G. K. U.
HARIDWAR LIB.

DESH DOOT 1948 JAN-DEC

113447

COMPILED

RT-194

Stock Verification-2004

मूल्य ७॥)

ा =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

ार, ४ जनवरी, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 4th January, 1948

COMPILED

पर ओघ
ते भावर नस्ट सेनाएं वि
यह स्थान ए
—यह घिरा हुआ है।
भय। यदि भा
अपव्यय कर के बीच राज-
करने के लिए
में लगा देंगे तो डित जवाहरलाल
में सहायता दें सीलोन के प्रधान
के लिये बी ायक नई दिल्ली
बचायें तो भा
प्रधान मंत्री ने
ार, बौद्ध के शिलारोपण
ाग लिया।
पाकिस्तान के समझौते
लिए करांची जायेंगे।]
समझौते की वार्ता में
८ लाख भारतीयों
, सीलोन में भारतीयों
बन्ध-रक्षा आदि विषयों
गया।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र

ारतीय संघ की भाषा हिन्दी।
की क्रूर भाग्य-लिपि।

स्वतन्त्र भारत
रंग-मंच, हँसि-परिहास

मूल्य २ आना

किंकिणी में कवि की बढ़िया कविताओं का संग्रह है। भाषा मधुर और कल्पना इतनी आकर्षक है कि पाठक कुछ क्षणों तक भावविभोर बना रहता है। मूल्य ।।।) बारह आने।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

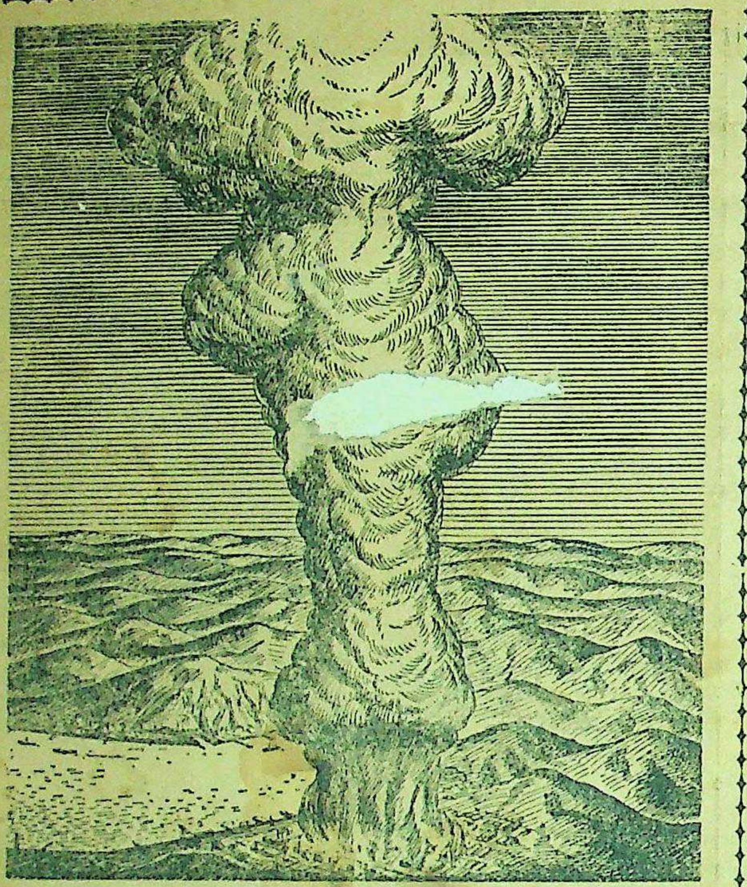

६ अगस्त १९४५ के दिन सारा संसार इस गुप्त रहस्य के प्रकाशन पर चकित [illegible] गया कि जापान का एक नगर हिरोशिमा, जिस में कम से कम २५०,०[illegible] प्राणी रहते थे, ऍटम बम के गिरने से पूर्ण रूप से नष्ट हो गया है। दूसरा ऍटम बम जो जापान पर गिराया गया उस ने नागासकी नगर का विनाश कर दिया। आज सारा संसार इस भयंकर विनाशकारी शस्त्र से भयभीत है।

ऍटम की शक्ति शान्ति-काल में विभिन्न लाभप्रद प्रयोगों में लाई जा सकती है। यह कोयला, तैल और बिजली के स्थान पर प्रयोग हो सकती है और इस पर खर्च इन सब चीज़ों से बहुत ही कम बैठता है। मनुष्य मात्र की भौतिक सम्पत्ति और सर्व सामान्य के हित के लिये ऍटम की शक्ति अपरिमित है परन्तु यह युग सम्बन्धी आविष्कार प्राणीमात्र के कल्याण या आधुनिक सभ्यता के विनाश के लिये प्रयोग में लाया जायेगा - यह बात मनुष्य जाति की बुद्धि पर निर्भर है।

[illegible] मनुष्यों की [illegible]
[illegible] का निवारण कर
[illegible] कीमतों का
[illegible] चीज़ों पर
[illegible] से [illegible]
निस्सन्देह [illegible] कीमतों [illegible]
। इस के विपरीत यदि कु[illegible]
[illegible] का ख़रीदना बन्द करके [illegible]
[illegible]को लाभ होगा और ऐसा करने
[illegible] में भी [illegible] सहायता
[illegible] चीज़ें
[illegible] आवश्यकता के
[illegible] दें।

अपनी बचत को बीमा पॉलिसी, सहकारी साख समिति, डाकख़ाने का सेविंग्ज़ खाता, नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स और सरकारी लोन (क़र्ज़), की सुरक्षित मदों में लगाइए।

भूमि, सम्पत्ति, सोना चाँदी के पांसे, आभूषण, द्रव्य, बना माल या सट्टेबाज़ी पर धन का अपव्यय न कीजिए! इन के मूल्य चढ़े हुए हैं और आशा है कि शीघ्र ही कम हो जायेंगे।

[illegible] को रोकिए
[illegible]यय न कीजिए

[illegible] के फ़ाइनेन्स [illegible] द्वारा प्रकाशित

ग्राहक और एजेन्ट शीघ्रता करें
पहला अङ्क प्रकाशित हो गया

'मंजरी'

सचित्र · कलात्मक · कहानी मासिक

वार्षिक मूल्य ६) रु०   प्रति अङ्क ।।) आठ आने।
तिरङ्गा आवरण, दर्जनों चित्र और कलापूर्ण छपाइ

जनवरी १९४८ के अङ्क में

७ कलात्मक हिन्दी कहानियाँ
२ प्रान्तीय भाषाओं की (तामिल और गुजराती) कहानियाँ
१ धारावाहिक उपन्यास
३ कथा-साहित्य पर समीक्षात्मक लेख और
३ स्तम्भ

प्रथमांक के आकर्षण

औपन्यासिक सम्राट् वृन्दावनलाल वर्मा,
चक्रवर्ती राजगोपालाचारी,
कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी,
उषादेवी मित्रा, होमवती देवी,
विष्णु प्रभाकर, शम्भुरत्न मिश्र 'मुकुल',
डाक्टर ब्रजमोहन गुप्त, एम० ए०, डी० फिल०,
कृष्णचन्द्र शर्मा, एम० ए०, एल्-एल० बी०,
परिपूर्णानन्द वर्मा, रमादत्त शुक्ल,

सम्पादक   प्रकाशक
देवीदयाल चतुर्वेदी   इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

शारीरिक उष्णता के वजह से...

Kadha
PEARL & Co.

अगर आप निम्न-लिखित उष्णताकी शिकायतों से दुःखी हो रहे हों—
(१) सारे शरीर के ऊपर और अन्दर खूब गरमी और जलन होना, आंखों की जलन, हथेलियों और पाँव के तलुओं में जलन, मान्डी के रंगके (पीले) पेशाब की जलन;
[२] खाना बेस्वाद लगना, क़ायमी बदहजमी और अरुचि, खाने के बाद जलन होना और खट्टी डकारें आना, पित्ताशय की मन्द पाचनशक्ति, क़ायमी क़ब्ज़;
[३] शरीर और दिमागकी थकान, निर्बलता, गरमी के कारण सम्भोगकी अयोग्यता;
तो 'पर्ल काढ़ा' की बोतलका सेवन शुरु कीजिये। २५ से भी ज्यादा सालों तक पर्ल काढाने इस दवाईके सेवन करनेवाले हजारों लोगोंको अच्छा कर दिया है।
पर्लकाढ़ा जवान और बूढ़े स्त्री, पुरुष और बच्चे-सभीको समान रुपसे फ़ायदा करताहै। यहांतक कि प्रसूता स्त्रियोंको भी फ़ायदा करता है।

शारीरिक उष्णता के लिये मशहूर अनुभूत इलाज!

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक
पर्ल काढ़ा

एकबार परीक्षा कर स्वयं अज़माइये!

8/46   HI/2

पर्ल कंपनी, आयौषधी कारखाना, राणीबाग, बम्बई २७

यू० पी० प्रतिनिधि दोसर एण्ड कम्पनी, बिरहना रोड

देशदूत

वर्ष १०, संख्या १८]　सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक　[रविवार, ४ जनवरी, १९४८

113447

सप्ताह के समाचार

सम्मेलन के भूतपूर्व सभापति

अधिवेशन	स्थान	सभापति	संवत्
पहला	काशी	महामना पं० मदनमोहन मालवीय	१९६७
दूसरा	प्रयाग	पं० गोविन्दनारायण मिश्र,	१९६८
तीसरा	कलकत्ता	उपाध्याय पं० बदरीनारायण चौधरी, [illegible]	[illegible]
चौथा	भागलपुर	महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द)	[illegible]
पांचवां	लखनऊ	पं० श्रीधर पाठक	[illegible]
छठवां	प्रयाग	रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए०	१९७२
सातवां	जबलपुर	महामहोपाध्याय पाण्डेय रामावतार शर्मा, साहित्याचार्य	१९७३
आठवां	इन्दौर	कर्मवीर मोहनदास कर्मचन्द गांधी	१९७४
नवां	बम्बई	महामना पं० मदनमोहन मालवीय	१९७६
दसवां	पटना	रायबहादुर पं० विष्णुदत्त शुक्ल	१९७७
ग्यारहवां	कलकत्ता	डा० भगवानदास, एम० ए० डीं० लिट्०	१९७७
बारहवां	लाहौर	पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी एम० आर० ए० एस०	१९७८
तेरहवां	कानपुर	बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन एम० ए०, एल-एल० बी०	१९७९
चौदहवां	दिल्ली	पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	१९८०
पद्रहवां	देहरादून	पं० माधवराव सप्रे	१९८१
सोलहवां	वृन्दावन	पं० अमृतलाल चक्रवर्ती	१९८२
सत्रहवां	भरतपुर	महामहोपाध्याय पं० गौरीशंकर हीराचंद ओझा	१९८३
अठारहवां	मुजफ़्फरपुर	पं० पद्मसिंह शर्मा	१९८५
उन्नीसवां	गोरखपुर	श्री गणेशशंकर विद्यार्थी	१९८६
बीसवां	कलकत्ता	बाबू जगन्नाथदास 'रत्नाकर' बी० ए०	१९८७
इक्कीसवां	झांसी	श्री किशोरीलाल गोस्वामी	१९८८
बाईसवां	ग्वालियर	रावराजा पं० श्यामबिहारी मिश्र एम० ए०	१९८९
तेईसवां	दिल्ली	महाराजा सर सयाजीराव गायकवाड़ बड़ौदा	१९९०
चौबीसवां	इन्दौर	महात्मा मोहनदास कर्मचन्द गांधी	१९९२
पच्चीसवां	नागपुर	राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्रप्रसाद	१९९३
छब्बीसवां	मद्रास	सेठ जमनालाल बजाज	१९९४
सत्ताईसवां	शिमला	पं० बाबूराव विष्णु पराड़कर	१९९५
अट्ठाईसवां	काशी	पं० अलम्बकाप्रसाद बाजपेयी	१९९६
उन्तीसवां	पूना	श्री सम्पूर्णानन्द	१९९७
तीसवां	अबोहर	डा० अमरनाथ झा	१९९८
इकतीसवां	हरिद्वार	पं० माखनलाल चतुर्वेदी	२०००
बत्तीसवां	जयपुर	गोस्वामी गणेशदत्त	२००१
तैंतीसवां	उदयपुर	श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी	२००२
चौंतीसवां	कराची	श्री वियोगी हरि	२००३
पैंतीसवां	बम्बई	श्री राहुल सांकृत्यायन	२००४

पंडित जवाहर लाल नेहरू

——अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के पैंतीसवें अधिवेशन, बम्बई के अध्यक्ष-पद से महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने गत ता० २८ दिसम्बर ४७ को कहा—'हिन्दी केवल भारतीय संघ की राजभाषा नहीं होगी, वरन् अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में भी वह महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त करेगी। अँगरेजी या उर्दू को अब राष्ट्रभाषा का स्थान कदापि नहीं प्राप्त हो सकता।'

——जम्मू की एक विराट् सभा में भारत के उपप्रधान मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने भारत-सरकार के इस संकल्प को दोहराया कि आक्रमणकारियों को काश्मीर से खदेड़ दिया जायगा।

——बनारस-राज्य में हिन्दी, राज्य की सरकारी भाषा घोषित हो चुकी है।

——बिहार के सुधार-मन्त्री डा० सैयद महमूद ने भारतीय यूनियन के मुसलमानों के सम्मेलन, लखनऊ में कहा—'ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने अपनी भेद-नीति के अनुसार न केवल राजनीतिक दृष्टि से. बल्कि सांस्कृतिक एवं सामाजिक दृष्टि से भी मुसलमानों में मतभेद पैदा करने का प्रयत्न किया है।'

——समाचार है कि काश्मीर से भगाई हुई स्त्रियों का पश्चिमी पंजाब के गुजरात जिजले के कारखानों में 'गुलाम लड़कियों' के रूप में उपयोग किया जा रहा है।

——ग्वालियर राज्य कांग्रेस कमेटी ने ग्वालियर अंतरिम सरकार को सूचित किया है कि ग्वालियर-नरेश द्वारा घोषित सुधारों को कार्यान्वित न किया गया, तो लोकप्रिय आन्दोलन छेड़ दिया जायगा।

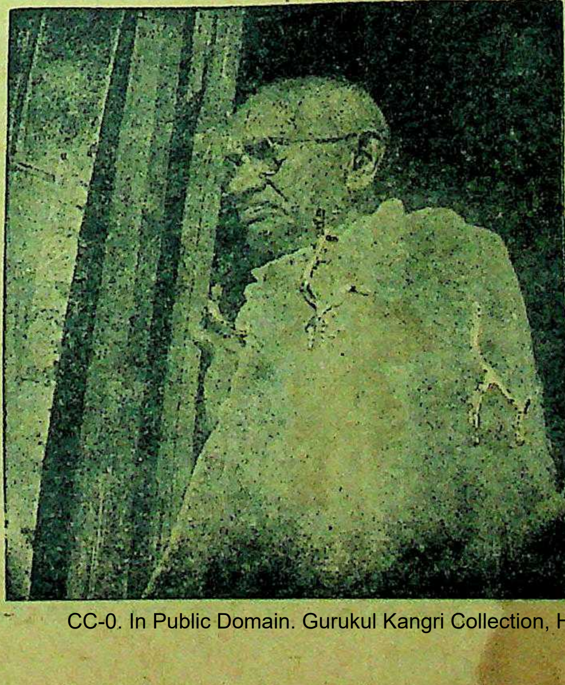

महात्मा गांधी

जनरल मार्शल च्यांगकाई शेक

——चीनी प्रेस के प्रेषित खरीतों के अनुसार मंचूरिया की पुरानी राजधानी मुकदन के लिए किया जानेवाला युद्ध भयंकरता की एक नई सीमा पर पहुँच गया, जब कि कम्यूनिस्ट सेनाओं ने एक-एक घंटे के बाद प्रमुख रेलवे केन्द्रों पर अधिकार करने के उद्देश्य से आक्रमण शुरू किये।

——इस बीच में दो प्रमुख रेलवे केन्द्रों के लिए युद्ध होता रहा, जहां कम्यूनिस्टों ने मुकदन में घुस जाने का प्रयत्न किया।

——मंचूरिया की राजधानी चांगचुन के आस-पास के कुछ प्रमुख स्थानों को अपने अधिकार में पुनः कर लेने का सरकारी सेना ने दावा किया है।

——उत्तरी चीन की स्थिति को बहुत संगीन बताया जा रहा है। खबर है कि यहां पर ६०,००० कम्यूनिस्ट सेनाएँ पेपिंग-हैंकों रेलवे के दोनों किनारे पर जमा हो रही हैं।

——शांसी प्रान्त से सरकारी पक्ष की खबरों में कहा गया है कि यंगचेन पर अधिकार कर लेने के उद्देश्य से कम्यूनिस्ट सेनाएँ वि[illegible] का प्रयोग कर रही हैं। यह स्थान एक महीने से अधिक समय से घिरा हुआ है।

——भारत और सीलोन के बीच राजनीतिक समस्याओं को हल करने के लिए भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू से मिलने के लिए सीलोन के प्रधान मंत्री श्री डी० एस० सेनानायक नई दिल्ली आये हैं।

——[illegible] सीलोन के प्रधान मंत्री ने सांची के विहार, बौद्ध के शिलारोपण संस्कार में भाग लिया।

——सेनानायक पाकिस्तान के समझौते की वार्ता के लिए करांची जायेंगे।

——भारत के समझौते की वार्ता में सीलोन में रहनेवाले ८ लाख भारतीयों के राजनीतिक पद, सीलोन में भारतीयों के प्रवास पर प्रतिबन्ध-रक्षा आदि विषयों पर भी विचार होगा।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन

लेखक, श्री कृपाल द्विवेदी, साहित्य-विशारद, प्रभाकर

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के ३५वें बम्बई अधिवेशन के मनोनीत सभापति महापंडित राहुल सांकृत्यायन भारत की उन महान् विभूतियों में से हैं जिन्होंने भारत में ही नहीं, बल्कि समस्त विश्व में भारतीय सांस्कृतिक आदर्श तथा पाण्डित्य की धाक जमा दी है। हिन्दी के विद्वानों में तो वे अकेले ही है जो कि अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। स्वतन्त्र भारत के इस सर्वप्रथम महाधिवेशन के अवसर पर जब कि हिन्दी विधान-परिषद् द्वारा राष्ट्र-भाषा स्वीकृत होने जा रही है; महापंडित राहुल सांकृत्यायन जैसे ख्यातिप्राप्त विश्व की ३० भाषाओं के प्रकाण्ड विद्वान् के सुदृढ़ हाथों में सम्मेलन की बागडोर आना हिन्दी के उज्ज्वल भविष्य की सूचना है।

जन्म—राहुल जी का जन्म रविवार ता० ९ अप्रैल १८९३ ई० को संयुक्त-प्रान्त में आजमगढ़ जिले के पन्दहा नामक गांव में हुआ। उनकी माता का नाम कुलवन्ती देवी था और वे अपने पिता की एकमात्र लाड़ली बेटी थीं। राहुल जी के बचपन का जीवन उनके नाना के यहां ही बीता।

शिक्षा—राहुल जी की शिक्षा में काफी व्यवधान रहे। सुस्थिर तथा सुव्यवस्थित रूप से वे शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके। कई बार बीच-बीच में उनकी पढ़ाई बन्द हो गई। अक्षरारम्भ उन्होंने नवम्बर १८९८ में किया—रानी की सराय के मदरसे में। उसके पश्चात् बनारस में संस्कृत की शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद तो स्वतन्त्र अध्ययन द्वारा उन्होंने विश्व की अनेक भाषाओं का पांडित्य प्राप्त किया।

देश-भ्रमण—विद्यार्थी काल से ही राहुल जी का जीवन अव्यवस्थित-सा रहा है। एक स्थान पर स्थिर होकर वे कभी नहीं रह सके। सर्वप्रथम घूमने का चस्का लगने पर राहुल जी बनारस गये, दक्षिण का तीर्थाटन किया और लगभग तीन मास तक अयोध्या में रहे। उसके बाद आर्य मुसाफिर विद्यालय, आगरा में रहे और सन् १९१६ लाहौर में। सन् १९१९ तथा बीच के कई महीने आप चित्रकूट प्रदेश में पर्यटन करते रहे। सन् १९२० में फिर पर्यटन का भूत सवार हुआ और सन् १९२१ में चार महीने तक कुर्ग में रहे।

राजनीति-प्रवेश—(जेल-जीवन सन् १९२१-२७) सन् १९२१ में कांग्रेस के सत्याग्रह में भाग लिया और इस देश-सेवा के फलस्वरूप १३ फरवरी से ९ अगस्त तक बक्सर जेल में बर्तानिया सरकार के मेहमान रहे। राहुल जी ने देश-सेवा में अपने जीवन का अमूल्य समय व्यतीत किया और उनकी सेवाओं को ध्यान में रखते हुए २९ अक्टूबर को छपरा जिला कांग्रेस कमेटी ने उन्हें मंत्री नियुक्त किया। सन् १९२३ में आपने नैपाल यात्रा की और वहां डेढ़ वर्ष तक रहे। इसके पश्चात् अप्रैल १९२३ से १९२५ तक हजारीबाग जेल में रहे और १९२६ ई० में हिमालय की ओर।

राहुल जी के जीवन में स्थिरता कभी भी नहीं रही। एक स्थान पर स्थिर होकर कभी भी वे बैठ नहीं सके। भ्रमण पर्यटन द्वारा विश्व-दर्शन की एक अपूर्व लगन उनके हृदय में रही और राहुल जी के जीवन का बहुत बड़ा भाग भ्रमण, यात्राओं तथा जेल में कटा।

राहुल जी का पहले का नाम साधु रामोदार था। आप सिंहल में बहुत दिनों तक रहे और आठ नौ महीने तक समस्त पालि वाङ्मय का आपने अध्ययन किया। आप संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित हैं और सिंहल प्रवास में आपने अपना सारा समय पालि के अध्ययन तथा संस्कृत के अध्यापन में व्यतीत किया।

तिब्बत की यात्रा—बौद्ध-धर्म तथा साहित्य-सम्बन्धी विशेष ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा से राहुल जी तिब्बत गये। आपने वहां बौद्ध-साहित्य का विशेष अध्ययन किया और सन् १९३० में गुरुवर धर्मानन्द की विशेष आज्ञा से भारत लौटे और अपने साथ सत्रह खच्चर ग्रन्थ लादकर लाये जो कि पटना म्युजियम में अब तक भी सुरक्षित हैं।

नाम-परिवर्त्तन—बौद्ध-धर्म में सन् १९३० में दीक्षित होने के बाद रामोदार साधु के रूप में राहुल जी इतने प्रख्यात हो चुके थे कि शायद दूसरे नाम का रंग जमना कठिन था, किन्तु आपने बाद में उक्त नाम के प्रथम अक्षर से संक्षिप्त नाम रखा मात्र रा० सा० और आज हिन्दी-साहित्य संसार में जनता उन्हें राहुल सांकृत्यायन के नाम से ही जानती है।

योरोप-यात्रा—सन् १९३२ में राहुल जी श्री भदन्त आनन्द कौसल्यायन के साथ इँग्लैंड गये और तीन महीने तक योरप में रहे। राहुल जी अथक् परिश्रमी हैं। दिन-रात का अधिकांश समय अध्ययन तथा लेखन-कार्य में व्यतीत होता है। आप तीन बार तिब्बत और तीन बार रूस हो आये हैं।

महान् व्यक्तित्व—ढीले-ढाले श्वेत कुरते में से सुन्दर, पुष्ट, स्वस्थ शरीर गौरवर्ण तथा उन्नत ललाट अपनी महानता को उद्घोषित करने से लगते हैं। राहुल जी अत्यन्त मृदुभाषी, निरभिमानी सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं। बनावट से तो वे कोसों दूर हैं। स्वाभाविक ढंग से बातचीत करने का उनका ढंग उनके मिलनसार व्यक्तित्व को और भी मोहक बना देता है। रूस की सुप्रसिद्ध लेनिनग्राड-यूनीवर्सिटी के सम्माननीय प्रोफेसर होते हुए भी वे भारत की कोटि-कोटि नंगी, भूखी जनता के नोन, तेल और लकड़ी के सवाल को लेकर विश्व-संघर्ष में जूझनेवाले व्यक्ति हैं।

पारिवारिक जीवन—राहुल जी की पत्नी रूस की एक विदुषी महिला हैं; राहुल जी के साथ ही लेनिनग्राड-विश्वविद्यालय की प्रोफेसर हैं। श्री राहुल जी संस्कृत के अध्यापक हैं तथा श्रीमती राहुल जी तिब्बतियन की।

राहुल जी की केवल एक ही सन्तान है, एक पुत्र; जिसका नाम है इगोन राहुलोविच। राहुल जी अपने बच्चे की पढ़ाई को ध्यान में रखकर अपनी पत्नी तथा बच्चे को रूस में ही छोड़ आये हैं। और अभी दो वर्षों तक उनका रूस जाने का विचार नहीं।

साहित्यिक जीवन—राहुल जी एक महान् विचारक, वक्ता तथा असाधारण शक्तिशाली लेखक हैं। हिन्दी-सम्मेलन के समस्त विद्वान् लेखकों में राहुल जी का साहित्य विस्तार की दृष्टि से सर्वप्रथम है। राहुल जी द्वारा लिखित पुस्तकों की संख्या नब्बे तक पहुँच चुकी है और कई पुस्तकें लिखी ही जा रही हैं। उनके द्वारा लिखित मौलिक, अनुवादित तथा संपादित साहित्य २१,००० पृष्ठों का है। केवल हिन्दी में ही नहीं बल्कि संस्कृत, पाली, तिब्बती, सिंहली, फ्रेंच, अँगरेजी, रूसी, रूमनी (जिप्सी) उर्दू और भोजपुरी आदि भाषाओं में भी उन्होंने विपुल साहित्य सर्जन किया है।

अँगरेजी तथा भारत की समस्त भाषाओं—बँगला, मराठी, गुजराती, तामिल उर्दू तथा सिंधी में उनकी अनेक रचनाओं के अनुवाद प्रकाशित हुए हैं।

केवल हिन्दी ही नहीं बल्कि, विश्व भर में कोई ऐसा विद्वान् नहीं जिसने इतनी अधिक भाषाओं में सफलतापूर्वक इतनी अधिक संख्या में पुस्तकें लिखी हों।

राहुल जी ने अपनी साहित्य साधना में किसी भी विषय को अछूता नहीं छोड़ा। धर्मशास्त्र, दर्शन, इतिहास, जीवनी, भाषा विज्ञान, आलोचना, यात्रा-वृत्तान्त आदि प्रत्येक विषय पर उन्होंने अधिकारपूर्वक प्रामाणिक रूप में अनुपम ग्रंथ-रचना की है।

उपरोक्त समस्त साहित्य-रचना उनकी पिछले १५ वर्षों के अथक् रूप से की गई साधना का परिणाम है। यदि इसी गति से वे हिन्दी तथा विश्व-साहित्य की अभिवृद्धि करते रहे तो निर्विवाद रूप से वे विश्वभाषा के प्रथम कोटि के विद्वानों की श्रेणी में अपना नाम अमर कर जायँगे।

जन-जीवन—राहुल जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन साहित्य-साधना तथा जन-

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

आदरणीय प्रधान मन्त्री पंत के प्रति

लेखक, श्री श्रीपालसिंह 'क्षेम'

नौका छू चली मझधार।
तुमने आँधियों से स्वर मिला गाये प्रलय में गान।
उन्मद सिन्धु पर अविराम खेते तुम गये जल-यान॥
माँझी हो न चल क्षण एक भी टूटे न तेरा तार॥ १॥
ले तेरी विजय का राग अब तक गूँजता आकाश।
लतिका-से चले तुम झेल उच्छल उर्मियों के पाश॥
तुमने निज हृदय के रक्त से रँग दी गरजती धार॥ २॥
फैला रज कणों पर एक युग के बाद आज प्रभात।
यद्यपि भर रही नभ मौन स्वर से आज झंझावात॥
माझी हो अभी ढीली न कर में एक पल पतवार॥ ३॥
तलवों को तुम्हारे चूमने को आ रहा तूफान।
चिर बढ़ते चलो अविजेय, लेकर शान्ति का अभियान॥
बनकर फूल चरणों पर झरेंगे व्योम के अंगार॥ ४॥
अब तो है प्रभा-मय पंथ उज्ज्वल हो चला तम-भार।
बनकर सत्य हँसता है तुम्हारे स्वप्न का संसार॥
शत-शत नयन आशा से तुम्हें हैं देखते उस पार॥ ५॥

गुरु नानक जन्मदिवसोत्सव के उपलक्ष्य में दिल्ली में उस दिन सहस्रों सिक्ख स्त्री-पुरुष गुरु-ग्रंथ-साहब के जलूस में सम्मिलित हुए। चित्र में उस [illegible] एक दृश्य अंकित है।

भारतीय संघ की भाषा हिन्दी के सिवा दूसरी भाषा नहीं हो सकती

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति महापंडित राहुल सांकृत्यायन का अभिभाषण

बंबई में होनेवाले हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति महापंडित राहुल सांकृत्यायन

बम्बई में होनेवाले हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के ३५वें अधिवेशन के सभापति महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन ने बड़ा ही महत्त्वपूर्ण भाषण दिया है। भाषण का आवश्यक अंश इस प्रकार है—

आज फिर भारत एक संघ में बद्ध हुआ है। हमारे भारत-संघ की कोई एक भाषा भी होनी आवश्यक है। संघ-भाषा के बारे में कुछ थोड़े से लोग अपने व्यक्तिगत विचारों और कठिनाइयों को लेकर बाधा डालना चाहते हैं। हम पूछेंगे—संघ के काम के लिए भारत में बोली जानेवाली सभी भाषाओं को लेना सम्भव नहीं, फिर किसी एक भाषा को हमें स्वीकार करना होगा।

फिर प्रश्न होगा :—क्या हमारे संघ की राष्ट्र-भाषा स्वदेशी होनी चाहिए या विदेशी, यानी अंगरेजी होनी चाहिए या भारतीय?

आश्चर्य करने की बात नहीं है, यदि अब भी कुछ दिमाग यह सोचने का कष्ट नहीं उठाते और अब भी अँगरेजी को राष्ट्र-भाषा बनाये रखने का आग्रह करते हैं। यह भी दासता के अभिशाप का अवशेष है। चूंकि किसी की आंखें सूरज को नहीं देख सकतीं, तो सूरज को उगना ही नहीं चाहिए। इन्होंने अँगरेजी छोड़ किसी भारतीय भाषा पर अधिकार नहीं पाया, सदा साहबी ठाठ में रहे और कभी ख्याल भी नहीं किया, कि देश की जनता भी किसी भाषा से सम्बन्ध रखती है और उसका साहित्य, जहां तक शुद्ध साहित्य का सम्बन्ध है, विश्व की किसी भाषा से पीछे नहीं है शाहबों के राज्य के चले जाने के बाद भी हमारे बीच में जो काले साहब बच रहे हैं, उनकी "हाय अँगरेजी, हाय अँगरेजी" की ओर हमें अधिक ध्यान देने की आवश्यकता नहीं।

बंबई में होनेवाले ३५वें हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के स्वागत-मंत्री ठाकुर काशीप्रसादसिंह।

कोई भी अविकृत-मस्तिष्क आदमी आज अँगरेजी को राष्ट्र-भाषा बनाने की कोशिश नहीं करेगा। हां, यहां यह भी कह देना चाहिए, कि हमारे रेडियो अब भी अँगरेजी को अधिक प्रचार का साधन मान रहे हैं। उन्हें फ्रेंच और रूसी रेडियो-प्रोग्रामों को देखना चाहिए और मालूम करना चाहिए, कि वहां कितने प्रतिशत मिनट प्रोग्राम अँगरेजी में चलते हैं।

सवाल है—हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं और दोनों लिपियों को भी क्यों न सारे संघ की राष्ट्र-भाषा और राष्ट्र-लिपि मान लिया जाय। पूछना है अपनी मातृभाषा और उसके साहित्य के पढ़ने के साथ साथ क्या दूसरी भाषा का बोझ ज्यादा से ज्यादा लादना व्यवहार और बुद्धिमानी की बात है? संघ की राष्ट्र-भाषा सिर्फ एक होनी चाहिए। दो-दो, चार-चार भाषाओं को संघ की भाषा मानना किसी भी दृष्टि से ठीक नहीं है। स्वीज़रलैंड की तीन भाषाओं का दृष्टान्त हमारे यहां भी लागू हो सकता था, यदि हमारा देश एक तहसील या तालुके के बराबर होता। हमारे यहां जो उदाहरण लागू हो सकता है, वह है सोवियत-संघ का, जहां ६६ भाषाएँ बोली-लिखी जाती हैं। द्रविड़ भाषाओं में तो तब भी ६०-६० प्रतिशत तक संस्कृत शब्द मिलते हैं—वही संस्कृत शब्द जो उत्तरी भाषाओं में हैं, किन्तु सोवियत की मंगोल-तुर्की सम्बन्ध की पचासों भाषाओं का रूसी भाषा से कोई सम्बन्ध नहीं। तो भी वहां के लोगों ने संघ की एक भाषा मानते वक्त रूसी को ही वह स्थान दिया, क्योंकि वह $\frac{2}{3}$ जनता की अपनी भाषा थी और देश में भी बहुत दूर तक प्रचलित थी। हिन्दी का भी वही स्थान है। इसलिए एक भाषा रखते वक्त हमें हिन्दी को ही लेना होगा। हिन्दी भाषा-भाषी बहुत भारी प्रदेश तक फैले हुए है, इतना ही नहीं बल्कि आसामी, बँगला, उड़िया, मराठी, गुजराती, पंजाबी ऐसी भाषाएँ हैं, जो हिन्दी जाननेवालों के लिए समझने में बहुत आसान हो जाती हैं, क्योंकि उनका एक दूसरे का बहुत निकट का सम्बन्ध है। मैंने उड़िया नहीं पढ़ी थी और न उसे सुनने का वैसा मौका मिला था। लेकिन इस साल कटक में मैं एक नाटक देखने गया। मैं डरता था कि शायद समझने में दिक्कत होगी, लेकिन पहले दिन के ही संवाद को मैं ८० सैकड़ा समझ गया, और उड़िया भाषा ने अपने सौन्दर्य से मुझे बहुत आकृष्ट किया। मैंने यात्रा, दर्शन और राजनीति के सम्बन्ध में गुजराती, [मराठी, उड़िया, बँगला भाषा-भाषियों के सामने कितनी ही बार व्याखान दिए हैं और भारी संख्या में उनके सावधानतापूर्वक सुनने से, सिद्ध था कि वे हिन्दी समझ लेते हैं। हां, वहां इस बात का जरूर ध्यान रखना पड़ता था कि हिन्दी में जब तक आनेवाले अरबी-फारसी के शब्दों की जगह तत्सम संस्कृत शब्दों का प्रयोग किया जाय। इससे यह भी सिद्ध हो जाता है कि अरबी-फारसी से लदी उर्दू भाषा को भारत के दूसरे प्रान्तों पर लादा नहीं जा सकता। और लिपि? उर्दू-लिपि जो कि वस्तुतः अरबी-लिपि है, इतनी अक्षम लिपि है, कि उसे खुद बहुत से इस्लामी देशों से देशनिकाला दिया जा चुका है। उसको लाने का ख्याल तो हमारे दिल में आना ही नहीं चाहिए।

हिन्दी के राष्ट्रभाषा होने के लिए जब कहा जाता है, तो कहीं कहीं से आवाज निकलती है—हिन्दीवाले सारे भारत पर हिन्दी का साम्राज्य स्थापित करना चाहते हैं? यह उनका झूठा प्रचार है और वह हिन्दी-भिन्न-भाषा-भाषियों के मन में यह भय पैदा करना चाहते हैं, कि हिन्दी के संघ-भाषा बनने पर उनकी भाषा का साहित्य और अस्तित्व ही मिट जायेगा। यह विचार सर्वथा निर्मूल है। अपने क्षेत्र में वहां की भाषा ही सर्वे-सर्वा होगी। बंगाल में प्रारम्भिक स्कूलों से यूनिवर्सिटी तक, गांव की पंचायतों से प्रान्त की पार्लियामेंट और हाईकोर्ट तक सभी जगह बँगला का अक्षुण्ण राज्य रहेगा। इसी रह उड़ीसा, आन्ध्र, तमिलनाड, केरल, कर्नाट, महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब और आसाम में भी वहां की भाषाओं का साहित्यिक और राजनीतिक दोनों क्षेत्रों में निराबाध राज्य रहेगा। हिन्दी का काम तो वहां ही पड़ेगा, जहां एक प्रान्त का दूसरे प्रान्त से सम्बन्ध होगा। इसको कौन नहीं स्वीकार करेगा कि बंगाली, उड़िया, मराठे, गुजराती, तिलंगे और कर्नाटकी जब एक जगह अधिकाधिक मिलेंगे, तो उनके आपसी व्यवहार के लिए कोई एक भाषा होनी चाहिए।

इतिहास हमें बतलाता है, कि ऐसी भाषा भारत में जब जब राजनीतिक एकता या अनेकता भी रही तब तब मानी गई। अशोक के शिलालेखों की भाषा मैसूर, गिरनार, जौगढ़ (उड़ीसा) और कलसी (देहरादून) इसका प्रथम प्रमाण है। फिर संस्कृत ने माध्यम का स्थान लिया, यद्यपि इसमें संदेह है, कि वह कचहरियों और दरबारों की बहुप्रचलित भाषा न थी। अपभ्रंशकाल (७-१३ सदी) में हम आसाम से मुल्तान, गुजरात-महाराष्ट्र से उड़ीसा तक अपभ्रंश भाषा में कवियों को कविता करते पाते हैं, उनमें कितने ही दरबारी कवि हैं। इस अपभ्रंश में यद्यपि इन सारे प्रदेशों की भाषाओं का बीज मौजूद है, परन्तु उसकी शिष्ट भाषा अवध और ब्रज के बीच की भूमि—पंचाल—की भाषा थी, जिसका मुख्य नगर कन्नौज मौखरियों के समय से गहड़वारों के समय (६-१२वीं सदी) तक उत्तरी भारत का सबसे बड़ा राजनीतिक और सांस्कृतिक केन्द्र रहा। इस तरह अपभ्रंश उस समय सारे भारत में वही काम कर रही थी, जो गैरसरकारी तौर से आज तक और सरकारी तौर से आगे हिन्दी को सारे भारत में करना है।

हिन्दी को सारे हिन्द-संघ के ऊपर राष्ट्र-भाषा के तौर पर लादने का सवाल नहीं है। यह तो एक सीधी व्यवहार की बात है। मुसलमानी शासनकाल में भी कितनी ही हमारी अन्तर्प्रान्तीय साधु-संस्थाएँ रहीं और वह आज तक चली जा रही हैं। उन्ही को देखिए, किस भाषा को उन्होंने सुव्यवहार्य समझकर अपने भाषण और लिखा-पढ़ी के लिए स्वीकार किया। संन्यासियों के अखाड़ों और स्थानों को जा के देखिए या बैरागी अखाड़ों या स्थानों को देखिए; वह समुद्र की तरह हैं, जहां सचमुच ही सैकड़ों नदियां जाकर मिलती ह और नामरूप विहाय समुद्र बन जाती हैं इन अखाड़ों की बड़ी बड़ी जमातें चलती हैं और [illegible] तो उनकी

बंबई में होनेवाले राष्ट्र-भाषा परिषद् के सभापति डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी।

संख्या लाखों तक पहुँच जाती है। वहां जाकर पता लगाइए कि मलाबारी, तेलगू, नेपाली, बंगाली, पंजाबी और सिन्धी साधु-संन्यासी किस भाषा में आपस में बातचीत करते हैं? हिन्दी में और सिर्फ हिन्दी में। इसका गांधी जी के दक्षिण हिन्दी भाषा-प्रचार से कोई सम्बन्ध नहीं है। हमारी आज की हिन्दी-संस्थाओं से सदियों पहले से यह काम हो रहा है। अखाड़ों में रक्खी अब भी आपको दो-दो सौ वर्ष की और कुछ पुरानी भी बहियां और चिट्ठियां इस बात का सबूत देंगी। इन्हीं अखाड़ों के एक प्रतिनिधि अतिकेचनगिरि ने १८६६ संवत् (१८०९ई०) में सोवियत् के बाकू नगर के पास ज्वाला जी के मन्दिर पर शिलालेख खुदवाकर लगाया—॥:॥६०॥ ओं श्री गणेशायनमः ॥श्लोक॥ स्वस्ति श्री नरपति विक्रमादित राज साके ॥ श्री ज्वाला जी निमत दरवाजा बणायाः अतिकेचनगिर सन्यासी रामदहावासी कोटेश्वर महादेवका ॥...असोज वदी ८ संवत् १८६६ ॥"

स्मरण रखना चाहिए कि सदियों से जब भारत में एकाधिपत्य और निरंकुश शासन का ही चारों तरफ बोलबाला था, साधुओं के यही अखाड़े थे, जिन्होंने जनतंत्रता का अच्छा आदर्श सामने रखा, तथा प्रान्तीयता और अखिल भारतीयता की समस्या को हल किया, बहुत हद तक उन्होंने जातिभेद के बन्धन को भी शिथिल किया था।

अस्तु, इससे यह तो साफ है, कि जब जब व्यवहार की बात आई, तब तब हिन्दी

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

बंबई में होनेवाले ३५वें हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष सेठ राधाकृष्ण खेतान।

म० प्रा० हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

विदर्भ में होनेवाले वार्षिक अधिवेशन का एक संस्मरण

लेखक, श्री उमाशङ्कर शुक्ल वर्धा .

मध्यप्रान्त विदर्भ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का बारहवां अधिवेशन विदर्भ की राजनैतिक राजधानी तथा विदर्भ की पुरुषार्थ ज्योति ब्रिजलाल वियाणी के गढ़ अकोला में हुआ। यह अधिवेशन बहुत ही महत्त्वपूर्ण रहा। प्रान्त की साहित्यिक तरुणाई को इससे बल व स्फूर्ति प्राप्त हुई और राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रसार के लिए कई नई-नई योजनाओं को मूर्तरूप मिला। हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार सेठ गोविन्ददास जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि संसार के इतिहास में अब तक जिन-जिन उपायों को काम में लेकर देशों ने स्वातंत्र्य संग्राम लड़े उनसे सर्वथा भिन्न उपायों को काम में लाकर भारत स्वतन्त्र हुआ। इतिहास बताता है कि राजनैतिक और सामाजिक क्रान्तियां प्रायः साथ-साथ नहीं होतीं; परन्तु जिन दिनों इस देश की राजनैतिक क्रान्ति हुई उन्हीं दिनों सामाजिक भी। अस्पृश्यता समाप्त हो गई, स्त्रियों का पर्दा चला गया, बाल-विवाह आदि न जाने कितनी सामाजिक कुरीतियां खत्म हो गई और साहित्य भूत का दिग्दर्शन कराते हुए वर्तमान में भविष्य का निर्माण करता है उसका भी इस काल में कैसा सृजन हुआ? हिन्दी में द्विवेदी-युग के पश्चात् के सारे साहित्यिक महारथी इसी गांधीयुग में हुए।

तो यह समय है क्रान्ति के बाद का समय। क्रान्ति प्रलय कर नई सृष्टि के बीज बोती है उस समय जो साहित्य सृजन होता है वह प्रगतिवाद का साहित्य है, यह कहा जाता है। प्रगतिवाद चाहे आज समाजवाद या साम्यवाद का पर्यायवाची वाद माना जाता हो, पर ऐसे अवसरों पर जो भी साहित्य-सृजन हुआ है तथा भविष्य में होगा, वह सारा सृजन प्रगतिवाद का सृजन है। वैज्ञानिक दृष्टि से यह माने बिना रहा ही नहीं जाता।

सेठ गोविन्ददास जी ने राष्ट्रभाषा के सम्बन्ध में प्रकाश डालते हुए कहा कि देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी बनाने का यह अर्थ कदापि नहीं है कि हम उर्दू या भिन्न-भिन्न प्रान्तीय भाषाओं की हत्या करना चाहते हैं। जहां तक उर्दू का सवाल है, हम उर्दू को हिन्दी का ही एक विकृत रूप मानते हैं। हमारे मुसलमान भाई उसका और फारसी लिपि का उपयोग कर सकते हैं। प्रान्तीय भाषाओं को तो हम अधिक से अधिक प्रोत्साहन देना चाहते हैं। बंगला, मराठी, गुजराती, तेलगू, तामिल, मलयालम, कन्नाड़ी, इत्यादि सारी भाषाएँ खूब फूलें-फलें। प्रान्तीय सरकारों, प्रान्तीय धारासभाओं और प्रान्तीय कचहरियों की भाषा उस प्रान्त की भाषा हो। हर प्रान्त अपने-अपने विश्वविद्यालय में शिक्षा का माध्यम अपनी प्रान्तीय भाषा को रखे। नागपुर विश्वविद्यालय ने अपनी कार्यभाषा मराठी रखने का अभी निर्णय किया है, कुछ हिन्दी भाषा-भाषी इससे बहुत रुष्ट हुए हैं; परन्तु मेरे मत से यह रोष अनुचित है। हां इतना मैं अवश्य कहना चाहूँगा कि नागपुर विश्वविद्यालय जिस प्रकार स्थापित हुआ है, उसे देखते हुए नागपुर विश्वविद्यालय की कार्यभाषा हिन्दी व मराठी दोनों होना चाहिए। पूना में कोई विश्वविद्यालय हो तो उसकी भाषा केवल मराठी हो सकती है। हम हिन्दी को केन्द्र में केन्द्रीय सरकार की और अन्तर्प्रान्तीय भाषा बनाना चाहते हैं, जिसका दूसरा अर्थ राष्ट्रभाषा होता है। हां हिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तों की तो वही प्रान्तीय भाषा भी होगी। वहां की सरकार की भी वही भाषा होगी और वहां के शिक्षा माध्यम की भी वही भाषा। अँगरेजी से हमारा कोई द्वेष नहीं––अन्तर्राष्ट्रीय भाषा हमारी अँगरेजी भाषा होगी। पर अँगरेजी को अपने देश की भाषा में हम अनिवार्य नहीं रखना चाहते। हमारे देश में दो ही भाषाएँ अनिवार्य होंगी––प्रान्तों की प्रान्तीय भाषा और राष्ट्रभाषा हिन्दी। भारत के स्वतन्त्र हो जाने के बाद वर्तमान परिस्थिति में साहित्यिकों और इन साहित्य-संस्थाओं की जिम्मेदारी बहुत बढ़ गई है पर इस जिम्मेदारी को साहित्यिक और साहित्य-संस्थाएँ तब तक पूरा नहीं कर सकतीं जब तक स्वतन्त्र भारत की स्वतन्त्र सरकारें इन्हें पूरी-पूरी सहायता और पूरा-पूरा सहयोग न दें।

विदर्भ की नारी-जागरण की प्रतीक श्रीमती राधादेवी गोयनका ने स्वागताध्यक्ष पद से जो भाषण दिया है उसमें उन्होंने कहा है कि साहित्य के क्षेत्र में हमारे प्रान्त की देन एक विशेष स्थान रखती है। क्या पत्रकार-कला और क्या कहानी, कविता, उपन्यास, नाटक, निबंध, आलोचना सभी दिशा में इस प्रान्त की प्रतिभा अपना अलग-अलग मार्ग बनाती चली हैं। छंद और व्याकरण की सुन्दर देन तो हिन्दी को इसी प्रान्त से मिली। युग कलाकार का सृजन करता है और कलाकार कार्य करता है अपने युग के निर्माण का। 'कला कला के लिए' विचारधारा का एक मान्य अंश अवश्य है, परन्तु साहित्यकार के भी राष्ट्र और समाज के प्रति उत्तरदायित्व की उपेक्षा नहीं की जा सकती। यह जिम्मेदारी नवनिर्माण के युग में तो कई गुनी बढ़ जाती है। आज तो राष्ट्र को ऐसे निर्माताओं की सबसे अधिक आवश्यकता है जो अर्थ और राजनीति से विशेष प्रभावित न होकर उन्हें ही समुचित रीति से प्रभावित कर सकें। राष्ट्र उनका है और वे राष्ट्र के हैं।

प्रान्त की पत्रकारिता के गौरव आदरणीय पंडित माखनलाल जी चतुर्वेदी ने राष्ट्रभाषा हिन्दी के सम्बन्ध में जो सूझ-पूर्ण व मौलिक तर्क दिये हैं वे बहुत ही सुन्दर थे। उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तानी व्यावहारिकता में कभी टिक नहीं सकती। आज गांधी जी तथा उनके अनुयायी भले ही हिन्दुस्तानी को राष्ट्रभाषा बनाने का स्वप्न देख रहे हों, पर यह कभी सम्भव नहीं है। उन्होंने कहा कि मैं उर्दू को जब देखता हूं तो मुझे वह 'सिर्फ गांधी जी की प्रार्थना में और [illegible] में ही दीखती है। बापू तुम हिमालय हो, नागाधिराज हो––हिन्दीरूपी गंगा को अबाध गति से प्रवाहित होने दो। उसे गंदा न करो। बापू यदि आप उर्दू लिखते हों तो पूरे देश को उर्दू मत लिखाइए। देवनागरी के बावन अक्षरों का बलिदान न कीजिए। पाकिस्तान में पस्तो, सिंधी और गुरुमुखी को प्रधानता दी गई है। पाकिस्तान रेडियो में गुरुमुखी बोली जाती है।

* * *

अधिवेशन को सफल बनाने में विदर्भ के प्राण ब्रिजलाल जी ब्रियाणी ने जो कुछ किया उसे भुलाया नहीं जा सकता। ऐसा कोई कार्य नहीं जो बियाणी जी न कर सकें। वे जनता की सेवा करना अधिक पसन्द करते हैं बनिस्बत कि अपने राजस्थान भवन में आराम करने के। उन्हें अपने भवन में आराम नहीं––वे हमेशा बाहर गरीबों की कुटिया की ओर दौड़ते हैं। उनका राजस्थान भवन कांग्रेसी कार्यकर्ताओं का कार्यस्थल और साहित्यिकों का साधना-स्थल बन गया है। आज विदर्भ की जनता ब्रियाणी जी के इशारों पर मर मिटने को तैयार है।

प्रान्त के कोने-कोने से साहित्यिक पधारे थे। बाहर से आनेवालों में से कुछ ये हैं––नीला चश्मा और सिल्क का कुरता पहने 'नक्षत्र' के लेखक व्योहार राजेन्द्रसिंह, खुले सिर और काली लम्बी शेरवानी पहने हुए श्री नर्मदाप्रसाद खरे, आंखों में मस्ती लिये हुए और खद्दर का मोटा कुरता पहने हुए, श्री भवानीप्रसाद तिवारी, 'ऊँट' उपनाम धारण करनेवाले, श्री रामानुजलाल श्रीवास्तव जो कविता कलम से नहीं हृदय से लिखते हैं, कुछ ऊँचा सुननेवाले 'महाकोशल' रायपुर के सम्पादक श्री स्वराज्यप्रसाद त्रिवेदी और 'वीणा फेम' 'जय हिन्द' के सम्पादक श्री कालिकाप्रसाद दीक्षित 'कुसुमाकर।' इनके अलावा सर्वश्री प्रयागदत्त शुक्ल, रामगोपाल माहेश्वरी, कृष्णलाल 'हंस', झलकनलाल वर्मा छैल, हृषीकेश शर्मा, हंस, केदारनाथ झा 'चन्द्र', केशवप्रसाद वर्मा, भवानीप्रसाद मिश्र, व मुरलीधर दीक्षित 'भ्रान्त' भी पधारे थे।

कवि-सम्मेलन का संचालन जिस मस्ती के साथ उस दिन पंडित भवानीप्रसाद तिवारी ने किया वह कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। जिस समय श्री नर्मदाप्रसाद खरे ने अपनी कविता––"निकल पड़ी जलधार, हमारी आंखों से जलधार" सुनाई, श्रोताओं की आंखों में आंसू छलछला आय थे। श्री खरे
के ही नहीं, किन्तु वे सारे भारत के क
में अपना एक विशेष स्थान रखते
उनकी अपनी शैली है, उनका अपना
है और उनका अपना 'टेकनीक' है।
दिन दूर नहीं जब श्री खरे काव्य-जगत्
विशेष रूप से सफल कवि माने जा
प्रान्त के बाहर उनकी आवाज पहुँच
है। पंडित भवानीप्रसाद तिवारी क
के कवि हैं। वे कोमल से कोमल भावना
को प्रकृति के क्षेत्र में शत शत प्रकार
प्रदर्शित करने में समर्थ हैं। उनके ह
का सन्ताप आकाश-गंगा की भांति अ
अश्रुतारिकाओं से परिपूर्ण है। उन
विशेषता यही है कि सूक्ष्म भावों
अन्तराल में प्रवेश कर उसकी सम
परिधि तक दृष्टि फेरते हैं और मोती
तरह मनोविज्ञान को चुनकर कविता
सजा देते हैं। 'गीतांजलि' का जो स
अनुवाद उन्होंने किया है वह हिन्दी-सं
में आदर की दृष्टि से देखा जा रहा
पंडित भवानीप्रसाद मिश्र को उनक
कविता पर उसी समय ५०१) का पुरस्
घोषित किया जाना अपना एक अर्थ र
है। कवियों व साहित्यकारों की प्रति
महान् हैं। उन्हें रुपया पैसा-नहीं चाहिए
उन्हें कविता को समझनेवाला चाहि
अकोला में जो कवि-सम्मेलन हुआ—
बहुत ही सुन्दर व सफल आयोजन

* * *

एक-दो को छोड़कर प्रान्त के प्र
सभी पत्रकार उपस्थित थे। स्वतन्त्र भा
में समाचारपत्रों का अपना विशेष स्
है। उन पर बड़ी भारी जिम्मेदारी
पत्रकारिता के क्षेत्र में मध्यप्रान्त अ
उतना आगे तो नहीं बढ़ पाया है
भी आज प्रान्त को 'कर्मवी
पर गर्व है। तीन हिन्
दैनिकों, दस हिन्दी साप्
हिकों और अनेकों मासिक
के प्रकाशन से यहां
जागृति हुई है––वह निःसंदे
बहुत बड़ा कार्य है।

सम्मेलन ने निश्चय कि
है कि प्रान्त में कि
केन्द्रीय स्थल पर हिन्द
भवन एक लाख की र
से बनाया जाय। इसके लि
चंदा एकत्र करने का क
शुरू होने को ही है। आ
है कि उक्त हिन्दी-
नागपुर या जबलपुर में
जायगा। अगला अधिवे
राज नांदगांव में होगा।

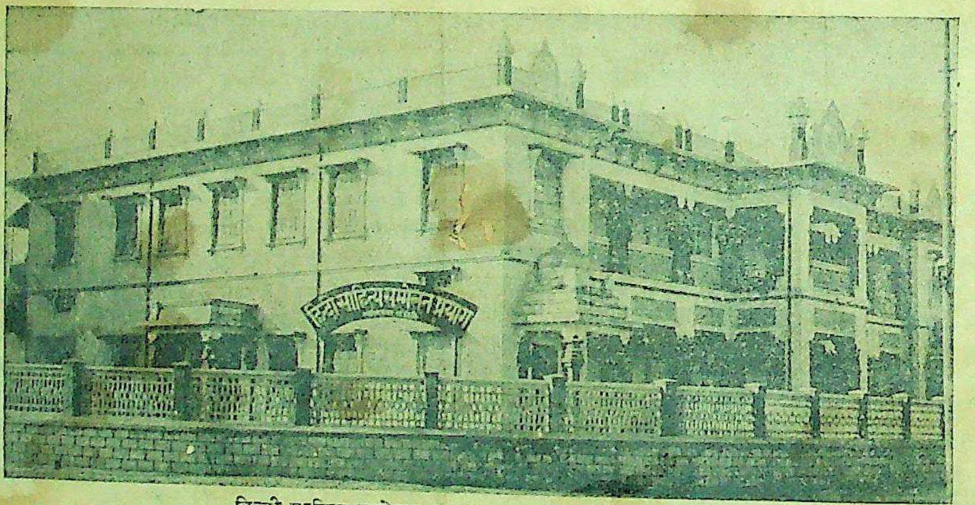

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन प्रयाग का वृहद संग्रहालय ।

हम स्वतन्त्र भारत के नागरिकों
देश की उन्नति के लिए अभी बहुत कु
करना है। अभी तो हमारे बन्धन
हैं––कार्य तो सामने पड़ा ही है।
देश की उन्नति होगी तब भारत संसार
मानवता का सन्देश देगा और उसका
विदेशों में जाकर सत्य व प्रेम का संदे
सुनायेगा।

(भारतेन्दु हिन्दी सिंडिकेट, वर्धा)

परीदेश।

यह पुस्तक ख़ास कर छोटे बच्चों के
लिए है। इसमें ऐसी एक भी बात नहीं
जिसको समझने के लिए माथापची करनी
पड़े। इसमें रोजमर्रा की बातें बड़े ही
अच्छे ढंग से लिखी गई हैं। बड़े आकार
की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों और फूल-
पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है। मूल्य ॥)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रया

कोरिया की क्रूर भाग्य-लिपि

क्या साम्राज्यवादी राष्ट्र कोरिया की स्वतंत्रता की योजना बना रहे हैं

लेखक, श्री रतनलाल जोशी, एम० ए०

कोरिया का भाग्यचक्र आज भी साम्राज्यवादियों के हाथ का खिलौना बना हुआ है। अमरीका तथा रूस की शक्ति के बीच कोरिया की स्वाधीनता कराह रही है। प्रत्येक राष्ट्र उसे प्रलोभन दे रहा है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने कोरिया की आज की राजनीति पर सुन्दर प्रकाश डाला है। लेख पठनीय तथा विचारणीय है।

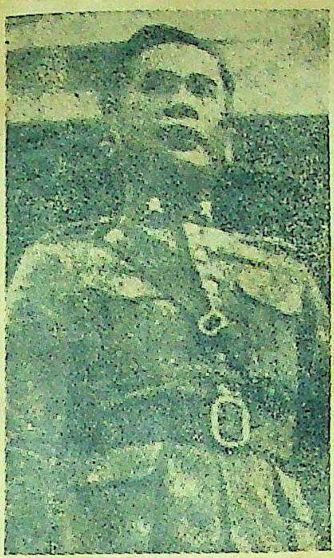

मार्शल फीबुल, स्याम के भूतपूर्व जापानी प्रधान मंत्री ने पुनः स्याम का संचालन-भार ग्रहण किया है।

द्वितीय महायुद्ध में जापान की पराजय ने कोरिया को एकदम रूस एवं अमेरिका के द्वंद्व-युद्ध का आखेट बना दिया। रूस की गृद्ध-दृष्टि पिछली दो सदियों से कोरिया के खनिज पदार्थों और बारहों मास हिमरहित रहनेवाले समुद्र-तट पर लगी हुई है। रूस के अधिकार में इतने विशाल भू-भाग के होते हुए भी उष्ण समुद्रतट का अभाव है। सामरिक दृष्टि तो कोरिया की स्थिति रूस के लिए और भी लुभावनी है। कोरिया रूस की प्रशांत महासागरीय सीमा का आखिरी छोर है और जहां वह एक ओर जापान सागर और अमेरिका के प्रशांत महासागरीय सैनिकों के अड्डों पर सीधा लक्ष्य करता है वहां चीन और मंचूरिया का संतरी भी है। गोलार्द्ध के ठीक दूसरी ओर कोरिया पूर्व एवं पश्चिम को मिलानेवाला सेतु है। यदि रूस के प्रभुत्व में कोरिया आ जाता है तो सारे सुदूर-पूर्व की राजनीति उसके हाथों का खिलौना हो जाती है। जापान पर अमेरिका ने जो अपना प्रभुत्व स्थापित किया है वह कोरिया पर सोवियत रूस का आधिपत्य होने से एकदम नगण्य हो जाता है। कोरिया की भौगोलिक स्थिति जापान से ज्यादा महत्त्व की है। सामरिक दृष्टि से ही नहीं, खनिज-सम्पत्ति की दृष्टि से भी जितनी भाग्यशाली कोरिया की वसुन्धरा है उतनी जापान की नहीं। साथ ही खनिज सम्पत्ति के अपरिमित स्रोत मंगोलिया एवं मंचूरिया को अपने प्रभुत्व में रखने के लिए रूस को कोरिया की आवश्यकता है। कोरिया में अपने हित-विरोधी स्वामित्व को सोवियत रूस कायम रखना नहीं चाहता है। अमेरिका कोरिया को अपने संरक्षण में लेना चाहता है सोवियत रूस इससे और भी अधिक उद्विग्न हो गया है।

भौगोलिक महत्त्व

कोरिया की वर्तमान दुर्व्यवस्था का अधिकांश दायित्व उसकी भौगोलिक अवस्थिति पर है। एशिया के एक कोण में जहां रूस और अमेरिका (इससे पहले जापान भी) प्रभुत्व-स्थापन के लिए प्रतियोगिता कर रहे हैं कोरिया-जैसे छोटे-से राष्ट्र का स्वतंत्र रहना बाह्य साम्राज्यवादी शक्तियों के संदेह, शंका और षड्यंत्र का कारण है। इतिहास की पुनरावृत्ति हो रही है। पचास वर्ष पूर्व कोरिया रूस और जापान के पारस्परिक संघर्ष का उर्वर क्षेत्र था—दो दानवीय शक्तियों के घात-प्रतिघातों के बीच में कोरिया रक्त-रंजित हो गया था। आज फिर वही परिस्थिति कोरिया की करुण भाग्यलिपि बनकर अवतरित हो गई है। आज कोरिया संसार की दो महान् शक्तियों—रूस और अमेरिका के द्वंद्व-प्रतिद्वंद्व का अखाड़ा बन गया है। जापान के दूरदर्शी राजनीतिज्ञों को कोरिया के इस भौगोलिक महत्त्व का ज्ञान था और वे यह भी देख रहे थे कि कोरिया पर अधिकार करने के लिये रूस ही प्रयत्नशील नहीं है वरन् अमेरिका भी अपनी लोलुप दृष्टि लगाये बैठा हुआ है। जापान के लिए कोरिया का रूस या अमेरिका के आधिपत्य में चला जाना भयावह था; क्योंकि कोरिया सारे सुदूर-पूर्व एवं दक्षिण-पूर्वीय प्रशान्त महासागर का प्रहरी है। मध्य-एशिया में आज काश्मीर का जो सामरिक महत्त्व है उससे भी कहीं अधिक महत्त्व दक्षिण-पूर्वीय एशिया में कोरिया का है। जापान के हाथों रूस की पराजय के बाद यूरोपीय शक्तियों ने कोरिया को जापान के संरक्षण में इसीलिए दिया था कि वे जापान से इतने भयभीत नहीं थे जितने रूस से थे और रूस को वे अपने ही विशाल भू-भाग में बंदी बनाये रखना चाहते थे। इस बंदीगृह का एक फाटक तुर्की था और दूसरा कोरिया।

युद्धकालीन कर्तृत्व

द्वितीय महायुद्ध में जापान की पराजय में शूरवीर कोरियनों का भी काफी हाथ रहा है। एशिया का भावी इतिहास जब निष्पक्ष भाव से लिखा जायेगा तो जापान की पराजय के युद्ध में कोरियनों के शौर्य एवं बलिदानों का उल्लेख स्वर्णाक्षरों में किया जावेगा। लाखों कोरियन चीनियों और मित्रराष्ट्रीय सेनाओं के साथ वीरता से से लड़े। जापान का दृढ़ शासक भी कोरियनों के संकल्प से कांप उठा। अप्रैल १९४५ को सम्राट् हिरोहितो ने "बड़ी कृपा के साथ कोरियनों को जापान की पार्लमेंट में प्रतिनिधित्व का अधिकार प्रदान किया।"

लेकिन चालीस वर्ष से स्वतंत्रता की बलिवेदी पर कुरबानियां चढ़ानेवाले कोरियनों को सम्राट् हिरोहितो के इस छद्म आदेश से किस प्रकार संतोष हो सकता था? उन्होंने इस आदेश को जापानियों की आंतरिक निर्बलता का द्योतक समझा और अपने आन्दोलन को और भी अधिक बलवान् बना दिया। हजारों नवयुवक पहाड़ियों पर भाग गये। और जापानियों से गुरिला-युद्ध करते रहे। जनरल किन-जिन-सिंग के नेतृत्व में १५००० सैनिकों की एक टुकड़ी ने चीनियों की एट्थ रूट आर्मी (आठवीं सेना) से सम्पर्क स्थापित कर लिया। उधर कोरिया में जनता ने भी इन स्वातंत्र्य-वीरों को पूरा-पूरा सहयोग दिया। जापानियों ने बलात् फौज-भर्ती और मजदूरों से बलात् श्रम लेना शुरू किया। कोरियनों ने अत्याचारों के बावजूद भी जापानियों को सहयोग नहीं दिया। उन्होंने सारे कोरिया भर में पंचमांगियों का जाल बिछा दिया और जापानियों को अपने देश से खदेड़ा।

अमेरिका का पतन

दासत्व, त्रास और रक्तपात के इन कठोर वर्षों में कोरियनों को एशिया की तो क्या संसार की किसी भी जाति या राष्ट्र की सहायता नहीं मिली। विदेशी शक्ति द्वारा आक्रमण के समय अमेरिका ने सहायता देने का जो वचन दिया था उसकी सिर्फ हत्या ही उसने नहीं कि किन्तु कोरिया और बृहत् रूप से एशिया पर आक्रमण करने के लिए अमेरिका ने जापान को लोहा, कोयला, तेल, रुई का सामान एवं अन्य प्रकार की सामग्री के अभाव में नहीं रक्खा। श्रीमती पर्ल बक ने १९३६ में ही इस सम्बन्ध की चेतावनी अमेरिका की जनता को दी थी। जापान के पक्ष में अमेरिका इतना उदार और सहायक बन गया था कि उसे यह भी चिन्ता नहीं हुई कि जापान अमेरिका से लेकर जो अपरिमित सामग्री एकत्र कर रहा है वह किसी दिन अमेरिका पर आक्रमण करने के ही उपयोग में लाई जावेगी! कोरिया पर जापान के राजनीतिक प्रभुत्व को राजकीय मान्यता देने में अमेरिका ने ही सबसे पहला कदम उठाया था। कोरियनों के आश्चर्य और संताप का ठिकाना न रहा जब एक रात के बाद ही दूसरे सवेरे उन्होंने अमेरिकन सरकार की यह आज्ञा पढ़ी और अपने को जापानियों की प्रजा के रूप में पाया।

"अमेरिका की सरकार कोरिया में जापानी विजय को मान्यता देती है और आज से कोरियनों के साथ अमेरिका का सम्बन्ध जापानी राजदूतावास के द्वारा ही हुआ करेगा।"

द्वितीय महायुद्ध के अंतर्गत भी कोरिया के स्वातंत्र्य-आन्दोलन को आर्थिक सहायता देने के लिए कोरियनों की अपीलें अमेरिका ने न सुनीं।

जापान का आधिपत्य

कोरिया पर जापानी आधिपत्य की कहानी सीमातीत साम्राज्यवादी शोषण की हृत्कंपी कहानी है। भौगोलिक सम्पत्ति की दृष्टि से कोरिया जापान की अपेक्षा अधिक भाग्यशाली है। प्रकृति का अनुग्रह कोरिया की उर्वरा भूमि पर ही नहीं है, किन्तु खनिजीय क्षेत्र में भी उसकी कृपा असीम है। लेकिन इस भौगोलिक महत्त्व ने ही कोरिया पर विपत्तियों पर विपत्तियां ढहाई हैं। जापानियों ने कोरिया का वर्षों तक निर्दय शोषण किया और उसको खोखला बना डाला। एशिया के जिन देशों का जीवन-स्तर अत्यंत निम्न है कोरिया उनमें अग्रगण्य है। कोरिया की ८५ प्रतिशत भू-सम्पत्ति जापानियों के हाथों में थी और खेती पर भी जापानियों का सर्वाधिक अधिकार रहता था। यही कारण है कि पिछले चालीस वर्षों से कोरिया की साठ फी सदी जनता वर्ष के तीन महीनों में पेड़ों की पत्तियों और जड़ों पर जीवन-निर्वाह करती आई है।

आर्थिक शोषण के साथ-साथ राजनीतिक दमन भी इन चालीस वर्षों में अमानुषिकता की पराकाष्ठा को स्पर्श करता रहा। जापानियों ने कोरिया की संस्कृति पर सबसे पहले आघात किया। देश की भाषा जापानी घोषित कर दी और शिक्षा भी उसी के माध्यम से दी जाने लगी। हाईस्कूल तक सौ में एक छात्र ही कदाचित् पहुंच पाता था। विश्व-विद्यालय में तो सभी विद्यार्थी जापानी होते थे। वाणी एवं विचार-स्वातंत्र्य को पूरी तरह कुचल दिया गया था और राजनीतिक रुचिवाले व्यक्तियों को कई प्रकार से संतप्त किया जाता था।

अभूतपूर्व पाखण्ड

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में जैसा पाखंड कोरिया के साथ किया गया है वैसा संसार के किसी भी देश के साथ नहीं हुआ है। रूस-जापान-युद्ध के बाद यूरोपियन शक्तियों ने कोरिया को अकारण ही जापान के संरक्षण में दे दिया था। कोरियनों की सम्मति की भी किसी ने चिन्ता नहीं की। भेड़-बकरी की भांति एक स्वतंत्र राष्ट्र को अपरिचित स्वामित्व में रख दिया। जापान की पराजय के बाद कोरिया में स्वतंत्रता की घोषणा करनी चाहिए थी किन्तु रूस और अमेरिका ने मिलकर उसे दो भागों में स्वेच्छानुसार बांट लिया। राजनीति में ऐसी अनीति और अत्याचार बीसवीं सदी के इन वर्षों में भी होता है और उन महाशक्तियों द्वारा होता है जो दूसरी ओर सारी मानवता को स्थायी शान्ति और मुक्त वातावरण देने के लिए राष्ट्र-संघ की स्थापना का ढोंग रच रहे हैं। कोरिया के अन्यायपूर्ण आधिपत्य को नवोदित एशिया क्षमा नहीं कर सकेगा—निकट भविष्य के कुछ वर्ष ही इस भविष्यवाणी को चरितार्थ कर देंगे।

स्याम के बादशाह प्रजाधिपोक और उनकी पत्नी। यह चित्र बैंकाक में सन् १९३४ में लिया गया था।

स्वतंत्र भारत का रेलवे-बजट

सरकार स्वयं घाटे को पूरा करने का उद्योग करेगी

लेखक, श्री वंशीलाल पुण्डीर, बी० ए०

रेलवे भारत की राष्ट्रीय सम्पत्ति है। इसके द्वारा राष्ट्र की प्रगति का विस्तार तो होता ही है, साथ ही आर्थिक तथा व्यापारिक गति भी व्यापक रूप ग्रहण करती है। इस लेख में रेलवे-बजट की आलोचना की गई है और भारत-सरकार को कुछ सुझाव भी किये गये हैं, जो पठनीय तथा विचारणीय है।

स्वतन्त्र भारत का प्रथम रेलवे-बजट एक लोकप्रिय और विश्वसनीय सरकार ने तैयार किया है। अब वह पुरानी आर्थिक नीति नहीं चल रही है जब कि ब्रिटिश स्वार्थों की रक्षा और भारतीय हितों की उपेक्षा की जाती थी। भारतीय अब स्वयं ही अपने भाग्य के निर्माता हैं। अगर पंजाब में यह दुःखपूर्ण घटनाएँ न होतीं तो शरणार्थियों पर व्यय किया जानेवाला २२ करोड़ रुपया बच जाता और सारा घाटा लगभग पूरा हो जाता। इस थोड़े ही समय में इतना अधिक रुपया व्यय करना पड़ रहा है जो कि परिस्थितिवश आवश्यक हो गया है, क्योंकि उन दुखी और घर-बार छोड़कर आये हुए व्यक्तियों की सहायता करना प्रत्येक सरकार का कर्तव्य है।

* * *

इन सारी चीजों की जड़ उत्पादन की समस्या रही है। आज हमें इतनी अधिक आवश्यकता और किसी वस्तु की नहीं है जितना उत्पादन बढ़ाने की है। विभाजन के बाद भी साम्प्रदायिक स्थिति बिगड़ती गई और हर प्रकार के व्यापार, उद्योग व आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन को गहरा धक्का पहुँचा, जिसके कारण सब चीजों की बहुत अधिक कमी महसूस की जा रही है। आवश्यक और प्रतिदिन काम में लाई जानेवाली वस्तुओं की कमी के कारण मूल्य भी बहुत बढ़ गये और सर्वसाधारण को कठिनाइयां उठानी पड़ीं। गत वर्ष की हड़तालों और लाक-आउटों और इस साल के दंगों के कारण कपड़े का उत्पादन १९४५ से ४६,००० लाख से घटकर ३९,००० लाख गज रह गया है। इसी प्रकार युद्धकाल की अपेक्षा लोहे का उत्पादन ४ लाख टन घट गया है। सीमेंट का उत्पादन भी ७ लाख टन घट गया है। इस कारण वस्तुओं का मूल्य बढ़ना स्वाभाविक था, यद्यपि सरकार ने रुपये खींचने का क्रम जारी रखा और अधिक मुद्रा का प्रसार नहीं किया। अगर उत्पादन बढ़ गया होता तो वस्तुओं का मूल्य अवश्य गिर जाता और सर्वसाधारण की सुविधाएँ बढ़ जातीं।

इस दिशा में सबसे अधिक असन्तोष-जनक स्थिति खाद्य पदार्थों की है। कृषि-प्रधान देश होने पर भी भारत को गत २½ वर्षों में ५५ लाख टन ग़ल्ला बाहर के देशों से मँगाना पड़ा है और इस कारण भारत के १६९ करोड़ रुपये बाहर भेजे जाने पड़े हैं। भारत जैसे गरीब देश के लिए इतने रुपये कम नहीं हैं और अगर हम इतना अन्न पैदा कर सकते कि ये रुपये बाहर जाने से बच जायें तो भारत की आर्थिक स्थिति अच्छी होती और हमें लगातार गत ८ वर्षों से जो बजट में घाटा पड़ रहा है, वह बच जाता। कृषि में सुधार की नितान्त आवश्यकता है। इसके साथ-साथ 'अधिक अन्न उपजाओ' आन्दोलन भी सफल नहीं रहा है और इतने प्रयत्न करने पर भी अन्न-उत्पादन में वृद्धि नहीं हो पाई है। पर सन्तोष का विषय है कि भारतीय सरकार इस अवस्था से परिचित है और किन्हीं कारणों से भी बंगाल-दुर्भिक्ष के समान विपत्ति नहीं आ सकती और चाहे जितना ही आयात करना पड़े पर कोई भूखा नहीं मर सकता।

	करोड़ रुपयों में
आय	१७१·१५
व्यय	१९७·३९
घाटा	२६·२४

आय में चुंगी से ५०·५ करोड़ रुपये, आय-कर से २९५·५ करोड़ रुपये और साधारण करों से ८८·५ करोड़ रुपये प्राप्त होंगे। डाक और तार-विभाग से सिर्फ २·०३ करोड़ रुपये प्राप्त होंगे और रेलवे-विभाग से कुछ भी आशा नहीं है। स्मरण रहे कि इन दो विभागों से केन्द्रीय सरकार को हमेशा लाभ रहता था और यह कुछ न कुछ घाटा पूरा करने में सहायक रहते थे पर इस साल विभिन्न कारणों से इन विभागों से कुछ भी लाभ नहीं हो रहा है।

१९७·३९ करोड़ रुपये के कुल व्यय में ९२·७४ करोड़ रुपये रक्षा में खर्च होंगे और बाकी १०४·६५ करोड़ रुपये सिविल खर्च है। मा० अर्थ-मंत्री ने अपने भाषण में कहा कि भारत लगभग २,६०,००० सेना रखेगा और स्थान स्थान में साम्प्रदायिक दंगों के कारण सेना का खर्चा भी बढ़ गया है; और फिलहाल विघटन करना और व्यय कम करना भी कठिन है। भारत जैसे गरीब देश के लिए सेना का इतना व्यय करना कठिन है और यह उत्पादक कार्यों की ओर लगता तो और भी अच्छा होता पर वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए जब कि बाहरी और भीतरी शत्रुओं से भारत घिरा हुआ है तब अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करना भी अत्यन्त आवश्यक है। शान्ति और व्यवस्था रखना भी प्रत्येक राज्य का प्रमुख कर्त्तव्य है। अवस्था में सुधार होने पर आशा है कि खर्च कम हो जायेगा।

सिविल खर्चे में २२ करोड़ रुपये शरणार्थियों का खर्च है जो कि आवश्यक है और उनको यथायोग्य सहायता पहुँचाना भी राज्य का प्रमुख कर्त्तव्य है। अन्यथा समाज में असन्तोष और बेकारी बढ़ना स्वाभाविक है। २२·५ करोड़ रुपये बाहर से मंगाये जानेवाले खाद्य पदार्थों को कम मूल्य में बेचने के कारण खर्चा है। इसके साथ साथ २०·३९ करोड़ रुपये प्रान्तों को भी सहायता के रूप में दिये जायेंगे ताकि वे अपनी उन्नति की योजनाओं को चला सकें और प्रान्तों को १५ करोड़ रुपये कर्जे के रूप में भी दिये जायेंगे। इतना सब होने पर भी यह नहीं कहा जा सकता कि शरणार्थियों पर इतना ही खर्चा किया जायेगा,' क्योंकि अगर आवश्यकता पड़ी तो और भी खर्च करना पड़ेगा।

* * *

भारत अपने पौंडपावने पर बड़ी बड़ी आशायें लगाये हुये था पर यह सब स्पष्ट होता जा रहा है कि इनसे कुछ आशा करना वृथा है। युद्ध को समाप्त हुये लगभग २½ साल हो गये पर अभी तक इसका कुछ भी निर्णय नहीं हो पाया है और दोनों सरकारों के बीच बातचीत चल रही है। भारत-सरकार की यह इच्छा है कि यह रुपया सिर्फ उत्पादन को बढ़ानेवाली मशीनों को मंगाने पर खर्च किया जाये ताकि हमें सदा दूसरों का मुंह न ताकना पड़े।

* * *

राजनैतिक और साम्प्रदायिक विषम परिस्थितियों के कारण पुनर्निर्माण-योजनायें उतनी तेजी से न चलाई जा सकीं जितना कि पहले सोचा जाता था और आशा की जाती थी। पहले तो बड़ी बड़ी योजनाओं पर विचार होता रहता था पर भारत-सरकार अन्य आवश्यक कार्यों के कारण इस ओर पूरा ध्यान नहीं दे पाई है और इसके लिये सिर्फ १ करोड़ रुपया रखा गया है। प्रान्तों को २०·३९ करोड़ रुपया मिलेगा और १५ करोड़ रुपया कर्जा दिया जायेगा। इतने बड़े देश के दृष्टिकोण और बड़ी बड़ी योजनाओं के लिए इतना रुपया बहुत ही कम है पर अन्य परिस्थितियों के कारण यह आवश्यक है। मा० अर्थ-मंत्री ने कहा है कि साधनों की कमी के कारण बड़े बड़े कार्य एकदम नहीं किये जा सकते और प्रान्तीय सरकारों से अपील की है कि वे अपने साधनों को एकत्रित कर इस ओर लगायें। मा० अर्थ-मंत्री ने यह भी विश्वास दिलाया कि जिन योजनाओं के सम्बन्ध में निर्णय किया जा चुका है उनके लिए केन्द्र अवश्य प्रान्तों की सहायता करेगा। भारत जैसे देश में पुनर्निर्माण की बहुत आवश्यकता है जहां कि प्रचुर साधनों का उचित लाभ नहीं उठाया गया है और जहां के निवासियों का रहन-सहन का दर्जा बहुत नीचा है। हमें आशा है कि जब भी आर्थिक अवस्था सुधरेगी, अधिक से अधिक रुपया इस दिशा में खर्च किया जायेगा।

* * *

राष्ट्रीय उद्योग-धन्धों के विकास की नीति के सम्बन्ध में मा० अर्थ-मंत्री ने कहा, "भविष्य में चाहे भारत की आर्थिक व्यवस्था कुछ भी हो पर आनेवाले कई सालों तक व्यक्तिगत आर्थिक संगठनों की काफी आवश्यकता है। मेरा विश्वास है कि भारत की आर्थिक व्यवस्था मिश्रित होनी चाहिए जहां कि व्यक्तियों के व राज्य के आर्थिक संगठन

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

कोरिया की राजधानी सिऊल से चालीस मील उत्तर में "३८वीं समानांतर" है जो कोरिया को दो भागों में विभक्त कर रही है—एक फौलादी सीमा-रेखा खींच दी गई है जिसके उत्तर में रूस का स्वामित्व है और दक्षिण में अमेरिका का नियंत्रण है। जनतंत्र के लिए लड़े गये द्वितीय महायुद्ध की सर्वेसर्वा जातियों ने क्या कोरियनों के कल्याण के लिए ऐसी योजना बनाई है? कोरियन ऐसा नहीं समझते हैं, सारा एशिया ऐसा नहीं समझता है और ब्रिटेन एवं अमेरिका का प्रबुद्ध जन-समाज भी ऐसा नहीं समझता है। क्या यह षड्यंत्र है फिर?

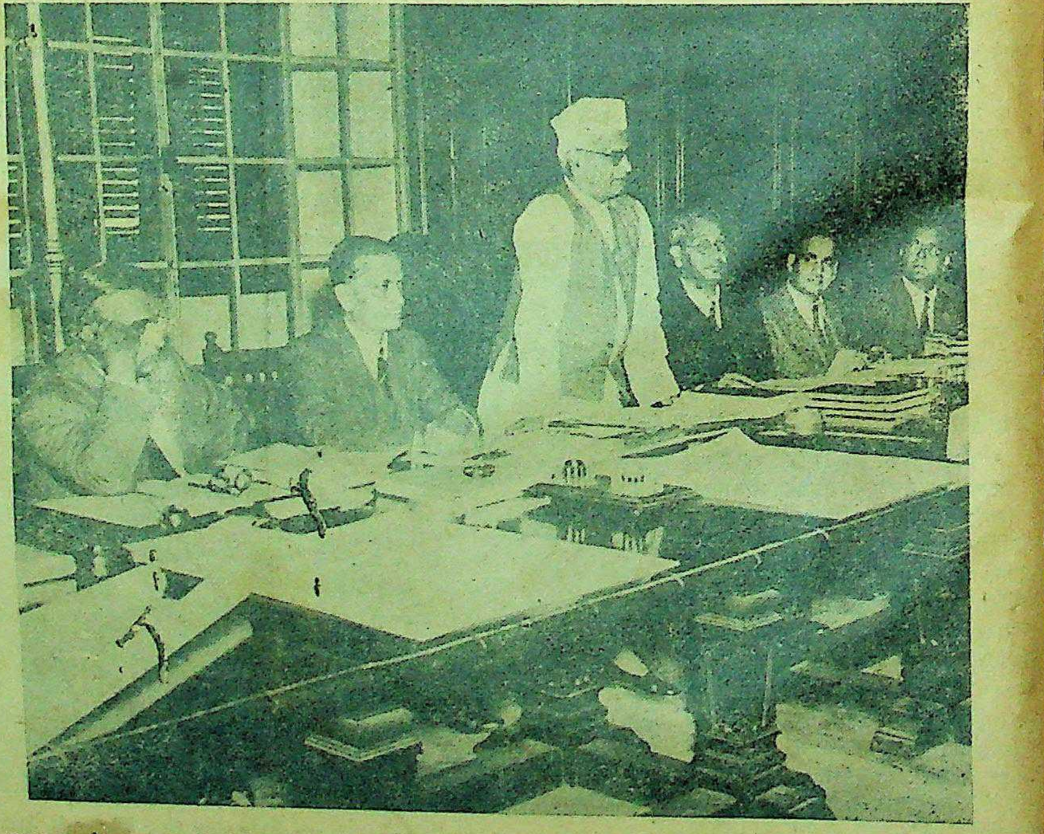

भारत-सरकार के प्रभावशाली मंत्री श्री [illegible] के संबंध में होनेवाली एक सभा में भाषण दे रहे हैं।

केलेवाला

लेखिका, कुमारी रूप मेहरा

> समय का प्रभाव व्यापक है। कौन जानता है कब क्या होगा? केलेवाला यद्यपि मुसलमान था किन्तु इस युग में भी वह अपने व्यवहार और सुजनता से हिन्दू बच्चों का प्रिय बन गया था। इसी घटना के आधार पर कहानी लिखी गई है, जो पठनीय तथा रोचक है।

"ले केला, बम्बइया केला, केला क्या मलाई है" की पुकार लगाता हुआ केलेवाला नित्य मेरे मुहल्ले में आता। पता नहीं, उसकी पुकार में कौन-सा जादू भरा था कि मुहल्ले के सभी बच्चों पर वह बिना अपना प्रभाव डाले न रहता। सभी बच्चे अपने-अपने घरों से निकलकर मेरे घर के द्वार पर चारों ओर से केलेवाले को घेर लेते थे। मेरे घर के द्वार के समीप ही वह केलेवाला अपना आसन जमाकर बैठ जाता था।

केलेवाला हँसता हुआ जोर-जोर से अपने केलों की तारीफ करता हुआ बच्चों को एक-एक आने केले बेचता। कोई भी बच्चा उससे मोल-भाव न करता, क्योंकि यही उसका नित्य-प्रति का बँधा हुआ भाव था। वह बारहों महीने केले ही बेचता था। उसका एक आने से भाव न कभी कम होता और न कभी अधिक होता था। इस प्रकार वह मेरे ही मुहल्ले में रुपये-डेढ़ रुपये तक के केले बेच लिया करता था।

मुहल्ले में रहनेवाले सभी यह भली भांति जानते थे कि केलेवाला मुसलमान था और बरकतअली भी यह जानता था कि इस मुहल्ले में केवल हिन्दू ही रहते हैं, किन्तु उसे इन बातों से क्या मतलब, उसे तो केवल अपने केले बेचना रहता, उसी जरिये से तो वह अपनी और अपने तीन नन्हों की गुजर-बसर करता रहता था। उसे किसी से ईर्ष्या आदि न थी। वह बच्चों को प्यार करता। उन्हीं से उसकी रोटी चलती थी। बच्चे भी उससे प्रतिदिन सौदा लेने से काफी हिल गये थे। वे भी किसी और फलवाले से केला न खरीदते। बरकत का इन्तजार करते और जब वह आता तो सबके सब पहले केला लेने को उतावले हो जाते। चारों तरफ से "हमें दो पहले, बरकत हमें दो, ओ केलेवाले पहले हमें दो, हमने पैसे दे दिये" की आवाज बरकत ही को न सुनाई देती बल्कि मुहल्ले भर में गूंज-सी जाती। बरकत भी उस ध्वनि-लहरी में विभोर केलों के बांटने में मग्न रहता। कभी-कभी एक-दूसरे में छीना-झपटी भी हो जाया करती और उस अवसर पर हाथापाई के हो जाने से एक-दो केलों का नुकसान बरकत को उठाना पड़ता। कारण यह था कि पके होने के कारण जल्दी ही हाथ लगने से या तनिक-सा भी जोर पड़ने से वे पिलपिले हो जाते थे, किन्तु इस नुकसान से बरकत को दुख न होता। उसे इन बालक-रूपी बन्दरों का झगड़ा बड़ा ही भला लगता था।

इन वानरी सेना में मेरा भाई प्रकाश भी शामिल होता था। उसे केले बहुत पसन्द थे। प्रतिदिन केला खाने की उसकी एक आदत-सी पड़ गई थी। उसकी इस आदत में बरकत का थोड़ा-बहुत हाथ भी था। कारण कि जो प्रतिदिन ही केले जो लाता था। उसे अपना कर्तव्य निभाने में प्रकृति भी कुछ न कर पाती थी। चाहे जाड़ा हो चाहे गर्मी। या चाहे पानी ही क्यों न पड़ता हो, वह कम से कम मेरे मुहल्ले में अवश्य आता था।

बरकत की दूर से ही आवाज सुनकर प्रकाश पिताजी के पास पैसे लेने दौड़ता। पिताजी अखबार पढ़ते-पढ़ते या चाय पीते-पीते या अन्य कोई कार्य करते-करते उसके हाथ में इकन्नी रख देते। लेकिन दूसरा हाथ झट बढ़ाकर प्रकाश फिर कहता, "और पारू बहन के लिए।" फिर पिता जी दूसरी इकन्नी उसकी फैली हथेली पर रख देते। जब तक बरकत पास आता, वह द्वार पर पहुँच जाता। वह केले खरीद सीधा मेरे ही पास आता। एक तो वह स्वयं खाता दूसरा मुझे देता। मेरी रुचि केलों के खाने में बिलकुल नहीं है। अतएव मैं कभी तो खा लेती कभी ऐसा होता कि जब पिता जी कचहरी जाने को तैयार होते, उन्हें दूध की क्रीम में मैं वही केला मिलाकर देती और जब वे मना कर देते तो मां को दे दिया करती। मां भी उसे न खाकर अलमारी में रख देतीं और जालीदार अलमारी बन्द कर देतीं ताकि चूहे उसे न पा सकें या कोई अन्य जीव-जन्तु उसे नष्ट न करे। शाम को कालेज से लौटने पर जब मैं प्रकाश के पास पहुँचती तो उसे प्रायः वही केला खाते पाती।

* * *

इसी प्रकार बचपन की मधुर बेला व्यतीत होती रही, इसी बीच आ गई पन्द्रह अगस्त की शुभ बेला। बाल रवि के सप्त अश्वों से जुते हुए रथ पर चढ़कर आई भारत की आजादी! एक बार फिर भारतमाता के मस्तक पर तिरंगा अशोक के चक्र के साथ लहरा उठा। साथ ही हो गया भारत का विभाजन! माता के दो लाड़ले सपूत इधर-उधर शासन की बागडोर थामे अपने रथ चलाने लगे।

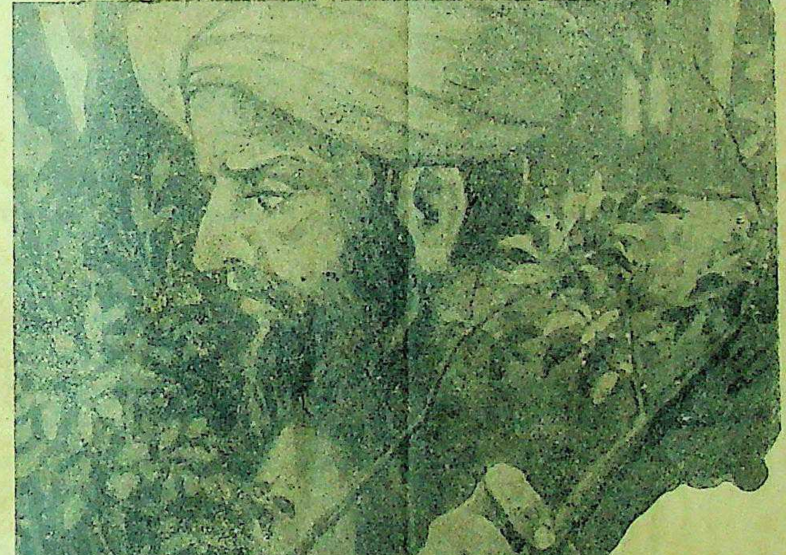

केलेवाला एकाएक कुछ देखकर सोच में पड़ गया

अभी भारत को स्वतन्त्रता मिले एक सप्ताह भी व्यतीत न हो पाया था कि पंजाब में हिन्दू-मुस्लिम उपद्रव आरम्भ हो गया। जगह-जगह मार-काट हो रही थी, सभी अपनी-अपनी जान बचाकर भाग रहे थे। हिन्दू-मुस्लिम सभी एक-दूसरे के खून के प्यासे हो रहे थे। चारों तरफ कत्लेआम हो रहा था, कितने सनाथ अनाथ हो रहे थे, मां-बाप के सामने ही उनकी पुत्रियों का अपहरण हो रहा था। संग्राम-भूमि में भैरव नृत्य कर रहे थे, मानवता का [illegible] हो रहा था। मानव ने अपने को पशु से भी नीचे गिरा दिया था। हिन्दू-धर्म का सर्वनाश मचा हुआ था, इस्लाम अपनी अन्तिम सांस ले रहा था। अखबारवालों की खूब बन आई थी। अपने-अपने मरनेवालों की संख्या अधिक से अधिक छापकर जनता को उत्तेजित कर रहे थे। बढ़े-चढ़े ऊँचे नेता मंचों पर चढ़कर एक-दूसरे के धर्मों पर आरोप लगाने में दत्तचित्त थे जिससे कि जनता शान्त होने के अतिरिक्त उत्तेजित हो रही थी। चालीस कोटि के पूज्य बापू की आशाओं पर पानी फेर रहे थे।

पंजाब के सनसनीपूर्ण समाचार हमारे शहर में भी अपना प्रभाव डाले बिना न रह सके। जिस स्थान पर कल तक हिन्दू-मुसलमान गले मिल रहे थे, आज एक-दूसरे के खंजर भोंक रहे थे। पंजाब का एक धुंधला चित्र यहां भी खिंच गया किन्तु सरकार की बुद्धिमानी ने काम किया। लूट-पाट या मार-पीट के शुरू होते ही यहां करफ्यू आर्डर लगा दिया। इस प्रकार शहर अपनी पूर्व स्थिति में दो सप्ताह के पूर्व ही आ गया किन्तु भयरूपी बादल अभी भी सभी के हृदयों पर छाये हुए थे।

उपद्रव के कारण केलेवाला भी कई दिनों तक न आ सका। कुछ दिनों तक तो बच्चे उसकी राह देखते रहे किन्तु अधिक दिनों के व्यतीत हो जाने और उसे अपने मुहल्ले में न पाने से वे बच्चे उसे धीरे-धीरे भूलने लगे। सभी के दिलों में यह बात बैठ गई कि बरकत मुसलमान है, वह अब हिन्दुओं के मुहल्ले में नहीं आयेगा। मगर प्रकाश की निराशा अभी तक दूर नहीं हुई थी। उसे पूरा विश्वास था कि बरकत अवश्य केले लेकर आयेगा।

एक दिन प्रकाश ने जब कि उसका धैर्य टूटने लगा तो पूछा—"पारू बहन, केलेवाला अब क्यों नहीं आता? अब तो सम्पूर्ण शहर में शान्ति है।" मैंने भी उसे नैराश्य न होने देने के लिए कहा—"अभी सम्भव है, उपद्रव हो, शायद इसीलिए वह नहीं आ सका है। थोड़े दिनों बाद वह सम्भवतः आवेगा ही।" मैंने उत्तर दिया।

अभी हम लोग बातें कर ही रहे थे कि दूर से, "ले हरी छाल बम्बइया केले, मीठे केले" की आवाज सुनाई दी। आवाज सुनते ही प्रकाश एक पल में ही द्वार पर आ पहुँचा। एकबारगी ठिठककर खड़े हो उसने देखा कि केलेवाला बरकत नहीं था। जब सब बच्चे उससे केले खरीद चुके तो प्रकाश भी धीरे-धीरे उसके पास पहुँचा। जेब से दो इकन्नियां निकाल उसकी ओर बढ़ाते हुए उससे बोला—"केलेवाले, क्या तुम बरकत को जानते हो, जो यहां रोज केले बेचने आया करता था।"

"हां भैया! जानता हूँ बरकतअली को। एक महीना हुआ उसे पुलिस पकड़ ले गई। उस पर हत्या का अभियोग लगाकर उसे जेल भेज दिया गया है।" उत्तर देते हुए केलेवाला उसकी ओर देखने लगा। कुछ क्षण तक तो प्रकाश वहीं जड़वत् खड़ा रहा, फिर मुड़ा और बिना केले लिये हुए ही घर को लौट आया। सीधे मेरे कमरे में पहुँचा। मैंने उसके उदासपूर्ण मुखड़े को देखकर पूछा—"क्यों केले लाया?" "नहीं" उसने उत्तर दिया। "पारू बहन ...." वह फिर बोला, किन्तु उसके मुंह से साफ और सीधी आवाज नहीं निकल रही थी। मैंने कहा—"क्यों कहता नहीं, क्या बात है?"

"पारू, बरकत को पुलिस पकड़कर ले गई ह। उसने ले जाकर बरकत को जेल में बन्द कर दिया है। उस पर कत्ल करने का मुकदमा चलेगा। एक आदमी के खून कर डालने का बरकत पर इलजाम लगाया गया है।" इतना सुनते ही मेरा हृदय धक् से रह गया। कमरे में एकबारगी हम दोनों के बातचीत न करने से स्तब्धता छा गई। हम दोनों एक दूसरे का क्षण-मात्र मुंह देखते रहे। मेरे हृदय में बरकत के लिए अब दया का लेश-मात्र न था, मेरा हृदय घृणा से भर उठा, किन्तु प्रकाश को अभी तक विश्वास था कि बरकत ऐसा काम नहीं कर सकता। सहसा प्रकाश चिल्ला उठा—"नहीं पारू, यह हो नहीं सकता, वह किसी को मार नहीं सकता।"

अच्छा जा यहां से, खबरदार जो मेरे सामने अब उस निर्दयी व्यक्ति का नाम लिया।" मैंने उसे फटकारा। वह और कुछ कहना चाहता था, लेकिन इस भय से कि उसे मैं फिर कहीं न झिड़क दूं, चुपचाप सिर नीचा किये मेरे कमरे की ओर बढ़ गया।

इस घटना को घटे अभी केवल महीने ही भर हुए। हाथ में 'भारत' समाचार-पत्र लिये हुए प्रकाश ने मेरे कमरे में प्रवेश किया। "पारू बहन! अगर तुम मुझ पर नाराज न हो तो एक बात कहूँ।" पारू ने कहा—नहीं प्रकाश, मैं नाराज भला क्यों होने लगी। प्रकाश ने कहा—"मेरी इच्छा है कि मैं एक बार जेल में जाकर किसी प्रकार बरकत से मिल आऊँ। पता नहीं उसका क्या हाल है। "अच्छा जाओ, अगर मिल सको तो अवश्य उससे तुम भेंट कर सकते हो।" मैंने उसे अपनी अनुमति दे दी। मुझसे उसका दुखी चेहरा नहीं देखा जाता था, वह इन दिनों काफी दुबला भी हो गया था। मेरी यह इच्छा कदापि न थी कि उसे किसी प्रकार का कोई कष्ट हो।

* * *

जेलर के साथ एकाएक प्रकाश को देखकर बरकत विस्मित हो गया। "अरे, नन्हें बाबू, तुम! ....तुम यहां कैसे आये।

जेलर बाबू! मेरे नन्हें राजा को छोड़ दो। इस मासूम कली को जेल में न सड़ने दो, भला इन्होंने क्या कुसूर कर डाला, मैं इनका कुसूर अपने सिर लेता हूँ। मुझे इनके बदले में सजा दे दो, इन्हें छोड़ दो।" गिड़गिड़ाते हुए बरकत जेलर के कदमों पर लोट गया।

"अरे बरकत उठो, हम जेल में पकड़कर नहीं लाये गये हैं। हम तो जेलर बाबू के साथ तुम्हें देखने आये हैं।" बरकत का हाथ पकड़कर अपनी ओर खींचते हुए प्रकाश ने कहा।

"छोटे बाबू, मुझे देखने आये हो, खुदा तुम्हें खुश रखे, बहुत ऊँचे ओहदे पर जाओ और हमारी भी उम्र लेकर जियो।" बरकत ने दुआ दी—"लेकिन बरकत, तुमने ऐसा क्यों किया? तुम तो बड़े अच्छे आदमी जान पड़ते हो और सीधे भी फिर यह खून……सहमें-सहमें प्रकाश ने पूछा।

"क्या बताऊँ नन्हें बाबू! अगर सच कहूँगा तो तुम शायद विश्वास न करोगे। इसलिए तुम अब जाओ, अगर कभी जेल से बाहर आऊँगा तो बताऊँगा। लेकिन मेरी बात से मेरा यह यकीन रखना कि मैंने किसी को कत्ल नहीं किया है। मुझे बेकसूर जेल में लाकर ठूंसा गया है। जो तकदीर में लिखा है वह तो भुगतना ही पड़ेगा नन्हें बाबू!" कहते हुए बरकत ने एक दीर्घ निःश्वास छोड़ी।

"तुम बेकसूर हो, मैं भी यही कहता था दीदी से। लेकिन वे मेरा विश्वास नहीं करती थीं बरकत।" अच्छा अब मैं जाता हूँ नहीं तो चाचा जी नाराज होंगे। मैंने सिवा पारू बहन के और किसी को नहीं बताया है। अच्छा अब चलूं। प्रकाश ने थोड़ी दूर चलकर देखा—बरकत खड़ा रो रहा है और अपने कुरते से आंसुओं को पोंछ रहा है।

जेल से प्रकाश लौट आया। उसके मन में बराबर यही ख्याल रहा और पूरा विश्वास रहा कि बरकत बेकसूर है, अतः वह शीघ्र ही छूट जायगा। किन्तु उसे क्या मालूम कि विधि का विधान कभी उलटे कभी सीधे चलता है। कभी-कभी कसूरवाले बेदाग छूट जाते हैं और बेकसूर फांसी पर लटका दिये जाते हैं। हुआ वही जो होना था।

मैं जानती थी कि बरकत अब अदालत और पुलिस के पंजे से छूट नहीं सकता। अन्त में एक दिन हमने सुना और समाचार-पत्रों में पढ़ा कि 'एक चौदह वर्षीय हिन्दू बालक की हत्या करनेवाले पुरुष बरकत-अली को आजीवन कालेपानी का दंड दिया गया।'

हम दोनों जड़वत् थे। दोनों की आंखें सजल थीं। अब मैं कभी केले न खाऊँगा कहते हुए प्रकाश ने रूमाल से अपना मुंह ढँक लिया।

अपनी बात

लेखक, श्रीयुत चन्द्रभूषण वश्य

मनुष्य के चरित्र में किस प्रकार की दुर्बलतायें होती हैं और उन्हें दूर करके वह किस प्रकार अपने जीवन को उन्नत बना सकता है, यह बात इस पुस्तक में बहुत ही ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई है और लिखी गई है व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर। अपने चरित्र का निर्माण करने के लिए प्रत्येक युवक को यह पुस्तक एक बार अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ॥।) बारह आने।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग।

स्वास्थ्य व्यायाम

बढ़िया सब्जी कैसे बनें ? आपकी पत्नी को क्या करना चाहिए ?

लेखक, श्री रामेश बेदी, आयुर्वेदालंकार

मेरा ख्याल है कि इस प्रश्न का ठीक जवाब आप नहीं जानते। खूब मिर्च-मसाले और ढेर सारे घी में भूनकर बनाई गई और खुशबू छोड़ती हुई सब्जियाँ आपकी बिगड़ी जबान को भले ही अच्छी लगती हों। परन्तु उनसे आपको पूरा पोषण नहीं मिलता। उन्हीं सब्जियों को उतने ही पैसे और उतने ही परिश्रम में आपकी पत्नी ऐसा तैयार कर सकती है कि उनसे कई गुना लाभ प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए आपको और आपकी पत्नी को ये बातें मालूम रहनी चाहिए।

बर्तन कैसा हो ?

बर्तन वह लीजिए जो सारा एक समान और अच्छी तरह गरमी ग्रहण करता हो। इसका तला चपटा होना चाहिए जो समान रूप से आग के सम्पर्क में रहे। तला ऊँचा-नीचा न होकर एक जैसा ही चपटा होना चाहिए। जब पानी कम होता है तो चपटे तलेवाले बर्तन में एक जैसा फैल सकता है और सब्जी के अधिक से अधिक भाग के सम्पर्क में आ सकता है। छोटी पेंदीवाले बर्तनों में पानी नीचे पेंदी में ही रह जाने से वह सब्जी के थोड़े हिस्से के सम्पर्क में रहेगा। उंचाई की अपेक्षा बर्तन का व्यास अधिक होना चाहिए।

पानी के बिना ही सब्जियों को पका देनेवाले कुकरों में सब्जियाँ अच्छी बनती हैं। इनमें गाजर, शलजम, हरी सेम आदि को छोटे-छोटे टुकड़े करके डालना चाहिए। पकाने के विभिन्न तरीकों में हम किसी विधि को ऐसा नहीं मान सकते जिसमें सब्जियों के चूने (कैल्शियम) पर आग का बुरा प्रभाव न होता हो। हाँ, दबाव के अन्दर पकाये जानेवाले बर्तनों में प्रस्फुरक और खाद्योज (विटामिन) सी की कुछ अधिक रक्षा होती है। लेकिन इसमें एक बड़ी खराबी यह है कि दबाववाले बर्तन के अन्दर निर्धारित समय से चौथाई मिनट भी अधिक हो जाय तो पोषक गुणों का बहुत अधिक नाश हो जाता है।

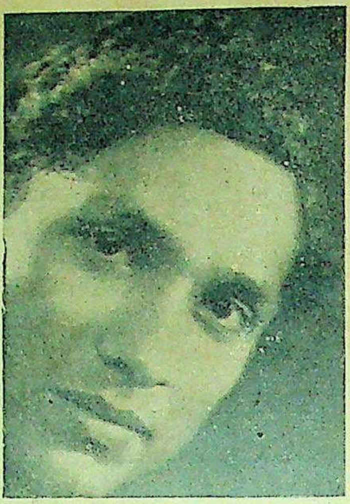

इस लेख के लेखक, श्री रामेश बेदी, आयुर्वेदालंकार

पकाने का ठीक तरीका

पहले खाली बर्तन को आग पर रखिए। जब यह गरम हो जाय तो सब्जी डालिए। सब्जी को अपनी ही नमी से पकने दीजिए। अधिक उदाहरणों में पानी के बिना ही सब्जी पक जायगी। पालक, तोरई, कद्दू, फीजा आदि को पकाने में पानी का व्यवहार करने की जरूरत नहीं। सख्त सब्जियों को गलाने के लिए पानी डालने की आवश्यकता पड़े ही तो उबलता हुआ पानी डालिए। जब तक उबलना शुरू न हो सब्जियाँ ढंकी रहनी चाहिए। उबालने के लिए आग पर रखने के बाद सब्जी को झटपट उबाल डालें। धीरे-धीरे सिझाये नहीं। प्याज और बन्द गोभी जैसी चीजों को पकाने का तरीका यह है कि खुले पात्र में इन्हें नीचे केवल इतनी ही आँच दिखायें जिससे ये नरम हो जायें, इतने से ही ये सुपच हो जाती हैं। आलू को छिलके समेत उबालना या पकाना चाहिए, क्योंकि छिलका खाद्योज को नष्ट होने से बचाता है। आपकी कोशिश यही होनी चाहिए कि आलू के साथ उसका छिलका भी खाया जाय।

बासी मत कीजिए

पकाने के बाद साग-सब्जियों को देर तक न पड़ा रहने दें, तुरन्त परोस लें। घरों में प्रायः देखा जाता है कि बहुधा भोजन के समय से बहुत पहले ही सब्जियां पकाकर रख दी जाती हैं। ठण्डी न होने देने के लिए इन्हें आग के पास रख दिया जाता है। यह आदत ठीक नहीं क्योंकि यह देखा गया है कि हरी सब्जियाँ या पकाये हुए आलू यदि देर तक आगपर रख दिये जायँ तो उनकी काफी खाद्योज और खनिज लवण नष्ट हो जाते हैं।

भोजन को कुछ देर के लिए रखना ही अभीष्ट हो तो उसे आग पर ही पड़े रहने देकर गरम न रखिए। ठण्डा हो जाने दीजिए और खाते समय दुबारा गरम कर लीजिए। इसमें भोजन की कम हानि होगी। फिर भी ध्यान रखिए कि दुबारा गरम करने से सदा ही सब्जियों के पोषक गुणों का नाश होता है। इसलिए आपका प्रयत्न तो यही होना चाहिए कि पकाने के बाद कम से कम समय तक इन्हें पड़ा रहने दें, जल्दी ही इस्तेमाल कर लें।

इधर-उधर न भटकिए

न्यू इरा बुक हाउस

तथा

न्यू इरा एजेंसी

८६, हिवेट रोड, प्रयाग

इण्डियन प्रेस तथा अन्य बड़े-बड़े प्रकाशकों की हिन्दी, अँगरेज़ी और उर्दू की सभी पुस्तकें आप हमारे यहाँ से ले सकते हैं।

इंडस्ट्रियल रिसर्च हाउस, प्रीमियर फर्निशर्स और हिन्दुस्थान टैक्स्टाइल लि॰ का सामान भी हमारे यहाँ मिलेगा।

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

[illegible] इलाहाबाद।

हास्य परिहास

हाय रे विधाता !

लेखक, श्री मुरलीधर

सुनता था कि १५ अगस्त के बाद से सत्युग प्रारम्भ हो जायगा और मानव के तमाम दुःखों का अन्त होगा, परन्तु विश्वास न होता था। होता भी कैसे? यहाँ तो लक्षण ही उलटे दिखाई पड़ने लगे। में इन्हीं बातों से तंग आकर एक दिन रोने तथा आर्त स्वर में भगवान् को पुकारने लगा और कहने लगा--"हे विधाता! सुना था कि तुमने ही गज, गीध और अजामिल को तारा था और तुम्हीं अपने भक्तों को कष्ट में देखकर नंगे पैर दौड़े चले आते थे। परन्तु क्या विश्वास करूँ कि यह सब सच था? फिर आज तुम इतने कठोर कैसे हो गये नाथ? क्या आज तुम्हारा प्रेम तथा विश्वास अपने भक्तों पर से उठ गया है?" अचानक मेरे नेत्रों के सम्मुख एक प्रकाश की चकाचौंध-सी फैल गई और उसके उपरान्त देखता क्या हूँ कि साक्षात् ब्रह्मा अपनी सज-धज के साथ मेरे सम्मुख खड़े हैं--विश्वास न हुआ और एक क्षण में अनेकों बार आँखें बन्द करके तथा खोलकर में अपने भ्रम को दूर करने का प्रयत्न करने लगा। परन्तु भ्रम, भ्रम न निकला क्योंकि मेरे कानों ने भी सुना कि ब्रह्मा अपना मुखारविन्द खोलकर कहने लगे--"मेरे पुत्र, तू इतना दुःखी क्यों है और क्यों तूने आर्त-स्वर में मुझे टेरा। मैं भगवान् के पैरों पर लोट गया और रोकर बोला हे ब्रह्मा मैं बड़े दुःख में हूँ या तो मुझे इस मृत्युलोक से मुक्त करके अपने साथ ले चलो अथवा मेरे दुःखों का तत्काल निपटारा करो।" ब्रह्मा आश्चर्यान्वित होकर बोले--परन्तु तुम्हें क्या दुःख हो सकाता है, तुम मेरे भक्त हो और मैंने तुम्हारे लिए खाने-पीने, रहने की सब सुविाएँ, उच्च नौकरी इत्यादि सब ही कुछ क तो समुचित प्रबन्ध कर दिया है, फिर यह दन कैसा।"

ओह नाथ, तुम सच कहते हो कि तुमने मेरे लिए सांसारिकता के नाते सब ही सुख तथा ऊँचा ओहदा प्रदान किया है, परन्तु सम्भवतः इधर तुम कुछ दिनों से मर्त्यलोक के अधिक सम्पर्क में नहीं रहे हो हो। आजकल यदि १५ अगस्त से तो यदि फाँसी के दण्ड के मुकाबले की कोई सजा हो सकती है तो वह सरकार की चाकरी है।"

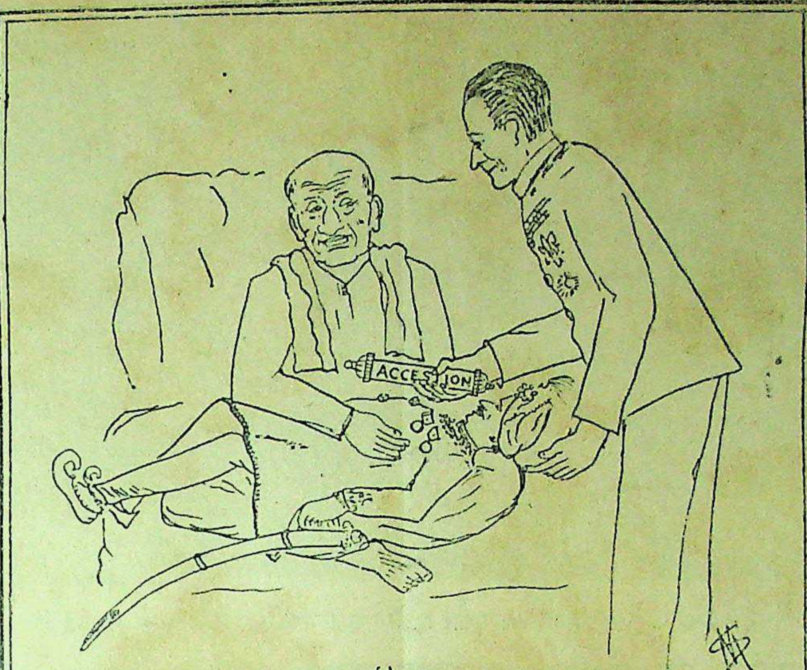

ON THE LAPS(E) OF PARAMOUNTCY.

देशी राज्यों की सार्व भौम भारत सरकार के अधीन कब होगी ?

मूर्ख, यह क्या कहता है, अब तो तेरे ही भाई-बन्धु राज की बागडोर सँभाल रहे हैं विदेशियों के आतंक से छूटकर अब तो तुझे अपने को बन्धन-मुक्त समझना चाहिए।"

परन्तु हे करुणामय! यदि हमारे जैसे चाकरों की दुर्दशा आप सुनें तो आपका हृदय दया से पिघल उठेगा।

"कुछ कह भी तो" ब्रह्मा उतावली दिखाते हुए बोले।

नाथ, थोड़ा धैर्य से सुनिए--

जैसे पतंग तथा उसके उड़ानेवाले के बीच में डोर रहती है--उसी प्रकार आपके आशीर्वाद प्राप्त कुछ जीव जो एम० एल० ए०--अथवा बागड़बिल्ले तथा एम० एल-सी० या म्यावूँ के भूत, हमारे और हमारे उच्च मिनिस्टरों इत्यादि के बीच में रहते हैं। इनकी योग्यता की चर्चा करना मानो सूर्य को दीपक दिखाना है। कोई कोई तो यावनी भाषा तथा गोरी भाषा से इतना बराव करते हैं जे चौबे मुर्गी अण्डे से। कुछ उनमें कई साल लुढ़क-पुढ़ककर हिन्दी मिडिल पास हो गये ह--सो भी सम्भवतः हेडमास्टर को घूस देकर सो, ये पहला वर्ग इन एम० एल० ए० ये बागड़बिल्ले तथा एम० एल० सी० या म्यावूँ के भूतों का है।

अब दूसरा वर्ग एम० एल० ए० तथा एम० एल-सी० का उन बड़े पढ़े-लिखे पंडितों का ह जिन्हें--बघड़ौल कहकर पुकारा जाय तो कुछ अनुचित न होगा। ये बड़े महारथी हमारे जैसे लोगों को जो पढ़-लिखकर योग्यता प्राप्त करके इन ऊँचे ओहदों पर हैं और जिनके बिना इन बागड़बिल्लों म्यावूँ के भूतों और बघड़ौलों की नाव खेनेवाला दूसरा नहीं, आज इनकी ठोकरों का शिकार बन रहें। तू ये क्या कहता है मेरे भक्त मैंने तो इन जीवों के पिछले कृत्यों को देखकर ही इन्हें ये काम सौंपा था।

"नाथ--सच बिलकुल सच कहता हूँ इन ही अतीत के त्यागियों ने अब गिरगिट का-सा रंग पलट लिया है। अब तो सरकारी नौकरों की वही दशा जैसे (एक तिरिया अनेक भतार)--अजब खींचातानी है--ये बेसुलझे मस्तिष्कवाले नेता कभी कहते हैं दिन को सबेरा कहो और कभी कहते हैं दिन को रात कहो--आज्ञा का पालन आँख बन्द करके हमें करना होता है और यदि हमारा मस्तिष्क इस बात की विवेचना में पड़ जाता है कि दिन वास्तव में रात या सवेरा है या नहीं--तो--इनकी धमकियों का कोई अन्त नहीं--मैं अभी मिनिस्टर को फोन करता हूँ--तुमको कौड़ी के तीन बिकवा दूंगा--या गवर्नमेंट में तुम रहोगे अथवा मैं--इस्तीफा दे दो नौकरी से इत्यादि। ये मुफ्त की पेंशनें पानेवाले सरकार के ठेकेदार इस मर्त्यलोक को पतन की ओर घसीटे लिये जा रहे हैं। ब्रह्मा बोले, छिः छिः क्या कहता है--विश्वास न ो नाथ तो स्वयं देख लीजिए और मुझे भी दिव्य दृष्टि दे दीजिए कि मैं भी आपके साथ-साथ देखता जाऊँ और सारे हाल को विस्तारपूर्वक समझाता जाऊँ। ब्रह्मा "तथास्तु" बोले--एक क्षण में मैंने देखा मेरा जैसे एक जीव हाथ जोड़े एक बागड़बिल्ले के सम्मुख खड़ा है। बागड़बिल्ला एक अर्जी आगे बढ़ाते हुए कहता है देखो तुम्हारे यहाँ जो जगह खाली है उस पर मेरे इस मित्र को तैनात कर दो, वह सरकारी चाकर बोला परन्तु मालिक, हय आदमी तो इतना योग्य पढ़ा-लिखा नहीं है--इससे भी अधिक योग्य तथा अनुभव-प्राप्त, लोगों की अर्जियाँ मेरे पास ह--आप उन्हें देखने का कष्ट करें--बस, इतना कहना था कि बागड़बिल्ले जनाब तुनककर आँखें और तरेर कर बोले अच्छा, लाओ अर्जी वापस, मैं इसकी तनाती मिनिस्टर से कहकर करवाऊँगा और तुमको भी तभी समझ लूँगा--बिचारा सरकारी चाकर हाथ जोड़कर बोला, क्षमा करिए महाशय मुझसे भूल हुई, आपकी दया के बिना मेरे छः बच्चे भूखों मर जायेंगे।

दूसरी जगह देखा एक म्यावूँ के भूत महाशय किसी मिल-मालिक से कह रहे थे--भाई इतने बड़े काम को किसी शादी-ब्याह से कम न समझो--क्या मिनिस्टर तक पहुँचना कुछ सहल बात है--ये भी कुछ म्यावूँ के ठौर से कम खतरनाक चीज नहीं है--लेकिन मैं विशास दिलाता हूँ कि चुटकी बजाते आर्डर करवा लाऊँगा--पर मेरी फीसें मिल-मालिक ने एक थैली निकाल कर "म्यावूँ के भूत" के सम्मुख रख दी।

तीसरे स्थान पर एक बघड़ौल महाशय दिखलाई पड़े, वह किसी अभागे सरकारी चाकर को हटाकर अपने नाते के साले को उसकी राजगद्दी दिलवा रहे थे--बेचारा चाकर मेरे ही समान आर्त-स्वर में रोकर ब्रह्मा की टेर लगा रहा था। मैं यह देखकर कुछ बोलनेवाला था कि ब्रह्मा के मुख से स्वयं निकल पड़ा "हरे, हरे, ऐसा अनाचार।"

मैंने अपने पिछले शब्द फिर दोहराये--नाथ अब आप स्वयं न्याय करके मेरा फैसला कर दीजिए। इस यातना से तो आपके चरणों में मुझे अधिक शान्ति मिलेगी। मैं अपने सब मोह के बन्धन तोड़कर आपके साथ अभी चलने को तत्पर हूँ।

ब्रह्मा ने मेरे सिर पर हाथ रखा और बोले--तू घबरा न पुत्र, न्याय अवश्य होगा मेरा मस्तक कृतज्ञता से नत हो गया, परन्तु जब सिर उठाकर देखा--ब्रह्मा लोप हो गये थे और मैं जहाँ था वहीं बैठा था। केवल एक न्याय की आशा हृदय में लिए।

अद्भुत कहानियाँ

दो रंगों में छपी इस सचित्र पुस्तक में एक से एक बढ़िया कहानियाँ हैं। इसमें इतिहास, स्वामिभक्ति और भाग्य के खेल का वर्णन पढ़ते ही बनता है। मूल्य ।।≡)

प्रसिद्ध यात्राओं की कथा

प्रसिद्ध चीनी यात्री फाहियान से लेकर वर्तमान युग के एवरेस्ट की चोटी पर चढ़नेवाले साहसी वीरों तक की कथा इस पुस्तक में है। जिन यात्रियों ने प्राणों की बाजी लगाकर स्थल और जल के अज्ञात देशों में भ्रमण किया था और उनके परिश्रम से संसार का जो लाभ हुआ उसका रोचक वर्णन इस पुस्तक में पढ़िए। मूल्य ।।।-)

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

बालों को स्वस्थ और सुंदर रखता है
Vaseline POMADE
CHESEBROUGH MFG CO.
सभी दूकानों पर

कोमलता से सुगंधित किया गया वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।

Copyright.

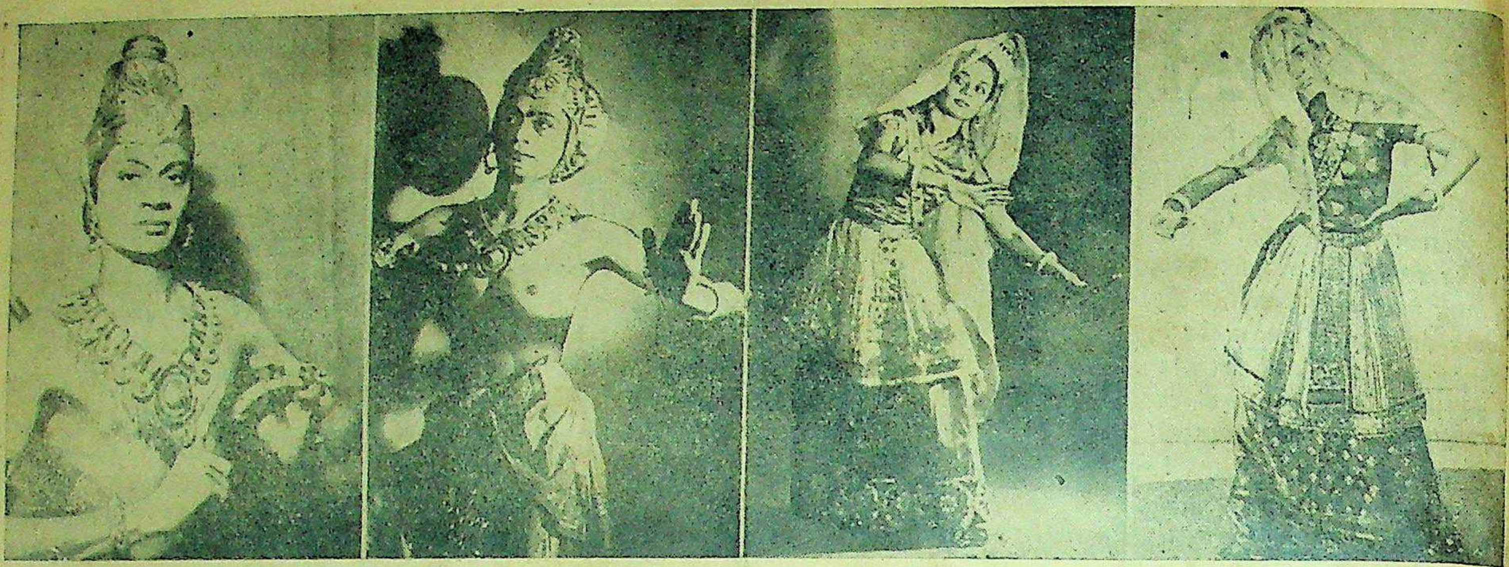

भारतीय नृत्यकला का एक दृश्य। कलाकार प्राचीन कलात्मक नृत्य का प्रदर्शन कर रहे हैं।

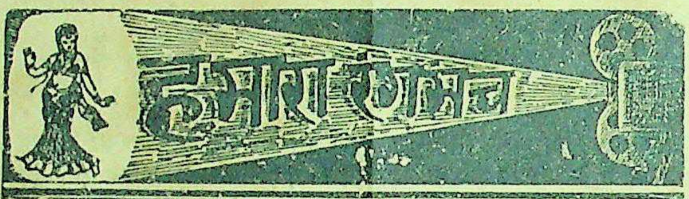

क्या फिल्म-कम्पनियाँ कला-मन्दिर हैं ?
आजकल की फैली हुई उच्छृङ्खलता कैसे दूर होगी ?

लेखक, श्री उमेश जोशी

भारतीय चित्र-निर्माण-गृहों पर जब हम दृष्टि डालते हैं, तो हमको बड़ा अफसोस एवं दुःख होता है, वह इसलिए कि आज के चित्र-निर्माण-गृह उच्छृङ्खलता, असंयमता, एवं अनैतिकता के विशाल अड्डे बने हुए हैं। आज जो यह प्रचार किया जाता है कि फिल्मी दुनिया से वासना का मजार बना दिया गया, यह बिलकुल गलत है। आज भी रोजाना चित्र-निर्माण-गृहों में चारित्रय पतन की नवीन-नवीन घटनाएँ घटित होती रहती हैं, लेकिन हाँ वे घटनाएँ आदर्शवाद के आवरण के पीछे हुआ करती हैं। चित्र-निर्माताओं की ओर से आज जो यह कहा जाता है कि फिल्मी दुनिया की रूप-रेखा की काया-पलट कर दी गई है, सभ्य एवं उच्च घरानों के कलाकार ही अब उसमें काम करते हैं, किन्तु मैं यह दावे के साथ कहता हूँ कि आज की फिल्मी-दुनिया नैतिकता के विकास-मार्ग पर बिलकुल नहीं बढ़ी। चित्रों ने हमारे नवयुवकों को उत्थान-क्षितिज की ओर लेशमात्र भी प्रेरित नहीं किया बल्कि उन्होंने हमारे तरुओं को पतन के खंडहर में ढकेल दिया, जब कि विश्व के अन्य राष्ट्र इन्हीं चित्रपटों से अपने देश व समाज की काफी सेवा कर रहे हैं। चित्रों के द्वारा युवकों के अन्दर वह पवित्र भावना भर दी जिससे कि वे तरक्की की दुनिया में आगे ही बढ़ते चले गये। जो काम इन चित्रों से विदेशी निर्माताओं ने किया वह हमारे देश के निर्मातागण नहीं कर सकते थे? परन्तु उनको तो विलासिता से ही फुरसत कहाँ, उन्होंने स्वप्न में भी यह ख्याल नहीं किया? वे तो दिन-रात दौलत कमाने की धुन में एवं नई-नई परियों को फँसाने के फेर में ही लगे रहे। आज जिन हाथों में चित्र-जगत् की बागडोर है, वे सुदृढ़ नहीं हैं। वहाँ केवल विलासी निर्माताओं का ही बोलबाला है। हुस्न और शराब ही उनके साथी हैं। मैं यह बात स्पष्ट कहता हूँ कि फिल्मी दुनिया में वही व्यक्ति कामयाब हो सकता है जो कि अपने को हुस्न और शराब की दुनिया में समर्पण कर दे।

पहले के चित्र-निर्माण-गृहों एवं आज के चित्र-निर्माण-गृहों में सिर्फ इतना ही फर्क है कि पहले जो कुछ विलासिता होती थी वह खुले रूप में—उस विलासिता के ऊपर किसी प्रकार का आवरण नहीं था किन्तु आज के चित्र-निर्माण-गृहों के विशाल प्रांगण में विलासिता भारतीय कला तथा संस्कृति के पवित्र आँचल के नीचे छिपी होती है। बस इसी को आप सुधार समझिए। लेकिन इस सुधार से क्या काम चलेगा? इसका होना या न होना बराबर ही है। अब सवाल उठता है कि क्या चित्र-निर्माण-गृह कला-मन्दिर नहीं बन सकते? ऐसे कला-मन्दिर जिनमें प्रत्येक भारतीय को प्रवेश करते वक्त गौरव महसूस हो। जिनमें प्रवेश करने पर हमारे अन्दर पवित्र भावनाओं की दिव्य लहरें उमड़ने लगें। क्या ऐसा होना सम्भव है? जब कि ईमानदारी के साथ राष्ट्र व समाज की सेवा करने की शुद्धि भावना हमारे निर्माताओं के विलास से आच्छादित हृदयों में प्रविष्ट हो सके। किन्तु आज के निर्माताओं से यह आशा करना मानो सागर के विशाल वक्षःस्थल पर रसा के सदृश चलना है।

आज देश का नकशा बदल गया है। सभी विभागों की काया-पलट की जा रही है, फिर चित्र-निर्माण-गृहों की काया-पलट क्यों न की जाय। आज जनता को यह विश्वास है कि चित्र-जगत् में चरित्र की रक्षा नहीं हो सकती। तभी वे अपनी सन्तानों को फिल्मी दुनिया में प्रवेश कराने में अपना अपमान समझते हैं। इसलिए कुलीन परिवारों के लड़के व लड़कियाँ सिनेमावालों से नहीं मिलते, या जिन्होंने अपने जीवन का आदर्श भोग-विलासमय बना लिया है। वे ही इसमें आने का साहस करते हैं। चित्र-निर्माण-विभाग हमारे देश के योग्य कर्णधार सरदार बल्लभभाई पटेल के अधीन हैं, इसलिए मेरा उनसे विनम्र निवेदन है कि वे चित्र-निर्माण-गृहों की गन्दगी को दूर कराने में अपना कदम कड़ाई के साथ आगे बढ़ायें। अब तक जिस शिथिल नीति से काम होता रहा है, उस ढिलमिल नीति से भविष्य में न हो, ऐसी हमें पूर्ण आशा है। सभी चित्र-निर्माण-गृहों को भारतीय कला एवं संस्कृति का पवित्र केन्द्र बनाया जाय। इसी में राष्ट्र का कल्याण है—जो कार्य गुलाम भारत न कर सका उस पुनीत कार्य को स्वाधीन भारत को पूरा करके दिखा देना चाहिए, ताकि दुनिया समझ जाय कि हम आजादी का सदुपयोग करना जानते हैं।

हमें पूर्ण आशा है कि सरदार पटेल अवश्य ही चित्र-निर्माण-गृहों की ओर अपना ध्यान देकर देश की भलाई में हाथ बँटायेंगे। भारत के लिए वह दिन बड़ा पवित्र होगा जिस दिन चित्र-निर्माण-गृह कला-मन्दिर के रूप में हमारे सामने आयेंगे। क्या हम ऐसी आशा रक्खें?

(लेखक द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

१९४८ में क्या होनेवाला है?

यदि आप १९४८ में होनेवाली अच्छी व बुरी घटनाएं समय से पूर्व जानना चाहते हैं, तो आज ही केवल एक पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी फूल का नाम लिखकर भेज दें, बस फिर हम ज्योतिष-विद्या के हिसाब से आपके आनेवाले १२ मास का हानि-लाभ, किस व्यापार में लाभ होगा, किस साधन से धन प्राप्ति होगी, रोजगार कब मिलेगा, वेतन-वृद्धि, परीक्षा में सफलता अर्थात् कार्ड की तारीख से लेकर एक वर्ष तक होनेवाली कुल बातों का संक्षेप अर्थात् मासिक वर्षफल बनाकर केवल १।) में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाक-व्यय अलग।

श्री स्वामी योगीराज ज्योतिष आश्रम,
फगवाड़ा (कपूरथला स्टेट)

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!

आप घर बैठे मैट्रिक, एफ. ए., बी. ए., पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से और होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं नियमावली मुफ़्त मँगायें। पता :—
इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

१००) इनाम

सिद्ध वशीकरण यन्त्र—के धारण करने से कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होता है। आप जिसे चाहते हैं, चाहे वह पत्थर-दिल क्यों न हो, आपके पास चली आयेगी। इससे भाग्योदय, नौकरी, धन की प्राप्ति, मुक़दमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य ताँबा का २), चाँदी का ३), सोने का १२) झूठा साबित करने पर १००) इनाम।

श्री बालमिकी आश्रम, नं० D.
पो० कतरी सराय (गया)

देशदूत चित्रावली

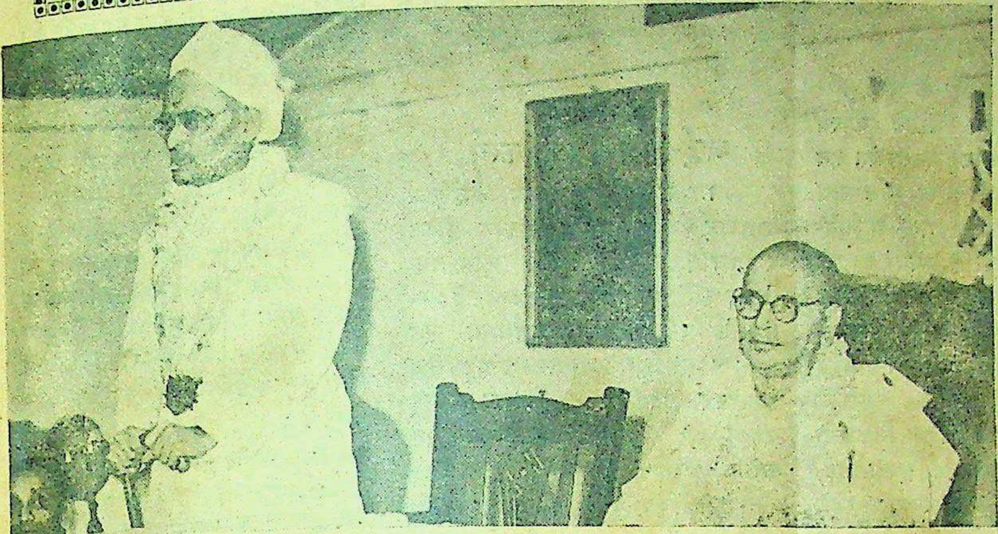

माननीय जस्टिस पतंजलि शास्त्री, फेडरल कोर्ट जज नियुक्त होने के बाद, लक्ष्मीपुरम् की एक सभा में भाषण दे रहे हैं। फेडरल कोर्ट के दूसरे जज सर एस० वरदाचारी भी बैठे हैं, जिन्होंने सभा का संचालन किया था।

समाजवादी नेता श्री अच्युत पटवर्द्धन, मद्रास में विद्यार्थियों की एक सभा में भाषण दे रहे हैं।

भारतीय संघ के पार्लामेंट के अधिवेशन के अवसर पर श्री के० एम० मुंशी बेगम अजीज रसूल से वार्ता कर रहे हैं।

श्री जी० एल० मेहता भारतीय टेरिफ़ बोर्ड के नये प्रेसिडेंट, जिन्होंने अपने पद पर काम करना शुरू कर दिया है।

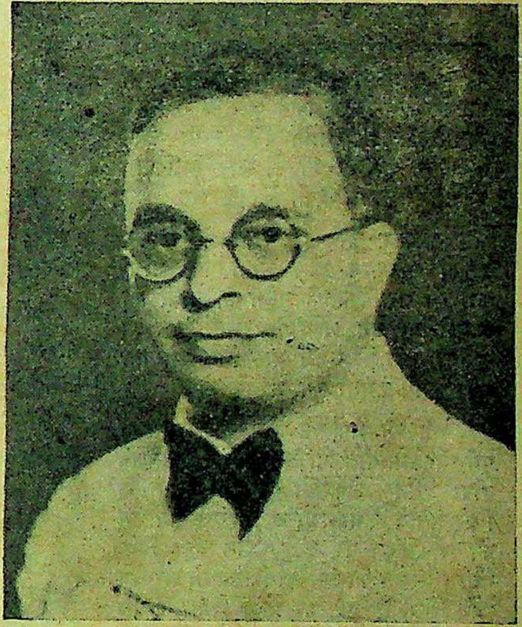

डा० यू० कृष्णराव, मद्रास कारपोरेशन के नये मेयर निर्वाचित हुए हैं।

श्री एस० बी० नरेन्द्रसिंह, अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर नियुक्त हुए हैं।

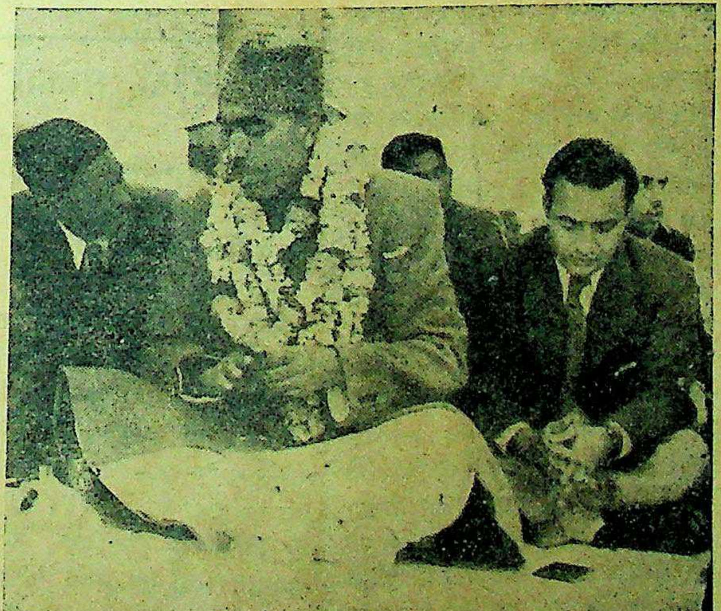

काश्मीर के नेता शेख अब्दुल्ला का यह चित्र, दिल्ली प्रांतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा स्वागत के अवसर पर लिया गया है।

श्री सी० के० विजयराघवन् मद्रास-पुलिस-विभाग के इंस्पेक्टर जनरल नियुक्त हुए हैं।

संपादक के नाम चिट्ठियां

[इस स्तम्भ में व्यक्त विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है ।]

प्रजातन्त्र की अस्थायी नौकरियाँ

प्रान्तीय और औपनिवेशिक सरकार द्वारा तथाकथित अस्थायी स्थानों पर अफसरों की नियुक्तियों के सम्बन्ध में जन-साधारण को जो आपत्ति हो रही है, उसके सम्बन्ध में मेरा निवेदन है कि एक ओर तो आधुनिक सरकार विशुद्ध प्रजा-तन्त्र-शासन और प्रजातन्त्र-मूलक राज्य की शपथ ले रही है और दूसरी ओर एकदम गैर प्रजातन्त्र-मूलक स्वर अलाप रही है। इस बात से कोई मुकर नहीं सकता कि प्रतिस्पर्द्धी परीक्षाओं द्वारा की जानेवाली नियुक्तियां ही आदर्श होती हैं जब तक कोई दूसरा और अपेक्षाकृत उचित मार्ग नहीं मिलता, तब तक प्रतिस्पर्द्धी परीक्षाएँ ही निस्सन्देहरूप से जन-साधारण को इन नौकरियों के लिए अधिकाधिक सुअवसर प्रदान करती हैं। बेईमानी, पक्षपात और बेकारी से भी जन-साधारण को यह प्रथा दूर रखती है। इन्हीं बातों की रक्षा करने के लिए 'पब्लिक सर्विस कमीशनों' को जन्म दिया गया था।

यह दुख की बात है कि आधुनिक सरकार राष्ट्रीय और प्रजातन्त्रात्मक चोगे को पहनकर पब्लिक सर्विस कमीशन तथा नौकरियों में भरती किये जाने के सम्मान्य नियमों को, अस्थायी नियुक्तियां करने के बहाने आम विज्ञापनों और प्रतिस्पर्द्धी परीक्षाओं द्वारा धोखा दे रही है।

सरकार चाहे या न चाहे, लेकिन इसका परिणाम यही होगा कि अधिकारियों तक जिनकी पहुँच है, उन्हीं की नियुक्तियां इन अस्थायी स्थानों पर हो सकेंगी, भले ही उनमें वास्तविक योग्यता और कार्य-क्षमता का अभाव हो।

यह भी अफवाह है कि कुछ समय पूर्व युक्तप्रान्तीय पब्लिक सर्विस कमीशन द्वारा रेवेन्यू अफसरों की नियुक्तियों के लिए चुनाव किया गया था; परन्तु कमीशन की सफारिश पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। इसका कारण क्या है, यह तो सरकार स्वयं जाने! यह भी कहा जाता है कि प्रमुख नियुक्तियां सिफारिशों और सम्बन्धों को देखते हुए गुप्त रूप से की जा रही हैं। इनमें प्रतिस्पर्द्धी परीक्षाएँ नहीं ली गईं। सरकार के पास उन योग्य उम्मीदवारों की सूची अवश्य रही होगी, जिन्होंने ये परीक्षाएँ उत्तीर्ण की होंगी और उन्हें यह कहा गया होगा कि विभिन्न स्थानों के रिक्त होने पर उनकी नियुक्तियां की जायेंगी। पब्लिक सर्विस कमीशन पर भी विश्वास कर बिना किसी कठिनाई के चुनाव किया जाना चाहिए।

यह ध्यान रखना चाहिए कि कोई भी ऐसी चुनाव-समिति पब्लिक सर्विस कमीशन का स्थान नहीं ले सकती और विभिन्न विभागों के अध्यक्षों का दबाकर, ऐसी चुनाव-समिति जिसमें अनुभवी व्यक्तियों का अभाव है, योग्यता के आधार पर कोई उपयोगी सुधार न कर सकेगी। यह कहना ही पड़ता है कि जो कुछ हो रहा है, वह इसी लिए कि हम अभी प्रजातन्त्र की ऊपरी सतह पर ही उतरा रहे हैं और उसके मूल तत्त्वों से अभी बहुत दूर हैं।

३८, पार्करोड, —लालमोहन बनर्जी
इलाहाबाद

* * *

प्रयाग अर्द्ध-कुम्भ का धार्मिक पर्व और अखाड़े

कुम्भ या अर्द्धकुम्भी के प हमारे धार्मिक जगत् में अपना विशेष महत्त्व रखते हैं। सर्व-साधारण जनता को इन अवसरों पर पुण्यस्नान के साथ-साथ नाना प्रकार के जुलूसों, दर्शनों के अतिरिक्त सन्त-महात्माओं के दर्शनों का भी लाभ होता है। कुम्भ तथा अर्द्धकुंभी पर्वों पर प्राचीन परम्परा से हमारे साधु-समाज के अखाड़े, तीर्थ एवं अपने इष्टदेव के प्रति विशेष सम्मान प्रदर्शित करने के लिए सज-धज के साथ जुलूस निकालते आये हैं। जिनमें बाजे-गाजे, हाथी-घोड़े, आदि नाना प्रकार के साज-बाज रहते हैं। साधु-महात्माओं के इस प्रकार के भव्य जुलूस को देखने के लिए सर्व-साधारण धार्मिक जनता कितनी उत्सुक रहती है, इसे वही जान सकते हैं, जिन्होंने कभी इन पर्वों के समारोह को देखा हो। यहाँ इस सम्बन्ध में मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि उस प्रकार के विशाल जुलूस को निकालने का उद्देश्य अखाड़ों का अपने वैभव-सम्पन्नता का किंचित् मात्र भी परिचय देना नहीं होता बल्कि तीर्थ एवं अपने इष्टदेव के प्रति पूर्ण रूप से सम्मान प्रदर्शित करना ही होता है।

परन्तु मुझे ज्ञात हुआ है कि स्वतन्त्र भारत का सर्वप्रथम अर्द्धकुंभी का प प्रयागराज में होने जा रहा है, उस अवसर पर किसी भी प्रकार का प्रदर्शन एवं जुलूस न निकालने का अखाड़ों ने निश्चय किया है। स्वतन्त्रता की प्रसन्नता में हमारे अखाड़ों को चाहिए तो यह था कि दूने-चौगुने समारोह से इस अवसर पर जुलूस स्याही निकालते। पर इसके विपरीत प्राचीन परम्परा से चले आये हुए इस महान् जुलूस स्याही को न निकालने का निश्चय किया है। अतएव इस सम्बन्ध में मैं अखाड़ों से पुनर्विचार करने की प्रार्थना करता हूँ। प्रायः यही एक अवसर बहुत दिनों बाद आता है, जब कि अखाड़ों को इस कार्य में व्यय करना पड़ता है। अखाड़ों के उक्त निर्णय से क्या हम यह कल्पना करें कि स्वतन्त्र भारत में हमारे मेलों तथा धार्मिक उत्सवों का कोई स्थान ही न रहेगा। माना कि इस समय स्वतन्त्रता के बावजूद भी हमारा देश संकट में है, परन्तु संकटग्रस्त होने पर भी स्वतन्त्रता की प्रसन्नता तो है ही। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के अवसर पर सारे देश में जो दीपमालिका की गई थी क्या वैसी दीपमालिका पहले भी कभी हुई थी? फिर उपरोक्त पर्वों पर तो हम कोई नया समारोह भी नहीं कर रहे हैं। यह तो प्राचीन परम्परा से चला आता हुआ इस पर्व का एक मुख्य अंग है। इस प्रकार के सांस्कृतिक पर्व और मेले ही तो हिन्दू-धर्म और संस्कृति की रीढ़ हैं। ऐसे अवसरों पर उत्साहहीनता किसी भी प्रकार उपेक्षा के योग्य नहीं है।

मैं गवर्नमेंट से भी अनुरोध करता हूँ कि वह अखाड़ों से इस पर्व को जो कि स्वतन्त्र भारत में सर्वप्रथम मनाया जा रहा है उत्साह एवं समारोह के साथ मनाने के लिए निवेदन करे। इसके साथ ही मैं अखाड़ों से भी निवेदन करता हूँ कि वे अपने निर्णय पर पुनर्विचार करें।

श्री श्रवणनाथ —महंत शान्तानन्द नाथ
मठ, हरिद्वार

* * *

अर्द्ध-कुम्भ में सेवा-कार्य

आगामी वर्ष का महान् अर्द्धकुम्भ समारोह १४ जनवरी से आरम्भ होकर ९ मार्च १९४८ तक होगा। मुख्य तथा विशेष पर्वों की तिथियाँ इस प्रकार हैं:—संक्रान्ति १४ जनवरी। पूर्णमासी २८ जनवरी। सोमवती अमावस्या ९ फरवरी। अमावस्या (द्वितीय) १० फरवरी। वसन्त-पंचमी १५ फरवरी। माघ पूर्णिमा २४ फरवरी। शिवरात्रि ९ मार्च १९४८ ई०।

विगत २५ वर्षों से हमारी संस्था इन अवसरों पर लगातार सेवा-कार्य कर रही है। बालचर तथा तैराक प्राण-रक्षक मंडल ने प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक, उज्जैन, हरिहरक्षेत्र, त्रिपुरी आदि विभिन्न स्थानों में अनेक अवसरों पर जनता की अनेक प्रकार से सेवाएँ की हैं। सहस्त्रों प्राणियों को डूबने से बचाया है। अग्निकाण्ड आदि दुर्घटनाओं के समय धन-जन की रक्षा की है। भूले-भटके नर-नारी तथा अबोध बालक-बालिकाओं का उद्धार किया है। दुःखी एवं असहायों को आवश्यकतानुसार सहायता प्रदान की है। रोगियों व घायलों की चिकित्सा तथा विपदग्रस्त, दीन-दुःखी व भूखों के कष्ट-निवारणार्थ यथासम्भव अन्न, वस्त्र, धन, लकड़ी आदि की व्यवस्था की है। हमारी निःस्वार्थ सेवाएँ देश में भली भाँति विदित हैं।

इस पुनीत पर्व के महान् अवसर पर हमारी संस्था को सेवाकार्य के हेतु लगभग २,५०० स्वयंसेवकों का प्रबन्ध करना आवश्यक होगा जो एक मास से अधिक समय तक हमारे त्रिवेणी संगम तथा अन्य स्थानों के कैम्पों में रहेंगे। उनके आने-जाने व भोजनादि व्यय में तथा अन्य सेवाकार्यों के सुचारु रूप से संचालन करने के लिए हमारी संस्था को २५,०००) रुपयों की आवश्यकता है।

सदैव की नाईं आज भी हम आप ही की उदार सहायता के आकांक्षी हैं और हमारी विभिन्न सेवा-योजनाओं का फलीभूत होना आप ही की कृपा पर निर्भर है। हमें विश्वास है कि स महान् पर्व के पुनीत अवसर पर आप हमारी संस्था को धन-धान्य, वस्त्रादि की सहायता, समिति के कोषाध्यक्ष, कोठी रामकृष्ण बद्रीप्रसाद, १३, जौहरी टोला, इलाहाबाद या प्रधान मन्त्री, अ० भा० अग्रवाल सेवा-समिति, प्रधान कार्यालय, इलाहाबाद के पते पर भेजकर अक्षय पुण्य तथा असीम यश के भागी बनेंगे। जो सज्जन डेपुटेशन लेकर जायँ, उनको हमारी समिति का दिया हुआ प्रमाणपत्र देखकर रसीद लेकर चन्दा दें।

अ० से० समिति —द्वारकाप्रसाद जौहरी
प्रयाग प्रधान मंत्री

* * *

बोर्ड आफ हाईस्कूल और इण्टरमीडियट एजुकेशन युक्त-प्रान्त

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि जिन विद्यार्थियों ने सन् १९४२ के आन्दोलन में भाग लिया था और उसके कारण उनकी पढ़ाई की हानि हुई है और जो बोर्ड आफ हाईस्कूल की परीक्षाओं में सम्मिलित नहीं हो सके उनके लिए सरकार ने एक विशेष हाईस्कूल तथा इण्टर मीडियेट की परीक्षा लेने का आदेश प्रदान किया है जो कि अप्रैल सन् १९४८ में होगी। हाईस्कूल की परीक्षा में ३ प्रश्नपत्र होंगे—(१) अँगरेजी, (२) हिन्दी या उर्दू, (३) अंकगणित तथा इण्टरमीडियेट की परीक्षा में दो प्रश्नपत्र होंगे—(१) अँगरेजी (२) हिन्दी या उर्दू। ऐसे लोगों को चाहिए कि वे अपने जिले के इन्सपेक्टर आफ स्कूल्स से मिलकर तथा सारे नियमों को जानकर तुरन्त अपना आवेदन-पत्र सेक्रेटरी बोर्ड आफ हाईस्कूल और इण्टरमीडियेट एज्यूकेशन, युक्तप्रान्त, इलाहाबाद के पास भेज दें, जिसकी अन्तिम तिथि १५ जनवरी सन् १९४८ ई० है।

बोर्ड आफ हाईस्कूल
तथा इण्टरमीडियेट—परमानन्द, सेक्रेटरी
एजूकेशन, युक्तप्रान्त

चटपटी, मजेदार, सस्ती और सुन्दर पुस्तकें

लखनऊ की रंगीन रातें—लखनऊ के नवाबों, वेश्याओं और बिगड़े हुए रईसों के पतन की नंगी तसवीर देखना चाहते हैं तो इसे जरूर पढ़ें। मूल्य १)।

मजनू की चिट्ठियाँ—इसमें फिल्म स्टूडियोज में होनेवाले व्यभिचार का भंडाफोड़ किया गया है। मू० २)।

विवाहित मनोरंजन—इसमें नव-विवाहितों को बतलाया गया है कि वह परस्पर संभोग का सच्चा सुख किस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं। मू० १)।

चित्रावली—प्रेम-मिलन व संसार की सुंदरियों के गुप्त चित्रों का आकर्षक संग्रह। मू० ३।)।

बम्बई की चाँदनी रातें—इसमें एक अभिनेत्री की आत्मकथा जिसे पढ़कर आप सिनेमा-क्षेत्र का असली रूप देख सकेंगे। मू० १)।

फिल्मी अप्सराएं—यौवन की मस्ती के बोझ से लदी हुई ५० अभिनेत्रियों के चित्र एवं जीवनियाँ, सजिल्द का मू० २)

सोहागरात—प्रथम मिलन की भाँति मादक यह पुस्तक आपके विवाहित जीवन को सुखमय बना देगी। मू० १।)।

वशीकरण मंत्र—अनेकों प्रकार के वशीकरण मंत्रों तथा जादू के खेलों का संग्रह। मू० १॥)।

नोट—पोस्टेज पैकिंग प्रत्येक पर अलग लगेगा।
पता—एस के सक्सेना (६०) रंगमहल, अलीगढ़।

संवाददाताओं के पत्र

अनुपम साहित्यिक जमघट

प्रयाग विश्वविद्यालय की 'हीरक-जयन्ती' के ऐतिहासिक अवसर पर हिन्दी-विभाग की ओर से १२ दिसम्बर को एक अखिल भारतवर्षीय कवि-सम्मेलन का आयोजन किया था। 'समावर्त्तन-संस्कार' के निमित्त निर्माण कराये गये बहुमूल्य पंडाल में युक्तप्रान्तीय असेम्बली के अध्यक्ष माननीय बा० पुरुषोत्तमदास जी टंडन के सभापतित्व में हिन्दी के प्रमुख कवि एकत्र हुए। हिन्दी की एकमात्र साहित्यिक संस्था 'हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन' के प्राणदाता की छाया में हिन्दी का यह साहित्यिक आयोजन स्वतन्त्र भारत में अपना महत्त्व रखता है।

'मधुरेण-समापयेत्' की व्यावहारिक नीति साहित्य में और विशेषकर कवि-सम्मेलनों में 'मधुरेण आरभेत्' के रूप में ही अधिक उपयोगी होती है। डाक्टर रामकुमार वर्मा की सरस्वती-वन्दना के पश्चात् हिन्दी के नवोदित तरुण गीतकार श्री श्रीपालसिंह 'क्षेम' के सुमधुर कविता-पाठ के साथ यह समारोह समारम्भ हुआ। इसके बाद सर्वश्री विश्व (प्रयाग), नर्मदाप्रसाद खरे, (मध्यप्रान्त) सोहनलाल द्विवेदी, सनेही जी, सत्यनारायण पांडेय, अम्बिकेश (रीवां), बच्चन, कोकिल, सुमित्रानन्दन पन्त, गोपेश, नरेशकुमार मेहता (लखनऊ), शम्भूनाथसिंह (काशी) महेन्द्र, रंग जी, रमानाथ अवस्थी, तथा अनूप जी ने अपनी कविताएँ पढ़ीं। कविताएँ 'रिले' भी हुई थीं। सम्मेलन में लगभग हिन्दी की सभी प्रमुख धाराओं के प्रख्यात नवोदित और उदीयमान कवि सम्मिलित हुए। प्रयाग हिन्दी विभाग के अध्यापक तथा प्रसिद्ध रहस्यवादी कवि श्री रामकुमार जी ने भी अपनी ललित रचना सुनाई। बच्चन जी को लोगों ने इतना पसन्द किया कि उन्हें दुबारा पढ़वाया गया। देर हो जाने से सम्मेलन श्रोताओं की रुचि के विरुद्ध भी बन्द कर दिया गया।

--संवाददाता

* * *

हरिद्वार म्युनिसिपल बोर्ड के गत अधिवेशन में चौधरी रामभज जी म्यु० कमिश्नर द्वारा पेश करने पर शरणार्थियों के सम्बन्ध में निम्न प्रस्ताव पास हुआ।

"हरिद्वार यूनियन की यह सभा सरकार से प्रार्थना करती ह कि यूनियन में ठहरे हुए शरणार्थियों की बड़ी संख्या को प्रान्त के दूसरे स्थानों पर शीघ्र स्थानान्तरित कर दिया जाये क्योंकि हरिद्वार कोई औद्योगिक केन्द्र नहीं है। यह भी आशा नहीं है कि ये लोग निकट भविष्य में अपने घरों को लौट सकेंगे। इन लोगों के जीवन-यापन के लिए साधन जुटाना सरकार का काम है। हरिद्वार और कनखल दोनों बस्तियों की जन-संख्या २० हजार के लगभग है जब कि यहां आनेवाले शरणार्थियों की तादाद साठ और सत्तर हजार तक पहुँच गई है। जाड़े का मौसम है, मगर इन शरणार्थियों के पास भीषण सर्दी का मुकाबला करने के लिए कपड़ों का पूर्णतया अभाव है। इसके अतिरिक्त यहां कानून शिकनी और नियम उल्लंघन की वारदातें दिनों-दिन बढ़ती जा रही हैं तथा म्यु० बोर्ड की तयवजीरी की आमदनी में भारी कमी हो गई है। इन लोगों ने प्रत्येक गली और खाली जगह पर बोर्ड के नियमों के खिलाफ कब्जा कर लिया है, और वहां कण्ट्रोल की चीजों को ब्लेक मार्केट के भावों पर बेच रहे हैं। ये लोग रेल में बिना टिकट सफर करते और बाहर से कण्ट्रोल-सामग्री बिना रेलभाड़ा व चुंगी दिये यहां ले आते हैं। इस तरह बोर्ड और रेलवे, दोनों की भारी क्षति हो रही है और साथ ही मुकाबले पर काम करने के सबब व्यापारी वर्ग का भी काफी नुकसान हो रहा है। उपर्युक्त बातों को देखते हुए इस बोर्ड की सरकार से प्रार्थना है कि इन शरणार्थियों को जितनी जल्दी सम्भव हो, दूसरे स्थानों पर तब्दील कर दिया जाय।

--संवाददाता

* * *

गौरी बाजार इन्दुपुर (देवरिया) के चतुर्दिक लगभग सौ वर्गमील के क्षेत्रफल में कोई अस्पताल नहीं है। आबादी इतनी घनी है कि सदा कोई न कोई बीमारी फैली रहती है। साधारण जनता को किसी प्रकार की सरकारी सहायता सुलभ नहीं है। आदरणीया श्रीमती विजयलक्ष्मी के आगमन के समय एक स्मरण-पत्र द्वारा ठाकुर प्रयागध्वजसिंह, भूतपूर्व एम० एल० ए० ने उनका ध्यान इधर आकर्षित किया था। जनता को पूर्ण आशा थी कि गौरी बाजार में अस्पताल बन जायेगा। लेकिन सरकार ने अपना यह निश्चय बदल दिया और यहां की जनता को गौरी बाजार फैक्टरी डिस्पेंसरी के भरोसे छोड़ दिया। उक्त डिस्पेंसरी फैक्टरी कर्मचारियों के लिए ही पर्याप्त नहीं है, फिर इतने बड़े क्षेत्रफल की जनता की वह क्या सेवा कर सकती है। यू० पी० की जनप्रिय सरकार को यहां की जनता के सहयोग से शीघ्र गौरीबाजार या इन्दुपुर में एक अस्पताल बनवाने का प्रबन्ध करना चाहिए।

--संवाददाता

* * *

गौरीबाजार मण्डल (देवरिया) में इधर लगभग एक माह से मिट्टी के तेल का मिलना दुर्लभ हो गया है। साधारण जनता को बड़ा कष्ट हो रहा है। सरकारी अधिकारी वर्ग को इधर ध्यान देना चाहिए।

--संवाददाता

* * *

प्रयाग हिन्दी-होस्टल की 'साहित्य परिषद्' के मंत्री सूचित करते हैं कि वे अखिल भारतवर्षीय परिमाण पर एक कहानी-प्रतियोगिता कर रहे हैं। कहानियों के पहुँचने की अन्तिम तिथि ३१ दिसम्बर से हटाकर १२ जनवरी कर दी गई है। अगर यह आयोजन अपने नाम में सार्थक हो, तो यह हिन्दी की एक अजीब चीज होगी। डाक्टर ताराचन्द जी को उसका प्रधान संरक्षक, डा० रामप्रसाद त्रिपाठी को संरक्षक तथा डा० रसाल को अध्यक्ष घोषित किया गया है। सर्वश्रेष्ठ दो कहानियाँ पुरस्कृत की जाएँगी। प्रतियोगिता में भेजी जानेवाली प्रत्येक कहानी के साथ प्रवेश शुल्क अवश्य आना चाहिए, जो सर्वसाधारण के लिए एक रुपया तथा छात्रों के लिए आठ आन -मात्र है।

—संवाददाता

* * *

प्रयाग अर्द्धकुंभी के अवसर पर गंगा-पार झूंसी में काली कमलीवाले क्षेत्र के कैम्प में देश के कल्याणार्थ और श्रीवृद्धि के लिए लक्ष्मीनारायण महायज्ञ और गोरक्षा व हिन्दी-सम्मेलन करने का भी आयोजन किया जा रहा है।

--संवाददाता

* * *

गीत

लेखक, श्री 'नीरव' एम० ए०

एक वर्ष के बाद आज फिर दीप-यामिनी आई।
सजे दिशा-बधुओं के बाने
जगे ज्योति के गीत सुहाने
तिमिर परी ने आज मदभरी साधी स्वर-सहनाई।
दीप और तारों की रातें
सुख से सनी स्नेह बरसातें
लख असंख्य नयनों से नभ को रसा और सरसाई।
हुए विभव के प्राण उजाले
कण कण में नव स्वर्ग सँभाले
भर आलोक अंक में फूली छाया की तरुणाई।
जग-जन लाज बखेर रहे हैं
ये सब प्रिय-पथ घेर रहे हैं
प्राण करोगे उर आँगन में तुम किसकी पहुनाई।

झाँसी के स्वाधीन प्रेस के अध्यक्ष, श्री सत्यदेव वर्मा, बी० ए०, एल-एल० बी० सूचित करते हैं कि गत तारीख २८ दिसम्बर ४७ को स्वाधीन प्रेस की रजतजयन्ती हमारे प्रान्त के राजस्व-मंत्री माननीय श्री कृष्णदत्त जी पालीवाल की उपस्थिति में धूम-धाम से मनाई गई। औपन्यासिक सम्राट् श्री वृन्दावनलाल जी वर्मा का अभिनय 'काश्मीर का कांटा' भी इस अवसर पर अभिनीत किया गया।

—सम्वाददाता

* * *

कानपुर स्वर्गीय कौशिक जी द्वारा स्थापित मीरा साहित्य मन्दिर इस वर्ष नवीन कहानी-प्रतियोगिता का आयोजन कर रहा है। सर्वश्रेष्ठ दो कहानियों पर पुरस्कार दिया जायगा। मंत्री के पास कहानी पहुँचने की अन्तिम तारीख १५ जनवरी ४८ है। कहानी के साथ एक रुपया प्रवेश शुल्क आना अनिवार्य है। पुरस्कृत कहानियों पर मन्दिर का सर्वाधिकार रहेगा।

—सम्वाददाता

* * *

ऋषिकेश में बाबा काली कमलीवाले क्षेत्र की ओर से पश्चिमोत्तर पंजाब से आये पीड़ित शरणार्थियों पर गत दीवाली अर्थात् १२ नवम्बर तक २१९७०) रु० खर्च हुए हैं और इसके अतिरिक्त रहने के लिए स्थान, बर्तन और वस्त्रादि की भी सहायता की गई है। जिस समय हमारा संवाददाता ऋषिकेश गया, उस समय १३५ परिवार क्षेत्र में मौजूद थे।

—सम्वाददाता

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५।।=) डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

अपने देश की बनी हुई वस्तुएँ अपनायें

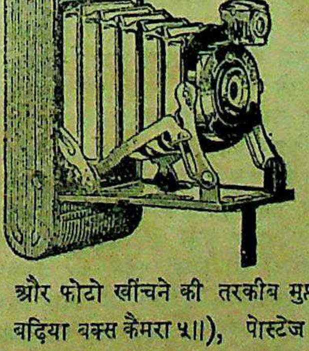

भारत के होशियार कारीगरों के बनाये हुये

स्वदेशी कैमरे

सुन्दर मजबूत, नया डिजायन, विश्वसनीय, कीमत में सस्ते, काम में अच्छे, इन कैमरों से आप चाहे जिस दिलपसन्द चीज का टिकाऊ मनोहर फोटो खींच सकते हैं। इन कैमरों से बढ़िया फोटो खींचने की गारंटी है।

कैमरे के साथ, फिल्म कार्ड, मसाला और फोटो खींचने की तरकीब मुफ्त भेजी जाती है। कीमत बक्स कैमरा ४।), बढ़िया बक्स कैमरा ५।।), पोस्टेज पैकिंग १=) अलग, बढ़िया फोल्डिंग कैमरा तथा फोटो खींचने की तरकीबसहित १५), पोस्टेज पैकिंग १।।) अलग।

[illegible] फोटो स्टूडियो (एन० पी० १८) अलीगढ़ सिटी।

(पेज ५ का शेष)

ही सारे भारत की अन्तर्प्रान्तीय भाषा स्वीकार की गई। यदि इस पुराने तजर्बे को नहीं मानते हैं, तो चाहें तो फिर तजर्बा कर लें। हिन्दी भाषा-भाषियों को अलग रखकर पंजाबी, आसामी, बंगाली, उड़िया, आन्ध्र, तमिल, केरली, कर्नाटकी, मराठी, गुजराती लोगों को ही व्यवहार से इसके बारे में फैसला करने के लिए छोड़ दें। मैं समझता हूं, यदि वे सारे भारत की एकता के पक्षपाती हैं, तो उनका तजर्बा भी हिन्दी ही के पक्ष का समर्थन करेगा।

* * *

राष्ट्रलिपि—राष्ट्रभाषा हिन्दी स्वीकार करने पर भी कोई कोई भाई रोमन लिपि स्वीकार करने के लिए कह रहे हैं। क्या वह अधिक वैज्ञानिक है? वैज्ञानिक का मतलब है, लिपि का उच्चारण के अधिक अनुरूप होना। लेकिन रोमन लिपि के २६ अक्षर हमारे सारे उच्चारणों को प्रकट नहीं कर सकते। नागरी अक्षरों में हम उससे ज्यादा शुद्ध रूप से किसी भी भाषा को लिख सकते हैं; और बिना चिह्न दिये। चिह्न देने पर रोमन में जितने पेवन्द लगाये जाते हैं, उससे कम ही चिह्नों को लगा नागरी द्वारा हम दुनिया की हर भाषा के शब्दों को उच्चारणानुसार लिख सकते हैं। इसलिए जहां तक उच्चारण का सम्बन्ध है, हमारी नागरी दुनिया की सब से अधिक वैज्ञानिक लिपि है।

सारे संघ की राष्ट्रभाषा और राष्ट्र-लिपि हिन्दी ही होनी चाहिए। उर्दू भाषा और लिपि के लिए वहां कोई स्थान नहीं है।

इसका यह अर्थ नहीं, कि उर्दू पढ़नेवालों के लिए सुविधा न दी जाये। हर एक को अपनी भाषा और अपनी लिपि पढ़ने का अधिकार होना चाहिए। जो उर्दू भाषा-भाषी अपनी शिक्षा उर्दू भाषा द्वारा लेना चाहते हैं, उन्हें इसके लिए पूरी स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए। वे स्कूलों ही में नहीं, चाहें तो अलीगढ़ यूनिवर्सिटी तक में उर्दू को माध्यम रख सकते हैं। लेकिन जो समय सामने आ रहा है, उसे देखते हुए मैं उन्हें परामर्श दूंगा कि लिपि के आग्रह को छोड़कर उर्दू के लिए भी नागरी लिपि को अपनायें। आखिर पश्चिमी एशिया की ताजिक और तुर्की भाषाओं को अर्बी लिपि से सम्बन्ध-विच्छेद कर लेने पर हानि नहीं बल्कि बहुत भारी लाभ हुआ है। सोवियत की ये भाषाएं रूसी लिपि में लिखी जाती हैं, जो ३२ अक्षरों की होने से रोमन से कहीं अधिक वैज्ञानिक हैं।

कोई कोई उर्दूवाले कहने लगे हैं, कि क्यों न रोमन लिपि को ही अपनाया जाय। यदि हिन्दी (नागरी) लिपि अरबी लिपि की तरह दोषपूर्ण होती, तो हमें रोमन लिपि अपनाने में कोई उजर न होता। लेकिन रोमन-पक्षपाती उर्दूवाले भाइयों को नागरी जैसी लिपि को अपनाने में आना-कानी क्यों? सिर्फ इसलिए कि अगर अरबी लिपि जाती है, तो साथ-साथ हिन्दी लिपि का भी बेड़ा गर्क हो!

उनका भारतीयता के प्रति यह विद्वेष सदियों से चला आया है सही, किन्तु नवीन भारत में कोई भी धर्म भारतीयता को पूर्णतया स्वीकार किये बिना फल-फूल नहीं सकता। ईसाइयों, पारसियों और बौद्धों को भारतीयता से एतराज नहीं, फिर इस्लाम ही को क्यों? इस्लाम की आत्म-रक्षा के लिए आवश्यक है भी, कि वह उसी तरह हिन्दुस्तान की सभ्यता, साहित्य,-इतिहास, वेश-भूषा, मनोभाव के साथ समझौता करे, जैसे उसने तुर्की, ईरान और सोवियत मध्य-एशिया के प्रजातन्त्रों में किया। धर्म को समाज के हर क्षेत्र में घुसेड़ना आज के संसार में बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। अभी हमारे राष्ट्रीय-मुसलमान भाई भी नहीं समझ पाये हैं, कि उनकी सन्तानों को नव-भारत में कहां तक जाना है। नवीन भारत ऐसे मुसलमानों को चाहेगा, जो अपने धर्म के पक्के हों, किन्तु साथ ही उनकी भाषा, वेश-भूषा और खान-पान में दूसरे भारतीयों से कोई अन्तर न हो, भारत के गौरवपूर्ण इतिहास के प्रति आदर रखने में वे दूसरों से पीछे न हों। भारतीय संघ के मुसलमानों की भी आज की तीसरी पीढ़ी में हिन्दी के अच्छे अच्छे कवि और लेखक उसी परिमाण में होंगे, जिस परिमाण में वे आज उर्दू में हैं। वह समय भी नजदीक आयेगा, जब कि हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का सभापति कोई हिन्दी का धुरन्धर साहित्यकार मुसलमान होगा। आखिर पाकिस्तान के आधे से अधिक हिस्से में अरबी लिपि और अरबी मिश्रित भाषा न होने से पूर्वी बंगाल में इस्लाम को खतरा नहीं है फिर हिन्दी से उन्हें क्यों खतरा मालूम होता है! यदि बुद्धि को प्रमाण मानते हैं, तो हिन्दी को उन्हें अपनाना चाहिये, नहीं तो भवितव्यता तो उधर ले ही जा रही है।

जहां तक सारे संघ की राष्ट्रभाषा और राष्ट्र-लिपि का सम्बन्ध है, तर्क और तजर्बा सभी हिन्दी के पक्ष में हैं। हमारे कुछ नेता अभी नारद-मोह के शिकार हैं और वे सारी शक्ति इसके विरुद्ध लगा रहे हैं, किन्तु मुझे आशा नहीं कि उनकी बात स्वीकृत होगी। हठ करने पर भी इसमें तो सन्देह नहीं, कि व्यवहार्य न होने से उर्दू लिपि और भाषा का दूसरे प्रान्तों में प्रचार होने से रहा; हां, खामखाह के झगड़े जरूर पैदा हो सकते हैं।

* * *

सारे संघ की राष्ट्रभाषा के अतिरिक्त हिन्दी का अपना विशाल क्षेत्र है। हरियाना, राजपूताना, मेवाड़, मालवा, मध्यप्रदेश, युक्तप्रान्त और बिहार हिन्दी की अपनी भूमि है। यही वह भूमि है, जिसने हिन्दी के आदिम कवियों सरह, स्वयम्भू आदि को जन्म दिया। यही भूमि है, जहां अश्वघोष, कालिदास, भवभूति और बाण पैदा हुए। यही वह भूमि है, जहां कुरु (मेरठ-अम्बाला कमिश्नरियों) पंचाल (आगरा-रुहेलखण्ड कमिश्नरियों) की भूमि में वशिष्ठ, विश्वामित्र, भरद्वाज ने ऋग्वेद के मन्त्र रचे और प्रवाहण, उद्दालक और याज्ञवल्क्य ने अपनी दार्शनिक उड़ानें कीं। इस भूमि के सारे भाग की हिन्दी मातृभाषा नहीं है, किन्तु वह है मातृभाषा जैसी ही। इस विशाल प्रदेश के हर एक भाग में शिक्षित, अशिक्षित नागरिक और ग्रामीण सभी हिन्दी को समझते हैं। इसलिए यहां हिन्दी का राजभाषा के तौर पर, शिक्षा के माध्यम के तौर पर स्वीकार किया जाना बिलकुल स्वाभाविक है। कुछ राजनीतिक नेता हिन्दुस्तानी के नाम पर और न जाने किस भलाई के ख्याल से उर्दू को भी यहां घुसेड़ना चाहते हैं। लेकिन यह तो निश्चित है, कि इस बात में उनका व्यक्तित्व कोई काम नहीं करेगा। पन्त जी की सरकार ने युक्तप्रान्त में हिन्दी के प्रति अपनी दृढ़ता दिखलाते हुए उसे एकमात्र राजभाषा स्वीकार किया, उसने बतला दिया कि हवा का रुख किधर है। दो-दो भाषा और दो-दो लिपि को राष्ट्रभाषा बनाने का अब कोई कारण नहीं है। तर्क पेश किया जाता है, कि अगर यहां के उर्दू भाषा-भाषी मुसलमानों को हिन्दी पढ़ने पर मजबूर किया गया, तो बँटा हुआ हिन्दुस्तान फिर कभी एक न होगा। मानो उर्दू को राजभाषा स्वीकार कर लेने पर एकता निश्चित है। मेरी समझ में तो अभी बँटे हुए हिन्दुस्तान [illegible] फजूल ही नहीं, हानिकर है। हमारी पीढ़ी जो कर सकती थी कर चुकी। एकता करने का काम अगली पीढ़ी का है, हमें इस एकता की बात करके उनके काम में कठिनाइयां नहीं पैदा करनी चाहिए। एकता तभी होगी, जब कि दोनों भागों में धर्मान्धता का स्थान राष्ट्रीयता और वैयक्तिक स्वार्थ का स्थान समाज-स्वार्थ लेगा।

उर्दू को लादने में और क्या भलाई समझी जाती है? उर्दूवालों को हिन्दी पढ़ने के लिए मजबूर किया जायेगा? यह तो जन-तान्त्रिक नियम है। जिस भाषा के अधिक बोलनेवाले होते हैं, वही भाषा राजकीय मानी जाती है। अल्पसंख्यकों की भाषा इस तरह नष्ट हो जायगी? यह भी आक्षेप नहीं हो सकता। मैं समझता हूँ, कि हमारी सरकार उर्दू पढ़नेवालों के रास्ते में रुकावट नहीं डालेगी लेकिन साथ ही यह तो जरूर होगा कि जिनको सरकारी या कल-कारखानों की नौकरियों को पाने का ख्याल है, उनके लिए हिन्दी पढ़ना आवश्यक होगा। आखिर आज तक जब इनके लिए वे अँगरेजी पढ़ते रहे, फिर अब हिन्दी पढ़ने में क्या हर्ज है। जैसे वह आज तक हाईस्कूल से यूनिवर्सिटी तक अरबी-फारसी पढ़ते रहे, वैसे आगे भी पढ़ते रहेंगे। हिन्दी तो केवल वही स्थान लेने जा रही है, जिसे अँगरेजी ने जबर्दस्ती दखल कर रखा था। विदेशी भाषा सीखने में जब उजर नहीं था, तो अपने देश की भाषा सीखने में क्यों उजुर है? हिन्दी भाषा ७०० सालों से पदच्युत रहकर अब विशाल मध्यदेश में अपना स्थान ग्रहण करने जा रही है, इसके लिए हमें हर्ष होना चाहिए।

विश्व की महान् भाषा—हिन्दी भारतीय संघ की राष्ट्रभाषा होगी और उसके आधे से अधिक लोगों की अपनी भाषा होने के कारण वह अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में अब एक महत्त्वपूर्ण स्थान ग्रहण करेगी। चीनी भाषा के बाद वही दूसरी भाषा है, जो इतनी बड़ी जनसंख्या की भाषा है। हिन्दी के ऊपर इसके लिए बड़ा दायित्व आ जाता है। हिन्दी को एक विशाल जन-समूह के राज-काज और बातचीत को ही चलाना नहीं है, बल्कि उसी को शिक्षा का माध्यम बनना है। फिर आजकल की शिक्षा सिर्फ कविता, कहानी, और साहित्यिक निबन्धों तक ही सीमित नहीं है। विश्व की प्रत्येक उन्नत भाषा का साहित्य अधिकतर साइन्स के ग्रन्थों पर अवलम्बित है। अभी तक तो साइन्स की पढ़ाई अँगरेजी ने अपने सिर पर ले रखी थी, किन्तु अब अँगरेजों के साथ अँगरेजी का राज्य जा चुका है। सरह-स्वयम्भू से पन्त-निराला, महादेवी तक का हिन्दी काव्य-साहित्य बहुत सुन्दर और विशाल है। नाटक छोड़कर सभी अंगों में विश्व के किसी भी प्राचीन और नवीन साहित्य से उसकी तुलना की जा सकती है। कथा-साहित्य में प्रेमचन्द ने जो परम्परा छोड़ी है, वह काफी आगे बढ़ी है। किन्तु अब हमें हिन्दी में सारा ज्ञान-विज्ञान लाना होगा। कुछ लोग इसे बहुत भारी, शायद सदियों का काम समझते हैं। परन्तु, मेरी समझ में यह उनकी भूल है। आज जिस चीज की मांग हो, उसे साहित्य-जगत् में सृजन करनेवालों की कमी नहीं होती। अब तक उपन्यास, कहानी, कविता की मांग थी, और लेखकों तथा कवियों ने इस मांग को बहुत हद तक पूरा किया।

(पेज ८ का शेष)

होने चाहिए।" इस नीति को स्पष्ट करते हुए आपने कहा कि भारतीय उद्योगपतियों को अधिक रुपया अपने उद्योगों में लगाना चाहिये। आपने यह आशा प्रकट की कि अधिक रुपया आगे आयेगा जिससे उत्पादन भी बढ़ेगा और आर्थिक अवस्था भी सन्तोषजनक होगी। आपने अपील की, "अगर जनता के रहन-सहन का दर्जा उन्नति की बड़ी बड़ी योजनाओं को चालू करके काफी ऊँचा करना है तो धनी व्यक्तियों व मध्यम वर्ग के लोगों को आगे आकर अपनी बचत सरकार को कर्ज के रूप में दे देनी चाहिये।"

यद्यपि बजट घाटे का है फिर भी सरकार ने नये टैक्स नहीं लगाये हैं और सिर्फ कपड़े व सूत के निर्यात पर कुछ टैक्स बढ़ा दिया है जिससे सिर्फ १·६५ करोड़ रुपये की आशा है। पर यह टैक्स इतना कम है कि जब कंट्रोल हटेगा तब कपड़े का निर्यात बढ़ाना स्वाभाविक है, क्योंकि मध्यपूर्व और पूर्व में भारतीय कपड़ा अच्छे मूल्य में बिकेगा और भारत में कपड़े के मूल्य का बढ़ना स्वाभाविक है। इस प्रकार जहां बजट में सर्व-सधारण के लिये कोई बहुत आशाजनक चित्र नहीं खींचा गया है और न उन्हें किसी प्रकार का आश्वासन दिया गया है वहां उन्हें सब परिस्थितियों का सामना करने के लिये आह्वान किया गया है। सन्तोष का विषय है कि कोई भी नया कर नहीं लगाया गया है और सरकार किसी न किसी रूप में घाटे को पूरा करने का स्वयं प्रयत्न करेगी।

५००) नकद इनाम

जवाँमर्द चूर्ण से सब प्रकार की सुस्ती, दिमागी कमजोरी, स्वप्नदोष, धातु विकार तथा नामर्दी दूर होकर शरीर हृष्ट-पुष्ट बनता है। मूल्य ३|||) मय डाकखर्च। बेकार साबित करने पर ५००) इनाम। श्याम फार्मेसी (रजिस्टर्ड) अलीगढ़।

जानवरों की मज़ेदार कहानियाँ

मोर और कौआ, लोमड़ी और गधा, चालाक बुढ़िया, सोने की चिड़िया, सिंह और सियार आदि कहानियाँ पढ़िए और इनका चमत्कार देखिए। मोटे टाइपों में अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य ||≈)

पृथ्वी की परिक्रमा

भिन्न-भिन्न देशों के प्रधान स्थानों का मनोहर वर्णन आपको इस पुस्तक में सुन्दर भाषा में मिलेगा। चिकने कागज पर छपे हुए पूरे पृष्ठ के चित्र भी इसमें हैं। मूल्य ||)

मनोरञ्जक कहानियाँ

(दूसरा भाग)

इस पुस्तक में बहुत सी मनोरंजक और शिक्षाप्रद कहानियाँ हैं। इसके पढ़ने से बालकों को अन्य लाभ के सिवा भाषा-सम्बन्धी ज्ञान भी होता है। मूल्य |-)||

गुदड़ी के लाल

इस पुस्तक की कहानियाँ बहुत ही सरल और रोचक भाषा में लिखी गई हैं। इनको पढ़कर बच्चे बेहद खुश होते हैं। ऐसी पुस्तक अपने बच्चों को जरूर दीजिए। मूल्य ||)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

मातृमंदिर

घर और रसोई की ओर

अब भी पश्चिम से ये नारे क्यों ?

लेखक, श्री प्रेम कपूर "कंचन"

नारी पारस पत्थर है। पर आज वही पारस पत्थर लोह के संसर्ग से लोहा बनने की चेष्टा क्यों कर रहा है? उसकी कर्म-भूमि उन समस्त स्थानों में हैं जहां मानवता है, जीवन है, गति है, चेतना है। फिर नारी अकर्मण्य क्यों बनती जा रही है? उसे आज क्यों विश्वास हो रहा है कि घर का उसके सम्मुख कोई महत्त्व नहीं। घर केवल बन्दीगृह है। वहां उसे सर्वदा छला जाता है। लोक और परलोक के सुख का भय दिखाकर उसे आगे बढ़ने से रोक दिया जाता है।

स्वतन्त्रता! इस शब्द से उसे बहुत प्रेरणा मिलती है। वह समझती है कि घर......उसके लिए स्वतन्त्रता नहीं प्रदान करेगा। इसलिए उसे अपने पद-चाप घर के बाहर रखने होंगे—सीमा का बन्धन तोड़ना है। मैं कहता हूँ "बहन जी! आपने अपने लेख में किस बात पर प्रकाश डाला है? वहां केवल विवरण है महत्त्व नहीं।"

ध्यान दे। आज विदेश की स्वतन्त्रता उन्हीं स्वतन्त्र-नारियों के लिए अभिशाप बन चुकी है। विदेशी नारियों की स्वतंत्रता स्वतंत्रता नहीं। विदेशी नारी को नारी कहना भी एक बड़ी भूल है। वह है व्यावसायिक-प्रतिमा उसने अपनी मर्यादा अपने पैरों से कुचली है। नारी का जीवन घर के बाहर सुखी हो सकेगा? गृह-त्याग कर वह कहां जायगी। आपका उत्तर होगा—"नारी के दो हाथ पैर हैं और भगवान् की कृपा से उसे भी सोचने-समझने की शक्ति प्रदान की गई है।" तो याद रहे उसे साथ-साथ क्षुधा भी शान्ति करनी होगी और क्षुधा-शान्ति के लिए उसे, दफ़्तर, स्कूल या और कहीं आश्रय लेना ही होगा। तो क्या वह इस प्रकार किसी भी स्थिति में अपना निर्माण कर सकेगी?

बहन जी आप भी नारी हैं, जरा अपने हृदय पर हाथ रखकर विचार कीजिये। आपने "संगम" पत्रिका के १५वें अंक में जो कुछ अंकित किया है वह कहां तक सत्य है? आपका कथन है—"आप आश्चर्य में हैं, यह जानकर कि आज विदेश की नारी "घर मुड़ने, रसोई की ओर बढ़ने" का नारा क्यों लगा रही है? बहन जी सत्य सत्य है। माननेवाले चाहे कुछ क्षण के लिए अपना नया विचार क्यों न लगा ले? पर हर समय पाप की हांड़ी नहीं चल सकती, कागज की नाव पर मांझी दूर किनारे तक नहीं जा सकता। इसलिए आज इस युग में जब सर्वत्र स्वतंत्र क्रान्ति मच रही है उस स्थिति में नारी क्यों बंधन में जाने की सोच रही है? क्यों? सीधा-सा उत्तर है नारी देखती है कि वह आज तक जिस ओर पदार्पण करती रही, वहां से उसे सत्य के निकट पहुँचना बहुत ही कठिन प्रतीत ही रहा था इसी लिए उसने अपनी विचार-ारा को उस ओर मोड़ दिया जहां से इसे शान्ति और सुख दोनों प्राप्त हो जाय।

बहन जी आपका कहना है कि नारी र को त्यागकर जब तक बाहर न ायेगी उसके लिए सर्वत्र अन्धकार है। र उस बाहर आनेवाली नारी के जीवन ा आदर्श क्या है? आदर्श रूप उसने ीन-सी प्रतिमा गढ़ी है? किस युग में स प्रकार की प्रतिमा गढ़ी गई थी? ......तब.....!!! केवल इसी ल्पना पर इस प्रकार पश्चिमी आदर्श रखना हो तो बहुत बड़ा अन्याय है और उस अन्याय में आपका सहयोग मुझे नहीं भायेगा।

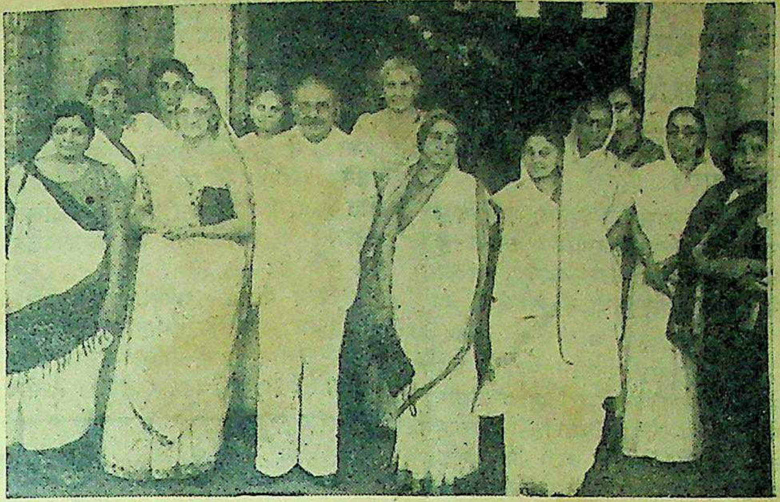

अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की बम्बई शाखा के अधिवेशन में श्रीमती अम्मु स्वामिनाथन् ने 'बच्चों के सुधार' विभाग का सभानेतृत्व किया था। चित्र में सभा-नेत्री श्रीमती मुंशी और लेडी रामराव के साथ दिखाई दे रही हैं।

यदि नारी स्वतन्त्रता चाहती है तो बाहर से कहीं अधिक घर में वह स्वतन्त्रता प्राप्त कर सकती है। नारी शक्ति है और शक्ति को रोका नहीं जा सकता। इसलिए यह कहना व्यर्थ है कि नारी की शक्ति को किसी ने रोक लिया है। विचार तो इसका करना है कि नारी उस शक्ति का उपयोग किस ओर करे? कहीं अमृत के धोखे में कनक घट में भरा हुआ, विष तो वह नहीं पीने जा रही है।

नारी निर्माता है पर वह निर्माण-कार्य केवल उस स्थिति में पूर्ण हो सकता है जब वह स्वयं अपना निर्माण कर ले। नारी का समाज में वही स्थान है जो शरीर में मस्तिष्क का, लेकिन मस्तक को प्रेरणा देनेवाली अज्ञात चेतना कोई दूसरी होती है। ठीक उसी प्रकार नारी को भी चेतना प्राप्त करने के लिए त्याग करना पड़ता है और त्याग उसके लिए उसके जीवन का पथ-निर्माण करता है। वह उसे बनाना चाहता है। अगर नारी ने घर को किसी भी रूप में स्वीकार किया ह तो स्वीकार करने के उपरान्त तो चतुरता उसकी इसी में है कि वह उस घर को अपने अनुरूप बनाये। यह कहां की बुद्धिमत्ता है कि नारी, उसे जिसे स्वीकार करती है, ठुकराकर चली जाय। उसे कौन बुद्धिमान् कहेगा?

संगठित प्रयत्न, सामाजिक क्रान्ति... किस लिये? किससे युद्ध करना है उसे? घर से या समाज से? युद्ध वह करते हैं जो अपने को कमजोर समझते हैं। श्वान के भूकने से मदमस्त हाथी उससे झगड़ने के लिए नहीं बढ़ता, लेकिन वह श्वान ही है जो बार-बार भूकता है। अगर नारी को अपनी स्थिति पर गर्व है, तो उसे क्रान्ति और संगठन की आवश्यकता नहीं पड़ती। इसलिए बहन जी कुछ कहने के प्रथम सोच लें, नूरजहां या आदर्शवादी सीता बनने के लिए कोई बुराई नहीं, पर 'क्लब, हाउस', 'होटल रेस्तरां से तो शुद्ध है।'

विदेश की ओर झांकने के पहले अपने आंचल और पल्लों में देखे। "लव मैरेज" या "क्लोज टर्च" से अगर नारी स्वतन्त्रतापूर्ण हो जाती है तो ऐसी स्वतन्त्रता को भारत में लाने के पहले नारी को ही इसका परिणाम भोगना होगा।

मैं नारी समाज से यही कहूँगा कि वह इस विद्रोह में उसी समय अपना हाथ डाले जब उसे विश्वास हो। नहीं तो उसका भी वही अन्त होगा—"पांडे जी पछताएँगे फिर वही गुड़ चना खाएँगे।"

विदेशी नारियों की तरह घर लौटने के नारे लगाने पड़ेंगे इसलिए ऐसे नारों से अपनी सफलता नहीं। इसलिए सफलता के लिए आपको अपने आदर्श जीवन की स्वतन्त्र-प्रतिमा का निर्माण करना चाहिए और इस प्रकार के सुनहले लेखों को पढ़कर अपने जीवन को आदर्श-विराम की ओर न ले जाकर चमचमाते हुए खड्ग में ले जाना चाहिए।

गीत

लेखक, श्री श्रीपालसिंह 'क्षेम'

प्राण, नभ में खिली प्रेम की चाँदनी।
झूमता है गगन फूल मधु-हास में,
ऊँघती हैं दिशाएँ सुरभि-साँस में,
नील-अंचल भरा ज्योति के खील से
प्राण, मकरन्द से भीगती यामिनी।
मोद में आज पुलकित धरा-प्राण है,
बात की हर लहर में भरा मान है,
झिप रही आज संसृति किरण-पाश में·—
प्राण, कितनी मधुर मौन की रागिनी!
सो रहीं राह की वेदनाएँ सभी,
खिल रहीं प्राण की चेतनाएँ सभी।
खोल दो नयन में ज्योति-वर्षा नयन,
प्राण, आई घड़ी स्वप्न-उन्मादिनी।
शक्ति दो, प्रेरणा नव सृजन में करूँ,
रूपसी, रूप दो शून्य जीवन भरूँ,
मैं झरूँ हास-घन सा व्यथित-विश्व पर
प्राण, [illegible] रागिनी।

मनोरंजक चुटकुले

मालिक ने नौकर से कहा—"मोहन तनख्वाह लेकर क्या करोगे तुम तो अपने घर में अकेले हो न? खाने भर को ले लिया करो।"

नौकर—आखिर आपको मेरी तनख्वाह देनी ही है। फिर, मेरे खर्च-वर्च से मतलब क्या!'

मालिक—यही कि तुमसे कहीं रुपये गुम न हो जायँ। तुम्हारे पास कोई सन्दूक भी तो नहीं है जिसमें रक्खोग।"

नौकर—"उस साल जब आपकी तिजोरी से सारा रुपया चोरी चला गया था। तो मेरे ३०० रुपये तनख्वाह के भी जाते रहे। इसी से डरता हूँ कि जो कुछ मेरा होता जाय उसे देते जाइए क्यों आपके जिम्मे कर्ज बढ़े।"

* * ◦

बुद्धू—"भाई राधे आज चार रोज से मेरी आँख लाल हो गई है।"

राधे—"चीनी और गुलाबी रंग छोड़ लो। देहात में और दवा ही क्या है।"

बुद्धू—"अरे बीस दिन हुए डेढ़ छटांक चीनी मिली थी। रख दिया, चींटी और चींटे खा गये। फिर दवा किसकी बने?"

* * *

बुद्धू—'अब ज का स्थान समाज ले रहा है। राजे-महाराजे बिचारे डरने लगे हैं। हम लोगों को भी समाज के साथ रहना चाहिए।

राघव—"और संसार से क्या घृणा करते हो?"

बुद्धू—समाज तो संसार ही के अन्दर है न?

राघव—तब आज संसार ही को पहले खरीद लो। समाजवादी पीछे आ जायँगे।

बुद्धू—अजी मैंने नहीं समझा।"

राघव—बनारस चले जाओ।

* * *

व्यापारी ने अपने साथी क्लर्क से पूछा—"दफ्तर कब से है?"

क्लर्क—"साढ़े नव बजे से।"

व्यापारी—सभी दफ्तर १० बजे से चालू होते हैं फिर अपना दफ्तर कैसा?"

क्लर्क—"पैदल ही जाना पड़ता है; इससे यदि दस बजे चलूँ तो गैर हाजिर हो जाऊँगा न?

* * *

रसोइया ने मालिक से कहा—"हुजूर आटा नहीं है।"

मालिक—"इस राशनिंग के जमाने में तुम खाना क्यों अधिक बना लेते हो?"

रसोइया—"खाना तो अधिक नहीं बनाता हुजूर; हाँ, महीने में अधिकतर भूखों रह जाना पड़ता है।"

* * *

साहु ने पुजारी से कहा—पुजारी जी शिवा जी पर अक्षत (चावल) नहीं चढ़ा दिखलाई देता।"

पुजारी—'साहु जी शिव जी के लिए राशन जो नहीं मिलता।"

* * *

राजधानी का रंगमंच

सम्मेलनों का सप्ताह–प्रथम भारतीय फौजी कमांडर की महत्त्वपूर्ण सीख–गूँगे-बहरों के लिए स्कूल–खादी अन्वेषणशाला–औद्योगिक विकास के लिए तूफानी प्रयत्न

(अपने विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

प्रान्तीय राजधानी में दिसम्बर का अन्तिम सप्ताह 'सम्मेलनों का सप्ताह' था। बैंक-कर्मचारी-सम्मेलन, वाणिज्य-सम्मेलन, शिक्षाधिकारी सम्मेलन, मुसलमानाने हिन्द सम्मेलन—सम्मेलनों की जैसे धूम मच गई। पत्रकारों को तो चाय पीने और सांस लेने का अवकाश न था। सर्वत्र चाय और काफी, परन्तु पीने का अवकाश कहां!

* * *

मुसलमानाने हिन्द सम्मेलन मौ० अबुल कलाम अजाद की अध्यक्षता में हुआ, जिन्होंने वर्तमान संकट में भारतीय मुसलमानों की सच्ची रहनुमाई की है और यदि देश के मुसलमानों ने उनका साथ दिया—और अब वे मौलाना के नेतृत्व को स्वीकार कर लेंगे, यह असंदिग्ध है—तो अपनी अतीत की कालिमा को धोकर वे विश्व के इस महान् राष्ट्र के गौरवशाली नागरिक बनने में अवश्य ही सफल हो सकेंगे। जैसा कि मौलाना आजाद ने अपने अध्यक्ष भाषण में कहा, उन्होंने मुसलमानों के समक्ष कोई नई बात नहीं रखी है। मुस्लिम-समस्या का उनका हल वही ४० वर्ष पुराना नुस्खा है अर्थात् साम्प्रदायिक संस्थाओं को राजनीति में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। युक्तप्रान्त के लीगी नेताओं ने इस सम्मेलन में शामिल न हो सकने पर खेद प्रकट करते हुए कहा कि लीग के अनुशासन में आबद्ध होने के कारण ही वे इस सम्मेलन में शामिल न हो सके, अन्यथा उसके उद्देश्य उन्हें मान्य हैं।

* * *

बैंक-कर्मचारी-सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए श्री शरत्चन्द्र वसु ने केन्द्र तथा प्रान्तों के कांग्रेस मंत्रिमंडलों पर भीषण वाक्प्रहार करते हुए कहा कि कांग्रेस के उद्देश्यों में नागरिक स्वतन्त्रता का सर्वप्रमुख स्थान रहा है, पर ये कांग्रेसी मंत्रिमण्डल ही आजकल नागरिक स्वतन्त्रता के अपहरण में सर्वप्रमुख हैं। प्रत्येक प्रान्त में ऐसे कानून बनाये गये हैं, जिससे लोगों को बिना मामला चलाये नजरबन्द रखा जा सकता है, यद्यपि विधान-परिषद् ने स्वीकार किया है कि प्रत्येक नागरिक को अपनी स्वतन्त्रता के लिए अदालत का दरवाजा खुला मिलेगा। श्री शरत् वसु के आरोप सर्वथा सत्य हैं, किन्तु असाधारण काल में असाधारण विधानों की व्यवस्था करनी ही पड़ती है और यदि उसका दुरुपयोग न हो, तो कोई भी विधान दूषित नहीं हो सकता। युक्तप्रान्त में ही मन्त्रिमण्डल को सुरक्षा तथा चोर-बाजारी-निरोधक विधानों के अन्तर्गत असाधारण अधिकार प्राप्त हैं, किन्तु कोई ऐसा दृष्टान्त मिलना कठिन है कि उनका दुरुपयोग किया गया हो।

* * *

शिक्षाधिकारी सम्मेलन में श्री सम्पूर्णानन्द ने शिक्षा-विभाग के डाइरेक्टर, उप-डाइरेक्टरों एवं इंस्पेक्टरों को नवीन शिक्षा-योजना समझाते हुए कहा कि आप पर काम का काफी बोझ है, परन्तु मैं उस बोझ को बढ़ाता ही जाऊँगा। उप-डाइरेक्टर बी० एन० झा ने इसका उत्तर देते हुए कहा कि हम लोग केवल वेतन के लिए ही काम नहीं करते। हमारा कर्त्तव्य महान् है। हम जिनके आदेश पर काम करते हैं, वे अब हमारे अपने नेता हैं और जिनके लिए काम करते हैं, वे हमारे अपने बच्चे हैं, जिन्हें हमको इस स्वतन्त्र राष्ट्र का उज्ज्वल नागरिक बनाना है। आप चाहे कितना बोझ बढ़ाइए, इस काम में हमारी कमर कभी न झुकेगी।

* * *

युक्तप्रान्तीय फौजी एरिया के प्रथम भारतीय कमाण्डर मेजर जेनरल नाथूसिंह ने बरेली में फौजी अफसरों को महत्त्वपूर्ण सीख दी है। उन्होंने कहा कि अँगरेजी फौजों के चले जाने से भारतीय फौजी अफसरों के समक्ष पदोन्नति का सुअवसर अवश्य आ गया है, परन्तु उनका दायित्व भी बहुत बढ़ गया है। आपने कहा कि स्वतन्त्र राष्ट्रों का उत्कर्ष उनकी सैनिक शक्ति पर भी निर्भर रहता है और उसके सैनिक तभी उत्साही एवं कर्मण्य रह सकते हैं, जब उनके फौजी अफसर अपने सिपाहियों के साथ सहानुभूति और दया का बर्ताव करें। जेनरल नाथूसिंह ने फौजी अफसरों को उपदेश दिया कि वे अँगरेजों के समय का बड़प्पन का वृथा अभिमान छोड़कर साथी और सहयोगी की भांति अपने सैनिकों से मिलें-जुलें।

* * *

प्रान्त के गूंगे तथा बहरे बालकों की शिक्षा के लिए सरकार ने आगामी कुछ ही वर्षों में प्रान्त के प्रत्येक जिले में एक-एक गूंगा-बहरा स्कूल खोलने की योजना बनाई है। अभी तक ऐसे स्कूल केवल प्रयाग और लखनऊ में है। आगामी दो वर्षों में ८ अन्य नगरों में ऐसे स्कूल खुल जायेंगे। इन स्कूलों के लिए उपयुक्त शिक्षक तैयार करने के हेतु सरकार ने एक विशेष ट्रेनिंग कालेज खोलने की व्यवस्था की है, जिसके प्रिंसिपल कलकत्ता के श्री शैलेन्द्रनाथ बनर्जी नियुक्त हुए हैं।

* * *

हाथ के बुने कपड़े के उद्योग को प्रोत्साहन देने के निमित्त युक्तप्रान्तीय सरकार ने प्रयाग में एक खादी अन्वेषणशाला स्थापित करने का निश्चय किया है, जो हाथ की कताई-बुनाई और रँगाई के सम्बन्ध में अनुसन्धान करेगी। यह अन्वेषणशाला शीघ्र ही चालू हो जायगी और श्री प्रभुदास गांधी उसके प्रथम प्रिंसिपल होंगे, जो उसे महात्मा गांधी के वर्धा आश्रम की भांति चलायेंगे। शरणार्थी महिलाओं को चर्खा और रुई देकर उनसे सूत कताने और उसे बुनवाकर उद्योग-विभाग द्वारा बिकवाने की व्यवस्था भी श्री केशवदेव मालवीय कर रहे हैं।

* * *

मालवीय जी पूर्वी जिलों के औद्योगिक विकास के लिए भी प्रयत्नशील हैं। वे हिन्द बांध बनवाने में जल्दी कर रहे हैं, ताकि इन जिलों को औद्योगिक विकास के लिए सस्ती बिजली उपलब्ध हो सके। इसके साथ ही वे दो नये रेल-पथों की योजना बना रहे हैं। एक मिर्जापुर चुनार अथवा मुगलसराय से हिन्द तक, जो राबर्ट्सगंज होकर जायगा और दूसरा मानिकपुर से बिहार के बरवाडीह तक, जो रीवां में कोयले की अनखुदी खानों की यातायात समस्या की पूर्ति करेगा। राबर्ट्सगंज कस्बे में अगले ही वर्ष से वाटरवर्क्स बनाकर जल-कल की व्यवस्था के लिए भी प्रान्तीय सरकार ने दो लाख रुपये स्वीकृत किये हैं।

(पेज ४ का शेष)

सेवा में समर्पित कर दिया है। साहित्य-सम्मेलन तथा किसान-सभा आदि संस्थाओं से उनका घनिष्ट सम्बन्ध रहा है और उनकी सेवाओं से प्रभावित होकर विभिन्न संस्थाओं ने समय-समय पर उनको अपने वार्षिक अधिवेशनों का सभापति निर्वाचित किया है। वे अब तक निम्नलिखित संस्थाओं के अधिवेशनों का सभापतित्व कर चुके हैं:—

प्राच्य विद्या सम्मेलन (बड़ौदा) की हिन्दी शाखा के सभापति (१९३३) बिहार-प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति (१९३९) बिहार प्रान्तीय किसान सभा के सभापति (१९४०) अखिल भारतीय किसान सभा के सभापति (१९४०) अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक सम्मेलन के सभापति (१९४७)।

सम्मेलन के सभापति—इस वर्ष हिन्दी सेवियों ने राहुल जी को सम्मेलन का सभापति निर्वाचित कर अपनी गुणग्राहकता का अनुपम परिचय दिया है। आशा ही नहीं बल्कि दृढ़ विश्वास है कि भारत के इस महान् विचारक, साहित्यिक तथा राजनैतिक नेता के नेतृत्व में स्वतन्त्र भारत की जनवाणी अपनी शौर्यपूर्ण शैली में स्वातंत्र्य-स्वर का उद्घोष कर सकेगी।

वीर सावरकर-कृत
१८५७ का भारतीय स्वातंत्र्य समर
अनुवादक—पं० ग० र० वैशंपायन
सचित्र, दुर्लभ तिरंगा तीन तथा कई सादे चित्र
छ रंगा आवरण मूल्य १२॥) रु०,
एकमात्र प्रामाणिक अनूठा ग्रंथ
निर्मल साहित्य प्रकाशन
६९३ बुधवार पेठ, पुणें २ (poona 2)

इंडियन प्रेस लिमिटेड प्रयाग के कुछ साहित्यिक ग्रन्थ

आलोचनाञ्जलि
लेखक—स्वर्गीय आचार्य्य महावीरप्रसाद द्विवेदी

इस पुस्तक में द्विवेदी जी के आलोचनात्मक लेखों का संग्रह है। अधिकांश लेखों में संस्कृत-साहित्य के कई प्राचीन और प्रतिष्ठित ग्रन्थों का परिचय दिया गया है। दो-एक लेख इसमें ऐसे भी हैं जो हिन्दी तथा मराठी भाषाओं के आधुनिक साहित्य से सम्बन्ध रखते हैं। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

सचित्र हिन्दी-कोविद-रत्नमाला
लेखक—रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास, बी० ए०

पहले भाग में भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र और महर्षि दयानन्द सरस्वती से लेकर वर्तमान समय तक के हिन्दी के नामी चालीस लेखकों और सहायकों के सचित्र और संक्षिप्त जीवन-चरित्र दिये गये हैं। दूसरे भाग में पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी तथा पंडित माधवराव सप्रे, बी० ए० आदि विद्वानों के तथा विदुषी स्त्रियों के जीवन-चरित हैं। हिन्दी में यह पुस्तक अपूर्व है। प्रत्येक हिन्दी-भाषा-भाषी को यह 'रत्नों की माला' मँगाकर अपने कण्ठ की शोभा बढ़ानी चाहिए। प्रत्येक भाग में ४० हाफ़टोन चित्र दिये गये हैं। पहले भाग का मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने। दूसरे भाग का मूल्य २॥≡) रुपये दो ग्यारह आने।

आलोचनादर्श
लेखक—पण्डित रामशङ्कर शुक्ल, 'रसाल' एम० ए०

इस पुस्तक में दिखलाया गया है कि आलोचना क्या है, इसका क्या उद्देश्य है और इससे क्या लाभ होता है। यह विद्या है या कला, आलोचक के गुण और कर्त्तव्य क्या हैं, उसे कैसा होना चाहिए तथा आलोचना करने के लिए किस प्रकार की तैयारी करनी चाहिए। आलोचना-कला का ऐतिहासिक विकास किस प्रकार हुआ है, यह भी इसमें बड़ी सुन्दरता के साथ दिखलाया गया है। इस प्रकार आलोचना-कला की इसमें सैद्धान्तिक तथा शास्त्रीय (वैज्ञानिक) मीमांसा की गई है। लगभग ३०० पृष्ठों में बड़ी योग्यता और सुन्दरता के साथ आलोचना पर पांडित्यपूर्ण प्रकाश डाला गया है। मूल्य २) दो रुपये।

साहित्य-समीक्षा
लेखक—श्रीयुत कालिदास कपूर, एम० ए०, एल-टी०

इस पुस्तक में हिन्दी और उर्दू का विरोध, समालोचना, रामचरितमानस का महत्त्व, हिन्दी में नाटक, द्विजेन्द्रनाटकावली, हिन्दी में उपन्यास-साहित्य, सेवासदन, प्रेमाश्रम तथा रंगभूमि आदि दस लेखों का संग्रह है। लिखने में पाश्चात्य लेखकों की आलोचनात्मक शैली का अनुसरण किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

बुकडिपो, एजेंट—इंडियन लखनऊ।

113447

हमारी विविध विषय की उत्तमोत्तम पुस्तकें

हिन्दी साहित्य—यह हिन्दी साहित्य का परिवर्द्धित और परिमार्जित संस्करण है। पहले की दो आवृत्तियों में यह हिन्दी भाषा और साहित्य के नाम से प्रकाशित हुआ था, किन्तु अब इसे स्वतन्त्र रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। कवियों के विषय में जो नये अनुसंधान हुए हैं उन सबका इसमें समावेश किया गया है। साहित्यिक स्थिति के वर्णन में भी आवश्यक परिवर्तन किये गये हैं। हिन्दी साहित्य के प्रत्येक विद्यार्थी को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ४) चार रुपये।

काव्यकला—साहित्यालोचन का यह संक्षिप्त संस्करण है। लोगों का कथन है कि इस नवीन रूप में इस पुस्तक का उपयोग ऊँची श्रेणी के विद्यार्थी सफलतापूर्वक कर सकते हैं। इसमें साहित्यशास्त्र के सभी अंगोपांगों का विवेचन तो है किन्तु साथ ही वे अंश निकाल दिये गये हैं जो जटिल और खंडन-मंडनात्मक हैं। इसके संकलनकार भी लेखक के पुत्र श्री गोपाललाल खन्ना हैं। मूल्य २) दो रुपये।

चिन्तामणि—(पहला भाग) लेखक, आचार्य पंडित रामचन्द्रजी शुक्ल। इस पुस्तक में आचार्य शुक्ल जी ने भिन्न-भिन्न विषयों पर लिखे गये अपने सत्रह निबन्धों का संग्रह किया है। ये सभी निबन्ध बहुत ही गंभीर और अध्ययनपूर्ण हैं, जिनके द्वारा मनुष्य की विभिन्न प्रकार की आन्तरिक भावनाओं पर आलोचनात्मक ढंग से प्रकाश डाला गया है। इस रचना पर मंगलाप्रसाद पारितोषिक मिल चुका है। मूल्य २) दो रुपये।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ—लेखक, पंडित उमेशचन्द्र मिश्र। इस पुस्तक में विश्वकवि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर की प्रामाणिक जीवनी और उनकी समस्त कृतियों—कविता-संग्रह, नाटक-नाटिका, कहानियाँ उपन्यास, यात्रा-वर्णन, विज्ञान के ग्रंथ, निबन्ध, साहित्यिक समालोचना, चित्रकला आदि—का विवेचनात्मक परिचय दिया गया है। उदाहरणों में कवि की प्रायः समस्त सुप्रसिद्ध और चुनी हुई रचनायें आ गई हैं। फुटनोट में उनके सरल अर्थ दिये गये हैं। इसके द्वारा आप रवीन्द्रनाथ और उनकी काव्य-कृतियों का पूरा-पूरा परिचय प्राप्त कर सकते हैं। विश्वभारती (शान्तिनिकेतन) के विद्वानों ने भी इसकी प्रशंसा की है। मूल्य केवल ५) पाँच रुपये।

द्विवेदी मीमांसा—लेखक, श्रीयुत प्रेमनारायण टण्डन। हिन्दी के नवीन युग की धाराओं और प्रवृत्तियों के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। साधारण पाठकों के अतिरिक्त सम्मेलन के परीक्षार्थियों व विश्वविद्यालयों के छात्रों के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य २) दो रुपये।

पं० शान्तिप्रिय द्विवेदी की कुछ पुस्तकें

कवि और काव्य—श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी ने काव्य के गुण-दोष से सम्बन्ध रखनेवाले कितने ही उपयोगी विषयों का इसमें विशद्‌रूप से विवेचन किया है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

संचारिणी—लेखक, श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी। यह श्रेष्ठ रचना अभी अभी पाठकों के सामने आई है। इसमें भक्ति-काल से लेकर आज के संक्रांति-काल तक की साहित्यिक चेतनाओं का मर्म स्पर्श है। मूल्य २) दो रुपये।

युग और साहित्य—लेखक, श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी। 'युग और साहित्य' भी हिन्दी-निबन्धों का एक आदर्श उपस्थित करती है। इसमें १३ मौलिक निबंध हैं, जिन्हें विद्वानों ने बहुत पसन्द किया है। मूल्य २।।≡) दो रुपये ग्यारह आने।

देवपुरस्कार-विजेता हरदयालुसिंह की कुछ व्रजकाव्य की समीक्षायें

देवदर्शन—देवपुरस्कार - विजेता श्री हरदयालुसिंह लिखित व्रजकाव्य समीक्षाएँ—इसमें व्रजभाषा के प्रख्यात कवि देव की जीवनी और उनके समस्त काव्यों का आलोचनात्मक परिचय दिया गया है। व्रजकाव्य के प्रेमियों के अतिरिक्त साहित्य के विद्यार्थियों के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

पूर्ण-पराग—इसमें व्रजभाषा के प्रसिद्ध आधुनिक कवि श्री देवीप्रसाद 'पूर्ण' की जीवनी और उनके काव्य का समालोचनात्मक परिचय है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मतिराम-मकरन्द—इसमें काव्यालोचन के साथ-साथ कवि मतिराम के ३ प्रसिद्ध ग्रंथों—मतिराम सतसई, ललितललाम और रसराज का संक्षिप्त सरस संग्रह भी कर दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

विहारी-विभव—इसमें महाकवि विहारी की कविता का आलोचनात्मक परिचय, उनकी जीवनी तथा सतसई के चुने हुए दोहे संकलित हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

भूषण-भारती—इसमें महाकवि भूषण की जीवनी और उनके समस्त काव्य ग्रन्थों—का विवेचनात्मक परिचय दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

महादेवी का विवेचनात्मक गद्य—संकलनकर्त्ता, श्री गंगाप्रसाद पांडेय, एम० ए०, साहित्य की नवीन शैली का अध्ययन करनेवालों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य २।।) दो रुपये बारह आने।

आलोचनादर्श—इस पुस्तक के लेखक हैं डाक्टर रामशंकर शुक्ल 'रसाल', एम० ए० डी० लिट। इसमें आलोचनाकला का मार्मिक और शास्त्रीय विवेचन किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

साहित्य-प्रकाश—यह पुस्तक भी डाक्टर रसाल की ही लिखी है। इसमें साहित्यिक सिद्धान्तों का विवेचन किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

साहित्य-समीक्षा—इस पुस्तक में हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक श्रीयुत कालिदास कपूर, एम० ए० एल-टी० के साहित्यिक तथा समालोचनात्मक लेखों का संग्रह किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

प्राचीन साहित्य—इस पुस्तक में रवीन्द्र बाबू के कई प्राचीन साहित्य, विशेषतः संस्कृत साहित्य के आलोचनात्मक निबन्धों का संग्रह है। मूल्य १) एक रुपया।

महाकवि अकबर—उर्दू के प्रसिद्ध कवि अकबर का आलोचनात्मक परिचय तथा उनकी उत्कृष्ट रचनाओं का अर्थसहित संग्रह। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

शिक्षा—हम अपने बालकों तथा बालिकाओं को किस तरह सुशिक्षित तथा सदाचारी बना सकते हैं, यह बात इस पुस्तक में विस्तारपूर्वक समझाई गई है। इसके मूल लेखक सुप्रसिद्ध दार्शनिक 'हर्बर्ट स्पेन्सर' हैं और अनुवादक स्वर्गीय आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी। मूल्य ४।।≡) चार रुपये ग्यारह आने।

भारतवर्ष में पश्चिमी शिक्षा—वर्तमान शिक्षा-विभाग के क्रम-विकास का संक्षिप्त इतिहास। मूल्य ।।) आठ आने।

अर्थमेटिक शिक्षा-प्रणाली—यह पुस्तक नार्मल स्कूलों और ट्रेनिंग क्लासों के विद्यार्थियों तथा स्कूलों के अध्यापकों को अर्थमेटिक पढ़ाने के उत्तम से उत्तम ढंग सिखलाने के उद्देश्य से लिखी गई है। मूल्य १) एक रुपया।

संगीत-सम्बन्धी पुस्तकें

ध्रुपद-स्वर-लिपि—इस पुस्तक के लेखक काशीनिवासी श्री हरिनारायण मुकुर्जी ध्रुपद के विशेषज्ञ हैं। मूल्य २।।≡) दो रुपये ग्यारह आने।

संगीत-सुदर्शन—सब प्रकार की राग-रागिनियों का शास्त्रीय-विवेचन। मूल्य १।।≡) एक रुपया ग्यारह आने।

विविध विषय की पुस्तकें

मन की अद्‌भुत शक्ति—अपने मन की अद्‌भुत शक्तियों पर पूर्णरूप से अधिकार प्राप्त करके तथा उनका सदुपयोग करके मनुष्य किस प्रकार अपने जीवन को अधिक से अधिक सार्थक बना सकता है, इस बात की इस पुस्तक में विवेचना की गई है। मूल्य ।।।-) तेरह आने।

ऋद्धि—जो लोग धनहीन हैं, ऋण-ग्रस्त हैं, बहु-कुटुम्बी हैं, साथ ही आय भी बहुत कम है, वे इस पुस्तक के उपदेश के अनुसार चलकर सुख से जीवन बिता सकते हैं। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

मानसिक आकर्षण-द्वारा व्यापारिक सफलता—व्यापारिक सफलता के लिए संपर्क में आनेवाले व्यक्तियों पर मानसिक आकर्षण की शक्ति का प्रयोग करने की विधि। मूल्य ।-) पाँच आने।

गोपालन—विभिन्न प्रकार की गौओं के रूप-रंग तथा गुण-दोष का विस्तृत वर्णन। इसमें गौओं का पालन-पोषण करने तथा उन्हें अधिक से अधिक दुधार बनाने की विधि बतलाई गई है। मूल्य १) एक रुपया।

लकड़ी के दाम निकालने की जंत्री—इस पुस्तक की सहायता से लकड़ी का दाम सरलतापूर्वक निकाला जा सकता है। मूल्य २) दो रुपये।

बहीखाता—हिसाब-किताब रखने का उत्तम से उत्तम ढंग। मूल्य ।।-) नौ आने।

भारतीय चित्रकला-पद्धति—कलात्मक चित्र, कार्टून आदि बनाने की आसान विधि। मूल्य १) एक रुपया।

स्काउट मास्टरी और ट्रूप संचालन—पुस्तक में स्काउट मास्टरों के लिए बहुत-सी व्यावहारिक बातें बताई गई हैं। इस पुस्तक के अनुसार चलनेवाले स्काउट मास्टर ट्रूप संचालन में निस्सन्देह सफल होंगे। मूल्य १) एक रुपये।

अग्निकांड में सेवा—अग्निकांड में स्काउट लोग किस प्रकार सफलतापूर्वक दूसरों के जीवन और संपत्ति की रक्षा कर सकते हैं यह बात इस पुस्तक में विस्तारपूर्वक लिखी गई है। पुस्तक सचित्र है। मूल्य १) एक रुपया।

स्काउट ड्रिल और खेल—यह पुस्तक अपने ढंग की बिलकुल अकेली है। स्काउटों के लिए जितने प्रकार के भी ड्रिल और खेल आवश्यक हैं, वे सभी इसमें विस्तारपूर्वक बतलाये गये हैं। उनके नियमों तथा उपयोग आदि पर भी समुचित प्रकाश डाला गया है। पुस्तक सचित्र है। मूल्य पहला भाग १) एक रुपया दूसरा भाग २) दो रुपये।

बाल शब्द-सागर—रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास, बी० ए० ने हिन्दी का यह शब्द-कोष विशेष रूप से विद्यार्थियों के उपयोग के लिए बनाया है। किन्तु अपनी व्यावहारिक उपयोगिता के कारण यह सभी के काम आ सकता है। मूल्य २।।≡) दो रुपये ग्यारह आने।

कुछ संस्कृत पुस्तकें

प्रबन्ध प्रकाश—लेखक, मंगलदेव शास्त्री। इस पुस्तक के प्रारम्भ में सरल संस्कृत भाषा में प्रबन्ध रचना सम्बन्धी आवश्यक नियम दिये हैं। इसके पश्चात् उदाहरण-स्वरूप सुप्रसिद्ध प्राचीन तथा आधुनिक विद्वानों के तथा स्वयं ग्रन्थकार के लिखे हुए परीक्षोपयोगी निबन्ध दिये गये हैं। पुस्तक के अन्त में गद्य-पद्यमय सुभाषित तथा लोकन्याय दिये गये हैं। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

संस्कृत गद्य रत्नावली—पंडित अमरनाथ झा, वाइसचान्सलर प्रयाग विश्वविद्यालय। यह पुस्तक संस्कृत गद्य की विभिन्न प्रकार की शैलियों का नमूना है। संस्कृत के सभी प्रतिष्ठित ग्रन्थों से अवतरण लिये गये हैं; किन्तु इस बात का ध्यान रखा गया है कि कोई अवतरण कठिन न हो। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मेघदूत—यह महाकवि कालिदास के मेघदूत का बहुत ही उत्तम और उपयोगी संस्करण है। हर एक श्लोक के सामने राजा लक्ष्मणसिंह का किया हुआ पद्यानुवाद दिया गया है। गद्य में बहुत ही सरल और विस्तृत अर्थ भी दिया गया है। पाद टिप्पणियों में संस्कृत के कठिन शब्दों के समास, विग्रह तथा प्रतिशब्द आदि भी दिये गये हैं। मूल्य ।।।-) तेरह आने।

पंचतंत्र—संस्कृत में यह पुस्तक बहुत ही प्रसिद्ध है। इसके सुन्दर संस्करण का अभाव देखकर हमने इसे प्रकाशित किया है। आवश्यक टिप्पणियाँ देने के बाद अन्त में हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित किया गया है। मूल्य ।।≡) ग्यारह आने।

संक्षिप्त वाल्मीकीय रामायण—स्वर्गीय रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा संपादित आदि कवि वाल्मीकि मुनि प्रणीत वाल्मीकीय रामायण संस्कृत में बहुत बड़ी पुस्तक है। श्री रवीन्द्रनाथ जी ने इसे संक्षिप्त किया है। किन्तु पुस्तक का क्रम कहीं भी टूटने नहीं पाया है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

कादम्बरी—सम्पादक स्वर्गीय महामहोपाध्याय पंडित गंगानाथ झा और पंडित काशीराम एम० ए०। बाणभट्ट की कादम्बरी संस्कृत में बेजोड़ पुस्तक है। परन्तु यह ग्रन्थ इतना बड़ा है कि इस युग के लोगों के लिए कठिन भी हो गया है। इस कठिनाई को हटाने के लिए इसका यह संक्षिप्त संस्करण निकाला गया है। मूल्य १) एक रुपया।

संक्षिप्त बिहारी—महाकवि बिहारी के दोहों का यह बहुत अच्छा संस्करण है। बिहारी की सतसई में जितने अधिक अश्लील दोहे थे, वे छाँटकर इसमें से निकाल दिये गये हैं। मूल्य २) दो रुपये।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

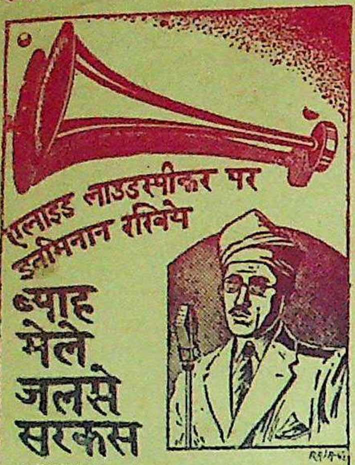

ब्याह
मेले
जलसे
सरकस
तथा
हर मौके पर इस्तेमाल कीजिये

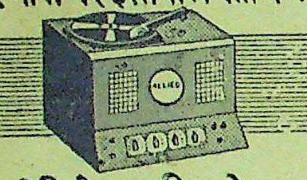

ख़रीदिये या किराये पर
लीजिये

एलाइड एलेक्ट्रिक एण्ड
रेडियो कारपोरेशन
हज़रतगंज लखनऊ
कैनिंग रोड एलाहाबाद

थोड़ी प्रतियाँ बची हैं। शीघ्रता कीजिए

वार्षिक बालसखा १९४७

इसकी छपाई कई रंगों में हुई है। चित्रों की भरमार है। लेख, कविताएँ और कहानियाँ अनुपम हैं। जिल्द सजीली, आकर्षक और बालकों के पसन्द की है। ऐसा कौन बालक होगा जो इस अंक को पाकर आदि से अन्त तक पढ़े बिना शान्त रहे। ३०० पृष्ठों क इस अंक का मूल्य ३)। मासिक ग्राहकों को रियायती मूल्य २॥) शीघ्रता कीजिए।

मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

जुकाम सर्दी पर अकसीर उपा

आरोद
१८६६
नीलगिरि तै

मो. खांडालेकर बंधु बम्बई

बचत भिन्न भिन्न काल में
③ भारी सम्पत्ति

अदल-बदल के व्यापार की बजाय सांकेतिक द्रव्य अर्थात् बकरी आदि देकर माल-खरीदने का व्यवहार वस्तुओं के अदल-बदल करने के विषय में मनुष्य की उन्नति की ओर एक बड़ा महत्व पूर्ण पग था। परन्तु बकरी रूपी द्रव्य सर्व प्रिय न था। सब बकरियां एक जैसी नहीं होती थीं। दुर्बल और रोगी बकरियों के बदले में माल ख़रीदना शीघ्र ही एक समस्या बन गई। रोग, व्याधि इस सम्पत्ति को प्रायः नष्ट कर देते थे। व्यापार के नवीन विस्तार ने मनुष्य को, जो स्वभाव से ही काल्पनिक है, कोई श्रेष्ठतर द्रव्य खोज निकालने पर विवश कर दिया। उस की दृष्टि धातुओं पर पड़ी। धातु नष्ट न होने वाली और निश्चय से एक समान रहने वाली द्रव्य थी। अब से सब व्यापारिक व्यवहार लोहे, तांबे या सीसा आदि की सलाखों या उनके ढले हुये डलों द्वारा होने लगा।

अपनी दैनिक ख़रीदारी के लिये मनुष्य को किसी न किसी धातु की भारी सलाख या डले को लिये लिये फिरना पड़ता था। इसी कारण भविष्य के लिये बचत करने की इच्छा से लोग धातुओं का संग्रह करने लगे। वास्तव में धनाढ्य अपने धन के भार से दबे हुये थे! कच्ची धातुओं की खानों में खोज की तीव्रता के साथ साथ रुपये का मूल्य गिर जाता था, और नफ़ाख़ोर शुद्ध धातुओं को दूषित कर देते थे।

आज कल माल के खरीदने में या बचत करने में विशेष असुविधा नहीं होती। बुद्धिमान खर्च करने की बजाय भविष्य के लिये बचाना अच्छा समझता है और वह अपनी बचत को बुद्धिमत्ता पूर्वक सुरक्षित मद में लगाता है। नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स की मद में लगाया हुआ धन पूर्णतया सुरक्षित है और अवधि पूरी होने पर इस का मूल्य ५०% बढ़ जाता है—अर्थात् १०) बारह वर्ष में १५) बन जाते हैं। इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता। आप अब ५) से १५,०००) तक की मालियत के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं। जिन की बचत थोड़ी हो, वे।), ॥) और १) के नेशनल सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं।

भविष्य के लिये बचाइए

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए

रुपया लगाने की सर्व-प्रिय मद

ये डाकख़ानों, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजन्टों और सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त किये जा सकते हैं।

घर की स्त्रियाँ

निकोटा
पारिवारिक टूथ पेस्ट का
व्यवहार करता है!

क्योंकि निकोटा दांतों को सफेद और सुन्दर रखता है जिससे स्त्रियां युवा दिखती हैं। यह सबसे अधिक 'किफायती' और समस्त परिवार के लिये प्रथम श्रेणी का टूथ पेस्ट है।

लगभग सभी जगह एक रुपये से कम में मिलता है।

- ★ स्वादिष्ट
- ★ स्फूर्तिप्रद
- ★ कीटाणुनाशक.

एक सुन्दर लाल बक्स में सभी केमिस्ट व व्यापारियों के यहाँ मिलता है।

पारिवारिक
टूथ पेस्ट

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र नि

वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

विवार, १८ जनवरी, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 18th January. 1948

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

पेशावर में मेरे तीन महीने
धर्म और राजनीति को अलग करो

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

यूनान में आज का गृहयुद्ध क्यों ?
कन्ट्रोल का अस्तित्व समाप्त हो।

५००) नकद इनाम

जवाँमर्द चूर्ण से सब प्रकार की सुस्ती, दिमागी कमजोरी, स्वप्नदोष, धातु विकार तथा नामर्दी दूर होकर शरीर हृष्ट-पुष्ट बनता है। मूल्य ३॥) मय डाकखर्च। बेकार साबित करने पर ५००) इनाम।

श्याम फार्मेसी (रजिस्टर्ड) अलीगढ़।

मुकाम सर्दीपर अकसीर उपाय

आरोशेल

१८६६

नीलगिरि तैल

[illegible]

पी. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

शारीरिक उष्णता
के लिये
मशहूर अनुभूत इलाज

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काजा

आज से ही शुरू कीजिए

पर्ल कंपनी, राणीबाग, बम्बई २७

यू० पी० प्रतिनिधि दोसर एण्ड कम्पनी, बिरहना रोड, कानपुर।

दाद, खुजली
और
हरेक मेलका चमड़ीका दर्दोंके लीए

गत ५० वर्षों से
जग-विख्यात
कपड़े खराब नहीं करती
नकालों से सावधान

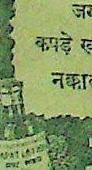

रापट लोशन

रापट एन्ड कुंली.
मुंबई, २.

B.D.C.182

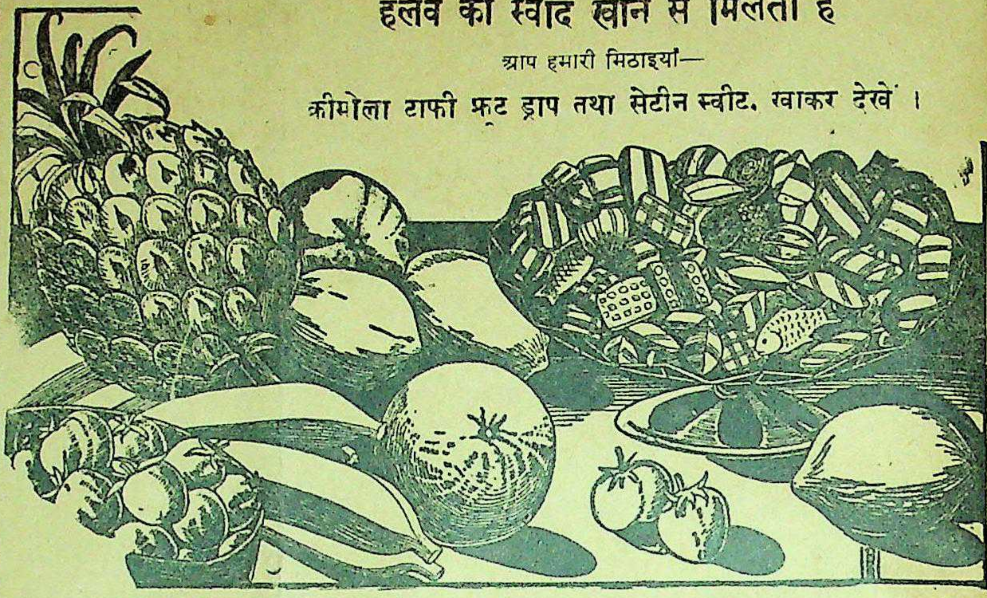

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट. खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

आज भारत स्वतंत्र है

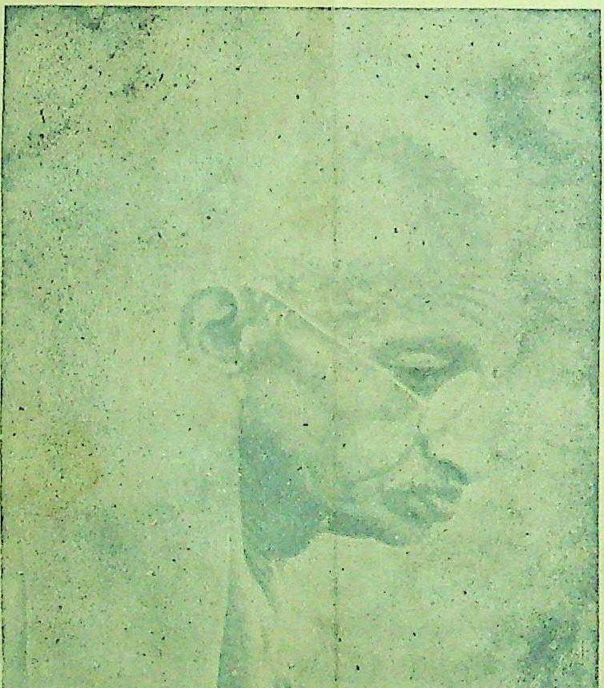

यह स्वतंत्रता राष्ट्र-पिता महात्मा गांधीजी की ही देन है

अतः

गान्धी-गौरव-गान के लिए

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ

और

सेवाग्राम

अपने प्रिय मित्रों को उपहार में दीजिए।

गान्धी-अभिनन्दन-ग्रन्थ में गान्धीजी के संबंध में आज तक लिखी हुई सभी श्रेष्ठ कविताएं संगृहीत हैं। ऐसा ग्रन्थ किसी भी दूसरी भाषा में नहीं प्रकाशित हुआ! मूल्य ७॥)

× × ×

सेवाग्राम में राष्ट्रीय चेतना को काव्य का सच्चा स्वरूप देनेवाले कवि श्री सोहनलाल जी द्विवेदी की कविताएँ बड़ी सज-धज के साथ प्रकाशित की गई हैं।

ये रचनाएँ देश के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक प्रेम से पढ़ी जाती हैं।

मूल्य १०)

युक्तप्रान्त के शिक्षा-सदस्य जी की सम्मति—

"सेवाग्राम का प्रकाशन सुन्दर हुआ है। आप जैसे लब्धप्रतिष्ठ कवि की रचनाओं के सम्बन्ध में कुछ कहना मेरा दुस्साहस-मात्र है। हाँ, मैं इतना कह सकता हूँ कि रचनाएँ मुझे बहुत अच्छी लगीं।

—सम्पूर्णानन्द"

अपनी प्रतियाँ निकट के पुस्तक-विक्रेता से माँगिए, न मिलें तो इस पते से मँगाइए।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

हिन्दुस्तान

वर्ष १०, संख्या २०] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, १८ जनवरी, १९४

विश्ववंद्य महात्मा गांधी ने १५वाँ उपवास प्रारम्भ कर दिया

साम्प्रदायिक सद्भावना की स्थापना तथा हिन्दू-मुसलिम एकता के लिये

महात्मा गांधी ने १३ जनवरी ११ बजे दिन में हिन्दू-मुस्लिम-एकता के लिए अनिश्चित काल तक के लिए अपना अनशन प्रारम्भ कर दिया।

आपने अपना जल-पान साधारण समय से एक घंटे बाद किया था, जिसमें आपने बकरी का दूध, उबाली हुई तरकारी और कुछ फल का रस लिया था। अनशन शुरू करने के पहले आपने नित्य क्रिया की। तड़के उठे, प्रार्थना की, टहलने गए और वहां से आकर स्नान किया। कुछ महत्त्वपूर्ण कागज-पत्र देखे और कुछ लोगों से मिले भी।

महात्मा जी से बहुत सुबह मिलने वालों में थे—श्री जयरामदास दौलतराम जी (जो हाल ही में बिहार गवर्नर के पद से हटे हैं), डा० जीवराज मेहता और मौलाना अबुल कलाम आजाद।

दिन के ९॥ बजे भारत के उपप्रधान मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने महात्मा गांधी से भेंट की। उस समय महात्मा जी के पास बैठे हुए सब आदमियों से हट जाने के लिए कहा गया। इसके बाद बिड़ला-भवन के घास के मैदान पर गांधी जी और सरदार पटेल की बातें शुरू हुईं, जो पौन घंटे तक होती रहीं। गांधी जी एक खाट पर लेटे थे।

कुछ देर बाद मौलाना अहमद सईद, मौ० हिफाजुर्रहमान और श्री रफी अहमद किदवई गांधी जी से भेंट करने के लिए गए और कुछ मिनट उनके पास रहे।

कुछ स्त्रियों ने भी गांधी जी से भेंट की, और उन्होंने उनसे बहुत प्रार्थना की कि आप उपवास न करें।

महात्मा गांधी का यह १५वां उपवास है। उपवास आरम्भ होने के पूर्व घास के मैदान पर पहले ईश-प्रार्थना हुई। सभी सम्प्रदायों के लोग गांधी जी की खाट के पास आकर जमा हो गये। ईसा मसीह के सम्बन्ध का पहले यह गान हुआ—मैं जब उस आश्चर्य-जनक सलीब की ओर खता हूँ जिस पर विभूति का युवराज रा था।" इसके बाद कुरान, ग्रंथ साहब और हिन्दू धर्मशास्त्रों से गाने हुए। कुछ ड़कियों ने गांधी जी का यह प्यारा भजन गाया—"वैष्णवजन तो तेने कहिए जे पीर परायी जाने रे।" इसके बाद सबने एक साथ मिलकर श्री रामचन्द्र जी की प्रशंसा में गान गाया।

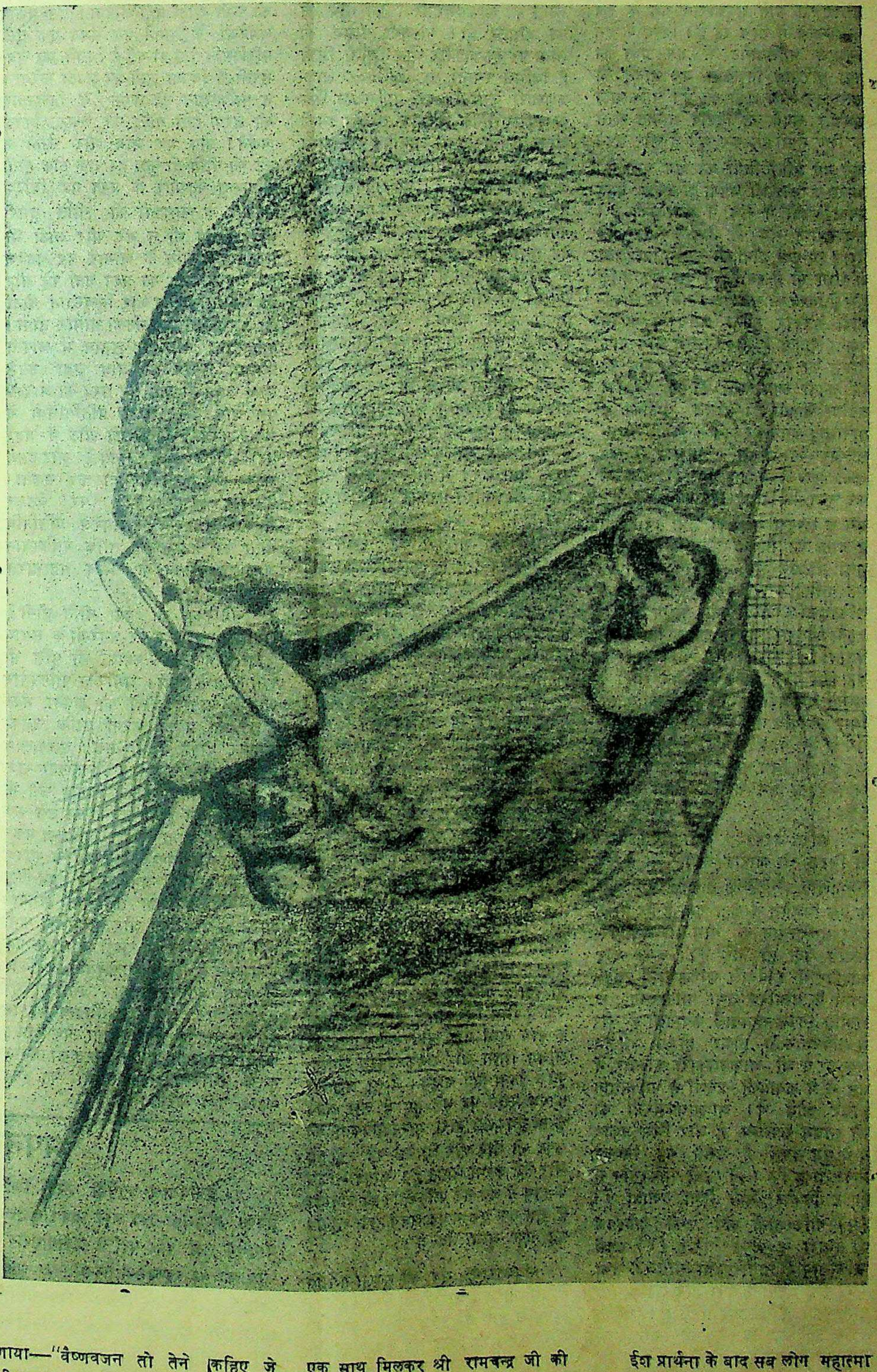

ईश प्रार्थना के बाद सब लोग महात्मा जी को प्रणाम करके चले गए।

सम्पादक का पृष्ठ

संयुक्तराष्ट्र संघ और काश्मीर का प्रश्न

संयुक्तराष्ट्र संघ में काश्मीर-सम्बन्धित भारत-सरकार ने पाकिस्तान के विरुद्ध जो आरोप किया है उस पर आज देश के सभी लोगों की दृष्टि लगी हुई है। सुरक्षा कौंसिल में यह प्रश्न इस समय चल रहा है। विचारशील मनुष्य नाना प्रकार की बातें संयुक्तराष्ट्र-संघ के रुख के सम्बन्ध में सोच रहे हैं। विश्व के इस विशाल पार्लियामेंट में इस प्रश्न का क्या परिणाम निकलेगा यह जानने की उत्सुकता आज सभी को है। पाकिस्तान सरकार अपने को निर्दोष साबित करने के लिए तैयारियां कर रही है और अपने चुने हुए प्रतिनिधियों को भेज चुकी है। भारत-सरकार भी अपना दृष्टिकोण बहुत स्पष्ट शब्दों में संघ में रख चुकी है। संयुक्तराष्ट्र संघ की पिछली रवैया को देखते हुए कुछ लोगों को उसकी निष्पक्षता में शंका भी है क्योंकि वे देख चुके हैं कि संघ में विश्व की कुछ शक्तिशाली साम्राज्यवादी सरकार अपना आधिपत्य कायम रखना चाहती है और पिछली लीग आफ नेशन्स की तरह वे संयुक्तराष्ट्र संघ को भी अपनी स्वार्थसिद्धि का एक अखाड़ा बनाना चाहती है। दक्षिण अफ्रीका के तानाशाह जनरल स्मट्स के विरुद्ध भारत-सरकार की उचित मांगों का अनादर अभी कुछ दिन पहले संयुक्तराष्ट्र संघ कर चुका है। आज भारत का दूसरा प्रश्न संघ के सम्मुख आ खड़ा हुआ है। देखना ह न्याय की विजय होती है या उसका गला घोंटकर संघ न्यायप्रिय राष्ट्रों को यह चुनौती देता है कि या तो उन्हें कुछ शक्तिशाली राष्ट्रों का गुलाम बनकर रहना है या अपना स्वतन्त्र पथ कायम करना है। भारत और पाकिस्तान का यह प्रश्न आज विश्व के सब राष्ट्रों के सम्मुख एक बड़ी चुनौती है जिसका न्यायोचित हल यदि नहीं हुआ तो संयुक्तराष्ट्र संघ के मुंह में सदैव के लिये ऐसी कालिख लग जायगी जिसे धोकर पाक साफ बनकर खड़ा रहना संघ के लिए बड़ा मुश्किल होगा।

भारत-सरकार द्वारा पाकिस्तान के विरुद्ध जो आरोप लगाये गये हैं उन्हें जान लेना आवश्यक है। भारत-सरकार के एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि भारत और पाकिस्तान के बीच भी वर्ण-परिस्थिति पैदा हो गई है। जम्मू और काश्मीर में होनेवाले आक्रमणों में पाकिस्तान के नागरिक तथा पाकिस्तान के अत्यन्त निकट रहनेवाले कबायली हैं और वे पाकिस्तान से होकर ही आ रहे हैं। अक्टूबर में जो आक्रमणकारी काश्मीर में घुसे थे वे कबायली प्रदेशों से पाकिस्तान होकर आये थे। आक्रमणकारियों को जो साधन उपलब्ध हैं और जिस प्रकार से वे युद्ध करते हैं उससे यह निष्कर्ष निकलता ह कि (१) उन्हें पाकिस्तान से होकर निकल आने दिया जाता है। (२) पाकिस्तानी क्षेत्र उनके आक्रमण की तयारी के अड्डे बने ह (३) उनमें पाकिस्तान के नागरिक भी शामिल हैं तथा (४) उन्हें शस्त्रास्त्र तथा अन्य युद्ध-सामग्री पाकिस्तान से उपलब्ध होती है। पाकिस्तान की सेना के अफसर उन्हें शिक्षा तथा सलाह-मशविरा देते हैं। इस प्रकार पाकिस्तान की इन हरकतों से अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति तथा सुरक्षा के लिए खतरा उपस्थित हो गया है। वक्तव्य में यह भी बतलाया गया है कि आक्रमणकारियों को बारामूला से ऊरी खदेड़ दिया गया है और भारतीय सेनाएँ उन्हें यहीं पर रोके हैं। इस क्षेत्र में लगभग १९८०८ आक्रमणकारी संघ की सेनाओं का सामना कर रहे हैं। वे लूटपाट, आगजनी और औरतों को भगा रहे हैं। लूट का सामान काबायली क्षेत्रों में ले जाया जा रहा है ताकि अन्य लोगों को आक्रमणकारियों का साथ देने का हौसला हो। पश्चिमी पंजाब की सीमा पर जो काश्मीर और जम्मू से मिली है विभिन्न स्थानों पर ७०८००८ आक्रमणकारी जमा हैं। इन्हें पाकिस्तान सेना के अफसर सैनिक शिक्षा दे रहे हैं। इनको खाना, कपड़ा तथा आधुनिक शस्त्रास्त्र देने का भार पाकिस्तान सरकार ने अपने ऊपर लिया है। इस विषम परिस्थिति को देखते हुए वक्तव्य में यह बतलाया गया है कि आक्रमणकारियों को निकाल देने तथा फिर काश्मीर में न आने देने के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए भारत की सेनाओं को पाकिस्तान में घुसने के लिए विवश होना पड़ेगा। यही एकमात्र उपाय है जिससे आक्रमणकारी पाकिस्तान के अड्डों का उपयोग न कर सकेंगे और उनकी रसद की लाइन भी कट जायेगी। अन्तर्राष्ट्रीय नियम के अनुसार भारत की सेनाओं को यह हक है कि वे पाकिस्तान में घुसें और आक्रमणकारियों से निबटें परन्तु ऐसा करने में पाकिस्तान से संघर्ष होता जो भारत-सरकार को अभीष्ट नहीं है।

उपरोक्त आरोपों को देखते हुए यह बात स्पष्ट है कि काश्मीर की लड़ाई में पाकिस्तान की सरकार भारत के साथ एक छिपी लड़ाई लड़ रही है। यही कारण है कि आज काश्मीर की लड़ाई दिन पर दिन जोर पकड़ती चली जा रही है। भारत-सरकार के पास इतनी शक्ति है कि लुटेरों को चन्द दिनों में परस्त कर देती। परन्तु अभी तक वह नहीं कर सकी है इसका कारण पाकिस्तान की सहायता ही है। अन्तर्राष्ट्रीय नियमों के अन्दर पाकिस्तान में भारत की फौजें घुसकर कबीलों के अड्डों पर हमला कर सकती थीं परन्तु भारत-सरकार का उद्देश्य पाकिस्तान से लड़ाई मोल लेना नहीं है। वह तो उसे बचाना चाहती है। परन्तु पाकिस्तान के कर्णधार लड़ाई करने पर तुले हुए हैं और तेजी के साथ एक न एक ऐसी परिस्थिति वे पैदा किये जा रहे हैं जिनसे समस्या सुलझाने के बदले और उलझती जा रही है और वह दिन समीप आता जा रहा है जिस दिन भारत और पाकिस्तान के बीच खुला संघर्ष होने लगेगा। कायदे आजम जिन्ना और उनके पिट्ठू शान्तिपूर्वक बैठना नहीं चाहते। वे तो अशान्ति कायम रखने पर तुले हुए हैं और अपने पुराने हथकण्डों द्वारा साम्प्रदायिकता की लपट जो धीरे धीरे शिथिल पड़ रही थी और तेज करना चाहते हैं। कायदे आजम के हाथ में जब तक पाकिस्तान की बागडोर है, तब तक एक न एक अनर्थ होता रहेगा। यह एक खुला भेद ह।

संयुक्तराष्ट्र संघ की सुरक्षा-समिति में अभी भारत के आरोपों पर विचार होगा। विश्व के तीन बड़े राष्ट्र ब्रिटेन, अमेरिका और रूस आज विश्व पर अपना आधिपत्य कायम रखना चाहते हैं। इन्हीं के हाथों में संयुक्तराष्ट्र संघ की राजनीति करवटें लिया करती है। भारत द्वारा पेश किये गये काश्मीर के प्रश्न पर इन राष्ट्रों की क्या नीति होगी इसी पर हमें विचार करना है। ब्रिटिश सरकार की कलुषित नीति से ही आज हम भारत में ये बुरे दिन देख रहे हैं। पाकिस्तान और हिन्दुस्तान का झगड़ा बहुत कुछ अँगरेजों की नीति का ही परिणाम है। कायदे आजम जिन्ना ब्रिटिश साम्राज्यवाद के बनाये हुए नेता हैं अतएव अंगरेज पाकिस्तान के विरुद्ध जल्दी कोई नीति अख्तियार नहीं करेंगे। भारत को भी नाराज करना उन्हें अभीष्ट नहीं। तुलनात्मक दृष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों को सामने रखते हुए अंगरेज भारत की सहानुभूति को कभी खोना नहीं चाहेगा। इस प्रकार अंगरेजों के सामने इस समय एक ऐसी परिस्थिति पैदा हो गई है जिससे वह खूबसूरती से निकल जाने का प्रयत्न करेगा। न पाकिस्तान की तरफ न हिन्दुस्तान की तरफ इसी नीति को लेकर अंगरेज चलेंगे। सांप मर जाय और लाठी न टूटे की नीति तो कुछ हद तक ठीक होती है परन्तु काश्मीर के प्रश्न पर ब्रिटिश सरकार के चाणक्यों की नीति दूसरी होगी। सांप भी न मरे और लाठी भी न टूटे इस नीति के आधार पर अंगरेज चलेंगे। काश्मीर का प्रश्न बना रहे और अंगरेज पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों को प्रसन्न रखें यही उनका आधार होगा। पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में आपसी प्रेमभाव कायम हो जाय तथा उनके संघर्ष खतम हो जायँ इस तरह की आदर्शपूर्ण बातें हमें ब्रिटिश प्रतिनिधियों से सुनाई पड़ेंगी। आदर्श की ओट में जहर देना अंगरेज खूब जानते हैं और इसमें उनका कोई मुकाबिला नहीं कर सकता। वेदव्यास की गद्दी पर बैठकर संयुक्तराष्ट्र संघ में अंगरेज प्रतिनिधि गीता का पाठ करेंगे ताकि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच महाभारत कायम रहे।

अमेरिका की क्या नीति होगी? अमेरिका इस प्रश्न पर अंगरेजों के समाथ रहेगा क्योंकि उसके स्वार्थों की पूर्त्ति भी इसी नीति से होगी। अमेरिका पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों को अपना भक्त बनाने का प्रयत्न करेगा ताकि उसका व्यापार दोनों में हो सके। तुलनात्मक दृष्टि से पाकिस्तान एक दिवालिया राष्ट्र है अतएव अमेरिका की निगाह उसे भी खुश करने की होगी ताकि वह उसे कर्ज दे सके और अपना व्यापार वहीं बढ़ा सके। पाकिस्तान आर्थिक कठिनाइयों के कारण बहुत सी बातों में अमेरिका से मदद लेगा जिसे वह अमेरिका से पाता रहेगा। भारत के पास धन और साधन की कमी नहीं परन्तु विश्व के राष्ट्रों में भारत एक ऐसा राष्ट्र है जिसकी सहानुभूति अमेरिका के लिए आवश्यक है। अमेरिका पूरे एशिया पर अपना आधिपत्य कायम रखना चाहता है। एशिया पर भारत का ही रोब होगा अतएव भारत को नाराज करके अमेरिका अपने स्वार्थों का हनन पसन्द नहीं करेगा।

संयुक्त राष्ट्रसंघ में भारत का प्रतिनिधि करनेवाले काश्मीर के राष्ट्रवादी नेता शे अब्दुल्ला।

रूस ने दक्षिण अफ्रीका के में भारत का साथ दिया था। परन्तु परिस्थिति दूसरी थी। पाकिस्तान प्रश्न पर रूस क्या रुख लेगा यह पहेली-सा दिखाई पड़ता है। भारत साथ खुले तौर पर रूस शायद पाकिस्त के मामले में न आ सकेगा यद्यपि उस सहानुभूति भारत के साथ होगी। पा स्तान एक मुस्लिम राष्ट्र है योरप वर्त्तमान परिस्थिति को देखते हुए मुसलमानी राष्ट्रों की सहानुभूति चाहता है। रूस में स्वयं मुसलमा की आवादी काफी है। फिलस्तीन अरब का मामला भी उसके सामने अभी तक मुसलमानी राष्ट्रों पर अंग हावी हैं। रूस की नीति अंगरेजों को कर अपना प्रभुत्व कायम करना

इस दृष्टि को सामने रखते हुए रूस सामने काश्मीर के प्रश्न पर एक अ उलझन होगी।

इन परिस्थितियों को दे हुए संयुक्तराष्ट्र संघ से हमें तो आशा नहीं दीखती। इससे तो अ था कि यह प्रश्न ही वहां नहीं जाता अगर जाता भी तो पाकिस्तान के द्वार संयुक्तराष्ट्र संघ आजकल गंदी राजनी का अखाड़ा बन रहा है। अतएव वहां न्या का यदि गला घोंट दिया जाय तो इ आश्चर्य न होगा। भारत को वास्तव अपनी शक्ति पर निर्भर रहना है पाकिस्तान अपनी हरकतों से बाज नहीं आयेगा। उसे हमें परास्त करना है संयुक्तराष्ट्र संघ इत्यादि संस्थाएं आदर्श की ओड में ताण्डवनृत्य तैयारी में संलग्न हैं जिसके फलस्व विश्व में महाप्रलय आनेवाला भारत को अपनी शक्ति से अपने भ को तय करने के साथ-साथ विश्व के भ महाप्रलय को भी बचाने का प्रयत् करना है।

अपना-पराया

पं० देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' लिखित इस मनोरंजक उपन्यास में एक ची तरुणी का मेनका-नृत्य जहाँ आपको आत्म-विभोर कर देगा, वहीं तिब्बत और चीन नैसर्गिक छटा और वहाँ के अजीबोग़रीब रस्म-रिवाज भी आपके सामने नाच उठें चीन की यह रहस्यमयी तरुणी किस प्रकार भारत आती और अपने धर्म तथा स्वदे भिमान की रक्षा कर, एक भारतीय नौसैनिक की सहायता से अपने देश लौट जाती आदि प्रसंग आपको प्रणय की रंगीनियों का सजीव परिचय देंगे। पृष्ठ २३२, सजि और नयनाभिराम दुरंगा आवरण, मूल्य २॥) रुपये।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

यूनान का आज का गृह-युद्ध क्यों?

राष्ट्र को गुरिल्ला-युद्ध की सीमा से पार होकर महायुद्ध का सामना न करना पड़े?

लेखक, श्री चन्द्रोदय दीक्षित

यूनान में आज गृह-युद्ध पनप रहा है। साम्राज्यवादी राष्ट्रों का स्वार्थ सीमा के परे पहुँच रहा है। जनता राष्ट्र के विभाजन और विदेशियों की गुलामी का विरोध ही नहीं कर रही है, वरन् अपनी अलग सरकार भी बना ली है। जनता गुरिल्ला-युद्ध के द्वारा राष्ट्रीयता की रक्षा कर रही है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने यूनान की वर्तमान राजनीति का सुन्दर वर्णन किया है, जो पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

फिलिस्तीन की स्वतंत्रता के क्रांतिकारी नेता ग्रांड मुफ्ती।

यूनान का आन्तरिक संकट अभी तक अपनी गम्भीर स्थिति से निकल नहीं पाया है। द्वितीय महायुद्ध के अन्तिम प्रहर में ही इस संकट का सूत्रपात हो गया था। नाजियों के हाथों से स्वतंत्र होने के समय यूनान में दो विरोधी शक्तियां राज्य पर अधिकार करने के लिए व्यग्र थीं। मित्रराष्ट्रों के पारस्परिक समझौते में यूनान ब्रिटेन का प्रभाव-क्षेत्र मान लिया गया था और ब्रिटेन ने अपनी सैनिक शक्ति के प्रयोग से यूनान के युद्धपूर्व स्थिति को स्थापित करने का सफल प्रयत्न किया। यूनान की स्थिति उस समय से निरन्तर गृह-युद्ध की स्थिति है। एक ओर वहां के निहित स्वार्थवाले वर्ग देश में पुनः राजतंत्र स्थापित करके उसी समाज को लादने का प्रयत्न कर रहे हैं, जिससे वहां का शोषित वर्ग मुक्ति पाना चाहता है और दूसरी ओर यूनान की वे प्रजातांत्रिक शक्तियां है जो द्वितीय महायुद्ध से जागृत होकर अपने अधिकारों की रक्षा के लिए कटिबद्ध हैं। इसमें सन्देह नहीं कि इन शक्तियों के एक अच्छे अंश पर कम्युनिस्टों का प्रभाव है लेकिन केवल कम्युनिस्टों के प्रभाव से ही हम वहां की प्रजातांत्रिक शक्तियों के विरुद्ध हो जायँ, यह उचित नहीं है। हमें निष्पक्ष रूप से स्थिति को समझने का प्रयत्न करना चाहिए।

यूनान के सम्बन्ध में हमारे सम्मुख तीन विचार हैं। पहले हम ब्रिटेन और अमरीका के दृष्टिकोणों को संक्षेप में रखेंगे और बाद में वहां की वस्तुस्थिति पर प्रकाश डालते हुए कम्युनिस्टों के दृष्टिकोण को उपस्थित करेंगे।

ब्रिटेन का दृष्टिकोण

यूनान-सम्बन्धी ब्रिटिश नीति में अनुदारदल और मजदूरदल में कोई अन्तर नहीं है। मौलिक रूप से दोनों एक ही हैं। इस सम्बन्ध में हम यदि एक बात को ध्यान में रख लें तो समस्या को सरलता से ही समझ सकेंगे। यूनान योरोप और एशिया दोनों महाद्वीपों की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण देश है और इस देश पर अपना भाव रखना प्रत्येक शक्तिशाली देश की आन्तरिक इच्छा हो जाती है। ब्रिटेन भी यूनान के पीछे इसीलिए परेशान है कि यहां से एक ओर बाल्कन देशों का रास्ता है, काले सागर की ड्योढ़ी है और एशिया माइनर और टर्की ही क्या भूमध्य-सागर के एक छोर के लिए सामरिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्व का देश है। यूनान में इसके साथ ही ब्रिटिश पूंजी और हित भी ही जिसे वह 'परोपकारक' ही तो नहीं छोड़ देना चाहेगा। यही कारण है कि मजदूर-दल की सरकार ने सर वाल्टर सिटराईन ऐसे मजदूर-नेताओं की सिफारिशों को भी पूर्णतः कार्यान्वित न होने दिया। ब्रिटेन ने दिखाने के लिए यूनान में प्रजातांत्रिक व्यवहार को अपनाया। उस प्रजातांत्रिक व्यवहार का यह फल हुआ कि वहां की जनता के जनमत से ही वहां राजतंत्र की स्थापना हो गई। राजा जार्ज को पुनः गद्दी पर बैठा दिया गया। इसके बाद राजतंत्र को वहां की प्रजातांत्रिक संस्थाओं के दमन की पूरी स्वच्छन्दता मिल गई। वहां मजदूर संघों को भी मिटा दिया गया है। मजदूर सरकार अपनी विदेशी नीति में दूसरे देश की मजदूर संस्थाओं को नष्ट करने में पूरा योग दे इसे असंगति कहने को बाध्य होना पड़ता है।

अमरीका का रुख

ब्रिटेन के दिवालिया होने पर उसने घोषणा की कि वह यूनान की शान्ति की सुरक्षा का भार नहीं ले सकता और यदि समय से ही अमरीका ने उस भार को स्वीकार नहीं किया तो ब्रिटेन वहां से अपना डेरा-तम्बू उखाड़ लेगा। यूनान की गुरिल्ला शक्तियों के भय से राजतंत्र अपने शासन को सुरक्षित नहीं समझता है। अमरीका इस अवसर को इस प्रकार कैसे जाने दे सकता था उसने यूनान में शासन-व्यवस्था और शान्ति-रक्षा के लिए सहायता करने का पूरा भार अपने ऊपर ले लिया। अमरीका के वैदेशिक विभाग के श्री हेन्डरसन ने इस सम्बन्ध में कुछ प्रकाश डाला है। आपने यूनान की सहायता के लिये एक योजना भी तैयार कर डाली, साथ ही संयुक्तराष्ट्र-संघ में अमरीकी कूटनीति ने अपने पक्ष के समर्थन के लिए काफी तैयारियां कर लीं।

अमरीका की ओर से जो यूनान के सम्बन्ध में अध्ययन किया गया है उसमें स्पष्टतः यह स्वीकार किया गया है कि यूनान से उदारवाद अथवा प्रजातंत्र समाप्त हो रहा है। एक ओर वहां की अधिकतर जनता अति दक्षिणपक्षीय नीति की ओर आकर्षित होती जा रही है और दूसरी ओर कुछ लोग अतिवामपक्षीय तानाशाही की ओर झुकते जा रहे हैं और इन्हीं दो विरोधी उग्र नीतियों के संघर्ष के फलस्वरूप यूनान में शान्ति नहीं हो पा रही है। उसमें यह भी स्वीकार किया गया है कि यूनान की जनता दो भागों में तेजी से विभाजित होती जा रही है एक ओर अल्पसंख्यक निहित स्वार्थवाले व्यक्ति हैं और दूसरी ओर शोषित जनता। फिर भी यह आशा प्रकट की गई है कि उदारवाद की सभी सम्भावनाएँ नष्ट हो गई हैं। दोनों विरोधी पक्षों में और बीच में ऐसे लोगों की संख्या काफी है जो वास्तव में यूनान को स्वतंत्र देशों के रूप में संगठित करना चाहते हैं। साथ ही यह भी बतलाया गया है कि यह कहना निराधार है कि यूनान के सभी मजदूर कम्युनिस्टों के प्रभाव में हैं। मजदूरों की अधिकतर संख्या यूनान में राष्ट्रीय स्वतंत्रता स्थापित करने के पक्ष में है। आखिर राष्ट्रीय स्वतंत्रता की जो बात अमरीका की ओर से की जा रही है उसे भी साफ होना चाहिए। हमें तो मूल में एक ही बात दिखलाई देती है कि यूनान किसी भी रूप में हो, अमरीका के प्रभाव में ही रहे यही अमरीका की नीति है। आज तो उसने अब यूनान में शान्ति स्थापित रखने के लिए तथा उसके पड़ोसी राष्ट्रों से रक्षा करने के लिए शक्ति प्रयोग करने की घोषणा कर दी है। अमरीका की ओर यह स्पष्ट तौर से यूनान द्वारा लगाये गये आरोपों को सत्य प्रमाणित करने का प्रयत्न किया गया है। उक्त आरोपों द्वारा यूनान ने अल्बानिया, युगोस्लेविया, बल्गेरिया आदि पर यह दोषारोपण किया था कि यह राष्ट्र यूनान में आन्तरिक अशान्ति बनाये रखने के लिए गुरिल्ला शक्तियों को हर तरह से सहायता देते हैं। उक्त राष्ट्रों ने इसका विरोध भी किया था परन्तु अमरीका के विदेशी विभाग ने यूनान सरकार के कथन को ही प्रमाणित मान लिया है।

अरब-लीग के प्रधान मंत्री श्री अब्दुल रहमान आजम पाशा, फिलिस्तीन के राजनैतिक प्रधान मोशेशेरटोक से हाथ मिला रहे हैं।

कम्युनिस्ट दृष्टिकोण

द्वितीय महायुद्ध के उपरान्त यद्यपि रूस ने यूनान पर ब्रिटेन के प्रभाव को स्वीकार कर लिया था और वहां उसने किसी प्रकार का कोई हस्तक्षेप नहीं किया। परन्तु यूनान के सभी पड़ोसी देशों में हिटलर के शासन के अन्त हो जाने पर जनता ने राज्य-शासन पर अधिकार कर लिया और वे अपने भाग्य-निर्णय के अधिकार को स्वयं निमंत्रित करने लगीं। इस बात का प्रभाव यूनान पर न पड़ता—यह हो सकना दुष्कर था। अन्य देशों की भांति द्वितीय महायुद्ध के अन्त में मित्रराष्ट्रों ने वहां के जनान्दोलन को सशस्त्र करके नाजी शासन का अन्त करने में उनका सहयोग लिया। जागृत जनता जब अपने बलिदान से किसी वस्तु को प्राप्त करती है तो यह उसका अधिकार हो जाता है कि वह उस पर अधिकार भी कर ले। यूनान में युद्धोपरान्त काल में दो भिन्न शक्तियों का संघर्ष हुआ और जैसा कि हम ऊपर कह चुके हैं, ब्रिटेन की संगीनों के बल पर यूनान में पुनः राजतंत्र की स्थापना हो गई। आज स्थिति कुछ आगे बढ़ चुकी है। अन्तर्राष्ट्रीय गुटबन्दियों के कारण यूनान में रूस का कोई हित नहीं है—कहना गलत होगा। आज तो समस्त पूर्वी योरोप में केवल यूनान ही ऐसा देश है जिस पर डालर का साम्राज्य है अन्यथा सभी देशों पर रूस का ही प्रभाव है। पूर्वी योरोप में रूस के अधिनायकत्व में जिन संस्थाओं का संगठन हो रहा ह वे नाम से प्रजातंत्र होते हुए भी ऐसी प्रजातांत्रिक संस्थाएँ नहीं हैं जो जनगण के विश्वास को जीत सकें। प्रजातंत्र और वैयक्तिक स्वतंत्रता असंगति नहीं है। दोनों का समावेश आवश्यक है; अतः यह भी प्रमुख कारण हो जाता है कि रूसी प्रभाव की संस्थाओं के सम्बन्ध में लोग विरोधी प्रचार करते हैं।

यूनान की वर्तमान स्थिति

राजतंत्र की स्थापना के बाद यूनान में प्रतिक्रियावादी शासन और अधिक दक्षिणपक्षीय हो गया। निर्वाचन के दिनों में मजदूर संस्थाओं को जो सुविधाएँ दी गई थीं वे सब समाप्त कर दी गईं। यूनान में चलनेवाले राजद्रोहात्मक मुकदमों की संख्या पहले से कितनी अधिक बढ़ कई है इसका अनुमान लगाना सरल नहीं है। आज श्रीमती मैरिया स्वलास की गणना के अनुसार ५० हजार व्यक्तियों से अधिक लोगों को देश से निकाल दिया गया है। यूनान की सभी जेलें राजनैतिक बन्दियों से भरी हुई हैं। कुछ समय पूर्व बेविन की घोषणा के अनुसार यह संख्या १६ हजार थी। यूनान में कैदियों को और निर्वासित

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

पेशावर में तीन मास कैसे बीते?

मुस्लिम लीगी मंत्रिमंडल और काश्मीर पर आक्रमण

लेखक, श्री करमचन्द खन्ना

पाकिस्तान का शासन-सूत्र किस प्रकार संचालित हो रहा है? सीमाप्रांत के पठानों में साम्प्रदायिकता किस प्रकार कूट-कूटकर भरी गई है, अल्पसंख्यकों के प्रति लीगी सरकार किस प्रकार की उपेक्षा कर रही है, इसका जीता जागता और अनुभूतिपूर्ण संस्मरण इसमें प्रगट किया गया है। लेखक स्वयं डाक्टर खान साहब के जल्मे पख्तून का एक सदस्य, कांग्रेसी विचारों का युवक तथा राष्ट्रवादी है। लेख में सीमाप्रांत तथा लीगी साम्प्रदायिकता का सुंदर भंडाफोड़ हुआ है जो सामयिक और पठनीय है।

जीवन के ३६ वर्ष मैंने पेशावर में व्यतीत किये हैं—रोमांचकता से भरे हुए जीवन के ३६ वर्ष। किन्तु मेरे अन्तिम सात दिन उस नगर में चिरस्मरणीय रहेंगे। इस प्रकार के दिनों की कभी मैंने कल्पना भी न की थी। इतिहास इतना शीघ्र, इस भीषण गति से और इस रूप में बदलेगा, इसे कौन कह सकता था?

भारतवर्ष के प्रवेशद्वार, भूतपूर्व प्रहरी का इतिहास १५ अगस्त को नहीं बदला, वह उस दिन बदला जब कि डाक्टर खान साहब का मंत्रमण्डल हटा और उसकी जगह स्थापित हुआ अवसरवादी राजनीतिज्ञ खान अब्दुल कयूम का मंत्रिमंडल। खान अब्दुल कयूम नये मुस्लिम लीगी हैं। लीग ने उनकी देश की गद्दारी के पुरस्कार-स्वरूप प्रान्त का प्रधान मंत्रित्व प्रदान किया है। उन पर इतना अधिक विश्वास किया कि खान औरंगजेब को और उनकी लीग की तमाम सेवाओं को बलाये ताक रख दिया। अतएव जनाब अब्दुल कयूम साहब को अपनी नमकहलाली तो प्रदर्शित करनी ही थी। उन्हें यह दिखाना था कि मुस्लिम लीग ने उदारतापूर्वक उन्हें जो पद दिया है वे उसे उसकी सर्वश्रेष्ठ परिपाटी में निबाहने के पूर्णतः योग्य हैं। यों भी नया मुसलमान दिन में ५ बार नमाज पढ़ता ही है।

कयूम साहब का प्रथम कार्य

मंत्रिपद प्राप्त करने के पश्चात् खान अब्दुल कयूम ने प्रथम कार्य यह किया कि पेशावर के जितने बड़े-बड़े जिरगों के नेता थे सबको बुलाया गया और उनसे कहा गया कि अब तुम लोग खान भाइयों को बिलकुल सहायता न दो, कोई भी व्यक्ति जो खान भाइयों से सहयोग करेगा, उसे मृत्युदंड दिया जायगा। जिरगे के नेताओं से यह भी कहा गया कि अब हिन्दुस्तान के एक हिस्से में, अर्थात् पाकिस्तान में, मुसलमानों की इस्लामी सल्तनत बन चुकी है, अतएव हर एक मुसलमान यहां के हिन्दुओं को अब गुलाम समझ सकता है। इस उपदेश का स्वाभाविक परिणाम हुआ। जिरगों के नेताओं ने अपने सैनिकों को उपदेश दिया और सैनिकों ने इन उपदेशों को कार्यरूप में परिणत किया। दूसरे दिन से हिन्दुओं का सड़क पर चलना मुश्किल हो गया। एक स्थानीय सिनेमा हाल के सम्मुख तीन हिन्दू महिलाओं को अपमानित किया गया। पुलिस यह सब इस प्रकार देखती रही, जैसे उसको इस प्रकार के आचरण का ही आदेश मिला हो। बाद की घटनाएँ हमारे इन संदेहों की पुष्टि करती हैं।

इन घटनाओं से हिन्दुओं ने समझ लिया कि अब सीमाप्रान्त में रहना उनके लिए असम्भव है। एक दिन सेक्रेटेरिएट के एक उच्च मुसलमान अफसर ने तमाम हिन्दू कर्मचारियों को बुलाकर कहा—"आप लोगों ने प्रान्त की आज तक जो सेवायें की हैं उनके लिए हम आपके शुक्रगुजार हैं। किन्तु इस समय स्थिति बदल गई है। हिन्दुस्तान में हिन्दुओं ने मुसलमानों के साथ जो अत्याचार किये हैं, उनकी प्रतिक्रियास्वरूप यहां के मुसलमान काफिरों के खून के प्यासे हो रहे हैं। हम ऐसी हालत में आपकी रक्षा नहीं कर सकते। आप जल्दी से जल्दी सीमाप्रान्त छोड़कर बाहर चले जाइए। लेकिन आप लोग अपने साथ कोई सम्पत्ति नहीं ले जा सकते। जो लोग जाना चाहें वे अपने नाम दे सकते हैं। सरकार आपके जाने का प्रबन्ध करेगी।" इस आश्वासन के फलस्वरूप ४० व्यक्तियों ने हिन्दुस्तान आने के लिए नाम दिया। वे व्यक्ति पेशावर रेलवे स्टेशन गये और हमें बताया गया कि वे भारत पहुँच गये। किन्तु तब से उनका कोई समाचार नहीं मिला। एक राजनीतिक कार्यकर्ता और मुख्यतः शरणार्थी समस्या के साथ विशेष सम्बन्धित होने के नाते मैंने उनका पता लगाने का प्रयत्न किया, किन्तु कुछ ज्ञात नहीं हो सका। हां, कुछ दिनों के पश्चात् उन आदमियों के परिवार की कुछ औरतें—जिनमें नवयुवतियां ही अधिक थीं, पेशावर की सड़कों पर घूमती हुई देखी गईं। वे मुसलमान हो चुकी थीं। मेरे एक मित्र की बहन मुझे एक दिन रास्ते में मिली। जब मैंने जोर से उसका नाम लेकर पुकारा, तो पास पहुँचने पर उसने धीरे से कहा "करम भाई! धीरे बोलो, मेरा नाम गुलजार है।"

जवानी का जोश

मेरे घर के प्रायः सभी लोग ऊँचे सरकारी ओहदों पर एक लम्बे समय से हैं। पेशावर में मेरा घराना एक खास घराना, राजनीतिक या कांग्रेसी घराना समझा जाता है। अगर पेशावर में मार-काट प्रारम्भ हुई तो शायद आग, लूट और हत्याकाण्ड का शिकार सबसे पूर्व मेरा ही घर बनेगा, इसकी हम लोगों को स्वाभाविक ही शंका थी। परिवारवाले सभी भयभीत थे और इस पक्ष में थे कि उन्हें शीघ्रातिशीघ्र पेशावर छोड़ देना चाहिए। मैं यह कह रहा था कि हमें यहीं ठहरना चाहिए जो होगा देखा जायगा। मेरे चाचा ने कहा कि यह सब जवानी का जोश है, तुम अभी अनुभवहीन हो, इस वक्त भलाई पेशावर छोड़ देने में ही है। लेकिन मैं अपनी जिद पर ही डटा रहा। अन्त में तय यह हुआ कि परिवार के अन्य लोग दिल्ली चले जायें पर मैं यहीं रह जाऊँ। आज मैं सोचता हूँ लि वास्तव में मैं कितना अनुभवहीन हूँ। यदि मेरी सलाह मानकर मेरा परिवार वहीं रहता तो आज उसकी क्या दुर्दशा होती इसे ईश्वर ही जानता है।

पिछले दिन होनेवाली एक घटना ने हमें बता दिया कि अब हम लोग सम्मानपूर्वक यहां नहीं रह सकते। हमारे यहां एक पठान दरबान था, जिसे बहुत स्वामिभक्त समझा जाता था। उस दिन रात को मेरी ममेरी बहन मेरे घर आ रही थी। दरवाजे पर पठान ने एकाएक उसका हाथ पकड़ लिया—वह जोर से चिल्लाई हम लोग बाहर निकल आये और पठान को डांटना शुरू किया। किन्तु उसने बजाय शर्मिन्दा होने के अपनी बन्दूक तान ली। पुलिस को सूचना दी गई, किन्तु वहां से उत्तर मिला—"ओह! यह कौन-सी बड़ी बात है, यह तो एक पठान का जन्मसिद्ध अधिकार है।" इस उत्तर ने हमारे पेशावर छोड़ने के इरादे को दृढ़ कर दिया। तीसरे दिन मेरे सिवा मेरा समस्त परिवार दिल्ली चला आया। पेशावर से दिल्ली आने के लिए मेरे चाचा को ३ हजार रुपये खर्च करने पड़े। बिना उसके उन लोगों का यहां सकुशल पहुँच सकना सम्भव न था।

सीमाप्रान्त के गांधी खान अब्दुल गफ्फार खाँ, जो पाकिस्तान के विरोधी हैं, और पठानिस्तान की स्थापना के लिए सतत् प्रयत्नशील हैं।

खान साहब नौशेरा चले गये

पेशावर में मेरे ठहरने का एक मुख्य कारण यह था कि मैं जल्मे पख्तून के एक कमाण्ड का सदर था। जल्मे पख्तून के सम्मुख उस समय एक विशेष कार्यक्रम था। ज्यादातर उसमें मुसलमान युवक ही थे, किन्तु काफी हिन्दू सदस्य भी थे। मैं हिन्दू प्लेटून का सदर था। यदि मैं उस समय पेशावर डरकर छोड़ देता तो उसका दूसरों पर बहुत बुरा और अहितकर असर पड़ता। मेरे मुसलमान दोस्तों ने मुझे आश्वासन दिया था कि अपनी जान पर खेलकर भी वे मेरी रक्षा करेंगे। मुझे खुशी है कि उन्होंने अपना वचन पूर्णतः निबाहा। आज १० वर्षों से मैं सक्रिय राजनीतिक कार्यकर्ता रहा हूँ। मेरा विश्वास था कि मैं सभी प्रकार की परिस्थितियों का मुकाबला कर सकता हूँ। अतएव मैंने वहीं रहने का निश्चय किया। किन्तु वहां मेरा रहना सभी लोग जान गये थे। लोग पहले से ही मेरे खून के प्यासे थे। इसलिए मैंने उचित यह समझा कि अपना घर छोड़कर अब खान साहब के मकान में चला जाऊँ। खान साहब का मकान काफी सुरक्षित था। मैं जिस मकान में रहता था, वह यूं था तो हिन्दू बस्ती में, किन्तु वह मुहल्ला प्रायः खाली हो चुका था। अधिकांश घरों को शराबखानों, अपहृत बालिकाओं के रखने की जगहों और व्यभिचारगृहों में परिणत कर दिया गया था। डाक्टर खान साहब के मकान में मैं जब पहुँचा तब उसे बन्द पाया। पूर्व परिचित संतरी से ज्ञात हुआ कि सपरिवार कुछ दिनों के लिए पेशावर चले गये हैं। अब मेरे सम्मुख यह प्रश्न आया कि कहां रहूँ। किन्तु जल्मे पख्तून के एक मुसलमान साथी ने मुझे अपने घर ठहराने का प्रस्ताव किया। मुझमें और एक मुसलमान में यूं ऊपरी दृष्टि से कोई भेद भी नहीं मालूम पड़ता, जबान तो हमारी एक है ही। इस मित्र के घर के लोग मुझे कतई नहीं जानते थे। इसलिए मित्र ने मुझे अपने घर मुसलमान बनाकर रखा। घर में उसका बाप डाक्टर खान साहब का समर्थक था और उसका छोटा भाई लीगी। किन्तु भाई को गम्भीर राजनीति से कोई मतलब न था। वह कालेज में पढ़नेवाला एक मनमौजी जीव था। सबसे अधिक

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

पेशावर के एक गाँव का दृश्य जहाँ अल्प-संख्यक धन और जन से सुरक्षित नहीं हैं।

धर्म और राजनीति को अलग करो

आजकल की परिस्थितियों और जनता का तकाजा यही है

लेखक, श्री मन्मथनाथ गुप्त

राष्ट्र की स्थिति इस समय भयावह हो रही है। जनता की शान्ति, अशान्तिपूर्ण जीवन ने ग्रहण कर लिया है। इसका प्रमुख कारण क्या है? धर्म और राजनीति की उधेड़-बुन और संघर्ष। इस लेख में समाजवादी लेखक ने यह बतलाया है कि आधुनिक संघर्ष का मूल कारण धर्म और राजनीति है, इसलिए इन्हें जनता-जीवन से अलग करना अत्यन्त आवश्यक है। लेख सामयिक और विचारपूर्ण है।

इस लेख के लेखक प्रसिद्ध समाजवादी श्री मन्मथनाथ गुप्त।

आज भारतवर्ष की राजनीति में हमें जो सबसे विस्मय बात मालूम दे रही है वह है धर्म तथा राजनीति का गठबन्धन। वर्तमान समय में जो खुला या छिपा भ्रातृघाती युद्ध देश भर में मचा हुआ है, उसकी तह में हम इसी बात को पाते हैं। दुर्भाग्य से हमारे देश में कई धर्म हैं और इन धर्मों में भी इस्लाम ऐसा कट्टर धर्म है। यदि भारतवर्ष में एक धर्म होता तो कदाचित् प्रतिक्रियावादी शक्तियां इस खूंखार तथा खतरनाक रूप में प्रकट न हो पातीं।

केवल जिन्ना ने ही धर्म तथा राजनीति का गठबन्धन किया है, ऐसा कहना सत्य का प्रलाप करना होगा। हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रारम्भ से ही धर्म और राजनीति का गठबन्धन रहा है। जातीयता या राष्ट्रीयता के उदय के प्रारम्भिक दिनों में धर्म के साथ इसका बहुत दृढ़ सम्बन्ध रहा है। केवल भारतवर्ष में ही नहीं जहां भी किसी विभिन्नधर्मी शक्ति का राज्य रहा है, वहीं पर धर्म और विद्रोही भावना का सम्बन्ध रहा है।

पर यदि देखा जाय तो यह गठबन्धन इसी कारण सम्भव हुआ कि ऐसे लोगों का राज्य था जो दूसरे धर्म को मानते थे। जैसा कि मैंने अपनी एक पुस्तक में लिखा है—"राष्ट्रीय स्वाधीनता की लड़ाई के लिए इन्हीं कारणों से यह सम्भव हुआ कि वह एक हद तक धर्मयुद्ध का रूप धारण करे। अलमेंहदी, चाफेकर बन्धु, खुदीराम, तिलक, गांधी आदि की धार्मिकता इस प्रकार समझ में आ जाती है। भारत में गदर से लेकर या उससे भी पहले से जितने भी आन्दोलन विदेशी शासन के विरुद्ध हुए, उनमें हम धर्म को प्रगति की तरफ एक शक्ति के रूप में पाते हैं। लोकमान्य तिलक के इर्द-गिर्द महाराष्ट्र में जो राष्ट्रीय आन्दोलन गत शताब्दी के अन्तिम दशक में उठा, या बंगाल तथा अन्य स्थानों के क्रान्तिकारियों ने स्वदेशी युग, १९१४-१८ की लड़ाई के युग, यहां तक कि प्राक भगतसिंह युग के क्रान्तिकारी आन्दोलनों में धर्म की दुहाई बराबर दी जाती थी। लोग गीता को लेकर फांसी के तख्ते पर हंसते-हंसते चढ़ गये। १९२७ में अशफाकुल्लाह नामक एक क्रान्तिकारी शहीद ने गले में कुरान बांधकर फांसी को वरण किया और साम्राज्यवादविरोधी नारे लगाते हुए फांसी पर चढ़ गया।"

पर यह द्रष्टव्य है कि यह जो गठबन्धन हुआ, वह हिन्दू-धर्म के साथ ही हुआ। अवश्य १९१४-१८ के युग में देवबन्द के कुछ मुसलमानों ने एक षड्यंत्र किया, यह षड्यंत्र साम्राज्यवाद विरोधी था। पहले इस षड्यंत्र का उद्देश्य अँगरेजों को निकाल कर मुस्लिम राज्य स्थापित करना था, पर बाद को कुछ परिस्थितियां ऐसी सामने आईं कि इन षड्यंत्रकारियों को अपना उद्देश्य बदल देना पड़ा और वे प्रजातंत्रवाद के पुजारी हो गये।

फिर भी यह बिलकुल साफ है कि इस प्रकार जो मुसलमान राष्ट्रीयतावादी हुए, उनके विचारों तथा हिन्दुत्व के साथ मिलाकर राष्ट्रीयतावादी हुए, उनके विचारों में बड़ा अन्तर था। धर्म और राजनीति के गठबन्धन का अनिवार्य परिणाम है पुनरुज्जीवनवाद का प्रचार; पर यह स्पस्ट है कि हिन्दू पुनरुज्जीवनवादी कुछ और स्वप्न देखते हैं, और मुस्लिम पुनरुज्जीवनवादी कुछ और स्वप्न देखते हैं। इसीलिए इस वर्तमान दंगों के दौर के बहुत पहले ही मैंने यह लिख दिया था कि 'भले ही कुछ दिनों के लिए क्रियाशील पुनरुज्जीवनवादीगण साम्राज्यवाद विरोध करें फिर भी अन्त तक जाकर वे अपना प्रतिक्रियावादी [illegible] प्रकट करेंगे। इसलिए ऐसी शक्ति[illegible] को प्रगति के रथ में जोतने के समय इन बातों को सोच लेना चाहिए।

जिस समय हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन का गांधीवादी दौर शुरू हुआ, उस समय पंजाब-हत्याकाण्ड के साथ-साथ खिलाफत के प्रति किये गये कथित अन्याय को आन्दोलन का प्रधान आधार बनाया गया। शेषोक्त आधार के कारण मुसलमान बहुत अधिक संख्या में असहयोग-आन्दोलन में शरीक हुए, पर उनकी यह शिरकत बहुत सामयिक सिद्ध हुई। जब मुस्तफा कमाल पाशा ने तुर्की में प्रजातंत्र की स्थापना कर खिलाफत को खतम कर दिया तो स्वाभाविक रूप से स्वयं ही खिलाफत-आन्दोलन का अन्त हो गया। अब खिलाफत के लिए आन्दोलन का कोई अर्थ ही नहीं रहा। यदि कोई गैरमुस्लिम शक्ति इस प्रकार खिलाफत का अन्त कर देती तो बड़ा कोहराम मचता, पर खलीफा को तुर्की के महान् नेता कमाल पाशा ने जिन्हें मुसलमान गाजी तथा मुस्तफा की उपाधि दे चुके थे, अन्त किया, तो कुछ कहने का रह नहीं गया। अब मुसलमान फुर्र से कांग्रेस तथा राष्ट्रीय आन्दोलन से उड़ गये।

इस प्रकार व्यवहारिक रूप में यह देख लिया गया कि धर्म और राजनीति का गठबन्धन ठीक नहीं था। पर हमारे महामान्य नेता गांधी जी का जीवन तथा विचार-धारा धर्म से इस प्रकार ओतप्रोत थी कि वे इन घटनाओं से प्राप्त सबक से सीख न सके। वे बराबर धार्मिक तौर पर चीजों को कहते गये। वे तो हर बात में ईश्वर, आन्तरिक ज्योति आदि को घसीटने के आदी थे।

मेरे कहने का हर्गिज यह मतलब नहीं है कि गांधी जी की ही इस जिद के कारण मुसलमान राष्ट्रीय आन्दोलन से अलग हो गये। ऐसा कहना इतिहास के साथ बहुत भारी अन्याय करना होगा। गांधी जी तथा इतिहास के प्रति न्याय के लिए यह बता देना जरूरी है कि यद्यपि गांधी जी बराबर धर्म के नाम पर प्रचार करते थे, फिर भी उनका धर्म कोई कट्टर संकुचित धर्म नहीं था। उनका धर्म सर्वधर्मसमन्वयवादियों का धर्म था। उस पर सार्वदेशिकता की छाप थी। अवश्य उसमें गोरक्षा आदि कुछ ऐसी भी बातें थीं, जिन्हें हिन्दुत्व की छापयुक्त बातें कही जा सकती हैं।

राजनीति स्वयं कोई आधार नहीं है। राजनीति के लिए राजनीति का कोई अर्थ नहीं होता। इस कारण लोगों को देशभक्ति या साम्राज्यवाद-विरोध के लिए तैयार करने के निमित्त किसी आधार की आवश्यकता थी। यह आधार धर्म या उसकी पुटयुक्त भावुकता अथवा वस्तुवादी आर्थिक कारण ही हो सकते थे। गांधी जी प्रभृतिवेत्ता आर्थिक आधार को ही लेकर चलना या उसकी बुनियाद पर एक नई भावुकता की सृष्टि करना नहीं चाहते थे। उनकी सारी शिक्षा-दीक्षा इसके विरुद्ध थी।

अवश्य कांग्रेस ने इस मामले में सम्पूर्ण रूप से गांधी जी का अनुसरण नहीं किया; पर भले ही पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा बढ़ते हुए समाजवादी उपादानों के प्रभाव के कारण कांग्रेस के प्रस्तावों में धार्मिक बातें न आ पाई हों, पर जनता के निकट गांधी जी ही कांग्रेस के नेता, उसकी भावधारा के अनुवादक तथा व्याख्याता थे।

अतएव धार्मिक बातें हमेशा राजनीति में घसीटी गई। उधर लीग के नेताओं ने आक्रमणात्मक ढंग से धार्मिक नारों को देना शुरू किया। मुसलमानों के नये पढ़े-लिखे तथा व्यापारीवर्ग के साथ हिन्दू पढ़े-लिखे तथा व्यापारीवर्ग की प्रतिद्वंद्विता से चीजों को और जोर पहुँचा। पाकिस्तान तथा दो जाति का नारा दिया गया। खाई बढ़ती गई। नोआखाली, बिहार, पंजाब आदि के हत्याकांड हुए।

पाकिस्तान की स्थापना ने धार्मिक भावनाओं को घटाने के बजाय और बढ़ा दिया। परिस्थिति अब ऐसी हो गई है कि जो लोग कभी धार्मिक दृष्टि से चीजों को देखते नहीं थे, वे भी चीजों को धार्मिक रूप से न सही तो एक न एक सम्प्रदाय के पक्ष में सोचने के लिए विवश हुए। कुछ वास्तविकताएँ ऐसी थीं, जिन पर राख डालना असम्भव था। नोआखाली और बिहार के दंगों को एक श्रेणी में डालने की परिपाटी चल गई

शेष पृष्ठ १२ पर देखिए

लन्दन में पाकिस्तानी कमिश्नर द्वारा डाक्टर एडिथ समरस्किल का स्वागत।

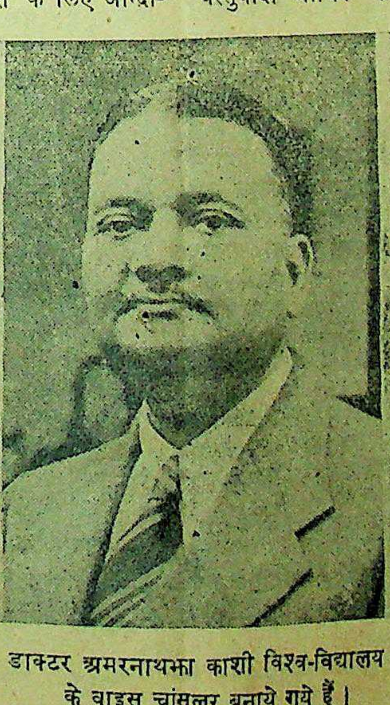

डाक्टर अमरनाथझा काशी विश्व-विद्यालय के वाइस चांसलर बनाये गये हैं।

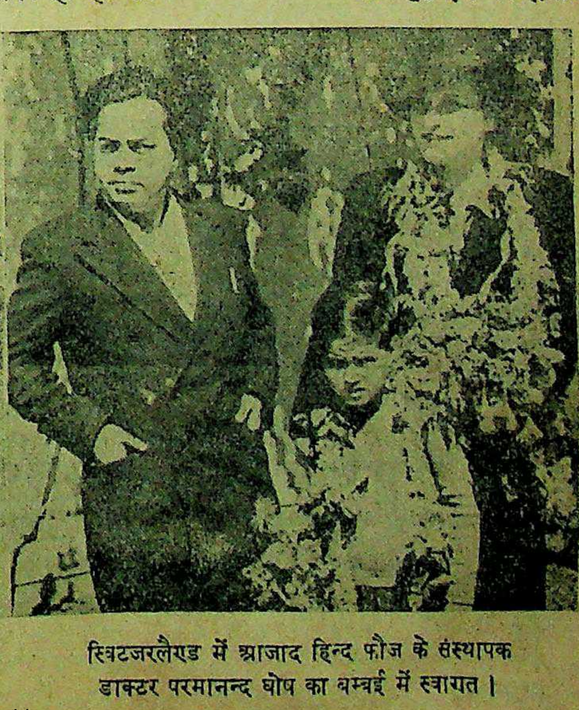

स्विटजरलैण्ड में आजाद हिन्द फौज के संस्थापक डाक्टर परमानन्द घोष का बम्बई में स्वागत।

कंट्रोल का अस्तित्व समाप्त हो

जनता के हित की जिम्मेदारी जनता पर ही क्यों नहीं दी जाती ?

लेखक, श्री विजयचन्द्र टन्डन, एम० ए०

खाद्य-पदार्थों तथा दैनिक जीवन के उपयोग में आनेवाली वस्तुओं पर कंट्रोल अथवा नियंत्रण लगा हुआ है। जनता को कन्ट्रोल से उत्पन्न होनेवाले पापाचारों का कड़ुआ अनुभव हो चुका है, इसलिये अब कन्ट्रोल की एकदम सफाई हो जानी चाहिये। विद्वान् लेखक ने इस लेख में कन्ट्रोल की वर्तमान स्थिति, उससे उत्पन्न होनेवाली कठिनाइयों तथा परिस्थितियों का विचारपूर्ण वर्णन किया है और सरकार को कुछ सुझाव भी प्रस्तुत किये हैं। लेख सामयिक, सुन्दर और पठनीय है।

माननीय श्री चन्द्रभानु गुप्त, खाद्य-मंत्री संयुक्तप्रान्तीय सरकार

गत १५ अगस्त को भारतवर्ष के स्वतंत्र होने के बाद अनेक समस्याओं ने भारतवासियों को आ घेरा है। इन समस्याओं में से सबसे प्रमुख खाने और पहनने की समस्या है और यह एक ऐसी समस्या है जो जाति-पांति के भेद को छोड़कर प्रत्येक देशवासी के सामने नाच रही है। क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, छोटा या बड़ा आज सब एक अजीब परेशानी में घिरे हुए हैं। इस मुसीबत का कारण क्या है? मनुष्य के दिमाग में इस प्रश्न के हल करने की इच्छा प्रबल हो जाती है। बहुत कुछ सोच-विचार करने के बाद वह केवल इस निश्चय पर पहुँचता है कि इन सब कठनाइयों का मूल कारण 'नियन्त्रण' या 'कन्ट्रोल' की प्रथा है।

नियन्त्रण कब और कैसे ?

यह 'नियन्त्रण' क्या बला है? यह बला कब और कैसे आई? भारतवर्ष में भी नियन्त्रण युद्ध-काल में पूर्ति (सप्लाई) की कमी के कारण बढ़ती हुई कीमतों को सीमा के बाहर बढ़ने से रोकने और थोड़े ही माल का सब उपभोक्तों में सामान्य वितरण करने के उद्देश्य से लागू किये गये थे। वैसे तो नियन्त्रणों का आरम्भ सन् १९४२ के अन्तिम महीनों से ही शुरू हो गया था परन्तु पूर्णतया नियन्त्रण सन् १९४४ में लागू कर दिये गये जब प्रायः आवश्यकता की सब ही वस्तुएँ—यहां तक की खाद्य पदार्थ भी नियन्त्रण की जंजीरों में जकड़ लिये गये। नियन्त्रणों के लागू करने के बाद ही बाजार में चीजों का मिलना कठिन होता गया। नियन्त्रणित कीमत पर खुले बाजार में चीजों के बेचने की बजाय औने-पौने दामों में चीजें चोर बाजार में बिकने लगीं। सरकारी आंकड़ों के अनुसार उत्पत्ति की कमी दिन पर दिन बढ़ती चली गई। आरम्भ में जब राशनिंग-प्रथा शुरू की गई थी उस समय भारतीय सरकार पर केवल २६ मिलियन जनता को राशन देने का भार था। यह भार दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही गया और यहां तक कि सन् १९४५ में ५२ मिलियन, सन् १९४६ में १०० मिलियन और सन् १९४७ में १७१ मिलियन जनता सरकारी राशन पर निर्भर रहने लगी है। इधर राशन पानेवाली जनता की दिन दूनी, रात चौगुनी वृद्धि और उधर माल की दिन पर दिन कमी ने एक अजीब स्थिति में डाल दिया है। इसीलिये १ पाउन्ड राशन प्रत्येक बालिग से आरम्भ होकर आज केवल २ छटांक प्रत्येक बालिग मनुष्य रह गया है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार खाद्य पदार्थों की कमी इतनी बढ़ गई है कि देश की आन्तरिक मांग को पूरा करने के लिये लगभग ४०,००,००० टन अनाज बाहर से मँगाना पड़ेगा और इसमें से केवल २०,००,००० टन मिलने की आशा की जाती है। सरकारी अनुमान है कि खाद्य पदार्थों की कमी के तीन मुख्य कारण हैं। पहला कारण तो देश पर प्राकृतिक कोप है जिसके कारण आन्तरिक पैदावार की बहुत बड़ी हानि हुई है। इस प्रकार उपज की हानि का अनुमान निम्नलिखित आंकड़ों से किया जा सकता है:—

खाद्यान्न की उपज (समस्त भारत) औसत पांच साल लाख टन में

सन्	चावल	गेहूँ	ज्वार-बाजरा	कुल	औसत से फर्क
१९४३-४४	२८२	१०६	११२	५००	—
१९४४-४५	३०१	१०८	१०९	५१८	१८
१९४५-४६	२८४	९२	८८	४६४	–३६
१९४६-४७	३०२	८१	८५	४६८	३२

सरकारी अनुमान के अनुसार खाद्य पदार्थों की कमी का दूसरा कारण अन्य देशों का सहयोग न मिलना है। देश की मांग को पूरा करने के लिये हमको बहुत कुछ और और देश, जो कि हमारी खाद्य पदार्थों की मांग को पूरा करने के काबिल थे, पर निर्भर रहना पड़ा और अब भी पड़ रहा है। परन्तु पहले तो माल भेजने में ही बहुत नखरे दिखाये और अगर भेजा भी तो इतनी बढ़ी हुई कीमत पर जिसको अदा करने से देश की आर्थिक स्थिति पर एक बहुत बड़ा असर पड़ा। बर्मा का चावल जो सन् १९४६ के आरम्भ में १० रु० मन मिल रहा था, उसकी कीमत उसी साल जून के महीने में १४ रु० मन और सन् १९४७ के आरम्भ होते होते १७ रु० रु० मन कर दी गई। ब्रेजिल और ईजिप्ट के चावल का दाम २६ रु० और २४ रु० मन था जो कि बहुत महँगा पड़ रहा था। आस्ट्रेलिया के गेहूँ के दाम सन् १९४३-४४ में ७ रु० मन से अब १५ रु० मन कर दिये गये हैं। टर्की के गेहूँ के दाम २० रु० मन पड़ते हैं। इस ऊँची कीमत को देने के अलावा, आयात पदार्थों की बढ़ी चढ़ी कीमत और देश के खाद्य पदार्थों की कम कीमत के अन्तर को एकसा करने के लिये भारतीय सरकार को सरकारी सहायता भी देनी पड़ी। यह सरकारी सहायता अप्रेल सन् १९४६ से मार्च सन् १९४७ तक २०·५९ करोड़ रुपये थी। अप्रेल सन् १९४७ से दिसम्बर सन् १९४७ तक यह लगभग १७·३५ करोड़ रुपये पहुँच चुकी है। अतः इन कठनाइयों के कारण बाहर से माल लाने में भी बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ा है जिसके कारण देश में कमी बिलकुल पूरी नहीं हो सकी।

तीसरा कारण सरकारी विचार से आन्तरिक प्राप्तिकरण की कठिनाइयां रहा है। देश की पैदावार का सब हिस्सा सरकार को उपभोक्तों में वितरण करने के हेतु प्राप्त नहीं हो सका। उत्पादक सरकार को नियन्त्रणित कीमत पर अनाज देने के लिये तैयार नहीं था और न अब है। उत्पादक को यह अच्छी तरह ज्ञात हो चुका था कि अगर सरकारी हाथों में बेचने के बजाय अगर वह अनाज का संचय स्वयं कर लेगा तो उसका संचित अनाज काफी ज्यादा दामों पर चोर बाजार में बिक सकेगा। अतः सरकार के सब प्रयत्न निष्फल रहे और पैदावार का काफी अंश चोर बाजार को मजबूत बनाता रहा।

आर्थिक मूल

सरकारी अनुमान के कमी के तीनों कारणों को पढ़कर यह कहा जा सकता है कि खाद्य पदार्थों की कमी का मूल कारण उत्पादन का मांग के अनुसार न बढ़ना रहा है। आर्थिक मूल के अनुसार उत्पादन की वृद्धि होड़ की स्पर्धा पर निर्भर रहती है। खुले बाजार में प्रत्येक उत्पादक अपने माल को अधिक से अधिक कीमत पर बेचने का प्रयत्न करता है। उपभोक्ता कम से कम दामों पर अपनी आवश्यकता की वस्तु खरीदने का प्रयत्न करता है। अगर उत्पादक काफी संख्या में है और माल की कमी नहीं है तो उत्पादकों की आपस की प्रतियोगिता के कारण उपभोक्ता को वस्तु के अधिक दाम नहीं देने पड़ते; परन्तु बाजार में जब माल की कमी रहती है तो चीजों की कीमत काफी बढ़ जाती है।

भारतवर्ष में युद्ध के कारण ज्यों-ज्यों माल की कमी होती गई त्यों-त्यों चीजों की कीमत दुगनी और चौगनी बढ़ती गई। इसी को रोकने के लिये नियन्त्रण लागू किये गये। परन्तु नियन्त्रण लागू करने का असर बिल्कुल दूसरा हुआ। चोर बाजार बहुत जोर-शोर से चलने लगा और रिश्वतों का दौर दौरा भी खूब जोर से चलने लगा। चोर बाजार और रिश्वत के बढ़ने के कारण माल की कमी न होकर नियन्त्रण के प्रबन्ध में गड़बड़ रहा है। आश्चर्य तो इस बात पर है कि एक तरफ तो सरकारी अनुमान के अनुसार माल की इतनी कमी है कि दूर दूर देशों से माल प्राप्त करने के लिये अनन्य डेलीगेशन भेजे जाते हैं और दूसरी ओर चोर बाजार से औने-पौने दामों पर अपनी आवश्यकता भर या उससे भी अधिक माल खरीद सकते हैं। अगर माल की वास्तव में कमी है तो फिर चोर बाजार में इतना माल कहां से आ जाता है? इसका अभिप्राय यह नहीं कि इस समय देश के उत्पादन में कमी नहीं। कमी तो अवश्य है; परन्तु इतनी नहीं जितनी सरकारी आंकड़ों में दिखाई जाती है। वास्तव में समस्या तो कीमत की है। आर्थिक दृष्टि से उत्पादन की वृद्धि उत्पादक के लाभ की मात्रा पर निर्भर है। उत्पादक किसी भी बाहरी बन्दिशों से बँधकर उत्पादन नहीं बढ़ा सकता। वह केवल एक बन्दिश का पाबन्द रहता है और वह है बाजार की मांग (डिमान्ड) और पूर्त्ति (सप्लाई) जिसके बढ़ने और कम होने पर उसके माल की कीमत का बढ़ना या उतरना निर्भर रहता है। प्रतियोगिता के वश में वह चार पैसे कम लेने पर भी उतर जाता है परन्तु नियन्त्रणवश वह अधेला कम लेने पर भी तैयार नहीं हो सकता।

युद्धकाल में तो अवश्य उत्पादन उत्पादकों की आपस की प्रतियोगिता पर नहीं छोड़ा जा सकता था। युद्ध के वास्ते बहुत सी चीजों की काफी मात्रा में आवश्यकता पड़ती है अतः मांग और पूर्त्ति के खेल को नियन्त्रण के कटघरे में बन्द करना आवश्यक हो जाता है; परन्तु अब जब कि युद्ध समाप्त हुए लगभग दो साल से भी अधिक हो रहा है इस समय भी क्या नियन्त्रण आवश्यक है, यह एक शोचनीय प्रश्न है। तीन या चार साल के नियन्त्रण-काल में जनता नियन्त्रण के प्रबन्ध से काफी असन्तुष्ट और दिन-प्रतिदिन यह असन्तुष्टता बढ़ती ही जा रही है। आर्थिक सिद्धान्त के अनुसार असन्तुष्टता तब ही हट सकती है जब कि उत्पादन की वृद्धि हो और उपस्थित परिस्थितियों में उत्पादन बढ़ाने का केवल एक रास्ता है और वह यह है कि नियन्त्रण हटा लिए जायँ जिससे उत्पादक पुनः उत्पादन में व्यस्त होकर माल की कमी को कुछ पूरा कर सके।

नियन्त्रण के पक्षपातियों का कथन है कि अगर नियन्त्रण बिल्कुल हटा लिये जायेंगे तो चीजों के दाम बहुत बढ़ जायेंगे। यह कहना तो ठीक है परन्तु नियन्त्रण रहने पर भी तो अपना पेट भरने के लिये अनाज, जो साढ़े तीन सेर का राशन की दूकान पर १ या १½ छटाक प्रतिदिन प्रति व्यक्ति मिलता था, चोर बाजार से १½ और २ सेर तक का खरीदना पड़ता है। अगर इसी दाम खुले बाजार में भी बिकेगा तो अपना और अपने बच्चों का पेट भरने के लिये इन्सान को दर दर मारा तो नहीं फिरना पड़ेगा। चीनी पर जब तक कन्ट्रोल रहा तब तक प्रत्येक मनुष्य चीनी के लिये परेशान रहता था। परन्तु आज जब चीनी खुले बाजार में दुगने दाम पर बिक रही है तो किसी को भी कोई खास शिकायत नहीं है। कन्ट्रोल के हटा लेने से आवश्यकता से अधिक लेकर

शेष पृष्ठ १६ पर देखि

विवाहित जीवन

को सुखमय बनाने के गुप्त रहस्य जानते हों तो निम्न पुस्तकें मँगायें।

१—कोक शास्त्र (सचित्र)	१॥)	२—८४ आसन (सचित्र)	१॥)
३—८० आलिंगन (सचित्र)	१॥)	४—१०० चुम्बन (सचित्र)	१॥)
५—सोहागरात (सचित्र)	१॥)	६—चित्रावली (सचित्र)	१॥)
७—गोरे खूबसूरत बनो	१॥)	८—गर्भ-निरोध (सचित्र)	१॥)

उपरोक्त पुस्तकें एक साथ लेने से ८) रु० में मिलेंगी, पोस्टेज १) अलग लगेगा।

पता—ग्लोब ट्रेडिंग कम्पनी (जी० १३) अलीगढ़ सिटी।

कहानी

गरीबी

लेखक, श्री स्नेह रश्मि

> निर्धनता भी आज के भारत का एक अभिशाप है। भारतीय गांवों में लाखों पुरुष-स्त्री और बालक निर्धनता के शिकार बने बैठे हैं। मानवता त्राहि त्राहि कर रही है। यह एक श्रेष्ठ गुजराती कथाकार की कहानी है। कहानीकार ने इस रचना में निर्धनता का एक वास्तविक और हृदयस्पर्शी चित्रण किया है जो निर्धन-भारत का एक मार्मिक दृश्य उपस्थित करती है। कहानी सुन्दर और पठनीय है।

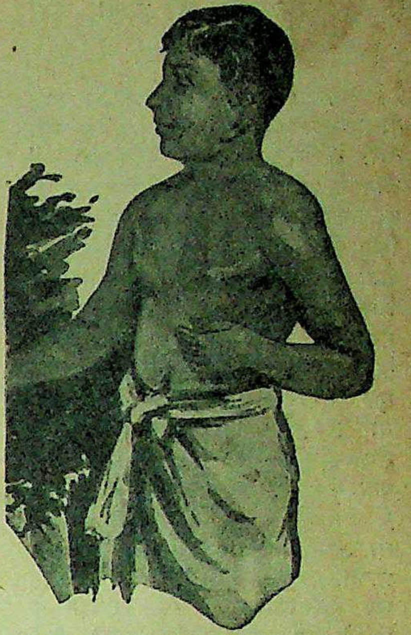

बुढ़िया का पोता बन्ना जिसे बावले कुत्ते ने काट खाया था।

कंकू बुढ़िया का कुटुम्ब जैसे अनेक सुदामाओं का मेला। उसके पांच लड़के, हर एक लड़के की बहू और बच्चे मिलकर कुटुम्ब में अच्छे खासे बीस-पच्चीस आदमी। थोड़े समय तक तो कंकू बुढ़िया ने सबको चूल्हे पर निभा दिया, पर पूरा पेट भरे नहीं और प्रतिदिन रोटियों के लिए लड़ाई-झगड़ा और कलह हो इससे तो सबके अलग-अलग चूल्हे अच्छे। यह निश्चय कर पांचों भाइयों ने अलग-अलग चूल्हे कर लिए। चूल्हे जुदे होते ही कंकू बुढ़िया के नित्य-क्रम में थोड़ी-सी कमी आ गई।

गरीब बेचारी कंकू बुढ़िया उदारता का अवतार थी। उसके शरीर पर के कपड़े में कदाचित् ही पंद्रह-बीस से कम थेगलियां हों और घर में सबके लायक अन्न भी कदाचित् ही हो, पर फिर भी उसके दरवाजे पर कुत्तों का मेला जमा ही रहता, और उन सबको निराश होने के अवसर भी बहुत कम आते। कंकू बुढ़िया सुबह ही सुबह अपनी झोपड़ी के सामनेवाले खेत में चार-पांच कूड़ों में पानी भर आती और पक्षी रोज उनमें से पानी पीकर वहां किल्लोल करते। दूसरों के बालकों को भी कंकू बुढ़िया कभी-कभी खाना देती। उसकी अपार निर्धनता में कंकू बुढ़िया का यह उदार स्वभाव एक भिन्न ही प्रभाव डालता। अलग-अलग चूल्हे हो जाने के कारण उसकी उदारता संकट में पड़ तो गई अवश्य, पर फिर भी वह पक्षियों तथा कुत्तों इत्यादि को निराश नहीं कर सकी। इससे कभी-कभी किसी बालक को कदाचित् बिलकुल भूखे ही सोजाना पड़ता, पर तब वह अपना स्नेह-भरा हाथ उसके माथे पर फेरती-फेरती उसे सुला देती।

एक बार उसके बड़े लड़के छब्बा के लड़के बन्ना को एक बावला कुत्ता काट गया। कंकू बुढ़िया ने उसके उपचार करने में कोई भी कसर नहीं रक्खी—पर वे उपचार अर्थात् शास्त्रीय, वैद्यक के उपचार नहीं। उसके गांव में प्रचलित जितने उपचार थे, सभी आजमा देखे; पर लड़के के आराम होने का कोई चिह्न दिखाई नहीं दिया। हताश कंकू बुढ़िया मेरे पास आई। मैं कंकू बुढ़िया को भली भांति जानता था। अश्रु-भरी आंखों से उसने मुझसे पागल कुत्ते की बात कही। कंकू बुढ़िया का मातृ-हृदय कैसा है इसका मुझे एक बार सुन्दर अनुभव हुआ था। बात यह थी कि इसके एक बेटे के छोटे लड़के दीपा को देखकर मुझे लगा कि यदि इस लड़के को पढ़ाया जाय तो यह जरूर अपना नाम रोशन करेगा। गरीबी और भुखमरी के कारण उसका शरीर केवल अस्थि-पंजर जैसा ही था, पर फिर भी उसके अस्थि-पञ्जर में से भी सुन्दर रेखाएँ स्पष्ट हुए बिना न रहती थीं। मेरे एक मित्र ने पिछड़ी हुई जाति के बालकों को निःशुल्क शिक्षा देने की योजना बनाई थी। उस योजना से दीपा को लाभ हो, इस इच्छा से मैंने कंकू बुढ़िया से दीपा को मांगा। कंकू बुढ़िया ने तब मुझसे कहा।

"भाई! लड़का आंखों के आगे रहे तो देने का मन होता है, पर ऐसे लड़के को दूसरे गांव कैसे भेजा जा सकता है। तुम यहीं किसी के यहां इसे ढोर चराने का काम दिलवा दो तो अच्छा।"

मैंने कंकू बुढ़िया को खूब समझाया, दीपा पढ़ेगा तो सारे कुटुम्ब का कैसा लाभ होगा इत्यादि सविस्तार मैंने उसके सामने वर्णन किया, पर अपने आंखों के सामने से वह लड़के को दूर करने के लिए तैयार नहीं थी। सम्भव है इसमें बहुतों को कंकू बुढ़िया के अज्ञान और उसकी मूर्खता का ही आभास हो, पर मेरे मन पर इसका उलटा ही प्रभाव पड़ा था। ऐसी गरीबी में एक खानेवाला कम हो तो बहुतों को तो एक मुक्ति का श्वास लेने का मन हो, पर कंकू बुढ़िया का मातृ-हृदय समस्त निर्धनता तथा समस्त गणनाओं से परे था। साधनों की अपूर्णता उसके निःस्वार्थ प्रेम से पूर्ण हो जाती थी।

आज हताश होकर वह मेरे पास यदि मैं कुछ मदद कर सकता हूँ तो यह पूछने आई थी। तुरन्त ही मैं उसके साथ चल दिया। वैसाख का सूर्य सिर पर तप रहा था। सारा संसार जल-भुन रहा था। धरती तपकर अंगारे की तरह हो गई थी। कंकू बुढ़िया के पैर में किसी तरह का भी जूता न था। वह अंगारे जैसे रेत पर जैसे फूलों पर चल रही हो, इस प्रकार चल रही थी। इस वृद्ध शरीर को मैं देखता रहा। निर्धनता के कितने भीषण झंझावात पार कर वह आज दूसरे किनारे पर आ पहुँची थी। मानवता का उन्मूलन कर देनेवाले कितने प्रसंगों के विरुद्ध इसने मूक हृदय से अनेक दारुण युद्ध लड़े होंगे! कुटुम्ब में दूसरे अनेक व्यक्ति थे जो बन्ना के लिए मेरे पास आ सकते थे, पर बुढ़िया जब तक उसके अपने पैर चलें तब तक दूसरे किसी की मदद की अपेक्षा रखती ही न थी।

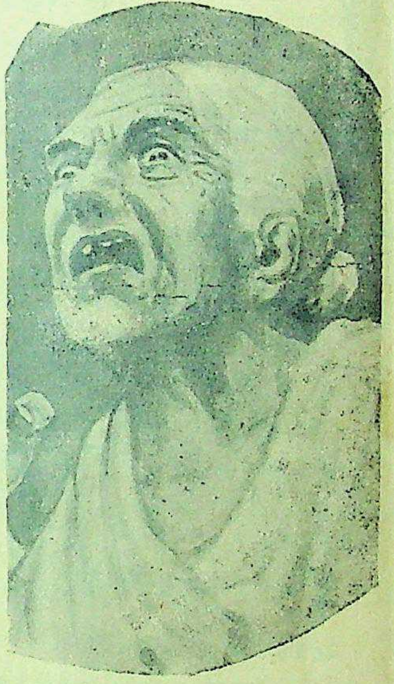

बेचारी गरीब बुढ़िया उदारता की अवतार थी।

छब्बा की झोंपड़ी में घुसते ही एक भयंकर दुर्गन्ध मेरी नाक में घुस गई। छब्बा का आठ-नौ वर्ष का लड़का एक कोने में फटे-टूटे गुदड़े पर पड़ा था। उसके शरीर पर बेहद मक्खियां भिनभिना रही थीं। झोंपड़ी में घुसते ही जो दुर्गन्ध मेरी नाक में भर गई थी. वह बन्ना के शरीर में से आ रही थी। यह दृश्य देखकर मेरे रोएँ खड़े हो गय। निर्धनता और अज्ञान का ऐसा भयंकर प्रतीक कदाचित् ही मैंने पहले देखा था। छब्बा झोंपड़ी में एक ओर शून्य मनस्क की तरह बैठा था। मैंने उसे सम्बोधित कर कहा—

"छब्बा! बन्ना को कुत्ता काटे हुए कितने दिन हो गये?"

"हुए होंगे आठ-दस दिन।"

"तो तुमने इसकी क्या दवा की?"

"दवा तो दूसरी क्या करते? जो कुछ हाथ की दवा सूझ रही है कर रहे हैं।"

मैंने देखा कि लड़के की स्थिति गंभीर थी। तुरन्त ही गांव में से अपने एक डाक्टर मित्र को, मैंने बुला मँगाया। उसने बन्ना की परीक्षा कर बताया कि इसके शरीर में जहर फैल गया है। किसी बड़े अस्पताल में इसे भेज दिया जाये तो ही कदाचित् बचे।

तुरन्त ही मैंने उसे डफरिन हास्पिटल में ले जाने की योजना अपने मन ही मन में बना ली। छब्बा से मैंने उसे बताया। वह तो आश्चर्य-चकित ही हो गया। वह बोला—

"भाई! मैं बड़ौदे किस तरह चला चलूं? इस एक को बचाने जाऊँगा तो ये दूसरे चार यहां मर जाएँगे। इन सबको कमाकर खिलायेगा कौन?"

छब्वा की यह बात सुनकर मुझे विशेष आघात लगा इसका अर्थ तो इतना ही न कि बन्ना को मरने दिया जाये! मैंने छब्वा से कहा।

"तुझे इन बच्चों की चिन्ता नहीं करनी। मैं सब ठीक-ठाक कर दूंगा। कल सुबह की गाड़ी से हम बड़ौदे जानेवाले हैं, तू तैयार रहिये।"

छब्वा के लिए और बन्ना के लिए मैंने उसी दिन कपड़े की व्यवस्था की। बन्ना के शरीर में से आती हुई दुर्गन्ध कम करने के लिए मैंने लोशन इत्यादि भिजवाया, दूसरे दिन बन्ना, छब्वा और मैं इस प्रकार तीन आदमी बड़ौदे रवाना हो गये। कंकू बुढ़िया भाव-भरे नेत्रों से हमको बहुत दूर तक देखती रही।

बन्ना के शरीर पर मक्खियों का भिनभिनाना तो चालू ही था। वह दुर्गन्ध भी कुछ कम नहीं हुई थी। छब्वा को इसका कुछ ख्याल आया, वह सहज अकुलाया, अपने टूटे-फूटे शब्दों में उसने मुझसे कहा, "इसमें से बड़ी दुर्गन्ध आ रही है तुम मुंह जरा उस तरफ रक्खो तो अच्छा!" मैं मन ही मन हँसा। इस बेचारे को अपनी कृतज्ञता व्यक्त करनी थी नहीं तो अपने बेटे को लक्ष्य कर इतनी अप्रिय बात क्यों कहता, पर उसके लिए उसके योग्य शब्द मिल नहीं रहा था।

स्टेशन पर हमारे पास तो कोई आने ही क्यों लगा? वरन् रेलगाड़ी में बैठना भी भारी हो गया। अनेक आदमियों की अनेक प्रकार की गालियां सुनने को मिलीं। "ऐसे सड़े हुए लड़के को लेकर यहां बैठते हुए तुम्हें शरम भी नहीं आती?"

"ऐसा था तो कोई डिब्बा रिजर्व क्यों नहीं कराया?" "भाई साहब बड़े धर्मराज के अवसर बनकर चले हैं। कौन जाने दाल में क्या काला होगा?" पर मुझे तो इन सबका जवाब ही कहां देना था? छब्वा की ओर मेरा ध्यान गया। गाड़ी में इससे पहले वह बहुत कम बार बैठा है, ऐसा मुझे लगा। विरुद्ध दिशा में दौड़ते हुए खेत और वृक्ष वह बालक जसी कौतूहल वृत्ति से देखकर मानो मन ही मन प्रसन्न हो रहा था। इसे निश्छलता कहो, भोलापन कहो या मूर्खता कहो—पर रसपूर्वक मैं उसे देखता रहा।

अनेक प्रयत्नों के उपरान्त अत्यन्त लाग-लिपट के बाद अस्पताल में बन्ना को भरती किया गया। उसके अच्छे होने की आशा बहुत कम थी, ऐसा डाक्टरों ने अपना अभिप्राय दर्शाया, पर मैंने एक भी उपाय बाकी न छोड़ने का दृढ़ संकल्प कर लिया था। दो दिन बाद छब्वा अकुला उठा।

"भाई! मुखिया का खाद अभी निकालना है। बरसात बरस गई तो सब रह जायगा।

छब्वा की जगह यदि कोई दूसरा आदमी होता तो वह हृदयशून्य है—यह कहकर उस पर चिढ़ता, पर छब्वा की असहायता पर मुझे दया आई। मैंने उसे वापस जाने के लिये उसका टिकट कटा दिया। जाते जाते अंतिम बार बन्ना की ओर दृष्टि फेरकर निश्वासें छोड़ते हुए वह बोला—

भाई! मेरे सभी बालकों में सबसे अच्छा यहीं था। किसी दिन उसने खाने का कजिया नहीं किया। टुकड़ा मिल गया तो टुकड़ा ही, नहीं तो भूखा ही सो जाता। दूसरों की तरह कभी भी उसने मुझे परेशान नहीं किया......"

एक गम्भीर निश्वास के साथ उसके ये दर्द-भरे बोल मैं सुनता रहा। कितने-कितने कंकू बुढ़िया, छब्वा और बन्ना के मूक निश्वासों से आज मानवता का हृदय धड़क रहा होगा।

(अनुवादक, श्री शिवचन्द्र नागर बी० ए०)

धर्म और राजनीति को अलग करो

(पेज ७ का शेष)

है। अभी उस दिन गांधी जी के साथ नोआखाली घूमे हुए डाक्टर अमिय चक्रवर्त्ती से ज्ञात हुआ कि नोआखाली में लीग ने पहले ही सब बात ठीक कर ली थी, किस किस व्यक्ति को मारना है, किस किस औरत को भगाना है—इत्यादि सब पहले से तय था। आग लगाने के लिये यथेष्ट परिमाण में पेट्रोल मंगा लिया गया था तथा तिमंजिलों तक में आग लगाने के लिए स्टीरप पम्प आदि तैयार थे। एक सामरिक कार्यक्रम की तरह सभी बातें तय थीं। क्या बिहार के दंगे के सम्बन्ध में ऐसी बात कही जा सकती है? क्या यह कहा जा सकता है कि बिहार में दंगाइयों ने पहले से तैयारी की थी, या उनके पीछे कोई बड़ी संस्था या कोई प्रान्तीय सरकार थी जैसा कि निःसंदेह रूप से नोआखाली और कलकत्ता के दंगों के पीछे लीग तथा लीगी सरकार थी?

काश्मीर में जो कुछ हुआ है, उससे भी पता चलता है कि पहले से योजनात्मक तरीके से सारी तैयारियां की गई थीं। अब तो यह बिलकुल स्पष्ट हो चुका है कि पाकिस्तान की सरकार ने सम्मुख युद्ध बराकर कायरतापूर्ण ढंग से काश्मीर तथा भारतीय यूनियन पर हमला बोल दिया है। इसमें पाकिस्तान ने फिर धर्म और राजनीति को मिलाना चाहा और यह दिखाना चाहा कि काश्मीर में मुसलमानों पर जो आक्रमण हो रहे थे, उन्हीं की कहानियों से उत्तेजित होकर पाकिस्तान-वासी मुसलमानों ने हमला कर दिया था। कहना न होगा कि यह कथन बिलकुल झूठा था जैसा कि शेख अब्दुला के इस सम्बन्धी बयानों से साबित है।

कुछ भी हो, हम धर्म और राजनीति के मिलाये जाने के विषमय परिणाम को देख रहे हैं। एक देशवासी, एक भाषा-भाषी लोग किस प्रकार दो टुकड़ों में बंटे ही नहीं बल्कि परस्पर के शत्रु भी हो गये। इसका हम नमूना बंगाल तथा पंजाब में देख सकते हैं। अभी दिल्ली में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की जो बैठक हुई थी, उसमें एक प्रस्ताव में यह कहा गया है कि भारतवर्ष कितने ही धर्मों और वर्णों का देश है, फिर भी उसमें बुनियादी एकता है। कहना न होगा कि ये बातें बहुत पुरानी हो गईं, और इनका कोई विशेष अर्थ नहीं है। इस प्रकार भावुक बातें कहने से काम नहीं चलेगा। हमें बुनियादी तरीके से सोचना पड़ेगा कि क्या कर्त्तव्य है।

परिस्थिति बहुत कुछ अन्धकारपूर्ण है। कड़वापन घटने के बजाय बढ़ता ही चला जाता है। भारतीय यूनियन की तरफ से भले ही तरह दिया जाय, पर उधर से कोई रियायत नहीं है। हमारे नेताओं को क्वीसलिंग कहकर रेडियो में व्याख्यान दिया जाता है। सारी बातों को नींव से लेकर सोचना चाहिए।

भारतवर्ष को यदि बाहर की साम्राज्यवादी शक्तियों का क्रीड़ास्थल तथा पादपीठ नहीं बनाना है तो हमें कुछ न कुछ समाधान निकालना ही पड़ेगा। एक समाधान तो यह है कि अन्त तक लड़ाई कर ली जाय, पर इससे भी पूरा समाधान न होगा, क्योंकि जो भी पक्ष हारेगा वह मन में बदले की धारणा का पोषण करेगा। जब यहूदी ऐसी छोटी जाति को सारे ईसाई जगत् के जुल्म ने खतम नहीं कर पाया तो मुसलमानों के लिए हिन्दुओं को या हिन्दुओं के लिए मुसलमानों को खतम करने का स्वप्न लीग या राष्ट्रीय स्वयंसेवक-संघ की तरह गैर जिम्मेदार लोग ही देख सकते हैं। इसमें संदेह नहीं कि गुंडों के विरुद्ध शक्ति का प्रयोग तथा गुंडई का डटकर विरोध करना पड़ेगा, चाहे इसके लिए कुछ भी दाम देना पड़े। पर साथ ही बुनियादी बातों को भी सोचना पड़ेगा। भारतवर्ष के स्वेच्छापूर्वक एक होने का याने एक संघ होने का बस एक ही उपाय है वह यह है कि लोग धार्मिक पागलपन से अपने को मुक्त कर लें और न तो कोई हिन्दू रहे न मुसलमान। धर्म और राजनीति को अलग करने का जो लोग नारा देते हैं, उन्हें इस तार्किक उपसंहार तक जाना पड़ेगा। यदि वे इस हद तक जाने से इनकार करते हैं, और केवल भावुकता की सतह तक रह जाते हैं, तो वे आत्मप्रवंचना करते हैं।

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!

आप घर बैठे मैट्रिक, एफ. ए., बी. ए., पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से और होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं नियमावली मुफ्त मँगायें। पता:—

इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

फाउण्टेन पेन और पेंसिल पेन

यू० एस० ए० में निर्मित

विभिन्न रंगों और आधुनिक डिजाइनों के फाउण्टेन पेन तथा पेंसिल पेन बेचे जा रहे हैं। प्रत्येक फाउण्टेन पेन 'गोल्डेन निब और क्लिप' से युक्त है। साधारण २॥।), उत्तम ३॥), सर्वोत्तम ४।)। १४ केरेट रोल्ड गोल्ड—गोल्ड-प्लेटेड निब-सहित ५॥) १४ केरेट रोल्ड गोल्ड गोल्ड निब-सहित ८), सर्वोत्तम १०)। प्रत्येक अतिरिक्त निब ।=), उत्तम ॥।), सर्वोत्तम १।)। १४ केरेट गोल्ड निब ३।), सर्वोत्तम ४)। पेंसिल पेन साधारण ३), उत्तम ३॥), सर्वोत्तम ४॥)। एक दर्जन अतिरिक्त लेड ॥), एक साथ तीन दर्जन १=)। नोट—प्रत्येक फाउण्टेन पेन के साथ एक निब और तीन लेड प्रत्येक पेंसिल पेन के साथ मुफ्त दिए जाते हैं। तीन पेन या पेंसिल पेन मँगाने पर १२॥% की दर से कमीशन दिया जाता है। डाक-व्यय ॥।)।

पत्र-व्यवहार अँगरेजी में ही करें।

स्टैण्डर्ड वाच कं०

पोस्टबाक्स नं० ११४१९, कलकत्ता, ६, (डी०)

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा २।—) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" का मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

ग्राहक और एजेण्ट शीघ्रता करें

पहला अङ्क प्रकाशित हो गया

'मंजरी'

सचित्र कलात्मक कहानी मासिक

वार्षिक मूल्य ६) रु० प्रति अङ्क ॥) आठ आने

तिरङ्गा आवरण, दर्जनों चित्र और कलापूर्ण छपाई

जनवरी १९४८ के अङ्क में

७ कलात्मक हिन्दी कहानियाँ
२ प्रान्तीय भाषाओं की (तामिल और गुजराती) कहानियाँ
१ धारावाहिक उपन्यास
३ कथा-साहित्य पर समालोचनात्मक लेख और
३ स्तम्भ

प्रथमांक के आकर्षण

औपन्यासिक सम्राट् वृन्दावनलाल वर्मा,
चक्रवर्ती राजगोपालाचारी,
कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी,
उषादेवी मित्रा, होमवती देवी,
विष्णु प्रभाकर, शम्भुरत्न मिश्र 'मुकुल',
डाक्टर ब्रजमोहन गुप्त, एम० ए०, डी० फिल०,
कृष्णचन्द्र शर्मा, एम० ए०, एल्-एल० बी०,
परिपूर्णानन्द वर्मा, रमादत्त शुक्ल

सम्पादक
देवीदयाल चतुर्वेदी

प्रकाशक
इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

चमकीले स्वस्थ बालों के लिये
Vaseline POMADE
CHESEBROUGH MFG. CO.

पेमलता से सुगंधित किया गया वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।

वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।

सभी दूकानों पर

Copyright

देशदूत चित्रावली

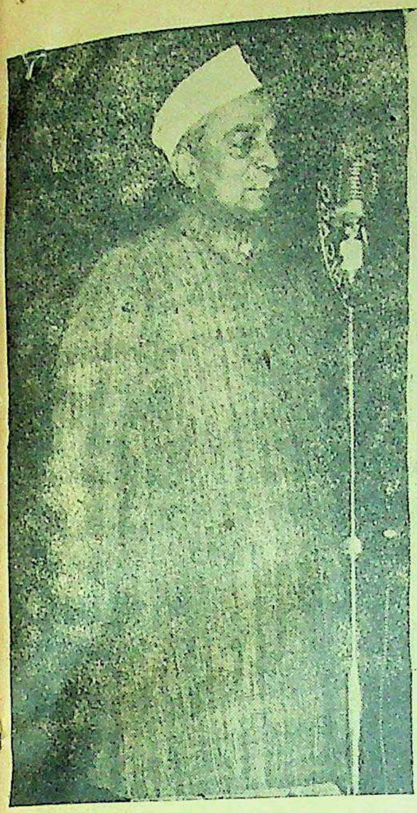

स्वर्गीय महामना मालवीय जी की प्रथमवर्षी के अवसर पर डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद भाषण दे रहे हैं।

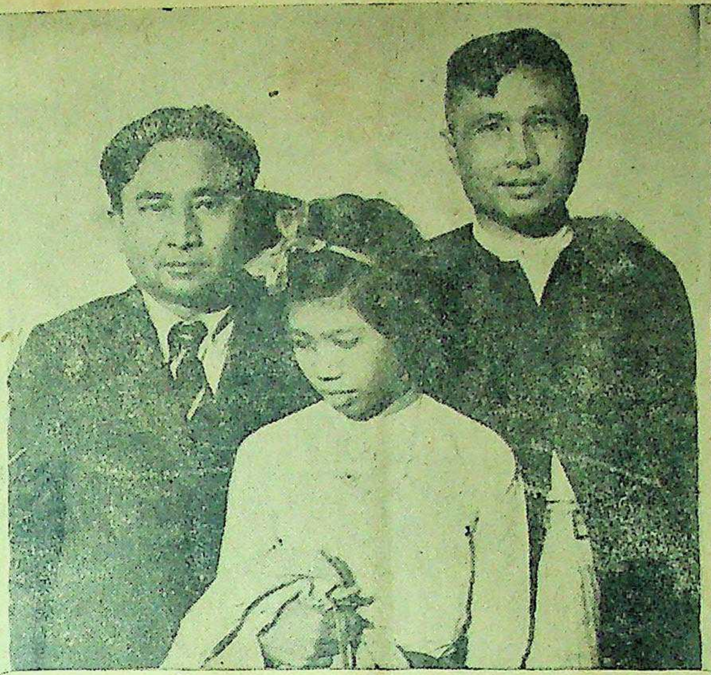

दमदम हवाई अड्डे पर बरमा के प्रधान मंत्री थाकिन नू अपनी पुत्री तथा वैदेशिक मंत्री टिन टुट के साथ।

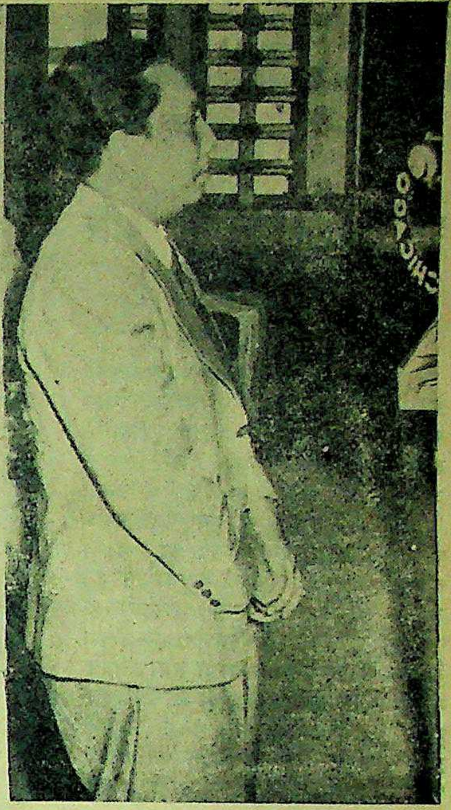

इन्डोनेशिया प्रजातन्त्र के भूतपूर्व प्रधान मंत्री डाक्टर शहरयार लेडी इरविन कालेज में भाषण दे रहे हैं।

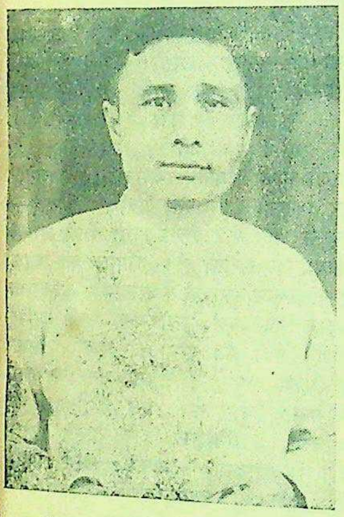

बरमा के प्रधान मंत्री श्री थाकिन नू, पिछले दिनों महात्मा गांधी और पण्डित नेहरू से परामर्श करने के लिये दिल्ली आये थे।

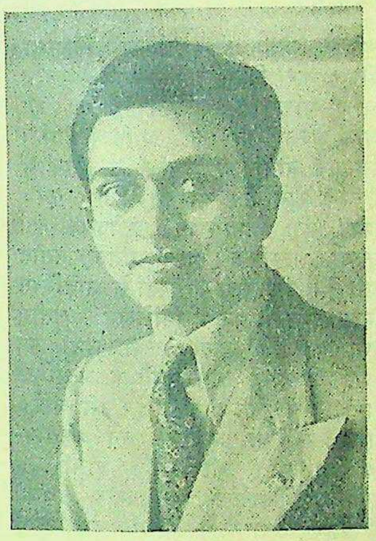

अहमदाबाद के श्री जयकृष्ण हरिवल्लभदास ने अहमदाबाद में ट्रेनिंग कालेज की स्थापना के लिए ३ लाख ७५ हजार रुपये दिये हैं।

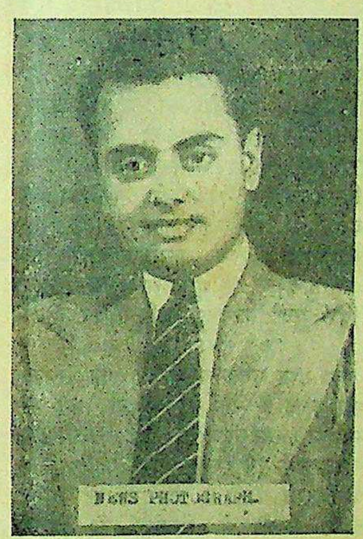

मायावरम् (दक्षिण) के श्री एन० रामकृष्ण को अखिल भारतीय फोटोग्राफी-सम्मेलन में रजत-पदक प्राप्त हुआ है।

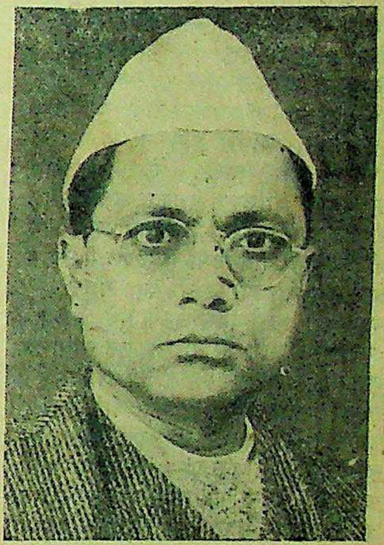

श्री चेंगालरिया रेड्डी मैसूर के नये प्रधान मन्त्री नियुक्त किये गये हैं।

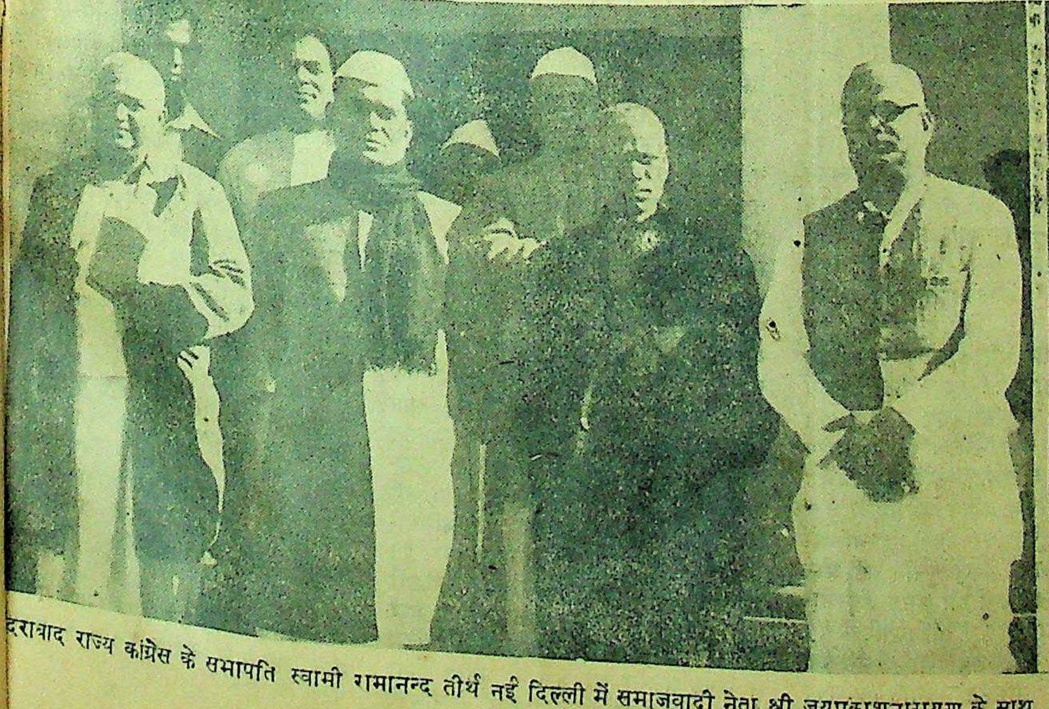

दराबाद राज्य कांग्रेस के सभापति स्वामी रामानन्द तीर्थ नई दिल्ली में समाजवादी नेता श्री जयप्रकाशनारायण के साथ

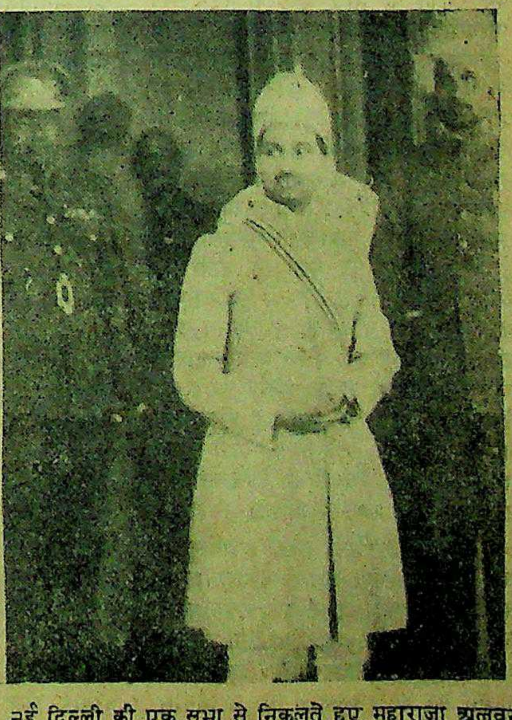

नई दिल्ली की एक सभा से निकलते हुए महाराजा अलवर

हमारा रंग-मंच

'रेणका'

प्रगतिशील कहानी और निर्जीव निर्माण !

लेखक, श्री गोपाल मेहरोत्रा

भारतीय छात्राओं को कलात्मक नृत्य का प्रदर्शन नृत्य की भावांभंगिमा दर्शनीय है।

चन्द्र आर्ट प्रोडक्शनकृत 'मनोरमा' के पश्चात् श्री जयन्त देसाई जी निम्न कोटि के निर्देशन के लिए अत्यधिक ख्याति प्राप्त कर रहे हैं। यद्यपि उन्होंने जयन्त देसाई प्रोडक्शन की पूर्व रचना 'महाराणा प्रताप' में कुछ उन्नतिशील परिवर्त्तनों का प्रदर्शन किया था, परन्तु वर्तमान प्रचारित चित्र 'रेणुका' ने श्री जयन्त देसाई की पुरातन लोकप्रियता पर एक ऐसा असहनीय कुठाराघात किया है, जो उनकी निर्माण-संस्था तथा उनके मस्तिष्क पर एक 'कलंक का टीका' सिद्ध हुआ है। दिग्दर्शक श्री रमेश सहगल द्वारा लिखित एवं दिग्दर्शित प्रगतिशील 'रेणुका' रजतपट पर इस भांति प्रस्तुत की गई है:—

गोपाल के विवाहोपरान्त उसकी नूतन पत्नी, उमा उसके गृह में चरण-स्पर्श करते ही प्रकाशमान सिद्ध होती है। उमा अपने भोले पति को कुशल एवं सफल व्यवसायी का रूप देती है—अपने मनोरंजक परिश्रम द्वारा। तत्पश्चात् अहोभाग्यवश गोपाल को एक पुत्र-रत्न, राम की प्राप्ति होती है। उमा एक निर्धन रमणी होने के फलस्वरूप गोपाल की साली, एक मातृहीन अष्टवर्षीय बालिका, रेणुका उसी के गृह में शरण प्राप्त करती है। शनैः-शनैः राम और रेणुका यौवनरूपी युद्धस्थल में संग्राम करते हुए प्रेमरूपी अस्त्रों का मधुर... करते हैं। दुर्भाग्यवश इसके पूर्व, बाल्यावस्था ही में राम की मां का एक साधारण दुर्घटना द्वारा स्वर्गवास हो जाता है। रेणुका गोपाल को 'पिताजी' कहकर पुकारती है। पड़ोस की एक चरित्रहीन स्त्री गोपाल से पुर्नविवाह के लिए सदैव कहती है, परन्तु गोपाल किंकर्त्तव्य-विमूढ़ सा अस्वीकार करता है। रेणुका के अल्हड़ यौवन तथा उस कुलक्षिणी पड़ोसिन के कारण गोपाल की निद्रित वासना सजग हो उठती है और वह अपने पुत्र के स्थान पर रेणुका के प्रति एक बाध्यपूर्ण व्यंग एवं स्वांग का सहारा लेकर अपनी सास से रेणुका के साथ विवाह करने की स्वीकृति ले लेता है। गोपाल और रेणुका का पाणिग्रहण होता है, परन्तु अभागा राम...! रेणुका राम की जीवन-साथिनी नहीं, पवित्र मां के रूप में पदार्पण करती है। सुहागरात के दिवस उमा मृत्युकारिणी स्मृति के रूप में गोपाल के सम्मुख आती है और गोपाल की मृत्यु हो जाती है। अन्तिम क्षण में गोपाल अपनी भूल स्वीकार कर अपने पुत्र व रेणुका से विवाह करने की प्रार्थना करता है, परन्तु व्यर्थ। गोपाल की मृत्यु होते ही रेणुका आत्महत्या करती है। राम, रेणुका के शव को गोपाल के शव के चरणों के समीप रखते हुए, समाज की 'भेंट' शब्दों का उच्चारण कर वह अविवाहित रहने की प्रतिज्ञा करता है।

इसमें संदेह नहीं है कि कथावस्तु ने अत्यधिक साहस तथा सहनशीलता के साथ समाज की वास्तविक सेवा करने के लिए इस ओर दृढ़प्रतिज्ञ पग उठाया है, परन्तु दुर्भाग्यवश ऐसी प्रगतिशील कहानी का इतने अश्लील ढंग से विनाश किया है, जिसके कारण चित्र निम्नकोटि का प्रतीत होता है। यद्यपि चित्र की वास्तविक कथा प्रारम्भ होने से पूर्व दो प्रकोष्ठों की कहानी का प्रचार किया गया है, परन्तु दीपावली के दृश्यों तथा गोपाल के सड़क पर जाने के दृश्यों ने दिग्दर्शक एवं लेखक की ठग-विद्या को सत्यरूप में प्रदर्शित कर दिया है।

दीपावली के दृश्य अत्यधिक प्रशंसनीय हैं, परन्तु होली का दृश्य अत्यधिक अस्वाभाविक एवं निरर्थक दृष्टिगोचर होता है। रेणुका तथा राम के मिलने के दृश्य तथा उनके वार्तालाप यह स्पष्ट प्रकट करते हैं कि वे वासना को भी सम्भवतः स्थान ग्रहण करा चुके हैं। गोपाल के विवाह के पूर्व रेणुका व राम का षड्यंत्र एवं विरोध पानी के बुलबुलों की भांति उठकर पानी में विलीन हो जाता है, जो पूर्णतया अस्वाभाविक प्रतीत होता है। गोपाल की प्रार्थना पर भी रेणुका और राम का विवाह न करना तथा रेणुका का आत्महत्या कर लेना, कहानी की प्रगतिशीलता पर असहनीय कुठाराघात तथा पुरातन एवं निर्जीव कल्पना की सत्यता का रूप देने के समान है—जो अनेक बार रजतपट पर प्रदर्शित हो चुकी हैं। श्री रमेश सहगल द्वारा लिखित संवाद संतोषप्रद व वासनामय है। कामुकता की पंक्ति में—उदाहरणार्थ—एक स्थान पर गोपाल अपनी पत्नी से पुत्री के अभाव में कहता है—'तो एक लड़की और पैदा कर लो न।' श्री संवाद लेखक जी ने तो नारी को केवल 'चाइल्ड-प्रोड्यूसिंग मशीन' समझ लिया है? द्वितीय स्थान पर स्मरण करें, राम का बाल्यावस्था में यह कहना—'माता जी! क्या फिर बच्चा होनेवाला है?' क्या इन संवादों को स्थान देकर संवाद-लेखक ने भारतीय नारियों के उज्ज्वलमय चरित्र पर कीचड़ उछालने का सफल प्रयत्न नहीं किया है? श्री रमेश सहगल को अपनी कुप्रवत्तियों के विरुद्ध त्यागपत्र देकर सुमार्ग की ओर अग्रसर होना चाहिए। श्री कमर जलालाबादी द्वारा रचित गीत निम्नकोटि के हैं।

इसके अतिरिक्त श्री मल्लिक सरदार जैसे 'घासलेट' संगीत-निर्देशकों को स्थान देकर दिग्दर्शक ने निकृष्ट श्रेणी के गीतों को पूर्णतया निष्प्राण घोषित कर दिया है। यह है हमारे स्वतंत्र भारत के 'कलाकारों' की दशा। लज्जा भी न आती होगी। गीत एवं गीतों की 'ट्यून्स' न हंसने में और न रोने में। श्री बी० डी० एस० कश्यप का चित्रालेखन संतोषप्रद है। चन्द्रमा अत्यधिक अस्वाभाविक प्रतीत होता है। दीपावली के दृश्यों के अतिरिक्त समस्त स्थानों का चित्रालेखन तृतीय श्रेणी का है। स्वर्गीय पत्नी उमा की भयंकर 'तसवीर' रूपी स्मृति का अत्यधिक भावुक चित्रण किया गया है। श्री आई० सी० देसाई का ध्वनिआलेखन असंतोषप्रद है। स्वरों की ध्वनि धीमी पड़ जाने के फलस्वरूप अधिकतर संवादों का सौन्दर्य तथा गीतों की गति मूक प्रतीत होती है। नृत्य-निर्देशक श्री...जी तो अनाथ व असभ्य दृष्टिगोचर होते हैं। पता नहीं यह भांड़-भांड़िन जैसी होली हिन्दू-समाज के किस वर्ग में होती है? हिन्दू-घराने न हुए...भांड़-भांड़िनों के अड्डे हो गए? भारतीय जनता को ऐसे चित्रों के प्रदर्शन का विरोध करना चाहिए। यदि आज वे मूक अवस्था में रहें तो भविष्य अंधकारमय ही दृष्टिगोचर होता है। छाया व प्रकाश का समुचित सम्मिश्रण न होने के कारण दृश्यों का सम्पूर्ण सौन्दर्य नष्ट हो गया है। 'मेक-अप' स्वाभाविक है, परन्तु कला को कोई स्थान नहीं दिया गया है।

प्रस्तुत चित्र में तीन नूतन कलाकारों को प्रदर्शित किया गया है। राम की यौवन-भूमिका में योग्य अफजल ने किसी सीमा तक सफल कार्य किया है। प्रत्येक वस्त्र में आप अत्यधिक फबते हैं। स्वर अत्यधिक मोटा है, संवाद कहने का ढंग अस्वाभाविक है, जिसके फलस्वरूप किसी-किसी स्थान पर 'ओवर-ऐक्टिंग' हो गई है। इस नूतन कलाकार की भविष्य-सफलता की मैं मनोकामना करता हूं। 'दूर चले' की कलानेत्री श्रीमती हेमावती ने रेणुका की कल्पना में सफलीभूत कार्य किया है। कुछ कारणवश आपके चरित्र में उच्छृंखलता का अंश भी प्रतीत होता है। 'तृतीय श्रेणी के 'मेक-अप' ने श्रीमती हेमावती की सुन्दरता के साथ अन्या किया है'—ऐसा लोगों का कथन ह इस अभिनेत्री के काले शरीर, उ पर मोटे-मोटे होंठ (अफरीकि की भांति) और उस पर काली-काली भयंकर केशराशि, रजत- पर कितनी सुन्दरता प्रदर्शित करेगी-यह सरलता से केवल कल्पना में ही अंकि किया जा सकता है। गोपाल की का के कलाकार मुबारक ने वास्तव में अत्यधि स्वाभाविक एवं मनोरंजक कार्य अभिनीत किया है। राम की बाल्य-भूमि में शशि कपूर ने संतोषजनक अभि अभिभूत किया है। इस कलाकार भविष्य उन्नतिशील दृष्टिगोचर हो है। विजयादास ने सफल कार्य कि है। उमा की छाया की अभिनेत्री लज्जामय अभिनय प्रदर्शित किया है

श्री रमेश सहगल की दिग्दर्शन-कला अध्यक्षता में चित्र का पूर्वार्द्ध पूर्णत निष्प्राण, परन्तु उत्तरार्द्ध को अत्यधि कुशलता-सहित प्रदर्शित किया गया है दिग्दर्शक ने आदर्श को एक निराश्रित एव दीन-हीन अपाहिज वस्तु समझ लिया है—यह चित्र से स्पष्ट प्रकट होता है। 'रेणुका' प्रदर्शित होली केवल चित्र-निर्माण-गृहों में प्रदर्शित होने योग्य है। श्री जयन्त देस के 'स्टंट' चित्रों का उल्लेखनीय अभि प्रस्तुत चित्र में प्राप्त होता है। उदाहरण गोपाल पर उसकी पत्नी द्वारा पैशाचि प्रहार की कल्पना, वह पिशाचिनी प्रति पूर्णतया जादुई. एवं अस्वाभाविक उपरोक्त लिखित अस्वाभाविकता एवं अश्लीलताओं को दृष्टिगत र हुए मैं श्री रमेश सहगल को हृदय से ध वाद देता हूँ, क्योंकि उन्होंने एक प्रशंस व सामयिक सामाजिक विषय पर अ लेखनी एवं दिग्दर्शन-कला का प्रय किया है। यदि 'रेणुका' चित्रपट पुनः कुशलता एवं स्वाभाविकता के स दिग्दर्शित किया जाय तो प्रथम श्रेणी का चल-चित्र सिद्ध सकता है।

संक्षेप में वर्तमान 'रेणुका' एक प्रग शील कहानी के निर्जीव निर्माण का स उदाहरण है।

मातृमंदिर

नारियों की स्वतन्त्रता क्या हमारा आधुनिक समाज उन्नतिशील है ?

लेखक, श्री प्रेम कपूर 'कंचन'

इसी विचार पर मैं भी बहुत समय से विचार कर रहा था कि वह कौन समय हो सकता है जिसके लिए आज भारत में इतनी चर्चा चल पड़ी है। "नारी स्वतंत्रता" नामक एक समस्या मानी गई है। लेकिन स्वतंत्रता के अन्तरगत किन विचारों का विवेचन किया गया है किसी ने अभी तक समझाने की चेष्टा नहीं की है। जहां तक अपने पूर्वज महानुभावों ने समझाया है उससे जो कुछ मैंने निष्कर्ष निकाला है उसके लिए केवल इतना ही कहा जा सकता है कि नारी स्वयं स्वतंत्र हैं, यह विचार कि नारी परतंत्र हैं किसी भी अंश में सत्य नहीं; क्योंकि वह नारी ही है जो समाज को एक सूत्र में संगठित किये हैं।

जब भी मुझे यह सुनने को मिलता है या लोग कहते हैं कि नारी-स्वतंत्रता नारियों को अवश्य प्राप्त होनी चाहिए, मुझे बहुत दुःख होता है। मेरी समझ में नहीं आता कि वे किस विचार में नारी को परतन्त्र कहते हैं। स्वतंत्र देश में हर वस्तु स्वतंत्र है, और फिर विचार किया जाय तो पता चलेगा कि नारी की आज विश्व में क्या स्थिति है। पुरातन समय में इस देश की क्या धारणा थी मैं नहीं कहूँगा, लेकिन आज हम उस विचार को क्यों लायेंगे जब हमारे सम्मुख उस देश के लोगों के विचार हैं जिसको आज हम स्वतंत्र आदर्श रूप में मानते हैं।

स्वतंत्रता का उद्गम ज्ञान है, विद्या है या हमारे आदर्श विचार हैं। "जान टसकिन" अपने "क्विन्स गार्डन या लिलीज" शीर्षक के अन्तरगत अपने नारियों के विचार की विवेचना करता है वहां वह कितनी सुन्दरता से समझाता है कि नारी शक्ति है। और उस विदेशी समाज में शक्ति का क्या स्थान है ? क्या शक्ति कभी भी किसी के अधिकार में रही है ? कब वह किसी की परतंत्रता स्वीकार कर सकती है ? फिर वही हाल आज इस स्वतंत्र देश में मचा है। नारी-स्वतंत्रता के लिए विद्या को आवश्यक बतलाया गया है। लेकिन आज हमारे यहां विद्या के नाम पर कुविद्या उसी प्रकार सिखाई जाती है जिस प्रकार कनकघट में विष रख दिया जाय जैसी स्थिति में 'जान टस्किन' कहता है--"विद्या उस प्रकार की हो जिससे उनका मानस-पटल विकसित हो। नारी को अपनी सुन्दरता बढ़ाने के लिये कृत्रिम वस्तुओं की जैसे स्वर्णहार या कंगन की आवश्यकता न पड़े।"

इसलिए प्रथम आवश्यक नियम हो कि हम अपने समाज के उस अंग को स्वस्थ रख सकें। आज भारत में कितनी नारियां ऐसे रोगों से पीड़ित हैं जिनसे कि उनकी संतान पर बुरा असर पड़ रहा है। इसलिए हर नारी के लिये सुन्दरता आवश्यक है। इसलिये उनके लिये व्यायाम आवश्यक है जिससे कि तन्दुरुस्ती ठीक रह सके। उनके लिये व्यायामशाला या अखाड़े नहीं होंगे या उन्हें गामा पहलवान नहीं बनना है। पुरातन इतिहास से पता चलता है वह व्यायाम नृत्य के रूप में था। नृत्य वह आज-कल का नृत्य नहीं जिससे कामुकता या यौवन का विश्लेषण हो। नृत्यज्ञान बहुत ही कठिन विद्या है जिससे नारियों का शरीर सर्वदा स्वस्थ रह सकता है।

तन्दुरुस्ती ही सुन्दरता का एक चरण है। सुन्दर होना प्रत्येक नारी के लिये आवश्यक वस्तु है। सुन्दरता या तन्दुरुस्ती उसी को कह सकते हैं जो कि प्रत्येक शक्ति पर अपना अधिकार कर सके। वह सुन्दरता क्या जिसे कि लोगों ने सुन्दर नहीं कहा।

नारी ही है जो पुरुष के गठीले कुल्हाड़े पर धार चढ़ाती है। नारी और पुरुष दो पृथक् वस्तुएँ नहीं। इसलिए नारी-शिक्षा के अन्तर्गत हमें प्रथम तो उनको इस बात के लिए प्रेरित करना है कि वह अपने शरीर को शक्तिशाली भावुक और सुन्दर बना सकें, पर उस शक्ति में उनके गठीले शरीर की आवश्यकता नहीं न वीरता की आवश्यकता है।

तभी तो कवि 'विलियम वर्डसवर्थ' ने अपनी 'ऐजुकेशन आपन नेचर' नामक काव्य में 'लिली' नामक लड़की को समझाते हुए कहते हैं कि शिक्षा हमें न तो मोटी मोटी पुस्तक से प्राप्त हो सकती है न प्रकाण्ड विद्वान् मास्टरों से प्राप्त हो सकती है; बल्कि वह प्राकृतिक ही है जो हमें कुछ समझाने के लिये तैयार है। इसलिए नारी को दूसरी स्थिति में हृदय की स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए जिससे कि वह सोच सके, समझ सके।

ईरान में भारतीय राजदूत सैयद अली जहीर बेगम अली जहीर के साथ।

उस कवि की इस कविता से आज भारत की बहँकी हुई नारी के लिए बहुत से विचार मिल सकते हैं। प्रकृति मां के स्वरूप में लिली से कहती है कि मैं इसके जीवन की प्रखर ज्योति जलाऊँगी, परन्तु साथ ही साथ कुछ सीमा के अन्दर भी रखेगी और उस सीमा के पार जाने से भी रोकेगी।

"Myself will to my darling be
Both law and impulse.....
To kindle or restrain."

फिर उसी के आगे कवि कहता है नारी-चरित्र के लिए कि लिली को क्या होना चाहिए ?

The floating clouds their state shall lend
To her for the willow bend
Nor shall she fail to see
Even in the motion of the storm
Grace that shall mould the midens form
By silent sympthy.

उसकी चाल सर्वदा बादलों की तरह गम्भीर और महान् होनी चाहिए लेकिन उस महानता या गम्भीरता में विनम्रता का पुट होना चाहिए नहीं तो उस महानता या गम्भीरता में उच्छृंखलता आ जायगी, इसलिये विनम्रता उसी प्रकार से होनी चाहिए जिस प्रकार से एक अंगूर की लतर अंगूर के आने के साथ साथ झुक जाती है और उसकी सूखी या सड़ी पत्तियों को अंधड़ या तूफान आकर साफ कर देता है। इसी प्रकार उसका जीवन सुन्दर, सरल एवं सुगठित हो।

इतने आवश्यक विचार उनकी स्वतंत्रता की शिक्षा के लिए आवश्यक होने चाहिए, जिससे भारतीय नारी विदेशी व्यवसायिक नारी के रूप में न आ सके। ये विदेशी विचार ही नहीं हैं, वरन् ऐसे बहुत से और इनसे सुन्दर विचार हमारे पुरातन ग्रंथों में प्राप्त हो सकते हैं। लेकिन इस प्रकार के विचार आज भटके हुए लोगों को समझा सकेंगे, इसलिए उन पुराने विचारों को छोड़कर विदेशी भाषा तथा संस्कृत के विचार प्रगट करने का ध्येय ही यही है। आशा है इससे ऊपर के स्वतंत्रता-सम्बन्धी गौरांग पद विर्धारित हो सकेगा। स्वतंत्रता का भूत हमारे भोले-भाले युवकों एवं युवतियों के मस्तिष्क से झड़ जायगा। उन्हें अपने विचार से देखना है कि वे कहां तक इसके अनुरूप हो सकते हैं। उन्हें चाहिए कि वे अच्छे प्रकार विचार करने के उपरान्त तय करें कि उन्हें आगे क्या करना है और तब देखें कि क्या कारण था जिससे वे इधर-उधर भटक रहे थे ? और अपने भारतीय पथ, मर्यादा और आदर्श को लुटेरों और निर्धन विचारों के हाथों बिकने से बचावें।

स्वतंत्रता-संग्राम और क्रान्ति के इन शब्दों की भूख इस विचार से मिट सकेगी, हमें ऐसो आशा है।

उत्तरी मद्रास में होनेवाले महिला-सम्मेलन के अधिवेशन में भाग लेनेवाली प्रसिद्ध नारियाँ और महिला-प्रतिनिधियों का दल।

मुफ्त

युवको ! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीवन फीका हो चुका हो तो भारत भर में सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त रोग विशेषज्ञ कविराज ब्रह्मसरूप बी० ए० लाहौरवाले फतेहपुरा (D.A.) देहली से मशविरा (सम्मति) मुफ्त लेकर अपना जीवन सुधार लें।

प्रेमियों के हृदय में भूकम्प

प्रेम-रहस्य

लेखक, पण्डित रामचन्द्र शुक्ल "सरस"

• प्रेम की लहरें किसके हृदय में नहीं उमड़तीं ? लेकिन प्रेम-रहस्य को समझनेवाले विरले ही होते हैं।

सभी प्रकार के प्रेम का रहस्योद्घाटन आप "प्रेम-रहस्य" में पायेंगे।

डाक्टर अमरनाथ जी झा तथा हिन्दी के अन्य अनेक विद्वानों ने इस पुस्तक की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है।

लगभग २०० पृष्ठों की सुन्दर और सजिल्द पुस्तक का मूल्य दो रुपये। मँगवाने में शीघ्रता करें, अन्यथा पुस्तक दुर्लभ हो जायगी।

प्रतिभा मण्डल, नया कटरा, प्रयाग

संपादक के नाम चिट्ठियां

भारत-सरकार को सुझाव और जनता

भारत-सरकार के सामने असंख्य कठिनाइयां उपस्थित हुईं। उसके अपने उत्तरदायी शासन पर आते ही देश के कोने-कोने में अराजकता का शासन हो गया। पटवारियों, आपरेटरों और शिक्षकों की अनेक हड़तालें हुईं और रियासतों ने भी अनुचित लाभ उठाने का प्रयत्न किया और अपनी कांग्रेस सरकार को सहयोग देने के प्रतिकूल उसके सामने अनेक आपत्तियां खड़ी कर दीं। जूनागढ़, हैदराबाद इत्यादि के विकराल रूप व 'काश्मीर' की शोचनीय दशा ने हमारी सरकार के पैर उखाड़ने का पर्याप्त प्रयत्न किया; परन्तु अपनी योग्यता, वीरता, दृढ़ता व दूरदर्शिता से सरकार सब गुत्थियां सरलता से सुलझा सकी। इसके अतिरिक्त पञ्जाब-पीड़ितों की व्यथित अवस्था को संभालने की एक महाजटिल समस्या और समक्ष आई। यही एक ऐसा दुरूह कर्म है जिसका जल्दी से सिद्ध होना अति आवश्यक है। ऐसे समय में देश के प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह तन-मन-धन से देश-सेवा में लग जाए और अपनी शुभचिंतक सरकार को पूर्ण सहयोग दे। हमें यह भी मालूम है कि हमारी कांग्रेस सरकार ने इन आपत्तियों से छुटकारा दिलाने के लिए भरसक प्रयत्न किया और बहुत अंशों में सफलता भी पाई; परन्तु फिर भी पूर्णतया पीड़ितों की पीड़ा न हर सकी। इस असफलता के जहां अनेक कारण हो सकते होंगे वहां एक मुख्य कारण भारत-सरकार की आर्थिक कठिनाई भी है। इसके अतिरिक्त जनता का असहयोग भी एक कारण है।

अभी तक पंजाब-पीड़ितों को ठीक-ठीक जीविका साधन नहीं जुटा जा सके हैं। निष्क्रियता बढ़ी हुई है और सैकड़ों शीत से मृत्यु को प्राप्त हो रहे हैं। सरकार जानती है कि भारत को कार्यक्षेत्र बनाया जाये, तभी यह निष्क्रियता दूर हो सकेगी। मिल खोले जायें, कला-कौशल का प्रसार किया जाये और उचित साधन जुटाये जायें तभी यह समस्या तय हो सकेगी। परन्तु प्रत्यक्ष है कि यह योजना कार्यान्वित उसी समय हो सकती है जब कि इनके लिए धन हो। इसके लिए आवश्यक है कि जनता से धन-सहयोग लिया जाये और जमींन्दारों से दूनी मालगुजारी, पूंजीपतियों से दूना टैक्स, किसानों से दूना लगान तथा नगरनिवासियों से राशन कार्ड पर १००) की आय से अधिकवाले से ५) और कम से २) लिया जाये तो बहुत धन इट्ठा हो सकता है। आयोजना उचित इसलिए है कि स्वतन्त्र देश के नागरिक की व्यक्तिगत संपत्ति भी राज्य की सम्पत्ति मानी गई है। इस धन से तुरन्त की आवश्यकताओं की पूर्ति भी हो सकती है और सदैव के लिए इन आपत्तियों से भी छुटकारा पाया जा सकता है।

ये लोग जो यवनों के आज दुराचारों और पाशविक वृत्तियों से कुचले जाकर हमारे सामने दलित अवस्था में मन ही मन कराह रहे हैं। वास्तव में वही दयावीर दानशील, धर्मवीर एवं सत्यवीर हैं जिन्होंने सदैव से देश की विपत्तियों को दूर करने के लिए तन-मन-धन से सेवाएं की हैं। बंगाल के दुर्भिक्ष में पहली सहायता पंजाब से पहुँची, बिहार-भूचाल में पंचनद के निवासियों ने ही सहयोग दिया और भूचाल के पीड़ितों को सब प्रकार की सहायता दी और मोपला-विप्लव में भी पंजाब ही सफलता प्राप्त कर सका था। ये वही पंजाबी हैं जिन्होंने इन भयंकर विपत्तियों से बचाकर भारत के कोने कोने को ऋणी बनाया। परन्तु आज इन्हें 'शरणार्थी' कहकर अपमानित किया जाता है। यह कितना घृणित शब्द है? कितना अनुपयुक्त!! क्या इसकी अपेक्षा 'निर्वासित', 'व्यथित' या 'पीड़ित' इत्यादि में से कोई शब्द निर्वाचन में न आ सका? आ सकता था, परन्तु वह शब्द भारतीय कूपमडूकों का बड़प्पन उन पर थोप नहीं पाता। देखिए आज उन वीरों के लिए भारत में कोई स्थान नहीं, कोई सम्मान नहीं; और न भारतियों की उनके प्रति कोई श्रद्धा व सहानुभूति ही है। यदि है भी तो बहुत कम। सरकार ने भी विशेष ढाढ़स नहीं बंधाया और अन्त में पदाधिकारी यहां तक आ गये कि पीड़ितों को पुनः पंजाब खदेड़ने की सोचने लगे। जो लोग अपना सामान उचित दामों में बेचकर अच्छी रकम साथ लेकर पाकिस्तान जाना चाहते हैं, उन्हें तो रोक रहे हैं और जो रुकना चाहते हैं उन्हें निकाल रहे हैं! यह कैसा अन्याय, कैसा अनर्थ है? कुछ कहते नहीं बनता कि पीड़ितों को क्यों प्रचण्ड अग्नि में धक्का देने की सोच रहे हैं। तनिक सोचें तो कि ये व्यथित जो गृहहीन, वस्त्रहीन और सम्पत्तिहीन होकर मृत्यु के कक्ष से निकलकर यहां आ पहुँचे हों, उन्हें क्योंकर खदेड़ा जा सकता है। अच्छा तो यह हो कि इन्हें सुविधाएं देकर यहीं बसाया जाये; जो जाना चाहते हैं उन्हें न रोका जाये। पूर्वी पंजाब से लेकर समस्त भारत में ये खप भी सकते हैं, यहीं रक्खा जाये।

पूंजीपतियों की हार्दिक इच्छा है कि इन्हें यहां न रक्खा जाये, क्योंकि उन्हें पंजाब की दुर्दशा का स्वप्न भी नहीं हुआ है। अपने सुख व शान्ति में अन्धे और उन्मत्त पड़े हैं। लक्ष्मी के दुरुपयोग से वे शान्ति व सुख की नींद सो रहे हैं। पंजाब-पीड़ितों को झगड़े का कारण समझकर उनसे घृणा करते हैं। अपन व्यक्तिगत सुख में ही देश का सुख समझते हैं। उन्हें यह मालूम नहीं कि देश के सुख और शान्ति से ही व्यक्ति की वास्तविक शान्ति है। 'टूटी बांह गले को लगती है' के अनुसार विपत्ति में अपनों पर ही दृष्टि जाती है। एक उर्दू कवि ने क्या खूब कहा है:—

यह कैसी दोस्ती है बने हैं दोस्त नासह,
कोई गम गुसार होता कोई चारासाज होता।

और भी:—

अगर नाव डूबी तो डूबोगे सारे,
बचोगे तुम न साथी तुम्हारे।

नहटौर
(बिजनौर)
—चौधरी भगवन्तसिंह त्यागी

* * *

गोवध बन्द हो

देश के करोड़ों लोग गोवध को धार्मिक दृष्टि से बहुत ही बुरा समझते हैं। हजारों लोगों ने गोरक्षा के लिए प्राण दिये तथा बर्बाद हुए। आज भी धार्मिक विचार के लोग करोड़ों रुपया गायों के नाम पर खर्च कर रहे हैं। गाय का धार्मिक ही नहीं आर्थिक व शारीरिक महत्त्व तथा आवश्यकता भी है। गाय से ही दूध-घी तथा बैल मिलते हैं। आज दूध घी तथा अन्न की कमी का मुख्य कारण गोवध ही है। "गौ नहीं तो हम नहीं।"

आज की बढ़ी हुई गोहत्या का जन्म अँगरेजी राज्य ने दिया तथा इसे पराकाष्ठा तक पहुँचाया। अपाहिज तथा बूढ़ी ही नहीं पर जवान दुधारू गायें और बछड़ों की नरम खालें प्राप्त करने के लिए ग्याभन गायों के वध की भी छूट दी। इसी पाप से अब अँगरेजी राज्य खत्म होकर स्वतन्त्र भारत का विधान बन रहा है। इस विधान में धार्मिक ही नहीं आर्थिक तथा शारीरिक दृष्टि से भी गोवध-निषेध का नियम रखने की अत्यन्त आवश्यकता है। गोवध बन्द होने से करोड़ों लोगों को प्रसन्नता होगी ही। देश के सब लोगों को आवश्यक दूध, घी मिलेगा। विदेशों से गला-सड़ा और महँगा अन्न मँगवाने की भी जरूरत न होगी।

जहाँ तक निश्चय हुआ है सर्वप्रथम इसके लिए विधान-असेम्बली को ध्यान दिलाना होगा। अतः गोवध बन्द करने का नियम भारतीय विधान में आधारभूत अधिकार के रूप में रक्खा जाये, आप इस सम्बन्ध में अधिक से अधिक तार तथा पत्र सभापति विधान-असेम्बली, नई देहली को (विधान सभा के अन्य सदस्यों को भी) स्वयं भेजें, अपने यहाँ की संस्थाओं अध्यापकों, छात्रों, क्लर्कों, वैद्यों, डाक्टरों, स्वयसेवकों, मजदूरों, महिला-संघ, राष्ट्रसंघ, मंदिर, मठ आदि संस्थाओं के अधिकारियों, सदस्य तथा जहाँ आपकी पहुँच है उन सब लोगों से भिजवायें।

दिल्ली —शिवा

मनोरञ्जक कहानियाँ
(दूसरा भाग)
इस पुस्तक में बहुत सी मनोरंजक और शिक्षाप्रद कहानियां हैं। इसके पढ़ने से बालकों को अन्य लाभ के सिवा भाषा-सम्बन्धी ज्ञान भी होता है। मूल्य ।-)॥
गुदड़ी के लाल
इस पुस्तक की कहानियाँ बहुत ही सरल और रोचक भाषा में लिखी गई हैं। इनको पढ़कर बच्चे बेहद खुश होते हैं। ऐसी पुस्तक अपने बच्चों को जरूर दीजिए। मूल्य ॥)
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

युद्ध-पूर्व मूल्यों से कम पर
स्विस-निर्मित, ठीक समय देने-वाली। प्रत्येक के लिए ५ वर्ष की गारंटी, प्लास्टिक पट्टी से जिवेल-जड़ित। गोल या चौकोर, क्रोमियम केस १६) उससे अच्छी २५), सर्वश्रेष्ठ ३०)। तिकोनी, चमकीला क्रोमियम केस ३८), श्रेष्ठ ४२) रोल्ड गोल्ड (१० वर्ष की गारंटी) गोल या तिकोनी ५०), १५ जिवेल रोल्ड गोल्ड ८५)। एलार्म टाइम पीस १८) और २२)। डाकखर्च ।॥)। सूचीपत्र समाप्त है।
जुबिली वाच कम्पनी (डी० डी०)
पोस्टबाक्स नं० १२२१३, कलकत्ता (५

सूर्यग्रहण के अवसर पर तैयार की हुई
दिव्य सिद्धि तांत्रिक अँगूठी (रजिस्टर्ड)
आप जो चाहेंगे हो जायगा। गरीबी दूर भाग जायगी, लक्ष्मी आपके कदम चूमेगी, आप धनवान हो जायगे, आपकी प्रेमिका आपसे अटूट प्रेम करने लगेगी, शत्रु मित्र बन जायँगे, मनचाही सन्तान होगी, बुरे ग्रहों का दोष दूर हो जायगा, संसार आपकी इज्जत करेगा, लड़ाई-झगड़े में फतह होगी, विद्यार्थी परीक्षा में पास होंगे, जिसे आप चाहते हैं उसी सुन्दरी से शादी होगी, नाराज हाकिम खुश होगा, वशीकरण होगा। बात यह है कि हर काम आपके इच्छानुसार होगा। यह अंगूठी ग्रहण के अवसर पर शुभ मुहूर्त में तयार होती है। बड़े परिश्रम से तैयार कराई गई है। अब परीक्षा करके लाभ उठाना आपका काम है। मूल्य २॥) डाक-खर्च ।।≥) आना।
नोट—बेकार साबित हो, तो ६ महीने तक वापिस।
भारतीय तांत्रिक भंडार (१०) अलीगढ़

थोड़ी प्रतियाँ बची हैं। शीघ्रता कीजिए
वार्षिक बालसखा १९४७
इसकी छपाई कई रंगों में हुई है। चित्रों की भरमार है। लेख, कविताएँ और कहानियाँ अनुपम हैं। जिल्द सजीली, आकर्षक और बालकों के पसन्द की है। ऐसा कौन बालक होगा जो इस अंक को पाकर आदि से अन्त तक पढ़े बिना शान्त रहे। ३०० पृष्ठों के इस अंक का रियायती मूल्य २।) शीघ्रता कीजिए।
मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

हास परिहास

भंग की तरंग

डाक्टर काटजू साहब कहते हैं कि संस्कृत भारत की राष्ट्र-भाषा बनाई जाय। ऐसी अवस्था में महात्मा जी कहेंगे कि संस्कृत में थोड़ी अरबी मिला दी जाय।

* * *

पकवासा महोदय कहते हैं कि गवरनर शब्द मुझे ठीक नहीं लगता, मैं तो जनता का सेवक हूँ। तो वह दासानुदास अपने नाम के साथ लिखा करें, कौन रोकता है?

* * *

भारतीय मुसलमानों की अभिलाषा है कि पाकिस्तान भारत पर हमला कर दे। भारत के मुसलमान यों ही कांग्रेसी नहीं हो रहे हैं।

* * *

आजाद साहब ने बिहार में कहा कि अभी पांच साल तक अँगरेजी ही भाषा व्यवहार में लानी चाहिए। हां यदि उर्दू नहीं तो विदेशी ही सही। हिन्दी किसी प्रकार न हो।

* * *

कुछ सरकारी कर्मचारी जो पाकिस्तान गये थे, असंतुष्ट होकर लौट आये और यहां फिर नौकरी चाहते हैं। प्रान्तीय सरकार को चाहिये कि उन्हें और ऊँची नौकरी दे। शरणागत का बहुत सम्मान किया जाता है।

* * *

गजनफर अली कहते ह कि पश्चिमी पंजाब में भ्रष्टाचार जोरों से बढ़ रहा है। शायद वह समझ रहे थ कि वहां ईमानदारों का जमघट है।

* * *

आपन यह भी बताया कि हैजे और प्लेग से ढाई हजार व्यक्ति शरणार्थी कैम्पों में मर गये। तो क्या हुआ पाकिस्तान परेह या बहिश्त है। बात तो ठीक ही है।

* * *

उत्तराखंड में विद्यापीठ बन रहा है जिसके लिये एक करोड़ रुपया एकत्र हो रहा है। इस विद्यापीठ में योग-विद्या और समाधि लगाने की शिक्षा देनी चाहिये। इसके बहुत से अध्यापक वहां मिलेंगे।

* * *

बंबई का मजदूर-संघ कहता है कि वस्तुओं पर नियंत्रण जारी रहे। मजदूरों को तो उसका उलटा कहना चाहिए महात्मा गांधी कहें।

* * *

बंबई में संयुक्तप्रांत के प्रधान मंत्री पंडित गोविंद वल्लभ पंत ने कहा कि मिय होकर भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा ाना होगा। क्यों न ऐसे व्यक्ति कांग्रेस निकाल दिये जायँ?

* * *

कहा जाता है कि कानपुर डेवलेपमेंट बोर्ड को जो सिमेंट मिला था उसने बाजार में बच दिया। डवलेपमेंट का अर्थ ह उन्नति। सिमेंट बेचकर मुनाफा किया, उन्नति की। इसमें अपराध ह?

* * *

महात्मा जी कहते हैं कि पाकिस्तान विरोध नहीं करना चाहिए। ठीक है। पाकिस्तान का सब तरह से समर्थन करना चाहिए। भारत को भी पाकिस्तान बनाना चाहिए।

* * *

सुना जाता है कि हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का नाम अब बदल दिया जायगा। इसका नाम रखा जायगा कम्युनिस्ट साहित्य-सम्मेलन।

* * *

बरमा भी स्वतंत्र हो गया। आशा है जितन बरमन लोग हैं वह अब वहीं जाकर बसेंग।

——अगड़धत्त शर्मा

साहित्य-चर्चा

‘भैरवी’

गांधी-युग का सर्वोत्कृष्ट काव्य

लेखक, श्री रामपरीक्षासिंह ‘पुष्प’ एम० ए० ‘साहित्यरत्न’

गांधी-युग के कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी

वर्तमान युग के राष्ट्रीय कवियों में पंडित सोहनलाल द्विवेदी का अपना एक विशिष्ट स्थान है। ‘भैरवी’-कार के रूप में हिन्दी-जगत् ने द्विवेदी जी का अच्छा सम्मान किया। ‘भैरवी’ जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, कवि के ‘राष्ट्रीय जागरण’ के कुल ३७ गीतों का एक सुन्दर-संग्रह है। ‘पूजागीत’ से ‘भैरवी’ का प्रारम्भ होता है। इसमें कवि का पूर्ण त्याग और वंदिनी भारतमाता के प्रति अचल अनुराग परिलक्षित होता है। यथा—“हों जहां बलि शीश अगणित, एक शिर मेरा मिला लो”। ‘युगावतार गांधी’ शीर्षक को पढ़िये और पुस्तक के आदि में बापू के लकुटीधारी चित्र को देखिये——

‘चल पड़े जिधर दो डग, मग में,
चल पड़े कोटि पग उसी ओर,
पड़ गई जिधर भी एक दृष्टि,
गड़ गये कोटि दृग उसी ओर’।

इन पंक्तियों की आधार-शिला पर गांधीवाद रूपी भव्य प्रासाद की रचना कवि ने किस कौशल से की है, देखिये:——

“हे कोटि चरण हे कोटि बाहु!
हे कोटि रूप हे कोटि नाम!
तुम एक मूर्त्ति प्रति मूर्ति कोटि,
हे कोटि मूर्ति तुमको प्रणाम!

एक शब्द ‘कोटि’ की कई बार आवृत्ति से भाषा में सौन्दर्य और संगीतात्मकता की निराली छटा आ गई है। इसी को कवि कौशल कहते हैं, और इसी का नाम कविता ह।

‘गांधीवाद’ और गांधी-गौरव जो सहस्रों पृष्ठों का विषय है, आप चाहें तो इन तीन पदों में पढ़ लीजिये——

धर्माडंबर के खँडहर पर,
कर पद प्रहार कर धरा ध्वस्त,
मानवता का पावन मंदिर,
निर्माण कर रहे सृजन व्यस्त!

* * *

कँपता असत्य कँपती मिथ्या,
बर्बरता कँपती है थर-थर,
कँपते सिंहासन राज-मुकुट,
कँपते खिसके आते भू पर।
हैं अस्त्र-शस्त्र कंपित लुंठित,
सेनायें करतीं गृह-प्रयाण!
रणभेरी तेरी बजती है,
उड़ता है तेरा ध्वज-निशान!

द्विवेदी जी के गीतों पर विचार करने से यह स्पष्ट विदित हो जाता है कि ये पंक्तियां केवल प्रगतिवादी कवियों की श्रेणी में नाम लिखाने के लिए ही नहीं लिखी गई हैं। कोटि-कोटि नंगे-भिखमंगों के दयनीय दृश्य से कवि का हृदय आहत हुआ है, और वही आह बरबस बाहर निकल आई है। इसीलिए प्रत्येक पद सच्चाई और समवेदना से ओतप्रोत है।

भारत ग्राम-प्रधान देश है। इसमें नगरों की संख्या तो नगण्य है; अतः ग्रामों की दशा ही भारत की वास्तविक दशा है। जिसे भारत की दशा का, इसकी गरीबी और मुहताजी का चित्र देखना हो वह सदियों से कराहते हुए ग्रामों की सैर करे और साथ ही ‘हड्डी-पंसली के पुतलों’ की दीन दशा देखकर अपने गुलाबी गालों को गीला करे। कवि दो प्रकार की वस्तुएँ देखता है। एक ओर वैभव और ऐश्वर्य और दूसरी ओर दैन्य और निराशा! कहीं तो चमचमाते हुए अभ्रंकुश भव्य-भवन और सुरम्य अट्टालिकायें और कहीं ‘पुरईवालों’ और खपरैलों से बने हुए गिरे-पड़े मिट्टी के कच्चे घर! कहीं तो नाना प्रकार के वस्त्राभूषणों से अलंकृत अंगरागों से मंडित और पुष्परागों से सुवासित मृदुल वेष, और कहीं चीथड़ों से ढँके श्रम-विन्दुओं से लथ-पथ, बिवाइयों से व्यस्त, रक्त-विहीन सूखे नर-कंकाल! कहीं स्वर्ण और रजत-थालों में परसे हुए विविध-व्यंजन और कहीं सूखे चने और नमक-रोटी के भी लाले! इस पर कवि समाज में विषमता की नींव डालनेवाली स्वार्थ-सत्ता की आधार शिला पर अधिष्ठित वैभव और विलास को घृणा भरी दृष्टि से देख दैन्य और निराशा का पक्ष लेता है और मर्माहत होकर फूट पड़ता है——

“दिन रात सदा पिसते रहते,
कृषकों में औ’ मजदूरों में,
जिनको न नसीब नमक रोटी,
जीते रहते उन शूरों में,
भूखे ही जो हैं सो रहते,
विधिना के निठुर नियावों में,
है अपना हिन्दुस्तान कहां?
वह बसा हमारे गांवों में!”

* * *

चूती जिनकी खपरैल सदा,
वर्षा की मूसल धारों में,
ढह जाती है कच्ची दिवार,
पुरवाई की बौछारों में,
उन ठिठुर रहे, उन सिकुड़ रहे,
थर-थर हाथों में पावों में,
है अपना हिन्दुस्तान कहां?
वह बसा हमारे गांवों में!”

गांवों और ग्रामीणों का इससे सजीव, मर्मस्पर्शी और स्पष्ट चित्र अन्यत्र दुर्लभ ह।

झोंपड़ियों की ओर चलने के लिए आमंत्रित करते हुए कवि कहता है:——

“यह अन्याय अनीति मिटाओ,
युग-युग का दुख दैन्य दलो।
महलों को भूलो प्यारे!
अब झोंपड़ियों की ओर चलो!”

‘भैरवी’ में किसान, मजदूर और देशरत्नों के बड़े ही मार्मिक शब्द-चित्र अंकित हैं। आज के बहुतेरे कवि निराशावादी दृष्टि कोण रखते हैं। वे कदाचित् विकट परिस्थितियों से संघर्ष करने की क्षमता नहीं रखते; और सर्वनाश तथा महाप्रलय के द्वारा ही मुक्ति प्राप्त करना चाहते हैं। काव्य-जगत् में यह निराशावादी दृष्टिकोण और भीरु-भावना कभी समादृत नहीं हो सकती। ‘भैरवी’ के सम्बन्ध में श्री सम्पूर्णानन्द जी ने लिखा है——“हमारी अधिकांश प्रगतिशील कविताओं में निराशा का प्राचुर्य है, द्विवेदी जी की कविताओं में श्रद्धा और आशा की ज्योति है।”

किन्तु द्विवेदी जी की इन पंक्तियों को पढ़कर पाठकों को कुछ भ्रम हो जाता है——

“वज्रपात हो बिजली कड़के,
थर-थर कांपे सब जल-थल,
अतल, वितल, पाताल, रसातर,
भूतल निखिल सृष्टि मंडल!
महा प्रलय होने दे निष्ठुर!
कर विनाश की तैयारी।
सर्वनाश हो पराधीनता,
यों ही भारत की सारी!”

‘भैरवी’ वर्तमान-युग की एक सुन्दर रचना है। प्रत्यक्ष रूप से नहीं तो अप्रत्यक्ष रूप ही से सही, इसमें हमारी जटिल समस्याओं का थोड़ा-बहुत समाधान भी है। ‘भैरवी’ के निर्माण की मूल प्रेरणा प्रत्येक पंक्ति में प्रत्यक्ष दीख पड़ती है।

‘भैरवी’-कार से हमें भाषा की शिकायत अवश्य है। कहीं-कहीं तो भाषा की भद्दी-भद्दी भूलें भावाभिव्यंजन को बिलकुल विरूप कर डालती हैं। यथा——‘इनकी प्राचीरों के उड़ान’, ‘प्रेमी के गहन निराशा का’, ‘जो थी भिखारिणी कल अपार’ ‘कल लखनऊ गूंज उठा था’ ‘वैभव सिंचित शृंगार करो’ इत्यादि।

‘भैरवी’ की ‘भाषा और शैली’ शीर्षक निबन्ध में इन भूलों पर विस्तृत विचार किया गया है।

पृथ्वी की कहानी

पृथ्वी कैसे बनी, पृथ्वी पर पहले-पहल कौन आया; नद-नदियाँ, पहाड़, जंगल, रेगिस्तान, बर्फीले देश, जानवर, पक्षी और आदमी कैसे बने; धर्म और जातियां, राजा और कानून कैसे बने; पुरानी यादगारें, आज की दुनिया, पृथ्वी का अन्त आदि बातों का वर्णन इस पुस्तक म बड़े अच्छे ढंग से किया गया है। मूल्य ॥=॥)

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग।

कसीदा काढ़ने की मशीन

यह चार सुइयों की मशीन भाँति भाँति के काम करती है। इससे कसीदा काढ़ना बड़ा ही आसान है। दिल पसंद फूल, पत्ती, बेल, बूटे, पशु-पक्षियों के चित्र, कालीन, सीन-सीनरी इत्यादि आसानी से काढ़े जा सकते हैं। बड़ी सुंदर और मजबूत है। मूल्य ४ सुइयों सहित ३) डाकखर्च ॥।), कसीदाकारी की डिजाइन की पुस्तक। मूल्य २) डाकखर्च ॥)।

एस० के० सक्सेना (सी० ४) रंग महल, अलीगढ़।

इधर उधर की

पूर्वी पंजाब में हिन्दू शरणार्थी

अब तक पूर्वी पंजाब और भारतीय रियासतों में प्रायः २० लाख शरणार्थी आबाद किये जा चुके हैं। इनमें से प्रायः १५ लाख को पूर्वी पंजाब में २० लाख एकड़ जमीनें दी गई हैं। अम्बाला डिवीजन में प्रायः ५॥ लाख शरणार्थी आबाद किये जाएँगे २,२३,००० विभिन्न रियासतों में आबाद किए जायेंगे। पटियाला में १,२३,००० और जोधपुर में ३०,००० व्यक्ति आबाद किये गए हैं। १५,००० व्यक्तियों को भारत-सरकार ने नौकरियां दिलवाईं। पटियाला राज्य में और ७५,००० व्यक्ति बसाए जाएँगे। इन्दौर के ३ जिलों में भी शरणार्थियों को आबाद करने की योजना बन रही है। इस योजना पर ५ लाख रु० खर्च किया जाएगा। अलवर में ५० हजार शरणार्थी और बसाए जाएँगे। प्रतापगढ़ राज भी ५ लाख रु० खर्च करके शरणार्थियों को बसाएगा। भारत-सरकार का कृषि-विभाग अगले मार्च तक २२० ट्रैक्टर मँगाने का यत्न कर रहा है। इनकी सहायता से २ लाख एकड़ बंजर जमीन पूर्वी पंजाब में चालू की जायगी और वहां शरणार्थी आबाद किए जाएँगे। शहरी शरणार्थियों को आबाद करने की योजना भी विचाराधीन है। बड़ौदा और मैसूर भी शरणार्थियों को बसाएगा।

*

कितने शरणार्थी आये

देश के विभिन्न भागों में १६० शरणार्थी-कैम्प हैं और उनमें १२॥ लाख शरणार्थी हैं। इनमें से पूर्वी पंजाब में ८५ कम्प हैं और उनमें ७। लाख शरणार्थी हैं। फरीदकोट, उदयपुर, इन्दौर, ग्वालियर, अलवर, रीवां, कोटा और रतलाम के कैम्पों में ५३,००० शरणार्थी हैं। बम्बई प्रान्त के ३२ कैम्पों में १३,०००, यू० पी० के ३१ कैम्पों में ३,०००, मद्रास के ३ कैम्पों में ६००, मध्यप्रान्त में १५० और दिल्ली के कैम्पों में १५,००० शरणार्थी हैं। इन कम्पों पर कई लाख रु० रोज खर्च होता है। भारत-सरकार ने अपने बजट में शरणार्थियों के लिए १० करोड़ रु० रखा है।

* * *

१४ अक्टूबर तक पश्चिमी पंजाब और सीमान्त से ४०,१५,०००, सिन्ध से २,७७,०००, बहावलपुर से ७०,०००, पश्चिमी पाकिस्तान से कुल ४३,६२,००० शरणार्थी निकले। इन्हें निकालने के लिए १० लाख गलन पेट्रोल हर महीने खर्च होता रहा। कुरुक्षेत्र कैम्प में हर रोज २,८०० मन आटे का खर्च है। वहां १६,००० तम्बू हैं और उनमें २,७०,००० शरणार्थी आबाद हैं। भारत-सरकार ने १,३०,००,००० कम्बल और रजाइयां, पौने ६ लाख रुईदार बंडियां बनवाने का आर्डर दिया है। पूर्वी पंजाब में १५ लाख से अधिक शरणार्थियों को आबाद किया जा चुका है। कुरुक्षेत्र कैम्प से अब तक २०,००० व्यक्ति बाहर भेजे गये हैं। पूर्वी पंजाब-सरकार अब तक १,५७,५०,००० रु० तकावी और ८४,००० टन बीज बांट चुकी है।

*

'मिस्टर' और 'एस्क्वायर' चले

पूर्व पंजाब के प्रधान मंत्री डाक्टर गोपीचन्द भार्गव ने आदेश जारी किया है कि सारे सरकारी कागजों, फाइलों और पत्रों में 'मिस्टर' और 'एस्क्वायर' का लिखना तत्काल बन्द कर दिया जाय और उनके स्थान पर 'श्री' या 'श्रीमान्' लिखे जायें।

कंट्रोल का अस्तित्व समाप्त हो

(पेज ८ का शेष)

संचय करने की आम रीति का भी अन्त हो जायेगा। दुकानदार या उत्पादक बढ़ी हुई कीमत के लालच में आकर अपना माल अधिक से अधिक निकालने का प्रयत्न करेगा। उसे इस बात का डर रहेगा कि प्रतियोगिता के कारण शायद आज जो दाम मिल रहे हैं कल उतने दाम न मिल सकें। उपभोक्ता बढ़ी हुई कीमत को देखकर अपनी आवश्यकता के अनुसार ही मांग रखेगा, क्योंकि पहले तो उसकी आमदनी इस बोझ को सहने से असमर्थ हो और दूसरे उसे यह आशा रहेगी कि शायद कल कीमत आज से कुछ कम हो जाये। इस प्रकार संचय करने की इच्छा के अन्त होने से बाजार में माल की मात्रा बढ़ जायगी और धीरे धीरे मांग और पूर्ति का पुराना खेल फिर से आरम्भ हो जायगा; यह सुविधायें नियन्त्रण हटाते एकदम ही नहीं प्राप्त हो जायँगी, क्योंकि इतने समय के बाद बाजार को अपनी पुरानी रफ़्तार में आते आते कुछ समय लगेगा। परन्तु इतना जरूर है कि धीरे धीरे सब बातें फिर से ठीक हो जायेंगी।

कुछ सुझाव

यह तो कहना ठीक है कि नियन्त्रणों को हटाने के बाद हालत बहुत कुछ सुधर जायगी परन्तु एक कठिनाई अवश्य है। समस्त देश में इस समय गल्ले तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं की कमी है। यह कमी नियन्त्रण हटाने से कुछ कम अवश्य हो जायेगी; परन्तु तब भी थोड़ी बहुत रहेगी। हमारे देश में एक खास बात है और वह यह कि प्रत्येक प्रान्त की स्थिति कुछ एक दूसरे से भिन्न है। कुछ प्रान्तों में कुछ आवश्यक वस्तुएँ अधिक मात्रा में पैदा होती हैं और कुछ में कम। नियन्त्रण हटाने से पहले दो बातें आवश्यक हैं। पहले तो यह कि जहां तक हो सके, उपस्थित पैदावार का सब प्रान्तों में एकसा वितरण कर दिया जाय। कन्ट्रोल के जमाने में यह देखा गया है कि अगर बंगाल में चावल का उपभोग अधिक है तो वहां चावल के बजाय गेहूँ अधिक मात्रा में दिया जाता था और युक्तप्रांत में जहां गेहूँ की अधिक मांग है, वहां चावल ज्यादा दिया जाता था। प्रत्येक प्रान्त का आवश्यकतानुसार . वितरण बहुत आवश्यक है। दूसरे नियन्त्रण हटाने से पहले प्रत्येक प्रान्तीय सरकार और भारत-सरकार स्वयं को काफी माल स्टाक में रख लेना चाहिए। अगर नियन्त्रण हटाने के बाद यह पाया जाय कि आवश्यक माल की कीमत हद से ज्यादा बढ़ रही है तो उस समय सरकारी संचित माल बाजार में भेजकर प्रतियोगिता को बढ़ाने और कीमत को कम करने के काम में लाया जाय। इस माल के समय पर बाजार में आने से पूर्ति की वृद्धि होगी और इसका असर यह होगा कि उत्पादकों को कीमत कम करनी पड़ेगी जिससे वह बाजार की प्रतियोगिता के सामने ठहर सके। इसके अलावा देश की उत्पादन-शक्ति को बढ़ाने के लिए यह अनिवार्य है कि साइन्स की नई इजादों को खेत और गांव में काम में लाकर माल की कमी को पूरा कराया जाय। अभी तक हमारे देश का किसान पुरानी लकीर का फकीर है। लेकिन देश के स्वतंत्र होने के बाद अब उसकी पुरानी बातों तक ही सीमित नहीं रहना पड़ेगा बल्कि नई-नई बातों का अनुभव कर देश की उन्नति में हाथ बटाना पड़ेगा।

देश की पूंजीवाद-प्रथा भी हमारे देश के उत्पादन की कमी का एक बहुत बड़ा कारण है। खेत पर किसान अपनी मेहनत का पूरा फल न पा सकने के कारण उत्पादन बढ़ाने में कोई दिलचस्पी नहीं लेता। इसी प्रकार मिल का मजदूर एक मशीन की तरह काम करता है और उत्पादन बढ़ाने में कोई खास हिस्सा नहीं लेता, क्योंकि मेहनत का पूरा फल न मिलने के कारण उसकी आमदनी इतनी कम होती है कि वह मेहनत करने काबिल अपने जिस्म को नहीं रख सकता और वह यह भी जानता है कि उत्पादन बढ़ाने से उसका कोई लाभ न होगा क्योंकि लाभ का काफी अंश तो पूंजीवादियों की जेबों में जायगा जो कुर्सी और मेज पर बैठ केवल हुक्म चलाना जानते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि देश की स्थिति को सँभालने के लिए जमींदारी प्रथा का अन्त हो और देश की खास-खास उद्योग-धन्धों का शीघ्र से शीघ्र राष्ट्रीयकरण हो और सरकार यह देखे कि प्रत्येक मेहनत करनेवाला इन्सान अपनी मेहनत का पूरा फल प्राप्त करता है।

देश के स्वतन्त्र होने के बाद देश की उन्नति और अवनति का भार देशवासियों पर ही है। इसीलिए यह आशा की जाती है कि देश का प्रत्येक हितैषी, बड़ा या छोटा, हिन्दू या मुसलमान हर एक अपने बनावटी और आपसी भेद-भाव छोड़कर देश की उन्नति करने के लिए जुट जायगा। इसी में देश का कल्याण है और देशवासियों में शान्ति है।

यूनान का आज का गृह-युद्ध

(पेज ५ का शेष)

लोगों को उतना ही भोजन दिया जा जिससे कि वे जीवित रहें। कैलोरी संख्या में यह संख्या दो हजार ही यूनान की आर्थिक स्थिति दिन-प्रति गिरती जा रही है। वहां के निहित स्व वाला वर्ग अपने शासनाधिकार के बल ही शोषण-चक्र को पूरी तेजी से चला है और इसी का यह फल हो रहा है यूनान की जनता विरोधी गुट की अधिक आकर्षित होती जा रही है। यू में अब कम्यूनिस्ट फौज ने प्रजातां सेना के नाम से संगठन करना आरम्भ दिया और इस नाम से उनका प्र पहले से कहीं अधिक फैलता जा रहा जनता के इस तेजी के झुकाव के हो हुए भी स्थिति उलझती ही अधिक प्र होती है, क्योंकि दक्षिणपक्षीय शक्ति को पूरी तौर से सहायता देने की नी की घोषणा अमरीका ने कर दी है।

अभी हाल के समाचार से ज्ञा हुआ है कि यूनान में गुरिल्ला लो एक समानान्तर सरकार का निर्मा दिया है। गुरिल्ला लोगों की इस सर में केवल कम्युनिस्ट लोगों का ही अधि बतलाना निराधार होगा। आज इस सर को यूनान की समस्त प्रजातांत्रि शक्तियों का सहयोग मिल रहा है। ओर अमरीकी साम्राज्यवाद यूनान राजतंत्रीय फासिस्टवाद को स्थापित क का प्रयत्नशील है और दूसरी ओर की जनशक्ति दिन-प्रतिदिन संगठित हो जा रही है। यूनान का उभयपक्षीय स दिन-प्रतिदिन उग्रतर होता जा है और अब वह गुरिल्ला-युद्ध तक सी न रहकर भयंकर गृहयुद्ध का स्व ले लेगा।

श्रीराजाराम श्रीवास्तव की अनमोल कृतियाँ

वनवास

इसमें रामचन्द्रजी के वनवास का अनोखा वर्णन है। कवि महोदय पुण्यधाम चित्रकूट के पड़ोसी हैं और वहीं पर वनवास की अनेक मुख्य घटनाएँ हुई थीं। इस कारण यह 'वनवास' अपने ढंग की एक ही पुस्तक है। इसमें श्री रामचन्द्रजी के वनवास से सम्बन्ध रखनेवाली, दशरथ के प्राण-त्याग, भरत के द्वारा कैकेयी की भर्त्सना, अयोध्या लौटने के लिए श्री रामचन्द्रजी से भरत के आग्रह करने तथा लक्ष्मण के द्वारा शूर्पणखा की नाक काटने आदि की घटनाओं का वर्णन है। मूल्य ॥≈) चौदह आने।

लक्ष्मण-शक्ति

यह बहुत ही उत्तम कोटि की रचना है। इस खण्ड-काव्य की रचना रामायण के लंकाकाण्ड की उस सुप्रसिद्ध घटना के आधार पर की गई है, जब लक्ष्मणजी मेघनाद से युद्ध करते हुए उसके द्वारा चलाई गई शक्ति क हृदय में लग जाने पर मूर्च्छित होकर गिर पड़े थे और उनके जीवित रहने की आशा नहीं रह गई थी। मूल्य ॥) आठ आने।

मधुस्रवा

इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीवन में मधु बरसाने की पूरी क्षमता है। इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन को रस-सिक्त बनाइए। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

किंकिणी

इस पुस्तक में कविजी की उत्तमोत्तम फुटकर कविताओं का संग्रह है। कविताओं की भाषा इतनी मधुर और कल्पना की उड़ान इतनी आकर्षक है कि पाठक कुछ क्षण के लिए उसमें अपनी सुध-बुध भूले बिना नहीं रहता। मूल्य ॥।) बारह आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

संवाददाताओं के पत्र

शिमला (डाक से) श्री सागर कार्यालय मंत्री, हिटरी राज्य प्रजामण्डल केन्द्रीय कार्यालय लिखते हैं—

साम्प्रदायिक दंगों के दौरान में प्रजामण्डल के कई कार्यकर्ताओं को पब्लिक सेफ्टी आर्डिनेंस के अन्तर्गत दंगाइयों के नाम से गिरफ़्तार किया गया था। इन लोगों को लगभग पांच मास से कारागार में बन्द कर रक्खा है। मण्डी सरकार इन राजनैतिक बंदियों पर दफा ३०२, ३२५ चलाकर इन्हें कई वर्षों की लम्बी-लम्बी सजाएँ देने पर तुली हुई है। इन लोगों को अभी तक अण्डर ट्रायल ही रक्खा जा रहा है। कई राजनैतिक बन्दी कुछ दिनों भूख-हड़ताल कर रहे हैं, मेरी तीन बार प्रार्थना करने पर भी मुझे इनसे मिलने की आज्ञा न दी गई। इसके विपरीत मुझे दूसरी पास की रियासत 'सुकेत' में जाने से भी मण्डी पुलिस-द्वारा रोका गया और एक मोटर द्वारा ९८ मील दूर पठानकोट ले जाकर छोड़ा गया।

सुकेत रियासत में दूसरी बार एक सप्ताह बाद जाकर एक नया कानून लागू पाया, जिसके अन्तर्गत रियासत के किसी भी नागरिक को अपने घर में अतिथि को टिकाने की आज्ञा नहीं है। मैं वहां के प्रजामण्डल कार्यालय में ठहरा तो पुलिस ने प्रजामण्डल-कार्यालय के कार्यकर्ताओं और पास-पड़ोसियों को बुरी तरह तंग करके डाट-फटकार दिखाई। साथ ही उसी रात को बारह बजे मुझे बिना वारंट के जंजीरों से बांधकर एक मील दूर कोतवाली तक घसीटा गया। थानेदार ने मेरे हाथ का तिरंगा झण्डा छीनकर फाड़ डाला इसके बाद मुझे तीन दिन तक भूखा कैद में रक्खा गया। चौथे दिन बाद, गठरी बनाकर मोटर में डाला जाकर १४ पुलिसवालों की देख-रेख में १२ मील दूर बिलासपुर स्टेट पुलिस के हवाले सौंपा गया।

बिलासपुर रियासत में कुछ प्रजामण्डल कार्यकर्ताओं के घर उजाड़ पाये गये। भेद मालूम करने पर पता चला कि इन घरों के अधिकारियों (मालिकों) को प्रजामण्डल कार्यकर्ता होने के कारण रियासत से निर्वासित कर दिया गया है। सरकार की हिटलरशाही के कारण अभी तक बिलासपुर रियासत के भीतर प्रजामण्डल-कार्यालय नहीं स्थापित हो सका। अन्धेरगर्दी यहां तक है कि रियासत की राजधानी में स्थित भारत-सरकार के डाकघर पर तक (जो बिलकुल स्वतन्त्र होना चाहिए) तिरंगा झण्डा नहीं लगा हुआ है।

—संवाददाता

* * *

उदयपुर महिलामंडल के द्वारा संचालित कस्तूर बा ट्रेनिंग विद्यालय की स्नातिकाओं ने अपने निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार एकलिंगपुरा ग्राम में ग्राम-सुधार व सेवा के लिए शिविर चलाया जिसमें छात्राओं ने भाग लिया। शिविर में गांव की आवश्यकताओं, जनगणना, गांव की उपयोगी जानकारी, औषध-वितरण, कृषि-सम्बन्धी योजनाओं, प्रौढ़-शिक्षा, महिलाओं की समस्याएँ व सम्पर्क, ग्राम स्वच्छता तथा सड़कों का निर्माण आदि बिन्दु उल्लेखनीय थे। कैम्प का निरीक्षण श्री मोहनलाल जी सुखाडिया सप्लाई मिनिस्टर, श्री लक्ष्मीलाल जी जोशी डाइरेक्टर शिक्षा-विभाग और शिक्षा-विभाग के निरीक्षक श्री सनाढ्य ने किया। अन्तिम दिन श्री डा० मोहनसिंह जी मेहता की अध्यक्षता में समारोह हुआ जिसमें कार्य-विवरण, भील-नृत्य, ग्रामीण महिलाओं के गीत, ग्रामीणों से बातचीत, ग्रामबालाओं की उपस्थिति, सहयोग तथा क्रियाशीलता का प्रभाव कैम्प की विशेषता रही है।

श्रीमती सौ० महारानी साहिबा इन्दौर तथा श्रीमंत महाराजा साहब बहादुर रतलामवाले ने एक-एक हजार की सहायता कर मंडल को बल दिया है।

देशी राज्य लोक-परिषद् की राजपूताना कार्य-समिति के महिला-विभाग द्वारा आयोजित राजपूताना कार्यकर्त्री शिक्षण-शिविर मार्च मास में उदयपुर में होने जा रहा है। उसके साथ-साथ यहां राजस्थान महिला-सम्मेलन होने का भी निश्चय हो गया है। अतः इसका स्वरूप निश्चित करने तथा अन्य प्रकार से रस लेनेवाली महिलाएँ शीघ्र पत्र-व्यवहार करें।

—कमलाकुमारी श्रोत्रिय

* * *

गौरी बाजार (देवरिया) की अँगरेजी शुगर फैक्टरी बहुसंख्यक हिन्दी-भाषी प्रांत में है। इस फैक्टरी से सम्बन्धित सपूर्ण जनता हिन्दी ही लिख और पढ़ सकती है। यू० पी० की जनप्रिय सरकार के आदेश से कचहरियों और थानों में अब हिन्दी आसीन हो गई है। प्रान्तीय सरकार का गजट भी हिन्दी में निकलने लगा है। पर शुगर फैक्टरी के दफ्तर का सारा कारोबार आज भी पुरानी परिपाटी के अनुसार अँगरेजी में ही हो रहा है। इससे हम साधारण जनता को बड़ी असुविधा हो रही है। आज भी हम गन्ना बोनेवाले किसानों को फैक्टरी में गन्ना लानेवाली पुरजी अँगरेजी में ही दी जाती है जिसे हिन्दी पढ़-लिख सकनेवाले किसान भी इधर-उधर पढ़वाते फिरते हैं। गन्ना के तौल की भी पुरजी अँगरेजी में ही होती है। पुरजी भुनाकर रुपया लेते समय हस्ताक्षर कर सकनेवालों को भी निशान ही देना पड़ता है। इस स्थान पर स्याही और लेखनी का भी प्रबन्ध फैक्टरी की ओर से रहना चाहिए। इन असुविधाओं को दूर करके फैक्टरी जनप्रिय बन सकती है। केन डेवलपमेंट सोसाइटी न होने के कारण् सर्व-साधारण गन्ना बोनेवाले किसानों की परिवर्तनकारी पुकार फैक्टरी के अधिकारियों के पास नहीं पहुँच पाती है। आशा है अधिकारी-वर्ग जनरुचि का स्वागत कर राष्ट्र की प्रगति में सहायक बनेंगे। हिन्दी के सम्बन्ध में इस क्षेत्र के कई सार्वजनिक सभाओं से प्रस्ताव भी पास हुए हैं।

——चन्द्रिकासिंह अध्यापक

* * *

गौरी बाजार (देवरिया) में श्री चन्द्रिकासिंह पाल की साहु कांग्रेस कार्यकर्ता और श्री दुधई कोइरी-उद्योग से, ग्राम-पंचायत लावकनी (देवरिया) के संगठन निमित्त, किसानों और मजदूरों की एक सार्वजनिक सभा श्री दुःखहरणसिंह के सभापतित्व में हुई। श्री सूर्यनारायणसिंह का 'पंचायत के संगठन पर', चन्द्रिकासिंह का 'प्राप्त स्वतन्त्रता-रक्षा निमित्त' और श्री सभापति जी का 'ग्रामीण नागरिकों के अधिकार पर' प्रभावशाली भाषण हुआ। सर्व-सम्मति से 'गांव हुकूमत बिल' के अनुसार ३५ सदस्यों की एक ग्राम-असेम्बली और १३ सदस्यों का पंचायत-मण्डल चुना गया। श्री देवनारायणसिंह जी सरपंच और श्री दुधई कोइरी सेक्रेटरी चुने गये। ग्राम-रक्षा पुलिस का भी संगठन किया गया। कई आवश्यक और महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव भी पास हुए और सम्बन्धित अधिकारियों के पास भेजे गये।

—संवाददाता

कालसी में जौनसार बावर ठाकुर सेवकसिंह त्यागी के सभापतित्व में एक सार्वजनिक सभा हुई। आदिवासी कोल्टा लोग भी सम्मिलित थे कुछ सयाने कांग्रेस के पुराने कार्यकर्ता पंडित सोमप्रकाश मिश्र और ठाकुर केदारसिंह ठाकुर सेवकसिंह आदि के विरुद्ध प्रचार करते हैं। मीटिंग में सर्वसम्मति से इन लोगों पर विश्वास प्रकट किया गया। एक अन्य प्रस्ताव द्वारा वर्तमान कांग्रेस सरकार पर पूर्ण विश्वास प्रकट किया गया। युक्तप्रान्तीय सरकार ने जौनसार बावर की उन्नति के लिए ५० हजार रुपये देना स्वीकार किया है। उसके लिए वक्ताओं ने धन्यवाद दिया।

अशोक-आश्रम के व्यवस्थापक श्री धर्मदेव शास्त्री भी मीटिंग में उपस्थित थे। उन्होंने भी सबको अपनी बुराइयां छोड़कर एक साथ चलने का उपदेश दिया। कोल्टा जाति के युवक विद्वान् श्री वेदप्रकाश ने कोल्टों को संगठित करने पर जोर दिया।

जौनसार बावर की उन्नति के लिए प्रान्तीय सरकार ने एक कमेटी बनाई है। उसके प्रधान पंडित सोमप्रकाश हैं।

—संवाददाता

* * *

फतेहपुर (राजपूताना) में श्री विद्वद्वैद्य परिषद् की विराट् सभा पंडित सागरमल छगड़ा के सभापतित्व में हुई। जिसमें परिषद् की ओर से श्रद्धेय राजवैद्य पंडित श्री वंशीधर जी, श्री अमोलकचन्द जी, श्री सीताराम जी मिश्र, आयुर्वेदाचार्य को अभिनन्दनपत्र तथा हिज हाईनेस महाराजा श्री हरेन्द्रसिंह जी बहादुर कुशनगढ़ की ओर से वंश-परंपरा के लिए ताजीम एवं सोनापोशी व जागीर दिया गया।

——संवाददाता

* * *

जोधपुर में होनेवाले अखिल भारतीय हिन्दी कुमार साहित्य-सम्मेलन का आगामी वर्ष के लिए पदाधिकारियों का चुनाव इस प्रकार हुआ—

सभापति—प्रो० प्रभाकर माचवे, अध्यक्ष——श्री सूर्यराज व्यास, प्रधान मंत्री— श्री गोवर्धन शर्मा, संयुक्त मंत्री श्री——नेमिचन्द्र जैन 'भावुक' और सुश्री सुदर्शना आनन्द, कोषाध्यक्ष—श्री जगदीशचन्द्र रस्तोगी।

——संवाददाता

* * *

हाथरस से ग्रामों की समस्या को सुलझाने के लिये 'ग्रामदूत' साप्ताहिक का प्रकाशन होने जा रहा है। वार्षिक मूल्य ६) होगा।

——संवाददाता

* * *

श्री डूँगरगढ़ (बीकानेर) में राज्य कवि-सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन शीघ्र ही होनेवाला है। स्वागताध्यक्ष पद के लिये सुप्रसिद्ध मारवाड़ी कार्यकर्त्ता कवि एवं लेखक श्री अद्भुत शास्त्री की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। शास्त्री जी ने निम्नलिखित स्वागतकारिणी भी घोषित कर दी है—स्वागताध्यक्ष—श्री अद्भुत शास्त्री, स्वागत मंत्री—श्री जमुनाप्रसाद लखोरिया, प्रचारमंत्री—श्री शिवेन्द्र, कोषाध्यक्ष सेठ महालचन्द जी भादाणी, कार्यकारिणी सदस्य—श्री कोडामल करनाणी, श्री शिवनारायण तोषनीवाल, चांदरतन उपाध्याय, श्री नथमलजी वैद्य, श्री डा० हरिसिंह।

—संवाददाता

* *

मथुरा में प्रान्तीय प्रेम संगीत प्रतियोगिता व सम्मेलन की तैयारियां आरम्भ हो गई हैं। प्रतियोगी अपना नाम ३१ जनवरी तक कार्यालय में भेज दें जिससे उनके निवासस्थान व भोजन का प्रबन्ध हो सके। बाद में नाम आने पर शामिल नहीं किया जायगा। इसी अवसर पर एक संगीत-सम्बन्धी चित्रों की प्रतियोगिता भी होगी। चित्र भी ३१ जनवरी तक आ जाने चाहिए। सुन्दर चित्र पर इनाम भी दिया जायगा।

—मंत्री

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के तत्त्वावधान में आयोजित अखिल भारतीय आयुर्वेदिक वाक् प्रतियोगिता में कांगड़ी गुरुकुल विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि (ब्र० सत्यकाम जी और ब्र० विनयकुमार जी) विजयी हुए हैं। भाषण-प्रतियोगिता में विभिन्न शिक्षा-संस्थाओं के बारह वक्ताओं ने भाग लिया था। सर्वश्रेष्ठ वक्ता का पारितोषक भी गुरुकुल के ब्र० सत्यकाम जी को मिला है। प्रयाग के पश्चात् गुरुकुल की इस वर्ष यह दूसरी शानदार विजय है।

——शंकरदेव विद्यालंकार आश्रम-सचिव

लखनऊ चांदनी प्रकाशनगृह से होली के शुभ अवसर से "चांदनी" का प्रकाशन प्रारम्भ होगा। "चांदनी" कलात्मक कहानी तथा सिनेमा-साहित्य प्रधान सर्वश्रेष्ठ पत्रिका होगी। मनोरंजक पाठ्य सामग्री तथा सामयिक फिल्म-चित्रों से यह पत्रिका विभूषित होगी। "चांदनी" का प्रकाशन करने का हमारा उद्देश्य पत्र-पत्रिकाओं की संख्या बढ़ाना नहीं है, किन्तु हम यह देख रहे हैं कि आजकल एक ऐसी पत्रिका का हिन्दी-साहित्य म अभाव खटक रहा है जो कि कहानी तथा चित्रपट साहित्य का भारतीय संस्कृति के अनुकूल नवनिर्माण कर सके एवं जनता की मनोवृतियों को परिष्कृत करने में योग दान कर सके। इस पत्रिका का वार्षिक मूल्य ६), प्रतिसंख्या ।।) होगा। गेट-अप तथा मुद्रण उत्कृष्ट एवं आकर्षक होगा।

—संवाददाता

सिद्धराज-समीक्षा

लेखक, श्री० ब्रजभूषण शर्मा, एम० ए०

सिद्धराज-समीक्षा श्री मैथिलीशरण जी गुप्त के ऐतिहासिक खण्ड काव्य 'सिद्धराज' का सर्वाङ्ग-पूर्ण विवेचन प्रस्तुत करती है। कथावस्तु, कथोपकथन, चरित्र-चित्रण, भाव-वर्णन, विचार-धारा, भाषा-शैली आदि सभी आलोच्य विषयों की इस पुस्तक में समीक्षा की गई है। परिशिष्ट में कठिन अंशों के अर्थ तथा अंतर्कथाएँ दे दी गई हैं। इस प्रकार यह पुस्तक उक्त काव्य को समझने तथा विभिन्न दृष्टिकोणों से अध्ययन करने की सभी सामग्री प्रस्तुत करती है। मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

पेशावर में तीन मास कैसे बीते ?

(पेज ६ का शेष)

परेशानी हुई मुझे मित्र की छोटी बहन से। प्रारम्भ से ही वह मेरी ओर बहुत अधिक आकृष्ट हुई। मेरे पास आकर वह घंटों बातें किया करती और इससे मुझे काफी परेशानी होती। वह अकसर मुझसे शाम को साथ घूमने चलने के लिए कहती। मैं बाहर प्रायः रात को ही जाया करता। किन्तु मित्र की बहन का आग्रह भी कैसे और कितने दिन टाला जा सकता था। एक दिन संध्याकाल को मैं उसके साथ घूमने गया। उन दिनों प्रायः सभी पठान बन्दूक या अन्य कोई अस्त्र लेकर चला करते थे। सरकार की ओर से उन्हें काफी अस्त्र-शस्त्र बितरित किये गये थे। मैं तो निहत्था ही निकला था। थोड़ी दूर चलने पर एक पठान ने आवाज दी—"खूमिया। तुम्हारा औजार किधर है ?" "मैं औजार लेकर नहीं चलता" मैंने उत्तर दिया। "तुम पठान है ?" "हां।" मैंने कहा।

"तो फिर काफिर को मारने का मौका आया तो क्या करेगा ?" उसने पूछा। मुझे उसके इन प्रश्नों से क्रोध आ रहा था, किन्तु मैंने अपने को सँभाल कर कहा—"मैं काफिर को मारने की जरूरत ही नहीं समझता।"

"ओह ! तुम खान साहब को माननेवाला है"—पठान गुर्राया।

मेरे साथ की लड़की काफी डर गई थी, उसने बीच में ही टोककर कहा—"अरे ! यह अभी यहां नया आया है, गुजरानवाला से। इसको इधर की हालत मालूम नहीं।" किसी तरह उससे पीछा छूटा। सोचा, जान बची लाखों पाये। किन्तु अभी जान नहीं बच पाई थी। रास्ते भर इन हालतों पर, गैर लीगियों पर होनेवाले इन अत्याचारों पर खून खौलता रहा। जब लौटकर आया तो घर से करीब १५ फर्लांग की दूरी पर, ४-५ पठान मिले। वे बैठे हुक्का पी रहे थे। सब बहुत मैले-कुचैले कपड़े पहने और हाथों में बन्दूकें लिए हुए। मुझे देखकर एक ने मेरी ओर इशारा किया, चारों पठान मेरे पास आ गये। उनमें से एक मेरी ओर, कभी मेरे साथ की लड़की की ओर देखता। लड़की को तो वह पहचानता था कि यह एक अकरम खान की लड़की है। किन्तु मेरे बारे में उसे शक था। शायद वह मुझे पहले से कुछ जानता था। वह बोला—"तुम खान साहब की कोठी में रहते हो ?" मैंने कहा—"नहीं, मैं तो गुजरानवाला से आया हूँ, यहां अकरम खान का मेहमान हूँ।" "हूँ ! तुम हिन्दू नहीं हो ?" उसने कहा। "नहीं"। मैंने दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया।

"तो फिर तुम्हारे कानों में ये छेद कैसे हैं ? मुसलमानों में तो कान छिदाये नहीं जाते ?"

उसके इस प्रश्न से मैं स्तम्भित रह गया। समझ में न आया क्या कहूँ। कानों को छूकर देखा, छेद तो वहां थे ही।

मैंने कहा—"मेरी मां ने एक हिन्दू पीर की मनौती मानी थी, उसी के कहने से कान छिदवाये गये हैं।"

उन लोगों को विश्वास तो नहीं हुआ किन्तु मुझे चले जाने दिया।

मैंने गहरी सांस ली। यह हालत हो गई थी पेशावर की कि किसी हिन्दू या गैर मुस्लिम लीगी के लिए सड़क पर चलना मुश्किल हो गया था। और, आज भी हालत बनी हुई है।

सरकारी गुंडापन

जल्मे पख्तून पर सरकारी शनि दृष्टि तो थी ही, इसीलिए कयूम मंत्रिमंडल ने कुछ अशिक्षित धर्मांध पठानों को इकट्ठा करके एक गाजी पख्तून नामक संस्था बनाई। गाजी पख्तून में सरकारी पुलिस तथा फौज के लोग थे। इन लोगों को शस्त्रास्त्र भी बांटे गये। इनका मुख्य काम था हमारे पख्तून का विरोध करना और अपनी गुंडागिरी से तोड़ना। वे उसमें सफल अवश्य हो गये हैं, किन्तु यह सफलता क्षणिक है। अब लोगों की आंखें पुनः खुल रही हैं। आज लोगों के क्या विचार हो रहे हैं, मैं यह बाद में बताऊँगा। इस समय मैं सरकारी गुंडापन की एक घटना का जिक्र कर रहा हूँ। हमारे पख्तून के कमाण्डरों की एक बन्द सभा हो रही थी। किसी भेदिये के जरिये शायद सरकार को पता चल गया, हालां कि जल्मे पख्तून पर कोई प्रतिबन्ध न था और न बन्द मीटिंग करना कोई गैर कानूनी चीज थी; किन्तु पुलिस अफसर ने हमें आज्ञा दी कि सभा बन्द कर दी जाय। विवश होकर हमें सभा बन्द कर देनी पड़ी। हम जब बाहर निकलकर अपने घरों की ओर चलने लगे तो एक छोर से गोलियों की बौछार-सी होने लगी। पुलिस के सिपाही खड़े हँस रहे थे, इस प्रकार से जैसे उन्हें पहले ही से इस सबका हाल ज्ञात हो। हमारा एक साथी घायल हो गया। बाद में कुछ घंटों के बाद उसकी मृत्यु हो गई। एक गोली मेरे पैर के तलवे को छीलती हुई निकल गई। चार-पांच रोज मुझे लँगड़ाकर चलना पड़ा, बाद में सब ठीक हो गया। लेकिन इस मामले की बाद में रिपोर्ट तक न लिखी गई। कयूम साहब ने शायद इसकी कसम खा ली थी कि प्रत्येक लीग-विरोधी को खत्म कर दिया जाय, क्योंकि इससे दिन से ही एक बड़े पैमाने पर गिरफ़्तारियां प्रारम्भ हो गईं। मुझे अपना बाहर निकलना बिलकुल बन्द कर देना पड़ा। अब मेरे लिए पेशावर में रहने का कोई अर्थ न था। किन्तु बाहर जाना भी असम्भव था। इसी समय सीमाप्रान्त में नये गुल खिलने प्रारम्भ हो गये।

काश्मीर पर चढ़ाई

काश्मीर पर लीगियों द्वारा हमला होने के एक मास पूर्व ही मुझे इस दुरभिसंधि का पता लग गया था और इस सम्बन्ध में मैंने भारतीय नेताओं को सूचित करने का भी प्रयत्न किया। सीमाप्रान्त में कयूम साहब की जनप्रियता नहीं के बराबर है। वे टिके हुए हैं, केवल अशिक्षा और पठानों की धर्माधन्ता के कारण। धीरे-धीरे लोग उनसे असन्तुष्ट होते जा रहे थे। कई जिरगों के सरदारों ने उनसे बगावत करने की धमकी दे दी थी। ईपी के फकीर ने भी उनका विरोध करना शुरू कर दिया था। इसलिए अब कयूम साहब के लिए आवश्यक हो गया था कि वे पठानों का ध्यान उनके आर्थिक प्रश्नों से हटाकर फिर किसी लड़ाई की ओर लगायें। जिन्ना पार्क में उन्होंने एक बड़ी सभा में भाषण देते हुए कहा..."पठानो ! हमारा मुल्क गरीब है, किन्तु पास के मुल्कों में काफी पैसा है। वे सब मुल्क हमारे हैं उन्हें दूसरों ने अपना बना रखा है। उन्हें फिर से फतेह करना होगा, हमारी पहली मंजिल काश्मीर है। काश्मीर में हमला करने से आपका कोई नुकसान नहीं होगा, जीतने पर बहिश्त मिलेगा और यदि लड़ाई में इस्लाम के नाम पर मारे गये तो भी बहिश्त मिलेगा।" कयूम साहब के इस भाषण का क्या असर हुआ, इसे काश्मीर की उजाड़ घाटी, उसका तहस-नहस स्वर्गीय सौन्दर्य बता सकेगा। काश्मीर जाने के लिए लोगों को मजबूर किया गया। मैं ऐसे अपने कई मित्रों को जानता हूँ जिन्हें बन्दूक की नोक पर मजबूर किया गया कि वे काश्मीर जाकर लड़ें। शायद वे लौटकर कभी न आयें।

१५ नवम्बर तक पेशावर में मुझ पर तीन बार हमले हुए। तीनों बार मैं ईश्वर की कृपा से बच गया। पुलिस मेरे पीछे पड़ गई थी। इसलिए पेशावर से मेरा चले आना लाजिमी हो गया था। वैसे तो मेरा आना मुश्किल था, लेकिन मेरे दोस्त के पिता किसी काम से करांची आ रहे थे। मैं भी उनका रिश्तेदार बनकर कराची चला आया। उन्हें अन्त तक यह नहीं मालूम हुआ कि मैं मुसलमान नहीं हूँ। जब मैं कराची से बम्बई जा रहा था, तभी मैंने पूरा किस्सा उन्हें बताया। सुनकर वे बहुत हँसे, फिर दुखी होकर कहा कि वह जमाना शीघ्र आयेगा, जब कि किसी को छिपने की जरूरत न पड़ेगी।

सीमाप्रान्त की वर्तमान स्थिति

काश्मीर में हजारों लोगों के मारे जाने का सीमाप्रान्त पर बहुत बुरा असर पड़ा है। चीजों के दाम बहुत अधिक बढ़ गये हैं, न माल मिलता है और न लोगों में खरीदने की ताकत है। व्यापार वगैरह सभी हिन्दुओं के हाथ में था, वह ठप हो चुका है। फलों का उद्योग बिल्कुल बेकार पड़ा हुआ है, क्योंकि माल बाहर जा ही नहीं पा रहा है। अंगूर सड़ रहे हैं, उन्हें चार आने की दर से भी कोई खरीदनेवाला नहीं मिल रहा। एक पठान के सामने इस समय जितनी अधिक आर्थिक दुश्चिन्ता है, उतनी कभी नहीं थी। अब वह किसी को लूट-पाट भी तो नहीं सकता। काश्मीर से जो घायल लोग आये हैं उनकी सेवा-शुश्रूषा आदि का कोई प्रबन्ध नहीं। गल्ला बहुत अधिक तेज हो गया है और कपड़ा तो है ही नहीं। पाकिस्तान बनने का दुष्परिणाम शायद सर्वप्रथम सीमाप्रान्त को ही भुगतना पड़ेगा। इन सब बातों का परिणाम यह हो रहा है कि सीमाप्रान्त के लोग कयूम मंत्रिमंडल से असन्तुष्ट हो गये हैं। अब वे एक दूसरा मंत्रिमंडल चाहते हैं। खान साहब की ईमानदारी पर उनका सदा से विश्वास रहा है, बीच में वह कुछ कम हो गया था, अब वह पुनः लौट रहा है। और, आशा तो यह की जाती है कि नये वर्ष के प्रथम मास में पुनः खान मंत्रिमण्डल बन जायगा। अभी सीमाप्रान्त की वह स्थिति नहीं कि हिन्दू-सिख वहां लौटकर जायँ किन्तु शीघ्र ही वह स्थिति आ रही है।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि सीमाप्रान्त में एक नई पीढ़ी पैदा हो रही है। नवयुवकों में चेतना आ रही है कि पाकिस्तान का अर्थ है भूख, अशिक्षा और बेकारी। उनके अन्दर विद्रोह की आग सुलग रही है और शीघ्र ही यह विस्फोट होगा। मुस्लिम नेशनल गार्ड ने—जो कि अब तक लीगी पिट्ठू था—कयूम की राजनीति से खुलेआम तीव्र असन्तोष जाहिर किया है। सीमाप्रान्त में शीघ्र ही परिवर्तन होगा।

प्रसिद्ध यात्राओं की कथा

प्रसिद्ध चीनी यात्री फाहियान से लेकर वर्तमान युग के एवरेस्ट की चोटी पर चढ़नेवाले साहसी वीरों तक की कथा इस पुस्तक में है। जिन यात्रियों ने प्राणों की बाजी लगाकर स्थल और जल के अज्ञात देशों में भ्रमण किया था और उनके परिश्रम से संसार का जो लाभ हुआ उसका रोचक वर्णन इस पुस्तक में पढ़िए। मूल्य ॥-)

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

विशेष कमी— अवसर मत चूकिये—आज ही मंगावें।
३॥) रु० में ६ नई पुस्तकें।

पति-पत्नी जीवन (सचित्र) केवल विवाहितों के पढ़ने योग्य, दाम्पत्य जीवन को सुखी सन्तुष्ट बनानेवाली अपूर्व पुस्तक १।), वशीकरण विद्या—अनेकों वशीकरण मंत्रों तथा जादू के खेलों का संग्रह १), सकल सिद्ध—मन चाहा कार्य सिद्ध करना १।), व्यौपारिक तेजी-मन्दी—तेजी मन्दी का ज्ञान प्राप्त कर हजारों रुपया पैदा कीजिये १।), हिन्दी अँगरेजी शिक्षा—घर बैठे अँगरेजी लिखना, पढ़ना, बोलना सीख लो १), हुस्न पैरिस—केवल पति-पत्नी के देखने योग्य १२ फोटो १॥)। ६ पुस्तकों के सेट का मूल्य केवल ३॥), पोस्टेज पैकिंग ॥।) अलग।

सन्तोष ट्रेडिंग कम्पनी, पाठक स्ट्रीट, जैगंज (३) अलीगढ़ सिटी।

हमारा नया कदम

हमें घोषित करते हुए प्रसन्नता है कि हमने एक विभाग फुटबाल, वोलीवाल, बासक्टबोल, हाकी व क्रिकिट बोल और जाल इत्यादि के बनाने के लिए खोल दिया है। विवरण के लिए कृपया सेल्स मैनेजर को लिखिए।

जी० जी० इन्डस्ट्रीज, आगरा

हमारी विविध विषय की उत्तमोत्तम पुस्तकें

हिन्दी साहित्य—यह हिन्दी साहित्य का परिवर्द्धित और परिमार्जित संस्करण है। पहले की दो आवृत्तियों में यह हिन्दी भाषा और साहित्य के नाम से प्रकाशित हुआ था, किन्तु अब इसे स्वतन्त्र रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। कवियों के विषय में जो नये अनुसंधान हुए हैं उन सबका इसमें समावेश किया गया है। साहित्यिक स्थिति के वर्णन में भी आवश्यक परिवर्तन किये गये हैं। हिन्दी साहित्य के प्रत्येक विद्यार्थी को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ४) चार रुपये।

काव्यकला—साहित्यालोचन का यह संक्षिप्त संस्करण है। लोगों का कथन है कि इस नवीन रूप मे इस पुस्तक का उपयोग ऊँची श्रेणी के विद्यार्थी सफलतापूर्वक कर सकते हैं। इसमें साहित्यशास्त्र के सभी अंगोपांगों का विवेचन तो है किन्तु साथ ही वे अंश निकाल दिये गये हैं जो जटिल और खंडनमंडनात्मक हैं। इसके संकलनकार भी लेखक के पुत्र श्री गोपाललाल खन्ना हैं। मूल्य २) दो रुपये।

चिन्तामणि—(पहला भाग) लेखक, आचार्य पंडित रामचन्द्रजी शुक्ल। इस पुस्तक में आचार्य शुक्ल जी ने भिन्न-भिन्न विषयों पर लिखे गये अपने सत्रह निबन्धों का संग्रह किया है। ये सभी निबन्ध बहुत ही गंभीर और अध्ययनपूर्ण हैं, जिनके द्वारा मनुष्य की विभिन्न प्रकार की आन्तरिक भावनाओं पर आलोचनात्मक ढंग से प्रकाश डाला गया है। इस रचना पर मंगलाप्रसाद पारितोषिक मिल चुका है। मूल्य २) दो रुपये।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ—लेखक, पंडित उमेशचन्द्र मिश्र। इस पुस्तक में विश्वकवि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर की प्रामाणिक जीवनी और उनकी समस्त कृतियों—कविता-संग्रह, नाटक-नाटिका, कहानियाँ उपन्यास, यात्रा-वर्णन, विज्ञान के ग्रंथ, निबन्ध, साहित्यिक समालोचना, चित्रकला आदि—का विवेचनात्मक परिचय दिया गया है। उदाहरणों में कवि की प्रायः समस्त सुप्रसिद्ध और चुनी हुई रचनायें आ गई हैं। फुटनोट में उनके सरल अर्थ दिये गये हैं। इसके द्वारा आप रवीन्द्रनाथ और उनकी काव्य-कृतियों का पूरा-पूरा परिचय प्राप्त कर सकते हैं। विश्वभारती (शान्तिनिकेतन) के विद्वानों ने भी इसकी प्रशंसा की है। मूल्य केवल ५) पाँच रुपये।

द्विवेदी मीमांसा—लेखक, श्रीयुत प्रेमनारायण टण्डन। हिन्दी के नवीन युग की धाराओं और प्रवृत्तियों के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। साधारण पाठकों के अतिरिक्त सम्मेलन के परीक्षार्थियों व विश्वविद्यालयों के छात्रों के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य २) दो रुपये।

पं० शान्तिप्रिय द्विवेदी की कुछ पुस्तकें

कवि और काव्य—श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी ने काव्य के गुण-दोष से सम्बन्ध रखनेवाले कितने ही उपयोगी विषयों का इसमें विशद्‌रूप से विवेचन किया है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

संचारिणी—लेखक, श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी। यह श्रेष्ठ रचना अभी अभी पाठकों के सामने आई है। इसमें भक्ति-काल से लेकर आज के संक्रांति-काल तक की साहित्यिक चेतनाओं का मर्म स्पर्श है। मूल्य २) दो रुपये।

युग और साहित्य—लेखक, श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी। 'युग और साहित्य' भी हिन्दी-निबन्धों का एक आदर्श उपस्थित करती है। इसमें १३ मौलिक निबंध हैं, जिन्हें विद्वानों ने बहुत पसन्द किया है। मूल्य २।।≡) दो रुपये ग्यारह आने।

देवपुरस्कार-विजेता हरदयालुसिंह की कुछ व्रजकाव्य की समीक्षायें

देवदर्शन—देवपुरस्कार - विजेता श्री हरदयालुसिंह लिखित व्रजकाव्य समीक्षाएँ—इसमें व्रजभाषा के प्रख्यात कवि देव की जीवनी और उनके समस्त काव्यों का आलोचनात्मक परिचय दिया गया है। व्रजकाव्य के प्रेमियों के अतिरिक्त साहित्य के विद्यार्थियों के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

पूर्ण-पराग—इसमें व्रजभाषा के प्रसिद्ध आधुनिक कवि श्री देवीप्रसाद 'पूर्ण' की जीवनी और उनके काव्य का समालोचनात्मक परिचय है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मतिराम-मकरन्द—इसमें काव्यालोचन के साथ-साथ कवि मतिराम के ३ प्रसिद्ध ग्रंथों—मतिराम सतसई, ललितललाम और रसराज का संक्षिप्त सरस संग्रह भी कर दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

विहारी-विभव—इसमें महाकवि विहारी की कविता का आलोचनात्मक परिचय, उनकी जीवनी तथा सतसई के चुने हुए दोहे संकलित हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

भूषण-भारती—इसमें महाकवि भूषण की जीवनी और उनके समस्त काव्य ग्रन्थों—का विवेचनात्मक परिचय दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

महादेवी का विवेचनात्मक गद्य—संकलनकर्त्ता, श्री गंगाप्रसाद पांडेय, एम० ए०, साहित्य की नवीन शैली का अध्ययन करनेवालों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य २।।) दो रुपये बारह आने।

आलोचनादर्श—इस पुस्तक के लेखक हैं डाक्टर रामशंकर शुक्ल 'रसाल', एम० ए० डी० लिट। इसमें आलोचना-कला का मार्मिक और शास्त्रीय विवेचन किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

साहित्य-प्रकाश—यह पुस्तक भी डाक्टर रसाल की ही लिखी है। इसमें साहित्यिक सिद्धान्तों का विवेचन किया गथा है। मूल्य २) दो रुपये।

साहित्य-समीक्षा—इस पुस्तक में हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक श्रीयुत कालिदास कपूर, एम० ए० एल-टी० के साहित्यिक तथा समालोचनात्मक लेखों का संग्रह किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

प्राचीन साहित्य—इस पुस्तक में रवीन्द्र बाबू के कई प्राचीन साहित्य, विशेषतः संस्कृत साहित्य के आलोचनात्मक निबन्धों का संग्रह है। मूल्य १) एक रुपया।

महाकवि अकबर—उर्दू के प्रसिद्ध कवि अकबर का आलोचनात्मक परिचय तथा उनकी उत्कृष्ट रचनाओं का अर्थ-सहित संग्रह। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

शिक्षा—हम अपने बालकों तथा बालिकाओं को किस तरह सुशिक्षित तथा सदाचारी बना सकते हैं, यह बात इस पुस्तक में [illegible] समझाई गई है। इसके मूल लेखक सुप्रसिद्ध दार्शनिक 'हर्बर्ट स्पेन्सर' हैं और अनुवादक स्वर्गीय आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी। मूल्य ४।।≡) चार रुपये ग्यारह आने।

भारतवर्ष में पश्चिमी शिक्षा—वर्त्तमान शिक्षा-विभाग के क्रम-विकास का संक्षिप्त इतिहास। मूल्य ।।) आठ आने।

अर्थमेटिक शिक्षा-प्रणाली—यह पुस्तक नार्मल स्कूलों और ट्रेनिंग क्लासों के विद्यार्थियों तथा स्कूलों के अध्यापकों को अर्थमेटिक पढ़ाने के उत्तम से उत्तम ढंग सिखलाने के उद्देश्य से लिखी गई है। मूल्य १) एक रुपया।

संगीत-सम्बन्धी पुस्तकें

ध्रुपद-स्वर-लिपि—इस पुस्तक के लेखक काशीनिवासी श्री हरिनारायण मुकुर्जी ध्रुपद के विशेषज्ञ हैं। मूल्य २।।≡) दो रुपये ग्यारह आने।

संगीत-सुदर्शन—सब प्रकार की राग-रागिनियों का शास्त्रीय-विवेचन। मूल्य १।।≡) एक रुपया ग्यारह आने।

विविध विषय की पुस्तकें

मन की अद्‌भुत शक्ति—अपने मन की अद्‌भुत शक्तियों पर पूर्णरूप से अधिकार प्राप्त करके तथा उनका सदुपयोग करके मनुष्य किस प्रकार अपने जीवन को अधिक से अधिक सार्थक बना सकता है, इस बात की इस पुस्तक में विवेचना की गई है। मूल्य ।।।-) तेरह आने।

ऋद्धि—जो लोग धनहीन हैं, ऋण-ग्रस्त हैं, बहु-कुटुम्बी हैं, साथ ही आय भी बहुत कम है, वे इस पुस्तक के उपदेश के अनुसार चलकर सुख से जीवन बिता सकते हैं। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

मानसिक आकर्षण-द्वारा व्यापारिक सफलता—व्यापारिक सफलता के लिए संपर्क में आनेवाले व्यक्तियों पर मानसिक आकर्षण की शक्ति का प्रयोग करने की विधि। मूल्य ।-) पाँच आने।

गोपालन—विभिन्न प्रकार की गौओं के रूप-रंग तथा गुण-दोष का विस्तृत वर्णन। इसमें गौओं का पालन-पोषण करने तथा उन्हें अधिक से अधिक दुधार बनाने की विधि बतलाई गई है। मूल्य १) एक रुपया।

लकड़ी के दाम निकालने की जंत्री—इस पुस्तक की सहायता से लकड़ी का दाम सरलतापूर्वक निकाला जा सकता है। मूल्य २) दो रुपये।

बहीखाता—हिसाब-किताब रखने का उत्तम से उत्तम ढंग। मूल्य ।।-) नौ आने।

भारतीय चित्रकला-पद्धति—कलात्मक चित्र, कार्टून आदि बनाने की आसान विधि। मूल्य १) एक रुपया।

स्काउट मास्टरी और ट्रूप संचालन—पुस्तक में स्काउट मास्टरों के लिए बहुत-सी व्यावहारिक बातें बताई गई हैं। इस पुस्तक के अनुसार चलनेवाले स्काउट मास्टर ट्रूप संचालन में निस्सन्देह सफल होंगे। मूल्य १) एक रुपये।

अग्निकांड में सेवा—अग्निकांड में स्काउट लोग किस प्रकार सफलतापूर्वक दूसरों के जीवन और संपत्ति की रक्षा कर सकते हैं यह बात इस पुस्तक में विस्तारपूर्वक लिखी गई है। पुस्तक सचित्र है। मूल्य १) एक रुपया।

स्काउट ड्रिल और खेल—यह पुस्तक अपने ढंग की बिलकुल अकेली है। स्काउटों के लिए जितने प्रकार के भी ड्रिल और खेल आवश्यक हैं, वे सभी इसमें विस्तारपूर्वक बतलाये गये हैं। उनके नियमों तथा उपयोग आदि पर भी समुचित प्रकाश डाला गया है। पुस्तक सचित्र है। मूल्य पहला भाग १) एक रुपया दूसरा भाग २) दो रुपये।

बाल शब्द-सागर—रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास, बी० ए० ने हिन्दी का यह शब्द-कोष विशेष रूप से विद्यार्थियों के उपयोग के लिए बनाया है। किन्तु अपनी व्यावहारिक उपयोगिता के कारण यह सभी के काम आ सकता है। मूल्य २।।≡) दो रुपये ग्यारह आने।

कुछ संस्कृत पुस्तकें

प्रबन्ध प्रकाश—लेखक, मंगलदेव शास्त्री। इस पुस्तक के प्रारम्भ में सरल संस्कृत भाषा में प्रबन्ध रचना सम्बन्धी आवश्यक नियम दिये हैं। इसके पश्चात् उदाहरण-स्वरूप सुप्रसिद्ध प्राचीन तथा आधुनिक विद्वानों के तथा स्वयं ग्रन्थकार के लिखे हुए परीक्षोपयोगी निबन्ध दिये गये हैं। पुस्तक के अन्त में गद्य-पद्यमय सुभाषित तथा लोकन्याय दिये गये हैं। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

संस्कृत गद्य रत्नावली—पंडित अमरनाथ झा, वाइस चान्सलर प्रयाग विश्वविद्यालय। यह पुस्तक संस्कृत गद्य की विभिन्न प्रकार की शैलियों का नमूना है। संस्कृत के सभी प्रतिष्ठित ग्रन्थों से अवतरण लिये गये हैं; किन्तु इस बात का ध्यान रखा गया है कि कोई अवतरण कठिन न हो। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मेघदूत—यह महाकवि कालिदास के मेघदूत का बहुत ही उत्तम और उपयोगी संस्करण है। हर एक श्लोक के सामने राजा लक्ष्मणसिंह का किया हुआ पद्यानुवाद दिया गया है। गद्य में बहुत ही सरल और विस्तृत अर्थ भी दिया गया है। पाद टिप्पणियों में संस्कृत के कठिन शब्दों के समास, विग्रह तथा प्रतिशब्द आदि भी दिये गये हैं। मूल्य ।।।-) तेरह आने।

पंचतंत्र—संस्कृत में यह पुस्तक बहुत ही प्रसिद्ध है। इसके सुन्दर संस्करण का अभाव देखकर हमने इसे प्रकाशित किया है। आवश्यक टिप्पणियाँ देने के बाद अन्त में हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित किया गया है। मूल्य ।।≡) ग्यारह आने।

संक्षिप्त वाल्मीकीय रामायण—स्वर्गीय रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा संपादित आदि कवि वाल्मीकि मुनि प्रणीत वाल्मीकीय रामायण संस्कृत में बहुत बड़ी पुस्तक है। श्री रवीन्द्रनाथ जी ने इसे संक्षिप्त किया है। किन्तु पुस्तक का क्रम कहीं भी टूटने नहीं पाया है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

कादम्बरी—सम्पादक स्वर्गीय महामहोपाध्याय पंडित गंगानाथ झा और पंडित काशीराम एम० ए०। बाणभट्ट की कादम्बरी संस्कृत में बेजोड़ पुस्तक है। परन्तु यह ग्रन्थ इतना बड़ा है कि इस युग के लोगों के लिए कठिन भी हो गया है। इस कठिनाई को हटाने के लिए इसका यह संक्षिप्त संस्करण निकाला गया है। मूल्य १) एक रुपया।

संक्षिप्त बिहारी—महाकवि बिहारी के दोहों का यह बहुत अच्छा संस्करण है। बिहारी की सतसई में जितने अधिक अश्लील दोहे थे, वे छाँटकर इसमें से निकाल दिये गये हैं। मूल्य २) दो रुपये।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

परिवार के नवयुवक

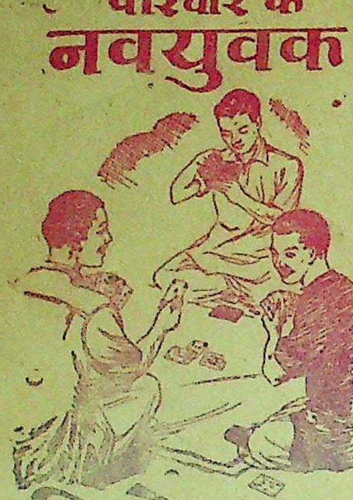

निकोटा का व्यवहार करते है।

क्योंकि निकोटा दांतों को स्वच्छ और दृढ़ रखता है, और सुन्दर मुस्कान देता है। परिवार में यह प्रत्येक के अनुकूल पड़ता है। इसलिये यह समस्त परिवार के व्यवहार के योग्य सबसे अधिक 'किफायती' उत्तम श्रेणी का टूथपेस्ट है।

लगभग सभी प्रकार एक रुपये से कम में मिलता है।

- ★ स्वादिष्ट
- ★ स्फूर्तिप्रद
- ★ कीटाणुनाशक

एक सुंदर लाल बक्स में सभी केमिस्ट व व्यापारियों के यहां मिलता है।

पारिवारिक टूथ पेस्ट

एलाइड लाउडस्पीकर पर इतमिनान रखिये

ब्याह
मेले
जलसे
सरकस
तथा
हर मौके पर इस्तेमाल कीजिये

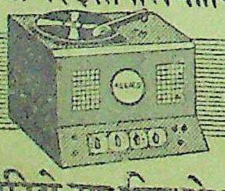

खरीदिये या किराये पर लीजिये

एलाइड एलेक्ट्रिक एण्ड रेडियो कारपोरेशन

हज़रतगंज लखनऊ
कैनिंग रोड एलाहाबाद

नई पुस्तक
मैक्सिम गोर्की

रूस के इस विश्रुत कलाकार के परिचय के लिए इस पुस्तक को अवश्य पढ़िए। है तो यह जीवनचरित्र, पर इसे पढ़ने में कहानी का आनन्द मिलता है। गोर्की की जीवनचर्य्या का वर्णन पढ़कर पाठक जान सकेंगे कि इस कलाकार को किन विकट कठिनाइयों में होकर गुजरना पड़ा था। छोटे टाइपों में छपी, लगभग ढाई सौ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य तीन रुपये।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

(रजिस्टर्ड)

१५० वर्ष की विश्वविख्या
(स्वास) दमा की फकीरी

जिसकी एक ही मात्रा पूर्णिमा को ता० २६-१-४८ को (अनुसुईया बूटी) के साथ सेवन करने से नया व पुराना सदैव को जड़ से नष्ट हो जाता है। ह मर्द स्त्री, व बच्चे आराम पा चुके हैं। लोग भी सेवन करके नीरोग्य हो जावें।

श्री महात्मा एस० के० दास,
श्री सन्त सेवा आश्रम, पो० चित्रकूट, यू०

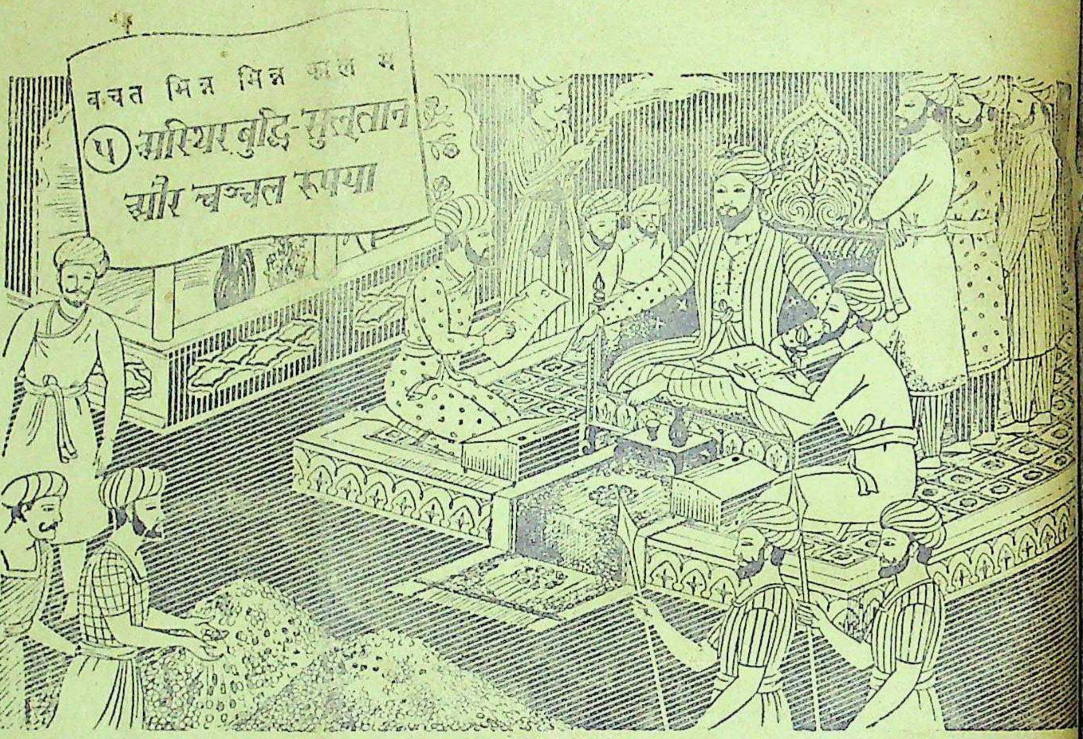
बचत भिन्न भिन्न काल में
(५) अस्थिर बुद्धि-सुल्तान और चञ्चल रुपया

सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लक (१३२५ से १३५१) पहला बादशाह था जिसने भारतवर्ष में कागज़ के नोट प्रचलित करने का विचार किया। इस के अमितव्ययी राज्य प्रबन्ध ने राजकोष को खाली कर दिया। इन कठिनाइयों से छुटकारा पाने का साधन सोचते सोचते उसे चीन देश के कागज़ के नोटों का ध्यान आया। उस ने सोचा "यदि चीन का सम्राट अपने देश में कागज़ के नोट सफलता पूर्वक चला सकता है तो क्यों न मैं भी अपनी राजकीय शक्ति के आधार पर चांदी की मुद्रा की बजाय तांबे की मुद्रा चलाऊं?" परन्तु भारतवर्ष उस समय सांकेतिक सिक्के के लिये तैयार न था।

उस समय बचत चांदी या सोने की ईंटों या मुद्राओं को संचय करके ही की जाती थी। और अब सुल्तान के आदेश से वे केवल तांबे के साथ ही बदली जा सकती थीं। इस कारण प्रजा ने इन नये सिक्कों का दृढ़ता पूर्वक विरोध किया। और तांबे के यह सिक्के प्रचलित न हो सके। इस कारण इन व्यर्थ तांबे के सिक्कों के ढेर के ढेर जिन का मूल्य कंकड़ समान था तुग़लकाबाद में एकत्रित होने आरम्भ हो गये।

आज कल रुपये के मूल्य की अस्थिरता का तनिक भी भय नहीं। अब हर कोई कागज़ के नोट शीघ्र ही स्वीकार कर लेता है क्योंकि भारतवर्ष की सम्पत्ति इन का आधार है। यह भी आवश्यक नहीं की सोना चांदी के संचय करने के रूप में ही बचत की जावे। आप अपनी बचत सुरक्षित मद में लगा कर अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स की मद में लगाया हुआ धन पूर्णतया सुरक्षित है और अवधि पूरी होने पर यह ५०% बढ़ जाता है अर्थात् प्रत्येक १०) बारह वर्ष में १५) बन जाते हैं। इस व्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता। अब आप ५) से १५,०००) तक इस मद में लगा सकते हैं। (थोड़ी बचत वाले ।), ॥), और १) के नेशनल सेविंग्ज़ स्टाम्प्स खरीद सकते हैं)। ये सर्टिफ़िकेट्स अब १८ मास के उपरान्त भुनाये जा सकते हैं (५ रु० के सर्टिफ़िकेट्स [illegible] के उपरान्त)।

भविष्य के लिये बचाइए

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए

रुपया लगाने की सर्व-प्रिय मद

ये डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजन्टों और सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त किये जा सकते हैं। AC21

ार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

वार, २५ जनवरी, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 25th January, 1948

पुस्तकालय
कांगड़ी

ेशी रियासतें और लोकतंत्र
ारतीय स्वतंत्रता का आन्दोलन

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

बम्बई-सम्मेलन के कुछ संस्मरण
साम्प्रदायिकता को दूर भगा देना है

किंकिणी में कवि की बढ़िया कविताओं का संग्रह है। भाषा मधुर और कल्पना इतनी आकर्षक है कि पाठक कुछ क्षणों तक भावविभोर बना रहता है। मूल्य ॥।) बारह आने।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

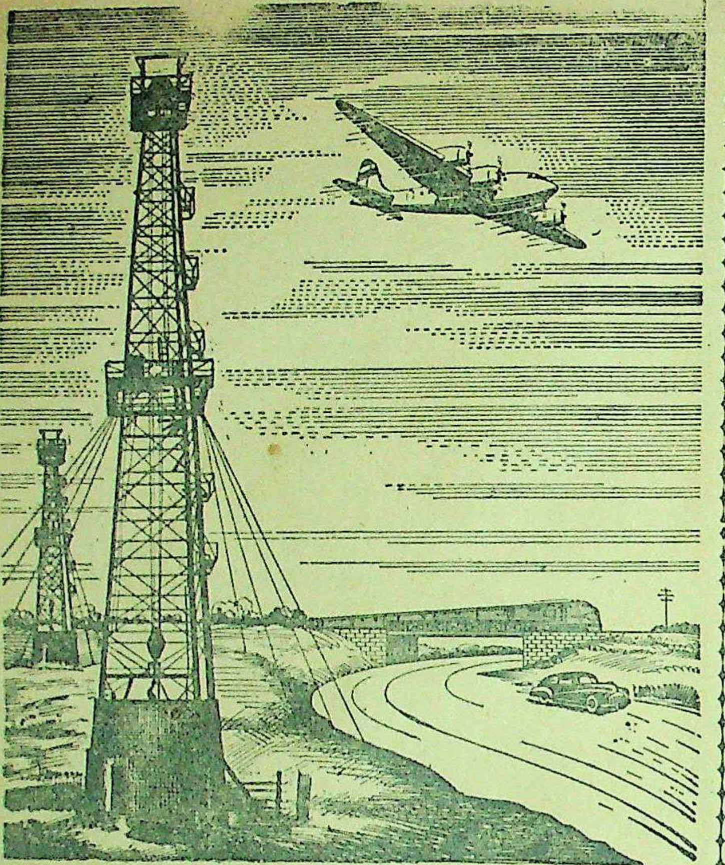

मनुष्य-जीवन के लिए तैल एक आवश्यक वस्तु है। इसमें सन्देह नहीं कि तैल के स्थान में भाप और बिजली प्रयोग में आती हैं लेकिन फिर भी सवारी और ढोलाई के कामों के लिए, अर्थात् मोटर, गाड़ी, वायुयान इत्यादि को चलाने में तैल भी उतना ही उपयोगी है। इसके अतिरिक्त औद्योगिक और घरेलू काम में आनेवाली बिजली के उत्पादन में तैल सहायक होता है। भारतवर्ष के छोटे छोटे नगरों, ग्रामों, सड़कों और घरों में प्रकाश के लिए अभी तक तैल ही से काम लिया जाता है। वास्तव में मनुष्य के लिए तैल, प्रकृति की एक अनुपम देन है। परन्तु दुर्भाग्य! ऐसी विचित्र देन को भी अत्यन्त विनाशकारी रूप से प्रयोग में लाया गया है।

हवाई, जल तथा स्थल सेनाओं ने तैल से ईंधन का काम लेकर युद्ध की प्रलयरूपी ज्वाला से लाखों सुखी कुटुम्बों, सहस्रों ग्रामों, नगरों और प्रदेशों को विध्वंस कर दिया। इस प्रकार भगवान की अमृतरूपी देन भी दुरुपयोग से मनुष्य जाति के लिए हलाहल विष बन जाती है।

कभी आपने यह भी सोचा कि आप की बचत का धन लाभप्रद होने के विपरीत हानिकारक सिद्ध हो सकता है? आजकल वस्तुएँ पर्याप्त नहीं और आने जाने की सुविधायें भी कम हैं। धन को व्यर्थ व्यय कर देने से या किसी अनुपयोगी मद में लगा देने से आप महँगे दामों को और भी चढ़ा देते हैं। क़ीमतों का बढ़ना आपके और राष्ट्र के लिए भी भयसूचक है। कुछ काल के लिए माल खरीदना बन्द कर दीजिये और इस प्रकार क़ीमतें गिराने में सहयोग दीजिये। इसके साथ ही अपना धन भी सुरक्षित रखिये।

अपनी बचत को बुद्धिमत्तापूर्वक लगाइये। बीमा पालिसी, सहकारी साख समिति, डाकखाने का सेविंग्ज़ खाता, नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स और सरकारी लोन (कर्ज़), धन लगाने की सुरक्षित मद हैं।

भूमि, सम्पत्ति, सोना चाँदी के पाँसे, आभूषण, द्रव्य, बना माल, या सट्टेबाज़ी पर रुपया व्यय न कीजिये। इनके मूल्य बहुत चढ़े हुए हैं और आशा है कि शीघ्र ही कम हो जायँगे।

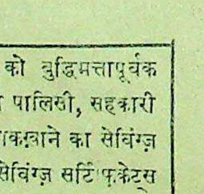

चढ़ी कीमतों को रोकिए
धन का अपव्यय न कीजिए.

भारत सरकार के फाइनेन्स विभाग द्वारा प्रकाशित

AC. 17

विशेष कमी— अवसर मत चूकिये—आज ही मंगावें।
३॥) रु० में ६ नई पुस्तकें।

पति-पत्नी जीवन (सचित्र) केवल विवाहितों के पढ़ने योग्य, दाम्पत्य जीवन को सुखी सन्तुष्ट बनानेवाली अपूर्व पुस्तक १।), वशीकरण विद्या—अनेकों वशीकरण मंत्र तथा जादू के खेलों का संग्रह १), सकल सिद्ध—मन चाहा कार्य सिद्ध करना १।) व्यौपारिक तेजी-मन्दी—तेजी मन्दी का ज्ञान प्राप्त कर हजारों रुपया पैदा कीजिये १।), हिन्दी अँगरेजी शिक्षा—घर बैठे अँगरेजी लिखना, पढ़ना, बोलना सीख लो १), हुस्न पैरिस—केवल पति-पत्नी के देखने योग्य १२ फोटो १॥)। ६ पुस्तकों के सेट का मूल्य केवल ३॥), पोस्टेज पैकिंग ॥।) अलग।

सन्तोष ट्रेडिंग कम्पनी, पाठक स्ट्रीट, जैगंज (३) अलीगढ़ सिटी।

फाउण्टेन पेन और पेंसिल पेन
यू० एस० ए० में निर्मित

विभिन्न रंगों और आधुनिक डिजायनों के फाउण्टेन पेन तथा पेंसिल पेन बेचे जा रहे हैं। प्रत्येक फाउण्टेन पेन 'गोल्डेन निब और क्लिप' से युक्त है। साधारण २॥।), उत्तम ३॥), सर्वोत्तम ४।)। १४ केरेट रोल्ड गोल्ड—गोल्ड-प्लेटेड निब-सहित ५॥) १४ केरेट रोल्ड गोल्ड गोल्ड निब-सहित ८), सर्वोत्तम १०)। प्रत्येक अतिरिक्त निब ।=), उत्तम ॥।), सर्वोत्तम १।)। १४ केरेट गोल्ड निब ३।), सर्वोत्तम ४)। पेंसिल पेन साधारण ३।, उत्तम ३॥), सर्वोत्तम ४॥)। एक दर्जन अतिरिक्त लेड ॥), एक डब्बा तीन दर्जन १=)। नोट—प्रत्येक फाउण्टेन पेन के साथ एक निब और तीन लेड प्रत्येक पेंसिल पेन के साथ मुफ्त दिए जाते हैं। तीन पेन या पेंसिल पेन मँगाने पर १२॥% की दर से कमीशन दिया जाता है। डाक-व्यय ॥।)।

पत्र-व्यवहार अँगरेजी में ही करें।

स्टैण्डर्ड वाच कं०
पोस्टबाक्स नं० ११४१९, कलकत्ता, ६, (डी०)

सुन्दर नरगिस अपनी त्वचा को कोमल एवं मृदु रखने के लिये लक्स टॉयलेट साबुन पर निर्भर रहती है!

LUX
TOILET SOAP

इस सुन्दर फिल्म अभिनेत्री का सौन्दर्य-उपचार लक्स टॉयलेट साबुन है। वह जानती है कि उस की त्वचा को स्वच्छ एवं कोमल रखने के लिये इस की सुगंधि-युक्त मलाईदार झाग के समान कोई दूसरा साधन नहीं है। जो अपनी त्वचा को कोमल एवं मनोहर रखने के सदा अभिलाषी हैं, उनसबों के लिये वह लक्स टॉयलेट साबुन के नियमित प्रयोग की सिफ़ारिश करती है।

लक्स टॉयलेट साबुन
फिल्मी अभिनेत्रियों का सौन्दर्य-साबुन

LTS. 172-172 HI

देशदूत

वर्ष १०, संख्या २१] [रविवार, २५ जनवरी, १९४७

अँगरेज बड़ा विचित्र होता है। वह कम्यूनिस्ट-पार्टी के खिलाफ जहर उगला करता है किन्तु कम्यूनिस्टपन से वह कभी भी बाज नहीं आता। आजकल लन्दन के कई अखबारों को हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के मामले को लेकर बड़ा आनन्द आ रहा है। लन्दनी अखबार पाकिस्तान की हिमायत करने में कोर-कसर नहीं उठा रख रहे हैं। काश्मीर की समस्या को वह अधिक से अधिक उलझाने और पाकिस्तानियों को उभाड़ने में एड़ी-चोटी का पसीना एक कर रहे हैं। एक अखबार ने लिखा है कि सीमा-प्रान्त के कबायली काश्मीर के लिए ही नहीं दिल्ली तक लड़ेंगे, वह संयुक्तराष्ट्र-संघ के किसी निर्णय को भी नहीं मानेंगे। हिन्दुओं और सिक्खों से बदला लेना उनका उद्देश्य है, आदि आदि। अपने राम की राय में अँगरेज अखबारनवीस कोई नई बात नहीं कह रहे हैं। काश्मीर में पाकिस्तानी नहीं लड़ रहे हैं बल्कि असल में अँगरेज का तिकड़म जारी है। पाकिस्तानी तो केवल शिखंडी बनाये गये हैं। कबायली तो सदा से पैसे के गुलाम रहे हैं। अँगरेजों ने पैसे के बल पर उन्हें सदा नचाया है। आज काश्मीर के हमले में भी अँगरेज प्लस पाकिस्तान के गठबन्धन का पैसा कबायलियों को आगे बढ़ा रहा है। अँगरेज़ों ने पाकिस्तान की स्थापना ही इसीलिए की है, क्योंकि उन्हें तो अपनी जन्मजात प्रकृति की रक्षा करनी ही होगी।

* * *

महात्मा गांधी के अनशन के परिणामस्वरुप पाकिस्तान के भाग्य जग गये। डूबते को मानो कोई सहारा मिल गया। ५५ करोड़ रुपया भारतीय संघ पाकिस्तान को पुनः देने को तैयार हो गया है। अब क्या है? रास्ता सरल हो गया। आर्थिक बाधा भी पाकस्तिान की दूर हो गई। ५५ करोड़ से हथियार मँगाये जायें और अँगरेजों के षड्यंत्र से पाकिस्तानी फौजें तैयार की जायें, इस प्रकार काश्मीर क्या और और स्थानों पर भी धूमधड़क्का मचाया जाये। क्योंकि अब तो पैसा मिला ही समझिये, फिर पाकिस्तानी मंसूबे क्यों न पूरे किये जायेंगे? आजकल जिन्ना साहब सात पर्दे के अन्दर रहते हैं। न उनसे कोई मिल सकता है और न उन्हें कोई देख सकता है। लिखना और बोलना भी उनका बन्द है। वह तो पूरे औलिया बन बैठे हैं। भारत में उनका स्थान लिया है मियां लियाकत अली खां तथा राजा गजनफरअली खां ने और विदेश में सर जफरुल्ला खां ने। इस वक्त पाकिस्तान को रुपये की तंगी थी, इससे तनिक हवास गुम थी क्योंकि बिना पैसे के हवाई कल्पना कैसे पूरी हो सकती थी? अब पैसा मिला और काम आगे बढ़ा। अँगरेज सहायक हैं ही। पाकिस्तान जिंदा हो गया। महात्मा जी के अनशन से यह बड़ी भारी बात हुई। पाकिस्तान को पैसा तो मिल गया, अपने राम को इससे प्रसन्नता ही होनी चाहिए।

* * *

कम्यूनिस्ट पार्टी के सदरआला श्री पूरनचंद जोशी महापंडित राहुल सांकृत्यायन से बेहद नाराज हो गये हैं। क्योंकि राहुल जी ने पिछले दिनों राष्ट्रभाषा हिन्दी के मामले में कम्यूनिस्टों से मतभेद होने के कारण पार्टी से त्यागपत्र दे दिया है। जोशी साहब फरमाते हैं कि राहुल जी चूंकि उर्दू का विरोध करते हैं और मुसलमानों को भारतीय संस्कृति में परिवर्तित करने की घोषणा करते हैं इसलिए वह कम्यूनिस्ट पार्टी में रहने के नाकाबिल हैं। अपने राम की राय में कम्यूनिस्ट पार्टी के लिए यह कोई नई बात नहीं है। राहुल जी ऐसे संसार के सर्वमान्य विद्वान् भारतीय कम्यूनिस्टों के गुर्गे बनकर रहें यह उनके लिए लज्जा की बात है। ईमानदारी की बात तो यह है कि कम्यूनिस्ट पार्टी में मौलानाओं की धूम है। फिर उर्दू को तिलांजलि कैसे दिया जा सकता है? और मुस्लिम संस्कृति को कैसे भुलाया जा सकता है? राहुल जी के त्याग-पत्र के सम्बन्ध में श्री पूरनचंद्र जोशी ने जो वक्तव्य दिया है उसमें जोशी नहीं बोल रहे हैं, बोल रहे हैं मौलाना लोग जिनका कम्यूनिस्ट पार्टी में बोल-बाला है।

* * *

आजकल दाढ़ी रखना भी परेशानी का कारण बन गया है। बहुत से हिन्दू भी दाढ़ी रखे हैं, वह तो और भी परेशान हैं क्योंकि पुलिस को उन्हें बताना पड़ता है कि मैं न मुसलमान हूँ और न सिक्ख। क्योंकि आजकल मुसलमान और सिक्ख का द्वंद्व चल रहा है। पुलिस दाढ़ी देखकर ऐसा भड़कती है जैसे रेल को देखकर भैंस। अपने राम की राय में अब लार्ड कर्जन का फैशन सबको अपनाना चाहिए कम से कम पुलिस की धौंस से तो रक्षा होती रहेगी। समय है क्या किया जाये, इस वक्त दाढ़ी मुंड़ा लेना चाहिए, फिर समय आयेगा तो दाढ़ी बढ़ा ली जायेगी। दाढ़ी तो उगती ही रहती है। वक्त जरूरत पर उसका उपयोग फिर किया जा सकता है।

* * *

अमरीकन और ब्रिटिशों ने हिन्दुस्तान में फिर एक नाटक शुरू करने का पाखंड रचा है। सुरक्षा समिति में काश्मीर के प्रश्न को लेकर पाकिस्तान और हिन्दुस्तान का जो विवाद चल रहा था, सुरक्षा समिति ने उस पर फैसला दे दिया। सुरक्षा समिति की ओर से एक कमेटी बनेगी जो काश्मीर की समस्या की जांच करेगी और अन्तिम फैसला देगी। अँगरेजों की यह प्राचीन परम्परा रही है कि वह काम को सुलझाते नहीं बल्कि उलझाते हैं। क्योंकि इस वक्त तो उन्हें हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों को प्रसन्न रखना है। जब किसी काम को गड़बड़घोटाले में डालना हो तो उसे कमेटी के सिपुर्द कर देना चाहिए। सो वही सुरक्षा समिति में भी हुआ है। जांच का चर्खा आगे बढ़ाया जानेवाला है। सुरक्षा समिति से इसी प्रकार के निर्णय की आशा भी थी। पाकिस्तान अपनी तैयारी करे और झखमार कर हिन्दुस्तान भी करे। अँगरेजों ने बन्दरबांट का कार्य प्रारम्भ कर दिया है। देखना है तराजू का पलरा किधर भारी होता है? भय है कि कहीं बानर जी स्वयं ही सब कुछ न हड़प जायें?

* * *

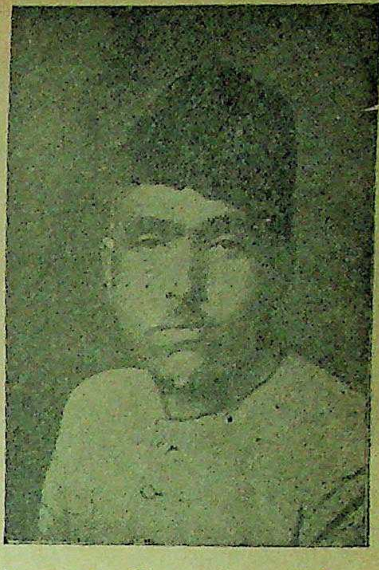

संयुक्त-राष्ट्रसंघ में भारत का प्रतिधित्व करनेवाले काश्मीर के राष्ट्रवादी नेता शेख अब्दुल्ला।

खबर है कि पाकिस्तान की ओर से करांची में संसार के मुस्लिम राष्ट्रों का एक सम्मेलन होगा। अपने राम की समझ में अवश्य ही होना चाहिए। बात यह है कि मिस्टर जिन्ना ने सदा कांग्रेस नेताओं विशेषकर महात्मा गांधी की नकल की। इसलिए वह नकल करने में पिछड़नेवाला नहीं। पिछले दिनों दिल्ली में एशियाई राष्ट्रों का एक सम्मेलन हो चुका है। इसलिए करांची में उसी जोड़ का कोई सम्मेलन होना निहायत जरूरी है। धन्य है पाकिस्तानी और उनके अंगरक्षक इंगलिशमैन। अब तो पाकिस्तान बन ही गया है, इसलिए आगे-आगे जो कुछ भी न हो जाये वह सब थोड़ा है।

* * *

काश्मीर में बड़ा घोटाला हो रहा है, पाकिस्तानी फौजें काश्मीर पर कब्जा करना चाहती हैं किन्तु हिन्दुस्तान में शान्ति-स्थापित करनेवाला राष्ट्रीय मुसलमानों का गुट्ट मुंह पर पट्टी बांधे बैठा है। वह सनकता तक नहीं। अपने राम की समझ में यह उत्तम कोटि की राष्ट्रीयता है। हिन्दुस्तान के प्रति वफ़ादारी का यह बढ़िया नमूना है। क्यों नहीं राष्ट्रीय मुसलमान पाकिस्तानी अन्याय का विरोध करते जो कि काश्मीर के प्रति हो रहा है? किन्तु कहावत है कि दोनों हाथ उलीचिये यही सयानों का काम। राष्ट्रीय मुसलमान दोनों हाथ से राष्ट्रीयता की रक्षा कर रहे हैं, यही क्या कम है?

ी कन्हैयालाल मणिकलाल मुंशी, हैदराबाद के नये एजेएट जनरल।

भारत में सोवियट रूस के राजदूत एम० नोवीकोव, भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू से हिन्दुस्तानी तथा रूस की राजनीति पर वार्ता कर रहे हैं।

सम्पादक का पृष्ठ

महात्मा जी का उपवास और शांति-स्थापना

१३ जनवरी सन् १९४८ भारत के इतिहास में अपना एक अनोखा स्थान रखेगा जिसके आने पर हम तथा हमारी आनेवाली पीढ़ियां बापू के उस 'महान् उपवास' को याद करेंगी जिसने भारतीय नागरिकों की कुण्ठित मानवता को इन्सानियत का चोगा पिन्हाकर संसार के सामने खड़ा किया। यह उपवास १८ जनवरी को लगभग पौन बजे दिन में महात्मा जी ने नेताओं के आश्वासन देने पर तोड़ दिया। लगभग १२० घंटे के इस उपवास के देश के एक कोने से दूसरे कोने तक एक अजीब बिजली दौड़ गई। पाकिस्तान भी इससे अछूता नहीं रहा। शान्ति के पुजारी, सर्वश्रेष्ठ मानव तथा कलियुग के महानतम अवतारी पुरुष महात्मा गांधी ने एक बार इन्सान के दिलों को हिला दिया और उन्हें बतला दिया कि भारत का मसीहा दिल्ली के एक कोने में बैठकर भी आध्यात्मिक बेतार के तार द्वारा अपने अमर सन्देश की वाणी पहुँचा सकता है। हर इन्सान के दिलों में जिसे सुनकर इन्सान के दिलों का शैतान कांप सकता है और उज्ज्वल मानवता की सरस भावनाएं फिर से प्रस्फुटित हो सकती हैं। महात्मा जी के पिछले उपवासों की मखौल कुछ लोगों ने उड़ाई थी और इस उपवास पर भी कुछ लोग बे सर-पैर की बातें उड़ा सकते हैं। परन्तु इन बातों से उपवास की महानता एक इंच भी कम नहीं होती बल्कि महात्मा जी के धवल चरित्र में चार चांद ही लगते हैं।

उपवास का कारण

वर्तमान भारत की परिस्थिति, पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में बढ़ता हुआ संघर्ष, साम्प्रदायिक सद्भावना का अभाव तथा मुसलमान और गैर-मुसलमानों में भ्रात-भावना की कमी ही महात्मा जी के इस आकस्मिक उपवास के कारण हो सकते हैं। महात्मा जी समझते हैं कि भारत की आजादी हिन्दू-मुसलमान के आपसी प्रेम में ही निहित है अतएव उसे फिर से कायम करने के लिए उनके अन्तःकरण में बेचैनी उठे तो इसमें आश्चर्य ही क्या है? यह बेचैनी पिछले कई दिनों से उन्हें परेशान कर रही थी और अपनी कमजोरी को वह महसूस कर रहे थे। अनशन का स्पष्टीकरण करते हुए 'बापू' ने कहा था, "(दिल्ली में) सेना और पुलिस की तत्काल कार्रवाई से परोक्ष रूप से शान्ति दिखाई पड़ती है, लेकिन हृदय के भीतर एक तूफान उठ रहा है। किसी दिन भी वह भयंकर रूप धारण कर सकता है। ऐसी शान्ति मेरे 'करने' की प्रतिज्ञा की पूर्ति नहीं कही जा सकती। उसकी पूर्ति ही मुझे मृत्यु से बचा सकती है। मेरी इच्छा है कि हिन्दू, मुसलिम और सिख हृदय से एक दूसरे के मित्र बनें। पहले ऐसी मित्रता उन लोगों के बीच थी, आज वह नहीं है। इस स्थिति को कोई भी देशभक्त गवारा नहीं कर सकता। मेरी आंतरिक आवाज मुझे बहुत पहले से बुला रही थी, परन्तु मैं उसकी ओर से कान बन्द किये हुए था कि कहीं वह शैतान अर्थात् मेरी कमजोरी की आवाज न हो। मैं कभी हताश नहीं होता और एक सत्याग्रही को ऐसा होना भी नहीं चाहिए। तलवार के स्थान पर अनशन उसका अन्तिम शस्त्र है।" कांग्रेस के अन्दर भ्रष्टाचार को देखकर भी बापू को काफी परेशानी थी। उन्होंने इस सम्बन्ध में भी अपने उक्त वक्तव्य में संकेत किया है। वे कहते ह, "स्वराज्य के कारण ही स्त्री और पुरुष आपका अनुसरण करते थे; किन्तु अब उस उद्देश्य की प्राप्ति हो जाने के बाद उन लोगों पर सारे नैतिक प्रबंध जैसे उठ गये हैं और आज वे उन लोगों का साथ दे रहे हैं जो एक समय स्वतन्त्रता के आन्दोलन के कट्टर शत्रु थे और जो आज स्वार्थवश कांग्रेस में शामिल हो गये हैं। परिस्थिति दिन पर दिन असहनीय होती जा रही है। उसका परिणाम यह है कि कांग्रेस तथा कांग्रेस की सरकार की बड़ी बदनामी हो रही है। अभी हाल के आंध्र के म्युनिसिपल चुनावों ने सिद्ध कर दिया है कि कांग्रेस कहां तक और कितनी जल्दी लोगों पर से अपना प्रभाव खो रही है। कांग्रेस क्षेत्रों में दलबन्दी, रुपया कमाने तथा अन्य भ्रष्टाचारों के कारण जनता में कांग्रेस के प्रति एक विद्रोह की भावना उठ रही है। लोगों ने यह कहना शुरू कर दिया है कि इससे तो अच्छी ब्रिटिश सरकार थी। लोग कांग्रेस को गालियां दे रहे हैं।" संक्षेप में महात्मा जी के उपवास का कारण भारत के नागरिकों में नैतिक भावना की कमी है जिसके फलस्वरूप देश में विभिन्न प्रकार की बुराइयां तेजी से पैदा हो रही हैं।

उपवास का तत्कालिक प्रभाव

इस थोड़े दिनों के उपवास का जनता पर क्या प्रभाव पड़ा इसे स्पष्ट रूप से कहना बड़ा मुश्किल है। यह प्रश्न यदि प्रत्येक मनुष्य अपने दिल से पूछे तो कुछ प्रकाश अवश्य मिल जाता है। पतन के गर्त्त में हम जिस तेजी से गिरते जा रहे थे, हमारी नैतिक दृष्टि जिस प्रकार कुत्सित होती जा रही थी और मानवता के नाम पर हम स्वार्थ-सिद्धि की ओर जिस तरह अपने को लेते जा रहे थे, इस दिशा में एक बार इस उपवास से हमारे दिलों में ठेस अवश्य लगी है। 'हम कहां जा रहे हैं?' यह प्रश्न हमारे सामने आ खड़ा हुआ। क्या हमारे लिए यही रास्ता है? इस पर थोड़ी देर रुककर हम विचार करने लगे हैं। इस दृष्टि से इस उपवास की महानता को अगर हम देखते हैं तो यह बात साबित हो जाती है कि बापू का यह त्याग निरर्थक नहीं। आगे चलकर हो सकता है कि हममें बहुत से वही रास्ता ले लें जिस पर जा रहे थे, परन्तु पिछली रफ्तार पर एक जबर्दस्त धक्का लगा है यह एक खुली बात है।

पाकिस्तान पर प्रभाव

इस उपवास का पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ा यह प्रश्न भी हमारे सामने है। सर फिरोजखां नून, इत्यादि पाकिस्तानी नेताओं ने महात्माजी के उपवास की सराहना की और उनके स्वास्थ्य के लिए सद्इच्छा प्रकट की। यह जाहिर करता है कि वहां भी इसका असर हुआ। कायदे आजम जिन्ना के ऊपर भले ही न असर हो जैसा कि कहा जा सकता है। पाकिस्तान को ५५ करोड़ रुपये मिल गये यह एक जाहिरा फायदा तो कायदे आजम को हुआ ही। यह बहुत सम्भव है कि पाकिस्तान के हिटलर इसे भारत-सरकार की सद्-इच्छा न समझकर मजबूरी समझें; परन्तु बहुत से पाकिस्तान के लोग इसे वही समझेंगे जिसकी हम लोगों को आशा है। उपवास तोड़ते वक्त पाकिस्तान के हाई कमिश्नर ने गांधी जी को आश्वासन दिया है कि पाकिस्तान सरकार भी साम्प्रदायिक सद्भावना लाने की कोशिश करेगी। यह आश्वासन कहां तक पूरा होगा, इसे कहना मुश्किल है।

अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया

बापू के इस महान् व्रत की प्रतिक्रिया विश्व के अन्य राष्ट्रों में भी होगी। अन्तर्राष्ट्रीय जगत् भारत-सरकार पर महात्मा जी का कितना प्रभाव है इसे जानता है। अतएव इस उपवास से उनकी आंखें खुलेंगी और वे जानेंगे कि भारत के प्राण महात्मा गांधी हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए प्राण तक भी दे सकते हैं। आज यह स हो गया कि भारत मुसलमानों के प्र क्या विचार रखता है और साम्प्रदा सद्भावना के लिए भारत के कर्ण कितने इच्छुक हैं? काश्मीर का प्र इस समय संयुक्तराष्ट्र की रक्षा-समि में चल रहा है। वहां के सदस्यों में भा की यह सद्भावना अच्छा काम करे इसमें शंका नहीं। महात्मा जी का उपव अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में यह बतला देगा भारत-सरकार सचमुच मुसलमान त पाकिस्तान की भलाई चाहती है इसके लिए बड़े से बड़ा त्याग करने तैयार है।

राष्ट्रपिता

लेखक, श्री सोहनलाल द्विवेदी

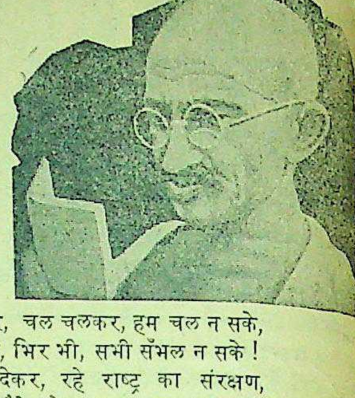

आज पुनः तुमने अपने दुःसह
अनशन का प्रण ठाना!
लगे राष्ट्र के प्राण सिहरने,
कैसा यह शर संधाना?
जीवन का विश्वास तुम्हारा,
बना तुम्हारा ध्रुवतारा,
तुम चिर विजयी हुए सदा ही,
भले, देश जीता हारा!

अडिग तुम्हारे आदर्शों पर, चल चलकर, हम चल न सके,
तुमने लाखों बार सँभाला, भिर भी, सभी सँभल न सके!
प्राणों की आहुति दे देकर, रहे राष्ट्र का संरक्षण,
राष्ट्रपिता! इस ऋण से कैसे होगा अपना राष्ट्र उऋण?

तुम समझाते रहे युगों तक, किन्तु, कभी ये क्या माने?
'पाकिस्तान' बनाकर ही ये रुके धर्म के दीवाने!
कैसे समझाओगे उनको दुरभि सन्धि जो नित बोते,
अपनी दिल्ली अभी अभी बच गई——भस्म होते होते!

तब भी तो तुम कहते थे, अमरण अनशन प्रण ठानोगे,
हो जननी का अंग-भंग, यह निर्णय कभी न मानोगे!
किन्तु, तुम्हारी आंखों के आगे ही देश विभक्त हुआ,
और, न हम कुछ भी कर पाये, ऐसा ज्ञान अशक्त हुआ!!

जब स्वतन्त्र भारत हो अपना, अपने अगणित सेनानी!
फिर भी, अनशन करो, क्षुब्ध हो, तो है इसके क्या मानी?
यह अपमान, कलंक, भर्त्सना, क्रूर व्यंग, उन वीरों पर,
कोटि कोटि जनगण का संरक्षण है जिन ध्रुव धीरों पर!!

भीष्म पितामह! आज पार्थ का लक्ष्य-भेद भी देखो तो!
यह वाणों की सेज त्याग दो, हृदय छेद भी देखो तो!!
हम चौंतीस करोड़, और अरसठ करोड़ बाहें अपनी,
इंगित हो——'मुट्ठी में भर लें' यह विस्तीर्ण सिन्धु अवनी!

हे पुनीत पावन! अजातशत्रो! आत्माहुति के दानी,
जय हो सदा तुम्हारी हे निर्मम निश्छल! प्रण अभिमानी!
महा मृत्यु के मृत्यु धूत को पी-पीकर जीनेवाले!
धन्य धरा हो अब भी यदि तव स्नेह साधना को पा ले!

युक्तप्रान्तीय सरकार-द्वारा पुरस्कृत तथा पाठशालाओं और
कालेजों के लिए स्वीकृत
१८५७ का भारतीय स्वातन्त्र्य समर
अनुवादक—परिडत ग० र० वैशम्पायन
सचित्र, दुर्लभ तिरंगा तीन तथा कई सादे चित्र
छःरंगा आवरण मूल्य १२॥) रु०।
एकमात्र प्रामाणिक अनूठा ग्रन्थ
प्रमुख विक्रेताओं के पास ग्रन्थ मिलता है।
निर्मल साहित्य प्रकाशन, ६९३ बुधवार पेठ, पुणें २ (Poona 2)

विवाहित जीवन
को सुखमय बनाने के गुप्त रहस्य जानते हों तो निम्न पुस्तकें मँगायें।

१--कोक शास्त्र (सचित्र)	१॥)	२—८४ आसन (सचित्र)	१॥
३—८० आलिंगन (सचित्र)	१॥)	४—१०० चुम्बन (सचित्र)	१॥
५—सोहागरात (सचित्र)	१॥)	६—चित्रावली (सचित्र)	१॥
७—गोरे खूबसूरत बनो	१॥)	८—गर्भ-निरोध (सचित्र)	१॥

उपरोक्त पुस्तकें एक साथ लेने से ८) रु० में मिलेंगी, पोस्टेज १) अलग लगेगा।
पता—ग्लोब ट्रेडिंग कम्पनी (जी० १३) अलीगढ़ सिटी।

रियासतों में लोकतन्त्र का उदय

उत्तरदायित्वपूर्ण शासन ही प्रजा तथा जनता के लिए हितकर है

लेखक, श्री चुन्नीलाल शर्मा एम० ए०

देशी रियासतों में अब लोकतन्त्र का उदय हो चुका है। सत्ताधारी शासन का युग बीत चला है। उत्तरदायित्वपूर्ण शासन-प्रणाली की स्थापना से ही रियासतों की लाखों निरीह जनता तथा प्रजा का भला हो सकता है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने रियासतों की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालते हुए नवीन युग की शासन-प्रणाली की स्थापना पर जोर दिया है। लेख विद्वत्तापूर्ण और सामयिक है।

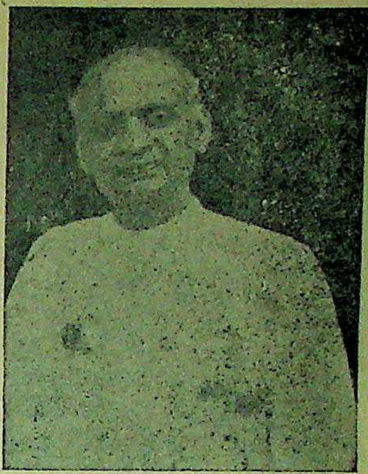

भारत-सरकार के देशी राज्य-विभाग के प्रधान सरदार वल्लभभाई पटेल।

इतिहास हमें भूतकाल की घटनाओं का विवरण प्रदान करता है। राजनीति गवर्नमेंट-विधान का विश्लेषण उसकी प्रक्रिया तथा उसी प्रकार के अन्य कार्यों की पूर्ति करता है। गवर्नमेंट के लिये उत्तम कोटि का संगठन कैसा होना चाहिए? तथा तत्कालीन संघर्षमयी समस्याओं का समाधान किस प्रकार हो? ये ही कार्य राजनीति शास्त्र के विषय हैं; परन्तु यह कथन भी सत्य ही है कि जिस स्थान पर राजनीति असफल होती है, वहां इतिहास की विजय होती है। अनेक बार गवर्नमेंट द्वारा अपनाये गये विधान समाप्त हो गए, क्योंकि भावी घटनाओं के सम्बन्ध में भविष्यवाणी करने में असमर्थ सिद्ध हुए। उनके द्वारा भावी आवश्यकताओं की पूर्ति भी नहीं हो सकी। ऐसे संकट-काल ही में इतिहास-निर्विच्छिन्न सहायक के रूप में उपस्थित होता है। वास्तव में वह इतिहास ही नहीं रहेगा, जो भावी घटनाओं का दिग्दर्शन कराने में सफल न हो सके।

मानव-प्रकृति ही केवल एक ऐसी है जहां इतिहास और राजनीति दोनों लड़खड़ाते दृष्टिगोचर होते हैं; परन्तु घटनाओं-सम्बन्धी अनिश्चितता और कठिनाइयां मनुष्य को भविष्य दिग्दर्शन से कभी नहीं रोकती। मानव के प्रकृतिजन्य स्वभाव के कारण ही जीवन की अनेक घटनाओं में उथल-पुथल होती रहती है। यही सिद्धान्त देशी राज्यों के भविष्य के सृष्टि रचयिताओं पर भी लागू होता है। उनको भी इन्हीं मूल सिद्धान्तों के आधार पर भविष्य रचना के स्वप्न-गढ़ बनाने पड़ते हैं। देशी नरेश अब तक अपनी सत्ता को अक्षुण्ण बनाने के उत्सुक रहे हैं। अपनी शासनप्रणाली, व्यक्तित्व तथा घरेलू स्वतंत्रता को क्षय रोग से दूर रखने की उनकी उत्कट अभिलाषा स्वाभाविक ही होनी चाहिए। भारतीय संघ का भावी विधान हम लोगों के सम्मुख उपस्थित है। उस पर विस्तार से विवेचन भी हो चुका है। किन्तु तो भी अनेक शंकाओं के लिए स्थान रह जाता है। यद्यपि भावी विधान भारत सामने आनेवाला है, किन्तु उसके अनेक रूपेण पूर्ण होने के विषय में दावा नहीं किया जा सकता; क्योंकि इतिहास और राजनीतिमय जीवन में पूर्णता को स्थान नहीं रहता; परन्तु तो भी भविष्य चमत्कार मनुष्य की भावनाओं पर भिन्न प्रकार से पर्दा डाले रहता है। भविष्य के विषय में ज्योतिशास्त्र का आश्रय लेना अधिक सार्थक नहीं हुआ करता। वह भावी घटनाओं का यथोचित चित्रण करने में असमर्थ होता है। तिस पर देशी राज्यों की उर्वरा भूमि में उनके निर्माण के लिये तो केवल उनका पहला इतिहास ही प्रमुख स्थान रखता है। नवीन भारत में घटित अनेक आन्दोलन, अदृश्य शक्तियों का मूक संगठन और प्रजाजनोंका शताब्दियों सेअचेतन अवस्था में पड़ा चीत्कार ही देशी राज्यों के वर्तमान इतिहास की भूमिका लिख रहा है और उनके भावी भाग्य-निर्माण में हाथ बंटा रहा है। घटनाएँ अदृश्य तथा अक्षुण्य अवस्था में प्रस्फुटित होती देखी जाती हैं। वे अपनी सत्ता का विवेकशील मनुष्यों के लिये यथेष्ट प्रमाण उपस्थित करती हैं। अनेक देशी राज्यों की विकट समस्याओंका समाधान रोड़ा अटकानेवाली और केवल विरोध के लिये की गई नीति द्वारा होना संभव नहीं। वरन् उसके लिए दूरदर्शिता और ठोस रचनात्मक कार्य-प्रणाली को अपनाना श्रेयस्कर होगा। हानिप्रद नीति का आश्रय लेने से तो नरेशों के मार्ग में कंटक ही रहेंगे। उनका और प्रजाजनों का निरन्तर संघर्ष बना रहेगा। न तो नरेश ही सुख की नींद सो सकेंगे और न प्रजाजन ही अपने विराट् स्वरूप का दर्शन कर पायेंगे।

हम प्राय: देशी नरेशों के भारतीय संघ का अंग बन जाने के लिए उन्हें बधाई देते हैं। इसमें वे अपनी प्रजा की उन्नति और विकाश न करेंगे। वरन् सम्पूर्ण भारत देश को संसार में उसका खोया हुआ स्थान प्राप्त कराने में सहायक होंगे। अंगरेजों की साम्राज्यवादी नींव का उसी समय अन्त हो गया, जब कि भारत और रियासतें दोनों ने एक साथ मिलकर संघ-शासन की रचना करने की शपथ ली। संघ में शामिल होने के लिये नरेशों और नवाबों के सम्मुख अनेक कारण उपस्थित थे। अधिक नरेशों ने तो केवल इसी लिये संघ में मिल जाने का निश्चय किया कि उनकी आर्थिक कठिनाइयां स्वभावतः हल हो जाएँगी। और सार्वभौम सत्ता द्वारा जो निरन्तर हस्तक्षेप होता था, उससे भी वे सुरक्षित हो जायेंगे। कतिपय नरेशों ने इसमें शामिल होकर अपनी देशभक्ति का अटूट परिचय दिया। दूसरे साथी नरेशों से प्रभावित होकर ही संघ में आए। संघ-शासन में आने पर भी बहुत से नरेशों ने अपनी सुविधा के लिए अनेक प्रतिबन्ध उपस्थित किए। प्राचीन कर्त्तव्यों का स्मरण कराया। परंपरा से चली आई हुई रीतियों और प्रणालियों का आश्रय भी लिया; परन्तु तो भी देश के हित में एक होना उनके लिए उचित और न्यायपूर्ण था। यहां इसका उल्लेख भी उचित है कि यूरोप जो कि प्रजातंत्र का घर समझा जाता था, वहां भी इस सिद्धान्त की जड़ हिलने लगी है। ग्रेट ब्रिटेन के अतिरिक्त प्रायः और सभी देश निरंकुश शासन की ओर जाते दिखाई देते हैं; परन्तु यह स्पष्ट कर देना नितान्त आवश्यक है कि यूरोप में कुछ भी हो, किन्तु भारत आज भी प्रजातंत्र ही के लिए खड़ा है। ब्रिटिश भारत में हुई जन-जागृति का प्रभाव देशी राज्यों में विविध प्रकार से पड़ा है। 'समय पाते ही वहां पर उत्तरदायित्वपूर्ण शासन की मांग होना स्वाभाविक है। चाहे बाहरी शक्तियां कितना ही हस्तक्षेप क्यों न करें, रियासती प्रजा के विकाश म कितनी ही बाधाएँ लाकर खड़ी करें, किन्तु उत्तरदायित्वपूर्ण शासन की प्राप्ति के लिए अपना सर्वस्व स्वाहा करने में न चूकेंगी। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण आज हमें बहुसंख्यक रियासतों में मिलता है। कहीं तो नागरिक स्वतंत्रता के लिए संग्राम छिड़ा है। कहीं "भूमि कर न देने" का बिगुल बज गया है। इस शंखनाद का अन्त पूर्ण उत्तरदायी शासन की प्राप्ति में होना ही निहित है। नरेशों का भी समय की गति देखकर चलने में अपनी मर्यादा और गौरव की रक्षा करना है। निरकुंश शासन की जंजीर तोड़े बिना वे अपनी प्रजा के ऊपर आधिपत्य न रख सकेंगे। हो सकता है यदि उन्होंने शीघ्र ही अपनी पुरातन नीति में परिवर्त्तन नहीं किया, तो वे केवल नाममात्र ही के लिए अपना अस्तित्व रख सकेंगे। सहयोग द्वारा ही प्रजा उन्हें सहानुभूति दे सकेगी। यदि वे अपनी नीति में परिवर्त्तन न करेंगे, तो समय-चक्र उन्हें एकदम उनके उचित स्थान के लिए बाध्य करेगा।

अनेक देशी रियासतों ने बिना संघर्ष के ही स्वभावतः शक्ति जनता के हाथ में दे दी है। उनके नरेश प्रजा के हितकारी और प्रजा अपने नरेशों के गौरव की रक्षक बनी है। औंध, कोचीन, ट्रावणकोर, मैसूर आदि ऐसे राज्य हैं, जहां प्रजा और राजा ने शासन-सूत्र का मिलकर संचालन करने में अपना हित समझा है। छोटी-छोटी रियासतें अधिकतर समीपवर्ती प्रान्तों का अंग बन गई हैं। कुछ निकट भविष्य में अपना मार्ग निश्चित कर रही हैं, परन्तु उनके और देश के लिए हितकर है कि इकाई बनकर अपने अपने भाग्य का निर्माण करें। यहां हमारे लिए इटली का उदाहरण विचारणीय है। वहां भी अनेक छोटी-छोटी रियासतें निरंकुश राजाओं द्वारा शासित होती थीं; किन्तु जनता के आन्दोलन ने इटली का एकीकरण कराया। भारत की परिस्थिति तो वहां से भी सुविधाजनक है। रिया-

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

फा० ३

महाराजा पटियाला एक विशाल सभा में भाषण देकर सिक्खों को भारतीय संघ की फौज में भर्ती होने के लिए आह्वान कर रहे हैं।

भारतीय स्वतन्त्रता का आंदोलन

'स्वाधीनता-दिवस' के इतिहास का एक सिंहावलोकन

लेखक, श्री अखिल विनय

'स्वाधीनता-दिवस' का ऐतिहासिक दिवस २६ जनवरी को पिछले १७ वर्ष से समस्त राष्ट्र में बड़े उत्साह से मनाया जाता रहा है, किन्तु अब राष्ट्र स्वाधीन हो गया है, इसलिये 'स्वाधीनता-दिवस' न मनाया जायेगा। जो कुछ भी हो भारतीय स्वाधीनता के आन्दोलन में २६ जनवरी का दिवस ऐतिहासिक है। इस लेख में लेखक ने स्वतन्त्रता-आन्दोलन पर एक विहंग प्रकाश डालते हुए स्वाधीनता-दिवस का महत्त्व प्रदर्शित किया है। लेख सामयिक और पठनीय है।

स्वाधीन भारत के प्रतीक पंडित जवाहरलाल नेहरू।

आज भारतीय आजादी का अर्थ संकुचित हो गया है। भारत का विभाजन हो जाने से, आज आजादी का आशय 'इंडियन डुमिनियन' की स्वाधीनता से है। सन् १७०७ में मुगलों के अन्तिम बादशाह औरंगजेब का देहान्त हुआ। सन् १७५७ में प्लासी के प्रसिद्ध युद्ध में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला को हराकर क्लाइव ने भारत में अँगरेजी साम्राज्य की नींव डाली। 'शेर के मुंह मनुष्य का मांस लग गया।' शोषण की भी एक हद होती है। फलतः १८५७ ई० में भारतीयों की ओर से विद्रोह की आग धधक उठी। यह दूसरी बात है कि संगठन और शक्ति की विशृंखलता के कारण सफलता हस्तगत न हो सकी। लार्ड रिपन भारत में आये और कुछ सुधार किये गये। लेकिन १९१४ के महायुद्ध के बाद अँगरेज राजनीतिज्ञों ने जो बड़ी-बड़ी दिलासाएँ दिलाई थीं। नष्ट-भ्रष्ट हो गईं। साइमन-कमीशन का भरपूर विरोध हुआ। सन् १९३० में राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) ने भारत की पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव स्वीकार किया। तब से विगत वर्ष तक प्रतिवर्ष २६ जनवरी को 'स्वाधीनता दवस' मनाया जाता रहा है।

आज भारतीय स्वाधीनता का नववर्ष लग गया है। अब हम २६ जनवरी को 'स्वाधीनता-दिवस' न मनायेंगे। आज प्रत्येक दिन हमारे लिए स्वाधीनता दिवस है; यदि देश का एक-एक नागरिक अपने उत्तरदायित्व को महसूस करे। आज अपने देश में अपनी सरकार है। स्वाधीनता हमें मिली तो सही; (निश्चय सन् १९४७ का वर्ष भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की अन्त्येष्टि का वर्ष था) परन्तु वह १९३० के प्रस्तावानुसार पूर्ण न मिली। भारत के टुकड़े होकर—भारत और पाकिस्तान दो स्वतन्त्र राज्य अस्तित्व में आये। इतना ही हो जाता तो गनीमत थी, लेकिन साथ-ही-साथ एक दर्दनाक और शर्मनाक घटना भी हुई, जिसका युद्धों को छोड़कर दुनिया के इतिहास में दूसरा उदाहरण मिलना मुश्किल है। पचास लाख मुसलमान और ४५ लाख हिन्दू और सिक्ख इस प्रकार कुल १ करोड़ मनुष्य अपने घर-द्वार से उखड़ गये। ढाई लाख मनुष्य अत्यन्त बर्बरतापूर्ण और पाशविक परिस्थितियों में मारे गये, या जख्मी हुए, हजारों ही स्त्रियां भगाई गई और बच्चे अनाथ कर दिये गये, तथा हजारों घर और दूकानें जला दी गईं। आबादी की अदला-बदली जटिल समस्या बनी रही और बनी ह।

२० फरवरी १९४७ को ब्रिटिश प्रधान मंत्री श्री एटली ने "भारत छोड़ने" सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक वक्तव्य दिया। 'जून १९४८ के बाद भारत स्वतन्त्र; लार्ड वैवल के स्थान पर इस अर्से में वाइसराय लार्ड माउण्ट बेटेन।' ३ जून को लार्ड माउण्ट बेटेन द्वारा विभाजन की घोषणा की गई। विशेषता यही कि इससे जून १९४८ के स्थान पर आजादी अगस्त १९४७ में ही मिल सकेगी। विभाजन की इस योजना को लीग और कांग्रेस दोनों ने स्वीकार कर लिया। १८ जुलाई को ब्रिटिश पार्लियामेंट-द्वारा स्वीकृत भारतीय स्वाधीनता-बिल को शाही मंजूरी प्राप्त हुई। ब्रिटेन ने हर बार हमसे झूठे वायदे किये पर विगत वर्ष वह वायदा पूरा हुआ। १४-१५ अगस्त की रात को शंखध्वनि और 'महात्मा गांधी की जय' के नारों के बीच देश के एक छोर से दूसरे छोर तक आजादी का स्वागत किया गया।

लेकिन रंग में भंग हुआ। जहां एक ओर लोग अपनी दासता की रात्रि का अन्त और आजादी के स्वागत में लगे थ, दूसरी ओर लोग आजादी तो दर किनारे रही मनुष्यता के पद से च्युत हो रहे थे। पाकिस्तान के गवर्नर-जनरल श्री जिन्ना के दो राष्ट्रोंवाले सिद्धान्त ने अग्नि में घी का काम किया। वह भूल गए कुछ ही समय पहले उन्होंने 'सद्भावना अपील' पर हस्ताक्षर किये थे। पंजाब में साम्प्रदायिकता के विष ने वह जोर पकड़ा। स्वयं वहां की पुलिस और फौज ने नागरिक अफसरों की मदद से कत्लेआम में हिस्सा लिया। हिंसा और नृशंस नीचता। बर्बरता का वातावरण छा गया। यह स्मरणीय है कि अविभाजित भारत में सर्वप्रथम हिन्दू-मुस्लिम दंगा पंजाब के मुलतान शहर में सन् १९२३ में हुआ और आज वहीं पाकिस्तान बना है। यह कार्य श्री जिन्ना के सिवाय और कोई न कर सकता था। उसी की ओट में भूतपूर्व ब्रिटिश मंत्री श्री चर्चिल ने भी काफी शिकार खेला।

पाकिस्तान में होनेवाली नाजायज हरकतों का कोई ठिकाना ही नहीं। आबादी की अदला-बदली (पंजाब व सिंध) में अधिक घाटा हिन्दुस्तान को ही रहा। हिन्दू और सिक्ख शरणार्थियों ('शरणार्थी' शब्द उनके लिए प्रयुक्त किया जा रहा है) को अपने पीछे ज्यादा अच्छी और अधिक जमीन छोड़कर आना पड़ा। मुसलमानों की तुलना में वे दस गुना—ज्यादा कीमत की जायदाद पीछे छोड़ आये हैं। हमारी सरकार से समझौते के अनुसार हिन्दू-अपहृत-महिलाओं को लौटाने में जबर्दस्त आनाकानी वे कर रहे हैं। वहां हमारे यहां ठीक इसके विपरीत मुस्लिम-महिलाओं को सुरक्षतापूर्वक लौटाने के लिए डा० गुलशनराय जैसे दृढ़ व्यक्ति कार्य में लगे हैं। जनता की राय के विरुद्ध

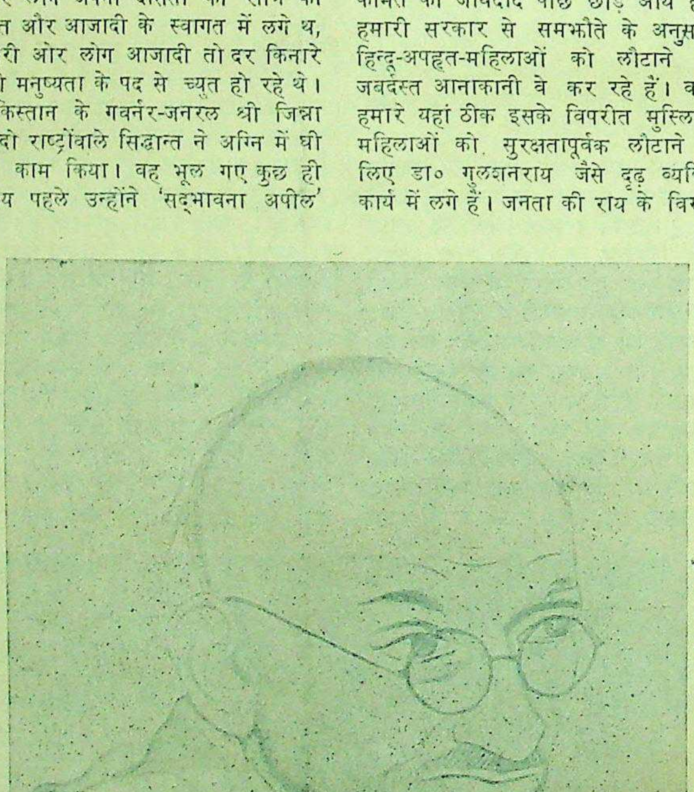

भारतीय स्वाधीनता के जनक महात्मा गांधी।

जूनागढ़ का नवाब पाकिस्तान में शा हो गया; परिणाम जो होना था हुआ। काश्मीर को जब समझा-बु पाकिस्तान में शामिल होने के लिए न किया जा सका तो पाकिस्ता उस पर चढ़ाई करना दी। आज का के मोर्चे पर अघोषित युद्ध हो रह यही कारण है पिछले दिनों एक कान्फ्रेंस में जनाब लियाकतअली खां, पूछने पर कि 'उनकी तथा-कथित आ काश्मीर सरकार को पेट्रोल कहां से मि ह, तो वे कुछ उत्तर न दे सके। शेरे का शेख अब्दुल्ला को भारत का आश्व मिला है और वह सच्ची स्वाधीनता लिए मोर्चे पर डटे हैं। गांधीजी ने भी इ समर्थन किया है।

देश के विभाजन से निष्क्रमण पुनः संस्थापन की समस्या ने देश ने की रचनात्मक योजनाएँ मन की मन रह गई। फिर भी भारत-सरकार ने कार्य विगत कुछ मासों में किया है पर प्रत्येक नागरिक को गर्व होना चाहि हैदराबाद-राज्य में हिन्दू बहुमत है १२ प्रतिशत मुस्लिम अल्पमत का शासन स्थापित नहीं किया जा सरदार पटेल ने, इसी लिए, चेतावनी ह कि भारतीय यूनियन से अलग है का कोई अस्तित्व नहीं हो सकता। को सुखपूर्वक जीने का जन्मसिद्ध अधि ह। देश की विधान-परिषद ने अपने में एक प्रस्ताव स्वीकार किया है कि का भावी शासन तंत्र 'स्वतन्त्र सार्व प्रजातन्त्र' होगा। उम्मीद ह कि फरवरी तक विधान हिन्दी में भी छ तैयार हो जायँगे। हिन्दी-भाषा में वि के अनुवाद के लिए योग्य विद्वानों को गया है। आज युक्तप्रान्त और विहा हिन्दी को राज-भाषा मान लिया सचमुच यह राष्ट्र-भाषा के पद पर ष्ठित होने के अनुकूल ही है। संसा चौथे नम्बर पर सबसे अधिक हिन्दी भाषा-भाषी हैं। विधान-प द्वारा कांग्रेस का तिरंगा झण्डा (जि शान में हजारों ही नवयुवक सन् १ में शहीद हुए—भारत की आजादी हित), बीच में अशोक का धर्मचक्र राष्ट्र की आजादी का प्रतीक मान गया है।

सिविल सर्विस के जरिये अँग राज्य चलता था। अँगरेजी राज्य के अँगरेज नौकरशाहों को भी बिस्तर बां पड़े। १५ अगस्त को ८५३ अँगरेज, मुसलमान और २२ अन्य अफसर सिविल सर्विस के थे, रिटायर हो ग उनका स्थान शासन-तंत्र को सुचारु से संचालित करने के लिए भारतीयों ले लिया। देश की सेना का भारतीयकर किया गया। इस कार्य के लिए अब के ३०० अँगरेज अफसर रह जायँगे सलाहकार और शिक्षक की हैसियत से रह सकेंगे। भारतीय सेना को, सच पू तो, पहली बार 'राष्ट्रीय सेना' बनने गौरव अब प्राप्त हुआ है। केन्द्रीय कमीशन की रिपोर्ट प्रकाशित हुई सरकारी नौकरों का अधिकतम २,००० रु० और न्यूनतम वेतन ५५ और नौकरी से हटने की उम्र ५ बजाय ५८ वर्ष निर्धारित की गई है। वेतन पानेवालों को सरकार बी सुविधा भी देगी। एक क्रान्तिकारी यह भी किया गया कि देश में प्र सिक्के—रुपये, का स्टर्लिंग से स विच्छेद के लिए, 'निकल' का प्रचारित किया गया। नमक का रद्द किया गया। यह गांधीजी की कूंच (सन् १९३०) की विजय सूचक ह।

शेष पृष्ठ १६ पर दे

बंबई-सम्मेलन का एक संस्मरण

अधिवेशन की कार्यवाहियों की एक मनोरंजक झाँकी

लेखक, श्री उमाशङ्कर शुक्ल

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ३५वाँ अधिवेशन बम्बई में सफलतापूर्वक समाप्त हो गया। सम्मेलन कैसा रहा और उसमें क्या विशेषताएँ थीं, इन सबका आँखों देखा वर्णन एक सुन्दर संस्मरण इस लेख में व्यक्त किया गया है। लेख मनोरंजक और अधिवेशन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालनेवाला है।

बंबई-सम्मेलम के सभापति महापंडित राहुल सांकृत्यायन।

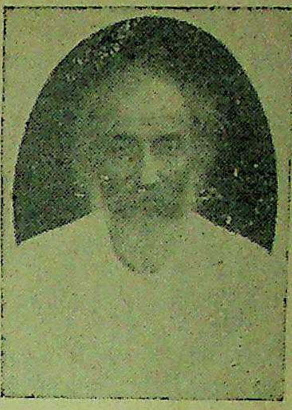

हिन्दी साहित्य- सम्मेलन के प्राण माननीय श्री पुरषोत्तमदास टंडन।

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन का पैंतीसवां अधिवेशन वैभवशालिनी बंबई नगरी में जिस उत्साह व शान के साथ होना चाहिए था——नहीं हुआ, यह बंबई निवासियों के लिए बड़ी ही लज्जा की बात है। स्वागत-समिति को बंबई के साहित्यिकों का पूर्ण सहयोग नहीं मिल सका था–अब पता नहीं कि स्वागत-समिति ने उनका सहयोग लिया नहीं या साहित्यिकों ने ही सहयोग नहीं दिया। सम्मेलन में सुनते हैं डेढ़ लाख रुपया फूंक दिया गया पर जो आनन्द आना चाहिए था, नहीं आया।

* * *

महात्मा गांधी व प्रोफेसर जे० सी० कुमारप्पा भले ही चाहे चिल्लाएँ कि वनस्पति घी, घी नहीं जहर है, पर बंबईवालों को इससे क्या? उन्होंने खूब जी भरकर डालडा की बनी हुई पूड़ियां प्रतिनिधियों को खिलाई और वह भी जूंठी थालियों में। बेहतर होता यदि केले के पत्ते या पत्रावली का उपयोग किया जाता। पर बंबई शहर में इतने केले के पत्ते व पत्रावलियां आती कहां से? वहां तो मिट्टी भी सोने के भाव बिकती है।

* * *

सम्मेलन में पत्रकार काफी संख्या में पधारे थे, पर अधिवेशन समाप्ति के बाद उन्हें कुछ संतोष हुआ होगा, इसमें संदेह ही है। अधिवेशन क्या था, एक तमाशा था। परिषदों के अध्यक्षों के भाषण जब छपे हुए रहते हैं, तो भला उन्हें पूरा पढ़ने की जरुरत ही क्या? श्रोताओं का ध्यान बिलकुल नहीं लगता और समय कटना मुश्किल हो जाता है। अच्छा हो—भाषण की मुख्य बातें ही पढ़ दी जाया करें। इससे समय की बचत हो सकती है और दूसरे बोलनेवालों को अधिक समय दिया जा सकता है। जो पत्रकार पधारे थे उनमें से मुख्य हैं–सर्वश्री पं० माखनलाल चतुर्वेदी, कमलापति त्रिपाठी, ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल', प्रो० अंचल, भवानीप्रसाद तिवारी, नर्मदाप्रसाद खरे, भगवतशरण अथोलिया, प्रभाकर माचवे, ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी, बसंत पुराणिक, विष्णु प्रभाकर, परमेश्वरीलाल गुप्त, माधव शुक्ल, बेढब बनारसी, बेधड़क बनारसी, मोहनलाल गुप्त, विश्वम्भरप्रसाद शर्मा आदि।

* * *

युद्धकाल में राशनिंग के युग में लोगों ने 'क्यू' बनाना सीखा है और अधिवेशन में 'क्यू' का प्रयोग लघुशंका तथा दीर्घशंका के लिए करना पड़ा। करीब चार सौ प्रतिनिधियों के लिए सिर्फ छः टट्टियों का निर्माण किया गया था। ऐसी व्यवस्था जन्म भर तक याद रहेगी। इन्तजाम देखकर नल भी कुपित हो गये थे और स्वागत-समिति के कुप्रबंध को देखकर उन्होंने हड़ताल कर दी थी। नल धीरे-धीरे रो रहे थे।

* * *

पं० सीताराम् चतुर्वेदी द्वारा 'देवता' नाटक का अभिनय प्रथम दिवस भीड़ ज्यादा होने के कारण नहीं किया जा सका। बाद में सेंट जेवियर्स कालेज के हाल में नाटक खेला गया। नाटक में घूसखोरी, संपादकों पर व्यंग और प्रगतिशील साहित्य की धज्जियां उड़ाई गई थीं। नाटक में बतलाया गया था कि संसार के प्रलोभनों से, बंधनों से और ममताओं से ऊपर उठकर जो अपने कर्त्तव्य से विचलित नहीं होता वही, देवता है। आज के इस अनैतिक युग में ऐसे ही देवताओं की आवश्यकता है। यही इस नाटक का संदेश है और कथा वही है जो हम आजकल नित्य अपनी आंखों से देखते जा रहे हैं। फिर भी न जाने क्यों हम खुलकर उसका उपाय नहीं कर पा रहे हैं।

* * *

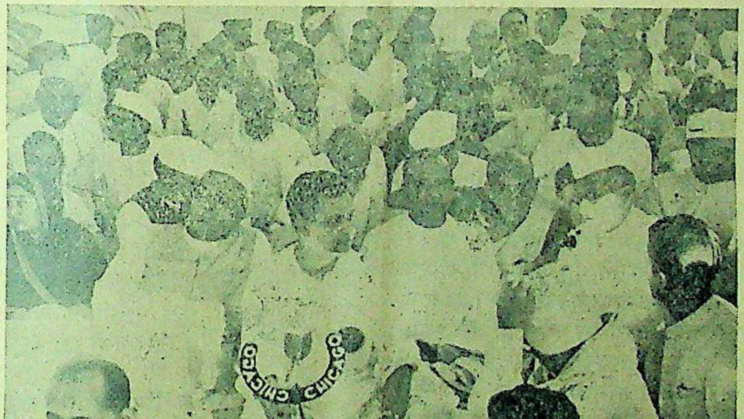

बंबई में होनेवाले हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अधिवेशन के प्रथम दिन का दृश्य।

समाज-शास्त्र-परिषद् में पं० कमलापति त्रिपाठी का जो भाषण हुआ वह कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण हुआ। उन्होंने कहा कि ऐसे युग में जब मनुष्यता के सम्मुख संकट उपस्थित है, जब वह अपने पथानुसंधान में संलग्न है और जब उसके विकास की गति कुंठित हुई दिखाई दे रही है और जब हिंसा और शस्त्र की निरर्थकता और प्रलयंकरता अखंडनीय रूप से सिद्ध हो चुकी है तब गांधीजी के अहिंसावाद के सिवा दूसरा कोई चारा नहीं है। आज नहीं तो कल विश्व को किसी न किसी रूप में उस भित्ति को अपनाना ही होगा।

* * *

३१ तारीख की रात को जो कवि-सम्मेलन हुआ——उसके प्रारंभ में बड़ी गड़बड़ी मचाई गई। उत्तर-भारतीय स्वयंसेवकों को बंबइया स्वयंसेवक पीट रहे थे और खून-खच्चर मचा हुआ था। खून से लथपथ एक वालंटियर को जब पंडाल में लाया गया तो बड़ी अशान्ति मची। आखिर बड़ी मुश्किल से शान्ति स्थापित हुई और निर्मलजी ने उस समय जो भाषण दिया उसका खूब अच्छा असर पड़ा। कवि-सम्मेलन के अध्यक्ष पं० माखनलालजी चतुर्वेदी ने भी कहा कि बंबई चरित्र-शील है या चरित्र-हीन——यह देखने आया हूँ। आप लोग शान्त रहें। मेरा कवि राष्ट्र-भाषा का है, वह गुलाम नहीं है। कवि प्रतिभाशील है। उसकी प्रतिभा को उछलने के लिए मैं सभापतित्व कर रहा हूँ। कवि-सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष श्री चिरंजीलाल लोयलका का भाषण हुआ। छपा भाषण सुनकर कुछ लोग जो वहीं मेरे पास बैठे थे गुनगुनाने लगे कि लोयलका जी अगर जबानी भाषण देते तो इतना कह ही नहीं सकते——यह भाषण तो किसी को 'कुछ' देकर लिखा लिया गया है।

* * *

कवि-सम्मेलन हुआ और उस रात खूब रंग बरसा। सर्वश्री सोहनलाल द्विवेदी, भगवतीचरण वर्मा, अनूप शर्मा, श्यामनारायण पांडे, बेधड़क बनारसी, डाक्टर आनंद, अनूपशर्मा, प्रो० अंचल, भवानीप्रसाद तिवारी, नर्मदाप्रसाद खरे, गोपालप्रसाद व्यास की कविताएं खूब पसंद की गईं। श्रीमती चंद्रमुखी ओझा 'सुधा', श्रीमती विद्यावती 'कोकिल' तथा श्रीमती सुमित्राकुमारी सिनहा की भी कविताएं अच्छी रहीं। कुछ कवियों को पुरस्कार भी मिले। प्रो० अंचल को किसी ने ११०१) का पुरस्कार दिया। श्री बेढब बनारसी कविता पढ़ने नहीं आये। दो बार उन्हें बुलाया गया, फिर भी वे नहीं आये। दूसरे दिन जब मैंने उनसे कविता न पढ़ने का कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि मुझे कवि-सम्मेलन के लिये आमंत्रित ही नहीं किया गया था। मैं कैसे कविता पढ़ने जाता। दुःख की बात है कि 'बेढब बनारसी' सदृश कवियों को भुला दिया गया। कवि-सम्मेलन रात को सवा तीन बजे तक होता रहा——फिर भी दो तिहाई कवि रह ही गए।

* * *

श्री अनूप शर्मा ने भदन्त आनन्द कौसल्यायन से कहा कि महाराज, एक प्रार्थना है और वह यह कि सम्मेलन का काम समाप्त हो गया है इसलिए इसे अब समुद्र में ही डुबा दो। इस पर आनंद जी ने कहा कि अभी नहीं——जरा ठहरो। अभी सम्मेलन का काम पूरा नहीं हुआ।

* * *

बम्बई का चोर बाजार प्रसिद्ध है। वहां के मवाली इतने चतुर होते हैं कि पावें तो आंखों का काजल निकाल लें। सम्मेलन में आनेवाले प्रतिनिधियों पर उन्होंने आखिर हाथ साफ कर ही तो दिया। जबलपुरी 'शुभचिंतक' संपादक तथा रसीले कवि श्री नर्मदाप्रसाद खरे की किसी ने पारकर की पेन ही मार दी। वर्धा कामर्स कालेज के प्रोफेसर बल्दुआ की वेस्ट एंड वाच कंपनी की घड़ी ही स्नान-गृह से उड़ा दी और एक प्रतिनिधि का मनीबेग ही गायब हो गया उसमें कहा जाता है कि उनतीस रुपये छः आने थे। सब तो सब सम्मेलन के अध्यक्ष महापंडित राहुल सांकृत्यायन की किसी ने चप्पलें ही साफ कर दीं।

* * *

बड़ी खुशी की बात है कि हमारे देश में अब नेताओं की तरह कवियों और लेखकों से भी हस्ताक्षर लिये जाने लगे हैं। कुछ कवियों ने तो हस्ताक्षर किये पर श्री सोहनलाल जी ने कहा कि मैं दस्तखत तभी करूँगा जब मुझे उसके बदले में कुछ मिलेगा। जो कुछ मिलेगा मैं उसे हिन्दी-प्रचार में दे दूंगा। वहीं पास बैठे हुए निर्मलजी ने एक पैसा अपनी जेब से निकालकर दिया। द्विवेदीजी जब पा गये तो उस पैसे को हिन्दी-प्रचार के लिये दे दिया और हस्ताक्षर कर दिये। हस्ताक्षर लेने का कार्य लड़कियों ने अधिक किया और यह उनका ही काम है भी। हरिपुरा कांग्रेस की बात है, श्री सुभाषचंद्र बोस कलकत्ता से हरिपुरा जा रहे थे। उनके स्वागत के लिए हर स्टेशन पर भीड़ होती थी। एक स्टेशन पर कुछ लड़कों ने उनसे हस्ताक्षर देने को कहा——सुभाष बाबू ने कहा कि यह लड़कों का काम नहीं है——बल्कि लड़कियों का काम है। हस्ताक्षर लेने की बीमारी पाश्चात्य देशों की है जो हिन्दुस्तान में बहुत फैल गई है।

* * *

अगला अधिवेशन संभवतः कलकत्ता में होगा। मेरठ की भी चर्चा सुनी जा रही है। इसका निर्णय बाद में किया जायगा। मुंबई की 'मुंबा' देवी के दर्शनों के बाद मालूम होता है अगले वर्ष 'काली मैया' के दर्शन करने पड़ेंगे।

* * *

बंबई का सम्मेलन, जैसी आशा की थी, वैसा नहीं हुआ। वहां के वैभव ने प्रतिनिधियों को अपनी ओर आकर्षित किया पर सम्मेलन की कार्रवाइयों ने प्रतिनिधियों को अपने से विलग ही रखा। देखना है कलकत्तावाले कितना उजेला करते हैं?

देशदूत

साम्प्रदायिकता हमारी दुश्मन है

अँगरेजी राज्य की तरह उसे भी गहरे गढ़े में गाड़ देना चाहिए

लेखक, माननीय पण्डित रविशङ्कर शुक्ल

(प्रधान मंत्री, मध्य-प्रांतीय सरकार)

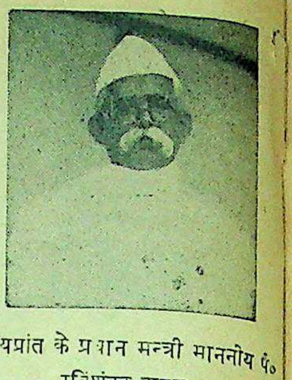

मध्यप्रांत के प्रधान मन्त्री माननीय पं० रविशंकर शुक्ल।

सागर विश्वविद्यालय के (मध्य-प्रांत) वार्षिक उत्सव के अवसर पर कुलपति पं० रविशंकर शुक्ल ने बड़ा ही महत्त्वपूर्ण भाषण दिया था। आपने अपने भाषण में नवयुवकों को भावी भारत के उत्थान में संगठित होने के लिए अह्वान किया और साम्प्रदायिकता को जड़-मूल से समाप्त करने का अनुरोध किया। भाषण का प्रमुख अंश यहाँ दिया जाता है।

सबसे पहले हम हिल-मिलकर स्वतंत्रता के मंगल प्रभात का स्वागत कर लें। वह हमारे अगणित बन्धु-बान्धवों की यंत्रणा, पीड़ा और अश्रुराशि का सुफल है। इस स्वतंत्रता की मुसकान के पीछे न जाने कितने बाल-पंथियों के उत्सर्ग की कहानियां छिपी पड़ी हैं, इस अवसर पर सहज ही उनकी स्मृति जागती है, आइये हम सब उन्हें मुक्त हृदय से श्रद्धांजलि दें उन आत्माओं का स्मरण करते हुए हम सब आज यह संकल्प करें कि अपनी इस दुर्लभ्य स्वतंत्रता की रक्षा प्राणों की बाजी लगाकर करेंगे स्वतंत्रता देश की अमूल्य निधि हुआ करती है और उसकी रक्षा वैसी ही अनुपम उमंग से करनी पड़ती है, आप इस महान् थाती के उत्तराधिकारी हैं आपका सर्वप्रथम दायित्व यह है कि यह स्वतंत्रता कभी खोने न पाये; इसका हनन न हो; अथवा कभी इसे शत्रु को समर्पित न किया जाय; चाहे सर्वस्व क्यों न चला जाये। स्वतंत्रता के उषःकाल में ही एक बार काले बादल क्षितिज पर घुमड़ आये थे, दानवीय शक्तियों ने सिर उठाया था और वे अपना प्रभाव जमा लेना चाहती थीं। हत्या, हाहाकार का विकट पागलपन देश के सम्पूर्ण जन-समूह को बावला बना चुका था। देश के एक भाग में भाई के ही रक्त से भाई ने स्नान किया था। ये घटनायें मानो स्वतंत्रता की प्रसव-वेदना सी थीं। परिवर्त्तन-क्षण में ऐसी दुर्घटनाएँ अवश्यम्भावी भी मानी जाती हैं; किन्तु यही सर्वथा सत्य नहीं है। साम्राज्य-वादी काल में घृणा के प्रचारकों-द्वारा जो विषाक्त बीज बोए गये थे, सन्धि-युग में उन्हीं के ये कुफल थे। मृतप्राय साम्राज्यवाद का इस देश में टिके रहने का वह अंतिम परोक्ष प्रयास था; किन्तु हमारे नेता अविचलित रहे। वे बद्ध परिकर खड़े हो गये और परिस्थिति पर उन्होंने विजय पाई। काले बादल विलीन हो गये और क्षितिज निरभ्र हो गया। आज से पांच महीनों के भीतर भारत संसार के मान-चित्र पर अपना विशेष स्थान बना चुका है और हमारी ओर शंकित दृष्टि से देखनेवालों को निराशा हुई है। भारत की भाग्य-नौका हमारे नेताओं के नितान्त कुशल हाथों में है, जिनके प्रथम नायक महात्मा गांधी हैं। हमारा कर्त्तव्य है कि हम ऐसा कोई काम न करें जो इन नेताओं के नौका-संचालन में बाधक हो। एक महान् भविष्य हमारा आह्वान कर रहा है। आपके पांवों में कोई कम्पन न आने पावे। हमें स्मरण रखना चाहिए कि हमारा सबसे बड़ा दुश्मन साम्प्रदायिकता है, वह केवल देशद्रोह ही नहीं है—गर्हित नीति है, विदेशी आक्रमणकारी के सिवा उससे किसी को लाभ नहीं होता, गत तीस वर्षों से इस दानव की चपेट में भारत कराह रहा है, हमें उसका उच्छेद करना होगा। अंगरेजी राज्य के साथ उसे भी गहरे गाड़ देना है। हमारा देश विभिन्न संस्कृतियों को आत्मसात् करने की अद्भुत क्षमता रखता आया है। शताब्दियों से हमारे आतिथ्य-प्रिय देश में संस्कृति की विभिन्न धाराओं का संगम हुआ है, जिसके फल-स्वरूप भारत की आत्मा का सृजन हुआ है, जिस पर किसी विशेष संस्कृति का एकाधिकार नहीं है तथा जिसमें सम्पूर्ण मानव-जाति के लिए सदैव स्थान रहा है। हम सबको मिल-जुलकर प्रयत्न करना चाहिए कि हम विदेशी सत्ता के प्रभाव में दबी हुई उसी भारतीय आत्मा को खोज कर फिर से पा लें।

जब मैं तरुणों के बीच होता हूँ, तब मुझे सबसे अधिक सुख मिलता है। तारुण्य जीवन का प्रतीक है और जीवन क्रिया-शीलता का नाम है। इसे ही दूसरे शब्दों में प्रगति कहते हैं। आप जीवन की देहली पर खड़े हैं, जहां अज्ञेय भविष्य तथा अलभ्य अतीत परस्पर आलिंगन कर रहे हैं। भविष्य के भय और भूतकाल के बोझ से आप परे हैं। आप स्वतंत्र-मस्तिष्क और मुक्त-हृदय हैं, इसलिये बनी हुई धारणाओं का प्रभाव आप पर नहीं पड़ना चाहिए और आवेग-उद्वेग में आपको बहना भी नहीं चाहिए। तन और मन का अनुशासन विश्व-विद्यालय में प्राप्त आपकी शिक्षा की कसौटी है। विश्व-विद्यालय दूसरे विद्यालयों की परीक्षा का भार अपने प्रबन्ध के अन्तर्गत तो लेता ही है; परन्तु सागर विश्वविद्यालय गुरुकुल-प्रणाली का अनुसरण करनेवाली प्रान्त में अपने ढंग की एक-मात्र संस्था है। सभी भागों के विद्यार्थी और शिक्षक यहां एकत्रित होते हैं और इस तरह प्रत्येक, स्वयं बहुत कुछ सीखता रहता है और दूसरों को भी सिखाता रहता है। पाठ्य-पुस्तकों से यह शिक्षा कुछ निराली होती है। पाठ्य-पुस्तकें ऐसी शिक्षा दे ही नहीं सकतीं, जो सत्संग से मिलती है। यह ऐसा ज्ञान है जो पढ़ाया नहीं जा सकता और जो विश्व-विद्यालय की परम्पराओं में निहित रहता है। विद्यार्थी के जीवन पर इन परम्पराओं का प्रभाव बना रहता है। वे उसकी चेतना का अंग बन जाती हैं और उसके विचार तथा कार्य को सदैव एक निश्चित स्वरूप में ढालती रहती हैं, चाहे वे खेल के मैदान में हो या खलिहान में। विश्व-विद्यालय की रूढ़ियां चरित्र का निर्माण करती हैं और उसी चरित्र की मिट्टी से राष्ट्र गढ़े जाते हैं। अतएव हमारे भावी भारत की रूप-रेखा वही होगी जो उसके विश्व-विद्यालय बनावेंगे। नालन्दा और तक्षशिला ने भारत के अतीत गौरव का निर्माण किया था। देश-विदेश के कोने कोने से विद्यार्थी गण वहां आते थे और भारतीयता का सन्देश लेकर जाते थे। वे भारत के सांस्कृतिक राजदूत हो जाते थे और सुदूर देशों में उसकी संस्कृति का प्रसाद बिखेर दिया करते थे। बाली द्वीप, कंदहार आदि देशों में आज तक इसके प्रमाण हैं। मुझे आशा है और यही एक स्वप्न मैं देख रहा हूँ, कि महाकोशल का सागर विश्व-विद्यालय ऐसा ही विद्या-मंदिर बन जायगा, जिसके ज्ञान का प्रकाश देश को अग्रसर करता रहेगा। विश्व-विद्यालय देश की जनता में मानवीय गुणों का विकास करता है। यह संस्कृति का घर है। यहां मनुष्य की आदि-वृत्तियों को नियंत्रित किया जाता है। उसकी वक्रताओं को सुडौल बनाया जाता है और उसके पशुत्व का निग्रह किया जाता है। यहां ज्ञान में प्रयोजन रहता है और विद्या-बल, विनय से अभिभूत हुआ करता है। विचार एक शिस्त में बंधता है और कार्य की गति निश्चित फल की दिशा में नियोजित की जाती है। विशाल कल्पना और संतुलित दृष्टि का यहां सृजन होता है। यहां जीवन के प्रति एक विकसित मनोवृत्ति का गठन होता है, जो उसे अधिकाधिक समृद्ध और सारगर्भित बना देती है। जो विश्वविद्यालय वर्ष में एक भी वास्तविक रूप से संस्कृत व्यक्ति तैयार कर सकता है, उसका आत्माभिमान शोभनीय है। विश्व-विद्यालय में बौद्धिक-नेतृत्व का लालन-पालन होता है। इसकी प्रयोगशाला में ऐसे विचार-युक्त बीजों की साज-सँवार की जाती है, जो समय पाकर अगणित व्यक्तियों का प्रबल विश्वास बन जाते हैं। विश्व-विद्यालय जीवन-यापन-कला का शिक्षा-केन्द्र होता है। यहां आपको जीवन-संघर्ष में प्रवेश करने के लिये मानसिक और नैतिक साधन प्राप्त होते हैं। शिक्षा का एक स्वरूप मस्तिष्क की शक्तिओं को संपादित करके व्यापक दृष्टि बनाने के लिये हुआ करता है। साथ ही ज्ञान और कला की विशेष शाखाएँ और अनेक प्रकार के वैज्ञानिक विषय भी हैं। आवश्यक यह है कि वैज्ञानिक दृष्टि को हृदयंगम किया जाय और जीवन के प्रश्नों का हल पाने के लिये वैज्ञानिक उपायों का अवलंब हो। विज्ञान हर चीज की परीक्षा प्रयोग-शाला में करता है और असंदिग्ध निष्कर्ष तक पहुँच जाता है। वर्तमान शताब्दी में वैज्ञानिक खोजों और यांत्रिक सफलताओं ने ऐसे भयंकर परिणाम प्रसारित किये हैं कि पृथ्वी का स्वरूप ही बदल गया है। उन्होंने प्रकृति की प्रच्छन्न शक्तियों को अपनी इच्छा के अनुसार संचालित किया और पृथ्वी के भीतर छिपी हुई निधि को प्रगट किया। निस्संदेह, उनके कारण पार्थिव वैभव बढ़ा, परन्तु आदर्शों से रहित हो विनाशकारी घटनाएँ भी हुईं। पश्चिम के कड़ुवे अनुभवों से हमें तो कुछ सीखना चाहिए। साथ ही विज्ञान के प्राप्त लाभों को व्यर्थ भी नहीं खोना है। हमारे देश और प्रान्त में वैज्ञानिक कार्य के लिये प्रशस्त क्षेत्र है। आपका विश्वविद्यालय उसका मूल-केन्द्र बन सकता है। आप बड़े भाग्यशाली हैं कि आपको डा० सर-हरीसिह गौर सरीखे उत्कृष्ट व्यक्ति निर्माता के रूप में प्राप्त हैं। वास्तव में विश्वविद्यालय डा० गौर की राजसी वदान्यता का फल है जो वदान्यता, हम जानते हैं, कभी रुकने का नाम न लेगी। धन ही नहीं, डाक्टर साहब ने विश्वविद्यालय के लिये बहुमूल्य अनुभव, समर्पित कर दिया है। उनका अगाध ज्ञान और उनके महान् व्यक्तित्व के सम्पर्क का लाभ, जो किसी भी देश की किसी भी संस्था के लिये अभिमान की बात हो सकती है, सागर-विश्वविद्यालय को सहज ही प्राप्त हो गया है। इस विश्वविद्यालय की नींव से लेकर कलश तक हर ईंट डा० गौर के संस्पर्श की छाप लिये रहेगी। उनका विचार है कि यह विश्वविद्यालय विद्यामंदिर तथा विज्ञान और यांत्रिक शिक्षा का केन्द्र बन जाय। प्रत्येक आधुनिक देश की उन्नति उसके वैज्ञानिकों और यंत्र-विद्या-विशारदों पर निर्भर रहती है। मुझे आशा है कि शीघ्र ही डा० गौर राष्ट्र-निर्माण के इस महत्त्वपूर्ण अंग की ओर ध्यान देंगे और सागर विश्वविद्यालय को इस प्रान्त और इस देश की महान् संस्था बना देंगे। मुझे भरोसा है कि इस दिशा में उनकी अटूट धन-राशि का अधिकाधिक भाग प्राप्त होता रहेगा। महाकोशल नैसर्गिक निधि की दृष्टि से समृद्ध है और सागर विश्वविद्यालय के कार्यकर्त्ताओं के प्रयत्नों की वह प्रतीक्षा कर रहा है। प्रान्त को डा० गौर की कुशाग्र-मति पर बड़ा विश्वास है। हमें आशा है कि हम सब मिलकर डा० गौर के स्वप्न को सफल बनाने में उनकी सहायता करेंगे।

जब तक अँगरेजों का राज्य था, हम लोग राजनैतिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी उनके गुलाम हो गये थे। राजनैतिक गुलामी तो मिट गई, परन्तु सांस्कृतिक गुलामी अभी शेष है। जिस देश में राष्ट्राभिमान नहीं होता, वह मिट जाता है। हम सब एक विशाल प्राचीन संस्कृति के उत्तराधिकारी हैं। स्वतन्त्रता के मंगल-प्रभात में इस पुण्य भूमि का प्रत्येक बालक और उसकी प्रत्येक बालिका उसी महान् बपौती के प्रति अब जागरूक बन जाये——यह मुहूर्त आ गया है। निश्चित है कि हमारी मातृ-भाषा के द्वारा ही हमें अपना राष्ट्रीय अभिमान मिलेगा और हमारी संस्कृति का छिपा खजाना हाथ लगेगा। अँगरेज गये——अँगरेजी को भी जाना चाहिए। अँगरेजी भाषा कितनी ही अच्छी हो, वह हमारी जनता की भाषा नहीं है और जन-राज्य में जनता की भाषा का ही सर्वोपरि आसन रहेगा। हमें अँगरेजी भाषा से प्रतियोगिता करने की इच्छा नहीं है। वह महान् भाषा है और उससे हमें अभी बहुत कुछ सीखना होगा। अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में उसी का आश्रय हमें लेना पड़ेगा, लेकिन फिर भी हमारी मातृ-भाषा का स्थान वह न ले सकेगी, क्योंकि हमारी भाषा के प्रत्येक शब्द के साथ हमारे सुख, दुःख, आशा और स्वप्न शताब्दियों से जुड़े हुए हैं। मिलान करने पर वह आज अँगरेजी के पीछे भले ही रह जाय, वह शब्दों के लिये ठिठके, उसके अर्थ ठीक न खुलें——यह सब हो सकता है——लेकिन हर भाषा को अपना बाल्य-काल इसी हालत में बिताना पड़ता है। इसमें कोई लज्जा की बात नहीं है। बल्कि इस कमजोरी से हमारे संकल्प में दूना बल आता है। हम अपना मन-प्राण अपनी मातृ-भाषा में भरेंगे और उसे उचित पद पर पहुँचा देंगे। हिन्दी को यहां ऐसे ही गौरव का स्थान मिलेगा। सागर, महाकोशल का सांस्कृतिक गढ़ है और वह हिन्दी का अनादर सहन नहीं कर सकता। मैं जानता हूँ, आपके उपकुलपति अँगरेजी के भक्त और विद्वान् हैं। मैं आपके उप कुलपति और उनकी अंग्रेजी दोनों का भक्त हूँ। लेकिन मैं जानता हूँ कि आपके उप कुलपति की मातृ-भाषा हिन्दी है और अपने नितान्त निजी क्षणों में वे हिन्दी का ही आश्रय लेते हैं। उनकी मातृभाषा की ओर से मैं उन्हीं से निवेदन करता हूँ कि वे हिन्दी को प्रश्रय देवें और दूसरी भाषाओं को जो लाभ मिला है वह डाक्टर गौर जैसे प्रतिष्ठित व्यक्ति-द्वारा उसे भी मिले। मैं आशा करता हूँ कि वह दिन दूर नहीं है, जब सागर-विश्व-विद्यालय

शेष पृष्ठ १२ पर देखिए

प्रतीक्षा

लेखिका, श्रीमती चन्द्रप्रभा द्विवेदी

डाक्टरी भी पढ़े-लिखे समाज का एक प्रमुख पेशा है, केवल सेवा नहीं। मध्यम श्रेणी की भांति ही मध्यम श्रेणी के डाक्टरी पेशावाले भी आये दिन दुर्दशाग्रस्त तथा आर्थिक संकटों से घिरे रहते हैं। उनकी दुर्दशा देखकर सजीव ही नहीं निर्जीव का .भी हृदय चीत्कार कर उठता है, इस कहानी में लेखिका ने इन्हीं भावनाओं को चित्रित किया है, जो पठनीय, तथा सुन्दर तथा भावुकता से पूर्ण है।

हाथ में अखबार और मुख में सिगार। डाक्टर साहब का खाली अस्पताल उनकी मानसिक हलचल से भरा तीसरे दर्जे की बोगी से कम नहीं था। यद्यपि उसमें केवल शीशे की आलमारियां और कुछ फर्नीचर ही थे, रोगी और बैठकबाज नहीं। फिर भी उनके लिए यह रीतापन सर्वथा नहीं के ही बराबर था। मस्त .विचार और पस्त शरीर के कारण। समाचार था——भारत के राजनीतिक विभाजन का। जिसकी अखंडता के अखंड नारे के कारण न जाने कितना रक्तपात हो चुका था; पर बहुसंख्यकों के न तो कंठस्वरों का कुछ असर हुआ न गणना का। .ठीक वैसे ही जैसे शक्तिशाली शरीर के लम्बे-चौड़े भागों के दृढ़ रहने पर भी, उसी में उत्पन्न फोड़े के कारण अंग-विच्छेद का। तमाम मलहम-पट्टी, सेंक-मर्दन के साथ वेदना सहने पर भी अन्त में उभर कर ही रहा, कट कर ही रहा; क्योंकि टीस उत्पन्न हो चुकी थी, स्वस्थ रक्त सड़कर मवाद हो चुका था और अब हड्डी के गलने की बारी थी।

फिर भी सर्जरी में दक्ष डाक्टर का ज्ञानी हृदय इस विच्छेद से मर्माहत हो उठा और वह बड़ी ही ममता तथा वेदना से देख रहा था भारत के उस विभाजित भाग को। उन्हें ऐसा प्रतीत होने लगा जैसे समस्त शीशियां मानव होकर अपने आलमारी के शीशे के अन्दर से झांकती हुई चीख मार-मारकर पुकार रही थीं——

"मैं लुटी हूँ, हाय शोषिता हूँ, निर्वासिता हूँ, मेरी रक्षा करो, मुझे शरण दो। मेरे पापी प्राणों की रक्षा के लिये इस पतित एवं दीन-हीन अंगों को, क्षत-विक्षत उस तरंग की भांति आश्रय दो। भस्म होने पर वाष्प संकुल होकर अपने अगाध जीवन के सुख सिंधु से वियुक्त कर पवन में प्रखर ताप से तप्त होकर मिल गई है और प्रतिक्षण यह तल, जल और थल के धरातल से छूटता सुदूर आकाश की ओर भागा जा रहा है। उसी को मिट जाने के लिये इस दुःखदावा में थोड़ा आश्रय, अपनी शरण। शक्ति की अशक्त चेतना को शरण, जो मृत्यु को वरण करने में अब असमर्थ है, असहाय और निर्बल है; क्योंकि जीवन की ममता अब तेजी से जाग पड़ी है सबों को खोकर भी, खाकर भी। प्रेतों की समता में भी तुच्छ कर्कश एवं निर्मम आधार! निर्दयता के प्रहार पर सदयता का उपकार सँजोने को आकुल!

मिस्र के 'पिरेमिड ही इस भांति हैं जो अपने ध्वंसावशेष में, अपने सुखों की अमर ममियां सजाये चले ही आ रहे हैं।

डाक्टर उठकर खड़े हो गये। नस-नस में भारतीय रक्त शरणार्थी की तीव्र अनुभूति लेकर ओज के साथ चक्कर लगाने लगा। उन्होंने दोनों हाथ उठाकर सबों को अभयदान करते हुए कहा:—

"आओ, मेरे असहाय बन्धु! मैं तुम्हें अपनाता हूँ। तुमने अपने को खोकर लाखों के अपनेपन को अपनाया है तो हम कभी पीछे नहीं हैं।"

पर यह क्या? वह कुछ कहने भी न पाये थे कि निकट की रखी आलमारी से उनका सिर टकरा गया। हाथ का समाचार-पत्र उनकी दशा से सर्वथा बेखबर होकर फर्श से अपना निकट का नाता जोड़ रहा था इसी अस्त-व्यस्तता में मुख की सिगरेट भी चक्राकार धुएँ का बादल उड़ाती दूर जा गिरी। बेचारे डाक्टर सिर खुजलाते हुये झुंझला उठे उन शरणार्थियों पर जो केवल मन ही में आये थे।

"चलो, दूर हटो! कायर कहीं के!! मृत्यु के डर से तुम जीवन को नरक बनाने यहां भी आ पहुँचे। देखो, मेरा सिर झनझना उठा, चश्मा टूटने से बचा और यह मखमली कोच जला जा रहा है सिगरेट से। अभागे नीच! जीने के आकांक्षी हो, तो जीतकर जीते, क्यों हारकर, भागकर जीने के लिये आये हो? कहां गया तुम्हारा वह शौर्य, जिससे तुम काल को भी ललकारा करते थे—अपने ताल ठोंककर!"

पर वहां न तो शरणार्थी ही थे न उनका किसी प्रकार का उत्तर। लपककर उन्होंने सिगरेट का टुकड़ा उठा लिया और कोच के जलते भाग को मलकर बुझा दिया, फिर तर्जनी और मध्यमा अँगुली में टुकड़ा फँसाकर अपना इंजन पूर्व और पश्चिम से फेरकर अपनी दूकान में ही घुमाने लगे, जो उनके केशों की ही भांति चितकबरी दुनिया बनी थी। वह उसी के दुरंगे रंग में फिर खो जाना चाहते थे कि वह टकरानेवाली आलमारी फिर हिल उठी। उन्होंने उसकी ओर मुड़कर देखा।

"अब क्या बात है?"

"बात तो यही है कि उसमें से एक चूहा निकलकर भागा जा रहा है।"

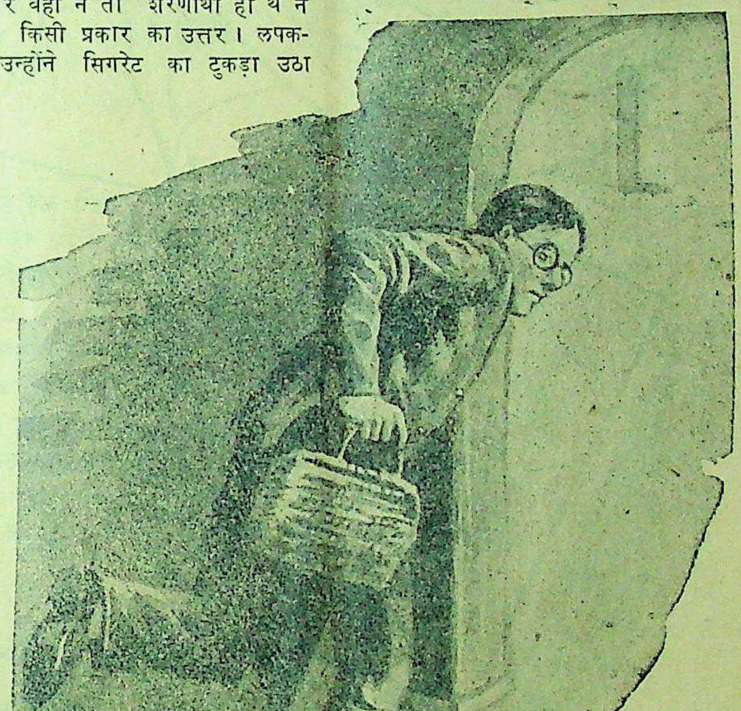
डाक्टर साहब अपना बेग लेकर भाग चले।

उनकी आंखों में देखा और वह फिर उठकर खड़े हो गये। किन्तु इस बार सतर्कता के साथ फिर भी मन ही मन कुड़कुड़ा उठे।

"आखिर तुझे भी इसी समय अपनी निर्बलता दिखाने को रह गया था, टूट गई है तो अच्छा हुआ, जल्दी ही छुटकारा पा जाऊँगा। उठाकर फेंक दूंगा चूल्हे के पास, एक समय का खाना तैयार हो जायगा। बस, छुट्टी मिल जायगी।"

फिर वह उसे प्यार भरी आंखों से देखने लगे। एक दिन इसे जब लाकर खड़ी किया था तब यह मूल्यवान् मेरी सम्पन्नता और दक्षता की सूचक थी पर क्या यह सर्वथा सत्य ही था? मा के गले का वह हार!

डाक्टर सिर पकड़कर फिर कुर्सी पर जा बैठे। अवस्था अब ढल चली है लड़का अभी इंटर-मीजियट के प्रथम ही वर्ष में है, कला ब्याहने के योग्य हो गई है, पर मेरी आय!"

उन्होंने अपनी खाली पड़ी दूकान को देखा—पर फिर वह बदरंग पड़ी आलमारी सामने आ गई। उन्होंने सुना, वह कह रही थी।

"आप तो सदैव बाहरी रंगों में ही डूबे रहते हैं, कभी मेरी भी दशा पर ध्यान दिया है? यह मैं मानती हूँ कि उतरते शिशिर में चराचर अपनी रंगीनी में डूब जाता है, वह युगों का बूढ़ा भी हो पर नया-नया बन जाता है, किन्तु मेरे स्वामी! जब से मैं तुम्हारी शरण में आई हूँ तब से केवल बदरंग ही तो होती रही! मेरी मौन सेवा तो अविराम ही थी। कभी मैंने तुमसे कुछ कहा है? पीड़ित होने पर कराह उठी, तब तुमने नहीं देखा, थकी होने पर पड़ी रही, तब तुमने कुछ नहीं सोचा। सोचते भी तो कैसे? मैं जड़ की निर्जीव भाग थी। यद्यपि प्रथम बार जब इस रूप में तैयार हुई थी तब एक बार नहीं, अनेकों बार रंगी गई पर उससे क्या? अब तो बदरंग ही होना है और प्रतिदिन होती जा रही हूँ। आखिर इन रंगीनियों से मुझसे क्या सम्बन्ध? क्योंकि अब तो शवमात्र हूँ। किसी दिन अवश्य मेरे पतझर ने मुझे जगाया है और वसंत ने खिलाया है, कवियों ने मेरे सौंदर्य में काव्य रचे हैं और चित्रकारों की तूलिकाओं से खचित मेरा रूप वर्णनातीत था पर अब?"

"जाने दो, भूल जाओ मुझे, मैं सड़ती-गलती भी जब तक कुछ भी शक्ति रखूंगी खड़ी ही रहूँगी। हां, जिस दिन धराशायी हो जाऊँगी उस दिन भी भस्म होकर चरणों में लिपट जाऊँगी। चरण-कमलों की मृदुल रज।"

डाक्टर का मुख उसके इन स्नेहिल उद्गारों को सुनकर खुला ही रह गया। वह क्या कहें किन शब्दों के फूल चढ़ाकर अपने कृतज्ञतापूर्ण हृदय की भावना व्यक्त करते? वह तो इस समय रीते थे बीते रागों के गीत की विकृत एक वाक्यावली, एक छोटी सी कड़ी मूक और व्यथित। फिर भी वह हारनेवाले न थे। खुले मुख से ध्वनि फूटी शब्दों के समूह छूटे।

"मृदुल रज! तुम्हीं नहीं, समस्त विश्व ही उस सर्वशक्तिमान के चरण-कमलों की मृदुल रज है, जो उसकी प्रेयसी प्रकृति के परम पुनीत कर-कुसुमों में लगते ही एक नूतन रूप धारण कर एक दूसरा ही बन जाता है, किन्तु तुम यह तो बताओ कि मैंने कब तुमको भुलाया है? रोगियों के आने और चले जाने पर मैं किस प्रकार तुम्हारे हृदय-कपाटों को सँभालकर खोलता और बंद करता हूँ। तुम्हारे इस उदार अंक में कितने प्रकार के रंगों ने आश्रय पाया है। विष और अमृत, वारुणी और चेतनामयी ओषधियों को अर्पित किया है। क्या तुम्हारा यह आगार मेरे जीवन का आधार, मेरे मस्तिष्क और अनुभव-पूर्ण अध्ययन का साकार रूप नहीं है? फिर क्यों तुम अपने को परित्यक्ता समझकर दुःखी हो रही हो?"

"मैं दुःखी हूँ डाक्टर? किन्तु अपने अन्त के विषय में नहीं, तुम्हारे इस रीते वसंत को सोचकर। मेरा यह जरा-जर्जर क्षीण गात अब पीली पत्ती की भांति झड़ जाने को तैयार है फिर भी हृदय खोल सबों का स्वागत करती हूँ अपने भरे हुए कोने-कोने निछावर कर देती हूँ पर बदले में तुम्हारे पास लक्ष्मी का शुभ वरदान नहीं आने पाता है। तब मुझे उस दिन की याद आती है, जब तुमने मेरे लिये............।" सहसा बोलती हुई अलमारी चुप हो गई। डाक्टर ने कहा:——

"हां, हां मेरे पाप-पंकिल में सने उस दुष्कृत्य को क्यों नहीं कहती हो?"

उन्होंने देखा——दो डबडबाये नेत्र याचना से करते हुये अपनी मनोभावना व्यक्त कर रहे हैं।

"क्या उसे भी मैं ही कहूँगी? मैं वह

अनुचरी तो नहीं हूँ जो स्वामी की आलोचना करती हैं, उन पर कटु वाक्य प्रहार करती हैं। मुझे क्षमा करें।"

"उफ! यह जड़ भी ऐसी कृतघ्न नहीं है, जैसे हम चैतन्य मानव हैं। वैभव का यह स्वांग ही आज मुझे मुंह चिढ़ा रहा है; जिसकी रचना मैंने मां का हार चुराकर किया था। यही क्यों? इधर चुपके-चुपके मेरी दूकान की सजावट हो रही थी जो उसे बेचकर मैं कर रहा था और उधर वह हृदय के भयानक दर्द से तड़प-तड़पकर दम तोड़ रही थी। मैंने सोचा था कि, लाभ होने पर चुपके से ही फिर उसे बनवा कर मा को दे दूंगा जिसे वह मेरी छोटी बहन को देने के लिए छिपाये थीं। पिता की वही तो अन्तिम सम्पत्ति थी, फिर मेरी छोटी बहन के विवाह के उपलक्ष में देने के लिये था। मा का ही नहीं, बहन का भी उसमें भाग था। वह स्वर्णहार! दूसरा भी तो वैसा ही था—कमला का क्या बदले में मैं उसे ही नहीं दे सकता था? पर वह तो मेरी प्रतिहिंसा थी, अहं की भयानक चाहना! और आज वही फर्निचर मेरा उपहास कर रहे हैं अपनी महान् सेवा सम्पन्न कर, उपयोगिता बढ़ाकर। अब वह जर्जर हो गये हैं। उसके मूल्य की कहानी भी पुरानी हो चुकी है पर वह अक्षय है और अभी सर्वथा तत्काल सी ताजी।"

उन्होंने सिर ऊपर उठाया—"क्या कहती हो तुम? न जाने कितने उत्ताप की लपटों में मैं झुलस चुका हूँ। सचमुच, हृदय की वे सभी दग्ध हुई रक्त की बूंदें यदि सम्मुख आई होतीं, उनका कोई रूप होता तो वह भी एक राशि से कम न होता। नहीं, यह अमूल्य सहचरी!"

वह उठकर खड़े हो गये और हड़बड़ाकर, उस चिर जीवन-संगिनी आलमारी के पार्श्व पर मस्तक टेककर खड़े हो गये, जो उन्हीं के समान अनुभवी और वयवती हो चुकी थी। जिसके अंतर में उनकी तमाम स्मृतियों के ही साथ सम्पत्ति छिपी थी।

उसके भी भग्न-कपाट पार्श्ववत् अपने ही आप खुलकर फैल गये। मानो अपने अभंग अनुराग से वह उन्हें अपनी बाहों में लेकर वक्ष में प्रतिबिम्बवत भर लेगी। किन्तु संकाकुल डाक्टर का हृदय हताश चेतना से चौकन्ना हो उठा। उन्होंने झपटकर सावधानी से उसकी फैली बाहों को समेट दिया और स्टेथिस्कोप पर हाथ जा पहुँचा। जैसे उसके हृदय की धड़कन को भी वह इसी प्रकार सुन लेंगे। फिर अपना इंजेक्शन अर्पित कर जीवन की घड़ियां बढ़ा लेंगे। उसके दोनों पट बंद हो गये—एक मृतक की पलकों की भांति।

फिर भी वह जीवित थी—जाग्रत थी और अपनी आंखों से देखा—डाक्टर अब सन्तोष के साथ अपनी कुर्सी पर जा बैठे हैं, वह कुर्सी उससे मिली हुई है, पर वह कुर्सी से नहीं!

डाक्टर भी अब अपने चश्मे से झांक-झांक रोगियों की प्रतीक्षा करने लगे, जो अभी तक नहीं आये थे। उन्होंने देखा पथिक उनकी रीती दूकान और भरी शीशियों की ओर घूर-घूरकर देख रहे हैं। दूसरी ओर आंखें फाड़-फाड़कर समाचार-पत्र भी देख रहा है। वह सोचने लगे।

"यदि यह शरणार्थी ही दस-बीस मेरी दुकान में आ बैठते तो क्या बुरा होता। लोग समझते तो यह भी एक कुशल डाक्टर हैं।"

ठीक यही प्रतीक्षा तो उस ओर भी थी—'अब आये, अब आये।' हृदय की गति के साथ ही नस-नस भी चीत्कार कर रही थी।

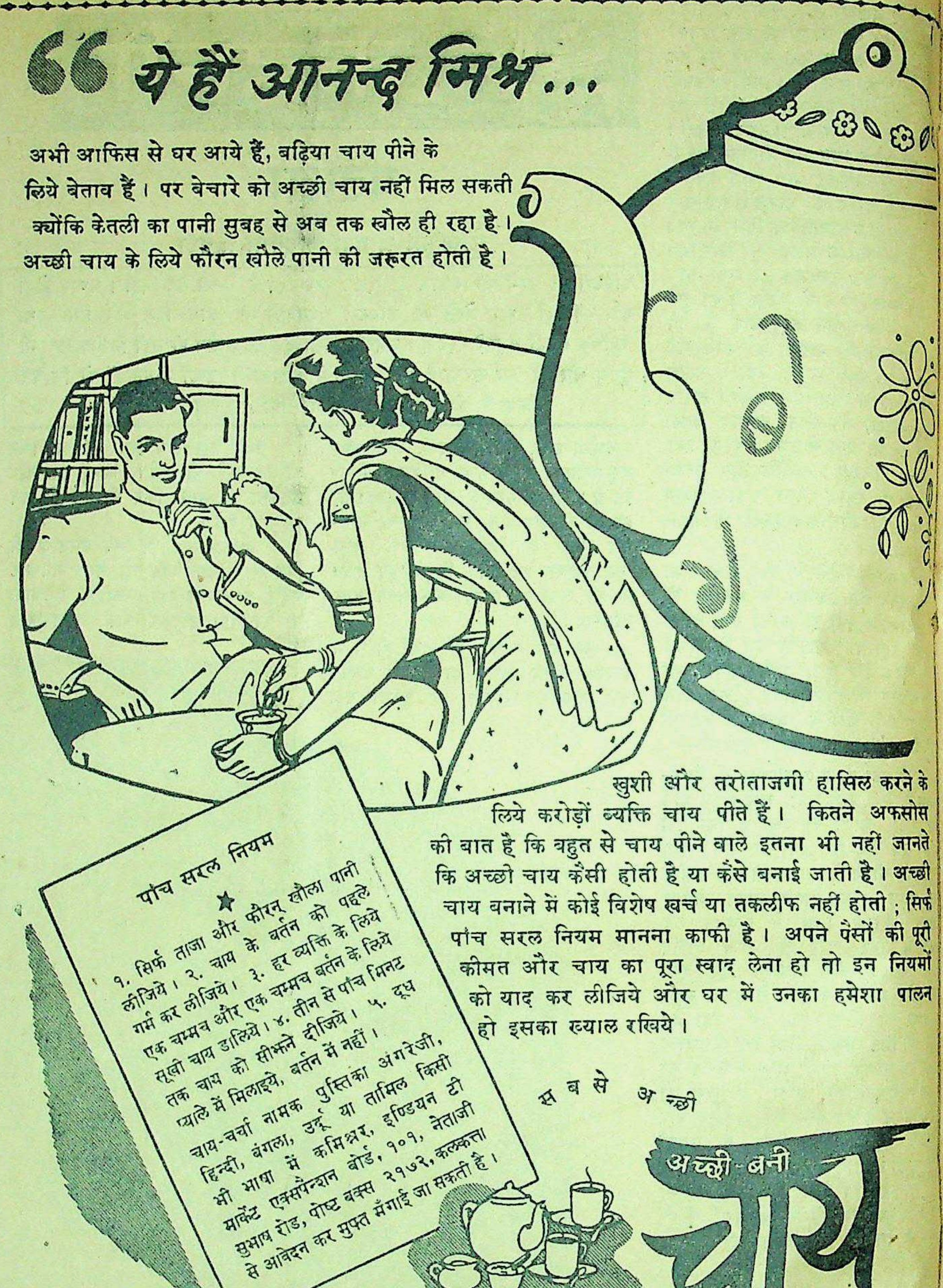
"ये हैं आनन्द मिश्र...

अभी आफिस से घर आये हैं, बढ़िया चाय पीने के लिये बेताब हैं। पर बेचारे को अच्छी चाय नहीं मिल सकती क्योंकि केतली का पानी सुबह से अब तक खौल ही रहा है। अच्छी चाय के लिये फौरन खौले पानी की जरूरत होती है।

पांच सरल नियम

★

१. सिर्फ ताजा और फौरन् खौला पानी लीजिये। २. चाय के बर्तन को पहले गर्म कर लीजिये। ३. हर व्यक्ति के लिये एक चम्मच और एक चम्मच बर्तन के लिये सूखी चाय डालिये। ४. तीन से पांच मिनट तक चाय को सीझने दीजिये। ५. दूध प्याले में मिलाइये, बर्तन में नहीं।

चाय-चर्चा नामक पुस्तिका अंगरेजी, हिन्दी, बंगला, उर्दू या तामिल किसी भी भाषा में कमिश्नर, इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड, १०१, नेताजी सुभाष रोड, पोष्ट बक्स २१७२, कलकत्ता से आवेदन कर मुफ्त मँगाई जा सकती है।

खुशी और तरोताजगी हासिल करने के लिये करोड़ों व्यक्ति चाय पीते हैं। कितने अफसोस की बात है कि बहुत से चाय पीने वाले इतना भी नहीं जानते कि अच्छी चाय कैसी होती है या कैसे बनाई जाती है। अच्छी चाय बनाने में कोई विशेष खर्च या तकलीफ नहीं होती; सिर्फ पांच सरल नियम मानना काफी है। अपने पैसों की पूरी कीमत और चाय का पूरा स्वाद लेना हो तो इन नियमों को याद कर लीजिये और घर में उनका हमेशा पालन हो इसका ख्याल रखिये।

सबसे अच्छी

अच्छी-बनी चाय

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IT 295

LIPTONS
WHITE LABEL
TEA
ONE POUND NETT
लिपटन
माने अच्छी चाय

हमारा रंग-मंच

'जेल-यात्रा'

श्री गजानन जागीरदार की एक दर्शनीय कृति

लेखक, श्री गोपाल मेहरोत्रा

हमारे समाज एवं देश के नियम हमको सदैव गढ़ने के लिए तत्पर रहते हैं। उन नियमों का उल्लंघन करना मृत्यु को निमन्त्रित करने के समान है। उन नियमों का उद्‌गम कहां से है? अन्त की हम प्रतीक्षा करते हैं और उस अन्त के 'अन्त' का परिणाम क्या होता है? इन्हीं प्रश्नों के उत्तरस्वरूप प्रसिद्ध अभिनेता एवं दिग्दर्शक श्री गजानन जागीरदार ने जागीरदार प्रोडक्शन की नवीनतम सामाजिक कृति "जेल-यात्रा" का निर्माण व निर्देशन, स्वतन्त्र आर्यावर्त की समृद्धशाली जनता के मध्य किया है।

"जेल-यात्रा" एक ऐसे मनुष्य की दुखदपूर्ण व सराहनीय जीवनकथा है, जो कारावास की खिड़कियों में जटित लोहे की सलाखों तथा पाषाण-हृदयी सीमाओं द्वारा सीमित स्थान को पवित्रता की पदवी से सुशोभित करता है। वह जेल-यात्री, एक करुण-तरुण नगरवासी-नवयुवक, जो करागृह को 'यात्रा' स्वीकार करता है। ऐसे अद्‌भुत सद्‌गुणी जेल-यात्री की व्यथिता-कथा को भारतीय स्वर्ण-रजतपट पर इस भांति प्रदर्शित किया गया है—एक सदाचारी निर्धन पुरुष अपनी चार दिवसों की भूखी तथा ज्वर से पीड़ित कन्या को दूध पिलाने के हितार्थ एक 'पुलिस-इन्सपेक्टर' के गृह से केवल 'चार आने' की चोरी करता है। वह अपना अभियोग स्वीकृत करता है, पर नयनहीन न्याय, उसे एक मृत्युतुल्य पशु के रूप में परिणत कर देता है। वह असभ्य मानव बंदीगृह से भागता है। अपराधी एक दुखित रमणी, नैना को, ठाकुर साहब के डाकबंगले से भगा ले जाता है; परन्तु सद्‌भाव के साथ। नैना चोरी करने के अभियोग में अपराधिन घोषित की जाती ह। इसके पश्चात् जेल-यात्री एक धर्मात्मा पर एक चतुर आक्रमण। स्वामी जी स्वयं शान्त हृदय से समस्त द्रव्य-पदार्थों को उसके अधिकार में कर देते तथा उसकी निद्रित, निद्रारूपी मानवता को पुनः जागृत कर देता है। यात्री पश्चात्ताप से मुक्ति भी न प्राप्त कर वह नैना की स्मृति में बिखर पड़ता है। वह प्रतिकार का मूल्य ग्रहण कराने के लिए प्रस्तुत होता ह। यात्री, नैना को ठाकुरों के पंजों से स्वतन्त्र कराने के हेतु उसके चाचा श्रीयुत रघुनन्दनप्रसाद जी के गृह ले आता है, जो किसी दूसरे नगर में रहते थे। एक राज-द्रोही बन्दी की पुत्री को अपने गृह में स्थान देने से अस्वीकार करने पर यात्री स्वयं नैना के चाचा का रूप धर कर उसे लेने आता है। सौभाग्यवश चाचा और भतीजी सुखमय जीवन व्यतीत करने लगते हैं। एक घटनावश नैना के जीवन में एक चित्रकार, राजेश प्रवेश करते हुए उसके मद भरे चित्रों का निर्माण करता है और नैना उसे अपना जीवन-साथी समझती है। द्वितीय ओर मोना, ठाकुर साहब की पुत्री कुवँर, उसके प्रेमी को अपने समीप लाने की चेष्टा करती है, क्योंकि कुवँर जी एक सुन्दरी, इन्दू से प्रेम ....। एक घटनावश, मोना के सम्मुख कुवँर जी के द्वारा राजेश का अपमान करने पर मोना की शान्त मुद्रा निरखकर वह पागल हो जाता तथा कुवँर साहब को मृत्यु की मीठी नींद सुला देने की धमकी देता है। यात्री, राजेश को अचेतावस्था में अपने गृह ले आता है। राजेश को सत्य-प्रेम का अनुभव होता है। कर्तव्य-पालक 'इन्सपेक्टर' छाया की भांति यात्री को अपने अधिकार में करने का प्रयत्न करता है। रहस्यमय दशा में रहस्योद्‌घाटन होता है और राजेश, यात्री का पुत्र सिद्ध होता है। नैना तथा राजेश की रक्षा के हितार्थ यात्री वहां से भागने की दृढ़ प्रतिज्ञा करता है। इन्दू का भ्राता अभागा वंशी, राजेश की पिस्तौल द्वारा कुवँर जी को समाप्त कर देता है। संदेहवश राजेश अपराधी सिद्ध होता है। यात्री के अतिरिक्त इस भेद का किसी को भी ज्ञान नहीं होता है। एक विकट प्रश्न उसके सम्मुख प्रस्तुत होता है—"पुत्र या पुत्री की मृत्यु—एक को स्वीकार करना होगा?" नैना का स्मरण होते ही वह रो उठता है। यात्री ने नैना के नयन-अश्रुओं द्वारा सींचे गये पथ पर विपदारूपी खाई न बनने के कारण दो दुखी जीवनों को सरसमय बनाने के हितार्थ कुवँर की मृत्यु-आरोप अपने ऊपर स्थगित कर पुनः "जेल-यात्रा" के हेतु अपने जीवन की उमंगों की आहुति दे देता है।

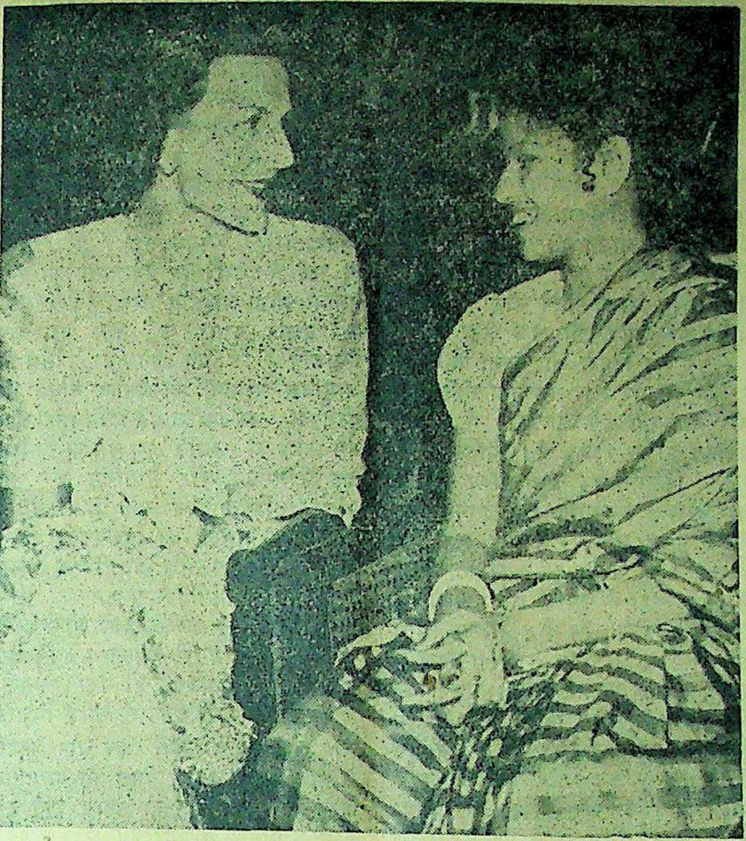

लेडी माउंटबेटेन और 'मीरा' फिल्म की प्रधान अभिनेत्री श्री सुबु लक्ष्मी।

प्रस्तुत चित्र की कहानी, फ्रांस के क्रान्तिकारी कथाकार श्री विक्टर ह्यूगो के सर्वोत्मक उपन्यास, 'लीस मिजरेबल्स' पर केन्द्रित है, जिसे श्री इमत्याज अली 'ताज' ने चित्रपट के योग्य प्रस्तुत किया है। पंजाब-फिल्म-क्षेत्र द्वारा घोषित 'पगडण्डी' के असाधारण, असफल कहानी-लेखक ने जो कलंक का टीका आपके मस्तिष्क पर सुशोभित किया था, उस शोभायमान कलंक को धो डालने का प्रयत्न, "जेल-यात्रा" की कथा रचकर, प्रदर्शित किया है। यद्यपि कहानी का मूल तत्त्व वर्तमानकाल की समस्त प्रमुख समस्याओं (वांछनीय दण्ड-प्रणाली, शोषण निर्धनता, पूंजीवाद, दासत्व, भावना इत्यादि) से परिपूर्ण है; परन्तु एक लघु वस्तु को इतना वाह्य रूप प्रदान करना सर्वथा अक्षम्य है—उस करुण हृदयी नगर-निवासी यात्री का अपना अभियोग स्वीकार कर लेने पर भी उसे कारावास के अधिकार में कर देना—जो एक स्वतंत्र महान् राष्ट्र के नियमों के अनुकूल नहीं प्रतीत होता। कहानी प्रेम, हास्य, क्रोध इत्यादि परिस्थितियों सहित कलात्मक ढंग से विकास पाती है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि समस्त भूमिकाएँ राजनैतिक कोणों का प्रतिनिधित्व नहीं करती हैं। श्री "ताज" द्वारा लिखित संवाद स्वाभाविक एवं सफल हैं। जेल-यात्री के कथोपकथन में विशेषता दृष्टिगोचर होती है। दिग्दर्शक की गम्भीर मुद्रा व कलात्मक ढंग से संवादों के उच्चारण ने चित्र की लोकप्रियता में और चार चांद लगा दिये हैं। श्री नरेन्द्र शर्मा, सज्जन तथा राममूर्ति द्वारा रचित गीत भावुक व साधारण हैं। श्री सज्जन एवं नरेन्द्र द्वारा लिखित प्रथम ('दुनिया सारी जेल रे') एवं सप्तम गायन (जग में छाया अंधेरा) अत्यधिक प्रशंसनीय हैं। श्री निनू मजूमदार का संगीत-निर्देशन चित्ताकर्षक है। गीतों के धुन नवीन हैं। पाश्चात्य नृत्य का रंगमंच-रहस्य-संगीत स्वाभाविक है। हेमावती एवं सत्यनारायण द्वारा भारतीय तथा समजुदाह द्वारा विदेशी प्रदर्शित-नृत्य सफल एवं सोने में सोहागा जैसा योग देनेवाले हैं। सम्भतः सर्वप्रथम प्रस्तुत चित्र में ही भारतीय एवं अँगरेजी नृत्यों को एक साथ सुचारु रूप से प्रदर्शित किया गया है। चित्रालेखन द्वितीय श्रेणी का है। मध्यान्तर के पश्चात् श्री एस० हरदीप का चित्रालेखन निरखने योग्य है। श्री नारायणराव का सम्पादन-कार्य असतर्क एवं निर्दोष है। श्री वटेगाओंकार की 'सेटिंग्स' भव्य एवं रुचिकर है। श्री एस० बी० ठकार, बी० एस-सी० की 'साउण्ड-रेकडिंग' अदोषपूर्ण है। दृश्य-दृश्यावलियां सुन्दर हैं। ध्वनि-आलेखन किसी-किसी स्थान पर अस्वाभाविक है।

समस्त पात्रों के अभिनयों को दृष्टिगत रखते हुए यह निडर रूप से घोषित किया जा सकता है कि सबसे सुन्दर एवं कलात्मक कार्य- जेल-यात्री की भूमिका में दिग्दर्शक श्री गजानन जागीरदार ने अभिभूत किया है। एक बंदी के रूप में आप अत्यधिक स्वाभाविक दृष्टिगोचर हुए हैं। आपका संवाद कहने का मार्मिक ढंग दर्शकों की स्मृति में एक लम्बे काल तक सजग रहेगा। नैना की कल्पना में कामिनी कौशल, ने चित्र में अत्यधिक सफलता का परिचय दिया है। इस कलानेत्री के उज्ज्वलमय भविष्य की मैं कामना करता हूँ। चित्रकार राजेश की काया में, भारतीय रजतपट के सुयोग्य कलाकार श्री पृथ्वीराज कपूर के सुपुत्र, राज कपूर ने साधारण कोटि का अभिनय प्रदर्शित किया है। श्री केदार शर्मा द्वारा निर्देशित चित्रपट 'नील-कमल' को लक्ष्य कर आप प्रस्तुत चित्र में क्षीण दृष्टिगोचर होते हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानो नव-पत्नी ने आपको अत्यन्त प्रभावित किया हो। इस समय आप 'आग' नामक चल-चित्र के दिग्दर्शन में व्यस्त हैं। मोना के आवरण में हेमावती ने जयन्त देसाई प्रोडक्शनकृत 'रेणुका' से अधिक सुन्दर अभिनय अभिनीत किया है। आपके द्वारा प्रदर्शित नृत्य सफल हुआ है, यद्यपि रंग श्वेत न होने के कारण आप रजतपट के लिए अनुपयुक्त दिखलाई देती हैं। कुँवर जी की छाया में हरीश ने सफलता का परिचय दिया है। आपका आगामी आकर्षण 'बुत तराश' है। श्वान के रूप में राबिन ने मनमोहक कार्य किया है। शेष कलाकारों में विक्रम कपूर, दीक्षित, सुनालिनी देवी, बद्रीप्रसाद ने भी सफल अभिनय किया है।

इस प्रकार श्री गजानन जागीरदार का प्रस्तुत निर्देशन व निर्माण-कार्य प्रथम श्रेणी का है। संक्षेप में "जेल-यात्रा" एक सामाजिक एवं दर्शनीय कृति है। स्वतन्त्र आर्यावर्त को ऐसे ही राष्ट्रीय चित्रपटों की अत्यधिक आवश्यकता है।

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

संपादक के नाम चिट्ठियां

टिहरी में तानाशाही

युक्तप्रान्त के गढ़वाल जिले के दूसरे अंग टिहरी गढ़वाल राज्य, जिसका क्षत्रफल ४५०० वर्गमील है और जनसंख्या पांच लाख से ऊपर है, में होनेवाले अत्याचारों पर पड़ा काला पर्दा सन् १९४४ में चौरासी दिन की भूख-हड़ताल के बाद शहीद होनेवाले युवक नेता श्रीदेव सुमन के स्वर्गवास के बाद उठ गया था। टिहरी जेल में सुमन के बलिदान के बाद बाहर की दुनिया के सामने ही टिहरी के कुशासन का पर्दाफाश नहीं हुआ, बल्कि टिहरी के किसानों ने भी तानाशाही को समाप्त करने के लिए कमर कस ली, तब से आज तक टिहरी की जनता का संघर्ष निरंतर चलता आ रहा है।

टिहरी में सन् १९४६ का प्रारंभ किसानों में शासन द्वारा अपनी आय को बढ़ाने के भूमि-बंदोबस्त के जाल के विरुद्ध पैदा हुए असंतोष के फलस्वरूप एक क्रांति के साथ हुआ। डांगचौरा में वृयोवृद्ध किसान नेता श्री दौलतराम के नेतृत्व में टिहरी सरकार द्वारा लादे गये भारी भारी जायज और नाजायज करों के रूप में की जानेवाली लूटपाट को चुनौती दी गई। जिसके बाद राजा को जनता की प्रतिनिधि संस्था को कानूनी करार देकर उसके सामने घुटने टेकने पड़े।

पिछले डेढ़ वर्ष से टिहरी की जनता का आन्दोलन प्रजामंडल के नेतृत्व में चल रहा है। उसको कुचलने के लिए चलाई गई सब चाल प्रायः बेकार हुई हैं। गत १५ अगस्त को जब सारा भारत विदेशी सत्ता के चंगुल से मुक्ति पाकर स्वतंत्रता-दिवस मना रहा था, तो टिहरी सरकार ने प्रजामंडल के नेताओं को जेल में बन्द कर दिया। जन-सुरक्षा की आड़ में सभाओं पर प्रतिबन्ध लगाकर नागरिक जीवन का अंत कर दिया गया और शासन-व्यवस्था को फौज और पुलिस के सहारे चलाया जा रहा था।

पंजाब के साम्प्रदायिक दंगों से पैदा हुई अव्यवस्था से लाभ उठाकर टिहरी सरकार ने १३ सितम्बर को राज्य के सकलाना इलाके में जनता को कुचलने के लिए १२० सशस्त्र फौज और पुलिस के सिपाहियों की टोली भेजी, वहां पर स्कूल और अस्पताल आदि खोलने की मांग को लेकर करबंदी आरंभ हुई थी। उसी अपराध में किसानों पर भारी भारी जुर्मानों की वसूली के लिए इस टोली को भेजा गया था। किसानों पर इस टोली के अत्याचारों ने सन् ४२ के गोरे फौजियों के व्यवहार की पुनरावृत्ति कर दी। पके हुए अनाज के खेतों को घोड़े और खच्चरों से रौंदाया गया। सिपाहियों ने दिन-दहाड़े घरों के ताले तोड़कर लूटपाट की। औरतों को बेइज्जत किया गया और लकड़ी के बदले खेती के औजारों को जला दिया। इलाहाबाद के गांधी आश्रम के एक कार्यकर्त्ता श्री त्रिलोकीनाथ पुरवार को जो राज्य में होनेवाले अत्याचारों की कहानी सुनकर सकलाना गए थे और जिन्होंने प्रजामंडल के नेताओं की सहायता से किसानों को संगठित कर पुलिस के दांत खट्टे कर दिये थे उन्हे पथरीली सड़क पर घसीटकर बूटों से पीटा गया और एक महीने तक जेल में जहां वे भूख-हड़ताल पर रहे। पुलिसवालों का अनाचार राज्य भर में होता रहा।

प्रजामंडल ने इस धांधली को बन्द कर निष्पक्ष जांच की मांग रखी पर जब यह स्वीकार नहीं किया गया तो राज्य में उत्तरदायी शासन की प्राप्ति के लिये संघर्ष छेड़ दिया गया। सत्याग्रहियों को भूखा रखने, मारने-पीटने और जंगल में छोड़ने का क्रम अभी चल रहा है।

पर अब टिहरी की जनता के संकट के दिन टल गए हैं। सकलाना कीर्तिनगर और देवप्रयाग के इलाकों में स्वतंत्र पंचायतें कायम हो गई हैं। कीर्तिनगर से १००० किसानों का जत्था राज्य की नई और पुरानी राजधानियों नरेन्द्रनगर और टिहरी की ओर रवाना हो रहा है। आन्दोलन की बढ़ती हुई लहर को रोकने के लिए राजा ने सुधारों की घोषणा का स्वांग भी रचा जिसके अनुसार पांच सदस्यों को अंतर्कालीन मंत्री-मंडल में एक प्रजामंडल का प्रतिनिधि लेना स्वीकार किया गया था और विधान-सभा में एक तिहाई राजा के नामजद सदस्य रखे गये थे। प्रजामंडल ने इस तानाशाही को कायम रखने का षड्यंत्र करार देकर ठुकरा दिया है और घोषणा कर दी है कि जनता को पूर्ण उत्तरदायित्व सौंपने तक संघर्ष चलता रहेगा।

२९ क्वीन्स वे
नई दिल्ली

—सुन्दरलाल बहुगुणा
प्रकाशन मंत्री
टिहरी राज्य प्रजामंडल

* * *

प्रयाग, महिला विद्यामन्दिर

प्रयाग महिला विद्या-मंदिर अनेक प्रकार के संकटों को झेलता हुआ, अपने जीवन काल के ९ वर्ष व्यतीत कर १०वें वर्ष में पदार्पण कर रहा है। स्कूल ने अपने अल्पकाल के जीवन में विघ्न-बाधाओं को सहन करते हुए भी आशातीत सफलता प्राप्त की प्रौढ़ स्त्रियों को आदर्श महिला बनाना और लड़कियों को उच्च आदर्श की शिक्षा देना संस्था का मुख्य उद्देश्य रहा। निःशुल्क शिक्षा पानेवाली छात्राओं की संख्या अधिक है। कुछ असहाय महिलाएँ भी मंदिर के आश्रय में हैं। इस प्रकार स्कूल में खर्च अधिक है पर उसको चलाने के लिए कहीं से भी कोई बड़ी सहायता नहीं मिल रही है। आर्थिक कठिनाई के कारण स्कूल की स्थिति डावांडोल हो रही है। अतः हमने स्कूल की परिस्थिति को जनता के सामने रखने के लिए इसका वार्षिक उत्सव मनाने का आयोजन किया है। इस वार्षिक उत्सव में आए हुए धन से लड़कियों को पारितोषिक देकर शेष स्कूल तथा स्कूल में शिक्षा पानेवाली असहाय महिलाओं की सहायता की जायेगी। हमारे इस साहस की पूर्ति सब देशहितैषी स्त्री शिक्षा-प्रेमी भाई-बहनों की उदारता, उत्साह और सहायता के भरोसे पर निर्भर है। आशा है कि उदार भाई-बहनें हमारे इस कार्य में सहायक होकर स्त्री-जाति का कल्याण-साधन करने का पुण्य प्राप्त करेंगे।

दिवेदिका—रमादेवी टंडन संचालिका, पार्वती देवी शुक्ला, सुन्दर देवी मालवीय, रमादेवी मालवीय, मिसेज जस्टिस हरिश्चन्द्र सभानेत्री, रूपरानी देवी सेठ उपसभानेत्री, माधुरी सिनहा मंत्राणी देवकी देवी सहायक मंत्राणी।

* * *

जमींदार और किसान

बस्ती (डाक से) गत महीने में तहसील बांसी ग्राम गंगवल जिला बस्ती के एक किसान को जमींदार के सिपाहियों ने सोते समय जान से मार डाला। ऐसी रिपोर्ट मंडल कांग्रेस कमेटी में आई है। मंडल के अधिकारी फौरन घटनास्थल पर गए। मालूम हुआ कि कई महीने से जमींदार और उनके सिपाही के साथ किसान से संघर्ष चल रहा था। तरह तरह से किसान पर अत्याचार किया जा रहा था। लेकिन वह झुक नहीं रहा था। उसके इशारे से और भी किसान अपने खेतों के लिए उठ रहे थे। इसी कारण सिपाहियों ने यह अनाचार किया था।

इलाके में हजारों बीघे खेत किसान अपने हल-बैल से जोतते हैं घर-द्वार है, लेकिन सारा खेत जमींदार का खुद कास्त लिखा जाता है। किसान मारे डर के कभी कह नहीं सकता कि यह मेरा खेत है।

कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओं तक की जान आज खतरे म पड़ी हुई ह। प्रान्तीय सरकार और जिले के अधिकारियों का ध्यान तुरन्त इस घटना पर जाना चाहिए, क्यों न प्रान्तीय सरकार ऐसों के इलाके कोर्ट आफ वार्ड के अन्तंगत ले ले?

बस्ती —प्रभुदयाल विद्यार्थी

साम्प्रदायिकता हमारी दुश्मन है

(पेज ८ का शेष)

में शिक्षण का माध्यम हिन्दी हो जायगा, जिससे वह नागपुर, बनारस और लखनऊ विश्व-विद्यालयों से पिछड़ न जाय।

हम बहुत ही महत्त्वपूर्ण समय सें गुजर रहे हैं। हमारे देश में बड़ा चमत्कार हो गया है और चिर-प्रतीक्षित स्वतंत्रता हमें प्राप्त हो गई है। भारतीय स्वतंत्रता का एक नवीन और अद्वितीय अर्थ है।

यद्यपि संसार के नेता बार-बार चिल्लाते हैं कि यह जन-युग है, तथापि आधुनिक संसार में सामान्य मानव की दुरवस्था सर्व-विदित है। विज्ञान और यंत्र-विद्या की उन्नति अणु बम के निर्माण तक पहुँच गई और साधारण जन उसे पाकर स्तम्भित और हतबुद्धि हो गया। नाश और निर्माण की विशेषज्ञता इतनी ऊँची उठ गई कि उसके साथही एक सामाजिक तथा राजनैतिक संगठन का जन्म हुआ, जो इतना उलझा हुआ और अरूप है कि साधारण जन के व्यक्तित्व के विकास का पथ एकदम अवरुद्ध हो गया। उसका जीवन और उसकी इच्छाएँ, उसके विचार और आदर्श तथा सत्य, शिव और सुन्दर के प्रति उसकी लगन, यंत्रजनित दानवता के संसार में सारहीन हो उठी। इसी का नाम आधुनिक सभ्यता है। आज मनुष्य का नहीं—और साधारण जन का तो बिलकुल ही नहीं—बल्कि मशीन का मूल्य है। मशीन इसलिये आई कि उससे श्रम बचे और जब तक मशीन यह उपयोगी काम करती है, तब तक वह साधारण जन को युग-युग की गुलामी से अवश्य ही छुटकारा देती है। लेकिन वैज्ञानिक खोजों की दौड़ ने मशीन को इतना आगे बढ़ाया कि श्रम बचाने के स्थान पर मशीन ने श्रम का ही आसन छीन लिया। इस तरह साधारण जन की दुःखगाथा का आरम्भ हुआ। बढ़ते-बढ़ते मशीनें ऐसी बढ़ीं कि मनुष्य का मूल्य ही न रहा और एक नई गुलामी का जन्म हुआ, जिसके कारण आदमी, मजदूरों के बाजार में एक जड़-वस्तु के समान और लड़ाई में तोपों की खूराक की दृष्टि से बेचा और खरीदा-जाने लगा।

आधुनिक संसार के महान् निर्माता, वैज्ञानिक, समाज-सुधारक, राजनीतिज्ञ, सब एक ऐसे चक्रव्यूह में फंस गये हैं कि अब उससे निकलने का उन्हें मार्ग ही नहीं मालूम। मशीनें बढ़ती जाती हैं और अधिकाधिक नाशकारी युद्ध हो रहे हैं। बलिहारी इस आधुनिकता की, जो एक ऐसी नागिन बन गई है कि उससे बचना कठिन दिखाई पड़ रहा है।

ऐसी दशा में साधारण जन क्या करे? पश्चिम इसका उत्तर नहीं दे सकता। हिन्दुस्तान के एक बहुत छोटे से आदमी ने, जो आज की दुनिया के साधारण जन का स्वयं एक प्रतिबिम्ब है, इसका केवल उत्तर ही नहीं दिया, बल्कि उसकी अमोघ शक्ति को सिद्ध करने के लिये उसने अपने प्राणों को दांव पर लगा दिया। यही छोटा सा मनुष्य, संसार में महात्मा गांधी के नाम से प्रसिद्ध है।

गांधीजी ने विज्ञान और मशीन के आधुनिक संसार के बारे में दृढ़ता-पूर्वक एक सत्य कह दिया कि साधारण जन का आज की दुनिया में कोई स्थान नहीं है। गांधीजी ने साधारण जन से कहा "सच बोलो, सच पर डटे रहो—उसके लिये जियो और मरो और सब बुराइयों का सामना सत्य और अहिंसा के उपायों से करो।" गांधीजी ने अपने इस नवीन, माननीय उपाय की अमोघता को सिद्ध कर दिया है और बता दिया है कि वर्तमान मशीन-युग द्वारा प्रतिपादित पशुता का सिद्धान्त कितने भयानक दुष्परिणामों से भरा पड़ा है।

इस तरह गांधीजी ने साधारण जन को एक नया अस्त्र प्रदान किया, जिसके बल पर वह सिर ऊँचा करके खड़ा रह सकता है और मानवीय मूल्यों तथा मानवीय गौरव के लिये मानवीय उपायों से लड़ने की क्षमता रखता है। हमारी स्वतन्त्रता पर गांधीजी के इसी सिद्धान्त की विशेष छाप है और इसलिये उसका अद्वितीय महत्व है। भारतीय स्वतंत्रता साधारण-जन के विद्रोह का प्रथम प्रयत्न है, जो विद्रोह उसने आधुनिक मशीन-युग की अमानुषिक शृंखलाओं के विरुद्ध किया ह। यदि सचमुच यह शताब्दी साधारण जन की है, तो नवीन स्वतन्त्र भारत का नेतृत्व ही इस सदी को वह पद प्रदान कर सकता है, पश्चिम के राष्ट्र नहीं कर सकते।

.५००) नकद इनाम
जवाँमर्द चूर्ण से सब प्रकार की सुस्ती, दिमागी कमजोरी, स्वप्नदोष, धातु विकार तथा नामर्दी दूर होकर शरीर हृष्ट-पुष्ट बनता है। मूल्य ३।।।) मय डाकखर्च। बेकार साबित करने पर ५००) इनाम।
श्याम फार्मेसी (रजिस्टर्ड) अलीगढ़।

पृथ्वी की कहानी
पृथ्वी कैसे बनी, पृथ्वी पर पहले-पह कौन आया; नद-नदियाँ, पहाड़, जंगल, रेगिस्तान, बर्फीले देश, जानवर, पक्षी औ आदमी कैसे बने; धर्म और जातियाँ, रा और कानून कैसे बने; पुरानी यादगा आज की दुनिया, पृथ्वी का अन्त आ बातों का वर्णन इस पुस्तक में बड़े अ ढंग से किया गया है। मूल्य ।।=)।।
जानवरों की मज़ेदार कहानि
मोर और कौआ, लोमड़ी और गधा चालाक बुढ़िया, सोने की चिड़िया, टि और सियार आदि कहानियाँ पढ़िए औ इनका चमत्कार देखिए। मोटे टाइपों अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य ।।
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग

देशदूत चित्रावली

जयपुर में सरदार पटेल--बरमा के भूतपूर्व प्रधान मंत्री जनरल यू० आंग सेन--माननीय गाडगिल भाषण दे रहे हैं।

पिछले महीने में सरदार वल्लभभाई पटेल जयपुर गये थे। चित्र में सरदार पटेल महाराजा जयपुर के साथ दिखाई दे रहे हैं।

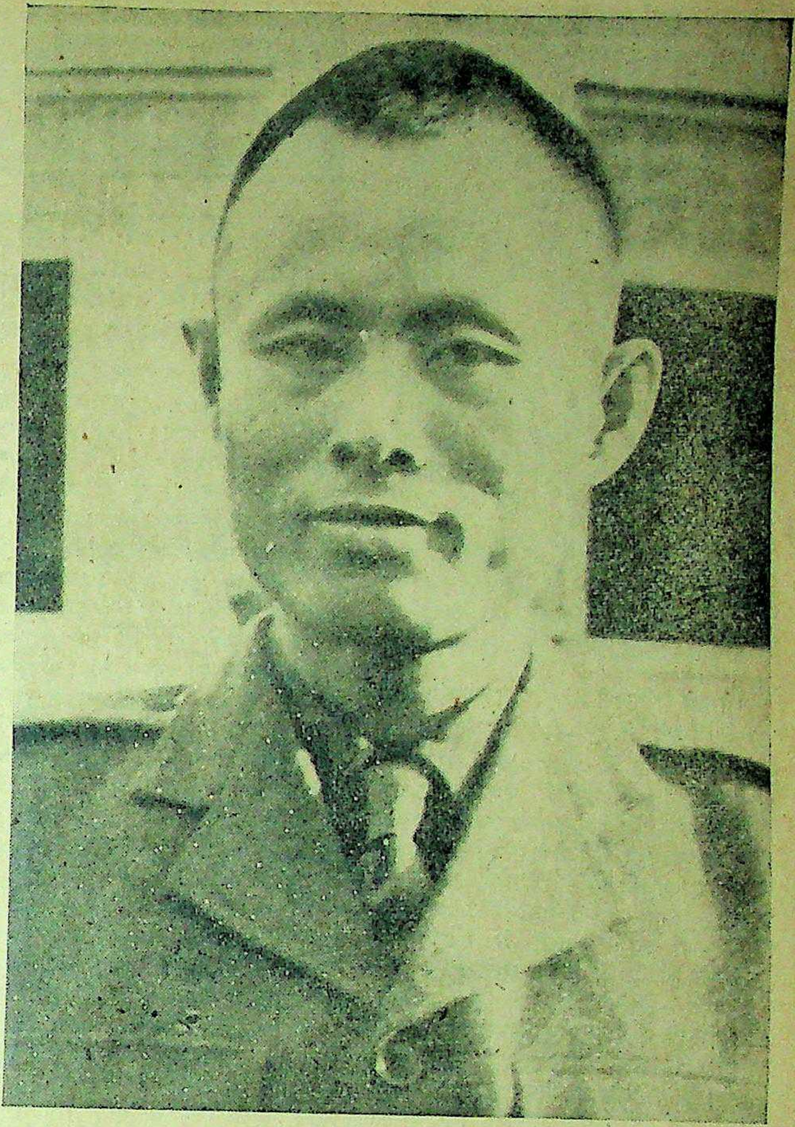

बरमा के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री यू० आंग सेन, जिनकी हत्या यू सा के दल द्वारा की गई थी।

भारत-सरकार के खनिज तथा बिजली-विभाग के मन्त्री माननीय श्री एन० वी० गाडगिल, केंद्रीय बोर्ड की एक परामर्श देनेवाली सभा में भाषण दे रहे हैं।

आज के नवयुवक और लड़कियाँ ?

आखिर यह उच्छृङ्खलता क्या कभी समाप्त होगी ?

लेखिका, कुमारी राजेश्वरी परिहार, फर्रुखाबाद

श्रीमती रामेश्वरी नेहरू, आजकल शरणार्थियों की सेवा-कार्य में व्यस्त हैं।

'देशदूत के पिछले अंक में प्रेम कपूर कंचन का लड़कियों की समस्या पर एक लेख छपा है। इस समस्या को मैं अच्छी तरह समझती हूँ। मैं इस वर्ष इन्टर की परीक्षा में बैठ रही हूँ। मुझे बहुत सी ऐसी बातें अपनी सहेलियों और दूसरी कक्षाओं की छात्राओं से सुनने को मिला करती हैं, जिनसे आजकल के नवयुवकों—विशेषकर छात्रों की कुत्सित मनोवृत्तियों का पता चलता है। मुझे इन नवयुवकों को देखकर तरस आता है। इनके पास न चरित्र है, न स्वास्थ्य और न बल है। इनसे क्या देश-सेवा की आशा की जा सकती है? इन 'क्षय के रोगियों' को आप सड़क पर, चौराहे पर, बाजार में, लड़कियों के स्कूलों और कालिजों के इधर-उधर टहलते हुए पायेंगे। पोशाक इनकी प्रायः हरी कमीज और पायजामा या फिर कोट-पैन्ट होगी। सर पर बड़े-बड़े बाल लहरदार, जिन पर निहायत नजाकत के साथ हाथ फेर लिया जाता है। यह महाशय गण रोज सुबह लड़कियों के रास्ते घेरते हैं, और कभी-कभी जब किसी 'बहादुर' के हाथ पड़ते हैं, तो पिट भी जाते हैं। जो 'कच्चे दिल' की लड़कियां होती हैं वह बेचारी डरती हैं कि कहीं समाज उनको बदनाम न करे, क्योंकि हमारा समाज पुरुष-प्रधान है। वहां स्त्री ही अपराधी ठहराई जाती है, क्योंकि वह कमजोर है। पुरुष के पाप दबा दिये जाते हैं।

मुझे अपने स्कूली जीवन की एक घटना याद है। मैं उस समय दसवीं कक्षा में थी। हम लोगों ने कुछ चुनी हुई लड़कियों की अपनी एक पार्टी बनाई थी। यदि किसी लड़की को कोई उलझन होती थी, तो वह हम लोगों से कहती थी। हम लोग उसकी भरसक मदद करते थे। हां, तो वह लड़की उस समय आठवें में थी। उसने एक दिन मुझसे कहा कि मैं कुछ सलाह लेना चाहती हूँ। मैं उसे लेकर एकान्त में गई। मैंने कहा—बताओ क्या बात है? वह बेचारी बहुत घबड़ाई हुई थी। बोली—"मेरे पड़ोस में एक लड़का रहता है वह मुझे स्कूल आते-जाते समय हमेशा छेड़ा करता है। हमारी छत भी मिली हुई है। मेरी मां इस समय यहां नहीं है पिता जी हैं उनसे मैं कह नहीं सकती, क्योंकि वे मेरी पढ़ाई रोक देंगे। मैं बहुत परेशान हूँ।" इन शब्दों के साथ ही आंसू उसके गालों पर ढुलक पड़े। हम लोगों ने उसे समझाया कि वह अपने पिताजी से अवश्य कह दे, क्योंकि न कहने पर भी मुहल्ले के लोग उसे बदनाम करेंगे। इस पर वह तैयार हो गई। घर जाकर उसने अपने पिता से कहा। पिता जी ने उस लड़के को बुलाकर डांटने, के स्थान पर उस लड़की की पढ़ाई ही रुकवा दी। जैसा भय था वैसा ही हुआ।

दूसरी घटना मेरी एक सहेली की है। हम लोग उन दिनों ११ बज़े स्कूल जाते थे, क्योंकि हमारे गणित-शिक्षक देर में आते थे। मेरी सहेली का घर और स्कूल में एक फर्लांग का फासला था। हम लोग घर से अकेले ही आते थे। दो-तीन दिन से एक 'स्टूडेंट' साहब रोज सुबह 'गुड मार्निंग' किया करते थे और शाम को 'गुड ईवनिंग'। हमारी 'पार्टी' की बैठक में सहेली ने मामला बताया फिर क्या था हम लोग तैयार हो गये। दूसरे दिन स्कूल के पिछले फाटक पर हम लोग इन्तजार करने लगे। सामने सड़क थी और उसके उस पार मेरी 'सहेली' का घर। थोड़ी देर बाद वह निकली और साइकिल के साथ वह मिस्टर भी दिखाई दिये। मेरी सहेली धीरे-धीरे आ रही थी। वह भी साथ-साथ चहलकदमी कर रहे थे। स्कूल के फाटक के पास उन्होंने 'गुड मार्निंग' की। सहेली ने उत्तर दिया और कहा—जरा ठहरिये। वह बेचारा अपना बड़ा सौभाग्य समझकर जरा मुस्कराकर रुका और इधर हम लोगों ने धावा बोल दिया। वह बेचारा लड़कियों से घिरा देखकर घबरा गया। उसने फौरन आत्म-समर्पण कर दिया। माफी मांगने पर हम लोगों ने क्षमा कर दिया और यह कह दिया कि अब कभी ऐसा सुनने में न आये वरना बिना मारे न छोड़ेंगे। उस दिन से फिर कभी वह दिखाई भी नहीं पड़ा।

ऐसे ही एक मिस्टर 'स' अपनी बहन को लिवाने साइकिल पर आया करते थे। शाम को छुट्टी के समय जब लड़कियों का झुण्ड निकलता तो वे धीरे-धीरे गुनगुनाया करते थे 'हौले-हौले ....।' हम लोगों को यह बात खटकी। खैर कई दिन तक देखा। पर जब नहीं सहन हुआ तब एक दिन थोड़ी सभ्यता की शिक्षा भी दे दी; किन्तु वह तो पूरा बेशर्म था। हम लोगों के कहने की भी उसने परवाह नहीं की। दूसरे दिन हमने अपनी प्रधान शिक्षिका से कहा। उन्होंने उसको बुलाकर डांट दिया। पर उसे सड़क पर गाने की तो रोक लगा ही कौन सकता था? वह महाशय सड़क पर रोज गुनगुनाते हुए साइकिल के साथ मिलने लगे। हम लोगों ने अब अपने साहस की परीक्षा करनी चाही। फिर क्या था हमारी कक्षा में तीन-चार लड़कियों के पास साइकिल थी। दूसरे दिन सब अपनी-अपनी साइकिल पर आईं और शाम को उन महाशय की साइकिल के इधर-उधर अपनी साइकिल लगाकर चलना शुरू किया। कुछ लड़कियां हमारे साथ की पैदल भी थीं। ज्यों ही मिस्टर 'स' ने तान निकालकर अपनी साइकिल तेज की वैसे ही हमने भिड़ा दी साइकिल। वह तैयार ही न था हमले के लिए—फौरन नीचे आया। फिर क्या था हम लोगों ने खूब मरम्मत की। अब तो दया की भिक्षा मांगने लगा। स्कूल के समय उस सड़क पर से न निकलने की आज्ञा देकर हम लोगों ने छोड़ दिया और वह भागा धूल झाड़ता हुआ—जान बची लाखों पाये।

इन घटनाओं से यह प्रश्न उठता है कि क्या लड़कियों के मां-बाप या अभिभावकों को 'छेड़खानी और बदनामी' से बचने के लिए घर में बैठाल लेना चाहिए

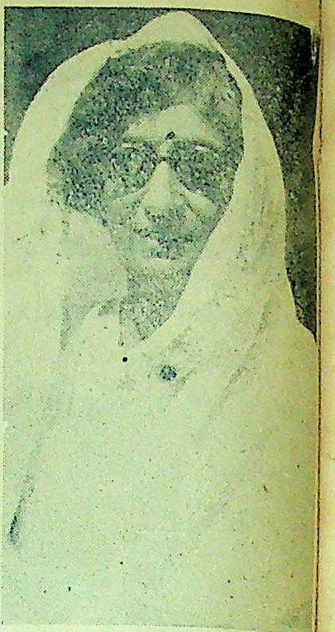

राजकुमारी अमृतकौर, मद्रास में होनेवा अ० भा० महिला-सम्मेलन की सभाने

या उन्हें गुंडों और मनचले छोकरों बहादुरी से सामना करने के लिए उत्सा करना चाहिए? कौन-सा मार्ग अच्छा है

इसके साथ ही मैं प्रत्येक लड़की औ स्त्री से अनुरोध करती हूँ कि वे अप मर्यादा की रक्षा स्वयं करें, अपने बल प भरोसा रखें। पुरुष हमारी रक्षा क का झूठा दम भरता है। यह पंजाब औ बंगाल में अच्छी तरह प्रमाणित हो ग है। हमको अपनी रक्षा के लिए 'पुरु की ओर नहीं ताकना चाहिए, ब ऐसे अवसर का बहादुरी से सामना क चाहिए, क्योंकि मर्यादाहीन जीवन वीर क्षत्राणियों की तरह मृत्यु का हँ हुए स्वागत करना हजार गुना अ है। हमारे सामने लक्ष्मीबाई, पद्मिनी औ सीता का आदर्श है।

हम पंडित नेहरू और सरदार प से अनुरोध करते हैं कि वे हमें सशस्त्र ह की आज्ञा दें। फिर हम भी देख लेंगे कौन हमारी तरफ देखने का दम रखता है बंगाल और पंजाब की दुर्दशा पढ़कर आं में खून उतर आता है। अब भी स है, हमारी राष्ट्रीय सरकार को चेत ज चाहिए।

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

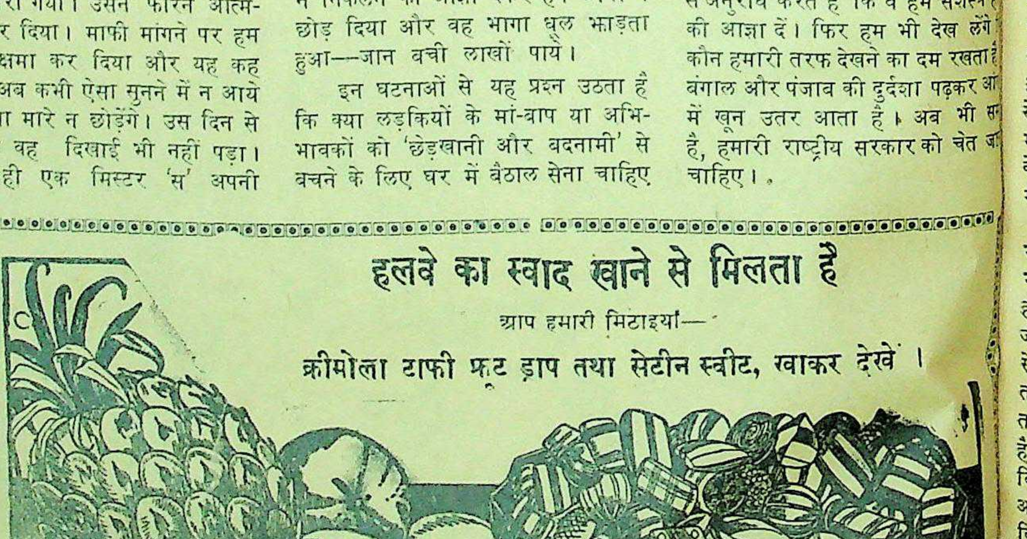

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

संवाददाताओं के पत्र

टिहरी में गत ता० ४-१-४८ को देवप्रयाग में वहां के न्यायाधीश द्वारा 'टिहरी' सरकार की ओर से उत्तरदायी शासन की घोषणा कर दी गई। कहा जाता है कि यह घोषणा राज्य की वर्तमान राजधानी नरेन्द्रनगर में १ जनवरी ४८ को ही कर दी गई थी। पता नहीं देवप्रयाग तक पहुँचने में इसे इतनी देर क्यों हुई? जो भी हो जनता यह सुनते ही कि आज घोषणा होनेवाली है उमड़-सी उठी और श्रीरामचन्द्र जी के मन्दिर में इकट्ठा होने लगी जहां घोषणा सुनाई गई। लेकिन किसी की भी समझ में नहीं आया कि इसमें नई बात क्या थी, क्योंकि उत्तरदायी के शब्द-जाल तथा वालिक 'मताधिकार' की मधुर चटनी के अलावा उसमें कोई नई बात नहीं थी। जैसा कि घोषणा-पत्र के संक्षिप्त ब्यौरे से पता लग जायगा कि महाराजा के विशेषाधिकार ज्यों के त्यों रहेंगे, फौज पर उनका अपना पूर्ण अधिकार रहेगा और राज्य के सर्वोच्च न्यायालयों के जजों की नियुक्ति भी महाराजा के द्वारा ही हुआ करेगी। जागीरदार तथा मुआफीदारों और गद्दी के उत्तराधिकारी व धार्मिक स्थानों (मठ-मन्दिर आदि) और बाहर से सम्बन्ध-विषयक अधिकार महाराजा के अक्षुण्ण ही रहेंगे; तथा किसी विशेष परिस्थिति पर शासन-सूत्र को अपने हाथ में लेने का अधिकार महाराजा को ही रहेगा। विधान बनाने के लिए तीस सदस्यों की एक परिषद् होगी जिसमें १० को तो स्वयं महाराजा ही नामजद करेंगे और बीस जनता द्वारा चुने जायेंगे। इस चुनाव के लिए एक कमेटी निम्न तरीके पर बनाई जायगी जिसमें पांच सदस्यों म तीन सरकारी एक प्रजामंडल और एक प्रजा-हतकारिणी का रहेगा। विधान बनाने तक पांच सदस्यों की एक अन्तरिम सरकार काम करती रहेगी जिसमें चीफ मिनिस्टर और एक सदस्य का चुनाव स्वयं महाराजा ही करेंगे, तथा एक सदस्य राज्य की वर्तमान धारा-सभा देगी। इसके अतिरिक्त प्रजामण्डल और राज्य द्वारा हाल ही में स्थापित प्रजा हितकारिणी से पांच-पांच आदमियों की नामावली मांगी जायगी जिसमें से दोनों संस्थाओं के एक-एक सदस्य का चुनाव स्वयं महाराजा ही करेंगे। यह है घोषणा।

प्रजामंडल के अधिकांश कार्यकर्ता भी वहां मौजूद थे उनकी ओर से श्री भगवतीचरण "निर्मोही" ने घोषणा होने के बाद अपने भाषण में यह कहा कि जनता को और प्रजामंडल को इस घोषणा से कतई प्रसन्नता नहीं हुई, क्योंकि जब तक हमारे नेता नहीं छोड़ दिये जाते तब तक यह घोषणा हमारे लिए नहीं के बराबर है। साथ ही जब तक प्रजामंडल आपसी विचार-विमर्श के बाद इस घोषणा पर अपनी स्वीकृति नहीं देता तब तक हमारे लिए यह घोषणा कोई महत्त्व नहीं रखती। हम अपनी मांगों के पूरी होने तक सत्याग्रह जारी रखेंगे।

—संवाददाता

* *

गोलाघाट (आसाम) ३० दिसम्बर ४७ को पं० शिवसिहासन मिश्र की अध्यक्षता में गोलाघाट इलाका हिन्दुस्तानी सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन हुआ। स्वागताध्यक्ष श्री रामधनी राम कान्दू ने बाहर से पधारे हुए प्रतिनिधि एवं अतिथि-वर्ग का स्वागत करते हुए गोलाघाट के इतिहास पर प्रकाश डाला और आसामी भाषा को असम प्रांत की राष्ट्र-भाषा का समर्थन करते हुए राष्ट्रीय-सरकार से अनुरोध किया कि स्कूल, विश्व-विद्यालय, रेडियो आदि विभागों में हिन्दी को स्थान दें। सभापति श्री मिश्राजी ने अपने ओजस्वीपूर्ण भाषण में हिन्दुस्तानी जनता को संगठन होने की अपील की तथा बारदोलोई-सरकार को हरएक प्रकार से सहयोग दे इसी में ही हमारा हित है। आसाम प्रांत को अपनी मातृ-भूमि समझे। अकेलर के सम्पादक श्री "रघुवंशी" तथा शहर के गण्यमान्य सज्जनों के भाषण हुए।

आगामी वर्ष के लिए निम्न-लिखित पदाधिकारी चुने गये सभापति :—श्री मोहनप्रसादसिंह, उपसभापति—श्री रामधनी रामजी, कानू व श्री बा० साली-ग्रामसिह, मंत्री श्रीरामदास रवीदास, स० मंत्री श्री कामाक्षाप्रसाद मिश्र व श्री गुप्तीप्रसाद कलवार कोषाध्यक्ष श्री तुलसीरामजी कान्दू, १६ अन्य कार्यकारणी के सदस्य।

—संवाददाता

* * *

गोलाघाट आसाम गत २१ दिसम्बर को श्री गीरीशचंद्र बरुवा के सभापतित्व में गोलाघाट हिन्दी-पुस्तकालय का वार्षिक अधिवेशन हुआ। सर्वप्रथम मंत्री ने गत वर्ष का कार्य-विवरण पेश किया। पश्चात् जमीन की व्यवस्था एवं भवन के निर्माण के लिए एक ट्रस्ट बोर्ड गठन किया गया :—सर्वश्री गजानंद जालान, श्री इन्द्रचंद्र सिन्हा, श्री राजेन्द्रनाथ बरुवा एम० एल० ए०, श्री रामधनीराम कान्दू, श्री रामदास रवीदास, श्री प्रियनाथ देव, भगवतीप्रसाद लडिया, निम्नलिखित सदस्यों से जो पद रक्त थे उसकी पूर्ति की गई :—श्री कपूरचंदकानू श्री देवराज अग्रवाल, श्री रामगोपाल शर्मा, अन्त में असम सेवा दल के प्रधान श्री आर० एन० बरुवा ने सबसे सहयोग की भावना से कार्य करते रहने की अपील की।

—भगवतीप्रसाद लडिया, मंत्री

* * *

उदयपुर महिलामंडल से गत सात वर्ष से स्त्री समस्या प्रधान-जागृत महिला नामक हस्तलिखित मासिक पत्र निकल रहा था। संचालक-मंडल ने उसे अब मासिक के रूप में प्रकाशित करने का निश्चय किया है। राष्ट्रमाता कस्तूर बा स्मृति अंक इसका पहिला अंक होगा और बाकी निधन तिथि से इसका प्रकाशन शुरू होगा। श्रीमती रामेश्वरी नेहरू, हंसा मेहता, महादेवी वर्मा, रामप्यारी शास्त्री, कमलाकुमारी श्रोत्रिय, राधादेवी गोयनका, सूर्यनारायण व्यास, हरी भाऊ उपाध्याय, कालूलाल श्रीमाली, उत्सवलाल शर्मा, शलभ इत्यादि विद्वानों का प्रस्तावित संपादक-मंडल बनने की आशा है।

राजपूताना रीजनल कौंसिल की महिला-विभाग की संयोजिका श्रीमती कमलाकुमारी श्रोत्रिय, राजस्थान की कार्यकर्त्रियों के लिए एक माह तक ट्रेनिंग केम्प चलाने की विशेष तैयारी में लगी हुई हैं। केम्प में प्रवेश पानेवाली बहिनें भर्ती हो रही हैं। अन्य बहिनों को भी नियमावली मंगवाकर आवेदन-पत्र भेजने की शीघ्रता करनी चाहिए। केम्प में कई भारत-प्रसिद्ध नेताओं और देवियों के उपयोगी भाषण होंगे। साथ ही राजस्थान महिला-सम्मेलन भी होगा जिसमें राजकुमारी अमृतकौर, रामेश्वरी नेहरू, जानकी देवी बजाज, इत्यादि के आने की पूर्ण आशा है।

स्वतंत्र भारत के नव-निर्माण में राजस्थानी महिलाएं भी संगठित होकर अपना योग्य कर्त्तव्य निभा सकें, अतः मीरा और पद्मिनी के मेवाड़ ने राजस्थान महिला-सम्मेलन का प्रथम सम्मेलन बुलाने का निश्चय किया है। सम्मेलन के पूर्व राजस्थानी कार्य-कर्त्रियों का शिक्षण-शिविर एक मास तक चलेगा। सम्मेलन में भारत की कई प्रसिद्ध नेत्रियों के आने की बात चल रही है। अतः राजस्थान की महिलाओं को सम्मेलन में सम्मिलित होकर लाभ उठाना चाहिए। मैं पत्र-संपादकों, प्रवासी राजस्थानी भाई-बहिनों और कार्यकर्त्ताओं से प्रार्थना करती हूँ कि सम्मेलन का संदेश प्रत्येक राजस्थानी महिला तक पहुंचावें और मेरे पास प्रगतिशील बहिनों के पते ठीक सुझाव, साहित्य, प्रस्ताव और योजना महिला-मंडल उदयपुर के पते से भेजकर सहयोग करें।

—कमलाकुमारी श्रोत्रिय
संयोजिका

* * *

सागर-विश्वविद्यालय सी० पी० के 'समावर्त्तन-संस्कारोत्सव' पर प्रान्त के गण्यमान्य नेताओं और प्रान्तमंत्रियों को उद्घाटन-वक्तृताओं, विश्वविद्यालय की 'पार्लियामेंट' की बैठकों तथा अन्य तत्सम्बन्धी उत्सवों में एक वृहत्-कवि-सम्मेलन का भी आयोजन किया गया था। ता० १० जनवरी को १० बजे रात से, विश्व-विद्यालय के हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष, कला-विभाग के 'डीन' तथा हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक श्री नन्द-दुलारे जी बाजपेयी के सभापतित्व में कवि-सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। प्रान्त के नवयुवक और वयोवृद्ध कवियों और प्रसिद्ध व्याकरणाचार्य दिवंगत श्री कामताप्रसाद गुरु के सुपुत्र श्री राजेश्वर गुरु के अतिरिक्त हिन्दी के प्रख्यात प्रगतिवादी कवि श्री 'अंचल' जी भी पधारे थे। इसके अतिरिक्त श्री 'छैल' तथा प्रयाग से भी दो उदीयमान गीतकार कवि श्री महेन्द्र तथा श्रीपालसिंह जी 'क्षेम' भी पधारे थे। 'अंचल' जी की प्रसिद्ध कविता 'एक बार फिर अन्यायी का शासन डोला' से जनता इतनी प्रभावित हुई कि ऐसा लगा कि प्रगति-वादी रचनाओं के आगे अन्य धारा की कविताएँ अब जमेंगी ही नहीं। पर प्रान्त के अन्य रास्ट्रीय धारा के कवियों के बीच श्री महेन्द्र और 'क्षेम' जी की रोमांटिक कविताओं को श्रोताओं ने जिस चाव और शान्ति के साथ सुना, उससे हिन्दी-संसार की निरन्तर वर्धमान कलात्मक रूचि का काफी परिचय मिला। 'एक भारतीय आत्मा' और खरे जी कारण-वश नहीं आ सके। इसके बाद विश्व-विद्यालय के छात्र और सुन्दर तरुण कवि श्री पुरुषोत्तम दास कठल, आदि के कविता-पाठ के बाद बाहर के कवियों के तुरन्त लौट जाने के कारण सम्मेलन समाप्त करना पड़ा। निश्चय ही सी० पी० की जनता हिन्दी-प्रेमी है और यह आशा है कि सागर का विश्वविद्यालय हाल की ही बैठक में हिन्दी को शिक्षा का माध्यम स्वीकृत कर लेने के कारण उत्तरोत्तर हिन्दी के प्रचार-प्रसार और साहित्यिक उन्नति में अपना महत्त्वपूर्ण योग देगा। —संवाददाता

* * *

देवरिया सरांव मंडल रुद्रपुर जिला देवरिया का पश्चिमी कछार है। गत कई वर्षों से इस क्षेत्र ने बाढ़-पीड़ित के साथ ही रबी की फसल से भी हाथ धो दिया इस क्षेत्र की आर्थिक स्थिति अत्यन्त भयंकर हो गई है। बाजारों में ब्लेक भाव से अन्न किसान खरीदने में असमर्थ हो रहे हैं। कारण कई वर्षों के अकाल से यहां की जनता ने तबाह होकर अपना आर्थिक जेवर आदि बेच दिया। अब उसके पास अन्न और वस्त्र खरीदने तक को पैसा नहीं है। सरकार का ध्यान कई बार आकृष्ट कराया गया; परन्तु कोई सुनवाई नहीं हुई। इस क्षेत्र में न कोई पुस्तकालय है, न बीज-गोदाम है और न तो औषधालय की व्यवस्था हुई है, सिर्फ बदमाशों की अधिकता के कारण जनता इनसे काफी कष्ट पा रही है। राशन जब से इस क्षेत्र का बन्द हो गया है तब से स्थिति और खतरनाक हो गई है। आशा है सरकार उचित व्यवस्था करेगी।

—रामावध मिश्र

* * *

देवरिया सरांव बुजुर्ग में भारतीय पुस्तकालय की स्थापना सन् १९३३ ई० में हुई थी, बीच में राजनैतिक उथल-पुथल (१९४२) के कारण पुस्तकालय का कार्य बन्द हो गया था; परन्तु अब जनता के सहयोग से पुस्तकालय चल रहा है। पुस्तकालय में पुस्तकों, अखबारों की आर्थिक स्थिति ठीक न होने से असंतोष-जनक है जब कि इस क्षेत्र में पुस्तकालय की अत्यन्त आवश्यकता है। शिक्षा-विभाग के इन्सपेक्टर मि० गोयल साहब को तथा सब डिप्टी इन्सपेक्टर देवरिया को सहायता के लिये लिखा गया है।

—रामावध मिश्र

अलीगढ़ में डा० हार्डीकर के आगमन पर समस्त जिले के वालन्टियरों की एक रैली हुई, जिसमें स्त्री-पुरुष वालन्टियर लगभग ३००० की संख्या में थे। जलूस-एक मील से भी अधिक लम्बा था। रामलीला ग्राउण्ड पर एक आम सभा हुई, जिसमें ठा० मलखानसिह एम० एल० ए० ने एक प्रस्ताव महात्मा गांधी के अनशन के संबंध में पेश किया, डा० हार्डीकर और श्री ख्वाजा अब्दुल मजीद साहब ने इसका समर्थन व अनुमोदन किया। समस्त शहरी व देहाती जनता ने इस प्रस्ताव का मूक अनुमोदन किया है। श्री लालबहादुर जी शास्त्री मंत्री, पुलिस विभाग यहां पधारे, वे गांवों में भी गये।

शाम की सार्वजनिक सभा में जनता को शान्त रहने का आदेश किया।

—संवाददाता

पूना के निर्मल साहित्य प्रकाशन से प्रकाशित हुआ वीर सावरकरजी का '१८५७ का भारतीय स्वातंत्र्य समर' हिन्दी ग्रन्थ को युक्तप्रान्त सकार ने पुरस्कार दिया है और सरकारी पाठशाला और कालेजों के लिए इस ग्रन्थ की प्रतियां खरीद की हैं। इससे इस ग्रन्थ का समुचित गौरव हुआ है।

—संवाददाता

हरिद्वार के श्री रामायण आश्रम सुमोद हाउस नं० ३ की ओर से श्री रामायण के पाठ कर सकनेवालों को २५००) रु० पुरस्कार (भेंट) करने का निश्चय किया गया है। उक्त पते से नियमावली मंगाकर इसमें भाग ले सकते हैं।

—संवाददाता

कसीदा काढ़ने की मशीन

यह चार सुइयों की मशीन भाँति भाँति के काम करती है। इससे कसीदा काढ़ना बड़ा ही आसान है। दिलपसंद फूल, पत्ती, बेल, बूटे, पशु-पक्षियों के चित्र, कालीन, सीन-सीनरी इत्यादि आसानी से काढ़े जा सकते हैं। बड़ी सुंदर और मजबूत है। मूल्य ४ सुइयों सहित ३) डाकखर्च ।॥), कसीदाकारी की डिजायन की पुस्तक मूल्य २) डाकखर्च ॥)।

एस० के० सक्सेना (सी० ४) रंग महल, अलीगढ़।

रियासतों में लोकतंत्र का उदय

(पेज ५ का शेष)

सतों में नरेश अपनी प्रजा के मध्य देशभक्ति की भावनाएँ फूंकने में असमर्थ सिद्ध हुए हैं। उन्होंने प्रजा के उत्थान-पथ में बाधाएँ डाली हैं। इसका प्रभाव भविष्य पर पड़े बिना न रह सकेगा। अतएव उचित है कि वे अपनी प्रजा के साथ आत्मीयता करें। कहीं कहीं साम्प्रदायिकता के नाम पर रियासतों में अनेक प्रकार की बाधाएँ उपस्थित की जा रही हैं। लोकतंत्र की आड़ में विविध प्रकार से अत्याचार किये जा रहे हैं। सदैव ब्रिटिश साम्राज्यशाही के समकालीन प्रतिक्रियावादी शक्तियां जनतंत्र को आगे बढ़ने से रोक रही हैं। आधुनिक भारत में प्रत्येक देश-भक्त का बाना पहिनकर अपना परिचय दे रहा है। यह नितान्त आवश्यक है कि अँगरेजी साम्राज्यशाही का अंकुर इस देश से समाप्त हो। आधुनिक स्वाधीन भारत में उसकी पुकार स्थान स्थान से आ रही है। हमारे विद्यालय घरेलू जीवन तथा अन्य स्थान उसकी मृतक आत्मा का आवाहन करते हैं। उसका दफना देना प्रत्येक भारतीय का परम कर्त्तव्य है।

नरेशों ने चेम्बर आफ प्रिंसस द्वारा अपना विकास किया। इससे प्रजा को भी लाभ हुआ। परन्तु इसके विषय में भी अनेक सम्मतियां हैं। बहुत से नरेशों की धारणा है कि इस परिवर्तित काल में इसकी आवश्यकता नहीं है। यह तो दुर्गम समस्याओं के निवारण के लिये स्थापित किया गया था। किन्तु वे सब कठिनाइयां तो संघ के हो जाने-मात्र ही से दूर हो जाती हैं। दूसरे नरेशों का कथन है कि चैम्बर आफ प्रिंसस की प्राकृतिक मृत्यु न होने देनी चाहिए, क्योंकि इसके द्वारा भविष्य में भी देशी नरेश तथा उनकी प्रजा को लाभ होगा। वे समझते हैं कि इसके द्वारा नरेशों के पारस्परिक झगड़े भी हल होते रहेंगे। कुछ ऐसे भी राजे लोग हैं जिन्होंने न तो इसकी प्रारम्भिक अवस्था ही में कोई भाग लिया न आगे ही अपना हाथ बटाया। वे प्रायः उदासीन ही रहे। छोटे छोटे राज्यों के सामने सार्वभौम सत्ता का प्रश्न उतने विशाल रूप में नहीं रहा, जितना कि बड़े नरेशों के सम्मुख था। बड़ी बड़ी रियासतें तो सदैव इनको अपने मार्ग में बाधा रूप ही समझती रहीं। इन्होंने भी चैम्बर जैसी संस्था में अपना प्रवेश हितकर न समझा। आज की परिस्थिति में जब कि प्रायः अधिकांश रियासतें संघ-शासन में आ चुकी हैं और शेष प्रवेश-द्वार पर अपने भविष्य का स्वप्न देखने में तत्पर हैं, यह प्रश्न ही नहीं उठता कि देशी राज्यों का क्या होगा? वर्तमान काल में जिस विशाल हृदयता का परिचय नरेशों ने दिया है, भावी इतिहास-लेखकों के सामने वह एक महान् समस्या होगी; किन्तु इतना तो स्वीकार करना ही होगा कि अँगरेजों की २०० वर्षों की "विभाजन" की नीति का पर्दाफाश संसार के सामने हो गया और इतिहास किसी भी प्रकार इस कालिमा को धोने में समर्थ न होगा।

भारत में लोकतंत्र का सूर्य उदय हो रहा है। रियासतों में किसी भी प्रकार से नरेशों तथा उनकी प्रजा के मध्य वह सहयोगी भावना न रह सकेगी जिसके आधार पर आज तक उन्होंने इच्छानुकूल राज्य किया। इसका अन्त निश्चय ही पूर्ण उत्तरदायी शासन में होना स्वाभाविक है। यहां पर पुनः इतिहास हमारी सहायता के लिए उपस्थित होता है और हमें क्रॉमवैल के विषय में क्लैरेन्डन के शब्दों का स्मरण कराता है। क्रॉम वैल का घरेलू

भारतीय स्वतंत्रता का आंदोलन

(पेज ६ का शेष)

यहां मालिकों और मजदूरों के बीच तीन साल तक औद्योगिक शान्ति रखने का समझौता हुआ है और सरकार भी उसमें साझी है। खेद है कि देश की कई संस्थाएँ यथा कम्यूनिस्ट पार्टी, समाजवादी पार्टी के कई व्यक्तियों ने गलत रवैया अब भी अपना रखा है, पिछले दिनों बम्बई की मिलों में 'टोकन स्ट्राइक' इसकी द्योतक है। वह छोड़ना चाहिए और रचनात्मक तरीका ही अख्तियार करना पड़ेगा। जूट पर पाकिस्तान ने निर्यात कर लगा दिया और इस सम्बन्ध में वाद-विवाद हुआ। भारत ने भी कर दिया है। आर्थिक लिहाज से जनता के दृष्टिकोण से शक्कर पर से नियंत्रण हटा देना अच्छा समझा गया है। कपड़े व अनाज पर से भी नियंत्रण हटाने का फैसला किया गया है। युक्तप्रान्त की सरकार ने तो १००) के ऊपर मासिक आयवालों के लिए समस्त प्रान्त में खाद्य-नियंत्रण हटाकर प्रशंसनीय कदम उठाया है। पेट्रोल पर से भी कन्ट्रोल उठेगा। आज महात्मा गांधी अपनी जोरदार आवाज इस विषय में बुलन्द कर रहे हैं।

दासता की जंजीरों को दृढ़ करनेवाली उपाधियां देने की प्रथा उठा ली गई है। देश में ही हवाई जहाज बनाने का निर्णय भी किया गया है। हवाई यातायात को बढ़ाने के लिए भारत-बर्मा और भारत-ब्रिटेन हवाई यातायात प्रारम्भ करने का निश्चय किया गया है। सरकार ने एक पैसे से लेकर ५ रुपये तक की नये टिकट तथा सिक्के चालू करने का फैसला भी कर लिया है। जब अँगरेज ही गये तो उनकी बदबू कैसी! 'जयहिंद' टिकट चलने भी लगे हैं। दामोदर घाटी, भाखरा बांध, हीराकुंड बांध योजनाओं को कार्यान्वित करने की दिशा में काफी उन्नति कर ली गई है। इनसे जहां जीवन का स्तर ऊँचा उठेगा, देश की खाद्य-समस्या भी अधिकांश में हल हो जायगी। विज्ञान-कांग्रेस में भाषण देते हुए पंडित नेहरू ने भारतीय दृष्टिकोण को पेश किया था, निश्चय उससे हमारा भाल ऊँचा होगा।

स्वतन्त्र भारत की परराष्ट्र-नीति यह है कि वह किसी परस्पर विरोधी दल में सम्मिलित नहीं होगा। सब देशों में भारतीय प्रतिनिधि नियुक्त किये गये हैं। भारत ने ही इंडोनेशिया में डच की दमन-नीति के विरुद्ध प्रथम आवाज उठाई। हमारे देश के प्रतिनिधियों ने फिलिस्थान के विभाजन का विरोध किया। दक्षिणी अफ़्रीका में प्रवासी भारतीयों के लिए आवाज उठाई है। सरकार उस दिशा में विश्वास है, उचित कदम उठायेगी। काश्मीर में होनेवाले निर्मम अन्याय के विरुद्ध भी हम पूर्ण विश्वास से कह सकते हैं कि देश के प्रतिनिधि अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति-सम्मेलन में जोरदार आवाज उठायेंगे।

प्रभाव उसके वैदेशिक से अधिक महान् था। अन्त में हमारी अभिलाषा है कि नरेश भारत-निर्माण में अपना कर्त्तव्य उसी प्रकार अदा करें जिस प्रकार कि सच्चे भारतीय को करना चाहिए। शिक्षा, कृषि, विज्ञान, सामाजिक सुधार इत्यादि को लेकर अपने अपने राज्यों में उस रामराज्य की स्थापना करें जिसके लिए देश के महान् नेता श्रद्धेय महात्मा गांधी गत २५ वर्षों से स्वप्न देख रहे हैं।

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ. ए., बी. ए., पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से और होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं नियमावली मुफ्त मँगायें। पता:—
इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

स्वादिष्ट है बढ़िया है!

Cadbury's
BOURN-VITA
THE IDEAL FOOD DRINK
MADE BY CADBURYS SPECIALISTS IN FOOD DRINKS FOR 100 YEARS
1 LB. NET

और शक्ति से भरा हुवा-स्वाद्योज पैदा करने वाला

'बोर्न-विटा' की चाक्लेटवाली मज़ेदार महक को छोटे और बड़े दोनों बराबर पसन्द करते हैं। परन्तु यह गुण इसके केल्सेयम और खाद्योज ही का है जो अच्छी हड्डी बनाते हैं और आपको नई तन्दुरुस्ती और शक्ति का ख़ज़ाना बख्शते हैं।

केडबरी का
बोर्न-विटा
केल्सेयम और खाद्योज से भरपूर

K. B. 3

गजब हो गया अपनी गलती से सैकड़ों घर बरबाद! रक्षा चाहते हैं तो इसे जरूर पढ़ें।

१—ताकतवर यौवन वटी—भाइयो, यह ताकत की बहुत जोरदार दवा कई तरह की कीमती दवाइयों से तैयार की गई है। इसकी एक खुराक खाते ही शरीर में महान् शक्ति पैदा मालूम देती है तथा धातुक्षय, कमजोरी, स्वप्नदोष को जड़ से हटाकर पतले वीर्य को दही के समान गाढ़ा बना देती है, स्मरणशक्ति बढ़ाकर दिल व दिमाग को ताकतवर बनाती है। खोई हुई ताकत व जवानी को आठ दिन में फिर से लाने के लिए आश्चर्यजनक यह इलाज है। बूढ़ा या जवान एक बार भी इसे खा ले तो यौवन का फिर से पूरा आनन्द आ जाता है। इसके आश्चर्यजनक गुणों से मोहित होकर बड़े-बड़े राजा-महाराजा, सेठ-साहूकारों ने इस्तेमाल करके प्रसन्नता प्रकट की है। पूरे कोर्स ६४ गोली के पैकिट का ५)।

२—अमीरी तिला—यह अद्भुत तिला राजा-महाराजा, सेठ-साहूकारों के सेवन करने योग्य है। इसके लगाने से कमजोरी, ढीलापन, सुस्ती हटकर बिजली के समान अपूर्व ताकत पैदा होती है। फी शीशी ५), डाकखर्च दोनों का १)।

३—आर० पी० का पत्थर हजम चूर्ण—कब्ज को दूर कर दस्त साफ लाता है। फी शीशी ।=)।

पता—जैन बालामृत कार्यालय बेलनगञ्ज, (१००) आगरा

उदयपर में महाज्ञान यज्ञ श्रीराम स्नेहीजी महाराज-द्वारा राम-राज्य पर प्रकाश

उदयपुर के हिन्दू सूर्यमेदपाटेश्वर महाराजाधिराज महाराजा सर श्री भूपालसिंहजी साहब बहादुर ने मदनगंज किशनगढ़ के प्रसिद्ध वक्ता श्रीरामस्नेही सम्प्रदाय के प्रधान पंडित स्वामी श्री भगीरथ राम जी महाराज से चार महीनों तक नित्य डेढ़ घण्टे श्रीहरिवंश ग्रंथ की ज्ञान यज्ञमयी कथा सप्रेम श्रवण की। हिज हाइनेस श्रीमती महाराणीजी साहिबा ने भी कथा सुनी। श्रीमान् युवराज महोदय तथा राज्य के उच्च अफसरगण तथा दरबारी वृन्द भी कथा में सम्मिलित होते रहे। कथा समाप्ति के दिन पूज्य श्री स्वामीजी महाराज की हाथी कोतल रिसाला बैन्ड छडी चमर छत्र आदि राजमान्य सरकारी विशाल लिवास के सहित भव्य सवारी निकाली गई। जुलूस में राज्य के उच्चाधिकारी वर्ग नागरिक बहुत बड़ी तादाद में शरीक थे।

उदयपुर के हजारों नागरिक जनता ने भी माननीय श्री स्वामीजी महाराज के सामयिक परिस्थिति धर्म, देश एवम् समाज की उन्नति पर तेजस्वी व्याख्यानों से काफी लाभ उठाया। उक्त स्वामी जी के वैदिक धर्म के विविध विषयों पर तथा विवशान्त्यर्थ आदर्श सच्चे राम-राज्य की व्याख्या पर बहुत प्रकाश डालते हुए माधुर्य-धारा प्रवाह प्रकांड विद्वत्तापूर्ण प्रखर प्रवचन बड़े महत्त्वपूर्ण थे। इसी अवसर पर एक विद्वत् सम्मेलन भी हुआ जिसमें विश्व-शान्ति के उपायों पर विचार करने के समय तीन दिन की कार्यवाहियों के पश्चात् सफलता पूर्वक सम्मेलन समाप्त हुआ। विश्व शान्त्यर्थ महाज्ञान यज्ञ की पूर्ण सफलता का सम्पूर्ण श्रेय आर्य-कुल कमल दिवाकर धर्मप्राण श्री उदयपुर नरेश को है जिनका कि सच्चा धर्म प्रेम तथा साहित्यिक व ऐतिहासिक विद्याभिरुचि अति स्वागत-योग्य, श्लाघनीय एवम् अन्य नरेन्द्र वृन्द के लिए भी अनुकरणीय है।

--संवाददाता

* * *

साक्षरता-सप्ताह
२७ से ३१ जनवरी तक सारे प्रांत में मनाया जायेगा

संयुक्त-प्रांतीय सरकार ने इस वर्ष साक्षरता-सप्ताह २७ जनवरी सन् १९४८ ई० से ३१ जनवरी सन् १९४८ ई० तक मनाने का निश्चय किया है। इस उत्सव का मूल उद्देश्य यह है कि जनता का ध्यान उन प्रयत्नों की ओर आकर्षित किया जाय जो प्रान्त में इस विभाग द्वारा निरक्षरता दूर करने के लिए किये जा रहे हैं। साथ ही जनता को उन नये-नये साधन से परिचित कराया जाय जो भविष्य में शिक्षा-प्रसार-योजना को ओर अधिक उन्नतिशील तथा लाभदायक बनाने के लिए प्रयोग में लाये जा रहे हैं।

जनता एवं सभी संस्थाएँ जो शिक्षा-सम्बन्धी कार्यों में संलग्न हैं तथा जो इस कार्य से विशेष प्रेम रखती हैं, इस कार्य में भाग लेने के लिए निमंत्रित किया जाता है। इस विभाग को पूर्ण आशा है कि साक्षरता-सप्ताह को सफल बनाने में स्थानीय कार्यकर्त्ताओं को वे अपना अमूल्य सहयोग देकर आभारी बनायेंगे।

—संवाददाता

इधर उधर की

चौदहवीं सदी की कुर्सी

चौदहवीं सदी की एक कुर्सी की नवीन किरणों द्वारा परीक्षा करने से पता चला है कि इस पर बठे हुए किसी व्यक्ति की पीछे से हत्या की गई थी। कुर्सी इस समय मि० ब्लाड जैक्सन नामक एक पुरातत्त्ववेत्ता के पास मौजूद है।

* * *

सबसे पुरानी कब्र

बेलसन कैम्प में शुक्रवार के दिन एक नई विशाल कब्र का पता चला है जिसमें २,००० लाशें दफन ह। इस कब्र का पता सबसे पहले दो जर्मन मजदूरों को लगा जो पोल निवासियों की भग्न कब्रों को हटा रहे थे। जब वे कब्र खोद रहे थे तो उन्हें अचानक और भी लाशों के कंकाल मिले। बेलसन शरणार्थी कैम्प के यहूदी अफसर के अनुसार वहां ऐसी और भी विशाल कब्रों के मिलने की सम्भावना है।

* *

पाँच बच्चे एक साथ पैदा हुए

कानपुर जिले की पुलिस में रिपोर्ट दर्ज की गई है कि एक स्त्री के एक साथ ५ बच्चे पैदा हुए। इनमें से एक लड़का और एक लड़की तो पदा होते ही मर गये शेष स्वस्थ ह। इस प्रकार की घटना सारे देश म अनोखी है।

* * *

डाक बाबू की जगह मशीन

अमेरिका में मेलोमेट नामक एक मशीन का आविष्कार हुआ ह जो पोस्ट आफिस के डाक बाबू का कार्य स्वयं कर देती है। आप टिकट के लिए दाम मशीन में डालिये, मशीन में लगे एक बटन को घुमाइये और अपनी चिट्ठी या पैकेट भीतर डाल दीजिए। मशीन अपने आप उस पर टिकट तथा मुहर लगा देगी। अमेरिका के ३९ पोस्ट आफिसों में मेलोमट को शीघ्र ही प्रयोग में लाने का प्रबन्ध हो रहा है।

सेरिडन
सर्व्वप्रकारका दर्द दूर करता है
10 Saridon
BRAND ANALGESIC TABLETS
Saridon

ग्राहक और एजेण्ट शीघ्रता करें
पहला अङ्क प्रकाशित हो गया
'मंजरी'
सचित्र कलात्मक कहानी मासिक
वार्षिक मूल्य ६) रु० प्रति अङ्क ।।) आठ आने
तिरङ्गा आवरण, दर्जनों चित्र और कलापूर्ण छपाई
जनवरी १९४८ के अङ्क में
७ कलात्मक हिन्दी कहानियाँ
२ प्रान्तीय भाषाओं की (तामिल और गुजराती) कहानियाँ
१ धारावाहिक उपन्यास
३ कथा-साहित्य पर समीक्षात्मक लेख और
३ स्तम्भ
प्रथमांक के आकर्षण
औपन्यासिक सम्राट् वृन्दावनलाल वर्मा,
चक्रवर्ती राजगोपालाचारी,
कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी,
उषादेवी मित्रा, होमवती देवी,
विष्णु प्रभाकर, शम्भुरत्न मिश्र 'मुकुल',
डाक्टर ब्रजमोहन गुप्त, एम० ए०, डी० फिल०,
कृष्णचन्द्र शर्मा, एम० ए०, एल्-एल० बी०,
परिपूर्णानन्द वर्मा, रमादत्त शुक्ल
सम्पादक देवीदयाल चतुर्वेदी
प्रकाशक इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

मधुस्रवा
इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीव में मधु बरसाने की पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन को रससिक्त बनाइए। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग।

ज्युवेल्स जड़ी हुई लीवर घड़ियाँ
सब घड़ियाँ स्विस निर्मित, ठीक समय देनेवाली और बढ़िया मशीनरी की होती हैं। आकर्षक डिज़ाइन और हर एक की ३ वर्ष की गैरंटी। क्रोमिअम केस कीमत १८।।), सर्वश्रेष्ठ २१), ४ ज्युवेल्स की १८।।), ४ ज्युवेल्स की चमकीली क्रोमिअम केस की ३३), ७ ज्युवेल्स ३८), सर्वश्रेष्ठ ४१), १५ जुवेल्स क्रोमिअम केस ६१), १० वर्ष गैरंटी की रोल्ड गोल्ड ७ ज्युवेल्स ५०), सर्वश्रेष्ठ ५२), १५ ज्युवेल्स रोल्ड गोल्ड ८०)।
डाकखर्च १२ आने, सूचीपत्र समात है। पत्र-व्यवहार अँगरेजी में कीजिए।
जुबिली वाच कम्पनी (डी० एस०)
पोस्टबाक्स नं० १२२१३, कलकत्ता ५

वह सदैव थका और बीमार रहता था
तीन शिकायतों ने उसके लिए संकट उपस्थित कर दिया था क्रुशन की कृपा से अब जीवन सुखमय है।
वह आदमी तीन बीमारियों से सदैव बीमार रहता था—उनमें मूत्राशय की अस्तव्यस्तता, पैरों और पुट्ठों में दर्द तथा गठिया उसको परेशान करती थी। इन बीमारियों से वह कैसे मुक्त पा सका? उसने अपने पत्र में बतलाया है कि चार सप्ताह में क्रुशन-साल्ट ने आमूल परिवर्तन किया।
"एक माह अथवा ऐसा ही समय बीता मैं मूत्राशय की अस्तव्यस्तता, कूल्हों और जंघे के दर्द तथा गठिया से लगातार बीमार रहता था। इतना कमजोर हो गया था कि चेहरे का रंग उतर गया। मैं अत्यन्त थक गया और दवाओं के आसरे रहने लगा। मैंने कितनी ही दवाएँ कीं, पर जब तक क्रुशन साल्ट का सेवन नहीं किया सब बेकार गई। चार सप्ताह के अन्दर क्रुशन के सेवन से आमूल परिवर्तन हो गया। मुझे अच्छी भूख लगती है और जीवन में आनंद अनुभव करता हूं।" एस० बी० एन०
मूत्रेन्द्रिय मानव-शरीर की छलनी है। यदि मूत्राशय आलसी हो जाय तो खराबियाँ रक्त-धमनियों में प्रवेश कर जाती हैं, जो कितनी ही साधारण बीमारियों की जड़ है।
क्रुशन में नमकों के वैज्ञानिक सहयोग से मूत्राशय स्वस्थ हो जाते और अपनी असली स्थिति में काम करने लगते हैं। इसके शीघ्र परिणाम से सिद्ध हुआ है कि पूर्व के सारे रोगों से मुक्ति मिल जाती है। आप जीवन में पुनः आनन्द का अनुभव करेंगे।
क्रुशन साल्ट सारे रसायनिक और व्यापारियों की दूकानों पर बेचा जाता है। दाम १।।=) प्रतिबोतल।

राजधानी की चिट्ठी

संयुक्तप्रांत में खेती तथा ग्राम-उद्योग-धन्धों की योजना

सरकार ने क्रियात्मक कार्यवाही प्रारम्भ कर दी—चौधरी खलीकुज्जमा की असेम्बली-सीट कौन लेगा ?—केन्द्र से आई० सी० एस० और पी० सी० एस० आ रहे हैं—गुमनाम शिकायतों पर भी कर्मचारियों की जाँच होगी—अनुवाद विभाग के विदूषक मीर मुन्शी साहब की अलविदा

(हमारे विशेष संवाददाता द्वारा)

संयुक्तप्रान्त में खेती तथा उद्योग-धन्धों की एक साथ उन्नति करने की बृहद योजना को युक्तप्रान्तीय सरकार ने गत सप्ताह कार्यान्वित करना प्रारम्भ कर दिया। मेरठ क्षेत्र के गंगा खादर क्षेत्र में ट्रैक्टर हल की पहली ठोकर की मिट्टी पलटी भी न थी कि नैनीताल की तराई में कृषिमंत्री निसार अहमद शेरवानी ने दूसरा ट्रैक्टर चला दिया। अब बुन्देलखंड की बारी है। बुन्देलखंड में भी गंगा खादर और नैनीताल तराई की भांति लाखों बीघा भूमि कृषिहीन पड़ी है, क्योंकि वहां पर कांस की अधिकता है, जिसके कारण फसलें नहीं होने पातीं। शीघ्र ही भीमकाय ट्रैक्टर हलों की सहायता से इस कांस को समूल उखाड़ फेंका जायगा और यह भूमि भी कृषि-कार्य में प्रयुक्त होने लगेगी। इन क्षेत्रों के ठीक कर लिये जाने पर लाखों बीघा भूमि उर्वर हो जायगी और प्रान्त का अन्नोत्पादन कई लाख टन प्रतिवर्ष बढ़ जायगा, जिससे युक्तप्रान्त खाद्य के मामले में न केवल आत्मसम्पन्न ही हो जायगा बल्कि अन्य प्रान्तों की सहायता भी कर सकेगा।

* * *

इसके साथ साथ विकास-मंत्री पं० केशवदेव मालवीय प्रान्त के औद्योगिक उत्कर्ष के लिये भी प्रयत्नशील हैं। किसी भी प्रदेश की औद्योगिक उन्नति वहां उपलब्ध विद्युत्-शक्ति की सुगमता और सस्तेपन पर निर्भर है। प्रान्तीय सरकार ने हाल ही में रिहन्द बांध बनाये जाने का आदेश दिया है। यह बांध मिर्जापुर जिले में विन्ध्य पर्वतमाला की कैमूर शाखा में रिहन्द नदी पर ३०० फुट ऊंचा बनेगा और इससे २,३०,००० किलोवाट शक्ति की जलविद्युत् उत्पन्न होगी। इस विद्युत् का उत्पादन मूल्य केवल १.३ पाई प्रति यूनिट होगा और उसका विक्रय-मूल्य एक आना प्रति यूनिट से कभी भी अधिक न होगा। एशिया में उपलब्ध यह सबसे सस्ती बिजली होगी। रिहन्द से कुछ दूर स्थित सोन नदी पर मार्कण्डेय दर्रे के पास एक बृहद सीमेन्ट फैक्टरी बनाई जायगी, जो प्रारम्भ में २५० टन सीमेंट प्रतिदिन तैयार करेगी। इस स्थल पर इतना ग्रेनाइट पाया जाता है कि यदि १००० टन सीमेन्ट प्रतिदिन बनाया जाय तो भी यह कारखाना एक शताब्दी तक चलता रह सकता है। इसी प्रकार नायर नदी में बांध बनाकर नहर और बिजली पैदा की जायगी और बुन्देलखंड में नारायणी नदी पर बांध बनाकर सस्ती जलविद्युत् पैदा की जायगी, जो समस्त झांसी डिवीजन तथा कानपुर तक फैलेगी।

* * *

लखनऊ मुस्लिम शहरी क्षेत्र से युक्तप्रान्तीय असेम्बली में चौ० खलीकुज्जमा के त्यागपत्र से जो स्थान रिक्त हुआ है, उसके उपनिर्वाचन में कांग्रेस मुस्लिम लीग तथा सुन्नी बोर्ड में त्रिकोण युद्ध हो रहा है। सुन्नी बोर्ड लखनऊ के सुन्नी मुसलमानों की प्रतिनिधि संस्था है और मद्देसहाबा आन्दोलन के समर्थन में संघटित हुई थी और इसी कारण स्थानीय मुसलमानों पर उसका इतना अधिक प्रभाव है कि विगत म्युनिसिपल निर्वाचनों में उसने मुस्लिम लीग को बिलकुल चित कर दिया था और असेम्बली के निर्वाचन में भी चौ० खलीकुज्जमा को नाकों चने चबवा दिये थे। चौ० खलीकुज्जमा केवल कुछ ही वोटों से सुन्नी बोर्ड के उम्मेदवार से जीते थे। मुस्लिम लीग उम्मेदवार के जीतने की तो इस बार कोई भी आशा नहीं है, इसे स्वयं लीगी भी मानते हैं। लीगी उम्मेदवार केवल प्रान्तीय लीग के अध्यक्ष सैयद रिगवानउल्ला की जिद के कारण ही खड़ा है, अन्यथा शहर मुस्लिम लीग तक ने उसका समर्थन करने से इनकार ही सा कर दिया है और उसकी कन्वासिंग करने के लिए शहर मुस्लिम लीग कुछ नहीं कर रही है। इस प्रकार असली लड़ाई कांग्रेस और सुन्नी बोर्ड के उम्मेदवारों के बीच में है। कांग्रेस उम्मेदवार के पक्ष में इन दिनों जो प्रचार-कार्य किया गया है, उससे प्रकट होता है कि मुसलमानों के अनेक वर्गों का समर्थन उसे मिल जायगा, परन्तु सुन्नी बोर्ड का प्रचार मुसलमानों की धर्मान्धता का लाभ उठाने के लिए है। बता चुके हैं कि पिछले निर्वाचन में सुन्नी बोर्ड का उम्मेदवार केवल कुछ ही वोटों से हारा था और इसी पर प्रान्तीय सरकार ने कह दिया कि मद्देसहाबा आन्दोलन पर सुन्नियों का विश्वास नहीं है और मद्देसहाबा की अनुमति नहीं दी जा सकती। सुन्नी बोर्ड इसी तिल का ताड़ बनाकर सुन्नी वोटरों से कह रहा है कि इस बार यदि सुन्नी बोर्ड का उम्मेदवार जीत गया, तो कांग्रेस को मद्देसहाबा पढ़ने का अधिकार सुन्नियों को देना ही पड़ेगा। फिर भी परिवर्तित राजनीतिक परिस्थिति में मुसलमान इस प्रकार की धर्मान्धता से प्रभावित ही हो जायेंगे, यह आवश्यक नहीं है।

* * *

३१ दिसम्बर को वह तिथि समाप्त हो गई, जब तक सभी सरकारी फार्मों तथा साइनबोर्डों आदि को हिन्दी में अंकित हो जाना चाहिए था। लखनऊ में साइनबोर्ड पेन्टरों की इन दिनों चांदी है। उनके पास काम का इतना आधिक्य है कि दिन-रात पेन्टिंग हो रही है और सरकारी साइनबोर्ड हिन्दी में अंकित किये जा रहे हैं। एक सरकारी अधिकारी ने मुझे बताया कि गवर्नमेंट प्रेस को आदेश दिया गया है कि वह सारे सरकारी फार्म अब हिन्दी में ही छापे। एक कठिनाई यह बताई जाती है कि गवर्नमेंट प्रेस में हिन्दी के अक्षरों में टाइप की तो कमी नहीं है, परन्तु अंकों के टाइप इतने नहीं हैं कि वे भारी भारी काम कर सकें। इसीलिए सरकार का नया बजट जो हिन्दी में छापा जा रहा है, उसमें उल्लिखत अंक रोमन में छापे जायेंगे। इसी प्रवक्ता ने यह भी बताया कि सचिवालय के क्लर्कों को अब हिन्दी का उपयोग करने में अधिक कठिनाई नहीं होती। उसने यह भी कहा कि मुफस्सिल में काम करनेवाले जिलों के अधिकारी और कर्मचारी भी हिन्दी का उपयोग करने लगे हैं और अनेक मुस्लिम अधिकारियों ने अपने फैसले त्रुटिहीन हिन्दी में लिखकर दिखा दिया है कि जरा से अभ्यास से राजभाषा का यह परिवर्तन कुछ कठिन न होगा।

* * *

युक्तप्रान्तीय सरकार ने केन्द्रीय सरकार की सेवा में इस प्रान्त से भेजे गये सभी आई० सी० एस० और पी० सी० एस० अफसरों को लौटा दिये जाने की मांग की है। बताया जाता है कि सरकार को इस समय न्यायाधिकारियों की सख्त जरूरत है, क्योंकि सहस्रों मामले विचाराधीन पड़े हैं कारण कि उनकी सुनवाई के लिए निश्चित संख्या में मैजिस्ट्रेट और जज नहीं हैं। राशनिंग के हटने से खाद्य-विभाग के प्रायः १५००० कर्मचारी बेकार हो जायेंगे, जिनमें से अनेक उच्च अधिकारी भी हैं। परन्तु न्याय-कार्यों में इन व्यक्तियों का उपयोग करने के लिए ठाकुर हुकुमसिंह तैयार नहीं हैं, क्योंकि खाद्य-विभाग के सभी कर्मचारी क्या छोटा क्या बड़ा बहुत बदनाम रहे हैं और विचाराधीन मामलों में से भी अधिकांश नियंत्रण सम्बन्धी ही हैं।

* * *

प्रान्तीय सरकार ने वैभागिक अधिकारियों को स्पष्ट आदेश दिया है कि किसी भी सरकारी अधिकारी अथवा कर्मचारी के विरुद्ध गुमनाम शिकायत आने पर भी उसकी कड़ी जांच की जाय। अनेक कर्मचारियों के बारे में गुमनाम शिकायतें आने पर उनके विभागों के अध्यक्षों ने उन्हें रद्दी की टोकरी में फेंक दिया और कुछ ने इसके सम्बन्ध में सरकार की राय पूछी। मंत्रिमंडल ने इस सम्बन्ध में विचार करके कहा कि भारतीय नागरिक अशिक्षित हैं और सदियों गुलामी के चक्कर में रहकर उसमें इतना साहस नहीं रह गया है कि वह किसी भी सरकारी कर्मचारी की शिकायत खुल्लमखुल्ला कर सके, क्योंकि पिछले शासन के अनुभवों के कारण वह उसके परिणामों से अवगत है। अतएव गुमनाम शिकायत आने पर कर्मचारी के आचरण की कड़ी जांच की जाय और शिकायत विशेष के विषय में भी जैसे भी और जहां तक भी सम्भव हो, पता लगाया जाय।

* * *

प्रान्तीय सरकार के मीरमुंशी के पद को समाप्त करने का सरकारी निश्चय अत्यन्त प्रशंसापूर्ण है। इस अधिकारी का काम गवर्नर के दरबारों पर पुराने बादशाही और साम्राज्यशाही तरीके पर इन्तजाम करना और विचित्र लाल पोशाक पहनकर विदूषक की भांति दरबार में बैठना मात्र है। नवीन व्यवस्था में इसकी कोई आवश्यकता नहीं रही है। इसके अतिरिक्त यह अधिकारी सरकारी अनुवाद-विभाग का अध्यक्ष भी हुआ करता है। राजभाषा के परिवर्तन के साथ साथ अनुवाद-विभाग का विस्तार करना है। इस पद का वर्तमान अधिकारी पुराने अनुवाद-विभाग को ही सँभाल सकता है, जिसमें केवल अंगरेजी और उर्दू का प्राधान्य था। अब तो इस पद के लिए किसी खानबहादुर की नहीं, विद्वान् व्यक्ति की आवश्यकता है और इसीलिए इस पद के समाप्त किये जाने का प्रान्त में स्वागत ही किया जायगा।

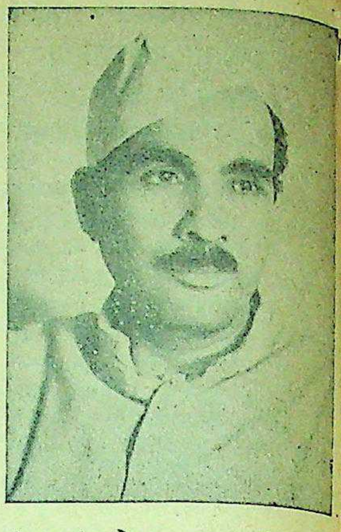

संयुक्त प्रांत के उन्नत तथा विकास-मंत्री पंडित केशवदेव मालवीय।

यदि वास्तव में एजेन्सी-द्वारा धन कमाना चाहें तो 'दी दिग्विजय टायल्स एण्ड पौटरीज लिमिटेड' की बनाई उत्तम वस्तुओं, यथा प्याले, तश्तरियां, चाय सैट, उबालदान, सुराहियों और प्लेट्स इत्यादि की एजेन्सी के लिए, इस पते पर पत्र-व्यवहार करने की कृपा करें।

दी दिग्विजय टायल्स एण्ड
पौटरीज लिमिटेड, जामनगर
(काठियावाड़)

गुदड़ो के लाल

इस पुस्तक की कहानियाँ बहुत ही सरल और रोचक भाषा में लिखी गई हैं। इनको पढ़कर बच्चे बेहद खुश होते हैं। ऐसी पुस्तक अपने बच्चों को जरूर दीजिए। मूल्य ||)

मनरोञ्जक कहानियाँ

(दूसरा भाग)

इस पुस्तक में बहुत सी मनोरंजक और शिक्षाप्रद कहानियाँ हैं। इसके पढ़ने से बालकों को अन्य लाभ के सिवा भाषा-सम्बन्धी ज्ञान भी होता है। मूल्य |-)||

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

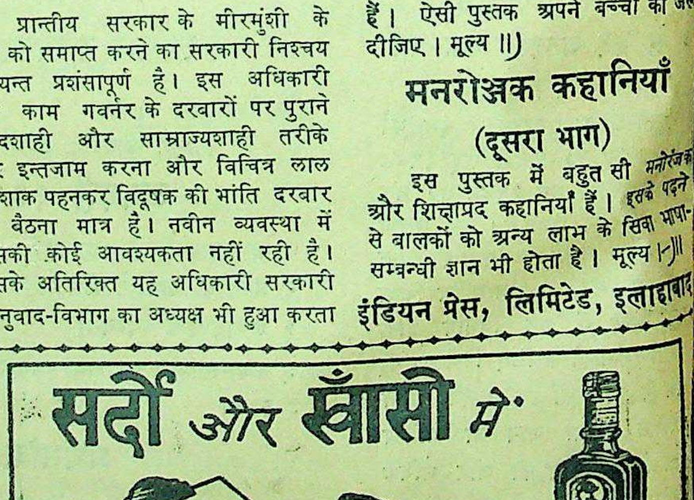

सूर्यग्रहण के अवसर पर तैयार की हुई

दिव्य सिद्धि तांत्रिक अँगूठी (रजिस्टर्ड)

आप जो चाहेंगे हो जायगा। गरीबी दूर भाग जायगी, लक्ष्मी आपके कदम चूमेगी, आप धनवान हो जायँगे, आपकी प्रेमिका आपसे अटूट प्रेम करने लगेगी, शत्रु मित्र बन जायँगे, मनचाही सन्तान होगी, बुरे ग्रहों का दोष दूर हो जायगा, संसार आपकी इज्जत करेगा, लड़ाई-झगड़े में फतह होगी, विद्यार्थी परीक्षा में पास होंगे, जिसे आप चाहते हैं उसी सुन्दरी से शादी होगी, नाराज हाकिम खुश होगा, वशीकरण होगा। बात यह है कि हर काम आपके इच्छानुसार होगा। यह अंगूठी ग्रहण के अवसर पर शुभ मुहूर्त में तैयार होती है। बड़े परिश्रम से तैयार कराई गई है। अब परीक्षा करके लाभ उठाना आपका काम है। मूल्य २॥) डाक-खर्च ॥=) आना। नोट—बेकार साबित हो, तो ६ महीने तक वापिस।

भारतीय तांत्रिक भंडार (१०) अलीगढ़

थोड़ी प्रतियाँ बची हैं। शीघ्रता कीजिए

वार्षिक बालसखा १९४७

इसकी छपाई कई रंगों में हुई है। चित्रों की भरमार है। लेख, कविताएँ और कहानियाँ अनुपम हैं। जिल्द सजीली, आकर्षक और बालकों के पसन्द की है। ऐसा कौन बालक होगा जो इस अंक को पाकर आदि से अन्त तक पढ़े बिना शान्त रहे। ३०० पृष्ठों के इस अंक का रियायती मूल्य २॥) शीघ्रता कीजिए।

मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

मुफ़्त

युवको! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीवन फीका हो चुका हो तो भारत भर में सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त रोग विशेषज्ञ कविराज ब्रह्मसरूप बी० ए० लाहौरवाले फतेहपुरा (D.A.) देहली से मशविरा (सम्मति) मुफ़्त लेकर अपना जीवन सुधार लें।

अपनी बात

लेखक, श्रीयुत चन्द्रभूषण वैश्य

मनुष्य के चरित्र में किस प्रकार की दुर्बलतायें होती हैं और उन्हें दूर करके वह किस प्रकार अपने जीवन को उन्नत बना सकता है, यह बात इस पुस्तक में बहुत ही ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई है और लिखी गई है व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर। अपने चरित्र का निर्माण करने के लिए प्रत्येक युवक को यह पुस्तक एक बार अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ॥।) बारह आने।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

दाद, खुजली
और
हरेक मेलका चमडीका दर्दोंके लीए
गत ५० वर्षों से
जग-विख्यात
कपड़े खराब नहीं करती
नकालों से सावधान
सपट
लोशन
सपट एन्ड कुंली.
मुंबई. २.
D.P.C.142

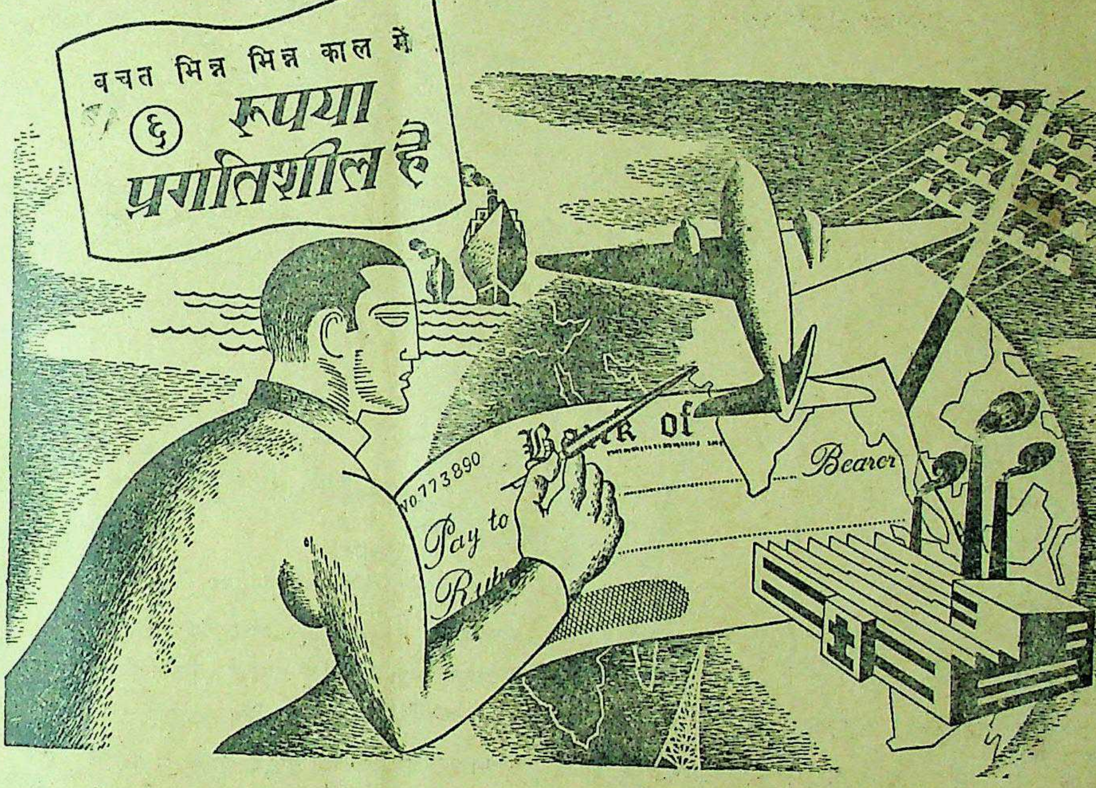

सिक्कों और काग़ज़ के नोटों से यह सुविधा थी कि वे आसानी से प्रत्येक स्थान पर ले जाये जा सकते थे। परन्तु ज्यों ज्यों यातायात के साधनों और व्यापार की उन्नति हुई अत्यन्त दूर के स्थानों से भी रुपये का लेन देन आवश्यक हो गया। प्रत्येक बार किसी हरकारे के हाथ रुपया भेजना सम्भव न था। इस के लिये किसी दूसरे सरल उपाय की आवश्यकता हुई। इस समस्या को सुलझाने के लिये भारतीय महाजनों ने 'बिल आफ़ एक्सचेंज' अर्थात् हुण्डियों का तरीक़ा निकाला। यह हुँडी किसी विशेष व्यापारी के नाम एक चिट्ठी के रूप में होती है कि लिखित व्यक्ति को निश्चित रुपया दे दिया जावे। यही आगे चल कर वर्तमान युग के चैक ड्राफ़्ट बन गये। ज़रा सोचिये प्राचीन काल के अदल-बदल के व्यापार की अपेक्षा यह कितनी उन्नति है। आज कल आप भारतवर्ष या संसार के किसी भी स्थान में माल ख़रीद सकते हैं और किसी प्रसिद्ध बैंक के नाम चैक या ड्राफ़्ट भेज सकते हैं।

बचत भी सुरक्षित और लाभदायक बन गई है। आप सिक्योरिटी ख़रीद सकते हैं या किसी बैंक में रुपया जमा कर सकते हैं। परन्तु एक योग्य व्यापारी समझता है कि आज कल नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स सब से अधिक लाभदायक होने के साथ साथ पूर्णतया सुरक्षित हैं। ये अवधि पूरी होने पर ५०% बढ़ जाते हैं—प्रत्येक १०) बारह वर्ष में १५) बन जाते हैं। इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता। अब आप ५) से १५०००) की मालियत के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं। थोड़ी बचत वाले ।), ॥) और १) के नेशनल सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं। अब आप सर्टिफ़िकेट्स १८ मास के उपरान्त भुना सकते हैं (५ रु० के सर्टिफ़िकेट्स १२ मास के उपरान्त)।

भविष्य के लिये बचाइए

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए

रुपया लगाने की सर्व-प्रिय मद

ये डाकख़ानों, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजन्टों और सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त किये जा सकते हैं।

जुकाम सर्दीपर अकसीर उपाय
आसोंदा
१८६६
नीलगिरि तेल
[illegible]
मी. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

आ दमी
[illegible] की
रुचि
बदलती है
लेकिन
जब
हवाई
सरविस की
बात
आती है तो

एयर फ़रांस एयर-इंडिया अैविका एयरलाइन बी. ओ. ए. सी., इंडियन नेशनल एयरवेज के. एल. एम. और ओरियन्ट एयरवेज़ भारत और पाकिस्तान में बर्मा-शेल हवाई सर्विस का प्रयोग करते हैं

बर्मा-शेल
हवाई
सरविस

एयरलाइनों के
SHELL
भरोसे की सर्विस

बर्मा-शेल आइल स्टोरेज ऐंड डिस्ट्रीब्यूटींग कम्पनी आफ़-इंडिया लि० (इंगलिस्तान में इंकार्पोरेट की गई) एजंट्स
6 HIN.

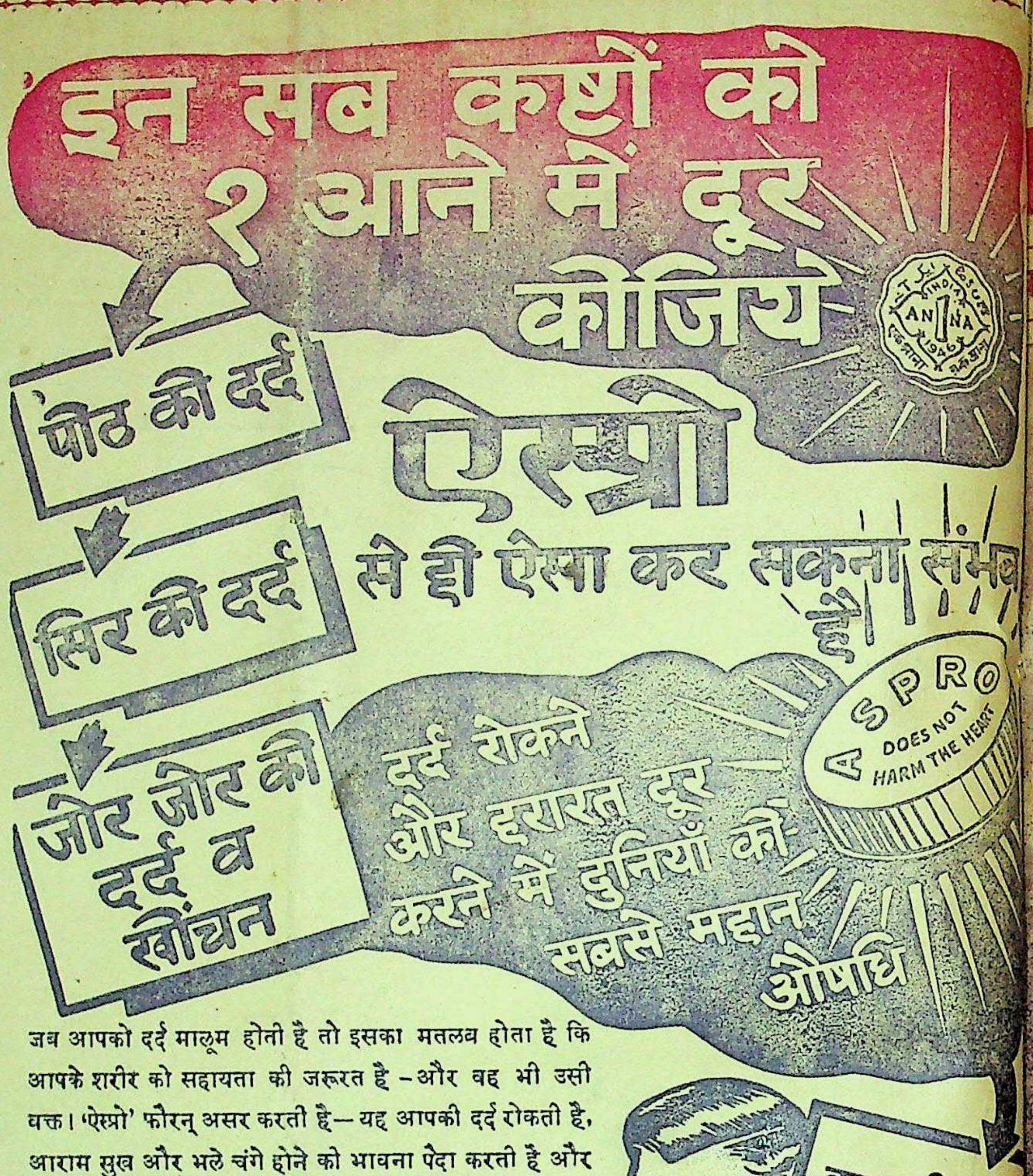

इन सब कष्टों को १ आने में दूर कीजिये

ANNA 1

पीठ की दर्द
सिर की दर्द
जोर जोर की दर्द व खींचन

ऐस्प्रो से ही ऐसा कर सकना संभव है

दर्द रोकने और हरारत दूर करने में दुनियाँ की सबसे महान औषधि

ASPRO
DOES NOT HARM THE HEART

जब आपको दर्द मालूम होती है तो इसका मतलब होता है कि आपके शरीर को सहायता की जरूरत है–और वह भी उसी वक्त। 'ऐस्प्रो' फौरन् असर करती है–यह आपकी दर्द रोकती है, आराम सुख और भले चंगे होने को भावना पैदा करती है और दर्द के कारण तक जाकर उसे निकाल बाहर करने में प्रकृति की मदद करती है। 'ऐस्प्रो' कि प्रत्येक टिकिया मनुष्य की आवश्यकताओं के मुताबिक पूरी सावधानी और चतुराई से बनाई जाती है। इसीलिये यह आधुनिक औषधि इतनी फलप्रद है

'ऐस्प्रो' समय नहीं खोती फौरन् आपकी सहायता करती है।

बुखार की स्थिति से कष्ट पानेवाले के लिये 'ऐस्प्रो' वरदानस्वरूप है यह ताप कम करती है व तकलीफों का निवारण करती है।

ASPRO
ACTS AT ONCE
'ASPRO' does not harm the heart or stomach
MADE IN ENGLAND
'ऐस्प्रो'
६ टिकिया
MADE IN ENGLAND
'ऐस्प्रो'
ASPRO
REC. TRADE MARK
ASPRO
REC. TRADE MARK

एक बच्चा भी 'ऐस्प्रो' ले सकता है

दाम
३ टिकिया २ आना
६ टिकिया ३ आना
३० टिकिया १० आना

वितरक :
जे, एल, मौरिसन, सन एण्ड जोन्स
(इण्डिया) लि:
पोष्ट बक्स ३८७ कलकत्ता टेलिफोन कलकत्ता ७९६

67

हर जगह बिकती है

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र नि

वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

वार, १ फरवरी, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 1st February, 1948

श्मीर राष्ट्र का स्वर्ग क्यों है ?
हापण्डित राहुल जी से एक भेंट

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

टिहरी ने आत्म-समर्पण कर दिया
नये युग में राजनीति ही सब कुछ है

घर की स्त्रियाँ

निकोटा
पारिवारिक टूथ पेस्ट का
व्यवहार करती हैं !

क्योंकि निकोटा दांतों को सफेद और सुन्दर रखता है जिससे स्त्रियां युवा दिखती हैं। यह सबसे अधिक 'किफायती' और समस्त परिवार के लिये प्रथम श्रेणी का टूथ पेस्ट है।

लगभग सभी जगह एक रुपये से कम में मिलता है।

★ स्वादिष्ट
★ स्फूर्तिप्रद
★ कीटाणुनाशक

एक सुंदर लाल बक्स में सभी केमिस्ट व व्यापारियों के यहाँ मिलता है।

पारिवारिक
टूथ पेस्ट

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयां—
क्रीमोला टाफी फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलता है:—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

एलाइड लाउडस्पीकर पर
इतमिनान रखिये

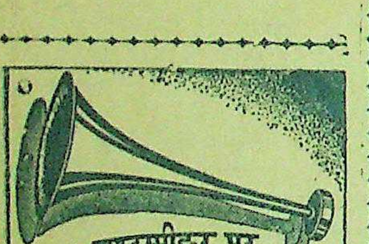

ब्याह
मेले
जलसे
सरकस
तथा

हर मौके पर इस्तेमाल कीजिये

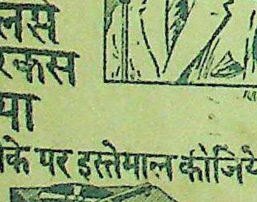

खरीदिये या किराये पर
लीजिये

एलाइड एलेक्ट्रिक एण्ड
रेडियो कारपोरेशन
हजरतगंज कैनिंग रोड
लखनऊ एलाहाबाद

आज भारत स्वतंत्र है

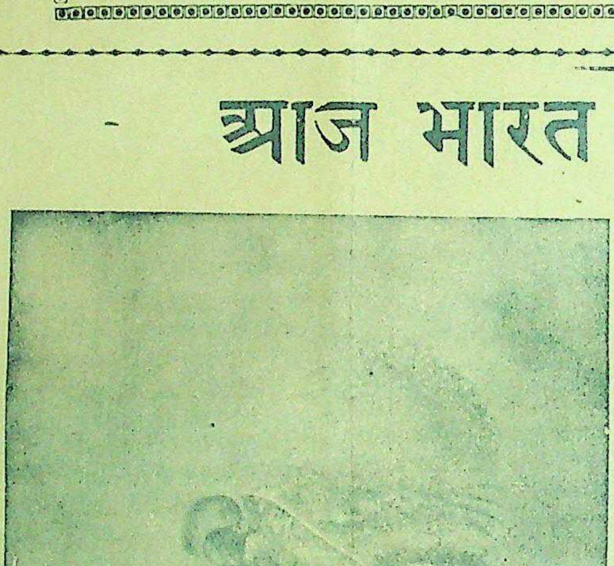

युक्त प्रान्त के शिक्षा-सदस्य जी की सम्मति—

“सेवाग्राम का प्रकाशन सुन्दर हुआ है। आप जैसे लब्धप्रतिष्ठ कवि की रचनाओं के सम्बन्ध में कुछ कहना मेरा दुस्साहस-मात्र है। हाँ, मैं इतना कह सकता हूँ कि रचनाएँ मुझे बहुत अच्छी लगीं।

—सम्पूर्णानन्द”

यह स्वतंत्रता राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी
की ही देन है

अतः

गान्धी-गौरव-गान के लिए

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्

और

सेवाग्राम

अपने प्रिय मित्रों को उपहार में दीजिए।

गान्धी-अभिनन्दन-ग्रन्थ में गान्धीजी के संबंध में आज तक लिखी हुई सभी श्रेष्ठ कविताएँ संगृहीत हैं। ऐसा ग्रन्थ किसी भी दूसरी भाषा में नहीं प्रकाशित हुआ! मूल्य ७॥)

× × ×

सेवाग्राम में राष्ट्रीय चेतना को काव्य क सच्चा स्वरूप देनेवाले कवि श्री सोहनला जी द्विवेदी की कविताएँ बड़ी सज-धज साथ प्रकाशित की गई हैं।

ये रचनाएँ देश के एक कोने से लेकर दूस कोने तक प्रेम से पढ़ी जाती हैं।

मूल्य १०)

अपनी प्रतियाँ निकट के पुस्तक-विक्रेता स माँगिए, न मिलें तो इस पते से मँगाइए

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

देशदूत

वर्ष १०, संख्या २२] [रविवार, १ फरवरी, १९४८

चेतावनी !

लेखक, श्री 'बच्चन'

दिखे अगर कभी मकान में झरन,
सयत्न मूंदते उसे प्रवीण जन,
निचिंत बैठना बड़ा गँवारपन,
कि जब समस्त
देश में
दरार हो ।

रहे न साथ, एक साथ जब रहे,
अलग विरुद्ध पंथ आज तो गहे,
यही मिलाप है कि राम मुंह कहे,
मगर बगल
छिपी हुई
कटार हो ।

सुदूर शत्रु सेन साजने लगा,
पड़ोस-का फ़िराक में कि दे दगा,
कहीं अचेत ही न जाय तू ठगा,
समय रहे
स्वदेश !
होशियार हो ।

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

संयुक्त राष्ट्र-संघ की सुरक्षा समिति ने मदारी का प्रारम्भ कर दिया। काश्मीर की जांच-पड़ताल के सम्बन्ध में सुरक्षा समिति ने जो कमीशन नियुक्त करना निश्चय किया है उसका काम तो हो ही रहा है किन्तु इसी बीच में एक नया नाटक प्रारम्भ हो गया है। पाकिस्तान के प्रतिनिधि का कहना है कि भारतीय सेना काश्मीर से बाहर हो जाये और शेख अब्दुल्ला की सरकार समाप्त कर दी जाये तब आगे काम बढ़ाया जाये और हिन्दुस्तान के प्रतिनिधि कहते हैं कि जब तक शान्ति स्थापना की कोई गारंटी नहीं मिलती है तब तक भारतीय फौजें काश्मीर से वापस नहीं हो सकतीं। शेख अब्तुदुल्ला की सरकार चूंकि जनता द्वारा स्वीकृत सरकार है इसलिए वह भंग नहीं हो सकती। देखना है सुरक्षा समिति के मदारी लोग इन प्रश्नों के निपटारे के लिए क्या फैसला देते हैं? क्योंकि उन्हें तो दोनों उपनिवेशों को प्रसन्न रखना है। अभी आगे-आगे ब्रिटेन और अमरीका को बहुत कुछ करना है इसलिए प्रथमे ग्रासे मक्षिकापातः का कार्य अगर होगा तो यह मदारी नाच-गान का प्रोग्राम कैसे चालू रखेंगे? इसीलिए मदारी अपनी करामात दिखाने में इस वक्त रात-दिन एक कर रहे हैं।

* * *

भला हो सरदार वल्लभ भाई पटेल का कि जब से ब्राडकास्टिंग विभाग उनके हाथ में आया है तब से भारतीय रेडियो विभाग की हवा सरकी है। दिल्ली रेडियो स्टेशन से आजकल जो कुछ ब्राडकास्ट होता है, उसमें तो कुछ जान आ गई है और हिन्दी का ब्राडकास्ट भी किसी कदर पहले से अच्छा ही होता है। राष्ट्रीय गीतों की प्रगति भी तेज है लेकिन संयुक्तप्रान्त में लखनऊ रेडियो का पुराना रवैया बदस्तूर जारी है। जिस प्रान्त की राजभाषा हिन्दी हो गई है, वहां का रेडियो-ब्राडकास्ट अपनी पुरानी रफ्तार से ही जारी रहे, यह आश्चर्य की बात है। दिया तले अँधेरा इसी को कहते हैं। संयुक्तप्रान्त में हिन्दीवाले लाख सिर धुनें किन्तु लखनऊ रेडियो स्टेशन अपनी 'मजलिस' बरखास्त करनेवाला नहीं। वह 'फरमाया' कहना कभी नहीं छोड़ेगा और हर चीज को 'पेश' करने का तो वह पुराना पापी बन गया है। जहां दिल्ली रेडियो स्टेशन ही पहले उर्दू का गढ़ बना हुआ था वहां अब उसकी जगह लखनऊ रेडियो स्टेशन ने ले ली है। खुदा जाने यह रवैया इस युग में लखनऊ रेडियो का कभी समाप्त भी होगा या नहीं? हिन्दी भाषा-भाषी प्रान्त की जब यह दशा है तो पटना रेडियो क्या करेगा, यह भी भगवान के ही हाथ में है। क्योंकि लखनवी टीम वहां भी जा धमकी है। लेकिन बिहार बिहार है और संयुक्तप्रान्त संयुक्तप्रान्त। यह भी समझ लेना चाहिए।

* * *

भारत सरकार ने यह निश्चय किया है कि मजदूरों की हड़ताल अब सहन नहीं की जायेगी। सरदार पटेल ने तो यहां तक कहा है कि जो मजदूर हड़ताल करें उन्हें काम से अलग कर दिया जाये और उनकी जगह नई भर्ती की जाये। पंडित नेहरू और सरदार पटेल ने कहा है कि अब चीजों की उत्पत्ति की ओर अधिक ध्यान होना चाहिए, अशान्ति की समाप्ति कर देनी चाहिए। अपने राम की समझ में यह बात आती है कि इस वक्त देश में अधिक से अधिक वस्तुओं के अभाव की पूर्ति होनी चाहिए, साथ ही मजदूरों को भी सन्तोष मिलना चाहिए। लेकिन दुख यह है कि कम्यूनिस्ट भाइयों का रोजगार कैसे चलेगा? जब तक हड़तालें न होंगी तब तक उनकी लीडरी की लढ़िया कैसे आगे बढ़ेगी? कम्यूनिस्ट चाहे हड़ताल करने के पक्षपाती न भी हों किन्तु हड़ताल की लीडरी के लिये वही रजिस्टर्ड हकदार हैं। कहावत है कि मुर्दे दिखाई पड़े और चील्ह तथा गीधों ने मँडराना शुरू किया। यदि हड़ताल का प्रारम्भ ही नहीं होगा तो कम्यूनिस्ट लीडरी का रोजगार कैसे चालू रखेंगे? वाकई यह बड़े ही अफसोस की बात है। राष्ट्र के एक महान् राष्ट्रवादी दल पर शनि-ग्रह लग गया है। किन्तु किया क्या जाये, भारतीय राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन क्या बना दी गई, कम्यूनिस्ट ट्रेड यूनियन के लिए एक खाई तैयार कर दी गई। देखना है अब कम्यूनिस्ट भाई अपना पांसा किधर फेंकते हैं।

* * *

पिछले दिनों महात्मा गांधी ने जो उपवास किया उसका प्रभाव जनता पर पड़ना अनिवार्य था। शान्ति तथा साम्प्रदायिक सद्भावना की स्थापना तो एक प्रकार से जरूरी ही हो गया किन्तु शान्ति स्थापना की सबसे बड़ी जिम्मेदारी आ गई उस जमात पर जो सन् ४२ के आन्दोलन में ब्रिटिश का साथी बना रहा। ब्रिटिश अत्याचार के जो हिमायती बने रहे वही आज शान्ति-स्थापना में अपने को अगुआ समझने लगे हैं। अपने राम की राय में अवसरवादी इस देश में सदा से अपनी डफली बजाते रहे हैं, खास कर कम्यूनिस्ट। कम्यूनिस्टों में भी भले आदमी हैं ऐसी बात नहीं, जो शान्ति के पुजारी और ईमानदार राष्ट्रवादी हैं लेकिन ज्यादातर हैं खुदाई बूकनेवाले। वह अपनी खुदाई के आगे खुदा की खुदाई को भी कुछ नहीं समझते। शान्ति-स्थापना तो यों ही होगी और हो रही है किन्तु खुदाई शान्तिस्थापक दल स्वयं शान्त रहें यही बहुत है। कृपया लीडरी अपने ही हद तक रखी जाये तो बेहतर है।

* * *

इस वक्त शरणार्थी महिलाओं की बड़ी दुर्दशा है। पंजाब के अनाचार में हजारों स्त्रियां पाकिस्तानियों के हाथ जा लगीं। भारत सरकार का शरणार्थी-विभाग उन्हें पुनः वापस लौटाने के काम में व्यस्त है। लेकिन एक बड़ी कठिनाई हो रही है कि जो महिलायें पाकिस्तानी गुंडों के हाथ से बचाई जाकर भारत लाई जा रही हैं, उन्हें यहां कोई पूछनेवाला नहीं। समाज उन्हें घृणा की दृष्टि से देखता है और उनके सम्बन्धी उन्हें अपनाने को तैयार नहीं। अपने राम की राय में हिन्दू समाज के लिए यह कोई नई बात नहीं है। यदि आज हिन्दू समाज की यह दशा न होती तो पाकिस्तान बन ही न पाता। जो मुसलमान इस वक्त भारत में हैं मूलतः वह पहले हिन्दू ही थे किन्तु अब वह इतने कट्टर मुसलमान हो गये हैं कि टर्की और अरब वाले भी उनके आगे मात हैं, यहां तक कि पाकिस्तान की रचना कर डाली गई। समाज और धर्म के ठेकेदारों को अब भी चेतना चाहिए। नहीं तो फिर पछताये होत का जब चिड़ियां चुन गई खेत !

साक्षरता-सप्ताह

संयुक्तप्रान्तीय शिक्षा प्रसार-विभाग-द्वारा आयोजित साक्षरता-सप्ताह के अवसर पर संयुक्तप्रान्त की गवर्नर श्रीमती सरोजिनी नायडू ने यह सन्देश दिया है—

माननीया श्री डाक्टर सरोजिनी नायडू
गवर्नर संयुक्तप्रान्त

मैं साक्षरता-सप्ताह के प्रति अपना हार्दिक सहयोग प्रदान करती हूँ तथा उन कार्यकर्ताओं के उत्तम प्रयत्नों में पूर्ण सफलता के लिए कामना करती हूँ जो इस प्रान्त के लाखों व्यक्तियों को वर्षों की निरक्षता की चारित्रिक दासता तथा उससे उत्पन्न अनेक दुर्गुणों से उद्धार करने में तल्लीन हैं। भारतवर्ष की राजनैतिक स्वतंत्रता का मूल्य ही क्या है यदि इस देश के प्रत्येक स्त्री-पुरुष को अज्ञानता के उस भयावह कारागार से मुक्त न किया गया जिसने उनकी सामाजिक एवं आर्थिक उन्नति को रोक था तथा अनेकों पीढ़ियों से उनको अपने अधिकारों तथा कर्त्तव्यों की अनुभूति से वंचित किये था।

हम सबका जो विद्या का अपूर्व आशीर्वाद प्राप्त कर चुके हैं यह कर्तव्य है कि इस अमूल्य वरदान को अपने उनबंधुओं तक जो इसको प्राप्त करने में हतभाग्य रहे हैं पहुँचायें और उनको इस योग्य बनायें कि जिससे कि वे ऐसे नवीन भारत के निर्माण में जो कि सब प्रकार की आन्तरिक तथा वाह्यिक दासता से मुक्त हो, उचित भाग ले सकें।

—सरोजिनी नायडू

सम्पादक का पृष्ठ

काश्मीर के लिये कमीशन

संयुक्त राष्ट्र-संघ की सुरक्षा समिति ने काश्मीर और जम्मू के प्रश्न का निपटारा करने के लिए हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के प्रतिनिधित्व को ध्यान में रखकर एक कमीशन नियुक्त करने का निर्णय किया है। कमीशन तीन सदस्यों का होगा। एक-एक सदस्य हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान द्वारा नियुक्त होंगे और तीसरा सदस्य सुरक्षा-समिति की ओर से। तीनों सदस्य काश्मीर की यात्रा करके गवाहियां तथा जांच-पड़ताल के अनुसार बहुमत के आधार पर एक रिपोर्ट तैयार करके निर्णय देंगे। सुरक्षा समिति में श्री अयंगर ने काश्मीर तथा जम्मू के प्रश्न को लेकर भारत सरकार की ओर से जितना तर्कपूर्ण प्रतिनिधित्व किया है वह प्रशंसनीय ही नहीं तथ्यपूर्ण भी था। पाकिस्तान की ओर से श्री जफरुल्ला ने ऐसी विवादास्पद तथा तर्कहीन प्रश्न उपस्थित किये जिसकी आलोचना व्यर्थ है। इस प्रकार जो विवाद हुआ और परिणाम स्वरूप सुरक्षा-समिति की ओर से कमीशन की नियुक्ति का जो निर्णय हुआ उससे यह तो स्पष्ट ही हो जाता है कि ब्रिटिश और अमरीका दोनों उपनिवेशों को प्रसन्न रखने का प्रयत्न कर रहे हैं, इसलिए यदि अन्त में वह ऐसा ही निर्णय दें कि जिससे दोनों उपनिवेश प्रसन्न रहें तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

भारतीय सरकार के लिए काश्मीर और जम्मू का प्रश्न राष्ट्र का एक व्यापक प्रश्न है। इसका उचित और न्यायपूर्ण निर्णय तो अन्त में होना ही है। यदि सुरक्षा-समिति द्वारा संगठित कमीशन न्यायपूर्वक निर्णय देता है तो भारत के लिए वह अमान्य हो ही नहीं सकता किन्तु यदि वह दोनों उपनिवेशों को प्रसन्न रखने की कला को सम्मुख रखकर कोई निर्णय देगा तो भारत उसे भी मान लेगा यह सम्भव नहीं है। पाकिस्तान को भले ही वह निर्णय मान्य हो। हम भविष्य वक्ता नहीं हैं और न अभी हम किसी प्रकार की एकांगीय भविश्यवाणी ही करना चाहते हैं किन्तु सामाज्यवादी राष्ट्रों की बंदर-बांट नीति से हम पूर्णरूप से परिचित हैं। उसने जिस प्रकार सम्पूर्ण भारतवर्ष का साम्प्रदायिक नीति के अनुसार बँटवारा करके अपनी अन्तराष्ट्रीय कूटनीति और चतुराई का परिचय दिया है उसी प्रकार काश्मीर का बँटवारा करके हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों को प्रसन्न करने के लिये कहीं वह उतारू न हो जाये? जम्मू पाकिस्तान के हवाले कर दिया जाये और काश्मीर हिन्दुस्तान के। यदि कमीशन ने ऐसा निर्णय किया तब क्या होगा? पाकिस्तान के प्रतिनिधि श्री जफरुल्ला ने बार-बार अपने भाषणों में इस बात पर जोर दिया है कि काश्मीर की जनता ७५ प्रतिशत से अधिक मुसलमान हैं। इसलिए पाकिस्तान के लिए यह उचित था कि वह भारत सरकार द्वारा काश्मीर के प्रति उठाये जानेवाले कदम की ओर सचेष्ट होता। जूनागढ़ पर भारत सरकार ने इसीलिए अधिकार जमा लिया क्योंकि वहां की जनता बहुमत में हिन्दू है। ऐसी दशा में पाकिस्तान काश्मीर के मामले कैसे चुप रह सकता है मिस्टर जफरुल्ला ने हैदराबाद के संबंध में एक शब्द नहीं कहा यद्यपि वहां की ९० प्रतिशत से अधिक जनता हिन्दू है। यद्यपि भारत की ओर से पाकिस्तानी विवाद का समुचित उत्तर दे दिया गया है किन्तु साम्राज्यवादियों के लिए तो इस प्रकार के वाद-विवाद उपयोगी सिद्ध होते रहे हैं और इसी आधार पर कमीशन की नियुक्ति का निर्णय भी हुआ है।

समय पर हम इस सम्बन्ध में विशद चर्चा करेंगे किन्तु इस अवसर पर हम कमीशन के सदस्यों तथा साम्राज्यवादी राष्ट्रों को आगाह कर देना चाहते हैं कि उन्हें बँटवारे की नीति की इतिश्री कर देनी चाहिए। भारतवर्ष को दो भागों में विभाजित करके जो अराजकता राष्ट्र में उत्पन्न की गई है, उसका कुफल कांग्रेस ऐसी राष्ट्रवादी संस्था तथा उसके नेता प्राप्त कर रहे हैं, इसलिए अब विभाजन को पुनः स्वीकार करने की गलती कांग्रेस कदापि नहीं कर सकती और न भारत सरकार ही भविष्य में किसी प्रकार का विभाजन स्वीकार कर सकती है। यदि मान लिया जाये कि साम्राज्यवादी काश्मीर का विभाजन किसी तरह करना उचित समझते हैं तो उनके लिए भविष्य में यह भी सम्भव है कि हैदराबाद और बरार के प्रश्न को लेकर दूसरे बँटवारे की समस्या के हल के लिये भी आगे बढ़ें। आज काश्मीर का प्रश्न आया है तो कल हैदराबाद के प्रश्न का उपस्थित होना अनिवार्य है। ब्रिटिश तो अवसरवादी हैं। संयुक्त-राष्ट्रसंघ या सुरक्षा समिति भी ब्रिटिश तथा अमरीका के हाथों का खिलौना है। इसलिए आवश्यक है कि भविष्य में बँटवारे की नीति का विरोध किया जाये। कांग्रेस की नीति सदा एकीकरण की रही है, इसलिए उसे अभी से काश्मीर के प्रश्न को लेकर अर्न्तराष्ट्रीय दृष्टि से ऐसा आन्दोलन करना चाहिए जिससे साम्राज्यवादी राष्ट्र पुनः बँटवारे की नीति के विस्तृत करने की ओर अग्रसर न हों। यह युग जनमत का है। जनमत के बहुमत का जो निर्णय हो वही मान्य समझा जाना चाहिए।

सुरक्षा समिति ने जिस कमीशन की नियुक्ति की है और उसमें जिस प्रकार के सदस्य रखे गये हैं, यद्यपि उनसे काश्मीर की समस्या का कोई न्यायोचित हल निकालने की कोई आशा नहीं है क्योंकि पाकिस्तान का ध्यान उन्हें अन्त में रखना ही पड़ेगा फिर भी कमीशन के निर्णय की प्रतीक्षा तो करनी ही पड़ेगी। ब्रिटिश साम्राज्यवादियों तथा संयुक्त-राष्ट्र संघ की सुरक्षा समिति की नीति की वास्तविकता का पुनः एक बार प्रदर्शन काश्मीर के प्रश्न के निर्णय पर प्रगट होगा, इसमें सन्देह नहीं।

अत्याचार-पीड़ित स्त्रियों की रक्ष

समाज और उनके संबंधियों को न्याय करना चाहिए

लेखिका, श्रीमती रामेश्वरी नेहरू

भारत-विभाजन के परिणामस्वरूप हमारे देशवासियों की राक्षसी वृत्तियां जाग्रत हो उठीं। इतिहास में पहले कभी भी इतने बड़े पैमाने पर मनुष्य-मात्र का नैतिक पतन दिखाई नहीं देता। जो घटनाएँ हुई उनको देख-सुनकर तो मनुष्य भी भगवान् का अंश है, इस कथन में भी विश्वास नहीं रहता। ऐसा लगता है कि भगवान् के अंश से नहीं राक्षस या शैतान के अंश से मनुष्य बना है। यदि ऐसा नहीं है तो मनुष्य इतना अमानुषी व्यवहार कर ही कैसे सका। जो कुछ हुआ उस सब में स्त्रियों के साथ होनेवाले अत्याचार सबसे अधिक पाशविक रोमांचकारी हुए। अनगिनित महि और छोटी लड़कियों को आतत उठाकर ले गये और उन पर मनम व्यवहार किया। यह अत्याचार स्त्री-जाति पर हुआ। हिन्दू, सि मुसलमान बहनें सब ही एक समान शिकार बनीं।

ऐसी सहस्र स्त्रिया अभी तक हैं और कौन जाने कहां हैं और कैसे चार सहन कर रहीं हैं। इनको दुष्टों हाथ से निकालने का प्रयत्न हो रहा परन्तु काम बहुत कठिन है। सैकड़ों से १०-५ ही निकालने में सफल

सबसे बड़े दुख की बात यह ऐसी जो बहनें निकलकर आती उनको भी उनके सम्बन्धी और अपनाने से संकोच करते हैं। वे वश उनका तिरस्कार करते हैं और पतित मानते हैं।

समाज और सम्बन्धियों का कुव्यवहार अत्यन्त निन्दनीय है। धर्म नहीं घोर अधर्म है। धर्मज्ञ, धर्मात्मा नेताओं के उपरोक्त कथ यह स्पष्ट जाहिर है कि वेद, पुराण, निषद्, किसी भी नीति और धर्म ऐसा व्यवहार मान्य नहीं है। करनेवाला घोर अधर्म का भागी हो और पाप करता है। इन भोली- बच्चियों को जिनकी रक्षा करना ह धर्म था, हम दुष्टों के हा सुरक्षित नहीं रख सके। इस कमी और कमजोरी के कार बेचारी बच्चियां घोर अत्याचारों शिकार बनीं। इनके लिए हमें आप को दोषी ठहराना चाहिए इन निर्बल बच्चियों को। जो पा अत्याचार उन पर हुए उसमें उनका हाथ नहीं था। इसलिए ऐसा चाहिए कि उनका सतीत्व अब भी ही बना है जैसे पहले था। खुले दिल सच्चे प्रेम के साथ हमें उनका करना चाहिए। मुझे आशा है कि अपने इस मूर्खतापूर्ण व्यवहार का करके अपनी बच्चियों को हृदय से नावेंगे क्योंकि इसी में धर्म है, इसी हमारा और हमारे समाज का कल्याण

शरणार्थी नारियों की रक्षा के लिये एक सभा में स्त्रियों द्वारा समाज से अपील की जा रही है।

भारत की स्वास्थ्य मन्त्री राजकुमारी अमृतकौर भाषण

टिहरी ने आत्म-समर्पण कर दिया

इस जन-युग में पहाड़ी राजाओं के भविष्य का एक लेखा

लेखक, श्री दीनदयालु शास्त्री

> उत्तर भारत में टिहरी राज्य की आतंकवादी कहानियां रियासतों की स्वतन्त्रता के इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। इन्हीं कारणों से टिहरी पर संयुक्तप्रान्तीय सरकार ने अधिकार करने की घोषणा की है। यह परिवर्तन राज्य की जनता के लिए हितकर ही होगा। इस लेख में विद्वान् लेखक ने टिहरी की आतंकवादी राजनीति का लेखा-जोखा उपस्थित करते हुए पहाड़ी रियासतों तथा नरेशों के भविष्य पर भी प्रकाश डाला है, जो पठनीय, स:मयिक और रोचक है।

यह युग जन-युग है, इस युग में जो व्यक्ति जनता की आवाज को नहीं सुनता और उससे टक्कर लेने की कोशिश करता है वह फिर चाहे कितना ही महान्, शक्तिशाली तथा समर्थ क्यों न हो खतम हो जाता है। पिछले सप्ताह यही हाल टिहरी नरेश का हुआ है और जल्दी ही अनेक तथाकथित नरेशों का होनेवाला है। टिहरी नरेश पँवार राजपूत हैं, उनके पुरखा सातवीं सदी में राजस्थान से इधर आये थे। राजपूतों की जो टोली उन दिनों हिमालय के इस प्रदेश में आकर बसी थी उनके नेता कनकपाल थे। ये मालवा प्रान्त की प्रसिद्ध नगरी धारा (वर्तमान धार) के निवासी थे और संवत् ७४५ में कुछ साहसी साथियों के साथ गढ़वाल में आये थे। शुरू में उनका राज्य गंगा नदी के आस-पास की कुछ घाटियों तक सीमित था किन्तु फिर वह फैला और पुराणों में प्रसिद्ध केदार खण्ड से भी आगे निकल गया। प्राचीन केदार खण्ड में आजकल के देहरादून व गढ़वाल के सम्पूर्ण जिले व टिहरी रियासत की गणना होती ह, सहारनपुर, बिजनौर व अलमोड़े का कुछ भाग भी इसमें शामिल समझना चाहिए। गढ़वाल के इस विस्तृत राज्य में यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ व बदरीनारायण नाम के चारों पुण्य-धाम शामिल थे। यही कारण है कि मध्ययुग में गढ़वाल की भक्त जनता ने अपने नरेश को पूज्य भाव से "बोलादा बदरी" नाम से स्मरण किया था। बदरीनारायण के मन्दिर में जो देवता प्रतिष्ठित हैं वे सदा मौन रहते हैं किन्तु गढ़वाल के नरेश सदा बोलते-चालते बदरी हैं इसका यही अभिप्राय है, आज समय की गति को तो देखिए—मध्ययुग के उन्हीं बोलान्दा बदरी की भक्त प्रजा उनके खिलाफ बगावत कर रही है और वे अपना शासनतंत्र जनता को सिपुर्द करने के लिए तैयार हो रहे हैं।

अँगरेजों का आगमन

हमारे देश में राजे-रजवाड़ों की संख्या बहुत है किन्तु गढ़वाल का राजवंश इनमें बहुत पुराना है। लगातार बारह सौ वर्ष से यह राजवंश गढ़वाल में राज्य कर रहा है। अठारहवीं सदी के अन्त में इस वंश के बुरे दिन आये और नैपाल के वीर गोरखों ने समस्त गढ़वाल पर अधिकार कर लिया। गोरखों ने गढ़वाली राजा को पदच्युत नहीं किया किन्तु उसकी अधिकार-शक्ति सीमित कर दी। इसके बाद अँगरेजों का जमाना आया और उन्होंने हिमालय में बसने की इच्छा से गोरखों से युद्ध किया। इस युद्ध में जो सन् १८१४-१५ में हुआ, गढ़वाल के राजा अँगरेजों के मददगार थे। परिणामस्वरूप हिमालय का अधिक भाग गोरखों के हाथ से निकल गया। चालाक अँगरेजों ने देहरादून, हरद्वार व अलकनन्दा नदी व मन्दाकिनी नदी के पूर्व दक्षिण का अधिक गढ़वाल अपने पास रख लिया और शेष गढ़वाल का शासन वहां के राजा के हाथ में रहने दिया। इससे पहले यहां के नरेश श्रीनगर में रहते थे और समस्त गढ़वाल के शासक थे, अब वे टिहरी में रहने लगे और समस्त गढ़वाल के पूज्य होते हुए भी कुछ लाख के शासक रह गये। हिमालय में गढ़वाली भाषा-भाषी जनता १४ लाख के लगभग है किन्तु टिहरी रियासत में इनमें से केवल पांच लाख व्यक्ति निवास करते हैं। रियासत का कुल रकबा ४५०० वर्गमील व आबादी पांच लाख है। अँगरेजों के द्वारा विभक्त होने के बाद टिहरी रियासत में यमुनोत्री व गंगोत्री नाम के दो पुण्य धाम अवशिष्ट रह गये हैं और शेष दोनों केदारनाथ व बदरीनारायण अँगरेजी गढ़वाल के अंग हैं। राजधानी टिहरी छोटा-सा कसबा है और गंगोत्री से आनेवाली भागीरथी नाम की गंगा की धारा पर अवस्थित है। यहां ही केदारनाथ के समीपवर्त्ती पहाड़ों से निकलकर आ रही भिलंगना नदी भागीरथी में आ शामिल हुई है। इस दृष्टि से टिहरी शहर का दृश्य बड़ा अनुपम है किन्तु घाटी में होने के कारण वह अधिक ठंडा नहीं है।

पंजाबी शासक

४५०० मील रकबे व पांच लाख आबादी की शासन-व्यवस्था अच्छे ढंग से की जा सकती है किन्तु टिहरी के क्रमागत नरेशों ने इसकी सदा उपेक्षा की है। गोरखों से पूर्व गढ़वाल सुशासित देश था ऐसा यहां के निवासी कहते हैं किन्तु अँगरेजों के जमाने में वह उपेक्षित राज्य रहा है, ऐसा हम मानते हैं। इस जमाने में वहां के नरेशों ने प्रजा की भलाई की अपेक्षा अपनी विलासिता की चिन्ता अधिक की है। सुशासन के स्थान पर अपने नाम का शहर बसाना यहां के वर्तमान नरेशों की खास दिलचस्पी का विषय रहा है। अँगरेजों के संरक्षण में टिहरी में क्रमशः प्रतापशाह, कीर्तिशाह व नरेन्द्रशाह नाम के नरेश हुए हैं और इन तीनों ने ही अपने नाम से प्रतापनगर, कीर्तिनगर व नरेन्द्रनगर नाम के कसबे बसाये हैं। जानकार लोग जानते हैं कि जनता का रुपया बरबाद करने के बावजूद प्रतापनगर और कीर्तिनगर आज भी उजाड़ स्थान हैं। तीसरा नरेन्द्रनगर आजकल राज्य का केन्द्र-स्थान है फिर भी वहां न बाजार है और न प्रजा के ही आराम का कोई स्थान। हां, राजा साहब की कोठी अपनी शान की निराली है। टिहरी के वर्तमान नरेश मानवेन्द्रशाह केवल दो वर्ष से गद्दी पर हैं, उनके पिता नरेन्द्रशाह अभी जीवित हैं किन्तु प्रजामण्डल के आन्दोलन को परोक्ष रूप से दबाने के लिए उन्होंने राजगद्दी छोड़ दी है यद्यपि पुत्र से नाम से शासक वे स्वयं ही हैं। वर्तमान नरेश गद्दीधारी नरेश अवश्य हैं, समझदार भी हैं किन्तु वे करते वही कुछ हैं जो उनके पिता अर्थात् बड़े राजा और सलाहकार उन्हें समझाते हैं। इन सलाहकारों में पहले गढ़वाली अधिक थे किन्तु सन् १९३६ में टिहरी गढ़वाल की शासन-व्यवस्था युक्तप्रान्त की सरकार के हाथों से निकलकर पंजाब की पहाड़ी रियासतों के पोलीटिकल एजेण्ट के हाथ में चली गई। इस एजेण्ट का केन्द्र-स्थान लाहौर या शिमला था। परिणामस्वरूप टिहरी दरबार के सलाहकारों में उन पंजाबियों की भरती शुरू हुई जो दकियानूसी व प्रतिगामी विचारों के थे। पंजाब में उन्हें जनता का सम्पर्क प्राप्त न था। अतः टिहरी में आकर भी वे जनहित की नहीं मध्ययुग की हुकूमत चाहते थे। यदि यह बीसवीं सदी न होती तो टिहरी के इन मध्ययुगी सलाहकारों की बन आती किन्तु उन्हें लोहा लेना पड़ा वहां के प्रजामण्डल के कार्यकर्त्ताओं से, जिनका हृदय जनहित में आप्लावित था और जो अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जान की बाजी लगाने को सदा तैयार रहते हैं।

हम हरद्वार में बैठकर यह लेख लिख रहे हैं। यहां हमारी कुटिया से सामने के एक पहाड़ी टीले पर कुछ भव्य भवन दिखलाई देते हैं। टिहरी की वर्तमान राजधानी नरेन्द्रनगर यही है. यहां से टिहरी को जो राज्यपथ गया है उसमें चम्बा नाम का एक शिखर मिलता है। इस शिखर के निकटवर्ती जौल गांव में श्री देव सुमन का जन्म हुआ था। टिहरी राज्य प्रजामण्डल की स्थापना का श्रेय श्री देव सुमन को प्राप्त था। श्री देव सुमन को अपने राजा के प्रति श्रद्धा थी किन्तु वे रियासत में जनतंत्र की स्थापना चाहते थे। राजा और उनकी कार्यशैली में यह मतभेद भयंकर रूप में प्रकट हुआ। प्रजामण्डल के पान्थरी, रतूड़ी, नेगी व डोभाल आदि कार्यकर्त्ताओं ने इस आन्दोलन में श्री सुमन का साथ दिया। हमें सन् १९४२ के आन्दोलन में इन सब साथियों के साथ जेल में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है और हम जानते हैं कि किस प्रकार इन सबकी कर्त्तव्यनिष्ठा ने टिहरी के प्रजामण्डल को तरक्की दी है किन्तु इन सबमें श्री देव सुमन प्रमुख रहे हैं। अतः उन्हें टिहरी जेल में रियासत के कर्मचारियों द्वारा मौत का मुंह चूमने का भी अवसर मिला है। श्री देव सुमन के उस बलिदान ने, ब्राह्मण की उस हाय ने. आज टिहरी दरबार को नेस्तनाबूद किया है, यह हम खुलेतौर पर स्वीकार करते हैं। टिहरी के महाराज व उनके साथियों ने यह समझा था कि श्री देवसुमन की हत्या से टिहरी का जन-आन्दोलन समाप्त हो जायेगा किन्तु हुआ उलटा ही। श्री देव सुमन का स्थान एक अन्य कृशकाय कार्यकर्त्ता परिपूर्णानन्द पैन्यूली ने लिया। श्री सुमन अधिकतर प्रचारक थे और रियासत से बाहर रहकर कार्य करते थे, पैन्यूली ठोस कार्यकर्त्ता हैं और रियासत में रहकर और सब आपत्तियां झेलकर कार्य करते हैं। यही कारण है कि वे आज पांच लाख प्रजाजनों के हृदय सम्राट् हैं और उनकी एक पुकार पर टिहरी के शासक चौंकते हैं और जनता आगे बढ़ती है। श्री देव सुमन की हत्या सन् १९४४ के जुलाई मास में हुई थी। अगले तीन वर्ष प्रजामण्डल के कार्यकर्त्ता राज्य के अधिकारियों से समझौता चाहते रहे, उनकी इच्छा थी कि देश की अन्य रियासतों की भांति महाराज टिहरी में भी जनतंत्र शासन कायम करें। इसके लिए अनेक बार बातचीत भी हुई किन्तु अपने सलाहकारों और बड़े राजा की सलाह से महाराज इस मांग के लिए तैयार न हुए। परिणाम

—शेष पृष्ठ १८ पर

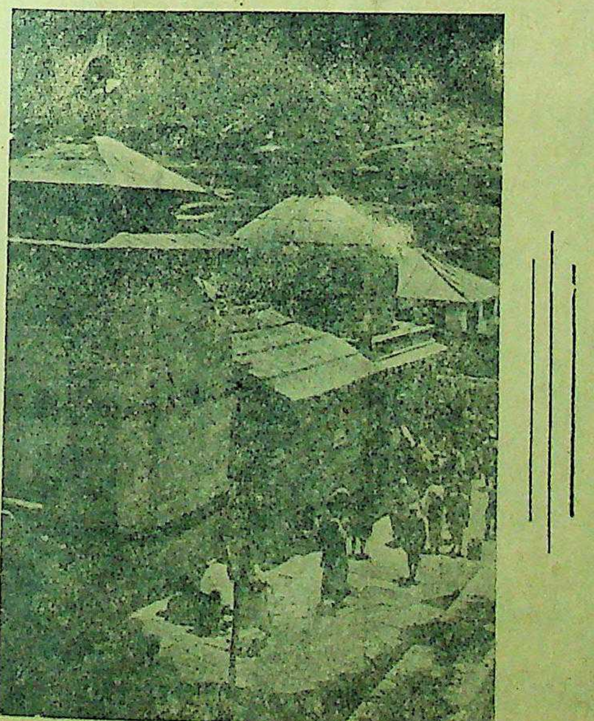

पर्वतीय प्रदेश में सुप्रसिद्ध बदरीनाथ के विशाल और पवित्र मंदिर का एक दृश्य।

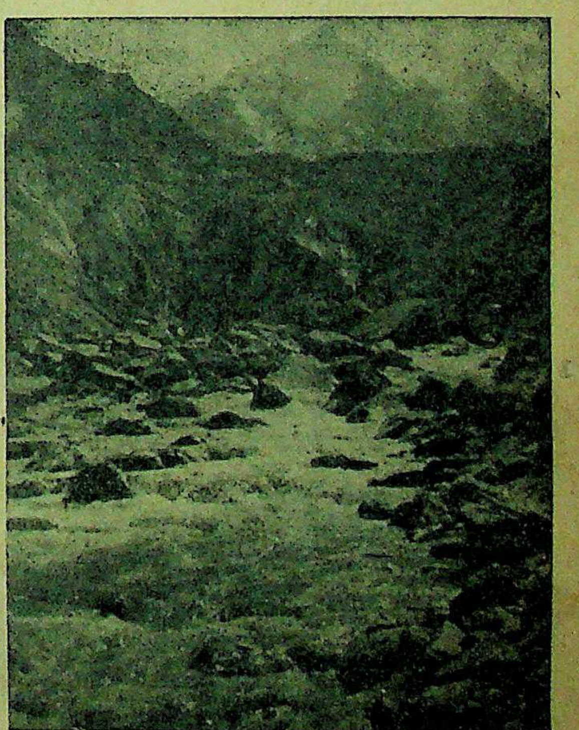

गढ़वाल जिले में पर्वतीय प्रदेश का प्रमुख स्थान गोमुख का एक दृश्य जहाँ से गंगाजी निकली हैं।

क्या राजनीतिक ही सब कुछ हैं ?

पहले विद्या और चरित्र का आदर होता था और आज !

लेखक, प्रोफेसर अवधबिहारी पांडेय, एम० ए०
(इतिहास-विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय)

गत वर्ष काशी में होनेवाले निराला-जयन्ती का उद्घाटन करते हुए आचार्य नरेन्द्रदेव जी ने कहा था कि बिना राजनीतिज्ञों के सांस्कृतिक और साहित्यिक जीवन में भी आगे बढ़ना हमारे लिए कठिन हो रहा है, यह बड़े आश्चर्य की बात है। इसमें सन्देह नहीं कि आज के युग में राजनीति और राजनीतिज्ञ ही सब कुछ हैं। जन, संस्कृति, साहित्य और समाज में उनका सहयोग ही सफलता का सूचक समझा जाता है। इस लेख में राजनीतिज्ञों की तथा जनता के हित के लिए होनेवाले कार्यों में उनकी उपयोगिता का वर्णन किया गया है और जो स्वयं एक प्रमुख प्रश्न है। लेख सामयिक और विचारणीय है।

एक समय था जब समाज में सबसे अधिक आदर विद्या और चरित्र की शुद्धता को मिला करता था। उस समय यदि कोई शासक अपने मित्रराष्ट्र के अधिपति से एक दार्शनिक भेजने की प्रार्थना करता था तो वह इसे विद्या का अपमान समझकर कह देता था कि मेरे देश में दार्शनिक बेचने की प्रथा नहीं है। यूनान के महान् विजेता सिकन्दर ने जब एक भारतीय विद्वान् और महात्मा से प्रभावित होकर उनके दर्शन किये और उन्हें कुछ पारितोषिक देने की इच्छा प्रगट की तो उस विद्वान् ने केवल यही कहा कि सूर्य के प्रकाश को निर्बाध रूप से आने दो। अर्थात् यहां से हट जाओ।

उस समय हम ज्ञानी उसे मानते थे जो संसार के भोग-विलासों से दूर रहकर आत्मा तथा परमात्मा के स्वरूप पर विचार करने का उद्योग करता था। जो इसमें कुछ सफलता पा लेते थे वे ही समाज में पूज्य होते थे। वे धूम-धाम कर लोगों को उचित शिक्षा देते थे अथवा किसी विशेष स्थान पर रहकर वहां आये हुए लोगों को ज्ञानोपार्जन में सहायता करते थे।

परन्तु अब स्थिति भिन्न है। आजकल समाज का मापदण्ड आतंकवाद है। अप्रसन्न होने पर जो अधिक से अधिक क्षति पहुँचा सके वही सबसे अधिक प्रतिष्ठा के योग्य है। सरकारी कर्मचारियों में शिक्षा के डाइरेक्टर की अपेक्षा पुलिस वर्दी से सुसज्जित और पिस्तौल से लैस दारोगा का प्रभाव अधिक है। साधारण आदमी (स्वतंत्रता मिलने के बाद भी) जितनी आवभगत अपने थाने के दारोगा की करता है उतनी अपने जिले के शिक्षा के इंस्पेक्टर की नहीं करता।

साधारण आदमियों को छोड़कर यदि हम पढ़े-लिखे समझदार कहे जानेवाले वर्ग की ओर ध्यान दें तो वस्तुस्थिति यहां पर भी प्रायः वैसी ही है। एक विद्या के केन्द्र में एक नेता ने वहां के अध्यापकों के लिये विद्यार्थियों की सभा में कई अपमानजनक बातें कहीं। उस पर दो चार दिन अध्यापक-मंडली में कुछ चर्चा रही परन्तु जब वहां एक विशिष्ट समारोह का व्यवधान किया गया तो, सम्मान और प्रतिष्ठा इसी में समझी गई कि उसी नेता को विशेष उपाधि से विभूषित किया जाय और उन्हीं से भाषण देने की प्रार्थना की जाय। अपमान करनेवाले की ऐसी आवभगत करने का कारण क्या था? —— समाज में राजनीतिज्ञ का बोलबाला।

इससे भी बढ़कर उदाहरण मिल सकते हैं। एक गवर्नर महोदय सन् १९४२ में काफी बदनाम हुए कि उन्होंने ब्रिटिश-साम्राज्य की रक्षा करने के कर्त्तव्य-पालन में भारतीय त्यागियों पर बड़े जुल्म ढाये। परन्तु एक विश्वविद्यालय में उनको विशेष उपाधि देकर गौरव प्राप्त करने का उपक्रम किया गया।

यह भी हो सकता है कि जब सम्मान के लिये डिग्रियां बांटी जाने लगें तो किसी विशेष घराने के व्यक्ति को डिग्री दे दी जाय परन्तु उसी प्रान्त के शिक्षा-मंत्री को जिसने सरस्वती की कुछ सेवा भी की हो और करते रहने का अभ्यस्त हो बिलकुल भुला दिया जाय और उसे अपने विभाग के लोगों से अपने बैठने के स्थान का पता लगाना पड़े।

आजकल जितनी प्रान्तीय अथवा अखिल भारतीय सांस्कृतिक अथवा वैज्ञानिक सभाएँ होती हैं उनके ऊपर दृष्टि डाली जाय तो वहां पर भी राजनीतिज्ञ का बोलबाला नजर आयेगा। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन को ही लीजिए। न मालुम कितनी बार उसके सभापति का आसन राजनीतिज्ञों द्वारा सुशोभित हुआ है। अभी हाल में जो वार्षिक समारोह हुआ था उसमें सम्मिलित होनेवालों की सूची में सबसे अधिक सम्मान के स्थान राजनीतिज्ञों को ही दिये गये थे। इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस का आदि भाषण एक राजनीतिज्ञ ने ही दिया। अखिल भारतीय विश्वविद्यालय-अध्यापक-मंडल के सभापति के स्थान पर भारत सरकार के एक मंत्री आसीन हैं। विज्ञान परिषद् की कितनी ही सभाओं में भी राष्ट्र के कई राजनीतिक नेता सभापति का आसन सुशोभित कर चुके हैं। इन नेताओं को यह सम्मान इसलिये नहीं दिया गया कि वे संबंधित विषयों के बड़े पंडित हैं वरन् इसलिये कि उनके नाम से आकृष्ट होकर कुछ अधिक सदस्य और दर्शकगण आवेंगे और अखबार में प्रचार की धूम हो जायेगी। कभी-कभी यह भावना भी रहती है कि इस प्रकार सम्मानित किये जाने पर ही वे हमारी आर्थिक कठिनाइयों की ओर ध्यान देंगे और उचित सहायता देने की इच्छा प्रगट करेंगे।

विवाह आदि में पहले सबसे अधिक प्रतिष्ठा वर और उसके पिता की होती थी। फिर कुछ दिनों के लिये उनमें कवितापाठ करनेवालों का महत्त्व बढ़ा। परन्तु इस प्रथा का चलन हो ही रहा था कि राजनीतिज्ञों ने इस नाके पर भी अपना अधिकार जमा लिया। अब जिस विवाह में कोई राजनीतिक नेता पहुँच जाता है उस बरात का प्रतिष्ठा की दृष्टि से वही दूल्हा हो जाता है।

सुना है कि कुछ वर्गों में अब यह बात चल रही है कि समाचारपत्रों का नियंत्रण पूरे तौर से राजनीतिक के हाथ में रहना चाहिए। मौका लगने पर विश्वविद्यालयों में भी राजनीतिज्ञ को ऊँची से ऊँची कुर्सी पर अधिकार करना चाहिए। यहां तक तो बहुत अधिक चिन्ता की बात नहीं थी। परन्तु सबसे ताज़ी खबर यह है कि अब राजनीतिक प्रकाशन का भार भी उठाने जा रहा है। वह बड़े-बड़े प्रेस खोलेगा। युक्तप्रान्त में सम्भवतः स्कूली किताबें भी राजनीतिज्ञ ही लिखेंगे अथवा लिखवायेंगे और उनके सिवाय दूसरे की किताबों को पढ़ाने की आज्ञा नहीं रहेगी।

जीवन की तो बात छोड़िये, मरने पर भी जिसकी अर्थी के साथ राजनीतिज्ञ चला जाय अथवा जिसकी मृत्यु पर कई शोक संवाद भेज दे उसके घरवाले अपने को कृतार्थ और गौरवान्वित अनुभव करते हैं। शायद वह समझते हैं कि इनकी सिफारिश से भगवान् मृतात्मा को अवश्य सद्गति प्रदान करेगा।

राजनीतिक भी सभी एक ही प्रकार के नहीं होते। कुछ कोरे राजनीतिज्ञ होते हैं जिन्हें केवल जनता-जनार्दन और अपने मस्तिष्क का भरोसा रहता है और जो भगवान् के अस्तित्व को भी मानने के लिये तैयार नहीं हैं। यह दूसरी बात है कि विशेष संकट के अवसर पर वह धोखे से, संभवतः संस्कारों के कुपरिणाम-स्वरूप यह कह जायँ कि 'मैं प्रार्थना करता हूं कि अमुक संकट दूर हो जाय।' आजकल इसी प्रकार के राजनीतिज्ञ अधिक पाये जाते हैं।

दूसरा वर्ग उन राजनीतिज्ञों का है जो अपनी सभी कुटिलताओं और षड्यंत्रों का पूरा श्रेय भगवान् को देने के लिये उद्यत रहते हैं। वे कुछ भी करें परन्तु उसके औचित्य पर अटल विश्वास रखते हुए वे दृढ़ता से कह सकते हैं कि भगवान् इन्हीं के साथ हैं और इसलिये विजय उन्हीं के हाथ रहेगी। कभी-कभी दो विरोधी राजनीतिज्ञ विरोधी बातों में भगवान् की दुहाई देते हैं। परन्तु राजनीतिज्ञों का भगवान् भी कुछ राजनीतिक दांवपेंच सीखा हुआ प्रतीत होता है क्योंकि वह अर्जुन और हनुमान की भांति दोनों की प्रतिष्ठा न रखकर कभी इसे और कभी उसे गिराता और उठाता रहता है।

वंदनीय होते हुए भी महात्मा गांधी का उदाहरण भी लिया जा सकता है। उन्होंने **पुराने** पैगम्बरों की भांति **ईश्वर से** सम्पर्क स्थापित कर लिया है। सभी कठिन अवसरों पर जब उनकी बुद्धि किसी कार्य-विशेष के पक्ष में अपने को ईश्वर की इच्छा पर छोड़ देते हैं और जैसा उसका आदेश होता है वैसा ही करते हैं। मि० जिन्ना ने इसका अकसर मजाक उड़ाया है। परन्तु गांधी जी न किसी के विरोध अथवा मजाक से खिन्न होते हैं न किसी की प्रशंसा से खिल उठते हैं। अभी हाल में ही उन्होंने साम्प्रदायिक सद्भावना के लिये अपने प्राणों की बाजी लगा दी थी। अनुयायियों पर उसका तुरन्त प्रभाव पड़ा।

शेष पृष्ठ १४ पर देखि

महात्मा गांधी प्रार्थना के लिए जाते हुए मीरा बहन तथा अपने दल के अन्य कार्यकर्ताओं के साथ।

लेडी माउण्टबेटेन बम्बई में तसवीर बनवाने के लिए खड़ी

महापंडित राहुल जी से एक भेंट

कम्यूनिज्म, कम्यूनिष्ट पार्टी तथा सोवियट रूस के सम्बन्ध में कुछ प्रश्नोत्तर

लेखक, श्री पुरुषोत्तमदास टंडन बी० ए०, एल-एल० बी० (पत्रकार)

महापंडित राहुल सांकृत्यायन भारत ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वान हैं। पत्रकार श्रीटंडन ने पिछले दिनों राहुलजी से विशेषरूप से एक भेंट की थी और राजनीतिक पहलुओं पर कुछ प्रश्न भी किये थे। राहुलजी ने उन प्रश्नों के उत्तर भी दिये थे। उसी प्रश्नोत्तर को इस लेख में अंकित किया गया है। लेख सामयिक, रोचक और पठनीय है।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति।

सर्दी पड़ रही थी और प्रातः आसमान साफ था। मुझे आशा थी कि महापण्डित राहुल सांकृत्यायन अपने मेजवान राय रामचरण अग्रवाल के चौड़े गीचे में धूप-सेवन करते मिलेंगे, पर मैंने उन्हें एक कमरे के अन्दर ऊनी चादर लपेटे हुए अपनी मेज पर कुछ लिखते हुए पाया। मैंने उनका अभिवादन किया और उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक प्रत्याभिवादन किया। उनको मालूम था कि मैं वहां एक पत्रकार-क्रिया करने गया था।

राहुल जी का जन्म आजमगढ़ जिले के एक गांव में ९ अप्रेल सन् १८९३ को हुआ। घर में उनका नाम केदारनाथ पाण्डेय था। बहुतेरे भारतीयों की तरह वह भी जल्द ही विवाह के जाल में फंस गये। जब उनकी शादी हुई थी तो वह केवल तेरह वर्ष के थे। चौदह साल की उम्र में उनकी माता का देहान्त हुआ और वास्तविक घटनामय जीवन इसके बाद शुरू हुआ। बचपन ही से उनकी रुचि र-सपाटे की ओर थी और भारत के ाहित्य रत्नाकर में गहरा गोता लगाने ी उनकी उत्कट लालसा थी।

मैंने राहुल जी के साथ इस देश में ामपक्षियों की एकता की समस्या पर ातचीत की और उनसे पूछा कि क्या नके आपस में मिलकर संयुक्त मोर्चा नाने की संभावना है? राहुलजी ने हा कि वह हताश नहीं हुए हैं। उनका क्य अवश्यम्भावी है। वह बोले, "कोई केली पार्टी (संगठन) हिन्दुस्तान में तनी शक्तिशाली नहीं है कि देश में समाज-ाद की स्थापना कर सके। इसलिये ारत में वामपक्षियों का एकत्रीकरण त्यन्त आवश्यक है। विगत अनक्य की ीव्रता को देखकर भी वाम एकत्री-रण के विषय में मैं आशाहीन नहीं हूँ। ामपक्षी दल जब मिलकर काम करेंगे उनके अविश्वास तिरोहित हो जायेंगे।"

राहुल जी एक गम्भीर विद्वान् हैं ीर लगभग तीन दर्जन पुस्तकों के लेखक । पढ़ना, लिखना और यात्रा करना नका पुराना शौक है। अपनी यात्रा-ियता के आवेश में उन्होंने कच्ची म्र में ही घर छोड़ दिया, अनेक दिक्कतें ीं, कड़ी मिहनत की, पर कभी निराश ीं हुए। उनके पास कल्पना, हिम्मत, श्चय और लगन थी। जवानी में ही ुल जी ने अपने परिवार से सम्बन्ध-छेद कर लिया। अपने घर से वह दूर रहे। उनके तीन भाई थे, शायद वह खेती करते हैं। अपने ास-स्थान में वह १९४३ में गये भी थे। सन् १९२२ में वह बौद्ध हुए। नेपाल तिब्बत गये । उन्होंने सां-बाप सन् १९११ में छोड़ा। उन्होंने मिडिल स्कूल की परीक्षा आजमगढ़ जिले की एक पाठशाला से पास की। सन् १९१३ में उन्होंने बनारस में संस्कृत पढ़ा। कहा जाता है कि आरम्भ में वे दुर्गा देवी के अनन्य उपासक थे और उनका विश्वास था कि सच्चे भक्तों को उनका दर्शन मिल सकता है। इस कारण सुना जाता है कि उन्होंने सात दिन तक तपस्या और उपवास किया और देवी के साक्षात्कार की प्रतीक्षा की। अन्त में वह निराश हो गये और आत्म-हत्या करनी चाही, पर उनके मित्रों ने उन्हें रोक लिया। वैज्ञानिक विद्वान् तथा यथार्थ मार्क्ससवादी राहुल को अब अपनी जवानी के इस बेतुके दुःस्साहस पर स्वयं हँसी आती होगी।

अपने जीवन में राहुल जी ने आर्य-समाज तथा बौद्ध आदि कई मतों के साथ प्रेमाभिनय किया, पर अन्त में पड़े वह मार्क्सवाद के प्रणयपाश में। यद्यपि वे भारतीय कम्यूनिस्टपर्टी के सदस्य हैं, (परन्तु अब नहीं हैं—सं० दे०) पर उनका मार्क्सवाद के प्रति दृष्टिकोण उस पार्टी के पादड़ियों का सा नहीं है। वे मार्क्सवाद के गम्भीर विद्वान् हैं, एक रूसी महिला से उन्होंने विवाह किया है, रूस में कई वर्ष बिताये हैं, वहां की संस्कृति का अध्ययन किया है, वहां के इतिहास को गहराई तक समझा है। एक रूसी विश्व-विद्यालय में अध्यापक का काम किया. फिर भी उन्हें "रूस का खब्त" नहीं है। वह रूस के बारे में बड़ी अच्छी राय रखते हैं, पर उस महान् राष्ट्र की कमियों और दोषों के प्रति आंख बन्द नहीं करते।

"क्या आपकी राय में रूस में कोई ऐसी चीज है कि जिससे आपका मतभेद है?" मैंने पूछा।

भारतीय साम्यवादियों की तरह उन्होंने मुझे कोई पका-पकाया उत्तर नहीं दिया। उन्होंने थोड़ा सोचा और कहा—"रूस को, दूसरों के प्रति काफी अविश्वास है, शायद, कुछ ज़रूरत से ज़्यादा, इसके लिये वह अपनी सफाई ज़रूर देता है, पर मैं उससे सहमत नहीं हूँ।"

ऐसे उत्तर की आशा भारतीय साम्य-वादी दल के किसी सदस्य से नहीं की जा सकती। जब आप राहुल जी के साथ बातचीत करेंगे तो आपको वैसा अनुभव नहीं होगा जैसा कि दूसरे भारतीय साम्य-वादियों के साथ बात करते समय होता है। अन्य साम्यवादियों के साथ बात करते समय ऐसा अनुभव होता है कि आप रूपधारी मशीन के साथ बोल रहे हैं जो पके पकाये उत्तर उगलता है। राहुल जी तर्कसंगत व्यक्ति हैं और बहस में विरोधी पक्ष की युक्तियों का उन पर असर पड़ता है। जब वे समझते हैं कि दूसरे सही बात कह रहे हैं तो वह उसे मानने को तैयार रहते हैं।

मैंने राहुल जी से यह भी पूछा कि क्या रूस में सरकार की खुली और साफ आलोचना की जा सकती है? उन्होंने कहा, "जब कानून बन जाते हैं तो उनकी किसी तरह की आलोचना नहीं होने दी जाती, जब तक कि कोई प्रस्ताव किसी अंश में या किसी मंजिल पर असफल न हो रहा हो। पर किसी भी कानून के बनने के पूर्व उस पर बहस की जाती है और उसकी आलोचना का स्वागत होता है।"

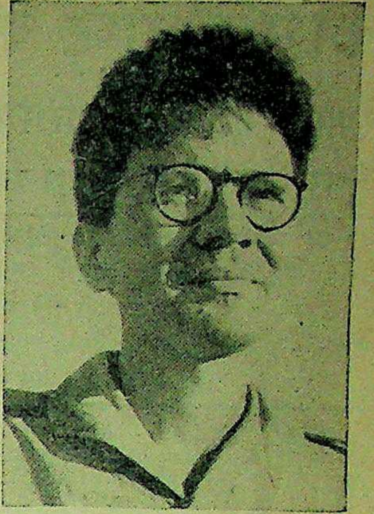

कम्यूनिस्ट-पार्टी के प्रधान मन्त्री कामरेड पूरनचन्द्र जोशी।

मैंने पूछा—"क्या आप मुझे बतला सकते हैं कि अपनी सुसंगठित पार्टी और श्रमशील होने के अनन्तर भी कम्यूनिस्ट लोग इस मुल्क में लोकप्रिय क्यों नहीं हैं?"

राहुलजी ने कहा—"इस पर कम्यूनिस्टों को गौर करना चाहिए कि मध्य-वर्गीय बुद्धिवादियों के विशाल अधिकांश की उनके प्रति काफी सहानुभूति क्यों नहीं है?"

"क्या आपकी राय में नेता जी सुभाष-चन्द्र बोस को गद्दार कहकर बदनाम करना कम्यूनिस्ट पार्टी के लिये उचित था?" मैंने पूछा। यह बातचीत उस समय की है जब उन्होंने कम्यूनिस्ट पार्टी से इस्तीफा नहीं दिया था।

राहुल जी ने उत्तर दिया—"पार्टी का नेता जी को देशद्रोही कहकर अपमानित करने की नीति गलत थी, एक तो इस कारण कि उनका सच्चा इरादा कभी जाना नहीं जा सकता था, और दूसरे इसलिये कि इस देश की जनता उनके प्रति अत्यन्त श्रद्धा और प्रेम रखती थी।" यह आश्चर्य की बात है कि पार्टी के सदस्य होते हुए भी राहुलजी ने पार्टी की नीति की निन्दा की। मैंने उनसे कहा कि हिन्दुस्तान में कोई कम्यूनिस्ट खुले तौर पर पार्टी की आलोचना नहीं कर सकता है। अगर जोशी भी सबके सामने पार्टी की आलोचना करें तो फौरन उनको निकाल दिया जायेगा। सम्भवतः जोशी को निकालने के लिये जोशी स्वयं प्रस्ताव पेश करेंगे। मेरे सवाल का जो उत्तर राहुल जी ने दिया था वह वास्तव में विस्मयजनक था।

जब हमारी यह बातचीत चल रही थी तो मुझे एक हास्यास्पद अनुभव हुआ। कमरे के किसी कोने से कोई महाशय एकाएक उत्तेजित होकर उछल पड़े और बोले—"आप राहुलजी से इस बेरहमी के साथ क्यों पूछते चले जा रहे हैं? आप कम्यूनिस्टों की आलोचना क्यों कर रहे हैं? कम्यूनिज्म का ऐसा विरोध करना अच्छा नहीं ही है।" इनको ऐसा लगा कि जैसे एक मुल्ला से मजहब पर चोट कराई जा रही हो और एक मौलवी को मस्जिद तोड़ने के लिये बाध्य किया जा रहा हो। पर राहुल जी ने उनसे कहा कि उनको परेशान नहीं होना चाहिए, और

शेष पृष्ठ १४ पर देखिए

अन्तर-ध्वनि

लेखक, प्रोफेसर चन्द्रप्रकाश वर्मा, एम० ए०

मैं हृदय के साथ लड़ना जानता हूँ।
हर लहर देती मुझे जब है चुनौती।
जब जलधि-जलकण पुकारें—प्रलय होती।
जब कहे जलनिधि कि अब मर्याद कैसी,
नाश के क्षण में सृजन की याद कैसी?
क्रुद्ध नभ जब किटकिटा कर दांत कड़के,
सर्पिणी-सी जब तड़ित हर ओर तड़के।
जब जिये उन्माद का आतंक केवल,
जब प्रकृति केवल करे उत्पात-हलचल।
जब कहे मन—लौट यह जल-पथ न तेरा,
यह तरी संहार है, जय-रथ न तेरा।
तब तरी को तीर से, हँसकर, हटाकर,
मैं प्रवासी पाल अपना तानता हूँ।
मैं हृदय के साथ लड़ना जानता हूँ।
जब विपिन में कोकिला मधु-गीत गाए,
जब विहग-दल प्यार से मंगल सुनाए।
जब कहे लतिका—विटप मुझको शरण दे,
मैं लिपट जाऊँ अभय, वे दृढ़ चरण दे।
जब कहे कलिक उभर—रस-भार भारी,
हाय रे सौभाग्य अलि का प्यार भारी।
फूल से लदकर कहे हर डाल प्यारी—
मैं झुकी मुझको हुए गलहार भारी।
जब कहे मन—आज तू है और नन्दन,
कौन-सा क्षण है न जो अभिसार का क्षण!
तब उदासी से भरा मैं बोल उठता—
पंथ मैं पतझार का पहचानता हूँ।
मैं हृदय के साथ लड़ना जानता हूँ।

काश्मीर राष्ट्र का स्वर्ग क्यों है?

रियासत को भीतरी परिस्थिति की एक दयनीय झाँको

लेखक, श्री त्रिलोकीनारायण दीक्षित, एम० ए०, एल-एल० बी०

काश्मीर पर आज संकठ आया हुआ है। भारत में ही नहीं संसार में यह एक प्रधान सौंदर्य-भूमि समझी जाती है यहाँ तक कि पृथ्वी का स्वर्ग भी इसे कहा जाता है। दुर्भाग्य से उसी स्वर्ग को हड़प लेने के लिये शत्रुओं की आँख लगी हुई है। इस लेख में विद्वान लेखक ने काश्मीर की आंतरिक स्थिति का थोड़े में और जानकारी से पूर्ण वर्णन किया है। लेख पठनीय तथा रोचक है।

काश्मीर प्राकृतिक सौन्दर्य में अद्वितीय प्रदेश है। संस्कृत एवं फारसी के कवियों ने उसकी सुन्दरता की उपमा स्वर्ग के सौन्दर्य से दी है। स्वास्थ्य सुधारने एवं भ्रमणार्थ जानेवाले यात्रियों के लिये भी अत्यन्त मोहक है। परन्तु वस्तुतः काश्मीर निकट से देखने पर वैसा नहीं है जैसा दूर से देखने पर प्रतीत होता है। स्वर्ग के दृश्यों के तुल्य रमणीक प्रदेश काश्मीर की स्थिति आज अत्यन्त शोचनीय है। निर्धनता के अभिशाप से संतप्त, अर्थ के अभाव से पीड़ित चिर उपेक्षित, हृदयवानों की सहानुभूति की आकांक्षी काश्मीर की जनता उन्नत मार्ग पर अग्रसर होने के लिए इच्छा रखते हुए भी साधनों एवं राज्य-प्रोत्साहन के अभाव से, निःसहाय है। उन्नति की आकांक्षा में हृदय का भार लिए वहां की जनता उठती है, परन्तु फिर भी अवनति की सीढ़ियों से लुढ़कती हुई विनाश की ओर अग्रसर हो जाती है।

काश्मीर कृषि प्रधान प्रदेश है। वहां की ९०% जनता खेती के सहारे जीवन-निर्वाह करती है। पूरी रियासत का क्षेत्रफल ८४ हजार वर्ग है परन्तु फिर भी अधिकतर भूमि कँकरीली और कृषि के लिए महत्त्वहीन है। नीचे काश्मीर के विभिन्न प्रान्तों के क्षेत्रफल एवं कृषि उपयोगी भूमि का चार्ट दिया जाता है। देखने से पता लगता है कि कितनी कम भूमि में वहां की ९०% जनता खेती करती है और अनुपात में उसे क्या प्राप्त होता है--

प्रान्त	क्षेत्रफल (लाख एकड़ में)	कृषि उपयोगी
काश्मीर	१७·७८	९·४९
जम्मू	४९·८९	११·३२
सरहदी इलाके	६८	०·७७

कृषि उपयोगी भूमि का पूर्ण भाग वहां के कृषकों के हाथ में नहीं है। जमींदार, ठेकेदार, शहरों के निवासी, बड़े-बड़े धनी व्यक्तियों की सम्पत्ति बनी हुई काश्मीर की उपर्युक्त कृषि उपयोगी भूमि कृषकों को बहुत ऊँचे दर से मिलती है। काश्मीर की २.९१,६८९ एकड़, जम्मू की ३,६२,२७६ एकड़ तथा सरहदी इलाके की ४६,१४५ एकड़ भूमि राज्य की ओर से जागीरदार और माफीदारों को प्राप्त है। काश्मीर में पूंच एक छोटी-सी रियासत है जिसका क्षेत्रफल १,६२७ वर्गमील आबादी ४२,१,९३९ और सालाना मालगुजारी ९,८४,३५७, है जिसका ४०% राजा को मिलता है। शेष ६० में राजकर्मचारी, तथा अन्य शोषकों का ३०% भाग रहता है और अभागी जनता को केवल ३०% में जीवनयापन करना पड़ता है। जागीरदारों के आधिपत्य में रहनेवाली जनता की दशा और भी शोचनीय है। परन्तु अभी तक महाराज सर हरीसिंह इस ओर से उदासीन रहे हैं।

देश में लगे हुए कर अत्यधिक हैं। कुछ वस्तुओं पर लगी हुई चुगी, उस वस्तु की मूल्य से ५० अधिक है। फल यह होता है कि बाजार में काश्मीरी जनता-निर्मित वस्तुओं की खपत नहीं होती और उत्पादन गिरता जाता है। राज्य के बड़े कर्मचारी इस परिस्थिति से लाभ उठाते हैं। गरीब किसानों का सामान गिरे हुए दामों में लेकर उसे वे अपने दबाव से बिना चुंगी अदा किए निकाल ले जाते हैं और स्वयं तिजारत करते हैं। इन्हीं दोषों को देखकर वहां की धारा सभा में एक प्रस्ताव हुआ कि २५) से कम लागत की वस्तु पर वहां के किसान से चुंगी न ली जाय। प्रस्ताव स्वीकृत होकर नियम भी बन गया पर चुंगी के कर्मचारी किसानों से अधिक सयाने होते हैं। फलतः २५) की चीज का दाम वे ५०) बड़ी सरलता से लगा लेते हैं।

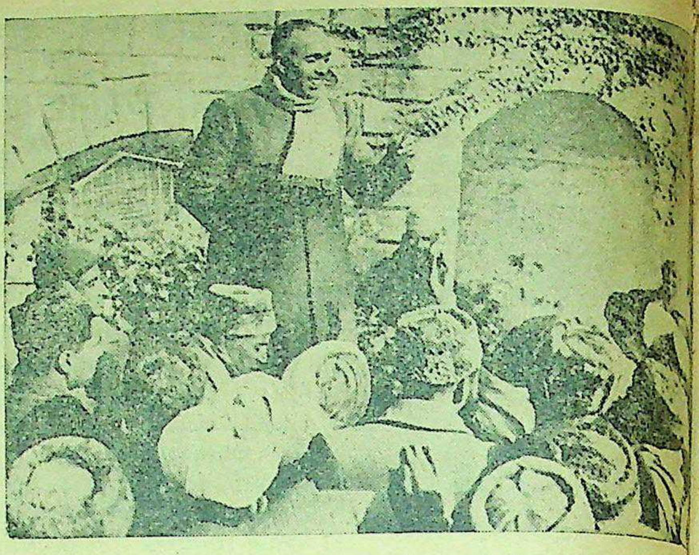

काश्मीर के नेता शेख अब्दुल्ला जम्मू के किसानों के प्रतिनिधि मंडल को उनकी परेशानी दूर करने के लिये आश्वासन दे रहे हैं।

काश्मीर के धन्धों और उद्योगों का अभी तक पतन ही रहा है। काश्मीर की शाल इंडस्ट्री की बड़ी दुर्दशा और अवनति रही है। वहां की सरकार को इस ओर तनिक भी रुचि नहीं रही है। इन्डस्ट्री को जब भी जो कुछ भी रुपया आपत्ति-काल में रियासत से मिला वह सूद पर। १९२८ ई० इस इन्डस्ट्री के लिए बड़ा आपत्तिकाल था। इसी प्रकार उसे रियासत से १९४० ई० में १००,०००) उधार लेना पड़ा था। १९४१ ई० में रियासत से बाहर जानेवाले सामान का दाम १६७४३७८५) था और रियासत में बाहर से २४६३५१०४) का सामान आया। आश्चर्य का विषय है काश्मीर में ऊन, ऊनी वस्त्र, तेल, तरकारी, और फल, मेवे तक बाहर से आते हैं। १९४० में रियासत के अन्दर ३९१२६४) के फल, और ९५०४२३) की ऊन आई थी। बाहरी प्रदेशों से काश्मीर में मेवे, फल तथा ऊन का आना बड़े आश्चर्य का विषय है। यदि इन वस्तुओं के उत्पादन एवं बिक्री का सुचारु प्रबन्ध किया जाय तो कोई भी आवश्यकता नहीं है कि काश्मीर को अन्य प्रदेशों का मुंह ताकना पड़े।

काश्मीर की ३६,४६,२४३ जनसंख्या में से केवल १,२३,८८५ व्यक्ति साक्षर हैं। इन ३·४% पठित व्य में सभी विद्वान् नहीं हैं। राज्य में ९०७८ अर्थात् ५% नारियों को ज्ञान है। वहां की सरकार शिक्षा पर वार्षिक २४६६०००) खर्च है। रियासत में ८४२० गांव और कस्बे हैं। रियासत में पुरुषों एवं की शिक्षा-व्यवस्था का अनुमान लिखित आंकड़े से हो सकेगा—

	जनसंख्या	प्रारम्भिक स्कूल	हाई
पुरुष	१,७३,९७,२००	९४३	१२
स्त्री	१५,१९,१३९	१७३	३

काश्मीर के स्कूलों एवं अध्यापकों के विषय पर मैंने अपने विचार 'देशदूत' के प्रकाशित जनवरी) लेख में किया था। उसकी पुनरुक्ति से कोई लाभ नहीं

राज्य में अस्पतालों का प्रबन्ध ही उपेक्षित रहा है। पूरे राज्य में ९५ सरकारी औषधालय हैं। जो में बने हुए हैं। एक अस्पताल प्रायः वर्गमील तथा ३८,३५८ व्यक्तियों वर्ष भर में दवा बांटता ह। रि में कुल ३ जनाने अस्पताल हैं जिनमें ही व्यक्ति कम्पाउण्डर, चपरासी अन्य ऊँचे-नीचे सभी कार्यों को हुआ डाक्टर की ड्यूटी भी पूर्ण है। स्टेट की ओर जनता के स्वास्थ्य के लिए न तो कोई योजना है प्रोत्साहन है।

यह है काश्मीर की अन्त जिसे यात्री लोग पृथ्वी का स्वर्ग सम

श्रीनगर (काश्मीर) में प्रसिद्ध समाजवादी नेता डाक्टर राममनोहर लोहिया तथा श्रीमती चट्टोपध्याय के हाथ काश्मीरी बच्चे नेशनल कान्फ्रेंस का बैज बेच रहे हैं।

कसीदा काढ़ने की मशीन

यह चार सुइयों की मशीन भाँति भाँ काम करती है। इससे कसीदा काढ़ बड़ा ही आसान है। दिलपसंद फूल, पत्ती, बेल, बूटे, पशु-पक्षियों के चित्र, सीन-सीनरी इत्यादि आसानी से काढ़े जा सकते हैं। बड़ी सुंदर और मजबूत मूल्य ४ सुइयों सहित ३) डाकखर्च ।||), कसीदाकारी की डिजायन की मूल्य २) डाकखर्च ||)।

एस० के० सक्सेना (सी० ४) रंग महल, अलीगढ़।

थोड़ी प्रतियाँ बची हैं। शीघ्रता कीजिए

वार्षिक बालसखा १९४७

इसकी छपाई कई रंगों में हुई है। चित्रों की भरमार है। कविताएँ और कहानियाँ अनुपम हैं। जिल्द सजीली, आकर्षक बालकों के पसन्द की है। ऐसा कौन बालक होगा जो इस अंक पाकर आदि से अन्त तक पढ़े बिना शान्त रहे। ३०० पृष्ठों के इस का रियायती मूल्य २।) शीघ्रता कीजिए।

मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहा

तिमिर-नाश

लेखक, श्री श्रीराम शर्मा 'राम'

पढ़े-लिखे लोगों से अपढ़ लोगों में एक निश्चय पर दृढतापूर्वक पहुँचने की अधिक क्षमता होती है। जग्गू की भी कुछ स्थिति ऐसी ही थी। वह किसान तो अवश्य था किन्तु बुद्धिमान् भी कम नहीं था। प्रसिद्ध कहानी लेखक श्री 'राम' ने इस कहानी में जग्गू की मनोभावनाओं का बड़ा ही सुंदर चित्रण किया है, जो पठनीय तथा हृदयस्पर्शी है।

की मेंड़ पर बैठे हुए जग्गू न मारा और उसका बहुत-सा हुआ इस प्रकार सामने खेत ष्टि पसारकर देखने लगा कि सूनी और निरुद्देश्य दृष्टि की भी निःसार था, दुनिया के लिए । खेत में हरियाली आ गई थी। में कहीं-कहीं सूखा भी पड़ गया था। वर्षा नहीं हो रही थी। गांव के अन्य किसानों की तरह, जग्गू की आंखें भी ऊपर खड़े हुए आसमान पर टिकी । लेकिन उस समय जब जग्गू ने दूर तक दृष्टि पसारकर ऊपर की ओर देखा, तो वहां निरा उजाड़, निःशब्द और निरा पानी से हीन वह आसमान पाकर उसकी दृष्टि झटका-सा आकर फिर नीचे आ गिरी। पास के पेड़ की जड़ से उसके दोनों बैल बंधे हुए थे। वे सूख चले थे। पेट में धँसी हुई उनकी कोख, जैसे चीख रही थी और उन बेजबान गऊ-पुत्रों की पीड़ा, व्यथा और विषमता को पुकार-पुकारकर बता रही थी। हां, भूखे हैं ये...निरे दीन!

किन्तु उस समय जग्गू ने उन बैलों की आंखों से जब बहता हुआ पानी देखा और मुंह से झागों का तार छूटता हुआ पाया, तो उसे यह भी अनुभव हुआ कि रो रहे हैं, उसके बैल! इन झागों के द्वारा किस-किसकर निकले जा रहे हैं उनके प्राण!

यह सोचते और देखते ही जग्गू का मन तड़प गया। उसके मन में आया कि वह दौड़कर, बैलों के पास जाये और जितनी भी ममता, आराधना और अपनत्व की भावना, उसके हृदय में समाविष्ट है, उसकी सम्पुट से बैलों की आंखों के बहते हुए पानी को, मुंह के झागों को हाथों में ले ले और कहे—मेरे प्राण...सखा मेरे..!

लेकिन हाय! हाय! यह भी कैसी विवशता थी, उस जग्गू की कितनी असमर्थता कि वह इतना चाहकर भी, अपने मन की भावना को इतना पढ़कर भी अपनी जगह से नहीं उठा। वह अपने आप में इतना साहस नहीं पा सका कि उन बैलों के पास जाये और उनसे कुछ कहे। उन्हें पुचकारे। अपितु उसके मन में तो आया कि वह जैसा है, वैसे ही बैठा रहे। बैल स्वयं ही उसके पास आयें। वह क्रोध से फुफकारते हुए आते ही, उसके पेट में सिर में सींग मारें और अपने वज्र सरीखे पैरों के खुरों से उसे कुचल दें। तब जग्गू की आंतें बाहर निकल आयेंगी, वह चीत्कार भरेंगी और पल भर में जग्गू को निर्जीव कर मांस का एक लोथड़ा कर देंगी। तभी बैल कहेंगे—कृतघ्न...क्रूर! वह बैल, अपनी भूख की लपलपाती हुई ज्वाला को शान्त करने के लिए कच-कच, चप-चप उसे खा जायेंगे...हड्डी सहित चबा जायेंगे, उसे!

निःसन्देह, अपनी उस भ्रूण, निर्दय और कठोर इच्छा के साथ जग्गू ने देखा कि उसके वे बैल,—उसके वे जीवन-साथी आज से थोड़े ही हैं उसके साथ! जाने कैसे-कैसे मार्गों को पार किया है उन्होंने। उसे याद आया कि उन दो बछड़ों को उसने अपने प्राणों की छाया करके पाला, बड़ा किया और उन्हीं दो बछड़ों को अब बैलों के रूप में पा, वह अपने जीवन का एक बड़ा रास्ता पार कर सका है। आज उसके वही बैल भूखे हैं। कई दिन से भूखे खड़े हैं बेचारे! उसने सोचा, कब तक रहेंगे ऐसे! सच, ऐसे तो मर जायेंगे। उससे दूर हो जायेंगे। जिन्होंने अब तक उसका परिवार पाला है, वही भूखे, दीन और आतुर बने हुए, बिना बोले चले जायेंगे जग्गू के बैल...प्राण उसके...!

घोटों पर मुंह रखे जग्गू बैठा हुआ था। बैलों का मुंह उसकी ओर था। किन्तु जग्गू उनकी ओर नहीं देख रहा था। उसकी आंखों के द्वार पर अपनी विवशता, असमर्थता और निर्धनता का जो सम्मिश्रण एकत्र था, उसी के परिणाम-स्वरूप लगता था कि उन आंखों के अन्दर समाया हुआ अश्रु-श्रोत बरबस ही, बाहर निकलने के लिए व्यग्र था। आंखों के द्वार पर उसके प्राणों का समूह भी आ खड़ा हुआ था। वह भी बाहर निकलने के लिए आतुर था। किन्तु जग्गू की उस क्षीण, दुर्बल बनी छाती के नीचे जो दिल था और धड़क रहा था, बरबस ही उसको दावे बैठा हुआ जग्गू जैसे मरना नहीं चाहता था, जीवन वह भी पाना चाहता था। अनाथ से सनाथ बनने का मोह उसके भी अन्दर परिव्याप्त था। उसका दिल हिलोरें लेना चाहता था और वही उस जग्गू को आशा-निराशा के झकझोरे दे रहा था। यही कारण था कि जग्गू प्रताड़ित और दीन था!

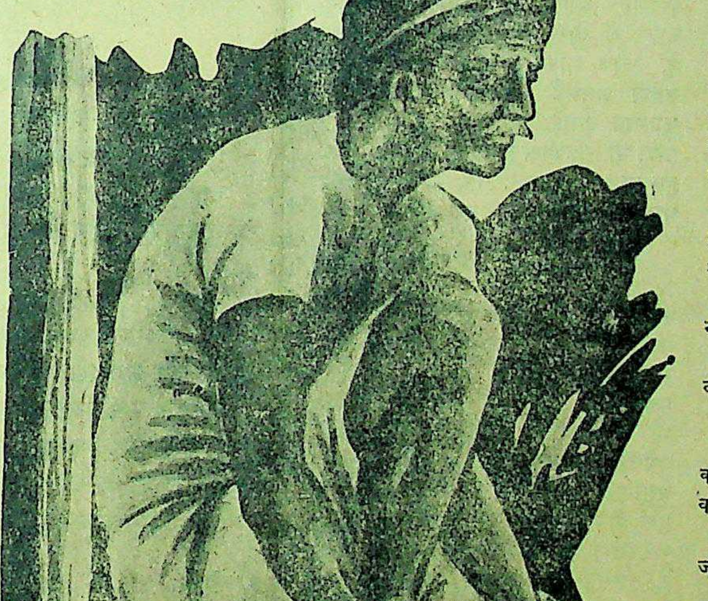

राष्ट्र को स्वतंत्रता मिल जाने पर जग्गू की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा।

बचपन से जिन माता-पिता ने उसे पाला-पोसा, उन्हीं की तरह, जग्गू भी अपने बैलों का पिता था। वह उनका पालक था। जीवन के इतिहास में जाने कितनी बार वह अपने प्यारे बैलों के लिये स्त्री से लड़ चुका था। जाड़ों में कभी बैलों के नीचे सूखा न हो तो क्या मजाल कि जग्गू चुप रह जाय। वह खुद उनके नीचे रेत बिछाता, अथवा स्त्री से उसी समय सूखा करने के लिए कहता था। लेकिन उस समय तो उसके मन में बात उठ रही थी कि भले ही, बैलों को उसी ने पाला और पोसा था; परन्तु वे उसके बैल अब बच्चे तो रह नहीं गये थे। वे बड़े हो गए थे। सावन-भादों की भरी दोपहरी में और माघ-पूस की काली और ठिठुरती हुई रातों में वही बैल कभी खेत के लिए कुएँ से पानी निकालते और कभी खेत जोतते थे। जग्गू का परिवार फले और फूले—इस भरे विश्व में भला उन बैलों को छोड़ और कौन उसकी इतनी हित-चिन्तना कर सकता था? फलस्वरूप जग्गू का परिवार खाता, हँसता और जीवन की सुन्दर घड़ियां देखता था। वे बैल भी पेट भरा चारा पाकर ही मानो युग-युग से चली आई अपनी परम्परा के अनुरूप उसे, आशीष देते और उसके दुःख-सुख के साथी बने रहते थे। वे कितने उपकारी थे! कितने सजीव! उनमें जितनी लगन, तन्मयता और आस्था थी, वह सबकी सब जग्गू, उसका परिवार और विश्व के अन्य कुटुम्बी पा रहे थे और भोग रहे थे।

और आज वही बैल भूखे थे, दीन और कातर! भूख से उनके प्राण निकले जा रहे थे। किन्तु उस भरे गांव में—सारे विश्व में कोई ऐसा नहीं जो उनकी ओर देख ले! उन्हें कुछ खाने को न दे, तो उनकी पीठ ही थपथपा दे। राहगीर उस रास्ते से निकलते और बैलों की बुरी दशा को देख, नाक सिकोड़कर निकल जाते। कदाचित् बैल भी यह देखते, मूँछों पर हाथ फेरनेवाले उन लोगों की ओर! लेकिन वे बैल तो मौन थे। खूंटे से बंधे थे। अजान और निर्वाक्! वह बोल पाते तो जरूर उन लोगों से कहते—कृतघ्न...घमण्डी कहीं के।

उसी समय, बहुत देर की चुप्पी के बाद एकाएक जग्गू का ध्यान भंग हो गया। उसकी स्त्री पार्वती उसके लिए रोटी और लोटा भरा मट्ठा लेकर आई। उसने सामान को नीचे रख दिया और कहा—'क्या है, कैसे मुंह गिरा रखा है।'

इतना सुनकर, जग्गू ने पार्वती की ओर देखा। उसने अनुभव किया कि पार्वती का मन स्वस्थ है,—जैसे सुखी! कदाचित् इसी से, उसे कुछ अरुचि पैदा हुई और उसकी बात का उत्तर देने के लिए अनिच्छा।

लेकिन पार्वती ने फिर कहा—वाह! कोई बात भी!

सुनते ही, जग्गू ने चाहा कि पार्वती का मुंह नोंच ले। उससे कह दे 'भाग जा तू! चली जा, डायन!'

किन्तु यह कहना तो दूर, जब पार्वती ने उसे दुबारा टँकोरा, तो जग्गू अपने को नहीं सहार सका। उसकी आंखों के द्वार पर देर से खारे पानी का उद्वेग खलबला रहा था, वह पल मारते में बाहर आ गया और तीव्र धार की तरह उसके गालों पर बह गया। बच्चे की तरह वह सुबकियों से रो पड़ा।

यह देख, पार्वती का माथा ठनक गया। उसका मन स्वतः ही एकाएक भर आया। उसके अपने ओढ़नी के छोर को जग्गू की उन आंखों पर रख दिया और कहा—'बताओगे नहीं—बतलाओ?

उसी अवस्था में जग्गू ने बैलों का मुंह उठाकर कहा—'पार्वती ये...भूखे हैं, हमारे बैल!'

सुनकर, पार्वती से एकाएक कुछ नहीं कहा गया। उसका मन गिर गया। उसने सिर झुकाकर, जमीन कुरेदना शुरू कर दिया।

जग्गू ने अपने आंसू पोंछकर ठण्डी सांस भरी और ऊपर अन्तरिक्ष की ओर अपना मुंह उठा दिया।

पार्वती ने कहा—'चौधरी ने भी नहीं दिया भूसा?'

जग्गू ने कहा—'उसने नहीं दिया, वह नहीं देगा।'

'कम्बख्त! बेईमान कहीं का!'

'आजकल जब आदमी ही आदमी को मारता ह, रोटी छीनता है, तो जानवर को कौन पूछता ह री, पार्वती!'

पार्वती ने कहा—'जानवर बेजबान है। जो बोलता नहीं, वह पहले हकदार है।'

यह सुनकर, जग्गू ने अपने सूखे होंठों पर जीभ फेरी और मन्द-सा मुस्करा दिया—'यह इस दुनिया की बात नहीं है, पार्वती! यहां ऐसा नहीं मिलता। देखती तो है कि आदमी जानवर बन गया है—भेड़िया!' यह कहने के बाद जग्गू ने बैलों की ओर देखा और पावती द्वारा लाई हुई रोटियों को उठा बैलों को जाकर खिला दिया। पार्वती ने यह देखा और अपना सिर झुका लिया।

* * *

जग्गू के दोनों बैल मर गये। उसने बहुत चाहा कि बैल न मरें, न जायें उसके हाथ से; पर वे तो भूखे थे, निदान न रहे—न रह सकते थे। उनके चारे के लिए वह कहां-कहां फिरा, किस किस के सामने गिड़-गिड़ाया—बैलों की तरह, मानो वह भी उसके जीवन का एक किस्सा बन गया। जिन जिन के घरों में काफी चारा था, उन्होंने भी उसे एक तिनका नहीं दिया। गांव का चौधरी सबसे आगे निकल गया। उसके पास काफी भूसा था, जिसमें से जरा भी नहीं दे सका। इसका परिणाम यह

हुआ कि जग्गू के बैल क्या मरे, वह स्वयं ही मर गया। उसका मन, समय और शाश्वत-जीवन सर्वथा बदल गया। क्रोध, घृणा और उपेक्षा से वह रात-दिन जलने लगा। वैसे आश्चर्य यह भी था कि जग्गू अपने जिन बैलों पर प्राण देता था, वह जीवित रहा, उसने अपने दिल को थाम लिया। लेकिन बैल तो मर गये, जग्गू भी रह गया, परन्तु अब उसके खेतों को कौन जोतेगा, कौन 'बोयेगा,—जब-तब वह इस बात पर सोचता, तो उसके लिए जैसे कुछ शेष ही नहीं रह गया था। उसे लगा कि अभी तो बैल मरे हैं, कल को बच्चे, परसों को स्त्री और फिर वह भी अपने हाथ-पैर पसार देगा, उसका अन्त हो जायगा, नाम मिट जायगा, जग्गू का! जिन बच्चों को देखकर, उसके प्राणों में कोलाहल होता है, जीवन का संघर्ष, लय और प्रलय, दिन और चीत्कार-सभी लिप-पुतकर केवल शून्य रह जाता है अपने जादू-भरे उन बच्चों की मृत्यु की कल्पना करके सचमुच जग्गू शान्त नहीं रहता। वह कांप जाता। लगता कि उसके प्राणों का समूह वह जीवन-पुञ्ज बाहर निकल आना चाहता। यही कारण था कि वह परेशान था। चिन्तित। गांव में, बाहर रिश्तेदारों में वह जहां-जहां गया, वहीं से लौट आया। सभी जगह उसे दयनीय स्थिति का दर्शन हुआ। सभी ने अपना रोना रोया। किसी के पास बैल नहीं, किसी के पास पैसा नहीं और किसी के पास जमीन।

निदान, ऐसी दुनिया में—ऐसे अभावपूर्ण जीवन में —जग्गू सोचता, क्या यही जीवन ह...जिन्दगी, —हाय। यह तो मौत है। यही कारण था कि जग्गू मरना चाहता था, वह अपने स्त्री-बच्चों का भी अन्त चाहता था।

लेकिन उसी अवसर पर, दूर से उड़ती हुई हवा, उस गांव में भी पहुँची। आह, कितनी मस्त और सुगन्धमयी थी, वह हवा! जिसे पाकर सभी खुश हुए—सभी मुग्ध!

पड़ोसी जगधर ने जग्गू के पास आकर कहा—'तुमने भी सुना दादा, देश आजाद हो गया।'

जग्गू ने यह सुना और आगे जानने के अभिप्राय से जगधर की ओर देखा।

जगधर ने कहा—देखते हो, लाखों मर गये... हजारों बे-घर हो गये—भेड़िये बन गये हैं, इन्सान। —उसने सांस भरकर कहा—दादा, जितने बचे हैं, जिन्दा हैं, वे सलामत रहें, हँसी-खुशी रहें, इसके लिए तो कुछ करना ही पड़ेगा। अब स्वतन्त्र रहेंगे हम, अपने माल और घर के मालिक।'

जग्गू ने सुनकर मुस्करा दिया। उसने मन में कहा—भोला है, गजधर... निरा अज्ञान!'

किन्तु यह कहने के बाद ही, उसने देखा कि पास ही बहुत-सी चींटियां कतार बांधकर कहीं से आ रही थीं और एक मिट्टी के घरोंदे में घुस रही थीं। जीवन में पहली बार उसने देखा और अनुभव किया, जीवन इनके भी पास है—कर्म का महान् संकल्प। उसे अचरज हुआ कि उन छोटी-सी चींटियों ने इतना बड़ा घरोंदा बना लिया...इतना परिश्रम किया, उन्होंने! वह बोला—हाय, जाने कितनी मरी होंगी, कितनी बची होंगी, इस घरोंदे में बैठने के लिए ये चींटियां....

तब ही उस जग्गू की आत्मा में जाने कहां से प्रकाश आया। वह उल्लास से भरकर छूटते ही बोला—'हां, रे धनपत! ठीक तो है, जो मरे, मरे! जितने जीवित हैं उनके लिये प्रसन्न होना चाहिए, भाई!'

उसने फिर कहा—'हां, गाओ-बजाओ रे, धनपत!' जग्गू ने अपनी देर की चिन्ता को छोड़ बरबस कह दिया और यही कहने के लिये, पार्वती के पास जाने का विचार लेकर अपने घर की दहलीज को पार कर गया।

स्वास्थ्य और व्यायाम

धातु के बर्तनों का प्रयोग स्वास्थ्य पर इनका कैसा प्रभाव पड़ता है-?

लेखक, श्री सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव

हमारी आंखें चमचमाती हुई वस्तुओं की ओर अधिक आकर्षित होती हैं। इसी विद्युत-पूर्ण प्रगति के चक्कर में पड़ कर हम पुरानी रीतियों को भूलते जाते हैं जिनका निर्माण हमारे हित के लिए किया गया था। पहले हमारे यहां मिट्टी तथा पत्थर के पात्र उपयोग में लाए जाते थे। पर अब पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव में आकर हमने उसे छोड़ दिया और अब हम दिन-प्रतिदिन आलसी और काहिल बनते जा रहे हैं। हर स्थान पर हम सुविधाओं को ढूंढने की चेष्टा करते हैं। सभ्यता के कृत्रिम रूप-राशि से आकर्षित होकर हमने अपने स्वच्छ, निर्मल, पवित्र एवं सस्ते मिट्टी के पात्रों का उपयोग छोड़ दिया है। उसके स्थान पर अब हम विषपूर्ण एवं मंहगे फूल, पीतल, तांबा, लोहा, कांसा आदि के पात्रों का उपयोग करने लगे हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से धातु के बर्तनों का उपयोग अत्यन्त हानिकारक होता है। इनमें रखे हुए भोजन की जीवन-शक्ति धीरे धीरे नष्ट होती रहती है। चूंकि हम इनमें भोजन करने के आदी हो चुके हैं इसलिए इसके द्वारा जो विष हमारे शरीर में धीरे धीरे प्रवेश करता रहता है, उसके परिणाम को जानने में हम सर्वदा असमर्थ रहते हैं। जब विष का कुप्रभाव हमारे शरीर पर होता है वह गन्दा भी अतिशीघ्र होता है। वार्निश किये हुए पात्र, अमृतवान, चाय के प्याले, आदि धातु की तरह हानिकारक होते हैं।

प्रश्न यह है कि हम धातु के बर्तन त्याग कर किसमें अपना भोजन पकावें? दाल, चावल आदि तो हम मिट्टी के पात्रों में बिना किसी विशेष कठिनाई के पका सकते हैं। तरकारी मिट्टी के पात्रों में पकायी नहीं जा सकती और यदि पकायी भी जाय तो तरकारी पात्र में चिपकने लगेगी। इसके अतिरिक्त कोई दूसरी असुविधा नहीं पड़ती। अधिक से अधिक एक लोहे की कड़ाई का इसके लिए प्रयोग कर सकते हैं। क्योंकि लोहा एक कड़ी धातु है, जिसके कारण इसके बने हुए पात्र से आसानी से नहीं निकल सकते। हां लोहे के पात्रों को स्वच्छता से रखने की आवश्यकता है। अन्यथा मोरचा इसमें अति शीघ्र लग जाता है, जो बहुत हानि करता है। इसमें तरकारी पका लेने के पश्चात् शीघ्र ही किसी पत्थर के पात्र में रख लेना पर, चाहिए।

कभी कभी सुनाई पड़ता है कि अमुक व्यक्ति भोजन के पश्चात् मर गया। अक्सर लोगों को 'कै' हो जाया करती है। यह सब धातु के विष का कुपरिणाम है। खट्टी चीजें बरतनों में रखने से कसीली हो जाती हैं। रात्रि भर धातु में रखा हुआ भोजन नीला हो जाता है। घी और तेल जैसे चिकने पदार्थ भी धातु के विष से अछूते नहीं बच पाते।

कलई किए हुए पात्र और भी हानिकारक होते हैं। उनमें ९९ प्रतिशत जस्ता काम में लाया जाता है जो बहुत नुकसान करता है। विशेषकर जब वह आग पर चढ़ाये जाते हैं। [illegible] भी अन्य धातु के बरतनों से कम हानिकारक नहीं होते। कुछ लोग अलमुनियम के बर्तन को लाभदायक बतलाते हैं। यह सस्ता अवश्य होता है। भोजन करने के लिए पत्तल का व्यवहार अति हितकर होगा। संयुक्तप्रान्त में मिट्टी के बर्तन दुबारा व्यवहार में नही लाये जाते, पर बंगाल में एक ही पात्र कई मास तक काम में लाए जाते हैं। अब देश की परिस्थिति ऐसी है कि हम प्रतिदिन चार पात्र नहीं फेंक सकते क्योंकि एक समय खाना बनाने के लिए कम से कम दो बरतनों की आवश्यकता पड़ती है। इसके लिये हमें चाहिए कि एक बार पात्र को व्यवहार में लाने के पश्चात् उसे कपड़े से रगड़-रगड़ कर धो डालना चाहिये। इसके उपरान्त मिट्टी की पोती चढ़ाकर आग में सेंक कर सुखा डालना चाहिए फिर उसे दूसरे दिन प्रयोग में लाने के लिए खूंटी पर टांग देना चाहिए।

हमारे यहां ताम्रपात्र के पानी को कृमिनाशक एवं स्वास्थ्य-प्रद समझा जाता है। पूजा में ताम्रपात्र का विशेषतः प्रयोग होता है। जो वस्तु पानी में थोड़े काल तक स्थिर रहने के पश्चात् भी घुली रहती है उसको हम बिना किसी कठिनाई के पचा सकते हैं। पर साथ ही साथ स्वच्छता की ओर भी ध्यान देना चाहिए। अर्थात पानी और पात्र स्वच्छ होना चाहिए। गंगा-जल पवित्र एवं स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हितकर होता है जिसको आधुनिक वैज्ञानिक स्वीकार करते हैं। गंगा के पानी में सब लाभकारी गुण के अतिरिक्त धातुओं के बहुत छोटे-छोटे कण रहते हैं, जिसको कि हम पानी से कर सकते। वे धातु के रूप में पानी में मिल जाते कार्य प्रकृति स्वयं करती उसको कोई गरम करने वरन् स्वयं ही प्राकृतिक के कण रस के रूप में प हैं। अतः हम इस निष्क हते हैं कि यदि तांबे के पात्र में पा हुँचते जाय तो वह हमारे लिये लाभकारी होगा।

ज्यों-ज्यों हम सभ्य होते जायेंगे त्यों-त्यों प्रकृति से विमुख होते जायेंगे और इसकी पूर्ति करने के लिए हम कृत्रिम वस्तुओं का अन्वेषण करेंगे। जो वस्तु कृत्रिम है वह प्राकृतिक वस्तुओं के समान उपयोगी नहीं हो सकती।

मरदाना कमज़ोरी

गुप्त फुंसी फोड़े आदि गुप्त रोगों

भारत भर में प्रसिद्ध विशेषज्ञ

कविराज ब्रह्मस्वरूप बी० ए०

(D.A.) फतेहपुरी देहली।

रा० ब० श्यामसुन्दर लिखित पुस्तकें

भाषा-रहस्य

इस ग्रन्थ में भाषाशास्त्र के सभी मुख्य प्रकरणों का विवेचन है। योरपीय भाषाओं के सम्बन्ध में भी इसमें विवेचना है। पुस्तक भारतीय विद्यार्थियों की आवश्यकता के अनुरूप है। बड़ा आकार, अच्छा कागज़, पृष्ठ ४०० से ऊपर। सजिल्द प्रति का मूल्य चार रुपये ग्यारह आने।

हिन्दी-साहित्य

इसमें विद्वान् लेखक ने प्रत्येक युग की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख कर यह बतलाया है कि साहित्य की प्रगति किस समय किस ढंग की थी। कवियों के विषय में इधर जो नये अनुसन्धान हुए हैं उनके आधार पर साहित्यिक स्थिति का वर्णन करके कवियों की रचना के उदाहरण भी दिये हैं। अच्छा कागज़, उत्तम छपाई, पृष्ठ ४५० से ऊपर। सजिल्द प्रति का मूल्य चार रुपये।

हिन्दी-कोविद-रत्नमाला

पहले भाग में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से लेकर नामी चालीस हिन्दी-लेखकों का संक्षिप्त सचित्र जीवन-चरित है। यह रत्नमाला अपने ढंग की अनूठी है। मूल्य दो रुपये पाँच आने।

दूसरे भाग में जोधपुर के मुंशी देवीप्रसाद आदि प्रमुख चालीस लेखकों का सचित्र संक्षिप्त जीवन-चरित है। मूल्य दो रुपये ग्यारह आने।

हिन्दी के निर्माता

(दो भागों में)

इसमें हिन्दी के नामी ५१ लेखकों और कवियों की संक्षिप्त सचित्र जीवन-घटनाएँ हैं। पहले भाग में उन लेखकों का वर्णन है जो लोकान्तरित हो चुके हैं। दूसरे भाग में वर्णित अधिकांश निर्माता वर्तमान काल के हैं। मूल्य प्रत्येक भाग का दस आने।

मिलने का पता—

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

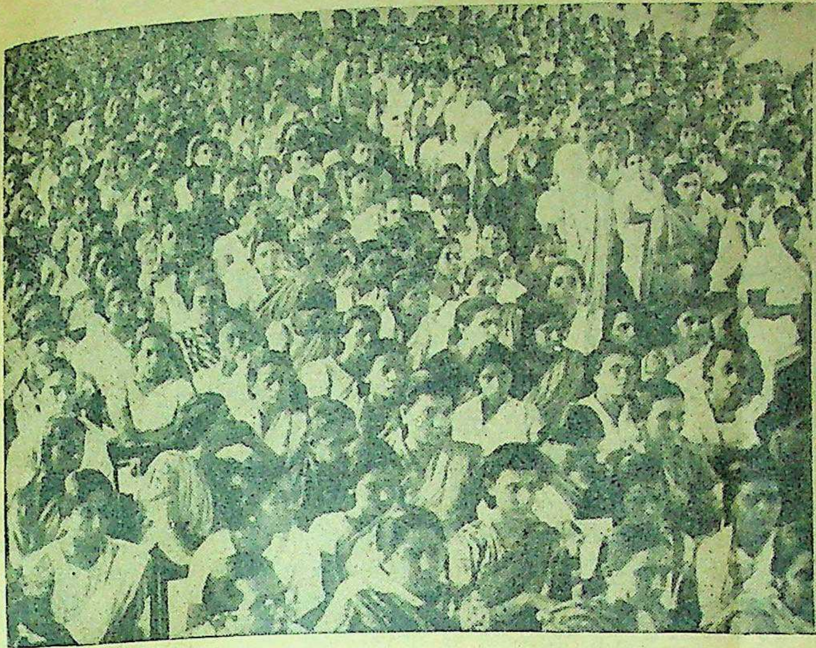

बंबई में होनेवाले नौकरी-पेशे की महिलाओं के एक सार्वजनिक सम्मेलन में उपस्थित हजारों महिलाओं का दृश्य।

श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय नौकरी-पेशे की महिलाओं के सम्मेलन में सभानेत्री पद से भाषण दे रही हैं।

मातृमण्डल

विधवाओं का पुनर्विवाह क्यों नहीं होना चाहिए ?

समाज के इस कलंक को अब किस युग में धोया जाएगा ?

लेखक, श्री पूर्णचन्द्र गुप्त

स्वराज्य मिलने का पहले यह आयोजन था कि हम अपने धर्म के विस्तार और उसकी रक्षा का पूरा प्रबन्ध कर सकेंगे किन्तु आज हिन्दू समाज मृत्यु की ओर सरक रहा है और यदि हमें समाज जीवित रखना है तो विधवाओं के प्रश्न पर भली भांति विचार करना होगा। इस वक्त भारत में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हो गई है और भारत सांस्कृतिक पुनर्निर्माण की ओर अग्र- हो रहा है, इसलिए 'समाज सुधार' त्र में बहुत ही सावधान रहना है।

ह कहने की आवश्यकता नहीं कि ओं की इस समय क्या परिस्थिति र वह किस प्रकार अपना जीवन त कर रहीं है? समाज के वजियों तथा अधिकार-प्राप्त समाज वीरों ने विधवा का जीवन रौंद देना ही चा है। एक वह समय था जब कि वधवा पूजयनीया और गौरवमयी समझी जाती थी और एक आज का युग है। नारी को रत्न कहा गया है। क्या रत्नों का यों ही आदर होता है? आज विधवा कुलटा, कलङ्किनी राक्षसी और हत्यारिन समझी जाती हैं। शुभ कार्यों में भाग लेने का तो उसे कोई अधिकार ही नहीं। हमारे परिवारों में इनकी कितनी दुर्दशा है यह किसी से छिपा नहीं है। इन अबलाओं का जीवन एक खूनी से भी बदतर है। नारी रत्न की दुर्दशा के ही कारण देश में अनाचार, अविचार की भरमार हो रही है। समाज के अत्याचारों और दुष्कृत्यों का ही यह परिणाम है कि जो देश अनगिनती सती-साध्वियों को उत्पन्न करनेवाला था, जिसमें दुराचार और व्यभिचार सबसे बड़ा कलंक समझा जाता था, उसमें आज यौवन के सौदे का प्रसार दिखाई देता है। सब से पहले उनकी सामाजिक अवस्था सुधारना है। राजनीति के क्षेत्र में तो उन्हें उनकी सुधरी हुई अवस्थाएँ ही स्थान दिला देंगी। किंतु इससे स्त्रियों की समस्या हल होती हुई नहीं दिखाई देती। उनकी समस्या तो तभी हल हो सकेगी जब कि हम उन्हें समाज में भी स्थान दिलाने का प्रयत्न करेंगे।

* * *

विधवाओं के सुधार के कई उपाय हैं। एक तो यह है कि उनकी इच्छा पर ही शादी करना छोड़ दिया जाय। जो विवाह करना पसंद करें उन्हें विवाह की सुविधा दी जानी चाहिए। जो विधवा विवाह करना चाहे उसे धर्म के नाम पर रोका न जाये। बहुत से लोग दलील पेश करते हैं कि विधवा विवाह से धर्म का नाश होता है। लेकिन ऐसा कहनेवाले लोग यह नहीं समझते कि धर्म क्या है? वास्तव में इसे समझना भी मुश्किल ही है। जब भीष्म पितामह जैसे त्यागी इस प्रश्न का उत्तर न दे सके तो किसी दूसरे मनुष्य के लिए इस प्रश्न का उत्तर देने की चेष्टा करना वृथा प्रयास ही है। लेकिन समय के अनुसार चलने में अधर्म नहीं। धर्म सदा देश-काल के अनुसार बदलता रहता है। धर्म की रक्षा तभी होती है जिससे पाप न बढ़े। जो विधवा शादी करना चाहे वह स्वतन्त्रतापूर्वक कर सके और जो न चाहे उसे बाध्य न किया जाय। जो समाज के भय से विवाह न करती हो तो उसका जबरदस्ती ही विवाह करा देना चाहिए।

इस प्रकार स्त्रियों को उनके उचित अधिकार सौंप दिये जाने चाहिएँ। जिस प्रकार स्त्रियों के मरने पर पुरुषों के अनेक विवाह हो सकते हैं उसी प्रकार पुरुषों के मरने पर स्त्रियों के भी समान अधिकार प्राप्त होने चाहिए। विधवाओं के उद्धार का सबसे उत्तम उपाय उनका पुनःविवाह कर देना है। इससे वातावरण में परिवर्त्तन होगा। जीवन में सादगी और पवित्रता आयेगी। धोखाबाजी और गुण्डेबाजी जिसका कि आज बोलबाला है अवश्य कम होगा साथ ही व्यर्थ में आत्महत्याएँ करनेवालों की संख्या घटेगी, वेश्याओं की संख्या भी कम होगी।

यदि न्याय-बुद्धि से पुरुष विचार करें तो मालूम होगा कि विधवाओं को दबाने का उन्हें कोई अधिकार नहीं है। भारतीय नारी-जीवन क्या इतना घृणित है? क्या भारतीय बालिकाओं, अविवाहितों और विवाहितों को अपने विषय में कुछ बोलने और कुछ कहने का अधिकार भी नहीं है?

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

मुलायम और सुन्दर बालों के लिये
प्रकाश पिक्चर्स कृत "घूंघट" की नायिका निर्मला
Blue Seal Vaseline Pomade
Chesebrough Mfg. Co.
सभी दूकानों पर

कोमलता में सुगंधित किया गया वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।
वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।

Copyright:

महापंडित राहुल जी से एक भेंट

(पेज ७ का शेष)

मैंने उनसे प्रार्थना की कि अपनी आत्मा को शान्त रक्खें और अपने काम में लगे रहें।

लेनिनग्राड विश्वविद्यालय में राहुल जी प्राच्य भाषाओं के प्रोफेसर हैं और थोड़े काल तक ठहरने के लिये भारत आये हैं। उनकी रूसी पत्नी और बच्चा रूस में हैं, उनकी चिट्ठियां बराबर आती रहती हैं। इस साल के लिये उनको हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया है।

वे तत्सम प्रधान हिन्दी के पक्ष में हैं, क्योंकि उनका ख्याल है कि दूसरी भारतीय भाषाओं के और उसके बहुत से शब्द एक हैं। हिन्दुस्तानी की उनकी दृष्टि में कोई उपयोगिता नहीं है। उनका विश्वास है कि हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है और वे चाहते हैं कि हिन्दी के लेखक इसकी सूक्ष्म अवगति रक्खें। उनको कई भाषाओं का ज्ञान है, पर वह कभी भी लम्बे अर्से तक अध्ययन के लिये विद्यालय में नहीं गये। वह धूम्र-पान न करनेवाले पंडित नहीं हैं। वह काफी सिगरेट पीते हैं और ऐसा पता लगता है कि पंडित लोग जिन दकियानूसी आदतों से अधिकतर लाचार रहते हैं उनमें से कई आदतों से राहुल जी मुक्त हैं। वह एक आधुनिक दृष्टिकोण वाले भले लगनेवाले व्यक्ति हैं।

"आपको भारतीय विश्वविद्यालयों और रूसी विश्वविद्यालयों में क्या फर्क मालूम पड़ता है?" मैंने पूछा।

उन्होंने बतलाया कि रूस में सिद्धान्त-पक्ष की अवहेलना नहीं की जाती और शिक्षा के उपयोगात्मक पहलू पर बहुत जोर दिया जाता है। अधिकांश छात्र विज्ञान पढ़ते हैं। एक प्राच्य-विभाग भी है, जहां पांच साल का पाठ्य-क्रम है और अन्वेषणकार्य के लिये बहुत सहूलियत दी जाती है। सन् १९४६ में कूटनीति के भारतीय विभाग में दूतवृत्ति के लिए ३५ छात्रों को शिक्षा मिली थी। रूसी छात्रों के लिए बेरोजगारी का भय नहीं है।

पत्रकारों के सम्बन्ध में राहुलजी ने कहा कि रूस में पत्रकारकला की कोई नियमित शिक्षा नहीं दी जाती पर स्कूलों के छात्र भित्ति पत्रों को चलाते हैं। कुछ छात्रों ने तो इन पत्रों को केवल सात वर्ष की उम्र में शुरू कर दिया था। इन दिवाल के अखबारों में व्यंग-चित्र, अच्छे लेख, कविता, समालोचना, कहानी आदि होती थीं। इस तरह वह पता लगाते थे कि छात्रों में पत्रकार कला की ओर कितनी अभिरुचि है और उनमें से कुछ इस तरह पत्रकार-वृत्ति को अख्तियार करते थे। रूस में पत्रकार-कला पर अच्छी पुस्तकें हैं और अच्छे-अच्छे पत्रकार इन छात्रों का पथ-प्रदर्शन करते हैं। अगर किसी को कवि बनना है तो उसे इसका पता छोटी ही उम्र में लग जाता है और हिन्दुस्तान की तरह ऐसा नहीं होता कि कवि जिस भी उम्र में चाहे अपनी प्रतिभा का पता पा जाय। उन्होंने यह भी बतलाया कि रूस में कोई भी पेशा जरूरत से अधिक भरा हुआ नहीं है और हर मर्द, औरत और बच्चे को यथोचित विकास और उन्नति की काफी सहूलियत मिलती है।

५००) नकद इनाम

जवाँमर्द चूर्ण से सब प्रकार की सुस्ती, दिमागी कमजोरी, स्वप्नदोष, धातु विकार तथा नामर्दी दूर होकर शरीर हृष्ट-पुष्ट बनता है। मूल्य ३॥) मय डाकखर्च। बेकार साबित करने पर ५००) इनाम। श्याम फार्मेसी (रजिस्टर्ड) अलीगढ़।

क्या राजनीतिक ही सब कुछ है?

(पेज ६ का शेष)

भारत-सरकार ने पहले पाकिस्तान को ५५ करोड़ रुपया देना तब तक के लिये स्थगित कर दिया था जब तक कि काश्मीर का प्रश्न तय न हो जाय उसी ने तोबा किया और रिजर्व बैंक को आज्ञा दे दी कि तुरन्त ५० करोड़ रुपया दे दो। अनशन समाप्त करने के लिये जो अन्य शर्तें लगाई गईं वे भी मान ली गई हैं और सभी वर्गों के दिल्ली-निवासी उन शर्तों को पूरी करने में सचेष्ट हैं।

परंतु गांधी जी के अहिंसा-चक्र का प्रभाव शत्रुपक्ष पर भी पड़ता है यद्यपि उनकी 'विचारधारा के अनुसार शत्रु कोई है ही नहीं। अनशन की सूचना पाकर मिस्टर जिन्ना और मिस्टर लियाकत अली ने चाहे कुछ न कहा हो और सर जफ़रुल्ला खां ने चाहे भले यह कहा हो कि भारत-सरकार ने गांधी जी को खुश करने के लिये अपनी भूल स्वीकार कर ली है और रुपया देना मंजूर कर लिया है परंतु श्री गजनफ़र अली ने सद्भावना की उपादेयता पर खासे विचार प्रकट किये हैं और जाहिदहुसेन साहब ने तो पाकिस्तान सरकार की ओर से भी यथाशक्य सभी कुछ करने का आश्वासन देने की कृपा की है और इस समय यही विश्वास भी करना चाहिये कि उनको आश्वासन हृदय से दिया गया है क्योंकि मौलाना आजाद ने स्पष्ट चेतावनी दे दी थी कि गांधी जी ऐसे सत्य के पुजारी को कोई असत्य आश्वासन न दें।

गांधी जी ने इस भांति राजनीति पर बिना अधिकार खोये हुए इसका ऊपरी भार दूसरों के कंधे पर डाल दिया है। क्योंकि वह महात्मा हैं और महात्माओं को भारतीय विचार-धारा के अनुसार दिव्य दृष्टि भी प्राप्त होती है, वह प्रायः ऐसे कार्य करते हैं जिन पर लोगों को क्रोध आता है परंतु वह बाद में ठीक निकले हैं। कंट्रोल का प्रश्न इसकी सबसे ताजी मिसाल है। गांधी जी ने पूजा-विधि, राष्ट्रभाषा, लिपि, शिक्षा, पूंजीवाद आदि पर भी ऐसी सम्मतियां प्रकट की हैं जो बहुत लोगों को ठीक नहीं जँचतीं। परंतु यदि वह दिव्य-दृष्टि प्राप्त कर चुके हैं तो होगा वही जो वह कहते हैं कि होनेवाला है। इस बात से राजनीतिज्ञ की महत्ता और उसके प्रभाव पर एक विशेष प्रकाश पड़ता है। क्या यह वाञ्छनीय अथवा अनिवार्य है?

विशेष कमी— अवसर मत चूकिये—आज ही मंगावें।
३॥) रु० में ६ नई पुस्तकें।

पति-पत्नी जीवन (सचित्र) केवल विवाहितों के पढ़ने योग्य, दाम्पत्य जीवन को सुखी सन्तुष्ट बनानेवाली अपूर्व पुस्तक १।), वशीकरण विद्या—अनेकों वशीकरण मंत्रों तथा जादू के खेलों का संग्रह १), सकल सिद्ध—मन चाहा कार्य सिद्ध करना १।), व्यौपारिक तेजी-मन्दी—तेजी मन्दी का ज्ञान प्राप्त कर हजारों रुपया पैदा कीजिये १।), हिन्दी अँगरेजी शिक्षा—घर बैठे अँगरेजी लिखना, पढ़ना, बोलना सीख लो १), हुस पैरिस—केवल पति-पत्नी के देखने योग्य १२ फोटो १॥)। ६ पुस्तकों के सेट का मू केवल ३॥), पोस्टेज पैकिंग ॥।) अलग।

सन्तोष ट्रेडिंग कम्पनी, पाठक स्ट्रीट, जैगंज (३) अलीगढ़ सिटी।

जब जिसने देखा, मुग्ध हो गया

'मंजरी'

सचित्र कलात्मक कहानी मासिक

वार्षिक मूल्य ६) रु० प्रति अङ्क ॥) आठ आने

तिरङ्गा आवरण, दर्जनों चित्र, कलापूर्ण छपाई

'मंजरी' का दूसरा अङ्क भी प्रकाशित हो चुका। श्रेष्ठ कथाकारों की सरस और सुरुचि-सम्पन्न कहानियाँ पढ़नी हों तो आज ही 'मंजरी' के ग्राहक बनिए।

विद्वानों और आलोचकों की दृष्टि में—

डा० अमरनाथ झा, भूतपूर्व अध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन और वाइस चांसलर, प्रयाग विश्वविद्यालय—'मंजरी' का प्रथम अङ्क मिला। पढ़कर प्रसन्न हुआ। कहानियाँ बहुत अच्छी हैं। इस उच्च कोटि की पत्रिका के प्रकाशन पर बधाई।

डा० धीरेन्द्र वर्मा, अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय—'मंजरी' का यह अङ्क सुन्दर और आकर्षक है। हिन्दी कहानी-पत्रिकाओं का स्तर वास्तव में बहुत गिर गया है। विश्वास है 'मंजरी' इस सम्बन्ध में आदर्श की ओर अग्रसर होगी और दूसरी पत्रिकाओं के लिए पथ-प्रदर्शक सिद्ध होगी।

माननीय पं० श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, सचिव, राजस्व तथा सूचना-विभाग, संयुक्तप्रान्तीय सरकार, लखनऊ—'मंजरी' मिली। मुझे पसन्द आई। मुझे आशा है कि जनता को उचित आदर्शों की ओर प्रेरित करेगी।

माननीय श्री ब्रिजलाल बियाणी, सदस्य, विधान-परिषद्, अकोला (बरार)—सुरुचि-सम्पन्न साहित्य-निर्माण के उद्देश्य को लेकर 'मंजरी' का प्रकाशन हुआ है, अतः मेरा विश्वास है, आपको पूर्ण सफलता मिलेगी।

सेठ गोविन्ददासजी, सदस्य, विधान-परिषद, जबलपुर—'मंजरी' का जो स्तर अभी से रखा गया है, वह सराहनीय है। यदि यही स्तर सदा रखा गया तो पत्रिका साहित्य एवं देश की बहुत सेवा करेगी, ऐसा विश्वास है।

श्री मोहनसिंह सेंगर, भूतपूर्व सम्पादक 'विशाल-भारत', कलकत्ता—कहानियों का चुनाव, सम्पादन, कथा-साहिय का परिचय एवं समीक्षा तथा लेखकों के परिचय आदि आपकी सूझ-बूझ के सुन्दर परिचायक हैं। छपाई-सफाई और सजावट के सम्बन्ध में तो कहना ही क्या? मेरा विश्वास है कि निकट-भविष्य में ही 'मंजरी' कहानी-पत्रिकाओं में अपना शीर्ष स्थान बना लेगी।

'आज' [काशी, १९ जनवरी ४८]—आकर्षक रंगीन मुखपृष्ठ के भीतर विविध चुने हुए श्रेष्ठ कथाकारों की रचनाएँ विभिन्न स्केचों एवं चित्रों से अलंकृत हैं। सम्पादन में श्रम तथा यथेष्ट सुरुचि से काम लिया गया है।

'स्वतन्त्र' [झाँसी, १८ जनवरी ४८]—अङ्क में लब्धप्रतिष्ठ कहानीकारों तथा उपन्यासकारों की रचनाओं की कमी नहीं है। महारथियों की कहानियाँ इसमें हैं। लेख भी लब्धप्रतिष्ठ लेखकों के हैं। आकार-प्रकार सुन्दर है और छपाई के लिए तो इंडियन प्रेस का नाम ही प्रमाण है।

मैनेजर 'मंजरी', इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

संपादक के नाम चिट्ठियां

हिन्दी की पत्र और पत्रिकाएँ

संसार में लगभग ३ हजार भाषाएँ । इनमें चौथे नम्बर पर सबसे अधिक ोली जानेवाली भाषा हिन्दी है। चीनी, ंगरेजी और रूसी जो दुनिया की प्रथम ार बड़ी भाषाएँ हैं, जो क्रमशः ४८, २४ ौर १६ करोड़ लोगों द्वारा बोली जाती ं। संसार की सब भाषाओं में हिन्दी ी एक ऐसी भाषा है जो इतनी कम ीमा में इतने अधिक लोगों द्वारा बोली ाती है जैसा कि सन् १९३१ में हिन्दी ोलनेवालों की संख्या १०,७३,४४,३३३ ी और आज तो १२ करोड़ से कुछ ऊपर ी है। हिन्दी आज राष्ट्रभाषा के पुनीत द को गौरवान्वित करने जा रही है। र्ष है कि कुछ वर्ष पूर्व लखनऊ से श्री ेमनारायण टंडन ने हिन्दी-सेवकों, पत्रों व संस्थाओं का परिचयात्मक ग्रंथ 'हिन्दी सेवी संसार' निकाला था और आज उसका संशोधित व परिवर्द्धित संस्करण भी छप रहा है। लेकिन केवल हिन्दी-पत्रों का परिचय प्रदाता ऐसा कोई ग्रंथ नहीं है जिससे आज प्रकाशित होनेवाले पत्रों (जिनमें जन्म से अब तक निकलनेवाले अथवा कई बार जन्म लेकर अब भी अपने अस्तित्व को कायम रखनेवाले पत्र भी ं।) की सूची व विवरण ज्ञात हो सके। स दिशा में 'हिमालय' (पटना) का यत्न प्रशंसनीय कहा जा सकता है, जिससे पछले एक वर्ष से आज प्रकाशित होनेवाले त्रों का परिचय तो मिला ही, साथ-ही ाथ समालोचना भी पढ़ने को मिली। ाज प्रकाशित होनेवाले हिन्दी के समस्त त्र-पत्रिकाओं की विवरणात्मक पुस्तिका काशित करने की एक योजना "हिन्दी-ाहित्य-समिति, बिरला कॉलिज, पिलानी जयपुर)" द्वारा बनाई गई है। 'हिन्दी पत्र और पत्रिकाएँ' पुस्तक में हिन्दी-त्रों की पूर्ण सूचिका, व संक्षिप्त परिचय े का प्रयत्न किया जायेगा। हिन्दी मियों, साहित्यिकों एवं पत्रकारों का चित सहयोग इस कार्य में अपेक्षणीय था प्रार्थनीय है। पत्र-सम्पादकों से नम्र निवेदन है कि अपने पत्रों का क्षिप्त परिचय तथा नमूने की प्रति समिति अध्यक्ष, प्रो० कन्हैयालाल सहल एम० ० को भेजने की कृपा करें।

लानी (जयपुर) —अखिल विनय

* * *

हिन्दी-सेवी-संसार

'संसार' हिन्दी-जगत् का एकमात्र रिचयात्मक-ग्रंथ है। अतः इसे भी दृष्टियों से पूर्ण प्रामाणिक ाने के लिए प्रत्येक हिन्दी-सेवी का योग अपेक्षित है, और इसके अपूर्ण जाने के उत्तरदायी भी केवल संपादक नहीं, हिन्दी-सेवी भी होंगे। एक तिष्ठित हिन्दी-सेवी के नाते आपसे नम्र निवेदन है कि संसार' के लिए तव्य सूचनाएँ शीघ्र से शीघ्र भेजें और े मित्रों से भी भिजवाने की कृपा करें। ये परिचय ५ फरवरी १९४८ तक रे पास अवश्य आ जायें; क्योंकि त सामग्री का सम्पादन आरम्भ हो है और शीघ्र प्रेस में दे दिया जायगा। ५ फरवरी १९४८ के पश्चात् जो ग्री हमें मिलेगी, वह उपयुक्त स्थान न जा सकेगी। भेजी हुई सामग्री में प्रकार के परिवर्तन-परिवर्द्धन की यकता हो तो उसकी सूचना भी हमें ५ फरवरी १९४८ तक ही निश्चित रूप से मिल जानी चाहिए।

लखनऊ —प्रेमनारायण टंडन
संपादक

* * *

मारवाड़ी नवयुवक क्रांतिकारियों से

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अ० भा० मारवाड़ी सम्मेलन की राजनीतिक उपसमिति समाज के राजनीतिक कार्यकर्ताओं का सप्रमाण क्रान्तिकारी इतिहास सन् १९२१ से आज तक प्रकाशित करने जा रही है। पुस्तक सर्वांग सुन्दर बन सके, इसके लिए हमें आपका संक्षिप्त जीवन-चरित एवं राष्ट्रीय आन्दोलनों में आपके द्वारा किये गये कार्यों के पूर्ण विवरण की आवश्यकता है।

इस विषय की पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए कृपा कर अ० भा० मारवाड़ी-सम्मेलन, १५२ बी० हरिसन रोड, कलकत्ता से पत्र-व्यवहार करें।

—राधाकृष्ण नेवटिया
मंत्री

* * *

प्रयाग का अर्धकुंभ मेला

अ० भ० अग्रवाल सेवा-समिति के मंत्री श्री महादेवप्रसाद जी अग्रवाल लिखते हैं—

प्रयाग का स्वतंत्र भारत में प्रथम बार अर्धकुंभ मेला ता० १४ जनवरी से आरंभ हो गया है जो पूरे दो मास तक रहेगा। मौनी अमावस्या के पर्व के अवसर पर भारत के कोने कोने से आये हुए लगभग चालीस लाख यात्री जिनमें साधू सन्यासी, कल्पवासी भी होंगे, पवित्र संगम में स्नान करके जायेंगे। हमारी समिति उन लोगों की हर प्रकार की सेवा करने के लिये अपनी बनाई योजना के अनुसार अपने कैम्पों को लगाकर ढाई हजार स्वयंसेवकों-द्वारा हर प्रकार की सुविधा पहुँचाते हुए कार्य कर रही है। जिसमें तीस हजार रुपया व्यय होगा, जो समस्त यात्रियों की सेवा में लगेगा। जिस खर्च के पूरा करने के लिए समिति के प्रधान मंत्री की ओर से समाचार-पत्रों में सहायता मांगने की अपील देश के सभी महानुभावों से की जा चुकी है और पत्र भी भेजे गये पर अभी तक जो सहायता समिति के कोष में पहुँची है, वह नहीं के बराबर है, जिससे उनके सेवा-कार्य में नाना प्रकार की कठिनाइयां जान पड़ रही हैं। इसलिए देश के सभी उदार हृदय महानुभावों राजा-महाराजा, सेठ साहूकारों से प्रार्थना है कि वे अपनी सहायता का हाथ बढ़ाकर शीघ्र से शीघ्र चिक, हुन्डी, ड्राफ्ट, मनीआर्डर ऐसे मानव जाति के पुनीत सेवा-कार्य के लिये समिति के प्रधान मंत्री श्री द्वारकाप्रसाद जी जौहरी के नाम अथवा अ० भ० अग्रवाल सेवा-समिति के कोषाध्यक्ष कोठी रामकिशन बद्रीप्रसाद के पते से भेजकर पुण्य व यश के भागी हों। समिति का डेपुटेशन बहुत सी कठिनाइयों के कारण धन-संग्रह करने को नहीं भेजा गया।

* * *

ग्वालियर में पूर्ण उत्तरदायी शासन

श्रीमन्त महाराजा सिन्धिया की घोषणा के अनुसार, ग्वालियर में शीघ्र ही एक उत्तरदायी अन्तरिम मंत्रिमंडल की स्थापना की जा रही है। मंत्रिमंडल में ९ लोकप्रिय मंत्री होंगे जिनको सामूहिक रूप से निर्वाचित धारा-सभा का विश्वास प्राप्त होगा, इनके अतिरिक्त इस मंत्रिमंडल में दो नरेश द्वारा-नियुक्त किये गये भी मंत्री होंगे। यह अन्तरिम मंत्रिमण्डल २४ जनवरी को शपथ ग्रहण करेगा। साथ ही साथ २० सदस्यों की एक विधान-सभा भी स्थापित की जा रही हैं, जिनका निर्वाचन धारा-सभा द्वारा किया जावेगा।

ग्वालियर स्टेट कांग्रेस के अध्यक्ष श्रीयुत लीलाधर जोशी ने इस घोषणा के सम्बन्ध में एक वक्तव्य में श्रीमंत महाराजा सिन्धिया को हार्दिक बधाई दी है।

श्रीमन्त महाराजा सिन्धिया ने अपनी ऐतिहासिक घोषणा में कहा है कि सन् १९३६ से जब से उन्होंने शासन-सूत्र ग्रहण किया है उनका यह ध्येय रहा है कि अपनी छत्रछाया में एक ऐसी शासन-व्यवस्था की स्थापना करूँ जो सही अर्थों में जनता के हित में जनता द्वारा संचालित हो। उन्होंने कहा कि इस ध्येय की पूर्ति उस समय सम्भव हो गई जब १५ अगस्त १९४७ को भारतवर्ष, जो हमारी मातृभूमि है, स्वतन्त्र हो गया और भारतीय-संघ में सम्मिलित होकर ग्वालियर ने भी स्वतन्त्र भारतीयों के भ्रातृ-संघ में प्रवेश किया। घोषणा में कहा गया है इस भ्रातृ-संघ द्वारा नरेश तथा उनकी प्रजा एक दूसरे के समीप आ गये हैं और मेरे उस विश्वास को पुष्टि मिलती है कि मेरी आन्तरिक अभिलाषा तथा जनता की आकांक्षा एक हैं कि मेरी छत्रछाया में एक उत्तरदायी सरकार अविलम्ब स्थापित की जावे। इस ध्येय को दृष्टि में रखते हुए स्टेट कांग्रेस के नेताओं तथा श्रीमन्त महाराज के सलाहकारों में हुई वार्ताओं के फलस्वरूप बनाई गई एक योजना अन्तरिम सरकार तथा नवीन विधान-निर्मात्री परिषद् के सम्बन्ध में, बनाई गई। इन दोनों पक्षों द्वारा स्वीकृत योजन को श्रीमन्त सरकार ने भी मान लिया है और यह अविलम्ब कार्यान्वित की जावेगी। योजना के अनुसार वर्तमान धारा-सभा की रूप-रेखा तथा विधान में परिवर्तन किया जावेगा जिससे भविष्य में केवल प्रजा-सभा ही रहेगी जिसमें वर्तमान को राज तथा प्रजा-सभा दोनों के निर्वाचित सदस्य मंत्रिगण तथा शेष अल्पसंख्यकों तथा अन्य हितों के प्रतिनिधित्व के लिए अधिक से अधिक १५ सदस्य होंगे। इन १५ सदस्यों का चुनाव भी वर्तमान राज तथा प्रजा सभा के निर्वाचित सदस्यों द्वारा किया जावेगा। यह परिवर्द्धित धारा-सभा अपने सदस्यों में से ही अध्यक्ष व उपाध्यक्ष का निर्वाचन करेगी।

यह नई धारा-सभा एक विधान सभा विधान-निर्मात्री परिषद् का भी चुनाव करेगी जिसके २० सदस्य होंगे। चुनाव-अनुपात प्रतिनिधित्व तथा एक हस्तान्तरित वोट के आधार पर किया जावेगा। यह सदस्य अपना अध्यक्ष चुनेंगे। नरेश की प्रिवी पर्स तथा महल की सिवल लिस्ट को छोड़कर जिनका परिमाण, आज की स्थिति को दृष्टि में रखते हुए, नरेश स्वयं निर्धारित करेंगे। विधान-निमात्री परिषद् के अधिकार क्षेत्र की कोई सीमा नहीं रखी जावेगी। और इस परिषद् के सब प्रस्तावों को जिनका सम्बन्ध वैदेशिक विभाग तथा रक्षा-विभाग से नहीं होगा, नरेश द्वारा स्वीकृति तथा कार्यान्वित किया जावेगा।

धारासभा के बहुसंख्यक दल कांग्रेस पार्टी को अन्तरिम सरकार बनाने के लिए श्रीमन्त महाराजा सिन्धिया ने नियंत्रित किया है। अन्तरिम सरकार में ९ मंत्री होंगे जिनको सामूहिक रूप से नई धारा सभा का विश्वास प्राप्त होगा इन्हीं मंत्रियों में से एक चीफ मिनिस्टर होगा जो कि मंत्रिमण्डल में अध्यक्ष का पद ग्रहण करेगा इसके अतिरिक्त इस मंत्रिमंडल में महाराजा सिन्धिया अपनी ओर से दो अन्य मंत्री नियुक्त करेंगे जो वैदेशिक विभाग, रक्षा-विभाग, प्रिवी पर्स, पैलेस सिविल लिस्ट तथा इन विभागों के आर्थिक नियंत्रण के लिए उत्तरदायी होंग। दीवान नहीं रखा जायगा।

घोषणा के अन्त में, श्रीमन्त महाराजा ने कहा कि गर्वपूर्ण ऐतिहासिक दिवस पर मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि मैं सब दलों का मार्ग-दर्शक तथा मित्र रहते हुए भी सब दलों से अलग रहूँगा और सब राज-काज को न केवल ग्वालियर की जनता के नाम से सुतरां, यदि ईश्वरेच्छा हुई, तब उनकी सहमति से करूँगा।

—संवाददाता

यदि वास्तव में एजेन्सी-द्वारा धन कमाना चाहें तो 'दी दिग्विजय टायल्स एण्ड पौटरीज लिमिटेड' की बनाई उत्तम वस्तुओं, यथा प्याले, तश्तरियां, चाय सैट, उबालदान, सुराहियों और प्लेट्स इत्यादि की एजेन्सी के लिए, इस पते पर पत्र-व्यवहार करने की कृपा करें।

दी दिग्विजय टायल्स एण्ड
पौटरीज लिमिटेड, जामनगर
(काठियावाड़)

गुदड़ी के लाल

इस पुस्तक की कहानियां बहुत ही सरल और रोचक भाषा में लिखी गई हैं। इनको पढ़कर बच्चे बेहद खुश होते हैं। ऐसी पुस्तक अपने बच्चों को जरूर दीजिए। मूल्य ॥)

मनरोञ्जक कहानियाँ

(दूसरा भाग)

इस पुस्तक में बहुत सी मनोरंजक और शिक्षाप्रद कहानियाँ हैं। इसके पढ़ने से बालकों को अन्य लाभ के सिवा भाषा-सम्बन्धी ज्ञान भी होता है। मूल्य ।–)॥

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इ[illegible]

विवाहित जीवन

को सुखमय बनाने के गुप्त रहस्य जानने हों तो निम्न पुस्तकें मँगायें।

१—कोक शास्त्र (सचित्र) १॥) २—८४ आसन (सचित्र) १॥)
३—८० आलिंगन (सचित्र) १॥) ४—१०० चुम्बन (सचित्र) १॥)
५—सोहागरात (सचित्र) १॥) ६—चित्रावली (सचित्र) १॥)
७—गोरे खूबसूरत बनो १॥) ८—गर्भ-निरोध (सचित्र) १॥)

उपरोक्त पुस्तकें एक साथ लेने से ८) रु० में मिलेंगी, पोस्टेज १) अलग लगेगा।

पता—ग्लोब ट्रेडिंग कम्पनी (जी० १३) अलीगढ़ सिटी।

संवाददाताओं के पत्र

देवप्रयाग में "टिहरी की जनता की लड़ाई में मैंने अहिंसा का प्रत्यक्ष रूप देखा है। महाराजा के द्वारा जनता के नेताओं के साथ घृणित व्यवहार करने व दो कार्यकर्ताओं को गोली से उड़ाने के बावजूद भी, जनता ने प्रजाराज्य की स्थापना पर उनसे छेड़ा तक नहीं। इसके विपरीत प्रजामण्डल के नेताओं ने गिरफ़्तार किये गये अधिकारियों के कुनबों की देख-भाल कर सराहनीय कार्य किया है" ये शब्द भारत सरकार के रियासती विभाग के आदेशानुसार टिहरी की शासन-व्यवस्था हाथ में लेने के लिए भेजे गये युक्तप्रान्त पुलिस के डिप्टी इन्सपेक्टर जनरल श्री जेटली ने युक्तप्रान्तीय असेम्बली के सदस्य डाक्टर कुशलानन्द गैरोला से कहे हैं, जो राज्य के विभिन्न भागों का दौरा कर रहे हैं।

भारत-सरकार के आदेशानुसार युक्तप्रान्तीय सरकार के अधिकारी श्री सनवाल जिला मजिस्ट्रेट देहरादून यू० पी० पुलिस के डिप्टी इन्स्पेक्टर जनरल श्री जेटली तथा मेरठ के कमिश्नर श्री सुचासिंह फौज व पुलिस के साथ टिहरी की शासन-व्यवस्था अपने हाथ में लेने के लिए टिहरी पहुँचे, जो जनता ने स्वयं लोगों का शानदार स्वागत किया। शहीद सुमन की माता ीमती तारादेवी के सभापतित्व में जनता की एक विराट् सभा हुई, जिसमें डाक्टर कुशलानन्द गैरोला एम० एल० ए० तथा सुन्दरलाल बहुगुणा के प्रभावशाली भाषण हुए। जनता ने भारत-सरकार के रियासती विभाग के निर्णय का हार्दिक स्वागत किया और टिहरी स्वतन्त्र जिला होने की मांग की। २५ जनवरी ४८ को श्री भगवतीचरण शर्मा के सभापतित्व में देवप्रयाग में एक आम सभा हुई जिसमें प्रान्तीय सरकार के डिप्टी इन्स्पेक्टर जनरल श्री जेटली, देहरादून के जिला मैजिस्ट्रेट श्री सनवाल, श्री सुन्दरलाल बगुगुणा टिहरी का बूढ़ा शेर किसान नेता श्री दौलतराम और प्रेमलाल वैद्य आदि वक्ताओं के प्रभावशाली भाषण हुए। डाक्टर गैरोला ने अपने वक्तव्य में महात्मा जी, नेहरू जी तथा सरदार पटेल का सन्देश सुनाया। आपने यह भी बताया कि हमारी सरकार टिहरी गढ़वाल की जनता की। बड़ी प्रशंसा करती है कि जिसने महात्मा जी के सत्य और अहिंसात्मक आन्दोलन को फलीभूत बनाया। श्री जेटली तथा श्री सनवाल ने अपनी हार्दिक सहानुभूति के साथ यहां के कार्य-कर्ताओं की प्रशंसा की इसके बाद जनता ने सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पास किया, जिसमें टिहरी एक अखण्ड और स्वतन्त्र जिला बनने की मांग की, जनता ने भारत-सरकार को यहां की शासन-व्यवस्था अपने हाथ में लेने की बड़ी प्रशंसा की।

—संवाददाता

* * *

प्रयाग के कल्याण-मंदिर कटरा से चैत्र सं० २००५ से एक द्वैमासिक पुस्तकमाला प्रकाशित की जा रही है। इस पुस्तकमाला का उद्देश्य होगा अनुभवी साहित्यिकों की बहुमूल्य कृतियों का प्रकाशन। उदाहरण के लिए साहित्यिक पुस्तकमाला के अन्तर्गत सर्वप्रथम 'सरस्वती' के भूतपूर्व सम्पादक पंडित देवीदत्त शुक्ल द्वारा लिखाई गई पुस्तकों का प्रकाशन होगा। शुक्ल जी से हिन्दी-जनता भली प्रकार परिचित है। आज वे आंखें खराब हो जाने से अवकाश प्राप्त कर चुके हैं। लिखने-पढ़ने से भी स्वभावतः उन्होंने हाथ खींच लिए हैं। फिर भी उक्त संस्था के संयोजक के विशेष आग्रह से व इसके लिए प्रस्तुत हुए हैं कि विभिन्न विषयों पर अपने अनुभवपूर्ण विचार लिपिबद्ध करवा दें। फलस्वरूप 'साहित्यिक पुस्तकमाला' के प्रथम वर्ष की छः पुस्तकें शुक्ल जी की अनुभवपूर्ण कृतियां होंगी। आत्मकथा, संस्मरण, साहित्य, समाज, धर्म और राजनीति जैसे प्रमुख विषय होंगे। प्रकट है कि यह पुस्तकमाला कितनी उपयोगी होगी। इस 'साहित्यिक पुस्तकमाला' का वार्षिक मूल्य डाकखर्च सहित १२) और एक पुस्तक का २॥) होगा। परन्तु २५ फरवरी के पहले ही ग्राहक बननेवालों को दस रुपये ही भेजने होंगे। प्रत्येक पुस्तक सचित्र होगी और ग्राहकों को रजिस्ट्री-द्वारा भेजी जाएगी। एजेण्टों को भी अभी से अपनी प्रतियां सुरक्षित करा लेनी चाहिए।

—संयोजक

* * *

प्रयाग में बाबा काली कमलीवाला पंचायती क्षेत्र ऋषिकेश का कैम्प गंगापार झूंसी में खुल गया है। स० मंत्री रा० ब० पंडित श्रीदत्त जी शर्मा स्वयं देख-रेख कर रहे हैं। अन्नक्षेत्र जारी है। कैम्प में राष्ट्र के सर्वविध कल्याण-समृद्धि के लिए श्री लक्ष्मीनारायण महायज्ञ माघकृष्ण अष्टमी २ फरवरी से सोमवती अमावस्या ९ फरवरी तक होगा। और धर्म-सम्मेलन, हिन्दी संस्कृत साहित्य-सम्मेलन, कवि-सम्मेलन, गोरक्षा और वर्तमान राष्ट्र की परिस्थिति पर गवेषणापूर्ण विद्वानों के भाषण होंगे। महात्मा, तपस्वी, विद्वान् पधार रहे हैं जिनके द्वारा सत्संग, हरिकीर्तन, भागवत-परायण होंगे। यात्रियों के लिए बड़े पैमाने पर कैम्प डाले गये हैं।

—संवाददाता

* * *

वृन्दावन मण्डल कांग्रेस की ओर से सुभाष-जयन्ती समारोह के साथ मनाई गई। सार्वजनिक सभा में प्रोफेसर कृष्णचन्द्र एम० एल० ए०, वैद्य उमाशंकर शास्त्री, शीलादेवी, अद्वैतकुमार गोस्वामी के भाषण हुए।

वृन्दावन के कांग्रेस कार्यकर्त्ता बाबू दुर्गाप्रसाद शर्मा अ० भा० कांग्रेस कमेटी के कार्यालय में नई दिल्ली जा रहे हैं। आपकी यह नियुक्ति जनरल सेक्रेटरी आचार्य जुगलकिशोर जी एम० एल० ए० ने की है। आप प्रेम महाविद्यालय के आफिस सुपरिटेंडेंट और स्थानीय 'युग संदेश' साप्ताहिक पत्र के सम्पादक थे। वृन्दावन मण्डल कांग्रेस के प्रधान मंत्री लाला हरचरणलाल गुप्त म्युनिसिपल कमिश्नर इस बार बोर्ड के शिक्षा-विभाग के चेयरमैन चुने गये हैं। आप यहां के हिन्दी मिडिल स्कूल के जनरल मैनेजर भी हैं और जिला कौमी सेना दल के कप्तान। आपने अभीहाल में समाजवादी पार्टी के संगठन मंत्रिपद से इस्तीफा दे दिया है।

वृन्दावन के प्रसिद्ध कांग्रेस कार्यकर्त्ता बाबू नलिनीकान्त मुकर्जी मथुरा जिला के स्पेशल मजिस्ट्रेट चुने गये हैं। वृन्दावन म्युनिसिपल बोर्ड के सीनियर वाइस चेयरमैन तथा प्रेम महाविद्यालय के सेक्रेटरी भी हैं।

—संवाददाता

* * *

गढ़वाल पोस्ट डाडामंड में पट्टी लंगूर, तथा ढांगू की पट्टियों की जनता की एक सार्वजनिक सभा पंडित आदित्यराम दुदपुड़ी की अध्यक्षता में काण्डारन में हुई जिसमें सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास हुआ—

सर्वसम्मति [illegible] आन्दोलन कमेटी कायम की गई और उसे अधिकार दिया गया कि यदि प्रान्तीय सरकार हमारी न्यायपूर्ण मांग को स्वीकार करने में आनाकानी करे तो इसके लिए सत्याग्रह की तैयारी की जानी चाहिए। प्रधान पंडित आदित्यराम दुदपुड़ी, उपप्रधान मुकन्दराम भट्ट, मंत्री ठाकुर गोकुलसिंह नेगी, उपमंत्री श्री सिद्धानन्द डबराल, कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद जी कण्डवाल आदि।

—मंत्री

* * *

बस्ती जिला सूपा राजा मंडल कांग्रेस कमेटी के अन्तर्गत गंगवल तहसील वांसी में १८ दिसम्बर को रामअधार किसान की जो हत्या विशम्भरनाथ चेतिया के जिलेदार वासुदेव कटकाहे ने की थी; उनकी गिरफ्तारी जिले के कप्तान साहब ने स्वयं अपनी निगरानी में बड़ी तत्परता के साथ १८ जनवरी ४८ को की। कप्तान साहब की तत्परता की एक लहर-सी तहसील भर में फैल गई और किसानों में सन्तोष आ गया।

—मंत्री

* * *

देहरादून कन्या गुरुकुल कन्याओं की शिक्षा के लिए आदर्श संस्था है। अगर आप देहरादून के स्वास्थ्यप्रद जलवायु में अपनी कन्या को हिन्दू-संस्कृति के वातावरण के आश्रम में रखकर शिक्षा देना चाहते हैं तो इस संस्था में अपनी बालिका को शिक्षा के लिए भेजें। ७ से ९ साल की ही कन्याएँ ली जाती हैं। इस समय प्रवेश प्रारम्भ है। विशेष विवरण के लिए निम्न पते पर पत्र-व्यवहार करें।

—चन्द्रावती लखनपाल
एम० ए०, बी० टी०,
आचार्या

पचमढ़ी, लालसेना, कांग्रेस और समाजवादी पार्टी की ओर से जयन्ती ता० १३ जनवरी को बड़े के साथ मनाई गई।

—संवा

इधर-उधर न भटकिए
न्यू इरा बुक हाउस
तथा
न्यू इरा एजेंसी
८६, हिवेट रोड, प्रयाग

इण्डियन प्रेस तथा अन्य प्रकाशकों की हिन्दी, अँगरेज़ी और की सभी पुस्तकें आप हमारे यहाँ सकते हैं।

नवीन प्रकाशन

अपरा—कोमल मधुर गीतों से ओज के शंख तक महाकवि की कविताओं का संग्रह। सजिल्द का मूल्य ३॥) रु०।

सान्ध्य गीत—हिन्दी काव्य की सुपरिचित कवयित्री श्रीमती वर्मा के मधुर सजल गीतों का सजिल्द प्रति का मूल्य ३) रु०।

स्वप्न और सत्य—डा० गुप्त, एम० ए०, डी० फिल० मार्मिक कहानियों का संग्रह। सजिल्द का मूल्य ३॥) रु०।

शिक्षा-विधान-परिचय

यह पुस्तक पाठकों को शिक्षण-सम्बन्धी नवीन और समय नुकूल विचारों का ज्ञान देने के लिए लिखी गई है। इसमें कल्पनाओं और विचारों का समावेश किया गया है जिनसे अध्य पकों के ज्ञान का क्षितिज विशाल होगा। यह पुस्तक प्रत्येक शिक्ष के पास होनी चाहिए। छोटे टाइपों में छपी, लगभग पौने ती सौ पृष्ठों की, सजिल्द पुस्तक का मूल्य पौने तीन रुपये।

अरिथमैटिक शिक्षाप्रणाली

यह पुस्तक अरिथमैटिक पढ़ाने की उत्तम रीति सिखलाने उद्देश्य से लिखी गई है। इसमें अरिथमैटिक का इतिहास, पढ़ाने की आवश्यकता, गणित के तत्त्व आदि का सुन्दर विवेचन है। मूल्य एक रुपया।

शिक्षा-सिद्धान्त और प्रारम्भिक मनोविज्ञान

इस पुस्तक में मनोविज्ञान और शिक्षाशास्त्र की व्याख्या सर रीति से की गई है। विषय को सुगम बनाने के लिए इसमें चि मानचित्र और ग्राफ-रेखाएँ पर्याप्त दी गई हैं। मनोविज्ञान उदाहरण सोच-समझकर दिये गये हैं। हमारे यहाँ शिक्षा के लि जो आवश्यकता है उस पर मौलिक ढंग से प्रकाश डाला गया है हमारी मातृभाषा में इस विषय की पुस्तकों की बहुत आवश्यक है। मूल्य दो रुपये।

शिक्षा-पद्धति

लेखक ने इसकी रचना अपने दस वर्ष के अध्यापन-सम्ब अनुभव की सहायता से की है। इसमें शिक्षक की ध्वनि और भा प्रोजेक्ट-पद्धति, बुनियादी शिक्षा, समन्वित शिक्षा, परीक्षा उदाहरण आदि शीर्षकों में विषय का वर्णन बड़ी सावधानी से वि गया है। जिनकी आवश्यकता पर दृष्टि रखकर यह पुस्तक लि गई है उनके लिए यह बहुत लाभप्रद है। एक रुपया आठ आने

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

राजधानी का रंगमंच

देश पर अनेक संकठ हैं, सेना में भर्ती हो जाओ--

लखनऊ में रँगरूट मेला—प्रांत के विकास की योजनायें-खाद्य-विभाग में नियंत्रण—समाजवादी नाराज हैं--मन्त्रिमंडल और वामपक्ष

(अपने विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

युक्तप्रान्त के सैनिक अधिकारियों द्वारा लखनऊ में आयोजित रँगरूट मेला एक दर्शनीय स्थल था। जैसा कि प्रान्तीय फौजी क्षेत्र के जनरल आफिसर कमांडिग मेजर जेनरल नाथूसिंह ने कहा, सैनिकों और जनता के बीच सम्पर्क स्थापित करने के हेतु इस प्रकार के मेलों की परम आवश्यकता है। महामान्या गवर्नरा श्रीमती सरोजिनी नायडू ने इस अवसर पर जल-स्थल और वायु सेनाओं के दस्तों की सलामी लेते हुए कहा था कि अभी तक 'सिपाही हमारे लिए भय की वस्तु था। हमारे बच्चे उसके नाम से कांपते थे, क्योंकि वह एक अत्याचारी विदेशी शक्ति द्वारा हमारे दमन के लिए भाड़े का टट्टू मात्र था, परन्तु अब सैनिक हमारे आतंक का कारण नहीं, हमारी रक्षा और सेवा के लिए है। वह हमारे आदर और मैत्री का अधिकारी है।'

* * *

भारत के रक्षा-मंत्री सरदार बल्देवसिंह ने इस अवसर पर युक्तप्रान्त के युवकों को सेना में भर्ती होने के लिए आवाहन करते हुए कहा कि हमारे देश पर अनेक संकठ हैं और हमें स्वदेश के सम्मान और स्वतन्त्रता की रक्षार्थ एक सबल सैन्य की आवश्यकता है। आपने पाकिस्तान को चुनौती दी कि यदि उसमें वीरत्व का लवलेश भी है, तो प्रत्यक्ष युद्ध घोषणा करके भारत से लोहा ले, यह क्या कि गुप्त रीति से कबीलियों और पठानों को काश्मीर और जैसलमेर में उपद्रव करने के लिए प्रेरित कर रहा है। आपने कहा कि जूनागढ़ में पाकिस्तान की बहादुरी कहां गई थी?

* * *

युक्तप्रान्त के विकास-मंत्री पंडित केशवदेव मालवीय ने प्रान्त के विकास की कुछ अत्युत्तम योजनाएँ बनाई हैं। परन्तु सामग्री के अभाव में उन्हें भली भांति कार्यान्वित नहीं कर पा रहे हैं। मालवीय जी की योजनाएँ सौभाग्यवश ऐसी हैं, जिनमें लगनेवाली अधिकांश सामग्री स्वदेश में ही मौजूद है, परन्तु मशीनों को तो विदेश से ही मँगाना है। अनेक ब्रिटिश तथा अमेरिकन फर्मों ने इन मशीनों को सप्लाई करने के लिए बड़े-बड़े आर्डर ले रखे हैं, परन्तु अभी तक वे माल नहीं दे पाये हैं।

* * *

विदेशी ही क्यों, भारतीय फर्में भी सरकार के साथ असहयोग कर रही हैं। कानपुर की वर्ड कम्पनी को, जिसके संचालकों में से अधिकांश अँगरेज हैं, भारत में सीमेंट का एक प्रकार से एकाधिकार प्राप्त है। युक्तप्रान्त को सीमेंट के प्रदत्त कोटे में से इस कम्पनी को २५ प्रतिशत सीमेण्ट देना चाहिए। परन्तु बीसियों बहाने बनाकर कम्पनी अपना सीमेण्ट व्यापारियों को बेचती रही और सरकार की मांग टालती गई। प्रान्त के ग्रामीण क्षेत्रों में इस वर्ष ६ हजार पक्के कुएँ बनाने के लिए ३२ लाख रुपये की व्यवस्था थी, परन्तु सीमेण्ट के अभाव में १० लाख से अधिक व्यय न किया जा सका और मुश्किल से २००० कुएँ बन पाये। अब प्रान्तीय सरकार के कहने पर भारत-सरकार ने कम्पनी के कान उमेठे हैं और उसने प्रतिमास ११ हजार टन सीमेण्ट सरकार को देना स्वीकार कर लिया है।

* * *

जनमत के कारण खाद्य-विभाग को विनियंत्रण के लिए लाचार होना पड़ा है, परन्तु फिर भी यह विभाग नियंत्रण जारी रखने के पक्ष में अपना प्रचार करने से नहीं चूकता। हाल ही में यह समाचार प्रकाशित हुआ था कि विनियंत्रण के कारण खाद्य-विभाग के जो २५,००० अस्थायी कर्मचारी हट जायँगे, उनके वेतनों की बचत होने से प्रान्तीय सरकार को प्रायः डेढ़ करोड़ रुपये का लाभ होगा। इस विभाग ने तुरन्त इसका प्रतिवाद करते हुए प्रचारित किया कि यह बचत तो हो सकती है, परन्तु विनियंत्रण होने से वस्तुओं का मूल्य भी बढ़ जाएगा और सरकार को अपने कर्मचारियों के लिए महँगाई के अतिरिक्त भत्ते की व्यवस्था करनी पड़ेगी, उससे यह बचत लाभ न होकर हानि ही सिद्ध होगी।

* * *

राजनीति में वामपक्ष के नेता कांग्रेस मंत्रिमंडल की असहनशीलता से बड़े नाराज हैं। विगत दिसम्बर में श्री शरत् बोस के लखनऊ आने पर अधिकारियों ने धारा १४४ के नाम पर उनके भाषण के लिए अमीनुद्दौला पार्क में सभा नहीं होने दी तथा लाउड स्पीकर से उनके संबंध में घोषणा करने की अनुमति नहीं दी। उधर कानपुर में नेता जी सुभाषचन्द्र बोस की जन्म-तिथि पर वहां के अधिकारियों ने जैसा शर्मनाक रवैया अख्तियार किया वह वास्तव में अति निन्दनीय है। यदि दो-एक छोटे-मोटे जुलूस निकल जाते, तो शासन का तख्ता न हिल जाता। लोगों की धारणा है कि पुरानी नौकरशाही के ये यंत्र मंत्रिमंडल को बदनाम करने के लिए अपनी कुत्सित दुरभिसन्धियों से बाज नहीं आते।

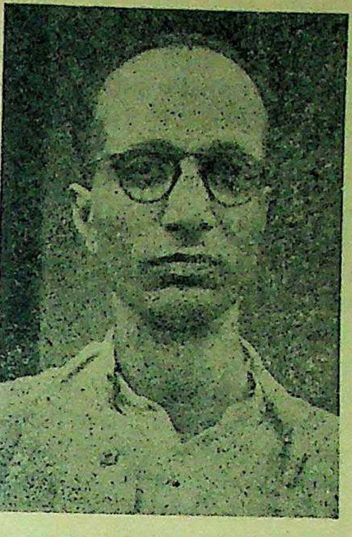

समाजवादी दल के प्रमुख कार्यकर्ता और विद्वान् नेता डाक्टर वेसकर।

* * *

कुछ वामपक्षीय नेताओं का कहना है कि मंत्रिमण्डल उनके अपने राजनीतिक प्रचार में अनुचित बाधा डालता है। जहां तक साम्प्रदायिक अशान्ति का प्रश्न है, ये नेता भी उसका विरोध ही करते हैं, परन्तु साम्प्रदायिक अशान्ति के बहाने वैध राजनीतिक विचार-धारा के प्रचार में किसी लोकप्रिय सरकार का बाधा डालना स्वार्थ, असहनशीलता तथा दुर्बलता का परिचायक है।

* * *

परन्तु मंत्रिमण्डल इस आरोप को पूर्ण साहस से ग्रहण करता है और उसके पास भी उसका समुचित उत्तर है। इस समय देश एक अभूतपूर्व साम्प्रदायिक और राजनीतिक संकट से गुजर रहा है। देश को स्वाधीनता मिले अधिक काल नहीं हुआ है और उस स्वतन्त्रता तक को खतरा है। देश के अनेक भागों में वाह्य आक्रमण भी हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में सब लोगों को मिलकर देश की शक्ति बढ़ानी चाहिए। पंडित नेहरू ने इसीलिए बड़े प्रयत्नों से मालिकों और मजदूरों में तीन वर्ष की औद्योगिक शान्ति का समझौता कराया। परन्तु कुछ वामपक्षीय नेता अपने राजनीतिक उद्देश्यों की सिद्धि के लिए मजदूरों को हड़ताल के लिए उकसाते हैं, सरकारी कर्मचारियों में शासन के प्रति द्वेष उत्पन्न करते हैं। इस प्रकार देश की साधन सम्पन्नता में बाधा पड़ने से राष्ट्र की शक्ति का ह्रास हो रहा है और इसीलिए सरकार को इस प्रकार के प्रतिबन्ध लगाने के लिए खेदपूर्वक लाचार होना पड़ रहा है।

मधुस्रवा

इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीव में मधु बरसाने की पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन को रस-सिक्त बनाइए। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

प्रतिमा

इस संग्रह में सुकवि राजाराम श्रीवास्तव की एक से एक बढ़िया ५० कविताएँ हैं। इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा है। क्या भाषा और क्या भाव सभी अनुपम हैं। रंगीन आवरण, बढ़िया छपाई और मूल्य केवल १) एक रुपया।

वनवास

कवि ने रामचन्द्र जी के वनवास का अनोखा वर्णन किया है। कवि राजाराम चित्रकूट के पड़ोसी हैं और वहीं पर वनवास की अनेक मुख्य घटनाएँ हुई थीं। इस कारण यह 'वनवास' अपने ढंग की एक ही पुस्तक है। मूल्य ||।=) चौदह आने।

अद्भुत कहानियाँ

दो रंगों में छपी इस सचित्र पुस्तक में एक से एक बढ़िया कहानियाँ हैं। इसमें इतिहास, स्वामिभक्ति और भाग्य के खेल का वर्णन पढ़ते ही बनता है। मूल्य ||≡)

पृथ्वी की परिक्रमा

भिन्न-भिन्न देशों के प्रधान स्थानों का मनोहर वर्णन आपको इस पुस्तक में सुन्दर भाषा में मिलेगा। चिकने कागज पर छपे हुए पूरे पृष्ठ के चित्र भी इसमें हैं। मूल्य ||)

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग।

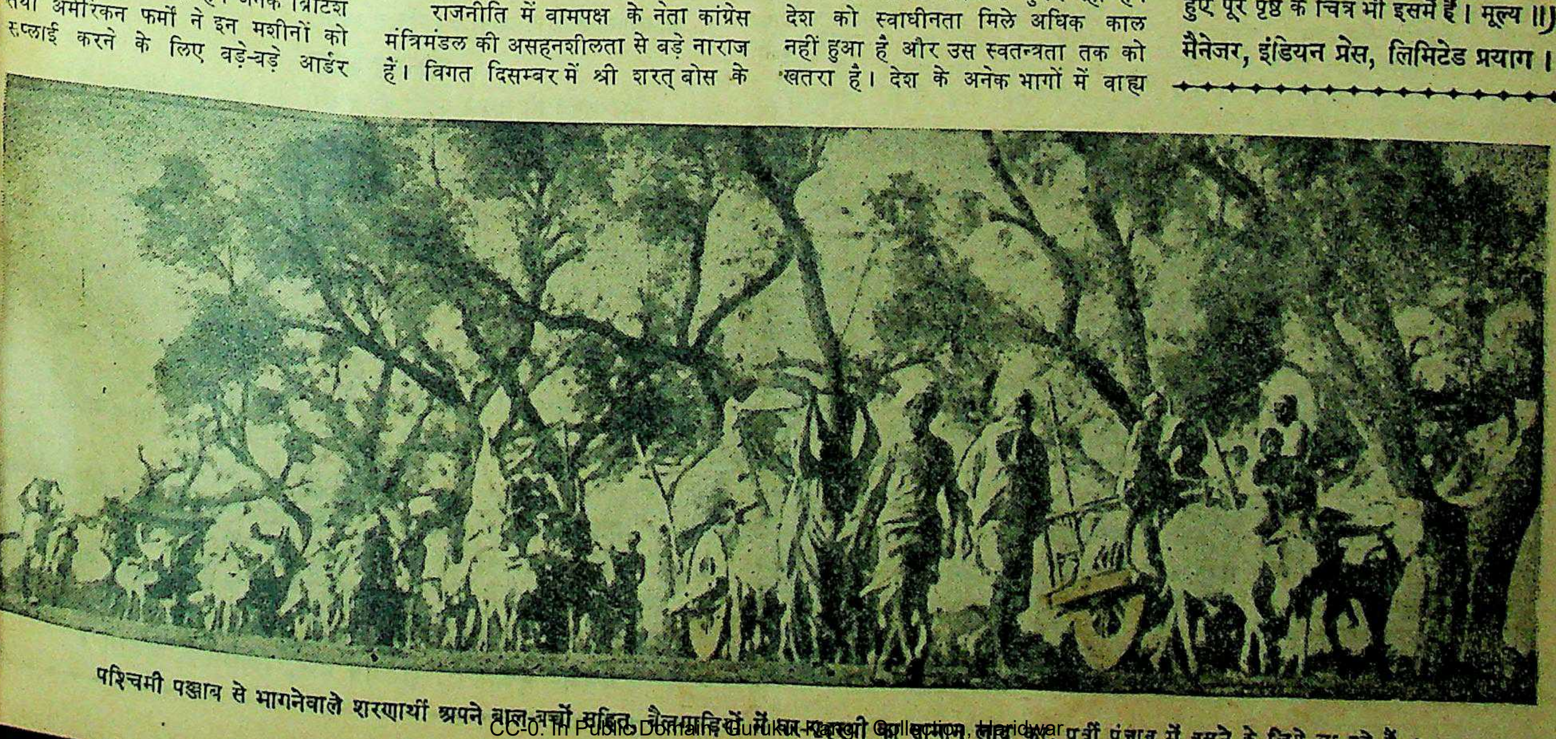

पश्चिमी पञ्जाब से भागनेवाले शरणार्थी अपने बाल-बच्चों सहित, बैलगाड़ियों में घर-गृहस्थी का सामान लाद कर, पूर्वी पंजाब में बसने के लिये जा रहे हैं।

ग्राम पंचायत बिल

पंचायत के अधिकारों के प्रमुख नियम

लेखक, श्री बेनीमाधव, मुख्तार

ग्रामीण जनता को स्वराज्य-सुखास्वादन कराने और उसकी बढ़ती हुई आकांक्षाओं को संतुष्ट करने के लिए जिस विधान का निर्माण जनता के प्रतिनिध कहलानेवालों ने अभी-अभी किया है वह २७ दिसम्बर ४७ से यू० पी० पंचायत राज ऐक्ट के नाम से लागू हो गया है और उसके प्रयोग के लिए प्रयत्न भी प्रारम्भ हो गये हैं। इसके अनुसार प्रत्येक गांव में एक 'गांव-सभा' बनेगी जिसका सभासद गांव का प्रत्येक स्त्री-पुरुष (२१ साल की आयुवाला) होगा। इन सभासदों की संख्या कदाचित् एक हजार होगी जिनमें से ३० से ५१ तक कार्यकारिणी समिति के लिए चुने जायँगे और वह समिति 'गांव पंचायत' कहलायेगी। इस पंचायत को जो-जो अधिकार प्राप्त होंगे उनमें से विशेष इस प्रकार हैं—

सूबे की सरकार द्वारा एक प्रान्त (जिला) मंडलों में विभक्त किया जायगा और उन मंडलों में आवश्यकतानुसार गांव सभाओं के कार्यक्षेत्रों को सम्मिलित करके प्रत्येक मंडल के लिए 'पंचायती अदालत' की स्थापना होगी। मंडल में प्रत्येक 'गांव-सभा' ऐसे पांच प्रौढ़ व्यक्तियों को चुनेगी जो एक निश्चित योग्यता रखते हों। अभी तक यह जाना नहीं जा सका है कि इस 'निश्चित योग्यता' का अर्थ क्या किया जावेगा पर यह अवश्य कहा जा सकता है कि अब तक की गतिविधि के विचारानुसार जेल-यात्रा ही सबसे बड़ी योग्यता मानी जायगी क्योंकि लिखाई-पढ़ाई का स्थान तो कताई-बुनाई या धुनाई बहुत पहले ही ले चुकी है और विधर्मियों को एन-केन प्रकारेण प्रसन्न रखनेवाले इस युग में जातीय या धार्मिक चर्चा पाप है ही। जो हो, इस प्रकार सब सभाओं के चुने हुए सज्जनों द्वारा 'पंचायती अदालत' का पैनल अर्थात् कार्यकर्ताओं की लिखित सूची—बनेगा। यह सज्जन समुदाय अपने में से ही एक ऐसे सज्जन को चुनेगा जो कार्यवाही लिख सकने और सरपंच का काम कर सकने की योग्यता रखता हो। क्या ऐसे पढ़े-लिखे व्यक्ति की खोज में जेलयात्रा भुला दी जायगी अथवा यह आशा की जाती है कि पढ़े-लिखे जेल-यात्री गांव में अधिक रहते हैं और शहरों में कम। अपने नगर में तो यह साक्षात देख ही पड़ता है। उपरोक्त सरपंच महोदय मुकदमा फौजदारी, दीवानी या माल के करने के लिए उस सूची में से पांच ऐसे पंचों की एक बेंच बनायेंगे जिनमें से कम से कम एक ऐसा हो जो साक्षी की बताई हुई बातों को और कार्यवाही को लिख सकने की योग्यता रखता हो। इन पंचों में से एक वादी और एक प्रतिवादी की 'गांव-सभा' के क्षेत्र का रहनेवाला होना आवश्यकीय होगा और शेष तीन उन क्षेत्रों के होंगे जिनमें वादी या प्रतिवादी कोई न रहता हो।

इस अदालत को भारतीय दंड-विधान में वर्णित बहुतेरी धाराओं के अनुसार होनेवाले अपराधों के लिए धन-दंड (जुरमाना) देने के अधिकार प्राप्त होंगे। परन्तु उनमें से साधारणतया होनेवाले अपराध ये हैं—किसी को जान-बूझकर चोट पहुँचाना (३२३)। किसी की चोरी करना (३७९)। चोरी की वस्तु को अपने पास रखना (४११)। किसी की वस्तु को हड़प कर लेना (४०३)। किसी की सम्पत्ति को हानि पहुँचाना (४२६, ४२८, ४३०)। किसी के घर, खेत इत्यादि में बलात् प्रवेश करना (४४७ व ४४८)। किसी का अनादर करना या धमकाना (५०४, ५०६) आदि। इसके अतिरिक्त जुए के और पशुओं द्वारा होनेवाली हानि के मुकदमे भी इसी अदालत में होंगे। इस विषय में विचित्र बात है अभियुक्त की रक्षार्थ किसी विधान विज्ञान के विद्वान् अथवा वकील मुख्तार) का उपस्थित न होना। आज तक सभ्य जगत् के समस्त देशों के विद्यानुसार प्रत्येक अभियुक्त निरपराध माना गया है जब तक कि वादी पूर्णरूपेण उसके अपराध को सिद्ध न कर दे। हमारे देश के बड़े-बड़े वकील नता भी राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करने से पहले गला फाड़-फाड़कर इसी सिद्धान्त का प्रचार और प्रसार करते रहे हैं पर न जाने क्यों उनके ही विशाल हृदयों में बेचारे अभियुक्त के इस जन्मसिद्ध अधिकार को अपहरण करने की भावना प्रवेश कर गई है। क्या उनकी समझ से वकील की अनुपस्थिति के कारण बहुतेरे अभियुक्तों के निर्दोष होते हुए भी दंडित हो जाने की शंका और सम्भावना इस युग में नहीं रह गई है जब प्रतिहिंसा की भावना को बड़े-बड़े अहिंसाव्रती तक नहीं रोक सकते और अपने विरोध में दो-चार शब्द तक धैर्यपूर्वक सुन नहीं सकते और एकाएक विचलित हो जाते हैं। जिस वकील समुदाय के प्रबल प्रयत्नों से आज भारतवर्ष में स्वतन्त्रता की झलक देख पड़ती है उसी समुदाय का यह निरादरपूर्ण और अन्याय-युक्त बहिष्कार कि अभियुक्त की सहायता के लिए उसका एक सम्बन्धी या मित्र तो 'पंचायती अदालत' में जा सकता है पर उसका विश्वासपात्र वकील नहीं!

मान लीजिए कि राम 'पंचायती अदालत' से प्रार्थना करता है कि मोहन ने मेरा पेड़ काटकर चोरी का अपराध किया है। मोहन मानता है कि मैंने पेड़ अवश्य काट लिया है पर मैं चोरी का अपराधी नहीं हूँ। पेड़ मेरे और राम के खेतों के बीचवाली मेड़ पर था। अब सोचिए कि क्या मोहन के किसी सम्बन्धी या मित्र को या स्वयं उसको ही यह ज्ञान हो सकता है कि अब तक के बड़े-बड़े न्यायाधीशों का मत है कि ऐसी दशा में मोहन सर्वथा निर्दोष है उसे दण्ड कदापि न मिलना चाहिए। यह जानकारी वकीलों की ही निजी विभूति है जिसे उन्होंने बहुत परिश्रम से जनहित के लिए संग्रह कर रक्खा है। साधारण जनता को उससे वंचित करने का फल अन्याय के अतिरिक्त और हो ही क्या सकता है? क्या ऐसे पंचायत-विधान का अर्थ ग्रामीण जनता अत्याचार का दूसरा रूप न समझेगी? समय से पहिले भूल-सुधार भूल नहीं कहलाती। अतः आशा है कि अभियुक्तों के लिए वकील की सहायता पर से रोक तुरन्त हटा ली जावेगी।

—फरुखाबाद

परीदेश।

यह पुस्तक ख़ास कर छोटे बच्चों के लिए है। इसमें ऐसी एक भी बात नहीं जिसको समझने के लिए माथापची करनी पड़े। इसमें रोजमर्रा की बातें बड़े ही अच्छे ढंग से लिखी गई हैं। बड़े आकार की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों और फूल-पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है। मूल्य ॥)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

(पेज ५ का शेष)

यह हुआ कि पहले तो सकलाना जागीर में सत्याग्रह व करबन्दी का आन्दोलन प्रारम्भ हुआ और बाद में वह आन्दोलन सारी रियासत में फैल गया। दो महीने तक यह आन्दोलन जारी रहा। अन्त में प्रजा मण्डल के कार्यकर्त्ताओं के आगे रियासती शासकों ने हथियार डाल दिये और महाराज ने भी भारत सरकार को राज्य शासन भालने का विचार प्रगट कर दिया।

अब टिहरी में सर्वत्र शान्ति है, भारत सरकार के आदेश से युतप्रान्त की सरकार उसका शासन सँभाल रही है। प्रजामण्डल के कार्यकर्त्ता प्रान्तीय सरकार की मदद कर रहे हैं और पुराने अधिकारी यहां विदा ले रहे हैं। लक्षण यह है कि टिहरी को युक्तप्रान्त में शामिल जायेगा और उसे एक जिले के रूप परिवर्तित किया जायेगा। हिमालय पहाड़ी रियासतों में रकबे आबा की दृष्टि से टिहरी सबसे बड़ी इस जनयुग में उसका खात्मा हो गया निश्चय ही हिमालय के अन्य छोटे रजवा भी स्वतन्त्र न रह सकेंगे। भेद केवल है कि टिहरी युक्तप्रान्त का अंग बनी तो अन्य छोटे रजवाड़े पूर्वी पंजाब में जायेंगे और फिर हिमालय संयुक्त हो यथार्थ में हमारे देश का असली प्र बन सकेगा।

आधुनिक हिन्दी-साहित्य का सर्वश्रेष्ठ गीति-काव्य

कवि और छवि

लेखक, सुप्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव

कविश्री बालकृष्ण राव आधुनिक हिन्दी-जगत् के चोटी के कलाकार और सर्वश्रेष्ठ गीतिकार हैं। 'कवि और छवि' आपकी नवीनतम गीति-काव्यों का सर्वश्रेष्ठ संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अंतर्द्वंद्व से परिपूर्ण तो हैं ही साथ ही सरस और हृदय पर मधुर प्रभाव और साथ छोड़ जानेवाले हैं। हृदय को तन्मय तथा गहन अनुभूति से सराबोर कर देनेवाले ऐसे गीत हिन्दी में आज लिखे ही नहीं जा रहे हैं। 'कवि और छवि' में संग्रहीत सभी गीत बिलकुल नवीन हैं, पढ़ते पढ़ते हृदय उद्वेलित हो उठता है। छपाई-सफाई नयनाभिराम, सचित्र और सजिल्द—मूल्य केवल २) रु०।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

श्रीराजाराम श्रीवास्तव की अनमोल कृतियाँ

वनवास

इसमें रामचन्द्रजी के वनवास का अनोखा वर्णन है। कवि महोदय पुण्यधाम चित्रकूट के पड़ोसी हैं और वहीं पर वनवास की अनेक मुख्य घटनाएँ हुई थीं। इस कारण यह 'वनवास' अपने ढंग की एक ही पुस्तक है। इसमें श्री रामचन्द्रजी के वनवास से सम्बन्ध रखनेवाली, दशरथ के प्राण-त्याग, भरत के द्वारा कैकेयी की भर्त्सना, अयोध्या लौटने के लिए श्री रामचन्द्रजी से भरत के आग्रह करने तथा लक्ष्मण के द्वारा शूर्पणखा की नाक काटने आदि की घटनाओं का वर्णन है। मूल्य ॥।=) चौदह आने।

लक्ष्मण-शक्ति

यह बहुत ही उत्तम कोटि की रचना है। इस खण्ड-काव्य की रचना रामायण के लंकाकाण्ड की उस सुप्रसिद्ध घटना के आधार पर की गई है, जब लक्ष्मणजी मेघनाद से युद्ध करते हुए उसके द्वारा चलाई गई शक्ति के हृदय में लग जाने पर मूर्च्छित होकर गिर पड़े थे और उनके जीवित रहने की आशा नहीं रह गई थी। मूल्य ॥) आठ आने।

मधुस्रवा

इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीवन में मधु बरसाने की पूरी क्षमता है। इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन को रस-सिक्त बनाइए। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

किंकिणी

इस पुस्तक में कविजी की उत्तमोत्तम फुटकर कविताओं का संग्रह है। कविताओं की भाषा इतनी मधुर और कल्पना की उड़ान इतनी आकर्षक है कि पाठक कुछ क्षण के लिए उसमें अपनी सुध-बुध भूले बिना नहीं रहता। मूल्य ॥।) बारह आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

हमारी विविध विषय की उत्तमोत्तम पुस्तकें

हिन्दी साहित्य—यह हिन्दी साहित्य का परिवर्द्धित और परिमार्जित संस्करण है। पहले की दो आवृत्तियों में यह हिन्दी भाषा और साहित्य के नाम से प्रकाशित हुआ था, किन्तु अब इसे स्वतन्त्र रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। कवियों के विषय में जो नये अनुसंधान हुए हैं उन सबका इसमें समावेश किया गया है। साहित्यिक स्थिति के वर्णन में भी आवश्यक परिवर्तन किये गये हैं। हिन्दी साहित्य के प्रत्येक विद्यार्थी को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ४) चार रुपये।

काव्यकला—साहित्यालोचन का यह संक्षिप्त संस्करण है। लोगों का कथन है कि इस नवीन रूप में इस पुस्तक का उपयोग ऊँची श्रेणी के विद्यार्थी सफलतापूर्वक कर सकते हैं। इसमें साहित्य-शास्त्र के सभी अंगोपांगों का विवेचन तो है किन्तु साथ ही वे अंश निकाल दिये गये हैं जो जटिल और खंडन-मंडनात्मक हैं। इसके संकलनकार भी लेखक के पुत्र श्री गोपाललाल खन्ना हैं। मूल्य २) दो रुपये।

चिन्तामणि—(पहला भाग) लेखक, आचार्य पंडित रामचन्द्रजी शुक्ल। इस पुस्तक में आचार्य शुक्ल जी ने भिन्न-भिन्न विषयों पर लिखे गये अपने सत्रह निबन्धों का संग्रह किया है। ये सभी निबन्ध बहुत ही गंभीर और अध्ययनपूर्ण हैं, जिनके द्वारा मनुष्य की विभिन्न प्रकार की आन्तरिक भावनाओं पर आलोचनात्मक ढंग से प्रकाश डाला गया है। इस रचना पर मंगलाप्रसाद पारितोषिक मिल चुका है। मूल्य २) दो रुपये।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ—लेखक, पंडित उमेशचन्द्र मिश्र। इस पुस्तक में विश्वकवि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर की प्रामाणिक जीवनी और उनकी समस्त कृतियों—कविता-संग्रह, नाटक-नाटिका, कहानियाँ उपन्यास, यात्रा-वर्णन, विज्ञान के ग्रंथ, निबन्ध, साहित्यिक समालोचना, चित्रकला आदि—का विवेचनात्मक परिचय दिया गया है। उदाहरणों में कवि की प्रायः समस्त सुप्रसिद्ध और चुनी हुई रचनायें आ गई हैं। फुटनोट में उनके सरल अर्थ दिये गये हैं। इसके द्वारा आप रवीन्द्रनाथ और उनकी काव्य-कृतियों का पूरा-पूरा परिचय प्राप्त कर सकते हैं। विश्वभारती (शान्तिनिकेतन) के विद्वानों ने भी इसकी प्रशंसा की है। मूल्य केवल ५) पाँच रुपये।

द्विवेदी मीमांसा—लेखक, श्रीयुत प्रेमनारायण टण्डन। हिन्दी के नवीन युग की धाराओं और प्रवृत्तियों के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। साधारण पाठकों के अतिरिक्त सम्मेलन के परीक्षार्थियों व विश्वविद्यालयों के छात्रों के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य २) दो रुपये।

पं० शान्तिप्रिय द्विवेदी की कुछ पुस्तकें

कवि और काव्य—श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी ने काव्य के गुण-दोष से सम्बन्ध रखनेवाले कितने ही उपयोगी विषयों का इसमें विशद्‌रूप से विवेचन किया है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

संचारिणी—लेखक, श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी। यह श्रेष्ठ रचना अभी अभी पाठकों के सामने आई है। इसमें भक्ति-काल से लेकर आज के संक्रांति-काल तक की साहित्यिक चेतनाओं का मर्म स्पर्श है। मूल्य २) दो रुपये।

युग और साहित्य—लेखक, श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी। 'युग और साहित्य' भी हिन्दी-निबन्धों का एक आदर्श उपस्थित करती है। इसमें १३ मौलिक निबंध हैं, जिन्हें विद्वानों ने बहुत पसन्द किया है। मूल्य २।।≡) दो रुपये ग्यारह आने।

देवपुरस्कार-विजेता हरदयालुसिंह की कुछ व्रजकाव्य की समीक्षायें

देवदर्शन—देवपुरस्कार - विजेता श्री हरदयालुसिंह लिखित व्रजकाव्य समीक्षाएँ—इसमें व्रजभाषा के प्रख्यात कवि देव की जीवनी और उनके समस्त काव्यों का आलोचनात्मक परिचय दिया गया है। व्रजकाव्य के प्रेमियों के अतिरिक्त साहित्य के विद्यार्थियों के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

पूर्ण-पराग—इसमें व्रजभाषा के प्रसिद्ध आधुनिक कवि श्री देवीप्रसाद 'पूर्ण' की जीवनी और उनके काव्य का समालोचनात्मक परिचय है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मतिराम-मकरन्द—इसमें काव्यालोचन के साथ-साथ कवि मतिराम के ३ प्रसिद्ध ग्रंथों—मतिराम सतसई, ललित-ललाम और रसराज का संक्षिप्त सरस संग्रह भी कर दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

बिहारी-विभव—इसमें महाकवि बिहारी की कविता का आलोचनात्मक परिचय, उनकी जीवनी तथा सतसई के चुने हुए दोहे संकलित हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

भूषण-भारती—इसमें महाकवि भूषण की जीवनी और उनके समस्त काव्य ग्रन्थों—का विवेचनात्मक परिचय दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

महादेवी का विवेचनात्मक गद्य—संकलनकर्त्ता, श्री गंगाप्रसाद पांडेय, एम० ए०, साहित्य की नवीन शैली का अध्ययन करनेवालों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य २।।) दो रुपये बारह आने।

आलोचनादर्श—इस पुस्तक के लेखक हैं डाक्टर रामशंकर शुक्ल 'रसाल', एम० ए० डी० लिट। इसमें आलोचना-कला का मार्मिक और शास्त्रीय विवेचन किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

साहित्य-प्रकाश—यह पुस्तक भी डाक्टर रसाल की ही लिखी है। इसमें साहित्यिक सिद्धान्तों का विवेचन किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

साहित्य-समीक्षा—इस पुस्तक में हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक श्रीयुत कालिदास कपूर, एम० ए० एल-टी० के साहित्यिक तथा समालोचनात्मक लेखों का संग्रह किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

प्राचीन साहित्य—इस पुस्तक में रवीन्द्र बाबू के कई प्राचीन साहित्य, विशेषतः संस्कृत साहित्य के आलोचनात्मक निबन्धों का संग्रह है। मूल्य १) एक रुपया।

महाकवि अकबर—उर्दू के प्रसिद्ध कवि अकबर का आलोचनात्मक परिचय तथा उनकी उत्कृष्ट रचनाओं का अर्थ-सहित संग्रह। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

शिक्षा—हम अपने बालकों तथा बालिकाओं को किस तरह सुशिक्षित तथा सदाचारी बना सकते हैं, यह बात इस पुस्तक में विस्तारपूर्वक समझाई गई है। इसके मूल लेखक सुप्रसिद्ध दार्शनिक 'हर्बर्ट स्पेन्सर' हैं और अनुवादक स्वर्गीय आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी। मूल्य ४।।≡) चार रुपये ग्यारह आने।

भारतवर्ष में पश्चिमी शिक्षा—वर्त्तमान शिक्षा-विभाग के क्रम-विकास का संक्षिप्त इतिहास। मूल्य ।।) आठ आने।

अर्थमेटिक शिक्षा-प्रणाली—यह पुस्तक नार्मल स्कूलों और ट्रेनिंग क्लासों के विद्यार्थियों तथा स्कूलों के अध्यापकों को अर्थमेटिक पढ़ाने के उत्तम से उत्तम ढंग सिखलाने के उद्देश्य से लिखी गई है। मूल्य १) एक रुपया।

संगीत-सम्बन्धी पुस्तकें

ध्रुपद-स्वर-लिपि—इस पुस्तक के लेखक काशीनिवासी श्री हरिनारायण मुकुर्जी ध्रुपद के विशेषज्ञ हैं। मूल्य २।।≡) दो रुपये ग्यारह आने।

संगीत-सुदर्शन—सब प्रकार की राग-रागिनियों का शास्त्रीय-विवेचन। मूल्य १।।≡) एक रुपया ग्यारह आने।

विविध विषय की पुस्तकें

मन की अद्‌भुत शक्ति—अपने मन की अद्‌भुत शक्तियों पर पूर्णरूप से अधिकार प्राप्त करके तथा उनका सदुपयोग करके मनुष्य किस प्रकार अपने जीवन को अधिक से अधिक सार्थक बना सकता है, इस बात की इस पुस्तक में विवेचना की गई है। मूल्य ।।।-) तेरह आने।

ऋद्धि—जो लोग धनहीन हैं, ऋण-ग्रस्त हैं, बहु-कुटुम्बी हैं, साथ ही आय भी बहुत कम है, वे इस पुस्तक के उपदेश के अनुसार चलकर सुख से जीवन बिता सकते हैं। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

मानसिक आकर्षण-द्वारा व्यापारिक सफलता—व्यापारिक सफलता के लिए संपर्क में आनेवाले व्यक्तियों पर मानसिक आकर्षण की शक्ति का प्रयोग करने की विधि। मूल्य ।-) पाँच आने।

गोपालन—विभिन्न प्रकार की गौओं के रूप-रंग तथा गुण-दोष का विस्तृत वर्णन। इसमें गौओं का पालन-पोषण करने तथा उन्हें अधिक से अधिक दुधार बनाने की विधि बतलाई गई है। मूल्य १) एक रुपया।

लकड़ी के दाम निकालने की जंत्री—इस पुस्तक की सहायता से लकड़ी का दाम सरलतापूर्वक निकाला जा सकता है। मूल्य २) दो रुपये।

बहीखाता—हिसाब-किताब रखने का उत्तम से उत्तम ढंग। मूल्य ।।-) नौ आने।

भारतीय चित्रकला-पद्धति—कलात्मक चित्र, कार्टून आदि बनाने की आसान विधि। मूल्य १) एक रुपया।

स्काउट मास्टरी और ट्रूप संचालन—पुस्तक में स्काउट मास्टरों के लिए बहुत-सी व्यावहारिक बातें बताई गई हैं। इस पुस्तक के अनुसार चलनेवाले स्काउट मास्टर ट्रूप संचालन में निस्सन्देह सफल होंगे। मूल्य १) एक रुपये।

अग्निकांड में सेवा—अग्निकांड में स्काउट लोग किस प्रकार सफलतापूर्वक दूसरों के जीवन और संपत्ति की रक्षा कर सकते हैं यह बात इस पुस्तक में विस्तारपूर्वक लिखी गई है। पुस्तक सचित्र है। मूल्य १) एक रुपया।

स्काउट ड्रिल और खेल—यह पुस्तक अपने ढंग की बिलकुल अकेली है। स्काउटों के लिए जितने प्रकार के भी ड्रिल और खेल आवश्यक हैं, वे सभी इसमें विस्तारपूर्वक बतलाये गये हैं। उनके नियमों तथा उपयोग आदि पर भी समुचित प्रकाश डाला गया है। पुस्तक सचित्र है। मूल्य पहला भाग १) एक रुपया दूसरा भाग २) दो रुपये।

बाल शब्द-सागर—रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास, बी० ए० ने हिन्दी का यह शब्द-कोष विशेष रूप से विद्यार्थियों के उपयोग के लिए बनाया है। किन्तु अपनी व्यावहारिक उपयोगिता के कारण यह सभी के काम आ सकता है। मूल्य २।।≡) दो रुपये ग्यारह आने।

कुछ संस्कृत पुस्तकें

प्रबन्ध प्रकाश—लेखक, मंगलदेव शास्त्री। इस पुस्तक के प्रारम्भ में सरल संस्कृत भाषा में प्रबन्ध रचना सम्बन्धी आवश्यक नियम दिये हैं। इसके पश्चात् उदाहरण-स्वरूप सुप्रसिद्ध प्राचीन तथा आधुनिक विद्वानों के तथा स्वयं ग्रन्थकार के लिखे हुए परीक्षोपयोगी निबन्ध दिये गये हैं। पुस्तक के अन्त में गद्य-पद्यमय सुभाषित तथा लोकन्याय दिये गये हैं। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

संस्कृत गद्य रत्नावली—पंडित अमरनाथ झा, वाइस चान्सलर प्रयाग विश्वविद्यालय। यह पुस्तक संस्कृत गद्य की विभिन्न प्रकार की शैलियों का नमूना है। संस्कृत के सभी प्रतिष्ठित ग्रन्थों से अवतरण लिये गये हैं; किन्तु इस बात का ध्यान रखा गया है कि कोई अवतरण कठिन न हो। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मेघदूत—यह महाकवि कालिदास के मेघदूत का बहुत ही उत्तम और उपयोगी संस्करण है। हर एक श्लोक के सामने राजा लक्ष्मणसिंह का किया हुआ पद्यानुवाद दिया गया है। गद्य में बहुत ही सरल और विस्तृत अर्थ भी दिया गया है। पाद टिप्पणियों में संस्कृत के कठिन शब्दों के समास, विग्रह तथा प्रतिशब्द आदि भी दिये गये हैं। मूल्य ।।।-) तेरह आने।

पंचतंत्र—संस्कृत में यह पुस्तक बहुत ही प्रसिद्ध है। इसके सुन्दर संस्करण का अभाव देखकर हमने इसे प्रकाशित किया है। आवश्यक टिप्पणियाँ देने के बाद अन्त में हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित किया गया है। मूल्य ।।≡) ग्यारह आने।

संक्षिप्त वाल्मीकीय रामायण—स्वर्गीय रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा संपादित आदि कवि वाल्मीकि मुनि प्रणीत वाल्मीकीय रामायण संस्कृत में बहुत बड़ी पुस्तक है। श्री रवीन्द्रनाथ जी ने इसे संक्षिप्त किया है। किन्तु पुस्तक का क्रम कहीं भी टूटने नहीं पाया है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

कादम्बरी—सम्पादक स्वर्गीय महामहोपाध्याय पंडित गंगानाथ झा और पंडित काशीराम एम० ए०। बाणभट्ट की कादम्बरी संस्कृत में बेजोड़ पुस्तक है। परन्तु यह ग्रन्थ इतना बड़ा है कि इस युग के लोगों के लिए कठिन भी हो गया है। इस कठिनाई को हटाने के लिए इसका यह संक्षिप्त संस्करण निकाला गया है। मूल्य १) एक रुपया।

संक्षिप्त बिहारी—महाकवि बिहारी के दोहों का यह बहुत अच्छा संस्करण है। बिहारी की सतसई में जितने अधिक अश्लील दोहे थे, वे छाँटकर इसमें से निकाल दिये गये हैं। मूल्य २) दो रुपये।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ. ए., बी. ए., पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से और होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं नियमावली मुफ्त मँगायें। पता:—
इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

गजब हो गया अपनी गलती से सैकड़ों घर बरबाद ! रक्षा चाहते हैं तो इसे जरूर पढ़ें।

१—ताकतवर यौवन वटी—भाइयो, यह ताकत की बहुत जोरदार दवा कई तरह की कीमती दवाइयों से तैयार गई है। इसकी एक खुराक खाते ही शरीर में महान् शक्ति पैदा मालूम देती है तथा धातुक्षय, कमजोरी, स्वप्नदोष को जड़ हटाकर पतले वीर्य को दही के समान गाढ़ा बना देती है, स्मरणशक्ति बढ़ाकर दिल व दिमाग को ताकतवर बनाती है। खोई ताकत व जवानी को आठ दिन में फिर से लाने के लिए आश्चर्यजनक यह इलाज है। बूढ़ा या जवान एक बार भी इसे खा तो यौवन का फिर से पूरा आनन्द आ जाता है। इसके आश्चर्यजनक गुणों से मोहित होकर बड़े-बड़े राजा-महाराजा, सेठ-साहूकारों ने इस्तेमाल करके प्रसन्नता प्रकट की है। पूरे कोर्स ६४ गोली के पैकिट का ५)।

२—अमीरी तिला—यह अद्भुत तिला राजा-महाराजा, सेठ-साहूकारों के सेवन करने योग्य है। इसके लगाने कमजोरी, ढीलापन, सुस्ती हटकर बिजली के समान अपूर्व ताकत पैदा होती है। फी शीशी ५), डाकखर्च दोनों का १)।

३—आर० पी० का पत्थर हजम चूर्ण—कब्ज को दूर कर दस्त साफ लाता है। फी शीशी ।=)।

पता—जैन बालामृत कार्यालय बेलनगञ्ज, (१००) आगरा

पर अकसीर उपाय
आसोंदा
१८९६
नीलगिरि तैल
पी. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

मेरी तरह तन्दुरुस्ती हासिल करो
BEFORE USE
खराब खून को साफ करता है
डा. वामन गोपाल
आयोडाइज्ड सार्सापरिला
हर जगह मिलता है

इलाहाबाद के एजन्ट—बलदेवप्रसाद बन्नूलाल जौहरी एल० एम० घोलकिया एण्ड ब्रदर्स।

दाद, खुजली
और
हरेक मेलका चमड़ीका दर्दोंके लीए
गत ५० वर्षों से
जग-विख्यात
कपड़े खराब नहीं करती
नकलों से सावधान
सपट
लोशन

सपट एन्ड कं. ली.
मुंबई. २.
D.D.C.142

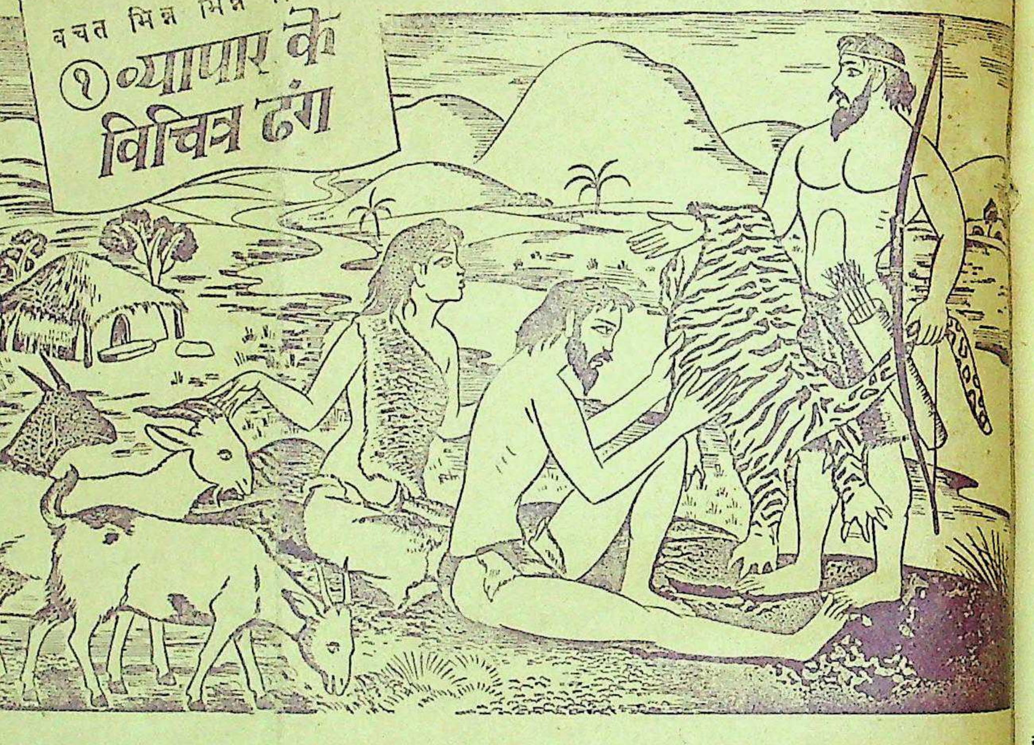

बहुत ही प्राचीन काल में जब कि समाज असभ्य ही था केवल अदल-बदल का ही व्यापार होता था। जैसे - एक शिकारी बाघ की खाल दे कर बकरी या अन्न ही नहीं बल्कि पत्नि भी प्राप्त कर सकता था। और यदि किसी को बाघ की खाल की आवश्यकता न होती तो कुछ प्राप्त नहीं हो सकता था। अनिश्चित भविष्य के लिये बचत करने की इच्छा होने पर भी ऐसी अवस्था में बचत करना न तो सहल था और न ही उचित। क्योंकि बचत विभिन्न वस्तुओं के रूप में ही की जा सकती थी, जैसे केलों के ढेर, अन्न की बोरियां, भेड़ों के समूह, इत्यादि। क्या ये सब नाश होने वाले पदार्थ नहीं? और फिर वर्ष की समाप्ति पर लाभ भी कुछ नहीं होता था।

इस के विपरीत आज कल माल के ख़रीदने में या बचत करने में कोई विशेष कठिनाई नहीं होती। बुद्धिमान ख़र्च करने की बजाय बचाना अच्छा समझता है और वह अपनी बचत को बुद्धिमत्ता पूर्वक सुरक्षित और लाभप्रद मद में लगाता है। नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स की मद में लगाया हुआ धन पूर्णतया सुरक्षित है और अवधि पूरी होने पर इस का मूल्य ५० % बढ़ जाता है-अर्थात १०) बारह वर्ष पूरे होने पर १५) बन जाते हैं। इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता। आप अब ५) से १५,००० तक की मालियत के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं। जिनकी बचत थोड़ी हो वे ।), ।।), और १) के नेशनल सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं।

भविष्य के लिये बचाइए
नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए
रुपया लगाने की सर्व-प्रिय मद

ये डाकख़ानों, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजन्टों और सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त किये जा सकते हैं।

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० ... तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

देशदूत

वर्ष १०, संख्या २२] [रविवार, १५ फरवरी, १९४८

श्रद्धांजलि !

राष्ट्र के जीवन में यह सबसे महान् और दुखद घटना है, विश्ववंद्य बापू आज हमारे बीच नहीं हैं। कौन जानता था कि अपने पन्द्रहवें उपवास के बाद ही बापू राष्ट्र को रोता-विलखता छोड़कर महानिर्वाण-पद प्राप्त कर लेंगे? कौन जानता था कि राष्ट्र के इस उथल-पुथल के युग में साम्प्रदायिक एकता की स्थापना के निमित्त बापू का महान् बलिदान भारतीयों को एकाएक सहन करना पड़ेगा? कौन जानता था कि २९ जनवरी की पूज्य बापू की अन्तिम प्रार्थना होगी जिसे राष्ट्र के करोड़ों व्यक्ति एकाग्र चित्त से उनकी अमरवाणी का रसास्वादन करते नहीं अघाते थे? किन्तु काल की गति बड़ी विचित्र और आश्चर्यजनक है। महापुरुषों का जिस प्रकार समस्त जीवन आश्चर्यजनक और चकित कर देनेवाला होता है उसी प्रकार उनका निर्वाण भी हृदय को रुला देने तथा कंपित कर देनेवाला होता है। पूज्य बापू वास्तव में महापुरुष ही नहीं, अभागे भारत के लिए अवतार थे।

* * *

संसार के महापुरुषों के निर्वाण की घटनायें भी चकित कर देनेवाली हुई हैं। भगवान् राम ने सरयू की लहरों में जल-समाधि ली, भगवान् कृष्ण को एक बहेलिये के वाण लगने से निर्वाण-पद प्राप्त हुआ, ईसा मसीह ने अपने अनुयाइयों द्वारा शूली पर प्राण-विसर्जन किया, अमरीका की स्वाधीनता के जनक शब्राहम लिंकन को ३० जनवरी को गोली का शिकार होना पड़ा, महात्मा सुकरात को भी प्राण-विसर्जन के पूर्व विष का प्याला पीना पड़ा और पूज्य बापू को भी अन्त में एक मूर्ख की गोली से महाप्रयाण करना पड़ा। संसार के महापुरुषों और महात्माओं के निर्वाण-पद-प्राप्त होने की कुछ ऐसी ही ऐतिहासिक परम्परा रही है। पूज्य बापू भी संसार के महापुरुष थे। भारतीय वसाधीनता की प्राप्ति के बाद उस महापुरुष को भगवान् ने अपने पास बुला लिया, क्योंकि भारत को स्वाधीन करने के लिए ही उस महापुरुष ने जन्म ग्रहण किया था।

* * *

पूज्य बापू को निर्वाणपद प्राप्त हो गया, किन्तु राष्ट्र की करोड़ों जनता के आंसुओं का समुद्र उमड़ पड़ा है। महापुरुषों के अभाव की पूर्ति कभी नहीं होती है, फिर बापू के अभाव की पूर्ति कैसे हो सकती है? आज राष्ट्र का बच्चा-बच्चा अपने प्राणप्यारे नेता की स्मृति में श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा है, उसे चारों ओर अँधेरा दिखाई दे रहा है, अब प्रकाश की रेखायें हैं, उसके लिए बापू की अमरवाणी, सत्य, अहिंसा, साम्प्रदायिक एकता और करो या मरो का आदर्श। इस आदर्श की पूर्ति ही पूज्य बापू की आत्मा के सन्तोष का महामंत्र है। ऐसे दुखद अवसर पर हमें महाकवि गोस्वामी तुलसीदास की 'हानि लाभ जीवन मरण, यश अपयश विधि हाथ' इन पंक्तियों का स्मरण करके सन्तोष करना पड़ता है। उस अमर आत्मा के प्रति नतमस्तक हो हम श्रद्धांजलि भेंट करते हैं।

श्रद्धांजलि !

महात्मा गांधी युगपुरुष थे, सन् १९२० से उनके जीवन के अन्त तक हमारे देश के निर्माण में उनका मुख्य हाथ था। इस देश में उन्होंने जन्म लिया, और वह हमारे इतने निकट रहे और उनके पवित्र जीवन और उपदेश से सीखने का हमें अवसर मिला। यह हम सबों का सौभाग्य था।

संसार भर को सुव्यवस्थित करना और ऊँचे आदर्शों की ओर ले चलना उनका सपना था। उनके उठ जाने से संसार की महान् ज्योति बुझ गई।

हमारे देश के तो वह प्राण थे। हमारे जीवन के कोने-कोने पर उनका प्रभाव था। हमारी स्वतन्त्रता की लड़ाई के तो वह अग्रणी सेनापति थे ही, दीन-दुखियों और सब ही सताए हुए वर्गों को सहारा देनेवाले वह आशा-स्तम्भ थे। उन्होंने अपने जीवन के इस आदर्श को कि देश स्वतन्त्र हो, पूरा किया। और उसके बाद शीघ्र ही चले गये। अब देश के पुनर्निर्माण और उसके शक्तिशाली संघटन का बड़ा प्रश्न हमारे सामने है। ईश्वर महात्मा गांधी की पवित्र आत्मा को हमारे देश के कल्याण के लिए फिर भारत में जन्म दे। यह देश के हृदय की पुकार है।

प्रयाग, ८ फरवरी ४८

पुरुषोत्तमदास टंडन

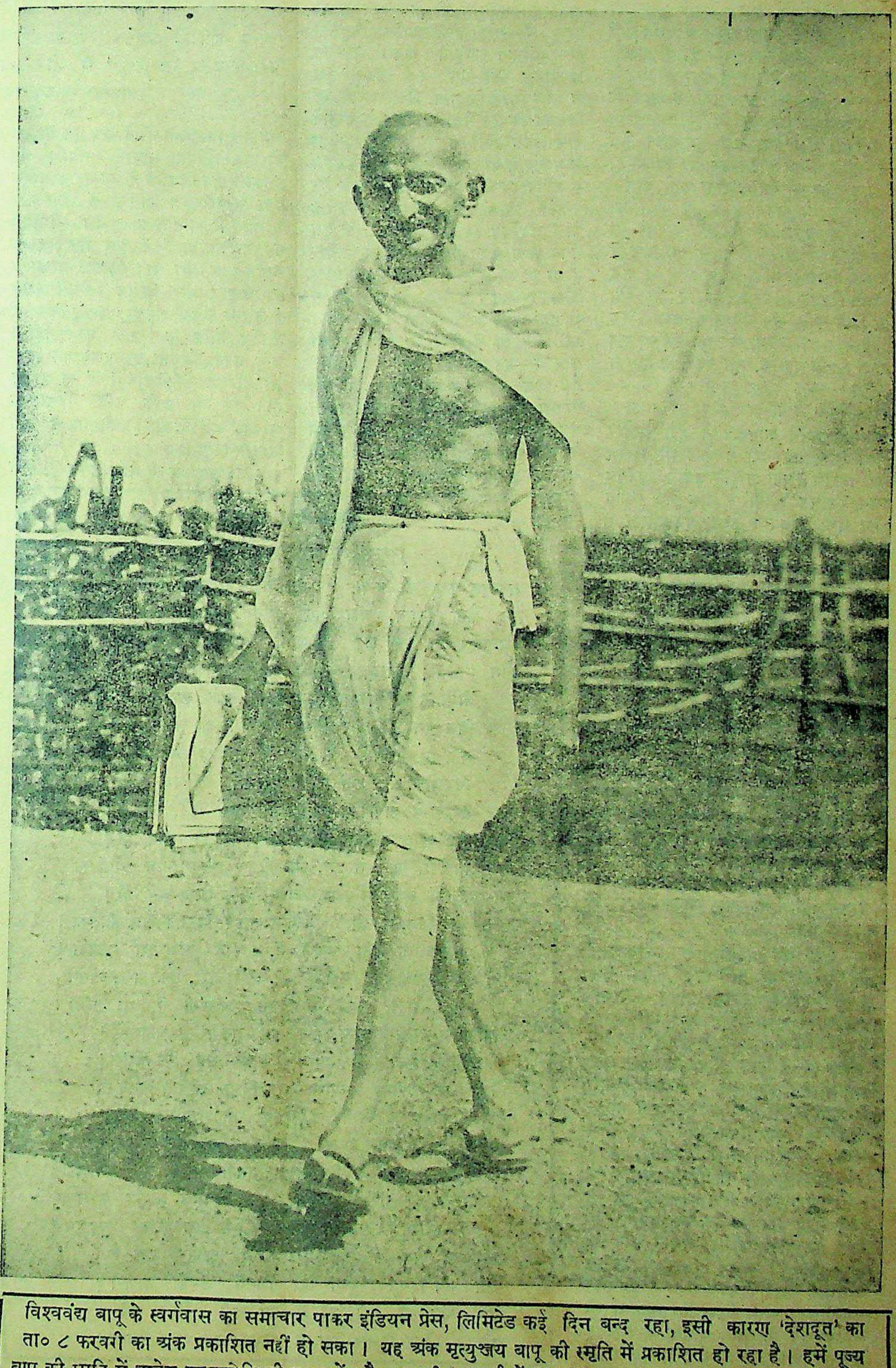

विश्ववंद्य बापू के स्वर्गवास का समाचार पाकर इंडियन प्रेस, लिमिटेड कई दिन बन्द रहा, इसी कारण 'देशदूत' का ता० ८ फरवरी का अंक प्रकाशित नहीं हो सका। यह अंक मृत्युञ्जय बापू की स्मृति में प्रकाशित हो रहा है। हमें पूज्य बापू की स्मृति में अनेक उच्चकोटि की रचनायें और सामग्री प्राप्त हुई हैं किन्तु विलम्ब से, जो आगामी अंक में छपेंगी।

महात्मा गांधी का महाप्रयाण

वह भारतवर्ष के ही नहीं, संसार के एक महापुरुष थे

लेखक, डाक्टर ईश्वरीप्रसाद एम० ए०, डो० लिट्

महापुरुष महात्मा गांधी का महाप्रयाण हो गया। इतिहास में संसार के अन्य महापुरुषों की भांति महात्माजी का जीवन अमर है। भारतीय स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए गांधीजी का बलिदान, त्याग और तपस्या स्वर्णाक्षरों में अंकित है। साथ ही विश्व-शांति तथा बंधुत्व का उनका आदर्श ऐतिहासिक है। सुप्रसिद्ध इतिहासकार ने इस लेख में महात्माजी के जीवन की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए हुतात्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की है।

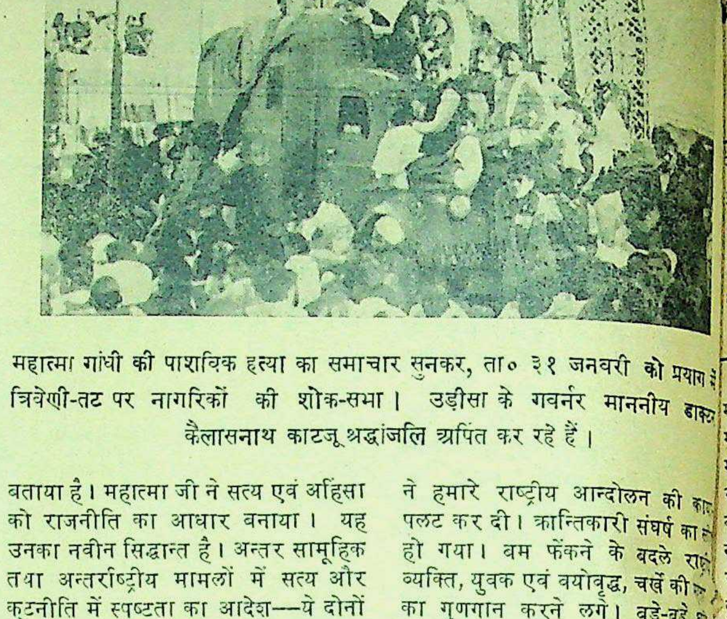

महात्मा गांधी की पाशविक हत्या का समाचार सुनकर, ता० ३१ जनवरी को प्रयाग त्रिवेणी-तट पर नागरिकों की शोक-सभा। उड़ीसा के गवर्नर माननीय डाक्ट कैलासनाथ काटजू श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं।

पराधीनता की बेड़ियों में जकड़े हुए भारत के मुक्तिदाता महात्मा गांधी की असामयिक मृत्यु से जो हमारे राष्ट्र को क्षति पहुँची है उसका शब्दों में वर्णन नहीं हो सकता, केवल अनुमान ही हो सकता है। गांधी जी जैसे सत्य तथा अहिंसा के पैगम्बर का एक आततायी के हाथ से निधन होना भगवान् की विचित्र लीला नहीं तो और क्या कहा जा सकता है। इतिहास में यह गौरव महात्मा जी को ही प्राप्त हुआ था कि उन्होंने अपने जीवन-काल में ही अपने लक्ष्य की पूर्ति को आंख से देखा और अपने आदर्शों को कार्यरूप में परिणत करने का अवसर प्राप्त किया। यदि वे कुछ समय तक जीवित रहते तो हमारे नवीन राष्ट्र की जड़ को सुदृढ़ कर देते और साम्प्रदायिक भेद-भाव की इतिश्री कर हमारे लिए सुख तथा स्वच्छन्दता के साथ रहने की सुविधा करते। परन्तु हमारा दुर्भाग्य है कि जब यह समय आया तो ईश्वर ने महात्मा जी को अपने कार्यक्षेत्र से हटा लिया। जब से महात्मा जी ने राजनीतिक क्षेत्र में पदार्पण किया उन्होंने हमारे संकुचित तथा त्रसित हृदयों में एक नई स्फूर्ति का संचार किया। उनके पथ-प्रदर्शन से हमें अँगरेजी साम्राज्य को ललकारने का साहस हुआ। अपने अदम्य उत्साह, कर्त्तव्य-परायणता तथा अनवरत परिश्रम से उन्होंने देश के कोने-कोने में स्वतन्त्रता का सन्देश पहुँचा दिया। महात्मा जी एक अद्भुत व्यक्ति थे। उनके जीवन के अनेक पहलू हैं। इनके विषय में एक-एक ग्रन्थ लिखा जा सकता है। कहां तक उनकी महिमा का एक छोटे से लेख में पर्याप्त वर्णन हो सकता है। वे उच्च कोटि के सन्त थे राष्ट्रीय नेता थे, सत्य तथा अहिंसा के अवतार थे। उनके सम्पर्क में आते ही अधम मनुष्य भी उस करुणामयी मूर्त्ति को देखकर अपने में एक महान् परिवर्तन पाता था। उनकी दया-सिंचित ओजस्वी वाणी का श्रवण कर, त्रस्त हृदयों में भी नवीन शक्ति का संचार होता था।

सत्य एवं अहिंसा पर "जीवनदान ही उनका महत्तम आदर्श था—इसे देखकर पाश्चात्य सभ्य जगत् विस्मित होता था। महात्मा जी प्रारम्भिक जीवन से ही ऐसे थे। सन् १९०९ की लाहौर कांग्रेस में दक्षिण-अफ्रीका के प्रश्न पर भाषण देते हुए श्री माननीय गोखले ने महात्मा जी के विषय में कहा था—"मिस्टर गांधी मानव-जाति में एक अपूर्व मनुष्य हैं, वे वीरों के वीर हैं। उनमें भारतीय मनुष्यत्व अपनी पराकाष्ठा को पहुँचा है। स्वयं वीरोत्तम होते हुए वे मिट्टी में से वीर उत्पन्न करना जानते हैं।" जिस पर गांधी जी का प्रभाव पड़ा वह स्वर्ण पुरुष हो गया। यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक प्लेटो ने अपने ग्रन्थों में सुवर्णमय पुरुषों का उल्लेख किया है। महात्मा जी नैतिक सूर्य थे, सत्य, अहिंसा के साक्षात् अवतार थे। उनके प्रभाव से मनुष्यों में एक अद्भुत परिवर्तन हो जाता था। यह बात हमारे राष्ट्रीय जीवन से प्रमाणित होती है। महात्मा जी के जीवन के दो पहलू थे—एक तो सैद्धान्तिक, दूसरा व्यावहारिक। उन्होंने केवल राष्ट्रीय आन्दोलन को ही नहीं वरन् देश के सम्मुख नये सिद्धान्तों और आदर्शों का विवेचन किया। सैद्धान्तिक रूप से उन्होंने राजनीतिक क्षेत्रों को सत्य तथा अहिंसा के महत्त्व से परिष्कृत किया। इस सिद्धान्त के प्रतिपादन तथा उद्देश्य की पूर्ति के हेतु उन्होंने व्यावहारिक जीवन-निर्माण के भी नियम बनाये। यही कारण है कि बुद्ध भगवान् के संघ की तरह कांग्रेस शक्तिशाली हो गई और जो सन्देश महात्मा जी ने अपने श्रीमुख से कहा वह इस देश में ही नहीं विश्व के कोने-कोने में गूंज गया। क्या इतिहास में किसी अन्य मनुष्य की मृत्यु पर इतना शोक प्रकट किया गया है? देश में करुण-क्रन्दन हो रहा है। विदेशों से महान् व्यक्तियों के सहानुभूति समाचार बराबर चले आ रहे हैं। विरोधियों ने भी उनकी महत्ता को स्वीकार किया है और सभ्य संसार की क्षति को अदृष्टपूर्व बताया है। महात्मा जी ने सत्य एवं अहिंसा को राजनीति का आधार बनाया। यह उनका नवीन सिद्धान्त है। अन्तर सामूहिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में सत्य और कूटनीति में स्पष्टता का आदेश—ये दोनों महात्मा जी की विशेषताएं थीं। उनका कार्यक्रम अनोखा था। ब्रिटिश साम्राज्य का उन्होंने घोर विरोध किया। भारत में उसकी इतिश्री कर दी; परन्तु फिर भी अँगरेज जाति के साथ घृणा नहीं। उन्हें अपनी मित्रता का आश्वासन दिया और विकट परिस्थितियों में कारावास होने पर भी उनके प्रति हिंसात्मक भावना नहीं दिखाई। इतिहास में ऐसा उदाहरण दुष्प्राप्य है।

महात्मा जी की अहिंसात्मक युद्धशैली ने हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन की का पलट कर दी। क्रान्तिकारी संघर्ष का हो गया। बम फेंकने के बदले रा व्यक्ति, युवक एवं वयोवृद्ध, चर्खे की का गुणगान करने लगे। बड़े-बड़े मानी पुरुष जो पाश्चात्य विलासिता नशे में चूर थे, महात्मा जी के उपदेश संन्यासी बन गये। ग्राम-संस्कृति के उद्धा का उपाय करने में संलग्न हो गये। सम के सर्वांगों में ज्योति का संचार हुआ कृषकवर्ग, श्रमिक-संघ, व्यापारी, पूंजीपति भूपति, विद्यार्थी सबने महात्मा जी चरण-धूलि में आश्रय पाया। उन निष्कपट वाणी ने प्राचीन ऋषियों द्वा निर्मित संस्कृति का पुनरुद्धार किया जि पतित मनुष्यों के जीवन में भी नैतिक परिवर्तन एवं परिशोधन प्र हो गया। रचनात्मक कार्य पर जोर दे महात्मा जी ने अपनी व्यावहारिक कुशल का परिचय दिया। 'मेरा तेरा' का उनके हृदय से लुप्त हो गया। भार संस्कृति फिर से जीवित हुई। अ कुटी में ही उन्होंने संसार के अनेक गण्य पुरुषों से भेंट की और उन पर व्यक्तित्व की छाप लगाई। राजनीति क्षेत्र में कार्य करते हुए उन्होंने कभी शब्दों का प्रयोग नहीं किया। पूंजीपति उद्योगपतियों, राजा-महाराजों की भर्त्स नहीं की। उन्हें दीन-दुखियों के हितार्थ अ समृद्धि का यथोचित उपयोग करने आदेश किया। क्रान्तिवादी सिद्धान्त कूटनीति असफल हो गये। करोड़ों हृद से हिंसा का भाव निकल गया, द्र लिप्सा, स्वार्थपरता, विलासिता विलीन हो गई। राजनीतिक क्षेत्र श्वेतवस्त्राच्छादित संन्यासियों से चमत्कृत हो गया। भगवा बुद्ध की तरह गांधी जी ने भी नया बताया, अति का परित्याग किया सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प तथा सम्य वाणी से हमारे समाज को दीक्षित कि जगत् परिवर्तनशील है, शरीर न है, सांसारिक वस्तुओं का नाश अनिवार्य है; परन्तु महात्मा जी का अ अमर है और जब तक मनुष्य जाति कर्त्तव्य, देश-प्रेम, समाज सेवा, तप, रक्षा इत्यादि आदर्शों का सम्मान क तब तक महात्मा जी का नाम उज्वल की तरह इस भूमंडल में जगमगाता रहे

हृदय-सम्राट् गांधी जी का हमारे देश के क्या संसार के इतिहा सदैव उच्च रहेगा। उनकी तुलना गौतमबुद्ध, ईसामसीह प्रभृति महा के साथ की जायगी। इतने बड़े होते भी वे अपनी भूल को शीघ्र

शेष पृष्ठ १८ पर

बापू की हत्या

लेखक, श्री नरेन्द्रशर्मा एम० ए०

वयोवृद्ध बापू की हत्या, घटना यह सामान्य नहीं है!
यह कैसा हिन्दुत्व, हुआ पैदा जिसमें उनका हत्यारा!
चिन्तातुर हो पूछ रहा है भावी लोकतंत्र भारत का,
मौन निरुत्तर बिलख रहा है आहत अन्तःकरण हमारा!
सोमनाथ औ विश्वनाथ को बचा सका क्या वह हिन्दूपन?
विजयनगर को और वंग की वीरभूमि को खो न दिया क्या?
क्या न पेशवाई के मद ने पानीपत में माँगा पानी?
सिक्खों ने सन् सत्तावन में पक्ष शत्रु का नहीं लिया क्या?
क्या कारण थे अधोपतन के, आओ चर्चा करें, विचारें!
हिन्दू का व्यवहार क्षुद्र था, दर्शन कितना ही महान् हो!
छूत-छात थी, जातपात थी, आत्मबोध कुलधर्म-मात्र था,
था समाज में न्याय न बाकी, चाहे जितना शास्त्र-ज्ञान हो!
दो पंडित, थे कोटि निरक्षर, शास्त्र बन गये मात्र जीविका!
साधक जा बैठा कोने में, मठ में मठाधीश पाखंडी!
राजे-रजवाड़े गुलाम थे, व्यभिचारी, अतिचारी, व्यसनी;
शत्रु नहीं, बकरे खाती थी राजफिरंगी में मा चंडी!
ग्लानिमग्न भारत के त्राता, आये तब जनशरण महात्मन्!
हरिजन बने, किसान बने, श्रमजीवी बने राष्ट्र के नायक!
तोड़ फोड़ पाखण्ड सत्य से, हरा दिया अन्याय विनय से,
बारह सदियों के रोगी के लिए बने संजीवन-दायक!
जन्मसिद्ध अधिकार हमारा दिखलाया जो लोकमान्य ने,
उसे महात्मा ने दिलवाया! इतनी जल्दी गये भूल हम?
सत्य हुए सपने युग युग के, देश आज अपना कहलाया,
चमके आज जवाहर बनकर सदियों तक पर रहे धूल हम!
राष्ट्र-पिता बापू की हत्या! घटना यह सामान्य नहीं है!
कैसा नव हिन्दुत्व, हुआ पैदा जिसमें उनका हत्यारा?
कोटि कंठ से पूछ रहे हैं आनेवाले हिन्दू बच्चे—
लज्जित होकर बिलख रहा है आहत अन्तःकरण हमारा!

महात्मा गांधी का महान् नेतृत्व

भारत की राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और नैतिक स्वतंत्रता के वह जनक थे

लेखक, श्री भारतन् कुमारप्पा

महात्मा गांधी के समस्त जीवन का सदैव एक ही लक्ष्य था भारतीय स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिये अहिंसात्मक युद्ध करना। इस लेख में गांधीवाद के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री भारतन् कुमारप्पा ने गांधीजी के महान् नेतृत्व पर प्रकाश डाला है और स्पष्ट किया है कि गांधीजी के त्याग के परिणामस्वरूप राष्ट्र को स्वतंत्रता ही नहीं प्राप्त हुई वरन् भारतीयों को राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और नैतिक स्वतंत्रता प्राप्त होने का मार्ग पूर्ण रूप से प्रशस्त हो गया है। लेख अत्यन्त सुंदर और पठनीय है।

यों ही स्वतंत्रता का नकारात्मक महत्त्व है। नियत्रण की अनुपस्थिति इसके माने होते हैं। भारत के स्वतंत्रता-संग्राम में गांधी जी ने राष्ट्र को इस बेमाने नकारात्मक किनारे से दूसरी तरफ मानेदार वास्तविक किनारे तक पहुँचाया है। स्वतंत्रता उनके अनुसार—एक तरफ रोक और बरबादी से प्राप्त होती है, और दूसरी तरफ वह राष्ट्रीय जीवन में बनावटी प्रयत्नों की शक्ल आगे बढ़ाती है। किस तरह? अभी हम देखेंगे।

भारत के राजनैतिक अखाड़े में जब गांधी जी ने भारत को 'सीधी कार्रवाई' के नाम पर उतारा तो उन्होंने ब्रिटिश अत्याचार से बचाव कराकर अपने को उससे मुक्त किया। इस तरह स्वतंत्रता आरम्भ में निषेधात्मक थी। एक वक्त वह था जब गांधी जी का अँगरेजी-साम्राज्य में विश्वास था, लेकिन सन् १९१४-१८ की लड़ाई के बाद—जिसमें उन्होंने और तमाम मुल्क ने उनकी मदद की—अँगरेजों का भारत के साथ बर्ताव देखकर उनका विश्वास जाता रहा अब उनका अँगरेजों में विश्वास न रहा और वे इस नतीजे पर पहुँचे कि अँगरेजों पर विश्वास नहीं किया जा सकता और इसलिए वे हमारे शासक रहने के लायक नहीं रहे—फलतः जितनी जल्दी हम उनसे मुक्त हो जायँ उतनी ही अच्छी बात है। स्वतंत्रता की यह पहली और बुनियादी तह थी जहां स्वतंत्रता का अर्थ था ब्रिटिश प्रभुत्व का खात्मा। शायद यही अर्थ अब भी हमारे सामने है।

लेकिन अधिक समय न बीत पाया था कि गांधी जी को यह ज्ञात हुआ कि अगरेजों के भारतीयों को राजनैतिक सत्ता हस्तान्तरित कर देने-मात्र से भारतीयों को उसका महत्त्व न मालूम हो सकेगा। सिर्फ ब्रिटिश नौकरशाही के बजाय भारतीय नौकरशाही का शासन हो जायगा। "कोउ नृप होय उन्हें बेमाने"। उन्हें तो सिर्फ इस बात की चिन्ता रहती है कि शाम को क्या खाने को मिलेगा? अतएव गांधी जी को यह महसूस हुआ कि जन-साधारण जिस स्वतंत्रता के इच्छुक हैं वह राजनैतिक न होकर आर्थिक है। इसे दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है—"गरीबी और जरूरतों से मुक्ति प्राप्ति।" इसलिए वे उस लक्ष्य की ओर प्रयत्नशील हो पड़े।

उन्हें मालूम हुआ कि अगर गांवों में लोग भूखों मरते और अर्द्ध-नग्न रहते हैं, अगर उनके झोपड़े टूटे-फूटे और उनकी सड़कें गंदी हैं, अगर उनके शरीर [illegible], रुग्ण तथा बेरुधिर हैं, अगर वे खुद अपढ़ और अंध-विश्वासी हैं तो उसका कारण है उनके काम का बे लाभकारी होना। जो व्यवसाय एक समय उनका गुजर चलाते थे अब खत्म हो गये या खत्म होने को आये क्योंकि कारखानों की बनी हुई चीजें सस्ती थीं और बाजार में भरी पड़ी थीं। इन व्यवसायों में मुख्य था कपड़े का बनाना जो पहले हमारे मुल्क के करीब हर घर में बनाया जाता था। इसलिए गांधी जी ने इस मरते हुए व्यवसाय को पकड़ा और अपना पूरा ध्यान इसमें लगा दिया ताकि लोग साक्षात् देख लें कि अगर वे अपने आपको गरीबी से मुक्त करना चाहते हैं तो उन्हें कारखानों में बने हुए सामान इस्तेमाल न करने चाहिए, बल्कि उन सामानों को खुद बनाना चाहिए। जो बात कपड़े के लिए लागू थी वही अन्य वस्तुओं के लिए भी लागू थी। इन वस्तुओं की गो कि ग्रामीणों को आवश्यकता थी उन्होंने उनका बनाना बन्द कर दिया था। अतएव गांधी जी ने एक संगठन का संगठन इन वस्तुओं को पुनः जीवित करने के लिए तैयार कर दिया।

लोगों को जरूरतों से अपने आपको मुक्त करने के लिए अपने ऊपर ही निर्भर रहने का जो रास्ता उन्होंने बताया उससे लोगों में आत्मा-विश्वास पैदा होता है। उद्योग-धंधों के—जिनमें उन्हें आज तक काम मिलता था—बरबाद हो जाने से वे अपने ऊपर का विश्वास खो बैठे और निराश, अनैतिक और दिल-परस्त हो गये। इसलिए इस निराशा से मुक्त होने के लिए ग्रामीण-उद्योग-धंधों को पुनः जीवित करके लोगों को यह मालूम करवा देने के सिवा कि अब भी वे अपनी जरूरतों को पूरा कर सकते हैं और अपने आप पर निर्भर रह सकते हैं दूसरा अच्छा रास्ता ही क्या था? इसलिए गांधी जी का खादी-प्रचार और अन्य ग्रामीण उद्योग-धंधों का आन्दोलन सिर्फ आर्थिक फायदा ही नहीं पहुँचाता था—क्योंकि यह बात मुख्य थी—बल्कि उससे लोगों के नैतिक पतन की बचत हुई जिसके बिना न तो वे आजादी ही प्राप्त कर सकते थे और न प्राप्त कर लेने पर उसे संभाल ही सकते थे।

इतना ही नहीं, इससे कारीगर दूसरे का शिकार होने से भी बचता है और अपना मालिक खुद बन जाता है क्योंकि असली स्वतंत्रता उसे तभी ही मिल सकती है जब मैं आपके सामने यह पेश करूँगा कि जरूरतों से कैसे मुक्ति मिल सकती है अगर आप इसे जल्दी से हासिल करना चाहते हों तो आपको रूस का अनुकरण करना होगा, जहां तमाम बड़े उद्योग सरकार के हाथ में हैं। फिर भी बड़े उद्योगों में केन्द्रीयता बढ़ने लगती है। जब उत्पादन किसी देश या सारे संसार के लिए किया जाता है तो उसका सारा प्रबन्ध केन्द्र के चन्द योग्य आदमियों के हाथ में होता है। कारीगर इस बड़ी सामाजिक मशीन के पहिये में सिर्फ एक तीली-मात्र-सा होता है जिसकी शक्ति संगठित शक्ति के सामने कुछ नहीं होती। इस ढंग से उसे जरूरतों से छुटकारा भले ही मिल सकता है—उसे तमाम दुनिया के सामान भी प्राप्त हो सकते हैं; परन्तु इससे उसकी प्रारम्भिक सोचने तथा स्वयं कार्य करने की शक्ति को खतरा है, क्योंकि वह उत्पादन में किसी भी यत्र का मालिक नहीं होता। अगर उसे अपनी रोजी कमानी है तो उसे अपने अधिकारियों की आज्ञा माननी ही है, नहीं तो फिर भूखों मरना पड़ेगा—जेल या बनवास जाना होगा, या हो सकता है कि मौत का भी सामना करना पड़े।

यह बहुत ही बुरे दरजे का अत्याचार होगा और गांधीजी को इस बात की चिन्ता रही है कि कहीं हम जल्दी में जरूरतों से मुक्त होते समय स्वर्ग से कदते समय खजूर पर न अटक जायँ। नतीजा यह होगा कि आर्थिक गरीबी से मुक्त होकर हम आत्मिक और मृत्यु के बन्धन में पड़ जायँगे। अतएव वे ग्रामीण छोटे छोटे धंधों की सलाह देते हैं जहां हर आदमी अपने औजार और काम का मालिक भी होगा। ऐसा आदमी एक बड़े सरकारी या पूंजीपति के नौकर से कहीं ज्यादा अच्छा है। नौकर चाहे आई० सी० एस० नौकरी में ही क्यों न हो, है वह नौकर ही। वह कोई भी बात नहीं कर सकता जिसे वह दिल से सोचता है। उसे तो नहीं करना पड़ता है जो उससे कहा जाता है। आर्थिक जरूरतों के मामले में मानसिक और क्रियात्मक आजादी तभी हासिल होती है जब आदमी अपना मालिक आप होता है। जब तक वह दूसरे का नौकर नहीं, वह सीधा खड़ा हो सकता है—खुलकर बोल सकता है है और अपने मन के मुताबिक निश्चय कर सकता है। उत्पादन जितना ही ज्यादा केन्द्रित और संगठित होता है, उतना ही उसे यह अन्तिम आजादी जो सब आजादियों से बड़ी है नहीं प्राप्त हो सकती। खुद सोचने और काम करने की आजादी के सामने अन्य आजादियां कुछ भी नहीं हैं।

लेकिन खुद सोचने और काम करने की स्वतंत्रता, जब तक दिमाग निरक्षरता, मन आवेश और शरीर रोग से मुक्त न हो जाय और इन तीनों चीजों को उचित ट्रेनिंग न मिले, असंभव है। जो शिक्षा हमको अब तक दी गई है उससे न तो यह सब कुछ होता ही है और न वह तमाम जनता तक पहुँची ही है। इससे भी ज्यादा खराबी उसने की है—जिन्होंने इसे प्राप्त किया है उनकी सारी चीजों को प्रारंभ करने की शक्ति मारी गई है। इससे मन, शरीर और हाथ की शिक्षा नहीं मिलती। दिमाग में अनावश्यक जानकारी की बातें इतनी ठूंस दी जाती हैं कि चेतना-शक्ति धुंधली पड़ जाती है और क्रियात्मक शक्ति का ह्रास हो जाता है एक तरफ तो अपढ़ों के दिमाग अंधे रहे और उनमें अंध-विश्वास भरा रहा, दूसरी तरफ शिक्षितों के दिमाग में भी यह अंध-विश्वास ढर्रे की शिक्षा से जिसमें, पुस्तकों, अखबारों, रेडियो, पार्टियों, जाति, धर्म इत्यादि ने अपना जौहर दिखाया भर गया। सिर्फ उसकी कायापलट भले ही हो गई। गांधी जी ने देखा कि अगर यह सब थोड़ी हद तक बदल दिया जाय तो आदमी खुद सोचकर कार्य कर सकता है। अतएव वर्तमान शिक्षा-प्रणाली को परिवर्तित करने की जरूरत है जो अब दिल, दिमाग और शरीर तीनों को ट्रेनिंग देती हुई सर्वांगी हो। उन्हें मालूम हुआ कि यह कार्य उसी दशा में अच्छी तरह किया जा सकता है जब शिक्षा किसी दस्तकारी के जरिये दी जाय जो व्यक्ति के किसी मतलब को पूरा करे। उसी के अनुसार फिर दिमागी, नैतिक, शारीरिक जानकारी की शिक्षा दी जाय। कोई भी मनोवैज्ञानिक इस बात का प्रमाण दे सकेगा कि दिमाग सबसे अच्छा काम तभी कर सकता है जब उसके सामने कोई समस्या होती है और उसका सारा ध्यान उस समस्या की ओर आकृष्ट हो जाता है। दूसरे वक्त

(शेष पृष्ठ १८ पर देखि

दैनिक प्रार्थना में विश्ववन्द्य बापू का प्रवचन

राष्ट्र-पिता बापू !

वह परतंत्र भारत को स्वाधीन बनाकर स्वर्गवासी हुए

लेखक, प्रोफेसर के० के० मेहरोत्रा, एम० ए०

विश्ववंद्य बापू का स्वर्गवास हो गया। वह मृत्यु पर विजय पाकर मृत्युंजय बन गये बापू आज हमारे बीच नहीं हैं, किन्तु उनकी अमर वाणी मानवमात्र की नस नस में व्याप्त है। प्रोफेसर मेहरोत्रा ने इस लेख में पूज्य बापू के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की है, जो पठनीय तथा सामयिक है।

"बापू"——आज इस राष्ट्र को विधवा बना रोता छोड़ जग से तीस जनवरी पांच बजे संध्या को पलायन कर बैठे। पिछले दिनों की हमारी प्रभृत्तियां और मनोभाव उनके जीवन के लिए विष बन बैठा और इसके लिए हमें जिम्मेदार होना पड़ेगा। उनके शरीर त्यागने के कुछ ही क्षणों पश्चात् यह दुःखद समाचार हम लोगों को ज्ञात हुआ और राष्ट्र पर विद्युत् सा आघात पड़ गया। चारों ओर विषाद ने अपना अचल पसार दिया। मैंने भी समाचार को एक बाइसिकल पर से जाते हुए मनुष्य से सुना। वह झपटता हुआ स्वयं घबराया-सा भाग रहा था। उसे कोई भी ध्यान न था कि वह लोगों से जो कह रहा है, वह सत्य है। उसने बिना कुछ पूछे-ताछे मुझसे कहा "गांधीजी गोली से आघात होकर स्वर्ग सिधार गये।" "वह अब नहीं रहे।" तभी सभी जो सुनते उनके मुख से निकलता। "नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता।"

वे एक अद्भुत आत्मा थे जो हम लोगों के मस्तिष्क पर पूर्णतया अधिकार कर चुके थे। समय और स्थान का अन्तर उसे बिताने में समर्थ नहीं हो सकता। उनका चित्र, उनकी बातें उनके विचार हमारे मन में इतने घुल-मिल गये थे जो कि किसी भी तरह मिटाये नहीं जा सकते थे। वे सदा-सर्वदा के लिये हमारे मन में बैठ चुके थे। यहां तक कि हमारे विचार भी उस मन की बात को निकालकर फेंक देने में समर्थ न हो सके। यह धारणा कुछ ही क्षणों में सत्य हो नाच उठी। दुखद समाचार आया, जिसके सुनते ही मानव के अन्दर की आंतरिक शक्तियां जाग उठीं और उनमें पशुता की भावनाएँ सजग दृष्टगोचर होने लगीं जो मनुष्य एवं स्त्रियां कहीं रास्ते पर, नोक्कड़ पर चौराहे पर झुंड के झुंड खड़े थे या वहां खड़े थे जहां रेडियो हवा को खींचकर उन्हें समाचारों को सुना रहा था। अश्रु-कण मनुष्यों की आंखों में बरबस छलक आये। यह कोई मित्र, राजनीतिज्ञ व्यक्ति की या समाज के पुरुष की मृत्यु न थी। यह बापू थे जो आज संसार को झूठा बनाकर चल पड़े थे। वे बापू जो हमारे लिये रक्षक थे, इसीलिये तो उन्हें राष्ट्र-पिता कहा जाता था। यह केवल एक भाषण के विचार नहीं हैं यह एक वह वाक्य है जो ध्रुव सत्य है और जिसका वर्णन महान् कठिन ही नहीं, हिमालय की तरह कठिन है। भारतीय हृदयों में गांधी जी एक आत्मजन प्राणी थे। बापू एक बच्चों की तरह प्रत्येक व्यक्ति के लिए थे जिनके प्रत्येक काम को जनता हृदय से स्वीकार करती थी।

लेकिन यह भी सत्यता का आधा ही भाग है। जीवन के प्रत्येक क्षण में उनकी मानवता-भरी भावनाएवं बच्चों की सुमधुर मुस्कान थी और इसी कारण तो बापू के चले जाने के उपरान्त हम देखते हैं हमने कोई बहुत ही बड़ी आत्मीय वस्तु खो दी है। और भी बहुत से नेता स्वर्गवासी हुए। हम उनके लिए दुखी हुए, उसे सहन किया गया। लेकिन उनका दुःख एक मान्यता में सामाजिक दुःख था लेकिन इस स्थान पर एक स्वयं का दुःख था जो उन सबसे परे है। क्या अब प्रार्थना-सभा नहीं होगी? क्या अब रेडियो पर साढ़े आठ नहीं बजेंगे? क्या हम अब उस वृद्ध पुरुष की वाणी जो देश और विश्व के पथ का निर्माण करती थी, कभी न सुन सकेंगे? किसी ने भी जिसने गांधी जी का एक भी भाषण सुना होगा वह अवश्य ही उलझ गया होगा उनकी मधुर भाषा में उनकी मधुर वाणी में जिसमें वे अपने विचार हमारे सामने रखते थे। वे सुनाते थे कहानियां बचपन की और उनका वह पुरातन तरीका अपना भाषण देने का समझा देता था सब कुछ जो कि कोई समझना चाहता था। क्या अब उस प्रकार की प्रार्थना-सभा कभी न होगी?...

दूसरे नेता समाज के एक हिस्से ही को अपने अधिकार में करने में सफल हुए हैं कुछ ने उससे कुछ आगे भी अपने पद बढ़ाये हैं। लेकिन गांधीजी ने उनके सबके ऊपर सारे के सारे विश्व में अपना आतंक उसी प्रकार फैला दिया था जिस प्रकार वायु अपना अंचल विश्व के प्रत्येक कोने में रखती है। इसी ने गांव, शहर एवं नगर सब स्थानों पर एक अपनेपन का वातावरण फैला रखा था और इसीलिये तो आज हम रो उठे हैं।

कितना करुण दृश्य वह है जहां कि देश का देश रो रहा है। यह दृश्य मानव के हृदय को क्या कड़े से कड़े पत्थर के हृदय में लोहे के आंसू बहा देगा। हम जानते हैं गांधीजी की जड़ें इस भारत के पृथ्वी में समा चुकी हैं लेकिन कहां तक ये जा चुकी हैं। हम कभी भी इसे समझने में पूर्णतया सफल नहीं हो सकते जब कि यह वृक्ष भारत मां के अन्तस्थल से खींचकर बाहर न निकाला जायगा। भारत के प्रत्येक कण में यह जड़ें झकड़ा जड़ों के समान फँस चुकी हैं और तभी हम देखते हैं प्रत्येक भारतीय के हृदय को नग्न रोते हुए और हमारे सामने दूसरा दृश्य उपस्थित होता है। आधुनिक युग के आसान अवसान में एक महान् पुरातन युग छिपा है। शताब्दियों के हृदय को चीरकर देखें और उसके अन्तस्थल में हमें एक पुरातन खोज प्राप्त होगी जो हमारे पुरातन भारत के पुरुषों के हृदय के धार्मिक एवं आत्मिक मनोभावों को दर्शावेगी। मैं जानता हूँ कि विश्व के किसी भी प्रदेश के प्रधान मंत्री ने जनता से प्रार्थना न की होगी कि वे श्रद्धांजलि भेंट करने के हेतु व्रत एवं नदी स्नान करने जायं। कितनी सुन्दरता से यह प्रार्थना की गई और कितनी प्रेरणा से हमने उसे स्वीकार किया।

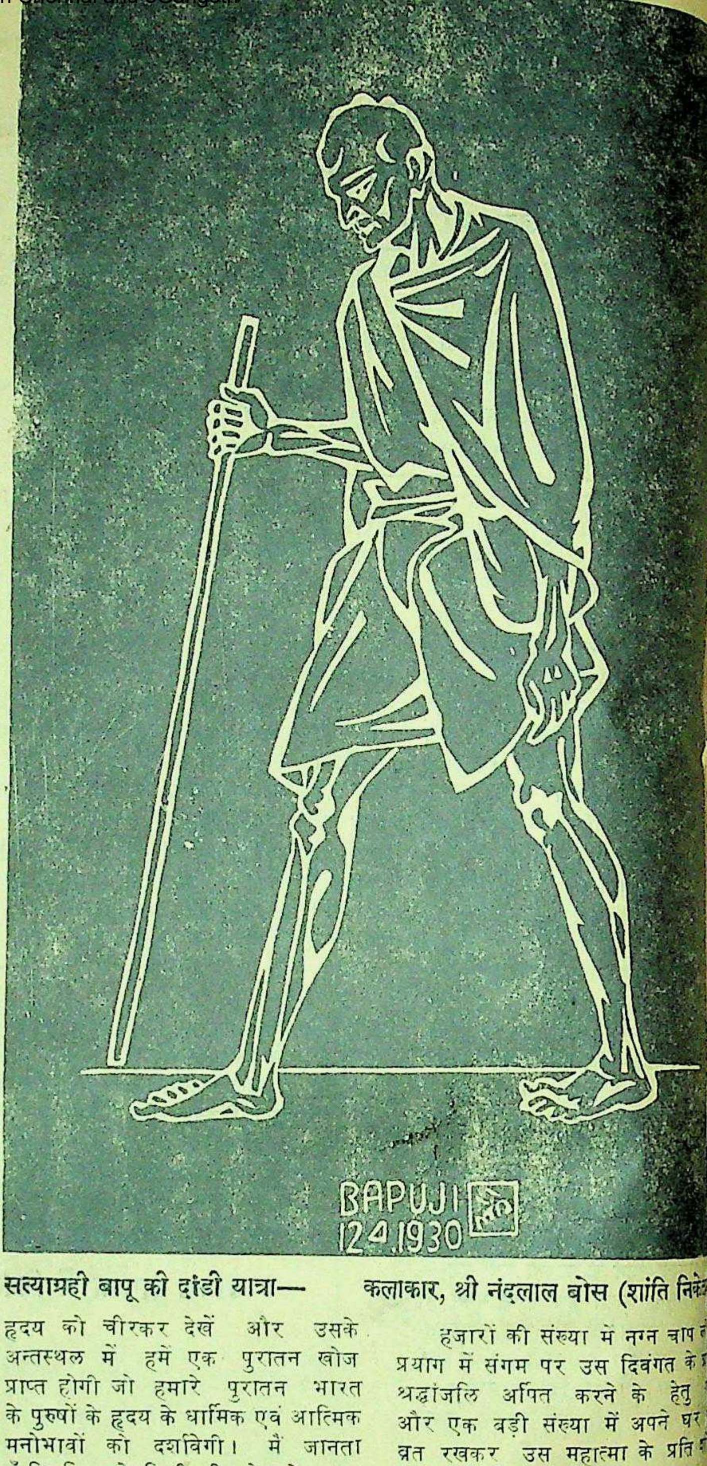

सत्याग्रही बापू की दांडी यात्रा— कलाकार, श्री नंदलाल बोस (शांति नि

हजारों की संख्या में नग्न चाप
प्रयाग में संगम पर उस दिवंगत के
श्रद्धांजलि अर्पित करने के हेतु
और एक बड़ी संख्या में अपने घर
व्रत रखकर उस महात्मा के प्रति
समर्पित किया।

यह हृदयग्राही विषाद इत
आत्मिक था कि वह अवर्णनीय था
हमारे समाज और सभ्यता के अंचल
छिपा हुआ है।

उस पापात्मा ने जिस विचार
से भी प्रेरित होकर किया था चाहे व
अपने जाति के लिए अथवा सम्प्रदाय
लिए जो कुछ भी किया वह हमको विचलि
कर देता है और हम घबरा उठते हैं, प
बापू इस प्रकार से जीवित नहीं थे
कि शरीर त्याग करने के उपरान्त
मृत्यु प्राप्त कर मृत्युंजय बन गये।

——अनुवादक प्रेम कपूर

गांधी-युग

लेखक, श्री सुधीन्द्र एम० ए०

अन्यायों के गहन तिमिर में ज्योति-पुंज तुम एक।
सत्याग्रह के अग्नि-पंथ पर बढ़े अथक अनिवार,
दिखा दिया तुमने स्वदेश को स्वतंत्रता का द्वार।
आत्मा का रस ढाल किया मानवता का अभिषेक
पीड़ित-पतित, दलित-शोषित की, ओर बढ़ाकर हाथ
मिट्टी के मानव को पाकर मृणमय सा मृतप्राय
प्राणामृत देकर कर संजीवन का सफल उपाय
उसे बिठाया तुमने देवों के आसन पर साथ।

× × ×

शस्त्र और संहार व्याप्त है जहां घृणा विद्वेष
आमंत्रित करता अमृत जन अपना स्वयं विनाश
उसको जीवन सत्य-प्रेम के तुम अभिनव सन्देश
अमृत का साधक सा गांधी-युग है एक प्रकाश

× × ×

मानव संस्कृति के विकास में मार्ग तुम्हारा श्रेय!
युगाधार! युग-युग तक होगा अजर अमर अविजेय!!

श्वेतकुष्ठ की फकीरी बूटी
महात्माप्रदत्त इस बूटी के
७ रोज में आधा और १५ रोज में
आरोग्य होने की गारंटी, अगर आप न
और कम कीमती दवा इस्तेमाल
निराश हो गये हैं तो एक बार इस
को भी इस्तेमाल कर इसके चमत्कारी
से लाभ उठावें। बेफायदा साबित करने
५००)रु० इनाम अगर चाहें तो डेढ़
का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें।
पता—श्री शिवशक्ति आश्रम मुहल्ल
सालिमपुर अहरा पो०—कदमकुआं,

ा ! महात्मा जी !

म और अहिंसा के अवतार

लेखक, श्री विशम्भरनाथ 'मानव'
एम० ए०

महत्मा गांधी का निधन-संवाद प्रलय के वज्र-सा धरती के हृदय पर गिरकर उसके टुकड़े-टुकड़े कर गया है। मनुष्य की स्मृति में शायद ही किसी की मृत्यु पर इतना भारी इतना मर्म-भेदी और इतना व्यापक शोक मनाया गया हो! जिन मनुष्यों ने अपने पिता की मृत्यु पर भी आंसू न बहाये होंगे, उनके आंसू इस हृदय-विदारक संवाद को सुनकर, न रुक सके। गांधी जी के चित्रों को देखकर उनके प्रति संसार भर की श्रद्धांजलियों को पढ़कर, उनके संबंध में अपनी स्मृतियों को दुहराकर, आंसू जैसे थमना ही नहीं जानते। सबके मन का ऐसा सोता फूटा है कि बांध स्वीकार ही नहीं करता। गांधीजी के लिए हमारे हृदय में इतने आंसू थे, यह हमने उन्हें आज खोकर जाना। यहां तो परसों से ही रुक-रुककर बूंदा-बांदी हो रही है। ऐसे महापुरुष की मृत्यु पर प्रकृति आंसू न बहाती, यह कैसे संभव था। लगता है जैसे उस विराट् व्यक्तित्व की आंख मुंद जाने पर पृथ्वी के साथ आकाश का भी हृदय फट गया है!

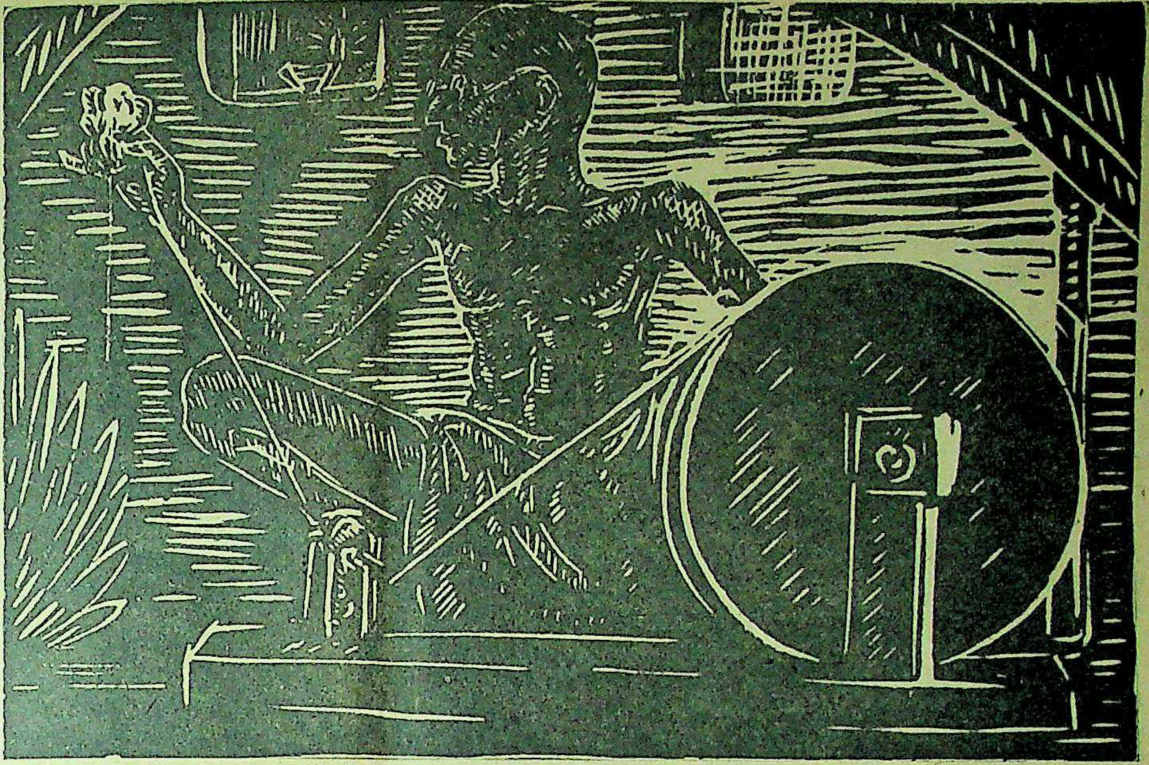

कलाकार की दृष्टि में पूज्य बापू

चित्रकार—श्री सुधीर खास्तगीर

गांधी जी के प्रेम और अहिसा के सिद्धांतों के कारण सब उनकी तुलना ईसा मसीह से किया करते थे। उनके ईसा होने में एक कसर बाकी थी। वह इस गोली ने पूरी कर दी।

हमने उस व्यक्ति को गोली का निशाना बनाया जो सत्य का प्रचारक था, जो अहिसा का प्रतिपादक था, जो प्रेम का पुजारी था! हमने उस व्यक्ति के प्राण लिए जो दुखियों के आंसू पोंछता था, जो दुर्बलों को अभयदान देता था, जो पीड़ितों का पक्षपाती था! हमने उस व्यक्ति को चिर-निद्रा में सुला दिया जो पृथ्वी की सांस था! हमने उस व्यक्ति को न जीने दिया जिसने हमारी युग-युग की क्रूर शृंखलाओं से हमें मुक्त किया, जिसनें हमारा सिर ऊँचा किया, जिसने हमें मानवता का पाठ पढ़ाया। जिसने हमें प्रकाश दिया, हमने उसके जीवन के दीपक को बुझा दिया! उफ़! महाप्रेम का क्या यही प्रतिदान होता है?

शोक के इस महासमुद्र में डूबी हुई जनता को क्या कहकर सान्त्वना दी जाय? शोक उसके लिए करते हैं जो अधार्मिक हो, जो पर-पीड़क हो, जो युद्ध-क्षेत्र से पीठ दिखाकर भाग आया हो! ऐसी निर्मल विभूति के लिये जो हृदय से ब्राह्मण और कर्म से क्षत्री था, ऐसे युद्ध-चेतन के लिए जो कर्म करते-करते मां-धरित्री की गोद में गिरा हो, ऐसे प्रकाश-पुंज के लिये जिसने राम-कृष्ण और बुद्ध के समान ही कवियों, चित्रकारों और मूर्त्तिकारों को सृजन के लिये प्रेरणा दी हो, ऐसी भावना के लिये जो प्रार्थना के लिये जाते हुए स्वयं प्रार्थना बनकर चढ़ गया हो, क्या शोक करना चाहिए? ऐसी स्पृहणीय मृत्यु किसी सुकरात, किसी ईसा, किसी मंसूर और किसी गांधी की ही हो सकती है।

लखनऊ
२ फरवरी, ४८

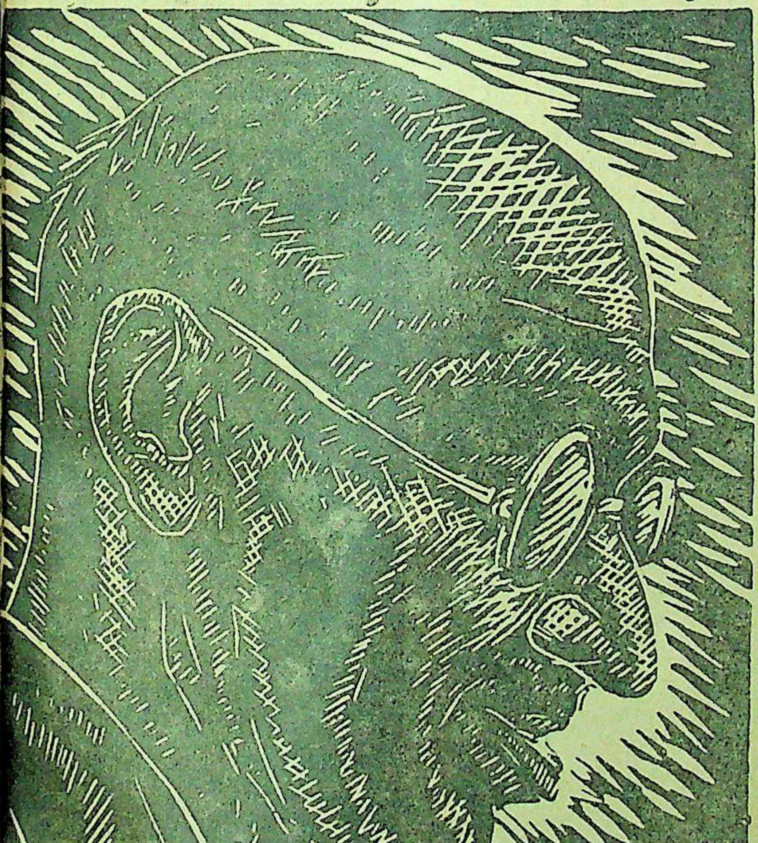

महानिर्वाण!

लेखक, श्री सोहनलाल द्विवेदी, एम० ए०

आंसू खुलकर बहो, हो गया भंग आज सब सुख सपना!
गया आज सर्वस्व तुम्हारा गया आज बापू अपना!
हिन्दू! अपना हृदय खोलकर देख, कौन तेरा है आज?
जिस पर तुझे गर्व था, वे चले गये गांधी महराज!

मुसलमान! रक्षक न तुम्हारा रहा आज कोई जग में
कहां आज आता, जो अपने प्राण बिछा दे आ मग में।
सिक्ख! आज किसकी जय करने के हित नग्न कृपाण लिये!
कहां सो गये तुम अचेत हो, जब कि बधिक ने प्राण लिये।

ईसा के भक्तो, ईसा की कौन सुनायेगा वाणी?
क्षमा, दया, करुणा की वर्षा हो न सकेगी कल्याणी!
ऐ एशिया! प्रकाश बुझ गया, तेरी राह अंधेरी है,
पा किसका संकेत कहेगा—'आज विजय यह मेरी है।'

खंड खंड हो धरा, धैर्य अब तुझको कौन बंधायेगा?
क्या कहती ओ जन्मभूमि! मनमोहन कहीं न जायेगा!
कहीं नहीं वह गया महात्मा, समा गया है मन मन में,
अमर प्रकाश पुंज आलोकित है, जननी के जन जन में।

महात्माजी की जीवन-झाँकी

राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए ५० वर्ष की त्यागी तपस्या

लेखिका, श्रीमती उमा मेहरोत्रा, एम० ए०

गांधीजी भारत ही नहीं, संसार के सबसे महान् व्यक्ति थे। वे सच्चे अर्थों में युग-पुरुष थे। गोखले जी ने ठीक कहा था कि "इस पृथ्वी पर इनसे अधिक पवित्र, इनसे अधिक महान्, इनसे अधिक वीर और इनसे अधिक उदार आत्मा अवतरित नहीं हुई है।" महात्माजी ने शताब्दियों से खोई हुई भारतीय राष्ट्र की आत्मा को जगाया और अपनी असाधारण त्याग-तपस्या से देश को स्वाधीन कराया ऐसे महापुरुष की जीवन-लीला का अन्त एक हत्यारे के हाथ होना विधि की बड़ी भारी विडम्बना है।

* * *

गांधीजी का जन्म २ अक्टूबर सन् १८६९ ई० को पोरबन्दर (काठियावाड़ गुजरात) में हुआ। इनके पिता करमचंद गांधी पहले पोरबन्दर फिर राजकोट और अन्त में कामेर के दीवान थे। गांधी जी की प्रारम्भिक शिक्षा राजकोट में हुई। १८८७ ई० में मैट्रिक की परीक्षा पास की। इसके पश्चात् एक वर्ष तक भावनगर कालेज में विद्याध्ययन किया। इनकी रुचि डाक्टरी की ओर थी, किन्तु गुरुजनों की इच्छा का पालन करने के लिए बैरिस्टरी पास करने के लिए १८८८ में इँगलैंड गये। वहां चार वर्ष रहे। १८९१ ई० में पढ़ाई पूरी हो गई और ये बैरिस्टर बनकर अपने देश को लौटे और कुछ समय पश्चात् वकालत आरम्भ कर दी।

* * *

पोरबन्दर की एक बड़ी फर्म ने जिसकी एक शाखा दक्षिण अफ्रीका में थी, एक मुकदमे में सहायता देने के निमित्त वहीं जाने के लिए प्रस्ताव किया। जिसे स्वीकार कर गांधीजी ने प्रथम बार दक्षिण अफ्रीका की यात्रा १८९५ ई० में की। वहां जाकर भारत की दास्ता के अभिशाप का हृदय-द्रावक दृश्य देखा। गोरे लोग बड़े से बड़े भारतवासियों को भी कुली समझते और उनके साथ पशुवत् व्यवहार करते थे। स्वयं गांधीजी को गोरों ने कई अवसरों पर बहुत अपमानित किया। फलतः इन्होंने प्रवासी भारतीयों के हितों की रक्षा के लिए आन्दोलन चलाने का निश्चय किया। पांच हजार पौंड प्रतिवर्ष की बैरिस्टरी की आय पर लात मारकर आन्दोलन में संलग्न हो गये। वहां आपने नेटाल इंडियन कांग्रेस की तथा १९०१ में ट्रांसवाल इंडियन एसोसियेशन की स्थापना की।

१९०७ ई० में सत्याग्रह-आन्दोलन आरम्भ किया जो एक प्रकार से १९१४ ई० तक चलता रहा। १९१४ में प्रसिद्ध गांधी-स्मट्स समझौता हुआ और दक्षिण अफ्रीका की सरकार को सभी भारतीय विरोधी काले कानूनों को वापिस लेना पड़ा। इस आन्दोलन के बीच दो बार गांधीजी की गिरफ्तारी हुई और उन्हें जेल का कष्ट तथा यातना सहन करनी पड़ी। किन्तु इन सब त्याग व आन्दोलन के फलस्वरूप प्रवासी भारतीयों की स्थिति में बहुत कुछ सुधार हो गया और गांधी जी सत्याग्रह की लड़ाई में सफलता प्राप्त कर, श्री गोखले के आग्रह से स्वदेश लौट आये।

* * *

बम्बई में धूमधाम से स्वागत हुआ। सारे देश का दौरा करने के पहले गांधीजी ने यहां की स्थिति का अध्ययन किया। फिर अहमदाबाद के निकट साबरमती आश्रम की स्थापना की और वहां रहने लगे। १९१७ ई० में भारत के अन्दर सार्वजनिक जीवन में उतरे। सबसे पहले गिरमिटिया मजदूरों के पक्ष में लड़ाई लड़ी और उसमें सफलता प्राप्त की। फिर चम्पारन में मजदूरों का पक्ष लेकर आन्दोलन प्रारम्भ किया। अधिकारियों का सब दमन विफल हुआ और जांच कमेटी बैठाने के लिए बाध्य होना पड़ा। इस कमेटी ने मजदूरों के पक्ष में अनेक सिफारिशें कीं जो कार्यान्वित की गईं।

१९१८ ई० में अहमदाबाद के मजदूरों का पक्ष लेकर आन्दोलन किया और अपने जीवन का पहला उपवास करके मिल-मालिकों से मजदूरी बढ़वाई तदनन्तर खेड़ा के किसानों के पक्ष में लड़ाई लड़ी और उसमें सफलता प्राप्त की। निरन्तर दौड़-धूप के कारण गांधीजी बहुत बीमार पड़ गये और जीने की कोई आशा नहीं रह गई। किन्तु ईश्वर की कृपा से वे बच गये।

* * *

बीमारी से उठने के बाद गांधीजी को एक व्यापक क्षेत्र में अहिंसात्मक संग्राम छेड़ने का अवसर प्राप्त हुआ। रौलट ऐक्ट के विरोध में इन्होंने सत्याग्रह करने की घोषणा की और १० अप्रैल १९१९ को पंजाब जाते समय कोसी स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिए गये, जिसकी प्रतिक्रिया-स्वरूप कुछ स्थानों पर दंगे हो गये। अधिकारियों ने दमन-चक्र चलाया और अमृतसर में जलियानवाला घृणित हत्याकाण्ड घटित हुआ। २० हजार निहत्थे हिन्दुस्तानी जनरल डायर की गोलियों से भून दिये गये। गांधीजी ने ३ दिन का उपवास किया और सत्याग्रह-आन्दोलन स्थगित कर दिया।

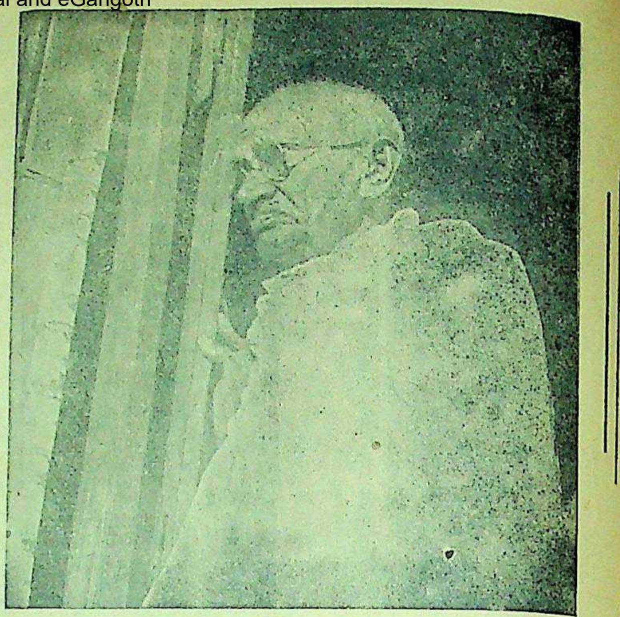

साम्प्रदायिक एकता के लिए अनवरत बलिदान करनेवाले बापू।

१ अगस्त १९२० ई० को असहयोग-आन्दोलन का श्रीगणेश हुआ। अली-बन्धुओं के नेतृत्व में चलनेवाले खिलाफत-आन्दोलन को भी कांग्रेस ने अपना लिया। देश में अपूर्व जागृति दिखाई पड़ी और सरकार से असहयोग करने के उद्देश्य से बहुत से लोगों ने सरकारी नौकरियां त्याग दीं, वकीलों ने वकालत छोड़ दी, विद्यार्थियों ने सरकारी व अर्द्ध-सरकारी स्कूलों में पढ़ना छोड़ दिया। कौंसिलों व अदालतों का बहिष्कार किया गया। अनेक स्थानों पर विदेशी कपड़ों का बहिष्कार किया गया। अनेक स्थानों पर विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई। १९२२ ई० में गोरखपुर जिले में प्रसिद्ध चौरी-चौरा काण्ड घटित हुआ और बारदोली में संग्राम की जो तैयारियां की जा रही थीं उन्हें गांधी जी ने स्थगित कर दी।

१० मार्च १९२२ को महात्माजी गिरफ्तार कर लिये गये और ६ वर्ष का कारावास हुआ। जनवरी १९२४ में इनके पेट में फोड़ा हो गया और सासून अस्पताल (पूना) में आपरेशन हुआ। इसके बाद ही गांधीजी छोड़ दिये गये।

इधर हिन्दुओं व मुसलमानों के बीच म बहुत बढ़ गया था। खिलाफत-आ के समयवाली एकता क्षणिक सिद्ध फलतः गांधीजी ने हिन्दू-मुस्लिम ए के लिए २१ दिन का लम्बा उप किया।

* * *

१२ मार्च १९३० ई० को उ प्रसिद्ध डांडी-यात्रा आरम्भ हुई। ५ को गिरफ्तार किये गये और अनि काल के लिए जेल में बन्द कर दिये देश भर में स्थान-स्थान पर नमक-का तोड़ा जाने लगा। सत्याग्रह पूरे वेग आरम्भ हो गया और लाखों की सं में स्त्री-पुरुष जेलों में भर दिये ३ मार्च १९३१ ई० को गांधी-इर समझौता हुआ और महात्मा जी क की ओर से गोलमेज परिषद् में भाग के लिए लन्दन गये। जब वे इँगलैंड वापस लौटे, कांग्रेस तथा सरकार में युद्ध ठन चुका था। गांधीजी ने तत्का वाइसराय लार्ड वेलिंगडन से मिल युद्ध टालना चाहा किन्तु सरकार दुराग्रह के कारण फिर सत्याग्रह प्रा किया गया। महात्माजी १९३२ में गिरफ्तार कर लिये गये। कांग्रेस गैर-का घोषित कर दी गई।

* * *

२१ सितम्बर १९३३ ई० साम्प्रदायिक निर्णय में हरिजनों को पृ प्रतिनिधित्व देने के विरोध में गांधी ने २१ सितम्बर १९३३ ही को जे में आमरण उपवास प्रारम्भ किया जो २६ सितम्बर को भंग हुआ। जेल छूटने पर गांधीजी हरिजन सेवा में संलग्न हो गये। १९३९ में राज के प्रश्न पर फिर आमरण अनशन कि दूसरा यूरोपीय युद्ध छिड़ने के १९४१ ई० में इनका व्यक्तिगत सत्या प्रारम्भ हुआ। बहुत से नेता फिर में भेजे गये। किन्तु अन्त में सरकार सबको छोड़ दिया। १९४२ में महात्म

शेष पृष्ठ १६ पर दे

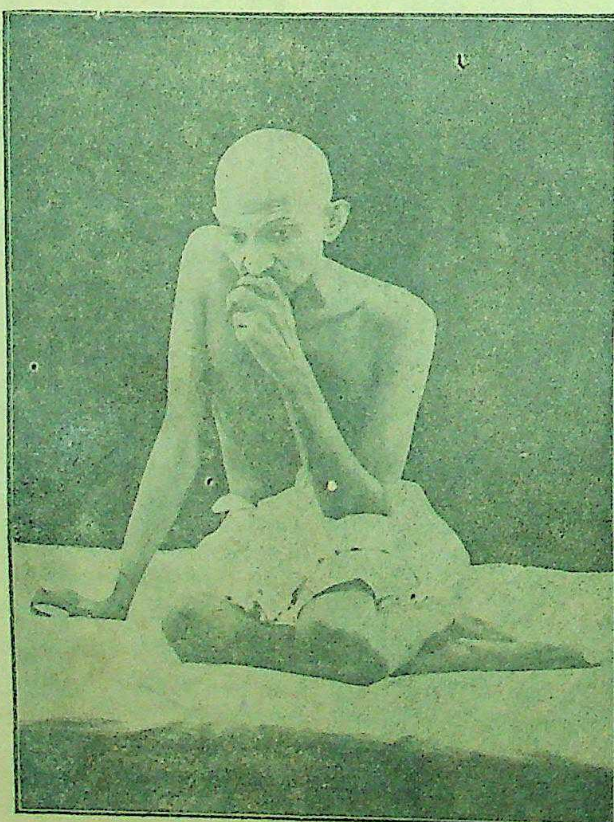

असहयोग-आन्दोलन [illegible] गांधी।

(रजिस्टर्ड) चित्रकूट पर्वत की
श्वांस (दमा) की अनुभवसिद्ध जड़ी
माघ सुदी पूर्णिमा ता० २२-२-४८
को एक खुराक सेवन करने से न
पुराना श्वांस (दमा) हमेशा के लिए
हो जाता है। घर बैठे मगवाकर सेवन
मँगाने का पता-**श्री महात्मा नागा**
आयुर्वेदाश्रम, पोस्ट चित्रकूट, यू०
पी ६६

बापू से मेरी पहली भेंट !

वह महान् विभूति और देवता आज हमारे बीच नहीं रहा

लेखक, पंडित जवाहरलाल नेहरू

महात्मा गांधी भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू को अपना आत्मीय और अत्यन्त प्रिय समझते थे। इस लेख में पंडित जी ने गांधीजी से पहली भेंट का संस्मरण लिखा है और यह प्रगट किया है कि उस महान् विभूति का उनके हृदय पर क्या प्रभाव पड़ा। लेख अत्यन्त सामयिक है।

मैं बापू से पहले-पहल १९१९ में लखनऊ कांग्रेस में मिला। दक्षिण अफीका में उनकी वीरोचित लड़ाई के लिए हम सब उनकी प्रशंसा करते थे; परन्तु हम नौजवानों में बहुतों को वह बहुत दूर और अलग तथा राजनीति से दूर व्यक्ति मालूम देते थे।

यद्यपि बापू प्राकृतिक सौन्दर्य की बहुत प्रशंसा करते हैं, परन्तु मनुष्य की बनाई वस्तुओं में वह सौन्दर्य या कला नहीं देख सकते। उनके लिए ताजमहल जबर्दस्ती ली गई बेगार की प्रतिमूर्ति-मात्र थी। उनका प्रत्येक संकेत सार्थक और नवीन विशेषता लिए हुए होता था। उन्हें बनावटीपन छू नहीं गया था। उनमें न कहीं नुकीलापन था, न कटीलापन। आन्तरिक शान्ति प्राप्त कर वह दूसरों को भी शान्ति देते थे और जीवन के कँटीले मार्ग पर सुदृढ़ और अभय चरण रखते हुए चले जाते थे।

मुझे स्मरण है कि १९२४ में मैंने बापू को पिताजी का एक फोटो दिया था। इन दिनों बापू और स्वराजियों की रस्साकशी हो रही थी। इस फोटो में पिता के मूंछें न थीं और उस समय तक बापू ने सदा उन्हें मूंछों में देखा था। इस फोटो को देखकर बापू चौंक पड़े और विलम्ब तक उसे देखते रहे, क्योंकि मूंछें न रहने से मुंह और ठोढ़ी की कठोरता और भी प्रकट हो गई थी। सूखी-सी हँसी हँसते हुए बापू बोले—'अब मैंने यह जान लिया कि मुझे किसका मुकाबला करना ह।'

कुछ वर्षों बाद १० अगस्त सन् ३० को मैं और पिता जी एक स्पेशल ट्रेन में नैनी जेल से पूना भेजे गये। हमारी गाड़ी बड़े-बड़े स्टेशनों की अपेक्षा कहीं कहीं छोटे और किनारे के स्टेशनों पर ठहराई गई। फिर भी हमारे जाने का समाचार हमसे भी आगे दौड़ गया और लोगों की भीड़ स्टेशनों पर इकट्ठी हो गई। हम ग्यारह की रात को पूना के समीप खिड़की स्टेशन पर पहुँचे।

हमारी धारणा थी कि हम बापू की बैरक में ठहराये जायँगे या नहीं तो उनसे शीघ्र ही भेंट तो अवश्य हो जायगी, पर दो दिनों तक हमें अपनी आशाओं को रोकना पड़ा। सरोजिनी नायडू, वल्लभभाई पटेल और जयरामदास भी वहीं लाये गये और उसी रात हम बापू के समीप पहुँचाये गये। तीन दिनों तक सप्रू और जयकर साहब से हमारा वार्तालाप होता रहा और कम से कम 'शर्तें' बता दी गईं जिनके पूरा होने पर सविनय-अवज्ञा-आन्दोलन बन्द किया जा सकता था।

जिस रात हम यरवदा पहुँचे, कर्नल मार्टिन ने बाबूजी से पूछा—'आप किस तरह का खाना पसन्द करेंगे ?'

पिताजी ने कहा—'मैं बहुत सादा और हलका खाना खाता हूँ।'

और उन्होंने सुबह की चाय से लेकर खाने तक सब आवश्यक वस्तुएँ गिना दीं। पिताजी ने सरल भाव से जो वस्तुएँ दिखलाईं, वे थीं तो सब सादी और हल्की ही, पर उन्हें सुनकर कर्नल मार्टिन दंग रह गया। हो सकता है कि 'रिज' और 'सेवाय' होटल में ये वस्तुएँ सादी और हल्की समझी जाती हों, पर यरवदा जेल में तो विलक्षण और निरर्थक दिखाई दीं। महमूद और मैं बड़ी रंगत के साथ कर्नल मार्टिन के चेहरे का उतार-चढ़ाव देख रहे थे, जब पिता जी भोजन की उन कई प्रकार की और खर्चीली वस्तुओं के नाम सुनाते जा रहे थे, क्योंकि कई दिनों से उनके यहां भारत का सबसे बड़ा और नामी नेता रखा गया था और जिसकी भोजन-सामग्री थी केवल बकरी का दूध, खजूर और शायद कभी-कभी नारंगियां।

सितम्बर १९३२ के मध्य एक आकस्मिक और बड़ी चिन्ताजनक घटना से जेल के मेरे शान्तिपूर्ण और एकाकी जीवन में खलबली मच गई। समाचार आया कि मिस्टर रैमजे मैकडोनेल्ड के साम्प्रदायिक निर्णय में दलित जातियों को अलग चुनाव दिये जाने के विरोध में बापू ने 'आमरण अनशन' करना निश्चय किया है। लोगोंको आघात करन की उनमें कितनी क्षमता है ? सहसा सभी तरह के विचार मेरे मस्तिष्क में आने लगे। उन्होंने अपनी व्यक्तिगत भावना के प्रबल होने से मुझे लगता था कि अब सम्भवतः मैं उन्हें न देख सकूंगा। और फिर मुझे उन पर झुंझलाहट भी आई कि उन्होंने अपनी अन्तिम कुर्बानी के लिए एक छोटा-सा सिर्फ चुनाव का मामला ही लिया। हमारी स्वतन्त्रता के आन्दोलन का क्या होगा ? और यदि बापू मर गये तो हिन्दुस्तान की क्या दशा होगी ? मुझे भविष्य सूना और उदास दीखने लगा।

बापू चाहे लोकतन्त्री हों या न हों, वह भारत की पीड़ित जनता के प्रतिनिधि अवश्य थे। वह उन करोड़ों की सुप्त और जाग्रत इच्छा-शक्ति के साररूप थे। करोड़ों जनता के आदर्शों की सजीव मूर्ति थे। वे एक अत्यन्त कुशाग्रबुद्धि, उच्चभाषण, सुरुचि तथा व्यापक दृष्टि रखनेवाले पुरुष थे। बहुत सहृदय, फिर भी आवश्यक रूप से एक तपस्वी, जिन्होंने अपने विकारों और दुर्भावनाओं का दमन करके उन्हें दिव्यत्व प्रदान किया था और आध्यात्मिक मार्गों में प्रेरित किया था। उनका एक सुदृढ़ व्यक्तित्व था। जो चुम्बक की भांति प्रत्येक को अपनी ओर खींच लेता था और अपने प्रति भयंकर कर्तव्य-पालन और ममता को दूसरों के हृदय में उमड़ाता था। यह सब एक किसान से कितना भिन्न और कितना परे है ? और इतना होने पर भी बापू एक महान् किसान थे जो बातों को किसान के दृष्टि-बिन्दु से देखते थे और जीवन के कुछ पहलुओं के बारे में किसान की भांति ही अन्धे भी।

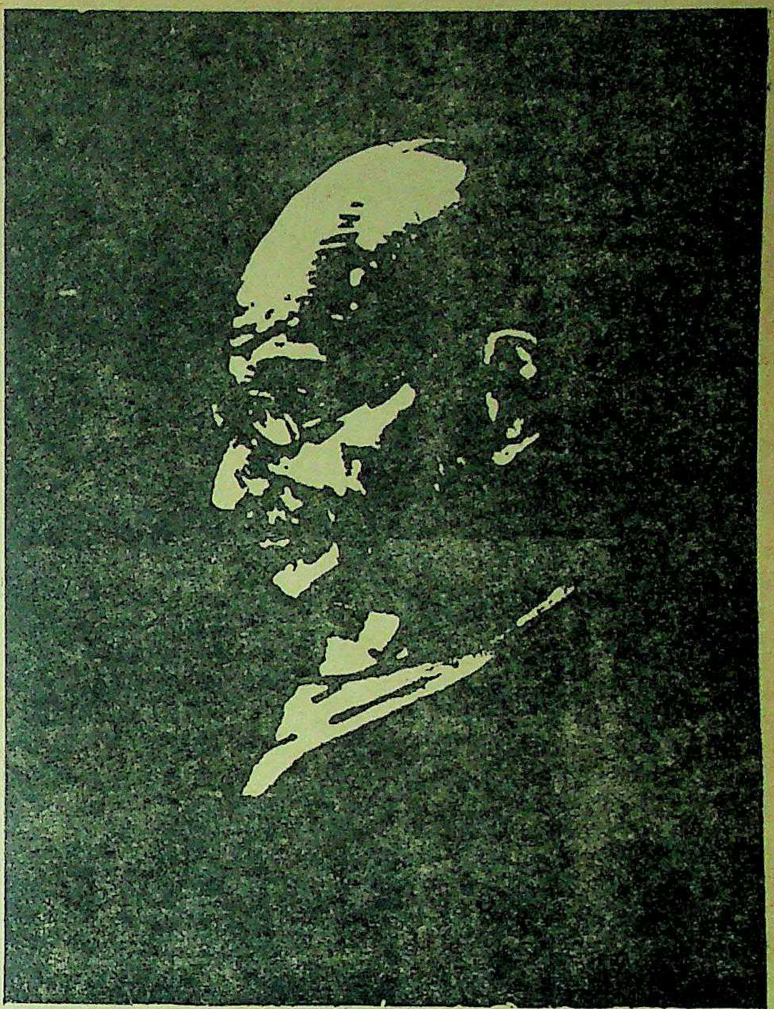

पूज्य बापू—चित्रकार, श्री सुधीर खास्तगीर

भारत का साहित्य बड़े-बड़े तपस्वियों की कथाओं से भरा पड़ा है जिन्होंने घोर त्याग और तप-द्वारा बहुत पुण्य का संचय करके छोटे-छोटे देवताओं के प्राधान्य को हिला दिया है। जब कभी मैं बापू की अक्षय आध्यात्मिक भंडार से बहनेवाली विलक्षण कार्यशक्ति और आन्तरिक बल को देखता हूँ तब मुझे प्रायः ये कथाएँ स्मरण हो आती हैं। बापू स्पष्टतः संसार के साधारण व्यक्ति नहीं थे। वे तो विरले और अद्भुत प्रकार के सांचे में ढाले गये थे जिनकी आंखों से मानो एक 'अज्ञात' हमारी ओर घूरा करता था। बापू ने अपनी जादू की लकड़ी से हमारे देश का नकशा ही बदल दिया।

जहां तक बापू से मेरा सम्बन्ध है उन्हें बहुत समीप से जानने का सौभाग्य मुझे प्राप्त है। यह विचार कि मैं उन्हें चुनौती दूं या उनसे सौदा करूं, मेरी दृष्टि में भयंकर राक्षसी कृत्य होगा।

कारागार की काली दीवारों से मेरे ये विचार ठुकरा ही रहे थे कि सारे देश में भयंकर उथल-पुथल मचने, हिन्दू-समाज में उत्साह की एक जादू भरी लहर के आ जाने का समाचार आया और मालूम हुआ कि अस्पृश्यता का अब अन्त ही होनेवाला है। मैं सोचने लगा कि यरवदा जेल में बैठा हुआ यह छोटा-सा मानव कितना बड़ा जादूगर है और लोगों के हृदय में खलबली मचा देनेवाली डोर हिलाना वह कितनी अच्छी तरह जानता है।

मैं इसी उधेड़-बुन में था कि बापू का

शेष पृष्ठ १३ पर देखिए

महात्मा गांधी के निधन पर

लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल्-एल० बी०

तेरा, ऐ नियति, यह न्याय ?
इस तरह क्या बन्द होना चाहिए अध्याय।

जो तिमिर के व्यूह से लाया धरा को खींच,
रख दिया भू-पिण्ड को उज्ज्वल गगन के बीच।
अर्चना को आज उसकी ही नियति क्यों बोल,
प्रात की पहली किरन पर शब्द निकला 'हाय' !

सृष्टि का सृष्टा अचानक सृष्टि सजते दूर
तीर लगते ही तरनि नाविक हुआ काफूर,
आज मन्दिर के विरचते मूर्ति अन्तर्ध्यान
स्नेह के व्यापार में, ऐ नियति, कटु व्यवसाय ?

मुक्ति की रोली लगाई दासता के भाल,
डाल दी फिरउर पराजित पर विजय की माल।
देह रचने पर प्रतिष्ठा प्राण की अनिवार्य
ऐ नियति, पर हो गया क्यों प्राण ही निष्काय।

आज सूली ईशु की आती पुनः क्यों याद,
आज लिंकन का पुनः क्यों दिख रहा जल्लाद,
देवता की माल को क्या चाहिये था फूल

हाय मानवता निबल, मानव बड़ा निरुपाय।

राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी के अंतिम प्रयाण के हृदय-विदारक दृश्य

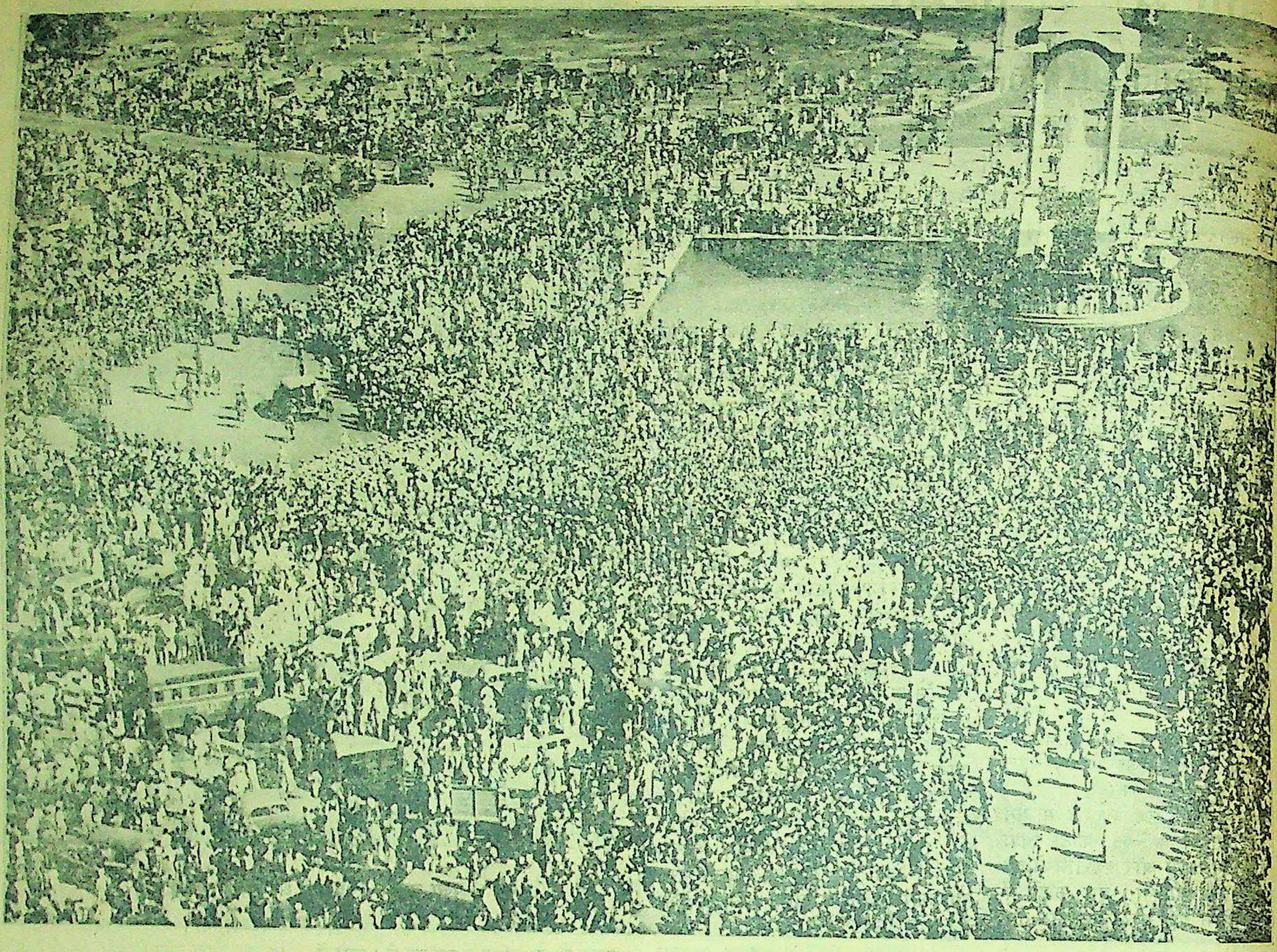

राजघाट (दिल्ली) की ओर महात्माजी की अर्थी के साथ जाती हुई लाखों जनता का अपार समूह।

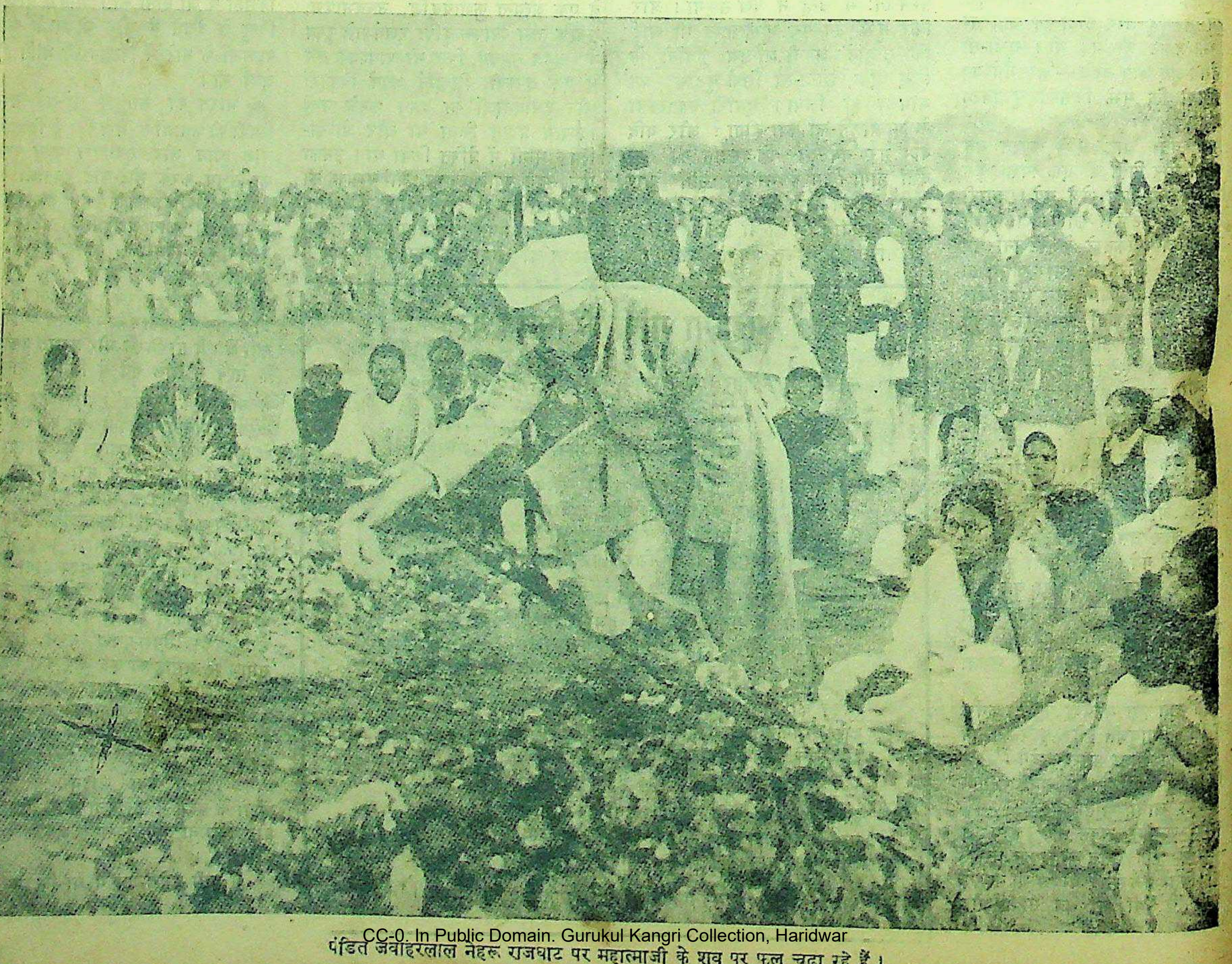

पंडित जवाहरलाल नेहरू राजघाट पर महात्माजी के शव पर फूल चढ़ा रहे हैं।

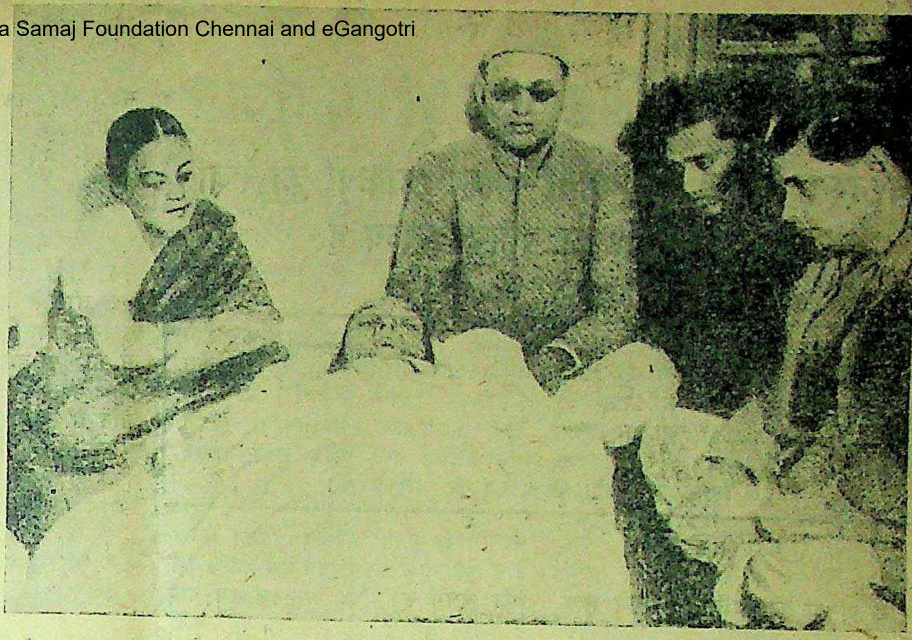

राष्ट्र-पिता बापू के
महाप्रयाण के
अवसर के चित्र

राष्ट्र-पिता का अंतिम दर्शन

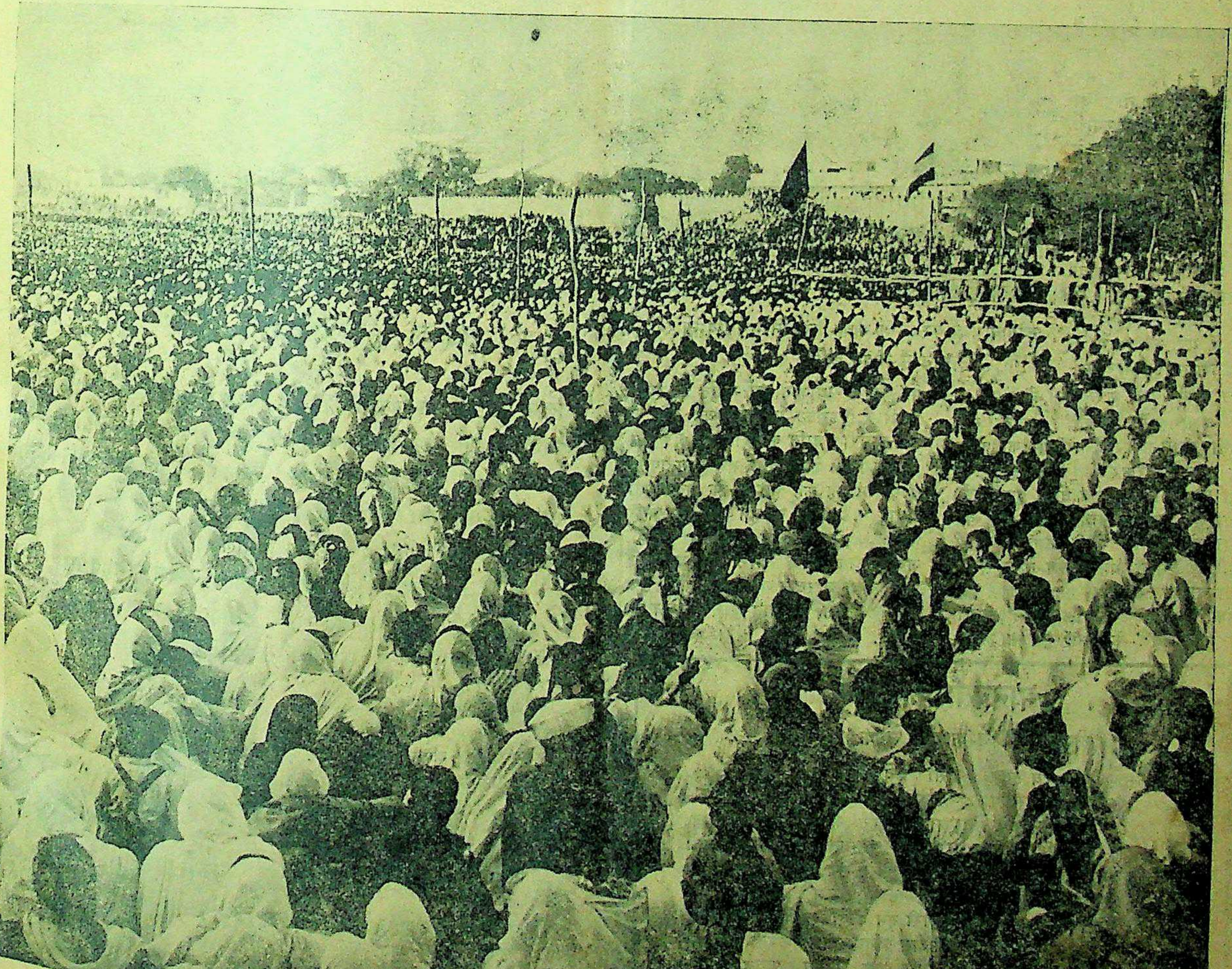

महात्मा गांधी की आत्मा को श्रद्धांजलि भेंट करने के लिए दिल्ली की शोकसभा में एकत्रित लाखों जनता का दृश्य।

महात्मा जी की इच्छा पूरी कीजिए

जबरदस्ती भगाई हुई बहनों और लड़कियों की रक्षा करना समाज का महान् कर्तव्य है

लेखिका, श्रीमती रामेश्वरी नेहरू

विश्ववंद्य बापू के सामने यह प्रश्न दिनों-दिन उलझन, उत्पन्न कर रहा था कि पंजाब की दुर्घटना में जो स्त्रियां जबरदस्ती भगाई गई हैं, उनका कैसे उद्धार हो? उन्हें समाज और उन बहनों के घरवाले अपनाने में क्यों हिचकिचाते हैं? उनकी रक्षा कैसे हो? श्रीमती रामेश्वरी नेहरू ने इस लेख में उन्हीं बहनों का चित्र खींचा है। आशा है समाज और समाज के अगुआ पीड़ित बहनों और लड़कियों की रक्षा करके पूज्य बापू की इच्छा की पूर्त्ति करेंगे।

पिछले ६ महीनों में हमारा देश जिस महाविप्लव का शिकार बना उससे हमारी जनता को भांति भांति का कष्ट उठाना पड़ा; परन्तु इस हत्याकांड में सबसे भयानक अत्याचार हमारी भोली-भाली लड़कियों और बहनों को सहना पड़ा। पश्चिमी और पूर्वी बंगाल में दुष्ट पापी मनुष्य उनको भगाकर ले गये। रेलें और ट्रक भर-भरकर इन बेचारी निर्दोष स्त्रियों को मनुष्यरूपधारी राक्षस कौन जाने कहां ले गए और उनसे क्या व्यवहार किया। ऐसी लड़कियां और स्त्रियां कितनी हैं, इनका शुमार नहीं है; परन्तु इसमें संदेह नहीं कि इन बेचारी मजलूम बहनों की संख्या सैकड़ों नहीं, हजारों तक पहुँचती है।

मैं यह बात बिलकुल साफ कर देना चाहती हूँ कि यह मज़लूम बहनें निर्दोष हैं। किसी के मन में भी इनको नीच या त्याज्य समझने का ख्याल नहीं आना चाहिए। वे जैसे पहले अपने घरों की रानियां थीं—समाज का प्रतिष्ठित अंग थीं—वैसे ही अब भी हैं। घर लौटने पर उनको प्रेम और आदर से स्वीकार करना चाहिए। उन अभागी बहनों के मन में यह भाव कभी न आवे कि समाज और घर-वाले उनसे घृणा करने लगे हैं।

स्वर्गीय पूज्य कस्तूर बा गांधी जिन्होंने भारतीय नारियों के उत्थान में जीवन अर्पित कर दिया।

घृणा करें भी क्यों? अपनी सती सच्ची सीधी-साधी बहू-बेटियों को पकड़-कर बल से हरकर यदि कोई दुष्ट ले गया तो क्या इससे वे दोषी बन गईं। सीता को रावण ले गया था तो क्या सीता को किसी ने दोषी ठहराया था? इसलिये हमको यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि संसार का कोई भी धर्म हमको ऐसा करने के लिये नहीं कहता, और न हमें धर्म के नाम पर ऐसा अत्याचार कभी करना चाहिए। हमने अनेक बार ऐसी भूलें की हैं जब धर्म को अधर्म और अधर्म को धर्म मानकर हम पाप के भागी बने हैं। हिन्दू-समाज की वृत्ति यह रही है कि विवेक को भूलकर वे धर्म के नाम पर पाप करते रहे हैं। हरिजनों के साथ छुआछूत करना ऐसी ही भूलों में से एक उदाहरण है। स्त्रियों के साथ भी हमारे समाज का व्यवहार संकुचित ही रहा है। थोड़ी-थोड़ी भूलों पर हमारे समाज ने स्त्री-जाति का त्याग किया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि हमारी जाति कमजोर पड़ गई है।

धर्म को जाननेवाले, सब ही महापुरुष बारम्बार यह कह चुके हैं कि जबरदस्ती भगाई हुई बहनों का हमें कभी तिरस्कार नहीं करना चाहिए। महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू और देश के दूसरे भावी नेता जोरदार शब्दों में कहते हैं कि वह बहनें वैसे ही मान और प्रतिष्ठा की पात्र हैं जैसे पहले थीं। जबरदस्ती धर्म परिवर्तन करना भी जायज़ नहीं माना जा सकता। न ही जबरदस्ती का विवाह धर्म का विवाह समझा जा सकता है। इसलिये जिन बहनों तक मेरी यह आवाज पहुँचे वे इस बात का विश्वास जानें कि उनका कुछ बिगाड़ नहीं हुआ है, उनके घरवाले माता-पिता, पति-भाई उनको उसी पहले प्रेम से रखेंगे। समाज उनको पूरी तौर से अपनावेगा। अब आज-कल पुराना ज़माना नहीं है। इस विपद-काल में जो कुछ हुआ उससे हमारे समाज की आंखें खुल गई हैं। वे अपनी भूलों को मान गये हैं और पूरे पूरे इस बात के लिये तैयार हैं कि वे अपनी बहू-बटियों को फिर से अपनावें। उनके घरों में उनका स्थान खाली पड़ा है; इसलिये वे निर्भय और निःसंकोच लौटकर आवें और घ और समाज में अपने आसन क फिर से ग्रहण करें।

मानवता का अन्त

लेखक, श्री निरंकारदेव सेवक, एम० ए०

यह कैसा भीषण वज्रपात सहसा हृद्गति हो गई मौन।
विश्वास नहीं होता इस पर यह बार बार कह रहा कौन?
सो गया सदा के लिए आज, चिर अविनाशी सेगांव सन्त,
किस दुर्दिन में इस भारत की मानवता का हो गया अन्त।
है बिलख रहा जन जन का मन, शोकातुर हैं सब दिगदिगन्त।
कैसा स्वतंत्र स्वाधीन देश कैसी होली कैसा बसन्त?
यह किस कायर की कमजोरी बन गई विश्व के लिए शाप,
है विकल वायु कण कण उदास दुनिया रो रो करती विलाप।
कर गया सिद्ध यह निर्विवाद मानवता पर निर्दय प्रहार।
इस दुनिया में अति का अच्छा होना भी भ्रम है निराधार॥

मिरगी-अपस्मार हिस्टीरिया की विजयी जड़ी

यह अचूक जड़ी केवल एक बार दौ के समय रोगी को सुँघा देने से १½ इं लम्बा काले रंग का कीड़ा छींकों के सा निकल आवेगा, कीड़ा निकल जाने प रोगी सदैव के लिए नीरोग हो जावेगा।

पता—श्री १०८ महात्मा सिद्ध बाब
पो० नागोद (जबलपुर)

विवाहित जीवन

को सुखमय बनाने के गुप्त रहस्य जानने हों तो निम्न पुस्तकें मँगायें—

१--कोक शास्त्र (सचित्र)	१॥)	२—८४ आसन (सचित्र)	१॥)
३—८० आलिंगन (सचित्र)	१॥)	४—१०० चुम्बन (सचित्र)	१॥
५—सोहागरात (सचित्र)	१॥)	६—चित्रावली (सचित्र)	१
७—गोरे खूबसूरत बनो	१॥)	८—गर्भ-निरोध (सचित्र)	।

उपरोक्त पुस्तकें एक साथ लेने से ८) रु० में मिलेंगी, पोस्टेज १) अलग लगेगा।

पता—ग्लोब ट्रेडिंग कम्पनी (जी० १३) अलीगढ़ सिटी।

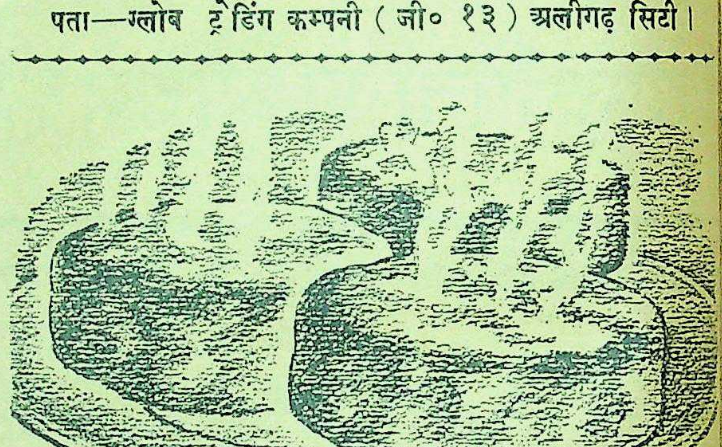

डालडा में तली हुई आलू की टिकियां सदैव स्वादिष्ट होती हैं!

आलुओं को धो कर बिना छिले ही उबालिये। जब नरम पड़ जायें तो छिलका उतार कर थोड़ा सा दूध मिला कर भुरता बनाइये और स्वादिष्ट बनाने के लिये नमक, काली मिरच, और हरे धनिये के पत्ते कुतर कर डालिये। इस की चपटी टिकियां बनाइये, अंडे की सफ़ेदी में अथवा चावलों के गीले आटे में भिगोइये और डब्ल रोटी का चूरा अथवा मैदा लगाइये। गरम डालडा में तवे पर तब तक तलिये जहां तक कि टिकियां दोनों तरफ से लाल हो जायें। गरम गरम टिकियां खाइये — आप को बहुत पसंद आयेंगी। डालडा में बनाने से हर एक वस्तु स्वादिष्ट बन जाती है।

किस प्रकार से रुचिकर और पौष्टिक खाने बनाये जायें इन्हें बनाने की ठीक ठीक विधि, अपने शेष भोजन के ठीक ठीक उपयोग के बारे मुफ्त सलाह के लिये निम्न पत्ते पर लिखिये:—

दि डालडा एड्वायज़री सरविस
पोस्ट बॉक्स नं० ३५३, बम्बई १

HVM. 74-172 HI

DALDA
VANASPATI
वनस्पती

बापू के प्रति श्रद्धांजलियाँ

बापू !

लेखक, डाक्टर ब्रजमोहन गुप्त

हे महाप्राण मानव महान्
तुमको मेरा शत शत प्रणाम !

हे जन मन्थन के सूत्रधार
जन-जीवन का सागर अपार
था सुप्त पड़ा; तुमने उसको
मथकर जो कुछ भी किया प्राप्त
उसमें से अमृत तो जग-हित
तुम रहे बांटते जीवन भर
पर द्वेष घृणा से जो निकला
कर गये हलाहल स्वयं पान।
मानवता के शंकर महान्
तुमको मेरा शत शत प्रणाम !

तुमको देखा, विश्वास हुआ
गौतम की कठिन तपस्या पर
उस जीवन में फिर जाग उठा
ईसा का भी बलिदान अमर
आत्मा के बल के तुम प्रतीक
तुमने संदेश दिया जग को
मानव-जीवन का लक्ष्य नहीं
निद्रा, मैथुन, भोजन केवल
अणु बम की शक्ति बड़ी लेकिन
अपराजित नित आत्मा का बल,
अविभाज्य एक आत्मा से ही
मानव मानव सब हैं समान !
जिसने यह शुचि संदेश दिया
उसको मेरा शत शत प्रणाम !

मानवता का सर्वोच्च कुसुम
मानवता का पावन हिमाद्रि
जग मैत्री की सुरभित सुरसरि
जिसके शुचि मानस से निःस्पृह
वह भारत का गौरव-किरीट
मानवता की जय का निशान
वह तपःपूत मानव महान्
उसको मेरा शत शत प्रणाम !

युग-पुरुष साधना के बल से
बन गये अचल ध्रुव तुम पावन
युग युग तक पथ संकेत और
बल पायेगा मानव का मन!
दिनपति के अश्वयान से भी
रे! कहीं तीव्र ज्योतिर्मय रथ
संदेश तुम्हारा वहन करेगा
भूमंडल में युग युग तक !
आत्मिक बल पर विश्वास अमर
के तीक्ष्ण ज्योतिमय अगणित शर
काटते रहेंगे युग युग तक
मानव मन का तामस विकार
जैसे रवि-किरणें अंधकार !
हे तपःपूत ऋषि जीवन भर
तुम करते आये यज्ञ एक
उसकी पूर्णाहुति में तुमने
बलि हित निज को कर दिया भेंट
साधना तुम्हारी लायेगी
निश्चय नव जीवन का विहान
इस नव विहान के अग्रदूत
हे महाप्राण मानव महान्
तुमको मेरा शत शत प्रणाम !

श्रद्धाञ्जलि

लेखक, आशु कवि श्री जगमोहननाथ अवस्थी

बदल गया इतिहास हो गया सहसा पट-परिवर्तन :
आखिर यह नौबत ले आया आपस का संघर्षण ।

मानवता हो गई कलंकित दानवता के द्वारा।
हिंसक मानव कौन करेगा अब विश्वास तुम्हारा।

जिसने संकट झेले हंस-हंस जो प्राणों से खेला।
सिद्धान्तों पर सदा अडिग वैरागी रहा अकेला।

सब कुछ कर दिखलाया अपने बल आजादी लाया।
हरिजन-प्रिय बन गया विषमता को भी दूर भगाया।

युग ने पूजा किया जिसे भगवान मानकर अपना,
सबने बापू कहा जिसे अवतार जानकर अपना।

खुद अपने भगवान मारकर बैठा आज पुजारी,
दाता का वध किया बन गया पागल हाय ! भिखारी !

यह निर्दयता, यह पशुता, यह दानवता है कैसी ?
पीता अपना खून भला यह मानवता है कैसी !

सच है कायर हाथी अपने दल पर बल दिखलाता।
धिक् नागिन का हृदय कि अपने बच्चों को खा जाता।

इसीलिए उपवास किया था यह फल उसका पाया !
मोहनभोग न खाया बापू ने तो गोली खाया।

बापू तो है अमर किन्तु, यह राष्ट्र मर गया देखो !
करना था जो उसे काम वह अमर कर गया देखो !

अमर स्वर्गवासी हे बापू ! श्रद्धाञ्जलि है अर्पण,
मोहन स्वीकृत हो मोहन का आंसू हार समर्पण !

बापू के प्रति

लेखक, श्री श्रीपालसिंह 'क्षेम'

छा रही तम की घटाओं सी उदासी, जल गई है ज्योति जमुना के किनारे !

चीखती है विश्व की चैतन्य-वीणा
बीच में ही आज सम का तार टूटा।
रक्त से अभिशक्त काली यामिनी में
दृढ़ प्रभा के स्तम्भ का आधार टूटा !!
आंसुओं की रात का वह स्वप्न टूटा—चल रहा था युग-पथिक जिसके सहारे !

हाथ में कुछ छार-कण लेकर ठिठककर
देखता है 'ज्योति का अभियान' युग का !
बह चला था जो कि मनु की बांसुरी से
आज फिर भ्रम में रुका वह गान युग का !!
यह नहीं है राख, दर्पण है कि फिर से—देख लें निज रूप तो मानव बिचारे !

यह न साधारण चिता, यह युग-पुरुष था
जो कि आया था धरा का तत्त्व लेने।
आज चढ़कर झलमलाते अग्नि-रथ पर
जा रहा जो स्वर्ग में अमरत्व लेने !!
देखते हो क्या, विदा-वरदान हैं ये आंख में रख लो उठाकर ये अँगारे !

रक्त अन्तिम सांस तक देता रहा जो
दे सके जब तुम न हा, सम्मान उसका।
व्यर्थ तब बर्बर मृषा आंसू बहाकर
कर रहे क्यों आज फिर अपमान उसका !!
रो अभागे रो, स्वकृत पर आज रो लें हैं रुदन को ही बने तेरे सितारे !

सांझ सबकी रक्त से रंजित न होती
यह तपी के सत्व की आराधना है।
यह नहीं है अस्त तारे का अभागे
सूर्य था वह, दिवस जिसकी साधना है !!
तप गया, संसार उज्ज्वल कर गया वह क्या करे, उज्ज्वल न हों यदि मन तुम्हारे !

अरे शिव था वह, दिया वरदान उसने
किन्तु हमने शस्त्र उस पर ही चलाये !
शव न सत्य-विवेक फूलों में छिपाकर
आज जमुना तीर पर हमने जलाये !!
दोष दाता का भला क्या ही सुधा जो, कंठ विष को ही तृषित हों जब हमारे !

ज्योति-घन ! पर श्रम न तेरा व्यर्थ होगा
बूंद जीवन की धरा पर यदि गिराई।
तृण उगेंगे, तरु बढ़ेंगे, फल लगेंगे
भूमि पर यदि स्वर्ग की बौछार आई !!
साधना की धार में यदि शक्ति होगी एक दिन ढह जायेंगे भ्रम के कगारे !

पेज ९ का शेष

एक तार मुझे मिला। इसमें उन्होंने लिखा था—

'इन वेदना के दिनों में मुझे सदा तुम्हारा ध्यान रहा है। तुम्हारी राय जानने को मैं विशेष उत्सुक हूँ। तुम्हें मालूम है कि तुम्हारी राय की मैं कितनी कदर करता हूँ। मैंने इन्दु और सरूप के बच्चों को देखा। इन्दु प्रसन्न और कुछ तगड़ी दीखती थी। तबीअत बहुत ठीक है। तार से उत्तर दो। स्नेह।'

यह एक साधारण बात थी, पर उनके स्वभावानुकूल थी। अपने अनशन की पीड़ा और काम-काज के बीच भी उन्होंने मेरी पुत्री और बहन के बच्चे के आने का जिक्र किया और यह भी लिखा कि इन्दिरा तगड़ी हो गई है। उस समय मेरी बहन भी पूना की जेल में थी और ये सब बच्चे पूना में पढ़ते थे।

ठीक उसी समय मुझे यह भी समाचार मिला कि चुनाव के प्रश्न पर कोई समझौता हो गया है और जेल के सुपरिंटेंडेन्ट ने दया करके मुझे बापू को उत्तर देने की आज्ञा दे दी और मैंने उन्हें यह तार भेजा—

'आपके तार और यह संक्षिप्त समाचार मिलने से कि कोई समझौता हो गया है, मुझे बड़ी प्रसन्नता और शान्ति मिली। पहले तो आपके अनशन के निश्चय से मानसिक क्लेश और द्विविधा पैदा हुई, पर अन्त में आशावाद की विजय हुई और मुझे मानसिक शान्ति मिली। पददलितों के लिए बड़ा से बड़ा बलिदान भी कम ही है। मैं धार्मिक दृष्टि से निर्णय करने में असमर्थ हूँ। लेकिन एक महान् जादूगर को मैं कैसे सलाह दे सकता हूँ, स्नेह।'

पूना में जमा हुए भिन्न-भिन्न लोगों ने एक समझौते पर हस्तार किया और ब्रिटिश प्रधान मंत्री ने उसे चटपट स्वीकार कर लिया और उसके अनुसार अपना पिछला निर्णय बदल दिया।

और इधर, उस महान् जादूगर ने अपना अनशन तोड़ दिया।

यदि वास्तव में एजेन्सी-द्वारा धन कमाना चाहें तो 'दी दिग्विजय टायल्स एण्ड पौटरीज लिमिटेड' की बनाई उत्तम वस्तुओं, यथा प्याले, तश्तरियाँ, चाय सैट, उबालदान, सुराहियों और प्लेट्स इत्यादि की एजेन्सी के लिए, इस पते पर पत्र-व्यवहार करने की कृपा करें।

दी दिग्विजय टायल्स एण्ड
पौटरीज लिमिटेड, जामनगर
(काठियावाड़)

(रजिस्टर्ड)
१५० वर्ष की विश्व-विख्यात
(स्वाँस) दमा की फकीरी बूटी

जिसकी एक ही मात्रा पूर्णिमा की रात्रि ता० २४-२-४८ को (अनुसुईया बूटी) खीर के साथ सेवन करने से नया व पुराना दमा सदैव को जड़ से नष्ट हो जाता है। हजारों मर्द स्त्री व बच्चे आराम पा चुके हैं। आप लोग भी सेवन करके निरोग्य हो जाइये।

श्री महात्मा एस० के० दास,
श्री सन्त सेवा आश्रम,
पो० चित्रकूट, यू० पी०

श्रद्धांजलियाँ !

भारत तथा विदेशी नेताओं की

संग्रहकर्ता, श्री गोपाल मेहरोत्रा

"इस महान् लज्जाशील दुर्घटना के पश्चात् हम भारतीयों को अपनी तुच्छ साम्प्रदायिकता को त्याग कर एकता, प्रेम एवं अहिंसा के पथ पर अग्रसर हो जाना चाहिए। इस समय उस महामना के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए हमें दृढ़प्रतिज्ञा करना चाहिए कि हम सब अहिंसा, सत्य और एकता के लिए अपने प्राणों की आहुतियां भी देने में किंचित्-मात्र भी न हिचकेंगे, जिसके लिए उस सम्राट् ने अपना अमूल्य-जीवन समाप्त कर दिया। जयहिन्द!"

--जवाहरलाल नेहरू

* * *

"वास्तव में हमारे लिए यह अग्नि-परीक्षा का समय आ गया है। ऐसे शोकावसर पर हमें क्रोध के वशीभूत न होना चाहिए; वरन् महान् संगठन से, अडिग ध्येय द्वारा उस महान् कार्य में सफलता प्राप्त करना है, जिसके लिए महात्मा गांधी जी ने अपना प्राण-दान दिया है; अन्यथा हम उन महान् आदर्शों को भूलकर आजन्म भर अवनति के गड्ढे में गिरकर धूल धूसरित होंगे। भारत पर इस महान् संकट के आने पर भी गांधी जी सदैव हमारे साथ रहेंगे तथा हम भारतीयों के उन्नति-पथ-प्रदर्शक रहेंगे। ईश्वर की इच्छा!"

--सरदार पटेल

* * *

"यह एक ध्रुव-सत्य है कि महात्मा जी विश्व की समस्त जातियों में उत्पन्न होनेवाले व्यक्तियों में से एक थे। वर्तमान अवस्था में भारतीय संघ को महात्मा गांधी जी की मृत्यु से जो असहनीय हानि हुई है, उसकी पूर्ति करना हम समस्त का सर्वप्रथम परम कर्तव्य है।"

--कायदे आजम जिन्ना

* * *

"असभ्य जनता में सुज्ञान का ज्ञान कराकर साम्प्रदायिक एकता का प्रयत्न करनेवाला केवल वही महान् व्यक्ति, जिसकी मृत्यु से देश को असहनीय क्षति हुई है--उनके वे स्मृतिरूपी आदर्श भारतीय जनता की कल्पना में सदैव सजग रहेंगे। ईश्वर उन्हें शान्ति प्रदान करे।"

--लियाकतअली खां

* * *

"महात्मा गांधी जी के दुखान्त मृत्यु-समाचार से हमारे शब्दों में कोई उत्तेजना का किंचित्मात्र भी साहस नहीं रहा है। सर्वप्रथम समस्त राष्ट्रीय नागरिकों को भारत के प्रधान मंत्री के आदेशों का समर्थन कर देश में शान्ति, अहिंसा तथा सत्य का प्रकाश विस्तृत करना चाहिए।

--सावरकर

* * *

"वास्तव में गांधी जी की मृत्यु से विश्व ने एक अनमोल रत्न को खो दिया है, जिसके फलस्वरूप वह एक निर्धन मानव प्रतीत हो रहा है।"

--भोपतकर

* * *

"वह हत्यारा समझता होगा कि उसने महात्मा जी की मृत्यु कर हिन्दू-जाति का बड़ा भारी हित किया है; परन्तु उसने हिन्दुस्तान को 'विधवा' कर दिया है।"

--पुरुषोत्तमदास टंडन

* * *

"मैं तुमको (पं० नेहरू जी) अपनी श्रद्धा, प्रेम और आहुति की शक्ति प्रदान करती हूँ, जिसके लिए पूज्यवर बापू ने अपने प्राण की आहुति दे दी।"

--विजयलक्ष्मी पंडित

* * *

"यह ऐसा दुखान्त अवसर है, जब कि मेरे स्वर उस महान् व्यक्ति की श्रद्धांजलि अर्पित करने में असमर्थ हैं। प्रत्येक भारतवासी को साम्प्रदायिकता का नाश कर एकता-पथ की ओर अग्रसर होना चाहिए।"

--सरोजिनी नायडू

* * *

"गांधी जी राजनीतिक नेता तथा समाज-सुधारक के अतिरिक्त एक महान् संसार-शिक्षक थे। एक पिता के नाते हमें उनके पथ का अनुसरण करना चाहिए।"

--बी० बी० गिरि

* * *

"ऐसे कारुणिक निधन पर ईश्वर मृतात्मा को चिर शान्ति दे तथा जनता से अन्धविश्वास, साम्प्रदायिकता एवं असत्य की भावना निकाल दे।"

--सी० राजगोपालाचार्य

* * *

"ईश्वर सम्पूर्ण-देश में शान्ति व एकता का बीजारोपण करने के लिए देश के प्रमुखों को शक्ति प्रदान करे, जिसके द्वारा हम उस दिवंगत का स्वागत कर सकें।"

--के० माधवा मेनन

* * *

"अत्यधिक आवश्यक एक महान् आध्यात्मिक विभूति आज हमारे नेत्रों से ओझल हो गई है।"

--हालिंगटन टांग (चीन)

* * *

"हत्यारे ने ऐसी सन्देहजनक स्थिति उत्पन्न कर दी है, जिसे दृष्टिगत रखते हुए भावी फलों का कोई उल्लेख नहीं किया जा सकता।"

--लार्ड लिनलिथगो

* * *

"सम्पूर्ण मानव-जाति की अन्तरात्मा के प्रवक्ता ने आज मुख मोड़ लिया है।"

--जार्ज मार्शल

* * *

"दिवंगत बापू के मृत्युपरान्त भी हमारी यह हार्दिक इच्छा है कि भारत शान्ति-साम्राज्य की स्थापना में असाधारण सफलीभूत हो।"

--बेविन (परराष्ट्र-मंत्री)

* * *

"अत्यन्त अधिक साधु होना अत्यधिक विनाशकारी होता है।"

--जार्ज बर्नार्ड शा

* * *

"हम विदेशी उस दिग्विजयी की मृत्यु पर दुखित हैं, जिसका सम्पूर्ण जीवन जगत् के लिए एक आदर्श का प्रतीक था।"

--लार्ड एडीसन

* * *

"नवीन वर्तमान युग में पूजनीय बापू जी का दारुण संवाद भारत ही नहीं वरन् विश्व की महान् क्षति है।"

--लार्ड लिस्टोवेल

विश्ववंद्य बापू सन् ४२ में वकिंग
सम्मिलित होने जा रहे हैं।

"अहिंसा और शान्ति-स्थापना
कारण ही उस महात्मा की मृत्यु
है। गत महायुद्ध ने जनता में किस
पाशविक भावनाओं का प्रादुर्भाव
है--यह इसका साक्षी है।"

--हांज हेडटाफ़्ट (डेनमा

* * *

"मानवता के उपासक के निधन
हमारी श्रद्धांजलि एवं देश के प्रति
कामनाएँ।"

--क्लीमेंट ए

* * *

"इस अपार हानि को ला
परिणत करने की शक्ति के लि
ईश्वर से सहर्ष प्रार्थना करता हूँ,
उस महान् आत्मा को शान्ति प्रा
सके।"

--नीग्रो नेतागण (अफ्रि

* * *

"आज धुंधले अतीत का एक
प्रतीक भी जल बसा; परन्तु सत्य, अ
व प्रेम की अलौकिक ज्वालाओं को
में हम सर्वथा असमर्थ रहेंगे।"

--राधा

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ--

क्रीमोला टाफी फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट. खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलता है:--

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

दाद, खुजली
और
हरेक मेलका चमडीका दर्दोंके लीए
RASIK
गत ५० वर्षों से
जग-विख्यात कपड़े खराब
नहीं करती।
नकलों से सावधान
सपट
लोशन

सपट एन्ड को, डिपार्टमेंट U.P,A
बम्बई २

विश्ववंद्य बापू की पाशविक हत्या

दाहसंस्कार का हृदयविदारक और पीड़ामय दृश्य

(विशेष संवाददाता द्वारा)

साम्प्रदायिक सद्भावना की स्थापना के लिये उपवास तोड़ने के बाद बापू

३० जनवरी को पांच बजे प्रायः पांच सौ व्यक्तियों की एक भीड़ प्रार्थना-सभा में महात्माजी की प्रतीक्षा कर रही थी। महात्माजी को आज पांच मिनट देर हो गई थी। आप बिड़ला-भवन से निकलकर श्री आभा गांधी और मनु गांधी का सहारा लेकर सभा-मंच की ओर बढ़ रहे थे। सभा की जनता दो भागों में बंटकर आपको मार्ग दे रही थी और मंच से प्रायः १५ गज रह गये होंगे कि सहसा मैंने पिस्तौल की आवाज सुनी। मैंने अपने से दो गज दूर उस व्यक्ति को देखा जिसने गोली चलाई थी। वह दाहिने हाथ में पिस्तौल लिये हुए था। मैंने महात्माजी को गिरते हुए देखा। उनके पेट से रक्त का निकलना और धोती पर फैलना एक ऐसा दृश्य था जिसे देखकर मुझे वर्णनातीत आघात हुआ। सभी ओर आतंक था। मैं तो ठक रह गया था। तुरन्त ही हत्यारे के पीछे के लोगों ने उसे पकड़ लिया और उसकी पिस्तौल जमीन पर गिर पड़ी। आक्रमणकारी फौज की-सी खाकी कमीज और पाजामा पहने हुए था। पहरे की पुलिस ने उस व्यक्ति को हिरासत में ले लिया। मैं दौड़कर गांधीजी के पास पहुँचा।

उनके शरीर से रक्त बह रहा था। उनके नेत्र बंद थे और मस्तक झुका हुआ था। हाथ जोड़े हुए वे संभवतः प्रार्थना कर रहे थे। उनकी पोतियां उन्हें सहारा देकर बैठाले हुए थीं।

चार-पांच व्यक्ति उन्हें उठाकर बिड़ला-भवन में ले गये। उनके कमरे के पट बंद कर दिये गये और किसी को भी वहां जाने की आज्ञा न थी।

५-३५ पर दीवान चमनलाल अंदर से निकले। मेरे पूछने पर उन्होंने बताया कि "बापू अभी जीवित हैं।" पांच मिनट बाद एक शोकक्रांत और विवर्ण व्यक्ति ने कमरे से निकलकर किसी प्रकार ये शब्द कहे "बापू समाप्त हो गये"।

३१ जनवरी को संध्या-समय (४-५५) भारत की राजधानी दिल्ली में यमुना तट पर विश्व की विभूति महात्मा गांधी का पार्थिव शरीर अग्नि को समर्पित कर दिया गया। हजारों कंठों से एक साथ आवाज गूंज उठी 'महात्मा गांधी अमर हो ये।' जिस समय चिता से लपटें उठीं हिलाएँ चीत्कार कर उठीं, मर्द सिसकने गे, वातावरण शोकाकुल हो गया। पंडित हरू बुत बने खड़े रहे, राजेन्द्र बाबू सिसकने गे, पंडित पंत की आंखों से अश्रुधारा री हो गई। उस जन-समुदाय में शायद कोई होगा, जिसकी आंखें न भीगी हों।

बिड़ला-भवन, जो कल तक गुल-र था, तथा जहां लोगों की भीड़ उमड़ी , आज वीरान पड़ा है। प्रार्थना-मि निर्जन है और सन्नाटा छाया है।

जिस कमरे में गांधीजी रहते थे वहां एक दीपक जल रहा है।

कल बापू की आत्मा हमसे बिछुड़ गई, आज उनकी आत्मा का पार्थिक आधार भी भस्म हो गया। भारत-भूमि के उज्ज्वलतम नक्षत्र का अन्त हो गया। भारतीय राष्ट्र को सदियों के बाद यह जबर्दस्त धक्का लगा है। इसके बाद का हमारा भविष्य क्या होगा, यह प्रश्न आज सबको बेचैन कर रहा है।

महात्मा गांधी के शव को आधी रात में यमुना जी के जल से स्नान कराया गया। उनकी शय्या को फूलों से सजा दिया गया। बगल में घी का चिराग जला दिया गया तथा रात भर कीर्तन होता रहा। श्री देवदास गांधी ने शय्या के पास सारी रात बिताई।

दिन के ग्यारह बजे महात्माजी के शव को बिड़ला-भवन से बाहर लाया गया तथा एक विशेष रूप से बने रथ पर रखा गया। पं० जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल और सरदार बलदेवसिंह ने जुलूस का नेतृत्व किया। जुलूस के चलने के समय सारी की सारी एकत्रित जनता एकबारगी रो पड़ी।

* * *

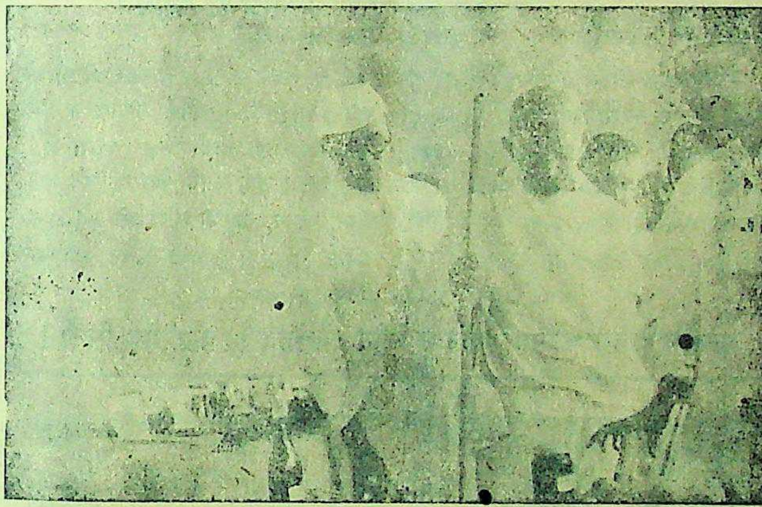

महात्मा गांधी का अपने दल के साथ साबरमती आश्रम छोड़कर सेवाग्राम की ओर प्रयाण

बिड़ला-भवन से लेकर राजघाट तक जहां गांधीजी का शव-संस्कार हुआ, जनता की अपार भीड़ उमड़ी हुई थी। लोगों का अनुमान है कि १० लाख से अधिक लोग रहे होंगे। गांधीजी के अंतिम दर्शनों के लिए दिल्ली के आस-पास के गांवों से लोगों की भीड़ आज सवेरे से ही इकट्ठी होने लगी थी। श्मशान घाट तक पहुँचने में जुलूस को पांच घंटे लग गये। सड़क की दोनों ओर श्रद्धा-सहित लोग खड़े थे, तथा महात्मा गांधी की जय के नारे लगा रहे थे।

इस जुलूस में चार हजार फौज के लोगों ने हिस्सा लिया था। पुलिस, जल-सेना, घुड़सवार, गवर्नर जेनरल के अंगरक्षक, गुरखा सैनिक तथा भारतीय सेना के अन्य सैनिक इसमें शरीक थे। इन लोगों ने गांधीजी के रथ को खींचा तथा व्यवस्था कायम करने में सहायता दी। स्काउट और जमायत-उल-उलेमा के वालंटियर भी जुलूस में शामिल थे।

गांधीजी के महाप्रयाण के बाद भारतीय मंत्रिमंडल की बैठक हुई। उसमें यह निश्चय किया गया कि गांधीजी के शव-संस्कार का प्रबन्ध सेना ही अच्छी तरह कर सकती है। तदनुसार सेना के प्रधान सेनापति जेनरल बुसर ने प्रबन्ध करने की जिम्मेदारी अपने हाथों में ली। राजघाट, जो स्थान गांधीजी के शव-संस्कार के लिये चुना गया था, घास-पात और कांटों से भरा था। सेना ने इस स्थान को साफ किया तथा चिता सजाने के लिये मिट्टी का चबूतरा तैयार किया गया।

गांधीजी के शव को ढोने की समस्या बड़ी जबर्दस्त थी। कंधों पर ले जाना असंभव था, साथ ही लोग गांधीजी के इस विचार को भी प्रधानता देना चाहते थे कि किसी मशीन का प्रयोग न हो। अन्त में सेना-विभाग की शस्त्र ढोनेवाली गाड़ी उपयुक्त समझी गई। रातों-रात इंजीनियरों ने उसका रूप बदल डाला उसे इतना ऊँचा कर दिया, जिससे लोग गांधीजी को देख सकें। गाडी का इंजिन निकाल दिया गया। इस रथ में चार रस्से लगाये गये और पचास-पचास सिपाहियों ने खींचना प्रारंभ किया।

* * *

११-४५ मिनट पर रथ बिड़ला-भवन से बाहर लाया गया। लार्ड माउंटबेटेन इस अवसर पर उपस्थित थे। गांधीजी की बगल में पंडित नेहरू बैठे थे। रास्ते भर वह रोते गये। पैर के पास सरदार वल्लभभाई पटेल थे। उनकी बगल में सरदार बल्देवसिंह और श्री रामदास गांधी थे। रथ जैसे ही चलने लगा, शंख-ध्वनि होने लगी, औरतें चीत्कार कर उठीं और मर्द सिसकने लगे।

पांच घंटे का रास्ता तय करता हुआ जुलूस एक-एक इंच बढ़ता हुआ निश्चित समय पर रथ चिता-स्थान पर पहुँचा। लार्ड माउन्टबेटेन और लेडी माउंटबेटेन भी समय पर पहुँच गये थे। रथ जैसे ही चिता-स्थान से एक सौ गज की दूरी पर आया, लोग घेरा तोड़कर अन्दर घुस आये और बदहवासों की तरह आचरण करने लगे। धड़ाधड़ एक दर्जन आदमी बेहोश हो गये। रेडक्रासवाले उन्हें उठा ले गये।

ऐसे अवसर पर लार्ड माउन्टबेटेन आगे बढ़ आये और सिपाहियों से लोगों को रोकने को कहा। पं० नेहरू और सरदार पटेल ने भी लोगों को रोकने की चेष्टा की, पर औरतें रोती हुई आगे बढ़ आईं और गांधीजी का अंतिम दर्शन करने की देष्टा की। बड़ी मुश्किल से भीड़ संभाली गई और घुड़सवारों ने जनता को संभाला।

रथ से गांधीजी के शव को उनके आश्रम-वासियों ने उतारा तथा दक्षिण तरफ सिर करके चन्दन की चिता पर रख दिया। गांधी जी को सूत की माला पहनाई गई। उसके बाद चीन के राजदूत 'डाक्टर लो ने माला पैर के सामने रखी। फिर क्रम से उनके शरीर के ऊपर चन्दन की लकड़ी रख दी गई।

पुरोहित श्री रामधन शर्मा ने मंत्र पढ़ना शुरू किया और श्री रामदास गांधी ने कार्य प्रारम्भ किया।

शरीर को चिता पर साढ़े चार बजे रखा गया और चार बजकर पचपन मिनट पर चिता में श्री देवदास गांधी द्वारा आग लगा दी गई। दो मिनटों में चिता प्रज्ज्वलित हो गई और शोले उठने लगे। चिता में सोलह मन लकड़ी, दो मन घी, १५ सेर कपूर तथा केसर और कस्तूरी डाली गई।

चिता में जैसे ही आग लगी लोग चीख उठे 'महात्मा गांधी अमर हो गये' पर उसके बाद का दृश्य बड़ा कारुणिक हो उठा। पश्चिम में सूर्यास्त हो रहा था और यमुना तट पर बापू की चिता से लाल अग्नि-ज्वाला प्रज्वलित हो रही थी। औरतें फूट-फूटकर रो रहीं थीं, मर्द सिसक रहे थे। इतने बड़े जन-समुदाय में शायद ही कोई होगा, जिसकी आंखें भीगी न हों। पं० बुत की तरह खड़े थे। राजेन्द्र बाबू और गोविन्दवल्लभ पन्त सिसकियां भर रहे थे।

महात्मा गांधी के शव का अन्तिम संस्कार वैदिक रीत्यानुसार करने के बाद आज प्रातःकाल चिता में की बची हुई अस्थियां एकत्र की गईं। उन्हें गंगाजल से धोकर तांबे के पात्र में रखा गया। इन अस्थियों को बाद में प्रयाग में संगम में प्रवाहित किया जायगा। अस्थि-प्रवाह आगामी कुछ दिनों के अन्दर होगा।

अस्थियों को एकत्र कर सफेद खादी में जिस समय रखा जा रहा था, उनमें रिवाल्वर की एक गोली भी मिली।

अस्थियों को एकत्र कर एक स्थान पर रखा गया और मंत्रों-सहित उन पर गंगाजल छिड़ककर पुष्प चढ़ाये गये। इसके बाद उन्हें तांबे के पात्र में रखकर उस पर 'राम राम' लिख दिया गया और पात्र को माला पहनाई गई तथा उसका मुह खादी के कपड़े से बांध दिया गया।

अस्थियों को एकत्र करने का कार्य डेढ़ घंटे तक होता रहा, जिसे हजारों मनुष्य हिन्दू, मुसलमान और अन्य लोग देखते रहे जो कि आज तड़के से ही श्मशान घाट पर एकत्र हुए थे। बहुतों ने फूल लाकर अस्थियों पर चढ़ाये।

यह कार्य बड़ी शान्ति और अनुशासन के साथ हुआ। इस कार्य में भाग लेनेवालों

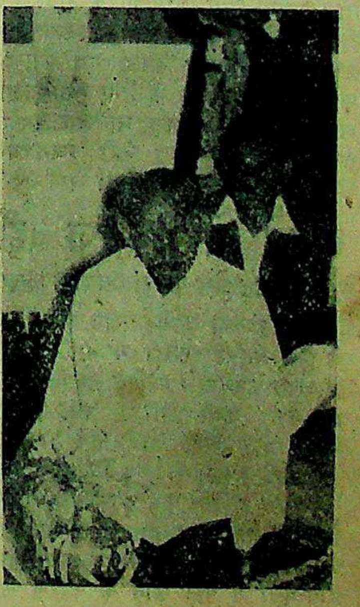

महात्माजी हरिजनों के उत्थान के लिए कुछ सोच रहे हैं।

में सर्वप्रमुख महात्मा गांधी के तृतीय पुत्र श्री रामदास गांधी थे।

सैनिकों तथा पुलिस के दल वहां शान्ति की रक्षा के लिए तैनात किये गये थे।

इस अवसर पर भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू और अन्य मंत्रीगण, युक्तप्रान्त की गवर्नर श्रीमती सरोजिनी नायडू, आसाम के गवर्नर सर अकबर हैदरी, निजाम के एजेंट नवाब जामिन यार जंग, नवाब छतारी तथा अन्य मुस्लिम नेता उपस्थित थे।

हत्यारे को भी नमस्कार

अंतिम शब्द 'राम'

नई दिल्ली, ३० जनवरी। जब गांधीजी प्रार्थना मंच की ओर बढ़ रहे थे, तभी एक आदमी सामने बढ़ा। उसने हाथ जोड़कर अभिवादन किया और तुरन्त रिवाल्वर से गोलियां दागीं, एक गोली हृदय के नीचे, दूसरी पेट में और तीसरी जांघ में लगी। गांधीजी ने नमस्कार करने के लिए हाथ उठाये और २० सेकण्ड के भीतर खून से लथपथ होकर लुण्ठित हो गये। उनके मुख से अन्तिम शब्द 'राम' निकला। इसके बाद वे अपने कार्यकाल के कमरे में ले जाये गये, जहां उनका प्राणान्त हो गया।

गांधीजी की सलाह

कांग्रेस को अंतिम बार

मरने के कुछ घंटे पूर्व महात्मा गांधी ने कांग्रेस को अन्तिम बार जो सलाह दी उसका आशय निम्नलिखित है—

कांग्रेस जनता के सेवकों की संस्था होनी चाहिए। यह अर्द्ध सैनिक संस्था हो, किन्तु उसका सिद्धान्त अहिंसा ही रहे। मेरा इस बात से कोई भी विरोध न होगा यदि वर्तमान कांग्रेस संस्था जनता के सेवकों से बनी नई संस्था का रूप ग्रहण करने के लिए भंग कर दी जाय ताकि नई संस्था के सच्चे जन-सेवक देश के लाखों गावों में जाकर जनता की सच्ची सेवा कर सकें और सामाजिक, नैतिक तथा आर्थिक स्वतन्त्रता में उसकी सहायता कर सकें। कांग्रेस ऐसे कार्यकर्ताओं की संस्था हो जो कई दलों में विभक्त हो सकें और प्रत्येक दल का नेता स्वयं चुन लें। पश्चात् इन दलों के नेता अपना अखिल भारतीय नेता चुने जो सभी का नेतृत्व कर सके। प्रत्येक सच्चा कार्यकर्ता अथवा जनसेवक शुद्ध खद्दर पहनने का अभ्यस्त हो, सत्यवक्ता हो, सभी धर्मों को समान तथा शुद्ध हृदय से देखनेवाला हो और जाति-धर्म का भेद-भाव न माननेवाला हो। उसके लिए ग्रामीणों के सुधार के लिए कार्य करना, निरक्षरता निवारणार्थ प्रचार करना तथा सफाई एवं स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार के लिए कार्य करना आवश्यक है। अखिल भारतीय बुनकर तथा ग्रामोद्योग-संघ जैसी रचनात्मक संस्थाएं कांग्रेस में मिला ली जायं।

हत्यारे को कोई रंज नहीं

एसोसियेटेड प्रेस का संवाददाता लिखता है—नई दिल्ली तुगलक रोड पुलिस थाने की एक अँधेरी कोठरी में मैंने गांधी जी की हत्या करनेवाले व्यक्ति को बैठे देखा। वह सफेद कमीज, नीला, स्वेटर, सूती, पतलून और खाकी कोट पहने था।

उसके मस्तक से खून निकल रहा था जिससे उसके चेहरे का संपूर्ण बायां हिस्सा रँग गया था। ज्ञात हुआ है कि यह चोट उसे प्रार्थना सभा में उपस्थित जनता द्वारा लात-घूंसों से पीटे जाने के कारण लगी है। पुलिस ने मुझे बतलाया कि यह समाचार एकदम गलत है कि हत्यारे ने अपनी आत्म-हत्या करने का प्रयत्न किया। इसके विपरीत घटनास्थल पर खड़ी हुई जनता उस पर टूट पड़ी और उसकी दुर्गति कर डाली।

हत्यारे के हाथों में हथकड़ी पड़ी थी। मेरे पहुँचने पर वह अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ। अपना नाम उसने नाथूराम बतलाया और कहा कि पूना से आया है। अपनी आयु उसने २५ वर्ष की बतलाई परन्तु देखने में वह इससे अधिक आयु का लगता था।

जब उससे पूछा गया कि उसे कुछ कहना है तो उसने रूखी हँसी हँसते हुए कहा—'फिलहाल में इतना ही कहना चाहता हूँ कि मुझे अपने किये पर जरा भी रंज नहीं है। बाकी में अदालत में बताऊँगा।'

पुलिस ने उससे और प्रश्न नहीं करने दिये। मुझे ज्ञात हुआ है कि हत्यारे के के पास लगभग ४०० रु० के नोट मिले हैं।

(पेज ८ का शेष)

ने अँगरेजों को भारत से हट जाने की सलाह दी और उसी वर्ष अगस्त में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में इस आशय का प्रस्ताव भी पास कराया। गांधीजी को नया सत्याग्रह-संग्राम चलाने का नेतृत्व सौंपा गया। ९ अगस्त को गांधीजी तथा कांग्रेस के अन्य नेता पुनः गिरफ्तार कर लिये गये। देश भर में विद्रोह-सा मच गया। १० फरवरी १९४३ ई० को आगा खां महल में ३ सप्ताह का उपवास किया। हालत बड़ी नाजुक हो गई किन्तु फिर बच गये। २२ फरवरी १९४४ को जेल में ही कस्तूरबा का देहान्त हो गया जिसका गांधी जी के हृदय पर बड़ा आघात पहुँचा। ६ मई १९४४ ई० को गांधीजी बिना शर्त रिहा कर दिये गये।

जेल से मुक्त होने के बाद गांधी जी फिर अपने ध्येय की पुष्टि में लग गये, और उस समय नोआखाली में जो काण्ड हुआ उसके लिए महात्मा जी ने पैदल उस क्षेत्र की यात्रा की, और इस यात्रा का वहां के हिन्दू-मुसलमानों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा और बंगाल के सुप्रसिद्ध लीगी नेता मिस्टर सुहरावर्दी तो उस समय से गांधीजी के भक्त बन गये। गत १५ अगस्त को देश स्वतन्त्र हुआ। उसमें भी गांधीजी का व्यक्तित्व ही मुख्य रूप से प्रभावित हो रहा था, और ऐसा कहा जा सकता है कि महात्मा जी की अनवरत तपस्या एवं प्रयत्नों के फलस्वरूप ही देश स्वतन्त्र हुआ। देश के स्वतन्त्र होने के बाद कलकत्ते में अनशन, बिहार का दौरा, महात्माजी के जीवन की मुख्य घटनाएँ हैं। पिछले दिनों देश के विभाजन के बाद दिल्ली में जो साम्प्रदायिक उपद्रव हुआ उसके रोकने में भी महात्माजी का प्रबल हाथ था। आपकी सतर्कता से लाखों हिन्दू-मुस्लिम शरणार्थियों की प्राण-रक्षा हुई, फिर भी साम्प्रदायिक की लहर शान्त नहीं हुई और इसके लि उन्हें १२ जनवरी को ५ दिन का अनश करना पड़ा। अनशन समाप्त करने लिए विभिन्न दलों के १३० व्यक्तियों उनकी सात शर्तों को मानते हुए ए लिखित आश्वासन दिया जिस पर क भंग हुआ। गत २० जनवरी को ए व्यक्ति ने आप पर बम फेंका, परन्तु ईश्व की कृपा से उस समय आप बच गये औ ता० ३० जनवरी को सायंकाल ५ बजक २ मिनट पर आपकी एक हिन्दू ने हत्य कर डाली।

विशेष कमी— अवसर मत चूकिये—आज ही मंगावें।
३॥) रु० में ६ नई पुस्तकें।

पति-पत्नी जीवन (सचित्र) केवल विवाहितों के पढ़ने योग्य, दाम्पत्य जीवन को सुखी सन्तुष्ट बनानेवाली अपूर्व पुस्तक १।), वशीकरण विद्या—अनेकों वशीकरण मंत्रों तथा जादू के खेलों का संग्रह १), सकल सिद्ध—मन चाहा कार्य सिद्ध करना १।), व्यौपारिक तेजी-मन्दी—तेजी मन्दी का ज्ञान प्राप्त कर हजारों रुपया पैदा कीजिये १।), हिन्दी अँगरेजी शिक्षा—घर बैठे अँगरेजी लिखना, पढ़ना, बोलना सीख लो १), हुस्न पैरिस—केवल पति-पत्नी के देखने योग्य १२ फोटो १॥)। ६ पुस्तकों के सेट का मूल्य केवल ३॥), पोस्टेज पैकिंग ॥।) अलग।

सन्तोष ट्रेडिंग कम्पनी, पाठक स्ट्रीट, जैगंज (३) अलीगढ़ सिटी।

चिरस्थायी व दिमागी ताकत बढ़ाने के लिए सेवन करो
डॉ. गौतमराव केशव
टॉनिक फॉस्फरस पिल्स
PILLS
डॉ. वामन गोपाल सासोपरिका डेपो मुंबई नं. २

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जोहरी एल० एस० धोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

सर्दी और खाँसी में
याद रखिये
सिरोलीन
"रोच"
सारे संसार में व्यवहार होता है

श्वास दमा (खाँसी) के रोगियो नोट कर लो। श्री चित्रकूट कामदगि बूटी जिसकी केवल एक ही खुराक मि माघ सुदी पूर्णिमा ता० २४-२-४८ सेवन करने से पुराने से पुराना श्वास (दमा) सदैव के लिए नष्ट हो जाता है।

मँगाने का पता—
श्री महात्मा तपसी बाबा, श्री रामगु
चित्रकूट, पो० चित्रकूट, जि० बाँदा (यू० पी०)

मिरगी (हिस्टीरिया)
की अनुभवसिद्ध जड़ी-बूटी

इस बूटी को केवल एक ही मरत दौरा के समय नाक में सूँघाने से छींक है साथ ही काले रंग का कीड़ा मरकर निक जाता है और रोगी सदैव के लिए नीरो हो जाता है। मँगाने का पता—

महात्मा धूनीवाले बाबा
सिरसावन पो० चित्रकूट बाँदा, यू० पी०

मुफ्त

युवको! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीव फीका हो चुका हो तो भारत भर सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त रोग विशे कँविराज ब्रह्मसरूप बी० ए० लाहौरवा फतेहपुरी (D.A.) देहली से मशवि (सम्मति) मुफ्त लेकर अपना जीव सुधार लें।

◆

५००) रुपये पुरस्कार
एक आश्चर्यमय आविष्कार
जादू की अँगूठी

यह अँगूठी जादू और मस्लेरिज्म की शक्ति की सहायता से तैयार की गई है। यह आश्चर्य के काम करती है। जो कोई इस अँगूठी को पहनेगा, वह किसी उद्देश्य में, वह कितना ही कठिन दुःसाध्य हो, सफल होगा। यह आपकी प्रकार के संकटों या रोगों से रक्षा करेगी ग्रहों का कोई बुरा प्रभाव नहीं हो सक इस अँगूठी का पहननेवाला किसी व्यक्ति (पुरुष या स्त्री) पर वह कितना कठोर हृदयवाला हो, अपना पूरा नि रखेगा। यही नहीं, वह अत्यंत विनी जायेगा और अनुपस्थिति से आप दुःखी अनुभव करेगा। आप प्रेम, बाजी और नौकरी में सफल होंगे बहुत-सा धन प्राप्त करेंगे। संक्षेप में, शरीररक्षक का काम देगी। एक बार माइए और ठीक पहली रात को आश्चर्यमय परिणाम देखिए।

मूल्य एक अँगूठी २ रु०। तीन ५ रु०। पैकिंग और पोस्टेज अति

श्री शंकर भण्डार
पोस्टबाक्स २४३, कानपुर

संवाद दाताओं के पत्र

हुतात्मा महात्मा गांधी के प्रति शोक-श्रद्धांजलियाँ

हरिद्वार में ता० ३१ जनवरी को भगवती भागीरथी के पवित्र किनारे श्रीश्रवणनाथ मन्दिर, कनखल आदि पंचपुरी के महात्माओं की सभा हुई, जिसमें राष्ट्र-निर्माता महात्मा गांधी के निधन पर अत्यन्त शोक प्रकट किया और उनकी अवणनीय सेवाओं के लिए उनके प्रति सादर श्रद्धाजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर राम-धुन कीर्तन, ईश्वर-प्रार्थना और गीता पाठ किया गया। श्री महन्त शान्तानन्द जी आदि कई वक्ताओं ने महात्मा जी के अनुपम गुणों का मार्मिक वर्णन करते हुए अत्यन्त करुणा भरे शब्दों में श्रद्धांजलि समर्पित की।

—संवाददाता

नगर जिला कानपुर स्थित आश्रम से, राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी की मृत्यु पर विषाद प्रकट करते हुए श्री श्रीयांणी धर्मध्रुव गौर ने देश के युवक व युवतियों के नाम निम्नांकित सन्देश दिया है—

"आज हमारे बीच से बापू चले गये। हमें उनके वियोग में दुख का अनुभव हो रहा है इसलिए कि अनेक समस्याओं को सुलझाने और राष्ट्रोन्नति करने में उनके पथ-प्रदर्शन व परामर्श की अभी हमें बड़ी आवश्यकता थी। किन्तु उनकी मृत्यु के बारे में शोक-विचार करते रहने और शोकित अथवा सशंकित बने रहने में कोई लाभ नहीं है। अब तो हमारा परमावश्यक कर्तव्य है कि उनके आदेशों को अपने जीवन का आधार बनाकर हम आगे बढ़ें और जिस साम्प्रदायिक दुर्भावना का अन्त करने में महापुरुष के प्राण गये हैं, उस तुच्छ एवं घृणित मनोवृत्ति को अपने से दूर करके अब हम परस्पर प्रेम-भाव प्रदर्शित करें और अपने को एक परमात्मा की सन्तान समझते हुए सदा एक बने रहें। तथा सत्य अहिंसा को पकड़े रहें जिससे कि परमात्मा हमारी सहायता करे, कि हम इहलोक में सुखी और शान्त रह सकें। बापू जी के प्रति श्रद्धा व विश्वास प्रकट करने के लिए यही उचित है।"

आसाम गोलाघाट २ फरवरी को श्री ढूंढाड़िया की अध्यक्षता में मारवाड़ी-सम्मेलन की एक बैठक हुई जिसमें राष्ट्र-पिता विश्ववंद्य परम पूज्य महात्मा गांधीजी के आकस्मिक देहावसान पर अनन्त दुख प्रकट किया तथा परमपिता परमात्मा से उस महान् दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए खड़े होकर मौन प्रार्थना की। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह हमें उनके आदर्शों के अनुगामी बनने के लिए बल एवं शक्ति प्रदान करें।

—भगवतीप्रसाद लडिया

बेतिया परसाबरवा (परसिया-) की सार्वजनिक सभा ने खड़े होकर प्रस्ताव पास किया कि भू-मंडल के महात्मा गांधी के आकस्मिक निधन पर यह सभा हार्दिक वेदना प्रकट करती है एवं दीवंगत आत्मा को शान्ति और संसार के निमित्त धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना करती है और उस समाज की घोर निन्दा का प्रस्ताव पास करती है कि जिसके प्रमुख व्यक्ति द्वारा महात्मा जी की आकस्मिक मृत्यु हो गई।

—संवाददाता

जयपुर वनस्थली में स्वर्गीय राष्ट्र-पिता के प्रति अपने अपरिमित प्रेम, श्रद्धा के प्रतीक स्वरूप विद्यापीठ १३ दिन तक शोक मनाएगा। नित्य संध्या समय पौने पांच से सवा पांच बजे तक जब कि बापू का महानिर्वाण हुआ वैदिक मंत्र, भजन, गीता, उपनिषद् बाइबिल, कुरान, आदि धर्म-ग्रंथों से पाठ 'गांधी वचनामृत' 'रामधुन' और मौन प्रार्थना का कार्यक्रम रहेगा। विद्यापीठ तीन दिन तक बंद रहेगा।

—संवादवाता

वृन्दावन में राष्ट्रपिता गांधीजी के निधन का समाचार सुनकर सारे शहर में शोक, सनसनी और क्षोभ का वातावरण फैल गया। म्यूनिसिपल बोर्ड के समस्त झंडे उसी समय आधे झुका दिये गये। ३१ ता० की सुवह से ही समस्त शहर में मातम का समुद्र उमड़ पड़ा। सैकड़ों आदमी यहां से मनों फूल लेकर दिल्ली बापू के अन्तिम दर्शनों को गए थे। हजारों आदमियों ने उपवास रखा ३१ ता० को दोपहर २।। बजे चुंगी के घंटाघर से जनता का एक मौन जुलूस नंगे सर व नंगे पैर काले झंडों के साथ निकला। वृन्दावन के इतिहास में इतना वड़ा शोक जुलूस नहीं निकला था, जिसमें १० हजार स्त्री व पुरुष थे। जनता रोती हुई—रघुपत राघव राजा राम—का कीर्तन करती जाती थी। शाम को चार वजे विशाल जलूस केशी घाट जमुना किनारे पहुँचा और रेती में बैठकर स्थानीय म्यू० गर्ल्स हाईस्कूल नी छात्रा कुमारी प्रभा गोस्वामी व कुमारी विमला घोष ने गांधी जी की प्रार्थना सभा में गाये जाने वाले भजनों का कीर्तन जनता को कराया। फिर वेद पाठ किया गया। जनता के हजारों हाथों नें अपने आंसुओं के साथ पूज्य बापू का नाम लेकर जलांजलि दी। वहां से जनता का समूह शहीद लछमन के स्मारक पर आया जहां कि पूज्य राष्ट्र-पिता का एक फोटो फूलों के बीच में हंसता हुआ विराजमान था। वहां जन-समूह नें रोते हुए अपने राष्ट्रपिता के चरणों में अंतिम पुष्पांजलि अर्पित की।

१ ता० वसंत चबूतरा पर कांग्रेस कार्य-कर्ताओं ने विश्ववंद्य गांधीजी की आत्म शान्ति के लिये ३ घंटा तक रामधुन का कीर्त्तन किया। पं० रामप्रसाद गौतम ने गीता पाठ किया और महात्माजी के प्रिय द्वितीय अध्याय की व्याख्या की। २ ता० को कांग्रेस कार्य-कर्त्ताओं ने व जनता ने एक घंटा तक रामधुन गाया। सायंकाल एक महती शोक सभा हुई। प्रारम्भ में बौहरे पुरुषोत्तमलाल जी ने रुंधे हुए कण्ठ और अश्रुपूर्ण नेत्रों से एक शोक प्रस्ताव रखा। फिर पूज्य बापू के जीवन पर श्रीमती शान्ती देवी, विजय कृष्ण गोस्वामी, पं० छोटेलाल गौतम, अद्वैतकुमार गोस्वामी, नरदेवजी शास्त्री, मुकुटवल्लभ गोस्वामी अतुलकृष्ण गोस्वामी, आदि के भाषण हुए। सभी ने खड़े होकर दो मिनट के लिए ईश्वर से एकान्त प्रार्थना की।

वृन्दावन विद्यापीठ हाईस्कूल—म्यूनिसिपल हाईस्कूल, गुरुकुल विश्व विद्यालय, प्रेममहा विद्यालय, पबलिक हिन्दी मिडिल स्कूल, म्यूनिसिपल बोर्ड आदि संस्थाओं में भी शोक मनाया गया और शोक-प्रस्ताव पास हुए।

कांग्रेस कार्य-कर्त्ताओं तथा जनता में यह भी चर्चा है कि प्रातःस्मरणीय पूज्य बापू का वृन्दावन में एक विशाल स्मारक बनाया जाय॥

—अद्वैत कुमार गोस्वामी

अजर अमर बापू

लेखक, श्री रमानाथ अवस्थी

रो मत मेरे देश अमर है तेरा यह सेनानी,
वह न मरेगा जब तक गंगा-जमुना में है पानी !

* * *

जन जन में जीवन से उनका जीवन बोल रहा है,
कण कण में उनकी करुणा का ही स्वर बोल रहा है !
रोम रोम में समा गया है उनका पावन नाम,
मानव भूल रहा है जपना जय जय सीताराम !
आज पुरानी भक्ति कर रही अपनी नई कहानी !

* * *

हिन्दू रोया, मुस्लिम रोया, रोया सकल जहान,
गंगा रोई जमुना रोई, रोया पत्थर का इंसान !
धनी-निर्धनी मिल मिल रोये, रोया करुण किसान,
दिल्ली रोई, लन्दन रोया, रोया पाकिस्तान !
फूट फूट रो रही विश्व में मानव की नादानी !

हरदोई गांव वरी में राष्ट्र-पिता महात्मागांधी का परलोक गवन सुनकर यहां की जनता को महानुशोक हुआ। दो दिन तक जनता ने अपने मकानों में प्रकाश आदि नहीं किया और बहुत ही दुखित हैं। कुछ लोग तो बहुत ही चिन्तित हैं। कई व्यक्तियों ने भोजन आदि भी छोड़ रखा है। लोगों का नाम—रूपलाल पाठक सुखलाल दुबे, मुंशी सिद्ध गोपाल सक्सेना, रामलाल, राजकुमार, नन्दलाल अवस्थी आदि। यहां की जनता ईश्वर से प्रार्थना करती है कि उनके प्राणों को शान्ति प्रदान करे।

—मिट्ठूलाल द्विवेदी

कमर के भयंकर दर्द के लिए

मा ने 'क्रुशन' की सलाह दी (वह) पहले ही बोतल से चंगी हो गई

उसकी मा ने यह सलाह दी कि उसको कमर-दर्द में क्रुशन साल्ट का सेवन करना चाहिए। वह तमाम दवाइयाँ सेवन कर चुकी थी पर अच्छी न हो सकी। पर ज्यों ही वह क्रुशन सेवन करने लगी, पहले ही बोतल के सेवन से उसे आराम अनुभव होने लगा। उसने पत्र लिखा है :—

"गत वर्ष इसी समय मेरी कमर म भयंकर दर्द था मैं तीन सप्ताह तक पेट के बल पड़ी थी और बिस्तर से उठ भी न सकती थी। मैंने कितनी ही प्रसिद्ध दवाइयाँ कीं परन्तु कुछ न हो सका।

'इसके बाद मैंने अपनी मा को अपने दर्द के सम्बन्ध में लिखा। उसने मुझे लिखा कि मैं क्रुशन साल्ट सेवन करूँ। मैंने तुरन्त ही एक बोतल खरीद ली। मैं कह सकती हूँ कि पाँच खुराक खाने के पहले ही मैं उठ बैठी। मैं उसे खाती रही और दो सप्ताह के अन्दर चंगी हो गई। मैं अब भी नित्यप्रति थोड़ी खुराक (खाती हूँ।"श्रीमती) ए० जी०

मूत्राशय मानव-शरीर के नाले हैं। जब वे कार्य नहीं करते, खराब गैसें बाहर होने के बजाय भीतर रक्त की धमनियों में गन्दगी पैदा कर देती हैं जिससे दुःखमय बीमारियाँ, जैसे, कमर-दर्द, गठिया और अत्यन्त थकावट पैदा हो जाती है।

क्रुशन साल्ट मूत्राशय के लिए एक मूत्रवर्द्धक और मीठी औषधि है। इसके द्वारा भीतरी गन्दगी साफ हो जाती है।

सारे रसायनिक और व्यापारी क्रुशन बेचते हैं। दाम १।।=) प्रतिबोतल।

दमा के रोगियो नोट कर लो

॥ चित्रकूट दमा बूटी ॥

वर्ष की किसी भी पूर्णिमा को एक ही मात्रा के सेवन से नये व पुराने सभी प्रकार के स्वाँस दमा खाँसी को जड़ से नष्ट करने वाली सिद्ध महात्मा द्वारा प्राप्त वही असली अपूर्व जड़ी है जो कि चित्रकूट में लगभग १०० वर्ष से दी जा रही है। आप लोग भी ता० २४-२-४८ पूर्णिमा को घर बैठे सेवन करके सदैव के लिए निरोग हो जायँ।

श्री महात्मा मौनीबाबा
आयुर्वेदिक आश्रम
चित्रकूट (यू. पी.)

सूर्यग्रहण के अवसर पर तैयार की हुई

दिव्य सिद्धि तांत्रिक अँगूठी (रजिस्टर्ड)

आप जो चाहेंगे हो जायगा। गरीबी दूर भाग जायगी, लक्ष्मी आपके कदम चूमेगी, आप धनवान हो जायँगे, आपकी प्रेमिका आपसे अटूट प्रेम करने लगेगी, शत्रु मित्र बन जायँगे, मनचाही सन्तान होगी, बुरे ग्रहों का दोष दूर हो जायगा, संसार आपकी इज्जत करेगा, लड़ाई-झगड़े में फतह होगी, विद्यार्थी परीक्षा में पास होंगे, जिसे आप चाहते हैं उसी सुन्दरी से शादी होगी, नाराज हाकिम खुश होगा, वशीकरण होगा। बात यह है कि हर काम आपके इच्छानुसार होगा। यह अंगूठी ग्रहण के अवसर पर शुभ मुहूर्त में तैयार होती है। बड़े परिश्रम से तैयार कराई गई है। अब परीक्षा करके लाभ उठाना आपका काम है। मूल्य २।।) डाक खर्च ।।=) आना। नोट—बेकार साबित हो, तो ६ महीने तक वापिस।

भारतीय तांत्रिक भंडार (१०) अलीगढ़

(पेज ५ का शेष)

वह उतना अच्छा काम नहीं कर सकता जब कि उसमें तैयार की हुई चीजें जबरदस्ती ठूंस दी जाती हैं। बच्चे के लिए सबसे ठोस मतलब का काम है दस्तकारी जो उसके ध्यान और दिलचस्पी को पकड़ लेती है। इस बात के आधार पर जानकारी की शिक्षा बाद में दी जा सकती है। उसकी इच्छा-शक्ति और शरीर को भी ट्रेनिंग दी जा सकती है। अतएव गांधी जी ने अपनी निजी शिक्षा-प्रणाली निकाली है जो दस्तकारी के द्वारा होती है। ऐसी शिक्षा मुल्क के सभी बच्चों को दी जानी चाहिए ताकि उसकी तमाम गुप्त शक्तियां खुल जायँ और उन्हें ट्रेनिंग भी मिल जाय इससे वह जीवन में वास्तविक रूप से स्वतंत्र हो सकेगा।

लोग सिर्फ गरीबी के पंजे में फँसे हुए हैं। उन्हें किसी तरह की मानसिक, नैतिक और शारीरिक शिक्षा नहीं मिली। उन्हें सामाजिक सुविधाएँ भी नहीं प्राप्त है। मुल्क की सबसे बड़ी असुविधा जन्म-संबंधी है जिससे छुआ-छूत का भेद-भाव पैदा हो गया है। स्त्री-पुरुष में भी भेद-भाव है। बेचारी स्त्री को वे तमाम सुविधाएँ नहीं प्राप्त जिससे मनुष्य स्वयं अपनी उन्नति करता है। बेचारी निस्सहायता के बोझ के नीचे हद से ज्यादा दबी हुई है और मर्द पर निर्भर रहना उनकी परंपरा हो गई है। एक तरह से उनका दायरा जकड़-सा दिया गया है। जब तक ये असुविधाएँ रहेंगी, तब तक स्वतंत्रता बेकार है, क्योंकि ये उन्नति के मार्ग में रुकावट हैं। अतएव गांधी जी की स्वतंत्रता के अनुसार इन असुविधाओं को खत्म कर देना होगा और समाज का हर आदमी बराबर होगा और उन्हें बिना भेद-भाव सब मौके बराबर प्राप्त होने चाहिए।

अतएव गांधी जी के नेतृत्व में एक तरफ तो हमें राजनैतिक स्वतंत्रता मिलती है, दूसरी तरफ राष्ट्र के हर आदमी को अन्य तमाम—आर्थिक, सामाजिक, मानसिक—स्वतंत्रताएँ भी मिलनी चाहिए। जो आदमी गांधी जी के प्रोग्राम को सिर्फ "भारत छोड़ो" तक ही सीमित समझता है वह यह बात बिलकुल नहीं समझता कि गांधी जी स्वतंता के क्या क्या माने लगाते हैं? आज तक स्वतंत्रता का अर्थ है—ब्रिटिश शासन को खत्म होने पर वह हर एक बनावी कोशिश की जाय जिससे हर व्यक्ति की सारी शक्तियों को स्वतंत्रता प्राप्त हो सके और यह अपनी ऊपरी फिक्र करने के बाद अपनी अन्तरात्मा को पहचान सके, जो उसका इस दुनिया में सबसे बड़ा लक्ष्य हो सकता है।

◆ ◆ ◆

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ

सम्पादक—श्री सोहनलाल द्विवेदी
प्राक्कथन – सर सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

संस्कृति, हिन्दी, उर्दू, बँगला, गुजराती, सिन्धी, मराठी, तामिल, तेलगू मलयालम, कन्नड़, अँगरेजी और चीनी भाषाओं में महात्मा गांधीजी पर लिखी हुई सर्वोत्तम कविताओं का संग्रह—हिन्दी भाषा में अर्थ-सहित।

बड़ा आकार, सुन्दर छपाई, पूरे पेज के अनेक चित्र। बढ़िया जिल्द। सर्वत्र प्रशंसित।

सादी जिल्द ६॥) कपड़े की जिल्द ७॥)

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लि० प्रयाग

◆ ◆ ◆

(पेज ४ का शेष)

कर लेते थे। राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं की हिंसात्मक वृत्ति से वे सर्वथा वंचित थे। कोई शक्ति उन्हें अपने निर्दिष्ट मार्ग से विचलित नहीं कर सकती थी। ब्रिटिश साम्राज्य की असीमित शक्ति का उन्हें तनिक भी भय नहीं था। उसके साथ अर्द्ध शताब्दी तक उन्होंने संग्राम किया और अन्त में विजय प्राप्त की। महात्मा जी प्राचीन भारतीय संस्कृति की मूर्ति थे। उन्होंने संसार को दिखा दिया कि त्याग तथा तप में क्या शक्ति है। 'ममता' का नाश कर मनुष्य किस पद को प्राप्त कर सकता है। साम्राज्य नष्ट हो जायँगे, सैनिक तथा सामुद्रिक बल क्षीण हो जायँगे, बड़े-बड़े राष्ट्राध्यक्ष, मंत्री, सेनानायक, राजनीतिज्ञ कीट-पतंगों की तरह काल के विकराल मुख में विलीन हो जायेंगे परन्तु महात्मा जी की कीर्ति सदा अमर रहेगी और मनुष्य-जाति को उत्कृष्ट पथ का प्रदर्शन करती रहेगी। इन अनुपम आदर्शों का चिरस्थायी होना ही महात्मा जी का सबसे बड़ा स्मारक होगा। अशोक के लेखों की तरह महात्मा जी के उपदेश अनीति [illegible] राजनीतिक क्षेत्र में सत्य तथा अहिंसा की महत्ता को प्रकट करते रहेंगे। धर्म की विजय ही वास्तविक विजय है। शासन में समता, लघुदण्डता, शान्ति, न्याय, सहिष्णुता से काम लेना ही राजनीतिज्ञता का प्रधान लक्षण है। हमें आशा है कि बौद्ध-भिक्षुओं के समान हमारे राष्ट्रीय नेता इस आदर्श का विस्मरण न करेंगे इसी में हमारा, और देश का कल्याण है।

मुलायम और सुन्दर बालों के लिये

सभी दूकानों पर

कोमलता से सुगंधित किया गया वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।
वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये

Copyright
BLUE SEAL
Vaseline POMADE
CHESEBROUGH MFG. CO.

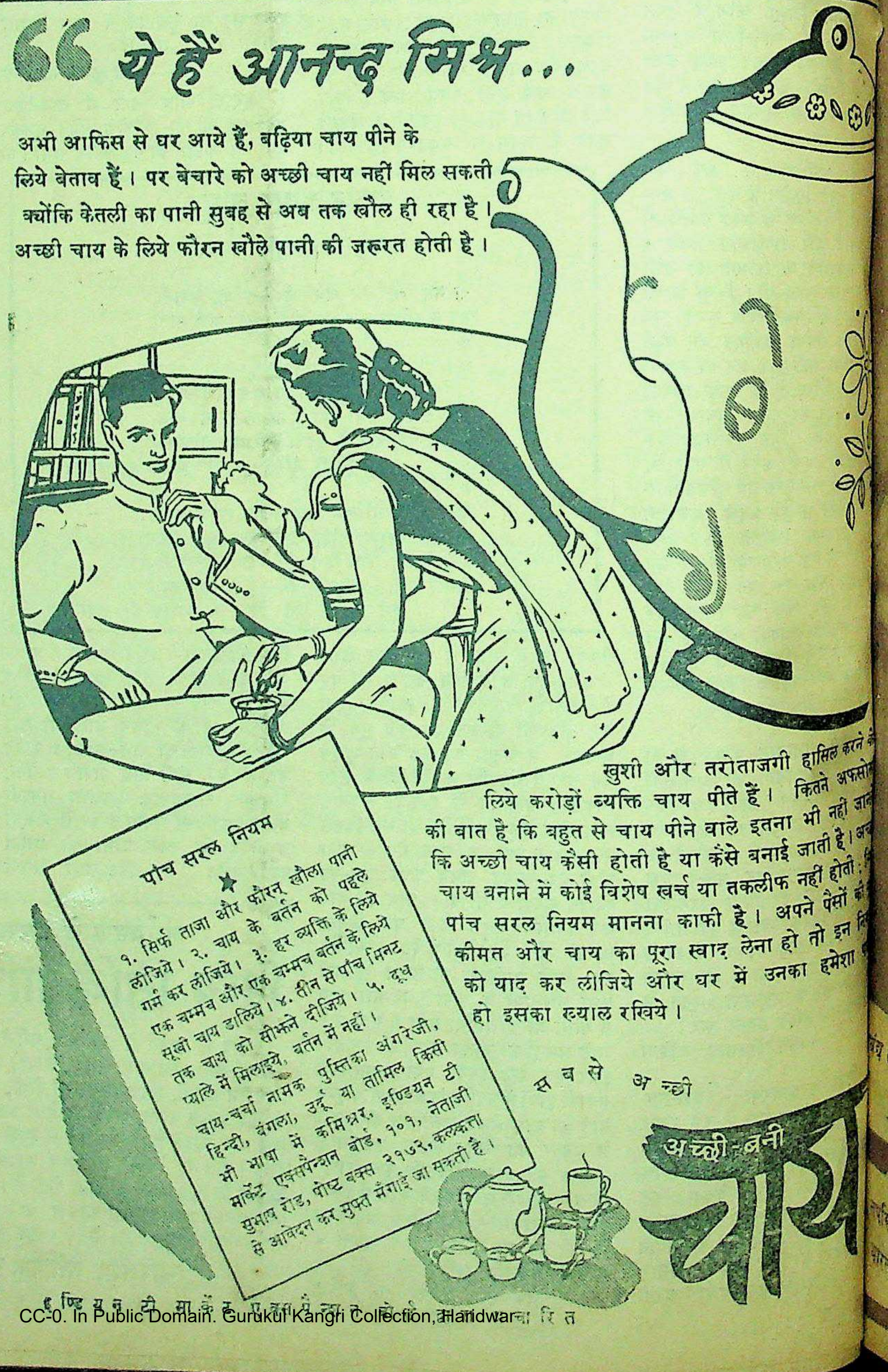
"ये हैं आनन्द मिश्र...

अभी आफिस से घर आये हैं, बढ़िया चाय पीने के लिये बेताब हैं। पर बेचारे को अच्छी चाय नहीं मिल सकती क्योंकि केतली का पानी सुबह से अब तक खौल ही रहा है। अच्छी चाय के लिये फौरन खौले पानी की जरूरत होती है।

पांच सरल नियम

★

१. सिर्फ ताजा और फौरन खौला पानी लीजिये। २. चाय के बर्तन को पहले गर्म कर लीजिये। ३. हर व्यक्ति के लिये एक चम्मच और एक चम्मच बर्तन के लिये सूखी चाय डालिये। ४. तीन से पांच मिनट तक चाय को सीझने दीजिये। ५. दूध प्याले में मिलाइये, बर्तन में नहीं।

चाय-चर्चा नामक पुस्तिका अंगरेजी, हिन्दी, बंगला, उर्दू या तामिल किसी भी भाषा में कमिश्नर, इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड, १०१, नेताजी सुभाष रोड, पोष्ट बक्स २१७२, कलकत्ता से आवेदन कर मुफ्त मँगाई जा सकती है।

खुशी और तरोताजगी हासिल करने के लिये करोड़ों व्यक्ति चाय पीते हैं। कितने अफसोस की बात है कि बहुत से चाय पीने वाले इतना भी नहीं जान कि अच्छी चाय कैसी होती है या कैसे बनाई जाती है। अ चाय बनाने में कोई विशेष खर्च या तकलीफ नहीं होती; पांच सरल नियम मानना काफी है। अपने पैसों की कीमत और चाय का पूरा स्वाद लेना हो तो इन नि को याद कर लीजिये और घर में उनका हमेशा हो इसका ख्याल रखिये।

सबसे अच्छी
अच्छी-बनी चाय

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

सचित्र
साप्ताहिक
वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रति संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

र, २२ फरवरी, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 22nd February, 1948

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

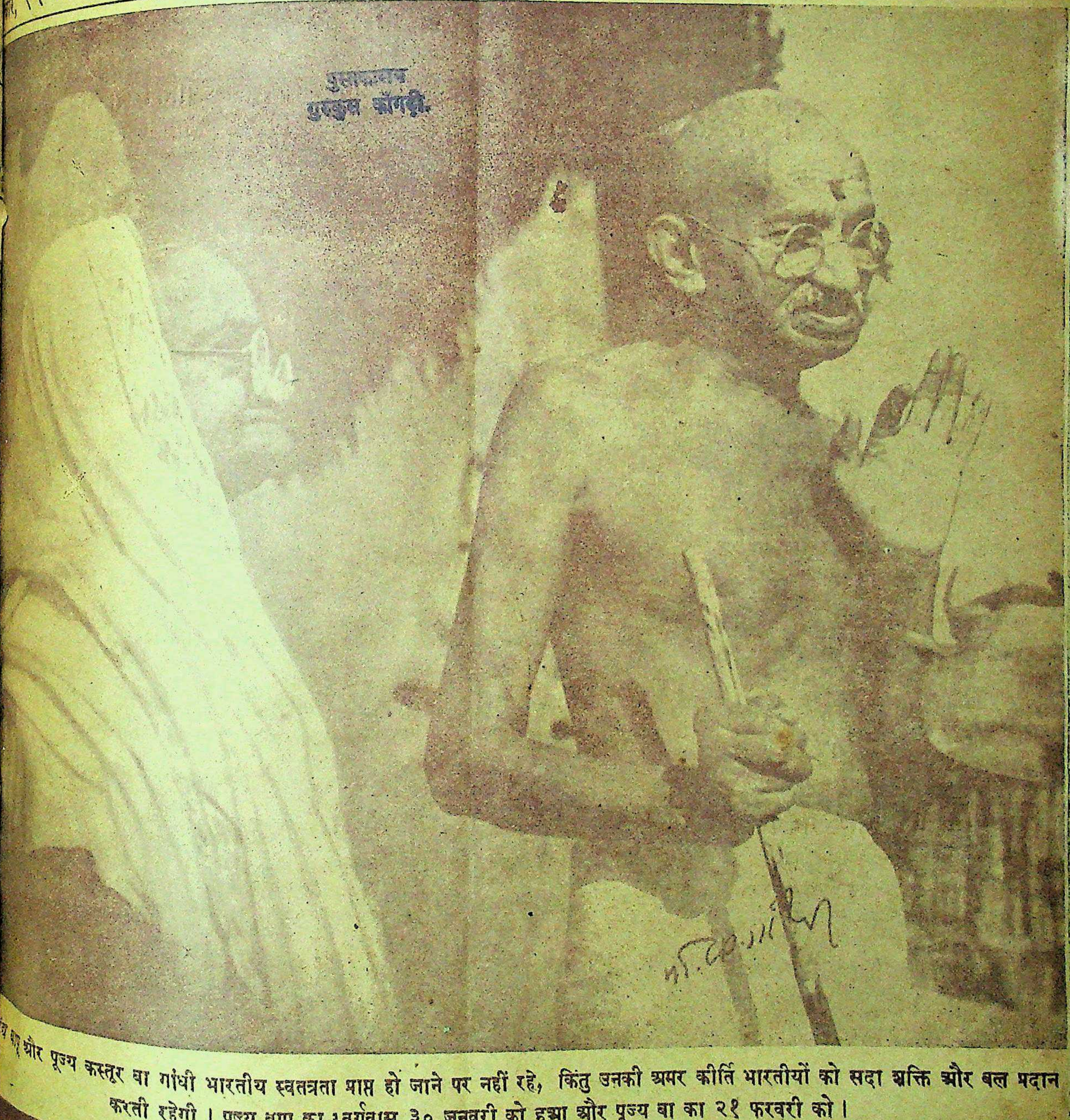

बापू और पूज्य कस्तूर बा गांधी भारतीय स्वतन्त्रता प्राप्त हो जाने पर नहीं रहे, किंतु उनकी अमर कीर्ति भारतीयों को सदा शक्ति और बल प्रदान करती रहेगी। पूज्य बापू का स्वर्गवास ३० जनवरी को हुआ और पूज्य बा का २१ फरवरी को।

स्विनी माता कस्तूर बा गांधी
तीय विधान-परिषद् और हिन्दी

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

बापू बिनु सूनो सेवाग्राम
मातृ-मंदिर, रंगमंच, हास-परिहास

आधुनिक हिन्दी-साहित्य का सर्वश्रेष्ठ गीति-काव्य

कवि और छवि

लेखक, सुप्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव

कविश्री बालकृष्ण राव आधुनिक हिन्दी-जगत् के चोटी के कलाकार और सर्वश्रेष्ठ गीतिकार हैं। 'कवि और छवि' आपकी नवीनतम गीति-काव्यों का सर्वश्रेष्ठ संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अंतर्द्वंद्व से परिपूर्ण तो हैं ही साथ ही सरस और हृदय पर मधुर प्रभाव और छाप छोड़ जानेवाले हैं। हृदय को तन्मय तथा गहन अनुभूति से सराबोर कर देनेवाले ऐसे गीत हिन्दी में आज लिखे ही नहीं जा रहे हैं। 'कवि और छवि' में संग्रहीत सभी गीत बिलकुल नवीन हैं, पढ़ते पढ़ते हृदय उद्वेलित हो उठता है। छपाई-सफाई नयनाभिराम, सचित्र और सजिल्द--मूल्य केवल २) रु०।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

१९४८ में क्या होनेवाला है?

यदि आप १९४८ में होनेवाली अच्छी व बुरी घटनाएँ समय से पूर्व जानना चाहते हैं, तो आज ही केवल एक पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी फूल का नाम लिखकर भेज दें, बस फिर हम ज्योतिष-विद्या के हिसाब से आपके आनेवाले १२ मास का हानि-लाभ, किस व्यापार में लाभ होगा, किस साधन से धन प्राप्ति होगी, रोजगार कब मिलेगा, वेतन-वृद्धि, परीक्षा में सफलता अर्थात् कार्ड की तारीख से लेकर एक वर्ष तक होनेवाली कुल बातों का संक्षेप अर्थात् मासिक वर्षफल बनाकर केवल १।) में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाक-व्यय अलग। बुरे ग्रहों की शांति का उपाय भी लिखा जायगा—जिससे आनेवाली कठिनाइयों को दूर किया जा सके।

श्री स्वामी योगीराज ज्योतिष आश्रम, (D.D.A.)
फगवाड़ा (कपूरथला स्टेट)

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!

आप घर बैठे मैट्रिक, एफ. ए., बी. ए., पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से और होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं नियमावली मुफ़्त मँगायें। पता :—

इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ

सम्पादक—श्री सोहनलाल द्विवेदी
प्राक्कथन—सर सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

संस्कृति, हिन्दी, उर्दू, बँगला, गुजराती, सिन्धी, मराठी, तामिल, तेलगू मलयालम, कन्नड़, अँगरेजी और चीनी भाषाओं में महात्मा गांधीजी पर लिखी हुई सर्वोत्तम कविताओं का संग्रह—हिन्दी भाषा में अर्थ-सहित।

बड़ा आकार, सुन्दर छपाई, पूरे पेज के अनेक चित्र। बढ़िया जिल्द। सर्वत्र प्रशंसित।

सादी जिल्द ६।।) कपड़े की जिल्द ७।।)

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लि० प्रयाग

पाँच सौ रुपया इनाम

[एक आश्चर्यजनक अद्भुत ईजाद]

मेस्मरेज़िम और जादू की शक्ति से तैयार की हुई यह अँगूठी अनिष्टकारी ग्रहों का प्रभाव दूर करने में अलौकिक शक्ति का परिचय देती है। इस अँगूठी को पहननेवाला अपनी हर प्रकार की कामना पूरी करने में सफल हो जाता है। प्रेम और मुकदमे में सफलता, स्वास्थ्य, सम्पत्ति तथा कीर्त्ति उसके पाँव चूमती हैं। एक ही रात में इस अद्भुत अँगूठी के गुणों और करामात से प्रभावित होना ही पड़ता है।

एक अँगूठी का मूल्य सिर्फ २)
एक साथ तीन अँगूठी मँगाने पर ५)
पैकिंग और डाकखर्च अलग

पता—
महाकाली आश्रम नं० २४७, कानपुर

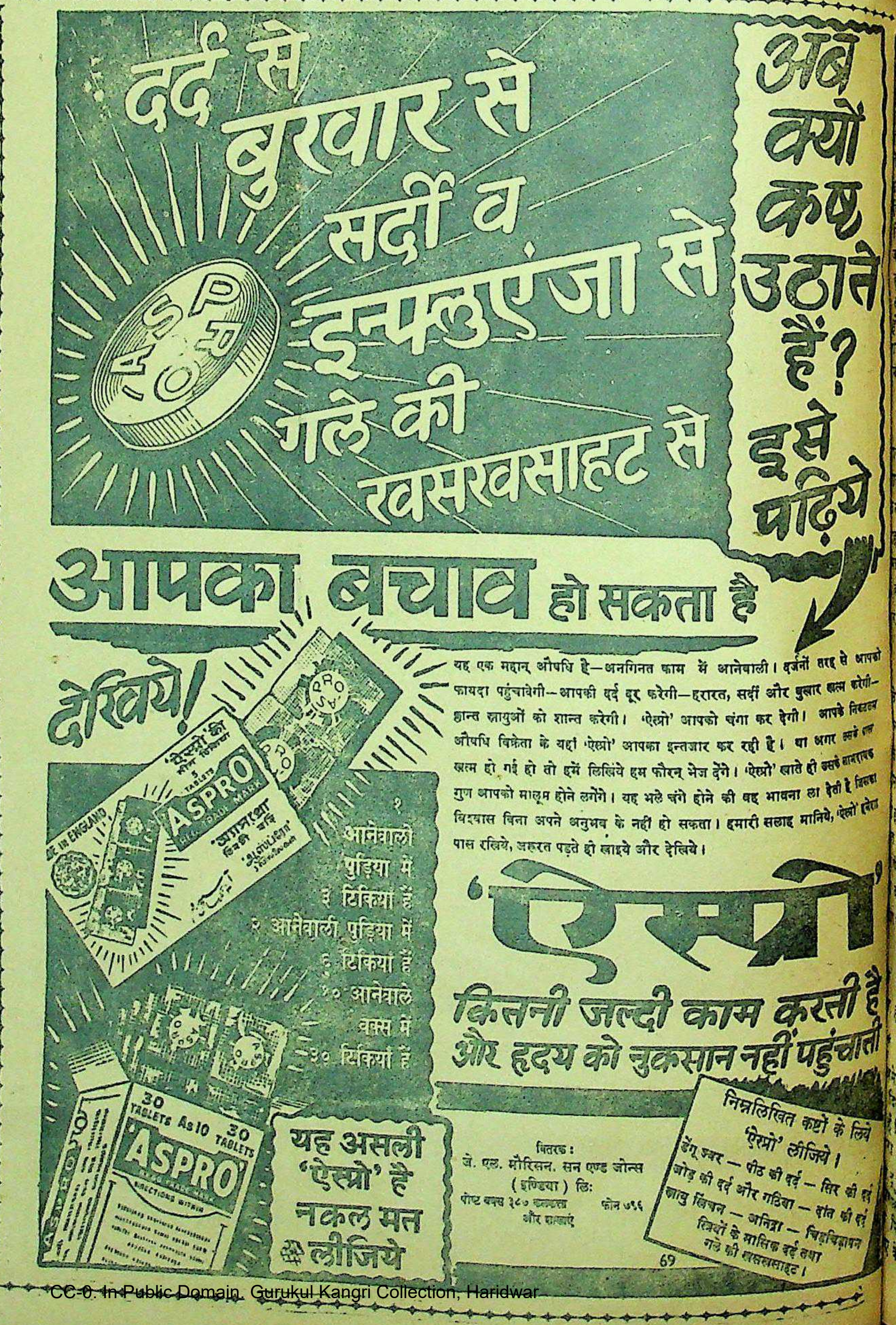

यह एक महान् औषधि है—अनगिनत काम में आनेवाली। दर्जनों तरह से आपको फायदा पहुंचावेगी—आपकी दर्द दूर करेगी—हरारत, सर्दी और बुखार खत्म करेगी—श्रान्त स्नायुओं को शान्त करेगी। 'ऐस्प्रो' आपको चंगा कर देगी। आपके निकटस्थ औषधि विक्रेता के यहां 'ऐस्प्रो' आपका इन्तजार कर रही है। या अगर उसके पास खत्म हो गई हो तो हमें लिखिये हम फौरन् भेज देंगे। 'ऐस्प्रो' खाते ही उसके लाभदायक गुण आपको मालूम होने लगेंगे। यह भले चंगे होने की वह भावना ला देती है जिसका विश्वास बिना अपने अनुभव के नहीं हो सकता। हमारी सलाह मानिये, 'ऐस्प्रो' हमेशा पास रखिये, जरूरत पड़ते ही खाइये और देखिये।

१ आनेवाली पुड़िया में ३ टिकियां हैं
२ आनेवाली पुड़िया में ६ टिकियां हैं
१० आनेवाले बक्स में ३० टिकियां हैं

वितरक :
जे. एल. मौरिसन, सन एण्ड जोन्स
(इण्डिया) लि:
पोस्ट बक्स ३८० कलकत्ता और शाखाएं
फोन ७९६

निम्नलिखित कष्टों के लिये 'ऐस्प्रो' लीजिये।
डेंगू ज्वर — पीठ की दर्द — सिर की दर्द
जोड़ की दर्द और गठिया — दांत की दर्द
स्नायु खिचन — अनिद्रा — चिड़चिड़ापन
स्त्रियों के मासिक दर्द तथा गले की खसखसाहट।

69

देशदूत

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक

[रविवार, २२ जनवरी, १९४८

१०, संख्या २३]

ई हुई स्त्रियों की रक्षा

ांधी की इच्छा पूरी कीजिए

के प्रधान मंत्री पंडित जवाहर ने विशेष ब्राडकास्ट करते हुई स्त्रियों और बच्चों के सम्बन्ध में सप्ताह किया। आपने कहा कि हुई स्त्रियां शीघ्र ही लौटा ली और ऐसा करने में यह न ख्याल कि पाकिस्तान ने इस मामले किया है।

* *

की जनता को यह कलंक चाहिए, कुछ समय पूर्व पश्चिमी पंजाब और सरकारों में इस प्रश्न पर हुआ था, और इस सम्बन्ध में हुआ था, पर काम बहुत ही है। स्त्रियों और बच्चों को का काम फिर एक बार तेजी से शुरू होना चाहिए। इस में पाकिस्तान ने कितना काम है, इस पर भारतीय जनता को नहीं करना चाहिए। भारतीय को अपने कर्तव्य का पालन करते भगाई हुई स्त्रियों को मर्यादा के स्थानों तक पहुंचाना चाहिए। हम चाहते हैं कि पाकिस्तान भी अपने कर्तव्य का करे, और यह समस्या हल करने में उसके साथ पूरा सहयोग करेंगे।

* *

में से प्रत्येक को अपने कर्त्तव्य का करना चाहिए, और हम एक ऐसा पैदा करें कि हमारी बहिनें अपने घरों को लौटें और पहले की मर्यादा के स्थान प्राप्त करें। जो कुछ उसके लिए उनका कुछ भी दोष नही और वे पहले ही की तरह हमारा प्रेम प्राप्त करती रहेंगी।

* *

नेहरू ने कहा कि हम अन्य बातें भूल जाएं, पर स्त्रियों का भगाया दीर्घकाल तक नहीं भूलेगा। के कारण भारत और पाकि- तनातनी बराबर बनी हुई है, शीघ्र ही हल करना चाहिए। नेहरू ने कहा कि भगाई हुई स्त्रियों के सम्बन्ध में महात्मा गांधी प्रकट की थी। मुझे आशा है कि उनकी इच्छा पूरी करेंगे। में भी भगाई हुई स्त्रियों का सप्ताह मनाया जा है।

* *

राष्ट्रपति श्री ट्रूमन ने रखनेवाली सरकारों को कि वे फिलिस्तीन सम्बन्धी स्थिति को रोक कर काम करें।" ने ईराक और सौदी अरब से विशेष रूप से प्रार्थना की स्तीन के बटवारे को रोकने हिंसा से काम न लें।

सप्ताह के समाचार

MAHATMA GANDHI

महात्मा गांधी का तैल चित्र जिसे सामने रख कर दिल्ली की सार्वजनिक सभा में नेताओं ने श्रद्धांजलियां अर्पित की थीं।

महात्मा गांधी का एक अन्तिम पत्र

बिड़ला-भवन
नई देहली, २५-१-४८

चि० प्रभुदयाल,

तुम्हारा खत मिला। ठीक काम कर रहे हो। इसी तरह से किया करो। देहातों में हमने काम किया ही नहीं है। इसलिए कठिनाइयां पैदा होती हैं। तुम्हें वहीं दूध पैदा करना है, फल और भाजी भी। भाजियां जल्दी से पैदा होती हैं। क्या तुम्हारे गांव में गाय हैं ही नहीं। जमींदारों से मिलो और प्रेम शक्ति से उनका दिल पिघलाने की चेष्टा करो। आज तक हमने अहिंसा की सच्ची शक्ति का दर्शन किया ही नहीं है। अब मौका है।

बापुके आशीर्वाद

(यह पत्र महात्मा गांधी ने श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी को लिखा था। श्री विद्यार्थी पूज्य बापू की सेवा में १५ वर्ष रह चुके हैं और आजकल बस्ती में कार्य कर रहे हैं।)

काश्मीर की लड़ाई।

शत्रु सेना चारों ओर भाग रही है

पिछले ३ दिनों से पूंच में आक्रमणात्मक कार्रवाइयां करनेवाली भारतीय सेनाओं ने एक बहुत महत्त्वपूर्ण पहाड़ी पर कब्जा कर लिया है और वहां से आक्रमणकारियों को साफ कर दिया है। इस संघर्ष में ७५ आक्रमणकारी मारे गये और २०० से अधिक घायल हुए हैं। काश्मीर की घाटी में गिलगट जानेवाली सड़क पर स्थित स्कार्डू के उत्तर इधर हाल में भारतीय सैनिकों का आक्रमणकारियों के छोटे-छोटे दलों से संघर्ष हुआ है। उस क्षेत्र में आक्रमणकारियों के मशीनगन के एक अड्डे को भारतीय सैनिकों ने खामोश कर दिया।

'आजाद काश्मीर सरकार' के प्रवक्ता ने पेशावर में जो यह दावा किया है, जैसा कि कुछ पत्रों में प्रकाशित हुआ है कि आक्रमणकारियों ने गोलाबारूद तथा अन्य सामग्रियों से भरी १०० लारियों पर कब्जा कर लिया है, उसका यहां के एक फौजी प्रवक्ता ने खण्डन किया है। उस फौजी प्रवक्ता ने कहा कि आक्रमणकारियों को नौशेरा में जो गहरी क्षतियां उठानी पड़ी हैं उसे वे निराधार प्रोपेगेण्डा की आड़ में छिपाना चाहते हैं। उनका इस प्रकार का निराधार प्रोपेगेण्डा आक्रमणकारियों का मनोबल, जो कि भंग होता जा रहा है, बनाए रखने के उद्देश्य से चल रहा है। उस फौजी प्रवक्ता ने आक्रमणकारियों के इस दावे का भी खण्डन किया कि राष्ट्रीय रक्षक दल के सदस्य उस संगठन को छोड़कर भाग गए हैं।

* * *

भारतीय डोमिनियन पार्लियामेंट में काजी करीमउद्दीन के प्रस्ताव पर, जिन्होंने देश के महत्त्वपूर्ण उद्योग धंधों के राष्ट्रीयकरण के लिए आग्रह किया था, बहस का उत्तर देते हुए प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भारत सरकार की औद्योगिक नीति की रूप रेखा प्रस्तुत की और कहा कि उत्पादन के मौजूदा साधनों को यथास्थित बने रहने देना चाहिए किन्तु उत्पादन के नए एवं अत्यन्त महत्त्वपूर्ण साधन सरकार के हाथ में रहने चाहिए।

* * *

भारतीय संघ की धारासभा में यातायात मंत्री डाक्टर जान मथाई ने रेलवे बजट (१९४८-४९) को उपस्थित करते हुए घोषणा की कि रेलवे विभाग को अगले वर्ष ९ करोड़ ८७ लाख रुपये की बचत होगी। आपने यह भी कहा कि इस वर्ष मेरा इरादा किसी भी प्रकार का किराया आदि बढ़ाने का नहीं है। डाक्टर मथाई ने हर्षध्वनि के मध्य कहा—"सम्भवतः अब हम उस स्थिति में पहुंच गए हैं जहां से विभाजन के कारण होनेवाली क्षति को रोक देंगे।"

हमारा स्वाधीनता-यज्ञ

बलिदानी वीरों को श्रद्धांजलियाँ देना हमारा कर्तव्य है

लेखक, प्रोफेसर ओंकारशंकर विद्यार्थी एम० ए०

भारतीय स्वतन्त्रता के लिए कितने ही वीरों ने अपना बलिदान दिया है, विश्ववंद्य महात्मा गांधी उनमें प्रमुख हैं। इस लेख में लेखक ने उन बलिदानी वीरों को श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए महात्मा जी की आत्मा से प्रार्थना की है कि—हे क्षितिजव्यापिनी ज्योतिराशि, हमारे मन को अंधकार ग्रसित न होने देना। लेख मार्मिक और पठनीय है।

स्वाधीनता-दिवस भारतीय इतिहास में एक सुनहरी आभा को लेकर आता है। सन् सत्तावन से जो आग की लपटें शुरू हुई थीं, वे उस समय तक शान्त न हुईं जब तक ब्रिटेन की पराधीनता की कड़ियां टूट-टूटकर चूर नहीं हो गईं।

पराधीनता किसी भी राष्ट्र की क्यों न हो, बुरी होती है। इसी पराधीनता ने हमारे देश के मानसिक, राजनैतिक और आत्मिक धरातल को बहुत नीचे गिरा दिया था। देश के सामने मुसीबतों के जो पहाड़ दूरस्थ काले बादलों की घटा की तरह मुक्त वायु की राह रोककर खड़े हुए हैं, उसकी वजह यही गुलामी और उसकी काली और पापसिक्त वसीयत है, जो हमारे देश में साम्प्रदायिकता, कलह और उत्पात के रूप में, पाप की चिमनी से उठनेवाली कालिख की भांति, चारों ओर बिखरी पड़ी है।

इस समय एक ऐसा क्षण है कि हम सोचें कि हमारी स्वाधीनता के यज्ञ में किन-किन बलिदानी करों ने आहुतियां और पूर्णाहुतियां डाली हैं। प्रायः ऐसा होता है कि आज की हमारी पीढ़ी यह भूल जाती है कि इस स्वाधीनता-यज्ञ में कुछ ही व्यक्तियों ने अपना योगदान नहीं दिया, वरन् कुछ ऐसे व्यक्तियों और दलों ने भी अपना सर्वस्व समर्पण इस यज्ञ के लिए, होठों पर मुस्कान और हृदय में आग लेकर किया था, जिनको हम आज भूल से गये हैं।

क्रान्ति-यज्ञ के लिए प्रथम आहुतियां देने में आतंकवादी नवयुवकों का बहुत बड़ा योग था। आज राष्ट्रीयता का इतिहास लिखते समय हमें भूल नहीं जाना चाहिए कि सर्वश्री खुदीराम बोस, श्याम जी कृष्ण और अन्य नवयुवकों ने किसी भ्रान्ति से वशीभूत होकर ऐसा नहीं किया था वरन् उन्होंने देश की आजादी के लिए विह्वल होकर किया था। इन आतंकवादियों की दूसरी पीढ़ी में हमें सर्वश्री चन्द्रशेखर आज़ाद, सरदार भगतसिंह, रोशनसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल के नाम भी जगमगाते हुए हमारे सामने आते हैं। इन क्रान्तिकारियों में सरदार भगतसिंह और आजाद को देश के महान् वीरों में गिना जायगा। सरदार भगतसिंह समाजवाद के बहुत बड़े पोषकों में थे, और आज वह यदि जीवित होते तो वह अत्यन्त उग्र समाजवादी होते। शहीद जतीनदास का नाम भी नहीं भूला जा सकता। आयरिश वीर मैक्स्विनी की याद को जतीनदास ने ताजा कर दिया और आत्म-बलिदान की प्रतिष्ठा को आगे बढ़ाया।

आज जब हम अपने बड़े-बड़े नेताओं को श्रद्धांजलियां अर्पित करते हैं, तो हमें उन अज्ञात नर-नारियों को नहीं भूल जाना चाहिए जो देश-प्रेम की भावनाओं से प्रेरित होकर जलूसों और मीटिंगों में शामिल हो गये और सहसा ही नौकरशाही की सर्वभक्षिणी गोलियों के शिकार हुए। जलियांवाला बाग ऐसी बीसियों घटनाओं के इतिहास से सन् १९ से सन् ३० तक का इतिहास गौरवान्वित है। विशेष रूप से कलकत्ते और बम्बई के लाठी-चार्जों में काफी मृत्युएँ हुई थीं। इन बलिदानों का महत्त्व किसी कदर भी कम नहीं कहा जा सकता। न केवल ये बलिदान बहुत करुण मानवीय घटनाएँ हैं, बल्कि इन आहुतियों से आग की लपटें लक्ष्य के आसमान की ओर काफी ऊपर उठी थीं।

छात्र-आन्दोलन और मजदूर-आन्दोलन की महत्ता को यदि आज कोई दृष्टि-पथ से अलग करना चाहेगा, तो भी गलती होगी। देश का छात्र-आन्दोलन समाजवाद और क्रान्तिवाद के सम्मिलित आदर्शों को लेकर हुआ। छात्र-आन्दोलन में पंडित जवाहरलाल नेहरू, नेता जी सुभाष और जिन्ना साहब, सभी की दिलचस्पी थी। बाद में साम्प्रदायिक नेतागण छात्रों के आन्दोलन से अलग हो गये। उनके लिए इस आग्नेय आन्दोलन में कोई स्थान नहीं था। आज छात्र-आन्दोलन की धारा कई टुकड़ों में विभक्त होकर बह रही है और किसी भी उद्देश्य-जलधि की ओर प्रवाहित नहीं हो रही है। फिर भी, छात्रों ने काफी लाठियां खाई हैं, और काफी

हिम्मत हार न मेरे देश

लेखक, श्री सोहनलाल द्विवेदी, एम० ए०

सच हैं तेरे उठे महात्मा!
सच है, आज न वह पुण्यात्मा!
प्राण प्राण में, किन्तु, उसी की प्रतिमा सजी अशेष!
सच है यह दह शक्ति उठ गई,
किन्तु न अपनी भक्ति उठ गई,
जन्मभूमि की भक्ति जन्म देगी, फिर ज्योति विशेष!
सच है यह घन अंधकार है,
नहीं सूझता आर पार है,
पर, सम्मुख पावन प्रकाश है, बापू का उपदेश!
अब आंखों से भिगो न अंचल,
मत आंसू से भिगो धरातल,
व्यथित न कर बापू की आत्मा, कर क्रन्दन ध्वनि शेष!
अनुशोचन उनका जो कायर,
अनुशोचन, उनका जो पामर,
खो न चेतना दुख असीम में, यही वीर का वेश!
जन जन में हो प्रेम-भावना,
हम सब ऐसी करें प्रार्थना,
अमर अखंडित राष्ट्रशक्ति हो, जीवन का उद्देश!
तू भी चल, उस पावन पथ पर,
सत्य अहिंसा के शुभ रथ पर,
जन्मभूमि जननी की जय हो, मिटा घटा के क्लेश!
हिम्मत हार न मेरे देश!

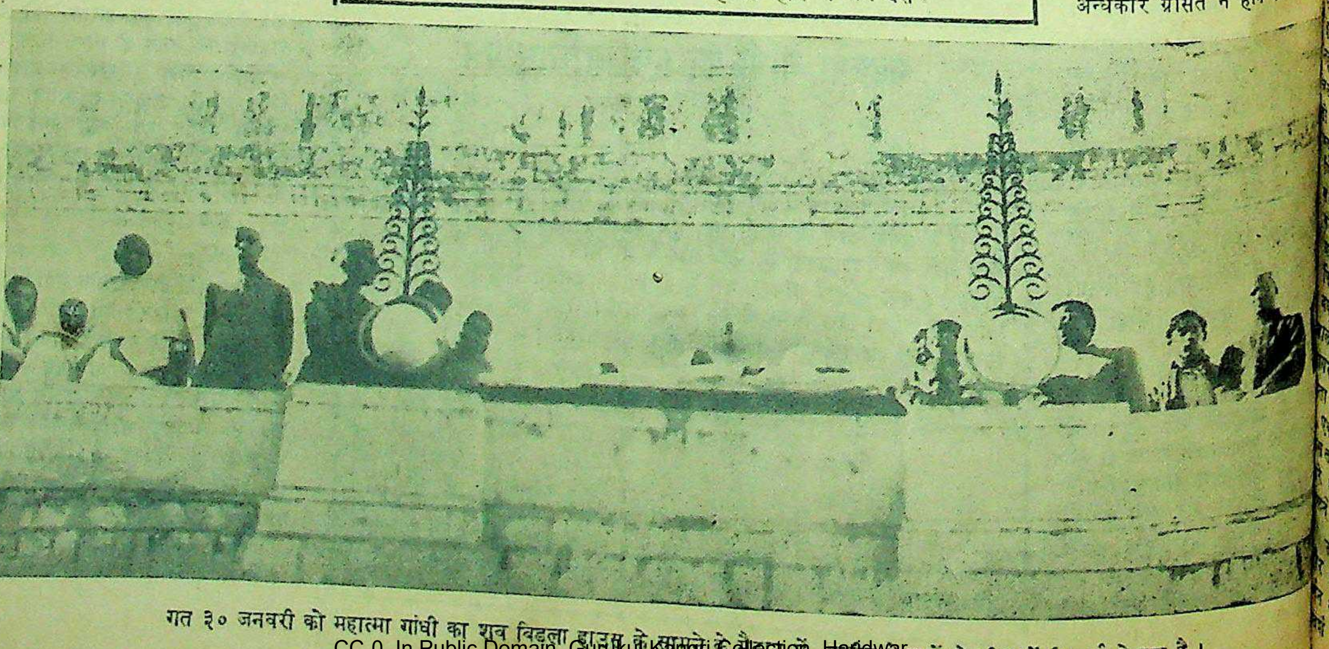

गत ३० जनवरी को महात्मा गांधी का शव बिड़ला हाउस के सामने के मैदान में, राष्ट्रीय नेताओं के बीच में दिखाई दे रहा है।

महात्मा गांधी के निध

लेखक, श्री बालकृष्ण
आई० सी० एस०

ज्योति ने पाई अमरता दीप ने
आज पाया बिन्दु ने नव सिन्धु-
मूक होकर कोटि कण्ठों
समाया स्वर तुम्हा
मिल गया मझधार में
कुशल नाविक को किना
आज क्षण के साथ युग की हो गई
राष्ट्र के शव में किया
प्राण का संचार तुमने
स्नायुओं में फिर प्रवा
की रुधिर की धार तुमने
धूलि को पद-रज बना तुमने दिया
सत्य का ध्रुव ध्येय
तुमने अहिंसा का दिखाया
क्षितिज बन उन्नत गगन
भूमि पर तुमने झुकाया
विजय का तुमने विफलता से किया
दे तुम्हें अञ्जलि, हुए
अश्रु जग के आज पावन
मुक्त हो तुम, किन्तु
हैं हमारे भक्ति बन्धन
मूर्ति खोई, पर उपासक पा गया
आज हिंसा के कठिन आघात
अक्षय हुए तुम
शरण देकर मरण को
आज मृत्युंजय हुए तुम
देश के हित आज तुमने कर लिया

चक्कियां उन्होंने पीसी हैं।
विश्वविद्यालय एवं बनारस विश्
के छात्रों ने सन् ४२ में जो
किये हैं, वे राष्ट्रीयता के इतिहा
अमर रहेंगे। नौजवानों की
गोली खाकर तड़प गई, वे इ
अमिट लकीरें बना गई हैं।

हमारी स्वाधीनता आज
दृष्टि से सम्पन्न होकर भी
भांति सिसक रही है। आज स
यज्ञकर्ता भौतिक रूप से इस
नहीं हैं। महात्मा जी की दुः
हमारी यज्ञ-शिखा की उठती
विषाद और क्षोभ की कालिमा
है। जिन तत्त्वों पर हमने विचा
है, वह सब सहायक साधनों की
अपना-अपना कार्य करते रहे थे
भूमिका तो बापू की ही थी, औ
बाद सुभाष, जवाहरलाल की।

इसलिए, आज हम सब
वीरों को श्रद्धांजलि दें और मह
की आत्मा से प्रार्थना करें "हे
व्यापिनी ज्योतिराशि, हमारे म
अन्धकार ग्रसित न होने देना।"

सन् १९४२ में ९ अगस्त को गांधी सवेरे ही गिरफ़्तार कर लिये गये थे। माता कस्तूर बा और प्यारेलाल भाई के नाम सरकारी वारंट नहीं था। गांधी जी ने जेल जाते समय माता कस्तूर बा से कहा—"मैंने जो काम अधूरा छोड़ा है उसे तुम पूरा करना। शाम को शिवाजी पार्क (बम्बई) में हज़ारों के बीच में भाषण करनेवाला था। वह अब तुम्हें पूरा करना है।" बा जी ने खुशी-खुशी उस महान् भार को अपने कंधों पर उठा लिया। वह गांधी जी की सच्ची सहधर्मिणी थीं तो ऐसा क्यों न करतीं? वह गांधी जी के पदचिह्नों पर चलती थीं। गांधी जी का संकेत ही उनके लिए काफी होता था। गांधी जी की बातों में उन्होंने कभी त्रुटि नहीं निकाली। पति के पीछे पीछे चलना उन्होंने जीवन का सिद्धान्त बना लिया था। गांधी जी कितना ही कठिन और कष्ट का काम उठा लेते और उस पर अमल करते—किन्तु माता कस्तूर बा उससे कभी मुंह नहीं मोड़ती थीं। सुख और दुख में बराबर साथ देती थीं साथ ही महात्मा जी को समय समय पर भारी उत्साह भी देती थीं। गांधी जी को माता जी से बड़ी सान्त्वना मिलती थी। गांधी जी ने जीवन में जो एक से एक महान् प्रयोग किये हैं उसमें माता कस्तूर बा का कम हाथ नहीं? गांधी जी ने अपने अनेकों प्रयोगों और कष्टों के कारण उन्हें कभी सुख की जिन्दगी बिताने का मौका नहीं दिया। सार्वजनिक जीवन में प्रवेश करते ही गांधी जी ने रोज ही नया से नया प्रयोग साधना शुरू किया। उन्होंने अपने प्रयोगों में माता कस्तूर बा को भी घसीटा। उन्हें भी सीधा-सादा जीवन व्यतीत करने के लिए विवश किया। देश की सेवा के लिए माता कस्तूर बा को कठिन से कठिन कष्ट झेलने पड़े। सरल से सरल जीवन व्यतीत करना पड़ा।

काठियावाड़ के पोरबन्दर नगर में सन् १८६९ के अप्रैल महीने में माता कस्तूर बा का जन्म हुआ था। बापू जी से करीब छः महीने वह बड़ी थीं। बा के पिता पोरबन्दर में व्यापारी थे। आर्थिक स्थिति साधारण ही थी। पोरबन्दर राज्य की दीवानगीरी करनेवाले गांधी-परिवार के साथ उनका अच्छा सम्बन्ध था। इसलिए तेरह साल की उम्र में गांधीजी के साथ बा का विवाह कर दिया गया।

गांधी जी ने अपने विवाह के बारे में लिखा है—"मुझे याद नहीं पड़ता कि विवाह के समय मुझसे कुछ कहा गया था। उसी तरह ब्याह के वक्त भी कुछ पूछा नहीं गया। सिर्फ तैयारियों से ही पता चला कि ब्याह होनेवाला है। उस समय अच्छे अच्छे कपड़े पहनेंगे, बाजे बजेंगे, जुलूस निकलेंगे, अच्छा-अच्छा खाने को मिलेगा, एक नई लड़की के साथ हंसी-विनोद करेंगे, वगैरह इच्छाओं के सिवा और कोई विशेष भाव मेरे मन में रहा हो ऐसा याद नहीं आता।" "मण्डप में बैठे, फेरे फिरे, कंसार खाया-खिलाया और वर-वधू एक साथ रहने लगे। दो अबोध बालक बिना जाने बिना समझे संसार-सागर में कूद पड़े—कुछ ऐसा ख्याल होता है कि हम दोनों एक दूसरे से डरते थे। एक दूसरे से शरमाते तो थे ही। बातें किस तरह करना, तो मैं क्या जानूं? धीरे-धीरे एक दूसरे को पहचानने लगे, बोलने लगे।"

उस समय की अपनी भावनाओं और बा के स्वभाव का गांधी जी यों वर्णन करते हैं; "मुझे अपनी पत्नी को आदर्श स्त्री बनाना था। वह साफ बने

देशदूत

तपस्विनी माता कस्तूर बा गांधी

राष्ट्र के लिए उत्सर्ग होनेवाले जीवन की एक झाँकी

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

विश्ववंद्य महात्मा गांधी की धर्मपत्नी पूज्य माता कस्तूर बा गांधी की निधन-तिथि २१ फरवरी को पड़ती है। यह लेख इसी अवसर की पुण्य-स्मृति में लिखा गया है। श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी १५ वर्ष तक बापू की सेवा में रह चुके हैं। इस लेख में पूज्य बा के जीवन के साथ बापू के जीवन पर भी प्रकाश डाला गया है जो पठनीय, सामयिक तथा सुन्दर है।

साफ रहे, मैं जो सीखूं, सीखे; जो पढ़ूं पढ़े और हम दोनों एक दूसरे में ओत-प्रोत रहें—यह मेरी भावना थी। मुझे याद नहीं पड़ता कि कस्तूर बाई की भी यह भावना थी। वह निरक्षर थीं, स्वभाव की सीधी, स्वतंत्र, मेहनती और मेरे साथ कम बोलनेवाली। उन्हें अपने अज्ञान से असंतोष न था। मैंने अपने बचपन में उनको कभी यह इच्छा करते हुए नहीं पाया कि जिस तरह मैं पढ़ता हूँ उस तरह वह खुद भी पढ़ें तो अच्छा हो। उन्हें पढ़ाने की मेरी बड़ी इच्छा थी। लेकिन उसमें दो कठिनाइयां थीं। एक तो 'बा' की अपनी पढ़ने की भूख खुली नहीं थी, दूसरे बा अनुकूल हो जाती तो भी उस जमाने के भरे-पूरे परिवार में इस इच्छा को पूरा करना आसान नहीं था।"

आगे और गांधीजी लिखते हैं "जिन दिनों शादी हुई उन दिनों निबन्धों की छोटी-छोटी पुस्तिकाएँ निकला करती थीं। उनमें दाम्पत्य प्रेम, किफायतशारी, बाल-विवाह वगैरह विषयों की चर्चा रहती थी। उनमें से कुछ निबन्ध मेरे हाथ पड़ जाते और मैं उन्हें पढ़ जाता। यह आदत तो थी ही कि पढ़ना, जो पसन्द न आये उसे भूल जाना और जो पसन्द पड़े उस पर अमल करना। पढ़ा था कि एकपत्नी व्रत पालना पतिधर्म है और यह बात हृदय में बसी रही।

बा अनपढ़ भले रहीं, लेकिन अनपढ़ और कम उम्र की बा में उस समय भी काफी विवेक शक्ति और स्वतंत्र विचार-शक्ति थी। अपने लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा है सो तो बा समझती ही थीं। इसके सिवा उन्हें इस बात का भी ख्याल था कि अपने पति के लिये क्या अच्छा है और क्या खतरनाक है? पति का पूरा आदर करती थीं। सेवा में तत्पर रहती थीं।

बापू जी जब विलायत में थे, तभी उनकी माताजी यानी बा 'बा' की सास गुजर गईं। बा की जेठानी घंटों पूजा में रहती थीं। उस समय उनके बच्चों को नहलाने-धुलाने और संभालने का सारा काम बा ही दिन-रात किया करती थीं। रसोईघर समूचा बा के ही जिम्मे था।

पूज्य माता कस्तूर बा गांधी की पुण्य-तिथि २१ फरवरी को मनाई जा रही है।

महात्मा जी की चिर-संगिनी पूज्य बा

बा ने सास के जैसे ही जेठानी की भी सेवा की है।"

दक्षिण अफ्रीका में बापू जी के जीवन ने करवट लेना शुरू किया और सन् १९०४ में तो उन्होंने अपने जीवन में महाक्रान्तिकारी परिवर्त्तन कर डाला। महान् परिवर्त्तन हुआ। तप और संयम के बड़े बड़े प्रयोग शुरू हुए। जीवन को तपोमय बना डाला। वैराग्य का जीवन आ गया। बा को भी बापू जी के तपोमय जीवन के पीछे-पीछे जाना पड़ा। गांधी जी ने स्वयं लिखा है। "बा में एक गुण बहुत बड़ी मात्रा में है, जो दूसरी बहुत सी हिन्दू स्त्रियों में न्यूनाधिक मात्रा में पाया जाता है। इच्छा से हो या अनिच्छा से, ज्ञान से हो या अज्ञान से, मेरे पीछे-पीछे चलने में उन्होंने अपने जीवन की सार्थकता मानी; और शुद्ध जीवन बिताने में मेरे प्रयत्न में मुझे कभी रोका नहीं। इसके कारण जो भी हमारी बुद्धि शक्ति में बहुत अन्तर है तो भी मुझे यह लगा है कि हमारा जीवन सन्तोषी, सुखी और ऊर्द्ध्वगामी है।"

फिलिक्स आश्रम की एक बड़ी दिलचस्प घटना पढ़िए सन् १९१३ साल की बात है। रावजी भाई मणि भाई पटेल लिखते हैं—"एक दिन सबेरे भोजन के बाद कोई ११ बजे मैं खाने की मेज के पास बैठा था। बापू जी हमेशा सबको जिमा कर जीमते थे। वे भोजन कर रहे थे और उनके पास उनके परिवार के एक बुजुर्ग कालिदास गांधी बैठे थे। वे टूंगाट नामक गांव में रहते थे और वहां से कुछ दिन के लिए आये थे। 'बा' खड़ी खड़ी रसोईघर में सफाई का काम कर रही थीं श्री कालिदास भाई कुछ पुराने विचारों के थे।

दक्षिण अफ्रीका में एक मामूली व्यापारी के यहां भी रसोईघर का और दूसरा सफाई वगैरह का काम करने के लिए नौकर रहते थे। यहां बा को अपने हाथों सब काम करते देखकर श्री कालिदास भाई ने बापूजी को सम्बोधन करके कहा—"भाई, तुमने तो जीवन में बहुत हेर-फेर कर डाला। बिलकुल सादगी सादगी अपना ली। इन कस्तूर बाई ने भी कोई वैभव नहीं भोगा।"

"मैंने इन्हें वैभव भोगने से रोका कब है?" बापू जी ने खाते-खाते जवाब दिया।

"तो तुम्हारे घर में मैंने क्या वैभव भोगा है? बा ने हंसते हंसते ताना मारा।

"बापू जी ने उसी लहजे में हंसते-हंसते कहा, "मैंने तुझे गहने पहनने से या अच्छी रेशमी साड़ियां पहनने से कब रोका

३० जनवरी की रात!

लेखक, श्री 'बच्चन'

रेडियो सुनाता है यह कैसा समाचार
खिचते जाते मेरे अंतर के तार-तार,
हो गया स्तब्ध है हृदय, सुन्न हो गई देह,
बैठा सुनता हूँ
विनत शीश
अवनत ग्रीव!
कितने सुख का अनुभव करता यह मन अधीर
यदि कोई कह सकता निशि का तम तोम चीर—
फिर बुझे दीप में जगी ज्वाल, भर गया स्नेह
हो उठे हमारे
बापू जी
फिर से सजीव!
किसकी आस्था, किसकी श्रद्धा-निष्ठा बनकर
वे जमे हुए थे तन-मन-जीवन के अंदर,
जो उनके उठ जाने से लगता है सत्वर—
हिल गई आज
मानवता की
फिर सुदृढ़ नींव!

है, और जब तूने चाहा, तब तेरे लिए सोने की चूड़ियां भी बनावा लाया था न?"

"तुमने तो सभी कुछ लाकर दिया, लेकिन मैंने उसका उपयोग कब किया है? देख लिया कि तुम्हारा रास्ता जुदा है। तुम्हें तो साधू-सन्यासी बनना है। तो फिर मैं मौज-शौक मनाकर क्या करती? तुम्हारी तबियत जान लेने के बाद मैंने तो अपने मन को मना लिया।" बा कुछ गम्भीर होकर बोलीं।

बा बापू जी की साधना में और उनके महाव्रतों के पालन में कभी बाधक नहीं बनीं। बल्कि उल्टे धीमे-धीमे वे बापू के व्रतों, आदर्शों और सिद्धान्तों को अपनाती गईं। वैसे वैसे बा का भी विकास होता गया। इस दृष्टि से बा को महान् पतिव्रता कहा जा सकता है। बा ने पति के सभी व्रतों को अपनाकर उन पर अमल किया है। और वे बहुत ऊपर उठ गईं और समाज के लिए बहुत पवित्र और सुन्दर आदर्श छोड़ गई हैं।

बापू जी के समान सत्याग्रही के पीछे चलना बड़ी कसौटी का खेल है। बड़े त्याग का काम है। बा ने उनके पीछे चलने में बहुत त्याग किया। बापू जैसे तपस्वी पुरुष के साथ चलने में बीच-बीच में भूकम्प के से कठोर धक्के सहने के मौके आते हैं। ज्वालामुखी के खौलते हुए लावा में भी चलना पड़ता है। इतना सब होने पर भी वे कभी पीछे नहीं हटीं। अपनी इच्छा-अनिच्छा का त्याग करके अनेक कठिनाइयों और परिवर्तनों को सहकर पति के रास्ते चलना आसान नहीं है। इसके लिए विपुल आत्मबल और अपूर्व समर्पण की भावना जरूरी है। बा में ये दोनों बातें थीं या बा ने इन दोनों का विकास किया था और यही वजह है कि वे गृहस्थ जीवन के दुस्तर समुद्र को कुशल तैराक की छटा से पार कर गईं।

बा के दिल में हमेशा सोते, जागते, बापू जी के लिए बराबर चिन्ता बनी रहती थी। उन्होंने हमेशा अपने दिल में इस भावना का सेवन किया था कि जब बापू जी आफत में हों तब वह कहीं रह ही नहीं सकती थीं। बापू जी के खाने-पीने आदि का सारा प्रबन्ध स्वयं करती या कराती थीं। बापू जी का पाखाना वृद्धावस्था तक साफ करती रहीं। हमेशा कमोड 'बा' ही साफ करती थीं। पाखाना लेकर गड्ढों में पाटती थीं। बापू के पैरों में तेल मलती थीं। बापू का सारा काम खुद करती थीं।

साबरमती के आश्रम की एक घटना है। "एक बार बहुत रात बीते बापू जी साबरमती आश्रम में सो रहे थे। सामने ओसारी में 'बा' और एक बहन सो रही थीं। कोई दो-ढाई बजे बापू जी एकाएक उठे और चल पड़े। बा जग उठीं और पास सोनेवाली बहन से पूछने लगीं—बापू जी कहां जाते होंगे? हम उनके पीछे चलें? कहीं बुद्ध के जैसा, तो नहीं हुआ? हम दोनों पीछे-पीछे गईं और थोड़ी ही दूर से बापू जी को देखा। बापू जी ने कहा—'तुमने सोचा होगा कि मैं भाग जाऊंगा?' सड़क पर कोई आदमी बिच्छू के काटने से रो रहा था। उसका रोना सुनकर बापू जी उधर गये थे।

१९३२ में हरिजनों का प्रश्न लेकर बापू जी ने यरवदा जेल में आमरण उपवास शुरू कर दिया था। तब "बा' साबरमती जेल में बन्द थीं। बापू के आमरण उपवास से बा चिन्तित हो उठीं। कहने लगीं। "बहनों से अपनी चिन्ता प्रकट करने लगीं। बहनें बा से कहती थीं—"सरकार बापू को सब सहूलियतें देगी। आप क्यों फिकर करती हैं?" इस पर बा जवाब देतीं—"लेकिन बापू कोई सहूलियत लें तब न। वे तो सभी बातों में असहयोग करते हैं। उनके जैसा आदमी तो न कहीं देखा, न कहीं सुना। पुराणों की बहुतेरी बातें सुनी हैं, लेकिन ऐसा तप तो कहीं नहीं देखा।"

सन् १८९८ के आस-पास की यह घटना है। बा से बापू जी कितना कसकर काम लेते थे वह उन्हीं के शब्दों में पढ़िए। "जिस समय मैं डरबन में वकालत करता था, तब अकसर मेरे कारकुन मेरे साथ ही रहते थे। उनमें हिन्दू और ईसाई थे, अथवा प्रान्तों के हिसाब से कहूँ तो गुजराती और मद्रासी थे। मुझे याद नहीं पड़ता कि उनके विषय में मेरे मन में कभी भेद-भाव पैदा हुआ हो। मैं उन्हें बिलकुल अपने कुटुम्बी के जैसा समझता और अगर पत्नी की ओर से उसमें कोई रुकावट आती, तो मैं उससे लड़ता-झगड़ता था। मेरा एक कारकून ईसाई था। उसके माता-पिता पंचम जाति के थे। हमारे घर की बनावट पश्चिमी ढब की थी। उसके कमरों में मोरियां नहीं थीं, और होनी भी नहीं चाहिए, ऐसा मेरा मत है। इसलिए हर एक कमरे में मोरी के बदले पेशाब के लिए अलग से एक बरतन रहता था। उसे साफ करने का काम नौकर का नहीं था, बल्कि हमारा पति-पत्नी दोनों का था। हां, जो कारकून अपने को घर का ही समझने लग जाते थे, वे तो अपने बरतन को खुद भी साफ कर डालते थे। ये पंचम कुल में जन्मे कारकून नये थे, उनका बरतन हमीं को उठाकर साफ करना चाहिए। दूसरे बरतन कस्तूर बाई उठातीं और साफ करती थीं, लेकिन इन भाई का बरतन उन्हें असह्य मालूम हुआ। हमारे बीच झगड़ा हुआ। मैं उठाता हूँ तो उनसे देखा नहीं जाता और खुद उठाना उनके लिए कठिन था। आंखों में मोती के बिन्दु बरसाती, हाथ में बरतन लिए मुझको अपनी लाल-लाल आंखों से उलहना देती, और सीढ़ियां उतरती हुई कस्तूर बाई को मैं आज भी ज्यों का त्यों चितर सकता हूँ।

"लेकिन मैं जितना ही प्रेमल उतना ही कठोर पति था। मैं अपने आपको उनका शिक्षक भी मानता था, इसलिए अपने अंधप्रेम के अधीन होकर उन्हें ठीक-ठीक सताता था।

"इस तरह उनके बरतन को उठाकर ले जाने भर से मुझे संतोष न हुआ। वह हंसते हुए उसे ले जायँ, तभी मुझे सन्तोष हो। इसलिए मैंने दो बातें ऊँची आवाज में कहीं और मैं गरज उठा—'मेरे घर में यह बखेड़ा नहीं चलेगा।'

"यह वचन तीर की तरह चुभा। पत्नी खौल उठी—'तो अपना घर अपने पास रखो, मैं चली।'

"मैं ईश्वर को भूल बैठा था। दया लेश-मात्र मुझमें न रह गया था। मैंने हाथ पकड़ा। जीने के सामने ही बाहर निकलने का दरवाजा था। मैं उस दीन अबला को पकड़कर दरवाजे तक खींच ले गया। दरवाजा आधा खोला।

"आंखों से गंगा-जमना बह रही थीं और कस्तूर बाई बोलीं—'तुम्हें तो शरम नहीं मुझे है। जरा तो शरमाओ। मैं बाहर निकल कर जाऊँ कहां? यहां मां-बाप भी नहीं कि उनके पास चली जाऊँ। मैं औरत ठहरी, इसलिए मुझे तुम्हारी चपत भी खानी ही होगी। अब जरा शरम करो और दरवाजा बन्द कर लो। कोई देखेगा तो दोनों की फजीहत होगी।'

"मैंने [illegible] तो सुख बनाय रखा; लेकिन मन में शरमा जरूर गया। दरवाजा बन्द किया। अगर पत्नी मुझे छोड़ नहीं सकती थी, तो मैं भी उसे छोड़कर कहां जा सकता था। हमारे बीच झगड़े तो बहुत हुए हैं, लेकिन परिणाम हमेशा शुभ ही हुआ है। पत्नी अपनी अद्भुत सहनशीलता से विजय पाई है।"

१९१३ में दक्षिण अफ्रीका में यह कानून पास किया गया कि ईसाई धर्म के अनुसार किये गये ब्याह के सिवा—जो विवाह—जो विवाह-विभाग के अधिकारी के यहां दर्ज हुए हों—दूसरे सब ब्याहों को कानून में कोई जगह नहीं। इसका अर्थ यह हुआ कि हिन्दू मुसलमान, पारसी वगैरह धर्मों के अनुसार की गई शादियां इस कानूनी वजह से रद्द मानी गईं; और इस कारण बहुत सी विवाहिता हिन्दुस्तानी स्त्रियों का दर्जा उनके पति के धर्मपत्नी का न रहकर रखेली का माना गया। यह एक विकट स्थिति पैदा हो गई जिसे स्त्री-पुरुष दोनों सह नहीं सकते थे। गांधी जी को यह कानून अपमानजनक लगा। इस कानून को रद्द कराने के लिए गांधी जी ने वहां की सरकार के साथ खूब बात-चीत चलाई, लेकिन उसका कोई नतीजा नहीं निकला और अन्त में गांधी जी ने सत्याग्रह का मार्ग अपनाने का निश्चय किया। इस सत्याग्रह में गांधी जी ने स्त्रियों को भी आने का आवाहन किया।

गांधी जी ने दक्षिण अफ़्रीका के इतिहास में लिखा है—"मैं जानता था कि बहनों को जेल भेजने का काम बहुत खतरनाक था। फिनिक्स में रहनेवाली अधिकतर बहनें मेरी रिश्तेदार थीं, वे सिर्फ मेरे लिहाज के कारण ही जेल जाने का विचार करें और फिर ऐन मौके पर घबराकर या जेल में जाने के बाद उकताकर माफी वगैरह मांग लें, तो मुझे सदमा पहुँचे। साथ ही इसकी वजह से लड़ाई के एकदम कमजोर पड़ जाने का डर भी था। मैंने तय किया था कि मैं अपनी पत्नी को तो हरगिज नहीं ललचाऊँगा। वह इनकार भी नहीं कर सकती थी, और 'हां' कह दे तो उस 'हां' की भी कितनी कीमत की जाय, सो मैं कह नहीं सकता था। ऐसे जोखिम के काम में स्त्री खुद होकर जो निश्चय करे, पुरुष को वही मान लेना चाहिए और कुछ भी न करे, तो पति को उसके बारे में तनिक भी दुखी नहीं होना चाहिए, इतना मैं समझता था। इसलिए मैंने उनके साथ कुछ भी बात न करने का इरादा रखा था। दूसरी बहनों से मैंने चर्चा की। वे जेलयात्रा के लिये तैयार हुईं। उन्होंने मुझे विश्वास दिलाया कि वे हर तरह का दुख सहकर भी अपनी जेल-यात्रा पूरी करेंगी। मेरी पत्नी ने भी इन बातों का सार जान लिया और मुझसे कहा:—

"मुझसे इस बात की चर्चा नहीं करते इसका मुझे दुःख है। मुझमें ऐसी क्या खामी है कि मैं जेल नहीं जा सकती? मुझे भी उसी रास्ते जाना है, जिस रास्ते जाने की सलाह आप इन बहनों को दे रहे हैं।"

"मैंने कहा—'मैं तुम्हें दुःख ही नहीं सकता। इसमें अविश्वास कोई बात नहीं। मुझे तो तुम्हारे में खुशी ही होगी। लेकिन तुम मेरे पर गई हो, इसका तो आभास तक अच्छा नहीं लगेगा। ऐसे काम अपनी-अपनी हिम्मत से ही करने चा में कहूं और मेरी बात रखने के लि सहज ही चली जाओ, और बाद में के सामने खड़ी होते ही कांप उठो, हार जाओ या जेल के दुःख से ऊब तो इसे मैं अपना दोष तो नहीं लेकिन सोचो कि मेरे क्या हाल मैं तुमको किस तरह रख सकूंगा दुनिया के सामने किस तरह खड़ा सकूंगा? बस इस भय के कारण ही तुम्हें ललचाया नहीं।"

"मुझे जवाब मिला। मैं हार छूट आऊँ, तो मुझे मत रखना। बच्चे तक सह सकें, आप सब सह और अकेली मैं ही न सह सकूं, ऐसा सोचते कैसे हैं? मुझे इस लड़ शामिल होना ही होगा।"

"मैंने जवाब दिया, 'तो मुझे तुम्हें शामिल करना ही होगा। मेरी शर्त तुम जानती हो हो। मेरे स्वभाव से तुम परिचित हो। अब भी विचार होगा, तो फिर विचार कर लेना। भली भांति सोचने के बाद तुम्हें यह कि शामिल नहीं होना है तो समझना तुम इसके लिए आजाद हो। साथ ही भी समझ लो कि निश्चय बदलने में शर्म की कोई बात नहीं है।'

"मुझे जवाब मिला। 'मुझे विचार कुछ करना है नहीं। मेरा ही है'।"

माता कस्तूर बा अपने निश्च बाद ही दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी साथ जेल गईं। तीन महीने की सजा जेल का खाना बहुत ही खराब था। से वह खाना नहीं खाया गया। फल निश्चय किया। जेल-अधिकारियों ने आदि देने से बिलकुल इनकार कर तब बा ने जेल में निश्चय किया मेरे लिए फल का इन्तजाम नहीं में भूखों रहूँगी। यदि मरने की आ जावे तो मर जाने की भी तैयारी ली। जेल-अधिकारियों ने जल्दी कुछ नहीं किया। तीन दिन तक बा भूखी रहीं तब कहीं जेल-अधिकारि उन्हें पांचवें दिन सिर्फ तीन केले 'प्रुन्स', दो टमाटर और दो नीबू देने तीन महीने तक आधे पेट रहकर की सजा पूरी की। तीन महीने के जब 'बा' जेल के दरवाजे से बाहर आ तो बिलकुल हड्डियों का ढांचा भर गई थीं।

दक्षिण अफ्रीका से जब गांधी हिन्दुस्तान वापस आये तब यहां देश में नये इतिहास का जन्म दिया की आबोहवा बदल दिया। लड़ाई का एक नया अध्याय शुरू देश की आजादी के लिए एक

शेष पृष्ठ १६ पर

विशेष कमी— अवसर मत चूकिये—आज ही मंगावें।
३॥) रु० में ६ नई पुस्तकें।
पति-पत्नी जीवन (सचित्र) केवल विवाहितों के पढ़ने योग्य, दाम्पत्य जीवन सुखी सन्तुष्ट बनानेवाली अपूर्व पुस्तक १।), वशीकरण विद्या—अनेकों वशीकरण तथा जादू के खेलों का संग्रह १), सकल सिद्ध—मन चाहा कार्य सिद्ध करना व्यौपारिक तेजी-मन्दी—तेजी-मन्दी का ज्ञान प्राप्त कर हजारों रुपया पैदा कीजिए हिन्दी अँगरेजी शिक्षा—घर बैठे अँगरेजी लिखना, पढ़ना, बोलना सीख लो पैरिस—केवल पति-पत्नी के देखने योग्य १२ फोटो १॥)। ६ पुस्तकों के सेट केवल ३॥), पोस्टेज पैकिंग ॥) अलग।
सन्तोष ट्रेडिंग कम्पनी, पाठक स्ट्रीट, जैगंज (३) अलीगढ़

बापू बिनु सूनो सेवाग्राम

गांधी जी के जीवन की गति-विधि की कीर्ति-भूमि

लेखक, उमाशंकर शुक्ल, वर्धा

गांधी जी ने साबरमती आश्रम छोड़ कर सेवाग्राम बसाया और वहीं निवास करने लगे। देखते-देखते सेवाग्राम भारतीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का केन्द्रस्थल बन गया। पूज्य बापू के स्वर्गवास की खबर पाकर सेवाग्राम के निवासियों पर क्या बीती, इस लेख में लेखक ने बड़ा हृदयद्रावक और करुण वर्णन किया है। लेख महात्मा जी की स्मृतियों से पूर्ण और मार्मिक है।

न जाने गांधी जी के रहते मैं कितनी बार सेवाग्राम गया था, दिन में तो चक्कर लगना साधारण बात थी; कभी-कभी दो-दो और तीन-तीन चक्कर लगाने पड़ते थे। काम ही ऐसा था। फिर संवाददाताओं को तो तनिक भी फुर्सत नहीं मिलती थी। जरा सा चूके कि गये, प्रतिद्वंद्वी हाथ मार दे। हर वक्त सतर्क रहना पड़ता था। सेवाग्राम से खबरें भेजना साधारण बात नहीं थी, लोहे के चने चबाना पड़ते थे। खबर लेकर भागना पड़ता था। सेवाग्राम से वर्धागंज पोस्ट आफिस करीब पांच मील पड़ता है। वर्धागंज आकर तार से खबरें भेजना पड़ता है। किसी दिन अगर बापू का वक्तव्य मिल जाता तो बड़ी खुशी होती—कभी भाषण सुनने को मिल जाता तो उस दिन फिर [illegible]। मैं चूंकि 'यूनायटेड प्रेस आफ इंडिया' का प्रतिनिधि था, इसलिए बड़ी जवाबदारी रहा करती थी और इस बात का बराबर ध्यान रहा करता था कि 'एसोसिएटेड प्रेस' के श्री करंदीकर मुझसे पहले खबरें न भेज दें। बापू जब सेवाग्राम रहते तो बड़ी चहल-पहल रहा करती थी। देश के कोने-कोने से नेतागण बापू से मिलने आया करते थे। कभी किसानों की समस्याओं पर चर्चा करने के लिए प्रो० एन० जी० रंगा आते, तो कभी सरदार वल्लभभाई पटेल। कभी राजा जी दिखाई देते, तो कभी मौलाना अबुल कलाम आजाद। कोई न कोई रोज आता ही। सब नेताओं से घनिष्ठ संपर्क हो गया था, इसलिए समाचार प्राप्त होने में कोई विशेष कठिनाई नहीं मालूम पड़ती थी। राजा जी [illegible] विनोद करते हैं।

सब धर्म एक हैं

गांधी जी गत सत्रह महीनों से सेवाग्राम नहीं थे, मैं कभी कभी बीच में सेवाग्राम चला जाता था, तो देखता था कि वहां की सभी संस्थाएं अपने अपने कार्यों में रत हैं। हिन्दुस्तानी तालीमी संघ में आचार्य आर्यनायकम् अपने काम में व्यस्त तो जाजूजी चर्खा-संघ के काम में व्यस्त। प्रो० भंसाली गांव को सुधारने में ही लगे रहते और प्रभाकर जी तो कस्तूरबा दवाखाने में ग्रामीणों को दवाई देने में लगे रहते। यहां के सब काम की रिपोर्ट बापू के पास बराबर पहुँचा करती थी। ३ फरवरी को बापू वर्धा आनेवाले थे, पर बीच में ही वे हमारे बीच से उठ गये। किसी पापी ने उनकी हत्या कर दी। बापू के वियोग से आज सारा राष्ट्र ही नहीं किन्तु सारा विश्व रो रहा है। मानवता के पुजारी बापू की हत्या की कल्पना कभी स्वप्न में भी नहीं की गई थी। बापू अब वहां चले गये हैं जहां से कोई वापस नहीं आता। वे तो चले गये, भगवान् ने उन्हें अपने पास बुला लिया और उस स्थान में उनके प्राण गये जहां पर कि वे रोज सायंकाल प्रार्थना करते थे। हमें कोई चाहे कितना भी धीरज क्यों न दे, गीता के श्लोक क्यों न कहे पर सांत्वना नहीं होती। बापू के महाप्रयाण से सारे संसार का एक महापुरुष उठ गया है। एक ऐसा महापुरुष जो जीवन भर सत्य, अहिंसा व प्रेम का संदेश मानव-मात्र को देता रहा, जिसकी दृष्टि में मानव मानव सब एक थे। दूसरों की सेवा करना जिसका जीवन-व्रत था। वही महात्मा, वही युगपुरुष आज गोली का शिकार होता है। ईसा मसीह को उनके विरोधियों ने फांसी पर लटकाकर निर्दयता के साथ मारा—पर ईसा आज अमर हैं। ईसा-धर्म आज आदर की दृष्टि से देखा जाता है। गांधीजी की हत्या भी ईसा सदृश घटना है। ईसा, महावीर, बुद्ध, जरथुस्त, महम्मद सदृश ईश्वर-पुत्र शताब्दियों में होते हैं। गांधीजी युगपुरुष थे। दूसरों ने तो अपने अपने धर्म चलाये—गांधीजी ने कोई नया धर्म नहीं चलाया। उन्होंने हमें यह सिखाया कि सब धर्म एक हैं। इसलिए हम उन्हें सच्चे अर्थों में सर्वमत समन्वयाचार्य कह सकते हैं।

गम्भीर वातावरण

पांच फरवरी ४८ को मैं सेवाग्राम गया। जाते समय न जाने कितने प्रकार के विचार मस्तिष्क में आते और विलीन हो जाते। न जाने पिछली कितनी स्मृतियां आतीं और हृदय को भारी कर देतीं। आंखें अपना काम कर रही थीं। सोचता, क्यों जा रहा हूँ सेवाग्राम। क्या धरा है अब वहां। जिसके लिए दिन भर में तीन बार जाता था—वह तो अब नहीं है। सायंकाल आगे बढ़ते भय खाती थी। आंखों में आंसू और हृदय में भारीपन लिये हुए मैं उतरे हुए चेहरे के साथ सेवाग्राम पहुँचा। देखा सब ओर शांति ही शांति दिखाई दी। यहां तक कि निर्मल पवन भी चुपके चुपके बह रहा था, पेड़ों की पत्तियां चुपचाप बिना हिले-डुले दिखाई दीं। पेड़ मौन थे। वहां का वातावरण देखकर दिल कांप उठा। प्रथमतः हिन्दुस्तानी तालीमी संघ के कार्यालय पहुँचा। सब कार्यकर्त्ता शांति के साथ अपना कार्य कर रहे थे। पहले मुझे देखकर सब हंसते हुए बातें करते थे, पर आज उनकी हंसी छिन गई थी। वे गमगीन दिखाई दिये। आर्यनायकम् जी के बारे में पूछा कि वे कहां हैं तो एक भाई ने जवाब दिया—चर्खा चला रहे हैं। मैं बढ़ा।

न कोई चहल-पहल और न वातावरण में कोई रौनक ही। सब सुस्त दिखाई दिये। और ऐसा स्वाभाविक भी था। नीलगिरि के वृक्ष बापू के वियोग में आंसू बहा रहे थे। सेवाग्राम 'गेस्ट-हाउस' खाली पड़ा था। बापू के खास अतिथि यहीं ठहरते थे। डाक्टर सैयद महमूद यहां करीब दो महीनों तक रहे थे। सामने मश्रूवाला जी की कुटिया भी खाली दिखाई दी। आगे बढ़ा। रुकते-रुकते—गांधी जी के प्राइवेट सेक्रेटरी श्री प्यारेलाल का आफिस एकदम बंद पड़ा था। बापू की कुटिया.....। आंखों में आंसू आ गये। पुरानी स्मृतियां जाग उठीं, न जाने यहां कितनी बार बापू को बैठते देखा था, विनोद करते देखा था, कार्यकर्त्ताओं से घंटों बात-चीत करते देखा था और चर्खा चलाते देखा था। पर आज—आज तो बापू नहीं हैं—उनकी जगह उनकी तसवीर रखी हुई है। कमरे में ईसा की फोटो भी है। बापू ईसा को बहुत चाहते थे और इसलिए उनकी कुटिया में ईसा की फोटो टंगी रहती थी। ॐ भी लिखा रहता था। अब भी वह सब कुछ है सिर्फ बापू नहीं हैं—जो सब कुछ है। राम जब वन को गये थे और अयोध्यावासियों की जो दशा हुई थी, उससे कहीं अधिक दुःख वर्धा व सेवाग्राम-वासियों को ही नहीं सारे—देश को बापू की हत्या से हुआ है। कइयों के तो उनकी हत्या का समाचार सुनकर प्राण निकल गये। उनकी कुटिया के सामने सूत-कताई शुरू थी।

विश्ववंद्य बापू के बिना सेवाग्राम सूना हो गया है।

'सेवाग्राम' स्वयं स्मृति है

यह प्रार्थना-स्थल है—यह पीपल है—यह अशोक है—यह रेत है—सब कुछ वही है पर सब में विराट् परिवर्तन दिखाई दे रहा है। सायं सायं मालूम होता था। सेवाग्राम आज अनाथ है। वह रो रहा है। उसे दुःख इस बात का है कि उसके स्वामी के उसे अंतिम दर्शन न हुए। बापू 'हे राम' के पूर्व कुछ कह न सके।

लंगोटी लपेटे तथा शुभ्र खादी की चादर ओढ़े—ये चमनलाल भाई हैं—आश्रम के मैनेजर सुस्त पड़े हैं। आवाज नहीं निकलती। मैंने पूछा कि क्या बापू की स्मृति में सेवाग्राम में कुछ बनेगा? चमनलाल जी ने कहा कि अभी कुछ तय तो नहीं हुआ है पर, सेवाग्राम तो स्वयं बापू की स्मृति है। इससे बड़ी स्मृति क्या होगी। बापू ने अपने जीवन के बारह वर्ष यहां बिताये हैं।

एक आश्रमवासी ने बताया कि बापू चले गये, वे तो मुक्ति पा गये पर दूसरों को बिलखता छोड़ गये। ईश्वर ने उन्हें काम करने के लिए भेजा था; जब उनका काम हो गया, पुनः अपने पास बुला लिया। अब हमें उनके बताये हुए मार्ग पर चलना है तभी हमारा कल्याण होगा।

बापू के संस्मरण।

मैं जब गांधीजी के वृद्ध भतीजे श्री छगनलाल जी गांधी के पास पहुँचा तो उन्होंने बहुत ही विलाप किया। मैं अपने को न संभाल सका। आश्रम भर में हिन्दू महासभा तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक के कृत्यों के प्रति घृणा प्रकट की गई। श्री छगनलाल भाई ने गांधी जी के संबंध में बहुत से पुराने संस्मरण सुनाये। पाठकों

शेष पृष्ठ १८ पर दाखए

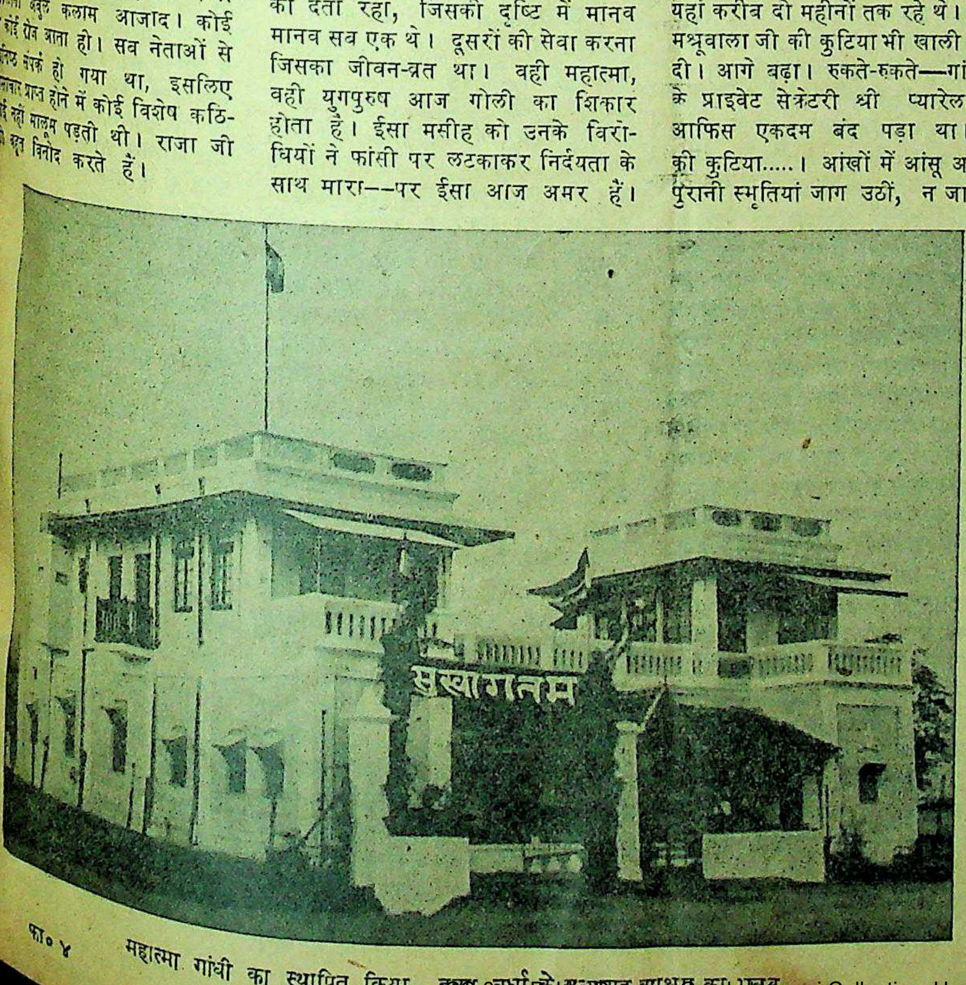

फा० ४ महात्मा गांधी का स्थापित किया [illegible] आश्रम का [illegible]

भारतीय विधान-सम्मेलन

हिन्दी में विधान बनानेवाली समिति के सामने कठिनाइयाँ और उनका हल

लेखक, विधान-परिषद् का एक सदस्य

भारतीय विधान-परिषद् के विधान की नियमावली हिन्दी में बनाने के लिए एक समिति की नियुक्ति की है । समिति के सामने इस समय पारिभाषिक शब्दों के निर्माण में कठिनाइयाँ हो रही हैं । इस लेख में लेखक ने यहाँ उन कठिनाइयों का उल्लेख करते हुए समिति को यह सुझाव दिया है कि पारिभाषिक शब्दों का निर्माण मूल संस्कृत से ही ग्रहण करना श्रेयस्कर होगा, क्योंकि संस्कृत हिन्दी की जननी है लेख विचारणीय तथा जानकारी से पूर्ण है ।

यह बड़ी खुशी की बात है कि संविधान का हिन्दी प्रारूप बनानेवाली समिति ने अपना कार्य पूरे जोर से आरम्भ कर दिया है। इस बात से किसी को इनकार नहीं हो सकता कि देश का विधान ऐसी भाषा में होना चाहिए कि जिसको देश के अधिक से अधिक आदमी समझ सकें। अब तक भारत में जो शासन-व्यवस्था थी उसके विषय में बहुत ही थोड़े लोगों को ज्ञान था और अधिकतर व्यक्ति तो सरकारी अधिकारियों के हाथ में कठपुतली की तरह ही थे। उनको न तो अपने अधिकार का ज्ञान था और न अपने कर्तव्य का; और इसका प्रमुख कारण यही था कि शासन-व्यवस्था एक ऐसी भाषा में लिपिबद्ध थी जिस भाषा को देश के ९९ फी सदी लोग नहीं समझते थे। भारत के स्वतन्त्र होने पर तो यह आवश्यक ही है कि यह व्यवस्था पूर्णतया बदली जाये और देश का प्रत्येक नागरिक अपने अधिकारों और कर्तव्यों को पूर्णतया समझे जिससे कि देश में पंचायती राज्य स्थापित होने में कोई कठिनाई न हो। पंचायती राज्य की सफलता के लिए आवश्यक है कि देश की जनता की सम्मति के अनुसार काम हो और जनता की समिति तभी ठीक हो सकती है जब कि जनता को अपने अधिकारों और कर्तव्यों का पूर्ण ज्ञान हो।

यद्यपि यह आदर्श सर्वमान्य है; परन्तु इसको कार्य में परिणत करना कोई सरल बात नहीं। पहली कठिनाई तो यह है कि भारत के विभिन्न प्रान्तों में विभिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं और इसलिए यह सम्भव नहीं कि किसी एक भाषा में लिखा हुआ विधान सब प्रान्तवाले पूरी तरह से समझ लें। दूसरी कठिनाई यह है कि शासन-विधान में प्रयुक्त होनेवाले बहुत से शब्दों और वाक्यखंडों के लिए भारतीय भाषाओं में समुचित पर्यायवाची शब्द और वाक्यखंड उपलब्ध नहीं हैं। इसलिए यह निश्चय करना बड़ा कठिन हो जाता है कि शासन-विधान में जो शब्द आने चाहिए उनके लिए भारतीय भाषाओं के किन शब्दों का प्रयोग हो। तीसरी कठिनाई यह है कि भारत में बहुत बड़ी संख्या में लोग अभी तक मामूली साहित्य की भाषा भी नहीं समझते और इसलिए उनके लिए शासन-विधान में, प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का समझना तो बहुत ही कठिन होगा। हो सकता है कि किसी भी प्रकार से किसी भी भाषा में बनाया हुआ विधान भारत के बहुसंख्यक लोगों की समझ में न आ सके। कम से कम यह अवस्था आरम्भ के कुछ वर्षों में तो अवश्य होगी। अतः कोई भी समिति जो विधान को भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी में प्रारूपित करेगी, उसको इन कठिनाइयों को ध्यान में रखना होगा और ये ऐसी कठिनाइयां हैं जिनको सुलझाना कोई आसान बात नहीं। इसके अर्थ ये नहीं हैं कि भारतीय भाषा में या राष्ट्रभाषा हिन्दी में विधान बनाया ही न जाये, क्योंकि जैसा पहले कहा जा चुका है यदि भारतवासियों को पंचायती राज्य के सब लाभ पहुँचने हैं तो यह आवश्यक है कि विधान ऐसी भाषा में हो जिसे इस देश के लोग आसानी से समझते हों या समझ सकते हों और यह भाषा केवल वही हो सकती है जो इस देश में पैदा हुई हो और जिसे देश के अधिक से अधिक लोग बरतते हों। थोड़े शब्दों में यह कहा जा सकता है कि विधान को किसी भारतीय भाषा में लिपिबद्ध करना वैसा ही काम है जैसा कि किसी प्रदेश में नई सड़क बनाना। अब तक भारतीय भाषाओं में अधिकतर साहित्य का ही प्राधान्य रहा है, उसमें विधान, शासन तथा दण्ड न्याय के विषयों पर विद्वत्तापूर्ण पुस्तकें नहीं लिखी गईं। वह इसलिए कि अब तक ऐसी पुस्तकों की मांग नहीं थी, क्योंकि इन तीनों बातों में राज्य-भाषा अँगरेजी थी। अतः विद्वानों ने इन विषयों पर जो कुछ कार्य किया वह सब अँगरेजी भाषा ही था। इन विषयों के प्रतिपादन में जो भाषा की शैली होनी चाहिए वह अब तक निश्चित नहीं हो सकी और इस दिशा में यह कहना अनुचित न होगा कि इन विषयों पर लिखने में जिस भाषा का प्रयोग किया जाये उसकी शैली सुदृढ़, सुगठित और ठीक-ठीक अर्थवाली होनी चाहिए, क्योंकि इन विषयों में कल्पना और सौन्दर्य तथा कला के लिए उतना स्थान नहीं जितना कि अर्थ और भाव-स्पष्टता के लिए है। इससे व्यक्त है कि समिति को राष्ट्र-भाषा में एक नई शैली का जन्म देना है, एक नई स्वरूपवाली भाषा बनानी है, ऐसी भाषा जो अधिक से अधिक भारतीय समझ सकें पर जिसमें कानून-सम्बन्धी बातों को व्यक्त करने के लिए आवश्यक ओज तथा यथार्थता बनी रहे।

हमारा विश्वास है कि समिति इस प्रयास में सफल होगी। समिति के चेयरमैन श्री घनश्यामसिंह गुप्त हैं जो मध्यप्रान्त की धारा-सभा के प्रधान हैं और जिनको हिन्दी से अत्यन्त प्रेम है। इन्होंने मध्यप्रान्तीय धारा-सभा में हिन्दी पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग प्रारम्भ भी कर दिया है। यह विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि समिति में कानून की दृष्टि का वह पूरा ध्यान रखेंगे और भाषा को अधिक से अधिक यथार्थबोधिनी बनायेंगे। समिति के दूसरे सदस्य श्री हरिभाऊ जी उपाध्याय हिन्दी के प्रसिद्ध लेखकों और अनुवादकों में से हैं। इन्होंने अँगरेजी की बहुत-सी पुस्तकों का हिन्दी में बड़ा सरल और लोकप्रिय अनुवाद किया है और यह विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि वह इसमें लोकप्रियता की दृष्टि का पूरा ध्यान रखेंगे और विधान की भाषा को अधिक से अधिक लोकप्रिय बनाने का पूरा प्रयास करेंगे। श्री कमलापति तिवारी जो समिति के तीसरे सदस्य हैं हिन्दी-पत्रों के प्रसिद्ध सम्पादकों में से हैं और उनका भी अनुभव समिति के लिए मूल्यवान् होगा। समिति के सदस्यों में डाक्टर रघुवीर जैसे प्रखर विद्वान् हैं जिन्होंने वैज्ञानिक तथा अन्य पारिभाषिक अँगरेजी शब्दों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद करना अपने जीवन का ध्येय बना लिया है और जिन्होंने इस दिशा में बहुत कुछ सफलता भी अब तक प्राप्त की है। अतः इन सब विद्वानों के होते हुए यह आशा की जाती है कि समिति विधान का हिन्दी में जो प्रारूप बनायेगी वह ऐसा होगा कि जो लोकप्रिय भी हो और साथ ही कानूनी दृष्टि से पूरी तरह से ठीक हो।

हिन्दी में संविधान का प्रारूप बनानेवाली समिति के सम्मुख सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि वह पारिभाषिक शब्दों को किस स्रोत से [illegible] अब तक हिन्दी में जो शब्द प्रयुक्त होते हैं वे इतने थोड़े हैं कि उनसे संविधान अथवा विधि में प्रयुक्त होनेवाले अँगरेजी पारिभाषिक शब्दों का हिन्दी पर्याय बनाने के लिए नये शब्द गढ़े जायें अथवा उनके लिए आजकल अँगरेजी में प्रयोग होनेवाले अथवा फारसी या संस्कृत में प्रयोग होनेवाले शब्द काम में लाये जायें। कुछ लोगों का विचार है कि जहां तक पारिभाषिक शब्दों का प्रश्न है उनको उसी रूप में या थोड़ा बदलकर हिन्दी में प्रयोग किया जाये जिसमें कि वे अँगरेजी में प्रयोग होते हैं जैसा कि आम बोलचाल में बहुत से अँगरेजी शब्दों का प्रयोग हो भी रहा है। उदाहरणार्थ—स्कूल, स्टेशन, सिगनल, रेलवे इत्यादि शब्दअँगरेजी के हैं; परन्तु उनका प्रयोग खुले तौर पर हिन्दुस्तानी भाषाओं में होता है। इसी तरह यह कहा जाता है कि राजनैतिक और कानूनी शब्द भी अँगरेजी से हिन्दी में ले लिये जा सकते हैं। संविधान बनाने अथवा कानून बनाने के लिए जो संस्थाएँ किसी देश में होती हैं उनको अँगरेजी में अधिकतर काउन्सिल या एसेम्बली का नाम दिया जाता है और आजकल ये दोनों ही शब्द हिन्दुस्तानी भाषाओं में भी प्रयोग हो रहे हैं और गांववाले भी इन शब्दों का अर्थ अब समझ लेते हैं। ऐसी अवस्था में क्या आवश्यकता है कि इन दोनों शब्द के हिन्दी पर्याय बनाये जायें या सहस्रों वर्ष पहले इस प्रकार की संस्थाओं के लिए प्रयुक्त होनेवाले कोई शब्द ढूंढ़कर निकाले जायें । क्यों न सुगमता से इन्हीं शब्दों को हिन्दी में प्रयोग कर लिया जाये और ऐसे शब्द थोड़े नहीं, पर्याप्त हैं। किन्तु इस विचारधारा के लोग एक बात भूल जाते हैं कि ये अँगरेजी के शब्द बहुत प्रकार के समासों या पदों में प्रयुक्त होते हैं और ऐसी अवस्था में यहँ सम्भव नहीं है कि हर जगह इन्हीं शब्दों से हिन्दी में काम चल जाये। उदाहरणार्थ एसेम्बली शब्द को लीजिये। इस शब्द का प्रयोग अँगरेजी में विधान बनानेवाली एक सभा के साथ होता है। अँगरेजी में इसको लेजिस्लेटिव एसेम्बली कहा जाता है। पर एसेम्बली शब्द का प्रयोग किसी जनता की मीटिंग के लिए भी किया जाता है जैसे कि ताजीरात हिन्द में "अनलवफुल ऐसेम्बली" ऐसी जनता के समूह का नाम है जो कानून से वर्जित कर दिया गया है। अब यदि हिन्दी में एसेम्बली शब्द लिखा जाये तो यह कठिनाई होगी कि इन दोनों शब्दों का ठीक-ठीक विभेद नहीं किया जा सकेगा और बहुधा ऐसा होगा कि एसेम्बली शब्द के प्रयोग से लोगों के मन में भ्रान्ति पैदा हो जायगी। इतना ही नहीं कि समास में इन अँगरेजी शब्दों का प्रयोग हिन्दी में नहीं हो सकेगा, वरन् बहुत से इस शब्द से बननेवाले शब्दों के बनाने में बड़ी कठिनाई होगी। उदाहरणार्थ अँगरेजी का गवर्न शब्द लीजिये। इसका अर्थ है किसी प्रकार का शासन करना। इससे बनते हैं गवर्नमेंट, गवर्नमेंटल, गवर्नर, गवर्निंग गवर्नन्स इत्यादि इत्यादि। यदि अँगरेजी के गवर्नर और गवर्नमेंट शब्द हिन्दी में रखे जायें तो फिर इससे बननेवाले श को हिन्दी में किस प्रकार प्रयोग कि जायगा, क्योंकि वे सब अँगरेजी भाषा व्याकरण के अनुसार बनते हैं और हि व्याकरण अँगरेजी व्याकरण से सर्वथा भि है। यदि इन शब्दों को हिन्दी व्याक के द्वारा बनाया जाये तो बड़े अटपटे हास्यास्पद हो जायेंगे और यदि अँग व्याकरण के अनुसार ही हिन्दी में इन प्रयोग किया जाये तो बोलने और सुन वाले अँगरेजी व्याकरण के पढ़े बिना इन अर्थ नहीं जानेंगे और न वे इनका ठी ठीक प्रयोग कर सकेंगे। इसी तौर अँगरेजी का शब्द फार्म है जिसका हि प्रयोग फारम करके किया जाता है। फौर्म शब्द से अँगरेजी में फौर्मल, फौर्मे फौर्मिंग इत्यादि शब्द बनते हैं और बने हुए शब्दों के लिए हिन्दी में व कठिनाई होगी जो उपर्युक्त गवर्न शब्द बारे में बताई गई है। अतः यह सम्भव कि कानूनी और सांविधानिक भाष अँगरेजी शब्दों का हिन्दी में प्रयोग जाये। तब प्रश्न यह उठता है कि किस स्रोत से ये पारिभाषिक शब्द जाएँ। अब तक न्यायालयों में फारसी भाषा से लिए हुए शब्द प्रयोग किये जा रहे हैं। इसका कारण यही था कि मुग राज्य की भाषा फारसी थी और ईस्ट इंडिया कम्पनी ने जब भारत में अप राज्य स्थापित किया तो उसने न्याया में कुछ समय तक फारसी भाषा को भाषा रखा और जहां तक हिन्दुस्ता का सम्बन्ध था वे अधिकतर फारसी या उससे बने हुए शब्दों का ही न्यायालयों में करते रहे; परन्तु भाषा में भी सांविधानिक पारिभाषि न कुछ के बराबर हैं क्योंकि वर्तमान में जिस प्रकार का संविधान होता है संविधान प्राचीन या मध्यकालीन देश में नहीं था। साथ ही यहां की ज भी अधिकतर फारसी शब्दों का अर्थ नहीं समझती। इसीलिए मुंशी वकीलों का उस पर बड़ा प्रभुत्व रहता

यदि भारत में जनता के स्वतन्त्रता का कुछ अर्थ होना तो यह आवश्यक है कि प्रयुक्त ऐसे हों जिनको जनता थोड़े में पूरी तरह समझने लगे। अतिरिक्त बहुत से फारसी शब्द कि पश्चिमोत्तर भारत और पूर्वी और पश्चिमी संयुक्तप्रान्त में समझ जाते हैं दक्षिणी और पूर्वी भारत बिल्कुल नहीं समझे जा सकते। कारण यह है कि इन स्थानों पर जो भाषा बोली जाती हैं उनमें अब तक संस्कृत शब्दों का बाहुल्य है और ये भाषाएँ बहुत कुछ संस्कृत से ही मिलती-जुलती हैं। यह तक कि कुछ में तो व्याकरण भी संस्कृत के अनुसार ही हैं। अतः यह आवश्य है कि पारिभाषिक शब्द ऐसे हों जिन न केवल उर्दू बोलनेवाले प्रदेश के लोग समझें वरन् वे प्रदेश भी पूर्णतया जहां ऐसी भाषा बोली जाती है संस्कृत शब्दों की प्रधानता है। हमारे विचार में हिन्दी में संविधान प्रारूप बनानेवाली समिति को संस्कृत से ही पारिभाषिक शब्दों के और लेने के अतिरिक्त और कोई .मार्ग है ही नहीं और इसी मार्ग पर से संविधान की भाषा इस तरह सकेगी जिसको कि भारत के अधिक व्यक्ति सुगमता से समझ उदाहरणार्थ गवर्न शब्द को इसको हिन्दी में शासन करना जायगा। गवर्न से उत्पन्न होनेवाले सब शब्दों और समास पदों के लिए से लिए पर्याय बन जायेंगे। जैसे शासित्व, गवर्निंग बड़ी के लिए शा गवर्निंग क्लास शासि वर्ग, गव

शेष पृष्ठ १२ पर

कहानी

रामी

लेखिका, कुमारी पुष्पा विद्यालंकृता

समाज में अच्छे मार्ग पर चलने पर भी कलंकित होना असंभव नहीं। समाज के ठेकेदारों की गृद्धदृष्टि से कोई भलामानुस बच नहीं सकता। रामी भी समाज के ठेकेदारों द्वारा कलंकित होने से न बच सकी। कहानी की लेखिका सुश्री पुष्पा, सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान और नेता प्रोफेसर इंद्र विद्यावाचस्पति की सुपुत्री हैं। आपने इस कहानी में समाज के ठेकेदारों तथा रामी का बड़ा ही करुण, वास्तविकता से पूर्ण तथा हृदयस्पर्शी चित्रण किया है जो प्रभावशाली और पठनीय है।

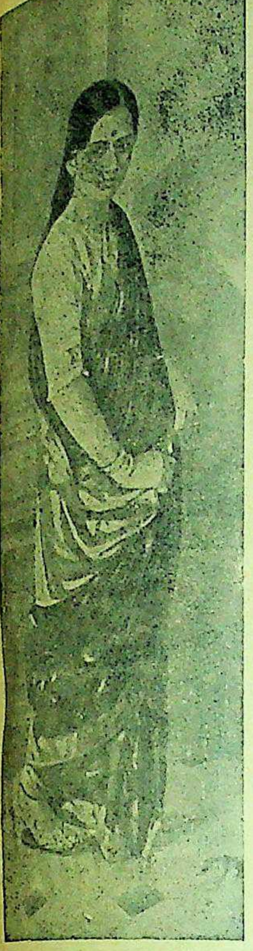

रामी को आखिरकार घर से निकलकर [illegible] करना पड़ा।

"बेटी रामी, चिलम तो गरम कर दे जरा" किवाड़ में से अन्दर को झांककर बाबा नन्दलाल ने जब रामी को न पाया तो पुकारते हुए अन्दर घुस गये। ढूंढते हुए आंगन में जो पहुँचे तो देखा कि कड़कड़ाती हुई सर्दी में केवल धोती से तन लपेटे रामी गाय की सानी कर रही है। सर्दियों के दिन, ऊपर से अभी रात की अंधियारी भी दूर नहीं हुई थी। बाबा ने क्षण भर देखा और फिर जाकर रामी की पीठ पर हाथ रखकर स्नेहसिक्त स्वर में बोले—"रामी, बीमारी के बाद इतने सवेरे उठना चाहिए क्या?

रामी चौंक गई, मानो चोरी पकड़ी गई हो, फिर जल्दी से अपने लज्जा से [illegible] मुख को छिपाने के लिए बाबा के [illegible] के लिए झुक गई।

"जीती रहो बेटी, जीती रहो" नन्दू बाबा गद्गद हो उठे। रामी आंचल [illegible] चुपचाप खड़ी थी। नन्दू [illegible] कुछ कहें, उसे करने को तत्पर; [illegible] चिलम की बात भूल गये, अपनी [illegible] स्वाभाविक हंसी हंसते हुए बोले [illegible] कहा है तुझे, पर तू इस [illegible] बात पर कान ही नहीं देती, मंगतू [illegible] है जब सारा काम तू अपने [illegible]। कमजोर शरीर है उस पर [illegible] मानकर, नहीं तो बीमार पड़ [illegible]

[illegible] सिर नीचा किये अँगूठे से जमीन [illegible] थी, बात पूरी होने पर धीरे [illegible] "यह सब करने की मुझे [illegible]"

"[illegible] तो है, पर बीमारी में करने [illegible] नहीं, समझी। बूढ़े बाबा को [illegible] दिया कर" बाबा आगे बढ़कर [illegible] पीठ थपथपाने लगे। हृष्ट-[illegible] के माथे पर हाथ फेरकर, [illegible] हुए, रामी की ओर देखकर [illegible] से नन्दिनी को तुमने अपने हाथ [illegible] देना शुरू किया है वह कितनी [illegible] हो गई है। और मुझे देखो—

फा० ५

"अपनी आस्तीन चढ़ाने का उपक्रम करते हुए बिलकुल पहलवान हो गया हूँ।"

रामी को नन्दू बाबा की इस क्रिया से हंसी आये बिना न रही। रामी को हँसता देख बाबा भी अपने पोपले मुंह से खिलखिलाकर हंस पड़े।

"मेरी बात सुनकर तू हंसती है और भी सारे गांववाले हंसते हैं। कल यही बात जब मैंने महेश चौधरी से कही तो वह भी हंसा और बोला बड़ी, उमर में पहलवान होने की उमंग हुई है। बाबा, जवानी में घर बसाते तो ठीक था।" मैंने कहा—"जब भी उमंग पूरी हो जाय तभी अच्छा" अपनी ही बात पर वह स्वयं खूब हंसे। सुनती हो, यह सब गांववाले क्या कहते हैं?

दृष्टि उठाकर रामी की ओर देखा तो नन्दू बाबा की बात आधी मुंह में ही रह गई। रामी का चेहरा एकदम सफेद हो गया था मानो एक कतरा भी खून न हो। पैर लड़खड़ा रहे थे, अभी गिरी अभी गिरी। बाबा समझ न सके कि यह क्यों और कैसे हो गया? घबराकर मंगतू को आवाज दी और रामी को आराम करने को कह बाहर को चल दिये।

बाबा की पीठ होते ही रामी एकदम सिर पकड़कर जमीन पर बैठ गई। चकराते हुए सिर को हाथों से दबाने की चेष्टा करने लगी। सारे शरीर की शक्ति मानो किसी ने खींच ली हो। बाबा के मुंह से महेश चौधरी का ताना मानो उसका अन्तःस्थल सा बेधता हुआ चला गया हो। वह न जाने कब तक यों ही बठी रहती, पर उसकी नन्ही मन्नों की आवाज ने उसे भाव-समुद्र से उबार लिया। न जाने कब से पुकार रही होगी? रामी अर्धचेतन अवस्था में ही बिटिया की खाट के पास जा बैठी।

* * *

भरी सर्दी के दिन थे। अभी रामी का अन्धकार भी दूर न हुआ था। हलका कोहरा सारे गांव में छाया था। गांव में निस्तब्धता थी केवल कहीं कहीं से चक्की का खर्र-खर्र सुनाई पड़ता था। कभी कभी बहुत सवेरे उठनेवाले राधिका पंडित का जो गांव में भक्तजी के नाम से प्रसिद्ध हैं, तुलसी-स्तोत्र का उच्च स्वर भी सुनाई पड़ जाता था। हमारे नन्दू भी धर्मपरायण वृद्ध की तरह अँधेरे-अँधेरे उठकर स्नानादि से निवृत्त होकर पूजा-पाठ में लग जाते हैं। निबटकर चिलम की आवश्यकता अनुभव करते हैं। चिलम हाथ में लेकर किवाड़ों के सामने बैठकर सारे गांव का निरीक्षण और आते-जाते से उसके हाल-चाल जानना यह उनका नियम सा बन गया था। रामी भी बाबा की सुविधा के लिए सवेरे-सवेरे उठकर दूध गर्म कर तैयार रखती है कि चिलम लेकर किवाड़ों के बाहर जाने से पहले ही दूध पी लें। आज दूध दुहनेवाले मंगतू को आने में देर हो गई। अतः रामी स्वयं ही वह काम करने लगी।

दुनिया कितनी नीच है, "वहीं बैठे बैठे रामी सोचने लगी। बाबा उसे बेटी कहते हैं और वह भी उन्हें पिता की दृष्टि से देखती है, और इतने वृद्ध और धमपरायण व्यक्ति के ऊपर भी नीचतापूर्ण व्यंग कसने में लोग नहीं चूकते। ग्लानि से, क्रोध से और आशंका से रामी का हृदय भर भर आने लगा।

'बहू जी, दूध ले आया" मंगतू की पुकार से वह उठकर दूध गर्म करने लगी। लकड़ी को चूल्हे में डालते डालते ही वह फिर विचार-धारा में बह गई। अतीत की मधुर और कटु स्मृतियां उसके स्मृतिपटल पर उभर-उभरकर आने लगीं।

अभी महीना भर भी उसे यहां आये नहीं हुआ। अब तो वह बाहर निकलती भी नहीं थे; पर वह क्षण, वह दिन उसे याद हैं जब शहर से लौटकर उसने अपनी झोंपड़ी का दरवाजा आ खोला तो सारे गांव भर ने उसका कैसा स्वागत किया! घर से गुजरती हुई नन्दू कहारी को उसने सरल भाव से आवाज दी तो वह, वह कहारी उसकी ओर थूककर मुंह फेरकर चल दी। रामी का दिल भड़ककर रह गया। सब उसे थू, थू करती हैं। वह पतिता है, नीच है, कुलच्छनी है फिर भी है तो मानस! उसके भी दिल है उसे भी बुरी बात लग सकती है। हरलाल के जाने के बाद जब वह अकेली रह गई तब गांव में से किसी ने न पूछा, जब उसकी सब जमीन पर कब्जा हो गया तब सबने आंख फेर ली, किसी ने फर्याद न सुनी, फिर वह दुखित होकर शहर चली गई तब एकाएक समाज का आसन जोरों से हिल उठा। जिनके कान उसकी फर्याद सुनते समय बन्द थे, बुराई सुनने और करने को सपाट खुल गये।

लकड़ियों के धुंएँ से रामी की आंखें जलने लगीं। उसने उन्हें फूंक मारकर जलाया। वह भभक उठीं, उस पर दूध रख वह फिर ध्यानावस्थित हो गई।

* * *

आज से ६ साल पहले वह इस गांव में पहले-पहल वधू के रूप में आई थी। गांव की सारी स्त्रियां उसे देखने आईं और सब ही ने उसके रूप और गुणों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। उसकी अपनी सास तो थी नहीं, पर उसकी एक दूर की रिश्ते की सास की बात उसे आज भी याद है। उसने मुंह देखकर बलाएं लेते हुए कहा था—इस चांद के टुकड़े को मेरा हरुआ न जाने कैसे आसमान से धरती पर उतार लाया है", गांव की कुछ अन्य वधुओं को देखकर उन्होंने इशारा किया "सारे गांव में अभी तक ऐसी कोई बहू नहीं आई" रामी का हृदय अभिमान से [illegible] बात उसने लजाते हुए हरलाल से कही। सुनकर वह खूब हँसा और चुटकी लेता हुआ बोला—तुझे देखकर बूढ़ी बुआ भी अपना दिल खो बैठी फिर औरों की क्या बिसात!

"चलो, जाने भी दो" ऊपर से गुस्सा दिखाकर अन्दर से खुश होते हुए भी रामी मुस्करा दी थी।

दिन बीतते गये। हरलाल रामी को अपने से भी ज्यादा सँभालता। काम करते देखकर कहता—"तू तो राजमहलों के लायक थी, भला ये तेरे छोटे-छोटे हाथ इन कामों के लिए बने हैं?"

रामी तुनकती "खबरदार जो फिर यह बात कही! क्या यह हमारा राजमहल नहीं है? क्या मैं यहां की रानी नहीं हूँ? हूँ कि नहीं—

हरलाल को "हां" कहना ही पड़ता।

लकड़ियां धधक रही थीं। उनके प्रकाश में उसका छोटा सा सुन्दर मुंह लज्जायुक्त मुस्कराहट से प्रकाशमान हो दीख रहा था।

दिन बीतते गये। दोनों सुख के हिंडोले पर झूलते हुए सारी दुनिया भूल गये। नन्हीं मन्नो उनके जीवन में बहार बनकर आ गई। उसकी किलकारियों से रामी की महकती बगिया खिल उठी। वह अपने भाग्य पर फूली न समाती। ४ वर्ष ४ क्षण से बीत गये और तब एक दिन—

उसने मुंह पर आई हुई लटों को झटके से पीछे फेंक दिया।

और तब एक दिन हरलाल जो शहर गया तो लौटकर न आया। रामी की धोती और मन्नो की रंगीन कमीज की फर्माइश लेकर गया था। शहर की भीड़ में मोटर के नीचे आ गया। रामी ने सुना तो धक् से रह गई। विश्वास न हुआ पर कहां तक विश्वास न करती। मन्नो के सिवाय और उसका सहारा भी कौन था? हरलाल के मरते ही थोड़ी बहुत जो जमीन थी उसको लेकर मुकदमे शुरू हो गये। रामी क्या करती—जो सहारा था वह भी गया। वह रोई, चिल्लाई, सारे गांव के बुजुर्गों के पास फर्याद लेकर पहुँची, पर किसी न न सुनी। सब तरफ से निराश होकर वह अभागिन अपने एकमात्र सजीव धन को आंचल में छिपाकर दिन काटने लगी।

किसी तरह छः महीने कटे, शान्तिपूर्वक कटे और फिर एक दिन उसके जीवन में हलचल मचगई। रघुपति शहर में किसी मिल नौकर था। गांव में छुट्टियों में, जो आया तो सुना रामी विधवा हो गई। देवर के सम्बन्ध से उसे सान्त्वना देने पहुँच गया। उसकी बातों में रामी अपने को भूल गई। उसके सुनहरे फन्दे में वह स्नेह-पिपासु और भोली ग्राम-वधू फंसती गई। शहर की रंगीनियां, सहारे की आकांक्षा, सम्बन्धियों का दुरव्यवहार और रघुपति का बढ़ावा, सब उसे शहर की ओर खींच ले गये। मन्नो को गोदी में सँभाल, रघुपति का हाथ थाम वह एक रात को शहर के लिए चल ही दी। उसका इसमें दोष भी क्या था? निराश्रय आश्रय चाहता ही है।

रामी ने ऊँची सांस ली, आंचल सँभालकर सचेत हो बैठ गई, मानो अपने इस भार को या पाप को सिर से उतार चुकी हो।

शुरू शुरू में शहर की ऊपरी चमक-दमक ने उसे प्रभावित किया, ज्यों ज्यों दिन बीतते गये शहर का जीवन उसके लिए दूभर हो गया। कहां गांव की खुली हवा, कहां शहर की बन्द हवा में छोटी सी गन्दी सी कोठरी में दिन-रात बन्द रहना। तिस पर ज्यों ज्यों समय बीतता गया रघुपति का असली रूप भी स्पष्ट होता गया। खर्च की तंगी रहते हुए भी जब

रघुपति शनिवार की रात को नशे में मदहोश घर लौटता तो रामी का पारा चढ़ जाता। लड़ती, ताने देती और बस न चलने पर रोती, चिल्लाती भी पर रोग बढ़ता ही गया, पहले रामी का आकर्षण उसे नर्म व्यवहार के लिए बाधित करता था पर अब रामी उसके लिए भार हो गई। एक दिन शराब पीकर उसने रामी और मन्ना को मारा, रामी अपना दुःख सह सकती है, पर मन्नो के आंसू उसके लिए असह्य हैं। अगले ही दिन रघुपति के काम पर जाने के बाद गोद में मन्नो को सँभालकर वह अपने चिर-परिचित घर को चल पड़ी। गांव पहुँच तो गई, पर गांव में किसी ने उसका स्वागत न किया। सबने उसे दुरदुराया, क्योंकि वह अब किसी भी सद्गृहस्थ से मिलने-जुलने योग्य न रही थी। खाने-कपड़े का अधिकार वह खो चुकी थी; अतः दाने-दाने को तरसने लगी। दो-चार जो चांदी के गहने थे गिरवीं रख काम चलाती रही, पर आखिर कब तक? किसी के आगे हाथ पसारना उसने सीखा न था, चोरी वह कर नहीं सकती, गांव भर में कोई सहायता देना तो दूर शकल देखना भी पसन्द नहीं करता, अब वह करती तो क्या? स्वयं भूखी रहकर मन्नो को खिलाती रही आखिर अन्न का एक दाना भी घर में न रहा और मन्नो के उपवास का तीसरा दिन आ गया, बच्ची की फूल-सी देह कुम्हलाकर बिखर पड़ी। बेहोश कन्नो को गोदी में लिये वह घंटों रोती रही, वह क्षण भर को आंख खोलती और कहती "मां, रोती" पर मां के अनवरत आंसुओं और चुप्पी को देख फिर आंख बन्द कर लेती। उसके जीवन का आशादीप बुझने को है और वह आंसुओं को बहाने के सिवाय कुछ नहीं कर सकती। इसी तरह रात को १२ बज गये। एकाएक रामी के दिमाग में आशा की किरण उदय हुई, सोचा इस अँधियारी में जाकर किसी के खेत से दो-चार भुट्टे तोड़ लाये। मन्नो को गोदी में लिये, वह धीमे से झोंपड़ी से बाहर आ गई। काली रात थी, चारों ओर सुनसान था। रामी आहट लेकर आगे बढ़ी। सात-आठ दिन के उपवास से रामी की अशक्त देह और भी अशक्त हो गई थी। ज्यों ज्यों वह अपने लड़खड़ाते कदम आगे रखती, त्यों त्यों उसकी संज्ञा लुप्त सी हुई जा रही थी। आंखों के आगे अँधेरा छा रहा था, उसने लौटना चाहा, लौट न सकी। एकाएक उसके दिमाग में बिजली सी चमकी--उसे लगा उसकी मन्नो को कोई उससे छीन रहा है उसने जोर से चीख मारी और संज्ञाहीन होकर गिर पड़ी।

रामी की आंख से आंसू की धारा बह रही थी, उसे उसने आंचल से पोंछ डाला। उसकी आंखें एकदम आग की ज्वलन्त ज्वालाओं को निहार रही थीं।

सवेरे जब उसे होश आया वह इसी घर में चारपाई पर पड़ी थी और नन्दू बाबा की सदा प्रफुल्लित आंखें कुछ चिन्तित भाव से उसकी ओर देख रही थीं। बिजली की गति से सारी रात की घटना उसके दिमाग में आई, पूछा—"मन्नो कहां है?"

"वह सो रही है" बाबा ने खुश होते हुए कहा। "दिखा दो" मन्नो को देखकर उसके श्वास-प्रश्वासों को देखकर रामी को विश्वास हो गया कि उसके प्राण बच गये।

नन्दू के स्नेहच्छाया के नीचे रामी और मन्नो फिर से लहलहा उठीं। मन्नो तो बाबा के बिना क्षण भर भी न रहती, दिन भर बाबा की बातें सुनना चाहती पर रामी उसे पकड़कर रोक लेती--समझती "कहीं बाबा गुस्सा न हो जायें?"

एक दिन किसी दोष पर रामी ने मन्नो को एक थप्पड़ मार दिया। मन्नो भागकर बाबा के पास फर्याद लेकर पहुँच गई। थोड़ी देर बाद नन्दू बाबा जब मन्नो को गोद में लेकर अन्दर आये तो रामी साग बीन रही थी--देखकर आंचल ठीक करती हुई उठ खड़ी हुई—बाबा ने उसी तरह मन्नो को गोदी में लिये कहा—देखो बेटी, हमारी अदालत में मन्नो ने फर्याद की है--कहो तो, तुमने उसे क्यों मारा?

रामी एक असीम सुख का अनुभव करती हुई मुस्करा पड़ी। बोली--"यह कोई काम नहीं करने देती बाबा जी, गोद में लिए कहां तक बैठी रहूँ?

हो, हो, यह बात है, अरी मन्नो जब तेरा गोद में बैठने को दिल करे तो मेरे पास आ जाया कर।" बाबा खिलखिला पड़े।

मन्नो ने बाबा के गले में बाहें डाल दीं "तुम बोत अच्छे हो बाबा, ओं अम्मा बुई" दोनों हंस पड़े। नन्दू खुश था, रामी खुश थी, मन्नो खुश थी पर बिरादरी में शोक के बादल छा गये थे। उनकी दृष्टि में नन्दू ने पाप, बड़ा भारी पाप किया कि एक पतिता विधवा की जीवन-रक्षा की। नन्दू ने इन आलोचनाओं को सुना और हंस दिया। गांव के मुखिया के सचेत करने पर वह कुछ क्रुद्ध हो उठा, बोला--जो जी में आये करो, इतनी हिम्मत! बिरादरी में हलचल मच गई।

उसके बाद जो हुआ कल्पनातीत था। गांववालों की सैकड़ों की धमकियों के बाद भी नन्दू ने रामी को घर से न जाने दिया। यही कहते रहे कि पहले इस दुखिया के खाने का, कपड़े का सब गांववाले इन्तजाम कर दो तब ही यह बात मुंह से निकालना। रामी ने बहुत समझाय। "बाबा, मेरे कारण तुम्हारी बदनामी हो रही है मुझे जाने दो।"

क्षण भर के लिए बाबा के हंसते चेहरे पर विषाद छा गया बोले—"तुझे मैंने बेटी समझा है। तू आई घर में, मैंने समझा घर बन गया। अब तू ऐसा कहेगी तो मेरा दिल दुखेगा। दुनिया से डरती है? दुनिया तो सदा ऐसा ही कहती आई है, उन्हें कहने दे। पर अब तू मुंह से मत कहना" रामी की आंखों में आंसू भर आए। देवता-स्वरूप पिता को उसने हृदय ही हृदय में प्रणाम किया। वह कुछ आगे न कह सकी पर गांव में कुहराम मच गया। लोगों ने, गांव के मुखिया ने नन्दू को [illegible] समझाया पर वह टस से मस न हुआ। आखिर बिरादरी ने एकमत होकर निर्णय दिया कि एक सप्ताह में या तो रामी को घर से निकालकर प्रायश्चित्त करो या बिरादरी से निकाल दिया जायगा। यह निर्णय सुनकर बाबा ने स्वयं गांव में निकलना बन्द कर दिया। किसी से बात भी नहीं करते घर में ही हुक्का गुड़गुड़ाते रहते हैं। कहते हैं "अब मेरे भजन-पूजन के दिन हैं दुनियां से क्या नाता? पर क्या वह जानती नहीं कि इन ६ दिनों में नन्दू बाबा कितने ज्यादा बूढ़े और कमजोर दीखने लगे हैं। मुंह पर चिन्ता की रेखाएं उभर आई हैं, न बातों में पहला सा उत्साह है न उमंग! और इन सबका एकमात्र कारण है वह स्वयं अभागिन रामी! जिसने उसके दुःख में भगवान् की तरह आकर उसकी मदद की, जिसने मन्नो के प्राण बचाए उनके ही सुख में, शान्ति में वह काल बन गई। वह कितनी नीच है कितनी स्वार्थी! आज छठा दिन है, आखिरी दिन। इसके बाद नन्दू बाबा को बचाने का कोई भी रास्ता न रहेगा। वह निरसहाय है, मन्नो को लेकर कहां चली जाय? कहीं भी तो उसके लिए आश्रय नहीं है। आश्रय नहीं है? इस आकाश की छाया में, पृथ्वी की गोद में सबके लिए आश्रय है। वह भी ऐसा ही आश्रय ढूंढेगी, और इस विशाल हृदय को कष्ट से छुटकारा देगी।

रामी ने अपने दोनों हाथों से माथे को जोर जोर से दबाया और फिर एकाग्र हो उफनने को तैयार दूध को देखने लगी। दूध उफना, दिन निकल आया, रामी ने बाहर दृष्टि डाली, उसकी नन्हीं मन्नो अपने नन्हें हाथों को फैलाये उसकी ओर आने की चेष्टा कर रही थी, रामी के मुंह पर विषादयुक्त मुस्कराहट फैल गई।

* * *

रोज की तरह जब दूध की बटलोई लेकर मंगतू चौके में पहुँचा तो चूल्हा ठंडा पाया। बहू जी की लापरवाही पर मुस्कराता बाहर आया और पुकारा। कोई उत्तर न पा कोठरी के दरवाजे पर पहुँचा, वह खाली थी। चारों तरफ देखा रामी का निशान भी न पाया। घबराया हुआ नन्दू के पास पहुँचा। बाबा स्नानादि से निबट पूजा के लिए तत्पर थे। सुनकर आशंका से उनका दिल धड़कने लगा। रामी तो कभी भी घर से बाहर पैर नहीं रखती? रामी की कोठरी खाली थी, केवल चारपाई पर नन्हीं मन्नो स्वप्नों में मुस्करा रही थी। राम्मी का शरीर गया पर आत्मा वहीं थी। बाबा ने पागलों की भांति घर का कोना कोना छान डाला पर रामी न मिलनी थी न मिली। आखिर थककर दालान में सिर पर हाथ रखकर बैठ गये। हृदय की वेदना आंखों से आंसुओं के रूप में बहने लगी। एकाएक उन्हें होश आया, मन्नो की कमलनाल सी बाहें उसकी पीठ पर से होती हुई उसके गले में पड़ गईं। नन्दू चौंका, जल्दी से हंसने का विफल प्रयास करते हुए उसने गोद में उठा लिया, पर आंसू बच्ची से छिपे न रहे, पूछा--बाबा, लोते हो?

"नहीं तो मेरी बिटिया!" आंसुओं को कुरते की बांह से पोंछकर बाबा हंसने का उपक्रम करने लगे। "बाबा, भूख लगी है, मां कहां है?"

बाबा की आंखें फिर भर आईं—"बेटी तेरी चिज्जी ले नेगई है।"

"इतनी साई न बाबा?" आंखें मटकाकर, हाथों को पूरा फैलाकर मन्नो ने प्रश्न किया।

हवा के शीतल झोंके से मन्नो के कोमल बाल उसके सुन्दर मुंह पर फैल गये। सर्दी से ठिठुरकर वह बाबा की गोद में दुबक गई। नन्दू ने एक बार प्राची के रक्तिम प्रकाश को देखा और फिर मन्नो को छाती से चिपटाकर सिसक पड़े।

रामी चली गई और फिर कभी न लौटी। नन्दू बाबा का जीवनप्राण मन्नो हो गई। कभी गोद में, कभी पीठ पर कभी उंगली पकड़े सदा वह खिलखिलाती बाबा के साथ रहती। बाबा का सब पूजा-पाठ धरा रह गया, कहते यही मेरा ध्यान यही मेरी पूजा। गांववाले पीछे उसे [illegible] कहते हैं, पागल बतलाते हैं, पर वह पागलपन में मस्त है, खुश है।

[illegible]
[illegible]
१८६६
नीलगिरि तेल
[illegible]
मो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयां—
क्रीमोला टाफी फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रताओं के यहाँ मिलता हैं:—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

सपरिहास

भङ्ग की तरङ्ग

पत्रकार का कहना है कि भारत- अपना व्यय कम करे। प्रधान के संबंध में तो कहा जाता है कि कोई पैसे की आवश्यकता और लोगों की क्या अवस्था है ही जा सकता।

* *

व्यवस्था की जाय कि मंत्रि- में ऐसे ही लोग हों जिन्हें न बीवी न बाल-बच्चे तो सरकार का व्यय कम हो जाय।

* *

सुना जाता है कि सत्तानबे गांव कर वृहतर लखनऊ का निर्माण । जमींदारी के साथ क्या गांव भी लिये जायेंगे?

* *

नया लखनऊ बसे तब एक चक के लिए होनी चाहिए। की जमींदारियां छीन ली गई जहां पुरातत्व विभाग के लोग करने आ सकें, इसका प्रबंध होना हिए।

* *

प्रयाग के कुछ मुसलमानों ने कायदे आज़म के पास तार भेजा है कि प्रांतों में मुसलमानों की जो हुई है उसके लिए रिजर्व बैंक से में से आधा भेजें। आप यह नहीं कहते कि कायदे आज़म फकीरी ने हैं।

* *

लोगों का कहना है कि प्रयाग पर सरकार की शनि दृष्टि पड़ रही है। वासियों को संतोष होना चाहिए कि केवल शनि की दृष्टि है राहु की नहीं, नहीं तो वालों को कठिनाई होती।

* *

बी० टी० आर० में बिना टिकट के पकड़े जा रहे हैं। यह यात्रियों का दोष नहीं है। बहुत से लोगों को सचमुच आश्चर्य हो रहा है कि छोटी लाइन में भी टिकट लिये जाते हैं!

* * *

कर्नाटक, प्रान्तवाले भी नया प्रान्त बनाना चाहते हैं। देखें इस प्रकार का नाटक कब तक चलता है?

* * *

कम्युनिस्ट पार्टी कहती है कि भारत की राष्ट्रभाषा उर्दू होनी चाहिए। शायद स्टालिन के हाथ में कम्युनिस्ट पार्टी की अगाड़ी है और कायदे आज़म के हाथ में पिछाड़ी।

* * *

एक समाचार है कि कागज का पारसल एक वैगन में बंबई के लिए लादा गया और पहुँचा गोरखपुर। इसमें आश्चर्य क्या, बाबा गोरखनाथ की कृपा है। छोटी लाइन हेडक्वार्टर यों ही गोरखपुर में नहीं बना है।

* * *

वहीं के एक महोदय शिकायत करते हैं कि मैंने शराब का पारसल मंगवाया और खोलने पर बोतलों में विशुद्ध जल निकला। यह भी साधारण समझने की बात है। गोरखनाथ के धाम में शराब कैसे जा सकती है?

* * *

कानपुर में नेता जी की जयंती के अवसर पर गोलियां चलीं। नेता जी की सभा का सम्मान गोलियों द्वारा ही हो सकता है। वह वीर सेनानी थे।

* * *

केंद्रीय सरकार शरणार्थियों पर दस लाख रुपये प्रतिदिन खर्च कर रही है। शरणार्थी स्वयं अपने ऊपर कितना खर्च कर रहे हैं यह भी देखना चाहिए। इससे कम रकम न होगी।

* * *

रक्षा-मंत्री सरदार बलदेवसिंह कहते हैं पाकिस्तान को लड़ना हो तो आमने-सामने लड़े। जो कार्य जिसने सीखा नहीं उससे वह कार्य कराना अन्याय है।

—अगड़धत्त शर्मा

गीत

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

शारदे आज यह वर दे!
नैनों से भी तीखी तर हो,
शिशुओं सी सर्वथा निडर हो,
व्यंग-विनोद हास का घर हो,
तुझ-सी ही हे देवि अमर हो।
इस निब वाली को मैं जैसा चाहूँ—वैसा कर दे।
इसमें रंग भरा हो काला,
किन्तु जगत में करे उजाला,
जहां बनज हो रोने वाला,
वहां गिरे यह बनकर पाला,
फाड़े यह पाषंड दंभ के तने हुए जो परदे।
जैसी टेढ़ी अलकें काली,
मानों ऐंठी कोई व्याली,
हो यह टेढ़े शब्दों वाली,
किन्तु नहीं हो विष की प्याली,
इससे सुधा बूंद बरसा अधरों पर सबके धर दे।
भरा रहे रत्नाकर इसमें,
रस का भर दे सागर इसमें,
पायें लोग चराचर इसमें,
मस्ती के हों आखर इसमें,
जग को कर दे मादक इसमें वह मादकता भर दे।
चूमे क्षितिज और अंबर को,
नक्षत्रों के लोक अमर को,
करे पराजित यह निर्झर को,
छू ले मानव के अन्तर को,
उड़े कल्पना के समीर पर इसको ऐसे पर दे।

स्वास्थ्य और व्यायाम

अमरूद

सुन्दर स्वास्थ्य तथा पेट के लिए श्रेष्ठ फल

लेखक, श्री सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव

अंगूर, सेब अनार आदि फल अत्यन्त पौष्टिक होते हैं। डाक्टर लोग राय देते हैं कि यह फल स्वास्थ्य बनाये रखने के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं। अंगरेजी में एक कहावत भी है, "नित्य एक सेब खाओ डाक्टर को दूर भगाओ।" पर जिस व्यक्ति के पास पर्याप्त धन नहीं है वह क्या करे? संसार का प्रत्येक व्यक्ति धनवान् ही नहीं है। यद्यपि काश्मीर में अंगूर और सेब आठ आने सेर मिलता है पर हमारे प्रान्त में तो यह धनवानों ही के योग्य समझा जाता है। स्वयं ही सोचिए कि क्या आपने कभी किसी गरीब को सेब, अनार, संतरा या अंगूर खाते हुए देखा है? पर आपको अमरूद खानेवाले भाई तो बहुत ही मिलेंगे।

यों तो अमरूद भारतवर्ष के प्रत्येक भाग में पाया जाता है परन्तु सिन्ध-घोलक तथा इलाहाबाद के अमरूद प्रसिद्ध हैं। इलाहाबाद में भी बभक्कर-पुर, बख्तियारपुर, खुसरूबाग आदि बागों के अमरूदों की अधिक मांग है।

अमरूद के पेड़ बड़े आसानी से लगाये जा सकते हैं। दूसरे फलों के समान इसके लिए किसी विशेष प्रकार की मिट्टी अथवा वातावरण की आवश्यकता नहीं पड़ती। इसके लिए अधिक तरी की भी आवश्यकता नहीं पड़ती। आस-पास पानी दे देने से अमरूद के पेड़ संतुष्ट हो जाते हैं इसलिए पेड़ के चारों ओर लोग थाला बांध देते हैं।

यदि सतर्कता से काम लिया जाय तो पथरीली मिट्टी में भी अमरूद पैदा किया जा सकता है। यदि खराब मिट्टी में थोड़ी खाद डाल दी जाय तो पेड़ अमरूदों के मारे खिल उठेंगे। पेड़ लगाने के पश्चात् लगभग तीन वर्ष में फल लगने लगते हैं। यह आवश्यक नहीं कि बीज ही से पेड़ बोये जायँ। इसकी डाल पृथ्वी में लगा देने से ही अमरूद का बाग खड़ा किया जा सकता है। कुछ लोगों को शंका थी कि कलम द्वारा लगाये हुए पेड़ों के फल उतने वजनदार और स्वादिष्ट नहीं होते जितना कि बीज से लगाये हुए पेड़ों के फल होते हैं। पर बम्बई सरकार के विशेषज्ञ डाक्टर चीमा ने प्रमाणित कर दिया है कि इसके विषय में संदेहात्मक धारणा सर्वथा निर्मूल है।

अमरूद की लकड़ी बड़ी कठोर होती है जिससे कि कीड़े-मकोड़े इसकी डाल को हानि पहुँचाने में सर्वथा असमर्थ होते हैं। परन्तु इसके फल मुलायम और स्वादिष्ट होते हैं इसलिए तोते तथा अन्य पक्षी इसे बहुत हानि पहुँचाते हैं।

अमरूद की कई जातियां होती हैं। इलाहाबाद का सफेदा अमरूद बहुत प्रसिद्ध है, क्योंकि इसका गूदा अत्यन्त मुलायम होता है। इसमें बीज भी बहुत कम होते हैं। अधिक बीजवाले अमरूद को खानेवाले कम पसन्द करते हैं। अमरूद लाल किस्म का भी होता है, पर वह स्वादिष्ट नहीं होता।

निम्नांकित तालिका में अमरूद तथा अन्य कुछ फलों में वर्तमान प्रोटीन, बसा (fat) और कार्बोज (Carbohydrate) की मात्रा दिखलाई गई है। साथ ही यह भी दिखलाया गया है कि एक छटांक फल में कितनी उष्णता की आशा की जा सकती है तथा कौन फल किस विटामिन में कितना प्रचुर है :—

ल	कार्बोज %	प्रोटीन %	चर्बी %	एक छटांक में मिलनेवाली गर्मी में	विटामिन ए	विटामिन बी	विटामिन सी
सेब	१२·१	·४	·२	३२	कुछ	कुछ	काफी
केला	१९·८	१·०	·५	५०	कम	"	कुछ
नाशपाती	१२·७	·३	·२	२०	×	"	"
अमरूद	७·६	१·२	·७	२४	कुछ	"	"
लीची	६·३	·८	·२	२०	"	"	"
तरबूज	६·३	·४	·२	१८	×	×	"
ककड़ी	३·०	·६	·१	६	×	काफी	"

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अमरूद सेब और केले को छोड़कर बाकी सब फलों से कहीं उच्च स्थान रखता है। यदि नीबू, संतरा आदि फल भी इसी में सम्मिलित कर लिये जायँ तो इसी दृष्टिकोण से यही हाल रहेगा। परन्तु नीबू आदि में आम्ल विशेष (Ciric acid) और विटामिन सी की अधिकता के कारण उसके गुण, पाचन-शक्ति स्कर्वी की बीमारी से दूर करने व दांतों और मसूढ़ों की रक्षा करने के सम्बन्ध में अधिक बढ़ जाता है।

अमरूद का प्रोटीन अन्य फलों की भांति मध्यम श्रेणी का होता है। अमरूद के विटामिन ए व बी बसा (fat) को पचाने में सहायता देते हैं। विटामिन सी के कारण अमरूद मंदाग्नि, अनपच आदि रोगों में वर्जित नहीं। विटामिन सी से रक्त शुद्ध होता है। यह आंतों को पुष्ट और संक्रामक रोगों को रोकने के काम में सहायता पहुँचाता है।

जिन व्यक्तियों को कब्ज होता हो उन्हें चाहिए कि अमरूद खाने के पश्चात् थोड़ा दूध पी लें। अन्दर जाकर पेट में थोड़े समय तक गड़गड़ाहट होती है और फिर पाखाना साफ होता है। इसके गूदे में मोटे अणु तथा कड़े बीज होते हैं जो कि पेट को साफ करता हुआ शीघ्र नीचे बढ़ जाता है। यदि अमरूद सुबह ही खा लिया जाय तो यह शीघ्र ही बिना लाभ पहुँचाये पखाने द्वारा निकल जायगा। खाना खाने के घंटे दो घंटे पश्चात् इसे खाया जाय तो अधिक लाभ होने की सम्भावना रहती है। हरे गदरे अमरूद में लोह का लाभप्रद अंश अधिक रहता है। पक जाने पर यह गुण कम हो जाता है। इसलिए जो अमरूद खाया जाय वह बहुत पका न हो और गदरा हो तो और ही अच्छा है।

गुदड़ी के लाल

इस पुस्तक की कहानियाँ बहुत ही सरल और रोचक भाषा में लिखी गई हैं। इनको पढ़कर बच्चे बेहद खुश होते हैं। ऐसी पुस्तक अपने बच्चों को जरूर दीजिए। मूल्य ||)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

भारतीय विधान-सम्मेलन

(पेज ८ का शेष)

लिए शासन, गवर्नर के लिए शासक, डिप्टी गवर्नर के लिए प्रतिशासक, लोकल सेल्फ गवर्नमेंट के लिए स्थानीय स्वशासन इत्यादि इत्यादि। हमें विश्वास है कि समिति इस बात का विचार रखेगी और उपर्युक्त कारणों को ध्यान म रखकर अँगरेजी शब्दों के हिन्दी में पर्याय केवल संस्कृत से ही लेगी या बनायगी। इसका एक लाभ यह भी होगा कि भारतीय सभ्यता की टूटी शृंखलाएँ पुनः जुड़ जायेंगी। मध्यकालीन और अँगरेजी राज्य में भारत की जनता अपनी सामाजिक और राजनतिक व्यवस्था को सर्वथा भूल चुकी थी वह ऐसा करने से उससे पुनः परिचित हो जायगी। इसम किसी धर्म का प्रश्न नहीं है, क्योंकि किसी भी धर्म को किसी भी भाषा में बताया जा सकता ह और उसका प्रचार किया जा सकता ह। कुछ लोगों का विचार है कि हिन्दुस्तानी मुसलमानों को ऐसी भाषा के समझने और पढ़ने में बहुत कठिनाई होगी। इस विचार से वे लोग कहते हैं कि मुसलमानों का ध्यान रखकर हिन्दुस्तान म जो राज्य की भाषा बने उसमें लगभग ५० प्रतिशत शब्द फारसी भाषा से या अरबी भाषा से ले लिए जायें जिससे हिन्दुओं को मसलमानों की संस्कृति के विषय में भी कुछ ज्ञान हो जाय और मुसलमानों का यह विचार कि राज्य में उनकी संस्कृति और भाषा का कुछ ध्यान नहीं किया जा रहा है, दूर हो जाये। परन्तु यह विचार एक भ्रम पर आश्रित है और वह भ्रम यही है कि भारत के मुसलमानों की अपनी कोई एक भाषा ह। सत्य तो यह ह कि बंगाल के मुसलमान बंगाली बोलते हैं, गुजरात के मुसलमान गुजराती बोलते हैं और मराठी मुसलमान मराठी बोलते हैं और इन सब भाषाओं में संस्कृत का प्राधान्य है और ऐसे मुसलमानों को संस्कृत से लिए हुए या संस्कृत द्वारा बनाये गये पारिभाषिक शब्दों के समझने में किंचित्मात्र भी कठिनाई नहीं होगी। इसके अतिरिक्त भाषा का स्वरूप इच्छानुसार नहीं गढ़ा जा सकता है। इसीलिए आवश्यक ह कि इस प्रकार ५० प्रतिशत फारसी और ५० प्रतिशत संस्कृत का मिश्रण बनाकर हास्यास्पद भाषा न बनाई जाय और विशेषतया अवस्था में जब ५० प्रतिशत फारसी या अरबी को भारत के बहुसंख्यक मसलमान स्वयं नहीं समझ सकेंगे। एक दृष्टि से तो मुसलमानों का हित इसी म ह कि वे अपने धम का प्रचार एसी भाषा म करें जिसको यहां के किसान और श्रमी सुगमता से समझ सकें। अब तक इस्लाम धर्म के प्रचार में एक विशेष बाधा यही रही है कि इस्लाम धर्म के प्रचारकों ने इस देश म बोली जानेवाली भाषा को नहीं अपनाया है और हिन्दू-मुसलमान-समस्या का एक विशेष कारण यही रहा है कि इस्लाम धर्म के प्रचारकों ने जिस भाषा का प्रयोग किया ह उसको इस देश के जनपद, चाहे वे ग्राम के हों, या नगर के, समझ नहीं सके। और इसलिए भारत के ९९ प्रतिशत हिन्दू इस्लाम धम के विषय में कोई भी ज्ञान नहीं रखते। यदि मुसलमान चाहते हैं कि इस्लाम धम भारत में फले-फूले तो यह आवश्यक है कि वे अपनी भाषा को इस देश में बोली जानेवाली भाषा बना लें और वह तभी हो सकता है जब कि इस देश की प्राचीन परम्परा और प्राचीन संस्कृति में प्रयुक्त संस्कृत भाषा के शब्दों को अधिकतर अपनायें। यही बात ईसाइयों के लिए भी लागू है। इसलिए धर्म के नाम पर भाषा के रूप के गठन का प्रश्न उठाना और उसको विकृत करना कुछ उचित प्रतीत नहीं होता। हमारी समिति से विनम्र [illegible] से प्रभावित न होकर केवल भारतीय संस्कृति, इतिहास और सभ्यता का ध्यान रखकर संविधान और विधि की भाषा ऐसी बनाये कि जिसको इस देश के अधिक से अधिक वासी समझ सकें और जो सुन्दर और सुललित हो और यह तभी हो है जब वह अपने पारिभाषिक संस्कृत के कोष से लें।

* * *

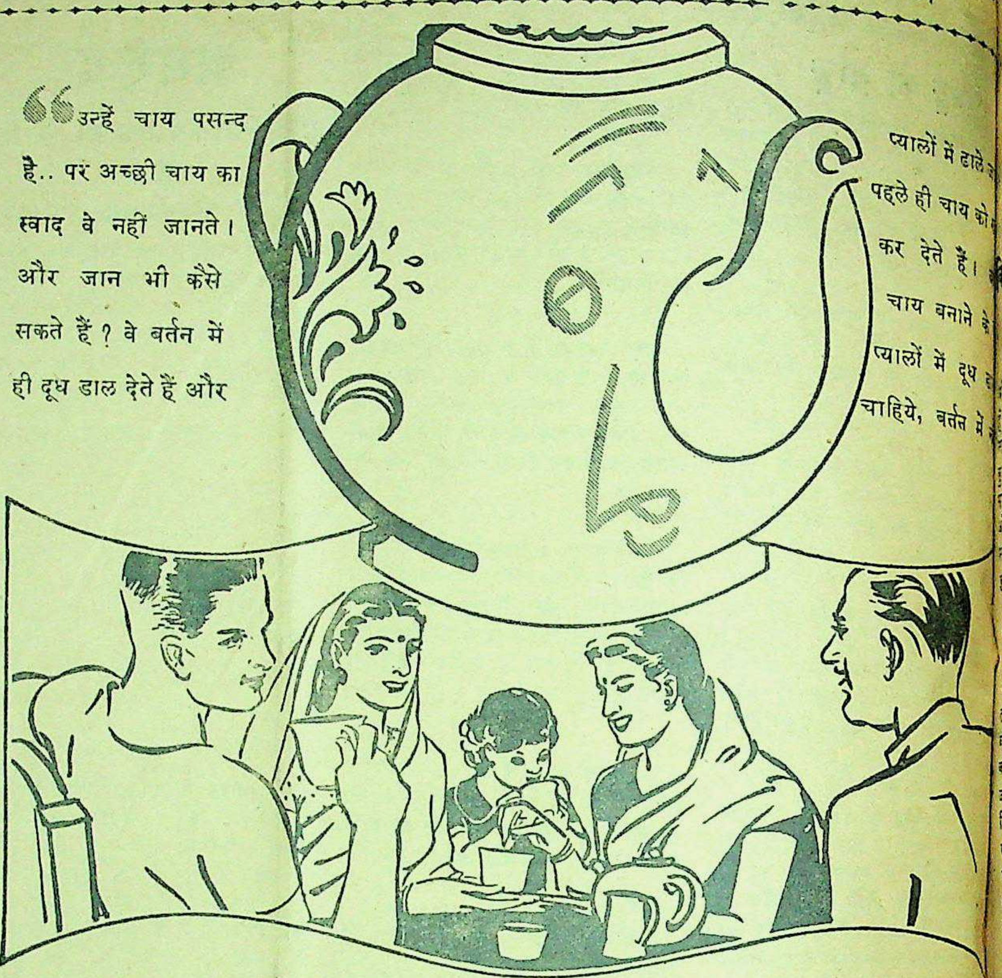

"उन्हें चाय पसन्द है.. पर अच्छी चाय का स्वाद वे नहीं जानते। और जान भी कैसे सकते हैं? वे बर्तन में ही दूध डाल देते हैं और

प्यालों में ढाले
पहले ही चाय को
कर देते हैं।
चाय बनाने के
प्यालों में दूध
चाहिये, बर्तन में

खुशी और तरोताजगी हासिल करने के लिये करोड़ों व्यक्ति चाय पीते हैं। कितने अफसोस की बात है कि बहुत से चाय पीने वाले इतना भी नहीं जानते कि अच्छी चाय कैसी होती है या कैसे बनाई जाती है। अच्छी चाय बनाने में कोई विशेष खर्च या तकलीफ नहीं होती; सिर्फ पांच सरल नियम मानना काफी है। अपने पैसों की पूरी कीमत और चाय का पूरा स्वाद लेना हो तो इन नियमों को याद कर लीजिये और घर में उनका हमेशा पालन हो इसका ख्याल रखिये।

पांच सरल नियम

१. सिर्फ ताजा और फौरन् खौला पानी लीजिये। २. चाय के बर्तन को पहले गर्म कर लीजिये। ३. हर व्यक्ति के लिये एक चम्मच और एक चम्मच बर्तन के लिये सूखी चाय डालिये। ४. तीन से पांच मिनट तक चाय को सीभने दीजिये। ५. दूध प्याले में मिलाइये, बर्तन में नहीं।

चाय-चर्चा नामक पुस्तिका अंगरेजी, हिन्दी, बंगला, उर्दू या तामिल किसी भी भाषा में कमिश्नर, इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड १०१, नेताजी सुभाष रोड, पोस्ट बक्स २१७२ कलकत्ता से आवेदन कर मुफ्त मँगाई जा सकती है।

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

सबसे अच्छी
अच्छी · बनी
चाय

लिपटन
LIPTONS
WHITE LABEL
TEA
ONE POUND NETT
माने अच्छी चाय

नारी ही उच्छृङ्खलता नष्ट करने में पर्याप्त है
किन्तु उसे भारतीय संस्कृति के अनुकूल ही रहना चाहिए

लेखक, श्री प्रेम कपूर 'कंचन'

आज की कन्याएँ ही कल की नारी और भविष्य में मां बनेंगी। लेकिन हम [illegible] कि उनको उनके जीवन का पूर्ण अंश [illegible] प्रदान करते और लाद देते हैं सब [illegible] अपने समाज पर। आज का भारतीय [illegible] है जिसने उनको बांध रखा है और वे असहाय होकर चीखती हैं "हमें [illegible] किया जाय, हमें अस्त्र मिले, हमारी स्थिति डांवाडोल हो रही है।" [illegible]......? क्योंकि हमें अधि-[illegible] नहीं मिल रहा है हमारी कहीं सुनवाई नहीं। मान लीजिए [illegible] को 'रिवाल्वर' दे दिया जाय तो यह बुद्धिमत्ता नहीं, क्योंकि एक बुरे व्यक्ति को जिसकी बुद्धि सर्वदा विनाश-कार्य में लगी हो उसको अगर ज्ञान दिया जाता तो उस ज्ञान का उपयोग वह निर्माण नहीं विनाश में ही लगायेगा। रावण राक्षस था और उसका ज्ञान उसे पतन की ओर ले गया। ठीक उसी प्रकार 'रिवाल्वर' देकर हम उसे लड़ने के लिए उत्साहित नहीं करते, वरन् उसके लिए कांटे बो देते हैं और उसका जीवन पहले ही खतरे में पड़ जाता है।

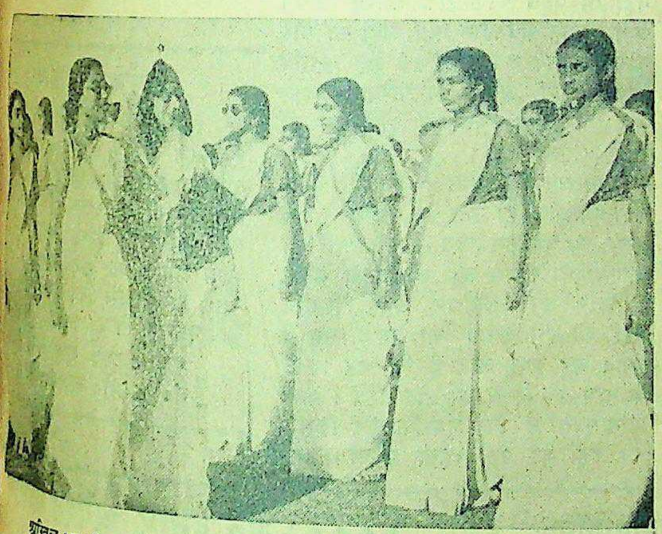

अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन मद्रास में राजकुमारी अमृतकौर को बालिकायें गाड आफ़ आनर दे रही हैं।

'देशदूत' के पिछले अंक में एक [illegible] जी का लेख प्रकाशित हुआ है [illegible] पढ़कर बड़ा खेद हुआ। आपने [illegible] भी तो क्या? इससे समाज को [illegible] प्रोत्साहन मिल सकता है? [illegible], पाठशाला, कालेज या विश्व-[illegible] लड़कियों से नहीं कहते कि वह [illegible] की भांति रूप-रंग बनाकर [illegible]। फैशन दूसरी वस्तु है और पढ़ना दूसरी। मेरे पास कितने ऐसे उदाहरण हैं [illegible] जो कुछ भी होता है, नारी की [illegible] पर होता है। रावण राक्षस था, [illegible] सीता के विचारों को न जीत सका। [illegible] तो श्रीमती जी से कहेंगे कि [illegible] आप रोटी न पकायें तो खानेवाला [illegible] क्या सकता है? लेकिन नहीं [illegible] पिता घर पर आपसे कहते [illegible] सिर ढंककर चला करो तो [illegible] जी तुनक जाती होंगी। साइकिल [illegible] आपको आवश्यकता रहती है हां जब [illegible] पिस्तौल और हथियार मांगती हैं तो उसकी आवश्यकता भी स्थितिनुकूल ही है।

समाज किसी को नहीं बदनाम करता, बदनाम होनेवाला स्वयं को ही बदनाम करता है। लड़कियां कालेज पढ़ने के लिए आती हैं वहां कोई नाच, या राग-रंग नहीं होता फिर लिपस्टिक, क्रीम पाउडर और विलास-व्यसन की आवश्यकता कहां रहती है?

आग वहीं जलती है जहां हवा बहती है। पाप वहीं होता है जहां बीज लगाये जाते हैं। पुष्प अपनी सुगन्ध फेंककर ही भौरों को आमंत्रित करते हैं। पुष्प में यदि सुगन्ध नहीं होती तो भौंरे वहां नहीं आते।

श्रीमती जी की गाथा शायद कपोल-कल्पित रही है। आपने किसी को पीटा और पीटने से आप अपने को विजयी समझने लगीं। विजयी वही है जो बिना पीटे ही दूसरे को शिक्षा दे सकता है लड़कर पशु भी विजयी हो जाते हैं।

आजकल शिक्षित लड़कियों की भावनाएँ बहुत ही उलटे मार्ग पर अग्रसर हो रही हैं। अपने भारतीय आदर्श से कुछ लेना चाहिए उसे बेचकर उसके लिए दूसरे साधन लेना बहुत ही बड़ी भूल होगी। फिर आज के पुरुष कल की नारियों की ही उत्पत्ति हैं आज जो मार्ग आप कुचल रही हैं कल उन्हीं के अनुयायी उनके पुत्र होंगे। जैसा वह उन्हें देंगी वैसे ही या उनके ही अनुकूल वे बनेंगे।

नारी के पास स्वतंत्रता की ही इतनी प्राकृतिक शक्ति है कि वह सब कुछ करने में पर्याप्त है अपनी शक्ति को भुलाकर आंखों के पर्दे को मिटाकर बर्बादी का मार्ग निकालना किसी भी स्थिति में ठीक नहीं। इसलिए अच्छा तो यह होगा इस चीख-पुकार को त्याग कर अपने लिए उन पथों का निर्माण करना चाहिए जिससे कि आपके साथ-साथ देश का भी कल्याण हो। नारियां ही राष्ट्र-निर्माता हैं और वे ही किसी राष्ट्र की शक्ति को दृढ़ करती हैं। आपका यह दोषारोपण और यह मार्ग सर्वथा निर्मूल है।

बापू के प्रति

लेखक, श्री नारायणदास खन्ना, बी० ए० आनर्स, एम० ए०, एल्-एल० बी०

मुक्त बन्धन रो रहे हैं!
सो रही हैं सान्त्वनाएं, आज जाग्रत जग व्यथाएं,
मूक प्राणों में कसक सी, मौन सारी कल्पनाएं,
प्रलय का सन्देश देकर, विश्व को किसने हिलाया?
कौन जगती में हलाहलपूर्ण मदिरा बांट आया?
पी जिसे जलते हृदय के आत्म क्रन्दन सो रहे हैं।
'देवता' तुमने कहा था, कह रहा इतिहास तेरा,
वाह रे भोले पुजारी नष्ट कर डाला बसेरा!
ज्योति दीपक की रही जो आंधियों में टिमटिमाती,
धन्य मानव! निज करों से शीघ्र ही तूने बुझा दी!
तम प्रसारित, कम्प भू, दानव सजग जब हो रहे हैं।
पूर्ण आहुति हो सकी क्या शलभ की कुरबानियों से?
रुक सकी क्या गति जगन की मृत्यु की चिनगारियों से?
हट सका हिमगिरि कभी क्या फूंक से, हुंकार, रव से?
मिट सकेंगे क्या अहिंसा, सत्य, बापू मृत्यु भय से?
नष्ट होंगे किन्तु कटुता-बीज को जो बो रहे हैं।
आज जग आंसू बहा इतने कि सागर रुक न पायें।
आज इतना जल, जलन की आस तुझमें बुझ न जाये।
आज कर ले प्यार अपनी मूढ़ता से, क्या किया है?
आज तू विष-पान को अमृत समझकर ही जिया है!
आज बापू विश्व कण कण में रमे भी खो रहे हैं।

श्रद्धांजलि

लेखिका, श्रीमती चन्द्रमुखी ओझा 'सुधा'

इस धरती का रोना सुनकर आज स्वर्ग भी रोया।
कोटि कोटि कण्ठों की वाणी लौटी शून्य जगत से,
सब कुछ तो तुम बता गये हो अन्तिम मौन बरत से,
माना यह अनबोली छवि, पर तुम तो बोल रहे हो,
भावी का इतिहास-पृष्ठ चुपके से खोल रहे हो,
गये मांग चिर विदा, जानकर, कौन नींद भर सोया।
इस धरती का राष्ट्रदेवता क्या मरकर मर सकता,
पूछ रही भारत मां युग से, कौन घाव भर सकता,
अपने घर में आग लगा बैठे अपने घरवाले,
जीवित होकर पूछ रहे भारत से बाहरवाले,
ब्रह्मा ने भी शशि कलंक को नहीं आज तक धोया।
भाव सभी के पास भरे हैं किन्तु नहीं है भाषा,
रुक रुक जाती है यह तूली उसकी क्या परिभाषा,
जो अविदित था विदित किया तुमने अपने को खोकर,
तुम स्वीकार करो श्रद्धांजलि हम सब देते रोकर,
बिखर रही वह राशि राष्ट्र की तुमने जिसे संजोया।
इस धरती का रोना सुनकर आज स्वर्ग भी रोया।

MALHOTRA STUDIO
"जुल्फ़े कश्मीर" हेअर आयल

स्त्री की विजय सौंदर्य में है और सौंदर्य का भेद है उसके बाल

जुल्फे काश्मीर हेयर आईल

स्त्री के बालों को घने, लम्बे, मजबूत और चमकीले बनाने में अद्वितीय है। बाजारी तेलों पर धन नष्ट करने के बजाय जुल्फे काश्मीर हेयर-आइल सेवन करें। यह एक शताब्दी से भी अधिक ख्याति-प्राप्त है। आप सदैव इसे ही पसन्द करेंगे।

काश्मीर परफ्यूमरी वर्क्स
कुतुबरोड, दिल्ली

संपादक के नाम चिट्ठियां

गांधी-स्मारक महात्मा-मन्दिर

भारत राष्ट्रपिता, विश्ववन्द्य, परमपूज्य, प्रातःस्मरणीय, महात्मा गांधी अब इस नश्वर संसार में नहीं हैं, केवल उनका वह अक्षय यश और अनश्वर नाम ही शेष है। जिसे कराल काल भी छू तक नहीं सकता, उनकी मोहन मूर्ति यद्यपि प्रत्येक मानव मन-मन्दिर में स्थापित है, और रहेगी। वही मन-मन्दिर उस मोहन मूर्ति के लिए एकमात्र स्थान है। किन्तु जिस प्रकार साधारण मनुष्य के लिए यह आवश्यक तथा अनिवार्य है कि जो वस्तु उसकी ध्येय हो उसकी एक साकार मूर्ति प्रत्यक्ष रूप में सामने रखी जाये। जिससे वे उसे देख सकें और उसकी उपासना और पूजन कर सकें, क्योंकि साधारण मनुष्य निर्विकार और निराकार स्वरूप का ध्यान तथा उसकी भाव मूर्ति की-- कल्पना नहीं कर सकते, और उन्हें एक प्रत्यक्ष मूर्ति की आवश्यकता होती है। इसी विशेषता को देखकर हमारे पूज्य पूर्वज महर्षियों ने भगवान् की सगुण मूर्ति की स्थापना मन्दिरों में कराई थी और परमपूज्य महात्माओं, कर्मवीरों की मूर्तियां भी स्थापित कराकर वीरोपासना की परिपाटी चलाई थी, तथा महान् पुरुषों को भगवान् का अवतार कहते हुए मन्दिरों में मूर्तिरूप में रखकर अर्चनीय और वन्दनीय कहकर समस्त भावी सन्तति के लिए प्रत्यक्षीकृत कराया था और उनका स्मरण करने के लिए साकार साधन उपस्थित किया था। उसी रूप में अवतार-स्वरूप अद्वितीय कर्मवीर सफल जीवन महात्मा गांधी को समस्त भारतीय तथा समस्त संसार की वर्तमान और भावी जनता के लिए मूर्तिरूप में स्थापित करने का संकल्प हमने किया है। हमारा विचार है कि भारत के ग्राम-ग्राम में महात्मा की मूर्तियों को स्थापित करने का सुन्दर कार्य हमारी सरकार जितनी शीघ्रता से हो सके करे। सम्भव है सरकार के पास इतना पुष्कल धन इस समय न हो, ऐसी दशा में ग्राम-कांग्रेस कमेटियां, जिला-कांग्रेस कमेटियां, प्रान्तीय कांग्रेस कमेटियां काम करें, महात्मा के भिक्षा मांगकर धन एकत्रित करके काम करने की शैली का अनुकरण करते हुए यह कार्य करें। ग्राम, नगर आदि की जन-संख्या को देखते हुए छोटे और बड़े मन्दिर स्थापित हो सकते हैं और प्रत्येक दिवस इन मन्दिरों में भगवन्नाम-कीर्तन (राम नाम ध्वनि) जो गांधी जी को परमप्रिय थी, हुआ करे और उनकी मूर्ति को श्रद्धांजलि अर्पित की जाया करे; और प्रतिदिन उनके बताये हुए आदर्शों का उपदेश रूप में जनता को स्मरण दिलाया जावे, तभी भारतीय राष्ट्र का कल्याण हो सकता है।

महात्मा जी के स्वर्गारोहण के द्वितीय दिवस (ता० १ फ़रवरी सन् ४८) को संध्या समय महात्मा जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए श्री १०८ ब्रह्मर्षि अद्वैताश्रम जी महाराज ने नये कटरे की जनता का ध्यान इधर आकर्षित कराया, हम स्वामी जी के इस उपदेश के लिए आभारी हैं और अपने श्रीमानों से निवेदन करते हैं कि वे इस पवित्र कार्य को शीघ्रातिशीघ्र पूरा करके सुयशभागी तथा दूसरों के लिए आदर्श बनें। हमारा विचार है कि इसमें प्रत्येक मनुष्य हिन्दू, मुसलमान या ईसाई कोई भी हो--सहयोग देकर महात्मा जी के प्रति अपना कर्तव्य करे, क्योंकि महात्मा जी प्रत्येक व्यक्ति के थे! यदि कोई एक पैसा भी इस कार्य के लिए देता है तो वह पैसा अमूल्य समझा जाकर उसी प्रकार सहर्ष स्वीकार होगा जैसे किसी सम्पत्तिशाली की दी हुई निधि। यही महात्मा जी का भी विचार था। जो भाई यह भी नहीं कर सकते वे हमें सक्रिय सहयोग देकर अपना कर्त्तव्य पूरा कर सकते हैं।

महात्मा जी का यह स्मारक-मन्दिर भागीरथी-तट ऋषिकेश हिमालय पर श्री आनन्दकन्दाश्रम में बनेगा! जो दानवीर १००१) तत्काल दान देंगे वे सज्जन मन्दिर के संरक्षक होंगे। १०१) के दानी सज्जन आजीवन सदस्य रहेंगे। इस योजना की नियमावली ५०००) एकत्रित होने के बाद प्रकाशित कराकर भेजी जायेगी। दानवीर सज्जनों को रसीद दान की फौरन ले लेनी चाहिए पूज्य ब्रह्मर्षि जी महाराज से। ब्रह्मर्षि अद्वैताश्रम कर्मयोगी तथा डा० रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' एम० ए० डी० लिट् सूत्रधार आजीवन संरक्षक रहेंगे।

--डाक्टर रमाशंकर शुक्ल
'रसाल'
एम० ए०, डी० लिट्

नया कटरा,
प्रयाग

* * *

ग्राम-पंचायत-बिल और वकील

'देशदूत' के गत १ फरवरी के अंक में हमने संयुक्तप्रान्त की गांव-पंचायत-बिल की कुछ त्रुटियों की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया था। सुनने में आता है कि ग्राम-पंचायत बिल में 'वकील वहिष्कार' नीति की विचित्रता के संबंध में जब वामपक्ष द्वारा उठाई हुई आपत्तियां प्रान्तीय धारा-सभा में आईं तब समर्थक समुदाय को और कोई मार्ग न सूझ पड़ा और हिन्दुओं की प्राचीन न्याय की प्रणाली की शरण लेनी पड़ी और कहना पड़ा कि इस विधान द्वारा प्राचीन प्रणाली का जीर्णोद्धार करने की चेष्टा की जा रही है। कदाचित् बहुतेरे मतदाताओं को अब तक ज्ञात न होगा कि उस प्रणाली के न्यायालयों में 'प्राडविवाक' (वकील) को कितना उच्च स्थान और आदर प्राप्त था। महर्षि नारद बताते हैं:--

धर्मशास्त्रं पुरस्कृत्य प्राड्विवाकमतेस्थितः।
समाहितमतिः पश्येत् व्यवहाराननुक्रमात्।

श्री कात्यायन जी कहते हैं:--

सप्राड्विवाकः सामान्यः सब्राह्मण सपुरोहितः।
ससभ्यप्रेक्षको राजा स्वर्गे तिष्ठति धर्मतः।

और:--

श्रुताध्ययनसम्पन्नाः धर्मज्ञाः सत्यवादित्तः।
राज्ञा सभासदः कार्या रिपो मित्रे च ये समाः।

आदि वचन हैं, संसार-प्रसिद्ध धर्मयुक्त राजनीति के महान् ज्ञाता याज्ञवल्क्य जैसे महापुरुष थे। मनुस्मृति अध्याय २ श्लोक ७९ में भी 'प्राडविवाक' की नियुक्ति का विधान इन शब्दों में पाया जाता है "सभान्तः.... सान्त्वान" इन वचनों को ध्यान में रखते हुए उस समय की धर्मनिष्ठा, सत्य बोलना, श्रुताध्ययन आदि गुणों की तुलना आजकल मिल सकनेवाले पंचों के गुणों से कीजिए और तब सोचिए कि उस स्वर्ण युग में तो 'प्राडविवाक' (वकील) की उपस्थिति और उसका मत अनिवार्य माना गया था पर इस युग में वही सब अनावश्यक जान पड़ता है। जब आये दिन बड़े-बड़े धनी तक ब्लैक मारकेट करते हुए पाये जाते हैं अच्छे-अच्छे शिक्षित सत्य की डींग मारते हुए भी अपने स्वार्थ की सिद्धि और सत्ता के लिए मिथ्या भाषण करते देख पड़ते हैं। किसी न किसी बहाने से राजशक्ति में भाग प्राप्त करने के लिए सचेष्ट और सतर्क हैं! क्या ऐसी दशा में बेचारे अभियुक्त के प्रति "पंचायती अदालत" में बिना वकील मुख्तार की सहायता के न्याय हो सकना सम्भव माना जा सकता है। मतगणना की दृष्टि से किसी नियम का बना देना जितना सरल है बुद्धिमान् लोग उसके प्रयोग को आधा भी सरल नहीं मानते और न हितकर ही समझते हैं। अनुशासन-भय से अपना मत दे देना और बात है और उसका फल भोगना दूसरी। अनुचित मत का फल दाता को तो भुगतना नहीं पड़ता भुगतना पड़ता है साधारण जनता को और 'पंचायती अदालत' में भुगतना पड़ेगा बेचारे निस्सहाय ग्रामीण कृषक को जिसको उस स्थान-विशेष में चारों ओर कोई आश्वासन तक देनेवाला देख न पड़ेगा और जिसे उसके मुंह पर ही वादी और साक्षी चोर या जुआरी बतायेंगे। समझने की बात है बेचारा अभियुक्त बिना वकील की सहायता के पंचों को कैसे विश्वास दिला सकेगा या बता सकेगा कि अमुक साक्षी सत्य नहीं बोल रहा है। सत्य और असत्य की परीक्षा के लिए कुछ प्रश्न और नियम अत्यन्त आवश्यक और निश्चित हैं, जिनको वकील-समुदाय ही जानता है। वे ग्रामीण कृषकों की जानकारी अथवा उन्हीं में के पंचों के ज्ञान से परे हैं और यदि सदैव नहीं तो बहुत काल तक अवश्य रहेंगे। जहां विधान के विद्वान् नहीं, वहां का कोई कार्य वैधानिक रूप से हो सके यह कदापि सम्भव नहीं और अनियमित अन्याय का प्रसार उस स्थान से होने लगे तो कोई आश्चर्य नहीं।

साक्षात् देख पड़ता है कि जमींदारी प्रथा को शीघ्र ही उठा देने की घोषणा ने अभी तक किसान-हृदय में स्वतंत्रता की वह भावना उत्पन्न नहीं की है कि कृषक जमींदार को छोड़कर अपने किसान भाई को पंच बनाने का प्रकट मत दे सकें। यह बात और है कि वह किसी के नाम पर किसी को वोट दे दें। अतः जान पड़ता है कि घूम-फिरकर किसान को जहां का वहीं रहना पड़ेगा। चतुर जमींदार या उसके कारिन्दा के से इस अदालत में बिना वकील के कौन किसान के स्वत्वों की रक्षा सकेगा? कौन पंचों को बतायेगा अमुक खेत में किसान को दखल का स्वत्व प्राप्त हो चुका है और इस मुकदमे को निवटाने के अधिका नहीं हैं। किसान नेताओं से विचार की आशा रखते हुए उपरो धाराओं पर प्रकाश डालने को फिर कभी करूंगा।

फर्रुखाबाद
२७ जनवरी, ४८

बेनीमाधो
मुख्तार

* * *

पुस्तक-प्रेमियों से निवेदन

ऐसे बहुत से पुस्तकालयों और पुस्तक-प्रेमियों के प्रार्थनापत्र आते हैं, जो द्रव्याभाव के कारण कवि आरसीप्रसाद सिंह की रचनाओं खरीद तो नहीं सकते; परन्तु, पढ़ने प्रबल इच्छा रखते हैं। अतएव, आ वसन्तोत्सव के सुअवसर पर हम की कविताओं का विराट् संग्रह "आर जनता-जनार्दन की सेवा में प्रेमोप स्वरूप दे देने के अभिलाषी हैं। "आरसी के अभाव में वैसी ही एकदूसरी कविता पुस्तक "सञ्चयिता" दी जायगी। दो में से कोई एक ही पुस्तक मिल सके जिस किसी भी सार्वजनिक पुस्तका या वाचनालय को इसकी आवश्य हो; या कोई विद्वान्, कवि, आलो या विद्यार्थी इसे देखना चाहें, निवेदन है कि एक रुपया डाक-खर्च कर अपनी प्रति मँगा लें।

रोसड़ा,
जिला दरभंगा

मैनेजर, तारा

सफेद बाल काला.

खिजाब से नहीं हमारे आयुर्वे सुगन्धित तैल से बाल का पकना सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। तैल दिमागी ताकत और आँखों की को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। २।।), आधा बाल पका हो तो ३।।), कुल पका हो तो ५) का तैल मँगा लें।

एल० एन० गुप्ता फार्मेसी
नं० ८ पो० नवादा, गया।

प्रतियोगिता १
जोड़ १५०

	५०	

१०००) रु० इनाम अवश्य जीतिए

पूर्तियाँ भेजने की अंतिम तारीख २५-२-४८ इसका सही उत्तर बन्द लिफाफे में रखा गया है जो ता० मार्च ४८ को दोपहर १२ बजे खोला जायगा और जिसका नती ता० १० मार्च तक प्रकाशित होगा। और सही उत्तर को पुरस्कार भी भेज दिया जायगा, पूर्तियां सादे कागज पर चाहे जितनी भेज हैं। अधिक जानकारी के लिये =) के टिकट भेजें। फीस १ पूर्ति का १), चार पूर्ति ३), अधिक के लिए ।।) प्रति पूर्ति, पूर्ति साफ लिखी आनी चाहिए और साथ में आर्डर रसीद भी आनी चाहिए।

पता—प्रभात ट्रेडिंग कम्पनी (प० वि० २०) सेव का बजार, आगरा।

विवाहित जीवन

को सुखमय बनाने के गुप्त रहस्य जानने हों तो निम्न पुस्तकें मँगायें—

१--कोक शास्त्र (सचित्र)	१।।)	२—८४ आसन (सचित्र)
३—८० आलिंगन (सचित्र)	१।।)	४—१०० चुम्बन (सचित्र)
५—सोहागरात (सचित्र)	१।।)	६—चित्रावली (सचित्र)
७—गोरे खूबसूरत बनो	१।।)	८—गर्भ-निरोध (सचित्र)

उपरोक्त पुस्तकें एक साथ लेने से ८) रु० में मिलेंगी, पोस्टेज १) अलग लगेगा।

पता—ग्लोब ट्रेडिंग कम्पनी (जी० १३) अलीगढ़ सिटी।

राजधानी का रंगमंच

ग्रामीण प्रजातन्त्र की स्थापना का कार्य प्रारम्भ

सूचना-विभाग का पुनर्संगठन—प्रांतीय कौंसिल की बैठक—महात्मा गांधी के निधन का प्रभाव—हिन्दी के मामले में केन्द्रीय तथा प्रांतीय सरकार—अप्रैल से गजट हिन्दी में—२० हजार एकड़ भूमि पर मशीन से खेती।

(अपने विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

पञ्चायत राज विधान पर गवर्नर की स्वीकृति मिल जाने के पश्चात् अब प्रान्त में 'ग्रामीण प्रजातन्त्र' की स्थापना का समुचित उद्योग हो रहा है। प्रान्त में लगभग ५० सहस्र पञ्चायतें बनेंगी। एक सहस्र से कम जनसंख्यावाले ग्रामों में दो दो तीन तीन ग्राम मिलाकर एक पञ्चायत बनाई जायगी। पांच पञ्चायत-क्षेत्र मिलाकर एक पञ्चायत-मण्डल बनेगा और प्रत्येक मण्डल में एक एक पञ्चायती अदालत होगी। प्रत्येक पञ्चायत की सीमा-रेखा निर्धारित करते हुए नक्शे बनवाने का आदेश जिला अधिकारियों को दे दिया गया है। ग्रामों की गणना करने का भी आदेश दिया गया है। ग्राम रजिस्टर के दो भाग होंगे—एक में गांव के प्रत्येक प्राणी का उसके [illegible], व्यवसाय, शिक्षा आदि का विवरण होगा और दूसरे में बालिग ग्रामीणों की तालिका होगी। प्रत्येक युवक के बालिग होते ही उसका नाम इस तालिका में चढ़ जायगा। पञ्चायतों के गठन के लिए श्री भगवन्नारायण भार्गव को विशेष अधिकारी नियुक्त किया गया है।

* * *

सूचना-मंत्री पं० श्रीकृष्णदत्त, पालीवाल अपने इस विभाग का पुनर्गठन कर रहे हैं। उनकी नवीनतम योजनाओं के अन्तर्गत शीघ्र ही प्रत्येक जिले में एक एक जनसम्पर्क अफसर की नियुक्ति होगी, जो शासक और शासित के बीच शृंखला का काम करेगा। इसके अतिरिक्त वे एक फिल्म-कम्पनी बनाए जाने में भी सहयोग दे रहे हैं, जो छोटे छोटे शिक्षाप्रद फिल्म बनाएगी। इस कम्पनी पर सरकार का नियंत्रण रहेगा। साथ ही प्रान्त में पांच छोटे-छोटे रेडियो स्टेशन खोले जाने की भी व्यवस्था हो रही है, जो ग्रामीणों के कार्यक्रम प्रसारित करेंगे। प्रान्त के ग्रामों में सरकार की ओर से [illegible] रेडियो सेट लग चुके हैं और ५०० [illegible] और मँगाए जा रहे हैं।

* * *

प्रान्तीय कौंसिल की आगामी बैठक जो २३ फरवरी से प्रारम्भ हो रही है, गैर सरकारी दिवसों के लिए कुछ बड़े मनोरञ्जक प्रस्ताव आए हैं। इनमें से एक श्री बद्रीदत्त पांडेय का है, जिसमें प्रान्तवासियों के लिए एक राष्ट्रीय परिधान निर्धारित कर देने की मांग है। राष्ट्रीय परिधान, जैसा कि उसके नाम से ही स्पष्ट है, सम्पूर्ण राष्ट्र की होगी और एक प्रान्तीय धारासभा का उसका निर्णय अशोभनीय ज्ञात होता है। इस पर तो केन्द्र में ही निर्णय होना चाहिए। श्री परमात्मानन्दसिंहजी ने प्रस्ताव किया है कि पृथ्वी की सूर्य-प्रदक्षिणा के आधार पर एक नया सम्वत् चलाया जाये। श्री चन्द्रभाल का प्रस्ताव है कि विभिन्न विभागों के सञ्चालन के सम्बन्ध में सरकार को परामर्श देते रहने के लिए वैभागिक स्थायी कमेटियां नियुक्त की जायें।

* * *

गांधी जी के बलिदान का प्रभाव शहरों में जो कुछ हो, देहातों में इतना अधिक पड़ा है जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती। हाल ही में लखनऊ के समीप बंगला बाजार गांव के हिन्दू-मुसलमानों में भूमि के एक टुकड़े पर लाठियां निकल आईं। परन्तु एक वृद्ध ने गांजो जी के नाम पर उन्हें लड़ने से रोका । तुरन्त लाठियां गिर गईं और दोनों सम्प्रदायों ने मिलकर निश्चित किया कि उक्त भूमि पर गांधी-स्मारक बना दिया जाये और वह गांव भर का पूजा-स्थल हो। इतना ही नहीं, दूसरी घटना सुनिए। लखीमपुर खीरी जिले के सहरुआ नामक ग्राम से मुसलमानों का एक प्रतिनिधिमंडल गांव के प्रत्येक मुसलिम निवासी के हस्ताक्षर अथवा निशान अँगूठा लगा आवेदन-पत्र लेकर आया है, जिसमें गृहमन्त्री से प्रार्थना की गई है कि गांव के उन ३४ हिन्दुओं को छोड़ दिया जाए, जिन्हें मुसलमानों पर आक्रमण करने के अपराध में विगत अक्तूबर में सजा मिली थी।

* * *

ज्ञात हुआ है कि केन्द्रीय सरकार ने प्रान्तीय सरकार को लिखा था कि जब तक राष्ट्रभाषा निश्चित न कर ली जाए, तब तक कानूनीकिताबों, बिलोंया सरकारी पुस्तिकाओं को अँगरेजी में ही छापा जाया करे। केन्द्रीय सरकार को आपत्ति न थी कि अहिन्दी प्रान्तों की अदालतों में नजीरें आदि उपस्थित करते समय असुविधा उत्पन्न होगी। किन्तु पता चला है कि प्रान्तीय सरकार ने केन्द्रीय सरकार को स्पष्ट लिख दिया कि हिन्दी को राज्य भाषा करने का निर्णय प्रान्तीय धारासभा का है और इस सभा की स्वीकृति के बिना उसमें परिवर्तन नहीं किया जा सकता।

* * *

विदित हुआ है कि प्रान्तीय सरकार का गजट आगामी अप्रैल से केवल हिन्दी में ही छपा करेगा और उसका अंगरेजी संस्करण भी बन्द कर दिया जायगा। अभी तक मूल गजट अँगरेजी में होता था और हिन्दी में तो उसका अनुवाद ही छपता था, किन्तु अब प्रत्येक विभाग को आदेश दे दिया गया है कि वे अपनी विज्ञप्तियां गजट में छपने के लिए हिन्दी में ही भेजा करें और सारी विज्ञप्तियां एक सम्पादक द्वारा सम्पादित होकर ही छपने के लिए भेजी जाया करेंगी।

* * *

आगामी दो वर्षों में प्रान्त में लगभग २० हजार एकड़ भूमि पर यंत्र-कृषि होने लगेगी। प्रान्तीय सरकार यंत्र-कृषि को प्रोत्साहन देना चाहती है और इसीलिए सर्वप्रथम अपने फार्मों पर जो १० हजार एकड़ भूमि में हैं, उसका प्रयोग प्रारम्भ करेगी। इसके लिए उसने १६ लाख रुपये की मशीनें मंगाई हैं। साथ ही उसमें इन फार्मों के संचालन की बड़ी अच्छी और समाजवादी पद्धति निकाली है। प्रत्येक फार्म के लिए लाभ का एक स्तर निर्धारित कर दिया जाएगा और उससे अधिक लाभ होने पर अतिरिक्त लाभ फार्म के कर्मचारियों में ही बांट दिया जाएगा।

जब जिसने देखा, मुग्ध हो गया

'मंजरी'

सचित्र कलात्मक कहानी मासिक

वार्षिक मूल्य ६) रु० प्रति अङ्क ||) आठ आने

तिरङ्गा आवरण, दर्जनों चित्र, कलापूर्ण छपाई

'मंजरी' का दूसरा अङ्क भी प्रकाशित हो चुका। श्रेष्ठ कथाकारों की सरस और सुरुचि-सम्पन्न कहानियाँ पढ़नी हों तो आज ही 'मंजरी' के ग्राहक बनिए।

विद्वानों और आलोचकों की दृष्टि में—

डा० अमरनाथ झा, भूतपूर्व अध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन और वाइस चांसलर, प्रयाग विश्वविद्यालय—'मंजरी' का प्रथम अङ्क मिला। पढ़कर प्रसन्न हुआ। कहानियाँ बहुत अच्छी हैं। इस उच्च कोटि की पत्रिका के प्रकाशन पर बधाई।

डा० धीरेन्द्र वर्मा, अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय—'मंजरी' का यह अङ्क सुन्दर और आकर्षक है। हिन्दी कहानी-पत्रिकाओं का स्तर वास्तव में बहुत गिर गया है। विश्वास है 'मंजरी' इस सम्बन्ध में आदर्श की ओर अग्रसर होगी और दूसरी पत्रिकाओं के लिए पथ-प्रदर्शक सिद्ध होगी।

माननीय पं० श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, सचिव, राजस्व तथा सूचना-विभाग, संयुक्तप्रान्तीय सरकार, लखनऊ—'मंजरी' मिली। मुझे पसन्द आई। मुझे आशा है कि जनता को उचित आदर्शों की ओर प्रेरित करेगी।

माननीय श्री ब्रिजलाल बियाणी, सदस्य, विधान-परिषद्, अकोला (बरार)—सुरुचि-सम्पन्न साहित्य-निर्माण के उद्देश्य को लेकर 'मंजरी' का प्रकाशन हुआ है, अतः मेरा विश्वास है, आपको पूर्ण सफलता मिलेगी।

सेठ गोविन्ददासजी, सदस्य, विधान-परिषद्, जबलपुर—'मंजरी' का जो स्तर अभी से रखा गया है, वह सराहनीय है। यदि यही स्तर सदा रखा गया तो पत्रिका साहित्य एवं देश की बहुत सेवा करेगी, ऐसा विश्वास है।

श्री मोहनसिंह सेंगर, भूतपूर्व सम्पादक 'विशाल-भारत', कलकत्ता—कहानियों का चुनाव, सम्पादन, कथा-साहित्य का परिचय एवं समीक्षा तथा लेखकों के परिचय आदि आपकी सूझ-बूझ के सुन्दर परिचायक हैं। छपाई-सफाई और सजावट के सम्बन्ध में तो कहना ही क्या ! मेरा विश्वास है कि निकट-भविष्य में ही 'मंजरी' कहानी-पत्रिकाओं में अपना शीर्ष स्थान बना लेगी।

'आज' [काशी, १६ जनवरी ४८]—आकर्षक रंगीन मुखपृष्ठ के भीतर विविध चुने हुए श्रेष्ठ कथाकारों की रचनाएँ विभिन्न स्केचों एवं चित्रों से अलंकृत हैं। सम्पादन में श्रम तथा यथेष्ट सुरुचि से काम लिया गया है।

'स्वतन्त्र' [झाँसी, १८ जनवरी ४८]—अङ्क में लब्धप्रतिष्ठ कहानीकारों तथा उपन्यासकारों की रचनाओं की कमी नहीं है। महारथियों की कहानियाँ इसमें हैं। लेख भी लब्धप्रतिष्ठ लेखकों के हैं। आकार-प्रकार सुन्दर है और छपाई के लिए तो इंडियन प्रेस का नाम ही प्रमाण है।

सम्पादक
देवीदयाल चतुर्वेदी

प्रकाशक
इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

लेकर बूढ़े तक ने जेल जाना सीखा। स्त्रियों तक ने खूब हिस्सा लेना शुरू किया। बा भी कई बार यहां की जेलों में गईं। १९३२-३३ में बा का बहुतेरा समय जेल में ही गया।

चम्पारन-सत्याग्रह के समय भी बा ने खूब भाग लिया। बा वहां के गांवों में दवा बांटने का काम करती थीं और गांवों में घूमकर उन्हें समझाती थीं। एक बार बा और उनके साथी गांवों में घूमने गये। जब लौटे, तो देखा कि जिस झोपड़े में रहते थे और जिसमें मदरसा लगता था, वे दोनों जलकर खाक हो गये हैं। सिवा राख के वहां उनका कोई निशान तक नहीं रह गया था। इसमें शक नहीं कि काम में रुकावट पैदा करने की गरज से किसी द्वेषी ने आग लगा दी होगी। बा का और उनके साथी श्री सोमण का आग्रह था कि मदरसा एक दिन भी बन्द न रहना चाहिए। चुनांचे सारी रात जागकर बांस और घास का एक झोपड़ा खड़ा कर लिया।

खेड़ा जिले के सत्याग्रह के दिनों में बा कभी बापू के साथ गांवों में जाती थीं और कभी अकेले जाकर किसानों को ढाढ़स बँधातीं और हिम्मत देती थीं। खेड़ा जिले के तोरणा गांव में मामलतदार ने एकाएक छापा मारकर तेईस घरों में जब्तियां कीं। जब्ती में उन्होंने औरतों के जेवर, हण्डे, घड़े, देग, दुधार भैंस वगैरह चीजें जब्त कीं। बा को इसका पता चला। बा फौरन उस गांव में दौड़ी गईं और लोगों को त्याग का फल समझाया और सत्याग्रह का मर्म। और कहा—"हमारे मर्दों ने सत्य के लिए सरकार के साथ जो लड़ाई ठानी है, उसमें हमें उनको उत्साह दिलाना चाहिए। सरकार के दिये दुःख को सहना चाहिए। वह हमारा माल-असबाब उठाने आवे, तो उसे उठा ले जाने देना चाहिए। वह हमारी जमीन छीने छीन लेने दो। लेकिन सरकार को लगान की एक पाई भी देकर झूठे नहीं बनना चाहिए; क्योंकि जब तक रिआया सरकार से कहती है कि फसल नहीं हुई तो सरकार को उस पर यकीन करना चाहिए। मगर वह न माने और सताये तो हमें सब कुछ सह लेना चाहिए। लेकिन अपनी टेक से डिगना न चाहिए। सरकारी नौकरों से मत डरिए। बल्कि धीरज रखिए और अपने भाइयों पतियों, और बेटों को हिम्मत बँधाइए।"

सन् १९२२ में गांधी जी सत्याग्रह के सिलसिले में गिरफ्तार कर लिये गये और राजद्रोह के अपराध में उन्हें छः साल की सख्त सजा दी गई। 'बा' ने वीर रमणी की भांति देशवासियों से कहा—"आज मेरे पति को छः साल की सजा हुई है। इस जबर्दस्त सजा से मैं थोड़ी अस्थिर-बेचैन हुई हूँ, सो मुझे मंजूर करना चाहिए। लेकिन हम चाहें तो सजा की मुद्दत पूरी होने से पहले ही उनको जेल से छुड़ा सकते हैं।

"सफलता पाना हमारे हाथ की बात है। अगर हम असफल हुए तो इसमें दोष हमारा ही होगा। और इसलिए मैं मेरे दुःख में हमदर्दी रखनेवाले और मेरे पति के लिए मुहब्बत रखनेवाले सभी स्त्री-पुरुषों से प्रार्थना करती हूँ कि वे रात-दिन लगे रहकर रचनात्मक कार्यक्रम को कामयाब बनायें। रचनात्मक कार्यक्रम में यानी तामीरी काम में चर्खा चलाना और खादी पैदा करना दो खास चीजें हैं। गांधी जी को दी गई सजा का जवाब हम इस तरह दें।

(१) सभी औरत-मर्द परदेशी कपड़ा पहनना छोड़ दें और खुद खादी पहनें व दूसरों को पहनने के लिए समझायें।

(२) सभी औरत-मर्द कताई को अपना धार्मिक कर्त्तव्य समझ लें, और दूसरों को भी वैसा करने के लिए समझायें।

(३) सभी व्यापारी परदेशी व्यापार करना छोड़ दें।"

१९३० की दांडी कूच और धरासणा कूच के समय भी बा ने मुल्क की बड़ी सेवा की। गांवों में गईं, लोगों को समझाया और पीड़ितों को सान्त्वना दी। पुलिस-वालों से कहा—"सरकारी नौकरी करनेवाले भाइयो आप सब कब तक अपनी नौकरी से चिपटे रहेंगे? सिपाही अपने देश भाइयों पर लाठियां चलाते और गोलियां दागते हैं। उन्हें यह हिम्मत कैसे होती है? भाइयो हिम्मत से काम लो! भगवान् आप में से किसी को भूखा नहीं रक्खेगा। पहले बेगुनाह और देश-भक्ति में पगे हुए बच्चों पर हाथ उठाना और फिर घर जाने के बाद आंखों में पानी भरकर लम्बी आहें छोड़ना इससे फायदा क्या? परमेश्वर का नाम लेकर हिम्मत से काम लो और नौकरी छोड़ दो।"

पुलिस के अत्याचार से बा का हृदय दहल उठा था। पीड़ा से कराह उठी थीं। "घायल स्वयंसेवकों को देखने और उन्हें ढाढ़स बँधाने के लिए बलसाड के अस्पताल में गईं। बिछौनों पर पड़े हुए उन भाइयों की मरहमपट्टी और बेण्डेज वगैरह का वह करुण दृश्य देखकर बा का दिल फटने लगा। रो पड़ीं। पुलिस ने उन पर जो जुल्म ढाये हैं, उन्हें सुन और देखकर मैं कांप उठी। मुझे कहना चाहिए कि मुझको दुःख तो हुआ। फिर भी ऐसी जबर्दस्त तकलीफें सहने के बाद भी उन नौजवानों ने जिस देशभक्ति, वीरता और उत्साह का परिचय दिया था, उसे देखकर मेरा दिल खुशी से नाच उठा। सत्य के लिए ऐसे बलिदान का दृष्टान्त तो इतिहास में अकेले एक हरिश्चन्द्र का ही मिलता है।"

सन् १९४२ में ९ अगस्त के दिन बा शिवाजी पार्क में भाषण देने के लिए ज्योंही मकान से निकलीं, त्योंही रास्ते में पुलिस ने बा, सुशीला नायर और प्यारेलाल भाई को गिरफ्तार करके आर्थर रोड (बम्बई) के जेल में ले जाकर बन्द कर दिया। ११ अगस्त को सबेरे ही बा और सुशीला बहन को आगा खां (महल) जेलखाने में गांधी जी के पास भेज दिया गया। अब की बार के जेल से बा को भारी सदमा पहुँचा और वृद्धावस्था के कारण अनन्त समय की नजरबन्दी का बुरा परिणाम उनके शरीर पर पड़ने लगा। महादेव भाई की मृत्यु से और भी दुःख पहुँचा और अनुभव करने लगीं—मेरा भी देहान्त यहीं जेलखाने में होगा। दिन-प्रतिदिन बा का सेहत खराब होने लगा। फिर भी सरकार ने उन्हें रिहा करना पसन्द नहीं किया। बीमारी बढ़ती गई और नजरबन्दी की अवस्था में २२ फरवरी १९४३ के दिन ७ बजे शाम को 'बा' इस दुनिया से कूच कर गईं। देश की स्वाधीनता के लिए अपना बलिदान चढ़ा दिया। 'बा' की मृत्यु के बाद श्रीमती सरोजिनी नायडू ने कहा था—"भारतीय स्त्रीत्व के जीते-जागते प्रतीक-सी, उस नाजुक किन्तु वीर नारी की आत्मा को चिर शान्ति प्राप्त हो। जिस महापुरुष को वे चाहतीं, जिसकी वे सेवा करतीं और अद्वितीय श्रद्धा, धैर्य और भक्ति के साथ जिसका वे अनुसरण करतीं उसके लिए बराबर कुरबानी करते रहने का जो कठिन मार्ग उन्होंने अपनाया था, उस मार्ग पर चलते हुए उनके पैर एक क्षण के लिए भी लड़खड़ाये नहीं और न उनके दिल ने, कभी कच्ची खाई, वे मृतत्त्व से अमरत्त्व में गईं और हमारी गाथाओं, हमारे गीतों [illegible] इतिहास की वीरांगनाओं की मंडली में वे अपने हक की जगह पा गईं।

बा का हृदय बहुत सरल था। वे हर किसी की सेवा में तन्मय हो जाती थीं। उन्हें किसी कौम से घृणा नहीं थी। हरिजनों को भी अपने बराबर मानती थीं, उनकी सेवा करती थीं। आश्रम के सभी छोटे-बड़े कामों में पूरा हिस्सा बँटाती थीं। गेहूँ साफ करती थीं। सबके लिए खाना पकाती थीं। मेहमानों का आदर-सत्कार करती थीं। कमरों में झाड़ू लगाती थीं। अपने नहाने के लिए स्वयं बाल्टी में पानी भरकर स्नानगृह तक ले जाती थीं। हर कामों में सफाई रखती थीं।

धर्मपरायण नारी थीं। गीता, रामायण का बराबर पारायण करती थीं। हर हिन्दू त्योहारों को अकेले मनाती थीं। एकादशी का व्रत बराबर रखती थीं। प्रातःकाल उठकर सूर्य भगवान् को नमस्कार करती थीं। तुलसी के पौधे की पूजा करती थीं और पानी चढ़ाती थीं। धूप आरती से तुलसी की पूजा बराबर करती थीं। नित्य सबेरे एकान्त में ईश्वर का स्मरण जरूर करती थीं। दिन भर किसी न किसी काम में बराबर लगी रहती थीं। चर्खा नियम से कातती थीं। बा का मन चर्खे में रम गया था। 'बा' के सामने कोई बड़ी से बड़ी गलती कर जाये, लेकिन 'बा' कभी बापू जी से उसकी शिकायत नहीं करती थीं। बापू जी के पास शिकायत करनेवालों को वे फटकारती भी थीं और कहती थीं यदि भूल से कुछ गलती हो गई है तो आगे सुधार लेगा। बापू जी से कहने की क्या आवश्यकता। कौन नहीं गलती करता। बा क्षमाशील नारी थीं। बच्चे निडर होकर उनके पास खेला करते थे। बच्चों को वह बहुत प्यार करती थीं। बहनों के प्रति उनकी बड़ी ममता थी और चाहती थीं बहनें समाज की अधिक से अधिक सेवा करें और आगे बढ़ें। 'बा' अपने कमरे में ही बहनों को ठहराती थीं और उनकी देख-भाल करती थीं। नारी-समाज के प्रति उनकी बड़ी ऊँची भावना थी।

उस (स्त्री) का अधेड़पन दूर हो
उसका अपच बन्द हो गया और
शक्ति दूनी हो गई

वह अधेड़ स्त्री दो बीमारियों परेशान थी, उसमें सर्वदा भारीपन अजीर्ण बना रहता था। क्रुशन के में जब उसने पढ़ा तो उसमें एक नयी आशा पैदा हो गई। तीन महीने के क्रुशन सेवन के पश्चात् उसकी परेशानियाँ हो गईं।

"मुझे कुछ समय से अजीर्ण करता था। अन्य मनुष्यों की तरह भी जुलाबवाली दवाइयाँ खानी शुरू जिनसे पाचन-शक्ति और भी खराब गई। तीन माह के बाद मैंने क्रुशन विज्ञापन देखा जिसने मुझमें एक नयी आशा पैदा कर दी। मैंने सोचा यह वही है जिसकी मुझे आवश्यकता है। मैं तुरन्त ही एक बोतल खरीद ली और से प्रति दिन सुबह उसका सेवन करती हूँ। तब से मैं अपच से बीमार नहीं और मेरी अधेड़ अवस्था जो मुझे परेशान किये थी पूर्ण रूप से गायब हो गई। मुझमें पहले से अधिक शक्ति है।"
(श्रीमती) ए० डब्ल्यू०।

अपच और कमर-दर्द प्रायः एक ही कारण से होते हैं। ये रोग भीतरी अंगों के धीरे-धीरे क्षीण होने से पैदा होते हैं, जो अधिकतर अधेड़ अवस्था में हो जाते हैं। जिसके परिणामस्वरूप शरीर के अंग कमजोर हो जाते, मोटापा लगता तथा शक्ति और इच्छाओं का हो जाता है।

क्रुशन का दैनिक इस्तेमाल शरीर प्रत्यंगों को अच्छे ढंग से कार्य करने सहायता देता है। इससे खराब अंग विषैले पदार्थों को निकाल बाहर देता है। उस समय आपकी शक्ति जाती है और आपका कमर-दर्द जाता है। उस समय आपको अनुभव लगता है कि आप पहले से बहुत अच्छे

आज ही क्रुशन का सेवन शुरू दीजिए। यह सारे रसायनिक और पारियों के यहाँ बिकता है। दाम प्रतिबोतल।

यू० एस० ए० फाउण्टेन पेन और पेंसिल पेन

विभिन्न रंगों और आधुनिक डिजायनों के फाउण्टेन पेन तथा पेंसिल पेन बेचे जा रहे हैं। प्रत्येक फाउण्टेन पेन 'गोल्डेन निब और क्लिप' युक्त है। साधारण २।=), उत्तम ३।), सर्वोत्तम ४।)। १४ केरेट रोल्ड गोल्ड—गोल्ड-प्लेटेड निब-सहित ५)। १४ केरेट रोल्ड गोल्ड गोल्ड निब सहित ८), सर्वोत्तम ६॥)। प्रत्येक अतिरिक्त निब ।=), उत्तम ॥), सर्वोत्तम १।)। १४ केरेट गोल्ड निब ३।), सर्वोत्तम ४)। पेंसिल पेन साधारण २॥=), उत्तम ३।=), सर्वोत्तम ४।=)। एक दर्जन अतिरिक्त लेड ॥), एक साथ तीन दर्जन १=)। नोट—प्रत्येक फाउण्टेन पेन के साथ एक निब और तीन लेड प्रत्येक पेंसिल पेन के साथ मुफ्त दिए जाते हैं। तीन पेन या पेंसिल पेन मँगाने पर १२॥% की दर से कमीशन दिया जाता है। डाक-व्यय ॥)।

पत्र-व्यवहार अँगरेजी में ही करें।

Amercian C. Stores (D.I.) Post Box 12213. Calcutta

थोड़ी प्रतियाँ बची हैं। शीघ्रता कीजिए

वार्षिक बालसखा १९४७

इसकी छपाई कई रंगों में हुई है। चित्रों की भरमार है। लेख कविताएँ और कहानियाँ अनुपम है। जिल्द सजीली, आकर्षक और बालकों के पसन्द की है। ऐसा कौन बालक होगा जो इस अंक को पाकर आदि से अन्त तक पढ़े बिना शान्त रहे। ३०० पृष्ठों के इस अंक का रियायती मूल्य २॥) शीघ्रता कीजिए।

मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

संवाददाताओं के पत्र

देवरिया जिला के अध्यापक समिति का वार्षिकोत्सव २४, २५ जनवरी को, देवरिया के मारवाड़ी विद्यालय में बड़े समारोह के साथ मनाया गया। श्री बाबा राघवदास जी ने समिति का उद्घाटन किया। आपका ओजस्वी और भावपूर्ण भाषण हुआ। आपने अध्यापकों के महान् कर्त्तव्य का दिग्दर्शन कराया और यह भी बताया कि स्वतंत्रता प्राप्ति में ग्रामीण अध्यापकों ने सक्रिय सहयोग दिया है। स्वागताध्यक्ष श्री डा० एन० मणि के भाषण के पश्चात् जिला शिक्षा इन्स्पेक्टर श्री के० एन० गोयल ने सभापति का आसन ग्रहण किया। आपने अपना भाषण पढ़ा। भाषण में वेतन-सम्बन्धी उल्लेख न होने के कारण अध्यापकों में असन्तोष फैला। श्री हरेराम एस० डी० आई० इंचार्ज ने यह बताकर सन्तोष दिलाया कि 'आप लोगों का वेतन पे-कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार अप्रैल सन् ४७ से अवश्य मिलेगा। श्री प्रयागध्वजसिंह चेयरमैन एजूकेशन कमेटी तथा भूतपूर्व एम० एल० ए० का शिक्षा-प्रसार पर सुन्दर भाषण हुआ।

दूसरे दिन लगभग छः सौ अध्यापकों की उपस्थिति रही, पदाधिकारियों के चुनाव के कारण आज अधिक सरगर्मी दीख पड़ी। कई महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुए। सभापति और स्वागताध्यक्ष के प्रशंसनीय प्रयत्न से दोनों समितियां एक हुईं। सब अध्यापक मुक्त गंठ से इस बात की प्रशंसा कर रहे थे। सभापति ने विचार-स्वातंत्र्य की दृष्टि से समिति के सभापति का चुनाव बैलेटबक्स द्वारा किया। अत्यधिक बहुमत से श्री रामदेव शाही, यू० पी० अध्यापक मंडल के पुराने कार्य-कर्त्ता, समिति के सभापति चुने गये। चन्द्रिकासिंह मंत्री और श्री गंगादयाल मिश्र कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए। —संवाददाता

देवरिया इन्दुपुर में 'साक्षरता-प्रसार' कार्यक्रम के अनुसार, हिन्दुस्तानी मिडिल स्कूल पर गवर्नमेण्ट पुस्तकालय का वार्षिकोत्सव पं० जगन्नाथ मणि के सभापतित्व में धूम-धाम के साथ मनाया गया। साक्षरता के सम्बन्ध में कई वक्ताओं के भाषण हुए, पश्चात् चन्द्रिकासिंह पुस्तकाध्यक्ष द्वारा पुस्तकालय की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी गई। उपस्थित जनता पर इसका अच्छा प्रभाव पड़ा।

ता० ३१ को प्रातःकाल चीनी मिल गौरीबाजार से, समीप के सब गांवों में, विश्ववंद्य महात्मा गांधी की निर्मम हत्या का शोक-सूचक समाचार विद्युत्-गति से फैल गया। गांवों की जनता अपने गांवों में एकत्रित होकर महात्मा जी का अर्थी जलूस निकालने लगी। ग्रामीण स्त्रियां अर्थी पर पत्र-पुष्प वर्षा करती हुईं नतमस्तक हो प्रणाम करती थीं। नागरिक बारी बारी से अर्थी को कन्धा लगाते थे। हरिजनों, मुसलमानों और सवर्ण हिन्दुओं में तनिक भी अन्तर नहीं था।

तीन अर्थी-जलूस, लवकनी, इन्दुपुर और गौरीबाजार के, समीप के नदी पर पहुँचे। और हिन्दू-धर्मानुसार शव का अग्नि-संस्कार किया गया। अग्नि-संस्कार के पश्चात्, पूर्वस्थानों पर महान् दुःखदायी शोक-प्रस्ताव पास हुए। लवकनी की जनता ने सर्व-सम्मति से गांव में गांधी-सरोवर और स्मारक मन्दिर बनवाने का निश्चय किया। इन्दुपुर में छवों गांवों की ओर से ३२ सदस्यों की एक समिति गांधी स्मारक बनवाने के निमित्त बनाई गई।

—संवाददाता

कालाकाँकर जिला प्रतापगढ़ की जनता राष्ट्रपिता बापू के निधन का दुखदायी समाचार सुनकर स्तब्ध हो गई। सैकड़ों आदमियों का जलूस गांवों में घूमकर गंगा-तट पर पहुँचा और स्नान करके तिलांजलि दी। उसके बाद सब हिन्दू-मुसलमान मंदिर पर जमा हुए और रामधुन होता रहा।

दूसरे दिन कालाकांकर के बड़े पार्क में जहां महात्मा गांधी ने सन् १९२९ में विदेशी वस्त्रों को होली लगाई थी एक शोक-सभा हुई। कुंअर सुरेशसिंह ने लोगों को पूज्य बापू के आदर्शों के बारे में बताया और यह प्रस्ताव रखा कि इस पार्क का नाम गांधी पार्क रखा जावे और इसमें पूज्य बापू की स्मृतिस्वरूप उनकी प्रस्तर मूर्त्ति स्थापित की जावे। वहां प्रतिवर्ष एक मेला लगा करे। जनता ने इस प्रस्ताव को कार्यरूप में करने का निश्चय कर लिया है और इसके लिए बड़ी तेजी से धन इकट्ठा हो रहा है।

तीसरे दिन गांव के सब हिन्दू-मुसलमान स्थानीय मसजिद में एकत्र हुए जहां गांव के मुसलमान ने बापू का तीजा मनाया था। गांव में तीन दिन तक पूरी हड़ताल रही।

——राजेन्द्रबहादुरसिंह

कालाकाँकर (अवध) के जिस पार्क में महात्मा गांधी ने सन् १९२९ में विदेशी कपड़ों की होली जलाई थी उस पार्क का नाम गांधी पार्क कर दिया गया है। कुंअर सुरेशसिंह के उद्योग से उसी पार्क में गांधी जी की एक प्रस्तर-मूर्त्ति स्थापित करने का आयोजन हो रहा है। जनता बड़े उत्साह से इस कार्य में सहयोग दे रही है और चारों ओर से धन इकट्ठा हो रहा है। ——संवाददाता

पटना सेवदह में नवयुवक-संघ के विद्यार्थियों द्वारा तथा सेवदह ग्राम के कतिपय लोगों ने प्रभात फेरी की। मीटिंग हुई जिसमें गांधीजी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई। पटना जिला कांग्रेस कमेटी के मंत्री श्रीलालसिंह त्यागी ने गांधी जी के आदर्शों की व्याख्या की। संघ के कतिपय लोगों ने गांधी जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। तदनन्तर गांधी-शव-स्पर्श फूलों का एक वृहद जुलूस निकाला गया। इसमें बड़े उत्साह से लोगों ने भाग लिया। सेवदह ग्राम की ओर से ३०० सौ अनाथ तथा गरीब हरिजनों को मीठी खीर खिलाई गई। अंत में लोगों ने गांधी जी के प्रति पूज्य दृष्टि रखते हुए प्रतिज्ञा की कि हम गांधी जी के आदर्शों पर चलेंगे।

राजेन्द्र महाविद्यालय सेवदह तथा आस-पास की जनता ने गांधीजी की स्मृति में एक स्मारक बनाने का निश्चय किया है। वहां गांधीजी की प्रस्तर मूर्त्ति रहेगी। शव-स्पर्श फूलों को भी वहां रखा जायगा। इस कार्य से लोगों में उत्साह है।

———संवाददाता

हरिद्वार में पूज्य महात्मा गांधी जी की पवित्र अस्थियों तथा भस्म का एक विशाल जलूस ज्वालापुर से रवाना होकर कनखल तथा हरिद्वार के मुख्य बाजारों से होता हुआ हर की पैड़ी पर पहुँचा। जलूस में सबसे आगे 'रीमाउण्ट डिपो' रुड़की के १६ घुड़सवार, टैंक, रायल गढ़वाल रायफल तथा 'सेयर्स एण्ड माइनर्स' मिलिटरी के दस्ते थे। अस्थियों को फूलों तथा राष्ट्रीय पताकाओं से सुसज्जित एक फौजी ट्रक में रखा हुआ था। जलूस के पीछे स्थानीय कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं तथा हजारों स्त्री-पुरुषों का समूह 'रामधुन' गाता हुआ चल रहा था। मार्ग में स्थान-स्थान पर अस्थियों पर पुष्प-वर्षा की गई। कोतवाली के सामने महात्मा जी की शिष्या मीरा बहिन, सेठ घनश्यामदास बिड़ला तथा पं० लक्ष्मीनारायण जी फरलिया रामायणी ने फूलों द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की। शहर में इस दिन पूर्ण हड़ताल थी। हरिद्वार में इससे पहले इतना शानदार और व्यवस्थित जलूस कभी नहीं निकला। इतना जन-समूह होते हुए भी पुलिस का प्रबन्ध प्रशंसनीय था। प्रबन्ध की सुव्यवस्था का सारा श्रेय जिलाधीश श्री रामेश्वर-दयाल जी तथा रुड़की के एस० डी० ओ० कैप्टेन भगवानसिंह जी को है जो कई दिन पहले ही हरिद्वार पहुँच गये थे और जलूस में भी साथ-साथ चल रहे थे। १२॥ बजे के लगभग म्यु० बोर्ड के चेयरमैन पं० हीरावल्लभ जी त्रिपाठी ने शास्त्रोक्त विधि-नुसार गंगाजी में अस्थियों को प्रवाहित किया। ज्वालापुर से जलूस के चलने से पहले और अस्थिप्रवाह के समय मिलिटरी ने सलामी दी। रुड़की से कर्नल ढिल्लों तथा कर्नल होल्वे भी पधारे हुए थे। इस अवसर पर लगभग डेढ़ लाख जनता उपस्थित थी।

सायंकाल को लगभग ५ बजे स्थानीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान पं० शंकरानन्द जी की अध्यक्षता में एक जलूस निकला और सुभाष घाट पर नागरिकों की एक विशाल सभा हुई जिसमें कई व्यक्तियों ने भाषण दिये और महात्मा जी के बताये हुए मार्ग पर चलने की प्रतिज्ञा की।

——संवाददाता

सागर में पूज्य बापू के श्राद्ध-दिवस (तेरहवीं) को दिन के १० बजे से ११ बजे तक चकराघाट पर पूज्य बापू की प्रतिमा के समक्ष नार्मल स्कूल तथा चिन्तामन माडल हाईस्कूल के विद्यार्थियों ने तकली व चर्खा कताई की। श्री ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी, रामसिंह जी 'बेधड़क', भाई अब्दुलगनी, मुंशी सुन्दरलाल तथा वासुदेवप्रसाद जी ने भी सूतयज्ञ में भाग लिया। दोपहर को नागरिकों का एक जलूस "रघुपति राघव राजाराम" कहता हुआ नगर की प्रमुख सड़कों पर घूमा। संध्या को ५ बजे श्री स्वामी कृष्णानंद की अध्यक्षता में एक शोक सभा चकराघाट पर हुई। सर्वश्री रामसिंह 'बेधड़क', राबेलाल शास्त्री, बिहारीलाल सेठ, महेशदत्त, बिहारीलाल सर्राफ, केशव-रामचन्द्र खांडेकर, गोपाल पाठक, बाबूलाल जैन, भाई अब्दुलगनी, ज्वाला-प्रसाद ज्योतिषी, ओंतारसिंह, डाक्टर सप्रे, मुन्नालाल जैन, गिरिजाशंकर, त्रिलोचनसिंह द्वय, तथा स्वामी जी ने अपनी श्रद्धांजलि पूज्य बापू के चरणों में अर्पित की। श्री चिन्तामन राव, श्री छोटाभाई तथा सेठ भगवानदास ने करीब २०,०००के दान के वचन बापू के स्मारक के लिए दिये। श्री चिन्तामन राव ने गरीबों को भोजन खिलाया। नगर में इसी दिन पूर्ण हड़ताल रही।

—पं० लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

ग्रामसुधार-विभाग यू० पी० के वैद्यों व हकीमों की एसोसिएशन का वार्षिक अधिवेशन २६, २७ फरवरी सन् ४८ को लखनऊ अमीनाबाद पार्क में संयुक्त-प्रान्तीय सरकार के पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी श्रीमान् चरनसिंह जी एम० एल० ए० की अध्यक्षता में होगा। ग्राम-सुधार-विभाग के सब वैद्य व हकीम अधिवेशन में अवश्य पधारें।

——भगवतसरन रस्तोगी

हरिद्वार में वैद्यराज पं० पूर्णचन्द्र काण्डपाल, जो कि श्री रामायण आश्रम में रामायण का अध्ययन कर रहे थे अब चार मास के पश्चात् ही विदा हो रहे हैं। अब आपका विचार स्वतंत्र रूप से किसी अन्य स्थान में धमार्थ औषधालय खोलकर जनता की सेवा करने का है। आपका अब श्री रामायण आश्रम से कोई सम्बन्ध नहीं रहा। —संवाददाता

गोलाघाट (आसाम) में श्री नेमीचंदजी पटवारी प्रदत्त भूमि में एक विशाल भवन बनवाने की योजना है जिसमें ग्रंथालय, वाचनालय, नाट्यमंच एवं अतिथिशाला का प्रबंध रहेगा। सर्वप्रथम जमीन अधिकार करने, सीमा निर्धारण करने आदि के लिए दो हजार रुपये की आवश्यकता है। इसमें १०१) रुपये श्री गजानंद जी जालान, १०१) रुपये श्री बैजनाथ जी ढंडारिया, १०१) श्री इन्द्रचन्द्र जी सिलहट, ५१) सदेहीराम जी डूंगरमल लोहिया और ५१) श्री रामचन्द्र शिवदत्त राय धानुका ने प्रदान किया है इसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं। राष्ट्र-भाषा प्रेमी जनता एवं धनी मानी सज्जनों से निवेदन है कि इस पुनीत कार्य में सहयोग प्रदान करें।

——भगवतीप्रसाद लडिया

पिलानी हिन्दी-साहित्य-समिति, बिरला कालेज के स्वाध्याय मण्डल के अन्तर्गत श्री प्रो० कन्हैयालाल जी सहल एम० ए० के द्वारा "संत कवियों में शृंगार भावना" पर गवेषणात्मक लेख पढ़ा गया। श्री सहल जी विभिन्न सन्त कवियों से उदाहरण देते हुए तथा कई विद्वानों के दृष्टिकोण को रखते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सन्त कवियों में उपर्युक्त 'भावना' का उदात्तीकरण कर लिया है। उपस्थित श्रोताओं में से डा० बेनीचरण महेन्द्र ने फ्रायड के मत का विश्लेषण करते हुए सहल जी के दृष्टिकोण का समर्थन किया।

समिति से निकलनेवाली 'अरुणोदय' नामक हस्तलिखित पत्रिका का प्रथम अंक पाठकों के सामने आ गया है। द्वितीय अंक शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाला है।

समिति की कार्यकारिणी ने अपनी एक बैठक में इस संस्था का हिन्दी-साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से सम्बन्ध कराने का प्रस्ताव पास किया है। इसके लिए पत्र-व्यवहार हो रहा है।

——भीमसेन मंत्री

सुल्तानपुर (अमेठी राज्य) में विश्व-वन्द्य महात्मा गांधी जी की नृशंस हत्या का दुःखद समाचार सुनकर महान् शोक हुआ। युवराज रणञ्जयसिंह जी की आज्ञा से राज्य के समस्त कार्यालय एवं स्कूल आदि तीन दिन के लिए बन्द कर दिये गये। युवराज महोदय को इस घटना से इतना आघात पहुँचा कि वह ज्वरग्रस्त हो गये। आपने पं० जवाहरलाल नेहरू, श्री देवदास गांधी तथा श्रीमती सरोजनी नायडू के पास शोक सहानुभूति के तार दिये और लिखा कि बापू जी में सत्य और अहिंसा का वह ज्योति स्तंभ विलीन हो गया, जिसकी मानव जाति की रक्षा के लिए वर्त्तमान युग में अत्यधिक आवश्यकता थी इत्यादि।

बाजारों में सर्वत्र पूर्ण हड़ताल रही। रामनगर, रायपुर अमेठी तथा गौरीगंज आदि में श्री रणवीर विद्यालय, आर्यसमाज कांग्रेस तथा राज्य की ओर से सार्वजनिक सभाएँ हुई जिनमें युवराज रणञ्जयसिंह जी महन्त धर्मेन्द्र पुरी बनारस, रायसाहब पंडित जगदम्बाप्रसाद मिश्र, रायबहादुर सूबेदार मेजर पंडित वाले तिवारी पं० सुरेशचन्द्र मिश्र मैनेजर अमेठी राज्य श्री चन्द्रभानु वकील श्री विजयपाल पाण्डेय श्री इन्द्रजीतसिंह गुप्त श्री रामकिशोर प्रभृति ने भी महात्मा जी के जीवन व कार्य पर प्रकाश डाला।

——संवाददाता

तालबेहट (झाँसी) के मृगेन्द्र पुस्तकालय को बापू के शोक में तेरह दिन के लिए बन्द रखा गया है। ३१ जनवरी को बापू को श्रद्धांजलियां दी गईं।

——संचालक

लाहौर राष्ट्रीय विद्यामन्दिर कालेज के छात्र-छात्राओं को सूचित किया जाता है कि सभी परीक्षार्थी अपने आप व्यक्तिगत रजिस्ट्रार पंजाब यूनिवर्सिटी शिमला के पते पर पत्र-व्यवहार करके अपनी परीक्षा के विषय में लिखें। कारण हमारे पास कोई किसी प्रकार का रिकार्ड नहीं है। हम संस्था की ओर से भी रजिस्टार महोदय से पत्र व्यवहार करके जांच कर रहे हैं। पत्र भेजने के बाद एक पत्र संस्थापक व संचालक राष्ट्रीय विद्यामन्दिर खोला श्रीनगर गढ़वाल के पते पर भी हमें सूचना दें। आशा है हम शीघ्र ही पूर्वी पंजाब में फिर कार्य आरम्भ करनेवाले हैं। अध्यापक वर्गों का भी तब तक हम कोई किसी प्रकार का प्रबन्ध नहीं कर सकते हैं। —अच्युतानन्दशास्त्री

ऋषीकेश के बाबा काली कमलीवाले क्षेत्र का कैम्प गंगा पार झूंसी में लगा है। जहां पर सैकड़ों साधु महात्मा और यात्री कल्पवास कर रहे हैं। श्री बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, जमनोत्री जानेवाले यात्री उधर यात्रा के सम्बन्ध मे विशेष जानकारी भी यहीं से प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि उस मार्ग में क्षेत्र की ओर से १०० धर्मशालाएं जो प्रति १२ मीऊ पर हैं जहां, क्षेत्र की ओर से प्याऊ सदावर्त्त जारी है। इसके अतिरिक्त संस्कृत पाठशाला, आयुर्वेद विद्यालय, अनाथालय, औषधालय और गोशाला हैं। गोशाला में यू० पी० सरकार की स्कीम व मीरा बहन के आदेशानुसार लगभग ६०० गायों का पालन होता है। जब से रा० ब० पंडित श्रीदत्त जी अवैतनिक सहकारी मंत्री ने ऋषिकेश में रहकर तपस्वी जीवन बिताते हुए क्षेत्र की सेवा का भार लिया है क्षेत्र का सेवा कार्य एक आदर्श हो गया है। —संवाददाता

बीकानेर श्रीडूंगरगढ़ में राज्य कवि-सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन हुआ। प्रसिद्ध साहित्य-सेवी सन्तोषचन्द बरड़िया ने उद्घाटन किया। कविरत्न प्रो० विद्याधर शास्त्री एम० ए० प्रधान सभापति थे। स्वागताध्यक्ष श्री अद्भुत शास्त्री का भाषण कवित्वपूर्ण था। —संवाददाता

आसाम प्रान्तीय मारवाड़ी युवक-सम्मेलन के अवसर पर राष्ट्रकर्मी श्री राधाकृष्ण खेमका की अध्यक्षता में प्रान्तीय मारवाड़ी युवक सम्मेलन करने का निश्चय हुआ। स्वागताध्यक्ष श्री भगवतीप्रसाद लडिया एवं मंत्री श्री मदनलाल खेतान चुने गये। —संवाददाता

वृन्दावन म्युंनिसिपल बोर्ड की आवश्यकीय मीटिंग ३० जनवरी को वाइस चेयरमैन नलिनीकान्त मुकर्जी के सभापतित्व में हुई, जिसमें पूज्य बापू के निधन पर शोक-प्रस्ताव पास करके कार्यवाही स्थगित कर दी गई।

वृन्दावन के प्रसिद्ध मंदिर राधारमण जी गोपीनाथ जी, गोविन्ददेव जी के मंदिरों में ३१ ता० को राष्ट्रपिता गांधी जी के शोक में रोजाना खुलनेवाले दर्शन शीघ्र ही बन्द किर दिये गये। आरती के समय बजनेवाले घंटा-घड़ियाल भी नहीं बजाए गये। तीनों मंदिरों में विशेष प्रार्थनाएँ की गई।

वृन्दावन की प्रमुख पांच संस्था-पचायत कार्यालय श्री राधारमण मंदिर-श्री राधाचरण पुस्तकालय ट्रस्ट गौरांग क्लब-ब्रज-साहित्य परिषद् व वैष्णव विद्यालय की ओर से एक शोक-सभा ६ ता० को राधारमण मंदिर के सामने रासमंडल पर हुई, जिसमें कि पूज्य बापू के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोक-प्रस्ताव पास किया गया। सभा में गोस्वामी दामोदराचार्य शास्त्री, अतुलकृष्ण गोस्वामी, गौरकृष्ण शास्त्री काव्य-तीर्थ, अद्वैतकुमार गोस्वामी के भाषण हुए।

वृन्दावन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक-संघ के अब तक तीन आदमी गिरफ़्तार कर लिए गये हैं। धनंजय घोष-वृन्दावन के प्रसिद्ध व्यापारी छोटेलाल पंसारी उर्फ छुट्टा तथा बिहारी जी के मन्दिर के मैनेजर पुरुषोत्तम शर्मा। संघ के दफ्तर की पुलिस ने तलाशी लेकर उस पर सील मोहर कर दी है।

वृन्दावन के संस्कृत छात्र-संघ व विद्वानों की ओर से बापू का शोक मनाया गया। सारे शहर में जलूस निकला। सायं रंग जी के बाग में सभा हुई। संस्कृत छात्र-संघ के प्रधान गोस्वामी रासबिहारी शास्त्री ने शोक प्रस्ताव पेश किया। पूज्य बापू के जीवन पर प्रो० कृष्णचन्द्र एम० एल० ए०, अद्वैतकुमार गोस्वामी, पुरुषोत्तम गोस्वामी मंत्री—के भाषण हुए।

८ ता० को वृन्दावन की प्रवासी बंगाली सम्मिलनी की ओर से वृन्दावन के समस्त बंगालियों की एक शोक-सभा फौजदारकुंज में हुई। एक शोक प्रस्ताव पास किया गया व बापू के जीवन पर डा० निताईचरण जी, आचार्य नन्दकिशोर गोस्वामी, प्रभुपाद के भाषण हुए। प्रवासी बंगाली सम्मिलनी की ओर से छात्रों को एक मैडिल भी इनाम रखा गया है जो कि छात्र गांधी जी के जीवन पर अच्छा निबन्ध लिखकर लावेगा।

वृन्दावन गर्ल्स हाईस्कूल बराबर उन्नति की ओर जा रहा है और इस हाईस्कूल की उन्नति का सारा श्रेय वहां की हैड मिस के० मुकर्जी को है। आप छात्राओं को बराबर सदाचार की शिक्षा देती रहती हैं। वृन्दावन के नारी-समाज में इक स्कूल द्वारा काफी चेतना पैदा कर दी गई है। स्कूल की उन्नति में भाग लेनेवाली संगीत में सर्वश्रेष्ठ छात्रा कुमारी पदमा गोस्वामी, विमला घोष व सरला गोस्वामी हैं। तथा खेल-कूद व वाक्-प्रतियोगिता में आगे आनेवाली कुमारी प्रभा गोस्वामी आदि अनेक छात्राएँ हैं। —संवाददाता

प्रयाग कुम्भ मेला क्षेत्र में बाबा काली कमलीवाला कैम्प (गंगा पार भूसी) । . . . . व्यवस्थापक रायबहादुर पंडित श्रीदत्त शर्मा ।

पेज ७ का शेष

की जानकारी के लिए उनमें से यह कुछ दे रहा हूँ।

उन्होंने बताया कि गांधीजी का बी पर कोई विश्वास न था। कुछ लोग कहते हैं कि बापू का बीमा बहुत रुपयों का है यह गलत है। बापू ने सन् १९०३ में बीमा उतरवाया था पर जब दक्षि अफ्रीका में गये तो उन्होंने प्रीमियम ही नहीं भरा और इस तरह उनकी पालिसी 'लैप्स' हो गई। गांधीजी की व्यक्तिगत संपत्ति कुछ भी नहीं है—जो कुछ है व राष्ट्र का है। यहां तक कि उनके पास जो पहनने के कपड़े होते थे वे खुद के सूत के महिलाश्रम वर्धा अथवा बंबई की अनुसू बहन गोखले हाथ कते सूत की खादी उन्हें समर्पित करती थीं। बाहर से भी उन्हें सूत व कपड़ा मिला करता था।

एक बार परचुरे शास्त्री बापू से भेंट करने दत्तपुर से आये थे। बापू से उन्होंने कहा कि बापू जी वस्त्र चाहिए। बापू ने तुरन्त अपनी चादर उतार कर दे दी। पाठकों को स्मरण रहे कि परचुरे शास्त्री कुष्ट-रोगी थे और बापू ने सेवाग्राम में उनका इलाज स्वयं अपने हाथों किया था। परचुरे शास्त्री का देहान्त पिछले दिनों दत्तपुर (वर्धा) में हो गया था।

बापू अमर हैं

पूरा सेवाग्राम शोकमग्न है। गांधी के उठ जाने से देश की असहनीय हा हुई है जिसकी पूर्त्ति निकट भविष्य में सदियों तक होना मुश्किल है। अब तो उनके बचे हुए कार्य की पूर्त्ति में लगना खादी-कार्य को उन्नति-शील बनाना है

तीर्थ बन गया

सेवाग्राम में यद्यपि आज बापू अनुपस्थिति के कारण सूनापन है सेवाग्राम भी बापू के साथ अमर गया है और उसे तीर्थ का रूप प्राप्त गया है।

(भारतेंदु हिन्दी सिंडिकेट,

प्रयाग अर्द्धकुंभ मेला के अवसर पर ५ कुंडोंवाला श्री लक्ष्मीनारायण महायज्ञ का दृश्य जो बाबा काली कमलीवाले के कैम्प में हो रहा है।

हर मौसम में हर समय
सर्दी और खाँसी के
SIROLIN ROCHE
For COUGHS COLDS
F. HOFFMANN-LA ROCHE & CO. LTD. BASLE
निर्भरयोग्य औषधि
सिरोलीन "रोच"
सारे संसार में व्यवहार होता है

शीशे में बंद
...धूल और मैल से सुरक्षित रखता है
डा. वेस्ट्स जल-अभेद्य है
दाँतों को ९० प्रतिशत अधिक स्वच्छ करता है
साल भर की गारंटी
सूअरों के बालों से रहित
Dr. West's Miracle Tooth Paste
Dr West's Miracle Tuft MEDIUM
डा. वेस्ट्स टूथ ब्रुश और टूथ पेस्ट
व्यापारिक पूछताछ के लिये: एल. डी. सेमूर एंड कं० (इंडिया) लिमि०
बम्बई - कलकत्ता - कराची - मद्रास

मेरे पतिदेव

बचपन की कुचालों में फँसकर प्रमेह, स्वप्नदोष जैसे भयानक रोग में पीड़ित हो गये थे। परिणाम यह निकला कि वह अपने पुरुषार्थ से भी हाथ धो बैठे, इलाज में सैकड़ों रुपया खर्च किया परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। हम दोनों का जीवन दुखमय हो गया।

जालीनूस-अम्बरी

एक ऐसी बलवर्द्धक-वाजीकरण महौषधि है जिसको मंगाकर सेवन कराने से उन्होंने अपनी शक्ति, पुरुषार्थ प्राप्त किया। अब हम दोनों दाम्पत्य प्रेम का स्वर्गीय आनन्द भोग रहे हैं। नपुंसक पुरुषों के लिए यह शक्तिशाली औषधि है और ४६ वर्ष से प्रसिद्ध है। मूल्य—१०।।।)

पता— **हकीम राजनरायन** (२२) होज काजी **देहली**

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे **"वीर्यसंजीवनसत"** ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ **"तिला मस्ताना"** की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५।।=) डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

LUX
LUX TOILET SOAP
बेगम पारा अपनी त्वचा को लक्स टॉयलेट साबुन से कोमल एवं मृदु रखती है
LTS. 178-111 HI
फिल्मी तारिकाओं का सौंदर्य साबुन

गजब हो गया अपनी गलती से सैकड़ों घर बरबाद ! रक्षा चाहते हैं तो इसे जरूर पढ़ें

१—ताकतवर यौवन वटी—भाइयो, यह ताकत की बहुत जोरदार दवा कई तरह की कीमती दवाइयों से तैया गई है। इसकी एक खुराक खाते ही शरीर में महान् शक्ति पैदा मालूम देती है तथा धातुक्षय, कमजोरी, स्वप्नदोष को हटाकर पतले वीर्य को दही के समान गाढ़ा बना देती है, स्मरणशक्ति बढ़ाकर दिल व दिमाग को ताकतवर बनाती है। खोई ताकत व जवानी को आठ दिन में फिर से लाने के लिए आश्चर्यजनक यह इलाज है। बूढ़ा या ज़वान एक बार भी इसे तो यौवन का फिर से पूरा आनन्द आ जाता है। इसके आश्चर्यजनक गुणों से मोहित होकर बड़े-बड़े राजा-महाराजा, सेठ-कारों ने इस्तेमाल करके प्रसन्नता प्रकट की है। पूरे कोर्स ६४ गोली के पैकिट का ५)।

२—अमीरी तिला—यह अद्भुत तिला राजा-महाराजा, सेठ-साहूकारों के सेवन करने योग्य है। इसके लगाने कमजोरी, ढीलापन, सुस्ती हटकर बिजली के समान अपूर्व ताकत पैदा होती है। फी शीशी ५), डाकखर्च दोनों का १)।

३—आर० पी० का पत्थर हजम चूर्ण—कब्ज को दूर कर दस्त साफ लाता है। फी शीशी ।=)।

पता—जैन बालामृत कार्यालय बेलनगञ्ज, (१००) आगरा

शारीरिक उष्णता
के लिये
मशहूर अनुभूत इलाज

शीतल. शक्तिवर्धक. आरोग्यदायक
पर्ल काढा
आज ही शुरू कीजिए
पर्ल कंपनी, रणीबाग, बम्बई २७

यू० पी० प्रतिनिधि दोसर एण्ड कम्पनी, बिरहना रोड, कानपुर।

५००) रुपये पुरस्कार
एक आश्चर्यमय आविष्कार
जादू की अँगूठी

यह अँगूठी जादू और मस्मेरिज्म की शक्ति की सहायता से तैयार की गई है। यह आश्चर्य के काम करती है। जो कोई इस अँगूठी को पहनेगा, वह किसी भी उद्देश्य में, वह कितना ही कठिन और दुःसाध्य हो, सफल होगा। यह आपकी सब प्रकार के संकटों या रोगों से रक्षा करेगी। ग्रहों का कोई बुरा प्रभाव नहीं हो सकता। इस अँगूठी का पहननेवाला किसी भी व्यक्ति (पुरुष या स्त्री) पर वह कितना ही कठोर हृदयवाला हो, अपना पूरा नियंत्रण रखेगा। यही नहीं, वह अत्यंत विनीत बन जायेगा और अनुपस्थिति से अपने को दुःखी अनुभव करेगा। आप प्रेम, मुकदमेबाजी और नौकरी में सफल होंगे और बहुत-सा धन प्राप्त करेंगे। संक्षेप में, अँगूठी शरीररक्षक का काम देगी। एक बार आजमाइए और ठीक पहली रात को इसके आश्चर्यमय परिणाम देखिए।

मूल्य एक अँगूठी २ रु०। तीन अँगूठी ५ रु०। पैकिंग और पोस्टेज अतिरिक्त।

श्री शंकर भण्डार
पोस्टबाक्स २४३, कानपूर

मेरी तरह तंदुरुस्ती
हासिल करो
खराब खून को साफ करता है
डा. वामन गोपाल
आयोडाइज्ड
सार्सापरिला
हर जगह
मिलता है

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद कन्हैयालाल जौहरी एल० ए० घोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

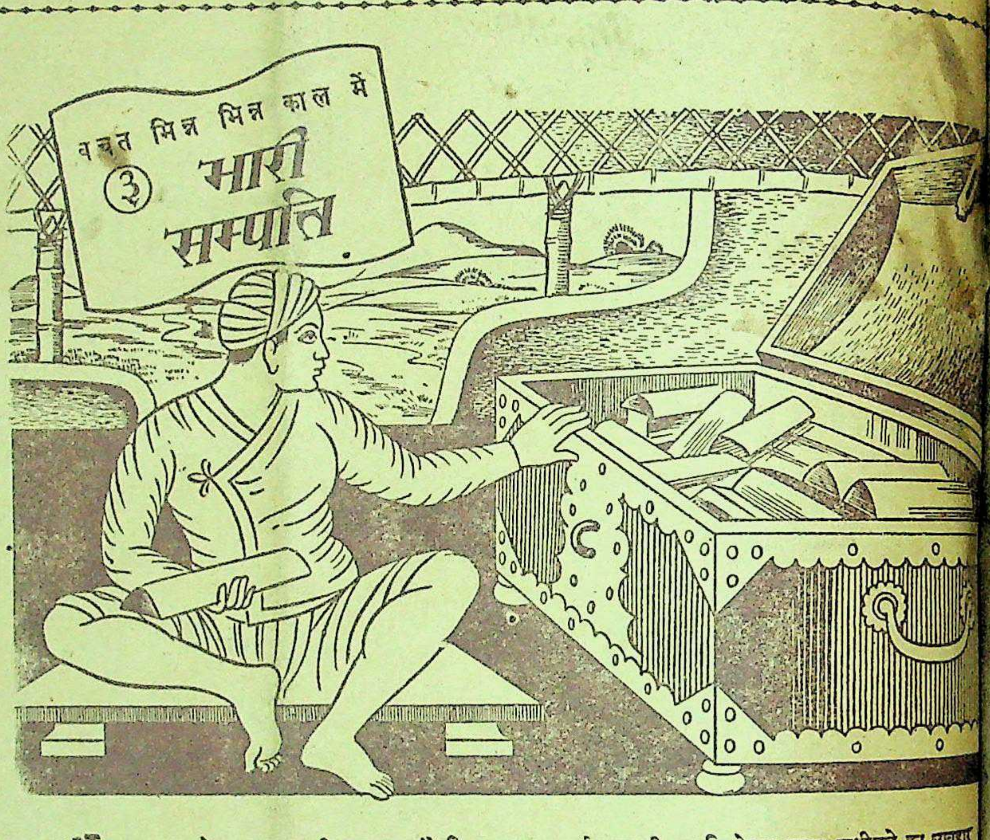
बचत भिन्न भिन्न काल में
③ भारी
सम्पत्ति

अदल-बदल के व्यापार की बजाय सांकेतिक द्रव्य अर्थात् बकरी आदि देकर माल-ख़रीदने का व्यवहार वस्तुओं के अदल-बदल करने के विषय में मनुष्य की उन्नति की ओर एक बड़ा महत्व पूर्ण पग था। परन्तु बकरी रूपी द्रव्य सर्व प्रिय न था। सब बकरियां एक जैसी नहीं होती थीं। दुर्बल और दोषी बकरियों के बदले में माल ख़रीदना शीघ्र ही एक समस्या बन गई। रोग, व्याधि इस सम्पत्ति को प्रायः नष्ट कर देते थे। व्यापार के नवीन विस्तार ने मनुष्य को, जो स्वभाव से ही काल्पनिक है, कोई श्रेष्ठतर द्रव्य खोज निकालने पर विवश कर दिया। उस की दृष्टि धातुओं पर पड़ी। धातु नष्ट न होने वाली और निश्चय से एक समान रहने वाली द्रव्य थी। अब से सब व्यापारिक व्यवहार लोहे, तांबे या सीसा आदि की सलाखों या उनके ढले हुये डलों द्वारा होने लगा।

अपनी दैनिक ख़रीदारी के लिये मनुष्य को किसी न किसी धातु की भारी सलाख या डले को लिये लिये फिरना पड़ता था। इसी कारण भविष्य के लिये बचत करने की इच्छा से लोग धातुओं का संग्रह करने लगे। वास्तव में धनाढ्य अपने धन के भार से दबे हुये थे! कच्ची धातुओं की खानों में खोज की तीव्रता के साथ साथ रुपये का मूल्य गिर जाता था, और नफ़ाखोर शुद्ध धातुओं को दूषित कर देते थे।

आज कल माल के ख़रीदने में या बचत करने में विशेष असुविधा नहीं होती। बुद्धिमान खर्च करने की बजाय भविष्य के लिये बचाना अच्छा समझता है और वह अपनी बचत को बुद्धिमत्ता पूर्वक सुरक्षित मद में लगाता है। नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स की मद में लगाया हुआ धन पूर्णतया सुरक्षित है और अवधि पूरी होने पर इस का मूल्य ५०% बढ़ जाता है—अर्थात् १०) बारह वर्ष में १५) बन जाते हैं। इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता। आप अब ५) से १५,०००) तक की मालियत के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं। जिन की बचत थोड़ी हो, वे ।), ॥) और १) के नेशनल सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं।

भविष्य के लिये बचाइए
नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए
रुपया लगाने की सर्व-प्रिय म

ये डाकख़ानों, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजन्टों और सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त किये जा सकते

ार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

ार, २९ फरवरी, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 29th February, 1948

बापू के साथ बारह वर्ष
में पूज्य बापू की तेरहीं

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी की हत्या
वैज्ञानिक शब्दों का भारतीयकरण

१९४८ में क्या होनेवाला है ?

यदि आप १९४८ में होनेवाली अच्छी व बुरी घटनाएँ समय से पूर्व जानना चाहते हैं, तो आज ही केवल एक पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी फूल का नाम लिखकर भेज दें, बस फिर हम ज्योतिष-विद्या के हिसाब से आपके आनेवाले १२ मास का हानि-लाभ, किस व्यापार में लाभ होगा, किस साधन से धन प्राप्ति होगी, रोजगार कब मिलेगा, वेतन-वृद्धि, परीक्षा में सफलता अर्थात् कार्ड की तारीख से लेकर एक वर्ष तक होनेवाली कुल बातों का संक्षेप अर्थात् मासिक वर्षफल बनाकर केवल १।) में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाक-व्यय अलग। बुरे ग्रहों की शांति का उपाय भी लिखा जायगा—जिससे आनेवाली कठिनाइयों को दूर किया जा सके।

श्री स्वामी योगीराज ज्योतिष आश्रम, (D.D.A.)
फगवाड़ा (कपूरथला स्टेट)

चिरस्थायी व दिमाग़ी ताक़त बढ़ाने के लिए सेवन करो
PILLS
डॉ. गौतमराव केशव टानिक फॉस्फरस पिल्स
डॉ. वामन गोपाळ सार्सापरिल्ला डेपो मुंबई नं० २

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जोहरी एल० एस० धोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

सॅरिडॉन
सर्व्वप्रकारका दर्द दूर करता है
10 Saridon
BRAND ANALGESIC TABLETS
Saridon

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

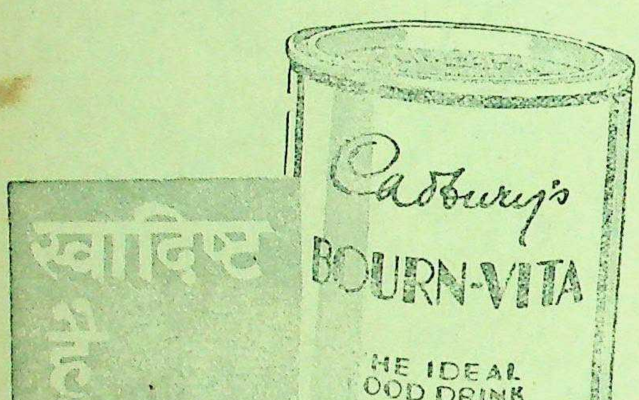
स्वादिष्ट है बढ़िया है !
Cadbury's
BOURN-VITA
THE IDEAL FOOD DRINK
MADE BY CADBURYS SPECIALISTS IN FOOD DRINKS FOR 100 YEARS
खास तौर पर बच्चों के लिये

'बोर्न-विटा' का केल्सेयम और खाद्योज बढ़नेवाले बच्चों की हड्डियों को मजबूत और मांस को कडक बनाते हैं। बालिगों के लिये भी यह गहरी और मीठी नींद लाता और ताक़त का खज़ाना बख्शाता है।

केडबरीका
बौर्न-विटा
केल्सेयम और खाद्योज से भरपूर
केडबरी का [illegible]

K. B. 2

बालों को सुश्रृंगारिक रूप से बनाकर रखिये
जीत प्राडक्शन्स कृत "तोहफ़ा" का नायक "रहमान"
Vaseline POMADE
CHESEBROUGH MFG. CO.

कोमलता से सुगंधित किया गया वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।
वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।
Copyright.

देशदूत

वर्ष १०, संख्या २४] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, २९ फरवरी, १९४८

अमरीका में होनेवाली सुरक्षा समिति में भारत-सरकार की ओर से काश्मीर का प्रतिनिधित्व करके शेख अब्दुला भारत वापस आ गये। आपने एक वक्तव्य देते हुए कहा है कि जब पाकिस्तान ने यह घोषणा की कि काश्मीर के आक्रमण से उसका कोई वास्ता नहीं है और न आक्रमणकारियों की वह सहायता ही करता है तब सुरक्षा कौंसिल पाकिस्तान को काश्मीर के प्रश्न को लेकर अड़ंगेबाजी उत्पन्न कर रहा है? अपने राम की राय में शेरे काश्मीर ने बात तो पते की कही है किन्तु पाकिस्तान में उसे सुननेवाला कौन है? क्योंकि लंका में सभी बावन गज के हैं। पाकिस्तान में सभी लीडर हैं और कौन किधर जा रहा है कुछ पता-ठिकाना नहीं। इधर शासन की बागडोर अंगरेज गवर्नरों ने थाम रखी है, वह बखूबी अपनी कूटनीति की चाल चल रहे हैं। उधर पाकिस्तानी लीडर अपनी ढोंगी धुन में मस्त हैं। काश्मीर से पाकिस्तान का क्या संबंध है, इसका निर्णय तो कभी न कभी होगा ही, किन्तु इस वक्त तो अखाड़ेबाजी की जरूरत है सो हो ही रहा है। आगे के लिए खुदा हाफिज!

* * *

काश्मीर के मामले में भारत-सरकार बड़ी दृढ़ता से काम ले रही है। वह न तो काश्मीर से फौज ही हटायेगी और न काश्मीर को शत्रुओं के हाथ में जाने देगी। अपने राम की राय में शासन की यही दृढ़ता है और अगर भारत-सरकार अंत तक अपने विचारों पर दृढ़ रही तो सुरक्षा कौंसिल के सदस्यों की ही नहीं पाकिस्तानियों की भी पों बोल जायगी। कांग्रेस सरकार की ढुलमुल नीति का लाभ अभी तक अँगरेज और मुस्लिम लीगी दोनों उठाते रहे हैं लेकिन अब तो काश्मीर के मामले का निबटारा हथियारों के बल से होगा। महाभारत में कहा भी है—अर्जुनस्य प्रतिज्ञेद्वे न दैन्य न पलायनम्।

* * *

निजाम सरकार भी अपनी खिचड़ी अलग पका रही है। उसने अब एक अँगरेज को अपना सलाहकार बनाया है जो दिल्ली जाकर भारत-सरकार तथा निजाम सरकार के बीच समझौता कराने में तल्लीन है। अपने राम की समझ में नहीं आता कि निजाम ने पुनः अँगरेज की शरण क्यों ग्रहण की है? नवाब छतारी आदि समझौता करते-कराते वहां से नौ दो ग्यारह हो गये और अँगरेज बहादुर ऐसी कौन सी शतरंजी चाल चलेंगे जिससे निजाम और भारत-सरकार के बीच समझौता हो जायेगा? हां, अंगरेज सलाहकार लार्ड लुई माउंट बेटेन के मेहमान बन जरूर सकते हैं किन्तु निजाम के संबंध में निर्णय होगा देशी राज्य विभाग के द्वारा। समझ में नहीं आता कि निजाम क्यों अपनी खिचड़ी अलग पकाना चाहता है? अगर उसे नरक में ही जाना पसंद है तो जाता क्यों नहीं, पाकिस्तान यूनियन में शामिल तो हो, फिर फैसला हो जायगा, लेकिन आज स्थिति तो निजाम की ऐसी है कि आसमान से गिरे तो खजूर में अटक गये। न तो वह भारत-सरकार का ही होकर रहना चाहता है और न पाकिस्तान के पीरों को ही हलुआ पूड़ी खिला सकता है। भइ गति सांप-छछूंदर केरा।

चला गया........

लेखक, प्रोफेसर 'अंचल' एम० ए०

देवों का देवत्व बढ़ा पर मनुज भूमि पर रोया !
भू से बिछुड़ा आज मरण-सागर पी जानेवाला
चला गया भू से अनयों की भीत ढहानेवाला
चला गया वह पुन्य-परार्थी आहत जग का त्राता
चला गया मानवता को चेतन्य बनानेवाला
चुक आया था स्नेह व्योम के रवि-शशि का—तारों का
चुक आया था नीर मेघ-मालाओं की धारों का
शायद सूख चली थी गगन-शैलजा—अमृत चुका है
देवों का देवत्व बढ़ा पर मनुज भूमि पर रोया !

मद-मत्सर-विरहित, तेजोमय जीवन-कला-प्रणेता
चला गया भू से शिवता का—ईश्वरता का नेता
पहले आजादी के सपने को ध्रुव सत्य बनाया
जाता अब हिंसक पशुता को प्राणों की बलि देता
रक्त-तृषित भाई को अपना खून पिलानेवाला
इस अधबने राष्ट्र की जड़ में शक्ति सजानेवाला
चला गया—इतिहास न कर सकता था अधिक प्रतीक्षा !
देवों का देवत्व बढ़ा पर मनुज भूमि पर रोया !

चला गया जिसकी प्रतिमा थी मन्दिर में मन-मन के
चला गया विश्वास बना जो श्वासों में जन-जन के
चला गया जिसके वन्दन के स्वर स्थिर कभी न होंगे
चला गया जिसकी श्रद्धा से दीप जले तन-तन के
चला गया वह विभा खेलती जिसकी किरण मुखों पर
चला गया जिसकी करुणा छाई थी जगत-दुखों पर
चला गया जिसके बल पर जूझा यौवन अचलों से
देवों का देवत्व बढ़ा पर मनुज भूमि पर रोया !

चला गया संकल्पों को ही खड्ग बनानेवाला
चला गया मृत मिट्टी से हुंकार उठानेवाला
चला गया जिसने जन-बल का नगपति खड़ा किया था
चला गया वह अबुझ दीप्ति का पर्व बनानेवाला
घट-घट में जिस महासाधना ने अमरत्व जगाया
चला गया जिसने मरघट को अमरावती बनाया
परिक्रमा करतीं गत सदियां लोहू के फूलों से
देवों का देवत्व बढ़ा पर मनुज भूमि पर रोया !

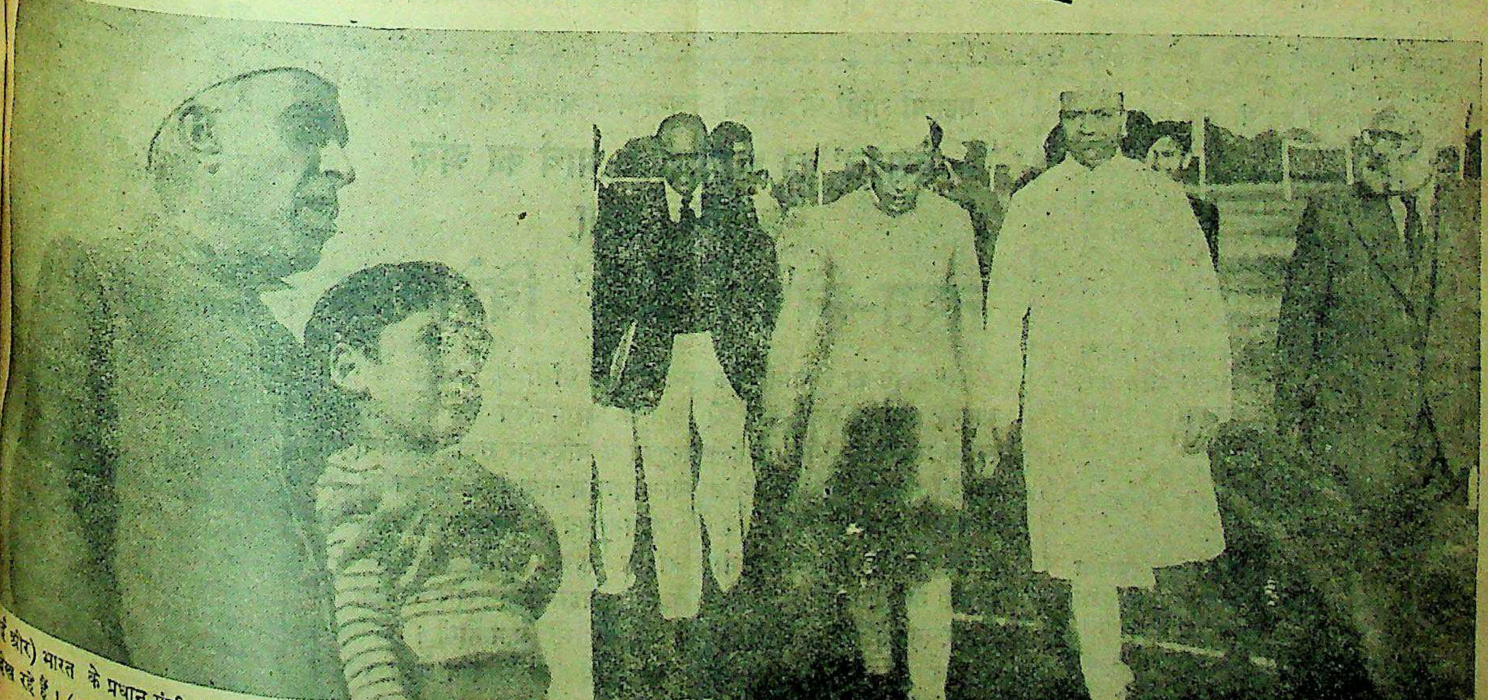

ओर) भारत के प्रधान-मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू अपने नाती के साथ खेल देख रहे हैं। (दाहिनी ओर) खेल के संचालकों के साथ जाते हुए पंडित नेहरू।

सम्पादक का पृष्ठ

महात्मा गांधी के बाद

दिल्ली में होनेवाली अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन समाप्त हो गया। कांग्रेस का यह प्रथम अधिवेशन था जिसमें उस महापुरुष का अभाव बेतरह खटक रहा था जिसके इशारे तथा परामर्श से राष्ट्र किसी निर्णय पर पहुँचता था। महात्मा जी का दर्शन इस बार अधिवेशन में नहीं हो सका, उस अभाव का दृश्य बड़ा मर्मस्पर्शी था। गांधी जी पिछले ५० वर्ष से कांग्रेस का जिस अग्रगामी गति से संचालन कर रहे थे इसे कौन राष्ट्रप्रेमी नहीं जानता? नेताओं में मतभेद होने पर भी, उस महापुरुष के सामने, सभी मतभेद विलीन हो जाते थे। प्रत्येक विरोधी भी यह अनुभव करने लगता था कि गांधी जी की इच्छा ही सब कुछ है, उनका मार्ग-प्रदर्शन ही वास्तव में सत्य है। इसलिए उन्हीं के अन्तिम निर्णय के अनुसार कांग्रेस के नेता अपना निर्णय देते थे। किन्तु कौन जानता था कि महात्मा जी राष्ट्र तथा करोड़ों जनता के बीच से एकाएक अन्तर्द्धान हो जायेंगे और वर्किंग कमेटी तथा अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का यह अधिवेशन उनकी अनुपस्थिति से सूना रहेगा, फिर भी हमें प्रसन्नता है कि कांग्रेस तथा कांग्रेस नेता गांधी जी द्वारा प्रशस्त किये हुए मार्ग का अवलम्बन करते हुए आगे बढ़ने की ओर अग्रसर हो रहे हैं। इस बार कांग्रेस ने कुछ महत्त्वपूर्ण निर्णय किये हैं और वह निर्णय महात्मा गांधी द्वारा निर्देशित नीति के अनुसार ही किये गये हैं।

भारतीय कांग्रेस ने जो निर्णय किया है उसमें सबसे प्रमुख है कांग्रेस के लिए नये विधान की स्वीकृति। कांग्रेस में अब किसी अन्य राजनैतिक दल की गुंजाइश नहीं रहेगी। कांग्रेस के प्रत्येक सदस्य की एक नीति होगी, एक ध्येय होगा और एक आदर्श होगा। अब तक कांग्रेस में अनेक दल हैं और उन दलों की विभिन्न विचार-धाराएँ हैं। महात्मा गांधी के जीवन तक तो किसी प्रकार पक्ष-विपक्ष दोनों की एक सम्मिलित नीति चलती रही, क्योंकि गांधी जी अपने प्रभाव तथा व्यक्तित्व के बल से सभी दलों को एक सूत्र में आबद्ध किये रहते थे और अन्त में वह जो कुछ निर्णय देते थे, प्रत्येक दल के लोग उसे मान्य समझते थे; किन्तु अब जब कि वह हमारे बीच नहीं हैं, परिस्थिति बदल गई है। सर्वोपरि व्यक्तित्व का अभाव है। ऐसी दशा में कांग्रेस ने कांग्रेसवादियों को एक सूत्र में आबद्ध करने के लिए जो निर्णय किया है वह अत्यन्त उचित और जरूरी है। अब वह समय नहीं है कि कांग्रेसजन विभिन्न दलों में बँटकर अपनी शक्ति क्षीण करें, दलबंदी की नीति के अनुसार परस्पर जूझते रहें, अब तो सचमुच एक सूत्र में आबद्ध होने का महान् अवसर है। भारत-विभाजन के बाद इस स्थिति की महत्ता और भी बढ़ गई है।

कांग्रेस ने संयुक्त मोर्चे की स्थापना के लिए जो निर्णय किया है उसमें सबसे अधिक आपत्ति थी समाजवादी नेताओं की। उनका कहना था कि कांग्रेस का नया विधान पारस्परिक मतभेद को बढ़ायेगा। समाजवादियों को अब कांग्रेस में स्थान नहीं प्राप्त हो सकेगा। या तो वह अपना अलग संगठन करें या कांग्रेस में सम्मिलित होकर अपने दल की इतिश्री कर दें। हम जानते हैं और यह सही भी है कि भविष्य समाजवादी भावनाओं और विचारों का ही है। वह समय दूर नहीं है जब कि देश का शासन विशुद्ध समाजवादी नीति के आधार पर ही होगा, किन्तु आज के समाजवादी दल का अस्तित्व कमजोर नींव पर स्थित है। आचार्य नरेन्द्रदेव, श्री जयप्रकाशनारायण तथा डाक्टर राममनोहर लोहिया आदि इने-गिने समाजवादी नेता हैं जिनके बल पर समाजवादी दल कायम है। हम पूछते हैं कि पूंजीपतियों को छोड़कर इस देश में कौन समाजवादी नहीं है? करोड़ों किसान, मजदूर तथा मध्यम श्रेणी के लोग सभी समाजवादी नहीं हैं तो और क्या हैं? किन्तु क्या समाजवादी दल ने वैधानिक दृष्टि से कभी इनके संगठन का सामूहिक उपाय किया है? अखबारी प्रचार के बल से ही समाजवादी दल क्या एक सुदृढ़ राजनैतिक जमात अभी तक नहीं प्रमाणित हो सकी है, इसलिये जब तक वह वैधानिक तथा रचनात्मक दृष्टि से संगठित न हो तब तक हवा में रहकर कोई भी राजनैतिक संस्था राष्ट्र की बागडोर अपने हाथों न तो ले ही सकती है और न वह सफल ही हो सकती है। पूंजीवाद का महान् गढ़ केवल प्रचार से नहीं ढहाया जा सकता, जब तक कि किसी ठोस और रचनात्मक प्रणाली न अपनाई जायेगी? आखिर समाजवादियों को भी तो पैसे की आवश्यकता है? फिर उन्हें कहां से पैसा मिलता है, क्योंकि देश की जनता बड़ी गरीब है, वह कहां से पैसा देगी?

इसलिए आवश्यक है कि समाजवादी दल इस सम्बन्ध में ईमानदारी से निर्णय करे और कांग्रेस की शक्ति को अधिक से अधिक सुदृढ़ बनाने की ओर बढ़े। अब महात्मा जी नहीं रहे, इसलिए राष्ट्रभक्तों पर बड़ी भारी जिम्मेदारी आ गई है। केवल नेहरू-पटेल के मतभेद का नारा लगाने और ध्वंसक नीति ग्रहण करने से राष्ट्र का उद्धार न होगा। ध्वंसात्मक कार्यों की जिम्मेदारी तो मौलिक रूप से कम्यूनिस्ट पार्टी पर छोड़ देना चाहिए। कांग्रेस समाजवादी दल तो कांग्रेस का ही एक अंग है, इसलिए उसे सम्पूर्ण रूप से कांग्रेस के साथ मिलकर और संयुक्त मोर्चे के आधार पर संगठित होकर काम करना चाहिए। अब राष्ट्रीय विचा को सजग होना चाहिए। महात्मा जी नाम की आड़ में विजय प्राप्त करने नीति समाप्त होनी चाहिए और ग जी के बताये हुए मार्ग पर चलकर रच त्मक तथा ठोस राजनीति को अपना चाहिए। गांधी जी की आत्मा को शांति तभी होगा जब कि उनके आदर्श उपा सिद्धान्तों की पूर्ति में प्रत्येक कांग्रेसवादी एक स्वर से आगे बढ़ेगा। हम अखि भारतीय कांग्रेस कमेटी के निर्णय का स्वागत करते हैं।

* *

स्वर्गीय सुभद्रा जी !

हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवियित्री श्री सुभद्राकुमारी चौहान का गत १६ फ को जबलपुर से ४३ मील की दूरी मोटर-दुर्घटना से स्वर्गवास हो यह विपत्ति हिन्दी-संसार के लिए ही दुखद और हृदयविदारक है। कुमारी जी की आयु अभी ४३ थी। घर में छोटे-छोटे बच्चे हैं, कच्ची है। बच्चों की देखभाल और का समस्त उत्तरदायित्व श्रीमती जी पर ही था। इस दृष्टि से यह और भी करुणापूर्ण है। सुभद्रा पति ठाकुर लक्ष्मणसिंह चौहान ए वादी और कर्मठ योद्धा हैं।

शेष पृष्ठ १८ पर

हम क्या करें, समझ में नहीं आता

इस समय पूज्य बापू के पथ-प्रदर्शन की पग-पग पर आवश्यकता थी

लेखिका, श्रीमती रामेश्वरी नेहरू

देश के पिता करोड़ों स्त्री-पुरुषों के बापू संसार के पथ-प्रदर्शक, शान्ति और प्रेम की मूर्त्ति महात्मा गांधी ने शरीर त्याग किया और स्वर्ग को सिधारे। सारे देश में अँधेरा छा गया। करोड़ों आंखों से आंसुओं की धाराएं बह गईं। आशाएँ टूट गईं। हृदय शोकातुर हो गए। जिस महापुरुष ने वर्षों सत्य और अहिंसा को लड़ाइयां लड़ीं, लड़खड़ाते देश को अपने पैरों पर खड़ा होना सिखाया, सफलता के साथ उसको दासता की जंजीरों से छुड़ाया, वह आज हमको छोड़कर चला गया! उसके महापरिश्रम और भगीरथ पुरुषार्थ से राजनैतिक स्वराज्य तो मिल गया, परन्तु स्वतन्त्रता का उपयोग कैसे करना चाहिए, उसको बनाये रखने के लिए क्या उपाय बरतने चाहिए, यह तो हमने कभी सीखा नहीं था। इसी पाठ को सिखाने में दिन-रात व्यस्त थे कि किसी दुष्ट के पाशविक आघात से देखते देखते संसार-यात्रा समाप्त की और हमको अनाथ छोड़कर चले गये। ठीक उस समय जब पथ-प्रदर्शन के लिए उनकी पग-पग पर आवश्यकता थी। कलकत्ता, बिहार और दिल्ली में हम शक्ति और प्रेम का पाठ धीरे-धीरे सीख रहे थे कि हमारा पूज्य गुरु हमसे बिछुड़ गया।

हजारों के पिता

बापू केवल राजनैतिक नेता नहीं थे, वह प्रेम के सागर, सत्य के भंडार और त्याग की मूर्त्ति थे। वह हजारों के पिता थे, जिनके व्यक्तिगत जीवन की कठिनाइयां वह सुलझाया करते थे। हम जिन्हें उनके निकट जाने का सौभाग्य प्राप्त था अच्छी तरह जानते हैं कि किस प्रकार वह अपने स्नेह-व्यवहार और मीठे शब्दों से हमारा शंका-समाधान औ संकट-हरण करते थे। अपनी पवित्र से वह हमको पवित्र बनाते थे, हमें सच्चा का रास्ता दिखाते और साथ ही अ अपार सहनशीलता से हमारे दोषों क्षमा करते थे। उनके लिए न कोई ब था न छोटा, न कोई नीचा था न उ स्वच्छ और निष्काम मन से जो कि जाय वही उनको प्रिय था। सबके लि उनकी समान दृष्टि और समान प्रेम था। ऐसे पिता के विछोह से दुःखी हो स्वाभाविक है।

उनके काम को पूरा करो

परन्तु यदि हम दुःख और शो में डूबकर अपने कर्त्तव्य को भूल जा तो जो परिश्रम उन्होंने हम पर कि वह मानो व्यर्थ गया। ऐसा करने से हम उनकी आत्मा को भारी दुःख पहुंचावेंगे। उनका काम अधूरा रह गया है। उसको पूरा करने का ढंग वह सिखा चुके हैं। अब हमारा पहला धर्म यही है कि हम उनके आरम्भ किये काम को पू करें, उनके सिखाये हुए सिद्धान्तों चलें और सारे देश को उस पर च सिखायें। सचाई और शान्ति को फै उसके लिए परिश्रम करें त्याग बलिदान दें और हर उचित उपा देश को सच्चे रूप में स्वतन्त्र बनायें। देश में और संसार में शान्ति स्था करें। लड़ाई-दंगा बन्द करें और का रामराज्य स्थापित करें। बापू की आत्मा को सुख मिलेगा। यह स्मरण रहे कि वह अब भी ह साथ हैं और सदा की नाई हमको अ कर्त्तव्य-पालन करते देखकर ही उन सन्तोष होगा।

हे पितामह! हमें धर्मपालन की शक्ति

महात्मा गांधी के आदर्श रचनात्मक आदेश की स्मृति में

'देशदूत' का आगामी ७ मार्च का अंक प्रकाशित होगा

'नशा-निषेध अंक' विशेषांक

'देशदूत का आगामी अंक पूज्य महात्मा गांधी के जीवन के एक आदर्श, आदेश तथा कार्य की स्मृति में 'नशा-निषेध अंक' विशेषांक के रूप में प्रकाशित होगा। नशीली वस्तुओं के बहिष्कार तथा भारतीयों को नशे की आदतों को छोड़ देने का आन्दोलन महात्माजी के जीवन का एक महत्त्वपूर्ण कार्य था। इस अंक में 'नशा-निषेध' के सम्बन्ध में सुंदर से सुन्दर रचनायें प्रकाशित होंगी। राष्ट्रीय नेताओं, कांग्रेस मन्त्रि-मंडल के मंत्रियों तथा विभिन्न धर्मावलम्बी विद्वानों, महात्माओं और साधुओं की श्रेष्ठ रचनाओं और प्रवचनों की बानगी भी प्राप्त होगी। विशेषांक अत्यन्त आकर्षक, सुन्दर और 'नशा-निषेध' के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण होगा।

व्यवस्थापक 'देशदूत'

वैज्ञानिक शब्दों का भारतीयकरण

स्वतंत्र भारत में शिक्षा-शास्त्रियों तथा वैज्ञानिकों की एक राष्ट्रीय जिम्मेदारी

लेखक, डाक्टर रघुवीर एम० ए०, पी० एच० डी०

भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी की मान्यता से इस समय विद्वानों के बीच वैज्ञानिक शब्दों के भारतीयकरण का महत्त्वपूर्ण प्रश्न उपस्थित है। सुप्रसिद्ध विद्वान् डाक्टर रघुवीर ने इस लेख में इस समस्या पर प्रकाश डालते हुए शिक्षा-शास्त्रियों तथा वैज्ञानिकों से अनुरोध किया है कि इस राष्ट्रीय और सांस्कृति समस्या का हल भारतीय दृष्टिकोण से ही करना उचित है। लेख विचारणीय तथा मननपूर्ण है।

भारतीय वैज्ञानिकों की वर्तमान अँगरेजी भाषा की परिधि के अन्दर है। उन्होंने जिस कठिन श्रम के अँगरेजी का ज्ञान उपलब्ध किया उनकी समानता संसार के किसी भी में नहीं मिलती।

उनके लिए अँगरेजी मातृभाषा के ही सरल सुन्दर बन गई है। इसका यह नहीं कि जितने भी शब्द वे प्रयोग हैं उन सबके अर्थ वे जानते ही किन्तु वे उन्हें इतने समय से प्रयोग में आ रहे हैं कि उनको उन शब्दों के छिपे अर्थ को जानने की परवाह नहीं होती।

किन्तु हमारे देश में ऐसे लोगों की १० हजार में एक भी तो नहीं। हमें विज्ञान को विस्तृत अध्यन का बनाना है और दस हजार में एक के को घटाकर १०० में एक करना इस उद्देश्य को सिद्ध करने के लिए अँगरेजी के स्थान पर भारतीय भाषाओं को लाना होगा।

वैज्ञानिक अध्ययन के भारतीय- का ख्याल ही शिक्षा-शास्त्रियों तथा को भयभीत कर रहा है। अँगरेजी का अध्ययन किया है इस- उसके स्थान पर किसी दूसरी भाषा के पक्ष में वे हैं ही नहीं। उनके वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्दों का करण का ध्यान ही एक विचित्र सी वस्तु है।

तर्क

निराशा से अभिभूत होकर वे 'अन्तर्राष्ट्रीय' का नारा लगाते हैं। जब वे अन्तर्राष्ट्रीय शब्द का प्रयोग करते हैं तो उनका आशय उससे अँगरेजी से होता है, जिसका कि अब तक उन्होंने अध्ययन किया है। उनका आशय न इससे अधिक होता है और न कम।

'अन्तर्राष्ट्रीय' शब्द हिन्दू मस्तिष्क को असाधारण रूप से अपील करता है। 'अन्तर्राष्ट्रीय' की बलिवेदी पर वे अपने को कुर्बान करने को तैयार हैं। उच्च आदर्श की ओर झुकने की हिन्दू मस्तिष्क के अन्दर रहती है। कहा जाता है कि हमें बाहरी दुनिया के साथ अपना सम्बन्ध बनाये रखने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय या यों कहिए अँगरेजी पारिभाषिक शब्दों की अत्यन्त आवश्यकता है। ३० करोड़ भारतीयों को शिक्षित करने के लिए जिस भाषा की आवश्यकता है वह अँगरेजी नहीं, बल्कि एक ऐसी देशी भाषा है जिसका आधार अत्यन्त दृढ़ हो।

अँगरेजी बोलनेवाले देशों के साथ सम्बन्ध बनाये रखने के लिए अँगरेजी बहुत अच्छी है, किन्तु उसी प्रकार फ्रान्स, जर्मनी, रूस, दक्षिणी अमेरिका, चीन और जापान आदि देशों से भी सम्बन्ध बनाये रखने के लिए दूसरी भाषाओं की आवाश्यकता है।

अनुसंधान-कार्य के करनेवालों का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने विषय में सम्बन्ध रखनेवाले किसी भी भाषा के पत्रों में निकलनेवाले प्रत्येक लेख से अपना सम्बन्ध बनाये रहें। इस मतलब को सिद्ध करने के लिए केवल अँगरेजी काफी नहीं। इसलिए सरकार को चाहिए कि वह एक ऐसी निश्चित मशीनरी तैयार करे जो अन्य देशों के मानवीय परिश्रम के परिणाम को हमारे अनुसन्धान कार्यकर्त्ताओं के समक्ष रखे।

आज हमारे सामने जो प्रश्न है वह यह है कि एक बालक या प्रौढ़ को जो अपने जीवन के सर्वोत्कृष्ट १०-१५ वर्ष ऐसी भाषा के अध्ययन करने में नहीं व्यय करना चाहता जो कि संसार की अत्यन्त कठिन भाषाओं में से एक है, किसी भी प्रकार की और किसी भी स्तर तक वैज्ञानिक शिक्षा देने से इनकार नहीं किया जा सकता और ऐसा तभी हो सकता है जब कि विज्ञान की शिक्षा किसी भारतीय भाषा में दी जाय।

अँगरेजी पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग

यदि किसी प्रकार अँगरेजी पारिभाषिक शब्दों को अपनी भाषा में रोक भी लिया गया तो उनके द्वारा हमारी भाषा सर्वथा अभिभूत हो जायगी। वैज्ञानिक रचनाओं में वैज्ञानिक विचारों को परस्पर पिरोने के लिए किसी भाषा में ढांचे के रूप में, जिस शब्दावली की होती है, उसमें २००० पारिभाषिक शब्दों से अधिक नहीं होते।

किन्तु किसी भी प्रधान विज्ञान के सम्पूर्ण पारिभाषिक शब्दों की संख्या एक लाख तक पहुँच सकती है। इससे मोटे तौर पर मालूम हो जायगा कि उक्त विचारों के अनुसार यदि वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्दों को ही प्रयोग में लाया गया तो वे भाषा पर अपना कब्जा करके उसे सर्वथा नष्ट कर देंगे। किसी भी प्रधान विज्ञान की पारिभाषिक शब्दावली में हमारी भाषा के दो प्रतिशत शब्द रहेंगे।

नीचे एक उद्धरण दिया जाता है:—

'अपने असंस्कृत धातुओं के साथ हाइड्रोनेपथेलिन एथेलिन से समानता रखता है। दो एटम या ग्रुप (एच २, बी० आर० २ हीलादि) बी० १ बी०२ स्थिति से एकदम मिलाये जा रहे हैं। दूसरी तरफ डी हाइड्रो और टेटा हाइड्रो नेपथेरीन दोनों असली आटोमेटिक टाइप में परिवर्तित होने के लिए हाइड्रो जिनिटेड ओटोमेटिक सिस्टम के आंशिक गुण रखते हैं, जैसे कि नेपथेलिन तथा हाइड्रोजन देने के लिये केवल गरम करके उनके पृथक्करण से पता चलता है।

यहां पर हर एक महत्त्वपूर्ण शब्द जो कि विज्ञान से सम्बन्ध रखता है, अँगरेजी में ही दिया गया है, शेष तो केवल संयोजक शब्द हैं, जिन्हें भारतीय भाषा में दे भी दिया गया, तो वे विज्ञान के अध्ययन में किसी प्रकार न तो सरलता लाते और न ला ही सकते हैं।

ऐसे बहुत से उन्छेद प्राप्त हो सकते हैं जिनमें संयोजक शब्दों को अँगरेजी में रखना ही समुचित प्रतीत होगा। अँगरेजी पारिभाषिक शब्दों को भारतीय भाषा में बनाये रखने का मतलब यह होगा कि जो भारतीय विज्ञान अध्ययन करना चाहता है उसे अँगरेजी की शिक्षा अवश्यमेव देनी पड़ेगी। तब 'अनुवार' का उद्देश्य ही नष्ट हो जायगा। हमारी अपनी भाषा में सुधार करने तथा उसे समृद्ध बनाने का प्रश्न तो उठता ही नहीं।

आक्रमण हानिकारक

कुछ लोगों का विचार है कि अँगरेजी के सारे पारिभाषिक शब्दों को चाहे न लिया जाय किन्तु अपनी भाषा को हानि पहुँचाये बगैर भी कुछ एक शब्द लिये जा सकते हैं। ऐसे लोग साधारण पारिभाषिक शब्दों को लेते समय उनकी विस्तार-सीमा की ओर ध्यान ही नहीं देते। किसी भी भाषा में शब्द अकेले कभी नहीं रहते। उनके सम्बन्धी-संगी, समानार्थक तथा विपरीतार्थक शब्द भी होते हैं। एक के दर्जनों यौगिक शब्दों तथा बीसों समस्त शब्द होते हैं। यदि तुम किसी विदेशी शब्द को अपनाओगे तो उसका शेष परिवार भी स्वयं उस शब्द के साथ आ जायगा। इस प्रकार हम भाषा-सम्बन्धी आक्रमण के लिये बिना किसी रुकावट तथा सन्देह के प्रधान द्वार खोल देंगे। मैं रसायन-शास्त्र से 'फास्फोरस' इस साधारण शब्द को ही लेता हूँ। यहां नीचे फास्फोरस के परिवार के सदस्यों की तालिका दी जाती है:—

फास्फोरस, फोस्जीन, फोस्फेस, फोस्फेमाइड, फोस्फेट, फोस्फेट शक्क, फोस्फेटाइड, फोस्फेटयूरिया, फोस्फोन फोस्फेनिल, फोस्फिन, फोस्फाइट फोस्फग्लिसेरट, फास्फो-एमिनोलिवाइड, फोस्फो-मोलिब्डिक एसिड, फोस्फोनम्, फोस्फोप्रोटीन, फोस्फारेट, फास्फेटेड, हाइड्रोजन, फोस्फर, बोंज, फोस्फोसील, फोस्फोरसेन्स, फोस्फोरसी, फोस्फोरिक-एसिड, डी फोस्फेरिक एसिड, ग्लेशल फोस्फोरिक एसिड, मेटा फोस्फोरिक एसिड, फोस्फेरी-फेरिस, फोस्फे-रेजेनिक, फोस्फोरीग्राफी फोस्फेरस आक्साइड, एन्ट हिड्राइस, फोस्फोरस पेण्टोक्साइड, फोस्फोरसिक्की, सल्फाइड फोस्फोरिल, फोस्फोरिटीकेट, फोस्फोयु-रेहिलाइट, फोस्फिल, फोरसीजाइड।

साभिप्राय शब्द

अँगरेजी पारिभाषिक शब्द अधिकतर

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

दिल्ली में होनेवाली केन्द्रीय शिक्षा सलाहकारिणी समिति में पंडित जवाहरलाल नेहरू भाषण दे रहे हैं। मौलाना अबुलकलाम आजाद, सर शांतिस्वरूप भटनागर और राजकुमारी अमृतकौर बैठी हुई दिखाई दे रही हैं।

राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी की पाशविक हत्या हिन्दुत्व के लिए कलंक है

भारत और करोड़ों भारतीय आज अनाथ हो गये हैं

लेखक, श्री अद्वैतकुमार गोस्वामी (पत्रकार)

३० तारीख को सायंकाल ५ बजे संसार के दो सूर्य अस्त हो गये। एक पश्चिम में और एक भारत में। संसार के इतिहास में यह तारीख और यह घड़ी भारत के लिए सबसे दुर्भाग्यपूर्ण लिखी जायगी। जिस दिन कि भारतवासियों ने अपने उस महान् नेता को हमेशा के लिए खो दिया। भारतवासी पूज्य बापू से जन्म-जन्मान्तर तक उॠण नहीं हो सकते। जो कि वह भारत के लिऐ ही पैदा हुए थे। भारत के लिए ही जिये और भारत की हित-आकांक्षा में ही विलीन हो गये।

मुझे अपने इस लघु जीवन में चार बार उस राष्ट्र-पितामह के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। अपने जीवन में जो भी कुछ राष्ट्रीयता व पत्रकार-कला का ज्ञान हुआ है उस सबके प्रणेता पूज्य बापू ही थे। मेरे जीवन का वह सुखद प्रभात था, जिस दिन कि मैंने सर्वप्रथम पूज्य बापू के दर्शन किये थे। सन् १९२८ में पूज्य बापू अपने राष्ट्रव्यापी परिभ्रमण के अवसर पर वृन्दावन भी पधारे थे। म्युनिसिपल डाकबंगला में उनका भाषण था। उस समय मेरी अवस्था १४-१५ साल की थी। अतः बचपन की उन बेफिक्रियों के साथ मैं भी उस दिन राष्ट्र-पिता के दर्शनों को गया था, क्योंकि तब तक राजनीति के प्रति मेरी जरा भी दिलचस्पी न थी। अतः पूज्य बापू ने अपने पूरे भाषण में क्या कहा, यह मैं जानकर भी स्मरण न रख सका। पर उस ओजमयी वाणी के वह मंत्र अभी तक मेरे कानों में गूंज रहे हैं जो कि उन्होंने देशवासियों से आजादी के भावी आन्दोलन में भाग लेने की अपील करते हुए भारत माता के बन्धनों को काटने के लिए अपील की थी। पूज्य बापू के उसी आदेश से प्रेरणा लेकर सन् ३० में मैंने सर्वप्रथम कांग्रेस के आन्दोलन में भाग लिया; और तब से लेकर अब तक सारा जीवन ही राजनीति में जा रहा है; और बहुत चाहते हुए भी मैं राजनीति से अपने को पृथक् न रख सका। जेल-जीवन में रहते हुए बाहर स्त्री का देहान्त हुआ—हजारों रुपया जुर्माना हुआ—जुर्माने में रहने का घर भी नीलाम हो गया जो कि अब तक किराये के मकानों में ही रहना हो रहा है। आर्थिक संकटों से तीन तीन दिन तक चने ने ही सहारा दिया, पर स्वर्गीय बापू के उन्हीं वेद-वाक्यों के सहारे जीवन को राजनीति में उलझा दिया है कि दुनिया की समस्त वस्तुओं से बढ़कर प्रिय देश की आजादी है। काश बापू आज यह शब्द फिर हम तुम्हारे श्रीमुख से सुन पाते!

बाकी तीनों बार मुझे पूज्य बापू के दर्शनों का सौभाग्य इलाहाबाद में ही प्राप्त हुआ। प्रथम जब कि वह अपने देश-व्यापी हरिजन-आन्दोलन के दौरे में सन् ३३-३४ के दिनों में इलाहाबाद पधारे थे। दूसरा अवसर उनके दर्शनों का इलाहाबाद में तब प्राप्त हुआ जब कि वह कमला नेहरू अस्पताल की नींव धरने पधारे थे। हालां कि उन दिनों मैंने अपना पत्रकार का काम प्रारम्भ कर दिया था। फिर भी मैं तब तक अपने जीवन के किसी निश्चित लक्ष्य की ओर नहीं पहुँच रहा था; और संशयात्मक हालत में कालक्षेप कर रहा था। अपने जीवन की धारा को किसी निश्चित लक्ष की ओर प्रवाहित करने के लिए मैंने पूज्य बापू से मिलना उचित समझा; और मैं उस समय उनसे आनन्द-भवन में मिला। स्वर्गीय भाई महादेव देसाई जी की कृपा से मुझे पूज्य बापू के चरणों में १० मिनट तक समय मिल गया और तब मैंने उनसे संक्षेप में अपना जीवन-वृत्तान्त कह भविष्य का मार्ग पूछा। बापू का सबसे पहला सवाल यही था कि तुम्हारी किस काम में दिलचस्पी है। मैंने डरते हुए शब्दों में कहा कि कांग्रेस और पत्रकार-कला। बापू ने कहा कि यह तो जीवन के सर्वोत्तम मार्ग हैं। इन्हीं दो लक्षों को सामने रखकर अपन जीवन को भगवान् पर छोड़ दो। पूज्य बापू के इन्हीं आशीर्वादों पर मैं आज जी रहा हूँ, चल रहा हूँ और सफल भी हो रहा हूँ। तीसरी बार राष्ट्र-पिता के दर्शनों का सौभाग्य इलाहाबाद में हो तब प्राप्त हुआ जब कि वह सन् ३८-३९ में कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सिलसिले में इलाहाबाद पधारे थे। उन दिनों मैं वृन्दावन अग्रगामी दल (फार्वर्ड ब्लाक) का मंत्री था और देशभक्त राजा महेन्द्रप्रताप जी की स्वदेश वापिसी के लिए मैं पूज्य बापू से मिला। संबन्धित विषय पर बातें हो जाने के बाद मैंने उनके श्रीचरणों में निवेदन किया कि बापू मैं लक्ष-भ्रष्ट हो गया हूँ और इस समय मैं फार्वर्ड ब्लाक में हूँ। उस महान् आत्मा ने फौरन जवाब दिया—हो तो कांग्रेस के अन्दर ही। फार्वर्ड ब्लाक कांग्रेस से भिन्न कहां है? रास्ता भले ही दो हों फिर भी आना तो कांग्रेस में ही होगा। क्योंकि स्थायी वह ही रहेगी। आज पूज्य बापू की वह भविष्य-वाणी सच हो रही है और पूज्य बापू के चरणों के सन्निकट बैठने का मेरा वह अन्तिम अवसर था। बाद में कई एक विषयों पर मैंने पूज्य बापू को पत्र लिखकर कष्ट दिया। पर इसे मैं अपने जीवन का सौभाग्य कहूँ या बापू की कृपा कि मेरे सभी पत्रों का जवाब बापू ने स्वयं ही दिया और आज उन्हीं पत्रों को मैं संसार की सबसे कीमती वस्तु समझता हूँ। जो कि मेरे जीवन-सर्वस्व है। अब बापू का निधन होने पर जब मैं उन पत्रों को पढ़ता हूँ तो वही शान्ति प्राप्त होती है जो शान्ति बापू के चरणों में बैठने पर प्राप्त होती थी।

आज हम अन्धकार में इधर-उधर भटक रहे हैं, क्योंकि हमारे जीवन का जो प्रकाश था वह तो बापू के साथ ही चला गया अब उस अन्धकार में से निकलने के लिए बापू आपके आदेश ही हमारे लिए वह प्रकाश हैं। आप अपना वरद हाथ हमारे [illegible] एक बार फिर हमें आशीर्वाद दो कि हम लक्ष्य-भ्रष्ट न हों—जीवन के सच्चे आदर्श को न [illegible] प्रकाश हमें मिलता रहे।

अब

लेखक, श्री विशम्भर 'मानव' एम० ए०

निरन्तर मुझे कर्म का बल मिले अब।
विरह रात बीती, मिलन प्रात आया
बड़े भाग्य से मंजु मुख देख पाया;
अभी तक रहा अश्रुप्रहरी तुम्हारा कठिन पंथ पर शक्ति-संबल मिले अब।
न यह धार कटती, न मैं पार पाता,
सदय कर तुम्हारा पहुँच जो न जाता;
मुझे पास खींचा द्रवित हो, सुमुखि तो अकर्मण्यता का न अंचल मिले अब।
न जो मैं उठा तो जगत् क्या कहेगा?
प्रणय प्रेरणा क्या न बनकर रहेगा ?
कि जिससे घुला तन, गला मन हमारा अमृत बन मुझे नयन का जल मिले अब।

येरोप ने ईसा को मारकर जो पाप किया, वही बापू की हत्या करके भारत ने

लेखक, श्री नेमीचन्द्र जैन बी० एस्-सी०

गांधी जी का पार्थिव शरीर आज इस नश्वर संसार में नहीं है। उनका असामयिक निधन हम भारतीयों के लिए वज्राघात से भी अधिक कष्टकर सिद्ध हुआ है। हमारे अश्रुकण हमारी असीम वेदना को वास्तविक रूप में चित्रित करने में समर्थ नहीं हो सकते। विदीर्ण हृदय की मूक व्यथा को शब्दों द्वारा व्यक्त करना नितान्त असम्भव है। हमें जो आघात लगा है उसकी धसक कुछ ऐसी विचित्र प्रकार की है कि उसका अनुभव जीवन में प्रथम बार ही हुआ है। हम अपने को असहाय पा रहे हैं। वयोवृद्ध पितामह के स्वर्गवास कर जाने पर उस कुटुम्ब की कि जिसमें केवल अबोध बालक ही हों, जो दशा हो जाती है हमारी भी वही दशा है। जो भार वे दो कन्धे सहर्ष उठाये हुए थे कोटि कंधे उस भार को वहन करने में झिझक रहे हैं।

यह विचार कर हमारा शीश लज्जा से झुक जाता है कि संसार के सबसे महान् भारतीय हिन्दू पर गोली से वार करने-वाले एक भारतीय हिन्दू के ही हाथ थे। जो जीवन भारत और हिन्दुत्व के उत्थान में व्यतीत हो रहा था इस घृणित रूप से समाप्त कर दिया गया। हमारे देश के भाल पर जो कलंक लगा है, वह कभी भी धोया नहीं जा सकेगा। संसार की भविष्य की पीढ़ियां हमारे सम्बन्ध में क्या विचारेंगी। नीचता, पशुता व कृतघ्नता की पराकाष्ठा हो गई है, जिन्होंने अपने सर्वोपरि महान् जीवन का प्रत्येक अमूल्य क्षण अपने रक्त का प्रत्येक कण हमारी उन्नति के सतत प्रयत्न में अर्पण कर दिया उनके उपकारों का हम किस प्रकार बदला चुकायें, निर्लज्जता भी लज्जित हो रही है? मैं उन देशवासियों से जिनकी प्रेरणा इस लज्जास्पद कुकर्म में रही है यह जानना चाहूँगा कि उन्होंने अपने इस कृत्य से भारत व हिन्दुत्व को कौन-सा लाभ पहुँचाया है? गांधी जी को भारत व हिन्दुत्व से असीम प्रेम था, उनके इस कथन से कौन असहमत हो सकता है कि हिन्दुत्व का उत्थान और पतन भारत के उत्थान और पतन पर निर्भर है। यदि भारत और पाकिस्तान के भी मुसलमानों को नष्ट कर दिया जाये तो क्या होगा? उनके संसार में अन्य राष्ट्र भी हैं; परन्तु

भारत इस संघर्ष में नष्टप्राय हो गया
हिन्दुओं के लिए उनका अपना कहने
को भी कोई देश नहीं है। उस अवस्था
हिन्दुत्व का अस्तित्व ही मिट जाय
हिन्दुत्व की रक्षा करना है, उत्थान कर
है, तो हमें भारत को एक सुदृढ़ व शक्ति
राष्ट्र बनाना होगा। गांधी जी का दृष्टि
कोण तो महान् था। परन्तु यदि
व्यक्ति हिन्दू-हितों के संकुचित दृष्टिकोण
से ही देखना चाहें तो भी हमें गांधी
के बताये हुए मार्ग पर चलना
वार्य है। यदि हमारे उन पथ-भ्र
भ्राताओं को भारतमाता व हिन्दुत्व
वास्तविक प्रेम है तो वह विचार
कि उनके उद्देश्य की प्राप्ति किस प्रकार
हो सकती है? जातीय व धार्मिक दंगों के
भयानक व विनाशकारी दलदल से बचकर
हमें एक सूत्र में बँधकर ही आगे बढ़ना
होगा।

बापू के महाप्रयाण से आज संसार
निधन हो गया है। वही केवल एक-मात्र
व्यक्ति थे जो इस भूमंडल में शान्ति स्थापित
कर सकते थे। आज प्रतिस्पर्द्धा में राष्ट्रों
ने उन भयानक अस्त्र-शस्त्रों की
की है जिनके स्मरण-मात्र से रोम
सिहर उठता है। एटम बम तो उनके
खिलवाड़ दिखाई देता है। जहां
कीटाणु बम छोड़ दिये जायेंगे
भाग में सहस्रों वर्षों तक मनुष्य तो
वनस्पिति भी न उग सकेगी। गांधी
की शक्तिशाली वाणी संभवतः उन
नाश के बादलों को रोक सकती थी
तृतीय विश्वव्यापी युद्ध छिड़ जाने
संसार पर मंडराने लगेंगे। संसार
सबसे महान् व सर्वाधिक शक्ति
शांतदूत महाप्रयाण कर चुका है
साथ ही विश्व में शान्ति की स्था
का एक प्रबल आधार-स्तम्भ ही
गया है।

ग्रामीणों व श्रमिकों का स
सहायक व पथ-प्रदर्शक संसार से
कर चुका है। भारत के ७ लाख ग्रामों
उत्थान की उन्हें कितनी उत्कट लगन
उन्होंने सदैव यही कहा कि भारत
में नहीं यहां के ग्रामों में बसा हुआ है।
उन्होंने भारत को सदैव इसी दृष्टिकोण
से देखा। मृत्यु के कुछ दिन पूर्व ही उन्होंने
अपनी प्रार्थना-सभा में कहा था कि
के वास्तविक अधिकारी किसान हैं
योग्य व सच्चरित्र किसान मिल सकें
मंत्रिमंडल बनाने का अधिकार उन्हीं
है। उन्होंने अपना जीवन ही दरिद्र ना
की सेवा में अर्पण कर दिया था।
हरिजनोद्धार के लिए उन्होंने

शेष पृष्ठ १६ पर

फैंसी सिल्क साड़ी
आकर्षक डिज़
कलापूर्ण ३-४ इंच चौड़ा
नं० ७ ८ ९ ५
१८) २३) २८)
२) पेशगी बाकी वी० पी०
थोक व्यापारियों को खास
बमाको इन्डस्ट्रीज़
जुही नं० ६ कानपुर

सेवाग्राम में पूज्य बापू की तेरहीं

परमधाम पवनार में मर्मस्पर्शी दृश्य और आचार्य विनोबा भावे को महत्त्वपूर्ण श्रद्धांजलि

लेखक, श्री भगवानप्रसाद त्रिपाठी (पत्रकार)।

सेवाग्राम महात्मा गांधी को अत्यन्त प्रिय था। गांधी जी के वहाँ निवास करने से वह भारतीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का केन्द्रस्थल बन गया था। आज पूज्य बापू के न रहने से सेवाग्राम सूना हो गया है। सेवाग्राम में पूज्य बापू की तेरहीं किस प्रकार मनाई गई थी, इसका मर्मस्पर्शी वर्णन इस लेख में किया गया है। लेख पठनीय, सामयिक और जानकारी से पूर्ण है।

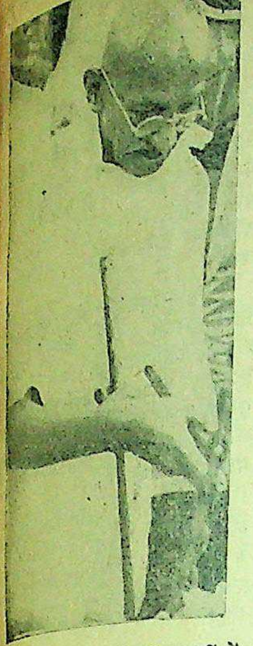

[illegible] गांधी आज राष्ट्र के बीच नहीं हैं।

[illegible] ११ तारीख की शाम को ही [illegible] के गवर्नर माननीय पकवासा सेवा-[illegible] पधारे। उस समय सेवाग्राम की [illegible] देखने योग्य थी। बापू की कुटिया [illegible] ओर ही रूप में दिखाई पड़ रही थी। तेरह दिनों से उसमें अखण्ड रूप से चर्खा-[illegible] हो रहा था। आचार्य आर्यनायकम्, आशादेवी, प्रो० भंसाली, तपोधन श्रीकृष्ण-दास जी जाजू, विनोबा भावे आदि उस [illegible] के प्रणेता थे। जिन लोगों ने कभी बापू के समय उस कुटिया को देखा था, आज वे रो रहे हैं। बापू की पुस्तकें, कलम, घड़ी तथा कुछ फुटकर सामान रखे थे। एक छोटा-सा गद्दा बिछा था। गद्दे के ऊपर बापू का अस्थि भस्म-कलश रखा था, एक सफेद खादी वस्त्र में लिपटा हुआ। इन सभी चीजों को देखकर ऐसा ज्ञात होता था कि बापू अभी-अभी उठकर कहीं बाहर घूमने गये हैं और थोड़ी देर में आकर यहां बैठेंगे। कुटिया में बापू की आत्मा का [illegible] रूप भावनात्मक प्रेरणा से [illegible] हो रहा था। तकिया के पीछे दीवार पर बापू का रेखाचित्र हृदय को एक प्रकार से विह्वल कर देता था। उस [illegible] के चारों ओर उनका मंत्रिमंडल [illegible] कार्य में संलग्न था। सदस्यगण एक ओर चर्खा चला रहे थे और दूसरी ओर [illegible] आंखों से आंसुओं की जो धारा [illegible] जाती थी, उसे सुरक्षित रूप [illegible] के लिए धीरे-धीरे पोंछते भी [illegible]। आशादेवी जी का यह कार्य [illegible] प्रतीत हो रहा था। [illegible] कर रही थी। कुटिया में [illegible] थी। जान पड़ता था कि बापू [illegible] वह कलश सबका पथ-प्रदर्शन कर [illegible]। शाम को इतनी भीड़ हो जाती [illegible] नहीं। वर्धा से सेवा-[illegible] सड़क आज कई दिनों से [illegible] के विश्वनाथ मन्दिर के समान [illegible]। बापू के अस्थि-कलश को देखकर [illegible] भक्तों को सन्तोष करना पड़ता [illegible] को वह कलश एक रथ पर [illegible] पहुँचाया गया, जहां [illegible] की समाधि बनी हुई है। [illegible] बापू का कलश जमुनालाल जी [illegible] के बगल में रखा रहा।

* *

[illegible] दिन प्रातः प्रान्ताध्यक्ष माननीय [illegible] की देख-रेख में कलश एक [illegible] रथ पर रखा गया। जनता के [illegible] समुदाय ने स्वागत किया और [illegible] पवनार की ओर जलूस चल [illegible]। जलूस में रथ के ऊपर एक ओर बापू के भक्त काका कालेलकर दूसरी ओर मशरूवाला और तीसरी ओर प्रान्ताध्यक्ष पकवासा जी गम्भीर मुद्रा में बैठे थे। जनता रथ को खींच रही थी। धीरे-धीरे छः मील के लम्बे जलूस ने पवनार में बापू का अस्थि-प्रवाह किया। उस समय का दृश्य कुछ और ही था। बड़े-बड़े कर्मचारी उपस्थित थे। प्रान्त की लगभग दो लाख जनता ने अपने बापू के प्रति जो श्रद्धांजलि अर्पित की; वर्धा, सेवाग्राम एवं पवनार के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगी। १२ फरवरी का पुण्य पर्व परमधाम पवनार को अमर बना देगा।

* * *

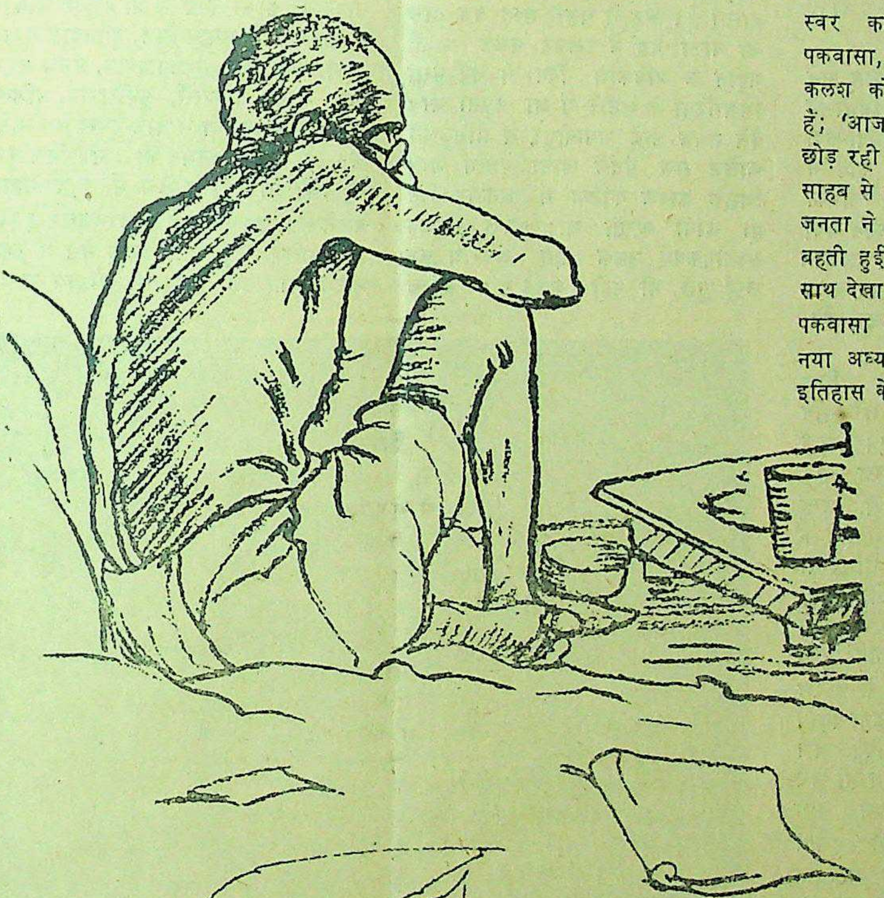

परमधाम पवनार

यह धाम एक ऐसे स्थान पर बसा हुआ है जिसे देखते ही ऋषि-मुनियों की याद आ जाती है। पवनार नदी की कलकल धारा का शान्त निनाद, प्राकृतिक सौन्दर्य से पूर्ण, बायें किनारे पर स्थित लाल रंग की एक छोटी-सी कुटी और उसमें निवास करनेवाले कुछ तपस्वियों का स्वरूप कुछ विचित्र-सा दिखाई पड़ता है। यह वही आश्रम है जहां गांधीवाद के प्रतीक सन्तवर विनोबा भावे निवास करते हैं। परमधाम की शोभा अवर्णनीय है। शाम को ५-६ बजे जब विनोबा के घूमने का समय रहता है, पवनार नदी के किनारे उनके साथ घूमने का आनन्द एक विशेष महत्त्व रखता है। जान पड़ता है कि हम एक ऐसे तपस्वी के साथ घूम रहे हैं जो देश में, समाज में सत्य-अहिंसा के स्थापनार्थ तपस्या, करने में संलग्न हो। उसकी साधना की सफलता निश्चित सी है। तपस्वी विनोबा प्रायः सभी के साथ हिलमिलकर बातें करते हैं। बापू के समान विनोबा का एक-एक मिनट राष्ट्र-निर्माण में लगता है। उनके मिलने-जुलने का समय बँधा हुआ है। फुर्सत के समय जब वे घूमने निकलते हैं, कोई भी मिल सकता है। विनोबा का समय कई विभागों में बँटा हुआ है। १—ईश्वर-भजन, विद्याध्ययन, शिक्षण-कार्य, स्वावलम्बन, ग्राम-निर्माण, एवं रचनात्मक कार्यक्रम के प्रत्येक पहलू को पूरा करना आदि। रात को ग्राम-निवासियों से बातें करते हैं, उसमें उनके नियतप्रति के कार्यों को नवीनतम रूप में देने की सलाह देते हैं। उनकी कठिनाइयों को हल करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। यह विनोबा का नित्य का कार्यक्रम है।

* * *

आज बापू की 'तेरहीं' है। दिल रो रहा है, वर्धा का, प्रान्त का, देश का, राष्ट्र का। सभी हैं, केवल सेवाग्राम का सन्त नहीं है। बापू का मंत्रिमंडल है, पर आज उसमें चेतनता नहीं है, वह जड़वत् बन गया है। कौन जानता था कि जो १२५ वर्ष जीने की प्रबल इच्छा रखता था, आज हमारे बीच न रहेगा, उसका 'मातम' मनाने के लिए हमें पवनार में इकट्ठा होना पड़ेगा। विनोबा आज रो रहा है। मंत्रों का उच्चारण करते समय स्वर कांप सा रहा है। माननीय पकवासा, काका कालेलकर चुपचाप कलश को नदी की धार में बहा रहे हैं; 'आज बापू की राख भी हमारा साथ छोड़ रही है' माननीय पकवासा ने काका साहब से बड़े ही कारुणिक स्वर में कहा। जनता ने आंखों में समुद्र छिपाए बापू की बहती हुई राख को बड़ी ही खामोशी के साथ देखा। अस्थि-प्रवाह के बाद माननीय पकवासा ने कहा, "हमारे इतिहास का नया अध्याय प्रारम्भ हो रहा है। इस इतिहास के प्रणेता बापू ही थे और स्वयं इतिहास के पूरा होने से पूर्व ही हमें छोड़कर चले गये। अब हमें उनके अधूरे काम को पूरा करना है और यहां से आज के दिन से हमारे दूसरे अध्याय का प्रारम्भ होगा।" उपरोक्त वाक्यों का उच्चारण करते-करते माननीय पकवासा का गला भर आया। काका साहब ने कुछ कहने से इन्कार कर दिया। उनका व्यथित हृदय रो रहा था। सन्तवर विनोबा पुनः खड़े हुए। उन्होंने कहा—"हमें अपने भविष्य के लिए सोचना हैं। बापू गया, अब नेहरू तथा उनकी सरकार को संभालना है। बापू की आत्मा को तभी शान्ति होगी जब शान्तिपूर्वक उनके अधूरे कार्यों को पूरा करेंगे। आज से हम प्रतिज्ञा करें कि भविष्य में कोई ऐसा कार्य न करें जिससे बापू की आत्मा को चोट लगे।"

महात्मा गांधी के परम भक्त और साधु आचार्य विनोबा भावे

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ. ए., बी. ए., पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से और होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं नियमावली मुफ्त मँगायें। पता :—
इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

सुभाष बाबू के साथ बारह वर्ष

सन् १९१२ से १९२४ के जीवन के कुछ संस्मरण

लेखक, श्री हेमन्तकुमार सरकार

राष्ट्रगौरव सुभाषचन्द्र बोस आज राष्ट्र के बीच नहीं हैं; किंतु उनके जीवन की स्मृतियाँ अब भी सहृदयों में सुरक्षित हैं। इस लेख के लेखक सुभाष बाबू के सम्पर्क में लगभग १२ वर्ष रह चुके हैं इसलिये जो कुछ लिखा गया है, उसमें तथ्य है और सुभाष बाबू के जीवन पर प्रकाश पड़ता है। संस्मरण पठनीय तथा रोचक है।

मुर्शिदाबाद भ्रमण करने जाने के पहले सुरेश, युगल, गुरुदास, सुभाष और मैं नवद्वीप सैर करने गया था। वहां हम युगल भाई के एक परिचित मन्दिर में ठहरे। मन्दिर के पुजारी मोटे पेटीवाले बाबा जो की तीन-तीन सेवादासियां थीं। भोजन करते समय जब एक तरुण सेवादासी भोजन परोसने आई, उसी समय सुरेश भाई अत्यधिक क्रोध में आकर बोल उठे--"धर्म के नाम पर घर मकान छोड़कर, यहां आकर वेश्यागिरी कर रही हो ?" बाबा जी पास ही बैठे थे, सुरेश भाई की बात पर जल-भुनकर कबाब बन गये। फलतः भोजनादि के पश्चात् हमें वहां से विदाई लेनी पड़ी।

सन्ध्या के पश्चात् जब हम कृष्णनगर नाव से लौटने लगे, उस समय हमें नदी के श्रोत से काफी युद्ध करना पड़ा था। माझी भी अनाड़ी रहा, इसलिये पतवार को सुरेशभाई सँभाल लिये और युगलभाई, सुभाष व मैं डांड़े खेने लगा। सुरेश का पहले ही से अभ्यास रहा, इसलिये उन्हें किसी प्रकार की तकलीफ नहीं हुई। सबसे अधिक तकलीफ सुभाष को हो रही थी। बड़े घराने का लड़का--चांद सा मुखड़ा--बचपन ही से लाड़-प्यार के बीच पला था, दुःख होता क्या है ? जानते ही नहीं थे।

मैंने सुभाष के थके चेहरे को देखकर कहा--"सुभाष ! तुम रहने दो।" परन्तु सुभाष ने माना नहीं।

मैट्रिक पास करने के पश्चात् मैंने कृष्णनगर में श्रमजीवी नैश विद्यालय की स्थापना की। कलकत्ते से यदा-कदा श्री शैलेन घोष आकर मेरे इस कार्य में हाथ बटाते थे। एक बार आप अमेरिका भागकर गये और न जाने कितने वर्षों के बाद स्वदेश लौटे। यहां आने पर कलकत्ता कार्पोरिशन के शिक्षा-सचिव का पद ग्रहण किया। आजकल आप ढाका इण्टरमिडियट कालेज के अध्यक्ष हैं।

मेरा नैश विद्यालय में सबसे अधिक सुभाष का सहयोग था। जुलाई में सुभाष प्रसिडेन्सी कालेज में भर्ती हुए। मैट्रिक में द्वितीय श्रेणी आने के कारण २०) इन्हें छात्र-वृत्ति भी मिलती रही, परन्तु कटक में पढ़ने के लिये राजी न होने के कारण वृत्ति बन्द कर दी गई। प्रेसिडेन्सी में १०) मासिक वृत्ति मिलती रही। सुभाष लाजिक, संस्कृत व गणित में काफी तेज रहे। मैं भी प्रसिडेन्सी में भर्ती हुआ था; परन्तु कृष्णनगर के संघ के कारण लाचारी में मुझे कृष्णनगर में पढ़ना पड़ा। सुभाष अत्यन्त दानशील व्यक्ति थे। उन्होंने अपने एक कटकवासी मित्र को मेरे यहां भेजा। नीलमणि उसका नाम था, वह ट्यूशन करता रहा और सुभाष उसे अपने स्कालरशिप में से सहायता करते रहे। सुभाष के उद्योग से वह बी० ए० पास कर दौलतपुर कालेज का डिमन्सट्रेटर बना। अरविन्द मुखर्जी नामक छात्र ने भी मुझे काफी सहायता दी थी। यही अरविन्द देशबन्धु चितरंजनदास के साप्ताहिक पत्र "बांगलार कथा" के प्रिन्टर व पब्लिशर के रूप में ६ महीने की सजा पा आलिपुर की जेल में मेरे व सुभाष के साथ रहा। आजकल अरविन्द बिहार के बेतिया जिले में अध्यापक है।

कृष्णनगर के अंजना नदी के किनारे हम नित्य शाम को जुटते और धर्म एवं राजनीति पर बहस किया करते थे। इसमें सुरेश भाई व सुभाष का काफी सहयोग मिलता रहा। हेमचन्द्रदास गुप्त व हेमचन्द्र सरकार भी आते रहे। जब हमने युगल भाई को लन्दन भेजा तब इन्हीं दो व्यक्तियों से आर्थिक सहायता मिली थी।

प्रेसिडेन्सी कालेज में भर्ती होने के बाद सुभाष थोड़े दिनों में अपनी प्रतिभा के कारण सभी प्रोफेसरों के प्रियपात्र बन गये। इसके अलावा कालेज में मैगजीन डिबेटिंग क्लब और पूर फण्ड इत्यादि के संगठन में काफी दिलचस्पी के साथ भाग लिया।

सुभाष के नेतृत्व में कालेज का वातावरण बदल गया। अधिकांश लड़के धनी घर के थे। सुभाष के सीधी-सीदी पोषाक, आदर्श जीवन और परोपकार प्रवृत्ति इत्यादि ने सभी छात्रों पर विशेष प्रभाव डाल दिया।

३८।२ नं० एलगिन रोड के मकान से ट्राम की लाइन तक ५-६ मिनट का रास्ता है। घर से चलते वक्त जब ट्राम का भाड़ा जेब में रखकर चलते थे तो महीने के अधिकांश दिन तो वह पैसा भिखारियों के कटोरे में जा पड़ता था। वैसे समय उन्हें भवानीपुर से प्रेसिडेन्सी कालेज तक पैदल जाना पड़ता था। जिसके कारण कालेज में अकसर लेट हो जाया करती थी; परन्तु सहृदय अध्यापकवर्ग उनके इस अपराध पर उन्हें कुछ भी नहीं कहते थे। बल्कि मार्क कर रख देते थे। सिर्फ एक बार प्रोफेसर स्टानिग करने से इन्कार कर गये। सुभाष तुरन्त क्लास के बाहर चले जा रहे थे; परन्तु जाने के पहले ही प्रोफेसर ने कहा--"मुझसे बिना आज्ञा लिये तुम बाहर कदम नहीं रख सकते।"

फलस्वरूप सुभाष ने अनुमति ली और क्लास के बाहर चले आये। ऐसा था उनका अभिमान।

कालेज से अवकाश पाने के बाद ३ नं० मिर्जापुर स्ट्रीट पर मेरे पास चले आया करते थे। कभी-कभी यहीं से उसके दूसरे दिन कालेज जाया करते थे। ३ नं० मिर्जापुर स्ट्रीट का दल (क्रान्तिकारी अग्रगामी) काफी भारी हो चला था। कटक केन्द्र से गिरीश बनर्जी, नृपेन बसु, बिधुराय, अन्नदा चौधरी, शशांक मुखोपाध्याय; ढाका केन्द्र से श्री प्रफुल्ल घोष; कलकत्ते से श्री सुबोध मित्र, भूपेनदास गुप्त, हेमन घोष, देवेन वन्द्योपाध्याय, प्रमथ सरकार, धीरेन चक्रवर्त्ती, सुधीशराय, अजित घोष; कृष्णनगर से मैं और हेमन्दु सेन आते थे। श्री जीवनरतनधर भी ३ नं० मिर्जापुर स्ट्रीट से मेडिकल कालेज में पढ़ने आया करते थे। उनका भाई नीलरतनधर ११० नं० कालेज स्ट्रीट के एक मेस में रहा करता था। उसी जगह श्री मेघनाथ साहा, ज्ञान घोष, ज्ञान मुखर्जी इत्यादि, डा० सी० राय (आचार्य प्रफुल्लचन्द्र राय) मेधावी छात्रगण थे। अकसर इसी मेस सुप्रसिद्ध विप्लवी नेता यतीन मुखर्जी थे। उनके संस्पर्श में मुझे आने का सौभा हुआ था। इसके अलावा हमारे साथी प्रेसिडेन्सी कालेज के हिन्दू होस्ट में रहा करते थे। श्री ज्योतिर्मय घोष योगेन साहा, शशांक मुखर्जी, शैलेन घोष नलिनाक्ष सान्याल और मनमोहन भट्टाचार्य।

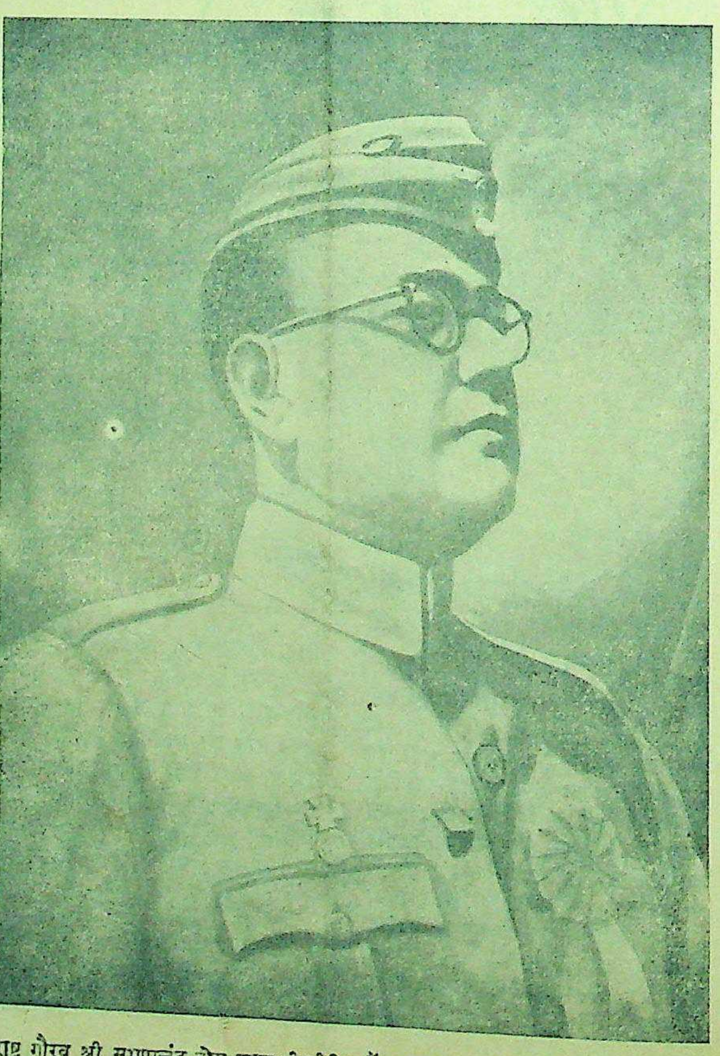

राष्ट्र गौरव श्री सुभाषचंद्र बोस आज भी जीवित हैं अथवा मृत हो गये हैं, इसे कौन जाने ?

यह युग स्वदेशी डकैती का युग था हिन्दू होस्टल में ५ नं० के वार्ड में छोटी छोटी कोठरियां थीं। यहीं हम रिवाल्वर का प्रैक्टिस करते रहे। एक दि सुभाष व मेरे रहते पुलिस ने खाना-तलाशी ली। हम भी सतर्क रहे, फलस्वरूप हा मानकर वे चले गये।

सुभाष, मैं और अन्य साथी बेलुड़ म और दक्षिणेश्वर में जाया करते थे बेलुड़ मठ के सन्यासीगण राजनीति को प्रश्रय देना पसन्द नहीं करते थे। दक्षिणेश्वर के पंचवटी की जड़ में हमेशा चिन्ता हो सुभाष बैठा करते थे। एक दि गंगा स्नान करते समय सुभाष डूबते बच गये। वह तो कहिए प्रफुल्लभाई ने उसकी रक्षा की। सुभाष तैरना नहीं जानते थे, बाद में कृष्णनगर के जलंगी नदी में मैंने उन्हें तैरना सिखाया था।

एक दिन सुभाष, अरविन्द, शैलेन मंडल और मैं बागाचड़ा ग्राम की ओर अलिपुर के बम के मामले में सजायाफ्ता श्री निरापद राय से मिलने के लिये चल पड़े हमारे साथ एक मुसलमान सह रहा, जिसका नाम हमने ठंकिम शान्तिपुर के पास बांगाचड़ा में मेरा निवासस्थान है। इसी ग्राम में अलि के बम के मामले के आसामी श्री निरा राय व रामकृष्ण मिशन के सम्मा स्वामी मेधवानन्द व उनके वासुदेवानन्द पैदा हुए हैं। निरा राय १० वर्ष कालेपानी की भुगतकर लौटे हैं। आजकल बुनते हैं। गौर वर्ण खर्वाकृति, बदन गेरुआ वस्त्र, गले में यज्ञोपवीत और पर हास्य विराजमान था। इसी के पास जाकर हमने प्रणाम कि सुभाष का परिचय पाकर वे अत्यन्त हुए और आर्शीवाद देते हुए "तुम सब बड़े होकर मातृभूमि की कर सको यही मेरी कामना है, प अपने गांव को न भूलना।"

कुछ दिनों बाद उनकी मृत्यु निया में हो गई; परन्तु आज भी उनका आर्शीवाद हृदय में छाप लगाये हुए हैं।

कुछ दिनों के बाद कृष्णनगर में इन्द्रदास बाबा जी नामक उदा सिख-सम्प्रदाय के तरुण सन्यासी आये नदी किनारे धुनी लगाकर बैठे। गांव लोग दवा सिद्धी की लालच में जाने बिगड़ उठते थे। इसी संन्यासी का और मैंने शिष्यत्व ग्रहण किया था। दिनों के संसर्ग के बाद अचानक एक बाबाजी कह बैठे—"क्या तुम दोनों से ऐसा प्रेम हो गया है स्थान छोड़ने को जी नहीं चा अचानक स्वयं गायब हो गये। बहुत के बाद एक बार एक पत्र कुम्भ से आया था।

सुभाष के साथ १९१२ से तक इस बीच में अनेकों घटनायें और उनके सम्पर्क में आने के सौभा मुझे गर्व है। उन सबका उल्लेख करूँ।

शरणार्थिनी बाला

लेखक, श्री पुरुषोत्तमदास टंडन बी० ए०, एल्-एल० बी० (पत्रकार)

भारत के विभाजन तथा पंजाब की विगत दुर्घटनाओं के कारण शरणार्थी स्त्री-पुरुषों की संख्या इतनी बढ़ गई कि उन्हें बसने के लिए अन्य प्रांतों में जाना पड़ा। इस कहानी में एक शरणार्थिनी बाला का लेखक ने सुंदर चित्रण किया है जो पठनीय तथा रोचक है।

लाहौर में तनातनी बढ़ रही थीं। …ों का बाजार गरम था। लोगों में …हरा आतंक छाया हुआ था। भावी …कारी संकटों की कलुषित छाया …र्वाभास चारों तरफ मिल रहा था। …हर को सांघातिक घटनाओं ने …ों के होश-हवास उड़ा रक्खे थे। …ों से रक्षा मानो बिदा मांग चुकी …। मृत्यु का भय—बर्बरतापूर्ण और …कल्पित सम्भाव्य—नर, नारी तथा …ों पर भूत की तरह सवार था। …व्यञ्जक कुछ व्यक्तियों ने अपने …जनों से चुम्बन के साथ बिदा मांगनी …रम्भ कर दी और अधिक सुकुमार …वाले लोगों की चेतना आमूल विचलित हो गई, उनके स्नायु छिन्न हो गये …र वे आजीवन पंगु हो गये। मृत्यु का … नृत्य अभी आरम्भ भी नहीं हुआ …र भावी काण्ड की छाया ने ही कई …जर उजाड़ दिये। निशा न तो विचलित …ई न हताश! उसके चेहरे पर भोलेपन …स्थान पर एक पथरीला भाव आ गया। …ने अपनी पढ़ाई जारी रक्खी और अपना …नियमित काम करती गई। उसके मां-…प को उसकी इस दैवी अविचलता पर …श्चर्य हुआ, उन्होंने भी उसे अपनाना …ाहा, पर उनका साहस उनको दगा दे गया। …ौर पड़ोसी शोकग्रस्त थे और विषाद …ने उन पर अधिकार जमा लिया था। …नका डर झूठा नहीं था और एक रात …गुंडों के झुण्ड ने उस स्थान पर आक्रमण कर दिया, मकान जला डाले, औरतों के साथ बलात्कार किया, आदमियों, बच्चों और औरतों की हत्या की। थोड़े ही समय के अन्दर वहां केवल रक्त और बेगुनाहों का कटा हुआ मांस था।

निशा ने अपने बन्द कमरे के पर्दों की आड़ से मज़हब के नाम पर किया गया यह बर्बर काण्ड देखा। दया के लिए चिल्लाते हुए अपने मां-बाप की बोटी कटती हुई देखा और बिल्कुल ठंडे तौर से अपनी बेबसी महसूस की। इत्तफाक से रात के अंधेरे में उन कसाइयों की नजर मकान के कोने [illegible] पर नहीं पड़ी। एक बार उसके दिल में आया कि अपने को भी उन हत्यारों के सामने डाल दे और अपने भाइयों और मां-बाप की तरह मर जाये। उसने मन में सोचा कि ऐसी लम्बी जिन्दगी की क्या जरूरत है जिसमें इन खौफनाक घटनाओं की याद सताती और जिन्दगी भर दिल दुखा रहेगा। वह दरवाजा खोलने ही जा रही थी कि एकाएक कुछ उसको सूझा। क्या मैं जीवित रहकर उन लोगों के आंसू नहीं पोंछ सकती जा कि अपने रिश्तेदारों, दोस्तों और मां-बापों की याद में रोयेंगे?" उसने कहा; कुछ …र उसने तय किया कि उन शरणार्थियों में अपनी रक्षा करेगी, जिनकी …ों से जानवरों तक को शरम आती …। रात के सन्नाटे में वह कमरे से बाहर …। रक्त की धारा के ऊपर से गुज़रकर उन लाशों के लिए सर झुकाया जिनको …तड़पकर मरते देखा था। …तेज बारिश पड़ रही थी। …तर्कता तथा हिकमत के साथ … निकल पाई और बीस मील …चली जब कि मौत की छाया …लगी हुई थी। रात के सन्नाटे … खेत के पास उसे एक बूढ़ा आदमी …अपने जानवरों को लेकर खेतों … था। निशा उसके पास गई …, मुझे आपकी मदद चाहिए। … आदमी ने लड़की को तकलीफ … हुई देखकर हर तरह की सहायता … वादा किया और उसको अपनी … के पास ले गया।

निशा बहुत थक गई थी और उसके कपड़े भीग गये थे। फौरन उसको एक फटी धोती और एक बण्डी कपड़े बदलने के लिए मिल गये। उनको पहनकर उसने सोना चाहा, क्योंकि वह बिलकुल थक गई थी। शारीरिक और मानसिक व्यथा के कारण वह बदहवास थी और करीब करीब बेहोश होने जा रही थी। बूढ़े और उसकी बीबी ने उसको चारपाई पर लिटाकर अपने देहाती तरीके से उसकी शुश्रूषा की; कुछ मिनटों के बीतने पर निशा ने कहा कि उसकी तबियत बेहतर है और नींद लग रही है। वह शाम तक सोती ही रही और जब खेतों से अपने जानवरों के साथ बूढ़ा वापस आया तो उसकी नींद टूटी। शाम के खाना खाने का समय हो गया और दम्पति ने अपने मेहमान की खातिर की। अकस्मात् बूढ़े आदमी ने पूछा, "बेटी, पर बतलाओ तो तुम कौन हो? कहां से आ रही हो? कहां जा रही हो? तुम एक बहादुर लड़की मालूम होती हो, पर तुम्हारे मां-बाप कहां हैं, उन्हें तुमने कहां छोड़ा है? तुम जानती हो कि सारे पंजाब में साम्प्रदायिक दंगे हो रहे हैं और तुमने रात को मकान छोड़कर बड़ा जोखिम का काम किया। अब तुम्हारा क्या इरादा है? निशा ने अपने मेजबानों से सब किस्सा बयान किया और कहा कि अब वह उनसे बिदा मांगेगी और पड़ोस के शरणार्थी शिविर में भर्ती हो जायगी। बूढ़े ने उससे कहा कि जल्दी करने की जरूरत नहीं है, वह कुछ दिन आराम करके जा सकती है। पर निशा शिविर में जाने के लिये बहुत उतावली थी ताकि उन लोगों के बीच रहे जिन्होंने उसी की तरह के दुःख झेले हैं। एक इतवार की सुबह उसने बूढ़े आदमी से बिदा मांगी और चल पड़ी। उसकी उम्र केवल सोलह साल की थी; कीचड़ लगे हुए कपड़ों से भी उसकी सुन्दरता कम नहीं हुई थी, उसके विस्फारित पलक कुछ खोजते से मालूम पड़ते थे और उसके चेहरे पर एक नूर झलकता था। अपने सफर के दरमियान उसे कई नवयुवक मिले जिन्होंने उससे आतिथ्य स्वीकार करने की प्रार्थना की और वादा किया कि उसकी हर तरह मदद करेंगे। उनमें से कुछ उसके प्रशस्य नारीत्व के ओज से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उससे विवाह करना चाहा। पर निशा को न तो ऐश और आराम की तलाश थी न परिस्थिति से भागने की इच्छा। उसकी उत्कट लालसा कई आंखों के आंसू पोंछने की थी। तकलीफों से उसकी हिम्मत पस्त नहीं हुई थी। रात को अकस्मात् वह चौंक पड़ती थी और उसके सामने उन रिश्तेदारों की सूरत नाचने लगती थी जिनकी हत्या की गई थी। वह जी भरकर रोती थी; पर फिर अपने को शान्त करके सो जाती थी।

पृ० ५

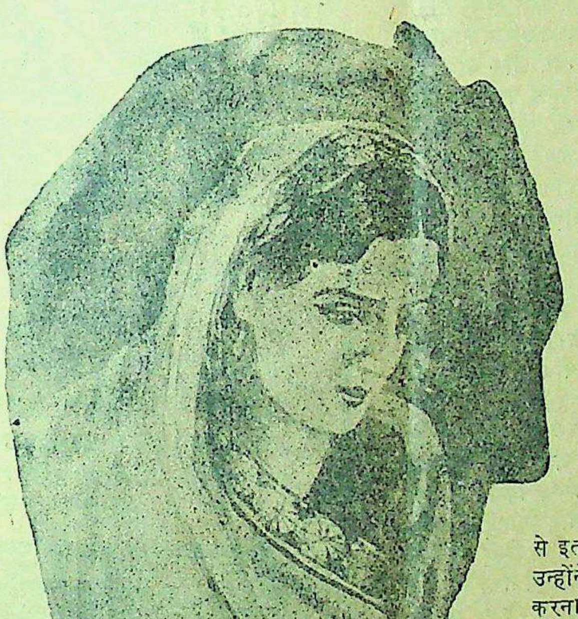

शरणार्थिनी निशा जो पश्चिमी पंजाब से आई है।

एक सुबह वह शरणार्थी शिविर में पहुँची और उसमें भर्ती होना चाहा। उसके शान्त और गंभीर चेहरे को देखकर शिविर के अफसर को ताज्जुब हुआ। उसके बारे में कृपापूर्ण पूछ-ताछ करने के बाद उसको यह बात कतई नागवार गुजरी कि एक ऐसी सुन्दर लड़की को ऐसे शिविर में रक्खा जाय जिसकी हालत अभी बहुत-कुछ असन्तोषजनक थी। उसने निशा से कहा कि जिले के मजिस्ट्रेट और उसको खुद बच्चों की पढ़ाई के लिए एक अध्यापक की आवश्यकता है और चूंकि वह ग्रेजुएट थी इसलिए उस काम को कर सकती थी। निशा की मंशा रुपया कमाने की या नौकरी करने की अथवा आराम पाने की नहीं थी। वह शरणार्थियों के बीच एक शरणार्थी बनकर रहना चाहती थी ताकि उनकी आम किस्मत और दुःखों में हिस्सा ले। उसने अफसर का शुक्रिया अदा किया और उससे मिन्नत की कि उसको सिर्फ शिविर में भर्ती कर दें, बस यही काफी है। अफसर को लड़की की उदासीनता पर आश्चर्य हुआ और वह उसके लिए एक समस्या बन गई। उसको अन्देशा था कि कैम्प में विभिन्न प्रकार के कार्यकर्ता युवक उस लड़की के चारों तरफ मंडरायेंगे और शिविर बदनाम हो जायेगा। उसने जी तोड़कर कोशिश की कि लड़की को वहां भर्ती होने के इरादे से डिगा दे; पर उसने जिद न छोड़ी और भर्ती की गई। उसको कैम्प में ले जाया गया जहां उसने एक शान्तिपूर्ण रात सोकर बिताई और एक शान्तिपूर्ण दिन सोचने में। दूसरी सुबह उसने कैम्प के अफसर से कहा कि वह कैम्प में काम करना चाहती है। वह कैम्प की स्वयंसेविका हो गई और गोदाम से खाने-पीने का सामान ले जाकर सुबह और शाम शरणार्थियों में बांटती थी। उसने चिट्ठी बांटने की जिम्मेवारी भी अपने ऊपर ले ली। जो लोग पढ़ नहीं सकते थे उनकी चिट्ठी वह पढ़कर सुना देती थी और जिन्हें लिखना नहीं आता था उनकी तरफ से खत लिख देती थी। दिन में वह लोगों को बुनाई सिखाती थी और इस तरह उनको मामूली खर्च के लायक पैसे कमवा देती थी। खाना खाने के बाद उसने एक घंटे के लिए एक दर्जा पढ़ाना शुरू कर दिया जिसमें वह हिन्दी और अँगरेजी पढ़ाती थी। यह निशा की दिनचर्या थी। वह कैम्प में सर्वप्रिय बन गई। सब शरणार्थी उसको दयामयी बहन, पथप्रदर्शक और प्रिय मित्र समझते थे। उसका कैम्प पर बड़ा असर था और कैम्प का अफसर बगैर उसकी राय के कोई काम करने में हिचकता था। छोटे बच्चे उसके चारों तरफ इकट्ठा होकर बात-चीत किया करते थे और उसको बड़ी दीदी कहकर पुकारते थे। वह बच्चों को गोद में ले लेती, उनको साधारण स्वास्थ्य-रक्षा के नियम सिखाती और उनसे खेलती थी। किसी दिन अगर हाथ में काम ज्यादा रहने के कारण वह दिन भर बच्चों से नहीं मिल पाती थी तो शाम को वे लोग शिकायत करते थे कि उसने उनकी अवहेलना की है, और वे रंजीदा रहते थे। उसको भी कुछ खिन्नता-सी रहती थी और वह इरादा कर लेती थी कि दूसरे दिन उनसे अवश्य मिलेगी।

बुजुर्ग औरतों को निशा बहुत सान्त्वना देती थी। वह हिन्दू-धर्मग्रन्थों से उनको वीरता की कहानियां सुनाती थी और गीता तथा रामायण बांच देती थी। वह उनको पूजा-पाठ या किसी दूसरे काम में हर वक्त व्यस्त रखती थी और इस तरह उनके ध्यान को उन लोगों की तरफ जाने से रोकती थी जिनसे वे बिछुड़ चुकी थीं और जिनकी नियति ने दुर्दशा की थी। निशा की सबसे बड़ी दिक्कत यह थी कि कैम्प के ज्यादातर लोग उसकी आत्मकथा सुनना चाहते थे और उसके भागने की, यातनाओं की और घरेलू जीवन की कथा विस्तारपूर्वक कहने की प्रार्थना करते थे। यह कोई एक मिनट की बात तो थी नहीं, और अगर वह एक-आध व्यक्ति को भी सुनाती तो बड़ा वक्त लगता था। वह चाहती थी कि उनको निराश न करे पर साथ ही ऐसी बातों में अधिक समय नष्ट करना भी नहीं चाहती थी। इसलिए उसने अपने साथियों को एक दिन इकट्ठा किया और अपना पूरा वृतान्त उनको सुना दिया। जब लोगों ने उसके भीरु

और हिम्मत को जान लिया तो उसकी और भी प्रशंसा करने लगे। उनके लिए वह हिम्मत और आशा की प्रतीक बन गई।

निशा सबसे अधिक खुश रात को दर्जा पढ़ाते समय होती थी। कई शरणार्थी वहां इकट्ठा होते थे और रुचिकर तथा सरस सवाल पूछते थे। वह अत्यन्त सुयोग्य शिक्षक थी—सहानुभूतिपूर्ण, दयालु, सहृदय और निःस्वार्थ। लुधियाना का एक जवान लड़का, जिसका नाम राजू था, उसी कैम्प में था और वह उसके दर्जे में हमेशा जाता था। वह अर्धशिक्षित था; पर उसकी चित्रकला और काव्य-रचना की ओर रुचि थी। उसके ऊपर भी करीब करीब निशा की ही तरह बहुत दुर्दैव की दृष्टि पड़ी थी। उसको अपनी बहन की स्मृति बहुत सताया करती थी जो उससे छूटकर पीछे ही रह गई थी। उसका चित्त किसी भी विषय में एकाग्र नहीं हो पाता था और वह बहुत गमगीन लगता था। कुछ दिनों बाद उसने थोड़ा कागज और एक रंगों का डिब्बा चित्रकारी के लिए हासिल कर लिया। वह ऐसे कि एक दिन एक डिप्टी मजिस्ट्रेट कैम्प में आया और चलते-चलाते उसने पूछ लिया कि उसे किसी चीज की जरूरत तो नहीं है? उसने कहा कि थोड़ा कागज और एक रंगों का डिब्बा अगर मिल जाता तो उसे कुछ चित्र बनाने की सहूलियत हो जाती। उस कृपालु अफसर ने वे चीजें भेज दीं और वही राजू की सबसे अधिक मूल्यवान् वस्तुएं थीं। दिन में खाना खाने के बाद वह अपनी बहिन बीणा की तसवीर बनाया करता था। वह कल्पना किया करता था कि बीणा घर में खेल रही है, स्कूल के लिए कपड़े पहन रही है, दर्जे के साथियों के साथ गा रही है, और भी इसी तरह की बातें जो उसके दिमाग में आती थीं, इससे वह मशगूल और प्रसन्न रहता था। उसकी बीमारों की-सी नजर गायब हो गई और वह प्रसन्न तथा सुथरा लगने लगा। एक दिन निशा ने उससे पूछा, "राजू तुम आजकल इतने खुश क्यों हो? तुम अपना पूरा दिन कैसे बिताते हो? कल मैं शायद तुम्हारे पास बातचीत करने के लिए आऊंगी।" राजू को यह सुनकर बड़ी खुशी हुई। वह निशा को बहुत पसन्द करने लगा था और निशा भी उसको पसन्द करती थी। दूसरे दिन निशा उसके पास गई। वह कोई चित्र बनाने में लगा हुआ था। वह निशा की तसवीर थी सुथरी और सुन्दर। उसको राजू की प्रतिभा देखकर ताज्जुब हुआ। उसे कतई मालूम नहीं था कि वह इतना अच्छा कलाकार है। "हजरत आप क्या करने में मशगूल हैं", निशा ने एक बुजुर्गाने लहजे में कहा और खुलकर हंस पड़ी। राजू अचकचा गया और उसके हाथ से रंगीन पेन्सिल गिर पड़ी। उसका मुंह थोड़ा रक्तिम हो गया। कागज को उलटकर रखते हुए उसने कहा कि वह एक तसवीर बना रहा था। "किसकी तसवीर?" निशा ने मुस्कुराकर पूछा। राजू को विश्वास हो गया कि उसको पता लग गया है कि उसी की तसवीर बनाई जा रही थी और अब मामले को छिपाने से कोई लाभ नहीं। उसने कहा, "मैं आप ही की तसवीर दर्जे में लटकाने के लिए बना रहा था। आपने हम लोगों के साथ इतनी भलाई की है और हमारे लिए इतना सब काम किया है, यह आपके द्वारा की गई सेवाओं के लिए कैम्पवासियों द्वारा एक छोटा शुक्रगुजारी का निशान होगा। इस वीरान और प्रसन्नताहीन स्थान में जहां हम जैसे गरीब, आफतों के सताये, अकेले और दुःखी जीव रहते हैं—आपकी कृपा के प्रति अपनी भावनाओं का इजहार हम और किस तरह कर सकते हैं?" वह उसे पसन्द करता है—इस बात को वह जानती थी और उसको इस विषय में अधिक सवाल पूछकर पसोपेश में डालना उसने नहीं चाहा इसलिए पूछा कि क्या उसने दूसरी तसवीरें भी बनाई हैं? राजू ने अपनी बहन की तमाम तस्वीरें उसको दिखलाईं जिनसे वह प्रभावित हुई, उसकी नजरों में राजू और ऊंचा उठ गया और उस दिन से उसके लिए निशा की चाह बढ़ती गई। राजू ने निशा के साथ कैम्प में काम करना शुरू कर दिया और वह भी शरणार्थियों का सच्चा सेवक बन गया। अकसर वह खाना नहीं खाता था पर जब तक अपना दिन का काम खतम नहीं कर लेता था तब तक आराम नहीं करता था। उसने दो लड़कों को चित्रकारी सिखलानी शुरू कर दी और वे उसकी देख-रेख में पेड़, पत्ते, फूल आदि बनाकर खुश होते थे।

कई महीने बीत गये। राजू और निशा शरणार्थियों के लिए बगैर किसी हिचकिचाहट के कड़ी मिहनत करते गये। धीरे-धीरे शरणार्थियों की संख्या घटती गई, क्योंकि उनमें से अधिकतर या तो नौकरी पा गये या उनको अपनी अपनी जगह वापस भेज दिया गया। अन्त में अफसरों ने यह तय किया कि कैम्प को तोड़ दिया जाय। अब राजू और निशा ने भी अपने भविष्य के बारे में सोचा। उनका कोई घर नहीं था, और न राजू की उस बहिन का ही कुछ पता था जो पीछे छूट गई थी। उस कैम्प से कुछ मील दूर एक गांव था वहां ये लोग कभी चले जाते थे। वहां इन्होंने कुछ लोगों से मित्रता कर ली थी और गांव के दूसरे लोगों के भी प्रिय बन गये थे जिनके सम्पर्क में वे आये थे। वे चाहते थे कि जुदा न हों और यह तय किया कि उसी गांव में जाकर बस जायेंगे और वहां लोगों की उसी तरह सेवा करेंगे जैसे शरणार्थी-शिविर में करते थे। निशा ने कहा, "हमने दुःख और दर्द काफी देख लिया अब चलकर अपने चारों तरफ काफी प्रसन्नता और सुख देखना चाहिए। मैंने यह निश्चय किया है कि अपने जीवन को इस गांव के गरीब और कुचले हुए लोगों की सेवा के लिए अर्पित कर दूं।" राजू भी पीछे हटनेवाला न था और निशा के दिखाये हुए रास्ते पर चलने के लिए तैयार हो गया। दोनों उस गांव को चल दिये और कुछ पुराने दोस्तों की मदद से एक टुकड़ा जमीन का पाकर उसमें दो कुटिया बनाकर रहने लगे। उन्होंने एक अखबार मंगाना शुरू कर दिया जिसको वे लोगों को इकट्ठा करके सुनाया करते थे। वे पास के शहर में जाकर गांव के बीमार लोगों के लिए मुफ्त दवा लाते थे। साल में कई मर्तबा उन्होंने सामाजिक उत्सवों की व्यवस्था की और बच्चों का शाम को खेलने का इन्तजाम किया। उन्होंने एक स्कूल स्थापित कर दिया जिसमें वे अपने अल्प साधनों से जो कुछ भी पढ़ा पाते थे, वह पढ़ा दिया करते थे। कई महीने बीत गये और उन्होंने गांव में अपना काम जारी रक्खा और अपने को हर गांव
का प्रिय बना दिया। अब उस गांव
सफाई का ध्यान रक्खा जाता है,
के झोंपड़े साफ रहते हैं, बच्चे
में पढ़ते हैं और खेतों में खेलते हैं,
में सहयोगमय जीवन है और चारों
खुली धूप और प्रसन्नता है। वे जिन
जरूरत होती है उसकी मदद करते
गरीबों का पोषण करते हैं, तकलीफ
पड़े आदमी को सान्त्वना देते हैं,
हुए लोगों को प्रसन्न करते हैं और
आंखों के आंसू पोंछते हैं। वे वहां तब
लोगों की सेवा करने को तैयार हैं जब
उनमें दम है। निशा कहती है कि
और उसकी उम्र अब विवाह योग्य है

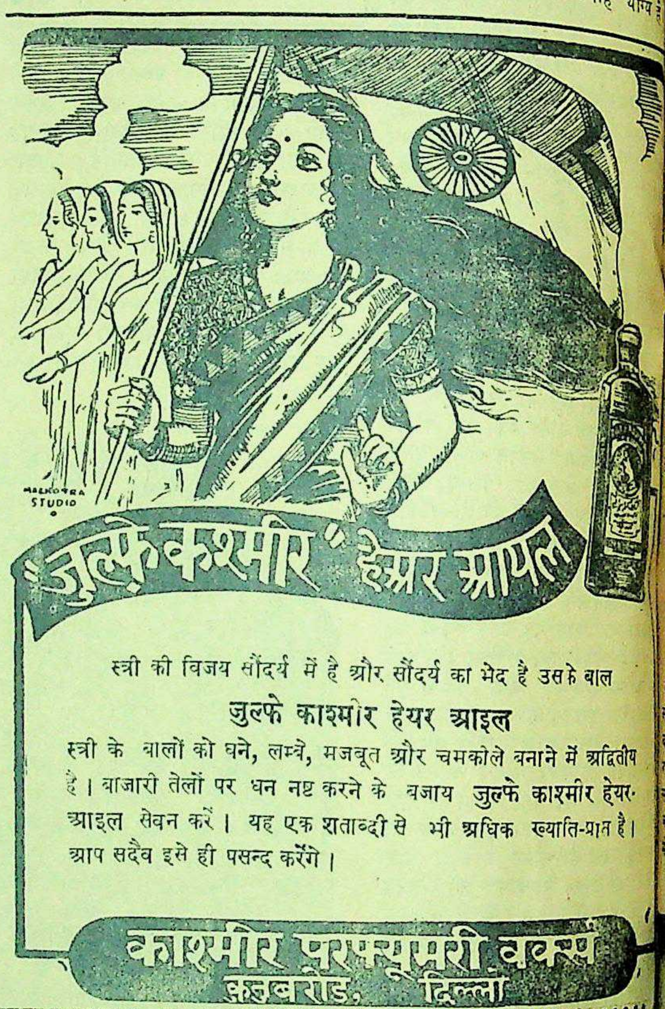

स्त्री की विजय सौंदर्य में है और सौंदर्य का भेद है उसके बाल

ज़ुल्फ़े काश्मीर हेयर आइल

स्त्री के बालों को घने, लम्बे, मजबूत और चमकोले बनाने में अद्वितीय है। बाजारी तेलों पर धन नष्ट करने के बजाय ज़ुल्फ़े काश्मीर हेयर आइल सेवन करें। यह एक शताब्दी से भी अधिक ख्याति-प्राप्त है। आप सदैव इसे ही पसन्द करेंगे।

काश्मीर परफ़्यूमरी वर्क्स
कुतुबरोड, दिल्ली

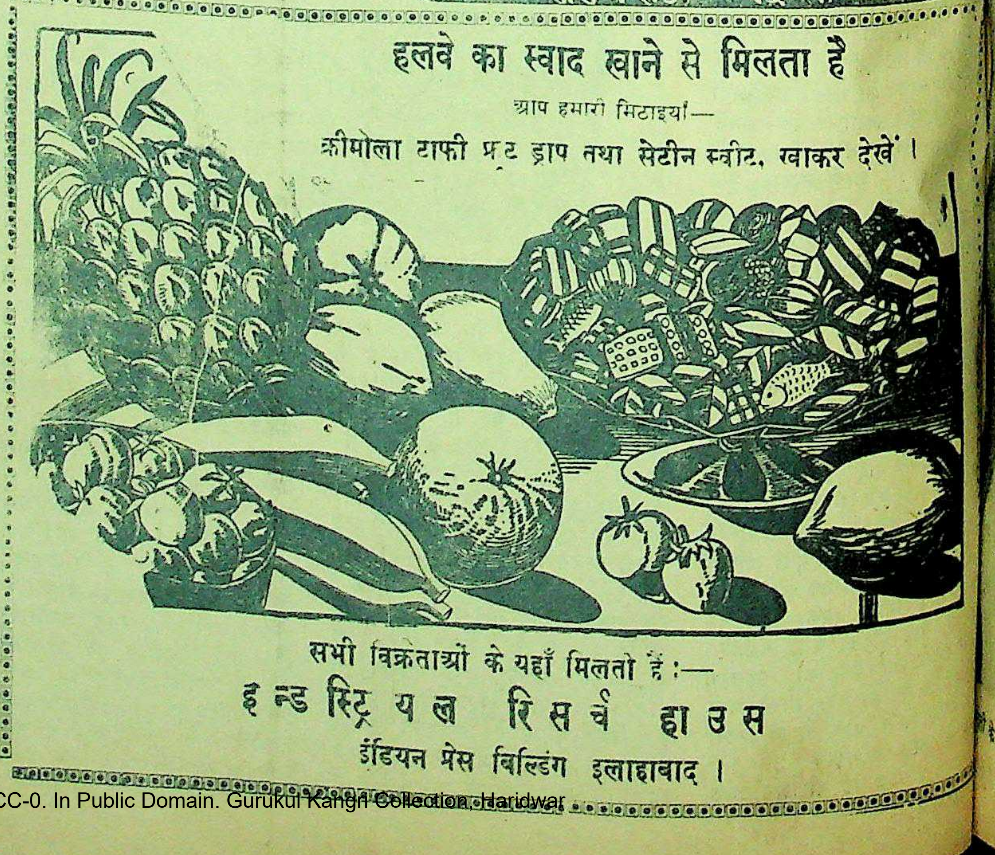

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयां—

क्रीमोला टाफी फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

मातृमण्डल

भारतीय नारी-समाज की वैधव्य-व्यथा

स्वतंत्र भारत में नेता लोग समाज को रोग-मुक्त बनायें

लेखक, श्री कृष्णकुमार गुप्त बी० काम

प्रत्येक समाज की अपनी समस्याएँ होती हैं। हिन्दू-समाज इस सम्बन्ध में सबसे अगुआ है। अस्पृश्यता-निवारण, अछूतोद्धार, मन्दिर-प्रवेश, बाल-वृद्ध और अनमेल विवाह, दहेज-प्रथा और कन्या-विक्रय की तो समस्याएँ हैं ही इनके अतिरिक्त भी रूढ़ियों और सामाजिक कुरीतियों की शिलाओं पर अनेक निरपराध बालाओं दिन-प्रतिदिन चूर हो रही हैं। उनके हृदयबिन्दु जहां-तहां बिखरे पड़े हैं। एक शब्द में, वैधव्य समस्या बड़ी जटिल है और हमें अपना अस्तित्व स्थिर रखने के लिए उसको हल करना होगा।

किसी समय उच्चतम धार्मिक आदर्शों को लेकर पुरुष और स्त्री दोनों के लिए एक विवाह की आयोजना की गई थी। पुरुष के लिए पत्नि-व्रत और पत्नी के लिए पतिव्रत की व्यवस्था एक साधना थी। स्वेच्छापूर्वक अपनाया हुआ वैधव्य अथवा विधुरावस्था जीवन का आदर्श, आत्मा का बल और नैतिक कर्त्तव्य प्रकट करते थे। वह वैधव्य त्याग, पवित्रता और तपस्या का प्रतीक था जिसमें शान्ति और आत्मिक महानता निहित थी। देश, काल और युग के अनुसार विधवाओं का जीवन प्राचीन समय में सबके साथ-साथ सात्विक था, उनकी संख्या कम थी, बाल-विधवा सम्भवतः एक भी नहीं थी। रहन-सहन का ढंग बहुत साधारण था। लोगों के आचरण शुद्ध थे। स्त्रियां आदर की दृष्टि से देखी जाती थीं और उन्हें समाज में सम्मान प्राप्त था।

अब परिस्थितियों और वातावरण में परिवर्तन आ गया है। वर्तमान समय में प्रकृति अपनी गतिविधियों को इतनी तीव्र गति से बदल रही है कि हम कल्पना भी नहीं कर पाते कि कल क्या होगा? हममें से एक भी 'राम' नहीं। आज का समाज और पारिवारिक वातावरण दूषित एवं विलासितायुक्त है, आधुनिक जीवन कृत्रिम प्रलोभनशील और असंयमपूर्ण है। विधवा बालिकाओं को ब्रह्मचर्य से रहने के लिए कोई साधन सुलभ नहीं। यदि निस्पक्षतापूर्वक विचार किया जाय तो ज्ञात होगा कि मनुष्य की स्वार्थसिद्धि की भावना उसे अन्धा बनाए है और वह धर्म की आड़ में विधवाओं पर बलात् संयम लादकर रक्षक के रूप में भक्षक बना हुआ है।

भारत के कोने-कोने सभी में आयु की असंख्य विधवाओं की करुण चीत्कार सुनाई पड़ती है। अपना जीवन-धन खोकर, सब प्रकार के कष्ट भोगते हुए भी वे कुलटा, कलंकिनी, राक्षसी, हत्यारिन बनाई जाती हैं। उनका मानव-अत्याचार से दम घुटता रहता है, वे सिसकियां भरती रहती हैं; परन्तु मरने नहीं दी जातीं। वे जन्मपर्यन्त तिरस्कृत रहती हैं। न उन्हें भर पेट भोजन मिलता है न पूरे वस्त्र। उनकी उमंगें और भावनाएँ उनके हृदय में ही विलीन हो जाती हैं। उनका हृदय विदारक और नारकीय जीवन देखकर लज्जा से मस्तक नीचा हो जाता है। यदि वे किसी से हँसें, बोलें तो यह उनका दुराचरण कहाता है। गुप्त रूप से चाहे पुरुष ही विधवाओं का सतीत्व हरने के अनेक उपाय करते हों, प्रेम दर्शाते हों, प्रलोभन देते हों और उनकी दबी हुई काम-पिपासा को उभारकर अपने ढोंग को सफल करते हों। विधवावस्था मूक नारी समाज के कोमल अंग पर कायर की भांति प्रहार है। विधवाएँ समाज का कलंक और जीवित नर्ककुण्ड बन रही हैं। विधवा शब्द स्वयं अपार करुणा और दया प्रगट करता है।

अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन की सभानेत्री श्रीमती अनुसुइयाबाई काले भूतपूर्व सभानेत्री श्रीमती रामराव के साथ।

के अस्पताल में जहां काश्मीर के युद्ध में आहतों की दवा हो रही है, श्रीमती कुलवन्त सिंह निरीक्षण कर रही हैं।

विधवा-उद्धार का प्रश्न, अतएव अति सूक्ष्म प्रकार से हमारे सम्मुख अपने नग्न रूप में उपस्थित है। इसका केवल एक ही उत्तर है और वह है विधवा-विवाह और वही व्यभिचार कम करने, वेश्याओं की संख्या घटाने, भ्रूण हत्याओं तथा अन्य क्रूरताओं को मिटाने का एक-मात्र उपाय है। यौवनकाल एक संकट-कालीन अवस्था है। जब पुरुष अपने को संयम के सूत्र में बांधने में असमर्थ रहा है, तो नारी जो पुरुष से कहीं अधिक कामुक कही जाती है किस प्रकार सफलता-पूर्वक वैधव्य निर्वाह कर सकती है? यदि हम 'राम' नहीं तो हम स्त्रियों से सीता बने रहने की मांग भी औचित्यपूर्वक नहीं कर सकते। प्रकृति ने कभी किसी को विधवा नहीं समझा। इसका प्रमाण यही है कि वैधव्य कोई असाधारण शारीरिक परिवर्तन नहीं कर देता, अपितु वही क्रम चलता रहता है। प्रकृति की अनुलंघनीय शक्ति के सामने धार्मिक, सामाजिक एवं राजकीय बन्धन सभी व्यर्थ हैं।

सुधार और उन्नति का यह युग है। इसमें धर्म केवल हमारा साधन हो सकता है न कि ध्येय। जिस धर्म के नाम पर विधवाओं को मार्गच्युत किया जा रहा है वह एक सरासर धोका है। धर्म के वास्तविक तत्त्वों को सर्वसाधारण समझते ही कहां हैं? धर्म तो स्वयं विधवा-विवाह के लिए आज्ञा देता है। व्याघ्रपात के एक श्लोक का अर्थ है कि कलयुग में जैसे स्त्री के मरने के पश्चात् पुरुष पुनर्विवाह कर लेता है वैसे ही पुरुष के मरने पर स्त्री को भी पुनर्विवाह कर लेना चाहिए। जावालि, अगस्त्य जी तथा अन्य ऋषियों ने भी इसी आशय की आज्ञा प्रदान की है। वेदों में विधवा-विवाह की अनुमति है, स्मृतियों में सम्मति है, पुराणों में साक्षी है, महापुरुषों के आदेश इसे प्राप्त हैं। नोआखाली में अपरिष्कृत स्त्रियों के पुनरुत्थान का प्रश्न उठा तो काशी के प्रकाण्ड पंडितों ने एक मत से विधवा-विवाह का समर्थन किया। देश के समस्त लोकप्रिय नेता तथा संसार की अपूर्व विभूति महात्मा गांधी इसके पक्ष में थे। विश्व के किसी भी देश में विधवा-विवाह निषेध नहीं।

अशिक्षा, अन्धविश्वास, कुसंसकारों एवं अनावश्यक रूढ़ियों से पोषित बलात् वैधव्य सर्वथा निन्दनीय है। इस सामाजिक बन्धन का कोई मूल्य नहीं। कैसी विडम्बना है कि न युवती विधवाओं को ब्रह्मचर्य साधनार्थ कोई सुविधाएँ हैं और न उनका पुनर्विवाह ही किया जाता है। इस वर्णनातीत दशा को सुधारने के लिए हिन्दू-समाज के कायाकल्प की आवश्यकता है। इस दिशा में देश के प्रौढ़स्तम्भ नवयुवकों, स्वार्थत्यागी समाज-सुधारकों तथा सम्मानित नेताओं द्वारा प्रत्यक्ष कार्य तत्काल होना चाहिए। हमें अपना अस्तित्व स्थिर रखने के लिए आवश्यक है कि हम विवाह योग्य विधवाओं को प्रस्तुत बन्धन से मुक्त कर विवाहित कर दें। यों त्याग की भावनाओं-वाली बहनें अपने निर्णय में सदैव स्वतन्त्र रहें। विधवाओं की समस्या उनको अकेले घर की चहारदीवारी में बन्द करके जहां चिड़िया भी पंख न मारने पावे, कदापि हल नहीं हो सकती।

अर्थशास्त्र की दृष्टि से भी वैधव्य देश और समाज के साथ शत्रुता है। स्त्री का सबसे बड़ा उत्पादक कार्य मातृत्व है। मातृत्व का निर्वाह वे पुनर्विवाह द्वारा ही कर सकती हैं। समाज-शास्त्र का सिद्धान्त है कि सब कोई अपने लिए सुख का साधन जुटाने का अधिकारी है। तब इस प्रकार विधवाएँ क्योंकर वंचित की जा सकती हैं। कुँवारों की समस्या का भी विधवा-विवाह ही हल है।

१५ अगस्त १९४७ को प्राप्त की गई स्वतन्त्रता का अर्थ सामाजिक उन्नति—विशेष कर स्त्रियों की उन्नति—के बिना कुछ नहीं। उन्नति सर्वांगीय हो, वही वास्तविक उन्नति है, वही प्रशंसनीय है। हमें आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि देश के मनोनीत नेतागण के हाथ हमारा भविष्य उज्ज्वल और सुरक्षित है और वे हिन्दू-समाज को रोगमुक्त कर स्वस्थ बनाने में समर्थ होंगे।

सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं हमारे आयुर्वेदिक सुगन्धित तैल से बाल का पकना रुककर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। यह तैल दिमागी ताकत और आँखों की रोशनी को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो, वे मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। मूल्य २॥), आधा बाल पका हो तो ३॥), और कुल पका हो तो ५) का तैल मंगा लें।

एल० एन० गुप्ता फार्मेसी
नं० ८ पो० नवादा, गया।

संपादक के नाम चिट्ठियां

टिहरी गढ़वाल का राजनैतिक भविष्य

१५ जनवरी को टिहरी में एक अहिंसक क्रान्ति की सफलतापूर्वक समाप्ति के बाद लोक-राज्य की स्थापना हो चुकी थी, उसी दिन शान्ति और सुव्यवस्था कायम करने के लिए भारत-सरकार ने राज्य का प्रबन्ध अपने हाथों में ले लिया था; परन्तु जैसा कि बाद को युक्तप्रान्त के डिप्टी इन्सपेक्टर जनरल श्री जेटली की रिपोर्ट से पता चला है कि २-३ दिनों के प्रजा-राज्य में भी टिहरी में कोई विशेष घटना नहीं हुई, प्रजामण्डल के नेताओं ने महाराजा द्वारा पाले गये सफेद हाथियों—उनके कर्मचारियों के साथ जो सदियों से जनता का शोषण करते आ रहे थे, बड़ी सहृदयता का व्यवहार किया है। इसके बाद ही टिहरी और राज्य के दूसरे नगर पारस्परिक विरोधी विचार-धाराओं के अखाड़े बन गये। राजतंत्र के हिमायतियों ने उत्तरदायी शासन का अलाप रागना आरम्भ कर दिया और राज्य भर में खुल्लमखुल्ला लड़ाई कराने की स्थिति पैदा करदी। इस मौके पर प्रजामण्डल के कार्यकर्ताओं ने राज्य के कोने-कोने में जाकर शान्ति स्थापित करने के लिए जी-तोड़ परिश्रम कर सराहनीय कार्य किया है।

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए प्रजामण्डल की कार्यसमिति ने यह निश्चय किया कि फिलहाल राज्य की व्यवस्था अपने हाथों में ली जावे और इस समय का उपयोग राज्य भर में प्रजामण्डल का संगठन मजबूत बनाकर भावी कदम उठाया जावे। भारत-सरकार के रियासती विभाग ने भी इस सुझाव को स्वीकार कर लिया और इस प्रकार टिहरी में अगले ६ महीनों के लिए एक अन्तःकालीन व्यवस्था कायम कर ली गई है, जिसमें प्रजामण्डल की मांग पर प्रधान मंत्री रियासती विभाग की ओर से भेजा गया है और चार प्रजामण्डल द्वारा नामजद मंत्री होंगे, जहां तक राजा के अधिकारों का प्रश्न है यह पहले ही स्पष्ट कर दिया गया है कि सर्वोच्च सत्ता जनता में निहित है और राजा के खर्चे की रकम भी सरदार पटेल ही निश्चित करेंगे।

ऐसी स्थिति में राज्य में पूर्ण उत्तरदायी शासन की स्थापना की चिल्लाहट स्वतः ही बन्द हो जानी चाहिए, क्योंकि आज टिहरी की जनता उत्तरदायी शासन की स्टेज से कई कदम आगे बढ़ चुकी है। इसलिए राजा को बनाए रखने का प्रश्न तो उठ ही नहीं सकता।

राजा के न रहने की स्थिति में दूसरा सम्भव हल राज्य के किसी प्रान्त के साथ विलीनीकरण करने में ही पाया जा सकता है। उड़ीसा की रियासतों के विलीनीकरण के पश्चात् रियासती जनता ने तानाशाहों के चंगुल से मुक्ति पाने के लिए विलीनीकरण की योजना का स्वागत किया है, पर थोड़े ही समय में उन्हें पिछड़ा हुआ होने के कारण अपने हितों की सुरक्षा के सम्बन्ध में खतरा भी नजर आने लगा। जहां तक टिहरी राज्य का प्रश्न है, आन्दोलन के दौरान में यहां की जनता ने भी एकस्वर से युक्तप्रान्त में मिल जाने का नारा बुलन्द किया और अब भी हमारा विश्वास है कि टिहरी को युक्तप्रान्त के सिवा पूर्वी पंजाब व शिमला की पहाड़ी रियासतों के साथ किसी भी हालत में नहीं बांधा जा सकता है, पर अब प्रश्न यह उठता है कि क्या युक्तप्रान्त जैसे बड़े प्रान्त में टिहरी की पिछड़ी हुई जनता की हालत सुधारने की ओर कुछ विशेष ध्यान दिया जा सकेगा? राजा की सत्ता को उखाड़ फेंकने का सबसे प्रमुख कारण आर्थिक शोषण था। यहां के राजाओं ने अपने १,३०० वर्षों के शासन-काल में जनता की आर्थिक दशा सुधारने की ओर कतई ध्यान नहीं दिया था, इसलिए अपनी सरकार कायम होने पर प्रजामण्डल ने नाजायज करों को, अनुचित शोषण के तरीके समझकर, समाप्त कर दिया है। इसके अतिरिक्त राज्य में अधिक से अधिक आदमियों को रोजी दिलाने के लिए, क्योंकि यहां की एक चौथाई जन-संख्या पेट-पूर्ति के निमित्त बाहर रहती है, नये-नये उद्योग-धन्धे खोलने की घोषणा की है। पर ६ महीने के छोटे से समय में यह सब कुछ हो सकना असम्भव-सा प्रतीत हो रहा है।

हिमालय प्रान्त बनाने की मांगें भी सामने आ रही हैं, पर जब तक पर्वतीय प्रदेश में छोटे-मोटे दो दर्जन से अधिक रजवाड़े कायम हैं, यह प्रश्न उठता ही नहीं, क्योंकि हमारी भावी व्यवस्था में राजाओं का कोई स्थान ही नहीं है। दूसरे आवागमन के साधनों की कमी के कारण एकदम ऐसा हो सकना कठिन है। हां, भविष्य में चलकर इस प्रश्न पर विचार किया जा सकता है।

यह सब कुछ ध्यान में रखते हुए यही कहा जा सकता है टिहरी के राजनैतिक भविष्य के निर्णय करने में आर्थिक कारणों का बड़ा भारी हाथ है। हम यह कह सकते हैं कि राज्य को अपने साथ मिलाने की दशा में किसी भी सरकार को घाटा नहीं पड़ सकता; क्योंकि राज्य के प्राकृतिक साधनों का अभी तक कतई उपयोग नहीं किया गया है और आर्थिक विकास के लिए बड़ा भारी क्षेत्र है। छोटी-सी पूंजी लगाने पर ही कागज, लकड़ी और तारपीन का तेल तथा सीमेंट के उद्योग खुल सकते हैं। खनिजों की अभी तक खोज नहीं की गई है और बिजली पैदा करने के लिए, जो कि पानी की प्रचुरता और पहाड़ स्थान होने के कारण आसानी से किया जा सकता है, कुछ नहीं किया गया है। एकदम राज्य के विलीनीकरण हो जाने पर, बाहर के पूंजीपतियों के हाथ इन उद्योगों के चले जाने का खतरा भी यहां की जनता के सामने था।

इसके अतिरिक्त पिछड़े हुए होने के कारण शिक्षा और सरकारी नौकरियों में भी लोग संरक्षण चाहते हैं। अधिक से अधिक स्थानीय स्वतन्त्रता के साथ विलीनीकरण की योजना का प्रजामण्डल द्वारा स्वागत किया जावेगा। यदि प्रान्त में मिलने पर इन हितों की सुरक्षा का रास्ता न दिखाई दिया तो सीधे केन्द्रीय सरकार के संरक्षण में आकर भी यह समस्या आसानी से हल हो सकेगी।

प्रजामण्डल टिहरी —सुन्दरलाल बहुगुणा

* * *

'गांधी-संवत्'

अखबारों में यह सुझाव रक्खा जा चुका है कि राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी की मृत्यु-तिथि से उनके नाम पर गांधी-संवत् चलाया जाय। ईसवी-संवत् भी महात्मा ईसा के मृत्यु-दिवस से [illegible] मुहम्मद साहब की मृत्यु के बाद ही चालू हुआ था। भगवान् बुद्ध के पश्चात् महात्मा गांधी की ही महान् आत्मा भारत में अवतरित हुई। समस्त संसार के दृष्टिकोण से महात्मा ईसा के बाद हमको महात्मा गांधी ही शान्ति और अहिंसा के प्रतीक-स्वरूप प्राप्त हुए। यह अति वाञ्छनीय है कि इस दिव्य आत्मा की स्मृति में हम एक संवत् चलायें कुछ सज्जन १५ अगस्त १९४७ से एक संवत् चलाना चाहते हैं। वे इस ओर प्रयत्नशील भी रहे हैं; परन्तु उनके प्रस्ताव की अपेक्षा राष्ट्र-पिता की मृत्यु-तिथि से संवत् आरम्भ करना अधिक उत्तम होगा

प्रत्येक संवत् वर्ष में बारह माह हों। उनके नाम इस प्रकार हों— १–निर्वाण मास, २–सेवा मास, ३–प्रेम मास, ४–अहिंसा मास, ५–सत्य मास, ६–रामधुन मास, ७–समता मास, ८–त्याग मास, ९–शान्ति मास, १०–अभय मास, ११–व्रत मास, १२–एका मास। प्रथम मास हमको गांधी जी के निर्वाण की याद दिलायेगा और अन्तिम मास एकता का। बापू एकता के लिए मरे, एकता के लिए उनका निर्वाण हुआ। अन्य मास हमको उन गुणों की झांकी दिखायेंगे जिसके लिए गांधी जी वन्दनीय हैं।

प्रत्येक मास में कई सप्ताह हों। प्रत्येक सप्ताह में सात दिन हों। शुक्रवार, शनिवार, रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार और बृहस्पतिवार। संवत् की पहली तिथि शुक्रवार को मानी जाय। रविवार के स्थान पर शुक्रवार को छुट्टी रहा करे।

प्रत्येक संवत् वर्ष में ३६५ दिन माने जायँ। जिस संवत् वर्ष में चार से भाग देने पर '१' शेष बचे उसमें ३६६ दिन रक्खें जायँ। इस प्रकार गांधी-संवत् १, ५, ९, १३, १७ आदि में ३६६ दिन रहेंगे। परन्तु प्रत्येक शताब्दी के प्रथम वर्ष में तभी ३६६ दिन रहेंगे जब उस शताब्दी की संख्या चार से विभाजित हो, जैसे—४०१, ८०१, १२०१ आदि।

गांधी-संवत् के प्रथम मास में ३१ दिन रक्खे जायें। अन्य मासों में क्रमशः ३०, ३१, ३०, ३१, ३०, ३०, ३१, ३०, ३१, ३० तथा ३० दिन हों। जिस वर्ष में ३६६ दिन हों, अन्तिम मास में ३१ दिन माने जायँ।

मंझनपुर, प्रयाग
२५ फरवरी, ४८
—हरेशचंद्र अग्रवाल
एम० ए० बी० टी०

* * *

साहित्यकार-स्मृति-दिवस

कुछ ही दिवस हुए स्थानीय 'सूर्यकरण पारीक स्मारक-समिति' द्वारा 'भाषण - प्रतियोगिता' का आयोजन सफलतापूर्वक समाप्त हुआ। यद्यपि वातावरण उल्लसित न था; महामानव बापू के निधन से सर्वत्र शोक व्याप्त था। प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए जयपुर, बीकानेर, ग्वालियर, नवलगढ़ और बगड़ आदि स्थानों के हाईस्कूल के विद्यार्थी आये थे। 'धर्म मानव-समाज की प्रगति में बाधक है' भाषण का विषय था। स्थानीय हाईस्कूल के छात्रों तथा बिड़ला बालिका-विद्यापीठ की छात्राओं ने भी प्रतियोगिता में भाग लिया। विजयी छात्रों के मध्य ६ पुरस्कार वितरित किये गये तथा 'रजत-विजय-पात्र' एक वर्ष तक अपने यहां रखने का अधिकारी हुआ बगड़-स्कूल। पिछले ९ वर्षों से हर वर्ष यह आयोजन राजस्थानी के अभूतपूर्व विद्वान् स्वर्गीय श्री सूर्यकरण जी पारीक एम० ए० की स्मृति में किया जाता है। वे स्थानीय बिड़ला कालेज के वाइस-प्रिंसिपल भी थे। श्री पारीक जी द्वारा [illegible] "वेलि किसन रुक्मिणी री" (जो 'हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग' प्रकाशित हुई है) की पाश्चात्य वि 'यथा डा० ग्रियर्सन आदि ने भी मुक्त से प्रशंसा की है। उनके अन्य ग्रंथ ' स्थान के लोक-गीत' (दो भाग) 'बोलावण' शीर्षक एक नाटक भी प्रका हुए हैं। उनके सम्मान में यहां से, के हिमायती और सुप्रसिद्ध आलो राजस्थानी साहित्य के अन्वेषक वि प्रो० कन्हैयालाल सहल एम० ए० सम्पादकत्व में 'श्री सूर्यकरण पारी स्मृति ग्रंथमाला' का प्रकाशन भी कि जा रहा है। प्रथम पुष्प 'चौबो प्रकाशित भी हुआ है। आज आवश्यक है कि—साहित्यकारों की याददाश्तें कायम करें। राजनीतिक पराधीनता विमुक्त होने के बाद आज हमें साहित्यि और सांस्कृतिक स्वराज्य की अपेक्षा है

पिलानी (जयपुर) —अखिल वि

* * *

वंगीय हिन्दी-परिषद् में 'कविकल

वंगीय हिन्दी - परिषद् के अन्त कविकल्प का संगठन किया गया कविकल्प का उद्देश्य काव्य की श्रीवृ के लिए सतत् प्रयत्न करना है। इस बैठक प्रत्येक मास के अन्तिम रविवार को हुआ करती है, जिसमें स्थानीय कवि भाग लेते हैं और अपनी उत्तमोत्तम रचनाएँ सुनाते हैं। कविकल्प में पठि सर्वोत्तम रचनाएँ पुस्तकाकार भी प्रकाशि की जायेंगी, गत २३ जनवरी को श्री गुलाबरत्न जी वाजपेयी की अध्यक्ष में स्थानीय कवियों की एक सभा हुई जिसमें नये वर्ष के लिए श्री सूर्यदेव ध्याय "अनुरागी" एवं रणधीर साहि लंकार साल भर के लिए संयोजक गये तथा सात व्यक्तियों की एक समिति, ५ व्यक्तियों की एक समालो समिति एवं ७ व्यक्तियों की एक परा समिति गठित की गई।

कार्य-समिति में निम्नलिखित सद रखे गये हैं। सर्वश्री सूर्यदेव उपा 'अनुरागी', रणधीर जी, मनोहर मालवी उपेन्द्र जी, गणेश जी, रघुनन्दन गुलाबरत्न वाजपेयी। आलोचक समि सर्वश्री पं० ललिताप्रसाद सुकुल, देवदत्त मिश्र, सुश्री कमलादेवी पं० परमानन्द शर्मा, शिवदेव उपा 'सतीश।'

परामर्श-समिति सर्वश्री गुलाब वाजपेयी, आजाद जी, अनुरागी मनोहर मालवीय, ललितप्रसादसिंह नट उपेन्द्र जी, रणधीर जी।

—संयोज

* *

पत्र-पत्रिकाओं की पूर्ण सूचिका

हिन्दी-संसार को यह जानकर अतीव हर्ष होगा कि हिन्दी-साहित्य-समिति (बिड़ला कालिज) पिलानी, के तत्वा वधान में 'हिन्दी के पत्र और पत्रिका पुस्तक श्री अखिल विनय के सम्पादक में शीघ्र ही प्रकाशित हो रही है, आज प्रकाशित होनेवाले हिन्दी के पत्र-पत्रिकाओं का विवरण रहेगा। आज संसार में चौथे नम्बर पर अधिक बोली जानेवाली भाषा नितान्त आवश्यकता है कि हिन्दी तथा भारतीय जनता को राष्ट्र 'हिन्दी' में प्रकाशित पत्रों की जान शीघ्र और सुविधापूर्वक हो सके। व सम्पादक का नाम, स्थान, एक का और वार्षिक मूल्य आदि अपेक्षित हैं। हमें विश्वास है कि प्रेमियों, साहित्यिकों एवं पत्रकारों उचित सहयोग प्राप्त होगा। पत्र-सम से सादर विनय है कि नमूने की तथा संक्षिप्त परिचय भेजकर करें।

पिलानी —कन्हैयालाल सहल, ए

युक्तप्रांतीय सूचना-विभाग प्रचार-शिविर माघमेला के कार्य का लेखा-जोखा

लेखक, एक दर्शक

एक महीने तक युक्तप्रान्तीय के सूचना-विभाग के प्रचार-शिविर म्भ मेले में प्रचार-कार्य किया तो प्रतिवर्ष उक्त विभाग की ने माघमेले में प्रचार-कार्य चलता न्तु इस वर्ष कर्मचारियों ने दैनिक में अनेकानेक लाभकारी और कार्य-क्रम रखकर जिस प्रतिभा चय दिया है वह सर्वथा सराहनीय घमेले में मुझे अकसर जाने का हुआ है। सूचना-विभाग, युक्त-सरकार का साइनबोर्ड देखकर क्यों मुझे उस विभाग से कुछ हुई। सोचा सरकार के कई अन्य विभागों की तरह यहां भी कुछ दिखावे का काम होता होगा। और जब मुझसे बताया गया कि यहां प्रचार-कार्य होता है तब तो मेरी धारणा और भी पक्की हो गई। होगी क्यों न, 'प्रचार' शब्द से मेरी तरह बहुत से और लोग भी चिढ़ते हैं।

किन्तु यहां तो प्रतिदिन ३,४ प्रमुख वक्ताओं के भाषण होते थे जिनमें साधु-संन्यासी, पत्रकार, लेखक, विश्वविद्यालयों के अध्यापक आदि आदि थे। इन वक्ताओं के भाषणों द्वारा जनता में राज-नैतिक चेतना होती थी और सांस्कृतिक विकास होता था।

और एक दिन मैंने देखा एक साधु ज्योतिदान यज्ञ कर रहे थे। और मनन करते थे, वेद-मंत्रों का उच्चारण करते थे, उनके साथ दूसरे लोग भी वैसा ही करते थे। अपनी क्रियाओं की व्याख्या करते हुए साधु ने बतलाया कि नेत्रों के सारे रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा हो सकती है। नेत्रों के लिए व्यायाम निर्धारित हैं और भगवान् सूर्य की, जो सारे संसार को आलोक देता है, आराधना करने से नेत्रों को ज्योति-लाभ होता है।

शिविर में मैंने दूसरी ओर देखा सैकड़ों चित्र लगे हैं और जहां-तहां पोस्टर टंगे हैं। देश के गण्यमान्य नेताओं की चित्रा-वली दर्शदनीय थी। कुछ पोस्टर ऐसे भी लगे थे जिनमें सरकार की विविध योजनाओं का परिचय मिलता था।

कई सरकारी कर्मचारियों ने सरकार की उन्नति-विभाग-संबंधी योजनाओं पर प्रकाश डालते हुए व्याख्यान दिये। हमने देखा हजारों आदमी ध्यानस्थ हो भाषणों को सुनते थे।

कीर्तन और भजन भी घंटों चलते थे। माघमेले में आनेवाले अधिकतर लोग सनातनधर्मावलम्बी होते हैं, उनकी रुचि के अनुरूप भगवन्नामसंकीर्तन हमें बड़ा पसंद आयेगा।

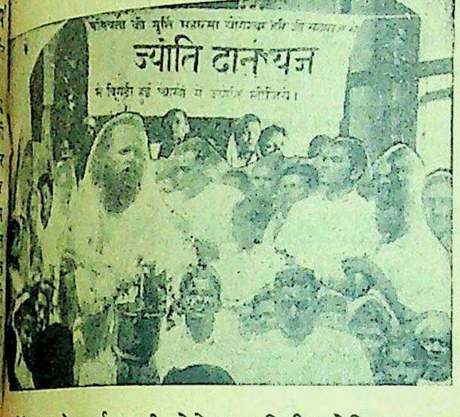

ज्योतिदान यज्ञ के आचार्य स्वामी जोगेश्वर हरिजी ज्योतिदान कर रहे हैं।

शाम को प्रति दिन यात्रियों को बेदाम का सिनेमा देखने को मिला। लोग टूटे पड़ते थे। सिनेमा की तसवीरों द्वारा सरकार की बहुतेरी योजनाओं का प्रकाश किया गया। बहुतेरे यात्रियों ने बाहर कभी सिनेमा न देखा होगा।

३१ जनवरी को महात्मा जी के निधन पर सारा संसार बिलख रहा था। इलाहाबाद के नागरिकों ने एक बहुत बड़ा जुलूस निकाला, वह जुलूस त्रिवेणी तक गया। फिर सूचना-विभाग के तत्त्वा-वधान में सार्वजनिक सभा हुई जिसमें लगभग ५ लाख आदमी उपस्थित थे। सूचना-विभाग के केवल थोड़े से कर्मचारियों ने सभा की इतनी अच्छी व्यवस्था की, देखकर मुझे काफी आश्चर्य हुआ।

सूचना-विभाग की ओर से कई दिन वायुयानों द्वारा जनोपयोगी साहित्य बांटे गये। १२ फरवरी को जिस दिन महात्मा जी के फूलों का विसर्जन हो रहा था, वायुयानों द्वारा महात्मा जी के चित्र जिन पर महात्मा जी के सुप्रसिद्ध 'रामधुन' की पंक्तियां लिखी थीं लाखों की संख्या में बांटे गये। इस समय गांधी जी की रामधुन का प्रचार अवसर के अनुरूप ही था।

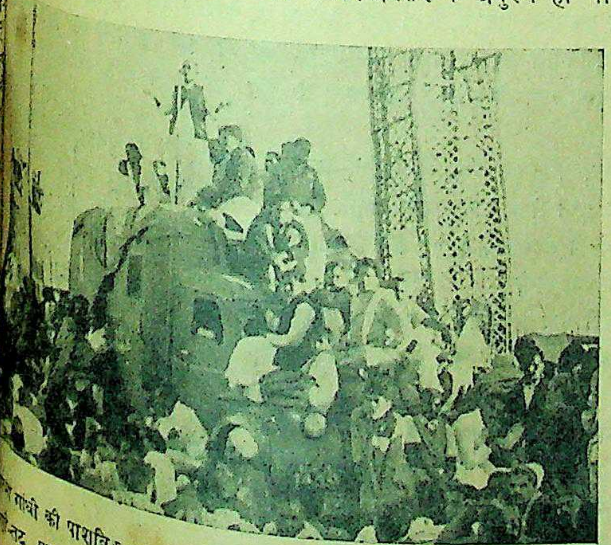

गांधी की पाशविक हत्या का समाचार सुनकर, ता० ३१ जनवरी को प्रयाग में तट पर नागरिकों की शोक-सभा। उड़ीसा के गवर्नर माननीय डाक्टर कैलाशनाथ काटजू श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं।

अवध कला-मंडल, फैजाबाद

यों तो संगीत और नृत्य-सम्बन्धी कितनी ही संस्थाएँ भारतवर्ष में चल रही हैं और उनसे दीक्षित होकर कितने ही स्नातक बाहर आ रहे हैं और उन्हीं का यह परिणाम है कि आज संगीत और नृत्य के प्रति पिछली पीढ़ियों के हीनभाव मिट चले हैं और सभ्य समाज में इन कलाओं का सम्मान बढता ही जा रहा है, किन्तु 'अवध-कला-मंडल' इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण और अपने ढंग का नवीन प्रयास है। प्रायः देखा जाता है कि जो लोग साहित्यिक हैं वे एक संगीत और नृत्य-कला से अनभिज्ञ हैं और जो नृत्य और संगीत में रुचि-सम्पन्न हैं वे साहित्य और काव्य-कला से उदासीन रहते हैं। इसी अभाव की पूर्त्ति को दृष्टि-छाया में रखकर 'अवधकला-मंडल' आगे बढ़ रहा है। इसने काव्य, संगीत और नृत्य की त्रिवेणी पर ही सच्ची कला की अवतारणा की दिशा में अपने आविष्कार भी किये हैं। हिन्दी-साहित्य के इतिहास को संगीत की पृष्ठभूमि से छाया-नाट्य के रूप में प्रदर्शित कर एक नवीन दिशा में विकास का संकेत दिया है। इसके अतिरिक्त महादेवी वर्मा के 'शलभ मैं शापमय वर हूँ' गीत 'रत्नाकर' के छन्द, सूर और तुलसी के गीत-पदों और बच्चन आदि नवीन कवियों की 'स्वीकृति' आदि कविताओं का नृत्य-नाट्य भी मंडल की अपनी सृष्टि है। प्रायः नृत्य-कला से अनभिज्ञ दर्शकों को नृत्य की मुद्राओं का अर्थ स्पष्ट नहीं होता। गीतों के गान के साथ चलती हुई नृत्य-मुद्राओं से कविता और नृत्य दोनों की भावनाओं का हृदयंगम होता चलता है। मौखिक के अतिरिक्त वाद्य-संगीत भी संस्था का विषय है।

'अवध-कला-मंडल' को 'आधुनिक प्राच्य-संगीत-नृत्य' के शीर्षक में रखा जा सकता है। हास्य और तांडव-नृत्य के सुन्दर प्रदर्शन इसकी प्रच्छन्न प्रवृत्ति के परिचायक हैं। अखिल भारतीय संगीत-सम्मेलनों में यहां की स्नातिका सुश्री विमला ग्रोअर, कृष्ण वर्मा और उमा वर्मा को अपनी प्रतियोगिताओं में प्रथम श्रेणी में पुरस्कृत भी किया है। मंडल अल्प-वयस्का बालिकाओं में नृत्य-संगीत और साहित्यिक सुरुचि का विकास कर उन्हें आधुनिक और सांस्कृतिक कला-दीक्षा से संस्कृत कर रहा है। इस प्रकार नृत्य-संगीत के साथ-साथ साहित्य और काव्य को भी जोड़कर इस मंडल ने जिस महत्त्व-पूर्ण दिशा की ओर इंगित किया है वह अन्यान्य तद्विषयक संस्थाओं के लिए एक आदर्श है। सस्ते प्रचार से दूर रखते हुए बा० महादेवप्रसाद जी अध्यापक ग० मं० स्कूल फैजाबाद, श्री केशवचंद्र जी वर्मा तथा वहां के अन्यान्य शिष्ट सज्जन जिस प्रकार इस संस्था को सच्ची कला के पथ पर अग्रसर कर रहे हैं, उसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।

—श्रीपालसिंह 'क्षेम'

काम सर्दीपर अकसीर उपाय
प्राशेंदा
१८६६
नीलगिरि तैल
[illegible]
पी. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

लिपटन के प्रेमी : १

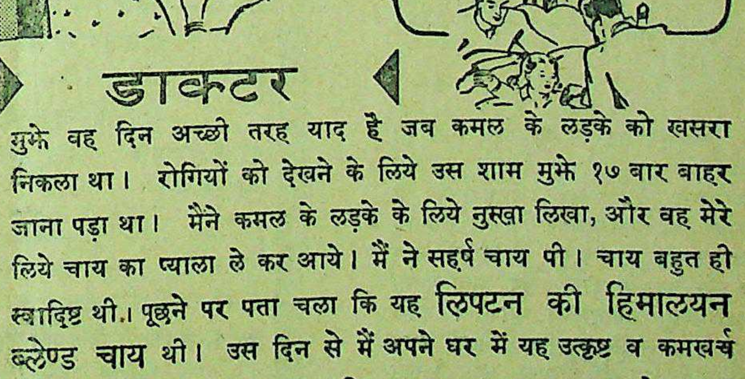

डाक्टर

मुझे वह दिन अच्छी तरह याद है जब कमल के लड़के को खसरा निकला था। रोगियों को देखने के लिये उस शाम मुझे १७ बार बाहर जाना पड़ा था। मैंने कमल के लड़के के लिये नुस्खा लिखा, और वह मेरे लिये चाय का प्याला ले कर आये। मैं ने सहर्ष चाय पी। चाय बहुत ही स्वादिष्ट थी। पूछने पर पता चला कि यह लिपटन की हिमालयन ब्लेण्ड चाय थी। उस दिन से मैं अपने घर में यह उत्कृष्ट व कमखर्च चाय व्यवहार करता हूं। इस बढ़िया चाय का पता पाकर मुझे इतना आनन्द हुआ कि मैं अपनी फीस के लिये बिल भेजना भी भूल गया।

Liptons
Flowery Orange
Pekoe
LIPTON'S
HIMALAYAN BLEND
CHOICE
Darjeeling

लिपटन की
हिमालयन ब्लेण्ड
सर्वोत्तम दार्जिलिंग चाय
LTK 128

राजधानी का रंगमंच

भारत-सरकार के दो विभाग

चिकित्सा और स्वास्थ्य पुनर्संगठन समिति की सिफारिशें

(अपने विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

लखनऊ के नागरिकों ने महात्मा गांधी की स्मृति को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए एक अनुपम आयोजन किया है। प्राचीन काल से महापुरुषों तथा अवतारों की प्रतिष्ठा में कवियों ने अमरगान गाये हैं और लखनऊ का आयोजन भी ऐसा ही है। आगामी २७ मार्च को यहां एक अखिल भारतीय कवि-सम्मेलन होगा, जिसमें देश की सभी प्रमुख भाषाओं के प्रतिनिधि कवि महात्मा जी की स्तुति में अपने गान गायेंगे। इस आयोजन को सफल बनाने के लिए एक समिति श्री लालबहादुर शास्त्री की अध्यक्षता में संघटित कर ली गई है, जिसके मन्त्री श्री सरोज तथा कोषाध्यक्ष श्री विजयकुमार मिश्र हैं।

* * *

भारत-सरकार ने दो प्रमुख कार्यालय युक्तप्रान्त में स्थापित करने का निश्चय किया है, इनमें से एक प्रयाग में स्थित होगा और दूसरा लखनऊ में। प्रयाग में भारतीय सैन्य के ईस्टर्न कमांड का हेडक्वार्टर रहेगा, जो अभी तक रांची में था। और प्रयाग-स्थित वर्तमान सब एरिया आफिस फैजाबाद भेज दिया जायगा। लखनऊ में नार्दर्न इंडिया रेलवे का प्रधान कार्यालय होगा। यह रेलवे ईस्ट इंडियन, तथा ओ० टी० रेलवे के उन अंशों को, जो क्रमशः मुगलसराय से तथा छपरा से पश्चिम में हैं, मिलाकर बनेगी और ईस्टर्न पंजाब रेलवे का पूरा भाग भी इसमें शामिल कर दिया जायगा।

* * *

इस सप्ताह लखनऊ में तीन प्रमुख व्यक्तियों का आगमन हुआ। एक थे भारत के गवर्नर जनरल लार्ड माउन्टबेटन और अन्य दो थे हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अध्यक्ष महापंडित राहुल सांकृत्यायन तथा भदन्त आनन्द कौशल्यायन इन दोनों महाविद्वानों ने हिन्दी को राजभाषा और राष्ट्रभाषा बनाने के विरोधी आन्दोलन को मुंहतोड़ उत्तर दिये और अपने अपूर्व तर्कलाघव से सिद्ध कर दिया कि हिन्दी ही राष्ट्रभाषा हो सकती है। राहुल जी ने यह भी प्रकट किया कि संस्कृत को राष्ट्रभाषा बनाने का आन्दोलन उन लोगों ने शुरू किया है, जो हिन्दी की प्रगति संस्कृत के छद्म में रोकना चाहते हैं।

* * *

प्रान्तीय सरकार एक ऐसे बिल का मसविदा बना रही है, जिसके अन्तर्गत मिलावटी खाद्यपदार्थ बेचनेवालों को कठोर दंड की व्यवस्था की जा सकेगी। इस प्रकार का कानून ब्रिटेन में लागू है और उसी के आधार पर प्रान्त में भी ऐसा कानून बनाया जा रहा है। इसके अन्तर्गत वनस्पति घी और तेलों की रँगाई अनिवार्य कर दी जायगी और उनको रँगने के लिए एक क्षतिहीन विषरहित रंग का अनुसन्धान किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त प्रान्त से बाहर के मिलों का, जिन पर प्रान्तीय सरकार का कोई नियंत्रण नहीं है, वनस्पति घी इस प्रान्त में मंगाये जाने पर रोक लगा दी जायगी।

* * *

लखनऊ के चारबाग स्टेशन के यार्ड में एक पूरी लाइन को घेरे हुए एक मालगाड़ी विगत अक्टूबर से खड़ी है। बताया जाता है कि इसमें उन मुस्लिम कर्मचारियों का फर्नीचर तथा अन्य सामान है, जो पाकिस्तान चले गये हैं। इस मालगाड़ी को स्थानीय पुलिस ने इसलिए रुकवा लिया था कि इसमें उसे भारतीय संघ का कुछ सामान चुराकर ले जाये जाने का संदेह था। उसकी तलाशी का भार रेलवे पुलिस पर है, किन्तु इतने दिन में इस गाड़ी के २७ डिब्बों की तलाशी नहीं ली जा सकी है, जिसके कारण संघ की रेलों के २७ डिब्बे वृथा अटके हुए हैं और वे अन्य सामान की ढुलाई में प्रयुक्त नहीं हो पाते।

* * *

चिकित्सा तथा स्वास्थ्य पुनर्गठन समिति की सिफारिश के अनुसार प्रांतीय सरकार ने आगामी अप्रैल से इन दोनों विभागों को एक में मिलाने का निश्चय कर लिया है। अस्पतालों के इंस्पेक्टर जेनरल का पद तोड़ दिया जायगा और स्वास्थ्य तथा चिकित्सा-विभाग का एक डायरेक्टर होगा। स्वास्थ्य-विभाग के वर्तमान डायरेक्टर श्री ए० सी० बनर्जी इस पद पर नियुक्त किये जायंगे।

शरणार्थी लड़कियाँ

विवाह योग्य पढ़ी लिखी शरणार्थी तथा दूसरे अच्छे खानदान की प
व यू० पी० की लड़कियों की लिस्ट व फ़ोटो पाँच रुपया भेजकर मँगवा
शादी का शीघ्र ही प्रबन्ध किया जाता है। व्यर्थ पत्र-व्यवहार न करें।

मदनगोपाल बी० ए० मैनेजर हैप्पी मैरिज, वर्नास्ट्रीट, सदर बाजार, देह

यू० एस० ए० फाउण्टेन पेन और पेंसिल पेन

विभिन्न रंगों और आधुनिक डिजायनों के फाउण्टेन पेन तथा पें
पेन बेचे जा रहे हैं। प्रत्येक फाउण्टेन पेन 'गोल्डेन निब और क्लि
युक्त है। साधारण २॥=), उत्तम ३।), सर्वोत्तम ४)। १४ केरेट
गोल्ड—गोल्ड-प्लेटेड निब-सहित ५)। १४ केरेट रोल्ड गोल्ड गोल्ड नि
सहित ८), सर्वोत्तम ६॥)। प्रत्येक अतिरिक्त निब ।=), उत्तम ॥), सर्वो
१।)। १४ केरेट गोल्ड निब ३।), सर्वोत्तम ४)। पेंसिल पेन साधारण २
उत्तम ३।=), सर्वोत्तम ४।=)। एक दर्जन अतिरिक्त लेड ॥), एक
तीन दर्जन १=)। नोट—प्रत्येक फाउण्टेन पेन के साथ एक निब
तीन लेड प्रत्येक पेंसिल पेन के साथ मुफ्त दिये जाते हैं। तीन पेन या पें
पेन मँगाने पर १२॥% की दर से कमीशन दिया जाता है। डाक-व्यय ।

पत्र-व्यवहार अँगरेजी में ही करें।

Amercian C. Stores (D.I.) Post Box 12213. Calcutta (5)

जब जिसने देखा, मुग्ध हो गया

'मंजरी'

सचित्र कलात्मक कहानी मासिक

वार्षिक मूल्य ६) रु० प्रति अङ्क ॥) आठ आने

तिरङ्गा आवरण, दर्जनों चित्र, कलापूर्ण छपाई

'मंजरी' का दूसरा अङ्क भी प्रकाशित हो चुका। श्रेष्ठ कथाकारों की सरस और सुरुचि-सम्पन्न कहानियाँ पढ़नी हों तो आज ही 'मंजरी' के ग्राहक बनिए।

विद्वानों और आलोचकों की दृष्टि में—

डा० अमरनाथ झा, भूतपूर्व अध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन और वाइस चांसलर, प्रयाग विश्वविद्यालय—'मंजरी' का प्रथम अङ्क मिला। पढ़कर प्रसन्न हुआ। कहानियाँ बहुत अच्छी हैं। इस उच्च कोटि की पत्रिका के प्रकाशन पर बधाई।

डा० धीरेन्द्र वर्मा, अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय—'मंजरी' का यह अङ्क सुन्दर और आकर्षक है। हिन्दी कहानी-पत्रिकाओं का स्तर वास्तव में बहुत गिर गया है। विश्वास है 'मंजरी' इस सम्बन्ध में आदर्श की ओर अग्रसर होगी और दूसरी पत्रिकाओं के लिए पथ-प्रदर्शक सिद्ध होगी।

माननीय पं० श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, सचिव, राजस्व तथा सूचना-विभाग, संयुक्तप्रान्तीय सरकार, लखनऊ—'मंजरी' मिली। मुझे पसन्द आई। मुझे आशा है कि जनता को उचित आदर्शों की ओर प्रेरित करेगी।

माननीय श्री ब्रिजलाल बियाणी, सदस्य, विधान-परिषद्, अकोला (बरार)—सुरुचि-सम्पन्न साहित्य-निर्माण के उद्देश्य को लेकर 'मंजरी' का प्रकाशन हुआ है, अतः मेरा विश्वास है, आपको पूर्ण सफलता मिलेगी।

सेठ गोविन्ददासजी, सदस्य, विधान-परिषद्, जबलपुर—'मंजरी' का जो स्तर अभी से रखा गया है, वह सराहनीय है। यदि यही स्तर सदा रखा गया तो पत्रिका साहित्य एवं देश की बहुत सेवा करेगी, ऐसा विश्वास है।

श्री मोहनसिंह सेंगर, भूतपूर्व सम्पादक 'विशाल-भारत', कलकत्ता—कहानियों का चुनाव, सम्पादन, कथा-साहित्य का परिचय एवं समीक्षा तथा लेखकों के परिचय आदि आपकी सूझ-बूझ के सुन्दर परिचायक हैं। छपाई-सफाई और सजावट के सम्बन्ध में तो कहना ही क्या? मेरा विश्वास है कि निकट-भविष्य में ही 'मंजरी' कहानी-पत्रिकाओं में अपना शीर्ष स्थान बना लेगी।

'आज' [काशी, १६ जनवरी ४८]—आकर्षक रंगीन मुखपृष्ठ के भीतर विविध चुने हुए श्रेष्ठ कथाकारों की रचनाएँ विभिन्न स्केचों एवं चित्रों से अलंकृत हैं। सम्पादन में श्रम तथा यथेष्ट सुरुचि से काम लिया गया है।

'स्वतन्त्र' [झाँसी, १८ जनवरी ४८]—अङ्क में लब्धप्रतिष्ठ कहानीकारों तथा उपन्यासकारों की रचनाओं की कमी नहीं है। महारथियों की कहानियाँ इसमें हैं। लेख भी लब्धप्रतिष्ठ लेखकों के हैं। आकार-प्रकार सुन्दर है और छपाई के लिए तो इंडियन प्रेस का नाम ही प्रमाण है।

सम्पादक
देवीदयाल चतुर्वेदी

प्रकाशक
इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

मारा रंग-मंच

'सिंदूर'

किशोर साहू की एक सामाजिक कृति

लेखक, श्री गोपाल मेंहरोत्रा

भारतीय दर्शकों द्वारा प्रशंसित भारतीय चित्र-जगत् के अभिनेता, लेखक, [illegible] एवं निर्माता 'जीनियस' कलाकार किशोर साहू ने 'राजा', 'कुवांरा-बाप', [illegible] तथा 'वीर कुणाल' को प्रदर्शित [illegible] के पश्चात् 'विधवा-विवाह पुनः [illegible] हों' जैसी सामाजिक तथा सामयिक [illegible] का दिग्दर्शन, फिलिस्तान की [illegible] रचना, "सिन्दूर" में किया है।

श्री किशोर साहू ने प्रगतिशील समस्या [illegible] शकुन अथवा अपशकुन तथा [illegible] की सत्य दरसाने के लिए [illegible] की कहानी को इस भांति [illegible] किया है—लखनऊ के एक कान्य-[illegible] पं० शिवप्रसाद तिवारी [illegible] परिवार में बेनी की स्नेहकर्त्री निराश्रित [illegible], चाची रहती है। चाची की [illegible] की पुत्री निर्धन, विधवा, मीरा [illegible] पुत्र, मुन्ना सहित उस [illegible] के समीप ग्राम, तुलसीघाट में रहती है। मीरा के पत्र आने के फल-स्वरूप [illegible] की आज्ञानुसार बेनी, मीरा [illegible] सहित तुलसीघाट से लखनऊ [illegible] है। मीरा की सेवा व कर्त्तव्यनिष्ठा [illegible] बेनी के हृदय में मीरा के प्रति [illegible]। [illegible] एक दिन मीरा [illegible] लगता है तथा द्वितीय स्थान [illegible] मिथ्यापूर्ण अभियोग में बेनी को [illegible] पड़ता है। बेनी, बनारस [illegible] के एक अस्पताल में एक भागीदार [illegible] कार्य करता है। दुर्भाग्यवश [illegible] मीरा पर पड़ने के कारण [illegible] कोतवाल को डांटें की [illegible] उपस्थित होती है और मीरा [illegible] में अपने रोगी पुत्र [illegible] बैलगाड़ी द्वारा, अपने गांव [illegible] है। बेनी को मीरा का दुखद [illegible], वह लखनऊ आता है। [illegible] मीरा एवं मुन्ना को न निरखकर [illegible] तथा भाई-बंधुओं को [illegible] तुलसीघाट पहुँचकर मुन्ना की [illegible] करता है। उसके जीवन में [illegible] नवयुग के समीप आने [illegible] मांग में रक्तिम रक्त [illegible], सिन्दूर के रूप में [illegible] उठी है और समाज उनको [illegible] देता है।

[illegible] 'सिन्दूर' की कथा समस्या-[illegible] परन्तु प्रतिक्रियावादी [(१) [illegible] दृश्य में मुन्ना का प्रतीक [illegible] दरसाकर उसकी मृत्यु कर [illegible], परन्तु श्वान के क्रंदन [illegible] महत्व को सत्य सिद्ध करने [illegible] के स्थान पर एक पागल [illegible] करा दी जाती है। (२) [illegible] को सौभाग्यवती होने [illegible] तथा पुजारी भविष्यवाणी [illegible] सम्भवतः मीरा का विवाह [illegible] अस्वाभाविक एवं अक्षम्य [illegible] करना और तिवारी जी के [illegible] और व्यभिचार का [illegible] उन्हीं के गृह में पकता है? [illegible] में कलयुगी और सत्ययुगी [illegible] उत्पत्ति? मीरा को बाध्य-[illegible] पढ़ाना तथा उसे सांसारिक-[illegible] को ग्रहण कराने की चेष्टा करना—यद्यपि वह स्पष्ट शब्दों में कह चुकी थी—'बेनी बाबू! जो आप मुझमें खोज रहे हैं, नहीं पाइएगा, क्योंकि वह मैं किसी को दे चुकी हूँ।' मीरा द्वारा इस—'ओ जानेवाले! जाने से पहले अपने दिल की निशानी देता जा'—गीत को गवाना—एक विधवा नारी द्वारा? तुलसीघाट से लखनऊ की यात्रा के समय—'वसन्त ऋतु आई रामा 'जुवना' उभार के'—जैसे निकृष्ट व आपत्तिजनक गीत को स्थान दिया जाना? मीरा से वार्तालाप करते समय बेनी का उसकी 'वह' पकड़ लेना तथा मीरा का उसके वक्षस्थल पर अपना मस्तिष्क रख देना? बेनी तथा उसके भ्राता द्वारा दी गई अपने मित्रों की 'पार्टी' का दृश्य? इत्यादि), वास्तविक तथा सुन्दर (भारत के वर्तमान-काल के 'कालेज' अथवा विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों का अपने प्रकोष्ठों में, एक ओर महावीर जी तथा द्वितीय ओर 'जननीन' अथवा अभिनेत्री का चित्र लटका कर अपने माता-पिता के प्रति विश्वास-घात करना तथा परीक्षा-दिवसों में, अपनी पुस्तकों से पृष्ठों को फाड़कर अपनी 'कला' का परिचय देना), आदि परिस्थितियों से परिपूर्ण है। सर्वश्री किशोर साहू, पं० नीलकंठ तिवारी, कमर जलालाबादी एवं अम्बिकेश कुंतल द्वारा रचे गये गीत अश्लील एव अस्वाभाविकों के अतिरिक्त भावुक भी हैं। उदाहरणार्थ—'ओ रूठे हुए भगवान तुझे कैसे मनाऊँ'। दिग्दर्शक ने स्वयं सुन्दर संवाद लिखे हैं। जैसे मीरा का कहना— "बेटे की वकालत, मां की शहादत और पिता की अदालत में चढ़ा दो मुझ मुजरिम को फांसी पर।" कथोपकथन की भाषा अधिकतर उर्दू है। श्री खेमचन्दजी ने साधारण कोटि का संगीत-निर्देशन किया है। साजों के स्वर पात्रों के स्वरों से भिन्न प्रतीत होते हैं। नृत्य निन्दनीय व कुत्सित संकेतों (जिस भांति वर्तमान-काल में सिनेमा-चित्र-प्रदर्शन गृहों के मंच पर नृत्य होते हैं) से परिपूर्ण हैं। श्री चंदू का चित्रालेखन अस्वाभाविक एवं कलात्मक है। बेनी का मीरा के ऊपर साड़ी फेंकने का दृश्य रुचिकर है। बेनी का 'फटफटिया' चलाना, मेघराज की गर्जना तथा जलवृष्टि के दृश्य अत्यधिक अस्वाभाविक दृष्टिगोचर होते हैं। प्रतीकवाद के भी चित्रण हैं। श्री एम० एम० क़ाका का ध्वनि आलेखन न्यूनाधिक कोटि का है। श्रीराम टिपनिस का 'मेकअप' स्वाभाविक हुआ है। श्री एच० आर० रुप्ले की 'सेटिंग्स' संतोषजनक है। चरित्र-चित्रण तथा 'प्लेबैक' (शमीम का) में असतर्कता का परिचय प्राप्त होता है।

अभिनय के दृष्टिकोण से नायक बेनी की भूमिका के कलाकार किशोर साहू ने स्वाभाविक व सफल कार्य किया है, परन्तु चरित्र-चित्रण सुन्दर न होने के कारण आप एक आदर्शवादी युवक की भूमिका के लिए एक उपयुक्त कलाकार नहीं सिद्ध हुए हैं। संवाद कहने का ढंग प्रशंसनीय है, विशेषकर, अंतिम दृश्य के पूर्व। नायिका मीरा के आवरण में शमीम ने रुचिकर अभिनय का प्रदर्शन किया है। आपके चरित्र-चित्रण में 'दोष' की उत्पति, स्वरों में मधुरता, प्रत्येक वेश-भूषा में उपयुक्त तथा 'बैक-ग्राउन्ड' निन्दनीय है। शमीम के आगामी आकर्षण 'सम्राट् अशोक', 'भंवर', 'शिकारपुरी' आदि हैं। सुन्दर की कल्पना में वीरा ने निरर्थक अभिनय एवं अश्लील नृत्य किये हैं। आपने श्री ईश्वरलाल द्वारा निर्देशित चित्र 'रिवाज' में नायिका की भूमिका में अत्यधिक सफल कार्य किया है। गृहस्वामिनी तथा चाची की काया में गुलाब व प्रतिभादेवी ने संतोषजनकता का परिचय दिया है। [illegible] स्वाभाविक कार्य किया है। शेष अभिनय-कारों का अभिनय उल्लेखनीय नहीं है।

'सिंदूर' फिल्म के निर्माता और दिग्दर्शक प्रसिद्ध सिने अभिनेता श्री किशोर साहू।

मेरठ की 'महान् लेखिका' श्रीमती होमवती देवी का यह, मेरठ के न्यायालय में, कहना है कि "सिन्दूर" की कहानी उनकी एक 'मौलिक' कहानी "गोटे की टोपी" का फिल्मी रूपान्तर है। "गोटे की टोपी" का पूर्ण आशय इस भांति है—बड़ी बहू ने पत्र प्राप्त कर निराशपूर्ण शब्दों में उत्तर दिया, परन्तु नयनों का दीवाना स्वआज्ञानुसार माणिकगंज चल दिया। प्रथम दृश्य में तो सौतेली मां भाभी के दुख की भागीदार बनने के हेतु मंजरी को बुलाने का प्रसंग छेड़ा था, पर मंजरी को नवल तथा मंजरी के पुत्र मुन्ना के साथ आया देख अत्यधिक रुखाई से व्यवहार किया। वह विधवा मंजरी ऐसी प्रतीत होती है—मानो नवल से पूर्व परिचित थी। नित्य के कष्टों से दुखी हो वह गांव जाने को प्रस्तुत हो गई। नवल उसके विरह को न सह सका और बहाने से (रामलीला के दर्शनार्थ) उसे घर लिवा लाया। गृह में बालक गोटे की टोपी लगाये थे। मुन्ना टोपी छीनने की चेष्टा करने लगा। लोगों ने अपशब्द कहे और मीरा पुनः गांव लौट गई। नवल भी क्रोधित हो, बाजार से गोटे की टोपियां विक्रय कर, शरदपूर्णिमा को गांव गया और एक चम्मच चावल मीरा के मुख में ठूंस-ठांस कर विवाह कर लिया।....... और दूर पर कहीं कोयल कूक उठी—। वर्णन एवं मिलन की परिस्थितियां पूर्ण न होने के कारण कहानी पूर्णतया अस्वाभाविक, तथा जटिल प्रतीत होती है।

'गोटे की टोपी' की कहानी को दृष्टिगत रखते हुए यह प्रश्न कदापि नहीं उठता कि भव्य कलाकार श्री किशोर साहू ने कहानी चुराई है या नहीं?—इसका हमसे कोई सम्बन्ध नहीं। पाठकगण 'निसर्ग' नामक कहानी-संग्रह से 'गोटे की टोपी' नामक कहानी पढ़कर स्वयं निर्णय कर सकते हैं, पर इतना अवश्य स्वीकार करना पड़ेगा कि किशोर साहू ने 'गोटे की टोपी' को पढ़ा अवश्य था, जिसके फलस्वरूप अत्यधिक प्रयत्न करने पर भी कलाकार उसे छिपा न सका—क्योंकि 'बस' में मुन्ना के मस्तक पर 'टोपी' तथा मुन्ना, मंजरी, नवल, भाभी, गृह-स्वामिनी तथा मेले के स्थान पर रामलीला का दृश्य 'चोर की दाढ़ी में तिनका' ही प्रतीत होता है। 'सिन्दूर' के अन्य स्थलों को लक्ष्य कर पाठक यह भी कह सकते हैं—"इस कहानी के उद्गम का श्रेय किसी अन्य व्यक्ति पर है।" अतः हम यह भी नहीं कह सकते हैं कि श्रीमती होमवती देवी का वह आरोप निरर्थक तथा 'सिन्दूर' श्री किशोर साहू की एक मौलिक कृति है। इसके अतिरिक्त श्री साहू ने कब [illegible] मौलिक रचना है। फिलिमस्तान कृत "सिन्दूर" की परिचय पुस्तिका में शब्द अंकित—Screenplay (दृश्यदृश्यावलियां-लेखन) Kishore Sahu (किशोर साहू)—स्पष्ट प्रकट करता है कि "सिन्दूर" श्री साहू द्वारा एक 'फिल्मी रूपान्तर' है। अंत में मैं, इस सम्बन्ध में, इतना अवश्य कहूँगा कि यद्यपि दोनों की कहानियों का मूल-तत्त्व एक हैं फिर भी 'गोटे की टोपी' की लेखिका का अभियोग मिथ्या है। हो सकता है कलाकार और लेखिका ने कहानी किसी अन्य स्थान से चुराई हो। उस चुराने की कला में श्री किशोर साहू को पूर्णतया सफलता प्राप्त हुई है और श्रीमती होमवती देवी को पूर्णतया असफलता।

यद्यपि "सिन्दूर" में श्री साहू ने भारत की एक अत्यन्त जटिल तथा आवश्यक समस्या को अत्यन्त कुशलतापूर्वक, अपना दृष्टिकोण, स्वतंत्र-भारत की उन्नतिशील जनता के सम्मुख, प्रदर्शित किया है, परन्तु एक वार वैदिक रीत्यानुसार विवाह हो जाने तथा ईश्वर की दया से यदि पति-स्मृति के रूप में एक सन्तान (पुत्र हो या पुत्री) प्राप्त हो जाय तो—उसका पुनर्विवाह रुचिकर व कल्याणकर नहीं होता। मुझे पूर्ण विश्वास है कि सन्तान-प्राप्त युवती—सम्भवतः ही कोई चरित्र-भ्रष्ट होने की चेष्टा करे (यों तो पतिव्रता स्त्रियां भी स्वयं को कुप्रवृत्ति में फंसा देती हैं। यदि उस अवस्था में अपने आचरण तथा चरित्र को पवित्र रखना कितना कठिन है, "परन्तु अत्यन्त अनुपात, कष्ट तथा विषम-परिस्थितियों में अपने चरित्र की रक्षा करना ही मानव स्वभाव की विशेषता है। त्याग में ही जीवन का वास्तविक आनन्द है। क्या मीरा मुन्ना की देख-रेख उसी भांति भविष्य में भी कर सकती थी, जैसी कि उसने उसके उज्ज्वलमय भविष्य की चिन्ता में की थी। यदि मीरा को सन्तान के जाज्वल्य-मान भावी के निर्माण में उसी अवस्था में सहायता तथा प्रोत्साहन दिया जाता तो सम्भवतः वह पुनर्विवाह का नाम भी न लेती अथवा मीरा को सुखी बनाने लिए बेनी अपने जीवन की आहुति दे देता तो दर्शकों के सम्मुख एक महान् आदर्श सदेह उत्पन्न हो जाता और किशोर साहू तथा 'सिन्दूर' को लोकप्रियता में और चार चांद लग जाते। फलतः "सिन्दूर" इस वर्ष का सर्वोत्तम चित्रपट तथा यह शुभ घटना-फिलिमस्तान के इतिहास का स्वर्णिम प्रथम पृष्ठ घोषित किया जाता। श्रीयुत शौकत हुसेन द्वारा दिग्दर्शित 'जीनत' को स्मरण करें। एक विधवा किस भांति सांसारिक लांछन, तिरस्कार तथा अपार दुख सहती हुई, अपने चरित्र की रक्षा करती हुई, सन्तान के भविष्य को उज्ज्वलमय निर्मित करती हुई प्राणोत्सर्ग करती है? वास्तव में प्रभात की नवीनतम रचना 'आगे बढ़ो' इस विधवा-समस्या को सरल बनाने में पूर्णतया सफल हुई है, जिसका मैं हृदय से स्वागत करता हूँ।

'टेकनीक' की दृष्टि से "सिन्दूर" साधारण कोटि का है। स्वप्न-कल्पना का दृश्य अत्यधिक प्रशंसनीय है। अभिनय-कला की दृष्टि से श्री किशोर साहू का दिग्दर्शन द्वितीय श्रेणी का है। ऐसे सुन्दर एवं आवश्यक विषय पर श्री साहू का निर्देशन सराहनीय है। यद्यपि "सिन्दूर" वास्तविक अर्थों में विधवा-विवाह का उचित समाधान नहीं है, परन्तु एक बार अवश्य देखने योग्य कृति है।

साहित्य-चर्चा

व्यवसाय का आदर्श*

लेखक, श्री अखिल विनय

जीवन में आदर्शों की उपयोगिता से कोई भी अपरिचित नहीं। बिना आदर्श और जीवन में किसी लक्ष्यविशेष के निर्धारण किये बिना किसी व्यक्ति का जीवन वैसे ही है जैसे कि कोई यात्री अपना गन्तव्य स्थान निश्चित किये बिना और निर्दिष्ट पथ की पर्वाह न कर घर से निकल तो पड़ता है पर विश्व-वैचित्र्य में चकाचौंध होकर पथ-भ्रष्ट हो जाता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है, वह अकेला रह ही नहीं सकता। अकेला मनुष्य अपनी आवश्यकताएँ पूरी कर ही नहीं पाता। कोई आदमी अपने जीवन-निर्वाह की सभी चीजें अपने आप बना सके यह मुश्किल ही नहीं, असंभव ही समझिए। समाज में तरह-तरह के व्यवसाय हैं। जो आदमी कोई व्यवसाय करके समाज की आवश्यकताएं पूरी करने में सहायक नहीं होता उसे दूसरों से अपनी जरूरत की चीजें, नहीं मिल सकतीं।

साहित्य-मनीषी श्रीयुत भगवानदास केला की नागरिक व अर्थशास्त्र पर कई महत्त्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। हाल ही में दो पुस्तकें और निकली हैं 'देशी राज्यों की जन-जागृति' तथा दूसरी 'हमारे व्यवसाय का आदर्श क्या हो' विषय पर प्रकाश डालती है। क्रियात्मक सुझावों की तो भरमार होती है उनके ग्रंथों में। स्वतंत्र देश के एक-एक व्यक्ति को सुनागरिक बनाने की आवश्यकता है। भारतवर्ष आज परतंत्र नहीं; सदियों की दासता से वह विमुक्त हो चुका है। देश के प्रत्येक नागरिक को शब्द के यथार्थ अर्थों में बनना है। स्वतंत्र देश के व्यक्ति के कर्तव्य और आदर्शों पर श्री केला जी ने बहुत प्रकाश डाला है। मानव-जीवन में कोई आदर्श तो होना ही चाहिए। उनका कहना है—हम 'जीओ और जीने दो' की नीति रखें, व्यवसाय द्वारा अपना भरण-पोषण करें, पर किसी को कष्ट या हानि न होने दें। हम धन कमाने के काम करें, पर याद रखें कि अधर्म या अनीति से कमाया हुआ धन स्थायी सुख और शान्ति देनेवाला नहीं होता; उससे हमारे विकास में बाधा होती है। हमारी शक्ति और योग्यता समाज द्वारा प्राप्त हुई है, वह यथा-सम्भव और अधिक-से-अधिक लोक-हित में लगनी चाहिए। हम चाहे जो व्यवसाय करें, उसमें हमारा आदर्श यही हो।

व्यवसाय का चुनाव करते हुए यह आवश्यक है कि पहले पूर्णतः हृदयंगम कर लिया जाय—व्यवसाय सेवा का साधन है; 'कार्य ही पूजा है'। व्यवसाय का चुनाव करते हुए सामाजिक प्रतिष्ठा के विचार को महत्त्व नहीं दिया जाना चाहिए। 'आवश्यकता है, कि नागरिक सब प्रकार के उपयोगी श्रम का आदर करें और व्यवसायों में ऊँच-नीच का भेद-भाव न करें! वास्तव में अच्छे, ईमानदार, योग्य आदमी हर काम की प्रतिष्ठा बढ़ानेवाले होते हैं। व्यवसाय तो सभी अच्छे हैं, बशर्तें कि वे अच्छी तरह और अच्छे सिद्धान्तों के अनुसार किये जायँ। नागरिकों पर इस बात की जिम्मेवारी है कि वे अपने काम को सच्चाई, नेकनीयती, सेवा और परोपकार भाव से करते हुए उसका गौरव बढ़ायें।'

हम अपने लिये कोई भी व्यवसाय क्यों न चुनें, व्यवसाय में श्रद्धा और भक्ति का होना नितान्त आवश्यकीय है। अपने व्यवसाय को भार या बेगार न समझकर उसे अपने जीवन का उद्देश्य या 'मिशन' बना लिया जाय तो जीवन कितना सुखमय हो सकता है। आज देश-विदेश के महापुरुषों के सुकर्म और पद-चिह्न आह्वान करते हैं कि जीवन में हमारा अपना भी कोई लक्ष्य हो, उसकी पूर्त्ति के लिये अपने सामने कोई निश्चित आदर्श भी। हम पूर्वी और पश्चिमी, देशी-विदेशी, पुराने और नए सभी महापुरुषों के जीवनादर्श को अपने सामने रखकर तदनुकूल कार्य कर सकते हैं। आज देश की महान् विभूतियां कृष्ण, गौतम बुद्ध, महात्मा गांधी, नेहरू, आजाद और दादाभाई नौरोजी आदि हमारा पथ-प्रदर्शन कर रही हैं, वहां विदेश के ईसामसीह, लेनिन, मेजिनी, मार्क्स, रस्किन, टालस्टाय, क्रोपाटकिन और फ्लोरेंस नाइटिंगेल आदि हमें उचित पथ-निदर्शन कर रहे हैं। हम अपनी रुचि और ध्येय के अनुकूल किसी को भी अपना आदर्श बना सकते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रथम पांच अध्यायों में कारीगर, कल-कारखानेवाले (मिल-मालिकों), व्यापारी, दुकानदार और चिकित्सक के आदर्श पर विचार किया गया है। प्रत्येक व्यक्ति को पहले अपने कर्त्तव्य की ओर ध्यान देने की जरूरत है। आज आवश्यकता है कि सभी कार्यों में ईमानदारी का व्यवहार बर्ता जाय। प्रत्येक कार्य-कलाप में उन्नति करने के लिए यही आवश्यक है और साथ-ही-साथ कार्य-पद्धति की निरन्तर जांच की जानी चाहिए। जीवन में आत्म-निरीक्षण का बहुत महत्त्व है। आज मिल-मालिक है, कल-कारखानेदार महात्मा गांधी जी वाले ट्रस्टीपन के सिद्धान्त को अपनावें। श्री केला जी ने उनके लिये लिखा है—"अफसोस! हमारे कल-कारखानेवाले 'मुनाफे के लिये विदेशी पूंजीपतियों से सहयोग' के विषय पर शान्ति और गम्भीरता से विचार नहीं करते। आज दिन कितने ही बड़े-बड़े पूंजीपति इस बात के लिए लालायित हैं कि अमरीका आदि के पूंजीपति जो कारखाने यहां खोलें, उनमें थोड़ा-बहुत साझा हमारा रख लिया जाय, जिससे मुनाफे का कुछ हिस्सा हमें भी मिल सके। उन स्वार्थी पूंजीपतियों का भारतवर्ष में कारखाना खोलना और भारतीयों को 'स्वदेशी' या 'भारत में बना' माल देकर शोषण करना स्वाभाविक है; लेकिन इस पाप-कार्य में भारतीय पूंजीपतियों का साझीदार बनना हमारा घोर पतन सूचित करता है।"

इनके अलावा लेखक, अध्यापक, किसान, मजदूर, घरू नौकर, सार्वजनिक कर्मचारी, वकील, प्रकाशक, धर्मोपदेशक, वैज्ञानिक और आविष्कारक, कवि और चित्रकार आदि सभी पेशेवालों के आदर्श पर इस छोटी सी पुस्तक में विचार किया गया है। श्री केला जी की लेखनी में वह ओज और शक्ति है कि भावों का सजीव चित्र-सा खिंच जाता है; वर्ण्य विषय औचित्य-अनुचितता मूर्त-रूप हो आंखों के सामने नाच उठती है। गागर में सागर भर देना उनकी लेखनी का चमत्कार है। उनके शब्द नपे-तुले होते हैं पर उनके पीछे गंभीर अध्ययन और अनुभव की प्रतिछाया स्पष्ट ही दिखाई पड़ती है। विषद विषयों का संक्षेप में निरूपण वे कर देते हैं। लेखक का आदर्श बतलाते हुए उनकी स्पष्टोक्ति इस भांति है—'जनता के [illegible] सुधार-युग के आह्वान में, नई सृष्टि की रचना में तुम्हारा यथेष्ट भाग होना चाहिए, तुम्हारी लेखनी पाठकों के मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान में सहायक हो। तुम युग-निर्माता हो, अपने उत्तरदायित्व का ध्यान रखो।'

अपने ग्रंथों में स्थान-स्थान पर आदर्श-वाक्य उद्धृत करना आज भी अपनी विशेषता लिये हुए है। इस पुस्तक में भी कई साहित्यिकों के आदर्श-वाक्य उद्धृत किये गये हैं। साथ ही साथ स्वयं उन्होंने भी कई स्थानों पर आदर्श-वाक्यों की सृष्टि की है यथा—'आय बढ़ाना अनुचित नहीं, पर लोक-सेवा का ध्यान रहे', 'कारखानेवाला अपने आपको मजदूरों का संरक्षक समझे', 'प्रत्येक प्रकार का श्रम आदरणीय है,' 'काम करने की जगह साफ-सुथरी हो,' 'बाधाओं से मत घबराओ; ये ईश्वर की देन हैं', 'हरेक आदमी को स्वावलम्बी होना चाहिए' आदि। स्थान-स्थान पर वाक्य तथा पूरे का पूरा पैराग्राफ ही इतना हृदयग्राही बन पड़ता है कि उपन्यासकार प्रेमचन्द जी के वाक्यों की ही भांति नोट कर लेने व कंठाग्र कर लेने को जी चाहता है। ऐसी उपयोगी पुस्तक का मूल्य केवल एक रुपया हो; यह प्रकाशकों के लिये क्रियात्मक आदर्श है।

---

*श्री भगवानदास केला लिखित "व्यवसाय का आदर्श" पुस्तक। प्रकाशक—भारतीय ग्रन्थमाला, दारागंज, प्रयाग। प्रथम संस्करण—१९४८ ई०, मूल्य १) पृष्ठ-संख्या ९२।

(पेज ८ का शेष)

जान की ही बाजी लगा दी थी यहां तक कि वह अपने को भंगी कहते थे और भंगी-बस्ती में ठहरने भी लग थे। उन्होंने इस वर्ग के साथ जो अगणित उपकार किये और उस अंधकार में से बाहर निकालकर प्रकाश में ला खड़ा किया उसके लिए वह सदैव आभारी रहेंगे। हरिजन-आन्दोलन तो गांधी जी के जीवन का एक अविभाज्य अंग ही बन गया था। हरिजन अपने इस उद्धारक का अभाव सदैव ही अनुभव करेंगे।

कांग्रेस के तो वे जनक ही थे। एक प्रार्थना-पत्र देनेवाली मध्य-वर्ग की सभा स्वतंत्रता के लिए निरन्तर युद्ध करनेवाले एक क्रान्तिकारी सार्वजनिक आन्दोलन में परिणत कर देने का श्रेय उनको ही है। जब से कांग्रेस का संचालन-सूत्र उनके शक्तिशाली करों में आया तब से अब तक कांग्रेस अपने दुर्गम पथ के दुःसह कंटकों को सहर्ष सहती व पार करती हुई सदैव आशातीत सफलता प्राप्त करती रही है। अन्त में स्वतन्त्रता देवी का द्वार उन्होंने खुलवा ही लिया। उनकी अकाट्य अद्भुत व अद्वितीय सम्मतियों से जो महान् से महान् अवसरों पर अचूक रहीं, कांग्रेस अब सदैव को वंचित रह गई। परन्तु मेरी अल्प बुद्धि से कांग्रेस की सबसे अधिक क्षति जिस बात में निहित है वह यह है कि उनका प्रभाव ही संस्था के विभिन्न दलों को एक सूत्र में बांधे रहता था, उनके पथ उनके पथ-प्रदर्शन में मतभेद बढ़ नहीं पाते थे उनके सर्वमान्य व्यक्तित्व की उ करने की शक्ति किसी में नहीं थी। उ अनुपस्थिति में यदि कांग्रेस छिन्न-भि हो गई तो देश का कितना अनिष्ट होग हमें आशा है कि हमारे नेता अपने म भेदों को भूलकर उस पथ के ही अनु बनेंगे, जिस पर चलने की गांधी जी ने आजीवन शिक्षा दी है।

गांधी जी का जीवन मानव के उत्थान के लिए ही अर्पित था। सफलताएँ व कार्य इतने महान् थे व उनका कार्य-क्षेत्र इतना विस्तृ यदि उनके असामयिक निधन से पहुँची है उसकी सूची बनाने लगें अनन्त कथा बन जायेगी। यदि में मानवता का कोई हितैषी मित्र था तो वह गांधी जी ही थे। सत्यनिष्ठा व अपने ध्येय की सतत् व निरन्तर प्रयत्न करते रहे अद्वितीय लगन के सम्बन्ध में कोई ओर उंगली भी नहीं उठा सकता। वे अपनी पूर्ण आयु (१२५ वर्ष) कर पाते तो बहुत कुछ सम्भव वह भूमंडल पर शान्ति स्थापित क सफल हो पाते। उनका नश्वर शरीर हो गया, परन्तु आत्मा अजर-अमर वह उनके द्वारा प्रतिपादित हमारे अहिंसा व सत्य के महान् सिद्धान्त जीवित रहेंगे। उस स्वर्गीय आत्मा के श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए हम सब भारतवासी प्रतिज्ञाबद्ध हो कि हम उनके उद्देश्य की पूर्ति के लि निरन्तर प्रयत्नशील रहेंगे। हम सबमें इच्छा-शक्ति, दृढ़ता, बल तथा लगन हो भगवान् से यही हमारी का प्रार्थना है।

वैज्ञानिक शब्दों का भारतीय

(पेज ५ का शेष)

अव्युत्पन्न होते हैं। हमने इन्हें बार दोहराकर ही याद किया है। बच्चे भी शायद ऐसा ही करेंगे। जिस विचार अभिप्राय को ये शब्द अभिव्यक्त करते हैं वे जीवि सक्रिय हैं, इसलिए उन्हें हमारी भा समुचित प्रकार से अभिव्यक्त किया ताकि शब्द हमें भुलाने के बजाय अभिप्राय को सीधे हम तक पहुंचने शब्दों का हमारे लिए कुछ न कुछ होना चाहिए। वे मुंह को कष्ट देने अर्थहीन शब्द न हों, ध्वनि और भा से बने हुए शब्द ऐसे शब्दों के स्थान ग्रहण नहीं कर सकते जो कि हमें परिभाषा के साथ उस ओर ले जहां कि अभिधेय वस्तु पड़ी हो।

निश्चय पुत्र ही होगा

जिन सज्जनों के घर ज्यादातर पुत्री ही पुत्री पैदा होती हो और को गोद में खिलाना चाहते हैं तो गर्भ धारण होने पर आप अपनी पत्नी को हमारे ४६ वर्ष से प्रसिद्ध

समरे हयात

दवा का सेवन करावें। नौ मास बाद पुत्र का होना ऐसा जरूरी सायंकाल के बाद प्रातःकाल का! हजारों प्रशंसा-पत्र मौजूद हैं...... केवल १०) डाक-व्यय ।।।)

पता:—हकीम राजनरायन (२२) होज काजी देह

अस्थि-कलश को पुष्पदान

लेखिका, श्रीमती चन्द्रप्रभा द्विवेदी

रे दीन दासता की वियुक्ति, हे सुघर सलोने की वियुक्ति।
उस रक्त बहाती माता के अंतर पर शूलों की नियुक्ति।
वह तड़प तड़प कर खोज रही, उस सुत को जिसको मिली मुक्ति
उड़ चला कहां वह, राजहंस? रखती थी जगती बनी सुक्ति।
है विकल विश्व विलपित भारत, जब महारथी की उठी रथी।
ले आया था जो शान्ति ऐक्य की, सुरसरि श्रम ले भगीरथी।
अभिशप्त, तप्त हत भाग्य बना, वह राष्ट्र स्वतः ही त्रस्त व्यथी।
ले डाला जिसने लहू लोल, रसना लपकाकर, परम पथी।
चेतनाहीन कर चला अचल, ले शोभा, 'गौरव 'तिलक' मान।
नत मस्तक उन्नत जीत जननि, दे रही तुम्हें है दूध दान।
तुम फिर न फिरोगे मुक्त पथिक! है अस्थि-कलश करता प्रयाण
ओ दधीचि के महामान, करती हूँ स्वागत भूल ज्ञान।
लो तिल तिल जलती जननि जान, 'स्वीकार करो जल पुष्पदान !

आप वृन्दावन के प्रसिद्ध गोस्वामी गोपीलाल एडवोकेट की बड़ी पुत्री हैं और संगीत में काफी प्रवीण हैं।

वृन्दावन की प्रसिद्ध फर्म गोपालदास मोहनलाल के मालिक और अग्रवाल समाज के सिरमौर सेठ मोहनलाल भगत का ९८ साल की अवस्था में स्वर्गवास हो गया। आप वृन्दावन के भगत शिरोमणि बोले जाते थे।

वृन्दावन प्रेम महाविद्यालय से एक पत्र रुड़की बिजली इंजीनियर को मई सन् ४४ में बिजली के कनेक्शन को लिखा गया था। उसका जवाब अब चार साल बाद विद्यालय को २९ जनवरी ४८ को मिला है। सरकारी दफ़्तरों और पुर्जों को धन्यवाद !

—संवाददाता

* * *

वृन्द्रावन म्युनिसिपल बोर्ड के चेयरमैन प्रो० कृष्णचन्द्र जी एम० एल० ए० और स्थानीय प्रसिद्ध कांग्रेस कार्य-कर्त्ता गोस्वामी अद्वैतकुमार जी दिल्ली से पूज्य बापू की पवित्र भस्म का घड़ा लेकर यहां आये। यह पात्र वृन्दावन के लिए राष्ट्रपति ने विशेष रूप से दिया था। ३ दिन तक वृन्दावन की हजारों जनता ने उस पवित्र अवशेष के दर्शन किये और १२ ता० को बड़े समारोह के साथ सारे शहर में बापू के फूलों का जुलूस निकाला गया। हजारों जनता ने जमुना में जाकर उनको प्रवाहित कर दिया।

वृन्दावन के प्रसिद्ध राधारमण मंदिर की पंचायत कमेटी ने पूज्य बापू के निधन पर शोक-प्रस्ताव पास किया है। राधारमण मंदिर के सामने रास चबूतरा पर बापू के निमित्त एक ज्ञानयज्ञ किया गया, जिसमें अनेक विद्वानों ने कई शास्त्रों के पाठ किये।

वृन्दावन बोर्ड बापू के नाम पर एक गांधी पार्क बना रहा है। उसमें १० हजार रुपये से बापू की एक प्रतिमा लगाई जायगी। बोर्ड ने एक सड़क का नाम भी गांधी रोड रख दिया है।

वृन्दावन मंडल कांग्रेस के सदस्य दाऊदयाल जी पंडा को स्थानीय पुलिस ने सीमेन्ट की चोरबाजारी में पकड़ा है। पुलिस ने उनके मकान की तलाशी ली और १११ बोरा सीमेन्ट बरामद किया। अभियुक्त १ हजार की जमानत पर रिहा है। वसंतपंचमी को रंग जी के बगीचा में प्रसिद्ध कवि श्री बिन्दू जी गोस्वामी के सभापतित्व में एक कवि-सम्मेलन हुआ जिसमें कि बापू की स्मृति में ही कविता पढ़ी गई।

वृन्दावन के इतिहास में प्रथम बार यहां के तीन प्रसिद्ध मंदिर हरिजनों के वास्ते खोल दिये गये। गोस्वामी आनन्द गोपालजी ने अपना राधारमण जी का मंदिर, वैद्य शिवदत्त जी ने अपने दो मंदिर राधा माधव जी का और अटल बिहारी जी का हरिजनों को खोल दिया। प्रथम दो मंदिर राधावल्लभीय संप्रदाय के हैं, तथा तीसरा मंदिर निम्बार्क संप्रदाय का। इस साहस पर मंदिर के संचालकों को बधाई के संदेश मिल रहे हैं।

वृन्दावन के प्रसिद्ध कांग्रेस कार्यकर्त्ता गोस्वामी अद्वैतकुमार जी पत्रकार गांधी-गौरवनाम का एक साप्ताहिक पत्र निकाल रहे हैं। पत्र की इजाजत के लिए जिला मजिस्ट्रेट के यहां दरख्वास्त दे दी गई है। पत्र का उद्देश्य गांधी जी के विचारों का प्रचार करना होगा।

—संवाददाता

* * *

कलकत्ता से मंत्री वंगीय हिन्दी परिषद् १५ बंकिम चटर्जी स्ट्रीट (अलबर्ट हाल) लिखते हैं।—

आज राष्ट्र के सामने अपनी भाषाविषयक नीति निर्धारित करने का प्रश्न उपस्थित है। किन्तु यह प्रश्न नया नहीं। राष्ट्र-चेतना के साथ ही प्रत्येक नेता के सामने यह प्रश्न इसी रूप में उपस्थित हो चुका था। प्रत्येक विचारशील व्यक्ति न्यूनाधिक अन्तर के साथ एक ही निर्णय पर पहुँचा था।

पिछले लगभग ७५ वर्षों में इस समस्या को लेकर जो भी विचार व्यक्त किये गये हैं, 'हिन्दी ही क्यों?' नामक पुस्तक में संग्रहीत कर दिये गये हैं। पक्ष और विपक्ष की सारी दलीलें एक ही स्थान पर इस पुस्तक के द्वारा सामने रख दी गई हैं ताकि इस समस्या के हल करने में जन-साधारण को, देश के नेताओं को तथा शासकों को सुविधा प्राप्त हो।

राष्ट्रीय सेवा के अतिरिक्त साहित्यिक महत्त्व भी इस पुस्तक का कम नहीं है, क्योंकि इसमें राष्ट्र की मानसिक चेतना के इतिहास की सामग्री प्रचुर मात्रा में मिलेगी। आशा है, न केवल हिन्दी भाषा-भाषी ही या हिन्दी के विद्वान् ही, वरन् अन्य प्रान्तों के राष्ट्र-सेवी एक ही भावना से वंगीय हिन्दी-परिषद् के इस सामयिक प्रयास का स्वागत करेंगे। ग्रंथ की संपादिका सुश्री कमला गर्ग एम० ए० हैं।

३०० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य ५) है जो कि लागत-मात्र है। पुस्तक का प्रकाशन व्यवसायिक दृष्टि से नहीं हुआ है और इसीलिये इसके प्रचार के लिए सभी का सहयोग प्रार्थनीय है।

—संवाददाता

* * *

सुलतानपुर अमेठी में पूज्य महात्मा जी के अस्थिप्रवाह के विषय में एक महती शोक-सभा श्रीमान् युवराज रणञ्जयसिंह जी एक्स एम० एल० ए० (केन्द्रीय) के सभापतित्व में हुई। सभा में सहस्रों नर-नारी एकत्र हुए।

श्री जयबहादुरसिंह नायब तहसीलदार, श्री सुरेशचन्द्र मिश्र, श्री सईद खां (मुस्लिम लीग), श्री स्वामीदयाल श्रीवास्तव, श्री शिवहर्ष तथा श्री गंगाप्रसाद श्रीवास्तव ने क्रमशः महात्मा जी के प्रति श्रद्धांजलि भेंट की।

अन्त में सभापति महोदय ने इस बात पर दुख प्रकट करते हुए कहा कि स्वास्थ्य ठीक न होने से श्रद्धांजलि समर्पित करने के लिए प्रयाग नहीं जा सके विश्ववन्द्य महात्मा जी के अहिंसा, सत्य और एकता के उच्च उद्देश्यों का वर्णन करते हुए कहा कि हमें केवल मौखिक ही नहीं प्रत्युत कर्मणा उन्हें पूर्ण करना चाहिए।

—संवाददाता

* * *

मोरेना (ग्वालियर) मण्डी में १२ फरवरी को पूज्य बापू को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए शहर में पूर्ण हड़ताल रक्खी गई। स्टेट कांग्रेस की ओर से प्रभातफेरी निकली। शाम को श्री हरीदास सुर्जन की अध्यक्षता में शोकसभा हुई जिसमें सर्वप्रथम बापू जी का प्रिय गीत गाया गया। इसके बाद बाबू गुलाबचन्द वर्मा, जगन्नाथप्रसाद भटनागर व डाक्टर भटनागर व गिरजाशंकर जी ने अपनी बनाई कविताओं द्वारा बापू जी को श्रद्धांजलियां अर्पित कीं। उसके बाद श्री सुमतिचंद शास्त्री, पं० नारायणलाल शर्मा, श्री प्यारेलाल जमादार, बाबू गोवर्धनदास गर्ग, बाबू दाताराम गुप्ता, श्री हरीदास राठी, पं० प्रयागनारायण शास्त्री, श्री जयकुमार जैन आदि ने पूज्य बापू के गुणों का दिग्दर्शन कराते हुए श्रद्धांजलियां अर्पित कीं।

—संवाददाता

* * *

चक्रधरपुर से श्री त्रिभुवननाथ लिखते हैं—

राष्ट्रपिता 'बापू' की स्मृति में "श्रद्धांजलि" शीर्षक एक ग्रंथ प्रकाशित हो रहा है। इसमें केवल 'बापू' के प्रति कविताएँ रहेंगी। कवियों से प्रार्थना है कि वे शीघ्र अपनी अपनी रचनाएँ श्री त्रिभुवननाथ चक्रधरपुर (सिंहभूमि) बी० एन० आर० के यहां भेजने की कृपा करें।

—संवादढाता

* * *

आगरा से अन्तर्राष्ट्रीय जगत् का स्वतंत्र, निर्भीक एवं निष्पक्ष पत्र 'वन्दे मातरम्' आगरा से पुनः प्रकाशित होने जा रहा है। पाठकों को विदित होना चाहिए कि सन् १९४२ के आन्दोलन में ब्रिटिश गवर्नमेंट ने इस पत्र को जब्त कर लिया था।

—व्यवस्थापक

श्वेतकुष्ठ की फकीरी बूटी

महात्माप्रदत्त इस बूटी से केवल ७ रोज में आधा और १५ रोज में पूर्ण आरोग्य होने की गारंटी, अगर आप नकली और कम कीमती दवा इस्तेमाल करके निराश हो गये हैं तो एक बार इस बूटी को भी इस्तेमाल कर इसके चमत्कारी गुणों से लाभ उठावें। बेफायदा साबित करने पर ५००) रु० इनाम अगर चाहें तो डेढ़ आने का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें।

पता—श्री शिवशक्ति आश्रम मुहल्ला—सालिमपुर अहरा पो०—कदमकुआं, पटना

स्वास्थ्य और व्यायाम

प्लेग—औपसर्गिक सन्निपात

लेखक, श्री मूलशंकर तिवारी आयुर्वेदिक

आयुर्वेदीय विज्ञान के अनुसार देश में अधर्म की वृद्धि एवं धर्म की हानि के कारण पंचतत्त्व दूषित हो एक प्रकार के कीटाणुओं को जन्म देते हैं। ये सूक्ष्म कीट प्रथम चूहों के शरीर में प्रविष्ट हो उन्हें मृत्यु का शिकार बनाते हैं। चूहों के मरते ही इन कीटों की शक्ति एवं संख्या कई गुनी अधिक बढ़ जाती है और वे मनुष्यों पर भी आक्रमण प्रारम्भ कर देते हैं।

इस व्याधि में यदा-कदा रोगी का प्राणान्त कुछ घंटों में ही हो जाता है किन्तु अधिकांश रोगी निम्न तीन अवस्थाओं में पहुँचकर या तो प्राणान्त कर देते हैं अथवा उनकी दशा सुधरने लग जाती है। इन तीनों अवस्थाओं को भली भांति देखा जा सकता है।

प्रारम्भ अवस्था—प्रथम अवस्था में रोगी के शरीर में (प्लेग) का विष प्रविष्ट हो चुकता है। इस अवस्था में यदि विष अधिक हुआ तो रोगी चार ही घंटों में प्राणांत कर देता है। अन्यथा दो से सात दिनों तक इसका असर धीरे धीरे बढ़ता जाता है।

द्वितीय अवस्था—इस अवस्था में ज्वर आने लग जाता है जिससे भोजन में अरुचि, शरीर में शिथिलता, मन में ग्लानि, वमन कभी कभी पतले दस्त, छाती में दर्द आदि उत्पात उत्पन्न हो जाते हैं। इस अवस्था में नाड़ी की गति बढ़ जाती है तथा थोड़े ही समय के उपरान्त गिल्टियां निकल आती हैं जिनसे असह्य पीड़ा होने लगती है।

तृतीय अवस्था—इस अवस्था में गिल्टियों में जो बहुधा जांघ, ग्रीवा, कांख आदि स्थानों में निकलती हैं, अत्यधिक जलन होने लगती है। मूत्र-लालिमा, पतले दस्त, बेचैनी आदि इस अवस्था के भयंकर लक्षण हैं। रोगी या तो लगभग चौबीस घंटे इस अवस्था में रहकर प्राणान्त कर देता है अथवा उसका स्वास्थ्य सुधरने लगता है। नाड़ी की गति बढ़कर मन्द पड़ जाना, गिल्टियों का पक जाना आदि रोगी की दशा सुधरने के लक्षण हैं।

प्लेग से बचने के उपाय एवं चिकित्सा-प्रारम्भिक अवस्था में ही रोगी को स्वच्छ प्रकाशवाले स्थान में ले जाना चाहिए तथा ज्वर प्रारम्भ होते ही रोगी को पूर्ण उपवास करा देना चाहिए। यदि लंघन असाध्य हो जाये तो दूध अथवा धान की खील का पानी भी दिया जा सकता है।

रोगी का मल-मूत्र बस्ती के बाहर गढ़ा खोदकर गड़वा देना चाहिए। बस्ती में ही फेंक देने से अन्य लोगों को भी इस व्याधि का सामना करना पड़ता है। रोगी के वस्त्रों एवं कमरे को फिनाइल से धोना हितकर है।

इस व्याधि में अनेकों अस्थि-सन्धियों से गिल्टियां निकल आती हैं जिनमें भिलावा पीसकर उसका लेप अथवा धतूरे के बीज और लहसुन को पीस, गर्म कर बांधने से अत्यधिक लाभ पहुँचता है।

रोग के प्रारंभ में ही रोगी की चिकित्सा किसी सफल एवं योग्य चिकित्सक द्वारा प्रारंभ कर देनी चाहिए। यदि चिकित्सक मिलना दुर्लभ हो तो निम्न औषधि (जिसके कारण बड़ी बड़ी फार्मेसियों के घर भरे हैं जिसे डा० रामकृष्ण वर्मा ने वैज्ञानिक विश्लेषण कर प्राप्त किया है) रोगी को खिलायें। योग इस प्रकार है—

आक की जड़ की छाल एक भाग, मिर्च काली एक भाग, नीम के पत्तों का चूर्ण एक भाग, कुटकी एक भाग, तुलसी के पत्र आधा भाग, कुचला आधा भाग, औषधियों का चूर्ण अलग अलग कर सब औषधियों को मिलाकर कपूर-जल में मिश्रित कर खरल करने के बाद दो दो रत्ती प्रमाण की गोलियां बना लें।

यदि दुर्भाग्यवश रोगी का प्राणान्त हो जाये तो उसे यथासम्भव नीम की लकड़ियों से ही जलाना चाहिए।

मृत शरीर का दाह-संस्कार कराकर वापिस आनेवालों के लिए आवश्यक है कि नीम के पानी से स्नान करें अथवा नीम के तेल से मालिश करें।

मृत के कमरे में गंधक अथवा अन्य कीटाणुनाशक वस्तुओं को अवश्य जला देना चाहिए जिससे प्लेग-कीट जीवित न रह सकें।

(पेज ४ का शेष)

का जीवन राष्ट्र के लिए एक बलिदानी जीवन रहा है। पति-पत्नी दोनों ही राष्ट्र के आह्वान सर्वस्व निछावर करने को तत्पर रहे। अन्त समय तक स्वतन्त्रता के आदर्शों की पूर्ति के लिए सुभद्रा जी सदा ही अग्रगण्य होती रही हैं। उनका कवि साहित्यिक होते हुए भी राष्ट्रीय रहा है। उनका व्यक्तित्व प्रथम राष्ट्रीय रहा है और इसके बाद साहित्यिक।

सुभद्राकुमारी जी प्रयाग नगर से लगे हुए एक छोटे से गांव निहालपुर में उत्पन्न हुई थीं। बचपन से ही आपको कविता लिखने और पढ़ने के प्रति अनुराग उत्पन्न हुआ किन्तु विवाह के बाद इस ओर विशेष प्रगति हुई। आपके पति ठाकुर लक्ष्मणसिंह चौहान स्वयं एक साहित्यकार और कवि हैं इससे सुभद्रा जी की आन्तरिक भावनाओं को और भी बल मिला और कविता-संसार में वह अग्रगामी होती गईं। असहयोग-आन्दोलन में आप महात्मा गांधी की पुकार पर आगे बढ़ीं और आपने राष्ट्रसेविका का बाना धारण किया। समय-समय पर वह राष्ट्र की वेदी पर अपना बलिदान चढ़ाती रहीं साथ ही साहित्यकार होने के नाते काव्य की प्रगति भी बलवती होती गई। इस प्रकार राष्ट्रीय विचारों तथा साहित्यिक भावनाओं के सम्मिश्रण से आपकी रचनाएँ चमक उठीं और उन जीवनपूर्ण रचनाओं का हिन्दी-संसार ने अभूतपूर्व स्वागत किया। राष्ट्रसेविका के नाते आप कई बार जेल भी गईं। सुभद्रा जी ने गद्य और पद्य की कई पुस्तकें लिखीं। काव्य-रचना के साथ ही कहानियां भी वह उच्च कोटि की लिखती थीं। पिछले २५ वर्ष से वह अनवरत साहित्य-सेवा में संलग्न रहीं। स्त्री-कवियों में सुभद्रा जी बड़ी ही लोकप्रिय और गौरवपूर्ण स्थान रखती थीं। 'झांसी की रानी' उनकी सर्वश्रेष्ठ रचना है जो आज भी सहृदयों के हृदय में घर किये बैठी है। विवाह के बाद सुभद्रा जी का राजनैतिक और सामाजिक जीवन का केन्द्र मध्यप्रान्त बन गया था। सुभद्रा जी के निधन से मध्यप्रान्त तो सूना हो ही गया, किन्तु हिन्दी-संसार तथा राष्ट्रीय जगत् के अभाव की पूर्ति भी असम्भव है। संघर्षों में लिप्त रहने के कारण उनकी आर्थिक स्थिति भी पहले अच्छी नहीं कांग्रेस सरकार की स्थापना के कुछ सुधार हो चला था किन्तु भी उन्हें देखना बदा नहीं था। के सिवा इसे और क्या कहा जाये ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह जी की आत्मा को शान्ति तथा बच्चों तथा परिवारवालों को धैर्य करे।

मधुस्रवा

इस अनुपम और नवीन शै कविता-पुस्तक में जीव में मधु बरसाने की पूरी क्षमता है। आप भी इसकी र को पढ़कर जीवन को रससिक्त क मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

प्रतिमा

इस संग्रह में सुकवि राजाराम की एक से एक बढ़िया ५० कविता इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा है। भाषा और क्या भाव सभी अनु रंगीन आवरण, बढ़िया छपाई और केवल १) एक रुपया।

वनवास

कवि ने रामचन्द्र जी के वनवा अनोखा वर्णन किया है। कवि चित्रकूट के पड़ोसी हैं और वहीं वास की अनेक मुख्य घटनाएँ इस कारण यह 'वनवास' अपने ढंग ही पुस्तक है। मूल्य ।||=) चौदह

अद्भुत कहानियां

दो रंगों में छपी इस सचित्र में एक से एक बढ़िया कहानियां हैं। इतिहास, स्वामिभक्ति और भाग्य का वर्णन पढ़ते ही बनता है। मूल्य

पृथ्वी की परिक्रमा

भिन्न-भिन्न देशों के प्रधान स्थानों मनोहर वर्णन आपको इस पुस्तक में भाषा में मिलेगा। चिकने कागज हुए पूरे पृष्ठ के चित्र भी इसमें हैं।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

नेताजी श्री सुभाषचन्द्र बोस के बड़े भाई श्री शरद्चन्द्र बोस कलकत्ता में नेताजी जन्म-तिथि के अवसर पर एक सार्वजनिक सभा में भाषण दे रहे हैं और यह प्रतिज्ञा हैं कि वह नेताजी द्वारा स्थापित फार्वर्ड-ब्लाक को जीवित रखेंगे और उनके उठाये कार्यों की पूर्ति करते रहेंगे।

हमारी विविध विषय की उत्तमोत्तम पुस्तकें

युग और साहित्य—लेखक, श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी। 'युग और साहित्य' भी हिन्दी-निबन्धों का एक आदर्श उपस्थित करती है। इसमें १३ मौलिक निबंध हैं, जिन्हें विद्वानों ने बहुत पसन्द किया है। मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

देवपुरस्कार-विजेता हरदयालुसिंह की कुछ ब्रजकाव्य की समीक्षायें

देवदर्शन—देवपुरस्कार - विजेता श्री हरदयालुसिंह लिखित ब्रजकाव्य समीक्षाएँ—इसमें ब्रजभाषा के प्रख्यात कवि देव की जीवनी और उनके समस्त काव्यों का आलोचनात्मक परिचय दिया गया है। ब्रजकाव्य के प्रेमियों के अतिरिक्त साहित्य के विद्यार्थियों के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

पूर्ण-पराग—इसमें ब्रजभाषा के प्रसिद्ध आधुनिक कवि श्री देवीप्रसाद 'पूर्ण' की जीवनी और उनके काव्य का समालोचनात्मक परिचय है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

मतिराम-मकरन्द—इसमें काव्यालोचन के साथ-साथ कवि मतिराम के ३ प्रसिद्ध ग्रंथों—मतिराम सतसई, ललितललाम और रसराज का संक्षिप्त सरस संग्रह भी कर दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

बिहारी-विभव—इसमें महाकवि बिहारी की कविता का आलोचनात्मक परिचय, उनकी जीवनी तथा सतसई के चुने हुए दोहे संकलित हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

भूषण-भारती—इसमें महाकवि भूषण की जीवनी और उनके समस्त काव्य ग्रन्थों—का विवेचनात्मक परिचय दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

महादेवी का विवेचनात्मक गद्य—संकलनकर्त्ता, श्री गंगाप्रसाद पांडेय, एम० ए०, साहित्य की नवीन शैली का अध्ययन करनेवालों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥।) दो रुपये बारह आने।

आलोचनादर्श—इस पुस्तक के लेखक हैं डाक्टर रामशंकर शुक्ल 'रसाल', एम० ए० डी० लिट। इसमें आलोचनाकला का मार्मिक और शास्त्रीय विवेचन किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

साहित्य-प्रकाश—यह पुस्तक भी डाक्टर रसाल की ही लिखी है। इसमें साहित्यिक सिद्धान्तों का विवेचन किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

साहित्य-समीक्षा—इस पुस्तक में हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक श्रीयुत कालिदास कपूर, एम० ए० एल-टी० के साहित्यिक तथा समालोचनात्मक लेखों का संग्रह किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

प्राचीन साहित्य—इस पुस्तक में रवीन्द्र बाबू के कई प्राचीन साहित्य, विशेषतः संस्कृत साहित्य के आलोचनात्मक निबन्धों का संग्रह है। मूल्य १) एक रुपया।

महाकवि अकबर—उर्दू के प्रसिद्ध कवि अकबर का आलोचनात्मक परिचय तथा उनकी उत्कृष्ट रचनाओं का अर्थसहित संग्रह। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

शिक्षा—हम अपने बालकों तथा बालिकाओं को किस तरह सुशिक्षित तथा सदाचारी बना सकते हैं, यह बात इस पुस्तक में विस्तारपूर्वक समझाई गई है। इसके मूल लेखक सुप्रसिद्ध दार्शनिक 'हर्बर्ट स्पेन्सर' हैं और अनुवादक स्वर्गीय आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी। मूल्य ४॥≡) चार रुपये ग्यारह आने।

भारतवर्ष में पश्चिमी शिक्षा—वर्त्तमान शिक्षा-विभाग के क्रम-विकास का संक्षिप्त इतिहास। मूल्य ।।) आठ आने।

अर्थमेटिक शिक्षा-प्रणाली—यह पुस्तक नार्मल स्कूलों और ट्रेनिंग क्लासों के विद्यार्थियों तथा स्कूलों के अध्यापकों को अर्थमेटिक पढ़ाने के उत्तम से उत्तम ढंग सिखलाने के उद्देश्य से लिखी गई है। मूल्य १) एक रुपया।

संगीत-सम्बन्धी पुस्तकें

ध्रुपद-स्वर-लिपि—इस पुस्तक के लेखक काशीनिवासी श्री हरिनारायण मुकुर्जी ध्रुपद के विशेषज्ञ हैं। मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

संगीत-सुदर्शन—सब प्रकार की रागरागिनियों का शास्त्रीय-विवेचन। मूल्य १॥≡) एक रुपया ग्यारह आने।

विविध विषय की पुस्तकें

मन की अद्भुत शक्ति—अपने मन की अद्भुत शक्तियों पर पूर्णरूप से अधिकार प्राप्त करके तथा उनका सदुपयोग करके मनुष्य किस प्रकार अपने जीवन को अधिक से अधिक सार्थक बना सकता है, इस बात की इस पुस्तक में विवेचना की गई है। मूल्य ॥।–) तेरह आने।

ऋद्धि—जो लोग धनहीन हैं, ऋण-ग्रस्त हैं, बहु-कुटुम्बी हैं, साथ ही आय भी बहुत कम है, वे इस पुस्तक के उपदेश के अनुसार चलकर सुख से जीवन बिता सकते हैं। मूल्य २।–) दो रुपये पाँच आने।

मानसिक आकर्षण-द्वारा व्यापारिक सफलता—व्यापारिक सफलता के लिए संपर्क में आनेवाले व्यक्तियों पर मानसिक आकर्षण की शक्ति का प्रयोग करने की विधि। मूल्य ।–) पाँच आने।

गोपालन—विभिन्न प्रकार की गौओं के रूप-रंग तथा गुण-दोष का विस्तृत वर्णन। इसमें गौओं का पालन-पोषण करने तथा उन्हें अधिक से अधिक दुधार बनाने की विधि बतलाई गई है। मूल्य १) एक रुपया।

लकड़ी के दाम निकालने की जंत्री—इस पुस्तक की सहायता से लकड़ी का दाम सरलतापूर्वक निकाला जा सकता है। मूल्य २) दो रुपये।

बहीखाता—हिसाब-किताब रखने का उत्तम से उत्तम ढंग। मूल्य ॥–) नौ आने।

भारतीय चित्रकला-पद्धति—कलात्मक चित्र, कार्टून आदि बनाने की आसान विधि। मूल्य १) एक रुपया।

स्काउट मास्टरी और ट्रूप संचालन—पुस्तक में स्काउट मास्टरों के लिए बहुत-सी व्यावहारिक बातें बताई गई हैं। इस पुस्तक के अनुसार चलनेवाले स्काउट मास्टर ट्रूप संचालन में निस्सन्देह सफल होंगे। मूल्य १) एक रुपये।

अग्निकांड में सेवा—अग्निकांड में स्काउट लोग किस प्रकार सफलतापूर्वक दूसरों के जीवन और संपत्ति की रक्षा कर सकते हैं यह बात इस पुस्तक में विस्तारपूर्वक लिखी गई है। पुस्तक सचित्र है। मूल्य १) एक रुपया।

स्काउट ड्रिल और खेल—यह पुस्तक अपने ढंग की बिलकुल अकेली है। स्काउटों के लिए जितने प्रकार के भी ड्रिल और खेल आवश्यक हैं, वे सभी इसमें विस्तारपूर्वक बतलाये गये हैं। उनके नियमों तथा उपयोग आदि पर भी समुचित प्रकाश डाला गया है। पुस्तक सचित्र है। मूल्य पहला भाग १) एक रुपया दूसरा भाग २) दो रुपये।

बाल शब्द-सागर—रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास, बी० ए० ने हिन्दी का यह शब्द-कोष विशेष रूप से विद्यार्थियों के उपयोग के लिए बनाया है। किन्तु अपनी व्यावहारिक उपयोगिता के कारण यह सभी के काम आ सकता है। मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

कुछ संस्कृत पुस्तकें

प्रबन्ध प्रकाश—लेखक, मंगलदेव शास्त्री। इस पुस्तक के प्रारम्भ में सरल संस्कृत भाषा में प्रबन्ध रचना सम्बन्धी आवश्यक नियम दिये हैं। इसके पश्चात् उदाहरण-स्वरूप सुप्रसिद्ध प्राचीन तथा आधुनिक विद्वानों के तथा स्वयं ग्रन्थकार के लिखे हुए परीक्षोपयोगी निबन्ध दिये गये हैं। पुस्तक के अन्त में गद्य-पद्यमय सुभाषित तथा लोकन्याय दिये गये हैं। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

संस्कृत गद्य रत्नावली—पंडित अमरनाथ झा, वाइस चान्सलर प्रयाग विश्वविद्यालय। यह पुस्तक संस्कृत गद्य की विभिन्न प्रकार की शैलियों का नमूना है। संस्कृत के सभी प्रतिष्ठित ग्रन्थों से अवतरण लिये गये हैं; किन्तु इस बात का ध्यान रखा गया है कि कोई अवतरण कठिन न हो। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

मेघदूत—यह महाकवि कालिदास के मेघदूत का बहुत ही उत्तम और उपयोगी संस्करण है। हर एक श्लोक के सामने राजा लक्ष्मणसिंह का किया हुआ पद्यानुवाद दिया गया है। गद्य में बहुत ही सरल और विस्तृत अर्थ भी दिया गया है। पाद टिप्पणियों में संस्कृत के कठिन शब्दों के समास, विग्रह तथा प्रतिशब्द आदि भी दिये गये हैं। मूल्य ॥।–) तेरह आने।

पंचतंत्र—संस्कृत में यह पुस्तक बहुत ही प्रसिद्ध है। इसके सुन्दर संस्करण का अभाव देखकर हमने इसे प्रकाशित किया है। आवश्यक टिप्पणियाँ देने के बाद अन्त में हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित किया गया है। मूल्य ॥≡) ग्यारह आने।

संक्षिप्त वाल्मीकीय रामायण—स्वर्गीय रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा संपादित आदि कवि वाल्मीकि मुनि प्रणीत वाल्मीकीय रामायण संस्कृत में बहुत बड़ी पुस्तक है। श्री रवीन्द्रनाथ जी ने इसे संक्षिप्त कया है। किन्तु पुस्तक का क्रम कहीं भी टूटने नहीं पाया है। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

कादम्बरी—सम्पादक स्वर्गीय महामहोपाध्याय पंडित गंगानाथ झा और पंडित काशीराम एम० ए०। बाणभट्ट की कादम्बरी संस्कृत में बेजोड़ पुस्तक है। परन्तु यह ग्रन्थ इतना बड़ा है कि इस युग के लोगों के लिए कठिन भी हो गया है। इस कठिनाई को हटाने के लिए इसका यह संक्षिप्त संस्करण निकाला गया है। मूल्य १) एक रुपया।

संक्षिप्त बिहारी—महाकवि बिहारी के दोहों का यह बहुत अच्छा संस्करण है। बिहारी की सतसई में जितने अधिक अश्लील दोहे थे, वे छाँटकर इसमें से निकाल दिये गये हैं। मूल्य २) दो रुपये।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

गजब हो गया अपनी गलती से सैकड़ों घर बरबाद ! रक्षा चाहते हैं तो इसे जरूर

१—ताकतवर यौवन वटी—भाइयो, यह ताकत की बहुत जोरदार दवा कई तरह की कीमती दवाइयों से गई है। इसकी एक खुराक खाते ही शरीर में महान् शक्ति पैदा मालूम देती है तथा धातुक्षय, कमजोरी, स्वप्नदोष को हटाकर पतले वीर्य को दही के समान गाढ़ा बना देती है, स्मरणशक्ति बढ़ाकर दिल व दिमाग को ताकतवर बनाती है। ताकत व जवानी को आठ दिन में फिर से लाने के लिए आश्चर्यजनक यह इलाज है। बूढ़ा या जवान एक बार भी तो यौवन का फिर से पूरा आनन्द आ जाता है। इसके आश्चर्यजनक गुणों से मोहित होकर बड़े-बड़े राजा-महाराजा, कारों ने इस्तेमाल करके प्रसन्नता प्रकट की है। पूरे कोर्स ६४ गोली के पैकिट का ५)।

२—अमीरी तिला—यह अद्भुत तिला राजा-महाराजा, सेठ-साहूकारों के सेवन करने योग्य है। इसके कमजोरी, ढीलापन, सुस्ती हटाकर बिजली के समान अपूर्व ताकत पैदा होती है। फी शीशी ५), डाकखर्च दोनों का

३—आर० पी० का पत्थर हजम चूर्ण—कब्ज को दूर कर दस्त साफ लाता है। फी शीशी ।=)।

पता—जैन बालामृत कार्यालय बेलनगञ्ज, (१००) आगरा

साधनमाला—मंत्र, तंत्र और शक्ति-उपासना-सम्बन्धी हिन्दी में अकेली मासिक पुस्तक-माला। वार्षिक मूल्य ८)। एक प्रति १)।
कल्याण-मन्दिर, कटरा, प्रयाग।

५००) रुपये पुरस्कार

एक आश्चर्यमय आविष्कार

जादू की अँगूठी

यह अँगूठी जादू और मस्मेरिज्म की शक्ति की सहायता से तैयार की गई है। यह आश्चर्य के काम करती है। जो कोई इस अँगूठी को पहनेगा, वह किसी भी उद्देश्य में, वह कितना ही कठिन और दुःसाध्य हो, सफल होगा। यह आपकी सब प्रकार के संकटों या रोगों से रक्षा करेगी। ग्रहों का कोई बुरा प्रभाव नहीं हो सकता। इस अँगूठी का पहननेवाला किसी भी व्यक्ति (पुरुष या स्त्री) पर वह कितना ही कठोर हृदयवाला हो, अपना पूरा नियंत्रण रखेगा। यही नहीं, वह अत्यंत विनीत बन जायेगा और अनुपस्थिति से अपने को दुःखी अनुभव करेगा। आप प्रेम, मुकदमेबाजी और नौकरी में सफल होंगे और बहुत-सा धन प्राप्त करेंगे। संक्षेप में, अँगूठी शरीररक्षक का काम देगी। एक बार आजमाइए और ठीक पहली रात को इसके आश्चर्यमय परिणाम देखिए।

मूल्य एक अँगूठी २ रु०। तीन अँगूठी ५ रु०। पैकिंग और पोस्टेज अतिरिक्त।

श्री शंकर भण्डार
पोस्टबाक्स २४३, कानपूर

एलाइड लाउडस्पीकर पर
इत्मीनान रखिये
ब्याह
मेले
जलसे
सरकस
तथा
हर मौके पर इस्तेमाल कीजिये
खरीदिये या किराये पर
लीजिये

एलाइड एलैक्ट्रिक एण्ड
रेडियो कारपोरेशन
हज़रतगंज कैनिंग रोड
लखनऊ एलाहाबाद

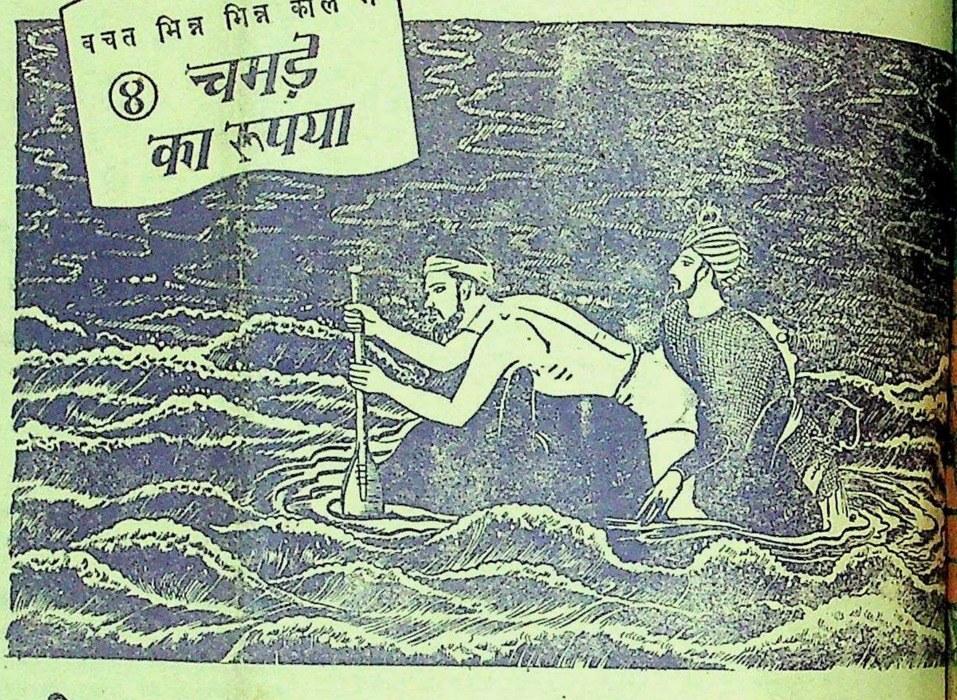
बचत भिन्न भिन्न काल में
④ चमड़े का रुपया

सिक्कों के रूप में धातुओं के प्रयोग में आ जाने के कारण लोगों के आपस के झगड़ों और मुकदमेबाज़ी मे आकर किसी बुद्धिमान राजा ने धातु के डलों पर मोहर लगाने की सोची जिस से धातु की शुद्धता प्रमाण हो सके। समय के साथ साथ घटिया धातुओं की बजाय सोना चांदी की धातुएं प्रयोग में आने लगीं डलों का आकार भी छोटा हो गया। इस प्रकार सिक्का पहली बार प्रयोग में आया। सहस्रों वर्ष पीछे की बात है। परन्तु राजा प्रायः इस में असफल रहता कि लोग उस की आकृति घटिया धातु के सिक्कों पर न ब यह कठिनता और भी बढ़ जाती थी यदि पुलिस अयोग्य होती या राजा रणक्षेत्र में गया होता। याद रहे एक बार हुमायूं बादशाह के गंगा नदी में डुबकने पर चमड़े के टुकड़े भी सरकारी सिक्के बन गये थे। राज के बहुधा अदल-बदल से रुपये का मूल्य भी कम व अधिक होता रहा।

जब रुपये का मूल्य ऐसा अस्थिर था और राजवंश प्रायः बदलते रहते थे तो बचत करने के लिये उत्सा बढ़ाने वाले कारण कम थे। इस के अतिरिक्त जो कुछ भी बचत की जाती वह सुरक्षित रखने के विचार से भूमि में दबा दी जाती और प्रायः नष्ट हो जाती थी।

आज कल सिक्कों की अस्थिरता का कोई भय नहीं और न ही यह आवश्यक है कि बचत 'संचित धन' का ही रूप धारण करे। आप अपने रुपये को किसी उपयोगी मद में लगा कर उस में वृद्धि कर सकते हैं। नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स की मद में लगाया हुआ रुपया पूर्णतया सुरक्षित है और यह अवधि की समाप्ति पर ५०% बढ़ जाता है—अर्थात प्रत्येक १०) बारह वर्ष में १५) बन जाते हैं। अब आप ५) से १५०००) तक की मालियत के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं। थोड़ी बचत वाले ।), ॥) और १) मूल्य के नेशनल सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं। अब आप सर्टिफ़िकेट १८ मास के पश्चात भी भुना सकते हैं (५ रु० के सर्टिफ़िकेट्स एक वर्ष के पश्चात भी भुनाये जा सकते हैं)।

भविष्य के लिये बचाइ

नेशनल सेविंग्ज़
सर्टिफ़िकेट्स
ख़रीदिए

रुपया लगाने की सर्वप्रिय

ये डाकख़ानों, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजन्टों और सेविंग्ज ब्यूरो से प्राप्त किये जा सकते है

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद

देशदूत

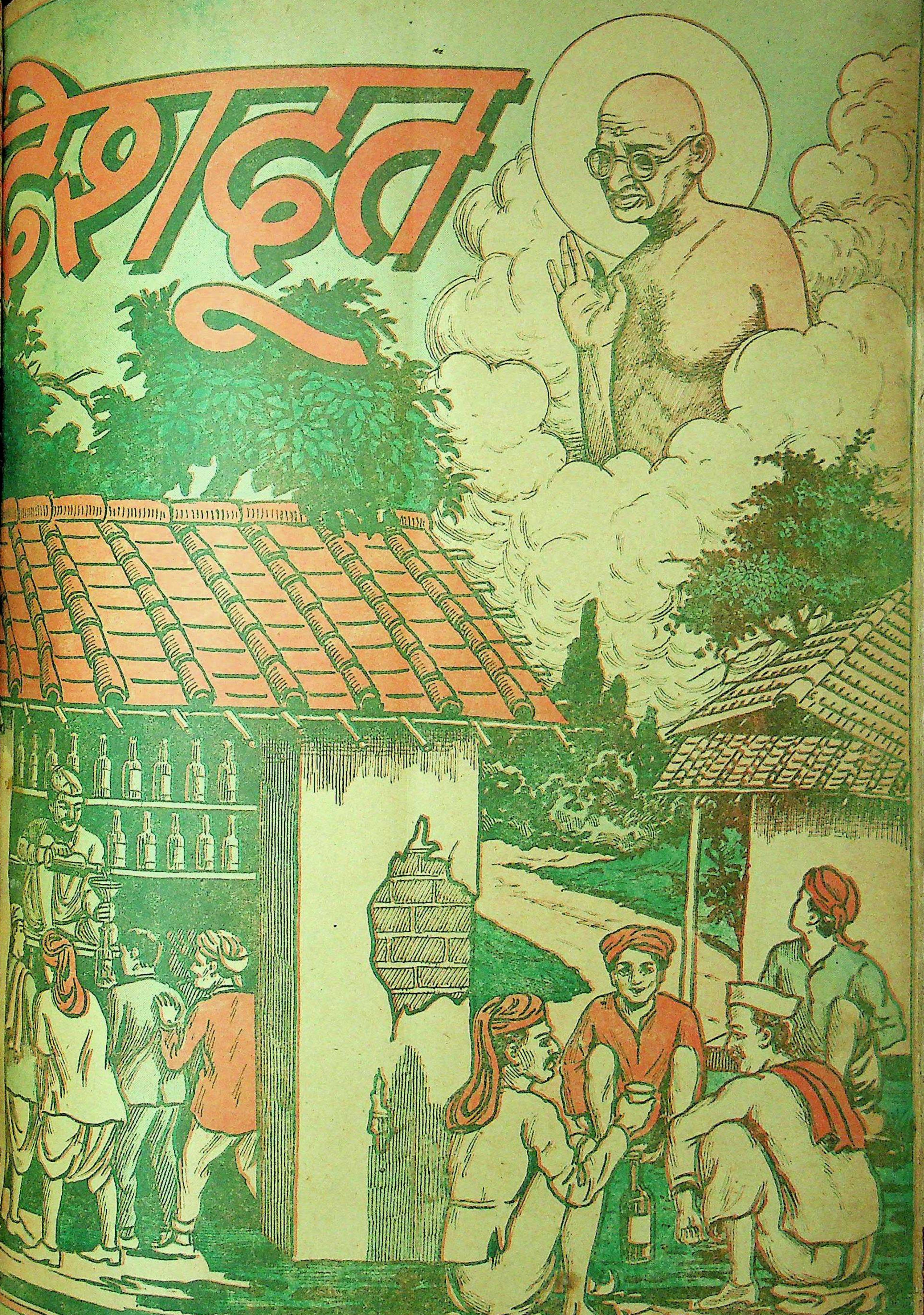

मार्च १९४८
March 1948

नशा निषेध अङ्क

मूल्य ≈)
Price. 2 As.

सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं हमारे आयुर्वेदिक सुगन्धित तैल से बाल का पकना रुककर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। यह तैल दिमागी ताकत और आँखों की रोशनी को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो, वे मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। मूल्य २।।), आधा बाल पका हो तो ३।।), और कुल पका हो तो ५) का तैल मँगा लें।

एल० एन० गुप्ता फार्मेसी
नं० ८ पो० नवादा, गया।

दाद, खुजली
और
हरेक मैलका चमड़ीका दर्दके लीए

गत ५० वर्षों से
जग विख्यात
कपड़े खराब नहीं करती।
नकालों से सावधान

सपट
लोशन

सपट एन्ड को, डिपार्टमेंट U.P,DA.I.
बमई २

ANNA
1 ANNA

इन सब कष्टों को
१ आने में दूर
कीजिये

पीठ की दर्द

सिर की दर्द

जोर जोर की दर्द व खींचन

ऐस्प्रो
से ही ऐसा कर सकना संभव है,

ASPRO
DOES NOT HARM THE HEART

दर्द रोकने और हरारत दूर करने में दुनियाँ की सबसे महान औषधि

जब आपको दर्द मालूम होती है तो इसका मतलब होता है कि आपके शरीर को सहायता की जरूरत है–और वह भी उसी वक्त। 'ऐस्प्रो' फौरन् असर करती है–यह आपकी दर्द रोकती है, आराम सुख और भले चंगे होने की भावना पैदा करती है और दर्द के कारण तक जाकर उसे निकाल बाहर करने में प्रकृति की मदद करती है। 'ऐस्प्रो' कि प्रत्येक टिकिया मनुष्य की आवश्यकताओं के मुताबिक पूरी सावधानी और चतुराई से बनाई जाती है। इसीलिये यह आधुनिक औषधि इतनी फलप्रद है

'ऐस्प्रो' समय नहीं खोती फौरन् आपकी सहायता करती है।

बुखार की स्थिति से कष्ट पानेवालों के लिये 'ऐस्प्रो' वरदानस्वरूप है। यह ताप कम करती है व तकलीफों का निवारण करती है।

MADE IN ENGLAND
'ऐस्प्रो'
६ टिकिया
ASPRO
TABLETS
MADE IN ENGLAND
'ऐस्प्रो'
२ टिकिया
ASPRO
एक बच्चा भी 'ऐस्प्रो' ले सकता है

दाम
३ टिकिया १ आना
८ टिकिया २ आना
३० टिकिया १० आना

हर जगह बिकती है

वितरक :
जे. एल. मौरिसन. सन एण्ड जोन्स
(इण्डिया) लि:
पोष्ट बक्स ३८७ कलकत्ता टेलिफोन कलकत्ता ७९६

67

घर की स्त्रियाँ

निकोटा
पारिवारिक टूथ पेस्ट का
व्यवहार करती है !

क्योंकि निकोटा दाँतों को सफेद और सुन्दर रखता है जिससे स्त्रियां युवा दिखती हैं। यह सबसे अधिक 'किफायती' और समस्त परिवार के लिये प्रथम श्रेणी का टूथ पेस्ट है।

लगभग सभी जगह एक रुपये से कम में मिलता है।

- ★ स्वादिष्ट
- ★ स्फूर्तिप्रद
- ★ कीटाणुनाशक

एक सुन्दर लाल बक्स में सभी केमिस्ट व व्यापारियों के यहाँ मिलता है।

पारिवारिक
टूथ पेस्ट

देशदूत

वर्ष १०, संख्या २६] [रविवार, ७ मार्च, १९४८

सन् १८७५ ईसवी में सारे ब्रिटिश भारत में आबकारी की मद से केवल १३,१०,००० पौंड की आमदनी हुई थी। यह रकम सन् १९०५ ई० में बढ़कर ४८,६१,००० पौंड हो गई। सन् १९२९-३० में यह रकम बढ़ते-बढ़ते एक करोड़ पचास लाख पौंड स्टर्लिंग तक पहुँच गई थी। ऐसी वृद्धि ब्रिटेन या संयुक्तराष्ट्र अमेरिका में हर्गिज नहीं हुई। महात्मा जी के आदेशानुसार कांग्रेस द्वारा नशे की दूकानों पर धरना देने और शराब का बहिष्कार किए जाने के फलस्वरूप सन् १९३६ में आबकारी के मद से केवल १,१२,८५,००० पौंड की ही आमदनी हुई।

* * *

एक बोतल शराब के सरकारी भाव से गांवों में ४५ सेर गेहूँ खरीदा जा सकता है। इसी तरह एक तोला चरस खरीदने में जो रुपया खर्च होता है उससे तीस सेर गेहूँ खरीदा जा सकता है।

* * *

यह मैं आप ही पर छोड़ता हूँ कि [illegible] के समस्त अफसर नाविक और कोयला झोंकनेवाले नशात्यागी होते, तो क्या हमें 'समय की भूल' बदचलनी, अन्तर और रंग के भ्रम की कम शिकायत नहीं सुनाई पड़ती।

* * *

हमारा रास्ता हमारे सामने है। चाहे शराब उसे एल, वाइल, ब्रांडी चाहे किस दूसरे नाम से पुकारें, और चाहे जिस रूप में वह हमारे सामने आवे—चाहे वह शराबखाने में हो या शराब की दुकान पर, चाहे वह सांसारिक मनुष्य की बैठक हो या नीरस प्रोफेसर की मेज पर—इससे हमारी सफलता रुकती है। इस एक बाधा को दूर करने पर हम आगे बढ़ सकेंगे और हमारी मेहनत का दस हजार गुना फल मिलेगा।

* * *

सब विद्वान् इसमें सहमत हैं कि घोर मद्यपान से ७५ प्रतिशत से लेकर ६० प्रतिशत तक अपराधों का सृजन होता है।

* * *

शराबखोरी से रेलवे को साल भर में पांच हजार पौंड दुर्घटनाओं में हर्जाना के रूप में देना पड़ा।

* * *

मद्यपान ही तमाम बदमाशियों की माता, अपराधों की जड़, दुर्गुणों का स्रोत, दिमाग का चक्कर, इंद्रियों का पतन, जबान का तूफान, शरीर का नाश, जीवन की लज्जा, ईमानदारी का दाग, आत्मा की महामारी और बरबादी है।

* * *

जहां तक हमारा अनुमान काम करता है, श्रमजीवियों के मकानों में जो कंगाली दिखाई देती है, उसकी तह में शराबखोरी ही है।

* * *

एक डाक्टर का कथन है कि नशीली वस्तुओं के नियंत्रित रूप के व्यवहार से कब्ज, खून की कमी, मंदाग्नि, हृदय, फेफड़े और गुर्दे के रोग, स्नायुजन्य कमजोरी, आलस्य, चित्तभ्रम, नैतिक पतन, नैतिक अविश्वास, जल्द थकना, मृत्यु इत्यादि बीमारियां हो जाती हैं।

सन्देश

माननीय श्रीमती सरोजनीनायडू गवर्नर, संयुक्तप्रांत—

सहस्रों वर्षों से भारत के कोने-कोने से यात्री गंगा और यमुना के संगम की यात्रा अपने हृदयों में प्रेम और विश्वास रखते हुए करते रहे हैं। इस वर्ष और वर्षों की भांति लाखों पुजारी अपने आत्मिक सन्तोष के लिए यहां आये हैं। उन सभी को जो पवित्र प्रयागराज में एकत्रित हुए हैं, मैं आत्मिक शान्ति, नव आशा-संचार तथा साहस के लिए दुआ करती हूँ ताकि वह आधुनिक संघर्ष तथा संकठों में भी अपराजित रहें। सुखी तथा शान्तिमय गृहस्थ जीवन की सबमें आवश्यक वस्तु, सभी बुरी आदतों को छोड़ना और मन को आसक्त करनेवाली वस्तु में जैसे मादकता—आदि जिन्होंने बहुत से देशों में अनगिनती घरों को बर्बाद कर दिया है—पर अधिकार प्राप्त करना है।

मुझे आशा है कि स्वतन्त्र भारत के नये राष्ट्रीय झंडे के सम्मान में हम सब संगठित होकर, विश्व के सामने मादकता, जो कि वस्तुतः नाश और मृत्यु का बीज है, के सम्पूर्ण त्याग का आदर्श स्थापित करेंगे।

लखनऊ
१३ जनवरी, ४८

—सरोजनी नायडू

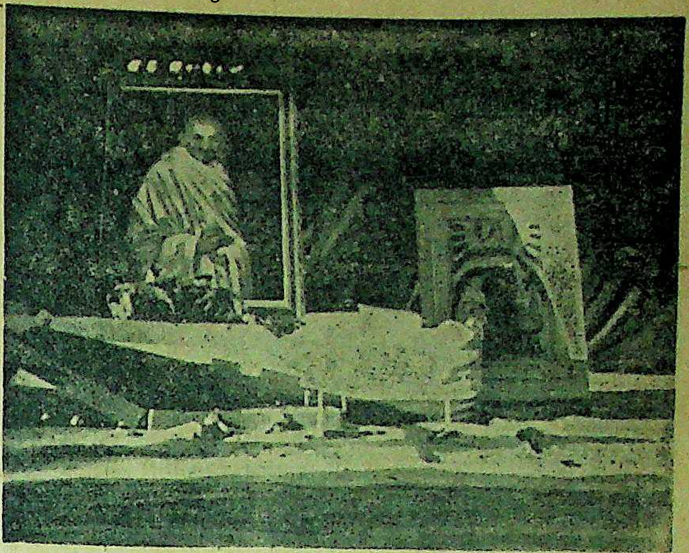

अर्द्धकुंभ मेले के अवसर पर नशा-निषेध कैम्प में विश्ववन्द्य महात्मा गांधी के स्वर्गवास पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई थी। यह चित्र उसी अवसर पर लिया गया था। चित्र में महात्माजी की तस्वीर तिरंगे झंडे से लिपटे हुए दो तख्तों पर रखी हुई है। तख्तों पर महात्माजी का प्रिय गीता, कुरान बाईबिल और चर्खा भी रखा हुआ दिखाई दे रहा है।

बापू !

लेखक, श्री ललितकुमार सिंह 'नटवर'

बापू, तुम तो संसारी थे, भगवान् न बनना था तुमको
इस दानवता की दुनिया में इनसान न बनना था तुमको

कौन था, कहां से आ के, अपना बना के हाय,
फिर कैसे हमसे बिछुड़ के चला गया!
प्रेम-पालने में पाल, प्रेम ही पढाया सदा,
आज वही झट से झगड़ के चला गया!
भूल से भी भूलता रहा नहीं जो सपने में,
आंखें फेर शान से अकड़ के चला गया!
चन्दन समान भाग्य भाल पर शोभता था,
चन्दन की चिता पर चढ़ के चला गया।

साधु, संत, योगी, यती, ऋषि मुनि महात्मा था,
साधक, तपस्वी, देवता कि अवतार था!
करामाती, जादूगर, सिद्ध या सयाना, पीर,
दरवेश, औलिया, फ़क़ीर, कल्पकार था!
सेवक, सिपाही, बनिया, किसान, मजदूर,
भिक्षुक, जुलाहा, कोल, भंगी-परिवार था!
ज्ञानवीर, भक्तिवीर, धर्मवीर, कर्मवीर,
प्रणवीर, रणवीर, वीरों का शृंगार था!

शिशुता - सुलभ, मृदुहास - रास - सम्मोहन,
कर्म की कठोरता में चेहरा चट्टान था।
सुकुमार सुमन-सौरभ-सा स्वभाव, शील;
प्रणहठी हृदय हिमालय समान था।
निर्मल - नयन नेह - चुम्बक - चमत्कार,
पर, भ्रू की भंगिमा में प्रलय तूफान था।
अर्द्धनग्न, क्षीणकाय, वयोवृद्ध मानुस में—
देवलोक-दुर्लभ महान् से महान् था।

राजाओं का राजा महाराजाओं का महाराज,
चक्रवर्ति-चूड़ामणि, शूर - सरदार था।
मानवता-नाव भव-भँवर में फँस रही,
पार करने का वही दिव्य पतवार था।
भारत-विधाता, विश्व-प्रेम-मंत्रदाता, त्राता,
शान्ति रूप में अनूप क्रान्ति की उभाड़ था।
दानवता हार बार बार खाती थी पछाड़,
एक मुट्ठी हाड़ में विराट-सा पहाड़ था।

जब से वसुन्धरा में सृष्टि-रचना हुई है,
आंख से न देखा किसी ने न सुना कान से।
ब्रह्म की न चाह, परवाह स्वर्ग-मुक्ति की न,
भक्त भगवान् हो, रम गया जहान से।
तीन लोक तारिणी त्रिवेणी आज तर गई,
भारत-विभूति की विभूति के मसान से।
ऐटम-बम अणु परमाणु में बिखर के,
घुल-मिल गया जल, थल, आसमान से।

सत्यता हरिश्चन्द्र, पौरुष परशुराम,
ध्रुव प्रह्लाद की अचलता सुहाई थी।
दृढ़ता दधीचि की थी, त्याग शिवि के समान,
नीति नटवर-सी निपुणता लखाई थी।
बुद्ध का वैराग्य, और ईसा का परोपकार,
तप बल-विश्वामित्र, राम वीरताई थी।
नानक कबीर ज्ञान, साधुता मुहम्मद की,
बापू की बनावट में विधि की बड़ाई थी।

मद्य-निषेध महापुण्य

स्वतंत्र भारत में वीर, उत्साही और पवित्र विचारों के नागरिकों की आवश्यकता है

लेखक, त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्तजी महाराज

मद्य-निषेध एक महापुण्य का कार्य है। शारीरिक, मानसिक और आर्थिक पतन से बचने के लिये मद्यनिषेध अत्यन्त आवश्यक है। इस लेख में गोस्वामी जी ने मद्य-निषेध की आवश्यकता बतलाते हुए स्पष्ट किया है कि स्वतंत्र भारत में वीर, उत्साही और पवित्र विचारों के नागरिकों की आवश्यकता है, इस दृष्टि से प्रांतीय सरकार का मद्य-निषेध का कार्य प्रशंसनीय है। लेख पठनीय है।

भारत जैसे धर्म-प्रधान संस्कृति के केन्द्र देश के लोगों को यह कहना कि वे शराब आदि मद्यों को न पीवें एक लज्जाजनक बात है। हमारे प्राचीन ऋषियों ने इस बात पर बड़ा जोर दिया है कि हमारा खान-पान कैसा होना चाहिए। स्थान-स्थान पर मद्य-पान को घृणित पातक बताया है। संसार के समस्त प्राणियों में मनुष्य इसीलिये श्रेष्ठ है कि उसका मस्तिष्क और बुद्धि तरह तरह के सूक्ष्म विचारों से जगत् में अनेकों आश्चर्यजनक पदार्थों का निर्माण कर लोकहित साधन करता है। न केवल पदार्थों से ही बने अपने विचारों से भी अपना और दूसरों का मार्ग-प्रदर्शन करता है। हमारे जितने ऊँचे विचार होते हैं उतना ही ऊँचा हमारा जीवन उठता चलता जाता है। यानी जीवन विचारों का ही बाह्य रूप है। इसीलिये गायत्री मंत्र में बुद्धि की पवित्रता की प्रार्थना की गई है। इसी आशय से ऋषियों ने खाने-पीने की छोटी से छोटी वस्तुओं पर नियम बना डाले हैं। कि कहीं मलीन पदार्थ शरीर में जाकर बुद्धि को मलीन न कर दे। जगत् में जितने खाने-पीने की चीजें हैं उनमें मद्य-पान सबमें अधिक बुद्धिनाशक वस्तु है। मद्यप के विचार-तन्तु टूट जाते हैं। वह अपने या दूसरों के बारे में कुछ सोच ही नहीं सकता फिर जीवन का उत्थान ही क्या हो सकता है? इसका तात्पर्य यह हुआ कि मद्य पीना जीवन का ही नाश करना है। हम तो यह जानकर हैरान हो जाते हैं कि इतनी हानिकारक वस्तु जो बलपूर्वक भी कोई पिलावे तो उसके लिये हमें अन्तिम दम तक लड़ना चाहिए उसे अपने खून-पसीने की कमाई के पैसे से खरीदकर लोग पीते हैं। यह व्यसन लोगों का इतना तक बढ़ जाता है कि अपने बच्चों को भूखा रखकर, अपनी

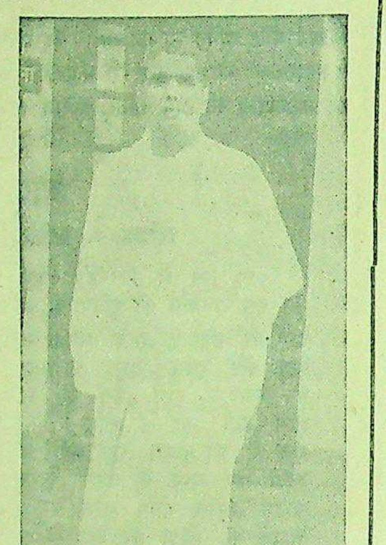

गोस्वामी गणेशदत्तजी

स्त्री के कपड़े बेचकर, अपने पेट की रोटियां तक बेचकर लोग शराब पीने लग जाते हैं। वह इसलिये है कि संसार के काम जितने अधिक गन्दे और हानिकारक होंगे उतने ही अधिक वे लुभावने और अच्छे मालूम पड़ते हैं। वास्तव में वे जिन्दगी का नाश करनेवाले होते हैं। हिन्दू-धर्म-शास्त्रों में तो सुरापान से बड़ा कोई पाप ही नहीं माना गया और पापों का प्रायश्चित्त हो सकता है पर शराब पीने का कोई प्रायश्चित्त भी नहीं होता। पुराणों की प्रसिद्ध कथा है कि एक बार दुर्भिक्ष पड़ने पर आपदधर्म मान महर्षि विश्वामित्र ने कुत्ते का मांस उबालकर अपने खाने के लिये तैयार किया। खाने से पूर्व वे जब सूर्य को बलि देने लगे तो सूर्य देवता ने बलि स्वीकार नहीं की। तब महर्षि विश्वामित्र ने सूर्यदेव से प्रार्थना की कि यह मेरा श्वपाक आपद्धर्म है अब जीवन सुरक्षित रहने पर बाद में मैं इसका प्रायश्चित कर लूंगा। मैंने कोई सुरा-पान थोड़े ही किया है कि जिसका कोई प्रायश्चित्त न हो सके और जिससे जीवन अत्यन्त गहरे गढ्ढे में गिर जावे। यानी सुरा-पान सबसे निकृष्ट पाप है; और भारत जैसे गरीब देश में जहां हजारों व्यक्ति बिना खाये रात को सोते हैं और लाखों बिना वस्त्र के मृत्यु के मुख में जाते हैं, शराब का पीना अपने भाइयों के खून के पीने के समान है। जो गरीब लोग व्यसन के शिकार बन शराब पीते हैं वे तो सचमुच अपना खून पीते हैं। धनिक लोग भी अपने गरीब भाइयों का खून भी पीते हैं। हमारी सभ्यता बड़ी ऊँची है। अँगरेजों के समय हम डींग मारा करते थे कि हम संसार के सभ्य व्यक्ति हैं केवल अँगरेजों ने हमें पतित बना दिया है। अब अँगरेजों की प्रभुता समाप्त हुई, हम स्वतन्त्र हो गये हैं। अब हमें दिखा देना चाहिए कि हम वास्तव में विचारशील सभ्य जाति की सन्तान हैं। अब संसार की अन्य जातियों के सामने हमारा सिर ऊँचा उठना चाहिए। शराब आदि गन्दे व्यसनों के रहते हुए फिर हम सभ्य कैसे गिने जा सकते हैं? यह भगवान् कृष्ण का देश है। यहां हमें घी, दूध, दही, मक्खन खाना सीखना चाहिए। जो भाई इस व्यसन के [illegible] हैं वे साहस इकट्ठा कर एक बार त्रिवेणी के तट पर प्रतिज्ञा करें कि हम आगे यह पाप-कर्म न करेंगे। शराबी भारतीय देश का कलंक है। स्वतन्त्र भारत में वीर उत्साही पवित्र विचारों के नागरिकों की आवश्यकता होगी। इस प्रकार शराब आदि पीकर अपने जीवन को बरबाद करनेवालों की नहीं। अब वे समझें कि हम स्वतन्त्र देश की सन्तान हैं। हममें मानवीय दुर्गुणों को स्थान नहीं मिलना चाहिए। जब वे मद्य-पान के व्यसन को छोड़ सभ्य नागरिक बनेंगे तो वे स्वयं अनुभव करेंगे कि उनका जीवन कितना ऊँचा चढ़ता चला जाता है। सचमुच वे एक कैद से मुक्त हो जावेंगे और भगवान् उनका कल्याण करेंगे।

मुझे यह जानकर परम प्रसन्नता हुई कि यू० पी० सरकार की ओर से आयोजित "नशा-निषेध प्रचारक कैम्प" इस ओर बड़ी लगन और प्रेम से काम कर रहा है। यह आयोजन बड़ा सामयिक है और लाभदायक है। मैं इसके संयोजक, प्रबन्धक तथा कार्यकर्त्ताओं को इसके लिये बधाई देता हूँ। श्री उमेशचन्द्र जी माथुर के प्रयत्नों से हमारे कैम्प के प्रचारक आदि भी उसमें तन्मयता से भाग ले रहे हैं।

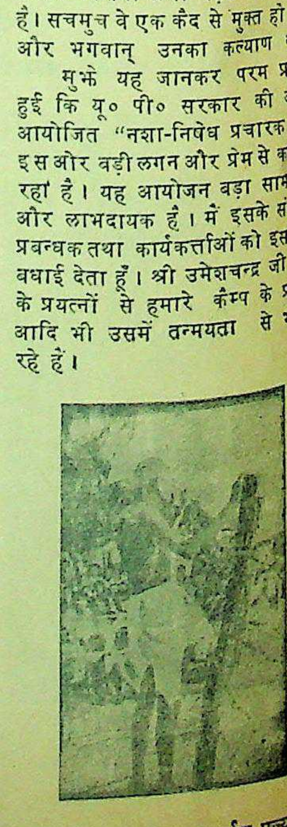

मद्य-निषेध के आन्दोलन प्रवर्तक पूज्य बापू।

नशा-बन्दी क्यों?

माननीय चौधरी गिरधारीलाल, एम० एल० ए० मिनिस्टर आबकारी विभाग संयुक्तप्रांत—

सरकार केवल उस उच्च कोटि की आय जो कि आबकारी से मिलती है का त्याग करने को प्रस्तुत है वरन् इससे भी अधिक बलिदान करने को तैयार है जिससे कि पूरा सूबा नशा-रहित हो जाय और जनता अपना जीवन बरबादी से बचा ले, क्योंकि नशे की बुरी आदतें भारतवासियों की आयु को कम कर देती हैं। आप पूछेंगे जब करोड़ों रुपया सूबे की उन्नति के लिये आवश्यक है ऐसी दशा में वे जनता से नशा त्याग पर क्यों आग्रह कर रही हैं? इसका उत्तर साफ है। अब जनता की सरकार है; और यदि अब जनता तन्दुरुस्त नहीं होती तो उसकी सरकार भी मजबूत नहीं हो सकती। फिर यदि जब भी केवल ऐसी आय को कायम रखा जाय जिससे कि इस सूबे की जनता बरबाद हो चुकी है, तो मजबूत आसन नहीं हो सकता। इसी से अब यह आवश्यक है कि जनता का पूरा सहयोग प्रत्येक ऐसे कार्य के लिये लिया जाय जिससे कि उसका स्वास्थ्य सँभले।

अनुमान से इस सूबे की छः करोड़ जन-संख्या में से प्रायः पचास लाख शराब तथा अन्य मादक द्रव्यों के आदी हैं और इससे भी अधिक अन्य बुरी आदतों के शिकार हैं। आपने आशा की है कि आज से ही सब लोग नशा-निषेध की प्रतिज्ञा करेंगे और इस प्रकार सरकार को इस बुराई को दूर करने में सहायता करेंगे। ऐसे प्रस्ताव पंचायतों में पास होने चाहिए और उनके पालन पर जोर देना चाहिए। केवल देशी शराब ही नहीं, वरन् अँगरेजी शराब भी छोड़ना चाहिए।

—चौधरी गिरधारीलाल

संदेश

तिथि. माघकृष्ण ८ वि० २००४
तारीख २ फरवरी १९४८

अनंत श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर स्वामी श्री ब्रह्मानन्द सरस्वतीजी महाराज, ज्योतिर्मठ, बद्रिकाश्रम

'मादक-द्रव्य मनुष्य के शारीरिक और मानसिक विकास के लिये अत्यंत हानिकर है। शास्त्रों में भी इन्हें निषिद्ध कहा गया है। जनता को चाहिए कि इनका सर्वथा बहिष्कार करे और यदि नशा करना है तो भगवन्नाम का नशा करे।

—द्वारकाप्रसाद त्रिपाठी
मंत्री, अनंत श्री समलंकृत[illegible]
ज्योतिष्पीठ, बद्रिकाश्रम

नशा-निषेध क्यों आवश्यक है?

कुछ धार्मिक और सामाजिक उपायों की रूप-रेखा

लेखक, श्री मसुरियादीन एम० एल० ए०

मदिरा की गणना रत्नों में होती है। जिसका वर्णन पुराणों में बड़े सुन्दर ढंग से किया है। सम्भावना है कि पुराण के रचयिता ने इसे वीररस समझकर उचित ढंग से वर्णन किया हो। एक बार जब देव और असुरों में संग्राम छिड़ा था, तब विष्णु भगवान् ने चाल चली। वह यह कि मदिरा को असुरों को पिलाया और उनकी शक्ति को क्षीण कर दिया। उसी समय से दो दलों का निर्माण हुआ। एक देव और दूसरा असुरों का। इनकी आकृति को भी चित्रकारों ने बड़ी बीभत्स बनाया और देवदल को बड़े सुन्दर ढंग से चित्रित किया।

मदिरा के सेवन करनेवालों को शूद्र, राक्षस और चाण्डाल सम्बोधित कर समाज ने सदैव बहिष्कार किया है और उन्हें समाज-च्युत कर उन लोगों के प्रतिकूल प्रचार कर उन्हें घृणित उपाधियों से विभूषित किया है।

उस समय के समाज में मदिरा के सेवन करनेवालों के लिए समाज में बड़े कठोर नियम लागू थे।

सुना जाता है कि मध्यकाल में मुगल साम्राज्य में भी कुछ शासकों ने मदिरा सेवन करनेवालों पर बड़ा कड़ा प्रतिबन्ध लगा रक्खा था।

धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाएँ मदिरा को समाज से बिलकुल उन्मूलन कर देना चाहती थीं। तथा इसी कारण से इस सम्प्रदाय के लोगों ने अपने यहां इसका विशेष प्रचार किया कि मदिरा सेवन करनेवाला व्यक्ति किसी सम्प्रदाय में नहीं रह सकता।

एक सम्प्रदाय जो वाममार्गी कहलाते हैं अपने यहां इसको स्थान दिया। इसका सभी सम्प्रदाय और संस्थाओं ने घोर विरोध किया। अन्तिम परिणाम यह निकला कि यह सम्प्रदाय नष्ट हो गया।

ऋषि लोग अपने-अपने ग्रन्थों में इसके प्रति विरोध ही अंकित करते थे। तथा इसके सेवनकारी को समाज से च्युत कर देते थे। मदिरा प्रकृति के प्रतिकूल है। इसका एक एक उदाहरण पाठकों के समक्ष रखना आवश्यक समझता हूं। जिस समय मदिरा का प्याला हाथ में लेकर मुख के समीप लाते हैं, उस समय त्वचा में उसकी 'बू' पहुँचते ही त्वचा में सिकुड़न आ जाती है। आंख भी बन्द हो जाती है। परन्तु मनुष्य उसे जबरदस्ती पी जाता है। मदिरा के स्थान पर दूध का प्याला पीने के लिए जब मुख के निकट लाते हैं, उस समय कोई अंग उसे अस्वीकार नहीं करता बल्कि उसे बड़े चाव से पी जाता है। मदिरा का सेवन करने पर शरीर का प्रत्येक अंग उस समय व्यर्थ हो जाता है। बुद्धि भी नष्ट हो जाती है। तथा अश्लील बातें भी अधिक निकलने लगती हैं। तथा सारे शरीर को एक बार हिला देती है। और अत्यधिक पी लिया तो शरीर से बाहर (कै) मुख के द्वारा निकल जाती है। मनुष्य को बेहोश भी कर देती है। आदि आदि।

आजकल के समाज में विशेषकर अछूतवर्ग में इसका प्रचार अधिक मात्रा में पाया जाता है। विवाह आदि शुभ संस्कारों के अलावा मरने पर जब मृतक शरीर को प्रवाह करके वापस लौटते हैं उस समय बिरादरी के लोगों से दहेज लेकर शराबखाने में जाते हैं। तथा सब लोग बैठकर शराब पीते हैं। शादी आदि में मदिरा न पाने पर लोग लड़की-लड़के का सम्बन्ध-विच्छेद कर देते हैं। यदि अधिक मदिरा मिली तो खूब पीकर आपस में लड़कर जेल जाते और घर बरबाद कर डालते हैं। पंचायत में भी इसका चौधरियों पर अच्छा रिश्वत लेने का अनुपम असर करती है।

गांधीजी की देन हमारे ऊपर अपार रूप में वर्तमान है। हम इस भलाई को कदापि नहीं विस्मरण कर सकते; क्योंकि उन्होंने इस कुप्रथा को बन्द कराने में अधिकाधिक प्रयत्न किया है। इसी कारण से हम लोगों ने भी शराबबन्दी योजना को सहर्ष अपनाया। प्रत्यक्ष प्रमाण तो यह है कि जिस समय बापूजी ने शराबबन्दी-आन्दोलन छेड़ा उसी समय समाज की कुप्रथा को बन्द करने के लिए सभी लोगों ने बड़ी जोरदार अपीलें उपस्थित कीं।

प्रत्येक जाति के लोग बहुत प्रभावित हुए। विशेषकर अछूत समाज को तो उन्होंने अमृतदान दिया। उनकी सारी कमाई का पैसा इसी में व्यय होता था। अब हर स्थान में रोक-थाम हुई। लोग बिरादरी-प्रथा के अनुसार पंचायत में तय करने लगे कि इस प्रथा को शीघ्रातिशीघ्र समाज से उठा देना ही अनिवार्य है।

हमें बापू का काम पूरा करना है। उनकी योजना थी कि भारतवर्ष में शराब की प्रथा को बन्द कर दिया जाय।

इसीलिए हर प्रान्त में शराब को बन्द करने का कार्य प्रान्तीय मंत्रिमंडल की योजना में सन् १९३६ ई० में शुरू हुआ था और अब की बार इसे भारतवर्ष से अलग कर देने की योजना तैयार हो रही है कि जल्दी से जल्दी शराबबन्दी कानून लागू किया जाय। उसके लिए विशेष योजनाएँ बन रही हैं।

शराब का प्रचार विशेषकर अछूत समाज में है। उसके लिए सरकार उन्हीं के जातीय पंचायत द्वारा विवाह और दाह-प्रवाह में शराब की कुप्रथा बन्द कराने की प्रथा चालू करावे। साथ ही उनमें भक्ति की भावना का प्रचार कर उन्हीं के जाति द्वारा कंठी और जनेऊ का प्रचार कराये। तथा यह प्रथा जातिवार होनी चाहिए जिससे उनकी भावना भगवत्-भजन की ओर जाय। जिसमें उनकी जाति की सभा या पंचायत कराकर सामूहिक रूप से जनेऊ और कंठी पहनाने का प्रस्ताव करें और उन्हें कंठी पहनने के लिए बाध्य करें। जब यह लोग कंठी या जनेऊ पहन लेंगे तो इनकी भावना एकदम बदल जायगी और कंठी या जनेऊ गले में पहनने के साथ वह यह समझने लगेंगे कि अब हमने ईश्वर का चपरास पहन लिया है। मदिरा, मांस आदि बुरी वस्तुओं को सेवन नहीं कर सकते।

मदिरा आदि बुरी वस्तुओं का सेवन नहीं करेंगे। इससे उनकी आत्मा को एक प्रकार कंठी या जनेऊ का डर हो जायगा। इससे वह मादक वस्तुओं से वंचित रहेंगे। साथ ही इनमें धार्मिक प्रचार के लिए नियमित कार्य होना अति अनिवार्य है।

संदेश

माननीय पंडित गोविन्द वल्लभ पंत, प्रधान मन्त्री, सयुक्तप्रांतीय सरकार

हमारे देश में सब सत्पुरुष सदा सब प्रकार के नशों के विरोधी रहे हैं। नशों से मानसिक और नैतिक पतन होता है। सब धर्म और जन-मत के सब पक्ष नशों को हानिकर और त्याज्य समझते हैं। गरीबों के लिये तो नशा न केवल उनकी थोड़ी सी कमाई को ले जाता है, वरन् उनके कुटुम्बों का सर्वनाश कर देता है। इसलिये कांग्रेस ने अपना ध्येय सब प्रकार की नशाबन्दी बनाया है जिसमे शराब मुख्य है। इस सम्बन्ध में कांग्रेस ने युद्ध के पहले मंत्रिमंडल बनाने पर कुछ काम किया था; परन्तु उनके पदत्याग के बाद वह पलट दिया गया। अब हम फिर से उसे आरम्भ कर रहे हैं और पहले बदायूं, मैनपुरी, एटा, फर्रुखाबाद, सुल्तानपुर, परतावगढ़ और जौनपुर में १ अप्रैल से पूरी शराबबन्दी हो जावेगी। इसके सिवाय देहरादून जिले में शराब की सब दुकानें सरकार के अधिकार में आ जावेंगी और देहरादून और मसूरी शहरों में सिनेमाघरों की शराब की दुकानें बन्द कर दी जावेंगी और ऐसी कार्यवाही की जावेगी जिससे शराब का उपयोग कम से कम हो जावे। यह हम सबका कर्त्तव्य है कि देश के चरित्रबल की सतह को ऊँचा उठावें और विशेषकर गरीबों को सत्यानाश से बचावें चाहे हमें इसके लिये कायदे कानून ही क्यों न बनाना पड़ें। लेकिन जो कुछ हम चाहते हैं वह केवल दबाव से नहीं हो सकता। असली ध्येय तभी पूरा होगा जब स्वेच्छा से नशा त्याग किया जावे। यह सद्गुण अवश्य बढ़ाना चाहिए, क्योंकि इसी के द्वारा अन्त में दुर्गुण पर विजय हो सकती है। इसलिये मैं सब लोगों से यह प्रार्थना करता हूँ, चाहे वह किसी भी जाति, धर्म अथवा सामाजिक और राजनैतिक विचारों के हों, कि वे इस शुभ कार्य में हाथ बटावें और सरकार द्वारा चलाये हुए नशा-निषेध आन्दोलन में सब प्रकार से सहायता करें।

चरित्र का पतन राष्ट्र का पतन है

माननीय श्री शङ्करशरण सभापति प्रयाग हरिजन सेवक सङ्घ और इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज—

साप्ताहिक 'देशदूत' एक नशा-निषेधांक निकालने जा रहा है, इसे जानकर मुझे प्रसन्नता है। मादक वस्तुओं से किसी भी राष्ट्र की जो क्षति होती है उसकी कल्पना जनता जनार्दन आसानी से नहीं कर सकती। इसका सबसे बड़ा प्रभाव नागरिकों के चरित्र पर होता है। चरित्र का पतन राष्ट्र का पतन है। पूज्य महात्मा गांधी भारत को एक श्रेष्ठ राष्ट्र बनाना चाहते थे। यही कारण था कि उन्होंने मादक वस्तुओं के विरुद्ध लोगों की भावनाएं जागृति करने की कोशिश की। आज महात्मा जी हमारे बीच नहीं हैं। परन्तु नशा-निषेध उनका एक पुण्य काम था जिसे पूरा करना हर नागरिक का कर्तव्य है।

हरिजन आश्रम
प्रयाग, १० फरवरी

—शङ्करशरण

गहरी निद्रा का आनन्द

विज्ञान का आश्चर्यजनक आविष्कार स्लीपो (Sleepo) किसी सोते या जागते को सुंघा दीजिये। वह एक घंटे के लिए गहरी नींद में सो जायेगा और हिलाने से भी नहीं जागेगा। मूल्य ३) डाक-खर्च ।||) आना। यदि आप एक घंटे से पूर्व जगाना चाहें तो एवेको (Awako) सुँघाइए। मूल्य केवल ३) रु०। कम मिकदार या नमूना मुफ्त नहीं भेजा जाता। गारंटी की जाती है कि स्लीपो या एवेको दिल को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाता। आज ही आर्डर दें और अपना पता साफ और पूरा लिखें।

इम्पीरियल चैम्बर आफ साइन्स।
(D.D.A.) हलका नं० २१, अमृतसर।

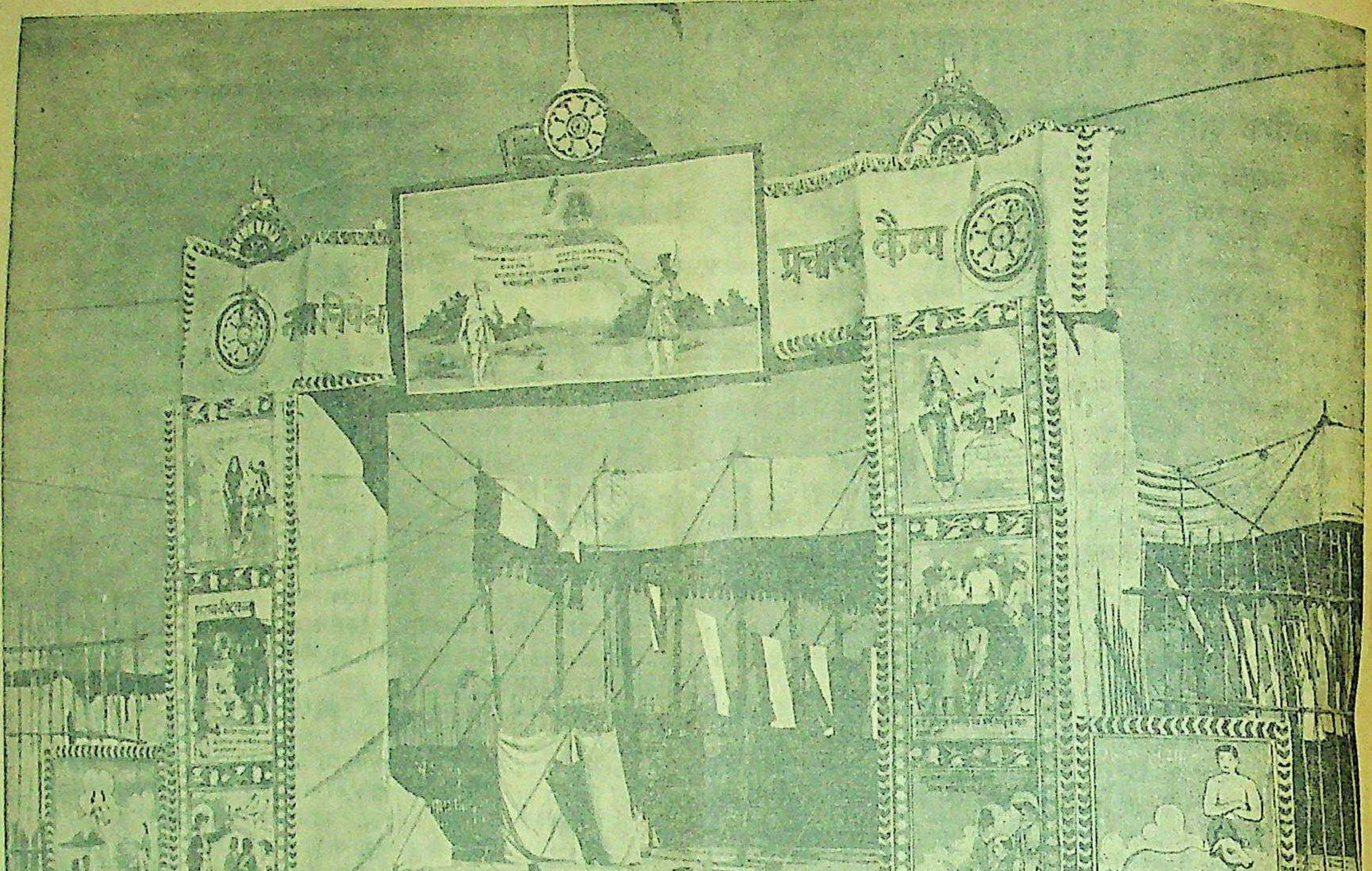

नशा-निषेध प्रचार-कैंप कुंभमेला प्रयाग के प्रमुख द्वार का चित्र

नशा-निषेध कैंप

चित्रों तथा कुछ विशेषताओं का वर्णन

लेखक, श्री स्वामी रामानन्द जी

आज दसियों वर्ष से मैं माघ मेले में प्रयागराज आता रहा हूँ। मुझे सदैव ही विद्वान् साधुओं के प्रवचन सुनने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा। समाचार-पत्रों के विज्ञापनों से अबकी बार यह ज्ञात हुआ कि खान-पान की सामग्री के सुप्रबन्ध का सरकार अपने ऊपर जिम्मेदारी नहीं लेना चाहती है। फिर भी अपने राम को कोई इससे आपत्ति नहीं हुई। मैंने तो सभी ग्रंथों में प्रयाग का माहात्म्य पढ़ रक्खा था। फिर अर्ध-कुम्भ का अवसर! मैंने तुरन्त निर्णय किया कि यदि शारीरिक कष्ट से प्रयाग में अगर मैं मर भी जाऊँ तो पुण्य है, पाप नहीं। अतएव मैं चल ही पड़ा और प्रयाग में माघ मेले की पवित्र धरती पर १२ जनवरी को आ पहुँचा। मेले का कार्यक्रम इस समय शीघ्रता से चल रहा था। अभी तक मेले में अधिक भीड़ नहीं थी। मैंने चुपचाप अपनी गुदड़ी एक उपकारी साधु की कुटी में रख दी। इसके बाद मेले में भ्रमण प्रारम्भ किया। ज्ञानी महापुरुषों के सत्संग के पश्चात् १३ जनवरी को जब मेले की चौड़ी सड़क के पास जा रहा था एक भोंपू से सुना "नशा-निषेध प्रचारक-कैम्प का उद्घाटन जो कि अर्ध-कुम्भ मेले में त्रिवेणी रोड पर स्थित है कल सायंकाल चार बजे माननीय चौधरी गिरधारीलाल जी, मंत्री आबकारी विभाग करेंगे। इस अवसर पर एक विराट् हरिजन सम्मेलन भी होगा। इत्यादि..." उत्सुकता से आगे बढ़ एक हिन्दी में छपा विज्ञापन भोंपूवाली गाड़ी में बैठे हुए एक कर्मचारी से लिया। अपनी कुटी में जाकर मैं बहुत देर तक यही सोचता रहा कि ऐसा हो कैसे सकता है? अपने पास बैठे हुए महानुभावों से पूछा क्या इलाहाबाद जिले में नशा बन्द हो गया; परन्तु सबने यह कहा ऐसा नहीं है। मेरा बहुत समय इसी सोच-विचार में व्यतीत हुआ। सन्ध्याकाल में बहुत से कैम्पों में गया सभी जगह इसी विज्ञापन से एक नई लहर उठती हुई प्रतीत हुई। १४ तारीख को मैं अपनी कुटी से करीब एक बजे निकल पड़ा और त्रिवेणी-रोड पर पहुँचा बांध से ऊपर चढ़ते हुए रोचक गानों की ध्वनि ने मेरा चित्त एक विशाल पंडाल की ओर आकर्षित किया। इसी तरफ बढ़ा। अपनी धुन में कैम्प में घुसना चाह रहा था कि कैम्प के सुसज्जित फाटक को देखकर मैं रुक गया।

फाटक पर लगे हुए चित्रों को मैंने एकटक खड़े होकर देखा फिर उन सबको एक एक कर समझने का प्रबल प्रयत्न किया। मुझको उनके समझने में अधिक समय न लगा। मेरा चित्त उन्हीं में लगा रहा, क्योंकि मुझको उस सुन्दर चित्रों के आदेशों से एक नई विचार-धारा उत्पन्न हुई। मैं उनकी व्याख्या स्वयं ही किये देता हूँ। यथार्थ में यह फाटक नशा-निषेध के उपचार का हार्दिक प्रचार करता हुआ मुझको नशा-निषेध की योजना का मौलिक रूप प्रतीत हुआ।

फाटक के बाईं ओर के पहले चित्र में अनेक जलयान विलयत से घूम-घूमकर आते दीख रहे थे। उनमें से एक अँगरेज उतरा खड़ा बङ्गाल प्रान्त में अकड़ रहा था। उसकी बगल में कई पुस्तकें हैं और एक हाथ में बोतल। भारत माता की शृंखला पहने हुए दुखद दृश्य और उनके ऊपर शराब की बोतलों की राक्षसी वर्षा से मेरा हृदय उमड़ आया। केशवचन्द्र सेन का अमर कथन है कि "भारत में जब अँगरेज आये तो शेक्सपियर और मिल्टन के अतिरिक्त ब्रांडी की बोतलें भी लाये" इस चित्र में अंकित था। उसने भारत के दुर्दिनों को और भी दुखद बना दिया था।

ठीक इसके नीचे के चित्र से जिसमें कि एक महिला शराबी के धक्के से गिरी पड़ी थी और दूसरी अपने हाथ से फिर भी शराबी को शराब खरीदने से मना कर रही थी, देख मेरा अंतःकरण दहल उठा। उसी के नीचे हमने पूज्य महात्मा गांधी का यह आदेश लिखा देखा कि उनका ध्येय महिलाओं को यह कार्य सौंपने का सम्पूर्ण अहिंसात्मक वातावरण उत्पन्न करने का था—धैर्य हुआ। फिर भी इस कलुषित मन में यह वासना उठी कि हमारी महिलाओं से यह अति कठोर काम क्यों लिया जा रहा था? ऐतिहासिक विचार-धारा ने दौड़कर मेरे हृदय को सान्त्वना दी कि नहीं महात्मा जी का यह आदेश ठीक था। पर्दे में घुसी हुई हमारी वीर महिलाओं ने अकथनीय धैर्य और नम्रता से काम ले शराब की दूकान के धरने के कार्य को संलग्न किया और सरकार की कलुषित आबकारी की आय को धक्का पहुँचाया। महात्मा गांधी की जय के भाव तत्काल ही उद्गारित हुए।

मेरी उत्सुकता बढ़ती गई। मैंने अपनी दृष्टि इसके नीचे के तीसरे चित्र पर डाली। एक मोटे अँगरेज की बगल में एक बड़ी किताब "आबकारी कानून" नामक थी देखा इसके अन्तर्गत अपने वेद को देख पहले हृदय में रोष का संचार होने लगा। फिर अपने देवता श्रीकृष्ण को एक कर में प्याला तथा दूसरे में बोतल लिये देख हृदय जल उठा। धैर्य के साथ इस चित्र का फिर देखा। [illegible] लिये हुए पंडित जी के वाक्य को मदिरा ही सुरा है, सोम है अध्ययन किया। उस चित्र का आशय समझा और ऊपर की ओर आबकारी की नीति की किताब से दबे हुए सभी धर्मों के ग्रंथों को दबा देख मेरी समझ में आ गया कि इस अँगरेज की लकड़ी और सभी चित्रित धर्म के प्रचारकों में घनिष्ठ सम्बन्ध था। रोष शान्त हुआ और अपने धर्म के दारुण दुरुपयोग जो कि ब्रिटिश ने इस लकड़ी द्वारा करवाया, देख हृदय में दुख की तरंगें उठने लगीं।

कुछ पल बाद ही मेरी निगाह इसके बायें ओर रक्खे हुए एक चित्र पर गई। शराबी की दशा देख मुझे घृणा हुई। फिर उसकी स्त्री की ओर जब ध्यान गया तो देखा कि वह एक अस्थिपिंजर गाय को दुह रही है और उसके थनों से लाल दूध निकल रहा है। उस क्रूर शराबी को इतना समय भी न था कि वह अपनी माता गो को खाना देता। अवश्य ही वह दूध नहीं था—खून था। इसको देख मैं रो पड़ा। आसपास में खड़े लोग मेरी ओर देखने लगे। आंसुओं की अविरल धारा कुछ देर तक बहती रही। इसी चित्र के एक टीन पर जिस पर घासलेट लिखा था मेरी दृष्टि खिंची। तत्काल ही गोमाता के श्राप का मुझे ध्यान आया और मैं चिल्ला उठा "हे, अन्ध भारत देश के नशा-ग्रसित निवासियो! यह गोमाता का श्राप ही है कि तूने उसको घास खिलाना ही बन्द कर दिया उसके फलस्वरूप तुझको स्वयं घी के बदले घी रूप में घास खानी पड़ी" है पतित तेरे लिये! यही उचित था!

मैं फिर फाटक के दाहिने स्तम्भ की ओर गया। इसके नीचेवाले चित्र पर मेरी आंख पड़ी। तुलसी की चौपा

शेष पृष्ठ २१ पर देखि

नशा-निषेध नीति के तीन पहलू

नैतिक, आर्थिक और राजनैतिक दृष्टि से क्या लाभ है ?

लेखक, श्री पन्नालाल श्रीवास्तव एम० ए०

नशा-निषेध का सक्रिय कदम सरकार की ओर से उठाया जा चुका है, कई जिलों में नशीली वस्तुओं पर प्रतिबंध लगाया गया है, इस दृष्टि से जनता का नैतिक, आर्थिक और राजनैतिक स्तर ऊँचा होना अनिवार्य है। महात्मा गांधी ने भी नशा-निषेध की नीति के इन्हीं तीनों पहलुओं पर सदा जोर दिया है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने इसी संबंध में प्रकाश डाला है जो पठनीय तथा विचारणीय है।

नशा-निषेध नीति के तीन पहलू हैं, नैतिक, आर्थिक और राजनैतिक। कांग्रेस कार्यक्रम में नशा-निषेध अथवा शराबबन्दी को शामिल करने का श्रेय महात्मा गांधी को है। गांधी जी नैतिकबल अथवा चरित्रबल ही अहिंसा की जड़ हैं। जब वह अपने प्रार्थना-भाषणों में अहिंसा की व्याख्या करते हैं तो यह बतलाते हैं कि निर्भयता, आत्मबल इत्यादि गुण संयम और इन्द्रिय-निग्रह से ही आते हैं और संयम की कुंजी है सादा और प्राकृतिक जीवन। किसी भी प्रकार का नशा न केवल शरीर को क्षीण करता है परन्तु आत्मबल का भी भंयकर ह्रास करता है। नशे में ग्रसित व्यक्ति कभी भी चरित्रवान् दृढ़निश्चयी और संयमी नहीं हो सकता। नीरोग और बलिष्ठ शरीर में ही बलिष्ठ आत्मा रहती है।

जब तरह तरह के नशों के द्वारा शरीर जीर्ण और रुग्ण हो जाता है तो उसमें और चाहे जो गुण रहें मनुष्यत्व नहीं रह जाता। और जब नशा किसी भी प्रकार का [illegible] न हो व्यक्तियों तक सीमित न रहकर सामाजिक कुप्रथा का रूप धारण कर लेता है तब वह समाज और उसके द्वारा निर्मित राष्ट्र भी पतन के गर्त में गिर जाता है। इतिहास और पुराण इस बात के साक्षी हैं। सभी जानते हैं कि यदुवंशी जिस प्रकार शराब के नशे में चूर होकर आपस में लड़ मरे। अफीम के नशे को अपनाकर चीनी राष्ट्र ऐसा पीनक में आया कि उसमें से आज तक नहीं निकल पाया है और उसके दण्ड आज तक भोग रहा है। सनयात सेन से लेकर च्यांगकाई शेक की राष्ट्रीय सरकार ने चीन में अफीम के नशा-निषेध के लिये जो सराहनीय प्रयत्न किये हैं वह सर्वविदित हैं। फिर भी स्वार्थी देशी और विदेशी व्यापारियों की स्वार्थ-परता के कारण चीन से यह भयानक कुप्रथा अभी तक समूल नष्ट नहीं हो पाई है। राजपूतों की जिस वीरता का लोहा सारे संसार ने मान लिया उसी को जब अफीम का चस्का लगा तो वह धूप के सामने ओसकण के समान लुप्त हो गई। जो लोग राजपूताने के सामाजिक जीवन के बारे में जानकारी रखते हैं वे जानते हैं कि आज भी अफीम का नशा वहां किस प्रकार प्रचलित है। इतिहास के पन्ने बतलाते हैं कि मुगलकाल में के अन्तिम काल में शासकवर्ग कितना नशेबाज हो गया था।

गांधी जी जब भारतीय राजनीति के क्षेत्र पर आये तो उन्होंने सबसे पहले भारतीयों की गुलामी और इस देश में अंग्रेजी राज्य के मूल तत्त्वों को पकड़ने की कोशिश की। महात्मा जी उतने अध्ययनशील नहीं हैं जितने मननशील। उन्होंने देखा कि अंग्रेजी राज्य की छत्रछाया में तरह तरह की नशेबाजी न केवल पनप रही थी, बल्कि उसे उत्साहित भी किया जा रहा था। उन्होंने तुरन्त ताड़ लिया कि यह चीज न केवल अंगरेजी राज्य की जड़ें मजबूत करती, वरन् राष्ट्र की आत्मा का भी [illegible] देती। इसलिये कर्मयोगी गांधी जी ने नशा-निषेध तुरन्त एक बड़ी नैतिक और राजनैतिक आवश्यकता मान ली। देश ने गांधी जी की सूझ का स्वागत किया और स्वतंत्रता संग्रामों में धरना और ताड़ के पेड़ काटने का कार्य जिस उत्साह के साथ किया गया, वह तो आज सभी लोग जानते हैं। नशा-निषेध के दो पहलू और हैं—राजनैतिक और आर्थिक, यद्यपि ये दोनों पहलू एक दूसरे से बहुत घनिष्ठता से मिले हुए हैं। जब सन १९३७ में कांग्रेस के हाथ में प्रान्तीय शासन की बागडोर आई तो यह आवश्यक था कि वह नशा-निषेध को अपने कार्यक्रम में रखते। गांधी जी तो इस काम को सर्वप्रथम स्थान देते थे। इस समय प्रश्न यह उठा कि यदि इस समय शराबबन्दी की जाती है तो प्रान्तीय सरकारों को अपनी आमदनी की खासी रकमें खोनी पड़ेगी जो कि इस समय वांछनीय नहीं है। कुछ लोगों ने कहा कि इस समय नशा-निषेध से अधिक आवश्यक शिक्षा प्रचार है और इस कार्य के लिये रुपये की बड़ी आवश्यकता है। यदि शराबबन्दी के कारण आय घट गई तो शिक्षा-प्रचार में बाधा पड़ेगी और शिक्षा-प्रचार होते ही शराब और अन्य प्रकार की नशाखोरी अपने आप बन्द हो जावेगी,क्योंकि लोग उसकी हानियों से परिचित हो जावेंगे। महात्मा गांधी को ये दलीलें जची नहीं। वे अपनी टेक पर अड़े रहे और अन्त में बड़ी मुश्किल से. इस बात पर राजी हुए कि अच्छा शराबबन्दी का कार्य धीरे धीरे चलाया जाये। कुछ जिलों से आरम्भ करके सारे प्रान्तों में फैला दिया जाये।

प्रान्तों में धीरे-धीरे कुछ जिलों से शराबबन्दी का कार्य आरम्भ हुआ और बढ़ने लगा। उसी हिसाब से सरकारी आय घटने लगी और जनता को लाभ होने लगा। इसी बीच में द्वितीय महायुद्ध आ गया और सब काम उलट-पलट गया। परन्तु युद्ध के बाद कांग्रेस सरकारों ने अपने अपने प्रान्तों में फिर वह कार्य दुगने उत्साह के साथ आरम्भ कर दिया है और वह तेजी के साथ चल रहा है। मद्रास प्रान्त तो इसी वर्ष पूर्ण नशेबन्दी कर देगा।

जब हम निषेध-नशा के राजनैतिक पहलू की ओर ध्यान देते हैं तो प्रायः लोगों को अमेरिका का उदाहरण देते हुए पाते हैं। लोग कहते हैं जब अमेरिका ऐसे देश में यह कार्य सफल नहीं हो पाया तो भारतवर्ष में क्या सफल होगा ? क्या भारत सरकार अमेरिका सरकार से अधिक शक्तिशाली है ? यहां आवश्यकता है भारतवर्ष और अमेरिका की विभिन्न परिस्थितियों के तुलनात्मक अध्ययन करने की। अमेरिका और भारतवर्ष दोनों की नैतिकता और राजनीति में बहुत भेद है। जब अमेरिकन सरकार ने नशाबन्दी का कानून पास करके शराबबन्दी का प्रयत्न किया तो उसे बहुत बडी शक्तियों का सामना करना पड़ा। वहां शराब के व्यापार में करोड़ों, अरबों रुपया लगा हुआ था। बड़े बड़े सेठ और व्यापारी उसमें शामिल थे। उनका प्रभाव संसारव्यापी था। उन लोगों ने रुपये के बल से समाचार-पत्रों के सफे अपने पक्ष में कर लिये और सरकारी अफसरों को घूस के जाल में फंसाकर चोरबाजार की धूम मचा दी। नशा के विरुद्ध अमेरिका की जनता में कोई नैतिक और धार्मिक बल नहीं था जैसा कि भारत के हिन्दुओं, बौद्धों और जैनों में है। इस कारण अमेरिका में यह प्रयोग सफल नहीं हो सका। परन्तु भारतवर्ष में यह प्रयोग सफलतापूर्वक आगे बढ़ाया जा रहा है। भाग्य से शराब अथवा नशा व्यापार के पीछे यहां 'बोतलों के राजा' नहीं है जो थैली के बल से समाचारपत्रों, सरकारी नौकरों और जाग्रत् जनमत को खरीद लें। हमारे देश में शराब बनाना और बेचना अधिकांश सरकार के हाथ में है। इसलिये जब सरकार निषेध-नीति की समर्थक हो जाती है तो उसका काम बहुत आसान हो जाता है। निम्नश्रेणी की दलबन्दी को छोड़कर वास्तव में नशा-निषेध के विरुद्ध कोई भी तर्क अथवा युक्ति नहीं है। यह कहना कि संसार में और किसी भी देश में नशा-निषेध की नीति सरकार द्वारा नहीं स्वीकृत है। यह काम तो केवल धार्मिक समितियों और पादरियों के हाथों में छोड़ देना चाहिए कोई तर्क नहीं है। फिर तो यह भी कहा जा सकता है कि चूंकि संसार के अन्य किसी देश के लोग धोती नहीं पहनते इसलिये हमें भी नहीं पहनना चाहिए केवल सूट पतलून पहनना चाहिए अथवा चूंकि हिन्दी अन्य किसी देश में नहीं बोली जाती इसलिये हमें भी उसे नहीं अपनाना चाहिए।

सबसे बड़ी बात यह है कि संसार के किसी भी देश में अथवा साहित्य में किसी भी नशे को लाभकारी अथवा सराहनीय नहीं कहा गया। प्रत्येक देश के उच्च कोटि के साहित्य में उसकी निन्दा ही मिलेगी। जगत्प्रसिद्ध अँगरेजी कवि शेक्सपियर ने लिखा है कि जब शराब मुह के भीतर जाती है तो बुद्धि बाहर निकल आती है। when the wine goes in, the wit comes out उसने और भी लिखा है कि समझ में नहीं आता कि कैसे लोग इस दुश्मन को अपने शरीर के अन्दर पहुँचाते हैं। संसार भर में घूम आइये इन्द्रियलोलुपों को छोड़कर और कोई नशा का पृष्ठपोषक नहीं मिलेगा।

अब नशा-निषेध के आर्थिक पहलू की ओर ध्यान दीजिए। अभी हाल में यह समाचार प्रकाशित हुआ है कि यू० पी० सरकार ने कानपुर और उन्नाव जिलों में शराबबन्दी करने का निश्चय कर लिया है इसके फलस्वरूप सरकार को ६५ लाख रुपया वार्षिक आय का घाटा होगा। आज-कल सरकार को अपनी विभिन्न योजनाएँ कार्यान्वित करने के लिये धन की अत्यधिक आवश्यकता है। एक एक पाई उनके लिये बहुमूल्य है। इसलिये ६५ लाख रुपये आय में से कम हो जाना मामूली बात नहीं है और यह तो केवल दो जिलों से हुई। इसके अलावा और भी तो सात जिलों में शराबबन्दी चल रही है। वहां भी लाखों रुपया वार्षिक की आमदनी खतम हो गई। इतना ही नहीं ऊपर से कई लाख सरकार को नशा-निषेध प्रचार में खर्च करना पड़ता है और 'सूखे' जिलों में आबकारी विभाग के कर्मचारियों की संख्या बढाना पड़ती है जो गैरकानूनी शराब तथा नशा नहीं बढ़ने देते। परन्तु इस आर्थिक प्रश्न का एक दूसरा पक्ष भी तो है। कानपुर का उदाहरण ले लीजिए। कानपुर में जो लाखों रुपया की शराब बिकती है उसका ६० प्रति सैकड़ा से अधिक वहां का मजदूर वर्ग खरीदता है। जो मजदूर दिन भर गाढ़ी मेहनत करने के बाद थकावट मिटाने के लिये शाम को शराब अथवा ताड़ी पीकर अपनी गन्दी झोपड़ी में आकर सो रहता है अथवा नशाजनित अन्य व्यभिचार करता है जब कि उसके बच्चे तथा स्त्री अधपेट खाकर बीमार तथा रुग्ण बने रहते हैं उसके लिये आप क्या कहेंगे। काबुलियों से उधार लेकर पीते हुए आदत से मजबूर श्रमिकों के लिये क्या कहेंगे ? लोग कहते हैं कि दिन भर के थके हुए आदमी के लिये नशा सबसे अच्छा विनोद है। नहीं वह विनोद नहीं है वह तो थके हुए शरीर को बेहोश कर देनेवाली चीज है जो शक्ति को क्षीण कर देता है। थके हुए आदमी के लिये काम से लौटने पर एक गिलास ताजा दूध अथवा दो चार ताजे फल ही सबसे अच्छी चीज है। क्यों न श्रमिक केनटीन उन्हें ये चीजें दें ? इससे उसकी कार्यशक्ति बढ़ेगी।

माना कि नशा-निषेध में आय की भारी हानि है पर यह भी तो देखना चाहिए कि वह आय कैसे आती उसके कारण कितने लोगों को कितने प्रकार के कष्ट भोगने पड़ते हैं। फिर जब सरकार लोकसेवक सरकार है, वह सहर्ष इस मद से प्राप्त हुई आय को त्याग कर रही है और उसके पास आय के अन्य साधन मौजूद हैं तब तो सब लोग नशाबन्दी का स्वागत करेंगे। परन्तु इस कार्य में सबसे बड़ी आवश्यकता है जनमत की। सरकार के हाथ मजबूत करने की जिससे चोर व्यापार न पनपने पावे। जब हम जनमत की बात करते हैं तब हमारा अभिप्राय उन लोगों से है, उस बड़े जन-समूह से है जो पढ़े-लिखे नहीं हैं और नशा-निषेध के लाभ को पूर्णतया नहीं समझते। इसलिये नशा-निषेध कार्य में सब देशप्रेमियों का सक्रिय सहयोग प्राप्त होना चाहिए।

संदेश

माननीय पंडित श्री कृष्णदत्त पालीवाल एम० एल० ए०, अर्थ मन्त्री तथा सूचना-मन्त्री संयुक्तप्रांतीय सरकार—

शराब, गांजा, चरस, अफीम, हीरोन वगैरह किसी भी किस्म का नशा सब धर्मों में बुरा बताया है। उससे नशा करनेवाले की बुद्धि, आयु और स्वास्थ्य का नाश होता है तथा घर की शान्ति भी मिट जाती है। इसलिए हर धर्मभीरु तथा लोकसेवी का कर्त्तव्य है कि वह न सिर्फ खुद ही सब नशों से दूर रहे बल्कि सबको उससे दूर रहने के लिए समझाने और इस तरह महात्मा गांधी की प्रेरणा से लोकप्रिय जनता की सरकार इस सम्बन्ध में जो सत्प्रयत्न कर रही है उसे सफल बनाने में योग दे।

—श्रीकृष्णदत्त पालीवाल

लखनऊ
१९ जनवरी, ४८

साधु और महात्मा क्या कहते हैं ?

महात्मा जी की आत्मा को तृप्त कीजिए

श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज, भारत सेवाश्रम संघ लिखते हैं—

अनेकों वर्षों के कठोर संग्राम और तपस्या के बाद आज हमारा हिन्दुस्तान जग स्वतन्त्र बन गया है। अब चारों ओर से पुनः रचना के काम में अग्रसर होना हमारा मुख्य व्रत हो गया। शराबबन्दी की समस्या भी देश में एक कठिन समस्या है। डेढ़ सौ वर्ष अंगरेजों के अधीन में परतन्त्रता के साथ-साथ बहुत प्रकार के व्यसन और दुर्गुण हमारे समाज जीवन में आ गये हैं। आज उन सबों को निकालने के लिए पूरी तरह से कोशिश करना हमारा कर्त्तव्य बन गया है। परम पूज्य महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में कांग्रेस के द्वारा नशा-निषेध के लिए काफी प्रयत्न हो गया है; परन्तु वह काम अब तक पूरी तरह से सफल नहीं हुआ। स्वतन्त्रता की प्राप्ती के साथ साथ आज हमको जो महान् मौका मिला है उसका सुयोग लेकर इस पुण्यभूमि भारतवर्ष से दूसरे प्रकार के दुर्व्यसनों के साथ इस व्यसन को भी हटाने के लिए हमको कटिबद्ध होना पड़ेगा। हमको यह सुनकर हर्ष हुआ कि युक्त प्रान्तीय सरकार की तरफ से इस समस्या के समाधान के लिये हार्दिक प्रयत्न हो हुआ है। इसी अर्धकुम्भ मेले में एक विशाल पंडाल जिसका फाटक सुन्दर चित्रों से सुसज्जित था केवल "नशा-निषेध" के प्रचार के लिए बनवाया गया। इस कैम्प का कार्य-क्रम सफल बनाने के लिये इसके संचालक बहुत परिश्रम करते रहे, धर्म के धुरन्धर विद्वानों के भाषणों के अतिरिक्त धार्मिक गाने तथा कीर्तन से रोचक बनाया गया है। मुझको भली भांति मालूम है कि इस प्रचार का प्रभाव अर्धकुम्भ में आई हुई जनता पर बड़ा हितकर पड़ा। जिन लोगों ने "नशा-निषेध" के प्रतिज्ञापत्र भरे उनमें से जितनों से मेरी बात हुई वे सभी सच्चे दिल से यह प्रतिज्ञा करके आये थे। महात्माजी के खेदजनक अवसान के बाद उनकी आत्मा को तृप्त करने के लिए जब हम लोग प्रयत्न करते हैं तो उनके दिल दुखानेवाली इस समस्या का समाधान करके उनकी स्वर्गगामी आत्मा को हम सन्तुष्ट करेंगे।

कुंभ मेला कैंप, प्रयाग

नशीली वस्तुओं का वहिष्कार

श्री विष्णुदास शर्मा, प्रधान मंत्री, श्री सनातन धर्म, महावीर दल, पंजाब लिखते हैं—

स्वतन्त्र भारत में आज भारतीय समाज के शारीरिक मानसिक, आध्यात्मिक, आर्थिक और सामाजिक स्तर को उन्नत करने के लिए नाना प्रकार के उपायों को क्रियात्मक रूप में भारत सरकार परिणत करने का भरसक प्रयत्न कर रही है। इस दिशा में सफलता-प्राप्ति के लिए जहां कई प्रकार के व्यवसायों की उन्नति अपेक्षित है वहां पर, कई पदार्थों के उपयोग तथा उपभोग नियन्त्रण करना भी अतीव उपादेय है, क्योंकि किसी भी देश को उन्नति के शिखर पर पहुंचाने के लिए उसके वासियों को शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक रूप से ऊँचा उठाने तथा उन्हें आदर्श चरित्र और सदाचारसम्पन्न बनाना परमावश्यक होता है। ऐसे पुण्यमय जीवन के लिए मानव-समाज को संयमी होना चाहिए। इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करनी चाहिए, भावनाओं में सात्विक शक्तियों का समावेश करने के लिए ऐसी वस्तुओं के सेवन से दूर रहना चाहिए जिनका दूषित और कुत्सित प्रभाव उन्हें सब प्रकार से रसातल की ओर ले जावे। कौन नहीं जानता कि नशीली वस्तुओं (अफीम, सुल्फा, गांजा और मद्य) का सेवन कितना भयंकर परिणामवाही होता है। इनका सेवन शरीर के अंगों में निर्बलता, मानसिक शक्तियों में उच्छृङ्खलता, बुद्धि में विकार और आत्मिक शक्तियों का ह्रास करता है। इसलिए संसार के सभी विवेकशील मनस्वी व्यक्तियों ने इनके सेवन का निषेध किया है। आज भारत सरकार प्रायः सर्वत्र प्रान्तीय सरकारों द्वारा इन पर रोक लगा रही है। जनता को राष्ट्र की भावी उन्नति को ध्यान में रखते हुए इसमें पूर्ण रूप से सहयोग देना चाहिए। मैं आशा करता हूं कि श्रीमहावीर दल के स्वयंसेवक अपने परम पावन उद्देश्य को लक्ष्य में रखते हुए स्वयं भी इन नशीली वस्तुओं के सेवन से बेचैन तथा जनता को भी इनके चंगुल में फसने से बचाने में राष्ट्र के प्रति अपनी सेवायें अर्पण करेंगे।

मादक वस्तुएँ उन्नति में बाधक हैं

श्रीमत् स्वामी भागवतानन्द जी महाराज महामण्डलेश्वर दशनामाचार्य काशी, हरिद्वार—

राष्ट्र के अनेक दुःखों के कारणों में मादक वस्तुओं का सेवन मुख्य कारण है। मनुष्य की विशेषता सद्बुद्धि-सम्पन्नता में ही है, उस बुद्धि को दूषित विकृत करनेवाले मद्य आदि मादक द्रव्य ही हैं। भगवान् कृष्ण ने गीता में कहा है कि "बुद्धि नाशात् प्रणश्यति" बुद्धि नाश ही पतन की पराकाष्ठा है। छान्दोग्य उपनिषद् में स्पष्ट लिखा है कि "आहार शुद्धौ सत्त्व शुद्धिः" खान पान शुद्ध होने पर ही अन्तःकरण शुद्ध होता है। अतः हमारी आध्यात्मिक, धार्मिक, आर्थिक उन्नति के विरोधी मादक पदार्थों का प्रचार भगीरथ प्रयत्न से रोका जाना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को इस सत्कार्य में भाग लेना चाहिए।

रुदन गीत

लेखक, श्री शालिग्राम पथिक

ओ! पूर्ण पुरातन मानुष बापू!
बापू! बापू!! चले कहां?
यह मानवता की जर्जर नैया
तुम बिन पहुँचेगी कहो कहां?
क्षण केवल क्षण भर को तो,
रुकते जाओ, सुनते जाओ
केवल, केवल दो शब्दों में
कहते जाओ, कहते जाओ।
बिन प्राण देह, तुम बिन भारत,
मानवता कैसे टिके यहां?
ओ! पूर्ण पुरातन मानुष बापू!
बापू! बापू!! चले कहां?

मादक वस्तुओं का निषेध

श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य गीताव्यास महामण्डलेश्वर श्री विद्यानन्द जी महाराज गीता मंदिर (अहमदाबाद)

आधुनिक जगत् में कुछ समय से मादक वस्तुओं का उपयोग असाधारण रीति से होने लगा है जिसके द्वारा जन-समाज की महान् अवनति होती जा रही है। धनवान् ही नहीं अनेकों निर्धन व्यक्ति भी इस महान् रोग के शिकार हो रहे हैं जिसे देख हृदय में महान् क्षोभ होता है भारतवर्ष की निर्धनता एवं निर्बलता का एक मुख्य कारण मादक वस्तुओं का सेवन भी है, भारतवर्ष की जनता मादक वस्तुओं के सेवन होनेवाले दोषों से परिचित हो एव इस दुर्गुण का त्याग करके अपनी लौकिक एव पारलौकिक उन्नति प्राप्त करे, इसलिए इस विषय में मैं अपना थोड़ा सा विचार प्रकट कर रहा हूँ। मादक वस्तुओं का सेवन करनेवाला पुरुष मनुष्यता का त्याग कर असुरत्व ग्रहण कर लेता है, मनुष्य होकर साक्षात् राक्षस बन जाता है जैसा कि किसी मद्य पीनेवाले पुरुष को मद्य-सेवन के पश्चात् देखने से प्रत्यक्ष अनुभव हो सकता है। इतना ही नहीं मादक वस्तुओं के सेवन से अनेकों भयंकर रोग उत्पन्न होते हैं दमा, खांसी, क्षय इत्यादि इसी के कुपरिणाम हैं। इसके अतिरिक्त धन-हानि की तो बात ही क्या पूछनी मद्य-सेवन करनेवाला घर में थाली लोटा भी नहीं छोड़ता है। हजारों ऐसी घटनायें नित्य देखने में आती हैं कि मादक वस्तुओं के सेवन करनेवाले अपने शरीर पर का वस्त्र भी बेच डालते हैं इससे बढ़ी निर्धनता एवं हानि का क्या प्रमाण दिया जा सकता है? सबसे बड़ी बात तो यह है कि मादक वस्तुओं का उपयोग करनेवाला पुरुष लोक ही नहीं अपना परलोक भी बिगाड़ लेता है जैसा कि भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है— अधो गच्छन्ति तामसा। बस संक्षिप्त में नशे का उपयोग करनेवाला अपना सर्वनाश कर लेता है। इस अर्धकुम्भ में जो नशा-निषेध प्रचारक कैम्प की ओर से प्रचार हुआ है इसे देखकर हमें बड़ी प्रसन्नता प्राप्त हुई है प्रभु इसके प्रचारकों को आरोग्य एवं सफलता प्रदान करें।

T. B.
टी० बी०
"तपेदिक" रोग के हताश रोगियो—
जबरी (jabri) का नाम नोट कर लो, यही इस दुष्ट रोग से रोगी की जान बचानेवाली शक्तिशाली औषधि है। एक बार परीक्षा करके देख लो, परीक्षा ही नमूना रखा गया है, जिसमें तसल्ली हो सके। मूल्य नं० १ (स्पेशल) पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन २०) रु०। 'जबरी' नं० २ पूरा कोर्स २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु० महसूल आदि अलग है। आज ही आर्डर देकर रोगी की जान बचावें। तार का पता "jabri" jagadhri काफी है।
पता :—रायसाहब के० एल० शर्मा, रईस (D) 'जगाधरी' (E.P.)

गर्भ का रहना रुक सकता है
यदि आप स्त्रियों की निर्बलता! संतान की अधिकता, निर्धनी या किसी और कारण से ज्यादा संतान की आवश्यकता नहीं तो आँख मूंदकर
अख़्त्यारी
का सेवन अपनी पत्नी को करावें। इससे बिना किसी कष्ट के संतान का होना बंद हो जायगा और जब चाहेंगे होने लगेगा। मूल्य १०।।) है।
पता—हकीम [illegible] [२२] हौज काजी देहली

ईसा के लगभग ४५० वर्ष पहले भारतवर्ष में भगवान् बुद्ध ने मानव-समाज को मुक्ति का मार्ग बताया था। कठिन तपस्या के बाद उन्होंने यह समझा कि आवागमन का चक्र ही दुःख का मूल कारण है जिससे छुटकारा केवल सदाचारी ही पा सकता है। वे कहते थे कि यदि कोई मनुष्य इस जीवन में अच्छे कर्म करेगा तो उसे दूसरी बार अधिक श्रेष्ठ जीवन प्राप्त होगा। इस प्रकार प्रत्येक जन्म में उसका जीवन उन्नत होता जायेगा और अन्त में वह जन्म मरण से मुक्त हो जायेगा। बुरे कर्मों से मनुष्य अवश्य नीचे गिर जायेगा और अन्त में उसको निर्वाण नहीं प्राप्त होगा। सत्य, जीवन की पवित्रता, दानशीलता तथा आत्मा-संयम ऐसे गुण हैं जिनकी प्राप्ति के लिए मनुष्य को निरन्तर प्रयत्न करना चाहिए। भगवान् बुद्ध के मुख से निकली हुई उस समय की वाणी विचार करने पर कितनी सत्य प्रतीत होती है। जो बात एक व्यक्ति के लिए सत्य है वही समाज तथा राष्ट्र के लिए भी सही हो सकती है। कोई भी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र उसी समय महान होगा जब उसके इर्द-गिर्द सदाचार का वायुमंडल होगा जिसका होना नशा-निषेध के बिना असम्भव है।

जैसा भोजन वैसा भाव

किसी भी व्यक्ति के सदाचार की सात्विकता उसके भोजन पर अधिकतर निर्भर करती है। 'जैसा भोजन वैसा भाव' की कहावत निराधार नहीं बल्कि यह एक वैज्ञानिक सत्य है। हर धर्म के प्रवर्तक तथा धार्मिक महापुरुषों ने तामसिक भोजन का विरोध किया है इसलिए नहीं कि उससे शारीरिक क्षति होती है बल्कि इसलिए कि उसके सेवन से भाव तामसिक होते हैं जिसके कारण धार्मिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक प्रवृत्तियां दूर होती चली जाती हैं। इस समय पाश्चात्य देशों का नमूना हमारे सामने है। पाश्चात्य सभ्यता के निर्माणक यद्यपि धार्मिक तथा नैतिक सिद्धान्तों की दुहाई देते नजर आते हैं फिर भी उनके द्वारा जिस सभ्यता की रचना हुई है, वह उन सिद्धान्तों से कोसों दूर है। वास्तवतः उस सभ्यता की बुनियाद 'खाओ पीओ मौज उड़ाओ' की नींव पर खड़ी हुई पाश्चात्य सभ्यता का यह महल ऊपर से भले ही आकर्षक है परन्तु भीतर घुसने पर उसमें ऐसी गंदगी भरी पड़ी है जिससे मानवता का नाश हो रहा है और वह एक ऐसे पवित्र स्थान की खोज में है जिसमें नैसर्गिक पवित्रता के साथ-साथ आत्मीयता हो तथा जिसके वातावरण में पहुंचकर आसुरी प्रवृत्तियां सर न उठा सकें। शराब, कामिनी तथा कंचन की गोद में पली पाश्चात्य सभ्यता ने आज विश्व-शान्ति को बहुत बड़ा खतरा पैदा कर दिया है। विश्व की संस्थापना तथा वास्तविक विश्वशान्ति कायम करने के लिए आज मानव को क्षण भर रुककर विचार करना है। मादक वस्तुएं मानव को पशु बनाती हैं। मानव पर समाज-निर्माण का बहुत बड़ा दायित्व है जिसको वह आज पूरा नहीं कर पा रहा है। मादक वस्तुओं के सेवन से हृदय का भगवान सुप्त हो गया है और राक्षसी प्रवृत्तियां बलशाली बनकर इन्सान को हैवान बनाती चली आ रही हैं। हमें अपने अन्दर के सुप्त देवता को जगाना है। सात्विक सदाचार का अनुसरण कर उसमें शक्ति लानी है ताकि वह अपने बल से राक्षस को पछाड़ सके।

नशा-निषेध और राष्ट्र-निर्माण

महात्मा गांधी के प्रति यह सबसे बड़ी श्रद्धांजलि है कि नशे का बहिष्कार किया जाय

लेखक, श्री श्यामबिहारी विरागी, बी० ए०

नशा-निषेध का प्रबलता ज्यों ज्यों होने लगी त्यों त्यों राष्ट्र-निर्माण की नींव और भी दृढ़ होगी। इस लेख में लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि नशाबंदी से राष्ट्र की उन्नति और निर्माण में किस प्रकार सहायता प्राप्त हो सकती है? यदि नशे की आदत और अपव्यय बंद हो जाय तो राष्ट्र की आर्थिक तथा नैतिक उन्नति होने में सदेह नहीं। लेखक पठनीय तथा सुन्दर है।

रामराज्य या रावणराज्य

हमारे देश के नेता भारत में रामराज्य लाना चाहते हैं। इससे यह स्पष्ट है कि इस समय विश्व में रावण-राज्य कायम है। रावण प्रचण्ड पंडित, राजनीतिज्ञ तथा विद्वान् था। आज भी विद्वानों की कमी नहीं। एक से एक धुरन्धर राजनीतिज्ञ मौजूद हैं। रावण बुरा था, क्योंकि उसके राज्य की बुनियाद शराब, कामिनी तथा कंचन पर कायम थी जिससे आसुरी प्रवृत्तियां जोर पर थीं और ब्राह्मण-कुल में पैदा होकर भी रावण और उसका वंश राक्षस कहा जाता था। राम ने रावण का संहार किया। देवता ने राक्षस पर विजय पाई। आज भी वही प्रश्न हमारे सामने है। राक्षसी लक्षण इन्सान में बढ़ते चले जा रहे हैं। रावण-राज्य से विश्व कांप रहा है। परन्तु राम कहां हैं? भारतवर्ष को राम पैदा करना है। आज भारत पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। सबसे पहले अपनी आसुरी प्रवृत्तियों को हमें स्वयं रोकना है। रामराज्य कायम करने के लिए हमें महान् प्रयास करना होगा। यह किसी एक का काम नहीं। यह तो सबके सहयोग से ही हो सकेगा। भारत के हर नागरिक को राम का सिपाही बनना है। शराब, कंचन तथा कामिनी से हटकर भगवान् बुद्ध के शब्दों में हमें सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाक्य, सम्यक् कर्मान्त तथा सम्यक् समाधि के पथ को अपनाना है। सृष्टि में शरीर की कोई कीमत नहीं। कीमत तो भावों की होती है। हमें अपने भावों को कीमती बनाना है। शरीर तो केवल घर-मात्र है। अभी तक हम घर को ही सुन्दर बनाते चले आये हैं चाहे उसमें रहनेवाली आत्मा अन्दर सड़ ही क्यों न रही हो। अब हमें अपना दृष्टिकोण बदल देना है। सोई हुई आत्मा को हमें स्वच्छ हवा देनी है, पौष्टिक तथा सात्विक पदार्थों को खिलाना है तथा सुगन्धमय जल से नहलाकर उसे खड़ी करना है ताकि उसमें जीवन-संचार आये और शरीररूपी घर में वह ऐसी सुगन्ध पैदा करे जिसके सम्पर्क से दूषित वायु पवित्र हो जाय। नशा-निषेध अनुकूल परिस्थिति पैदा करने की पहली सीढ़ी है।

अमर शान्ति की कुंजी

जब से सृष्टि कायम हुई तभी से इन्सान अमर शान्ति की कुंजी ढूंढ़ रहा है। कोई प्रजातन्त्रवाद को अच्छा समझता है तो कोई समाजवाद की गाड़ी आगे खड़ा करके खुश होता है। बहुतों को साम्यवाद में रामराज्य की झलक दिखाई पड़ती है; परन्तु मुझे तो इन विभिन्न 'वादों' में एक अजीब उलझन दिखाई देती है। इन सबकी बुनियाद कच्ची है, कमजोर है। ठोस बुनियाद राजनीतिक तथा आर्थिक उलट-फेरों पर कभी कायम नहीं हो सकती। इसके लिए हर नागरिक की भावनाएं ठीक करनी होंगी। आर्थिक तथा सामाजिक समानता वस्तुतः नहीं लाई जा सकती, परन्तु शुद्ध नैतिक वातावरण पैदा करके इनका सामंजस्य अवश्य लाया जा सकता है। एक कुटुम्ब में परस्पर प्रेम-भावना इसलिए नहीं रहती कि उनमें आर्थिक तथा सामाजिक समानता है बल्कि इसलिए रहती है कि उनमें एक दूसरे के लिए त्याग की भावना है। मां स्वयं भूखी रहकर बच्चों को सब कुछ खिला देती है और उसे इसी में आनन्द मिलता है। एक किसान भाई दिन भर हल जोतकर रूखी सूखी रोटी खाकर अपने भाई को बी० ए० पास कराके ऊंचे ओहदे दिलाकर प्रसन्न होता है। दोनों भाइयों के सामाजिक तथा आर्थिक असमानता के बावजूद भी दोनों एक दूसरे को अपना समझते हैं तथा एक दूसरे को विकसित देख प्रसन्न होते हैं। जो बात एक कुटुम्ब के लिए सही है, वही एक राष्ट्र तथा समस्त विश्व के लिये भी सही हो सकती है। इससे यह स्पष्ट कि अमरशान्ति की कुंजी भावों को बदल देने में है और इसका सम्बन्ध हर व्यक्ति के मानसिक विकास से है। जब तक एक परिवार में आसुरी प्रवृत्तियां प्रवेश नहीं करतीं तब तक आपसी प्रेम की दरिया बहा करती है। परस्पर त्याग की भावना प्रबल होती है और उस कुटुम्ब में रामराज्य कायम रहता है। आज हमें सत्य को पकड़कर सोचना है और इसे सम्पूर्ण राष्ट्र पर ढाल देना है। विचार करने पर यह ज्ञात होता है कि इस भावना का सम्बन्ध परिवार के अन्दर रहनेवाले व्यक्तियों के आध्यात्मिक विकास से है। जिस परिवार का जिस स्तर तक नैतिक तथा धार्मिक विकास होता है उसी स्तर तक उनमें आपसी प्रेम, एक दूसरे के लिए त्याग तथा आत्मसंयम की भावनाएं मौजूद होती हैं। इससे यह सिद्ध है कि अमरशान्ति की कुंजी नागरिकों के आध्यात्मिक विकास पर निर्भर है।

नशा-निषेध बिना आध्यात्मिक विकास असम्भव

आज स्वतन्त्र भारत के सामने महान् काम पड़ा है। यहां की आसुरी प्रवृत्तियों का विनाश कर हमें सारे विश्व को अमरशान्ति की शिक्षा देनी है। राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी का वध यह जाहिर करता है कि हम आसुरी प्रवृत्तियों के शिकार बनते जा रहे हैं। उस महान् आत्मा की पुकार हमें सुननी है। अभी तक हमने तिरस्कार किया है और वास्तविक रूप से कभी भी उनके मार्ग को नहीं अपनाया है। आज स्वर्ग से उनकी आत्मा पुकारकर कह रही है कि भारतीयो उठो अपनी राक्षसी प्रवृत्ति को खतम करके भारत को सुन्दर बनाओ। मानवता के श्रेष्ठ पुत्र महात्मा गांधी की वाणी में ही हमारा भविष्य निहित है। यह एक खुला सत्य है कि हमारा आध्यात्मिक विकास नहीं हो सकता जब तक हमारे विचार सात्विक नहीं होंगे। इसके लिए सम्पूर्ण नशा का सम्पूर्ण विनाश आवश्यकीय है। सुन्दर फूल पैदा करने के लिये सुन्दर खेत बनाना होता है। राष्ट्र का निर्माण आसान काम नहीं। प्रत्येक नागरिक को त्याग, आत्मसंयम तथा सदाचार के मार्ग पर आ जाना है। इसी में भारत का कल्याण है, विश्व का कल्याण है तथा यही पूज्य महात्मा गांधी के लिये सबसे सुन्दर श्रद्धांजलि है।

सन्देश

माननीय पंडित केशवदेव मालवीय एम० एल० ए०, मंत्री उन्नति और विकास-विभाग, संयुक्तप्रांत

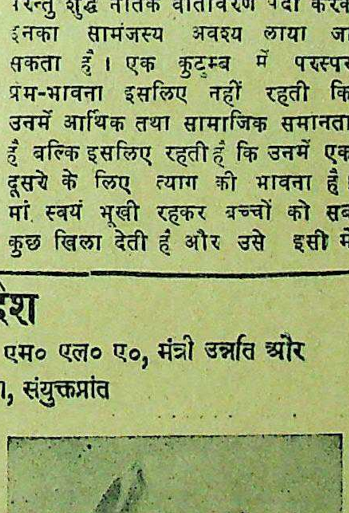

कांग्रेस सरकार की उन्नति योजनाओं में नशाबन्दी एक खास योजना है। शराब, गांजा, अफीम, चरस आदि नशीली वस्तुओं की आदत हर तरह से हानिकर है जिसे छुड़ाने के लिये जनता की सरकार पूरी कोशिश करेगी। इस काम को पूरा करने के दो ही उपाय हो सकते हैं। एक नशीली चीजों की बिक्री बन्द करना और दूसरा जनता को बताना और समझाना कि नशाखोरी से किस किस तरह की भयंकर हानियां होती हैं। आशा है कि लोग, सरकार के नशा-निषेध प्रचार-कार्य से लाभ उठावेंगे। साथ ही नशीली वस्तुओं को त्यागने की भावना उत्पन्न होगी।

—केशवदेव मालवीय

मरदानाकमज़ोरी

गुप्त फुंसी फोडे आदि गुप्त रोगों के

भारत भर में प्रसिद्ध विशेषज्ञ

कविराज ब्रह्मस्वरूप बी० ए०

(D.A.) फतेहपुरी देहली।

शरणार्थी लड़कियाँ

विवाह योग्य पढ़ी लिखी शरणार्थी तथा दूसरे अच्छे खानदान की पंजाब व यू० पी० की लड़कियों की लिस्ट व फ़ोटो पांच रुपया भेजकर मंगवायें। शादी का शीघ्र ही प्रबन्ध किया जाता है। व्यर्थ पत्र-व्यवहार न करें।

मदनगोपाल बी० ए० मैनेजर हैप्पी मैरिज, बना स्ट्रीट, सदर बाजार, देहली

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपको इन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

डालडा में
तली हुई पूरियां
सदैव
उत्तम बनती हैं

पूरियां गेहूँ के आटे, मैदे अथवा दोनों के मिश्रण से बन सकती हैं। अच्छी पूरियां बनाने के लिये आटे में डालडा सानिये और पर्याप्त पानी मिला कर खूब अच्छी प्रकार से गूँधिये यहां तक कि गुंधा हुआ आटा मुलायम पड़ जाये। इसे मुट्ठियों से दबा कर पानी छिड़किये और इसे ढक कर एक घंटा पड़ा रहने दीजिये। फिर इस के पेड़े बनाइये, बेल कर गोल कीजिये, गरम डालडा में तलिये और करछी से आहिस्ता आहिस्ता चक्राकार रूप में दबाइये। पूरियां जब फूल जायें तो उलट दीजिये। कुछ लाल होने पर कढ़ाई से उतार लीजिये, कागज पर रखिये और गरम गरम परोसिये। डालडा में तली हुई पूरियां पौष्टिक होती हैं।

क्या आप को पाक-सम्बन्धी कोई उलझन है? है तो लिखिये:—

दि डालडा एड्वायज़री सरविस

पोस्ट बॉक्स नं. ३५३, बम्बई १

DALDA
VANASPATI

HVM. 75-172 HI

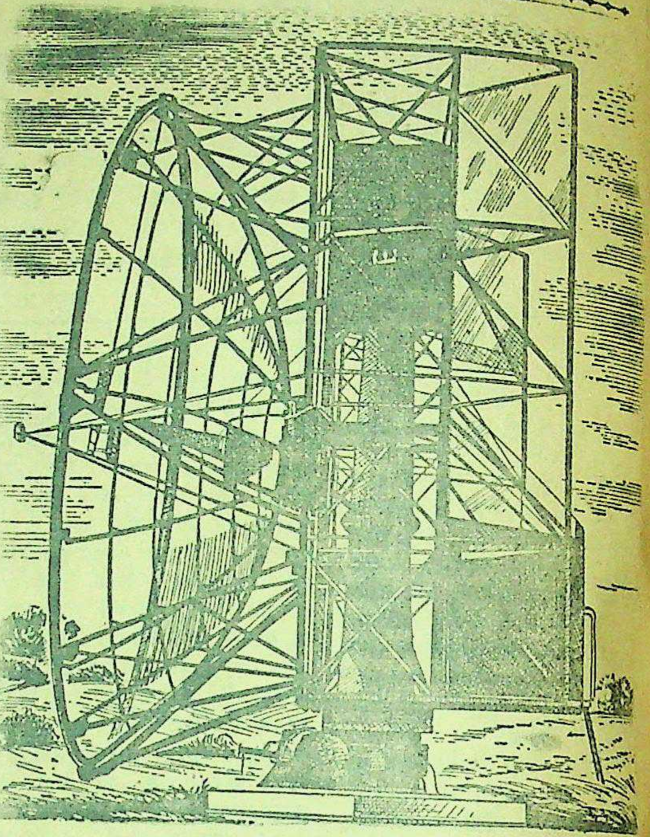

"राडर" का आविष्कार

तार, टेलीफ़ोन और वायरलैस के पश्चात ध्वनि का एक चमत्कार "राडर" (Radar) का आविष्कार है। रेडियो की सूक्ष्म से सूक्ष्म तरंगों की सहायता से दूर के तथा अदृश्य पदार्थों का भी पता चल जाता है। इस प्रकार राडर द्वारा दूरी, अन्धेरे या धुन्ध के कारण छिपी वस्तु भी दीख पड़ती है। आक्रमण करने वाले बम-मार जहाज़ों की खोज करने के लिये इस शस्त्र का आविष्कार आत्म-रक्षा के निमित्त किया गया और यह युद्ध में विजय प्राप्त करने में वर्तानिआ का सहायक सिद्ध हुआ। तदनन्तर इस ने आक्रमण करने में बड़ी सहायता दी और शत्रु की शक्तिशाली युद्ध सामग्री को नष्ट करने में उपयोगी सिद्ध हुआ।

शान्ति-काल में भी इस के विविध प्रयोग हैं। इस की सहायता से समुद्री जहाज़ यात्रा कर सकते हैं। वायुयान राडर की तरंग के साथ साथ उड़ान करते हुये अपने लक्ष्य पर सुगमता और कुशलता पूर्वक पहुँच सकते हैं। इस प्रकार आधुनिक यात्रा सम्बन्धी अनेकों बाधाओं पर विजय प्राप्त कर ली गई है। युद्ध संग्राम का शस्त्र शान्ति-काल का उपयोगी यन्त्र सिद्ध हो रहा है।

आप के पास भी एक शक्तिशाली शस्त्र है जिसका दुरुपयोग सहस्रों के लिये दुखदाई और सदुपयोग सुखदाई सिद्ध हो सकता है। यह शस्त्र है आप के धन की बचत। यदि आप इस बचत का अपव्यय करेंगे या इसे किसी अनुचित मद में लगायेंगे तो आपका धन व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय परिस्थिति के लिये हानिकारक सिद्ध होगा, चीज़ों के दाम और भी अधिक बढ़ जायेंगे। इसके विपरीत यदि आप धन बचायेंगे तो राष्ट्रीय सम्पत्ति की वृद्धि होगी और आपकी अपनी आर्थिक दशा भी उन्नत होगी

आजकल वस्तुओं की कमी है। इन के मूल्य भी चढ़े हुये हैं। आप माल का ख़रीदना उस समय तक स्थगित क्यों नहीं कर देते जब तक श्रेष्ठतर वस्तुएं सुलभ नहीं हो पातीं? बीमा पॉलिसी, सहकारी साख समिति, डाकख़ाने का सेविंग्ज़ खाता, नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स, और सरकारी लोन (कर्ज़े), धन लगाने की सुरक्षित मद हैं।

भूमि, सम्पत्ति, सोने चांदी के पांसे, आभूषण, द्रव्य, बना माल, और सट्टे [illegible] पर रुपया न [illegible] के शीघ्र ही कम हो जायंगे।

चढ़ी कीमतों को रोकिए
धन का अपव्यय न कीजिए

भारत सरकार के फ़ाइनेन्स विभाग द्वारा प्रकाशित

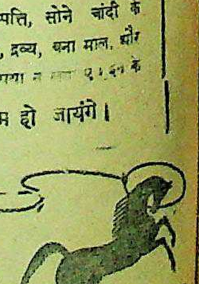

सार्वजनिक जीवन में नशा-निषेध-आन्दोलन के प्रवर्त्तक महापुरुष महात्मा गांधी

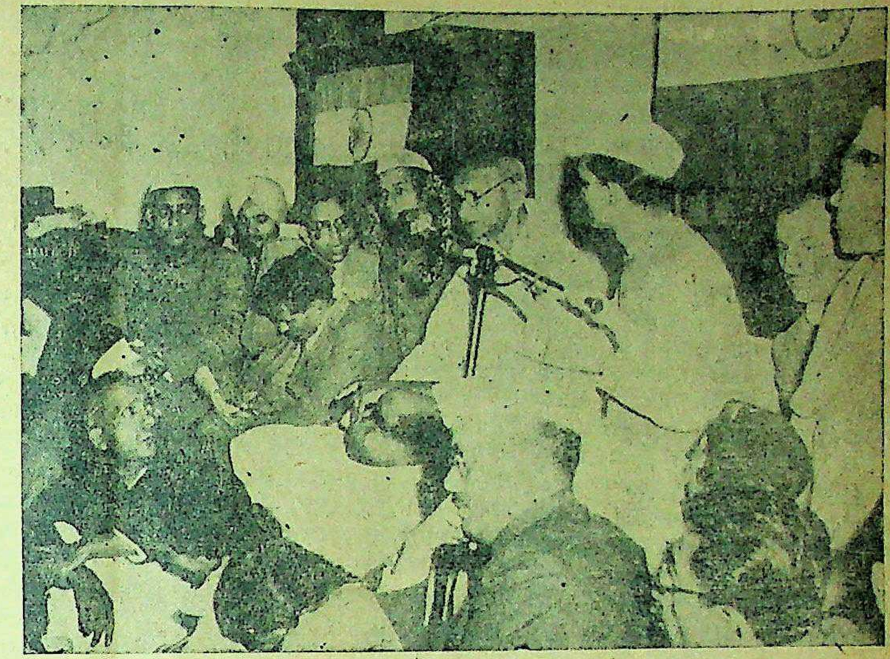

महात्मा गांधी शरणार्थियों की एक सभा में नशा सेवन न करने का उपदेश दे रहे हैं।

नशा-निषेध-आन्दोलन के प्रवर्त्तक महात्मा गांधी।

महात्मा गांधी अपनी शिष्या मीरा बहन के साथ बिड़ला-भवन से बाहर निकलकर प्रार्थना में जाने की तैयारी में।

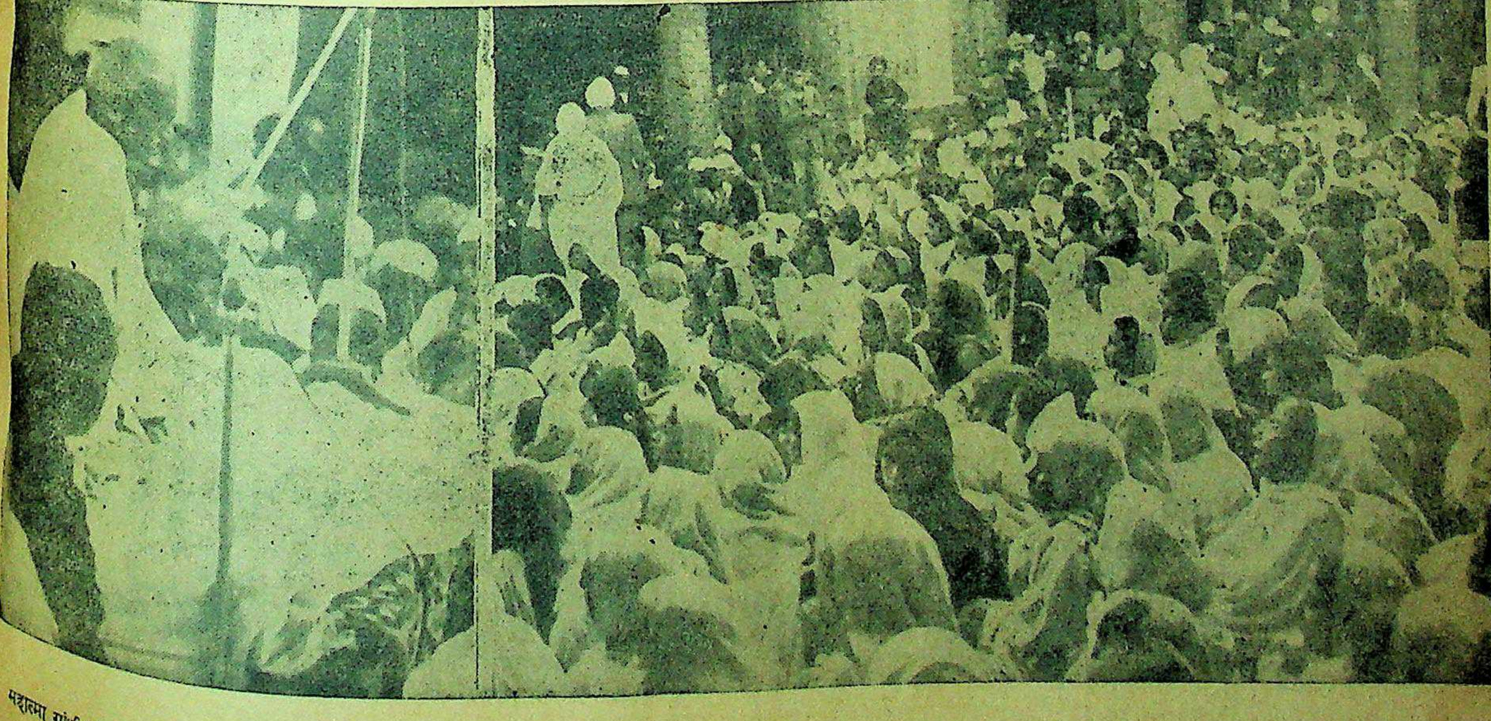

महात्मा गांधी स्त्रियों की एक सार्वजनिक-सभा में उपदेश दे रहे हैं कि वह घर के आदमियों को नशा-निषेध के लिये आग्रह करें जिससे राष्ट्र शक्ति-शाली तथा सतोगुणी बन सके।

चरित्र-बल और मादकता

भारतीय स्वतन्त्रता को दृढ़ बनाने का सही मार्ग

लेखक, श्री उमेशचन्द्र माथुर बी० ए०, एल्-एल० बी०

(टेम्प्रेन्स पब्लिसिटी आफिसर अर्धकुम्भमेला, इलाहाबाद)

चरित्रबल का जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। चरित्र का विकास और पतन मानव के उन्नति और पतन का इतिहास है। मादकता सच्चरित्रता के लिये घातक है। लेखक ने इस लेख में उदाहरण देते हुए मादकता को चरित्र के लिये अत्यन्त बाधक प्रमाणित किया है। लेख गम्भीर तथा विचारणीय है।

बड़े-बड़े धुरन्धर योद्धाओं के मद काल-चक्र के क्रम से चकनाचूर होते रहे हैं—अर्जुन ऐसे महारथी भी गोपियों की रक्षा नहीं कर सके और उनको भीलों ने लूटा; परन्तु इतना ही कहने से हमारी शंकाएँ-समाधान नहीं होतीं। यदि समय से ही सब बातें हो जातीं तो फिर पुरुषार्थ की आवश्यकता ही क्या? इसी सम्बन्ध में हमको हिन्दू-धर्म-शास्त्र की दंडनीति का स्वीकृत सिद्धान्त "यथा राजा तथा प्रजा" स्मरण हो आता है—महाभारत में भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर से कहा कि 'तुम्हें इस बात में संशय नहीं होनी चाहिए क्योंकि राजा ही काल का कारण होता है।' जैसा जैसा आचरण राजा करता है वैसा वैसा आचरण प्रजा करती है, क्योंकि इसे वैसा ही अच्छा लगता है (यद्‌दा चरते राजा तत्प्रजा नां समरोचते)। जब राजा पूर्ण दंडनीति का अवलंबन करता है तब कृतयुग होता है, जब राजा दंडनीति के तीन अंशों का अवलंबन करता है तब त्रेतायुग होता है, जब राजा दंडनीति के अनुसार आधा ही काम करता है तब द्वापर होता है, जब वह दंडनीति का सर्वथा त्याग करता है तब कलियुग होता है।

जब राजा में ही इतनी वृहत शक्ति है तो यह समझना कठिन न होगा कि उसके अधिकारों के साथ ही उसका उत्तरदायित्व कितना बड़ा होगा। यह स्पष्ट ही है कि क्योंकि राजा प्रजा से कर लेता है इसलिए प्रजा के पापों का भार भी उसी अनुपात से उस पर पड़ता है—'जासु राज प्रिय प्रजा दुःखारी, सो नृप अवश नरक अधिकारी।' कौरवों और पांडवों के महायुद्ध का कारण दुर्योधन का केवल एक सुई की नोक बराबर पृथ्वी अपने भ्राता पांडवों को देने से इनकार करना ही नहीं था वरन् उनके चरित्र का पतन इसका मूल कारण था। विलासिता में लिप्त कौरवों को यह निर्णय करने की भी शक्ति नहीं रह गई थी कि युवराज श्रीकृष्ण की ताकत उनकी समस्त सेना से कितनी अधिक थी। इस महायुद्ध—जिसमें कि भाइयों के हाथों से भाइयों का संहार हुआ—का परिणाम तो जग-विदित है। रामायण-काल में उस विख्यात पंडित रावण जिसके नाम से देवता तथा दैत्य भयभीत होते थे—ने किस प्रकार पर-स्त्री अपहरण के अभियोग में नरदेवहारी श्री रामचन्द्र जी के करों से कैसे देह त्यागी, आपसे छिपा नहीं है—योद्धा राजपूत जिनकी वीरता के वृत्तान्त सुन आज भी रोयें खड़े होते हैं अपने राजनैतिक परम्परा के सर्वनाश को अपनी ही नीति के पतन से पहुँचे। सम्राट् बाबर के दांत भारत की सेनाओं ने खट्टे किये, परन्तु उसने परास्त होने से पहले ही अपनी भूल समझ ली और अपने सर्वप्रिय शराब के प्याले को तोड़ भारत की सेना का मुकाबला किया और विजय पाई। ज्यों ज्यों भारत में मुगल-साम्राज्य बढ़ता गया उसके सम्राटों में विलासिता का प्रवेश होता गया। सम्राट् जहांगीर को तो शराब इतनी प्रिय थी कि उसने इसका नाम "राम रङ्गी" रखा था। धीरे-धीरे विनाश-काल आया और बुद्धि विपरीत होती चली गई। यहां तक कि बहादुरशाह के समय में अंगरेजों ने अपना आधिपत्य जमाने का पूरा सामान इकट्ठा कर लिया।

रोमनों का विशाल साम्राज्य भी चरित्रहीनता से नाश को प्राप्त हुआ। फ्रांस ने सात साल की लड़ाई आस्ट्रिया से संधि कर लड़ी। कहा जाता है कि यह सन्धि लुई दी फिफ्त ने मेडम डी पोम्पेर के जोर देने पर की थी। फ्रांस इस लड़ाई में असफल हुआ जिसके फलस्वरूप फ्रांस के अनेकों उपनिवेश समाप्त हो गये और उसको नैतिक तथा आर्थिक हानि हुई। यदि लुई कम विलासी होता अथवा उसकी प्रेम-पात्री, राजनैतिक बातों में हस्तक्षेप न करती तो फ्रांस की दशा कुछ दूसरी ही होती। राजा से हमारा तात्पर्य केवल उन्हीं व्यक्तियों से नहीं है जो कि गद्दी पर बैठ जाते हैं। राजा कहलाने का तो वह भी अधिकारी है जिसके साथ जनता का बहुमत हो। यूरोप के इतिहास में बहुत से प्रमाण मिलेंगे जिसमें प्रभावशाली व्यक्तियों ने इतिहास की विचार-धाराओं को बदल दिया। कुछ सुप्रसिद्ध लेखकों का कथन है कि फ्रांस की राजक्रान्ति के और कारणों में प्रभावशाली व्यक्तियों का भी अधिक हाथ था। "क्या घटनाओं का क्षेत्र न बदल जाता यदि मीराबू बुखार से न मर जाता अथवा रोबसपियर की आकस्मिक मृत्यु ईंट के लगने अथवा मृगी से हो जाती या बोनापार्ट गोली लगने से मर जाता इसके अतिरिक्त इतिहास कुछ और ही होता यदि क्लूपेटरा की नाक किसी कदर छोटी होती।" इसमें कोई सन्देह नहीं कि अपने मस्तिष्क तथा चरित्रबल से प्रभावशाली अवल घटनाओं की आकृति को बदल सकते हैं।

हिटलर ने "मीन कैम्फ" में ठीक ही कहा है कि यदि किसी व्यक्ति पर वार करना हो तो उसके चरित्र को पहले ही हजारों झूठ से इतना खराब बना दो कि उससे सहस्त्रों मनुष्य घृणा करने लगें और उसके मित्र हँसे—फिर वार करो। इससे कहीं पहले से ही हमारे विदेशी शासक इस नीति को खूब समझते थे। सन् १८५७ की गदर के बाद अंगरेजों ने भली भांति जान लिया था कि यदि केवल ताकत से ही राज्य की स्थापना की जायगी तो ऐसा राज्य अधिक समय तक टिक न सकेगा। अस्तु जैसा कि डाक्टर पट्टाभि सीतारमैया ने कहा है सर चार्ल्सवुड के नेतृत्व में ब्रिटिश संस्कृत के अनुसार शिक्षा देने पर बड़ा जोर दिया गया। ब्रिटिश ने बजाय किले बनवाने के, नये हथियार गढ़वाने के अथवा सिपाहियों को पुराने आदर्शों पर ट्रेनिंग देने के अपनी दूरदर्शिता तथा चालाकी से मदरास, बम्बई और कलकत्ते के विश्वविद्यालयों को स्थापित कर तीन नये प्रकार के किलों की नींव डाली। विश्वविद्यालयों के ग्रेजुएटों को एक नई पलटन की ट्रेनिंग (शिक्षा) दी और उनके कलम तथा जिभ्या के रूप में नये हथियार बनाये जिनके कि प्रयोग को प्रोत्साहन दिया गया। विश्वविद्यालयों की स्थापना के पश्चात् सन् १८६० में हाईकोर्ट और १८६१ में लेजिस्लेटिव कौंसिल की स्थापना हुई। उसी दिवस से एक नये प्रकार के नागरिक की वृद्धि हुई जो कि ब्रिटिश सरकार का नागरिक सिपाही था। यह तो चरित्र हरने का एक उपाय रहा; परन्तु ब्रिटिश सरकार अपनी सत्ता को जमाने के लिए यहीं तक ही नहीं रही। जैसा कि केशवचन्द्र जी सेन ने कहा है कि ब्रिटिश मिल्टन और शेक्सपियर के अतिरिक्त ब्रान्डी की बोतलें भी अपने साथ लाई। यह वह बोतल थी जिसके प्रचार में शासकों ने बहुत प्रयत्न किये और उसमें सफल हुए। कलम का प्रभाव तलवार से कहीं अधिक है। हमारे शिक्षित विद्वानों द्वारा इसका विस्तार दिन-दूना रात चौगुना होता चला गया। प्रचार की अविरल धारा बड़े वेग से बहने लगी। लोलुप, कामी, स्वार्थी लोगों की संख्या और भी बढ़ती गई। ऐसी दशा में यह कोई अनहोनी सी बात नहीं थी कि धर्म-उपदेशक भी ऐसे मिले जिन्होंने मदिरा को सुरा और सोम के नाम से सम्बोधित किया। इसके हानिकर प्रभाव को हितकर बताया। मंच से अंगरेजी सांस्कृत में लिप्त महानुभावों ने यह प्रचार किया—"कौम अपनी के चार चीज है फर्ज। हुक्का, शराब, तवाइफ और कर्ज॥" योगिराज श्रीकृष्ण के पवित्र प्रेम को कुछ श्रृंगारी कवियों ने अपने कलुषित तथा वसनामय भावनाओं को प्रकट करने के लिए, पवित्र भक्त के उच्च पद से खींच लौकिक वासनामूलक प्रेम में परिणत करने का भरसक प्रयत्न किया। निरकुशता, धृष्टता, मिथ्याचार का आश्रय ले सभी चरित्रहरण वार्ता को सामूहिक रूप से प्रचार किया गया। इससे सरकार को दो लाभ हुए—एक तो उसकी आय की वृद्धि हुई और दूसरे चरित्रहीनता से गुलाम मुल्क पर आधिपत्य जमाने का पूरा अवकाश मिला।

यों तो संयम का प्रश्न उसी समय से चला जब कि किसी पुरातन काल से चीनी को सड़ाकर उससे शराब निकालने की प्रथा निकली। अन्तर्राष्ट्रीय इतिहास यह बतलाता है कि उसी पुराने काल से ही परशिया, फिलस्तीन, मिस्र, ग्रीस, कार्थेन्ज में जभी से ही मादकता के व्यसन को रोकने के प्रयत्न किये जाते रहे हैं। इस सम्बन्ध से यह जान लेना हानिकर न होगा कि इन देशों में जो शराब पी जाती थी वह क्या थी? उस समय के पुराने लोग जो मद्यपान करते थे वह चुआई हुई आधुनिक मदिरा न थी। वह अंगूर तथा अन्य फलों और अन्न से बना हुआ पेय था यह पेय मेक्सिको तथा पेरू के लोगों को ज्ञात था। रोमनों के काल में असभ्य लोग शहद को सड़ाकर तथा सेब और अंगूर को सड़ाकर पान किया करते थे। इनका प्रभाव मस्तिष्क पर धीरे-धीरे होता था। आजकल की शराब का जन्म तो तेरहवीं शताब्दी का है। आयरलेन्ड के एक कीमिया वेनालेवो ने इसको मेडिकल दृष्टिकोण से दैवी पेय माना है। यह वस्तु जो बीमारी में प्रयोग के लिए आविष्कृत की गई थी अब आम जनता में इस्तेमाल होने लगी। संसार के अन्य देशों ने १८वीं शताब्दी में शराब का दुष्परिणाम देखा तब ही से इसका विरोधी आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया। सन् १८१४ ईसवी

शेष पृष्ठ १४ पर देखिए

सन्देश

माननीय श्री निसार अहमद शेरवानी एम० एल० ए० मिनिस्टर कृषि-विभाग, संयुक्तप्रांत

आजाद हिन्दुस्तान की तरक्की के लिये यह जरूरी है कि हिन्द का हर एक निवासी अपनी पूरी ताकत से देश की उन्नति के कामों में तन, मन और धन से हाथ बंटावे, हर तरह की फजूलखर्ची बन्द करे। नशीली चीजों के इस्तेमाल से सिर्फ रकम ही बेकार जाया नहीं होती बल्कि अच्छी तन्दुरुस्ती भी खत्म हो जाती है। नशे में इन्सान बेतुकी हरकतें कर बैठता है जिनका नतीजा हर तरह से खराब होता [illegible] सरकार ने नशाबन्दी शुरू की है, गो कि इस काम में सरकार का माली नुकसान है। मुझे पूरी उम्मेद है कि इस [illegible] में नशाबन्दी का कैम्प नशे की बुराइयां बताकर लोगों के दिलों में नशे की तरफ नफरत पैदा करेगा और इस तरह मुल्क की बेहतरीन खिदमत कर सकेगा।

लखनऊ —निसारअहमद शेरवानी

१०-१२-४७

कहानी

नशा

लेखक, श्री देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

नशा करनेवाला चाहे शराबी हो या गंजेड़ी, कभी किसी की सीख नहीं सुनना चाहता। वह अपने नशे की आदत छोड़ने में सर्वथा विवशता का अनुभव करता है। परन्तु परिस्थितियों की चपेट में पड़कर कभी-कभी तनिक-से विवेक के सहारे यह आदत सदा के लिए किस प्रकार छूट जाती है, यही इस कहानी में दर्शाया गया है।

जमींदार कैलाश बाबू को उनकी जमींदारी के सभी लोग जी-जान से चाहते हैं। उनके इंगित पर ये लोग अपने प्राण बढ़ा देने में भी आगा-पीछा सोचने की आवश्यकता नहीं समझते। आखिर क्यों न हो, कैलाश बाबू भी अपनी रैयत को ठीक उसी प्रकार चाहते हैं जिस प्रकार कोई सद्गृहस्थ अपने परिवार के सभी सदस्यों को समान रूप से चाहता है। अवसर पड़ने पर जहां गृहस्वामी अपने किसी आश्रित को डांट-डपट दिखलाता है, वहां उसे अपना स्नेह लुटाने में भी सदा आगे रहता है। उसके दुख से दुखी और उसके सुख से सुखी होता है। परिवार के सदस्य जिस प्रकार गृहस्वामी के स्नेहदान पर कृतज्ञता का अनुभव करते और उसकी डांट-डपट को भी अपने लिए कल्याण-प्रद समझते हैं, ठीक उसी प्रकार कैलाश बाबू की जमींदारी की रैयत भी उनकी गति-विधि से पूर्णतः सन्तुष्ट थी।

जब से कैलाश बाबू पढ़-लिखकर शहर से अपने गांव में आ गये हैं और जमींदारी का सूत्र उनके हाथों में आ गया है, तब से लगभग चार वर्ष बीत चुके; लेकिन उनकी जमींदारी का कोई मुकदमा अदालत में पेश नहीं हुआ। यह बात नहीं इस बीच रैयत में कभी किसी प्रकार का कोई झगड़ा-फसाद हुआ ही नहीं; लेकिन कैलाश बाबू के न्याय का ढंग ही ऐसा था कि उससे वादी-प्रतिवादी दोनों को ही पूरा-पूरा संतोष हो जाता था और उन्हें अदालत का दरवाजा खटखटाने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती थी।

बात यह थी कि कैलाश बाबू बी०ए० तक पढ़ने के सिलसिले में जब शहर में रहा करते रहे, तब उन पर कांग्रेस-आन्दोलनों का गहरा प्रभाव पड़ चुका था। महात्मा गांधी के सिद्धान्तों का तो उन पर ऐसा कुछ प्रभाव पड़ा कि अपने जीवन में भी उन सिद्धान्तों के अनुसार कैलाश बाबू अनेक प्रयोग करते रहते थे। इसी सिलसिले में कैलाश बाबू यह भी समझ चुके थे कि सामन्त-वादी युग की अन्त्येष्टि शीघ्र ही होनेवाली है—वह अनिवार्य है। ऐसी दशा में अन्य जमींदारों की तरह वह अपनी रैयत पर जोर-जुल्म करने के तनिक भी समर्थक नहीं थे। गरीब किसानों और मजदूरों पर उनकी अगाध आत्मीयता सदा बरसती रहती।

कांग्रेस की हलचलों का बारीकी से अध्ययन करते रहने का उन्हें नशा था। कांग्रेस मन्त्रि-मण्डलों ने जब जमींदारी-प्रथा तोड़ देने का निश्चय किया, तब उन्होंने जिला-कांग्रेस-कमेटी को एक पत्र लिखकर स्वयं इस प्रस्ताव का जोरदार शब्दों में समर्थन किया था। यह भी लिख भेजा था कि इस सम्बन्ध में अथवा अन्य किसी सार्वजनिक हित के काम में मेरी सेवाएँ अपेक्षित हों, तो आप कभी मुझे लिख सकते हैं।

इसी तरह कैलाश बाबू का समय बीत रहा था कि आज प्रातःबेला में जब वे अपनी हवेली के सामनेवाले चबूतरे पर एक कुरसी पर बैठे समाचार-पत्र पढ़ रहे थे, तभी उनके नौकर रमुआ ने आकर कहा—'शहर से दो बाबू आये हैं, मालिक! आपसे मिलना चाहते हैं। कहते हैं, कांग्रेस-दफ्तर से आये हैं।'

'आने दो उन्हें।' कैलाश बाबू ने अखबार पढ़ते-पढ़ते ही कह दिया। दो मिनट के भीतर ही, दो खद्दर-धारी युवकों ने आकर कैलाश बाबू को नमस्ते किया। कैलाश बाबू ने खड़े होकर उनका स्वागत किया। मुस्कराते हुए कहा—'बैठिए।' और सामने पड़ी कुर्सियों की तरफ संकेत किया।

'कहिए, कैसे कष्ट किया?' कैलाश बाबू ने आगन्तुकों से छोटा-सा प्रश्न किया।

एक तरुण ने जिला-कांग्रेस-कमेटी के अध्यक्ष का एक पत्र कैलाश बाबू की ओर बढ़ा दिया। पत्र पढ़कर कैलाश बाबू ने कहा—'प्रसन्नता की बात है कि किसी बहाने कांग्रेस ने मुझे याद तो किया और, मादक वस्तुओं के निषेध के सिलसिले में आपने हमारे गांव में आने की जो कृपा की है, इसके लिए मैं आभारी हूँ।' फिर एक ओर खड़े नौकर से कहा—'चाय और नाश्ता ले आओ।'

'आपका नाम तो हमारे कांग्रेस-दफ्तर में सभी जानते हैं, जमींदार साहब!'

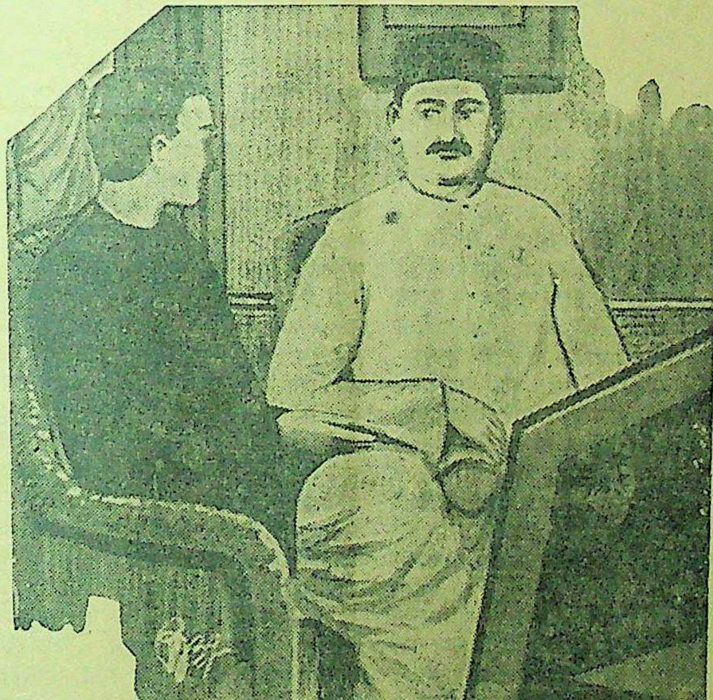

'सहायता तो क्या कर सकूँगा! हाँ, सम्भाव्य सेवाएँ देने में सदा तत्पर रहूँगा',

एक खद्दरधारी युवक बोला—'जमींदारी-प्रथा तोड़ने का जो समर्थन आपने किया था, वह हमारे यहां सुरक्षित रूप में रख छोड़ा गया है। समय आते ही इस सम्बन्ध में आपकी उचित सहायता ली जायेगी।'

'सहायता तो क्या कर सकूँगा, हां, सम्भाव्य सेवाएँ देने में सदा तत्पर रहूँगा।' कैलाश बाबू ने आन्तरिक प्रसन्नता का अनुभव करते हुए कहा—'अच्छा, इस मद्य-निषेध के सम्बन्ध में मुझे क्या करना होगा?'

'आपको बहुत-कुछ करना होगा।' दूसरे खद्दरधारी तरुण ने कहा—'हम लोग तो मादक वस्तुओं के निषेध का सन्देश-मात्र देकर चलते बनेंगे; लेकिन उसकी वास्तविक जिम्मेवारी तो आप पर ही रहेगी।'

'इसके लिए आज सन्ध्या-समय हम लोग गांववालों की एक सभा करें।' पहले तरुण ने कहा—'उसमें नशे की बुराइयां बतलाई जायें और गांववालों से कहा जाये कि वे अपनी नशीली आदतें छोड़कर स्वयं अपना और समाज तथा देश का कल्याण करें।'

'गरीबों को नशे के चंगुल से छुड़ाने का देशव्यापी आन्दोलन होना ही चाहिए। मैं अभी मुनादी पिटवाए देता हूँ।' कैलाश बाबू ने कहा।

'लेकिन मुनादी में यह न कहा जाये कि मद्य-निषेध पर भाषण होंगे; नहीं तो कोई भी शराबी-गंजेडी न आयेगा। मुनादी में सिर्फ यही कहा जाये कि शहर से कुछ लोग आये हैं, जिनके मजेदार भाषण होंगे, देश-विदेश की बातें सुनाई जायँगी और गांववालों के काम की बातें भी बतलाई जायँगी।'

'तो यह कहिए' मुस्कराते हुए कैलाश बाबू ने कहा—'कि धोखा देकर ग्रामीणों को बुलाना चाहते हैं। लेकिन किसी के लाभ के लिए—हित के लिए—धोखा देना अथवा झूठ बोलना अपराध नहीं।'

इसी बीच रमुआ चाय और नाश्ता लेकर आ पहुँचा। कुर्सियों के बीच में छोटी मेज पर उसने चाय-नाश्ता विधिवत् रख दिया।

कैलाश बाबू ने कहा—'चाय पीजिए। मैं तो अभी-अभी पी चुका हूँ।'

दोनों युवक चाय पीने लगे। कैलाश बाबू ने रमुआ से मुनादी पिटवाने की बात कही और आवश्यक हिदायत देकर उसे सन्ध्या-समय सभा का आयोजन करने के लिए कारिन्दा को समझा देने की बात भी कह दी।

इसी बीच एक दूसरे नौकर ने आकर कहा—'भोला अहीर आया है, सरकार! आपसे मिलना चाहता है।'

'आने दो उसे।' कैलाश बाबू ने कहा।

घुटनों तक एक मोटी फटी-सी धोती और तार-तार-सा कुरता पहने भोला आया और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

'क्या है भोला?' कैलाश बाबू ने पूछा।

'सरकार, आज दो रुपयों की जरूरत आ पड़ी है।'

'क्यों, शराब पीनी है?' मुस्कराते हुए कैलाश बाबू ने रुपये मांगने का प्रयोजन जानना चाहा।

'नहीं सरकार!' भोला ने कान पकड़ते हुए कहा—'तीन बरस बीत रहे हैं, कभी भूलकर शराब पीने की कोशिश नहीं की मैंने। और, आपके एहसान को जनम भर नहीं भूलूंगा, सरकार! आपने मेरी यह आदत छुड़ाकर मेरा बड़ा उपकार किया है।'

'वाह साहब! आप तो छिपे रुस्तम निकले।' एक खद्दरधारी युवक ने चाय का प्याला खाली करते हुए कहा—'आपके प्रयत्न की जीवित मिसाल सामने है। तो यह भोला पहले शराब पीता था?'

'हां, सरकार!' भोला ने कहा—'रोज पीता था—नियम से पीता था। खाना किसी दिन न मिले, तो कोई बात नहीं; लेकिन शराब नहीं छूटती थी।'

'कुछ न पूछो भाई!' कैलाश बाबू ने कहा—'पक्का शराबी था यह भोला। घर में चाहे खाने के लिए एक दाना न हो, बाल-बच्चे चाहे भूखों बिलबिलाते रहें; लेकिन शराब पिये बिना यह रह नहीं सकता था।'

'तब कैसे छुड़ाई इसकी आदत?' दूसरे युवक ने पूछा।

'मैंने इसे समझाया कि भाई, तुम आठ आने रोज की शराब पी डालते हो।' कैलाश बाबू कहने लगे—'तीज-त्योहार पर संगी-साथियों को भी पिलानी पड़ती है। इस प्रकार साल भर में दो सौ रुपये से कम खर्च नहीं होता। यही रुपये यदि बचाकर रखे जायें, तो हर साल तुम बढ़िया नस्ल की दो गायें खरीद सकते हो, और तुम्हारा दूध का धंधा इतना चमक सकता है कि इस गांव के अहीरों में तुम्हीं-तुम दिखोगे। इतने पर भी भोला की समझ में मेरी बात नहीं आई। एक दिन मौके की बात, इसकी सारी गायें किसी ने कांजीहौस में बन्द कर दीं। दो दिन तक पता न चला कि गायें कहां हैं। दूसरे गांव के कांजीहौस में गायें बन्द की गई थीं। दूध नहीं था, पैसे नहीं आये। शराब कहां से आती? यह दौड़ा आया मेरे पास। मैंने कहा कि तुम्हारी गायों को मैं ५) रु० देकर कांजीहौस से छुड़ाये देता हूँ; लेकिन एक शर्त पर कि तुम आज से एक आने की शराब प्रतिदिन कम पिया करोगे और आठ दिन के बाद

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

(पेज १२ का शेष)

में डाक्टर बेनजमिन रश ने, जो कि फिलडेलफिया के एक प्रसिद्ध डाक्टर तथा राजनीतिज्ञ थे—एक पुस्तक इस विषय पर लिखी और शीघ्र ही नशे के विरोध में एक संयमी आन्दोलन जोर से बढ़ा। सन् १८२६ ईसवी तक अमेरिका की विभिन्न रियासतों में ऐसी संस्थाएँ स्थापित हुईं जिनके दस लाख से अधिक सदस्य थे। आयलैंड में सन् १८२९ से संगठित नशा-निषेध की आयोजना सरगरमी के साथ बढ़ी। सन् १८३० ईसवी में १२७ सोसाइटियां जिनके कि २३,००० ऐसे सदस्य थे जो कि रुपया देते थे तथा ६०,००० ऐसे भक्त सदस्य थे जो कि नशे का त्याग कर चुके थे। खास लन्दन में सन् १८३१ ईसवी में ब्रिटिश और फारिन टेम्परेन्स सोसाइटी स्थापित हुई जिसके प्रधान लन्दन के बिशप ब्लोमफील्ड थे। इसके पेटरन मल्का विक्टोरिया सन् १८३७ में बनी। इतिहास से ज्ञात होता है कि सन् १८४१ में आयलैंड में ४६,४७,००० ऐसे भक्त थे जो नशा नहीं करते थे। थियोबेल्ट मैथू, के प्रचार के फलस्वरूप तीन वर्षों में शराब की बिक्री १,०८,१५,००० से ५२,९०,००० गैलन हो गई थी। इन्होंने इंग्लैंड तथा अमेरिका में भी प्रचार किया। अमेरिका में इस कार्य को अन्य प्रमुख व्यक्तियों ने उठाया। सन् १८५१ में यूटिका (न्यूयार्क) के आर्डर आफ गुड टेम्पलर नामक संस्था ने बड़े समारोह से उठाया और इसकी विचारधाराएं अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन, स्केन्डीनेविया, स्वीडन, आस्ट्रेलिया, भारत, दक्षिणी तथा पश्चमी अफरीका, दक्षिणी अमेरिका में फैली। अमेरिका में सन् १८२५ ईसवी में एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन इस विषय पर एन्टवर्प में हुआ। इसके पश्चात् एक संसार के सभी देशों का सम्मेलन लन्दन में १९०९ में हुआ। इसमें करीब ३०० सदस्य विभिन्न देशों से आये, परन्तु भारत का कोई भी सदस्य इसमें न था। वाद-विवाद के पश्चात् इस बात का निर्णय किया गया कि कौन कौन-सा कार्य नशा-प्रचार को रोकने के लिए किया जाये।

एक स्वाभाविक प्रश्न यह उठता है कि क्या वास्तव में ही भारतवर्ष के धर्म आचार, विचार, मादकता का समर्थन करते थे? क्या सोम सचमुच शराब था इत्यादि। जहां तक कि सोम का सम्बन्ध है अथर्ववेद के एक मंत्र से प्रमाणित हो जाता है कि सोम का अर्थ महत्त्वपूर्ण ज्ञान और प्रकाश के अन्य उद्गमों से भी है। वैदिक साहित्य के प्राचीन कोष निरुक्त में सोम का अर्थ "सूयन्ते उत्पाद्यान्ते ये ते सोमः अर्थात् जो वृक्ष वनस्पति आदि उत्पन्न किये जाते हैं वह सोम कहलाते हैं और उनका सारभूत रस सोम कहलाता है। आगे यह भी कहा है वायुः सोमस्य रनिता" अर्थात् सोम वनस्पति का रजक वायु है सोम का अभिप्राय केवल औषधि या पान है। सोम के डंठलों को दो पत्थरों के बीच में रखकर उसका रस निकाला जाता था और ऊन के वस्त्र में छानकर दूध, दही व जौ के पानी में इसको मिलाकर पिया जाता था। इसके पीनेवाले के मुंह में सुगन्ध आती थी। शास्त्र के हिसाब से सोम के पीनेवाले की आयु बढ़ जाती थी क्या यह धर्म का दुरुपयोग नहीं है कि सोम को आधुनिक मदिरा से तुलना दी जाय—मनुस्मृति में ब्रह्मघाती, मद्यपायी, चोर, गुरु-पत्नी में गमन करनेवाला इन सबको महापातकी कहते हैं। सुरापान के दोषशान्त्यार्थ ऊनी वस्त्र पहनना, जटा रखना, सुरापान का चिह्न धारण करना और एक वर्ष से रात को एक बार किसी अन्न की पीठी या तिल की खली खाना-मात्र बताया है। इसी प्रकार गुरु नानक ने मद्यपान को वर्जित किया है। बौद्ध, ईसाई तथा इस्लाम धर्मों में भी नशे का घोर निषेध किया है।

स्वयं इंगलैंड में भी नशे का विरोधी शिक्षित समाज था। श्री ए० पी० हरबर्ट ने कामन सभा में अपना मेटरी मोनियल कोजिज बिल सन् १९३७ में रखते समय बहुत विरोध का सामना किया और अन्त में वह थोड़े से ही संशोधन के बाद पास हो गया। इस कानून के अनुसार तलाक (त्याग) देने के अन्य कारणों में निर्दयता, मद्यपान को स्वाभाविक बनाना, असाध्य पागलपन, आजन्म कैद बढ़ा दिया गया। महोदय केन ने पार्लियामेंट में कहा था कि सभी चरित्र के भाव आय की वृद्ध के लिये समाप्त कर दिये जाते हैं। सभ्य देशों की अधमतम आबकारी नीतों में सबसे अधिक घृणित भारत की आबकारी नीति है। इस बात के दोहराने की मैं आवश्यकता नहीं समझता कि विभिन्न विचारशील नेताओं ने नशे की स्वास्थ्य के लिये समाज के लिये आर्थिक वृद्धि के लिये कितना हानिकर कहा है।

हमारे देश के कर्णधार महात्मा गांधी ने जो भारत के पतन के मूल कारणों में नशेबाजी की आदत को श्रेय दिया। सन् १९२० ईसवी से ही कांग्रेस इस नीति का महात्माजी के नेतृत्व में विरोध करती आई है। सन् १९३१ में गांधी-इरविन पैक्ट के बाद जब कांग्रेस संस्थायों पर से प्रतिबन्ध उठा लिए गये और उनका संचालन होने लगा महात्माजी ने कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं को आन्दोलन के समाप्त करने का आदेश दिया परन्तु नशीले द्रव्यों तथा विदेशी कपड़ो के बहिष्कार की आज्ञा दी। इस सम्बन्ध में आदेश देते हुए परम पूज्य महात्मा ने कहा कि शराब की दूकानों पर धरना देने का कार्य महिलाएँ करें "मेरा ध्येय महिलाओं को इस कार्य के सौंपने का यही था कि वे इन आदेशों का पूर्ण रूप से पालन करेंगी और सम्पूर्ण अहिंसात्मक वातावरण उत्पन्न करेंगी। भारत के बहुत से प्रभावशाली व्यक्ति भी इस आदेश को सुनकर घबराये, क्योंकि महिलाएँ अभी तक राजनैतिक क्षेत्र में आई नहीं थीं फिर उनका अहिंसात्मक रूप से शराबियों का सामना करना दुर्गम प्रतीत होता था। महात्मा गांधीजी ने अपने आदेश पर दृढ़ रह यह घोषणा की कि यदि यह बहिष्कार असफल हो तो वह इसकी पूरी जिम्मेदारी अपने ऊपर लेने को तैयार हैं। बहिष्कार सफल हुआ और सरकार की आय इसी के फलस्वरूप घटी। मादक द्रव्यों के पुजारी तथा कुछ ऐसे सज्जन जो कि आगे कदम बढ़ाने से सदैव ही घबड़ाते रहे इस आन्दोलन से भयभीत हो इसका विरोध करने लगे। इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं कि ब्रिटिश सरकार को खुश करने के लिए बहुतेरे महानुभावों ने इस आदेश का विरोध किया। तरह तरह की टिप्पणियां सुनने में आने लगीं। कुछ लोगों ने यह कहा कि क्योंकि नशाबन्दी की योजना अमेरिका ऐसे शिक्षित देश में असफल रही तो भारत में वह कैसे सफल हो सकती है? भारत में अब भी ऐसे महानुभाव जीवित हैं जो कि इसी विचार के हैं। इसलिये उनको नशेबन्दी की योजना की अमेरिका में असफलता का कारण बताना हानिकर न होगा। अमेरिका में नशेबन्दी की योजना के समाप्त होने के बाद भी जो नशाबन्दी के प्रश्न पर ९,००० चुनाव लड़े गये उनमें से ६,००० चुनावों में जीत हुई। आज तक स्थानीय कानूनों द्वारा सहस्रों कस्बों और शहरों में [illegible]

गिफई महाशय ने अमेरिका में दृढ़ता से नशाबन्दी के कानूनों का विरोध किया परन्तु वाशिंगटन के कोषाध्यक्ष ने जो कि स्वयम् अमेरिका के ह्विसकी (शराब) बनानेवाले आदमियों में से एक था, नशेबन्दी के कानून का विरोध किया। सेनेट के एक सदस्य ने ७,००,००० गैलन शराब धोके से निकलवाकर खूब बिकवाई। यही कारण था जिससे नशेबन्दी की शक्तियां बेकाम हो गईं। अब यह समझना कठिन न होगा कि भारतवर्ष में नशे का प्रचार हमारे भूतपूर्व शासकों ने क्यों किया? सन् १९३५ ईसवी में जब कांग्रेस के मंत्रिमंडल बने तब सम्पूर्ण नशाबन्दी की योजना को अग्रसर किया गया। संयुक्तप्रान्त के सात जिलों में नशाबन्दी कर दी गई। यह स्वाभाविक ही था कि नशों में ग्रसित जनता तथा उनके हिमाइतियों ने जो कि ब्रिटिश सरकार से सहानुभूति रखते थे, इस योजना के अभिप्राय को न समझा। संयुक्तप्रान्त के आबकारी कमिश्नरों की रिपोर्टों से यह ज्ञात होता है कि अभिनित जनता ने इस योजना की सफलता में रोड़े अटकाये। इस योजना को चले थोड़ा ही समय बीता था कि कांग्रेस ने मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया। इसके पश्चात् ब्रिटिश सरकार ने कांग्रेस की इस नीति को उलट दिया। लड़ाई के समय तो मादक द्रव्यों का उपयोग इतना बढ़ गया कि उसका अनुमान करना भी कठिन है।

आज भारत स्वतंत्र है। हमारी सरकार ने अब सम्पूर्ण नशा त्याग की नीति को सफल बनाने का बीड़ा उठाया है। पिछले साल सात जिलों में युक्तप्रान्त में नशा बन्द कर दिया गया। सरकार को इस बात का पूर्ण रूप से ज्ञान है कि जनमत को प्रचार से यह समझाना अत्यन्त आवश्यक है कि नशे के क्या दुष्परिणाम होते हैं। यह अधिकतर देखा गया है कि किसी भी कार्य को यदि कड़े कानूनों द्वारा स्थापन करने का प्रयत्न शीघ्र सफल नहीं होता। श्री केनथवाकर ने अपनी "फिजियोलोजी ऑफ सेक्स" नामक किताब में लिखा है कि "यह देखा गया है कि ज्यों ज्यों तलाक का कानून सख्त किया जाता रहा तलाकों की संख्या बढ़ती गई। अमेरिका में तलाक के कानून को कड़ा बनाने का परिणाम वास्तविक रूप से यह हुआ कि उनकी संख्या यहां तक बढ़ी कि छः विवाहित लोगों में से एक ने तलाक दिया। स्वेडन में जहां तलाक पति-पत्नी की आपस की सलाह से दिया गया जा सकता है, अमेरिका के तलाकों से छः गुने कम हैं" इसी किताब में इस लेखक ने कहा है कि खाली यही बात किसी योजना के संचालन के लिये कड़े कानून हैं उसको उच्चतम नहीं बना सकती। अमेरिका के नशाबन्दी की योजना के समय में प्रायः आधे मनुष्य पानी पीते यदि उनको शराब पीना कड़े कानूनों द्वारा न वर्जित किया जाता।

देशदूत के इसी अंक में अन्यत्र आपको कई महापुरुषों के सन्देश मिलेंगे जो कि समाज और धर्म पर प्रभाव रखते हैं। जैसा कि माननीय श्री चौधरी गिरधारीलाल, मंत्री आबकारी-विभाग युक्तप्रान्त ने अपने भाषण में जो कि उन्होंने नशा-निषेध प्रचारक कैम्प अर्धकुंभ मेला प्रयाग का १४ जनवरी को उद्घाटन करते हुए कहा कि अब वह नशाबन्दी केवल उन्हीं जिलों में करना चाहते हैं जहां कि जनमत से यह प्रस्ताव आये कि वह नशाबन्दी चाहते हैं।

यह मनुष्य-योनि पाकर जिसको सभी चर और अचर जीव याचना करते हैं जो मनुष्य सद्मार्ग से विचलित हो अपने लौकिक तथा पारलौकिक पतन की ओर चलते हैं वह यथार्थ ही में अपना सर्वनाश करते हैं। हमारा तो जनता के प्रत्येक व्यक्ति तथा साधुओं से यही अनुरोध है कि महात्मा गांधी जी के चलाये हुए नशा-निषेध के इस पुण्य कार्य को वह अपनी धार्मिक शिक्षा का एक प्रमुख अंग बनाकर प्रचार करें। आज हमको यह कहते हुए दुःसह दुःख होता है कि उस महान् आत्मा महात्मा गांधी को परमपिता परमेश्वर ने हमसे छीन लिया है। हम उनके अनन्य उपकारों का बदला आजन्म नहीं चुका सकते। यदि हम यही दृढ़ प्रतिज्ञा कर लें कि हम उनके दिखाये हुए मार्ग पर ही चलें तो हमको महात्मा गांधीजी की आत्मा को संतुष्ट करने का अवकाश मिलेगा और अपने जीवन को सुधारने का भी। संत सहहिं दुख परहित लागी। पर दुख हेतु, असंत अभागी। भारतवर्ष की सभी संस्थाएं चाहे वह सामाजिक हों, आर्थिक हों धार्मिक हों अथवा राजनैतिक हों, को अपना यह कर्त्तव्य समझना चाहिए कि वह जनता के चरित्र-बल को सर्वथा नष्ट करनेवाली वस्तु 'नशे' का त्याग करवाने में संलग्न हों, भारतवर्ष की स्वतंत्रता को दृढ़ बनायें।

मुफ्त :— सिर्फ ३) तीन रुपये में चार शीशी "ओटो-चमन" (सेंट) मंगाकर लोग धड़ाधड़ मुफ्त में असली रिस्टवाच गारंटी ३ साल हासिल कर रहे हैं। छः दर्जन की बिक्री पर ग्राहक संख्यानुसार रिस्टवाच भेजी जा रही है। "ओटो-चमन" को मशहूर करने के लिए यह उपहार रक्खा गया है। आज ही आर्डर भेजिए।

"रसिक (D.D.) कम्पनी"
कुन्दनगंज, गोंदिया सी० पी०

स्वास्थ्य में चमकते हुये बालों के लिये
"सुरैया"
नमुना प्राडक्शन्स कृत
"दो-दिल"
Vaseline POMADE
CHESEBROUGH MFG Co.
सभी दूकानों पर

कोमलता से सुगंधित किया गया वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।
वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।

मद्य-निषेध क्यों ज़रूरी है?

कांग्रेस सरकार की सतर्कता और जनता का कर्तव्य

लेखक, आशु कवि श्री जगमोहननाथ अवस्थी

सामाजिक और नैतिक पतन के लिये नशाखोरी एक जघन्य अपराध है। संयुक्त-प्रान्तीय सरकार ने इसीलिए नशाखोरी को नष्ट करने के लिये योजना जारी की है और कई जिलों में नशा-निषेध लागू किया गया है। कांग्रेस सरकार इस ओर क्यों सतर्क है, यही इस लेख में बतलाया गया है। लेख सुन्दर और पठनीय है।

'हम मस्त हैं, हम पर चढ़ा,
कितने नशों का रंग है,
चंडू, चरस, गांजा, मदक,
अहिफेन, मदिरा, भंग है।'
—मैथिलीशरण गुप्त

यह बात किसी से छिपी नहीं है कि सामाजिक तथा नैतिक पतन का एक कारण नशाखोरी भी है। मद्यसेवी जीवन में नारकीय दृश्यों का समावेश होना स्वाभाविक है। एक सन्त की वाणी है—"इस संसार में आकर नशे दो ही अच्छे हैं, एक तो रोटी का नशा और दूसरा ईश्वर के भजन का नशा। इसके अतिरिक्त सब प्रकार के नशे अपने को विनाश के निकट ले जानेवाले हैं।" आदरणीय पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भी कहा है—"हमें मजदूरों में नशाबाजी की एकदम मुखालिफत है। बहुत से लोग नशाबन्दी के इसी वजह से कायल हैं। लेकिन नशाबन्दी की सच्ची जीत का कारण यही होगा कि एक कौम की तरक्की और बहबूदी के लिए नशाबाजी का बन्द होना कतई लाजमी है।"

पूर्व स्थिति

सन् १९३७ ई० में जब संयुक्त-प्रान्त में कांग्रेस मंत्रिमंडल ने प्रथम बार शासन की बागडोर अपने हाथ में ली थी, उसका ध्यान इस सामाजिक रोग की ओर विशेष रूप से आकर्षित हुआ था। उसने इसके शमन के लिये ही नहीं, अपितु उसके समूल नष्ट कर देने का बीड़ा उठाया था और बड़ी तत्परता से विधिवत् कार्यारम्भ कर दिया था।

६ जिलों में पूरे तौर पर नशाबन्दी की घोषणा हो गई थी। इसके अतिरिक्त ११ अन्य नगरों में आबकारी की दूकानों का प्रबन्ध सरकार ने अपने हाथ में ले लिया था। शेष प्रान्त में ४५ प्रतिशत दूकानों को उसने बन्द करवा दिया था और मादक वस्तुओं के फुटकर भाव नियत कर दिये थे।

किन्तु, इसके पूर्व कि कांग्रेसी मंत्रिमंडल अपनी इस लोकोपयोगी मद्यनिषेध योजना के अनुसार कार्य करके सम्पूर्ण प्रान्त को सात्विक बना पाता, उसने सन् १९३९ ई० में पद त्याग दिया। अतः सन् १९३९ ई० से लेकर सन् १९४६ ई० तक के दीर्घकाल में मद्य-निषेध-आन्दोलन को चालू रखना तो दूर रहा, कांग्रेस मंत्रिमंडल द्वारा की गई प्रगति की भी इति श्री हो गई। नशाबन्दी के जो भी आदेश जारी किये गये थे उन सबको सरकार द्वारा रद्द कर दिया गया और महायुद्ध-काल में नशाबाजी का जोर और भी बढ़ गया।

नवीन समस्याएं

युद्ध समाप्त होने के पश्चात् वातावरण में फिर स्थिरता आई। धारा सभाओं के लिये चुनाव हुए और कांग्रेस पुनः विजयी होकर अपने प्रान्त में शासनारूढ़ हुई। किन्तु शासन-सत्ता संभालते ही उसको खाद्य-संकट आदि जैसी अनेक तात्कालिक समस्याओं का हल ढूंढने के लिये अथक परिश्रम करना पड़ा। चोरबाजार, घूसखोरी आदि असामाजिक दोष और साम्प्रदायिक विद्वेष के दमन के लिये कांग्रेस मंत्रिमंडल आज सराहनीय उपाय कर रहा है। ऐसी स्थिति में भी उसका ध्यान बार-बार मद्य-निषध-आन्दोलन को पुनः संचालित करने की ओर जाता है और यह विश्वास किया जाता है कि जैसे ही उसे वर्तमान विकट समस्याओं से छुट्टी मिलेगी, वह पुनः अपना पूर्व नियोजित कार्यक्रम प्रारम्भ कर देगी। फिर भी उसने पहली अक्टूबर से ताड़ी की १० प्रतिशत दूकानों को कम करने और ताड़ी के पेड़ों की कीमत १० प्रतिशत बढ़ाने के आदेश जारी कर दिये हैं।

मद्य की परिभाषा

यहां पाठकों को यह न भूलना चाहिए कि मद्य से तात्पर्य केवल शराब से ही नहीं है, बल्कि जितनी भी वस्तुओं के सेवन से मस्तिष्क, मेधा एव मानवीय शक्तियों का ह्रास होता है, वे सब मद्य की परिभाषा में आ जाती हैं। ऐसी वस्तुओं के अन्तर्गत शराब, गांजा, भांग, अफीम, कोकीन, चंडू इत्यादि सब वस्तुएं हैं। इनका प्रभाव समाज के स्वास्थ्य पर ऐसा पड़ता है कि वह अकर्मण्य और बेकार हो जाता है और नशेबाजों को पुरुष कहने में भी संकोच होने लगता है। उन्हें देखकर तो यही कहना पड़ता है कि—

क्या मर्द हैं, हम वाह वा!
मुख नेत्र पीले पड़ गये,
तन सूखकर कांटा हुआ,
सब अंग ढीले पड़ गये।
मर्दानगी फिर भी हमारी
देख लीजे कम नहीं,
ये भिनभिनाती मक्खियां क्या,
मारते हैं हम नहीं?

नशे की लत

जीवन में यह आवश्यक नहीं है कि यदि हम यह मान बैठें कि अगर हमें किसी नशे की लत पड़ गई तो हम निराश होकर कहने लगें कि अब वह छूट ही नहीं सकती। यह हमारी दुर्बलता है। एक दुर्व्यसन यदि हममें आ सकता है तो हमें यह विश्वास रखना चाहिए कि हम उसका त्याग भी कर सकते हैं; परन्तु उसके त्याग की भावना में दृढ़ता होनी चाहिए। बहुत से लोग कह देते हैं कि क्या करें, ऐसी नशे की लत पड़ गई है कि बिना इसके अब हम जीवित नहीं रह सकते और न यह छूट ही सकती है। हमें यह विचार करना चाहिए कि इस प्रकार के व्यक्ति जीवित भी मरे हुए हैं। वह स्वय अपनी मानसिक दुर्बलताओं के बन्दी होकर इस प्रकार के दुर्व्यसनों के मोहताज बने हैं। जब मनुष्य अपने अत्यन्त प्यारों और कुटुम्बियों के मर जाने पर जीवित रह सकता है तो हमें यह भी मानना पड़ेगा कि वह नशे के दुर्व्यसन को मारकर और त्यागकर भी जीवित और सुखी रह सकता है।

नशेबाजी का दुर्व्यसन एक ऐसा घुन है, जिसके शरीर में प्रवेश कर जाने से मनुष्य अकर्मण्य होकर दीन, दुर्बल और घिनौना हो जाता है। समाज की दृष्टि में गिर जाता है। दो-चार आने दैनिक मजदूरी पानेवाला मजदूर जब शराब या किसी अन्य नशे का सेवन करके अपना पैसा बरबाद कर देता है, तब उसके बाल-बच्चे भूखों मरने लगते हैं। मैंने बहुधा देखा है कि—

दो-चार आने रोज के भी,
जो कुली मजदूर हैं,
संध्या समय वे भी नशे में
दीख पड़ते चूर हैं।
मर जायें चाहे बाल-बच्चे
भूख के मारे सभी,
पर छोड़ सकते हैं नहीं,
उस दुर्व्यसन को वे कभी।

ऐसी दशा में तो सरकार को इस ओर और भी कड़ा रुख धारण करना चाहिए, जैसा सम्भवतः सरकार कर भी रही है। यदि नशाखोरी बन्द हो जाय तो बहुत से जुर्म भी गायब हो जायें।

सहयोग की आवश्यकता

यह तो निर्विवाद है कि इस मादक-वस्तु-निषेध ऐसे पवित्र आयोजन को सफल बनाने के लिये देश की प्रत्येक शक्ति का सच्चा सहयोग आवश्यक है। प्रत्येक विभाग, प्रत्येक देशवासी, प्रत्येक मानव कहलानेवाले प्राणी का यह कर्त्तव्य है कि वह इस रोग के विनाश की चेष्टा करे और सरकार को इस कल्याणकारी कार्य में तन, मन, धन से सहयोग प्रदान करे। इस रोग से भारतीय मानवों को मुक्त हो जाना ही सच्ची जन-सेवा तथा देश-सेवा है। जनता ही की सरकार अपने देशवासियों को स्वच्छ, सुखी, स्वस्थ तथा उन्नतशील देखना चाहती है। अतएव हम सबको सरकारी योजना के अनुकूल ऐसा उपाय करना चाहिए कि इस असामाजिक दोष का अविलंब मूलोच्छेद हो जाय।

फैंसी सिल्क साड़ी
आकर्षक डिज़ाइन
कलापूर्ण ३-४ इंच चौड़ा बार्डर
नं० ७ ८ ९ ५ गज
१८) २३) २८)
२) पेशगी बाकी वी० पी० से
थोक व्यापारियों को खास सुभीता
धमाका इन्डस्ट्रीज,
जुही नं० ६ कानपुर

बिना लाइसेन्स रखिए

अमेरीकन
मॉडेल पिस्तौल
मुफ़्त
यह रिवाल्वर, जिसकी लम्बाई ६ इंच और वजन केवल १५ तोला है, असली अमरीकन पिस्तौल से भी अधिक सुन्दर और उपयोगी है। इसमें अपने आप घूमने वाली चरखी लगी है जिसमें ६ से लेकर १० शाट तक भरे जाते हैं। गुंडों, चोर डाकुओं और जंगली जानवरों से रक्षा करने के लिए यह अनुपम यन्त्र है।
मूल्य छः शाट वाला माडल—
नं० २२२१ ६॥) २२२२ (नया माडल) ७॥) ३३३३ स्टेण्ड ७॥)
नं० ६६६६ (सिल्वर पालिश स्पेशल माडल) १०॥) १० शाट वाला १३॥)
फालतू शाट ४ दर्जन १) चमड़े की पेटी व केस ४) गुर्दों का तेल १)
मुफ्त—ऊपर लिखे हुए किसी भी नम्बर के तीन रिवाल्वरों को एक साथ मँगाने पर १० शाट वाला एक रिवाल्वर मुफ्त दिया जाता है।
यूनाइटेड ट्रेडर्स, पो० बा० नं० २४३, कानपुर यू० पी०
UNITED TRADERS P.B. NO. 243 KANPUR

खरीदने से पहले
इस ट्रेड मार्क को
देखो

वुडवर्ड के ग्राइप वाटर
के
बोतल सदैव साथ रक्खें। यह
बच्चों को तन्दुरुस्त रखता है।

WOODWARD'S
GRIPE WATER
keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुडवर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिए इसको अवश्य देख लिया करें।
1-WW 105—117 W. WOODWARD LTD. LONDON. ENGLAND.

मादक वस्तुओं को दूर भगाइए

सतोगुणी बुद्धि से ही राष्ट्र का कल्याण हो सकता है

लेखक, श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री १०८ श्री स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज

आजकल मादक वस्तुओं के प्रयोग की जन-साधारण की एक आदत-सी पड़ गई है साथही नशीली चीजों का उपयोग जीवन का एक आवश्यक अंग बन गया है जिससे चरित्र तथा स्वास्थ्यहीनता की वृद्धि हो रही है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने मादक वस्तुओं द्वारा होनेवाली हानियों का वर्णन करते हुए सतोगुणी बुद्धि की व्यापकता तथा राष्ट्रीय स्वास्थ्य की रक्षा की ओर जन-साधारण का ध्यान आकर्षित किया है।

लेखक स्वामी शुकदेवानन्द महाराज।

मनुष्य योनि सर्वश्रेष्ठ योनि है। मानव सभी प्राणियों से सर्वोपरि प्राणी है। इसका कारण यह है कि अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य को बुद्धि विशेष रूप से प्राप्त है। सत्पथ पर चलनवाला व्यक्ति अपनी सत्वगुणी बुद्धि के द्वारा उत्तरोत्तर उन्नति करता हुआ, आध्यात्मिक मार्ग में निर्वाध गति से अग्रसर होता हुआ एक दिन अपने चरम लक्ष्य, भगवत्प्राप्ति तक पहुँच सकता है। यही मानव-जीवन की सफलता है, चौरासी लाख योनियों में भटककर आये हुए त्रिताप संतप्त जीव को मनुष्य शरीर भगवान की असीम और अहेतुकी दया से इसीलिए मिलता है कि वह अपने बंधन की शृंखलाएँ अपनी शुद्ध सतोगुणी बुद्धि के सहयोग से सदैव के लिए तोड़कर फेंक दे। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् श्रीकृष्ण अपने परम प्रिय सखा अर्जुन से कहते हैं "बुद्धिग्राह्य मतीन्द्रिय" अर्थात् मैं बुद्धि के द्वारा प्राप्त होता हूं, इन्द्रियों के द्वारा नहीं। इस प्रकार सिद्ध हो जाता है कि सतोगुणी बुद्धि का विकास करना प्रत्येक मनुष्य का मुख्य कर्तव्य है।

बुद्धि का विकास करने के अनेकों साधन हमारे धर्म-शास्त्रों में बताये हैं, सभी साधनों के मूल में है आहार, अर्थात् मनुष्य जैसा आहार करता है उसी के अनुरूप उसकी बुद्धि बन जाती है कहावत है 'जैसा खावे अन्न वैसा बने मन' आहार के सम्बन्ध में वेद का कथन है कि "आहार शुद्धौ सत्व शुद्धि सत्त्व-शुद्धे ध्रुवः स्मृति" श्री गीता जी के सत्रहवें अध्याय में श्री भगवान ने श्रीमुख से कहा है:—

आयु सत्त्व बलारोग्य,
सुख प्रीति विवर्धनाः।
रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या,
आहाराः सात्त्विक प्रियाः॥

अर्थात्—आयु, बुद्धि, बल, आरोग्य, सुख और प्रीति को बढ़ानेवाले एवं रसयुक्त और चिकने और स्थि रहनेवाले तथा स्वभाव से ही मन को प्रिय आहार अर्थात् भोजन करने के पादार्थ तो सात्त्विक पुरुष को प्रिय होते हैं। जो मनुष्य तमोगुणी भोजन करता है उसका स्वभाव तमोगुणी बन जाता है, उसकी इन्द्रियां पतनोन्मुखी बन जाती हैं, समाज का उसके द्वारा बहुत अहित होता है और अन्त में उसकी अधोगति होती है "अधो गच्छन्ति तामसा" भगवद्जन अथवा सद्गति उसके लिए आकाश कुसुमवत समझिए।

मदिरा, भांग, अफीम, गांजा, ताड़ी खाने-पीनेवाली आदि यह सभी वस्तुएं निषिद्ध और तमोगुणी हैं इन वस्तुओं का सेवन करनेवालों की बुद्धि का विकास नहीं हो सकता, क्रमशः सेवन करते-करते मनुष्य इतना अभ्यस्त हो जाता है कि यदि वह किसी दिन अपनी अभीप्सित वस्तु को संयोगवश नहीं पाता तो अनेकों प्रकार के चोरी इत्यादि निन्दनीय कर्म करने पर उतारू हो जाता है, ऐसे मनुष्यों की बुद्धि ऐसी भ्रष्ट हो जाती है कि उन्हें भले-बुरे का अथवा उचित और अनुचित का ज्ञान ही नहीं रहता। मादक द्रव्यों के निषेध के सम्बन्ध में एक एक विषय पर अलग-अलग स्वतन्त्र पुस्तक लिखी जा सकती है किन्तु समयाभाव और विस्तार-भय से इस छोटे से लेख में अधिक न लिखकर संक्षेप में आवश्यक बातों पर अलग अलग प्रकाश डालने का प्रयत्न करेंगे।

आजकल मदिरा का इतना अधिक प्रचार हो गया है कि उसका प्रयोग करनेवाले लोग खुलेआम सेवन करते हैं। प्रायः देखा जाता है कि अपने को सभ्य कहने वाले शिक्षित समुदाय में मदिरा के द्वारा आदर-सत्कार करने की परिपाटी चल पड़ी है।

मदिरा का सेवन करनेवालों की दलील है कि भोजन के साथ थोड़ी सी लेने से पाचन-क्रिया भली भांति हो जाती है, स्थूल दृष्टि से अवश्य ऐसा जान पड़ता है कि भोजन खूब पच रहा है, खुलकर भूख लगती है इसका कारण यह है कि मदिरा में तेजाब होता है जो कि भोजन को गला देता है, किन्तु उसकी प्रतिक्रिया आंतों पर भी होती है, भीतर भीतर आंतें भी गलती रहती हैं, और शरीर की आन्तरिक दशा इतनी बिगड़ जाती है कि मद्यप व्यक्ति अनेक रोगों से ग्रसित होकर अकाल में कालकवलित हो जाता है। मदिरा के सेवन से तुरन्त इन्द्रियों में उबाल आता है ऐसा नशा चढ़ता है कि वह न कहने योग्य बातें कहता है और न करने योग्य कार्य कर बैठता है। नालियों में गिर जाता है मुंह में कुत्ते लघुशंका कर देते हैं इत्यादि। अनेकों ऐसी अनर्थकारी घटनाएं शराबियों के द्वारा आये दिन होती रहती हैं जिन्हें सर्वसाधारण भली प्रकार जानते ही हैं। शराबी का खून खराब हो जाता है जिसका प्रभाव सन्तान पर भी पड़ता है जो कई पीढ़ियों तक बना रहता है। मद्यप व्यक्ति को अपने नशे की झोंक में माता और बहन का भी भान नहीं रह जाता। सदाचार अथवा सद्गुणों की आशा उससे दुराशा-मात्र है।

चरस और गांजा तम्बाकू से कई गुना बड़ा भयंकर है। इसके सेवन से तुरन्त प्रभाव पड़ता है। खांसी और दमा अपना अड्डा जमा लेते हैं जो दम के साथ ही जाते हैं। इसके सेवन करनेवालों का रक्त काला और दूषित हो जाता है कारण कि दम लगाने के साथ ही ढेर का ढेर धुआं मुख-द्वार से शरीर के आन्तरिक भाग में जाकर रक्त को जलाता है ऐसे लोगों के वीर्य में सन्तानोत्पत्ति की शक्ति नहीं रह जाती और यदि भी है तो चरस और गांजावाले व्यक्तियों के पुत्रियों का जन्म ही अधिक होता है पुत्र तो होता ही नहीं।

चरस और गांजा लौकिक और पारलौकिक दोनों दृष्टियों से त्याज्य और निषिद्ध पदार्थ है कारण कि इनके सेवन से बुद्धि का नाश होता है, तमो-

शेष पृष्ठ २२ पर देखिए

सन्देश

माननीय ठाकुर हुकुमसिंह एम० एल० ए०, मंत्री रेवन्यू और जेल-विभाग, सयुक्तप्रांत

मादकता की वेदी पर भारतवर्ष के सहस्रों परिवारों का बलिदान होता रहा है। हमारे विदेशी शासकों की शोषण नीति की परिमिति में जीवन की कदाचित् ही कोई ऐसी वस्तु बची हो जिस पर उनका प्रकट या गुप्त रीति से काबू न रहा हो। जिस समय संसार में गुलाम बनाकर रखने की प्रथा पूर्णरूप से प्रचलित थी गुलामों के मालिक सदैव यह प्रयत्न करते थे कि उन तक, संसार की कोई ऐसी बात जो बुद्धि अथवा विद्या को बढ़ा मानवता का आभास करा दे, न पहुँच सके। इसी आदेश से ब्रिटिश सरकार ने भारतवर्ष से करोड़ों रुपया अपनी घृणित आबकारी नीति द्वारा कमाया। भारतवासियों ने भी मादक वस्तुओं का सेवन कर न केवल अपनी गाढ़ी कमाई सरकारी कोष में दी वरन् अपना अमूल्य चरित्र भी सूद में उसके साथ देते चले गये जिससे कि हमारी स्वतन्त्रता के भीषण संग्राम में बड़ी बाधाएं पड़ीं।

कांग्रेस ने तो इस मूल कारण को बहुत पहले ही समझ लिया था और इसीलिए महात्मा गांधी ने अपने अन्य अहिंसात्मक शस्त्रों में से नशा-निषेध को भी एक शस्त्र बना आबकारी की दूकानों पर धरने को प्रोत्साहन दिया। इस आन्दोलन में हमारे अनेकों सिपाहियों (जिसमें महिलाएँ अधिक थीं) ने कारागार जा अकथनीय कष्ट सहे।

मुझको पूरा ज्ञान है कि आबकारी के कर से सरकार को इतनी अधिक आमदनी है कि इसके समाप्त करने से जनता के हितकारी अन्य कार्यों में बाधा पड़ जायगी। परन्तु सरकार के सामने सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य तो मादकता-ग्रसित जनता का चरित्र सुधारना है—जिसके सुधारने के पश्चात् करोड़ों क्या अरबों रुपया राष्ट्रीय वृद्धि के लिये मिल जायगा।

बहुत दिनों की पड़ी हुई आदत को छोड़ने में कठिनाइयां तो अवश्य ही होती हैं, परन्तु बिना कड़वी ओषधि पान किये तो तन का ताप भी नहीं मिटता। इस कार्य की सफलता में मुझको स्वयं तो कोई आपत्ति नहीं जान पड़ती, क्योंकि मद-पान तो सभी धर्मों में वर्जित है।

मैं नशा-निषेध-प्रचारक कैम्प, प्रयाग के सचालकों को इस राष्ट्र-हितकारी कार्य के संचालन करने पर बधाई देता हूँ और पूर्ण आशा करता हूँ कि तीर्थराज प्रयाग स्थित संगम में स्नान करनेवाले भारतीय पूर्ण नशा-त्याग की शपथ ले अर्द्ध-कुम्भ का पुण्य लूटेंगे।

लखनऊ
३१-१२-४८

—हुकुमसिंह विश्वेन

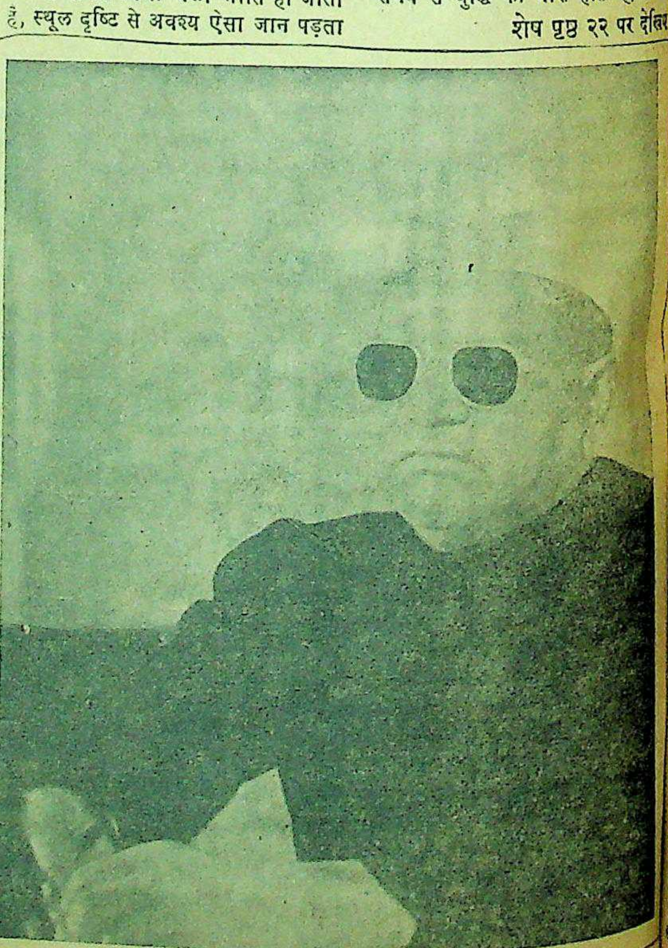

नशा-निषेध क्यों ?

पहले शारीरिक शुद्धि की आवश्यकता है

लेखक, स्वामी सुदर्शनानन्द जी उदासीन

मनुष्य का शरीर भोजन के आधार पर बनता है वह जैसा भोजन करता है वैसा उसका शरीर बनता है; अर्थात् शरीर के परिमाणुओं के स्वभाव के आधार पर शरीर का स्वभाव बनता है जिसके आधार पर मन और बुद्धि का विकास होता है। यदि मनुष्य सात्विक भोजन करता है तो उसके शरीर के परमाणु भी सात्विक हो जाते हैं और शरीर के आधार पर मन भी सात्विक हो जाता है एवं बुद्धि भी सात्विक हो जाती है। जैसे..."जैसा खावे अन्न वैसा उपजे मन।" उपनिषदों में भी कहा गया है... "इन्द्रियभ्यपरा-ह्यर्था..." अर्थात् शरीर के अनन्तर इन्द्रियों का दर्जा होता है और इन्द्रियों से परे उनके विषयों का—इसी तरह इन्द्रियों के विषयों के बाद मन का दर्जा होता है और मन के बाद बुद्धि का और बुद्धि से परे आत्मा का स्थान है। इस प्रकार इनका परस्पर उत्तरोत्तर संबंध है और एक के प्रति दूसरा सूक्ष्मतर है। इससे भी यही सिद्ध होता है कि यदि मनुष्य आत्मोन्नति करना चाहता है और आत्मज्ञान की प्राप्ति करना चाहता है तो उसे इन सब शरीर, इन्द्रिय, मन, बुद्धि और आत्मा की शुद्धि करना परम आवश्यक है। अतः यह निश्चय हुआ कि शरीर को सात्विक बनाना ही परम आवश्यक है और वह तब तक बनेगा नहीं जब तक कि हम अपने खान-पान को सात्विक रूप में नहीं रखेंगे तब तक शरीर सात्विक बन नहीं सकता इसके लिये गीता के चौदहवें और सोलहवें अध्याय के अनुसार अपने आहार-व्यवहार और रहन-सहन को सुधारना पड़ेगा जिससे हमें यह मालूम होगा कि भगवान श्री कृष्णचन्द्र ने अर्जुन के प्रति यह स्पष्ट कर दिखाया है कि दैवी सम्पत्ति की वृद्धि के लिये मनुष्य को कैसा आचरण करना है और आसुरी सम्पत्ति के लिये कौन सा और साथ ही यह भी दिखा दिया है कि दैवी सपत्तिवालों की मुक्ति कैसी होती है और आसुरिक सम्पत्तिवालों की अधोगति कैसे होती है। जो लोग मनुष्य-योनि पाकर धर्माधर्म, कर्त्तव्य, कार्याकार्य का ज्ञान नहीं रखते उनको मनुष्य-देहधारी पशु कहना चाहिए, क्योंकि धर्म के ज्ञान की विशेषता से ही मनुष्य को मनुष्यत्व मिलता है और जो आत्मोन्नति के साधनों को पाकर भी आत्मा की उन्नति नहीं करते हैं उनको आत्मा-हनन का पाप लगता है और वे अन्धकार-मय लोकों में कीटाणुओं-सदृश देह को धारण कर बहुत कष्ट भोगते हैं जैसे उपनिषदों में कहा गया है असूर्या नाम ते लोकाः...... इसलिये आत्मोन्नति के लिये शरीर की शुद्धि परम आवश्यक है और शरीर की शुद्धि के लिये भोजन की शुद्धि तथा खान-पान, रहन-सहन की शुद्धि बहुत जरूरी है। इस नियम से चलने पर मनुष्य को यहां मालूम हो जायगा कि जितने हेय पदार्थ हैं उनमें तमाम नशा आदि मादक पदार्थ आ जाते हैं जितनी नशीली चीजें चाहे छोटे रूप में हों, चाहे बड़े, सब शरीर की उन्नति के लिये हानिकारक हैं और स्वास्थ्य-रक्षा के विरुद्ध हैं चाहे गांजा हो, भांग हो, शराब, अफीम, तम्बाकू आदि कुछ भी हो यह सब मादक पदार्थ मनुष्य की बुद्धि को दबा देते हैं, और उच्च भावनाओं को नष्ट कर देते हैं। मनुष्य के अन्दर मनुष्यत्व पैदा करनेवाले जितने गुण होते हैं उन सबको नशा दबा देता है और बुद्धि को विचलित कर देता है जिससे कि मनुष्य अपने हित और अनहित को भी नहीं पहचान सकता है, और इसी से ऐसे आचरण करने लगता है कि दूसरों की दृष्टि में वह निन्दनीय सूचित होने लगता है, नशीली चीजें मनुष्य के स्वरूप, स्वभाव, आकृति और प्रकृति को भी बदल देती हैं इसमें धन का ही व्यर्थ व्यय नहीं होता किन्तु समय जिसकी कि कोई कीमत भी नहीं दी जा सकती है, वह भी व्यर्थ चला जाता है। जितना द्रव्य मनुष्य इन नशीली चीजों के सेवन में खर्च करता है उसका और कई एक कामों में सदुपयोग हो सकता है और साधुओं में भी जो लोग यह कहते हैं कि गांजा के पीने से ध्यान अच्छा लगता है वह भूल करते हैं, क्योंकि महात्माओं ने भी इसकी निन्दा की है। "अमली होके धरे ध्यान, और बाबू होके कथै ज्ञान" यह दोनों ही ठग हैं, क्योंकि नशे से इन्द्रियां शिथिल हो जाती हैं जिससे मन और बुद्धि भी बेकार हो जाती है और जब तक मन और बुद्धि स्थिर नहीं तब तक धर्माधर्म, ज्ञानाज्ञान का भी बोध नहीं हो सकता है और जब बुद्धि में बोध करने की शक्ति नहीं तो ध्यान कैसे हो सकता है। इसलिये नशे के बल से ध्यान लगाने की कोशिश करना भूल है। हां, यों हो सकता है कि गांजा पीनेवाले को जाड़ा कम लगता हो, शीत न सतावे परन्तु सर्दी से बचने के लिये भी गांजे आदि किसी नशे की आड़ लेना एक बड़ी भूल है, क्योंकि साधु के माने साधना के हैं और साधना करने में शीत, गर्म, भूख, प्यास, भला, बुरा आदि द्वन्द्वों को सहन करने का अभ्यास करना जिससे कि वह एक दिन तितीक्षु का दर्जा हासिल कर ले। इसलिये साधु हो या गृहस्थ, सभी के लिये नशीली चीजों का निषेध किया गया है।

नशे से कभी किसी का भला नहीं हुआ है और इसका परिणाम हमेशा दुष्परिणाम ही रहा है। कौरवों-पाण्डवों के मध्य में अन्तर डालनेवाला यह नशा ही था क्योंकि कौरव इसके आदी थे और पाण्डव इससे दूर रहते थे इसी से पाण्डवों की विजय और कौरवों की हार हुई है। एवं यादव-कुल के संहार का कारण भी नशा ही है यानी जब वे प्रभासक्षेत्र में गये तो शराब (वारुणी) को पी पी करके जब मदोन्मत्त हो गये तो आपस में लड़ने लगे और यहां तक उनकी बुद्धि मलिन हो गई कि एक दूसरे को भी नहीं पहचान सकते थे और भाई भाई, बाप बेटा मर-कटकर समाप्त हो गये।

किसी भी धर्म में नशा पीनेवालों के लिये स्थान नहीं है चाहे बाइबल में देखिए चाहे ग्रंथ, कुरान, पुरान, रामायण आदि में चाहे बौद्ध या जैन-धर्म के ग्रन्थों में देखिए। जो लोग अपने अपने धर्म के सच्चे अनुयायी कहलाना चाहते हैं उनका यह परम कर्त्तव्य होगा कि वे किसी प्रकार की भी नशीली चीजों का सेवन न करें, चीन, जब तक अफीम के नशे में चकनाचूर रहता था तब तक वह देश बहुत पिछड़ा हुआ था किन्तु जबसे उस देश में जागृति हुई और इसके नेताओं ने अफीम के दुर्गुणों को समझ लिया और अफीम, चडू आदि के सेवन करनेवाले लोगों की सोचनीय हालत को देखा और उनके कारण देश की अवनति को होते हुए देखा तब इसका विरोध करना आरम्भ किया इसके फलस्वरूप आज हम देखते हैं, कि चीन पहले की अपेक्षा अब बहुत उन्नतिशील है।

जिस देश के लोग जब तक इन नशीली चीजों के अधीन रहते हैं तब तक किसी प्रकार की उन्नति नहीं कर सकते हैं, क्योंकि वे भले बुरे का ज्ञान सब भूल जाते हैं। देशोन्नति तभी हो सकती है जब हम पहले आत्मोन्नति करें। प्रत्येक मनुष्य की आत्मोन्नति से ही सारे देश की उन्नति हो सकती है; अतः उस देश को उन्नतिशील, बलशील, ज्ञानशील और धर्मशील बनाना है तो प्रत्येक मनुष्य को अपना-अपना स्वभाव, आकृति, प्रकृति, आहार, व्यवहार, आचार-विचार, रहन-सहन इस प्रकार से बनाना चाहिए कि वह अपनी और देश की उन्नति का कारण बन सके।

इसी आधार पर हमारी प्रान्तीय सरकार का ध्यान आजकल इस ओर विशेषकर आकर्षित हो रहा है जिसके फलस्वरूप उन्होंने इस योजना को कार्यरूप में परिणित करने के लिये जगह-जगह नशा-निषेध के प्रचार का प्रबन्ध किया है और विशेषकर इस अर्घ-कुंभी के अवसर पर माघमेले में बांध के ऊपर एक विशाल पंडाल बनाकर नित्य सुबह से शाम तक प्रचार के लिये यथायोग्य सुव्यवस्थित प्रबन्ध की व्यवस्था की गई थी। उससे जनता को बहुत लाभ हुआ है। हमें पूर्ण विश्वास है कि हमारी सरकार इसी प्रकार के प्रचार की व्यवस्था जिले-जिले और गांव-गांव में भी करेगी जिससे एक दिन हमारे देश से नशीली चीजों का सर्वथा बहिष्कार हो जायगा।

नशा-निषेध-कीर्तन*

लेखक, श्री उमेशचन्द्र माथुर, बी० ए० एल्-एल० बी०

रघुपति राघव राजाराम—मद्य कदापि न कीजै पान।

मादकता सब जग बौराई
सुख धन स्वास्थ्य, शान्ति बिलगाई
बुद्धि हरे बल जाय नसान, मद्य कदापि न कीजै पान।

लज्जा शील स्नेह, द्युति हरनी
घोर पाप कर्मरत करनी
भ्रष्टाचार मूल यह जान, मद्य कदापि न कीजै पान।

सात धातु से सृजित शरीरा,
ओजपूर्ण शक्ति बल धीरा
ओज ही जीवन ओज ही प्रान, मद्य कदापि न कीजै पान,

मद्य तेज का करे विनाशा
नाश करे जीवन की आशा
पहुँचावे नर को शमशान, मद्य कदापि न कीजै पान ॥

वर्जित वेद ग्रन्थ मदपाना
धर्म-विरुद्ध कहे सब जाना
हिन्दू मुसलिम औ कृस्तान, मद्य कदापि न कीजै पान।

तप कर जन्म मनुष तन पावा
नशा खाय सब पुण्य बसावा।
आफू गांजा चाहे भांग, मद्य कदापि न कीजै पान।

बिगड़ै लोक और परलोका
मादकता से जीवन शोका
फिर क्यों मूरख त्यागा जान, मद्य कदापि न कीजै पान ॥

---

*यह कीर्तन श्री व्यास जी की संरक्षता में कुमारी कालिन्दी कालेकर तथा प्रयाग संगीत-समिति इलाहाबाद, की चार और छात्राओं ने मिलकर "राग पीलू" में १४ जनवरी ४२ को नशा-निषेध-प्रचारक कैम्प के उद्घाटन के अवसर पर गाया था और उसी दिन यह अखिल भारतीय रेडियो द्वारा ब्राडकास्ट किया गया था।

—संपादक

श्वेतकुष्ठ की फकीरी बूटी

महात्माप्रदत्त इस बूटी से केवल ७ रोज में आधा और १५ रोज में पूर्ण आरोग्य होने की गारंटी, अगर आप नकली और कम कीमती दवा इस्तेमाल करके निराश हो गये हैं तो एक बार इस बूटी को भी इस्तेमाल कर इसके चमत्कारी गुणों से लाभ उठावें। बेफायदा साबित करने पर ५००) रु० इनाम अगर चाहें तो डेढ़ आने का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें। मूल्य ३) रुपये

पता—श्री शिवशक्ति आश्रम मुहल्ला—सालिमपुर अहरा पो०—कदमकुआं, पटना

१९४८ में क्या होनेवाला है?

यदि आप १९४८ में होनेवाली अच्छी व बुरी घटनाएं समय से पूर्व जानना चाहते हैं, तो आज ही केवल एक पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी फूल का नाम लिखकर भेज दें, बस फिर हम ज्योतिष-विद्या के हिसाब से आपके आनेवाले १२ मास का हानि-लाभ, किस व्यापार में लाभ होगा, किस साधन से धन प्राप्त होगी, रोजगार कब मिलेगा, वेतन-वृद्धि, परीक्षा में सफलता अर्थात् कार्ड की तारीख से लेकर एक वर्ष तक होनेवाली कुल बातों का संक्षेप अर्थात् मासिक वर्षफल बनाकर केवल १।) में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाक-व्यय अलग। बुरे ग्रहों की शांति का उपाय भी लिखा जायगा—जिससे आनेवाली कठिनाइयों को दूर किया जा सके।

श्री स्वामी योगीराज ज्योतिष आश्रम, (D.D.A.)
फगवाड़ा (कपूरथला स्टेट)

नशा

(पेज ११ का शेष)

फिर एक आने कम की। इस प्रकार दो महीने के बाद एकदम बन्द कर देनी होगी। जरूरत थी रुपयों की, इसलिए इसे मेरी शर्त स्वीकार करनी पड़ी। और, सचमुच इसने जो शराब बन्द की, तो आज तक फिर कभी उसका नाम नहीं लिया।'

'भोला, तुम बड़े समझदार हो।' खद्दरधारी युवक ने कहा—'लेकिन अपने दूसरे शराबी साथियों को भी इस आदत से बचाओ।'

'शराबी किसी की बात नहीं सुनना चाहते सरकार! वह तो मुझे रुपयों की जरूरत थी और जमींदार साहब ने वचन हरा लिया था, इसलिए छोड़नी ही पड़ी। और, मेरी तथा मेरे कुनबे की जिन्दगी सुधर गई, हालत बदल गई; नहीं तो रात-दिन घर में कांव-कांव होती रहती थी।'

'तुम्हारी जितनी प्रशंसा की जाये, थोड़ी होगी भोला?' खद्दरधारी दूसरे तरुण ने कहा—'इस गांव के शराबियों को तुम्हारे कदमों पर चलना चाहिए। अच्छा, तुम आज शाम को हमारी सभा में जरूर आना भोला!'

'जरूर आऊंगा, सरकार! अभी-अभी मुनादी भी पिट चुकी है।'

'रुपयों की जरूरत क्यों पड़ गई, भोला?' जमींदार कैलाश बाबू ने अब भोला की प्रार्थना सुननी चाही, जिसके लिए वह आया था।

'दामाद आ गया है, सरकार! लड़की की बिदा करनी है। अभी-अभी पांच रुपये का भूसा खरीद लिया, नहीं तो आपसे रुपये मांगने की नौबत ही न आती। संझा को लौटा दूंगा, सरकार!'

कैलाश बाबू ने जेब में से दो रुपए निकाल, भोला को देते हुए कहा—'यह लो, अपना काम चलाओ और, वापस करने की ऐसी जल्दी नहीं कि संझा को ही दौड़े आओ।'

कृतज्ञता का भाव भोला की आंखों में स्पष्ट रूप से छलक उठा। सिर झुकाकर वह चला गया।

कैलाश बाबू ने आगन्तुक खद्दरधारियों को अतिथि-गृह में ठहराया। दोपहर में उनके साथ भोजन किया और सन्ध्या समय उनके साथ बाजार के उस मैदान में जा पहुंचे, जहां सभा-मंच तैयार किया जा चुका था।

गांव के हजारों नर-नारी उस मैदान में एकत्र हो चुके थे। उत्सुकता से वे लोग अपने जनप्रिय जमींदार के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। कैलाश बाबू के पहुंचते ही उपस्थित नर-नारियों ने खड़े होकर उनका स्वागत किया और जयहिन्द के गगन-भेदी नारों से वहां का वातावरण गुंजा दिया। खद्दरधारी दोनों युवक इस गांव की यह व्यवस्था देख आन्तरिक प्रसन्नता से भर उठे।

कैलाश बाबू की अध्यक्षता में सभा की कार्यवाही शुरू हुई। प्रारम्भ में देश की ताजी खबरें ग्रामीणों को सुनाई गईं। इसके बाद खद्दरधारी युवक ने अपना लक्ष्यवेध करते हुए कहा—'भाइयो, अब हमारा देश आजाद हो चुका है। अब तक हमारा देश उस बादशाह के इशारों पर नाचता था जो सात समुन्दर पार बैठा है। लेकिन अब तो अपने देश में अपना राज हो चुका है। अंगरेजों ने लगभग २०० वर्षों तक हमें गुलाम रखकर हम पर अपनी हुकूमत चलाई, लेकिन अब हम स्वयं अपने देश के भाग्य-विधाता हैं। आजाद होकर हमें अपनी शक्ति बढ़ानी है ताकि दूसरे दुश्मन हम पर हमला करके हमें फिर गुलाम न बना दें। लेकिन शक्ति बढ़ाने के लिए हमें फौजों पर ही भरोसा करना काफी न होगा। हमें अपनी शारीरिक, मानसिक और आर्थिक शक्तियां बढ़ानी होंगी। शारीरिक और मानसिक शक्ति के अभाव में हमारी आर्थिक दशा कभी सुधर नहीं सकती। शारीरिक शक्ति बढ़ाने के लिए कसरत-व्यायाम तो करना ही होगा, लेकिन एक बात और है, जिसके बिना हम शक्तिशाली नहीं हो सकते।'

'वह क्या है?' उपस्थित नर-नारियों में से कुछ ने प्रश्न किया।

'वह बड़ी कठिन बात है। शायद उसे आप लोग न कर सकें और गुलाम रहना ही पसन्द करें।' दूसरे खद्दरधारी युवक ने कहा।

'नहीं, हम गुलाम नहीं रहना चाहते।' पुनः भीड़ में से आवाज आई।

'तो आप वादा कीजिए कि आप उसे पूरा करेंगे।' यह जमींदार कैलाश बाबू का स्वर था।

'वादा करते हैं; जरूर पूरा करेंगे।' भीड़ ने समवेत स्वर में उत्तर दिया।

'तो सुनिए—मादक वस्तुओं—शराब, गांजा, भांग चाय आदि—का पीना एकदम बन्द कीजिए' फिर भोला अहीर को मंच पर बुलाकर और उसे अपनी बगल में खड़ा करके युवक ने कहा—'यह देखिए, भोला अहीर आपके सामने जीवित मिसाल है। आप लोग जानते होंगे कि शराब के बिना यह भोला एक दिन भी नहीं रह सकता था; लेकिन जमींदार साहब के कहने पर इसने धीरे-धीरे शराब बिलकुल छोड़ दी और, शराब छोड़ने के लाभ इसी से आप लोग पूछ सकते हैं। किसी भी मादक पदार्थ का नशा हमारे शरीर को भीतर-ही-भीतर खोखला कर देता है; हमारे घर की हालत बिगाड़ देता है और हमें गुलामी की बेड़ियां पहने रहने पर विवश कर देता है। अब आप लोगों में से जो लोग नशा छोड़ने को तैयार हों, वे कल जमींदार साहब के कारिन्दा के पास अपना नाम लिखा आयें। जो लोग नाम नहीं लिखायेंगे और छिपकर नशा करते रहेंगे, उन पर कानूनी प्रतिबन्ध लगाया जायगा। अब विदेशी सरकार नहीं है कि देशवासियों को बुरी लत में पड़ी रहने देगी। अब तो अपनी सरकार है, जो देशवासियों की सामाजिक, नैतिक और आर्थिक भलाई का पूरा-पूरा ध्यान रखेगी। बच्चों की भलाई के लिए मां-बाप जिस प्रकार कभी-कभी ताड़ना भी देते हैं, उसी प्रकार देशवासियों की भलाई के लिए हमारी सरकार भी कड़ाई से काम लेने में हिचकेगी नहीं।'

'हम छोड़ तो देंगे, लेकिन धीरे-धीरे ही छूटेगी यह आदत।' एक शराबी ने खड़े होकर कहा।

'कोई हर्ज नहीं, धीरे-धीरे ही सही।' कैलाश बाबू ने कहा—'हम इसकी तरकीब बतलायेंगे।'

इसके बाद कुछ बालक-बालिकाओं के सुरीले गीत के साथ सभा समाप्त की गई।

अकाल सर्दी पर अक्सीर उपाय
आरोग्य
१८६६
नीलगिरि तैल
मो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

किंकिणी में कवि की बढ़िया कविताओं का संग्रह है। भाषा मधुर और कल्पना इतनी आकर्षक है कि पाठक कुछ क्षणों तक भावविभोर बना रहता है। मूल्य ।।।) बारह आने।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

नित्यप्रति की झंझटें
चाय
से मिटाइये

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

लिपटन
LIPTONS
WHITE LABEL
TEA
माने
अच्छी चाय

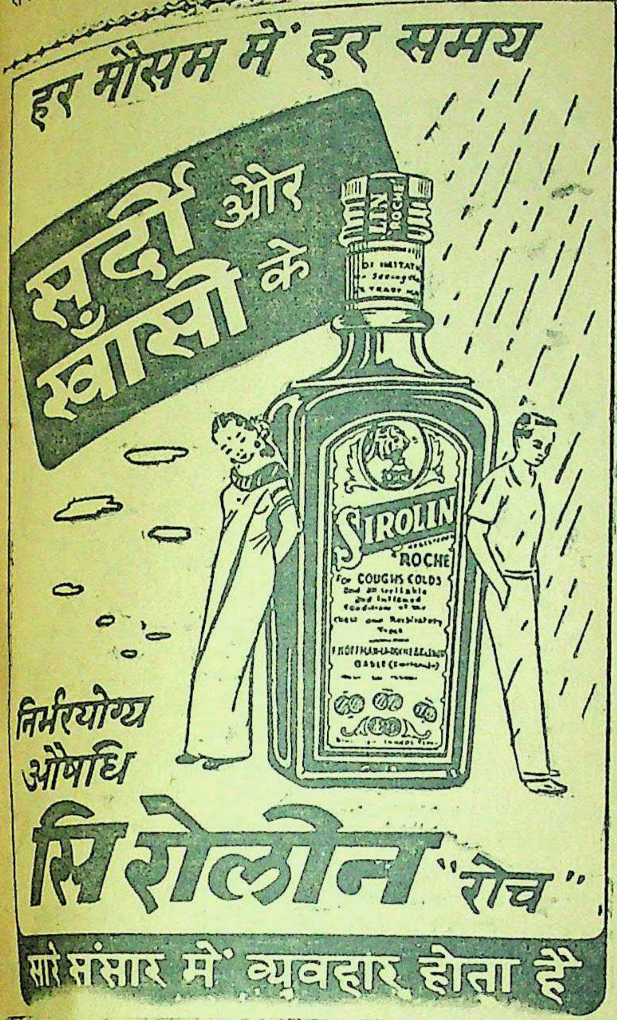
हर मौसम में हर समय
सर्दी और खाँसी के
SIROLIN ROCHE
For COUGHS COLDS
निर्भरयोग्य औषधि
सिरोलीन "रोच"
सारे संसार में व्यवहार होता है

शारीरिक उष्णता के बजह से::

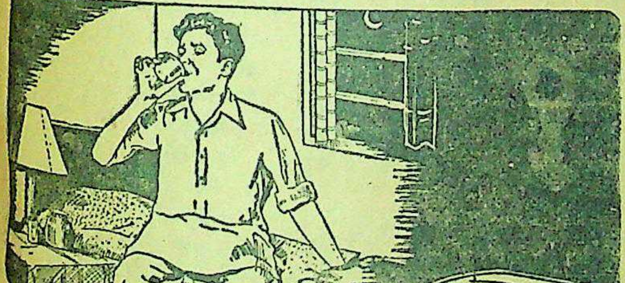

यदि आपको कायमी बदहजमी और अरुचि जैसी उष्णता की शिकायतें हों, रातको बारम्बार सख्त प्यास आपको जगाती रहती हो, खाना खानेके बाद जलन होती हो और खट्टी डकारें आती हों, पित्ताशय में कायमी मन्द कब्ज़ रहती हो, सारे शरीरके ऊपर और अन्दर जलन रहती हो, आंखें जलती हों, हथेलियों और पाँव के तलुओं में जलन होती हो, मूत्र-मार्ग में जलन होती हो, वजन कम हो गया हो, पंडुरोग हो, सामान्य कमजोरी महसूस होती हो तो आजही एक बोतल का सेवन शुरु कीजिये, २५ से भी ज्यादा सालों से पर्लकाढा ने इस दवाई को सेवन करनेवाले हजारों लोगों को अच्छा कर दिया है।

पर्लकाढा जवान और बुढे स्त्री, पुरुष और बच्चे – सभीको समान रुपसे फायदा करता है। प्रसूता स्त्रियों को भी फायदा करता है।

शारीरिक उष्णता के लिये मशहूर अनुभूत इलाज!

शीतल शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

एकबार परीक्षा कर स्वयं अजमाइये!

/HI/1

पर्ल कम्पनी, आर्योषधी कारखाना, रानीबाग, बम्बई २५

यू० पी० प्रतिनिधि दोसर एण्ड कम्पनी, बिरहना रोड, कानपुर।

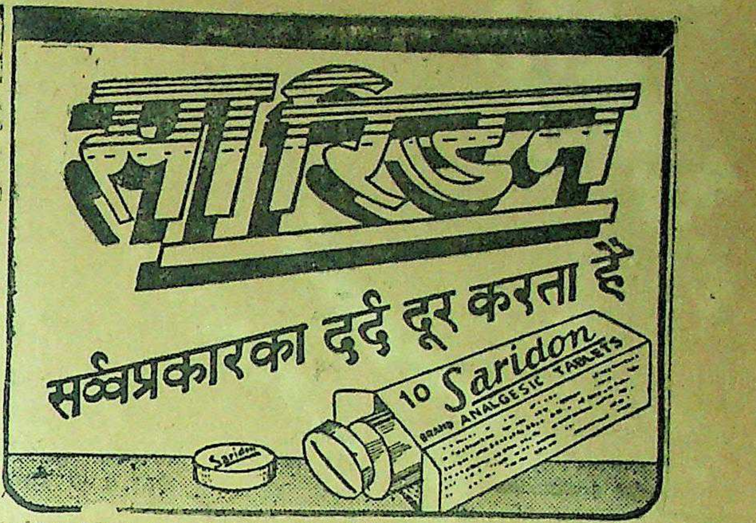
सारिडन
सर्व्वप्रकारका दर्द दूर करता है
10 Saridon
BRAND ANALGESIC TABLETS
Saridon

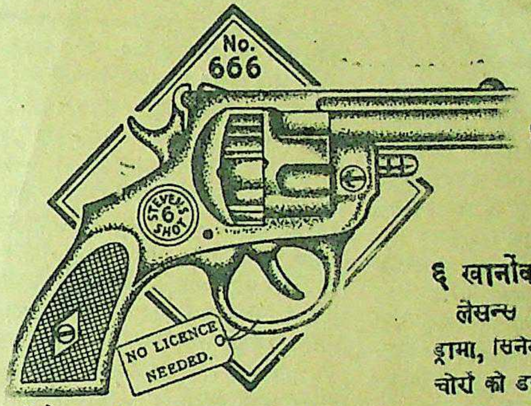
No. 666
STEVENS 6 SHOT
NO LICENCE NEEDED.

आत्मरक्षा

अमरीकन माडल

औटोमेटिक

६ खानोंवाला पिस्तौल

लैसन्स की जरूरत नहीं

ड्रामा, सिनेमा तथा खतरे के समय चोरों को डराने के लिए बड़े काम की है। दागने पर पिस्तौल के मुँह से आग और धुआं निकलता है। असली रिवाल्वर की तरह मालूम होती है। साइज ७½"×४" और वजन १५ औंस। मूल्य ८) एक साथ में एक दर्जन गोलियां (प्लाम डिस्क) मुफ्त। अतिरिक्त एक दर्जन गोलियों का दाम २) स्पेशल तांबे का बनी ६६६ नं० की पिस्तौल का दाम १०) पोस्टेज और पैकिंग का अलावा १।=) प्रत्येक आर्डर के साथ एक शीशी रिवाल्वर का तेल मुफ्त। अपना पूरा पता साफ साफ लिखें। नापसन्द होने पर दाम वापस।

अमरीकन ट्रेडिङ्ग एजेन्सी, (D.D.A.) हलका नं० २१, अमृतसर

American Trading (D.D. A.) Halka No. 21 Amritsar

STUDIO
'जुल्फे कश्मीर' हेअर आयल

स्त्री की विजय सौंदर्य में है और सौंदर्य का भेद है उसके बाल

जुल्फे काश्मीर हेयर आइल

स्त्री के बालों को घने, लम्बे, मजबूत और चमकीले बनाने में अद्वितीय है। बाजारी तेलों पर धन नष्ट करने के बजाय जुल्फे काश्मीर हेयर-आइल सेवन करें। यह एक शताब्दी से भी अधिक ख्याति-प्राप्त है। आप सदैव इसे ही पसन्द करेंगे।

काश्मीर परफ्यूमरी वर्क्स

[illegible] रोड, दिल्ली

सन्देश

माननीय हाफिज मोहम्मद इब्राहीम एम० एल० ए०, मंत्री यातायात-विभाग; संयुक्तप्रांत

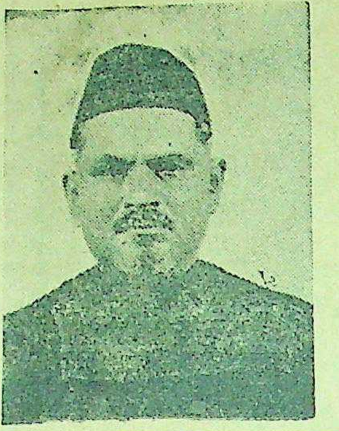

मुझे यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि अर्द्धकुंभ मेले में नशाबन्दी का प्रचार करने के लिये कैम्प खोला जा रहा है। शराब, गांजा, चरस जैसी नशीली चीजों का इस्तेमाल करने में इन्सान अपनी असली हालत खो बैठता है, जिसकी वजह से वह अपनी हरकतों पर काबू नहीं रख सकता। इसी सबब से हर एक धर्म में नशा करने की मनाही है। मुझे पूरी उम्मीद है कि यह कैम्प नशे की बुराइयां और नशा छोड़ने से फायदा बताकर लोगों को नशीली चीजों से दूर रखने में अच्छा काम करेगा।

—हाफिज मोहम्मद इब्राहीम

नशा-निषेध का प्रचार

प्रयाग में स्थापित कैम्प का क्या ध्येय था ?

लेखक, श्री रघुवंशबिहारीलाल माथुर, जिला आबकारी अफसर, इलाहाबाद

हमारे देखते-देखते ही भारतवर्ष में मादक वस्तुओं का सेवन बढ़ता ही चला गया। यह तो सभी को मालूम है कि आबकारी-विभाग से ब्रिटिश सरकार बहुत रुपया वसूल किया करती थी। दूकानों के नीलाम के समय सदैव यह प्रयत्न किया जाता था सरकारी कोष में खूब रुपया आये। नीलाम के बाद इन मादक वस्तुओं की बिक्री बढ़वाने का काम भी इन्हीं लोगों के सुपुर्द था। धीरे-धीरे भारतीय समाज पर धर्म का दुरुपयोग कर इस नीति को इतना बृहत बनाया गया कि मादक वस्तुओं का सेवन एक अच्छा फैशन समझा जाने लगा।

दुनिया की दूसरी लड़ाई में तो शराब पीने की आदत सैनिकों तथा अन्य औद्योगिक कर्मचारियों में इतनी बढ़ी कि भारत के डिस्टिलरियों में इतनी अधिक मात्रा में शराब बनाना असम्भव हो गया। जहां अन्य आवश्यक सामग्रियों का चोर-बाजार शुरू हुआ वहां शराब की बोतल भी उससे पीछे न हटी। यद्यपि वह महायुद्ध समाप्त हो गया है; परन्तु भारत की जनता आज भी इसी व्यसन में ग्रसित है। इलाहाबाद के पिछले आबकारी की दूकानों का नीलाम भी अद्वितीय दृश्य था। जौनपुर, प्रतापगढ़ तथा सुलतानपुर के जिलों में तो मादक द्रव्यों की बिक्री हमारी कांग्रेस सरकार द्वारा बन्द की जा चुकी थी। संभवतः ठेकेदारों को ज्यादा दाम पर दूकान लेने का यह एक और प्रलोभन था। उस जिले के अधिकारियों ने दूकान पर बोली बोलनेवालों को कड़ी चेतावनी दी कि सरकार की नीति इस समय जनता के चरित्र सुधारने-हेतु नशीली चीजों के प्रचार कम करके पूर्ण नशाबन्दी करना है। इतना होने पर भी जैसा कि माननीय चौधरी श्री गिरधारीलाल जी, मंत्री आबकारी विभाग ने नशा-निषेध प्रचारक कैम्प, अर्धकुम्भमेला, इलाहाबाद का उद्घाटन करते हुए १४ जनवरी १९४८ को कहा कि जिन जिलों में नशा बन्दी कर दी गई उनके पासवाले जिलों में आबकारी-विभाग की आमदनी और भी बढ़ गई। अप्रैल सन १९४७ से ही दूकानदारों ने आबकारी गोदाम से अधिक से अधिक मात्रा में मादक वस्तुओं—गांजा, भांग, अफीम, शराब लेकर संचना शुरू कर दिया। इसको रोकने के लिए सरकार के आदेशानुसार इस जिले में प्रत्येक ऐसे दूकानदार जिसकी बिक्री असाधारणतः अधिक थी, नियमित कर दी गई। इस प्रतिबन्ध का घोर विरोध ठेकेदारों की ओर से हुआ, क्योंकि बिक्री के घटने से उनकी आमदनी कम होने लगी।

ज्यों-ज्यों अर्ध-कुम्भ मेला निकट आता गया ठेकेदारों का विरोधी दल संगठित हो जिले की इस कड़ी नीति का विरोध करता रहा। इससे पहले इस जिले में कोई प्रभावशाली "टेम्प्रेन्स प्रचार की ऐसी संस्था न थी जो कि जनता को मादक वस्तुओं के सेवन की हानियां बताती। नवम्बर १९४७ में श्री आर० पी० भार्गव आई० सी० एस०, कलेक्टर इलाहाबाद ने यह निर्णय किया कि अर्ध-कुम्भ मेले में एक बृहत नशा-निषेध प्रचारक कैम्प का आयोजन किया जाये जिसका कि ध्येय जनता को नशा-त्याग की उपयोगिताएं समझाकर उनसे त्रिवेणी-तट पर सम्पूर्ण नशा-त्याग की शपथ ली जाये। इस आशय का एक पत्र श्री भार्गव जी ने श्रीमान् के० के० नायर आई० सी० एस० आबकारी कमिश्नर संयुक्तप्रान्त को लिखा जिसमें कि स्थानीय दशा का परिचय देते हुए यह अनुरोध किया कि चूंकि अर्ध-कुंभ मेला एक ऐसा मेला है जिसमें कि भारतवर्ष के कोने-कोने से जनता आवेगी। इसीलिए नशा-निषेध प्रचार का महत्त्व और भी बढ़ जाय। उक्त कमिश्नर साहब ने श्री भार्गव जी की राय का समर्थन करते हुए युक्त प्रान्तीय सरकार को इस आयोजना को आर्थिक सहायता देने के लिए लिखा। साथ ही साथ उन्होंने श्री उमेशचन्द्र जी माथुर को जो कि जमुनापार के हल्के के आबकारी इन्स्पेक्टर हैं और जिनका कि बहुत-सा जीवन नौकरी में आने से पहले नशा-निषेध प्रचार तथा सम्पादकीय कार्यों में बीता इस कैम्प के कार्य के लिए नियुक्त कर दिया। श्री उमेशचन्द्र ने इस कैम्प का संचालन तन-मन से किया। उनके आदेशानुसार जो इस कैम्प के फाटक पर चित्र बने हैं, उनकी प्रशंसा जनता ने बार बार मुझसे की है। मैं श्री उमेशचन्द्र को इसके लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूं।

इस काम के उठाने में हम लोगों को कठिनाइयां तो अवश्य हुई परन्तु हमारा उत्साह प्रतिदिन बढ़ता ही गया जब कि जन-हितकारी विभिन्न संस्थाओं ने अपना सहयोग देना प्रारम्भ किया। हम हरिजन-आश्रम प्रयाग के अधिकारी माननीय न्यायाधीश शंकरशरण जी, श्री बृजविहारीलाल जी, श्री श्यामबिहारी विरागी के बहुत आभारी हैं कि उन्होंने अपने बालक व बालिकाओं को भी हमारे कैम्प में कीर्तन-गान के लिए भेजा और उन्होंने स्वयं अपने प्रभावशाली व्याख्यानों द्वारा जनता को नशा-निषेध की उपयोगिताएं समझाई। प्रयाग संगीत-समिति के मन्त्री श्री बैजनाथ सहाय जी डायरेक्टर श्री महेशनारायण जी तथा श्री रामेश्वर सहाय जी व महेशचन्द्र जी के हार्दिक प्रयत्नों से हमारा १४ जनवरी के प्रोग्राम के लिए जो कि संगीत से सम्बन्ध रखता था और जिसको कि आप लोगों में से बहुतों ने रेडियो सुना होगा—हम आभारी हैं। श्री पंचानन पाठक तथा जन-नाट्य-संघ के रत्न श्री मुकुर्जी और श्री व्यास जी संगीत-भूषण (जिन्होंने हमारे टेम्प्रेन्स पब्लिसिटीआफीसर की नशा-निषेधकीर्तन की रचना को अपनी सरक्षता में कुमारी कालेकर तथा अपनी अन्य छात्राओं का रेडियो पर गान करवाया) की सहायता के हम कृतज्ञ हैं। इसके अतिरिक्त स्वामी सुखदेवानन्द जी शाहजहांपुरी, श्री मंजुल जी, श्री छैलविहारी जी, पंजाब महावीरदल के प्रमुख कार्यकर्त्ता प्रोफेसर कर्मचन्द्र जी 'प्रेम', श्री रामस्वरूप जी शास्त्री, प्रोफेसर जगदीशचन्द्र जी, श्री पूरणचन्द्र जी स्वामी रामदेव जी विरक्त तथा नैनी कृषि-कालेज के छात्रों जिन्होंने समय समय पर अपना व्याख्यान तथा गान से इस कैम्प के कार्यक्रम को आगे बढ़ाया, हमारे धन्यवाद के पात्र हैं। श्री बी० डी० भट्ट, आफीसर आन स्पेशल ड्यूटी, प्रोहिबिशन एक्साइज, लखनऊ ने इस कैम्प के चलाने में जो हमको हार्दिक व आर्थिक सहायता दी है और दे रहे हैं, उसको हम कभी नहीं भूल सकते। श्री हीरालाल जी वर्मा, रिक्लेमेशन आफीसर स्वयं हमारे कैम्प में पधारे और उन्होंने अपने विभाग का पूरा सहयोग दिया। श्री के० एस० मलिक स्टेशन डायरेक्टर, आल इंडिया रेडियो, लखनऊ तथा श्री मदन आगा ने हमारे प्रोग्राम को १४ जनवरी को जो रेडियो द्वारा प्रकाशन किया हम उनके आभारी हैं।

मादक वस्तुओं का सेवन तो सभी धर्मों में वर्जित है। इसी से हमको पूर्ण आशा है कि हमारे देश में नशा-निषेध का पुण्य-कार्य जिसको कि कांग्रेस, महात्मा गांधी की प्ररणाओं से बहुत दिनों से चला रही है सफल होगा। ऐसी वस्तुएं जिनसे कि सामाजिक आर्थिक, लौकिक तथा पारलौकिक हानियां हों हमारे भारतवर्ष में अब नहीं रह सकतीं। आमतौर पर यह कहा जाता है कि शराब से गम गलत होता है लेकिन इस बात में कोई तत्त्व नहीं। एक कवि ने कहा है कि—

> "पीना हराम है न पिलाना हराम है
> पीने के बाद होश में आना हराम है।"

ऐसी अवस्था में यदि कोई पीकर सदैव के लिए सो जाना चाहे अथवा अपना जीवन नष्ट करना चाहे तो ऐसे व्यक्ति के लिए वास्तव में शराब रामबाण है।

श्री गुरुनानक जी ने सम्राट् बाबर के आग्रह करने पर कि वे शराब पी लें यह कहा कि यदि इसके पीने से मस्ती आती है तो कोई ऐसा नशा क्यों न पिया जावे जिसकी मस्ती शराब की भांति २४ या ४८ घंटे में न उतरे। गुरु जी ने बाबर से ईश्वरभक्ति के नशे को पीने की सलाह दी जिसकी कि मस्ती आजन्म रहती है। इससे अधिक मैं आपको क्या सलाह दे सकता हूं।

नशा-निषेध का कार्य तो जनता ही का कार्य है, और इसी कारण से हमारा सदैव प्रयत्न यही रहा कि जनता के अध्यक्ष ही इस कैम्प के मंच पर इसका प्रचार करें और अपने प्रभाव से नशा-निषेध की दृढ़ प्रतिज्ञा जिसके कि स्मरण-हेतु इस कैम्प की ओर से एक रंगीन छपा हुआ प्रतिज्ञा-पत्र जिसमें तीन महान् आत्माओं श्रीकृष्ण, भीष्म तथा महात्मा गांधी के चित्रों के अतिरिक्त हमारी [illegible] के अन्दर नशा-निषेध की दृढ़ प्रतिज्ञा अंकित है निःशुल्क ले जायें। मुझको यह जानकर हर्ष है कि जनता ने इस चित्र को जिसको कि टेम्प्रेन्स पब्लिसिटी आफीसर श्री उमेशचन्द्र जी माथुर ने अपने आदेशानुसार बनवाया और जिसकी व्याख्या उन्होंने स्वयं उसके पीछे लिखी, पसन्द किया। हमारा ध्येय इस चित्र को निःशुल्क देकर अधिक मात्रा में ऐसे ही बांट देने का नहीं था। इसीलिए हम इसको केवल उन्हीं महानुभावों को दिया है जिन्होंने कि प्रयाग की इस पवित्र धरती संगम के तट पर दृढ़ प्रतिज्ञा की करते कि वे सम्पूर्ण नशे त्याग देंगे। यद्यपि आर्थिक दृष्टिकोण से इस चित्र की कीमत लेनेवाले के लिए कुछ भी नहीं है परन्तु धार्मिक तथा पारलौकिक दृष्टि से इस प्रतिज्ञा का शुल्क आत्मिक बल है जो कि अमूल्य है।

श्री ए० काजमी, शिक्षा-प्रचार आफीसर—संयुक्तप्रान्त इलाहाबाद ने नशा-निषेध की शिक्षा को हमारे कलेक्टर सा० श्री दलजीतसिंह राठौर की प्रार्थना पर हार्दिक रूप से अपनाया। आपने केवल अपने विभाग की सुसज्जित मोटर ही हमारे कार्य के लिए न दी वरन् हमको अन्य अनेकों प्रकार की सुविधाएं इस कैम्प के सुचारु रूप से चलाने के लिए दीं और दे रहे हैं। जनता की अन्य धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक संस्थाओं ने अपने सहयोग देने का वादा किया है जिससे कि हमको पूर्ण आशा है कि नशा-निषेध-प्रचारक कैम्प का कार्य अर्ध-कुंभ के अंतिम स्नान दिवस तक निर्विघ्न चलता रहेगा। इस कार्य के करने में हमसे त्रुटियां तो अवश्य ही हुई होंगी जिसके हम क्षमाप्रार्थी हैं। साथ ही साथ हमारी सभी महानुभावों से प्रार्थना है कि वे इसके सम्बन्ध में अपने विचार हमारे पास भेजें ताकि हम उनका पूर्ण उपयोग इस कार्य को पुष्ट बनाने के लिए कर सकें।

नशा-निषेध नीति के नम्रदाता महात्मा गांधी आज हमारे सामने नहीं हैं। उनके देहावसान से हमको दुसह दुख हुआ है। उस महान् आत्मा ने देश के लिए कितने उपकार किये, हैं यह आप स्वयं ही जानते होंगे। श्री रामचन्द्र जी ने बालि की मृत्यु पर उनकी पत्नी तारा को सान्त्वना देते हुए कहा था—

> क्षिति जल पावक गगन समीरा,
> पंच रचित अति अधम सरीरा।
> प्रगट सो तनु तव आगे सोवा,
> जीव नित्य केहि लगि तुम्ह रोवा।

इस स्थूल शरीर के सम्बन्ध में महात्मा गांधी जी की भी यही धारणा थी। अतएव अब हमारा परम धर्म है कि ऐसे महात्मा के लिये जिसने अपना पूरा जीवन देशसेवा में अर्पण कर दिया हम ऐसे उपाय करें कि उनकी आत्मा को संतोष हो। जैसा कि पं० जवाहरलाल नेहरू, प्राइम मिनिस्टर ने कहा है कि यह समय शोक अथवा गुस्से का नहीं हम महात्मा जी के आदर्शों का निरूपण कर यदि उनके बताये हुए मार्ग पर चलें तो उनकी आत्मा को संतोष होगा। नशा-निषेध का कार्य महात्मा जी को इतना प्रिय था कि उन्होंने इसके बारे में अपने विचार इस नववर्ष के आरम्भ में ही प्रकट किये थे और जनता तथा सरकार को इस नीति के पालन के लिये सलाह दी थी। मैं सब सज्जनों से अनुरोध करता हूं कि वे अधिक से अधिक संख्या में नशा-निषेध की दृढ़ प्रतिज्ञा करें और इस संदेश को महात्मा गांधी के आत्मिक संतोष हेतु देश के कोने कोने में ले जाएं।

मद्य-निषेध और पूज्य बापू

उनका कार्य प्रत्येक भारतीय को पूरा करना चाहिए

लेखक, श्री शालिग्राम पथिक

वैष्णव जन तो तेणे कहिए,
जे पीड़ पराई जाणे रे—
पर दुखे उपकार करे तोये,
मन अभिमान न आणे रे।

बापू स्वयं एक आदर्श वैष्णव जन थे। वे सारे संसार को, सम्पूर्ण मानवता को, जिसे उन्होंने सदैव अपना सगा माना है, वैष्णव जन बना लेना चाहते थे। यही उनकी विशेषता थी। यही उनका बड़प्पन था। इसी के लिए वे जन्मे थे, इसी के लिए जिए, इसी के लिए मर भी गये—प्राणों की आहुति दे गये।

हमने उनके इसी अपनत्व और बड़प्पन से प्रभावित होकर उन्हें सदैव 'बापू' कहकर पुकारा था, महान् आत्मा (महात्मा) कहा था। इसी बड़प्पन और अपनत्व के कारण आज सारा विश्व, सम्पूर्ण मानवता, यहां तक पेड़, पशु-पक्षी भी उनके निधन पर रो रहे हैं; बिलख रहे हैं; उनकी अमर आत्मा की शान्ति के लिए, हर संभव मार्ग को टटोल रहे हैं—सब कुछ करने को तैयार हैं।

वह विश्व की निधि थी, मानवता का गौरव था। संसार का सबसे बड़ा महापुरुष था, ऐसी विभूतियां, हजारों हजार वर्षों में ही अवतरित होती हैं। धन्य है वह देश जहां ऐसा महान् पुरुष जन्मा हो, रहा हो, बोला हो, चला हो, खाया, पिया सोया हो, और, और........।

धन्य है वह युग, वह पीढ़ी जिसने अपनी आंखों उसकी चलती-फिरती मूरत देखी हो, जिसने अपने कानों उसकी अमर वाणी सुनी हो, उसके आदेशों पर अमल किया हो, निषेधों से परहेज किया हो।

हम और आप ऐसे ही भाग्यशाली व्यक्ति हैं। हमने अपनी आंखों, कानों बापू की मद्य-निषेध अमर वाणी को सुना है। हमने अपनी आंखों—सन् ३० में माताओं, बहनों को, छोटे छोटे दुधमुंहे बच्चों को, बड़े बड़े नेताओं को, शराब, गांजा भांग की दूकानों पर पिकेटिंग करते, लाठियां खाते, जेल जाते देखा है। और सुना है 'बापू' का फरमान "प्रत्येक भारतवासी को, हर प्रकार के नशे को छोड़ देना चाहिए। नशीली चीजों की बिक्री, उनका उपयोग, उनका चलन, हमारे राष्ट्र पर, देशवासियों पर कलंक है। मैं अपने प्राण देकर भी इसे धोना चाहूँगा।"

बापू चले गये। वे अपनी जवान के धनी, अपनी बात के पक्के, अपने निश्चय के अटल निकले। सचमुच वे हमारा कलंक धोने के लिए प्राणों पर खेल गए, जान की बाजी लगा गये। और हम... हम उनके जीते-जी उनके आदेशों और निषेधों का, पूरी तरह पालन नहीं कर सके हों, उनके मरने पर उनकी इच्छा की अक्षरशः पूर्ति अवश्य करेंगे। उनकी आत्मा स्वर्ग में बैठी प्रसन्न होगी, शान्ति पायेगी, हमारी लगन, इस निश्चय, इस कर्त्तव्य-परायणता को देखकर अपने आदेशों को पूरा पाकर, अपने अधूरे काम को पूरा होते देखकर हमें अपने चरण-चिन्हों पर संपन्न चलता देखकर।

आपको मालूम है, सन् ३७ में, पहले पहल कांग्रेसी राज्य होते ही मद्य-निषेध लागू किया गया था। अंगरेजी राज्य में शराब, गांजे, भांग की दूकानों की आमदनी से बच्चों की शिक्षा का खर्च चलता था। बापू के सामने भी मंत्रियों ने सवाल रक्खा, 'बापू अब शिक्षा का खर्चा कहां से आयेगा?' मैं उस समय उन्हीं के समीप बैठा था। मैंने बापू की आंखों में एक अजीब ज्योति चमकती देखी। उनका चेहरा तमतमा उठा। उन्होंने घोषणा-सी करते हुए, अटूट उत्साह और अटूक निश्चय के साथ कहा "इस देश के सभी स्कूल-कालेज बंद होकर भी, मद्य-निषेध किया जा सके, तो वह देश के लिए लाभ ही होगा, हानि नहीं।"

बापू इसे इतना आवश्यक समझते थे। उनके विचार से छूत-अछूत का विचार और नशे का चलन, बराबर के दर्जे के राष्ट्रीय कलंक थे। आपको मालूम है इसी कलंक को दूर करने के प्रयास में बापू ने वरदान पाये हैं—हम तक पहुँचाये हैं। (१) शराब की दूकानों पर पिकेटिंग कराने के प्रश्न पर सोचते हुए उन्हें नारी-समाज को उभारने, आगे बढ़ाने, मैदाने जंग में उतारने, वीर बहादुर बनाने का वरदान प्राप्त हुआ था। 'बापू' की आंखों में मानो एक आनन्द का सागर उमड़ आया हो। बापू ने—सभी आश्रमवासियों को बुलाकर अपनी इस शोध का शुभ संदेश सुनाया था। देश के बहुत से लोगों ने इस पर उनसे शंका भी की। पर बापू को तो मानो अन्तर्वाणी सुनाई दे चुकी थी। उन्होंने कहा—"मद्य-निषेध के कलंक को धोने में मुझे यह वरदान मिला है।"

(२) जैसा कि ऊपर आया है, कांग्रेसी मंत्रियों ने सेवाग्राम की कुटिया में, मद्य-निषेध से होनेवाली शिक्षा हानि का सवाल रक्खा था। मद्य-निषेध बापू के लिए अनिवार्य था। मानवता को धर्म-परायण वैष्णव जन, बनाने में सबसे बड़ी बाधा थी—रोड़ा था। वे अपने उसूलों के साथ समझौता कभी किये नहीं। उन्होंने तुरन्त ही 'बेसिक-शिक्षण' के स्वाश्रयी स्वावलम्बी, होने की बात रक्खी। यह भी उनके लिए हमारे लिए, मानवता के लिए मद्य-निषेध की दूसरी बड़ी देन, इसका बड़ा वरदान था।

आज, उनके चले जाने पर, हम आप सभी उनके प्रत्येक आदेश को, प्रत्येक निषेध को अक्षरशः पालन करके मृतात्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। उनकी आत्मा की शान्ति के लिए, हर संभव प्रयास करेंगे। उनके प्रिय गीत, वैष्णव जन.....का गान करेंगे। इतना ही नहीं, बापू के जीवन-आदर्श के अनुरूप उनके स्वप्न का 'वैष्णव जन' बनने का प्रयास करेंगे—बनेंगे, बन के रहेंगे। मद्य-निषेध उनकी एक प्रमुख अभिलाषा थी। हममें से कौन ऐसा कुपूत, कृतघ्न, कापुरुष होगा जो मृतात्मा की इच्छा के विरुद्ध आचरण करके उसे स्वर्ग में भी दुखी पातिप्त करने का पाप करेगा।

एक वह पापी 'गोडसे' है जिसने उन पर गोली दागी है, उनका खून किया है, उन्हें हमेशा के लिये हमसे अलग किया है, हमें लूट लिया है। उसी एक का पाप, दुष्कर्म, मानवता से ढोया नहीं जा रहा है। हम, उसके निषेध को भूलकर, उनकी प्रियतम अभिलाषा की अवहेलना करने, उसे रौंदकर, दूसरा पाप बढ़ाने का साहस नहीं करेंगे।

'बापू' संसार को 'वैष्णव जन' बनाने आये थे। वे चले गये। अपना काम पूरा करके। हमें सम्पूर्ण वैष्णव जन बन ही जाना चाहिए।

(पेज ६ का शेष)

'नर तन, पाय विषममत देही। पलट सुधा से सद विष लेईं' को पढ़कर चित्त प्रसन्न हुआ। यह आभास हुआ कि यह भारत में धर्म-प्रचार के आशय से बना है। इसके ठीक ऊपर के चित्र में एक कांग्रेसी नेता एक सम्मेलन में भाषण देते दीख रहे थे। चित्र के नीचे लिखे हुए शब्दों से प्रकट होता था कि वे नशा त्याग करने की शुभ प्रतिज्ञा करा रहे थे। धन्य हो महानुभाव के शब्द मेरे हृदय से निकल पड़े। जब माननीय चौधरी गिरधारीलाल जी फाटक पर आये तो मुझे ज्ञात हुआ कि यह नेता वही थे।

समय ज्यादा होता जा रहा था इसलिये इस ओर के सबसे ऊपर के चित्र पर दृष्टि डाली। बापू को खड़ा देख उसको और भी लगन से देखा। हवा में उड़ते हुए वायुयानों को देख उसमें घुसती हुई बोतलों पर दृष्टि पड़ी। भारत के चारों ओर से भागकर बोतलें वायुयान में जाती देखीं। बापू के चरणों में पड़ी धन की थैली भी उस ओर खिचती देखी। स्वतः ही भारत माता पर आंख पड़ी। समझा कि शृङ्खलाएँ टूटी हैं। इसी से यह अँगरेजी अमृत उनके वायुयानों में उड़ा विलायत चला जा रहा है। और साथ में धन भी। परन्तु बापू हाथ जोड़े खड़े हैं और मानो कह रहे हैं कि चाहे भारत दिवालिया हो जाय परन्तु सम्पूर्ण नशा-त्याग भारतवर्ष के लिये अत्यन्त आवश्यक है। महात्मा सचमुच महान् हैं। सभी धर्मों का नशा सत्यानाश कर रहा है।

दायें ओर गोमाता के एक चित्र में जिसमें कि थन से सलिल दूध की धारा निकल रही है—देख में मुग्ध हो गया। और दौड़कर उस विशाल पिंडाल के अन्दर घुसा जहां अब तक सैकड़ों आदमियों की भीड़ जमा हो चुकी थी। मैं पंडाल में एक ओर बैठ गया। उस समय जो हरिजन सम्मेलन हो रहा था उसमें दिये हुए व्याख्यानों का रस लेता रहा। ठीक पांच बजे के समय फाटक पर एक मोटर रुकी। दर्शकों की भीड़ फाटक की ओर बढ़ी। कानाफूसी होने लगी—गिरधारीलाल मंत्री आ गये। मंत्री जी भी कुछ समय फाटक के चित्रों को देखते रहे; और फिर मंच पर आये। मधुर गानों की तानें मैंने सुनीं। माननीय जी का भाषण सुन मुग्ध हो गया। उनके यह वाक्य कि सरकार नशे की कलुषित आय को नहीं चाहती मेरे कानों में आज भी गूंज रहे हैं। मैंने नशा-निषेध की दृढ़ प्रतिज्ञा उसी समय इस हेतु की कि मैं जी खोलकर अब नशा-निषेध का प्रचार प्रत्येक ग्राम में जहां जहां मैं जाऊँगा करूँगा। उसके उपहार-स्वरूप मुझको जो एक सुन्दर चित्र मिला है मैं आज भी उसको अमूल्य वस्तु समझकर अपनी गुदड़ी के सुरक्षित कोने में रखता हूँ।

उसी दिन से मैं प्रत्येक दिन इस कैम्प में जाता हूँ और इसकी कार्यवाही को देखता हूँ। जिस दिन महात्मा गांधी का दुखद समाचार रेडियो द्वारा आया मैं वहीं था। मैंने दुख-समुद्र में उमड़ती हुई लहरें जन समुदाय में देखीं। उपस्थित सज्जनों की आंखों से आंसू निकलते हुए देखे जिनमें कि कैम्प के संचालक भी अवश्य रहे होंगे। इसके बाद जब मैं कैम्प में गया तो वहां के अन्य कार्यक्रम को स्थगित पाया। रेडियो से आये हुए समाचार जो कि गांधी जी की मृत्यु से सम्बन्ध रखते थे मैंने बराबर इसी कैम्प में सुने। जन-समुदाय की कौन कहे जब देवता भी शोक में डूब [illegible] बादल उमड़ आये और देवताओं ने अश्रु-वर्षा की।

"हे हमारे इष्टदेव महात्मा गांधी! तुम जिस लोक में भी हो तुमको शान्ति मिले।"

यद्यपि महात्मः गांधी के पंच भौतिक शरीर का अंत हो गया है, परन्तु उनकी आत्मा अवश्य ही यह देख रही है कि उनके दिखाये हुए मार्ग पर जनता जिसके लिये उस अमर शहीद ने अपने प्राण दिये चल रही है अथवा नहीं। शारीरिक अंत के लिये शोक मनाना पागलपन है। अतएव कैम्प के संचालकों से मेरी यह प्रार्थना है कि वे नशा-निषेध के कार्य को अपने धार्मिक व्याख्यानों द्वारा सलग्न चालू करें ताकि वह चरित्र-बल जिसका उत्पन्न करना महात्मा गांधी का ध्येय था, थोड़े ही समय में हो जाय।

मैं अर्ध-कुम्भ में स्थित सभी साधु-वृन्दों की ओर से यह बताना चाहता हूँ कि वे सभी हार्दिक रूप से इस कार्य का समर्थन कर रहे हैं।

केवल विवाहित व्यक्तियों के लिये
नवीन पुस्तकें
१—सचित्र कोकशास्त्र—इसे पढ़कर आपका विवाहित जीवन सुखमय हो जायगा। मूल्य १॥)
२—८४ आसन—८४ चित्रों सहित आसनों का मनोहर वर्णन दिया गया है। मूल्य १॥)
३—गुप्त चित्रावली—संसार की सुंदरियों के ३४ आकर्षक चित्रों का मनोहर संग्रह। मू० ३।) पूरा सेट लेने पर ४॥)
पोस्टेज ।।) अलग
पता—प्रतियोगिता आफिस, मथुरा (२५)

घुटना लकड़ी की तरह कड़ा
मध्यवयस्क पुरुष जो कठिनाई से चल सकता था
क्रूशन का सेवन करता है और अब १४ मील रोज़ चलता है

यद्यपि एक्स-रेज़ यह नहीं बतला सकी कि इस पुरुष के घुटने में कोई ख़राबी थी और वह बराबर कड़ा और अस्वस्थ रहा आया। फिर उसने क्रूशन की बात सुनी और पहली बोतल भी पूरी नहीं खा पाया था कि कड़ेपन ने उससे विदा माँग ली। वह लिखता है :—

"कुछ साल पहले मेरे घुटने का जोड़ ख़राब हो गया और कड़ा पड़ गया। लगभग तीन महीने तक मैंने इलाज किया। मैं कठिनाई से चल सकता था; वह बहुत ही ख़राब हो गया था और उसमें दर्द बहुत होता था। मैंने उसका "एक्स-रे" भी कराया; परन्तु घुटने में कोई ख़राबी न दिखी। मैंने क्रूशन साल्ट की बात सुनी, इसलिए इसकी एक बोतल प्राप्त कर ली। इस बोतल का कुछ ही साल्ट खाया था कि कड़ेपन ने पिण्ड छोड़ दिया। इसलिए अब मैं नित्य सबेरे क्रूशन का सेवन करता हूँ और रोज़ १२ अथवा १४ मील चल सकता हूँ, यद्यपि मैं मध्यवयस्क हूँ।"—ए० एम०

वातरोग साधारणतः रक्त-प्रवाह के ज़हर से हुआ करता है। यदि आप रक्त-प्रवाह शुद्ध कर सकें, ज़हर आपके जोड़ों में प्रवेश नहीं कर सकता।

यही तरीका है कि क्रूशन आपको फ़ायदा पहुँचा सकता है। क्रूशन विभिन्न खनिज क्षारों का एक सन्तुलित मिश्रण है। यह मधुर, दस्तावर और मूत्रवर्द्धक औषध है। इस दोहरी क्रिया से क्रूशन पूर्णतः भीतरी सफ़ाई करता है।

क्रूशन साल्ट सभी दवाफ़रोशों के यहाँ बेचा जाता है। क़ीमत १॥=) प्रतिबोतल।
B.C. 1

मादक वस्तुओं को दूर भगाइए

(पेज १६ का शेष)

गुण बढ़ता है। ऐसे व्यक्तियों के द्वारा ब्रह्मचर्य का पालन होना असंभव है। जिन्हें ब्रह्मचर्य-व्रत पालन अभीष्ट है उन्हें तो बलात् इन वस्तुओं का त्याग कर ही देना चाहिए।

प्रत्येक मनुष्य राष्ट्र की एक इकाई है, अर्थात राष्ट्र की सम्पत्ति है कारण कि उसने अपने शरीर का निर्माण राष्ट्र की भूमि पर राष्ट्र के अन्न-जल से किया है। माता के उदर में आने से पूर्व प्रत्येक मनुष्य माता और पिता के रज-वीर्य में व्यापक था। रज और वीर्य भी देश के अन्न-जल से बना था। इस प्रकार सिद्ध हो जाता है कि हमारा शरीर निजी हमारी सम्पत्ति नहीं, देश की सम्पत्ति है। यदि हम अपने शरीर को, राष्ट्र की इस धरोहर को मादक द्रव्यों के सेवन से निर्बल बना रहे हैं अथवा नष्ट कर रहे हैं तो निश्चय ही देश का अहित कर रहे हैं। यह समझना भयंकर भूल है कि हम अपने पैसे से जो चाहें कर सकते हैं, किन्तु ऐसा समझनेवालों को गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए कि हमें प्रारब्ध से जो धन प्राप्त हुआ है वह दुरुपयोग करने के लिए नहीं वरन् देश की सेवा के लिए, अथवा जनता-जनार्दन की सेवा के लिए, सदुपयोग के लिए प्राप्त हुआ है। यदि हम मादक द्रव्यों में अपने धन को नष्ट कर रहे हैं तो निश्चय ही देशद्रोही हैं।

सूक्ष्म और पारलौकिक दृष्टि से विचार करने पर पता चलता है कि हमारा शरीर माता-पिता और राष्ट्र के अतिरिक्त देवताओं तथा ईश्वर की असीम दया से निर्मित हुआ है। सूर्य, चन्द्रमा वायु आदि देवताओं के सहयोग से पृथ्वी में अन्न की उत्पत्ति होती है अतएव यह शरीर देवताओं का ऋणी है। परम पिता परमात्मा की सत्ता से ही देवताओं को सभी शक्तियां प्राप्त हुई हैं। इस प्रकार देवताओं तथा ईश्वर के प्रति अपने कर्त्तव्य के पालनार्थ हमें सभी प्रकार के मादक द्रव्यों का सर्वथा परित्याग कर देना परम आवश्यक है। देवता तो सुगन्धित द्रव्यों के अग्नि में हवन करने से प्रसन्न होते हैं, किन्तु आज के युग में चरस, गांजा, सिगरेट आदि का विषाक्त धुआं वायुमण्डल को दुर्गन्धमय बनाता रहता है फिर भला देवता कैसे प्रसन्न हों?

ऊपर कहा जा चुका है कि सतोगुणी बुद्धि के द्वारा मानव इसी जीवन में भगवत्प्राप्ति के चरम लक्ष्य तक पहुंचने में समर्थ हो सकता है। किन्तु मादक द्रव्यों का सेवन करनेवालों की बुद्धि घोर तमोगुणी बनकर अधःपतन का कारण बन जाती है, इस प्रकार अपने पैर में आप ही कुल्हाड़ी मारनेवाली बात चरितार्थ होती है।

अपने कल्याण के इच्छुक जनों को अपने चारों प्रकार के ऋणों से मुक्त होने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ होकर प्रत्येक मादक वस्तु को सदैव के लिए नमस्कार कर लेना ही चाहिए।

मुफ्त! मुफ्त!! मुफ्त!!!
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ़. ए., बी. ए., पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से और होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ्त मंगाइये। पता :—
इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

गजब हो गया। अपनी गलती से सैकड़ों घर बरबाद! रक्षा चाहते हैं तो इसे जरूर पढ़ें।

१—ताकतवर यौवन वटी—भाइयो, यह ताकत की बहुत जोरदार दवा कई तरह की कीमती दवाइयों से तैयार की गई है। इसकी एक खुराक खाते ही शरीर में महान् शक्ति पैदा मालूम देती है तथा धातुक्षय, कमजोरी, स्वप्नदोष को जड़ से हटाकर पतले वीर्य को दही के समान गाढ़ा बना देती है, स्मरणशक्ति बढ़ाकर दिल व दिमाग को ताकतवर बनाती है। खोई हुई ताकत व जवानी को आठ दिन में फिर से लाने के लिए आश्चर्यजनक यह इलाज है। बूढ़ा या जवान एक बार भी इसे खा ले तो यौवन का फिर से पूरा आनन्द आ जाता है। इसके आश्चर्यजनक गुणों से मोहित होकर बड़े-बड़े राजा-महाराजा, सेठ-साहूकारों ने इस्तेमाल करके प्रसन्नता प्रकट की है। पूरे कोर्स ६४ गोली के पैकिट का ५)।

२—अमीरी तिला—यह अद्भुत तिला राजा-महाराजा, सेठ-साहूकारों के सेवन करने योग्य है। इसके लगाने से कमजोरी, ढीलापन, सुस्ती हटकर बिजली के समान अपूर्व ताकत पैदा होती है। फी शीशी ५), डाकखर्च तीनों का १)।

३—आर० पी० का पत्थर हजम चूर्ण—कब्ज को दूर कर दस्त साफ लाता है। फी शीशी ।=)। सूचीपत्र मुफ्त एजेन्टों की जरूरत।

पता—जैन बालामृत कार्यालय बेलनगञ्ज, (१००) आगरा

एजेन्ट—कुम्भट आदर्श मण्डी बाजार जोधपुर—बाबूलाल चौहान कंपोडर महाराष्ट्र आफिस के सामने नागपुर

"हिन्द सरकार के श्रम-विभाग ने 'राष्ट्रीय रोज़गार संस्था' स्थापित करके देश के उत्पादक साधनों के उपयोग के लिए अभी एक छोटा सा ही क़दम उठाया है, किन्तु इसे आगे बढ़ाने में सभी को पूरा पूरा सहयोग देना चाहिए।"—स्वतन्त्र भारत के प्रधान मंत्री पन्डित जवाहरलाल नेहरू।

बेरोज़गार शरणार्थियों की सहायता कीजिए

बेकारी की जटिल समस्या को सुलझाने और देश की औद्योगिक उन्नति के लिए हिन्द सरकार ने देश में जगह जगह अनेक रोज़गार-दफ़्तर (ऐमप्लायमेएट ऐक्सचेंज) खोल रखे हैं, जिनका काम बेरोज़गार लोगों को नौकरी दिलाना या किसी धन्धे में लगाना है। ये दफ़्तर नौकरी चाहने वालों और नौकरी देने वालों के बीच सम्पर्क स्थापित करते हैं और दोनों ही मुफ़्त तथा निष्पक्ष सेवा करते हैं। शरणार्थियों को भी फिर से काम में लगाने की ज़िम्मेदारी इन्हीं दफ़्तरों ने ली है।

अपनी मिलों, छोटे या बड़े कारख़ानों या दफ़्तरों में जब भी और जितनी भी जगहें ख़ाली हों, उनकी यथा समय सूचना अपने इलाक़े के रोज़गार-दफ़्तर को देकर आप न केवल अपने काम के लिए अच्छे से अच्छे कर्मचारी या कारीगर पा सकते हैं, बल्कि इस महत्वपूर्ण राष्ट्रीय उद्योग में हाथ भी बंटा सकते हैं।

बेरोज़गार शरणार्थियों की सहायता करना सच्ची देश-सेवा है

हिन्द सरकार के श्रम विभाग के अंतर्गत रिसैटिलमैन्ट और ऐमप्लायमेन्ट के प्रधान संचालन-केन्द्र द्वारा प्रकाशित

AC 330

यू० एस० ए० फाउण्टेन पेन और पेंसिल पेन

विभिन्न रंगों और आधुनिक डिज़ायनों के फाउण्टेन पेन तथा पेंसिल पेन बेचे जा रहे हैं। प्रत्येक फाउण्टेन पेन 'गोल्डेन निब और क्लिप' से युक्त है। साधारण २।=), उत्तम ३।), सर्वोत्तम ४।)। १४ कैरेट रोल्ड गोल्ड—गोल्ड-प्लेटेड निब-सहित ५)। १४ कैरेट रोल्ड गोल्ड गोल्ड निब-सहित ८), सर्वोत्तम ६।)। प्रत्येक अतिरिक्त निब ।=), उत्तम ।।।), सर्वोत्तम ।।)। १४ कैरेट गोल्ड निब ३।), सर्वोत्तम ४)। पेंसिल पेन साधारण २।।=), उत्तम ३=), सर्वोत्तम ४।=)। एक दर्जन अतिरिक्त लेड ।।), एक साथ तीन दर्जन १=)। नोट—प्रत्येक फाउण्टेन पेन के साथ एक निब और न लेड प्रत्येक पेंसिल पेन के साथ मुफ्त दिये जाते हैं। तीन पेन या पेंसिल न मंगाने पर १२।।% की दर से कमीशन दिया जाता है। डाक-व्यय ।।।)।

पत्र-व्यवहार अँगरेजी में ही करें।

Amercian C. Stores (D.I.) Post Box 12213. Calcutta (5)

१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

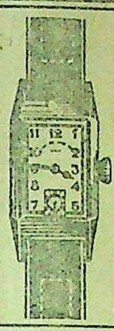

हमारे प्रसिद्ध काला तेल रजिस्टर्ड के सेवन करने से बाल हमेशा के लिए काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है, और उनको लम्बे, घुंघरवाले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न आते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता है और सिर को ठण्डक पहुंचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २।।) तीन शीशी पूरा कोरस की रियायती कीमत ६।।)। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक फैंसी म्यूट रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्दन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती है।

जरूरी नोट :—माल पसन्द न होने पर कीमत शीघ्र वापस कर दी जाती है। तीन शीशी दवाई के खरीदार को डाक खर्च बिलकुल माफ़ और चार अंगूठी लन्दन न्यू गोल्ड, और चार घड़ियां बिलकुल मुफ्त इनाम दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार-बार हाथ न आयेगा। आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ़ लिखें।

लंडन कमर्शियल कंपनी, पो. ब. नं० १६५ DA. लाहौर
LONDON COMMERCIAL Co. P. B. 165 DA. LAHORE.

२००० रु० इनाम !

REWARD Rs 1000
CALENDAR

मासिक-धर्म एक दिन में जारी !

मैन्सीली पिल्ज़ :-एक दिन के अन्दर ही कितने समय के रुके हुए मासिक-धर्म को जारी कर देती है। कीमत ५) रु०

मैन्सीली स्पेशल पिल्ज़ :—जो कि फौरन जारी करके मासिक-धर्म को बिलकुल साफ़ कर देती है। कीमत १०) रु०। याद रखो, गर्भवती इसे सेवन न करें क्योंकि यह बच्चेदानी को बिलकुल साफ़ कर देती है।

१०००) रु० इनाम। जो मैन्सीली पिल्ज़ को नुकसानदेह साबित करे। पत्र-व्यवहार गुप्त रक्खा जाता है।

डाक्टर असली दवाखाना।
(D.D.A.) हल्का नं० २१, अमृतसर।

१००) रुपये पुरस्कार

आश्चर्यमय आविष्कार

जादू की अँगूठी

यह अँगूठी जादू और मस्मेरिज़्म की सहायता से तैयार की गई है। आश्चर्य के काम करती है। जो कोई अँगूठी को पहनेगा, वह किसी भी काम में, वह कितना ही कठिन और दुष्कर हो, सफल होगा। यह आपकी सब कष्टों या रोगों से रक्षा करेगी। आप पर बुरा प्रभाव नहीं हो सकता। अँगूठी का पहननेवाला किसी भी (पुरुष या स्त्री) पर वह कितना ही हठीला हो, अपना पूरा नियंत्रण कर लेगा। नहीं, वह अत्यंत विनीत बन जाएगा और अनुपस्थिति से अपने को दुःखी अनुभव करेगा। आप प्रेम, मुकदमे और नौकरी में सफल होंगे और धन प्राप्त करेंगे। संक्षेप में, अँगूठी जादू का काम देगी। एक बार आज़माइए और ठीक पहली रात को इसके आश्चर्यजनक परिणाम देखिए।

मूल्य एक अँगूठी २ रु०। तीन अँगूठी ५ रु०। पैकिंग और पोस्टेज अतिरिक्त।

श्री शंकर भण्डार
पोस्टबाक्स २४३, कानपूर

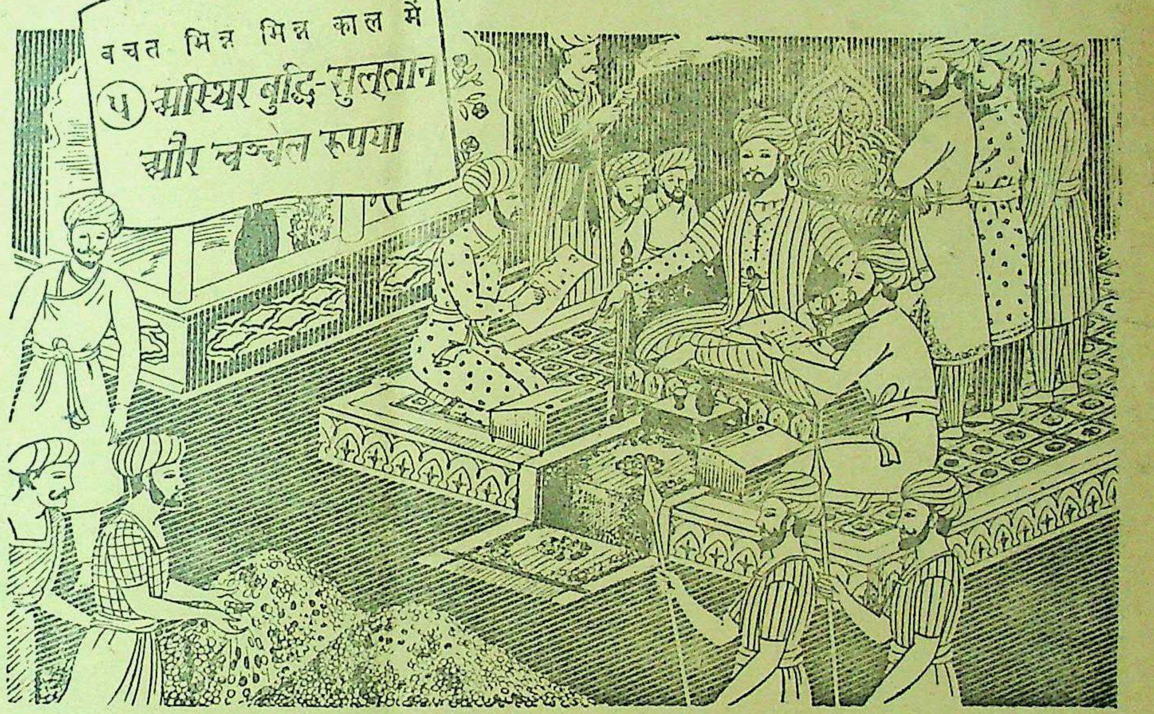

सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लक (१३२५ से १३५१) पहला बादशाह था जिसने भारतवर्ष में काग़ज़ के नोट प्रचलित करने का विचार किया। इस के अमितव्ययी राज्य प्रबन्ध ने राजकोष को खाली कर दिया। इन कठिनाइयों से छुटकारा पाने का साधन सोचते सोचते उसे चीन देश के काग़ज़ के नोटों का ध्यान आया। उस ने सोचा "यदि चीन का सम्राट अपने देश में काग़ज़ के नोट सफलता पूर्वक चला सकता है तो क्यों न मैं भी अपनी राजकीय शक्ति के आधार पर चांदी की मुद्रा की बजाय तांबे की मुद्रा चलाऊं ?" परन्तु भारतवर्ष उस समय सांकेतिक सिक्के के लिये तैयार न था।

उस समय बचत चांदी या सोने की ईंटों या मुद्राओं को संचय करके ही की जाती थी। और अब सुल्तान के आदेश से वे केवल तांबे के साथ ही बदली जा सकती थीं। इस कारण प्रजा ने इन नये सिक्कों का दृढ़ता पूर्वक विरोध किया। और तांबे के यह सिक्के प्रचलित न हो सके। इस कारण इन व्यर्थ तांबे के सिक्कों के ढेर के ढेर जिन का मूल्य कंकड़ समान था तुग़लकाबाद में एकत्रित होने आरम्भ हो गये।

आज कल रुपये के मूल्य की अस्थिरता का तनिक भी भय नहीं। अब हर कोई काग़ज़ के नोट शीघ्र ही स्वीकार कर लेता है क्योंकि भारतवर्ष की सम्पत्ति इन का आधार है। यह भी आवश्यक नहीं की सोना चांदी के संचय करने के रूप में ही बचत की जावे। आप अपनी बचत सुरक्षित मद में लगा कर अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स की मद में लगाया हुआ धन पूर्णतया सुरक्षित है और अवधि पूरी होने पर यह ५०% बढ़ जाता है अर्थात् प्रत्येक १०) बारह वर्ष में १५) बन जाते हैं। इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता। अब आप ५) से १५,०००) तक इस मद में लगा सकते हैं। (थोड़ी बचत वाले ।), ।।), और १) के नेशनल सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं)। ये सर्टिफ़िकेट्स अब १८ मास के उपरान्त भुनाये जा सकते हैं (५ रु० के सर्टिफ़िकेट्स १२ मास के उपरान्त)।

भविष्य के लिये बचाइए

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए

रुपया लगाने की सर्वप्रिय मद

ये डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजन्टों और सेविंग्स ब्यूरो से प्राप्त किये जा सकते हैं।

AC 214

नशा-निषेध प्रतिज्ञा-पत्र

लेखक, श्री उमेशचन्द्र माथुर टेम्परेन्स पब्लिसिटी अफ़सर

इस पृष्ठ पर छपे हुए "नशा-निषेध प्रतिज्ञा-पत्र" में तीन महान् आत्माओं—श्रीकृष्ण, भीष्म पितामह और महात्मा गांधी के चित्रों के अतिरिक्त उस अमर पताका का चित्र अंकित है जिसके नीचे सहस्रों भारतीयों ने अपना बलिदान हँसते-हँसते दे दिया है।

योगीराज श्रीकृष्ण की लौकिक लीलाओं से भारतवर्ष का कदाचित् ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जो न परिचित हो। वृन्दावन की 'कुञ्ज-गलिन' में तो आज भी कृष्ण-भक्तों को अपने इष्टदेव की मधुर बांसुरी की तानें सुनाई पड़ती हैं। निधवन में श्रीकृष्ण स्वयम् रात को वास कर अपनी लीलाऐं करते हैं। कई पुरुष जिन्होंने छिपकर उनकी रास-लीलाओं को देखा तथा सुना, सबेरा होते ही गूंगे तथा बहरे हो गये। ऐसे आदर्श रूप-भगवान् का चित्र तो जब तक हमारे सम्मुख रहे तब तक अच्छा है। बाल्मीक जी तो 'राम' का उलटा नाम लेते लेते परम भक्त हो गये। फिर स्वयम् भगवान् की मूर्ति उनके स्वच्छ चरित्र तथा उपदेशों का स्मरण कब तक न करायेगी।

परंब्रह्म श्रीकृष्ण जी अपने एक कर से महात्मा गांधी तथा दूसरे कर से महात्मा भीष्म की रक्षा कर रहे हैं और उनकी ज्योति इन दोनों ही महात्माओं के ऊपर पड़ रही है। जहां तक प्रतिज्ञा का सम्बन्ध है, संसार के इतिहास में भीष्म से बड़ा कोई आदर्श है ही नहीं। प्रेमोन्मत्त अपने पिता शान्तनु को शान्ति देने के हेतु पितामह भीष्म ने सत्यवती के पिता (मल्लाह) के सन्मुख केवल यही प्रतिज्ञा नहीं कि वे राज्य के उत्तराधिकारी नहीं होंगे वरन् वे स्वयम् ब्रह्मचारी रहेंगे। इस प्रतिज्ञा पर वे अंतिम समय तक दृढ़ रहे।

महात्मा गांधी की लीलाए तो संसार भर में विख्यात हैं। उनके आचरणों का अवलोकन कर यदि हम उनको देवता कहें तो अनुचित न होगा। भूमंडल की समस्त सभ्यताओं को अचम्भा हो रहा है कि एक "नंगे फकीर" ने अपने अहिंसा के शस्त्रों से भारतवर्ष की स्वतन्त्रता कैसे दिलाई है। क्या यह महात्मा जी में दैवी शक्ति की प्रचुरता का प्रमाण नहीं है? आपके अहिंसात्मक शस्त्रों में "नशा-निषेध" भी एक अमूल्य शक्तिशाली शस्त्र है जिन सबकी प्रचंडता तिरंगे झंडे के नीचे और भी बढ़ जाती है।

महात्माजी के हाथ में फहराते हुए इस झंडे की महिमा सचमुच अपार है यह सदा शक्ति प्रदान करनेवाला, वीरों को प्रोत्साहन देनेवाला, विश्व-विजयी, मातृभूमि का जीवन, सच्ची एकता का प्रचारक, अपने प्रकार का एक ही मात्र है। इसमें अंकित "नशा-निषेध की प्रतिज्ञा" भी जो कि चरित्र दृढ़ता का एक ही साधन है इसी प्रकार प्रचुर रूप से विस्तृत होगी—यही आशा है।

"नशा-निषेध प्रतिज्ञा-पत्र" में सभी आदर्शों का समावेश है। इसको सुननेवाले तथा इस पर हस्ताक्षर करनेवालों से अनुरोध है कि वे इसको सुनकर तथा इस पर हस्ताक्षर कर अपने लौकिक तथा पारलौकिक जीवन को इन आदर्शों का निरूपण कर सुधारेंगे।

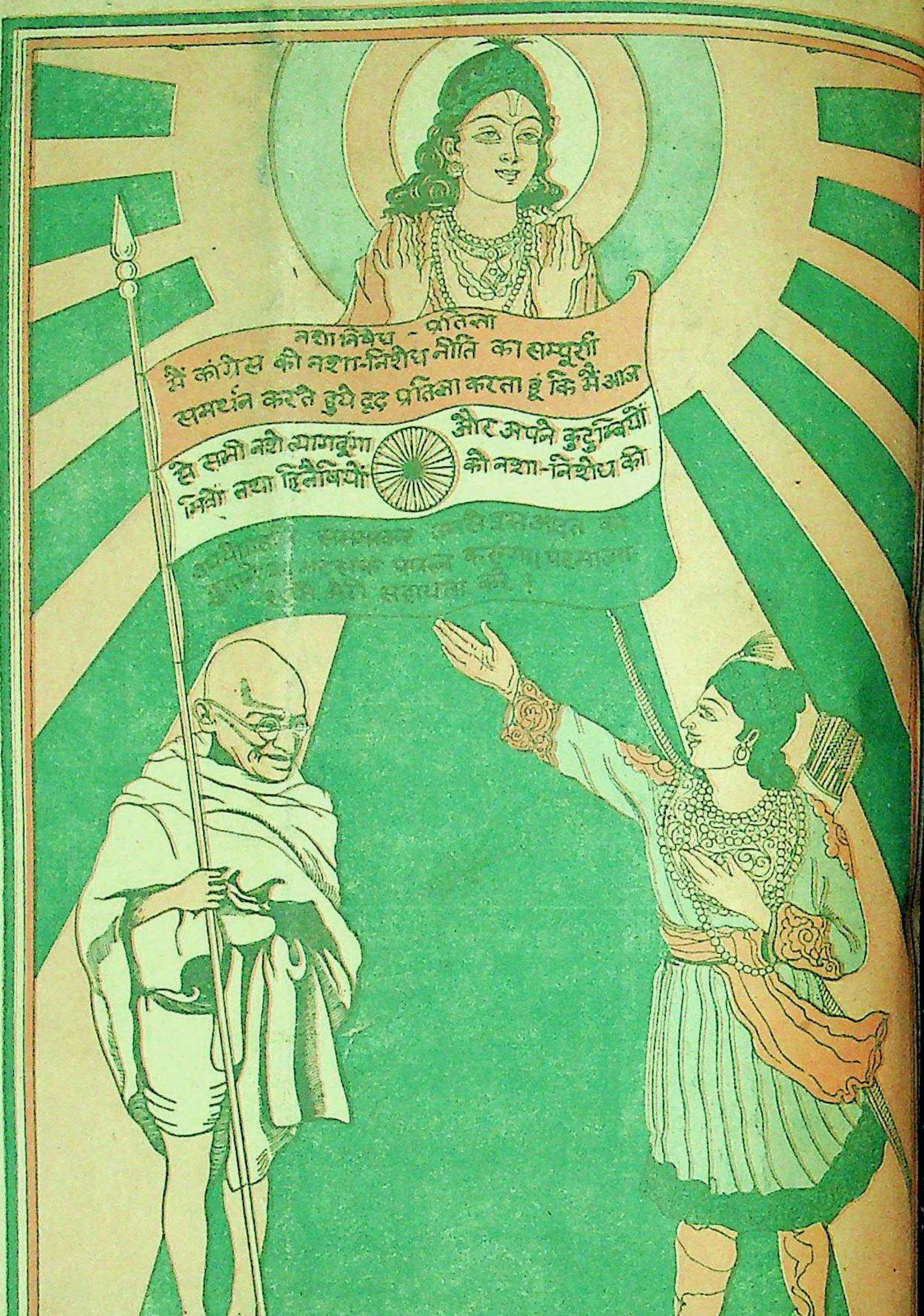
नशा-निषेध - प्रतिज्ञा
मैं कांग्रेस की नशा-निशेध नीति का सम्पूर्ण
समर्थन करते हुये दृढ़ प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं आज
से सभी नशे त्याग दूंगा
और अपने कुटुम्बियों
मित्रों तथा हितैषियों
को नशा-निशेध की

नशा-निशेध प्रतिज्ञा-पत्र

मैं कांग्रेस की नशा-निषेध नीति का सम्पूर्ण समर्थन करते हुये दृढ़ प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं आज से सभी नशों को त्याग दूँगा और अपने कुटुम्बियों, मित्रों तथा हितैषियों को नशा-निषेध की उपयोगितायें समझाकर उनसे इस आदत को छुड़ाने का भरसक प्रयत्न करूँगा। परमात्मा इसमें मेरी सहायता करे।

प्रतिज्ञा करनेवाले के हस्ताक्षर

तिथि १४-१-४८

प्रतिज्ञा करनेवाले का नाम और पता—माननीय चौधरी गिरधारीलाल, मंत्री आबकारी विभाग, लखनऊ

आयु............प्रतिज्ञा करने का स्थान—नशा-निषेध प्रचारक कैम्प, अर्धकुम्भ मेला, इलाहाबाद।

पाँच सौ रुपया इनाम
[एक आश्चर्यजनक अद्भुत
मेस्मरेज़िम और जादू की
तैयार की हुई यह अँगूठी
का प्रभाव दूर करने में अलौकिक
का परिचय देती है। इस
पहननेवाला अपनी हर प्रकार की
पूरी करने में सफल हो जाता है।
और मुकदमे में सफलता, स्वास्थ्य,
तथा कीर्त्ति उसके पाँव चूमती हैं।
ही रात में इस अद्भुत अँगूठी
और करामात से प्रभावित हो
पड़ता है।
एक अँगूठी का मूल्य सिर्फ
एक साथ तीन अँगूठी मँगाने
पैकिंग और डाकखर्च
पता—
महाकाली आश्रम नं० २४०

क मूल्य ७॥)
तिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

र, १४ मार्च, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 14th. March, 1948

श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान
में शिक्षा-प्रसार की प्रगति

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

विभाजन के बाद पंजाब की परिस्थिति
गांधीजी और बुद्ध का अंतिम निधन

पाँच सौ रुपया इनाम

[एक आश्चर्यजनक अद्भुत इजाद]

मेस्मरेज़िम और जादू की शक्ति से तैयार की हुई यह अँगूठी अनिष्टकारी ग्रहों का प्रभाव दूर करने में अलौकिक शक्ति का परिचय देती है। इस अँगूठी को पहननेवाला अपनी हर प्रकार की कामना पूरी करने में सफल हो जाता है। प्रेम और मुकदमे में सफलता, स्वास्थ्य, सम्पत्ति तथा कीर्त्ति उसके पाँव चूमती हैं। एक ही रात में इस अद्भुत अँगूठी के गुणों और करामात से प्रभावित होना ही पड़ता है।

एक अँगूठी का मूल्य सिर्फ २)
एक साथ तीन अँगूठी मँगाने पर ५)
पैकिंग और डाकखर्च अलग
पता—
महाकाली आश्रम नं० २४७, कानपुर

२००० रु० इनाम !

NOW YOU CAN LAUGH AT THE CALENDAR!
REWARD Rs.1000

मासिक-धर्म एक दिन में जारी !

मैन्सीली पिल्ज :—एक दिन के अन्दर ही कितने समय के रुके हुए मासिक-धर्म को जारी कर देती है। कीमत ५) रु०

मैन्सीली स्पैशल पिल्ज :—जो कि फौरन जारी करके मासिक-धर्म को बिलकुल आसानी से साफ कर देती है। कीमत ११।।) रु०। याद रखो, गर्भवती इसे सेवन न करें क्योंकि यह बच्चेदानी को बिलकुल साफ कर देती है। २०००) रु० इनाम। जो मैन्सीली पिल्ज को नामुफीद साबित करे। पत्र-व्यवहार गुप्त रक्खा जाता है।

लेडी डाक्टर असली दवाखाना।
(D.D.A.) हल्का नं० २१, अमृतसर।

५००) रुपये पुरस्कार

एक आश्चर्यमय आविष्कार

जादू की अँगूठी

यह अँगूठी जादू और मस्मेरिज्म की शक्ति की सहायता से तैयार की गई है। यह आश्चर्य के काम करती है। जो कोई इस अँगूठी को पहनेगा, वह किसी भी उद्देश्य में, वह कितना ही कठिन और दुःसाध्य हो, सफल होगा। यह आपकी सब प्रकार के संकटों या रोगों से रक्षा करेगी। ग्रहों का कोई बुरा प्रभाव नहीं हो सकता। इस अँगूठी का पहननेवाला किसी भी व्यक्ति (पुरुष या स्त्री) पर वह कितना ही कठोर हृदयवाला हो, अपना पूरा नियंत्रण रखेगा। यही नहीं, वह अत्यंत विनीत बन जायेगा और अनुपस्थिति से अपने को दुःखी अनुभव करेगा। आप प्रेम, मुकदमेबाजी और नौकरी में सफल होंगे और बहुत-सा धन प्राप्त करेंगे। संक्षेप में, अँगूठी शरीररक्षक का काम देगी। एक बार आजमाइए और ठीक पहली रात को इसके आश्चर्यमय परिणाम देखिए।

मूल्य एक अँगूठी २ रु०। तीन अँगूठी ५ रु०। पैकिंग और पोस्टेज अतिरिक्त।

श्री शंकर भण्डार
पोस्टबाक्स २४३, कानपूर

थोड़ी प्रतियाँ बची हैं। शीघ्रता कीजिए

वार्षिक बालसखा १९४७

इसकी छपाई कई रंगों में हुई है। चित्रों की भरमार है। लेख, कविताएँ और कहानियाँ अनुपम हैं। जिल्द सजीली, आकर्षक और बालकों के पसन्द की है। ऐसा कौन बालक होगा जो इस अंक को पाकर आदि से अन्त तक पढ़े बिना शान्त रहे। ३०० पृष्ठों के इस अंक का रियायती मूल्य २।।) शीघ्रता कीजिए।

मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

श्वेतकुष्ठ की फकीरी
महात्माप्रदत्त इस बूटी
७ रोज में आधा और १५ रोज
आरोग्य होने की गारंटी, अगर आ
और कम कीमती दवा इस्तेमा
निराश हो गये हैं तो एक बार
को भी इस्तेमाल कर इसके चम
से लाभ उठावें। बेफायदा साबि
५००) रु० इनाम अगर चाहें तो
टिकट भेजकर शर्त लिखा लें। मूल्य
पता—श्री शिवशक्ति आश्रम
सालिमपुर अहरा पो०—कदमकु

बचत भिन्न भिन्न काल में
६
रुपया प्रगतिशील है
Bank of
No 773890
Pay to
Ru
Bearer

सिक्कों और काग़ज़ के नोटों से यह सुविधा थी कि वे आसानी से प्रत्येक स्थान पर ले जाये जा सकते थे परन्तु ज्यों ज्यों यातायात के साधनों और व्यापार की उन्नति हुई अत्यन्त दूर के स्थानों से भी रुपये का लेन आवश्यक हो गया। प्रत्येक बार किसी हरकारे के हाथ रुपया भेजना सम्भव न था। इस के लिये किसी दूस सरल उपाय की आवश्यकता हुई। इस समस्या को सुलझाने के लिये भारतीय महाजनों ने 'बिल आफ एक्सचेंज' अर्थात् हुन्डियों का तरीक़ा निकाला। यह हुँडी किसी विशेष व्यापारी के नाम एक चिट्ठी के में होती है कि लिखित व्यक्ति को निश्चित रुपया दे दिया जावे। यही आगे चल कर वर्तमान युग के बैंक ड्राफ़्ट बन गये। ज़रा सोचिये प्राचीन काल के अदल-बदल के व्यापार की अपेक्षा यह कितनी उन्नति है। आज कल आप भारतवर्ष या संसार के किसी भी स्थान में माल ख़रीद सकते हैं और किसी प्रसिद्ध बैंक के नाम चैक या ड्राफ़्ट भेज सकते हैं।

बचत भी सुरक्षित और लाभदायक बन गई है। आप सिक्योरिटी ख़रीद सकते हैं या किसी बैंक में रुपया जमा कर सकते हैं। परन्तु एक योग्य व्यापारी समझता है कि आज कल नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स सब से अधिक लाभदायक होने के साथ साथ पूर्णतया सुरक्षित हैं। ये अवधि पूरी होने पर ५०% बढ़ जाते हैं—प्रत्येक १०) बारह वर्ष में १५) बन जाते हैं। इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता। अब आप ५) से १५०००) की मालियत के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं। थोड़ी बचत वाले ।), ।।) और १) के नेशनल सेविंग्ज स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं। अब आप सर्टिफ़िकेट्स १८ मास के उपरान्त भुना सकते हैं (५ रु० के सर्टिफ़िकेट्स १२ मास के उपरान्त)।

भविष्य के लिये बचाइ

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए

रुपया लगाने की सर्व-प्रिय

ये डाकख़ानों, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजन्टों और सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त किये जा सकते हैं।

देशदूत

वर्ष १०, संख्या २७] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, १४ मार्च, १९४८

संयुक्तराष्ट्र सुरक्षा परिषद् में हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के प्रतिनिधि

* *

श्री एन० गोपाल स्वामी अय्यंगर (दाहिनी ओर) संयुक्तराष्ट्र सुरक्षा परिषद् में भाग लेनेवाले भारतीय प्रतिनिधि दल के नेता, संयुक्तराष्ट्र संघ के भारतीय प्रतिनिधि डा० पी० पी० पिल्लई से काश्मीर के प्रश्न पर वार्ता कर रहे हैं।

* *

सर मुहम्मद जफरुल्ला, संयुक्तराष्ट्र सुरक्षा परिषद् में भाग लेनेवाले पाकिस्तान के प्रतिनिधि। श्री जफरुल्ला अमरीका के [illegible] वाकर से पाकिस्तान की ओर से काश्मीर के हमले के संबंध में बातचीत कर रहे हैं।

* *

प्रयाग त्रिवेणी संगम में महात्मा जी की अस्थि-प्रवाह के अवसर पर माननीय सरदार वल्लभ भाई पटेल और माननीय श्री रफी अहमद किदवई।

* *

प्रयाग गंगा-यमुना के संगम का एक दृश्य। महात्मा गांधी का अस्थि-प्रवाह करते हुए [illegible] दिखाई दे रहे हैं।

* *

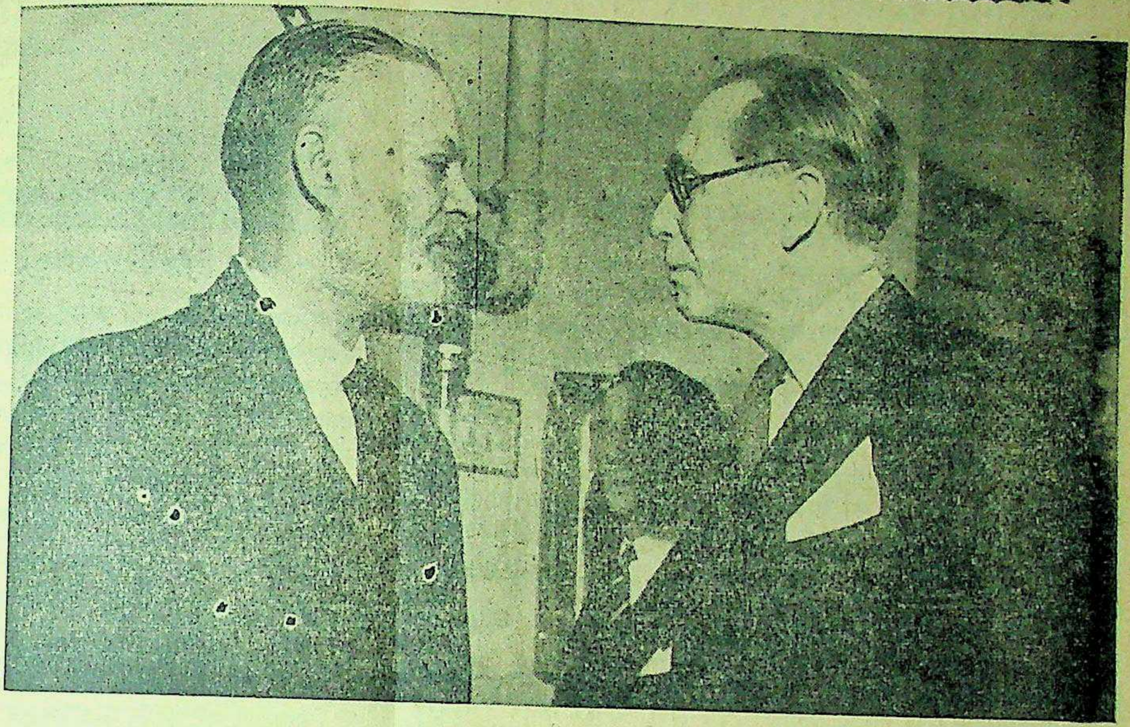

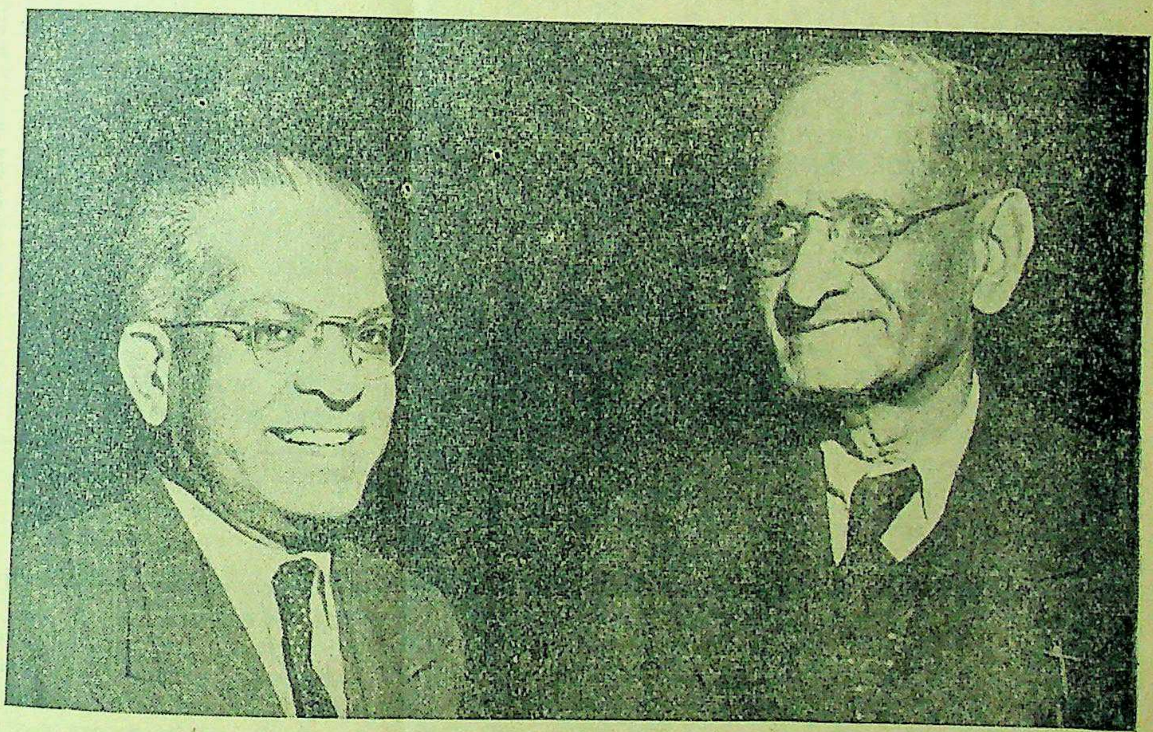

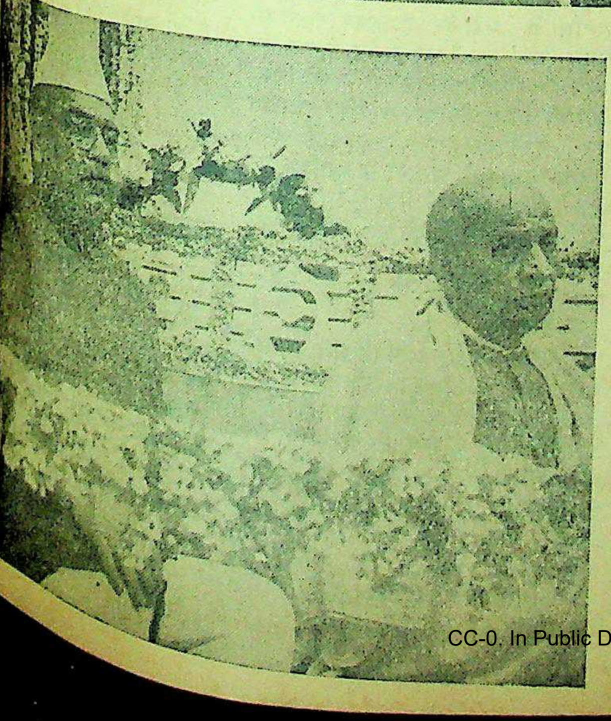

सुप्रसिद्ध कलाकार उदयशंकर की 'कल्पना'

संगीत, नृत्य, नाटक और सिनेमा की उन्नति उच्च स्तर होना आवश्यक है

लेखक, श्री रमानाथ अवस्थी

'कल्पना' फिल्म में उदयशंकर की पार्टी के एक कलात्मक नृत्य का दृश्य।

"अब मेरा 'कल्पना' नामक चित्र पूर्ण हो गया और बहुत से अभिनय-गृहों में प्रदर्शित भी हो रहा है। मैं एक ऐसी संस्था का प्रारम्भ करना चाहता हूँ, जिसमें संगीत, नृत्य, नाटक और सिनेमा की उन्नति और सफलता एक उच्च स्तर तक हो सके। उसमें वही कलाकार स्थान पा सकेंगे जो ईमानदार और कार्य-कुशल होंगे, यदि सम्भव हुआ तो मैं इस संस्था को सरकार की मदद से पूर्णतः राष्ट्रीय भी बनाना चाहूँगा, और संस्था का आधार पूंजीपति न होंगे न उससे किसी प्रकार का अन्य वैयक्तिक लाभ ही उठाया जायेगा। मैं सोचता हूँ, हमारी राष्ट्रीय सरकार शीघ्रातिशीघ्र इस कार्य में सहमत होकर कला, सभ्यता को समाज के लिए चित्रपट द्वारा एक विशेष आनन्दप्रद रूप देगी, ऐसी संस्था के द्वारा जो भी लाभ होगा, स्वाभाविक रूप से वह राज्य का होकर एक सच्ची कला के निर्माण में पूर्णरूपेण सहयोगी बनेगा," इस प्रकार के शब्द विश्व-विख्यात, नृत्यकार, दिग्दर्शक, 'कल्पना' चित्र के निर्माता श्री उदयशंकर ने कलकत्ता के ग्रैन्ड होटल में एक पत्रकार के मिलने पर अपनी एक विशेष भेंट पर कहा। इस संबंध में बोलते हुए उदयशंकर ने और भी कहा, "यदि ऐसा नहीं है तो मैं बिना सरकार के सहयोग के आगे सिनेमा में जाना नहीं चाहता।"

प्रश्न—क्यों?

उत्तर—क्योंकि राष्ट्रीयता का निर्माण ऊँचे पैमाने पर होना चाहिए और जनता की उन्नति और समाज को आनन्द के लिए राजनीतिज्ञ और कलाकार को मिलकर काम करना चाहिए।

प्रश्न—वास्तव में आपका क्या अनुमान है और उसे किस प्रकार करेंगे?

उत्तर—मैं ५०० या ६०० कलाकार विशेषतः नये, तैयार करना चाहता हूँ। कुछ तो पहले से ही हैं, भूमि पर बुद्धि की कमी नहीं, इसका अर्थ इसकी प्राप्ति के लिए, समय, शक्ति और लगन चाहिए। दक्षिण ऐसी विशेषताओं से पूर्ण है, जो इसके लिए चुने जावेंगे उन्हें दो या तीन वर्ष ट्रेनिंग लेनी होगी, इसके अतिरिक्त ५ या ६ विभाग भी प्रत्येक कला के लिए बनेंगे। एक संगीत, दूसरा नाटक, तीसरा अभिनय और चौथा नृत्य के लिए होगा। प्रत्येक विभाग के कलाकार भारतवर्ष के नगरों, गांवों और शहरों में भेजे जायेंगे, वे विशेष कुछ नई नई बातों का ज्ञान पैदा करेंगे, जिसका प्रयोग फिर दूसरे चित्रों में होगा।

प्रश्न—क्या फिल्मी क्षेत्र में आप बिलकुल मनोविनोद के पक्ष में नहीं हैं?

बापू के महाप्रयाण पर

लेखक, प्रोफेसर चन्द्रप्रकाश वर्मा, एम० ए०

वे क्षण जिनमें निश्चेष्ट हुआ था वह शरीर,
कोदंड-काल के थे वे सबसे तीक्ष्ण तीर।
वे तीर छोड़ वह काल हुआ होगा अचेत,
विधि कांप उठा होगा थर थर देवों समेत।
विधि की रचना विधि का कर बैठी आज नाश,
यह सर्वनाश! यह सर्वनाश!! यह सर्वनाश!!!
रो पड़ी मृत्यु—कितना अपयश! कितना कलंक!
वह उज्ज्वल कितना, कितना मेरा श्याम अंक!
कह उठा शेष—अब धर दूं भूमंडल उतार,
लाखों पहाड़ पापों के मेरे फण हजार।
वह ऊपर को खींचे था ठहरी रही सृष्टि,
अब कैसे झेलूं एकाकी यह भार-वृष्टि।
प्रलयंकर बोला—पटक चरण, जय महाकाल।
परिवर्तन को उत्सुक तांडव की ताल-ताल।
दिशि-दिशि में छाया प्रश्न मौन, यह प्रश्न मौन,
अब होगा फिर अवतार कौन? अवतार कौन?

उत्तर—मनोविनोद तो होगा, किन्तु वर्तमान प्रणाली से कुछ भिन्न। सर्वप्रथम दिग्दर्शकों का एक बोर्ड निर्मित होगा, जिनमें से कुछ सरकार के प्रतिनिधि होंगे और दूसरे प्रजा की ओर से जो भारतमाता की सेवा के लिए विश्वासनीय और उससे एक शौक रखते होंगे। दर्शन-शास्त्र, समाज-शास्त्र, कला, विज्ञान, व्यापार, राजनीति, सामाजिक जीवन यह सारी कलाएँ उत्पत्ति और मनोविनोद के साथ और अधिक प्रसिद्ध भी होंगी, अभी जो कुछ सिनेमा, या नृत्य के द्वारा हो रहा है उसे मैं परिपर्याप्त नहीं कह सकता, इसमें से बहुत बातों को निकालना पड़ेगा, कुछ तो इनमें से बिलकुल ही लोप हो जावेंगी, दूसरे शब्दों में यह राष्ट्रीय, आधार और राष्ट्रीयता की रक्षा के लिए होंगी।

* * *

प्रश्न—कलाकार कहां मिलेंगे? उन्हें कौन खोजेगा?

उत्तर—मैं स्वयं सम्पूर्ण देश का भ्रमण करके आवश्यक बातें एकत्र करूँगा, जैसा कि मैंने कहा है कि हमारी धरती कलाओं से भरी-पुरी है, सरकार को तो केवल "हां" कहने भर की देर है, साथ ही यह कि हम आर्थिक सहायता के अतिरिक्त और भी साधन देंगे आप कार्य का सम्पादन करें" सरकार कला की शाखाएँ अपने सूचना-विभाग में आसानी से स्थापित कर सकती है, लेकिन इसके लिए ऐसे आदमियों की आवश्यकता है, जो इस कार्य में कुछ जानते हों।

प्रश्न—फिर व्यक्ति के साहस के लिए क्या होगा?

उत्तर—वर्तमान परिस्थिति बदलेगी, और यह अब भी सुधर-सी रही है, जो निजी विशेषज्ञ होंगे वे सरकार के द्वारा सुधरेंगे, इसके प्रारम्भ स्थान के बारे में कुछ कठिनाई अवश्य होगी, वह इसलिए कि जहां पर कलात्मक शैली का अभाव हो, वह स्थान सुन्दर होगा। इसके लिए सहायकों की जरूरत होगी, जो दो या तीन मुख्य समयों पर काम करेंग, युवक और युवतियां पहले परीक्षा में फिर उनको, विविध बातों की लिए सरकार के ही खर्च से अमेरिका आदि भेजा जावेगा, देश के बाहर एक अच्छे समय पड़ेगा, इसका समय लगभग दो वर्ष हो जिससे वे अपनी सीखी हुई और कलाओं का पूरा पूरा लाभ देश को दे सकें। प्रत्येक ऐसे (Group) के साथ एक इन्स्पेक्टर भी रहेगा, जिसके कोई युवक और युवती अपने काम में मटोल न कर सके, इसके अतिरिक्त भी बहुत-सी अन्य बातें हमें जो विदेश से ही पाई जा सकेंगी, यह अर्थ नहीं कि हम उनका अनुकरण करें, जो उनकी कला है उसे हम अपनी बना लें, यह से नहीं बल्कि मस्तिष्क से हो

प्रश्न—सिनेमा के विषय में और क्या विचार हैं?

उत्तर—जिस प्रकार सिनेमा उसके इस रूप से बिलकुल न ऐसे चित्रों के पक्ष में ही हूं, बिलकुल सत्य है कि एक अमेरि हमारे सामने एक नवीन योजना जिसमें हमारे चित्रों के लिए निमंत्रण है।

हां, आज से दस वर्ष पूर्व मेरा एक विचार था, जिसे पूरा पहले मैं इस विचार-मात्र से ही भयभीत था, फिर और दूसरों के मैंने अपनी और उनकी परामर्श चित्र तो हम वर्षों से बना रहे हैं, तो निर्माता होने के लिए क, ख, जानते थे, फिर भी उनको एक बड़े से लाइसेन्स मिला, जब यह तब मैंने अपने को कभी भी एक नहीं समझा, मैं तो केवल एक (Actor) मात्र हूं। इसके 'कल्पना' के निर्माण में सहायता किसी को मेरे विचारों की प्रारम्भ से अन्त तक सब कुछ

शेष पृष्ठ १८

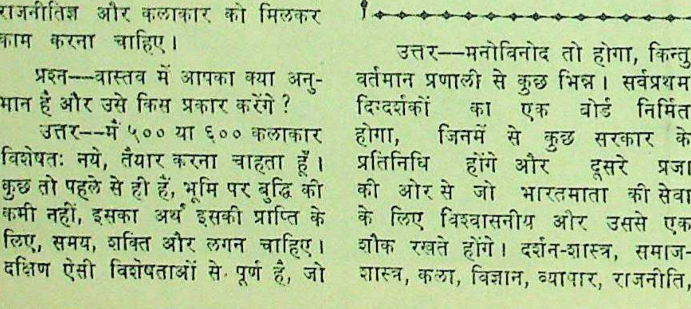

'कल्पना' चित्र में उदयशंकर और अमलादेवी।

मुफ़्त :— सिर्फ ३) तीन शीशी "ओटो (सेंट) मंगाकर लोग धड़ाधड़ असली रिस्टवाच गारंटी ३ कर रहे हैं। छः दर्जन की बिक्री संख्यानुसार रिस्टवाच भेजी "ओटो-चमन" को मशहूर लिए यह उपहार रखा गया ही आर्डर भेजिए।
"रसिक (D.D.)
कुन्दनगंज, गोंदिया सी.

स्वर्गीय श्रीमती सुभद्रा जी !

'धकती चन्दन-चिता पर मूर्त्त कविता सो गई हा !'

लेखक, श्री नर्मदाप्रसाद खरे

की सुप्रसिद्ध कवयित्री और राष्ट्र-सेविका श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान के ... और दुर्घटनापूर्ण निधन से हिन्दी-जगत् पर जो आपत्ति आई वह बड़ी ही ... है। श्रीमती सुभद्राजी के रिक्त स्थान की पूर्ति नहीं हो सकती। इस लेख में ... लेखक ने सुभद्राजी के जीवन तथा उनकी रचनाओं पर सुन्दर और विवेचनात्मक प्रकाश डाला है। लेख अत्यन्त सुन्दर और पठनीय है।

...मती सुभद्राकुमारी चौहान का ... १९६१ में नागपचमी के दिन ... के निहालपुर मुहल्ले में हुआ था। ... पिता का नाम ठाकुर रामनाथसिंह ... जाति के वैश्य क्षत्रिय थे। सुभद्रा ... माता-पिता की आठवीं सन्तान ... १९७६ में उनका विवाह ... निवासी ठाकुर लक्ष्मणसिंह चौहान ... एल०-एल० बी० से हुआ। उस ... प्रयाग के क्रास्थवेट गर्ल्स स्कूल ... थीं। इसके पश्चात् अपने पति ... अनुसार बनारस थियोसोफिकल ... में अध्ययन करने गईं; परन्तु उसी ... स्वतन्त्रता-संग्राम छिड़ जाने के ... विवश हो उन्हें अपना अध्ययन ... पड़ा।

महात्मा गांधी ने सावरमती से ... का बिगुल फूंका। नव-दम्पति ... जीवन देश-सेवा को अर्पित कर ... । वे अन्तिम सांस तक अविराम ... सेवा में संलग्न रहीं। देशा-... के कारण वे तीन बार कृष्ण मन्दिर ... कर चुकी थीं। वे दो बार ... प्रान्तीय व्यवस्थापिका ... निर्वाचित हुई थीं।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन प्रयाग ने, ... बार सेकसरिया पारितोषिक देकर ... रचनाओं का सम्मान किया था। ...—'मुकुल', 'बिखरे मोती', 'उन्मा-... 'त्रिधारा' और 'सभा का खेल' ... चित्र' नामक पुस्तकें ... हो चुकी थीं। 'मुकुल' और ... मोती' तो पुरस्कृत भी हो चुकी ... 'त्रिधारा' में पंडित माखनलाल ... और पंडित केशवप्रसाद पाठक ... कविताओं के साथ, उनकी नवीन ... का संकलन है। 'सभा का खेल' ... बालोपयोगी कविताओं का संग्रह ... चित्र' में उनकी नवीनतम ... संगृहीत थीं।

सुभद्रा जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री [illegible] चौहान, जो प्रयाग विश्वविद्यालय में बी० ए० के छात्र हैं।

गत १५ फरवरी को एक मोटर-दुर्घटना में सुभद्राजी की हृदय की गति सदा को बन्द हो गई।

आधुनिक कविता के विकास में सुभद्रा जी का नाम उल्लेखनीय है। उनकी कविता के आविर्भाव ने हमारी देवियों को मंत्र-मुग्ध कर दिया, वे रस-विभोर हो उठीं और स्वयं कविता रचने का प्रयास करने लगीं। सुभद्राजी को ही उन्होंने अपना आदर्श माना और उनसे प्रेरणा पाकर अपनी मनोभावनाएँ प्रकट कीं। देवियों को ही नहीं, अनेक नवयुवक कवियों को भी उनसे प्रेरणा मिली और वे भी कविता करने लगे। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यही है कि 'मुकुल' के प्रकाशित होते ही सुभद्रा जी की कविताओं के पद्य-वद्ध उत्तर-प्रतिउत्तर लिखे जाने लगे जो 'चांद' आदि प्रतिष्ठित पत्रों में समय-समय पर प्रकाशित भी हुए। इधर तो सुभद्रा जी का अपना एक अलग 'स्कूल' ही हो गया था, जिसका वे सम्मानपूर्वक प्रतिनिधित्व कर रही थीं।

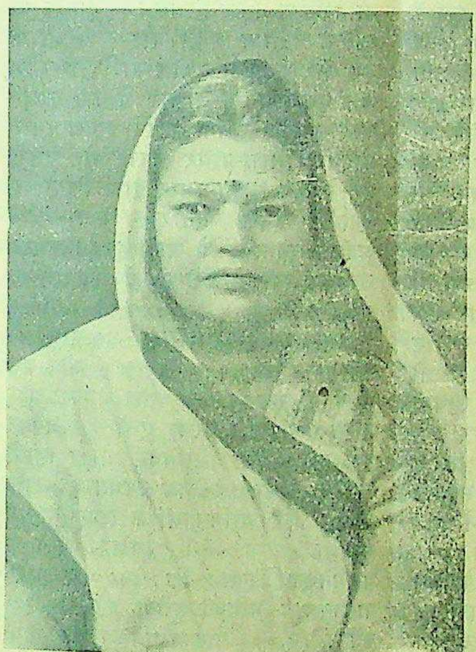

हिन्दी-साहित्य की कोकिला स्वर्गीय श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान।

'त्रिधारा' के सम्पादक महोदय ने सुभद्रा जी की कविता के सम्बन्ध में जो विचार प्रकट किए हैं, वे अत्यन्त मार्मिक और माननीय हैं। हम भी उनसे सहमत होकर कहते हैं—"श्रीमती सुभद्राकुमारी जी चौहान पराकोटिवादी हैं। उनका प्रेम, उनका आनन्द, उनका उल्लास, उनका नैराश्य, उनका वीरत्व, उनकी देश-भक्ति सब अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँचे हुए मिलते हैं। जब वे अनुभव करती हैं, तब वे हृदय के किसी एक कोने में नहीं अनुभव करतीं, किन्तु उनका सम्पूर्ण हृदय उस अनुभूति से ओत-प्रोत हो उठता है और उस समय उनके हृदय में यदि अन्य किसी भावना का उदय भी होता है तो वह भी उसी रंग में रँगकर [illegible] अनुभूति की सहायक बन जाती हैं। उनकी काव्य-प्रतिमा की चेतना-तरंगिणी एक ओर स्वदेश के कूल और दूसरी ओर मानवता के तट को चूमती हुई चलती है।"

स्वर्गीय सुभद्रा जी की ज्येष्ठ पुत्री श्रीमती सुधा अमृतराय बी० ए०, अपने नवजात पुत्र को गोद में लिये हुए।

कविता का सम्बन्ध अन्तर्जगत से है, जीवन के घात-प्रतिघात, आशा-निराशा और सुख-दुख से हृदय पर जो प्रभाव पड़ता है, मानस-पटल पर जो चित्र अंकित होते हैं, परिस्थिति की हिलोर हमें जहां बहा ले जाती है, वहीं सच्ची कविता का प्रादुर्भाव होता है। केवल कल्पना के चल-पंखों पर उड़कर कवि सच्ची कविता नहीं लिख सकता। जिस कविता में सच्ची अनुभूति नहीं वह अमर साहित्य में कभी स्थान नहीं पा सकती। इसी बात को प्रो० रामकुमार वर्मा 'एम० ए०' ने मुकुल की भूमिका में दूसरे शब्दों में इस प्रकार लिखा है।—

"परिस्थितियों की हिलोर में कवि की कविता इस प्रकार चलती है, जैसे कोई मन्त्र-मुग्ध। मेरे कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि कविता में ऐसी शक्ति उत्पन्न होती है जो सुननेवालों को मुग्ध कर देती है, पर मतलब यह है कि कविता स्वयं मंत्र-मुग्ध की भांति अग्रसर होती है। उसका प्रत्येक शब्द मतवाला होता है.....।"

सुभद्रा जी की कविताओं का जन्म इसी प्रकार हुआ, इसलिए वे कहीं देश-प्रेम से मतवाली होकर झूमने लगतीं, कहीं प्रणयोन्माद से आकुल हो उठतीं और कहीं बचपन की मधुर याद में रो उठी हैं। सुभद्रा जी की कविता-तरंगिणी दो प्रमुख धाराओं में प्रवाहित हुई है (१) देश-भक्ति-पूर्ण ओजस्वी काव्य-धारा, (२) मानव-जीवन की विभिन्न भावनाओं से प्रसूत सरस काव्य-धारा।

सुभद्रा जी का देश-सेवा से अधिक [illegible] रहा है क्योंकि इनके पति ठाकुर लक्ष्मणसिंह चौहान स्वतन्त्रता के अनन्य पुजारी हैं। सहित्य-सेवा के जीवन-प्रभात में इन्हें पंडित माखनलाल जी चतुर्वेदी के समान 'भारत मां' के अनन्य उपासक का सहयोग प्राप्त हुआ, जिससे इनकी कविता-वल्लरी राष्ट्रीय भावों का पुण्य सलिल पाकर पल्लवित होने लगी और इधर तो राष्ट्रीय भावों की सच्ची कविता रचनेवाले कवियों में उन्होंने अपना एक अलग स्थान बना लिया था।

उनकी देश-भक्तिपूर्ण कविताओं को हम दो विभागों में विभाजित कर सकते हैं। पहली वे—जिनमें इतने ओजपूर्ण भाषा में, हृदय-द्रावक शैली द्वारा भारत-माता की करुण कहानी कही गई है, भारत-माता के गीत गाए हैं; और दूसरी वे, जिनमें एक अनोखा वीरत्व है, जागृति का सन्देश है और पराधीनता की बेड़ियां काटने के लिए रणभेरी की हुंकार है।

उनके जीवन के विभिन्न अंगों से सम्बन्ध रखनेवाली जो कवितायें लिखी

शेष पृष्ठ १४ पर देखिए

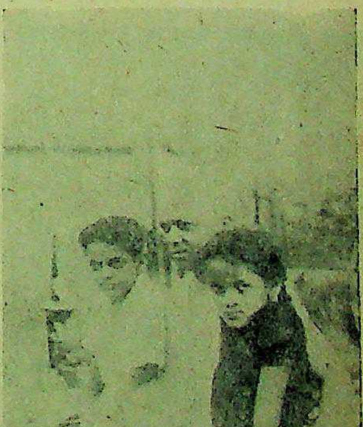

स्वर्गीय सुभद्राजी के पति ठाकुर लक्ष्मण-सिंह चौहान (बीच में) अपने सबसे छोटे पुत्र अशोक और छोटी पुत्री ममता के साथ।

संयुक्तप्रांत में साक्षरता-प्रसार

निरक्षरता देश के लिये कलंक और प्राणिमात्र के लिये अभिशाप है

लेखक, श्री रामचन्द्र पांडेय

(सहायक, शिक्षा प्रसार अफसर संयुक्तप्रांत)

निरक्षरता राष्ट्र के लिये कलंक और प्राणिमात्र के लिये अभिशाप है—इस आदर्श को सिद्ध करते हुए विद्वान लेखक ने इस लेख में संयुक्तप्रांत में होनेवाले शिक्षा-प्रसार के विस्तृत और जनोपयोगी कार्य के विवरण प्रस्तुत किया है। लेखक ने यह भी व्यक्त किया है कि सरकार की ओर से तो काम हो ही रहा है, जनता को भी इसे सफल बनाने में पूर्ण सहयोग देना चाहिए। यह लेख 'देशदूत' के गत 'नशा-निषेध' अङ्क के लिये तैयार किया गया था, किंतु कारणवश इस अङ्क में प्रकाशित किया जा रहा है। लेख उपयोगी और पठनीय है।

निरक्षरता अक्षर-ज्ञान के अभाव को कहते हैं। अक्षर वर्णमाला की लड़ी क, ख, ग आदि का नाम है और अक्षर अखिल विश्व के रचयिता, जिसका कभी नाश न हो उस ब्रह्म का भी द्योतक है। इस परिभाषा के अनुसार हम देखते हैं कि अक्षर-ज्ञान केवल हमारी भौतिक उन्नति का ही आधार नहीं है, वरन् हमारे आध्यात्मिक उन्नति में भी इसका एक स्थान है। यद्यपि यह सत्य है कि बिना अक्षर-ज्ञान के ही कितने ही व्यक्तियों ने भगवान् की भक्ति करके और उनको ही अपने सम्पूर्ण कर्मों को समर्पण कर वासना-रहित होकर पूर्ण आध्यात्मिक उत्थान प्राप्त किया, तथापि यह भी कहा गया है कि भगवान् की सत्ता वेद में और सर्वसाधारण की जानकारी के लिए पुराण तथा अन्य पुस्तकों में कथा के रूप में अक्षरों के द्वारा ही प्रकट की गई है। इस सत्ता को जानने के लिए अक्षर-ज्ञान की आवश्यकता है, क्योंकि कवि ने यह सत्य ही कहा है—

जाने बिनु न होइ परतीती,
बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती।
बिना प्रीति नहिं भक्ति दृढ़ाई।

इत्यादि—अतएव यह तो अवश्य ही विदित होता है कि अक्षर-ज्ञान हमारी आध्यात्मिक उन्नति का एक शक्तिसम्पन्न साधन है।

यह भी सत्य ही है कि संसार में अनेकों प्राणियों ने अक्षर-ज्ञान के बिना ही भौतिक उन्नति की पराकाष्ठा प्राप्त की है, परन्तु ऐसे व्यक्तियों की संख्या नहीं के बराबर है। भौतिक उन्नति के साधनों की गाड़ी को खींचने के लिये अक्षर-ज्ञान का यंत्र आवश्यक है। संसार की वर्तमान स्थिति में हमें मानना पड़ता है कि हमें आर्थिक और परमार्थिक दोनों कामों के लिए अक्षर का सहारा लेना पड़ता है।

आज उन देश और जातियों ने जो आर्थिक उन्नति में अग्रगण्य हैं, सर्वप्रथम निरक्षरता को ही मिटाने का प्रयत्न किया। आज रूस, इंगलैंड, अमेरिका, जर्मनी, जापान आदि देशों ने जहां कि प्रतिशत ९० से अधिक साक्षर तथा शिक्षित व्यक्ति मिलते हैं संसार को अपनी आर्थिक उन्नति से आश्चर्य में डाल दिया है।

इस समय इस विषय में भारत की स्थिति चिन्ताजनक ही नहीं वरन् भयावह है। सम्पूर्ण भारत में पढ़े-लिखे व्यक्तियों की संख्या १०० में १२ से भी कम है। एक समय था जब भारत की सभ्यता का सूर्य पूर्ण प्रखरता प्राप्त कर चुका था और उस समय संसार की अधिकांश जातियां अज्ञान के अंधकार में ढकी हुई थीं। भारत का इतना घोर पतन कैसे हुआ इतिहास के पन्नों में छिपा हुआ है। वर्षों की दासता में बंधे रहने पर भी यह देश जीवित है, यह उसी उच्च संस्कृति और सभ्यता का परिणाम है जो आज भारत के वेद और शास्त्रों में छिपी हुई है और जिसके जानने और समझनेवालों की संख्या नहीं के बराबर है। यदि यह संस्कृति भारत की रक्षा न करती तो दासता का परिणाम वही होता जो अमेरिका, आस्ट्रेलिया और अफ्रिका आदि देशों के पुराने रहनेवालों के साथ हुआ और हो रहा है। यह देखते हुए हमें प्रयत्न करना है कि हम अपनी प्राचीन संस्कृति की रक्षा करें और सर्वसाधारण को इस योग्य बनावें कि वह उस संस्कृति को समझकर उसे अपनावें। अक्षर-ज्ञान इस स्थिति की प्रथम श्रेणी होगी।

भगवान् की असीम दया तथा देश के सहस्त्रों महान् आत्माओं के बलिदान तथा त्याग से अब देश को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि वह स्वतंत्र हो गया है। क्या ही उत्तम हो यदि शीघ्र ही पूर्ण साक्षरता भी स्वतन्त्रता की सहगामिनी हो। स्वतन्त्रता हमारे सामाजिक और वैयक्तिक उत्थान के लिए अनुकूल परिस्थिति पैदा करती है। सामाजिक उत्थान, वैयक्तिक उत्थान पर ही निर्भर है। अतएव सरकार तथा समाज दोनों का ही दायित्व है कि वे वैयक्तिक उत्थान के लिए ऐसा सहयोग करें कि शीघ्रातिशीघ्र देश अपने खोए हुए वैभव को प्राप्त कर सके।

इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हमारी राष्ट्रीय सरकार ने उचित सुधारों की तरफ कदम बढ़ाया है और निरक्षरता-निवारण की तरफ भी पूर्ण ध्यान दिया है। यह सत्य ही है कि निरक्षरता-निवारण सब सुधारों से प्रथम होना चाहिए, क्योंकि जनमत पहले इस योग्य तो हो कि वह समझ सके कि उन सुधारों का मूल्य क्या है।

इस प्रान्त में निरक्षरता-निवारण तथा शिक्षा-संबंधी जो सुधार हो रहे हैं वे और प्रान्तों के लिए उदाहरणीय हो सकते हैं। इस प्रान्त में शिक्षा-विभाग द्वारा यह प्रयत्न किया जा रहा है कि एक ओर पाठशाला में जाने योग्य कोई ऐसा बालक या बालिका न रहे जिसके लिए शिक्षा की सुविधा वर्तमान न हो और दूसरी तरफ १७ और ४५ वर्ष के बीच कोई ऐसा युवक और युवती न रहे जो कम से कम साक्षर और सुसंस्कृत न बन जाय। पहला प्रयत्न प्राइमरी शिक्षा-प्रसार द्वारा और दूसरा प्रयत्न प्रौढ़ शिक्षा-प्रसार द्वारा किया जा रहा है। इनके अतिरिक्त शिक्षा-संबंधी अनेकों सुधार किये जा रहे हैं। इनका उल्लेख किसी अन्य लेख में किया जा सकेगा।

प्राइमरी शिक्षा-प्रसार—इस प्रान्त की जन-संख्या लगभग ५ करोड़ है और इस संख्या में लगभग ६४ लाख बालक और बालिकाओं की अवस्था ऐसी है जिनको पाठशाला-संबंधी सुविधा प्राप्त होनी चाहिए। अभी तक केवल लगभग १६ लाख बालक और बालिकाओं के लिए ही यह सुविधा प्राप्त है। शिक्षा-विभाग ने यह निश्चय किया है कि २,२०० प्राइमरी पाठशालायें प्रतिवर्ष खुलती रहें और १० वर्ष में २२,००० पाठशालायें खुलकर कम से कम २२ लाख बालक-बालिकाओं को शिक्षा की सुविधा दे सकें। ऐसा हो और उपरोक्त पाठशालाओं के हो जाने पर दस वर्ष के अंत में पाठशाला जाने योग्य शायद ही कोई बालक बालिका रह जावे जिसको शिक्षा की सुविधा प्राप्त न हो। इन पाठशालाओं के लिए अध्यापकों की ट्रेनिंग तथा समुचित पाठभवन का प्रबंध हो रहा है। इस प्रकार हम देखते हैं कि जिस काम को विदेशी सरकार एक शत वर्ष में नहीं कर सकी अपनी सरकार दस वर्ष ही में करने प्रयत्न कर रही है। हम कह सकते हैं यह भी स्वतन्त्रता की एक देन है।

संयुक्तप्रांत के शिक्षा तथा श्रम मंत्री माननीय श्री संपूर्णानन्द।

प्रौढ़-शिक्षा—प्रौढ़ों की शिक्षा प्रयत्न पहले-पहल सन् १९३८ में कांग्रेस मंत्रित्व द्वारा किया गया। प्रान्त ५ करोड़ की जन-संख्या में से यदि बच्चे १ और ५ वर्ष के अन्दर हैं निकाल दिये जावें और वह भी संख्या निकाल दी जो पाठशालाओं में है या जो उस अवस्था को प्राप्त हो चुकी है जो साक्षर होने अयोग्य है तो लगभग ३० करोड़ संख्या ऐसी बच जाती है जो है। कांग्रेस मंत्रित्व ने यह देखा इस संख्या का निरक्षरता के अंधकार पड़ा रहना देश की उन्नति के लिए अपरमित बाधा प्रस्तुत करेगा। बड़ी निरक्षरता वैयक्तिक तथा सामाजिक उत्थान ही के लिए बाधारूप नहीं होगी वगैर इसके मिटाये राजनैतिक भी असम्भव होगी और अधिकांश

शेष पृष्ठ १६ पर

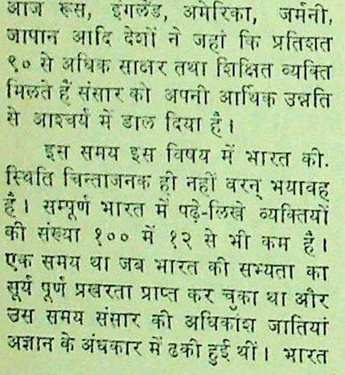

श्री ए० काज़मी, शिक्षा-प्रसार अफसर संयुक्तप्रांत। श्रीकाज़मी ने प्रांत में शिक्षा-प्रसार के जहाँ अनेक उपाय कियेव हाँ नशा-निषेध के प्रचार में भी पूरी सहायता पहुंचाई है।

श्री आर० पी० भार्गव, आई० सी० एस०, कलक्टर इलाहाबाद। गत कुम्भ मेला के अवसर पर नशा-निषेध प्रचार कैंप कार्यों में सफलता प्राप्त होने में आपका विशेष हाथ रहा है।

श्री रघुवंशविहारी लाल माथुर, जिला आबकारी अफसर इलाहाबाद। अर्द्धकुंभ मेले के अवसर पर नशा-निषेध प्रचार कैम्प द्वारा होनेवाले सफल कार्यों में आपका भी पूरा सहयोग रहा है।

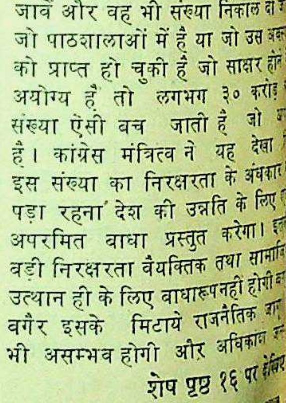

श्री उमेशचन्द्र माथुर, टेम्परेंस पब्लि अफसर, इलाहाबाद। गत अर्द्धकुम्भ के अवसर पर नशा-निषेध-प्रचार कार्यों को जो सफलता प्राप्त हुई है अधिकांश श्रेय आप ही को है।

विभाजन से पहले का पंजाब—१

साम्प्रदायिक वैमनस्य के बाद आज पंजाब की वास्तविक स्थिति क्या है ?

लेखक, श्री दीनदयालु शास्त्री

हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान की स्थापना के पूर्व पंजाब की क्या स्थिति थी ? वास्तव में पूर्वी पंजाब तथा पश्चिमी पंजाब के निर्माण से जो राष्ट्रीय हानि हुई है, उसका प्रत्यक्ष अनुभव तो हो ही रहा है, साथ ही कहा नहीं जा सकता कि इसका भविष्य क्या होगा ? इस लेख में विद्वान् लेखक ने विभाजन से पूर्व पंजाब की स्थिति का वर्णन किया है, जो सुन्दर और पठनीय है।

लाभ यह था कि उस पंजाब की सवा दो करोड़ आबादी में अस्सी लाख से अधिक गैर-मुस्लिम होते जिन्हें विशेष अधिकार देने के लिए मुस्लिम बाध्य होते। यही नहीं इन गैर-मुस्लिमों का उस पंजाब के ६ जिलों में बहुमत भी रहता; अतः मुसलमान उनके साथ अधिक बुरा वर्ताव न कर सकते। हमारा ख्याल यह है कि अकाली सिखों के एक बड़े दल ने इन सब समस्याओं पर विचार भी किया था और इस आधार पर मुस्लिम लीग से ले-दे की बातें भी की थीं। इस बातचीत में वे अधिक अच्छा सौदा न पा सके, उधर कांग्रेस से बातचीत में उन्होंने यह समझ लिया कि हो न हो पूर्वी पंजाब में तो उनकी सत्ता जोरों की होगी, बस मुस्लिम लीग से उनकी बातचीत टूट गई। परिणाम यह हुआ कि पंजाब का वह विभाजन हुआ जो भाषा व संस्कृति की दृष्टि से किंवा स्वयं सिखों की दृष्टि से भी उचित था। उसके बदले में पंजाब उस तरीके से बंटा जिसका आधार मुस्लिम व गैर-मुस्लिम आबादी थी और जो कि यथार्थ में अनमेल था।

आर्थिक समन्वय

विभाजन से पूर्व मुसलमान यह समझते थे कि पंजाब में उनकी ले-दे हिन्दुओं से नहीं सिखों से होनी है। मुसलमानों की इस समझ का आधार यह था कि मध्य व पश्चिमी पंजाब में अर्थात उस पंजाब में जहां पंजाबी व मुसलमानी बोली जाती है, हिन्दू केवल व्यापारी हैं या बनिया हैं वह एक विशेष वर्ग का प्रतिनिधि है। वह न खेती करता है और न मजदूरी ही; अतः वह अधिकतर शहरों व कस्बों में रहता है देहात में नहीं। जनगणना के आंकड़े यह स्पष्ट करते हैं कि अम्बाला कमिश्नरी व कांगड़ा के अतिरिक्त शेष पंजाब में हिन्दू जनता नहीं के बराबर है। वह वर्ग या श्रेणी के अन्तर्गत है अर्थात् इस पंजाब में हिन्दू जनता का (मासेज masses) नहीं वर्ग को (Classes) दो प्रतिनिधित्व करते हैं। इसके विपरीत सिख पश्चिमी पंजाब में भले ही व्यापारी व वणिक्-वर्ग के प्रतिनिधि हों, किन्तु मध्य पंजाब में वे अधिकतर खेती व मजदूरी करते हैं अतः किसी वर्ग-विशेष के नहीं अपितु जनता के अंग हैं। जनगणना के आंकड़ों से यह स्पष्ट है कि मध्य पंजाब की देहाती जनता सिखों व मुसलमानों के मेल से बनी है और किसी किसी जिले में तो जनता मुख्यतः सिख ही है। आज धर्म के उन्माद में हम लीग को गाली देते हैं, लीग का रवैया तथा तरीका यथार्थ में बुरा है किन्तु सचाई यह है कि पश्चिमी पंजाब में हिन्दू व सिख शोषक हैं और मुसलमान शोषित एवं मध्य पंजाब में हिन्दू शोषक हैं और मुसलमान व सिख शोषित। स्पष्ट है कि आर्थिक दृष्टि से या अन्ततोगत्वा सर्वत्र प्रगति कर रहे समाजवाद की दृष्टि से मध्य पंजाब में सिखों व मुसलमानों का मेल हो सकता है, हिन्दुओं का नहीं। इसी प्रकार अम्बाला कमिश्नरी व कांगड़ा में हिन्दू जनता के प्रतिनिधि हैं वे खेती व मजदूरी करते हैं और मुसलमान वर्ग-विशेष के प्रतिनिधि हैं जनता के नहीं। हां, यह दुर्भाग्य की बात है कि यहां शोषकवर्ग में भी हिन्दू हैं और शोषित में भी; अतः हिन्दुत्व हमें यहां बंटा हुआ नजर आता है। चौधरी छोटूराम पंजाब की राजनीति में इसलिए ही चमके कि उन्होंने अम्बाला कमिश्नरी के शोषितों का पश्चिमी व मध्य पंजाब के शोषितों से, मुसलमानों व सिखों से समन्वय किया था। यह समन्वय उन दिनों पंजाब के यूनियनिस्ट दल की शकल में प्रकट था। हमारी राय में वह समन्वय बना रहता तो अधिक अच्छा था किन्तु दुर्भाग्य से वह संगठन शिथिल था अतः आज के धर्मोन्माद में टिक न सका और पंजाब को आज के दुर्दिन देखने पड़े।

भाषा का भेद

भाषा व संस्कृति की दृष्टि से अम्बाला कमिश्नरी व कांगड़े का शेष पंजाब से मेल नहीं है; अतः हम उसकी चर्चा यहां नहीं करते। शेष पंजाब में जहां पंजाबी व मुलतानी की धारा बहती है, हिन्दू मुख्यतः शोषकवर्ग का प्रतिनिधि है और सिख व मुसलमान शोषितवर्ग का। मुस्लिम लीग के नेता यदि इस दृष्टि से सोचते तो लाभ में रहते और शायद सिखों को अपनी ओर कर लेते किन्तु एक तो सिखों के नेता मिलवां पद्धति के थे उनमें खेतिहर व शोषक दोनों थे और दूसरे लीग ने आर्थिक के साथ साथ धर्म को भी मिला रखा था। अतः मुसलमानों व सिखों में मेल न हो सका। इससे मुसलमानों व सिखों दोनों को तकलीफ हुई। परिणामस्वरूप मुस्लिम लीग ने समझा कि हमारे लक्ष्य की प्राप्ति में यथार्थ में सिख बाधक हैं। दूसरी ओर सिखों को यह ज्ञात हुआ कि मुसलमान हमें दबाकर जबरदस्ती हम पर हुकूमत करना चाहते हैं। बस फिर क्या था? उन दोनों समुदायों में जिनमें सौहार्द्र होना चाहिए था कटुता पैदा हो गई। दोनों ने यह समझ लिया कि हम परस्पर विरोधी हैं। इसका ही नतीजा है कि 'विभाजन के पहले या बाद में मुसलमान सिन्ध व पंजाब में सिख के खून का प्यासा है और उसे वहां नहीं बसने देना चाहता। दूसरी ओर पूर्वी पंजाब में सिख मुसलमान पर कृपाण ताने खड़ा है और उसकी जान का दुश्मन बना हुआ है। इसका यह अर्थ नहीं है कि पश्चिमी पंजाब में हिन्दू को मुसलमान पसन्द करता है या हानि नहीं पहुंचाता; किन्तु यह स्पष्ट है कि मुसलमान आज हिन्दू सिख में से सिख को अधिक खतर-नाक मानता है। हमें यह मालूम है कि पाकिस्तान के उद्योग-धन्धों, व्यापार व वाणिज्य की तरक्की के लिए वहां के मुसलमान हिन्दुओं को बनाए रखना चाहते हैं किन्तु इसी कार्य के लिये यदि सिख अपनी सेवायें पेश करें तो मुसलमान नाक-भौं सिकोड़ता है। सिन्ध की सरकार का सिखों को प्रान्त से

शेष पृष्ठ १२ पर देखिए

पूर्वी पंजाब की सीमाप्रांतीय फौजों के मार्च का एक दृश्य। यही फौजें पूर्वी पंजाब की सीमा पर गस्त लगाकर पाकिस्तानी फौजों का मुकाबला करती हैं।

जालंधर में पूर्वी पंजाब के सेनाध्यक्ष मेज़र जनरल थिमैया फौज की सलामी ग्रहण कर रहे हैं।

बुद्ध और गांधी के अंतिम संस्कार

क्या स्तूप-निर्माण तथा विभिन्न तीर्थ-स्थानों में उसकी स्थापना की ऐतिहासिक परंपरा की रक्षा होगी ?

लेखक, श्री भदन्त आनन्द कौसल्यायन

पूज्य बापू के निधन से राष्ट्र पीड़ित है। महात्माजी ऐसे महापुरुष की स्मृति में ऐसे ऐतिहासिक स्मारक की स्थापना होनी चाहिए जो सत्य, अहिंसा और शांति का संदेश युग-युग तक देता रहे। राष्ट्र के नेता इस ओर अंतिम प्रयत्न के लिए प्रयत्नशील हैं। सुप्रसिद्ध विद्वान् कौसल्यायन जी ने इस लेख में भगवान् बुद्ध और पूज्य गांधीजी के निधन की तुलना करते हुए गांधी-स्मारक की स्थापना की ऐतिहासिक परंपरा का स्मरण दिलाया है। लेख अत्यन्त सुन्दर और विचारणीय है।

पूज्य बापूजी का स्मारक शीघ्र ही बनेगा।

नागरी-प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित शब्दसागर ही शायद हिन्दी का सबसे बड़ा कोष है। उसमें ९३,११५ शब्द होंगे। किन्तु इतने हजार शब्दों में क्या एक भी शब्द ऐसा है जो इस देश की वेदना की उस तीव्रता को व्यक्त कर सके जो इसे अपने राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी को गँवाकर हुई ?

कहा जाता है कि नाथूराम गोडसे एक पत्रकार रहा। इससे हर पत्रकार लज्जित है। सुनते हैं वह ब्राह्मण भी है, इससे हर ब्राह्मण जमीन में गड़ा जा रहा है। वह हिन्दू है, यह हर हिन्दू के लिए डूब मरने की बात है। वह भारतीय है, भारतमाता उस कुल-कलंकी को जन्म देने के कारण अनुतप्त है। भारतीयता ही नहीं, सारी मानवता पर लगे अभिशाप का दूसरा नाम है नाथूराम गोडसे।

हमें लगता है कि जिस प्रकार इस देश में कोई भी रावण कहलाना पसन्द नहीं करता, विभीषण कहलाना पसन्द नहीं करता है। उसी प्रकार भविष्य में कोई अपना नाम नाथूराम भी रखना पसन्द न करेगा।

किन्तु इस महान् पातक का दूसरा पहलू भी है। इस पातक ने महान् बापू को और भी महान् सिद्ध कर दिया। देश में भभकती हुई साम्प्रदायिकता की आग की शान्ति के लिए कदाचित् स्वयं राष्ट्र-पिता की बलि अपेक्षित थी। अब तो यह द्वेषाग्नि शान्त हो !

बापू के बलिदान के बाद देश में जो कुछ हुआ है वह सभी कुछ अभूतपूर्व है। बलिदान-दिवस से आज तक इस महान् राष्ट्र ने ही नहीं, अन्य राष्ट्रों ने भी "हाय बापू" कहकर जितने ठंडे सांस लिये उतने इससे पहले काहे को कभी किसी बड़ी से बड़ी विभूति की याद में भी लिए गये होंगे। यमुना-तट पर का दाहकरण-संस्कार, गंगा, यमुना तथा सरस्वती के संगम में बापू की अस्थियों का प्रवाह और देश भर की सभी पवित्र नदियों का बापू की भस्म का अधिकारी होना हमें भगवान् बुद्ध के अन्तिम संस्कार की याद दिलाता है। पाली वाङमय में वह इस प्रकार दर्ज है :—

अन्तिम वचन

"तब भगवान् ने आयुष्मान आनन्द से कहा—'आनन्द! शायद तुमको ऐसा हो—(१) अतीत-शास्ता (=चले गये गुरु) का यह उपदेश है, अब हमारा शास्ता नहीं है। आनन्द! इसे ऐसा मत समझना, मैंने जो धर्म और विनय विहित किये हैं मेरे बाद वही तुम्हारे शास्ता (=गुरु) (२) इच्छा होने पर संघ मेरे बाद छोटे-मोटे भिक्षु नियमों को छोड़ दे सकता है।

तब भगवान् ने भिक्षुओं को आमंत्रित किया—'भिक्षुओ! यदि बुद्ध, धर्म संघ में एक भिक्षु को भी कुछ शंका हो, तो पूछ लो। भिक्षुओ! पीछे अफसोस मत करना—'शास्ता हमारे सम्मुख थे किन्तु हम भगवान् के सामने कुछ पूछ न सके।'

किसी एक भी भिक्षु को कोई शंका न थी।

तब भगवान् ने भिक्षुओं को आमंत्रित किया—

'हन्त! भिक्षुओ अब तुम्हें कहता हूँ। सभी संस्कार नाशवान् हैं। अप्रमाद के साथ (=आलस्य-रहित होकर) जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करो।'—यही तथागत के अन्तिम वचन हैं।

निर्वाण

तब भगवान् प्रथम ध्यान को प्राप्त हुए। प्रथम ध्यान से उठकर द्वितीय ध्यान को प्राप्त हुए।....चतुर्थ ध्यान से उठने के अनन्तर भगवान् परिनिर्वाण को प्राप्त हुए। भगवान् के परिनिर्वाण होने पर निर्वाण होने के साथ भीषण, लोमहर्षण भूचाल हुआ। देव-दुन्दुभियां बजीं। उस समय ब्रह्मा ने कहा—

'संसार के सभी प्राणी जीवन से गिरेंगे।

'जब कि लोक में ऐसे बल-प्राप्त अद्वितीय पुरुष।'

'तथागत, शास्ता, बुद्ध परिनिर्वाण को प्राप्त हुए।'

उस समय देवेन्द्र शक्र ने कहा—

'अरे संस्कार उत्पन्न और नष्ट होनेवाले हैं।

जो उत्पन्न होकर नष्ट होते हैं; उनका शान्त होना ही सुख है।

भगवान् के परिनिर्वाण हो जाने पर जो अवीत राग भिक्षु थे, उनमें कोई बांह पकड़कर क्रन्दन करते थे, कटे वृक्ष के सदृश गिरते थे, धरती पर लोटते थे—भगवान् बहुत जल्दी परिनिवृत हो गये। किन्तु जो वीतराग भिक्षु थे, वह स्मृति-सम्प्रजन्य के साथ स्वीकार करते थे—'संस्कार अनित्य हैं, (=वियोग न हो) यह कहां मिलेगा?'

तब आयुष्मान अनुरुद्ध ने भिक्षुओं से कहा—

'नहीं आयुसों! शोक मत करो, रोदन मत करो।

भगवान् ने तो आयुसो! यह पहले ही कह दिया है—

'सभी प्रियों से जुदाई होनी है।'

गीत

लेखक, श्री मोती, बी० ए०

क्या न मेरी याद तुमको बादलों में आ रही है ?

देखकर तुमको उमड़कर थे चले अरमान सारे,
बन्द अधरों में दृगों ने थे पुकारे प्राण-प्यारे।
धड़कनों में गूंजकर ही रह गये जो गीत सुख के,
क्या न उसकी याद घन के गर्जनों में आ रही है ?
क्या न मेरी........

बांधकर तुमको भुजाओं में न जब कुछ कह सका था,
सिसकियों की पीर जिस क्षण में न कुछ भी सह सका था,
अश्रु-बूंदों में सिमटकर रह गई जो प्यास रूठी–
क्या न उसकी याद रिमझिम की झड़ी में आ रही है ?
क्या न मेरी......

दी वियोगी-उर-दृगों में जब व्यथाएं पी रहे थे,
दूर की आशा लिये जब प्राण आहत जी रहे थे,
जब उसासों में तड़पकर रह गई थी पीर भोली–
क्या न उसकी याद घन की तड़पनों में आ रही है ?
क्या न मेरी.........

झड़ पड़ी मुस्कान रोकर आंख के दो बूंद जल में,
आ गये रोते वियोगी क्षण हमारे बीच पल में,
आंख में ही रह गई मूर्च्छित हमारी बेबसी जो–
क्या न उसकी याद पीले बादलों में आ रही है ?
क्या न मेरी....

दूर की अभिलाष लेकर पास के दो क्षण हटे थे,
कौन कह सकता हमारी धड़कनों के स्वर घटे थे,
कांपकर ही रह गई थी जो अधर में बात दिल की—
क्या न उसकी याद रीते बादलों में आ रही है ?
क्या न मेरी याद तुमको बादलों में आ रही है ?

बंबई रेडियो के सौजन्य से

इस लेख के लेखक श्री भदंत आ
कौसल्यायन।

आयुष्मान अनुरुद्ध और आयु आनन्द ने वह बाकी रात धर्म-कथा में बिताई। तब आयुष्मान अनुरुद्ध ने आयुष्मान आनन्द से कहा—

'जाओ, आयुस आनन्द! कुसीनारा में जाकर, कुसीनारा के मल्लों से कहो—'वाशिष्टो! भगवान् परिनिवृत हो अब जो तुम्हें करना उचित लगे वह करो।'

'अच्छा भन्ते'! "कह आयुष्मान आनन्द कुसीनारा में प्रविष्ट हुए। समय किसी काम से कुसीनारा के संस्थागार (= प्रजातन्त्र-सभा-भवन जमा थे। आयुष्मान आनन्द वहां बोले—

'वाशिष्टो! भगवान् परि गये अब जो तुम्हें करना उचित करो।'

आयुष्मान आनन्द से यह सुन मल्ल, मल्ल-पुत्र, मल्ल-वधुएं, मल्ल दुखित हो क्रन्दन करने लगीं। कोई को बिखेरकर रोती थीं, बांह पक रोती थीं, कटे वृक्ष की भांति गिरती धरती पर लुंठित-विलुंठित होती बड़ी जल्दी भगवान् का निर्वाण बड़ी जल्दी सुगत का निर्वाण हुआ, जल्दी लोक-नेत्र अन्तर्धान हो गये।

तब कुसीनारा के मल्लों ने को आज्ञा दी—'तो भणे! कुसी की सभी प्रकार की गंध मालाएँ और वाद्यों को जमा करो।'

तब कुसीनारा के मल्ल गंध सभी वाद्यों और पांच हजार थान को लेकर जहां उप-वत्तन था, भगवान् का शरीर था, वह उन्होंने भगवान् के शरीर को वाद्य, माला, गंध से सत्कार करते कपड़े का मंडप बनाते दिन बिता तब कुसीनारा के मल्लों के मन में

---

१ वर्तमान कुसीनगर—जिला
पुर यू० पी०

सत्य और अहिंसा के अवतार भगवान्

शेष पृष्ठ १२ पर

अदालत के कटघरे में खड़ा हुआ नन्दन जैसे निरा जड़, निरा दीन और याचक-सदृश बना हुआ कभी जज की देखता, कभी स्वयं उसी का तमाशा आई हुई जनता की ओर! उस में, कोई उस श्यामनन्दन को अपनी दृष्टि के साथ देखता और कोई तथा दयापूर्ण भावना के साथ? ही, वह श्यामनन्दन जैसे दया का था। उसके गोरे और सुन्दर पर दाढ़ी बढ़ी हुई थी। बड़ी और आंखें माथे में धँस गई थीं। गाल थे। लगता था कि दरिद्रता, और याचकता उसके चेहरे पर जमाकर बैठ गई थी। उसका श्यामनन्दन का दामन-चोली का साथ इसीलिए, वह बरबस ही, पर खिलखिल करती हुई हँसती थी।

उसी समय, एकाएक श्यामनन्दन चौंक उसने जज की ओर देखा। जज —तुम, श्यामनन्द.......'

नन्दन ने कहा—'जी, मैं श्याम-'

तुम स्वीकार करते हो कि बच्चे की हत्या की?'

श्यामनन्दन ने तब भी जैसे पथराई जज की ओर देखा। उसी भाव उसने देखते हुए कह दिया—— ही वह बोला——'मैंने बच्चे का खून किया...उस तीन के अलिन का।'

इतना सुना और घूरकर अभियुक्त की ओर देखा। मानो बिना भी कह रहा —वह उसकी दृष्टि में मनुष्य का नैतिक पतन। इन्सान था। जीवन में और आदर्श उसने भी स्वीकार अतएव, मनुष्य के रूप में, जीवन की गोद में बैठा अभियुक्त, वह श्यामनन्दन; बन गया.....इतना कठोर बच्चे की हत्या करने में। जिस बच्चे को उसने की सेज पर रखकर पाला, में फेंक दिया....उसी का अन्त —हत्यारा और क्रूर वह श्याम-

* *

वर्ष पहले नगर में लाला सभ्य और कुलीन परिवार माना जाता था। धनिक भी। लेकिन समय आया कि नन्दन का रोजगार बिगड़ बाजार में था, वह प्राप्त जिनका देना था, उन्होंने करके वसूल कर लिया। श्यामनन्दन के घर में सोने-चांदी होता, वहां मिट्टी के ढेलों को नहीं रह गया। उस समय नन्दन ने जिन्दगी के पन्नों को पढ़ा कि जहां विभूति है, वहीं यश; किन्तु जब दरिद्रता को विभिन्नता मिलती बनने के साथ, दुनिया में किसी भी अभियुक्त से दिखाई देता, अतएव, लाला का रोजगार क्या बिगड़ा, का ढांचा ही बदल गया। के जीवन में कितना सार्थक श्रेष्ठ और बलवान, ऐसा भी अनुभव कर लिया। नाते-रिश्तेदार, भाई-मित्र— इस प्रकार उनसे रास्ता काट मानो उनका श्यामनन्दन से कोई

कहानी

हत्या का अभियुक्त

लेखक, श्री श्रीराम शर्मा 'राम'

आज-कल अदालतों में प्रतिदिन फैसले होते ही रहते हैं। न्याय और अन्याय के निर्णय पर कितने ही दोषी और निर्दोषी गति और दुर्गति के शिकार बनते रहते हैं। इस कहानी में एक युवक का, जिस पर हत्या का अभियोग लगाया गया था, चरित्र-चित्रण बड़ी सुन्दरता से किया गया है। वातावरण और परिस्थितियों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भी हृदयग्राही है।

सम्बन्ध ही नहीं था। वे उनके थे ही नहीं!

निदान, लाला श्यामनन्दन ने जब आंख खोलकर देखा, तो समझा कि अब तक जो देखा—अनुभव किया—वह झूठ ही था। पाप ही था, वह! वह जीवन भी नहीं था। अपने पैरों पर नहीं खड़ा था, वह जीवन। धन पर खड़ा था। उसी के बल पर आश्रित था। वह धन गया, तो लगा कि जैसे वह जीवन बालू की दीवार की तरह ढह गया। दीन और याचक बन गया, हाय! इतना समझकर तो, सचमुच ही, उस व्यक्ति में—समाज के उस एक विशिष्ट अंग में—जीवन के प्रति जो प्रतिक्रिया पैदा हुई, वह असह्य थी। वह मानो नोंच-नोंचकर, कुरच-कुरचकर, दीमक की तरह अन्दर ही अन्दर उन्हें चाट रही थी, वह सम्बोधित कर रही थी और खिलखिलाकर हँसती हुई; उस व्यक्ति के जीवन का उपहास कर रही थी।

कुटुम्ब बड़ा और धन का अभाव! कई छोटे छोटे बच्चे, उनमें अलिन सबसे छोटा था। जब वह पैदा हुआ, तो दरिद्रता की वह साकार मूर्ति लाला श्यामनन्दन एक क्षण को भी यह नहीं सोच पाये, न समझ पाये कि घर में बच्चा पैदा हुआ है; उन्हीं का है वह बच्चा, तो जरूर उसे देखें, उसे पहचानें। वे समझें कि वह उन्हीं का प्रतीक है—उन्हीं का प्रतिरूप! उन्हें हर्ष इसलिए भी मनाना चाहिए था कि घर में जितने बच्चे थे, उनमें लड़का एक अलिन ही था। बाकी सब लड़कियां! दो विवाह योग्य थीं, बाकी छोटी। ईश्वर ने अब उन्हें लड़का दिया, श्यामनन्दन को पिता कहनेवाला पुत्र; तो जरूर वह खुशी मनायें। वह उछलें, वह कूदें। वह मरेंगे तो उनका पुत्र ही, उनकी चिता सजायेगा, पिण्डदान करायेगा और जितने भी क्रिया-कर्म के उपादान होंगे, वह पुत्र ही, उन सबको सम्पादित करेगा।....देर से लाला श्यामनन्दन के मन में यह अभाव सन्निहित था कि अगर एक पुत्र होता, तो वह ही, उनके आगे आनेवाले बुढ़ापे में हाथ बँटाता....बुढ़ापे की लकड़ी बनता और जब वह मरते, तो पुत्र ही उन्हें अपने कन्धों पर ले जाकर चिता में रख आता...वह पुत्र उनके मरने के बाद उनका नाम जागरित रखता—वंश बेल बढ़ाता वह पुत्र! किन्तु धन ने तो धोखा दिया ही, साथ ही, इस ओर से भी उन्हें अपने भाग्य पर भरोसा नहीं था, हाय! कैसी विवशता थी उनकी कि निर्धन बनकर भी अपने वंश की बेल का ध्यान नहीं भुलाया गया। पुत्र का मोह उन्हें भी सताता। परन्तु जब वही पुत्र, वही वंश-बेल उनके घर में फूट निकली, तो जाने किस भावनावश, अपनी किस दैहिक विवशता के साथ लाला श्यामनन्दन के हृदय ने पुत्र होने के समाचार को सुन, आनन्द का अनुभव नहीं किया। अपितु, उन्हें यह अच्छा ही नहीं लगा कि अपनी उस दरिद्रता में भी क्यों उन्होंने सन्तान का सृजन किया...पति-पत्नी ने एक पाप! परन्तु जिस प्रकार मनुष्य की दरिद्रता, उसकी विभिन्नता जीवन की स्वभावगत भावनाएँ नहीं भूल पाती, उसी प्रकार लाला श्यामनन्दन ने भी, जब पुत्र की ओर देखा, तो पाया कि हां, वह उन्हीं का रूप है—उन्हीं का प्रतीक; मानो उन्हीं के हृदय का एक अंग, एक उच्छ्वास, एक पीड़ा। निदान, उन्होंने जब पुत्र को छाती से लगाया, तो तब भी पाया कि पुत्र के हृदय में जो धड़कन है, वह उन्हीं की है।

धीरे-धीरे पुत्र बढ़ रहा था, तो उसके साथ लाला श्यामनन्दन का स्नेह भी उस पुत्र के प्रति दिन-दिन विकसित होता जा रहा था। वे अपनी आवश्यकताएँ दबाते, घर के अन्य प्राणियों की भी, इच्छाओं का दमन करते; परन्तु क्या मजाल कि पुत्र के लिए वह किसी जरूरत को दरगुजर कर देते। एक दिन जो व्यक्ति उनके यहां नौकर था, फिर बढ़ते-बढ़ते पैसेवाला बन गया, अपनी इच्छा के विपरीत श्यामनन्दन ने उसी के कारखाने में मुनीमी का काम शुरू कर दिया। काम पचास रुपये का था, परन्तु आवश्यकता जिसकी अधिक थी, उसी को अधिक झुकना पड़ा; और नौकर की झुकने की परम्परा के साथ, लाला श्यामनन्दन को ही, इसलिए पचास रुपये की जगह बीस रुपये में काम करना पड़ा कि जरूरत का प्रश्न उनका था, उनको बीस रुपया पाना भी सरल नहीं दीखता था।

लेकिन पुत्र क्या हुआ, मानो उसने उनके जीवन की धारा को ही बदल दिया। रोजगार बिगड़ने के बाद, जिस प्रमाद ने लाला श्यामनन्दन के चारों ओर घेरा डाला, वह उन्हें कुछ भी नहीं करने देता था। जीवन था—जिन्दगी का अवसान—परन्तु जो उसकी वास्तविकता थी, मानो देर हुई कि उसका पानी उनके ऊपर से उतर चुका था, जितना भी शेष जीवन था, वह मर जाये—कभी लुट जाये—इसका विचार करना, अथवा भय करना उन्होंने छोड़ दिया था। परन्तु उस पुत्र के होने के साथ, उन्हें आशा लगी कि अब जीवन बदल जायगा। फिर श्रीवृद्धि होगी और उनके घर में जिस दरिद्रता ने घेरा डाला है, वह जल्दी ही उठ जायेगा। यही कारण था कि श्यामनन्दन ने अपने-आप में फिर उत्साह पाया, बल पाया और नवस्फूर्ति का प्रवाह! किन्तु पुत्र वर्ष, फिर दो वर्ष का हो गया; परन्तु लाला श्यामनन्दन ने अपने प्रवाह में—जीवन की गति में—कोई अन्तर नहीं पाया। उन्हें एक दिन भी ऐसा अनुभव नहीं हुआ कि उनका पुत्र भाग्यशाली है...उनके घर का चिराग! बल्कि, उन्हें तो लगा कि पुत्र भी जब से हुआ है, तो दिन-दूनी रात चौगुनी के समान उनकी गरीबी, विवशता ने और जिन्दगी की कठिनाई ने अपने घेरे को मजबूत ही बनाया, उसे ढीला एक दिन भी नहीं किया। जीवन के किसी एक क्षण में उस नर-पुंगव को ऐसा आभास नहीं मिला कि एक बार जिस अन्धकार में उनका वह शाश्वत, भावनामय जीवन गिर पड़ा है, उसमें कहीं भी—किसी एक ओर भी—प्रकाश की रेखा दिखाई दे।

—और विवशता यह कि सन्तान का मोह—वह पुत्र-प्रेम—उसकी आयु के साथ ऐसे बढ़ रहा था कि जैसे पूर्णिमा का चांद! लाला श्यामनन्दन के अन्तर में भरा हुआ जाने कितना अपूर्व, एकनिष्ठ और अडिग था, वह प्रेम! वह जब भी अन्धकार में भटकते, घरू जीवन

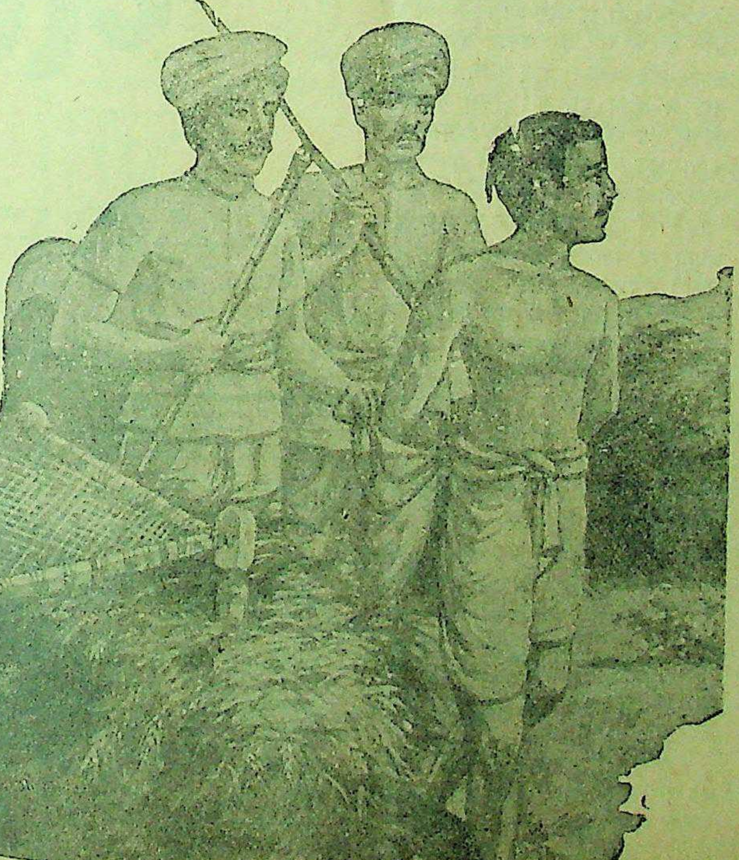

वह हत्यारा जिसने बालक की हत्या की और जिसे [illegible] की सजा हुई।

की समस्याओं में उलझकर उदासीन और चिन्तित बनते, तो वही प्रकाश-स्तम्भ, वह पुत्र-प्रेम उन्हें रोकता वह उन्हें शाश्वत और मनोरम भावनाएँ प्रदान करता। मानो वह उन्हें बताना चाहता कि मैं हूँ मैं.--तुम्हारा पुत्र! तुम्हारी जीवित आशा! तुम्हारा भविष्य!

'हां, यही कारण था कि लाला श्यामनन्दन अपने परिवार में सबसे अधिक पुत्र को प्यार करते। वह अलिन जब भी बीमार पड़ता, तो श्यामनन्दन के लिए मानो वे क्षण अशुभ दीखते और निरे जड़। उन्हें लगता कि पुत्र के प्राणों में ही उनके प्राण हैं...उनका जीवन। वह है, तो वे हैं--नहीं तो...हां ....

कदाचित् यही एक कारण था कि लाला श्यामनन्दन जिस कारखाने में मुनीमी करते, तो उसके मालिक के सामने वे सचमुच ही, इतने अधिक झुक गये थे कि उसका एक हिस्सा भी, वह व्यक्ति उनके यहां नौकरी करते हुए नहीं झुका था, न झुकाया गया था। किन्तु क्षुद्र नदी के चंचल प्रवाह की तरह, जब वह धन के दरिया में बह चला, तो अन्य व्यक्तियों के समान, उसकी दृष्टि में भी लाला श्यामनन्दन के लिए सम्मान का कोई भाव नहीं रह गया था। वह भूल गया कि एक दिन श्यामनन्दन ही उसका मालिक था। उसने ही, उसके जीवन-स्तर को ऊँचा किया था। यों, धीरे-धीरे जब समय-समय पर उस व्यक्ति के द्वारा लाला श्यामनन्दन को लांछनों तथा अनेक प्रतारणाओं का शिकार होना पड़ा, तो लगता कि उस व्यक्ति की आत्मा में जो सूजा हुआ फोड़ा था, उसी पर आघात हो जाता। फलस्वरूप, श्यामनन्दन का हृदय तड़प जाता। वह वेदनाओं का पुञ्ज बन जाता।

किन्तु इतना होने पर भी, जब एक दिन लाला श्यामनन्दन को नौकरी से जवाब मिल गया, तो लगा कि जो शेष जीवन था, वह भी मिट गया। आंखों के सामने अँधेरा आ गया। जैसे किसी ने जीवन की समस्त स्नायुओं का रक्त एक ही बार में मुट्ठी में भींचकर निचोड़ दिया..., अशक्त बना दिया, वह जीवन!

कई दिन हो गए कि ला० श्यामनन्दन के घर में भोजन का अभाव था। बच्चों को पानी पिलाकर जिन्दा रखा जा रहा था। लेकिन, वह तो आहार नहीं था—नहीं! निदान, लड़का अलिन सूख चला। उसकी ओर देखना भी जैसे अच्छा नहीं लगता। ऐसे अवसर पर, मानो लाला श्यामनन्दन की छाती में घूंसा लगता। कोई उन्हें धिक्कारता। मूर्ख बनाता कोई..।

एक दिन शाम का पहर था। झुटपुटा। लड़का अलिन कुछ देर पूर्व ही, भूख से रोता हुआ सो गया था। उसकी मां अन्दर घर में थी। बहनें दूसरी ओर। उसी समय, श्यामनन्दन ने एकाएक बच्चे की ओर देखा। आंसुओं का बहता हुआ प्रवाह अभी पूर्ण रूप से नहीं सूख चुका। किन्तु श्यामनन्दन का ध्यान उस ओर नहीं था। जैसे कहीं और। दूर! उस अवसर पर, उस व्यक्ति के मन में,—अलिन के पिता में,—हाहाकार उठ रहा था कि हाय! तुमने ऐसा ही पाया, यह जीवन! इतना निर्मम इतना कठोर! ऐसा पत्थर! जघन्य! क्रूर! वेदना के उस विचलित हुए प्रवाह में बहते-बहते जब कहीं भी उस श्यामनन्दन से नहीं रुका गया, तो देखा उसने कि हां, सच, वह अशक्त है। वह निर्बल है। वह निस्तेज! वह नर-पशु है, क्योंकि उस क्षण में, जब कि कई दिन से उसके पेट में अन्न का एक दाना भी नहीं गया, आत्मा ने नितान्त संकुचित होकर जाने पेट के किस स्थान में अपना मुंह पटक दिया, तो उसने एकाएक चीखकर कहा—अरे, तू भी भूखा...तेराब च्चा भी.... यह अलिन! हां, यह अभी रोते-रोते सोया है। अब फिर जागेगा, तो मां से रोटी की मांग करेगा, छटपटायेगा। मचलेगा।

'तो—?—तो—?' एकाएक बरबस ही, मानो सन्ध्या के उस गहरे अन्धकार में, चारों ओर घूरते हुए श्यामनन्दन के मन ने चीखकर पूछा।

उसने कहा—'हां, मेरा अलिन मौन ही रहे। सोता ही रहे। चैन ही पाता रहे, यह।'—वह बोला—'यह तड़पेगा, तो क्या मुझे चैन मिलेगा—नहीं।'

तब—?—हां, तब! श्यामनन्दन ने मानो फिर अपने को झकझोरा। उसने जीवन की चारों दिशाओं से प्रश्न किया—'तो सच, अलिन सोता रहे? मौन ही रहे, मेरा बेटा?'

मानो कोई कह रहा था, 'जैसे श्यामनन्दन नहीं, हां, अलिन सोता ही रहे। जागेगा, तो रोयेगा। तड़पेगा। रोटी के लिए मचलेगा।'—उसने कहा—'और तुम्हारे पास रोटी नहीं। तुम दरिद्र हो। तुम पापी! अपने पाप के साथ तुम बच्चे को भी पापी बना रहे हो...जघन्य... नितान्त दीन!'—वह बोला—'हां, श्यामनन्दन, तुम्हारा बच्चा, तुम्हारा प्राण, सदा रोटियों के लिए तरसेगा। दूसरों का दास बनेगा। याचक!'

उसने रोष से भरकर, झुंझलाते हुए कहा—नहीं, नहीं! मैं अपने बच्चे को याचक नहीं बनने दूंगा। दया का पात्र भी नहीं। मैं अपने पाप अपने अलिन के ऊपर नहीं डालूंगा। अलिन सात्विक है... अलिन पवित्र! यह निर्मल है, ऐसा ही रहे। गंगा का जल ही रहे। यह यहां न रहे। यह कहीं और जाये। इसके जितने अच्छे संस्कार नहीं थे, वे सब यहां बिता दिये। अब मुक्त-धारा में बह जाये... अजश्र.....अमोघ......

श्यामनन्दन की आंखें अविकल होकर बह रही थीं। वे मानो ऊपर के अन्तरिक्ष से भी कुछ मांग रही थीं, जैसे बल, आत्मशक्ति!

उसी समय आगे बढ़कर श्यामनन्दन ने अपनी बहती हुई आंखें अलिन के मनोरम और सलोने मुंह पर टपका दीं। उसने कहा—मेरे बच्चे! मेरे प्राण! जाने कहां से आया था, तू! किस धारा में बहकर, इस गरीब, इस निर्बल श्यामनन्दन के द्वार पर आ लगा। 'उसने अपना मुंह बच्चे की छाती पर रख दिया और कहा—'हाय! मैं तुझे न सहार सका। तुझे अपना पुत्र बनाकर भी, तेरी सेवा न कर सका। मेरे बच्चे! तू मुझे क्षमा करना। तू मेरे अपराधों को भूल जाना। तू समझना, तेरा यह पिता अयोग्य निकला....याचक...नीच...... ।

श्यामनन्दन की आंखें अन्धकार में फैल गईं। रोमांच उठ आया और उसने सोते हुए अलिन को उठा लिया। उसे छाती से लगा लिया और तेजी के साथ मकान के बाहर हो गया। जब वह पास के कुएँ पर पहुँचा, तो वह जन-शून्य था। एक बार उसने चारों ओर देखा और फिर अलिन की ओर देखकर बोला—'चल, मेरे बच्चे, चल! मैं भी चलूंगा, तेरे साथ! तुझे अकेला नहीं भेजूंगा। अपने प्राण को यों अकेला ही कुएँ के अर्पण नहीं कर दूंगा.....।

तभी कुएँ में जोर का शब्द हुआ। बुद-बुद बुदबुदाता भी चला और तब एक शान्ति, एक सन्नाटा, उस कुएँ के पानी के स्तर पर छा गया।

किन्तु दैव की बात कि कुएँ में गिरकर भी श्यामनन्दन नहीं मर सका। अलिन मर गया। लोगों ने जब उसे निकाला और पुलिस को सौंपा तो दर्शकों ने साफ कह दिया कि इस व्यक्ति ने अपने लड़के को मार दिया...पापी....क्रूर......

* * *

मुकदमे के दौर में, अन्त में जज ने पूछा—'कुछ और कहना है, श्यामनन्दन!' उस दिन श्यामनन्दन का फैसला था।

सुनकर—श्यामनन्दन चौंक गया। आतुर और वेदना से भरकर बो 'हां, मैं पापी हूँ। मैं हत्यारा....मुझे दो...मुझे फांसी!' —वह चिल्ला 'मुझे फांसी दो....मेरा अन्त कर दो!

लेकिन चतुर जज ने उसे फां सजा नहीं दी, उसे दस वर्ष का कार दण्ड दे दिया।

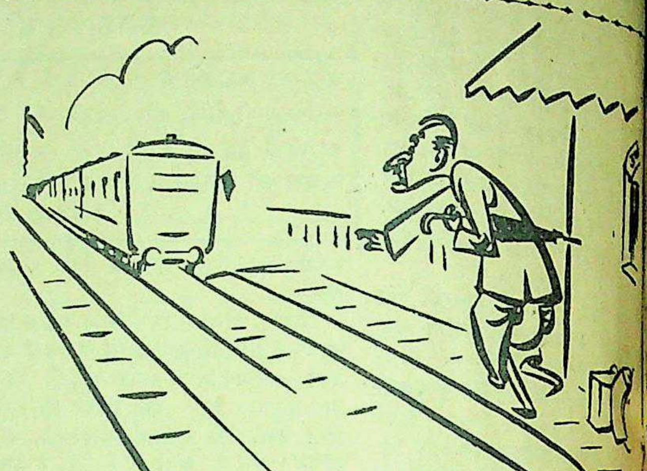

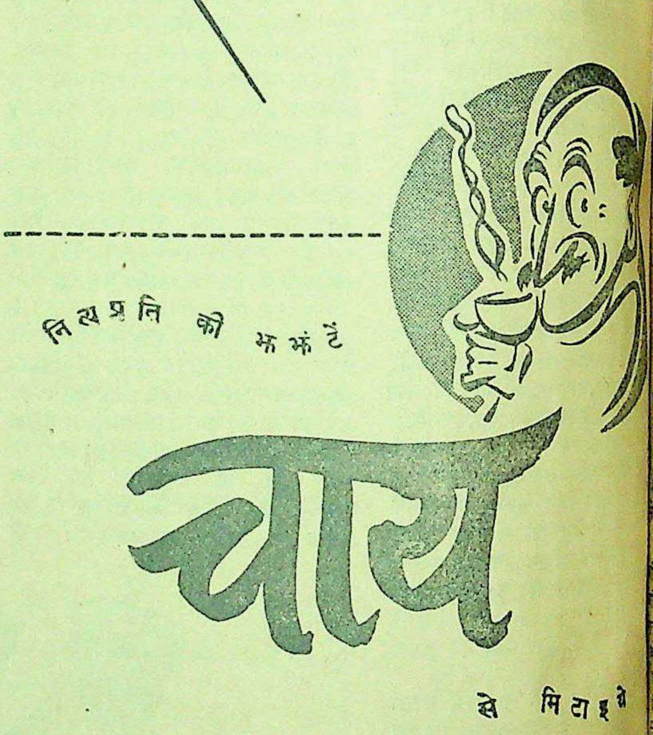

नित्यप्रति की झंझटें
चाय
से मिटाइये
इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

लिपटन
LIPTONS
WHITE LABEL
TEA
माने
अच्छी चाय

मातृमण्डल

भगाई हुई स्त्रियाँ और लड़कियाँ

इनकी रक्षा करना और समाज में स्थान देना एक राष्ट्रीय कर्तव्य है

लेखिका, श्रीमती रामेश्वरी नेहरू

लेखिका श्रीमती रामेश्वरी नेहरू।

बीसवीं शताब्दी मनुष्यमात्र और मानव-हकों को सुरक्षित के लिए मान्य है। संसार की दो लड़ाइयां आजादी के नाम पर अभी बहुत दिन की बात नहीं युद्ध चल रहा था, विश्व की शक्तियों के नेताओं ने विशाल विस्तृत सतह पर से के साथ मनुष्यमात्र को की जो atlantic के नाम से विख्यात है निश्चय का एलान कि समस्त मनुष्यमात्र प्रकार के अत्याचारों से मुक्त जीवन व्यतीत करने का जायगा। इसी उद्देश्य से" नाम की—जिसमें सब ही देश शामिल और पाकिस्तान भी जिसमें संस्था बनी और बड़े जोरों रही है।

मनुष्यमात्र का एक है। स्त्री पुरुष के समान इसको भी एक निर्विवाद गया है। इसलिए आशा स्त्रियां अपने सच्चे स्थान करेंगी और निर्भय जीवन परन्तु हुआ इसके बिलकुल आजाद हुआ। हिन्दुस्तान दो स्वतन्त्र राज्य बनकर देशों की पंक्ति में गौरव परन्तु इन दोनों देशों में दुर्दशा हुई वह किसी से है। हजारों की संख्या में वे गईं और उनके साथ अत्याचार हुए। गाय, बैल, लोग चुरा ले जाया करते में पढ़ा था कि इंगलैंड में में (cattle lifting) जानवरों को भगा ले जाने आम हो गया था। ठीक महीनों में भली स्त्रियों लोग उठा-उठाकर जहां और जो मन में आया उनसे या। खुले आम उनकी बाजारों में माल-असबाब बेचा गया। न बेचनेवाले न खरीदनेवाले को। पड़ोसियों का खून सरकार कुछ कर सकी, न उन अपराधियों को पकड़ा। हिन्दुस्तान में और आजाद में हुआ। बूढ़ी माताएँ रोती रह गई, बाप तड़पते रहे, पति और भाई देखते रहे; परन्तु इनको छुड़ाने और बचाने के लिए कुछ कर न सके। उस महान् विप्लव के समय न फौज मिली, न सवारियां मिलीं, न सहायता मिली और हमारी प्यारी सती-साध्वियां पशुओं के समान इस्तेमाल की गईं।

इसी सती-हरण के समय तो हम उनको बचा न सके; परन्तु उनके बिना तो अनेक घर सूने और बिराने थे। जब तक वह अपने घरों को वापस न लाई जायेंगी देश में अमन नहीं हो सकता। इसलिए उनको छुड़ा लाने की कोशिश शुरू की गई और पूर्वी और पश्चिमी पंजाब में हमने अपने कार्यकर्ताओं को भेजा जो पुलिस और पुरुष कार्यकर्त्ताओं के साथ लड़कियों को निकलवाने और उनको हिफाजत से वापिस घर लिवा लाने में मदद करें। पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में ६ दिसम्बर ४७ को यह समझौता हुआ कि दोनों तरफ की सरकारें अपने-अपने दायरे में इस बात का पूरा-पूरा प्रयत्न करेंगी कि सब भगाई हुई लड़कियों को निकालकर उनके घर पहुँचा दिया जाये। समझौता तो हो गया परन्तु इस पर काम लगभग एक महीने तक शुरू न हो सका। जनवरी में हमारी सेविकाएँ लाहौर पहुँच गईं और पाकिस्तान की कुछ बहनें पूर्वी पंजाब में काम करने को आ गईं। जितनी आशा थी उतनी सफलता हमको नहीं मिली। फिर भी मेरा अनुमान है कि दोनों ओर से लगभग पांच हजार स्त्रियां निकाली जा चुकी हैं। मगर भगाई हुई स्त्रियों की संख्या देखते हुए यह ५,००० कुछ भी नहीं है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम जैसे भी बने एक-एक बहिन को जिस जबर्दस्ती से भगाया गया है उसके घर वापस करें। यह व्यापार नहीं है जिसमें तराजू लेकर हम यह देखें कि दोनों ओर पलड़ा बराबर रहना चाहिए।

जितनी औरतें पाकिस्तान से छूटकर आई हैं उतनी ही हम भी वापस करें। प्रतिस्पर्द्धा सदा ही बुरी है फिर अच्छे कामों में तो हो भी सकती है। पाप और कुकर्म के प्रतिस्पर्द्धा की बात तो हमें नीचे ही गिराती है हम पहले ही काफी नीचे गिर चुके हैं। हमारे मुंह पर कालिमा लग चुकी है। मौका है कि लड़कियों को वापिस करके इस कालिमा को धो डालें। पाप तो किया है, परन्तु पाप का प्रायश्चित्त भी होता है। हम सबको उचित है कि जैसे भी हो सके हिन्दुस्तान के कोने-कोने से भगाई हुई लड़कियों को वापिस करें। यह काम केवल पुलिस का ही नहीं है, हर नागरिक का है; इसलिए मुझे आशा है कि हम सब स्त्री-पुरुष इस काम को अपना धर्म कर्त्तव्य मानकर लड़कियों को छुड़ाने में पुलिस की पूरी सहायता करेंगे।

केवल विवाहित व्यक्तियों के लिये
नवीन पुस्तकें
१—सचित्र कोकशास्त्र—इसे पढ़कर आपका विवाहित जीवन सुखमय हो जायगा। मूल्य १॥)
२—८४ आसन—८४ चित्रों सहित आसनों का मनोहर वर्णन दिया गया है। मूल्य १॥)
३—गुप्त चित्रावली—संसार की सुंदरियों के ३४ आकर्षक चित्रों का मनोहर संग्रह। मू० ३।) पूरा सेट लेने पर ४॥)
पोस्टेज ॥) अलग
पता—प्रतियोगिता आफिस, मथुरा (२५)

BLUE SEAL
Vaseline
POMADE
CHESEBROUGH MFG. CO.
मनोहर किशोर की "अमर आशा" का नायक उमाकांत

बालों को स्वस्थ और सुंदर रखता है
सभी दूकानों पर
कोमलता से सुगंधित किया गया वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।
वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।
Copyright

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

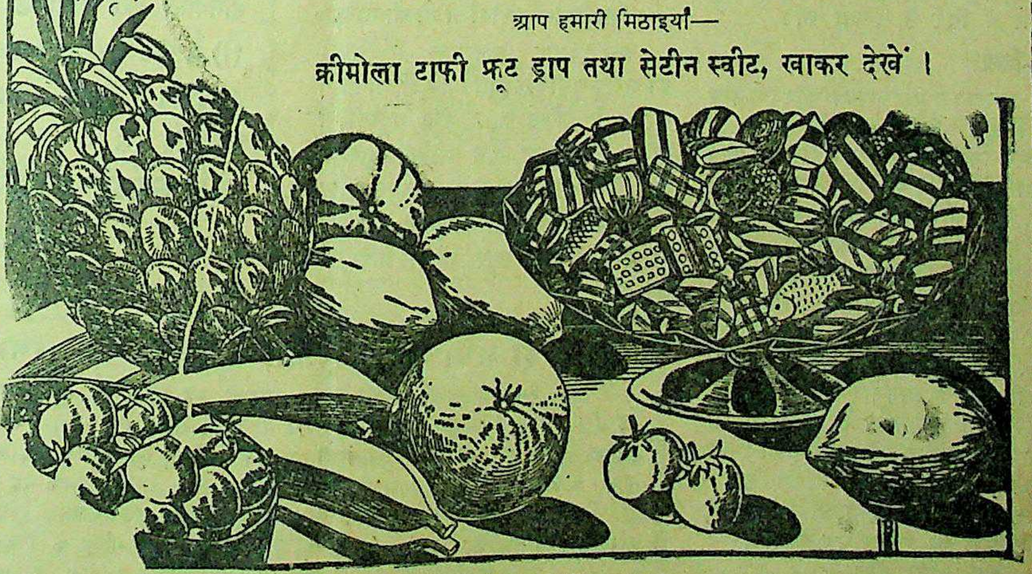

सभी विक्रताओं के यहाँ मिलता है:—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

बुद्ध और गांधी के अन्तिम संस्कार

(पेज ८ का शेष)

भगवान् के शरीर के दाह करने को आज बहुत विकाल हो गया। अब कल भगवान् के शरीर का दाह करेंगे। इस प्रकार कुसीनारा के मल्ल सात दिन तक भगवान् के शरीर की सत्कार-पूजा ही करते रहे। सात दिन के बाद कुसीनारा के मल्लों ने नगर से उत्तर-उत्तर से ले जाकर जहां मुकुट-बन्धन नामक मल्लों का चैत्य था, वहां भगवान् का शरीर रखा। तब कुसीनारा के मल्लों ने आयुष्मान आनन्द से पूछा—

'भन्ते! आनन्द! हम तथागत के शरीर को कैसे करें?'

'वाशिष्टो! जैसे चक्रवर्ती राजा के शरीर को करते हैं वैसे ही तथागत के शरीर को करना चाहिए।'

"कैसे भन्ते! चक्रवर्ती राजा के शरीर को करते हैं।"

"वाशिष्टो! चक्रवर्ती राजा के शरीर को नये वस्त्र से लपेटते हैं; नये वस्त्र से लपेटकर धुनी रुई से लपेटते हैं। धुनी रुई से लपेटकर नये वस्त्र से लपेटते हैं। इस प्रकार लपेटकर तेल की लोहद्रोणी (=दोन में रखकर दूसरी लोहद्रोणी से ढांककर, सभी सुगंधित लकड़ियों की चिता बनाकर राजा चक्रवर्ती के शरीर को जलाते हैं; जलाकर बड़े चौरस्ते पर राजा चक्रवर्ती का स्तूप बनाते हैं, हमें भी तथागत का स्तूप बनवाना चाहिए। वहां जो माला, गंध, या चूर्ण चढ़ायेंगे, या अभिवादन करेंगे, या चित्त को प्रसन्न करेंगे, उनके लिए वह चिरकाल तक हित-सुख के लिए होगा।"

तब कुसीनारा के मल्लों ने भगवान् के शरीर को कोरे वस्त्र में लपेटा। कोरे वस्त्र से लपेटकर धुनी रुई से लपेटा, धुनी रुई से लपेटकर कोरे वस्त्र से लपेटा फिर तांबे (=लोह) की तेलवाली कढ़ाई में रख (=चन्दन आदि) सुगंधित काष्ठों की चिता बनाकर भगवान् के शरीर को चिता पर रखा।

* * *

तब आयुष्मान महाकाश्यप ने जहां मल्लों का मुकुट बंधन नामक चैत्य था, जहां भगवान् की चिता थी, वहां पहुंचकर चीवर को एक कंधे पर कर अंजलि जोड़ तीन बार चिता की परिक्रमा कर सिर से वन्दना की। पांच सौ भिक्षुओं ने भी एक कंधे पर चीवरकर हाथ जोड़ तीन बार चिता की प्रदक्षिणा कर भगवान् के चरणों में सिर से वन्दना की।

दाह-क्रिया

आयुष्मान महाकाश्यप और उन पांच सौ भिक्षुओं के वन्दना कर लेते ही भगवान् की चिता स्वयं जल उठी। भगवान् के शरीर की जो झिल्ली या चर्म मांस, नस, या चर्बी थी, उनकी न राख जान पड़ी न कोयला; सिर्फ अस्थियां ही बाकी रह गईं, जैसे कि जलते हुए घी या तेल की न राख (=छारिका जान पड़ती है न कोयला) (=मसि)। भगवान् के शरीर के दग्ध हो जाने पर मेघ ने प्रादुर्भूत हो आकाश से भगवान् की चिता को ठंडा किया। कुसीनारा के मल्लों ने भी सर्वगन्ध मिश्रित जल से भगवान् की चिता को ठंडा किया।

तब कुसीनारा के मल्लों ने भगवान् की अस्थियों को सप्ताह भर संस्थागार में रखा, उनकी पूजा की।

स्तूप-निर्माण

राजा मागध अजातशत्रु वैदेही पुत्र ने सुना—'भगवान् कुसीनारा में परिनिर्वाण को प्राप्त हुए। राजा मागध अजातशत्रु वैदेही पुत्र ने कुसीनारा के मल्लों के पास दूत भेजा—'भगवान् भी क्षत्रिय थे, मैं भी क्षत्रिय हूं; भगवान् की अस्थियों में मेरा भी उचित हिस्सा है। मैं भी भगवान् की अस्थियों पर 'स्तूप बनाऊंगा और पूजा करूंगा।'

वैशाली के लिच्छिवियों ने सुना०।
कपिलवस्तु के शाक्यों ने सुना०।
अल्लकप्प के बुलियों ने सुना०।
रामग्राम के कोलियों ने सुना०।
वेठ दीप के ब्राह्मणों ने सुना०।
पावा के मल्लों ने भी सुना०।

ऐसा कहने पर कुसीनारा के मल्लों ने उन संघों और गणों से कहा—"भगवान् हमारे ग्राम क्षेत्र में—परिनिवृत हुए, हम भगवान् की अस्थियों के भाग नहीं देंगे।'

उनके ऐसा कहने पर द्रोण ब्राह्मण ने उन संघो और गणों से कहा—'आप सब मेरी एक बात सुनें। हमारे बुद्ध क्षमा-वादी थे। यह ठीक नहीं कि उन उत्तम पुरुष की अस्थियां बांटने में मार-पीट हो, आप सभी एकमत होकर आठ भाग करें, दिशाओं में स्तूपों का विस्तार हो। बहुत से लोग बुद्ध में प्रसन्न हों।'

'तो ब्राह्मण तू ही भगवान् की अस्थियों को आठ समान भागों में सुविभक्त कर।'

'अच्छा भो!' कह ब्राह्मण ने भगवान् की अस्थियों को आठ भागों में बांटकर उन संघों से निवेदन किया—'आप सब ये कुंभ (घड़ा) मुझे दें, मैं कुंभ का स्तूप बनाऊंगा और पूजा करूंगा।

उन्होंने द्रोण ब्राह्मण को कुंभ दे दिया।

पिप्पलिवन के मौर्यों ने सुना०।

'भगवान् की अस्थियों का भाग नहीं है। भगवान् की अस्थियां बँट चुकीं। यहां से कोयला ले जाओ।'

वे वहां से कोयला ले गये।

राजा अजातशत्रु ने राजगृह में भगवान् की अस्थियों का स्तूप बनाया और पूजा की।

वैशाली के लिच्छिवियों ने भी०।
कपिलवस्तु के शाक्यों ने भी०।
अल्लकप्प के बुलियों ने भी०।
रामग्राम के कोलियों ने भी०।
वेठ दीप के ब्राह्मणों ने भी०।
पावा के मल्लों ने भी०।
कुसीनारा के मल्लों ने भी०।
द्रोण ब्राह्मण ने भी कुंभ का०।
पिप्पलिवन के मौर्यों ने भी कोयले का०

इस प्रकार चक्षुष्मान (=बुद्ध) का शरीर सुसंस्कृत हुआ। देवेन्द्रों, नागेन्द्रों, नरेन्द्रों से पूजित तथा श्रेष्ठ मनुष्यों से पूजित हुआ, उसे हाथ जोड़कर वन्दना करो, सौ कल्प में, भी बुद्ध होना दुर्लभ है।

काश! बापू की राख पर भी देश के कोने-कोने में स्तूप बनवा दिये जा सकते!

(पेज ७ का शेष

चले जाने का और हिन्दुओं को कायम रहने देने का आदेश देना यथार्थ में इसी सहज प्रवृत्ति का परिणाम है। पश्चिमी पंजाब व सीमाप्रान्त में भी बहुत कुछ यही प्रवृत्ति है और पूर्वी बंगाल में झगड़ न होने का भी मुख्यतः यही आधार है। पूर्वी बंगाल में सिख नहीं हैं वहां हिन्दू व मुसलमान हैं और दोनों बँगला भाषा व संस्कृति के उपासक हैं; अतः वहां शान्ति बनी हुई है। हां! यह बात ठीक है कि पश्चिमी पंजाब व सीमाप्रान्त में सिखों व हिन्दुओं का चोली-दामन का साथ है; अतः गैरसमझ मुसलमान सिखों के साथ साथ हिन्दुओं को भी अपना शिकार मान लेता रहा है किन्तु यथार्थ में वहां झगड़ा केवल मुसलमानों व सिखों का रहा है और उसका जो आधार है उसे हमने ऊपर स्पष्ट कर ही दिया है। इस वैमनस्य का जो परि
पंजाब के दोनों भागों को देखना पड़ा
वर्णनातीत है, उस परिणाम को
सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं,
उसका विषम परिणाम पीढ़ियों तक
को भुगतना पड़ेगा। पंजाब इस वैम
के बाद क्या नया रूप धारण कर
इसे हम अगले लेख में स्पष्ट करेंगे।

मुफ्त ! मुफ्त !!
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ. ए.,
ए., पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सि
और होम्योपैथिक बायोकैमिक
आसानी से पास कर सकते हैं नियम
मुफ्त मंगाये। पता :—
टर नेशनल इंस्टीट्यूट (राजस्टर्ड)

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य
पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि
को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और
हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत
१ डिब्बा ३।–) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी इन्द्रिय
में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों
रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए
इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती
कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५।।=) डाक और पैकिंग खर्च
रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपु

१९४८ में क्या होनेवाला है!

यदि आप १९४८ में होनेवाली अच्छी व बुरी घटनाएं समय से पू
जानना चाहते हैं, तो आज ही केवल एक पोस्टकार्ड पर अपना पूरा प
और किसी फूल का नाम लिखकर भेज दें, बस फिर हम ज्योतिष-विद्या
हिसाब से आपके आनेवाले १२ मास का हानि-लाभ, किस व्यापार
लाभ होगा, किस साधन से धन प्राप्त होगी, रोजगार कब मिलेगा, वेतन
वृद्धि, परीक्षा में सफलता अर्थात् कार्ड की तारीख से लेकर एक वर्ष तक
होनेवाली कुल बातों का संक्षेप अर्थात् मासिक वर्षफल बनाकर केवल
१।) में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाक-व्यय अलग। बुरे ग्रहों की शांति
का उपाय भी लिखा जायगा—जिससे आनेवाली कठिनाइयां दूर
किया जा सके।
श्री स्वामी योगीराज ज्योतिष आश्रम, (D.D.A.)
फगवाड़ा (कपूरथला स्टेट)

गजब हो गया अपनी गलती से सैकड़ों घर बरबाद! रक्षा चाहते हैं तो इसे जरूर पढ़ें।

१—ताकतवर यौवन वटी—भाइयो, यह ताकत की बहुत जोरदार दवा कई तरह की कीमती दवाइयों से बना
गई है। इसकी एक खुराक खाते ही शरीर में महान् शक्ति पैदा मालूम देती है तथा धातुक्षय, कमजोरी, स्वप्नदोष को
हटाकर पतले वीर्य को दही के समान गाढ़ा बना देती है, स्मरणशक्ति बढ़ाकर दिल व दिमाग को ताकतवर बनाती है। खोई
ताकत व जवानी को आठ दिन में फिर से लाने के लिए आश्चर्यजनक यह इलाज है। बूढ़ा या जवान एक बार भी इसे खा
तो यौवन का फिर से पूरा आनन्द आ जाता है। इसके आश्चर्यजनक गुणों से मोहित होकर बड़े-बड़े राजा-महाराजा, सेठ
कारों ने इस्तेमाल करके प्रसन्नता प्रकट की है। पूरे कोर्स ६४ गोली के पॉकट का ५)।
२—अमीरी तिला—यह अद्भुत तिला राजा-महाराजा, सेठ-साहूकारों के सेवन करने योग्य है। इसके लगाने
कमजोरी, ढीलापन, सुस्ती हटकर बिजली के समान अपूर्व ताकत पैदा होती है। फी शीशी ५), डाकखर्च तीनों का १)।
३—आर० पी० का पत्थर हजम चूर्ण—कब्ज को दूर कर दस्त साफ लाता है। फी शीशी ।=)। सूचीपत्र
एजेन्टों की जरूरत।

पता—जैन बालामृत कार्यालय बेलनगञ्ज, (१००) आगरा
एजेन्ट चौहान कपाउंडर महाराष्ट्र आफिस के सामने

तीय संस्कृति-सम्मेलन
त के विद्वानों, पंडितों, साधु महात्माओं का घोषणापत्र

क्षेत्र प्रयाग की अर्धकुम्भी के इस अवसर पर त्रिवेणी के तट पर हिन्दू-समाज की समुन्नति और तथा भारतीय संस्कृति के के उद्देश्य से हम निम्नलिखित करते हैं—

सनातन भारतीय (हिन्दू आर्य) वतः ही सार्वभौम धर्म है। उसी र पर हमारे कण्वादि महर्षियों काल में "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" ज्ञा के अनुसार संसार के दि विभिन्न देशों में जाकर मनुष्य- को सुव्यवस्थित और सभ्य बनाकर देश की कीर्ति को जगद्-व्यापी था।

तया कण्वो मिश्रदेशमुपाययौ।
संस्कृत्य चाभाष्य तदा दशसहस्रकान्
स्वं प्राप्तो ब्रह्मावर्ते महोत्तमे।
तान् म्लेच्छान् शूद्रवर्णाय चाकरोत्
सर्वे बभूवुर्वसुपुत्रकाः।
दा तेषां मध्ये वैश्या बभूविरे॥

*

राजानं राजपूतपदं ददौ॥")
पुराण ४ प्रतिसर्ग खण्ड २१वां
य)।

के
सकाशादग्रजन्मनः।
पृथिव्यां सर्वमानवाः"

में जो उपर्युक्त उद्देश निहित संसार भर के लोगों के को सुधार करने का दायित्व गों के ऊपर है। अब स्वतन्त्र भारत का सूर्य से उदय हो रहा है और हमारा है कि पुनरपि भारत की कीर्ति को संसारव्यापी बनाया है कि मनु महाराज की

वैश्यस्त्रयो वर्णा द्विजातयः।
शूद्रो नास्ति तु पञ्चमः॥"

का उपयोग देश-काल की को देखकर किया जाय। के तथा अन्य स्मृतियों के हमारा मत है कि परम्परागत वर्ण-व्यवस्था के समान ही का सिद्धान्त भी भारतीय धर्म को मान्य है।

काशी
शास्त्री, दर्शन केसरी, पंडित सभा "
: सर्वे हिन्दवः इति
मिश्रः, प्रधान संस्कृत हि० वि० वि० "
, हि० वि० वि० "
ध्याय व्याकरणा- , प्रधानाध्यापक हि० "
त्रिपाठी, एम० ए० साहित्या- ध्यापक हि० वि० वि०, "
शास्त्री, "
मालवीय, साहित्य शास्त्राचार्य "
ध्याय, वेदान्ताचार्य, "
डी० लिट्० क हि० वि० वि० "
दीक्षित, "
झा ज्योतिषाचार्य "
द्विजेन्द्रनाथ मिश्र तीर्थ "
ध्याय, प्राचीन-नवीन "
वेदान्ताचार्य सांख्य- मीमांसा तीर्थ:
ध्याय, "
द्विवेदी, दर्शनाचार्य, "
अग्निहोत्री एम० ए०, साहित्याचार्य: "

रघुनाथ पाण्डेय, व्याकरणाचार्य काशी
गोराबाला खुशाल जैन, न्यायतीर्थ साहित्याचार्य, एम० ए० "
अनन्त सदाशिव अलतेकर, प्रधानाध्यापक प्राचीन संस्कृति-विभाग, हि० वि० वि० "
करुणापति त्रिपाठी, व्याकरणाचार्य साहित्याचार्य एम० ए०, "
ईश्वरदत्त द्विवेदी, आयुर्वेदाचार्य "
मधुसूदन शास्त्री, साहित्याचार्य प्राध्यापक, हि० वि० वि० "
रामदयाल शास्त्री, व्याकरणाचार्य: "
यज्ञनारायण उपाध्याय काव्यतीर्थ, पूर्वमन्त्री अ० भा० सनातन धर्म सभा, "
श्री रामलाल शास्त्री, व्यवस्थापक सुप्रभातम्, "
सीताराम शास्त्री, संचालक हरि-कीर्तन मंडल, "
जनार्दन व्यास, विविध भाषा विशारद, विद्यावाचस्पति, "
रामबहादुर त्रिपाठी, साहित्याचार्य "
शीलस्वरूपानन्द, मंडलेश्वर, मंगल-मठ, "
स्वामी शङ्करानन्द परमहंस, अध्यक्ष लक्ष्मीकुंड नारायण मठ, "
श्रीशङ्कर शुक्ल शास्त्री, "
महेन्द्र उपाध्याय, प्रधान मन्त्री श्री काशी विश्वनाथ पं० सभा "
राधाप्रसाद शास्त्री, भूतपूर्व प्रधानाध्यापक, धर्मशास्त्र विभाग हि० वि० वि० "
कपिलदेव द्विवेदी, एम० ए० शास्त्री एम० ओ० एल० एडवो० "
कमलापति द्विवेदी, एम० ए० एल० एल० बी० मंत्री श्री अन्नपूर्णा मिल्स, "
स्वामी अद्वैतानन्द, भारत सेवाश्रम संघ, "
भूपेन्द्रपति त्रिपाठी, व्याकरणाचार्य, काव्यतीर्थ, प्रयाग
प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, संकीर्तन भवन, झूंसी, "
रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री, काव्यतीर्थ, साहित्यरत्न "
रामकृष्ण त्रिपाठी, वेदान्ताचार्य, झूंसी, "
प्रभात मिश्र शास्त्री, साहित्याचार्य, साहित्यरत्न, "
बाबूराम उपाध्याय व्याकरणाचार्य, वेदान्त शास्त्री "
रामपाल त्रिपाठी, विशारद व्याकरणाचार्य, साहित्य शास्त्री "
पद्मानन्द चतुर्वेदी, साहित्याचार्य. साहित्यरत्न "
हीरालाल पाण्डेय, व्याकरणाचार्य, "
राधाकृष्ण शास्त्री, झूंसी, "
केदारनाथ द्विवेदी, व्याकरणाचार्य वेदान्त शास्त्री, "
शिवदत्त शास्त्री, ज्योतिषाध्यापक "
शरणानंद (स्वामी) त्रिवेणी तट "
धर्मदास, सेक्रेटरी पंचायती बड़ा अखाड़ा उदासीन "
मंगलपुरी, मंत्री, अखाड़ा श्री निरंजनी पंचायती "
चंद्रशेखर गिरि, निर्वाणी अखाड़ा "
महंत सीतारामदास, शास्त्री, नासिक
को० अ० सुब्रह्मण्य अय्यर, अध्यक्ष संस्कृत-हिन्दी-विभाग, लखनऊ विश्व विद्यालय, लखनऊ
पं० गिरीशचन्द्र अवस्थी, व्याकरणाचार्य, प्रधान प्राच्य विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय "
रामशंकर द्विवेदी, व्याकरण तथा साहित्याचार्य, प्राच्य विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय "
जगन्नाथप्रसाद पाण्डेय, आयुर्वेदाचार्य, "
श्रीधर मिश्र, व्याकरणाचार्य "
रामाधीन उपमन्यु, शास्त्री, विद्यारत्न "

भारतीय संस्कृति सम्मेलन के संस्थापक माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन।

योगेन्द्रनाथ शर्मा, काव्यभूषण, लखनऊ
राधेनारायण वाजपेयी, "
बदरीनाथ वाजपेयी "
जयशङ्करनाथ मिश्र "
पं० हरिशंकर "
प्रभुदत्त स्वामी शास्त्री, मेरठ
वाचस्पति शर्मा शास्त्री "
राजाराम शर्मा, मिश्र "
हरिदत्त शर्मा, व्याकरणाचार्य "
चन्द्रभान शास्त्री, एम० ए० "
हनुमानप्रसाद पोद्दार, गोरखपुर
नारदानंद सरस्वती नैमिषारण्य
भजनानंद, मैनपुरी
चन्द्रकिशोरपतित्रिपाठी, व्याकरणाचार्य, काव्यतीर्थ, साहित्यरत्न, देवदरिया
वासुदेव द्विवेदी, वेदशास्त्री, साहित्याचार्य "
नवनिधि पति त्रिपाठी, व्याकरणाचार्य, गोरखपुर
परमानन्द शर्मा, विद्यावाचस्पति, खुर्जा
रामाकान्त मिश्र, व्याकरण शास्त्राचार्य, न्यायतीर्थ बांस्दा स्टेट गुजरात
गोस्वामी गणेशदत्त, प्रधान मन्त्री, सनातन धर्म प्रतिनिधि, सभा, पंजाब, नई दिल्ली
मनोहरलाल गौड़, एम० ए० व्याकरणाचार्य, काव्यतीर्थ वेदान्ताचार्य "
गोस्वामी गिरिधारी लाल शास्त्री, विद्यामनीषी, मुख्य धर्मोपदेशक, बिड़ला मंदिर "
प्रभुदत्त शास्त्री, महामहोपदेशको विद्यावाचस्पति दिल्ली
रामधन शर्मा, एम० ए० साहित्याचार्य "
रामेश्वरप्रसाद शर्मा, ज्योतिषी "
यमुनाधर ज्योतिषी, ज्योतिषाचार्य "
सरयूप्रसाद शास्त्री 'द्विजेन्द्र' काशी
विश्वनाथ पाठक, विद्यामंदिर "
बाबूराव विष्णु पराड़कर "
मुरारि शर्मा, साहित्य ज्योतिषाचार्य "
श्री लक्ष्मण शास्त्री, त्रिपाठी "
कमलापति शास्त्री "
गौरीशंकर, "
कैलासपति त्रिपाठी, "
विद्याधर शर्मा, "
श्रीराम शर्मा व्यास साहित्याचार्य "
स्वामी घनश्यामानन्द "
श्री शिवकुमार शास्त्री, साहित्याचार्य, व्याख्यान-विशारद "
लक्ष्मण शास्त्री दर्शनालंकार, "
केदारनाथ शर्मा सारस्वत संपादक सुप्रभातम् "
कवीन्द्र महेन्द्र शास्त्री, पटना

नौजवान सेना में भरती हों

जब तक भारत गुलाम था और हमारी सेना भाड़े का टट्टू कही जाती रही है, एक स्वतन्त्र देश के सैनिकों की भांति वे स्वदेश की रक्षा के निमित्त सेना में नहीं भरती होते थे बल्कि इसे भी वेतन द्वारा अपनी उदर-पूर्ति का यह एक जरिया मानते थे।

परन्तु अब समय बदल गया है, हम सदियों की गुलामी की शृंखला को तोड़कर स्वतन्त्र हुए हैं। अतएव हमें एक ऐसी सेना की आवश्यकता है जिसके हृदय में स्वदेश भक्ति की भावना कूट-कूटकर भरी हो। जो अपने देश की रक्षा के लिए प्राणों की बलि देने को प्रतिक्षण तत्पर रहे। स्वदेश-भक्त सेना ही राष्ट्र का गौरव, उसकी शान, उसकी शक्ति और उसकी इज्जत है।

हमारा देश सदा से वीरता का उपासक रहा है, भारत के वीरों ने अपने धनुष की टंकार से समस्त पृथ्वी को प्रकंपित कर रखा था। सारा संसार हमारा लोहा मानता था। हम शस्त्र ग्रहण करने में अपना गौरव समझते रहे हैं। परन्तु इतिहास इस बात का साक्षी है कि हमारे शस्त्रों का प्रयोग अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए ही नहीं होता था, हमारी तलवार दीन-दुखियों की रक्षा करने तथा अत्याचार का नाश करने के लिए थी। अंगरेजों की गुलामी के जमाने में हमें निशस्त्र करके क्लीव बनाने का सतत् प्रयत्न किया गया, हमारे हृदयों से देश-भक्ति की, वीरता की, स्वदेश-रक्षा की भावना को नष्ट करने की बराबर कोशिश की गई। परन्तु अब हम स्वतंत्र हैं। हमारा हृदय स्वदेश-प्रेम से परिप्लावित है। हमारी सेना भी न केवल सुसंघटित, सशस्त्र और अनुशासनपूर्ण होनी चाहिए, बल्कि हमारे सैनिकों के हृदय में यह भाव भरा होना चाहिए कि उन्हें दूसरों के सैनिकों की भांति नहीं, बल्कि सच्चे देश-भक्त की भांति अपने राष्ट्र की रक्षा के लिए लड़ना है। हमें किसी दूसरे देश पर आक्रमण करने के लिए नहीं, अपने देश की रक्षा के लिए सैनिक बनना है।

अपनी राष्ट्रीय सेना में भरती का अवसर प्रत्येक समर्थ नौजवान भारतवासी के जीवन का एक पुण्य अवसर है। हमारे प्रान्त में आज यही अवसर प्रस्तुत है। सैनिकों की भरती की जा रही है। पिछले महीने भारतीय सरकार के रक्षा-मंत्री माननीय सरदार बलदेवसिंह ने भरती के इस मेले का उद्घाटन करते हुए कहा था कि भारतीय सेना का काम भारत की रक्षा करना है और प्रत्येक भारतीय का यह कर्त्तव्य है कि वह इस सेना में भरती हो। इस सेना में १७ से ३२ वर्ष तक की उम्र के विभिन्न वर्ग के युवक भरती हो सकते हैं।

जो स्वतंत्रता हमने इतने वर्षों के कठिन संघर्ष के बाद प्राप्त की है उसकी रक्षा करना हममें से प्रत्येक का परम कर्त्तव्य है। प्रत्येक नागरिक का यह पावन कर्त्तव्य है कि वह सेना में भरती होकर देश की रक्षा की तैयारी में अपना सहयोग प्रदान करे देश-रक्षा के लिए राष्ट्र का यह आह्वान देश के कोने कोने में पहुँचाना प्रत्येक देश-प्रेमी का फर्ज है ताकि भारत के राष्ट्रीय सैनिकों के विजयवाहिनी की हुंकार से समस्त संसार यह जान जाय कि हमारा देश अपनी रक्षा के लिए हर तरह से तैयार है और कोई भी शक्ति हमारी आजादी की ओर आंख उठाने का साहस नहीं कर सकती।

फरवरी, मार्च में युक्तप्रान्त में सैनिक भरती का काम चालू हो गया है। हिन्दी की चौथी कक्षा से लेकर मैट्रिक तक की शिक्षा पानेवाले युवक सेना में भरती किये जाते हैं। इस सम्बन्ध की पूरी जानकारी की बातें जिला मजिस्ट्रेट से मालूम की जा सकती है।

(पेज ५ का शेष)

हैं, उन्हें हम तीन विभागों में बांट सकते हैं:—(१) प्रणय-प्रधान (२) मातृत्व-पूर्ण (३) विभिन्न विषयों से सम्बन्ध रखनेवाली।

जिस प्रकार सुभद्रा जी ने राष्ट्रीय कविताओं की रचना में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है, उसी प्रकार प्रणय-प्रधान कविताओं की सृष्टि में भी पूर्ण सफल हुईं। प्रियतम के रूठने पर, उदासीन होने पर, उसके बाहर जाते समय नारी-हृदय की क्या गति हुई? उसके मन में कैसी मार्मिक वेदना, कैसे भीषण क्षोभ और अपरिमित क्लान्ति ने जन्म लिया, इसका सजीव चित्र ही मानो सुभद्रा जी की कविताओं में मूर्त्त हो उठा है। उनकी इस प्रकार की कविताओं में वेदना, उच्छ्वास, आंसू और आहों की कहीं छाया तक नहीं है। फिर भी वे अत्यन्त करुण और प्रभावोत्पादक हैं, क्योंकि उनकी उत्पत्ति हृदय पर ठेस लगने से ही हुई है और उनमें एक सहृदय नारी का हृदय रोया है। सुभद्रा जी के प्रणय की नींव केवल रुदन ही नहीं है। जहां उन्होंने एक ओर वेदना-सिक्त करुण स्वर में यह कहा है—

"बहुत देर तक हुई परीक्षा,
अब रूखा व्यवहार न हो।
अजी बोल तो लिया करो तुम,
चाहे मुझ पर प्यार न हो।।"

वहीं दूसरी ओर उन्होंने अपने प्रियतम के प्रेम पर अटल विश्वास रखते हुए यह भी कहा है—

"क्या कहते हो आ न सकोगे,
तुम मेरी कुटिया की ओर।
किन्तु सहज ही तोड़ सकोगे,
कैसे प्रबल प्रेम की डोर?"

प्रियतम के आगमन-काल में नारी का अनुराग-रंजित हृदय उल्लास से विभोर हो उठता है। वह अपने आपको उस रूप में देखना चाहती है, जिसे देखकर उसके जीवन-धन खिल उठें, उस पर बलिहार हो जावें। सुभद्रा जी ने इसी भावना से प्रेरित होकर 'स्वागतसाज' शीर्षक एक कविता लिखी, जिसकी कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं:—

"ऊषे सजनि! अपनी लाली से
आज सजा दो मेरा तन।
कला सिखा खिलने की कलिके!
विकसित कर दो मेरा मन।।
हे प्रसून दल! अपना वैभव,
बिखरा दो मेरे ऊपर।
मुझसी मोहक और न कोई,
कहीं दिखाई दे भू पर।।

* * *

सखि मेरे सौभाग्यसदन में
लाली छा जायेगी आज।
वे आएँगे, मुझे सजा दो,
दे-देकर तुम अपना साज।।
उस महान् वैभव के आगे,
मैं भी ठहर सकूं क्षण भर।
उस विशालता के सम्मुख सखि!
मेरा भी कुछ हो कण भर।।

नारी-हृदय मातृत्व को पाकर ही गौरवान्वित हुआ है। सुभद्रा जी के प्रणय में जो मधुरता और सरसता है, उससे कहीं उच्चकोटि का आनन्द और सुख उनके मातृत्व में है। सुभद्रा जी जहां पर माता हैं, जहां वे पुत्री को अपनी गोद में किलकती हुई देखकर कहने लगती हैं:—

"यह मेरी गोदी की शोभा,
सुख सोहाग की है लाली।
शाही शान भिखारिन की है,
मनोकामना मतवाली।।"

वहां से वात्सल्य की चरम सीमा पर पहुँची हुई मिलती है। ऐसी कौन माता होगी, जो सुभद्रा जी के स्वर में अपना स्वर मिलाकर ममता से विह्वल हो उन्मत्त न हो उठे? सुभद्रा जी ने इस प्रकार की अनेक कविताएँ लिखी हैं। जहां उनका मातृ हृदय ही कविता में बोल उठा है, अपने आप ही शब्दों की तूलिका ने भावों का रंग भरकर एक मनोमुग्धकारी चित्र अंकित कर दिया है। बच्ची के रोने पर, स्वामी को पास देखकर वे सहज भाव से कहती हैं—

"तुम कहते हो मुझको इसका
रोना नहीं सुहाता है।
मैं कहती हूँ, इस रोने से
अनुपम सुख छा जाता है।।
मैं हूँ उसकी प्रकृति संगिनी,
उसकी जन्म प्रदाता हूँ।
वह मेरी प्यारी बिटिया है,

* * *

मैं ही उसकी माता हूँ।
तुमको सुनकर चिढ़ आती है,
मुझको होता है अभिमान।
जैसे भक्तों की पुकार सुन,
गर्वित होते हैं भगवान्।।"

समय-समय पर हृदय में उठनेवाली भावनाओं को भी सुभद्रा जी ने पद्य-बद्ध कर दिया। उनकी ऐसी कवितायें थोड़ी हैं, परन्तु वे भी अत्यन्त मार्मिक और अभिव्यंजनापूर्ण हैं। उनका मानस भावना-तरंगों से उद्वेलित हो उठा और वे अपने आपको व्यक्त करने के लिए विवश हो गईं। तभी उनने लेखनी उठाई। धुंधली अनुभूति और निरी कल्पना के प्रबल वेग में उनकी कविता का जन्म नहीं हुआ। इसीलिए उन्होंने लेखनी ने जब जिस विषय को छुआ, उसे अमर कर दिया। अपने जीवन की गतिविधि पर विचार करते हुए 'उल्लास' शीर्षक कविता में उन्होंने लिखा है:—

"शैशव के सुन्दर प्रभात का,
मैंने नव विकास देखा।
यौवन की मादक लाली में,
जीवन का हुलास देखा।।
जग- झंझा - झकोर में,
आशा लतिका का विलास देखा।
आकांक्षा, उत्साह, प्रेम का,
क्रम-क्रम से प्रकाश देखा।।"

* * *

मैं न कभी रोई जीवन में,
रोता दिखा न यह संसार।
मृदुल प्रेम के ही गिरते हैं,
आंखों से मोती दो चार।।

अपने जीवन से सन्तुष्ट होकर अपने आप में तन्मय होकर सुभद्रा जी ने 'मेरा जीवन' नामक कविता में लिखा है:—

मैंने हँसना सीखा है
मैं नहीं जानती रोना।
बरसा करता पल-पल पर
मेरे जीवन में सोना।।

* * *

जग है असार, सुनती हूँ
मुझको सुख-सार दिखाता।
मेरी आंखों के आगे
सुख का सागर लहराता।।

* * *

सुख भरे सुनहले बादल
रहते हैं मुझको घेरे।
विश्वास प्रेम साहस हैं
जीवन के साथी मेरे।।

कवि में हृदय के भावों को पूर्ण रूप से सरलता और सुन्दरता के साथ व्यक्त करने की क्षमता का होना आवश्यक है। जिसमें ये दो बातें नहीं उस कवि की कविता कभी प्रभावोत्पादक और सरस न होगी। जिस प्रकार माली भिन्न-भिन्न प्रकार के पुष्प चयन कर सुन्दर हार का निर्माण करता है, उसी प्रकार कवि भी भावोद्यान से अनुभूतियों के विविध पुष्प चयन कर कविता की माला तैयार करता है; परन्तु पुष्प-चयन में भी चातुर्य की आवश्यकता है। जो माली जितना चतुर होता है, उसकी माला भी उतनी ही मोहक होती है। इसी प्रकार जो कवि अपनी अनुभूतियों को जितनी गहराई और सचाई से व्यक्त करेगा, उसकी कविता उतनी ही आकर्षक और प्रभावशालिनी होगी। सुभद्रा जी में यह चातुर्य था। वे अपने भाव ऐसे सरल और मर्मस्पर्शी शब्दों में प्रकट करतीं, जो सबके हृदयों को एक-सा प्रभावित कर देते। कहने का तात्पर्य यह कि सुभद्रा जी में प्रसाद-गुण यथेष्ट मात्रा में था और भावुकता में वे आकण्ठ डूबी हुई थीं। उनकी भाव-प्रकाशन की शैली तो जैसे ईश्वरीय देन थी; इसीलिए उनकी कविता लोकप्रिय और सम्मानित हुई। हिन्दी की आधुनिक कवियित्रियों में उनका क्या स्थान था, इसके लिए हम श्रीयुत गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' का कथन उद्धृत कर देना ही उचित समझते हैं—"देवियों ने हिन्दी-साहित्य की सेवा में जो भाग लिया है, उसमें श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान का महत्त्वपूर्ण स्थान रहेगा। पूर्ववर्ती कवियों में मीराबाई को छोड़कर अन्य किसी स्त्री ने इतनी मादक, सरल और प्रभावशालिनी कविता नहीं की।"

केवल स्त्री-कवियों में ही नहीं, हिन्दी के आधुनिक कवियों में उन्होंने अत्यन्त सम्मानपूर्ण स्थान बना लिया था। वे हिन्दी-काव्य-कोकिला थीं, महान् साहित्य-साधिका थीं, मूर्त्तवान कविता थीं। उनकी मृत्यु से साहित्य-ना एक देदीप्यमान तारा सदा को हो गया।

जय हिन्द यह शब्द नेताजी सुभ बोस की हिन्दुस्तान पवित्र भेंट है जिसको जगत्-प्रसिद्ध के लिए हमने न्यू-गोल्ड (नकली सोने अँगूठियाँ तैयार कराई हैं जो अस की भाँति चमकती हैं। जिन पर न जगह पर अति सुंदर हिंदी अक्ष "जय-हिन्द" खुदा है। आजाद हिन् के हर व्यक्ति को नेताजी की यह निशानी हर समय अपने पास रखना इज्जत है। आपके परिवार के सब के पास एक-एक अँगूठी अवश्य चाहिए। दाम लागत बराबर प्रति २।।-) ३ के ६।।≡) ६ के ११।≡) १२ के लिए २०।।≡) डाक-खर्च

मंगाने का पता—
जय-हिन्द ट्रेडर्ज (डी० ए०
पोस्ट आफिस सोलन, (जिला शिम

सारिडन
सर्व्वप्रकारका दर्द दूर करता है
10 Saridon
Saridon

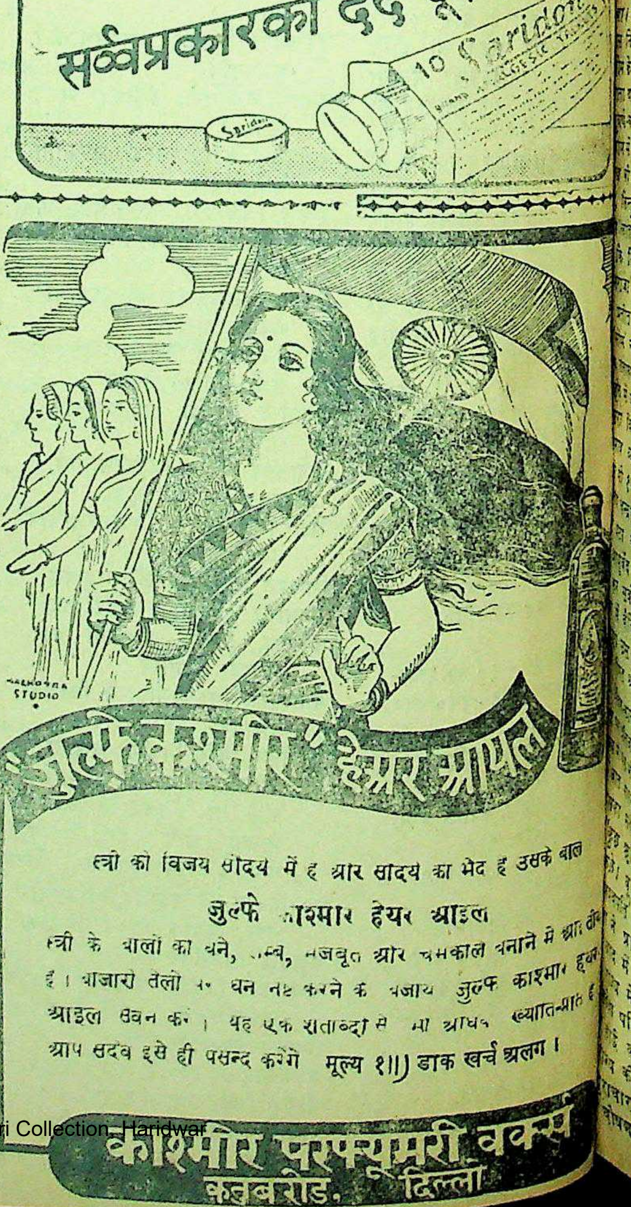

स्त्री की विजय सौंदर्य में है और सौंदर्य का भेद है उसके बाल

ज़ुल्फे काश्मीर हेयर आइल

स्त्री के बालों को घने, लम्बे, मजबूत और चमकीले बनाने में अद्वितीय है। बाजारी तेलों से धन नष्ट करने के बजाय ज़ुल्फे काश्मीर हेयर आइल सेवन करें। यह एक शताब्दी से भी अधिक ख्यातिप्राप्त है आप सदैव इसे ही पसन्द करेंगे मूल्य १।।) डाक खर्च अलग।

म्पादक के नाम चिट्ठियां

बापू और मद्य-निषेध

की हत्या से सारा विश्व हिल उनकी हत्या का मुख्य कारण कता का अभाव है। यह वह की कि विदेशों से लदकर नहीं इसके सरकारी आंकड़े भी नहीं हो सकते। यह कंट्रोल की राशनकार्ड पर भी नहीं मिल इसके अभाव को दूर करने के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं उच्छृंखलता को जड़ से दूर करना प्रकार की उच्छृंखलता-निवृत्ति उपाय मद्य-निषेध भी है। के मद्य-निषेध सम्बन्धी होने से भी वह रुका नहीं, प्रकारान्तर से अधिक गम्भीर चिन्तन के लिए बाध्य

अस्तित्व प्राचीन काल से भारत में मद्य को प्रोत्साहन रहा, किन्तु वह कड़ी निन्दा था। विश्व के सबसे प्राचीन में शराब पीनेवाले और बड़बड़ानेवाले को असभ्य कहा है तथा उनकी है (ऋग्वेद ८।२।१२)। 'सोम-पान' का 'सुरा-पान' नहीं है। 'सोम' और भ्रमपूर्ण ही नहीं, है। सुरा उस समय भी थी और उसका से भिन्न नहीं के बाद कूटकर उसका (ऋग्वेद १०।८५।३)। अग्नि पर नहीं चढ़ाया निकालने के बाद, छानकर में रखा जाता और पीने के (ऋग्वेद ९।१।१-२)। मादक यह नहीं होता मामूली-सा भांग जैसा श्री राहुल जी ने बतलाया में अब भी भांग को करते हैं।

होता है कि वैदिक-काल की दो वनस्पतियां थीं। और दूसरा क्षुपाकार। मादकता होती और आयुष्य, रसायन और वर्धनीय होता। जातियां थीं। सभी की कला की तरह बढ़ा थीं। इसी सोम के (सुश्रुत चि० २९) में काया- प्रयोग है। सोम की सूक्तों का यही रहस्य भी छूत और मांस में ही थी।

के बाद तक राजा रखा करते और अपने शराबी न होने का गौरव थे। छान्दोग्योपनिषद् वर्णन है—

ब्रह्मविद्या की खोज घूमते वे महाराज के राज्य में जा निकले। प्रारम्भिक आतिथ्य-सत्कार कहा कि—'आप लोग में निवास कीजिए। मेरा पवित्र है। न कोई चोर है कायर। एक भी शराबी की सीमा में नहीं है और का अड्डा। मेरी तो यह है—

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपो नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरो स्वैरिणी कुतः (छान्दोग्य प्रपाठक ५ खण्ड ११ वाक् ५)।"

काल-क्रम से सुरापान के प्रतिषेध पर ढिलाई आने लगी और शूद्र के लिए उसका पीना दण्ड का विषय न समझा जाने लगा। 'शूद्रस्य तु न सुरा-प्रतिषेधः (याज्ञवल्क्य मिताक्षरा)।' किन्तु द्विजों के लिए उसके पान का प्रायश्चित्त आग के समान गर्म की हुई शराब का पीना ही था (मनुस्मृति ११।९०) शराबी का मस्तक 'सुराध्वज' से दाग किये जाने तक का प्रायश्चित्त होने पर भी शूद्रों के सम्पर्क से सुरापान का प्रचार बढ़ता गया। जीवन के सभी क्षेत्रों में एक साथ रहनेवाली जातियों में आचरण की समानता आये विना नहीं रहती। सामन्य जनता आचरण की भलाई और बुराई का विश्लेषण करने नहीं बैठा करती। यह निश्चित है कि बौद्ध-काल में सुरापान की प्रवृत्ति उत्कर्ष पर पहुँच चुकी थी। तभी कौटिल्य ने अपने 'अर्थशास्त्र' में मद्य-निषेध के लिए एक पूरा अध्याय रखा। उस समय मद्य-निषेध के लिए कठोर प्रतिबन्ध लगाये गये। जिनका जनता पर यथेष्ट प्रभाव भी पड़ा। 'फाह्यान' और 'अलबेरूनी' जैसे विदेशी यात्रियों के वक्तव्य से स्पष्ट है कि उस समय मद्य का व्यवहार नीची जातियों में भी बहुत कम था।

आज की दशा उलटी है। विभिन्न किस्मों के मद्य का प्रचार है। क्या गरीब और क्या अमीर कोई अछूता नहीं है। मद्य के प्रभाव से बढ़ी हुई सौत्रिक धातु यकृत को कोषाणु और रक्त-नलिकाओं का संकोच कर, जनता के तन और मन को विकृत करती है। मां-बाप के मद्याभ्यास से भारत के बहुत से सपूत पागलखानों के मरीज हैं। कितने ही श्रीसम्पन्न परिवार इस लत की भेंट हो चुके हैं। यह एक व्यक्ति पर ही नहीं, किन्तु सारे परिवार, सन्तति और समाज पर अपना नाशकारी असर छोड़ता है। नैतिक पतन का मुख्य कारण है।

यह प्रसन्नता की बात है कि हमारी सरकार इस ओर से उदासीन नहीं है। अनेकों प्रान्तों में आंशिक मद्य-निषेध और उसके प्रयोग चालू हैं, किन्तु इनमें अवाञ्छनीय विलम्ब हो रहा है। बापू की हत्या से हमने अपने नैतिक पतन का नग्न दृश्य देख लिया है। नैतिक उत्थान के लिए सरकारी भोजों से ही नहीं, सामान्य जनता से भी शीघ्र ही मद्य का दौर-दौरा उठ जाना चाहिए। हमारी संस्कृति, सभ्यता और समाज इसमें पूरा सहायक होगा। यही समय की मांग, बापू के रचनात्मक कार्यक्रम का ठोस अंग और बापू का सबसे बड़ा स्मारक है।

बिड़ला कालेज —आचार्य
पिलानी नित्यानंद सारस्वत

* * *

गीत

लेखक, श्री रमानाथ अवस्थी

मैं तरुण आकाश साथी मैं तरुण आकाश
दूर नयनों से तुम्हारे पर हृदय के पास
आंसुओं में तारकों की ज्योति बांधे हूँ
मौनता में मैं प्रलय की शक्ति साधे हूँ
मैं सभी का किन्तु मेरा है नहीं कोई
साथ मेरे रह सदा बरसात भी रोई
अश्रु देकर मोल लेता हूँ जगत की प्यास

* * *

मैं अमर हूँ क्योंकि जीना जानता हूँ
जो मुझे प्रिय है उसे पहचानता हूँ
रूप लेकर मन नहीं, तन बेचता हूँ
प्रीति ले मन और जीवन बेचता हूँ
प्रीति खोकर, मनुज ने फूंका मनुज की लाश

* * *

तन जला आशा न जीवन की जली है
आसरा में ही सदा दुनियां पली है
तुम मुझे पहचान कर मत भूल जाना
मार्ग में चांहे सदा कांटे बिछाना
मैं चलूंगा ले तुम्हारे दर्शनो की आश

* * *

माननीय शिक्षा-मन्त्री ध्यान दें

हिन्दी को आज अनेक प्रान्तों की राज-भाषा होने का सौभाग्य प्राप्त है। अनेक विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा के माध्यम के रूप में भी हिन्दी को ही स्वीकृत किया जा रहा है। इस प्रकार की स्थिति में तथा जब कि माननीय शिक्षा-मंत्री महोदय ने कतिपय विद्यापीठ एवं गुरुकुलों की अन्तिम परीक्षा को विश्वविद्यालय की बी० ए० परीक्षा की कोटि का मान लिया है और उन-उन संस्थाओं के अन्तिम परीक्षोत्तीर्ण स्नातक अपने विषय से सम्बन्धित एम० ए० परीक्षा में प्रवेश होने के अधिकारी भी मान लिए गये हैं; तब माननीय शिक्षा-मंत्री महोदय की सेवा में हमारा भी यह विनम्र निवेदन है कि जो स्नातक गवर्नमेंट संस्कृत कालेज बनारस या हिन्दू-विश्वविद्यालय बनारस जैसी प्रमाणित शिक्षा-संस्थाओं के आचार्य हैं तथा अँगरेजी की कम से कम हाईस्कूल परीक्षा पास हैं, उन्हें संस्कृत लेकर एम० ए० परीक्षा में सम्मिलित होने का अवश्यमेव अधिकार मिल जाना चाहिए।

इससे तीन लाभ होंगे—प्राच्य परीक्षोत्तीर्ण संस्कृतज्ञों के जीविका-क्षेत्र का विस्तार होगा, हाईस्कूल और एम० ए० के बीच की परीक्षाओं की उन्मुक्ति से उनके समय और शक्ति का अपव्यय न होगा तथा साहित्य-सृजन और शोध के क्षेत्र में वे विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकेंगे।

हमारे विचार से माननीय शिक्षा-मंत्री महोदय को प्रस्तुत निवेदन को क्रियान्वित करने में तनिक भी आपत्ति न होनी चाहिए; क्योंकि इस बात से वह स्वतः सुपरिचित हैं कि एक आचार्य की भाषा-सम्बन्धी योग्यता संस्कृत के एम० ए० की अपेक्षा अधिकतर परिपक्व होती है। फिर संस्कृत के विद्वानों के लिए अँगरेजी भाषा के साहित्य का उपयोग करने के लिए हाईस्कूल परीक्षा की योग्यता का बन्धन भी अपर्याप्त नहीं है।

आशा है, प्राच्य परीक्षोत्तीर्ण संस्कृत विद्वानों की हित-दृष्टि से और भारतीय साहित्यिक क्षेत्र को समधिक समृद्ध एवं प्रकाशपूर्ण बनाने की दृष्टि से भी माननीय शिक्षा-मंत्री महोदय इस सामयिक निवेदन को अवश्य ही सफल बनाने की कृपा करेंगे।

जैन कालेज, —राजकुमार जैन,
बड़ौत साहित्याचार्य

* *

पत्र-पत्रिकाओं की विवरणात्मक सूचिका

हिन्दी-संसार को यह जानकर अतीव हर्ष होगा कि हिन्दी-साहित्य-समिति (बिड़ला कालिज) पिलानी—जयपुर स्टेट—के तत्वावधान में 'हिन्दी के पत्र और पत्रिकाएँ' पुस्तक श्री अखिल विनय के सम्पादकत्व में शीघ्र ही प्रकाशित हो रही है; जिसमें आज प्रकाशित होनेवाले हिन्दी की समस्त पत्र-पत्रिकाओं का परिचय रहेगा। हिन्दी आज संसार में चौथे नम्बर पर सबसे अधिक बोली जानेवाली भाषा है। नितान्त आवश्यकता है कि हिन्दी-प्रेमियों तथा भारतीय जनता को राष्ट्र-भाषा 'हिन्दी' में प्रकाशित पत्रों की जानकारी शीघ्र और सुविधापूर्वक हो सके। पत्र व सम्पादकों का नाम, स्थान, एक प्रति का वार्षिक मूल्य आदि सूचनाएँ अपेक्षित हैं। माननीय श्री सम्पूर्णानन्द जी ने पूर्व प्रकाशित पत्रों की सूची भी रखने का सुझाव दिया है। हमें विश्वास है कि हिन्दी-प्रेमियों, साहित्यिकों एवं पत्रकारों का उचित सहयोग प्राप्त होगा; सम्मति व सुझाव भी प्रार्थनीय हैं। पत्र-सम्पादकों से सादर विनय है कि नमूने की प्रति तथा संक्षिप्त परिचय भेजकर अनुग्रहीत करें—कन्हैयालाल सहल, एम० ए०, प्रधान।

* * *

श्री 'गांधी संवत् १'

सत्य, अहिंसा, प्रेम, शान्ति के साकार अवतार भगवान् गांधी जी के स्वर्गारोहण के उपरान्त श्री 'गांधीसंवत्सर १' का श्रीगणेश होना परमाश्यक है। अतः प्रथम फरवरी से ही मैंने भारत-सरकार के प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल, नेहरू सरदार पटेल, मौ० आजाद, राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद विधान-परिषद् के अध्यक्ष मा० मावलंकर एवं अन्य प्रान्तीय सरकारों से गांधी संवत् को वैधानिक रूप देकर प्रचलित करने का अनुरोध किया है। इसके अतिरिक्त रेडियो के संवाद प्रकाशक विभागों, व्यवसायिक केन्द्रों, शिक्षा प्रचारिणी संस्थाओं, पत्रकारों, ज्योतिष विशारदों आदि के समक्ष भी मेरा विनम्र निवेदन प्रस्तुत है। आशा है राष्ट्र के कर्णधार व गणित-विशेषज्ञ उक्त पुनीत कार्य को सम्पन्न कर, प्रकाशित करने में विलम्ब न करेंगे। अतएव समस्त जनता से अपील है कि वह श्री 'गांधी संवत् १' लिख कर परम पूज्य बापू जी के प्रति अपनी अपार श्रद्धा प्रदर्शित करें। इस प्रकार राष्ट्र-पिता की वार्षिक स्मृति भावी शताब्दियों तक करोड़ों नर-नारियों के हृदय में सर्वदा नवीनतम विद्यमान रहेगी।

आगरा—वैद्य रोशनलाल गुप्त
'करुणेश'

संयुक्तप्रांत में साक्षरता-प्रसार

(पेज ६ का शेष)

संख्या राजनैतिक अधिकारों से जो स्वतन्त्रता की देन हैं, वंचित रह जावेगी। अतएव प्रौढ़ शिक्षा-विभाग की नींव पड़ी। यह विभाग अब तक अपना काम कर रहा है। शिक्षा-प्रसार के लये १३४२ सरकारी और ४०० सहायता प्राप्त पाठशालाओं का संचालन करता है और इनके द्वारा लगभग ७५ हजार की औसत में व्यक्ति प्रतिवर्ष साक्षर होते हैं। इन व्यक्तियों की साक्षरता स्थिर रखने के लिए तथा जनता में शिक्षा की रुचि बढ़ाने के लिए १०४० पुस्तकालय और ३६०० वाचनालयों का भी संचालन इस विभाग के द्वारा किया जा रहा है। पुस्तकालय तथा वाचनालयों में पुस्तकों के अतिरिक्त साप्ताहिक, अर्द्ध-साप्ताहिक तथा मासिक पत्रिकाओं के दिये जाने का आयोजन है और आधी सहायता जनता से प्राप्त होने पर सरकार से स्वीकृत एक दैनिक समाचारपत्र भी दिया जाता है।

यह मानना पड़ता है कि इस विभाग को प्रौढ़-शिक्षा-प्रसार में अब तक जो सफलता मिली है वह पूर्ण आशाप्रद नहीं कही जा सकती, इस असफलता का एक मुख्य कारण इस विभाग के उद्देश्य का संकुचित दृष्टिकोण हो सकता है।

अब तक केवल साक्षरता-प्रसार पर ही विशेष ध्यान दिया जाता था। भला उस चालीसवर्षीय युवक को जो दिन भर खेतों में परिश्रम करने के पश्चात् घर आता है, एक लालटेन के धीमे प्रकाश में क, ख, ग की शिक्षा किस प्रकार रुचिकर हो सकती है। उसको तो आवश्यकता है मनोरंजन की और ऐसी बातों की जो उसकी शुष्क धमनिओं में इसका संचार कर उसकी खोई हुई स्फूर्ति की पूर्ति कर सकें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए गान, नाटक, कथा, भजन, प्रहसन आदि बातों का प्रबंध होना चाहिए और इसके साथ साथ थोड़ा-बहुत पढ़ने-लिखने का भी प्रबंध हो सकता है। रुचि सफलता का मुख्य साधन है, रुचि बढ़ने से साक्षरता सुगम होगी और साक्षरता का स्वाद स्वतः प्रभावशाली बनता जावेगा। सिनेमा, मैजिक लैनटर्न आदि के प्रयोग से शिक्षा का ही कार्य सुगम नहीं होगा वरन् वह लोगों की रुचि के बढ़ाने में भी सहायक होगा। इस प्रकार ग्राम-संबंधी सुधार की जितनी योजनाएँ हैं वे शिक्षा-प्रसार के ऐसे ही केन्द्रों पर विकसित हो सकती हैं। इन केन्द्रों का नाम बदल दिया जा सकता है। इनको हम मनोरंजन सभा, ग्राम-क्लब या किसी अन्य नाम से पुकार सकते हैं।

शिक्षा के उद्देश्य में सुधार के साथ-साथ हमें अन्य साधनों की भी आवश्यकता पड़ेगी। आज तक इस विभाग को जो संतोषप्रद सफलता नहीं मिली उसका एक विशेष कारण इन साधनों का अभाव था। किसी भी संस्था को जीवित रखने के लिए निरीक्षण की आवश्यकता पड़ती है। आज तक प्रौढ़-शिक्षा विभाग की संस्थाओं का निरीक्षण डिस्ट्रिक्ट इन्स्पेक्टिंग स्टाफ़ के द्वारा होता रहा है। यह स्टाफ अपने अन्य कामों में व्यस्त होने के कारण इन संस्थाओं के निरीक्षण में सफल नहीं रहा। आवश्यकता है कि प्रत्येक जिले में कम से कम इसी काम के लिए एक सुपरवाइजर नियुक्त हो। इसके अतिरिक्त प्रत्येक जिला में कागजात की देख-भाल के लिए एक अलग क्लर्क की भी आवश्यकता है। अध्यापकों की ट्रेनिंग का भी कोई प्रबंध नहीं है। यह आवश्यकता भी अनिवार्य है।

प्रौढ़-शिक्षा में प्रचार का एक प्रमुख स्थान है। इस समय के लिए केवल एक ही लारी है। शिक्षा तथा प्रचार दोनों कामों के लिए अधिक लारिओं की आवश्यकता होगी जो सिनेमा और लाउडस्पीकर आदि यंत्रों से सुसज्जित हों। इनके द्वारा प्रचार तथा शिक्षा दोनों का काम हो सकता है। चित्रपट द्वारा शिक्षा की चलन लाभप्रद प्रमाणित हो रही है और इसका प्रयोग अधिक किया जा सकता है।

प्रौढ़-शिक्षा-विभाग की स्थिरता—बहुधा यह विचार किया जाता है कि प्राइमरी शिक्षा के प्रसार के साथ प्रौढ़ शिक्षा-प्रसार की आवश्यकता घटती जायेगी और अंत में इसकी नितान्त आवश्यकता न रहेगी। इस विचार-धारा में एक भ्रांति है। अब तक प्राइमरी शिक्षा का अनुभव बतलाता है कि जितने छात्र प्राइमरी पाठशालाओं में प्रवेश पाते हैं उनमें से ६० प्रतिशत बिना साक्षर हुए पाठशाला छोड़ देते हैं और बढ़कर निरक्षर प्रौढ़ बन जाते हैं। इस स्थिति में सुधार हो सकता है; परन्तु शायद ही इस स्थिति की कोई अवस्था ऐसी हो जिसमें प्राइमरी पाठशालाओं में अपव्यय न रहे। अतएव प्रौढ़-शिक्षा की आवश्यकता सर्वदा रह सकती है।

इसके अतिरिक्त प्रौढ़ शिक्षा की सीमा को भी विस्तृत करने की आवश्यकता है। जिस प्रकार शारीरिक रक्षा के लिए भोजन, वायु और जल की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मस्तिष्क के विकास के लिए शिक्षा की आवश्यकता होती है। यह आवश्यकता केवल पाठशाला तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए। पाठशाला के पश्चात्, पोस्ट प्राइमरी, पोस्ट सेकेन्डरी और पोस्ट यूनिवर्सिटी शिक्षा की भी आवश्यकता पड़ सकती है। स्थानाभाव के कारण इन शिक्षाओं का विस्तृत विवरण नहीं दिया जा सकता। प्रत्येक अवस्था के पश्चात् उस अवस्था के प्रौढ़ों की योग्यता तथा स्थानीय उपयोगिता के अनुकूल कला-कौशल, नागरिक शास्त्र, साहित्य तथा राजनीति की शिक्षा का विधान होना चाहिए। यह मानना ही पड़ेगा कि देश के खँडहरों में प्राचीन सस्कृति का स्रोत छिपा हुआ है। ग्रामों की स्त्रियां अब तक साधारण चित्रकारी जानती हैं और विवाह आदि के समय उनका प्रदर्शन भी करती हैं; अब तक वृद्धाएँ बच्चों के साधारण रोगों का उपचार कर लेती हैं और गांव का लोहार, कुम्हार, रंगसाज गांव के साधारण यंत्रों को बना लेता है और आवश्यकताओं को दूर कर सकता है। उपरोक्त पोस्ट शिक्षा का यह भी उद्देश्य होगा कि वह इन छिपी हुई प्राचीन सभ्यता के नाममात्र चिह्नों का उद्धार करे।

पोस्ट शिक्षा-संबंधी संस्थाएँ रिफ्रेशर कोर्स के रूप में, स्थायी रूप में तथा जन-शिक्षा-संस्था के रूप में व्यवहृत हो सकती हैं और प्रौढ़-शिक्षा के ही सीमा के अन्दर आ सकती हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रौढ़-शिक्षा-विभाग स्थायी हो सकता है और इसके स्थायी होने की आवश्यकता अनिवार्य है।

सामाजिक सहयोग—लेख के प्रारम्भ में यह कहा गया है कि शिक्षा-प्रसार का दायित्व सरकार तथा समाज दोनों के ऊपर है। समाज का भी धर्म है कि वह वैयक्तिक विकाश को जिस पर उसकी सत्ता निर्भर है बढ़ावे। इसके लिए समाज सरकार के द्वारा खोली हुई संस्थाओं से सहानुभूति कर सकता है और स्वयं नवीन संस्थाओं को खोलकर सरकार का काम हलका कर सकता है। प्रसन्नता का विषय है कि समाज का ध्यान इस ओर आकर्षित होने लगा है और भिन्न भिन्न स्थानों पर अनेक सहायता प्राप्त प्रौढ़ पाठशालाएँ खुल चुकी हैं। इन पाठशालाओं की देख-रेख भी समाज के ही द्वारा होती है और आशा की जाती है कि इनका संचालन सफलतापूर्वक होता रहेगा। देवरिया, आज़मगढ़, प्रयाग, फतेहपुर आदि जिलों में ऐसी पाठशालायें सुचारु रूप से चल रही हैं। देवरिया में श्री बाबा राघवदास के संरक्षण

में प्रयाग, आजमगढ़ और फ
श्री सालिग्राम पथिक के संरक्षण मे
सी पाठशालाएँ खुल गई हैं।
इस तरफ जनता का ध्यान
आकर्षित होता रहेगा। शिक्षा मे
आशीर्वाद है। यह उस व्यक्ति को
वर्दित करती है जो शिक्षा देता
उसको भी जो शिक्षित होता है।

सुधार तथा अनुभव--प्रौढ़
विभाग ने त्रुटियों को ध्यान में र
प्रयोग करके कुछ अनुभव भी प्राप्त
का उद्योग किया है। प्रौढ़ शिक्षा
लय में ही एक चपरासी क्लब खोल
है। इस क्लब में मनोरंजन के साथ
ही विशेषता दी गई है। मेजा रोड
थरवई में शिक्षा-विधि पर प्रयोग
गया है। इन प्रयोगों के फलस्वरूप
अनुभव प्राप्त हुए हैं उनसे प्रौढ़-शि
पुनर्निर्माण में सहायता मिल सकती

निरक्षरता देश का कलंक और
मात्र का अभिशाप है। इसका नि
सरकार तथा समाज दोनों का धर्म है

श्वास दमा (खाँसी) के रोगी
नोट कर लो। श्री चित्रकूट
बूटी जिसकी केवल एक ही खुराक
फारगुन सुदी पूर्णिमा ता० २५-३-
सेवन करने से पुरानी से पुरानी
(दमा) खाँसी सदैव के लिए नष्ट हो जा
मगाने का पता—
श्री महात्मा तपसी बाबा, श्री रा
चित्रकूट, पो० चित्रकूट, जि० बाँदा (यु

आरोग्य
१८६६
नीलगिरि तै
श्री. खांडालेकर बंधु बम्बई

T.B. टी.बी. "तपेदिक" फेफड़ों का हो, या अँतड़ियों का, बड़ा भयंकर रोग है

पहली स्टेज	दूसरी स्टेज	तीसरी स्टेज	चौथी स्टेज	अंतिम स्टेज
मामूली ज्वर खाँसी	ज्वर-खाँसी की अधिकता	शरीर का सूखना ज्वर खाँसी की भयंकरता	हालत खराब, दस्त आदि शुरू जाना	रोगी की मौत भयंकर का इधर-उधर फैलना
(Jabri)	(जबरी)	(Jabri)	(जबरी)	

[T. B. टी. बी.] तपेदिक और पुराने ज्वर के रोगियो देखो—

(२) श्रीमान् तीसलहुसेन साहब रईस मौजा मुसेपुर पो० भरतकुण्ड जि० फैजाबाद से अपने ताजे पत्र में लिखते हैं कि— आपके यहां से जिस रोगी के लिए दवा 'जबरी' हमने मंगाई थी, बहुत लाभ हो रहा है, हम तो समझते थे कि इस भयंकर रोग की कोई भी दवा नहीं है। परन्तु आपकी दवा 'जबरी' ने हमारे विचार को बदल दिया। यथार्थ में 'जबरी' इस रोग के लिए आश्चर्यजनक शक्तिशाली औषधि है, हमारी तरफ से आपको हार्दिक धन्यवाद है। परमात्मा आपको दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की दे।

श्री नागेश्वरप्रसाद तिवारी—मास्टर स्कूल नड़गावां पो० "डालटनगंज" बिहार से लिखते हैं। मैं अनेक दिनों से ज्वर खाँसी बीमार था बलगम आदि की परीक्षा पर तपेदिक (राजयक्ष्मा) रोग ही साबित हुआ। मैं रोग का नाम सुनते ही बहुत घबड़ा गया। बीच परमात्मा की कृपा से आपकी अमृतरूपी दवा 'जबरी' का नाम सुना। मैंने तुरन्त आर्डर देकर पार्सल प्राप्त किया। दवा को पूर्वक सेवन किया, उसके अमृतरूपी गुणों ने मुझे आश्चर्य में डाल दिया, थोड़े ही दिनों में शरीर का रंग ही बदल गया, ऐसा होने लगा जैसे कुछरोग ही नहीं रहा। अधिक लिखना व्यर्थ है। यथार्थ में आपकी औषधि इस दुष्ट रोग के लिए अमृत है जितनी भी प्रशंसा कीजावे कम है।

इसी प्रकार के पचासों प्रशंसापत्र पहिले भी आप इन्हीं कालमों में देख चुके हैं, भारत के कोने-कोने में लोगों ने यह मान लिया इस भयंकर रोग से रोगी की जान बचानेवाली यदि कोई औषधि है तो वह एकमात्र 'जबरी' (Jabri) ही है। 'जबरी' के नाम भारत के पूज्य ऋषियों के आत्मिक बल का कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि प्रथम दिन से ही इस दुष्ट रोग के जर्म नष्ट होना जाते हैं। यदि आप सब तरफ से हताश हो चुके हैं तो परमात्मा का नाम लेकर एक बार जबरी की परीक्षा करें, परीक्षार्थ ही दिन का नमूना भी रख दिया है, जिसमें आपको तसल्ली हो सके। बस—आज ही आर्डर देकर रोगी की जान बचावें। अन्यथा कहावत होगी कि—अब पछताये क्या होत है, जब चिड़ियां चुग गई खेत। इसे डाक्टर, हकीम, वैद्य अपने रोगियों पर व्यवहार नाम पैदा कर रहे हैं और तारद्वारा आर्डर देते हैं। तार आदि के लिए हमारा पता केवल 'जबरी' जगाधरी (Jabri, Jaga लिख देना ही काफ़ी है। तार से यदि अर्डर दें तो अपना पूरा पता दें। मूल्य इस प्रकार है—

'जबरी' स्पेशल नं० १ अमीरों के लिए जिसमें साथ साथ ताकत बढ़ाने के लिए सोना, मोती, अभ्रक आदि की मूल्यवान् पड़ती हैं मूल्य पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन के लिए २०) रु०। जबरी नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान जड़ी पूरा कोर्स २०) रु०, नमूना १० दिन के लिए ६) रु०। महसूल आदि अलग है। आर्डर में पत्र का हवाला तथा नं० १ या नं० साफ लिखें। तुरन्त आर्डर देकर रोगी की जान बचा लें।

[illegible] एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड बैंकर्स (D) 'जगाधरी' पूर्व पंजाब (E.

और इस प्रकार उस महामानव के शान्ति तथा एकता आदर्शों [illegible] साथ साथ उसके भौतिक स्मारक के निर्माण में भी योग दे। संसद् भवन में बापू के स्मारक के रूप में गांधी कक्ष के नाम से एक ऐसा पुस्तकालय स्थापित करने की योजना स्वीकार की गई जिसमें बापू से सम्बद्ध समस्त विश्व का साहित्य संग्रहीत रहे और जिससे उनके जीवन और आदर्शों के अध्ययन और प्रसार के इच्छुकों को विशेष सुविधायें दी जा सकें।

अंतरंग संसद् ने दूसरे प्रस्ताव द्वारा हिन्दी काव्य की कोकिला तथा स्वतन्त्र संग्राम की वीर नेत्री श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान के आकस्मिक निधन पर गम्भीर वेदना तथा उनके शोक-संतप्त परिवार के प्रति सहानुभूति प्रकट की।

संसद् उनकी अमूल्य कृतियों के विशेष संस्करण प्रकाशित करने तथा उनकी रचनाओं के अध्ययन उपस्थित करने की आवश्यकता अनुभव करती है, क्योंकि साहित्यकार की कृतियां ही उसका अमर स्मारक हो सकती हैं।

—संवाददाता

* * *

प्रयाग हिन्दी-साहित्य परिषद्, ऐंग्लो बंगाली इन्टर कालेज के तत्त्वाधान में ता० २७-२-४८ को तुलसी-स्मृति-कविता प्रतियोगिता हुई। प्रायः सभी स्थानीय विद्यालयों ने भाग लिया! तीन निमन्त्रित निर्णायकों ने निर्णय किया। ऐंग्लो बंगाली कालेज ने चल-चषक प्राप्त किया! प्रथम पुरस्कार श्री मनिकाप्रसाद, द्वितीय श्री जनार्दन प्रसाद, तृतीय श्री सुरेन्द्रनाथ मिश्र और अतिरिक्त श्री विजयप्रकाश को प्रदान किया गया! इस प्रकार से कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न हुआ। प्रतियोगिता—श्री भूपेन्द्रनाथ कार की अध्यक्षता में हुई। निर्णायकों में श्री ज्योतिप्रसाद जी 'निर्मल' श्री विभु तथा श्री ओंकारनाथ जी मिश्र थे।

—संवाददाता

* * *

शिमला—मध्य-पर्वतीय राज्य प्रजा-परिषद् का एक विराट् राजनैतिक सम्मेलन विशेष निमंत्रित श्री बुद्धिसागर नौटियाल, भूतपूर्वमंत्री टिहरी राज्य प्रजामंडल के सभापतित्व में हुआ। लगभग तीन हजार स्त्री-पुरुष तथा हिमालय की कई छोटी-बड़ी रियासतों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। सर्वप्रथम बाघल राज्य प्रजाप्रिय राजा साहब श्री राजेन्द्रसिंह द्वारा तिरंगा झण्डा फहराते हुए सम्मेलन का उद्घाटन और स्वागताध्यक्ष पद से आमंत्रित सज्जनों का स्वागत किया गया, इसके बाद सभापति की ओर से पूज्य बापू जी के अकस्मात दुर्घटनात्मक निधन के प्रति शोक प्रकट करते हुए प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई। साथ ही संघियों के इस घृणित व्यवहार की जोरदार शब्दों से निन्दा की गई। बाघलराज्य प्रजा-परिषद् के प्रधान श्री हारासिंहपाल द्वारा एक प्रस्ताव स्वीकृत हुआ जिसका सुकेत, बिलासपुर, क्यूंठल, महलोग, बघाट आदि अनेक रियासती प्रजामंडलों के प्रतिनिधियों ने समर्थन किया। प्रस्ताव इस प्रकार है—शिमला मध्य-पर्वतीय राज्य प्रजा-परिषद् का यह सम्मेलन भारतीय सरकार और अखिल भारत देशी राज्य लोक-परिषद् से मांग करता है कि वे हिमालय की ३६ रियासतों को मिलाकर टिहरी गढ़वाल से चम्बा रियासत तक और कालका से तिब्बत तक एक पृथक् प्रान्त "हिमाचल प्रदेश" बनाने में सहायता प्रदान करें जिससे तमाम पहाड़ी रियासतों की जनता की सांस्कृतिक, भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक उन्नति हो सके।

—संवाददाता

महलोग (शिमला) प्रजामंडल का वार्षिक अधिवेशन विशेष निमंत्रित श्रीयुत बुद्धिसागर नौटियाल, भूतपूर्व मंत्री, टिहरी राज्य प्रजामंडल, की अध्यक्षता में हुआ, सम्मेलन में पूज्य बापू जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई और उनके अकस्मात् निधन पर शोक प्रकट किया गया, साथ ही संघियों जिनके पीछे कुछ राजा भी सुने गये हैं, के इस घृणित कार्य की घोर निन्दा की गई।

सम्मेलन द्वारा भारत-सरकार और अखिल भारत देशी राज्य लोक-परिषद् से मांग की गई कि वे हिमालय के तमाम ३६ रियासतों को मिलाकर टिहरी-गढ़वाल से चम्बा तक और कालका से तिब्बत तक एक पृथक् प्रान्त "हिमाचल-प्रदेश" बनाने में सहायता प्रदान करें। जिससे हम तमाम पर्वतीय रियासती जनता की राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, भौगोलिक और सांस्कृतिक उन्नति हो सके।

इस अवसर पर हमलोग प्रजामंडल का वार्षिक चुनाव भी हुआ। श्री ब्रह्मानन्द जी, प्रधान और श्री ठाकुरदास जी, प्रधान मंत्री चुने गये। —संवाददाता

वृन्दावन के म्युनिसिपल गर्ल्स हाईस्कूल का सालाना अधिवेशन प्रो० कृष्णचन्द्र एम० एल० ए० चेयरमैन बोर्ड के सभापतित्व में समारोह के साथ हो गया। छात्राओं की एक वादाविवाद प्रतियोगिता हुई, जिसमें मथुरा के चार गर्ल्स स्कूलों वे तथा वृन्दावन के दो गर्ल्स स्कूलों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का विषय था—कलम और तलवार। समारोह काफी सफल रहा। म्युनिसिपल गर्ल्स हाई स्कूल की दो छात्राएँ कुमारी प्रभा गोस्वामी और कुमारी विमला घोष बहुत अच्छा बोलीं अतः उक्त गर्ल्स हाईस्कूल प्रथम रहा। उसे एक कप पुरस्कार दिया गया। दूसरा नम्बर गवर्नमेंट गर्ल्स हाईस्कूल वृन्दावन का रहा, जिसे कि एक पदक प्रदान किया गया।

वृन्दावन की बोर्ड अपनी सीमा बढ़ा रही है। इस काम के लिए चेयरमैन साहब ने बोर्ड के एक्जीक्यूटिव अफसर श्री जानकीरमन शर्मा और वाइस चेयरमैन नलिनीकान्त मुकर्जी को नियत कर दिया है।

बोर्ड शहर में नाज की मंडी का एक बड़ा गंज बनाने की योजना पर विचार कर रहा है। क्योंकि वर्तमान मंडी में अधिक गाड़ी आ जाने से यातायात को असुविधा हो जाती है। —संवाददाता

वृन्दावन के प्रसिद्ध राधारमण मंदिर के मंत्री आचार्य अनन्तलाल गोस्वामी के यहां भारत के प्रसिद्ध संगीताचार्य पं० ओंकारनाथ जी पधारे। रंगजी के बाग में आपका गायन भी हुआ। स्थानीय स्थानीय माधव गौड़ेश्वर पीठ के सचालकों ने आपको गन्धर्व विद्यावारिध उपाधि से विभूषित किया। ब्रज-साहित्य-परिषद् के मंत्री सुभांग गोस्वामी वकील ने आपके सम्मान में एक प्रीत-भोज दिया।

—संवाददाता

उदयपुर में राजपूताना प्रांतीय देशी राज्य लोक-परिषद् के महिला-विभाग द्वारा १ मार्च से होने वाला महिला शिविर पूज्य महात्मा गांधी के निधन हो जाने तथा महिलाओं के आग्रह पर शिविर की तिथि ऐसी स्थिति में आगे बढ़ा दी जाय, इस कारण शिक्षण-शिविर अनिश्चित समय के लिए स्थगित कर दिया गया है।

—शिविर-संचालिका

उदयपुर में श्रीमती इन्दुबाला सुखाड़िया के सभापतित्व में श्री कस्तूर बा स्मृति दिवस का आयोजन महिला-मंडल कस्तूर बां ट्रेनिंग विद्यालय द्वारा किया गया। चर्खा दंगल हुआ तथा 'बा' को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।—संवाददाता

जोधपुर के कुमार साहित्य-परिषद् के प्रधान मंत्री तथा अ० भा० कुमार हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के संयुक्त मंत्री श्री नेमीचन्द्र जैन 'भावुक' के आदेशानुसार परिषद् की समस्त शाखाओं ने बापू-दिवस मनाया।

—संवाददाता

काशी नागरी-प्रचारिणी सभा का एक साधारण अधिवेशन सभाभवन में हुआ, जिसमें दो शोक-प्रस्ताव स्वीकृत हुए—सभा की यह बैठक भारतीय राष्ट्र को सत्य, अहिंसा और स्वकर्मयोग से पावन बनाकर विश्व के समक्ष उन्नत करनेवाले महामानव बापू के आकस्मिक महाप्रयाण पर शोक प्रकट करती है और जगन्नियंता से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं राष्ट्र को यह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

हिन्दी की प्रसिद्ध कवयित्री और राष्ट्र-कर्मकर्त्री श्रीमती सुभद्राकुमारी जी चौहान के दुर्घटनाग्रस्त आकस्मिक और अत्यंत क्लेशकारी निधन पर काशी नागरी-प्रचारिणी सभा की यह बैठक घोर शोक प्रकाश करती है और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे। —प्रधान मंत्री

बिहार बेसिक एजूकेशन बोर्ड के सेक्रेटरी और इन्सपेक्टर श्री रामशरण उपाध्याय राजेन्द्र महाविद्यालय सेवदह (पटना) निरीक्षण के लिए आये थे। साथ में पटना जिला कांग्रेस कमेटी के प्रधान मंत्री श्री त्यागी जी भी थे। आपने यहां के पुस्तकालय, वाचनालय, क्लास, द्योग-विभाग (कोल्हू) कताई-बागवानी आदि—सभी विभागों का निरीक्षण किया, यहां के कार्य से प्रसन्न होकर जुलाई महीने में बेसिक क्लास खोलने का भी वचन दिया।

—संवाददाता

देहरादून कन्यागुरुकुल कन्याओं की शिक्षा के लिए आदर्श संस्था है। अगर आप देहरादून के स्वास्थ्यप्रद जलवायु में अपनी कन्या को हिन्दू संस्कृति के वातावरण में आश्रम में रखकर शिक्षा देना चाहते हैं तो इस संस्था में अपनी बालिका को शिक्षा के लिए भेजें। ७ से ९ साल की ही कन्याएँ ली जाती हैं। इस समय प्रवेश प्रारम्भ है। विशेष विवरण के लिए निम्न पते पर पत्र-व्यवहार करें:—

—चन्द्रावती लखनपाल एम० ए० बी०
आचार्या कन्यागुरुकुल देहरादून

—संवाददाता

गोलाघाट (असाम) में आसाम प्रांन्तीय मारवाड़ी सम्मेलन का अधिवेशन आगामी ता० २८ व २९ के बजाय अब ता० ३-४ अप्रैल को बंगीय व्यवस्थापिका सभा के अध्यक्ष माननीय श्री ईश्वरदास जी जालान एटर्नी, एटला, की अध्यक्षता में गोलाघाट में होगा। आसाम के प्रधान मंत्री माननीय श्री गोपीनाथ बारदोलोई महोदय से कान्फरेंस का उद्घाटन करने के लिए अनुरोध किया गया है। सम्मेलन के साथ युवक-सम्मेलन आदि कई उत्सवों का आयोजन किया गया है।

—भगवतीप्रसाद लडिया

कैप्री सिल्क साड़ी आकर्षक डिज़ाइन
कलाबूए ३-४ इच चौड़ा बार्डर
नं० ७ ८ ९ ५ गज
१८) २३) २८)
२) पेशगी बाकी वी० पी० से
थोक व्यापारियों का खास सुभीता
बमाका इन्डस्ट्रीज,
जुही नं० ६ कानपुर

साहित्य-चर्चा

'छायातप' (कहानी-संग्रह) लेखक श्री रघुवंश, प्रकाशक—साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग। कवर सुन्दर—मूल्य २॥)

'छायातप' के लेखक श्री रघुवंश एम० ए० (रिसर्च स्कालर हिन्दी, प्रयाग विश्व-विद्यालय) हिन्दी के एक उदीयमान कहानी-लेखक हैं। आज का तो युग ही कहानियों का है, और हिन्दी में न ख्याति-अर्जन तो मड़से कम धनोपार्जन के सुकृत्य के नाते तो कितनी ही कहानी-पुस्तकें प्रतिवर्ष बाजारों में निकल रही हैं। रेल-यात्रियों को कहानी चाहिए, मिलिटरी के सिपाहियों को कहानी चाहिए, कितने ही वर्ग हैं, जिन्हें कहानी चाहिए और हिन्दी की कितनी ही पत्रिकाएँ हिन्दी के समालोचकों का पीकदान बनकर भी इस सेवा में निरन्तर निरत ही हैं। ऐसे समय में 'छायातप' को पढ़कर एक बार मन में उठा, क्या हिन्दी के बाजारों में ऐसी भी कहानी-पुस्तकों की मांग है? एक बार लेखक की साधना और प्रकाशक के साहस के प्रति हृदय उल्लसित हो उठा।

'छायातप' की सारी कहानियां कलात्मक, भावमूलक और सुरुचि-सम्पन्न हैं। उनमें न तो कहीं ठाले का रोमांस मिलेगा और न सस्ती प्रगतिशीलता के प्रवाह में डूबते हुए उच्छृंखल-हृदय के प्रलाप। लेखक को प्रेरणा मिली है ठोस जीवन से और उस पर उसने अपनी चिन्तन-मिश्रित कल्पना से कहानियों का सुन्दर कलामय स्वरूप खड़ा किया है। रघुवंश जी भाव-प्रवण होने के साथ ही एकान्त चिन्तक भी हैं। इसीलिए उनके जीवन में आये हुए भाव-संवेदन उनकी कल्पना के सहारे कहानियों में जड़ उठे हैं। लेखक की सबसे बड़ी विशेषता है वातावरण का आलेखन। यह आलेखन बाह्य और आन्तिरिक दोनों ही प्रकार का है। कभी तो लेखक की भावना बाह्य-प्रकृति की गोचर चित्रपटी से कलकल नाद करती हुई बहती मिलती है और कहीं आन्तरिक और मानसिक चित्रों की भूमि में गुंजरित। और लेखक इस अन्तर बाह्य के सामंजस्य से हृदय में अपना उद्दिष्ट विषय उभारता जाता है। प्रसादजी की भाव-प्रधान; और राजा राधिकारमणसिंह जी की भावुकता-प्रधान कहानियां तो पाठक पढ़ ही चुके होंगे, किन्तु उनकी श्रेष्ठता को अक्षुण्ण मानते हुए भी हम इस उदीयमान लेखक के विषय में इतना निर्देश तो कर ही देना चाहते हैं कि उसने कहानियों में नवीन भूमि तोड़ी है। इसमें वह कहां तक सफल होगा, यह तो उसका भविष्य-विकास बतायेगा, किन्तु उसकी वर्तमान टेकनीक के विषय में एक शब्द कहे बिना तो हम रह ही नहीं सकते। कहानियों में स्वप्न, दिवा-स्वप्न, चिन्तन, मानसिक चित्र तथा वातावरण सृजन की प्रधानता है। इसमें लेखक ने 'अब वह स्वप्न देखता है' अथवा चिन्तन करने लग जाता है' अथवा और इसी प्रकार के संकेत-सूचक सीधी कथन-प्रणालियों का प्रयोग न करके उन्हें 'टाइपों' की विषमता से प्रकट किया है। जो सुनने में तो नहीं, हां पढ़ने में अवश्य बड़ी सहायक हैं। ये ही मानसिक चित्र कहानी के गुण भी हैं और किन्हीं लोगों के लिए अवगुण भी हो सकते हैं, क्योंकि इन कहानियों की यह विशेषता है कि तनिक असावधानी करने पर कथा का सूत्र खो जा सकता है। रघुवंशजी का अपना नवीन प्रयोग है। 'बाबुल मेरो नैहरवा छूटो जाय', 'पत्थर की चांदनी' कहानियां तो मुझे बहुत ही सुन्दर लगीं। पढ़ते-पढ़ते मन विभोर हो जाता है। बीच-बीच में आये हुए प्रकृति के चित्र, बालू के रिल्ले, रेगिस्तान, वन-प्रदेश और पहाड़ियों के चित्र तो पढ़ते पढ़ते आंखों के सामने खड़े हो जाते हैं। 'स्मृति-चित्रों' में कथा का चयन रघुवंश जी की टेकनीक है। कहानियों के शीर्षक बड़े ही आकर्षक होते हैं। लेखक मानस-प्रधान है; अतः कहानियां प्रगति-शीलता-प्रधान न होकर रस-प्रधान हैं। समस्याएँ उनके भीतर रेशम के तारों सी भले ही हों। एक कलात्मक वस्तु है। लेखक बधाई के पात्र हैं।

'क्षेम —

*   *   *

अन्तर्नाद (कविता-संग्रह)—रचयिता, श्री उपेन्द्र; प्रकाशक, आधुनिका, १०।१, घोष लेन कलकत्ता; मूल्य एक रुपया।

दुरूह शब्दों और बेमेल कल्पनाओं के घटाटोप से आच्छादित कविताएँ पढ़ते पढ़ते जिनका मन ऊब चुका हो और कविताओं को जो मात्र शब्द जाल समझकर उपेक्षणीय समझने लगे हों, उनके लिए 'अन्तर्नाद' की कविताएँ अत्यन्त सरस, सुलझी हुई और प्रवाहपूर्ण प्रतीत होंगी।

'अन्तर्नाद' का कवि स्वाभाविक मानवी जिज्ञासाओं का समाधान खोजना चाहता है। वह कहता है—

ऊषा की स्वर्णाभा में
खिलता किसका कलहास प्रिये?
व्योम कुंज में दूर विश्व से
किसका वह आवास प्रिये?

और इस सरल स्वाभाविक जिज्ञासा के पीछे उसकी दार्शनिकता भी बही चली आती है:—

लहरों में किसके उर का
गुंजित नित हाहाकार यहां?
सृजन बीच क्यों यह कठोर है,
क्रूर मरण का पाश प्रिये?

सभी कविताओं में कवि की मस्ती, तन्मयता और अकुलाहट की त्रिवेणी प्रवाहित हो रही है, जिसमें एक अबाध प्रवाह है, रोचकता है और है आकर्षण का चुम्बक कविता-प्रेमी रसिक पाठकों के लिए 'अन्तर्नाद' संग्रहणीय संग्रह हैं। पुस्तक की छपाई, सफाई साफ-सुथरी और कागज बढ़िया है!

*   *   *

झाँसी की रानी (वीरांगना लक्ष्मीबाई)—लेखक और प्रकाशक, श्री हरिमोहन श्री वास्तव, एम० ए०, एल० टी; साहित्यरत्न; दतिया (मध्य भारत); मूल्य ॥) आठ आने

गत वर्ष १५ अगस्त, ४७ को हमारे देश को जो स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है, उसके लिए पहले-पहल सन् १८५७ के भारतीय विद्रोह के सिलसिले में आजादी के जिन दीवानों ने अपना बलिदान दिया, उनमें झांसी की रानी वीरांगना लक्ष्मीबाई का नाम सदा अमर रहेगा।

इस पुस्तिका में वीरांगना की कहानी और जीवनी, कल्पना और इतिहास की सुन्दर सजीव झांकी अंकित करने में लेखक को पूर्ण सफलता मिली है। भारतीय नारी के लिए जीवन, जागृति और बलिदान का स्फूर्तिप्रद सन्देश देनेवाली इस वीरगाथा का अधिकाधिक प्रचार वांछनीय है। पुस्तक की छपाई-सफाई साफ-सुथरी और आकर्षक है।

—देवीदयाल चतुर्वेदी

*   *   *

सुधानिधि औषधालय, फतेहपुर

फतेहपुर नगर के दस मील उत्तर लालीपुर नाम के एक छोटे से गांव में पंडित छेदीलाल जी त्रिपाठी वैद्य ने कई वर्ष पूर्व 'सुधानिधि औषधालय' कायम किया था, उसके द्वारा जनता की जो सेवा हो रही है, वह अत्यन्त सराहनीय है। आज इस औषधालय द्वारा इस गांव के ही नहीं वरन् अन्य गांवों के रोगीजन भी अत्यधिक स्वास्थ्य-लाभ कर रहे हैं। एक बार मैं स्वयं एक भीषण रोग का शिकार हो गया था किन्तु औषधालय की कृपा से मैं एक ही सप्ताह में पूर्णरूपेण स्वस्थ हो गया था, मेरे विचार से ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसे औषधालयों की अत्यधिक आवश्यकता है, हमारी कांग्रेस सरकार की भी ऐसी विचार-धारा है, इसलिए मेरे विचार से जिन गांवों में सुधानिधि जैसे जनता के सच्चे औषधालय पहले से ही स्थापित हैं उन्हें सरकार को सर्वप्रथम अपनी सहायता प्रदान करनी चाहिए, रोगियों की प्रतिदिन की संख्या चालीस होगी, ऐसा अनुमान है। लखनऊ, कानपुर तथा रायबरेली और प्रयाग तक सुधानिधि औषधालय की औषधियां जाती हैं, और वे अभी तक लाभप्रद ही सिद्ध हुई हैं, आशा है सरकार ऐसे औषधालयों को प्रोत्साहित करके जनता का कल्याण करेगी।

—एक प्रत्यक्षदर्शी

(पेज ४ का शेष)

है, जो भी इसमें दिखाया गया वह सब कुछ मेरे ही विचार से हुआ, मैं ऐसा कहने को अभिमान नहीं मानता, यह केवल सत्य है, जिसको २० या ३० चित्र प्रदर्शित करना हो वह किसी एक की अच्छाई के लिए क्या कहे, कि कितनी कोई अच्छी या उच्च है जैसा कि मैं आशा करता हूँ, जब मैंने अल्मोड़ा का अभिनय-गृह बन्द किया तभी इस चित्र का जन्म मेरे विचारों में खिच गया था, वैसे जैसे मैंने इस चित्र की कल्पना की थी वैसा तो नहीं बन सका, किन्तु यह मेरा एक निष्पक्ष प्रयोग तो है ही! बहुत से कार्यकर्ता मुझे कुछ मन के भी न लगे किन्तु अब 'कल्पना' जनता के सामने है, वही इसका उचित मूल्यांकन भी कर सकती है।

प्रश्न—क्या यह आपके आखिरी पसन्द का अनुमान है?

बच्चों के लिए चित्र

उत्तर—मैं दूसरे चित्र का भी निर्माण चाहता हूँ, किन्तु आर्थिक सहायता के बिना यह कठिन-सा जान पड़ता है, मुझे एक पुस्तक बच्चों की कोटि की दीजिए मैं बच्चों के मनोविनोद के लिए चित्र उपस्थित करूँ, वह बच्चों, बूढ़ों और माताओं सबके योग्य होगा, हमें सामाजिक चित्रों की भी आवश्यकता है। ऐसे चित्र भी हों जिनके द्वारा भारतीय जनता के बीच, सीता, राम और पार्वती सुन्दरतम् रूप को रख सकें।

प्रश्न—आप पर्दा या मंच महत्त्वपूर्ण समझते हैं? या ही चाहते हैं?

उत्तर—यह दोनों ही मुझे सिनेमा में कुछ ऐसे लाभ हैं जो के से न मिलेंगे, आप मंच पर मोटर या ऊँचा मकान पलक मारते ही सामने न रख सकेंगे, केवल आपको दर्शकों की मनोवृत्ति को होगा। लेकिन सिनेमा में दर्शक अपने को समझा लेता है।

प्रश्न—आप अपने सिखाये को कुछ समय पश्चात् क्या करें?

उत्तर—वे लोग गांवों में जैसे किसी नदी के किनारे, भोजन लें; और इस प्रकार वे लोगों के अपनी कला का प्रदर्शन भी करें।

उदयशंकर में कलाकार होने के ही ऊँचे दर्जे की नम्रता और भी है, मैं इनके पास इसी विचार से था कि वे राज्य की ओर से क्या को सोच रहे हैं, जो कुछ जान यही कहूँगा कि उनके विचार की ओर से राष्ट्रीयता को दृढ़ हैं।

(रजिस्टर्ड) **चित्रकूट पर्वत की**
श्वांस (दमा) की अनुभवसिद्ध जड़ी
फाल्गुन सुदी पूर्णिमा ता० २५-३-४८
को एक खुराक सेवन करने से
पुराना श्वांस (दमा) हमेशा के लिए
हो जाता है। घर बैठे मँगवाकर सेवन
मँगाने का पता—**श्री महात्मा ना**
आयुर्वेदाश्रम, पोस्ट चित्रकूट,
पी०

सफेद बाल काला
खिजाब से नहीं हमारे आयु
सुगन्धित तैल से बाल का पकना
सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है
तैल दिमागी ताकत और आँखों की
को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न
मूल्य वापस की शर्त लिखा लें।
२॥), आधा बाल पका हो तो ३॥
कुल पका हो तो ५) का तैल मँगा
एल० एन० गुप्ता फार्मेसी
नं० ८ पो० नवादा, गया।

५०० रु. इनाम

धन कवचः—के द्वारा मनुष्य कुबेर जैसा धनवान् होने का शुभ अवसर प्राप्त करता है और लक्ष्मी उसकी चेरी बन जाती है। घर में तमाम दुष्ट ग्रह-शान्ति होकर हर तरह से घर में धन की वर्षा होती है। जिससे पुश्त दर पुश्त के लिए गरीबी से छुटकारा मिल जाता है। कीमत ४॥।) रु०, चाँदी का ६॥।) रु०, सोने का ९॥।≡) रु०

सिद्ध वशीकरण यन्त्रः—जिसे आप चाहते हैं वह पत्थर हृदय क्यों न हो इस यंत्र की अलौकिक शक्ति से आपसे मिलने चली आवेगी इसे धारण करने से व्यापार में लाभ, मुकदमा, कुश्ती, लाटरी में जीत परीक्षा में सफलता, नवग्रह की शान्ति, नौकरी की तरक्की होती है कीमत ताँबा २) रु०, चाँदी का ३) रु०, सोने का ८॥≡) रु० गलत साबित करने पर ५००) रु० इनाम।

आनन्द स्वामी (डी० डब्ल्यू ए०) पी० ओ० इच्छरा (लाहौर)
ANAND SWAMI (D. W. A) P. O. ICHHRA
(LAHORE)

सर्दी और खाँसी में

याद रखिये

सिरोलीन "रोच"

सारे संसारमे व्यवहार होता है

निश्चय पुत्र ही होगा

जिन सज्जनों के घर ज्यादातर पुत्री ही पुत्री पैदा होती हो और वह पुत्र को गोद में खिलाना चाहते हैं तो गर्भ धारण होने पर आप अपनी धर्म-पत्नी को हमारे ४६ वर्ष से प्रसिद्ध

समरे हयात

दवा का सेवन करावें। नौ मास बाद पुत्र का होना ऐसा जरूरी है जैसे सायंकाल के बाद प्रातःकाल का ! हजारों प्रशंसा-पत्र मौजूद हैं.......मूल्य केवल १०) डाक-व्यय ।॥)

पता—हकीम राजनरायन (२२) हौज काजी देहली।

बिना लाइसेन्स रखिए

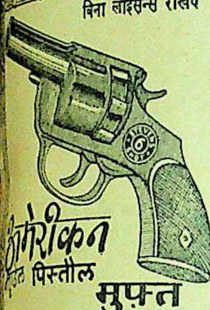

अमेरीकन [illegible] पिस्तौल

मुफ़्त

[illegible] और वजन केवल १५ औंस [illegible] से भी अधिक सुन्दर और उपयोगी [illegible] जिसमें ६ से [illegible]। चुरों, चोर डाकुओं और जँगली [illegible] के लिए यह अनुपम अस्त्र है।

[illegible]

[illegible] (नया माडल) ४४४४ स्पेशल ५॥)

[illegible] ५० शाट वाला १३॥)

[illegible] पुर्जों का तेल १)

[illegible] रिवाल्वरों को एक [illegible] शाट वाला एक रिवाल्वर मुफ़्त [illegible]

[illegible] ट्रेडर्स, पो० बा० नं० २४३, कानपुर यू० पी०

TED TRADERS P.B. NO. 243 KANPUR

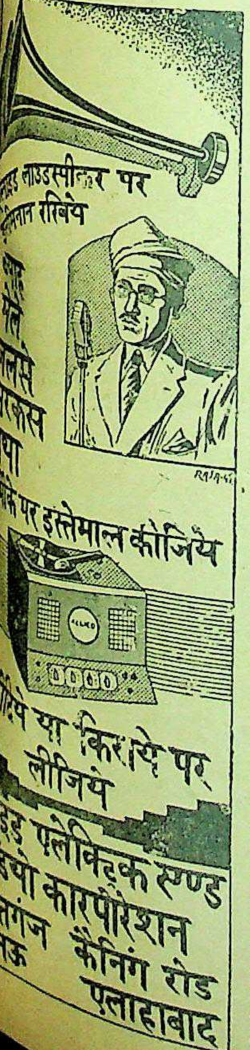

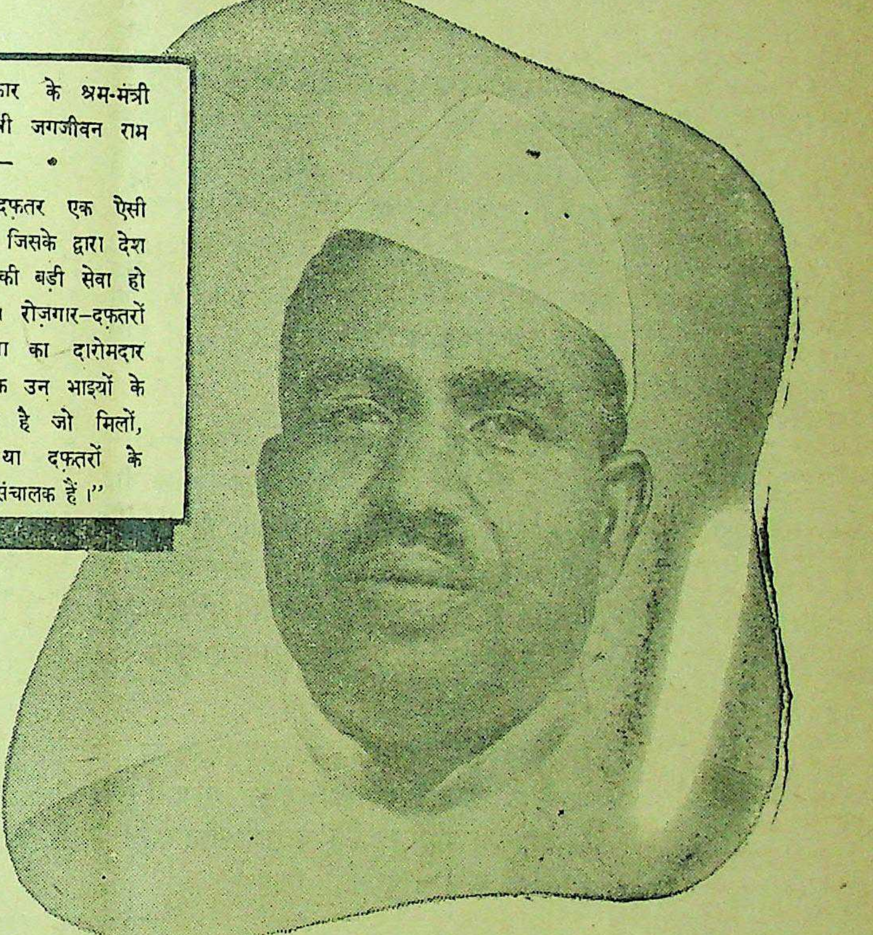

हिन्द सरकार के श्रम-मंत्री माननीय श्री जगजीवन राम लिखते हैं:—

"रोज़गार-दफ़तर एक ऐसी संस्था है जिसके द्वारा देश और समाज की बड़ी सेवा हो सकती है। रोज़गार-दफ़तरों की सफलता का दारोमदार सबसे अधिक उन भाइयों के सहयोग पर है जो मिलों, कारख़ानों या दफ़तरों के मालिक या संचालक हैं।"

बेकारी की जटिल समस्या

एक तो हमारे देश में बेकारी की समस्यायें यों ही बड़ी जटिल थी, अब पश्चिमी पाकिस्तान से उजड़े हुए शरणार्थियों के आ जाने से वह और भी कठिन हो गई है।

हिन्द सरकार ने पहले से ही देश भर में रोज़गार-दफ़तर (ऐमप्लायमेण्ट ऐक्सचेंज) खोल रखे हैं, जिनका काम है नौकरी चाहने वालों को काम दिलाना। यह संस्था शरणार्थियों की भी यथा साध्य सेवा कर रही है।

जब भी आप को अपने कारख़ानों, मिलों या दफ़तरों के लिए कर्मचारियो या कारीगरों की आवश्यकता हो, तो तत्काल अपने इलाके के रोज़गार-दफ़तर को सूचित कीजिए। इस प्रकार आप न केवल अपने लिए बिना किसी कठिनाई के अच्छे आदमी पा सकेंगे, बल्कि देश की औद्योगिक उन्नति में भी हाथ बटायेंगे।

बेरोज़गार शरणार्थियों की सहायता करना सच्ची देश-सेवा है

हिन्द सरकार के श्रम विभाग के अंतर्गत रिसैटिलमेण्ट और ऐमप्लायमेण्ट के प्रधान संचालन-केन्द्र द्वारा प्रकाशित

A C 331

श्री सोहनलाल द्विवेदी
लिखित
काव्य कृतियों
के
नवीन संस्करण

भैरवी — गांधी युग का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। महामना मालवीयजी के शब्दों में 'ऐसी कविता का प्रचार देश के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक होना चाहिए।' मूल्य २॥≡)

वासवदत्ता — बाबू मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं 'इस रचना से मैं बहुत प्रभावित हुआ।' स्वच्छन्दतापूर्वक जिस प्रौढ़ता की ओर द्विवेदीजी अग्रसर हो रहे हैं, जान पड़ता है, स्वयं वह भी उन्हें वरण करने के लिए आतुर हो रही है। 'वासवदत्ता' के प्रकाशन ने हिन्दी-साहित्य में एक नई क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। यह स्वयं पढ़कर निर्णय कीजिए। मूल्य १॥)

कुणाल — महापंडित राहुल सांकृत्यायन की सम्मति में—अशोक, तिष्यरक्षिता और कुणाल खास तौर से—'कुणाल' के चरित्र-चित्रण में कवि ने कमाल किया है। शब्द-सौकुमार्य और भावोत्कर्ष के साथ ही नपे तुले शब्दों के प्रयोग ने काव्य को बहुत ऊँचा उठाया है। विशेष संस्करण मूल्य २॥)

पूजागीत — राष्ट्रीय चेतना को काव्य का सच्चा स्वरूप देने के लिए द्विवेदी जी को प्रचुर सम्मान तथा लोकप्रियता प्राप्त हुई है। ये पूजा-गीत कवि के गौरव के अनुरूप ही हैं। मूल्य २)

विषपान — सुप्रसिद्ध पौराणिक कथा का सरल तथा सबल खंड-काव्य है। भाषा का प्रवाह, प्रसन्न शैली तथा कथा के मार्मिक घटना-क्रम की वर्णना ने इसे बड़ा ही हृदयग्राही बना दिया है। मूल्य १)

झरना
शिशुभारती
बाँसुरी

द्विवेदीजी पहले बालकों के कवि हैं पीछे राष्ट्र के। पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा माननीय सम्पूर्णानन्दजी ने इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा की है। 'अमृत बाज़ार पत्रिका' की सम्मति में—जिस प्रकार की शिक्षा बालकों को देने के लिए हमारे नेता वर्षों से प्रयत्न कर रहे हैं, इन पुस्तकों में उसी प्रकार का साहित्य है। प्रत्येक पुस्तक में कई रङ्गीन तथा अनेक सादे चित्र हैं। प्रत्येक पुस्तक का मूल्य १)

पूरे सेट का मूल्य
१२ रु०

पता—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

शारीरिक उष्णता के वजह से

यदि आपको कायमी बदहजमी और अरुचि जैसी उष्णता की शिकायतें हों, रातको बारम्बार सख्त प्यास आपको जगाती रहती हो, खाना खानेके बाद जलन होती हो और खट्टी डकारें आती हों, पित्ताशय में कायमी मन्द कब्ज़ रहती हो, सारे शरीरके ऊपर और अन्दर जलन रहती हो, आंखें जलती हों, हथेलियों और पाँव के तलुओं में जलन होती हो, मूत्र-मार्ग में जलन होती हो, वजन कम हो गया हो, पंडुरोग हो, सामान्य अशक्ति महसूस होती हो तो आजाही एक बोतल का सेवन शुरु कीजिये, २५ से भी ज्यादा सालों से पर्लकाढा ने इस दवाई को सेवन करनेवाले हजारों लोगों को अच्छा कर दिया है।

पर्लकाढा जवान और बुढे स्त्री, पुरुष और बच्चे – सभीको समान रुपसे फायदा करता है। प्रसूता स्त्रियों को भी फायदा करता है।

शारीरिक उष्णता के लि
मशहूर अनुभूत इला

शीतल शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक
पर्ल काढ़ा

एकबार परीक्षा कर
स्वयं अजमाइये!

8/46
पर्ल कंपनी, आर्योषधी कारखाना, राणीबाग, व

यू० पी० प्रतिनिधि दासर एण्ड कम्पनी, बिरहना (ड,

लिपटन के प्रेमी :

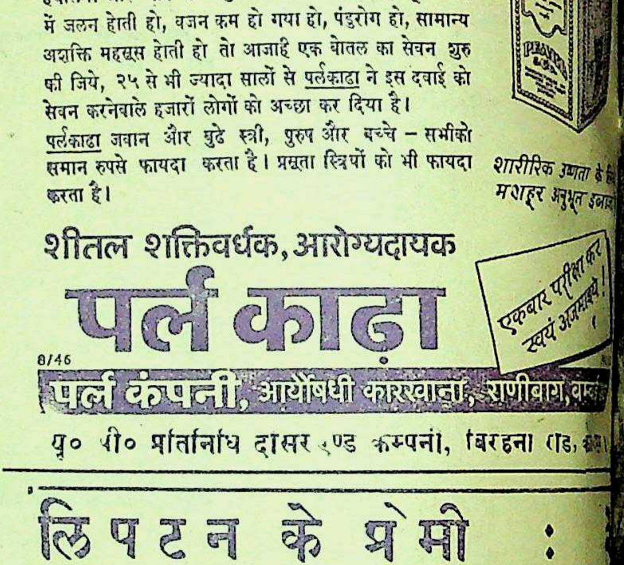

फिल्म प्रोड्यूसर

फिल्म कलाकारों की गरम मिजाज़ी या नाराज़ कैमरामैन की मुझे परवाह नहीं, यदि स्टूडियो में पिलाने के लिये लिपटन की हिमा ब्लेण्ड चाय मिल सके। ऐसा क्रोधी फिल्म कलाकार मुझे मिला जो इस उत्कृष्ट चाय से शांत न हो जाता हो। कि सफल फिल्म बनाने के लिये अच्छी कहानी, अच्छे कला हज़ार फुट सेलोलाएड के साथ एक मन लिपटन की हि ब्लेण्ड चाय भी आवश्यक है। और कमखर्च का ख्याल र हमेशा अपने स्टूडियो में यही चाय व्यवहार करता हूं।

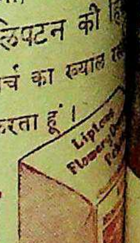

लिपटन की
हिमालयन ब्लेण्ड
सर्वोत्तम दार्जिलिंग चाय

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० ... रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद

सचित्र
साप्ताहिक
वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रति संख्या ≈)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

२१ मार्च, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 21st March, 1948

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

सुप्रसिद्ध कलाकार और नृत्यकार उदयशंकर द्वारा निर्देशित 'कल्पना' फिल्म का एक दृश्य।

दलों का संयुक्त मोर्चा
की आज की राजनीति

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

पूर्वी पंजाब का विभाजन क्यों?
भारतीय रेलवे का नया बजट

गहरी निद्रा का आनन्द

विज्ञान का आश्चर्यजनक आविष्कार स्लीपो (Sleepo) किसी सोते या जागते को सुँघा दीजिये। वह एक घंटे के लिए गहरी नींद में सो जायेगा और हिलाने से भी नहीं जागेगा। मूल्य ३) डाक-खर्च ।।) आना। यदि आप एक घंटे में पूर्व जगाना चाहें तो एवेको (Awako) सुँघाइए। मूल्य केवल ३) रु०। कम मिकदार या नमूना मुफ्त नहीं भेजा जाता। गारंटी की जाती है कि स्लीपो या एवेको दिल को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाता। आज ही आर्डर दें और अपना पता साफ और पूरा लिखें।

इम्पीरियल चैम्बर आफ साइन्स।
(D.D.A.) हलका नं० २१, अमृतसर।

दाद, खुजली
और
हरेक मेलका चमडीका दर्दोंके लीए
गत ५० वर्षों से
जग विख्यात
कपड़े खराब नहीं करती।
नकालों से सावधान
सपट
लोशन

सपट एन्ड को, डिपार्टमेंट U.P,DA.I.
बम्बई २

बिना लाइसेन्स रखिए
अमेरीकन
माडल पिस्तौल
मुफ्त
UNITED TRADERS P.B. NO. 242 KANPUR

[illegible]

यूनाइटेड ट्रेडर्स, पो० ब० नं० २४२, कानपुर यू० पी०

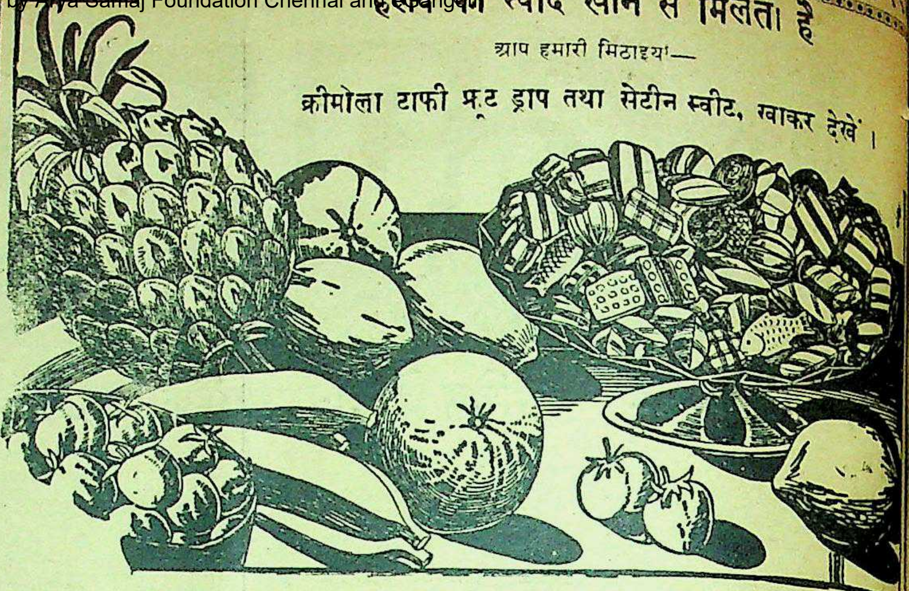
हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

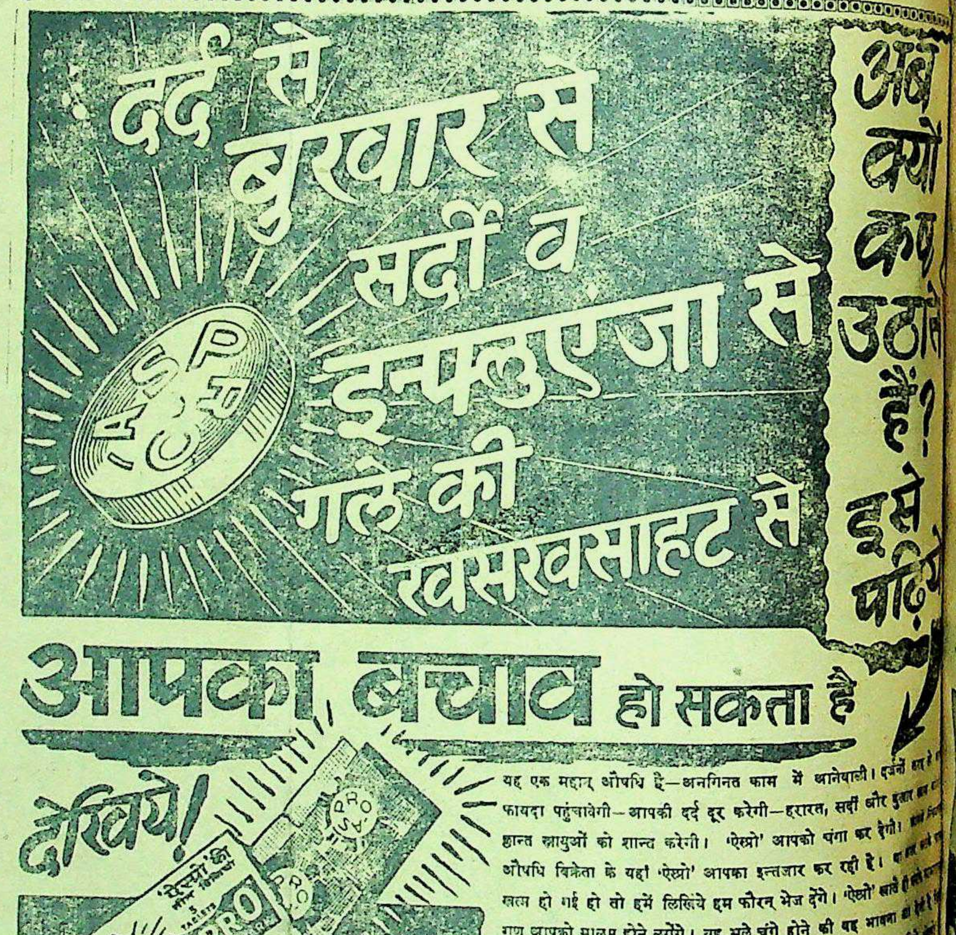
दर्द से
बुखार से
सर्दी व
इन्फ्लुएंजा से
गले की
खसखसाहट से
अब क्यों कष्ट उठाते हैं? इसे पढ़िये
आपका बचाव हो सकता है
ASPRO

यह एक महान् औषधि है—अनगिनत काम में आनेवाली। दर्जनों
फायदा पहुंचावेगी—आपकी दर्द दूर करेगी—हरारत, सर्दी और बुखार
क्लान्त स्नायुओं को शान्त करेगी। 'ऐस्प्रो' आपको चंगा कर देगी।
औषधि विक्रेता के यहां 'ऐस्प्रो' आपका इन्तजार कर रही है।
खत्म हो गई हो तो हमें लिखिये हम फौरन् भेज देंगे। 'ऐस्प्रो' खाते ही
गुण आपको मालूम होने लगेंगे। यह भले चंगे होने की यह भावना
विश्वास बिना अपने अनुभव के नहीं हो सकता। हमारी सलाह
पास रखिये, जरूरत पड़ते ही खाइये और देखिये।

देखिये!
ASPRO
ASPRO
MADE IN ENGLAND
आनेवाली
पुड़िया में
३ टिकिया है
आनेवाली पुड़िया में
६ टिकिया है
२० आनेवाले
बक्स में
३० टिकिया है
30 TABLETS As10 30 TABLETS
ASPRO
यह असली
'ऐस्प्रो' है
नकल मत
ले लीजिये

'ऐस्प्रो'
कितनी जल्दी काम करत
और हृदय को नुकसान नहीं पहुं

वितरक:
जे. एल. मौरिसन, सन एण्ड जोन्स
(इण्डिया) लि:
पोस्ट बक्स १८७ कलकत्ता फोन ७५९
और शाखाएं

निम्नलिखित कष्टों में
'ऐस्प्रो' लीजिये।
डेंगू ज्वर — पीठ की दर्द —
जोड़ की दर्द और गठिया —
स्नायु खिंचाव — अनिद्रा —
स्त्रियों के मासिक दर्द तथा
गले की खसखसाहट।

69

देशदूत

वर्ष १०, संख्या २८] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, २१ मार्च, १९४८

'देशदूत' चित्रावली

बंबई के सेक्रेटेरियट में रानी महाराजसिंह की अध्यक्षता में होनेवाली स्त्रियों की सुरक्षा-सभा का एक दृश्य।

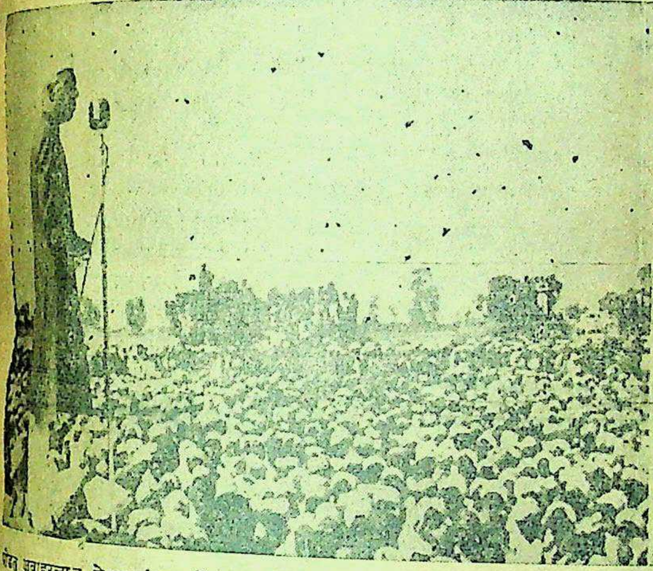

पंडित जवाहरलाल नेहरू पंजाब में अतारी गाँव की जनता को अपनी रक्षा करने का आदेश दे रहे हैं। अतारी गाँव उस सड़क पर है जो पाकिस्तान की ओर जाती है।

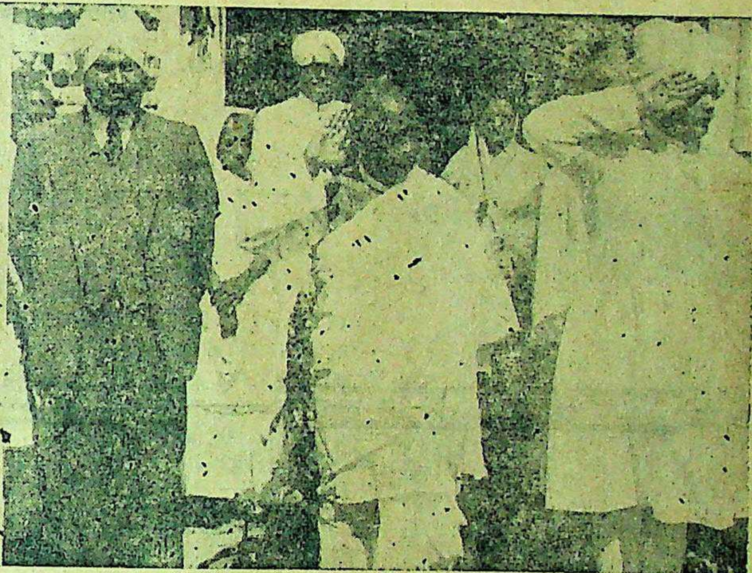

काठियावाड़ के संयुक्त राज्यों की एक सभा का सरदार पटेल ने उद्घाटन किया था। चित्र में सरदार पटेल, सरदार बल्देवसिंह और जाम साहब नवानगर दिखाई दे रहे हैं।

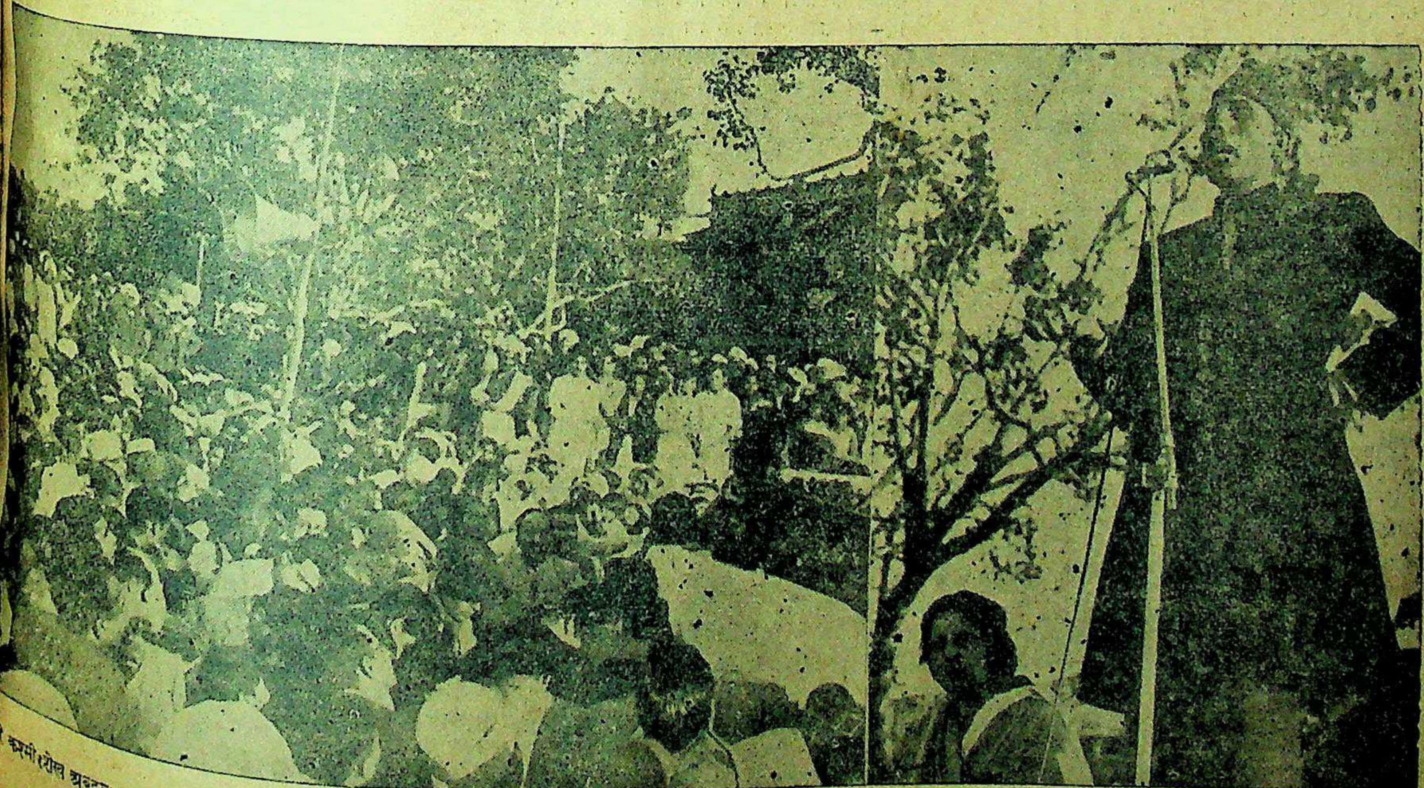

रे कश्मीर शेख अब्दुल्ला दिल्ली प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के तत्वावधान में होनेवली एक सार्वजनिक सभा में सुरक्षा-परिषद् में होनेवाले अपने अनुभवों का वर्णन कर रहे हैं

भारतीय मुसलमान क्यों नहीं चेतते

अधिकार-प्राप्ति की लालसा के साथ ही कर्तव्य-पालन की प्रबल भावना क्यों नहीं ?

लेखक, श्री राजेन्द्रसिंह गौड़, एम० ए०

विभाजन के पूर्व से ही भारत के मुसलमानों ने अधिकार प्राप्ति के लिये जितना आन्दोलन किया उतना राष्ट्र के प्रति कर्तव्य पालन की ओर ध्यान नहीं दिया। इस लेख में विद्वान् लेखक ने मुसलमानों की अधिकार प्राप्ति की इच्छा की ऐतिहासिक परम्परा की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए यह बतलाया है कि विभाजन के बाद भारतीय मुसलमानों को राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य पालन की ओर कटिबद्ध हो जाना चाहिए। लेख सुन्दर और विचारपूर्ण है।

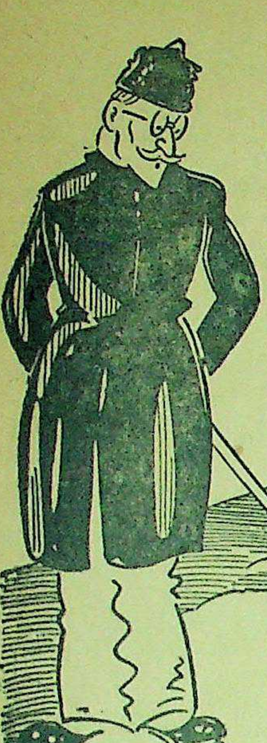

राष्ट्रीय मुसलमानों के महान नेता मौलाना आजाद।

भारत में मुसलमानों का जिस दिन आगमन हुआ उस दिन से आज तक का इतिहास हमें यह बताता है कि भारतीय मुसलमानों में अधिकार-प्राप्ति की भावना जितनी प्रबल रही उतनी कर्तव्य-पालन की भावना नहीं और यदि किसी अंश तक रही भी तो केवल मुसलमानों के प्रति। हिन्दुओं के प्रति उनकी कर्तव्य-भावना का विकास नहीं हुआ। कहने का तात्पर्य यह कि मुसलमानों का राजनीतिक विकास केवल अधिकार-मूलक रहा। अकबर के अतिरिक्त गुलाम-वंश से मुगल-वंश तक के सभी बादशाहों ने अपने तथा अपनी मुस्लिम प्रजा के अधिकारों की जिस तत्परता एवं संलग्नता के साथ रक्षा की उतनी तत्परता एवं संलग्नता उन्होंने हिन्दुओं के अधिकारों की रक्षा करने में नहीं दिखाई। अकबर ने अपने अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्त्तव्यों की ओर भी ध्यान दिया। भारत में वह पहला और अन्तिम मुसलमान बादशाह था जिसने यह अनुभव किया कि यदि मुसलमानों को हिन्दुओं के साथ मिल-जुलकर रहना है और इस देश पर शासन करना है तो उन्हें अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्त्तव्यों की ओर भी ध्यान देना चाहिए। उसने अधिकार-प्रिय मुसलमानों की भावनाओं की उपेक्षा करके अपने अनुभव को कार्यरूप में परिणत करने के लिए पूरी चेष्टा भी की, पर वह अपनी चेष्टा में पूर्णतया सफल न हो सका। उसकी मृत्यु के पश्चात् जहांगीर से बहादुरशाह तक का इतिहास मुसलमानों की अधिकार-प्रियता का ही इतिहास है। इस प्रकार हम देखते हैं भारतीय मुसलमान अपने शासन-काल में सामूहिक रूप से अपने वर्ग के लिए, अपने सजातीय भाइयों के लिए धार्मिक एवं राजनीतिक अधिकारों की लड़ाई जितनी तत्परता से लड़ते रहे उतनी तत्परता उन्होंने समस्त भारतीय जनता के प्रति कर्तव्य-पालन में नहीं दिखाई। मेरा तो यह विश्वास है कि इस एकांगी दृष्टिकोण के कारण ही उनका पतन हुआ।

मुगल-साम्राज्य के पतन के पश्चात् भारत के राजनीतिक रंगमंच पर अँगरेजों की सत्ता का प्रादुर्भाव हुआ। नीति-कुशल अँगरेज मुसलमानों की मनोवृत्ति से भली भांति परिचित थे। इसलिए जहां उन्होंने एक ओर मुगल-वंश के अन्तिम बादशाह बहादुरशाह को अधिकार-च्युत करके अपनी प्रभुता स्थापित और घोषित की वहां दूसरी ओर उन्होंने अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक की घातक समस्या खड़ी करके मुसलमानों को अधिकार-मूलक प्रवृत्ति को खुल्लमखुल्ला प्रोत्साहन दिया। अधिकार-प्रेमी मुसलमान उस समय भी बाज न आये। उन्होंने उन्हीं अँगरेजों के सामने अपने अधिकारों की याचना की जिन्होंने निर्दयतापूर्वक उनके शासन का भारत में अन्त किया था। इसका परिणाम वही हुआ जो होना था। हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच अधिकारों की छीना-झपटी होने लगी। शासन का कोई विभाग इस छीना-झपटी के प्रभाव से न बच सका। समय के प्रभाव से भारत में जिस राष्ट्रीय चेतना का उदय हुआ उसने हिन्दू और मुसलमान दोनों को अधिकारों के संघर्ष से पृथक् रहकर कर्त्तव्यों की ओर झुकने का—भारत को विदेशी सत्ता के चंगुल से मुक्त करने का—गौरवपूर्ण सन्देश दिया, पर इसका प्रभाव एकांगी ही रहा। भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ खिलाफत-आन्दोलन का जो गठबन्धन हुआ वह थोड़े दिनों तक स्थिर रहकर अधिकारों के प्रभंजन के प्रभाव से टूट गया और तब से अब फिर कभी वह स्वर्ण अवसर प्राप्त नहीं हुआ। मुसलमानों की अधिकार-प्रियता ने ही एक अराष्ट्रीय संस्था मुस्लिम को जन्म दिया। इसके तत्त्वावधान में मुसलमानों ने जो आन्दोलन चलाये उनमें अधिकारों की याचना के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। उसके आज के चोटी के नेता कांग्रेस के सदस्य रह चुके हैं। कायदे आजम जिन्ना, लियाकत अली, सुहरावर्दी आदि का कांग्रेस से पलायन यह सिद्ध करता है कि उनमें सम्पूर्ण भारत के प्रतिसामूहिक दृष्टि से हिन्दुओं और मुसलमानों के प्रति कर्त्तव्य-पालन की उत्प्रेरणा नहीं थी। वे चाहते थे अधिकार अपने लिए, अपने वर्गविशेष के लिए और मुसलमानों के लिए। इसलिए उन पर अँगरेजों का जादू चल गया। वे उनके हाथों की कठपुतलियां बन गये। कांग्रेस से बाहर निकलकर उन्होंने अधिकारों का इतना भीषण संग्राम छेड़ दिया कि मसजिदों के सामने बाजा बजाने से उनके धार्मिक अधिकारों पर चोट पहुँचने लगी। इसका प्रभाव कांग्रेस पर भी पड़ा। उसे विवश होकर मुसलमानों के अधिकारों की मांग पर विचार करना पड़ा और उसके प्रति सहानुभूति दिखानी पड़ी। इतना करने पर भी मुसलमानों को सन्तोष नहीं हुआ। एक के बाद एक समस्या भीषण रूप धारण करके सामने आती रही और धीरे-धीरे मुसलमान कांग्रेस से विमुख होते गये। हम भारत को स्वतन्त्र करने के लिए सीना खोलकर गोलियां खाते रहे, और भारत के अधिकांश मुसलमान लीग के रंगमंच पर खड़े होकर हमसे तथा नीति-कुशल सरकार से अधिकारों की याचना करती रही। यह अधिकार-याचना यहां तक बढ़ी कि अन्त: मुसलमान और हिन्दू एक दूसरे के प्राण-पण से विरोधी हो गये। भारत के कोने-कोने में धर्म के नाम पर राजनीतिक अधिकारों के लिए साम्प्रदायिक दंगे होने लगे। महात्मा गांधी ने इन दंगों को दबाने की बड़ी चेष्टा की, पर अधिकार-प्रिय मुसलमानों पर इसका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा। हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच जो खाई खुद गई वह धीरे-धीरे गहरी होती ही चली गई। मुस्लिम लीग ने इसकी कोई चिन्ता नहीं की। वह अपने अधिकारों की मांग में बराबर आगे बढ़ती रही। अन्त में उसने राष्ट्र-द्वै के आधार पर भारत के बँटवारे की मांग पेश की। कांग्रेस को उसकी यह मांग भी माननी पड़ी। १५ अगस्त सन् १९४७ को भारत दो राष्ट्रों में विभक्त हो गया। मुसलमानों ने अपना पाकिस्तान बना लिया। यह हुआ मुसलमानों की अधिकार-प्रियता का परिणाम! इसके आगे की कहानी तो इतनी करुणाजनक है कि लेखनी उसे लिख नहीं सकती।

कहने का तात्पर्य यह कि मुसलमानों की अधिकारप्रियता इस समय अन्तिम सीमा को पहुँच गई है, पर फिर भी संघर्ष जारी है। पाकिस्तान में मुसलमान हिन्दुओं पर जिस प्रकार अमानुषिक अत्याचार कर रहे हैं उसकी कहानी समाचारपत्रों द्वारा प्रतिदिन हमारी आंखों के सामने आती है और हमारी मनोवृत्तियों को प्रभावित करती है। फलस्वरूप हम कभी-कभी पागल हो उठते हैं और प्रतिकार की भावना से प्रेरित होकर अमानुषिक कार्य कर बैठते हैं। हमारे इन अमानुषिक कार्यों के लिए महात्मा गांधी को अब तक दो बार उपवास करना पड़ा है। शान्ति-स्थापना के इन पुनीत प्रयत्नों का प्रभाव पाकिस्तानी भाइयों पर जैसा पड़ा है वह भी स्पष्ट ही है। काश्मीर की समस्या भी धीरे-धीरे भयंकर रूप धारण करती जा रही है और भारत में गुप्त रूप से हमारी सरकार के विरुद्ध मुसलमानों को उभारने का षडयन्त्र चल रहा है। ऐसी दशा में एक प्रश्न उठता है और वह यह कि यदि काश्मीर की समस्या के कारण भारत और पाकिस्तान के बीच गृह-युद्ध की सम्भावना हुई तो भारतीय मुसलमानों का क्या रुख होगा? हमें इस प्रश्न का उत्तर भारत के उन लीगी मुसलमानों से मिलना चाहिए जिन्होंने अभी कल तक नारे लगा-लगाकर पाकिस्तान की मांग पेश की थी। इसके साथ ही हम अपने देश के चोटी के नेताओं से भी इस प्रश्न का स्पष्ट उत्तर चाहते हैं कि नारे के बल पर पाकिस्तान बनानेवाले मुसलमान संकट के अवसर पर भारत के प्रति अपने नागरिक कर्त्तव्यों का पालन करेंगे—इसका उनके पास क्या प्रमाण है। भारत की जनता इस प्रश्न का उत्तर सुनना चाहती है, क्योंकि इसी प्रश्न के उत्तर पर भारत के भविष्य का नव-निर्माण होगा।

बापू के अनशन पर*

लेखक, श्री प्रोफेसर 'अंचल' एम० ए०

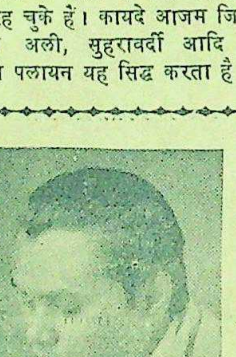

देव ! प्रतिज्ञा देख तुम्हारी त्रिभुवन सिहर उठा है।
यह कैसा विश्वास जिसे लखकर आकाश लजाया।
यह कैसा संकल्प जिसे लखकर नगपति थर्राया।
कैसा स्वप्न तुम्हारा जिसको लखकर जागृति हारी
यह ज्वलन्त उल्लास जिसे लखकर यौवन सकुचाया,
पीड़ा-सागर मन में कैसा भीषण ज्वार उठा है।
मानवता खोकर जड़ मानव निज अभिशाप बना है
फूटे घातक पाप—हृदय हिंसा का ताप बना है
रक्त पी रहा है बनपशु-सा फिर भाई भाई का
घर घर में पशुता का खूनी हिंस वितान तना है
भ्रान्त मनुज का सहृदयता से चिर विश्वास उठा है।
आजादी मरुभूमि हो रही है—जल रहा वतन है
कागज़ के फूलों से सजता उजड़ा हुआ चमन है
सिर न कटे इसलिये देश को तुमने कटते देखा
अन्त नहीं पर प्रतिहिंसा का—कैसा विकृत पतन है
कैसी भीषण आग धरा का कण कण खौल उठा है।
स्नेह पंथ से आज न मानव उतर भूमि पर आता
जीवनदाता घन अम्बर से अंगारे बरसाता
मानवता की तृषित चातकी एक बूंद को रोती
कौन गगन में नव स्वाती का नीरद बन कर छाता
एक जलद—भू का मन नव आशा से डोल उठा है।
यह कैसा आदर्श प्राण की भेंट जिसे है प्यारी
खुली चुनौती बर्बरता को है यह लगन तुम्हारी
हिन्द महासागर के मुख पर रहे लाज की लाली
आजादी का ताश न बन जाये तलवार दुधारी।
देव ! प्रतिज्ञा देख तुम्हारी त्रिभुवन सिहर उठा है।

---

*पूज्य बापू के अंतिम उपवास के अवसर पर लिखित।

वामपक्षी दलों की एकता का मोर्चा

पटना में होनेवाले सम्मेलन का आँखों-देखा वर्णन

लेखक, श्री मन्मथनाथ गुप्त

इस लेख के लेखक श्री मन्मथनाथ गुप्त

> पिछले दिनों पटना में राजनीति क्षेत्र में वामपक्षी दल के नेताओं का एक सम्मेलन इस उद्देश्य से हुआ था कि वामपक्षियों का एक संयुक्त मोर्चा स्थापित किया जाये। उस सम्मेलन में क्या हुआ, इसका एक संस्मरण इस लेख में दिया गया है। लेख सुन्दर और पठनीय है।

अभी-अभी पटना में वामपक्षी दलों के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन हुआ था। इसके पहले दिल्ली में भी एक सम्मेलन हुआ था जिसमें मैं व्यक्तिगत रूप से उपस्थित न हो सका था, पर पटनावाले सम्मेलन में मैं स्वयं उपस्थित था। पटनेवाले सम्मेलन का महत्त्व करीब-करीब ऐतिहासिक इसलिए हो जाता है कि इसमें वामपक्षियों की एकता को एक व्यवहारिक रूप मिल गया। इस एकता के पहले लोग यही समझते थे कि वामपक्षियों की एकता असम्भव बात है, पर इस सम्मेलन ने इस असम्भव को भी सम्भव करके दिखाया।

कई कारणों से यह एकता सम्भव हुई। मैं ऐसा कहने का साहस नहीं करता कि जो एकता स्थापित हुई, वह चिरस्थायी तथा अन्तिम है, पर जो भी एकता हुई है, वह एक बहुत सराहनीय वस्तु है और यदि दीर्घ काल तक स्थायी न भी हो, तो भी बहुत प्रशंसा की वस्तु है।

तो कौन-सी ऐसी बात थी जिसके कारण यह असम्भव भी सम्भव हो गया? बात यह है कि देश की परिस्थिति बराबर बिगड़ती चली जा रही है। हमारे नेतागण अपने किये में इस बुरी तरह फँसते चले जा रहे हैं कि ऐसा भय होता है कि कहीं हम पहले से बुरी हालत में न फँस जायँ। देश के धार्मिक विभाजन के कारण सारी जनता पर एक आपत्ति का पहाड़-सा टूट पड़ा है। मैं अभी दिल्ली तक गया था, वहां पर भुक्तभोगियों से जो बातें मालूम हुईं उनसे ज्ञात होता है कि पूर्वी और पश्चिमी पंजाब तबाह हो गये। हजारों लखपति रात भर के अन्दर पथ के भिखारी हो गये। लाखों के घर-द्वार नष्ट हो गये, हजारों की तादाद में स्त्रियां भगाई गईं और वे अब अपने प्रियजनों से दूर गुलाम जैसा जीवन व्यतीत कर रही हैं। हमारे नेताओं ने देश के धार्मिक विभाजन को स्वीकार करने के समय यह कारण बताया था कि ऐसा करने से साम्प्रदायिक झगड़ों का अन्त हो जायगा, पर हुआ इसके बिलकुल विपरीत।

देश के धार्मिक विभाजन के बाद से झगड़े और बढ़े न कि घटे और परिस्थिति बिगड़ते-बिगड़ते अब काश्मीर के क्षेत्र में इतनी बिगड़ चुकी है कि न मालूम कब दोनों राष्ट्रों में लड़ाई छिड़ जाय? अवश्य इस सम्बन्ध में यह साफ बता दिया जाय कि पाकिस्तान के नेतागण शुरू से ही साम्प्रदायिक थे और बराबर दो जाति सिद्धान्त के द्वारा परिचालित होकर एक के बाद एक अनर्थ की सृष्टि की। पाकिस्तान में भी जनता के हक में भी लीग के शासन का परिणाम अच्छा नहीं रहा, जो थोड़ी बहुत खबरें इस सम्बन्ध में मिल रही हैं उनसे यही बात सिद्ध होती है।

जनता द्वितीय महायुद्ध के परिणामों के कारण ही परेशान थी। लोग बिलकुल दुर्भिक्ष के सामने खड़े थे, तिस पर पंजाब तथा काश्मीर का हत्याकाण्ड हुआ; लाखों लोग इधर से उधर गये, खेत बेकार पड़े रहे, तबाही आ गई। पहले से परिस्थिति और खराब हो गई। जनता कराहने लगी। १५ अगस्त १९४७ को जिन सुनहली आशाओं का उदय हुआ था, वे भंग हो गईं। जहां तक दिखाई पड़ रहा है, भविष्य कुछ अधिक आशाजनक नहीं है।

ऐसी परिस्थिति में वामपक्षी नेताओं के एक हिस्से में स्वाभाविक रूप से यह भावना उठी कि अब इस बात का समय आ गया है कि सब वामपक्षी दल एक हो जायँ। १९४६ में जब से मैं छूटा हूँ, तब से मैंने अथक् रूप से इस सम्बन्ध में लिखा है। सामयिक पत्रों में लेखों के अतिरिक्त मैंने अपनी पुस्तक 'अगस्त क्रान्ति और प्रति क्रान्ति' में बहुत जोरदार शब्दों में वामपक्षी एकता पर जोर दिया। मैंने उस पुस्तक में कम्युनिस्टों की १९४२ वाली नीति की बहुत खुले शब्दों में निन्दा की, फिर भी मैंने उसमें यह लिखा कि 'फिर भी वर्तमान परिस्थिति में भी जब कि कथित कम्युनिस्ट गलतियों के गढ़े में पड़े हुए हैं, मैं यह कहूँगा कि मई दिवस, लेनिन दिवस, रूसी क्रान्ति दिवस पर कम्युनिस्टों का साथ सहन किया जा सकता है?'

स्मरण रहे कि ऐसा मैंने १९४६ में ही लिखा था। मैंने यह भी लिखा था कि एक विकारग्रस्त बदले की भावना के वशवर्ती होकर हमें समाजवाद, मार्क्सवाद तथा सोवियट की जड़ों में कुठाराघात नहीं करना है। हमें मसानी ऐसे लोगों का अनुकरण नहीं करना है जो इस विकारग्रस्त मनोवृत्ति के अधीन मार्क्सवाद से ही अलग हो चुके हैं।

जैसे मैं इस सम्बन्ध में सोचता रहा, वैसे ही बहुत से अन्य वामपक्षी साथी भी सोचते रहे। जयप्रकाश जी किसी युग में वामपक्षी एकता के लिए बहुत कुछ कर चुके थे, पर उस बार उन्हें कम्युनिस्टों से धोखा हुआ, [illegible] लिए वामपक्षी एकता में अविश्वासी हो गये। इस बार जब वामपक्षी एकता की बात चली, तब उनके दल कांग्रेस समाजवादी दल ने उसमें कोई दिलचस्पी नहीं ली। वे न तो दिल्ली में आये न तो पटना में आये। मुख्य दलों में कांग्रेस समाजवादी दल की गिनती की जा सकती है, इसलिए उसका इस प्रयत्न में शामिल न होना बहुत दुःख की बात रही; और सम्मेलन को जितनी सफलता मिल सकती थी, उतनी नहीं मिली। मैं समझता हूँ कि अब भी कांग्रेस समाजवादी दल अपने रवैये पर विचार करेगा और जिस आधार पर वामपक्षी दलों में एकता हुई उसे मानकर वामपक्षी मोर्चे में शामिल होगा।

पहले यह बता दिया जाय कि किन आधारों पर वामपक्षी दलों की एकता हुई। अब कांग्रेस समाजवादी दल के लिए यह एक नैतिक कर्त्तव्य हो जाता है कि वे यह बतावें कि इन आधारों में से किस आधार पर उन्हें मतभेद है नहीं तो लोगों को ऐसा कहने का पूर्ण अधिकार हो जायगा कि कांग्रेस समाजवादी दल इस मोर्चे से इस कारण अलग रहना चाहता है कि वह प्रच्छन्न दक्षिण-पंथी दल है, और जैसा कि लोग कहते हैं, वह केवल left manoeuvre of the bourgeoisie याने पूंजीवादी दल का वामपक्षी दिखावा-मात्र है, इस कथन को सत्य कर देगा।

अब मैं उन आधारों को गिनाता हूँ जिन पर इस सम्मेलन में उपस्थित सोलह वामपक्षी दलों की एकता हुई। वे आधार ये हैं—

(१) पूर्ण स्वतन्त्रता—ब्रिटिश साम्राज्य से सम्बन्ध त्याग और सभी ब्रिटिश फौजों और अफसरों की यहां से बिदाई।

(२) सभी ब्रिटिश और विलायती आर्थिक हितों, जिनमें बैंक, बीमा-कम्पनियों, कारखाने, बगान, खान आदि हैं—की जब्ती।

(३) [illegible] तथा ब्रिटिश साम्राज्य के राष्ट्रों से कोई समझौता न किया जाय।

(४) शासन के यंत्र और सेना को पूर्ण जनवादी बनाया जाय। नौकरशाही को खतम किया जाय।

(५) जनता को हथियार से लैस किया जाय और जनता की एक स्वयंसेवक सेना सगठित की जाय।

(६) एक जनवादी विधान बनाया जाय, जिसका आधार भाषा और संस्कृति की बुनियाद पर बनी इकाइयां. यदि ऐसी इकाइयां हों, उनको आत्मनिर्णय का अधिकार दिया जाय। इन इकाइयों को अलग होने का अधिकार प्राप्त रहेगा। सबकी इच्छा के आधार पर बना एक भारतीय संघ, सभी बालिगों को वोट का अधिकार और अनुपात के अनुसार प्रतिनिधित्व।

(७) सभी दमन-कानून रद्द किये जायँ। सभी राजबन्दी जिनमें किसानों, मजदूरों और जनता के अन्य वर्गों की लड़ाइयों के सिलसिले में सजा पाये या नजरबन्द लोग भी हैं फौरन रिहा कर दिय जायँ। देश में पूर्ण नागरिक स्वाधीनता जिसमें भाषण, मेल-जोल, सभा और छापेखाने की स्वतन्त्रता शामिल है, कायम हो।

(८) देशी रियासतों में रजवाड़ों का खातमा, एकतंत्र के विरुद्ध रियासती जनता की लड़ाई में मदद दी जाय।

(९) अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा की जाय, उनकी संस्कृति, भाषा और रोजी-रोटी के हकों की हिफाजत के लिए कदम उठाये जायँ, साम्प्रदायिक भेद-भाव और दंगे के विरुद्ध जेहाद बोला जाय। भारतीय संघ और पाकिस्तान के बीच दोस्ताना सम्बन्ध किया जाय। सरकारें साम्प्रदायिक दंगे रोकने के लिए जो भी कदम उठावें, उनका समर्थन किया जाय, साथ ही साम्प्रदायिक प्रतिक्रियावादियों को तरह देने की नीति का डटकर पर्दाफाश किया जाय।

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

उलाहना

लेखक, श्री गंगाप्रसाद पाण्डेय, एम० ए०

दिया अंधेरी रातें मुझको
शुभ्र चांदनी और किसी को,
यही तुम्हारा दान;
प्राण मैं समझ गया हूँ!
तुम रूठो मैं खूब मनाऊँ
मैं रूठूं तो मूर्ख कहाऊँ,
यही तुम्हारा मान;
प्राण मैं सुलझ गया हूँ!
तुम चाहो जो करो भला है
मेरी सभी कला विकला है,
यही तुम्हारा ध्यान;
प्राण मैं उलझ गया हूँ!
सभी तरह अधिकार तुम्हारा
मेरे लिए न शेष सहारा,
यही स्नेह संधान,
प्राण मैं बिलझ गया हूँ!

सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता आचार्य नरेन्द्रदेव

सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता श्री जयप्रकाश-नारायण।

पूर्वी पंजाब का विभाजन—२

विभाजन के बाद भाषा और संस्कृति का प्रश्न

लेखक, श्री दीनदयालु शास्त्री

पंजाब का विभाजन पश्चिमी तथा पूर्वी पंजाब के नाम से हुआ है। पूर्वी पंजाब भारतीय यूनियन के अन्तर्गत है और पश्चिमी पाकिस्तान के। विभाजन के बाद इस समय पूर्वी पंजाब की भाषा तथा संस्कृति के निर्णय का प्रश्न उपस्थित है; क्योंकि परिस्थिति अब बदल गई है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने इसी प्रश्न के हल की ओर दृष्टिपात किया है, जो पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है। इस लेख का प्रथम अंश गतांक में प्रकाशित हो चुका है।

संयुक्त पंजाब में २९ जिले थे, विभाजन के बाद इनमें से १६ जिले पश्चिमी पंजाब का अंग बनकर पाकिस्तान में चले गये और शेष १३ जिले पूर्वी पंजाब के नाम से हमारे देश का अंग बने रहे। इन १३ में से सात में हिन्दुओं का बहुमत है और मुसलमान अल्पमत में हैं। इसी प्रकार पश्चिमी पंजाब के १६ जिले में से दस में मुसलमानो का बहुमत है और हिन्दू अल्पमत में थे। भाग्यवश पूर्वी व पश्चिमी पंजाब के इन १७ जिलों में सिखों की संख्या नगण्य थी; अतः सिख-नेताओं को इनकी चिन्ता कभी नहीं रही। सिख चिन्तातुर थे मध्य पंजाब के बारह जिलों के लिए, जिनमें वे अधिकतर संख्या में और जिनकी भाषा पंजाबी थी, किन्तु इन में से किसी भी जिले में सिखों को बहुमत प्राप्त न था। यह होते हुए भी वे इन जिलों को संयुक्त रखना चाहते थे, मुस्लिम लीग की भी यही इच्छा थी। भेद केवल यह था कि सिख इन बारह जिलों को हिन्दुस्तान में रखना चाहते थे और मुसलमान पाकिस्तान में। हुई दोनों की नहीं, निर्णय हुआ कि इनमें से मुस्लिम बहुल जिले पाकिस्तान में चले जाएं और गैर मुस्लिम हिन्दुस्तान में रह जायें। इस निर्णय की कटु प्रतिक्रिया का परिणाम सारे पंजाब को भुगतना पड़ा है किन्तु उसका मुख्य आधार मध्य पंजाब के ये बारह जिले ही रहे हैं। सम्पन्नता, शिक्षा व उद्योग-धन्धों की दृष्टि से मध्य पंजाब के ये बारह जिले अग्रणी थे। विभाजन के बाद रक्त धारा बहाने में भी ये अग्रणी रहे। मुसलमानों ने समझा कि पाकिस्तान में सिक्ख न रहना चाहिए और लगे हाथ उससे हमदर्दी रखनेवाला हिन्दू भी। इस समझ के अनुसार मध्य पंजाब के ६ जिलों में रक्त-प्रवाह प्रारंभ हुआ, पंजाब ही नहीं भारत ही नहीं दुनिया में सर्वाधिक अन्न व व्यापार के केन्द्र के जिले कुछ ही दिनों में तबाह हो गए और हिन्दू व सिखों की हत्या से पूर्ण थी। सिक्खों ने इसका बदला लिया पड़ोस के ६ जिलों में और मुसलमान की जिन्दगी वहां खतरे से खाली न रही। परिणाम यह हुआ कि पाकिस्तान व हिन्दुस्तान दोनों को ही दुनिया के सामने नत मस्तक होना पड़ा और बरबादी से बचने के लिए यह निर्णय करना पड़ा कि दोनों पंजाबों की आबादी में विनिमय किया जाये। यह सिलसिला चार महीने तक जारी रहा, अब पश्चिमी पंजाब में केवल पचास हजार हिन्दू व सिक्ख अवशिष्ट हैं और ४० लाख से अधिक हिन्दुस्तान में आ गए हैं। इसी प्रकार पूर्वी पंजाब में अब केवल डेढ़ लाख मुसलमान अवशिष्ट हैं और ४५ लाख मुसलमान जिन्ना की शरण में चले गये हैं। इन ८०,७८५ लाख शरणार्थियों की दशा देखकर रोंगटे खड़े होते हैं। ६ साल पूर्व ये लोग अपने अपने घरों में थे, खेती, वणिल्य व उद्योग धन्धों द्वारा अपना व अपने परिवार का पेट पालते थे। अब ये सब बेघरबार हैं, हजारों के घर-बार नष्ट हो गये हैं और जीविका के लिए उन्हें सरकार या दान की शरण जाना पड़ता है।

विभाजन का परिणाम

पंजाब का यह विभाजन हमारी दृष्टि में गलत हुआ है। विभाजन ने दोनों पंजाबों में शासन-व्यवस्था खतम कर दी है। यह ठीक है कि धीमे धीमे पंजाब में सुधार होगा, नगर व गांव बसेंगे और ठीक ढंग से हुकूमत प्रारम्भ होगी; किन्तु पंजाबी भाषा या प्रदेश दो भागों में विभक्त हो गया है इसका इलाज कोई न कर सकेगा। विभक्त पंजाब से हिन्दू व मुसलमान की समस्या हल हो गई यह सत्य है, किन्तु सिख की समस्या हल नहीं हुई यह प्रत्यक्ष है। पहले वे सिख मध्य पंजाब के बारह जिलों में बिखरे हुए थे, अब वे अधिकतर पूर्वी पंजाब के पश्चिमी ६ जिलों में एकत्र हो गये हैं। मुस्लिम लीग की बात मानी जाती तो मध्य-पंजाब के बारह जिले पश्चिमी पंजाब में शामिल होकर पाकिस्तान का अंग बनते। उस हालत में सिख हमारे देश की नहीं पाकिस्तान की समस्या होते, इसके साथ ही वे उन बारह जिलों में बिखरे रहते। जिन्ना उन्हें विशिष्ट अधिकार देना चाहते थे, किन्तु सिखों से उनका समझौता न हो सका था। अब सिख पाकिस्तान की नहीं हमारे देश की समस्या हैं, वे हमारे देश की पश्चिमी सीमा पर एकत्र हैं और इस दृष्टि से उनका वहां रहना चिन्ता का कारण भी है। यदि वे यथार्थ में हमारे हैं और हमारे साथ रहना चाहते हैं तो उन की वीरता हमारे देश की सीमा के संरक्षण में सहायक होगी, किन्तु यदि वे हमारे नहीं हैं तो वे हमारे लिए कभी भी घातक हो सकते हैं और हमारी सीमा को खतरे में डाल सकते हैं। इस विशिष्ट स्थिति को सिख स्वयं खूब समझते हैं और उनके अनेक नेता इससे लाभ उठाना चाहते हैं। यह ठीक है कि पृथक् निर्वाचन के दिनों में सिखों की पृथकता अधिक भयंकर थी, अब संयुक्त निर्वाचन का जमाना है और सिख को हिन्दू के वोट का सहारा लेना है, अतः वह अधिक दूषित वृत्ति का नहीं हो सकता, किन्तु किसी समुदाय की प्रवृत्तियों को निर्वाचन के तरीके कम या बढ़ा ले सकते हैं किन्तु बिलकुल हटा नहीं सकते। इस सामान्य नियम के अनुसार हमें सिक्खों का दृष्टिकोण सदा समझना चाहिए। हम स्वयं पंजाबी हैं और पंजाब के विभिन्न समुदायों को खूब समझते हैं इसलिए ही हमारा विचार यह है कि हमारी पश्चिमी सीमा अब भी व्यवस्थित नहीं है और उसका अब नहीं तो कालान्तर में हमें इलाज करना होगा। विभाजन के पहले सिखों का अकाली दल अपने लिए मध्य पंजाब में पृथक् राष्ट्र का स्वप्न देखता था। विभाजन के बाद कुछ जिलों में एकत्र हो जाने के बाद यह दल उस स्वप्न को न सोचें हमें ऐसा न मानना चाहिए। विभाजन से पूर्व जालन्धर के आस पास के ६-७ जिले सिखों का गढ़ थे, किन्तु वहां मुसलमान आबादी पर्याप्त थी। अब उन जिलों से मुसलमान चले गये हैं और उनका स्थान लिया है पश्चिमी पंजाब से आये हुए हिन्दू व सिखों ने। इस बढ़ी आबादी के कारण जालन्धर के आस-पास के जिलों में सिख आबादी पहले से कहीं अधिक बढ़ी है; अतः सिख राष्ट्र का स्वप्न अब अकाली न देखें, ऐसा माननेवाला व्यक्ति एवं स्वयं तो भ्रम में रहता ही है जनता को भी अन्धकार में रखता हैं। इस प्रकार हमें यह मानना होगा कि विभाजन के बाद भी पंजाब में हमारी स्थिति सुधरी नहीं है बिगड़ी ही है। भेद केवल यह है कि पहले वहां हमें मुसलमान की चिन्ता थी और अब सिख की है। मुसलमान हमारा प्रत्यक्ष विरोधी था और सिख चोली दामन का साथी होने के कारण खुलकर नहीं खेल सकता है। उसे यह भी भय रहता है कि उसका हिन्दू विरोध उसके सम्प्रदाय में ही भेदभाव न पैदा कर दे। यदि सिख को यह निश्चय हो जाय कि उसके उस हिन्दू विरोध के कारण उसके सम्प्रदाय में फूट न पड़ेगी तो वह मुसलमान की भांति खुलकर खेलने में भी कसर न रक्खेगा। सिखों व हिन्दुओं की यह एकत्व भावना बढ़े हमें इसका प्रबन्ध करना होगा और यदि हमने यह कर लिया तो हम निःसन्देह अपनी पश्चिमी सीमा को भी सुरक्षित कर सकेंगे।

हिन्दी व पंजाबी

विभाजन के बाद पूर्वी पंजाब नाम का जो प्रान्त बना है हमारी राय में वह राजनैतिक दृष्टि से अशुद्ध है। इस नये प्रान्त में पंजाबी व हिन्दी को एकत्र कर दिया गया है। सवा करोड़ की आबादी में ७५ लाख की भाषा पंजाबी है और ५० लाख की हिन्दी, स्पष्ट है कि इस अनमेल जोड़ में हिन्दी की कोई न सुनेगा। तिस पर पंजाबी के उपासक हैं सिख और हिन्दी के हिन्दू-सम्प्रदाय के आधार पर यह भाषा-भेद हमारी राय में न केवल अस्वाभाविक है अपितु प्रान्त के लिए हानिकर भी है। अभी प्रान्त की नवीनता के कारण इन दो भाषाओं का पारस्परिक संघर्ष प्रारम्भ नहीं हुआ है किन्तु समय व स्वभाव के कारण पूर्वी पंजाब में यह संघर्ष अवश्यंभावी है ऐसा हम मानते हैं। वैसे भी इस प्रान्त में अम्बाला कमिश्नरी के ६ जिले सांस्कृतिक दृष्टि से पंजाबी जिलों से मेल नहीं खाते। आज भी पश्चिमी पंजाब से आये हुए कुछ लाख शरणार्थी अम्बाला कमिश्नरी की हिन्दी संस्कृति में विघातक से हैं। इनके कारण इन जिलों की हिन्दी विकृत हो जायेगी यह मानी हुई बात है; अतः हमारी राय में वर्तमान पूर्वी पंजाब का पुनः विभाजन होना चाहिए। उसके हिन्दी भाषा-भाषी जिले या तो दिल्ली, मेरठ व आगरा द्वारा संयुक्त नवीन प्रान्त के अंग बनने चाहिए और या पड़ोसी युक्तप्रान्त में शामिल किये जाने चाहिए। रह जाते हैं पंजाबी भाषा-भाषी जिले इनकी आबादी ७५ लाख है, वर्तमान आसाम की

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

पश्चिमी बंगाल से ऊन के सामानों का बंडल पंजाब के शरणार्थियों के लिये भेजा जा रहा है।

बंबई की एक सभा में, माननीय भाबा, डा० मुकर्जी, सरदार पटेल राशनिंग हटाने के संबंध में विचार-विनिमय कर रहे हैं।

भारतीय रेलवे का नया बजट

विभाजित भारत का प्रथम रेलवे बजट के आय-व्यय का लेखा-जोखा कैसा?

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

विभाजित भारत के नये वर्ष का प्रथम बजट स्वीकृत हो गया है। बजट कैसा है, रेलवे-कर्मचारियों, जनता तथा सार्वजनिक दृष्टि से यह कितना उपयोगी तथा जनप्रिय है। विद्वान् लेखक ने इस संबंध में पूर्ण विवरण देते हुए बजट की आलोचना की है। लेख अत्यन्त सुंदर विचारणीय तथा पठनीय है।

घाट के बीच गर्मियों के दिनों में रेल से यात्रा करते हुए एक सुरंग समाप्त होने पर दूसरी सुरंग आरम्भ हो जाती है और उसके समाप्त होते होते तीसरी सुरंग आरम्भ हो जाती है, पर उसके मुख पर गाड़ी के आने पर यात्रियों को सूर्य-प्रकाश दर्शन और ठण्डी हवा का झोंका स्पर्श होने के समान विभाजित भारत के रेलवे के प्रबन्ध की अवस्था है। रेलवे-मंत्री डा० जान मथाई द्वारा १९४८-४९ का उपस्थित किया गया रेलवे-बजट को देखने पर सहसा यह प्रभाव पड़े बिना न रहेगा। लड़ाई समाप्त हो गई, युद्धोत्तर काल बीत रहा है, इसी समय भारत का विभाजन हुआ और इसके साथ रेल का भी विभाजन हुआ, और इसके साथ इतनी बड़ी मात्रा और इतने बड़े परिमाण में जन-परिवर्तन हुआ। जैसा इससे पहले कभी विश्व के इतिहास में नहीं हुआ; इन सब विकट स्थितियों को पारकर भारतीय रेलवे उन्नति और उत्कर्ष की आशा से रेलवे ने अपना नया साल प्रारम्भ किया है। डा० जानमथाई की यह आशा पूर्ण हो, यह प्रत्येक भारतीय की हार्दिक इच्छा है।

रात बीत गई

डा० जानमथाई का १९४८-४९ का [illegible] आशा का बजट है। रेलवे-[illegible] ने १.८५ करोड़ रुपया के बचत की आशा की है। नवम्बर १९४८ में वे जितनी आशा करते थे, उससे यह ४ करोड़ रु० अधिक है। देश में साम्प्रदायिक दंगों के होने और देश-विभाजन के बाद आई [illegible] के कारण रेलवे पर आई [illegible] इसकी आमदनी का बराबर [illegible] रुक गया है और रेलवे ने [illegible] उन्नति-पथ पर पैर रखा है। [illegible] यह अर्थ नहीं है कि रेलवे की अवस्था सुधर गई है, इसमें उन्नति हुई है। [illegible] इतना ही है अब गिरती अवस्था रुक गई है, अंधेरी रात बीत गई है और [illegible] की लाली दिखाई देने लगी है।

१५ अगस्त १९४७ से ३१ मार्च १९४८ की आमदनी का संशोधित अनुमान [illegible] करोड़ रु० किया गया है, जो बजट-अनुमान की अपेक्षा ८.१५ करोड़ रु० कम है। मालगाड़ियों की आमदनी में [illegible] कोटि रु० की कमी हुई। इसका कारण यह है कि माल के डब्बों ने चक्कर कम लगाये। मुसाफिरी की गाड़ियों से अनुमान से ११ प्रतिशत कम आमदनी होने का अनुमान है और वह ६.८४ करोड़ रु० कम है। पर अन्य आमदनी, सेना के यातायात और पार्सलों की रफ्तानी के बढ़ने के कारण बढ़ी और वह २.५७ करोड़ रु० होने की आशा है। आमदनी के साथ खर्च में भी ५.५७ करोड़ रु० की कमी हुई। बजट में ९३.५५ कोटि रु० खर्च का अनुमान किया गया था। पर खर्च में कमी होना इस बात का प्रमाण नहीं है कि यह सुप्रबन्ध और मितव्ययिता का परिणाम है; क्योंकि आवश्यक माल न मिलने के कारण मरम्मती काम के १.५० करोड़ रु० बच गये। दूसरी बात यह बढ़ा किराया और भाड़ा १ जनवरी से ही अमल में आया है। फलतः कुल घाटा २.६९ कोटि रु० की जगह ५.२० करोड़ रु० होगा। इस घाटे की पूर्त्ति २.५१ करोड़ रु० रेलवे रिजर्वफण्ड (रेलवे महानिधि) से लेकर पूरा किया जावेगा। बजट और संशोधित अनुमान के अन्तर को देखकर स्वभावतः प्रश्न होता है यह भारी भूल कैसे हुई? इसके जवाब में डा० जानमथाई का कहना है—(१) अविभक्त भारत के अनुभव के आधार पर विभक्त भारत का बजट बनाना पड़ा, (२) सारे साल के अनुभव के आधार पर साढ़े सात मास का बनाना पड़ा; (३) देश में बजट बनाने के समय अव्यवस्था, साम्प्रदायिक दंगे और शरणार्थियों का आवागमन जारी था। अतः संशोधित बजट में आमदनी और खर्च में कमी दिखाई गई है।

नवीन वर्ष का बजट

नये साल १९४८-४९ का बजट इस आशा और विश्वास के आधार पर बनाया गया है कि यातायात बढ़ेगा। उपभोक्ताओं के माल की कमी के कारण पार्सलों की रफ्तनी से भी आमदनी बढ़ेगी। मुसाफिरी से भी आमदनी बढ़ेगी। थोड़ी दूर के सफर की आमदनी में वृद्धि अभी से दिखाई देने लगी है। यह अब और बढ़ेगी। बसों की कमी होने और पेट्रोल महँगा हो जाने से यह घटने के बजाय बढ़ेगी ही। पर दूर की रेलवे-यात्रा की आमदनी आज की ऊँची सतह पर कायम रहेगी, यह सन्दिग्ध है। किराया बढ़ा दिया गया है, अधिक दूर की यात्रा पर किराये की मात्रा घट जाती थी, वह रियायत अब नहीं रही है। इसका स्वभावतः परिणाम यह होगा कि आमदनी घटेगी। पर यह किस परिमाण में घटेगी यह कहना कठिन है। पर रेलवे-अधिकारी इससे घबड़ाते नहीं हैं। उनका विश्वास है कि यदि बिना टिकट के सफर करने की बढ़ती बीमारी रुक जाय, तो किराया बढ़ाने का कुप्रभाव दूर हो जायेगा क्योंकि बिना टिकट के सफर करनेवालों की संख्या इतनी बढ़ गई है कि रेलवे को ८ करोड़ रु० का प्रति-वर्ष नुकसान होता है। बिना टिकट की यात्रा को रोकने के लिए रेलवे ने संयुक्त-प्रान्त में विशेष रूप से इन्तजाम किया है। रेलवे-पुलिस बढ़ाई गई है और रेलवे-मजिस्ट्रेट नियुक्त किये गये हैं। दूसरी बात यह है कि सवारी के डब्बों की कमी के कारण बहुत से लोग टिकट नहीं ले पाते। ८०० मुसाफिरी डब्बों के बढ़ जाने से इसमें कमी आवेगी। तब लोग इतमीनान से टिकट लेकर बैठ सकेंगे। इन सब बातों का विचार करके रेलवे की यातायात से कुल आमदनी अगले साल के लिए १९० करोड़ रु० कूती गई है। इसमें मालगाड़ियों से ९४.१६ कोटि रु०, मुसाफिरी गाड़ियों से ७९.५४ करोड़ रु० और अन्य विशेष सवारी गाड़ियों से १३.८२ करोड़ रु० आमदनी होने की आशा है। इसके मुकावले संचालन-व्यय १५९.७८ करोड़ रु० होने का अन्दाजा है। अतः यातायात की विशुद्ध आमदनी ३०.२२ करोड़ रु० रह जायगी। विविध आमदनी २.१६ कोटि रु० होने की आशा है। अतः कुल आमदनी ३२.३८ करोड़ रु० हो जायगी। इसमें से सूद का खर्चा २२.५३ करोड रु० घाटा देने पर रेलवे को ९.८५ करोड़ रु० की बचत रह जावेगी। इस बचत में से ४॥ करोड़ रु० साधारण बजट को दिया गया है।

महानिधि

रेलवे की विशुद्ध बचत महानिधि—(रिजर्व-फण्ड) और जनमंगल निधि—(बोरमेण्ट फण्ड) को बांट दी जाती है। महानिधि में १ अप्रैल १९४८ को ३.८ कोटि रु० होगा। ६७८ करोड़ रु० की विशाल पूंजी से बनी रेलवे की महानिधि में इतनी तुच्छ राशि ही यह सुप्रबन्ध और दूरदर्शिता का चिन्ह नहीं है। जनमंगल निधि में १२.२६ कोटि रु० है। मुसाफिरों और रेलवे-कर्मचारियों को सुख-सुविधा पहुँचाने के लिए इस निधि का उपयोग होता है। महानिधि में कम से कम ४० कोटि रु० होना आवश्यक है। १९३७ में वेजवुड कमेटी ने भारतीय रेलवे की महानिधि में कम से कम ५० कोटि रु० जमा करने की सिफारिश की थी। इसलिए रेलवे की बचत का विनियोग इन दो मदों में २:१ के अनुपात से करना उचित होगा।

भारतीय रेलवे-विभाग के मंत्री माननीय श्री जानमथाई।

घिसाई फण्ड

घिसाई फण्ड के अन्दर वर्षारम्भ में ९०.४८ कोटि रु० होगा। इस फण्ड में ११.१८ करोड़ रु० और जमा किया जायेगा। पर २३.४३ करोड़ रु० इस साल इस फण्ड में से निकाला जावेगा। अतः साल के अन्त में ७८.२३ करोड़ रु० ही इसमें बाकी रहेगा। इस फण्ड में इतनी बड़ी राशि जमा होने का कारण यह है कि युद्ध-काल में रेलवे की पुरानी चीजों के बदले नई चीजें लेने का काम रुका रहा। पर रेलवे की विभिन्न जमा-सम्पत्ति के मूल्य का ६% भाग विनियोग करना वास्तविकता से परे है, क्योंकि अधिकांश चीजों की जीवन का ६० साल मानना ठीक नहीं है। यथा अधिकांश रेलवे एंजिनों का जीवन ३५ साल, बायलर का २५ साल, माल के डब्बों का ४० साल, मुसाफिरी के डब्बों का ३० साल है। इस अवस्था में ६% की दर से घिसाई फण्ड में रकम जमा करना उचित नहीं कहा जा सकता। १९४३ में रेलवे की विभिन्न जमा-सम्पत्ति की आयु निश्चित करने के लिए एक जांच-कमेटी नियुक्त की गई थी। पर यह बीच ही में छोड़ दिया गया। इस काम को अब पूरा करना चाहिए।

शेष पृष्ठ १४ पर देखिए

सरकार के उपप्रधान मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल एक सार्वजनिक सभा में महात्मागांधी के निधन के बाद देश में शांति बनाये रखने के लिये जनता से अपील कर रहे हैं।

शायरे इन्कलाब की शायरी

राष्ट्रीय स्वतंत्रता की प्राप्ति में जोश मलीहाबादी ने अपनी रचनाओं द्वारा क्या सहायता की?

लेखक, श्री अहमद रजा, हल्लौरी

किसी भी देश की आजादी प्राप्त करने में बहुतेरे लोगों का हाथ रहता है। कोई सभाओं में बोलकर जनता को सुधारते हैं और कोई अपनी कविताओं द्वारा अपने देशवासियों की बुराई दूर करते हैं। उनके सोये हुए भावों को झकझोर - झकझोरकर जगाते हैं। यह किससे छिपा है कि हिन्दुस्तान की आजादी भी बड़ी मुश्किल से मिली है। इसमें बहुतों का श्रम सम्मिलित है। इसमें सन्देह नहीं की वास्तविक काम गांधी जी का ही है लेकिन उनका सहयोग समस्त राष्ट्र की जनता ने दिया। यदि जनता ने महात्मा जी का साथ न दिया होता तो वह अकेले भी कुछ न कर सकते। गांधी जी ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये अपने बड़े बड़े सहयोगी तैयार किये। पंडित जवाहरलाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आजाद और सरदार पटेल जैसे लोगों को जनता के कानों तक आजादी का सन्देश पहुंचाने का काम सौंपा, भूखे और नंगे किसानों के बहते हुए आंसू पोंछने के लिये भेजा! मिलों और फैक्टरियों में काम करनेवाले बच्चों और विधवा औरतों को ढाढ़स बँधवाया। उनको चरखा चलाने की शिक्षा दी। वह मर्द और औरतें जो पैसा पास होते हुए भी कपड़े के लिये दूसरों की मोहताज थी, अपना बदन अपने हाथ से बुने हुए कपड़ों से ढक सकें और उनको मानचेस्टर और जापान की मिलों का मुंह न देखना पड़े।

इसी के बराबर वह लोग हैं जिन्होंने रंगमंच पर तो कुछ नहीं कहा परन्तु अपनी कविताओं से उन्होंने वही काम किया जो अन्य राष्ट्र के नेताओं ने किया। वास्तव में गांधीजी बड़े ही बुद्धिमान और दुनिया देखे हुए थे उन्होंने सोचा कि सभाओं में लोग एक समय में किसी अच्छी बात को बड़े ध्यान से सुनते और फिर दूसरे समय उसी को भूल जाते हैं। भाषणों का असर जनता के दिल पर केवल थोड़े ही समय तक बाकी रहता है इसलिये उन्होंने एक गरोह की और सहायता ली जो शायर कहे जाते हैं। गांधी जी ने उनसे कहा कि अब तुम लोग केवल हंसी मजाक की रचनाओं पर ही अपनी कविता का अन्त न कर दो, जरा संसार की दशा देखो और अपने देश की दुर्दशा को सुधारने की कोशिश करो ऐसी कविताएं लिखो कि हमारे देश के भूल और गफलत में पड़े हुए नौजवानों के हाथों में तलवार दिखाई देने लगे। जो औरत अपने बेटों को आग और पानी से डरना सिखाती है वह उनको आग से खेलना और बहते हुए नदी में बेधड़क कूदना सिखाने लगें। अब लड़ाई के मैदान में जाते हुए नौजवान के मां-बाप की आंखों में डबडबाए हुए आंसू तकलीफ के न हों बल्कि खुशी के।

उस गिरोह में एक शायर मलीहाबाद का रहनेवाला भी बैठा था। वह गांधी जी की बातें सुनकर बहुत खुश हो रहा था इसलिये कि गांधी जी जोश और उमंग की बातें कर रहे थे उनकी बातें देखकर सागर से भाप बनकर खुशी के बादल बन रहे थे, क्योंकि क्यों न होता खुश यह कवि इसका नाम ही जोश है।

जोश ने जो कुछ अपने मुल्क की आजादी के लिये किया उसका वर्णन पूरी तरह इस जगह पर जरा मुश्किल है। अपने देश के लिये बहुत काम किये इसी कारण तो वह शायरे इन्कलाब के नाम से मशहूर हैं। उन्होंने दुनिया की फिक्र कम की और हिन्दुस्तान की ओर ध्यान अधिक रखा। किसी विशेष जाति को नहीं उकसाया बल्कि भारत के बच्चे बच्चे को आजादी की दौड़ में आगे बढ़ाना चाहा। कहने को तो इसके पहले उर्दू जबान में अकबाल और चकबस्त ने भी देश की आजादी के गीत गाये परन्तु उन गीतों के सुर ऐसे न थे कि खेतों में काम करनेवाले किसान, मिलों और फैक्टरियों में अपना खून पसीना एक करनेवाले मजदूर और नंगे, भूखे इंसान के कानों तक न पहुँच सकें? जिनके कानों तक पहुँचें भी उन पर कुछ असर न कर सकें। जोश ने इस प्रकार से जनता तक आजादी का संदेश पहुँचाया कि उसको अपढ़ भी संगीत जानकर सुनने लगे। वह इस संगीत को सुनकर ऐसा मस्त हुआ कि आंखों के सामने आजाद भारत की तसवीर फिरने लगी। जोश में खास बात यह है कि उसने भारतवासियों से साफ साफ कभी नहीं कहा कि तुम गुलाम हो, आजाद होने की कोशिश करो। उन्होंने पहले भारत की उस दशा को दिखाया जो अँग्रेजों के आने से पहले थी फिर उसका मुकाबिला उस जमाने की हालत से किया जो अँगरेजों के आने के बाद हुई। इस प्रकार जन-साधारण की स्वतन्त्रता-प्राप्ति की लालसा बलवती होती गई। यहां नमूने के तौर पर हम कुछ लिखते हैं जिसमें अँगरेजों के आने से पहले भारत की दशा दिखलाई है:—

हमारे मुल्क में पहले भी
कुछ जांबाज[1] रहते थे।
गरीबों बेकसों के
हरदम बदमसाज[2] रहते थे।
जिन्हें चलती हुई तलवार से
डरना न आता था।
घरों में बैठकर आराम पर
मरना न आता था।

फिर अंगरेजों के आने के बाद भारत की दशा इस प्रकार दिखाई है—

वह बस्ती अुफ वह बस्ती
जिसको हिन्दुस्तान कहते हैं।
जहां बन बन के हाकिम
मगरबी[3] हैवान रहते हैं।
जहां मजदूर मेहनत करके
मजदूरी नहीं पाता।
अगर भूले से भी पाता है
तो पूरी नहीं पाता।
जहां पर कैदखाना लीडरों से
भरता जाता है।
जहां जखमी शिकारी काम
अपना करता जाता है।
जहां इन्सानियत रो रो के
अपनी जान खोती है।
जहां जलती हुई मांओं की
छाती खुश्क होती है।

इसके बाद अंगरेजों के जुल्म को इस तरह बयान किया है—

उन्होंने खून चूसा शेर-दिल
झांसी के रानी का।
कि उस पर कुछ असर होता न था
तेगों के पानी का।
भगत को इसलिये मारा कि
जो न जानता था वह,
वतन के दुश्मनों का खून
पीना न जानता था वह।
हां अवध की बेगमों का
भी सताना याद है!
याद है झांसी की रानी का
फिसाना याद है!
वह भगतसिंह आज जिसके
गम में दिल नाशाद[1] है।
उसकी गरदन में जो डाला था
वह फंदा याद है।

जोश के यहां सूखी सूखी बातें नहीं हैं वह बुड्ढे टीचर के समान नहीं हैं! वह हंसा-हंसाकर अपना काम निकालते हैं! वह कभी-कभी ऐसी बातें कह जाते हैं जिसको हमारे पंडितों, संन्यासियों, मौलवियों और सूफियों ने हजारों और लाखों बार कहा है परन्तु जोश के कहने का तरीका ऐसा है कि बात तीर की तरह दिल में बैठ जाती है जब यह कहना चाहते हैं कि इस संसार में सब बराबर हैं धनी को अपने धन-दौलत पर घमंड न करना चाहिए तो वह उस समय की तसवीर खींचता है जब किसी बादशाह की लाश दफन होने जा रही है। कहते हैं—

खड़े हुए हैं कमर बसता[2]
हाजिब व दरबान[3]
निकल रहा है हरम[4] से
जनाजये सुल्तान[5]
बताओ है कोई ऐसा
सिपाहियों में जवान,
छुड़ा ले मौत की चुटकी से
दामने सुल्तान,
सदा[6] दो कोई खजाने के
साज व सामां को,
दफीना[7] दफन होने दे
अपने सुलतां को।

---

[1] जांबाज = बली [2] दमसाज = सहायता देनेवाले। [3] मगरबी = पच्छिमी

[1]—नाशाद = दुखी। [2]—कमर बसता = तैयार। [3]—हाजिब व दरबान = नौकर चाकर। [4]—हरम = महल। [5]—जनाजये सुलतान = बादशाह की लाश। [6]—सदा दो = पुकारो। [7]—दफीना = खजाना।

भारतीय ग्रामों का राष्ट्रीयकरण

एक सुदृढ़ आर्थिक पुनर्निर्माण-योजना को कार्यान्वित करना अत्यन्त आवश्यक है

लेखक, श्री रतनलाल अग्रवाल

सैंकड़ों वर्षों से चली आई हुई ब्रिटिश परतन्त्रता पर जब हम ध्यान देते हैं तो देश को सब प्रकार दरिद्र, भूखा, नंगा तथा गृहहीन पाते हैं। हमारे देश की 'धरती का भार' इतना बढ़ गया है कि देश का यह बोझ सँभालना उसे इस परिस्थिति में कठिन हो रहा है। खेतों पर बहुत लोगों के निर्भर रहने का परिणाम यह हो गया है कि खेत छोटे छोटे टुकड़ों में बँट गये हैं। तथा बहुत दूर दूर हो गये हैं। सन् १८८१ में कुल ५८ प्रतिशत लोग ही खेती पर निर्भर थे; परन्तु क्रमशः इसमें वृद्धि होती गई, सन् १९३१ में यह संख्या ७३ तक पहुँच गई और आज तो इसमें भी अधिक वृद्धि हो गई है। करीब ५० वर्ष पहले इस खेती पर निर्भर रहनेवालों का अनुपात अन्य देशों—फ्रांस, जर्मनी और डेनमार्क इत्यादि से भी कम था; परन्तु यहां परतन्त्रता के अभिशाप-स्वरूप उलटी ही प्रगति हुई। आज हमारा देश कृषि-प्रधान बनता जा रहा है।

महात्मा गांधी ने ग्रामीण उद्योग-धंधों को सदा प्रोत्साहित किया है।

भूमि का बढ़ा हुआ भार

देश में यद्यपि भूमि का भार तो बढ़ गया है, परन्तु कृषि-कार्य में कोई विशेष प्रगति नहीं हुई है बल्कि देश की उर्वरा शक्ति—अच्छी खाद, अच्छे बीज, छोटी-छोटी जमीनें, पुराने ढंग के औजार, साधनों की कमी, सिंचाई की कमी, दरिद्रता तथा बड़े प्रमाण की खेती का अभाव इत्यादि के कारण, नष्ट होती गई है। वर्तमान समय तक कुल ५,१२० लाख एकड़ भूमि में से केवल २,९८० लाख एकड़ भूमि में ही खेती होती है और ६८० लाख एकड़ भूमि में केवल जंगल हैं। बाकी २,४०० लाख एकड़ भूमि ऊसर, आधे ऊसर या अर्द्ध उपजाऊ हैं। यही कारण है कि कृषिजन्य उत्पादन में कोई प्रगति नहीं हुई है।

ऋण में वृद्धि

देश के ऋण में क्रमशः इस तीव्र गति से वृद्धि होती जा रही है कि हमारे कृषक आज स्वतन्त्र होते हुए भी ऋण के बोझ से इतने दबे हुए हैं कि उनका हृदय व मस्तिष्क उनके अधिकार में नहीं है। उनके हाथ साहूकारों के ऋण में बंधे हैं। आर्थिक गुलामी आज देश में इस भयानक रूप से छाई हुई है कि—"भारत के रिजर्व बैंक के कृषि-साख विभाग" ने 'देहाती ऋण' का सन् १९३७ में १८०० करोड़ रुपया का अनुमान लगाया है जब कि सन् १८९५ में केवल ४५ करोड़ था इस ऋण के कुछ कारणों में बेमुनाफे के खेतों की मौजूदगी, सहायक ग्रामोद्योग धंधों की अवनति, सरकार की मालगुजारी नीति, फसलों की थोड़ी उपज तथा आर्थिक [illegible] वाले ऋण पर जीवन-निर्वाह करना ही मुख्य है।

खेतिहर मजदूर की वृद्धि

इस दरिद्रता तथा अधिक ऋण का परिणाम यह हुआ कि अधिकांश खेत कृषकों के पास से निकलकर महाजनों व जमींदारों के पास चले गए हैं। उदाहरणस्वरूप "सर मनीलाल बी० नानावटी और अंजारिया "लिखित" दी रूरल प्राब्लेम" से ज्ञात होता है कि—"पंजाब में १८६६ और १८७४ के बीच किसानों ने प्रतिवर्ष वहां ८०,००० एकड़ भूमि के हिसाब से बेचा वहां उसके बाद के पांच वर्षों में प्रतिवर्ष ९३,०००; १,६०,०००; ३,१०,००० तथा ३,३८,००० एकड़ भूमि बेची। बम्बई-प्रान्त में १९२७ में तथा १९३७ के बीच किसानों को ५० लाख एकड़ भूमि से हाथ धोना पड़ा।"

इस तरह किसानों के हाथ से खेतों के निकल जाने का फल यह हुआ है कि वे बेखेत हो गये हैं और खेतों पर मजदूरी

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

कहानी

प्रेरणा

लेखक, डाक्टर रमेशचंद्र वर्मा, एम० ए०, डी० फिल्

मनुष्य-मात्र के अंतर में जीवन होता है। आवश्यकता है जीवन को उपयुक्त मार्ग की ओर प्रेरित करने की। आलसी से आलसी तथा काहिल से काहिल भी प्रेरणा प्राप्त करके जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है। इस कहानी में प्रेरणा के महत्त्व का सुंदर चित्रण किया गया है, जो पठनीय और सुंदर है।

स्टेशन पर उतरा तो सबेरा हो गया ... वर्ष पूर्व के सभी दृश्य आंखों के ... फिर गये। पक्की ईंटों की बनी ... इमारतें निर्जीव उदास, कुछ खोई-... अपने स्थान पर खड़ी थीं। ... मास्टर थे तो पुराने ही; परन्तु ... ने उनके शरीर में शिथिलता ... चेहरे पर झुरियां ला दी थीं। पोपले ... धंसी हुई आंखोंवाले पैटमैन ... पर एक युवक नियुक्त था जिसकी ... से फुर्ती टपक रही थी। ... फाटक पर टिकट दे मैं बाहर निकला ... कि पीछे से किसी के शब्द सुनाई ...

"बाबू जी सलाम।"

... चकित हो मुड़कर देखा। एक ... अटंगी धोती तथा एक मैला ... विनीत प्रसन्नतापूर्ण दृष्टि ... जमाये था। उसके हाथ के चाबुक ... इक्कावान होने का परिचय दे ...

... तरफ मुझे घूरते देख वह बोला, ... मुझे पहचानते नहीं। मैं ... आपका पुराना खादिम" ... याद आया। उसकी आवाज ... था कि इस स्वर को कहीं ... अब मैं इस कस्बे की तहसील में ... था कल्लू अकसर सलाम कर ... कहीं जाना-आना होता तो ... भी हाजिर कर देता। ... "कहो कल्लू, मजे में रहे न?" ... "हुजूर, अपकी दुआ से ... हो जाती है। रोज का ... है। शाम तक रोटी-... और चाहिए ही क्या?"

... और होल्डाल लाकर ... बैठ जाने पर घोड़ा ... पूछा, "जानते हो कहां ... गिरधारी के यहां।"

... मुस्कराते हुए मुझे देखा और ... इतना भी नहीं समझता। ... यहां मुलाजिम थे दोनों का ... का साथ साथ उठना-बैठना ... आपकी दोस्ती मशहूर थी। ... कि दोनों उस जन्म के जुड़वा ...

... पहिये खड़खड़ाते हुए चल रहे ... से मरम्मत नहीं होने के ... पर बीच बीच में गड्ढे पड़ ... बार मुझे हचक लगती थी। ... कल्लू के लगातार हट हट ... के चौछारों से प्रेरित हो बढ़ी ... थी।

... मंजिले कोठी के सामने आकर ... गया। मैंने प्रश्नसूचक दृष्टि ... "क्या बात है जी, ठहर ...

... उत्तर दिया, "सरकार, पहुँच ...

... यही गिरधारीलाल का ... मुझसे मजाक करते हो।" ... चौंक उठा था। जिस समय ... नौकर था गिरधारीलाल एक ... करते थे। ३० रुपये में ... मां-बेटे का खर्च चलता ... गिरधारीलाल इस विशाल ... रहेंगे, यह मैं स्वप्न में भी ... था।

... अपनी बात को प्रमाणित ... कुछ कहना चाहता था, तब ... स्वयं बाहर निकल ...

"... ठीक कह रहा है भाई। ... है। अन्दर आओ, अम्मा ... बहुत प्रसन्न होंगी।"

... साथ साथ मैं बैठके में गया। ... गिरधारीलाल अब नहीं रह गये ... बदन फूल गया था, तोंद निकल आई थी, तथा चेहरा रोबीला हो उठा था। केवल मुख ही से पहचाने जाते थे।

गिरधारी ने मेरी बड़ी खातिर की। उनकी मां देर तक बातें करती रहीं।

तीसरे पहर दिवानिद्रा से उठा तो वे आकर मेरे निकट बैठ गये। मैं भी पलँग पर ही उठ बैठा।

पूछा उन्होंने, "कहो भैया, तुम्हें बहुत आश्चर्य हो रहा है कि इस अतुल सम्पत्ति का मैं मालिक कैसे हो गया! जब से तुमने यह परिवर्त्तन देखा, इस भेद को जानने के लिए व्याकुल हो।" मेरे सम्मति-सूचक सिर हिलाने पर वे बोले, "आओ मेरे साथ, इसका कारण तुम्हें बतलाता हूँ।"

उनके साथ मैं उनके कमरे में गया। उन्होंने आलमारी से एक पैकेट निकाला। कई तह पतले, कीमती कागज में वह सुरुचिपूर्ण ढंग से लिपटा था। जिस श्रद्धा, भक्ति, तथा डर की भावना से पुजारी देवता को पिटारी से निकालता है, उसी प्रकार उन्होंने उसमें से एक चित्र निकाला। वे उसे बहुत सहेजकर हाथ में लिये थे मानो स्पर्श से वह कलुषित हो जायगा अथवा उसके प्रति अप्रतिष्ठा प्रकट होगी।

चित्र को मेरे हाथों में रख उन्होंने पूछा, "इसे पहचानते हो?"

उसे देख मुझे ६ वर्ष पूर्व की एक घटना याद आ गई। उस समय गिरधारी इसी को हृदय से लगा आहें भरा करते थे। जिस सेठ के वे मुनीम थे वह उसी की पुत्री विमला का चित्र था। गिरिधारी का उससे प्रेम चल रहा था। घंटों वे मेरे पास बैठे बैठे अपनी प्रेमकहानी सुनाया करते। मैंने उनके लिये विमला को कई प्रेम-पत्र भी लिखे थे जिन्हें भेजने की उन्हें कभी हिम्मत नहीं पड़ी।

मैंने मुस्कराकर कहा, "खूब पहचानता हूँ, भला तुम्हारी प्रेमिका को भूलूंगा।"

उन्होंने उत्तर दिया, "यही युवती मेरे साभाग्य का कारण है। इसी से मुझे वह प्रेरणा मिली उसने मुझे इस स्थान पर पहुँचाया इस समय मेरे अधिकृत धन तथा ऐश्वर्य का श्रेय इसी को है।"

मेरे प्रश्नसूचक दृष्टि करने पर वे बोले, "मैं तुम लोगों के समान पढ़ा-लिखा नहीं हूं; परन्तु इतना दावे के साथ कह सकता हूँ कि विश्व के महान् पुरुषों के कृति की प्रेरक शक्ति नारी ही थी। कहीं माता के रूप में, कहीं प्रियतमा के रूप में, कहीं भगिनी के रूप में नारी की मूर्त्ति ही उसे वह शक्ति प्रदान करती है जिसके सहारे वह अचिन्तनीय तथा असंभव कार्य कर जाता है।"

हँसकर मैंने कहा, "अच्छा अच्छा! बहुत वक्तृता मत झाड़ो, अपनी बात सुनाओ।"

वे गम्भीर होकर बोले, "नहीं भाई! मैं हंसी नहीं कर रहा हूँ। तुम पता लगा लो, मेरा कथन अक्षरशः सत्य निकलेगा। मेरा जीवन इसका ज्वलंत प्रमाण है। तुम तो जानते हो विमला को देख मैं किस प्रकार पागल हो गया था। वह मुझे सम्पूर्ण सौन्दर्य तथा गुणों की खान प्रतीत होती थी। मुझे उसमें किसी प्रकार की अपूर्णता अथवा अभाव नहीं दिखलाई पड़ता था। न जाने क्यों मेरे मन में यह बात बैठ गई थी कि वही मेरे उपयुक्त जीवन-संगिनी है। कुछ दिनों तक विरह, उच्छ्वास, आंसू, प्रेमपत्र आदि का सिलसिला चलता रहा। अन्त में मैंने कमर कसकर कार्य करने का निश्चय किया।

एक संध्या को मैंने सेठजी के सामने विवाह का प्रस्ताव रक्खा। उस समय मेरा कलेजा धड़क रहा था, बदन में पसीना आ गया था, जबान लड़खड़ा रही थी। सेठ जी तमक उठे। उनका चेहरा क्रोध से लाल हो गया। बोले, "मैं स्वप्न में भी नहीं सोच सकता था कि तुम्हारे समान छोटा आदमी मेरी पुत्री से ब्याह करने की इच्छा प्रकट करेगा। मेरी समझ में नहीं आता कि तुम्हारी हिम्मत कैसे पड़ी। जानते हो मेरी बेटी किस ऐश्वर्य में पली है। तुम्हारी झोपड़ी में वह एक क्षण भी नहीं रह सकती। मेरी आंखों से दूर हट जाओ। यदि फिर तुमने इस विषय पर मुंह खोला, तो मेरी दूकान में तुम्हारे लिए स्थान नहीं है।" उनकी फटकार सुन मैं उलटे पांव लौट आया। मेरे मुंह में स्याही पुत गई थी। इसके पूर्व मेरा इतना अपमान कभी नहीं हुआ था; इस प्रकार की झिड़की मैंने कभी नहीं सुनी थी।

परन्तु इससे मेरा लाभ ही हुआ। घर पहुँचने पर मेरा सुषुप्त अभिमान जग उठा। मेरी स्वाभाविक शक्तियां जो अब तक शिथिल पड़ी थीं सजग हो गईं। इस अपमान का बदला लेने की मैंने दृढ़ प्रतिज्ञा की। धनाभाव के कारण ही सेठ जी ने विवाह से इनकार कर दिया। मैं भी सतत प्रयत्न कर धनी बनूंगा, तथा एक दिन उस सामाजिक स्तर पर पहुंच जाऊंगा कि सेठ जी अपनी लड़की मुझे देना सौभाग्य समझेंगे।

इस घटना के बाद से मेरा जीवन ही बदल गया। इसके पूर्व मैं आलसी, निकम्मा तथा मितव्ययी था। सुबह ८ बजे सोकर उठता। संध्या को मित्र-मंडली में गप्प लड़ाने लगता तो रात हो जाती। चाट पर जमता तो दो-चार रुपए आसानी से व्यय हो जाते। उस दिन से सब छूट गया। एक मिनट भी मेरा बर्बाद नहीं होता। सेठ जी के यहां मुनीमी करने के अतिरिक्त प्रातः सायं मैं दो ट्यूशन करता। कम पढ़ाई के कारण अध्ययन-कार्य के लिए मुझे दो घंटे घर पर पढ़ना पड़ता। बाकी समय में से एक घंटा निकाल एक दूसरे सेठ के यहां मुनीमी कर लेता। मेरे जीवन में तपस्वियों की सी सहन-शीलता, सादगी तथा कर्मनिष्ठता आ गई थी। चौबीसों घंटे आंखों के सामने विमला की तस्वीर नाचा करती तथा मन में यह विचार घुमड़ता रहता कि मुझे पूंजी इकट्ठा कर व्यापार करना है जिससे वह युवती मुझे प्राप्य हो सके।

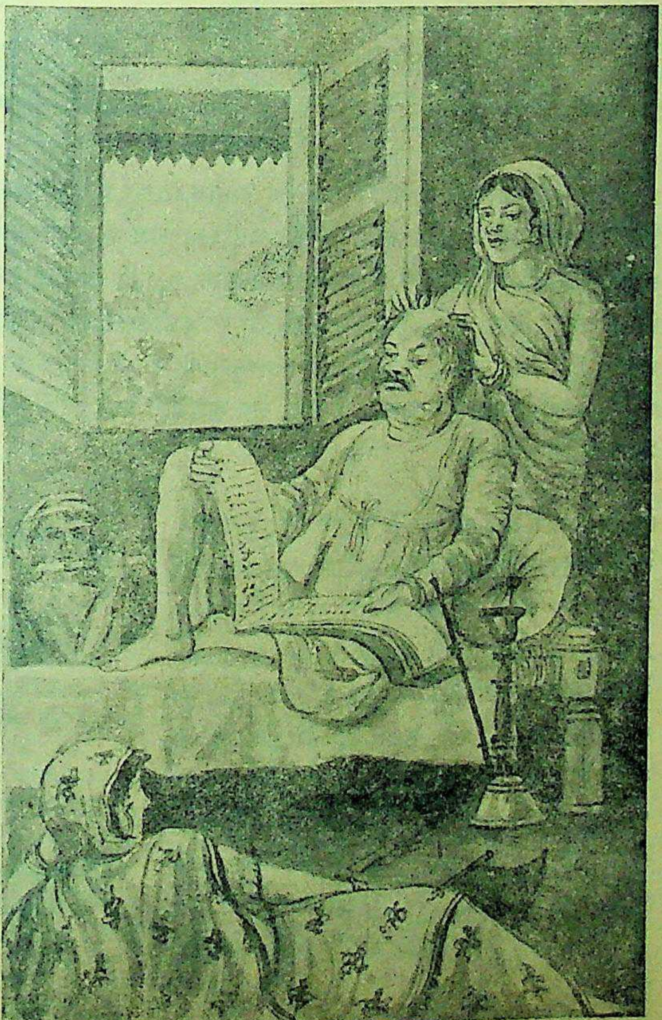

यह वही सेठ जी हैं जिनके आगे विवाह का प्रस्ताव रखा गया था।

यह ख्याल मुझे शक्ति प्रदान करता; मेरे मन प्राण में स्फूर्ति भर देता।

"कुछ ही मास में मेरा परिश्रम फल लाया। कार्य के प्रथम चरण में मुझे सफलता मिली। मेरे पास डेढ़ हजार की पूंजी जमा हो गई जिसको मुझे व्यापार में लगाना था। मैंने प्रान्त के चौकीदारों के वर्दी-सप्लाई का ठीका लेने का निश्चय किया तथा इसी हेतु इन्सपेक्टर-जेनरल से मिला। यह कार्य अत्यन्त कठिन है। इसके लिए क्लर्कों को घूस देना पड़ता है; चपरासियों की घुड़कियां खानी पड़ती हैं तथा छोटे छोटे आदमियों के सामने सिर झुकाना पड़ता है। विमला के लिए मैंने सभी कुछ किया। प्रथम वर्ष मुझे ४००० रुपये का लाभ हुआ जिसमें से २००० रुपये का सामान मैंने इन्स्पेक्टर-जेनरल को डाली लगाकर भिजवा दिया। इसका परिणाम मेरे लिए अति लाभदायक सिद्ध हुआ। तीन वर्षों तब मुझे लगातार पुलिस तथा दारोगा के वर्दी का ठीका मिलता रहा। चौथे वर्ष मेरे पास बीस हजार की पूंजी जमा हो गई थी।

"इस सफलता से मेरी हिम्मत बढ़ी। सम्पूर्ण पूंजी ले मैं कलकत्ते पहुंचा तथा लोहे का व्यापार प्रारम्भ कर दिया। यह नगर उद्योग-धंधे का केन्द्र है। यहां मिल और फैक्टरियों की बहुतायत है तथा टूटे-फूटे कल-पुर्जे अधिक मात्रा में नीलाम होते रहते है। मिल-मनेजरों को घूस देकर मैंने २० हजार का अधिक सा सामान खरीद लिया। वही कल-पुर्जे मरम्मत कर देने पर दुगने-तिगुने मूल्य पर बिके। इससे मुझे बहुत लाभ हुआ; घर लौटा तो लखपती हो गया था। यहां आकर मैंने कोठी बनवा ली और अढ़तिया हो गया।

"इस बीच में सेठ जी की दशा बिगड़ती जा रही थी। उन्हें पग-पग पर घाटा हो रहा था। मेरे घर लौटने के कुछ ही दिन पश्चात् उनका दिवाला निकल गया। सरकार ने दूकान अटेचकर नीलाम पर चढ़ा दिया। मैंने उनके कर्ज को अदा करके दूकान तथा कोठी खरीद ली ?

"अन्त में वह दिन भी आ गया जिसके लिए मैंने इतना परिश्रम किया था। जिस विमला के हेतु मैंने सम्पूर्ण सांसारिक सुखों को तिलांजलि दे दी थी, जिसके लिए मैं बैरागी बन बैठा था—उसी के विवाह का प्रस्ताव सेठ जी ने मेरे सामने रक्खा ' उस समय वे पानी पानी हो रहे थे। झेंप के मारे उनके मुख से शब्द नहीं निकल रहा था। उनके प्रस्ताव को सुन मैं प्रसन्नता से फूल उठा। दूसरे दिन प्रातः अपनी राय प्रकट करने का वचन दे मैं घर आया। मारे प्रसन्नता के मेरे पांव धरती पर नहीं पड़ रहे थे। इतने दिनों पश्चात् अभीष्ट वस्तु मेरी पहुँच के अन्दर आ गई। मेरे हां भर कहने से विमला जो मेरे जीवन की केन्द्र रही है, मुझे प्राप्त हो जायगी।

कुछ क्षण वे चुप रहे, मानो रुककर सांस ले रहे हों। फिर गला साफ कर बोले, "परन्तु दूसरे दिन मैंने विवाह के लिए असम्मति प्रकट कर दी।"

"असम्मति प्रकट कर दी—यह क्या कहते हो भाई ?"

"मैं जानता हूँ तुम्हें आश्चर्य होगा। इस निश्चय पर मैं बहुत सोच-विचार कर पहुँचा और अब भी कह सकता हूँ कि मैंने ठीक ही किया। यह भी मुझे विचित्र तरह से सूझा। दूसरे दिन प्रातःकाल नित्य-कर्म से निवृत्त हो जब मैं सेठ जी के निकट विवाह की स्वीकृति देने जाने लगा तो मुझे एक चिट्ठी मिली। पत्र-प्रेषक बम्बई के एक लखपती थे। उन्होंने अपने एकमात्र पुत्री के विवाह के लिए मुझसे प्रार्थना की थी। स्वीकृति देने पर मैं बिना परिश्रम के ५० लाख का स्वामी हो जाता।

"इस पत्र ने मुझे संकट में डाल दिया। कमरे में लौट फिर से विचार करने पर मैं इस परिणाम पर पहुँचा कि बम्बई में ही विवाह करना मेरे लिए उचित होगा। विमला तो मेरे जीवनाकाश में ध्रुवतारा के समान आई। यह युवती तो मेरे लिए उषाकालीन वह लालिमा थी जिसने मुझे अंधकार से खींच प्रकाश का पथ दिखलाया। निकट से प्राप्त कर, संभव है, मुझे उसमें कोई अपूर्णता दिखलाई पड़ जाय। उस दशा में मेरे हृदय पर खिंची हुई उसकी आदर्श मूर्ति छिन्न-भिन्न हो जायगी। फिर मुझे उससे वह प्रेरणा नहीं मिल सकेगी जिसके फलस्वरूप मैं इस स्थान पर पहुँचा हूँ तथा भविष्य में भी प्रगति करता रहूँगा।

मैंने बम्बई में विवाह कर लिया। विमला का पाणिग्रहण दूसरे लड़के से हो गया। उसका चित्र अब भी मेरे पास है तथा सफलता की तरफ अग्रसर कर रहा है।"

इतना कह वे तसवीर को कुछ क्षण श्रद्धापूर्ण दृष्टि से देखते रहे; इसके पश्चात् जिस प्रकार भक्त भगवान् की मूर्ति सहेजकर रखता है, उसी तरह वे कागज में लपेटने लगे।

मैं अवाक् उन्हें देख रहा था।

T. B.
टी० बी०
"तपेदिक" रोग के हताश रोगियो—
जब्री (jabri) का नाम नोट कर लो, यही इस दुष्ट रोग से रोगी की जान बचानेवाली शक्तिशाली औषधि है। एक बार परीक्षा करके देख लो, परीक्षार्थ ही नमूना रखा गया है, जिसमें तसल्ली हो सके। मूल्य नं० १ (स्पेशल) पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन २०) रु०। 'जब्री' नं० २ पूरा कोर्स २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु० महसूल आदि अलग है। आज ही आर्डर देकर रोगी की जान बचावें। तार का पता "jabri" jagadhri काफी है।
पता :—रायसाहब के० एल० शर्मा, रईस (D) 'जगाधरी' (E.P.)

बचत भिन्न भिन्न काल में
१ व्यापार के विचित्र ढंग

बहुत ही प्राचीन काल में जब कि समाज असभ्य ही था केवल अदल-बदल का ही व्यापार होता था। जैसे - एक शिकारी बाघ की खाल दे कर बकरी या अन्न ही नहीं बल्कि पत्नि भी प्राप्त कर सकता था। और यदि किसी को बाघ की खाल की आवश्यकता न होती तो कुछ प्राप्त नहीं हो सकता था। अनिश्चित भविष्य के लिये बचत करने की इच्छा होने पर भी ऐसी अवस्था में बचत करना न तो सहज था और न ही उचित। क्योंकि बचत विभिन्न वस्तुओं के रूप में ही की जा सकती थी, जैसे केलों के ढेर, अन्न की बोरियां, भेड़ों के समूह, इत्यादि। क्या ये सब नाश होने वाले पदार्थ नहीं ? और फिर वर्ष की समाप्ति पर लाभ भी कुछ नहीं होता था।

इस के विपरीत आज कल माल के खरीदने में या बचत करने में कोई विशेष कठिनाई नहीं होती। बुद्धिमान खर्च करने की बजाय बचाना अच्छा समझता है और वह अपनी बचत को बुद्धिमत्ता पूर्वक सुरक्षित और लाभप्रद मद में लगाता है। नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स की मद में लगाया हुआ धन पूर्णतया सुरक्षित है और अवधि पूरी होने पर इस का मूल्य ५० % बढ़ जाता है-अर्थात १०) बारह वर्ष पूरे होने पर १५) बन जाते हैं। इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता। आप अब ५) से १५,००० तक की मालियत के सर्टिफ़िकेट्स खरीद सकते हैं। जिनकी बचत थोड़ी हो वे ।), ।।), और १) के नेशनल सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं।

भविष्य के लिये बचाइए
नेशनल सेविंग्ज़
सर्टिफ़िकेट्स
ख़रीदिए
रुपया लगाने की सर्व-प्रिय मद

ये डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त एजन्टों और सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त किये जा सकते हैं।

संपादक के नाम चिट्ठियां

राज्य गढ़वाल की वर्तमान समस्याएँ

र्तमान राज्य गढ़वाल शताब्दियों की एक-तन्त्र राज्य-सत्ता से आक्रान्त झटके से मुक्त होना चाहता प्रश्न का क्या उत्तर हो सकता प्रश्न के उत्तर में सर्वप्रथम हमें है कि किसी भी राजनैतिक हल करने से पहले उसके सामा- आर्थिक विकासों की ओर भी ध्यान आवश्यकीय प्रतीत होता है अर्थशास्त्र और राजनीति-शास्त्र का सम्बन्ध है।

गढ़वाल, भौगोलिक दृष्टि से अक्षांश और ७७०-४२, ७९-२४ पर स्थित है। यह एक कृषि- है। यहां पर के खेत बड़े-बड़े वरन् मेहनती किसान अपने पहाड़ों को काट-काटकर बनाते के खेतों के लिए पानी की सिंचाई की अत्यन्त आवश्यकता है। खेतों की सिंचाई के लिए वर्षा पर ही निर्भर रहना है। यही किसान और कृषक का है। यहां पर सिंचाई के और कोई प्रतीत होते। यदि कोई भी जाय, वह कई वर्षों नहीं चल सकता, इस पूंजी का व्यय प्रतीत

खाद्य-पदार्थों की भी प्रचुरता राज्य गढ़वाल की चीनी, गुड़, तम्बाकू, मिट्टी का तेल, और कपड़े के लिए भी बाहरी मुंह देखना पड़ता है। अर्थ- (Experts) विशेषज्ञों के अनुसार यह एक-मात्र (Deficit ही दिखाया गया है। अत्युक्ति न होगी यदि यह कि हमारे प्रान्त को जीवन की के लिए भी बाह्य निकट- का मुह देखना पड़ता है।

पर नये-नये कलों, कार घरेलू उद्योग-धंधों, और खोलने के लिए धन की आवश्यकता प्रतीत होती है। दिल्ली के श्री बिड़ला, कानपुर और बम्बई के श्री हरी जी धनिक भी नहीं कि वे समाज कर सकें। यदि चन्द हैं भी पदलोलुप दृष्टिगोचर होते वही (Capitalism) उपासक जो कि समाज की पर समाज को धोखा देकर गरीबों का खून चूसकर लक्ष्मी बनना चाहते हैं (या) लक्ष्मी- से अपना बोलवाला करना इन सब बातों की ओर एक दृष्टि से, भारतीय राजनीति स्पष्टतया यह देख रहा है और अन्तर्राष्ट्रीयता का नारा है, पंडित जवाहरलाल नेहरू— भारत के प्रधान मंत्री और है राष्ट्रीयता की लहर में पूंजीपति—गरीबों का करने में व्यस्त हैं। यह लहर में दृष्टिगोचर हो रही है। है कि राज्य गढ़वाल, शता- की निद्रा से जागृत होकर अँगड़ाइयां परन्तु यहां के समुदाय(Groups) ही झटके से मुक्त करना चाहते प्रश्न एकदम हल करना अत्यन्त गहन और जटिल विदित होता है। इसी हेतु यह कहना अनुपयुक्त न होगा कि किसी वस्तु को सफल बनाने से पहले उसके लिए साधन जुटाना आवश्यकीय प्रतीत होता है। यह साधन क्या? यह प्रश्न हो सकता है। यह साधन है प्रजातन्त्रवाद और लोकतंत्रवाद को सफल बनाने के तरीके——जैसे——नागरिक स्वाधीनता और नागरिकों में अधिकार और कर्तव्य की सच्ची भावना। इस सम्बन्ध में समाज का सांस्कृतिक जीवन, नागरिकों का स्वास्थ्य, मानव का सामाजिक जीवन और समाज के भिन्न-भिन्न अंगों का विकास। इन्हीं सब अंगों के विकास के साथ ही सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक स्तर भी उन्नति की ओर अग्रसर होकर एक सुदृढ़ समाज अर्थात् गांधी जी के शब्दों में 'राम-राज्य' का निर्माण हो सकता है। इन्हीं सब प्रश्नों के प्रत्येक पहलू को हल करने और सुलझाने से पहले कोई भी एकमत बना देना किसी समाज (या) राज्य की जड़ों की ओर ले जाना ही होगा। इसीलिए मैं अपने देश के प्रधान नेताओं तथा राजनीति के विद्वानों से यह प्रार्थना करूँगा कि वे राज्य गढ़वाल के वर्तमान जटिल प्रश्न पर एक चन्द प्रोपेगेन्डिस्ट, प्रतिक्रियावादियों, पूंजीपतियों, धनलोलुपों और पदलोलुपों के बहकावे में आकर एकदम ही शीघ्रता से राज्य गढ़वाल के भाग्य का फैसला न दे दें। मैं राजनीति शास्त्र के विद्यार्थी की तरह अपनी केन्द्रीय सरकार से यही प्रार्थना करूँगा कि वे कुछ मँजे हुए, प्रौढ़, राजनीति-शास्त्र और अर्थशास्त्र के विशेषज्ञों को राज्य गढ़वाल में भेजें, जो कि यहां पर रहें और सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक समस्याओं का अवलोकन, अनुशीलन और अध्ययन करें वरना राज्य गढ़वाल का राजनैतिक जीवन उन्नति, लाभ की ओर अग्रसर होने की अपेक्षा अवनति की ओर जायेगा जिससे भारतीय राजनीति की क्षति होने की सम्भावना हो सकती है।

टिहरी गढ़वाल राजेन्द्रदत्त खंड़ूड़ी, एम० ए०, एल०-एल० बी०

* * *

हा! सुभद्राकुमारी चौहान

बंकिम बाबू का नाम सुना होगा। उपन्यासकार थे। आनन्दमठ लिखा है। उसी में है, राष्ट्रीय-गीत 'वन्दे मातरम' है न, सर्वाधिक लोक-प्रिय कविता। उसके बाद, दूसरी लोक-प्रिय कविता? 'झांसी-वाली रानी।' सबको एक-सी प्यारी। बालक से लेकर वृद्ध तक। बच्चों से लेकर बूढ़ी मां तक। सबकी जबान पर। इसकी कवियित्री? वैदिककालीन गार्गी और आत्रेयी की परम्परा में। देखने में सौम्य और सात्त्विक। बोलने में धीर और गम्भीर। कवि-रूप में नवनीत हृदया। समाज में सुसभ्या और संस्कार-संपन्ना। अन्याय-मर्दन में सिंहवाहिनी। राजनीति की पारदर्शिका। स्त्री-जगत् की सर्वस्व। आदर्श कुमारी, आदर्श रमणी, आदर्श माता। नाम ह सुभद्रा कुमारी चौहान। हाय! इनके पहले भी 'स्वर्गीय' शब्द जोड़ना पड़ेगा।

आप साहित्य, समाज और राजनीति में एक सी प्रतिभा रखनेवाली सर्वप्रथम भारतीय महिला थीं। आप सन् १९२३ से सार्वजनिक जीवन बिता रही थीं। जबलपुर म्युनिसिपैलिटी की वर्षों तक सदस्या रहीं ह। प्रान्तीय असेम्बली में दो बार निर्विरोध निर्वाचित हुईं। वे झण्डा-सत्याग्रह में जेल में ही थीं। सन् ४२ में भी उनका निवास-स्थान जेल ही था। उनके 'मुकुल' पर प्रथम और 'बिखरे मोती' पर द्वितीय 'सेक्सरिया पुरस्कार' मिल चुका था। 'बिखरे मोती' में गल्प-गाथा पी है। 'कहानी-कल्पद्रुम' और प्रसिद्ध मासिक पत्रिका 'नारी' के सम्पादन में उनकी सुरुचि व्यक्त थी। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अवसर पर तो चलता-फिरता परिचय हुआ करता है, किन्तु जब वे पिलानी आई थीं, उनकी साहित्यिक-प्रतिभा को नजदीक से देखने का अवसर मिल्ा ा। उनका राजनैतिक स्वरूप मैंने अमरावती (बरार) में देखा था। उनके नाम-मात्र से 'सभास्थल' की ओर खिंचती जनता को देखकर मैं उनके मध्यप्रान्तीय माहात्म्य का अनुमान कर सका था। उस समय वे जल्दी में थीं, विशेष बात-चीत न हो सकी।

विश्ववन्द्य बापू जाते जाते भी कह गये थे:—'उसके लिए मत रोओ, जो अनिवार्य है। उसके गुण अपनाओ। बात देखने में ठीक और सच्ची लगती है। पर क्या आज तक ऐसा हुआ है? 'प्रेमचन्दजी' का स्थान किसने लिया? सिंहासन आज तक खाली है। उपन्यास-साम्राज्य सूना पड़ा है। 'प्रसाद' की 'कामायनी' संगिनी खोजती ही रह गई! 'हरिऔध जी' के प्रिय-प्रवास की अवधि किसने आगे बढ़ाई? हिन्दी के चन्द्र और सूर्य 'दीन' और 'रत्नाकर' अस्त हो गये। 'प्राचीन-साहित्य-सम्पादन' के भाग्याकाश में आज भी निविड़ अन्धकार ह। 'आचार्य शुक्ल जी' के जाते ही बेचारी 'समीक्षा' आंसू बहाने लगी थी, आज तक सान्त्वना के दो शब्द कहनेवाला तक कोई नहीं मिला! लेकिन जो लोग ईश्वर की सर्वशक्तिमय सत्ता में विश्वास रखते हैं, उनके लिए कोई काम असम्भव नहीं। हमें साहित्यिक, सामाजिक और राजनैतिक लोकोत्तर प्रतिभा को एक व्यक्ति में देखने का लोभ संवरण न कर स्वर्गीया सुभद्राकुमारी जी के जीवन और कामों से सजाये और सँवारे हुए मार्ग पर चलना चाहिए।

पिलानी (जयपुर) —आचार्य नित्यानंद सारस्वत

* * *

बापू श्रद्धांजलि ग्रन्थ

महात्मा जी की हीरकजयन्ती की स्मृति में गांधी अभिनन्दन ग्रन्थ मैंने प्रकाशित किया था। वह बड़े ही हर्ष तथा उल्लास का दिवस था। और आज उन्हीं प्यारे बापू जी के महाप्रयाण के संबंध में श्रद्धांजलि ग्रन्थ प्रकाशित करने की योजना बनाई जा रही है। यह कल्पना भी असह्य है, और हमारी व्यथा असीम है। तथापि, हमें इस पवित्र कर्तव्य को भी उत्साह के साथ पूर्ण करना है।

मेरी आपसे विनीत प्रार्थना है कि बापू जी के अलौकिक निर्वाण के संबंध में अपनी काव्य श्रृद्धांजलि भेजिए, तथा भिजवाइए।

ये रचनाएँ श्रद्धांजलि ग्रन्थ में तो प्रकाशित होंगी ही, अभिनन्दन ग्रन्थ में भी, बाद में प्रकाशित की जायँगी।

—सोहनलाल द्विवेदी
संपादक गांधी अभिनन्दन-ग्रन्थ
पो० बिन्दीकी, यू० पी०

नशाबन्दी

लेखक, श्री के० के० नय्यर आई० सी० एस० आबकारी कमिश्नर संयुक्तप्रांत

यदि कांग्रेस का मंत्रिमंडल उस समय से जब कि नशा-निषेध की योजना चलाई थी आज तक रहता तो पूरा सूबा क्या पूरे भारत में नशाबन्दी हो जाती; परन्तु कांग्रेस को मंत्रिमंडल का त्याग करना पड़ा जिससे कि नशाखोरी की बुरी आदत दूनी प्रगति से हुई। अब कांग्रेस की फिर सरकार है और उसने इस कार्य को संलग्न चलाना आरम्भ किया है। सात जिलों में नशाबन्दी पहले साल ही कर दी गई और इसका क्षेत्र अन्य जिलों में बढ़ाने की सम्भावना है और ऐसी योजनायें जिनसे नशाबन्दी को प्रोत्साहन मिले चलाई जायँगी। सरकार जनता को इस बुरी आदत से बचाने के लिए करबद्ध है और सरकार को इसमें सफलता जनता के सहयोग से अवश्य मिलेगी।

नशाबन्दी से सरकार की आय में भारी कमी होगी, परन्तु सरकार इसके लिए जनता को बर्बादी से बचाने को तैयार है। नशाबन्दी की योजनायें और देशों में भी की गई परन्तु सम्पूर्ण नशा त्याग की योजना को संचालन का श्रेय भारत को ही है। आपने आशा की कि कांग्रेस संस्था ने जिसने इस देश को ब्रिटिश के आधिपत्य से छुटकारा दिलाया, इस योजना को सफल बनायेगी।

* * *

हिन्दी-कवियों से निवेदन

परम पूज्य राष्ट्रपिता श्री बापू की पुण्य-स्मृति को अमर रखने के लिए 'बापू अभिनन्दन काव्य' प्रकाशित करने की योजना की गई है जिसके दो खण्ड होंगे। प्रथम खण्ड में उन कविताओं को सम्मिलित किया जायगा जो स्वतंत्रता प्राप्ति के समय बापू के अभिनन्दन के लिए लिखी गई हैं। द्वितीय खण्ड में बापू के स्वर्गारोहण के पश्चात् उनके प्रति श्रद्धांजलि के रूप में लिखी गई कविताओं का समावेश होगा। अतः हिन्दी के समस्त सुयोग्य कवियों की सेवा में यह विनम्र निवेदन है कि वे उक्त दोनों प्रकार की स्वरचित रचनाएँ निम्न पते से अविलम्ब भेजकर तथा अपने कवि मित्रों को यह सन्देश पहुंचाकर पूज्य बापू के प्रति अपने पुनीत कर्त्तव्य का पालन करें।

स्टेट हाईस्कूल—श्रीकृष्ण 'सरल' बी० ए०
गुना (ग्वालियर)

२०००) रु० इनाम अवश्य जीतिये प्रतियोगिता नं० [२]

नं० १ का हल पूर्तियाँ भेजने की अंतिम तारीख २५-४-४८ जोड़ १८०

५१	६७	२
१	५०	६६
६८	३	४६

खुलने की तारीख ३०-४-४८। १२००) हमारे सीलबंद उत्तर से मिलनेवालों को जो स्थानीय भारत बैंक में जमा है। ७००) न्यूनतम अशुद्धियों पर, १००) सबसे अधिक पूर्तिवाले को दिये जांयगे, फीस १ पूर्ति का १), चार का ३), अधिक के लिए ॥) प्रति पूर्ति अधिक। मनीआर्डर के कूपन के नीचे और भेजी हुई पूर्तियों के नीचे पूरा नाम व पता साफ लिखा आना चाहिए, उत्तर के लिए =) के टिकट भेजें।

	६०	

पता—"प्रभात" ट्रेडिङ्ग कम्पनी" (पं० वि० ११), सेव का बाजार, आगरा।

भारत सरकार की स्वास्थ्य-विभाग की मंत्रिणी राजकुमारी अमृतकौर।

मातृमण्डल

लड़कियाँ तितलियाँ क्यों बनती जा रही हैं? स्वतन्त्र भारत में भी पश्चिमी रंग-ढंग क्यों पनपता जा रहा है?

लेखक, श्री प्रेम कपूर कंचन

लज्जा, संकोच, स्नेह, भ्रम-विभ्रम, अग्नि, जल, एवं शक्ति और पता नहीं क्या क्या है...यह नारी। फिर भी हम कहते हैं कि नारी को समाज ने जकड़ लिया, वह पंगु है वासना की प्रतिमा.....और तभी हम वेद काल तथा ईसा के पूर्व "मातृ-सत्ता" के युग का प्रमाण देते हैं। सन् १८७७ में घटित रूस की क्रान्ति का वर्णन करते हैं और अपने को धिक्कारते हुए उनके पूर्वजों को सराहते हैं। क्यों.........?

सीधा-सा उत्तर है--"स्वतन्त्रता" और इस सीधे-से उत्तर को सरलता से हमने रट लिया है। लेकिन इस उत्तर के अंचल में प्रश्न छिपा है और उस प्रश्न के उत्तर देने के लिए सबके मुख में विराम लग जाता है। आश्चर्य है, और क्यों न हो, मानव स्वभाव से ही प्रत्येक वस्तु की नकल करने में प्रवीण रहा है। समझ में नहीं आता आखिर क्यों? क्या शक्ति को कोई बाध सका है? इतिहास के पन्ने उलटने की आवश्यकता नहीं। यह ध्रुव सत्य है कि नारी राष्ट्र-निर्माता है और उसे शिक्षित एवं सुयोग होना आवश्यक है किन्तु...।

आज भारतीय नारी "स्वतन्त्रता" का नारा लगाती पश्चिमी आदर्शों को अपनाने के लिए बांह फैलाये खड़ी है। उसी के विपरीत पश्चिमी नारी घर लौटी रसोई की ओर मुड़ी का नारा लगा रही है।"

लोग कहते हैं कि हमें पश्चिमी आदर्श नहीं चाहिए। फिर आदर्श की कौन-सी परिभाषा बनी है। पश्चिम में नारी ने अपनी शक्ति का परिचय पुरुष के साथ साथ काम करके नहीं वरन् पुरुष से बराबरी करके दिया। किन्तु क्या अब भारतीय नारी वहां से कल्पित "रोमांस" और 'अपटूडेट सोसाइटी गर्ल' बनकर किसी के घर को सुशोभित करेगी।

सुरक्षा-परिषद् की एक मीटिंग में सीरिया की प्रतिनिधि भारत की बेगम हानिदअली से वार्ता कर रही हैं।

क्या सुन्दर निर्माण होगा उस घर का? और दुर्भाग्य से कहीं पति महाशय की "वकालत फेल" हो गई तब। क्या दशा होगी? पत्नी को भी किसी आफिस के टाइप राइटर खटखटाने पड़ेंगे। तभी बच्चों के लिए सरकार को शिशुपालन-गृह निर्माण करने की आयोजना तैयार करनी पड़ेगी।

'रस्किन' ने लिखा है कि नारियों की शिक्षा प्राकृति द्वारा होनी चाहिए। और 'वर्डस वर्थ' ने अपनी कविता में उसे उतार दिया है। 'रस्किन' ने लिखा है नारियों को रोमांस और कल्पित या नवीन लेखकों के उपन्यास नहीं पढ़ने को देने चाहिए। लेकिन यहां तो बीवी जी के साथ अगर रात्रि में १२ बजे तक कहानियां नहीं पढ़ीं तो कुछ नहीं किया।

दिन भर के थके हुए पति और पत्नी शाम को सिनेमा से लौटकर सो गये। आठ बजते बजते नौकर ने लाकर चाय रख दी और अगर खाना न बना तो होटल चले गये। कहां रह गया प्राकृति जीवन? स्थूल, नहीं दुबला सा शरीर लिये "आफिस" पहुँच गये। ढ़ाई सौ रुपये महीने मिलते हैं और सौ रुपये बीवी के। कितनी रकम जोड़कर रख ली है? दूर गांव में बैठे हुए कभी मां-बाप को भी याद किया है? राम-राज्य में दूध की नदियां बहती थीं और और सती सी नारियां भी थीं। आज अगर खाना बनाना पड़ गया "फैशन" के तागे टूटने लगते हैं। पैसा आपका पेट में जाता है? ५० रुपये में एक गाय नहीं सकती! लेकिन मेहनत कौन ढाई सौ का 'सूट' फिर कहां से बनेगा कपड़े की देख-भाल होती रहे पेट की और तभी तो नारी को स्वतन्त्रता मिल

यदि लड़की कालिज में पढ़ती तो फिर क्या पूछना है? स्वतन्त्रता बिल्ला लगाने के लिए तो यहीं प्रस्तुत तितलियों सी पुष्पों का रस लेती घूमती रहेंगी। पतन की पराकाष्ठा स्वतन्त्रता का बाना पहनाकर के अधिकार में ठीक होगा या नहीं तो उन्हीं को जानना है, पर मैं यह रहा था मानवी स्वभाव को।

तो आया। इस काली चोटी को सलवार और फ्राक को जिसका दुपट्टा भी नदारद हो चुका है आंखों में और चश्मा कलाई में घड़ी चूड़ियां सिनेमाघर, "दोस्तों की पार्टी" या हाउज़। लेक्चर रोमांस "नूरजहान सुरैया" से बाल और इसी प्रकार की बहुत सी बातें सीख लेना ही अगर स्वतन्त्रता है तो यह सब उन्हें ही मुबारक रहे। ध्यान तो निकाल ही देना होगा कि भारत की प्रत्येक नारी पंडित विजयलक्ष्मी सरोजिनी नायडू नहीं बन सकती। भारत है--जहां वुद्धि नहीं आत्मा उन्नति होती थी।

इस स्वतन्त्र भारत में क्या किस बात का निर्माण होगा या आदर्श प्रतिमा गढ़ी जायगी उसको या कहना किसी के अधिकार में नहीं। की नारी जब पुरुष के बराबर अपना अधिकार रखती है तो वह स्वयं ही पति इच्छानुकूल चुन लेगी। लेकिन है स्वतन्त्रता के नाम पर वह न पी जाये किन्तु यह सत्य है नारी को लज्जा, संकोच और होना चाहिए। जैसी तितलियों बाना आज की नारी पहिनती जा हैं--आशा है वह उसे उतार फेंकेंगी।

सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं हमारे आयुर्वेदिक सुगन्धित तैल से बाल का पकना रुकता सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। तैल दिमागी ताकत और आंखों की को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। २||), आधा बाल पका हो तो ३||) और कुल पका हो तो ५) का तैल मँगा लें।

एल० एन० गुप्ता फार्मेसी
नं० ८ पो० नवादा, गया।

मेरे पतिदेव

बचपन की कुचालों में फँसकर प्रमेह, स्वप्नदोष जैसे भयानक रोग में पीड़ित हो गये थे। परिणाम यह निकला कि वह अपने पुरुषार्थ से भी हाथ धो बैठे, इलाज में सैकड़ों रुपया खर्च किया परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। हम दोनों का जीवन दुखमय हो गया।

जालीनूस-अम्बरी

एक ऐसी बलवर्द्धक-वाजीकरण महोषधि है जिसको मंगाकर सेवन कराने से उन्होंने अपनी शक्ति, पुरुषार्थ प्राप्त किया। अब हम दोनों दाम्पत्य प्रेम का स्वर्गीय आनन्द भोग रहे हैं। नपुंसक पुरुषों के लिए यह शक्तिशाली औषधि है और ४६ वर्ष से प्रसिद्ध है। मूल्य—१०|||)

पता— हकीम राजनरायन (२२) देहली

१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल रजिस्टर्ड के सेवन करने से बाल हमेशा के लिए काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है, और उनको लम्बे, घूंघरवाले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न उगते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता है और सिर को ठण्डक पहुंचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २||) तीन शीशी पूरा कोरस की रियायती कीमत ६||)। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक फैंसी म्यूट रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्दन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती है।

जरूरी नोट :—माल पसन्द न होने पर कीमत शीघ्र वापस कर दी जाती है। दवाई के खरीदार को डाक खर्च बिलकुल माफ; और चार अंगूठी लन्दन न्यू गोल्ड, और घड़ियां बिलकुल मुफ्त इनाम दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार-बार हाथ न आयेगा। आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ लिखें।

लंडन कमर्शियल कम्पनी, बाग रामानन्द [D.A.] अमृतसर
London Commercial Co, Bagh Ramanand [D.A.] Amrit

स्वास्थ्य और व्यायाम

सब्जियाँ

दैनिक जीवन का एक खाद्य पदार्थ

लेखक, श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालंकार

बगीचे की एक ताजी सब्जी खाद्योजों (विटामिनों) और खनिजों से कितनी ही भरपूर क्यों न हो, रंगरूप तथा स्वाद में कितनी ही लुभावनी क्यों न लगती हो; परन्तु रसोई में से होकर जब वह आपकी मेज पर पहुँचती है तो अक्सर निर्जीव-सी चीज प्रतीत होती है। किसी ढाबे या भोजनागार में आपको कई बार भोजन करने का अवसर मिला होगा। प्लेट में परोसी हुई सब्जी में बहुधा ही न तो पोषण बचता है और न ही उसका स्वाभाविक रूपरंग तथा स्वाद, छीलने, काटने, कुचलने और घंटों पकते रहने से उनकी शकल भी इस तरह बदल हो जाती है कि आप बहुधा उसे पहचानने में भी अपनी असमर्थता प्रकट करेंगे।

* * *

भूख लगने पर खाने की इच्छा पैदा होती है, पाचन में सहायता देनेवाली ग्रंथियां अपना काम शुरू कर देती हैं और मुंह में लार पैदा होने लगती है। अच्छा स्वाद होना भी लाला ग्रंथियों या आमाशय से पाचक रसों के निकलने में उत्तेजना देता है। अपने मनपसन्द चीजों के लिए विशेष रुचि होने का कारण भी यही है। ऐसे पदार्थों के लिए अधिक परिमाण में पाचक रसों के निकलने से वे पदार्थ जल्दी हजम हो जाते हैं और आप समझने लगते हैं कि वह आपके लिए विशेष रूप से अनुकूल है। घरों में बीमार तथा स्वस्थ लोगों को आपने अक्सर कहते सुना होगा कि अमुक चीज मुझे मुआफिक है और अमुक नहीं। ऐसा व्यक्ति यह जानते हुए भी कि स्वास्थ्य की दृष्टि से एक पदार्थ की पोषक उपयोगिता यद्यपि अत्युत्तम है परन्तु यदि उसे वह स्वादु नहीं लगता तो उसे वह भोजन खिलाना कठिन हो जाता है। इसलिए यह आवश्यक है कि पकी हुई सब्जियों की पोषक उपयोगिता को देखते हुए हम उनके स्वाद को उन्नत करने का भी ध्यान रखें। खाने के लिए तैयार करने की प्रक्रियाओं में और परोसते हुए वायु, गरमी तथा जल का जो सम्पर्क होता है उसका भी न केवल खाद्योजों पर प्रभाव पड़ता है; परन्तु उनके रूपरंग, स्वाद तथा गुण पर भी असर पड़ता है। मसालों के द्वारा स्वाद को उन्नत करने की आवश्यकता नहीं। सब्जियां बनाने में सावधानी बरतकर स्वाद को बढ़िया बनाइए।

* * *

सामान्य लोग अब यह जानने लगे हैं कि सब्जी अच्छी चीज है और हमारे भोजनों में उसे स्थान मिलना चाहिए। लेकिन वे यह नहीं जानते कि हरएक सब्जी के गुण अलग-अलग होते हैं और इसलिए हमें सब्जियों को बदल-बदलकर खाना चाहिए। सेवाग्राम आश्रम (वर्धा) में मैंने देखा है कि दोनों समय के भोजनों में लगातार महीनों तक लाल कद्दू ही बनता है। इसका कारण मुझे आर्थिक बताया गया। कद्दू उस प्रदेश में सबसे सस्ती सब्जी है और आश्रम की भूमि में अनायास ही खूब पैदा कर ली जाती है। फिर भी मैं सिफारिश करूँगा कि घीया आदि अनेक सब्जियों को वहां पैदा करके आश्रमवासियों को भिन्न-भिन्न सब्जियां खिलाने का प्रयत्न करना चाहिए।

बहुत-सी सब्जियां ऐसी हैं जो अपने विकास के आरम्भ में ही तोड़ ली जानी चाहिए और कुछ ऐसी हैं जो परिपाक की पूर्णावस्था में ली जानी चाहिए, क्योंकि इन्हीं अवस्थाओं में इनके अन्दर सर्वाधिक गुण तथा खाद्योज विद्यमान रहते हैं।

* * *

सामान्यतया जिन तरीकों से सब्जियां पकाई जाती हैं उससे उनमें भूख को चमकाने की क्षमता तो बचती ही नहीं और उनकी भोजन-सम्बन्धी उपयोगिता में भी बहुत कमी आ जाती है। पकते हुए स्वाद देनेवाले बहुत से पदार्थ तो विश्लिष्ट हो जाते हैं और बहुतेरे भाफ के साथ उद्यमशील पदार्थों के रूप में निकल जाते हैं। कुछ घुलनशील लवण पानी में घुलकर सब्जियों में से बाहर आ जाते हैं और कुछ जम गई प्रोटीन के अन्दर तथा काष्ठोज (सेलुलर) की दीवारों के अन्दर बन्द हुए-हुए सब्जी में ही रहते हैं। खाद्योज भी बहुत बड़े पैमाने पर (९९ प्रतिशतक) नष्ट हो जाती है। खाद्योज बी का नाश इस बात पर निर्भर करता है कि कितना पानी डाला गया है और कितने समय तक पकाया गया है। पकाने की सब प्रकार की प्रक्रियाओं में खाद्योज ए पर बहुत कम प्रभाव होता है।

सब्जियों को पकाने में कर्बोदित (कार्बोहाइड्रेट) और प्रोटीन का नाश बहुत होता है। जितनी देर तक इन्हें पकाया जायगा उतनी ही अधिक हानि होगी; परन्तु सब्जियों में ये पदार्थ वैसे भी बहुत कम होते हैं। हमें दिन भर में जितने कर्बोदित और प्रोटीन की आवश्यकता होती है उसकी बहुत थोड़ी प्रतिशतकता ही इनमें मिलती है।

* * *

पकाने की ये हानियां जानते हुए भी फिर हम सब्जियों को पकाते क्यों हैं? अधिक सब्जियों के बारे में तो इसका उत्तर यह ठीक है—क्योंकि हम पकी हुई सब्जियों की आकृति और स्वाद के आदी हो गये हैं। हम बदले हुए स्वाद को अधिक पसन्द करने लगे हैं चाहे उसमें हमें पोषण कम मिल रहा हो, और हम अधिक कोमल सब्जियां चाहते हैं, क्योंकि कच्ची सब्जियों को चबाने की हमारी आदत जाती रही है।

साथ ही, पकाने में पत्तेवाली सब्जियों के कोष्ठों में से नमी निकल जाने से वे फैलाव में कम हो जाती हैं। इस तरह खाने में उनके थोड़े परिमाण में ही अधिक पोषण मिल जाता है। पकाये हुए आलू का निशास्ता कच्चे आलू के निशास्ते से अधिक जल्दी पच जाता है। शिम्बी (legumes) पदार्थों की पकाने से भोजन-सम्बन्धी उपयोगिता बहुत बढ़ जाती है। पकाना एक सफाई की प्रक्रिया भी है जिससे सब्जी की सतह पर रहनेवाले कृमि मर जाते हैं।

* * *

आवश्यक खनिज—चूना, तांबा। लोहा, प्रस्फुरक और जलीय विलेय खाद्योज थिएमीन, रिबोफ्लेवीन, निएसीन और ऐस्कार्बिक एसिड—पकाने की सामान्य विधियों में घुलकर नष्ट हो सकते हैं। श्रीयुत रीस्विग की सम्मति में इस हानि से बचने के लिए भूनना और भाफ में पकाना ये दो अधिक अच्छे तरीके हैं क्योंकि इनमें फालतू पानी मिलाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। जब पानी मिलाना ही है तो कम से कम मिलाना चाहिए।

साधनमाला—मंत्र, तंत्र और शक्ति-उपासना-सम्बन्धी हिन्दी में अकेली मासिक पुस्तक-माला। वार्षिक मूल्य ८)। एक प्रति १)।
कल्याण-मन्दिर, कटरा, प्रयाग।

वह करवट भी नहीं बदल सकता था

कमर के दर्द से उसको रात असाध्य थी

क्रुशन ने उसको दर्द से मुक्त कर दिया

वे ही लोग कमर के दर्द को जान सकते हैं जो इससे बीमार हुए हैं और जब उन्हें इसकी दवा मालूम होती है तो वे इस समाचार को और बीमारों को उत्सुकता से सुनाते हैं। उस आदमी की सुनिए जिसको क्रुशन के सेवन पर इस भयंकर रोग से मुक्ति मिली:—

"मैं कमर के दर्द से बीमार हो गया। जब मैं चारपाई पर पड़ा तो उठने की हिम्मत न होती थी। दर्द के कारण चल न सकता था। मैं यह न जान सका कि मुझे कौन दवा खानी चाहिए और क्या करना चाहिए? मुझे क्रुशन साल्ट खाने की सलाह दी गई और मैंने उसका सेवन करना भी शुरू कर दिया। कुछ खुराक खाते ही मुझे आराम मालूम हुआ एक बड़ी बोतल के सेवन के पश्चात् तो मेरे कमर का दर्द काफूर बनकर एकदम उड़ गया। मैं यह अनुभव करता हूँ कि अब वह शायद ही लौटे। मैं उन लोगों से, जो कमर-दर्द से पीड़ित हैं, अनुरोध करूँगा कि वे क्रुशन साल्ट अवश्य सेवन करें।"
जी० ए० बी०

क्रुशन प्राकृतिक खनिज नमकों का एक रसायन है जो आपके पित्ताशय और मूत्राशय को कार्य के लिए तैयार करता है। स्वास्थ्य के लिए पाचक वस्तु और उचित क्रियाशीलता को बढ़ाता है। वह भीतरी स्वच्छता बढ़ाता है, और रक्त की धमनियों को साफ करता है आपके कमजोर अंगों को रक्त पहुँचाता है। कमर-दर्द, गठिया, सिर-दर्द और अपच को दूर करता है।

क्रुशन साल्ट सारे रासायनिक और दूकानदारों की दूकाना पर बिकता है मूल्य एक रुपया दस आने प्रतिबोतल

आधुनिक हिन्दी-साहित्य का सर्वश्रेष्ठ गीति-काव्य

कवि और छवि

लेखक, सुप्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव

कविश्री बालकृष्ण राव आधुनिक हिन्दी-जगत् के चोटी के कलाकार और सर्वश्रेष्ठ गीतिकार हैं। 'कवि और छवि' आपकी नवीनतम गीति-काव्यों का सर्वश्रेष्ठ संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और आनन्द से परिपूर्ण तो हैं ही साथ ही सरस और हृदय पर मधुर प्रभाव और छाप छोड़ जानेवाले हैं। हृदय को तन्मय तथा गहन अनुभूति से सराबोर कर देनेवाले ऐसे गीत हिन्दी में आज लिखे ही नहीं जा रहे हैं। 'कवि और छवि' में संग्रहीत सभी गीत बिलकुल नवीन हैं, पढ़ते पढ़ते हृदय उद्वेलित हो उठता है। छपाई-सफाई नयनाभिराम, सचित्र और सजिल्द—मूल्य केवल २) रु०।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

शरद् बाबू के उत्तमोत्तम उपन्यास

छुटकारा

एक निठल्ले और बेरोजगार भाइ की सहायता उपार्जनशील भाई को किस प्रकार करना चाहिए, यह बात इस उपन्यास से भली-भाँति सीखी जा सकती है। मूल्य १।-) एक रुपया पांच आने।

नव-विधान

पाश्चात्य सभ्यता के अन्धानुकरण में पड़कर अत्यन्त अशान्तिमय जीवन व्यतीत करनेवाले पति को प्राचीन पद्धति से गृहकाय का संचालन करनेवाली गृहिणी किस प्रकार सुखी करने में समर्थ हुई, यह बात इस उपन्यास में दरसाइ गइ है। मूल्य १॥=) एक रुपया दस आने।

मँझली दीदी

एक सौतेली बहन अपने माता-पिता से हीन भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार कर सकती है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

(पेज ७ का शेष)

उपर्युक्त विवरण को ध्यान में रखकर १९४८-४९ का रेलवे बजट डा० जानमथाई ने इस प्रकार पेश किया है—

रेलवे बजट १९४८-४९

(करोड़ रु० में)

	१५-८-४७ संशोधित अनुमान	१९४८-४९ बजट
कुल याता० आ०	१०८.००	१९०.००
सा० सं० व्यय	९३.५५	१४७.२५
घिसाई फण्ड	६.८१	११.१८
चली लाइनों का यु०	०.६३	१.४५
यातायात की आ०	७.०१	३०.२२
विविध आ०	१.४०	२.१६
विशुद्ध आय	८.४१	३२.३८
ब्याज	१३.६१	२२.५३
बचत या घाटा	५.२०	+ ९.८५

रक्तवाहिनी है

रेलवे राष्ट्र-शरीर की रक्तवाहिनी है। देश की आर्थिक उन्नति इसके ऊपर निर्भर है। इस दृष्टि से रेलवे की आर्थिक स्थिति अच्छी होनी आवश्यक है। रेलवे की आज की बढ़ी आमदनी मुद्रा-स्फीत का परिणाम है। दूसरे देश का विभाजन होने के कारण भौगोलिक कारणों से घाटे और कम आमदनी की रेलवे पाकिस्तान के हिस्से में आई है। इसलिए रेलवे को अपना बढ़ा खर्च कम करना चाहिए। लड़ाई के जमाने में बढ़ाया गया खर्चा अब घटाना चाहिए।

माल की रफ्तनी से मालूम होता है कि माल के डब्बों को अब अनावश्यक रूप से ज्यादा देर रोकने की प्रवृत्ति में कमी हो रही है। अब ३१ घण्टे रुकते हैं। जब कि नवम्बर में ४१.६ घण्टे रुकते थे। पर आवश्यकता है कि वे २४ घण्टे से अधिक न रोके जायें। माल के डब्बों को रोक रखने के लिए व्यापार उद्योग को ही जिम्मेदार नहीं बताया जा सकता। रेलवे-प्रबन्ध में सुधार की आवश्यकता है। डेमरेज बढ़ा देने और रविवार को भी उसमें शामिल करने से तब तक लाभ न होगा, जब तक रेलवे-प्रबन्ध में सुधार न होगा और रेलवे तत्परता और सतर्कता से काम न करेगी। १९४४-४५ में प्रतिदिन माल का डब्बा कितने मील चलता था और १९४७-४८ में प्रतिदिन कितने मील चला, यदि इसकी तुलना की जाय तो यह बात स्पष्ट हो जावेगी। यथा :—

प्रतिमाल का डब्बा प्रतिदिन कितने मील

	१९४४-४५	१९४७-४८
बी० एन०	४०.४	४६.३
बी०बी०ए०सी०आई०	७७.३	३३.६
ई० आई०	३८.०	३२.७
एम०ए०एस०एम०	५६.५	४५.३
एस० आई०	४६.०	४२.४
	मीटर	गाज
बी०बी०ए०सी०आई०	८६.७	३६.३
एम०ए०एस०एम०	४५.४	३१.५
ओ० टी०	३४.७	१७.२
एस० आई०	४२.५	३४.१

इससे स्पष्ट है कि प्रति माल डब्बे के प्रतिदिन के मीलों में भारी कमी आई है और अनेकों में ५० प्रतिशत की कमी आई है। अतः अनुचित रूप से रोके जाने, आवश्यक सामग्री की कमी या वर्कशाप में काम का कम होना ये बहाने मूल कारण को बताने में असमर्थ हैं। मुख्य कारण रेलवे-प्रबन्ध और रेलवे-कर्मचारियों की कार्य-अक्षमता मालूम होती है। लड़ाई के दिनों में माल की ढुलाई और उतराई सेना के निरीक्षण में होती थी और इस कारण आज की अपेक्षा जल्दी काम होता था। इससे प्रकट है कि रेलवे के निरीक्षण में कहीं शिथिलता है। रेलवे वर्कशापों में काम करनेवालों के दिनों की संख्या में वृद्धि हुई है। पर उत्पादन में नहीं। एक-तिहाई रेलवे एंजिन अपनी उमर समाप्त कर चुके हैं। यदि इनकी जल्दी जल्दी मरम्मत हो जाय तो इनसे काम लेने में कोई खतरा नहीं है। १४६ नये एंजिनों के आने की आशा है। पर इनसे स्थिति में कोई विशेष अन्तर न आयेगा, क्योंकि साधारणतः २,००० एंजिन व्यवहार में आते हैं।

केन्द्रीय संयुक्त व्यवस्था

अब प्रायः सब रेलवे भारत-सरकार की सम्पत्ति है। अतः इनका सचालन एक केन्द्रीय संयुक्त व्यवस्था द्वारा होना चाहिए। पहले की कम्पनियों का अलग अलग व्यवस्था का अब अन्त होना चाहिए। एक व्यवस्था और एक प्रबन्ध होने से प्रबन्ध और निरीक्षण तथा दफ्तर का खर्च बचेगा। रेलवे का खर्च इस समय बराबर बढ़ता जा रहा है। महंगी इसका कारण नहीं है। विभिन्न रेलवे का अलग अलग खर्च है। और वह एक स्तर पर नहीं है। हरएक रेलवे लाइन में खर्च कितने प्रतिशत बढ़ा है, यह निम्न तालिका से स्पष्ट हो जावेगा। यथा:—

रेलवे का बढ़ता खर्च

	प्रतिशत
बी० बी० एण्ड सी० आई०	२८७
ई० आई० रेलवे	३७२
बी० एन० आर०	३८०

ब्रिटेन में भी रेलवे का राष्ट्रीयकरण किया गया है और वहां चारों रेलों का एकत्रीकरण और संयोगीकरण की मांग की जा रही है। भारत में भी इसकी आवश्यकता है। खर्च के बचत की दृष्टि से यह आवश्यक है, क्योंकि अगले साल ई० आई० रेलवे में ३.७६ करोड़ रु०, आसाम रेलवे में ३.५८ करोड़ रु० और बी० एन० रेलवे में २.१८ करोड़ रु० घाटा होने का अन्दाजा है। कुंजरू कमेटी की रिपोर्ट की प्रतीक्षा न करके रेलवे-बोर्ड को यह काम शीघ्र करना चाहिए।

तीसरे दर्जे की यात्रा को सुखकर बनाने के लिए इस साल कुछ नहीं किया गया। अगले साल कुछ किया जायगा इसकी कोई आशा नहीं दिलाई गई है। बी० बी० एण्ड सी० आई०, ई० आई० और जी० आई० पी० रेलवे की १५०० मील लाख का विद्युतीकरण की योजना भी कागज पर ही लिखी रखी है। धात्वीय उपयोग के कोयले की रक्षा के लिए रेलों का बिजली से चलाना आवश्यक है।

बचत का क्या करें ?

रेलवे को यदि बचत हो तो क्या उसका कोई भाग साधारण बजट को मिलना चाहिए ? इस वर्ष अर्थमंत्री और रेलवे-मंत्री परस्पर एक राय न हो सके, अतः यह विषय 'मावलंकर कमेटी' को सौंपा गया और उसने रेलवे की बचत में से साधारण बजट को ४॥ कोटि रु० दिलाया। १९२४ में जब रेलवे बजट साधारण बजट से अलग किया गया था, तब निश्चय किया गया था कि रेलवे में लगी पूंजी का एक प्रतिशत या बचत का एक पंचमांश रेलवे साधारण बजट को देगा। इसके साथ ही यह भी तय हुआ था कि सामरिक रेलों का घाटा साधारण बजट सहन करेगा। यह भी साथ में जोड़ा गया कि यदि बचत में रेलवे का भाग किसी वर्ष ३ करोड़ रु० से ज्यादा हो तो बचत का एक-तिहाई भाग साधारण बजट को मिलेगा। यह भी ठहरा कि यदि किसी साल रेलवे अपनी निहित पूंजी का एक प्रतिशत न दे सकेगा तो वह बकाया आगे देगा। १९२४-२५ से १९३०-३१ तक रेलवे ने ६ करोड़ रु० साधारण बजट को दिया। इसके बाद रेलवे को घाटा होने लगा और वह घिसाई फण्ड से कर्ज लेकर घाटा पूरा करने लगी। रेलवे महानिधि में केवल ५ लाख रु० रह गया। युद्ध छिड़ने से अवस्था बदल गई। फिर कनवेंशन भी बदला और १९४३ में ठहरा कि बचत का बँटवारा रेलवे और साधारण बजट की आवश्यकता के अनुसार होगा। १९३९-४० से १९४६-४७ तक रेलवे को २४४ करोड़ रु० की बचत हुई। इसमें से १६५ करोड़ रु० साधारण बजट को मिला और ५२ करोड़ रु० रेलवे महानिधि (रिजर्व फण्ड में गया)। शेष घिसाई फण्ड का कर्जा चुकाने और जनमंगल निधि में दिया गया।

यह हरएक स्वीकार करता है कि रेलवे महानिधि में अच्छी राशि जमा होनी चाहिए। पर यह भूलना न चाहिए कि रेलवे सरकार को कोई कर नहीं देता और किराया और भाड़ा बढ़ाकर अपनी आमदनी बढ़ाया है। यदि वह साधारण बजट में कुछ न देगा, तो बजट को सन्तुलित करने के लिए उस पर और कर लगाया जायेगा। अतः रेलवे जब तक आय-कर से मुक्त है, उसको अपनी बचत का एक भाग साधारण बजट को अवश्य देना चाहिए।

यह एक और कारण से भी आवश्यक है। रेलवे-कर्मचारियों और गवर्नमेंट के अन्य कर्मचारियों के वेतन का एक ही मानदण्ड नहीं है। रेलवे-कर्मचारियों को जो सुविधा प्राप्त है, वह अन्यों को प्राप्त नहीं है। रेलवे जनता को यात्रा की सुविधा देने की ओर जितना ही कम ध्यान देती है, उतना ही अधिक वह अपने कर्मचारियों को सुख-सुविधा पहुँचाने की ओर देती है। रेलवे के कर्मचारी सुखी और सन्तुष्ट रहें, यह आवश्यक और उचित है। पर यह जनता की रेलवे यात्रा को सुखकर बनाने के साथ होना चाहिए। पर यह नहीं हो रहा है। यथा रेलवे बोर्ड रेलवे-कर्मचारियों की सुख-सुविधा पर ५.८२ करोड़ रु० खर्च करने का विचार कर रहा है। जब कि वह जनता की सुख-सुविधा पर केवल २.८३ करोड़ रु० ही। जनता रेलवे प्रबन्ध में अधिकाधिक इससे और उसको अपनी सम्पत्ति समझे इसके लिए यह आवश्यक है कि यह विषमता दूर की जाय।

मरदानाकमज़ोरी
गुप्त फुंसी फोड़े आदि गुप्त रोगों के
भारत भर में प्रसिद्ध विशेषज्ञ
कविराज ब्रह्मस्वरूप बी० ए०
(D.A.) फतेहपुरी देहली।

फैंसी सिल्क साड़ी
आकर्षक डिज़ाईन
कलापूर्ण ३-४ इंच चौड़ा बार्डर
नं० ७ ८ ९ ५ गज
१८) २३) २८)
२) पेशगी बाकी वी० पी० से
थोक व्यापारियों को खास सुभीता
बमाको इन्डस्ट्रीज,
जुही नं० ६ कानपुर

सुखनाम सर्दी पर असरीर उपार
आसेंटा
१८६६
नीलगिरि तैल
बी. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

निश्चित रूप से
10 Saridon
सारिडन
सर्व्वप्रकारका दर्द शीघ्र दूर करता है

संवाददाताओं के पत्र

ख़ों का समाचार है कि कोई सवा इधर-उधर चक्कर लगाकर सुशीला नैयर का एक पत्र श्री सिया- रामशरण गुप्त के पास अब पहुँचा है। गांधी ने गत १३ जनवरी को में जो अनशन-व्रत लिया था, पर "आज की प्रार्थना" शीर्षक एक श्री सियारामशरण गुप्त ने लिखी इस कविता को पढ़कर बापू ने कहा, यह डा० सुशीला नैयर ने एक पत्र में बताया है। पत्र बापू निर्वाण के आठ दिन पहले का है कविता कदाचित् हिन्दी कवि-द्वारा की गई ऐसी अन्तिम श्रद्धांजलि जो बापू की सेवा में पहुँच सकी। सुशीला नैयर का पत्र इस है:-

बिर्ला हाउस
२२-१-४८

वर जी,

कविता मिली। बापू को बताई। चल रहा था। कहने लगे सारी सुना दे, सुनाई। फिर कुछ उन्होंने खुद पढ़े। कहने लगे और काव्य से भरी हुई कविता है। कुशल होंगे। बापू अच्छे हैं। धीरे आ रही है।

विनीता—सुशीला नैयर

आज की प्रार्थना

१३ जनवरी १९४८ को उपवास व्रत के अवसर सियारामशरण द्वारा की प्रार्थना" कविता इस है:-

समाप्त सकुशल हो सत्वर,
तुमसे करें प्रार्थना क्या मुंह लेकर ?
वचन ध्यान से सुने न समझे;
तो सुदूर पश्चिम में हम थे।
तुम मनुष्य, जी करो न ओछा;
हम मुसलमान, हमने यह सोचा।
एक दूसरे पर हम टूटे;
क्रूर कुटिल हिंसा में फूटे।
दानव जन्तु जगाकर भीतर बाहर,
तुमसे करें प्रार्थना क्या मुंह लेकर ?

के तार दूर होकर भी विचलित,
के किसी शुद्ध स्वर में हैं कम्पित।
ये प्राण मानते नहीं पराभव,
सन्देश सुभाषा फिर से नव-नव।
अवलोक चुके हैं पशु में नर्तित,
क्यों न हो स्वयं नर में आवर्तित?
हो उठे प्रार्थना प्रभो, हमारी,
के पुत्र बनें हम नरता धारी।
भला युग-पुरुष को क्या डर है;
प्रेम सुधा, वह अजर-अमर है!

—संवाददाता

* *

में अप्रैल के दूसरे सप्ताह इंजीनियरिंग कालेज की शताब्दी तैयारियां की जा रही हैं। एक सप्ताह तक एक विशाल की भी विशाल आयोजना की सुना है कि भारत के गवर्नर- लार्ड माउण्टबेटन तथा पं० जी नेहरू आदि बड़े-बड़े को निमंत्रित किया गया है। हजारों व्यक्तियों के पधारने है। इस प्रकार इस अवसर पर के भोजन-सत्कार तथा मनो- आदि पर लाखों रुपये व्यय होंगे। में इस सम्बन्ध में बड़ी चर्चा है कि पूज्य बापू जी के निधन को जब महीने भी नहीं हुए हमें इस की खुशियां और मनोरंजन मनाना कहां तक उचित है? सुना जाता है कि इस सम्बन्ध में स्थानीय जनता का एक डेपुटेशन भी उच्चाधिकारियों से मिलनेवाला है। आशा है कि सम्बन्धित अधिकारी देश के वातावरण को देखते हुए उत्सव को स्थगित कर देंगे।

—संवाददाता

* * *

वृन्दावन के प्रसिद्ध मंदिरों के दर्शन करने लिए बंगाल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के सभापति श्री सुरेन्द्र मोहन घोष वहां की प्रसिद्ध कांग्रेस श्रीमती लावण्य प्रभादत्त के साथ पधारे। यहां के सभी मंदिरों में आपका स्वागत किया गया। राधारमण मंदिर में गोस्वामी अद्वैतकुमार जी ने आपका स्वागत किया। प्रवासी बंगाली सम्मिलनी सभा की ओर से अयोजित बंगालियों की एक सभा में आपने बंगाल प्रान्त की जटिल समस्या पर अपने विचार प्रकट किये।

श्री गौरांग प्रेम-मण्डल एटा के द्वितीय वार्षिकोत्सव के अवसर पर वृन्दावन के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य मदनमोहन गोस्वामी वैष्णव दर्शन तीर्थ भागवत रत्न सभापति मनोनीत होकर पधारे थे।

गीत

लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस० सी०, एल्-एल० बी०

चांद लेकर क्या करूंगा, चांदनी दो।

कुछ मुंदे दृग, तो हृदय कुछ आंख खोले,
कुछ मुंदे दृग कल्पना कुछ बात बोले,
विश्व बनता है स्वयं, किसने बनाया
स्वप्न लेकर क्या करूंगा, यामिनी दो।

रूप है दृग-भार जो मन मिल न पाया,
प्यार पाया जो न तो तन खिल न पाया,
फूल पुजता है सुरभि के पंख पाकर
चांद लेकर क्या करूंगा, चांदनी दो।

मौन मुसकाती रही प्राची न बोली,
मौन मुसकाती रही रजनी न बोली,
किन्तु मन ने पी लिया संगीत सारा
बात लेकर क्या करूंगा, मानिनी दो।

गा उठा मधुमास कोकिल के स्वरों में,
बज रहा जीवन तुम्हारे नूपुरों में,
गुन गुना दो तार बज जावे हृदय का,
तार लेकर क्या करूंगा, रागिनी दो।

आपके साथ वृन्दावन के और भी विद्वान् गोस्वामी लोग गये थे। चार दिन तक एटा में बड़े समारोह के साथ सभा और कीर्त्तन हुआ। सभा में आचार्य्य मदनमोहन गोस्वामी, माधवाचार्य्य गोस्वामी, आचार्य्य अनन्त लाल गोस्वामी, कृष्ण चैतन्य गोस्वामी और अतुल कृष्ण गोस्वामी के प्रभावशाली भाषण हुए।

वृन्दावन के प्रसिद्ध वैद्य अभिनव चैतन्य औषधालय के संचालक आचार्य्य गौरकृष्ण वैद्य शास्त्री यहां पर पूज्य बापू की पुनीत स्मृति में एक गांधी आयुर्वेद मंदिर स्थापित करने जा रहे हैं। जहां छात्रों को आयुर्वेद विज्ञान की शिक्षा दी जायेगी। एक विशुद्ध आयुर्वेद प्रयोगशाला भी रहेगी।

—संवाददाता

* * *

अजमेर से मंत्री, राजस्थान ट्रस्ट, लिखते हैं—अजमेर मेरवाड़ा के जिला मजिस्ट्रेट ने 'नया राजस्थान', के बाद अब नवीन राजस्थान', 'नूतन राजस्थान' और आगे प्रकाशित होने की सम्भावनावाले 'नव राजस्थान' और 'यंग राजस्थान' यानी वे सब अखबार जिनके नाम से 'राजस्थान ट्रस्ट' काम कर सकता था, और जिनके डिक्लेरेशन लिये जा चुके थे उन सब पर यह पाबन्दी लगा दी है कि सारा का सारा अखबार तैयार करके एक रोज पहले १२ बजे दोपहर तक सिटी मजिस्ट्रेट द्वारा जांच करा लेने के बाद छापा जाय, क्योंकि यह शर्त हमारे लिए अपमानजनक है और किसी भी दैनिक पत्र के लिए उसका पालन करना असम्भव है, इसलिए हम अनिश्चित काल तक प्रकाशन बन्द करते हैं।

* * *

डबरा (ग्वालियर) में शान्ति-प्रचारक श्री श्री योगी धर्म्मध्रुव जी गौर उरई, जालौन, झांसी, दतिया आदि में उपदेश करते हुए यहां भी पधारे। जनता में प्रेम, पवित्रता तथा ईश्वर-भक्ति की भावना भर रहे हैं। आपके आध्यात्मिक भाषण विशेषकर विद्यार्थियों व नवयुवकों को प्रोत्साहित करनेवाले होते हैं। आपका वृहत् ज्ञान और अनुभव जनता की आत्म-जागृति में बहुत प्रभावशाली सिद्ध हो रहा है।

—संवाददाता

* * *

शिमला—विश्वस्त सूत्र द्वारा पता चला है कि महलोग सरकार ने सरकारी दफ्तरों को उनके निश्चित स्थानों से बदलकर जनता के अतिथि निवासों और डाकबँगलों पर ले जाये जाने की आज्ञा जारी कर दी है तथा कचहरियों के असली मकानों को राजा के निजी कारोबार में इस्तेमाल करना जारी कर दिया है। इतना ही नहीं, सरकारी खजाने के रुपयों में से पचास हजार रुपये निकालकर राजा की 'निजी सम्पत्ति' के नाम से दूसरे बैंक में जमा करवा देने के लिए अपने वजीर श्री ब्रजलाल को यहां भेज दिया है।

—संवाददाता

* * *

अजमेर से स्वर्गीय श्री सुन्दरलाल जी गर्ग की याद में स्थापित अजमेर की साहित्यिक संस्था 'श्री बाड़ी मंदिर' द्वारा इसी माह से 'राष्ट्रवाणी' नामक एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है जिसका उद्देश्य राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना, पूज्य बापू जी के जीवन सिद्धान्तों और सर्वोदय-बिचार-धारा के अनुकूल वातावरण बनाना तथा राजस्थान की शिक्षा, साहित्य व सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का प्रकाशन करना तथा उन्हें हर प्रकार से बल पहुँचाना रहेगा। 'राष्ट्रवाणी' के सम्पादक श्री रामस्वरूप गर्ग रहेंगे। —संवाददाता

सिवनी लखनादौन के हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक, सुकवि, वक्ता, गो-साहित्य के प्रणेता कविरत्न शोभाराम धेनुसेवक के पुत्र चिरंजीव दुर्गाशंकर यादव का शुभविवाह जबलपुर के प्रसिद्ध समाज-सुधारक बा० बलराजसिंह की कन्या सौ० कुमुदनी बाई के साथ आगामी ५ मार्च को होना निश्चित हुआ है।

—संवाददाता

जोधपुर मारवाड़ कुमार-साहित्य परिषद्‌ने श्रीमती सुभद्राकुमारीजी चौहान के स्वर्गवास पर हार्दिक शोक प्रकट करते हुए उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की है। प्रधान मन्त्री श्री नेमिचन्द्र जैन ने वक्तव्य में राष्ट्रपिता गांधी जी के स्वर्गवास के उपरान्त इनके देहान्त को दूसरा शोक तथा राष्ट्रीय जीवन के लिए विशेषकर गहरा धक्का बताया। —संवाददाता

जबलपुर में आयुर्वेद के प्रकाण्ड विद्वान् प० रामदयालुजी शास्त्री त्रिपाठी के सभापतित्व में महाकोशल प्रान्तीय वैद्य-सम्मेल का द्वितीयाधिवेशन हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन मध्यप्रान्त और बरार के स्वास्थ्य-मन्त्री, माननीय, बारलिंगे ने किया। —मंदाप्रसाद मिश्र

प्रसिद्ध यात्राओं की कथा

प्रसिद्ध चीनी यात्री फाहियान से लेकर वर्तमान युग के एवरेस्ट की चोटी पर चढ़नेवाले साहसी वीरों तक की कथा इस पुस्तक में है। जिन यात्रियों ने प्राणों की बाजी लगाकर स्थल और जल के अज्ञात देशों में भ्रमण किया था और उनके परिश्रम से संसार का जो लाभ हुआ उसका रोचक वर्णन इस पुस्तक में पढ़िए। मूल्य ||।-)
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

श्वेतकुष्ठ की फकीरी बूटी

महात्माप्रदत्त इस बूटी से केवल ७ रोज में आधा और १५ रोज में पूर्ण आरोग्य होने की गारंटी, अगर आप नकली और कम कीमती दवा इस्तेमाल करके निराश हो गये हैं तो एक बार इस बूटी को भी इस्तेमाल कर इसके चमत्कारी गुणों से लाभ उठावें। बेफायदा साबित करने पर ५००) रु० इनाम अगर चाहें तो डेढ़ आने का टिकट भेजकर शर्तें लिखा लें। मूल्य ३) रुपये
पता—श्री शिवशक्ति आश्रम मुहल्ला—सालिमपुर अहरा पो०—कदमकुआं, पटना

शारीरिक उष्णता
के लिये
मशहूर अनुभूत इलाज
शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक
पर्लकाला
आज से ही शुरू किजिए
पर्ल कंपनी, राणीबाग, बम्बई २७

यु० पी० प्रतिनिधि दोसर एण्ड कम्पनी, बिरहना रोड, कानपुर।

भारतीय ग्रामों का राष्ट्रीयकरण

(पेज ८ का शेष)

करने लग गये हैं। "भारतीय सेंसर रिपोर्ट के प्रथम जिल्द के प्रथम खंड" से हमें ज्ञात होता है कि—"सन् १९२१ से १९३१ के भीतर दस वर्षों में बे-खेत मजदूरों की संख्या १,००० कृषकों पर २९१ से बढ़कर ४०७ हो गई; अर्थात् २,१६,७६,०००से बढ़कर ३,१५,००,००० हो गई और कृषकों की संख्या इसी काल में ७,५६,६५,०००से घटकर ६,११,८०,००० रह गई।"

कृषक अति दरिद्र होते गये

इन्हीं सब कारणों की वजह से आज देश के कृषक अति दरिद्र, हीन, अज्ञान तथा नंगे और भूखे हैं। 'डिगवी' लिखित—'संपन्न ब्रिटिश भारत' नामक पुस्तिका से विदित होता है कि देश की औसत वार्षिक आमदनी केवल १७६०४ आन है। धनिक-वर्ग की आमदनी की गुंजाइश रखने के पश्चात् उसने हिसाब लगाया था कि भारतीय किसान की औसत वार्षिक आमदनी केवल १२ शिलिंग या ९ रुपये हैं। उसने यह भी कहा—"इससे एक पेंस या तीन पैसा रोज का भी नहीं पड़ता। इस आमदनी को बराबर बराबर बांट दिया जाय तो उससे अच्छी तरह गुजर नहीं हो सकती। इससे तो पश्चिमी देशों की बड़ी पशुशालाओं के मवेशियों का भी काम नहीं चल सकता।"

आज का कृषक

तात्पर्य यह है कि इतने वर्षों की परतन्त्रता के अभिशापस्वरूप हमारे 'भारतीय आत्मा' की दयनीय दशा का हाल यदि—"भारतीय मेडिकल सर्विस के मेजर जनरल सर जान मेगा" के सन् १९३३ के आंकड़ों पर से उद्धृत करें तो निम्न प्रकार होगा। आप लिखते हैं—"भारतीय जन-संख्या के केवल ३९ फी सदी को पेट भर भोजन मिलता है, १६ करोड़ जनता (४१ प्रतिशत) आधापेट भोजन पर रहती है, ८ करोड़ को (२० प्रतिशत) तो निरन्तर भूखों रहना पड़ता है। ५ से १० करोड़ तक (१२॥ प्रतिशत से २५ प्रतिशत) मलेरिया के शिकार हैं, मलेरिया सहज में दूर की जा सकती है लेकिन भारत में मलेरिया का प्रकोप दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। १५० साल के ब्रिटिश शासन के बावजूद भी जनता अविद्या के घोर अंधकार में पड़ी है। वहम और अंध-विश्वास का ऐसा साम्राज्य अन्यत्र कहीं नहीं देखा गया। पांच साल के ऊपर के केवल १४६ प्रतिशत लोग साक्षर हैं जिनमें ऐसे लोगों की अधिक संख्या है जो कि फिर अपना हस्ताक्षर कर लेते हैं।

हमारी योजनाएं

उत्पादन में विकेन्द्रीयकरण तथा उपयोग में स्वदेशी हों। परन्तु इन सबके बावजूद भी अब देश स्वतन्त्र हो चुका है, इसलिए यह आवश्यक है कि आर्थिक क्रांति शीघ्रातिशीघ्र एक सुदृढ़ योजना के साथ की जाय जिससे कि सात लाख ग्रामों की सर्वांगीण उन्नति हो और वे सब इस प्रकार हों कि सारे ग्राम अपनी दिन-प्रतिदिन की आवश्यक वस्तुओं के लिए पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर हो जायें। यद्यपि सैकड़ों वर्षों की बुराई शीघ्र ही कुछ वर्षों में नहीं मिटाई जा सकती फिर भी यह तो निश्चित है कि 'एक सुदृढ़ आर्थिक पुनर्निर्माण योजना' की सहायता से ग्रामों की काफी उन्नति क्रमशः की जा सकती है। इसलिए ग्रामों को आत्मनिर्भर बनाने की ओर अग्रसर होने के लिए प्रथम कदम—'मौजावाड़ी बन्दोबस्त तथा ग्राम भूमि मिल्कियत' पद्धति को प्रचलित करने की ओर होना चाहिए जिससे जमींदार, ताल्लुकदार और मालगुजार इत्यादि 'बीचखोरों' का अन्त हो जावेगा। तात्पर्य यह है कि सर्वप्रथम 'जमीन का राष्ट्रीयकरण' करना होगा और धीरे-धीरे जमीन के राष्ट्रीयकरण के बाद 'ग्रामों' का 'राष्ट्रीयकरण' भी कर देना आवश्यक होगा। 'जमीन व ग्राम का राष्ट्रीयकरण' ही आर्थिक पुर्ननिर्माण की योजना को सुदृढ़ व ठोस रूप देकर देश की आर्थिक स्थिति में एक क्रांतिकारी परिवर्तन कर सकता है और प्रत्येक ग्राम को आत्मनिर्भर बना सकता है, क्योंकि उस योजना का आधार उत्पादन में विकेन्द्रीकरण तथा उपभोग में स्वदेशी होगा।

"ये हैं आनन्द मिश्र...

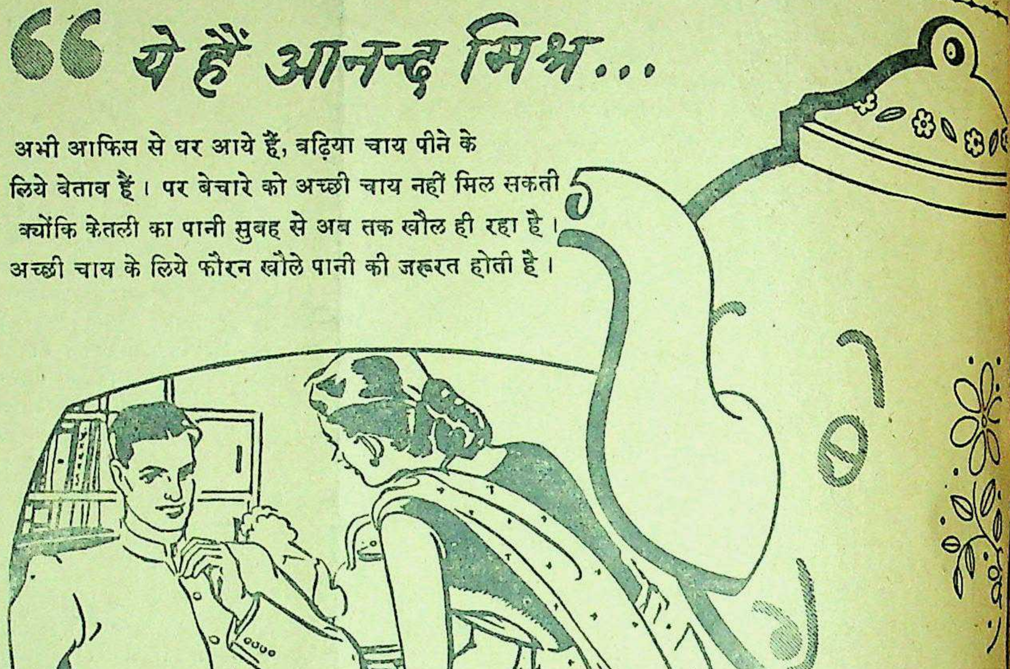

अभी आफिस से घर आये हैं, बढ़िया चाय पीने के लिये बेताव हैं। पर बेचारे को अच्छी चाय नहीं मिल सकती क्योंकि केतली का पानी सुबह से अब तक खौल ही रहा है। अच्छी चाय के लिये फौरन खौले पानी की जरूरत होती है।

खुशी और तरोताजगी हासिल करने के लिये करोड़ों व्यक्ति चाय पीते हैं। कितने अफसोस की बात है कि बहुत से चाय पीने वाले इतना भी नहीं जानते कि अच्छी चाय कैसी होती है या कैसे बनाई जाती है। अच्छी चाय बनाने में कोई विशेष खर्च या तकलीफ नहीं होती; सिर्फ पांच सरल नियम मानना काफी है। अपने पैसों की पूरी कीमत और चाय का पूरा स्वाद लेना हो तो इन नियमों को याद कर लीजिये और घर में उनका हमेशा पालन हो इसका ख्याल रखिये।

पांच सरल नियम

★

१. सिर्फ ताजा और फौरन खौला पानी लीजिये। २. चाय के बर्तन को पहले गर्म कर लीजिये। ३. हर व्यक्ति के लिये एक चम्मच और एक चम्मच बर्तन के लिये सूखी चाय डालिये। ४. तीन से पांच मिनट तक चाय को सीझने दीजिये। ५. दूध प्याले में मिलाइये, बर्तन में नहीं।

चाय-चर्चा नामक पुस्तिका अंगरेजी, हिन्दी, बंगला, उर्दू या तामिल किसी भी भाषा में कमिश्नर, इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड, १०१, नेताजी सुभाष रोड, पोष्ट बक्स २१७२, कलकत्ता से आवेदन कर मुफ्त मँगाई जा सकती है।

सबसे अच्छी

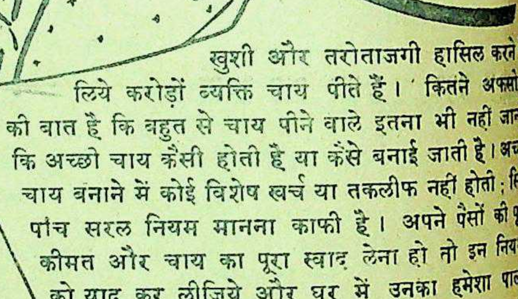

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

LIPTONS
WHITE LABEL
TEA
ONE POUND NETT
लिपटन
माने अच्छी चाय

हमारा रंग-मंच

'कल्पना'

भारतीय नृत्य के पूर्ण कलात्मक फिल्म

लेखक, श्री गोपाल मेहरोत्रा

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध नृत्य-सम्राट [illegible] ने अपनी महान "कल्पना" [illegible] प्रदर्शन किया है। वास्तव [illegible] जी की 'कल्पना' में [illegible] का सजीव चित्रण है, जिसके [illegible] में एक महान उद्देश्य छिपा [illegible] है, जिसे व्यक्त करते हुए श्री उदय-[illegible] जी ने स्वयं कहा है :—

'कल्पना' मेरे विचारों का एक [illegible] है, जिसका निर्माण मैं दो वर्ष [illegible] 'अल्मोड़ा-नृत्य-कला-केन्द्र' में कर [illegible] था। उसके पश्चात् अपने मित्रों [illegible] सहयोग एवं साहस के फल-स्वरूप [illegible] विश्वास पर दृढ़ प्रतिज्ञ हुआ कि [illegible] के भारतीय-चित्रपट केवल [illegible] को ही सहयोग प्रदान कर [illegible] जिसका कुप्रभाव हमारा भूत व [illegible] रहा है। उन कुरूपताओं से [illegible] उद्देश को आपके सम्मुख [illegible] मैंने अपना यह('कल्पना') [illegible] रूप प्रदर्शित किया है। [illegible] ध्येय मेरे-आपके विचारों [illegible] है। आज इस संघर्ष-[illegible] ही एक मुख्य वस्तु है, [illegible] इस विज्ञान-युग में,विश्व [illegible] अपने केन्द्र पर सदा-[illegible] स्थगित रह जाती है। [illegible] को प्रदर्शित करते हुए [illegible] इच्छा है कि जनता एवं [illegible] राष्ट्रीय सरकार हमें सहयोग [illegible] जिसके परिणाम स्वरूप हम [illegible] विश्व में एक ऐसा नवीन-[illegible] वातावरण उपस्थित करें, [illegible] सुरुचिपूर्ण, सुन्दर एवं महान [illegible] में पुनः आर्यावर्त की उन्नति-[illegible] जनता से करबद्ध प्रार्थना [illegible] कि वे मेरे विचारों को जनता [illegible] करने की सफल चेष्टा [illegible]

'कल्पना' उदयशंकर के वास्त-[illegible] का चित्रपट-रूपान्तर है। [illegible] परिस्थितियां एक चरित्रहीन [illegible] महान-नृत्यकार एवं प्रेमी का [illegible] करती है। उसके जीवन में [illegible] धनिक-युवती के प्रेमागमन-[illegible] जीवन-नैया डग-मग डोलने [illegible]। यही पूर्ण चित्र का लघुतम-[illegible] है।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि कथाकार ने भारतवर्ष की असाक्षर-उन्नतिशील जनता के सम्मुख अनेक उच्चतम एवं आवश्यक विचारों को प्रदर्शित करने की सफल चेष्टा की है।

उदाहरणार्थ :—(१) भारतमाता से सम्बन्धित दृश्य, (२) 'क्लब-हाउस' में आधुनिक परियों को 'कठपुतली' घोषित करना, (३) नारियों को विश्वविद्यालय की पदवियों को तिलांजलि देने की ललकार तथा उनके अन्धकारमय भविष्य की ओर संकेत करना, (४) निर्माताओं के कुविचार व अत्याचार, (५) भारत के अवनतिपूर्ण पुरुषों को उन्नत-मार्ग की ओर अग्रसर होने के हेतु रचनात्मक-पग, (६) भारतवर्ष की अन्न-स्थिति, इत्यादि। परन्तु प्रस्तुत चित्र में अस्पष्टता का भी विशेष स्थान रहा है। इतनी अधिक जटिल समस्याओं को एक ही चित्र में स्थान देने के ही कारण इस अस्पष्टता का आधिपत्य स्थापित हो सका है। श्री अमृतलाल नागर द्वारा लिखित कथोप-कथन साधारण श्रेणी का है। इसके अतिरिक्त चित्र में 'कलाकार-परिचय' तथा 'समाप्त' को विदेशी भाषा 'अँगरेजी' में प्रदर्शित किया गया है, जिसस हिन्दी एवं हिन्दी की वास्तविक सेवा का ज्वलन्त प्रमाण प्राप्त होता है। श्री सुमित्रानन्दन पन्त द्वारा लिखित गीत प्रथम श्रेणी के हैं। भाषा, स्थल-सम्बन्धित होने के कारण चित्र की लोकप्रियता में चार चांद लग गये हैं। संगीत मौखिक न होने पर भी श्री शिराली जी ने सफलता प्राप्त की है। सम्पादन, दोषपूर्ण हुआ है। उदाहरण-स्वरूप—नीच-पूंजीपतियों के द्रव्यों द्वारा "कला—केन्द्र' की स्थापना तथा 'मैक्रोफोन' पर उनकी नामावलियों की घोषणा। रंग-मंच आश्चर्यजनक तथा वेषभूषा-परिवर्तन उत्तम श्रेणी के हैं। ध्वनि-आलेखन निर्दोष तथा 'मेक-अप' स्वाभाविक हुआ है। दृश्य देखने योग्य हैं। शिल्पी का कार्य अत्यधिक सराहनीय है। यद्यपि समस्त नृत्य कलामय है, परन्तुं प्रचलित। चित्रालेखन न्यूनाधिक श्रेणी का है।

भारतीय नृत्य बड़े सुन्दर हैं। आमला ने उमा का अभिनय-प्रदर्शन सुतोषजनक है। आपके द्वारा प्रदर्शित नृत्य प्रशंसनीय हैं। उदयन की भूमिका में दिग्दर्शक श्री उदयशंकर ने स्वयं बड़ा सुन्दर अभिनय किया है।

यद्यपि नृत्यकार श्री उदयशंकर जी ने अपनी अनुपम-कलाओं को प्रदर्शित करने की सफल चेष्टा की है, परन्तु मेरे हृदय में कुछ संदेहात्मक प्रश्न उपथित हैं, जिन्हें मैं पूछना चाहता हूँ :—

क्या अश्लीलता एवं कामुकता ही कला का एकमात्र ध्येय है? क्या धन के हेतु नर्तकी वेश्या हो जाय? क्या भारतीय-संस्कृति, 'हल' के स्थान पर पर विदेशी 'टैक्टरों' को उच्चता प्रदान करना तथा लज्जाभूषण त्याग कर नारी का पुरुषों के साथ 'होड़' लेने की दृश्टि से 'कल्पना' की ललकार भारत की वर्तमान-स्थिति पर एक अमिट तमाचा नहीं है? क्या अपने उद्देश्यों पर अटल न रहना ही मानव धर्म है?

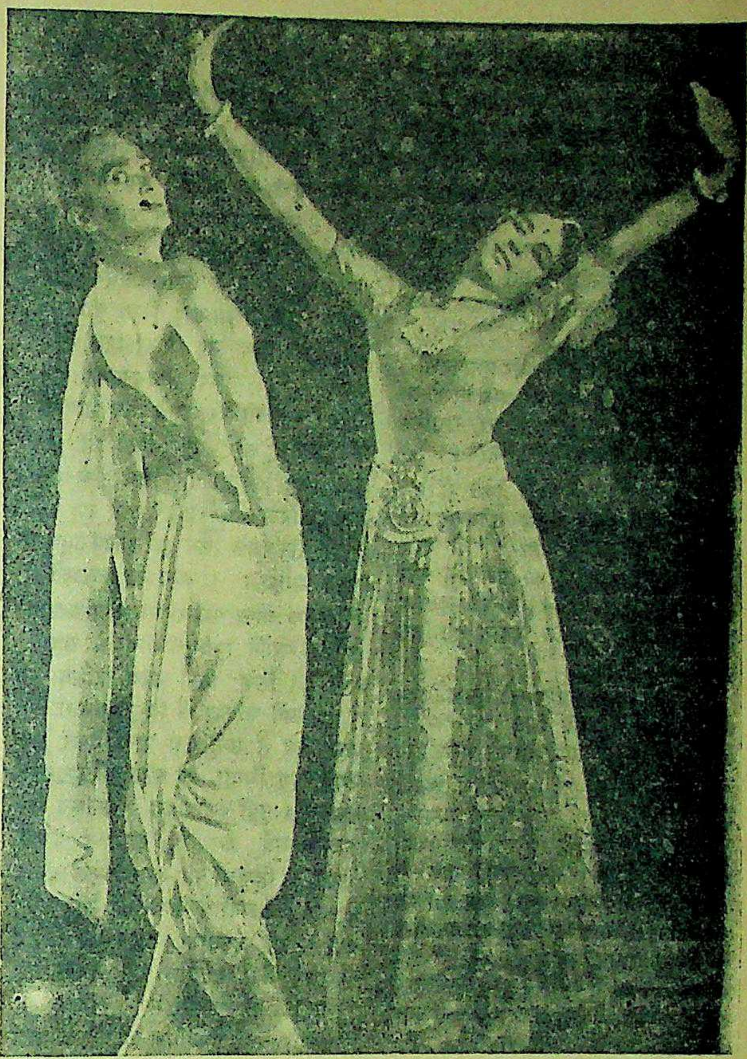

'कल्पना' फिल्म में प्रसिद्ध कलाकार उदयशंकर और अमला देवी।

"वर्तमान-युग के चित्रपट केवल भ्रष्टाचार का ही प्रचार कर रहे हैं, जिसका दोषी हमारा सेन्सर-बोर्ड भी है। यह कितने दुख की बात है जब कि अन्य देशों के निर्माता चित्रों का निर्माण करते समय अपने देश की उन्नति का ध्यान रखते हैं, परन्तु हमारे देश में इसका पूर्णतया उल्टा। वास्तव में इन व्यवसायी चल-चित्रों ने भारतवर्ष के जाज्वल्यमान-इतिहास पर एक ऐसा असहनीय कुठाराघात किया है, जो सदैव शोक के साथ स्मरण किया जावेगा। यदि एक-एक सिनेमा-गृहों के स्थान पर एक एक वैश्यालय भी होता तो भारतीय-संस्कृति एवं इतिहास का आज इतना ह्रास तथा विध्वंस न होता, जितना कि इन भारतीय-पाखण्डी दिग्दर्शकों एवं निर्माताओं की कृतियों द्वारा हुआ है। इसका मुख्य कारण—'उनमें ऐक्य-भावना का लेशमात्र न होना तथा व्यवसायिक-प्रवृतियां है।"

(—विश्व-वन्द्य-बापू तथा अन्य नेता गण)

मैं श्री उदयशंकर जी से यह विनीत प्रार्थना करूँगा कि वे भारतीय-छायालोक के उच्चतम दिग्दर्शकों, श्रीह्वी० शान्ताराम, पृथ्वीराज कपूर, एस० एफ० हसनैन, बी० एम० व्यास, विजय भट्ट, महबूब, नीतिन बोस, किशोर शाह, देवकी बोस, बाबूराव पेंढारकर—कथाकारों, में श्री फड़के, एम० जी० दुबे, कुरेशीसाहब तथा अन्य साहित्यिक उच्चकोटि के सुरुचिपूर्ण गीतकारों, संवाद-लेखकों, संगीतज्ञों, चित्रलेखकों एवं नृत्यकारों की एक समिति स्थापित कर राष्ट्रोत्थान की ओर अपना रचनात्मक पग उठावें। इस ऐक्य-पथ पर अटल रहकर देश को सशक्त बनाने से अच्छी श्रद्धांजलि, बापू के प्रति, भारतीय छायालोक कदापि भी नही अर्पित कर सकता। आशा है वे भारतीय-'सेन्सर-बोर्डों' की ओर भी अपना विशेष ध्यान आकृष्ट करेंगे तथा उन्हें मेरा प्रस्ताव स्वीकार होगा।

'कल्पना' फिल्म में अमला देवी।

२०॥) में ज्वेलवाली रिस्टवाच

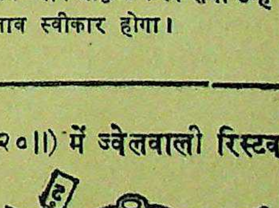

स्वीसमेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्ष की गारएटी

गोल या स्क्वायर सेप......२०॥)

" " सुपिरियर २५)

फ्लाट सेप क्रोमियम केश... ३०)

फ्लाट सेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारएटी...५५)

फ्लाट सेप १५ ज्वेल क्रोम केश ३८)

फ्लाट सेप १५ „ रोल्ड गोल्ड ७५)

रेक्टेंगुलर कर्भ या टोनो सेप क्रोमियम केस ४२), सुपिरियर ४५) रोल्ड गोल्ड ६०),रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेलयुक्त ६०) अलार्म टाइम पीस कीमत १८), २२) बीग साइज २५) पोस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेने से माफ।

एच० डेभिड एराड कम्पनी (D.A.)

पो० बक्स नम्बर-११४२४, कलकत्ता

(जपे ५ का शेष)

(१०) जमींदारी का हर रूप में और इसी के समान दूसरी व्यवस्थाओं को बिना मुआवजे खतम कर दिया जाय। जोतनेवालों को जमीन दी जाय। किसानों के सभी कर्ज रद्द किये जायें। खेती के लिए सरकार की ओर से कम सूद पर कर्ज दिया जाय।

(११) बिना मुआवजा दिये सभी मुख्य और बुनियादी उद्योगों और प्रधान राष्ट्रीय साधनों का राष्ट्रीयकरण किया जाय।

(१२) चोरबाजारी और मुनाफाखोरी को खतम करने के लिए जोरदार आन्दोलन छेड़ा जाय। पूरी और उचित राशनिंग और मूल्य नियंत्रण किया जाय।

(१३) काम के घंटे हफ्ते में ४० हों, जीवन-निर्वाह योग्य तनख्वाह की एक कम से कम दर तय कर दी जाय, सबको रोजगार पाने का हक हो, और सबकी नौकरी पक्की हो। सबको हड़ताल, पिकेटिंग और यूनियन बनाने का हक मिले।

(१४) हर नागरिक को मुफ्त शिक्षा दी जाय, और सबके लिए मुफ्त इलाज और स्वास्थ्य के आम साधन प्राप्त हों।

संक्षेप में इन १४ धाराओं में हमारी आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक व्यवस्था का एक क्रान्तिकारी खाका पेश किया गया है। कांग्रेस समाजवादी दल के अतिरिक्त श्री एम० एन० राय का दल तथा श्री शरत् बोस का नया दल इस मोर्चे से अलग रहा। ऊपर गिनाई हुई १४ धाराएं इन दलों के लिए एक चुनौती के रूप में हैं, और वे यह बतलावें कि वे इनमें से किस धारा से सहमत नहीं हैं।

इस सम्मेलन के अवसर पर स्वामी सहजानन्द ने सभापति की हैसियत से जैसा सुन्दर कार्य किया, सर्वथा प्रशंसनीय है। पर साथ ही सोमनाथ लाहिड़ी, राजदेवसिंह, यमुना कार्यी, शीलभद्र याजी, मथुराप्रसाद मिश्र, साधन गुप्ता, टी० परमानन्द, युगल बाबू, श्रीमती रामदुलारीसिंह, ओंकारनाथ शास्त्री, सुशील भट्टाचार्य, केशव शर्मा आदि के प्रयत्न भी कम सराहनीय नहीं थे। इनमें से एक-एक व्यक्ति भारत के क्रान्तिकारी तथा मजदूर किसान के इतिहास में तपे हुए हैं। ऐसे लोगों के सहयोग से जो मोर्चा बना वह देश की आम जनता के हक में हितकर साबित होगा इसमें सन्देह नहीं। मुझे यह देखकर तथा सुनकर बहुत खुशी हुई कि ये सभी क्रान्तिकारी नेता संयुक्त मोर्चे के लिए लालायित थे।

इन सोलह दलों में कम्युनिस्ट पार्टी एक बहुत बड़ा दल है। नेताजी का फार्वर्ड ब्लाक भी इस मोर्चे में शामिल है। सोशलिस्ट पार्टी आफ इंडिया जिसके मंत्री श्री राजदेवसिंह हैं, कई प्रान्तों में फैला हुआ दल है। इसी प्रकार हमारे मित्र श्री जोगेश चटर्जी के नेतृत्व में चलनेवाला क्रान्तिकारी समाजवादी दल एक मुख्य दल है श्री ओंकारनाथ शास्त्री स्वयं एक पुराने योद्धा हैं और उनका दल भी इसमें शामिल था। श्री साधन गुप्ता, टी० परमानन्द, युगल बाबू, बहुत पुराने देशसेवक हैं। आशा है कि इन लोगों के नेतृत्व में जो मोर्चा बना, उसमें शामिल होने के लिए कांग्रेस समाजवादी दल तथा अन्य दो दल भी बाध्य होंगे, और इस प्रकार यह मोर्चा पूर्णांग हो जायगा। अभी हमारी क्रान्ति अधूरी है, हमारे सिर पर फासिस्टवाद, पूंजीवाद और साम्प्रदायिकता का भूत सवार है। आशा है यह मोर्चा अपनी सम्मिलित चेष्टा से उन्हें दूर कर वास्तविक स्वतन्त्रता प्राप्त कर सकेगा।

(पेज ६ का शेष)

आबादी भी लगभग इतनी ही है: अतः आसाम की भांति पूर्वी पंजाब के पंजाबी जिले भी पृथक् प्रान्त का निर्माण कर सकते हैं। पड़ोस की सिख रियासतें यदि इसमें शामिल कर ली जायें तो इस नवीन प्रान्त की आबादी एक करोड़ हो जाती है जो कि एक स्वतन्त्र प्रान्त के लिए पर्याप्त होनी चाहिए। इस नवीन प्रान्त में भाषा का संघर्ष न होगा, संघर्ष होगा केवल हिन्दू व सिख का; किन्तु सीमावर्ती होने के कारण यह पारस्परिक संघर्ष हानिकर न होकर लाभकारी होगा। ऐसा हम मानते हैं। इससे सिख भावनाएँ पूर्ण होती हैं और हिन्दू-हितों को कोई हानि नहीं होती। सिख स्वेच्छया हमारे द्वारपाल बनें हमारे लिए यह बड़ी बात है और इसके लिये हमें उनका सहायक होना चाहिए। कुछ लोग यह समझते हैं कि पृथक् प्रान्त पाकर सिख पाकिस्तान से मिल जायेंगे. हम ऐसे लोगों से सहमत नहीं हैं। सिख लोग आज द्विविधा में हैं, वे अपने भविष्य के लिए चिन्तित हैं। अपने देश में उन्हें एक प्रान्त देकर हम उनकी इस चिन्ता को सहज में दूर कर सकते हैं। पूर्वी पंजाब का विभाजन इस का ही मूर्त रूप है, इससे न केवल सिखों व हिन्दुओं की समस्या हल होती है अपितु पंजाबी व हिन्दी की भी; फिर क्यों न इसे अपनाया जाये। इस प्रकार स्पष्ट है कि वर्तमान पूर्वी पंजाब का विभाजन ही हमारे लिए श्रेयस्कर है और वही हमारी एकाधिक कठिन समस्याओं का हल भी है। अतः इसे अपनाकर ही देश अपनी पश्चिमी सीमा से निश्चिन्त हो सकता है।

थोड़ी प्रतियाँ बची हैं। शीघ्रता कीजिए
वार्षिक बालसखा १९४७
इसकी छपाई कई रंगों में हुई है। चित्रों की भरमार है। लेख, कविताएं और कहानियाँ अनुपम हैं। जिल्द सजीली, आकर्षक और बालकों के पसन्द की है। ऐसा कौन बालक होगा जो इस अंक को पाकर आदि से अन्त तक पढ़े बिना शान्त रहे। ३०० पृष्ठों के इस अंक का रियायती मूल्य २।) शीघ्रता कीजिए।
मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

श्री सोहनलाल द्विवेदी
लिखित
काव्य कृतियों
के
नवीन संस्करण

भैरवी
गांधी युग का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। महामना
मालवीयजी के शब्दों में 'ऐसी कविता का
प्रचार देश के एक कोने से लेकर दूसरे कोने
तक होना चाहिए।' मूल्य २॥≡)

वासवदत्ता
बाबू मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं 'इस रचना से
मैं बहुत प्रभावित हुआ।' स्वच्छन्दतापूर्वक जिस
प्रौढ़ता की ओर द्विवेदीजी अग्रसर हो रहे हैं, जान
पड़ता है, स्वयं वह भी उन्हें वरण करने के
लिए आतुर हो रही है। 'वासवदत्ता' के प्रकाशन ने
हिन्दी-साहित्य में एक नई क्रान्ति उत्पन्न कर दी
है। यह स्वयं पढ़कर निर्णय कीजिए। मूल्य

कुणाल
महापंडित राहुल सांकृत्यायन की सम्मति—
अशोक, तिष्यरक्षिता और कुणाल खास
से—'कुणाल' के चरित्र-चित्रण में कवि ने
कमाल किया है। शब्द-सौकुमार्य और भावा
के साथ ही नपे तुले शब्दों के प्रयोग ने काव्य
बहुत ऊँचा उठाया है। विशेष संस्करण मूल्य

पूजागीत
राष्ट्रीय चेतना को काव्य का सच्चा स्वरूप
के लिए द्विवेदी जी को प्रचुर सम्मान
लोकप्रियता प्राप्त हुई है। ये पूजा-गीत कवि
गौरव के अनुरूप ही हैं। मूल्य २)

विषपान
सुप्रसिद्ध पौराणिक कथा का सरल तथा
खंड-काव्य है। भाषा का प्रवाह, प्रसं
तथा कथा के मार्मिक घटना-क्रम का
इसे बड़ा ही हृदयग्राही बना दिया है। मूल्य १)

झरना
शिशुभारती
बाँसुरी
द्विवेदीजी पहले बालकों के कवि हैं पीछे
के। पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा
सम्पूर्णानन्दजी ने इन कविताओं की
प्रशंसा की है। 'अमृत बाज़ार पत्रिका
सम्मति में—जिस प्रकार की शिक्षा
को देने के लिए हमारे नेता वर्षों से प्रय
रहे हैं, इन पुस्तकों में उसी प्रकार का साहि
प्रत्येक पुस्तक में कई रङ्गीन तथा अनेक
चित्र हैं। प्रत्येक पुस्तक का मूल्य १)

पूरे सेट का मूल्य
१२ रु०

पता—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०,

बा—लेखक राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०। इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीवन में मधु बरसाने की पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन [illegible] रस-सिक्त बनाइए। मूल्य १।-) एक रुपया पांच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

१९४८ में क्या होनेवाला है?

दि आप १९४८ में होनेवाली अच्छी व बुरी घटनाएँ समय से पूर्व ना चाहते हैं तो आज ही केवल एक पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता र किसी फूल का नाम लिखकर भेज दें, बस फिर हम ज्योतिष-विद्या के से आपके आनेवाले १२ मास का हानि-लाभ, किस व्यापार में होगा, किस साधन से धन प्राप्त होगा, रोजगार कब मिलेगा, वेतन-, परीक्षा में सफलता अर्थात कार्ड की तारीख से लेकर एक वर्ष तक वाली कुल बातों का संक्षेप अर्थात् मासिक वर्षफल बनाकर केवल वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाक-व्यय अलग। बुरे ग्रहों की शांति य भी लिखा जायगा—जिससे आनेवाली कठिनाइयों को दूर जा सके।

श्री स्वामी योगीराज ज्योतिष आश्रम, (D.D.A.)
फगवाड़ा (कपूरथला स्टेट)

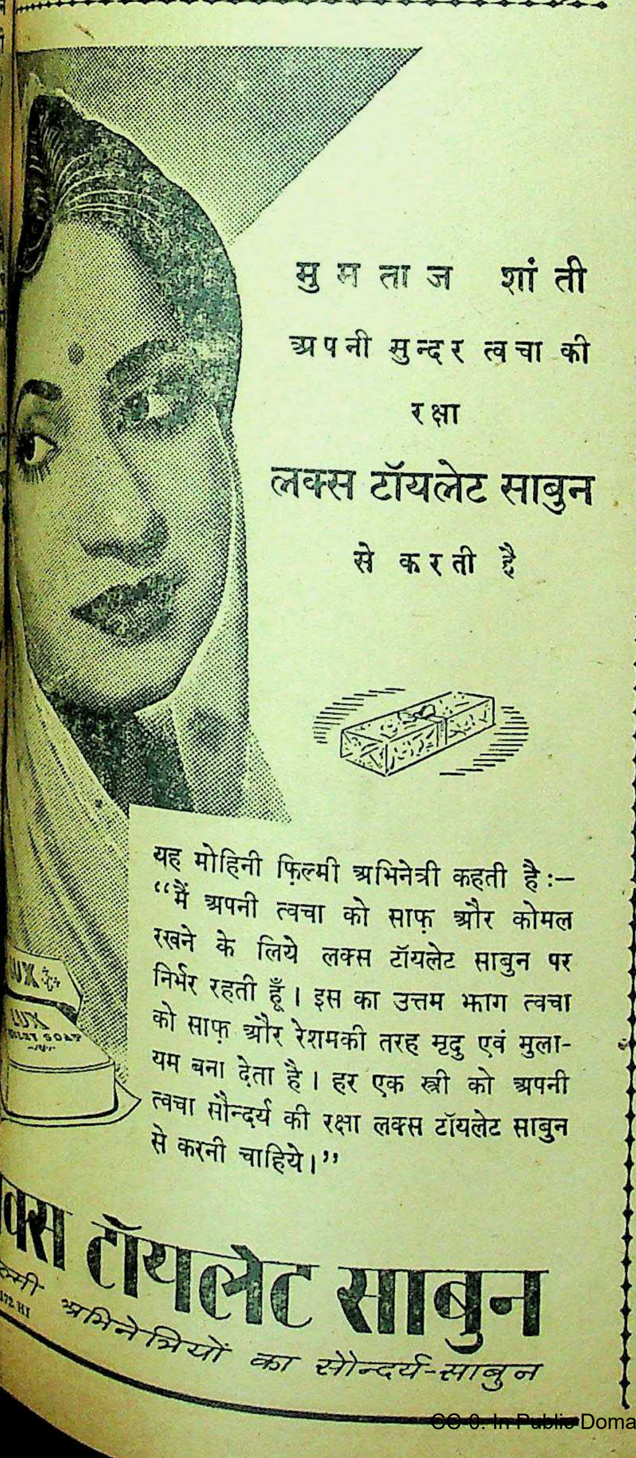

मुमताज शांती
अपनी सुन्दर त्वचा की
रक्षा
लक्स टॉयलेट साबुन
से करती है

यह मोहिनी फ़िल्मी अभिनेत्री कहती है :—
"मैं अपनी त्वचा को साफ़ और कोमल रखने के लिये लक्स टॉयलेट साबुन पर निर्भर रहती हूँ। इस का उत्तम झाग त्वचा को साफ़ और रेशमकी तरह मृदु एवं मुलायम बना देता है। हर एक स्त्री को अपनी त्वचा सौन्दर्य की रक्षा लक्स टॉयलेट साबुन से करनी चाहिये।"

क्स टॉयलेट साबुन
ल्मी अभिनेत्रियों का सौन्दर्य-साबुन

जब जिसने देखा, मुग्ध हो गया

मंजरी

श्रेष्ठ कथाकारों की सरस कहानियाँ और कथा-साहित्य पर गम्भीर तथा आलोचनात्मक लेख आकर्षक मुद्रण-विन्यास के साथ प्रस्तुत करनेवाली 'मंजरी' सांस्कृतिक मनोरंजन की एकमात्र कहानी-पत्रिका है।

एक आलोचना

'मनोरंजन' [दिल्ली, मार्च १९४८]—हिन्दी के कहानी-मासिकों की प्रतिदिन बढ़ती भीड़ में यह सर्वाङ्ग सुन्दर, चित्रों से अलंकृत नया पत्र विशिष्टता लेकर अवतरित हुआ है। इसके पहले दो अंक हमारे सामने हैं, जो संपादक की सुरुचि और श्रम के परिचायक हैं। कहानियाँ इस प्रकार के अन्य पत्रों की अपेक्षा निश्चय ही ऊँचे स्तर की तथा सुरुचिपूर्ण हैं। कथा-साहित्य-सम्बन्धी गम्भीर व आलोचनात्मक लेखों और टिप्पणियों, नवीन कथा-साहित्य की समीक्षा और लेखकों के परिचय के स्तम्भों ने पत्र की उपयोगिता को और भी बढ़ा दिया है।

कथा-साहित्य की दृष्टि से इतना सुन्दर, मनोरंजक और उपयोगी पत्र निकालने के लिए सम्पादक और प्रकाशक वस्तुतः बधाई के पात्र हैं।

× × ×

एक सम्मति

प्रोफ़ेसर 'अंचल', जबलपुर—आज जो कहानी-मासिक निकल रहे हैं, उनमें 'मंजरी' का स्थान सबसे निराला है, यह असन्दिग्ध है। कहानियों का चुनाव, सम्पादन, तरतीब और इतर स्तम्भ-नियोजना सभी दृष्टियों से आपका कौशल और परिश्रम सराहनीय है।

केवल सस्ते मनोरंजन को सामने न रखकर—बिक्री के उद्देश्य से ऊपर उठकर आप सांस्कृतिक मनोरंजन और सामाजिक चेतना के प्रसार की दिशा में आगे बढ़े हैं। कथा-साहित्य के असली ध्येय को आपने सामने रक्खा है। मुझे विश्वास है, कहानी के शौकीन पाठक-पाठकाओं की रुचि के परिमार्जन और संस्कारयज्ञिता का श्रेय आपको मिलेगा। उच्च कोटि की साहित्यिक सौष्ठवपूर्ण सामग्री इतने सुन्दर मुद्रण-विन्यास के साथ आप दे रहे हैं कि कहानी की अन्य मासिक पत्रिकाएँ पीछे छूट चली हैं।

आज हिन्दी में जो कहानी-पत्रिकाएँ निकल रही हैं, उनमें से अधिकांश को पढ़ने की मेरी कभी इच्छा नहीं होती, पर आपकी पत्रिका इसका अपवाद है। आगे चलकर आपको कथा-साहित्य में एक नई रुचि के निर्माण का श्रेय मिलेगा।

× × ×

प्रतिमास 'मंजरी' पढ़कर आप भी अपना और अपने परिवार का सांस्कृतिक मनोरंजन कीजिए।

वर्षिक मूल्य ६) छः रुपये — **प्रति अङ्क आठ आने**

सम्पादक :
देवीदयाल चतुर्वेदी

प्रकाशक :
इंडियन प्रेस लि०, प्रयाग

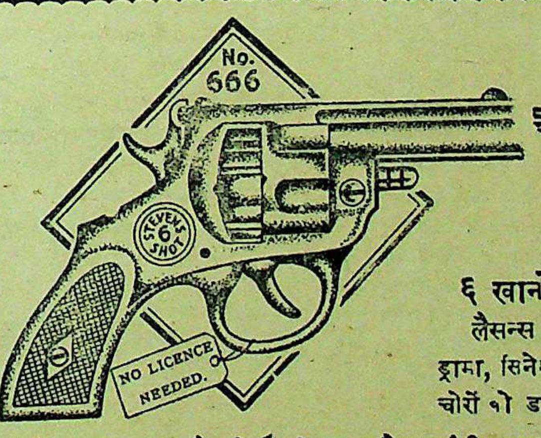

आत्मरक्षा
अमरीकन माडल
औटोमेटिक

६ खानोंवाली पिस्तौल
लैसन्स की ज़रूरत नहीं

ड्रामा, सिनेमा तथा खतरे के समय चोरों को डराने के लिए बड़े काम की है। दागने पर पिस्तौल के मुँह से आग और धुआँ निकलता है। असली रिवाल्वर की तरह मालूम होती है। साइज ७½" × ४" और वजन १५ औंस। मूल्य ८) एक साथ में एक दर्जन गोलियाँ (एलर्म डिस्क) मुफ़्त। अतिरिक्त एक दर्जन गोलियों का दाम २)। स्पेशल ताँबे की बनी ६६६ नं० की पिस्तौल का दाम १०) पोस्टेज और पैकिंग का अतिरिक्त १।≈) प्रत्येक आर्डर के साथ एक शीशी रवालर का तेल मुफ़्त। अपना पूरा पता साफ साफ लिखें। न पसन्द होने पर दाम वापस।

अमरीकन ट्रेडिङ्ग एजेन्सी, (D.D.A.) हल्का नं० २१, अमृतसर
American Trading (D.D.A.) Halka No. 21 Amritsar

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्य संजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५।।=), डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

सुव्यवस्थित बालों में आप रोबीले दिखेंगे
Vaseline POMADE
CHESEBROUGH MFG. CO. CONS'D

कोमलता से सुगंधित किया गया वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें सरस और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग से बालों … वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही और …

सभी दूकानों पर

Copyright:

२००० रु० इनाम !

NOW YOU CAN LAUGH AT THE CALENDAR!
REWARD Rs.1000

मासिक-धर्म एक दिन में जारी !

मैन्सीली पिल्ज़ :—एक दिन के अन्दर ही कितने समय के रुके हुए मासिक-धर्म को जारी कर देती है। कीमत ५) रु०

मैन्सीली स्पैशल पिल्ज़ :—जो कि फौरन जारी करके मासिक-धर्म को बिलकुल आसानी से साफ कर देती है। कीमत ११।।) रु०। याद रखो, गर्भवती इसे सेवन न करें क्योंकि यह बच्चेदानी को बिलकुल साफ कर देती है। २०००) रु० इनाम। जो मैन्सीली पिल्ज़ को नामुफीद साबित करे। पत्र-व्यवहार गुप्त रखा जाता है।

लेडी डाक्टर असली दवाखाना।
(D.D.A. हल्का नं० २१, अमृतसर।

५००) रुपये पुरस्कार

एक आश्चर्यमय आविष्कार

जादू की अँगूठी

यह अँगूठी जादू और मेस्मेरिज्म की शक्ति की सहायता से तैयार की गई है। वह आश्चर्य के काम करती है। जो कोई इस अँगूठी को पहनेगा, वह किसी भी उद्देश्य में वह कितना ही कठिन और दुःसाध्य हो, सफल होगा यह आपकी सब प्रकार के संकटों या रोगों से रक्षा करेगी। ग्रहों का कोई बुरा प्रभाव नहीं हो सकता। इस अँगूठी का पहननेवाला किसी भी व्यक्ति (पुरुष या स्त्री) पर वह कितना ही कठोर हृदयवाला हो, अपना पूरा नियंत्रण रखेगा। यही नहीं, वह अत्यंत विनीत बन जायेगा और अनुपस्थिति से अपने को दुःखी अनुभव करेगा। आप प्रेम, मुकदमेबाजी और नौकरी में सफल होंगे और बहुत-सा धन प्राप्त करेंगे। संक्षेप में, अँगूठी शरीररक्षक का काम देगी। एक बार आजमाइए और ठीक पहली रात को इसके आश्चर्यमय परिणाम देखिए।

मूल्य एक अँगूठी २ रु०। तीन अँगूठी ५ रु०। पैकिंग और पोस्टेज अतिरिक्त।

श्री शंकर भण्डार
पोस्टबाक्स २४३, कानपुर

शरणार्थी-विभाग के मंत्री माननीय श्री के. सी. नियोगी लिखते हैं:—"मैं देश के सभी मिल-मालिकों, तथा सभी तरह के उद्योग-धन्धों के संचालकों से अनुरोध करता हूँ कि जब भी आप को कर्मचारियों या कारीगरों की आवश्यकता हो, तो अपने इलाके के रोज़गार-दफ़्तर को सूचित करें; और इस प्रकार सरकार के साथ सहयोग करके बेघरबार और पीड़ित देशवासियों (शरणार्थियों) के फिर से बसने में सहायता और सुविधा प्रदान करें।"

शरणार्थियों को रोजगार दिलाने में सरकार के साथ सहयोग कीजिए

देश में बेकारी की समस्या पहले ही जटिल थी, किन्तु असंख्य शरणार्थियों के अपने अपने घरों से उखड़ जाने के कारण यह और भी कठिन हो गई है। हिन्द सरकार के श्रम विभाग द्वारा खोले गए रोज़गार-दफ़्तर (ऐम्प्लायमेण्ट ऐक्सचेंज) इस समस्या को यथाशक्ति हल करने और शरणार्थियों को नौकरी दिलाने में अग्रसर हो रहे हैं।

बेरोज़गार शरणार्थियों की सहायता करना सच्ची देश-

हिन्द सरकार के श्रम विभाग के अन्तर्गत रिसेटिलमेण्ट और ऐम्प्लायमेण्ट के प्रधान संचालन-केन्द्र द्वारा

सचित्र
साप्ताहिक
वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रति संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

२८ मार्च, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 28th March, 1948

सुप्रसिद्ध कलाकार उदयशंकर और अमलादेवी 'कल्पना' फिल्म में ।

सरा महायुद्ध आगे होगा ?
मेरिका की आज की राजनीति

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

काश्मीर के युद्ध में नवीन प्रकाश
महामालव प्रांत और उसकी राजधानी

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे **"वीर्य संजीवनसत"** ने मात पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ **"तिला मस्ताना"** की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५।।=), डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

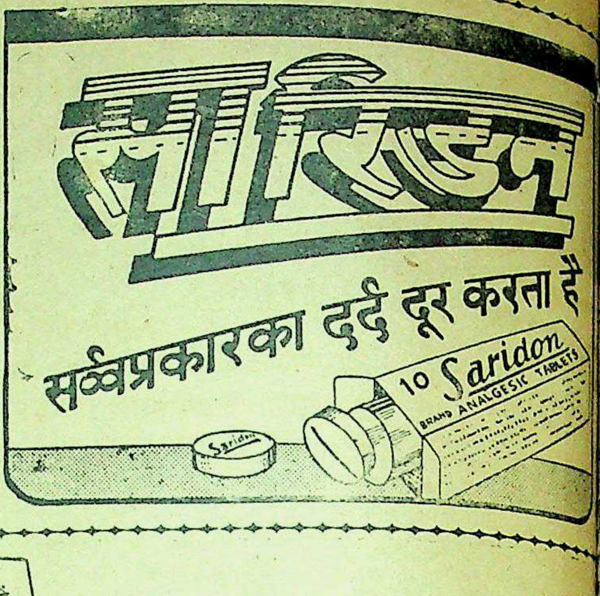

१६।।) में ज्वेलवाली रिस्टवाच

स्वीसमेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्ष की गारण्टी। गोल या स्क्वायर सेप १६।।) सुपिरियर २०), फ्लाट सेप क्रोमियम केस ३०), फ्लाट सेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५), फ्लाट सेप १५ ज्वेल क्रोम केस ३८), फ्लाट सेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड ७५)।

रेक्टेंगुलर, कर्व या टोनो सेप क्रोमियम केस ४२), सुपिरियर ४५), गोल्ड ६०), रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेलयुक्त ६०) अलार्म टाइम पीस कीमत १८), २२) बीग साइज २५) पोस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेने से माफ।

एच० डेभिर, एण्ड को० (S.P.)
पो० बक्स नम्बर ११४२४, कलकत्ता

५००) रुपये पुरस्कार

एक आश्चर्यमय आविष्कार

जादू की अँगूठी

यह अँगूठी जादू और मस्मेरिज्म की शक्ति की सहायता से तैयार की गई है। यह आश्चर्य के काम करती है। जो कोई इस अँगूठी को पहनेगा, वह किसी भी उद्देश्य में, वह कितना ही कठिन और दुःसाध्य हो, सफल होगा। यह आपकी सब प्रकार के संकटों या रोगों से रक्षा करेगी। ग्रहों का कोई बुरा प्रभाव नहीं हो सकता। इस अँगूठी का पहननेवाला किसी भी व्यक्ति (पुरुष या स्त्री) पर वह कितना ही कठोर हृदयवाला हो, अपना पूरा नियंत्रण रखेगा। यही नहीं, वह अत्यंत विनीत बन जायेगा और अनुपस्थिति से अपने को दुःखी अनुभव करेगा। आप प्रेम, मुकदमेबाजी और नौकरी में सफल होंगे और बहुत-सा धन प्राप्त करेंगे। संक्षेप में, अँगूठी शरीररक्षक का काम देगी। एक बार आजमाइए और ठीक पहली रात को इसके आश्चर्यमय परिणाम देखिए।

मूल्य एक अँगूठी २ रु०। तीन अँगूठी ५ रु०। पैकिंग और पोस्टेज अतिरिक्त।

श्री शंकर भण्डार
पोस्टबाक्स २४३, कानपूर

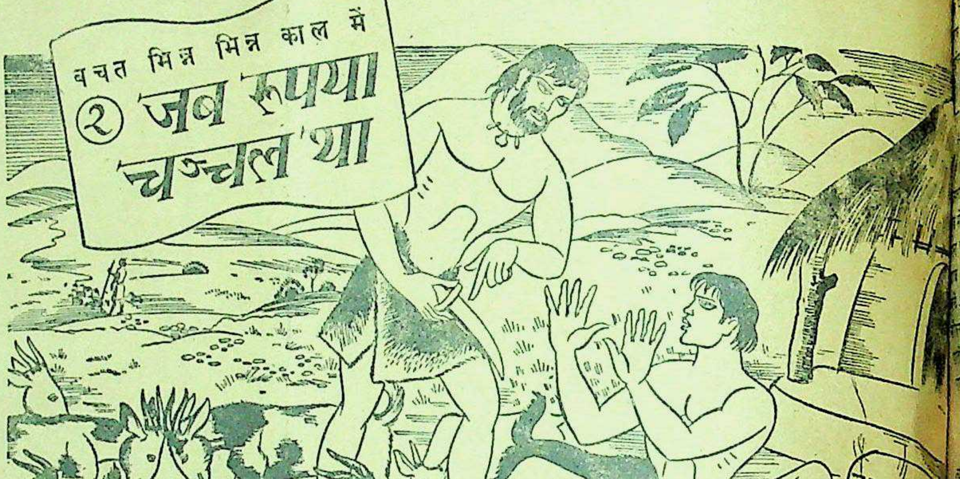
बचत भिन्न भिन्न काल में
② जब रुपया चञ्चल था

भूले हुये प्राचीन काल में एक अपूर्व बुद्धि वाले अनुद्योगी व्यक्ति ने ऐसी गणना की कठिनाइयों से तंग आकर — जैसे कि एक गधे के बदले कितने चावलों की आवश्यकता होगी – यह उपाय सोचा कि प्रत्येक वस्तु के मूल्य जिनिस के रूप में ही दिया जावे। आज कल भी पूर्वी अफ्रीका की कुछ जातियों में ऐसा व्यवहार है। यह जिनिस कदाचित् बकरी थी।

एक शिकारी-चाकू १० बकरियों के तुल्य समझा जाता था। ५० केले बकरी के एक बच्चे के बदले में सकते थे। और इसी प्रकार अन्य वस्तुएं भी मिल सकती थीं। किसी व्यक्ति के धन का अनुमान बकरियों की संख्या से किया जाता था। तनिक विचार कीजिए कि माल ख़रीदने के लिये अपनी बकरियां लिये फिरना कितना विचित्र और कठिन प्रतीत होता होगा। बचत भी बकरियों के रूप में ही होती थी। यह कोई लाभप्रद मद न थी। बकरियों के पालन पोषण पर भी व्यय करना पड़ता और चोरों, जंगली पशुओं रोगों के भय का तो कहना ही क्या! एक धनी रात भर में दरिद्र हो सकता था।

इस के विपरीत आज कल माल के ख़रीदने या बचत करने में कोई विशेष असुविधा नहीं होती परन्तु लाभप्रद मद का चुनाव अभी भी सहल नहीं। एक अच्छा व्यापारी जानता है कि आज कल की रुपया लगाने की सर्वोत्तम मद नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स हैं। ये पूर्णतया सुरक्षित हैं और अवधि की समाप्ति पर इन का मूल्य ५०% बढ़ जाता है – अर्थात १० रुपये १२ वर्ष के पश्चात १५) बन जाते हैं। ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता। अब सर्टिफ़िकेट्स १८ मास के पश्चात भी भुनाये जा सकते हैं (५ रु० का सर्टिफ़िकेट १ वर्ष के पश्चात भुनाया जा सकता है)। थोड़ी बचत वाले ।), ।।), और १) की कीमत के नेशनल सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं।

भविष्य के लिये बचाइ

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए

रुपया लगाने की सर्व-प्रि

ये डाकखानों [illegible] और सेविंग ब्यूरो से प्राप्त किये जा सक

देशदूत

१०, संख्या २९] [रविवार, २८ मार्च, १९४८

आजम मोहम्मद अली जिन्ना बाद अपनी मांद से बाहर हुए दिनों वह ढाका पहुँचे थे। एक सार्वजनिक सभा में सांप्रदायिक राग अलापा। की समझ में नहीं आता कि न बन गया तो फिर हिन्दु- अब क्या लेना देना है ? को ही लेकर जूझना उचित यह है कि जिन्ना साहब के सर दायिक भूत सवार हो चुका रनेवाला नहीं है। अँगरेजों को ऐसी ट्रेनिंग दी है कि होना असंभव है। नहीं बुझती है। जो मुसल- थे, बड़ी बड़ी आशाएँ भी हिन्दुस्तान वापस खाने का ठिकाना नहीं, तनख्वाहें तक नहीं मिल यह है कि मुसलिम वाह रे जिन्ना साहब !

* * *

समस्या अभी ज्यों की सुरक्षा परिषद् क्या तो वही जाने लेकिन भारत-सरकार कभी भी नहीं बुलायेगी जब कारी अपना आक्रमण और वहां शान्ति और स्थापना नहीं होती। इसके आगे बढ़े लेकिन पाकिस्तान तौर पर काश्मीर को की नीति का खात्मा यह सही है कि मिस्टर कनिंघम ऐसे गवर्नरों की स्थापना कठिन है, सरकार ने जो जिम्मेदारी की है, उसकी तिलांजलि सकती है। शेख अब्दुल्ला जम गये हैं, वह हटनेवाले लोहे को लोहा ही काट समस्या तो काश्मीर की है।

मरीकन राजदूत हेनरी ग्रेडी।

फिलिस्तीन में अमरीकन और अँगरेज खूब घोटाला कर रहे हैं। फिलिस्तीन को बांटकर साम्राज्यवादी शान्ति से बैठने पायेंगे, यह संदेहजनक है। अरब लोग जान की बाजी लगा रहे हैं और यहूदियों की साम्राज्यवादी सहायता कर रहे हैं, उसी प्रकार जिस प्रकार हिन्दुस्तान में अँगरेज पाकिस्तान की सहायता कर रहे हैं। एशिया में दो ज्वालामुखी साम्राज्यवादियों की कृपा से उभाड़े गये हैं। ईश्वर जाने इन ज्वालामुखियों से योरोप और एशिया के भविष्य पर क्या प्रभाव पड़ रहा है? अपने राम की समझ में आ रहा है कि आग लगाकर जमालो दूर खड़ी। अँगरेज हिन्दुस्तान में विभाजन करके खिसकन्ताम हो गये हैं और फिलिस्तीन में अमेरिकनों को आगे कर वह हलुआ खाने के फेर में ताक-झांक लगाये हैं। देखना है यह ताक-झांक कब तक जारी रहती है ?

* * *

कांग्रेस समाजवादी दल ने नासिक में यह निर्णय किया है कि कांग्रेस से उसका कोई वैधानिक संबंध न रहेगा। इसका मतलब यह है कि कौंसिलों, असेम्बलियों और विधान-परिषद् में जितने समाजवादी कांग्रेस टिकट पर सदस्य हैं, वह अपने पदों से त्यागपत्र देंगे। अपने राम की समझ में फैसला तो उचित ही हुआ है। श्री जयप्रकाशनारायण तो विशुद्ध समाजवादी नेता हैं, वह कहीं भी कांग्रेसी पद पर नहीं हैं। उनका रास्ता तो साफ है, किन्तु देखना है कि कितने समाजवादी कांग्रेस दल छोड़कर समाजवादी बनने का दावा कायम रखते हैं। और प्रातों का हाल तो अपने राम को नहीं मालूम, किंतु संयुक्तप्रान्त के अवसरवादी समाजवादी नासिक में होनेवाले निर्णय से चौंधिया गये हैं। भइ गति सांप छछूंदर केरी। अपने राम की राय में समाजवादियों के लिये यह समय नारद-मोह का है। देखना है संयुक्तप्रान्त के समाजवादियों का ऊँट किस करवट बैठता है ?

* * *

मार्च का महीना बजट का महीना है। जहां देखिये अगले महीनों के लिए बजट बनाया तथा स्वीकृत कराया जा रहा है। केन्द्र से लेकर प्रान्त-प्रान्त में बजट-रोग इस तरह व्यापक बन गया है जैसे प्लेग और ताऊन अपना रंग दिखाने में भिड़ा है। बजट ही बजट का आजकल धूम धड़क्का हो रहा है। मजा यह है कि सभी प्रान्तों के बजट में घाटा ही घाटा दिखाया जा रहा है, नये नये टैक्सों के लगाये जाने की तो धूम मच रही है! ठीक ही है, अब तो अपनी सरकारें हैं, कोई विदेशी सरकार तो नहीं है। फिर टैक्सों से घबराने की कौन सी बात है? अपने देश का टैक्स अपने ही देश में रहेगा। एक नहीं एक सौ एक टैक्स लगा दिये जायें। जैसे रेलवे की टिकट दर ड्योढ़ी हो गई है। अगर विदेशी शासन ने यह दुष्कर्म किया होता तो उसका नातका अब तक बन्द कर दिया जाता, किन्तु अब तो स्वराज्य है। स्वराज्य के लिए अब तक हम लोग मरे खपे, अब वह मिल गया है, इसलिए टैक्स नहीं दर टैक्स लगे, क्योंकि जनता स्वतंत्र हो गई है। इससे अधिक और क्या चाहिए ?

* * *

पंथिक अकाली दल अब कांग्रेस दल में सम्मिलित होना चाहता है। निर्णय तो बहुत अच्छा है, किंतु अक्ल जरा देर को आई। एक तरह से देखा जाय तो ठीक भी है, क्योंकि समाजवादियों के अलग हो जाने से वेकेंसी तो हो ही गई है, दाढ़ी और सिखावालों की यह कांग्रेसी पलटन अच्छी और खासी रहेगी।

* * *

शेख अब्दुल्ला का कहना है कि काश्मीर से आक्रमणकारी निकाल दिये जायें तब तो लोकमत संग्रह का वादा पूर्ण किया जायेगा। यदि आक्रमणकारी निकल ही जायेंगे तो डंडे के बल से होनेवाला मतसंग्रह कैसे होगा? पाकिस्तान के मुंह में करखा लग जायेगा तब !

पिछले दिनों ब्रिटेन और ईराक की संधि हुई है। इस चित्र में संधि-पत्र पर हस्ताक्षर होने के बाद ब्रिटिश वैदेशिक मंत्री मिस्टर बेविन भाषण दे रहे हैं। मिस्टर बेविन के बगल में ईराक प्रधान-मंत्री सैयद खनेहजाबर बैठे हुए दिखाई दे रहे हैं।

कैसी होली

लेखक, श्री सोहनलाल द्विवेदी एम० ए०

है लगी कलेजे में गोली, कैसा बसन्त, कैसी होली ?
हम खेल चुके हैं अभी फाग,
छूटे न खून के अभी दाग,
फिर, धधकाओ मत अभी आग !
रहने दो आज रंग रोली। कैसा बसन्त, कैसी होली ?

क्या और जलाना रहा शेष ?
हम जला न पाये रागद्वेष,
कर दिया भस्म गौरव अशेष,
हिंसा से रँग मां की चोली, कैसा बसन्त, कैसी होली ?

जिस देश राष्ट्र का राष्ट्र-पिता,
चढ़ चला अभी हो अग्नि-चिता,
वे कैसे जीवन रहे बिता ?
हो रही मौन कवि की बोली, कैसा बसन्त, कैसी होली ?

खेलो न फाग, गाओ न राग,
आंसू से पोंछो लगे दाग,
जिससे उजडा मां का सुहाग,
जिससे अपनी इज्जत धोली, कैसा बसन्त, कैसी होली ?

लाओ न अबीर और कुंकुम,
लाओ अन्तर मथ, अमृत तुम,
जन-जन में जगे स्नेह का क्रम,
तब हो बसन्त, तब ही होली, कैसा बसन्त, कैसी होली।

फ्रांस की वर्तमान राजनीति में मध्यम पथ का नेतृत्व करनेवाले लियोन ब्लम।

प्राचीन सांस्कृतिक राज्य नैपाल

भारत का इसका सम्बन्ध अनादि काल से है

लेखक, डाक्टर ईश्वरीप्रसाद एम० ए० डी० लिट्

(अध्यक्ष, राजनीति विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय)

भारत के उत्तर में नेपाल राज्य एक प्राचीन और सांस्कृतिक भूमि है। भारत से इसका राजनैतिक तथा पड़ोसी का संबन्ध अनादि काल से चला आ रहा है। नैपाल के महाराणाओं की परम्परा हिन्दू संस्कृति से सदा ही अनुकूल रही है। वर्तमान महाराणा श्री पद्मशमशेर जंग बहादुर बड़े ही लोकप्रिय शासक हैं। इस लेख में विद्वान् इतिहासकार ने महाराणा की विशेषताओं का वर्णन किया है। महाराणा आज-कल भारत के विभिन्न स्थानों का दौरा कर रहे हैं।

इस लेख के लेखक और सुप्रसिद्ध इतिहासकार डाक्टर ईश्वरीप्रसाद।

नैपाल देश की प्राचीन संस्कृति से कौन ऐसा हिन्दू है कि जो परिचित न हो। भारत का नैपाल के साथ सांस्कृतिक तथा राजनीतिक सम्बन्ध अनादिकाल से रहा है। नैपाल ही हिन्दू-जाति का अब तक एकमात्र स्वाधीन राज्य था। धर्म के नाते से भी भारत-नैपाल एक ही समझे जाते थे। काशी से नैपाल का प्राचीन सम्बन्ध चला आता है। हमारे विश्वविद्यालय ने प्रयाग के साथ नैपाल राज्य का सम्बन्ध स्थापित करने का श्रीगणेश किया है। श्री महाराज पद्मशमशेर ने एशियाई इतिहास तथा संस्कृति की शिक्षा एवं अध्ययन के लिए ६ हजार रुपया वार्षिक सहायता प्रदान की है। इसकी हमारे विश्वविद्यालय के चांसलर महोदय ने हीरक-जयंती के समय घोषणा की थी। यूनिवर्सिटी ने अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए महाराज को अन्य गण्यमान व्यक्तियों के साथ एल० एल० डी० की पदवी प्रदान की। श्रीमती सरोजिनी नायडू ने अपने भाषण में महाराज की कीर्ति का गुणगान किया और यह डिग्री उन्हें प्रदान की। महाराज उस समय विश्वविद्यालय के उपाधि-वितरण-सम्मेलन में उपस्थित न थे। उनके डाइरेक्टर जनरल मृगेन्द्र शमशेर तथा सभासदगण मौजूद थे। नैपाल के साथ हमारे विश्वविद्यालय का सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित हुआ। हमें आशा है कि यह सम्बन्ध भविष्य में और भी दृढ़ हो जायेगा। नैपाली विद्यार्थी हमारे विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने के लिए आयेंगे और हमारे अध्यापकों के पाण्डित्य से लाभ उठायेंगे।

महाराज पद्मशमशेर बड़े अनुभवी पुरुष हैं। आप महाराज भीम शमशेर के पुत्र हैं। अपने चाचा श्री युद्ध शमशेर के सन्यास लेने पर आप राजसिंहासनारूढ़ हुए। आपने राज्य में अनेक पदों पर कार्य किया है। कमांडिंग जनरल तथा प्रधान सेनापति के पद पर रहकर आपने अपने देश की अपूर्व सेवा की है। अकाल के समय आपने दिन-रात प्रजा के हित के लिए प्रयत्न किया, रुपया दिया, स्वयंसेवक एकत्र किये और राज्य की सभी शक्ति प्रजा की रक्षा में लगाई। महाराज पद्मशमशेर ने प्रथम विश्व-युद्ध में भी भाग लिया था और ब्रिटिश सरकार ने उन्हें अधिक उपाधियों से सुशोभित किया था। इन सेवाओं से प्रसन्न होकर महाराज युद्ध ने आपको अपना सिपहसालार बनाया। महाराज पद्मशमशेर सदा से प्रजा-वत्सल रहे हैं। आपके जीवन की सादगी, आपकी धर्मपरायणता, देश-भक्ति अनन्य हैं। धर्म में आपकी विशेष अभिरुचि है। महाराज श्री राम के अनन्य भक्त हैं। सदा रामायण का श्रवण करते हैं और भगवान् मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र के आदर्शों के अनुकूल आचरण करते हैं।

विद्या में आपकी विशेष अभिरुचि है। हिन्दू-जाति की प्राचीन सभ्यता यथा संस्कृति पर आपको बड़ा गर्व है। उसकी उन्नति के लिए सदा प्रयत्नशील रहते हैं। राजपद पर सुशोभित होते हुए भी दीन-दुखियों का सदा ध्यान रखते हैं और उनके कष्ट-निवारण का उपाय करते हैं। आप गांधी जी को अवतार समझते हैं। बहुत काल से खद्दर पहनते आये हैं और मनुष्यों तथा धनी सज्जनों को सादगी एवं मितव्ययता का उपदेश करते हैं। महाराज का जीवन भक्ति से ओतप्रोत है। बहुत-सा समय ईश्वर के ध्यान में व्यतीत होता है। राज के कार्यों की खबर रखते हैं और कठिन प्रश्नों पर गम्भीर विचार करने के बाद अपना फैसला देते हैं। आप सार्वजनिक स्वत्वों की अवहेलना नहीं करते। प्रजा को अधिकार देना चाहते हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए महाराज ने अभी वैधानिक सुधार की घोषणा की है। इसके द्वारा शासन-प्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तन होगा। प्रजा-द्वारा निर्वाचित सदस्य मंत्री हो सकेंगे। नैपाल राष्ट्र की रूप-रेखा ही बदल जायगी।

नैपाल महाराज ने प्रयाग विश्वविद्यालय में एशिया के इतिहास तथा संस्कृति की शिक्षा के लिए व्यवस्था की है। इस विषय के अध्यापक की नियुक्ति के लिए आपने ६०००) वार्षिक स्वीकृत किया है। आगामी वर्ष से विश्वविद्यालय में इस विषय का पठन-पाठन होगा। हमें आशा है कि विद्यार्थी पर्याप्त संख्या में इस विभाग में प्रवेश करेंगे और अपने ज्ञान द्वारा एशिया के देशों में परस्पर प्रेम तथा सहयोग स्थापित करेंगे।

नैपाल तथा भारत का घनिष्ट सम्बन्ध है। हमें आशा है कि यह सम्बन्ध दिन पर दिन दृढ़ होता जायगा। विश्वविद्यालय ने महाराज
कर एक सत्कार्य किया है
हमें वाइस चांसलर तथा
कृतज्ञ होना चाहिए।

नैपाल के वर्तमान महाराणा
शमशेर जंग बहादुर।

गीत

लेखक, प्रोफेसर शालिग्राम मिश्र एम० ए०

मैं पाकर वरदान तुम्हारा मौन रहूँ कैसे ?

हुई भोर से सांझ अभी तक तनिक दूर चल पाया,
तम की चूनर ओढ़ गगन से उतरी निशि की छाया,
कण-कण में छा गई, उदासी की बदली जैसे,
तब पाकर वरदान तुम्हारा मौन रहूँ कैसे ?

उमड़-घुमड़ कर गगन-छोर तक बादल का दल आया,
रस की बूंदें उमड़ पड़ी हैं, अंग-अंग सरसाया,
रोम-रोम छू गई लालसा की बिजली जैसे,
तब पाकर वरदान तुम्हारा मौन रहूँ कैसे ?

सांसों की गति में जीवन का एक रहस्य छिपाया,
तपने को ही मुझे मिली थी यह कंचन की काया,
पाकर किंचित् स्नेह, दीप की लौ मचली जैसे,
मैं पाकर वरदान तुम्हारा मौन रहूँ कैसे ?

हर मौसम में हर समय
सर्दी और खांसी के
SIROLIN
ROCHE
For COUGHS COLDS
निर्भरयोग्य औषधि
सिरोलीन "रोच"
सारे संसार में व्यवहार होता है

क्या तीसरा महायुद्ध होकर ही रहेगा

इ मी वर्ष क्या पुनः संसार रक्तरंजित होगा ?

लेखक, प्रोफेसर अवधविहारी पाण्डेय एम० ए०

(इतिहास-विभाग प्रयाग विश्वविद्यालय)

संसार की परिवर्तित घटनाओं तथा उथल-पुथल को देखते हुए राजनीतिज्ञ अभी से यह अनुमान करने लगे हैं कि संसारव्यापी तीसरा महायुद्ध आगामी १० वर्ष में होकर ही रहेगा। विद्वान् इतिहासकार ने राजनैतिक घटनाओं पर प्रकाश डालते हुए अपने अनुमान की पुष्टि की है। लेख सामयिक और जानकारी से पूर्ण है।

रूस के सर्वेसर्वा स्टेलिन कम्यू- वृद्धि की आशा में बैठे हैं।

रे महायुद्ध के समाप्त होने पर छोटे-मोटे युद्ध योरप, एशिया, तथा अमेरिका में इधर-उधर परंतु दूसरे महायुद्ध की आशंका तक नहीं के बराबर थी। १९३६ अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति दिन-प्रति- बिगड़ती गई और अंत में १९३९ में महायुद्ध प्रारंभ हो गया। इस और दूसरे महायुद्ध के बीच से अधिक का समय बीता। की संधि के पश्चात् जिस की स्थापना हुई थी उसने युद्ध समाज से बहिष्कृत करने का किया था। परंतु राष्ट्र- कर्णधारों की गतिविधि से हो गया था कि द्वितीय होगा अवश्य और उस उसे रोक सकने में शायद

महायुद्ध को समाप्त हुए अभी नहीं हुए और युद्धारम्भ अपराधी राष्ट्रों के साथ भी नहीं हो पाई; परंतु इस चल पड़ी है कि तीसरा अनिवार्य है और वह अपेक्षाकृत प्रारंभ होगा।

महायुद्ध की आशंका का क्या है? युद्ध के समाप्त होते और साम्यवादी शक्तियों विरोध शीघ्रता के साथ लगा। युद्ध-काल का पार- सहयोग, प्रतिस्पर्धा और ईर्ष्या होने लगा। पिछले युद्ध में प्रधान राष्ट्रों में से इटली, जापान, फ्रांस और इंगलैंड की घट गई है। अब केवल दो राष्ट्र रह गए हैं। वे हैं साम्य- और संयुक्तराष्ट्र अमेरिका लोकतंत्र।

अमेरिका और रूस में क्यों बढ़ रहा है? क्योंकि आदर्शों और उनकी नीतियों में विरोध है। संयुक्तराष्ट्र अमेरिका उद्देश्य संसार भर में चार स्वतंत्रताओं के आधार हुआ लोकतंत्र स्थापित करना लोकतंत्र में व्यक्ति को विचार संघ बनाने की स्वतंत्रता, से प्राप्त किये हुए धन को करने और व्यय करने की की स्वतंत्रता सुलभ होगी। में एक से अधिक राजनीतिक और उद्योग-धन्धों का संचा- की अपनी कार्यक्षमता पर छोड़ा राज्य इस बात की चेष्टा किसी को अन्न-वस्त्र-घर का संकट न रहे। अस्तु जिस समाज संयुक्तराष्ट्र करना चाहता है उसमें पूंजीपति और मज़दूर शोषित और शोषक, शक्तिवान् और दुर्बल बराबर बने रहेंगे। लोकतंत्र पर यदि किसी ओर से आघात हो तो संयुक्तराष्ट्र उसका निराकरण करने की भी चेष्टा करेगा वह इस समय संसार का सबसे धनी देश है और वह अपने आदर्श को स्वीकार करनेवाले राष्ट्रों को करोड़ों डालर का कर्ज़ देकर उन्हें अपनी आंतरिक स्थिति सुदृढ़ करने में मदद देना चाहता है और दे रहा है।

सोवियट रूस का आदर्श और कार्यक्रम बिलकुल भिन्न है। रूसी सरकार का यह निश्चित मत है कि बिना साम्यवादी समाज की स्थापना हुए न तो जनसाधारण को सुख शांति और उन्नति की समुचित सुविधा प्राप्त हो सकती है और न युद्ध का ही अन्त हो सकता है। वह प्रत्येक देश में एक कुशल, शिक्षित तथा सुसंगठित साम्यवादी कार्यकर्ताओं की प्रेरणा से और उनकी देख-रेख में किसानों तथा मजदूरों को संगठित करके उनकी अपनी आर्थिक स्वतंत्रता के आधारवाली लोक-तंत्रात्मक सरकार बनाना चाहता है। उस सरकार में जनता का रक्त चूसनेवाली जोंकों—पूंजीपतियों, ज़मीदारों, धर्म-पोपों—के लिए कोई स्थान नहीं होगा। देश की सारी संपत्ति और सारे साधन सारे समाज के समान सुख के लिए उपयोग में लाये जायँगे, वर्गीकरण का विनाश किया जायगा और शनैः शनैः एक वर्गहीन सुखी, समुन्नत संयत तथा संतुष्ट समाज का निर्माण किया जायगा जिसमें सभी मनुष्य बिना राज्य द्वारा मजबूर किये गये अपने कर्त्तव्यों का पालन करेंगे और हिल-मिलकर रहते हुए मनुष्योचित समाज की सृष्टि करेंगे। इस महान् आदर्श की प्राप्ति में यदि मुट्ठी भर पूंजीपतियों तथा उनके हिमायतियों का खून भी करना पड़े तो कोई अनुचित न होगा। उनके पिछले कुकर्मों का यह उचित दण्ड होगा। अंतकालीन युग में साम्यवादी दल के अतिरिक्त अन्य विघटायक दलों को क्रूरता से दबा दिया जाय तो भी कोई हर्ज नहीं है। इस आदर्श की प्राप्ति के लिए रूस के पास अमेरिका की-सी संपत्ति नहीं है। पिछले युद्ध में स्थल की लड़ाई का प्रधान भार सहते रहने के कारण उसे अपने हज़ारों नगर तथा ग्राम फिर से बनाने और कल-कारखाने चलाने के लिए ही पर्याप्त धन नहीं है। परंतु उसके पास धन से भी आकर्षक और उन्मादकारी अस्त्र है। वह है चिरशांति तथा सुख की विश्वासपूर्ण आशा। साम्यवाद के प्रचारक गरीबों और पीड़ितों को साम्ययाद के कल्पित स्वर्ग का स्वप्न दिखाकर उन्हें अपनी ओर खींच सकते हैं। परंतु १९१७ और १९४८ के बीच में रूस की अभूतपूर्व उन्नति को बढ़ा-चढ़ाकर बताकर वह उस कल्पना को मूर्तिमान करने में सहज ही सफल हो जाते हैं। वह पूंजीवाद की भर्त्सना करने में शोषितवर्ग का सहज ही विश्वास पा जाते हैं। इस कारण साम्यवाद का प्रभाव बराबर बढ़ता जा रहा है। पूंजीवादी देशों और सरकारों का इससे आतंकित होना स्वाभाविक है।

अमरीका के प्रेसिडेंट ट्रूमन संसार से कम्यूनिज्म को उखाड़ फेंकने में लगे हैं।

अस्तु सोवियट रूस और संयुक्तराष्ट्र अमेरिका में वास्तविक सहयोग के स्थान पर विषमता और विरोध का होना आश्चर्यजनक नहीं है। पिछले तीन वर्षों में ऐसी अनेक बातें हुई हैं जिनके कारण यह विरोध उत्तरोत्तर उग्र रूप धारण करता जा रहा है। उनमें से कुछ की ओर संकेत कर देना अनुचित न होगा। संयुक्तराष्ट्र ने अणुबम-विषयक ज्ञान रूस को बताना स्वीकार नहीं किया। चीन में चियांगकाई शेक द्वारा संचालित सरकार की नीति में अनेक दोष होने पर भी संयुक्तराष्ट्र साम्यवादी विरोध को दबाने में उसकी बराबर सहायता कर रहा है। फिर भी साम्यवादी सेनाओं की प्रगति हो रही है और चियांग की शक्ति घट रही है। अमेरिका का एक वर्ग अब यह जोर डाल रहा है कि उसे खुलकर चीन को सैनिक सहायता देनी चाहिए। रूस की दृष्टि में अमेरिका की नीति जन-आंदोलन की सहज प्रगति में बाधा डालकर अत्याचार, गरीबी, भूख और संकट को प्रोत्साहन दे रही है। उसे इससे क्षोभ है और वह साम्यवादियों को कम से कम नैतिक सहयोग तो दे ही रहा है।

फारस में तेल के संबंध में जो संधि हुई थी उसमें भी अमेरिका का दबाव पड़ने के कारण फारस की सरकार रूस को पूर्व-प्रस्तावित सुविधाएँ देने को तैयार नहीं है। दक्षिण-पूर्वी तथा मध्य योरप में बलगेरिया, रूमानिया, हंगेरी, यूगोस्लाविया, पोलैण्ड तथा चेकोस्लोवाकिया ने साम्यवादी नीति ग्रहण कर ली है और रूस के साथ न केवल घनिष्ठ संबंध स्थापित किया है, वरन् मार्शल-योजना पर विचार करने से भी इनकार कर दिया है। यूनान में भी साम्यवादी दल का प्रभाव काफी है। परंतु संयुक्तराष्ट्र ने उसे तथा तुर्की को सैनिक-सहायता तथा आर्थिक सहायता देने का निश्चय करके वहां साम्यवाद का प्रभाव बढ़ने में अड़ंगा लगा दिया है। चेकोस्लोवाकिया में गाटवैल्ड सरकार की स्थापना होते ही अमेरिका, फ्रांस तथा इंगलैण्ड में बड़ी खलबली मच गई है और इंगलैण्ड, फ्रांस, बेलजियम, हालैण्ड तथा लक्सेमबर्ग ने ५० वर्ष के लिए आर्थिक तथा सैनिक संधि कर ली है और न केवल आपस में घनिष्ठ आर्थिक सहयोग स्थापित करने का निश्चय किया है, वरन् किसी पर भी

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

गीत

लेखक, श्री नर्मदाप्रसाद खरे

सपनों का संसार न छीनो !
मुझसे मेरा प्यार न छीनो !
आंखों से तुम भले गिरा दो,
पूजा का अधिकार न छीनो !
जीवन-पथ में फूल बिछाये—
मरु में करुणा-घन बरसाये;
रूप-इन्दु के किरण-जाल में
उलझ गए दृग, सुलझ न पाये;
सदा रहे अनुराग-पूर्णिमा
शशि का सरस दुलार न छीनो !
नयन नयन से बोल चुके हैं,
छवि के बंधन खोल चुके हैं,
यौवन की मदिरा छलकाकर
जीवन में रस घोल चुके हैं,
सांसों को छू अमर बनाया,
प्राणों का अभिसार न छीनो !
कभी विहँसकर हृदय लगाया,
कभी आंसुओं से नहलाया,
हास-रुदन की धूपछांह में
संग-संग डोली है छाया,
जिस वीणा पर स्वर भर गाया,
उसकी मृदु झंकार न छीनो !
मन-मधुकर को गान दिया जब,
स्नेह-सुरभि का दान दिया जब,
मेरे मीत ! एक दिन तुमने
मुझको अपना मान लिया जब,
नयन-हिंडोलों में ही झूलो—
सपनों का संसार न छीनो !

काश्मीर का युद्ध किधर जा रहा है

एशियाई राष्ट्रों की स्वतंत्रता का अभी यह प्रथम चरण है

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

काश्मीर में युद्ध क्यों हो रहा है ? विरोधियो अर्थात् विदेशी राष्ट्रा तथा पाकिस्तान के क्या स्वार्थ है, जिनके कारण काश्मीर को युद्ध का केन्द्रस्थल बनाया जा रहा है, इन्हीं सब समस्याओं पर विचार करके इस लेख में काश्मीर की सामयिक समस्या पर प्रकाश डाला गया है। क्योंकि काश्मीर के युद्ध की समस्या केवल भारतीय ही नहीं, वरन् समस्त एशिया की स्वतंत्रता की समस्या है। लेख विचारणीय तथा पठनीय है

किसी देश के उत्थान में जितना परिश्रम करना पड़ता है उससे शतांश समय में ही उस देश के वैभव का सत्यानाश किया जा सकता है। अँगरेजों ने जिस भारतवर्ष को एकता के सूत्र में बांधकर एक संघ बनाने का प्रयत्न करीब दो सौ वर्षों में पूर्ण किया उसी को एक वर्ष के भीतर ही छिन्न-भिन्न कर दिया। काश्मीर में आन्तरिक कोई कलह न थी; परन्तु अँगरेजों की कूटनीति ने उस रम्य प्रदेश में एक ऐसा बवण्डर पैदा कर दिया जिससे उस प्रदेश ही को नहीं, वरन् संसार की आंखें चकाचौंध होने लगीं। संसार के सर्वोच्च न्यायालय (सेक्योरिटी कौंसिल) में भारतवर्ष ने जिस आदर्श और उद्देश्य के लिए काश्मीर का मामला पेश किया था वह पीछे पड़ गया। उसके स्थान पर पाकिस्तान के प्रतिनिधि श्री जफरुल्ला ने एक ऐसा प्रस्ताव उपस्थित कर दिया जिसकी कि कोई सम्भावना न थी। श्री गोपालस्वामी आयंगर जो कि भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, उन्होंने प्रस्ताव को असंगत सिद्ध करने का बहुत प्रयत्न किया; परन्तु ब्रिटेन के प्रतिनिधि श्री नोवेल बेकर के दिमाग में वही गूंज रहा था जिसे कि श्री जफरुल्ला ने पेश किया था।

सारा मूल प्रस्ताव पीछे पड़ गया। एक गौण प्रस्ताव जिसकी कि पेश होने की सम्भावना न थी सिर पर आ धमका। इसका मूल कारण क्या था—क्योंकि अँगरेजों ने जिस विष-बेलि को भारतवर्ष में लगाया था उसी को अमरीका में विश्व की सर्वोच्च न्यायालय में बैठकर सींचने में प्रयत्नशील हैं। भारत का गवर्नर जनरल मूक भाषा में पाकिस्तान को उसी प्रकार का समर्थन करता है जैसे कि दुर्योधन की सभा में बैठे हुए भीष्म पितामह और द्रोणाचार्य। काश्मीर के मामले पर भारतीय नेताओं (यहां तक कि महात्मा जी स्वयं) ने बहुत खुलकर वक्तव्य दिये हैं पर लार्ड माउण्ट बेटेन ने कोई ऐसी कारंवाई नहीं की कि जिसका प्रभाव अँगरेजों के ऊपर पड़ता। दूसरी ओर अँगरेजों की एक अलग कूटनीति चल रही है। वे समझते हैं कि पाकिस्तान को कितना ही बढ़ाया और मदद दिया जाये पर, वह एक पानी का बुलबुला रहेगा। अतः यह आवश्यक है कि भारत को भय दिखाकर अपनी ओर मोड़ लिया जाये, क्योंकि भारत की ओर से इँगलैण्ड अधिक शंकित रहता है इसका कारण यह है कि संयुक्तराष्ट्र-संघ में भारत सर्वदा इँगलैंड का विरोधी रहता रहा है। इसके अतिरिक्त भारत की विधान-परिषद् में भारतीय पूर्ण स्वाधीनता के प्रस्ताव ने अँगरेजों के कान खड़े कर दिये। उन्हें यह जरा भी विश्वास नहीं रह गया कि भारत हमारा साथी रहेगा। इसलिए किसी भी प्रकार से भारत को अपमानित और भयभीत किया जाये जिससे वह इँगलैंड के पक्ष में आ जाये।

काश्मीर के युद्ध का मानचित्र जिस समय संसार के सम्मुख उपस्थित किया जायगा उस समय यह स्पष्ट हो जायगा कि ब्रिटिश और अमरीकन कूटनीति ने किस प्रकार भारत और पाकिस्तान को सत्यानाश किया है। अभी कुछ ही दिन बीते एक अँगरेज पत्रकार की एक सनसनीपूर्ण खबर समाचारपत्रों में प्रकाशित हुई थी उसमें उसने यह दिखलाने का प्रयत्न किया था कि काश्मीर-युद्ध में पाकिस्तानी सिपाही लड़ते देखे गये हैं वे आधुनिक अस्त्र-शस्त्रों से लैस थे। युद्ध के अन्दर जो बन्दूकें और सामान आक्रमणकारी छोड़कर भागे हैं उन पर रूस के कारखानों की छाप है। अतः काश्मीर के रण में रूस छिपे रूप से पाकिस्तान का साथ दे रहा है।" इसके अतिरिक्त एक दूसरा समाचार अँगरेजों की ओर से कहा गया जिसमें यह कहा गया है कि रूस भारत महासागर में पहुँचने के लिए पाकिस्तान से लिखा-पढ़ी कर रहा है।" वह कराची के बन्दरगाह को उपयोग में लाना चाहता है। इसके अतिरिक्त दूसरी ओर एक और कूटनीति चल रही है उसमें विशेषतः अँगरेजों की चाल ही मालूम पड़ती है। अफगानिस्तान की सरकार ने कराची बन्दरगाह में अफगान सरकार को भी हस्तक्षेप करने की अनुमति की मांग की है। यह कहा जा सकता है कि अफगानिस्तान की बाह्य और अन्तर्नीति अधिकतर रूस से सम्बन्ध रखती है, फिर वह कराची में क्यों दखल देने लगा और पाकिस्तान सरकार अफगान सरकार का यह प्रस्ताव कैसे स्वीकार कर सकती है ? इस कूटनीति को बहुत कम समझ सके हैं ! सीमाप्रान्त के पाकिस्तान से अलग होने पर पठानिस्तान की मांग का अफगानिस्तान क्यों समर्थन कर रहा था—इसका भी एक रहस्य है ? अफगानिस्तान पठानिस्तान का हमदर्द नहीं था और न वह भारत की हमदर्दी में यह आवाज उठा रहा था। यदि वह भारत की हमदर्दी प्रकट करना चाहता था तो उसे अखण्ड भारत की आवाज उठानी थी अथवा काश्मीर में होते हुए कबायली आक्रमण को रोकने में काश्मीर और भारत की सहायता करने की घोषणा करनी चाहिए। परन्तु वह अब भी मौन है। उसने काश्मीर के ऊपर होते हुए आक्रमण के विरुद्ध आज तक एक भी शब्द नहीं कहा और न विदेशों में कबायलियों के विरुद्ध निन्दा के एक भी प्रस्ताव या भाषण किसी अफगान के मुख से सुनाई पड़ा है। फिर यह कैसे स्वीकार किया जा सकता है कि अफगान भारत और काश्मीर के हमदर्द हैं। यदि अफगानिस्तान रूस का साथी होता तो वह न तो कराची बन्दरगाह की मांग करता और न पठानिस्तान के अलग प्रान्त की। इन दोनों की मांग का स्पष्ट तात्पर्य है कि पाकिस्तान को निर्बल कर दिया जाय। उसकी शक्ति छिन्न-भिन्न कर दी जाय। इस कूटनीति में यदि किसी का हाथ हो सकता है तो वह अमरीकन और ब्रिटिश ही हो सकते हैं। दोनों देशों ने एशिया, योरप और अफ्रीका को अभी तक गुलाम बना रक्खा था अब जब कि इन महाद्वीपी देशों ने स्वतन्त्रता की सांस लेने को करवट बदली तो ये पूंजीवादी और साम्राज्यवादी दोनों राष्ट्रों ने आन्तरिक कलह पैदा करने की नीति ग्रहण की। भारत को विभाजित कर दिया, फिलिस्तीन के टुकड़े किये, मिस्र को (मिस्र और सूडान) भी बांट दिया। उधर पूर्व में हिन्देशिया और बर्मा में (प्रजातंत्र और शान स्टेट में) झगड़ा चल रहा है। इस प्रकार हम देखते हैं कि एशिया के एक किनारे से दूसरे किनारे तक आज पारस्परिक कलह का एक घोरतम विद्रोह फूट पड़ा है जिसकी चिनगारी ब्रिटेन और अमरीका ने स्वयं अपने हाथों से सुलगाई है। महाद्वीप के वर्णन का तात्पर्य यह है कि एशिया के तीन महान् देशों की

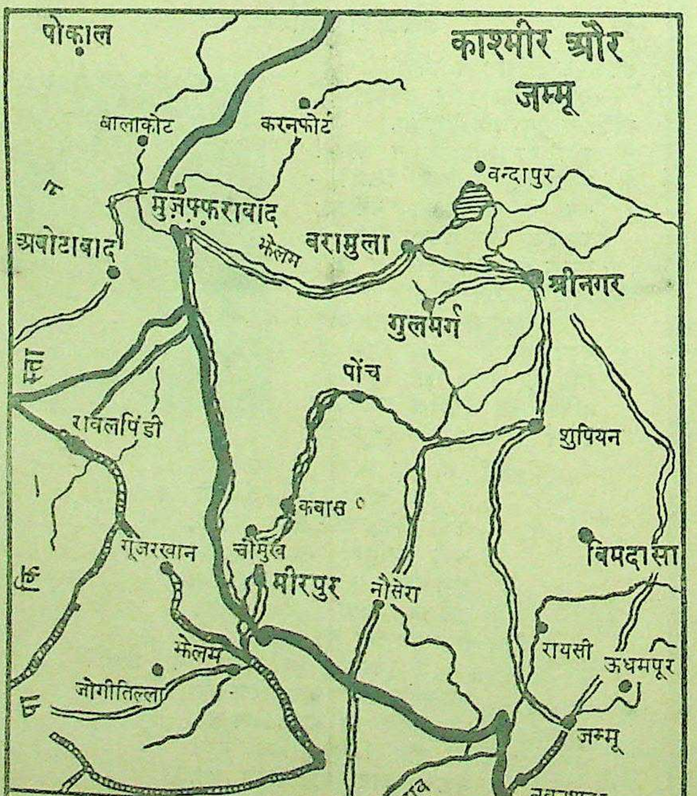

काश्मीर के प्रधान मंत्री तथा राष्ट्रीय ने
शेख अब्दुल्ला।

जो सीमा थी वहां आज अराजकता, अशान्ति और अव्यवस्था का नग्न ताण्डव हो रहा है। वह सीमा जिस पर तीनों दे सरलता से मिल सकते हैं; संसार की शान्ति के लिए कुछ सोच सकते हैं वह काश्मीर है जो आज नर-संहार और लूटपाट की भीषण ज्वाला में जल रहा है। यही प्रदेश है जहा संसार के तीन बड़े देश चीन, भारत और रूस मिलते हैं। परन्तु चौथी ब्रिटेन और अमरीका भला यह कैसे पसन्द करेंगे; अतः उनके लिए यह आवश्यक हो गया कि काश्मीर ही अशान्ति का बना दिया जाय तो फिर तीन कहां और कैसे मिल सकेंगे। अतिरिक्त इन तीनों देशों में पारस्परिक मनोमालिन्य पैदा करने में और अमरीकन पत्र और संवाददाताओं की प्रतिस्पर्धा बढ़ती जा रही है। संवाददाता के वक्तव्य को लेकर पार्लियामेंट में काफी वाद-विवाद चुका है। पंडित नेहरू ने ऐसे समाचारों का बिलकुल खण्डन किया इससे सिद्ध होता है कि ब्रिटिश अमरीकी कूटनीतिज्ञता अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच चुकी है।

लेक सक्सेस संसार की एक शाला बन रहा है। आयरलैंड के प्रधान मंत्री श्री डी वेलरा ने अमरीका कहा है कि यदि संयुक्तराष्ट्र-संघ शान्ति के लिए कड़ा रुख न ग्रहण सका तो जिसके लिए यह महान स्थापित की गई है वह उद्देश्य हो सकता। भारत के प्रतिनिधि गोपाल स्वामी आयंगर और के नेता श्री शेख अब्दुल्ला अमरीका वापस आये तो उनके चेहरों पर एक उदासीनता थी। उनका कहना है— जितना दुख विश्व की सर्वोच्च से नहीं है उससे अधिक अपने के निधन का है।" इसका तात्पर्य अमरीका और अन्य महाद्वीपों में जी के प्रति गहरी संवेदना है। भारत पर गहरे संकट आये, महात्मा की बुद्धि ने ही उसका निराकरण काश्मीर के मामले को लेकर गहरी दिलचस्पी है। शेख गिरफ्तारी से भारत हिल उठा पर पंडित जवाहरलाल नेहरू स्वयं गये और गिरफ्तार भी हुए। ने काश्मीर को भारत की ओर अधिक बल दिया। काश्मीर जा रहा था इस पर महात्मा जी गये और शेख अब्दुल्ला को वायुमण्डल पैदा किया। यद्यपि

शेष पृष्ठ १६

चैकोस्लोवाकिया की राजनीति

योरोप के पूँजीवादी और आतंकवादी शासन के बीच यह समाजवादी परिवर्तन क्यों ?

लेखक, प्रोफेसर आशाराम, एम० ए०

> योरोप चेकोस्लोवाकिया एक ऐसा राष्ट्र है जहां पिछले दिनों शासन-संबंधी राजनैतिक परिवर्तन हुआ है। वहाँ नई कम्यूनिस्ट सरकार स्थापित हुई है। कहा जाता है कि इस परिवर्तन में सोवियट रूस की सरकार का हाथ है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने चेकोस्लोवाकिया की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि पर प्रकाश डालते हुए नये परिवर्तन का विवरण प्रस्तुत किया है। लेख पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

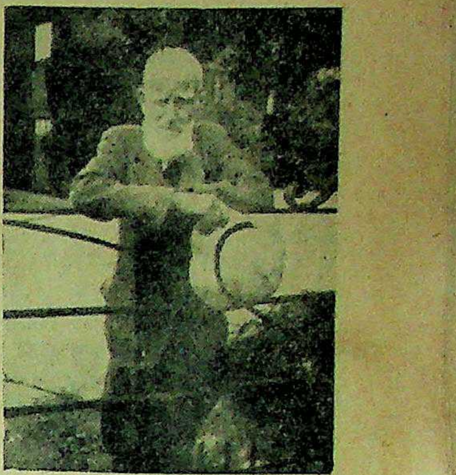

समाजवादी विचार-धारा के सुप्रसिद्ध कलाकार जार्ज बर्नर्ड शा

वादी भावनाओं का प्रचार हुआ और समाजवादी दलों ने स्वतन्त्रता संग्राम में प्रमुख भाग लिया।

अतएव युद्ध के बाद चैकोस्लोवाकिया में हिटलर के साथी और धनिक वर्गों की शक्ति कम हो गई। जनता उनसे अप्रसन्न थी। जिन व्यक्तियों अथवा दलों ने हिटलर की सहायता की, जनता उनको दण्ड देना चाहती थी। अतएव देशद्रोही और धनिक वर्ग अपने दलों को भंग कर कुछ अन्य दलों में मिल गए।

युद्ध के बाद सन् १९४६ में चुनाव हुआ। पाश्चात्य देशों ने भी माना है कि ये चुनाव प्रजातान्त्रिक ढंग से हुए थे। इन चुनावों में कयुनिम्स्ट पार्टी को बहुमत प्राप्त हुआ। दलों की शक्ति इस प्रकार थी—(१) कम्युनिस्ट दल ४१ प्रतिशत; (२) राष्ट्रीय समाजवादी दल ३० प्रतिशत (३) समाजवादी प्रजातन्त्र दल १० प्रतिशत; (४) अन्य कैथोलिक तथा स्लोवाकिया के प्रजातन्त्रवादी १० प्रतिशत। इस चुनाव के निर्णय के अनुसार

रुमानियाँ के राजा अपनी पत्नी के साथ किधर जा रहे हैं ?

कम्यूनिस्ट नेता गोटवाल्ड देश के प्रधान मन्त्री हुए, पुराने नेता डा० बेनिश और डा० मसारिक परराष्ट्र सचिव।

उपरोक्त दलों ने चुनाव से पूर्व ही कार्यक्रम के सम्बन्ध में समझौता कर लिया था। वह इस प्रकार था—

(१) उद्योगधंधों का राष्ट्रीयकरण।

(२) भूमि का राष्ट्रीयकरण और पचास एकड़ से अधिक जमीनवाले से जमीन छीनकर उसका उपयुक्त बटवारा।

(३) हिटलर को सहायता देनेवाले व्यक्तियों को दण्ड।

(४) सोवियट देश से मैत्री।

परन्तु धीरे-धीरे विभिन्न दल उपरोक्त कार्यक्रम का विरोध करने लगे। विशेषतया स्लोवाकिया प्रदेश में कैथोलिक प्रधान प्रतिक्रियावादी दल (प्रजातन्त्रवादी) का बहुमत था। इस दल ने सोवियट और प्रजातन्त्र विरोधी और हिटलर के साथी पोल आतंकवादियों को सहायता देना और स्वयं स्लोवाकिया में भी इस प्रकार के गिरोहों को बनाना शुरू किया। पुराने हिटलर-विरोधी छापेमारों ने इनका विरोध किया, सारे देश ने इनका विरोध किया और इस प्रकार प्रतिक्रियावादियों की यह नीति विफल हुई।

साथ ही सन् १९४७ में एक भारी अकाल पड़ गया। किसानों की सहायता का प्रश्न था। कम्यूनिस्ट दल का कहना था कि धनिक वर्ग से कर वसूल करके किसानों की सहायता की जाए। अन्य दलों के मंत्रियों ने इसका विरोध किया। कम्यूनिस्ट दल ने मंत्रिमंडल की सारी कार्यवाही जनता के सामने रख दी। जनता ने रोष प्रकट किया और अन्त में मंत्रिमण्डल को कम्यूनिस्टों की बात माननी पड़ी; परन्तु क्योंकि मंत्रिमंडल में अन्य दलों का बहुमत था, अतएव भूमि और उद्योगधंधों का राष्ट्रीयकरण न हो सका। यहां तक कि ब्रिटेन के उदार पत्र, न्यू-स्टेट्स मैन ने भी कहा है कि यद्यपि मजदूरों ने काम करने में कोई कसर नहीं उठा रक्खी; परन्तु सेठ खूब चोर बाजारी करते थे। वे कपड़ा आदि चीजें चोरी से योरप के अन्य बाजारों में भेजकर रुपया कमाते थे।

इसी प्रकार, नाजीवाद और हिटलर के साथियों को उपयुक्त दण्ड न दिया जा सका। क्योंकि, न्याय मंत्री के पद पर एक राष्ट्रीय समाजवादी नेता आरूढ़ था।

विभिन्न दलों में ऐसे आदमी भर गए थे! जिन्होंने कल हिटलर की सहायता की और आज वे सोवियट और चैकोस्लोवाकिया के विरुद्ध ब्रिटेन और अमरीका के एजेण्ट बन गए थे। इस प्रकार के व्यक्ति सरकारी दफ्तरों और अन्य महत्त्वपूर्ण पदों पर आसीन हो गए थे। वे देश के रहस्यों को बाहर भेजते थे और बाहरी देशों और फौजी अफसरों की सहायता से देश पर अपना शासन स्थापित करना चाहते थे।

परन्तु सौभाग्यवश पुलिस विभाग कम्यूनिस्ट मन्त्री के हाथ में था। उसने इन षड्यन्त्रों का पता लगाया और इसका अन्त करने के लिए मंत्रिमण्डल की सहायता मांगी; परन्तु क्योंकि कई दलों के प्रमुख सदस्य और कुछ मंत्री भी इस षड्यन्त्र में शामिल थे। अतएव दो दलों ने इस प्रश्न पर वाद-विवाद करने से इन्कार किया, त्यागपत्र दे दिए और चुनाव की मांग की। इधर कम्यूनिस्ट प्रधान मंत्री ने इस षड्यन्त्र का जनता के सामने भण्डाफोड़ किया। जनता उबल पड़ी। हड़तालें और प्रदर्शन हुए और सभापति से जनता ने मांग की कि दोषी व्यक्ति और दलों को सजा दी जाए।

इस समय पांच दलों का मंत्रिमण्डल फिर बन गया है; परन्तु दोषी व्यक्तियों को सजाएँ दी जा रही हैं। इस मंत्रिमंडल में कम्युनिस्टों के पचास प्रतिशत मन्त्री हैं, शेष अन्य दलों के हैं; परन्तु अन्य मंत्रियों ने देश की रक्षा और कार्यक्रम की पूर्ति की शपथ ली है। बचे हुए उद्योग-धंधों के राष्ट्रीयकरण की घोषणा की गई है और अब केवल ७.५ प्रतिशत उद्योग-धंधे ही व्यक्ति के हाथ में रह जाएँगे। शेष ९१.५ प्रतिशत उद्योगधंधों का राष्ट्रीयकरण होगा। भूमि का भी राष्ट्रीयकरण होगा। जिन हिटलर के साथियों को बिना दण्ड दिए छोड़ दिया गया था, उनके ऊपर एक बार फिर मुकदमा चलाया जाएगा।

चेकोस्लोवाकिया में राजनैतिक परिवर्तन हुए हैं। परन्तु इन परिवर्तनों को भयावह समझना भारी भूल होगी। उपरोक्त देश की जनता ने प्रतिक्रिया की शक्ति के विरुद्ध अपने बल से अपनी मांगें पूरी की हैं। भारतवर्ष में हमने भी ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध इसी नीति का आश्रय लिया था। इन परिवर्तनों से प्रतिक्रिया की शक्तियों को डरने की आवश्यकता है। उनकी हार हुई है। ब्रिटेन, फ्रांस और अमरीका, जो आए दिन इण्डोनेशिया, इण्डोचीन, ग्रीस, मिश्र, इराक, ईरान आदि देशों में प्रजातन्त्र का गला घोंटते हैं वे स्वतन्त्रता के शत्रु हैं, साथी नहीं। हां, ब्रिटिश, अमरीकी, फ्रांसीसी और डच सेनाओं ने अन्य देशों की स्वतन्त्रता का अपहरण किया है; परन्तु लाल सिपाही ने किसी देश की स्वतन्त्रता का अपहरण नहीं किया। सोवियट सेनाएँ अथवा हथियार निर्यात का माल नहीं; वे बाहर नहीं भेजे जाते।

संसार की प्रगतिवादी शक्तियों को चैकोस्लोवाकिया के राजनैतिक परिवर्तनों से हर्ष ही होगा। नाजीवाद, साम्राज्यवाद, पूंजीवाद, और आतंकवाद की पराजय से किस देशभक्त को प्रसन्नता न होगी? इन परिवर्तनों से योरप का शासक-वर्ग व्यग्र और क्रुद्ध है। स्वाभाविक है; परन्तु जनता को हर्ष है।

महा-मालव प्रान्त की राजधानी?

क्या ऐतिहासिक त[illegible]तिक दृष्टि से निर्णय होगा?

लेखक, श्री श्यामलाल गौड़ बी० ए०, एल्-एल० बी० (उज्जैन)

भारत का शासन-सूत्र जब से राष्ट्रीय सरकार के हाथ में आया है, तब से शासन में अनेक परिवर्तन हो रहे हैं। छोटे छोटे राज्यों का संगठित रूप में एक मोर्चा बनाया जा रहा है। इसी दृष्टि से मालवा के छोटे छोटे प्रांतों को महा-मालव प्रांत के रूप में संगठित किया जा रहा है, साथ ही यह भी निश्चय किया जानेवाला है कि महा-मालव प्रांत की राजधानी कहाँ हो? इस लेख में महा-मालवा के निर्माण यथा उसकी नई राजधानी की स्थापना के संबंध में विचार प्रगट किये गये हैं, जो पठनीय तथा विचारणीय हैं।

१५ अगस्त के ऐतिहासिक परिवर्तन के पश्चात् देश में विशेषतः रियासती जनता में जो जागृति हुई, देशी नरेशों ने जिस प्रकार भारतीय उपनिवेश में प्रवेश किया और अपनी जनता की चिर-आकांक्षा उत्तरदायी शासन देकर पूर्ण की है यह घटनाएँ इस सत्य का ज्वलन्त प्रमाण हैं कि देशी नरेश भी विदेशी सत्ता से ऊब उठे थे और जन साधारण के समान वे भी स्वतन्त्रता के शुभ प्रभात की प्रतीक्षा कर रहे थे।

भारतीय उपनिवेश के रियासती विभाग ने जितनी प्रगति अपने कार्य में की है वह सुस्पष्ट व प्रशंसनीय है। देशी राज्यों का भारतीय उपनिवेश में सम्मिलित होने व इसके पश्चात् की घटनाओं का श्रेय रियासती विभाग को तो है ही; परन्तु देशी नरेशों को भी इससे वंचित नहीं किया जा सकता। छोटी-छोटी रियासतें एक इकाई में सम्मिलित हो रही हैं और बड़ी रियासतों ने इधर अपनी जनता को जनतंत्र-प्रणाली के आधार पर उत्तरदायी शासन देना प्रारम्भ कर दिया है। इस सम्बन्ध में ग्वालियर के युवक नरेश ने जिस भावना का परिचय दिया वह वास्तव में स्तुत्य है। कुछ प्रतिक्रियावादी शक्तियां कुछ नरेशों को अपने हाथों खेला रही थीं व उनके प्रोत्साहन से कुछ नरेश आनाकानी कर रहे थे और भारतीय उपनिवेश में सम्मिलित होना ही नहीं चाहते थे ऐसे नरेशों को भारतीय उपनिवेश में सम्मिलित कराने का श्रेय ग्वालियर के सुयोग्य शासक को भी है।

आज इतिहास ने एक नया पृष्ठ और खोल दिया है। हमें उस स्वर्णिम युग में ले जाकर खड़ा कर दिया है जब यह विशाल भारत प्रान्तों में विभाजित था। आज ठीक उसी प्रकार महा-मालव प्रान्त का निर्माण होने जा रहा है। आज महा-मालव के जन प्रतिनिधि, नरेशगण, तथा भारतीय उपनिवेश का रियासती विभाग महा-मालव प्रान्त की योजना बनाने में संलग्न है। महा-मालव के इस विशाल क्षेत्र में ग्वालियर राज्य को भी अपना कर्तव्य पूर्ण करना है। आज सब लोगों की आंखें ग्वालियर-नरेश के निर्णय पर लगी हुई हैं। सम्भव है सम्पूर्ण ग्वालियर राज्य महा-मालव के इस नवीन प्रान्त में सम्मिलित हो जाये। हमें ग्वालियर के प्रगतिशील नरेश से यह अपेक्षा है कि वे इस दिशा में एक ऐसा कदम उठायें जो अन्य नरेशों के लिए भी अनुकरणीय हो।

यदि ग्वालियर राज्य पूर्णतः अथवा अंशतः इस नवीन प्रान्त में सम्मिलित होता है तो राजधानी का प्रश्न वैसे ही हल हो जाता है। ग्वालियर राज्य में ही प्राचीन मालव-प्रदेश की प्रसिद्ध राजधानी उज्जैन अथवा अवन्तिका स्थित है और जब नवीन महा-मालव प्रान्त बन रहा है तो अवन्ती नगरी के अतिरिक्त कोई ऐसा स्थान नहीं जो इस विशाल प्रान्त की राजधानी के लिए सर्वथा उपयुक्त हो।

महा-मालव प्रान्त के निर्माण के साथ-साथ राजधानी का प्रश्न एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है और इस प्रश्न का निर्णय भी हमें निःस्वार्थ भावना से ही करना है। इस प्रश्न पर विचार करते समय हमें यह भावना अपने दिल से निकाल देनी चाहिए कि मैं अमुक रियासत का निवासी हूँ; अतः मेरी रियासत का प्रमुख नगर ही मालव-प्रान्त की राजधानी बनना चाहिए। राजधानी के प्रश्न पर हमें गंभीरतापूर्वक विचार करना है और इसलिए हमें यह जानना भी आवश्यक है कि वास्तव में राजधानी के उपयुक्त नगर की आवश्यक बातें क्या हैं? राजनैतिक क्षेत्रों में मालव प्रान्त की राजधानी के लिए कुछ नगरों के नाम लिये जाना प्रारम्भ हो गये हैं। कुछ लोग उज्जैन के पक्ष में हैं, कोई इंदौर की ओर अपनी निगाहें उठाकर देख रहे हैं और कोई धारानगरी में राजधानी का निर्माण करने का विचार कर रहे हैं और कुछ सज्जनों के मतानुसार रतलाम भी उपयुक्त स्थान हो सकता है।

प्राचीन इतिहास पर जब हम दृष्टिपात करते हैं तब हमें यह स्वीकार करना पड़ता है कि राष्ट्र के राजनैतिक परिवर्तन जैसे उज्जैन की महानगरी ने देखे हैं, मालव-इतिहास में कोई नगर उसकी क्षमता नहीं कर सकता। प्राचीन और नवीन संस्कृति का सामंजस्य जो हमें उज्जैन में दिखाई देता है वह और अन्यत्र नहीं। इस दृष्टि से जब हम उपरोक्त नगरों की ओर दृष्टि दौड़ाते हैं तो हमें निराश होना पड़ता है। इंदौर रतलाम आदि के पीछे कोई पुरातन इतिहास नहीं। धारानगरी भी इस दृष्टि से उज्जैन की तुलना में श्रीहीन है। सांस्कृतिक दृष्टि से अगर देखा जावे तो हमें यह अनुभव होगा कि धार व रतलाम बहुत पिछड़े हुए हैं और इन्दौर ठेठ पश्चिमी संस्कृति का प्रतिपादक है। भारतीय संस्कृति का संरक्षण जिस प्रकार अवन्ती के प्रांगण में हुआ उतना और अन्य नगर में नहीं।

भौगोलिक दृष्टि से भी उज्जैन का अपना पृथक् महत्त्व है। भौगोलिक दृष्टिकोण से भारत के मध्य में केवल यही महानगरी है। विषुवत् रेखा भी इ नगर का स्पर्श करती हुई निकली है। इसका जलवायु भी सामान्य है। मा प्रदेश का इसे स्वर्ग कहें तो अत्युक्ति होगी। तीन ओर से पतितपावन शि के अंक में यह खेलती-सी प्रतीत होती है। इस प्रकार भौगोलिक महत्त्व के अतिरि इसका सामरिक महत्त्व भी बढ़ जाता है।

यातायात का प्रश्न एक महत्त्व प्रश्न है और राजधानी के चुनाव में प्रश्न पर विचार करना भी अनिवार्य है। यातायात के सम्बन्ध में सबसे हुआ नगर अगर कोई है तो धारा इस भारी कमी के कारण धारा तो वैसे ही समाप्त हो जाता है। यदि हम शेष तीन नगरों की ओर निगाहें दौड़ाएँ तो हम अवश्य ही निर्णय पर पहुँचेंगे कि यातायात व साधनों की दृष्टि से भी उज्जैन ही पर खरा उतरता है। रेलवे का सम्बन्ध है इन्दौर बी० बी० एण्ड० आई० की छोटी लाइन पर स्थि रतलाम बी० बी० एण्ड० सी० की छोटी व बड़ी लाइन का जंक्शन और बम्बई देहली लाइन पर स्थि उज्जैन बी० बी० एण्ड सी० आई० व बड़ी लाइन, सिंधिया स्टेट रेलवे, आई० पी० लाइन का जंक्शन है। उज्जैन प्रमुख लाइन पर नहीं है कि मालवा के प्रसिद्ध नगरों से रेल-द्वारा सीधा सम्बन्ध है। प्रान्त बन जाने पश्चात् जिन प्रमुख नगरों का सम्बन्ध नहीं है और जहां अ प्रवेश तक नहीं हो पाया है, स्टेट रेलवे द्वारा सीधा सम्बन्ध योजना की जा सकती है। जहां सड़कों का सम्बन्ध है, उज्जैन का देवास, ग्वालियर, नीमच, रतलाम, पाटन, धार, भोपाल इत्यादि स्थानों भी सीधा सम्बन्ध है। जी० सी० टी० कम्पनी का यहां मध्यभा केन्द्रीय कार्यालय होने से याता साधनों की भी कमी नहीं है। ह जहाज का कोई अड्डा इन्दौर के भी नहीं है; परन्तु यह कमी सरका पूरी की जा सकती है और इस यहां उपयुक्त स्थान भी विद्यमा

आर्थिक एवं व्यावसायिक दृ से यदि देखा जाय तो इन्दौर की हमें स्वीकार करनी होगी। इ जनसंख्या लगभग २-२॥ लाख मध्य-भारत का यह सर्वोत्तम व्या केन्द्र है। कल-कारखाने यहां प्र में हैं। बड़े-बड़े व्यवसायियों की नगर को सुन्दर बनाये हुए हैं। सुन्दरता को यहां के कोलाहलपू

शेष पृष्ठ १२ पर

ग्वालियर राज्य के नये प्रधान मंत्री श्री लीलाधर जोशी।

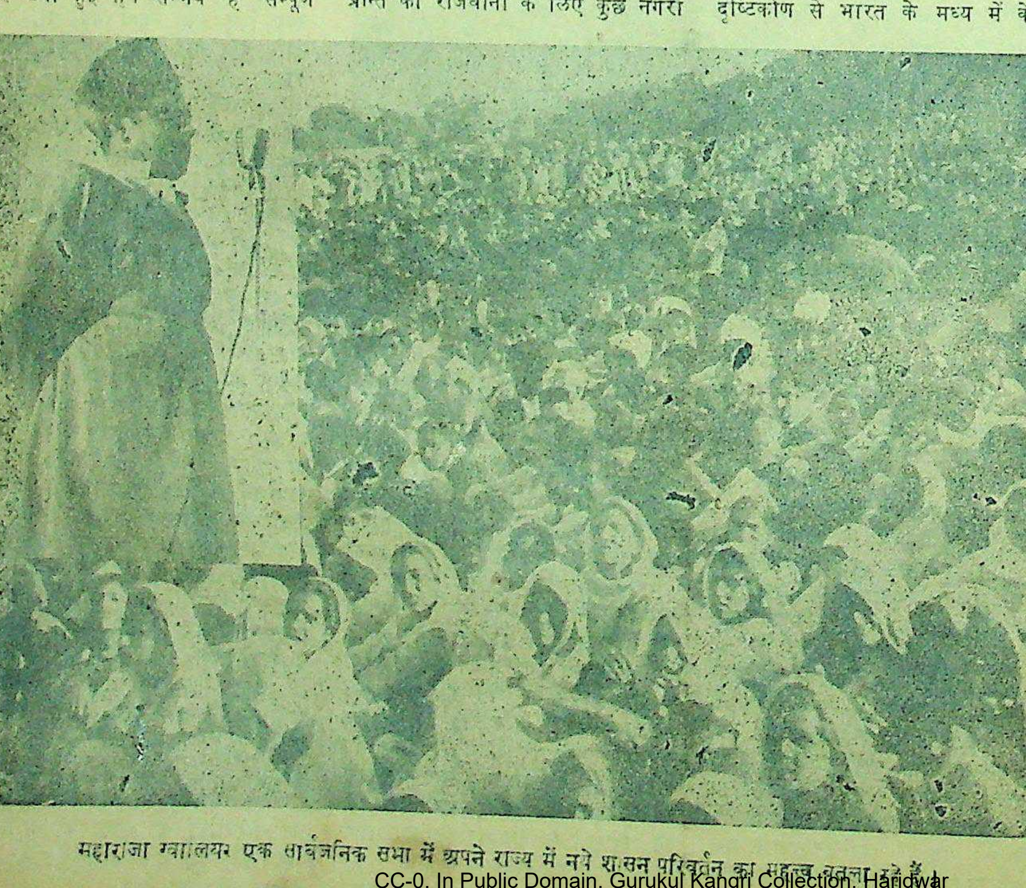

महाराजा ग्वालियर एक सार्वजनिक सभा में अपने राज्य में नये शासन परिवर्तन का महत्त्व बतला रहे हैं।

कहानी

बरगद का पुराना पेड़

लेखक, श्री श्रीपालसिंह 'क्षेम' बी० ए०

समाज बरगद के एक जर्जर ठूँठ की भांति है जिस पर थोड़े अधिकारप्राप्त व्यक्ति बैठकर गृद्धों की भांति अपने पर फड़फड़ा रहे हैं। इस कहानी में अधिकार-प्राप्त व्यक्ति के झूठे दुरभिमान का अत्यन्त सुंदर चित्रण किया गया है, जो पठनीय तथा हृदय पर एक आघात छोड़ जानेवाला है। कहानी सुन्दर और पठनीय है।

वह बरगद का एक बहुत ही पुराना गांव के पश्चिम बाहर एकान्त में वट-वृक्ष चारों ओर पुरातनता भाव बिखेरता रहता है। अकेला वह बूढ़ा पेड़ और चारों विरल घासों के धब्बों से बंजर भूमि जैसे मृत वृत्त की जड़ केन्द्र को घेर रही हो। गांवों के बड़े-बूढ़े जब जाड़ों की में अलाव के चारों ओर बैठे को अपने अनुभवों की बही तो उस पेड़ का भी जिक्र वे बतलाते कि वह पेड़ आज ही बड़ा है जैसे उनके बचपन में, वह उसी भांति युग-युग तक क्योंकि वह अब गांव के 'करनबीर' की आयु से जी जब कभी आंधी-अंधड़ में उसकी गिर गई है तो आस-पास के अवश्य ही कोई न कोई विपत्ति और शायद वही दिन उन गांवों दिन भी होगा, जब वह वृक्ष-चबूतरे पर टूटकर गिर इसीलिए गांव के निवासी उस वेदी पर हर नई सन्तानोत्पत्ति पर वहां नाच करवाते हैं, हर उपलक्ष्य में कड़ाही देते हैं। बारात के दूल्हे पहले-पहल वेदी पर माथा टेकते, तब जाते, और तब उस रात उस —उस विजन की मरण-और भी उद्दीप्त हो उठती तो विशाल; किन्तु काल निरन्तर धारा, कोटरों से झांकनेवाले ठूठों के जड़ती जा रही है। से फूटकर नीचे भूमि उसकी जर्जर काया रहती है।

कभी अनिष्ट-निवारणार्थ की हवन-शंख के तार-धरती पर पड़ा मरणासन्न स्पन्दित हो जाता, सायं-के कलरव से जिन्दगी रोगी वार करवट ले लेती, किन्तु इस सबसे उदास, किसी संन्यासी की भांति समाधिस्थ निरपेक्ष! कई वार उद्वास न मानने पर गांववालों का चला था कि कौन जाने वह करनवीर की ही साका

भगवान् अपनी मरीचि-चुपचाप अस्ताचल से जाते, तो सन्ध्या की रक्तिमा वट-वृक्ष पर फैलकर जैसे करुण कथा की पृष्ठभूमि देती और प्रभात में सुनहरी मुस्करा।। कंचन उस प्रान्तर कर एक मृत्युकालीन पीतिमा हो जाता। रात के आने के जाने के बाद का कुहर-जाल चादर से उस बरगद को देता! जब पतझर आता कंकाल नंगा और निर्जीव हो पर अटके चिड़ियों के घोंसले पर फैले फोड़े की भांति भर देते!! फिर बगरद में तड़पते कलेजे की भांति भारी पंखों की फड़फड़ाहट, द्वारा पकड़े गये शावकों और उससे आतंकित पक्षि-का आर्त्त क्रन्दन—सभी कुछ की स्वप्न-याञ्चित आंखों में की चटखती चिनगारी की भांति जाता है!!

* *

ठीक डेढ़ सौ वर्ष पहले जब समय इतने बोझिल न रहे होंगे......

अपनी अनुरंजित कोपलों की मदहोश तरुणाई में आस-पास की भूमि के हरियाले अंचल पर मचलते पवन की हिलोरों को गिनते हुए उस बरगद ने देखा था....

गांव की युवक-युवती का एक युग्म हाथ में हाथ रखे एक दूसरे को स्नेह-सिंची दृष्टि से निर्निमेष देख रहा था। चारों ओर दुग्ध-धवल चन्द्रिका का शिशिर-शीतल हास बरस रहा था! चांद ने उस प्रणयी-युगल के लिए दीपक जला दिया था और कोमल-मृदुल शाद्वल ने हरी शैया। मसृण-दल वट की कोपलों को चूमकर आती हुई सोंधी-सोंधी अनिल-लहरियों ने व्यजन देकर उस प्रान्त को सुहाग-गृह बना दिया था।

नवयुवक ने युवती के गले में अपनी बलिष्ठ कोमल बाहुओं को डालते हुए कहा—"चम्पी, क्या तुम जानती हो कि मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ?" और भावावेश से उद्वसित-अन्तर उस युवक ने अपना उत्तर पा लेने को युवती की आंखों में आंखें डाल दीं।

"मैं क्या जानूं!" कहते-कहते पुलक की लहरों से सप्राण कम्पायमान होती हुई युवती ने एक अल्लड़ और भोली लज्जा से आंखों को मूंद लिया और युवक की बाहों में छिप गई।

युवक ने युवती के केश-पाश को सहलाते हुए कहा–'चम्पी, मुझे अब भी याद है, ठीक उस जुगजुगाते हुए तारे की भांति—जब तुम घास करते-करते घाम की गर्मी मिटाने के लिए सखियों के साथ इसी पेड़ के नीचे खड़ी हो गई थीं और मैं भी अपने ईख के खेत से 'छहाने' के लिए यहीं चला आया था। तुमने अपने गोरे-गोरे हाथ सखियों के सामने फैलाते हुए कहा था, देखो न सखो, ये पेटुवा के फूल पर बैठे मुए भौंरे ने किस तरह 'बिन्हँ' लिया है......और तुम खिलखिला-कर हँस पड़ी थी। फिर तुम एक लजीली नजर से मेरा ओर देखती हुई, मुख पर दौड़ गई ललाई को आंचल से छिपाती हुई डगमगाती उस ओर चली गई थी और मैं जादू का मारा-सा देखता रह गया था, देखता रह गया था......"

भुजाओं में पूर्ववत् मुंह छिपाये, रह-रहकर पुलकों से कांप-कांप उठती हुई युवती ने अपनी गर्म-गर्म सांसों से युवक की रक्त-धार को और तीव्र करते हुए कहा—"हूँ, और तब फिर?"

युवक एक बार खिलती हुई चादनी में सिहर उठा। अपने सर को कुछ नीचे झुकाया, एक पुचकार का शब्द हुआ। उसकी उँगलियां अनजान रूप से युवती के केशों में दौड़ गई—"फिर? फिर, आह के दिन, दर्द की रातें, घूमते-घूमते कजगांव की गलियों का चक्कर......और फिर लुका-छिपी की देखादेखी, और...... और......" कहते-कहते युवक खिल-खिलाकर हँस पड़ा। युवती ने एक लज्जा के तीव्र आवेग में अपने सर को युवक की बाहों में और जोर से धँसा दिया। थोड़ी देर तक बिजली के दो तारों की भांति एक ही सिहरन से दोनों कांपते रहे। फिर युवक ने चारों ओर दृष्टि फेरते हुए कहा—

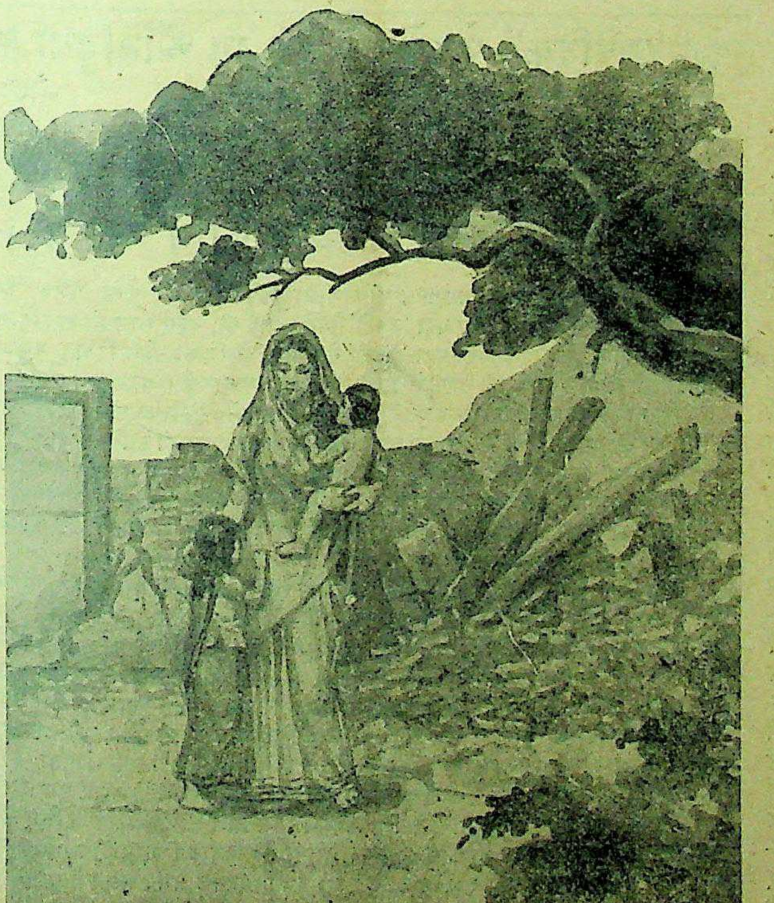
बरगद का पेड़ जहाँ अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिये लोग मनौतियाँ मानते हैं।

"कितनी सुहावनी आज की रात होती जा रही है चम्पी!" चम्पी सहसा किसी बात के ध्यान आ जाने की-सी मुद्रा में उठ बैठी। अपनी छलछलाती दृष्टि से देखा, मैदान में कपूरी ज्योत्स्ना अँगड़ाई ले रही थी, दिशाएँ आलस में जँभाई-सी ले रही थीं। बरगद की घनी डालों में से कहीं से पपीहा बोल उठा, 'पी कहां!" जैसे इस तृषित पुकार से सारा मैदान एक लालसा से कांप उठा।

"लेकिन चम्पी," युवक का चेहरा कुछ उतर-सा गया था। पहले उल्लास के स्थान पर एक अज्ञात त्रास-भरे शब्दों में उसने कहा—"सुना तुम्हारे चाचा कह रहे थे कि तुम्हारे कुल के कोई पुरषा हमारे कुल के किसी आदमी से झगड़कर कुएँ में कूद पड़े थे। बस, हाड़ पड़ गया और हमारी तुम्हारी शादी......." युवक के दृग-कोर सजल हो रहे थे। हवा के एक झोंके से बरगद के पत्ते खड़खड़ा उठे।

युवती एक क्षण चुप रही। कुछ भींगे-से शब्दों में जैसे हृदय की मरोड़ को स्वर देते हुए दबी आवाज में बोली—"वे बहुत ही चिढ़नेवाले स्वभाव के हैं, चाची तो......" उसे अपनी मां की याद आ गई और युवक को लगा, उसके हाथों पर दो तीन गर्म-गर्म बूंदें धीरे से ढुलक गईं।

"अच्छा, चम्पी", युवक ने भर्राए हुए स्वर में कहा "अब घर चलो, नहीं तो तुम्हारे घरवाले नाराज होंगे।" चम्पी उठी और धीरे-धीरे उत्तर ओर बोझिल-बोझिल पदों से, कभी आगे और कभी पीछे मुड़कर देखती हुई चली गई।

युवक उठा। तब तक उत्तर ओर स्थिर दृष्टि से देखता रहा था, जब तक कि चम्पी की छाया के प्रत्येक चिह्न को वह प्यासी चांदनी पी न गई। एक बार धरती से आकाश तक उसकी थकी दृष्टि घूम आई। मोती के पानी-सी झलमलाती दो क्षण पहले की चांदनी विशाल बालुका-राशि के सूखे व्यंग्य-हास में बदल चुकी थी। उस नीरस श्वेतिमा को चीरते हुए करन के पग अर्धचेतन अवस्था में पथ पर बढ़ते जा रहे थे। वह भँवर में पड़े तिनके की भांति कभी ऊपर और कभी नीचे बैठते हुए मन से चला जा रहा था, भीतर से कितना अस्थिर किन्तु बाहर से कितना अवसन्न! कितना जड़!!

* * *

चम्पी जब करन से अलग होकर घर पहुँची, तो गांव में दिया जले एक घंटे से ऊपर हो चला था। हृदय की धड़कन के साथ गिन-गिनकर पैर रखती हुई ज्योंही वह घर के पास पहुँची, सुना, चाची आंगन में गरज रही थीं—

"अरे तुम्हारी दुलारी यह चम्पी, अगर तुम्हारी नाक न काट चले तो कहना! यह दोनों कुल को उँजेला करेगी और तब मैं देखती हूँ तुम कैसे चौधरी बने हाथ में लट्ठ लिए और मूँछें खड़ी किये लोगों के सामने चलते हो?"

"अच्छा चुप रह, बहुत बढ़-बढ़कर बातें न कर, मैं देखता हूँ न" चम्पी अब चौखट लांघ चुकी थी। सहसा बाहर आते हुए चाचा ने उसे देखकर कहा,

"कहां गई थी चम्पी, आय, बोलती क्यों नहीं?"

वह सर से पैर तक कांप उठी। एक क्षण रुककर बोली—"बाहर।"

"बाहर, अच्छा मैं इसकी दवा करता हूं" आंखें तरेरते हुए उसके चाचा बाहर चले गये। चम्पी उन्हें न देखते हुए भी उस कड़वे चिराग के प्रकाश में चाचा की आग्नेय आंखों की भयंकर कल्पना में एक क्षण कांपती खड़ी रह गई। चाची क्रोध में कुछ बोलीं तो नहीं, हां काली की भांति इधर-उधर नाचती हुई घर के बर्तन टनका रही थीं, लोटे को पटक रही थीं।

धीरे-धीरे घरवालों की अकारण बढ़ती खीझ के साथ चम्पी ने चार चिड़चिड़े दिन चार पाषाणी रातों की ओट बिता में दिये।

जब कभी करन उस गांव की गलियों से निकल जाता, लोगों की उँगलियां उठ जातीं। चौधरी अब परेशान आ गया था। आखिर सभी की इज्जत होती है और वह सोचता, पानी के गये जिन्दगानी किसी काम की नहीं होती। चौधरी सोता तो दो-दो घंटे उसे नींद ही न आती। सैकड़ों प्रकार के विचारों पर हिंडोले की भांति उसका मन चकराया करता। वह क्या करे, यही समस्या उसके मन में चौबीस घंटे आग की लपट-सी जला करती। वह खुद भी तो अनुभव कर रहा था, वह अब भी लट्ठ उठाकर कंधों पर रख लेता है। उसकी मूछें अब भी वैसी ही तनी रहती हैं, पर उसका मन भीतर-भीतर स्वयं लज्जित रहता, कुछ गिरा रहता। करन से चम्पी की वह शादी भी तो नहीं कर सकता! एक तो वह कुल में नीचा, फिर कई पीढ़ियों से हाड़ जो पड़ गया था। करन के कुलवालों की लाख मिन्नतों पर भी जब अब तक उसके कुलवालों की शान निभती आई और उन लोगों ने उनके घर का पानी तक न पिया, तो अब यह कैसे हो सकता है कि वह अपने कुल की लड़की उन्हें दे, और वह भी वह भतीजी खुद अपनी भी नहीं, जिसे उसका भाई मरते समय उसकी बांह पकड़ा गया हो! वह कुछ निश्चय नहीं कर पाता। सामने दुधिया चांदनी हवा के मन्द-मन्द वासन्ती झूलों पर झूम रही थी, पर उससे क्या, वह तो पश्चिम के कचपचिया तारों पर दृष्टि गड़ाये सोचता ही जा रहा था। सहसा उसे एक यत्न सूझा। उसके मुंह से निकल पड़ा—"हूं"। उसकी "हूं" का निश्चित स्वर उस वातावरण में निकलते ही इस भांति छा-सा उठा कि जैसे खिलखिलाती हुई चांदनी का हास एक क्षण को स्तम्भित हो उठा हो, वह कांप उठी हो!

* * *

दूसरे दिन चम्पी ने देखा, उसके दरवाजे पर दूर के गांव से चार आदमी आये। चौधरी ने उनके लिए खाना बनवाया। पहर रात बीत जाने पर चौधरी जब घर के एकान्त में चम्पी की चाची के कानों में कुछ फुसफुसा कर कह रहे थे, तो उसका हृदय एक अज्ञात भय से कांप उठा। उसने दरवाजे की आड़ से देखा, चाचा उनसे कुछ धीरे-धीरे परामर्श-सा कर रहे थे। उनमें से एक ने पुराने कपड़े की पर्तों में एक लम्बी-सी चीज सँभाली। चौधरी रह-रहकर बाहर कुछ आहट ले लेता था। जब लोगों की चौपालों से सोने के खर्राटे आने लगे, तब उस सूनेपन के वातावरण में पांच आदमियों का वह समूह उठा। पांचों पांच ओर छिटक गये। उनके चले जाने के पांच-छः मिनटों के बाद चम्पी धकधकाते हुए कलेजे को किसी प्रकार सँभालती हुई बाहर आई। देखा, कुछ आदमियों का झुंड आगे की बाग की घनी छाया में चुपचाप अदृश्य हो गया। उसका दिल बैठता जा रहा था। एक क्षण तक अपनी भरी आंखों को ऊपर उठाकर वह कुछ मनाती रही और फिर घर में आकर चारपाई पर गिर गई।

चन्द्रमा की सकपकाई किरणों ने देखा चार आदमी कंधों पर एक चारपाई उठाये लिए आ रहे थे और एक आदमी उनसे तीस गज की दूरी पर इधर-उधर आहट लेता हुआ चला आ रहा था। उस सूने विस्तृत मैदान पर चांदनी का धुकधुकाता हुआ वक्ष फैला हुआ था। टोली ने इधर-उधर ससम्भ्रम दृष्टि से देखते हुए बरगद की छाया में चारपाई रख दी। चारों ने मिलकर चारपाई पर से एक कुछ हिलती हुई लम्बी चीज को उतारकर रखा और पांचवां आदमी बरगद से दूर अब भी इधर-उधर टोह ले रहा था।

तीन ने तीन ओर से, उस चीज को टेका और चौथे ने उस पर अपना घुटना रख दिया। हलकी-सी छटपटाहट हुई और एक 'हिन्च' के शब्द के साथ ज्योत्स्ना का वह सारा का सारा प्रसार जैसे अचम्भे में कुछ डग पीछे हट गया हो। चारों छाया-मूर्तियों ने उस लुंज-पुंज पदार्थ को उठाकर पास के सूखे कुएँ में डाल दिया। एक 'धब्ब' के स्वर से वातावरण कांप उठा और फिर वे लोग चार दिशाओं में तितर-बितर हो उठे, लेकिन चांदनी कफन की भांति अब भी उस कुएँ पर लहरा रही थी।

* * *

सवेरे चारों ओर शोर मच गया—"खून हो गया, खून!" महँगू के लड़के करन का रात में कतल हो गया। रात कोई उसे चारपाई सहित उठा ले गया और उस सिवान के बरगद के नीचे खून के धब्बे अब तक पड़े हैं, जिन्हें मिट्टी से ढँकने के प्रयत्न में कतल करनेवाले जल्दी के कारण पूरा-पूरा छिपा नहीं पाये।

आस-पास के गांव के सभी लोग आये। सभी के ऊपर एक आतंक-सा छाया हुआ था। देखने से लगता जैसे उस भूभाग का सारा जीवन ही आतंकित हो उठा हो। वातावरण जैसे उस हत्या का गुप्त रहस्य पिये हुए पकड़े गये चोर की भांति मौन था। लोगों के मुंह पर आतंक छाया हुआ था। तृण-तृण जैसे एक दूसरे के प्रति सशंकित हो उठा था। आदमी एक दूसरे की ओर सीधे देखते नहीं थे। जगह-जगह बैठे हुए सभी लोग चकराये हुए चेहरे से कभी थानेदार की ओर देखते और कभी जमीन की कंकड़ियां गिनने लगते।

आज पुलिसवालों की लाल पगड़ी उस सिवान में इकट्ठा सारी भीड़ पर रोब ले रही थी। सामने कुएँ से निकालकर करन की लाश रखी थी, पास चारपाई पर रेशमी झालर की लाल पगड़ी उतार कर सिरहाने रखे हुए दारोगा साहब कभी कड़े शब्दों में कुछ प्रश्न पूछते, कभी जमीन पर बेंत खटखटाते हुए कुछ गम्भीर समस्या में सोचने लगते। बकरीदी सिपाही घंटों से कभी चौकीदार पर बिगड़ता, कभी मुखिया के कान फूंकता और कभी दारोगा साहब से कहता—"सरकार जरा मुंह धो लें, बड़ी देर हो रही है।"

पकौड़िया चौकीदार हाथ पर दूध का लोटा रखे दारोगा साहब की मुखाकृति को पढ़ने का प्रयत्न कर रहा था, कौन जाने कब क्या हुकुम हो जाय।

महँगू करन के शव के सिरहाने बैठा रो रहा था। गांववाले उसके रुदन पर अपनी आंखें मलने लगते। कभी कोई गांव का बूढ़ा कह उठता, "भैया महँगू, अब दिल को समझाओ।"

अन्त में दोपहर के बाद टेंट सँभालते हुए बकरीदी ने कहा, "सरकार का हुकुम है कि लाश ले जाकर जला दी जाय।" महँगू ने गांव के महाजन के पैर छुए और बेटे को अपने बूढ़े हाथों से श्मशान पर आग दे आया।

* * *

आज वही बरगद का पेड़ उस सिवान में अपनी बूढ़ी काया सँभाले खड़ा है। उसकी जड़ के पास एक चबूतरा बना दिया गया है और पत्थर की कुछ पिंडियां—सिन्दूर से टिकी-रखी हैं। यही करनवीर का देवल है। लोग अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिए यहीं मनौतिया
ह धूप-दीप चढ़ाते हैं—किसी
की उसी समाधि को जो अपने अपूर्ण
में स्वयं पत्थर हो गई है। जिस
का समाज ने कभी गला घोंट दिया
आज उसी की करुण कहानी को
मंगल-अनुष्ठानों का प्रतीक बना
है। यह है किन्हीं तड़पते हुए आंसुओं
पूजा, जिसकी अपनी आर्त पुकार तो
दीप और फूलों से दबा दी गई हो
जिस पर लाद दिया गया है समाज
मंगल का भार!

आज जब से नयन बाबा से मैंने
कहानी सुनी है, मैं बराबर यही
रहता हूँ, क्या यह हमारा समाज
जर्जर वट-वृक्ष की भांति नहीं
ठूंठ के ऊपर कुछ अधिकार-सम्पन्न
गृद्धों की भांति पर फड़फड़ा रहे हैं,
पुरानी अर्थहीन रूढ़ियों के कोटरों में
निरीह प्राणियों का निवास है।
इस बरगद के नीचे रखी पिंडी के
इस जीर्ण समाज की छाया में हम
ही की मधुर अभिलाषाओं को
उनकी जगह पर पत्थर पूजा करते हैं
ठीक है समाज कितनों के ही
जला डालता है और उसकी
मांगता है अपने सपनों का वरदान!!

श्वेतकुष्ठ की फकीरी बूटी

महात्माप्रदत्त इस बूटी से
७ रोज में आधा और १५ रोज में
आरोग्य होने की गारंटी, अगर आप
और कम कीमती दवा इस्तेमाल
निराश हो गये हैं तो एक बार
को भी इस्तेमाल कर इसके
से लाभ उठावें। बेफायदा
५००) रु० इनाम अगर चाहें तो
टिकट भेजकर शर्त लिखा लें। मूल्य
पता—श्री शिवशक्ति आश्रम
सालिमपुर अहरा पो०—कदमकुआं

T.B. टी.बी. "तपेदिक" फेफड़ों का हो, या अँतिड़ियों का, बड़ा भयंकर रोग है

पहली स्टेज मामूली ज्वर खाँसी (Jabri)
दूसरी स्टेज ज्वर-खाँसी की अधिकता (जबरी)
तीसरी स्टेज शरीर का सूखना ज्वर खाँसी की भयंकरता (Jabrt)
चौथी स्टेज हालत खराब, दस्त आदि शुरू जाना (जबरी)
अंतिम स्टेज रोगी की मौत भयंकर का इधर-उधर फैलना

[T. B. टी. बी.] तपेदिक और पुराने ज्वर के रोगियो देखो—

(२) श्रीमान् तीसलहुसेन साहब रईस मौजा मुसेपुर पो० भरतकुण्ड जि० फैजाबाद से अपने ताजे पत्र में लिखते हैं— आपके यहां से जिस रोगी के लिए दवा 'जबरी' हमने मंगाई थी, बहुत लाभ हो रहा है, हम तो समझते थे कि इस भयंकर रोग की भी दवा नहीं है। परन्तु आपकी दवा 'जबरी' ने हमारे विचार को बदल दिया। यथार्थ में 'जबरी' इस रोग के लिए शक्तिशाली औषधि है, हमारी तरफ से आपको हार्दिक धन्यवाद है। परमात्मा आपको दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की दे।

श्री नागेश्वरप्रसाद तिवारी—मास्टर स्कूल नड़गावां पो० "डालटनगंज" बिहार से लिखते हैं। मैं अनेक दिनों से ज्वर
बीमार था बलगम आदि की परीक्षा पर तपेदिक (राजयक्ष्मा) रोग ही साबित हुआ। मैं रोग का नाम सुनते ही बहुत घबड़ा गया।
बीच परमात्मा की कृपा से आपकी अमृतरूपी दवा 'जबरी' का नाम सुना। मैंने तुरन्त आर्डर देकर पार्सल प्राप्त किया। दवा को
पूर्वक सेवन किया, उसके अमृतरूपी गुणों ने मुझे आश्चर्य में डाल दिया, थोड़े ही दिनों में शरीर का रंग ही बदल गया, ऐसा
होने लगा जैसे कुछ रोग ही नहीं रहा। अधिक लिखना व्यर्थ है। यथार्थ में आपकी औषधि इस दुष्ट रोग के लिए अमृततुल्य
जितनी भी प्रशंसा कीजावे कम है।

इसी प्रकार के पचासों प्रशंसापत्र पहिले भी आप इन्हीं कालमों में देख चुके हैं, भारत के कोने-कोने में लोगों ने यह मान लिया
इस भंयकर रोग से रोगी की जान बचानेवाली यदि कोई औषधि है तो वह एकमात्र 'जबरी' (Jabri) ही है। 'जबरी' के
भारत के पूज्य ऋषियों के आत्मिक बल का कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि प्रथम दिन से ही इस दुष्ट रोग के जर्म नष्ट होना
जाते हैं। यदि आप सब तरफ से हताश हो चुके हैं तो परमात्मा का नाम लेकर एक बार जबरी की परीक्षा करें, परीक्षार्थ ही
दिन का नमूना भी रख दिया है, जिसमें आपको तसल्ली हो सके। बस—आज ही आर्डर देकर रोगी की जान बचावें। अन्यथा
कहावत होगी कि—अब पछताये क्या होत है, जब चिड़ियां चुग गई खेत। इसे डाक्टर, हकीम, वैद्य अपने रोगियों पर व्यवहार
नाम पैदा कर रहे हैं और तारद्वारा आर्डर देते हैं। तार आदि के लिए हमारा पता केवल 'जबरी' जगाधरी (Jabri, Jaga
लिख देना ही काफी है। तार से यदि अर्डर दें तो अपना पूरा पता दें। मूल्य इस प्रकार है—

'जबरी' स्पेशल नं० १ अमीरों के लिए जिसमें साथ साथ ताकत बढ़ाने के लिए सोना, मोती, अभ्रक आदि की मूल्यवान्
पड़ती है मूल्य पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन के लिए २०) रु०। जबरी नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान जड़ी
पूरा कोर्स २०) रु०, नमूना १० दिन के लिए ६) रु०। महसूल आदि अलग है। आर्डर में पत्र का हवाला तथा नं० १ या नं०
साफ लिखें। तुरन्त आर्डर देकर रोगी की जान बचा लें।

रायसाहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड बैंकर्स (D) 'जगाधरी' पूर्व पंजाब (E.

संपादक के नाम चिट्ठियां

के पहरे में अहिंसा के प्रयोग

दिन जब राजेन्द्र बाबू से मिलने
देखा बजाजवाड़ी (वर्धा) का
चारों ओर से बन्दूकधारियों
था। पुलिस के दरोगा और
वाले सिपाही फाटक पर चक्कर
। सहज भाव से उधर निकलने-
प्रश्न किए जाते। शंका और
बहार थी। फौज के सैनिकों
अलग कनातें लग रही थीं—
की छोटी-छोटी आंखें उनके
झांक रही थीं। जैसे अँगरेजी
किसी गवर्नर या मेम्बर की
की जा रही हो। इनकी रक्षा
अति आवश्यक था। देश के
की जानों की रक्षा सैनिक
के हाथों होनी ही चाहिए!
बावजूद भी दिमाग पर पिछले
खिच रहे थे—मन उन्हें
रखकर तौल रहा था। हरएक
प्रश्नवाचक चिह्न अपने आप
था। पहले जब राजेन्द्र बाबू
लाल सरीखे नेता वर्धा में
स्वयंसेवकों की कतारें उन्हें घेर
थीं। पुलिस को पास
दिया जाता था। नम्रता
अहिंसक सैनिक उस कांग्रेसी
थे। गरीब जनता पलक
थी उनके रास्ते में।
उमड़ पड़ता था उनकी
पर इस बार क्या होगा?
परम्परा क्या धूल में
अधिकार और शासन
अब उस जनसमुद्र का
बढ़ेंगी? नहीं अब तो
एरिया के पास भी नहीं
जायगा; और यह सब
हो रहा था कि कोई विद्रोही
महात्मा जी की प्राणान्तक घटना
दुहरा सके। राजनैतिक दृष्टि
ठीक है। सत्ता का शौर्य इसी
होता है। पर उससे एक सवाल
उठता है—"बापू की अहिंसा
बड़ी हार और क्या हो

देश का एक लोक-प्रिय नेता
में सावधानी और शंका के इस
कर कब तक चल सकेगा?
जनतंत्र की कट पराजय नहीं
अहिंसा के सहज सिद्धान्त आज
वर्धा में रो नहीं रहे हैं?
हो गये अभी कुछ ही दिन
इसी बीच में उनके सिद्धान्तों
पलीद? बापू के नाम पर
बनाया जायगा और रचनात्मक
योजनायें तैयार की जाएँगी सबसे
यह है कि यह सब होगा पहरे
के घेरे में बैठकर। ४००
शिष्य अहिंसा और ग्राम-
चर्चा करेंगे जब कि चारों ओर
पुलिस के सिपाही गश्त कर
व्यवहार और सिद्धान्त के
इससे सुन्दर उदाहरण क्या,
मिलेगा। और यहां का किया
जनता के जीवन को कितनी
स्पर्श करेगा। जिस अहिंसा
में 'बापू' ने अपना बलिदान
बचाने में वे खुद अपने
न बचा सके—आज उसी अहिंसा
में खून किया जा रहा है—
के प्राणों की रक्षा करके उसकी
को काटा जा रहा है। जिस
पर से देश के अग्रगण्य नेताओं
और सत्ता का विश्वास 'स्वरक्षा' के विषय में भी नहीं रहा—वही अहिंसा जीवनव्यापी सिद्धान्तों और राजनैतिक गुत्थियों को अब सुलझाने में कहां तक सफल होगी?

आप मुझसे पूछ सकते हैं कि संकट के ऐसे वातावरण में अपने इन कर्णधारों को अरक्षित छोड़ दिया जाता? मैं यह कब कहता हूं। पर मैं तो आपसे स्वयं पूछना चाहता हूं कि जिस अहिंसा की रक्षा में बापू ने अपने प्राण दिये उन प्राणों का मूल्य अहिंसा की आत्मरक्षा से कम था या अधिक? अगर बापू ने शरीर से अधिक श्रेष्ठ माना अपनी प्यारी अहिंसा को तो क्या आज उनके पीछे व्यक्तियों के प्राणों से भी गई गुजरी अहिंसा हो गई है? दिखाई दे रहा है—स्वरक्षा और प्रबन्ध के नाम पर उसका गला घोंटा जा रहा है और वह भी साधना और तपस्या की उस पीठस्थली—सेवाग्राम और वर्धा में; जहां बापू ने २५ वर्षों तक विश्व को, राष्ट्र को और राष्ट्र के नागरिकों को प्रेम और विश्वास के पाठ पढ़ाये थे। आज उसी भूमि पर, उन्हीं के पन्थानुगामियों की यह दशा देख दिल रो उठता है। अब मन बार बार पूछता है, चाहता है कि आखिर यह सब क्या हो रहा है? क्या वर्धा में आज पूर्वी लोकतंत्र का, जनप्रिय शासन का, 'शिलान्यास' हो रहा है या कूटनीतिपूर्ण पश्चिमी प्रजातंत्र को उसकी नसों में उतारा जा रहा है।

अखबारों में रोज पढ़ा करता था कि दिल्ली में पटेल और नेहरू के बँगलों में चारों ओर तार कसे जा रहे हैं। सैनिकों का कड़ा पहरा बिठा दिया गया है, ठीक था। दिल्ली के दलदल में यह सब शोभा देता था। पर जब उस दिन सेवाग्राम की पवित्र भूमि पर सैनिकों के कदम पड़ने की बात सुनी तो कुछ समझ न सका। इसका अंजाम क्या होगा?

गौतम बुद्ध के शिष्य उनके प्रतिद्वन्द्वों के भय से जब उन्हें विशेष सावधान रहने को कहते तो वे हमेशा हँसकर कहा करते थे—"प्रेम और विश्वास के हरे-भरे अंकुरों को शंका और भय से दूषित मत करो—प्राणों की रक्षा से अधिक मूल्य है उस अहिंसा का जिसके बल पर संसार की घृणा को जीतना है।" बापू ने भी यही कहा और यही किया, पर उनके नाम की 'जय' बोलकर गांधी की इस नगरी में आज ये सैनिक और असंख्य गुप्तचर जवाहर और प्रसाद के प्राणों की रक्षा नहीं कर रहे हैं; वरन् बापू की जीवन-ज्योति अहिंसा के सीने में गोलियां मार रहे हैं। सेवाग्राम में रचनात्मक कमेटी जहां हुई थी, वहां फाटक के भीतर प्रवेश-पत्र के बिना प्रवेश निषिद्ध रहा और सेवाग्राम की सीमा की चप्पा चप्पा जमीन संगीनों की चमचमाहट से भर गई थी।

काश! इन अहिंसा और बापू के पुजारियों से कोई पूछता कि तुम्हारी अहिंसा का 'जनाजा' उसी समय निकल गया जिस दिन सेवाग्राम की कुटी प्रेम और अहिंसा की कुटी चारों ओर से सैनिकों द्वारा परिवेष्टित की गई। तुम्हारी विश्वास और प्रेम की इमारत तो उसी दिन ढह चुकी जिस दिन आत्मरक्षा के नाम पर शस्त्र-प्रयोग की उपयोगिता को मान्य किया गया। सुना है देश भर के ४०० गुप्तचरों ने बर्र के छत्ते के समान वर्धा को भर दिया था। केंद्र और प्रान्त का गृह-विभाग अपनी सावधानी की सीमा को पार कर गया था—और इस वातावरण और सुरक्षा के बीच हमारे 'जन नायक' जवाहर ने बापू की उस कुटिया में प्रवेश किया।

कहा जाता है कि प्राचीन काल में एक सम्राट् भी ऋषि आश्रम या तपोभूमि में पहुंचकर अपने अंगरक्षकों को पीछे छोड़ देता था—आश्रम की पवित्रता को विनाशक अस्त्रों से दूषित नहीं किया जाता था और आज हमारे सामने प्रश्न है—प्राणों की रक्षा श्रेष्ठ है या अहिंसा का विश्वास। और सब का उत्तर यही मिलता है दोनों पक्षों की तुलना करते हुए भी यह तो सत्य है कि 'बापू' की अहिंसा की उन्हीं के घर में यह सबसे बड़ी हार है।

राष्ट्रभाषा प्रचार- —प्रोफेसर रंजन
समिति, वर्धा

* * *

वेदों पर विद्वानों का मत

वेद हिन्दू-जाति का सर्वस्व है। वेदोक्त धर्म का पालन उसका परम कर्त्तव्य है। जब तक वेद प्रतिपादित धर्म का आश्रय कर हिन्दू-जाति संसार में अग्रसर है तभी तक इसकी सत्ता है। यदि हिन्दूपन छूट गया तो हिन्दू हिन्दू नहीं है। यूरोपियन विद्वानों ने भरसक वेद के प्रामाण्य को नष्ट करने का प्रयत्न किया; और उनके दलाल आज भी कर रहे हैं। उसका कारण हिन्दूपन नष्ट कर मनमानी शिक्षा देकर ईसा मसीह की सभ्यता का प्रचार तथा अँगरेजी राज्य की नींव को सुदृढ़ बनाने का ध्येय था। उनका कहना है कि हमने भाषा-विज्ञान द्वारा वेदों की भाषा की परीक्षा की। वेदों की भाषा में अन्तर होने के कारण जो समयान्तर में ही सम्भव है, वेद भिन्न भिन्न काल में बनायें गये। ऋग्वेद पहले बना। और अन्य कुछ काल के बाद बने। जब तक किसी के कथन की निष्कर्ष परीक्षा न की जावे, तब तक उसकी सत्यता का निश्चय होना कठिन है। मेरा नम्र निवेदन है कि ऋग्वेद में और वेदों के नाम रहते हुए भी यदि ऋग्वेद के समय में और वेद नहीं थे तो यह कथन वैसा ही समझा जावेगा जैसा कि यूनीवर्सिटी के सन् १९४० के कलेंडर में किसी अध्यापक का नाम रहते हुए भी उस समय यूनीवर्सिटी में उस अध्यापक के न रहने का प्रमाण देनेवाले की धृष्टता का। ऋग्वेद ८।८७।१ में 'स्तोम' शब्द आया है। जो कि सामवेद में ही होता है। ऋ० ६।३६।१३ में 'उक्थ' शब्द आया है। और ऋ० ८।६।३५ तथा ८।१६।२ में भी 'उक्थ' शब्द आया है जो कि एक प्रकार के सामवेद का नाम है। ऋ०१०।९०।९ में ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद की उत्पत्ति का एक साथ वर्णन है। ऋ०१०।१००।६ में 'सामग' शब्द लिखा है। जिसका अर्थ सामवेद का जाननेवाला होता है। तथा 'उक्थशास' साम विशेष का 'शंसिता' अर्थात् उसके द्वारा स्तुति करनेवाला तथा 'यजन्य' शब्द आया है। जिसका अर्थ यज्ञ का नेता 'अध्वर्यु' जो यजुर्वेद का ज्ञाता होता है। और सब वेदों के ज्ञाता ब्रह्मा का वर्णन है।

वेद में मंत्र भाग संहिता कही जाती है। और दूसरा भाग जिसमें यज्ञ का विधान, मंत्रों के ऋषि तथा प्रायश्चित्तादि का वर्णन है, वह ब्राह्मण कहा जाता है। ऋग्वेद का ब्राह्मण ऐतरेय है। उसमें अध्याय २५ खंड सात में इस प्रकार वर्णन है—प्रजापति ने सामान इकट्ठा किया और ऋग्वेद के ज्ञाता को होता बनाया। यजुर्वेद के ज्ञाता को 'अध्वर्यु' बनाया। सामवेद के ज्ञाता को 'उद्गाता' बनाया। तीनों वेदों के ज्ञाता को ब्रह्मा बनाया। यज्ञ करके देवताओं को भी आज्ञा दी। देवताओं ने भी उसी प्रकार यज्ञ किया। यह चारों 'ऋत्विक' प्रत्येक यज्ञ में अवश्य होते हैं। ब्रह्मा का काम यह रहता है कि वह चुपचाप बैठा मंत्रोच्चारण को सुनता रहे। बाद में यदि 'ऋत्विक' ने ऋग्वेद के उच्चारण में अशुद्धि की है तो 'भू' इस व्याहृति से गार्हपत्य अग्नि में हवन करे। यदि यजुर्वेद के उच्चारण में अशुद्धि हो तो यदि सोम याग है तो 'भुवः' इस व्याहृति से आग्नीध्रीय अग्नि में हवन करे। यदि हविर्याग है तो अन्वाहार्य पचन नामक अग्नि में हवन करे। जिन यज्ञों में सोम रस का हवन होता है वह सोम याग कहे जाते हैं। जिनमें जौ, चावल, तिलादि से हवन होता है वह हविर्याग कहे जाते हैं। यदि सामवेद के उच्चारण में अशुद्धि हो तो 'स्वः' इस व्याहृति से 'आहवनीय' अग्नि में हवन करे। यदि तीनों वेदों के उच्चारण में अशुद्धि है तो तीनों व्याहृतियों से आहवनीय अग्नि में हवन करे। बाद में हवन की आवश्यकता इसलिए होती है कि यदि मंत्र का उच्चारण अशुद्ध हो गया तो यज्ञ का अंग नष्ट हो गया और वह उस अंश को खराब ही नहीं करता उलटा हानिकारक भी हो जाता है। इससे प्रायश्चित्त द्वारा अर्थात् हवन करके, उसका दोष मिटाना ब्रह्मा को आवश्यक है। यदि हवन कर दिया गया तो फल ठीक होता है। यह सब बातें ऐतरेय ब्राह्मण में स्पष्ट वर्णन हैं। जब तक और वेद न हों, ऋग्वेद जो प्रधान यज्ञ का ग्रन्थ है यज्ञ न होने से बेकार मानना होगा। जब और वेद हों तभी ऋग्वेद के यज्ञ हो सकते हैं। इससे ऋग्वेद के साथ साथ और वेदों की सत्ता मानना आवश्यक है। ऋ०३।५३।११ में पैजवन राजा के अश्वमेध यज्ञ का वर्णन है जिसकी पद्धति यजुर्वेद में ही है। यजुर्वेद जब तक न हो अश्वमेध कैसे हो सकता है। इससे ऋग्वेद में आये यज्ञ का वर्णन यजुर्वेद की सत्ता का साफ साफ वर्णन कर रहा है। फिर भी यूरोपीय विद्वान् समस्त संसार की आंखों में धूल डालते हुए भी अथारिटी गिने जाते हैं। समय की बलिहारी है।

विश्वविद्यालय, —गिरीशचंद्र अवस्थी
लखनऊ व्याकरणाचार्य

२००० रु० इनाम !

NOW YOU CAN
LAUGH AT THE
CALENDAR!
REWARD
Rs.1000

मासिक-धर्म एक दिन में जारी !

मैन्सीली पिल्ज :-एक दिन के अन्दर ही कितने समय के रुके हुए मासिक-धर्म को जारी कर देती है। कीमत ५) रु०

मैन्सीली स्पैशल पिल्ज :—जो कि फौरन जारी करके मासिक-धर्म को बिलकुल आसानी से साफ कर देती है। कीमत ११॥) रु०। याद रखो, गर्भवती इसे सेवन न करें क्योंकि यह बच्चेदानी को बिलकुल साफ कर देती है। २०००) रु० इनाम। जो मैन्सीली पिल्ज को नामुफीद साबित करे। पत्र-व्यवहार गुप्त रक्खा जाता है।

लेडी डाक्टर असली दवाखाना।
(D.D.A.) हल्का नं० २१, अमृतसर।

स्वास्थ्य और व्यायाम

त्रिफला

आँखों और बालों के लिए संजीवनी बूटी

लेखक, श्री मूलशंकर तिवारी

त्रिफला आयुर्वेदीय चिकित्सा-संसार की महान् निधि है। जैसा इसके नाम से बोध होता है, यह तीन फलों का मिश्रण है। एक हर्रा, दो बहेड़ा, चार आमलों को एकत्र कर चूर्ण बना लेने से अनेकों व्याधिनाशक त्रिफला-चूर्ण तैयार हो जाता है।

इसे पाण्डुरोग या एनीमियां नाम से भी पुकारा जाता है। इस रोग में सारा शरीर पीला पड़ जाता हैं। आंख तथा नाखूनों में विशेष पाण्डुता आ जाती है। रोग-ग्रसित व्यक्ति की त्वचा का वर्ण फीका पड़ जाता है और शारीरिक दौर्बल्य बढ़ जाता है।

पैरों में सूजन आ जाना, थकावट के लक्षण आभासित होने लग जानाा आदि इस व्याधि के लक्षण हैं। यह व्याधि रक्त-स्वल्पता, अत्यधिक सम्भोग, अनपच, मिट्टी खाने एवं पर्याप्त पौष्टिक भोजन के न मिलने आदि कारणों से होती देखी जाती है। तीन माशे त्रिफला-चूर्ण के साथ छः माशे शहद का दिन में चार बार प्रयोग करने से रोगी की दशा में अत्यधिक लाभ दीखने लगता है। कुछ समय के दैनिक प्रयोग से भगंदर, प्रमेह तथा खांसी रोग इसी औषधि से समूल नष्ट हो जाते हैं।

त्रिफला-जल से व्रणों को धोने से चर्म-रोग अल्प समय में ही निर्मूल हो जाते हैं। इसके दैनिक प्रयोग से श्वेत कुष्टादि भी अच्छे होते देखे गये हैं।

अर्श

इसे बवासीर तथा पाइल्स नाम से जाना जाता है। यह अधिक गर्म पदार्थों के सेवन करने, हृदय-रोग, कब्जियत, यकृत विकार, अधिक मदिरापान आदि के कारण होता देखा गया है। घी और त्रिफला-चूर्ण के सेवन से दोनों प्रकारों (खूनी एवं बादी) के अर्श में अत्यधिक लाभ पहुंचता है।

रात्रि को सोते समय दो माशे त्रिफला-चूर्ण, छः माशे शहद तथा एक तोले घी का सेवन करने से समस्त नेत्र-रोग, कफ-पित्त विकार नष्ट हो जाते हैं।

त्रिफला-चूर्ण में पीपल-चूर्ण मिलाकर शहद के साथ सेवन करने से क्षुधा की कमी, खट्टी डकारों का आना, उदर-शूल, गले में जलन, जीभ पर मैल जम जाना, रात्रि को सुखद निद्रा न आना, दस्त साफ न होना, खांसी, श्वास रोग जो बहुधा अधिक तामसी भोजन के खाने, भोजन के उपरान्त ही कठिन परिश्रम के करने, अधिक चाय पीने तथा अधिक मानसिक चिन्तन के कारण उत्पन्न हो जाते हैं, थोड़े ही समय के नियमित प्रयोग से नष्ट हो जाते हैं।

रात्रि के समय गर्म जल के साथ त्रिफला-चूर्ण का प्रयोग करने से साधारण जुलाब का काम निकल जाता है। इससे पेट को किसी भी प्रकार की हानि नहीं पहुंचती और पेट भी साफ हो जाता है। गर्मी की ऋतु में साधारण जुलाब के लिए शक्कर के साथ त्रिफला-चूर्ण का प्रयोग करना चाहिए।

चार सेर त्रिफला के काढ़े में एक सेर शुद्ध तिल्ली का तेल मिलाकर तब तक पका लेना चाहिए जब तक सारा पानी जल न जाये। इस तेल के लगाने से बाल लंबे, मजबूत और चमकीले बन जाते हैं तथा आंखों की ज्योति बढ़ जाती है।

गीत

लेखिका, श्रीमती चन्द्रमुखी ओझा सुधा

दर्शक बनकर दर्शन दे दो
मैं पावन बन जाऊँगी।
जन जन के मन में कौतूहल
मन्दिर में किसकी मूरत है
प्रतिदिन प्रश्न उठा करता है
किसकी पूजा में तू रत है
समझ सको तो चित्रित मेरी
हर मूरत नीले अम्बर में
चेतन मानव जान न पाया
क्या क्या है मेरे अन्तर में
सिद्धि बनो तुम कहीं किसी
की मैं साधन बन जाऊँगी।
मेरे चिन्तन से घिरते घन
रोना ही बरसात समझना
हँसने से खिल उठी चांदनी,
सुधि को झंझावात समझना
आ जाओ तो तुम्हें देखकर
पत्थर से भगवान बना लूं
जीवन का विष एक निमिष में
देव, अमिय का दान बना लूं
तुम आसाढ़ भरे दृग देखो, मैं सावन बन जाऊँगी।

(पेज ८ का शेष)

वातावरण ने नष्ट कर दिया है।
जीवनयापन का मापदंड भी अन्य
की अपेक्षा अधिक ऊँचा है। हमें
भूलना चाहिए कि सेक्रेटेरियट की
के कारण मध्यम श्रेणी के लोगों को
में ही रहकर अपना कार्य सम्पादन
है। इस दृष्टि से इन्दौर सर्वथा
होगा। १००) या ५०) रु० प्राप्त
वाला व्यक्ति एक या दो कमरों के
रु० प्रतिमास क्या देने में समर्थ हो
उज्जैन मालवा क्षेत्र में दूसरे
व्यापारिक केन्द्र है। इन्दौर के
इसी का नाम आता है। इन्दौर के
प्रमुख व्यापारियों की
पीढ़ियां भी यहां विद्यमान है
कारखानों का भी अभाव नहीं है
साथ ही जीवन का मापदंड
अमीर, गरीब, राजा रंक सभी यहां
गुजारा सन्तोषपूर्वक कर सकते हैं।
का शान्त एवं सन्तोषप्रद वातावरण
नगरी की योग्यता एवं उपयुक्तता
परिचायक है। राजनीति के
जीवन में यहां की प्रकृति और
शान्ति का सन्देश देता है। यहां की
संख्या १।। लाख के लगभग है।
बाह्य आडम्बर या दिखावा कम
में। क्या प्रजातंत्रीय शासन में इस
के जीवन की अपेक्षा नहीं?

भारतीय पार्लियामेंट में भाग
राजधानी उज्जैन बनाने का भी
है। जो नगरी सम्पूर्ण भारत की
बनने की क्षमता रखती हो उसे
मालव की राजधानी न बनाना
अन्याय ही होगा।

वर्तमान युग में इस
सौभाग्य प्राप्त हुआ है और
राष्ट्रपिता का अखंड
फरवरी के पुनीत अवसर पर
अस्थिएँ क्षिप्रा के पुनीत जल में
नहीं हुईं वरन् कुछ भस्म उस
अखण्ड कोष में भी सम्मिलित कर
जो प्रतिदिन महाकाल पर
इस प्रकार भस्म के रूप में
का आशीर्वाद इस महानगरी को
तक प्राप्त होता रहेगा जब तक
की अखंड भस्म राशि का कोष
नहीं हो जाता। इस प्रकार
द्वारा अखंड आशीर्वाद प्राप्त
का यथार्थ सम्मान हम तभी कर
जब हम उसे महा-मालव की
का श्रेय दें।

हमें यह पूर्ण विश्वास है कि
नरेश और उनका जन-प्रिय
तथा अन्य जन-प्रतिनिधि उज्जैन
राजधानी बनाने का प्रयत्न

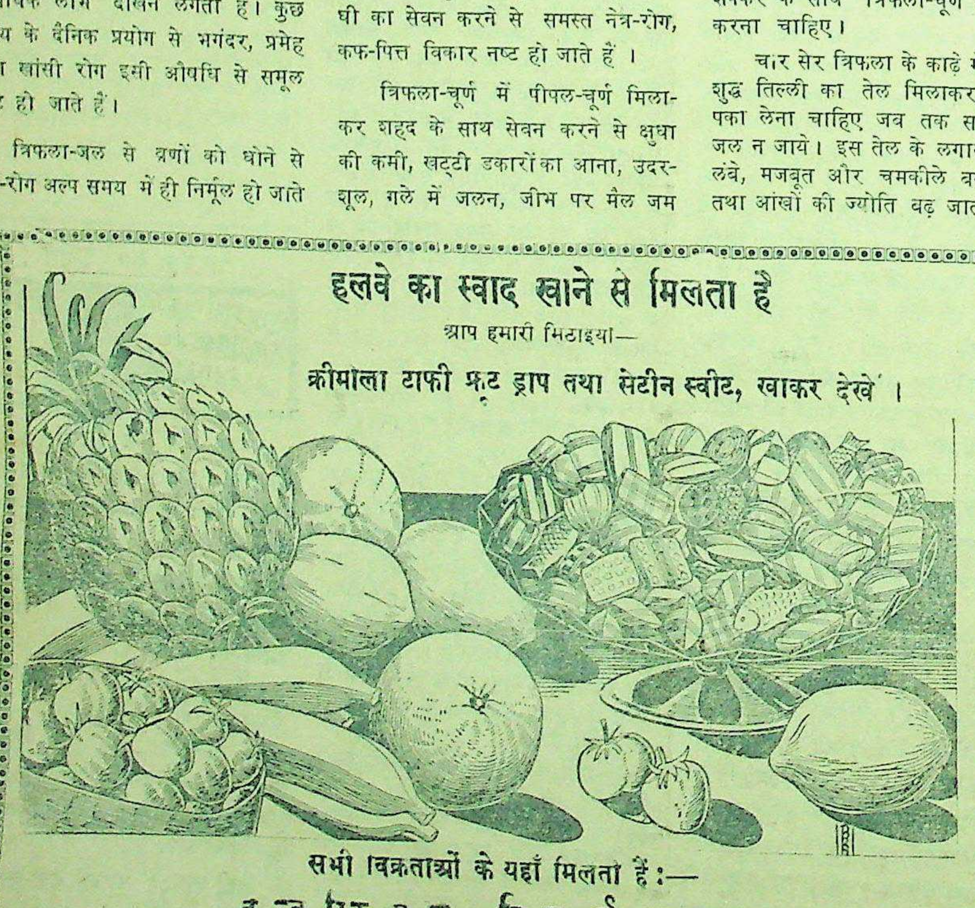

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयां—
क्रीमाला टाफी फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।
सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलता हैं :—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग इलाहाबाद।

मुफ़्त ! मुफ़्त !!
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ० ए०,
ए० पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी
और होम्योपैथिक बायोकैमिक
आसानी से पास कर सकते हैं।
मुफ़्त मँगायें। पता :—
इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड)

सफेद बाल काला
खिजाब से नहीं हमारे
सुगन्धित तैल से बाल का पकना
सफेद बाल जड़ से काला हो जाता
तैल दिमागी ताकत और आँखों की
को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास
मूल्य वापस की शर्त लिखा
२॥), आधा बाल पका हो तो
कुल पका हो तो ५) का तैल
एल० एन० गुप्ता
नं० ८ पो० नवादा,

मातृमण्डल

क्या नारियों से सतर्क रहना चाहिए?

क्या है और किधर जा रहा है, इसे समझना बड़ी टेढ़ो खीर है

लेखक, श्री प्रेम कपूर कंचन

क्या है!" एक बार मेरे मित्र बड़ा बेतुका सा प्रश्न है मैंने मैंने कहा नारी क्या है उसके निर्माण-कर्ता ब्रह्मा भी सकता, अपने लोगों की क्या संसार में नारी एक उलझी उसका वासस्थान ना... एवं उसके समझने के लिए राजा को वैराग्य लेना पड़ा। महा- को जीवदान देना पड़ा। कहां तक ठीक हूं।

कहा—"राजा भर्तृहरि को लेना पड़ा सो कैसे?"

दिया बड़ा लम्बा किस्सा है। दशरथ ने कैकेयी पर विश्वास कुछ खोकर दिया ठीक उसी भर्तृहरि भी अपनी महारानी पर करके और उनके प्रेम में कर चुके थे; लेकिन वह को दिलासा देती रही। के एक कुशल सेना- हुई थी। सेनापति नारी कन्या के प्रेम में कन्या एक ग्वाले के प्रेम और ग्वाला स्वयं एक गोबर प्रेम करता था।

के राज्य में एक महामुनि उन्होंने दरिद्रता दूर करने को सिद्ध किया और एक किया। पर वह उसका न कर सके और उसे ले भर्तृहरि को भेंट में दे दिया। ने विचार किया यह भी नहीं मेरी प्रिय प्रिया को चाहिए और उन्होंने उसे दिया। इसी प्रकार प्रेमी को और प्रेमिकाओं से प्रेमी जाता हुआ वह फल गोबर- में जा पड़ा। वह गोबर- न पच सका। वह अपनी में उस फल को गोबर ले चली। सौभाग्य- के हेतु उधर से जा रहे थे, उन्होंने वही फल देखा। किस्सा चल पड़ा और अन्त में बड़ी पूछ-ताछ के बाद यह पता लगा कि फल वही है जिसे उन्होंने महामुनि से पाया था। उन्होंने देखा विश्व का षड्यंत्र खुल गया। नारी पर से उनका विश्वास उठ गया ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार से राजा दशरथ का कैकेयी पर से एवं सती पर से महादेव जी का विश्वास उठ गया था उन्होंने रामायण में कहा है कि आज से नारी पर से विश्वास नहीं रह जायगा। राजा भर्तृहरि की आंखें खुलीं उन्होंने विराग लिया और उसके पश्चात् उन्होंने तीन शतक की रचना की। नीति शतक, शृङ्गार शतक एवं वैराग्य शतक। नीति शतक के एक श्लोक में उन्होंने कहा है—

दाक्षिण्यं स्वजने दया परिजने
शाठ्यं सदा दुर्जने,
प्रीतिः साधुजने नयो नृपजने
विद्वज्जने चार्जवम्।
शौर्यं शत्रुजने क्षमा गुरुजने
नारीजने धूर्तता,
ये चैवं पुरुषाः कलासु कुशलाः
तेष्वेव लोकस्थितिः॥

नीति श्लोक।

भर्तृहरि ने श्लोकस्थिति में पुरुष की विवेचना करते हुए कहा है कि अगर पुरुष कुशल बनना चाहता है तो उसे चाहिए कि वह इन बातों पर चलने का प्रयोग करे। उन्होंने कहा है नारी से हमें धूर्तता करनी चाहिए।

कारण क्या था? उसका कारण आज भी हमारे नारी-समाज में देखने को पर्याप्त रूप में मिलता है। अगर आज एक पुरुष खुलकर नारी के सम्मुख आता है उसी समय उसे प्रथम हार मिलती है। वह नारी के अधिकार में खड़ा हो हर बात पर हां-हजूरी करता है। नारी उससे क्या नहीं करा डालती है? नारी के हर विचार चाहे वह किसी भी अवस्था में हो पूर्ण करने को बाध्य होता है। इस प्रकार नारी पुरुष की कमजोरियों से फायदा उठाती है। यह नारी को शोभा नहीं, देता, पर वे बेचारी क्या करें। उनके सामने समय ने बड़ा प्रश्न लाकर उपस्थित कर दिया है। समय की गति के अनुसार उन्होंने अपने को बदलना शुरू कर दिया है। यह विचार एक स्थिति में ठीक भी है। हमें लकीर के फकीर नहीं होना चाहिए फिर भी पुरानी परिपाटी को मेटकर फिर ककहरे से प्रारम्भ करना बुद्धिमत्ता नहीं; इसलिए उन्हें चाहिए कि पुरानी परिपाटी के बहाव को थोड़ा सा नये रूप की आंच में लाकर मध्यम रीति का अनुसरण करना चाहिए।

परन्तु भारत की नारियों ने एक अलग अपनी रीति स्थापित की है। आज हमें हर जगह यही सुनने का सौभाग्य मिलता है कि कहीं सास-बहू में झगड़ा हुआ; क्यों सास कुटिला है। कहीं बहू कुटिला है और नित्य घर में नई कलह का निर्माण होता है। दिन भर थके हुए पति महोदय को प्रति संध्या एक नवीन रचना देखने को मिलती है उसका कारण क्या है पुरुष की कमजोरी। अश्व-की कमजोरी सारथी का अनुभव प्रकट करती है। अगर सारथी उसे ठीक राह पर नहीं ले आ पाता तो वह कुशल चालक नहीं कहा जाता।

मेरे कहने का यह तात्पर्य नहीं कि पुरुष को नारी की तरफ से उदासीन-सा हो जाना चाहिए। उन्हें नारी को सास के रहते घर की मालकिन या कुंजी रखने का अधिकार न प्रदान करना चाहिए। वास्तव में पुरुष करते क्या हैं वे औसत में या तो नारी को पाप की प्रतिमा कहकर जीवन के सबसे अँधेरे गर्त में ढकेल देने का प्रयास करते हैं या उसे उठाकर घर की मालिकन बना डालते हैं। मैं पूछता हूँ अगर नारी घर की लक्ष्मी ही बनी रहे तो क्या हो जाय?

नारियां अगर पुण्य के फेर में पड़कर कुछ दान-दहेज कर डालती हैं तो पुरुषों को उनके विपरीत कहने का कोई अधिकार नहीं। अगर वे त्योहार को किसी प्रकार भी हायतोबा करके कंजूस पुरुषों से ज्यादा खर्च करा देती हैं तो भी बुरा नहीं कहना चाहिए।

अगर आज किसी पुरुष से कहा जाय कि रसोईघर में जरा चूल्हा फूंको और पका-पकाकर खिलाते रहो तो वह अगर करेगा तो हर बात को सोचेगा। कहेगा यार इतना खर्च हो गया कोई दूसरा आ जायगा तो वह मुंह बिचकायेगा अपने लिये बढ़िया से बढ़िया सामान बनाकर खायेगा लेकिन नारियों से पूछो जिनका औसत जीवन चूल्हे के पास बीतता है जो खिलाना जानती हैं, खाना नहीं।

नारी वह सहारा है जो बचपन में मां बनकर यौवन में पत्नी बनकर बुढ़ापे में सेविका बनकर कर्म करती है। नारी का मूल्य किसी ऐसे व्यक्ति से अगर पूछा जाय जिसकी पत्नी मर चुकी है तो वह नारी के मूल्य का आंका हुआ उत्तर दे सकता है।

हम उन नारियों के बारे में नहीं कह रहे हैं जो कि बहुत आगे जा चुकी हैं। जिन्होंने पुरुष को खिलवाड़ समझकर उससे टक्कर लेने की चेष्टा की है। इसलिए प्रत्येक पुरुष को चाहिए कि वह अपनी आमदनी का हिसाब अपने स्वयं हाथों में रखे। अपनी गुप्त बातें नारी से कभी न कहे और नारी का आधिपत्य स्वीकार न करे तो काम चल सकता है नहीं तो अगर गधा बनकर ही जीवन बिताना है तो दूसरी बात है। इसलिए नारी से अवश्य धूर्तता करनी चाहिए। मैं पुरुषवर्ग की ओर से आजकल की उन रसीली नारियों से प्रार्थना करता हूं कि अपने पुरुषों के प्रति अपना विश्वास बनाये रखने के लिए कोई ऐसी नीति काम में न लायें जिससे उनके विश्वास पर धक्का पहुँचे और उसका परिणाम सामने है। सती ने स्वयं जीवन से हाथ धोया था और कैकेयी ने पति के जीवन से। हम आशा करते हैं कि मेरे इस उत्तर से मेरे मित्र महोदय की शंका दूर हो चुकी होगी और वह भी नारीवर्ग को सराहते हुए उससे सतर्क हो चुके होंगे।

बंबई में लेडी होम स्कूल—जो नर्सिंग की शिक्षा के लिये खोला गया है—की छात्राओं के साथ लेडी माउन्टबेटेन।

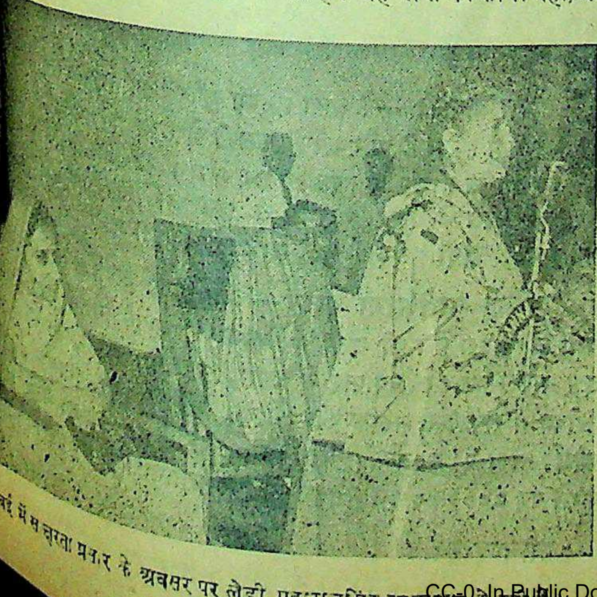

बम्बई में सुरक्षा सप्ताह के अवसर पर लेडी महाराजसिंह व्याख्यान दे रही हैं।

बिना लाइसेन्स रखिए
अमेरीकन
माडल पिस्तौल
मुफ्त

यह रिवाल्वर, जिसकी लम्बाई नौ इंच और वजन केवल १५ औंस है, असली अमेरीकन पिस्तौल से भी अधिक सुन्दर और उपयोगी है। इसमें अपने आप घूमने वाली चर्खी लगी है जिसमें ६ से लेकर ५० शाट तक भरे जाते हैं। गुंडों, चोर डाकुओं और जंगली जानवरों से रक्षा करने के लिए यह अनुपम अस्त्र है।

मूल्य छः शाट वाला माडल—

नं० २२२२ ६॥) ३३३३ (नया माडल) ७॥।=) ४४४४ स्पेशल ९॥)

नं० ८८८८ (सिल्वर पालिश स्पेशल माडल) १२॥) ५० शाट वाला १३॥)

फालतू शाट ४ दर्जन ४) चमड़े की पेटी व केस ४) पुर्जों का सेट १।)

सूचना—ऊपर लिखे हुए किसी भी नम्बर के तीन रिवाल्वरों को एक साथ मंगाने पर ५० शाट वाला एक रिवाल्वर मुफ्त दिया जाता है।

यूनाइटेड ट्रेडर्स, पो० ब० नं० २४३, कानपुर यू० पी०

UNITED TRADERS P.O. BOX 243, KANPUR

संवाददाताओं के पत्र

'अप्रैल फूल' और राष्ट्रीय होली

साम्राज्यवादी मनोभावना के शिकार अँगरेजों को आज हमने अपने देश से बाहर निकाल दिया है; बचे-खुचे अँगरेज भी अपने बोरिया-बिस्तर गोल कर रहे हैं। अँगरेजों ने सदा यही कहा कि धार्मिक मामलों में वे कभी कोई दखल न देंगे, पर चुपके-ही-चुपके अँगरेजी शिक्षा के द्वारा रोग के कीटाणु भारतीयों के दिमागों में भरे गये। हर हर्ष हमारे यहां पहली अप्रैल के दिन तथाकथित शिक्षित और विद्यार्थीवर्ग 'अप्रैल फूल' जैसी भोंडी प्रथा का अनुकरण कर, अपने कृत्य पर गर्व महसूस करता है। इस प्रकार दूसरों को बुद्धू बनाना स्वयं ही बुद्धू बनना है। माना कि एक अर्से से यह प्रथा हमारे आमोद-प्रमोद का साधन रही है। हिन्दी-साहित्य के युग-निर्माता भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के जीवन की, 'अप्रैल फूल' बनाने की, वे दो घटनाएँ संस्मरणीय हैं। लेकिन आज परिस्थितियां परिवर्तित हो चुकी हैं आज हम स्वतन्त्र भारत में सांस ले रहे हैं, और स्वतन्त्र वायुमण्डल में ही हमें विचरण करना है। स्वतन्त्रता को चिरस्थायी बनाने के लिए आवश्यकता है कि अपनी मानसिक दासता के बन्धनों को हम टूक-टूक कर दें, तथा भारतीय संस्कृति और सभ्यता का संवर्द्धन ही हमारा पुनीत कर्त्तव्य हो। लार्ड मेकाले के लेखानुसार सच्ची शिक्षा हम हासिल करें। हमारा अपना राष्ट्रीय पर्व 'होली' होते हुए, हम 'अप्रैल फूल-दिवस' क्यों मनायें? महात्मा गांधी के जीवन से हमें बहुत कुछ सीखना है। बापू ने जीवन भर हमें मानव-धर्म के पालन का आदेश दिया। आज उनके निधन पर हमारा निश्चय यही होना चाहिए कि जो शिक्षा उन्होंने हमें दी, उसे कार्यरूप अब हम दें। अँगरेजों की भद्दी देन 'अप्रैल फूल-दिवस' मनाने का पूर्ण बहिष्कार हो; तथा प्रेम और भ्रातृत्व-भावना के प्रसार का प्रतीक, परम पुनीत पर्व 'होली' ही हमारा त्यौहार है। खेलें तो, गुलाल और चंदन से चंदन की होली' हम ही खेलें, "कीचड़ की होली" नहीं; गुलाम भारत की नहीं, आजाद भारत की होली हम खेलें।

पिलानी (जयपुर) —अखिल विनय

'मानव-महान् ट्रेक्ट माला'

महात्मा गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम को दृष्टिगत रखकर एक ट्रेक्ट-माला का आयोजन किया गया है। बापू की शिक्षाओं का प्रचार और प्रसार ही प्रकाशन का प्रमुख उद्देश्य है। एक ट्रेक्ट की पृष्ठ-संख्या ८ तथा मूल्य केवल दो आना रहेगा। लेखक व कवि महानुभावों से, जो इस पुनीत कार्य में सहयोग का हाथ बँटाना चाहें, प्रार्थना है कि अपनी रचनाएँ निम्न पते पर शीघ्र भेजें—श्री सम्पादक, "मानव-महान् ट्रेक्टमाला" कार्यालय, पोस्टबाक्स ४५४२, बम्बई नं० ८ इन ट्रेक्टों को विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ भी भेजा जायगा। १५ अप्रैल से ट्रेक्टमाला का प्रकाशन प्रारम्भ हो जायगा। जिन लेखकों के निबन्ध स्वीकृत होंगे, उन्हें सम्मानस्वरूप ट्रेक्ट की ८ प्रतियां भेंट की जावेंगी। ट्रेक्टों की प्रतियां इस पते पर भी मिल सकेंगी।

"सारस्वत सदन" —अखिल विनय
पिलानी (जयपुर)

शिमला में नवनिर्मित "हिमांचल प्रदेश" वासियों का एक विराट् सम्मेलन प्रथम बार हिमाच्छादन के साथ-साथ पूर्वी पंजाब के पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी श्री बेलीराम जी, एम० एल० ए० की अध्यक्षता में हुआ। जिसमें स्वतन्त्र टिहरी गढ़वाल राज्य प्रजामण्डल के प्रमुख कार्यकर्ता श्री बुद्धिसागर नौटियाल, स्वतन्त्र जुब्बल प्रजामण्डल के प्रधान श्री भागमल सौहठा, बुशहर प्रजामण्डल के प्रधान श्री सत्यदेव बुशहरी, बाघल राज्य प्रजापरिषद् के प्रधान श्री हारासिंह पाल, भज्जी प्रजामंडल के प्रधान श्री भास्करानन्द आदि अनेक वक्ता महानुभावों ने अपने जोरदार शब्दों द्वारा निम्नलिखित प्रस्तावों का समर्थन किया जो सर्वसम्मति द्वारा स्वीकृत हुए–(१) "हिमाचलप्रदेश" वासियों का यह सम्मेलन संसार की महान् आत्मा, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की हत्या के घृणित और लज्जित कृत्य के प्रति हार्दिक शोक प्रकट करता है। "हिमाचलप्रदेश" जिसका जन्म पूज्य स्वर्गीय बापू के आशीर्वाद से हुआ, का यह सम्मेलन प्रतिज्ञा करता है कि बापू के आदर्शों का पालन करते हुए 'हिमाचल' को उन्नत करने में संलग्न रहेंगे।(२) 'हिमाचलप्रदेश' के स्वतन्त्रता संग्राम में जो लोग अपना बलिदान दे गये हैं उनके प्रति यह सम्मेलन हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता है तथा भारत सरकार के रियासती विभाग से अनुरोध करता है कि हिमाचलप्रदेश की विभिन्न रियासतों में जो राजबन्दी हैं उन्हें शीघ्र से शीघ्र मुक्त कराने का आदेश करें, (३) भारत - सरकार के रियासती विभाग ने "हिमाचलप्रदेश" को पृथक् प्रान्त स्वीकार करके अपने न्याय का परिचय दिया है। हिमाचलवासी भारत-सरकार के रियासती विभाग को इस निर्णय के प्रति धन्यवाद उपस्थित करते हैं। (४) हिमाचल - प्रदेश की सीमा के भीतर भारतीय संघ के जो भाग शिमला, तहसील कोटरवाई, कोटगढ़, कुल्लू, रियासत पटियाला की तहसील, कंडाघाट तथा गढ़वाल के हैं को हिमाचलप्रदेश में सम्मिलित किया जाये तथा रियासत टिहरी गढ़वाल को भी इसी प्रदेश में शामिल होने का अधिकार दिया जाये। जैसे कि इन इलाकों के लोग भी इससे सहमत हैं। (५) हिमाचलप्रदेश को पूर्ण प्रान्तीय सत्ता दे दी जाये।

—संवाददाता

* * *

हरिद्वार में आजकल नाजायज शराब की बिक्री अधिक बढ़ रही है। चौ० रामभज म्यु० कमिश्नर तथा स्थानीय पुलिस की दौड़-धूप से कई स्थानों पर छापे मारकर शराब पकड़ी गई; परन्तु कहा जाता है कि आबकारी के इन्स्पेक्टर के यह कहने पर कि इसमें पानी मिला हुआ है, अभियुक्त छूट जाते हैं। लोगों में इस बात की बड़ी चर्चा है।

हरिद्वार में बाबा काली कमलीवाले पंचायती क्षेत्र की ओर से यहां पर जनता के लाभ के लिए एक घंटाघर बन रहा था। नियमानुसार म्यु० कमेटी से नक्शा भी स्वीकृत करा लिया गया था; परन्तु अब अचानक यह कहकर कि इसमें कमेटी की भी कुछ जमीन आती है, निर्माण-कार्य रुकवा दिया है। स्थानीय जनता में इसकी बड़ी चर्चा है। कहा जाता है कि कुछ स्वार्थी और ईर्षालु व्यक्तियों द्वारा गलतफहमी फैलाने का यह फल है। आशा है सम्बन्धित अधिकारी तथा क्षेत्र के स० मंत्री रा० ब० पं० श्रीदत्त जी मिलकर शीघ्र ही इसका कोई हल निकालेंगे ताकि २–४ इंच भूमि के लिए घंटाघर का निर्माण न रुके।

—संवाददाता

* * *

टिहरी में लोकप्रिय मंत्रिमंडल की स्थापना के बाद अभी एक महीना भी नहीं हुआ है; परन्तु लोकप्रिय मंत्रियों ने इसी बीच में कई महत्त्वपूर्ण सुधार कर दिये हैं। टिहरी से गंगोत्तरी की ओर धरासू तक मोटर सड़क बन रही है और राज्य के दूसरे इलाकों में भारी भारी पहाड़ों को काटकर सुन्दर सड़कें बन रही हैं। सबसे अधिक सुधार शिक्षा-विभाग में हुए हैं। अगले एक महीने में राज्य में करीब २५० प्राइमरी स्कूल हो जावेंगे और उसी अनुपात से मिडिल स्कूल भी खुल रहे हैं। मंत्रिमण्डल में पुरानी सरकार द्वारा सन् १९४२ से १९४८ तक राजनैतिक कार्यकर्ताओं पर किये गये जुर्माने वापस लौटाये जा रहे हैं।

सकलाना मुआफी, जहां पर जागीरदारों द्वारा आन्दोलन के दौरान में सब अधिकार जनता को सौंप दिये थे और आजाद पंचायत काम कर रही थी, भी टिहरी राज्य में शामिल हो गया है। टिहरी सरकार ने सकलाना की जनता पर किये गये सामूहिक जुर्मानों को लौटाने व वहीं के लिए दूसरे सुधारों की घोषणा कर दी है। स्मरण रहे कि टिहरी में लोकप्रिय मंत्रिमण्डल की स्थापना हो जाने पर भी आज तक सकलाना की समस्या हल नहीं हो सकी थी। इस समस्या का शान्तिपूर्ण हल करने का श्रेय आजाद सकलाना पंचायत के सरपंच श्री रामचन्द्र जी ऊनियाल को है।

प्रजामण्डल की कार्य-समिति ने सरकार से राज्य के भावी आर्थिक विकास तथा दूसरे विषयों पर योजना बनाने के लिए विभिन्न कमेटियां नियुक्त करने की मांग की है। आन्दोलन के दौरान में पिछली सरकार द्वारा की हुई ज्यादतियों को जांच करने के लिए पांच सदस्यों की एक जांच-समिति बनाई गई है।

—सुन्दरलाल बहुगुणा

* *

गोलाघाट (आसम) में प्रान्तीय मारवाड़ी-सम्मेलन के अवसर पर आगामी तारीख ४ अप्रैल को होनेवाले मारवाड़ी-युवक सम्मेलन के आयोजन की धूमधाम से तैयारियां की जा रही हैं। आसाम के सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता श्री हरेश्वर गोस्वामी बार एट-ला से उद्घाटन के लिए अनुरोध किया गया है।

आज युग की मांग है कि समाज की बागडोर प्रगतिशील विचारोंवाले नवयुवकों के हाथ में हो। वह अपनी शक्ति से निश्चेष्ट समाज में प्राण उसे आगे बढ़ायें। सभी प्रान्तों से भ्रातृत्व की भावना बढ़ावें, अधिवेशन का प्रमुख लक्ष है। सामाजिक अभिनय, स्वास्थ्य आदि उत्सवों की विस्तृत आयो व्यवस्था की गई है। बाहर से केसरी श्री बृजलाल जी बियाणी, राममनोहर लोहिया, सेठ गोवि श्री राधादेवी गोयनका, श्री मुरारका आदि प्रमुख नेताओं के की आशा है।

—मदनलाल

* *

कानपुर में विश्व-शान्ति के श्री श्री योगिराज धर्म्मध्रुव गौ बृहत्—आध्यात्मिक शिक्षाश्रम करनेवाले हैं। जहां किसी भेद-भा हर धर्म्मावलम्बियों को अध्यात्मवा शिक्षा व्यवहारिक रूप में दी जा योग के आधार पर नवीन युग का नि किया जायगा बाल-शिक्षण की भी गुरुकुल-प्रणाली पर होगी।

शिक्षाश्रम के निर्माण तथा कार्य-संचालन के लिए योगिराज ध्रुव द्वारा अपील की जा रही है कि शक्ति सहायता पहुंचाई जाये।

सेक्रेटरी, श्री धर्म्मध्रुव आश्रम गौरनगर, पोस्ट कांहजरी (कान

—संवाद

* * *

प्रयाग से निकलनेवाला 'बापू अङ्क' आगामी मई मास में होगा। हिन्दी के समस्त लेख कवियों से प्रार्थना है कि वे १९४८ तक विश्ववन्द्य म के सम्बन्ध की बालोपयोगी पद्य-सामग्री भेजने की कृपा क

—सम्पादक

फैंसी सिल्क साड़ी
आकर्षक डिज़

कलापूर्ण ३-४ इंच चौड़ा
नं० ७ ८ ९
१८। २३। २८
२) पेशगी बाकी वी० पी०
थोक व्यापारियों का खास
बमाका इन्डस्ट्रीज़,
जुहा नं० ६ कानपुर

५०० रु. इनाम

धन कवच:—के द्वारा मनुष्य कुबेर जैसा धनवान् होने का अवसर प्राप्त करता है और लक्ष्मी उसकी चेरी बन जाती है। घर में दुष्ट ग्रह-शान्ति होकर हर तरह से घर में धन की वर्षा होती है। पुश्त दर पुश्त के लिए गरीबी से छुटकारा मिल जाता है। ४॥।) रु०, चाँदी का ६॥।) रु०, सेने का ९॥।≥) रु०

सिद्ध वशीकरण यन्त्र:—जिसे आप चाहते हैं वह पत्थर क्यों न हो इस यंत्र की अलौकिक शक्ति से आपसे मिलने चला इसे धारण करने से व्यापार में लाभ, मुकदमा, कुश्ती, लाटरी में परीक्षा में सफलता, नवग्रह की शान्ति, नौकरी की तरक्की होती कीमत ताँबा २) रु०, चाँदी का ३) रु०, सोन का ८।≥) रु० गलत करने पर ५००) रु० इनाम। अपना पूरा पता साफ साफ लिखें।

आनन्द स्वामी (D.D.A.) बाग रामानन्द, अमृतसर।
D.D.A. Bagh Ramanand, Amritsar

शदूत चित्रावली

द्रास में होनवाले अखिल भारतीय हिला-सम्मेलन में भारत की प्रसिद्ध हिलायें सम्मिलित हुई थीं। इन चित्रों में कुछ प्रमुख महिलायें व्याख्यान देती हुई दिखाई पड़ रही हैं।

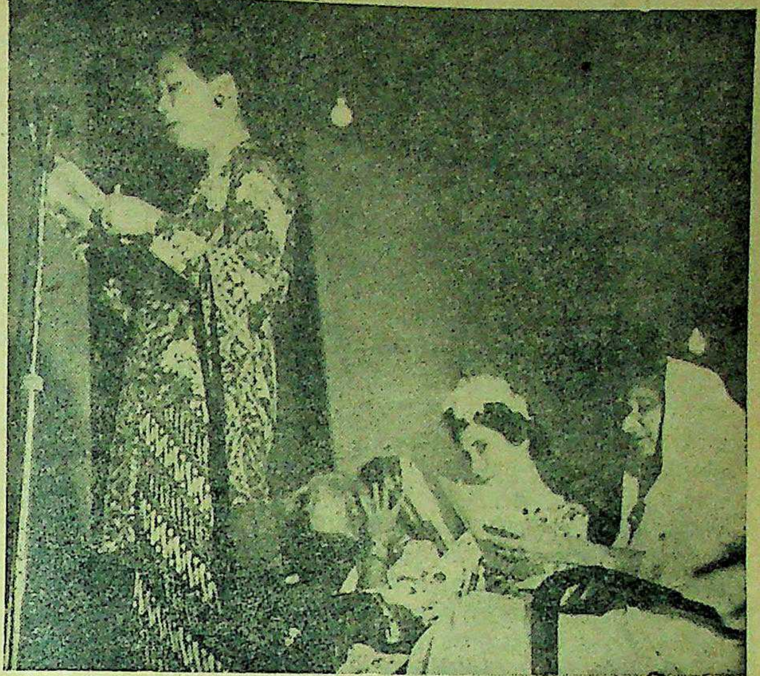

मद्रास में होनेवाले अखिल भारतीय महिला-सम्मलन के अवसर पर इंडोनेशिया की महिला-प्रतिनिधि भाषण दे रही है। गवर्नर की पत्नी तथा राजकुमारी अमृतकौर बैठी हुई दिखाई दे रही हैं।

महिला-सम्मेलन में श्रीमती अनुसुइयाबाई काले सभानेत्री-पद से भाषण दे रही हैं।

सम्मेलन में मद्रास-गवर्नर की पत्नी, श्रीमती अम्मुस्वामिनाथन् तथा बुरका पहने एक मुस्लिम महिला प्रतिनिधि से बातें कर रही हैं।

प्रमुख महिला नेता श्रीमती मिट्ठनलाम सम्मेलन के अवसर पर होनेवाली प्रदर्शिनी का उद्घाटन कर रही हैं।

भारत-सरकार की स्वास्थ्य मन्त्रिणी राजकुमारी अमृतकौर सम्मेलन में आई हुई महिला-प्रतिनिधियों के बीच भाषण दे रही हैं।

गांधी-स्मारक-कोष

महाराजा ग्वालियर की अपील

ग्वालियर के महाराजा सिंधिया ने प्रजा के नाम गांधी-स्मारक कोष में धन देने की एक अपील निकाली है, जो इस प्रकार है—

राष्ट्रपिता विश्ववन्द्य महात्मा गांधी के अकस्मात् तथा सोचनीय निधन के अवसर पर ग्वालियर के प्रजा ने जिस धैर्य तथा साहस से इस दारुण दुःख को सहन किया तथा पूज्य बापू को अन्तिम श्रद्धांजलि अर्पित करते समय जिस प्रेम, श्रद्धा तथा भक्ति का परिचय दिया वह इस राज्य की परिपाटी के अनुरूप था। इस दुखद अवसर पर मेरी तथा मेरी प्यारी प्रजा के प्रत्येक वर्ग की यही हार्दिक इच्छा रही कि महात्मा जी के महान् उपकारों से किसी अंश में उऋण होने तथा उनकी हत्या के जघन्य पातक का प्रायश्चित्त करने का उपाय केवल यही हो सकता है कि देश के प्रत्येक वर्ग का प्रत्येक व्यक्ति तन मन धन से उस स्वर्गीय विभूति के उद्देशों की पूर्ति के लिए तत्पर हो जावें।

अपनी प्रजा की इस आकांक्षा की पूर्ति के लिए मैंने एक समिति नियुक्त की है जिसके सदस्य निम्नलिखित होंगे। और जो मेरी अध्यक्षता में कार्य करेगी:—

१—श्री लीलाधर जोशी, प्रधान मंत्री,	उपाध्यक्ष
२—श्री तख्तमल जैन,	कोषाध्यक्ष
३—श्री राधेलाल व्यास	सदस्य
४—श्री गोपीकृष्ण विजयवर्गीय	,,
५—श्री सीताराम जाजू	,,
६—ब्रि० सरदार एम० एन० शीतोले	,,
७—कर्नल सरदार डी० के० जाधव	,,
८—कर्नल सरदार एम० आर० फालके	,,
९—सेठ सर हुकमचन्द जी	,,
१०—रा० ब० सेठ लालचन्द सेठी	,,
११—श्री दुर्गाप्रसाद मंडेलिया	,,
१२—श्री दामोदरदास नागोरी	,,
१३—श्री हरिकिशनदास भूता	,,
१४—श्री युधिष्ठर भार्गव	मंत्री

उक्त कमेटी के तत्त्वाधान में समस्त ग्वालियर राज्य में धन एकत्रित किया जायेगा तथा महात्मा जी की स्मृति चिरस्थायी करने के लिए योजना बनाई जायगी।

आज भारतवर्ष का प्रत्येक निवासी, चाहे वह गरीब हो या अमीर, बालक हो या वृद्ध यह अनुभव करता है कि हम सब महात्मा गांधी के चिरकाल तक ऋणी रहेंगे। जैसा कि मैं इससे पूर्व कह चुका हूं "आज के भारत के जागृति तथा विकास का इतिहास महात्मा जी की जीवनगाथा है।" उन्होंने देश में जीवन-ज्योति जगाई, जन जन में एक देश को स्वतंत्र करने के लिए उन्होंने सत्य अहिंसा के जिन अमोघ तथा अनोखे शस्त्रों का प्रयोग किया उनके अचूक प्रभाव को देखकर सारा संसार आश्चर्यचकित हो गया तथा स्तब्ध रह गया। अन्त में इस स्वतंत्रता को स्थायी करने के लिए तथा इसलिए कि हमारा देश संसार के सभ्य देशों के सामने सिर ऊँचा रख सके, महात्मा जी ने साम्प्रदायिकता के भयंकर दानव से निर्भीकतापूर्वक युद्ध करते हुए अपने आदर्शों की बलिवेदी पर अपने प्राणों का उत्सर्ग किया। उनके बलिदान की कहानी संसार के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखी जावेगी।

पुण्यश्लोक महात्मा जी के ऋण से हम उऋण हो नहीं सकते, परन्तु उनकी आत्मा की शान्ति के लिए हम सतत प्रयत्न कर सकते हैं, हममें से कौन ऐसा अभागा है जिसकी हार्दिक इच्छा यह न हो कि पूज्य बापू की स्मृति को हम अमर करें तथा उनका वरद हस्त हमें चिरकाल तक आशीर्वाद दे। यह कार्य केवल उनके उन उद्देशों की पूर्ति से हो सकता है जिनके लिए वे जीवन भर तपस्या करते रहे और जिन पर उन्होंने अपने प्राण न्योछावर किए। यह स्पष्ट है कि उनके उद्देशों की पूर्ति के लिए स्थापित कोष में अधिक से अधिक धन देना प्रत्येक देशवासी का पवित्र कर्त्तव्य है। मुझे विश्वास है कि मेरी प्यारी प्रजा में से प्रत्येक व्यक्ति इस कोष में कम से कम अपनी दस दिन की आय देकर अपना यह कर्त्तव्य पूरा करेगा। मैं मानता हूँ कि इस पवित्र कार्य के लिए किसी से भी विशेष आग्रह करने की आवश्यकता नहीं है और न इस काम में जाति, धर्म या सम्प्रदाय के किसी भेदभाव की गुंजायश है; परन्तु फिर भी मेरा यह कर्त्तव्य है कि इस पुनीत कार्य के लिए धन देने की स्वाभाविक प्रेरणा में मैं अपना नम्र निवेदन भी मिला दूं।

मैं इस कोष का प्रारम्भ अपनी ओर से १० लाख रुपये देकर करता हूं। मुझे विश्वास है मेरे राज्य का प्रत्येक व्यक्ति इस कोष में अधिक से अधिक दान देकर दरिद्रनारायण की सेवा के पुण्य का भागी बनेगा। साथ ही मेरी यह भी प्रार्थना है कि राज्य का हर निवासी तथा सभी सार्वजनिक संस्थाएँ इस निधि में ग्वालियर के गौरव के अनुरूप धनराशि इकट्ठा करने में महात्मा गांधी-स्मारक-समिति का हाथ बँटायें।

—जे० एम० सिंधिया

(पेज २ का शेष)

आक्रमण होने पर तुरंत पूरी सैनिक सहायता देने का वचन दिया है। साधारण परिस्थिति में ऐसी संधि से विशेष भय की आशंका न होती; परंतु इस संबंध में तीन बातें बड़ी भयावह हैं—(१) यह संधि अमेरिका के धन से पुष्ट होगी; (२) इसे करते समय यह स्पष्ट कर दिया गया है कि इसका उद्देश्य पश्चिमी राज्यों की सभ्यता की साम्यवाद की बाढ़ से रक्षा करना है; (३) चैकोस्लोवाकियाके सरकार-परिवर्तन को हिटलर द्वारा उसके जीते जाने से मिलता हुआ बताया गया है।

इसका तात्पर्य यह हुआ कि अमेरिका की सरकार इन सभी राज्यों को सैनिक तैयारी के लिए धन देगी। यदि इनमें से किसी में भी साम्यवादी दल का प्रभाव बढ़ा और साम्यवादी सरकार की स्थापना हुई तो इसे रूसी आक्रमण घोषित करके युद्ध छेड़ा जा सकेगा। इटली और फिनलैंण्ड में भी रूस का प्रभाव बढ़ने की संभावना है।

रूस पड़ोसी राज्यों से सैनिक संधियां कर रहा है। वह जर्मन और आस्ट्रियन लोगों को अपनी नीति से प्रभावित करना चाहता है। वह नये हथियार बनाने में भी लगा है। सभी स्वतन्त्रता के लिए लड़नेवाले देशों में उसके आदर्शों से प्रेरित स्थानीय साम्यवादी दल अपना प्रभाव बढ़ाकर रूस की शक्ति बढ़ाने की पृष्ठभूमि तैयार कर रहे हैं। अमेरिका के वर्तमान मंत्री जलसेना, थलसेना, नभसेना तथा नये अस्त्रों को बढ़ाने में शीघ्रता करने की सलाह दे रहे हैं। ब्रिटेन के युद्धमंत्री भी युद्ध की सम्भावना को स्वीकार करते हैं।

इस भांति साम्यवाद और पूंजीवादी लोकतंत्र के प्रतिनिधि राष्ट्रों के वैमनस्य और विरोध के कारण युद्ध के बादल फिर निकट आते दिखलाई पड़ रहे हैं। फिर भी यह आशा की जा सकती है कि युद्ध कम से कम निकट भविष्य में नहीं होगा।

इस आशा के मुख्य आधार यह हैं—(१) आधुनिक युद्ध बड़ा ही विनाशकारी होता है और प्रत्येक नया युद्ध पिछले युद्ध से भीषणतर होता है। इस समय तक अणुबम से भी भयानक युद्धास्त्र निर्मित हो चुके हैं। इसलिए तृतीय युद्ध इतना विध्वंसकारी होगा कि द्वितीय युद्ध के कुपरिणामों से त्रस्त जनता, सरकार द्वारा युद्ध का आवाहन करने पर भी उसमें भाग लेने से हिचकेगी। (२) सभी देशों की सरकारें इस समय निर्माण-कार्य में व्यस्त हैं और उसके लिए शान्ति की इच्छुक हैं। इसलिए गीदड़-भभकी और कूटनीतिज्ञ पैंतरेबाजी के बावजूद वे युद्ध से बचने का यत्न करेंगी। (३) साम्यवादी रूस कोई बड़ा युद्ध प्रारम्भ करने में डरेगा, क्योंकि अमेरिका की अपेक्षा उसकी क्षति अधिक हुई है। दूसरे उसे शान्तिकाल में साम्यवादी दलों को संगठित करने में सुविधा होगी और वह आशा कर सकता है कि उसका उद्देश्य बिना युद्ध किये ही सिद्ध हो जायगा। (४) अमेरिका बिना साम्यवादी दलों की शक्ति को नष्ट किये नया युद्ध नहीं आरम्भ करेगा, क्योंकि उस दशा में प्रत्येक देश में भीषण पंचमांगी पैदा हो जायँगे। साम्यवादी दलों को नाश करने में या तो बहुत देर लगेगी या सम्भव है पूंजीवाद ही नए हो जाय।

परन्तु आन्तरिक स्थिति ठीक होते-होते अर्थात् लगभग १० वर्ष के भीतर—तीसरे युद्ध की सम्भावना हो सकती है। क्या उसका निवारण सम्भव है?

होली में

लेखक, श्री रमानाथ अवस्थी

मानव होली में मन का मैल जला दो!
गंगा-जल-सा पावन मानव का जीवन,
जिसके चरणों की रज धोता है सावन।
निज सांसों में जो मुक्ति बांधकर लाया,
जो तूफानों में भी रहकर मुसकाया।
ऐसे जीवन को कलुषित करनेवाली,
ममता को निज होली में आज जला दो!

× × ×

केसर, कस्तूरी, रंग-बिरंगी रोली,
भर कहां सकी है मानवता की झोली!
कोकिल छिप-छिप कर अमराई में बोली,
'मानव ने मानव की जंजीरें खोलीं।
आजाद मनुज, परतंत्र मनुज की बेड़ी,
तुम तोड़ तोड़ होली में आज जला दो!

(पेज ६ का शेष)

इस भौतिक संसार में नहीं
उनकी आत्मा काश्मीर के
के हृदयों में गूंज रही है जिनके
जवाहरलाल जी और महात्मा
काश्मीर की यात्रा की थी।
काश्मीर स्वर्ग के स्थान पर नर्क
परन्तु यह निश्चय है कि वहां से
और पाकिस्तानी सेनाएं भगा दी
इतने से ही अमरीकी और अँगरेजी
नीति समाप्त न हो जायगी,
अँगरेज अफसर भारत से हटना
पाकिस्तान सरकार स्थान दे
साथ ही कितने अँगरेज अफसर
की ट्रेनिंग देने के लिए इंगलैंड
देशों से पाकिस्तान बुलाये गये हैं।
के मामले को शान्त कर देने के
अँगरेजों की कूटनीति चलेगी, ऐसा
होता है। यह कहां और कैसे
दो स्थान जान पड़ते हैं—एक
पाकिस्तान, दूसरे पठानिस्तान।
स्थलों में गृह-युद्ध छिड़ेगा, ऐसा
जान पड़ता है। पाकिस्तान को
के लिए काश्मीर के लोगों को
अँगरेजों के वक्तव्य हो रहे हैं।
जी की मृत्यु भारत को एक
गई। देखना है पाकिस्तान क्या
काश्मीर को रणस्थल इसलिए
है कि वहां से भारत और रूस
पायें। इधर पाकिस्तान की सहा
में ईरान के स्वयंसेवक तक आने
हैं। पाकिस्तान की सहायता
गल्ला भी देगा। ऐसा आभास
अँगरेजों ने ईरान को पाकि
सहायता के लिए प्रेरित किया है।
किसी भी दिन ऐसा हो
भारत और ईरान का
वन्द हो जाय जिसका
पर पड़ेगा। इस असम्बन्ध
के दो उच्च आदर्शवादी
दूसरे से हजारों कोस दूर हो
उस समय ब्रिटिश और अमरीकी
अपने स्वार्थ-साधन में सफल हो
इधर भारत की पार्लियामेंट में
प्रधान और वैदेशिक मंत्री पंडित
लाल नेहरू ने कहा है कि
तटस्थता-नीति ने उसको संसार
भी देश का विश्वासभाजन
अतः इस वक्तव्य से आवश्यक
है कि संसार के किसी भी युद्ध में
भाग लिया जाय। इन वक्तव्यों का
यह कि संसार के अन्य राष्ट्रों ने
के मामले में अपना बदला चुका
इस ओर से उदासीन हैं। अतः
होता है कि संसार के चौधरी
देशों को आपस में लड़ाकर
उन पर शासन करना चाहते
उस युद्ध का द्वार है। यदि
अन्य देश काश्मीर-युद्ध से पाठ
सभी के सम्मुख यही समस्या
होगी। अन्य देशों को चाहे
पड़े पर भारत और पाकिस्तान
और भुगतना पड़ेगा। कितने
काश्मीर बनकर राष्ट्र की
कर देंगे। इसलिए काश्मीर
एशियाई देशों (गुलामों से
युद्ध समझकर हमें भविष्य
प्रशस्त करना आवश्यक है।

मरदानाकम
गुप्त फुंसी फोड़े आदि गुप्त
भारत भर में प्रसिद्ध
कविराज ब्रह्मस्वरूप
(D.A.) फतेहपुरी देह

हिन्द पिक्चर्स का एक निकम्मा चित्र—वामक-अजरा

जनता को पतित बनानेवाले कामुकता तथा वासना-पूर्ण चित्र क्यों दिखाये जाते हैं ?

लेखक, श्री उमेश जोशी

हिन्द पिक्चर्स के अधिष्ठाता को एक [illegible] सवार हुई है कि वासना के चट्टान [illegible] की दुनिया निर्मित करना। जनता [illegible] मिस्टर नजीर की वह पुरानी घात [illegible] है। उसने "लैला-मजनू" फिल्म [illegible] ही अच्छी तरह समझ लिया था [illegible] मिस्टर नजीर के प्रेम की दौड़ [illegible] स्वर्णलता की व्यक्तिगत दुनिया [illegible] ही सीमित है। इससे आगे वह कुछ [illegible] ही नहीं सकते। उनके प्रेम की [illegible] स्वर्णलता के यौवन की चट-[illegible] दुनिया में ही घुमड़कर रह गई [illegible] उन्होंने 'वामक-अजरा' की ओट में [illegible] की पुरलुत्फ दुनिया के वासना-[illegible] नजारे दिखलाये हैं। किसी के [illegible] जीवन की समालोचना करना [illegible] नहीं है, लेकिन वही जब [illegible] जीवन कृतियों के रूप में आता [illegible] आलोचक को पूरा अधिकार है [illegible] की आलोचना बड़ी स्पष्टता [illegible]। हमने जब वामक-अजरा [illegible] तो हमें मिस्टर नजीर [illegible] तरस आया। मिस्टर [illegible] फिल्म के निर्माता, अभिनेता, [illegible] हैं। तीनों ही में वह बुरी तरह [illegible] हुए हैं। निर्देशन करना तो [illegible] बिलकुल आता ही नहीं? और [illegible] कुशल कलाकार ही कहे जा सकते [illegible] इस चित्र में वह प्रेम की स्वाभाविक[illegible] को साबित न कर सके। मिस्टर नजीर को प्रेम की पवित्रता ही महसूस न होने पाई। वह उसके इर्द-गिर्द ही वासना का घना जाल बुनते रहे। हमें बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि आज वह मानव-आदर्श से इतने फिसल पड़े कि वह अपने को भी भूल गये। आज वह वासना की भूल-भुलैयों में फिरने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर रहे।

मैं तो यह कहता हूँ कि उनमें वे गुण बिलकुल नहीं हैं जिनके कि बल पर वह एक सफल चित्र-निर्माता बन सकें। चित्र-निर्माता बनने के लिए मानव-जीवन के उच्च आदर्शों का होना लाजिमी है। बिना इनके जो चित्र-निर्माता बनने के स्वप्न देखता है, उसका फिल्मी-दुनिया में सफल होना बड़ा टेढ़ी खीर है। फिल्म-निर्माता और फिल्म-निर्देशक दोनों को मानव-जीवन की प्रत्येक गली का अनुभव होना चाहिए। मालूम यह होता है कि मिस्टर नजीर को अभी मानवता का पूर्ण ज्ञान नहीं है। और न उन्होंने "वामक-अजरा" के साहित्य का अध्ययन ही किया है, इसीलिए वामक-अजरा एक निकृष्टतम निर्माण बन गया और इसीलिए मिस्टर नजीर को स्वर्णलता की तरफ से एक सन्देश निकालना पड़ा। उस सन्देश में यह कहा गया था—"वामक-अजरा को देखने से आप न चूकिए, क्योंकि यह मेरे जीवन का एक महान् चित्र है। इस चित्र में मेरा अभिनय उच्च कोटि का हुआ है। मैंने अब तक जितने भी चित्रों में काम किया है, उन सबसे अच्छा मेरा अभिनय इसी चित्र वामक-अजरा में हुआ है। मुझे यह चित्र बहुत प्रिय है। यदि आप मेरी कला की पराकाष्ठा देखना चाहते हैं तो आपको एक बार अवश्य वामक-अजरा देखना चाहिए—नहीं तो आपको बाद में पछताना पड़ेगा।" स्वर्णलता के इस सन्देश से प्रभावित होकर मैंने भी इस चित्र को देखा और इस बात की कोशिश की कि मुझे स्वर्णलता की कला की पराकाष्ठा मिल जाये, लेकिन मुझे निराश ही होना पड़ा। स्वर्णलता का यह दावा कि उसका अभिनय इसी चित्र में सर्वश्रेष्ठ हुआ है, बिलकुल हास्यास्पद है। न मालूम स्वर्णलता ने ऐसा क्यों कहा? किस बात से उन्हें मजबूर होकर यह कहना पड़ा? लेकिन फिर भी वह जनता के हृदयों में अपना सिक्का न जमा पाई। फिल्म को लोकप्रिय बनाने की यह आखिरी चाल मियां नजीर की थी; परन्तु नजीर साहब को मालूम होना चाहिए कि आज वे दर्शक कुछ अपनी भी बुद्धि रखते हैं। आज के दर्शक केवल प्रोपेगेण्डा के सहारे चित्र की कीमत नहीं आंकते? वह जमाना गया जब कि इस प्रकार के सन्देश निकालकर पब्लिक को बेवकूफ बना लिया जाता था। इतना सब कुछ करने पर भी वामक-अजरा की असफलता को मियां नजीर नहीं रोक सके। जब वह स्वयं वामक-अजरा को लोकप्रिय चित्र न बना सके तो उन्होंने स्वर्णलता का सहारा पकड़ा, परन्तु अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि उनका यह तीर भी खाली गया।

वास्तव में मिस्टर नजीर ने वामक-अजरा को बनाकर ग्यारह हजार फीट फिल्म की बरबादी कर डाली।

चित्र की कहानी लैला-मजनू की कहानी से मिलती-जुलती है। मोहब्बत की दुनिया के दो दीवाने हैं वामक और अजरा। लैला-मजनू की तरह ही इनकी मोहब्बत भी जीवन के क्रियात्मक क्षेत्र में समुद्र की लोल लहरों के जोश के समान बढ़ती है। दोनों को निराशा के कुहरा का सामना करना पड़ता है। और उसी निराशा के कुहरे में वामक और अजरा प्रेम की दुनिया की ओर बढ़ते ही जाते हैं, मायूसी की चट्टान को साहस की कुदाली से खोदकर। सच्चे प्रेमी कभी आपस में मिल नहीं पाते। अजरा गिरकर मर जाती है तथा वामक अन्धा होकर उसकी लाश को उठाकर अज्ञात दिशा की ओर चला जाता है। कहानी के बीच-बीच में मानव-जीवन की कई कठोर विषमताएँ व उलझनें दिखाई गई हैं, जिनका कि वामक को कदम-कदम पर सामना करना पड़ता है। बस यही संक्षिप्त में कहानी है।

वामक का कार्य मियां नजीर ने किया है और अजरा का काम स्वर्णलता ने। दोनों का अभिनय बिलकुल रद्दी है, क्योंकि मानव-जीवन की स्वाभाविकता उस अभिनय में लेशमात्र भी नहीं है। दर्शकों को यह नहीं मालूम होता कि वे जीवन-संघर्षों के बीच में से होकर गुजर रहे हैं। बल्कि उन्हें साफ जाहिर हो जाता है कि वे एक नाटक देख रहे हैं। अभिनय सिनेमेटिक स्टाइल का नहीं हुआ है बल्कि नाटकीय हो गया है। मियां नजीर को शायद यह पता न रहा होगा कि वह एक फिल्म बना रहे हैं या नाटक? मोहब्बत के दृश्यों को दिखलाते वक्त निर्देशक ने बिलकुल भारतीय सभ्यता का ख्याल नहीं किया है। बड़े ऊट-पटांग ढंग से दोनों का प्रेम हमारे सामने प्रदर्शित किया गया है। कोई भी कलाकार प्रशंसा के योग्य अभिनय नहीं कर पाया है। ऐसा मालूम होता है कि कलाकारों ने अभिनय करते वक्त चरस या गांजा पी लिया होगा, तभी तो उन्होंने अभिनय के नाम पर कोरमकोर उछल-कूद की है।

चित्र की फोटोग्राफी भी अच्छी नहीं है। ध्वनि-आलेखन भी निकम्मा है। संगीत भी दकियानूसी है। पंडित गोविन्दराम संगीत में बुरी तरह असफल हो गये हैं। संवाद भी ओजस्वी नहीं है। संवाद का स्टाइल नाटकीय ढंग का है, जगह-जगह मियां नजीर ने पाकिस्तानी शब्दों की भरमार की है। कहानी का "स्क्रीनप्ले" ठीक ढंग से नहीं बना पाये। स्क्रीनप्ले में बहुत-सी त्रुटियां हैं जो कि साधारण दर्शक भी पकड़ लेता है। कहानी का प्रवाह जगह-जगह रुक जाता है जो कि दर्शक को बहुत ही बुरा खटकता है। सब मिलकर चित्र बिलकुल निकम्मा बन गया है। बिलकुल प्राणहीन! किसी भी व्यक्ति को यह चित्र न देखना चाहिए। मियां नजीर से हमारा कहना यही है कि वह भविष्य में इस प्रकार के चित्र बनाने का साहस न करें, आज का मानव-समाज विकास की दुनिया में बहुत कुछ आगे बढ़ गया है।

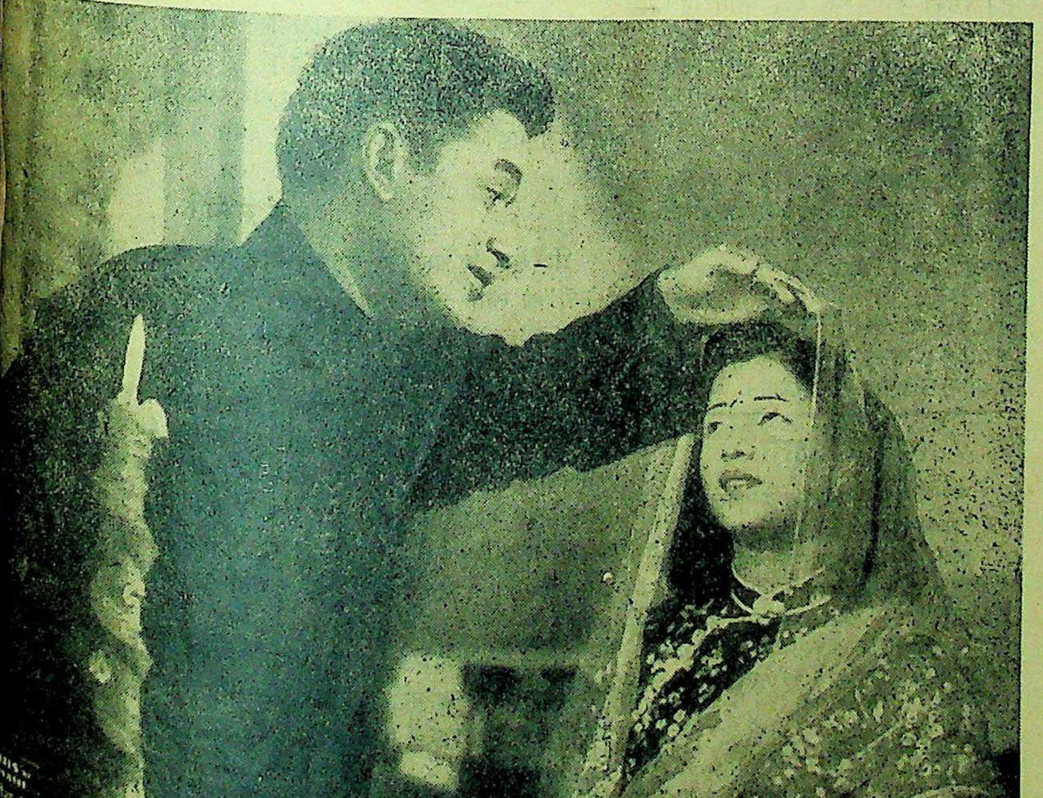

डाक्टर कोटनीस की अमर कहानी—फिल्म मे सुप्रसिद्ध निर्देशक और निर्माता श्री शांताराम और जयश्री।

१५०) इनाम

सिद्ध शम्भु कवच

सिद्ध वशीकरण। इसके धारण से जिस स्त्री या पुरुष को आप चाहें वश में हो जायगी। इससे दुर्भाग्य और शत्रु का नाश, नौकरी, सन्तान, धन की प्राप्ति, व्यापार में लाभ, परीक्षा में पास, मुकदमे, जुआ और लाटरी में जीत, कठिन से कठिन रोगों से छुटकारा होकर भाग्योदय होता है।

मूल्य तांबा २॥) सिलवर ३) सोने का १४) बेफायदा साबित करने पर १५०) रुपया इनाम

पता—श्री शम्भुआश्रम मुहल्ला दरियापुर गोला (D. D.) पोस्ट बाँकीपुर (पटना)

इधर-उधर की

मास्को में २,२५३ पुस्तकालय हैं जिनमें ६,४०,००,००० पुस्तकें हैं। मास्को के प्रत्येक कारखाने और क्लब में उनके निजी पुस्तकालय और वाचनालय हैं। क्रान्ति के पहले मास्को में कुल मिलाकर ८० पुस्तकालय थे; उनमें पुस्तकों की संख्या भी कम थी और उनकी सूचियां भी ठीक तौर पर तैयार नहीं की गई थीं।

* * *

लेनिन पुस्तकालय की गणना संसार के सबसे बड़े पुस्तकालयों में होती है; इसने हाल में अपनी ८५वीं वर्षगांठ मनाई थी। क्रान्ति के ५५ वर्ष पहले तक इसने दस लाख पुस्तकों से अधिक इकट्ठा न की थीं। किन्तु पिछले ३० वर्षों में इसकी पुस्तकों की संख्या दस गुनी बढ़ गई है। इस पुस्तकालय के दस वाचनालयों का उपयोग पिछले वर्ष २२ लाख लोगों ने किया था; ५ लाख पुस्तकें इस अवधि में लोगों ने यहां से पढ़ने के लिए ली थीं।

* * *

मास्को एक हजार कवियों, गद्य-लेखकों, नाटककारों, समालोचकों और पत्रकारों का निवासस्थान है।

* * *

मास्को में ६० म्यूजियम और बीस स्थायी प्रदर्शनियां हैं।

* * *

मास्को में चौबीस नाटयशालाएं हैं; यह अनुमान लगाया गया है कि एक वर्ष में यहां नौ हजार खेल दिखाये जाते हैं जो अस्सी लाख दर्शक देखते हैं। यहां अभिनेताओं की पन्द्रह मंडलियां ऐसी हैं जो घूम-फिरकर खेल दिखाती हैं। मास्को की नाटयशालाओं में ७ हजार अभिनेता, गायक, संगीतज्ञ और कलाकार हैं।

* * *

मास्को की संगीतशाला के छात्रों की संख्या इस वर्ष दो हजार है; क्रान्ति के पहले वह १५० थी। सोवियट शासनकाल में मास्को में एक नई संगीतशाला—गनेसिन संगीत संस्था—स्थापित हुई है; गनेसिन नामक बहनों ने ५० वर्ष पहले इसकी स्थापना की थी; तब यह एक साधारण संस्था थी, आज इसमें एक हजार से अधिक लोग शिक्षा पा रहे हैं।

* * *

मास्को में कुल मिलाकर २६ संगीतशालाएं हैं जिनमें नौ हजार लोग शिक्षा पा रहे हैं।

* * *

मास्को के ७६ मुद्रणालय चालीस भाषाओं में पुस्तकें इत्यादि प्रकाशित करते हैं; इनमें समाचारपत्रों और पत्रिकाओं के प्रकाशनालय सम्मिलित नहीं किये गये हैं। इवेंकी, नानी, पांसी और खांती इत्यादि जातियां क्रान्ति के पहले अपनी निजी भाषा का गर्व न कर सकती थीं।

* * *

दूसरे महायुद्ध के पहले मास्को के प्रकाशनगृहों ने १९,५०० पुस्तकें २९,६०,००,००० प्रतियों में प्रकाशित की थीं। १९१३ में मास्को के प्रकाशनगृहों ने ६,६८५ पुस्तकें ४,५०,००,००० प्रतियों में प्रकाशित की थीं। दूसरे महायुद्ध के बाद पहले वर्ष में ही पुस्तकों की ३१,२०,००,००० प्रतियां तक प्रकाशित हुई थीं।

* * *

मास्को में, सोवियट शासन के समय में सब मिलाकर ३,६६,१४४ पुस्तकें ७,००,००,००,००० प्रतियों में प्रकाशित हुई हैं। मास्को में ५०० पत्रिकाएं ८,५०,००,००० प्रतियों में प्रकाशित हो रही हैं। (टास)

महाराणा नैपाल

यूनिवर्सिटी यूनियन की ओर से दिये जानेवाले मानपत्र का उत्तर

पिछले दिनों महाराणा श्री पद्म-शमशेर जंग बहादुर नैपाल प्रयाग पधारे थे। प्रयाग विश्वविद्यालय यूनियन की ओर से आपका स्वागत किया गया और मानपत्र भेंट किया गया। महाराणा ने मानपत्र का जो उत्तर दिया वह इस प्रकार है—

मेरे नवयुवक मित्रो,

आप लोगों ने जो मेरा स्वागत किया है उसके लिये मैं आपको हृदय से धन्यवाद करता हूँ। मुझे प्रयाग में अधिक समय तक नहीं ठहरना था। मेरा स्वास्थ्य भी आजकल अच्छा नहीं है; परन्तु जब मैंने सुना कि आप लोग मुझसे मिलना चाहते हैं तो मैंने हर्ष के साथ आपकी प्रार्थना को स्वीकार किया, क्योंकि मुझे छात्रों के साथ सदैव प्रेम रहा है।

आपने जो महात्मा गांधी के विषय में विचार प्रकट किये हैं उनसे मैं सर्वथा सहमत हूँ। गांधी जी मनुष्य नहीं थे। वे ईश्वर के अवतार थे और भारत की ही नहीं संसार की विभूतियों में से थे। आज हम उनके न होने से अत्यन्त दुखी हैं। मुझे भी उनके दर्शन की बड़ी अभिलाषा थी; परन्तु पूर्ण न हो सकी। इसका मुझे अत्यन्त खेद है।

आपने जो नैपाल के विषय में कहा है वह सत्य है। नैपाल तथा भारत की संस्कृति एवं धर्म एक ही है। इनकी रक्षा करना और इनके विकास में योग देना हम सबका कर्तव्य है।

भारत और नैपाल का सम्बन्ध प्राचीन है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि दिन-प्रतिदिन यह सम्बन्ध और घनिष्ट होता जायगा। हमारे नैपाली विद्यार्थी आपके विश्वविद्यालय की प्रशंसा सुनकर यहां आये हैं। मुझे आशा है कि आपका व्यवहार उनके साथ सदा प्रेम तथा सहानुभूति का होगा जैसा कि होता आया है।

आप प्रयाग विश्वविद्यालय के छात्र हैं। इसका संसार में बड़ा नाम है। आपका कर्तव्य है कि आप इसके आदर्शों पर चलते हुए आगे बढ़ें और जिस संस्कृति का हम सबको गौरव है, उसकी वृद्धि करें। इसी में हमारा एवं संसार का कल्याण है।

अब मैं आपको हृदय से आशीर्वाद देता हूँ। आप विद्या विनय सम्पन्न होकर जीवन में प्रवेश करें, सुखी तथा समृद्धिशाली बनें। यही मेरी श्री राम से प्रार्थना है।

एक बार फिर मैं आपको धन्यवाद करता हूँ। आपने जो मेरा सन्मान किया है वह मुझे सदा स्मरण रहेगा।

अपराजिता

यह श्रीयुत रामेश्वरप्रसाद शुक्ल एम० ए०, 'अञ्चल' की कतिपय सुन्दर कविताओं का संग्रह है। कविताएं नवीन युग की नूतन सांस्कृतिक रुचि और प्रगति के साथ हैं। कवि 'अंचल' की रचनाओं का आनन्द प्राप्त करने के लिए अपराजिता को अवश्य देखिए। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३) तीन रुपये।

गुदड़ो के लाल

इस पुस्तक की कहानियाँ बहुत ही सरल और रोचक भाषा में लिखी गई हैं। इनको पढ़कर बच्चे बेहद खुश होते हैं। ऐसी पुस्तक अपने बच्चों को जरूर दीजिए। मूल्य ॥)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

आधुनिक हिन्दी-साहित्य का सर्वश्रेष्ठ गीति-काव्य

कवि और छवि

लेखक, सुप्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव

कविश्री बालकृष्ण राव आधुनिक हिन्दी-जगत् के चोटी के कलाकार और सर्वश्रेष्ठ गीतिकार हैं। 'कवि और छवि' आपकी नवीनतम गीति-काव्यों का सर्वश्रेष्ठ संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अतर्द्वंद्व से परिपूर्ण तो है ही साथ ही सरस और हृदय पर मधुर प्रभाव और छाप छोड़ जानेवाले हैं। हृदय को तन्मय तथा गहन अनुभूति से सराबोर कर देनेवाले ऐसे गीत हिन्दी में आज लिखे ही नहीं जा रहे हैं। 'कवि और छवि' में संग्रहीत सभी गीत बिलकुल नवीन हैं, पढ़ते पढ़ते हृदय उद्वेलित हो उठता है। छपाई-सफाई नयनाभिराम, सचित्र और सजिल्द—मूल्य केवल २) रु०।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

जब जिसने देखा, मुग्ध हो गया

मंजरी

श्रेष्ठ कथाकारों की सरस कहानियाँ और कथा-साहित्य पर गम्भी
आलोचनात्मक लेख आकर्षक मुद्रण-विन्यास के साथ प्रस्तुत करनेवाली
सांस्कृतिक मनोरंजन की एकमात्र कहानी-पत्रिका है।

एक आलोचना

'मनोरंजन' [दिल्ली, मार्च १९४८]—हिन्दी के कहानी-मासिकों की
बढ़ती भीड़ में यह सर्वाङ्ग सुन्दर, चित्रों से अलंकृत नया पत्र विशिष्टता लेकर
हुआ है। इसके पहले दो अंक हमारे सामने हैं, जो संपादक की सुरुचि और
परिचायक हैं। कहानियाँ इस प्रकार के अन्य पत्रों की अपेक्षा निश्चय ही ऊंचे
की तथा सुरुचिपूर्ण हैं। कथा-साहित्य-सम्बन्धी गम्भीर व आलोचनात्मक लेखों
टिप्पणियों, नवीन कथा-साहित्य की समीक्षा और लेखकों के परिचय के स्तम्भों ने
उपयोगिता को और भी बढ़ा दिया है।

कथा-साहित्य की दृष्टि से इतना सुन्दर, मनोरंजक और उपयोगी पत्र निकालने
लिए सम्पादक और प्रकाशक वस्तुतः बधाई के पात्र हैं।

× × ×

एक सम्मति

प्रोफेसर 'अंचल', जबलपुर—आज जो कहानी-मासिक निकल रहे हैं
'मंजरी' का स्थान सबसे निराला है, यह असन्दिग्ध है। कहानियों का चुनाव,
तरतीब और इतर स्तम्भ-नियोजना सभी दृष्टियों से आपका कौशल और
सराहनीय है।

केवल सस्ते मनोरंजन को सामने न रखकर—बिक्री के उद्देश्य से ऊपर उठ
आप सांस्कृतिक मनोरंजन और सामाजिक चेतना के प्रसार की दिशा में आगे
कथा-साहित्य के असली ध्येय को आपने सामने रक्खा है। मुझे विश्वास है
के शौकीन पाठक-पाठिकाओं की रुचि के परिमार्जन और संस्कारयज्ञिता
आपको मिलेगा। उच्च कोटि की साहित्यिक सौष्ठवपूर्ण सामग्री इतने सुन्दर
विन्यास के साथ आप दे रहे हैं कि कहानी की अन्य मासिक पत्रिकाएं पीछे
चली हैं।

आज हिन्दी में जो कहानी-पत्रिकाएँ निकल रही हैं, उनमें से अधिकांश
की मेरी कभी इच्छा नहीं होती, पर आपकी पत्रिका इसका अपवाद है।
आपको कथा-साहित्य में एक नई रुचि के निर्माण का श्रेय मिलेगा।

× × ×

प्रतिमास 'मंजरी' पढ़कर आप भी अपना और अपने परिवार का
मनोरंजन कीजिए।

वार्षिक मूल्य ६) छः रुपये
सम्पादक :
देवीदयाल चतुर्वेदी

प्रति अङ्क आठ आने
प्रकाशक :
इंडियन प्रेस लि०,

पटन के प्रेमी : ४

"अब वे बड़े चाव से आती हैं। मैं उन्हें लिपटन की हिमालयन ब्लेण्ड चाय पिलाता हूं"

ैण्टीन मैनेजर

ने के मज़दूरों को चाय की ख़ासी अच्छी पहचान होती है। न महीने तक मैंने उन्हें भाँति भाँति की कीमती पत्ती चाय पर उन्हें किसी तरह पसंद ही न आती थी और वे बराबर करते रहते थे। एक दिन मैंने देखा कि चौकिदार अपनी चाय है और लिपटन की हिमालयन ब्लेण्ड इस्तेमाल कर है। मैंने इसको पीके देखा और तब से मैंने इसी चाय को चुन है। पिछले दो साल से कैण्टीन में यही चाय व्यवहार की जा है। तब से शिकायत सुनने को मिली ही नहीं। बहुत बढ़िया होने साथ यह चाय कमखर्च भी है।

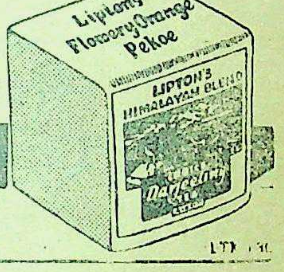
Lipton's Flowery Orange Pekoe
LIPTON'S HIMALAYAN BLEND
Darjeeling

लिपटन की हिमालयन ब्लेण्ड
दार्जिलिंग चाय

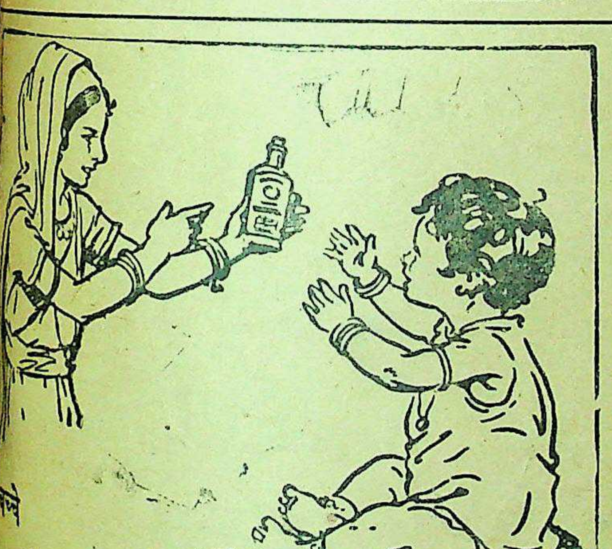

ब्चे वुडवर्ड का ग्राइप वाटर पसंद करते हैं

ह सब दर्दों को दूर करता है और च्चों को तंदुरुस्त व खुश रखता है।

IMPORTANT TO MOTHERS
WOODWARD'S CELEBRATED GRIPE WATER

WOODWARD'S GRIPE WATER
keeps baby well

"...से निकलता हुआ बालक" ही असली वुडवर्ड ग्राइप वाटर की पहचान है। सांवरे माता जी। आप ... बालक के हित के लिए इसको अवश्य सेवन किया करें।

W 118—111

किंकिणी में कवि की बढ़िया कविताओं का संग्रह है। भाषा मधुर और कल्पना इतनी आकर्षक है कि पाठक कुछ क्षणों तक भावविभोर बना रहता है। मूल्य ।।।) बारह आने।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

१९४८ में क्या होनेवाला है?

यदि आप १९४८ में होनेवाली अच्छी व बुरी घटनाएं समय से पूर्व जानना चाहते हैं तो आज ही केवल एक पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी फूल का नाम लिखकर भेज दें, बस फिर हम ज्योतिष-विद्या के हिसाब से आपके आनेवाले १२ मास का हानि-लाभ, किस [illegible] में लाभ होगा, किस साधन से धन प्राप्त होगा, रोजगार कब मिलेगा, वतन-वृद्धि, परीक्षा में सफलता अर्थात कार्ड की तारीख से लेकर एक वर्ष तक होनेवाली कुल बातों का संक्षेप अर्थात् मासिक वर्षफल बनाकर केवल १) में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाक-व्यय अलग। बुरे ग्रहों की शांति का उपाय भी लिखा जायगा—जिससे आनेवाली कठिनाइयों को दूर किया जा सके।

श्री स्वामी योगीराज ज्योतिष आश्रम, (D.D.A.)
फगवाड़ा (कपूरथला स्टेट)

है तो केवल ऑमलेट —

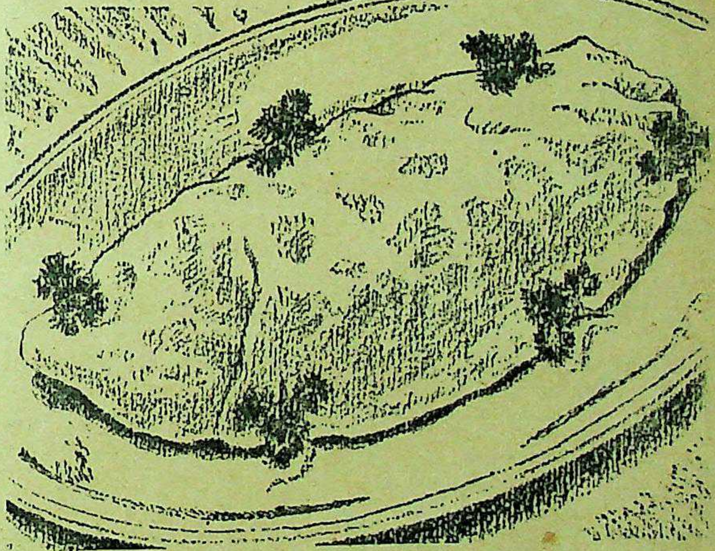

परन्तु डालडा में बनाने से कितना स्वादिष्ट !

अन्डे की सफेदी को अन्डे के पोले भाग से पृथक करें और सफ़ेदी को गाढ़ा होने तक फेंटिये, फिर अन्डे के पोले भाग को इस में मिलाकर ५ मिनिट तक फेंटिये। इस में कतरे हुए प्याज, कम कुचले हुए मटर अथवा टमाटर के बारीक बारीक टुकड़े, नमक और काली मिर्च स्वादिष्ट बनाने के लिये डालिये। एक तवे पर डालडा को गरम कीजिये और इस में यह मिलाव उँडेलिये। एक तरफ़ कुच्छ लाल होने तक तलिये फिर दोहरा कर के पलट दीजिये। दूसरी ओर भी पहिली तरह लाल कीजिये और गरम गरम परोसिये। आप इसे स्वादिष्ट पायेंगे।

डालडा से भोजन किस प्रकार स्वादिष्ट बनाये जायँ... दैनिक भोजन के लिये अथवा ख़ास अतिथि के लिये क्या बनाया जायँ... ऐसी विशेष सूचना पाने के लिये लिखें।

DALDA VANASPATI
वनस्पती

दि डालडा एड्वायज़री सरविस
पोस्ट बॉक्स नं. ३५३, बम्बई १

HVM. 76-172 HI

निश्चय पुत्र ही होगा

जिन सज्जनों के घर ज्यादातर पुत्री ही पुत्री पैदा होती हो और वह पुत्र को गोद में खिलाना चाहते हैं तो गर्भ धारण होने पर आप अपनी धर्मपत्नी को हमारे ४६ वर्ष से प्रसिद्ध

समरे हयात

दवा का सेवन करावें। नौ मास बाद पुत्र का होना ऐसा जरूरी सायंकाल के बाद प्रातःकाल का! हजारों प्रशंसा-पत्र मौजूद
दस लाख पुस्
मूल्य केवल १०) डाक-व्यय ।।।)

पता—हकीम राजनरायन (२२) होज काजी देहली।

सुन्दरता के लिये बालों को सैलीके बनाकर रखिये
सुभाष पिक्चर्स कृत "समाज को बदल डालो" का नायक "भाग्य"
Vaseline POMADE
CHESEBROUGH MFG. CO.

कोमलता से सुगंधित किया गया वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।
वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।

Copyright:

साधनमाला—मंत्र, तंत्र और शक्ति-उपासना-सम्बन्धी हिन्दी में अकेली मासिक पुस्तक-माला। वार्षिक मूल्य ८)। एक प्रति १)।
कल्याण मन्दिर, कटरा, प्रयाग।

जुकाम सर्दी पर अकसीर उपाय
आरोंदा
१८९६
नीलगिरि तैल
पी. सांगामेकर बंधु बम्बई ४.

एलाइड लाउडस्पीकर पर इत्मिनान रखिये
ब्याह
मेले
जलसे
सरकस
तथा
हर मौके पर इस्तेमाल कीजिये
खरीदिये या किराये पर लीजिये
एलाइड एलेक्ट्रिक एण्ड रेडियो कारपोरेशन
हज़रतगंज लखनऊ
कैनिंग रोड एलाहाबाद

हिन्द सरकार के रक्षा-मंत्री माननीय सरदार बल्देव सिंह का कथन है:—

"मिल-मालिकों, कारखानों या दफ़तरों के संचालकों के सहयोग पर ही 'राष्ट्रीय रोज़गार संस्था' की सफलता निर्भर है। मुझे आशा है कि आप लोग इस उपयोगी संस्था के साथ दिल खोल कर सहयोग करेंगे।"

उजड़े घरों को फिर से बसाइए

हिन्द सरकार की "राष्ट्रीय रोज़गार संस्था", जिसने देश में जगह जगह रोज़गार-दफ़्तर (ऐम्प्लायमेण्ट ऐक्सचेंज) खोल रखे हैं, बेरोज़गारों और शरणार्थियों को काम दिलाने और फिर से बसाने की पूरी कोशिश कर रही है। मिलों, छोटे बड़े कारखानों या दफ़तरों में जब भी और जितनी भी जगहें खाली हों, उनकी यथासमय सूचना अपने इलाक़े के रोज़गार-दफ़्तर दीजिए। इस प्रकार आप न अपने काम के लिए आवश्यकता अच्छे से अच्छे कर्मचारी या कारीगर पा सकते हैं, बल्कि राष्ट्र-निर्माण में हाथ भी बँटा सकते हैं।

बेरोज़गार शरणार्थियों की सहायता करना सच्ची देश

हिन्द सरकार के के प्रधान संचालक - केन्द्र

सम्पादक
इलाहाबाद देवीप्रसाद चतुर्वेदी
प्रबन्ध सम्पादक—एम० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इंडि
पादक—ज्योतिप्रसाद

सचित्र
साप्ताहिक
र्षिक मूल्य ७।।)
ति संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

४ अप्रैल, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 4th April, 1948

पुस्तकालय
गुरुकुल काँ

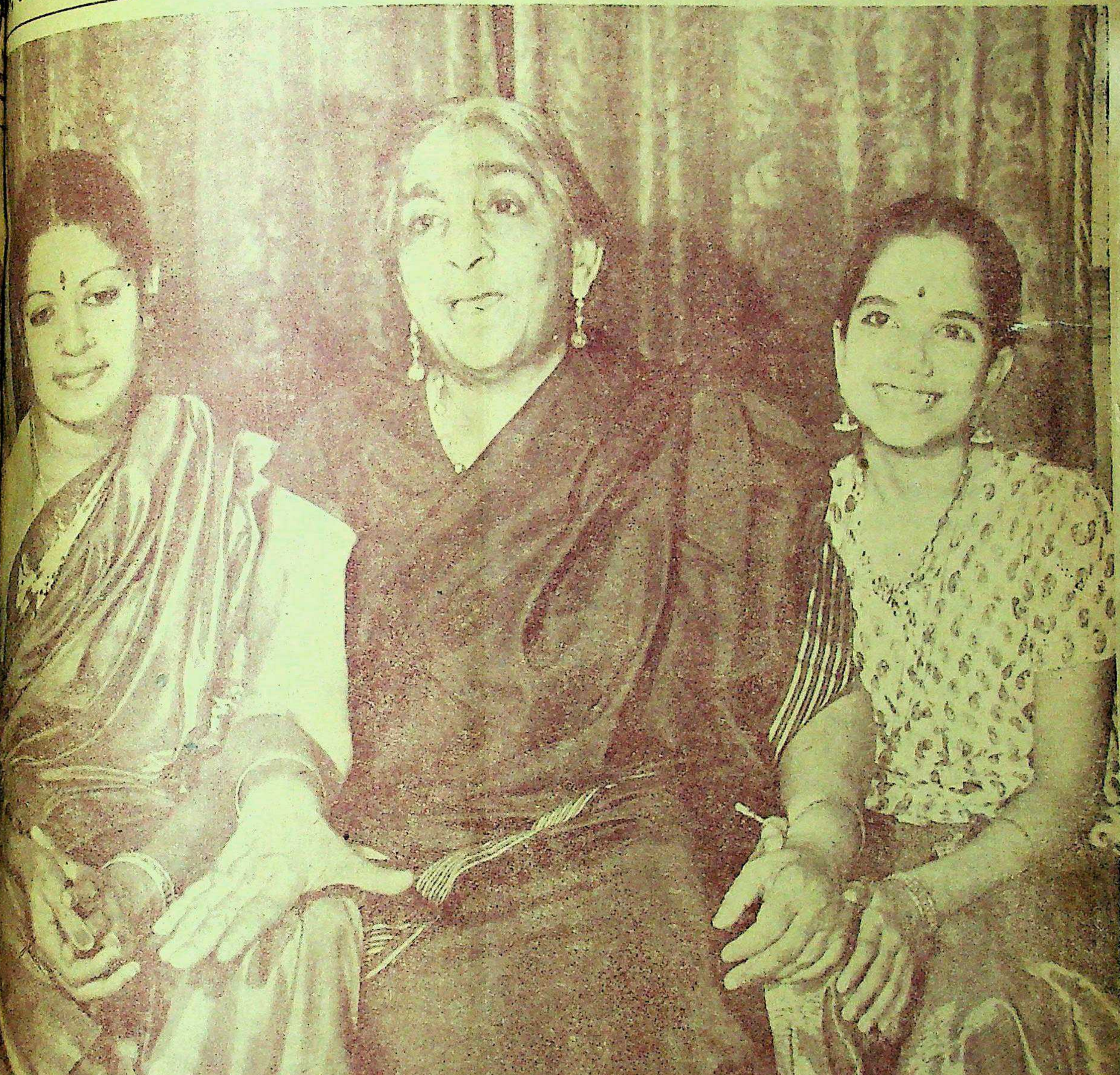

सुश्री शुभलक्ष्मी के साथ हर एक्सेलेंसी सरोजिनी नायडू

ज़ी बनाम हिन्दी की समस्या
जी की सार्वजनिक प्रार्थना

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

रचनात्मक कार्यकर्ता सम्मेलन
योरप से क्या सबक़ लेना चाहिए

हमारी कुछ चुनी हुई पुस्तकें

देवी चौधरानी—अनुवादक, श्रीयुत पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी, 'निराला'। मूल-लेखक स्वर्गीय बंकिम बाबू ने इस उपन्यास में बंगाल की उस समय की अवस्था का चित्रण किया है, जब कि मुसलमानों की शक्ति का अवसान हो चुका था और अँगरेज़ों की प्रभुता का अभ्युदय हो रहा था। आदि से अन्त तक पुस्तक रोचक और शिक्षाप्रद है। मूल्य १।-)

वैकुण्ठ का विल—मूल लेखक, स्वर्गीय डा० शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय। यह उपन्यास है तो छोटा किन्तु बहुत ही भावपूर्ण है। मानव-हृदय की स्वाभाविकता इसके प्रत्येक पात्र से प्रकट हो रही है। शरद् बाबू उपदेश देने की दृष्टि से रचना नहीं करते; किन्तु उपदेश अज्ञात रूप से अपना काम किये बिना कब रहता है। यह बात उनके इस उपन्यास में भी अपवाद नहीं हो सकी। मूल्य ॥≡)।

अज्ञात दिशा की ओर—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। यह श्री सौरीन्द्रमोहन मुखोपाध्याय के 'निरुद्देशेर यात्री' नामक उपन्यास का अनुवाद है। इस उपन्यास में हिन्दू-समाज की वैवाहिक समस्या पर बहुत ही रोचक ढंग से प्रकाश डाला गया है। मूल्य १)।

पुष्करिणी—लेखक, श्रीयुत भगवतीप्रसाद वाजपेयी। यह हिन्दी के प्रसिद्ध कहानी-लेखक श्री भगवतीप्रसाद जी वाजपेयी की चौदह कहानियों का संग्रह है। इस संग्रह में सम्मिलित की गई सभी कहानियाँ एक से एक बढ़कर हैं और इनमें पीड़ित मानवता के चीत्कार और जागरण की कलापूर्ण कथायें लिपिबद्ध की गई हैं। मूल्य केवल २)।

पथ-भ्रान्त पथिक—अनुवादक, पण्डित सुन्दरलाल त्रिपाठी और पण्डित ठाकुरदत्त मिश्र। श्री चारुचन्द्र बन्द्योपाध्याय-लिखित इस उपन्यास का उपन्यास-प्रेमियों में अच्छा सम्मान है। हिन्दी के उपन्यास-पाठकों की प्रेरणा से ही इसका हिन्दी अनुवाद हमने पहली बार प्रकाशित कराया है। उपन्यास की रोचकता और महत्ता के लिए चारुचन्द्र बाबू का नाम ही पर्याप्त है। मूल्य २॥≡)।

कृष्णकान्त का विल—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। यह बंकिम बाबू का एक अत्यन्त लोकप्रिय उपन्यास है। एक भारतीय पतिव्रता का जैसा सुन्दर चित्र इस उपन्यास में खींचा गया है वैसा अन्यत्र न मिलेगा। मूल्य १)।

युद्ध और शान्ति—अनुवादक, श्री रुद्रनारायण अग्रवाल। टॉल्सटॉय के 'वार एण्ड पीस' नामक प्रसिद्ध रूसी उपन्यास का यह हिन्दी-रूपान्तर है। इसमें लेखक ने मानव-जीवन का सम्पूर्ण चित्र, अपने समय के रूस की तसवीर और राष्ट्रों की खींच-तान बड़ी खूबी से चित्रित किया है और जीवन तथा मृत्यु के रहस्य का उद्घाटन किया है। मूल्य ५।-)।

कपाल-कुण्डला—अनुवादक, श्रीयुत पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी, 'निराला'। यह बंकिम बाबू की कपाल-कुण्डला का हिन्दी-रूपान्तर है। कथानक की रोचकता तथा वर्णन की अपूर्वता के कारण यह उपन्यास इतना लोकप्रिय हो चुका है कि इसका नये सिरे से परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। कपाल-कुण्डला के हिन्दी में आज तक जितने भी अनुवाद प्रकाशित हुए हैं, यह अनुवाद उन सबसे बहुत सुन्दर हुआ है। मूल्य १॥)।

भक्त जयदेव—पण्डित गौरीशंकर मिश्र बी० ए० एल-एल० बी० लिखित इस उपन्यास में 'हम भक्तन के भक्त हमारे' का सुन्दरता-पूर्वक प्रदर्शन हुआ है। मूल्य १॥)

शनि की दशा—अनुवादक पण्डित ठाकुरदत्त मिश्र। श्रीमती काञ्चनमाला देवी के 'शनिर दशा' नामक बंगला उपन्यास का यह अनुवाद है लेखिका महोदया ने उपन्यास की नायिका के चरित्र में जिस मधुरता और महिमा का समावेश किया है, वह विश्व के महिला-समाज में हिन्दू-महिलाओं को गौरवपूर्ण पद दिलाने के लिए सर्वथा उपयुक्त है। मूल्य २)

धोखा-धड़ी—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। यह बंगला के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार बाबू चारुचन्द्र बन्द्योपाध्याय के धोखार टाटि नामक उपन्यास का अनुवाद है। सीधे-सादे और उदार-हृदय व्यक्ति कृत्रिम सौजन्य, सहानुभूति और विनय प्रदर्शित करनेवालों के मायाजाल के शिकार होकर किस प्रकार अकारण ही अगणित दुःख-क्लेश सहन करने के लिए बाध्य हो जाते हैं, यही इस उपन्यास का विषय है। मूल्य १॥≡)।

रिक्ता—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। श्री नीहारबाला देवी के इस उपन्यास में पति-प्रेम वंचिता नारी का ऐसा सजीव और भावपूर्ण चित्र अंकित हुआ है कि पढ़ते-पढ़ते हृदय द्रवित हो जाता है। ऐसे भाव-पूर्ण उपन्यास आपके पढ़ने में कम आये होंगे। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-)।

श्रीकान्त—(प्रथम और द्वितीय भाग)—अनुवादक, श्री रूपनारायण पाण्डेय। 'श्रीकान्त' शरद् बाबू का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना गया है इसमें शरद् बाबू की अमर लेखनी ने उनके कलाकार का सजा और सधा हुआ रूप चित्रित किया है, जो अत्यन्त मनोरम है। प्रत्येक भाग का मूल्य २)।

ब्राह्मण की बेटी—मूल लेखक, श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक, पंडित रूपनारायण पाण्डेय। शरद् बाबू भारत के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास-लेखक माने जाते हैं। उनका यह उपन्यास लोक-प्रियता और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मूल्य सजिल्द पुस्तक का १।-)।

आनन्दमठ—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। मुसलमानों और अँगरेज़ों को हिन्दुस्तान से बाहर करने के लिए, बंगाल में वैष्णवों ने जो विद्रोह किया था, उसी का इस उपन्यास में उपन्यास-सम्राट श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने बड़ी खूबी से बयान किया है। ऐसा सुन्दर चित्रण इस उपन्यास में है कि पढ़कर मातृ-भूमि के लिए दिल फड़क उठता है। मूल्य १।-)।

रजनी—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। यह उपन्यास-सम्राट श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का एक करुणापूर्ण अद्वितीय उपन्यास है। चमत्कारपूर्ण मनोवैज्ञानिक कहानी इस उपन्यास की एक ऐसी खूबी है कि जिसके कारण पुस्तक पढ़ने का मोह संवरण नहीं किया जा सकता। मूल्य ॥≡)।

संसार की प्रसिद्ध कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत रामशेर बहादुरसिंह, बी० ए०। इस पुस्तक में योरप के संसार-प्रसिद्ध कलाकारों की चुनी हुई कुछ कहानियाँ संगृहीत की गई हैं। ये कहानियाँ बहुत ही कलापूर्ण और मनोरंजक हैं। यदि आपको योरप के कथा साहित्य की बानगी लेनी हो, तो इस पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य १)।

मोपासाँ की चुनी हुई कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत गोपीनाथ जी कानूनगो। इस पुस्तक में मोपासाँ की चुनी हुई ग्यारह कहानियों का संग्रह किया गया है। मोपासाँ की रचनाओं की बानगी लेने के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य १)।

ब्रजनाथ का विवाह—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। आश्चर्यमयी घटनाओं से परिपूर्ण यह सामाजिक उपन्यास पढ़ने में ऐसा रोचक है कि एक बार आरम्भ करने पर फिर बिना समाप्त किये चैन नहीं पड़ता। मूल्य १।-)

स्काटलैंड-यार्ड की जासूस श्री—पुस्तक लेडी मॉली की ८ जासूसी कहानियों का संग्रह है। इस पुस्तक की एक-एक कहानी मनोरंजक और कौतूहलवर्द्धक है कि आप इसे पूरा पढ़े बिना चैन नहीं पा सकते। मॉली के जितने कहानी-संग्रह अब तक प्रकाशित हुए हैं, यह उन सबसे अच्छा है। मूल्य ॥।-)

द्वन्द्व—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। श्रीमती सरोजकुमारी देवी नामक बंगला की प्रसिद्ध उपन्यास-लेखिका की इसी नाम की का हिन्दी-अनुवाद है। इसमें मानव हृदय के अन्त-द्वन्द्व तथा उसके कारण उत्पन्न होनेवाली अशान्ति का बहुत ही उत्तमतापूर्वक विश्लेषण किया है। यह उपन्यास आदि से अन्त तक मर्मस्पर्शी घटनाओं से परिपूर्ण है और इसका कोई भी ऐसा अंश नहीं है जिसमें सरसता का अभाव हो। मूल्य २॥≡)

जीवन-क्रान्ति—लेखक, पंडित गौरीशंकर मिश्र बी० ए०, एल-एल० बी०। अनुभवी तथा लेखक ने इस उपन्यास में सेठ-साहूकारों तथा आदमी कहे जानेवाले व्यक्तियों की नर-पशुता, पुलिस तथा अन्य अधिकारियों के हथकण्डे, धन के लोभ से निरपराधों को अपराधी ठहरा कारागार की नारकीय यातना भोगने के लिए विवश करने के माया-जाल का बहुत ही आकर्षक ढंग बयान किया है। उपन्यास का एक-एक ओजपूर्ण और हृदय में घर कर लेनेवाला है। मूल्य २॥≡)।

प्रतिशोध—लेखक, पंडित उमेशचन्द्र मिश्र। उपन्यास में प्रोफ़ेसर भारद्वाज नामक एक वैज्ञानिक षड्यन्त्रकारी की रहस्यपूर्ण कार्यवाहियों का बड़े रोचक ढंग से किया गया है इसे पढ़ते आप ऐसे तल्लीन हो जायँगे कि बिना समाप्त पुस्तक हाथ से न छूटेगा। मूल्य १) एक

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

देशदूत

१०, संख्या ३०] [रविवार, ४ अप्रैल, १९४८

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

गांधी के स्वर्गवास के राजनीतिक क्षेत्र में एक हो रहा है। कांग्रेस से अलग हो रहे हैं। क्यों क्या इसलिए कि आज प्रजातंत्र और सिद्धान्तों की बलि रही हैं। अब तो प्रत्येक अवसरवादी बन गया है। स्वार्थ को पहुंच रही है। पैसा ही त्याग है और इसलिए समाजवादियों का होना ठीक ही है। आज हैं किन्तु १०-५ वर्ष होंगे ही। मकान ही पड़ चुकी थी की तैयारी शुरू

* * *

की सुरक्षा परिषद् में समस्या खटाई में पड़ी हुई नहीं हो रहा है। भारत की सरकारें गोराशाही की ओर लालायित रही हैं। जान पड़ता है काश्मीर सुरक्षा परिषद् नये सिरे से विनिमय करनेवाली है किंतु से पहले शुरू नहीं होगा। राय में गोरांगों की यह है कि वह विदेशियों की सदा खटाई में डालते यदि कुछ किया भी गया। देखना है अमरीका और के संबंध भविष्य में कौन

* *

लीग का रवैया आजकल है। मुस्लिम लीगी अब कर पैतरा बदल रहे हैं। वादी होने का दावा कर प्रांतीय धारासभा में ने 'जनता पार्टी' नई है। इसी का नाम समय बदलना। क्या बात अब जनता-पार्टी बन के युग में जनता के ठेकेदार हो रही है क्योंकि की भौजाई है। वक्त जनता के नाम पर लूट शुरू मुस्लिम लीगी जिन्दगी भर की उत्तेजना देने अब वही विभाजन हो जाने

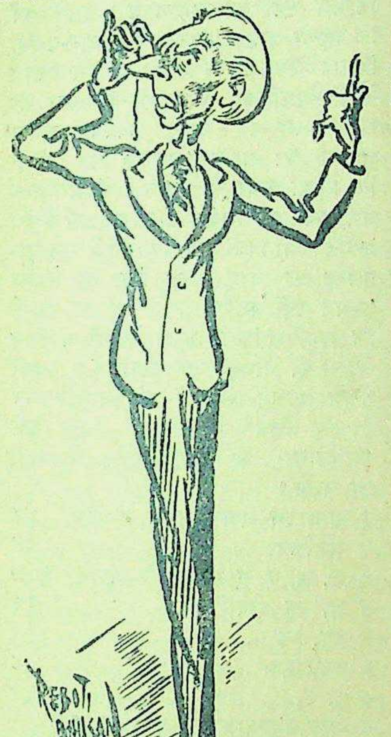

यही हैं पाकिस्तानी जिन्ना !

पर भारतीय जनता के पहरेदार बनने का दावा करने लगे, यह खूब रही। वाह रे जनता के ठेकेदारो।

* * *

पश्चिमी पंजाब में भी आपस में तू-तू मैं मैं शुरू हो गई है। पंजाब सरकार पर मुसलमानों का कतई विश्वास नहीं है। अपने राम की समझ में नहीं आता कि क्यों ? पाकिस्तान बनाने के लिए तो पहले बड़ा धूम-धड़क्का मचाया गया किन्तु क्या अब उसका महान् आनंद प्राप्त हो गया। पहले तो बिना पाकिस्तान के चैन नहीं मिल रहा था किंतु अब क्यों हलुआ कड़ुआ जान पड़ता है। पश्चिमी पंजाब में मुस्लिम लीग के प्रेसीडेंट मियां इफ्तखारुदीन गरम लोहा बन गये हैं और पाकिस्तानी सरकार के खिलाफ ढोल पीट रहे हैं। देखना है ढोल का बोल कायम रहता है अथवा पोल ही पोल दिखाई देती है ?

* * *

देशी राज्यों में इस समय क्रांति मची हुई है। छोटी छोटी रियासतें सब एकत्रित हो रही हैं। सरदार वल्लभभाई पटेल को इस संबंध में पूरी सफलता मिली है। लेकिन अपने राम बड़े गौर से देख रहे हैं कि हदराबाद का क्या हो रहा है ? हैदराबाद साहब की स्थिति त्रिशंकु की तरह बन गई है। न वह पाकिस्तान के हो रहे हैं औरन हिन्दुस्तान के। न जमी के न आसमान के। आगे वह किसके होंगे इसका निर्णय कौन करे ? लेकिन जान यही पड़ता है भारत और हैदराबाद के समझौते की मीयाद खतम होते ही कोई न कोई गुल खिलेगा। हैदराबाद महाशय कर लें जो कुछ करना है अभी, बाद को तो ऊँट पहाड़ के नीचे आयेगा ही।

इस वक्त भारत में उद्योग-धंधों के बढ़ाने और बातें बघारने की कला व्यापक बनती जा रही है। प्रतिदिन हमारे लीडराने कौम घोषणा करते हैं कि भारत को उद्योग-धंधों से सम्पन्न बनाना है। यह उद्योग बढ़ाया जाये और वह धंधा पनपाया जाये। सभाओं तथा सम्मेलनों में उद्योग-धंधों के संबंध में भारी भरकम भाषणों की धूम मचाई जाती है और वह पत्रों में बड़े जोशोखरोश के साथ छपता है लेकिन चारों तरफ घूम देखा जाये तो न खाने का ठिकाना और न कपड़े का। पिछली लड़ाई का पाप और भी व्यापक बन बैठा है। जनता के हित का नक्कारा तो धूम-धाम से पिट रहा है लेकिन जनता की दशा वास्तविक क्या है इसे तो खुदा ही समझ रहा है। अपने राम की समझ में नहीं आता कि उद्योग-धंधों की उन्नति के कुछ क्रियात्मक उपाय भी होंगे या केवल अखबारबाजी ही चलती रहेगी ? अंधा तो तब पतियाय जब उसे आंखें मिलें। अंग्रेजी राज्य के जमाने से हम उद्योग-धंधों की उन्नति के संबंध में गर्जन-तर्जन सुनते आ रहे हैं और वही शोर-गुल आज भी हो रहा है। जनता के हित की आड़ में यह धूम-धड़क्का आखिर कब तक ?

* * *

सच पूछा जाय तो इस वक्त संसार में सोवियट रूस ने साम्राज्यवादियों की हवा खराब कर दी है। रूस योरोप के साम्राज्यवादियों के हथकंडों का शिकार न जाने क्यों नहीं हो रहा है ? यद्यपि ऐसा होना नहीं चाहिए। क्योंकि साम्राज्यवादी राष्ट्र कभी कच्ची गोली का दांव नहीं खेलते। अपने राम की राय में इस वक्त संसार की हवा ही खराब हो रही है, अमरीका और ब्रिटेन करें क्या ? चेकोस्लोवाकिया तो साम्राज्यवादियों के हाथ से चला ही गया, इटली में भी हवा का रुख बदलनेवाला है। कम्यूनिज़म चीन को चापर करता ही जा रहा है। आगे क्या होगा समझ में नहीं आता। अमरीका और ब्रिटेन का तो गठबंधन है किन्तु रूस अपनी चाल अलग चल रहा है। देखना है इस चलाचली का वास्तविक स्वरूप कब प्रकट होता है ?

काश्मीर के प्रधान मंत्री शेख अब्दुल्ला, एक सार्वजनिक सभा में काश्मीर पर किये जानेवाले पाकिस्तानी आक्रमण का विरोध कर रहे हैं।

नया वर्ष

लेखक, श्री 'बच्चन'

तमाम साल जानता कि तुम चले,
निदाघ में जले, कि शीत में गले,
मगर तुम्हें उजाड़ खंड ही मिले !
मनुष्य के
लिए कलंक
हारना !

अतीत-स्वप्न मानता, बिखर गया,
अतीत, मानता, निराश कर गया,
अतीत, मानता, अभाव भर गया,
तजो नहीं
भविष्य को
सिंगारना !

नवीन वर्ष में नवीन पथ वरो,
नवीन वर्ष में नवीन प्रण करो,
नवीन वर्ष में नवीन रस भरो,
धरो नवीन
देश-विश्व
धारणा !

सम्पादक का पृष्ठ

आज का आर्थिक संकट

सन् १९४८ में ब्रिटिश सरकार ने जो आर्थिक अनुसन्धान किया है उसे बहुत दिन नहीं बीते, इस अनुसन्धान के अनुसार ही ब्रिटेन की सारी आर्थिक समस्याएँ हल की जायेंगी, फिर भी यह अनुसन्धान थोड़ा बहुत परिष्कार भी चाहती है। प्रायः भारतवर्ष और ब्रिटेन की आर्थिक समस्याएँ वर्तमान युग में एक सी ही हैं, इसलिए ब्रिटेन की यह खोज भारत के लिए भी हितकर हो सकती है। सन् १९४७ में ब्रिटेन के बजट में ६७५ लाख पौंड का घाटा था, किन्तु सन् १९४८ में आशा की जाती है, कि वह घाटा २५० लाख पौंड और कम हो जायेगा। ब्रिटेन का सर्वप्रथम विचार औद्योगिक धंधों और खेती में सुधार करना है, इसके अतिरिक्त आयात और निर्यात-करों में भी आर्थिक दृष्टिकोण से कुछ परिवर्तन होगा जो देश की गरीबी को सँभालेगा। सन् १९४७ में कोयला, लोहा और रुई क्रमशः १९७, १२'७२, ९०० पौंड पैदावार के अनुपात से थे, किन्तु १९४८ में ब्रिटेन ने इन्हें क्रमशः २११, १४, के अनुपात से बढ़ाने का निश्चय किया है, जिसमें १,७५,००० टन लोहा जहाजों के निर्माण में आवेगा। इसी प्रकार और वस्तुओं की उत्पत्ति के लिए भी कुछ आंकड़े निश्चित किये गये हैं। इस दिशा में ब्रिटिश सरकार को अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई है और आशा है कि सन् १९४८ के अन्त तक इस सफलता में और अधिक विस्तार होगा! इसलिए इसी प्रकार भारतीय सरकार का भी ऐसा ही मत होना चाहिए कि वह भी कुछ मुख्य वस्तुओं के लिए एक निश्चित अथवा अनुमानित आय या सामग्री निश्चित कर दे और उसकी पूर्ति के लिए सम्पूर्ण शक्ति का प्रयोग भी करे, भारतवर्ष को मशीनों और इनके अन्य छोटे-छोटे कामों के लिए विदेश पर निर्भर रहना पड़ता है, इसका कारण केवल वस्तुओं के निर्माण का अभाव है जिसके कारण देश का व्यापार विदेशों से वैसा नहीं हो पाता जैसा कि होना चाहिए, इसके दूसरी ओर ब्रिटेन इस बीमारी से बिलकुल स्वतंत्र है, किन्तु यदि मजदूरों और मालिकों के बीच कुछ आर्थिक समझौता हो जाय जैसा कि पिछली बार 'औद्योगिक सभा' के द्वारा दिल्ली में किया गया था तो सम्भवतया देश का भविष्य आर्थिक दृष्टि से बहुत कुछ स्वस्थ और समृद्ध रहेगा! इस समझौते पर भारत का आर्थिक भविष्य बहुत कुछ सम्भव है!

ब्रिटिश सरकार आय वृद्धि के लिए निर्यात कर अधिक और आयात कर कम करने की कोशिश कर रही है, जिससे कि बजट में वृद्धि सम्भव हो सके! निर्यात-कर १९४७ की अपेक्षा सन् १९४८ में ६० प्रतिशत निश्चित किया गया है, जो सन् १९३८ के कर से भी अधिक है, किन्तु यह सब कुछ कठिनाइयों के कारण ही किया गया है। फिर भी सन् १९३८ की अपेक्षा अब यह कर ५० प्रतिशत कम किया गया है, जो वस्तुएँ बाहर भेजी जाती हैं, उनके बनाने में सरकार की ओर से विशेष ध्यान दिया जाता है, जिससे देश के लिए सम्पूर्ण सम्भव लाभ लिया जा सके, विशेष रूप से पश्चिमी ब्रिटेन में वस्तुओं के बनाने का क्रम अधिक व्यापक बनाया जा रहा है, क्योंकि पश्चिमी ब्रिटेन में कच्चा माल और कुछ खाद्य-सामग्री अन्य भागों की अपेक्षा उत्तम है। युद्ध के पूर्व जहाजों और अन्य आवश्यक सामग्री के कारण ब्रिटेन को बहुत-सी ऐसी चीजें विदेशों को भेजनी पड़ीं जो स्वयं ब्रिटेन को भी आवश्यक थीं, किन्तु परिस्थितियों के परिवर्तन से सन् १९४७ में युद्ध-सम्बन्धी घाटा केवल २२६ लाख पौंड शेष रहा। सन् १९४८ में आशा की जाती है कि सिनेमा, प्राचीन इमारतों की मरम्मत और जहाजों के कारण युद्ध-सम्बन्धी घाटा लगभग ८० लाख पौंड और कम हो जावेगा।

ब्रिटेन के बजट का प्रभाव वहां की रक्षित सोने और चांदी की मुद्राओं में एक अन्तर उत्पन्न कर रहा है, यह अन्तर सन् १९४६ में २२६ लाख पौंड के रूप में अनुमान किया गया था, ९६३ लाख पौंड सन् १९४७ में और सम्भवतया सन् १९४८ में यह अन्तर ६ महीनों में लगभग २२२ लाख पौंड का है। सन् १९४८ के प्रारम्भ में यह अन्तर ६३० लाख पौंड था किन्तु इस २२२ लाख पौंड के मिलने से आशा की जाती है कि इस वर्ष के मध्यकाल तक सम्पूर्ण अन्तर से ४५० लाख पौंड और कम होगा। भविष्य में एक आशा है कि ब्रिटेन के कर्त्तव्यों के कारण सम्भवतया सन् १९४९ में बजट में संतोषजनक आंकड़े मिलेंगे। इसके अलावा अमरीका के अर्थ सचिव मार्शल की योजना ब्रिटेन की आर्थिक अवस्था को एक उच्च स्तर प्रदान करेगी, ऐसा विश्वास किया जाता है।

ब्रिटेन अपनी आर्थिक कठिनाइयों से छुटकारा पाने के लिए अमेरिका का मुंह ताकता है और भारतवर्ष ब्रिटेन की ओर ताक लगाये देख रहा है। भारतवर्ष ने युद्धकाल में ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा के निमित्त जो महत्त्वपूर्ण सेवाएँ की हैं उनके फलस्वरूप यदि आवश्यकता के अवसर पर ब्रिटेन से मदद चाहता है तो यह अस्वाभाविक नहीं है, ब्रिटेन यदि भारत को कोई महत्त्वपूर्ण मदद प्रदान कर सकता है तो वह केवल यह है कि वह भारत को मशीनें देकर इसका औद्योगिक क्षेत्र विस्तृत करके इसे पुनर्संगठित तथा जीवित करे। क्योंकि भारतवर्ष बिना औद्योगिक विकास के सबल देश नहीं बन सकेगा इसी समस्या की पूर्ति ही ब्रिटेन की महत्त्वपूर्ण सेवा भारतवर्ष के लिए हो सकती है।

वर्धा में होनेवाले रचनात्मक कार्यकर्ता सम्मेलन के अवसर पर आचार्य विनोबा भावे भाषण दे रहे हैं। पंडित नेहरू बैठे हुए दिखाई दे रहे हैं।

हिन्दी टाइपराइटरों में सुधार

सार्वजनिक उपयोगिता की दृष्टि से कुछ सुझाव

लेखक, श्री नारायणदास खन्ना,
एम० ए०, एल्-एल० बी०

इधर कुछ समय से हिन्दी लिपि-परिवर्तन तथा हिन्दी टाइपराइटरों में सुधार-संबंधी समस्याएँ विशेषज्ञों के विचाराधीन हैं और प्रान्तीय सरकार भी इस ओर ध्यान दे रही है। समाचारपत्रों में भी इस प्रकार के कुछ लेख प्रकाशित हो चुके हैं। अंगरेजी टाइपराइटरों में जो सुविधाएं देखने में आती हैं वे हमें हिन्दी टाइपराइटरों में नहीं मिलतीं। इसका मुख्य कारण यह है कि हिन्दी-भाषा में शब्दों तथा उसके विभिन्न रूपों का बाहुल्य है। इसके पूर्व कि हिन्दी टाइपराइटरों में सुधार-संबंधी विचार स्थित किया जाय। मैं इस विषय के विशेषज्ञों का ध्यान हिन्दी-भाषा की अनेकरूपता की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दी-भाषा में प्रयोग में आनेवाले सभी स्वर एवं व्यंजन टाइपराइटरों में इस प्रकार लगा दिये जायँ कि उनमें सर्वाङ्ग-पूर्णता आ जाय किन्तु ऐसा हो सकना सम्भव नहीं प्रतीत होता। कारण यह है कि आधुनिक हिन्दी के छापेखानों में जिन टाइपों की आवश्यकता पड़ती है। उनकी संख्या लगभग ७०० है जो निम्नलिखित है और किसी भी प्रकार इतने वर्ण सीमिताकार के टाइपराइटर में नहीं आ सकते।

१	साधारण अक्षर अ से ज्ञ तक	४८
२	अर्धाक्षर	३८
३	उ, ऊ, ए, ऐ मात्रावाले अक्षर	१५७
४	क्रु, खृ इत्यादि	१६
५	क्न, ग्न ,,	११
६	ट्य, ड्य ,,	८
७	रु, रू, ,,	२२
८	अन्य संयुक्ताक्षर द्व ह्व ट्ट त्त ङ्क ष्ट क्त द्ध। इत्यादि	५८
९	क़ ख़ ,,	८
१०	सादी और संयुक्त मात्राएं इत्यादि	
११	विराम चिह्न, कोष्ठक इत्या	
१२	संख्याएं	
१३	अन्य आवश्यक चिह्न जैसे इत्यादि	
१४	कर्नकटे अक्षर	

अब प्रश्न यह है कि यदि हम राइटरों को सर्वांगपूर्ण बनाना किस प्रकार इतने विभिन्न शब्दों का वेश उनमें किया जाय। टाइपरा आकार भी छोटा होना चाहि यथा-संभव काम में आनेवाले वर्णों का समावेश भी हो प्रस्तुत टाइपराइटर विदेशी द्वारा बनाये गये हैं। उनके वर्णों की उपयोगिता के अनुसार नहीं रखा गया। यह क्रम क्या हो अनुमान लगाना सरल कार्य नहीं यदि प्रान्तीय सरकार इस ओर दे तो मैं तो केवल यह सुझाव चाहूंगा कि अविलम्ब विशेषज्ञों की समिति बनाई जाय और उनके द्वारा प्रकार के आंकड़े प्रस्तुत किये जायें पता चल सके कि हिन्दी-भाषा में कौन से वर्ण क्रमानुसार अधिक प्रयोग में आते हैं। यह स्थिर हो पर आसानी से उनकी स्थिति भी की जा सकती है। उदाहरणार्थ यदि यह मान लें कि अधिक प्रयोग में आ वर्ण क्रमानुसार क, व, ग, क्ष, ह हैं सरलता से इन्हें बीचवाली इस प्रकार से रखा जाय कि दूसरी अंगुलियों द्वारा छापे जा जो वर्ण बहुत कम कार्य में उन्हें सबसे ऊपर या सबसे नीचे में इस प्रकार स्थान दिया जाय तीसरी या चौथी अंगुलियों पर

आधुनिक हिन्दी टाइपराइटरों वर्ण-क्रम में एकरूपता नहीं पाई जाती समय चार प्रकार के टाइप देखने में मिलते हैं, रेमिंगटन, पोर्टेबुल, अन्डर्वुड तथा मानक; टाइपराइटरों के वर्ण-क्रम में इतना अन्तर है कि एक मशीन पर सीखा विद्यार्थी दूसरी मशीन पर कार्य न सकता; अतः सरकार का यह है कि जनता विद्यार्थियों तथा पिस्टों के हित में और स्वयं सुविधाओं के लिए, शीघ्रातिशीघ्र वर्ष में नये सिरे से ऐसे टाइपराइटर निर्माण करायें जिनके की-बोर्ड रूपता हो।

इस समय सबसे अधिक स्टैंडर्ड टाइपराइटर रेमिंगटन है जो सरकारी दफ्तरों में काम जाता है। इसमें ४६ कीज (कुं हैं, फिलहाल इसी में कुछ परिवर्तन किये जा सकते हैं कम्पनी ने पोर्टेबुल टाइपराइटर है जिसमें केवल ४२ कीज ही ही टाइपराइटर एक दूसरे से हैं और लोगों का अनुमान है कि स्टैंडर्ड में बहुत कुछ सुधार भी उसमें बहुत से वर्णों का कोष्ठक आदि चिह्न तो उसमें और यदि छापेखाने में प्रयोग में उपर्युक्त वर्णाक्षरों में से बहुत श्यक वर्णों को हटा भी दिया टाइपराइटरों की समस्या हल दिखाई पड़ती। दफ्तरों में कार्य रेमिंगटन टाइपराइटर नं० लाइनें हैं जिनमें बीच की दो बारह बारह कुंजियां तथा अन्तिम लाइनों में ग्यारह हैं इनका आकार-प्रकार अं

शेष पृष्ठ १८

रचनात्मक कार्यकर्ता सम्मेलन

सेवाग्राम में सर्वोदय समाज का रचनात्मक कार्यक्रम

लेखक, श्री उमाशंकर शुक्ल

आचार्य विनोबा भावे, महात्मा गांधी के अनन्य भक्त तथा प्रसिद्ध साधु और दार्शनिक विद्वान् हैं।

पिछले दिनों वर्धा में महात्मा गांधी के आदर्श तथा सिद्धांत के पक्के अनुयाइयों का एक सम्मेलन डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद के सभापतित्व में हुआ था। सम्मेलन में गांधी जी के आदर्श के अनुसार रचनात्मक कार्य करने की अपनी भविष्य की नीति स्थिर की। इस लेख में पत्रकार ने रचनात्मक कार्यकर्ता सम्मेलन के संस्मरण लिखे जिससे सम्मेलन के सम्बन्ध में अनेक जानकारी प्रात होती है। लेख सुंदर और पठनीय है।

अध्ययन बहुत ही गहन है। अगर यह कहा जाय कि पंडित जवाहरलाल नेहरू गांधी जी के राजनीतिक उत्तराधिकारी हैं तो आचार्य बिनोवा गांधी जी के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी हैं—कोई हर्ज नहीं है। विनोवा जी की सूझ मौलिक होती है। सम्मेलन में विनोवा जी ने ऐसे प्रश्नों को सामने रखा जो उनके मस्तिष्क में चक्कर लगा रहे थे। उन्होंने कहा कि क्या ऐसी स्थिति सोची जा सकती है जब कि सैद्धान्तिक मतभेद नहीं होंगे और जब एक ही सिद्धान्त का बोलबाला होगा। दूसरा प्रश्न यह है कि क्या साम्प्रदायिकता को बिलकुल दूर किया जा सकता है जिसने दूसरे रास्ते जैसे प्रान्तीयता, जात-पांत का भेद और वर्ग-संघर्ष का रूप धारण कर लिया है। तीसरा प्रश्न यह है कि क्या सैद्धान्तिक मतभेद के होते हुए भी सब इस बात के लिए तैयार हो सकते हैं कि एक महान् आदर्श को प्राप्त करने के लिए अच्छे साधनों का प्रयोग किया जाय और हिंसा का प्रयोग बिलकुल त्याग दिया जाय। आपने कहा कि मुझे पूर्ण विश्वास है कि चाहे आदर्श कितना भी उच्च हो, उसके प्राप्त करने के लिए हिंसा का प्रयोग हानिकारक है। गांधी जी के सिद्धान्तों में विश्वास करनेवालों को अपने संगठनों को ठीक करना चाहिए और उन्हें दूसरों से अच्छा परिणाम प्राप्त करके दिखाना चाहिए।

गांधी जी द्वारा प्रचारित संरक्षकता के सिद्धान्त का जिक्र करते हुए विनोवा जी ने कहा कि यदि वर्तमान आर्थिक असमानता बनी रही और जिन लोगों के पास पर्याप्त धन है उन्होंने उसका उपयोग एक संरक्षक के समान नहीं किया तो समाज अहिंसक नहीं रह सकता।

बाद में पंडित नेहरू ने कहा कि श्री बिनोवा भावे ने जो विचार सामने रखे हैं उनसे मैं सहमत हूँ। आपने कहा कि दूसरे में दोष निकालने से कोई लाभ नहीं है किन्तु हमें सोचना चाहिए कि हमने कहां गलती की है और हममें कमजोरी किस प्रकार आ गई है? सम्मेलन के लिए जो सुरक्षा प्रबन्ध किया गया है उसे देखकर मुझे शर्म आती है। मुझे इस बात पर आश्चर्य होता है कि जिन बातों की हम निन्दा करते हैं उन्हें ही अपनाते जाते हैं। हम सोचते एक ओर हैं किन्तु व्यावहारिक रूप को ध्यान में रखते हुए कार्य दूसरी ओर करते हैं। आगे चलकर नेहरू जी ने बताया कि मुझे विश्वास है कि हिंसा हर एक रूप में देश के लिए हानिकारक है किन्तु मैं यह नहीं कह सकता कि जहां तक देश की रक्षा का सम्बन्ध है वहां अहिंसा से कहां तक काम चल सकता है। मैं इस बात से सहमत हूँ कि किसी को भी आवश्यकता से अधिक धन नहीं रखना चाहिए किन्तु यह निश्चय किस प्रकार किया जाय कि कितना धन एक व्यक्ति के लिए जरूरी है।

सम्मेलन में कुल छः प्रस्ताव पास किए गए। मुख्य प्रस्ताव था 'सर्वोदय समाज' की स्थापना का। 'सर्वोदय समाज' का उद्देश्य है कि सत्य और अहिंसा पर एक ऐसा समाज बनाने की कोशिश करना, जिसमें जात-पांत न हो। जिससे किसी को शोषण करने का मौका न मिले और जिससे समूह और व्यक्ति दोनों का पूरा-पूरा विकास करने का पूरा अवसर मिले।

इस इरादे को पूरा करने के लिए नीचे लिखे साधन काम में लाये जायँगे—

(१) साम्प्रदायिक एकता, (२) अस्पृश्यता - निवारण, (३) जाति-भेद निराकरण, (४) नशाबंदी, (५) खादी और दूसरे ग्रामोद्योग, (६) गांव-सफाई, (७) नई तालीम, (८) स्त्रियों के लिए पुरुषों के बराबरी के हक और समाज में स्त्री-पुरुष की बराबरी की प्रतिष्ठा, (९) आरोग्य और स्वच्छता, (१०) देश की भाषाओं का विकास, (११) प्रान्तीय संकीर्णता का निवारण, (१२) हिन्दुस्तानी का राष्ट्रभाषा के तौर पर प्रचार, (१३) आर्थिक समानता, (१४) खेती की तरक्की, (१५) मजदूर संगठन, (१६) आदिम जातियों की सेवा, (१७) विद्यार्थी संगठन, (१८) कुष्ट रोगियों की समस्या, (१९) संकट निवारण और दुःखियों की सेवा, (२०) गोसेवा, (२१) प्राकृतिक चिकित्सा, (२२) इसी तरह के दूसरे काम। जो कोई ऊपर लिखे उसूलों तथा साधनों को मानता है और उनके मुताबिक काम करने की कोशिश करता है वह सेवक इस समाज में शामिल हो सकेगा। वह सर्वोदय समाज के मंत्री को इसकी सूचना दे कि उसे समाज के उसूल और साधन मंजूर हैं और अपना नाम और पता भेज दें। ऐसे सेवक का नाम और पता समाज के रजिस्टर में दर्ज किया जायगा। सेवकों का आपस में सम्पर्क रखने के लिए हर वर्ष एक नियत स्थान पर ३० जनवरी के दिन मेला लगा करे जिसमें सब सेवक शामिल हो सकें।

पूज्य महात्मा गांधी के सम्बन्ध में सम्मेलन ने जो प्रस्ताव पास किया था उसमें बताया गया है कि मानव जाति पर लगे हुए इस धब्बे को और उससे हुए नुकसान को तथा गांधी जी के परिवार

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

गीत

लेखक, श्री 'मोती' बी० ए०

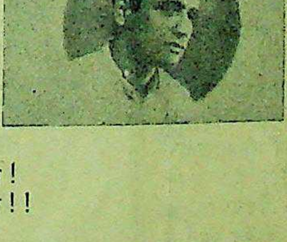

ग में क्यों प्यार किया जाता–
आंखों से आंखें क्यों मिलतीं,
औ' दिल से दिल क्यों मिलते हैं?
अधरों से अधर मिलें क्योंकर,
क्यों प्राण, प्राण से मिलते हैं?
आलिंगन आत्मसमर्पण का–
क्यों मधु उपहार दिया जाता!
जग में क्यों प्यार किया जाता!!

भुजबन्धन ढीले होते ही–
क्यों मृत्यु नहीं आ जाती है,
विरही शय्या के सिरहाने–
विरहिन कविता क्यों गाती है?
विरही उर की पीड़ा का फिर–
क्यों मधु उपचार न हो पाता!
जग में क्यों प्यार किया जाता!!

पीड़ा पर पीड़ा सहने को,
कटु से कटुतर विष पीने को,
जग में क्यों हँसना पड़ता है–
रो-रोकर क्षण क्षण जीने को?
जीवन भर विष पीने के हित—
क्षण भर क्यों अमृत पिया जाता!
जग में क्यों प्यार किया जाता!!

क्यों जग को प्यार दिया जाता
कितना भूखा कितना प्यासा
कितना निर्मम, कितना निर्दय
ऐसे जग के आगे जाकर
क्यों कहता अपनी पीर हृदय
जिसको देना आता न कभी—
जिसमें सर्वस्व लिया जाता!
क्यों जग को प्यार किया जाता!!

कितना अविवेकी औ' झूठा
कितना पाखण्डी और छली
वह उससे भी अनजान बना
जो रोता फिरता गली गली
ऐसे जग के खातिर जीवन—
योंकर बरबाद किया जाता!
क्यों जग को प्यार किया जाता!!

आंखें रह जातीं प्यासी ही—
दिल से भी दिल जब मिले नहीं,
आंसू की सरिता में भी जब
मनचाही कलियां खिलें नहीं,
जग में क्यों व्यर्थ जिया जाता —
किस कारण जहर पिया जाता!
जग को क्यों प्यार किया जाता!!

यूरोप से क्या सबक लेना चाहिए

क्या भारत स्वावलंबन द्वारा गरीबी और शोषण से बरी होने का राजमार्ग दिखाकर संसार का नेतृत्व करेगा ?

लेखक, प्रोफेसर जे० सी० कुमारप्पा

> केवल उत्पादन के लिए उत्पादन करके भौतिक पदार्थों का ढेर लगा देना यह बहुत बड़ी बुद्धिमानी नहीं है, जितना मानव-मात्र में शांति और सद्भावना की स्थापना। भारत को स्वालम्बन द्वारा गरीबी और शोषण से मुक्त होने का राजमार्ग दिखाना चाहिए। योरोप की नकल कदापि नहीं—सुप्रसिद्ध विचारक श्री कुमारप्पा ने इस लेख में इस दृष्टि से अपने विचार व्यक्त किये हैं, जो पठनीय तथा उपयोगी हैं।

अजायबघरों में पुरातन काल के मिस्र के बादशाहों के मसाला लगे सुरक्षित मृत शरीर रखे हैं। ये बादशाह "फैरोआ" कहलाते थे। ३३०० बरस पहले इन फैरोओं के जमाने में मिस्र में कुछ घटनाएँ घटी। अपनी हाल की योरोप की यात्रा में मुझे बरबस ध्यान आया कि पुनरावृत्ति कैसे होती रहती है। और ईश्वर की चक्की यद्यपि धीरे चलती प्रतीत होती है पर पीसती है बिलकुल बारीक। उसके न्याय से कोई बच नहीं पाता।

उन दिनों मिस्र, संसार में एक प्रबल राष्ट्र था। उसकी अर्थ-व्यवस्था ऐसी थी कि इसराईल के अनुयायियों को गुलामों के तौर पर पिसना पड़ता था। इसराईली सेवक थे और मिस्री लोग थे उनके साम्राज्यवादी मालिक। जिस जमाने में मिश्र के 'पिरामिड' बनाये गये थे उस समय के मिस्र के वैभव की अभी तक कोई बराबरी नहीं कर सका है।

बाइबिल के दूसरे भाग के 'एकभोडस' नामक अध्याय में लिखा है कि ईश्वर ने इसराईल के शोषित नागरिकों को मिस्र की दासता से मुक्त कराने के लिये महात्मा मौजेज को मुक्तिदाता बनाकर भेजा। बलवान शोषक शोषित को छोड़ने पर आसानी से राजी नहीं होता। इसलिए मिस्र का फैरोआ यहूदियों को मिस्र से जाने ही नहीं देता था। ईश्वर ने मौजेज को फैरोआ के पास यह कहने को भेजा कि, "मेरे बन्दों को जाने दे जिससे कि वे मेरी सेवा कर सकें।" तब यहूदी, मिस्रियों की सेवा में लगे हुए थे। वे भौतिक वस्तुओं का उत्पादन करते थे और जो उन्हें दिया जाता उस पर गुजर करते थे। ईश्वर और उच्चादर्श नाम की कोई चीज उनकी निगाह में थी ही नहीं। इसलिए दलित वर्ग को अपने आत्मिक उन्नति का एक अवसर देना चाहता था जिससे कि वे उच्च कोटि की जिन्दगी बिता सकें; परन्तु 'फैरोआ' के रूप में जो शोषक था वह उन्हें छोड़ता न था। समाज के भौतिक और आध्यात्मिक तत्वों के बीच की लड़ाई में बहुत से कहर बरपा हुए। खुदा ने मिस्रियों पर दस प्रकार की महामारियों का प्रकोप डाला।

पानी खून बन गया। इस तरह जीवन की प्रमुख आवश्यकताओं में से एक और उसमें रहनेवाली मछलियां भी मिस्रियों की पहुँच से बाहर हो गईं। मेढक इतने पैदा हो गये कि आदमी का रहना दुश्वार हो गया।

पिस्सू इतने बढ़ गये कि मनुष्य और जानवरों की जिन्दगी खतरे में पड़ गई।

इजिप्ट में मक्खियां इतनी बढ़ गईं कि केवल गरीबों की ही नहीं पर अमीरों के लिए भी परेशान करनेवाली साबित हुईं।

पांचवीं महामारी यह थी कि पशुओं के रोग इतने फैले कि वे बड़ी तादाद में मरने लगे।

देश में फोड़े-फुन्सियों का ऐसा दौरा चला कि लोगों को भयानक कष्ट भोगने पड़े।

इस लेख के लेखक प्रोफेसर जे० सी० कुमारप्पा गांधीवाद के महान् विद्वान् हैं।

सातवां प्रकोप, तूफान, ओले और आग का आया; इसने सब जायदाद, खेती-बारी नष्ट कर डाली।

तब टिड्डी दल आया और "नील नदी की देन" वाला सारा उपजाऊ भूभाग बंजर बन गया।

उसके बाद अन्धकार ने सारे संसार को ढक लिया।

तत्पश्चात् ज्येष्ठ पुत्रों का भयानक कत्लेआम हुआ।

इन सब महामारियों में से प्रत्येक के बाद मौजेज फरोआ के पास गया और हर बार ईश्वर की वही विनती दुहराई, "मेरे बन्दों को छोड़ जिससे वे मेरी सेवा कर सकें" जब फैरोआ महामारी से घबरा जाता तो मुक्त करने का आश्वासन दे देता, पर जब उसकी बात के आधार पर प्रकोप शान्त कर दिया जाता, तो फैरोआ फिर कड़े दिल से अपना पुराना रवैया जारी रखता। और दसवीं महामारी में जब ज्येष्ठ पुत्रों का कत्लेआम हुआ तब उसने यहूदियों को जाने दिया। पर बाद में उसकी मति बदल गई और उसने उनका पीछा किया। जैसे ही यहूदी लाल सागर पार कर चुके कि वह भी पीछा करता हुआ पहुँचा, पर पार करने में ही डूब मरा।

आज योरोप में इसी इतिहास की पुनरावृत्ति हो रही है। मिस्र की तरह योरप दुनिया भर का शोषक रहा है और दूसरे सारे देश उसके पैरों तले कराहते रहे हैं। उनके अपने भूभाग में भी मालदार गरीबों का शोषण करते रहे हैं। अपने आर्थिक लाभ के कारण पैसेवालों ने श्रमिकों को स्वाभाविक जीवन व्यतीत करने का कभी मौका भी नहीं दिया। ईश्वर को भुला दिया गया। उच्च नैतिक मूल्यों का समाज में कोई स्थान ही नहीं रहा। लालच, नफरत, सन्देह और बड़े पैमाने पर मारकाट का बाजार गर्म रहा। ईश्वर आम जनता को अपनी सेवा के लिए [illegible] रहा है और धर्म-लोलुपता तथा कुबेर की सेवा से अलग होने को कहता रहा है। और केवल भौतिक वस्तुओं के उत्पादन से हटाने में उनकी आज की विनती यह है, "मेरे बन्दों को छोड़ दो जिससे वे मेरी सेवा कर सकें। फैरोआ की तरह मालदार लोगों पर जब जब विभिन्न प्र हर बार उन्होंने पंजा ढीला करने किया; परंतु जैसे ही दुःख ह दिल कड़ा करके अपना पुराना रखा।

शेष पृष्ठ १६

आई लेकिन कफन ओढ़कर, स्वतन्त्रता की देवी

लेखक, श्री नीलकण्ठ तिवारी, 'साहित्यरत्न', एम० ए०

हाय! नियति की निठुराई
आई लेकिन कफन ओढ़कर, स्वतंत्रता की देवी आई।
आशाओं के कन्धे चढ़ समझौते की आजादी आई॥
आंधी से जो बचकर निकली, नाव किनारे से टकराई।
खण्ड हृदय सी खण्डित कर दी, हमने अपनी धरा पुनीता।
राम बिना रावण ने हर ली, जागी जब मिट्टी की सीता।
बरसों का बलिदान हमारा, बाहर का दुश्मन भी हारा॥
लेकिन पाकर दान हमारा, घर के दुश्मन ने है मारा।
आदर्शों की बलि दी हमने, द्वेष, घृणा, विग्रह के आगे॥
झुके अहिंसा के परमेश्वर, अहंमयी हिंसा के आगे।
किया झूठ से समझौता तो, उसका फल भी हमने पाया॥
किसे दोष दें? कर्णधार को? या कि कहें विधना की माया।
हम निकले जग-भार उठाने, जीवन का जब हुआ तकाजा॥
भार समझ कन्धों पर रखा, हमने अपना स्वयं जनाजा।
था क्षण-भंगुर सुख का सपना, क्षण में घर-घर मातम छाया॥
जिसके नीचे सेज बिछाई, निकली वह बादल की छाया।
हाहाकार मचा पलभर में, जहां कि गूंजी थी शहनाई॥
पूछो, पूछो शरणार्थी से, जिसकी जीवित अर्थी आई।
आई लेकिन कफन ओढ़कर, स्वतत्रता की देवी आई॥
मजहब को भी धोखा देकर, देकर उसकी झूठ गवाही।
मानवता का खून बहाने, निकले हिंसा के व्यवसायी॥
दिल की आग लगाई घर-घर, दिल भी फूंके, घर भी फूंके।
नैतिकता के, संस्कृतियों के, सदाचार के मन्दिर फूंके॥
कल जो घर था चिता बना वह, जीवित जल सब राख बने।
जिनकी ठोकर में सोना था, ठोकर की वे खाक बने॥
प्रेम-तीर्थ के धाम हृदय थे, वही मृत्यु के धाम बने।
नगर, गांव, घर, सड़क, कुएँ सब, लाशों के गोदाम बने॥
राजनीति के सांचों में जब ढलकर निकले भोले-भाले।
वे मानव से बने अचानक, बम, बंदूकें, छुरियां, भाले॥
अन्न-वस्त्र गृहहीन बने सब, गांव-नगर श्मशान बने।
लाखों मानव की लाशों के, गिद्ध, श्वान मेहमान बने॥
चला कारवां नर-नारी का, था संसार लुटा उनका।
बदनसीब इन्सान बना है, भीषण आंधी में तिनका॥
अरे, विलायत की गोरी ने, काली कूट-नीति थी गाई।
बहके नेता डाली उसने, रिझा रिझाकर जब गलबांही॥
आई लेकिन कफन ओढ़कर स्वतंत्रता की देवी आई॥

भारत का सद्धर्म लुटा है, लुटीं हजारों कन्याएँ।
चुप चुप करुणा क्रन्दन करतीं, हाय हजारों विधवाएँ॥
बर्बरता भी थूके उनपर, कैसे मुंह से बात निकाछें॥
अपनी मांओं-बहनों के भी, स्तन काट जो गाड़ें भाले।
देवि अहिंसे! बता करें क्या, धर्म लुटे जब नारी का।
जिसके मस्तक का टीका है, चक्र सुदर्शनधारी का॥
चीख रही थी बाजारों में, नंगी लज्जा नारी की।
कांपी धरती थी जघन्यतम, लीला अत्याचारी की॥
क्रूर छुरे के सीने में भी उभरे होंगे दुख के छाले।
गर्भवती नारी, बच्चों के कोमल पेट चीर जब डाले॥

बर्बरता की हद कर दी थी, मन के कायर दीवानों ने।
मजहब को जल्लाद बनाया, मजहब के सुल्तानों ने॥
फूल नहीं फूलों की लाशें ले, स्वतंत्रता मधु-ऋतु आई।
आई लेकिन कफन ओढ़कर, स्वतंत्रता की देवी आई॥
तोड़ रहा दम जीवन सारा, तड़प रही है भारतमाता।
जाग जाग ए शोषित निर्धन, तू ही सच्चा भाग्य-विधाता॥
तेरी दुनिया में सब मानव, आपस में सब भाई-भाई।
तेरी दुनिया में क्या हिन्दू, क्या मुसलिम,क्या सिक्ख,इसाई॥
निर्धन के ईश्वर जब जागे, दूर हुई सब फूट-बुराई।
काश्मीर की घाटी देती इसी बात की आज गवाही॥
मिट्टी के हो स्वर्णकार तुम, खड़ा भविष्यत् हाथ पसारे॥
झोंपड़ियों के अन्धकार से, निकलो सूरज, चांद, सितारे॥
यहां गरीबी का सिर कटता, चांदी की तलवारों से।
यहां सूर्य्य भी डरता धन के उल्लू की ललकारों से॥
मर्द वही है जिनके दिल में, मजलूमों का दर्द भरा है॥
आजादी का पौदा जिनने, गरम खून से किया हरा है॥

नहीं चलेगी, नहीं चलेगी, बहुत दिनों तक गुण्डाशाही।
काश्मीर की जमी बर्फ से, ज्वाला जागी ले अँगड़ाई।
काश्मीर के निर्धन मुरझे फूलों ने तलवार उठाई॥

महात्मा जी की सार्वजनिक प्रार्थना

आखिर प्रार्थना भी लोगों की आपत्ति का कारण क्यों बनी ?

लेखक, श्री रामेश्वरदयाल दुबे, एम० ए०

महात्मा गांधी की सार्वजानक प्राथना एक ऐतिहासिक महत्त्व रखती है। महात्माजी के जीवन का आदर्श साम्प्रदायिक सद्भावना की स्थापना रहा है, इसलिये उनकी प्रार्थना भी भारत के प्रमुख सम्प्रदायों की दृष्टि से समन्वयसूचक था, किन्तु कभी-कभी प्रार्थना भी लोगों की अपत्ति का कारण बन जाती थी। इस लेख में लेखक ने महात्माजी की सार्वजनिक प्रार्थना पर सुन्दर प्रकाश डाला है।

प्रार्थना को सामुदायिक प्रार्थना का रूप दिया था। उसमें वे अपना और प्रार्थना में सम्मिलित होनेवाले सभी व्यक्तियों का हित देखते थे।

ऐसे ईश्वर-भक्त, प्रार्थना-निष्ठ गांधी जी की प्रार्थना में जब नित्य बाधाएँ उपस्थित की जाने लगीं; तब उन्हें कितनी मानसिक वेदना होती होगी, इसका अनुमान करना भी आसान नहीं है।

सहज प्रश्न उठता है कि गांधी जी की प्रार्थना में ऐसी क्या बात थी जिस पर आपत्ति उठाई जाती थी।

गांधी जी महामानव थे। मानव-मानव में भेद करना उन्हें पसन्द न था। उनके निकट न कोई हिन्दू था न मुसलमान। उनकी करुणाधारा, उनका सहज स्नेह सभी के लिए मुक्त था। प्रसंगवश जो भी उनके निकट आ जाय, वह उनके स्नेह का अधिकारी हो जाता था।

'गांधीआश्रम प्रार्थना' का कुछ ऐसा ही इतिहास है। जन्मजात हिन्दू होने के नाते हिन्दू-संस्कारों का प्रभाव गांधी जी के जीवन पर अधिक पड़ना ही चाहिए। इसलिए विभिन्न धार्मिक ग्रन्थों से चुने हुए श्लोक और मंत्र गांधी जी की प्रार्थना का पहले पहल अंग बने।

आश्रम-प्रार्थना के विकास के सम्बन्ध में गांधी जी ने एक स्थान पर लिखा है–

"आश्रम-प्रार्थना का विकास अपने आप होता रहा है। सन् १९३५ में कुछ जापानी साधू मेरे पास मगनवाड़ी वर्धा में आकर रहने लगे थे उनमें से एक, गत युद्ध आरम्भ होने तक मेरे पास ही थे। जापान के साथ लड़ाई की घोषणा होने पर वे गिरफ़्तार कर लिए गए। रोज सुबह-शाम वे अपनी प्रार्थना ढोल की आवाज के साथ चलते-फिरते किया करते थे। आश्रम की शाम की प्रार्थना उनके नित्य के जप के मंत्र से शुरू हुआ करती थी। मंत्र था--"नम्यो होरेंगे क्यो।"

अर्थात्--"सद्धर्म के प्रवर्तक भगवान् बुद्ध को नमस्कार हो।"

"मेरे लिए यह मंत्र साधु केशो की पवित्रता और एकनिष्ठा का स्मारक है, अतः इसमें खास शक्ति है।

"सेवाग्राम आश्रम की प्रार्थना में रैहाना बहन की सूचना और प्रयत्न से कुरान शरीफ की कुछ आयतें, जो नमाज का मुख्य अंग हैं, रोज पढ़ी जाती हैं।

"डाक्टर गिल्डर जेल में (आगा खां महल में) मेरे उपवास के दरम्यान मेरे पास भेजे गये थे। तब से रिहाई तक साथ ही रहे। उपवास छूटने के समय उन्होंने एक गाथा गाई थी। उसे प्रार्थना में हमेशा के लिए स्थान मिल गया।"

इस इतिहास से स्पष्ट है कि प्रार्थना का विकास अपने आप होता गया है। प्रसंगवश जो अंश आया; जोड़ लिया गया।

प्रार्थना की भाषा में भेद भले हो, भाव एक ही है। एक ईश्वर की सत्ता में विश्वास करनेवाले व्यक्ति के निकट उसे पुकारने के विभिन्न नामों में कोई अन्तर प्रतीत नहीं होता। एक रूप के अनेक नाम हो सकते हैं, होते हैं। गांधी जी के निकट जो ईश्वर था, वही अल्ला था। नाम भेद उसके निकट व्यर्थ थे।

गांधी जी की प्रार्थना में उपनिषदों से कई मंत्र लिये गये हैं। सन्ध्या की प्रार्थना में गीता के १९ श्लोक हैं। इनके अलावा दूसरे धर्म से सम्बन्ध रखनेवाली तीन प्रार्थनाएँ गांधी जी की प्रार्थना में हैं। बौद्ध-धर्म का जापानी मंत्र जो प्रार्थना के प्रारम्भ में पढ़ा जाता है, जो ऊपर दिया जा चुका है।

कुरान शरीफ़ की नीचे लिखी आयतें प्रार्थना का अंग हैं--

आऊज़ो बिल्लाहे मिनश्शैत्वा निर्रजीम ।*
बिस्मिल्ला हिर्रह्मा निर्रहीम।
अल् हम्दो लिल्लाहे रब्बिल् आलमीन,
अर्रहमा निर्रहीम
मालेकेयव्मिद्दीन, ईयाका नआबुदो
वईयाकानस्तईन,
एहदेनिस्सिरात्वल मुस्तक़ीम, सिरात्वल्ल-
ज़ीना अन् अम्ता
अलयहिम्, गयरिल् मग़बूदे अलय्हिम
बलद्द्वाल्लीन।
आमीन।

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम।
कुल्हेविल्लाहो अहद्, अल्लाहुस्समद्,
लम्यलिद् वलम्यूलद्, बलम यकुंल्लहु
कोफ़ोवन् अहद्।

इन आयतों का हिन्दी में पद्यबद्ध अर्थ इस प्रकार है—

पापात्मा शैतान से रक्षा करे रहीम।
बिस्मिल्ला हिर्रहमान जो करुणासिन्धु
करीम॥
तारीफ़ सब तेरी खुदा, तू सृष्टि का करतार
है।
मालिक तुही, पालक तुही, तू विश्व तारन-
हार है॥
दाता दया का एक तू, ज्ञाता सभी के
मर्म का।
न्यायी बनेगा अन्त में तू ही असत्-सत
कर्म का।
बस एक तेरे ही लिए यह है सतत
आराधना।
तेरी मदद की है, रहेगी, हम सभी की
याचना॥
जिन पर सदा तेरी कृपा, दिखला, उन्हीं
की राह जो।
उनकी नहीं, जो कोपभाजन, और हैं गुम-
राह जो॥
कह, दे तथास्तु या खुदा! कह प्रार्थना
स्वीकार ह।
प्रारम्भ अल्ला नाम से जो अति दया
आगार है॥
कह कि अल्ला एक है, वह पूर्ण काम
अलिप्त है।
जनता नहीं, न जना गया, वह अद्वितीय
अव्यक्त है।

पारसी-प्रार्थना की एक छोटी सी गाथा भी गांधी जी की प्रार्थना का एक अंश है। वह इस प्रकार है—

सदा अत मोइ बहिस्ता
स्वा ओस्चा श्योथनाचा वओचा।
ता-तू वह मनंघहा
अशाचा इषुदेम स्तुतो
क्षमा का क्षथ्रा अहुरा फेरशोम्
वस्ना हइथ्येम् दाओ अहूम्॥

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

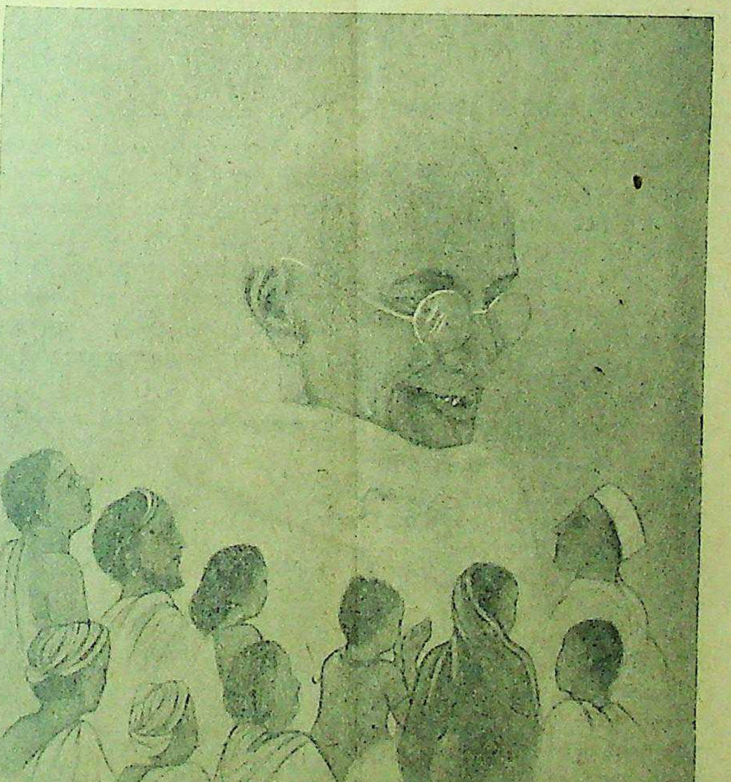

महात्मा गांधी प्रार्थना-सभा में सभी सम्प्रदाय के लोगों के बीच में।

अँगरेजी बनाम हिन्दी

पारिभाषिक शब्दों के निर्माण में संस्कृत का सहारा ही लेना श्रेयस्कर है

लेखक, डाक्टर रघुवीर एम० ए०, डी० लिट्०

> हिन्दी राष्ट्रभाषा का पद प्राप्त कर चुकी है, इसलिये उसका शब्द-भंडार भी व्यापक होना अत्यन्य आवश्क है। पारिभाषिक शब्दों के निर्माण की ओर अब विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इस कार्य में डाक्टर रघुवीर क्रियात्मक ढंग से अग्रसा हो रहे हैं। इस लेख में डाक्टर रघुवीर ने पारिभाषिक शब्दों के निर्माण की ओर विद्वानों का ध्यान आकर्षित किया है। साथ ही यह मत भी प्रकट किया है कि हिन्दी में पारिभाषिक शब्दों के निर्माण में संस्कृत के आधार से ही सफलता प्राप्त हो सकती है। लेख सुन्दर तथा विचारणीय है।

आजकल भारतीयों की एक बहुत बड़ी संख्या यह कहती सुनी जाती है कि अँगरेजी के पारिभाषिक शब्द अन्तर्राष्ट्रीय हैं। आज जबकि अँगरेजी से हिन्दी की ओर आने का अवसर है तो अंगरेजी शिक्षा-प्राप्त वर्ग ने इसे ही अपना नारा बना लिया है। उनकी आशा है कि इस प्रकार वे अपनी देश-भाषा के सीखने के कष्ट से बच जायँगे। हम इस नारे की परीक्षा करेंगे। ब्रिटिश के साथ यदि थोड़े से आस-पास के देश सहमत हो जाते हैं तो बिना किसी भी प्रकार के संकोच और आत्मव्रीड़ा के वे तुरन्त वहां 'अन्तर्राष्ट्रीय' शब्द का प्रयोग करने लग जाते हैं। उदाहरण के लिए नार्वे, डेनमार्क, हालैंड, बेल्जियम, फ़्रांस, स्पेन राष्ट्रों के रूप में गिने जाते हैं। अस्तु, इससे किसी को विरोध नहीं। इस प्रकार इनकी जनसंख्या और क्षेत्र के सीमित होने पर भी, अगर ये देश किसी वैज्ञानिक या साहित्यिक, धार्मिक या सांस्कृतिक पारिभाषिक शब्द को मान लेते हैं तो अंगरेज यह कहने लग जाते हैं कि अमुक पारिभाषिक शब्द अन्तर्राष्ट्रीय हो गया है। 'अन्तर्राष्ट्रीय' शब्द के इस प्रयोग को हमारे भारतीय मित्रों को स्पष्टतः समझ लेना चाहिए। उन्हें यह भी समझ लेना चाहिए कि यूरोप और अमेरिका दोनों की सभ्यता एक परिवार की है। उनके धर्म और संस्कृति का उद्गम एक है। अगर शासन-संस्थाओं के भेद की बात को ध्यान से मिटा दें तो भारत अथवा चीन के समक्ष वे एक मनुष्य-समुदाय के रूप में लिए जा सकते हैं। यूरोप और अमेरिका में परस्पर उतना अन्तर नहीं है जितना उत्तर-भारत की विविध भाषा-भाषी जनपदों में। यूरोपवालों के लिए लैटिन का वही महत्त्व है जो हमारे लिए संस्कृत का।

अंगरेजी के 'अन्तर्राष्ट्रीय (इन्टरनेशनल) शब्द से प्रकट होनेवाली अन्तर्राष्ट्रीयता वास्तव में एक ही सभ्यता की एक जाति है जो यूरोप के विभिन्न उपभाषा-समूहों में बँटी है और उन्हें भिन्न राष्ट्रों का नाम इसलिए मिला है कि उनकी सरकारें भिन्न अथवा पृथक् हैं। लेकिन जब एक भारतीय इस शब्द को अंगरेजी से उधार लेता है तो वह इस 'अन्तर्राष्ट्रीय' शब्द से यह अर्थ समझता है कि उसमें समस्त संसार से मतलब है और उसमें भारत, चीन और जापान भी समाविष्ट हैं। वह उससे यह समझ लेता है कि चाहे हम उन शब्दों का अर्थ समझें अथवा नहीं, किन्तु उनका प्रयोग हमारे लिए अनिवार्य है।

न केवल अंगरेजी के पारिभाषिक शब्द, अपितु 'कमॅसमेंट', 'रेलिजन', 'फिलासोफी', 'अर्चिटेक्चर' आदि कितने ही साधारण शब्द भी यूरोपीय भाषाओं में समान हैं। इसका यह अर्थ नहीं कि जब वे इन शब्दों को 'इंटरनेशनल' कहते हैं तो उनका प्रयोग हमारे लिए भी अनिवार्य और आवश्यक है। अगर ऐसा हो तो फिर हमें खोज खोजकर यह देखना पड़ेगा कि यूरोपीय भाषाओं में कौन-कौन से शब्द एक ही अथवा उभयनिष्ठ हैं। इस प्रकार फिर जो शब्द मिलेंगे सभी हम पर अनिवार्य होंगे। न तो ऐसा संसार में कहीं हुआ है और न हमीं अथवा संसार का कोई देश ऐसा करेगा ही। अगर कुछ शब्द सभी यूरोपीय भाषाओं में एक से पाए जाते हैं तो इसका यह अर्थ नहीं है कि उनमें आपस में भी उतना ही भेद है जैसे हममें और अंगरेजों में जो कि दूसरी भाषा के शब्द प्रयोग करते समय झिझकते हैं। लटिन अथवा ग्रीक का यूरोप की किसी भी भाषा में प्रयुक्त हुआ शब्द अन्य सभी देशों के लिए बोधगम्य है। अतः वे एक सम्मेलन में बैठकर किसी भी ग्रीक अथवा लैटिन शब्द को स्वीकार कर सकते हैं; किन्तु वे हमारे शब्द नहीं हो सकते। वे अपनी भाषा के बोधगम्य अंगों के रूप में अपनाये अथवा बैठायें भी नहीं जा सकते। वे अपनी विचित्र ध्वनियों के साथ हमारी भाषा में अलग ही हंसों में काग की भांति कांव-कांव करते रहेंगे।

हमारी आज की पीढ़ी जिसकी शिक्षा-दीक्षा अंगरेज़ी और लैटिन पारिभाषिक शब्दावली पर हुई है, आगे आनेवाली पीढ़ियों की आवश्यकताओं के साथ ठीक से न्याय नहीं कर सकती। और वह पीढ़ी अपने स्कूल और कालेज-जीवन का सर्वोत्तम अंश अंगरेज़ी की कहावतों और पदावलियों को रटने में नहीं खपा सकेगी।

लैटिन और ग्रीक यूरोप की प्राण हैं। वे हमारी आत्मा नहीं बन सकती हैं। अपितु हमारा तो अपना निजी एक प्राण है हम प्राण-विहीन नहीं। हमारा अपना इतिहास और अपनी परंपरा है। हमारे पास स्वयं की एक बपौती है जिसे हमें सुरक्षित और विकसित तथा समृद्ध बनाना है। हम दूसरों का परमुखापेक्षी नहीं बन सकते। हमें अपना देखना है। हमें ज्ञान की अपनी पिपासा को शान्त करना है हमारा एकान्त उद्देश्य यही हो सकता है कि हम किस प्रकार शीघ्र से शीघ्र प्रणाली से ज्ञानार्जन कर सकें। जब तक हम विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में अपना निजी दान नहीं देते, हम अंगरेज़ी की पुस्तकों को ऊँचे कार्यों के लिए सहायतार्थ ग्रहण कर सकते हैं। बाद को हमारे पास स्वयं सहायक पुस्तकों, पत्रिकाओं और अनुवाद-समितियों का ऐसा भांडार होगा जिससे हम शेष संसार के समस्त ज्ञान-विज्ञान को अपने देशवासियों के लिए उपादेय और सर्वसुलभ बना सकेंगे। लेकिन हम अपने बच्चों को अपनी भाषा के माध्यम से और अपने पारिभाषिक शब्दों के द्वारा शिक्षा देकर उनका बहुमूल्य समय बचावेंगे। हम उन्हें अपनी पुस्तकों और पत्रिकाओं से, विदेशी भाषा में कुत्ता-बिल्ली की कहानियां न पढ़कर, ज्ञान-विज्ञान की उच्च शिक्षा सुलभ करेंगे। उन्हें संसार की सर्वाधिक विषम और अनिश्चित भाषा पढ़ाकर कहावतों, मुहावरों, अनियमित वर्णविन्यासों (स्पेलिंग) उच्छृंखल उच्चारणों और बलाघातों के रटने के द्रविणी प्राणायाम में हम उनकी शक्तियों का ह्रास न करेंगे। प्रत्येक विश्वविद्यालय में कुछ चने-गिने मेधावी व्यक्ति विदेशी भाषाओं में अध्यवसाय कर सकते हैं; किन्तु अधिकांश लोगों को तो अपना समय ज्ञान की सच्ची प्राप्ति में ही लगाना चाहिए। हमारा यह एक स्पष्ट और अटल लक्ष्य होना चाहिए कि हमें आधुनिक ज्ञान को ऐसे शब्दों के माध्यम से अर्जित करना चाहिए जो सीधे हमारी अग्रगति में सहायक हों, और हमारी उन्नति के मार्ग में बाधक न हो। अगर हम प्राणि-विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान अथवा रसायन-शास्त्र और धातु-खनन-विद्या को ही लें तो कितने अध्यापक अंगरेज़ी के उलझे-सुलझे पारिभाषिक शब्दों का तात्विक अर्थ समझते हैं? उसका एक भाग अर्थप्रद हो सकता है किन्तु उसका अधिकांश उनके लिए अर्थ-विहीन ही होता है। चाहे मूल रूप से उनका अर्थ कुछ भी हो भारतीय अध्यापकों के लिए उनका अर्थ निरर्थक ही होता है। वह केवल अनवरत उद्धरिणी से स्मरण किया जाता है और विषय और प्रसंग से अर्थ ग्रहण किया जाता है। स्वयं शब्दों का निरपेक्ष अर्थ शून्य ही होता है। चूंकि वे उन शब्दों को समझते नहीं और उन्होंने कभी यह सोचा नहीं कि उनको अपनी भाषा में किस प्रकार पुकारा जाय, उनके लिए सदैव ही वे शब्द अज्ञात-अज्ञेय और रहस्यमय ही बने रहते हैं। उन्होंने उनके लिए इतना अध्यवसाय किया है, यही बात उनके दिमाग में सदैव भरी रहती है और इस प्रकार वे उनसे प्रेम करते रहते हैं जिस प्रकार कोई अपनी अत्यन्त कष्ट से अर्जित वस्तु को प्रेम करता है।

जिस प्रकार लैटिन के पारिभाषिक शब्द सारे यूरोप में एक ही हैं, उसी प्रकार संस्कृत की पारिभाषिक पदावली समस्त भारतवर्ष में होगी। सभी क्षेत्र और उनकी जनसंख्या परस्पर एक हैं। और अगर हम घोर परिश्रम करें जैसा कि यदि संघर्ष में अपनी सत्ता को अक्षुण्ण बनाए रखना आवश्यक है तो हमें करना ही होगा, हम शीघ्र निस्संदेह यूरोपवासियों के समकक्ष जायँगे।

वैज्ञानिक शब्द हिम-खंड के होते हैं। वे ज्यों-ज्यों समय की गति ढुलकते चलते हैं अपने चारों ओर अधि धिक शक्ति की काई बटोरते चले उनका विकास अनन्त होता है। ही समय में एक छोटा सा हिम-खंड से सौ गुने परिमाण में हो जाता अगर हम कुछ थोड़े से भी इंगलिश को लेकर चलते हैं तो नियत काल ही वे आश्चर्यजनक रूप में अपने और अंगरेज़ी शब्दों की एक राशि एकत्र कर लेंगे। प्रत्येक शब्द सहयोगी शब्द होते हैं और वे शब्द स्वयं अपने सहयोगी शब्द हैं। इस प्रकार वह राशि उत्तरो वर्धमान होकर इस अवस्था को जाती है कि समस्त भाषा उनसे आक्रान्त और पराभूत हो जाती है।

किन्तु अगर हम इस क्रिया को देते हैं और अगर हम अपनी भाषा शब्दावली लेकर चलते हैं जो अपनी में अपना निजी अर्थ रखते हैं और जो मात्र ध्वनि न होकर स्वयं अपने भाषिक अर्थ के एक अंग के मूलतः होंगे, तो वे भी अपनी राशि एकत्र करते रहेंगे। धैर्य, बुद्धिमानी के साथ किये गये कार्य, नियमपूर्वक व्यवस्थित ढंग चलाए गए परीक्षण और शोध हमारी भाषा और मस्तिष्क को बनावेंगे और दूसरी कोई वस्तु विदेशी शब्द हमें कुछ भी व्यंजना देते। हमारे अपने शब्द हमें अर्थ देंगे और उनसे हमारी प्रगति यही हमारे अपने और विदेशी में भेद है।

अब हम फिर 'इंटरनेशनल' (अन्तर्राष्ट्रीय) शब्द पर आवें। कोई भी जो दो या दो से अधिक राष्ट्रों में हो, अन्तर्राष्ट्रीय है। उदाहरणार्थ जापान, मंचूरिया, कोरिया, अनाम के परस्पर आधे से अधिक समान इस शब्द-भंडार में उच्च साहित्य विज्ञान से सम्बंधित सभी शब्द विष्ट हैं।

इसी प्रकार भारतवर्ष का वह भंडार जो बर्मा, श्याम सीलोन में है, अन्तर्राष्ट्रीय कहा जायगा। यह अवश्य है कि हम अभी इससे परि नहीं हैं। किन्तु अब यही तो जब हमें इन सभी सम्बन्धित देशों के के लिए उन्हें जानना है और उनका उपयोग करना है।

चमकीले स्वस्थ बालों के लिये
BLUE SEAL VASELINE POMADE
Vaseline POMADE
CHESEBROUGH MFG CO.

कोमलता से सुगंधित किया गया वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।

वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।

Copyright:

कमर टूट गई

लेखक, श्री श्रीराम शर्मा 'राम'

विश्ववंद्य महात्मा गांधी के महाप्रयाण से कौन नहीं रो पड़ा ? भारत ही नहीं सारे विश्व ने आंसुओं की श्रद्धांजलियां अर्पित कीं। इस कहानी में भी ऐसी मार्मिक घटनाओं का वर्णन करते हुए महात्माजी के स्वर्गवास पर अन्तर्वेदना को उँडेलकर रख दिया गया है। कहानी सुंदर और मार्मिक है।

बहिन के लिए दुनिया का आधार प्राप्त न होते कोई तो सहारा था ही कि जिस हुई थी। उसका वह सामा- भले ही अकेला और शून्य था; परन्तु उस अवस्था में भी थी—जीवन काट रही थी। ! नगर में, मोहल्ले में, ऐसे थे कि जिनकी दृष्टि में सम्मान पाती, गर्व पाती सच ही, ऐसे बहुत कम और नारियों की बस्ती में— जन-समुद्र में—जब-जब कोई गहरा गोता खाती, मोती से भरी सीप न पाकर सकती थी, यही पाती कारण था कि उस समुद्र के पर अशान्त और अधीर लहरों की तरह वह अपना सिर आत्मघात करना चाहती, तो किस प्रेरणा पर, किस आश्रित हुई, जीवन के प्रति में मोह पाती, दया और यही कारण था कि रेणुका अपने तईं दया रखती, अपने आस-पास के जन-समाज अपने अन्तर का समूचा प्यार, दया का भाव उँडेल देती।

बहिन अकेली थी, जीवन के प्रथम पहर में की दहलीज पर चढ़ी और द्वारा विवाह की तैयारी दैववश, नगर में फैली कारण रेणुका बहिन के जीवन-यात्रा समाप्त हो अकेली रह गई। गई। नाते-रिश्तेदारों विवाह हो; परन्तु, के लेखे को अपनी ऐसी विरक्त हुई कि सर्वथा ही दूर चली गई।

का पथ तो वह नहीं ऐसा निर्देश भी नहीं। आये दिन, रेणुका बहिन भी बातें आने लगीं कि सम्भवतः उसे अनेक बार विशेषतः उसके लिए बात यह थी कि वे बातें द्वारा उठाई गईं कि उसके लिए इसलिए मान्य आत्मीय थे। वे स्त्रियां दादी-चाची लगतीं, उन्होंने ऐसी झिझक नहीं पाई कि कहा जा रहा है, वह रेणुका —उन्हीं की कृपा और दया

, इसका परिणाम यह बहिन की वह किश्ती जो , न जीवनरूपी समुद्र की झोंकों को सह सकने योग्य; किश्ती लड़खड़ाने लगी— किश्ती डूब जाये, उसका मर जाये, ऐसी अकल्पनीय ने एक दिन भी नहीं की। स्वयं अपनी जनक थी—अपने प्रतीक! जिसका परिणाम जिन घात-प्रतिघातों को उसने अपनी छाती पर पड़ते जिस प्रकार वह पहले-पहल मूक और निस्तेज बनी हुई , तो बाद में, स्वयं ही शक्ति- । उपेक्षा और दया की भावना से उद्घोषित हुई, अन्यथा, अनेक बार सोचा कि वह उन मुंह नीचा है, उन नारियों को , लेकिन ऐसा करना तो उसके नहीं था। शायद बुद्धि-संगत भी , उसने एक बार जिस पथ पर अपने को डाल दिया केवल उसी ओर देखा—अपने लक्ष्य की ओर!

यह क्यों था? किस प्रकार ? यह एक समस्या थी, रेणुका बहिन की! शायद अवसर और भाग्य की बात भी। परिस्थितियों के जिस ढांचे में वह ढल रही थी, अशक्त और दुर्बोध मांझी की तरह, लहरों की कृपा पर आश्रित बन वह अपनी पतवार रखकर जिस प्रकार निश्चिन्त हो उठी थी, तो लगता कि उसे अपनी नैया के साथ डूबने या पार होने की आशा-निराशा नहीं थी। वह आशा उसने लहरों के आश्रय पर छोड़ दी थी। यही कारण था कि घर के उस अकेले जीवन में जब वह देर तक शून्य और निर्वाक बनी बैठी रही, तो तब, बरबस ही, एक नई दिशा की ओर वह झुक गई। पड़ोस के एक वृद्ध सज्जन ने एक दिन वह टँकोरी। उन्होंने यह बात कही कि 'यह जीवन तो बड़ा है, रेणुका इसे देख, बेटी!'

सुनकर, रेणुका ने कहा—'तो क्या करूँ?'

'करने को बहुत कुछ है। पथ का द्वार खुला है।'

'मैं विवाह नहीं करूँगी।'

'ओह, यह तो गौण विषय है, रेणुका! नितान्त हीन!'

'यह हीन है। न, न, यह तो बड़ा है। समाज के लिए आज यही श्रेष्ठतर बन गया है।'

वे वृद्ध सज्जन एक प्रकार से वाण-प्रस्थ थे। शिक्षित और समझदार, शायद वह अपनी देर की बात लिए हुए ही उस दिन रेणुका के द्वार पर आ लगे थे। रेणुका के पिता उनके भी मित्र थे। बात सुनकर वह बोले—'तुम ठीक कहती हो, बेटी! समाज यही चाहता है। आज तक यही निभता आया है। समाज इसी प्रकार के शीशे में अपना मुंह देख सका है।'

तब एकाएक रेणुका ने कहा—'तो?

वे सज्जन बोले—'पर मैं कहता हूँ, विवाह का प्रश्न तो बहुत पीछे है। तुम विवाह नहीं करती, तो न करो।'....

उन्होंने कहा—'यह तो दलदल है.... मानव का श्राप!'—कहते हुए उन्होंने जैसे झटका-सा खाया और कहा—'इस विवाह ने, मानव की इस एक इकाई ने—सचमुच ही भ्रष्ट किया है, मानव! यह नर और नारी का समाज कुत्ते-बिल्ली की स्थिति से ऊपर नहीं उठ सका है।'

'आप बतायें, मैं परेशान हूँ, बाबू जी!'

'हां, तुम परेशान हो—सच!' वह सदय और सरल भाव लेकर बोले—'इस यौवन में—जीवन के इस टेढ़े-मेढ़े रास्ते पर सभी कोई भटकता है—भ्रष्ट भी बन जाता है, बेटी!' वह बोले—'इसी से समाज कहता है, तुम विवाह कर लो।' उन्होंने कहा—'अन्धों को रास्ता चाहिए और ऐसी अवस्था में आंखें रहते भी अन्धा बन जाता है, यह नर और नारी का समाज!'

रेणुका चुप थी, जैसे जड़।

वे बाबूजी बोले—'तुम विवाह नहीं करती हो, तो समाज का काम करो—सेवा-पथ पर अग्रसर बनो, रेणुका!'

शाश्वत और अधीर भाव में रेणुका ने कहा—सेवा!'

'हां, सेवा!

'वह महान् है, वह अलभ्य!'

बाबू जी बोले—'अलभ्य होते हुए भी, वह प्राप्त है, बेटी! तुम्हारे लिए ग्राह्य! उपादेय!'

'तो मैं यही करूँगी। मैं.......'

बाबू जी ने कहा—'देश में कांग्रेस का जोर है। महात्मा जी का तप और त्याग सभी को प्रभावित कर रहा है। तुम भी जाओ, उस ओर!' वह बोले—'हां, रेणुका! कुछ काम करो। जनता की सेवा करो। घर-घर में जाओ। जीवन और जागृति का पाठ दो—इस नारी-समाज को कि जो हीन है, आज! शायद कायर! इस मनुष्य के सामने दीन!'

तदन्तर ही, जब बाबू जी जाने लगे, तो रेणुका ने उनके पैरों की रज लेते हुए कहा—'सच, मैंने आज ही सुना, आज ही पाया, बाबू जी!

बाबू जी ने कहा—'मुझे आना था। मुझे तुमसे यही कहना था। यह जीवन तो संदिग्ध! यह तो तुम्हें कहीं भी मार सकता है—तुम्हें लेकर डूब सकता है, बेटी!'

× × ×

कई मास हो गये, रेणुका साबरमती आश्रम की एक कोठरी में रहती हुई चरखा कातती, सेवा-भावना का पाठ लेती और जो उसके लिए जीवन की अकल्पनीय, शोभनीय और सुख की बात थी, वह यह कि स्वयं बापू की सेवा करने की इच्छा उसे प्राप्त हो गई थी। बापू की दिनचर्या, उनकी विचार-धारा इस प्रकार उसके जीवन में प्रविष्ट हो रही थी कि जैसे गंगा की तीव्र धार गंगोत्री पहाड़ से निकलकर नीचे मैदान में बहने लगी। उस अवस्था में, आश्रम के उस जीवन में ऐसे अनेक अवसर आये कि जब यौवन के झंझावात में रेणुका का वह जीवन फँस-फँस गया। वह उसे आकुल और बेचैन बनाने में भी समर्थ हुआ। परन्तु भाग्य की बात यही थी कि ऐसे अवसर पर वह तुरन्त अपने बापू का आश्रय पाती। उनके बताये हुए आदेशों पर चलती, जब वह सेवा और सत-कार्यों में अपने को लगा देती, वह अधिक व्यस्त होती,

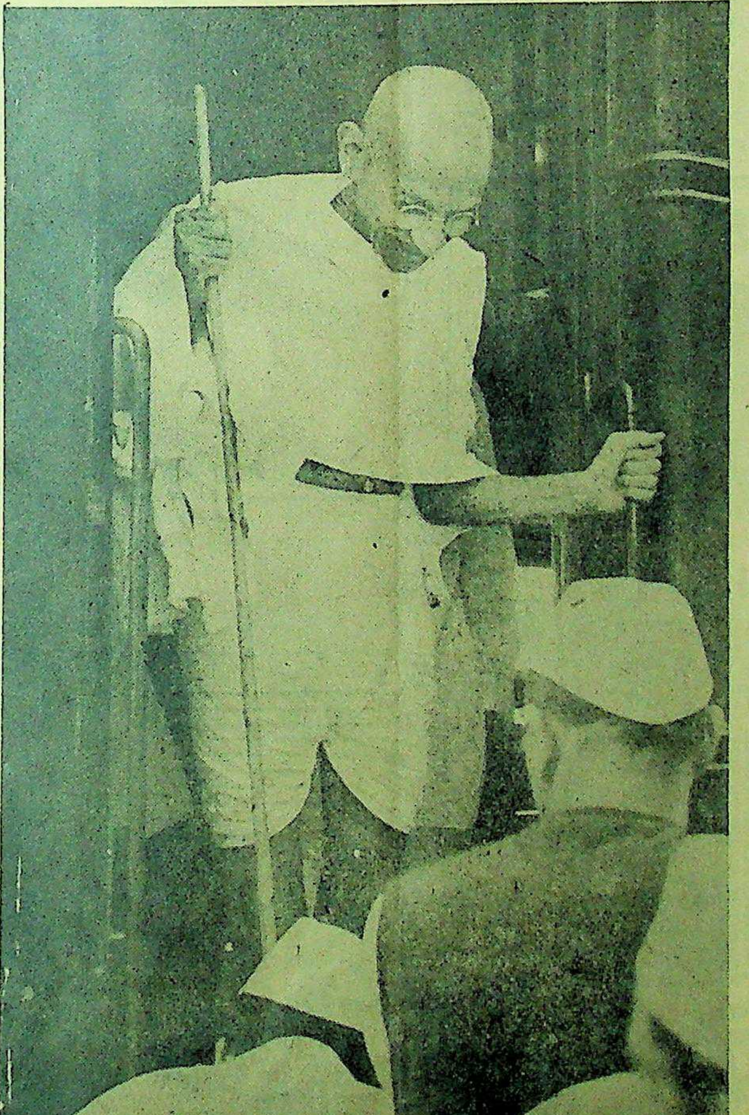
विश्ववन्द्य महात्मा गांधी, जिनके निधन से राष्ट्र की कमर टूट गई।

तो अनुभव करती कि जो वासना है उसके मन में, वह अकेली है, वह चंचल है। वह मूढ़। वह तो सुख और चैन में ही बोलती है। बेकार मनुष्य के ही कानों को झंकृत कर पाती है, यह वासना! निदान, उस छोटे से गुरु-मंत्र को पा, रेणुका फिर अपने नगर को लौटी। वह नगर के सेवा-क्षेत्र में उतरी। वह रेणुका से 'रेणुका बहिन, बनी। लोगों में उसके प्रति जो आशंका थी, जो दुर्भावना; उसकी ओर देखने की इच्छा भी तब उसके मन में नहीं आई। समाज की जिन हीन और दुर्गन्धिपूर्ण बस्तियों में जाकर रेणुका बहन अलख जगाती, उन्हें मनुष्य बनने के लिए सम्बोधित करती, तो उसे लगता कि यही पुण्य है, यही है जीवन की साध और जीवन-तप! क्योंकि रेणुका देखती कि उन बस्तियों में जिनमें सूर्य की किरणें भी आते हुए लजाती, उनमें समाज का उच्च और समर्थ वर्ग तो आता ही क्यों? लगता कि वह वर्ग, समाज का वह उच्छिष्ट अंग सर्वथा हीन और कायर बना दिया गया था। उसे देख, बरबस ही, रेणुका को लगा कि जो शाश्वत है, जो अमर है, मानव का पुण्य है, वह यों ठुकराया गया है....अन्धकार में रखा गया है। समाज ने नारी को कुचला है, अपने स्वार्थ के लिए उसे तोड़ा है, तो समाज का यह हीन अंग भी क्या यों ही......यों.....

इतना देखकर, सचमुच ही रेणुका बेचैन थी। परेशान। वह जैसे उस जीवन को पाकर अपने आपको भूल गई थी। यही कारण था कि अपने अन्तर की समूची साधना और त्याग की भावना को लेकर इस प्रकार उन हरिजनों की बस्ती में खो गई कि मानो उसके अतिरिक्त उसका और कोई अस्तित्व ही नहीं था--कोई साध्य नहीं।

किन्तु समय आया, एकाएक ही, रेणुका बहिन ने भी सुन लिया कि महात्मा जी गये....वे मार दिये गये। जीवन के उन दुर्दान्त और अशान्त क्षणों में रेणुका को तब सचमुच ही, यह नहीं सूझ सका कि वह जीवित है, वह सचेत है, वह जागरूक! अपितु, उसे लगा कि उसकी कमर टूट गई....समाज का मानव अंधा और क्रूर बन गया......अपने स्वार्थ का दास!

परन्तु हाय! हाय! कैसी विवशता थी उस रेणुका बहिन की कि उसी समय, उन्हीं शोकप्रद घड़ियों में हरिजन के एक बच्चे ने उसके पास आकर कहा--'मैं भूखा हूँ, दीदी!'

किन्तु दीदी ने उधर ध्यान नहीं दिया--उससे नहीं बोला गया। सूर्य डूब रहा था और उसका दृष्टि-लक्ष भी उस रक्तपूर्ण अन्तरिक्ष की ओर उठा था।

बच्चे ने फिर कहा--'दीदी....'

तब दीदी चौंक गई और एकाएक रोते हुए उस बच्चे की ओर देखकर बोली--'अरे, हां मेरे बच्चे! तू! तू!'

बच्चा सहम गया और दीदी को लगा कि वह शेष नहीं है। जितनी है, उसे वे बच्चे, वह समाज--भूखा और तृषित समाज पा लेना चाहता है--शायद उसका अन्त.....

बात की बात में रेणुका बहिन के चारों ओर हरिजन नर-नारियों की भीड़ इकट्ठी हो गई। उसके कानों में एक ही वाणी गूंज उठी--'यह क्या......यह अनर्थ कैसा, रेणुका बहिन!' जिसने जीवन दिया, उसी को मार दिया!'

आश्चर्य था कि उस समय रेणुका बहिन के मस्तिष्क में वह अमर-वाक्य गूंज रहा था, जो एक बार बापू ने उससे कहा--जीवन के लिए मृत्यु है....मृत्यु के लिए जीवन.......'

आंखों से अश्रुधारा बहाते हुए उसने कहा--"वे अमर हुए--वे महान्!"

परन्तु उसने क्या कुछ खो दिया, इतना वह नहीं कह सकती थी--नहीं! उसे लगा कि भारतमाता रो रही थी और उसकी कमर टूट गई थी।

किंकिणी में कवि की बढ़िया कविताओं का संग्रह है। भाषा मधुर और क
इतनी आकर्षक है कि पाठक कुछ क्षणों तक भावविभोर बना रहता है।
॥।) बारह आने।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

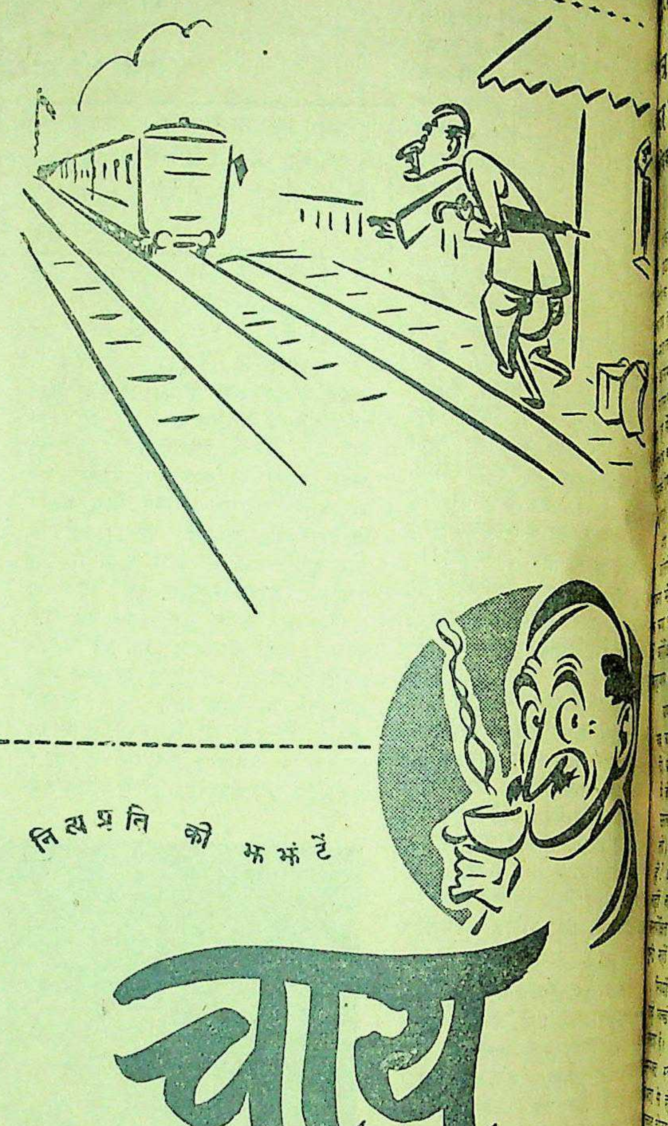
नित्यप्रति की झंझटें

चाय

से मिटाइये

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

हर मौसम में हर समय

सर्दी और खाँसी के

निर्भरयोग्य औषधि

सिरोलीन "रोच"

सारे संसार में व्यवहार होता है
SIROLIN
ROCHE
For COUGHS COLDS

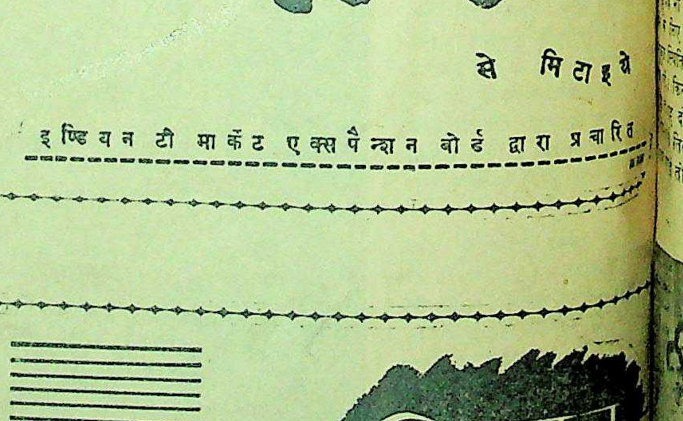
लिपटन

माने अच्छी चाय

आषा मधुर और
बना रहता है।
, इलाहाबाद

मिटाइये
प्रचारित
न
चाय

मातृमंदिर

ली का बाना ?

भारत की नारी स्वतंत्र भी स्वच्छन्द नहीं होगी,

श्रीमती उर्मिला गुप्ता

एम० ए०

र, २१ मार्च के 'देशदूत' का था। कार्य-व्यस्तता एवं व्यस्तता के बीच भी इतना निकाल ही लेती हूँ कि इसके का लेख देख जाऊँ। उसके ने ही मेरा आकर्षण-सा रहा निगाह दौड़ाते ही कभी तो हां कह देता है और कभी भाव उत्पन्न हो जाता है—— में जो कुछ उस लेख में

लेख उन लेखक के विचारों रूप नहीं है। ऐसी मेरी नहीं है। वरन् प्रश्न यही है कटु आलोचना नारी-जगत् वातावरण उत्पन्न करने में

चित्रण बुरा नहीं; किन्तु, पूर्वपीठिका के रूप में होता है। नारी-जगत् कल्पना ली दी जा रही है श्रेय शब्द उचित है रियों तक ही सीमित वक को क्या वापस जा सकता? यदि वह करें तो उनकी मांगें नी चाहिए।

ने स्वतन्त्रता की मांग की। शब्द अधिक उपयुक्त क्योंकि लेखक का तात्पर्य स्वतन्त्रता से न होकर स्वच्छंद-ही है। उन्होंने——स्त्रियों ने चाहा; कालेज की छात्राओं उस उन्मुक्त वातावरण को लालायित हो उठा और पाकर वह उसी के रंग में किन्तु, उन किशोरिकाओं का दोष नहीं। जो आज उन्हें तितली कहा जाता है। वह तो निर्भर नहीं; प्रत्येक क्षेत्र में अपनी इच्छा की पूरक नहीं। वह परिवार की सदस्या है——पिता, माता, बहिन, भाई इत्यादि के सम्बन्धों से घिरी हुई। यदि माता-पिता और अन्य परिजन उनको इतनी स्वच्छंदता न दें तो वे आज इन विशेषणों और उपाधियों से आभूषित न हों। यह स्वच्छंदता न देने की अपील पहले सम्मानित एवं अधिकारी परिजनों से करनी चाहिए। भोक्ता का दोष इतना अधिक नहीं है जितना देनेवाले का! और उस स्थिति में तो यह कथन और भी उपयुक्त मालूम होता है जब भोक्ता बुद्धिहीन, दुर्बल एवं औचित्य का सीमोल्लंघन करनेवाला है। यहां मेरे कहने का तात्पर्य यह नहीं कि हमारे ऊपर सभी प्रकार से अंकुश हों, हम स्वतन्त्र न हों; किन्तु, हमें उचित मार्ग में स्वतन्त्रता का पथ-प्रदर्शन किया जाय। फिर तो, यह कहने की गुंजाइश नहीं रह जायगी कि आधुनिक नारी स्वच्छंदता प्रिय है।

लेखक ने उस लेख में जो कुछ भी चित्र खींचा है वह माध्यम स्थिति का नहीं। भारतवर्ष में कितने घर ऐसे हैं जहां पढ़ी-लिखी लड़कियां गृह-कार्य नहीं करतीं? (धनिक वर्ग की कतिपय शिक्षित लड़कियों की बात मैं नहीं कहती; क्योंकि उन्हें अभी धन का नशा चढ़ा हुआ है)। यह कार्य न करने की व फैशन की हवा तो पहले चली थी जब शिक्षा आरम्भ हुई थी। तब परिजन भी लाड़-प्यार एवं अभिमान के करण पुत्रियों को ग्रह-कार्य नहीं करने देते थे। पर आज जब परिजनों ने, समाज ने उस शिक्षा का पर्याप्त दुरुपयोग देख लिया है, तब से वह अपनी लड़कियों से गृह-कार्य कराते हैं। लड़कियां कुशल गृहिणी होना चाहती हैं। मैं तो समझती हूँ कि माध्यम वर्ग की अधिकांश पढ़ी-लिखी स्त्रियां श्रद्धेय बापू के सेवा व त्याग भाव से अधिक प्रभावित हुई हैं—— उनमें कार्य करने का व सेवा करने का अधिक माद्दा उत्पन्न हो रहा है।

और यदि वह रुचि और भावना उनमें जाग्रत् नहीं हुई है तो उन्हें समझाया जा सकता है। अब भी वह अनुशासित तो हैं ही। पहले मातृ-ग्रह में अनुशासन रहता है; यदि परिजन ध्यान दें तो उसे सुधार सकते हैं; बाद में पति के अनुशासन में उन्हें चलना होता है। यदि वह प्रत्येक पुत्री को समझायें तो उसे अपनी त्रुटि का ज्ञान हो जायगा और वह अपने अनुभव दूसरों को देंगी। इस प्रकार एक के सुधर जाने से भी बहुत लाभ होता है।

अब बात आती है 'अप-टु-डेट सोसाइटी गर्ल' की। माफ कीजिये, यदि पति स्वयं ही पत्नी को प्रदर्शिनी समान बनाना चाहते हैं तो इसमें उस बेचारी का क्या दोष? सुन्दर, पढ़ी-लिखी, हँसमुख पत्नी पाकर कौन 'धन्य-भाग्य' नहीं कहता? कौन नहीं चाहता कि उनकी पत्नी उनके मित्रों से बोले और पार्टी में निमंत्रित की जाय। साथ ही वह यह भी आशा करता है कि वह सब गृह-कार्य करे। मैं तो यही कहती हूँ कि यह मांग अनुचित नहीं है। किन्तु, यदि पत्नी को केवल सभा-सोसाइटी का ही शौक है, तो उसे उससे वंचित रखें। थोड़े दिन में वह स्वयं ही सब कार्य करने लगेंगी और यदि रुचि होगी तो सभा आदि में जाने के लिए भी समय निकाल लेंगी। बेचारी स्त्रियों के माथे ही दोषारोपण उचित नहीं; उसमें पुरुषों का भी पूर्ण उत्तरदायित्व है।

मिस्टर 'क' सिनेमा जाते हैं और चाहते हैं कि पत्नी भी साथ जाय। पर्स उनके पास होती है उन्हें मालूम है कि २५०) में खर्च चलाना है। वह स्वयं ही होटल जाने का प्रस्ताव रखते हैं। कोई स्त्री अपनी ओर से यह युक्ति नहीं रखती; और यदि रखती है तो पुरुष उस युक्ति को ठुकराने का अधिकारी है। अपने स्नेह एवं अन्यान्य भावों द्वारा वह पत्नी को मनोनुकूल बना सकता है। यह दलील दोनों क्षेत्रों में ही लागू होती है। निरन्तर अभ्यास से तो सब कुछ सफल हो जाता है। आवश्यकता रहती है केवल इच्छा की। मैं तो लेख के सुझाव के रूप में यही कहूँगी कि आप (पुरुष वर्ग) पहले स्वयं तो अपने को देखें कि आप क्या चाहते हैं, आप स्त्रियों व पत्नी से क्या आशा रखते हैं? पर स्वयं ही अनिश्चित धारणाएँ लेकर पत्नी पर दोषारोपण नहीं कर सकते। यों तो सबको स्वतन्त्रता है ही।

स्वतन्त्र भारत की नारी स्वतन्त्र रहकर भी स्वच्छंद नहीं होगी, ऐसा स्त्री-वर्ग का विश्वास है। अपनी 'राजकुमारी' व 'कोकिला' की तेजस्वी, पवित्र एवं मधुर काकली हमारे कर्ण-कुहरों में प्रवेश करके आत्मा तक अवश्य पहुँचेगी।

तब वह (नारी) तितली का वाह्य आवरण अवश्य उतार फेंकेगी——चाहे वह लड़कियां हों अथवा पत्नी।

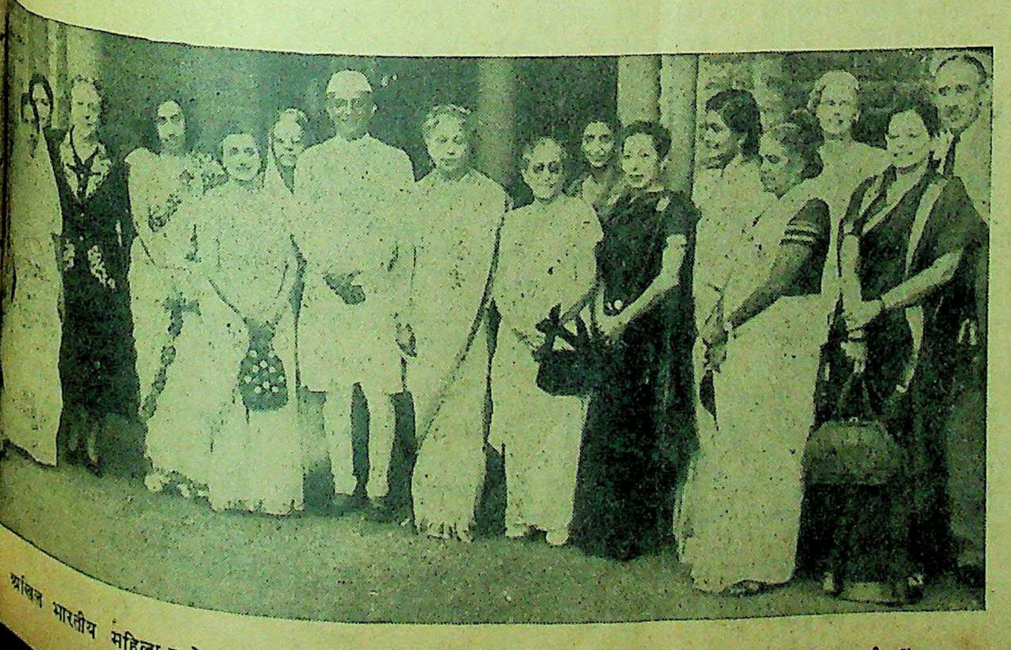

अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन की बम्बई शाखा की प्रमुख महिलाएँ, जो अधिवेशन के समय एकत्रित हुई थीं।

मुफ़्त

युवको! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीवन फीका हो चुका हो तो भारत भर में सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त रोग विशेषज्ञ कविराज ब्रह्मसरूप बी० ए० लाहौरवाले फतेहपुरी (D.A.) देहली से मशविरा (सम्मति) मुफ़्त लेकर अपना जीवन सुधार लें।

फैंसी सिल्क साड़ी आकर्षक डिज़ाईन

कलापूर्ण ३-४ इंच चौड़ा बार्डर
नं० ७ ८ ९ ५ गज
१८) २३) २८)
२) पेशगी बाकी वी० पी० से
थोक व्यापारियों को खास सुभीता

बमाको इन्डस्ट्रीज,
जुही नं० ६ कानपुर

बवासीर

यदि आप खूनी अथवा खुश्क बवासीर से पीड़ित हैं और हज़ारों इलाज पर भी कोई फायदा नहीं हुआ तो आज ही मुझसे बवासीर का छल्ला जो कि मैस्मेरिज़्म की ताकत से प्रोफेसर जौलीसन, एन० डी० (अमरीका) ने तैयार किया है मँगवा कर पहनें और रोग से सदा के लिए छुटकारा पायें। हज़ारों रोगी फायदा उठा चुके हैं। फायदा न होने पर कीमत वापस। कीमत ३)। डाक-खर्च पृथक्।

प्रोफेसर कुलदीप पोस्ट-बक्स नं० १४८, देहली

५००) रुपये पुरस्कार

एक आश्चर्यमय आविष्कार

जादू की अँगूठी

यह अँगूठी जादू और मेस्मेरिज्म की शक्ति की सहायता से तैयार की गई है। यह आश्चर्य के काम करती है। जो कोई इस अँगूठी को पहनेगा, वह किसी भी उद्देश्य में, वह कितना ही कठिन और दुःसाध्य हो, सफल होगा। यह आपकी सब प्रकार के संकटों या रोगों से रक्षा करेगी। ग्रहों का कोई बुरा प्रभाव नहीं हो सकता। इस अँगूठी का पहननेवाला किसी भी व्यक्ति (पुरुष या स्त्री) पर वह कितना ही कठोर हृदयवाला हो, अपना पूरा नियंत्रण रखेगा। यही नहीं, वह अत्यंत विनीत बन जायेगा और अनुपस्थिति से अपने को दुःखी अनुभव करेगा। आप प्रेम, मुकदमेबाजी और नौकरी में सफल होंगे और बहुत-सा धन प्राप्त करेंगे। संक्षेप में, अँगूठी शरीररक्षक का काम देगी। एक बार आजमाइए और ठीक पहली रात को इसके आश्चर्यमय परिणाम देखिए।

मूल्य एक अँगूठी २ रु०। तीन अँगूठी ५ रु०। पैकिंग और पोस्टेज अतिरिक्त।

श्री शंकर भण्डार
पोस्टबाक्स २४३, कानपुर

संपादक के नाम चिट्ठियां

बापू-संवत्

अँगरेजों के साथ ही उनके संवत्—ईस्वी सन् को भी हटाने के लिए महात्मा गांधी के स्वर में 'ईस्वी सन्! भारत छोड़ो'। की आवाज बुलन्द हो रही है। वैसे तो ईस्वी सन् का छोटे मुन्नू से लेकर बड़े सम्पादकजी की कलम तक दौर-दौरा रहा है; किन्तु हमारी संस्कृति के अभेद्य कवच के सामने यह भी कुण्ठित हो चुका है। हमारे धार्मिक समारोह और हमारी संस्कृति के सच्चे संरक्षक भारत के सात लाख गांवों में आज भी विदेशी तारीख की जगह एकम, पड़वा दूज, तीज का बोलबाला है। शिक्षित-वर्ग से भी आज नहीं तो कल, यह जानेवाला ही है। उस समय इसके रिक्त सिंहासन पर हमें अपने किसी संवत् को अभिषिक्त करना ही है, तब बापू को ही संवत्सर की भी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने में कौन असहमत होगा?

सम्भव है कि कुछ संस्कृतिनिष्ठ विद्वान् किसी प्रचलित भारतीय संवत् को ही ग्रहण का आग्रह करें। तब हमें गम्भीर चिन्तन करना होगा। हम यदि निष्पक्ष होकर विश्व के संवत्सर-साहित्य का सिंहावलोकन करें तो इस निश्चय पर पहुँचेंगे कि सभी संवत्सरों में विशिष्ट भावना की अभिव्यक्ति के साथ उत्कृष्टतम काल-विभाग करने का प्रयास हुआ है। प्रति-संवत्सर गत वैशिष्ट्य के साथ ही कुछ त्रुटियां भी हैं। हमें जागृत भारत के संवत्सर का राष्ट्रीयकरण करते समय सभी संवत्सरों की अच्छाई लेनी और त्रुटियां छोड़नी होंगी। इस सुसंस्कृत संवत् के नामकरण के समय गांधीजी का नाम जोड़कर ही उसे अमर किया जा सकता है। गांधीजी के अनेक नामों में से 'बापू' ही उनके अधिक अनुरूप और हमारी भावनाओं का सुन्दर प्रतीक हैं। महात्मा जी उतने महात्मा नहीं, उतने सन्त नहीं, उतने राजनीतिज्ञ नहीं, उतने गांधी भी नहीं, जितने कि वे सबके 'बापू' थे। ऐसी हालत में इस नए संवत्सर का नाम 'बापू-संवत्' ही हो सकता है।

'बापू-संवत्' के निर्धारण से पहले संसार के सभी संवत्सरों का पर्यालोचन होना जरूरी है। संसार में आज ५७ संवत्सर चालू हैं। अवान्तर भेद से यह संख्या न्यूनाधिक भी गिनी जा सकती है। हिन्दुस्तान में प्रचलित 'सप्त ऋषि-संवत्' (पहाड़ी संवत्, कच्चा संवत्) आदि का उल्लेख न करने पर भी नीचे लिखे प्रमुख हैं। इनकी प्राचीनता के बारे में कल्हण जैसे प्राचीन विद्वान् से लेकर आज के इतिहासकारों तक में कहीं कहीं मतभेद भी है।

संवत्सर-नाम	आज का चालू वर्ष
सृष्टि संवत्सर	१, ९७, २९, ४९, ०४७
पारसी ,,	१, ८९, ९१५
कलि ,,	५,०४९
युधिष्ठिर ,,	४,३८७
मूसा ,,	३,५२०
यूनानी ,,	२,७१४
बुद्ध ,,	२,४९१
वीर ,,	२,४७४
विक्रम ,,	२,००४
ईसा ,,	१,९४८
शालिवाहन ,,	१,८६९
हिजरी ,,	१,३६७
बंगाली ,,	१,३५५
गुरु नानक ,,	४७८
दयानन्द ,,	१२३

संसार के अवशिष्ट प्रमुख संवत्सर :—

चीन संवत्सर	९,६०,०२,४४७
मिश्र ,,	२७,६०१
ईरान ,,	५,९५२
यहूदी ,,	५,७०८
इब्राहीम ,,	३,८६८
स्टाटिन ,,	३,६५१
रूम ,,	२,७००
जोरोस्पटिन ,,	१,३१७

हमें इनकी उत्कृष्टता के साथ ही 'बापू-संवत्' के मास एवं दिनों के नाम भी सार्थक और सत्प्रेरक रखने हैं। प्रत्येक मास के नाम से ही क्रम से सत्य, अहिंसा अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, अभय, अस्वाद, शरीरश्रम, स्वदेशी-व्यवहार, सर्वधर्मसमन्वय, अधर्मप्रतिकार और ईश्वर-चिन्तन का बोध होना जरूरी है। सप्ताह के प्रत्येक दिन का नाम भारतीय स्वतन्त्रता के अमर सेनानी लोकमान्य तिलक, नेताजी, महामना मालवीय, लाला लाजपतराय, श्री गोखले आदि ७ के नामों पर ही निश्चित हो। संवत्सर का प्रारम्भ बापू के जन्मदिन, बापू के उद्देश्य स्वतन्त्रता-दिवस या महानिष्क्रमण के दिनों से कभी भी किया जा सकता है। सभी पक्षों के प्रमाण उपलब्ध हैं। युक्तप्रान्तीय धारा-सभा का सूर्यग्रह पर आधारित 'गांधी-संवत्सर' मकर-संक्रान्ति से चलाने का सुझाव भी सुन्दर है।

सच तो यह है कि इस योजना के सांगोपांग विवेचन के लिए भारतीय संवत्सर-विशेषज्ञों की एक समिति बने। वही इस महत्त्वपूर्ण समस्या का निर्णय कर विज्ञान-संमत और निष्पक्ष घोषणा करे, ताकि 'बापू-संवत्' निर्विवाद रूप से समग्र भारतवर्ष में ग्राह्य हो सके। यदि यह समिति बापू की पुण्य-स्मृति में नया संवत् न चलाने का ही निश्चय करे, तो उसका अर्थ यही हो सकता है कि आज तक जितने भी महापुरुषों के यादगारों में संवत् चालू हुए हैं, उन सब से बापू के महान्तम होने के कारण उनकी स्मृति में 'बापू-संवत्' नहीं चलाया जा सकता।

बिरला संस्कृत कालेज, पिलानी —आचार्य नित्यानन्द सारस्वत

* * *

गांधी-स्मारक-निधि

महात्मा गांधी की सच्ची उपासना और आराधना उनके दिखाये हुए मार्ग का अनुसरण करने में ही है। उनकी अमर वाणी और उनके उदात्त विचार तथा कार्य भारतवासियों और संसार को सदा सत्प्रेरणा देते रहेंगे तथा उनका मार्ग प्रदर्शन करते रहेंगे। महात्मा जी के अमृतमय उपदेश से बढ़कर उनका दूसरा कोई स्मारक क्या हो सकता है? वही उनका सच्चा कीर्ति-स्तम्भ है। उनकी दिव्य वाणी ही उनकी आत्मा है। उनका यशसौरभ उनके जीवनकाल में ही दिग्-दिगन्त को व्याप्त कर चुका था। उनकी कीर्ति अचल है। पीड़ित मानवता और भारतीय संस्कृति उनकी कीर्ति को विनष्ट होने न देगी। यह सब होते हुए भी हम सब भारतवासियों का यह विशेष कर्तव्य है कि हम उनके सच्चे आदर्शों और सिद्धान्तों के प्रचार का आयोजन करें तथा उन विविध रचनात्मक कार्यों को, जो उनकी सर्वतोमुखी प्रतिभा के फल थे, विलुप्त होने न दें। अपने आदर्शों की पूर्ति के लिए महात्मा जी निरन्तर विविध रचनात्मक कार्यों में लगे हुए थे तथा अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने अनेक संस्थाओं की स्थापना की थी। इन संस्थाओं को जीवित रखने तथा इनके कार्य को अग्रसर करने का उत्तरदायित्व सकल राष्ट्र पर है। वह सत्य और अहिंसा के पुजारी थे। वह अहिंसक समाज की स्थापना के लिए समाज से सामाजिक तथा आर्थिक विषमताओं को दूर करने का उद्योग करते थे। वह सब धर्मों को आदर की दृष्टि से देखते थे और उनकी मौलिक एकता में विश्वास रखते थे। उनकी राष्ट्रीयता मानव-जातिकी सेवा का उपकरण मात्र थी। जनतंत्र, साम्प्रदायिक एकता तथा विश्वप्रेम के लिए उन्होंने समस्त उद्योग किया। दरिद्र, अकिंचन, पीड़ित और पद-दलित वर्ग उनकी कृपा के विशेष पात्र थे। महात्मा जी ने उनके जीवन के स्तर को उन्नत करना तथा उनके अधिकारों के लिए लड़ना हमको सिखाया है। राजनैतिक क्षेत्र में नैतिक आचरण की प्रतिष्ठा कर उन्होंने वर्तमान युग को सच्चा रास्ता दिखाया है। आज का मानव ग्लानि और अवसाद से अविभूत हो रहा है, वह निराशा से आच्छन्न है और जीवन में असफलता ही असफलता देखता है। मानव का विश्वास मानवता से उठ गया है। उनको एक नये विश्वास की आवश्यकता है जो उनको आशा प्रदान कर सके। वह एक नये मार्ग को ढूंढ़ता है। उसको एक नई दृष्टि जीवन के नये सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्यों की तलाश है। महात्मा जी का दिखाया हुआ मार्ग ही मनुष्य के व्यथित हृदय को शान्ति प्रदान कर सकता है। उसको एक नया आलोक, एक नया जीवन दे सकता है।

संयुक्त प्रान्त में निधि के लिए धन-संग्रह करने के लिए एक कमेटी नियुक्त की गई है। इस कमेटी की सभानेत्री प्रान्त की गवर्नर साहबा श्रीमती सरोजिनी नायडू हैं और प्रधान सचिव पंडित गोविन्दवल्लभ पन्त तथा प्रान्तपति श्री दामोदर-स्वरूप सेठ उसके उप-सभापति तथा श्री विचित्रनारायण जी मंत्री हैं। जिलों में धन-संग्रह करने के लिए इस कमेटी की कार्यकारिणी की ओर जिलों में स्थानीय कमेटियों की शीघ्र नियुक्ति होगी, ताकि यह पुनीत कार्य सुव्यवस्थित रूप से प्रत्येक स्थान में किया जा सके। यह पूरा विश्वास है कि हर एक स्त्री और पुरुष अपनी योग्यता के अनुसार अधिक से अधिक द्रव्य इस महात्मा गांधी राष्ट्रीय कोष में देगा। दिग्गज धनवान् अपने वित्त के अनुसार उपयुक्त रकम देकर और निर्धन भी कम से कम १० दिन की अपनी पूरी आय देकर महात्मा जी की पुण्य स्मृति को चिरंजीवी बनाये रखने के लिए इस अवसर पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। प्रान्तीय कार्यालय शीघ्र स्थापित होगा। इस बीच इस कोष के लिए निम्नलिखित बैंकों तथा उनकी शाखाओं में, सेक्रेटरी-गवर्नर महोदया, प्राइवेट सेक्रेटरी, प्रधान सचिव या प्रधान, प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी को धन भेजा जा सकता है और वे इसे सधन्यवाद स्वीकार करके इस कोष में जमा कर दें।

लखनऊ, —चन्द्रदत्त पाण्डेय
२२ मार्च ४८,

* * *

स्वाधीन टिहरी की जनता से

१३०० वर्षों की पुरानी निरंकुश सामन्तशाही के खिलाफ निरन्तर युद्ध करने के पश्चात् आखिर आज देवताओं के इस देश में आजादी का सूर्य उदय हो ही गया है। इस संग्राम में हमने जो कुर्बानियां दी हैं आज उनका हिसाब जोड़ना आसान काम नहीं। फिर भी रवाई के [illegible] बलिदान, २८ दिन की भूख हड़ताल के बाद जेल की अँधेरी में स्वतन्त्रता की वेदी पर अपने की आहुति देनेवाले वीर शहीद 'सुमन' व कीर्ति-नगर के मोर्चे पर से भूने जानेवाले युवक नेता श्री नागे सकलानी व ठाकुर भोलूसिंह की या हमारी आंखों के सामने ताजी है। सन्देह नहीं कि हमारे इतिहास के ये सितारे भविष्य में भी हमारा मार्ग करते रहेंगे।

परन्तु आजादी हासिल करने कठिन उसे कायम रखना है। अपनी के मद में यह भूल बैठना ही हमारी के दुश्मन हो सकते हैं, इतिहास के के प्रति अपनी आंखें बन्द कर होगा। प्रतिगामी शक्तियां घात बैठी हैं कि उन्हें एक बार तो मौका जावे। शायद खुल्लमखुल्ला वे मैदा हमारे सामने आने की हिम्मत न फिर भी हमारे संगठन को कम बनाने के लिए वे प्रकट और अप्रकट से सभी हथकण्डे बरतेंगे। ऐसी स्थि हमें राजनीति के इस अमिट सिद्धा पर कि "आजादी की सच्ची कीम जागरुकता है।" कदम-कदम पर अम करना होगा। यह उसी दशा में सम्भ हो सकेगा जब कि हरएक आदमी सच्चे अर्थ में आजादी का अर्थ समझकर उसके पहरेदार के रूप में अपनी जिम्मे-दारी निबाहेगा। टिहरी में मजदूर और किसानों की हुकूमत का कायम हो जा ही सामन्तशाही के कल-पुर्जों के लि एक महान् चुनौती है। अब उनका अस्ति स्वयं ही समाप्त हो जाना चाहि।

परमाणु बम के इस युग में अहिं क्रान्ति का सजीव उदाहरण टिहरी की जनता ने भारी नाम हैं। वैसे भी रियासती राजनीति में वाली उथल-पुथल में हमारे स्वत संग्राम ने अप्रकट रूप से जो सह पहुँचाई है वह किसी से छिपी हुई नहीं अब शीघ्र ही अपने भावी निर्णय का हमारे सामने आवेगा। उस समय निश्चय किया जा सकेगा कि हम किस तक यह मान पाने के योग्य हैं। ह आजादी के लड़ाके आज भी वीरान और बर्फीले पहाड़ों को लांघकर राज्य कोने-कोने में प्रजामण्डल का सन्देश आगे बढ़े हैं। हमें आशा है कि इस बात का ध्यान रखते हुए कि मण्डल का प्रत्येक सिपाही आज भी टि के पांच लाख नंगे भूखे किसानों की सुधारने के लिए अपने खून की बूंद बहाने के लिए तैयार है, इस यज्ञ को सफल बनाने में हाथ

टिहरी —रामचन्द्र
९ मार्च, १९४८ —सुन्दरला
प्रधान

मंत्र, तंत्र
साधनमाला—शक्ति-उ
सम्बन्धी हिन्दी में अकेली मासिक
माला। वार्षिक मूल्य ८)। एक प्र
कल्याण-मन्दिर, कटरा, प्र

सफेद बाल काला
खिजाब से नहीं हमारे आ
सुगन्धित तैल से बाल का पकना
सफेद बाल जड़ से काला हो जाता
तैल दिमागी ताकत और आँखों की
को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास
मूल्य वापस की शर्त लिखा लें।
२।।), आधा बाल पका हो तो ३।
कुल पका हो तो ५) का तैल मँगा
एल० एन० गुप्ता फार्मेसी
नं० ८ पो० नवादा, गया

शदूत चित्रावली

र्थियों की सहायता के लिए पंडित नेहरू ने जनता से अपील की थी। इस गर्ल्स कालेज की छात्राएँ 'फैंसी ड्रेस' का प्रदर्शन करके चंदा जमा कर रही हैं।

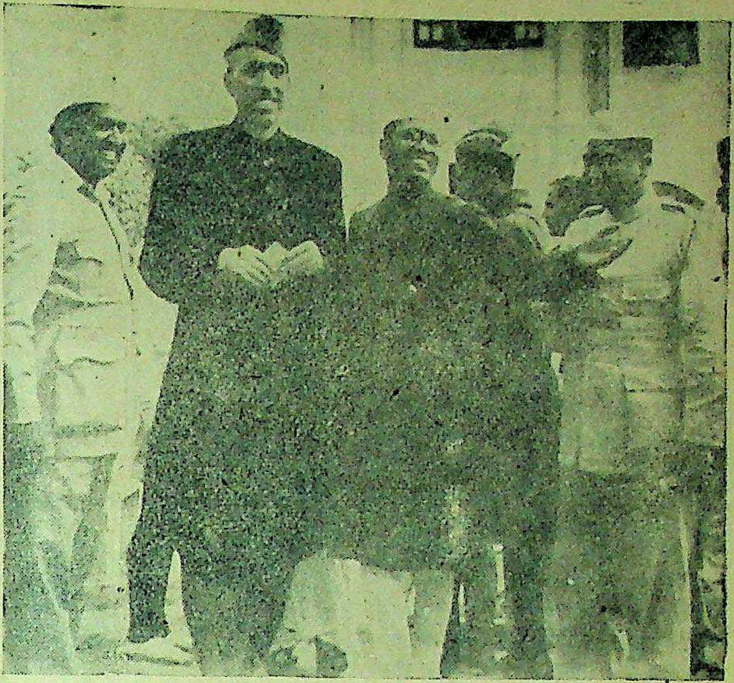

काश्मीर के प्रधान मंत्री शेख अब्दुल्ला, जो पिछले दिनों अमरीका से लौटे थे, दिल्ली में होनेवाले अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी में विशेष निमंत्रण प्राप्त होने पर शामिल होने के लिए जा रहे हैं।

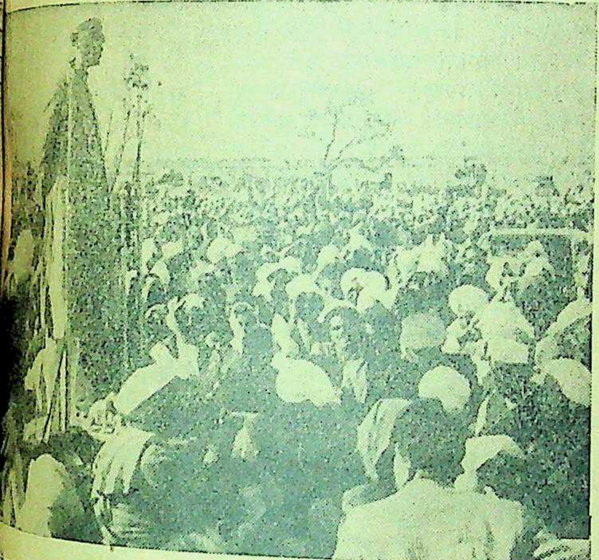

मन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू जालन्धर में काश्मीर की समस्या पर एक में भाषण दे रहे हैं। कई हजार जनता पंडित जी का भाषण सुन रही है।

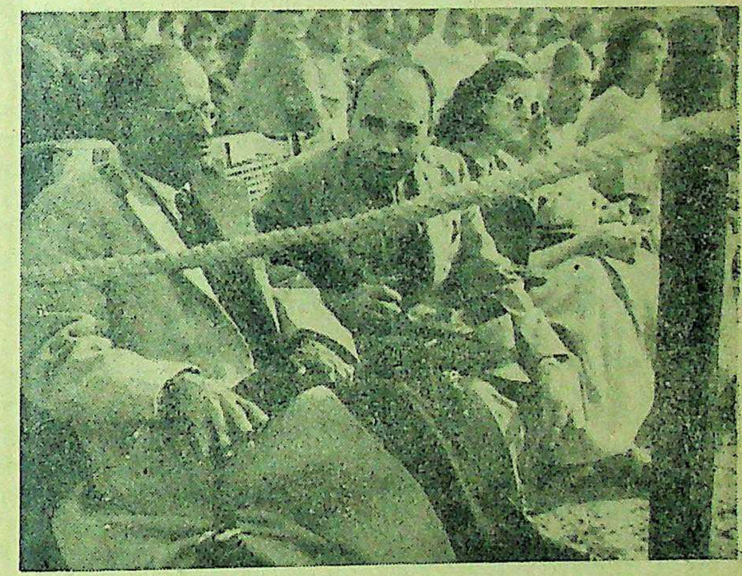

श्री एन० गोपालस्वामी अयंगर, माननीय श्री चन्दूलाल त्रिवेदी, गवर्नर पूर्वी पंजाब और श्रीमती इन्दिरा गांधी जालन्धर की सभा में पंडित नेहरू का भाषण सुन रही हैं।

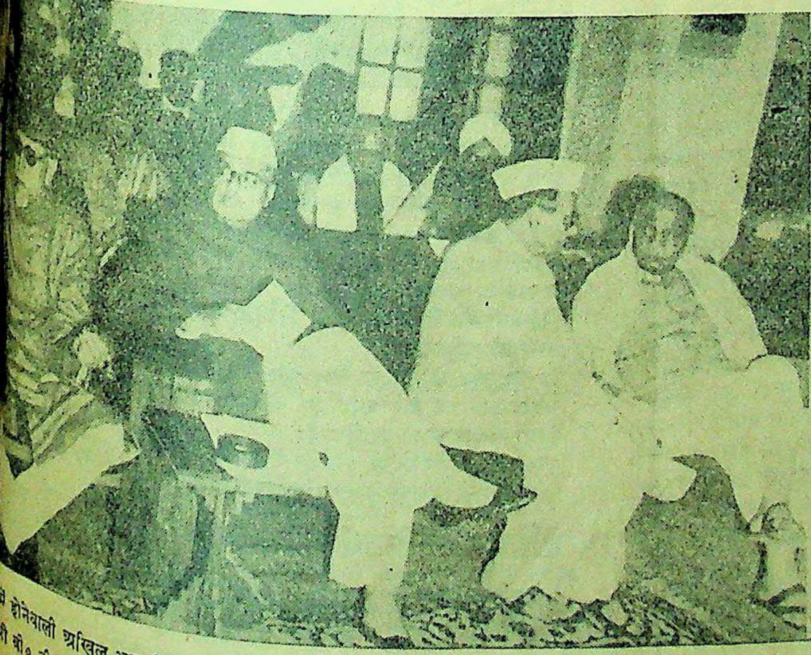

में होनेवाली अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन में सरदार वल्लभभाई पटेल बम्बई के प्रधान श्री बी० जी० खेर से वार्ता कर रहे हैं। श्री जयरामदास दौलतराम और मौलाना आजाद भी बैठे हुए दिखाई दे रहे हैं।

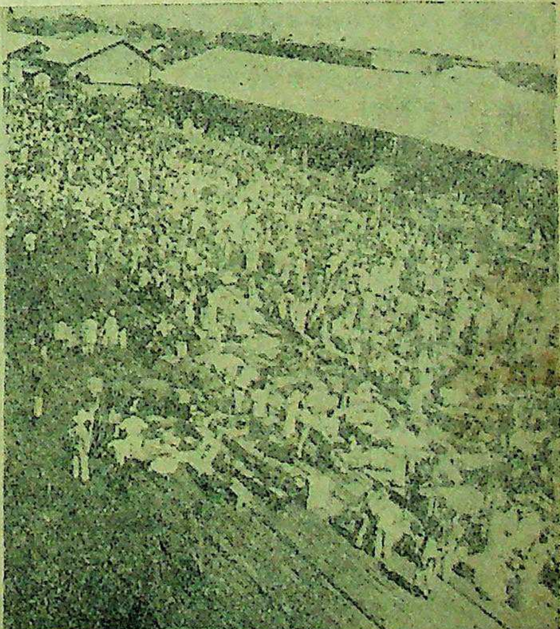

कराची बंदरगाह पर कतार बाधे खड़े हुए हिन्दू शरणार्थियों का समूह। प्रतिदिन सैकड़ों शरणार्थी बन्दरगाह पर भारत आने के लिए इकट्ठे होते हैं।

हमारा रंग-मंच

'मीरा'

भक्तिप्रधान एक कलात्मक फिल्म

लेखक, श्री गोपाल मेहरोत्रा

विश्व में अनेक महापुरुष अवतीर्ण हुए, हो रहे हैं तथा भविष्य में भी होंगे। पुरातन काल से ही भारतवर्ष अध्यात्मवाद के लिए समस्त संसार में प्रसिद्ध है। सम्पूर्ण जगत् को उसने जागृति की प्रथम किरण प्रदान की थी। यदि पुरुषों में भगवान् बुद्ध जैसे सर्व-संग-परित्यागी धर्मोपदेशक; राजा हरिश्चन्द्र जैसे सत्यवादी; दधीच जैसे आत्मत्यागी; शिवाजी जैसे गोब्राह्मण प्रतिपालक; गुरु गोविन्द जैसे धर्मवीर; महात्मा गांधी जैसे मातृभूमि के सर्वश्रेष्ठ सेवक, कर्मवीर, यतिराज आदि असंख्य महात्मा एवं प्रतापी पुरुष हुए तो भारतीय नारियां भी उनसे किसी भी भांति अपना निम्न स्थान नहीं रखती थीं। द्रौपदी, सीता, कौशल्या आदि इसके ज्वलंत प्रमाण हैं। अध्यात्मवाद की दृष्टि से 'मीराबाई' का महत्त्वपूर्ण स्थान है उनकी भक्ति ने प्रकृति के नियमों को परिवर्तित कर दिया, जिससे उनकी महानता का परिचय प्राप्त होता है। ऐसी अमर महान् विभूति का जीवन-चित्रण चन्द्रप्रभा सिनिटोन कृत "मीरा" में, दिग्दर्शक श्री एल्लिस आर० डंगन द्वारा चित्रित किया गया है।

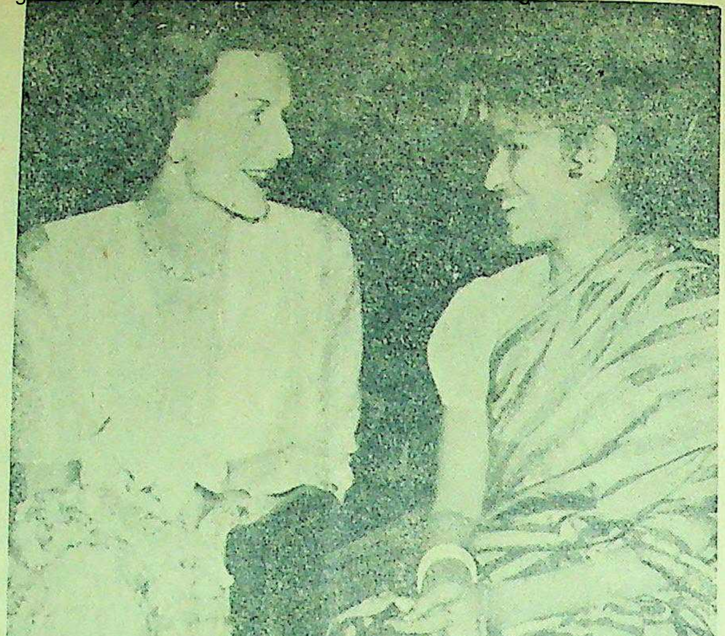

'मीरा' की प्रधान अभिनेत्री शुभलक्ष्मी लेडी माउन्टबेटेन के साथ।

प्रस्तुत चित्र की कहानी संक्षेप में इस भांति है——अन्य बालक-बालिकाओं की भांति बालिका मीरा भी अपनी जन्मभूमि पर कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव अत्यधिक उत्सुकता एवं सुन्दरता से मनाती है। इसी पुण्य समारोह के दिवस, एक बार, वृन्दावन के प्रसिद्ध वैष्णव-भक्त, श्री रूपगोस्वामी दिव्य प्रेरणावश मेड़ता को आलोकित करते तथा सदा-सर्वदा के हितार्थ मीरा का मन मुग्ध कर लेनेवाले मनमोहन कृष्णचन्द्र की मूर्ति वहां छोड़कर, द्वारिकापुरी की ओर प्रस्थान करते ह। मीरा बाल्यावस्था में ही मुरलीवाले श्याम की उपासिका बनते ही एक दिन योगेश्वर श्रीकृष्ण के गले में जयमाल सुशोभित कर देती है। एक ओर मीरा युवा होती तथा नित्य-प्रति कृष्ण-प्रेम में अत्यधिक लवलीन होती और द्वितीय ओर मातृहीन मीरा मेवाड़ के महाराणा के गृह नववधू के रूप में जाती है (वृद्ध बाबा के आग्रह पर)। महाराणा महाराणी को सुखी एवं प्रसन्न तथा गिरिधर गोपाल की मूर्ति को प्रतिष्ठित करने के हेतु एक विशाल मन्दिर का निर्माण कराता है। सांसारिक एवं दिव्य प्रेम की मध्य-प्रतियोगिता में दिव्य प्रेम की विजय होती है। महाराणा, मीरा से असंतुष्ट होने के कारण उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचते हैं। परन्तु समस्त व्यर्थ होता है। महाराणा पश्चाताप करते और मीरा चितौड़ त्यागकर वृन्दावन की ओर सिधारती है। युद्ध में युवराणा पराजित होते हैं और गृह-गृह, नगर-नगर में मीरा की वाणी स्फुटित होती है। ननद उदा, मीरा की भक्त हो जाती है। दूत द्वारा महाराणा को मीरा के बारे में कोई संदेश नहीं प्राप्त होता है। मीरा जो वृन्दावन से द्वारिकापुरी प्रस्थान करती है। तत्पश्चात् युवराणा स्वयम् द्वारिका जी पहुँचते हैं। मीरा को सम्मुख निरखकर उसे अपनाने के हेतु महाराणा दौड़ते हैं; परन्तु उनके करों में मीरा का शरीर आते ही वह आत्महीन एवं निष्प्राण हो जाता है। और मीराबाई की आत्मा नटवर श्याम में समा जाती है। मृतात्मा एवं स्वआत्मा की शान्ति के हेतु युवराणा नित्य-प्रतिदिन उसी चितचोर की मूर्ति के सम्मुख करनवागत किये हुये भजन करते हैं और समस्त वायु-मण्डल–"मेरे तो गिरवर गोपाल दूसरो न ओई"–अमृत-तुल्य शब्दों से गुंजायमान रहता है।

यद्यपि प्रस्तुत चित्रपट से पूर्व मीराबाई से सम्बन्धित तीन अन्य चल-चित्र 'मतवाली-मीरा', 'राजरानी मीरा' तथा 'मीराबाई' प्रदर्शित हो चुके हैं; परन्तु जिस सफलता से 'मीरा' चित्र प्रदर्शित किया गया है, उसके लिये सुश्री शुभ लक्ष्मी तथा डिगन जी साधुवाद के पात्र हैं। भारत-कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडू द्वारा श्रीमती एस० एम० शुभलक्ष्मी तथा उनकी पुत्री, राधा का पश्चिमी भाषा में परिचय देना उचित नहीं जान पड़ा। प्रामाणिक पूर्ण एतिहासिक तथ्यों को न स्थान देने के कारण चित्र अधूरा भी प्रतीत होता है। श्री अमृतलाल नागर द्वारा लिखित संवाद सुंदर है। भाषा की ओर विशेष ध्यान आकृष्ट किया गया है। श्री नरेन्द्र शर्मा के गीत भी सुंदर हैं। गीत अधिकतर मीराबाई द्वारा रचित हैं। श्री वेंकटराम, रामनाथ तथा नरेश भट्टाचार्य का संगीत-दिग्दर्शन 'क्लैजिकल-म्यूजिक' की दृष्टि से) प्रथम श्रेणी का ह। कुछ गीतों को 'क्लाजिकल-ट्यून्स' अत्यधिक दक्षिण-भारतीय होने के फलस्वरूप चित्र रसहीन हो जाता है और दर्शकगण ऊबते से प्रतीत होते हैं। कलात्मक नृत्यों का उपयोग मनोविनोद के लिये किया गया है, जिसका अनुपम उदाहरण बालिका मीरा (राधा) का योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण की मूर्ति के सम्मुख नृत्य करते हुए प्राप्त होता है। उच्च कोटि की वेशभूषा-परिवर्तन ने चित्र को जन-आकर्षण की चरमसीमा पर सुशोभित करने की सफल चेष्टा की है। चित्रालेखन साधारण कोटि का है। ध्वनिआलेखन दोषपूर्ण एवं छायालेखन सफल है। चरित्र-चित्रण अत्यन्त सतर्कता के साथ चित्रित किया गया है। दुर्भाग्यवश प्रस्तुत चित्र में कला को कोई स्थान नहीं प्रदान किया गया ह। श्रीमती शुभलक्ष्मी तथा राधा के अतिरिक्त समस्त पात्रों का कथोपकथन 'बैक-ग्राउन्ड' से प्राप्त जान पड़ता है। पात्रों का होठ सुचारु रूप से कम्पित न होना, इस कथन का पुष्टिकारक है।

अभिनय-कला की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ अभिनय मीराबाई की कल्पना में दक्षिणी भारत की स्वर्ण गायिका श्रीमती एस० एम० शुभलक्ष्मी ने किया है। स्वाभाविक वस्त्राभूषण के कारण आप पूर्ण बाई प्रतीत हुई हैं। गीतों प्रियता के हितार्थ आप दर्शकों सम्मान से परिपूर्ण हैं। ब संगठित गीतों को अपने प्रस्तुत किया है। प्रथम श्रेणी के ने आपकी सुन्दरता में और सुशोभित कर दिया है। श्रीमती तथा पं० जवाहरलाल जी नेहरू में आप 'स्वतंत्र भारत की महान् हैं। बालिका मीरा की भूमिका ने उत्तम श्रेणी का अभिनय किया है। अन्य भूमिकाओं के ने असंतोषजनक कार्य किया

इसमें कोई संदेह नहीं कि चित्र में श्री एल्लिस निर्देशन नवीनता का संचार परन्तु कुछ त्रुटियों ने चित्र की पर एक असहनीय कुठाराघात कि श्री टी० सदाशिवम् ने निर्माण सफलता का परिचय प्रदान कि सुन्दर व कलापूर्ण वेश-भूषा, म से गुञ्जायमान होनेवाले संगीत तथा चित्र-सम्पादन द्वारा की कुशल योजना तीन ऐसी हैं जो 'मीरा' को ऐतिहासिक की द्वितीय पंक्ति (इस वर्ष के) करेंगी। आशा है आपने अपनी कृतियों में प्रस्तुत चित्र से अधिक प्राप्त की होगी।

मुझे आशा ही नहीं, पूर्ण वि कि भारतीय-दर्शकवृन्द, भारतीय स्तानी भेड़िये श्री डब्ल्यू० जे० द्वारा निर्मित एवं दिग्दर्शित जनक एवं दाठ तारिका 'मीरा चल-चित्र का बहिष्कार प्रभा सिनितोन कृत 'मीरा से स्वागत करेंगे तथा भारतीय समाज का आदर्श इस उपहार स्वीकार करेगा।

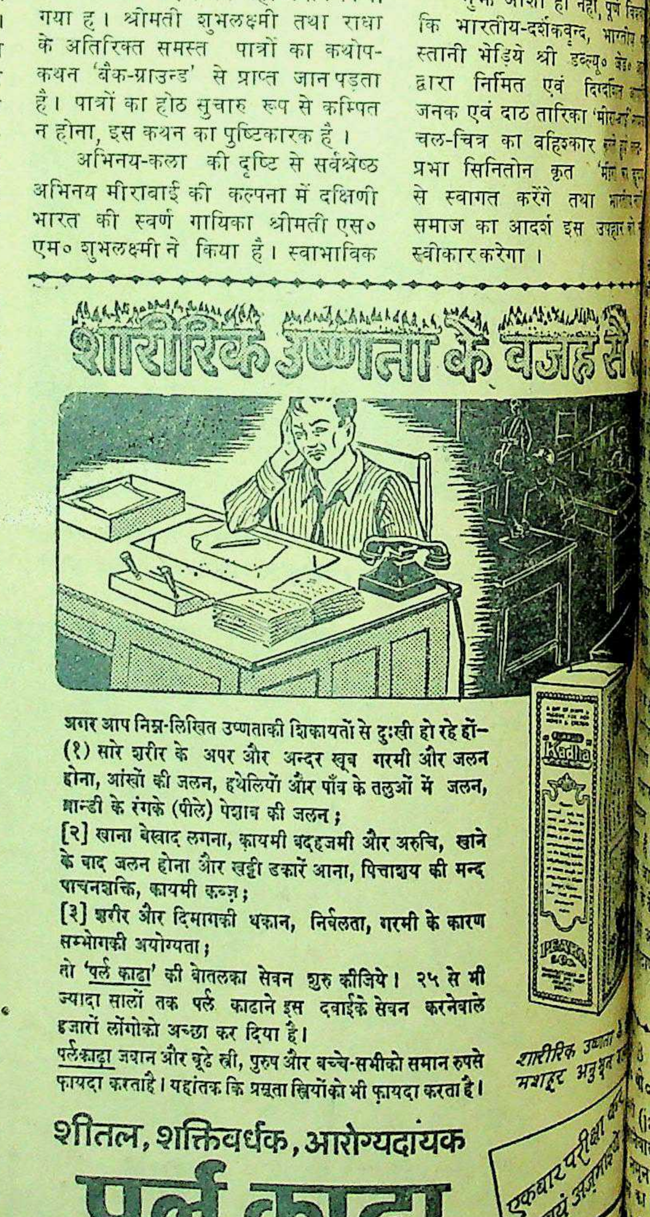

शारीरिक उष्णता के वजह से

अगर आप निम्न-लिखित उष्णताकी शिकायतों से दुःखी हो रहे हों—
(१) सारे शरीर के अपर और अन्दर खूब गरमी और जलन होना, आंखों की जलन, हथेलियों और पाँव के तलुओं में जलन, मान्दी के रंगके (पीले) पेशाब की जलन;
[२] खाना बेस्वाद लगना, क़ायमी बदहजमी और अरुचि, खाने के बाद जलन होना और खट्टी डकारें आना, पित्ताशय की मन्द पाचनशक्ति, क़ायमी क़ब्ज़;
[३] शरीर और दिमागकी थकान, निर्बलता, गरमी के कारण सम्भोगकी अयोग्यता;
तो 'पर्ल काढा' की बोतलका सेवन शुरु कीजिये। २५ से भी ज्यादा सालों तक पर्ल काढाने इस दवाईके सेवन करनेवाले हजारों लोंगोको अच्छा कर दिया है।
पर्लकाढा जवान और बूढे स्री, पुरुष और बच्चे-सभीको समान रुपसे फ़ायदा करताहै। यहांतक कि प्रसूता स्त्रियोंको भी फ़ायदा करता है।

शारीरिक उष्णता मशहूर अनुभूत

एकबार परीक्षा कर स्वयं अजमाइये

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

9/46

पर्ल कंपनी. आर्योषधी कारखाना, राणीबाग, ब

यू० पी० प्रांतानाथ दासर एण्ड कम्पनी, (बिरहना) (ढ

स्थ्य और व्यायाम

कीटाणु

रों की भ्रमपूर्ण धारणा

क, श्री सुरेश श्रीवास्तव 'मलयज'

डाक्टरी पद्धति किटाणुओं पर निर्भर है। यदि किसी को कोई जाती है तो उसका मूल कारण के कीटाणुओं की अधिकता जाता है। इन डाक्टरों को पूरा है कि कीटाणु संसार के समस्त का सबसे अधिक भयंकर है। वे लोग कीटाणुओं को के लिए नष्ट करने के लिए के साथ प्रयत्नशील हैं और उन्होंने बड़ गर्व से अनगिनत Anticeptic Medicines) र किया है। उनमें ब्लीचिंग बोरिक एसिड, कास्टिक एसिड, लायसोल, पैरोक्साइड, सोडियम रिसासिनोल, राइड, वाइकैलाजिट, परमांगनेट तथा हैं। इन विषों का लोग बड़ी सरगर्मी से कीटाणुओं के जन्मदाता रोगों में कोई कमी तो न संख्या की वृद्धि होने साथ ही साथ नये रोगों लगी है। इन कीटाणु- से रोगियों की नसों को बड़ी हानि पहुँचती मनुष्य-जाति के स्वास्थ्य हानिकारक प्रभाव पड़ता है। एवं कृमिनाशक कीटाणुओं नहीं करतीं वरन् वातावरण पैदा कर देती हैं। साथ ही सूंघने की शक्ति को कम है। जिसके फलस्वरूप अपने निकली हुई दुर्गंध का अनुभव पाते। इससे यह प्रमाणित वातावरण को स्वच्छ तो वरन् हमको इस विषय में रखते हैं कि हमारे शरीर में है। इसके अतिरिक्त को नष्ट करने के लिए तरह लगाये जाते हैं जिससे में अनावश्यक विष एकत्रित है।

की प्रत्येक वस्तु को प्रकृति प्राणियों के हित के हेतु चारों ओर कीटाणुओं का सा बिछा है आधे पाउंड में २,००,००,००० कीटा- अस्तित्व होता है जिनमें सबसे णु की मोटाई १/२५,००० इञ्च होती है। अनुसंधान से पता चला है कि संसार में १०,००० से अधिक प्रकार के कीटाणु पाये जाते हैं जिनमें साधारण से साधारण कीटाणुओं की मोटाई १/१,००० इञ्च होती है। डाक्टरों ने संसार के इतने अधिक कीटाणुओं को नाश करने का बीड़ा उठाया है। यह प्रकृति के विरुद्ध खुल्लमखुल्ला विद्रोह नहीं तो क्या है? समस्त संसार के इतिहास का एक-एक पृष्ठ हमारे समक्ष खुला पड़ा है पर हम कहीं भी इस बात का प्रमाण नहीं पाते कि प्रकृति के विरुद्ध युद्ध करने में कोई भी विजयी हुआ हो। भले ही हमने सिन्ध के रेगिस्तान में नहरें बनाकर उसे उपजाऊ बना लिया हो, पर साथ ही साथ अब लोगों को ज्ञात होने लगा है कि मिट्टी के उपजाऊ पदार्थ पानी में घुलकर नीचे चले जाते हैं। आज भी सहारा के रेगिस्तान में दिन में इतनी गर्मी पड़ती है कि अगर वहां के बालू में अनाज रख दिया जाय तो वह जल्दी ही भुंज जाय और रात को इतनी अधिक सर्दी पड़ती है कि अगर वहां पानी किसी बर्तन में रख दिया जाय तो वह बर्फ हो जाय। इससे प्रमाणित होता है कि प्रकृति का विरोध करने पर उसका परिणाम अत्यन्त अनिष्टकारी होगा।

संसार की प्रत्येक वस्तु में कीटाणु होते हैं और वे शरीर में हमारे भोजन और पीने के अतिरिक्त हमारे नाक, मुंह, आंख द्वारा प्रवेश करते रहते हैं। हमारे शरीर में पहले ही से जाने कितने प्रकार के कीटाणु रहते हैं। इन कीटाणुओं में अद्भुत बढ़ने की क्षमता होती है। अब यह प्रश्न उठता है कि जब हमारे शरीर में इतने अधिक कीटाणु रहते हैं तो हम सब रोगी क्यों नहीं हो जाते? इसका कारण यह है कि कीटाणुओं से रोग नहीं पैदा होता वरन् रोग ऐसे शरीर में पैदा होता है जहां कीटाणुओं को जीने की उपयुक्त सामग्री होती है; अर्थात गन्दा शरीर।

इस विषय पर अनेक अनुसंधान किये गये हैं और प्रयोग से उपरोक्त कथन की सत्यता प्रमाणित होती है। एक बार अमरीका का एक डाक्टर डिप्थीरियां के पचास हजार कीटाणु पानी में डालकर यह प्रमाणित करने के लिए पी गया कि कीटाणु से रोग नहीं पैदा होते। उनके साथियों ने कहा कि यह तो मृत्यु को आमंत्रित करना है। पर कई दिनों के बीत जाने के पश्चात् भी जब रोग के कोई लक्षण नहीं मिले सके तो विवश होकर उन्हें मानना पड़ा कि कीटाणु रोग नहीं पैदा कर सकते।

इसी प्रकार से निमोनिया मियादी बुखार मैनिंगजाइट्स (दिमाग पर प्रभाव करनेवाली बीमारी) मेलेरिया, हैजे जैसे भयानक बीमारियों में लाखों और करोड़ों की संख्या में कीटाणुओं को भोजन तथा पानी द्वारा शरीर के कोमल से कोमल भाग में पहुँचाया गया। साथ ही साथ यह भी ध्यान रखा गया कि कीटाणु खूब सजीव हों। पर सौभाग्यवश अथवा दुर्भाग्यवश जो कुछ कहिए कई दिनों तक धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करने पर भी उस रोग के दर्शन न हो सके। संसार में स्थान स्थान पर इस प्रकार के प्रयोग किये गये हैं जिससे यह प्रमाणित हुआ है कि कीटाणुओं द्वारा रोग पैदा होनेवाला सिद्धान्त सर्वथा निर्मूल है।

बोलो न बोलो

लेखक, श्री रमानाथ अवस्थी

मैं पुकारूँगा तुम्हें हर बोल में बोलो न बोलो !

तुम गगन से दूर रहकर भी हृदय के पास ही हो
बज रही जो जिन्दगी की बीन पर वह श्वास ही हो
तुम नहीं तो कुछ नहीं, मेरे लिए दुनिया तुम्हारी
तुम बड़े हो या न हो, है नाम भारी, नामधारी
नाम के नाते पुकारूँगा तुम्हें बोलो न बोलो !

कब तलक तुम ओस में छिप फूक पर गिरते रहोगे
दर्द बनकर आंसुओं के साथ तुम कब तक बहोगे
चीरकर तन बादलों का तुम धरा के घाव धोते
नरक के विष बीज अपने स्वर्ग में तुम क्यों न बोते ?
मैं गरल पीकर पुकारूँगा तुम्हें बोलो न बोलो !

चांद-सूरज,,रात-दिन, दुख-सुख, सभी खामोश ही हैं,
मैं अकेला हूँ नहीं जग में यही संतोष भी है।
एक राही हूँ कि जिसको मौत ने चलना सिखाया
और जीवन ने किसी के प्यार में जलना सिखाया
दीप-सा जल जल पुकारूँगा तुम्हें बोलो न बोलो !

चांद को देकर चुनौती जल रहा संसार सारा
मौत से बाजी लगा इन्सान ने क्या क्या न हारा
अमृत औ' मधु और यह आकाश के शीतल सितारे
किन्तु दुनिया को दिया तुमने दहकते से अँगारे
मैं अँगारे खा पुकारूँगा तुम्हें बोलो न बोलो !

प्रिय हमारे औ' तुम्हारे बीच यह दुनिया खड़ी है
पर तुम्हारी प्राप्ति की परवाह इससे भी बड़ी है
मैं तुम्हें पाकर न चाहूँ जिन्दगी का सुख पुराना
मैं मरूँ पर मर न पाये प्राण यह मेरा तराना
मैं पुकारूँगा तुम्हें संगीत बन बोलो न बोलो !

बी०
"तपेदिक" रोग के हताश रोगियो—
(jabri) का नाम नोट कर लो, यही इस दुष्ट रोग से रोगी की जान
वाली शक्तिशाली औषधि है। एक बार परीक्षा करके देख लो, परीक्षार्थ
नमूना रखा गया है, जिसमें तसल्ली हो सके। मूल्य नं० १ (स्पेशल) पूरा ४०
७५) रु०, नमूना १० दिन २०) रु०। 'जबरी' नं० २ पूरा कोर्स
रु० नमूना १० दिन ६) रु० महसूल आदि अलग है। आज ही आर्डर
रोगी की जान बचावें। तार का पता "jabri" jagadhri काफी है।
पता :—रायसाहब कं० एल० शर्मा, रईस (D) 'जगाधरी' (E.P.)

Godrej 'CHAVI' BRAND गोदरेज चावी छाप साबुन का
वाजबी दाम
हर एक साबुन के चित्र के नीचे बट्टी का वाजबी खुदरा दाम लिखा हुआ है।
जहाँ चुङ्गी, आक्ट्राय, टरमीनल टैक्स या और कोई भी दूसरा कर लिया जाता है वहाँ साबुनों का दाम जरा अधिक होगा।
नं० १—११ आना
नं० २—८½ आना
'वतनी'—६ आना
छोटा ('बेबी') 'वतनी'—१¾ आना
सण्डल—७ आना
लिमडा—७ आना
खस—७ आना
टर्किश बाथ—४½ आना
शेविंग स्टिक (कारटन) ७½ आना
शेविंग 'राउण्ड'—४½ आना
शेविंग स्टिक (टिन)—१० आना
गोदरेज सोप्स, लि०
हिन्द में वनस्पति 'टायलेट' (नहाने का) साबुन के अग्रगण्य निर्माता।

यूरोप से क्या सबक लेना चाहिए ?

(पेज ६ का शेष)

हमने देखा है कि धन-धान्य से पूर्ण देश, वे देश जो अनाज का निर्यात करते थे और दुनिया के खलिहान कहे जाते थे, दुर्भिक्ष के शिकार हो गये। बीमारी और बर्बादी का उन देशों में दौर-दौरा रहा। लाल बुखार और इन्फ्लुएंजा से लाखों स्वर्ग सिधार गये। बर्फ, आग और बाढ़ ने जायदाद और वनस्पति का सत्यानाश कर दिया। सोडोम और गोमोराह नगरों की भांति लन्दन स्वयं छः साल हुए आग की बरसात का शिकार रहा। बहुत-सी जायदाद स्वाहा हो गई। टिड्डी दल ही की तरह बिना चालक के बम जनता के लिए हौआ बन गये। और उनसे बचने को लोग भूगर्भ में छिपने को बाध्य हुए। सारी दुनिया पर अन्धकार हो गया। कोयले और बिजली की कमी ने और भी परेशान किया। मिस्र के 'ज्येष्ठ पुत्रों' की तरह लाखों लोग मर गये। आक्सफर्ड और कैम्ब्रिज की तरह अमीरों के सुपुत्रों की पाठशालाएँ खाली हो गईं। लड़ाई के जमाने में उनके विद्यार्थी भेड़-बकरी की तरह युद्ध के बूचड़खाने में कटने को फौज में भर्ती कर लिये गये और आज सारा का सारा योरोप बियाबान है; परन्तु फिर भी उनका दिल भौतिक वस्तुओं पर स्थित अपनी जिन्दगी को छोड़ने का नहीं होता। समझ में नहीं आता कि क्या ये लोग इतने पर भी कमजोरों के शोषण के अपने रास्ते से नहीं हटेंगे जब तक कि फैरोआ के लालसागर में जलमग्न होने की तरह यह भी अणुबम द्वारा समाप्त नहीं हो जाते? योरोप ने अब तक नहीं समझा है कि उसके पाप उसका पीछा कर रहे हैं और यदि वह पश्चात्ताप नहीं करता तो उसका खातमा निश्चित है।

सारे योरोप का ब्योरेवार हाल देना तो मुश्किल है पर अधिक से अधिक हम यह कर सकते हैं कि आधुनिक इँगलैंड के जीवन का मामूली खाका खींच दें। पिछली दो लड़ाइयों ने घावों के ऐसे चिह्न छोड़ दिये हैं कि उनके भरने में सदियां लग सकती हैं।

ग्रेट ब्रिटेन की लड़ाई में हजारों मरे और बिना किसी याददाश्त के चिह्न के, एक साथ कब्र में दफना दिये गये। लन्दन की इमारतों के बीच में लम्बी-चौड़ी जगहें खाली हो गई हैं। व्यवसायियों की ऊँची-ऊँची इमारतों से घिरे सन्तपाल के गिरजाघर तक के चारों ओर की सैकड़ों एकड़ जमीन साफ हो गई है। लूट, गेटहिल, चीपसाइड, क्वीन विक्टोरिया स्ट्रीट और उसके आस-पास का सारा इलाका पटा पड़ा है। बड़ी दया करके अधिकारियों ने उस भूमि के चारों ओर तख्ते लगाकर इस दुःखदाई दृश्य को राह चलती जनता की निगाहों से बचा रखा है। लकड़ी की इन दीवारों पर रंग-बिरंगी तसवीरों के विज्ञापन लगे हुए हैं जो लोगों को उनके पिछले दुःखद अनुभव भूलकर 'खाओ-पिओ, मौज उड़ाओ' की ओर आकृष्ट करते हैं। लन्दन के बहुत से गिरजाघर आज खोखले पड़े हैं, केवल मीनार और गुम्बज उनके स्थान बता रहे हैं। ऐसा मालूम होता है मानो उनका यह सबक है कि मीनारें जो मनुष्य के उच्च आदर्शों की ओर बढ़ने के चिह्न हैं आज भी खड़ी हैं पर अन्दर का हिस्सा, जिसमें गद्देदार कुर्सियों पर प्रार्थना के समय लोग ऊँघा करते थे, अग्नि-शिखाओं ने भस्म कर दिया। शानदार लन्दन के भोजनालयों में आज मेजों को ढँकने के लिए कपड़ा भी नहीं मिलता और मिले भी तो उनको साफ सफेद रखने लायक साबुन मिलना मुश्किल है। इसलिए उन्हें कागज के मेजपोशों और रूमालों से ही सन्तोष करना पड़ता है। लड़ाई में घिर जाने के समय दुर्भिक्ष की अवस्था उस देश में आ गई थी। जीवन की प्रधान आवश्यकता—भोजन—के भी लाले पड़ गये थे। आज भी वहां खाने, कपड़े और अन्य आवश्यक सामग्रियों की भारी कमी है। पिछले दिनों के वर्दीपोश टैक्सी ड्राइवर दिखाई नहीं देते। आज टैक्सी चलानेवाले सादी ही पोशाक और फैल्ट हैट पहने दिखाई देते हैं। बहुत-सी जगह भोजन की इतनी कमी है कि वहां प्रवासियों को आने ही नहीं देते, रेल में सफर करना एक तपस्या है। इँगलैंड का थर्ड क्लास हमारे फर्स्ट क्लास से भी महँगा है। तिस पर भी लोगों को लम्बे सफर खड़े-खड़े करने पड़ते हैं।

क्या ये सब मिस्र के ऊपर हुए प्रकोपों के आधुनिक रूप नहीं हैं? ये प्रकोप ऐसे देश पर हो रहे हैं जो कि भौतिक सामग्रियों से भरपूर था; परन्तु ये सब सामग्रियां अन्यान्यपूर्ण रीतियों से यानी फौज, हथियारों, हिंसा और युद्ध के बल पर प्राप्त की गई थीं। स्वार्थ और धन को आदर्श मान लिया गया था और ईश्वर तथा जीवन की वे उच्च भावनाएँ जिनसे भाई-चारे की भावना बढ़ती है, भुला दी गई थी।

दुर्भाग्यवश इन मुसीबतों के चले जाने पर योरोप और भी कट्टर हो गया है, वह अपनी जिन्दगी का रवैया बदलने को तैयार नहीं है। वह अपनी अर्थ-व्यवस्था को इस प्रकार बदलने को तैयार नहीं है जिससे कि लोग शान्ति से जीवन व्यतीत कर सकें। यद्यपि उसके व्यापार के टुकड़े-टुकड़े हो गये हैं फिर भी वह अपना व्यापार नहीं छोड़ सकता और उसे उसी नींव पर स्थापित करने की आशा को दयनीयता से पकड़े हुए हैं।

* * *

आज योरोप को देखने पर स्पष्ट हो जाता है कि डेढ़ सौ साल के बड़े पैमाने पर केन्द्रित ढंग से एक सोने के उत्पादन की अन्धाधुन्ध रफ्तार ने आखिरकार योरप को उसकी आज की गिरी अवस्था में ला पटका है। वहां आज बेहद मुसीबत है। उपयोगी चीजों की कमी है, मानवीय सम्बन्धों में खिंचाव, डर और सन्देह का बाजार गर्म है और भविष्य में भी आशा की किरण बड़ी धुंधली है। यदि पूर्व काल में काम में लाई गई उत्पादन विधियों का यही नतीजा निकला तो क्या यह बुद्धिमत्ता न होगी कि हम आज अपने तरीकों पर गौर करें और उन्हें सुधारें तथा उनमें भौतिक उत्पादन के बनिस्बत मानवता पर अधिक जोर दें।

हमारा पक्का अनुभव है कि ये भयानक युद्ध आधुनिक पश्चिमी अर्थ-व्यवस्था के आवश्यक अंग हैं, उनकी बरबादी की रफ्तार इतनी तेज होती है कि लोग अपनी निजी आवश्यकता की पूर्ति की कभी भी आशा नहीं कर सकते।

ऐसा होने से हमें वर्तमान अर्थ-व्यवस्था के सत्यानाशी अंश का बहिष्कार करना होगा। इसका मतलब होगा सामाजिक जीवन के आधार को ही परिवर्तित करना। योरोप की वर्तमान अवस्था से सबक सीखने के लिए क्या हम तैयार हैं?

उनके व्यवहारवादी नेता आज भयानक सिद्धान्तों का प्रतिपादन कर रहे हैं। लार्ड हैलीफैक्स की कोटि के नेता इस मत का प्रचार कर रहे हैं कि राजनीति और जनता के मामलों में ईसाई सिद्धान्तों का अवलम्ब करना असम्भव है। उनके अनुसार आम जीवन जनता के विकास पर चलेगा और इसलिए उसका नैतिक स्तर उच्च पुरुषों के नैतिक स्तर से बहुत नीचा रहना लाजिमी ही है। यह कहा जाता है [illegible] ईसाई सिद्धान्तों पर स्थापित करने की आशा करना दुराशा-मात्र है। ईसाई सिद्धान्त व्यक्तिगत जीवन के आदर्श बन सकते हैं, पर राष्ट्र के दैनिक जीवन में नहीं उतारे जा सकते।

क्या ये सब चिह्न इस बात के द्योतक नहीं हैं कि पिछले दो महायुद्धों से पूरी तरह सबक नहीं सीखा गया है और लोग फिर उसी खतरनाक राह की ओर बढ़ रहे हैं जिसने केवल योरोप में ही नहीं बल्कि दुनिया के करीब-करीब सभी प्रदेशों में आग भड़काकर उनको तबाह कर दिया। क्या अब भी हम केवल भौतिक उत्पादन के पीछे जान दे रहे हैं? क्या हम ऐसे उलझनवाले रहन-सहन के ऊपर जोर देना चाहते हैं जिसमें हमारे आराम के लिए जनता का शोषण आवश्यक होता है या कि उन्हें जाने देने को तैयार हैं जिससे कि वे ऐसा जीवन बिताएँ जिससे हमारे पड़ोसियों में शान्ति और समृद्धि आये।

आज भारत एक नवयुग के द्वार पर खड़ा है। क्या हम जीवन के उच्चादर्शों को त्यागकर कुबेर की पूजा में लगने के पाप के फलस्वरूप मिस्र पर हुए प्रकोपों से पाठ ग्रहण करेंगे? हमारा भविष्य क्या होगा? योरप के अनुभव से हमें समझ लेना चाहिए कि केवल उत्पादन के लिए उत्पादन करके भौतिक पदार्थों का ढेर लगा देना किसी काम का नहीं। शान्ति और मानवों में सद्भावना कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। क्या भारत स्वावलम्बन द्वारा गरीबी और शोषण से बरी होने का राजमार्ग दिखाकर जगत् का नेतृत्व करेगा?

(पेज ७ का शेष)

इसका अर्थ हिन्दी-पद्य में यह

आदेश जो सद्धर्म के,
ए होरम जद तू कह
शुभ कार्य क्या, कैसे करें,
तू पथ दिखाता चल
जिससे कि चल सन्मार्ग पर,
जीवन सफल मैं रख
करता हुआ उन्नति सदा,
गुणगान तेरा कर
दे चेतना सुस्फूर्ति नूतन,
यह सुमन जीवन
पाकर जिसे आनन्द हो,
वह स्वर्ग का भी सुख

ऊपर दिये हुए अर्थों से यह है कि जहां तक भावों का प्रश्न है, समान हैं।

* *

यह थी गांधी जी की प्रार्थना उस प्रार्थना का गायक अब चला गया या यों कहिए उसकी प्रार्थना हो गई।

प्रार्थना के वे मंत्र अब भी हैं, कुरान की वे आयतें अब भी हैं पारसी प्रार्थना की वह गाथा भी है, परन्तु इन प्रार्थना-मंत्रों में आत्मा को ध्वनित करनेवाला महात्मा अब नहीं रहा। आत्मा से वह महात्मा बना था, कौन जाने इस प्रार्थना के पर वह महात्मा से परमात्मा बना है चिरशान्त का यही तो अर्थ है।

महात्मा जी के जीवन-काल में उनकी जो प्रार्थना हमारे हृदयों की णंता को नष्ट नहीं कर सकी, प्रार्थना अब हमें कुछ सुबुद्धि क्या हम आज हृदय की पूरी साथ गा सकेंगे—

ईश्वर अल्ला एक ही नाम।

थोड़ी प्रतियाँ बची हैं। शीघ्रता कीजिए

वार्षिक बालसखा १९४७

इसकी छपाई कई रंगों में हुई है। चित्रों की भरमार है। लेख, कविताएं और कहानियाँ अनुपम हैं। जिल्द सजीली, आकर्षक और बालकों के पसन्द की है। ऐसा कौन बालक होगा जो इस अंक को पाकर आदि से अन्त तक पढ़े बिना शान्त रहे। ३०० पृष्ठों के इस अंक का रियायती मूल्य २।।) शीघ्रता कीजिए।

मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

१९४८ में क्या होनेवाला है?

यदि आप १९४८ में होनेवाली अच्छी व बुरी घटनाएं समय से पूर्व जानना चाहते हैं तो आज ही केवल एक पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी फूल का नाम लिखकर भेज दें, बस फिर हम ज्योतिष-विद्या के हिसाब से आपके आनेवाले १२ मास का हानि-लाभ, किस व्यापार में लाभ होगा, किस साधन से धन प्राप्त होगा, रोजगार कब मिलेगा, वेतन-वृद्धि, परीक्षा में सफलता अर्थात् कार्ड की तारीख से लेकर एक वर्ष तक होनेवाली कुल बातों का संक्षेप अर्थात् मासिक वर्षफल बनाकर केवल १।) में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाक-व्यय अलग। बुरे ग्रहों की शांति का उपाय भी लिखा जायगा—जिससे आनेवाली कठिनाइयों को दूर किया जा सके।

श्री स्वामी योगीराज ज्योतिष आश्रम, (D.D.A.)
फगवाड़ा (कपूरथला स्टेट)

संवाददाताओं के पत्र

...ली से मतवाला प्रकाशन के ... में, अप्रैल के प्रथम सप्ताह ...ला पुनः प्रकाशित हो रहा है— ...हैं शैलेन्द्रकुमार पाठक और ...मण्डल में तरंगी, तिलंगा, आवारा ...हिन्दी के ख्यातिप्राप्त कलाकार ...र्षिक मूल्य ६) और एक प्रति ... है।

—संवाददाता

*   *

...ली के श्रीव्यापक धर्म-सभा के ... में नया हिन्दी साप्ताहिक ...ती प्रकाशित हो रहा है। इसके ...पञ्जाब के प्रसिद्ध हिन्दी-कवि ...राम शर्मा वाशिष्ठ तथा प्रबन्ध ...डाक्टर श्रीनिवास जी वाशिष्ठ ...।

—संवाददाता

*   *

...नऊ से प्रकाशित हिंदी-सेवी-...का द्वितीय परिवर्द्धित संस्करण ...ही प्रकाशित करना चाहते ...हिन्दी के समस्त लेखक-..., संस्थाओं, प्रकाशकों, पत्र-... पुरस्कारों तथा अन्यान्य ...ताओं के साथ साथ इस बार उसके ...का भी विवरण रहेगा। संरक्षकों ...शासकों, शासन-विभाग ...कारियों अथवा धनीमानी उन ...यों से है जो लेखकों-कवियों ...कारों के संरक्षण एवं पोषण ...किसी रूप में हिन्दी की ... योग प्रदान करते रहे ... देखरेख में प्राचीन ...मूल्य ग्रन्थ पुस्तकालयों में ...।

...व्यवहार का पता—
...रतन, एम० ए० साहित्यरत्न
...दक, 'हिन्दी-सेवी-संसार'
रानी कटरा, लखनऊ।

*   *

...और सरस्वती बालिका विद्यालय ...त्राओं ने शिक्षा-विभाग के उपा-... श्री एन० बनर्जी की अध्यक्षता ...म व खेलों का विशेष प्रदर्शन ...इन्सपेक्टर्स आफ स्कूल ने पारि-...वितरण किये। श्री बनर्जी ने ...अपने भाषण में बताया वर्तमान ...यों को शक्तिशाली बनना चाहिए ... सदाचार और सेवा की भी ...जागृत होनी चाहिए। प्रत्येक पढ़ी-...का कर्तव्य है कि वह अधिक ...साक्षरता का प्रचार करे। श्री ...शर्मा ने परीक्षा में सर्वोत्तम कक्षा ...एक शील्ड प्रदान किया।

—संवाददाता

*   *

...म्बई के शान्ति लोकचित्र का हिन्दी ...निर्माण पूरा हो चुका है। स्टूडिओ ...का उद्घाटन-समारोह माननीय ...दास पकवासा मध्यप्रान्त और ... गवर्नर द्वारा हुआ था। इसके ...निर्देशक है श्री महेश कौल जिन्होंने ...कहानी और सिनेरिओ भी लिखा ...प्रधान पात्रों में राजकपूर, तृप्ति और ...हैं। इनके साथ अन्य कलाकारों में ...किशोर, महेश कौल, राठौर, सहगल, ...र, प्रवीन घोष तथा बेगम अनवरी ...बेबी जुबैदा हैं। चित्र का संगीत-...र्देशन नीनू मजूमदार ने किया है।

—संवाददाता

महाकोशल महाविद्यालय (जबलपुर) की हिन्दी-साहित्य-समिति के पदाधिकारी, प्रांतीय नेता तथा सदस्य—प्रोफेसर हरीदत्त दुबे (हिन्दी-विभाग) श्री सुशीलकुमार पटैरया (सभापति) डाक्टर शब्दे (प्रिंसिपल) माननीय श्री अग्निभोज, माननीय पंडित द्वारकाप्रसाद मिश्र, माननीय डाक्टर बारलिंगे, प्रोफेसर रमेशदत्त पाठक (अध्यक्ष हिंदी-विभाग) प्रोफेसर अंचल (हिंदी-विभाग) श्रीयुत भट्ट।

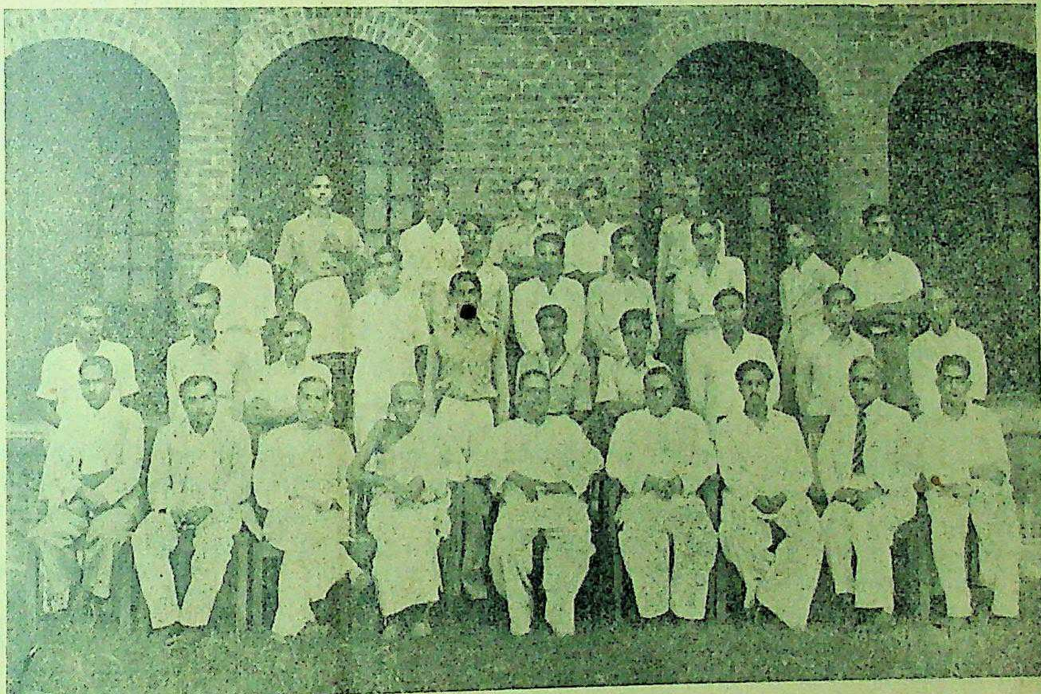

महाकोशल महाविद्यालय (जबलपुर) की हिन्दी-साहित्य-समिति के पदाधिकारी, अन्य विद्वान् तथा सदस्य—बैठे हुए—प्रोफेसर हरिदत्त दुबे (हिन्दी-विभाग-प्रोफेसर अंचल (हिन्दी-विभाग) श्री सुशीलकुमार पटैरया (सभापति) श्री भदंत आनन्द कौसल्यायन, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, डाक्टर धार (प्रिन्सिपल) श्री कमलाकर मिश्र (मंत्री) प्रोफेसर रमेशदत्त पाठक (अध्यक्ष हिन्दी-विभाग) श्री भालचन्द्र शुक्ल।

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्य संजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=), डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

अपराजिता

यह श्रीयुत रामेश्वरप्रसाद शुक्ल एम० ए०, 'अञ्चल' की कतिपय सुन्दर कविताओं का संग्रह है। कविताएँ नवीन युग की नूतन सांस्कृतिक रुचि और प्रगति के साथ हैं। कवि 'अंचल' की रचनाओं का आनन्द प्राप्त करने के लिए अपराजिता को अवश्य देखिए। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३) तीन रुपये।

गुदड़ी के लाल

इस पुस्तक की कहानियाँ बहुत ही सरल और रोचक भाषा में लिखी गई हैं। इनको पढ़कर बच्चे बेहद खुश होते हैं। ऐसी पुस्तक अपने बच्चों को जरूर दीजिए। मूल्य ॥)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

रचनात्मक कार्यकर्ता सम्मेलन

(पेज ५ का शेष)

के व्यक्तियों के समान बने हुए हमारे ऐसे सब लोगों के दुःख को किसी प्रस्ताव से नहीं मिटाया जा सकता। उसे मिटाने का एकमात्र मार्ग है विवेक के साथ गांधी जी के सिखाये हुए सिद्धान्तों और आदर्शों पर चलने के लिए जनता की मनोवृत्ति तैयार करना, उनके रचनात्मक कामों को लोकप्रिय बनाना, सब देशों, धर्मों और जातियों में मित्र भाव, सहयोग और सहायवृत्ति बढ़ाना तथा जगत से नर-हत्या, अत्याचार, युद्ध आदि हिंसक साधनों का त्याग कराना।

गांधी जी के लिए आदर और भक्ति रखनेवाले तथा उनके सिद्धान्तों के अनुसार राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि क्षेत्रों में काम करनेवाले सब कार्यकर्ताओं और जनता से संघ का अनुरोध है कि शोक के इन दिनों में हम इसी बात का चिन्तन करें, परस्पर विचार परामर्श करें और संकल्प करें कि आइन्दा हम उनके कामों को किस तरह आगे बढ़ा सकेंगे और उनका मिशन पूरा कर सकेंगे।

आचार्य श्रीमन्नारायण जी अग्रवाल ने एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव रखा जो पास हो गया। प्रस्ताव में कहा गया है कि पूज्य बापू जी के बलिदान का असली कारण देश में फैली तंग जातीयता है, जिसे दूर किए बिना हम हिन्द के माथे पर से कलंक का टीका न मिटा सकेंगे। इस अहम काम को पूरा करने के लिए यह बहुत जरूरी है कि देश की जनता को, खासकर नौजवानों को बिना किसी जातीय भेदभाव के सत्य, अहिंसा और सदाचार की बुनियाद पर संगठित किया जाय। यह संगठन एक शान्ति सेवादल के रूप में हो जो देश में कौमी एकता का वातावरण पैदा करें, दंगों में पीड़ितों की सेवा करें, शरणार्थियों को जरूरी मदद पहुँचाएँ और शहरों तथा देहातों में भजन मंडलियां कायम करें।

मौजूदा रचनात्मक संघों का आपस में मेल होगा और इस कार्य की जिम्मेवारी प्रो० जे० सी० कुमारप्पा पर सौंपी गई है।

देश में जो साम्प्रदायिकता की लहर फैली हुई है उस सम्बन्ध में सम्मेलन ने जो प्रस्ताव पास किया है वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। उसमें कहा गया है कि रचनात्मक काम करनेवालों का यह सम्मेलन निहायत दुःख के साथ उस मानसिक हवा को देखता है जो देश में फैल गई है। फिरकेवाराना नफरत और अपने मकसद को हासिल करने के लिए अच्छे-बुरे साधनों से फरक न करने की मनोवृत्ति या ख्याल आग की तरह फैल रही है और देश का भविष्य उसकी वजह से खतरे में पड़ रहा है। यह सम्मेलन हर हिन्दुस्तानी से पूरे जोश के साथ अपील करता है कि वह इस आग को बुझाने को अपना पहला कौमी फर्ज समझे और अपनी सारी शक्ति इस काम में खपा दे कि इस देश के रहनेवाले फिरकेवाराना नफरत से मुक्त हो जायें और निश्चय कर लें कि हर मकसद को पूरा करने की साधों को खरा और साफ रखना जरूरी है। यानी हर हालत में सत्य व अहिंसा के उसूलों को पूरी तरह पाला जाये।

सम्मेलन के अन्त में डा० राजेन्द्रप्रसाद ने कहा कि इस कान्फरेंस में महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकार किए गए हैं और इनको कार्यान्वित करके रचनात्मक कार्यकर्ता देश का बड़ा हित कर सकते हैं। गांधी राष्ट्रीय स्मारक-कोष का उल्लेख करते हुए आपने कहा कि इसको एकत्र करने में प्रत्येक को पूरी कोशिश करना चाहिए। उन्होंने साफ तौर से यह कहा कि यह कोष रचनात्मक कार्य में खर्च किया जायगा किसी राजनैतिक अथवा पार्टी के लिए नहीं। आपने जोर देते हुए कहा कि गांधी जी की मूर्ति की स्थापना को प्रोत्साहन न दिया जाय, क्योंकि उनका सबसे उत्तम स्मारक उनके रचनात्मक कार्यक्रम को कार्यान्वित करना है।

सम्मेलन सेवाग्राम के खादी विद्यालय के सामनेवाले मैदान में एक सादे पंडाल में हुआ था। करीब छः सौ कार्यकर्ता पधारे थे। पंडाल में महात्मा गांधी की तसवीर लगाई गई थी। वर्धा से सेवाग्राम तक सशस्त्र पुलिस का पहरा लगाया गया था ताकि किसी प्रकार की अप्रिय घटना न घटने पावे। सम्मेलन में अन्दर जाने के लिए सर्वसाधारण को मनाई थी। वही अंदर जा सकते थे जिनके पास प्रवेश-पत्र रहता था। समाचारपत्रों के प्रतिनिधियों को बड़ी ही असुविधाओं का सामना करना पड़ा और उन्हें सम्मेलन के संयोजकों की ओर से सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट बहुत देर से दी गई। उन्हें प्रवेश भी नहीं मिला। और यही कारण है कि सम्मेलन की खबरों का प्रकाशन जैसा होना चाहिए था वैसा नहीं हुआ। प्रचार के इस युग में प्रतिनिधियों तथा कैमरामैनों को सुविधाएँ देनी ही चाहिए थी। आशा है भविष्य में इस बात का ध्यान रक्खा जायगा। पत्रों के प्रतिनिधि भी जनता को समाचार पहुंचाकर बड़ी सेवा करते हैं। दुःख है कि सम्मेलन के संयोजकों ने उनकी उपेक्षा की—ऐसा नहीं होना चाहिए था।

कई प्रमुख कार्यकर्ताओं को सम्मेलन में आमंत्रित नहीं किया गया। आचार्य कृपलानी को निमंत्रण ही नहीं गया था और इसकी चर्चा उन्होंने अपने भाषण में की थी। कांग्रेस वर्किंग कमेटी के एक सदस्य श्री एस. के. पाटिल तथा विदर्भप्रांतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष माननीय बृजलाल जी बियाणी को भी आमंत्रित नहीं किया गया था।

रचनात्मक कार्यकर्ता सम्मेलन का अपना विशेष महत्त्व रहा और उम्मीद है कि देश में रचनात्मक कार्य पूरे जोश के साथ प्रारम्भ होगा ताकि हमारा देश प्रगतिपथ पर आरूढ़ हो और पूर्ववत् संसार को सत्य, अहिंसा, न्याय, प्रेम व भाईचारे का संदेश दे। भारत का भविष्य उज्ज्वल आशापूर्ण एवं महान् है। (भारतेंदु हिन्दी सिंडिकेट, वर्धा)

(पेज ४ का शेष)

राइटरों का सा ही है। मेरा सुझाव है कि टाइपराइटरों में चार लाइनों के स्थान पर पांच लाइनें कर दी जायें और जो पांचवीं लाइन बढ़ाई जाय उसमें केवल ऐसे ही वर्ग रखे जायें जो हिन्दी-भाषा में सबसे कम प्रयोग में आते हों।

बहुत से अंगरेजी के टाइपराइटरों में टेव्यूलेटर कीज या बार पहली लाइन के ऊपर होते हैं इसी स्थान पर यह पांचवीं लाइन लगा दी जाय और टेव्यूलेट का प्रबंध टाइपराइटर की सामने की दीवार (फ्रंट साइड) पर कर दिया जाय, चूंकि पांचवी लाइन में केवल वे ही वर्ग हैं जिनका प्रयोग यदाकदा ही होता है अतः देखकर ही इस लाइन का प्रयोग किया जाय तो भी हानि न होगी। एक अच्छा टाइपिस्ट इस पांचवीं लाइन को भी "टच-प्रणाली" से सीख सकता है, "शिफ्ट-की" "मार्जिन-की" आदि का प्रबंध जैसा है, वैसा ही रहे, इस पांचवीं लाइन के बढ़ा देने से टाइपराइटर के आकार-प्रकार में भी विशेष अन्तर नहीं पड़ेगा हां उसमें नवीनता अवश्य आ जायगी।

अपने लगभग १५ वर्षों के अनुभव के आधार पर मैं हिन्दी टाइपराइटर का एक बोर्ड नियत कर रहा हूं जिसमें काम में आनेवाले सभी वर्ण तथा संयुक्ताक्षर व आवश्यक चिह्न आ गये हैं।

सुधरा हुआ की-बोर्ड

॥	%	+	*	(	)	?	—		
ज्ञ	ऋ	ह्य	द्द	द्ग	ड्ढ	त्व	=		
१	२	३	४	५	६	७	८	९	.
द्य	द्	द्व	द्ध	ञ	ट	ठ	ड	ढ	:
ण	क्ष	ॄ	ॅ	ृ	`	`	॒	्र	ए
ष	ढ	भ	च	त	`	॒	थ	ग	उ
ठ	व	ॅ	ा	ॅ	उ	ॅ	ॅ	ी	इ
व	क	म	ा	न	ज	व	प	ि	स
,		र	ह्म	छ	रु	घ	त्त	ह	ो
`	.	श	ह	अ	ख	द	त्र	ल	ो

उपर्युक्त बोर्ड में तीसरी लाइन पर चार आर्ध वर्ग ण, ष, क्ष, ढ आ (ा) की मात्रा के ऊपरवाली मात्रा को लगाकर पूर्ण किये जा सकते हैं। अन्तिम लाइन का अन्तिम ऊपरवाला वर्ण भी बहुत आवश्यक है। इससे झ, फ, रु, ऊ, क्त बन सकते हैं। जैसा पहले कहा गया है कि यदि विशेषज्ञों की एक समिति बनाई जाय और वर्णों की उपयोगिता क्रम के अनुसार स्थिर कर ली जाय तो अच्छा होगा। जितना हम अपनी के महत्त्व को समझ सकते हैं विदेशी कम्पनियां नहीं समझ उन्होंने तो पैसा कमाने की गरज से भी चाहा वर्णों का क्रम रख दिया, षज्ञों के निर्णय की अनुपस्थिति में पास अन्य कोई साधन नहीं कि एक ठीक बोर्ड का नमूना रख सकें अतः रेमिंगटन टाइपराइटर के ही आधार उसमें आवश्यक हेर-फेर करके "की-बोर्ड" का क्रम किया गया है।

प्रायः यह भी कहा जाता है कि टाइपराइटरों पर अच्छी गति नहीं पाती। बात बहुत कुछ ठीक है कि यह है कि प्रत्येक हिन्दी शब्द में कभी तो एक से अधिक बार शिफ्ट का प्र करना पड़ता है। फिर भी ऐसे लोगों अभाव नहीं है जिन की गति इस भी हिन्दी टाइपराइटर पर ८० या शब्द प्रतिमिनट तक है। यदि विशे की समिति वर्णों की उपयोगिता-क्र साथ साथ उस क्रम का और भी दे जिससे 'शिफ्ट की' का प्रयोग करना पड़े तो समस्या और भी से हल हो सकती है।

इस समय यह बात बहुत ही आव श्यक है कि विशेषज्ञों की सम्मति से भारत वर्ष में ही टाइपराइटरों का निर्मा हो। जहां पर भारत में उद्योगी की अन्य महान् योजनाएं चल रही मोटर और हवाई जहाज तक बनाने ओर ध्यान दिया जा रहा है वहीं पर टा राइटर के निर्माण की ओर भी ध्यान भारतीय सरकार का मुख्य कर्त्तव्य यदि भारतवर्ष में, टाइपराइटरों का नि प्रारंभ हो जाय तो देश की करोड़ों सम्पत्ति देशवासियों की जेब में सकती है।

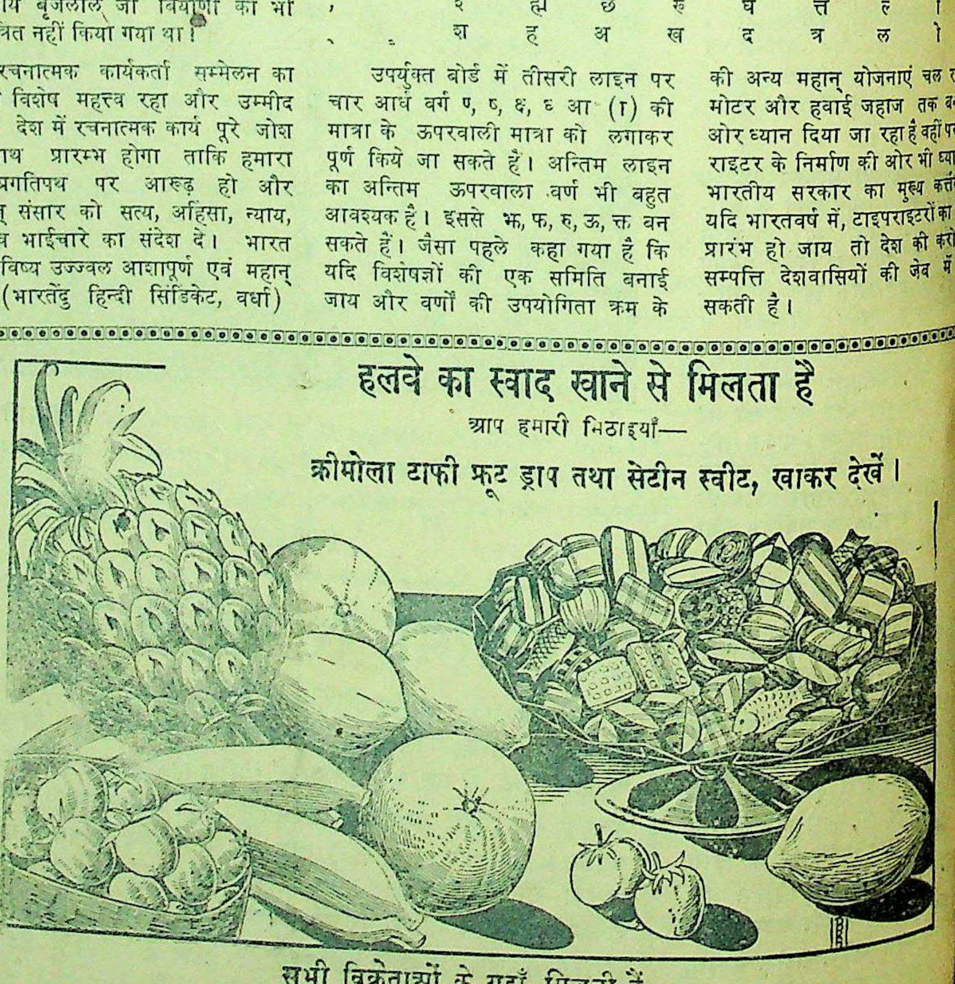
हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।
सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस,
[illegible] इलाहाबाद।

र की जाय तो
जतना हम अपनी
समझ सकते हैं
ां नहीं समझ
कमाने की गरज से
का क्रम रख दिया,
ी अनुपस्थिति में
ाधन नहीं कि एक
ूना रख सकें अतः
ाइटर के ही आधार
हेर-फेर करके
क्रम किया गया है।

ी कहा जाता है कि
अच्छी गति नहीं
कुछ ठीक है कि
हिन्दी शब्द में कमी
वार शिफ्ट का प्र
फिर भी ऐसे लोगों
जन की गति इस
राइटर पर ८० या
तक है। यदि किन
की उपयोगिता-क्रम
क्रम का और भी
कीं का प्रयोग
स्या और भी
है।

ह बात बहुत ही आ
ज्ञों की सम्मति से मान
इपराइटरों का निर्मा
भारत में उद्योगीकरण

—
=
९
ढ ए
ग उ
ी ह
ि स
ल ी
ल ी

जिनाएं चल रही
जहाज तक बनाने
रहा है वहीं पर टा
ी ओर भी ध्यान
का मुख्य कर्तव्य
ाइपराइटरों का निर्मा
ी देश की करोड़ों
ं की जेब में

खें।

०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल रजिस्टर्ड के सेवन करने से बाल हमेशा के लिए काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है, और उनको लम्बे, घूंघरवाले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न उगते हो वहां फिर से पैदा होने लगते हैं, आंखों की रोशनी तेज करता है और सिर को ठण्डक पहुंचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २॥) तीन शीशी पूरा कोरस की रियायती कीमत ६॥)। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक फैंसी म्यूट रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्दन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती है।

जरूरी नोट :—माल पसन्द न होने पर कीमत शीघ्र वापस कर दी जाती है। तीन शीशी खरीदने के खरीदार को डाक खर्च बिलकुल माफ; और चार अंगूठी लन्दन न्यू गोल्ड, और चार घड़ियां बिल्कुल मुफ्त इनाम दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार-बार हाथ न आयेगा। आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ लिखें।

ऋन कमर्शियल कम्पनी, बाग रामानन्द [D.A] अमृतसर
Commercial Co, Bagh Ramanand [D.A.] Amritsar.

सैरिडन
सर्वप्रकारका दर्द दूर करता है
10 Saridon
BRAND ANALGESIC TABLETS
Saridon

मुफ्त !! मुफ्त !!!
र बैठे मैट्रिक, एफ० ए०, बी०
तथा आगरा यूनीवर्सिटी से
ोपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी
स कर सकते हैं। नियमावली
पता:—
इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

दाद खुजली
और
चमड़ीका दर्दोंके लीए

गत ५० वर्षों से
जग विख्यात
काम नहीं करती।
नकालों से सावधान

सपट
लोशन

रो, डिपार्टमेंट U.P,DA.I.
बम्बई २

मेरी तरह तंदरुस्ती
हासिल करो

खून को साफ करता है
वामन गोपाल
आयोडाइज्ड
सार्सापरिला
हर जगह
मिलता है

एजन्ट—बलदेवप्रसाद
चौधरी एल० ए० ०धोलकिया
बजार

प्रत्येक चेहरे को दो सौन्दर्य-क्रीम की आवश्यकता है

POND'S
POND'S
Cold Cream
Cleansing
POND'S
POND'S
Vanishing Cream
Foundation

इस प्रसिद्ध साधन का अपने चेहरे पर प्रयोग कीजिये

सदैव सुंदर दिखने के लिये आपके चेहरे को दो विशिष्ट क्रीम के नियमित सौन्दर्य—साधन की आवश्यकता है। पहिला, चेहरे को स्वच्छ और कोमल बनाने के लिये उत्तम रीति सें सुमिश्रित तेलों का क्रीम—पांड्स कोल्ड क्रीम। दूसरा धूल और धूप के दिन भर के संरक्षण के लिये रेशमवत् चिकनाई-रहित—क्रीम पांड्स वेनिशिंग क्रीम।

अपने चेहरे को पांड्स कोल्ड क्रीम से स्वच्छ कीजिये। प्रति रात्रि को इस गहराई से भीतर प्रविष्ट होनेवाले तेलोंसे निर्मित क्रीम को चेहरे पर लगाइये। उंगलियों के पोरों से अपने मुख पर उसे सँवार लीजिये। पोंछ डालिये। अब देखिये, कितना स्वच्छ और उज्ज्वल आपका चेहरा दिखता है। उन सभी विकारों से रहित जो पसीने के साथ छिद्रों में छूट जाते हैं। और कितना कोमल!

प्रति सवेरे पांड्स वेनिशिंग क्रीम से अपने चेहरे की रक्षा कीजिये। शीतल, सूक्ष्म, चिकनाई-रहित पांड्स वेनिशिंग क्रीम की बहुत हल्की झिल्ली लगाइये। वह बड़ी सरलतासे सरकता है—किंतु वह चिकना नहीं है। वह आपके चेहेरे को दिन भर गर्मी और धूल से सुरक्षित बनाये रक्खेगा। आपके सौन्दर्य के लिये यह पूर्ण रूप से अदृश्य और पुष्पवत् शृंगार है।

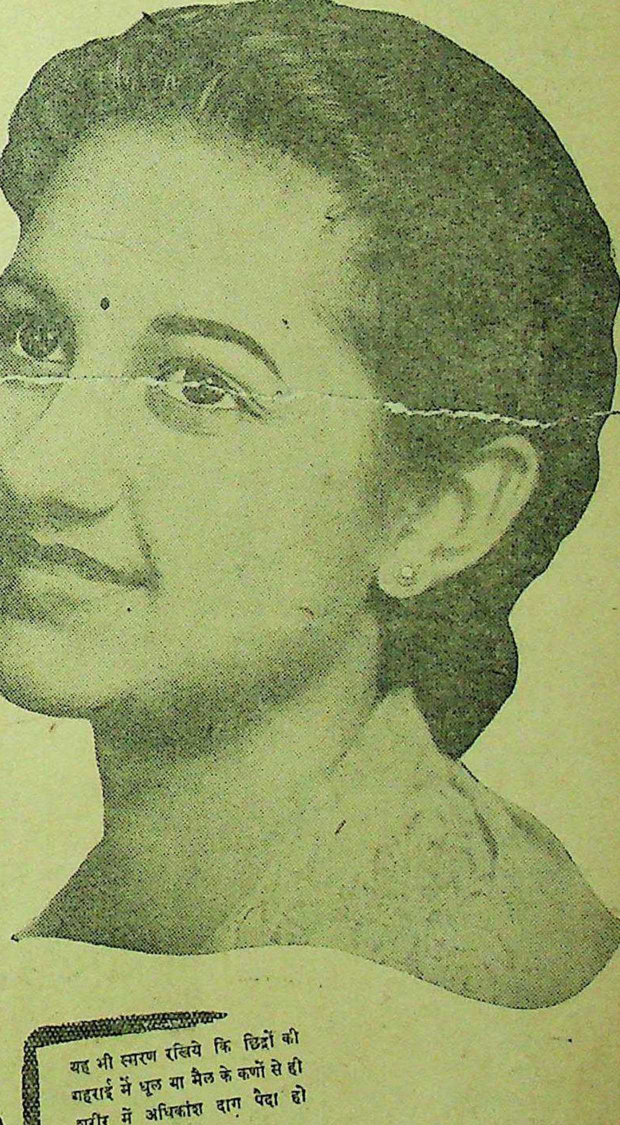

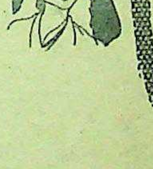

स्मरण रखिये ग्रीष्म की कठोर गरमी और सर्दी की शीत दोनों ही हमारे शरीर के प्रकृत तेलों को सुखाकर उसे कोला और भद्दा बना देती हैं।

यह भी स्मरण रखिये कि छिद्रों की गहराई में धूल या मैल के कणों से ही शरीर में अधिकांश दाग पैदा हो जाते हैं।

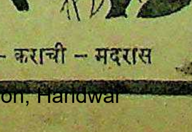

पांड्स के दैनिक, नियमित प्रयोग से चेहरा, स्वच्छ, उज्ज्वल और निर्मल हो जावेगा—वह सदैव युवा दिखेगा। आपके 'सौन्दर्य-नियमन' के इस साधन को प्रतिदिन पांड्स के दो क्रीम से पूरा कीजिये।

पांड्स

व्यापारिक विवरण के लिये—
एल. डी. सेमूर एंड कम्पनी (इंडिया) लिमि० बम्बई – कलकत्ता – कराची – मदरास

५०० पौंड का इनाम

चौबीस घंटे के अन्दर जवानी वापस

"ओटोजन" (जड़ी बूटियों से निर्मित). पार्कर एण्ड डैविस द्वारा प्रस्तुत पहले २४ घंटे के अन्दर ही शक्ति तथा स्फूर्ति प्रचारित करने में आश्चर्यजनक है। इसके उपयोग से स्त्री तथा पुरुष दोनों अपने वास्तविक आयु से १५-२० वर्ष छोटे मालूम पड़ने लगते हैं। यह पौरुषहीनता, स्मरणशक्ति की कमी, शारीरिक दुर्बलता, रक्त-विकार, चर्मरोग, हतोत्साह, अनिद्रा तथा शारीरिक शक्ति ह्रास को दूर करने के लिए उपयोगी है। इसके प्रयोग से २ से ४ इंच तक आपकी लम्बाई तथा ५ से १० पौण्ड तक शरीर का वजन बढ़ जायेगा। आपके चेहरे पर लालिमा आ जायगी तथा आपकी कान्ति दुगनी हो जायगी। 'आपकी त्वचा कोमल तथा चिकनी हो जायगी। जिससे आपके चेहरे पर जवानी की आभा पुनः आ जायगी। ओटोजन से आपके व्यक्तित्व में वृद्धि होगी, आंखों में रौनक आ जायगी, ओठों तथा गालों पर गुलाबी दौड़ जायगी। इसके प्रयोग से पकते हुए बाल स्थायी रूप से काले हो जायेंगे तथा वृद्धावस्था में नये दांत निकल आयेंगे। बाल गिरते हों, सिर रूखा हो अथवा चँदला हो गया हो तो उस समय 'ओटोजन' (टानिक) विशेष लाभप्रद सिद्ध होगा। "ओटोजन" का प्रयोग प्रोफेसर ए० पी० पार्कर ने स्वीटजरलैंड में १००, वर्ष के शक्तिहीन बुड्ढे पर किया था। केवल एक मास के नियमित सेवन के बाद इस आश्चर्यजनक औषधि ने उस १०० वर्ष के रोगी को तीस वर्ष का-सा नौजवान बना दिया। थोड़े समय बाद ही एक नवयुवती से विवाह कर लिया। फ़िल्म-जगत् के अभिनेता व अभिनेत्रियां इस औषधि के प्रयोग से ८० तथा ९० वर्ष की वृद्धावस्था में भी सौन्दर्य तथा उत्साहपूर्ण बनी रहती हैं तथा फिल्म-जगत् में निरन्तर काम करती हैं। प्रारम्भिक अवस्था से ओटोजन का प्रयोग करने से स्त्रियां सदा नवयुवती बनी रहती हैं तथा उनके सौन्दर्य में किसी प्रकार की कमी नहीं आती। पुरुषवर्ग युवास्था से ओटोजन का प्रयोग करने से समय से पहले बूढ़े नहीं होते। बाल काले बने रहते हैं। चेहरे पर कान्ति तथा स्वास्थ्य बना रहता है। इसके प्रयोग से मनुष्य अपनी वास्तविक आयु से वर्षों छोटा प्रतीत होता है।

यह बीसवीं सदी का आश्चर्यजनक आविष्कार तथा संसार का ८वां वैचित्र है। ओटोजन के प्रयोग के बाद स्त्रियों में तरुणाई तथा चपलता का संचार हो जाता है। तथा ओटोजन के प्रयोग के बाद स्त्री तथा पुरुष दोनों के भाग्यशाली दिन वापस आ जाते हैं। अभी से ओटोजन का प्रयोग आरम्भ कर दें तथा सौ बरस तक स्वस्थ तथा शक्ति-सम्पन्न बने रहें। इससे क्षुधा इतनी प्रज्वलित होती है कि एक पौंड अथवा इससे भी अधिक मक्खन कमजोर व्यक्ति भी पचा सकता है। इस विचित्र "ओटोजन" टानिक के प्रभाव को देखकर दुनिया के बड़े बड़े वैज्ञानिक तथा अनुभवी डाक्टर चकित रह गये।

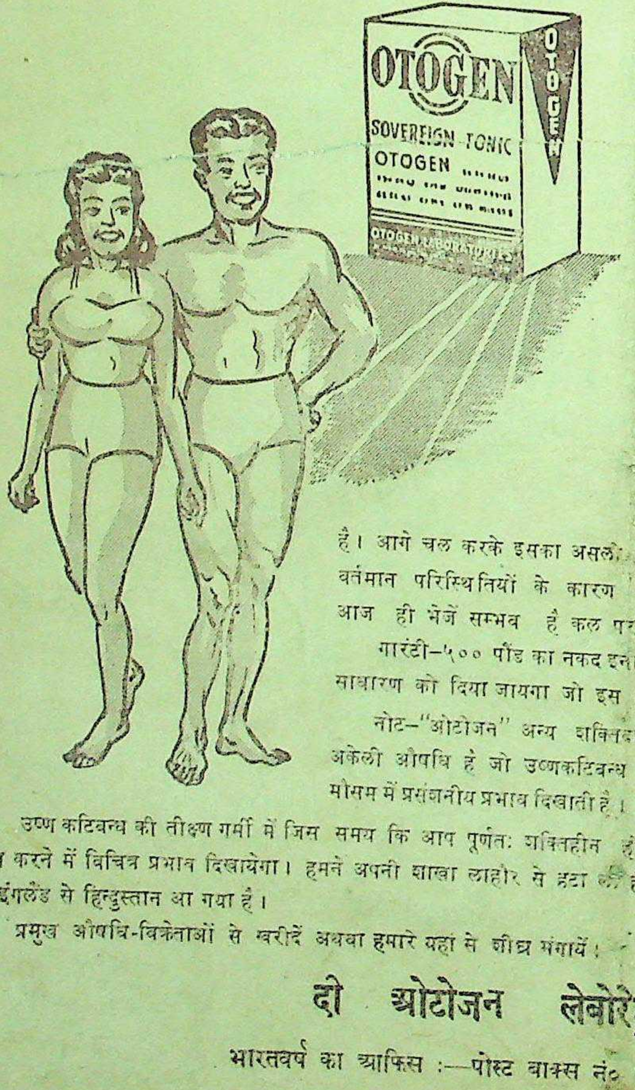

"ओटोजन" अपने प्रकार का अकेला टानिक है जिसे संसार के स्त्री व पुरुष दोनों उपयोग में लाते हैं। चिकित्सा-विज्ञान के इतिहास में यह अभी तक निराला है आज से ही इसका उपयोग आरम्भ कर इसके गुणों का अनुभव करें। आरम्भ करने के पहले अपना वजन ले लें तथा आईने में अपनी आकृति देख लें। फिर एक सप्ताह के बाद अपनी आकृति शीशे में पुनः देखें और गौर करें कि आपकी आकृति में तथा उत्साह में ओटोजन के व्यवहार से कितना परिवर्तन हो गया।

भारतवर्ष में इस औषधि का प्रचार करने के निमित्त इसका मूल्य मय डायरेक्शन के ५) प्रतिबाक्स कर दिया गया है। आगे चल करके इसका असली दाम ३०) प्रतिबाक्स चार्ज किया जायगा। वर्तमान परिस्थितियों के कारण माल थोड़ा बच रहा है। अतः अपना आर्डर आज ही भेजें सम्भव है कल पर छोड़ने से आप पीछे रह जायें।

गारंटी—५०० पौंड का नकद इनाम किसी भी वैज्ञानिक आयुर्वेदवेत्ता अथवा जनसाधारण को दिया जायगा जो इस आश्चर्यजनक खोज को गुणहीन साबित कर देगा।

नोट—"ओटोजन" अन्य शक्तिदायक औषधियों के विपरीत अपने प्रकार की अकेली औषधि है जो उष्णकटिबन्ध की गर्मियों में, जाड़े में नम तथा साधारण मौसम में प्रशंसनीय प्रभाव दिखाती है।

उष्ण कटिबन्ध की तीक्ष्ण गर्मी में जिस समय कि आप पूर्णतः शक्तिहीन हो गये हों उस समय ओटोजन आपकी शक्ति संचय करने में विचित्र प्रभाव दिखायेगा। हमने अपनी शाखा लाहौर से हटा ली है तथा १५ अगस्त १९४७ से हमारा कार्यालय इंगलैंड से हिन्दुस्तान आ गया है।

प्रमुख औषधि-विक्रेताओं से खरीदें अथवा हमारे यहां से शीघ्र मंगायें।

दी ओटोजन लेबोरेट्रीज़

भारतवर्ष का आफिस :—पोस्ट बाक्स नं० ४४७, बंबई।

१८६६
नीलगिरि
. खांडालेकर बंधु

श्वेतकुष्ठ की फकीरी

महात्माप्रदत्त इस बूटी
७ रोज में आधा और १५ रोज
आरोग्य होने की गारंटी, अगर
और कम कामता दवा इस्तेमाल
निराश हो गये हैं तो एक बार
को भी इस्तेमाल कर इसके चमत्कार
से लाभ उठावें। बेफायदा
५००)रु० इनाम अगर चाहें तो
टिकट भेजकर शर्त लिखा लें। मूल्य
ता—श्री शिवशक्ति आश्रम
सालमपुर अहरा पो०—

१५०) इनाम

सिद्ध शम्भु
सिद्ध वशीकरण। इसके
स्त्री या पुरुष को आप
जायगी। इससे दुर्भाग्य और
नौकरी, सन्तान, धन की
में लाभ, परीक्षा में पास,
और लाटरी में जीत, कठिन
से छुटकारा होकर भाग्योदय
मूल्य तांबा २।।) सिलवर ३)
बेफायदा साबित करने पर १५०)
पता—श्री शम्भुआश्रम मुहल्ला
(D. D.) पोस्ट बाँकीपुर

१६।।) में ज्वेलवाला

स्वीसमेड ठीक समय देने
गारण्टी। गोल या स्क्वायर
सुपिरियर २०), फ्लाट सेप
३०), फ्लाट सेप रोल्ड
गारण्टी ५५), फ्लाट
क्रोम केस ३८), फ्लाट
रोल्ड गोल्ड ७५)।
रेक्टेंगुलर, कर्व या टोनो
केस ४२), सुपिरियर
६०), रोल्ड गोल्ड
६०) अलार्म टाइम पीस
बीग साइज २५) पोस्टेज
घड़ी लेने से माफ।
एच० डेभिड, एण्ड
पा० बक्स नम्बर ११

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० बाघ |के० ... लिमिटेड, २४ ... रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित| प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद

चित्र
ाहिक
क मूल्य ७॥)
ी संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

११ अप्रैल, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 11th April, 1948

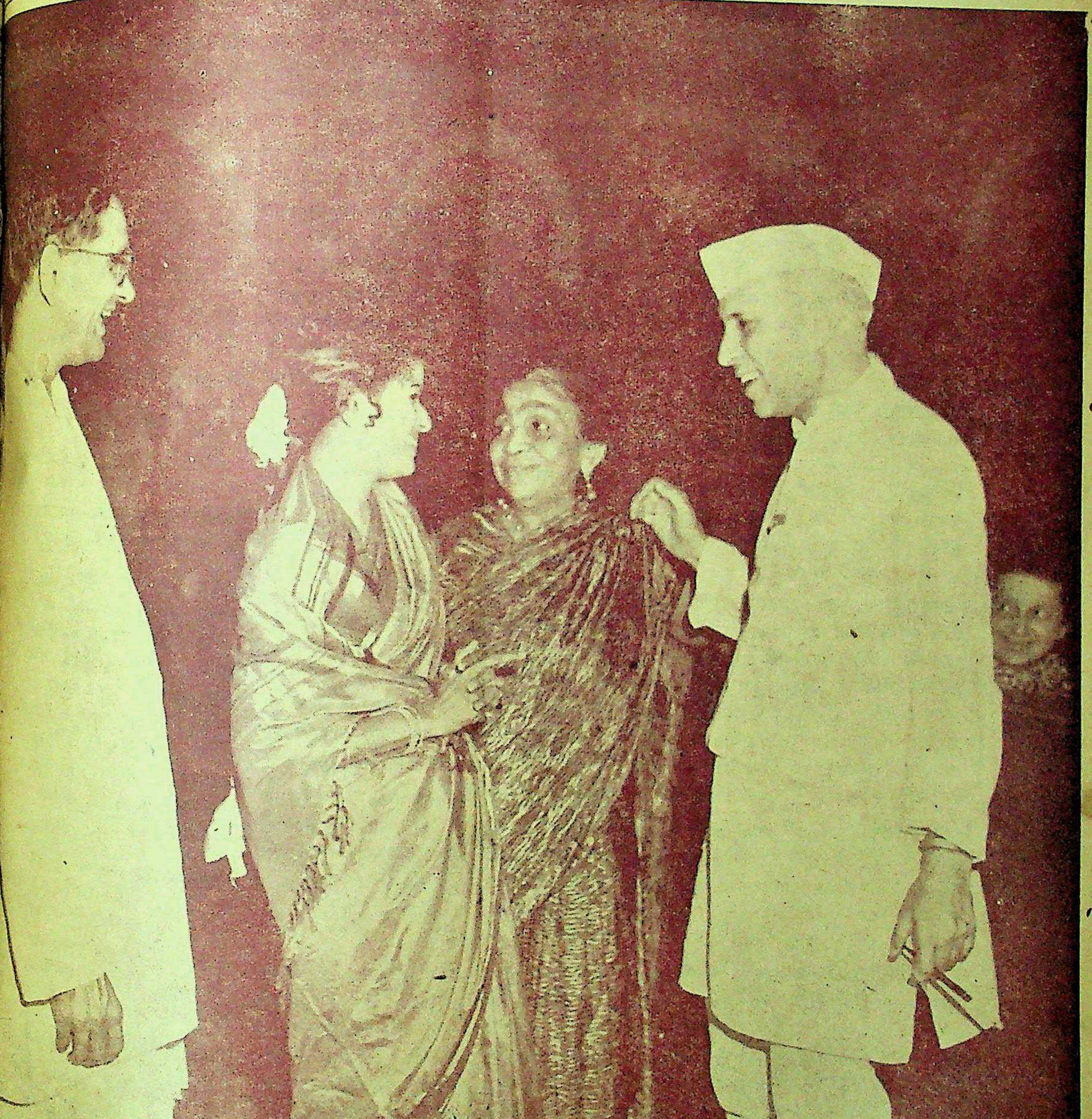

ना' फिल्म की प्रधान अभिनेत्री सुश्री शुभलक्ष्मी, पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा माननीया श्रीमती सरोजनी नायडू के साथ।

ी का स्मारक कैसा हो ?
पानुमंदिर, और कहानी

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

समाजवादियों का संयुक्त मोर्चा
संसार की राजनीति और इटली

हमारी कुछ चुनी हुई पुस्तकें

देवी चौधरानी—अनुवादक, श्रीयुत पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी, 'निराला'। मूल-लेखक स्वर्गीय बंकिम बाबू ने इस उपन्यास में बंगाल की उस समय की अवस्था का चित्रण किया है, जब कि मुसलमानों की शक्ति का अवसान हो चुका था और अँगरेज़ों की प्रभुता का अभ्युदय हो रहा था। आदि से अन्त तक पुस्तक रोचक और शिक्षाप्रद है। मूल्य १।-)

बैकुण्ठ का विल—मूल लेखक, स्वर्गीय डा० शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय। यह उपन्यास है तो छोटा किन्तु बहुत ही भावपूर्ण है। मानव-हृदय की स्वाभाविकता इसके प्रत्येक पात्र से प्रकट हो रही है। शरद् बाबू उपदेश देने की दृष्टि से रचना नहीं करते; किन्तु उपदेश अज्ञात रूप से अपना काम किये बिना कब रहता है। यह बात उनके इस उपन्यास में भी अपवाद नहीं हो सकी। मूल्य ||≋) ।

अज्ञात दिशा की ओर—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। यह श्री सौरीन्द्रमोहन मुखोपाध्याय के 'निरुद्देशेर यात्री' नामक उपन्यास का अनुवाद है। इस उपन्यास में हिन्दू-समाज की वैवाहिक समस्या पर बहुत ही रोचक ढंग से प्रकाश डाला गया है। मूल्य १) ।

पुष्करिणी—लेखक, श्रीयुत भगवतीप्रसाद वाजपेयी। यह हिन्दी के प्रसिद्ध कहानी-लेखक श्री भगवतीप्रसाद जी वाजपेयी की चौदह कहानियों का संग्रह है। इस संग्रह में सम्मिलित की गई सभी कहानियाँ एक से एक बढ़कर हैं और इनमें पीड़ित मानवता के चीत्कार और जागरण की कलापूर्ण कथायें लिपिबद्ध की गई हैं। मूल्य केवल २) ।

पथ-भ्रान्त पथिक—अनुवादक, पण्डित सुन्दरलाल त्रिपाठी और पण्डित ठाकुरदत्त मिश्र। श्री चारुचन्द्र बन्द्योपाध्याय-लिखित इस उपन्यास का उपन्यास-प्रेमियों में अच्छा सम्मान है। हिन्दी के उपन्यास-पाठकों की प्रेरणा से ही इसका हिन्दी अनुवाद हमने पहली बार प्रकाशित कराया है। उपन्यास की रोचकता और महत्ता के लिए चारुचन्द्र बाबू का नाम ही पर्याप्त है। मूल्य २||≋)।

कृष्णकान्त का विल—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। यह बंकिम बाबू का एक अत्यन्त लोकप्रिय उपन्यास है। एक भारतीय पतिव्रता का जैसा सुन्दर चित्र इस उपन्यास में खींचा गया है वैसा अन्यत्र न मिलेगा। मूल्य १)।

युद्ध और शान्ति—अनुवादक, श्री रुद्रनारायण अग्रवाल। टॉल्सटॉय के 'वार एण्ड पीस' नामक प्रसिद्ध रूसी उपन्यास का यह हिन्दी-रूपान्तर है। इसमें लेखक ने मानव-जीवन का सम्पूर्ण चित्र, अपने समय के रूस की तसवीर और राष्ट्रों की खींच-तान बड़ी खूबी से चित्रित किया है और जीवन तथा मृत्यु के रहस्य का उद्घाटन किया है। मूल्य ५।-) ।

कपाल-कुण्डला—अनुवादक, श्रीयुत पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी, 'निराला'। यह बंकिम बाबू की कपाल-कुण्डला का हिन्दी-रूपान्तर है। कथानक की रोचकता तथा वर्णन की अपूर्वता के कारण यह उपन्यास इतना लोकप्रिय हो चुका है कि इसका नये सिरे से परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। कपाल-कुण्डला के हिन्दी में आज तक जितने भी अनुवाद प्रकाशित हुए हैं, यह अनुवाद उन सबसे बहुत सुन्दर हुआ है। मूल्य १||) ।

भक्त जयदेव—पण्डित गौरीशंकर मिश्र बी० ए० एल-एल० बी० लिखित इस उपन्यास में 'हम भक्तन के भक्त हमारे' का सुन्दरता-पूर्वक प्रदर्शन हुआ है। मूल्य १||)

शनि की दशा—अनुवादक पण्डित ठाकुरदत्त मिश्र। श्रीमती काञ्चनमाला देवी के 'शनिर दशा' नामक बँगला उपन्यास का यह अनुवाद है। लेखिका महोदया ने उपन्यास की नायिका के चरित्र में जिस मधुरता और महिमा का समावेश किया है, वह विश्व के महिला-समाज में हिन्दू-महिलाओं को गौरवपूर्ण पद दिलाने के लिए सर्वथा उपयुक्त है। मूल्य २)

धोखा-धड़ी—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। यह बँगला के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार बाबू चारुचन्द्र बन्द्योपाध्याय के धोखार टाटि नामक उपन्यास का अनुवाद है। सीधे-सादे और उदार-हृदय व्यक्ति कृत्रिम सौजन्य, सहानुभूति और विनय प्रदर्शित करनेवालों के मायाजाल के शिकार होकर किस प्रकार अकारण ही अगणित दुःख-क्लेश सहन करने के लिए बाध्य हो जाते हैं, यही इस उपन्यास का विषय है। मूल्य १||≋)।

रिक्ता—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। श्री नीहारबाला देवी के इस उपन्यास में पति-प्रेम वंचिता नारी का ऐसा सजीव और भावपूर्ण चित्र अंकित हुआ है कि पढ़ते-पढ़ते हृदय द्रवित हो जाता है। ऐसे भाव-पूर्ण उपन्यास आपके पढ़ने में कम आये होंगे। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-)।

श्रीकान्त—(प्रथम और द्वितीय भाग)—अनुवादक, श्री रूपनारायण पाण्डेय। 'श्रीकान्त' शरद् बाबू का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना गया है। इसमें शरद् बाबू की अमर लेखनी ने उनके कलाकार का सजा और सधा हुआ रूप चित्रित किया है, जो अत्यन्त मनोरम है। प्रत्येक भाग का मूल्य २)।

ब्राह्मण की बेटी—मूल लेखक, श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक, पंडित रूपनारायण पाण्डेय। शरद् बाबू भारत के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास-लेखक माने जाते हैं। उनका यह उपन्यास लोक-प्रियता और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मूल्य सजिल्द पुस्तक का १।-) ।

आनन्दमठ—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। मुसलमानों और अँगरेज़ों को हिन्दुस्तान से बाहर करने के लिए, बंगाल में वैष्णवों ने जो विद्रोह किया था, उसी का इस उपन्यास में उपन्यास-सम्राट श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने बड़ी खूबी से वर्णन किया है। ऐसा सुन्दर चित्रण इस उपन्यास में है कि पढ़कर मातृ-भूमि के लिए दिल फड़क उठता है। मूल्य १।-) ।

रजनी—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। यह उपन्यास-सम्राट श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का एक करुणापूर्ण अद्वितीय उपन्यास है। चमत्कारपूर्ण मनोवैज्ञानिक कहानी इस उपन्यास की एक ऐसी खूबी है कि जिसके कारण पुस्तक पढ़ने का मोह संवरण नहीं किया जा सकता। मूल्य ||≋)।

संसार की प्रसिद्ध कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत शमशेर बहादुरसिंह, बी० ए०। इस पुस्तक में योरप के संसार-प्रसिद्ध कलाकारों की चुनी हुई कुछ कहानियाँ संगृहीत की गई हैं। ये कहानियाँ बहुत ही कलापूर्ण और मनोरंजक हैं। यदि आपको योरप के कथा-साहित्य की बानगी देखनी हो, तो इस पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य १) ।

मोपाँसा की चुनी हुई कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत गोपीनाथ जी कानूनगो। इस पुस्तक में मोपाँसा की चुनी हुई ग्यारह कहानियों का संग्रह किया गया है। मोपाँसा की रचनाओं की बानगी देखने के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य १) ।

ब्रजनाथ का विवाह—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। आश्चर्यमयी घटनाओं से परिपूर्ण यह सामाजिक उपन्यास पढ़ने में ऐसा रोचक है कि एक बार आरम्भ करने पर फिर बिना समाप्त किये चैन नहीं पड़ता मूल्य १।-)

स्काटलैंड-यार्ड की जासूस श्री- पुस्तक लेडी मॉली की ६ जासूसी कहानियों का संग्रह है। इस पुस्तक की एक-एक कहानी मनोरंजक और कौतूहलवर्द्धक है कि आप इस पुस्तक को पूरी पढ़े बिना चैन नहीं पा सकते। लेडी मॉली के जितने कहानी-संग्रह अब तक प्रकाशित हुए हैं, यह उन सबसे अच्छा है। मूल्य |||-)

द्वन्द्व—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। श्रीमती सरोजकुमारी देवी नामक बंगाल की प्रसिद्ध उपन्यास-लेखिका का इसी नाम की पुस्तक का हिन्दी-अनुवाद है। इसमें मानव हृदय के द्वन्द्व तथा उसके कारण उत्पन्न होनेवाली अशान्ति का बहुत ही उत्तमतापूर्वक विश्लेषण किया है। यह उपन्यास आदि से अन्त तक घटनाओं से परिपूर्ण है और इसका कोई भी अंश नहीं है जिसमें सरसता का अभाव हो। मूल्य २||≋)

जीवन-क्रान्ति—लेखक, पंडित गौरीशंकर बी० ए०, एल-एल० बी० अनुभवी तथा लेखक ने इस उपन्यास में सेठ-साहूकारों तथा आदमी कहे जानेवाले व्यक्तियों की नर-पुलिस तथा अन्य अधिकारियों के हथकण्डे धन के लाभ से निरपराधी को अपराधी कारागार की नारकीय यातना भोगने के लिए करने के माया-जाल का बहुत ही आकर्षक वर्णन किया है। उपन्यास की एक-एक ओजपूर्ण और हृदय में घर कर लेनेवाली मूल्य २||≋) ।

प्रतिशोध—लेखक, पंडित उमेशचन्द्र मिश्र उपन्यास में प्रोफ़ेसर भारद्वाज नामक एक षडयन्त्रकारी की रहस्यपूर्ण कार्यवाहियों का बड़े रोचक ढंग से किया गया है। इसे आप ऐसे तल्लीन हो जायँगे कि बिना समाप्त पुस्तक हाथ से न छूटेगी। मूल्य १)

मैनेजर (बुकडिपो) इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

देशदूत

१०, संख्या ३१] [रविवार, ११ अप्रैल, १९४८

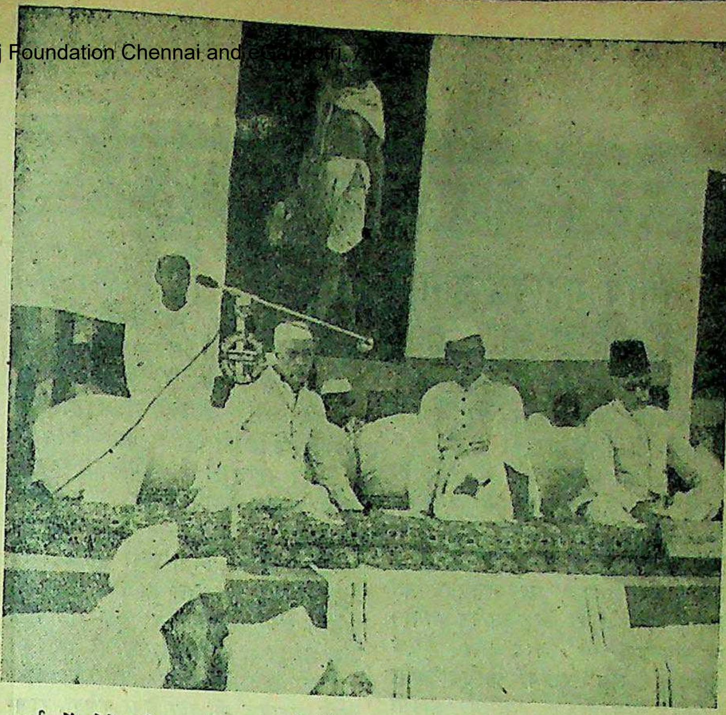

वर्धा में होनेवाले रचनात्मक कार्यकर्ता सम्मेलन में डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद, पंडित नेहरू और मौलाना अबुल कलाम आजाद बैठे हुए दिखाई दे रहे हैं।

धी टेढ़ी-खरी-मजेदार

में मेहतरों का बड़ा अभाव अधिकांश मेहतर हिन्दुस्तान हैं। अपने राम को राय में के देश में मेहतरों की कमी अपने ही हाथों से स्वयंसेवक पाकिस्तान को अब वास्त- ओर बढ़ना चाहिए।

* *

नीति काश्मीर का प्रश्न रही है, क्यों इसलिये तथा ब्रिटिश दोनों हिन्दुस्तान को प्रसन्न रखना है। ने कहूँ तेरी। पाकिस्तान ख्याल रखना ही है; साम्राज्यवादियों की पालतू लेना है काश्मीर की होती है?

* *

परेशान हैं। सरकार लग गया है कि उनसे और न उगलते। यदि हिसाब इस प्रकार दिखायें नहीं है तो सरकार कि जमींदारी रखने से क्या आमदनी अधिक दिखाई की लादी लदनी अनिवार्य जमींदारों की स्थिति भइ केरी। इसके सिवा जाये।

* *

सरकार के कार्यवाहकों ने के सामने सर लगाने से कुछ प्रकट की, किन्तु जनता ने इस शब्द के स्थान में श्री शब्द लगाकर अच्छी पूर्ति की है। सर से श्री की उन्नति प्रगतिशील है।

* * *

बेगम अजीज रसूल ने भारतीय पार्लियामेंट में बोलते हुए सरकार के सामने एक सुझाव पेश करते हुए कहा कि सरकार को अपनी आय-वृद्धि के लिये विवाह और पैदावार में इनकम टैक्स लगाना चाहिए। अपने राम की राय में विवाह के पश्चात् बच्चों के जन्म के रूप में ईश्वर भी मनुष्यों के ऊपर टैक्स लगाता है, इसलिये संसार में यदि विवाह आदि पर टैक्स लगाये गये तो वह एक प्रकार से ईश्वर को चुनौती देने के बराबर होगा।

* *

इटली की एक म्यूनिसिपैलिटी में कुछ घाटा पड़ा। मेम्बरों ने उसकी कमी के लिए सुझाव पेश किये। एक ने कहा कि कहीं से उधार लेकर बजट पूरा कर लिया जाय, दूसरे ने कहा कि जनता के ऊपर जो खर्च होता है उससे काट लिया जाये, अंत में एक महोदय बोले कि जितना भी रुपया बचा है वह सब आपस में बांट लिया जाय और फिर से म्यूनिसिपैलिटी का खर्च एकत्र किया जाये। जिससे हिसाब दोबारा न गलत हो।

* * *

एक अध्यापिका एक छात्र को आज्ञा-पालन की शिक्षा देते हुए एक कथा सुना रही थी। वह कहती थी एक भेड़िया, एक बकरी को झुण्ड से लेकर भाग गया और मारकर खा गया। यदि बकरी अपने मालिक की आज्ञापालक होती तो भेड़िया उसे न मारता, इसी तरह जो लोग बड़ों की आज्ञा लेकर मानते उनकी ऐसी ही दशा होती है, उस दिन से वह छात्र हर काम आज्ञा ही करता था।

* * *

एक वृद्ध पति महोदय एक दिन समाचारपत्र पढ़कर अपनी पत्नी से कहने लगे, 'मालूम होता है कि पिता की आदतों का प्रभाव बच्चों पर भी पड़ता है' पत्नी ने एक लम्बी श्वास लेकर कहा अगर बुढ़ाई में भी यही बुद्धि आ जाय तो मेरे और तुम्हारे अहोभाग्य हैं।

* * *

भारत सरकार के खाद्य-मंत्री ने कहा कि अब भोजन-परिस्थिति अच्छी है और भविष्य पर आशा बँधाते हुए बोले देश भूखों तब तक नहीं मर सकता जब तक हम न मर जायेंगे!

* * *

भोजन मंत्री ने कहा कि भोजन बहुत आवश्यक वस्तु है, इसलिए उसका प्रयोग भी वैसा ही होना चाहिए, यदि सरकार और जनता एक ही समय भोजन करने का निश्चय कर ले तो उसकी आवश्यकता अच्छी तरह सँभल जायेगी।

* * *

बंगाल की व्यवस्थापिका सभा में जब कानून बन रहे थे, तब न्याय-मंत्री ने एक विज्ञप्ति निकाली थी कि छोटे मुकदमें पंचायत से तय किये जायें; अर्थात् सरकार केवल बड़ों के मुकदमों के लिए है, छोटों की कोई परवाह नहीं।

* * *

एक बार नलिनीरंजन सरकार ने कहा कि वर्तमान चीजों की कीमत के बढ़ने का कारण कम्युनिस्ट हैं। क्यों यह हड़ताल करवाते हैं? सरकार को इन्हें रोकना चाहिए, कम्युनिस्टों ने इसका उत्तर दिया कि हम तैयार हैं; हम हड़ताल न करावेंगे, लेकिन यदि फिर भी कीमतें न घटीं तो सरकार हमसे अपनी जगहें बदल ले।

र गिरजाशंकर वाजपेयी प्रधान मंत्री, भारतीय मंत्रिमंडल अन्तरंग सलाहकार, संयुक्त-राष्ट्र संघ की बैठक में शामिल होने के लिये अमरीका गये हैं।

सरदार के० एम० पन्नीकर, बीकानेर के प्रधान मंत्री, मिस्टर मेनन के स्थान पर चीन के राजदूत नियुक्त हुए हैं।

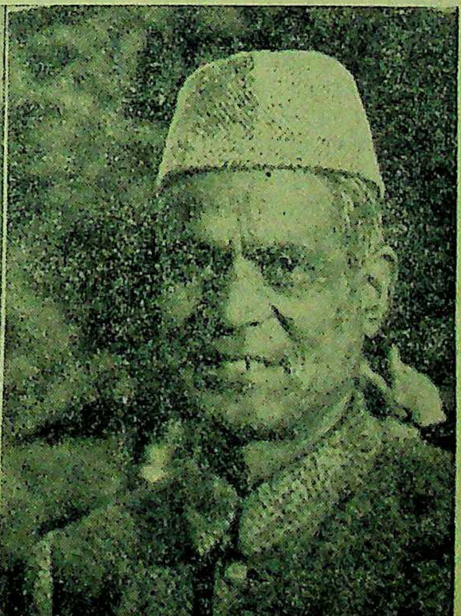

लोकनायक पंडित जयनारायण व्यास प्रधान मंत्री अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा-परिषद्, जोधपुर राज्य के प्रधान मंत्री बनाये गये हैं।

सम्पादक का पृष्ठ

क्या तृतीय महायुद्ध होगा ?

इंग्लैंड और सोवियट रूस के बीच आज की राजनैतिक अवस्था ने समस्त संसार को सशंकित बना दिया है। दोनों देशों के बीच मानसिक युद्ध तो किसी न किसी रूप में उत्पन्न हो ही गया है। इतना ही नहीं वरन् टर्की भी अपने को युद्ध के बाह्य दर्शन के प्रभाव से प्रभावित कर रहा है। वैज्ञानिक, भांति भांति की गैसों और अन्य भयंकर चीजों के निर्माण में संलग्न हैं, जो मानवता का विनाश करने की एक शक्ति बनेंगी। एक समाचार से ज्ञात हुआ है कि अमेरिका ने एक रेडियो निर्मित किया है जिसके पास आकर कोई भी आदमी एक निश्चित समय के अन्दर मर जाता है, इस यन्त्र का प्रभाव अणु बम से भी अधिक बतलाया गया है। इसके भी विस्तार में लगभग उतना ही भूमि भाग आता है जितना अणु बम के प्रभाव से नष्ट होता है। बैक्टेरिया के द्वारा भी कुछ नई खोज की गई है, जो मनुष्य को सदैव के लिए अस्वस्थ और बेकाम कर देती है। इसी प्रकार युद्ध के लिए और भी अनेकानेक विषैली और भयंकर वस्तुओं का निर्माण हो रहा है।

ब्रिटेन के युद्ध-मंत्री ने पार्लमेंट में घोषित किया है कि वह पहले के नाजी अफसरों से जलयान का [illegible]त्पादक शक्ति-संचालन का काम लेंगे, इसके लिये उन्हें पहले ट्रेनिंग दी जायेगी, यह आगे आनेवाला युद्ध संसार को एक अत्यंत भयानक परिस्थिति में डाल रहा है। आज सड़क पर चलते साधारण मजदूर भी पूछता है कि इस युद्ध का आरम्भ और अंत कैसा होगा, क्या युद्ध-सम्बन्धी देश वास्तव में मनुष्यों के जीवन के साथ फिर कोई नया खेल खेलने जा रहा है ? क्या महलों में निवास करनेवाले तथा मोटरों पर आनन्द करनेवाले मनुष्य भी इस युद्ध में जान-माल से सहायता देंगे, क्योंकि अभी तो द्वितीय महायुद्ध के द्वारा जो नाश हुआ है उसी की पूर्ति किसी भी अंश में नहीं हो पाई, पता नहीं हमारे नेता हमें किस दिशा की ओर चलने का आदेश दें, क्योंकि यह युद्ध मानवीय शक्ति को किसी एक निश्चित दिशा में लगावेगा, ऐसा विश्वास किया जाता है! इसके अतिरिक्त आज का विज्ञान भी मानवता को चुनौती दे रहा है, ऐसा प्रतीत होता है मानों मनुष्य का जीवन केवल संघर्षों का प्रतीक-मात्र ही रह जावेगा!

ट्रूमन ने स्वयं कह दिया है कि विश्व-शान्ति की जो तसवीर मैंने अपने हृदय में खींची थी, सम्भवतया वह कुछ बिगड़ सी रही है ? जार्ज मार्शल अमेरिका के राजनैतिक सेक्रेटरी ने भी घोषणा की है कि सम्भव है कि विश्व-इतिहास में कुछ और नये अध्याय जोड़ने पड़ जायं, क्योंकि प्रतिदिन एक न एक ऐसी अवस्था उत्पन्न होती जा रही है जो हमारे राजनैतिक कार्यों को किसी अज्ञात दिशा की ओर खींचती हुई जान पड़ती है, उन्होंने यह भी कहा कि इंडोनेसिया, चीन, कोरिया, और पुराना अमेरिका भी वर्तमान संघर्ष से किसी प्रकार भी बाहर नहीं।

अमेरिका का राजनैतिक क्षेत्र चेकोस्लावाकिया और फिनलैंड की परिस्थिति को भी गम्भीरता से सोच रहा है, बल्कि युद्ध के विषय में स्पष्ट वार्तालाप भी प्रारम्भ हो चुका है, मिस्टर वैलेस ने कहा भी है कि अमेरिका की राजनीति विशेष रूप से इटली को युद्ध में प्रमुख स्थान देने का विचार कर रही है, आगे यह भी कहा गया कि अमेरिका विशेषतया चाहता है कि वह व्यापारिक क्षेत्रों में मजदूरों की दशा में उचित विचार कर ले, जर्मनी की भी आर्थिक और औद्योगिक अवस्था पर गम्भीर विचार हो रहा है; यह विषय भी बहुत ही महत्त्वपूर्ण है, अमेरिका स्वतन्त्र संसार में एक विशेष स्थान प्राप्त करने की सोच रहा है; बल्कि वह संसार के समस्त देशों का अगुवा होना चाहता है, फिर भला उन देशों का क्या होगा जो युद्ध के लिए अपना सब कुछ चढ़ाने के लिए प्रस्तुत हैं, अभी तो यह भी निश्चित नहीं हो सका कि आखिर अमेरिका आनेवाले महायुद्ध की क्या सेवा करेगा, राजनीतिज्ञ तो यहां तक सोचते हैं कि अमेरिका, ब्रिटेन की राजनीति को अपनी मुट्ठी में करना चाहता है, इसलिए इस खेल में ब्रिटेन को भी अपने दांव-पेंच सोच लेने चाहिए।

अमेरिका के सचिव जार्ज मार्शल की नीति के अनुसार तो यूरोप तीन भागों में विभक्त किया ही जा चुका है, जिससे अमेरिका क्या बल्कि समस्त यूरोप का एक निश्चित आधार स्थापित किया जा सके, मास्को ने भी इसी के अनुसार एक नीति निर्मित की है, जिसके लिए आशा है वह शीघ्र ही और कुछ कहेगा! प्रधान मंत्री पेकेला अभी अभी सैनिक संगठन शक्ति के लिए मास्को से कुछ काम करके लौटे हैं, केवल फिनलैंड ही एक ऐसा देश है जिसने इस प्रकार के किसी समझौते पर अभी तक हस्ताक्षर नहीं किये। यह सारी बातें जहां तक रूस का प्रश्न है बहुत आवश्यक और विचारणीय हैं।

* * *

इटली का निश्चय

पूर्वीय यूरोप में गत महायुद्ध में कम्यूनिस्टों ने कुछ समय के अनन्तर ही अच्छी ख्याति कमाई, बल्कि कम्युनिस्टों ने सरकार की शक्ति का अच्छा प्रभाव यूरोप में फैलाया, उस प्रभाव में लगभग ६०,००,००० से ९०,००,००० निवासी तक सम्मिलित हैं, पश्चिमी यूरोप में दो कम्यूनिस्ट पार्टियों ने अच्छी उन्नति की थी, किसी प्रकार रूस ने इन सभी पार्टियों की रूपरेखा को एक सान्त्वना दी। सोवियट रूस और अमेरिका का मानसिक द्वंद्व एक अच्छी हद तक पहुँच चुका है, अब इटली के समक्ष यह प्रश्न उपस्थित है कि वह किसका होकर रहे, इटली के दूसरे चुनाव (Election) के आधार पर उसका निश्चय भी रखा जावेगा, जिसके आधार पर विश्वव्यापी युद्ध की भूमिका और भी सारगर्भित और स्पष्ट हो जावेगी, फिनलैंड सम्भवत: सैनिक शक्ति के लिए सोवियट रूस की ओर हस्ताक्षर करेगा, यह सोचा जाता है। किन्तु अब भी पोलैंड और रूमानियां जैसी सुदृढ़ शक्तियां अपना निश्चय अप्रकट किये हैं, ब्रिटेन के साथ तो इन दोनों देशों का संतोष गत महायुद्ध में मीठा नहीं रह सका, अमेरिका ने सैनिक शक्ति और आर्थिक मदद टर्की को दी है, इसलिए उस व्यवहार का सहारा उसे है ही। टर्की और ग्रीक की शक्ति साधारण नहीं। बहुत से राजनीतिज्ञों की निगाहें इन दोनों देशों के निश्चय की ओर लगी हैं, फिर भी यह तो निश्चय है कि तीसरे महा-युद्ध का श्रीगणेश इटली की ओर से भी होगा, क्योंकि इटली का प्रमुख स्थान इस समय की [illegible]

आजाद हिन्द फौज

एक सप्ताह से अधिक हुआ भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भारतीय पार्लियामेंट में आजाद हिन्द फौज के प्रति एक महत्त्वपूर्ण भाषण देते हुए कहा था कि पिछली सरकार ने दो वर्ष पूर्व यह निश्चय किया था कि आजाद हिन्द फौज के तीन भाग किये जायें, जिनमें पहले वर्ग के लोग तो अपनी अपनी जगहों में काम करते रहेंगे दूसरे वर्ग के लोग दूसरी जगहों में भेजे जायेंगे और तीसरी श्रेणी के लोग सरकार की ओर से नियुक्त न किये जायेंगे। वह अपनी ओर से राज्य में जो काम चाहें करें। पंडित नेहरू ने यह भी कहा कि आजाद हिन्द फौज और भारतीय सेना के बीच काफी लम्बे समय का अन्तर पड़ गया है, आजाद हिन्द फौज देश के बाहर ही कार्य करती रही है और उसे देशीय परिस्थितियों की उतनी जानकारी नहीं है जितनी आज की भारतीय सेना को। इस प्रकार भारतीय सेना और आजाद हिन्द फौज के सैनिकों के बीच एक प्रकार का मनोवैज्ञानिक अन्तर पड़ सकता है, जो देश की सैनिक शक्ति के लिए कदाचित् ही हितकर हो।

जनता में प्रधान मंत्री के दोनों विचारों का स्वागत तो हुआ ही साथ ही किन्तु दूसरी राय से जनता में कुछ मतभेद भी आया अर्थात् कुछ तो इस मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से सहमत हैं और कुछ नहीं। जनता का एक दल कहता है कि आजाद हिन्द फौज कांग्रेस के झंडे के नीचे ही देश की रक्षा के लिए बाहर लड़ी, भारतवर्ष के हित का ध्यान तो उसकी सेवाओं से ही स्पष्ट है, दूसरी ओर भारतीय सेना का भी ध्येय देश की रक्षा ही करना है, इस प्रकार दोनों के सिद्धान्तों में एक ही महत्त्व और अर्थ है, फिर इस प्रकार सोचना कि दोनों सेनाओं के बीच मनोवैज्ञानिक मतभेद हो सकता है, यह स्पष्टता समझ में नहीं आता लोगों का कहना है कि हमारी सरकार हिन्दू-मुस्लिम एकता चाहती है, आजाद हिन्द फौज में मुस्लिम सैनिक भी हैं, वे नेता जी सुभाषचन्द्र के कारण पहले तो भारत पर ही अपनी सेवाएं लगाना चाहते हैं, नहीं तो सम्भव है पाकिस्तान की सेना में सम्मिलित होकर सैनिक कार्य करें, यह बात हमारे सिद्धान्त को निर्बल साबित करेगी—दल-विभाजन की बात का जनता ने हृदय से स्वागत किया, उसकी समालोचना सरकारी घोषणा के सर्वथा अनुकूल ही है।

एक दल सरकार को सुझाव भी पेश करता है कि भारतीय सेना और आजाद हिन्द फौज दोनों अलग अलग रखी जायँ दोनों को एक ही सेना के नाम से न घोषित किया जाय, इस प्रकार उनका परस्पर मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण भी नहीं उलझ सकता, और यह प्रश्न आसानी से हल हो सकता है कि भारतीय सेना और आजाद हिन्द फौज में किसी प्रकार का मनोवैज्ञानिक मतभेद भी उपस्थित हो सकता है, इस सुझाव के प्रति लोगों की यह भी धारणा है कि आजाद हिन्द फौज को भारतीय सेना के समकक्ष ही घोषित क्यों नहीं कर दिया जाता ?

पृथ्वी की कहानी

पृथ्वी कैसे बनी, पृथ्वी पर पहले-पहल कौन आया; नद-नदियाँ, पहाड़, जंगल, रेगिस्तान, बर्फीले देश, जानवर, पक्षी और आदमी कैसे बने; धर्म और जातियां, राजा और कानून कैसे बने; पुरानी यादगारें, आज की दुनिया, पृथ्वी का अन्त आदि बातों का वर्णन इस पुस्तक में बड़े अच्छे ढंग से किया गया है। मूल्य ॥=)॥

मैनेजर इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग

रियासती राजनीति औ
टिहरी गढ़वाल

अखिल भारत देशी राज्य लो
षद् की स्थायी समिति द्वारा
रियासतों के भविष्य के संबन्
टिहरी राज्य को युक्तप्रान्त के
जिले से जोड़े जाने का फैसला
भ्रमात्मक प्रतीत होता है, जहा
रियासतों के निकटवर्ती प्रान्तों में
जाने की योजना का सम्बन्ध है,
कोई सन्देह नहीं कि रियासती जन
आसानी से राजाओं की तानाशाही
से मुक्ति पाने के साथ-साथ देश के
भागों के साथ उन्नति करने का
प्राप्त होगा। १५ अगस्त के बाद
रियासतों में जनता के बजाय रा
को आजादी मिलने के फलस्वरूप रि
जनता में फैला हुआ असन्तोष सामन्त
के विरुद्ध आन्दोलन के रूप में फूट पड़ा
इस प्रकार कई रियासतों में स्व
उत्तरदायी शासन की घोषणा हो
थी और अन्तःकालीन सरकारें,
प्रजामंडलों का भी सहयोग है,
गई थीं।

१६ दिसम्बर को राज्य के एक
सकलाना में और १५ जनवरी तक रा
राजधानी टिहरी समेत अधिकांश
पर प्रजामंडल की आजाद सरकार
अधिकार हो गया था। इस बीच में
और व्यवस्था कायम करने के
राज्य की शासन प्रबन्ध का भार
सरकार के रियासती विभाग ने
प्रान्तीय सरकार को सौंप दि
स्थिति १५ फरवरी तक र
जब कि रियासती विभाग ने
के इस सुझाव को कि राज्य के
विधान का फैसला करने के लिए
जनता को समय दिया जाये और
समय तक शासन-प्रबन्ध चलाने के
एक अन्तःकालीन व्यवस्था काय
जाये। इस समय राज्य का
प्रबन्ध उक्त अन्तःकालीन सरकार
रही है, जिसमें ४ प्रजामंडल द्वारा
मंत्री हैं और प्रजामंडल की
एक मंत्री रियासती विभाग की
नियुक्त किया गया है। दूसरी रि
में जो अन्तःकालीन सरकारें काय
गई हैं, उनमें राजाओं का थोड़ा
हाथ अवश्य है, परन्तु सबसे भिन्न
की मौजूदा व्यवस्था में राजा
स्थान नहीं है। रियासती विभाग
के लिए एक विधान सभा
सुझाव को भी मान लिया
सर्वोच्च सत्ता निहित होगी
राज्य की भावी व्यवस्था के
अन्तिम फैसला देंगे।

जहां तक राज्य को युक्त
गढ़वाल जिले में मिलाने से बढ़कर
स्पद और कुछ हो ही नहीं सकता
एक तहसील के रूप में ४५००
क्षेत्रफल का टिहरी राज्य गढ़वा
में रहेगी। स्मरण रहे कि टिह
और गढ़वाल जिले की आबा
क्षेत्रफल में थोड़ा ही अंतर है, औ
की आय तो गढ़वाल से कई गु
है। यह अवश्य है, कि अंग्रेजों
पहले दोनों की एक ही इकाई
शासन प्रबन्ध के अतिरिक्त दूसरी
में समानता है, पर आज तो
आर्थिक हितों की ओर ही ध्यान
दूसरे, एक ओर तो बिलासपुर
रियासतों को, जो अपने कुशा
बदनाम हैं कतई नहीं छेड़ा
दूसरी ओर टिहरी की जनता
भाग्य का फैसला स्वयं करने
करना न्यायसंगत नहीं कहा

—सुन्दरलाल

संसार की राजनीति और इटली

क्या आगामी नये चुनाव में कम्यूनिस्ट पार्टी विजयी होगी ?

लेखक, प्रोफेसर आशाराम एम० ए०
(राजनीति विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय)

गत महायुद्ध के बाद योरोपियन राष्ट्रों की स्थिति बड़ी डांवाडोल है। प्रत्येक राष्ट्र प्रगति की ओर बढ़ रहा है और विचित्र परिवर्तन हो रहे हैं। इटली भी प्रगति के पथ पर है। वहां भी नवीन चुनाव होनेवाला है। वामपक्ष का जोर बढ़ रहा है विद्वान लेखक ने इटली की आज की राजनीति का वर्णन करते हुए वहां के नये परिवर्तन पर प्रकाश डाला है। लेख विचारपूर्ण और पठनीय है।

इटली के वर्तमान कम्यूनिस्ट नेता टोगलियाटी

वर्ष और पूर्वीय एशिया आदि) के प्रमुख मार्ग अर्थात् स्वेज की नहर और लाल सागर पर अधिकार स्थापित कर ब्रिटिश और अमरीकी शक्ति को इन देशों से हटा सकता है।

इटली के परिवर्तनों का प्रभाव सारे योरप पर पड़ेगा, इसमें भी कोई सन्देह नहीं। यदि यहां पर सोस्लिस्ट-कम्यूनिस्ट सरकार स्थापित होती है तो फ्रांस के कम्यूनिस्टों की हिम्मत बढ़ेगी। आज भी फ्रांस की सबसे बड़ी पार्टी कम्यूनिस्ट पार्टी है। किन्तु यदि इटली में ब्रिटेन और अमरीका विरोधी शक्तियों की विजय होती है तब फ्रांस की समाजवादी शक्तियों का साहस बढ़ेगा और वे अपने देश में नये चुनाओं की मांग कर सकेंगे तथा ब्रिटेन और अमरीका के साथी दलों को परास्त कर सकेंगे। इधर आस्ट्रिया भी समाजवादी देशों से घिर जाएगा और स्विटजरलैंड और आस्ट्रिया दोनों को समाजवादी और सोवियट से सहयोग की नीति पर चलना होगा। यदि इटली के प्रभाव के कारण फ्रांस में भी कम्यूनिस्ट सरकार आ गई तब बेल्जियम, हालेंड और पश्चिमी जर्मनी आदि देश सोवियट के साथी देशों से फिर जाएँगे। इस प्रकार समस्त योरप के समाजवादी और कम्यूनिस्ट तथा सोवियट-सहकारी होने की संभावना है। और यह सम्भावना ब्रिटेन और अमरीका तथा योरप के कम्यूनिस्ट विरोधी दलों को अत्यन्त अप्रिय हैं। अतएव सोवियट और कम्यूनिस्ट विरोधी योरप की सारी शक्तियां इटली के उद्धार के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा रही हैं। इसी कारण इटली केवल योरप नहीं वरन् संसार भर की राजनीति का केन्द्र हो गया है और वहां के चुनाव का दिन, १८ अप्रैल १९४८ संसार के लिए एक ऐतिहासिक दिन बनगया है।

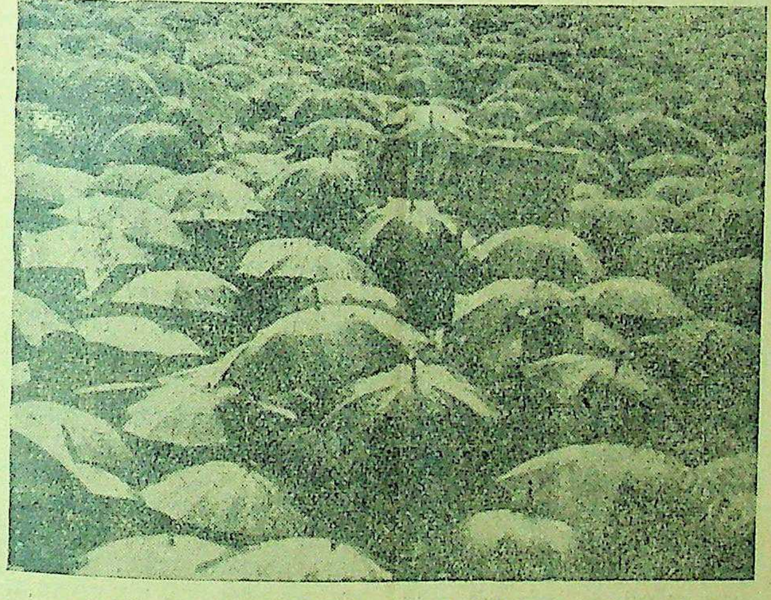

इटली में कम्यूनिस्ट पार्टी के नेताओं तथा कार्यकर्ताओं का सार्वजनिक प्रदर्शन

इटली में क्या होगा यह कहना कठिन है; परन्तु फिर भी आधुनिक इतिहास और विशेष कर युद्धकालीन और उसके बाद की घटनाओं पर दृष्टिपात करने से कदाचित् इटली की राजनीतिक अवस्था का पता लग जाएगा।

सन १९१४-१८ की लड़ाई में इटली ने आखिरी वक्त भाग लिया। वह मित्र राष्ट्रों से मिलकर जीत की लूट में शामिल होना चाहता था; परन्तु इटली के सम्राट् अपनी कमजोरी को न छुपा सके और मुंह की खानी पड़ी। युद्ध के बाद की क्रान्तियों का इटली पर भी प्रभाव पड़ा, परन्तु जनआन्दोलन की दुर्बलता और नेताओं के विश्वासघात के कारण समाजवादी शासन के स्थान में समाजशत्रु फासिस्ट शासन की स्थापना हुई और इटली का सर्वेसर्वा मुसोलिनी योरपीय प्रतिक्रिया का प्रथम नेता बन गया। सन् १९२९ के आर्थिक संकट से त्राण पाने के लिए जापान ने मञ्चूरिया पर आक्रमण किया तो इटली ने भी अबीसीनिया को पराधीन किया। इसी बीच जर्मनी में हिटलर का शासन स्थापित हो चुका था। अतएव अब हिटलर और मुसोलिनी दोनों ने मिलकर स्पेन की प्रजातन्त्र सरकार को उलटकर वहां पर अपने एजेन्ट जनरल फ्रांको को शासनारूढ़ किया। इसी बीच आस्ट्रिया और चैकोस्लोवाकिया के स्वतन्त्रता के अपहरण के बाद मित्रराष्ट्रों और हिटलर जर्मनी के बीच युद्ध आरम्भ हो गया। मुसोलिनी के लिए रास्ता साफ था। वह हिटलर का साथी था; परन्तु कुछ काल तक मित्रराष्ट्रों को धोका देने और युद्ध का रुख पहिचानने के लिए वह तटस्थ रहा। अन्त में हिटलर के साथ हो गया।

इस युद्ध में सोवियट के प्रवेश करने के बाद हिटलर और उसके मित्रों के भाग्य का सितारा मन्द हो गया। पूर्वीय मोर्चे की करारी पराजय के बाद मुसोलिनी की सेनाएं तितर-बितर [illegible] गईं और मुसोलिनी का सिंहासन डगमगा गया। वहां पर एक छोटी सी घरेलू क्रान्ति भी हुई और मुसोलिनी बन्दी बना लिया गया; परन्तु उसके मित्र हिटलर ने मुसोलिनी को मुक्त कर इटली प[illegible]न-शासन स्थापित कर दिया। यह शासन भी बहुत दिन तक न चल सका। इटली के देशभक्तों ने छापेमार युद्ध शुरू कर दिया। इस जनता के युद्ध के सामने जर्मनी को झुकना पड़ा। बाद में मित्रराष्ट्रों की सेना की सहायता से इटली स्वतन्त्र हुआ।

परन्तु स्वतन्त्र केवल कहने मात्र को! क्योंकि, प्रगति की शक्तियों के भय से इटली में ब्रिटेन और अमरीका ने अपना डेरा डाल दिया और उपरोक्त देश कठपुतली नेताओं की खोज में लग गए तथा प्रगति की शक्तियों को कुचलने लगे। रूस के कई बार कहने पर इटली की स्वतन्त्रता को स्वीकार किया गया और मार्शल बदोगलियो जैसे प्रतिक्रियावादी के नेतृत्व में एक शासन की स्थापना हुई। जनता धीरे-धीरे साहस और बल प्राप्त करने लगी और अन्त में उसने मुसोलिनी के पोषक सम्राट् को हटाकर लोकतन्त्र की स्थापना की तथा नए चुनावों में समाजवादी दलों को बहुमत दिया।

इन चुनावों के बाद वामपक्षी दलों का शासन बना जिसमें समाजवादी और कम्यूनिस्ट दल भी शामिल थे। इसी बीच ट्रूमन महोदय ने अपनी कम्यूनिस्ट विरोधी नीति की घोषणा की और उसके अनुसार साम, दाम, दण्ड, भेद—सारी कूटनीति के सहारे उन्होंने संसार की सरकारों से वामपक्षी दलों को हटाना और उदार, अनुदार तथा अमरीकी पिट्ठू पूंजीवादी दलों को सिंहासनारूढ़ करना शुरू किया। इस नीति के फलस्वरूप पश्चिमी योरपीय सरकारों से भी कम्यूनिस्ट और उनके साथी दल सरकारों से निकाल दिए गए। अतएव मई सन् १९४७ में कम्यूनिस्ट और सोशलिस्टों को इटली की सरकार से भी निकलना पड़ा।

परन्तु उपरोक्त घटना के बाद जनता और उसके मार्ग-प्रदर्शक वामपक्ष (समाजवादी और कम्यूनिस्टों) की शक्ति बढ़ी है कम नहीं हुई। जनशक्ति के विरोधी हैं पूंजीपति, कैथोलिक पादरी और उनका नेता पोप, प्रतिक्रिया की शक्तियों के केन्द्र हैं प्रजातन्त्र ईसाई दल और भगोड़े समाजवादी। इधर जनता के साथी हैं वामपक्षी दल जो कि सत्तर लाख संगठित मजदूर, दसियों लाख किसान

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

कांग्रेस और सोशलिस्ट

सच पूछा जाये तो यह युग शक्ति हथियाने का ही है

लेखक, पंडित मोहनलाल नेहरू

समाजवादी कांग्रेस से अलग हो रहे हैं। कांग्रेस की वर्तमान नीति से वह सहमत नहीं हैं, इसलिये अब वह विरोधी दल की दृष्टि से राजनीतिक क्षेत्र में कार्य करेंगे। वयोवृद्ध लोकसेवी पंडित मोहनलाल नेहरू ने इस लेख में समाजवादियों के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए वर्तमान स्थिति को स्पष्ट किया है। लेख सामयिक और पठनीय है।

अभी तक समाजवादी पार्टी में कांग्रेस और सोशलिस्ट सम्मिलित थे। ताकत हाथ में आने पर दोनों के रास्ते अलग अलग हो गये। यह नहीं कि उनमें कम से कम लीडरों में किसी देश सेवा का भाव जाता रहा हो वरन ऐसा मालूम होता है कि भाव यह पैदा हो गया है कि ताकत किसके हाथ में रहे और कौन उसे भोगे। गत आठ महीने में कांग्रेस यही यत्न करती रही कि देश की दौलत बढ़ाये। इसके लिए यह जरूरी है कि कारखाने में काम पूरी तौर पर और माल पैदा हो कि जो विदेशों के हाथ बेचा जा सके। कम्यूनिस्टों और सोशलिस्टों ने अलग अलग पार्टियां बनाकर अपनी अपनी इच्छा पूरी करने के लिए इसका विरोध किया। कांग्रेस सरकार ने ज्यों ज्यों मजदूरों की हालत सुधारने के यत्न किये त्यों त्यों इन लोगों ने नई शिकायतें निकालीं और नई मांग पेश की। हर मांग पर दोनों फरीकें अड़ी रहीं और नतीजा जो हो सका था वही हुआ कि माल की पैदावार कम होती गई और दाम बढ़ते गए। जहां मजदूरों की मांगें थीं वहीं सरकारी नौकर भी उभारे गए कि ज्यादा वेतन की मांग करो लगे और न मिलने पर हड़तालें बोल दें। इन सब हड़तालों की चोट साधारण जनता ही पर पड़ती है कि किसी और पर? माल मिलना कम होता गया और मूल्य बढ़ता गया। हमारे सोशलिस्ट लीडर समझदार और देशभक्त लोग हैं मगर दुःख यह है कि उन्हें भी कम्यूनिस्टों की तरह साधारण जनता की कोई फिक्र नहीं। मजदूर को वेतन ज्यादा दो और और ज्यादा दो। अनावश्यक सरकारी नौकरों को मुस्तकिल जगह दो हालांकि वे जब रखे गये थे तब ही उनसे कह दिया गया था कि थोड़े दिन का काम है। रेल का किराया मत बढ़ाओ। इस बात का जवाब नहीं कि इन सब बातों के या ऐसी ही दूसरी मांगों के लिए पैसा कहां से आवेगा? मैंने यही प्रश्न एक कम्यूनिस्ट लीडर से किया था। वह बोले-'टैक्स लगाना होगा। मानो इन साहबों के लिए साधारण जनता जिसे न कपड़ा मिले न पूरा खाना इसीलिए है कि उसे सरकारी नौकर या मजदूर पेशा लोग नोच नोचकर खावें। आजकल रवैया यह है कि मजदूर पेशा काम तो कम से कम करें और खाना कपड़ा ज्यादा से ज्यादा पावें। साधारण जनता उनके वास्ते चूसी जावे। किसान मजदूर की दोहाई दी जाती है। कितने किसान हैं जो अपने मजदूरों को पूरा वेतन देते हों। अब ऐसी एक पार्टी की आवश्यकता है जो उन मजदूरों को भड़कावे और पैदावार में और कमी करावे। वह पार्टी भी उसी तरह चमक उठेगी जैसे कम्यूनिस्ट और सोशलिस्ट हैं, वे कहते हैं। कांग्रेस सरकार फेल हो गई। कांग्रेस सरकार को अभी पूरी कामयाबी नहीं मिली है इसमें शक नहीं मगर इस थोड़े से जमाने में इससे ज्यादा सफलता मिल भी नहीं सकती थी जब हर तरफ से उसे विरोध मिला और हर तरफ उपद्रव उठ खड़े हुये।

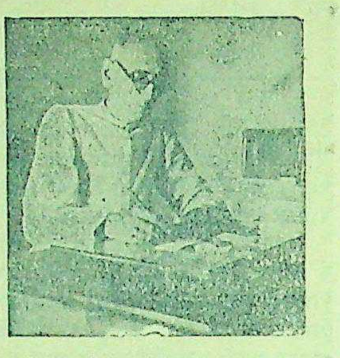

इस लेख के लेखक पंडित मोहनलाल नेहरू

कहते हैं महात्माजी को वह बचा न सको। पहले तो महात्माजी ने ही अपने ऊपर पहरा रखने का विरोध किया दूसरे जब समय आ जाता है तो कोई बचा नहीं सकता। महात्माजी इस बात पर पूरा विश्वास रखते थे कहते हैं मजदूरों को वेतन कम मिलते हैं। कांग्रेस गवर्नमेंट ने उनसे इतनी बढ़ती करा दी कि साधारण जनता परेशान हो गई मगर मांग अब भी बढ़ती जा रही है किसी को इतमीनान नहीं। वही मसल है मरज बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की। हालत यह है कि जो आज भूखा मरता किसी सरकारी पद पर हो जाता है कल वेतन बढ़ाने की दरखास्त देता है और परसों हड़ताल की धमकी। उसके सहायक किसी न किसी पार्टी में मिल जाते हैं। यह बातें देश को किधर ले जा रही हैं? क्या हमारी आजादी में यह बाधा नहीं डाल रही हैं?

कम्यूनिस्ट रूस की दोहाई देते हैं। वहां न तो कोई हड़ताल ही करा सकता है न मजदूरों को काम छुड़वा सकता है। क्या ऐसी ही डिकटेटरशिप यहां भी कायम करानी है, अगर है तो जनता का राज कहां रहेगा और मजदूर और किसानों की दोहाई कौन देगा?

जो आशा आज सोशलिस्ट भड़काकर हुकूमत हाथ में लेना चाहते हैं उसे बुझावेंगे कैसे जब तक वही रोकथाम दूसरी पार्टियों के वास्ते नहीं करेंगे जिसका इलजाम वह कांग्रेस गवर्नमेंट पर लगा रहे हैं।

जैसे कुछ लोग अपनी स्वार्थसिद्धि के वास्ते कांग्रेस में घुसे हुए हैं वैसे ही उनमें क्या न घुसेंगे? इस बात का क्या प्रबन्ध होगा कि उसमें सब घुसनेवाले साधु ही होंगे या अब जो हैं वे साधु हैं जिन्हें स्वार्थ छू भी नहीं गया।

कहते हैं कांग्रेसवालों में से कुछ ही चोर बाजार में पैसा पैदा कर रहे हैं या रिश्वतें ले रहे हैं। सम्भव है ठीक हो। इसकी तहकीकात होनी चाहिए और ऐसे लोगों को पकड़वाना चाहिए। क्यों वे ही कल सोशलिस्ट या कम्यूनिस्ट नहीं हो जावेंगे? या उनमें कुछ आज सोशलिस्ट नहीं हो गये।

समाचार-पत्र उद्योग जांच समिति की प्रश्नावली

पत्रकारों की स्थिति के सुधार के लिये सरकार की कार्यवाही

संयुक्तप्रांतीय सरकार ने प्रांत के समा पत्र उद्योग, व्यवसाय, पत्रकारों तथा कार्यकर्ताओं की स्थिति के सुधार के एक जांच समिति स्थापित की है। सा पिछले दिनों एक प्रश्नावली तैयार की जो समाचार पत्रव्यवसाय से संबंध र वाले व्यक्तियों के पास उत्तर के लिये गई है। इस व्यवसाय से संबंध र वाले व्यक्तियों को प्रश्नावली का उत्तर दे पत्रकारों की स्थिति के सुधारने के सरकार के कार्य में सहायक चाहिये।

१—पत्र का नाम—(क) दैनिक, (ख) अथवा अवधि के अनुसार प्रकाशित।

२—काम में लगे हुए व्यक्तियों की कुल संख्या।

(क) सम्पादकीय विभाग।

(ख) प्रबन्ध विभाग।

(१) स्थायी कर्मचारियों के रूप में।

(२) अस्थायी कर्मचारियों के रूप में।

(३) ठेके पर काम करनेवालों के रूप में।

(४) आंकित काल में काम करनेवालों के रूप में।

३—मालिक का नाम। यदि लिमिटेड संस्था या ट्रस्ट है तो मैनेजिंग डाइरेक्टर या मैनेजिंग ट्रस्टी का नाम।

४—सम्पादकीय तथा प्रबन्ध विभागों के कर्मचारियों में सम्पादक, सहायक सम्पादक, उप-सम्पादक, उप-सहायक सम्पादक, समाचार सम्पादक, प्रूफ रीडर, कातिब तथा सम्पादकीय विभागों से सम्बन्धित संगसाज, स्टाफ रिपोर्टर, मोफस्सिल संवाददाता, व्यंग चित्र निर्माता, प्रेस तथा समाचार, फोटोग्राफर, जनरल मैनेजर, विज्ञापन मैनेजर, सरकुलेशन मैनेजर, वर्क्स मैनेजर, मुख्य एकाउन्टेंट, कैशियर, टाइपिस्ट एवं अन्य लिखा-पढ़ी करनेवाले कर्मचारी तथा निम्न श्रेणी के नौकर होते हैं। आप किन मुख्य-मुख्य श्रेणियों में इनका वर्गीकरण करेंगे?

५—प्रश्न (४) में उल्लिखित विभिन्न वर्ग के कर्मचारियों के वेतन अथवा पारिश्रमिक निर्धारण के हेतु आपकी राय में परीक्षा की कसौटी तथा स्तर का कौन-सा आधार उचित होगा? विशेष रूप से यह बतलाइये कि क्लर्कों तथा अन्य सहायकों की कम से कम क्या तनख्वाह होनी चाहिए?

६—क्या आपके समाचार-पत्र कार्यालय में नियुक्त, जिसमें तरक्की, वृद्धि, जुर्माना, मुअत्तली, मौकूफी, बरखास्तगी आदि शामिल हैं, के विषय में कोई स्थायी-नियम लागू हैं? यदि हैं तो उनकी एक प्रति भेजने की कृपा कीजिये?

७—सम्पादकीय एवं प्रबन्धक कर्मचारियों के लिए आदर्श नियमावली के विषय में आप कौन से सुझाव देना चाहते हैं?

८—क्या आप यह आवश्यक समझते हैं कि सम्पादकीय कर्मचारियों के एक प्रतिनिधि को बोर्ड आफ डाइरेक्टर्स में शामिल किया जाय यदि वह कम्पनी लिमिटेड हो, अथवा उनके एक प्रतिनिधि को प्रबन्धक समिति में रक्खा जाय, यदि उद्योग निजी तौर पर चलाया गया हो, अथवा साझे का उद्योग हो, या किसी ट्रस्टी का उद्योग हो।

९—विभिन्न प्रकार के पत्रों के कर्मचारियों को आधारभूत वेतन किन सिद्धान्तों पर निर्धारित किया जा सकता है? कृपया अपने सुझाव दीजिये।

१०—यदि अपना कार्य करते हुए कोई पत्रकार, मारा जाय अथवा स्थायी रूप से पंगु हो जाय, तो उस दशा में मालिक की क्या जिम्मेदारी होनी चाहिए?

११—काम करनेवाले पत्रकारों के लिए कम से कम शिक्षा सम्बन्धी तथा अन्य योग्यताओं के विषय में आपके क्या सुझाव हैं?

१२—क्या आप अपने पत्र में काम सीखनेवालों को वैतनिक अथवा तनिक ट्रेनिंग देने के हेतु लेते हैं? ऐसा है तो आप एक बार में और कितने समय के लिए लेते हैं? कार्य सीखनेवाले वैतनिक हैं तो करके बतलाइये कि उनको क्या अथवा पारिश्रमिक मिलता है?

१३—एक ट्रेंड पत्रकार के कितना परीक्षणकाल होना चाहिए?

१४—समाचार पत्र का उस क्या उत्तरदायित्व होना चाहि उसके कर्मचारियों में से कोई कर्त्तव्य करने में किसी दीवानी या फौजदारी के मुकदमे में फँस जाता है?

१५—मालिकों और कर्मचारि के झगड़ों को तय करने के लिए आप राय में सर्वोत्तम साधन क्या हो सक है?

१६—क्या आपकी राय में पत्रकारों के लिए कोई निर्धारण करना उचित है? तो आपकी राय में उसका होना चाहिए?

१७—देशी भाषा के पत्रों के ऊँचा करने के लिए आप क्या पेश करना चाहते हैं?

१८—क्या आप पत्रकारों अन्य कर्मचारियों की नौकरी की के विषय में कोई अन्य सुझाव चाहते हैं?

काम के घण्टे, छुट्टियाँ इत्यादि

१९—आपके समाचार प दैनिक एवं साप्ताहिक कार्य के कितने हैं?

२०—आपके पत्र में प्रत्येक (शिफ्ट) का कार्यकाल और पारीवालों के लिए विश्राम काल है?

२१—आपके समाचार पत्र सिद्धान्त के अनुसार निश्चित अधिक कार्य करने के लिए अथवा दरों से पारिश्रमिक दि है? यदि एक से अधिक दरें हों, तो इसके कारण बतलाइये

२२—क्या आपके समाचार के सब कर्मचारियों को हफ्ते छुट्टी दी जाती है? यदि सबको तो इसके कारण बतलाने की कीजिये?

२३—साप्ताहिक छुट्टी के आपके पत्र कार्यालय में अ कौन-सी छुट्टियां दी जाती हैं? कितनी सवेतन दी जाती हैं? और प्रकार की छुट्टी को स्वीकार लिए क्या क्या शर्तें हैं? कृप विवरण दीजिये।

२४—कर्मचारियों को किस छुट्टी और सामान्य छुट्टियां और मिलनी चाहिए? कितने दिनों किन शर्तों के साथ?

शेष पृष्ठ १७ प

समाजवादियों का संयुक्त मोर्चा

नासिक में होनेवाले समाजवादी सम्मेलन के कुछ संस्मरण

लेखक, श्री भगवानप्रसाद त्रिपाठी, पत्रकार

अखिल भारतीय समाजवादी दल के कार्यकर्ता तथा नेता कांग्रेस से अलग हो रहे हैं, क्यों? क्यों कि पिछले दिनों नासिक में समाजवादियों का जो सम्मेलन हुआ था, उसमें ऐसा ही निर्णय हुआ था। इस लेख में लेखक ने नासिक-सम्मेलन की कुछ विशेषतायें बतलाई है और आँखोंदेखा वर्णन किया है लेख सुदर, सामयिक और जानकारी से पूर्ण है।

के सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता आचार्य नरेन्द्रदेव।

नासिक का रेलवे स्टेशन है। जो गाड़ी धकधक करती हुई हुई है, वह बम्बई से आई है। तथा पूना की ओर से आने- निधि आये हैं। तन पर खादी अधरों पर मृदु मुस्कान, में मस्त झूमते हुए श्री वर्धन हैं। उनसे कुछ थोड़ी शोक मेहता भी हैं। स्टेशन के कुछ अजीब मस्ती में हैं। उन्हें से स्वराज्य मिल गया है। टिकट तक कोई पूछनेवाला जितने प्रतिनिधि दिखाई पड़ कुछ अजीब चहलकदमी, नया संजीदगी भरी हुई है। रहा है, खुले दिल से, हँसते मिलाते हुए। स्टेशन की और ही रंग दिखला रही दिनों पूर्व जो स्टेशन सा दीखता था, आज अपनी ढिलाई और लोग कुछ विचित्र नशे में आ रहा है। उसे मानो चीज मिल गई है। प्लेट- देखने ही योग्य है।

थोड़ी ही देर बाद उत्तर से से आचार्य नरेन्द्रदेव, आ रहे हैं। जयप्रकाश रहे हैं। स्टेशन पर के अतिरिक्त जनता भी में अपने प्रिय नेताओं के हुई है। इन्कलाब जिन्दा जोरों से लग रहे हैं। प्रति- अपने हाथों में फूल-मालाएँ हैं। प्रमुख नेता फूल- लाद दिये जाते हैं। दोनों हाथों से मालाओं को हिस्ता-आहिस्ता जन-समूह के रहे हैं। आज जयप्रकाश चेहरे की ओर देखिए और की कोशिश कीजिए। आज के चेहरे पर जो गम्भीरता उतनी शायद ही कभी रही

बीच हमारे सेनानी

नासिक है जहां पर अन्दर समाजवादी पार्टी ने थी। आज उसके विशाल हमारे स्वतन्त्रता-संग्राम के अमर देश की परिस्थिति पर गम्भीर रहे हैं। सम्मेलन का पण्डाल हुआ है। प्रतिनिधिगणों में अदम्य उत्साह झलक रहा है; है कि उक्त सम्मेलन में हमारे उपस्थित हैं, जिन्होंने कांग्रेस होने का 'दिली फैसला' कर लिया चेहरे देखने और उनकी भाव- पढ़ने लायक हैं। उपस्थित में सर्वश्री आचार्य नरेन्द्रदेव, नारायण, डा० लोहिया, अरुणा, अच्युत, एस० एम० जोशी, पुरुषोत्तम त्रिविक्रमदास, रामानन्द मिश्र आदि मंच पर सुशोभित हैं। उक्त सम्मेलन में कुछ ऐसे समाजवादी भी हैं जो उपस्थित न हो सके हैं। या तो किसी मजबूरी के कारण या कांग्रेस छोड़ने की नीति के मतभेद के कारण। पर इनकी संख्या नगण्य ही समझिए। आज तक समाजवादी पार्टी ने देश की राजनीति में क्या किया, इस पर कुछ नहीं कहना है। बापू की अनुपस्थिति ने उनके कर्मियों को सेवाग्राम में जिस प्रकार एकत्र होने के लिए मजबूर किया, उसी प्रकार समाजवादियों को भी नासिक में अपने फैसले को घोषित करने के लिए एकत्र होना पड़ा। उधर सेवाग्राम और इधर नासिक। भारतीय राजनैतिक संघर्षों के बीच आज देश की जनता को यह फैसला करना है कि हम किस ओर बढ़ें!

नासिक आने की आवश्यकता क्यों?

आज कांग्रेस की शक्ति या यों कहिए कि कांग्रेस के प्राण अपनी प्रिय कांग्रेस से अलग होने के लिए व्याकुल हो रहे हैं। इसका कारण यही है कि नव विधान के अनुसार वे या तो अपनी पार्टी को कांग्रेस में विलीन कर दें या कांग्रेस से पृथक् हो जायँ। आज तक जिस पार्टी के संगठन के लिए 'जी-तोड़' कोशिश होती रही, उसे पल भर में कैसे तोड़ा जा सकता है? आज की कांग्रेस में प्रतिक्रियावादियों का बोलबाला हो रहा है। बापू की अनुपस्थिति ने कर्मठ कांग्रेस-कर्मियों के मस्तिष्क को तब्दील कर दिया है। आज की कांग्रेस को 'शुद्धिकरण' की आवश्यकता है। हम कांग्रेस से अलग नहीं होने जा रहे हैं बल्कि कांग्रेस हमसे अलग हो रही है। समाजवादियों को आज नासिक के मैदान में आकर यह तय करना है कि उनका अगला कदम किस ओर होना चाहिए। इसी बात को हल करने के लिए तथा जनता को सही रूप में ले चलने के लिए आज देश भर के कर्मशील समाजवादी नासिक के विशाल अंचल में नई योजना को लेकर कार्यान्वित करने जा रहे हैं।

नासिक-सम्मेलन के मुख्य प्रस्ताव

इस अधिवेशन में यों तो कई प्रमुख प्रश्नों के ऊपर गम्भीर रूप से विचार-विमर्श किया गया, लेकिन कांग्रेस से पृथक् होने का प्रस्ताव ही मुख्य था। पृथक् होने के पश्चात् पार्टी का अगला कदम क्या होगा, इस पर विचार करना भी एक खास सवाल रहा। १—समाजवादी पार्टी अपने को कांग्रेस से पृथक् कर दे और पूर्ण राजनैतिक रूप में विरोधी पार्टी का स्वरूप धारण कर कार्य करे। २—हैदराबाद की गम्भीर परिस्थिति को देखते हुए शीघ्र ही कड़ा कदम उठाया जाय। ३—सर्वोदय समाज द्वारा निर्धारित कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए हमको लग जाना चाहिए। ४—साम्प्रदायिकता का शीघ्रता से नाश किया जाय, क्योंकि सम्प्रदायवादी सही अर्थों में 'रामराज्य' स्थापित न करने देंगे। ५—आगामी मोर्चे के लिए जनता को जागरूक किया जाय। किसान-मजदूर एवं विद्यार्थी संघटन की पृष्ठभूमि पर अपनी आगामी योजना-शैलियों को बनाया जाय। ६—देश के अन्तर्गत समाजवादी सरकार की स्थापना कर किसान राज्य स्थापित करना अत्यन्त आवश्यक है। उक्त सम्मेलन के ये खास खास प्रस्ताव हैं जिन पर देश को चलना है।

प्रसिद्ध समाजवादी महिला श्रीमती अरुणा-आसफअली।

जनता के हृदय में समाजवाद बोलता है

नासिक सम्मेलन के निर्णय को सुनकर या देखकर यह कहा जा सकता है कि कांग्रेस की शक्ति अब दो भागों में विभक्त हो गई। समाजवादी कांग्रेस से पृथक् जा रहे हैं, इसलिए जनता की नजरों से गिर जायँगे, ऐसा कुछ लोग समझ बैठे हैं। कुछ लोग यह भी कहते सुने गये हैं कि जब तक ये समाजवादी कांग्रेस की आड़ में थे, तब तक जनता इनको मानती थी। ये सब फिजूल की बकवासें हैं। आज जो स्वतन्त्रता हमें प्राप्त हुई है, उसे हासिल करने में सबसे अधिक और बड़ा पार्ट समाजवादियों ने अदा किया है, इसे सभी विवेकशीलों का हृदय मानता है। समाजवादियों की कुर्बानी, त्याग एवं बलिदान का लोहा बापू तक मानते थे। आज वे अलग जा रहे हैं, किसी मतलब से जा रहे हैं, किसी ध्येय को लेकर जा रहे हैं। अरुणा ने अपने भाषण के बीच कहा है कि "समाजवादी पंडित नेहरू की सरकार से लड़ने नहीं जा रहे हैं बल्कि उसे दृढ़ करने जा रहे हैं, बापू का अधूरा काम पूरा करना ही उनका काम होगा।" अब तक के इतिहास से यह पता चलता है कि समाजवादियों के प्रति जनता के हृदय में काफी उत्तम स्थान है। हमारा तो यह व्यक्तिगत विचार है कि अगर इस मौके पर बापू होते तो कभी भी उन्हें बाहर नहीं जाने देते। अपनी कार्यशैली के कारण समाजवादी जड़ जनता के अन्तस्तल तक पहुँच चुकी है जिसे आसानी से नहीं उखाड़ा जा सकता। अब हम यहां सम्मेलन में उपस्थित नेताओं के कुछ मार्मिक विचारों को प्रस्तुत करेंगे।

यों तो पार्टी की नीति से सभी परिचित थे, फिर भी उनकी आंखें अपने नेता श्री जयप्रकाश की ओर लगी हुई थीं। इसलिए हम संक्षेप में कुछ ही नेताओं के विचारों को सम्मुख रख सकेंगे।

श्री पुरुषोत्तम त्रिविक्रमदास

श्री त्रिविक्रमदास बंबई के सुप्रसिद्ध समाजवादी हैं, जो उक्त सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष थे। उन्होंने अपने स्वागत भाषण में आये हुए प्रतिनिधियों को धन्यवाद दिया तथा पार्टी के भावी कार्यक्रम के बारे में गम्भीर चेतावनी दी। कांग्रेस में अब तक समाजवादी पार्टी ने जो कुछ भी किया है, उसका संक्षेप में वर्णन किया। उन्होंने यह कहा कि हम अपने को निर्बल न समझें। हमारी ताकत को कांग्रेस ही नहीं, बल्कि दुनिया भी जानती है। हमारे पांव इतने कमजोर नहीं, जो रास्ते में लड़खड़ायें।

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

प्रेमी से

लेखक, श्री श्रीपालसिंह क्षेम एम० ए०

ओ प्राण अभागे रोता क्यों?
झरना यदि जीवन का सच है, खिलना क्यों उनका सत्य नहीं।
बिछुड़न यदि जीवन का सच है, मिलना क्यों जीवन-सत्य नहीं?
जीवन अविराम बहा करता चिर सुख-दुख के युग कूलों से।
मिलने का सुख-आभार भुला, आंसू के हार पिरोता क्यों?
किसमें न हृदय का प्यार भरे किसकी न रचे रश्मिल भूषा,
दोनों नभ की दो आंखें हैं, दुखिया सन्ध्या, सुखिया ऊषा,
ऊषा है जिन्हें बुझा जाती, सन्ध्या वे दीप जला देती।
सन्ध्या आहों से कर धुंधली, ऊषा हासों से धोता क्यों?
वह तारा क्या, तम-लहरों पर हँस-हँस न गला जो अम्बर में,
दीपक क्या, काले प्रहरों पर हँस-हँस न जला जो घर-घर में,
हर श्वास सितारे-सा स्पन्दित, हर रोम दीप-सा हो जगमग,
यह विरह किसी का ज्योति-पर्व, तम-बीज अभागे बोता क्यों?
पाषाणों को भी देव बना जाते हैं जो मरते-मरते,
कंटक-पाशों को सुरभित कर जीवन भर फूल हँसा करते,
इस भांति अमर कर प्रेम कि देनेवाले की भी याद रहे,
उर का उर में विस्तार यहां अपने में ही गत होता क्यों?
तम-मय है प्रिय की याद नहीं विषमय है प्रिय का प्यार नहीं
प्रिय को यों अपमानित करना यह प्रेमी का शृंगार नहीं।
यों अमृत किसी का पी कृतघ्न विष घूंट नहीं कहना होता।
जग से दो आंसू की लालच अपनी दुर्बलता ढोता क्यों?
सब की अपनी-अपनी सीमा, सबके अपने-अपने बन्धन,
है दूर चांद की कपिश धरा, है दूर कुमू को नील गगन,
दे रही कुमुदिनी किन्तु सुरभि, दे रहा चांदनी किन्तु चांद!
इस अमर साधना के पथ पर, यों अपना सम्भ्रम खोता क्यों?

महात्मा जी का स्मारक

व्यापक योजना के अनुसार क्या गांधी विश्वविद्यालय की स्थापना की जायेगी ?

लेखक, प्रोफेसर दयाशंकर दुबे एम० ए० एल्-एल० बी०

अर्थशास्त्र अध्यापक प्रयाग विश्वविद्यालय

> महात्मा गांधी ऐसे महापुरुष का स्थायी स्मारक स्थापित होना अनिवार्य है। इसके संबंध में भारतीय नेता, तथा भारत सरकार के अधिकारी विचार-विनिमय कर रहे हैं। इस लेख में विद्वान लेखक ने यह सुझाव दिया है कि गांधी विश्वविद्यालय की स्थापना की जाये जहाँ गांधीवाद तथा गांधी जी के आदर्श के अनुकूल व्यापक शिक्षा दी जाये। लेख विद्वतापूर्ण और विचारणीय है।

आज महात्मा गांधी के अमरत्व लाभ करने के बाद भारत में जनता व सरकार दोनों इस चिन्ता में है कि महात्मा गांधी के स्मारक बनाए जायें। बहुत तरह की योजनाएँ बन रही हैं। कितने ही प्रस्ताव जनता व सरकार के समक्ष रखे जा रहे हैं। कोई कहता है कि अमुक शहर का नाम गांधीनगर रख दिया जाय, अमुक सड़क का नाम गांधीपथ रख दिया जाय, अमुक पार्क में महात्मा गांधी जी की प्रस्तर-मूर्ति स्थापित करके उसका नाम गांधी-पार्क रख दिया जाय। लाख-लाख रुपये खर्च करके भवन-मंदिर, स्तम्भ आदि बनाए जायें। एक भाई ने तो दैनिक भारत में लिखा था कि भारत ही का नाम बदलकर गांधी स्थान कर दिया जाय। इसी तरह न जाने कितनी योजनाएँ स्मारक बनाने के लिए अब तक निकल चुकी है। अब हमें यह विचारना है कि क्या यह वस्तुएँ स्मारक के पूरे-पूरे अर्थ को व्यक्त करती हैं या नहीं ?

स्मारक क्या वस्तु है ? यदि इसे सोचा जाय तो यही अर्थ निकलता है कि जो वस्तु स्मरण दिलाए वही सच्चा स्मारक है। अब विचारना यह है कि महात्मा गांधी के लिए सबसे उत्तम कौन-सी वस्तु है जो उनका स्मारक बने और हम लोगों को महात्मा जी का स्मरण दिलाया करे।

महात्मा गांधी केवल भारत ही के नहीं, वरन् सारे संसार के महापुरुष हो चुके हैं। महात्मा जी क्यों महान् हुए ? इसका सरल उत्तर यही है कि वे अपने नित्य और अटल सिद्धान्तों के कारण ही महान् हुए हैं और वे सिद्धान्त हैं सत्य और अहिंसा के। सत्य और अहिंसा को उन्होंने अपनाया है और शत्रु-मित्र सभी को इसकी शिक्षा दी है।

महात्मा गांधी में हम लोगों की इतनी प्रबल श्रद्धा क्यों हो गई ? यही न कि हमको उनके सिद्धान्तों में विश्वास है, उनका व्यक्तित्व सत्य व अहिंसामय है, उनके सिद्धान्तों द्वारा न कोई धोखा उठा सकता है, न ठगा जा सकता है। उनके सिद्धान्तों से न अपनी न पराए की हानि हो सकती है।

अब यदि हम लोग महात्मा जी के सिद्धान्तों की महत्ता को भूल जायें तो उन पर हमारी श्रद्धा भी कम हो सकती है। और यदि हम उनके सिद्धान्तों की महत्ता का स्मरण रखें तो हमारी श्रद्धा भी महात्मा जी में बराबर बनी रह सकती है। अब विचारना यह है कि हम लोग महात्मा जी के सिद्धान्तों की किस प्रकार से अधिक से अधिक रक्षा कर सकते हैं।

पुराने समय में यह नियम था कि किसी ग्राम, नगर अथवा देश का नाम किसी महापुरुष या उसके बसानेवाले के नाम पर रख दिया जाता था। प्राचीनकाल के रखे इस तरह के नाम इस समय सैकड़ों की संख्या में हैं जैसे, जयपुर, उदयपुर, हमीरपुर आदि। परन्तु कुछ इतिहास पढ़नेवालों को छोड़कर शेष जनता यह भी नहीं जानती कि इन राज्यों व नगरों के बसानेवाले महाराज जयसिंह, राणा उदयसिंह तथा वीरवर हमीर कौन थे, उनकी ख्याति क्या थी, तथा देश व समाज की उन्होंने क्या-क्या सेवाएँ की थीं ?

इसी तरह ईंट व पत्थरों से बने दुनिया में कितने ही पुराने किले, इमारतें, स्तूप, स्तम्भ आदि हैं जिनके बनवानेवालों का आज बिलकुल पता नहीं चल रहा है। कुछ के नाम तो विजेताओं ने बदलकर अपने रख दिये हैं। अतः सिद्ध होता है कि यह सब वस्तुएँ सच्चा स्मारक नहीं हैं।

इसके विपक्ष में यदि अपने देश के त्यागी महात्मागण, तुलसीदास, सूरदास, और कबीरदास आदि की तरफ देखिए तो मालूम होगा कि इन महात्माओं ने न कोई नगर बसाया न विशाल भवन व मंदिर बनवाए फिर भी इनका नाम बच्चा बच्चा जानता है और आस्तिकवाद प्रधान भारत में इनका नाम भक्तिभाव से लिया जाता है। हमको इन महात्माओं का स्मरण दिलानेवाली कौन-सी वस्तुएँ हैं ? हम यही तो कह सकते हैं कि ये वस्तुएँ इन महात्माओं के लिखे अमूल्य ग्रन्थ रामचरितमानस, सूरसागर, व बीजक हैं। जिस भक्ति व ज्ञान-मार्ग के सिद्धान्तों का प्रचार इन महात्माओं ने अपने जीवन काल में किया था उनका इन महान् ग्रन्थों द्वारा हम भारतवासी अब भी लाभ उठा रहे हैं। और इन महात्माओं के प्रति हमारी वही श्रद्धा अब भी है जो उनके जीवन-काल के लोगों में थी, जिन्होंने इनके सिद्धान्तों को अपनाया था।

महात्मा गांधी छोटे बालकों और बच्चों के बीच में।

उपरोक्त न्याय के अनुसार हम यही कहेंगे कि महात्मा जी का सच्चा स्मारक उनके सिद्धान्तों का प्रचार ही होगा।

हम विशेष भावुक लोगों की इच्छाओं को ऐसी बातें लिखकर ठेस पहुँचाना नहीं चाहते। वे चाहे तो भवन, स्तम्भ मंदिर आदि बनवाएँ; परन्तु इतना और याद रखें कि यदि महात्मा जी के सिद्धान्तों के प्रति भविष्य की जनता में श्रद्धा रहेगी तभी उनके बनाए भवन, मंदिर तथा स्तम्भ आदि भी श्रद्धा की दृष्टि से देखे जायँगे। अतः कहने का अर्थ यह है कि जनता व सरकार महात्मा जी के सिद्धान्तों के प्रचार का मुख्य स्थान दें।

महात्मा जी देशव्यापी तथा विश्वव्यापी महापुरुष हैं उनके स्मारक के लिए केवल भारत ही में नहीं वरन् सारे संसार में करोड़ों रुपया एकत्रित हो सकता है। यह सब रुपया अलग अलग खर्च न करके गांधी-स्मारक-कोष के नाम से एक कोष में एकत्रित किया जाय। फिर इसी रुपये से भारत में व दूसरे देशों में ऐसे गांधी-आश्रम स्थापित किये जाएँ जहां कुछ त्यागी पुरुष रहकर स्वयं महात्मा जी के सिद्धान्तों के अनुसार जीवन व्यतीत करें और दूसरों को भी इसी तरह जीवन बिताने के लिए प्रोत्साहित करें तथा व्यावहारिक शिक्षा दें। इन आश्रमों में बड़े-बड़े वेतनवाले कार्यकर्ता न रखे जायँ। महात्मा जी बहुत सरल और कम से कम खर्च का सादा जीवन बिताते थे। हमको भी इन आश्रमों की सभी बातें महात्मा जी के आदर्शों के अनुसार ही रखना होगा। उनके जीवित समय से ही सेवाग्राम व साबरमती के आश्रम चल रहे हैं। इसी ढंग के आश्रम प्रत्येक जिलों में खोल दिये जायँ। इनमें छात्रों को गांधीवाद की शास्त्रीय व व्यावहारिक ढंग की शिक्षा दी जाये। यह आश्रम गांधीवाद की शिक्षा के लिए स्कूलों और कालिजों का काम दें। इन आश्रमों में रहनेवालों की दिनचर्या वैसी ही होनी चाहिए जैसी महात्मा जी की थी। यहां के आश्रमवासी सादा जीवन व उच्च विचार रक्खें। ब्रह्मचर्य से रहें। देश की व विश्व की भलाई के कार्यों में संलग्न रहें। नियमित व्यायाम, सादा भोजन व नित्य सन्ध्या को वैसे ही प्रार्थना करें जैसी महात्मा जी करते थे।

इन आश्रमों में उपयुक्त कार्यकर्त्ता पाने के लिए एक गांधी विश्वविद्यालय की स्थापना की जाय। भारत में कहीं उत्तम स्थान विचार कर वहीं महात्मा गांधी जी के सिद्धान्तों के अनुसार जीवन बनाने व बिताने की उच्च से उच्च शिक्षा देने के लिए गांधी विश्वविद्यालय की स्थापना की जाय। इस विश्वविद्यालय के दो विभाग रखे जायँ—एक शिक्षा-विभाग, दूसरा खोज-विभाग। शिक्षा-विभाग द्वारा महात्मा जी के सिद्धान्तों के अनुसार जीवन बिताने की व्यावहारिक शिक्षा दी जाय तथा खोज-विभाग द्वारा गांधीवाद पर, खोज, गवेषण आदि होती रहे व सुयोग्य स्नातकों से नवीन पुस्तकें लिखाकर प्र होती रहें। इस विश्वविद्यालय के भारत के प्रत्येक जिलों के आश्र नियुक्त होकर आश्रमवासियों तथा को महात्मा जी के आदर्शों के स्वयं जीवन व्यतीत करते हुए महात् के सिद्धान्तों की व्यावहारिक शिक्ष केवल भारत ही में नहीं, वरन् संसा प्रत्येक देशों में पहुँचकर वहाँ के गांधीवाद की व्यावहारिक शिक्षा प्रचार करें।

यह गांधी विश्वविद्यालय शहर धूमधाम तथा गन्दे वायुमण्डल से दूर स्वच्छ जलवायु के प्रदेश में होना चा मेरे विचार से नर्मदा, गंगा अथवा नदियों में से एक किसी के तट पर निराले स्थान में होना चाहिए। के पहाड़ी स्थान में नर्मदा के इलाहाबाद व मिर्जापुर के बीच में गंगा-तट पर अथवा दिल्ली व के बीच में कहीं यमुना-तट पर हो विश्वविद्यालय लगभग भारत के केन्द्र में होगा।

यहां पर केवल भारत ही के वरन् दुनिया के प्रत्येक देश के नि आकर गांधीवाद की व्यावहारिक लिया करेंगे और फिर लौटकर अपने देशों में भी इसका प्रचार करेंगे।

मतलब यह नहीं है कि इस वि विद्यालय के स्नातक केवल आश्रमों में रहकर कार्य करें वरन् उन्हें समस्त कारी विभागों में भी योग्यतानु नियुक्त किया जाय। इस विश्ववि के स्नातक जहां भी कार्य करेंगे उसे रूप से करेंगे और उसे उज्ज्वल

यदि इसी कार्य में विशेषता महात्मा जी के स्मारक के हुआ धन खर्च किया जाय अधिक से अधिक सद्व्यय कहा है। पाठकों को याद होगा कि कु पहले बम्बई के धनिकों ने लाखों खर्च करके बम्बई के बन्दरगाह पर जी की एक विशाल मूर्ति स्थापित चाहा था, परन्तु महात्मा जी ने का अपव्यय कहकर रोक दिया

सम्पूर्ण भारतवासियों से हमारी प्रार्थना है कि आप लोग स्मारक उपरोक्त योजना पर विचार करें। व सरकार दोनों मिलकर इसे कार्य परिणित करें तभी महात्मा जी का और सच्चा स्मारक बन सकेगा।

महात्मा जी ने जिन सिद्धान्तों अपना कर सत्याग्रह आन्दोलन कितने ही कष्ट सहे और अन्त में पालन करते हुए, अपने को बलिदान कर दिया उन्हीं सिद्धान्तों की रक्षा तथा प्रचार करना हम सबका यदि महात्मा जी का संचालित हम लोग पूरा न कर सके तो महात्मा जी की अमर आत्मा को होगा और यदि हमने महात्मा संचालित कार्य को उपरोक्त योजना अनुसार बढ़ाया तो महात्मा जी की आत्मा को भी शान्ति मिलेगी।

आशा है कि जनता व सरकार सुझाव के अनुसार महात्मा जी का बनाएँगे।

मिरगी, अपस्मार, हिस्टी
की विजयी जड़ी
यह अचूक जड़ी केवल एक के समय रोगी को सुँघा देने से लम्बा काले रंग का कीड़ा निकल आवेगा, कीड़ा निकल रोगी सदैव के लिए नीरोग हो पता—श्री १०८ महात्मा सि
पो० नागोद (जबलपुर

कहानी

अजित

लेखक, श्री 'स्नेह रश्मि'

अनुवादक, श्री शिवचन्द्र नागर, बी० ए०

> यह एक भाव तथा विचारप्रधान कहानी है और गुजराती के प्रसिद्ध कथाकार की रचना का अनुवाद। अजित का चरित्र-चित्रण रचनाकार ने बड़ी सुन्दरता के साथ किया है। कहानी ऊंचे स्तर की और पठनीय है।

का काला पानी घू-घू
करता हुआ, बड़ी बड़ी गंभीर
चक्कर लगाता हुआ, अनेक
भयंकर का अपने उर पर
हुआ बहा जा रहा था।
हुई कालिन्दी, जैसे मुग्ध
कोई गर्वीला फणिधर संगीत
पर, फुंकार मारकर एक
के साथ गुस्से में अपना
इस प्रकार एक विशाल
टकराकर, एक स्वाभाविक
दूने वेग से, दूने आवेश से
कर रही थी। युग-युग से
की अस्मिता संस्कृति को
किसी अनंत पात्र में घोलकर
निश्चय कर इस भीषण भँवर
था। अपनी भृकुटी में
कर अजित गर्व के साथ
प्रति एक तिरस्कार-भरी
रहा था। उसे आज अपने
कृत-कृत्यता का अनुभव
वह युगजित, विश्वजित और
पर यह कौन उस पर
दृष्टि डाल रहा है?
कैसी बेअदबी? उसकी
गई। काल के चरणों
हुई भीषण कालिन्दी
घू..घू...घू..घू...।
अन्तर में किनारे पर से,
भरे, गर्व भरे नयन
में यौवन की खुमारी थी,
तेजस्विता थी, निर्भीकता

किनारे पर से आवाज आई,
पागल हो गई है इसके
कल्लोल नहीं करना!"
ने मृत्यु की उछ-
जैसी कालिन्दी की
को भीषण गुफाओं
भँवरों को, विराट
रखनेवाले नटराज
उसके तट-प्रान्तों को
दिया।
कालिन्दी पागल हो
तांडव कर रहा है तो
कि आज स्नान न किया
वाह!"
वह भँवर देखी?"
देखा। हो न हो इसने आकर
चक्कर खा रहा था!
रहा था!"
के पानी ने एक प्रचंड
उस चट्टान के साथ
एक भीषण गति के साथ
आई।
मेरा अपमान?" एक
से कांपती हुई घोर आवाज
इस भीषण भँवर में से—
विश्वजित, कालजित, सर्व-
वहां से किनारे पर टकराई
पर, छलांग मारकर प्रचंड
करते हुए वनराज

की आंखें चमकीं। कुछ
और बेपरवाही उनमें से
हँसते-हँसते वह बोला—
यमराज! कितने बूढ़े
तुमको इतने लम्बे जीवन
होता?
तेरा व्यंग सुनने के लिए
तू मुझे पहचानता है?
भस्म...."
जाने दो ये बातें। तुम
और साथ में तुम्हारी याद-
नहीं तो भला कोई ऐसे पूछता
पहचानता है मुझे?" क्या
बाल सफेद हो

गये हैं, त्वचा में झुर्रियां पड़ गई हैं—इसमें देखने की क्या बात है?"

"यह बात है लड़के? तू अपमान करे ही जायगा? ले देख तब.." जैसे सारा ब्रह्मांड कांप उठा हो ऐसा एक भयंकर धड़ाका हुआ जैसे अजित की गर्दन पर एक वज्र पंजा पड़ा हो। अजित ने जेब में हाथ डाला थोड़े से पक्के बेर उसमें से निकालकर मुंह में डाले और निश्चिन्तता से गुठलियां इधर-उधर फेंकते हुए वह बोला:—

"बूढ़े! जरा खड़ा तो रह। जरा पक्के बेर खा लेने दे। और तेरे मुंह में पानी आ रहा हो तो तुझको न दूं इतना स्वार्थी मैं नहीं। लो, पर गुठलियां मेरी पीठ पर नहीं पड़नी चाहिए हां।" अजित का तिरस्कारपूर्ण मुक्त हास्य कालिन्दी की तरंगों पर नृत्य करता हुआ दिशाओं की आंख में खो गया।

क्रोध से कांपती हुई एक आवाज अजित के कान के पास गरजी "आज तो, तुझे छोड़े देता हूँ लड़के! पर फिर आऊँगा तब तेरे आंसू, तेरे निश्वास या तेरी विनती कुछ काम नहीं कर सकती इतना याद रखना!"

अजित कभी-कभी सोच, विचार में पड़कर गंभीर हो जाता था।

"अच्छा, पधारो। देखो, दांत खट्टे न हो गये हों—अरे! पर बूढ़ों के दांत ही कहां होते हैं। तो भी ले ये बेर लेता जा!" अजित बेरों की गुठलियां इधर-उधर फेंक रहा था। तिरस्कृत गर्विता जैसी कालिन्दी पछाड़ें खा रही थी।

* * *

पहली बार आज उस सर्वजित कालाधीश को ऐसा आघात लगा। उसके एकमात्र श्वासों का स्वर सुनते ही बड़े-बड़े विशाल वृक्ष—वनों के वन सिर झुका देते, मूर्तिमन्त गर्व जैसे उत्तुंग गिरिराज, जिस प्रकार भयत्रस्त बहुत से अबोध बालक हों इस प्रकार कांपने लगते, समाधिस्थ जितेन्द्रिय योगी जैसा आकाश का प्रसुप्त शान्त हृदय धड़कने लगता! पर यह छोकरा! निमिष-मात्र में इसका अस्तित्व मिट जाये ऐसा यह जो अभी पूरा पांच हाथ का भी न था ऐसा वामन आज उसकी हँसी उड़ा रहा था! आज मृत्यु के इस कराल स्वामी के अभिमान को चोट लगी। और कैसा उसका भयंकर तिरस्कार! आकाश में छलांग मारते हुए रौद्र विराट् ज्वालामुखी के सर्वसंहारक जबड़ों में, निमिष-मात्र में शून्य की अनंतता पर संतुलित पंखों को असहायता से फड़फड़ा कर, तिनकों की तरह अपनी अल्पता का आघात-सहित दर्शन कर, जल जानेवाले किसी पक्षी की तरह वह अपने चंगुल में आ फँसा था! फिर भी जैसे कुछ पर्वाह न हो, कुछ भय न हो इस प्रकार अन्तर में जरा भी चिन्ता का अनुभव किये बिना ही, घड़ी भर में ही तो उसका अस्तित्व मिट जानेवाला है इसका कुछ विचार किये बिना ही वह बेरों की गुठलियां इधर-उधर फेंके जा रहा था! इसे आज मसल डालना एक खेल—पर......पर इसमें यमराज का गौरव क्या? उसकी प्रतिष्ठा क्या? उसने उसे छोड़ दिया।

पर उसका हृदय अशान्त हो गया—युग-युग से किनारों को छूते हुए क्षुब्ध सागर की तरह! इस मानवी के अभिमान को कैसे कुचला जा सकता है? उसने अगर पराजय स्वीकार न की तो फिर वह कालाधीश कैसा? यमराज की भृकुटी टेढ़ी हो गई।

* * *

अजित उसे पकड़ने का इरादा रखता था—स्वप्निल नयनोंवाली, केसरवर्णी उषा को पकड़ने का इरादा रखनेवाले सूर्य की तरह। वह सुनयना आज उसके समस्त स्वप्नों की, उसकी सम्पूर्ण महत्वाकांक्षाओं की अधिदेवी बन गई थी। अनन्त की निर्विकल्पता के नहीं, शान्त की सविकल्पता के संगीत की कल्पना आज वह कर रहा था। कालिन्दी की श्याम तिमिरावृत्त मृत्यु-छाया नहीं, आकाश-गंगा के गहरे चमकीले जल की आनंदोर्मियां आज उसको और उसके अन्तर को निल्हा रही थीं। उस सुनयना को उसने अपनी बनाई। कविता की कोमल पंक्तियों की तरह झूलती हुई वे अलक लट आज उसकी हो गई थीं। पूर्णिमा के गीले आतुर अन्तर पर स्थिर सोई हुई अमावस्या की तरह वह आज उसकी पुतलियों में फिर रही थी। उसको आज जीवन भरा-भरा लग रहा था। किसी एक सुख-स्वप्न की सुदूर सृष्टि पर लगी हुई आंख को अपनी ओर मोड़ने की आकांक्षा रखते हुए, हाथ की कोमलता से उसने उसको अपने हृदय से लगा लिया। दिशाओं में संगीत की सृष्टि हुई। तारों ने आशीर्वाद दिये। कृत निश्चय कालाधीश का अभिमान फुंकार मारकर ताण्डव करने लगा।

लहराती हुई चांदनी की स्मिति में उसने कालिन्दी के अन्तर पर अपनी डोंगी छोड़ दी। उसकी प्रियतमा उसके साथ थी—प्रेम का एक अखंड स्वप्न अपनाये हुए तारों की एक तेजस्वी छाया-सी। कालिन्दी के उर पर संगीत की एक आनन्द-लहरी जाग उठी। डोंगी के नीरव अन्तर में से उठकर पाल प्राण की श्वेतता में प्रतिध्वनित होकर कालिन्दी की लहर-लहर में, प्रेम की करोड़ों विस्फुरित आंखों की तरह वह गान नाच उठा। सम पर आई हुई वीणा के उर में एकाएक जिस प्रकार एक अकथ्य व्याकुलता जाग उठे इस प्रकार उसकी प्रियतमा स्वाभाविक भयभीत नेत्रों से एकाएक बोल उठी "अजित! प्राण!—देखो, देखो वह क्या दिखाई दे रहा है? ......वह......वह कालिन्दी के भैरवघाट में!" झंझावात के अन्तर पर कांपती हुई किसी एकाकी लता की तरह उसकी नाजुक गौर देहाकृति कांप रही थी!

अजित ने भैरवघाट पर दृष्टि डाली। पूर्णिमा वहां विद्ध मृग की तरह मूर्छित होकर अन्तिम श्वासें ले रही थी। प्रलय की काली अन्तिम छाया फैल रही हो इस प्रकार एकाएक असंख्य काले बादल

चढ़ आये युगान्तर तक। कैद में बन्द रहे हुए राक्षसों की एक प्रचण्ड सेना जैसे सारे बन्धन तोड़कर अट्टहास करते हुए एक तूफानी चढ़ाई कर रही हो इस प्रकार भैरवघाट में बाढ़ का पानी चढ़ा चला आ रहा था। अजित का उर घड़ी भर के लिए कांपा, कांपती हुई अपनी प्रियतमा को उसने अपने हृदय की तरफ खींचा—मौत की छाया में मनुष्य आशा के अन्तिम तन्तु को पकड़े रखे इस प्रकार। दसों दिशाओं में एक विचित्र अट्टहास गूंज उठा। अजित ने जैसे एक बार सुनी हो ऐसी कोई एक परिचित आवाज कान से टकरा रही हो ऐसा भास हुआ।

"क्यों आ गया क्या? क्यों आज कांपा क्यों? कहां गई तेरी वह महत्ता? उद्धतपना, उच्छृंखलता और व्यर्थ का दर्प!"

अजित ने उसे पहचान लिया। अपने अन्तर को स्थिर करने के लिए एक भगीरथ प्रयत्न करते हुए वह बोला—

"तुम्हें यह अच्छा नहीं लगता यमराज! पीठ पीछे प्रहार करनेवाले की बहादुरी सम्बन्धी कविता मैंने कहीं भी नहीं सुनी।" उसकी प्रियतमा का बदन उसकी विशाल छाती में समा गया था। सहज कांपती हुई उसकी आतुर उँगलियां मृदुता से उसकी सुकुमार और सुन्दर लटों पर फिर रही थीं। वह फिर बोला, "यमराज! आज जरा रुक जाओ तो बड़ा उपकार हो। अपनी अनुरागिणी को एक बार मुझे वहां क्षेम-कुशल सहित पहुँचा आने दो। तुमको वचन देता हूँ।"

वह भयानक अट्टहास दूने वेग से गरजा। हिमालय के अनेक शिखर कँपा कर, चूर-चूर होकर जैसे पृथ्वी की पांख में समा जाने के लिए—सुरक्षित होने के लिए तरसने लगा हो। वचन?" वह घोर आवाज फिर गूंजी "तुमसे वचन लेने के लिए मैं—मैं यमराज—सर्वजित कालाधीश हाथ फैलाऊँ! पामर! दंभी......" एक प्रचण्ड लहर ऊपर अधर उठी, पलटते हुए धूमकेतु की तरह उछलकर डोंगी किनारे पर फेंक दी। धू-धू करती हुई लहर अदृश्य में विलीन हो गई। कालिन्दी के उर पर एक भीषण शान्ति फैल गई। मूर्च्छा पाई हुई अनुरागिणी को कोमलता से उठाकर किनारे के पार अजित बढ़ा जा रहा था—स्थिर, सुदृढ़ पर विचारों में खोया हुआ।

* * *

कालिन्दी की मिट्टी में वह उसको छोटा-सा घर बनाये दे रहा था। संध्या का शान्त और स्पष्ट तेज उसके मुख पर लहरा रहा था। वे ही नयन—पर आज कुछ निस्तेज हो गये थे—सन्ध्या के उर पर विश्रान्ति लेते हुए सूर्य की तरह। उस छोटे से बालक के लिए खिलौना बनाते हुए कृतकृत्यता का आनन्द, सन्तोष उसके मुख पर फैला हुआ था। किनारे पर चौदह-पन्द्रह वर्ष का उसका अमर आंबली पीपली* का खेल खेल रहा था। गर्व से बूढ़े के नेत्र चमके।

वही भँवर, वही मृत्युछाया आज उससे थोड़ी ही दूर पर अपने हाथ उछाल रही थी। अजित ने उसे देखा। एक बार उसने किनारे पर देखा, अपने पास खेलते हुए बालक की तरफ देखा। उसके नेत्रों में शान्त तेज चमका। कालिन्दी की तरफ देखकर वह बोला—

"अवसर आ गया हो तो आज अपने वचन का पालन करने के लिए तैयार हूँ यमराज।"

कालिन्दी के काले पानी में धू-धू की आवाज हुई—जैसे गुफा में बन्द किये हुए हजार वनराज एक साथ दहाड़ उठे हों। अजित के पैरों को, उसकी कटि को, उसकी छाती को कालिन्दी ने घेर लिया।

"अब भी वही गर्व! वही बेपरवाही!" एक कठोर क्रोध से कांपती हुई, गम्भीर, भीषण आवाज गरजी। अजित को निगलने के लिए एक लहर वेग से उछली। किनारे पर अजित ने अपनी अन्तिम, सन्तोष-भरी, गर्व-भरी दृष्टि फेंकी। उसके मुख पर दिन की अन्तिम किरणों की तरह एक मुस्कराहट खिल उठी—स्वच्छ पर तेजस्वी।

मृत्युछाया पर सिकुड़ी हुई वह भृकुटी और भी सिकुड़ गई। उसमें कंपन हुआ। वही बेपरवाही! वही उद्धताई! वही गर्व! अमर—ना। अजित? आंख-मिचौनी खेल रहा था। एक दो तीन अरे! कोटिपरार्ध—असंख्य अजित तूफानी आंखें नचाते हुए कालिन्दी की तरफ धँसे जा रहे थे। कौन बता सकता है काल का रहस्य क्या होगा?

---

* आंखमिचौनी।

स्वास्थ्य और व्यायाम

हम क्या खाएँ और कैसे?

अन्न का प्रश्न स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य है

लेखक, श्री देवनाथ उपाध्याय एम० ए०, साहित्यरत्न

अन्न और जल मनुष्य के लिए वैसे ही जरूरी हैं जैसे रेलगाड़ी के लिए कोयला पानी। आपने देखा होगा २५-३० मील चलने के बाद रेलगाड़ी का इंजन पानी लेता है और डेढ़-दो-सौ मील चल लेने के बाद कोयला लेता है। क्यों? रेलगाड़ी का इंजन इतना अधिक बोझा ढोता है, इसके लिए उसमें शक्ति चाहिए। यह शक्ति कोयले और पानी से ही आती है।

मनुष्य उठता है, बैठता है, चलता है, दौड़ता है, पढ़ता है, लिखता है, काम करता है आदि आदि। इस सभी क्रियाओं में उसे बहुत अधिक शक्ति खर्च करनी पड़ती है। यह शक्ति कहां से आती है। अन्न-जल से। जाहिर है हमारा पेट इतना बड़ा नहीं है कि हम जिन्दगी भर के लिए एक ही बार भोजन भर लें और पानी पी लें थोड़ा-थोड़ा करके भोजन करते हैं और पानी पीते हैं, ठीक वैसे ही जैसे रेलगाड़ी का इंजन कुछ दूर चल लेने पर पानी लेता और कोयला लेता है। आपने यह भी सुना होगा कि कभी-कभी कोयला खराब होने के कारण रेलगाड़ी की चाल धीमी हो जाती है। ठीक वही हाल हमारा है। जब हमें खराब भोजन मिलता है तो हममें शक्ति कम हो जाती है। आपने यह भी देखा होगा, जंकशनों पर दो-एक इंजन लोको शेड में पड़े रहते हैं और कुली उनकी सफाई किया करते हैं। हजार पांच सौ मील चल लेने के बाद इस बात की जरूरत है कि इंजन के पुर्जे पुर्जे को साफ किया जाय और उसे आराम दिया जाय। ठीक वही हाल हमारे पेट का है: खाते और पचाते एक ऐसी स्थिति आ जाती है कि जब उसकी सफाई की जरूरत आ जाती है और आराम देना होता है।

अन्न-जल के सवाल से हमारी तन्दुरुस्ती का गहरा सम्बन्ध है इसलिए इस सवाल पर खास तौर से विचार करने की जरूरत है। जल का मामला बहुत टेढ़ा नहीं है। जो जल हम पिएँ साफ होना चाहिए। एक कहावत है "गुरु कीजै जानकर पानी पीजै छानकर" बेशक, छान देने से पानी के खर-पतवार और कीड़े निकल जाते हैं शहरों में जो पानी पाइप का आता है वह बहुधा साफ किया रहता है। फिर भी अच्छा होगा कि हम उसे छान लें। यदि हम पानी को उबालकर ठंडा कर लें तो पानी के दूसरे बहुतेरे विकार भी जाते रहें। पानी में कभी-कभी बीमारी के खतरनाक कीड़े मौजूद रहते हैं। यदि हम ऐसे उबाल देते हैं तो कीड़े मर जायेंगे और फिर वह पानी पीने से बीमारियों का डर कम रह जायगा। कुओं का पानी पीनेवाले सज्जनों को विशेष रूप से सतर्क रहने की आवश्यकता है। कुओं में अधिकतर गन्दगी की मात्रा अधिक होती है। मुहल्ले भर के लोग अपने-अपने घड़े एक कुएँ में डुबोते हैं जाहिर है यदि एक-एक घड़े के साथ थोड़ी-थोड़ी गन्दगी कुएँ में जाय तो बहुत अधिक गन्दगी हो जायगी। अच्छा हो कि हम अपने घड़ों को अच्छी तरह साफ करके कुओं में डुबाएँ। कुओं में पेड़ों के पत्ते और पास-पड़ोस की धूल बहुत गिरती है। हमें चाहिए कि २-३ साल में एक बार कुओं की अच्छी तरह सफाई कर लें। सारा पानी उलीच कर बाहर कर दें, बाहर फेंक दें। फिर नीचे पड़ी मैल को भी निकाल फेंके।

पानी पीने के सम्बन्ध में बस एक बात याद रखने की है। वह यह है कि जब हमें प्यास लगे तो पानी पीयें। न प्यास से अधिक पीयें, न कम। भोजन कर लेने के बाद तत्काल बहुत-सा पानी पीना हानिकर है। भोजन के बाद दो एक घूंट पानी पी लेना काफी है। घंटे आध घंटे के बाद हम एक-आध गिलास पानी पी लें तो लाभ भी होगा और पेट भी हलका रहेगा।

भोजन के विषय में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात याद रखने की यह है कि वह पौष्टिक हो। कोई जरूरी नहीं कि स्वादिष्ट और रुचिकर भोजन पौष्टिक ही हो। खट्टे, मीठे, तीखे, मसालेदार भोजन स्वादिष्ट तो होते हैं किन्तु वे हमें अकसर नुकसान पहुँचाते हैं। दूसरी महत्त्वपूर्ण बात याद रखने की यह है कि बहुत अधिक खाने से हममें बहुत अधिक शक्ति नहीं आती। उलटे हमारा मेदा खराब होता है और तरह तरह की बीमारियां पैदा होती हैं। अन्न बरबाद होता है सो अलग से।

प्रयाग विश्वविद्यालय के प्रोफेसर नीलरत्नधर ने अनुसंधान करके बताया है कि एक साधारण आदमी को २४ घंटे में जितनी शक्ति की आवश्यकता है वह हमारे भोजन से सस्ते दामों में किस प्रकार मिल सकती है। प्रोफेसर धर के दिये हुए आंकड़े इस प्रकार हैं।

गेहूं	२ छटांक
चावल	२ छटांक
दूसरे अनाज	२ छटांक
	मूल्य ४ आना ३ पाई
तेल १ छटांक	मूल्य १ आना ९ पाई
गुड़ १ छटांक	मूल्य ९ पाई
शाकभाजी	मूल्य १ आना
दाल	मूल्य १ आना ६ पाई
नमक मसाला	मूल्य ३ पाई
दूध १ पाव	मूल्य १ आना ६ पाई
जोड़ सबका	मूल्य ८ आना ३ पाई

प्रोफेसर धर का कहना है कि एक साधारण आदमी के लिए जो साधारण श्रम करता है २,५२० किलो कैलोरी गर्मी चाहिए। जिस भोजन की मात्रा अभी-अभी बताई गई है उसमें २,८५१ किलो कैलोरी गर्मी मिल सकती है। जो लोग गरीब हैं, केवल आध छटांक तेल और आध पाव दूध से काम चला सकते हैं। उनके लिए बाकी सामग्री ६ आना पर मिलेगी और वे २,५१० किलो कैलोरी गर्मी पैदा कर सकते हैं। इतनी गर्मी ... चलाने को काफी है। केवल अधि... में अन्न खाने से विविध प्रकार के ... उत्पन्न होते हैं। अन्न के साथ-साथ ... तरह की तरकारियां खाना बहुत ... है जैसे लौकी, गोभी, मूली, शलजम, ... आलू, शाक और चुकन्दर आदि। ... भोजन वह है जिसमें शाकभाजी ... अण्डे की मात्रा अन्न की मात्रा से ... हो। माना यह चीजें अन्न की ... महँगी पड़ती हैं; किन्तु यह ... रखना चाहिए कि इनसे लाभ भी ... पहुचता है। मोटे तौर पर यह ... जा सकता है कि जो लोग अन्न ... खाते हैं और शाकभाजी कम उन्हें ... कि गेहूँ और चावल लगभग बराबर ... में खाया करें।

शाकभाजी से शरीर के लिए ... पौष्टिक अंश मिलते हैं। हमारे शरी... लिए विटामिन की बहुत अधिक आव... है और खनिजों की भी। सच तो ... कि हम जितना ही अधिक शाक ... उतना ही अच्छा है।

गुड़ खाना शक्कर खाने से ... है। गुड़ में शक्कर तो है ही, कै... लोहा, पोटाशियम, फासफोरस और ... उपयोगी पदार्थ हैं।

शरीर में चरबी की बड़ी आव... है। इसलिए जरूरी है कि हम तेल ... दूध का इस्तेमाल किया करें। ... मूंगफली आदि भोज्य पदार्थों में ... काफी मिलती है। दूध में चरबी के अ... कैल्शियम तथा अन्य खनिज ... मिलती है। यह एक बहुत ही ... पेय है। बच्चों के लिए तो दूध ... अनिवार्य है। आजकल घी-तेल के ... बाजार में तरह-तरह की ... पड़ी हैं। डालडा, कोटोजम, ... आदि आदि पशुओं से प्राप्त घी से ... कोई मुकाबिला नहीं। बाजार के ... मय तेलों या नकली घी खाने से ... है कि हम शुद्ध सरसों का तेल इस्ते... करें।

बहुतेरे रोटी खानेवाले बहुत ... आटा पसन्द करते हैं। सारा चोकर ... कर फेंक देते हैं। यह बड़ी भूल है। ... में दो गुण हैं। एक तो उसमें हमारे ... के लिए उपयोगी खनिज और वि... मौजूद हैं, दूसरे उसमें पेट साफ करने ... गुण भी है। चिकना मैदा उतना ... नहीं है जितना चोकरदार आटा।

हम दिन में कितनी बार खाएँ ... उत्तर है जितनी बार भूख लगे ... बार खाये। भूख का अर्थ है कि स्वा... तौर पर खाने की इच्छा हुई है। ... भूख लगे खाना हानिकर है और ... अधिक खाना भी हानिकर है। ... खाना एक बुरी आदत है। ... लदा रहता है और हमें आल... रहता है।

खट्टी, मीठी, तीती और ... चीजों का बिलकुल निषेध करना ... नहीं, हां उनसे परहेज करने की ... श्यकता तो है। बहुतेरे बच्चे ... मिठाई खाने के आदी हो जाते हैं। ... स्वास्थ्य गिरता जाता है। यह ... बड़ी भूल है कि पैसे बरबाद ... स्वास्थ्य भी बिगड़े। बच्चों की इ... पर काफी रोक-थाम होनी चाहि...

मुफ़्त ! मुफ़्त !! मु...
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ० ए० पंजाब तथा आगरा यूनी... और होम्योपैथिक बायोकैमि... आसानी से पास कर सकते हैं। ... मुफ्त मँगायें। पता :—
इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्ट...

सरकार की स्वास्थ्य मंत्रिणी, माननीया राजकुमारी अमृतकौर

युक्तप्रान्त की गवर्नर, माननीया श्रीमती सरोजनी नायडू

रूस की भारतीय राजदूत श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित

मातृमण्डल

आधुनिक समाज और वैवाहिक कुप्रथाएँ

स्वतन्त्र भारत में क्या प्रचलित कुप्रथाएँ दूर होंगी ?

लेखक, श्री रामचरण पांडेय

भी देश के सामाजिक उत्थान का उत्तरदायित्व उस देश की पर रहता है। यदि देश तो विदेशी राज्यसत्ता उस से अधिक स्वार्थ-साधन शोषण की नीति काम में से उस देश की सामाजिक, सांस्कृतिक उन्नति और का ध्यान कम रहता देश स्वतन्त्र हुआ तो वर्ग सर्वप्रथम उसके को समय की गति के और लोकप्रिय बनाने की भले ही ऐसा करने में सामाजिक संघर्ष का सामना शताब्दियों की परतंत्रता के रूढ़ि-परम्पराओं का जिसने उसके सामाजिक खोखला और निकम्मा देश की स्वतन्त्रता के साथ नवजीवन का संचार करना आधुनिक समस्याओं को हुए इस प्रकार करना है प्राचीन आदर्श और संस्कृति हो।

सामाजिक कुरीतियों को आसान काम नहीं है। इसके क्रान्ति का आयोजन जो किसी व्यक्ति विशेष या के विरुद्ध न होगी बल्कि उन रूढ़िवादियों के विरुद्ध होगी का आज समाज अनुगामी से ऐसे दकियानूसी लोगों को करना है। वे जिस वस्तु के लिए घातक और असामयिक हैं उसका परित्याग करने में सर्वथा असमर्थ पाते हैं। बन्धनों में वे इतने जकड़े हुए मुक्त होना उनकी शक्ति के है। हिन्दू-सभा, आर्यसमाज संस्थाओं ने इस दिशा में बहुत है; परन्तु उन्हें सामाजिक के दूर करने में पूर्ण सफलता हो सकी। कांग्रेस का लक्ष्य अन्तिम २५ वर्षों के इतिहास में ही दिशा की ओर केन्द्रित रहा था देश को विदेशी शासन दिलाना, जिसे उसने अपने त्याग द्वारा प्राप्त कर लिया है। को अभी पहले की अपेक्षा बहुत काम करना है। शताब्दियों के फिर से नए ढंग से अपने जीवन की सभी उपयोगी वस्तुओं का संग्रह करना है। ४० करोड़ भारतीयों को सुखी करने का महान् कार्य उनके सामने है। सामाजिक उथल-पुथल भी उसके कार्यक्रम का एक अंग होगा जिसके शीघ्र ही कार्यान्वित किये जाने की हम प्रतीक्षा में हैं।

विभिन्न वर्गों और सम्प्रदायों की प्रचुरता के कारण भारतवर्ष की सामाजिक अवस्था में असमानता का होना स्वाभाविक है। एक प्रान्त की सामाजिक व्यवस्था दूसरे से बिलकुल भिन्न है। अतः जिन सामाजिक कुरीतियों का उल्लेख हम करने जा रहे हैं उनसे हमारा तात्पर्य सारे देश से नहीं है बल्कि देश के केवल उन प्रदेशों से है जहां वे पाई जाती हैं। सामाजिक दोषों पर विहंगम दृष्टि डालने का प्रयास नीचे की पंक्तियों में किया गया है :—

स्त्री और पुरुष समाज के दो प्रबल स्तंभ हैं जिन पर उसके भव्य भवन का निर्माण किया गया है। यदि उन दोनों स्तंभों में एक निर्बल और जीर्ण है तो उस विशाल भवन का पतन अवश्यम्भावी है। वर्तमान कुप्रथाओं के कारण समाज पतनावस्था को पहुँच चुका है क्योंकि सामाजिक विधान-निर्माताओं ने स्त्री वर्ग की उपेक्षा करके अपनी अदूरदर्शिता और पक्षपातपूर्ण भावना का प्रत्यक्ष प्रमाण दिया है। उन्होंने अपने विधान में पुरुषों को पत्नी के मर जाने पर पुनः विवाह करने की आज्ञा दी है; परन्तु स्त्रियों को विधवा हो जाने पर विवाह करने से वंचित रक्खा है। यह कैसा न्याय है? स्त्रियों के प्रति ऐसा प्रतिबन्ध लगाकर क्या समाज का अहित नहीं किया गया है? उसी का परिणाम है कि आज देश में लाखों की संख्या में हमारी बहिन-बेटियां विधवा होकर समाज और देश के लिए भार रूप हो रही हैं। इतना ही नहीं बल्कि समाज, और कुटुम्ब [illegible] तिरस्कृत होकर वे, अपने जीवन-निर्वाह के लिए वेश्यावृत्ति अथवा किसी अन्य घृणित मार्ग का आश्रय लेकर, समाज को कलंकित कर रही हैं। गर्भपात और बाल-हत्या तो प्रतिदिन का काम हो गया है जिसे हम सुना-देखा करते हैं। इतने पर भी समाज के ठीकेदारों की आंखें नहीं खुल रही हैं।

आजकल समाज में प्रचलित बाल-विवाह और वृद्ध-विवाह से भी समाज को बड़ी हानि पहुँच रही है। बाल-विवाह से स्त्री और पुरुष दोनों अल्पायु और रोगी हो जाते हैं। बाल्यावस्था ही में, जब वे दाम्पत्य जीवन से सर्वथा अनभिज्ञ रहते हैं, वैवाहिक जंजीरों में जकड़ दिये जाने के कारण वे अपनी मानसिक शक्ति और शारीरिक बल का पूर्ण विकास नहीं कर पाते और असामयिक मृत्यु के शिकार बनकर संसार से विदा हो जाते हैं। विवाह के बाद ही उनके सामने रोटी का प्रश्न उपस्थित हो जाता है और उसी उलझन में पड़कर वे पठन-पाठन आदि से हाथ धो बैठते और पशुवत् जीवन बिताने के आदी हो जाते हैं। कुछ जातियों में तो इस प्रकार के भी विवाह होते हैं जिसमें दो-तीन वर्ष की आयुवाले लड़के और लड़कियों को गोद में बैठाकर विवाह कर दिया जाता है। सामाजिक अव्यवस्था के ही कारण हजारों-लाखों की संख्या में लोग अविवाहित पड़े हुए हैं, यद्यपि वे विवाह के लिए अपनी पैत्रिक सम्पत्ति तक का त्याग करने को उद्यत हैं। शीघ्र विवाह न होने के कारण अनेक पुरुषों ने ४० या ४५ वर्ष की अवस्था में ३ या ४ वर्ष की लड़कियों से विवाह किया है और उन्हें सैकड़ों रुपए बारात और अन्य राग-रंग में व्यय करने पड़े हैं।

विवाह-सम्बन्धी और भी बहुत से दोष प्रचलित हो गए हैं। दहेज की प्रथा, जिसको दूसरे शब्दों में लड़के और लड़कियों का बेचना कह सकते हैं आजकल बहुतायत से चल पड़ी है। यदि सौभाग्य से लड़के का विवाह करना है तो पिता लड़कीवाले से बड़ी से बड़ी रकम लेने के लिए मोल-भाव करता है। यदि लड़कीवाला मालदार हुआ तो कुछ कमबेश सौदा पट जाता है और विवाह तय हो जाता है और तब हजारों रुपये व्यर्थ के खान-पान और नाच-रंग में पानी की तरह बहाकर विवाह हो जाता है; परन्तु यदि दुर्भाग्यवश लड़की सयानी हो गई और उसका पिता निर्धन हुआ तो दहेज के कारण उसे सुन्दर और सुशिक्षित लड़का मिलना कठिन हो जाता है। अतः विवश होकर उसे लड़की का विवाह ऐसे वर के साथ करना पड़ता है जो अवस्था में अधिक हो, या जिसकी एक या दो स्त्रियां मर चुकी हों अथवा जिसका किसी कारण विवाह ही न हो सका हो। ऐसे भी लोग समाज में कम नहीं हैं जो लड़कियों को बेचने और उससे अपनी जीविका चलाने का काम करते हैं। विवाह के इच्छुक पुरुष लड़कियों का मुंहमांगा मोल प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में चुकता करके विवाह करते हैं।

जिस समाज में स्त्रियों की ऐसी दयनीय दशा हो, उसकी उन्नति की आशा दुराशामात्र ही है। एक ओर तो हम सीता, सावित्री, अनसूया आदि सती देवियों के उज्ज्वल चरित्र की कथा गाते हैं और दूसरी ओर जब उन्हीं के वंशजों को इस पतितावस्था पर विचार करते हैं तो हमें पश्चात्ताप ही नहीं होता, वरन् लज्जा से नतमस्तक होना पड़ता है। वर्तमान सामाजिक संकीर्णता ही स्त्री-समाज के इस पतन का कारण है। स्मृतिकार मनु के शब्दों में 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता "स्त्री-वर्ग के प्रति कितना गौरव प्रकट किया गया है। जिस समाज ने स्त्रीत्व के विकास की सुविधाओं का मार्ग अवरुद्ध कर रक्खा है वह समाज कभी उन्नति की आशा नहीं कर सकता।

अन्त में हम राष्ट्रीय सरकार से अपील करते हैं कि वह इस देश के सामाजिक सुधार के लिए कुछ ऐसे लोगों की कमेटी नियुक्त कर दे जो देश के भिन्न-भिन्न प्रान्तों की सामाजिक परिस्थिति का अध्ययन करे और अपनी विस्तृत रिपोर्ट देकर उन उचित, सामयिक और उन्नतिशील मार्गों की सिफारिश करे जिसके द्वारा उपर्युक्त कुप्रथाओं का अविलम्ब अन्त किया जा सके। ऐसा करने के लिए नियुक्त कमेटी को भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों के प्रमुख व्यक्तियों और आचार्यों का अवश्य ही पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा और हम उन कुप्रथाओं का सरलता से अन्त कर सकेंगे।—(विचार प्रवर्तक मंडल द्वारा)

संपादक के नाम चिट्ठियां

आप किस पार्टी में हैं ?—यह चुनाव का जमाना है

यदि आप पुरुषोत्तमदास टंडन हैं तो इलाहाबाद से जिस पद के लिए चनाव में खड़े हों, आप कामयाब होंगे; यदि आप आचार्य नरेन्द्र देव हैं तो फैजाबाद की सारी सीटें आपके लिए सुरक्षित हैं; लेकिन यदि आप रफी अहमद किदवई हैं तो तीन जगहों से उम्मेदवार होने पर भी आपके चुने जाने की कोई उम्मेद नहीं। यह चुनाव का जमाना है, आपको अपना पहलू ठीक कर लेना है और यदि आप चुनाव में उम्मेदवार होना चाहते हैं, तब तो आपकी खैरियत नहीं।

आप समाजवाद के बहुत बड़े पंडित हों, मार्क्स की लेखनी से जो कुछ उतरा है उसे आप चाट चुके हों, लेकिन इससे आप समाजवादी कहलाने के हकदार नहीं हो जाते। आप तीन पीढ़ी से कांग्रेस में रहे हों, चरखा चलाते-चलाते आपके हाथ में ठेले पड़ गये हों, फिर भी आप कांग्रेस से कोसों दूर गिने जा सकते हैं।

तो किसको समाजवादी कहें किसको कांग्रेसवादी। कुछ समझ में नहीं आता। जब युक्तप्रान्त में पालीवाल जी किसान-मजदूर-पार्टी के अधिनायक थे और गौतम जी समाजवादी पार्टी के सूत्रधार थे तो मोटे तौर पर खद्दरधारी भाइयों को दो भागों में बांटा जा सकता था। लेकिन इधर पालीवाल जी ने अपनी पार्टी तोड़ दी और उधर गौतम जी दामन झाड़कर अलग हो गये तब से सारा मामला गोलमाल हो गया। समाजवादी पार्टी ने कांग्रेस से निकलने का निश्चय किया फिर विविध वर्गों के सदस्यों की कोई पहचान न रह गई और इसी बीच चुनाव आ धमका। खद्दरधारी भाई चिन्तित हैं, वे खुद नहीं समझ पाते कि किधर जायें किधर न जायें। वे गौतम जी को अपना समझें या पालीवाल जी को या जयप्रकाश जी को। इतना ही नहीं वे यह भी सोचने लगे हैं कि क्या खद्दर का बाना छोड़कर, अपने को सब पार्टियों से अलग रखकर, स्वतन्त्र रूप से चुनाव लड़ा जा सकता है। हां, यदि आप जेल से लौट आये हों, भले हो १९४२ में किसी दुश्मनी से आपको किसी पुलिस कर्मचारी ने रात भर हवालात की हवा ही क्यों न खिलाई हो, तो आपको कांग्रेस पार्टी में अथवा समाजवादी पार्टी में रहना ही होगा। इसमें आपका भला भी है, आपने कुछ राजनीतिक पूंजी कमाई है उसे आप खोयें क्यों?

तो यही समय है कि आप तय करें कि आप किस पार्टी में जायें। इतना तो आप निश्चय मान लीजिए कि हर एक पार्टी आपका स्वागत करने को तैयार है। आप बिड़ला नहीं, धनकुबेर हों; लेकिन आपके माथे पर समाजवादी की मुहर लगाई जा सकती है, आप गौतम या सम्पूर्णानन्द भले ही हों, कांग्रेस में आपके लिए स्थान सुरक्षित है। मैदान बिलकुल साफ है, आप जहां चाहें आ डटें आपको कोई हटानेवाला नहीं है। लेकिन इसका निर्णय आपको आज करना है—आज। कौन जाने कल कोई नया बवण्डर आ खड़ा हो और आपका चान्स हवा हो जाय। याद रखिए सिद्धान्तवादी आगे चलकर आपको कसौटी पर कसने लगेंगे।

संसार के अन्य प्रगतिशील प्रजातंत्रों की तरह भारत में भी पार्टी के आधार पर ही चुनाव लड़े जायेंगे। हमारे यहां आज कांग्रेसी और समाजवादी, दो ही पार्टियां प्रमुख नजर आती हैं। अगर आपको चुनाव लड़ना है तो चट किसी में दाखिल होइए।

भला हो लीगवालों का जिन्होंने पता नहीं किस डर से अपनी पार्टी ही तोड़ दी। लेकिन बुरा किया उन लोगों ने जिन्होंने जनता-पार्टी बनाई। सोचिए तो सही; यदि जनता-पार्टीवाले कहीं किसी चुनाव के लिए अपने उम्मेदवार खड़े करें तो क्या होगा? कौन वोट देगा उसे? उसे जानता ही कौन है? देखिए यह बेजड़ का पौधा कब तक हरा रहता है? पार्टी के नाम के साथ एक इतिहास हुआ करता है। इस स्वनामधन्य पार्टी का भगवान् ही भला करे।

किसान संघवालों का सुनते हैं बिहार में कहीं-कहीं नाम है। युक्तप्रान्त इस बखेड़े से बरी है। चुनावों के वक्त उनकी कोई चर्चा ही नहीं है। कम्यूनिस्टों का तो हाल है 'देशी मुर्गी बिलायती बोल' उनकी कौन सुने, साप्ताहिक पत्रों की बिक्री तक ही उनका कार्यक्रम सीमित है। तो मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि इन नगण्य संस्थाओं के चक्कर में तो आप पड़े नहीं, आपको तो चुनाव लड़ना है न?

ऐ चुनाव के लड़नेवालो, चुनाव लड़ना और चीज है, विजय पाना और। यदि आप कुछ उम्मेद लेकर उम्मेदवार बनना चाहते हैं, यदि चाहते हैं कि आपका बैलट-बक्स वोटों से ठसाठस भरा लौटे तो आप अपना मार्ग निश्चित कर लें।

लेकिन पार्टी का टिकट कैसे मिले। पार्टी के कर्ता-धर्ता से जब आप टिकट मांगेंगे तो वह देखना चाहेगा, आखिर आपके आगे-पीछे कोई है भी। आगे-पीछेवाले कहां से मिलें। यह आसान काम है। आप ही की तरह हजारों आदमी ढुलमुल घूम रहे हैं, किसी पार्टीमैन की फिराक में। यदि आपको चुनाव में सफल होने की लालसा है, यदि आपमें लीडरी की योग्यता है, तो आप उन सबको एकत्र कीजिए, उनमें से कुछ को आगे कीजिए और कुछ को पीछे, पार्टीमैन देखकर दंग रह जायेगा, वह आपका स्वागत करेगा और आपको टिकट देगा। यदि आपने अपना मार्ग निश्चित न किया, अपनी पार्टी नहीं बनाई तो आपकी कहां पूछ नहीं। आप तीन जगह ही नहीं, तीस जगह हारें तो आश्चर्य नहीं! —संयुक्त मोर्चा

* * *

सैनिक भरती

जब हम गुलाम थे उस समय हिन्दुस्तानी सिपाही की सारी दुनिया में धाक थी। उस समय उसे दूसरों के इशारों पर लड़ना पड़ता था, उसे स्वदेश-सेवा का समुचित अवसर नहीं मिलता था। आज हमारे सैनिक को यह अवसर प्राप्त है। देश स्वतन्त्र हो चुका है। हमारे नेता अहर्निश इसी प्रयत्न में लगे हुए हैं कि भारत की सामाजिक, आर्थिक, एवं सांस्कृतिक उन्नति यथासम्भव शीघ्र से शीघ्र हो जाये ताकि यह प्राचीन देश अपना खोया हुआ गौरव पुनः प्राप्त करके संसार में अग्रणी बन जाय। यह तभी हो सकता है जब देश में शान्ति हो और सम्पूर्ण जनता एकमत एवं संगठित होकर उन्नति के लिए प्रयत्न करे। शान्ति रक्षा और सुदृढ़ शक्ति के लिए राष्ट्रीय सेना हर देश में अनिवार्य होती है। हमें भी आज ऐसे सैनिकों की आवश्यकता है, जिनमें उत्साह हो, देश-प्रेम हो और जो उसे आन्तरिक अथवा बाह्य संकटों से बचाने के लिए सदैव कटिबद्ध हों।

विगत जनवरी मास के अन्तिम सप्ताह में फौजी अफसरों और सैनिकों का एक समारोह हुआ था जिसमें भाषण देते हुए अपने प्रान्त की गवर्नर महोदया ने कहा कि मैं अहिंसा में विश्वास रखती हूं लेकिन कर्मनिष्ठा में भी मेरा उतना ही विश्वास है और इसी हेतु मैं सैनिक समारोह में सम्मिलित हुई हूं। उन्होंने कहा कि भारतवासी शान्ति के पुजारी हैं और प्रायः हिन्दुस्तानी सेना को अभी तक जनता भय की दृष्टि से देखती आई है; परन्तु अब ऐसी बात नहीं है। उन्होंने कहा, कि सैनिक कठोर हृदयवाले कहे जाते हैं किन्तु हमें तो सहृदय शान्ति-रक्षक नवयुवकों की आवश्यकता है। हमें भाड़े के सैनिक नहीं चाहिए, हमें तो जनता के सेवक चाहिए जो हर प्रकार से देश और कौम की भली भांति सेवा कर सकें। वे कहने लगीं, मैं चाहती हूं कि अधिक से अधिक संख्या में नवयुवक अपनी मर्जी से सेना में भरती हों। सैनिकों की भरती किसी दूसरे देश पर हमला करने के लिए नहीं, है वरन् अपने देश की भली भांति रक्षा करने के लिए है। नये भरती होनेवाले युवकों से मैं यह कहना चाहती हूं कि तुम अपनी राष्ट्रीय पताका के स्वयं प्रतीक हो, जिसका मान देश का मान है और देश का मान वास्तव में अपना मान है। अन्त में उन्होंने कहा कि सैनिकों को देश के भीतर शान्ति और व्यवस्था कायम रखने में पूरा सहयोग देना चाहिए, तथा किसी प्रकार का भेद-भाव या धार्मिक पक्षपात नहीं रखना चाहिए।

उसी दिन रक्षा-सचिव माननीय सरदार बलदेवसिंह जी ने भी एक भाषण देते हुए बताया कि, "भारतीय सरकार १ लाख ७० हजार युवकों को भरती करके पूरी सैनिक-शिक्षा देगी। उन्होंने कहा कि जनता में एक भ्रम फैला हुआ है कि भारतीय सेना केवल नागरिकों को दबाने और कुचलने के लिए ही निर्माण की गई है। इसी भ्रम को मिटाने के लिए हम सब लोग आज यहां एकत्रित हुए हैं। १५ अगस्त के पहले भारतीय सेना को किराये की सेना भले ही कहा जाता हो, पर आज परिस्थिति बिलकुल बदल गई है। अब प्रत्येक भारतवासी का धर्म है कि वह सेना को अपनी समझे और उसमें भरती होकर अपने देश की सैनिक परिस्थिति को शक्तिशाली बनाये, जिससे कि आगे चलकर किसी भी संकट का कटिबद्ध होकर सामना किया जा सके।

"संक्षेप में हमारा अन्तिम कथन यही है कि आज सेना में सुलझे हुए और विकसित मस्तिष्कवाले युवकों की अत्यन्त आवश्यकता है और रहा शारीरिक स्वास्थ्य तो वह तो सैनिक-कैम्पों में आकर स्वयं ठीक हो जाता है।"

इसलिए देशहित और राष्ट्ररक्षा के लिए सैनिक-शिक्षा प्राप्त करना अथवा सेना में भरती होना प्रत्येक नवयुवक का कर्त्तव्य है।

लखनऊ —हरिश्चन्द्र पं

२० मार्च, ४८

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

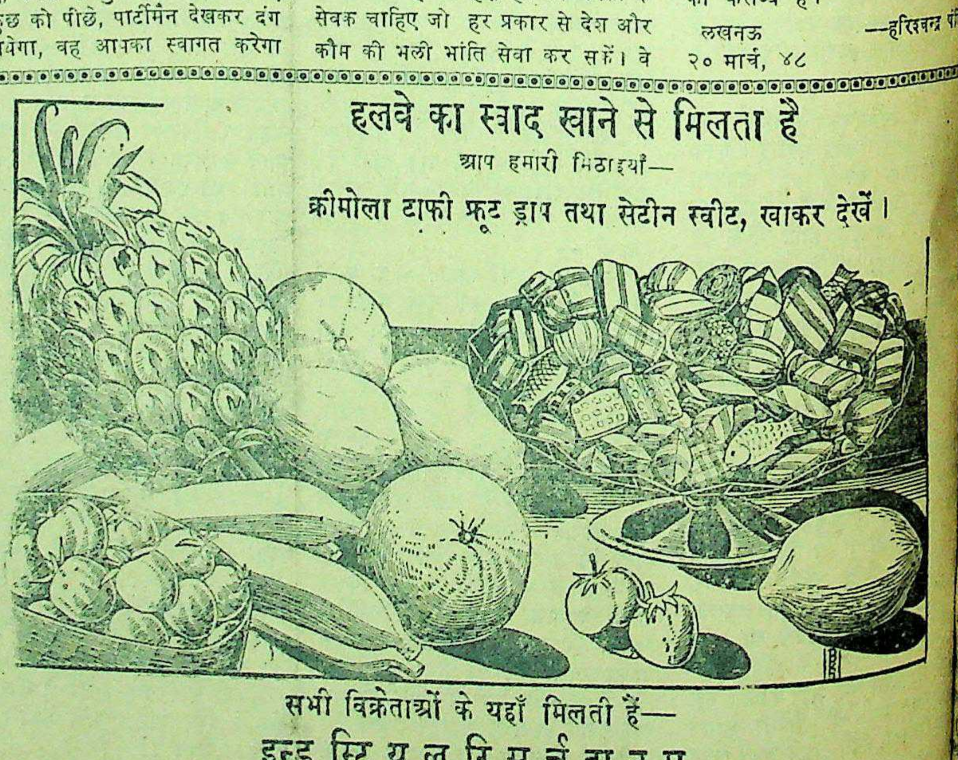

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस, बिल्डिंग इलाहाबाद।

मारा रंग-मंच

'एलान'

ायिक उत्तेजना फैलाने- ा एक 'महान् फिल्म'

श्री गोपाल मेहरोत्रा

छायालोक पर भी अन्य भांति साम्प्रदायिकता का रूप से पड़ रहा है। फलतः ने हिन्दू-चित्रों द्वारा केवल 'पाकिस्तान' की सेवा करना दिया है, जो आज मूर्त रूप से अट्टहास कर रहा है। उन में दिग्दर्शक श्री महबूब ने साम्प्रदायिक परिचय देना किया है।

अस्वाभाविक प्रसंगों से परि- ायिकता का प्रचार करते हुए िल्म की कहानी संक्षेप में इस की गई है।

लाड़-प्यार के परिणाम के के एक धनिक नवाब के साहब अपने पिता की सम्पूर्ण सुरा-पान एवं जुए के देते हैं। अत्यन्त निर्ध- शज्जाद की मां की बड़ी अपने पुत्र, जावेद सहित अन्य गृह में जीवन व्यतीत र की असीम कृपा तथा ाद से जावेद समस्त साधारण सफलता प्राप्त घटनावश जावेद की एक र से भेंट हो जाती है, उसका विवाह शज्जाद । एक दिन शज्जाद रोष पिता को एक तमाचा और उसके पिता .....। होते ही शज्जाद को महान् होती है। शज्जाद अपने करने की चेष्टा करता है, की मां स्वयं अपने पुत्र करती है। नाशपरवर घोषित की जाती है। सौभाग्य- एक सफल युक्तिप्रदर्शक की करता है तथा अपनी अतीत कराता है। शज्जाद की अपराध स्वीकार करते ही शान्त हो जाती है। विधवा ना अवशेष जीवन व्यतीत हितार्थ एक शिक्षा-सम्बन्धी स्थापना करती है।

द्वारा घोषित 'महान् ाजिक चित्र', 'एलान' की था रसहीन, असामयिक तथा कृत 'नजमा' के समान कोटि की है। मुसलिम सभ्यता की सर्वश्रेष्ठता को करते हुए इस फिल्म में अनेक स्थल हैं—(१) प्रारम्भ में की बांग, परन्तु इतनी विशाल केवल तीन व्यक्ति।

एक स्थान पर एक पात्र का गैर मजहबी लड़कियों में 'काफिरों' की आवादी से मुसलमानों में ज्यादती की है।') पूर्ण न्यायालय, 'स्टेशन' तथा में केवल मुसलमानों को करना।

) नायिका की चुनरी तथा शिक्षा- संस्था-स्थापना के समय 'चांद- का चित्रण।

(५) समस्त व्यक्तियों को मुस्लिम एकता का समर्थक बतलाना।

(६) अंतिम गीत :—

'इन्सान की तहजीब' पर 'एहसान हमारा।'
गर्जा है 'हरेक मुल्क कुर्आन हमारा॥'

कुछ अस्वाभिक प्रसंग तो इस फिल्म में ऐसे हैं जो साम्प्रदायिकता को उत्तेजित करनेवाले हैं।

संवाद, प्रथम श्रेणी के निकृष्ट तथा धर्मान्धता को भड़काने में योग प्रदान करनेवाले हैं। कथोपकथन की भाषा शत-प्रतिशन पाकिस्तानी है। घटनाओं के मध्य में ऐसे-ऐसे शब्दों का प्रयोग किया गया है, जो हिन्दुओं को कौन कहे मुसलमान-भाइयों की भी समझ में आनेवाली नहीं है। उदाहरणार्थ–'रवक्कुल', 'निगेबां', 'मसऊद', इत्यादि। नायक एक स्थल पर कहता है–"औरतों के हाथों में तलवार....यह 'तलवार पे तलवार।' प्रश्न है कि इस प्रकार के आपत्तिजनक प्रचारों पर प्रतिबन्ध क्यों नहीं लगाया जाता? क्या 'सेन्सर-बोर्ड का कार्य केवल चित्रों को प्रमाणपत्र ही 'सप्लाई' करना है? क्या भारतीय कथाकारों एवं संवाद-लेखकों का इतना नैतिक पतन हो गया है? ऐसी निर्लज्जता का कभी अन्त भी होगा अथवा नहीं?" यदि यही गति दिग्दर्शकों, प्रवर्तकों, पूंजीपति-प्रदर्शकों तथा 'सेन्सर-बोर्डों' की रही तो स्वतंत्र भारतवर्ष का बेड़ा 'पार' है। गीत अनावश्यक तथा आपत्तिजनक हैं। गीतों की भाषा पूर्णतया उर्दू है। गीतों का रसास्वादन कीजिये–'अल्लाह, निगेबां तेरा', 'हाय मेरी उठती जवानी' और उस पर अमीरबाई कर्नाटकी द्वारा नायिका का 'बैकग्राउन्ड'। समस्त गीतों की 'ट्यून्स' 'शाहजहां', 'अनमोल घड़ी', 'नाटक' आदि के समान हैं। चित्र-लेखन अत्यन्त अकलात्मक व साधारण है। ध्वनिआलेखन दोषपूर्ण है। नृत्य कामुकता को प्रोत्साहन प्रदान करनेवाले हैं। समस्त नृत्यों को केवल नोट-नोट दिखलाकर समाप्त कर दिया गया है। 'मेक-अप' साधारण तथा सम्पादन आपत्तिजनक तथा अक्षम्य है।

अभिनय कला की दृष्टि से हिमालयवाला (शज्जाद) ने संतोषजनक, मुन्नवर सुल्ताना (नाशपरवर) ने असाधारण असफल, सुरेन्द्र (जावेद) ने अस्वाभाविक (केवल लम्बी-लम्बी आहें भरना तथा नकनकाना), डब्लू० एम० खान (शज्जाद के पिता) ने सफल, शाहनवाज (शेख साहब) ने निम्नकोटि का, शुभासिनी (खुशकदम) ने उच्छृंखलपूर्ण, जेबुन्निसा (शज्जाद की मां) ने साधारण तथा लीला मिश्रा (जावेद की मां) ने सुन्दर अभिनय प्रदर्शित किये हैं। शेष पात्रों के कार्य उल्लेखनीय नहीं हैं। 'एलान' चित्र का दिग्दर्शन भारतवर्ष के 'महान् दिग्दर्शक' श्री महबूब ने किया है। चित्र का नाम ही (एलान) पूर्णतया अस्वाभाविक तथा परिहासपूर्ण दृष्टिगोचर होता है। चित्र-प्रवाह तथा गति, अस्वाभाविक नामकरण, असफल अभिनयों तथा रसहीन-अठ्टहास के कारण प्रत्येक दर्शक चित्र के समाप्त होने की प्रतीक्षा में लगभग सहस्रों बार द्वार-पर्यटन होने तथा घंटी सुनने को बाध्य होता है। श्री हमबूब ने साम्प्रदायिकता का अरुचिकर प्रयत्न करके भारतवर्ष जैसे धर्म-प्राण देश एवं समाज के प्रति एक असहनीय विश्वासघात नहीं किया है? यदि श्री महबूब के सांस्कृतिक-संस्कार होते तो वे भारतवर्ष के जाज्वल्यमान भविष्य पर कीचड़ उछालने का कदापि न प्रयत्न करते।

यदि स्वतंत्र आर्यावर्त की राष्ट्रीय सरकार, दर्शक एवं आलोचकों ने सम्प्रदायवादियों के विरुद्ध कोई रचनात्मक कदम न उठाया तो यह रोग एक दिन भारत के विध्वंस का कारण बन सकता है। महबूब प्रोडक्शन की सर्वश्रेष्ठ कृति 'एलान' में तो केवल ११ हजार फीट रील ही नष्ट की गई है, न जाने कितनी ११ हजार फीट रीलें इसी भांति नष्ट होती जायँगी। आप इन्हें देखते जाइये।

[महबूब प्रोडक्शन-कृत 'एलान' की नायिका मुनव्वर सुल्ताना।

मेरी तो श्री पृथ्वीराज कपूर से यह हार्दिक प्रार्थना है कि वे 'घूमती हुई खद्दर की दूकान' होना कुछ समय के लिये स्थगित कर सम्प्रदायवादियों को जड़-मूल से समाप्त करने का प्रयत्न करके देश को भ्रष्ट होने से बचायें। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि पाकिस्तान से धक्के खाकर लौटे हुए प्रवर्तक एवं दिग्दर्शक हमारे कभी भी प्रिय भाजन नहीं बन सकते तथा सम्पूर्ण भारत को पाकिस्तान-निर्मित करने का सफल प्रयत्न करेंगे। इससे तो उत्तम यही होगा कि वे पुनः पाकिस्तान जायें, क्योंकि भारतवर्ष में विश्वासघातक आस्तीन के सर्पों को स्थान नहीं है। इससे सम्बन्धित प्रत्येक व्यक्ति से हमारी यह प्रार्थना है कि वे अपने-अपने उत्तरदायित्व एवं कर्त्तव्य पर दृढ़ प्रतिज्ञ होकर विचार करें। भारतीय व भारतीयता की भलाई इसी में सन्निहित है, जिसके लिए प्रत्येक भारतवासी को कर्त्तव्य-पालन के लिये प्रस्तुत हो जाना चाहिये।

लेडी इरविन कालेज नई दिल्ली की छात्राओं के राधाकृष्ण नृत्य का एक दृश्य।

बवासीर

यदि आप खूनी अथवा खुश्क बवासीर से पीड़ित हैं और हज़ारों इलाज पर भी कोई फायदा नहीं हुआ तो आज ही मुझसे बवासीर का छल्ला जो कि मैस्मेरिज़्म की ताकत से प्रोफेसर जौलीसन, एन० डी० (अमरीका) ने तैयार किया है मँगवाकर पहनें और रोग से सदा के लिए छुटकारा पायें। हज़ारों रोगी फायदा उठा चुके हैं। फायदा न होने पर कीमत वापस कीमत ३)। डाक-खर्च पृथक्।

प्रोफेसर कुलदीप पोस्ट-बक्स नं० १४८,
देहली

१५०) इनाम

सिद्ध शम्भु कवच

सिद्ध वशीकरण। इसके धारण से जिस स्त्री या पुरुष को आप चाहें वश में हो जायगी। इससे दुर्भाग्य और शत्रु का नाश, नौकरी, सन्तान, धन की प्राप्ति, व्यापार में लाभ, परीक्षा में पास, मुकदमे, जुआ और लाटरी में जीत, कठिन से कठिन रोगों से छुटकारा होकर भाग्योदय होता है।

मूल्य तांबा २॥) सिलवर ३) सोने का १४)
बेफायदा साबित करने पर १५०)रुपया इनाम
पता–श्री शम्भुआश्रम मुहल्ला दरियापुर गोला
(D. D.) पोस्ट बांकीपुर (पटना)

साहित्य-चर्चा

उपहास

(कहानी-संग्रह)

लेखक, श्री हंसराज रहबर, प्रकाशक, इंडियन पब्लिशर्स, प्रयाग

हंसराज रहबर की कहानियों का संग्रह है। रहबर हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कहानीकार हैं। उनमें सामाजिक चेतना है और उसकी व्यंजना के लिए उनके पास हृदय है, वाणी है, कला है। भाषा उनकी जन-भाषा है जो भावों के प्रकटन में समर्थ तो है ही, सर्वथा बोधगम्य भी है। यह बोधगम्यता ही आधुनिक साहित्यिक दृष्टिकोण की आधारशिला है।

रहबर को सामाजिक विषमताएं आक्रोश और शक्ति दोनों देती हैं और वह समर्थ कलाकार अपनी तूलिका से इन विषमताओं का स्पष्ट चित्रपट तैयार करता है, परन्तु उसकी क्रुद्ध चोटें केवल पतन का अट्टहास ही नहीं है। विध्वस्त भग्नावशेषों के बीच रहबर नवनिर्माण के मार्ग भी निकालता जाता है और उसकी सामग्री में दोनों का स्वस्थ चयन है। निर्माण सर्वथा नवीन का न होता है, न हो सकता है। पुत्रों की श्रृंखला पिताओं की कड़ियों से निर्मित होती है पुत्र पिछले पिता नहीं नवजनक होते हैं। रहबर का प्रयास निर्माण-मार्ग के इसी सत्य में है।

प्रस्तुत संग्रह में पन्द्रह कहानियां हैं—प्रतिध्वनि, यह और वह, जिन्दगी की उमंग, जननी, अर्थ-व्यर्थ, फासला, औरत, श्मशान, ब्याह, हरकत, बधाई, होनहार बिरवा के, शिकारी, गंदे, जख्म। इनमें यह और वह, बधाई, गंदे समाज पर अद्भुत व्यंग है और इस प्रकार के व्यंग्य लिखन में रहबर अत्यन्त कुशल हैं। बधाई में वृद्ध तरुणी विवाह का परिणाम प्रस्तुत है जिसमें सेठ का औरस—वारिस पैदा करने में नौकर का सर्जक योग है। गंदे में मिथ्या जीवन वितानेवाले समाज के बने आदर्शवादियों का अपूर्व चित्रण है। 'जिन्दगी की उमंग' नायक युवक-आमृत्यु परिस्थितियों से संघर्ष करता हुआ भी कर्त्तव्य-कार्य करता जाता है, जीने की आशा करता है, निर्माण के अर्थ चिन्तित है। हमारे संघर्ष-बहुल जीवन में यह कहानी आलोक की लौ-सी प्रतीक है।

हम इसे पढ़कर शक्ति प्राप्त करते हैं। "हरकत" और 'होनहार बिरवा के' शक्ति और गतिदायिका कहानियां हैं। हरकत में गति से क्रान्ति का जनन है 'होनहार बिरवा के' में निम्नवर्गीय संचित गति का स्वस्थ परन्तु लाचार निरूपण। रहबर की इस कृति पर प्रगति की स्पष्ट छाप है और इसी कारण यह उस उन्नत जनमार्ग का आखिरी मंजिल भी नहीं जिस पर यह यात्री आरूढ़ है।

*   *   *

आकाश की झांकी—श्री देवनाथ उपाध्याय एम० ए०, बी० एस-सी०, साहित्यरत्न; किताब महल इलाहाबाद, पृष्ठ-संख्या १००; मूल्य १)।

प्रस्तुत पुस्तक में सुयोग्य लेखक ने ग्रह, उपग्रह, निहारिका, धूमकेतु, उल्का, तथा नक्षत्रमंडल आदि का पूरा परिचय दिया है। ब्रह्मांडस्थित पिंडों का अध्ययन एक कठोर विषय समझा जाता है, वे इतनी अधिक संख्या में हैं, उनकी गति इतनी विचित्र है, तथा उनके अध्ययन में इतनी माथापच्ची करनी होती है कि हम इस विषय को छोड़ बैठे हैं। फिर भी वे रोज हमारी आंख के सामने हैं, विचित्रता से भरे पड़े हैं, उनके विषय में जानकारी प्राप्त करने के मोह को हम संवरण नहीं कर सकते।

उपाध्याय जी न इस जटिल विषय का अध्ययन किया है और इस संबंध में जितनी भी ज्ञातव्य बातें हैं उनका इस ढंग से प्रतिपादन किया है कि गणित और विज्ञान का ज्ञान न रखते हुए भी साधारण मनुष्य उन्हें आसानी से समझ सकता है।

पुस्तक का गेट-अप विशेष रूप से आकर्षक है।

—बी० एस० उपाध्याय

मनोरञ्जक चुटकुले

भांड़ की चाल

श्याम—"तुमने अपनी सगाई क्यों स्थगित कर दी?"

नरेश—"मैंने नहीं लड़की ने ही, सगाई के लिए इनकार कर दिया है, वह मुझे पसन्द नहीं करती।"

श्याम—"तुम्हें उससे अपने संपत्तिशाली चाचा का जिक्र करना चहिए था।"

नरेश—"यही तो किया, इसीलिये तो अब वही लड़की मेरी चाची हो हो गई है।"

*   *   *

बहुत मजबूत

एक महिला ने कहा—"प्रोफेसर साहब आज आप मुझे धन्यवाद दीजिए क्योंकि कल शाम को मेरे नाती पैदा हुआ है।"

प्रोफेसर महाशय तनिक पागल-से थे, उन्होंने कहा—"इसके लिये मेरा हार्दिक धन्यवाद, ईश्वर करे आज एक दूसरा नाती और हो जाये।"

*   *   *

आत्महत्या

"आप क्या वास्तव में आ कर लेंगे, यदि मैं आपको सहयो दूं?" एक लड़की ने कहा जो नेत्री थी।

"काश यदि आप मुझे आत से बचा लें, तो मैं आप जैसा बन एक नवयुवक अभिनेता ने कहा।

*   *   *

रक्षा और अवकाश

एक सेना के अफसर ने "सैनिक उन लोगों की लिस्ट ला छुट्टी पर बाहर जाना चाहते हैं।"

"क्या आप अपनी धर्मपत्नी भी छुट्टी स्वीकार करेंगे वे देख चाहती हैं?" सैनिक ने कहा।

"मेरे देश की रक्षा हजारों कर रहे हैं, लेकिन मैं केवल अके अपनी पत्नी की रक्षा कर रहा हूं।"

*   *   *

स्त्री की हया

तीन आदमी गर्मी की चांदनी में एक झील में तैरने की तैयारी रहे थे, एक महिला भी उनके साथ महिला ने एक सज्जन का हाथ उन्हें पानी में कर दिया।

पुरुष ने कहा—"आपको कपड़ा पहने नहीं अच्छा लगता महिला शरमा गई।

*   *

अचानक

गर्मियों की छुट्टियों के पूर्व में अध्यापक ने एक लड़की से पूछा— दर्शक किसे कहते हैं? लड़की ने कहा— "जिससे आर-पार देखा जा सके जैसे शीशा"।

अध्यापक ने पूछा और कोई उदा हरण? एक लड़के ने कहा—"जैसे

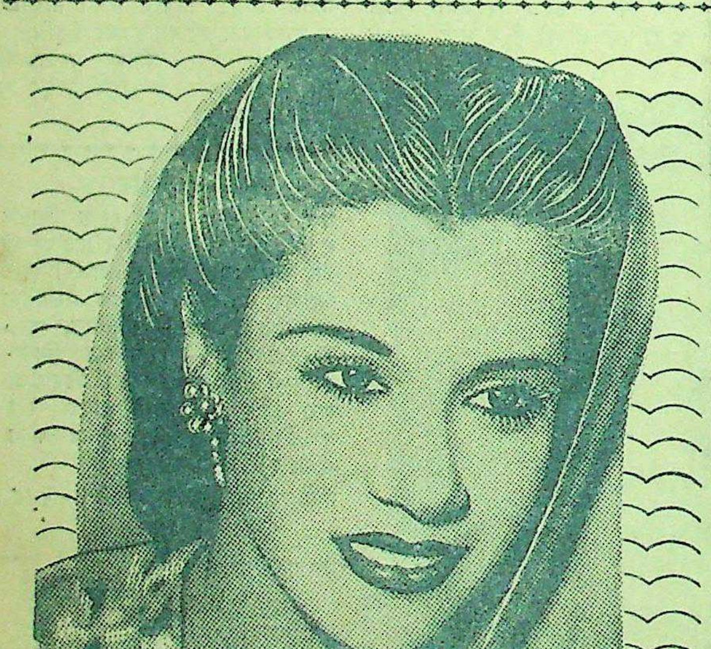
LUX
LUX TOILET SOAP
अज़ूरी अपनी सुन्दर एवं मृदु त्वचा की रक्षा लक्स टॉयलेट साबुन से करती है
LTS. 180-111 HI
फिल्मी अभिनेत्रियों का सौंदर्य साबुन

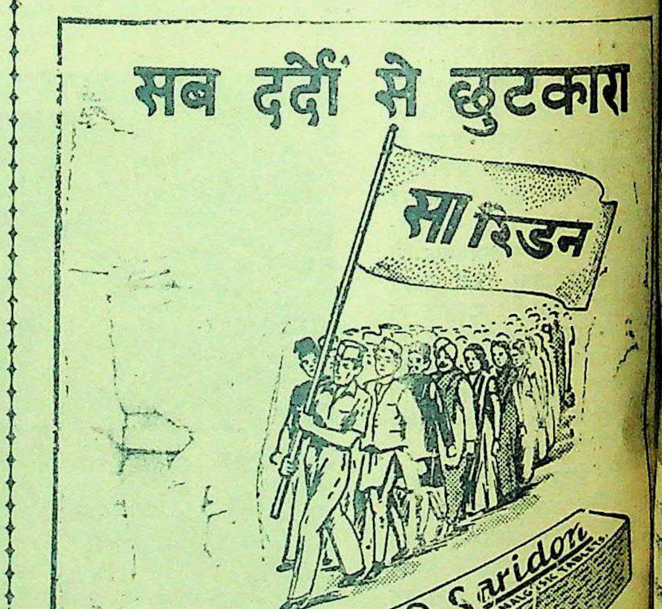

समाचारों की चित्रावली

टंगला में राज्य राजनैतिक सम्मेलन हुआ था। डाक्टर पट्टाभि सीतारमैया सम्मेलन का उद्घाटन कर रहे हैं।

भारत के वाइसराय लार्ड लुई माउंटबेटेन ने पिछले दिनों संयुक्तप्रांत में कुछ स्थानों का निरीक्षण किया था। इस चित्र में लार्ड माउंटबेटेन प्रान्तीय रक्षक दल का निरीक्षण कर रहे हैं।

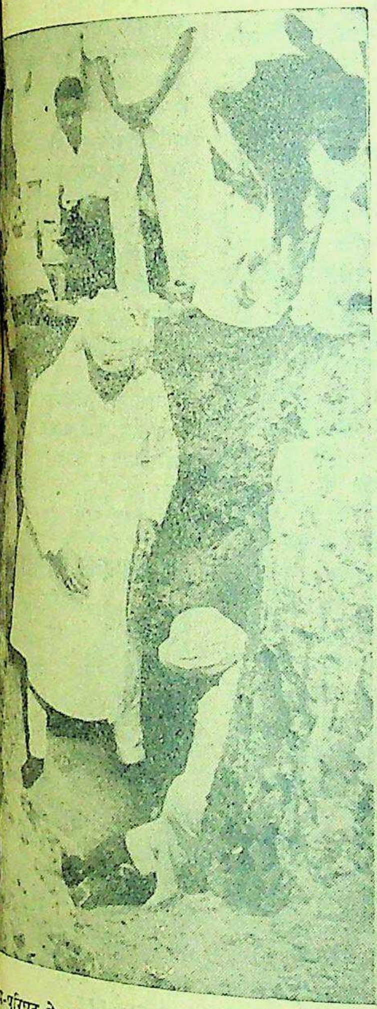

परिषद् के राज्य प्रमुख जामसाहब चंडीवालो गांधी की मूर्ति का शिलान्यास कर रहे हैं।

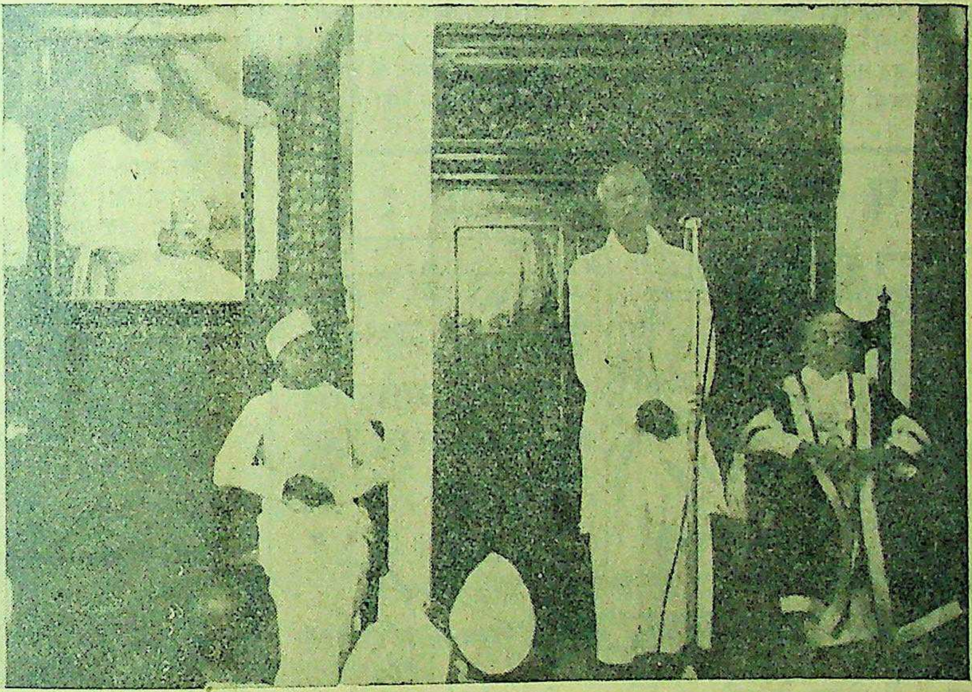

मद्रास कारपोरेशन के कौंसिल चेम्बर में मद्रास के प्रधान मंत्री श्री रामस्वामी केडियर श्री राजगोपालाचार्य के चित्र लगाने के अवसर पर सभा का उद्घाटन कर रहे हैं।

में स्वाधीन भारत के नये टिकटों का सार्वजनिक प्रदर्शन श्री एम० डी० कूपर ने नेहरू प्रदर्शनी का उद्घाटन करते समय श्रीमती इंदिरागांधी के साथ दिखाई दे रहे हैं

अखिल भारतीय सिमेंट सम्मेलन का अधिवेशन गत सप्ताह दिल्ली में हुआ था। माननीय श्री श्यामाप्रसाद मुकर्जी सम्मेलन का उद्घाटन कर रहे हैं।

संसार की राजनीति और इटली

(पेज ५ का शेष)

और युवक संघों के नेता हैं। वामपक्षी समाजवादी दल की सदस्यता १० लाख है और कम्यूनिस्ट दल की लगभग २३ लाख। इनके साथ अन्य दल भी हैं।

प्रतिक्रियावादी दल जिनका नेता गास्परी है बदनाम हो चुका है। इसके कई कारण हैं। इस दल के मन्त्री बेईमान और प्रतिक्रियावादी समझे जाते हैं जब कि समाजवादी और कम्यूनिस्ट मन्त्री (जब तक मन्त्रिमण्डल में रहे) ईमानदार और प्रगतिशील समझे जाते थे। वामपक्षी दलों ने चुंगियों के शासन को अच्छी तरह से सँभाला और जनता में प्रिय हो गए। वे जनसंस्थाओं की सहायता से प्रतिक्रियावादियों से सतत संग्राम करते रहते हैं।

इसके अतिरिक्त, जनता जानती है कि कम्युनिस्ट विरोधी गास्परी अमरीकी एजेन्ट है। वह अमरीकी राजदूत के साथ भ्रमण करता और अमरीका की प्रशंसा किया करता है। वह अमरीका को बहुत ही रियायतें दे चुका है, बहुत से देशी उद्योग-धन्धे उसके हाथ बेच चुका है। और उसकी इच्छा के अनुसार देशी कारबारों को चौपट कर चुका है। इस कारण आज इटली में बीस-तीस लाख बेकार व्यक्ति हैं। बेकारी बढ़ती है, महँगाई बढ़ती है। चीजों का दाम पचास-साठ गुना हो गया है; परन्तु आमदनी नहीं बढ़ती। लूट और मुनाफेखोरी का बाजार गरम है। किसान दुखी है। उसका रहन-सहन भारतीय किसान का जैसा है, अथवा उससे भी खराब। इन सब अपराधों के लिए जनता अपने शासकों को दोषी ठहराती है।

ब्रिटेन और अमरीका इटली में बुरी तरह बदनाम हैं। जनता नहीं भूल सकी कि ब्रिटिश और अमरीकी सेना ने प्रतिक्रियावादी दलों की सहायता की और उसको कुचला था। उपरोक्त देश अपने पापों का प्रायश्चित्त करना चाहते हैं। जनता को रुपयों का लोभ दिखाते हैं, घूंस देते हैं, उसके जहाजों को वापिस देते हैं, ट्रीस्ट के प्रान्त को लौटाने की बातें करते हैं। परन्तु फिर भी वास्तविकता ब्रिटेन और अमरीका के विरुद्ध है। जनता बेकारी और बरबादी के लिए अमरीका और ब्रिटेन की इटली-संबंधी आर्थिक और राजनैतिक नीति को उत्तरदायित्व ठहराती है। वह यह भी जानना चाहती है कि ब्रिटेन और अमरीका उसके उपनिबेशों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहते हैं। विशेषकर ब्रिटेन। क्योंकि उपरोक्त उपनिवेश ब्रिटेन के अधिकार में हैं और वहां पर इटालियन जनता का खून-खच्चर हो रहा है।

चुनावों में क्या होगा? इटली का भविष्य क्या है? पाश्चात्य विशेषज्ञों और संवाददाता स्वीकार करने लगे हैं कि वामपक्ष विजयी होगा। किन्तु प्रतिक्रियावादी दल और उनका साथी अमरीका, जनता की आवाज के सामने इस आसानी के साथ झुक जाएंगे और चुनाव के फल को स्वीकार करेंगे इसकी बहुत कम संभावना है। चुनावों में गड़बड़ी की जा सकती है। प्रतिक्रियावादियों ने वामपक्ष की विजय के समय विद्रोह की तैयारी भी की है। और फिर यदि प्रतिक्रिया की पूर्ण ही पराजय हो तब अमरीकी बेड़ा तो इटली के बन्दरगाहों में है ही। उससे सहायता ली जा सकती है। इस प्रकार इटली की जनता के सामने कठिनाइयां हैं। खतरे कम नहीं हैं।

(पेज ७ का शेष)

आचार्य नरेन्द्रदेव जी

सम्मेलन में "कांग्रेस छोड़ो" प्रस्ताव पेश करते हुए सुप्रसिद्ध विद्वान् आचार्य नरेन्द्रदेव ने कहा कि "आज देश का शासन कांग्रेस नहीं चला रही है बल्कि शासन "कांग्रेस" को चला रहा है। इस छोटे से नपे-तुले वाक्य में उन्होंने सभी बातें कह डालीं। बापू के छीने जाने पर सरकार की आपने कड़ी आलोचना की तथा सरकार को ही दोषी ठहराया। आपने कहा, "अगर बापू पाकिस्तान के भयंकर स्थानों में भी घूम आता तो भी कोई ताकत बापू का बाल बांका नहीं कर सकती। नोआखाली के बीच सुहरावर्दी ने जिस प्रकार प्रबन्ध किया था, उससे भी अच्छा हमारे 'सरदार' साहब को करना चाहिए था। सरकार की गलतियों ने साम्प्रदायिकता के क्रूर हाथों द्वारा हमसे बापू को छीन लिया। आचार्य जी के सारगर्भित भाषण ने जनता एवं प्रतिनिधियों को टस से मस नहीं होने दिया।

श्री जयप्रकाश नारायण

बड़ी खामोशी के साथ, एक लम्बी-सी शक्ल मंच पर आई। खादी का कुर्ता, जाकेट, कुछ टेढ़ी टोपी, एक हाथ कभी जाकेट के पाकेट में कभी बाहर, जनता के करतलध्वनि के बीच श्री जयप्रकाश बाबू खड़े हुए। उनके खड़े होते हुए जनता को कुछ ऐसा जान पड़ा, मानो कोई "हमारा" बोल रहा हो। जयप्रकाश के भाषण का प्रभाव बिजली की भांति जनता के हृदय-पटल पर पड़ता जाता है। यह नहीं कि लोग भावुकतावश ही उनका समर्थन कर रहे हैं। जनता का हृदय भलीभांति महसूस कर रहा था कि आज जयप्रकाश जो बातें कह रहे हैं कल ये ही सत्य साबित होनेवाली हैं। श्री जयप्रकाश ने अपने भाषण के दर्मियान बताया कि "राष्ट्रीय मोर्चे के रूप में कांग्रेस अब मर-सी गई है। हमारे ही समान वह भी एक विशेष पार्टी-सी बन गई है। कुछ लोग अब तक पार्टी को कांग्रेस के अन्तर्गत समझते आये थे, पर यह उनका भ्रम था। पार्टी सदा से ही स्वतन्त्र रूप में रही है। हम कांग्रेस के साथ वहीं तक रहे हैं जहां तक हमें स्वराज्य प्राप्त करना था। अब हमको 'रामराज्य' स्थापित करना है। हमारा अगला कदम 'रामराज्य' की ओर होगा। किसान, मजदूर, विद्यार्थी यह तीनों वर्ग हमारा कार्य-क्षेत्र होगा। अगर हम सही रास्ते पर जनता को ले जायेंगे तो कोई भी ताकत हमें पीछे नहीं ढकेल सकती। पार्टी तथा कांग्रेस के बीच रस्साकशी न होगी, बल्कि बहुत सी बातों में तो हम एक साथ ही चलेंगे। हां, जहां हम देखेंगे कि कांग्रेस गलत रास्ते पर जा रही है, हम फौरन जनता को खतरे की घंटी से आगाह करेंगे।

हमें पद का मोह नहीं, मंत्री-गृह रहे, जनता का सच्चा काम होना जनता के अहित की बातें कभी भी नहीं की जा सकेंगी। अब देश के व्यक्ति को बापू का काम पूरा करना

डा० राममनोहर लोहिया

श्री जयप्रकाश के बाद जनता डा० लोहिया की ओर लगी हुई थीं। तीन फिट से थोड़ा बड़ा भूटानी नौज अजीब आकर्षण के साथ मंच पर ये थे हमारे डाक्टर साहब। बोल अपनी नवीन शैली, तर्कों में स्पष्ट सुलझे हुए विचारों का जनता के इस प्रकार से वे रखते जा रहे थे परदे पर एक के बाद दूसरा और चित्र देखता जा रहा हो। डा० द्वारा प्रतिपादित विषय चल-चित्र भांति आंखों के सामने अब भी आ-जा हैं। उन्होंने कहा, "हमको अपनी शैली की क्षमता से देश का एक नया हास ही लिखना होगा। यह वह होगा जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपना चेहरा देख सकेगा। समाजवादि कांग्रेस से अलग होना अच्छे शुभ लक्षण समझिए। पर आप इतना रखिए कि समाजवादी देश के साथ में भी गद्दारी नहीं कर सकते। का इतिहास ही इस बात का साक्षी देश ने कई बार इनकी अग्नि-परीक्षा है और भी खरे उतरे हैं।"

नासिक-सम्मेलन कई दृष्टियों बहुत महत्त्वपूर्ण तथा सफल रहा। देश के अन्तःस्वर में समाजवाद की ध्वनि गूंज रही है। युग बड़ी तेजी साथ समाजवाद की ओर बढ़ता वस्तुतः अगर सच्चे रूप में काम तो देश का भविष्य समाजवादियों के हाथ में है, इसे मानने से इनकार नहीं जा सकता। आज दिल में जो सन्देह प्रश्न उठ रहे हैं, उन सबका जवाब वाद देगा, ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास

लिपटन के प्रेमी : ५

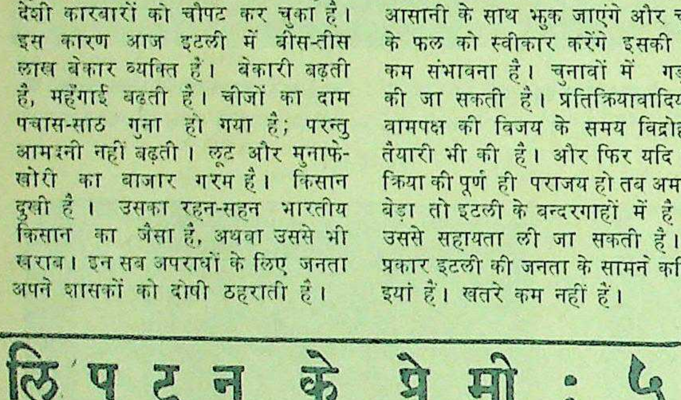
"दोपहर के पहले लिपटन की गर्मागर्म हिमालयन ब्लेण्ड चाय वाकई बड़ा मजा देती है।

स्कूल का मास्टर

स्कूलों में दोपहर के पहले इस लिये जरा देर छुट्टी दी जाती है कि लड़कों का मन पढ़ने में और ज्यादा लगने लगे। लड़कों को यह छुट्टी बहुत भाती है लेकिन ऐसा लगता है कि कठिन काम करनेवाले मास्टरों को यह और भी ज्यादा भाती है। मेरे स्कूल में. ११ पर सुई पहुंचते ही छुट्टी की घण्टी बजती है और ११ बज कर १ मिनट पर मैं लिपटन की हिमालयन ब्लेण्ड चाय से तरोताजगी हासिल करता रहता हूँ। दाम और गुण का सवाल जब मेरे सामने आता है तब मैं इसी चाय को पसन्द करता हूँ।

लिपटन की
हिमालयन ब्लेण्ड
सर्वोत्तम दार्जिलिंग चाय

Liptons Flowery Orange Pekoe
LIPTON'S HIMALAYAN BLEND

LTK 131

अत्यधिक सस्ती कीमतों

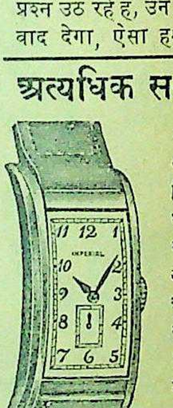

ऊँचे दर्जे की समय देनेवाली, निकल आकर घड़ियाँ। प्रत्येक की गारंटी दो गोल या आकार की क्रोम केस १६), १८), ४ २१), सेन्टर २४)। क्रोमियम रोल्ड-गोल्ड ५५), १५ जुवेल की डाक-खर्च माफ।

प्रेमशंकर एण्ड कं०, (D.A.)
ऐशबाग, लखनऊ

[illegible] की गलतीयाँ कीमत वा

गलतियां हो चुकी हैं तो भी विवाह से पूर्व, विवाह के पश्चात् हम असंख्य सहे मरीजों को शर्तिया ठीक कर चुके हैं। हट्टे कट्टे अन्दर से खोखले कमजोर जोर अहजा यानी ढीले-ढाले शरीर से नवीन अवस्था का चमत्कार देखकर आप जायेंगे। यदि इस्तहारी औषधियों और नीम हकीमों की ठगियों ने आपको आने से रोक रखा है तो मैं फिर कहता हूँ कि जिस दिन मरजी हो आइए, रहने का हमारे जिम्मे, यदि किसी कारण से लाभ न हो तो यात्रा का खर्च जेब से दूंगा इसके रिक्त जो डाक्टर, हकीम वैद्य सब इश्तहार झूठे समझते हैं आइए हमारे सामने औषधियों को हानिकारक सिद्ध करें तो एक हजार रुपया पुरस्कार में लें। मूल्य

कविराज हीरोजी वज़ीराबादी, मैनेजर दी हीरो फारमेसी
दवाखाना दरियागंज की पिछली तरफ दिल्ली।

सपरिहास

र कम्यूनिस्टों को पकड़ रही मजदूर लोग इसके विरोध में र रहे हैं। देखना है हड़ताल सरकार बड़ी है ?

* *

काटजू हिन्दी तथा हिन्दुस्तानी हैं। बड़े लोग सारी दुनया समझते हैं, हिन्दी हिन्दुस्तानी में है ?

* *

सरकार के खाद्य मंत्री का कि इस वर्ष अकाल नहीं पड़ेगा। समझते थे कि सरकार गल्ले का करती तो कभी अकाल न पड़ता।

* *

ग़ानिस्तान में एक नदी है। उस पर बांध बांधना चाहता इसका परिणाम यह होगा कि इस नदी में पानी ही नहीं या ईरान में कोई उलटी गंगा नहीं है।

* *

में एक युवती पुरुष के को पकड़ रही थी। उसने युवती अपने स्वाभाविक तो लड़के अपने आप उसके गे।

* *

है कि किसी अज्ञात विमान ने में बम गिराया। रूसवाले क्षेत्र में बम गिरा है। गाई के लिये कहीं से कुछ करना ही पड़ेगा।

* *

मंत्री अमृतकौर ने नई दिल्ली कि स्त्रियों को घर पर वैज्ञानिक गना चाहिए। यह सुझाव गाओं ने मान लिया तो गों को अपने भोजन का प्रबन्ध कर करना होगा।

* *

के कुछ गांवों में मुसलमानों के बहुत सा अस्त्र निकला है। ता है यह मुसलमान पुरातत्व इसी लिए इन्हें एकत्र कर रखा कि इनका प्रयोग तो इन्होंने बन्द दिया है।

* *

पंजाब की सरकार ने निश्चय है कि राजनीतिक बंदी ऊँची श्रेणी जाय। ठीक ही है। पता नहीं मंत्री और सचिव ही जायें।

*

(पेज ६ का शेष)

वेतन, महँगाई, भत्ता, बोनस प्राविडेंट फण्ड, इन्श्योरेंस तथा अन्य सुविधाएँ

२५—सन् १९३८ ई० या युद्ध के पूर्व उससे सन्निकट वर्ष में तथा सन् १९४७ ई० में अपने चर्मचारियों के मुख्य वर्गों का दैनिक और मासिक औसत आमदनी बतलाइये। यदि दैनिक या मासिक आमदनी में मौलिक वेतन के अतिरिक्त उनको दिया गया अन्य रुपया भो सम्मिलित है, महँगाई भता और बोनस को छोड़कर जिनका उल्लेख आगे किया गया है, तो इस प्रकार दो गई रकमों का अलग उल्लेख होना चाहिए।

२६—स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए प्रान्त के विभिन्न केन्द्रों के समाचार पत्र उद्योग में वेतन निर्धारण में किन किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

२७—क्या आप इसको उपर्युक्त समझते हैं कि विभिन्न पत्रों में एक ही प्रकार के कार्य के लिए समान पारिश्रमिक होना चाहिए ?

२८—क्या आप सिफारिश करेंगे कि कर्मचारियों को आजकल जो युद्ध या मंहगाई भता मिलता है उसको पूरा पूरा या उसके एक भाग को उस हालत में वेतन दरों में शामिल कर दिया जाय, यदि उन्हें वेतन स्केल देने का निश्चय हो जाय। वेतन की दरों में भतों को शामिल करने के लिये आप कौन से तरीके को काम में लाने का प्रस्ताव करेंगे ?

२९—आपके पत्र में मंहगाई के भत्ते को कौन सी दरें चालू हैं ?

३०—क्या आप समझते हैं कि आपके पत्र में मंहगाई के भते को तत्काल वृद्धि आवश्यक या सम्भव है ? यदि नहीं तो कारण बताइए ? यदि आवश्यक या सम्भव है तो क्या वृद्धि होनी चाहिए ? अपनी गणना का आधार भी बताइये।

३१—क्या आपका पत्र अपने कर्मचारियों को कोई बोनस देता है ? यदि देता है तो कर्मचारियों का कौन सा अंश इस का अधिकारी है ? बोनस और वेतन में क्या अनुपात है ? किसी कर्मचारी के लिए बोनस पाने के योग्य बनने के लिये किन किन शर्तों को पूरा करना आवश्यक है ? बोनस देने के निमित्त और कौन कौन सी शर्तें हैं ?

३२—आपके पत्र में कितनी पूंजी लगी हुई है और सन् १९३८ ई० से सन् १९४७ ई० तक प्रति वर्ष कितना कितना लाभ हुआ ? इसके साथ कम से कम निम्नलिखित सूचना दीजिए।

(क) कितनी लागत पूंजी, पेड अप कैपिटल, और ऋण (डिबेंचर्स और अन्य)

(ख) यन्त्रों आदि का ह्रास (डिप्रिसिएशन) और वृद्धि।

(ग) विभिन्न सुरक्षित पूंजियों का स्थानान्तरण।

(घ) डाइरेक्टरों की फीस तथा एजन्सी कमीशन।

(ङ) टैक्स में दी गई रकम। इसमें एक्सेस, प्राफिट टैक्स के रूप में दी गयी रकम को अलग से दिखलाइये।

(च) विभिन्न श्रेणियों के हिस्सों पर अदा किया गया मुनाफा (डिविडेंट)।

(छ) एक्सेस प्राफिट टैक्स की वह सुरक्षित पूंजी, जो कि आप गवर्नमेंट से वापस पाने के अधिकारी हैं।

३३—क्या आपके यहां प्राविडेंड फन्ड के लाभ प्राप्त करने का कोई विधान है ? यदि है तो उसमें कितने प्रतिशत मालिक के द्वारा अदा किया जाता है ?

३४—क्या कर्मचारियों के लिये जीवन बीमें का भी कोई अनिवार्य विधान है ? यदि है तो किस्त में कितना प्रतिशत मालिक के द्वारा अदा किया जाता है ?

३५—न्यूनतम अवधि कर लेने पर कर्मचारियों को ग्रैचुइटी मिलन का भी प्रबन्ध है ? यदि है तो किस हिसाब से ग्रैचुइटी दी जाती है ?

३६—क्या आपके कर्मचारियों को महँगाई के भत्ते के अतिरिक्त मकान के किराये का या किसी अन्य प्रकार का भत्ता भी मिलता है ? यदि मिलता है तो उसका आधार क्या है ?

३७—आपके कर्मचारियों को मनोरंजन और खेल-कूद के लिए कौन कौन सी सुविधाएँ दी जाती हैं ? पूर्ण विवरण देने की कृपा कीजिए।

३८—आपके कर्मचारियों को चिकित्सा सम्बन्धी कौन कौन सी सुविधाएँ उपलब्ध हैं ? विवरण देने की कृपा कीजिए।

३९—आपके किसी कर्मचारी के रिटायर होने अथवा उसकी मृत्यु होने पर उसके या उसके कुटुम्ब के लिए पर्याप्त प्रबन्ध के निमित्त आपकी राय में कौन सा सर्वोतम तरीका होगा ?

४०—रात की पारी में काम करने की वर्तमान प्रणाली में कौन से सुधार आवश्यक या सम्भव हैं ?

४१—आपके पत्र कार्यालय में स्वास्थ्य-रक्षा के लिये कौन कौन से प्रबन्ध होते हैं तथा कौन सी सुविधाएँ दी जाती हैं ?

४२—क्या आप अपने कर्मचारियों के लिये कोई कैन्टीन खोलने की राय देते? हैं ? यदि हां, तो क्या उसे चलाने के लिये प्रबन्धकों को कुछ देना चाहिए ?

(भाग ख)

मोफस्सिल संवाददाताओं से

४३—आप कितने समय से संवाददाता का कार्य कर रहे हैं और आप कितने पत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं ?

४४—आपकी मासिक औसत आय प्रत्येक पत्र से कितनी होती है और किस हिसाब से माहवारी, कालम हिसाब से अथवा लाइन के हिसाब से ? क्या आपको मंहगाई के रूप में या सवारी के निमित्त कोई अन्य प्रकार का भत्ता आदि भी मिलता ह ?

४५—क्या आप पूरे समय संवाददाता का कार्य करते हैं या यह आपका सहायक पेशा है ?

४६—मुफस्सिल संवाददाताओं का आप किस प्रकार वर्गीकरण करेंगे और उनके लिए पारिश्रमिक निर्धारण का कौन सा आधार आपकी समझ से उपयुक्त होगा ?

कोयल

लेखक, श्री बेढब' बनारसी

विष में नहाया, पापपंक बीच लोटी तू कि,
    सागर में काले तूने डुबकी लगाई है;
नेगरो की वंशज या संगिनी भुजंगिनी की,
    लैला की भगिनी है कि शनि की तू तायी है;
उड़ती यह जादू से शीशी काली वंक की कि,
    नीलम की चिड़िया सजीव बन आई है;
बालक वसन्त न नजर किसी की लगे
    विधना ने अथवा नई बिन्दी सजायी है।

प्रान्तीय सरकर ने अभी निश्चित नहीं किया कि नैनीताल जाना चाहिए कि नहीं। हमारी राय में जाना चाहिए नहीं तो लखनऊ की गरमी में कागजों पर हस्ताक्षर कैसे होगा।

* * *

बम्बई के एक शरणार्थी ने कायदे आजम का बंगला रहने के लिए मांगा है। प्रस्ताव तो अच्छा है किन्तु किसी विशेषज्ञ से यह समझ लेना चाहिए कि उस बंगले में रहनेवालों के दिमाग पर कोई विशेष प्रदान तो नहीं पड़ता।

* * *

कम्युनिस्टों ने कहा है कि कांग्रेस के विरुद्ध हम लोग समाज वादियों का साथ देंगे। कम्युनिस्ट लोग तो आवश्यकता पड़ने पर जमीदारों का भी साथ दे सकते हैं।

* * *

बिहार सरकार प्रान्त से भागे मुसलमान वकीलों को फिर से बसाने का प्रयत्न कर रही है। केवल वकीलों को बसाने से क्या होगा। कुछ मुकदमें बाजों को भी बसाना चाहिए।

* * *

काशी में महात्माजी की स्मृतिकोष में धन एकत्र करने के लिए दंगल होने वाला है। महात्माजी संभवतः दंगल के बड़े प्रेमी भी थे।

—अगड़धत्त शर्मा

१९४८ में क्या होनेवाला है

इस वर्ष आकाश में तारा मण्डल की कौंसिल में एक बड़ी भारी उथल-पुथल होनेवाली है। अगर आप इस साल में होनेवाले परिवर्तनों यानी अपनी भली या बुरी दशा समय से पहले ही जानना चाहते हैं तो आज ही केवल एक पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी फूल का नाम लिखकर भेज दें। बस फिर हम ज्योतिष विद्या द्वारा आपके आनेवाले १२ महीने का लाभ या हानि, किस तिजारत से फायदा होगा, किस जरिये से रुपया मिलेगा, नौकरी, तरक्की, तनज्जुली, स्त्री सन्तान का सुख, स्वास्थ्य, बीमारी, दूर की यात्रा, मुकदमा और सफलता सगाई, शादी, जमीन या जायदाद का सुख, किसी से नया मेल या नया सट्टा व लाटरी या किसी अज्ञात साधन से धन का मिलना, सारांश यह कि कार्ड लिखने की तारीख से लेकर १ वर्ष तक होनेवाली कुछ बातों का खुलासा यानी मासिक वर्षफल बनाकर केवल १।) में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाकखर्च ऊपर से लगेगा। बुरे ग्रहों की शान्ति के उपाय भी लिखा जायगा जिससे आनेवाली कठिनाइयों को दूर किया जा सके। एक बार परीक्षा से ही आपको भली भांति मालूम पड़ जायगा कि हमको कहां तक ज्योतिष विद्या में ज्ञान प्राप्त हैं।

श्री स्वामी योगीराज ज्योतिष आश्रम (D.D.A) फगवाड़ा
रियासत कपूरथला

संवाददाताओं के पत्र

कलकत्ता "भाषागत भारतीय ऐक्य के लिए एक भाषा और एक लिपि हमारे पास है; और वह है हिन्दी और नागरी इन पर तर्क की कोई बात उठ ही नहीं सकती।" यह विचार डा० कालीदास नाग ने बंगाल राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के सभावर्तन-समारोह में दीक्षान्त भाषण करते हुए प्रकट किये। यह उत्सव गत २० मार्च को तीर्थपति इंस्टीट्यूशन में बड़े समारोह के साथ मनाया गया। सभापति का आसन डा० प्रफुल्लचन्द्र घोष ने ग्रहण किया था तथा उपाधि-पत्र-पुरस्कार आदि का वितरण श्री वसन्तलाल जायसवाल ने किया। अनेक गण्यमान्य साहित्य-प्रेमी नागरिकों में सर्वश्री वसन्तलाल मुरारका, सीताराम सेक्सरिया, कुमार शरदिन्दुराय डा० डी० एन० मैत्र आदि उपस्थित थे। महिलाएं भी बहुत बड़ी संख्या में उपस्थित थीं।

कुमारी साधना राय के रवीन्द्र संगीत के द्वारा उत्सव का कार्य आरम्भ हुआ। समिति के मन्त्री श्री रेवतीरञ्जन सिनहा ने समिति का संक्षिप्त इतिहास बतलाते हुए उसकी असुविधाओं और आवश्यकताओं का उल्लेख किया। कुमारी पुरवी बसु की हिन्दी आवृति तथा श्री अशोक भट्टाचार्य का हिंदी में भाषण सुनकर सब लोग संतुष्ट हुए। आनन्दबाजार पत्रिका मनिमेला के संचालक श्री विमल घोष "मौमाछि" ने भी हिन्दी में भाषण दिया। तदुपरान्त विशेष स्थान प्राप्त करनेवाले छात्र-छात्राओं को पुरस्कार तथा विभिन्न परीक्षोतीर्ण ५१७ छात्र-छात्राओं को उपाधि-पत्र एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किये गये। इन परीक्षोत्तीर्ण छात्र-छात्राओं में पिता-पुत्र, माता-कन्याएं भी थीं और ११ वर्ष से लेकर ६३ वर्ष तक के व्यक्ति थे। डा० नाग ने अपने भाषण में कहा कि मैं हिन्दी न जानने से दीक्षान्त भाषण न दे सकूंगा इसलिए भाषण देकर स्वयं दीक्षा लेना स्वीकार करूंगा। समिति पर मेरा यह दावा है कि उसने मुझे क्यों अभी तक हिन्दी नहीं सिखाई। डा० डी० एन० मैत्र ने कहा कि ७० वर्ष की अवस्था इतनी अधिक नहीं है, जब कि उसे चित्ताकर्षक प्रमाण-पत्र पाने की लालसा न रहे। मैं अगली बार अपनी बहू-बेटियों पौत्र-पौत्रियों के साथ इसी प्रकार के समावर्तन-उत्सव में स्वयं आकर हिन्दी-परीक्षा में उत्तीर्ण होकर प्रमाण-पत्र ले जाने में अपने को गौरवान्वित समझूंगा।

पश्चात् डा० प्रफुल्लचन्द्र घोष ने सभापति पद से राष्ट्रभाषा की आवश्यकता बतलाते हुए कहा कि जो कठिन परीक्षा आज हमारे सामने है। उसका सामना हम असीम उत्साह के साथ करते हुए अग्रसर हों। तभी हमारा जीवन सार्थक होगा और सच्ची परीक्षा उत्तीर्ण करना होगा। समिति के सभापति डा० सुनीतिकुमार चटर्जी ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा हिन्दी आज प्रचार के द्वारा अहिन्दी भाषा-भाषियों पर लादी नहीं जा रही है। बल्कि इसे वह स्थान पाने का अधिकार है और वह अपना स्थान ग्रहण कर रहा है। हिन्दी भाषा-भाषी आज यह समझकर [illegible]ता से हाथ खींच न लें कि हिन्दी तो राष्ट्रभाषा हो ही जायगी इसलिए अहिन्दी भाषा-भाषी झख मारकर सीखेंगे, यह मनोवृत्ति हिन्दी के हित के लिए घातक सिद्ध होगी। यह उद्गार प्रकट करने पर श्रीमान् जायसवाल जी ने २५१) तथा परीक्षोत्तीर्ण बंग मातृभाषी छात्र-छात्राओं ने एकत्रित कर अपने वर्ग से १७५।) प्रदान किये। अन्त में श्रीमती सविता बागची तथा उनके सम्प्रदाय के 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' गाने के बाद समावर्त्तनोत्सव की समाप्ति हुई।

—श्री रेवतीरञ्जन सिन्हा मंत्री

राष्ट्रीय कवि-अभिनन्दन

बंगीय हिन्दी परिषद् ने राष्ट्रवाणी हिन्दी के उन महान् कवियों का अभिनन्दन करने का विचार किया है (१) जिनकी रचनाओं से राष्ट्रीय जागरण को निरन्तर प्रोत्साहन मिला हो, (२) जिनकी रचनाएँ राष्ट्रीय मंचों से आजादी की आवाज उठाने में समर्थ हों और (३) जिन्होंने अपनी काव्य-कला के साथ-साथ स्वातन्त्र्य संग्राम में भाग लिया हो। इस पवित्र उद्देश्य की पूर्त्ति के लिये परिषद् ने समस्त साहित्यिकों, पत्रकारों और हिन्दी भाषा-भाषी जनता से सहयोग की प्रार्थना की है। कुछ सज्जनों ने इस विषय पर अपने सुझाव भेजकर हमें कृतार्थ भी किया है। अभिनन्दन का विस्तृत कार्यक्रम हिन्दी-संसार के सुझावों के अनुसार ही प्रस्तुत किया जायगा। अतः प्रत्येक साहित्य-सेवी, साहित्य प्रेमी, और पत्रकार भाई से इस विषय में परिषद् के पास अपने सुझाव लिख भेजने या पत्र-पत्रिकाओं द्वारा अपना मन्तव्य प्रकट करने के लिए हम अनुरोध करते हैं। स्थानीय तथा अन्य हिन्दी भाषाभाषी संस्थाओं से भी इस विषय में अपने सुझाव देने के लिए प्रार्थना है। आशा ही नहीं, प्रत्युत पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी भाषाभाषी जनता हमारी प्रार्थना पर ध्यान देगी। सुझाव सम्मतियां अतिशीघ्र निम्नलिखित पते पर आनी चाहिए। संयोजक श्री वंगीय हिन्दी-परिषद् (अलबर्ट हाल) १५ बंकिम चटर्जी स्ट्रीट कलकत्ता।

—संवाददाता

पिलानी (जयपुर) की हिन्दी-साहित्य - समिति की कार्यकारिणी की बैठक ने यह तय किया है कि 'यहां से प्रकाशित होनेवाली पुस्तक 'हिन्दी पत्र-पत्रिकाएं' का सम्पादन श्री अखिल विनय और श्री गीण्डाराम वर्मा 'चंचल' करेंगे। पुस्तक के लिए एक उपसमिति बना दी गई है जिसके सदस्य इस प्रकार से हैं। (१) सर्वश्री कन्हैयालाल सरल एम० ए० (२) पतराम गौड़ एम० ए० (३) अमरनाथ जौहरी एम० ए० (४) अखिल विनय (संयोजक) (५) गीण्डाराम वर्मा 'चंचल' जो यह निश्चय करेगी कि पुस्तक को किस रूप में छपाया जाय।

अब तक सैकड़ों की संख्या में पत्र और पत्रिकाएँ पहुँच चुकी हैं जिनका नाम रजिस्टर में चढ़ा लिया गया है। इसका काम कालेज की पढ़ाई बंद होते ही गर्मी की छुट्टियों में शुरू कर दिया जायगा। इस विषय में सुझाव जल्दी ही भेज दिये जायें। जो प्रकाशक व सम्पादक पत्रिकाएँ भेजना भूल गये हों वे कृपया शीघ्र ही भेज दें। इस काम के लिए हजारों की संख्या में पत्र डाल दिए गए हैं और माननीय सम्पूर्णानन्द, वियोगी हरिजी, अग्रवालजी, माचवेजी, वाजपेयी आदि विद्वानों के सुझाव स्वागत पा चुके हैं। पत्र-व्यवहार सम्पादकद्वय अखिल विनय चंचल से कीजिए। पुस्तक को बहुत सुंदर रूप में प्रकाशित करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

—मंत्री

मालवा प्रांत में ग्वा० राज्य कांग्रेस के शाजापुर में दिनांक १, २ तथा ३ मई को होनेवाले ८वें तथा नवनिर्मित मालवा प्रांत के प्रथम विशाल अधिवेशन में केवल हिन्दी भाषा में प्रकाशित होनेवाले हिन्दुस्तान भर के प्राचीन तथा नवीन राष्ट्रीय दृष्टिकोण तथा विचार-धारा के दैनिक, अर्ध-साप्ताहिक, साप्ताहिक पाक्षिक, मासिक, द्वैमासिक तथा त्रैमासिक आदि सर्व अवधी के पत्र-पत्रिकाओं की प्रदर्शनी का विशाल तथा अपने ढंग का अनूठा मनोरम आयोजन किया गया है।

हिन्दी के प्रत्येक पत्र-पत्रिका के सम्पादक एवं व्यवस्थापकगणों से प्रार्थना है कि वे अपनी-अपनी पत्र-पत्रिकाएं २० अप्रैल तक संयोजक के पास भेजने की कृपा करें।

—संवाददाता

ग्वालियर राज्य के कपड़ों की मिलों में पगारों के लिये नियुक्त मौलिक वेतन-सम्बन्धी कमेटी की बैठक श्री जी० आर० गर्दे की अध्यक्षता में हुई जिसमें शासकीय वर्ग, मिल तथा मजदूरों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। कमेटी ने इन्दौर, बम्बई, अहमदाबाद, कानपुर इत्यादि के रेट्स मंगाये हैं तथा लाभ-हानि की छान-बीन कर रही है। कमेटी की आगामी मीटिंग १२ अप्रेल से होगी। तब आशा की जाती है कि मौलिक वेतन तथा पगारों के स्टेन्डर्डइजेशन तथा पूर्ण हो जावेगा।

—संवाददाता

झुँझनूँ में २९-३-४८ को अलसीसर, ओजटू, खण्डेला, चिड़ावा, नवलगढ़, पिलानी, बगड़, बड़वासी, मुरादपुर सिंघाना और सूरजगढ़ के सुयोग्य प्रतिनिधि शामिल हुए। बाकी के अनुपस्थित वैद्यों ने तार और चिट्ठी द्वारा मन्तव्य भेजा।

कुल ११ प्रस्ताव और ५ उपसमितियां विभिन्न कार्यों के लिए बनीं। संयोजक शीघ्र कार्य आरम्भ करेंगे। कार्यकारिणी के सदस्यों की नामावली आदि फिर छपेंगी।

प्रस्तावों में राज्य की औषधियों के गुण-धर्म, वैद्यों के जीवन-परिचय और अनुभूत योगों का संग्रह, विश्व-विद्यालयों में आयुर्वेद शिक्षा निजामतों में केन्द्रीय आतुरालय की योजनाएं प्रमुख थीं।

वैद्य रजिस्ट्रेशन बोर्ड के ए, बी" श्रेणी-विभाग की तीव्र निंदा की। नवें प्रस्ताव से छात्रों को दोनों परीक्षाओं में बैठने की सुविधा मिल जाएगी।

कृपया अपने यहां और बाहर के वैद्यों के पूरे पते आयुर्वेदिक समाचार नियमित रूप से पहुँचाने को शीघ्र भिजवावें।—

—वैद्य विरंचीलाल शास्त्री, प्रचारमंत्री।

सहारनपुर—२१ मार्च ४८ के देशदूत में रुड़की इंजीनियरिंग कालेज की शताब्दी का समाचार प्रकाशित हो चुका है। प्रसन्नता की बात है कि प्रान्तीय सरकार ने जनता के भावों की सराहना करते हुए कालिज की शताब्दी को अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया है।

—संवाददाता

२८ मार्च १९४८ के देशदूत में पृष्ठ १४ कालम दो के अन्त में बाबा कमली बनने का जो समाचार छपा है, उसमें वाले पंचायती क्षेत्र की ओर से घंटाघर 'हरिद्वार' के स्थान पर 'ऋषिकेश' पढ़ें। यह घंटाघर ऋषिकेश में बन रहा है हरिद्वारा में नहीं। पाठक कृपया ठीक करलें।

—संवाददाता

मथुरा राज हासित्य मंडल का पंचम वार्षिक सम्मेलन तारीख २१,२२,२३ मई को एटा में बड़े समारोह पूर्वक [illegible] निश्चय हुआ है। स्वागत कारि[illegible] चुनावइस प्रकार हुआ है—श्री हरि[illegible] दास स्वागताध्यक्ष, श्री बलवीरसिंह [illegible] स्वागत मंत्री, श्री शिवशंकरप्रसाद [illegible] संयुक्त मंत्री श्रीरामविलास [illegible] प्रचार मंत्री, श्री रोहमलाल जी [illegible] कोषाध्यक्ष।

स्वागत समिति के अन्य [illegible] सदस्यों में सर्व श्री बाबूराम वर्मा [illegible] एल० ए०, महाराज कुमार [illegible] रामदत्त जी भारद्वाज, कालीच[illegible] जी अग्रवाल तथा कामताप्रसाद जी [illegible] आदि उल्लेखनीय हैं।

भोजन पंडाल व कवि सम्मेलन [illegible] लिए अलग समिति भी बन गई है।

—प्रचार[illegible]

देवरिया रुद्रपुर में मण्डल कां[illegible] कमेटी के कार्यकर्त्ता गण सर्व श्री लल्ला[illegible] रामचन्द्रसिंह, रामकुमारजी, [illegible] प्र०, जईसिंह, सुदामाप्रसाद, बृहस्पति[illegible] रामधारीसिंह, रामानन्द पांडे [illegible] पानमतीदेवी, श्रीमतीमानीदेवी, [illegible] यादव, कृष्णभगत, भूखलजी, [illegible] दुर्गाप्रसाद, नागेश्वरजी, छविराज [illegible] चन्द्रबलीसिंह आदि कांग्रेस से त्याग [illegible] देकर किसान मजदूर राज स्थाप[illegible] समाजवादी दल में मिल गए।

—संवाद[illegible]

देहरादून कन्यागुरुकुल का [illegible] वार्षिकोत्सव ७-८-९-१० मई १९४८ [illegible] धूमधाम से मनाया जायगा। [illegible] देश के गण्यमान्य नेता पधारेंगे। [illegible] की गवर्नर श्रीमती सरोजनीदेवी को दीक्षा[illegible]न्त भाषण देने के लिए निमन्त्रित किया [illegible] रहा है। श्रीमती सुचेता कृपलानी को भी निमन्त्रित किया गया है। अजमेर के [illegible] भजनीक श्रीयुतप्रकाशचन्द्रजी भी पधारेंगे। उत्सव पर नवीन कन्याओं का प्रवे[illegible] संस्कार भी होगा।

—चन्द्रावती आचार्या

बिना लाइसेन्स [illegible]
अमेरीकन माडेल पिस्तौल मुफ्त
यह रिवाल्वर, जिसकी लम्बाई नौ इंच और वजन [illegible] है, असली अमरीकन पिस्तौल से भी अधिक सुन्दर [illegible] है। इसमें अपने आप घूमने वाली चरखी लगी है [illegible] लेकर ५० शाट तक भरे जाते हैं। गुंडों, चोर डाकुओं [illegible] जानवरों से रक्षा करने के लिए यह अनुपम [illegible]
मूल्य छः शाट वाला माडल—
नं० २२२२ २३२२ (नया माडल) [illegible]
३॥) [illegible]
नं० ६६६६ (सिल्वर पालिश स्पेशल माडल) [illegible]
२७॥)
फालतू शाट ४ दर्जन ५) चमड़े की पेटी व केस २) [illegible]
मुफ्त—ऊपर लिखे हुए किसी भी नम्बर के तीन रिवाल्वर [illegible] साथ मंगाने पर १० [illegible] दिया जाता है।
युनाइटेड ट्रेडर्स, पो० ब० नं० २४३, कानपुर [illegible]
UNITED TRADERS P.B. No. [illegible] KANP[illegible]

शरणार्थी लड़कियां
विवाह योग्य पढ़ी लिखी शरणार्थी तथा दूसरे अच्छे खानदान की [illegible] व यू० पी० की लड़कियों की लिस्ट व फोटो पाँच रुपया भेजकर मँगा[illegible] शादी का शीघ्र ही प्रबंध किया जाता है। व्यर्थ पत्र-व्यवहार न करें।
मदनगोपाल बी० ए० मैनेजर हैप्पी मैरिज, बर्ना स्ट्रीट, सदर बाजार, [illegible]

मुलायम और सुन्दर बालों के लिये
Vaseline POMADE
CHESEBROUGH MFG CO.
प्रकाश पिक्चर्स "घूंघट" की नायिका निर्मला

कोमलता में सुगंधित किया गया वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।

वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे **"वीर्य संजीवनसत"** ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ **"तिला मस्ताना"** की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५।।=), डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ घनकुट्टी, कानपुर

मंत्र, तंत्र और
नमाला— शक्ति - उपासना-
न्दी में अकेली मासिक पुस्तक-
क मूल्य ८)। एक प्रति १)।
मन्दिर, कटरा, प्रयाग।

मुफ्त

यदि अपनी भूल से यौवन
, अथवा विवाहित जीवन
हो तो भारत भर में
गुप्त रोग विशेषज्ञ
बी० ए० लाहौरवाले
.) देहली से मशविरा
लेकर अपना जीवन
।

सिल्कसाड़ी आकर्षक डिज़ाईन

३-४ इंच चौड़ा वार्डर
८ ९ ५ गज
(८) २३) २८)
वाको वी० पी० से
व्यापारियों को खास सुभीता

इन्डस्ट्रीज,
नं० ६ कानपुर

मैरी तरह तन्दुरुस्ती हासिल करो

खून को साफ करता है
डा. वामन गोपाल
आयोडाइज्ड सारसापरिला
हर जगह मिलता है
एजेन्ट—बलदेवप्रसाद
चौधरी एल० एफ०धोलकिया

तमसो मा ज्योतिर्गमय !

यह प्रकाश पुंज, जिससे न केवल भारत बल्कि समस्त संसार इतने वर्षों से आलोकित रहा, अब अनन्त क्षितिज को आलोकित कर रहा है। महात्मा गांधी परम-पिता जगदीश्वर के अनन्त प्रकाश के अंग हो गये। जिस भारतवर्ष के कल्याण के लिये वे अपने जीवन काल में सतत् चिन्तित रहते थे, उसकी ओर उनकी दृष्टि अब भी होगी। उस प्रकाश-लोक से भी वे देख रहे होंगे कि हम भारतवासी उनके आदर्शों की प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील हैं या नहीं। वे यह देख रहे होंगे कि उनके प्रेम, भ्रातृत्व, सहिष्णुता और मानवता के सन्देशों को हम अपना रहे हैं या नहीं। जिस मार्ग पर उन्होंने हमारा नेतृत्व किया था वह आनन्द और जीवन दायक मार्ग था। इस पथ पर चलकर हम भेद-भाव, कलह और विनाश से बचे रहेंगे। आइए, हम सब यह प्रर्थना करें :

असतो मा सद्गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्मा अमृतं गमय।

असत् से सत् की ओर ले चलो, अन्धकार से ज्योति की ओर ले चलो, नश्वरता से अनश्वरता की ओर ले चलो।

महात्मा जी के दिखाये मार्ग पर चलिये और सच्चे देशभक्त बनिये

युक्त प्रान्तीय सरकार के सूचना विभाग द्वारा प्रचारित

S.A.A U.P.GK1

५०० पौंड का इनाम

चौबीस घंटे के अन्दर जवानी वापस

"ओटोजन" (जड़ी बूटियों से निर्मित) पार्कर एण्ड डैविस द्वारा प्रस्तुत पहले २४ घंटे के अन्दर ही शक्ति तथा स्फूर्ति प्रचारित करने में आश्चर्यजनक है। इसके उपयोग से स्त्री तथा पुरुष दोनों अपने वास्तविक आयु से १५-२० वर्ष छोटे मालूम पड़ने लगते हैं। यह पौरुषहीनता, स्मरणशक्ति की कमी, शारीरिक दुर्बलता, रक्त-विकार, चर्मरोग, हतोत्साह, अनिद्रा तथा शारीरिक शक्ति ह्रास को दूर करने के लिए उपयोगी है। इसके प्रयोग से २ से ४ इंच तक आपकी लम्बाई तथा ५ से १० पौण्ड तक शरीर का वजन बढ़ जायेगा। आपके चेहरे पर लालिमा आ जायगी तथा आपकी कान्ति दुगनी हो जायगी। आपकी त्वचा कोमल तथा चिकनी हो जायगी। जिससे आपके चेहरे पर जवानी की आभा पुनः आ जायगी। ओटोजन से आपके व्यक्तित्व में वृद्धि होगी, आंखों में रौनक आ जायगी, ओठों तथा गालों पर गुलाबी दौड़ जायगी। इसके प्रयोग से पकते हुए बाल स्थायी रूप से काले हो जायेंगे तथा वृद्धावस्था में नये दांत निकल आवेंगे। बाल गिरते हों, सिर रूखा हो अथवा चँदला हो गया हो तो उस समय 'ओटोजन' (टानिक) विशेष लाभप्रद सिद्ध होगा. "ओटोजन" का प्रयोग प्रोफेसर ए० पी० पार्कर ने स्वीटजरलैंड में १०० वर्ष के शक्तिहीन बुड्ढे पर किया था। केवल एक मास के नियमित सेवन के बाद इस आश्चर्यजनक औषधि ने उस १०० वर्ष के रोगी को तीस वर्ष का-सा नौजवान बना दिया। थोड़े समय बाद ही एक नवयुवती से विवाह

संगीत के द्वारा उद्घाटन ... हुआ। समिति के मन्त्री श्री रेवतीरञ्जन सिनहा ने समिति का संक्षिप्त इतिहास बतलाते हुए उसकी असुविधाओं और आवश्यकताओं का उल्लेख किया। कुमारी पुरबी बसु की हिन्दी आवृति तथा श्री अशोक भट्टाचार्य का हिंदी में भाषण सुनकर सब लोग संतुष्ट हुए। आनन्दबाजार पत्रिका मनिमेला के संचालक श्री विमल घोष "मौमाछि" ने भी हिन्दी में भाषण दिया। तदुपरान्त विशेष स्थान प्राप्त करनेवाले छात्र-छात्राओं को पुरस्कार तथा विभिन्न परीक्षोतीर्ण ५१७ छात्र-छात्राओं को उपाधि-पत्र एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किये गये। इन परीक्षोत्तीर्ण छात्र-छात्राओं में पिता-पुत्र, माता-कन्याएं भी थीं और ११ वर्ष से लेकर ६३ वर्ष तक के व्यक्ति थे। डा० नाग ने अपने भाषण में कहा कि मैं हिन्दी न जानने से दीक्षान्त भाषण न दे सकूंगा इसलिए भाषण देकर स्वयं दीक्षा लेना स्वीकार करूंगा। समिति पर मेरा यह दावा है कि उसने मुझे क्यों अभी तक हिन्दी नहीं सिखाई। डा० डी० एन० मैत्र ने कहा कि ७० वर्ष की अवस्था इतनी अधिक नहीं है, जब कि उसे चित्ताकर्षक प्रमाण-पत्र पाने की लालसा न रहे। मैं अगली बार अपनी बहू-बेटियों

सेवी, साहित्य प्रेमी, और पत्रकार भाई से इस विषय में परिषद् के पास अपने सुझाव लिख भेजने या पत्र-पत्रिकाओं द्वारा अपना मन्तव्य प्रकट करने के लिए हम अनुरोध करते हैं। स्थानीय तथा अन्य हिन्दी भाषाभाषी संस्थाओं से भी इस विषय में अपने सुझाव देने के लिए प्रार्थना है। आशा ही नहीं, प्रत्युत पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी भाषाभाषी जनता हमारी प्रार्थना पर ध्यान देगी। सुझाव सम्मतियां अतिशीघ्र निम्नलिखित पते पर आनी चाहिए। संयोजक श्री बंगीय हिन्दी-परिषद् (अलबर्ट हाल) १५ बंकिम चटर्जी स्ट्रीट कलकत्ता। —संवाददाता

पिलानी (जयपुर) की हिन्दी-साहित्य-समिति की कार्यकारिणी की बैठक ने यह तय किया है कि 'यहां से प्रकाशित होनेवाली पुस्तक 'हिन्दी पत्र-पत्रिकाएं' का सम्पादन श्री अखिल विनय और श्री गीण्डाराम वर्मा 'चंचल' करेंगे। पुस्तक के लिए एक उपसमिति बना दी गई है जिसके सदस्य इस प्रकार से हैं। (१) सर्वश्री कन्हैयालाल सरल एम० ए० (२) पतराम गौड़ एम० ए० (३) अमरनाथ जौहरी एम० ए० (४) अखिल विनय (संयोजक) (५) गीण्डाराम वर्मा 'चंचल' जो यह

झुँझनूँ
ओजटू, ख
पिलानी, बगड़
और सूरजग
हुए। बाकी
और चिट्ठी
कुल ११
विभिन्न काय
शीघ्र कार्य
के सदस्यों
छपेंगी।
प्रस्तावों
गुण-धर्म, वैद्य
अनुभूत योगों
आयुर्वेद शिक्षा
रालय की योज
वैद्य रजि
श्रेणी-विभाग
प्रस्ताव से छा
बैठने की सुवि
कृपया अ
वैद्यों के पूरे
नियमित रूप से
वावें।—
—वैद्य विरंची
सहारनपुर
में रुड़की इंजी

...भिनेता व अभिनेत्रियां इस ...ती हैं तथा फिल्म-जगत् में ...दा नवयुवती बनी रहती हैं ... प्रयोग करने से समय से ...। इसके प्रयोग से मनुष्य ...टोजन के प्रयोग के बाद ... पुरुष दोनों के भाग्यशाली ... शक्ति-सम्पन्न बने रहें। ...क्ति भी पचा सकता है। ...क्टर चकित रह गये। ... अपने प्रकार का अकेला ... संसार के स्त्री व पुरुष ...में लाते हैं। चिकित्सा... ...हास में यह अभी तक ... से ही इसका उपयोग ... गुणों का अनुभव करें। ... पहले अपना वजन ले लें ... अपनी आकृति देख लें। ... के बाद अपनी आकृति ...और गौर करें कि आपकी ...त्साह में ओटोजन के व्यवहार से कितना परिवर्तन हो गया।

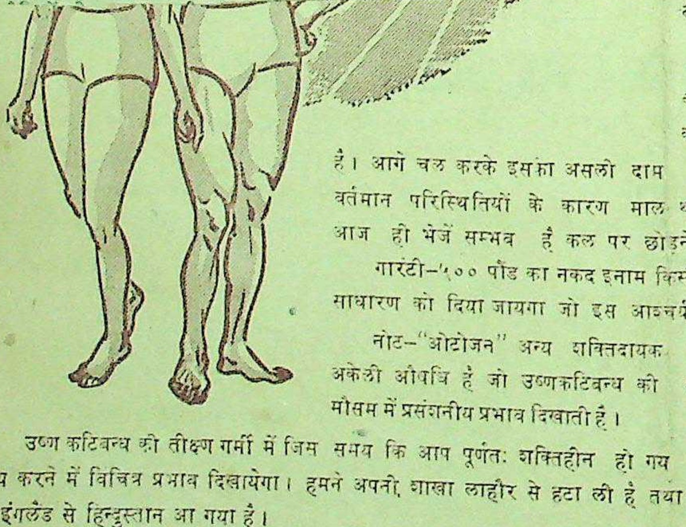

भारतवर्ष में इस औषधि का प्रचार करने के निमित्त इसका मूल्य मय डायरेक्शन के ५) प्रतिबाक्स कर दिया गया है। आगे चल करके इसका असली दाम ३०) प्रतिबाक्स चार्ज किया जायगा। वर्तमान परिस्थितियों के कारण माल थोड़ा बच रहा है। अतः अपना आर्डर आज ही भेजें सम्भव है कल पर छोड़ने से आप पीछे रह जायँ।

गारंटी—'५०० पौंड का नकद इनाम किसी भी वैज्ञानिक आयुर्वेदवेत्ता अथवा जनसाधारण को दिया जायगा जो इस आश्चर्यजनक खोज को गुणहीन साबित कर देगा।

नोट—"ओटोजन" अन्य शक्तिदायक औषधियों के विपरीत अपने प्रकार की अकेली औषधि है जो उष्णकटिबन्ध की गर्मियों में, जाड़े में नम तथा साधारण मौसम में प्रसंशनीय प्रभाव दिखाती है।

उष्ण कटिबन्ध की तीक्ष्ण गर्मी में जिस समय कि आप पूर्णतः शक्तिहीन हो गये हों उस समय ओटोजन आपकी शक्ति संचय करने में विचित्र प्रभाव दिखायेगा। हमने अपनी शाखा लाहौर से हटा ली है तथा १५ अगस्त १९४७ से हमारा कार्यालय इंगलैंड से हिन्दुस्तान आ गया है।

प्रमुख औषधि-विक्रेताओं से खरीदें अथवा हमारे यहां से शीघ्र मंगायें।

दी ओटोजन लेबोरेट्रीज़

भारतवर्ष का आफिस :—पोस्ट बाक्स नं० ४४७, बंबई।

जुकाम सर्दी पर अकसीर उपा
[illegible]
सन् १८६६
नीलगिरि तेल
पी. खांडालेकर बंधु बम्बई

१६॥) में ज्वेलवाली रिस्ट

स्वीसमेड ठीक समय देनेवाली
गारण्टी। गोल या स्क्वायर सेप
सुपिरियर २०), फ्लाट सेप क्रोमियम
३०), फ्लाट सेप रोल्ड गोल्ड १०
गारण्टी ५५), फ्लाट सेप १५
क्रोम केस ३८), फ्लाट सेप १५
रोल्ड गोल्ड ७५)।
रेक्टेंगुलर, कर्भ या टोनो सेप क्रोमि
केस ४२), सुपिरियर ४५),
६०), रोल्ड गोल्ड १५
९०) अलार्म टाइम पीस कीमत
बीग साइज २५) पोस्टेज
घड़ी लेने से माफ।
एच० डेभिड, एण्ड. को०
पो० बक्स नम्बर ११४२४,

एलाइड लाउडस्पीकर पर
इतमिनान रखिये
ब्याह
मेले
जलसे
सरकस
तथा
हर मौके पर इस्तेमाल कीजि
खरीदिये या किराये
लीजिये
एलाइड एलेक्ट्रिक
रेडियो कारपोरेश
हज़रतगंज
लखनऊ
कैनिंग
एला

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मिश्र-द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

सचित्र
साप्ताहिक
वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रति संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

१८ अप्रैल, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 18th April, 1948

महायुद्ध की तैयारियाँ हैं
अमेरिका का उद्योग-धंधा

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

दिल्ली का राजघाट एक तीर्थ स्थान
कांग्रेस-समाजवादी — भोपालराज्य

T. B.
टी० बी०

"तपेदिक" रोग के हताश रोगियो—

जब्री (jabri) का नाम नोट कर लो, यही इस दुष्ट रोग से रोगी की जान बचानेवाली शक्तिशाली औषधि है। एक बार परीक्षा करके देख लो, परीक्षार्थ ही नमूना रखा गया है, जिसमें तसल्ली हो सके। मूल्य नं० १ (स्पेशल) पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन २०) रु०। 'जब्री' नं० २ पूरा कोर्स २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु० महसूल आदि अलग है। आज ही आर्डर देकर रोगी की जान बचावें। तार का पता "jabri" jagadhri काफी है।

पता :—रायसाहब के० एल० शर्मा, रईस (D) 'जगाधरी' (E.P.)

शरणार्थी लड़कियाँ

विवाह योग्य पढ़ी लिखी शरणार्थी तथा दूसरे अच्छे खानदान की व यू० पी० की लड़कियों की लिस्ट व फोटो पाँच रुपया भेजकर मँगवायें शादी का शीघ्र ही प्रबंध किया जाता है। व्यर्थ पत्र-व्यवहार न करें।

मदनगोपाल बी० ए० मैनेजर हैप्पी मैरिज, बर्मा स्ट्रीट, सदर बाजार,

---

मुफ्त

युवको! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीवन फीका हो चुका हो तो भारत भर में सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त रोग विशेषज्ञ कविराज ब्रह्मसरूप बी० ए० लाहौरवाले फतेहपुरा (D.A.) देहली से मशविरा (सम्मति) मुफ्त लेकर अपना जीवन सुधार लें।

१६॥) में ज्वेलवाली रिस्टवाच

स्वीसमेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्ष की गारंटी है। गोल या स्क्वायर सेप १६॥) सुपिरियर २०), फ्लाट सेप क्रोमियम केस ३०), फ्लाट सेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारंटी ५५), फ्लाट सेप १५ ज्वेल क्रोम केस ३८), फ्लाट सेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड ७५)।

रेक्टेंगुलर, कर्व या टोनो सेप क्रोमियम केस ४२), सुपिरियर ४५), गोल्ड ६०), रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेलयुक्त ६०) अलार्म टाइम पीस कीमत १८), २२) बीग साइज २५) पोस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेने से माफ।

एच० डेविड, एण्ड. को० (S.P.)
पो० बक्स नम्बर ११४२४, कलकत्ता

---

५००) रुपये पुरस्कार

एक आश्चर्यमय आविष्कार

जादू की अँगूठी

यह अँगूठी जादू और मेस्मेरिज्म की शक्ति की सहायता से तैयार की गई है। यह आश्चर्य के काम करती है। जो कोई इस अँगूठी को पहनेगा, वह किसी भी उद्देश्य में, वह कितना ही कठिन और दुःसाध्य हो, सफल होगा। यह आपकी सब प्रकार के संकटों या रोगों से रक्षा करेगी। ग्रहों का कोई बुरा प्रभाव नहीं हो सकता। इस अँगूठी का पहननेवाला किसी भी व्यक्ति (पुरुष या स्त्री) पर वह कितना ही कठोर हृदयवाला हो, अपना पूरा नियंत्रण रखेगा। यही नहीं, वह अत्यंत विनीत बन जायेगा और अनुपस्थिति से अपने को दुःखी अनुभव करेगा। आप प्रेम, मुकदमेबाजी और नौकरी में सफल होंगे और बहुत-सा धन प्राप्त करेंगे। संक्षेप में, अँगूठी शरीररक्षक का काम देगी। एक बार आजमाइए और ठीक पहली रात को इसके आश्चर्यमय परिणाम देखिए।

मूल्य एक अँगूठी २ रु०। तीन अँगूठी ५ रु०। पैकिंग और पोस्टेज अतिरिक्त।

श्री शंकर भण्डार
पोस्टबाक्स २४३, कानपूर

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

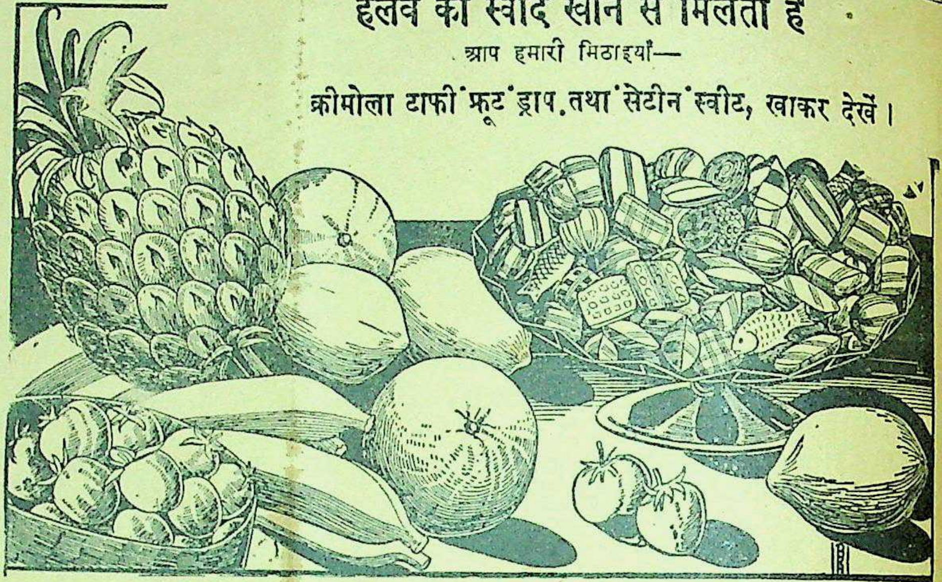

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस, बिल्डिंग इलाहाबाद।

---

५०० पौंड का इनाम

'ओटोजन' टानिक आपने परिष्कृत सूत्र में विगत वर्षों की अपेक्षा चौगुना शक्तिदायक और प्रभावशाली है। उपयोग से स्त्री या पुरुष अपनी वास्तविक उम्र से १५ से २० साल तक छोटे दीखने लगते हैं। प्रारम्भिक २४ घंटे के ही सजीवता और शक्ति में होनेवाली आश्चर्यजनक वृद्धि उल्लेखनीय है। यदि आप शक्तिहीनता, क्षीण स्मृति और शून्यता, अशुद्ध रक्त, अस्वस्थ त्वचा, खिन्नता, अनिद्रा, घुमनी, मानसिक अथवा शारीरिक थकावट आदि से ग्रस्त हैं, तो पार्कर द्वारा आविष्कृत **ओटोजन** (टानिक) में आपके लिए एक नवीन आशा है। एक सप्ताह में ही यह ५ से १० पौंड वजन बढ़ा देता है। आपके गालों पर लाली आ जाती और आपकी मुद्रा शत-प्रतिशत उन्नत दीखने लगती है। आपके आभा और दीप्ति वैसी ही हो जाएगी जैसी कि तरुणाई में थी जब कि आपकी चमड़ी मुलायम और ताजी थी। 'ओटोजन' आपकी आकृति को उन्नत बनाता और आंखों में एक दीप्ति, गालों और ओठों पर ललायी भर देता है। **ओटोजन** सौ वर्ष अधिक के एक दुर्बल रोगी पर आजमाया गया था। इस अलौकिक औषध के लगातार एक महीने के सेवन से, सौ वर्ष रोगी ने ३० वर्षीय तरुण-जैसा स्वास्थ्य प्राप्त किया था। हालीवुड के अभिनेता और अभिनेत्रियां, ८० और ९० वर्ष उम्र में भी इस औषध के सेवन से फुर्तीले, तरुण और आकर्षक हैं और रंगमंचों पर उत्साहपूर्वक अभिनय कर रहे हैं। और इँगलैंड में हजारों व्यक्तियों ने इसकी परीक्षा और सराहना की है और अब भारतवर्ष में भी यह उपलब्ध है।

बीसवीं सदी का यह आश्चर्यजनक आविष्कार और संसार का आठवां आश्चर्य है। **ओटोजन** के सेवन से स्त्रियां की कली का सौन्दर्य और स्कूल की छात्राओं जैसा आकर्षक रूप प्राप्त कर लेती हैं। मधुर, उज्ज्वल और भाग्यशाली दिन और स्त्रियों—दोनों को—पुनः प्राप्त हो जाते हैं, जो **ओटोजन** का सेवन करने लगते हैं। **ओटोजन** का सेवन शीघ्र और १०० वर्ष तक तरुण, चुस्त, शक्तिशाली और मुख पर गुलाब की लाली के साथ स्वस्थ रहिए। इससे भूख जाती है कि एक कमजोर व्यक्ति भी एक पौंड अथवा इससे भी अधिक मक्खन प्रतिदिन आसानी से पचा सकता है। का प्रभाव देखकर संसार के बड़े-बड़े वैज्ञानिक तथा अनुभवी डाक्टर चकित रह गए।

ओटोजन अपने ढंग का एक ही टानिक है, जिसका प्रयोग संसार भर के स्त्री-पुरुष करते हैं। चिकित्सा-इतिहास में यह अभूतपूर्व और आश्चर्यजनक आविष्कार है। आज से ही **'ओटोजन'** का सेवन प्रारम्भ कर दें और देखें। हां, प्रारम्भ करने के पूर्व अपना वजन तथा दर्पण में अपनी आकृति देख लें। एक सप्ताह के बाद पुनः दर्पण ध्यान दें कि वास्तव में आप कैसे दीखने लगे हैं और **ओटोजन** के सेवन का क्या प्रभाव पड़ा है।

प्रति डिब्बे की कीमत ५) पांच रुपए (डाकखर्च और पैकिंग अलग)।

गारण्टी—किसी भी वैज्ञानिक या आयुर्वेदवेत्ता अथवा जन-साधारण को इस आश्चर्यजनक आविष्कार को सिद्ध करने पर ५०० पौंड इनाम दिया जाएगा।

प्रमुख औषध-विक्रेताओं अथवा भाण्डारों में बेचा जाता है अथवा सीधे मँगवाइए—

दी ओटोजन लेबोरेट्रीज़

भारतवर्ष का आफिस :—पोस्ट बाक्स नं० ४४७, बंबइ।

देशदूत

संख्या ३२] [रविवार, १८ अप्रैल, १९४८

धी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

है कि लगभग एक हजार पाकिस्तान से भारत आ की समझ में नहीं आया घटना क्यों हो रही है ? लावारिश देश है ? वहां आते और काम करने का हमें वह दिन स्मरण है के साम्प्रदायिक मुसलमानों की स्थापना के लिए एड़ी- एक कर दिया था और चलकर हलुए पर एक । लेकिन बटवारा हो लोग हलुआ खाने उन्हें पता चला कि हैं। दूरवालों के लिये है लेकिन जो वहां अनुभव निराला ही प्राप्त कारण है कि जो साम्प्र- के ताव से पाकिस्तान राक से पुनः हिन्दुस्तान रहे हैं। हलुए का स्वाद वहां रहने की आवश्य- ?

* *

सरकार राशन-व्यवस्था करनेवाली है। अपने सरकार ने राशनिंग विभाग खोलकर जो महान् पुण्य कमाया है वैसा पुण्य बड़े बड़े सेठ साहूकारों ने स्वामी करपात्री जी के यज्ञ में दान देकर भी नहीं कमाया। राशनिंग खुलने पर पूंजीपतियों ने बड़ी लंबी लंबी आहुतियां डालीं, कितने तो उस पुण्य से मालामाल हो गये किन्तु बेचारी जनता उसकी सुगन्धि से ही अपना पेट भरती रही। राशनिंग क्या हुई सारे प्रान्त में पेट भरने के नाम पर खूब पेट भरा गया हर तरह से। लेकिन अब सरकार स्वयं पूर्णाहुति करने जा रही है इसलिए देखना है भविष्य में इसका क्या परिणाम निकलता है ? हमें तो प्रसन्नता इसी में है कि लोगों का पेट फूलने नहीं पाया और राशनिंग का टप्प होने जा रहा है।

* * *

एक कहावत प्रसिद्ध है कि लाख कीजिए किन्तु कुत्ते के दुम की ऐंठन नहीं जाती। वह टेढ़ी की टेढ़ी ही रहती है। यही दशा हैदराबाद रियासत की है। मामला सुलझ जाने पर भी उलझ ही जाता है। प्रतिदिन नई वार्ता के लिए रियासत और भारत-सरकार के बीच दिल्ली से हैदराबाद तक की दौड़ जारी रहती है। एक ओर रियासत में भारी गपड़चौथ मची हुई है, लोगों को शान्ति के साथ रहना कठिन हो रहा है और दूसरी ओर रियासती शासक प्रगतिशील बनने का भी पाखंड फैलाने में दांव पेंच जारी रखत है। मामला गहराई तक पहुँचते ही झट से अवसरवादी शासक दिल्ली की ओर दौड़ पड़ते हैं। लेकिन अंत में वही हाल होता है कि कुत्ते की दुम टेढ़ी की टेढ़ी।

* * *

कल परसों की बात है कि श्रीमती अरुणा आसफअली ने कहा कि कांग्रेस सरकार को शस्त्रबल से हैदराबाद के कारनामों को रोकना चाहिए। यही नहीं श्रीमती जी ने कांग्रेसी सरकार को भी ललकारा है कि यदि वह शस्त्रबल से हैदराबाद की बुद्धि नहीं दुरुस्त करती है तो समाजवादी दल इस काम को अपने हाथ में लेगा। अपने राम की समझ में भी यही आता है कि कांग्रेस सरकार की चाल तो इस वक्त कछुए की सी है और समाजवादी दल की हिरन की सी। किन्तु चिन्ता की बात तो यह है कि श्रीमती अरुणा शस्त्रबल से हैदराबाद को झुकाना चाहती है। लेकिन वास्तविकता यह है कि कांग्रेस सरकार पहले तो पक्की गांधीवादी है, अहिंसा परमोधर्मः की मर्यादा का पालन करनेवाली है, यदि इस काम में असफलता मिली तो आगे के लिए वह क्या करेगी, यह सब कुछ सोचना तो उसी का काम है किन्तु यदि समाजवादी दल हैदराबाद के संबंध में कुछ करना चाहता है तो उसे रोकनेवाला कौन है ? जब कांग्रेस दल को ही समाजवादी दल ने कुछ नहीं समझा तो हैदराबाद की उसके सामने क्या बिसात है ? फिर श्रीमती अरुणा तो आगे रहेंगी ही, इसलिए ऊँट कस करवट बैठे इसे कौन जाने ?

गीत

लेखक, श्री नर्मदाप्रसाद खरे

आज नयन क्या बोल रहे हैं ?
तुम पूनो की खिली चांदनी
ये युग-युग की प्यासी आंखें,
रूप-गगन में उड़ थक जातीं
मन-पंछी की कोमल पांखें;
गीले पलक लजीले लोचन
मेरे बन्धन खोल रहे हैं।
मधु-मरन्द की अञ्जलियां पा
फिरता था मैं फूला-फूला;
आज मलिन मुख-कमल देख क्यों
क्लान्त-श्रान्त मन भूला-भूला,
बीते दिवस—मिलन के वे क्षण जीवन में विष घोल रहे हैं।
मन की पीर नयन में उतरी
झलक उठे आंसू के मोती,
शशि-मुख पर करुणा की छाया
मानो मौन वेदना सोती,
ममता जोड़ विदा-वेला में आज नयन क्या बोल रहे हैं !
गंगा की पावन धारा-सा
यह तट तुमने चूम लिया था,
तपन मिटा, जीवन रसमय कर
अर्घ्य चढ़ा, अभिषेक किया था,
दूर, विलग होकर भी मुझमें प्राण तुम्हारे डोल रहे हैं।

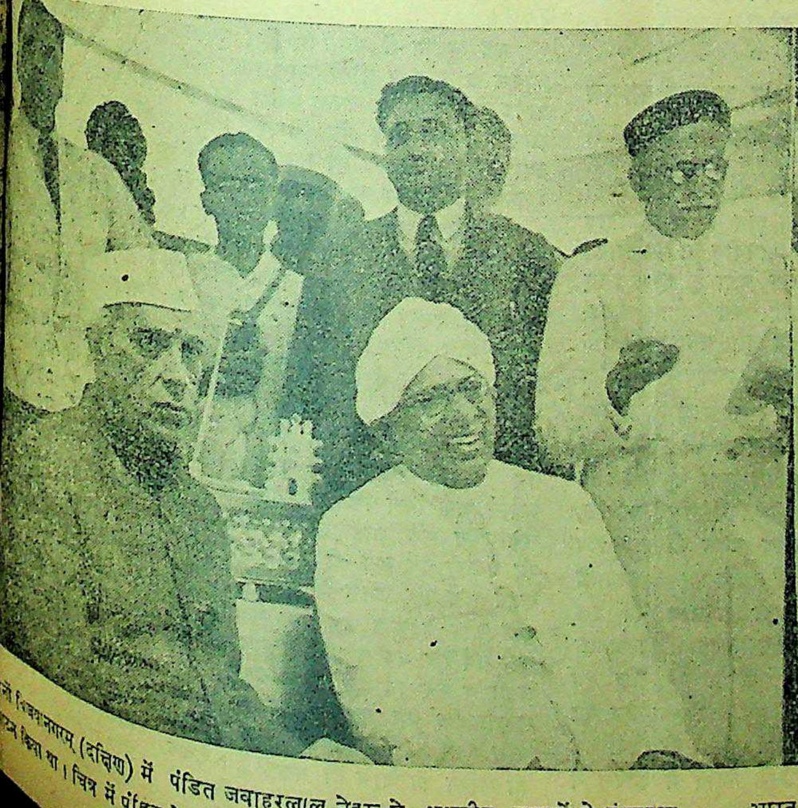

नगरम् (दक्षिण) में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भारतीय जहाजों के बंदरगाह किया था। चित्र में पंडित नेहरू सिंधिया स्टीम नेवीगेशन कम्पनी के सर बालचन्द्र हीराचन्द्र के साथ बैठे दिखाई दे रहे हैं।

भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू विजयानगरम् में बन्दरगाह पर काम करनेवाले मज़दूरों की यूनियन के भवन का शिलान्यास कर रहे हैं पंडित नेहरू के साथ स्थानीय कांग्रेस नेता तथा मज़दूर कार्यकर्ता।

सम्पादक का पृष्ठ

भारतीय उद्योग-धंधा

भारतीय औद्योगिक अवस्था में सुधार करने के लिए एक लम्बे अर्से से चर्चा चल रही है। वास्तव में इस युग में जहां तक भारतवर्ष का सम्बन्ध है इसकी औद्योगिक दशा अत्यन्त दयनीय है, महात्मा गांधी और कांग्रेस के सिद्धान्तों का अध्ययन करने के पश्चात् कोई भी व्यक्ति उद्योग-धंधों की उन्नति के लिए वही बात सोचेगा जिसे जो आज की सरकार भी करने जा रही है। वर्तमान अवस्था के अनुसार अब यह निश्चय करना सरल नहीं है कि समाज का धन और उसकी पूंजी का उपयोग किस प्रकार हो जिससे साधारण से साधारण आदमी को भी जीवन की समस्त सुविधाएँ प्राप्त हो सकें। उद्योगों के राष्ट्रीयकरण का अर्थ यह नहीं है कि हम बँटवारे के द्वारा केवल पूंजीवाद का शोषण ही करें, या इसे बिलकुल ही समाप्त कर दें। औद्योगिक उन्नति का अर्थ यह नहीं है कि हम उद्योग-धंधों को एक विशेष सीमा में सीमित कर दें, देश में जनता का कुछ भाग भूखों मरे यह बात उन लोगों के लिए घातक है जो उनके विरुद्ध पूंजी का व्यक्तिगत उपयोग करते हैं, औद्योगिक विकास और पूंजीवाद दोनों साथ-साथ नहीं रह सकते, पूंजीवाद व्यक्तिगत सुख का अनुमोदक है और व्यक्तिगत सम्पत्ति देश में समता नहीं स्थापित कर सकती।

सम्पत्ति की वृद्धि उत्पत्ति की अधिकता पर निर्भर है, केवल सम्पत्ति के लिए ही अपने को उपयोग में लाना, उत्पादन-शक्ति का ह्रास करना है। पूंजीवाद के समाप्त करने का अर्थ इससे भी अधिक धन का प्रबन्ध करना है, व्यक्तिगत व्यापार और लाभ देश के औद्योगीकरण को उच्च स्तर देने की शक्ति नहीं रखता। सबसे पहले हमें अपनी निर्धनता को मानवता की कोटि में लाने का प्रयत्न करना चाहिए। साधारण वैमनस्यों से पूर्ण रूप से मुक्ति पाना सबसे आवश्यक काम है; समाजवाद को केवल भौतिक दृष्टिकोण के सुख से ही सारी परिस्थितियों का निर्माण न करके उन्हें अहिंसात्मक तत्त्व के अन्तर्गत लाने का भी प्रयास करना चाहिए, इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए पिछले दिनों केन्द्रीय सरकार के उद्योग-मंत्री डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी ने भी कहा था, कि हमें देश की गरीबी का बँटवारा करके उसकी सम्पत्ति के बढ़ाने का उपाय करना चाहिए, अभी इस समय एकबारगी देश का औद्योगीकरण होना किसी प्रकार सम्भव नहीं, इसलिये सरकार ने यह निश्चय किया है कि वह देश के पूंजीपतियों के पास थोड़े उद्योग-धंधे रहने दे और शेष अपने अधिकार में लेकर उनकी सहायता से देश में नये नये कारखाने खोले यह अत्यन्त लाभप्रद है। इस योजना को सरकार ने तीन भागों में विभक्त किया है।

पहली कोटि में वे धंधे हैं जिनका सम्बन्ध केवल सरकार से रहेगा। इनके अन्तर्गत, ऐटम शक्ति, हवाई जहाज के निर्माण का विभाग, लोहे का कारखाना, टेलीफोन आदि आते हैं। इसके अतिरिक्त मिट्टी के तेल और पेट्रोल पर भी सरकारी नियंत्रण रहेगा, किन्तु अभी जल्दी ही इन उद्योगों पर सरकार अपना अधिकार न करेगी, यदि कोई विशेष अवस्था न उत्पन्न हुई तो।

दूसरी कोटि में सहकारी कारखाने और उद्योग आते हैं, जनता के अतिरिक्त सरकार भी इन कारखानों के साथ अपने कारखाने खोल सकती है, यदि व्यक्तिगत कारखाने देशीय औद्योगिक उन्नति में बाधक होंगे तो सरकार उन्हें अपनी रक्षा में ले सकती है। इसके अन्तर्गत, ट्रेक्टर, मोटर, बिजली, खाद, औषधियां, धातु, रबड़, सूती और ऊनी कपड़े, स्पिरिट, अखबार, रक्षा-सम्बन्धी काम, आ जाते हैं, इन कारखानों पर सरकारी अनुशासन रहेगा।

तीसरी श्रेणी में घरेलू उद्योगों की विवेचना आती है, जिनके आधार पर देश में उद्योग-धंधे बढ़ाने की योजना बन रही है। इस प्रकार के धंधों की उन्नति सरकार हृदय से चाहती है, जिसमें वह आवश्यकतानुसार सहायता भी देगी। इस समय ऐसे धंधों की अधिक कमी है, समाजवाद का समस्त कार्य इन कार्यों की उन्नति पर निर्भर है, इनकी उन्नति का प्रभाव पूंजीपतियों पर विशेष रूप से पड़ेगा। वैसे तो पूंजीपति यदि व्यक्तिगत लाभ पर विचार न करें तो देश के लिए वह उत्तम सहायक बन सकता है। धनी समाज को शोषण के स्थान पर हितसाधन का प्रयत्न करना चाहिए, इसी न्यूनता के कराण देश में निर्धनता का राज्य और बेकारी की भीषण बीमारी फैली है, मजदूरों के हितसाधन के लिए सरकार अपनी इन नीतियों से अच्छी सफलता पायेगी, ऐसा विश्वास है; पूंजीपतियों और मजदूरों के बीच एक ऐसा समझौता होना अत्यन्त आवश्यक है जो उनके साधनों और अधिकारों की रक्षा कर सके, इसके लिए सरल उपाय यह है कि पूंजी क मुनाफा बांटने की प्रवृत्ति में सरकार की ओर से कुछ परिवर्तन किया जाय, जिसमें मजदूरों की भी जगह रहे! सरकार की सारी योजनाएँ हमारे भविष्य को उत्तम बनाने की क्षमता रखती हैं, यदि उनका व्यवहारिक स्वरूप भी उत्तम रूप से प्रकट किया जाय! आशा है कि औद्योगिक विकास के साथ साथ देश में एक नया जीवन भी आवेगा, जिसमें शोषण कार्य का सर्वथा अन्त ही हो जायगा।

* * *

प्रांतीय कांग्रेस का अध्यक्ष-आसन

समाजवादियों और कांग्रेस-नेताओं के बीच जो असामयिक वियोग हो गया है, इस कारण यू० पी० कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पद की पूर्ति के लिए प्रांतीय कांग्रेस कमेटी ने माननीय टंडन जी को कार्यवाहक सभापति चुना है, इसके लिए हम उसे बधाई देते हैं। वास्तविकता यह है कि इस समय कांग्रेस के अन्दर अनैतिकता और भ्रष्टाचार फैल रहा है, इस समय एक ऐसे आत्मत्यागी, ईमानदार और प्रजासेवक आदमी की आवश्यकता है जो इस परिवर्तित दशा में कांग्रेस के भीतर उसके प्राचीन आदर्श को दृढ़ कर सके, इस दृष्टि से श्रद्धेय टंडन जी का चुनाव सर्वथा उचित ही है। यदि यह असावधानी बढ़ती गई तो किसी भी संस्था को देश में कांग्रेस के विरुद्ध लाभ उठाने का अच्छा अवसर मिलेगा। हमें आशा है कि जब स्थायी रूप से चुनाव होगा तो इस पद के लिए माननीय टंडन जी ही निर्वाचित किये जायेंगे। उनके नेतृत्व में कांग्रेस में सदाचार, नैतिकता और ईमानदारी की [illegible] वृद्धि होगी, ऐसा विश्वास किया जाता है।

कांग्रेसवादी बनाम समाजवा

नया चुनाव आते ही आखिर यह इतना भेदभाव

लेखक, पंडित मोहनलाल नेहरू

इस समय कांग्रेस और समाजवादियों में मतभेद उत्पन्न हो गया है। स
कांग्रेस से अलग हो गये हैं। आखिर वर्षों कंधे से कंधा मिलाकर चलनेवाले
प्रकार मतभेद क्यों उत्पन्न हो गया है। वयोवृद्ध लेखक पंडित नेहरू ने इ
कांग्रेस और समाजवादियों की वर्तमान स्थितियों पर अपने विचार व्यक्त
लेख सुंदर और सामयिक है।

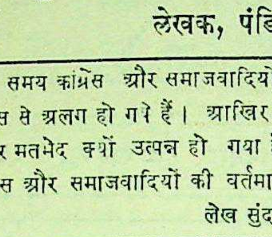

इस लेख के लेखक पंडित मोहनलाल नेहरू।

मानव-जाति भी और पशुओं की तरह स्वार्थी है। केवल भेद इतना है कि उसमें सोचने, समझने और धोखा देने, की न केवल दूसरों को नहीं वरन् अपने को भी, शक्ति है, हर वाद-विवाद में यही देखने में आ रहा है। इस समय कांग्रेसी और समाजवादियों में ऐसा ही विवाद छिड़ा है। दोनों ही अपने को गांधीवादी बताते हैं, परन्तु एक दूसरे को नीचा दिखाने के यत्न में लगे हैं। ऊँचे से ऊँचे कांग्रेसी तथा समाजवादी जो अब तक कंधे से कंधा भिड़ाकर देश की स्वतन्त्रता-प्राप्ति में लगे थे अब एक दूसरे को जड़ काटने में तत्पर हो गये हैं। अपने व्याख्यानों में जिनकी आजकल कमी नहीं वे एक दूसरे की कमी दिखाने में लगे हैं और किसने क्या नहीं किया या कौन क्या नहीं कर सकता इसी का राग अलापा जा रहा है। यह कोई नहीं कहता कि किसने क्या किया और वह उससे ज्यादा क्या कर सकता था और कैसे इसका कोई जिक्र तक नहीं करता।

गत चुनाव में सबने मिलकर चुनाव कांग्रेस के नाम से जीता और शासन की बागडोर हाथ में ली परन्तु शक्ति लेते ही आपस में भेद-भाव पैदा हो गया। यह क्यों? इसका कारण भी स्पष्ट है, प्रत्येक व्यक्ति को हाकिम बनने का शौक चर्राया हुआ था और उसी ने भेद-भाव बढ़ाया। जो लोग मंत्रियों की पंक्ति में न बैठ सके उन्हें यही रास्ता खुला दिखाई दिया कि सीधी जनता को बरगलायें कि अगले चुनाव में वे मंत्रिपद पर बैठ सकें। इसके लिए यह जरूरी है कि पुराने लीडरों ने 'क्या नहीं किया' इसपर जोर दें।

दूसरी तरफ जो लोग मंत्रियों के पद पर बैठ गये उन्होंने हर तरह के जोर लगाने शुरू किये कि उन्हें वहां से कोई उखाड़ न सके कोई उन्हें नीचा दिखाने की धमकी देने लगे तो कोई यही पुकार करने लगे कि उनके पास कोई प्रोग्राम नहीं और वे कुछ कर नहीं सकते। यह भूल गये कि जब तक कोई काम हाथ में लेकर न करे तब तक यह मालूम हो नहीं सकता कि वह कर सकेगा या नहीं? काम करने से ही करनेवाले की काम करने की शक्ति की जांच हो सकती है। केवल इम्तहान पास करने से किसी व्यक्ति की [illegible] नहीं होती वैसे ही खाली जेल जाने का इम्तहान पास करने

से किसी की जनता के सेवा क
सकने की शक्ति की जांच नहीं

यह समय ऐसा था कि
कांग्रेसवादियों को मिलकर
सेवा करनी चाहिए थी कि
की उन्नति हो, मगर ताकत मि
उस सेवा का इनाम ढूंढ़ने लगे
विदेशी शासन-काल में की
पतन का आरम्भ है।

फिर भी यह मानना पड़े
लोग कुर्सी पर बैठा दिये गये उन्हें
सेवा भाव को भुलाया नहीं और
उन्नति कर दिखाई। जहां उन्हें
पेशा लोगों की वेतन में बढ़ती
शिकायतों की जांच-पड़ताल
किया, वहां इसका भी इन्त
था कि उनको बेजा मांगें
थाम करें। जहां अध्याप
बढ़ाने का सवाल था-वहां
भी जरूरी हो गया और
आन्दोलन दबाना भी;
ने वे जरूरत कार्यकर्ता
थे उन्हें पदों से हटाना भी
और उसके खिलाफ आन्दोलन
जरूरी था, क्योंकि उपद्रव
कर्तव्य था, जहां आये दिन
दंगे हो रहे थे वहां पुलिस पर
ही अनिवार्य था। यह भी मा
कि पुलिस के रवैये में बहुत
हो गया, यद्यपि अभी पुरा
की बू पूरी तरह नहीं गई है
लेने की आदत। यहां पर ए
मगर सच्ची घटना बताकर
का सुबूत देता हूं। एक जगह
चोरी करते पकड़ा गया और
मय माल सुपुर्द कर दिया
ने उस मामले को दबा दि
के साथी ने मालिक से कहा
कर नहीं सकते कि यदि
मामला रफा-दफा करा
भेद इतना था कि पुराने
हमें ऐसी घटनाओं के
देने पड़ते थे इस समय
हो गये हैं।

जिस समाज में रि
आदत बहुत पुरानी है उस
में देर लगेगी। यह हम मा
कहने पर हम मजबूर हैं कि
पकड़ा जाये तहां उसे
कांग्रेसी हो चाहे समाजवा
कुल्हाड़ी मारना है, दू
बदनाम करने का मौका
वे अपने शासन-काल में
सकें। हमारी वर्तमान
चाहे जान-बूझकर चाहे
दे रही है कि विरोधियों
का मौका मिले इसमें
इसकी एक जीती-जागती
में सिमेंट का चोरबाजार
जहां रहने के घर बनाते
मिलती वहां सिनेमाघर
और सकड़ों बोरे सिमें
लाखों ईंट की कमी नहीं

शेष पृ

चेकोस्लोवाकिया का उद्योग-धंधा

क्या भारतीय उद्योगों के विकास तथा राष्ट्रीयकरण का भी महत्त्वपूर्ण हल हो रहा है ?

लेखक, श्री राधानाथ चतुर्वेदी

> योरोपीय देशों मे चेकोस्लोवाकिया के महत्त्वपूर्ण राजनैतिक परिवर्तन की ओर प्रगतिशील राष्ट्रों की दृष्टि लगी हुई है। राजनैतिक परिवर्तन के साथ ही वहाँ के उद्योग-धंधों के विकास की ओर कदम बढ़ाया जा रहा है। इस लेख में लेखक ने चेकोस्लोवाकिया के उद्योग-धंधों के विकास पर एक दृष्टि डालते हुए भारतीय उद्योग-धंधों के विकास तथा राष्ट्रीयकरण की ओर ध्यान आकर्षित किया है। लेख सामयिक और पठनीय है।

चिली के प्रेसिडेंट कान्जेलेज विडेला।

दोवर्षीय योजना का व्यवहार में लाया जाना आरम्भ हुआ उस समय चेकोस्लोवाकिया के ६२ प्रतिशत उद्योग सरकारी नियंत्रण में थे। खनिज उद्योग को तो सरकार ने शत-प्रतिशत अपने नियंत्रण में ले लियाथा। चमड़े का उद्योग जो मोरेविया की उपत्यका का सबसे बड़ा उद्योग है ६० प्रतिशत राष्ट्रीय नियंत्रण में आ गया था। विद्युत व जल-उद्योग ८२ प्रतिशत सरकार के हाथ में था। कुछ हंगेरियन व जर्मन उद्योग अवश्यमेव छोड़ दिये गए थे। उनके सम्बन्ध में यह तय किया गया था कि या तो स्थानीय अधिकारी ही उनकी देखभाल करें अथवा उन उद्योगों को उनकी ही श्रेणी के बड़े औद्योगिक कारखानों के संलग्नित कर दिया जाय। जिन कारखानों में यंत्रों का अभाव था और जिनका संचालन युद्धकाल में जर्मनों के हाथ में होने के कारण जर्मन जाते समय उन्हें नष्टप्राय कर गये थे उन सबको बन्द कर दिया गया। यदि इन आंकड़ों को भी जोड़ लिया जाय तो चेकोस्लोवाकिया के औद्योगिक राष्ट्रीयकरण की सीमा ६५ प्रतिशत तक पहुँच जाती है।

राष्ट्रीयकरण और उत्पादन

यद्यपि चेकोस्लोवाकिया के ६५ प्रतिशत उद्योगों का ही राष्ट्रीयकरण हो पाया था, किन्तु इसका प्रभाव उत्पादन पर राष्ट्रीयकरण के कुछ मासों के अन्दर ही परिलक्षित होने लगा। युद्ध के पूर्व सन् १९३७ का उत्पादन ही शान्तिकालीन उत्पादन गिना जा सकता है। सन् १९३७ में उद्योगों का जो उत्पादन था उसके अनुपात के अनुसार सितम्बर १९४५ में ही ५० प्रतिशत उत्पादन में वृद्धि हो गयी। दिसम्बर १९४५ में उत्पादन ५५ प्रतिशत हो गया और मई १९४६ में यह वृद्धि ७० प्रतिशत तक पहुँच चुकी थी। अन्तिम आंकड़े जो उपलब्ध हो सके हैं वह हैं अक्टूबर-नवम्बर १९४६ के जब कि उत्पादन की वृद्धि ७५ प्रतिशत और ८० प्रतिशत के मध्य में कहीं थी। नवम्बर १९४६ वह समय है जब उद्योगों का राष्ट्रीयकरण समाप्त हो रहा था और लगभग १-१॥ मास बाद जनवरी १९४७ द्विवर्षीय योजना लागू होने लगी थी। अभी तक द्विवर्षीय योजना के उत्पादन आदि के आंकड़े प्रकाशित नहीं हुये हैं किन्तु जब भी वह प्रकाशित होंगे उनके अद्भुत विकास से संसार सत्य ही स्तब्ध रह जायगा। अक्टूबर १९४६ में कोयले के उद्योग में उत्पादन की ९० प्रतिशत वृद्धि हो चुकी थी। लोहा तथा इस्पात का उत्पादन तथा इंजन आदि निर्माण का कार्य ७२ प्रतिशत बढ़ चुका था। रसायन (दवाइयां) रंग इत्यादि का उद्योग १२२ प्रतिशत बढ़ चुका था। कांच के उद्योग में शत प्रतिशत वृद्धि हो चुकी थी। कागज वा मुद्रण-उद्योग ७५ प्रतिशत बढ़ चुका था। मुद्रण की यह वृद्धि तब है जब वहां पर कुछ विशिष्ट वर्गों को छोड़कर प्रत्येक व्यक्ति प्रकाशन कार्य कानूनन नहीं कर सकता। विद्युत-उत्पादन का कार्य १५५% से भी ऊपर बढ़ चुका था।

औद्योगिक राष्ट्रीयकरण के ६५ प्रतिशत के आंकड़ों से जब उत्पादन-वृद्धि के ७५ प्रतिशत से ८० प्रतिशत आंकड़ों की तुलना की जाती है तो वह सहज ही अनुमान दिला देती है कि चेकोस्लोवाकिया की जनता किस स्फूर्ति और उत्तेजना के साथ राष्ट्र-निर्माण के कार्य में जुट गई है।

मनुजशक्ति और उद्योग

जिस समय मई सन् १९४५ में लाल सैना ने चेकोस्लोवाकिया को जर्मन सेना के चंगुल से मुक्त कराया उस समय वहां के उद्योगों में काम करनेवाले जर्मन श्रमिकों की संख्या २ लाख ३० हजार थी। चेकोस्लोवाकिया की जनता विजय के बाद इस बात के लिए एक क्षण को भी तैयार न थी कि वह जर्मन उनके देश में रहें जो चेकोस्लोवाक देशभक्तों के कत्लेआम पर खुशी के भोज देते तथा तालियां पीटते थे। स्वतन्त्र होने के ६ मास के अन्दर ही जर्मनी वापस चले जानेवाले जर्मनों की संख्या १ लाख ७० हजार थी। कुछ समय में शेष ६० हजार जर्मन श्रमिकों को भी चेकोस्लोवाकिया छोड़ देना पड़ा। जर्मनों के हटते समय यह साधारण सी भावना जनमत में व्याप्त थी कि संभवतः जर्मन-श्रमिक शक्ति के अभाव में उत्पादन घटे, किन्तु यह भावना गलत सिद्ध हुई। यद्यपि नए दुर्बल तथा अ-अनुभवी चेकोस्लोवाक श्रमिक उद्योगों में नियुक्त किए गए थे फिर भी उत्पादन कुछ प्रतिशत बढ़ा। जर्मनों का स्थान स्लोवाकिया के श्रमिकों ने मोरेविया, बोहेमिया तथा साहलेशिया में जाकर ले लिया। स्लोवाकिया की महिलाएँ भी उद्योग-क्षेत्र में उतर आईं और शीघ्र ही उन जर्मनों के स्थान पर गए जिन्होंने हिटलरी शासन काल में विभिन्न उद्योगों पर अधिकार जमा रखा था। सन् १९३७ में चेकोस्लोवाकिया के उद्योगों में काम करनेवाले श्रमिकों की संख्या १३,१५,००० थी। इनमें से ४-४॥ लाख जर्मन थे। दिसम्बर १९४६ में चेकोस्लोवाकिया के उद्योगों में १०,८६,००० व्यक्ति काम कर रहे थे इनमें से केवल ६१,००० जर्मन थे। वह जर्मन जिन्होंने चेकोस्लोवाकिया के देशहितों की रक्षा के प्रति शपथ ग्रहण कर ली थी। काम करनेवाली चेकोस्लोवाक महिलाओं की संख्या ३ लाख ४ हजार थी। जब सन् १९३७ में एक भी चेकोस्लोवाक महिला किसी भी उद्योग में काम न करती थी।

सितम्बर १९४५ में चेकोस्लोवाकिया के उद्योगों में काम करनेवाले व्यक्तियों की संख्या केवल ९ लाख ७८ हजार थी। दिसम्बर १९४६ में यह संख्या १०,८६,००० हो गई। सितम्बर १९४५ से दिसम्बर १९४६ की मनुज-शक्ति की वृद्धि तुलना करने पर १० प्रतिशत से अधिक नहीं ठहरती किन्तु उत्पादन की वृद्धि ७५ से ८० प्रतिशत तक पहुँच जाती है।

इससे यह स्पष्ट है कि उत्पादन-वृद्धि मनुज-शक्ति की वृद्धि पर ही आधारित नहीं है। चेकोस्लोवाकिया के औद्योगिक अनुभव से यह दो बातें सिद्ध हो गई हैं कि नए और अर्ध-अनुभवी श्रमिकों को भी शीघ्र ही शिक्षित व कार्यपटु बनाया जा सकता है। दूसरी बात पुराने ही आदमियों के अन्दर राष्ट्र के अपनत्व की भावना भरकर उनसे अधिक पटुतापूर्ण उत्पादन की आशा की जा सकती है। यह ऐसी है जो कभी निष्फल सिद्ध नहीं होती।

वर्तमान उत्पादन की दशा

उत्पादन की इस समय चेकोस्लोवाकिया में यह दशा ह कि कोयले की खानें

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

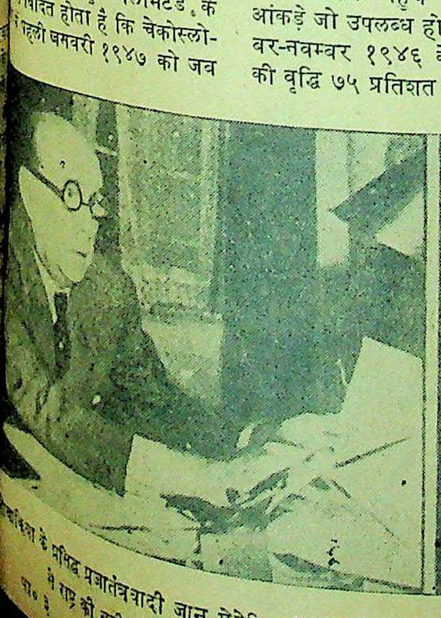

किया के प्रसिद्ध प्रजातंत्रवादी जान मेसेरिक जिनकी मृत्यु से राष्ट्र की बड़ी हानि हुई है।

चेकोस्लोवाकिया के प्रेसिडेंट एडवर्ड बेनेस, ज कम्यूनिस्ट शासन-नीति से परेशानी में पड़ गये हैं।

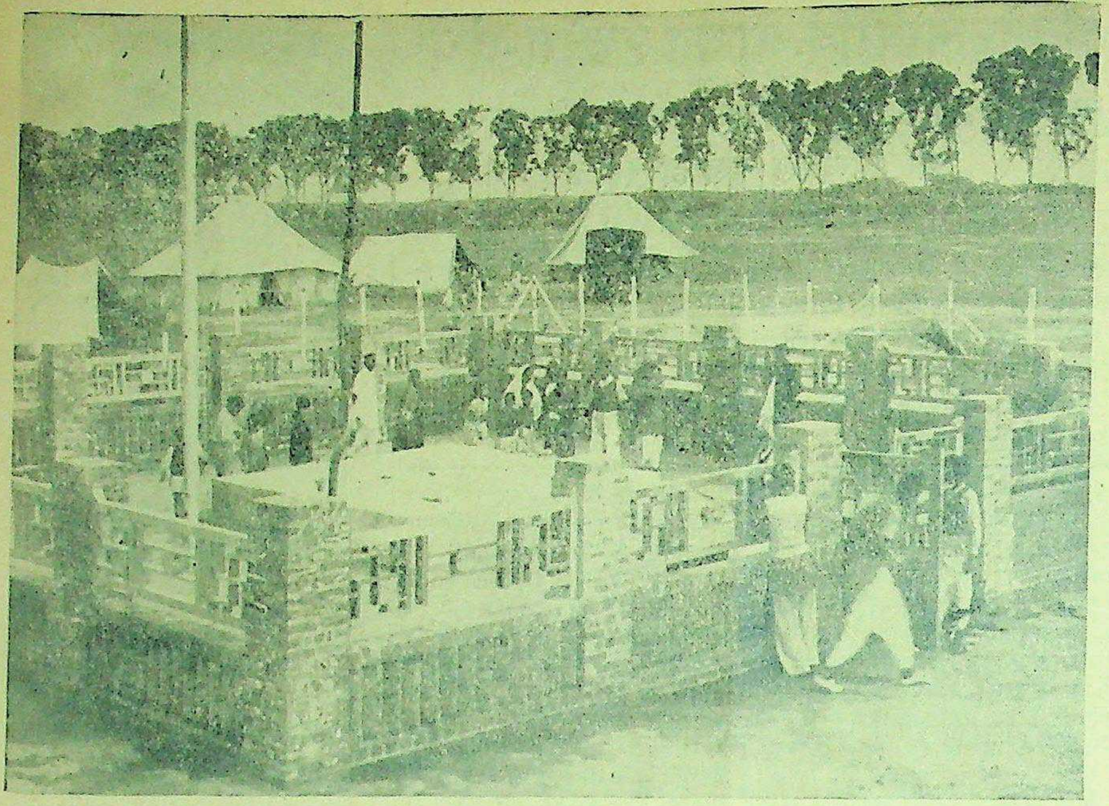

राजघाट (दिल्ली) जहाँ महात्मा गांधी का दाह-संस्कार हुआ था। प्रति दिन हजारों व्यक्ति यहाँ महात्मा जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं

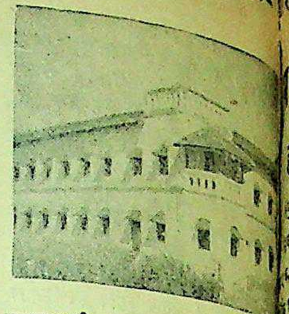

महात्मा जी द्वारा स्थापित साबरमती आश्रम के एक ओर का दृश्य।

साबरमती आश्रम में सन् १९१८—१ तक पूज्य बापू और पूज्य बा के का घर।

दिल्ली का राजघाट—एक तीर्थ

महात्मा गांधी के चिता-भस्म का पवित्र स्थल आजकल महान् तीर्थ बन गया है।

यमुना नदी के तट पर दिल्ली के पूर्वीय और पश्चिमी क्षितिज की ओर राजघाट स्थित है, दूसरे शब्दों में हम इसे ५० करोड़ का एक व्यर्थ भूमि-भाग भी कह सकते हैं, आज से कुछ समय पूर्व यह भूमि-भाग भी यमुना की लहरों के खेलने की चौपाटी था, अब भी जल की अधिकता इस भूमि-भाग को यदा-कदा अपने में छिपा लेती है, और लालकिले की छाया को अन्तर में भरकर लहरें खेला करती हैं! ३१ जनवरी के पहले राजघाट किसी विशेषता के लिए नहीं प्रसिद्ध था, और न इससे लोगों में कोई प्रेम ही था, किन्तु ३१ जनवरी की सांझ के पश्चात् इस स्थान का नाम संसार के कोने-कोने में पहुँच गया, महात्मा गांधी ने अपने जीवन-काल में कुछ स्थानों को जिनका कोई महत्त्व न था संसार-प्रसिद्ध कर दिया था जैसे, साबरमती, सेवाग्राम और वर्धा किन्तु मरने के बाद भी उन्होंने एक अविख्यात स्थान को वह रूप दे दिया जो विश्व के इतिहास में अपना प्रमुख स्थान रखेगा, इसके अतिरिक्त वह यात्रियों के लिए, काशी, वृन्दावन और जगन्नाथ-पुरी की भांति एक तीर्थ स्थान बन गया—गांधी जी ने श्मशान-भूमि को देवभूमि बनाया। यह भी उनके जीवन की तपस्या की एक महान् विजय है!

महात्मा जी के शवदाह-दिवस और उसके पश्चात् राजघाट के दर्शन करने संसार के अधिकांश महापुरुष पहुँचे थे, उस समय दिल्ली के महलों से अधिक स्थान राजघाट को ही प्राप्त था, असंख्य नर-नारी इसी भूमि-भाग पर अपने आंसुओं को सँजोए राष्ट्र पिता गांधी जी की अन्तिम झांकी कर रहे थे, राजघाट के वक्षःस्थल पर जलती हुई लाल-लाल लपटें जीवन के तम को प्रकाश देकर उसे सजग कर रही थीं।

चार फरवरी को जब आकाश पर कुछ बादल के टुकड़े चिता की भस्म लेने को आतुर हो रहे थे, उस दिन अस्थि-संग्रह किया जा रहा था तो उस समय की गम्भीरता, शान्ति, और आस्था उन लोगों के मन से कभी नहीं जा सकती जो वहां उपस्थित थे, अब दाह-संस्कार का वह अमर स्थान चारों ओर से दीवार और तारों की सहायता से सुरक्षित कर दिया गया है, प्रतिदिन दर्शक अकेले या अपने साथियों सहित निरन्तर उस पावन स्थान के दर्शन करने आते हैं, दर्शक अपने साथ फूल लाते हैं और प्रार्थना करके उन्हें राष्ट्रपिता की भभूति को समर्पित करते हैं।

सम्भवतया एक वर्ष के अन्दर ही राजघाट पर ९० एकड़ का एक बाग बनेगा, इस बड़े बाग के अन्दर भी एक दूसरा छोटा बाग रहेगा, और इन बागों के बीच में महात्मा जी की एक विशाल मूर्त्ति स्थापित की जावेगी, इस कार्य के लिए विश्व के कुशल कलाकार निमंत्रित किये जावेंगे, इनमें श्री नन्दलाल बोस शान्तिनिकेतन के कलाकार भी होंगे। इस प्रकार इसके निर्माण के पश्चात् राजघाट पर जो दर्शक आयेंगे, वे महात्मा जी की मूर्ति का दर्शन करके सत्य, अहिंसा और भक्ति के सामंजस्य पर विचार करेंगे, राष्ट्रपिता के जीवन की समस्त अनुभूतियों अपने में भरेंगे! राजघाट अब अपना एक अलग ही स्थान और व्यक्तित्व रखता है। भविष्य के इतिहास में राजघाट एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त करेगा और संसार के समक्ष युग-पुरुष गांधी जी की स्मृति को प्रस्तुत करता रहेगा।

राजघाट में फूल बेचनेवालियाँ यात्रियों को महात्मा जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये फूल देती हैं।

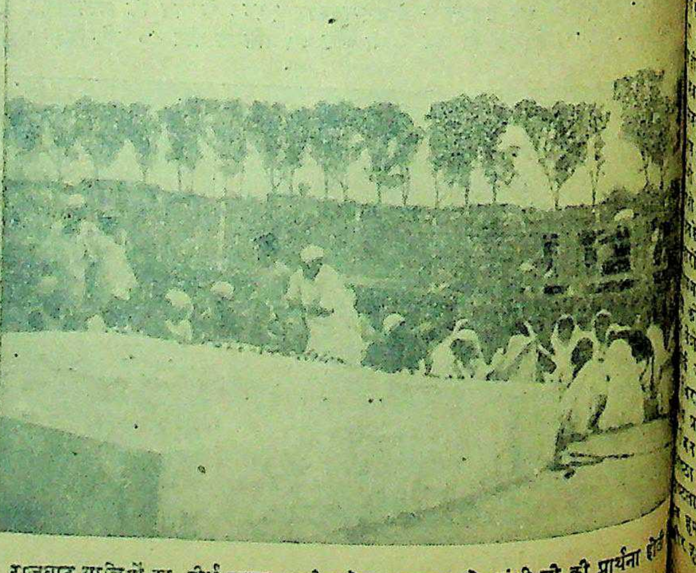

राजघाट यात्रियों का तीर्थ स्थल जहां प्रत्येक शुक्रवार को गांधी जी की प्रार्थना होती है और हजारों व्यक्ति एकत्र होते हैं।

रकार और श्रमजीवी पत्रकार

हम समाज में प्रतिष्ठा का स्थान चाहते हैं

क्तप्रांतीय श्रमजीवी पत्रकार-संघ वित सभापति श्री सुरेन्द्रनाथ घोष, नायनियर, ने आगरा में होनेवाले अधिवेशन में जो महत्त्वपूर्ण भाषण इस प्रकार है—

जमाने से हमारी विरादरी की और निन्दा दोनों होती आई है, ही अधिक हुई है। मित्रों ने भी में ऐसी बातें कही हैं, जिनसे ष्ठा नहीं होती। प्रख्यात अँगरेजी डन के पास भी अपने समय के विषय में इससे अच्छे विचार न थे हमारे कारखानों में तैयार काफी जाता है, काफी कारी- खाने में काम मिल जाता है से बेकार आदमियों को जाता है। पत्रकारों की बहुत से लोगों के तिरस्कार का है। भारत की पत्रकार-कला के बंगाल की प्रान्तीय एक बार खुद अपना अखबार का विचार किया था, जिसके लाभ यह भी सोचा गया था चार अवांछनीय यूरोपियन छूटेगा जो और किसी न होने से अखबारनवीसी काम चला रहे थे। कलम लनेवाले पत्रकारों की यही अपमानजनक परिभाषा को बुरा भला कहनेवालों भी थे और अब भी हैं। ने पत्रकारों द्वारा अपने बुरा होकर कहा था— तो संसार के राजा हैं, क्योंकि जिधर चाहते हैं, उधर घुमा किसी अन्य अवसर पर जब ने कार्लाइस से यह कहा कि होना चाहता हूँ तो उन्होंने कहा गंदा पानी है। ये तो चुटकुले हम यहां अपनी प्रतिदिन की पर विचार करने आये हैं, बारे में अच्छी या बुरी रायों करते नहीं।

सौभाग्य है कि युक्तप्रान्तीय म्मेलन से मेरा संबंध शुरू से ही गत वर्ष बनारस अधिवेशन में युक्तप्रान्तीय श्रमजीवी पत्रकार- ग्रहण करते हुए भी देखा। का संगठन मजदूर-संघ के हो या न हो इस पर राय समय अब बीत चुका है। अच्छा और मैं समझता हूँ कि है, संघ अब कायम हो गया है सदस्यों का काम है इसे बढ़ाने होने में मदद देना।

का एक मूल उद्देश्य है पत्रकारी परंपरा और स्तर कायम रखना, पत्रकारों के अधिकारों की रक्षा हितों की साधना और विशेषकर परमत प्रकट करने की स्वतन्त्रता करना। इन मूल उद्देश्यों के बारे कोई मतभेद हो ही नहीं सकता। की पवित्रता पर जोर देने की जरूरत नहीं समझता हम लोग बिरादरी के हैं, जिसके एक अन्यतम प्रातःस्मरणीय महात्मा गांधी थे। आदर्शों की रक्षा करनी है उनको वे ही कर गये हैं, स्पष्टवादिता, स्वतन्त्रता और जिम्मेदारी ये हमारे कर्तव्यपालन में आवश्यक हैं हमारे जीवन और पूर्णरूपेण कर्तव्यपालन पर ही लोकतन्त्र की सफलता निर्भर है। मैं बड़े क्लेश से यह स्वीकार करता हूँ कि हममें से कुछ पत्र और पत्रकार इस कर्तव्य से च्युत हुए हैं। यद्यपि ऐसे दृष्टान्त बहुत थोड़े और स्फुट हैं। राष्ट्र के इस घोर संकट की घड़ी में महात्मा गांधी की दारुण मृत्यु इस बात की चेतावनी है कि लेखों और भाषणों से साम्प्रदायिक भावनाओं को भड़काना कितना अनर्थकारी हो सकता है। महात्मा गांधी की अमर स्मृति को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते समय यदि हम कम से कम अपने काम में उनके उच्च आदर्शों को पूरा करने का संकल्प न करें तो यह हमारा घोर पाखंड होगा। इससे अधिक इस विषय पर कहने की जरूरत नहीं।

तथ्य स्थिर करना, सत्य का प्रकाशन करना और यह सार्वजनिक हित के लिए करना यही प्रत्येक आत्मसम्मानी पत्रकार को जिनका पद सार्वजनिक कर्मचारी से न्यून नहीं अनिवार्य धर्म है। 'हिन्दू' के उप-सम्पादक और इस संस्था के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री विश्वनाथ अय्यर ने अपनी सुसम्पादित पुस्तक दि इंडियन प्रेस में पत्रकारों के कर्तव्य का बहुत आधा निरूपण किया है। आप बहुत ठीक कहते हैं कि प्रेस का स्थान राज्य के चौथे वर्ग से कहीं ऊँचा है। संसार के विविध देशों के प्राकृतिक अन्तरों की कमी, विविध देशों और जातियों की एक दूसरे पर बढ़ती हुई आर्थिक निर्भरता, उत्पादन और उपयोग के अत्यधिक विस्तार से जन-संख्या की वृद्धि और समृद्धि के कारण अन्तर्राष्ट्रीय व्यावसायिक और औद्योगिक गुटों के विकास से पत्र या प्रेस को अभूतपूर्व महत्त्व प्राप्त हो गया है। समाज के लिए आज पत्र उतने ही आवश्यक हैं जितने रेल, तार और टेलीफोन। समाज की बुनियाद इन पर है। पत्रों को जकड़ दीजिये, फिर आपके तमाम सार्वजनिक रक्षा-विधान आतंक और निराशा का प्रसार नहीं रोक सकते। नागरिक के लिए तो प्रेस उसका सेक्रेटेरियट या दफ्तर है। यह उसके आगे सब जरूरी कागजों की फाइल बनाकर और ठीक नोट लगाकर पेश करता है और इस प्रकार सुचारुता तथा शीघ्रता से अपना काम निपटाने में मदद करता है और औरों को भी इसी भांति काम करने का अवसर देता है।

यदि अखबार जनता का मस्तिष्क-निर्माता न सही शिक्षक भी समझा जाय तो उसे निर्भीकता और योग्यतापूर्वक यह काम करने के लिए उपयुक्त आदमी और साधन मिलने चाहिए। पत्रों पर बड़े-बड़े स्वार्थों का एकाधिकार पत्र-मालिकों द्वारा अपने पिट्ठुओं का पोषण और पक्षपात और अनुचित सरकारी हस्तक्षेप भी पत्रकारों के लिए बड़े क्लेशकर हैं और उनके ही लिए नहीं, जनता के भले के लिए भी इनका दूर होना जरूरी है। इनके अलावा एक और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विषय है। भारतीय पत्रकार की जाति सदा से घोर शोषण का शिकार रही है। मसल मशहूर है कि भारतीय पत्रकार सबके लिए लड़ता है अपने लिए नहीं। मगर यह अपने लिए लड़ने की बात भी नहीं है। अगर आप चाहते हैं कि पत्रकार जनता के प्रति अपनी भारी जिम्मेदारी का निर्वाह ईमानदारी और योग्यतापूर्वक करे, तो औरों की तरह उसे भी निर्वाह योग्य पारिश्रमिक मिलना चाहिए। उसका वेतन निर्धारित करते समय इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि अन्य दिमागी काम करनेवालों की तरह उसकी जरूरतें केवल वे ही नहीं हैं, जिन्हें जीवन की न्यूनतम जरूरतें कहा जाता है। पेट भरने और तन ढकने के सिवा उसे अपने काम करने के लिए अध्ययन करना भी जरूरी है और इसके लिए उसे कुछ न कुछ किताबों और पत्र-पत्रिकाओं में खर्च करना चाहिए। पर आज भारत के ५ प्रतिशत पत्रकार भी इतने भाग्यवान् नहीं कि वे इस 'शौक' को पूरा कर सकें। जिन दशाओं में अधिकांश को काम करना पड़ता है वे नितान्त दयनीय हैं। इधर स्थिति में कुछ सुधार हुआ है, फिर भी यह मानना ही पड़ेगा कि अधिकतर पत्रकारों की रोजी संकट में ही रहती है। उनकी कार्य-कुशलता और ईमानदारी पर इसका कहां तक असर पड़ा है, यह मैं नहीं कहना चाहता। पर सभी जानते हैं कि पतन प्रारम्भ हो गया है और जनता का हित इसी में है कि ये सब दिक्कतें दूर की जायें जो पत्रकार को योग्यता और लगन से काम करने में बाधक होती हैं।

पत्रकारों की दशा सुधारने के लिए इस विषय की जांच की हमारी मांग पर युक्तप्रान्तीय सरकार ने ध्यान दिया है। पर मुझे खेदपूर्वक कहना पड़ता है कि इतनी देर के बाद जो कमेटी नियुक्त की गई, वह भी बहुत सक्रिय नहीं है। मगर इस मामले में हम भी निर्दोष नहीं हैं। कमेटी की सदस्यता के लिए जो प्रतिद्वंद्विता हुई उससे काफी कटुता पैदा हुई। पर हमें आशा है कि सबके हित में बाधक आपसी ईर्ष्या अब दूर हो गई होगी और कमेटी की रिपोर्ट और सिफारिश इतनी विशद और प्रामाणिक होगी कि उसके आधार पर प्रान्तीय सरकार कानून बना सकेगी।

पर हमें इस धोखे में न रहना चाहिए कि यह कानून जल्दी बन सकेगा। जब तक हम अपना घर न सँभालेंगे हमें कुछ न मिलेगा संघ को इस ओर अविलम्ब ध्यान देना होगा। केवल उद्देश्य और लक्ष्य बना लेने से ही कार्य नहीं हो जाता। जिस संस्था के अध्यक्ष होने का मुझे सम्मान मिला है उसकी परख इस बात से होगी कि कहां तक ये उद्देश्य पूरे हो पाते हैं। इस साल में हम बहुत काम नहीं कर सके हैं। परिस्थिति भी ऐसी थी कि बहुत बड़े काम की आशा नहीं थी। गत ९ महीने क्रान्तिकारी घटनाओं से भरे रहे। हम लोगों ने भारतीय स्वतन्त्रता के जन्म का उल्लासमय दृश्य देखा और भयानक साम्प्रदायिक संघर्ष के दुर्दिन भी देखे। पत्रकारों के लिए तो ये दिन बड़े ही व्यस्त रहे, उनके ही ऊपर इन द्रुत परिवर्तनों के तटस्थ और मार्मिक चित्रण का महान् दायित्व था। इस नाजुक समय में यदि हमें अपने वर्ग के स्वार्थों का ध्यान न रहा तो इसमें हमारा दोष नहीं। मगर अब इस ओर ध्यान देने का समय आ गया। हमारे संघ को अब सजग और सक्रिय होना चाहिए और इसके कार्यकर्ताओं को सावधान होकर पत्रकारों के हितों की रक्षा करनी चाहिए, ऐसे हित जिनका जनता के हितों से कोई भी विरोध नहीं।

राजनीतिक स्वतन्त्रता हमने प्राप्त कर ली है मगर पत्र की स्वतन्त्रता अभी दूर है। यह समझना ठीक नहीं कि स्वतन्त्रता मिल जाने के बाद अखबारों के अधिकारों के लिए लड़ना जरूरी नहीं। स्वतन्त्र पत्रकारी सार्वजनिक जीवन को साफ रखने में कितनी उपयोगी है, सरकार अभी यह नहीं समझती। अखबारों पर प्रतिबन्ध घटने के बजाय बढ़ गए हैं। विदेशी शासन के समय सरकार का विरोध दबाने के लिए जो प्रतिबन्ध लगाये गए थे, उन्हें हटाने के लिए भारतीय पत्रकारों को निरन्तर प्रयत्न करना चाहिए। इस सम्बन्ध में मेरे मित्र श्री चलपति राव ने युक्तप्रान्तीय प्रेस सलाहकार समिति

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

माननी। पंडित श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, [illegible] संयुक्त प्रांत ने आगरा में होनेवाले श्रमजीवी पत्रकार-सम्मेलन का उद्घाटन किया है।

भोपाल रियासत पर एक दृष्टि

मध्य-भारतीय देशी राज्यों की राजनैतिक स्थिति

लेखक, श्री प्रवासी

मध्य-भारत में भोपाल रियासत का भारतीय देशी राज्यों के इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान है। यद्यपि भूपाल भारतीय संघ का सदस्य है फिर भी उसकी साम्प्रदायिक शासन-प्रणाली तथा नीति अभी तक जारी है। इस लेख में लेखक ने भोपाल तथा मध्य-भारतीय राज्यों के राजनैतिक पहलू पर प्रकाश डाला है, जो सामयिक तथा विचारणीय है।

मध्य-भारत की मुस्लिम रियासतों में भोपाल का प्रमुख स्थान है। इसका क्षेत्रफल ६,९२१ वर्ग मील, जनसंख्या ८,००,००० और वार्षिक आय १,१९,८०,००० रुपया है। रियासत का आज तक का इतिहास एकतंत्रवादी कुशासन का इतिहास है जो अप्रगतिशील है। राज्य की नींव साम्प्रदायिक आधार पर जमाई गई है, जिसका एकमात्र उद्देश्य जनता को अशिक्षित रखकर, उसके हितों का ध्यान न देकर नवाबशाही को बनाये रखना मात्र रहा है। संक्षेप में यदि इसे, मध्य-भारतीय पाकिस्तान, कहा जाये तो कोई अत्युक्ति न होगी।

* * *

नवाब भोपाल बहुत होशियार समझे जाते हैं। उनकी होशियारी के कुछ नमूने नरेन्द्र-मंडल की चांसलरी के युग में देखने को मिले थे। उन दिनों आपने गिरगिट के समान रंग बदले, कभी गांधीजी के अनुयायी होने का दावा किया तो कभी कायदे आजम के पुछल्ले बने। गरज यह कि भारतीय राजनीति के साथ—आपने दिल खोलकर खिलवाड़ किया। नरेन्द्रमंडल के षड्यंत्रों को प्रकाश में न आने देने के हेतु आपने पत्रकारों को चंद चांदी के टुकड़ों पर खरीद लिया। जिसका मतलब था सत्य का गला घोंटना उनके मुंह थैलियों से सदा के लिए बन्द कर दिये यही कारण है कि भोपाल की आंतरिक स्थिति पर प्रकाश डालने में हमारे पत्रकारों ने उदासीनता दिखाई, जिसका परिणाम हम स्पष्ट देख रहे हैं कि आज भी नवाब अपनी साम्प्रदायिकता से बाज नहीं आ रहे ह।

* * *

१५ अगस्त के सुनहरे प्रभात में डेढ़ सौ वर्षों की गुलामी के बाद देश ने आजादी की सांस ली। लोगों की खुशियों का ठिकाना न था। प्रत्येक अपनी जननी को स्वतन्त्र देखकर गर्व से फूला न समाता था, किन्तु अँगरेजों की छत्रछाया में फले फूले राजा और नवाब घबराये कि उनके आका तो जा रहे हैं अब उनका क्या हाल होगा? कुछ दूरदर्शी शासकों ने तो स्वेच्छा से—भारतीय संघ में जाना स्वीकार कर लिया मगर जो प्रतिक्रियावादी थे उन्होंने इस मौके से लाभ उठाना चाहा और एक गुट, जिसका नाम, भोपाल गुट था, बनाकर अपने को स्वतन्त्र रखने के स्वप्न देखने लगे। इस अवसर पर नवाब भोपाल ने अपनी पूरी शक्ति लगाकर पड़ोसी रियासतों के राजाओं को फोड़ना चाहा; किन्तु जनता की शक्ति के सामने इस बार फिर मुंह की खानी पड़ी और अंत में खुद को भी भारतीय संघ में लाना पड़ा। स्वतन्त्रता-दिवस की खुशियां मध्य-भारत में भोपाल को छोड़कर हर जगह मनाई गईं। देश का एक हिस्सा आजादी की सांस ले रहा था जब कि भोपाल की आठ लाख जनता बेबस और उदास थी, इसलिए कि उसे अपने देश के स्वतन्त्र होने की खुशियां मनाने का भी आधिकार न था।

देश से अँगरेज तो गये मगर जाते जाते वे अपनी सौगात यहां छोड़ गये। एक बार फिर सारे देश में साम्प्रदायिकता की आग भड़क उठी। देश भाई भाई के खून का प्यासा बन गया। दानवता ने हृदय खोलकर तांडव किया, देश एक छोर से, दूसरे छोर तक इस आग से झुलस गया। पंजाब, बंगाल, कलकत्ता और फिर दिल्ली में खून की होली खेली गई इस समय से अवसरवादियों ने लाभ उठाकर लोगों के जजबात भड़काये; फलतः सी० पी०, यू० पी०, दिल्ली, अलवर, भरतपुर और ग्वालियर से मुसलमानों ने हिजरत शुरू की। हैदराबाद तथा भोपाल इसका केन्द्र बनाया गया, भोपाल में लगभग १ लाख मुसलिम आये जिन्हें भोपाल-सरकार की ओर से काफी सहायता पहुँचाई गई। कुछ लोगों को राज्य के गांवों और तहसीलों में भेजा गया, जहां उन्होंने वहां की शान्तिप्रिय जनता किसानों पर अत्याचार किये, इतनी बड़ी संख्या में मुसलमानों का राज्य में आना और फिर इस तरह उत्पात मचाना, वहां के हिन्दुओं में स्वाभाविक डर पैदा होना था, परिणामस्वरूप हिन्दुओं ने राज्य से भागना शुरू कर दिया, उक्त घटना को कोई भी समझदार आदमी एक षड्यंत्रकारी नीति कहेगा। दुनिया को यह दिखाने के लिए कि मुसलमानों पर अत्याचार किये जा रहे हैं जिसके कारण ही उन्हें विवश होकर अपने घरबार छोड़कर हमारी शरण में आना पड़ रहा है। योजना का दूसरा पहलू था रियासत के बहुमत हिन्दुओं को अल्पमत में लाने का। किन्तु सौभाग्य कहिए कि उक्त योजना सफल न हो सकी और आये हुए मेहमान या तो स्वेच्छा से या गुंडों द्वारा सताये जाने पर अपने घरों को वापस चले गये। जिनके कुछ साधन थे वे आज भी वहां मौजूद हैं और साम्प्रदायिक मनोवृत्ति का परिचय दे रहे हैं।

* * *

जहां मिस्टर जिन्ना ने दो राष्ट्र के सिद्धान्त की आवाज लगाकर देश में साम्प्रदायिक विष के बीज बोये, वहां नवाब हैदराबाद और नवाब भोपाल ने उस अंकुर को अपने यहां पोषित कर स्थायी और मजबूत बनाया। मुसलिम साम्प्रदायिकता के हिंसक प्रचार ने ही हिन्दुओं में साम्प्रदायिकता की भावना को जन्म दिया और इसलिए वे ही इसके जिम्मेदार हैं, भोपाल ने भी इस गलत रास्ते को अपनाया। जमींदारों, जागीरदारों एवं पूंजीपतियों ने इसमें सक्रिय सहयोग दिया। यहां तक कि राज्य के उच्च अधिकारियों ने भी स्वतन्त्रतापूर्वक इस विषैले प्रचार में हाथ बटाया जब कि राज्य के सरकारी कर्मचारियों को कड़ी हिदायतें हैं कि वे किसी राजनैतिक संस्था को सहयोग न दें, मगर किसी ने ठीक कहा है कि 'अंधेर नगरी बेबूझ राजा, टका सेर भाजी टका सेर खाजा।' इस तरह कई दिनों तक खुले आम प्रदर्शनों में हिंसा का प्रचार किया गया, इससे लोगों के दिलों में बजाय प्रेम के घृणा पैदा हुई। आज भी भीतर ही भीतर तैयारियां हो रही हैं केवल चिनगारी लगाने की देर बाकी है। इन कार्यों में प्रतिशोध की आग भड़कना स्वाभाविक है, मगर भोपाल के हिन्दुओं ने हर समय शान्ति और धैर्य से काम लिया, और आज भी ले रहे हैं इस पर भी राज्य भर में उनका सामाजिक बहिष्कार किया जाता है। जितने अलवर और भरतपुर के शासक हिन्दू साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन देने के कारण दोषी हैं, उससे कहीं अधिक नवाब भोपाल और उसके साथी मुस्लिम साम्प्रदायिकता को बढ़ाने में दोषी हैं। अलवर और भरतपुर के साथ तो उचित कार्यवाही की जा चुकी है, मगर भोपाल अभी तक बचा हुआ है, अब देखना यह है कि रियासती-विभाग आपको क्या तोहफा देता है?

* * *

भोपाल के राजनैतिक क्षेत्र में कई संस्थाओं का जन्म हुआ; किन्तु अस्तित्व एक का भी शेष न रहा सिवाय प्रजामंडल के। यही संस्था भोपाल की आठ लाख जनता के हितों के लिए गत १२ वर्षों से

भोपाल रियासत के सार्वभौमिक
नवाब साहब भोपाल।

संघर्ष कर रही है इसके कुछ तो
कार्यकर्ताओं के त्याग एवं बलिदान ने
इसे जीवित रखा। इसके अतिरिक्त
में हिन्दू-सभा और मुस्लिम-
जिनके संरक्षक स्वयं नवाब साहब
यह दोनों संस्थायें नवाब की कठपु
जिन्हें वे समय समय पर अपने स्वार्थ
लिए काम में लाया करते हैं। भोपाल
जनता की राज्य के जी हुजूरों ने प्रजामं
को हउआ बताकर उससे दूर
उन्हें समझाया गया कि इसमें जाने
हिन्दू और मुसलमानों को कोई फायदा
होगा इस तरह रियासत को बिना
दमन के प्रजामंडल की शक्ति
में सफलता मिली। फिर भी
कर्त्ता अपना संगठन बढ़ाते
म्युनिसिपल चुनाव में सरका
प्रतिक्रियावादियों ने मुंह की खाई।
सरकार तिलमिला उठी और उसने
लोगों के हर काम में बाधा डालना
किया। सबसे पहले नागरिक स्वतन्
पर प्रतिबन्ध लगाया गया जो आज
चल रहा है। इसके बाद कार्यकर्ताओं
म्युनिसिपल क्षेत्र में नजरबन्द करने की
सामने आई और आज रियासती
की प्रगति के साथ भोपाल को लाने के
जब वहां के कार्यकर्ता गांवों और तह
में अपना संगठन और प्रचार करने
हैं तो उन्हें सशस्त्र गुंडों का सामना
पड़ता है।

* *

भोपाल प्रजामंडल ने न
साहब से कई बार अनुरोध किया
वे अपनी छत्रछाया में जनता के लि
उत्तरदायी शासन स्थापित कर दें;
नवाब साहब के कान पर जूं तक
हां दुनिया को दिखाने के लिए कि वे
की इच्छा के अनुसार चल रहे हैं कभी
शासन-सुधारों की घोषणायें की,
सब कागजी साबित हुईं। जिनका
रूप आज तक देखने को नहीं
३० नवंबर सन् ४७ को भोपाल का
बनाने के संबंध में अन्तिम घोष
इसमें भी मौलिक सिद्धान्त पूर्ण उत्त
शासन न मानकर केवल प्रति नि
ढंग पर जोर दिया गया; लेकिन रि
भारत की राजनीति में एकदम
खाया। नवाब साहब ने रियासतों
एकीकरण होता देख बाध्य होकर उत्त
शासन का सिद्धान्त माना और प्रजा
के नेताओं को आमंत्रित कर उन
संबंध में चर्चा की तथा आश्वासन भी
मगर हमें इस आश्वासन में कुछ
दिखाई देता है।

*

गांधीजी की हत्या के बाद सारे
हिन्दू सभा संघ नेशनल गार्ड और

शेष पृष्ठ १४ पर

प्राचीन संस्कृति का जीता-जागता केन्द्र सांची के स्तूप

स्वतंत्र भारत और चित्रपटों का महत्त्व

ारण जनता की उन्नति के लिये यह एक उपयोगी साधन है

लेखिका, श्रीमती दुर्गा खोटे

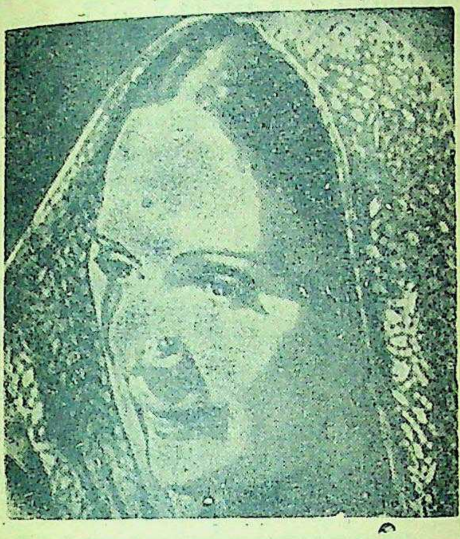

सुप्रसिद्ध फिल्म-अभिनेत्री श्रीमती दुर्गा खोटे

के संसार में चित्रपट की अनेकानेक आवश्यकताओं के बीच अपना एक स्थान रखता है, बल्कि चाहिये कि जीवन के भी अत्यधिक आवश्यक है। भारतवर्ष को इस उन्नति करने के लिये पर अधिक आश्रित रहता है, फिर भी दिनों- मानवीय जीवन में का स्थान बढ़ता ही है। आज से पचास की जनता का जीवन, नाटकों के ही अपना मनोविनोद था, किन्तु सिनेमा आज का सामा- और आध्यात्मिक की अपेक्षा नितान्त भिन्न हमारी सरकार ने इस सुधार अथवा परिवर्तन इस कला का आधार विल- सभ्यता का प्रतीकमात्र रहना यह चाहिये कि भार- इस समय तक विदेशी अच्छा नहीं, क्योंकि भारतीय में अपनी संस्कृति का किन्तु फिर भी यह देखकर है कि हम अन्य देशों के हुये भी इस दिशा में इतना ले आये!

दिग्दर्शन तो भारतवर्ष देन है, इसकी उत्पत्ति वेदों हुई है, सामवेद में संगीत और दिग्दर्शन कला का पूर्ण परि- होता है, अभाग्यवश हम अपनी सभ्यता और कुछ दूर होते गये, जिसके कारण चित्रपट हमारी सामाजिक अवस्था का स्तर उच्च नहीं कर पाते। हमारी प्राचीन सभ्यता के सुदृढ़ सकते हैं जिनके द्वारा हम राष्ट्रीय सामाजिक संदेश अत्यन्त सरलतापूर्वक हर जगह पहुँचा सकते हैं, इनके द्वारा हम चाहें तो कला को भौतिक दलदल से निकालकर उसे स्वर्गीय और अमर कर दें; किन्तु इससे भी अधिक सिनेमा के उन कलाकारों पर अधिक जिम्मेदारी है जो आधुनिकता में रँगकर प्राचीनता के देवालय में प्रवेश करना चाहते हैं, और जिनके पास केवल चित्रपट का ही एक सहारा है।

अब तो यह स्वीकार किया जा चुका है कि मनोविनोद के द्वारा हम विद्यार्थियों को शिक्षा भी दे सकते हैं, और हमारी प्राचीन परम्परा के अनुसार भी यह विचार पूर्ण सत्य है, रामायण, महाभारत और गीता आदि जैसी भारतीय संस्कृतियों का परिचय प्राचीन काल में अनेकों कहानियों और घटनाओं के सहारे जनता को मिला, इनके विषय का अभिनय भी किया गया; सम्भवतया इस कारण ही इन ग्रन्थों की उपयोगिता इतनी अधिक हुई। महाराष्ट्रों का इतिहास तो भांति भांति के मनोविनोदों, खेलों और तमाशों से भरा पड़ा है, इन तमाशों के द्वारा कभी कभी शत्रु को जीतने में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त होती थी। इसलिये आज के फिल्मों पर बड़ी महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी है, भारतवर्ष की अपढ़ जनता के बीच चित्रपट विद्या का प्रचार बड़ी सरलतापूर्वक कर सकते हैं, जनता के मानसिक जगत् को आश्चर्यजनक जागरूकता प्रदान कर सकते हैं!

'कुरुक्षेत्र' फिल्म में होनेवाले एक अभिनय का दृश्य।

एक बालक की शिक्षा चित्रों की सहायता से क्यों होती है, क्योंकि तसवीर अपना प्रभाव दिमाग पर अत्यन्त शीघ्र डाल देती है, ठीक इसी प्रकार भारत के करोड़ों अपढ़ स्त्री-पुरुष और बालक चित्रपट की सहायता से बहुत थोड़े समय में शिक्षित किये जा सकते हैं। संसार के प्रसिद्ध विद्वानों ने स्वीकार किया है कि जनता को स्वास्थ्य, विद्या और मनोविनोद की शिक्षा सिनेमा से अच्छी और किसी प्रकार नहीं दी जा सकती! पिछले महायुद्ध में सिनेमा के द्वारा लाखों, करोड़ों आदमियों की ट्रेनिंग का दिग्दर्शन केवल सिनेमा द्वारा ही हुआ, सम्भवतया और किसी प्रकार इस काम को करना भी असम्भव था। चित्रपट के द्वारा ही सैनिकों के बीच होनेवाली हाईजीन-सम्बन्धी बातें भी जनता तक पहुँच सकीं, भारत की इस समय की अगणित समस्याएँ फिल्म के द्वारा भी सरलतापूर्वक हल की जा सकती हैं, शर्त यह है कि जब इस प्रकार के चित्रों का निर्माण देश के होशियार और कुशल कलाकारों की देखभाल में किया जाय; सम्भवतया कोई भी विषय ऐसा नहीं जो सिनेमा के द्वारा मनोरंजक और शिक्षाप्रद न बनाया जा सके। केवल चित्रों के निर्माण में सत्यता और जनहित का ध्यान होना चाहिए!

भारतीय स्वर्णयुग को पुनः लाने के लिये चित्रपट से अधिक उपयोगी साधन साधारण जनता के लिये न मिलेगा, भारत ही नहीं बल्कि समस्त संसार में भारतीय आदर्श का प्रभाव फिल्मों के द्वारा रखा जा सकता है, इस समय हम भारतीय जीवन में अपनी प्राचीन सभ्यता का विज्ञापन तो अधिक करते हैं, किन्तु प्रयोगात्मक दृष्टि से हम उसका तनिक भी अनुभव नहीं करते, हमारे प्राचीन वीरों की कहानियां इतिहास में लिखित रूप से भले ही हों, किन्तु जन-साधारण के बीच इन कथाओं का महत्त्व चित्रपट के द्वारा ही पहुँच सकता है। त्याग, बलिदान और वीरता आदि गुणों से सम्पन्न चित्र आज की भारतीय जनता में आश्चर्यजनक परिवर्तन कर सकते हैं।

विदेशों का इतिहास हमारे आज के इतिहास से तो निःसन्देह उच्च है, उसका कारण केवल यह है कि अन्य देशों में ऐतिहासिक अध्याय चित्रपट के द्वारा समयानुकूल जनता के बीच पहुँचाये जाते हैं, कबीर एक उच्च कोटि के धार्मिक कवि हुए हैं दोनों हिन्दू और मुसलमान उनसे प्रभावित हैं, त्याग और सेवा की साक्षात् मूर्ति माता सीता, भक्ति और भावना की देवी मीरा, तथा उद्धार शक्ति की द्योतक अहिल्या—इसके अतिरिक्त महारानी होलकर और चांदबीबी आदि हमारे पौराणिकों के साथ साथ कब तक रहेंगी, इनकी कथाएँ फिल्म के द्वारा जनता के जीवन में रामराज्य का युग उपस्थित कर सकती हैं, यदि चित्रों के बनाने में जनहित का ध्यान, धन की अपेक्षा अधिक रखा जाय तो!

इन सब बातों के अतिरिक्त फिल्म हमारे दार्शनिक तत्त्वों को जिनके द्वारा केवल सत्य, प्रेम और विश्वास की पूजा की गई है, जनता तक आसानी से पहुँचा सकते हैं, इस विश्वास के साथ हम फिल्मी संस्थाओं और राष्ट्रीय सरकार से यह आशा करते हैं कि वे चित्रपट को मानवीय जीवन के लिये इस युग की एक महान् भेंट बनाएँ!

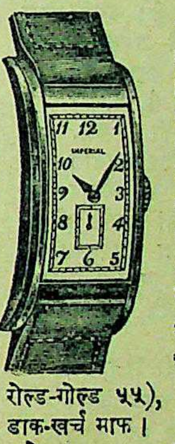

अत्यधिक सस्ती कीमतों में

ऊँचे दर्जे की ठीक समय देनेवाली, आधुनिक आकार की घड़ियाँ। प्रत्येक घड़ी की गारंटी दो साल। गोल या चौकोर आकार की क्रोमियम केस १६), सुपीरियर १८), ४ जुवेल की २१), सेन्टर सेकंड २४)। रेक्टेंगुलर क्रोमियम केस ४०), रोल्ड-गोल्ड ५५), १५ जुवेल की ८०)। डाक-खर्च माफ।

प्रेमशंकर एण्ड कं०, (D.A.)
ऐशबाग़, लखनऊ

बंगाल नागपुर की ईस्ट इंडियन रेलवे
गति और सुविधाओं में वृद्धि

सफर करनेवाली जनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि उन कठिनाइयों के होते हुए भी जो अब तक हैं, बंगाल नागपुर और ईस्ट इन्डियन रेलवे—दोनों ने—रेलगाड़ियों की गति में, पहली अप्रैल १९४८ से जितना सम्भव था उतना सुधार कर दिया है।

अतिरिक्त रेलगाड़ियाँ

टाटानगर और पटना के बीच एक रेलगाड़ी, बरकाकाना, गोमो और गया होते हुए; और कुछ अतिरिक्त लोकल गाड़ियाँ दोनों रेलवे में जारी की गई हैं।

ईस्ट इन्डियन रेलवे पर हावड़ा-बनारस-एक्सप्रेस पुनः जारी की गई है।

रेलों की गति तीव्र की गई—

बम्बई मेल—बंगाल-नागपुर और ईस्ट इन्डियन रेलवे पर कुछ तीव्र गति की गई है।

आसनसोल-पुरी पैसेन्जर—

यात्रा के समय में लगभग एक घण्टे की कमी कर दी गई है।

डाऊन मद्रास मेल हावड़ा जल्द आने लगी—

बंगाल-नागपुर रेलवे पर डाऊन मद्रास मेल १०-४० पर हावड़ा आने लगी है अर्थात् पहले से ७५ मिनट पहले।

जाजपुर रोड के लिए अतिरिक्त सुविधाएँ—

हावड़ा और पुरी के बीच आने जानेवाली अप एण्ड डाऊन पुरी एक्सप्रेस अब जाजपुर रोड पर रुकती है, जो जाजपुर का सब डिवीज़नल हेडक्वार्टर है।

विस्तृत विवरण सब स्टेशन मास्टरों से प्राप्त किए जा सकते हैं।

दी पब्लिक रिलेशंस आफीसर कलकत्ता रेलवे द्वारा प्रचारित।

साहित्य-चर्चा

वियोग रागिनी—डाक्टर बृजमोहन गुप्त, प्रकाशक सुषमा निकुंज यूनीवर्सल प्रेस, प्रयाग; मूल्य ४)।

मनुष्य सदा से प्रेम का पुजारी रहा है। जब मानव मन किसी-किसी रागमयी कल्पना से उद्वेलित होकर अभिव्यक्त हो उठता है तब वह अभिव्यक्ति, प्रायः गीत के रूप में प्रगट होती है। इस चिर सत्य के अनुसार ही कवि-हृदय की प्रणय भावना ने वियोग रागिनी का सृजन किया। वर्तमान प्रेम-काव्य में प्रेमी के विरह में व्याकुल होकर उसको कोसने का प्रभाव बढ़ रहा है। साधना और संयम की मात्रा न्यून होती जा रही है; परन्तु 'वियोग रागिनी' का कवि इस विषाक्त वातावरण से दूर है। उसका वियोग साधनारत एवं संयमशील है। कवि ने रमणी के वत्सलतारूपी जीवन में स्नेह, दया, प्रेम, श्रद्धा और भक्तिरूपी लहरें देखी हैं। विशेषता तो यह है कि जीवन के उर्दाचवर्षों संघर्ष की छाया में चलनेवाले प्रगतिशील कवि गुप्त जी ने जीवन का मर्म हृदय और साधनामूलक सहानुभूति-दृष्टि को कहीं भी नहीं खोया है।

कवि का हृदय किसी मर्मान्तक व्यथा से चोट खाया हुआ है। उसके काव्य में करुणा का स्रोत बहा है। उसमें पीड़ा और वेदना है। अपने उच्छ्वासों की लड़ियां पिरोकर गीत बनाता है—

जब उर रोता तब मैं गाता।
उर के उच्छ्वासों की लड़ियां,
पिरो पिरोकर मैं गीत बनाता।

कवि जीवन में एक अभाव का अनुभव करता है। कभी उसके जीवन में हलचल आ गई थी तथा प्रणयालस की उनींदी पलकों में किरणों का नृत्य हो उठा था। कोई आया और कवि के जीवन का ढांचा बदल गया।

'तुम आई केवल दो दिन को,
पर तुमने सब कुछ बदल दिया।
कुटिया से कुछ ले गई और,
कुटिया को कुछ दे गई नया॥

कवि अपनी पीड़ा में मधुरता का अनुभव करता है। सभी पंक्तियां मधुर विरह स्मृतियों में डूबी हैं—

एक दिन आकाश कवि का,
था सुखद मनहर सुनहला।
ज्योति स्वर्गिक व्याप्त नभ में,
था दिवस का चरण पहिला॥
जीवन की सूनी घड़ियों में अब
कुछ न रहा पाना-खोना।
तुम पारस थीं प्रिय क्षणिक
परस से बना गई मुझको सोना॥

कवि की प्रेयसी साधारण प्रेयसी नहीं है। उसके क्षणिक परस से लोहा सोना बन जाता है। इसमें सौन्दर्य की पूर्ण व्यंजना है। कवि ने कामिनी के जिस शृंगार को सजाया उसे देख कोई भी एकान्त भाव से मुग्ध हो सकता है। प्रेयसी अनुपस्थिति में भी प्रकाश प्रदान करती है—

बनी हुई हो तुम प्रकाशगृह,
जीवन पोत सँभलता चलता।
यद्यपि जगती के सागर में,
कभी-कभी तूफान मचलता।

प्रिय की याद लेकर राह पर चलना कितना अनुभूतिमय है—

"याद का संबल लिए प्रिय!
राह पर चलता रहूँगा।"

कवि अपने आदर्श से च्युत नहीं हुआ है। जीवनपथ पर नए आए हुए आलम्बन के प्रति कवि सजग है। वह नई आई हुई कामिनी जब अपना छवि-जाल कवि के हृदय को बंदी करने के लिए फैलाती है तब कवि तर्क से काम लेता है—

दो देह और एक प्राण,
यह कहने भर की बात प्रिये!
मानव का लय मानव में सम्भव,
नहीं मुझे यह ज्ञात प्रिये॥

और यदि उसने इस नई प्रेयसी के द्वार पर दस्तक दी तो इसका अर्थ नहीं कि वह रूप-जाल में सदैव के लिए बँध जाना चाहता है। वरन्—

आज तुम्हारी सेवा में मैं,
भूल रहा अपने ही दुख
मत प्रेम समझ लेना उसको।

वियोग रागिनी की सारी रचनाएँ कवि की अन्तर्मुखी प्रवृति हैं। आत्म-पवन इसमें अधिक प्रबल है। कवि की सहृदयता आत्म-स्वार्थ एवं बहुजनहिताय दोनों की ओर उन्मुख है। गुप्त जी की वियोग रागिनी में मानव-जीवन की गंभीर और सुकुमार वेदना निहित है। 'इलाहाबाद-आर्ट-स्कूल' के संचालक श्री सुखवीर सिंहल ने संकलित चित्र से पुस्तक के महत्त्व में मणि-कांचन संयोग कर दिया है।

चित्रकार कवि जीवन का चित्र बनाने में पूर्ण सफल हुआ है। चित्रकार की कला कमनीयता और भावुकता समझने योग्य है। पुस्तक की सफाई, गेटअप आदि अत्यन्त सुन्दर तथा आकर्षक है। मुझे पूर्ण आशा है कि साहित्य के पारखी इस निधि का उचित सत्कार करेंगे।

—[illegible]

(पेज ८ का शेष)

संस्थाओं को गैरकानूनी घोषित कर गिरफ्तारियां की गईं। रियासतों में भी उक्त कार्रवाई की गई। मगर भोपाल में सिर्फ हिन्दू सभा और संघ पर रोक लगाकर गिरफ्तारियां हुईं। जब प्रजामंडल की ओर से नेशनल गार्ड और खाकसारों पर प्रतिबंध लगाने पर जोर दिया गया तब कहीं लोगों को खुश करने के लिए यह रस्म अदा की गई। किन्तु इस रस्म के अदा करने से पहिले ही एक नई भूमिका तैयार की जा चुकी थी और वह थी राजनैतिक परिषद। कुछ अवसरवादी और प्रतिक्रियावादी लोगों ने गांधीजी के सिद्धान्तों की दुहाई देकर अपना मतलब पूरा करने के लिए उक्त संस्था का निर्माण किया, जो कि प्रजामंडल के मुकाबले में खड़ी की गई है। इससे शायद रियासत यह सिद्ध करना चाहती है कि राजनैतिक प्रजा-परिषद् ही भोपाल की जनता का सही रूप में प्रतिनिधित्व करती है और इसलिए वह उत्तरदायी शासन पाने की हकदार है। यदि भोपाल-सरकार ने यह गलत कदम उठाने की कोशिश की तो उसे वहां की जनता से मुकाबला करने के लिए तैयार रहना होगा।

* * *

भारतीय इतिहास में रियासतों में हो रही रक्तहीन क्रान्ति का उल्लेख चिर-स्मरणीय रहेगा। आज के शासक जनतंत्र के आधार पर ही जीवित रह सकते हैं। जो इसकी अवहेलना करने का दुःसाहस करेंगे उनका अस्तित्व क्या होगा यह समय बतला रहा है। केन्द्र को संगठित करने के हेतु अभी तक जो रियासतें स्वेच्छा से या तो निकटवर्तीय प्रान्तों में विलीन हो गई हैं अथवा संघरूप में प्रान्त-निर्माण कर रही हैं, वे वास्तव में बधाई की पात्र हैं। सौराष्ट्र-निर्माण के पश्चात् देश की अन्य रियासतों पर इसका अच्छा प्रभाव पड़ा। परिणामस्वरूप मत्स्य, विन्ध्य एवं मालव निर्माण की रूप-रेखायें सामने आ गईं। रियासती जन-नेता तथा नरेशों के परस्पर सहयोग ने ही उक्त योजनाओं को कार्यरूप में परिणत करने में सहायता पहुँचाई। मालव-योजना को महत्त्व देने के हेतु उज्जैन में एक विशेष अधिवेशन भी डा० पट्टाभि-सितारमैया कार्यवाहक अध्यक्ष अखिल-भारत देशी राज्य लोक-परिषद् की अध्यक्षता में बुलाया गया। आपने नवाब भोपाल की तीव्र आलोचना करते हुए भोपाल को एक छोटा सा टापू बताया। भोपाल की जनता को पूर्ण सहयोग का आश्वासन देते हुए आपने मालवा में भोपाल को मिलाने के लिये जनमत की तैयारी के लिए अपील की। अधिवेशन में भिन्न-भिन्न रियासतों के प्रतिनिधियों ने अपने अपने दृष्टिकोण रखे। केवल भोपाल के एक प्रतिनिधि के भाषण में उक्त योजना का विरोध झलकता था। इसके बाद रियासती विभाग की मध्य-भारत के नरेशों और नेताओं से इस संबंध में फिर भेंट हुई। अभी तक की वार्त्ताओं से रास्ता काफी साफ हो चुका है और मध्य अप्रैल तक नवीन प्रान्त-निर्माण की आशा है।

* * *

उज्जैन अधिवेशन की प्रतिक्रिया भोपाल-सरकार एवं वहां की जनता में होना स्वाभाविक था। फलतः नवाब भोपाल ने स्पष्ट घोषणा कर दी कि भोपाल की ऐतिहासिक महत्ता के कारण उसे न तो निकटवर्तीय प्रान्त में और न ही मालवा संघ में मिलाया जावेगा। वहां की जनता ने जरूर अपनी दबी आवाज में मालवा का समर्थन किया। किन्तु एक बार फिर नवाब के पिटठू मालवा योजना के
अपना मोर्चा बनाने का यत्न कर रहे हैं।
तरफ तो प्रचार द्वारा विरोधी मोर्चा
किया जा रहा है जब कि दूसरी तरफ
आजकल नवाब साहब रियासत के
का दौरा कर रहे हैं, जिसमें किसानों
लगान माफी तथा जनता की राहत के
लाखों रुपयों की सहायता की भी घो
की जा रही है। अब यह उदारता
नाटक किसलिए? क्या यह सब
इसलिए नहीं किया जा रहा है कि जन
के समय इन भेड़ियाधसानों की मद
से एकतन्त्रवादी हुकूमत को बचाया
सकेगा? वर्तमान स्थिति में भोपाल
जनमत का परिणाम हानिकारक
होगा, क्योंकि वहां की जनता को दबा
जायेगा। जिससे वे अपनी स्वतन्त्र
न दे सकेंगे। इसलिए इस संकट-काल
वहां की जनता और कार्यकर्त्ता मिल
अपनी राय पत्रों द्वारा रियासती-वि
को प्रेषित करें। पत्रों के आधार
रियासती विभाग को वहां की जनता
राय मान लेनी चाहिए।

साधनमाला— मंत्र, तंत्र और शक्ति-उपास
सम्बन्धी हिन्दी में अकेली मासिक पुस्तक
माला। वार्षिक मूल्य ८)। एक प्रति १)।
कल्याण-मन्दिर, कटरा, प्रयाग।

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्य संजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=); दो शीशी ५॥=), डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

१९४८ में क्या होनेवाला है

इस वर्ष आकाश में तारा मण्डल की कौंसिल में एक बड़ी भारी उथल-पुथल होनेवाली है। अगर आप इस साल में होनेवाले परिवर्तनों यानी अपनी भली या बुरी दशा समय से पहले ही जानना चाहते हैं तो आज ही केवल एक पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी फूल का नाम लिखकर भेज दें। बस फिर हम ज्योतिष विद्या द्वारा आपके आनेवाले १२ महीने का लाभ या हानि, किस तिजारत से फायदा होगा, किस जरिये से रुपया मिलेगा, नौकरी, तरक्की, तनज्जुली, स्त्री सन्तान का सुख, स्वास्थ्य, बीमारी, दूर की यात्रा, मुकदमा और सफलता, सगाई, शादी, जमीन या जायदाद का सुख, किसी से नया मेल या नया सट्टा, लाटरी या किसी अज्ञात साधन से धन का मिलना, सारांश यह कि कार्ड लिखने की तारीख से लेकर १ वर्ष तक होनेवाली कुछ बातों का खुलासा यानी मासिक वर्षफल बनाकर केवल १।) में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाकखर्च ऊपर लगेगा। बुरे ग्रहों की शान्ति के उपाय भी लिखा जायगा जिससे आनेवाली कठिनाइयों को दूर किया जा सके। एक बार परीक्षा से ही आपको भली भांति मालूम पड़ जायगा कि हमको कहां तक ज्योतिष विद्या में ज्ञान प्राप्त है।

श्री स्वामी योगीराज ज्योतिष आश्रम (D.D.A) फगवाड़ा
रियासत कपूरथला

विभिन्न अ
महाराणा सर प
गार्ड अ

विभिन्न अवसरों पर नेताओं द्वारा सभाओं और सम्मेलनों का उद्घाटन

महाराणा सर पद्मशमशेर जंगबहादुर को दिल्ली पधारने पर गार्ड आफ़ आनर दिया जा रहा है।

पिछले दिनों मत्स्य राज्य संघ का उद्घाटन श्री गाडगिल ने किया था। चित्र में श्री गाडगिल सर्वश्री धौलपुर, अलवर और भरतपुर नरेशों के साथ बैठे हैं।

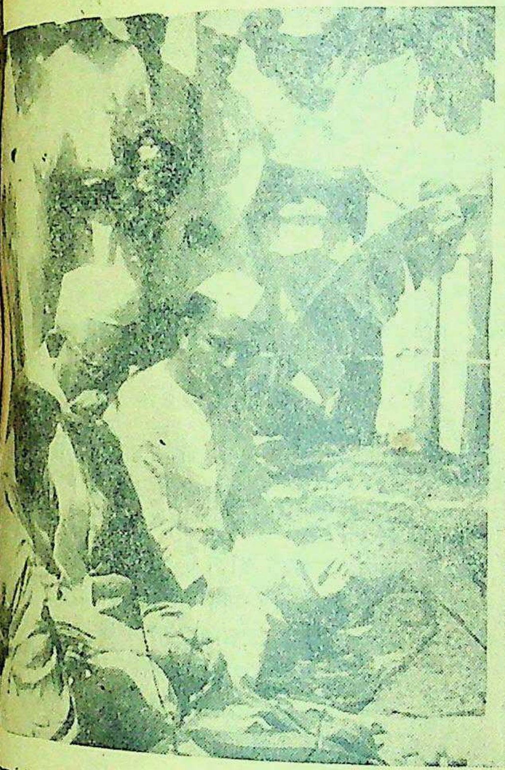

प्रांत) खुराल गाँव में पंडित रविशंकर शुक्ल 'अधिक अन्न आन्दोलन के सम्बंध में एक सभा का उद्घाटन कर रहे हैं।

बंबई में सुबरवान जिला उद्योग-सम्मेलन के अवसर पर प्रधान मंत्री श्री बी० जे० खेर उद्योग प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं।

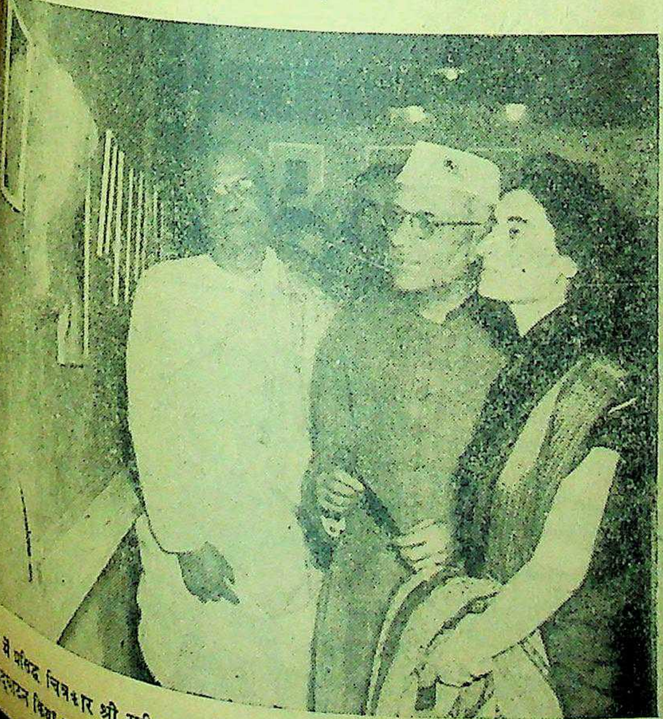

में प्रसिद्ध चित्रकार श्री रथीन्द्रनाथ ठाकुर के चित्रों की प्रदर्शनी हुई थी। पंडित नेहरू उद्घाटन किया था। चित्र में श्रीमती इंदिरा गांधी, पंडित नेहरू और श्री रथीन्द्रनाथ

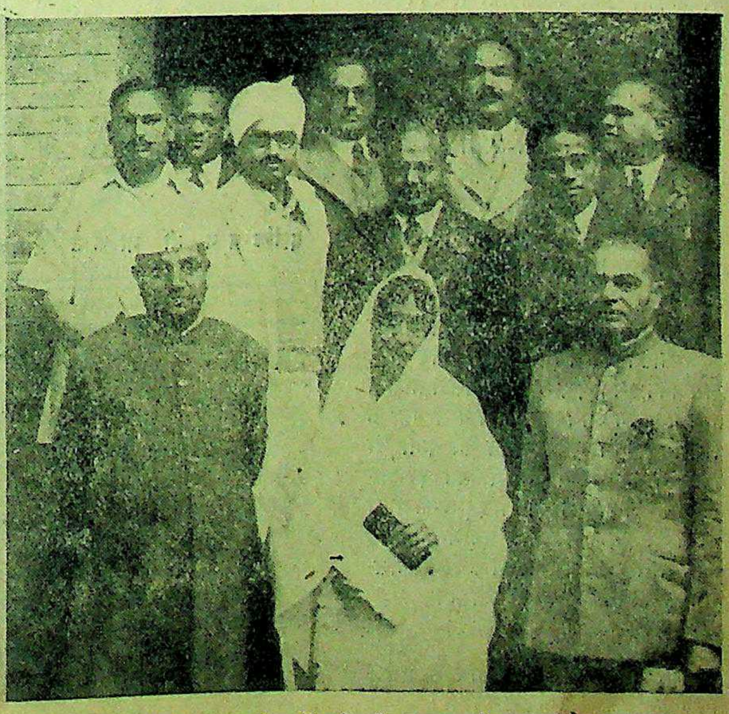

लेडी हार्डिंग मेडिकल कालेज में श्रीमती राजकुमारी अमृतकौर, डाक्टर मेहता, डाक्टर टंडन, डक्टर मित्तर और डॉक्टर मोहनलाल के साथ खड़ी दिखाई दे रही हैं।

(पेज ५ का शेष)

इतना अधिक कोयला उगल रही हैं कि रेलें उनके यातायात की व्यवस्था नहीं कर पातीं। जब कि युद्धकाल में कोयले का उत्पादन इतना घट गया था कि कुछ खानों में काम ही बन्द कर देना पड़ा। लोहे आदि का भी यही हाल है।

औद्योगिक कठिनाइयाँ और उनका हल

चेकोस्लोवाकिया ज्यों ज्यों औद्योगिक विकास के पथ पर अग्रसर होता गया त्यों-त्यों उसकी कठिनाइयां भी बढ़ती गईं। ज्यों ही किसी एक विशेष क्षेत्र से कठिनाई दूर की जाती त्यों ही उससे बड़ी एक दूसरी कठिनाई अन्य क्षेत्र में खड़ी होती। उदाहरण के रूप में कोयले को ही ले लेते हैं। जब कोयले का उत्पादन अधिक बढ़ गया और रेलों द्वारा उसका ठीक ठीक निर्यात नहीं हो पाया तो यह तय किया गया कि इंजन तथा डिब्बे बनाए जायँ। फलस्वरूप इनके निर्माण में लगभग ७२ प्रतिशत की वृद्धि हुई। जैसे ही यह दिक्कत दूर हुई लोहे और इस्पात की सफाई तथा ढालने का प्रश्न उठ खड़ा हुआ, क्योंकि यंत्र ढालनेवाली मशीनों का अभाव था। इन सब अनेकानेक कठिनाइयों को अनुभव करके यह निर्णय किया गया कि जब तक राष्ट्र के प्रत्येक अंग को एक समतल गति पर नहीं लाया जाता उस समय तक समस्त बाधाएं दूर करना असंभव है। इसी दृष्टि से प्रत्येक औद्योगिक क्षेत्र के लिए उत्पादन का एक विशिष्ट लक्ष्य निर्धारित कर दिया गया जिसे उस औद्योगिक विभाग को दो वर्ष के समय में पूरा करना है। यही योजना द्विवर्षीय योजना के नाम से विख्यात है और इस योजना को आरम्भ हुए एक बरस से अधिक समय हो गया है। योजना की अर्द्धकालीन रिपोर्ट चेकोस्लोवाक सरकार संभवतः शीघ्र ही प्रकाशित करेगी।

भारत और चेकोस्लोवाकिया

देश के विभाजन के बाद से भारत अब कृषि-प्रधान देश नहीं रहा है। यह बात दूसरी है कि वह अपने उपयोग योग्य खाद्य भले ही उपजा ले। भारत की युद्धकाल में ब्रिटिश शासन के कारण वही स्थिति थी जो हिटलरी शासन में चेकोस्लोवाकिया की थी। अन्तर इतना ही था कि हिटलर खुली घोषणा के आधार पर एकतन्त्रशाही के नाम पर शासन करता था और हमारे ब्रिटिश प्रभु (भूतपूर्व) प्रजातन्त्रवाद की टट्टी की आट में शिकार खेलते थे। सन् १९४२ के आन्दोलन में भारतीय जनता का जो क्रूरतम दमन किया गया था वह किसी भी हिटलर के अत्याचारों से कम न था। भारत की ही भांति चेकोस्लोवाकिया भी अर्द्धकृषि व अर्द्ध-उद्योग प्रधान देश है। बड़े यंत्रों का जो अभाव हमारे यहां है वह अल्पाधिक अंश में चेकोस्लोवाकिया में भी विद्यमान है। अन्तर केवल इतना ही रह जाता है कि चेकोस्लोवाकिया को मई १९४५ से ही विदेशी सत्ता से मुक्ति मिल गई थी जब कि भारत अगस्त १९४७ में स्वतन्त्र हो पाया है।

भारत में उत्पादन, श्रम तथा मनुज-शक्ति का अभाव उसी प्रकार के हैं जिस प्रकार सन् १९४५ में चेकोस्लोवाकिया के थे। जर्मन अधिकार के बाद से वहां के औद्योगिक क्षेत्र में उत्पादन की कमी थी वही आज भारत में भी है। राष्ट्रीय सरकार ज्यों ही एक कठिनाई सुलझा पाती है त्यों ही दूसरी कठिनाई पहली कठिनाई से भी अधिक उग्र रूप धारण करके विकास-मार्ग के सामने आ खड़ी होती है।

एक ही रास्ता

भारतीय राष्ट्रीय सरकार के समक्ष अब एक ही मार्ग शेष रह गया है। वह है देश के औद्योगिक राष्ट्रीयकरण का कठोर एवं दृढ़ निश्चय। इस निश्चय के बिना राष्ट्र का कल्याण नहीं। इस कठोर निश्चय के पालन की प्रथम सीढ़ी है रिजर्व बैंक का राष्ट्रीयकरण। इस संबंध में पार्लमेण्ट अभी विचार करनेवाली है। हमारा विश्वास है कि पार्लमेण्ट का निर्णय रिजर्व बैंक के राष्ट्रीयकरण के पक्ष में ही होगा यद्यपि देश के प्रतिक्रियावादी तत्त्व इस निर्णय को टालने में अपने सिर से एड़ी तक का जोर लगा देंगे।

रिजर्व बैंक के राष्ट्रीयकरण की योजना के कार्यान्वय के बाद समस्त राष्ट्रीय विकास की योजनाओं को काल-बद्ध कर देना चाहिए। देश में पंचवर्षीय तथा सप्तवर्षीय योजनाओं के कार्यक्षेत्र में आते ही हम अपने राष्ट्र की को जनता को स्वर्णिम भविष्य की ओर होता हुआ पायेंगे और संसार के विकासोन्मुख छोटे-बड़े राष्ट्रों के के साथ विश्व-शान्ति की कल्पना को मनुज-लोक में मूर्त रूप में अवतरि हुआ पायेंगे।

"ये हैं आनन्द मिश्र...

अभी आफिस से घर आये हैं, बढ़िया चाय पीने के लिये बेताब हैं। पर बेचारे को अच्छी चाय नहीं मिल सकती क्योंकि केतली का पानी सुबह से अब तक खौल ही रहा है। अच्छी चाय के लिये फौरन खौले पानी की जरूरत होती है।

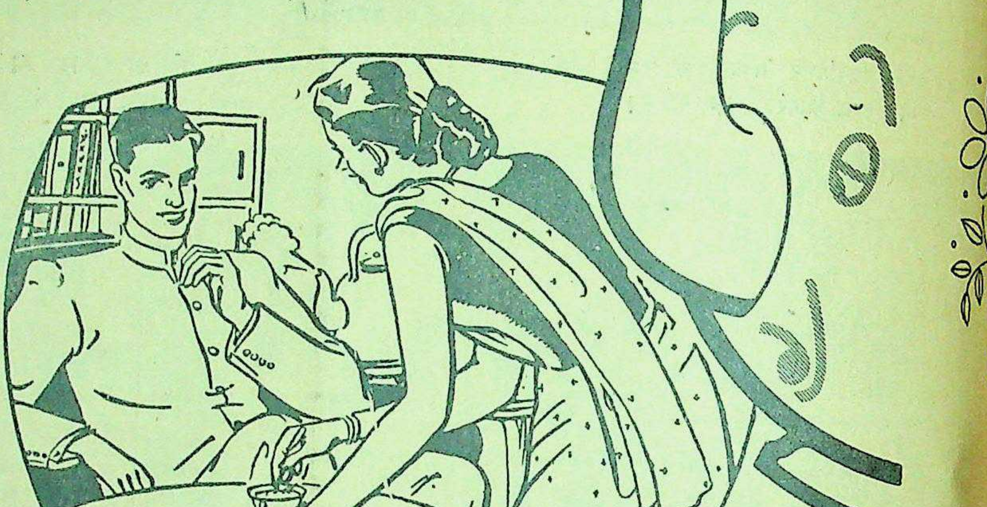

खुशी और तरोताजगी हासिल करने के लिये करोड़ों व्यक्ति चाय पीते हैं। कितने अफसोस की बात है कि बहुत से चाय पीने वाले इतना भी नहीं जानते कि अच्छी चाय कैसी होती है या कैसे बनाई जाती है। अच्छी चाय बनाने में कोई विशेष खर्च या तकलीफ नहीं होती; सिर्फ पांच सरल नियम मानना काफी है। अपने पैसों की पूरी कीमत और चाय का पूरा स्वाद लेना हो तो इन नियमों को याद कर लीजिये और घर में उनका हमेशा पालन हो इसका ख्याल रखिये।

पांच सरल नियम

★

१. सिर्फ ताजा और फौरन् खौला पानी लीजिये। २. चाय के बर्तन को पहले गर्म कर लीजिये। ३. हर व्यक्ति के लिये एक चम्मच और एक चम्मच बर्तन के लिये सूखी चाय डालिये। ४. तीन से पांच मिनट तक चाय को सीझने दीजिये। ५. दूध प्याले में मिलाइये, बर्तन में नहीं।

चाय-चर्चा नामक पुस्तिका अंगरेजी, हिन्दी, बंगला, उर्दू या तामिल किसी भी भाषा में कमिश्नर, इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड, १०१, नेताजी सुभाष रोड, पोष्ट बक्स २१७२, कलकत्ता से आवेदन कर मुफ्त मँगाई जा सकती है।

सबसे अच्छी

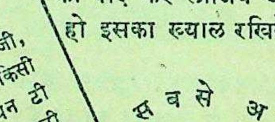

अच्छी बनी चाय

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

LIPTONS
WHITE LABEL
TEA
ONE POUND NETT
लिपटन
माने अच्छी चाय

संवाददाताओं के पत्र

देवप्रयाग टिहरी गढ़वाल में बैसाख स से अन्त तक प्रत्येक इलाके के दो- स्थानों पर क्रमशः पूर्व परम्परानुसार मेले हुआ करते हैं। असंख्य ग्रामीण रुषों के झुण्ड के झुण्ड दूर-दूर से इन में सम्मिलित होकर अपने दूरस्थ न्धियों से भी मिल जाते हैं। अधिक इस अवसर पर इतनी शराब पीते स्त्री-बच्चों को इधर-उधर छोड़कर जगह पड़े रहते हैं और बेहोशी में, बातों पर लड़-झगड़कर खून- तक कर बैठते हैं। इस वर्ष किसानों पर टिहरी की स्वतन्त्रता प्रभाव पड़ा कि गांव-गांव में यह र्चा चल रही है कि मेलों में लोगों दिरा पीने से रोका जाय, समझदार शिक्षित व्यक्ति मेलों के अन्दर की था को जड़ से मिटाने का प्रयत्न कर । टिहरी की अन्तःकालीन सरकार प्रिय मंत्री राज्य में शीघ्रातिशीघ्र बिल लागू करने के लिए भगी- कर रहे हैं। टिहरी-नगर में के कर्मठ कार्यकर्त्ता तथा श्री सत्यप्रसाद रतूड़ी ने जिस दल' की स्थापना की है उसमें ों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती रही है। स्वयंसेवकों की परेड शाम सुबह दोनों वक्त लोगों की लगी रहती है। केन्द्रीय प्रजा- प्रधान श्री चेपनसिंह तथा मंत्री उनियाल और सुन्दरलाल आजकल टिहरी नगर में दिन-रात रहे हैं। केन्द्रीय प्रजा-मण्डल समिति की बैठक १७ अप्रैल में होगी। इस अवसर अन्तःकालीन सरकार के चारों आवेंगे, हिमालय पर्वतीय स्थित सुप्रसिद्ध धाम श्री धाम की यात्रा बैसाख से और भगवान् बद्रीविशाल के मई अक्षयतृतीया के रोज खुलेंगे।

—संवाददाता

* * *

महलोग में नवनिर्मित हिमाचल- प्रजामण्डलों का एक विराट् सम्मेलन देवजी के सभापतित्व में महलोग के "जौहड़जी" नामक स्थान दिन तक हुआ। सम्मेलन में भाग वाले प्रतिष्ठित सज्जनों में से "हिमा- प्रदेश" के प्रमुख राजनैतिक नेता बुद्धिसागर नौटियाल अपने साथी टीकाराम शास्त्री के साथ उपस्थित "हिमाचल-प्रदेश" के अन्य नेतागणों साथ कई रियासतों से लगभग दस से ऊपर स्त्री-पुरुष और बूढ़े तथा तक उपस्थित थे। "हिमाचल- " की जनता और प्रजामण्डल स्वयं- कों ने टिहरी गढ़वाल से आये हुए नेता श्री बुद्धिसागर नौटियाल और साथी का स्वागत बैण्ड बाजों और ड ऑफ आनर" देकर किया गया। सम्मेलन में एक विशेष प्रस्ताव द्वारा स्वर्गीय पूज्य अमर बापू जी के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई, उनके निधन पर शोक मनाया गया और ऐसे घृणित कार्य की घोर निन्दा की गई। दूसरे प्रस्ताव द्वारा जनता को हिमाचल-प्रदेश-निर्माण पर बधाई दी गई और भारत-सरकार के रियासती सचिवालय के इस न्याय का स्वागत करते हुए उसे हार्दिक धन्यवाद दिया गया।

—संवाददाता

* * *

प्रयाग संकीर्तन-भवन झूंसी में ब्रह्म-चारियों को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। भोजन-वस्त्र तथा पुस्तकों का भी प्रबन्ध आश्रम से होता है। १० वर्ष से नीचे के लड़के जो कम से कम हिन्दी की चौथी कक्षा पास हों, प्रवेश किये जाते हैं। प्रविष्ट होनेवाले शीघ्र पत्र भेजें। चैत्र की पूर्णिमा (ता० २३ अप्रैल) को प्रवेश होगा। प्रार्थना-पत्र कम से कम एक सप्ताह पूर्व आना चाहिए।

* * *

प्रयाग झूंसी संकीर्तन भवन में सदा की भांति इस वर्ष भी संकीर्तन भवन झूंसी में चैत्र शु० १ से बैसाख कृष्ण २ तक नव संवत्सर उत्सव मनाया जा रहा है। जिसमें रामायण नवाह, श्रीमद्भागवत् सप्ताह, विशेष अखंड कीर्तन, रामलीला आदि हो रहे हैं। बाहर से बड़े बड़े संत-महात्मा कीर्तनकार तथा कला-कोविद पधार रहे हैं। इसके अतिरिक्त मोटर रोकना, जंजीर तोड़ना, भारी लारी को छाती से निकालना, १०० मन के पत्थर को छाती पर कुटवाना, तथा बाणविद्या के अद्भुत अद्भुत चमत्कार प्रो० रमेशचन्द्रजी व्यायाम-सम्राट् दिखावेंगे। समस्त धर्म-प्रेमी बन्धुओं से प्रार्थना है कि उक्त अवसर पर पधारकर उत्सव की शोभा बढ़ावें और कथा, कीर्तन से लाभ उठावें।

* * *

सागर में राष्ट्रीय सप्ताह के अवसर पर ता० ६ को श्री स्वामी कृष्णानन्द की अध्यक्षता में चकराघाट पर एक आम सभा हुई; जिसमें सर्वश्री चौधरी नन्हेंलाल, ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी, गिरिजाशंकर, लल्लूलाल, महेशदत्त, सुन्दरलाल, शास्त्री डा० बी० बी० राय, रामनारायण व स्वामी जी ने शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की तथा प्रान्तपति बाबू गोविन्ददास का संदेश पढ़ा गया।

यहां शिक्षकों की पिछली हड़ताल का वेतन अब तक नहीं मिला। जब यह वेतन गोंदिया, भंडारा, दमोह, तुमसर, आदि म्युनिसिपाल्टीज ने दे दिया है। सागर की म्युनिसिपल भी यह वेतन देना चाहती है। पर समझ में नहीं आता कि 'लोकल सेल्फ एक्जामिनर क्यों नहीं दिलाना चाहते? ५) स्पेशल महंगाई भी शिक्षकों को अब तक नहीं दी गई। क्या प्रान्तीय सरकार इस ओर ध्यान देगी?

—संवाददाता

* * *

सागर गांधी-स्मारक-समिति

जिले के करीब ३० राष्ट्रीय कार्य-कर्त्ताओं की उक्त समिति निर्मित हुई है। सभापति श्री बी० एल० सेठ व मंत्री श्री चिंतामन राव हैं। —संवाददाता

* * *

राजनांदगांव (मध्यप्रान्त) की गुरुकुल प्रणाली पर संचालित की जाने-वाली सुप्रसिद्ध प्रगतिशील संस्था "श्री देव आनन्द ज़न शिक्षण संघ" का तारीख २१, २२ अप्रल को वार्षिकोत्सव मनाया जायेगा। —[illegible]

स्वास्थ्य और व्यायाम

शहद के विविध उपयोग स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त गुणकारी क्यों है?

लेखक, श्री रमेश बेदी आयुर्वेदालंकार

ग्लूकोज के आपने प्रतिदिन अखबारों में आकर्षक विज्ञापन देखे होंगे और आपकी या आपके किसी भी आत्मीय की बीमारी में चिकित्सक ने इसे सेवन करने के लिए आवश्यक आदेश दिया होगा। यह उत्तम पोषक और बलदायक भोजन है और शरीर इसे सुगमता से अपना अंग बना लेता है। ग्लूकोज भी तो शहद में पाई जानेवाली शर्कराओं में से एक शर्करा है परन्तु यह एक कृत्रिम चीज है जो भोजन प्रयोजन के लिए शहद की अपेक्षा कहीं घटिया है।

खाण्ड के शर्बतों और पानकों की अपेक्षा शहद औषध अनुपान में अधिक प्रयोग किया जाता है। इसका रुचिकर स्वाद बुरे स्वादवाले पदार्थों के स्वाद को आवृत कर देता है और कषायों तथा अन्य औषधियों को अधिक स्वादु बना देता है। बच्चे और नाजुक प्रकृतिवाले व्यक्ति तीव्र और बुरे स्वादवाली औषध को शहद के साथ रुचि से खा जाते हैं। सीधा खून में मिल जाने के कारण इसके साथ दी गई औषध भी शीघ्र ही रक्त संचार में मिलकर जल्दी असर करती है। यह औषधियों के प्रभाव को शीघ्रतर कर देता है इसलिए इसे उत्कृष्ट योगवाही कहते हैं। इसी दृष्टि को सामने रखते हुए आयुर्वेदिक, यूनानी तथा अन्य चिकित्सा-पद्धतियों में औषधियों के अनुपान रूप में इसका विस्तृत उपयोग किया जाता है। औषधियों को लेने से पूर्व उन्हें शहद में अच्छी तरह हल कर लेना होता है और तब शहद औषध के गुण को बढ़ा देता है। इसकी आपेक्षिक घनता पानी की अपेक्षा उच्चतर है। अणुवीक्षक में देखा गया है कि शहद के साथ मिलाई हुई औषधि शीघ्रता से नीचे तल में बैठने के बजाय सूक्ष्म कणों के रूप में शहद में अवलम्बनस्थ रहती है। पाश्चात्य चिकित्सा में कफ मिश्रणों, गरारों, गण्डूषों और कषायों को स्वादु बनाने में शहद प्रयुक्त होता है।

* * *

भोजन का एक महत्त्वपूर्ण पदार्थ होने के रूप में ही यह आयुर्वेद में श्रेष्ठ समझा गया हो, ऐसी बात नहीं। इसकी चिकित्सा-सम्बन्धी उपयोगिता भी आयुर्वेद में विस्तारपूर्वक वर्णित ह। हिन्दू-चिकित्सा-शास्त्र के आदि रचयिता चरक, सुश्रुत और वाग्भट्ट ने इसका प्रचुर उपयोग किया है। प्रथम लेखक ने मधु के चार भेदों का वर्णन किया है। सुश्रुत ने आठ प्रकार के शहदों के गुणों आदि का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया है। उपर्युक्त दोनों भेद शहद को उत्पन्न करनेवाली मक्खियों के भेदों के अनुसार किये गये हैं।

* * *

संस्कृत-लेखक पुराने और नये शहद में अलग-अलग गुण समझते हैं। सुश्रुत नये मधु को अच्छा श्लेष्मानाशक नहीं समझता। शहद के गुण वह इस प्रकार लिखता है—'पुराना शहद श्लेष्मा को बहुत हराता है, मोटापे को छांटता है, अग्नि को प्रदीप्त करता है, पुंसत्व-शक्ति को बढ़ाता है, हृदय को बल देता है, आवाज को मधुर करता है और रंग निखारता है। यह ठंडा है और वमन तथा प्यास को शान्त करता है। यह ग्राही है। आंखों के उपयोग के लिए अच्छा है, व्रण से सड़ते हुए तन्तु को निकाल देता है, व्रण को साफ करके जल्दी भर देता है, विष, हिचकी, कृमि, श्वास, कास, अतिसार और इसी तरह अन्य अनेक रोगों को अच्छा करने में प्रभावकारी है। भग्न और क्षत पृष्ठों को मिलाने का गुण भी इसमें है। हलका होने से यह कफनाशक है, चिपचिपा, मीठा और कुछ-कुछ कसला होने से वात और पित्तनाशक ह अर्थात् तीनों दोषों का नाश करनेवाला है। शरीर के सूक्ष्म छिद्रों में प्रवेश कर जाता है इसलिए यह सूक्ष्म द्रव्य ह। रस आदि धातुओं और वात आदि दोषों को सुखाकर खुरच देने से यह लेखन करनेवाला कहा जाता है।

* * *

रखे रहने से सर्दियों में शहद के जो दाने या बारीक स्फटिक बन जाते हैं उसे संस्कृत लेखक मधुशर्करा कहते हैं। इसके गुण हैं—प्यास, उलटी आन और दस्तों को दूर करना तथा जमे हुए कफ को निकालना।

सुश्रुत शहद का एक और विभाग करता है—पक्का और कच्चा। ये दोनों किस्में छत्ते में शहद के रहने के समय की द्योतक हैं। छत्ते में ताजा भरा हुआ अपरिपक्व शहद तीनों दोषों को उत्पन्न करनेवाला होता है और सम्यक् तथा पका हुआ शहद तीनों दोषों को नष्ट करनेवाला होता है।

* * *

शहद में अत्यल्प परिमाण में गैलिक, सित्रिक (साइट्रिक) और पिपीलिक (फार्मिक) अम्ल होते हैं जिससे इसकी प्रतिक्रिया अम्लीय होने से और साथ ही इसकी अधिक घनता के कारण सब कृमियों की वृद्धि के लिए यह सर्वथा प्रतिकूल माध्यम है। फलों को सुरक्षित रखने में शहद कृमिहर के रूप में भारत में प्रयुक्त होता है। आधुनिक नये उपायों के ज्ञान से पूर्व फल आदि को सुरक्षित रखने के लिए इसी का प्रयोग किया जाता था। इस देश में गांवों के जमींदार लोग शहद से भरे कनस्तरों में बिना चोट लगे आमों को छोड़ देते हैं और इनको मौसम गुजर जाने के बाद साल में किसी भी मौसम में उसका उपयोग करते हैं। पदार्थों को सुरक्षित रखने के गुण के कारण आसाम की खसिया जाति से किया जाता हुआ शहद के एक अद्भुत उपयोग का हूकर उल्लेख करता है—'आग प्राप्त करने में कठिनाई होने से वर्षाऋतु में मुर्दे कम ही जलाये जाते हैं। उन लोगों के पास बहुतायत में अच्छा शहद होने के कारण वे मृत शरीरों को शहद में सुरक्षित रख देते हैं और सूखा मौसम आने पर दाह संस्कार कर देते हैं। मलाया प्रायद्वीप के कबीलों में यह प्रथा प्रचलित है। पुरातन इजिप्ट में भी इसी प्रयोजन के लिए शहद का विस्तृत उपयोग होता था।

* * *

पंजाब हिमालय में शहद एक प्रकार के एल्कोहलिक पेय बनाने में मुख्यतया प्रयुक्त होता है। शहद में समान भाग जल मिलाकर मट्टी के पात्र में बन्द करके साल भर रखा रहने देते हैं। प्राप्त पेय बहुत तीव्र होता है। नशा लाने के लिए इसका एक प्याला कहते हैं, काफी होता है।

बवासीर

यदि आप खूनी अथवा खुश्क बवासीर से पीड़ित हैं और हज़ारों इलाज पर भी कोई फायदा नहीं हुआ तो आज ही मुझसे बवासीर का छल्ला जो कि मैस्मेरिज़्म की ताकत से प्रोफेसर जौलीसन, एन० डी० (अमरीका) ने तैयार किया है मँगवाकर पहनें और रोग से सदा के लिए छुटकारा पायें। हज़ारों रोगी फायदा उठा चुके हैं। फायदा न होने पर कीमत वापस कीमत ३)। डाक-खर्च पृथक्।

प्रोफेसर कुलदीप, १३ दिलकुशा स्क्वायर
चित्रगुप्त रोड नई दिल्ली

(पेज ७ का शेष)

की ओर से केन्द्रीय प्रेस कानून जांच-समिति के सामने बहुत ही अच्छा वक्तव्य दिया है। श्री राव कहते हैं कि यह कमेटी जांच कर रही है कि ये कानून विधान सभा द्वारा प्रस्तावित मूल अधिकारों से कहां तक मेल खाते हैं। मूल अधिकारों की धारा ८ उपधारा (अ) में लिखा है--

सार्वजनिक व्यवस्था और सदाचार के अनुकूल और संघ या किसी प्रदेश द्वारा बाकायदा घोषित संकट काल के अतिरिक्त सर्वदा इन अधिकारों के उपयोग की स्वतन्त्रता रहेगी व प्रत्येक व्यक्ति को विचार और भाषण की स्वतन्त्रता।

धारा ९ इस प्रकार है--

बिना बाकायदे कानूनी कार्रवाई के किसी व्यक्ति की स्वतन्त्रता या प्राण का अपहरण न होगा न संघ की अमलदारी में किसी के साथ हीनता का बर्ताव होगा।

हमारे स्वतन्त्र विधान में प्रतिष्ठित इन्हीं मूल अधिकारों के अनुसार पत्र प्रतिबंधक कानूनों का संशोधन होना चाहिए। पत्रों की स्वतन्त्रता इन उद्देश्यों में थी जिनके लिए हमारी स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ी गई। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद राष्ट्रीय सरकार का धर्म है कि उन जंजीरों को तोड़ दे जो हमारी गुलामी के दिनों की यादगार हैं। ध्यान रहे कि भारतीय पत्र स्वच्छन्दता का दावा नहीं करते न कर सकते हैं। अपने लेखों की पूरी जिम्मेदारी हमारे ऊपर है। लार्ड रसेल की प्रसिद्ध उक्ति निर्विवाद है कि पत्रों की स्वतन्त्रता किसी भी नागरिक की स्वतन्त्रता से कम या ज्यादा नहीं है। स्वतन्त्र पत्र शासन के सुधार और जनता के हितों की रक्षा के लिए लड़ता है वह गैर जिम्मेदार और गाली-गुफ्ता करनेवाला नहीं होता। हम केवल वह वातावरण चाहते हैं जिसमें स्वतन्त्र विचार और मत सम्भव हों, क्योंकि इनके बिना स्वतन्त्रता निरर्थक है। परन्तु भारत में अभी भी सरकार की आलोचना के मामले में पत्रों पर अनेक प्रतिबंध हैं। इधर इन प्रतिबंधों में बढ़ती की ही प्रवृत्ति रही है। सरकार के शास्त्रालय में पत्रों की स्वतन्त्रता के दमन के लिए अभी भी हथियार तैयार किये जा रहे हैं। इससे पत्रकारों में गहरी आशंका होना स्वाभाविक है।

पत्रकार अपनी सरकार से क्या चाहते हैं इसका उत्तर हम श्री चलपति राव के शब्दों में ही देते हैं—यह स्पष्ट है कि वर्तमान कानून पत्रों की स्वतन्त्रता के सिद्धान्त के प्रतिकूल है और इनसे अफसरों को मनमानी करने का पूरा मौका मिलता है। मूल अधिकार की धारा ८ के अनुसार सब प्रतिबंधों की कसौटी केवल सार्वजनिक व्यवस्था, सदाचार और संकटकाल की आवश्यकता ही होनी चाहिए और ये भी धारा ९ के अनुसार बिना समुचित कानूनी कार्रवाई के बाद ही लागू होने चाहिए। इसका निष्कर्ष यह है कि इंडियन प्रेस इमर्जेंसी पावरएक्ट जैसे कानून रद्द होने चाहिए। आफिशल सीक्रेट ऐक्ट और फारेन रिलेशन ऐक्ट जैसे कानूनों में परिवर्तन और धारा १२४ए तथा अन्य कानूनों की अन्य धाराओं में संशोधन होना चाहिए। कानून की पोथियों को कलंकित करनेवाले दमनकारी प्रेस कानूनों और आर्डिनेंस नामधारी गैरकानूनी कानूनों के बारे में कुछ कहने की मैं जरूरत नहीं समझता। आज हमारे बीच में एक निर्भीक और तपे हुए पत्रकार उपस्थित हैं युक्तप्रान्त के सूचना सचिव श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल। वर्षों तक उन्हें और उनके शूर 'सैनिक' को विदेशी सरकार के जो उत्पीड़न सहने पड़े हैं वे ही इन काले कानूनों के अन्त करने के लिए सबसे प्रभावशाली दलीलें हैं। हम मंत्री के नाते नहीं बल्कि इस पेशे को उज्ज्वल करनेवाले बुजुर्ग पत्रकार की हैसियत से आपसे इन अखबारी कानूनों के सुधार के बहुत दिनों से टलते आये काम को पूरा करने का आग्रह करते हैं।

अब अपने बारे में भी कुछ कहना है। हम लोग समाज में प्रतिष्ठा का स्थान चाहते हैं। औरों की भांति हम भी समुचित स्थापित्व, निर्वाह योग्य वेतन और काम की सुविधाएँ चाहते हैं ये सभी चीजें हमें प्राप्त नहीं हुई हैं। केवल साल में एक बार सम्मेलन करने से ही हम इन्हें प्राप्त न कर लेंगे। इस प्रान्त के पत्रकारों के कार्यकलापों से कई वर्ष के परिचय के आधार पर मैं कह सकता हूँ कि हमारे बड़े-बड़े प्रस्तावों के मुकाबले हमारा काम बहुत कम हुआ है। सच्ची बात है कि हमने अपने प्रस्तावों और अपने को ही मजाक-सा समझ रखा है। कुछ मामलों में तो हमने जानते हुए भी हमारी मांगें न पूरी होंगी उन्हें बहुत बढ़ा-चढ़ाकर रखा है, ताकि लोग उनकी चर्चा करें। लोगों ने उनकी चर्चा भी की और आकाश में उड़ने के लिए हमारी हँसी भी उड़ाई। अस्तु अब हमें यथार्थवादी बनना होगा। हमारी मांगें भारतीय पत्रकारी की वर्तमान स्थिति के अनुरूप ही होनी चाहिए। और उन्हें पूरा करने के लिए हमें उपयुक्त शक्ति भी संचित करनी चाहिए। कानून द्वारा इनकी पूर्ति की आशा मृगतृष्णा है। अगर संघ कुछ करना चाहता है जो उसे आगे बढ़ना होगा। अपने ८ उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पहला काम जोरों से संघ के सदस्य बनने का है। मजदूर संघ के रूप में काम करने के लिए संघ को प्रतिनिधि और नियम बद्ध संस्था होनी चाहिए। मैं जानता हूँ कि पत्रकारों के संगठन का काम, गो कि वह इनके ही हित में है, कितना कठिन और निराशाजनक है। हमें अपने संघ में श्रमजीवी और पक्के पत्रकार ही लेने चाहिए, पत्रकारी के शौकीन नहीं। किसी भी वृत्ति या पेशे का संघटन सक्रिय कार्यकर्ताओं की शक्तिशाली संस्था होनी चाहिए। संघ की आर्थिक स्थिति पर भी हमें पूरा ध्यान देना चाहिए। जब तक हमारे पास काफी धन न होगा हम अपने सदस्यों को वे सुविधाएँ न दे सकेंगे, जो हमारे उद्देश्यों में हैं। हमने बेकारी और संकट में पत्रकारों को सहायता देने के लिए निधि एकत्र करने का निश्चय किया है, मगर यह निश्चय कागज पर ही न रह जाय। संघ की परख इसके कार्य से होगी बातों से नहीं। अपनी बातों के दशमांश को पूरा करने लायक भी पैसा हमारे पास नहीं। यह पैसा हमें अधिकांश अपने सदस्यों से ही एकत्र करना होगा।

अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के अलावा संघ इतना शक्तिशाली होना चाहिए कि पत्र-संचालक इसकी बातें मान लें। संचालकों से अपनी न्यूनतम मांगें मंजूर करने के साथ ही संघ को इस देश में पत्रकारी की उन्नति के लिए प्रयत्न करना भी चाहिए। सम्मेलन को विचार करना है कि यह कैसे किया जाय। यहां उपस्थित पत्रकारों को इस बार दृढ़ निश्चय का परिचय देकर संचालकों और सरकार को बता देना है कि कलमघसीट कुछ करने पर तुले हैं और इधर-उधर की बातों से बहलाये नहीं जा सकते।

अन्त में मैं आप सब मित्रों को धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे इस सम्मेलन की अध्यक्षता प्रदान की। हम लोगों को अपने प्रतिष्ठित पेशे की मर्यादा के अनुकूल आचरण करना चाहिए। सन् १९४८ संसार के भाग्य का निर्णायक हो सकता है। मेरी कामना है कि [illegible] स्वतन्त्र आत्मसम्मानी पत्रकारी का जन्म हो, जिससे सब पत्रकार पत्रकारी का गौरव अक्षुण्ण रखने तथा पत्रकारों की हित रक्षा के लिए एक विशाल में संगठित हों। यह उचित ही है भारत संघ का सबसे बड़ा प्रदेश युक्तप्रान्त इस कार्य में अग्रणी हो।

(पेज ४ का शेष)

घरवाले गजों सरकारी जमीन दबा लें तो थोड़ा-सा जुरमाना देकर लाखों रुपये की मिलकियत खड़ी कर सकें और सरकार दखल न दे तो बदनाम करनेवाले क्यों उसका लाभ न उठायें।

जनता पूरी तौर पर शासकों से सन्तुष्ट नहीं, यों तो पूरा सन्तोष मनुष्य जाति को हो ही नहीं सकता; मगर जब आप उसका और अवसर दें तो कुसूर किसका है। पहले तो मंत्रिमण्डल ने अपने वेतन में बहुत ज्यादा बढ़ती करके जनता में असन्तोष पैदा किया। इतना ही नहीं सारे घर का खर्चा, मोटर का खर्चा, टेलिफोन आदि का खर्चा भी सरकारी खजाने से दिलाकर अपने ऊपर लांछन कराने का मौका दिया। इसके लिए यह जरूरी हो गया कि मेम्बरों के वेतन भी पेट भर दिये जायें नहीं तो अपने ऊपर इतना खर्चा मन्जूर कैसे हो। यह मनुष्य जाति की कमजोरियां हैं सही मगर यह शत्रु पक्ष को भी मजबूत करती हैं।

इन्तजाम के लिए यह जरूरी है कि प्रबन्ध करनेवालों की आज्ञा मानी जाये। मुझे याद है कि दिल्ली-दरबार में सर जान हिवेट जो इस प्रान्त का गवर्नर था मुंतजिम था। मोटर कारें बिना
नहीं जा सकती थीं। एक दिन वह
पास भूल गया और साजेंट ने उसे
उसने कहा मैं अमुक व्यक्ति हूँ तुम
जानते हो, उसका उत्तर था कि आप
के हुक्म का पालन करता हूँ। यह सु
वह लौट गया और पास लेकर आ
यह इन्तजाम करने के तरीके हैं
कि पुलिसवालों को पीट देने के, क्या
लोग अपने तईं रोकथाम नहीं कर सके
खासकर वे जो आये दिन दूसरों को ने
सुनाया करें। अगर हमारे कांग्रेसी
अपने तईं और अपनी सरकार को बद
करने पर तुले हैं तो उसका नतीजा भो
ही पड़ेगा। यह कहना काफी नहीं
हमारे बाद तूफान आयेगा। यह तो
मालूम होगा अभी तो आंधी से बचने
प्रबन्ध है यह दुश्मन उत्तर देगा।

फैंसी सिल्क साड़ी आकर्षक डिजा
कलापूर्ण ३-४ इंच चौड़ा बार्ड
नं० ७ ८ ९ ५
१८) २३) २८)
२) पेशगी बाकी वी० पी० से
थोक व्यापारियों को खास सुभीता
बमाको इन्डस्ट्रीज,
जुही नं० ६ कानपुर

मरदों की गलतियाँ कीमत बाद

गलतियां हो चुकी हैं तो भी विवाह से पूर्व, विवाह के पश्चात् हम असंख्य रहे सहे मरीज़ों को शर्तिया ठीक कर चुके हैं। हट्टे कट्टे अन्दर से खोखले कमजोर से कमजोर अहजा यानी ढीले ढाले शरीर से नवीन अवस्था का चमत्कार देखकर आप दंग रह जायेंगे। यदि हस्तकारी औषधियों और नीम हकीमों की ठगियों ने आपको इस तक आने से रोक रखा है तो मैं फिर कहता हूँ कि जिस दिन मरजी हो आइए, रहने का प्रबन्ध हमारे जिम्मे, यदि किसी कारण से लाभ न हो तो यात्रा का खर्च जेब से दूंगा इसके अतिरिक्त जो डाक्टर, हकीम वैद्य सब इश्तहार झूठे समझते हैं आइए हमारे सामने हमारी औषधियों को हानिकारक सिद्ध करें तो एक हजार रुपया पुरस्कार में लें। मूल्य वाजबी।

कविराज हीरोजी वज़ीराबादी, मैनेजर दी हीरो फारमेसी, रजिस्टर्ड। डाकखाना दरियागंज की पिछली तरफ दिल्ली।

फूल आपकी किस्मत बतायेगा

भारतवर्ष की जगत्-प्रसिद्ध सच्ची साइन्स ज्योतिष विद्या गहरे अन्धकार में सूर्य की रोशनी है, यदि आप शीघ्र ही इस संसार में बदलनेवाली अपनी किस्मत के उलट-फेर का ठीक उतरा हुआ फोटो समय से पहले देखना चाहते हैं तो आज ही पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी दिलपसन्द फूल का नाम लिखकर भेज दें तो हम ज्योतिष विद्या के हिसाब से आपके आनेवाले १२ मास का लाभ, हानि, नौकरी, उन्नति, व पतन, स्त्री संतान का सुख, तन्दुरुस्ती, रोग, किसी से नया मेल-जोल, दिलपसन्द सगाई, मुकदमा परीक्षा में सफलता, लाटरी, सल्लत, किसी गुप्त ढंग से धन की प्राप्ति अर्थात् तिथि कार्ड से लेकर कुल एक वर्ष में होनेवाली सब बातों का विवरण अर्थात् मासिक वर्षफल बनाकर केवल १) में वी० पी० द्वारा भेज देंगे डाक-व्यय इसके अतिरिक्त होगा। साथ ही बुरे ग्रहों की शान्ति का उपाय भी लिख दिया जायगा ताकि आनेवाले कष्टों को दूर किया जा सके। एक बार का अनुभव आपको बता देगा कि हम ज्योतिष विद्या में कितना ज्ञान रखते हैं ठीक न हो तो दुगुनी कीमत वापिस झूठा साबित करनेवाले को १००) रुपया देने की गारन्टी है।

श्री [illegible] ज्योतिष आश्रम (D.D.) गाजियाबाद (यू० पी०)

हमारी विविध विषय की उत्तमोत्तम पुस्तकें

युग और साहित्य—लेखक, श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी। 'युग और साहित्य' भी हिन्दी-निबन्धों का एक आदर्श उपस्थित करती है। इसमें १३ मौलिक निबंध हैं, जिन्हें विद्वानों ने बहुत पसन्द किया है। मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

देवपुरस्कार-विजेता हरदयालुसिंह की कुछ व्रजकाव्य की समीक्षायें

देवदर्शन—देवपुरस्कार - विजेता श्री हरदयालुसिंह लिखित व्रजकाव्य समीक्षाएँ—इसमें व्रजभाषा के प्रख्यात कवि देव की जीवनी और उनके समस्त काव्यों का आलोचनात्मक परिचय दिया गया है। व्रजकाव्य के प्रेमियों के अतिरिक्त साहित्य के विद्यार्थियों के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।~) एक रुपया पाँच आने।

पूर्ण-पराग—इसमें व्रजभाषा के प्रसिद्ध आधुनिक कवि श्री देवीप्रसाद 'पूर्ण' की जीवनी और उनके काव्य का समालोचनात्मक परिचय है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।~) एक रुपया पाँच आने।

मतिराम-मकरन्द—इसमें काव्यालोचन के साथ-साथ कवि मतिराम के ३ प्रसिद्ध ग्रंथों—मतिराम सतसई, ललित-ललाम और रसराज का संक्षिप्त सरस संग्रह भी कर दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।~) एक रुपया पाँच आने।

विहारी-विभव—इसमें महाकवि विहारी की कविता का आलोचनात्मक परिचय, उनकी जीवनी तथा सतसई के चुने हुए दोहे संकलित हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।~) एक रुपया पाँच आने।

भूषण-भारती—इसमें महाकवि भूषण की जीवनी और उनके समस्त काव्य ग्रन्थों—का [illegible]चनात्मक परिचय दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।~) एक रुपया पाँच आने।

महादेवी का विवेचनात्मक गद्य—संकलनकर्त्ता, श्री गंगाप्रसाद पांडेय, एम० ए०, साहित्य की नवीन शैली का अध्ययन करनेवालों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥।) दो रुपये बारह आने।

आलोचनादर्श—इस पुस्तक के लेखक हैं डाक्टर रामशंकर शुक्ल 'रसाल', एम० ए० डी० लिट। इसमें आलोचना-कला का मार्मिक और शास्त्रीय विवेचन किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

साहित्य-प्रकाश—यह पुस्तक भी डाक्टर रसाल की ही लिखी है। इसमें साहित्यिक सिद्धान्तों का विवेचन किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

साहित्य-समीक्षा—इस पुस्तक में हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक श्रीयुत कालिदास कपूर, एम० ए० एल-टी० के साहित्यिक तथा समालोचनात्मक लेखों का संग्रह किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

प्राचीन साहित्य—इस पुस्तक में रवीन्द्र बाबू के कई प्राचीन साहित्य, विशेषतः संस्कृत साहित्य के आलोचनात्मक निबन्धों का संग्रह है। मूल्य १) एक रुपया।

महाकवि अकबर—उर्दू के प्रसिद्ध कवि अकबर का आलोचनात्मक परिचय तथा उनकी उत्कृष्ट रचनाओं का अर्थ-सहित संग्रह। मूल्य १।~) एक रुपया पाँच आने।

शिक्षा—हम अपने बालकों तथा बालिकाओं को किस तरह सुशिक्षित तथा सदाचारी बना सकते हैं, यह बात इस पुस्तक में विस्तारपूर्वक समझाई गई है। इसके मूल लेखक सुप्रसिद्ध दार्शनिक 'हर्बर्ट स्पेन्सर' हैं और अनुवादक स्वर्गीय आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी। मूल्य ४॥≡) चार रुपये ग्यारह आने।

भारतवर्ष में पश्चिमी शिक्षा—वर्त्तमान शिक्षा-विभाग के क्रम-विकास का संक्षिप्त इतिहास। मूल्य ॥) आठ आने।

अर्थमेटिक शिक्षा-प्रणाली—यह पुस्तक नार्मल स्कूलों और ट्रेनिंग क्लासों के विद्यार्थियों तथा स्कूलों के अध्यापकों को अर्थमेटिक पढ़ाने के उत्तम से उत्तम ढंग सिखलाने के उद्देश्य से लिखी गई है। मूल्य १) एक रुपया।

संगीत-सम्बन्धी पुस्तकें

ध्रुपद-स्वर-लिपि—इस पुस्तक के लेखक काशीनिवासी श्री हरिनारायण मुकुर्जी ध्रुपद के विशेषज्ञ हैं। मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

संगीत-सुदर्शन—सब प्रकार की राग-रागिनियों का शास्त्रीय-विवेचन। मूल्य १॥≡) एक रुपया ग्यारह आने।

विविध विषय की पुस्तकें

मन की अद्भुत शक्ति—अपने मन की अद्भुत शक्तियों पर पूर्णरूप से अधिकार प्राप्त करके तथा उनका सदुपयोग करके मनुष्य किस प्रकार अपने जीवन को अधिक से अधिक सार्थक बना सकता है, इस बात की इस पुस्तक में विवेचना की गई है। मूल्य ॥।~) तेरह आने।

ऋद्धि—जो लोग धनहीन हैं, ऋण-ग्रस्त हैं, बहु-कुटुम्बी हैं, साथ ही आय भी बहुत कम है, वे इस पुस्तक के उपदेश के अनुसार चलकर सुख से जीवन बिता सकते हैं। मूल्य २।~) दो रुपये पाँच आने।

मानसिक आकर्षण-द्वारा व्यापारिक सफलता—व्यापारिक सफलता के लिए संपर्क में आनेवाले व्यक्तियों पर मानसिक आकर्षण की शक्ति का प्रयोग करने की विधि। मूल्य ।~) पाँच आने।

गोपालन—विभिन्न प्रकार की गौओं के रूप-रंग तथा गुण-दोष का विस्तृत वर्णन। इसमें गौओं का पालन-पोषण करने तथा उन्हें अधिक से अधिक दुधार बनाने की विधि बतलाई गई है। मूल्य १) एक रुपया।

लकड़ी के दाम निकालने की जंत्री—इस पुस्तक की सहायता से लकड़ी का दाम सरलतापूर्वक निकाला जा सकता है। मूल्य २) दो रुपये।

बहीखाता—हिसाब-किताब रखने का उत्तम से उत्तम ढंग। मूल्य ॥~) नौ आने।

भारतीय चित्रकला-पद्धति—कलात्मक चित्र, कार्टून आदि बनाने की आसान विधि। मूल्य १) एक रुपया।

स्काउट मास्टरी और ट्रूप संचालन—पुस्तक में स्काउट मास्टरों के लिए बहुत-सी व्यावहारिक बातें बताई गई हैं। इस पुस्तक के अनुसार चलनेवाले स्काउट मास्टर ट्रूप संचालन में निस्सन्देह सफल होंगे। मूल्य १) एक रुपये।

अग्निकांड में सेवा—अग्निकांड में स्काउट लोग किस प्रकार सफलतापूर्वक दूसरों के जीवन और संपत्ति की रक्षा कर सकते हैं यह बात इस पुस्तक में विस्तारपूर्वक लिखी गई है। पुस्तक सचित्र है। मूल्य १) एक रुपया।

स्काउट ड्रिल और खेल—यह पुस्तक अपने ढंग की बिलकुल अकेली है। स्काउटों के लिए जितने प्रकार के भी ड्रिल और खेल आवश्यक हैं, वे सभी इसमें विस्तारपूर्वक बतलाये गये हैं। उनके नियमों तथा उपयोग आदि पर भी समुचित प्रकाश डाला गया है। पुस्तक सचित्र है। मूल्य पहला भाग १) एक रुपया दूसरा भाग २) दो रुपये।

बाल शब्द-सागर—रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास, बी० ए० ने हिन्दी का यह शब्द-कोष विशेष रूप से विद्यार्थियों के उपयोग के लिए बनाया है। किन्तु अपनी व्यावहारिक उपयोगिता के कारण यह सभी के काम आ सकता है। मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

कुछ संस्कृत पुस्तकें

प्रबन्ध प्रकाश—लेखक, मंगलदेव शास्त्री। इस पुस्तक के प्रारम्भ में सरल संस्कृत भाषा में प्रबन्ध रचना सम्बन्धी आवश्यक नियम दिये हैं। इसके पश्चात् उदाहरण-स्वरूप सुप्रसिद्ध प्राचीन तथा आधुनिक विद्वानों के तथा स्वयं ग्रन्थकार के लिखे हुए परीक्षोपयोगी निबन्ध दिये गये हैं। पुस्तक के अन्त में गद्य-पद्यमय सुभाषित तथा लोकन्याय दिये गये हैं। मूल्य १।~) एक रुपया पाँच आने।

संस्कृत गद्य रत्नावली—पंडित अमरनाथ झा, वाइस चान्सलर प्रयाग विश्वविद्यालय। यह पुस्तक संस्कृत गद्य की विभिन्न प्रकार की शैलियों का नमूना है। संस्कृत के सभी प्रतिष्ठित ग्रन्थों से अवतरण लिये गये हैं; किन्तु इस बात का ध्यान रखा गया है कि कोई अवतरण कठिन न हो। मूल्य १।~) एक रुपया पाँच आने।

मेघदूत—यह महाकवि कालिदास के मेघदूत का बहुत ही उत्तम और उपयोगी संस्करण है। हर एक श्लोक के सामने राजा लक्ष्मणसिंह का किया हुआ पद्यानुवाद दिया गया है। गद्य में बहुत ही सरल और विस्तृत अर्थ भी दिया गया है। पाद टिप्पणियों में संस्कृत के कठिन शब्दों के समास, विग्रह तथा प्रतिशब्द आदि भी दिये गये हैं। मूल्य ॥।~) तेरह आने।

पंचतंत्र—संस्कृत में यह पुस्तक बहुत ही प्रसिद्ध है। इसके सुन्दर संस्करण का अभाव देखकर हमने इसे प्रकाशित किया है। आवश्यक टिप्पणियाँ देने के बाद अन्त में हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित किया गया है। मूल्य ॥≡) ग्यारह आने।

संक्षिप्त वाल्मीकीय रामायण—स्वर्गीय रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा संपादित आदि कवि वाल्मीकि मुनि प्रणीत वाल्मीकीय रामायण संस्कृत में बहुत बड़ी पुस्तक है। श्री रवीन्द्रनाथ जी ने इसे संक्षिप्त कया है। किन्तु पुस्तक का क्रम कहीं भी टूटने नहीं पाया है। मूल्य १।~) एक रुपया पाँच आने।

कादम्बरी—सम्पादक स्वर्गीय महामहोपाध्याय पंडित गंगानाथ झा और पंडित काशीराम एम० ए०। बाणभट्ट की कादम्बरी संस्कृत में बेजोड़ पुस्तक है। परन्तु यह ग्रन्थ इतना बड़ा है कि इस युग के लोगों के लिए कठिन भी हो गया है। इस कठिनाई को हटाने के लिए इसका यह संक्षिप्त संस्करण निकाला गया है। मूल्य १) एक रुपया।

संक्षिप्त बिहारी—महाकवि बिहारी के दोहों का यह बहुत अच्छा संस्करण है। बिहारी की सतसई में जितने अधिक अश्लील दोहे थे, वे छाँटकर इसमें से निकाल दिये गये हैं। मूल्य २) दो रुपये।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल रजिस्टर्ड के सेवन करने से बाल हमेशा के लिए काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है, और उनको लम्बे, घूंघरवाले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न उगते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता है और सिर को ठण्डक पहुंचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २॥) तीन शीशी पूरा कोरस की रियायती कीमत ६॥)। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक फैंसी ग्यूट रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्दन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती है।

जरूरी नोट :—माल पसन्द न होने पर कीमत शीघ्र वापस कर दी जाती है। तीन शीशी दवाई के खरीदार को डाक खर्च बिलकुल माफ; और चार अंगूठी लन्दन न्यू गोल्ड, और चार घड़ियां बिल्कुल मुफ्त इनाम दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार-बार हाथ न आयेगा। आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ लिखें।

लंडन कमर्शियल कम्पनी, बाग रामानन्द [D.A.] अमृतसर
London Commercial Co, Bagh Ramanand [D.A.] Amritsar.

सर्दी और खाँसी में
याद रखिये
सिरोलीन
"रोच
सारे संसारमें व्यवहार होता है

मुफ़्त ! मुफ़्त !! मुफ़्त !!!

आप घर बैठे मैट्रिक, एफ० ए०, बी० ए० पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से और होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ़्त मँगायें। पता :—

इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

दाद, खुजली
और
हरेक मेलका चमडीका दर्दोंके लीए

गत ५० वर्षों से
जग विख्यात
कपड़े खराब नहीं करती।
नकालों से सावधान

सपट लोशन

सपट एन्ड को, डिपार्टमेंट U.P,DA.I.
बम्बई २

बिना लाइसेन्स रखिए

अमेरीकन मॉडल पिस्तौल मुफ़्त

युनाइटेड ट्रेडर्स, पो० ब० नं० २४३, कानपुर यू० पी०

UNITED TRADERS P.B. NO. 243 KANPUR

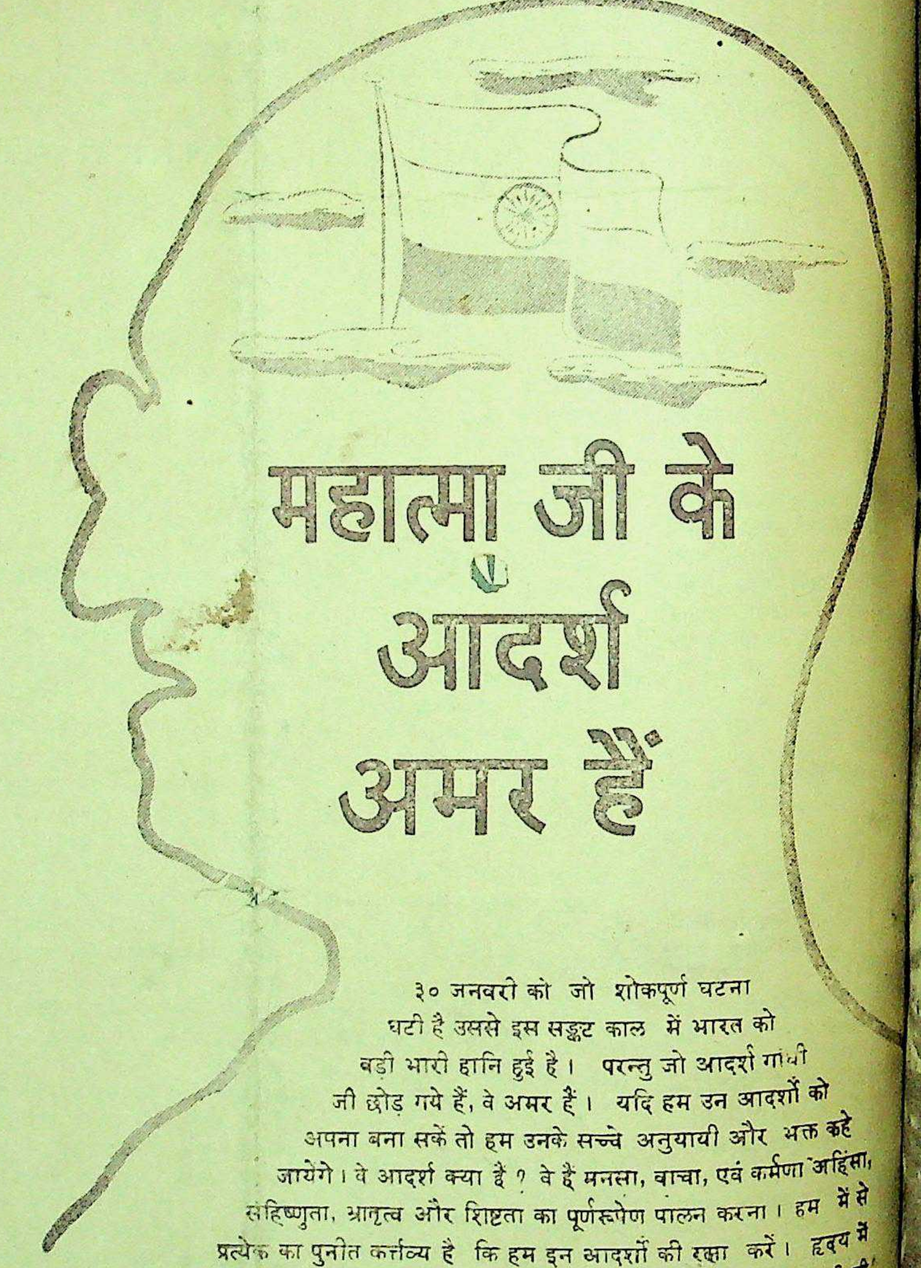

महात्मा जी के आदर्श अमर हैं

३० जनवरी को जो शोकपूर्ण घटना घटी है उससे इस सङ्कट काल में भारत को बड़ी भारी हानि हुई है। परन्तु जो आदर्श गांधी जी छोड़ गये हैं, वे अमर हैं। यदि हम उन आदर्शों को अपना बना सकें तो हम उनके सच्चे अनुयायी और भक्त कहे जायेंगे। वे आदर्श क्या हैं? वे हैं मनसा, वाचा, एवं कर्मणा अहिंसा, सहिष्णुता, भ्रातृत्व और शिष्टता का पूर्णरूपेण पालन करना। हम में से प्रत्येक का पुनीत कर्त्तव्य है कि हम इन आदर्शों की रक्षा करें। हृदय में सर्वदा इनका ध्यान रखिये, तदनुसार कार्य कीजिये और महात्मा जी की आत्मा को तृप्त कीजिये।

महात्मा जी के दिखाये मार्ग पर चलिये और सच्चे देशभक्त बनिये

युक्त प्रान्तीय सरकार के सूचना विभाग द्वारा प्रचा

S.A.A.

इन
सबसे ... वाली दलील है। हम मत्रा

[के० मिश्रा-द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसा

२८ अप्रैल,

में
लीन
"सोच
होता है

ी
को
क्त कहे
'अहिंसा,
म में से
हृदय में
ा जी की'

प्रचा
ा

ज्योतिप्रका

सचित्र
साहिक
र्षिक मूल्य ७॥)
प्रति संख्या =)

२५ अप्रैल,

ादून

[रविवार, २५ अप्रैल, १९४८

या कर रहा है ?

सुप्रसिद्ध कलाकार उदयशंकर भारतीय कला-नृत्य, की एक विशेष मुद्रा में।

महायुद्ध की तैयारियाँ
चार और उसकी शिक्षा

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

संयुक्तप्रान्त के नये शासक
हैदराबाद में क्या हो रहा है ?

१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

11 12 1
10 2
9 3
8 4
7 6 5

हमारे प्रसिद्ध काला तेल रजिस्टर्ड के सेवन करने से बाल हमेशा के लिए काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है, और उनको लम्बे, घूंघरवाले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न उगते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता है और सिर को ठण्डक पहुंचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २॥) तीन शीशी पूरा कोरस की रियायती कीमत ६॥)। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक फैंसी म्यूट रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्दन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती है।

जरूरी नोट :—माल पसन्द न होने पर कीमत शीघ्र वापस कर दी जाती है। तीन शीशी दवाई के खरीदार को डाक खर्च बिलकुल माफ; और चार अंगूठी लन्दन न्यू गोल्ड, और चार घड़ियां बिलकुल मुफ्त इनाम दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार-बार हाथ न आयेगा।

फूल आपकी किस्मत बतायगा

भारतवर्ष की जगत्-प्रसिद्ध सच्ची साइन्स ज्योतिष विद्या गहरे अन्धकार में सूर्य की रोशनी है, यदि आप शीघ्र ही इस संसार में बदलनेवाली अपनी किस्मत के उलट-फेर का ठीक उतरा हुआ फोटो समय से पहले देखना चाहते हैं तो आज ही पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी दिलपसन्द फूल का नाम लिखकर भेज दें तो हम ज्योतिष विद्या के हिसाब से आपके आनेवाले १२ मास का लाभ, हानि, नौकरी, उन्नति, व पतन, स्त्री संतान का सुख, तन्दुरुस्ती, रोग, किसी से नया मेल-जोल, दिलपसन्द सगाई, मुकदमा परीक्षा में सफलता, लाटरी, सल्लत, किसी गुप्त ढंग से धन की प्राप्ति अर्थात् तिथि कार्ड से लेकर कुल एक वर्ष में होनेवाली सब बातों का विवरण अर्थात् मासिक वर्षफल बनाकर केवल १।) में वी० पी० द्वारा भेज देंगे डाक-व्यय इसके अतिरिक्त होगा। साथ ही बुरे ग्रहों की शान्ति का उपाय भी लिख दिया जायगा ताकि आनेवाले कष्टों को दूर किया जा सके। एक बार का अनुभव आपको बता देगा कि हम ज्योतिष विद्या में कितना ज्ञान रखते हैं ठीक न हो तो दुगुनी कीमत वापिस झूठा साबित करनेवाले को १००) रुपया देने की गारन्टी है।

श्री भृगु संहिता ज्योतिष आश्रम (D.D.) गाजियाबाद (यू० पी०)

लिपटन के प्रेमी : १

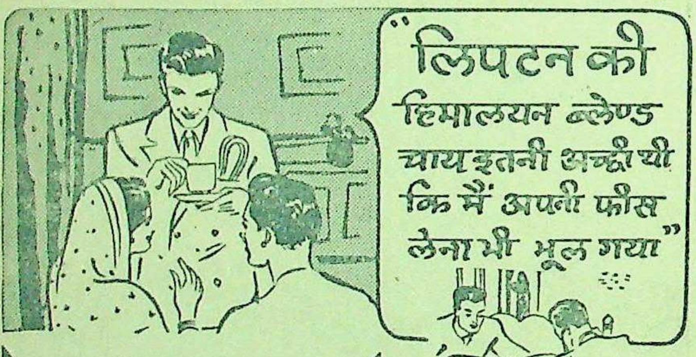

डाकटर

मुझे वह दिन अच्छी तरह याद है जब कमल के लड़के को खसरा निकला था। रोगियों को देखने के लिये उस शाम मुझे १७ बार बाहर जाना पड़ा था। मैंने कमल के लड़के के लिये नुस्खा लिखा, और वह मेरे लिये चाय का प्याला ले कर आये। मैं ने सहर्ष चाय पी। चाय बहुत ही स्वादिष्ट थी। पूछने पर पता चला कि यह लिपटन की हिमालयन ब्लेण्ड चाय थी। उस दिन से मैं अपने घर में यह उत्कृष्ट व कमखर्च चाय व्यवहार करता हूं। इस बढ़िया चाय का पता पाकर मुझे इतना आनन्द हुआ कि मैं अपनी फीस के लिये बिल भेजना भी भूल गया।

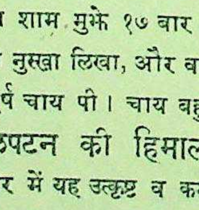

लिपटन की

हिमालयन ब्लेण्ड

सर्वोत्तम दार्जिलिंग-चाय

LTK 128

सर्दी और खाँसी

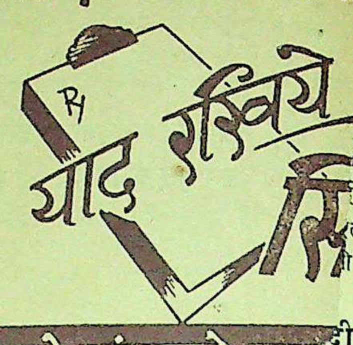

...दी हीरो फारमेसी रजिस...
...को पिछली तरफ दिल्ली।

...मत बा...

ाह के पश्चात् हम ग्रसं...
अन्दर से खोखले कमजोर...
का चमत्कार देखकर आप...
की ठगियों ने आपको...
दिन मरजी हो आइए,...
ी तो यात्रा का खर्च जेब...
तहार झूठे समझते हैं आइए...
ी एक हजार रुपया पुरस्कार...

१९४८ में क्या होनेवाला है

इस वर्ष आकाश में तारा मण्डल की कौंसिल में एक बड़ी भारी उथल-पुथल होनेवाली है। अगर आप इस साल में होनेवाले परिवर्तनों यानी अपनी ... या बुरी दशा समय से पहले ही जानना चाहते हैं तो आज ही केवल एक पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी फूल का नाम लिखकर भेज दें। बस फिर हम ज्योतिष विद्या द्वारा आपके आनेवाले १२ महीने का लाभ या हानि, किस तिजारत से फायदा होगा, किस जरिये से रुपया मिलेगा, नौकरी, तरक्की, तनज्जुली, स्त्री सन्तान का सुख, स्वास्थ्य, बीमारी, दूर की यात्रा, मुकदमा और सफलता, सगाई, शादी, जमीन या जायदाद का सुख, किसी से नया मेल या नया सट्टा, लाटरी या किसी अज्ञात साधन से धन का मिलना, सारांश यह कि कार्ड लिखने की तारीख से लेकर १ वर्ष तक होनेवाली कुछ बातों का खुलासा यानी मासिक वर्षफल बनाकर केवल १।) में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाकखर्च अलग लगेगा। बुरे ग्रहों की शान्ति के उपाय भी लिखा जायगा जिससे ... कठिनाइयों को दूर किया जा सके। एक बार परीक्षा से ही आपको भली भांति मालूम पड़ जायगा कि हमको कहां तक ज्योतिष विद्या में ज्ञान प्राप्त है।

श्री स्वामी योगीराज ज्योतिष आश्रम (D.D.A) फगवाड़ा
रियासत कपूरथला

हर मौसम में हर समय

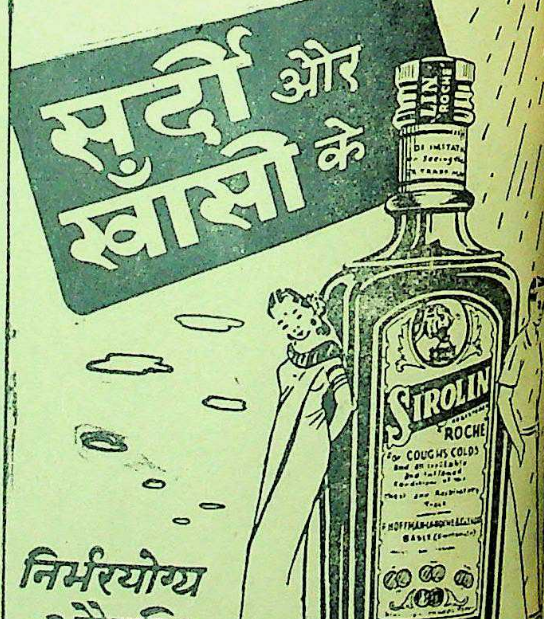

निर्भरयोग्य औषधि

सिरोलीन "रोच"

सारे संसार में व्यवहार होता

तबा

पश्चात् हम असंख्य
से खोखले कमजोर
त्कार देखकर आप
गियों ने आपको
रजी हो आइए,
त्रा का खर्च जेब
ठे समझते हैं आइए
जार रुपया पुरस्कार

फारमेसी रजिस्
क दिल्ली।

वाला है

बड़ी भारी उथल-पुथल
नों यानी अपनी
केवल एक पोस्टकार्ड
भेज दें। बस फिर
या हानि, किस तिजारत
. तरक्की, तनज्जुली,
मुकदमा और सफलता
मेल या नया मुकदमा
यह कि कार्ड लिखें
खुलासा यानी मालिक
। डाकखर्च आदि
गा जिससे
ही आपको भली भाँति
ज्ञान प्राप्त है।

D.D.A) फगवाड़ा

समय

OLIN
ROCHE
COLDS

"रोच

होता

देशदूत

१०, संख्या ३३] [रविवार, २५ अप्रैल, १९४८

ौन कहाँ क्या कर रहा है ?

स्वतंत्र चीन के प्रधान मंत्री च्यांग।

स्वतंत्र चीन के मार्शल जनरल चेन च्यांग।

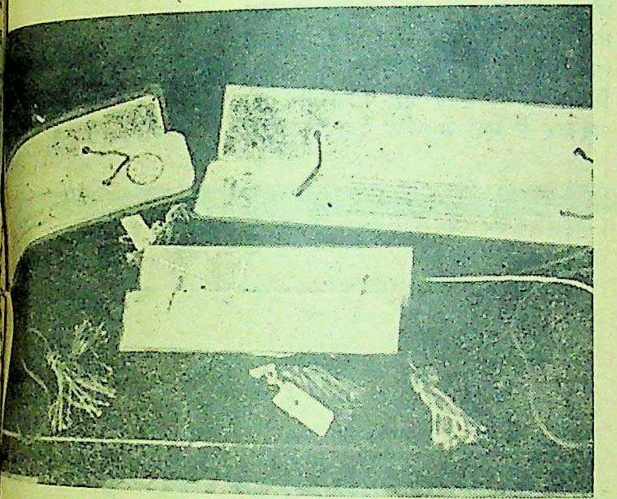
के द्वारा प्रदत्त लंका में प्राप्त ताड़ के-पत्तों पर लिखा हुआ पता।

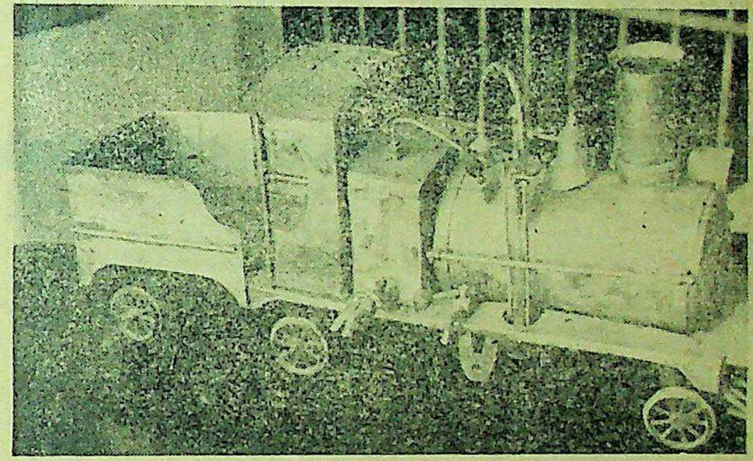
इलाहाबाद म्यूजियम में पंडित नेहरू द्वारा प्रदत्त चाँदी के इंजन का खिलौना

मौनीबाई के० ईरानी प्रथम महिला-सभानेत्री पूना म्युनिसिपल बोर्ड।

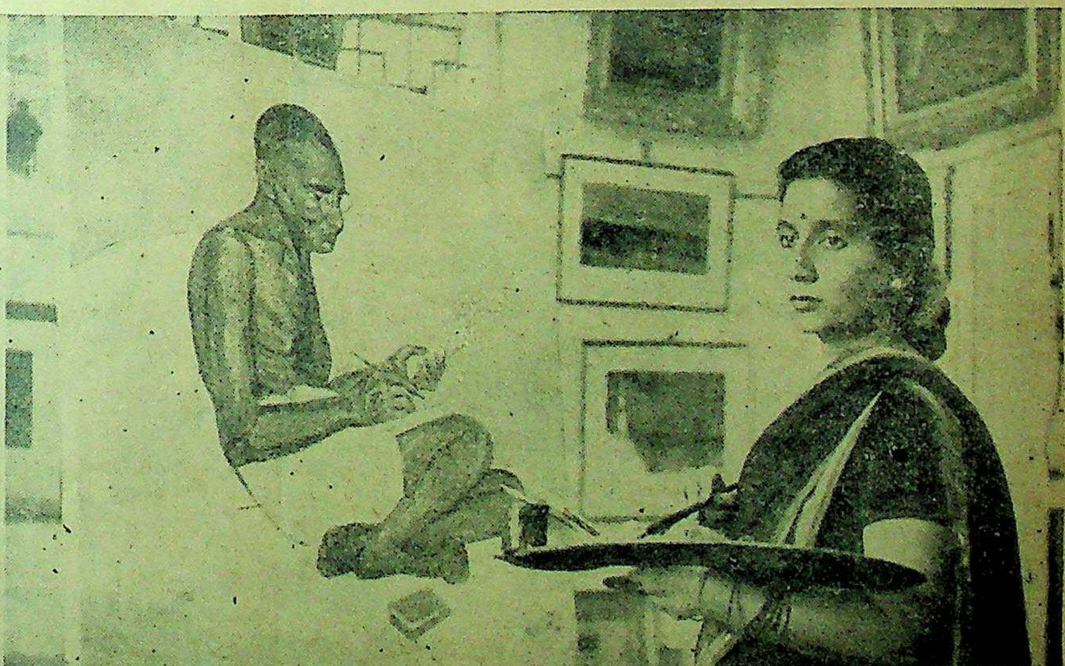
श्रीमती सुशीला यावलकर, प्रसिद्ध कलाकार श्री नागेश यावलकर की धर्मपत्नी, ने बंबई के ताजमहल होटल में महात्माजी की पेंटिंग का प्रदर्शन किया है।

सम्पादक का पृष्ठ

हैदराबाद का प्रश्न

भारतीय सरकार की शान्ति-स्थापन की इच्छा का अर्थ हैदराबाद ने उसकी निर्बलता समझा है। वैसे तो एक लम्बे समय से ही भारत और हैदराबाद के बीच कुछ मनोमालिन्य चला आ रहा है, जिसका कारण यह है कि हैदराबाद भारतीय संघ में सम्मिलित न होकर पाकिस्तान का एक अंग बनना चाहता है। अभी कुछ ही समय पूर्व एक वर्ष के लिए हैदराबाद और भारतीय संघ से समझौता हुआ था, किन्तु उस लिखे हुए समझौते की स्याही भी न सूखने पाई कि हैदराबाद ने उसके विरुद्ध आचरण करना प्रारम्भ कर दिया। वहां के उत्तरदायी आदमी आये दिन अपने भाषणों से जो आग उगलते हैं, उसका प्रभाव अभी इस समय की स्थिति को देखकर तो अच्छा नहीं मालूम होता, कुछ लोग बरार और उत्तरी सरकार के प्रान्तों को भी हैदराबाद में शामिल करना चाहते हैं, इन सब कारणों से हैदराबाद की जनता में नैतिक पतन भी हो गया। लूट-मार, आग और अन्य ऐसी ही बातें करने में उन्हें आनन्द आता है। अब प्रश्न यह है कि भारतीय संघ को क्या करना चाहिए। इसके लिए दो ही मार्ग हैं। या तो भारतीय सरकार हैदराबाद की स्वतन्त्र इच्छा को स्वीकार कर ले, अर्थात् उसे पाकिस्तान से गठबन्धन करने दे, और या फिर भारतीय सरकार हैदराबाद के लिए युद्ध को तैयार हो। अभी काश्मीर का भी फैसला नहीं हुआ, कि हैदराबाद की बात कुछ उसी तरह की बीच में आ पड़ी, आज की परिस्थिति के आधार पर तो यही जान पड़ता है कि निजाम बिना युद्ध के अपने कामों से बाज न आवेंगे।

हैदराबाद और भारतीय संघ के बीच की यह दशा पाकिस्तान को भी कुछ और अन्य बातें सोचने का अवसर देती हैं। भारतीय संघ यदि हैदराबाद के प्रति इसी प्रकार अनसुना-सा रहेगा, तो भारतीय जनता में उसके प्रति श्रद्धा कम हो सकती है। हैदराबाद के समझौते की तो आशा बिलकुल नहीं; शायद कुछ समय पूर्व हैदराबाद के लिए जन-मत का प्रश्न उठाया गया था लेकिन जनता से अधिक आवश्यक ऐसे स्थलों पर शासक के मत की जरूरत जान पड़ती है और निजाम का मत तो किसी से छिपा नहीं, इसलिए हमें जनता और राजनैतिक हलचल को शान्ति करने के लिए शीघ्र ही एक निश्चित मार्ग सोच लेना चाहिए। सम्भवतः वह मार्ग युद्ध ही हो, क्योंकि निजाम तो खुल्लमखुल्ला युद्ध चाहते हैं।

यह नारा क्यों ?

'पाकिस्तान खतरे में है' यह नारा उसी पुराने नारे 'इस्लाम खतरे में है' का एक परिष्कृत रूप है। इस नारे से अनेक मुस्लिम लीगी अपनी शक्ति का दुरभिमान भी करने लगते हैं। अभी कुछ दिन पहले खान अब्दुल गफ़्फ़ार ने प्रेस संवाददाताओं से बातचीत करते हुए कहा था कि पाकिस्तान के निवासी पाकिस्तान को अपने मनोभावों से खेलने का एक विशेष हथियार समझते हैं और जब मन में आता है तो चिल्ला उठते हैं कि 'पाकिस्तान खतरे में है।' पाकिस्तान के शासक भी ऐसी ही अंधविश्वासी शक्ति में अपनी निजी और वास्तविक शक्ति का अनुभव करते हैं। वह लोग मुस्लिम लीग के अतिरिक्त और किसी पार्टी को काम करने ही नहीं देना चाहते। मुस्लिम लीगी सरकार ने अपनी इसी संकुचित नीति के कारण पहले-पहल 'खुदाई खिदमतगारों' को कुचलने का विशेष प्रयत्न किया; किन्तु उस दिशा में असफल रहने के कारण लीग के सरकारी उच्च पदाधिकारियों ने खान बन्धुओं को भी उखाड़ फेंकने का प्रयत्न किया; किन्तु निर्धनों और दीनों में सेवा-भाव रखनेवाले खान बन्धुओं को मुस्लिम लीग कभी समाप्त नहीं कर सकती। पाकिस्तान के समस्त निवासियों ने स्वयं ही पाकिस्तान की सरकार में एक अशान्ति पैदा कर रखी है, जो उसकी अलोकप्रियता का
प्रमाण है।

* *

क्या मृत्यु-दंड दूर होगा ?

ब्रिटिश पार्लियामेंट ने प्रयो
में पांच वर्ष के लिए फांसी की
बहिष्कार किया है। इस पांच
अवधि से जान पड़ता है कि
पार्लियामेंट को अभी फांसी के
पूर्ण रूप से विश्वास नहीं हो सका है
न यही जाना जा सका है कि
के लिए फांसी की सजा कितनी
है ? एक बात इसके पक्ष में यह
है कि दूसरे देशों में भी इस
बहिष्कार किया जा रहा है।
में भी मानव के धर्म को प्रधानता
बहुत दिनों से यह आन्दोलन चल
कि मृत्यु-दण्ड उठा दिया जाना चाहि
सच पूछा जाय तो अभी भी भारत
दण्ड-विधान बिलकुल विलायत जैसा
है। अब इँगलैंड में इसका बहिष्कार
जा रहा है तो क्या भारतवर्ष में भी
ओर ध्यान दिया जायेगा? आशा है
ब्रिटेन भारत के इस विधान के परि
में अपनी पूरी शक्ति लगायेगा,
उसे अपनी परम्परा की स्थापना में
हाथ बँटाना ही चाहिए।

* *

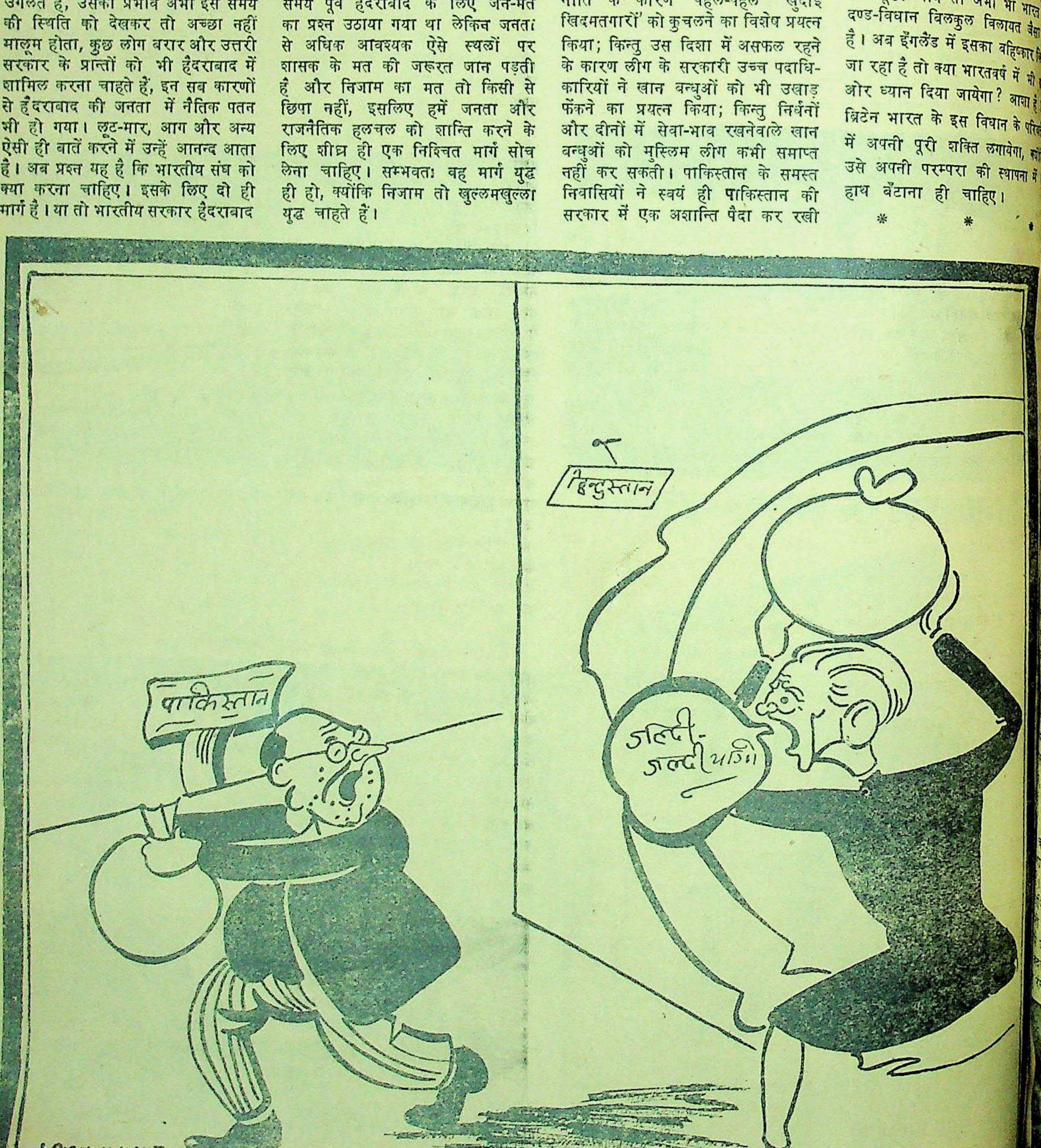

समाचार है कि पाकिस्तान के चोरबाजारवाले हिन्दुस्तान से चीनी लेकर पाकिस्तान की ओर भाग रहे हैं।

संयुक्तप्रांत के हमारे नये शासक

असेम्बली में हमने क्या देखा और क्या अनुभव किया?

लेखक, प्रोफेसर आशाराम, एम० ए०

(राजनीति-विभाग, प्रयाग-विश्वविद्यालय)

इस समय अपने प्रांत में कांग्रेस का शासन है। लेखक ने राजधानी में घूम-फिर तथा मिलकर जो देखा और उसका अनुभव किया उसी का उल्लेख इस लेख में किया गया है। विचार-स्वतंत्रता की कांग्रेस सरकार ने सदा छूट दी है, यह लेख भी विचार-स्वतंत्रता की दृष्टि से प्रकाशित किया जा रहा है, जो सुंदर, सामयिक और पठनीय है।

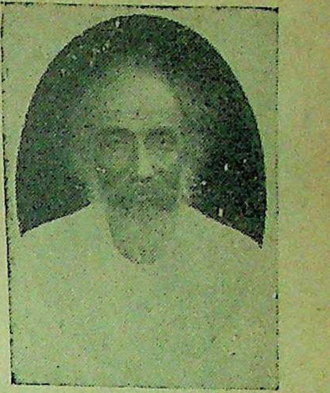

माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन

है इस संबंध में बहुत-सी राय है। कुछ कहते हैं, रंग के सिवा कुछ नहीं बदला।

* * *

हजरतगंज में अफसरों के भव्य भवन थे। वे ज्यों के त्यों हैं और बहुत से बन गये हैं और बन रहे हैं। हजरत लोग तरक्की पर हैं। नए शासकों के नए बंगले हैं, बड़े बड़े बंगले हैं। बंगले दिनों में चौकीदारों की मुगलिया पोशाक और रात को तीक्ष्ण विद्युत-प्रकाश से चमचमाते हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक-संघ की घबराहट में पुलिस सतर्क हो गई ह और मन्त्रियों के घरों ही नहीं सड़कों तक को घेरे रहती है।

मन्त्रियों के पीछे तरह-तरह के आदमियों की भीड़ रहती है। बेचारों को भीड़ से पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जाता है। बड़े-बड़े अफसर छोटे-मोटे दफ्तर के क्लर्क असेम्बलियों के सदस्य, सेठ और व्यापारी राजनैतिक दलों के नेता और कांग्रेसी कार्यकर्त्ता आदि सभी मन्त्री महोदय के दर्शन करने के लिये उत्सुक रहते हैं। घर और बाहर, दफ्तर और असेम्बली, खाना और टहलना——मन्त्रियों का इस भीड़ से एक मिनट के लिए त्राण नहीं।

कुछ बरस पहले गवर्नर अपने अफसरों की मदद से सारे सूबे का शासन सँभालता था। सन् १९१९ के सुधारों के अनुसार सूबे का काम चार-पांच मन्त्री चलाते थे। पिछली बार (१९३७) कांग्रेसी मन्त्रि-मंडल को छः मन्त्री और सात-आठ उपमन्त्रियों की आवश्यकता हुई, अब की बार नौ-दस मन्त्रीऔर लगभग इतने ही उपमन्त्री भी कम मालूम होते हैं। शायद और अभिवृद्धि हो।

यही दफ़्तरों का हाल है। जहां एक की जगह थी, दो आदमी काम कर रहे हैं। अफसर बारह बजे जाकर तीन बजे लौट आते थे, अब सुना है, सुबह के नौ बजे से शाम के छः बजे तक काम करते हैं। बहुत से नये अफसर नियुक्त किये गये हैं और अनेक नये आफिस खोले गये हैं। सुना है कि माननीय मन्त्री महोदय से लेकर साधारण क्लर्क तक काम के बोझ से दब गये हैं। बहुत से आदमियों की और जरूरत है।

लेकिन जिनको कुछ काम नहीं वे सवाल करते हैं, आखिर ऐसा क्या काम ह? जिसके बोझ से ये सब दबे हैं। लखनऊ में मसखरों की भी कमी नहीं। उनका कहना है, "फाइल और लाल फीतों के बोझ से।"

* * *

सरकारी दफ्तर और व्यवस्थापिका सभाओं की आलीशान इमारत है। अन्दर जाते हुए भवन की स्थूलता, उसके भारीपन, उसके बड़े आकार का भास होता है, भय की भावना होती है, दिल्ली की केन्द्रीय असेम्बली को देखते हुए भी यही घबराहट होती है। लोक-तन्त्र को ऐसे भय की भावना पैदा करनेवाले भव्य भवनों की आवश्यकता है, यह प्रश्न गंभीर और विचारणीय है।

यह कौंसिल हाउस न केवल दफ्तर के क्लर्कों, असेम्बली और कौंसिल के मेम्बरों और मन्त्री तथा अफसरों वरन् दर्शक और पुलिस के पहरेदारों से भरा रहता है। अन्दर जाने के लिए पास (आज्ञा-पत्र) की आवश्यकता होती है। महात्मा जी की मृत्यु के बाद यहां भी पहरा मजबूत कर दिया गया है। कौंसिल हाउस चारमंजिल पत्थर की इमारत है। इसके अन्दर असेम्बली और कौंसिल के सभी स्थान विभिन्न दलों और सभापतियों के कमरे, मन्त्रियों के दफ्तर, पुस्तकालय और वाचनालय और साथ ही जलपान आदि के लिए होटल हैं। नये परिवर्त्तनों से होटलों की कमाई में कमी नहीं, वृद्धि ही हुई है। काम निकालने के लिए जलपान कराना——यह सरल और कम खर्च तरीका है।

* * *

कुछ दर्शक असेम्बली के वाद-विवाद सुनने और उनको देखने के लिए भी चले आते हैं। व्यवस्थापिका सभा और कौंसिल दोनों में ही कुर्सियों की कतारें लगी हैं। बीच में एक ओर सभापति का स्थान है। ठीक ग्यारह बजे दोपहर को सेक्रेटरी सभापति के आसन से सभापति की उपस्थिति की घोषणा करता है, सदस्य स्थान से उठ खड़े होते हैं और सभापति के आसन ग्रहण करने पर बैठ जाते हैं। उसके बाद आनेवाले को स्थान ग्रहण करने के पूर्व प्रथम सभापति की ओर झुकना पड़ता है।

पहला घंटा सवाल-जवाब के लिए नियत है। मन्त्री महोदय सरकार की ओर से सदस्यों के सवालों का जवाब देते हैं। इस समय कुछ व्यंग, कटाक्ष, कुछ अनबन के लिए मौका मिल जाता है। बाद में मन्त्रियों की ओर से पेश किये गये कानूनों, बजट अथवा सदस्यों की ओर से पेश किये गये प्रस्ताव, संशोधन अथवा सभा-स्थगित प्रस्तावों पर बहस होती है। प्रश्न अधिकांशतः राजनैतिक, आर्थिक और बहुधा प्रान्त से सम्बन्ध रखनेवाले होते हैं।

व्यवस्थापिका सभा के सभापति हिन्दी-भाषा के प्राण श्री पुरुषोत्तमदास जी टंडन हैं। सभा-भवन में अंगरेजी का स्थान हिन्दी ने ले लिया है। दर्शकों के पास (प्रवेश-पत्र) शुद्ध और संस्कृत हिन्दी में छपे हैं, बोर्ड हिन्दी में बन गये हैं, हिदायतें हिन्दी में लिखी गई हैं। सभापति महोदय शुद्ध हिन्दी का प्रयोग करते हैं। मन्त्री और सदस्य हिन्दी में भाषण देते हैं। मजा तो तब आता है जब मन्त्रिगण सवालों का जवाब हिन्दी में पढ़ते हैं। मालूम होता है हुचकियां ले रहे हैं। भाषा गले के नीचे नहीं उतरती। इस पर भी हिन्दी के नाम पर सदस्य सरकार को खरी सुनाते नहीं चूकते। बहुत से सदस्य सबसे पहले सरकार की भाषा-संबंधी नीति की निन्दा करते हैं। कहते हैं सरकार इस भाषा को प्रोत्साहन नहीं देती, परन्तु वे स्वयं कौन-सी भाषा बोलते और किस भाषा में भाषण करते हैं——यह उनसे पूछिए! कहा जाता है ये भाषण जनता के लिए हैं। मानो जनता ही एक ऐसी जंतु है जिसको बेवकूफ बनाया जा सकता है।

* * *

टंडन जी व्यवस्थापिका सभा के पति हैं अथवा सदस्यों के पिता, यह तय करना कठिन है। वृद्ध पिता की भांति आप इन "चंचल लड़कों" को डांट-डपटकर ठीक रखते हैं। सदस्य आपके सफेद बालों की इज्जत करते हैं। असेम्बली में आप संयम और निश्चय की प्रतिमूर्त्ति की भांति कार्य करते हैं। कहा जाता है कि असेम्बली के सभापति अपने राजनैतिक विचार प्रकट

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

माननीय श्री केशवदेव मालवीय

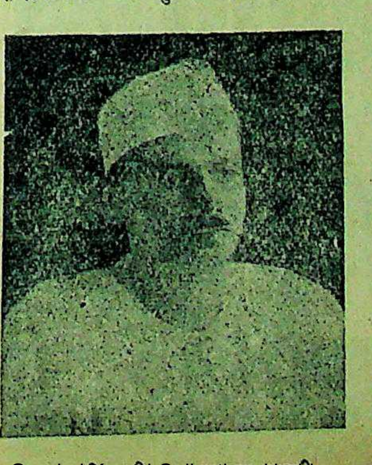

माननीय श्री लालबहादुर शास्त्री

माननीय श्री चंद्रभानु गुप्त

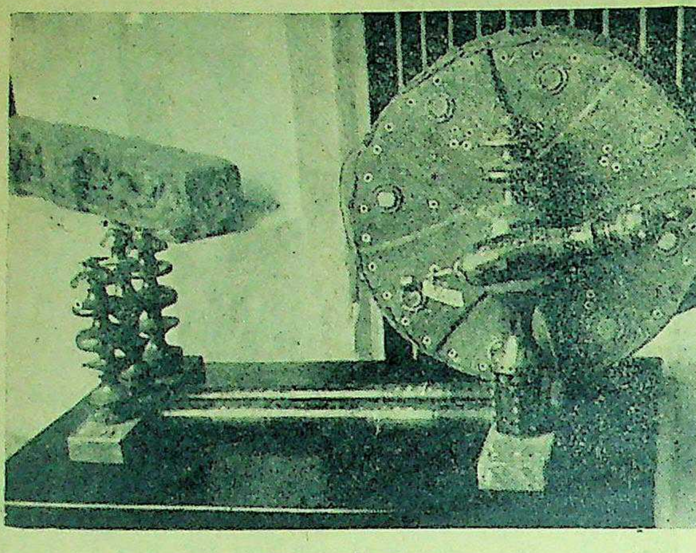

ऊन का एक जटित चरखा

कुछ रंगीन खिलौने

कुछ कारीगरी से बनी हुई रत्न-पेटियां

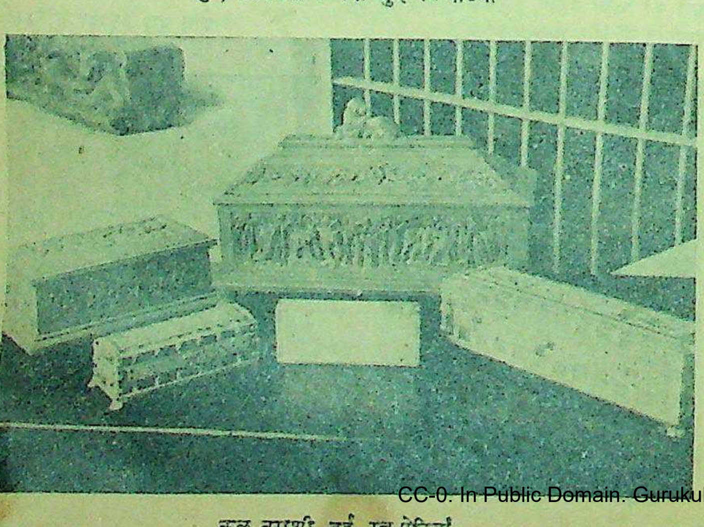

कुछ तराशी हुई रत्न-पेटियां

राष्ट्रीय और कलात्मक उपहार

इलाहाबाद म्यूजियम में पंडित नेहरू का प्रदत्त दान

लेखक, श्री सतीशचंद्र काला, एम० ए०

(क्यूरेटर, इलाहाबाद म्यूजियम)

एक कलात्मक अजायबघर अथवा पुरातत्त्व-विभाग में जानेवाले व्यक्ति को साधारणतया मानसिक विचारों से सम्बन्धित हर्षोन्माद, उत्सुकता और उदासीनता का अनुभव होता है। जब वह किसी भव्य पदार्थ पर दृष्टिपात करता है तो उसके अन्दर हर्ष की उत्पत्ति होती है, स्वभावतः मन में उस वस्तु के निर्माण-सम्बन्धी तत्त्व और इतिहास को जानने की इच्छा होती है और अंत में यह सोचकर कि इस वस्तु का निर्माता अब संसार में नहीं है, हृदय को एक विषाद और उदासीनता का अनुभव करना पड़ता है। वर्तमान काल के अजायबघरों में कभी कभी दिमाग बोझिल भी हो जाता है। कलकत्ता और लाहौर के अजायबघरों में वस्तुओं की अधिकता के कारण उनके संग्रह से प्रसन्नता और विस्तृत ऐतिहासिकता के कारण एक बार हृदय सिहर उठता है!

इलाहाबाद के अजायबघर में एक बड़ा कमरा है जो विशेषतया पंडित नेहरू के उन उपहारों का स्थान है जो उनको देश-विदेश के भ्रमण करते समय प्राप्त हुए हैं। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की ओर से सन् १९३६ में इस अजायबघर को एक विस्तृत वस्तुसमूह प्रदान किया गया था। इन विभिन्न उपहारों के रखने के लिये भांति-भांति के लकड़ी, शीशे और चांदी के छोटे-छोटे घर (Show Case) बने हैं, जिनके देखने से एक जौहरी की भव्य दूकान की याद आ जाती है। इनमें चांदी की तश्तरियां, हार, चौखटे, स्मृति-चिह्न, बुने हुए कपड़ों के पर्दे, लकड़ी की बहुमूल्य खेल-सामग्रियां और चरखा आदि कुछ चीजें हैं। यह सभी वस्तुएँ सिलसिलेवार रखी हैं। अजायबघर में इन चीजों के देखने में कुछ कष्ट अवश्य होता है, किन्तु इनका मूल्य इनकी कलात्मकता के कारण बहुत अधिक है और यह वस्तुएँ अपने कलाकारों और निर्माताओं की प्रतिभा का परिचय देती हैं। इन वस्तुओं के लिए उतनी ही पावनता और व्यवस्था की आवश्यकता है जितनी किसी अन्य राष्ट्रीय निधि के लिए हो सकती है। यह जगमगाती हुई वस्तुएँ हमारे राष्ट्र के स्वतन्त्रता-युद्ध की अमूल्य निधियां हैं। इनके द्वारा हम अपने आदर्शों और आत्मिक शक्तियों का अनुभव कर सकते हैं। नेहरू-परिवार की देश-भक्ति, सेवा और त्याग के लिए दिये गये प्रशंसा-पत्र हमारी राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने के अतिरिक्त स्थानीय समस्याओं पर भी प्रकाश डालते हैं। बर्मा और अन्य देशों में दिये गए प्रशंसापत्र वहां के निवासियों की सहृदयता के और उनकी आवश्यकताओं एवं उनकी समस्याओं के द्योतक हैं। हर व्यक्ति चाहे किसी भी देश और जाति का क्यों न हो, अपनी सारी समस्याओं का उल्लेख कांग्रेस के लिए करता है।

पं० नेहरू-द्वारा विदेशों में देशीय प्रचार

प्रायः संसार के समस्त देशों में पंडित जी भारतवर्ष का संदेश पहुँचा आये हैं; किन्तु चीन, लंका और आयरलैण्ड के संदेश एक विशेषता रखते हैं। भारतवर्ष और चीन २१७ ईसा शताब्दी में एक-दूसरे के सम्पर्क में आये थे; जब बुद्ध-धर्म के अनुयायी दोनों ही देशों से पामीर और तुर्किस्तान के मार्ग से आते-जाते थे। महाराज अशोक की पुत्री संघमित्र और उनके पुत्र महेन्द्र गया के बोधिवृक्ष [illegible] लिए, इसी के आधार पर लंका में बुद्धकालीन समय की एक स्मृति अनुराधापुर के नाम से निर्मित इस सारी भारतीय संस्कृति और का अंत गुप्त-साम्राज्य के पतन के साथ हुआ; किन्तु पूर्वी और दक्षिणी में पंडित नेहरू की उपस्थिति ने फि बार भारत की प्राचीन संस्कृति की दिलाई। अनेकों प्रशंसापत्र बर्मा और देशों से पंडित जी को मिले; मजदूरों और बर्मी निवासियों के सम्मा तो बड़े ही हृदयस्पर्शी हैं।

सोने, चांदी, लाह, चन्दन, हाथी बादाम, कागज और कपड़ों के चौखटों सुसज्जित अगणित प्रशंसापत्र—अज घर में एक लम्बी कतार बनाये हैं सबसे विशेष दर्शनीय वस्तु मैसूर के एक चन्दन का बक्स है, दूसरी भव्य भेंट अहमदाबाद म्यु सिपैलिटी की ओर से है। चन्दन लकड़ी पर अहमदाबाद का चित्र खुदा जिससे हिन्दुओं और मुसलमानों कारीगरी का सुन्दर मिश्रण उपस्थित खम्भों के बीच-बीच चांदी के पत्ते भरे हैं और इसके आधार पर इस परिचय भी खुदा है। बर्मा के प्रशंसा वहीं की सुन्दर लकड़ियों के चौखटों बन्द हैं, कुछ चौकोर और कुछ लम्बाई अधिक हैं।

लंका के प्रशंसा-पत्र

लंका के प्रसिद्ध नगर कैंडी प्रशंसा-पत्र बड़े ही आकर्षक हैं। प्रत्ये पंक्ति के आरम्भ और अन्त में के ऊपर वहां के प्रसिद्ध स्थानों चीजों के चित्र हैं।।इनकी सरलता है। कोलम्बो ने एक बक्स समर्पित कि है जिसमें शेर, हाथी और घोड़ों के हैं। यह बक्स तीन हाथियों की पीठ रखा है। इन चित्रों से जयपुर की कारी याद आती है। बाहरी ओर मोरों के अत्यन्त संगीतात्मकता के साथ चि हैं। पक्षी का सिर और गला सफेद है सब होते हुए भी मोर का समस्त सुन्दर है। स्वर्ण-निर्मित बक्स बड़े और चित्ताकर्षक हैं। लकड़ी की तश्त पर किया हुआ हाथीदांत का काम उत्तम कारीगरी का नमूना है। के ऊपर गांधी जी का चित्र भी है देखकर ऊँचे दर्जे की शान्ति मिल भेंटों में और भी भांति-भांति के और रेंगनेवाले जीवों के चित्र हैं से कुछएक श्रेष्ठ कला के प्रतीक होते हैं।

इन भेंटों के अतिरिक्त पोशि वस्त्र, ताले, पदक, प्याले, कांटे, और तलवारें भी दी गई हैं। इन विशेष चीज चांदी का इंजन है सारी भेंटों का अध्ययन हमारे हमारी संस्कृति की विशेषता रखता है। दो बातें विशेष रूप से होती हैं--पहले तो हमें इन अनेक प्रकार के चित्र मिलते हैं उच्च कला मिलती है। दूसरे की कला का नया रूप देखने मिलता है।

आज हम इन चीजों को दृष्टि से भले ही न परख पायें इन सारी वस्तुओं के अन्तर्गत आत्मीयता जो अमूल्य है, वह में आती ही है। यह पंडित नेहरू के और भाषणों के सर्वथा अनुकूल आनेवाली पीढ़ी इन अमूल्य अपने स्वदेश का मूल्यांकन

तीसरे महायुद्ध की तैयारियाँ

साम्राज्यवादी राष्ट्रों के विरुद्ध क्या नया मोर्चा खुलेगा ?

लेखक, श्री चन्द्रोदय दीक्षित

भविष्य में क्या तीसरा महायुद्ध होगा या नहीं, यह आज का एक प्रमुख प्रश्न है। साम्राज्यवादी राष्ट्रों, सोवियट रूस तथा राष्ट्र-संघ में होनेवाले संघर्षों से कभी कभी इस तथ्य की वास्तविकता प्रगट होने लगती है कि तीसरा महायुद्ध अवश्य होगा। इस लेख में विद्वान् लेखक ने तीसरे महायुद्ध की समस्याओं पर प्रकाश डाला है। लेख सुंदर और सामयिक है।

रूस का प्रधान डिक्टेटर स्टालिन।

तृतीय महायुद्ध के युद्धघोष आरम्भ हो गये हैं। द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति के अवसर पर थकी मानवता को शान्ति कर लेने की मृगतृष्णा हुई थी। को एक बार अपने सत्स्वरूप ने किया था और सुन्दर आदर्शों लोलुप राज्य-शासकों को भी मान्यता स्वीकार करने को बाध्य दिया था। संयुक्त राष्ट्र-संघ, उसके आदर्श इसी भावना का द्योतन हैं। लेकिन हमने उस समय भी की वर्तमान सामाजिक विषमता ध्यान दिलाया था और अन्त-गृहयुद्ध की ओर संकेत किया मानव-समाज के वर्ग संघर्ष है। एक सामाजिक व्यवस्था हो जाने पर उसका अन्त जाता है, एक नवीन व्यवस्था का जन्म होता है जो नवीन की मांग को पूरा करती हैं। अमरीका हमारे इतिहास की शक्तियां हैं। अमरीका संसार, साम्राज्यवादी शक्तियों का और रूस उसके विरोध में एक व्यवस्था को लानेवाला अग्रदूत है। शक्तियों का विरोध अपने बिन्दु पर पहुँच गया है। अमरीका ट्रूमन को अमरीका की में यह कहने को बाध्य होना पड़ा संसार की वर्तमान अवस्था की, युद्ध का अन्त स्वाभाविक नहीं है। उसका प्रधान कारण है बड़े राष्ट्र ने एक सम्माननीय शान्ति-के कार्य में सहायता ही नहीं दी नहीं है; वरन् उसने उसकी स्थापना शक्ति भर रोका है। इतना युद्ध के समाप्त हो जाने के बाद और उसके समर्थकों ने पूर्वी और केन्द्रीय योरोप के राष्ट्रों के प्रजातान्त्रिक स्वरूप को नष्ट किया है।

अमरीका के वैदेशिक मंत्री जार्ज मार्शल

इसके साथ ही फ्रांस के जनरल डिगाल फ्रांस में निहित स्वार्थी वर्ग के अधिनायक हैं, वे फ्रांस पर अपना अधिकार जमा लेने के लिए व्याकुल हैं। आप तो आरम्भ से ही रूस के विरोध के लिए प्रसिद्ध हैं। इस समय आप पश्चिमी योरोपीय संघ के निर्माण के लिए प्रयत्नशील हैं और उनका प्रमुख शत्रु साम्यवाद का भूत है। आश्चर्य तो यह है कि ब्रिटिश मजदूर-दल के शासक भी आज अमरीका और रूस दोनों के प्रभावों से अलग रहने की अपनी घोषणाओं के साथ विश्वासघात कर रहे हैं। यों तो आरम्भ से ही उन्होंने अपनी वैदेशिक नीति में परिवर्तन नहीं किया था लेकिन इस समय तो वे स्पष्ट रूप से रूस-विरोधी गुट में सम्मिलित हैं और उन्हीं की ओर से पश्चिमी योरोप संघ के अध्यक्ष पद के लिए ब्रिटिश अनुदार दल के नेता श्री चर्चिल के नाम का प्रस्ताव किया गया है। स्मट्स भी इस रूस-विरोधी प्रचार में किसी से पीछे नहीं हैं। इस प्रकार हम देख रहे हैं कि आज युद्ध-नियंत्रण के रौद्रराग को अलापनेवाले लोग साम्राज्यवादी और राज्य-लोलुप दल के नेतागण हैं। फिर भी हमें वर्तमान शक्ति-संतुलन पर एक दृष्टि डाल लेना अत्यन्तावश्यक है।

वर्तमान शक्ति-सन्तुलन को ठीक से समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम युद्ध-समाप्ति के अवसर पर पोट्सडम-सम्मेलन की कुछ शर्तों को स्मरण कर लें। उक्त सम्मेलन में युद्ध के अन्त के बाद संसार का तीन बड़े राष्ट्रों में कैसा बँटवारा होगा, यह निश्चित-सा हो गया था। बाल्टिक राज्य, बाल्कन राज्य और पूर्वी योरोप के राज्यों पर रूसी प्रभाव स्वीकार कर लिया गया था और यही कारण है कि यूनान के गृहयुद्ध के अवसर पर भी यूनान की सीमा पर स्थित रूसी सेनाओं ने भी उसमें भाग नहीं लिया। यूनान में ब्रिटेन के नाटक को हम सभी लोगों ने भली भांति देखा और यह देखा कि समाजवादी ब्रिटेन के नवीन शासकों ने यूनान को अमरीका के हाथ बेंच दिया जिसने वहां प्रजातंत्र का मंत्र पढ़कर सामन्तवादी राजतंत्र की स्थापना कर दी। इसके साथ ही जापान और चीन में अमरीका का प्रभाव स्पष्ट रूप से अधिक है। आज पूछा जा सकता है कि क्या अमरीका ने वहां की प्रजातान्त्रिक शक्तियों के नियोजनात्मक हनन का षड्यंत्र नहीं बनाया? क्या अमरीका ने हिन्द-एशिया और हिन्द चीन में पुराने साम्राज्यवादियों के राज्य की रक्षा नहीं की? आज की स्थिति को समझने के लिए यह भी अत्यन्तावश्यक है कि हम यह जान लें कि ईरान, ईराक, अरब और फिलस्तीन को अनेक छल-प्रपंचों से अमरीका ने अपने अधीन बना लिया है। अफ्रीका की काली करतूतों की ओर उन प्रजातंत्र के पुजारियों की निगाह नहीं जाती। आज युद्ध का नियंत्रण है। बात इतनी ही नहीं है वह कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। जर्मनी के प्रभावों के बँटवारे के बाद देखा गया कि रूसी प्रभाव के जर्मनी में वहां के मजदूर, किसान और निम्न मध्यम श्रेणी के लोग सन्तुष्ट हैं। वहां के विभिन्न समाजवादी दलों ने एक संयुक्त समाजवादी दल का निर्माण किया। इसके विपरीत ब्रिटेन के क्षेत्र में कुछ गनीमत थी लेकिन अमरीका के क्षेत्र में तो जनता को अपार कष्ट है। वहां मूल्यों में अपार वृद्धि हो गई है। मूल्य और आय के सन्तुलन के नष्ट हो जाने से परिवारों में आर्थिक संकट व्याप्त हो गया है। अमरीका की ओर से वहां पूंजीवाद के पुनर्स्थापना की चेष्टा की जा रही है। यह कार्य उसी दशा में पूरा हो सकता है जब कि जर्मनी में युद्ध के बाद जो पूंजीवादी स्तर नष्ट हो गया था उसे पुनः समाज के ऊपर लाद दिया जाय। अमरीका ने स्वयं पराजित नाजी नेताओं को पुनः अपने यंत्र के रूप में परिवर्तित करने की चेष्टा की। एक मृत समाज पद्धति को कृत्रिम रूप से बाह्य रक्त से जीवित करने का प्रयत्न किया। युद्धध्वस्त योरोप के सभी देशों में पूंजीवाद अपनी मृत्यु की गोद में पहुँच चुका था और यदि अमरीका उसे पुनः उसी शोषक के रूप में जीवित करना चाहता था तो उसे प्रत्येक प्रकार की सहायता देने के लिए बाध्य होना पड़ा। यही कारण है कि अमरीका मार्शल योजना द्वारा योरोप में मृत-पद्धति को जीवित करना चाहता है। जनता पूंजीवाद की असंगतियों और उसके अन्तर्विरोधों से परिचित हो चुकी है; अतः केवल प्रजातान्त्रिक रूप से उसे अमरीका अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकता। इसके लिए उसने धर्म, संस्कृति और सभ्यता के नष्ट होने का भय दिखलाया और साथ ही यह भी कहा—देखो, तुम्हारी आर्थिक व्यवस्था की सुरक्षा यदि कोई कर सकता है तो वह अमरीका ही है। पश्चिमी योरोप के १६ राष्ट्रों के सम्मेलन में अमरीका को पूरा समर्थन मिला है। इन लोगों का पूर्ण अभिनय करने का एकमात्र कारण यह बतलाया जा रहा है कि रूस ने पोलैंड, रूमानिया, बल्गेरिया, यूगोस्लाविया, हंगरी, चेकोस्लावाकिया आदि देशों में अपनी कठपुतली सरकारें बना दी हैं। रूस ने तानूतुवा नामक एक छोटे स्वतन्त्र राष्ट्र को हड़प लिया है। चीन से सन्धि करने में उसने दबाकर चीन को इस बात के लिए बाध्य किया कि वह बाहरी मंगोलिया की स्वतन्त्रता स्वीकार कर ले। इस देश पर रूस का पूरा प्रभाव और प्रबन्ध हो गया है। चेकोस्लावाकिया पर दबाव डालकर उसने उसका रूमानिया प्रान्त छीन लिया है। रूस का अपराध यह है कि उसने उन क्षेत्रों में, जिन्हें अमरीका और ब्रिटेन के प्रतिनिधियों ने उसे सौंपे थे, ऐसी सरकारें बना दी हैं जिनमें पूंजीवादी, साम्राज्यवादी षड्यंत्रों के लिए कोई स्थान नहीं रहा है; जहां पर युद्धकाल में फासिस्टों का साथ देनेवाले पूंजीवादी वर्ग को नष्ट कर दिया गया है; जहां देश की आर्थिक विषमता को मिटाकर भूमि का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया है और सामन्तवादी प्रथा को नष्ट कर दिया गया है। रूसी प्रभाव के क्षेत्रों के सम्बन्ध में हमें एक बात और भी जान लेनी चाहिए कि वहां काम की बात को ही प्रधानता दी जाती है। ढपोरसंख लोगों के वादे वहां नहीं हैं। वहां सामाजिक उत्पादन को बढ़ाने के लिए योजना का आश्रय लिया जाता है। सरकार जनहित की रक्षा करने के लिए तत्पर रहती है। वहां न तो वस्तुओं के मूल्यों में पूंजीवादी देशों की तुलना में वृद्धि हुई है और न वहां आर्थिक संकट का भय है।

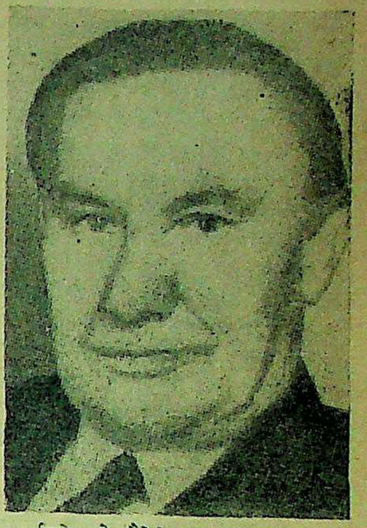

ब्रिटेन के वैदेशिक मंत्री बेविन

पूछा जा सकता है कि यदि इतनी ही बात है तो युद्ध की इतनी बेचैनी नहीं होनी चाहिए। उद्देश्य स्पष्ट है कि जनता इनकी पद्धति गत विषमता से परिचित न हो। उसे धर्म, संस्कृति, मानव व्यक्तित्व के सुन्दर नारों से प्रच्छन्न करने की चेष्टा की जा रही है। लेकिन सामाजिक विकास के संघर्ष की गति अपने विकासवान् स्वरूप को इन छोटे-छोटे अवरोधों से ही नष्ट नहीं होने देती। यही कारण है कि स्वयं पूंजीवादी साम्राज्यवादी नेतागण जनता की सजगता से त्रस्त हैं। सभी लोगों की आंखें इटली पर लगी हुई हैं। इटली में अगली १८ अप्रैल को आम चुनाव होगा। दक्षिण इटली के किसानों और उत्तर इटली के मजदूरों पर कम्युनिस्टों का प्रभाव है। इटली में ईसाई समाजवादियों की पार्टी है उसके नेता डीज स्वेरी ने जो इस समय सरकार के प्रधान मंत्री हैं, भूमि की अव्यवस्था को दूर नहीं कर पाये हैं और उन्होंने भूमिपतियों का ही साथ दिया है। उत्तरी इटली में कम्युनिस्टों का प्रभाव अधिक है। यहां पर जन संयुक्त मोर्चा काम कर रहा है और ऐसी आशा की जाती है कि निर्वाचन में कम्युनिस्टों तथा जन संयुक्त मोर्चे की जीत होगी।

यदि इटली पर कम्युनिस्टों का अधिकार हो जाता है तो फ्रांस में, जहां

शेष पृष्ठ १४ पर देखिए

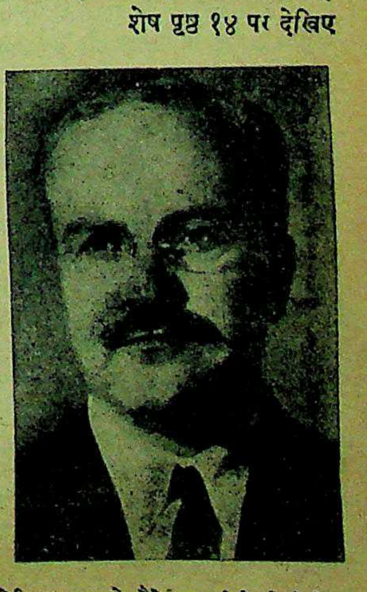

सोवियट रूस के वैदेशिक मंत्री मोलोटोव।

सदाचार और उसकी शिक्षा

दूसरों का सुधार उनसे प्रेम करने से स्वयं होता है, आलोचना करने से नहीं

लेखक, प्रोफेसर लालजीराम शुक्ल, एम० ए०, बी० टी०

सदाचार पर ही उच्च मानवीय जीवन की सफलताएँ निर्भर हैं, इस लेख में सदाचार को अनेक दृष्टिकोणों से देखा गया है और बतलाया गया है कि सदाचारहीनता से जीवन किस प्रकार बोझिल और भारस्वरूप प्रतीत होने लगता है। साथ ही जीवन की उच्चतर दिशा की ओर भी प्रकाश डालता गया है। लेख विद्यार्थियों और प्रौढ़ों के लिये समान रूप से लाभप्रद तथा जीवन को अधिकाधिक शक्ति और साहस देनेवाला है।

सदाचार नैतिकता को आचरण में लाने का परिणाम है। नैतिकता अपने आपके और समाज के कल्याण के लिए अत्यन्त आवश्यक है। नैतिकता के प्रतिकूल आचरण करनेवाले व्यक्ति को अनेक प्रकार के शारीरिक तथा मानसिक रोग होते हैं और उसे संसार में भी अन्त में विफलता ही मिलती है। जो मनुष्य अनैतिक आचरण करके संसार में उन्नति करते दिखाई देते हैं उनकी उन्नति अस्थायी रहती है। जितने वे बाहर से बढ़ते जाते हैं भीतर से खोखले होते जाते हैं। जो मनुष्य जितना ही स्वार्थी होता है और अपने सुख के लिए जितना ही दूसरे लोगों के मन को दुःखी करता है वह स्वयं भी उतना ही अधिक कष्ट जीवन में पाता है। ऐसे व्यक्ति के मन में अनेक प्रकार की मानसिक झंझटें उत्पन्न हो जाती हैं। मनुष्य दूसरे को सुखी बनाकर ही आत्म-शान्ति को प्राप्त कर सकता है।

मनुष्य के मन में अपने सुख की इच्छाएँ तथा दूसरों को सुखी बनाने की इच्छाएँ—ये दोनों प्रकार की इच्छाएँ हैं और जीवन का विकास अपने सुख की इच्छाओं के नियंत्रण और दूसरे को सुखी बनाने की इच्छाओं की वृद्धि में है। जो मनुष्य जितना ही अधिक अपना कल्याण दूसरे लोगों के कल्याण में देखता है वह उतना ही बड़ा महात्मा है और वह उतना ही सुखी और शान्त चित्त रहता है। उसके मन में किसी प्रकार का अन्तर्द्वंद्व उत्पन्न नहीं होता। अतएव वह एकाग्र चित्त होकर किसी काम को करता है और उसमें उसे सफलता मिलती है। मानसिक अन्तर्द्वंद्व की अवस्था में चित्त की एकाग्रता नहीं होती। अतएव मनुष्य कोई भी काम लगन के साथ नहीं कर पाता। जब वह एक काम करता है तो दूसरे काम की चिन्ता उसे सताती रहती है। इस प्रकार उसे किसी भी काम में पूर्ण सफलता नहीं मिलती।

व्यभिचारी, दुराचारी मनुष्य को अनेक प्रकार की आत्मग्लानि होती रहती है। जब वह अपने आत्मग्लानि के विचारों को दबाने की चेष्टा करता है तो उसे अनेक प्रकार के मानसिक अथवा शारीरिक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। प्रत्येक मनुष्य स्वभावतः भला बनना चाहता है। उसकी अन्तरात्मा तब तक सुखी नहीं होती जब तक कि वह अपने आचरण को अपने आदर्श के अनुरूप नहीं बना लेता है। प्रत्येक व्यक्ति के आदर्श होते हैं। आदर्श की उपस्थिति मनुष्य की विचार-शक्ति की क्रिया का ही परिणाम है। पशु में विचार करने की शक्ति नहीं रहती; अतएव उसमें धर्म-बुद्धि भी नहीं रहती और न उसके मन में किसी प्रकार के आदर्श होते हैं। आदर्शहीन पुरुष पशु के समान ही है। जब मनुष्य अपने आदर्श के विरुद्ध काम करता है तो उसका ही मन उसे दुःख देने लगता है। वह अपने आपसे ही दण्ड पाने लगता है। अतएव सदाचारी होना अपने आपको सुखी और उन्नतिशील बनाने का तथा स्वास्थ्यलाभ प्राप्त करने का सर्वोत्तम उपाय है।

नवीन मनोविज्ञान का छिछला ज्ञान रखनेवाले व्यक्ति नैतिकता को व्यर्थ मानते हैं। डाक्टर फ्रायड ने स्वतन्त्र जीवन की आवश्यकता बताई और नैतिकता की अतिवृद्धि को मानसिक रोगों का भी कारण माना है। उनके कल्पनानुसार जिस व्यक्ति के जीवन के आदर्श जितने ऊँचे होते हैं, उसके मन में उसकी अधिक झंझटें होती हैं, क्योंकि उसे उतना ही अधिक अपनी प्राकृतिक इच्छाओं पर प्रतिबन्ध रखना पड़ता है। उनका कथन है कि इस प्रकार के प्रतिबन्ध से मनुष्य की प्राकृतिक इच्छायें विकृत होकर मानसिक ग्रन्थियों का रूप धारण कर लेती हैं और फिर वे अनेक प्रकार के रोगों में प्रकाशित होती हैं। इस प्रकार की शिक्षा के परिणाम-स्वरूप नवयुवकों में स्वच्छन्द जीवन का प्रचार होने लगा। प्रगतिशील साहित्य का उद्देश्य भी मनुष्य की वास्तविक इच्छाओं को प्रोत्साहन देना बन गया। इसके परिणामस्वरूप समाज में अनेक प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं।

पर नैतिकता के प्रति उक्त विचार की धारणा रखना एक मनोवैज्ञानिक भूल है। नैतिकता के बहिष्कार से जिस प्रकार सामाजिक शान्ति नष्ट हो जाती है, उसी प्रकार वैयक्तिक शान्ति भी नष्ट हो जाती है। मनुष्य का मन और समाज एक दूसरे के पूरक हैं। जैसा मनुष्य का समाज होता है वैसा ही उसका मन होता है और जैसा मन होता है वैसा ही उसका समाज होता है। अनैतिक जीवन व्यतीत करनेवाले व्यक्ति अन्त में अपने आपका विनाश कर डालते हैं। व्यभिचारी व्यक्ति अन्त में विक्षिप्त बन जाते हैं अथवा आत्महत्या कर डालते हैं। अति स्वार्थी व्यक्तियों की भी यही दुर्दशा होती है। यदि मनुष्य अपने स्वार्थ का पूर्णतः त्याग कर दे तो उसे किसी प्रकार का मानसिक रोग उत्पन्न ही न हो। जो मनुष्य प्रत्येक काम को इस प्रकार करता है कि उसका साक्षी उसका अन्तरात्मा है वह कदापि किसी प्रकार की मानसिक अशान्ति नहीं भोगता। सदाचार के विरुद्ध आचरण ही मनुष्य का विनाश करता है।

अब प्रश्न यह है कि क्या अपने जीवन में नैतिकता अधिक प्रदर्शन करनेवाले व्यक्तियों के मन में मानसिक झंझटें नहीं रहतीं और क्या फ्रायड महाशय का कथन पूर्णतः झूठ है? क्या नैतिकता के कारण मनुष्य की सांस्कृतिक इच्छाओं का दमन नहीं होता और यदि उनका दमन होता है तो फिर क्या इससे मानसिक ग्रंथियां नहीं बन जायँगी? नैतिकता और प्राकृतिक इच्छाओं की तृप्ति का सामंजस्य कैसे किया जा सकता है?

इन प्रश्नों के उत्तर में यही कहा जा सकता है कि प्रत्येक प्रकार का अतिक्रम मनुष्य के मन में विषमता की उत्पत्ति करता है। अतिक्रम मानसिक रोग का कारण और उसकी उपस्थिति का सूचक है। जिस मनुष्य के जीवन में अति अधिक नैतिकता पाई जाती है उसकी प्राकृतिक इच्छाओं का अवश्य दमन होता है और इस प्रकार का दमन शारीरिक और मानसिक रोग का कारण होता है; पर नैतिकता का अत्यधिक बढ़ना ही इस बात का सूचक है कि व्यक्ति के आन्तरिक मन में दबी हुई पाप की भावना है। यह भावना मानसिक ग्रंथि के रूप में रहने के कारण उनके मन को अशान्त बनाये रहते हैं। इसी के प्रतिकारस्वरूप मनुष्य अपने आपको अति नैतिक व्यक्ति सिद्ध करने की चेष्टा करता है। जिस प्रकार के नैतिक नियम के विरुद्ध पहले उसका आचरण हो चुका है उसी प्रकार के नैतिक नियम की प्रबलता अब उसके जीवन में पाई जाती है। इस प्रकार के आचरण से मनुष्य अपने आपको भुलाने की चेष्टा करता है। यह नैतिकता मनुष्य के बाहरी आचरण में ही पाई जाती है। ऐसा व्यक्ति नैतिकता का उपदेशक बन जाता है। उसे स्वयं अपने नैतिक आचरण से सन्तोष नहीं होता। वह जो कुछ भला काम करता है उसका वह दूसरे लोगों में प्रचार करने की चेष्टा करता है। वह अपने आपको दूसरे लोगों से अधिक योग्य सिद्ध करने की अनेक प्रकार की चेष्टा करता है। इसके लिए वह अपनी प्राकृतिक इच्छाओं का आवश्यक दमन भी करता है। ये इच्छाएँ फिर विकृत होकर उसकी मानसिक झंझटों को बढ़ाती जाती हैं। उसकी मानसिक शक्ति अब अन्तर्द्वन्द्व में ही खर्च होने लगती है और ऐसे व्यक्ति को विक्षिप्तता उत्पन्न हो जाती है।

मानसिक अन्तर्द्वन्द्व वाले व्यक्ति के आदर्श बड़े ऊँचे होते हैं। वह इन आदर्शों के अनुसार न केवल अपने आपको वरन् दूसरे लोगों को भी चलाने की चेष्टा करता है। उसे दूसरों को सुधारने की जितनी फिकर लगी रहती है उतनी अपने आपको पहचानने की फिकर नहीं लगी रहती उसमें आत्मनिरीक्षण की शक्ति का अभाव रहता है। नैतिकता का शिक्षक बन जाना, उसके प्रचार का संकल्प लेना, अपने मन में पाप की मानसिक ग्रन्थि का प्रतीक है। इन सिद्धान्त के अनुसार सदाचारी होना अच्छा है पर सदाचार का शिक्षक बनना बुरा है। सदाचार के शिक्षक की मनोवृत्ति दूसरे लोगों के दोषों के देखने में लगी रहती है। सदाचार का प्रचारक अपनी तृप्तियों के लिए आत्मनिर्भर्त्सना का अनुभव न कर दूसरे लोगों की तृप्तियों के लिए दुःख का अनुभव करता है। वह अपने कुकृत्य के लिए प्रायश्चित्त न करके दूसरे लोगों के कुकृत्य के लिए प्रायश्चित्त करता है। उसे दूसरे लोगों के आचरण की चिन्ता लगी रहती है। वह अपने आपको तो स्वयं महात्मा समझ बैठता है। अपने मित्रों, अनुयायियों, शिष्य अथवा पुत्रों के अनैतिक आचरण उसे परेशान करते रहते हैं।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इस प्रकार की परेशानी अपने आपकी परेशानी का आरोपण मात्र है। मनुष्य में जब आत्म-निरीक्षण की शक्ति नहीं रहती तो वह अपने ही अवगुणों को दूसरे लोगों पर आरोपित करता है और वह इन आरोपित अवगुणों से अपने आपको दुःखी बनाये रहता है। दूसरों की तृप्तियों के लिए चिन्तित रहना विकृत रूप से अपने महान् होने का आत्मसन्तोष प्राप्त करना है। इस प्रकार की महानता की इच्छा आत्म-हीनता की मानसिक ग्रन्थि की प्रतीक है। इस ग्रन्थि की उत्पत्ति किसी प्रकार के अनैतिक आचरण के कारण होती है। जब मनुष्य किसी प्रकार का अनैतिक आचरण कर लेता है और इससे उसे आत्म-भर्त्सना उत्पन्न होता है तो प्रायः वह अपने अनैतिक आचरण के लिए प्रायश्चित्त न करके उसे भुलाने की चेष्टा करता है। जो व्यक्ति अपने पापको भुलाने की चेष्टा न करके उसका प्रायश्चित्त कर लेते हैं उनके मन में किसी प्रकार की मानसिक ग्रन्थि उत्पन्न नहीं होती। पर जो पाप को भुलाने की चेष्टा करते हैं उनके ही मन में अनेक प्रकार की मानसिक ग्रन्थियां उत्पन्न हो जाती हैं। इन ग्रन्थियों के परिणामस्वरूप वे अपने आप पाप का प्रायश्चित्त न करके दूसरों पर उस पाप का अरोपण करते हैं और उनसे अपने पाप का प्रायश्चित्त करवाते हैं अन्यथा उनकी भूलों के लिए आप प्रायश्चित्त करते हैं।

मनुष्य के मन में विलक्षण शक्ति है। हमारा मन ही अपने वातावरण की सृष्टि करता है। जिस प्रकार का मनुष्य का मन होता है उसका बाह्य वातावरण भी उसी प्रकार का हो जाता है। अपने अनुकूल व्यक्तियों को हमारा आन्तरिक मन ढूंढ़ लेता है। हमारी दृष्टि उन्हीं बातों पर पड़ती है जिन्हें जानना हमारे आन्तरिक मन के लिए आवश्यक है। जब हम अपने आपको स्वीकार नहीं करना चाहते तो हम ऐसे लोगों से अपने आपको घिरे पाते हैं जो हमें परेशान करते हैं; पर वास्तव में हम अपने आपसे ही परेशान होते हैं। दूसरे व्यक्तियों के दोषों से परेशान होना अपने आपको धोखा देना है। दूसरे लोगों में अपने ही दोष आरोपित हो जाते हैं। हमारा मन ऐसे लोगों के पास हमें ले जाता है जिनमें वे ही दोष होते हैं जिन्हें हम अपने आपमें भुलाये हुए हैं। निम्नलिखित उदाहरण इस तथ्य को प्रकट करता है।

लेखक के एक छात्र ने जिसकी उम्र कोई पच्चीस वर्ष ही है, लेखक से अपनी मानसिक परेशानी कही। उसने अपने एक सम्बन्धी के चरित्र-सुधार के विषय में लेखक से सलाह मांगी। उसने कहा कि इस व्यक्ति के कारण पूरे कुटुम्ब की बदनामी हो रही है। वह विवाहित है। तिस पर व्यभिचार करता है, उसे कैसे सुधारा जाय। यह छात्र स्वयं बड़ा आदर्शवादी है और दूसरे लोगों के आचरण की नुक्ताचीनी किया करता है। इसे अनेक प्रकार से समझाया गया कि अपना कर्तव्य दूसरों को सुधारना नहीं है, वरन् अपने आपको सुधारना ही है। दूसरों की भूलों से परेशान होना मूर्खता है। पर उसके मन में बात न बैठी। वास्तव में यह अपनी सम्बन्धी के आचरण से अपने आपको दुःखी बनाये हुए है; पर इस प्रकार की मनोवृत्ति से वह उस व्यक्ति का कल्याण न कर उसका नुकसान ही कर सकता है। जब किसी व्यक्ति के ऊपर जबर्दस्ती नैतिकता लादी जाती है तो इसके परिणामस्वरूप मनुष्य या तो अधिक व्यभिचारी हो जाता है अथवा वह विक्षिप्त हो जाता है। नैतिकता जब स्वाभाविक रूप से मनुष्य के चरित्र में आती है तब वह स्थायी रहती है। बाहर से प्राप्त की गई नैतिकता बालू की भीत के समान एक ही झकोरे में ढह जाती है। इस प्रकार की नैतिकता लादने का वे लोग प्रयत्न करते हैं जिसके मन में पाप की मानसिक ग्रन्थि उपस्थित रहती है। ऐसे व्यक्ति अपने आपकी ओर देख नहीं सकते; अतएव वे अपने आपको सुधारने के बदले संसार को सुधारने में लग जाते हैं। उन्हें फिर यह आदत पड़ जाती है कि वे कुछ भी भूल नहीं करते, दूसरों की भूलों का सुधार करना मात्र उनका काम है। वे अपनी भूलों के लिए उपवास करते हुए कभी भी दिखाई नहीं देते पर दूसरों की भूलों के लिए ही वे उपवास करते हैं।

शेष पृष्ठ १४ पर देखिए

कहानी

विक्षिप्त

लेखक, श्री श्रीराम शर्मा 'राम'

एक नारी का पुरुष के प्रति जो स्नेह होता है, उसके द्वारा पुरुष की अवस्था में नैतिकता की दृष्टि से सुधार होता है। वही पुरुष अपने को पुरुषत्व का साथी समझने लगता है। पुरुष और नारी के बीच का आध्यात्मिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक चित्रण लेखक ने सफलतापूर्वक किया है। दुर्व्यसनी पुरुष की आँखें सत्यता को नहीं देख पातीं, किन्तु समय आने पर वह उसी सत्य के द्वारा अपना सुधार करता है। इसी बात की उच्च सफलता का आदर्श इस कहानी की पृष्ठभूमि है। स्त्री-पुरुष दोनों के लिये इस कथा से सराहनीय सामग्री मिलेगी। कहानी सामयिक और सारगर्भित है।

मां रहे। पत्नी रहे। एक सुखी घर की स्वामिनी! किन्तु उसे लगा कि वह जिस व्यक्ति को अपना पति स्वीकार करके उसके साथ चली आई है, वह व्यक्ति अपनी बात कहता है, उसकी नहीं सुनता। मानो वह नशीली बोतल है, जिसे पीते रहना ही उसका ध्येय है। वह कुछ सुनने की भी क्षमता नहीं रखता। वह ऐसे भाग रहा है, ऐसे चल रहा है रजनीकान्त कि मानो अन्धा है, विवेकहीन; जन्म-जन्मों की भूख को शान्त करने के लिए ही, दिन-दिन उस नर्वदा के पास पहुँचता है। सम्भवतः यही कारण था कि उस नारी ने देखा कि उसका पति न तो व्यावहारिक है, न प्रगतिशील! वह अकर्मण्य है। वह अपनी इच्छाएँ तो पूरी करनी चाहता है, परन्तु आधारित बनकर और दीन बनकर! वह स्वयं अपने पैरों पर नहीं चलता। वह धन का भी उपार्जन नहीं करता। जिसका दुष्परिणाम यह हुआ कि नर्वदा दिन-दिन परेशान रहने लगी। कभी घर में अन्न नहीं, कभी तन के लिए कपड़ा! जब वह रजनीकान्त से इस विषय में चर्चा करती, तो देखती, वह इतना सुनना पसन्द नहीं करता। वह केवल वासना चाहता—अपनी इच्छा-पूर्ति। इसका परिणाम यह हुआ कि जेवर बिक गये। नर्वदा के मन में जिन अरमानों की एक सँजोई हुई दुनिया थी, वह खण्ड-खण्ड हो गई। सम्भवतः यही कारण था कि नर्वदा आये दिन, मुंह चढ़ाकर, आंखों में बल देकर रजनीकान्त से बोलती और उसकी बातों का जवाब देती। यह देख, कुछ दिन तक वह टालता रहा, परन्तु जब यह अवस्था बढ़ती गई, तो वह एक दिन अतिशय झल्लाकर बोला—'क्या है....क्या?' उसने कहा—देखता हूँ, कुछ है, तुम्हारे मन में!

उस समय नर्वदा से नहीं रुका गया। उसने कहा—'हां, है मेरे मन में!'

'क्या.....?'

'मुझे घर भेज दो।' वह बोली—तुम्हें दीखता थोड़े ही है कि इस नर्वदा का भी दिल है। पेट है, इच्छाएँ हैं इसकी!' उसने झल्लाकर आंखों से रोते हुए कहा—'जेवर बेच दिए मेरे! अब क्या मुझे भी बेचने की सोचते हो?'

इतनी बात सुनकर रजनीकान्त जैसे सहम गया। उसका मस्तिष्क भी घूम गया। वासना-पूरित इच्छाओं के साथ, उन दिनों वह नशा भी करने लगा था। निदान, उस समय भी नशे में था। उसने यह नहीं देखा कि नर्वदा जो धोती पहने हुए है, वह मैली है और कई जगह से फटी है। उसके गोरे और सलोने बदन पर वह किसी प्रकार भी अच्छी नहीं लग रही है। परन्तु इतना भर तो देखना दूर; जब उसने नर्वदा की बात को सुना, तो क्षण भर बाद ही, वह क्षिप्र और उदास मन के साथ एकाएक क्षुण्ण भी बन गया, उसी अवस्था में बोला—'तो मैं क्या करूँ! मैं मर जाऊँ?' उसने कहा—'मैं चोरी नहीं करूँगा। पैसे के लिए मैं पाप नहीं करूँगा, नर्वदा!'

किन्तु इतना सुनकर तो नर्वदा और चिढ़ गई। वह नारी थी, जिस वेदना और तड़प को वह अपने हृदय में छिपाए हुए थी, वह मानो उसकी आंखों में उतर आया। छूटते ही बोली—'जब पैसा नहीं कमाओगे तब भीख मांगोगे।' उसने कहा—'तुम्हें इसी तरह रहना था, तो विवाह नहीं करना था...मुझे नहीं लाना था, इस घर में!'

नर्वदा का इतना कटु बचन सुनकर, रजनीकान्त मानो खो गया, उसका अन्तस ऐसे सिकुड़ गया कि जैसे खून चूसनेवाली जोंक को ही निचोड़ दिया गया। उसने अनुभव किया कि यह नर्वदा जो सुन्दर और सलोनी है, जितनी मधुर है, कड़वी और तीखी भी कम नहीं है। उसके अनुमान से यह अधिक भारी है—अधिक ठोस! यही कारण था कि वह एकाएक कुछ नहीं कह सका। वह सन्न रह गया। वह नर्वदा की आंखों में हीन है—कायर है—ऐसा भाव भी उसके हृदय से छू गया। परिणामतः अशान्त बन गया, रजनीकान्त!

उसी अवस्था में नर्वदा ने फिर कहा—'दुनिया के जितने पुरुष हैं, वह पैसा कमाते हैं, तो पाप करते हैं, चोरी करते हैं?' वह बोली—'तुम्हारी निगाह में कायरता पुण्य है। घर बैठना इन्सानियत। मेरा सब कुछ तो बेच दिया, अब मैं रह गई हूँ, तो मुझे भी बेच देना। मैंने तुम्हारे साथ विवाह करके अच्छा नसीब नहीं पाया, यह भी दिखा देना तुम!'

किन्तु इतना सुनकर तो रजनीकान्त तड़प गया। मानो उसका पुरुषत्व जाग गया। उसने खूनी आंखें निकालकर कहा—'ओ नर्वदा.........'

नर्वदा ने कहा—'हां, हां, तुमसे यह भी उम्मीद है।'

इतना सुना तो, रजनीकान्त ने पास में पड़े हुए पत्थर के टुकड़े को उठा लिया और खींचकर इतने जोर से नर्वदा के ऊपर दे मारा कि उसका सिर खुल गया। खून का फौवारा छूट गया। वह तुरन्त ही घृणा और रोष को लिये हुए खड़ा हो गया और बाहर जाने के लिए प्रस्तुत हो, तड़पता हुआ बोला—'ले मर तू! मर!' फिर तेजी से वह बाहर चला गया।

उसके पीछे ही नर्वदा ने चीखकर कहा—'हे राम!'

परन्तु इतना भर सुनकर भी रजनीकान्त नहीं लौटा—नहीं। वह तेजी के साथ चलता चला। उसके मस्तिष्क में अनेक प्रकार के तूफान उठ रहे थे, एक के बाद दूसरे विचार आते और जाते थे। जब वह नगर के बाहर पहुँचा, तो सन्ध्या का समय हो गया। निर्जन स्थान में पहुँच गया, रजनीकान्त! वहां जाकर एक कुएँ की मेड़ पर बैठ गया। क्रोध और घृणा का भाव अब भी उसके मस्तिष्क में उठ रहा था। किन्तु जब धीरे धीरे उसे ठण्डी हवा का स्पर्श मिला, तो वही भाव नर्वदा से हटकर स्वयं उसी के ऊपर आरोपित हो गया। उसे लगा कि दोषी वह है। वह अन्धा है। वह कायर! वह हीन!

'तब क्या हो....क्या?'

मानो एक ही सांस में रजनीकान्त अपने से यह पूछ लेना चाहता था। परन्तु कठिनाई तो यह थी कि उसका विवेक साथ छोड़ बैठा था। वह स्वयं अपने आप में ही

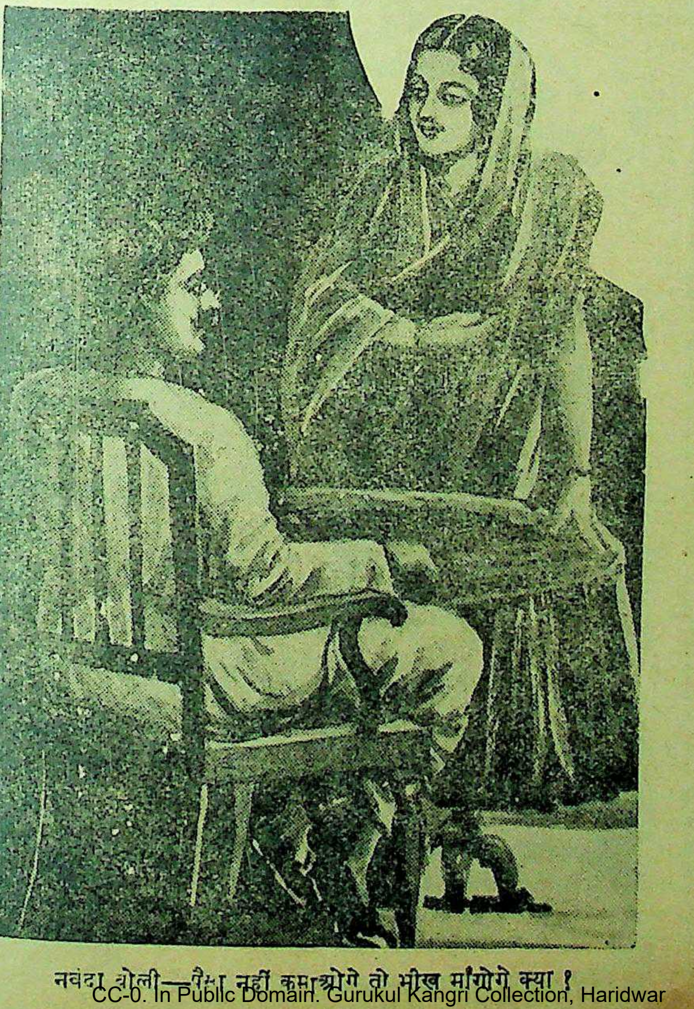

नर्वदा बोली—पैसा नहीं कमाओगे तो भीख मांगोगे क्या!

इतना सन्दिग्ध और हीन बन गया कि उसे लगा कि दुनिया के जिस मैदान में वह फिर रहा है, उसमें सब भाग रहे हैं, सब चल रहे हैं...परन्तु वह है कि न चलता है, न बढ़ता है, न इच्छा करता है।....हां, वह कायर है। वह बुजदिल! अपने मन की उस अवस्था में ही रजनीकान्त ने अपना मुंह कुएं के पानी की ओर किया। वहां झांका—उसमें पड़े हुए मेढकों का जब कर्ण-कटु आलाप उसके कानों में पड़ा, तो वह चौंका तो नहीं, परन्तु कुंठित अवश्य हो गया। उसे दीखा कि कुएं का निर्मल जल जितना अथाह है, उतना ही निर्मल! मानो उसमें शान्ति है, उसमें ममता है—उसमें प्रेम। और रजनीकान्त जिस दुनिया में अपने जिस घर में रहना चाहता है, उसमें न शान्ति है, न सुख। वहां लेने को कुछ नहीं है...देने को ही निर्मित हुआ है, यह व्यक्ति! यह रजनीकान्त!

निदान, इतना सोचने-समझने का परिणाम यह हुआ कि रजनीकान्त सोचने लगा कि नर्वदा के मन में कुछ है....कोई दुराव! उसे ध्यान आया, मित्र रमेश अब उसके पास अधिक आने लगा है। नर्वदा से भी बोलने लगा है, वह मुझसे भी उसकी प्रशंसा करने लगा है।....सोचा रजनीकान्त ने, जरूर नर्वदा ने रमेश का पैसा देखा है, उसका रूप! इसी से तो आज कहा उसने, मैं कायर हूं—मैं हीन!

उसी समय, रजनीकान्त ने अनुभव किया कि उसका हृदय जल रहा है। उसमें तड़प है और टीस! पर जब कुएं के पानी की ओर देखा, तो उसे शान्ति का आभास मिला। फलस्वरूप वह पल-पल पर उधर खिसकने लगा। पैर लटका दिये और हाथों से जिस मेड़ को पकड़े हुए बैठा था, वहां से भी हटने लगा।

परन्तु तभी उसे फिर नर्वदा का ध्यान आया। सोचा मन में, पड़ोसिनें आई होंगी। सब कह रही होंगी, पुरुष नहीं है, रजनीकान्त कायर! हीन! तू इसे छोड़ दे न, नर्वदा! बाप के घर जा। कोई और व्यक्ति चुन ले। इस घर से चली जा। यह आवारा है। दीन और मोहताज बना दिया है, तुझको.......

और रजनीकान्त कुएं की तरफ जा रहा था।

उसी समय उसने कहा—'रमेश भी आया होगा। बोला होगा, तू यहां से चल, नर्वदा! मैं आंखों पर रखूंगा...नारी बना दूंगा...........'

'तब.....तब .....'

मानो रजनीकान्त के हृदय का खून जम गया। आंखों के सामने अंधेरा छा गया। उसी अवस्था में उसने कहा—'हां, नर्वदा कुलटा है.....नर्वदा नीच....'

एकाएक उसके हृदय की गति तेज हुई। आंखें फैल गईं। वह क्रोध और घृणा के साथ बोला मैं नर्वदा को मार देता...उसका अन्त कर देता....

और मानो नर्वदा सामने है, वह खड़ी है, इसलिए एकाएक ही, उसके दोनों हाथों ने कुएं की मेंड़ को छोड़ दिया, मुट्ठियां बंध गईं और वह अपने उद्देश्य में सफल हो, या न हो, धड़ाम से कुएं के अन्दर जाता हुआ चिल्लाया—बचाओ....बचाओ....

जंगल के चरवाहों द्वारा रजनीकान्त कुएं से निकाल लिया गया। अस्पताल में भी दाखिल कर दिया गया। दूसरे दिन जब उसे होश हुआ, तो सामने सिर में पट्टी बांधे नर्वदा को खड़ी पा, बरबस ही ऐसे रो दिया कि जैसे सचमुच उसने कुछ किया, कोई पाप!

लेकिन इतना देखकर तो वह नर्वदा नहीं रुक सकी। आगे बढ़कर उसने अपना आंचल पसार दिया और उसी का पल्ला उन भरी आंखों पर रखकर कहा—'देखते हो, मैं नारी नहीं। रोओ मत। तुम आत्महत्या करने चले थे, भला क्यों! मेरे लिए! तुम अच्छे हो जाओ, मैं चली जाऊंगी। अपने पेट के लिए मैं कहीं भी मजदूरी कर सकूंगी।

उस समय रजनीकान्त ने सांस भरी। अस्पताल के कमरे की छत की ओर दृष्टि की और बोला—'अब तुम्हें ऐसा नहीं करने दूंगा, नर्वदा! मैं स्वयं मजदूरी करूंगा। तुम नारी हो तो तुम्हारे शास्वत और आध्यात्मिक जीवन को भी पाऊंगा...अब मैं अपने आपको तुम्हारे जीवन में लु दूंगा, नर्वदादेवी!

हाय! इतना सुनकर नर्वदा न नहीं रह गई। वह कटी डाल की त गिर गई और रजनीकान्त की छाती प मुंह रख फूट-फूटकर रो पड़ी।

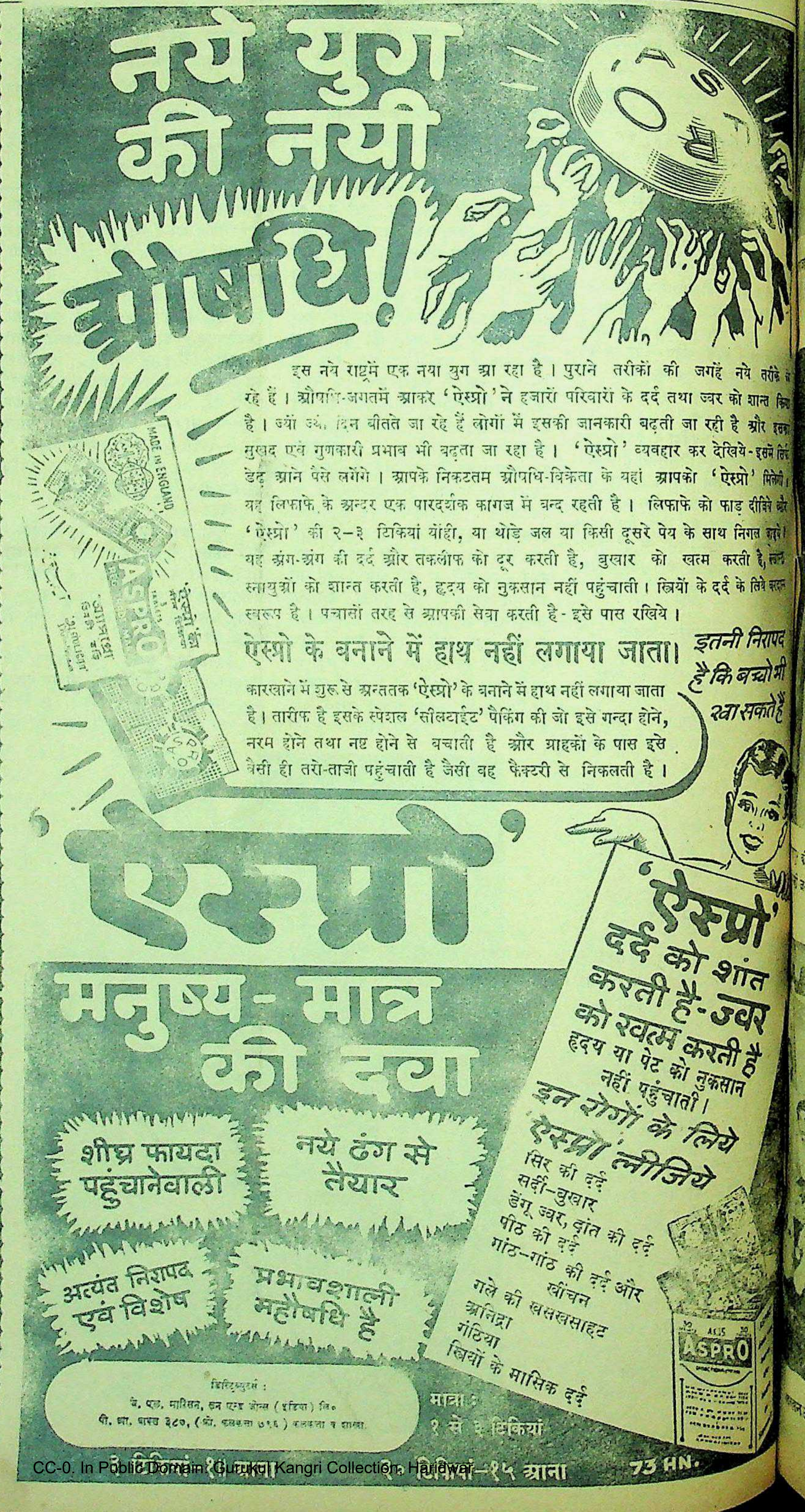
नये युग की नयी औषधि!

इस नये राष्ट्रमें एक नया युग आ रहा है। पुराने तरीकों की जगहें नये तरीके रहे हैं। औषधि-जगतमें आकर 'ऐस्प्रो' ने हजारों परिवारों के दर्द तथा ज्वर को शान्त कि है। ज्यों ज्यों दिन बीतते जा रहे हैं लोगों में इसकी जानकारी बढ़ती जा रही है और इस सुखद एवं गुणकारी प्रभाव भी बढ़ता जा रहा है। 'ऐस्प्रो' व्यवहार कर देखिये-इसमें सि डेढ़ आने पैसे लगेंगे। आपके निकटतम औषधि-विक्रेता के यहां आपको 'ऐस्प्रो' मिलेगी। यह लिफाफे के अन्दर एक पारदर्शक कागज में बन्द रहती है। लिफाफे को फाड़ दीजिये और 'ऐस्प्रो' की २–३ टिकियां योंही, या थोड़े जल या किसी दूसरे पेय के साथ निगल जाइये। यह अंग-अंग की दर्द और तकलीफ को दूर करती है, बुखार को खत्म करती है, स्नायुओं को शान्त करती है, हृदय को नुकसान नहीं पहुंचाती। स्त्रियों के दर्द के लिये वरदान स्वरूप है। पचासों तरह से आपकी सेवा करती है- इसे पास रखिये।

ऐस्प्रो के बनाने में हाथ नहीं लगाया जाता।

कारखाने में शुरू से अन्ततक 'ऐस्प्रो' के बनाने में हाथ नहीं लगाया जाता है। तारीफ है इसके स्पेशल 'सीलटाईट' पैकिंग की जो इसे गन्दा होने, नरम होने तथा नष्ट होने से बचाती है और ग्राहकों के पास इसे वैसी ही तरो-ताजी पहुंचाती है जैसी वह फैक्टरी से निकलती है।

इतनी निरापद है कि बच्चेभी खा सकते हैं

'ऐस्प्रो'

मनुष्य-मात्र की दवा

शीघ्र फायदा पहुंचानेवाली

नये ढंग से तैयार

अत्यंत निरापद एवं विशेष

प्रभावशाली महौषधि है

'ऐस्प्रो' दर्द को शांत करती है-ज्वर को खत्म करती है हृदय या पेट को नुकसान नहीं पहुंचाती।

इन रोगों के लिये ऐस्प्रो लीजिये

- सिर की दर्द
- सर्दी–बुखार
- डेंगू ज्वर, दांत की दर्द
- पीठ की दर्द
- गांठ–गांठ की दर्द और खींचन
- गले की खसखसाहट
- अनिद्रा
- गंठिया
- स्त्रियों के मासिक दर्द

डिस्ट्रिब्यूटर्स :
जे. एल. मारिसन, सन एण्ड जोन्स (इंडिया) लि०
पी. आ. बाक्स ३८०, (ग्रां. कलकत्ता ७१६) कलकत्ता व शाखा.

मात्रा :
१ से ३ टिकियां

[illegible] टिकियां [illegible] आना [illegible] टिकियां—१५ आना 73 HN.

देशदूत-चित्रावली

जयपुर जिन्होंने अपने राज्य में पूर्ण रूप से वैधानिक सुधार की घोषणा कर दी है।

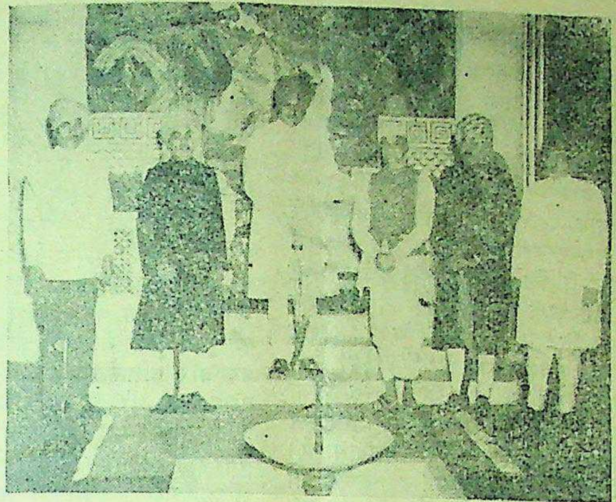

जोधपुर के महाराजा अपने नवीन संयुक्त मंत्रि-मंडल के सदस्यों के साथ।

श्री पी० थानू पिल्लाई ने ट्रावंकोर रियासत में प्रथम लोकप्रिय सरकार का निर्माण किया है।

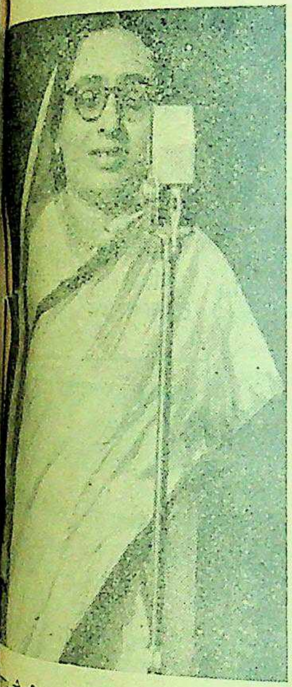

प्रसिद्ध कांग्रेस-कार्यकर्त्री महिला अवी लिगाडे भाषण दे रही हैं।

अफगानिस्तान के नये राजदूत-पद पर विंग कमांड रूपचन्द्र की नियुक्ति पिछले दिनों हुई है।

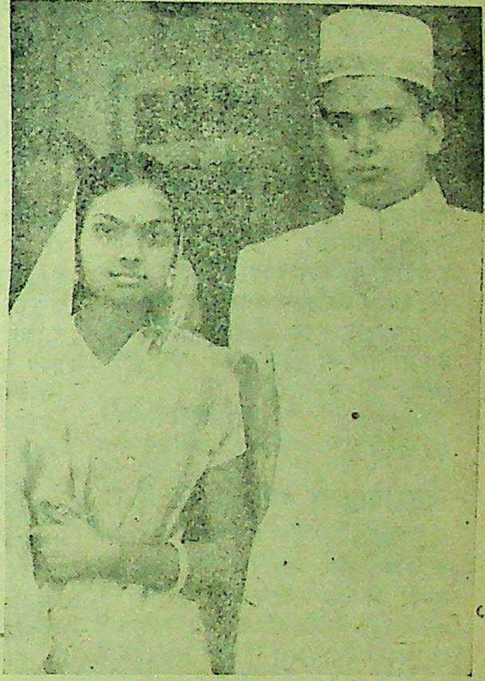

बम्बई के राजनारायणलाल पित्ती के पुत्र श्री मधुसूदन लाल और उनकी नई पत्नी कुमारी दमयंती जिनका विवाह हाल ही में हुआ है।

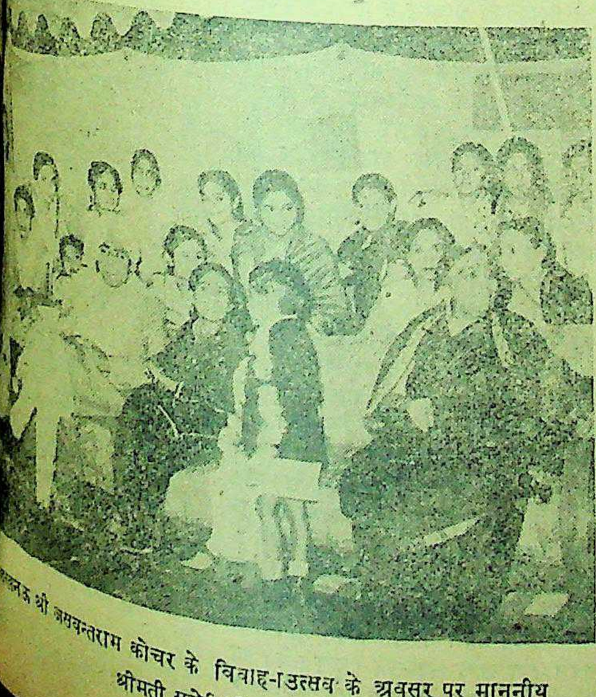

श्री जसवन्तराम कोचर के विवाह-उत्सव के अवसर पर माननीय श्रीमती सरोजिनी नायडू।

श्रीमती मिट्ठनलाल (बायें) बम्बई प्रेसिडेन्टी में महिलाओं की कौंसिल की नई सभानेत्री, पुरानी सभानेत्री श्रीमती रोशन भरूचा के साथ।

सम्पादक के नाम चिट्ठियां

गांधी राष्ट्रीय स्मारक-निधि

ये कतिपय शब्द हम आपको यह स्मरण दिलाने के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं कि गांधी राष्ट्रीय स्मारक-निधि के निर्माण के तात्कालिक एवं विशेष कर्त्तव्य को हम सबको पूरा करना है। हमें विश्वास है कि यह उस महान् आत्मा की प्रतिष्ठा के अनुकूल होगा जिसके नाम को हम अपने मध्य श्रद्धास्पद एवं अमर बनाना चाहते हैं। अपने इतिहास में किसी भी काल में हमारे लिए उनके अतुल ऋण को चुकाना संभव न होगा, जो उन्होंने हमें स्वतंत्र बनाकर हम पर किया है और जो भी निधि हम एकत्र कर सकेंगे वह उनके प्रति हमारी कृतज्ञता, प्रेम और श्रद्धा का प्रतीक मात्र होगा। किन्तु यह आवश्यक है कि इस प्रकार के निधि का निर्माण उन अनेक एवं विविध प्रगतिशील कार्यों के प्रसार के लिए किया जाय जिन पर मानवजाति के कल्याण के लिए वे सदा ध्यान देते रहे। हम यह अनुभव करें कि हम जो दान दे रहे हैं वह केवल अपनी सन्तान के लिए है; अतएव हमें अभी और जब भी संभव हो दान देना जारी रखना चाहिए। जैसा कि हम कह चुके हैं कि यदि चंदा देनेवाले चाहें तो अपने चंदे के धन को विशेष उद्देश्य के लिए निश्चित कर सकते हैं लेकिन हम यह चाहते हैं कि चंदे के धन को प्रमुख स्मारक के बजाय मूर्तियों, फव्वारों, भवनों आदि अन्य सजावटी स्मारकों की स्थापना में न खर्च किया जाय। महात्मा जी के महान् नाम को निर्जीव संगमरमर, इस्पात या हाथीदांत के प्रतीकों की आवश्यकता नहीं है। उनके प्रति हमारी सर्वोत्कृष्ट श्रद्धांजलि उस कार्य को मूल्य-वृद्धि करना ही होगी जिससे उन्हें प्रेम था और जो सदैव उनका सबसे सुन्दर स्मारक हो सकता है।

लखनऊ —सरोजिनी नायडू
१४ अप्रैल ४८ —गोविन्दवल्लभ पन्त

हैदराबाद में क्या हो रहा है ?

'भारत में अँगरेजी राज्य' इस देश के शोषण और भारतीयों पर ढाये गए जुल्मों की एक बेदर्द कहानी है। अँगरेज इस देश से निकले तो सही पर जाते-जाते भी अपनी ईमानदारी से वे न चूके। लार्ड वेवेल से हमें ऐसी आशाएँ नहीं थीं। परन्तु प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण क्या? भारत के विभाजन और पंजाब के हत्याकाण्ड का नग्न-दृश्य हम देख ही चुके हैं। बच्चों से लेकर स्त्री व बुड्ढों पर अत्याचार हुआ। तलवार के जोर पर मां-बहिनों का सतीत्व लूटा गया। पाकिस्तानी नर-राक्षसों के काले कारनामे इस्लाम धर्म को सदैव कलंकित करते रहेंगे। भारत के विभाजन के बदले हमें आजादी मिली। शायद यह घाटे का ही सौदा रहा, लेकिन इसके लिए हम चिन्तित नहीं। ब्रिटिश पार्लमेंट में स्वीकृत 'भारतीय स्वाधीनता बिल' के अनुसार देशी नरेश भी स्वाधीन हुए। आज अधिकांश देशी राज्य 'भारतीय प्रजातंत्र' में सम्मिलित हो गए हैं। 'सुबह का भूला शाम को घर लौट आए तो भूला नहीं कहाता।' काश्मीर का यही हाल हुआ। हमारी सरकार ने उसे शरण दी और आज अनेक आपत्तियों के होते हुए भी वैसा करने में उसे कोई संकोच नहीं है। शेरे-काश्मीर शेख अब्दुल्ला जैसा सरदार उस राज्य को मिला है, यह भी सौभाग्य की बात है। परन्तु आज दक्षिण भारत की एक बड़ी और महत्त्वपूर्ण स्टेट हैदराबाद में कितनी अंधेरगर्दी छाई है, क्या किसी से छिपी है? हिन्दुओं पर होनेवाले जुल्मों की दर्दनाक घटनाएँ हमें आये दिन पत्रों में पढ़ने को मिलती हैं। जीते जी एक ब्राह्मण के सिर में लोहे की कील ठोंक देना आदि तो साधारण घटनाएँ हैं। नारी-अपहरण और अबलाओं पर अत्याचार दिन-प्रतिदिन बढ़ रहे हैं। राज्य की हिन्दू-प्रजा अत्यन्त दुःखी है; लोग घर छोड़-छोड़कर भाग रहे हैं। पंजाब और सिन्ध की भांति वहां से आनेवाले भी "शरणार्थी" बने, भारत-सरकार की शरणार्थी-समस्या में योग दे रहे हैं। विगत नवम्बर में निजाम-सरकार ने एक वर्ष का 'यथापूर्व समझौता' किया था; परन्तु वर्ष पूरा भी न होने पाया कि समझौता समझौता न रहा। निजाम चाहते हैं कि वह अपना स्वतन्त्र राज्य कायम कर लें। ऐसा करते वक्त वे यह क्यों भूल जाते हैं कि 'राजा प्रजा का सेवक है' और इसी सिद्धान्त पर चलकर वैसा किया जाना सम्भव भी है। लेकिन इत्तेहादुल-मुसलमीन द्वारा जो अत्याचार किए जा रहे हैं; क्या वे इसी सिद्धान्त के अनुरूप हैं? पिछले दिनों वहां "शस्त्र-सप्ताह" मनाया गया। इत्तेहादुल-मुसलमीन के प्रधान कासिम रजवी ने जो भाषण दिया है, उससे किसी भी जिम्मेदार सरकार का मस्तक लज्जा से नीचे झुक सकता है। श्री रजवी साहब ने भारत-सरकार की नीति को 'बनियों की नीति' बतलाया है और ४½ करोड़ मुसलमान बतलाते हुए एक हाथ में तलवार और दूसरे में कुरान लेकर "एक-मात्र मुस्लिम राज्य" और तथाकथित 'मुस्लिम आजादी" के लिए जान देने को भी तैयार रहने का आह्वान किया है। कुरान का उपदेश क्या यही है? यह शरारत भरा वक्तव्य कहां तक वाञ्छनीय है, कोई भी व्यक्ति सोच सकता है। इस प्रश्न को लेकर केन्द्रीय परिषद् में श्री शिब्बनलाल सक्सेना का 'काम रोको' प्रस्ताव उचित ही मालूम पड़ता है। केवल इतना ही नहीं इत्तेहादुल-मुसलमीन के रजाकार संगठन द्वारा ९ अप्रैल को 'रजाकार दिवस' भी मनाया गया और राज्य के प्रत्येक शहर में रजाकारों की टोलियां शस्त्रों से सुसज्जित होकर परेड करती हुई निकलीं। सुना है, उन्होंने प्रतिज्ञा की है कि 'निजाम राज्य' के लिए वे अपना खून बहा देंगे। जनता को इस प्रकार आतंकित करने का रहस्य क्या है, कुछ समझ में नहीं आता। हमारी सरकार के 'कूटनीतिक पत्र' का उत्तर देते हुए निजाम सरकार ने उल्टे भारत-सरकार पर आरोप लगाया है और रजाकार-संगठन भंग न करने तथा पंच-न्यायालय में जाने का सुझाव भी अपनी ओर से पेश किया है। निजाम सरकार का कहना है—"इत्तेहादुल-मुसलमीन के रजाकारों का संगठन कुछ वर्षों से जारी है और रियासत में कम्यूनिस्टों की गतिविधि के फलस्वरूप इस संगठन को महत्व प्राप्त हुआ है।" उस स्टेट में कम्यूनिस्टों की कार्रवाइयों से वे ही अधिक परिचित होंगे; परन्तु इस प्रकार अपना दोष दूसरों पर डाल देने मात्र से तो वे मुक्त नहीं हो सकते। हैदराबाद के वकीलों की 'प्रतिवाद समिति' ने एक स्मारक पत्र द्वारा वहां की चिन्ताजनक राजनैतिक तथा साम्प्रदायिक स्थिति की ओर निजाम का ध्यान आकृष्ट भी किया है। रियासत में रजाकारों तथा पुलिस के जुल्म पर प्रकाश डालते हुए निजाम से तुरन्त हस्तक्षेप करने की प्रार्थना भी की गई है। लेकिन क्या इस प्रकार की की गई प्रार्थनाएँ सफल होंगी? निजाम की तानाशाही दिनों दिन बढ़ रही है। वहां हिन्दुओं पर किये जानेवाले जुल्म भी वैसे ही बढ़ रहे हैं। वहां होनेवाली नाजायज हरकतों का कोई ठिकाना ही नहीं। 'फ्री प्रेस सर्विस' के अनुसार आज ५ हजार राजनैतिक कैदी निजाम की जेलों में पड़े सड़ रहे हैं। कोई भी भला आदमी वहां नहीं टिक सकता। यह हाल १ करोड़ ४० लाख की आबादीवाले उस स्टेट का है जो निजाम द्वारा शासित है और जहां मुसलमानों की संख्या केवल ३५ लाख है। भारतवर्ष के एक स्टेट की यह करुण कहानी है, जहां मुसलमान केवल १२॥ प्रतिशत हैं और हिन्दू ८५ प्रतिशत। क्या यह घोर अन्याय नहीं? निजाम का न्याय ऐसा ही है? आशा है, भारत-सरकार शीघ्रातिशीघ्र और यथोचित ध्यान इधर देगी; 'भारत के लौह-पुरुष' भारतीय सरदार पटेल इधर अपेक्षित ध्यान देंगे। कहते हैं, इतिहास की पुनरावृत्ति होती है। यदि इधर समय पर और उचित ध्यान न दिया गया तो नोआखाली और पंजाब-काण्ड की पुनरावृत्ति होना असम्भव नहीं। क्या हम वैसा होने देने के लिए तैयार हैं? हैदराबाद से आनेवाले 'शरणार्थियों' पर भी उचित ध्यान देने की आवश्यकता है।

पिलानी (जयपुर) —अखिल विनय

विन्ध्य प्रांत क्या है ?

विन्ध्य-प्रदेश में सम्मिलित होनेवाले ३५ राज्यों का क्षेत्रफल २४,७३७ वर्ग-मील जनसंख्या ३५,६८,१९९ और वार्षिक आय २ करोड़ ६९ लाख रुपया है।

यह वीर-भूमि, जो एशिया के अफगान बार्डरलैंड, यूरोप के स्विटजरलैंड और ब्रिटेन के स्काटलैंड की समता करती है, पिछले समय में चेदि, जैजाकभुक्ति तथा दशार्ण नामों से विख्यात थी।

संसार के सात ऊँचे पर्वतों में विन्ध्याचल सबसे प्राचीन पर्वत है, जिसके चरणों में नर्मदा और वेत्रवती जैसी विशाल नदियां लहराती हैं।

प्रकृति की असीम अनुकम्पा के फलस्वरूप पहाड़, झील और नदियों के तान-वितान से युक्त होकर स्वतन्त्रता के विराट पुजारी के रूप में बुन्देलखंड बाहर के सभी प्रभावों की सैन्य वाहनियों का सफल विरोध करता रहा।
(लेखक की 'झांसी की रानी' पुस्तिका से)

आदि-कवि बाल्मीकि ने इसी भूमि में तमसा के किनारे 'रामायण' लिखी थी, और भगवान् व्यास ने भी इसी भूमि में जन्म पाया। कालिदास, बाण और राजशेखर विन्ध्य-भूमि के अद्वितीय सौन्दर्य पर मुग्ध थे और भव-भूति की 'पद्मावती' के ध्वंसावशेष भी यहां बिखरे पड़े हैं।

भारतवर्ष के मध्य में स्थित बुन्देलखंड प्रान्त अपनी प्रकृति-प्रदत्त विशेषताओं से अत्यधिक आकर्षक है और इस प्रकार वास्तविक अर्थ में भारतमाता की गोद में पलनेवाला एक सुकुमार लाड़िला है।

कीर्तिवर्म्मा और वीरसिंह देव जैसे प्रतापी नरेशों, आल्हा और ऊदल जैसे पराक्रमी योद्धाओं, छत्रसाल और लक्ष्मीबाई जैसे स्वतन्त्रता के पुजारियों, तुलसीदास और केशवदास जैसे काव्यकला के आचार्यों ने इस प्रान्त को अपने विमल यश की 'कहानी' का मोहक रूप दिया है।

खजराहो का विशाल मन्दिर और देवगढ़ की विष्णुमूर्ति, दतिया का पुराना महल और पन्ना का वृहस्पतिकुंड, जतारा का मदनसागर और बानपुर में द्रोणाचार्य की गुफा, मदरार का बौद्ध-मूर्ति और सोनागिरि के जैन-मन्दिर प्रान्त की वास्तुकला के कुछ सबल प्रमाण हैं, तथा टीकमगढ़ में कुण्डेश्वर और सेवड़ा का सनकुआ अनुपम नैसर्गिक लावण्य से युक्त है।

विन्ध्य प्रदेश में सम्मिलित होनेवाला सबसे बड़ा राज्य महाराज रघुराजसिंह का 'रीवां' है, जिसका क्षेत्रफल प्रायः १३,००० वर्गमील जनसंख्या १६ लाख और वार्षिक

आय एक करोड़ रुपया है।
के सुकवि ठाकुर गोपालशरणसिं
के अन्तर्गत नई गढ़ी में प्रथम
सरदार हैं।

जी० आई० पी० की प्रमुख
पर स्थित दतिया नगर एक
की राजधानी है जो अपनी
सीमाओं के कारण विन्ध्य-संघ
पृथक् इकाई के रूप में अपना
महत्त्व रखता है और जहां प्रायः
सिंधी शरणार्थियों को आश्रय
हुआ है।

चित्रकूट में रमि रहे,
'रहिमन' अवध नरेश।
जा पर विपदा परत है,
सो आवत यहि देश॥

सोना, चांदी, तांबा, शीशा
आदि से समृद्ध भारत का यह प्रांत
प्रकार के धान्यों और औद्योगिक
के साधनों से भली प्रकार सम्पन्न
भी काल के प्रभाव से आज निर्धन
क्रीड़ा स्थल बना हुआ है।

आज के विन्ध्य-प्रदेश में
ओरछा, दतिया, पन्ना, चरखारी,
अजयगढ़, छतरपुर, बिजावर,
नागौद, भैंसोदा, बरौंधा, अलीपुरा,
सरीला, बीहट, बिना, ढुरवई,
गोरिहार, जसो, जिगनी, कामता
कोठी सुहावल, लुगासी, नैगवां
पहरा, पालदेव, तरौन, टोड़ी
बंकापहाड़ी, खनियाधाना, मैहर।

बुन्देल-केसरी छत्रसाल के समय

इत जमना उत नर्मदा,
इत चम्बल उत टोंस
छत्रसाल सों लरन की,
रही न काहू हौंस॥

दतिया —हरिमोहनलाल
१५ अप्रैल ४८ एम० ए०
साहित्य

फैंसी सिल्क साड़ी आकर्षक डिज
कलापूर्ण ३-४ इंच चौड़ा
नं० ७ ८ ९ ५
१८) २३) २८
२) पेशगी बाकी वी० पी०
थोक व्यापारियों को खास सु
बमाका इन्डस्ट्रीज़,
जुही नं० ६ कानपुर

बिना लाइसेंस
अमेरीकन मॉडल पिस्तौल मुफ्त
यूनाइटेड ट्रेडर्स, पो० ब० नं० २४१,
UNITED TRADERS

राजकुमारी अमृत कौर

श्रीमती सरोजनी नायडू।

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित।

मातृमण्डल

भाषण-कला में कुशल कुछ राष्ट्रीय महिलायें

पुरुषों की भांति स्त्रियाँ भी अपनी वीर वाणी द्वारा मुर्दों को ज़िन्दा कर सकती हैं

लेखिका, कुमारी पद्मिनी सेन-गुप्त

लेखकों और विद्वानों का
को अबाध गति से
स्त्री से प्राप्त हुई थी
सिया था। किन्तु
स्त्री ने वक्ता के आदर्श
की है, बल्कि कहना
कांश सुघर भारतीय
भाषण करने की
है, इनका शुभ नाम
। इनकी शैली और
भावित होनेवालों
श्री सी० पी० राम
नारी जाति की भाषण-
डा० एनी बीसेन्ट अपने
किन्तु आज भारतवर्ष
करता है, जो नारी
एक योग्य वक्ता
रखती हैं, जैसे श्रीमती
श्रीमती कमलादेवी।
पंडित और माननीया
कौर। यह भारतीय
और वक्तृता के लिए
विदेशों में भी प्रसिद्ध
वाणी वैसे तो प्रकृति की
की अपेक्षा मधुर और
यदि इसका प्रमाण ही
विजयलक्ष्मी पंडित,
नाइडू और श्रीमती
कौर के व्याख्यान सुनें--
गति के साथ भाषण
रहता है, पंडित विजय-
इस में अपनी वक्तृता
को अश्रुपरिपूरित कर
कि वह किस सफल

नायडू

१९३८ में मुझे श्रीमती
ख्यान सुनने का सौभाग्य
पहले वे मंच पर आईं और
कविता की कुछ पंक्तियां
सुनाईं। श्रोताओं में एक
फैल गई और शनैः-
श्रीमती नायडू की ही
में परिवर्तित होने लगे।
में अत्यन्त प्रभावोत्पादक
। भाषण के बीच बीच
और कुछ काव्य का भी
यदा-कदा तो वे दर्शन
लगती थीं। संक्षेप
सुननेवालों के लिए
भी बन गया।

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित

श्रीमती पंडित भी प्रायः अपनी प्राकृतिक स्वतंत्रता के साथ साथ बड़ी अबाध गति से भाषण देती हैं। इनमें तर्क और न्याययुक्त बातों को भाषण का रूप देने की पूर्ण शक्ति है। यह अपने भाई की ही भांति सरल शब्दों में गम्भीर और सारगर्भित अर्थ रखती हैं। दक्षिण अफ्रीका में इन्होंने अपने भाषण में जिस कुशलता के साथ मानवीय उद्देश्य का परिचय दिया था, वह अपना अलग आदर्श रखता है। दक्षिण अफ्रीका में श्रीमती पंडित के भाषणों ने भारतीयों के गौरव को पहले की अपेक्षा कहीं अधिक ऊँचे उठाया है, यह बात निर्विवाद सत्य है। अमेरिका के एक प्रतिनिधि ने कहा था कि श्रीमती पंडित के भाषण को सुनने का असर हर राजनीतिज्ञ को जिस प्रकार भी सम्भव हो अवश्य निकालना चाहिए।

राजकुमारी अमृतकौर

अमृतकौर भी वर्तमान समय की सफल वक्त्राणी हैं। सबसे पहले मैंने आपका व्याख्यान मद्रास में सुना था जब सी० आर० दास के स्मारक के सम्बन्ध में पधारी थीं। आपकी बोलने की सरलता देखते ही बनती है। शब्दों के प्रयोग की कला आपकी अपनी नई है। जो कुछ भी बोलती हैं, श्रोताओं के हृदय में वाक्यों के रूप में तीर सा चुभता चला जाता है। आपके वाक्य कर्णकटु न होकर भी पूर्णरूप से अपना प्रभाव डालते हैं। राजकुमारी जी का व्याख्यान सुनने के पश्चात् ऐसा प्रतीत होता है, मानो हम सामूहिक प्रार्थना से एक प्रिय भजन सुनकर आये हैं, अर्थात् व्याख्यान का सार आप प्रयत्न करने पर भी नहीं भूल सकते, यही सबसे महान् विशेषता है।

श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय

कमला देवी जी अत्यन्त आकर्षक वक्त्राणी हैं, आप अपने व्याख्यान में अपनी बात अत्यन्त स्पष्टता से कहना जानती हैं। ज्ञानयुक्त भाषण के अतिरिक्त आपकी शैली बड़ी प्रवाहयुक्त होती है। बीच बीच में जब कहीं कुछ दुःखपूर्ण विषय आ जाता है तो वे एक सेनापति की भांति बोल जाती हैं; जिसका प्रभाव श्रोताओं पर अच्छा ही पड़ता है। आपका भाषण, अधिक तर्कों से युक्त न होता हुआ भी कभी कभी बड़े गम्भीर प्रश्न उपस्थित कर देता है, जिनके सुलझाने के लिए अच्छे ज्ञान की आवश्यकता पड़ती है। जिस वाक्य में जितना जोर चाहिए बड़ी नाप तौल से आप उस पर उतनी शक्ति रखकर बोलती हैं।

श्रीमती रामाराव

श्रीमती रामाराव के भाषण में विचारों का चयन और उनके उपस्थित करने की कला विशेष रहती है। आप किसी भी विषय पर बिना किसी प्रकार की तैयारी के बोलती हैं, जिससे उनके विचारों का क्रम और भी प्रतिभासम्पन्न ज्ञात होने लगता है। जब वे मंच पर आती हैं तो यह नहीं ज्ञात होता कि बोलने जा रही हैं। वे श्रोताओं के बीच ठीक उसी प्रकार आती हैं जैसे कोई प्रोफेसर अपने विद्यार्थियों के बीच आता है। बोलती भी इतना तेज हैं कि सुननेवाला यदि तनिक भी चूक जाय तो फिर आगे का भाषण समझना उसके लिए सम्भव न होगा। आप कभी भी कवित्वमय और लम्बे लम्बे वाक्य बोलने का प्रयास नहीं करतीं।

भाषण-कला विशेषतया पुरुषों के ही भाग में थीं, स्त्रियां तो निर्बल कही जाती हैं; किन्तु आज की इन महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया है कि स्त्रियां भी पुरुषों की तरह अपनी वाणी के द्वारा नसों का ठंडा रक्त गर्म कर सकती हैं।

गीत

लेखक, प्रोफेसर शालिग्राम मिश्र, एम० ए०

न कोई तुम्हें गीत गाकर बुलाता।
भरी भीर में तुम खड़े हो अकेले, न कोई तुम्हें कर हिलाकर बुलाता।
तिमिर से भरी रात में स्वप्न आते,
खुले लख पलक, हो विवश लौट जाते,
तुम्हीं ने किए स्वप्न निर्माण,—लेकिन, न कोई तुम्हारे पलक में समाता।
बजे ढोल-घंटा, झुके अनगिनत शिर,
सजी आरती, लो जगी अर्चना फिर,
तुम्हीं ने भरी मूर्ति में भावना पर—न कोई तुम्हें शिर झुकाकर बुलाता।

अत्यधिक सस्ती कीमतों में

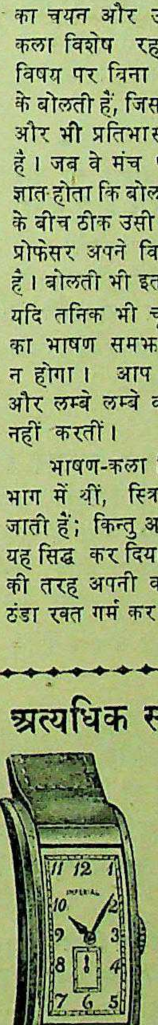

ऊँचे दर्जे की ठीक समय देनेवाली, आधुनिक आकार की घड़ियाँ। प्रत्येक घड़ी की गारंटी दो साल। गोल या चौकोर आकार की क्रोमियम केस १६), सुपीरियर १८), ४ जुवेल की २१), सेन्टर सेकंड २४)। रेक्टैंगुलर क्रोमियम केस ४०), रोल्ड-गोल्ड ५५), १५ जुवेल की ८०)। डाक-खर्च माफ।

प्रेमशंकर एण्ड कं०, (D.A.)
ऐशबाग़, लखनऊ

मनोरंजक चुटकुले

एक दार्शनिक की बहिन ने अपने भाई से पूछा कि दिमाग क्या है ? भाई ने जवाब दिया परवाह मत करो।

बहिन ने दुबारा पूछा, परवाह का क्या अर्थ है ?

भाई ने जवाब दिया दिमाग सब कुछ है।

* * *

एक बार कहा गया कि भारतीय सरकार ब्रिटेन से कोहनूर हीरा चाहती है जो महारानी विक्टोरिया को दिया गया था, किन्तु ब्रिटेन इस हीरे के लिए १,२०,००० रुपये का लालच भी प्रस्तुत कर रहा है।

* * *

यदि आप विधवा से विवाह कर सकते हैं, तो फिर संसार में कोई न बिना ब्याह का रहेगा और न कोई गैर विवाहित स्त्री ही शेष रहेगी, इस प्रकार अनाथालय आदि बन्द हो जावेंगे।

* * *

एक बीमार ने नर्स से कहा 'जरा जोर से बोलिए। नर्स ने कहा, मेरे जोर से बोलने से तुम्हें कष्ट होगा। बीमार ने कहा और क्या बीमारी में सुख मिलता है क्या ?

* * *

एक सज्जन अपनी पुत्री के लिए वर देखने के लिए एक लड़के के पास गये। पिता महोदय ने कहा कि मेरी लड़की पढ़ी-लिखी है, लड़के ने कहा यदि वह काफी चालाक हो तो मैं उसे ब्याह सकता हूँ। पिता ने कहा आप जैसे लड़कों को मेरी पुत्री कुछ नहीं समझ सकती। लड़के ने कहा तो मेरी समझ पर पानी न फेरिये मैं बिना शादी के ही अच्छा हूँ।

* * *

एक वकील साहब बीमार हुए और वे आवेश में आकर अपनी सारी कमाई बेवकूफ और नासमझ लोगों को देने लगे। लोगों ने कहा आप बेवकूफों को क्यों बांट रहे हैं ? वकील साहब ने कहा—मैंने भी तो लोगों को बेवकूफ बनाकर यह इकट्ठा किया है।

* * *

एक स्थानीय समाचार-पत्र कहता है कि कलकत्ता में होली शान्तिपूर्वक बीत गई। कहीं-कहीं साधारण अशान्ति रही, लेकिन उस दिन भोजन आदि खूब स्वतन्त्रता से किया गया; फिर भी कोई आदमी मरा नहीं, यही आश्चर्य है !

* * *

अमेरिका के एक विद्वान् ने कहा, कि धन बड़ी अजीब चीज है, क्योंकि भगवान् स्वयं इस वस्तु का वितरण लोगों के बीच बराबर नहीं कर सके, क्योंकि मनुष्य ईश्वर से इसके लिए असन्तुष्ट हैं।

* * *

ढाका विश्वविद्यालय में मिस्टर जिन्ना ने दीक्षान्त भाषण देते हुए कहा कि जीवन को सुखमय बनाने के लिए व्यापार और बैंक-व्यवस्था ठीक होनी चाहिए। उन्होंने उदाहरण भी दिया कि एक साधारण सरकारी नौकर ने चार वर्ष बैंक में नौकरी करके अपनी आय १,५०० रु० प्रतिमाह कर ली—शायद पाकिस्तान के समस्त लोग अब केवल बैंक में ही काम करेंगे क्या ?

(पेज ७ का शेष)

इस समय भी कम्युनिस्ट दल ही बहुमत दल है, कंम्युनिस्टों का प्रभाव अधिक बढ़ जायेगा। फ्रांस में इस समय शक्तियां दो दलों में ही विभक्त होती जा रही हैं मध्य-नीति के लोगों की कमी होती जा रही है। जनरल डिगाल निहित स्वार्थवाले वर्ग का नेतृत्व कर रहे हैं और वे फ्रांस पर अपना अधिकार करना चाहते हैं। इन्होंने अमरीका की नीतियों का अनुगमन आरम्भ कर दिया है। मजदूरों का झुकाव कम्युनिस्टों की ओर ही होता जा रहा है। पी० टी० टी०, वर्ग से फेडरेशन, यातायात के मजदूरों की राष्ट्रीय समिति, मार्सिली म्युनिसिपल वर्क्स से, स्वतन्त्र ट्रांसपोर्ट यूनियन, कर्मचारी संघ, बिजली और गैस मजदूर संघ, पत्रकार सभी कम्युनिस्टों से प्रभावित हो रहे हैं। यह सभी लोग मार्शल-योजना के विरोधी हैं। निम्न-मध्यम श्रेणी भी पूंजीवादियों की असफलताओं से भली भांति परिचित है। ऐसी स्थिति में यदि भावी निर्वाचन में कम्युनिस्ट लोगों की विजय हो गई तो हमें आश्चर्य नहीं होगा। इस प्रकार इटली और फ्रांस में समाजवाद के आगमन के बाद योरोप में पूंजीवाद की रक्षा नहीं की जा सकेगी और इसी भय से लोग आज युद्ध का शीघ्रता से आह्वान कर रहे हैं।

फिनलैंड और रूस की सहायक सन्धि के बाद योरोप में स्वीडन और स्वीजरलैंड ही ऐसे राष्ट्र हैं जो तटस्थ कहे जा सकते हैं। सम्पूर्ण योरोप दो दलों में बँटा हुआ है और उसका यह बँटवारा जैसा कि हमने ऊपर कहा पोट्सडम के अवसर पर ही हो गया था; लेकिन अपनी पद्धति के दोष को छिपाने तथा नवीन व्यवस्था के प्रभाव के विकास को रोकने के लिए ही आज युद्ध की तैयारियां आरम्भ हो गई हैं।

(पेज ८ का शेष)

इस प्रकार के व्यवहार से मनुष्य को आत्म-ज्ञान लाभ न होकर उसकी मानसिक जटिलता बढ़ती है। हम दूसरे लोगों के चरित्र का सुधार अपना चरित्र सुधार करके ही कर सकते हैं। आचरण की शिक्षा सबसे उच्च शिक्षा होती है। आचरण दूसरे मनुष्य के अचेतन मन को प्रभावित करता है और उपदेश अधिकतर उसके चेतन मन तक ही रह जाता है। उपदेश से मनुष्य के बाह्य आचरण में परिवर्तन हो जाता है, पर उसके चरित्र पर मौलिक प्रभाव अपने आचरण से ही हो जाता है। पर इसके लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति अपने आचरण का ढिंढोरा न पीटे। अपने सदाचार का ढिंढोरा पीटने की इच्छा एक प्रकार की मानसिक बीमारी का परिणाम है। स्वार्थ सदाचार वह है जिसे दूसरे लोगों में जानने की इच्छा ही नहीं रहती। जब हम नैतिकता को अपने आप कीमत रखनेवाली वस्तु समझने लगते हैं तो हम अपने सदाचार की विख्याति नहीं चाहते; पर नैतिकता की मौलिकता समझना तब तक सम्भव नहीं जब तक मनुष्य के मन में किसी प्रकार की आत्म-हीनता की ग्रन्थि है।

दूसरे लोगों का सुधार उनसे प्रेम करने से अपने आप ही होता है, उनकी आलोचना करने और उन्हें उपदेश देने से उनमें सुधार न होकर उलटा ही परिणाम होता है या ही इससे मनुष्य में दुराचार की प्रवृत्ति बढ़ जाती है अथवा उसके मन में आत्महीनता की भावना उत्पन्न हो जाती है जिसके परिणाम-स्वरूप वह अपना आत्म-विश्वास खो देता है।

किंकिणी में कवि की बढ़िया कविताओं का संग्रह है। भाषा मधुर और कल्पना इतनी आकर्षक है कि पाठक कुछ क्षणों तक भावविभोर बना रहता है। मूल्य ।।।) बारह आने।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

बंगाल नागपुर और ईस्ट इंडियन रेलवे
गति और सुविधाओं में वृद्धि

सफर करनेवाली जनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि उन कठिनाइयों के होते हुए भी जो अब तक हैं, बंगाल नागपुर और ईस्ट इन्डियन रेलवे—दोनों ने—रेलगाड़ियों की गति में, पहली अप्रैल १९४८ से जितना सम्भव था उतना सुधार कर दिया है।

अतिरिक्त रेलगाड़ियाँ

टाटानगर और पटना के बीच एक रेलगाड़ी, बरकाकाना, गोमो और गया होते हुए; और कुछ अतिरिक्त लोकल गाड़ियाँ दोनों रेलवे में जारी की गई हैं।

ईस्ट इन्डियन रेलवे पर हावड़ा-बनारस-एक्सप्रेस पुनः जारी की गई है।

रेलों की गति तीव्र की गई—

बम्बई मेल—बंगाल-नागपुर और ईस्ट इन्डियन रेलवे पर कुछ तीव्र गति की गई है।

आसनसोल-पुरी पैसेन्जर—यात्रा के समय में लगभग एक घण्टे की कमी कर दी गई है।

डाऊन मद्रास मेल हावड़ा जल्द आने लगी—

बंगाल-नागपुर रेलवे पर डाऊन मद्रास मेल १०-४० पर हावड़ा आने लगी है अर्थात् पहले से ७५ मिनट पहले।

जाजपुर रोड के लिए अतिरिक्त सुविधाएँ—

हावड़ा और पुरी के बीच आने जानेवाली अप एण्ड डाऊन पुरी एक्सप्रेस अब जाजपुर रोड पर रुकती है, जो जाजपुर का सब डिवीज़नल हेडक्वार्टर है।

विस्तृत विवरण सब स्टेशन मास्टरों से प्राप्त किए जा सकते हैं।

दी पब्लिक रिलेशंस आफीसर कलकत्ता रेलवे द्वारा प्रचारित।

क्या आप जानते

आस्ट्रेलिया में आबादी
से संसार के समस्त देशों से
हैं ?

* *

अरबी भाषा का सबसे
कास्ट १९३८ में फ्रेंच, जर्मनी,
स्पेन से हुआ था।

* *

सबसे पहले हवाई जहाज
तैयार किया था, जिसकी चाल
प्रतिघंटा थी।

* *

सन् १९०० के बाद कोको
संसार के अनुपात से ८०,०००
से ७५०,००० टन हो गई!

* *

आज से २३४ वर्ष पूर्व
में हेनरी मिल नामक व्यक्ति ने
में टाइप राइटर तैयार किया

* *

मरहठा जाति २५ मील
३४५ गज चौड़ी भूमि की
फैली है।

* *

संसार में पोल से कूदने
अधिक से अधिक १४ फीट
और भारत में इसकी नाप १२
इंच है।

* *

संसार में ऊँचाई की कूद की
अधिक ७ फीट १० इंच है और
इसकी नाप ६ फीट २½ इंच

मिरगी [हिस्टीरिया]
की अनुभवी जड़ी (बूटी)
इस बूटी को केवल एक
दौरा के समय नाक में सुँघाने से
साथ ही काले रंग का कीड़ा
जाता है और रोगी सदैव के लिए
हो जाता है।
मँगाने का पता—
महात्मा धूनी बाबा सिरस
पो० चित्रकूट बाँदा यू० पी०

फ़सल के उपरान्त
फ़सली फ
फल—प्रकृति का सर्वोत्तम उपहार है
फसल निकल जाने पर फल सुलभ नहीं
परीक्षा कीजिए

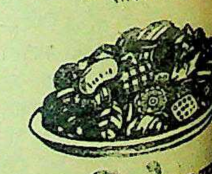

इन-री-हा फ्रूट
रेशमी
क्रीमोला टाफी
प्रायः सभी दुकानों पर बिकती है
सीधे नीचे पते से मँगाइए
इण्डस्ट्रियल रिसर्च
इलाहाबाद
सोल एजेन्ट:—बंगाल, बिहार,
आसाम के लिए—
मेसर्स सत्यावरत
६३।२, क्लैनिंग स्ट्रीट

भंग की तरंग

इस बात का पता लगा रहे हैं कि साहब कांग्रेसी हैं कि समाजवादी ? उन में अभी वह सोच रहे हैं कि तना ठीक है और क्या नहीं ?

*

लोग जो राजनीति के सिद्धान्तों जानते वह पूछते हैं कि समाज- का ध्येय क्या है ? उनकी के लिये बताना उचित है कि दलों का ध्येय बदलता है। इस समय समाजवादियों का चुनाव लड़ना है।

*

हुकुमसिंह ने कहा है कि जमीं- करने के कानून का मसविरा ठीक है किसी ज्योतिषी से उसे असेम्बली में उपस्थित जिससे विरोध अधिक न यही है।

*

के ४०६ थैले पाकिस्तान- गए। इस पर कुछ कहने की नहीं है। किदवई साहब करते हैं जिससे दोनों राष्ट्रों में सद्भावना बनी रहे, के गये तो जाने दीजिए, गए!

*

स्तान में हड़ताल हो गई नहीं, यदि किसी वस्तु के होगी तो पश्चिमी बंगाल पूरी कर दी जायगी।

*

ने बताया है कि सारा दोष का है। हमारा भी कुछ है। निजाम ऐसा राज्य है ?

राजकुमारी अमृत कौर कहती हैं कि महिलाएँ युद्ध के विरुद्ध हैं। पर अच्छा है नहीं तो उनसे युद्ध में पार पाना असंभव है असंभव।

* * *

काशी में पुलिस के इंसपेक्टर जनरल ने कहा कि पुलिस जनता की नौकर है। दंगल का आयोजन जब होता है तब तो यह बात स्पष्ट हो जाती है।

* * *

आगरा में श्रीयुत सुरेन्द्रनाथ घोष ने कहा कि देश की उन्नति पत्रकारों पर निर्भर है। पत्रकारों की उन्नति किस पर निर्भर है इस पर भी ध्यान देना चाहिए, नहीं तो मामला खटाई में पड़ जायेगा।

* * *

कोई काजिम रिजवी हैदराबाद में हैं। वह भारत से लड़ाई लड़ने की घोषणा कर रहे हैं। इस घोषणा की क्या आवश्यकता थी कम्यूनिस्टों से मिल क्यों नहीं नया मोर्चा बना डालते ?

बेढब की बहक !

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

करके वादा भी वह न आये थे,
मैंने बोरे यहां बिछाये थे।
उनके जलपान के लिये थोड़े,
आज मैंने चने भुनाये थे।
ऊँट भी भागने लगे सुनकर,
गीत ऐसे उन्होंने गाये थे।
सुबह तक रोशनी रही उनकी,
शाम को मेरे घर वह आये थे।
पूछते हो कि रो रहे हो क्यों,
काले बादल उधर जो छाये थे।
कैसे पहचानते भला मुझको,
वह मिनिस्टर के साथ आये थे।
उनको भगवान का मिला दरजा,
सबकी आंखों में वह समाये थे।
हो गया अस्पताल घर उनका,
कितने रोगी वहां पै आये थे।
मरते हैं तो बुरा नहीं 'बेढब'
मरने को हम यहां पै आये थे।

नई दिल्ली में एक महाराष्ट्र बाला ने एक क्लर्क को गोली मार देने का प्रयत्न किया। किन्तु क्लर्क महोदय शहीद होते-होते बच गये। भारत में महाराष्ट्रों ने शहीद बनाने का ठेका ले लिया ह क्या ?

* * *

हैदराबाद में वहां के शिक्षा-मंत्री पर अंडे फेंके गये। शीघ्रता में शायद आप पर बम न फककर अंडा ही लोगों ने फेंक दिया होगा !

* * *

पाकिस्तान से बहुत से मुसलमान भारत में लौट रहे हैं। जान पड़ता है वहां अंगूर और बादाम समाप्त हो गया, क्योंकि वहां तो यही भोजन मिलता ही था।

—अगड़दत्त शर्मा

हिन्दी ही राष्ट्रभाषा है

महापंडित श्री राहुल सांकृत्यायन का वक्तव्य

अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने समाचार-पत्रों के लिए यह वक्तव्य दिया है :—

हिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तों ने हिन्दी को राजभाषा बनाने के पक्ष में अपनी राय दे दी, हिन्दुस्तानी के पक्षपाती अब एक दूसरी चाल चल रहे हैं। हिन्दी प्रान्तों में अपनी दाल गलते न देखकर उन्होंने अहिन्दी प्रान्तों को अपना कार्य-क्षेत्र बनाया है और अपने मनोरथ-सिद्धि के लिए कोई भी उपाय छोड़ना नहीं चाहते। सुनते हैं, हिन्दुस्तानी समर्थक एक धुरन्धर आचार्य ने विधान-परिषद् में हिन्दी को भारत-संघ की राष्ट्रभाषा न बनने देने के लिए बीड़ा उठाया है और दूसरों के असगुन के लिए अपनी नाक तक कटवाने को तैयार हैं। वह कहीं कहते हैं—'बापू के जीवित रहने तक तो चाहे हिन्दुस्तानी उर्दू को ठुकरा भी सकते थे, लेकिन अब उसका ठुकराना बापू के प्रति महान् कृतघ्नता होगी।' कहीं लोगों को यह कहकर भड़काया जाता है कि हिन्दी जैसी एक तुच्छ भाषा कैसे सारे भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है? राष्ट्रभाषा बनाना है तो बँगला, मराठी, गुजराती, तामिल, तेलगू जैसी समुन्नत भाषाओं को वह पद दिया जाय और कहीं पर यह भी कहते हैं कि क्यों एक राष्ट्रभाषा हो। क्यों नहीं स्विटजरलैंड की तरह हमारे देश में अनेक राष्ट्रभाषाएँ हों। अहिंसा और सत्य के ये अवतार अब कल बल छल हर तरह से हिन्दी का विरोध करने के लिए कटिबद्ध हुए हैं। हिन्दुस्तानी का अर्थ उर्दू लिपि और उर्दू भाषा को घुसेड़ना छोड़कर और कुछ नहीं है। आसेतुहिमालय जहां उर्दू आज तक पहुँच नहीं पाई थी वहां भी उसे लादने का यह प्रयत्न कितना दुस्साहस है। इसे कई बार बतलाया जा चुका है कि उर्दू जिस अरबी लिपि में लिखी जाती है, यदि सुगम होती तो वह तुर्की और मध्य एशिया के देशों से निकाली न जाती। रही उर्दू भाषा उसका अर्थ है साठ, सत्तर प्रतिशत संस्कृत के तद्भव शब्दों की जगह उससे अधिक परिमाण में अरबी फारसी शब्दों को स्वीकार करना। यही तत्भव तत्सम शब्द हैं, जो भारत की सभी भाषाओं को एक दूसरे के समीप लाते हैं; क्योंकि बँगला, मराठी, गुजराती, तेलगू आदि सभी भाषाओं में यह संस्कृत के शब्द एक समान मिलते हैं। इन साठ;-सत्तर प्रतिशत शब्दों को निकालकर अरबी-फारसी के अपरिचित साठ-सत्तर शब्दों को रखना कौन-सा अविकृत मस्तिष्क ठीक समझ सकता है ?

देश के स्वतन्त्र होने के साथ अब गांव की पंचायतों से लेकर हाईकोर्टों तक प्रान्तों और केन्द्र की पालियामेंट तक, प्राथमिक पाठशालाओं से विश्वविद्यालयों तक अब अँगरेजी का स्थान मातृभाषायें लेने जा रही हैं। हिन्दी कभी नहीं चाहती कि प्रान्तों की मातृभाषाओं का स्थान ले।, अपने अपने क्षेत्र में मराठी, गुजराती तेलगू का सभी जगह अखण्ड राज्य होगा। हमें मातृभाषाओं को अपने लिए उचित स्थान दिलाने के लिए एक विशाल साहित्य तैयार करना है। जिसके लिए सबसे पहली आवश्यकता है पारिभाषिक शब्दों की,; और ये पारिभाषिक शब्द थोड़े नहीं ढाई लाख से चार लाख तक होंगे। क्या हिन्दुस्तानी की खाल में छिपे ये उर्दू-पक्षपाती चाहते हैं कि ये लाखों की संख्या में लिए जानेवाले पारिभाषिक शब्द अरबी से लिए जायँ ? कम से कम राजकाज-सम्बन्धी पारिभाषिक शब्द तो सबके लिए एक-से चाहिए। तो क्या इन शब्दों को अरबी से लेकर सारे भारत को सिखलाया जाय ? इस विषय में हिन्दी का रास्ता सरल और समान है। वह अपने पारिभाषिक शब्दों को संस्कृत से लेती है। उसी तरह बँगला, गुजराती, मराठी, तेलगू आदि ही नहीं बल्कि स्यामी और सीलोनी (सिंहली) भी। यह साफ है कि हिन्दी का रास्ता सभी प्रान्तीय भाषाओं के लिए सुलभ और व्यावहारिक है।

हमें आशा है कि आज जो हिन्दुस्तानी के प्रचारक हिन्दी के विरुद्ध पागल होकर अहिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तों में घूम-घूमकर झूठा प्रचार करके अपने को गांधी जी का सच्चा भक्त सिद्ध कर रहे हैं, उनके धोखे में कोई नहीं आयेगा। भारत की एकाबद्धता के लिए एक राष्ट्रभाषा की आवश्यकता है, जिसका काम प्रान्तीय भाषा का स्थान ग्रहण करना नहीं है, बल्कि एक भाषा-भाषी प्रान्त का दूसरे भाषा-भाषी प्रान्त के साथ और प्रान्तों का केन्द्र के साथ सम्बन्ध जोड़ना है। हमारा हिन्दी के लिए आग्रह सिर्फ इसीलिए है कि वह पहले ही से भारत के एक विशाल भाग में व्यवहृत होती है। यदि लोग हिन्दी की जगह किसी दूसरी भाषा को इसके योग्य समझें तो उसे भी हम मानने के लिए तैयार हैं, लेकिन वह भाषा ऐसी होनी चाहिए जो दूसरी भारतीय भाषाओं के साठ-सत्तर सैकड़े समान शब्दों को रखे। उर्दू ऐसी भाषा नहीं है, यह निश्चित है।

सारिडन
सर्व्वप्रकारका दर्द दूर करता है
10 Saridon BRAND ANALGESIC TABLETS
Saridon

(पेज ५ का शेष)

नहीं करते। परन्तु, इसके विरुद्ध श्री टंडन जी अपने राजनैतिक हठ के लिए प्रसिद्ध हैं। आप न केवल अपने तीव्र राजनैतिक मतभेद को प्रकट करते हैं, वरन् उसका पालन भी करते हैं।

कौंसिल के सभापति श्रद्धेय सर सीताराम जी भी सदस्यों को स्कूल-मास्टर की भांति लेक्चर दिया करते हैं; कभी कभी कुपित हो डांट देते हैं; कोशिश करते हैं कि कोई कुछ सीखे, कुछ कहे। उनको कायदे-कानून बताते हैं, बोलने के लिए उत्साह दिलाते हैं, उनकी त्रुटियों की उपेक्षा कर उलटा-सीधा भाषण देने देते हैं और असेम्बली की जैसी कोई समय की रोक-थाम नहीं करते।

सर सीताराम प्रान्तीय धारा-सभाओं के पिता हैं, आप प्रान्तीय धारा-सभा के प्रथम भारतीय सभापति हैं। सभापतित्व के अनुभव में श्री विट्ठल भाई पटेल के बाद आपका स्थान है। आपको २४ वर्ष का अनुभव प्राप्त है। आप अपने कार्य में दक्ष हैं। ऐसे व्यक्ति के सामने सदस्य क्लर्क छोकरे हैं।

पुराने आदमियों को शिकायत है कि सभा के सदस्य काबिल आदमी नहीं। साम्राज्यशाही से लड़ने के लिए "लालटैन के खम्भे" ठीक थे। कांग्रेस का कार्य विरोध का था। उसको दो-चार वक्ता और शेष हाथ उठानेवालों के बहुमत की आवश्यकता थी। परन्तु स्वतन्त्र भारत की धारा-सभाओं का काम अपढ़ सदस्यों से चल सकेगा, इसमें शक है। योग्य नेता मन्त्री-पद पर आरूढ़ हैं; परन्तु मन्त्रियों को मन्त्रणा देनेवाले भी मन्त्रियों की टक्कर के आदमी ही चाहिए। व्यवस्थापिका सभाओं की यह भारी कमी है। अधिकांश सदस्यों को अधिवेशन अप्रिय हैं, वे ऊब जाते हैं, बाहर आते, होटल अथवा लाइब्रेरी में गप लगाते हैं। यदि कभी कुछ जनता के लिए कहा जाता है, तो बेजान और बेतुकी बातें।

मन्त्रिगण चतुर और काम को समझनेवाले हैं। कौन मन्त्री फाइलों से टक्कर लेने में कितना चतुर है, यह कहना कठिन है। इस सम्बन्ध में अनेक धारणाएं हैं; परन्तु राजनैतिक द्वन्द्व में सभी टक्कर लेनेवाले हैं।

प्रधान मन्त्री पन्त सवालों के स्तर को ऊंचा उठाकर सिद्धान्तों की बुनियाद पर जवाब देते हैं, यहां तक कि अपनी सिद्धान्तप्रियता के लिए बदनाम हो चले हैं। आपके भाषण कुछ लम्बे हो जाते हैं। श्री सम्पूर्णानन्द और पालीवाल की तीखी चोटें सुनने के काबिल होती हैं, शुद्ध हिन्दी में भाषण दिये जा सकते हैं, यह आपकी वक्तृताओं से स्पष्ट होता है। श्री मालवीय और लालबहादुर जो शास्त्री चतुर वकील और श्री चन्द्रभान गुप्त स्पष्ट वक्ता हैं; और शेरवानी साहब की भाषा में लखनवी लोच है। श्री गोविन्दसहाय जी जन-वक्तृता के ढंग को असेम्बली में आजमाया करते हैं।

* * *

असेम्बली-भवन की भांति सदस्यों के निवासस्थान भी मोटरों के अड्डे बन गए हैं। यद्यपि मोटरकार रखने की अधिकांश सदस्यों की आकांक्षा है; परन्तु अभी तक बहुत कम सदस्य इस स्थिति में हैं कि इच्छा-पूर्ति कर सकें। ये कार कारोबारी व्यक्तियों के हैं, इनका मन्त्रियों से काम रहता ह और इसके लिए सदस्यों का बीच में पड़ना जरूरी है।

सुना है असेम्बली के बहुत से सदस्य धनोपार्जन में व्यस्त हैं। वे समझते हैं कि भावी राजनीति रुपए के बल पर चलेगी और राजनीति स्वयं एक व्यापार है। राजनीति के लिए रुपया चाहिए और रुपये के लिए व्यवसाय, उद्योग-धन्धे, कल-कारखाने, बीमा कम्पनी और बैंक चाहिए। एक ही तीर से दो शिकार होते हैं—स्वार्थ-सिद्धि और राष्ट्र-सेवा। अतएव सदस्यों का व्यवसायों से गठबन्धन हो रहा है।

इस कारण और प्रान्त की राजधानी होने के नाते लखनऊ व्यवसाय-केन्द्र बन रहा है। जब सदस्य डाइरेक्टर हों तब कम्पनियों की बैठक के लिए लखनऊ से सुगम और कौन स्थान हो सकता है?

असेम्बली में अभी तक दो मुख्य दल थे, कांग्रेस और मुस्लिम लीग, देश के इँटवारे के बाद लीग का अस्तित्व ही मिट गया। उसके कुछ सदस्यों ने जनता की पार्टी बनाई है परन्तु उसकी नीति अस्पष्ट है और उसके नेता मूंह खोलते घबराते हैं। लारी साहब विरोधी दल के चतुर वक्ता हैं; परन्तु देश की राजनीति को देखते हुए चुप रहना पसन्द करते हैं।

कांग्रेस दल प्रमुख दल है। उसका नेता प्रान्त का प्रधान मन्त्री है। इस दल का मन्त्रिमण्डल है। परन्तु इधर एक महीने से इसके अन्दर भी फूट पड़ गई है। समाजवादी दल ने कांग्रेस छोड़ने की घोषणा की है। अवसर पाकर कुछ अन्य पुराने कांग्रेसी भी दल से त्याग-पत्र दे रहे हैं। देश में अशान्ति है और इस अवस्था से अनेक व्यक्ति और कुछ दल लाभ उठाना चाहते हैं।

परन्तु ऐसे भी अनेक व्यक्ति हैं जो कल तक समाजवादी कहाते थे, लेकिन समय आने पर समाजवाद से त्यागपत्र देना दफ्तरों से हटने की अपेक्षा अधिक श्रेयस्कर समझते।

देश में अशान्ति है, प्रान्त में असंतोष है और इसका संबंध सरकारी नीति से है। सरकार की क्या नीति है यह व्यवस्थापिका सभाओं की कार्यवाही पर दृष्टिपात करने से पता लग जायेगा।

सदस्य कहते हैं, सरकारी अफसर पतित और घूसखोर हैं और निकम्मे हैं। सरकार का कर्त्तव्य है कि वह इनको ठीक करे। पन्त जी कहते हैं, अफसरों को गाली देने की पुरानी आदत है, वह अब पुरानी हो गई। अब स्वराज्य आ गया। हमको नियन्त्रण के साथ बोलना चाहिए। आखिर ये अफसर भी देशी हैं, अपने भाई और रिश्तेदार हैं। अगर खराब हैं तो मुकदमा चलाओ, परन्तु असेम्बली में इस तरह की बातें न कहो।

सच है, अफसर अपने ही भाई-भतीजे हैं। परन्तु जब कल कचहरियों की मदद से ये ठीक न किये जा सके तब आज की कचहरियां किस प्रकार रोक-थाम कर सकती हैं?

सदस्य कहते हैं, पुलिस और नौकरशाही पर बहुत खर्चा हो रहा है। शास्त्री जी कहते हैं, यह भी हमारी पुरानी आदत है। अब देश आजाद है। आजाद देशों में अस्सी आदमियों के ऊपर एक पुलिस का सिपाही है। हमको उनका अनुकरण करना है। तब क्या पुलिस और फौज का खर्च हम केवल ब्रिटिश सरकार से ही कम कराना चाहते थे? हम कहते थे, पुलिस और फौज स्वतन्त्रता-आन्दोलन को दबाने के लिए है। आज यह ड्योढ़ी-दुगनी पुलिस किसको दबाने के लिए है?

रुपये की कमी है। अतएव राष्ट्र-निर्माण का कार्य आगे नहीं बढ़ाया जा सकता, राजकर्मचारियों के वेतन नहीं बढ़ाये जा सकते, अनिवार्य शिक्षा की योजनाएँ कार्यान्वित नहीं की जा सकतीं; और धनिकों पर टैक्स नहीं बढ़ाये जा सकते। वे गरीब हैं; उनके मुनाफे कम हैं। उनको प्रोत्साहन चाहिए। हां किसानों और मजदूरों की जेब में कुछ रुपया है। उनका पेट काटा जा सकता है।

सरकार समझती ह प्रान्त के लिए यही नीति श्रेयस्कर है। अन्य राजनीतिज्ञ समझते ह यह नीति प्रान्त और राष्ट्र के लिए घातक है, यह अशान्ति की जन्मदात्री है।

* * *

श्री मोहनलाल जी गौतम सूबा कांग्रेस की पार्लियामेन्टरी बोर्ड के भवन में बैठे हुए उम्मीदवारों के भाग्य का फैसला किया करते हैं। इस भवन के अन्दर और आस-पास सैकड़ों खद्दरधारियों की भीड़ रहती है। डिस्ट्रिक्टबोर्ड और चुंगी के चुनाव में हिस्सा लेनेवालों के दल के दल आ जाते हैं। और श्री गौतम प्रत्येक की बात ध्यानपूर्वक सुनकर अपना फैसला देते हैं।

प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी का दफ्तर भी कार्यकर्त्ता और दर्शकों का अड्डा बना रहता है। कमेटी की मोटरें दौड़ा करती हैं, मौलाना मुजफ्फर और श्री मंगलाप्रसाद, दोनों ही काम में व्यस्त रहते हैं। पार्टी के चुनावों को लड़ना, उनमें जीत हासिल करना, चुनाव की मशीन का संगठन करना और वर्करों के एके को कायम रखना—यह प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी और उसके सेक्रेटरियों का काम है। कांग्रेस कमेटी के बिना चुनाव नहीं जीते जा सकते और चूनावों की जीत के बिना सरकार बनाना असंभव है। अतएव कांग्रेस भी सरकारी मशीन का पुर्जा है, उससे अलग नहीं।

कांग्रेस के पास बहुत बड़ी पूंजी है। उसके पीछे साठ वर्ष का इतिहास है, असहयोग और भद्रअवज्ञा आन्दोलन का इतिहास है, उसको राष्ट्रीय जागरण का श्रेय है। उसके पास नाम लेने को बड़े-बड़े नेता हैं। उसके लिए जनता के हृदय में स्थान है और इस कारण कांग्रेस एक जीवित संस्था है।

परन्तु आज इस राजनैतिक संस्था का मुख्य कार्य चुनाव लड़ना और राजनैतिक अखाड़ेबाजी करना रह गया है। रचनात्मक और नैतिक कार्य सरकार पर छोड़ दिया गया है; और सरकारी मशीन, अफसरी दुनिया के बारे में हम आप दोनों जानते हैं। इस प्रकार से कांग्रेस अपनी पुरानी पूंजी को कितने दिन तक संचित रख सकेगी—यह गम्भीर प्रश्न है।

सरकार की प्रमुख संस्था व्यवस्थापिका सभा होती है और वह बहुमत दल द्वारा चलाई जाती है। सरकारी पार्टी अपनी नीति मन्त्री और उनकी मातहत नौकरशाही से कार्यान्वित कराती है। बहुमत दल के पीछे देश में राजनैतिक पार्टी होती है और वह पार्टी जनता में बहुमत प्राप्त करने के लिए मंच और समाचार-पत्रों का सहारा लेती है। अतएव ये सभी चीजें शा
अंग समझे जाते हैं।

यों तो देश और प्रान्त भर में का
नीति के पोषक अनेक अखबार हैं;
प्रान्तीय सरकार का प्रमुख पत्र "
हेराल्ड" समझा जाता है। इसके
दाताओं में पंडित नेहरू और
किदवई हैं; और आज दोनों ही
से बाहर हैं। इस पत्र को श्री रामारा
अपने खून-पसीने से सींचा है; परन्तु
वे भी इससे अलग हैं। वर्तमान सम्पा
श्री चेलापतिराव देखने में आलसी
वस्तुतः बेहद परिश्रमी हैं। आपका अंग्रे
भाषा और उदार तथा राष्ट्रीय भाव
और विचारों पर पूर्ण अधिकार है।
अन्य पत्रों की भांति पन्नों को मन्त्री
कांग्रेसीनेताओं के भाषण, चित्र, स्तुति
वक्तव्यों से काले नहीं किया करते
समय समय पर उनकी आलोचना भी क
हैं। आप हेराल्ड को जनता का प्र
बनाना चाहते हैं। देखना है यह वि
और चेलापतिराव, दोनों का गठ
कब तक चल सकेगा? कांग्रेस के पास
और उर्दू पत्र भी हैं।

* * *

हजरतगंज आज तरक्की पर है
वह शासन का सिंहासन है, साथ ही प्रान्त
व्यापार का अड्डा बना जा रहा है। प्रान्
न्यायालय और दो-चार और प्रान्
दफ्तर कितने दिन और इलाहाबाद
सकेंगे, यह देखना है? हजरतगंज में
रहती है—मोटर गाड़ियों की,
टोपियों की, बनारसी साड़ियों की,
अफसरों की। यूनिवर्सिटी के लड़के
हजरतगंज की जान समझे जाते थे
उनका पलड़ा हलका पड़ गया है।
जगह धनिकों, रईसों, नेताओं और
ने ले ली है। हजरतगंज तरक्की पर
काश कि देश भी हजरत गंज की तरह
बढ़ता! लेकिन कहते हैं ये दोनों
साथ नहीं चल सकती।

राजनीति की दुनिया से कभी
इन्सान ऊब जाता है। खासकर
शासन जिसके सर पर राजनीति
घंटे सवार रहती है। जिन्दा रहने के
वह कुछ समय के लिए इस वातावर
त्राण चाहता है। ऐसा स्थान चाहता है
मनुष्य की स्वार्थी दुनिया से परे हो।
इसीलिए लखनवी आत्माओं अथवा
शासकों ने प्रकृति से आत्मीयता
के लिए सरकारी सिंहासन के पास
बाग और चौड़े मैदान बना दिए हैं।

सिविल वायुयान-विभाग

नीलाम की सूचना

बमरौली हवाई अड्डे (इलाहाबाद एरोड्रम) की सीमा में जो घास है
जिसका विस्तार लगभग ३२३ एकड़ है, तथा आम और जामुन के लगभग
वृक्षों पर फलनेवाले फलों का आम नीलाम एरोड्रम-आफ़िस में ता० २१
१९४८ को १०-३० बजे सुबह होगा।

अधिकतम नीलाम की बोली बोलनेवाले को नीलाम की बिक्री
जाने पर, बोली की कम से कम आधी कीमत जमा करनी होगी। नील
बोली एरोड्रम के कण्ट्रोलर देहली-विभाग, नई दिल्ली द्वारा अन्तिम रूप में
की जायेगी और जिस व्यक्ति की नीलाम की बोली स्वीकार की जायेगी,
रक़म स्वीकृति प्राप्त होने की तारीख से चार दिन के भीतर चुका देनी

घास काटने और उसे स्थानान्तरित करने तथा आम और जामुन
चुनने आदि की शर्तें तथा ठेके का अन्य विवरण एरोड्रम-आफ़िसर, इलाहा
कार्यालय में रविवार को छोड़, किसी भी दिन देखा जा सकता है।

—एरोड्रम-आफ़िसर,
इलाहाबाद

संवाद दाताओं के पत्र

न्दी-साहित्य-सम्मेलन ८ के लिए विभिन्न पारितोषिक

वें हिन्दी-साहित्य - सम्मेलन
के अधिवेशन के अवसर पर
पारितोषिक तथा पुरस्कार
जाते हैं। इस वर्ष उन सबके
र्थ पुस्तकें स्वीकार किए जाने
तिथि सौर वैशाख, ३१, सं०
(तारीख १४ मई सन् १९४८)
पारितोषिक तथा पुरस्कारों के
विवरण नीचे दिये जा रहे हैं।
पारितोषिक तथा सेठ गोविन्द-
सरिया विज्ञान पुरस्कार के अति-
पारितोषिकों तथा पुरस्कारों
उक्त तिथि से १५ मास से अधिक
प्रकाशित रचनाएँ नहीं ली
केवल जीवित लेखकों तथा
की रचनाएँ ही पारितोषिकों
कारों में विचारार्थ स्वीकार
ये सभी पारितोषिक तथा
रचनाओं के सम्मानार्थ
संकलित, संगृहीत या
यों को मौलिक रचना के
जायगा; किन्तु स्वतंत्र
स्थापित करनेवाली
रचना की श्रेणी में
पूरा पारितोषिक या
लेखक को ही मिलेगा।
पारितोषिक तथा सेठ
सरिया विज्ञान पुरस्कार
भेजी जानेवाली पुस्तकें
काल में दो बार तक
है। अन्य पुरस्कारों में
भेजी गई पुस्तकों पर फिर
किया जायगा। विस्तृत
लिए प्रत्येक पारितोषिक
की नियमावली निःशुल्क
द्वारा मँगाई जा सकती
मंगलाप्रसाद पारितोषिक
राम सेकसरिया विज्ञान
प्रत्येक पुस्तक की ८-८
अन्य पारितोषिक अथवा
७-७ प्रतियां उक्त तिथि
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन,
पर आनी चाहिए। हिन्दी-
लेखकों, लेखिकाओं तथा
निवेदन है कि वे अपनी
की कृपा करें।

प्रसाद पारितोषिक (१२००)
षिक इस वर्ष साहित्य के
पर दिया जायगा। दर्शन
उपनिषद्, स्मृति, दर्शन,
और मन-सम्बन्धी
मीमांसा और अध्यात्म-
की गणना की जायगी।

राम सेकसरिया विज्ञान
०) रु० का उक्त पुर-
गणित विषय की वैज्ञानिक
सम्मानार्थ दिया जायगा।
गंत गणित, ज्योतिष,
शिल्प और यन्त्र विज्ञान-
की गणना की जायगी।

महिला पारितोषिक--
उक्त महिला पारितोषिक
लेखिका को उनकी स्वरचित
रचना के सम्मानार्थ।

पारितोषिक--१००) का
बंगाली, उड़िया या
भाषी लेखक या लेखिका
हिन्दी की किसी रचना

रत्नकुमारी पुरस्कार--२५०) का उक्त पुरस्कार हिन्दी के किसी मौलिक नाटक के सम्मानार्थ।

श्री नेमीचंद पुरस्कार--५००) का उक्त पुरस्कार वीररसपूर्ण बाल-साहित्य विषय पर हिन्दी की किसी मौलिक रचना के सम्मानार्थ। बाल-साहित्य के अन्तर्गत वे सभी रचनाएँ गृहीत होंगी, जो देश, धर्म, समाज एवं बालकों के चतुर्दिक विकास और उत्थान को ध्यान में रखकर लिखी गई होंगी।

नारंग पुरस्कार--१००) का उक्त पुरस्कार पंजाब-निवासी किसी हिन्दी कवि या कवयित्री को भारतीय संस्कृति विषय पर उसकी रचित उच्च कोटि की कविता के सम्मानार्थ। कविता कम से कम १०० पंक्तियों की अवश्य होनी चाहिए।

--उदयनारायण तिवारी
एम० ए०, डी० लिट्०,
प्रधान मंत्री

गोलाघाट (आसाम) में मारवाड़ी युवक सम्मेलन का अधिवेशन वन्देमातरम् गायन के साथ आरम्भ हुआ। समाजवादी नेता श्री हरेश्वर गोस्वामी बार-एट-ला ने सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा कि युवकों को इस मंच से राजनैतिक एवं साम्प्रदायिक संगठनों से दूर रहकर सामाजिक संगठनों में भाग लेना चाहिए। स्वागत-मंत्री श्री मदनलाल खेतान ने स्वागत कविता पढ़ी। युवक-सभा की ओर से श्री गोस्वामी जी एवं माननीय सभापति जी को मानपत्र दिया गया। आसामिया बालिकाओं ने स्वागत-गान गाया। पश्चात् श्री राधाकृष्ण खेमका ने सभापति का आसन ग्रहण किया। स्वागताध्यक्ष श्री भगवतीप्रसाद लडिया ने आये हुए अतिथियों का स्वागत करते हुए पतिव्रता सती रानी जयमति एवं वीर कुशल कुँवर की जन्मभूमि तथा शिवसागर जिले के गोलाघाट के इतिहास पर प्रकाश डाला। आपने कहा कि हमारा समाज अन्य समाज के लोगों से शिक्षा-क्षेत्र में बहुत पिछड़ा हुआ है और दुःख है कि हमारे स्त्री-समाज में तो शिक्षा नहीं के बराबर है। हमारा ध्यान विशेषतः शिक्षा की ओर जाना चाहिए। सम्मेलन के अध्यक्ष श्री खेमका जी ने अपने भाषण के दौरान में कहा कि राष्ट्र-पिता बापू की हत्या के बाद देश की स्थिति निरन्तर खराब होती जा रही है। हमें उससे सतर्क रहने की आवश्यकता है। हमें व्यावसायिक नीति में आमूल परिवर्तन करना होगा। श्री वसन्तलाल जी के अपने प्रभावपूर्ण भाषण से नवयुवकों में एक नई जागृति उत्पन्न हुई उससे २८ युवकों ने परदा-प्रथा दूर करने की खुलेआम प्रतिज्ञा की।

गोलाघाट में माननीय श्री ईश्वरदास जालान को श्री गंगाधर बरठाकुर के सभापतित्व में सार्वजनिक अभिनन्दन दिया गया।

महिला सभा की बैठक श्रीमती धापीदेवी खद्दरिया की अध्यक्षता में हुआ। उसमें श्रीमती पद्मादेवी शर्मा, श्रीमती लक्ष्मीदेवी शर्मा, श्री वसन्तलाल मुरारका आदि के भाषण हुए।

खुले अधिवेशन की कार्यवाही माननीय जालान जी के सभापतित्व में आरम्भ हुई। आसाम के खाद्य-मन्त्री माननीय श्री अमियकुमार दास ने प्रधान अतिथि का आसन ग्रहण किया था। आपने आसामिया भाषा में भाषण देते हुए कहा आप पर व्यापारिक समाज के नाते विशेष उत्तरदायित्व है। सभापति जालान ने छोटे से भाषण में कहा कि सरकार के सामने उपस्थित यातायात की कठिनाइयों से ही यहां खाद्य की कमी हो गई है। इस प्रश्न को आम जनता के सहयोग से ही सरकार को हल करना है।

पश्चात् कई महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत हुए, इनमें पूज्य महात्मा गांधी जी की निर्मम हत्या पर घोर शोक प्रकट करते हुए परमात्मा से उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गई। प्रान्तीयता का विरोध, राष्ट्रीय सरकार को बलिष्ठ बनाना, शिक्षा की समुचित व्यवस्था करना, पूर्वी पाकिस्तान में मुसाफिरों के साथ दुर्व्यवहार की निन्दा, पाकिस्तान होकर आनेवाले माल के आवागमन की असुविधा, गोवध का विरोध, सेल्स टैक्स का विरोध, दिन प्रतिदिन बढ़ती हुई चोरी, डकैतियों के लिए गवर्नमेंट से रोक-थाम के लिए अनुरोध, परदा-प्रथा का विरोध आदि कई प्रस्ताव स्वीकृत हुए। आगामी वर्ष के लिए माननीय श्री ईश्वरदास जालान अध्यक्ष, श्री गजानन्द जी जालान कार्यकारी अध्यक्ष, प्रधान मन्त्री--श्री जयदेव खंडेलवाल तथा २५ कार्यकारिणी के सदस्य चुने गये।

--संवाददाता

आगरा में अ० भा० पशु-रक्षा-सम्मेलन की कार्यकारिणी की एक बैठक कार्यवाहक सभापति सेठ अचलसिंह जी एम० एल० ए० की अध्यक्षता में हुई। कई महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत हुए।

निश्चय हुआ कि आगामी अधिवेशन के सभापतित्व के लिए सर्वश्री मत्स्य प्रदेश के राजप्रमुख, राणा साहब धौलपुर, अ० भा० राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) के अध्यक्ष, डा० राजेन्द्रप्रसाद, भारत-सरकार के कृषि-मन्त्री श्री जैरामदास दौलतराम से प्रार्थना की जाय और उनकी स्वीकृति मिलने पर यदि आवश्यक हो तो उनकी सुविधानुसार द्वितीय अधिवेशन की तिथियों में परिवर्तन कर दिया जाय।

--संवाददाता

कलकत्ता श्रमजीवी हिन्दी-पत्रकार संघ का वार्षिक अधिवेशन आगामी मई के प्रथम सप्ताह में करने का निश्चय किया गया है। अधिवेशन की अध्यक्षता करना हिन्दी संसार के सुप्रसिद्ध पत्रकार, राष्ट्रकर्मी एवं युक्तप्रान्तीय सरकार के राजस्व मंत्री श्रीकृष्णदत्त जी पालीवाल ने स्वीकार कर लिया है। अधिवेशन में पत्रकारों की विभिन्न कठिनाइयों, समस्याओं एवं प्रश्नों पर जिनका उन्हें सामना करना है विचार-विमर्श एवं निर्णय किया जायगा। अधिवेशन की सफलता के लिए स्थानीय पत्रकार जी-जान से चेष्टा कर रहे हैं। स्वागत-समिति का गठन शीघ्र ही किया जायेगा। पत्रकार संघ का कार्यालय बंगीय हिन्दी-परिषद्, १५ बंकिम चटर्जी स्ट्रीट, 'अलबर्टहाल' में रखा गया है।

--सूर्यदेव उपाध्याय
'अनुरागी

टिहरी राज्य प्रजामण्डल के प्रधान श्री नेगी ने निम्नलिखित वक्तव्य दिया है--

"टिहरी राज्य को युक्तप्रान्त के गढ़वाल जिले के साथ जोड़े जाने के समाचार को पढ़कर हमें बहुत आश्चर्य हुआ है। देशी राज्य लोक-परिषद् की देख-रेख में प्रजामण्डल और भारत-सरकार के रियासती विभाग के बीच हुई वार्ता के अनुसार राज्य की भावी व्यवस्था के सम्बन्ध में विधान सभा ही फैसला देगी। ऐसी स्थिति में इस प्रकार के अटकल का कोई महत्त्व नहीं। हमारे सामने इस समय उन नंगे-भूखे किसानों को, जो राजाओं के सामन्ती शासन को उखाड़ फेंकने के लिए बहादुरी से लड़े हैं, राहत पहुँचाने की समस्या है।"

--संवाददाता

गुना (ग्वालियर) बापू साहित्य-परिषद् के व्यवस्थापक सूचित करते हैं कि **"बापू-स्मृति-ग्रन्थ"** का प्रकाशन हो रहा है--जिसमें राष्ट्र-पिता बापू की [illegible]त में विशेष रूप से लिखी गई--सर्वश्री मैथिलीशरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' डा० रामकुमार वर्मा, 'पन्त', 'बच्चन' स्वर्गीय सुभद्राकुमारी चौहान, सियारामशरण गुप्त, सोहनलाल द्विवेदी, सुमित्राकुमारी सिनहा, 'मिलिन्द', 'प्रेमी', 'सुमन', श्रीनारायण चतुर्वेदी, हरिशंकर शर्मा कविरत्न, ठाकुर गोपालशरणसिंह, 'अंचल', 'शेष', चिरंजीव हरिश्चन्द्र वर्मा, डाक्टर राजेन्द्रनारायण शर्मा और बेधड़क बनारसी आदि के अतिरिक्त हिन्दी के अन्य १०० कवियों की कविताएँ संग्रहीत हैं।

ग्रन्थ का समस्त लाभ केन्द्र के गांधी-स्मारक-कोष को अर्पित किया जा रहा है।

—नारायण श्यामराव
चिताम्बरे

विवाहित जीवन
को सुखमय बनानेवाली पुस्तकें
कोकशास्त्र (सचित्र) १॥)
८४ आसन (सचित्र) १॥)
१०० चुम्बन (सचित्र) १॥)
तीनों पुस्तकें एक साथ लेने पर ३॥)
पोस्टेज ॥) अलग।
पता—सेठ एण्ड को० (१)
छत्ताबाजार, मथुरा

आधुनिक हिन्दी-साहित्य का सर्वश्रेष्ठ गीति-काव्य
कवि और छवि
लेखक, सुप्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव
कविश्री बालकृष्ण राव आधुनिक हिन्दी-जगत् के चोटी के कलाकार और सर्वश्रेष्ठ गीतिकार हैं। 'कवि और छवि' आपकी नवीनतम गीति-काव्यों का सर्वश्रेष्ठ संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अंतर्द्वंद्व से परिपूर्ण तो हैं ही साथ ही सरस और हृदय पर मधुर प्रभाव और छाप छोड़ जानेवाले हैं। हृदय को तन्मय तथा गहन अनुभूति से सराबोर कर देनेवाले ऐसे गीत हिन्दी में आज लिखे ही नहीं जा रहे हैं। 'कवि और छवि' में संग्रहीत सभी गीत बिलकुल नवीन हैं, पढ़ते पढ़ते हृदय उद्वेलित हो उठता है। छपाई-सफाई नयनाभिराम, सचित्र और सजिल्द---मूल्य केवल २) रु०।
मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

स्वास्थ्य और व्यायाम

सादा भोजन

शारीरिक स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त उपयोगी है

लेखक, पंडित छेदीलाल त्रिपाठी, वैद्य

स्वास्थ्य और भोजन से बहुत निकटतम सम्बन्ध है। भोजन के विषय में प्रायः लोग कम जानते हैं और जानने की इच्छा भी नहीं करते। भोजन प्रायः तीन प्रकार के होते हैं—फलाहार, अन्नाहार और मांसाहार। इसमें सन्देह नहीं कि फलाहार शरीर के लिए उत्तम कोटि का भोजन है। फलों में सबसे अधिक पोषण-शक्ति होती है। यह हलके और रक्तवर्धक होते हैं। फलाहारी में तेजी और काम करने की शक्ति अधिक होती है और सादगी के विचार से भी फलाहार श्रेष्ठ है; किन्तु यह सबको पर्याप्त भी हो सकता है। यह प्रश्न कठिन है, लेकिन मौसमी फल तो हर कोई सुविधापूर्वक खा ही सकता है। एक न एक फल हर मौसम में सस्ता रहता है। उसके बाद अन्नाहार पर विचार करना है। फलाहार के पश्चात् अन्नाहार का ही स्थान है, इसमें रोटी, दाल, चावल, साग और कच्ची मूली नीबू आदि की गिनती है। थोड़ा-सा दूध भी मिल जाय तो अच्छा है। इस प्रकार के भोजन में शरीर के पोषक तत्त्व तो मौजूद हैं, साथ ही इस प्रकार के भोजन के साथ मिर्चा, तेल, खटाई अधिक मात्रा में न होना चाहिए। यह चीजें दूसरी सात्विक चीजों का प्रभाव समाप्त नहीं तो क्षीण तो कर ही देती हैं। मिर्चा, तेल, खटाई और मांसाहार का प्रभाव एक-सा ही समझना चाहिए।

भोजन सादा होना चाहिए; अर्थात् हमें जीवित रहने के लिए भोजन करना चाहिए। जीभ के स्वाद के लिए कदापि नहीं, साथ ही भोजन कम करना चाहिए। अधिक भोजन करनेवाला आदमी आयुर्वेद के अनुसार वीर्य की रक्षा कभी नहीं कर सकता। वैद्यों के मत से एक आदमी को एक दिन में ३९ तोला भोजन करना चाहिए। हलका और सादा भोजन करनेवाला भी महात्मा है। जो कुछ हम खाते हैं उससे रक्त, मज्जा और वीर्य भी उसी प्रकार का तैयार होता है। अधिक कड़ुआ भोजन शरीर में तामस उत्पन्न करता है। ब्रह्मचारी पुरुष के लिए तो तामसी भोजन का ध्यान तक न करना चाहिए। साथ ही अधिक खाना भी न चाहिए। अधिक भोजन रोगों का कारण बनता है, आयुर्वेद पेट को ही सब रोगों का मूल मानता है और भोजन का स्थान पेट ही है; इसलिए यदि हम भोजन की व्यवस्था को सुधार लें तो हमारा शरीर सदैव नीरोग और स्वस्थ रह सकता है।

प्राकृतिक आहार यदि मनुष्य भी सीख ले तो वह भी पशु-पक्षियों की तरह तेज बन सकता है। कच्चे और हरे साग बहुत गुणकारी होते हैं। साग अथवा कोई चीज जितना ही अधिक पकाई जाती है, उतना ही उसका गुण जाता रहता है। सादा भोजन करनेवाला उसी में समस्त स्वादों का अनुभव करता है। यह तभी सम्भव है जब आप अपनी सच्ची भूख लगने पर भोजन करें। भूख भी दो प्रकार की होती है। सच्ची भूख उस अवस्था में जाननी चाहिए, जब मुँह में लार अधिक आने लगे। किसी चीज को देखकर मुंह में पानी आ जाय, तभी समझना चाहिए कि यह सच्ची भूख है। जो लोग दिन में इधर-उधर की बाजारू चीजें खाते रहते हैं वे कभी भी सच्ची भूख का अनुभव नहीं कर पाते और न उन्हें सादा भोजन ही अच्छा लग सकता है। आयुर्वेद में कहा भी गया है—

"आहार शुद्धो सत्व शुद्धिः
सत्व शुद्धौध्रुवास्मृतः।"

अर्थात् आहार की शक्ति सत्व उत्पन्न करती है। शुद्ध सत्व से बुद्धि निर्मल और स्थिर बन जाती है" इसके अतिरिक्त विद्वानों ने तो शरीर का सारा कारोबार भोजन पर भी निर्भर हुआ कहा है, लिखा भी है—

'as a man eateth so he becometh'

अर्थात् जैसा जो भोजन करता है वैसा ही वह बन जाता है। संसार में जिन्हें वीर्यवान बनना है उन्हें सबसे पहले अपनी जीभ को जीतना चाहिए। गांधी जी ने भी लिखा है कि "स्वादेन्द्रिय पर अधिकार पा लेने के बाद ब्रह्मचर्य का पालन सरल हो जाता है।" भोजन करने में भी कुछ बातों का ध्यान आवश्यक है। भोजन निश्चिन्त होकर खूब कुचल-कुचलकर करना चाहिए। कुछ लोग भोजन करते जाते हैं, बातचीत भी करते हैं, हँसते भी हैं। इस प्रकार की क्रियाएँ हमारी मानसिक स्थिति को केन्द्रीभूत न होने देंगी। भोजन अधकुचला ही पेट के अन्दर जावेगा। परिणाम यह होगा कि दांतों का काम फिर पेट को करना पड़ेगा; इसी कारण पेट में दर्द, ऐंठन और डकारों की अधिकता भी पैदा हो जाती है।

दूध भी एक आहार है। दूध लेने में भी यह ध्यान रखना चाहिए कि वह एक ही जानवर का है। बहुत से लोग गाय, भैंस का दूध एक साथ मिलाकर पी जाते हैं। यह रीति लाभ के बजाय हानि पहुँचा सकती है। दूध सदैव एक ही जानवर का पीना चाहिए। धारोष्ण दूध अधिक गुणकारी होता है। अधिक देर का रखा हुआ दूध बिना गरम किये कभी न पीना चाहिए। डाक्टरों के अनुसार दूध दुहने के पश्चात् करीब पांच मिनट के बाद उसमें अनगिनती कीटाणु पैदा हो जाते हैं, इसलिए इस काम में बहुत सतर्कता रखनी चाहिए। बाजार का दूध प्रायः अच्छा नहीं होता। गांधी जी के अनुसार तो ब्रह्मचारी को दूध न लेना चाहिए; इसका कारण देते हुए उन्होंने कहा है कि यह चिकना होता है। चिकने पदार्थ वीर्य को धारण करने में सहायता नहीं देते; किन्तु ब्रह्मचारी को दूध का परित्याग पूर्ण रूप से न करना चाहिए। दूध की गिनती राजसी भोजन में है। प्रातःकाल मिठाई और दूसरी चीजें न खाकर यदि दूध ही पिया जाय तो बहुत लाभ हो सकता है।

भोजन शास्त्रीय नियम से दो बार करना चाहिए। बहुत गरम-गरम भोजन न करना चाहिए। इस प्रकार का भोजन वीर्य के लिए हानिकर है। जहां तक हो भोजन ताजा ही करना चाहिए। भोजन करने के पश्चात् सौ कदम चलना चाहिए और कम से कम आध घंटे आराम करना चाहिए। इन्हीं नियमों के द्वारा भोजन करने से मनुष्य सदैव स्वस्थ रह सकता है। भोजन के लिए हर मनुष्य को विचार करना चाहिए।

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ० ए०, बी० ए० पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से और होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ्त मँगावें। पता :—
इंटर नैशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

इधर उधर की

रसायन और पेट्रोल

मैनचेस्टर में एक नई योजना की गई है, जिसके द्वारा वायुयान, जलयान, और मोटर इत्यादि नवीन रूप से काम में लाये जा सकते हैं, यह खोज मैनचेस्टर के एक वैज्ञानिक ने की है, उसकी विचारधारा और प्रयोग दूसरी खोजों में भी विशेष सहायक सिद्ध हुए हैं। रसायन के द्वारा पेट्रोल का महत्त्व तालाबों के जल की तरह साधारण हो गया है, जब पेट्रोल का प्रयोग पम्पों के द्वारा किया गया था तभी वैज्ञानिक ने इसकी उपयोगिता का महत्त्व निकाला था। पेट्रोल से उत्पन्न आग दूसरे यन्त्रों में पहुँचाई जा सकती है, यही प्रयोग महत्त्वपूर्ण है।

टैंक हल के रूप में

विलायत के कृषि-प्रधान मिस्टर आर० एच० क्राफर्ड (Mr. R.H. Crawford) ने एक टैंक को जमीन खोदने का यन्त्र घोषित किया है। लन्दन में युद्ध-सम्बन्धी सामान इसी प्रकार कृषि के काम में लाया जा रहा है। सबसे पहले टैंक के वजन में कमी लाई गई, जिससे यह भूमि पर चलकर उसकी सतह को उलट सके, फिर टैंक में एक बड़ा हल लगाया गया, जो २० इंच की गहराई तक भूमि को खोद सकता है, इस प्रकार यह टैंक इस रूप में कृषि का एक औजार बन गया।

जवान बनिए
२४ घंटे में
पार्कर एण्ड डेविस द्वारा
'ओटोजन' सजीवता और स्फूर्ति में
घंटे में ही आश्चर्यजनक वृद्धि करता
यदि आप शक्ति की कमी, क्षीण
और शरीर-शून्यता, अशुद्ध रक्त,
चमड़ी, खिन्नता, अनिद्रा, घुमनी,
अथवा शारीरिक थकावट आदि से
हैं, तो आपके लिए यह नवीन
इससे एक सप्ताह में ही अच्छी
वजन में ५ से १० पौंड तक वृद्धि हो
है। आपके गालों पर ललामी आ
और आपकी मुद्रा शत-प्रतिशत
जाती है। आपके मुख पर वैसी ही
और चमक आ जायेगी जैसी कि
में थी जब कि आपकी चमड़ी ताजी
मुलायम थी। 'ओटोजन' आपकी
सुधार करता, आंखों में दीप्ति
गालों और ओठों पर गुलाबी चमक
है। इँगलैंड में हज़ारों व्यक्तियों ने
परीक्षा और सराहना की है और
भारतवर्ष में भी यह प्राप्य है।
सिद्ध करने पर ५०० पौंड दिये
हिदायतों के साथ प्रति डिब्बे की
५) पांच रुपये।
ओटोजन पोस्टबाक्स
बम्बई
जवानी और शक्ति के लि

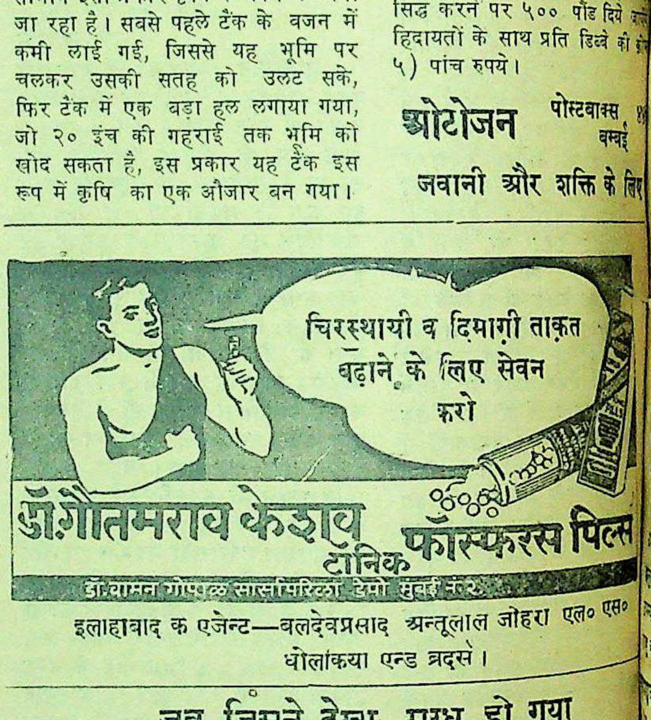
चिरस्थायी व दिमाग़ी ताक़त बढ़ाने के लिए सेवन करो
डॉ. गौतमराव केशव
टॉनिक फॉस्फरस पिल्स
डॉ. वामन गोपाळ सासमिरिका डेपो मुंबई नं. २

इलाहाबाद क एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जोहरा एल० एस० धोलाकिया एन्ड ब्रदर्स।

जब जिसने देखा, मुग्ध हो गया
मंजरी
श्रेष्ठ कथाकारों की सरस कहानियाँ और कथा-साहित्य पर गम्भीर
आलोचनात्मक लेख आकर्षक मुद्रण-विन्यास के साथ प्रस्तुत करनेवाली
सांस्कृतिक मनोरंजन की एकमात्र कहानी-पत्रिका है।
एक सम्मति
प्रोफेसर शिवपूजन सहाय, भूतपूर्व सम्पादक 'हिमालय'—'मंजरी' के
देखे और तीनों को देखकर यही धारणा हुई कि कथा-साहित्य की सबसे श्रे
निधि-पत्रिका 'मंजरी' ही है। छपाई सफाई और सजावट के लिए तो इंडियन
यशस्वी नाम ही प्रमाण है, सम्पादन-कौशल में आपने भी अपनी कला का
प्रदर्शन किया है। साज-सज्जा और सामग्री-संकलन में सुरुचि का समा
सराहनीय है। कृपया विदेशों के कथा-साहित्य का ज्ञान भी हिन्दी पाठकों को
भिन्न भाषाओं की कहानियाँ देकर आप हिन्दी पाठकों को काफी तृप्त कर रहे
से पाठकों ने यह मत व्यक्त किया है कि आपकी पत्रिका ही सब कहानी
में श्रेष्ठ एवं उपयोगी है। मैं आपकी आरम्भिक सफलता पर आपको
बधाइयाँ देता हूँ।
× × ×
प्रतिमास 'मंजरी' पढ़कर आप भी अपना और अपने परिवार का
मनोरंजन कीजिए।
वार्षिक मूल्य ६) छः रुपये
प्रति अङ्क आठ आ
सम्पादक :
[illegible] चतुर्वेदी
प्रकाशक :
इंडियन प्रेस लि०,

हमारी कुछ चुनी हुई पुस्तकें

ी चौधरानी—अनुवादक, श्रीयुत पण्डित
कान्त त्रिपाठी, 'निराला'। मूल-लेखक स्वर्गीय
बाबू ने इस उपन्यास में बंगाल की उस समय
अवस्था का चित्रण किया है, जब कि मुसलमानों
शक्ति का अवसान हो चुका था और अँगरेज़ों
प्रभुता का अभ्युदय हो रहा था। आदि से अन्त
पुस्तक रोचक और शिक्षाप्रद है। मूल्य १।-)

ठ का विल—मूल लेखक, स्वर्गीय डा०
न्द्र चट्टोपाध्याय। यह उपन्यास है तो छोटा
तु बहुत ही भावपूर्ण है। मानव-हृदय की स्वाभा-
ता इसके प्रत्येक पात्र से प्रकट हो रही है। शरद्
उपदेश देने की दृष्टि से रचना नहीं करते;
उपदेश अज्ञात रूप से अपना काम किये बिना
रहता है। यह बात उनके इस उपन्यास में भी
नहीं हो सकी। मूल्य ॥≈)।

त दिशा की ओर—अनुवादक, पंडित
दत्त मिश्र। यह श्री सौरीन्द्रमोहन मुखोपाध्याय
देशेर यात्री' नामक उपन्यास का अनुवाद
इस उपन्यास में हिन्दू-समाज की वैवाहिक
पर बहुत ही रोचक ढंग से प्रकाश डाला
है। मूल्य १)।

णी—लेखक, श्रीयुत भगवतीप्रसाद वाजपेयी।
के प्रसिद्ध कहानी-लेखक श्री भगवती-
वाजपेयी की चौदह कहानियों का संग्रह है।
सम्मिलित की गई सभी कहानियाँ एक
है और इनमें पीड़ित मानवता के
जागरण की कलापूर्ण कथायें लिपिबद्ध
मूल्य केवल २)।

पथिक—अनुवादक, पण्डित सुन्दर-
और पण्डित ठाकुरदत्त मिश्र। श्री
वन्द्योपाध्याय-लिखित इस उपन्यास का
में अच्छा सम्मान है। हिन्दी के
पाठकों की प्रेरणा से ही इसका हिन्दी
हमने पहली बार प्रकाशित कराया है।
की रोचकता और महत्ता के लिए चारुचन्द्र
नाम ही पर्याप्त है। मूल्य २॥≈)।

ान्त का विल—अनुवादक, श्री सूर्य-
त्रिपाठी, निराला। यह बंकिम बाबू का एक
लोकप्रिय उपन्यास है। एक भारतीय पतिव्रता
सुन्दर चित्र इस उपन्यास में खींचा गया
अन्यत्र न मिलेगा। मूल्य १)।

र शान्ति—अनुवादक, श्री रुद्रनारायण
। टॉलस्टॉय के 'वार एण्ड पीस' नामक
उपन्यास का यह हिन्दी-रूपान्तर है।
ने मानव-जीवन का सम्पूर्ण चित्र, अपने
की तसवीर और राष्ट्रों की खींच-तान
चित्रित किया है और जीवन तथा मृत्यु
उद्घाटन किया है। मूल्य ५।-)।

हला—अनुवादक, श्रीयुत पण्डित
त्रिपाठी, 'निराला'। यह बंकिम बाबू की
ला का हिन्दी-रूपान्तर है। कथानक की
तथा वर्णन की अपूर्वता के कारण यह
इतना लोकप्रिय हो चुका है कि इसका नये
परिचय देने की आवश्यकता नहीं है।
कुण्डला के हिन्दी में आज तक जितने भी
अनुवाद प्रकाशित हुए हैं, यह अनुवाद उन सबसे बहुत सुन्दर हुआ है। मूल्य १॥)।

भक्त जयदेव—पण्डित गौरीशंकर मिश्र बी० ए० एल-एल० बी० लिखित इस उपन्यास में 'हम भक्तन के भक्त हमारे' का सुन्दरता-पूर्वक प्रदर्शन हुआ है। मूल्य १॥)

शनि की दशा—अनुवादक पण्डित ठाकुरदत्त मिश्र। श्रीमती काञ्चनमाला देवी के 'शनिर दशा' नामक बँगला उपन्यास का यह अनुवाद है। लेखिका महोदया ने उपन्यास की नायिका के चरित्र में जिस मधुरता और महिमा का समावेश किया है, वह विश्व के महिला-समाज में हिन्दू-महिलाओं को गौरवपूर्ण पद दिलाने के लिए सर्वथा उपयुक्त है। मूल्य २)

धोखा-धड़ी—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। यह बँगला के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार बाबू चारुचन्द्र वन्द्योपाध्याय के धोखार टाटि नामक उपन्यास का अनुवाद है। सीधे-सादे और उदार-हृदय व्यक्ति कृत्रिम सौजन्य, सहानुभूति और विनय प्रदर्शित करनेवालों के मायाजाल के शिकार होकर किस प्रकार अकारण ही अगणित दुःख-क्लेश सहन करने के लिए बाध्य हो जाते हैं, यही इस उपन्यास का विषय है। मूल्य १॥≈)।

रिक्ता—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। श्री नीहारबाला देवी के इस उपन्यास में पति-प्रेम वंचिता नारी का ऐसा सजीव और भावपूर्ण चित्र अंकित हुआ है कि पढ़ते-पढ़ते हृदय द्रवित हो जाता है। ऐसे भाव-पूर्ण उपन्यास आपके पढ़ने में कम आये होंगे। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-)।

श्रीकान्त—(प्रथम और द्वितीय भाग)—अनुवादक, श्री रूपनारायण पाण्डेय। 'श्रीकान्त' शरद् बाबू का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना गया है। इसमें शरद् बाबू की अमर लेखनी ने उनके कलाकार का मंजा और सधा हुआ रूप चित्रित किया है, जो अत्यन्त मनोरम है। प्रत्येक भाग का मूल्य २)।

ब्राह्मण की बेटी—मूल लेखक, श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक, पंडित रूपनारायण पाण्डेय। शरद् बाबू भारत के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास-लेखक माने जाते हैं। उनका यह उपन्यास लोक-प्रियता और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मूल्य सजिल्द पुस्तक का १।-)।

आनन्दमठ—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। मुसलमानों और अँगरेज़ों को हिन्दुस्तान से बाहर करने के लिए, बंगाल में वैष्णवों ने जो विद्रोह किया था, उसी का इस उपन्यास में उपन्यास-सम्राट् श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने बड़ी ख़ूबी से वर्णन किया है। ऐसा सुन्दर चित्रण इस उपन्यास में है कि पढ़कर मातृ-भूमि के लिए दिल फड़क उठता है। मूल्य १।-)।

रजनी—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। यह उपन्यास-सम्राट् श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का एक करुणापूर्ण अद्वितीय उपन्यास है। चमत्कारपूर्ण मनोवैज्ञानिक कहानी इस उपन्यास की एक ऐसी ख़ूबी है कि जिसके कारण पुस्तक पढ़ने का मोह संवरण नहीं किया जा सकता। मूल्य ॥≈)।

संसार की प्रसिद्ध कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत शमशेर बहादुरसिंह, बी० ए०। इस पुस्तक में योरप के संसार-प्रसिद्ध कलाकारों की चुनी हुई कुछ कहानियाँ संगृहीत की गई हैं। ये सभी कहानियाँ बहुत ही कलापूर्ण और मनोरंजक हैं। यदि आपको योरप के कथा-साहित्य की बानगी लेनी हो, तो इस पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य १)।

मोपासाँ की चुनी हुई कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत गोपीनाथ जी क़ानूनगो। इस पुस्तक में मोपासाँ की चुनी हुई ग्यारह कहानियों का संग्रह किया गया है। मोपासाँ की रचनाओं की बानगी लेने के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य १)।

व्रजनाथ का विवाह—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। आश्चर्यमयी घटनाओं से परिपूर्ण यह सामाजिक उपन्यास पढ़ने में ऐसा रोचक है कि एक बार आरम्भ करने पर फिर बिना समाप्त किये चैन नहीं पड़ता. मूल्य १।-)

स्काटलैंड-यार्ड की जासूस स्त्री—यह पुस्तक लेडी मॉली की ६ जासूसी कहानियों का संग्रह है। इस पुस्तक की एक-एक कहानी इतनी मनोरंजक और कौतूहलवर्द्धक है कि आप इस पुस्तक को पूरा पढ़े बिना चैन नहीं पा सकते। लेडी मॉली के जितने कहानी-संग्रह अब तक प्रकाशित हुए हैं, यह उन सबसे अच्छा है। मूल्य ॥।-)।

द्वन्द्व—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। यह श्रीमती सरोजकुमारी देवी नामक बंगला की एक प्रसिद्ध उपन्यास-लेखिका की इसी नाम की रचना का हिन्दी-अनुवाद है। इसमें मानव हृदय के अन्तर्द्वन्द्व तथा उसके कारण उत्पन्न होनेवाली अशान्ति का बहुत ही उत्तमतापूर्वक विश्लेषण किया गया है। यह उपन्यास आदि से अन्त तक समस्यामय घटनाओं से परिपूर्ण है और इसका कोई भी ऐसा अंश नहीं है जिसमें सरसता का अभाव हो। मूल्य २॥≈)

जीवन-क्रान्ति—लेखक, पंडित गौरीशंकर मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी०। अनुभवी तथा विद्वान लेखक ने इस उपन्यास में सेठ-साहूकारों तथा बड़े आदमी कहे जानेवाले व्यक्तियों की नर-पिशाचिता, पुलिस तथा अन्य अधिकारियों के हथकण्डों और धन के लाभ से निरपराधों को अपराधी ठहराकर कारागार की नारकीय यातना भोगने के लिए विवश करने के माया-जाल का बहुत ही आकर्षक शैली में वर्णन किया है। उपन्यास की एक-एक पंक्ति ओजपूर्ण और हृदय में घर कर लेनेवाली है। मूल्य २॥≈)।

प्रतिशोध—लेखक, पंडित उमेशचन्द्र मिश्र। इस उपन्यास में प्रोफ़ेसर भारद्वाज नामक एक वैज्ञानिक षड्यन्त्रकारी की रहस्यपूर्ण कार्यवाहियों का वर्णन बड़े रोचक ढंग से किया गया है। इसे पढ़ते-पढ़ते आप ऐसे तल्लीन हो जायँगे कि बिना समाप्त किये पुस्तक हाथ से न छूटेगी। मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

मुफ़्त

युवको ! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीवन फीका हो चुका हो तो भारत भर में सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त रोग विशेषज्ञ कैविराज ब्रह्मसरूप बी० ए० लाहौरवाले फतेहपुरा (D.A.) देहली से मशविरा (सम्मति) मुफ्त लेकर अपना जीवन सुधार लें।

एलाइड लाउडस्पीकर पर
इत्मिनान रखिये
ब्याह
मेले
जलसे
सरकस
तथा
हर मौके पर इस्तेमाल कीजिये
खरीदिये या किराये पर
लीजिये
एलाइड एलेक्ट्रिक एण्ड
रेडियो कारपोरेशन
हज़रतगंज कैनिंग रोड
लखनऊ एलाहाबाद
RAJ

५०००) रुपये पुरस्कार

एक आश्चर्यमय आविष्कार

जादू की अँगूठी

यह अँगूठा जादू और मेस्मेरिज्म की शक्ति की सहायता से तैयार की गई है। यह आश्चर्य के काम करती है। जो कोई इस अँगूठा को पहनेगा, वह किसी भी उद्देश्य में, वह कितना ही कठिन और दुःसाध्य हो, सफल होगा। यह आपकी सब प्रकार के संकटों या रोगों से रक्षा करेगी। ग्रहों का कोई बुरा प्रभाव नहीं हो सकता। इस अँगूठा का पहननेवाला किसी भी व्यक्ति (पुरुष या स्त्री) पर वह कितना ही कठोर हृदयवाला हो, अपना पूरा नियंत्रण रखेगा। यही नहीं, वह अत्यंत विनीत बन जायगा और, अनुपस्थित से अपने को दुःखी अनुभव करेगा। आप प्रेम, मुकदमेबाजी और नौकरी में सफल होंगे और बहुत-सा धन प्राप्त करेंगे। संक्षेप में, अँगूठी शरीररक्षक का काम देगा। एक बार आजमाइए और ठीक पहली रात को इसके आश्चर्यमय परिणाम देखिए।

मूल्य एक अँगूठी २ रु०। तीन अँगूठी ५ रु०। पैकिंग और पोस्टेज अतिरिक्त।

श्री शंकर भण्डार
पोस्टबाक्स २४३, कानपूर

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्य संजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५।।=), डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

साधनमाला—मंत्र, तं
शक्ति-उ
सम्बन्धी हिन्दी में अकेली मासिक
माला। वार्षिक मूल्य ८)। एक
कल्याण-मन्दिर, कटरा, प्र

१८६६
नीलगिरि
मो. खांडालेकर बंधु

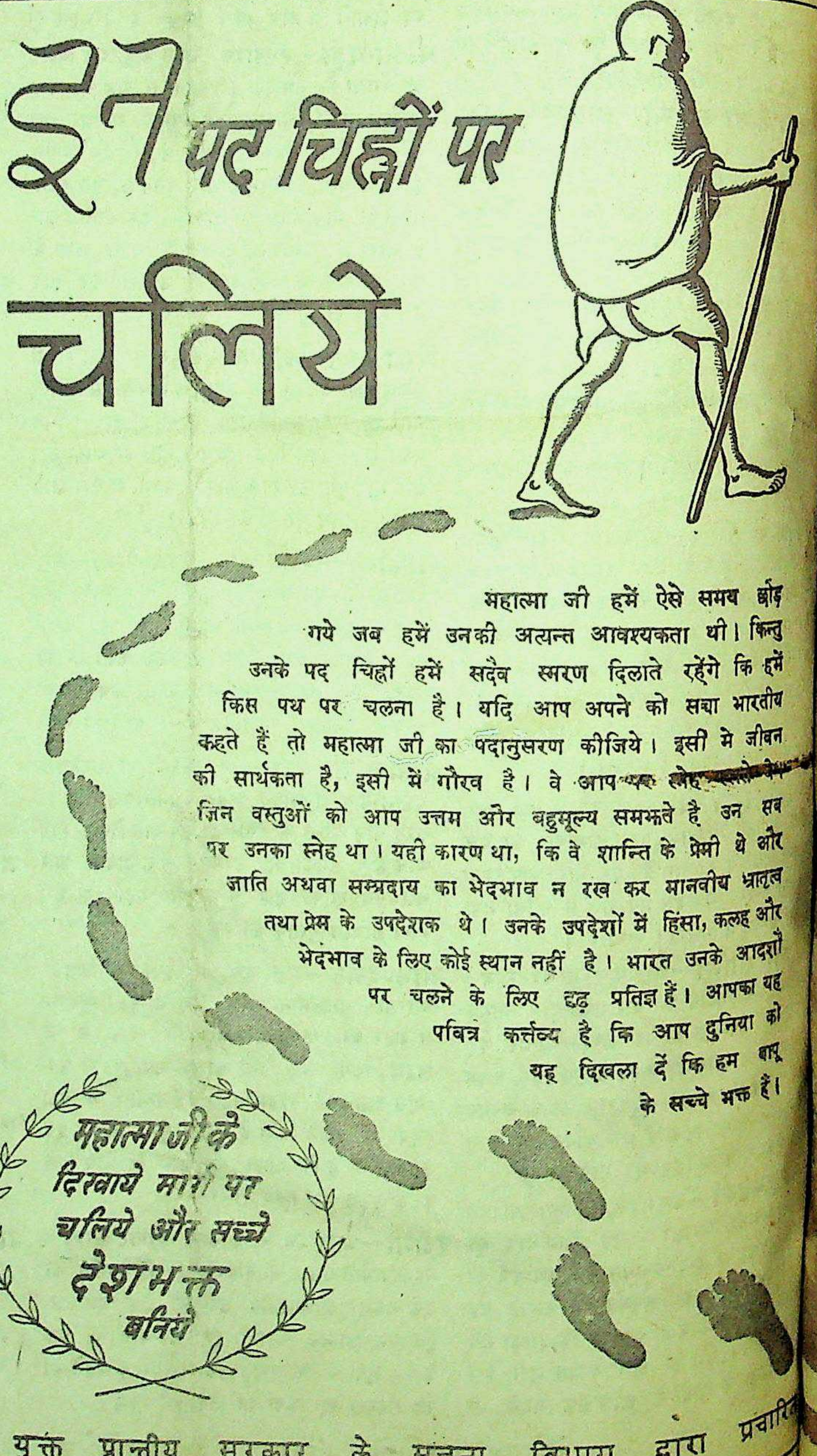
इन पद चिह्नों पर
चलिये
महात्मा जी के
दिखाये मार्ग पर
चलिये और सच्चे
देशभक्त
बनिये

महात्मा जी हमें ऐसे समय छोड़ गये जब हमें उनकी अत्यन्त आवश्यकता थी। किन्तु उनके पद चिह्नों हमें सदैव स्मरण दिलाते रहेंगे कि हमें किस पथ पर चलना है। यदि आप अपने को सच्चा भारतीय कहते हैं तो महात्मा जी का पदानुसरण कीजिये। इसी मे जीवन की सार्थकता है, इसी में गौरव है। वे आप [illegible] जिन वस्तुओं को आप उत्तम और बहुमूल्य समझते है उन सब पर उनका स्नेह था। यही कारण था, कि वे शान्ति के प्रेमी थे और जाति अथवा सम्प्रदाय का भेदभाव न रख कर मानवीय भ्रातृत्व तथा प्रेम के उपदेशक थे। उनके उपदेशों में हिंसा, कलह और भेदभाव के लिए कोई स्थान नहीं है। भारत उनके आदर्शों पर चलने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ हैं। आपका यह पवित्र कर्त्तव्य है कि आप दुनिया को यह दिखला दें कि हम बापू के सच्चे भक्त हैं।

युक्त प्रान्तीय सरकार के सूचना विभाग द्वारा प्रचारि

S.A.A.

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद

सचित्र
साप्ताहिक
क मूल्य ७॥)
ति संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

२ मई, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 2nd May, 1948

रियासतों में नया परिवर्तन
औद्योगिक महत्त्व क्यों ?

हिन्दी भाषाभाषी
[illegible]
मूल्य २ आना

मज़दूरों का मई दिवस क्या है ?
राष्ट्र-संघ का व्याधिग्रस्त शरीर

हमारी विविध विषय की उत्तमोत्तम पुस्तकें

हिन्दी साहित्य—यह हिन्दी साहित्य का परिवर्द्धित और परिमार्जित संस्करण है। पहले की दो आवृत्तियों में यह हिन्दी भाषा और साहित्य के नाम से प्रकाशित हुआ था, किन्तु अब इसे स्वतन्त्र रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। कवियों के विषय में जो नये अनुसंधान हुए हैं उन सबका इसमें समावेश किया गया है। साहित्यिक स्थिति के वर्णन में भी आवश्यक परिवर्तन किये गये हैं। हिन्दी साहित्य के प्रत्येक विद्यार्थी को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ४) चार रुपये।

काव्यकला—साहित्यालोचन का यह संक्षिप्त संस्करण है। लोगों का कथन है कि इस नवीन रूप में इस पुस्तक का उपयोग ऊँची श्रेणी के विद्यार्थी सफलतापूर्वक कर सकते हैं। इसमें साहित्य-शास्त्र के सभी अंगोपांगों का विवेचन तो है किन्तु साथ ही वे अंश निकाल दिये गये हैं जो जटिल और खंडन-मंडनात्मक हैं। इसके संकलनकार भी लेखक के पुत्र श्री गोपाललाल खन्ना हैं। मूल्य २) दो रुपये।

चिन्तामणि--(पहला भाग) लेखक, आचार्य पंडित रामचन्द्रजी शुक्ल। इस पुस्तक में आचार्य शुक्ल जी ने भिन्न-भिन्न विषयों पर लिखे गये अपने सत्रह निबन्धों का संग्रह किया है। ये सभी निबन्ध बहुत ही गंभीर और अध्ययनपूर्ण हैं, जिनके द्वारा मनुष्य की विभिन्न प्रकार की आन्तरिक भावनाओं पर आलोचनात्मक ढंग से प्रकाश डाला गया है। इस रचना पर मंगलाप्रसाद पारितोषिक मिल चुका है। मूल्य २) दो रुपये।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ---लेखक, पंडित उमेशचन्द्र मिश्र। इस पुस्तक में विश्वकवि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर की प्रामाणिक जीवनी और उनकी समस्त कृतियों--कविता-संग्रह, नाटक-नाटिका, कहानियाँ उपन्यास, यात्रा-वर्णन, विज्ञान के ग्रंथ, निबन्ध, साहित्यिक समालोचना, चित्रकला आदि--का विवेचनात्मक परिचय दिया गया है। उदाहरणों में कवि की प्रायः समस्त सुप्रसिद्ध और चुनी हुई रचनायें आ गई हैं। फुटनोट में उनके सरल अर्थ दिये गये हैं। इसके द्वारा आप रवीन्द्रनाथ और उनकी काव्य-कृतियों का पूरा-पूरा परिचय प्राप्त कर सकते हैं। विश्वभारती (शान्तिनिकेतन) के विद्वानों ने भी इसकी प्रशंसा की है। मूल्य केवल ५) पाँच रुपये।

द्विवेदी मीमांसा--लेखक, श्रीयुत प्रेमनारायण टण्डन। हिन्दी के नवीन युग की धाराओं और प्रवृत्तियों के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। साधारण पाठकों के अतिरिक्त सम्मेलन के परीक्षार्थियों व विश्वविद्यालयों के छात्रों के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य २) दो रुपये।

पं० शान्तिप्रिय द्विवेदी की कुछ पुस्तकें

कवि और काव्य—श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी ने काव्य के गुण-दोष से सम्बन्ध रखनेवाले कितने ही उपयोगी विषयों का इसमें विशद्‌रूप से विवेचन किया है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

संचारिणी—लेखक, श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी। यह श्रेष्ठ रचना अभी अभी पाठकों के सामने आई है। इसमें भक्ति-काल से लेकर आज के संक्रांति-काल तक की साहित्यिक चेतनाओं का मर्म स्पर्श है। मूल्य २) दो रुपये।

युग और साहित्य--लेखक, श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी। 'युग और साहित्य' भी हिन्दी-निबन्धों का एक आदर्श उपस्थित करती है। इसमें १३ मौलिक निबंध हैं, जिन्हें विद्वानों ने बहुत पसन्द किया है। मूल्य २।।≡) दो रुपये ग्यारह आने।

देवपुरस्कार-विजेता हरदयालुसिंह की कुछ व्रजकाव्य की समीक्षायें

देवदर्शन--देवपुरस्कार - विजेता श्री हरदयालुसिंह लिखित व्रजकाव्य समीक्षाएँ--इसमें व्रजभाषा के प्रख्यात कवि देव की जीवनी और उनके समस्त काव्यों का आलोचनात्मक परिचय दिया गया है। व्रजकाव्य के प्रेमियों के अतिरिक्त साहित्य के विद्यार्थियों के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

पूर्ण-पराग--इसमें व्रजभाषा के प्रसिद्ध आधुनिक कवि श्री देवीप्रसाद 'पूर्ण' की जीवनी और उनके काव्य का समालोचनात्मक परिचय है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मतिराम-मकरन्द--इसमें काव्यालोचन के साथ-साथ कवि मतिराम के ३ प्रसिद्ध ग्रंथों--मतिराम सतसई, ललित-ललाम और रसराज का संक्षिप्त सरस संग्रह भी कर दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

विहारी-विभव--इसमें महाकवि विहारी की कविता का आलोचनात्मक परिचय, उनकी जीवनी तथा सतसई के चुने हुए दोहे संकलित हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

भूषण-भारती--इसमें महाकवि भूषण की जीवनी और उनके समस्त काव्य ग्रन्थों--का विवेचनात्मक परिचय दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

महादेवी का विवेचनात्मक गद्य--संकलनकर्त्ता, श्री गंगाप्रसाद पांडेय, एम० ए०, साहित्य की नवीन शैली का अध्ययन करनेवालों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य २।।) दो रुपये बारह आने।

आलोचनादर्श--इस पुस्तक के लेखक हैं डाक्टर रामशंकर शुक्ल 'रसाल', एम० ए० डी० लिट। इसमें आलोचना-कला का मार्मिक और शास्त्रीय विवेचन किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

साहित्य-प्रकाश--यह पुस्तक भी डाक्टर रसाल की ही लिखी है। इसमें साहित्यिक सिद्धान्तों का विवेचन किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

साहित्य-समीक्षा--इस पुस्तक में हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक श्रीयुत कालिदास कपूर, एम० ए० एल-टी० के साहित्यिक तथा समालोचनात्मक लेखों का संग्रह किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

प्राचीन साहित्य--इस पुस्तक में रवीन्द्र बाबू के कई प्राचीन साहित्य, विशेषतः संस्कृत साहित्य के आलोचनात्मक निबन्धों का संग्रह है। मूल्य १) एक रुपया।

महाकवि अकबर--उर्दू के प्रसिद्ध कवि अकबर का आलोचनात्मक परिचय तथा उनकी उत्कृष्ट रचनाओं का अर्थ-सहित संग्रह। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

शिक्षा--हम अपने बालकों तथा बालिकाओं को किस तरह सुशिक्षित तथा सदाचारी बना सकते हैं, यह बात इस पुस्तक में विस्तारपूर्वक समझाई गई है। इसके मूल लेखक सुप्रसिद्ध दार्शनिक 'हर्बर्ट स्पेन्सर' हैं और अनुवादक स्वर्गीय आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी। मूल्य ४।।≡) चार रुपये ग्यारह आने।

भारतवर्ष में पश्चिमी शिक्षा—वर्त्तमान शिक्षा-विभाग के क्रम-विकास का संक्षिप्त इतिहास। मूल्य ।।) आठ आने।

अर्थमेटिक शिक्षा-प्रणाली--यह पुस्तक नार्मल स्कूलों और ट्रेनिंग क्लासों के विद्यार्थियों तथा स्कूलों के अध्यापकों को अर्थमेटिक पढ़ाने के उत्तम से उत्तम ढंग सिखलाने के उद्देश्य से लिखी गई है। मूल्य १) एक रुपया।

संगीत-सम्बन्धी पुस्तकें

ध्रुपद-स्वर-लिपि--इस पुस्तक के लेखक काशीनिवासी श्री हरिनारायण मुकुर्जी ध्रुपद के विशेषज्ञ हैं। मूल्य २।।≡) दो रुपये ग्यारह आने।

संगीत-सुदर्शन—सब प्रकार की राग-रागिनियों का शास्त्रीय-विवेचन। मूल्य १।।≡) एक रुपया ग्यारह आने।

विविध विषय की पुस्तकें

मन की अद्‌भुत शक्ति—अपने मन की अद्‌भुत शक्तियों पर पूर्णरूप से अधिकार प्राप्त करके तथा उनका सदुपयोग करके मनुष्य किस प्रकार अपने जीवन को अधिक से अधिक सार्थक बना सकता है, इस बात की इस पुस्तक में विवेचना की गई है। मूल्य ।।।-) तेरह आने।

ऋद्धि--जो लोग धनहीन हैं, ऋण-ग्रस्त हैं, बहु-कुटुम्बी हैं, साथ ही आय भी बहुत कम है, वे इस पुस्तक के उपदेश के अनुसार चलकर सुख से जीवन बिता सकते हैं। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

मानसिक आकर्षण-द्वारा व्यापारिक सफलता—व्यापारिक सफलता के लिए संपर्क में आनेवाले व्यक्तियों पर मानसिक आकर्षण की शक्ति का प्रयोग करने की विधि। मूल्य ।-) पाँच आने।

गोपालन--विभिन्न प्रकार की गौओं के रूप-रंग तथा गुण-दोष का विस्तृत वर्णन। इसमें गौओं का पालन-पोषण करने तथा उन्हें अधिक से अधिक दुधार बनाने की विधि बतलाई गई है। मूल्य १) एक रुपया।

लकड़ी के दाम निकालने की जंत्री—इस पुस्तक की सहायता से लकड़ी का दाम सरलतापूर्वक निकाला जा सकता है। मूल्य २) दो रुपये।

बहीखाता--हिसाब-किताब रखने का उत्तम से उत्तम ढंग। मूल्य ।।-) नौ आने।

भारतीय चित्रकला-पद्धति---कलातमव चित्र, कार्टून आदि बनाने की आसान विधि। मूल्य १) एक रुपया।

स्काउट मास्टरी और ट्रूप संचालन--पुस्तक में स्काउट मास्टरों के लिए बहुत-सी व्यावहारिक बातें बताई गई हैं। इस पुस्तक के अनुसार चलनेवाले स्काउट मास्टर ट्रूप संचालन में निस्सन्देह सफल होंगे। मूल्य १) एक रुपये।

अग्निकांड में सेवा—अग्निकांड में स्काउट लोग किस प्रकार सफलतापूर्वक दूसरों के जीवन और संपत्ति की रक्षा कर सकते हैं यह बात इस पुस्तक में विस्तारपूर्वक लिखी गई है। पुस्तक सचित्र है। मूल्य १) एक रुपया।

स्काउट ड्रिल और खेल--यह पुस्तक अपने ढंग की बिलकुल अकेली है। स्काउटों के लिए किस प्रकार के भी ड्रिल और खेल आवश्यक हैं, वे सभी इसमें विस्तारपूर्वक बतलाये गये हैं। उनके नियमों तथा उपयोग आदि पर भी समुचित प्रकाश डाला गया है। पुस्तक सचित्र है। मूल्य पहला भाग १) एक रुपया दूसरा भाग २) दो रुपये।

बाल शब्द-सागर—रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास, बी० ए० ने हिन्दी का यह शब्द-कोष विशेष रूप से विद्यार्थियों के उपयोग के लिए बनाया है। किन्तु अपनी व्यावहारिक उपयोगिता के कारण यह सभी के काम आ सकता है। मूल्य २।।≡) दो रुपये ग्यारह आने।

कुछ संस्कृत पुस्तकें

प्रबन्ध प्रकाश---लेखक, मंगलदेव शास्त्री। इस पुस्तक के प्रारम्भ में सरल संस्कृत भाषा में प्रबन्ध रचना सम्बन्धी आवश्यक नियम दिये हैं। इसके पश्चात् उदाहरण-स्वरूप सुप्रसिद्ध प्राचीन तथा आधुनिक विद्वानों के तथा स्वयं ग्रन्थकार के लिखे हुए परीक्षोपयोगी निबन्ध दिये गये हैं। पुस्तक के अन्त में गद्य-पद्यमय सुभाषित तथा लोकन्याय दिये गये हैं। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

संस्कृत गद्य रत्नावली--पंडित अमरनाथ झा, वाइस चान्सलर प्रयाग विश्वविद्यालय। यह पुस्तक संस्कृत गद्य की विभिन्न प्रकार की शैलियों का नमूना है। संस्कृत के सभी प्रतिष्ठित ग्रन्थों से अवतरण लिये गये हैं; किन्तु इस बात का ध्यान रखा गया है कि कोई अवतरण कठिन न हो। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मेघदूत--यह महाकवि कालिदास के मेघदूत का बहुत ही उत्तम और उपयोगी संस्करण है। हर एक श्लोक के सामने राजा लक्ष्मणसिंह का किया हुआ पद्यानुवाद दिया गया है। गद्य में बहुत ही सरल और विस्तृत अर्थ भी दिया गया है। पाद टिप्पणियों में संस्कृत के कठिन शब्दों के समास, विग्रह तथा प्रतिशब्द आदि भी दिये गये हैं। मूल्य ।।।-) तेरह आने।

पंचतंत्र—संस्कृत में यह पुस्तक बहुत ही प्रसिद्ध है। इसके सुन्दर संस्करण का अभाव देखकर हमने इसे प्रकाशित किया है। आवश्यक टिप्पणियाँ देने के बाद अन्त में हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित किया गया है। मूल्य ।।≡) ग्यारह आने।

संक्षिप्त वाल्मीकीय रामायण—स्वर्गीय रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा संपादित आदि कवि वाल्मीकि मुनि प्रणीत वाल्मीकीय रामायण संस्कृत में बहुत बड़ी पुस्तक है। श्री रवीन्द्रनाथ जी ने इसे संक्षिप्त कया है। किन्तु पुस्तक का क्रम कहीं भी टूटने नहीं पाया है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने!

कादम्बरी--सम्पादक स्वर्गीय महामहोपाध्याय पंडित गंगानाथ झा और पंडित काशीराम एम० ए०। बाणभट्ट की कादम्बरी संस्कृत में बेजोड़ पुस्तक है। परन्तु यह ग्रन्थ इतना बड़ा है कि इस युग के लोगों के लिए कठिन भी हो गया है। इस कठिनाई को हटाने के लिए इसका यह संक्षिप्त संस्करण निकाला गया है। मूल्य १) एक रुपया।

संक्षिप्त बिहारी—महाकवि बिहारी के दोहों का यह बहुत अच्छा संस्करण है। बिहारी की सतसई में जितने अधिक अश्लील दोहे थे, वे छाँटकर इसमें से निकाल दिये गये हैं। मूल्य २) दो रुपये।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

देशदूत

१०, संख्या ३४] [रविवार, २ मई, १९४८

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

जाता है कि लार्ड लुई माउंट- जून तक वाइसराय-पद से करेंगे। यही नहीं यह भी है कि लार्ड माउंटबेटेन ब्रिटिश किसी उच्च पदपर आसीन होने राम की राय में यदि ऐसा क्या है? लेकिन अनुमान समझा जाये जब कानी का क्योंकि कानी के ब्याह काश्मीर और हैदराबाद समस्या ऐसी है कि भारत में का अभी रहना निहायत वस्तन्त्र जरूर हो गया राज्यों में हैदराबाद अगर की ही। क्योंकि अंगरेज हैदराबाद इतना मोटा भारतीयों की ईमानदारी को तैयार नहीं। सच तो वाइसरायों से लार्ड माउंट- भले मानुष वाइसराय हैं। कुछ दिन के लिये इधर-उधर चक्रवर्ती श्रीराजगोपालाचार्य उनके स्थान पर कुछ दिन के सकते हैं। देखना है, लार्ड संबंध में लगाई जानेवाली में कौन सी सही

* *

में अच्छा तमाशा मचा राज्य की जनता हिन्दू है लेकिन हुआ है इत्तहादुल मुसलमीन मुसलमीन क्या बला इसका एकाएक अवतार भी ठंडे दिल से विचार करना । निजाम सरकार की, वास्तव यह नई देन है। बात यह है कि अँगरेजों ने सदा ही इसी तरह का खेल खेला है। जहां उन्होंने देखा कि उनके खिलाफ जनता बगावत कर रही है, बस वहां कुछ ऐसा दलदल बना दिया और विधान के नाम पर कुछ ऐसी कचरफूट की कि मामला खटाई में पड़ गया। निजाम सरकार यह समझती है कि बिना हिन्दुस्तान में शामिल हुए प्राण-रक्षा न होगी, इसलिये उसने इत्तहादुल मुसलमीन संस्था की स्थापना कर दी, जो हैदराबाद सरकार तथा वहां के मुसलमानों में आग लगाती रहे और प्रतिदिन ऐसा सीन दिखाती रहे जिससे वातावरण में गर्मी का जोर बढ़ता रहे। इत्तहादुल मुसलमीन इसी पेशे के लिये कायम की गई है और हैदराबाद में वह घोटालेबाजी करने पर उतारू बन बैठी है।

* * *

भारत-सरकार ने निजाम सरकार को आगाह किया है कि वह घोटालेबाजी छोड़ दे। या तो वह हिन्दुस्तान के साथ संबंध स्थापित कर ले या युद्ध के लिये तैयार हो जाये। अपने राम की समझ में भी यही आता है कि इन दो सूरतों के सिवाय तीसरी सूरत है ही क्या? लेकिन इस इत्तहादुल मुसलमीन के कारण कुछ होने भी तो पाये? पिछले दिनों अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन में पंडित नेहरू ने निजाम को आगाह किया है कि वह अपने वर्तमान रवैये में परिवर्तन करे अथवा यदि वह लड़ाई पसन्द करता है तो इस पर विचार किया जाये। इत्तहादुल मुसलमीन के सर्वेसर्वा रिजवी ने पंडित नेहरू को उत्तर देते हुए बड़ी अनाप-शनाप बातें बकी हैं। सच तो यह है कि निजाम का यह बकना-बकाना तो किसी दिन खत्म होगा ही। रिजवी साहब इस वक्त जितना बौकना हो बौक लें। निजाम को कटघरे के भीतर आना ही है, उछल-कूद देखना है कब तक जारी रहती है?

* * *

मध्यप्रान्त के गृह-सचिव पंडित द्वारकाप्रसाद मिश्र ने भी निजाम को आगाह किया है कि वह बरार को हथियाने का सपना भूल जायँ। अपने राम की राय में निजाम साहब बरार को हथियाने का सपना भूलते हैं या नहीं इसे कौन जाने, किन्तु जब निजाम की जनता स्वयं आफत में पड़ी है और उसके बचने की कोई सूरत नजर नहीं आती तो बरार की जनता क्यों हैदराबाद में शामिल होकर अपने पैर में कुल्हाड़ी मारेगी? लेकिन जिस तरह हैदराबाद रियासत में धांधलेबाजी मची हुई है उसी तरह बरार के मामले को भी लेकर उछल-कूद मचाई जा रही है। कहावत है कि मान न मान मैं तेरा मेहमान, बरार निजाम के राज्य में जाना नहीं चाहता किन्तु निजाम महोदय उसे जबरदस्ती गले लगाने को उतावले फिर रहे हैं।

* * *

पंजाब के हत्याकांड के अवसर पर कितनी ही पंजाबी स्त्रियों का अपहरण पाकिस्तानी गुंडों और डाकुओं के द्वारा हो चुका है। हिन्दुस्तान में जो अपहृत स्त्रियां हैं वह तो बराबर पाकिस्तान भेजी जा रही हैं किन्तु पाकिस्तानियों ने जिन स्त्रियों का अपहरण किया है वह बड़ी कम संख्या में भारत भेजी जा रही हैं। एक कहावत है कि जर, जमीन और जोरू समस्त टंटे की जड़ हैं। इसलिये यह तो साबित हो ही चुका है कि पाकिस्तानियों को प्रायः जर और जोरू चाहिए थी, उन्हें पाकिस्तान बनने से मिल गया।

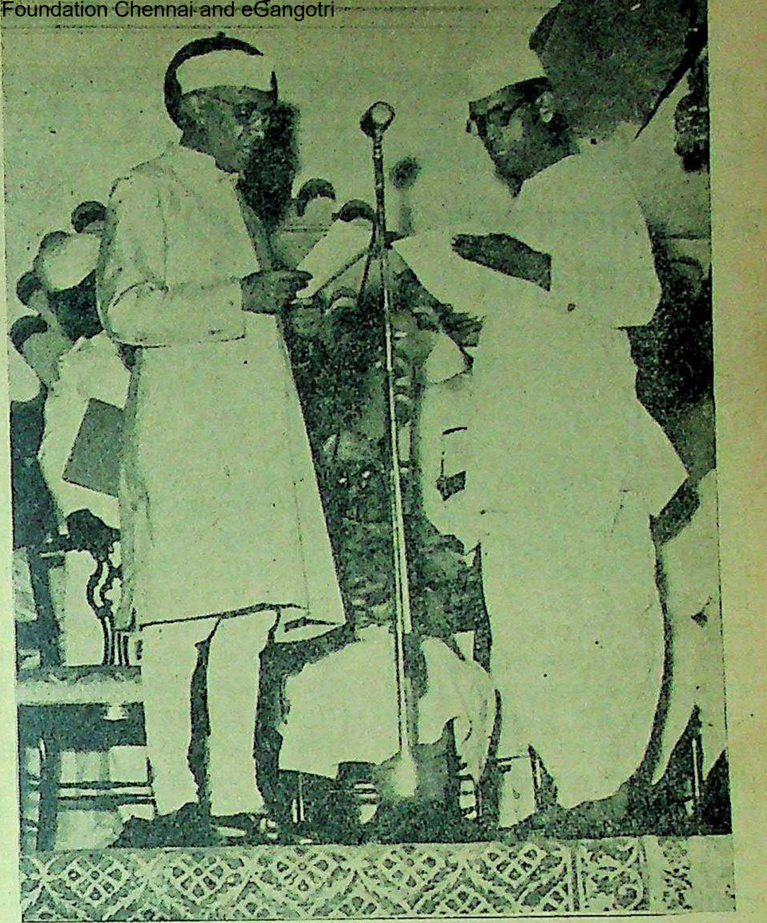

भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू उदयपुर में राजस्थान संघ के अधिवेशन के अवसर पर संघ से प्रधान मंत्री श्री कन्हैयालाल वर्मा को शपथ दिला रहे हैं। राजस्थान संघ के प्रमुख महाराणा उदयपुर चुने गये हैं।

की नीति के अनुसार अमरीका के चौदह राष्ट्रों को कई अरब से सहायता की है।

ले जा अपनी याद लिये जा

लेखक, प्रोफेसर 'अंचल' एम० ए०

ले जा अपनी याद लिये जा!
जानेवाले! साथ सिहरते अंगों की फरियाद लिये जा,
जीवनव्यापी तृष्णा औ' आकुलता की बुनियाद लिये जा,
ले जा अपनी याद——
जीवन भर बेचैन हृदय पर उठ आरे-सी चलनेवाली,
गलते शीशे-सी प्राणों पर—तन पर—मन पर ढलनेवाली,
रोम-रोम में रख देती जो बिजली की ज्वलन्त चिनगारी
नस-नस में फूंका करती जो अति असह्य झंकार तुम्हारी,
अपनी प्रतिहिंसक सुधि का प्रतिशोधी दग्ध निनाद लिए जा।
ले जा अपनी याद——
अश्रु-जड़ित सपनों से मंडित कोई कातर स्वर न सुनूं मैं,
किसी अंकुठित अभिमानी मन का रीता मर्मर न गुनूं मैं
सुन्दरता की आग लगा देनेवाली ममता न बुनूं मैं,
छलक रही लावण्य और यौवन से वे झलकें न चुनूं मैं।
ले जा अपने साथ असद विह्वलता के संवाद लिये जा,
ले जा अपनी याद——
मन की गंगा की धारा में पूजा के वे फूल बहें मत,
व्याकुल काली काली आंखों के पुरनम संकेत कहें मत,
मेरी आकांक्षा की कलियां अवसादी हिमपात सहें मत,
मेरी भूख-प्यास के गाने मेरे दिल के पास रहें मत,
तू जा ले अपने विछोह का अभिभूत विषाद लिये जा।
ले जा अपनी याद——

श्री धीरूभाई देसाई, सुपुत्र स्वर्गीय श्री भूलाभाइ देसाइ, स्विटजरलैण्ड के राजदूत नियुक्त हुए हैं।

सम्पादक का पृष्ठ

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन

अखिल भारतीय कांग्रेस का महा-अधिवेशन पिछले दिनों बम्बई में हुआ। यह अधिवेशन स्वतन्त्र भारत में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहा क्योंकि इसमें न केवल राजनैतिक समस्याओं पर ही विचार करना था वरन् देश में व्याप्त अनेक भ्रांतिमूलक धारणाओं का भी हल निकालना था। सच तो यह है कि स्वाधीनता प्राप्त होने के बाद भी देश की स्थिति दिनों-दिन भयानक ही होती गई। आज भी उसमें विशेष सुधार नहीं हो रहा है। देश की आज की परिस्थितियों में हैदराबाद और काश्मीर की समस्या बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ने अपने भाषण में कहा भी है कि देश की जनता को अपना जीवन राष्ट्रीय परिस्थितियों के साथ ही साथ निर्मित करना चाहिए। इसी प्रकार के विचार सरदार पटेल के भी हैं। वह भी चाहते हैं कि देश की राजनैतिक परिस्थिति हमारे जीवन को कुशल बनाने के साथ ही साथ गम्भीर भी बनाये तो अधिक अच्छा है। कांग्रेस-अधिवेशन में संयुक्त-राष्ट्रसंघ की सुरक्षा-परिषद् के प्रति भी विचार व्यक्त किये गये। इस सम्बन्ध में पंडित नेहरू ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा भी था, कि हम भारतीय जनता के हित के लिए किसी का विरोधी विचार भी स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं।

देशी राजनीति के अतिरिक्त महासमिति ने और कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण समस्याओं पर भी विचार किया था। नये शासन-विधान के विषय में भी काफी वाद-विवाद हुआ, आशा की जाती है कि यह विधान राष्ट्रीय संगठन को शक्तिशाली और अधिक व्यापक बनाने में सहायक ही सिद्ध होगा।

कांग्रेस महासमिति की यह बैठक वर्तमान राजनीति स्थिति में भी एक नई स्थिति उत्पन्न कर सकने में समर्थ हुई है क्योंकि पंडित नेहरू ने तो स्पष्ट शब्दों में कहा ही है कि भारतीय सरकार राष्ट्र की अन्य दूसरी पार्टियों के साथ मनमाना कार्य न करेगी, इस समय हमारी राजनैतिक समस्याएँ हमें यह सोचने को विवश करती हैं कि हमें सरकार की सहायता जिस प्रकार भी सम्भव हो करनी चाहिए। महासमिति में कदाचित् इसी बात पर विशेष रूप से जोर भी दिया गया है कि सरकार के प्रति जनता को अधिक उदार रहना चाहिए, क्योंकि जनता के द्वारा वर्तमान समस्याओं में किसी प्रकार का उलट-फेर होने का अर्थ भयानक ही है। सरकारी दृष्टि से तो राष्ट्र की समस्त कठिनाइयां जनता ही द्वारा आसानी से सुलझाई जा सकती है लेकिन शर्त यह है कि जनता भी सरकार के प्रति उदार तथा वफादार रहे। सरकार की शिथिलता जनता में असन्तोष भी उत्पन्न कर सकती है। दूसरे शब्दों में इसका अर्थ यह भी है कि यदि हैदराबाद भारतीय संघ से अग हुआ तो यह सरकार की हार होगी और जनता पर भी इसका प्रभाव अच्छा नहीं पड़ेगा; इसलिए कांग्रेस-अधिवेशन के निर्णय के अनुसार हम यह विश्वास करते हैं कि हैदराबाद की स्थिति अब पूर्ण रूप से काबू में लाई जावेगी, महासमिति ने भी ऐसा ही निर्णय किया है, क्योंकि भारतीय जनता की आंखें विशेष रूप से अभी तो हैदराबाद और काश्मीर के ऊपर ही लगी है। क्योंकि उपद्रव और पंजाब की तरह की और अन्य घटनाएँ तो हैदराबाद में रोज होती हैं। ऐसे समय पर हम महासमिति की बैठक पर सरकार को बधाई देते हैं, और उच्चतर भविष्य की आशा भी रखते हैं।

* * *

गीत

लेखक, श्री परमानंद शुक्ल, बी० ए०

तुम मेरी वाणी बन जाओ मैं बन जाऊँ स्वप्न तुम्हारा!
सपनों में प्रिय सतत निहारूँ,
दर्शनमय आलोक तुम्हारा;
छविमय जिसकी प्रथम किरण वह,
प्रान, बनी युग युग की कारा;
उस कारा का पंछी यह मन
गाए निशि दिन गान तुम्हारा।
तुम मेरी वाणी बन जाओ!
मैं बन जाऊँ याद तुम्हारी
तुम मेरी करुणा का सावन
जिसकी शीतल रस-फुहार से
सिक्त धरा का होवे कन-कन
प्रान तुम्हें पा जाने को तब।
उमड़ चले गंगा की धारा!

* * *

सूनी-सी निशि, सोता सा जग
सोया-सा यह भाग्य हमारा
जग न सके तन्द्रा में हो
देखे, कितनी दूर किनारा!
तुम देखो मेरी परवशता
वह चितवन बन जाय सहारा।

मैं बन जाऊँ स्वप्न तुम्हारा!

सुरक्षा परिषद् में काश्मीर का प्रश्न

भारत-सरकार ने काश्मीर के प्रश्न को संयुक्तराष्ट्र संघ की सुरक्षा-परिषद् के सामने अन्तिम निर्णय के लिए रखने का निश्चय किया था। काफी समय तक इस प्रश्न पर वहां वाद-विवाद चलता रहा किन्तु सुरक्षा-परिषद् का निर्णय पाकर जनता और राष्ट्रीय सरकार को जैसी निराशा हुई है, उससे अधिक और किया ही क्या जा सकता है। काश्मीर का प्रश्न बहुत सरल था लेकिन इसे अन्तर्राष्ट्रीय गुटबन्दी के पचड़े में डालकर बहुत मुश्किल और पेचीदा बना दिया गया, परिस्थिति दिनों-दिन सुधरने के बजाय गम्भीर होती जा रही है और ऐसा जान पड़ता है कि सुरक्षा-परिषद् के निर्णय के अनुसार पाकिस्तान और भारतीय संघ में युद्ध छिड़ना अनिवार्य ही है। सुरक्षा-परिषद् ने तो आक्रमणकारियों को दण्ड देने के बदले उन्हें शासन में सुविधाएँ देने की चेष्टा की है। कमीशन को सीधे पाकिस्तान से परामर्श करने का भी अधिकार सौंप दिया है, हमारी समझ में तो यह एक ऐसी बुनियादी बातें हैं जिनके बल पर समझौते का स्वप्न देखना मूर्खता यदि हिन्द-सरकार सुरक्षा-परिषद् निर्णय को स्वीकार करती है तो आदर्शों की उन्नति के सिवा पराभव की भी आशा है। सौभाग्य से सरकार ने सुरक्षा-परिषद् के मानने से इनकारभी कर दिया है; परिषद के समक्ष भारतीय संघ की ओर से जो शिकायत की गई थी उसे तो एक प्रकार से टाल ही दिया गया था और उलटा हिन्द के विरुद्ध निर्णय गया, जब कि यह स्पष्ट है कि ने आक्रमणकारियों को विशेष भी प्रदान कीं।

आज का प्रमुख प्रश्न यह है हिन्द-सरकार को क्या करना समझौते की बात ही जब समाप्त हो है, फिर एक ही मार्ग शेष रह और वह है कि हिन्द-सरकार परिषद् के निर्णय करने से बिलकुल कर दे, सुरक्षा-परिषद् में अमरीकी देख-देखकर तबीअत काफी भर इसलिए अब तो यही मालूम होता कि काश्मीर के भाग्य का निर्णय लेकसक्सेस में न होकर काश्मीर की पर ही होगा, हमारे विचार से तो राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा की रखना अपने को जान-बूझकर डालना है, काश्मीर के प्रश्न पर करना अब केवल भारतीय संघ का काम रह गया है. और हमें विश्वास है हिन्द-सरकार ऐसे समय पर न्याय से मुंह न मोड़ेगी, इस न्याय की में चाहे जो कुछ देना पड़े वह परिस्थिति के लिए अच्छा ही सिद्ध काश्मीर का प्रश्न भारतीय सम्पूर्ण राष्ट्र की मर्यादा का देश को ऐसे अवसर पर अपने को के लिए हर घड़ी तैयार रहना

प्रतिमा
इस संग्रह में सुकवि राजाराम की एक से एक बढ़िया ५० कविताएँ इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा है। भाषा और क्या भाव सभी रंगीन आवरण, बढ़िया छपाई और केवल १) एक रुपया।
इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

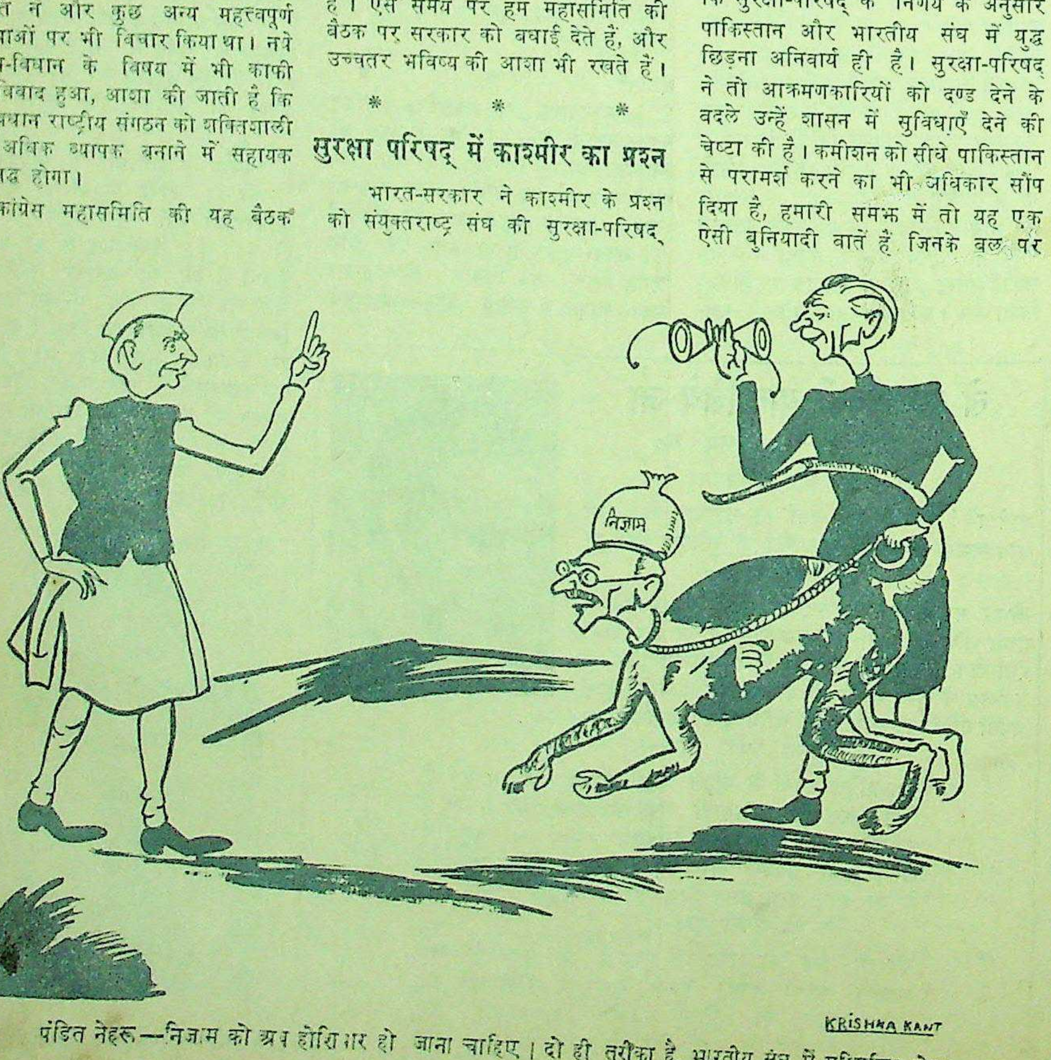

पंडित नेहरू—निजाम को अब होशियार हो जाना चाहिए। दो ही तरीका है, भारतीय संघ में सम्मिलित होना या फिर युद्ध!

ष्ट्रसंघ का व्याधिग्रस्त शरीर

विश्व शांति के लिए खतरा हो सकता है ?

लेखक, डाक्टर एम० मणिभद्रम् डि० लिट्

मनुष्य का पीछे छोड़ दिया है, आज जब संसार को शांति की आवश्यकता न का चमत्कार अशांतिमय वातावरण का रंगमंच तैयार कर रहा है। रूस, और अमेरिका इस समय विश्व की विज्ञान-शक्ति का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, न सबों का अगुआ है, लेखक ने प्रस्तुत लेख में इन समस्त राष्ट्रों की तथा उनकी प्रतिनिधि संस्था संयुक्तराष्ट्र संघ पर विचार किया है, जिसमें राजनीति और विज्ञान का यथेष्ठ सम्बन्ध भी है, लेख गवेषणापूर्ण है।

ओ० की जन्म-कुण्डली जब थी तो उसमें समस्त सहकारी समवेत प्रयत्नों की प्रेरणा थी। मात्रा में यह विश्वास से प्रतिष्ठित हो चुका था शर्तों को ईमानदारी और के साथ कार्यान्वित । यदि ऐसी प्रेरणा का नहीं होता तो यू० एन० ओ० का आधार ही नहीं बन । समवेत प्रयत्न और सामूहिक के अतिरिक्त यू० एन० ओ० भी और कौन-सी मिल जिस समय यू० एन० ओ० बनाया जा रहा था उस समय आशंका नहीं की थी उसके ही उसकी हत्या के प्रयत्न और जिन आवश्यकताओं ने है उन आवश्यकताओं किया जावेगा। विश्व शक्तियों का एकमत होकर के लिए योजनाएँ बनाना ऐसी प्रेरणा थी जिसके आश्वासन के सिवाय ही क्या सकता था? होने का अन्तिम लक्ष्य और बहुमत-निर्धारित में काम करना था—— की रक्षा के लिए वैयक्तिक करना था। यह सच विश्व की तीन महान् ब्रिटेन, अमेरिका और रूस—— देशों की प्रेरणा में भावी स्थायी शान्ति कार्यान्वित करने का संकल्प शेष राष्ट्र उनके ही आमंत्रण में प्रविष्ट हुए थे। किन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं है कि यू० एन० ओ० पर इन तीन राष्ट्रों का एकाधिकार है। आज की सारी परिस्थितियां भ्रांतिवश इस दिशा में बह रही हैं।

विज्ञान की क्रान्ति

यू० एन० ओ० का निर्माण अतिरंजित आदर्शवाद का परिणाम नहीं है। राजनीतिक वैभव-वृद्धि के लिए भी उसकी बुनियाद नहीं डाली गई है। महारुद्र के तृतीय नेत्र से प्रकाशित यथार्थवाद की अनुभूति ने यू० एन० ओ० को अपना रूप दिया है। बीसवीं सदी के वैज्ञानिक अनुसंधानों ने उसके निर्माताओं के दृष्टिकोण को नये सांचे में ढाला था और उन्हें महसूस करा दिया था कि उनकी भावी पीढ़ी की सुरक्षा विघटन में नहीं है, संगठन में है। अतः जब हम यू० एन० ओ० के वर्तमान रूप की परीक्षा करते हैं या उसके भविष्य की कल्पना करते हैं तो हमें इस पार्श्वभूमि को विस्मृत नहीं करना चाहिए। वस्तुतः हम ऐसे युग में सांस ले रहे हैं। जिसमें हमारी सुरक्षा को किसी की प्राकृतिक सीमा——समुद्रीय या पर्वतीय——में अखंड नहीं समझा जा सकता है। विज्ञान ने मानवता के हाथों में जो शस्त्रास्त्र दिये हैं उनके प्रतिकूल प्रकृति हमें किसी भी रूप में सुरक्षा की गारंटी नहीं दे सकती है। दो युद्धों की अल्पकालिक अवधि में ही मनुष्य इतना परिवर्तित हो सकता है हमारी बुद्धि आश्चर्य-स्तब्ध हुए बिना नहीं रह सकती।

आज वस्तुस्थिति यह है कि चाहे हमारी इच्छा है या नहीं हम सब एक-दूसरे के पड़ोसी हैं। पचास वर्ष पूर्व यातायात की दीवारों के कारण हम एक-दूसरे के दुख-सुख का अनुभव नहीं कर सकते थे——अपनी-अपनी सीमा में हम बंदी थ। किन्तु आज परिस्थिति भिन्न है। हम सब पृथ्वी नाम के एक ग्रह के ही निवासी नहीं हैं, किन्तु एक ही छप्पर की छाया में एक सम्मिलित परिवार के सदस्य हैं। युगान्तर ने हमें अकस्मात् इतना निकट ला खड़ा कर दिया है और यह अजनबीपन ही हमारे विचार-वैचित्र्य का कारण है। यू० एन० ओ० की स्थापना का लक्ष्य इन पारिवारिक कलहों को मिटाना ही है।

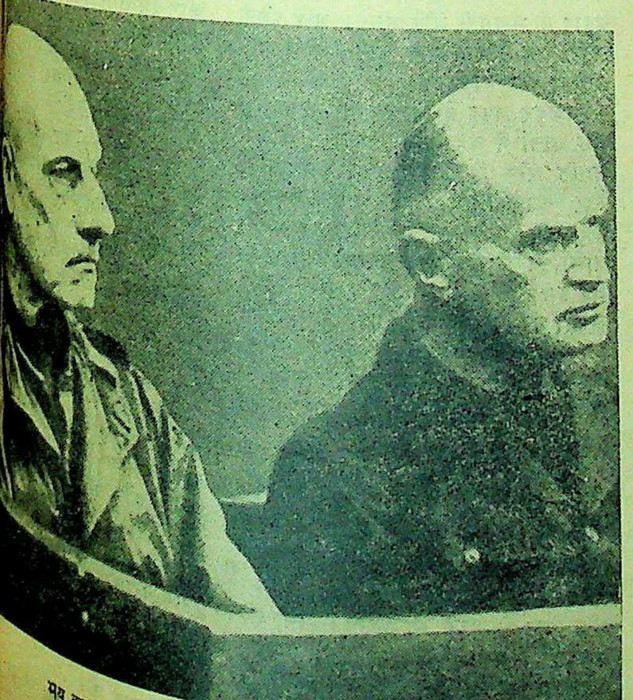

मय का भूत—क्या अभी कोई दूसरा नूरेम्बर्ग होगा?

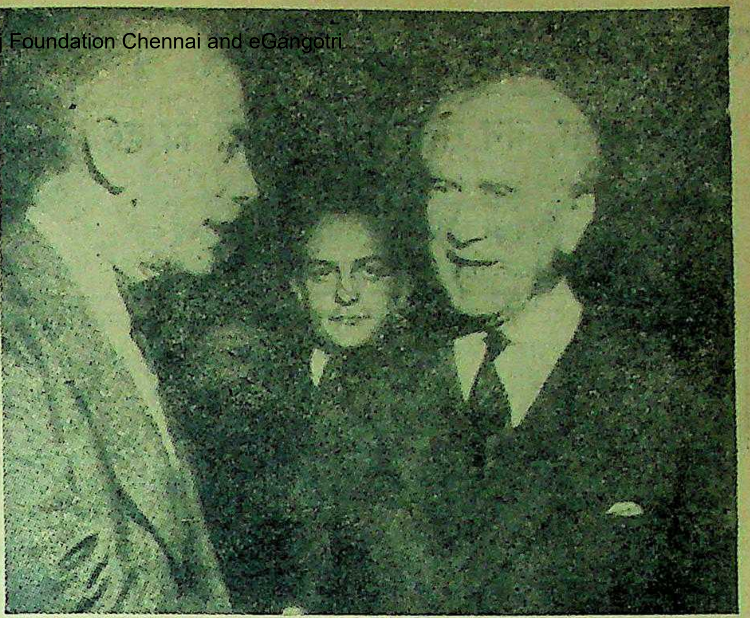

संयुक्तराष्ट्र संघ की असेम्बली प्रेसिडेंट को कैडोगान बधाई दे रहे हैं।

भविष्य की चुनौती

इन्हीं वैज्ञानिक खोजों ने हमें एक नया पाठ यह भी पढ़ाया है कि आज के युग में वैयक्तिक एकान्तवाद जितना उपहासास्पद है उतना ही हानिकर राष्ट्रीय असहयोगवाद है। आज का राष्ट्रीय स्वातंत्र्य अन्योन्याश्रित है। यह स्पष्ट है कि आज कोई भी राष्ट्र, चाहे कितना ही शक्तिशाली वह क्यों न हो, अपनी ही संकुचित परिधि में किये गये प्रयत्नों से अपेक्षाकृत उतना उत्कर्ष नहीं कमा सकता जितना अन्य राष्ट्रों के सहयोग में कमा सकता है। क्योंकि विज्ञान ने मनुष्य को प्रगति में काफी पीछे छोड़ दिया है और वह व्यक्तिगत रूप से इतना पंगु हो गया है कि सामूहिक प्रयत्नों के बिना अपने मार्ग पर चल नहीं सकता है। यू० एन० ओ० के भविष्य के सामने यही चुनौती है जिसे आज की महती शक्तियां अनुभव नहीं कर पा रही हैं। क्या यू० एन० ओ० की वर्तमान प्रगति इस लक्ष्य तक पहुँच सकेगी? आज की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का सबसे आतंकप्रद प्रश्न यही है। क्या आज जो ढांचा यू० एन० ओ० का है वह इतना सबल, ईमानदार और साहसी है कि भविष्य की इस चुनौती के साथ यथोचित न्याय कर सकेगा?

आज के अन्तर्राष्ट्रीय राजमंच की वस्तुस्थिति तो इस परिणाम पर पहुँचाती है कि इस प्रश्न का उत्तर नकारात्मक है। साधनों से ही साध्य का पता चलता है। रूस, अमेरिका और ब्रिटेन ने जिन साधनों को अंगीकार कर रक्खा है वे तो इससे प्रतिकूल लक्ष्य की ही ओर संकेत करते हैं। आज के संयुक्तराष्ट्र-संघ के सामने योजना तो स्थायी विश्व-शान्ति की है किन्तु जिस मार्ग का उसने अवलम्बन किया है वह शान्ति का न होकर संघर्ष और अन्ततः महायुद्ध का है।

सबसे बड़ी बाधा

आज के यू० एन० ओ० की सबसे बड़ी समस्या वीटो का विवेकहीन प्रयोग है। सुरक्षा परिषद् में बाईस बार में से अट्ठारह बार उसका प्रयोग अकेले सोवियत रूस ने ही किया ह। शक्तिशाली राष्ट्रों की पारस्परिक प्रतिद्वंद्विता इससे स्पष्ट हो जाती है। इस प्रकार वीटो का विवेकहीन प्रयोग यू० एन० ओ० के लक्ष्य को भ्रान्त करना है। सोवियत रूस इस अपराध से मुक्त नहीं माना जा सकता। यू० एन० ओ० की भावी प्रगति के लिए वीटो का इतना स्वच्छंद प्रयोग वस्तुतः एक बड़ी भारी बाधा बन गया है। मतभेद की परिस्थितियां यहां तक षड्यंत्रमयी हो गई हैं कि यू० एन० ओ० का सारा अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है। जनरल असेम्बली को सम्बोधित करते हुए फिलिपाइन के प्रतिनिधि ने वीटो के विषय में अपनी विचार-प्रतिक्रिया इस प्रकार स्पष्ट की थी। अर्थात्——

"इसकी पुष्टि करना अतिशयोक्ति नहीं है कि वीटो के निरन्तर प्रहारों से किसी समय यू० एन० ओ० का सारा ढांचा ही लड़खड़ाकर धराशायी हो जाना चाहिए। आज वस्तुस्थिति यह है कि संसार को वीटो और यू० एन० ओ० में से एक को चुनना है। हम दोनों को ही स्वीकार नहीं कर सकते।"

मार्शल का प्रयत्न

वीटो-प्रहार से पंगु और निश्चेष्ट सुरक्षा कौंसिल स्थायी विश्व-शान्ति की दिशा में एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकी है। अभी तक एक भी समस्या उसने नहीं सुलझाई है। उसके सदस्य आपस में द्वंद्वग्रस्त होकर अपनी शक्ति क्षीण कर रहे हैं। ईरानके मामले में सुरक्षा-कौंसिल अभी तक मौन है। इंडोनेशिया के सवाल पर उसने पूरी ईमानदारी और यथोचित निष्पक्षता के साथ विचार करना स्वीकार नहीं किया है। कोरिया के भविष्य से प्रासंगिक समस्याओं के निराकरण का भी अभी तक प्रयत्न नहीं किया गया है। यूनान के गृह-युद्ध से उत्पन्न परिस्थितियों ने जो गतिरोध पैदा कर दिया था उसको दूर करने की दिशा में जितना प्रयत्न किया जाता है उतना ही वह जटिल होता जाता है। एक अकेले फिलस्तीन के सम्बन्ध में यू० एन० ओ० ने निर्णय किया है, किन्तु उस निर्णय में कितना स्वार्थ, पक्षपात है और भविष्य में उस निर्णय को किस रूप में कार्यान्वित किया जावेगा——आगामी वर्ष ही उसकी सूचना देंगे।

वीटो के विवेकहीन प्रयोग को नियंत्रित करने के हेतु अमेरिका के वैदेशिक मंत्री जार्ज मार्शल ने यू० एन० ओ० के चार्टर में कुछ परिवर्तन करने के प्रस्ताव पेश किये हैं। ये परिवर्तन बुनियादी नहीं हैं। उनका एकमात्र उद्देश्य वीटो के प्रयोग को बाधक नहीं बनाकर सहायक बनाने

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

मज़दूरों का 'मई दिवस' क्या है?

मजदूर सत्ता, जन सत्ता तथा श्रमिकों का दृढ़ संगठन का प्रतीक है

लेखक, प्रोफेसर आशाराम, एम० ए०

(राजनीति-विभाग, प्रयाग-विश्वविद्यालय)

संसार में 'मई दिवस' का उत्सव विशेष व्यापक और आकर्षक है। मई दिवस क्या है, यह दिवस क्यों मनाया जाता है। मज़दूरों की सत्ता, जन सत्ता तथा संगठन का क्या यह दिवस प्रतीक है? इसका रोचक वर्णन इस लेख में किया गया है। लेख अत्यन्त सुन्दर, सामयिक और पठनीय है।

शांतिमय युद्ध—किन्तु वातावरण कुछ गरम होता दिखाई दे रहा है।

प्रतिवर्ष संसार भर के मजदूर प्रथम मई को अपना मई दिवस मनाया करते हैं। बूढ़े और जवान, मर्द और औरत हाथों में हंसिया और हथौड़ेवाले लाल झण्डे और प्लेकार्ड लेकर उच्च स्वर से नारे लगाते और मुट्ठियां बांधे हाथों को घुमाते हुए लम्बे लम्बे जलूसों में चलते हैं मानों किसी गढ़ पर विजय प्राप्त करने जा रहे हैं। जलूस सभाओं में परिणत हो जाते हैं। सभाओं में वक्तृता दी जाती है। इन सभाओं में मजदूर भी बोलते हैं और पाश्चात्य देशों में अधिकांशतः मजदूर ही बोलते हैं। एक बार फिर नारे लगाए जाते हैं और सभा विसर्जित होती है।

यह दिन दुनिया भर के मजदूरों का दिन है, और दुनिया भर के मजदूर इस दिन को मनाना चाहते हैं। परन्तु बहुत सी ऐसी जगह हैं जहां मई दिवस से घबराकर सरकारें मजदूरों की सभा और जुलूसों पर प्रतिबन्ध लगा देती हैं। मजदूर इस दिन अपनी शक्ति का परिचय दिया करते हैं और मालिकों के विरोध करते हुए भी स्वयं छुट्टी ले लिया करते हैं, हड़ताल किया करते हैं। बहुत से ऐसे स्थान हैं जहां इन हड़तालों पर रोक लगाई जाती है और मजदूर मालिक संघर्ष में पुलिस से भी मुठभेड़ हो जाती है अतएव डण्डे चलते हैं और खून-खच्चर हो जाता है।

किन्तु कुछ देश ऐसे हैं जहां मजदूरों का अपना राज है। अथवा, मजदूरों ने अपने बल प्रदर्शन से अपनी शक्ति की छाप सरकारों पर छोड़ दी है। ये देश सोवियट रूस, पूर्वीय योरप, उत्तरी चीन और इँगलैंड हैं। यहां पर मजदूर, इस दिन अपनी विजयपताका फहराया करते हैं, छुट्टी मनाया करते हैं, खुशी खुशी जुलूस निकाला और सभाएँ किया करते हैं और, विजय के गीत गाया करते हैं। इन देशों में, इस दिन पुलिस और सेना मजदूरों को सलामी देती है और जनता उनका स्वागत किया करती है।

* * *

सन् १८८४ की बात है। अमरीका और कनाडा के मजदूर आन्दोलन ने तय किया कि मजदूर आठ घंटे प्रतिदिन से अधिक काम न करेंगे। इस मांग को मालिकों से मनवाने के लिए वे लड़ेंगे, मोर्चा लेंगे।

बात पुरानी है। आज बहुत से देशों में यह मांग मानी जा चुकी है। भारतवर्ष में भी बहुधा कल-कारखानों में आठ घंटे प्रतिदिन से अधिक काम नहीं लिया जाता। परन्तु एक जमाना था जब काम के घण्टों पर कोई पाबन्दी न थी। मजदूरों से मनमाना काम लिया जा सकता था। सोलह घंटे तक काम लिया जाता था। स्त्री और बच्चों से भी बहुत देर तक, और सख्त काम लिया जाता था। उन दिनों मजदूरों की आठ घंटे काम की मांग क्रान्तिकारी मांग थी।

कम से कम मालिकों ने इस मांग को क्रान्तिकारी मांग समझा। और जब मांग मनवाने के लिए मजदूरों ने हड़ताल की तो उन्होंने इसका पूर्ण रूप से विरोध किया।

प्रथम मई सन् १८८६ का दिन था। आज अमरीका के शिकागो शहर में मजदूर काम पर नहीं गए। उनकी मालिकों से एक मांग है—आठ घंटा काम, आठ घंटा आराम और आठ घंटा तफरीह (मनोविनोद)। वे तीन दिन तक लगातार काम पर नहीं गए। नगर शान्त है। परन्तु यह शान्ति, मजदूरों का यह ऐक्य मालिकों के लिए असह्य था।

हड़ताल का चौथा दिन हुआ। शिकागो नगर के "हे" नामी बाजार में गोली चली। पुलिस ने मजदूरों पर हमला किया। चार मजदूर और सात सिपाही खेत रहे। दमन का चक्र चल गया। मजदूर नेता गिरफ्तार कर लिए गए। मुकदमे चले। मजदूर फांसी पर लटका दिए गए और अनेक मजदूर और उनके नेता अनेक वर्षों के लिए जेलों में डाल दिए गए।

* * *

आठ घंटे काम की मांग दुनिया भर के मजदूरों की मांग बन गई और मजदूरों की कुर्बानी का यह दिन उनकी भावनाओं, अभिलाषाओं और भविष्य की कल्पनाओं का प्रतीक बन गया।

अमरीकी मजदूरों ने तय किया कि वे प्रतिवर्ष इसकी याद मनाएंगे। अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर-संघ ने भी निर्णय किया कि प्रथम मई सन् १८९० से संसार के सारे मजदूर इस दिन को मनाएँगे।

आज संसार भर के मजदूर इस दिन को मनाते हैं। केवल आठ घंटे के दिन के लिए नहीं वरन् इसके अतिरिक्त अपनी और बहुत सी मांगों के लिए। इस दिन वे अपनी संगठन-शक्ति का परिचय देते हैं।

मजदूरों की मांगों की कमी नहीं। इसके लिए वे बदनाम हैं। कहा जाता है कि इनकी तृष्णा की कभी तृप्ति नहीं होती परन्तु इनकी मुसीबतों की भी कमी नहीं। वे बेकार हो जाते हैं, उनकी मजदूरी घट जाती है, उनको छुट्टियां कम मिलती हैं, उनके बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध नहीं, उनकी बीबी और बच्चों के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए मालिक अथवा सरकार की ओर से कोई इन्तजाम नहीं। मजदूर बुढ्ढा, कमजोर अथवा पंगु हुआ कि शहद की मक्खी की भांति चूसकर फेंक दिया जाता है।

यह समाज भी क्या समाज है! बड़ी बड़ी मशीनें हैं। दैत्य-काय कल और कारखाने हैं। वे और बढ़ाये जा सकते हैं, नए बनाए जा सकते हैं। बहुत से धन की उत्पत्ति की जाती है, बहुत सी चीजें बनाई जाती हैं। पहले से दुगनी, चौगुनी, अठगुनी, दसगुनी......। और बनाई जा सकती हैं, बढ़ाई जा सकती हैं।

लेकिन बनानेवाले को, वही सूखी रोटी, फटे कपड़े, सूअरों के जैसे घरों में! बुढ़ापे में भुखमरी और भीख। और इसके ऊपर रात दिन बेकारी और कटौती और छटौती का खतरा।

मजदूर अपढ़ हैं किन्तु अनभिज्ञ नहीं। कुछ बातों में वह बाबू लोगों से अधिक जागृत और शिक्षित हैं। वह जानता है पैदा करनेवाला वह है, वह इस युग का ब्रह्मा है। वह जानता है पालन करनेवाला, भरण-पोषण करनेवाला वह है—वह इस युग का विष्णु है। और उसको अपनी शंकरीय शक्ति की भी चेतना है। वह प्रलयकर नूतन संसार की रचना के लिए कटिबद्ध है। नए संसार के उसके अपने स्वप्न हैं। वह अपना जगत् बनाना चाहता है।

* * *

प्रत्येक मई दिवस अपनी समस्याएँ लेकर उपस्थित होता है। मजदूर इन समस्याओं पर विचार करता है और अपना निर्णय और निश्चय करता है।

बहुत से बरस नहीं बीते। अभी तो मजदूर ने सभ्यता और संस्कृति और प्रजातन्त्रवाद के शत्रु, पूंजीवाद और साम्राज्यवाद के एजेन्ट और मजदूरवर्ग के दुश्मन हिटलर से मोर्चा लिया था। लम्बा मोर्चा लिया था। लड़ाई छः साल चली। मजदूर ने जी-जान से काम लिया, से लोहा लिया और अन्त में हिटलर उसके साथियों को परास्त किया।

यह विजय मजदूर की विजय संसार की जनता की विजय थी। राज की सीमाएँ बढ़ीं, मजदूर प्रभाव बढ़ा, प्रजातन्त्र की रक्षा स्वतन्त्रता का क्षेत्र विस्तृत हुआ गुलाम देश जगे।

परन्तु युद्ध समाप्त नहीं हुआ नए युद्ध की चर्चा शुरू हो गई। ध्वनि का गुंजन शान्त नहीं हुआ की घंटी बजने लगी; उल्लास की धीमी नहीं पड़ीं कि बेकारी, भुखमरी की चिन्ताओं ने मजदूरों शुरू कर दिया। फिर वही फिर वही दमन का राज, फिर पर हमला। यह कैसी दुनिया मुसीबतों के बिना जिन्दा नहीं रह

और फिर युद्ध किस लिए? तन्त्र और स्वतन्त्रता की रक्षा निरंकुशता से त्राण के लिए।

प्रजातन्त्र कहां है, अमरीका, फ्रांस और बेल्जियम में? और फिर ग्रीस, चीन आदि में प्रजातन्त्र का कौन घोंटता है? कौन से निरंकुश शासनों का पोषण करते प्रजातन्त्र अमरीका में? और फिर के नागरिक अधिकार कौन छीन और उनको जिन्दा कौन जलाता है? क्या अफ्रीका में? और फिर और देशवासी अफ्रीकी जनता को भांति कौन रखता है? फ्रांस में फिर मजदूरों के अधिकारों को कौन है, डिगौल के फासिस्ट संगठनों सहायता देता है?

स्वतन्त्रता का पोषक अमरीका—जो चीन, जापान और को गुलाम बनाने पर तुला है, दुनिया चौथाई भाग में अपने फौजी, जहाजी हवाई अड्डे बनाए हैं, इन्डोनेशिया हालेण्ड के लिए सुरक्षित रखता है चीन और उत्तरी अफ्रीका आदि फ्रांस तथा अन्य साम्राज्यवादी देशों क्या स्वतन्त्रता का पोषक वह मलाया और स्वर्ण तट के आन्दोलनों का दमन करता है; फ्रांस, हालेण्ड और बेल्जियम निवेशों को दबाकर दासों के बने हैं?

सोवियट राज और उसके पूर्वीय योरप तथा उत्तरी चीन के को अप्रजातान्त्रिक तथा स्वतन्त्रता विरोधी कहना जनता की धूल झोंकना है। वे शान्तिप्रिय मजदूर राज हैं।

शेष पृष्ठ १६ पर

तृतीय महायुद्ध के यह विरोधी हैं किन्तु अन्य राष्ट्रों की प्रतीक्षा में हैं।

देशी राज्यों में नया परिवर्तन

रियासतों को एक सूत्र में संगठित करने का प्रयत्न सफल हो रहा है

लेखक, श्री चन्द्रोदय दीक्षित

> देशी रियासतों का प्रश्न स्वतन्त्र भारत में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, भारत-सरकार ने देशी रियासतों की स्वतन्त्रता के लिये जो नये विधान बनाए हैं, वह क्रान्तिकारी हैं। भारतीय राजनीति और देशी राज्यों ने सरकार के समक्ष जो समस्याएँ रखी थीं, उनके द्वारा सरकार ने राज्यों को जिस प्रकार संघटित किया है उसका सारा विवरण कुशल लेखक ने इस लेख में बड़ी सफलता के साथ किया है, लेख वर्तमान परिस्थितियों के समझने में सहायक सिद्ध होगा, ऐसा विश्वास है

माननीय सरदार वल्लभभाई पटेल, भारत-सरकार गृह तथा देशी राज्य विभाग के मन्त्री और प्रधान

तक स्वतन्त्र है। इसका क्षेत्रफल ४२ हजार वर्गमील, जनसंख्या १० लाख और वार्षिक आय ४० लाख रुपया है। इसका स्वतन्त्र रहना लोगों को आश्चर्य मालूम हो सकता है।

मद्रास-प्रान्त में पुडुकोटा और बंगालापाले नामक रियासतें मिला दी गई हैं। सन्दुर की रियासत भी इसी प्रान्त में मिला दी जायेगी। बम्बई-प्रान्त में दकन की १६ रियासतें मिलाई जा चुकी हैं। जंजीरा की एक छोटी रियासत जो पश्चिमी समुद्र-तट पर स्थित है अपनी स्वतन्त्रता बनाये हुए है। वैसे कोल्हापुर रियासत को स्वतन्त्र ही रखा गया है। कोल्हापुर राज्य में जन-संख्या १० लाख और वार्षिक आय १३० लाख रुपया है। गुजरात की १२ रियासतों को भी बम्बई-प्रान्त में मिलाया जा रहा है।

रियासती विभाग अभी आसाम की रियासतों के प्रश्न को नहीं ले रहा है। लेकिन पूर्वी पंजाब और हिमालय प्रदेश की रियासतों के सम्बन्ध में कोशिशें जारी हैं। ल्योहारू, पतौडी और दुजाना की रियासतें पूर्वी पंजाब में मिल गई हैं। बाकी रियासतें भी इस प्रान्त में मिलाई जायेंगी जिससे एक सुदृढ़ प्रान्त का निर्माण हो सकेगा। पटियाला रियासत अपने को स्वतन्त्र रखना चाहती है। झिन्ड, नाभा और फरीदकोट ने अभी तक स्पष्ट निश्चय नहीं किया है। सिख लोगों की ओर से यह प्रयत्न किया जा रहा है कि सिख-रियासतों में हस्तक्षेप न किया जाय। रियासती विभाग नाभा, कपूरथला, मलारकोटला, झिन्ड और फरीदकोट को फुलकियाँ संघ में संगठित करना चाहता है।

उपर्युक्त रियासतों के बाद जो रियासतें बाकी रहती हैं उन्हें या तो संघ के रूप में संगठित किया जायेगा अथवा उन्हें स्वतन्त्र रूप में ही रखा जायेगा। सरदार पटेल के प्रयत्नों से काठियावाड़ की रियासतों का सौराष्ट्र-संघ बना दिया गया है। यहाँ की सब रियासतों और जागीरों की संख्या ४४९ थी और वे सब अब एक प्रबन्ध के अन्तर्गत आ गई हैं। शिमला प्रदेश की पहाड़ी रियासतों को हिमाचल प्रदेश नामक संघ में संगठित किया जायेगा। इस क्षेत्र का क्षेत्रफल ११ हजार वर्गमील है और जन-संख्या १४ लाख तथा वार्षिक आय १ करोड़ रुपया है। टेहरी गढ़वाल रियासत को युक्तप्रान्त के गढ़वाल जिले में मिला दिया जायेगा। मत्स्य संघ में उत्तरी भारत की चार रियासतें; अलवर, धौलपुर, भरतपुर और करौली सम्मिलित कर ली गई हैं। इसी प्रकार राजस्थान संघ में डूँगरपुर, कोटा, बूँदी, जलावर, बंसवारा, किशनगढ़, शाहपुरा, प्रतापगढ़ और टोंक की रियासतें मिलाई जायेंगी। मालवा संघ में केन्द्रीय भारत की रियासतों को संगठित किया जायेगा। विन्ध्य प्रदेश की रियासतों को भी संघ में मिलाने की योजना सामने आ चुकी है। इस संघ में ३१ रियासतों को मिलाने की योजना है।

प्रान्तों में रियासतों के मिलाये जाने तथा ७ रियासती संघ बनाये जाने के बाद १९ बड़ी रियासतें बाकी रह जाती हैं। इनमें काश्मीर, हैदराबाद, ट्रावनकोर, कोचीन, मैसूर, बड़ौदा, कच, ग्वालियर, इन्दौर, भूपाल, बीकानेर, जोधपुर, जयपुर, उदयपुर, मयूरभंज, कोल्हापुर, कूचबिहार, त्रिपुरा और मनीपुर की रियासतें सम्मिलित हैं। इनमें से जयपुर मत्स्य संघ में, ग्वालियर और इन्दौर मालवा संघ में, और जोधपुर और बीकानेर को एक में मिला दिये जाने की योजना बनाई जा रही है। जैसलमेर को केन्द्रीय सरकार अपने प्रबन्ध में ले लेगी क्योंकि वह सीमा पर स्थित है और उसका सामरिक महत्त्व है। रायपुर और बनारस की रियासतों को युक्तप्रान्त में मिला दिया जायेगा।

रियासती संघों में सौराष्ट्र को छोड़कर सभी की वार्षिक आय दो करोड से अधिक नहीं है। साथ ही सभी रियासतों के प्रबन्ध में नौकरियों में पुराने तरीके के लोग अधिक हैं। राजाओं के व्यक्तिगत पूँजी और खर्च में राज्य की आय का प्रधान भाग नष्ट हो जाता है। साथ ही वहाँ सामाजिक विषमता अपनी चरम सीमा पर है। इस प्रकार प्रान्तों में मिलाये जाने तथा संघ बनाये जाने के बाद भी सामजिक दोष नष्ट नहीं हुए हैं। वहाँ जैसी सरकारों का निर्माण हो रहा है उनसे जनता की आकांक्षाओं की पूर्ति नहीं होती है। फिर भी इतना कार्य भी कम महत्त्व नहीं रखता। देश को एक सूत्र में संगठित करने का यह प्रथम प्रयास-मात्र है।

मेहता, दिल्ली पुलिस विभाग के अधिकारी शरणार्थियों के बसाने के कार्य में अधिक सहायता कर रहे हैं।

हैदराबाद के नये प्रधान मन्त्री मीर लायक अली के सामने इस समय एक समस्या उपस्थित हो गई है कि हैदराबाद हिन्दुस्तान के साथ मिल जाये या पाकिस्तान की ओर दौड़ पड़े?

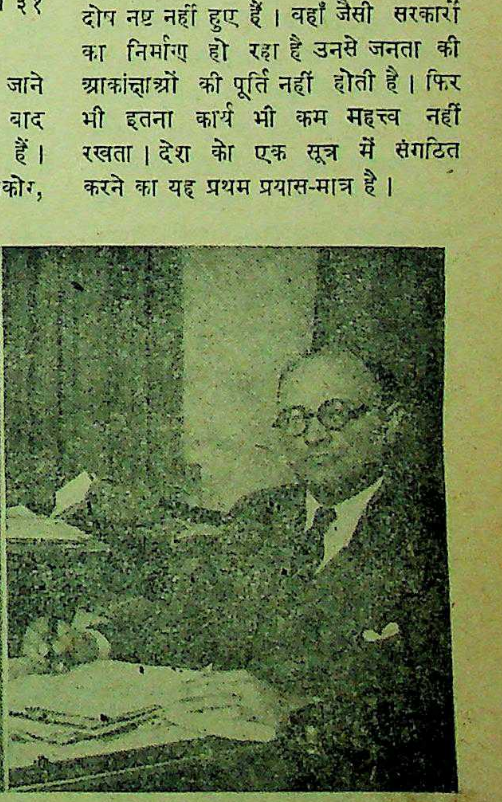

श्री एन० एम० बच, काठियावाड़ केसंयुक्त राज्यों के रीजनल कमिश्नर भारतीय प्रतिनिधि दल के साथ संयुक्त राष्ट्र संघ में सम्मिलित हुए थे।

भारत का औद्योगिक भविष्य

श्रम और पूँजी के समन्वय से ही आज की राष्ट्रीय समस्या हल हो सकती है

लेखक, श्री राधानाथ चतुर्वेदी

भारतवर्ष में औद्योगिक विस्तार की अधिकाधिक आवश्यकता है। आज की बेकारी, निर्धनता और आर्थिक कठिनाइयाँ किसी से छिपी नहीं हैं। ऐसी दशा में उद्योग-धन्धों का क्या महत्व है, उनके द्वारा देश की विविध समस्याएँ कैसे हल हो सकती हैं और किस प्रकार राष्ट्र का आर्थिक पहलू सबल हो सकता है, इस लेख में लेखक ने इन सभी समस्याओं को सुलझाया है, लेख राजनैतिक, आर्थिक और दैनिक जीवन से सम्बन्धित है।

माननीय डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी भारत-सरकार के उद्योग-मन्त्री।

गत ७ अप्रैल को भारतीय विधान-परिषद् में भारत-सरकार के उद्योग-सचिव डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी ने राष्ट्रीय उद्योग-नीति की घोषणा कर दी। उद्योग-नीति का प्रस्ताव अगली बैठक में बिना किसी गरमागरम विवाद के स्वीकृत भी हो गया। केन्द्र में २ सितम्बर १९४६ को भारतीय अस्थायी सरकार के निर्माण के बाद से ही देश के उद्योगपतियों के मन में शंकायें-कुशंकायें उठ खड़ी हुई थीं और उन्होंने तब से ही नये उद्योगों के निर्माण में नई पूंजी का लगाना स्थगित कर दिया था। देश के उत्पादन पर इसका स्पष्ट प्रभाव पड़ रहा था। इधर १५ अगस्त १९४७ को भारत के विभाजन तथा औपनिवेशिक स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेने के बाद से एक ओर तो सरकारी उद्योग-नीति की घोषणा की माँग बढ़ी और उधर दूसरी ओर नई पूँजी के बाजार में लाने पर उद्योगपतियों का कठोर नियन्त्रण भी बढ़ गया है।

परिडत जवाहरलाल नेहरू युद्ध-काल से ही देश के उद्योगीकरण के बड़े समर्थक रहे हैं। युद्ध-काल में वह युद्धोत्तर राष्ट्रीय निर्माण कमेटी के अध्यक्ष थे। उन्होंने उद्योगों के राष्ट्रीयकरण का सदैव समर्थन किया है। इसमें कोई सन्देह नहीं प्रधान मन्त्री परिडत नेहरू सबसे बड़े बुद्धिवादी, समाजवादी हैं, अस्तु, परिडत नेहरू तथा उनकी सरकार की उद्योग-नीतिकी घोषणा न होने से हमारे देश के उद्योगपतियों के मन में यह संशय था कि "कहीं सरकार समस्त उद्योगों का राष्ट्रीयकरण न कर दे।" इस संशयात्मक भयवश ही नये उद्योग खुल नहीं रहे थे और पूँजी रुकी पड़ी थी। उद्योग-नीति की घोषणा से यह संशय दूर हो गये हैं और अब शीघ्र ही भारत में नये कारखाने मशीनों की गड़गड़ाहट से प्रतिध्वनित होने लगेंगे।

रूप-रेखा नवीन नहीं

भारत-सरकार की उद्योग-नीति चाहे भले ही गत ७ अप्रैल को ही क्यों न घोषित की गई हो किन्तु जिन औद्योगिक पर्यवेक्षकों ने प्रधान सचिव परिडत नेहरू के समय-समय पर दिए गये भाषणों को ध्यान से पढ़ा है उनके लिए नीति का विश्लेषणात्मक महत्त्व कुछ अधिक नहीं है। भारतीय औद्योगिक और व्यापारिक संस्थाओं के संघ के अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए परिडत नेहरू ने अपने "व्यक्तिगत मत" के रूप में सरकार के विचार व्यक्त कर दिए थे। इसी भाषण में उन्होंने "मोटे तौर उद्योगों की तीन श्रेणियाँ" कौन कौन-सी हो सकती हैं यह भी बतला दिया था। अधिवेशन के अध्यक्ष श्री एम० ए० मास्टर ने पूंजी और उद्योग-सम्बन्धी जो जो शिकायतें अपने भाषण में रखी थी उनका निराकरण भी इस भाषण में परिडत नेहरू ने बड़े स्पष्ट ढंग से कर दिया था। इस भाषण के पूर्व १६ फरवरी को भारतीय विधान-परिषद् के एक सदस्य श्री करीमुद्दीन ने भी उद्योग-नीति के सम्बन्ध में प्रस्ताव रखा था। उक्त प्रस्ताव का उत्तर देते हुए भी परिडत नेहरू ने यह स्पष्ट कर दिया था "सरकार मध्यवर्ती नीति की समर्थक है और वह उद्योगों का विभाजन कर उन्हें श्रेणीबद्ध कर देगी। कुछ उद्योगों को सरकारी नियन्त्रण में ले लिया जायगा और कुछ को अर्द्ध-सरकारी तथा शेष उद्योग व्यक्तिगत पूँजी के उपयोग के लिए छोड़ दिए जायँगे।"

उद्योग-नीति

भारत-सरकार की उद्योग-नीति के तीन भाग स्पष्ट हैं। पहला भाग तो वह है जिसमें वर्तमान उद्योग-धन्धों के सम्बन्ध में सरकारी नीति निर्धारित कर दी गई है। दूसरा भाग भावी उद्योगों के सम्बन्ध में है और तीसरे का योजनात्मक कार्य से सम्बन्ध है। मोटे तौर से, पहले भाग में, वर्तमान औद्योगिक व्यवसायों को तीन भागों में विभक्त कर दिया गया है—(अ) वह उद्योग जो पूर्णतः सरकारी नियन्त्रण में रहेंगे, (ब) जो अर्द्ध-सरकारी नियन्त्रण में रहेंगे तथा (स) जो व्यक्तिगत पूँजी के क्षेत्र में रहेंगे। उद्योगों के व्यापक प्रचार के लिए भारत-सरकार एक योजना-कमीशन की नियुक्ति करेगी। सरकारी नीति के भाग (अ) को भी दो भागों में विभक्त कर दिया जा सकता है। पहले भाग में तो वह व्यवसाय हैं जिन पर सरकारी एकाधिकार रहेगा और दूसरे वह हैं जिन के निर्माण आदि की व्यवस्था तो सरकार ही करेगी किन्तु इस सम्बन्ध में सरकार उद्योगपतियों की सलाह आदि ले सकती है। पहले भाग में तीन उद्योग हैं—(१) शस्त्रास्त्रों का निर्माण, (२) अणु शक्ति का उत्पादन और नियन्त्रण तथा (३) रेल-यातायात की व्यवस्था। दूसरे भाग में ६ उद्योग हैं—(१) लोहा और इस्पात, (२) विमान-निर्माण, (३) जलपोतों का निर्माण, (४) टेलीफोन यन्त्रों का उत्पादन, (५) टेलीग्राफ तथा (के तार के यन्त्रों का निर्माण। अर्द्ध-सरकारी नियन्त्रित उद्योगों सार्वजनिक संघों द्वारा होगी।

नमक, मोटर, ट्रैक्टरों, बिजली सामान, अन्य भारी यन्त्रों, रबर, ऊनी वस्त्र, सीमेण्ट, शक्कर, और जल यातायात, खनिज सुरक्षा-सम्बन्धी उद्योगों की देख कार करेगी और इनका संचालन व्यक्तिगत पूँजी से ही होगा किन्तु नियन्त्रण रहेगा और यह नियन्त्र निक व्यवस्थाओं द्वारा होगा। इस के आधार वह कानून होंगे जो अथवा जो समय समय पर भविष्य कार बनायेगी। शेष उद्योग पूँजी के लिए छोड़ दिए गये हैं। कुटीर-उद्योगों के व्यापक प्रचार को भी करेगी।

उद्योगीकरण या राष्ट्रीयकरण

उक्त नीति की घोषणा के पूर्व सामने प्रमुख प्रश्न यह था कि इस करण पर जोर दें अथवा उद्यो पर। सरकार ने इस सम्बन्ध में अत्यन्त बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय किया है। उद्योग-नीति भले ही "स्वप्न (utopia) के अनुकूल न हो, उसके आधारभूत सिद्धान्तों के यथार्थवादिता काम कर रही है नहीं किया जा सकता। यूरोप के देशों के उद्योगों का राष्ट्रीयकरण हुआ वह औद्योगिक दृष्टि से अत्यन्त थे। चेकोस्लोवाकिया, हङ्गरी, यूगो व आस्ट्रिया आदि। रूमानिया एक वाद है किन्तु उसके पड़ोसी राष्ट्र उद्योग-सम्पन्न है कि उसे भी उद्यो होते देर न लगेगी। इसके विपरीत अभी ६ मास पूर्व ही स्वतन्त्र हुआ १५० वरस की अँगरेजी गुलामी के इस दासताकाल में और उसके का हर दृष्टि से विपन्न व दुर्बल स्वाभाविक ही है। अँगरेजी युग में उद्योगों का पनपना तो दूर रहा जो भी नष्ट हो गये। अस्तु, भारत के सामयिक प्रश्न यह है कि उसका उद्योगीकरण हो। तभी राष्ट्रीयकरण प्रश्न उठ सकता है। जब तक

—शेष पृष्ठ १४ पर

परिडत जवाहरलाल नेहरू पञ्जाब के एक गाँव अतारी में, जो हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान की सीमा पर स्थित है, सार्वजनिक सभा में राष्ट्र की सुरक्षा के लिये भाषण दे रहे हैं।

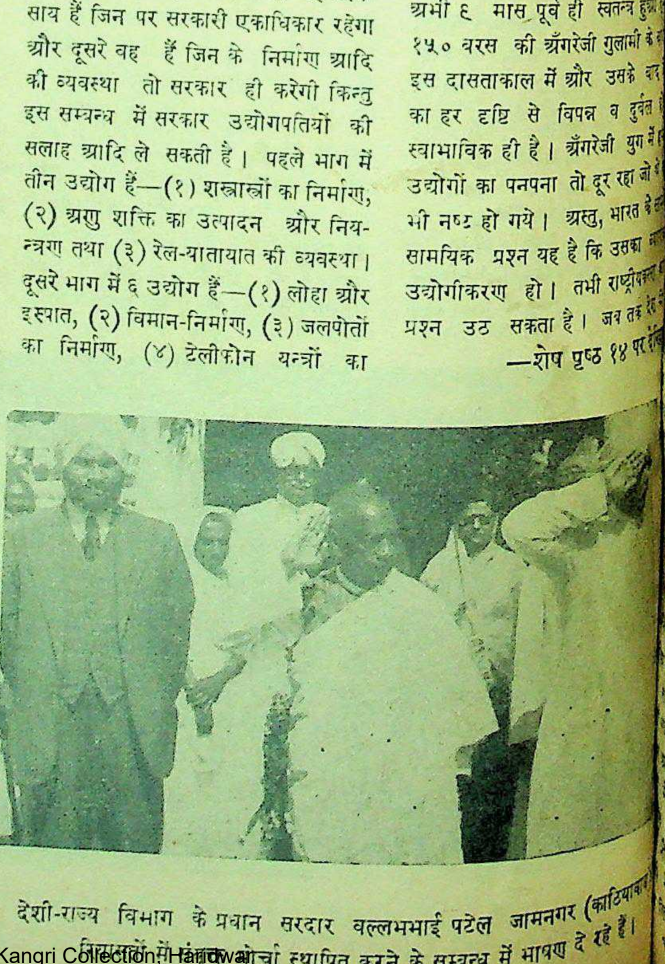

देशी-राज्य विभाग के प्रधान सरदार वल्लभभाई पटेल जामनगर (काठियावाड़) रियासतों में संयुक्त मोर्चा स्थापित करने के सम्बन्ध में भाषण दे रहे हैं।

कहानी

विषपान

लेखक, श्री चन्द्रकान्त बाली

पुरुष सदैव से अपने को नारी से श्रेष्ठ ही समझता आया है। नारी के अन्दर भी पुरुष को जीतने की अभिलाषा आज की नहीं है। इस कहानी में लेखक ने पुरुषत्व नारीत्व के बीच एक अपूर्व सामंजस्य स्थापित किया है और यह सिद्ध किया है कि एक नारी, पुरुष के लिये कठिन से कठिन बलिदान कर सकती है। कहानी सुंदर और रोचक है।

कर रहा था, सब पत्र में प्रकट हो गया। उस पत्र की प्रतिलिपि यह है—

प्रिय सोम,

मेरी यह चिट्ठी तुम्हारे पास पहुँच रही है। तुम इस चिट्ठी को एक तरह से नौका ही समझो। हम दोनों अभागे हैं। मैं समाज को पहले से ही हेय और अनुपादेय समझता था। मैंने उसकी कोई परवा नहीं की, पर मैं देखता हूँ समाज सच्चा था, मैं झूठा। समाज की विजय हुई, मैं बुरी तरह पराजित हुआ। मैंने क्या-क्या सोचा था, क्या-क्या सुना था, क्या-क्या समझा था; वह सब फरेब था, ढोंग था। एक स्वप्न था, क्षण भर में विलीन हो गया है। एक शबनम का तूफान था, जो सूर्य की एक किरण से छितरा गया है। मैं एक सुंदर सुगंधित इत्र की शीशी लाया था, वह एक तेज विष की शीशी निकली। मैं जिसे फूल समझे था, वह कपास का खिलौना निकला। मुझे तेरी विद्या, गुण और रूप अब धोखे में न रख सकेंगे। मैं चाल-ढाल से समझ गया था कि मेरे घर में 'गृहणी' के रूप में 'गणिका' प्रवेश कर चुकी है। तू जिस विद्यालय में पढ़ चुकी है, उसका एक अध्यापक—तू जिसकी अत्यन्त प्रशंसा किया करती थी, पर कितना दुश्चरित्र है; यह सारा संसार जानता है। तेरे घर में तेरा बहनोई जिस चाल-ढाल से आता-जाता है, वह भी सर्वविदित है। बस और अधिक संकेत क्या करूं; मैं तेरे सारे मर्म समझ गया हूँ। तू वकीलों की तरह अपनी सफाई पेश करने की चेष्टा करेगी, पर मैं पूर्ण निश्चय कर चुका हूँ कि तू उस हृदय-निकेत में बसने के सर्वथा अयोग्य है; जहाँ यह देवियाँ ससम्मान रहती हैं। बस, विचार-सागर में अधिक गोता खाने की आवश्यकता नहीं। इस पत्र के सहारे एक किनारे लग जाओ। दूर—बहुत दूर!'

पत्र डालकर देवराज ने दिल का भार हलका किया। उधर सोमप्रभा ने पत्र पाकर कोई उत्तर नहीं दिया।

* * *

आजकल बाजार में बिक्री का बड़ा जोर है। बजाजी और सुफैदी का सामान खूब बिक रहा है। धड़ाधड़ बिक्री हो रही है और दूकानदार मालामाल हो गये हैं। रोज की तरह आज भी बाजार गर्म है। 'देवराज कृष्णदास' की दूकान भी बड़ी सजधज के साथ चल रही है। गाहक आ रहे हैं और इष्ट वस्तु खरीद रहे हैं। देवराज रेशमी वस्त्र दिखा रहा है और उसके सामने पंजाबी पति-पत्नी बैठे देख-भाल कर रहे हैं और बातें भी।

देवराज—पंचू! साटन का थान लाइयो भाई! (गाहक से) अजी! अब तो भाव बड़ी तेजी से गिर रहे हैं। यह 'मलाईस्टीन ९-१० रु० गज बिक चुकी है और आपको हम ४) गज ही दे रहे हैं। लीजिए साटन के डिजाइन देखिए।

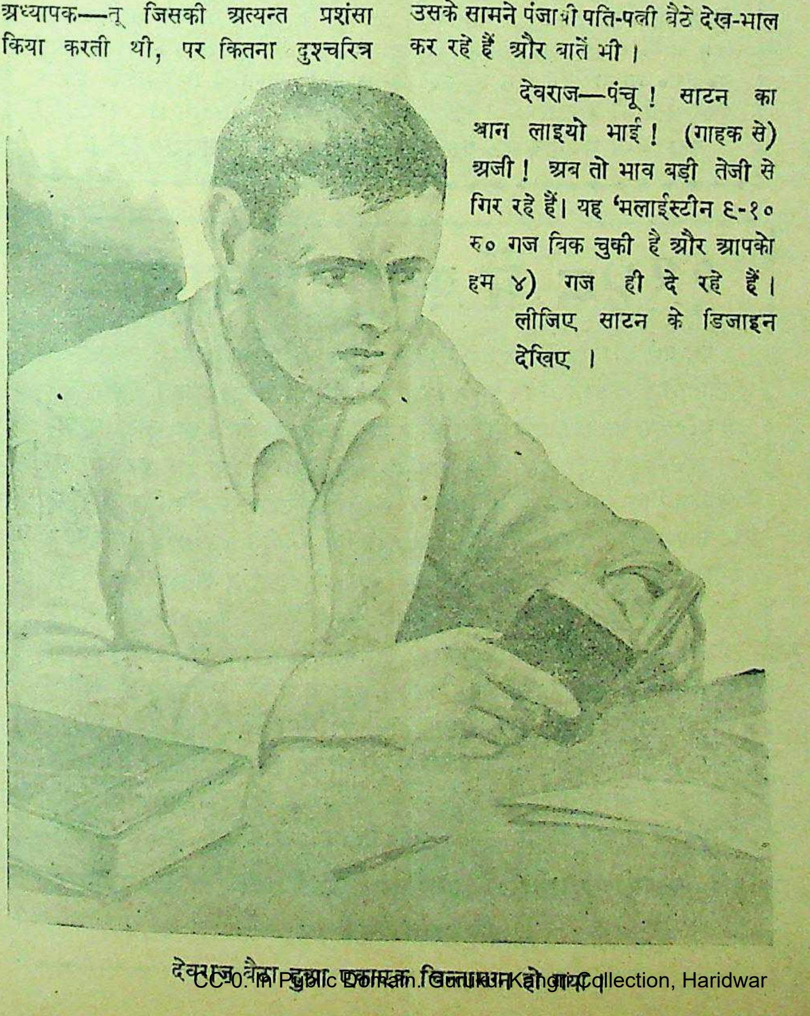

देवराज बैठा हुआ एकाएक चिन्तामग्न हो गया।

बीबी ने कहा–जी नहीं, इतने क्या कम हैं?

पंचू से साटन के थान लेकर खोलने लगता है।

बीबी—बस काफी खरीदा जा चुका है।

देवराज—यही दिन हैं, पहिन लो, पाकिस्तान बने, फिर—क्या हो क्या न हो कौन जाने?

बाबूजी—पाकिस्तान बने या न बने, हमें तो रंगीन पैराशूट मिलेगा ही।

देवराज—क्यों नहीं, पंचू! पेटी से दो-चार नमूने पैराशूट के लाना। (गाहक से) अजी! पाकिस्तान में ऐसा माल कहाँ मिलने लगा? कोई मिल नहीं है, हो भी तो कोयला कहाँ से आएगा?

बाबूजी—(बीबी से) ले लो फिर दो-चार सूट!

बीबी—नहीं जी, इतने क्या कम हैं?

देवराज—आपकी श्रीमती जी लेना तो चाहती हैं, पर आपके डर से नहीं लेना चाहतीं?

बीबी—नहीं जी, ऐसी कोई बात नहीं।

बाबूजी—भाई साहब! राजा का काम है कमा लाना और पूंजी लाकर मंत्री जी के आगे धर देना। आगे मंत्री जाने, उसे कैसे खर्च करना चाहिये, ऐसे नहीं। अब ये जाने और इनका काम जाने।

देवराज—इसमें क्या शक है! तो फिर हरे पैराशूट का सूट काटूं या बदामी रंग का?

बीबीजी—बस रहने दो।

बाबूजी—तो इन सूटों का बिल बनाइये न?

देवराज—लो जी!

देवराज कैशमीमो काटकर सूट-बूट बाँधने लगता है।

देवराज—३०) इसके, ४५) इसके और ७०) इसका, कुल तीन सूट रहे; सारा बिल १४५) का रहा, ये कुछ भी नहीं!

बाबूजी—और कितने का बिल बनता?

देवराज—यहां तो ५००) के कई कैशमीमो काट रक्खे हैं।

वह दम्पती १७५) देकर और बंडल बगल में दबाकर चल दिए।

देवराज का जी उचाट हो गया। अपनी जगह मुनीमजी को बैठाकर आप चुपचाप कहीं चल दिया।

* * *

परसों दीवाली है। सब अपने अपने घरों की लीपा-पोती कर रहे हैं। सोमप्रभा भी अपनी माता का हाथ बटाए हुए है। दिन भर की व्यस्त और थकी प्रभा मन में बेचैनी के सूत्र उलझाते हुए बैठी कि इतने में डाकिए ने पत्र लाकर दिया। सोमप्रभा ने झट उसे खोलकर पढ़ा—

प्रेयसी, सोमे !

मुझे कतई आशा न थी कि तुझे दूसरा पत्र भी लिखना पड़ेगा। मेरे जीवन में एक घटना घटी कि मेरा सारा जीवन ही बदल गया है। कुछ दिन हुए—एक दम्पती माल खरीदने मेरी दूकान पर आए थे। ऐसी भव्य जोड़ी मैंने कहीं नहीं देखी। उनकी भव्यता को देखकर मैं खीझ उठा अपने जीवन से ऊब गया। इस कटु जीवन को समाप्त कर देने में ही मुझे श्रेय दीखने लगा। सो मैंने ऐसा किया। तत्काल बाजार गया डाक्टर के यहाँ से एक जहर की शीशी खरीदी और रात को पीकर सो गया।

जब दिन को होश में आया तो कै आ रही थीं, मेरी चेतना धीरे-धीरे यथापूर्व होने लगी। पिताजी ने साधारण उपचार करके मुझे बचा लिया। इधर डाक्टर की भूल से घटिया दर्जे की जहर दी गई है। मैं बच गया हूँ। यमराज के द्वार जाकर लौट आया हूँ।

मैं मरने का पक्का इरादा रखता था, डाक्टर ने भी दवाई ईमानदारी से दी, इस पर भी मेरा बच जाना—एक दैवी घटना है। या फिर तेरी जैसी साध्वी पत्नी का प्रभाव है। खैर जो कुछ भी हो, मेरे बचने का एक-मात्र कारण तेरी मौन साधना है।

अधिक क्या लिखूँ। कमजोरी बेहद है। चाहिए तो यही था कि मैं स्वयं तुझे लेने आता, पर स्थिति को देखते हुए तुम अपने भाई के साथ चली आओ।

पिछली सब भूलों को भुलाने में ही कल्याण है। सबको जय हिन्द !

—राज—

इस घटना ने देवराज की गुत्थी सुलझा दी। यहाँ आकर उपदेश और सुधार समाप्त हो जाते हैं।

अकसीर उपाय
आरोग्य
१८६६
नीलगिरि तैल
पी. सांडालेकर बंधु बम्बई ४.

हा बापू !

लेखक, श्री रामेश्वरदयाल दुबे, एम० ए०

बापू !
सच कह दूं ?
हम सबने
है छला, तुम्हें
गत वर्षों में
पर हाय ! स्वयं ही, छले गये
तब तो तुम हा ! यों चले गये।

तुम आये थे
उस अवनी पर
है जहां सत्य से स्वार्थ बड़ा
है जहां काम से नाम बड़ा
है जहां धर्म से अर्थ बड़ा
तुम आये थे
उस धरती पर
पावनता का सन्देश लिये
मानवता का आदेश लिये
नवयुग का नव आदर्श लिये
भारत हित,
जन हित,
मानव हित,
जीवन भर तूने
हे बापू !
है बहुत किया
है बहुत सहा।

हमने ?
हां, हमने भी बापू !
तेरे गुण गाये
तेरा जय-जयकार किया
गाने में हम पीछे न रहे
बापू ! तेरी गांधी गीता।
यह पूछो मत,
कथनी थी क्या ?
करनी थी क्या ?
उनमें उतना ही अन्तर था
जितना
दक्षिण, ध्रुव से ध्रुव उत्तर का।
अधरों पर ये आदर्श मधुर
अधरों पर थी समता ममता।
सच कह दूं क्या ?
हृदयों में हा !
कितनी कटुता ! कितनी कटुता !
था जाति-द्वेष,
था प्रान्त-द्वेष,
था नहीं,
अभी भी वैसा ही
छल, छद्म, द्वेष
है पक्षपात
हिंसा भी है
प्रतिहिंसा भी।
चल रहा क्रूर
यह शोषण का अविराम चक्र
हे तुम !
दुखी थे देख-देख
हम सबके
नित के
ब्लेक कृत्य।
पर आज,
पर आज, जब कि तू जाता है
अपनी छाती पर लिये हाय !
ये लाल दाग
ये रक्त दाग
क्या कहें हाय !
क्या करें हाय ?

ये शब्द नहीं,
भीषण रव है,
फूटे जाते हैं श्रवण अरे,
कह रहीं दिशाएँ टेर-टेर
भारत
हत्यारे भारत ने
दी अपने ईसा को सूली
कह रही धरा
कह रहा गगन
कह रहा विश्व
भारत
हत्यारे भारत ने
निज राष्ट्रपिता की छाती में
मारी

गोली पर गोली
फिर गोली।

खो राष्ट्ररत्न
अब राष्ट्ररंक !
जो भारत
था महिमामय भी
गरिमामय भी
संस्कृति हिमगिरि से ऊँचा
वह भारत,
अब केवल भारत,
ह अकथ रंक
युग-युग तक उसको ढोना है
केवल कलंक,
केवल कलंक !

कह रहा कौन ?
यह कानों में
अन्तिम प्रणाम की बेला है
अन्तिम प्रणाम ?
कैसा प्रणाम ?
कर पावेंगे अन्तिम प्रणाम ?
किन हाथों से ?
रे ! हाय !! कौन-सा मुंह लेकर
ये रंगे रक्त से दोनों कर।
ये कम्पित कर।
यह झुका
आज लज्जा से शिर
यह मस्तक नत।

T. B.
टी० बी० "तपेदिक" रोग के हताश रोगियो—

जबरी (jabri) का नाम नोट कर लो, यही इस दुष्ट रोग से रोगी की जान बचानेवाली शक्ति शाली औषधि है। एक बार परीक्षा करके देख लो, परीक्षार्थ ही नमूना रखा गया है, जिसमें तसल्ली हो सके। मूल्य नं० १ (स्पेशल) पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन २०) रु०। 'जबरी' नं० २ पूरा कोर्स २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु० महसूल आदि अलग है। आज ही आर्डर देकर रोगी की जान बचावें। तार का पता "jabri" jagadhri काफी है।

पता :—रायसाहब के० एल० शर्मा, रईस (D) 'जगाधरी' (E.P.)

१९४८ में क्या होनेवाला है

इस वर्ष आकाश में तारा-मण्डल की कौंसिल में एक बड़ी भारी उथल-पुथल होनेवाली है। अगर आप इस साल में होनेवाले परिवर्तनों यानी अपनी भली या बुरी दशा समय से पहले ही जानना चाहते हैं तो आज ही केवल एक पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी फूल का नाम लिखकर भेज दें। बस फिर हम ज्योतिष विद्या द्वारा आपके आनेवाले १२ महीने का लाभ या हानि, किस तिजारत से फायदा होगा, किस जरिये से रुपया मिलेगा, नौकरी, तरक्की, तनज्जली, स्त्री सन्तान का सुख, स्वास्थ्य, बीमारी, दूर की यात्रा, मुकदमा और सफलता सगाई, शादी, जमीन या जायदाद का सुख, किसी से नया मेल या नया सट्टा व लाटरी या किसी अज्ञात साधन से धन का मिलना, सारांश यह कि कार्ड लिखने की तारीख से लेकर १ वर्ष तक होनेवाली कुछ बातों का खुलासा यानी मासिक वर्षफल बनाकर केवल १।) में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाकखर्च ऊपर से लगेगा। बुरे ग्रहों की शान्ति के उपाय भी लिखा जायगा जिससे आनेवाली कठिनाइयों को दूर किया जा सके। एक बार परीक्षा से ही आपको भली भांति मालूम पड़ जायगा कि हमको कहां तक ज्योतिष विद्या में ज्ञान प्राप्त है।

श्री स्वामी योगीराज ज्योतिष आश्रम (D.D.A) फगवाड़ा
रियासत कपूरथला

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ० ए०, बी० ए० पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी और होम्योपैथिक बायोकैमिक आसानी से पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ्त मगायें। पता :—
इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड)

मेरी तरह
खराब खून को साफ करता
डा. वामन गोपाल
आयोडाइज्ड
सारसापरिला

इलाहाबाद के एजन्ट—
पन्नुलाल जौहरी एल०

देशदूत चित्रावली

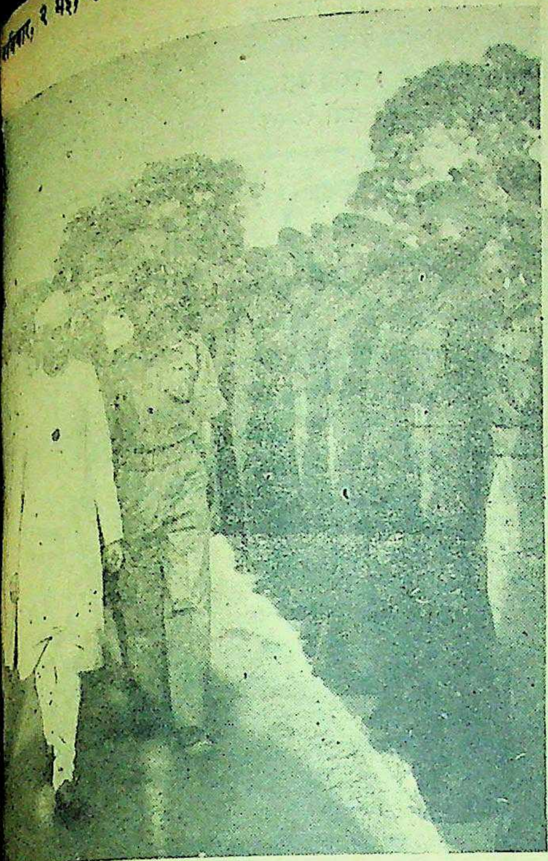

नेहरू दिल्ली में होनेवाली सैनिक प्रदर्शिनी के उद्घाटन के समय सैनिकों की सलामी ले रहे हैं।

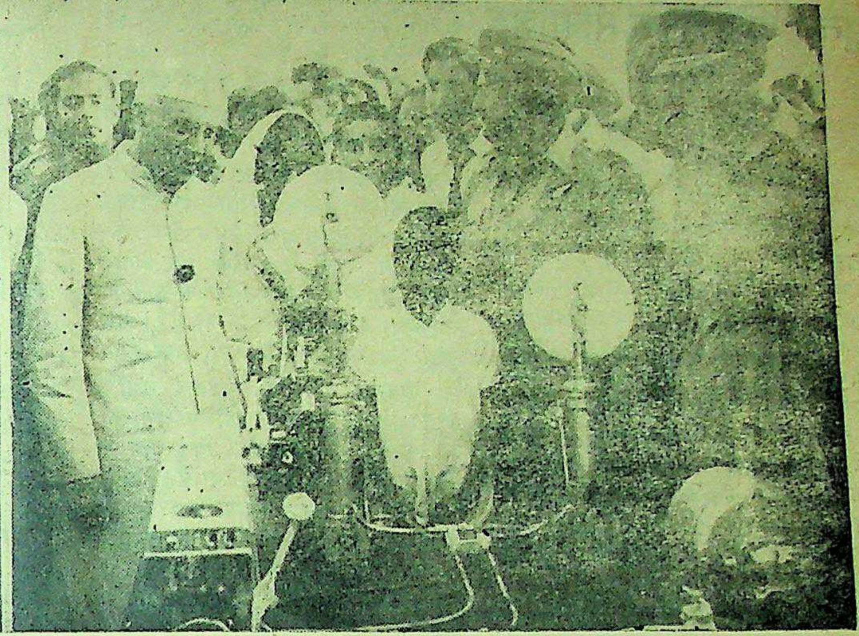

पंडित जवाहरलाल नेहरू सैनिक प्रदर्शनी में विविध वस्तुओं का निरीक्षण कर रहे हैं।

प्रतिष्ठित लोगों के बीच राष्ट्रपति डाक्टरराजेन्द्र प्रसाद बम्बई के आज़ाद मैदान में भाषण दे रहे हैं।

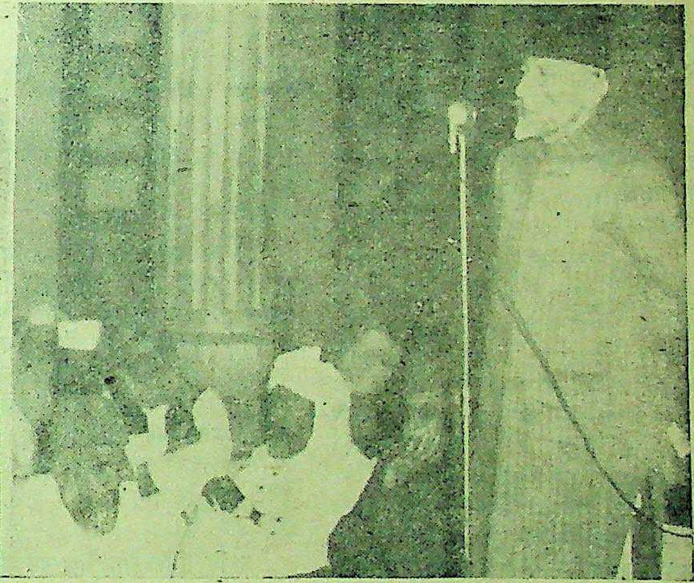

मौलाना आज़ाद नई दिल्ली में जमायतुलउलेमा के बीच भाषण दे रहे हैं। आपने कहा है कि उन्हें किसी अन्य पार्टी में न शामिल होना चाहिये।

दौलतराम विधान-क्लब में तृतीय ग्रामीण संघ के अवसर पर भाषण दे रहे (बाएँ ओर से) श्री सत्यनारायण सिनहा, श्री एन० जी० रंग (सभापति) डा० श्यामाप्रसाद, सरदार सिंह, श्री शिवराव और श्री विश्वनाथ दास बैठे हुए दिखाई दे रहे हैं।

मद्रास के अर्थ-मंत्री श्री बी० गोपाल रेडी ने चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचार्य हाल में एक चाय-पार्टी दी थी। जिसमे मद्रास के गवर्नर भी उपस्थित हैं। यह चित्र उसी अवसर पर लिया गया था।

हमारा रंग-मंच

'रास्ता'

सुन्दर और सफल सामाजिक फिल्म

लेखक, श्री पूरन खत्री

आजाद हिन्दुस्तान में प्रचार करने का जितना अच्छा साधन चित्र हैं उतना कोई नहीं। प्रान्तीय प्रधान मंत्री पण्डित गोविन्द-वल्लभ पन्त ने अभी हाल में कहा है कि अपने प्रान्त के गांवों में विद्या और संगठन का प्रचार चित्रों-द्वारा किया जायेगा। ग्रामीणों के लिए लारियों-द्वारा इसका प्रचार होगा। बात सच भी है; जितना असर अनपढ़ जनता को चित्रों-द्वारा होगा, वह भाषणों तथा लेखों-द्वारा नहीं। चित्रों को लोग देखेंगे--सुनेंगे और समझेंगे। फ्रांस में राज्य-क्रान्ति के समय तथा रूस में जार के जमाने में ऐसे-ऐसे नाटक खेले गये ऐसे-ऐसे चित्र बने हैं जिन्होंने लोगों के दृष्टिकोणों को ही बदल दिया। और फिर हिन्दुस्तान में भी तो ऐसे चित्र बने हैं जिन्होंने अनमेल विवाह, छुआछूत आदि समाज के भीषण अत्याचारों पर चिल्ला-चिल्लाकर एक क्रान्ति पैदा कर दी। पूज्य महात्मा गांधी जी के अमर संदेशों का भी चित्रों द्वारा प्रचार हुआ है (दूसरी शादी में) इसलिये अब इस आजाद हिन्दुस्तान में ऐसे ही चित्रों की आवश्यकता है जो लोगों को देश-सेवा की ओर अग्रसर करें ऐसा ही है यह नया चित्र 'रास्ता' जो देश की नौजवान लड़कियों के लिए एक शिक्षाप्रद होगा, श्री फजली ब्रादर्स की एक सफल देन है। फिल्म का कथानक इस प्रकार है--

चूंकि समावयस्कता ही प्रेम का एक-मात्र कारण है इसलिए शाहिदा का लतीफ से प्रेम हो गया। शाहिदा के भोलेपन से लतीफ ने फायदा उठाया। वह आजकल के मूर्ख लड़कों की तरह उसे भगाकर ले गया। शरत्चन्द्र के कथनानुसार "पहले तो दो-चार दिन कटे जिन्दगी खासी" सो ही हुआ; परन्तु ज्योंही शाहिदा के पैर भारी हुए लतीफ छोड़कर भाग गया। शाहिदा असहाय-सी एक भटियारिन से मिली जिसने इस शर्त पर रख लिया कि बच्चे को वह कभी न देख सकेगी। शाहिदा ने शर्त मंजूर की और हुआ एक लड़का जिसको मसजिद के दरवाजे पर रख दिया गया। वहां से एक आदमी उठा लाया जिसने उसे अपने ही लड़के की तरह पाला। मां होते हुए भी शाहिदा ने कभी यह प्रकट न किया कि वह उसी का लड़का है। अब शाहिदा उसकी नौकरानी थी।

दिन बीतते गये। शाहिदा की संरक्षता में लड़का बड़ा हुआ। डिग्रियां लेने के लिए कालेज में पढ़ने लगा और वहीं की एक लड़की से प्रेम करने लगा। शादी में असफल होने के कारण दोनों ने भागने की सोची, क्योंकि बच्चों की बातें कभी बड़ों को पसन्द नहीं आतीं। शाहिदा को उनके भागने की बात मालूम हुई ? और उसी रात में उसने अपनी कथा बताकर लड़की को समझाया, जिसके फलस्वरूप लड़की ने भागने से इनकार कर दिया। उसने (लड़की ने) घर आकर मां-बाप को समझाया और वह सफल भी हुई। इस तरह अन्त में उन दोनों की शादी हुई।

कथाकार हैं श्री हरप्रसाद शर्मा। कथानक के लिहाज से चित्र प्रथम श्रेणी का है। वास्तव में आजकल हिन्दुस्तान में ऐसे ही चित्रों की आवश्यकता है। हिन्दुस्तान की नौजवान लड़कियों के लिए यह चित्र पथ-प्रदर्शक का काम देगा, क्योंकि ज्यादातर वह शौक में आकर प्रेम करती हैं; और शौक? शौक की दुनिया में कोई कीमत नहीं है।

अभिनय की दृष्टि से चित्र में सर्वश्रेष्ठ अभिनय शाहिदा के रोल में श्री मायादेवी का है। यह बाम्बे टाकीज से ख्यातिप्राप्त एक पुरानी तारिका है। लतीफ के रोल में श्री डब्ल्यू० एम० खां हैं। जिसकी शक्ल ही से खल नायक का रूप भासित होता है। शाहिदा को छोड़कर भाग आने के बाद उसने जो एक कोढ़ी का अभिनय किया है वह बहुत ही उत्तम हुआ है। बाकी कलाकार अपने अपने स्थान पर किसी तरह से खरे ही उतरे हैं।

चित्रालेखन तथा टेकनिक निम्न कोटि का है। इसमें कोई शक नहीं कि चित्रालेखक ने दूरन्देशी से काम लिया है। खासतौर से उसने प्रेम के दृश्य "लाइट एण्ड शेड" में दिखाये हैं जो उत्तम ही नहीं अति उत्तम बन पड़े हैं। "क्लोज अप" के भी कुछ दृश्य प्रशंसनीय हैं। टेकनिक के लिए बरुआ द्वारा दिग्दर्शित "न्यू थियेटर्स" कृत देवदास से बहुत कुछ सहायता ली गई है।

ध्वनि, संगीत तथा वेश-भूषा से चित्र के धरातल को एक धक्का-सा लगता है। गीत और संगीत एक साथ बैठकर "कम्पोज" नहीं किये गये हैं। संगीत उखड़ा उखड़ा-सा नजर आता है। पार्श्वसंगीत ने मनोभावों का विकास किया तो जरूर है; परन्तु उत्तमता नहीं आ पाई है। इन सभी बातों के देखते हुए चित्र दूसरी श्रेणी का है।
निर्माता श्री "सिब्तम फजली"
दिग्दर्शक श्री "हरप्रसाद शर्मा"
कार्य प्रशंसनीय है।

गुरुकालनी नृत्य का एक [illegible]

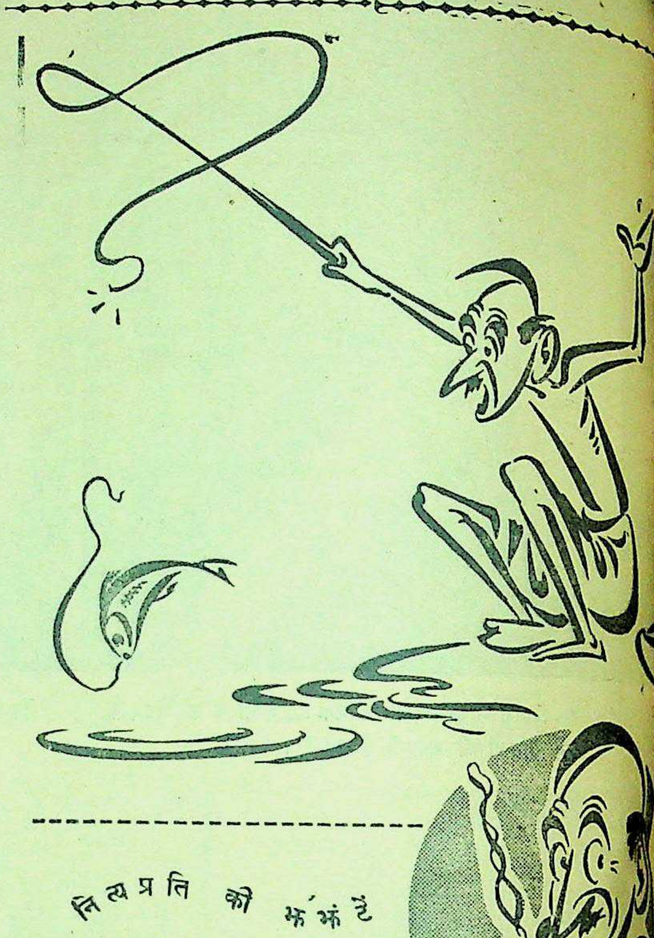

नित्यप्रति की झंझटें
चाय
से मिटाइये
इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

लिपटन
माने
अच्छी चाय
LIPTONS
WHITE LABEL
TEA
ONE POUND NETT

सम्पादक के नाम चिट्ठियाँ

हमारे शरणार्थी भाई

भारत के इतिहास में १५ १९४७ भी एक संस्मरणीय दिवस दिन भारत हजारों वर्षों की से विमुक्त हुआ था। सैकड़ों वर्षों से नौकरशाही नीति द्वारा इस देश जारी था। १५ अगस्त के दिन में अपना ही राज्य' की उक्ति हुई। देश के जन-सेवक राष्ट्र के कर्ण- । लेकिन एक ओर जब 'स्वाधी- ' के उपलक्ष में खुशियाँ मनाई थीं, जन-जन आनन्दित था, लाल तिरंगा झण्डा लहराया जा रहा हमारे ही देश में, दूसरी ओर मार- और अमानुषिक कृत्य सम्पन्न हो एक सम्प्रदाय के लोग दूसरे सम्प्र- को अपना वैरी समझकर प्राण अपना कर्तव्य समझते थे। मज- हब में मतवाले पाकिस्तानियों ने को तिलांजलि ही दे दी। वे इन्सानियत क्या होती है? वे के इल्हाम और कुरान के को भूल गए। बच्चे से लेकर पर अत्याचार किये गए। और बलात्कार खुलेआम । "धर्म-परिवर्तन अथवा एक ही नारा था। पंजाब जो-जो अत्याचार हुए हैं, अत्याचार भी लज्जित है। के आगे नोआखाली की है। केवल यही नहीं, साम्राज्यवादी नीति के कारण को भी अत्याचारों का पड़ा है। आज भी वहाँ द्वारा जो अन्याय हो रहा है, अपरिचित है। आबादी की की घटना पाकिस्तान के श्री जिन्ना के दिमाग का दरसाती है। आज भी की समस्या पूर्ण रूप से पाई है। सिन्ध से हजारों ही आने बाकी हैं। (वैसे पाकि- अव्यवस्था को देख, आज भी रहे हैं!) पाकिस्तान से भारत में आए हैं, उनका सब गया; जमीन-जायदाद, मकान ही। रिश्तेदार मारे गये सो श्रीयुत सन्तराम बी० ए० ने मुझे लिखा था—जात-पांत के सब कागजात, स्थावर आदि लाहौर में ही रह गई है। पत्र का प्रकाशन, सम्पादन) कार्यालय का भी यही हाल स्वयम् बड़ी मुश्किल से भारत में आ सके। हिन्दुस्तान के हमारे सामने सबसे बड़ी शरणार्थियों के निष्कासन की थी उनके पुनर्स्थापन की ही समस्या भारत के प्रायः प्रत्येक प्रमुख शरणार्थी आए हैं। दिल्ली के नामक स्थान में हजारों ही कैम्पों में दिन काट रहे हैं; इसी बम्बई के निकट चेम्बूर स्थान में सिन्धी शरणार्थी कैम्पों में बसे रहने के लिए ठौर भी नहीं है। अप्रैल को चेम्बूर के शरणार्थी एक नवयुवक ने इसलिये आत्महत्या कर ली कि उसे कहीं काम नहीं मिला। बेकारी का सवाल भी इस प्रकार बहुत बढ़ा है। आज देश के नागरिकों का कर्तव्य है कि अपने शरणार्थी भाइयों को वे अपनावें। उन्हें हर प्रकार की सुविधायें प्रदान करें। यह माना कि वे अन्य प्रान्त से आने के कारण (विभिन्न रीति-रिवाज होने से) हममें शीघ्र ही घुल-मिल नहीं सकते परन्तु उनकी दिक्कतों को हमें समझना है। बम्बई सरकार ने २५ प्रतिशत नौकरियाँ शरणार्थियों के लिए सुरक्षित रखी हैं। अन्य प्रांतीय सरकारों तथा देशी राज्यों के लिये यह अनुकरणीय आदर्श है। शरणार्थी-समस्या साथ-ही-साथ पाकिस्तान से दहेज के तौर "अपहृत महिलाओं का प्रश्न" भी हमें मिला है। अनेक निर्दोष बहनों पर वहाँ अत्याचार किये गए। बेचारी कुसुम-सी कोमल बालिकाओं का उसमें कोई दोष नहीं। महात्मा गांधी ने हमें आदेश दिया था कि सहर्ष हम उन्हें अपनावें। श्रीमती रामेश्वरी नेहरू, राजकुमारी अमृतकौर आदि महिलाओं तथा गणमान्य देश-नेताओं और हिन्दू धर्माचारियों ने भी उन्हें अपनाने की व्यवस्था दी है। भारत सरकार की ओर से पिछले दिनों 'अपहृत महिलाओं को अपनाओ—सप्ताह' भी मनाया गया। उन कुमारिकाओं और बहनों को आज समाज बहिष्कृत न समझे। समाज किसी व्यक्ति-विशेष का नाम नहीं; व्यक्तियों से ही समाज का निर्माण हुआ है। अतः प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह इस कार्य में पूर्ण रुचि ले और सहयोग दे। आज पश्चिमी पाकिस्तान से २६५१ अपहृत स्त्रियाँ भारत की सीमा में आ गई हैं; इनके अतिरिक्त कुंजाह कैम्प से ६८२ काश्मीरी स्त्रियाँ भी प्राप्त हुई हैं। हमारी सरकार अपहृत स्त्रियों से पैदा होनेवाले बच्चों के लिए एक धात्रीगृह भी खोल रही है। देश के नवयुवकों का कर्तव्य है कि हीन और हेय भावों को त्यागकर, खुले दिल से इन बहनों को वे अपनावें। यह भारतीय संस्कृति के अनुकूल है। 'यत्र-नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' ही हमारा आर्य-वाक्य है। ज्येष्ठ और श्रेष्ठ साहित्यकों का कर्तव्य है कि इस दिशा में उचित आन्दोलन किया जाय। पिछले दिनों अखिल भारतीय रेडियो के दिल्ली स्टेशन से बोलते हुए प्रो० प्रभाकर माचवे जी ने शरणार्थियों पर लिखी गई तीन कहानी-पुस्तकों की आलोचना की थी; पुस्तकों के लेखक सर्वश्री 'अज्ञेय' व कृष्णचन्द्र जी आदि हैं। आज आवश्यकता है कि ऐसे साहित्य का सृजन हो जिससे देश की इन महत्त्वपूर्ण समस्याओं के सुलझने में समुचित सहयोग मिल सके। आज समाजवादियों के कांग्रेस से पृथक् हो जाने पर चुनाव-चर्चा जोर पकड़ रही है। परन्तु ऐसे आड़े समय में हमारा कर्तव्य है कि अपनी सरकार के प्रत्येक कार्य में हम योग दें और ठोस तथा बापू के बताये रचनात्मक कार्य में ही अपना ध्यान केन्द्रित करें।

पिलानी (जयपुर) —अखिल विनय

* * *

सम्पूर्ण देवनागरी टाइपराइटर का आवश्यक अंग

यह प्रसन्नता की बात है कि आज हिन्दी के टाइपराइटर की आवश्यकता इतनी अधिक हो गई है कि इस विषय पर समाचारपत्रों में प्रायः चर्चा होती है। धीरे-धीरे अधिकांश लोगों का यह मत तो स्पष्ट हो गया है कि वर्तमान देवनागरी-लिपि का आमूल परिवर्तन इस प्रजातंत्र युग में जनता कभी न स्वीकार करेगी विशेषकर १२ प्रतिशत साक्षर जनता। क्योंकि कल्पनातीत समुद्र-मंथन से उत्पन्न सर्वथा नवीन लिपि अर्द्ध साक्षरों और निरक्षरों को एक भयप्रद गोरखधंधा प्रतीत होगी।

दूसरी ओर लगभग छः-सात सौ छापे के टाइपों की तो क्या, केवल स्वर और व्यंजनों के प्रचलित रूपों की संख्या १०० से अधिक हो जाती है। व्यापकता के पुजारी इसके कई उपाय बताते हैं। टाइपराइटर की एक पंक्ति में अधिक से अधिक १२ चाभियां अर्थात् १२×२=२४ या भारत में अप्रचलित डबल शिफ्ट में १२×३=३६ चिह्न हो सकते हैं। पुराने 'नागरी टाइपराइटर' में ४२ चाभियां और डबल शिफ्ट रीति से १२६ चिह्न हैं। अभी हाल में एक लेख में पांच पंक्तियां रखकर व्यापकता की रक्षा की गई है। परन्तु यह कार्यालयों और दूकानों के लिए सर्वसाधारण को कभी मान्य नहीं हो सकता।

क्या यह हस्त-लेख से उत्पन्न संयुक्ताक्षरों के अनेक विशिष्ट रूप आवश्यक हैं? उदाहरण के लिए र के ही ॅ, रु, रू, । और ् पांच रूप ले लीजिए। टाइपराइटर या लाइनोटाइप में गति के लिए ही नहीं, यदि हम लिपि को वेद-मंत्रों की भांति अचल मानने के अपने दुराग्रह से अहिन्दी प्रान्तों के राष्ट्रभाषा सीखने में अनावश्यक अड़चन डालकर अपने ही पैरों में कुल्हाड़ी न मारना चाहें, तो विवेक और तर्क के सहारे इनको कम से कम और अनिवार्य संख्या तक ही सीमित रखना पड़ेगा। उदाहरण के लिए यदि अ को मूल स्वर मानकर उसी की बारहखड़ी बना ली जावे तो जनता थोड़े ही दिनों में महात्मा गांधी और राहुल जी ऐसे, अन्य दिशाओं में भिन्न, हिन्दी-हितैषियों के द्वारा प्रचलित यह रीति मान लेगी। विद्वानों और विचारकों को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए कि स्वर और व्यंजनों के लिए कम से कम स्थान देना पड़े। परन्तु इस बात का ध्यान रहे कि लिपि के प्रचलित रूपों का ही आधार रहे और साथ ही किसी प्रकार की नटलीला पूर्ण और आधे अक्षर बनाने के लिए न करनी पड़े।

क्योंकि संक्षेप में जनता स्पष्ट रूप से यह चाहती है कि टाइपराइटर में ४० और ४८ के बीच में चाभियां हों और प्रत्येक चाभी में २०० से अधिक चिह्न न हों अर्थात् कुल चिह्न ८० और ९६ के बीच में हों। साथ ही यदि हिन्दी टाइपराइटर को भी अन्य भाषा के टाइपराइटरों की ही भांति साधारण साहित्य (भाषा-विज्ञान, वैदिक मंत्रों आदि को छोड़कर) और व्यापारिक पत्र-व्यवहार के लिए समान उपयोगी सिद्ध होना हो तो—निम्नलिखित अंगों का समुचित समावेश होना चाहिए:—

(१) स्वर, मात्राएँ, व्यंजन और उनके अर्ध रूप। यदि हो सके तो नीचे ऊपर की मात्राएँ और संयुक्ताक्षर पार्श्व में हो जावें।

(२) १ से लेकर ० तक १० अंक।

(३) विराम चिह्न, कम से कम जो हिन्दी में बहुत प्रयुक्त होने लगे हैं।

(४) व्यापारिक चिह्न—अन्य प्रचलित चिह्नों के अतिरिक्त यह नितान्त आवश्यक है कि रुपया, मन और बीघा लिखने की देशी विधि काम में आ सके जिससे महाजनी खाते, और सरकारी रिपोर्ट और रजिस्टर सभी सचमुच भारतीय रूप धारण कर सकें।

क्या स्वतन्त्र भारत की राष्ट्रभाषा के विद्वानों, विचारकों, प्रेमियों और उत्साही नवयुवकों के लिए यह कार्य असम्भव अथवा असाध्य है? मैं, व्यतीत हुए अहिन्दी युग का एक हिन्दी विद्यार्थी होते हुए भी, न तो व्यक्तिगत रूप से और न देश के कोने-कोने में व्याप्त हिन्दी भाषियों की ओर से इस बात को स्वीकार करने के लिए प्रस्तुत हूँ। आदर्श कठिन अवश्य है परन्तु राजर्षि टंडन जी के शब्दों में जब भाषा ही राष्ट्र का प्राण है तो कोई भी कठिनाई हमारे मार्ग में बाधक न होनी चाहिए। सरल, क्रियात्मक, तर्क-संगत और सम्पूर्ण हिन्दी टाइपराइटर नवजात राष्ट्र की, स्वतन्त्रता का, आज के प्रचार-युग में, एक प्रधान अंगरक्षक सिद्ध होगा।

इन मापदंडों को आधार मानकर मैं स्वयं शीघ्र ही योजना प्रस्तुत कर रहा हूँ।

बस्ती —देवीदीन त्रिवेदी

२० अप्रैल, ४८ एम० ए० साहित्यरत्न

इंस्पेक्टर शिक्षा-विभाग

उदास हूँ इसीलिए

लेखक, श्री रमानाथ अवस्थी

रात आई सुधियां लाई दिन बटोर ले गया,
उदास हूँ इसीलिए।
दीप चूम-चूमकर पतिंग जल रहा सदा
मृत्यु चूम-चूमकर मनुष्य चल रहा सदा।
प्राण त्याग त्याग कर सदा मनुष्य ने कहा
मिलन आया प्यार लाया विरह छोर ले गया
निराश हूँ इसीलिए!

फूल बनने के लिए कली कली थिरक रही
प्रसन्न हो बगैर दाम ही बयार बिक रही
परन्तु फूल फेंक हरसिंगार वृक्ष ने कहा
उषा आई, ओस लाई, रवि बहोर ले गया
उदास हूँ इसीलिए।

एक फूल पर अनेक भ्रमर गुनगुना रहे
शूल को सदैव लोग गालियां सुना रहे
शीश डालकर तुरन्त शूल ने तभी कहा
धूल आई फूल लाई काल तोर ले गया
हताश हूँ इसीलिए।

सिन्धु में नहा नहा चमक उठी किरन परी
परन्तु आसमान की निगाह क्यों भरी भरी?
मौन स्वर में आह भर के आसमान ने कहा
मेघ आये बूंद लाय जग निचोर ले गया
उदास हूँ इसीलिए।

स्वास्थ्य-चर्चा

क्या लहसुन और प्याज तामसिक हैं?

शारीरिक और मानसिक दृष्टि से क्या यह आहार हानिकार

लेखक, श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालङ्कार

(हिमालय हर्बल इंस्टिट्यूट गुरुकुल कांगड़ी)

लहसुन और प्याज के गुणों तथा उपयोगों के बारे में हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं में मैंने कुछ लेख लिखे हैं। इनके अद्भुत गुणों को देखकर अनेक पाठक मुझसे पूछते रहे हैं कि क्या ये चीजें तामसिक नहीं हैं? और, क्या प्रत्येक व्यक्ति सामान्य अवस्था में भी भोजन के अंग-रूप में इनका प्रयोग कर सकता है अथवा केवल रुग्णावस्था में ही इन्हें खाना चाहिए?

भोजनों में उपयोग

बड़े-बूढ़े बताया करते हैं कि देवताओं के भी राजा इन्द्रदेव की रसोई में से सदा एक सुगन्ध उठा करती थी, जिसकी चाह से दूसरे देवों के मुख में पानी आ जाता था। एक दिन देवों ने उस सुगन्ध का कारण जानने का निश्चय किया। कौए को इस रहस्य का पता लगाने के लिए भेजा गया। इन्द्र के महलों में वह रसोई के पास ही एक पेड़ पर बैठा देखता रहा और मौका पाकर एक सुगन्धित कन्द को चोंच में उठाकर ले उड़ा। तब देवों को मालूम हुआ कि जिस चीज के लिए वे तरसा करते थे वह लहसुन का कन्द है।

व्यञ्जनों में मसाले की शक्ल में इस का रसोईघरों में बहुत उपयोग होता है। तेज गन्ध के कारण व्यञ्जनों में स्वाद के लिए इस की बहुत थोड़ी मात्रा पर्याप्त होती है। चीनी लोग अपने कुछ प्रिय मसालों में इसे डालते हैं। वानस्पतिक और प्राणिज भोजनों में चीन में प्रयुक्त होनेवाले पांच प्रकार के तेज मसालों में लहसुन का प्रथम स्थान है। पत्तों का शाक और चटनी बनाई जाती है। मलाया में बहुत से खाद्य पदार्थों में लहसुन का उपयोग होता है। भारत में मांस खानेवालों के भोजनों में लहसुन महत्त्वपूर्ण भाग लेता है। मांस क्योंकि तामसिक आहार है इसलिए लहसुन भी तामसिक समझ लिया जाता है। इसके बिना 'हाण्डी' नहीं पकती। 'हाण्डी' पकते हुए भूख को उत्तेजित करनेवाली जो गन्ध आया करती है वह मुख्यतया लहसुन के कारण होती है। लाहौर के बाजारों में मसाले की एक टिकिया बिका करती थी जिसमें लहसुन के साथ-साथ अन्य मसाले भी रगड़कर सुखाये होते थे। सब्जियों में और विशेषकर रसेवाले व्यञ्जनों में इस टिकिया का जरा सा टुकड़ा छोड़ देने से उनमें वही 'हाण्डी' वाली सुगन्ध आ जाती है। इससे व्यञ्जन बहुत स्वादु बन जाते हैं। पुराने विचारों के कट्टर हिन्दुओं के घरों में और मांस न खानेवालों के भोजनों में भी मैंने लहसुन को इस टिकिया के रूप में प्रयोग किया जाते हुए देखा है।

मांसों को बनाने में लहसुन आजकल आवश्यक पदार्थ समझा जाता है परन्तु अकबर की रसोई में यह बहुत कम महत्त्व का पदार्थ था। अकबर की रसोई में जो व्यञ्जन बनते थे उनके घटक और परिमाण आईने अकबरी के चौबीसवें आईन में दिये हैं। तीस प्रकार के स्वादिष्ठ व्यञ्जनों में से केवल एक में ही लहसुन डाला जाता था।

वर्जित क्यों ठहराया गया?

रोज लहसुन खानेवालों के मुख से तो इस की गन्ध आती ही है, साथ ही शरीर के बहुत से भागों के स्रावों में भी यह गन्ध आने लगती है। कन्दों में विद्यमान उड्डनशील तेल की यह गन्ध होती है। इस उग्र गन्ध के कारण ही मनु, सुमन्तु, शंख, वैखानस, अपरार्क, माधव आदि स्मृतिकारों तथा धर्मशास्त्र के लेखकों ने इसे ब्राह्मणों के लिए वर्जित ठहरा दिया था। यह स्मरण रखना चाहिए कि सब लोगों के लिए यह निषिद्ध भोजन नहीं ठहराया गया। हजरत मुहम्मद ने भी अपने उपदेशों (हदीस शरीफ) में आदेश दिया था कि मसजिद में प्याज और मूली खाकर नहीं जाना चाहिए क्योंकि इसकी गन्ध खुद को भी अच्छी नहीं लगती और दूसरों को भी बुरी लगती है। फ्रेडरिक पोर्टर स्मिथ के अनुसार चीन में भी पुरोहित का काम करनेवालों के लिए यह निषिद्ध गिना जाता था। अकबर ने लहसुन खाना क्यों छोड़ दिया था इस बात पर हमें एशियाटिक सोसाइटी (बंगाल की, १९२७, पृष्ठ २०२) से प्रकाशित आईने अकबरी से कुछ प्रकाश पड़ता हुआ दीखता है। अकबर के अन्तःपुर में जो हिन्दू रानियां थीं उनके प्रभाव में आकर अकबर ने गोमांस, लहसुन और प्याज खाना तथा दाढ़ी रखना छोड़ दिया था। धार्मिक भावना को ठेस न पहुँचाने के अलावा लहसुन, प्याज और दाढ़ी तो चुम्बन में भी अवाञ्छनीय अनुभव किये जाते होंगे।

इतिहास की साक्षी से और उपर्युक्त विवेचन से हमें पता चलता है कि लहसुन और प्याज को वर्जित ठहराने का मुख्य कारण तो इनकी आपत्तिजनक गन्ध है और गौण कारण यह है कि मांस आदि तामसिक भोजनों के साथ इनका प्रयोग अधिक होता है।

तामसिक नहीं—महात्मागांधी का अनुभव

स्वर्गीय महात्मा गांधी ने और उनके अनेक आश्रमवासियों ने ब्रह्मचर्य की साधना करते हुए इस बात को बहुत गौर से देखा है कि ब्रह्मचर्य धारण करने में कौन से भोजन-द्रव्य सहायक होते हैं और कौन से बाधक। सेवाश्रम में बहुत से आश्रमवासी लहसुन का रोज सेवन करते हैं महात्मा गांधी भी स्वयं काफी समय तक इसका सेवन करते रहे हैं। लोगों का सामान्य विश्वास है कि लहसुन पाशविक वृत्तियों को जागृत करता है। इसलिए, सात्विक वृत्ति से अपने जीवन को बिताना चाहनेवाले ब्रह्मचारियों, संन्यासियों, कुमारियों और विधवाओं को तथा गृहस्थियों के अतिरिक्त और किसी भी आश्रमवाले व्यक्ति को इसका सेवन नहीं करना चाहिए। महात्मा गांधी क्योंकि स्वयं भी काफी समय तक इसे खाते रहे हैं इसलिए इस सम्बन्ध में उनके अनुभव मैंने जानने चाहे थे। यह बात नवम्बर १९४४ की है। बापू जी ने मुझे बताया कि मैंने तो उस अवस्था में लहसुन के प्रयोग आरम्भ किये थे जब मैं ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने में पूर्णतया सफल हो चुका था और साथ ही मेरी आयु भी अधिक हो चुकी थी जिससे लहसुन में कहे जानेवाले ब्रह्मचर्य विघातक गुण का मुझ पर कोई प्रभाव नहीं दिखाई दिया। तब उन्होंने मुझे कुछ युवक और अधेड़ साधकों के नाम बताये जो इस विषय पर अपने अनुभवों के आधार पर अधिक प्रक[illegible] भावे के भाई श्री बालकृष्ण जी ने क्षयग्रस्त होने पर अपने ऊपर लहसुन का प्रयोग करके रोग से छुटकारा पाया है। सालों तक लगातार पांच तोले कच्चा लहसुन खाने के बावजूद भी उन्होंने अपने ऊपर इसका ब्रह्मचर्य-विघातक प्रभाव नहीं देखा। वास्तव में बात यह है कि यह अत्यन्त शक्तिशाली रसायन है जो वीर्य को भी पुष्ट करता है। स्वस्थ वीर्य का पैदा होना बुरी बात नहीं, परन्तु इसका दुरुपयोग करना अवश्य बुरी बात है। ब्रह्मचर्य की रक्षा करना चाहनेवाला साधक पैदा हुए वीर्य को अपनी सात्विक प्रवत्तियों के द्वारा शरीर के उन हिस्सों में पहुँचाता है जहां वह ऐसी अन्तर्मुखी शक्ति के रूप में बदल कर ओज बन जाता है जो साधक को तो उजेला देता ही है समस्त संसार को भी आलोकित करता है।

भारत का औद्योगिक भविष्य

(पेज ८ का शेष)

उद्योग न हों तब तक राष्ट्रीयकरण किसका होगा? भारत-सरकार की वर्तमान स्थिति की दृष्टि से प्रस्तुत उद्योग-नीति "मध्यवर्ती नीति" नहीं रह जाती प्रत्युत सबसे प्रगतिशील नीति ही उसे कहा जा सकता है। पूँजीवाद की भी अपनी संसार को कुछ देन है। इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता। सामन्तवाद के पञ्जे से जनता को छुड़ाकर वैज्ञानिक उत्पादन-पद्धति के पथ पर अग्रसर कराना पूँजीवाद का काम है। पूँजीवाद का नाश तो उसकी असंगतियों के कारण होता है। एक सीमा तक उसकी विशेष उपादेयता तो है ही। नये चीन में भी—जिसे आजकल लाल चीन अथवा कम्यूनिस्ट चीन कहा जाता है—पहले उद्योगों का यही हाल था। कम्यूनिस्टों को दो मोर्चों पर संग्राम करना था। पहला मोर्चा तो जापानियों का था और दूसरा मोर्चा अर्द्ध-सामन्तवाद से चीन को मुक्ति दिलाकर उत्पादन बढ़ाने का था। उन्होंने जापानियों से लड़ने को प्राथमिकता दी और अन्तरंग मोर्चे को सफल बनाने के लिए वर्ग-सामंजस्य स्थापित करने की चेष्टा की। उन्होंने भूमिपतियों से कहा कि हम तुम्हारी भूमि नहीं छीनेंगे किन्तु शर्त यह है कि किसानों को तुम ऋण-मुक्त कर दो और उनकी मालगुजारी में ४० प्रतिशत कमी कर दो। भूमिपतियों ने यह स्वीकार कर लिया। किसान व भूमिपतियों में सामंजस्य स्थापित हो गया। उत्पादन बढ़ गया। औद्योगिक व खाद्यान्न की दृष्टि से लाल चीन आत्मनिर्भर हो गया। यह एक निर्विवाद सत्य है कि च्यांग की सेनाओं से अधिक जापानी कम्यूनिस्ट सेनाओं से
घबड़ाते थे। (देखिए
"दि चैलेञ्ज आफ रेड चाइना")
धिक अंश में भारत का भी यही
राष्ट्रीय जीवन-स्तर अत्यन्त निम्न
उच्चतर कराना है। अन्तर्राष्ट्रीय
दिन-दिन उग्रतर होती जा रही है
अपनी सुरक्षा करनी है। अतएव,
रक्षा को तो हमें प्राथमिकता
होगी। इसलिए आवश्यक है कि
करण के विवादग्रस्त प्रश्न को
उद्योगपतियों और श्रमिकों में
सामञ्जस्य स्थापित किया जाय और
नए उद्योगों की स्थापना करके
वृद्धि की जाय। उत्पादन-वृद्धि से
सरकार के रहने के कारण राष्ट्रीय
स्तर स्वयमेव ऊपर उठेगा।

उद्योग-नीति की प्रतिक्रिया

यह सच है कि भारत की
अभी अनेकों दुर्बलताएँ हो सकती हैं
इन दुर्बलताओं को तो समय-समय
किया ही जा सकता है। डाक्टर
प्रसाद मुकर्जी ने उसी दिन तथा
नेहरू ने यह तो दूसरे दिन ही
दिया था कि "व्यावहारिक
आधार पर नीति में समयानुकूल
की पूरी गुंजाइश है।" जहाँ तक
पतियों का सम्बन्ध है उन्होंने अपने
तो प्रकट कर ही दिए। श्री
बिड़ला ने नीति को "उचित
उचित कदम" बतलाया है।
भी अपनी व्यापारी-सुलभ 'ननुच' के
नीति का स्वागत कर ही लिया है।
राष्ट्रीय उद्योग-पतियों का भी अभी
ही में स्वागतसूचक वक्तव्य
हुआ था। लेकिन यह सचमुच ही
आश्चर्य की बात है कि अभी तक
की किसी भी प्रतिनिधि संस्था ने
कोई मत व्यक्त नहीं किया है।
कारण स्पष्ट है। पण्डित जवाहरलाल
के मतानुसार श्रमिकों को अपने
के ऊपर विश्वास नहीं रहा है।
अपना कार्य पूरा कर दिया है अब
पतियों का कर्तव्य है कि वह
उठावें और श्रमिकों में विश्वास की
भरें कि वह वस्तुतः ईमानदार हैं।
सचमुच श्रमिकों का जीवन-स्तर
बनाना चाहते हैं। इसी कदम पर
पति श्रमिक सामंजस्य पर भारत का
गिक भविष्य निर्भर करता है।
भावी आत्मरक्षा का प्रश्न निर्भर
और निर्भर करती है राष्ट्रीय
विकास की समस्या।

ऐतिहासिक भौतिकवाद
लेखक, भूतपूर्व काकोरी-कैदी
श्री मन्मथनाथ गुप्त और श्री रमेन्द्र
लगभग ५०० पृष्ठों के सजिल्द ग्रन्थ
मूल्य केवल ६) रुपये।
मार्क्सवाद में ऐतिहासिक भौतिकवाद की गहनता को सरलतापूर्वक
के लिए इस ग्रन्थ की उपयोगिता अद्वितीय है। समाजवाद
के लिए इसका अध्ययन अपरिहार्य है।
मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

मातृमंदिर

नारी--राष्ट्र-निर्मात्री
चात्य विचारधारा के
लने की जरूरत है

क, श्री प्रेम कपूर, कंचन

सी राष्ट्र को बनाने या बिगाड़ने
एक अत्याधिक महत्त्व का कार्य
। दुर्भाग्यवश हमारे देश में शिक्षा
र बहुत कम मात्रा में हुआ है और
ी यहां तक बढ़ चुकी है कि
घर के लोगों के चरित्र से बुरी
ने का मौका तो मिलता ही है,
ल में जाकर वह जो कुछ
वह भी उन्हें उन्नति के मार्ग में
अधःपतन की ओर ले जाता
घर में मिलनेवाली शिक्षा
माता पर होता है, क्योंकि
समय कोई इतना परिचित
। वह हर समय हर बात
का मुंह ताकता है। इसीलिये
जीवन का क्षण-क्षण, नारीत्व
का ऋणी है। जन्म देने के
चाहिए, दूध पिलाने के लिए नारी
करने के लिए नारी चाहिए,
जीवन-निर्माण के लिए
। जीवन की हैं ये चार
एं जहां नारी के उत्सर्ग
है। इसलिए शिक्षा से
अर्थ नहीं जिसका
परिचय-मात्र है। शिक्षा वह
शिशु का चरित्र निर्मित
के साथ बच्चे का
शिशु अपने जीवन में
के साथ कैसा व्यवहार
मानसिक मनोवृत्तियां कैसी
चरित्र का आदर्श किस
ग्रहण करे? वह मां की
हो सकता है। जिस
में ही तरह तरह का
गया है, जिसे आगे बढ़ने
है वह जीवन के अंगों से
नहीं हो सकता। राष्ट्र
महान् प्रश्न है। उसे स्त्रियों
लिये विशेष चेष्टा और धन
की आवश्यकता है। प्रतिवर्ष
एक निश्चित धन विद्या
करता है। यदि उसे राष्ट्र के
का निर्माण करना है तो उसे
करना पड़ेगा, क्योंकि मनुष्य
उसका उपयोग एक सीमित
है; परन्तु नारी अपनी शिक्षा
अपनी संतान के सुधार में करती है। उस [illegible] अत्यन्त लाभ हो सकता है।

पुरुष स्वभाव से नकल करता है और वह किसी न किसी प्रकार लाभदायक शिक्षा ग्रहण करता है पर यदि नारी-शिक्षा भी साथ साथ चले तो पुरुष की शिक्षा और आगे बढ़ सकती है। उसका चरित्र और सुदृढ़ हो सकता है वह अधिक शुशील हो सकता है। यदि राष्ट्र की नारी अशिक्षित रह जाती है तो लाख हम अपने बच्चों को स्कूल और कालेज भेजें, उनके लिए सुन्दर से सुन्दर आदर्श कालिजों का निर्माण करें--सब कुछ व्यर्थ होगा। इस कथन की सत्यता आंकने के लिए हमारे समक्ष शिक्षा की वर्तमान पद्धति उपस्थित है। यह शिक्षित भाइयों पर व्यंग नहीं है। सत्यता के आधार पर हमें कुछ कहना अवश्य है। कितने एम० ए० बी० ए० गलियों में मारे मारे फिरते हैं। क्या सीखा है उन्होंने? विश्वविद्यालय में उन्होंने शिक्षा तो पाई है वहां की संस्कृति और स्वभाव से परिचित अवश्य हैं, पर उन्हें मिला क्या? न उनमें साहस है, न लगन है और न काम करने की शक्ति। नौकरी के पीछे परेशान हैं। यदि दुर्भाग्य से नौकरी न मिली तो और कुछ उन्हें करना आता नहीं। अधिक कष्ट पाने पर वह आत्महत्या कर लेंगे पर जीवन को जीवन-संग्राम में उतरने की चेष्टा न करेंगे। यह है उनका चरित्र-बल एवं आत्मीयता का अभाव और उनके सरस जीवन पर मातृत्व की छाप।

और आगे आने पर नारी को गृहस्थ जीवन में युवक से सम्बन्धित पाते हैं। अविवाहित होने के नाते इस जीवन के विभिन्न अंगों का पूरा अनुभव तो मुझे नहीं है, पर जहां तक मैंने समझने की चेष्टा की है गृहस्थ जीवन सुन्दरता से यापन करने के पूरे अनुसंधान न होने से किसी जाति की विशेष उन्नति नहीं हो सकती। जहां दाम्पत्य जीवन में कलह है वहां शान्ति नहीं और शान्ति के अभाव में न राष्ट्र ही उन्नति करता है और न जाति। यही कारण है कि हर वस्तु का आदर्शरूप भारत से लुप्त हो चुका है।

भारत स्वयं आदर्श का निर्माण नहीं करता वरन् किसी को आदर्श मानकर उसके पीछे दौड़ने की चेष्टा करता है। इसके फलस्वरूप हमें यहां रोग, शिशुमृत्यु, साम्प्रदायिकता, बलहीनता, आत्महत्या, नारी जाति पर अत्याचार देखने को मिलते हैं।

इन सबसे बचने के लिए हमें नारी जाति की उन्नति करना है जिससे हमारे स्वतन्त्र राष्ट्र की नींव मजबूत हो सके। स्त्रियां ही संसार का निर्माण करती हैं और यह हमारी मां बहनो के बूते का काम नहीं कि वे हमारा निर्माण करने के पश्चात् इन रोगों और संस्कारों से बचावें। ◆

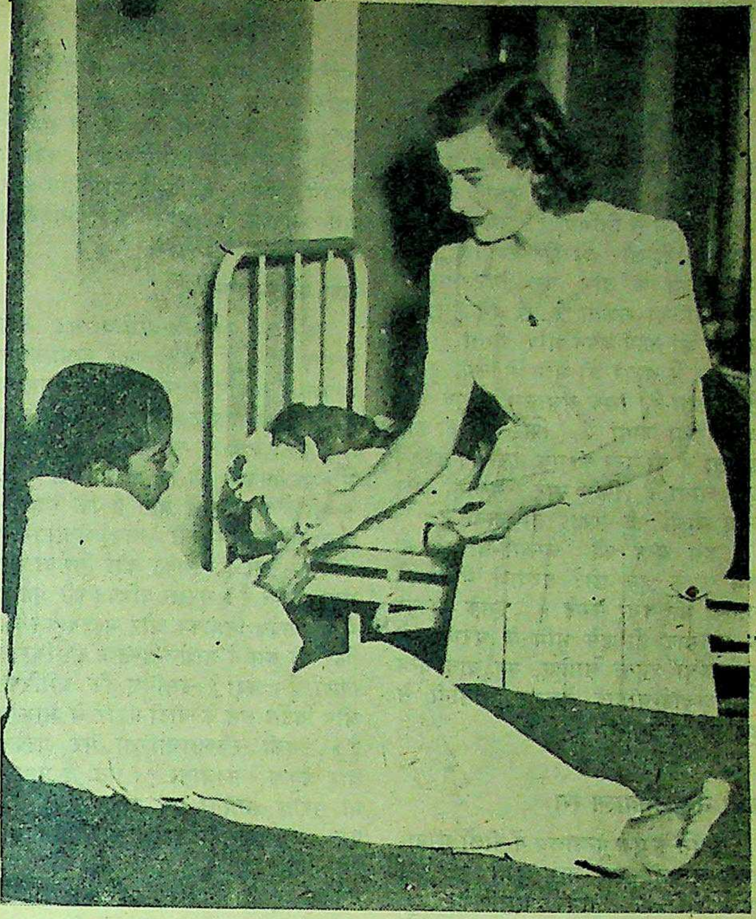

लेडी प्रमिला माउंटबेटेन दिल्ली के एक अस्पताल में मरीज़ से उसका हाल पूछ रही हैं।

इतना समझते रहने पर भी हमें बहुत से ऐसे व्यक्ति मिलेंगे जो नारी को उच्च शिक्षा देने के विरोधी हैं। जिनके सामने नारी केवल ना....एवं......री में ही रह जाती है। वे राष्ट्र में नारी के अस्तित्व को नहीं मानते उनका विश्वास है कि यदि नारी को शिक्षा दी जाय तो वह अपने आदर्श से गिर जायगी और आलस-विलास का जीवन व्यतीत करने लगेगी। पर यदि आपमें शक्ति है तो आप नारी पर ऐसे प्रतिबन्ध लगा सकते हैं जिससे वह स्वयं अपने कर्तव्यों का पालन कर सके। नारी के महान् आदर्श को न भूलिए अगर घोड़ा बिगड़ता है तो उसमें सारथी का दोष है। लोग सारथी की ही ओर अंगुली उठायेंगे। इसलिए यदि सारथी उस पर काबू पा लेता है नो सारथी की दूरदर्शिता एवं योग्यता प्रकट होती है। नारी स्वयं अपने आदर्श से नहीं गिरती।

कोई कहेगा नारी पतिभक्त नहीं रह जाती। मानता हूँ कि कोई भी सुशिक्षित नारी अपनी अच्छाई बुराई स्वयं समझती है। इस कारण यदि पति सीधी सीधी बात कहता है और वह ठीक है तो नारी पति से कदापि विमुख न होगी। परन्तु यदि पति को गुरु मानकर उसके बुरे कामों में सहायता देना पतिभक्ति कहलाती है तो यह पाप है। अन्याय का प्रतिवाद करना स्त्री का अधिकार है। अधिकांश शिक्षित स्त्रियों में यदि कोई दोष पाये जाते हैं तो उनका प्रमुख कारण यही है कि वे अपने को पाश्चात्य रूप में उपस्थित करने की चेष्टा करती हैं। पर दुख है कि वे ऐसा कर दुख को निमंत्रित करती हैं और दोष ग्रहण करती हैं।

बालों को सुश्रृंगारिक रूप से बनाकर रखिये
जीत प्रोडक्शन्स
कृत "तोहफ़ा" का
नायक "रहमान"
बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और
रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।
पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।
Vaseline POMADE
CHESEBROUGH MFG. Co.
सभी दूकानों पर

फूल आपकी किस्मत बतायेगा

भारतवर्ष की जगत्-प्रसिद्ध सच्ची साइन्स ज्योतिष विद्या गहरे अन्धकार में सूर्य की रोशनी है, यदि आप शीघ्र ही इस संसार में बदलनेवाली अपनी किस्मत के उलट-फेर का ठीक उतरा हुआ फोटो समय से पहले देखना चाहते हैं तो आज ही पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी दिलपसन्द फूल का नाम लिखकर भेज दें तो हम ज्योतिष विद्या के हिसाब से आपके आनेवाले १२ मास का लाभ, हानि, नौकरी, उन्नति, व पतन, स्त्री संतान का सुख, तन्दुरुस्ती, रोग, किसी से नया मेल-जोल, दिलपसन्द सगाई, मुकदमा परीक्षा में सफलता, लाटरी, सल्लत, किसी गुप्त ढंग से धन की प्राप्ति अर्थात् तिथि कार्ड से लेकर कुल एक वर्ष में होनेवाली सब बातों का विवरण अर्थात् मासिक वर्षफल बनाकर केवल १।) में वी० पी० द्वारा भेज देंगे डाक-व्यय इसके अतिरिक्त होगा। साथ ही बुरे ग्रहों की शान्ति का उपाय भी लिख दिया जायगा ताकि आनेवाले कष्टों को दूर किया जा सके। एक बार का अनुभव आपको बता देगा कि हम ज्योतिष विद्या में कितना ज्ञान रखते हैं ठीक न हो तो दुगुनी कीमत वापिस झूठा साबित करनेवाले को १००) रुपया देने की गारन्टी है।

श्री भृगु संहिता ज्योतिष आश्रम (D.D.) गाजियाबाद (यू० पी०)

इधर उधर की

आश्चर्यजनक यन्त्र

लन्दन की एक व्यापारिक कोठी से एक साधारण किन्तु अत्यन्त प्रभावोत्पादक यन्त्र का निर्माण हुआ है, जो अलमोनियम से निर्मित है, उसका आकार ९ इंच चौड़ा और दो फीट लम्बा है, किसी भी मकान के द्वार पर सरलतापूर्वक लटकाया जा सकता है, यह यंत्र चित्र के प्रदर्शन का कार्य अपने आप करता है, वह एक छड़ के सहारे जो भूमि से लगी रहती है लटकता है, उसके संचालन के पूर्व द्वार बन्द किया जाता है, फिर जैसे ही द्वार खुलता है तो यन्त्र की एक नली का ढक्कन खुल जाता है, फिर सारे मकान और अन्य चीजों की सफाई हो जाती है।

इस यन्त्र की लम्बाई-चौड़ाई को कम करके हम छोटे दरवाजे में लगाने लायक भी बना सकते हैं। इसके आकार के अनुसार ही इसे भूमि के धरातल से कुछ ऊँचा रहना चाहिए, यह बात यन्त्र की लम्बाई-चौड़ाई देखकर आसानी से हल हो जानेवाली है।

* * *

कभी न छूटनेवाला रंग

लन्दन के एक यन्त्रालय में नीली छायावाली रोशनी का जन्म हुआ है, इस हलके रंग का नाम 'एलकियन ब्लू' है जिसका निर्माण बहुत से रंगों और रसायनों की मदद से हुआ है; इसकी खोज का मुख्य ध्येय यह है कि कारखानों में इस प्रकार की रोशनी के द्वारा अधिकाधिक कार्य सम्भव शक्ति मिल सके, यह किसी अंश में बहुत पहले खोज ली गई थी। इस रंग का प्रयोग रोशनी के द्वारा वस्त्रों में भी सम्भव हो सका है, कारखानों में बननेवाले पैण्ट आदि कपड़ों में यह रंग विशेष प्रिय है। इस रंग की उपयोगिता छपाई आदि में भी उपयुक्त है इसी कारण इस क्षेत्र में भी इसका अच्छा प्रचार हो सकता है। बहुत दिनों पहले से इस रंग के विषय में खोजें प्रारम्भ हो गई थीं, किन्तु इसके निर्माण से हर दिशा में उत्पत्ति की वृद्धि सम्भव हो गई है।

* * *

काँच की इमारत

ब्रिटेन के औद्योगिक मेले में इस बार एक कांच की बनी हुई इमारत रखी जावेगी, यह नई चीज शीशे की बनी है लेकिन यह बहुत कमजोर नहीं है, इसी प्रकार शीशे का एक गेंद भी तैयार किया गया है जो कई रंगों से रँगा है, देखने में बहुत आकर्षक और भला मालूम होता है!

* * *

बाल बनाने का नया रेज़र

ब्रिटेन की एक कम्पनी ने एक नई तरह का रेजर बनाया है, जिससे पलँग पर लेटे-लेटे ही बाल बनाये जा सकते हैं, साथ ही रेजर काफी समय तक चलता है बहुत कम खराब होता है, बाल बनानेवाले को सर अधिक न हिलाना चाहिए ताकि चमड़ा न छिल जाय!

* * *

मछली पकड़ने की मशीन

ब्रिटेन में मछली पकड़ने की एक मशीन तैयार की गई है, जो रात और दिन में पूरा काम कर सकती ह। अब इसमें काम करनेवाले इसी काम को बढ़ाने के लिए अदन में भी इसका एक स्टेशन बना रहे ह!

राष्ट्रसंघ का व्याधिग्रस्त शरीर

(पेज ५ का शेष)

का है। जार्ज मार्शल का प्रस्ताव अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति को खतरों से बचाने के लिए यू० एन० ओ० के समस्त सदस्यों को समवेत करके एक अन्तर्कालीन स्थायी कमिटी कायम करने का है, जिससे राजनीति और शान्ति-सुरक्षा के प्रश्नों पर निर्विलम्ब विचार किया जा सके।

रूस की आशंका में

रूस ने मार्शल-प्रस्ताव का तीव्र विरोध किया है और अपने तत्प्रासंगिक भाषण में अमेरिका पर रूस के खिलाफ युद्ध छेड़ने के गम्भीर आरोप रूसी प्रतिनिधि मो० विशिस्की ने लगाये हैं। यू० एन० ओ० के विधान को जिसने सरसरी दृष्टि से भी देखा है उसे ज्ञात है कि मार्शल-प्रस्ताव में जिस स्थायी अन्तर्कालीन समिति की रूप-रेखा है उसका कोई निर्णयात्मक महत्त्व नहीं है। सुरक्षा परिषद् की अपेक्षा में वह सदैव निःशक्त और महत्त्वहीन है। फिर भी रूस ने मार्शल-प्रस्ताव का विरोध किया है। क्यों? इसलिए कि अमेरिका और ब्रिटेन रूस के वीटो-प्रहार से आक्रांत हैं। उनकी स्वेच्छाचारिता पर प्रत्येक बार अंकुश लग जाता है। अतः वे प्रत्यक्ष या परोक्ष साधनों एवं युक्तियों से यू० एन० ओ० के चार्टर को परिवर्तित कर देना चाहते हैं। यू० एन० ओ० में आज उनका बहुमत है। अमेरिका की आर्थिक सामर्थ्य से लाभान्वित होने के लिए आज अस्सी प्रतिशत राष्ट्र लालायित हैं। रूस में यह सामर्थ्य नहीं है कि वह ध्वस्त-त्रस्त विश्व को नवनिर्माण का आश्वासन दे सके। ऐसी परिस्थिति में रूस को आशंका है कि यू० एन० ओ० के चार्टर में जो परिवर्तन किये जावेंगे तो वे निश्चय ही रूस के हितों के लिए घातक होंगे। मार्शल-प्रस्ताव यद्यपि प्रत्यक्षतः चार्टर को परिवर्तनशील करार देने का प्रयत्न नहीं है। किन्तु उसके भीतर का कूटनीतिक रहस्य चार्टर में परिवर्तन की गुंजाइश पैदा करने का ही अवकाश ढूंढ़ता है। रूस के भयभीत होने का कारण यही है। वह चार्टर के सिद्धान्त को अक्षुण्ण रखना चाहता है। रूस की दृष्टि में मार्शल-प्रस्ताव का उद्देश्य सुरक्षा-परिषद् के विशेषाधिकार वीटो-प्रयोग पर अंकुश लगाना है और इस प्रकार चार्टर में परिवर्तन करने का प्रथम प्रयास है।

विश्व-शान्ति को खतरा

रूस और अमेरिका के इस पारस्परिक संघर्ष में यू० एन० ओ० का सारा कर्तृत्व पंगु हो गया है। इन दोनों महती शक्तियों का मतभेद दिन-प्रतिदिन और भी चौड़ा होता जा रहा है। समझौते के प्रयत्नों की ओर अभी तक किसी का ध्यान भी नहीं गया है। यह परिस्थिति यू० एन० ओ० के अस्तित्व के लिए भयावह है। उसका सारा आधार ही लड़खड़ा रहा है। क्योंकि वस्तुतः रूस और अमेरिका के बल पर ही विश्व-शान्ति का दारोमदार है। युद्धोत्तर विश्व का सारा भविष्य इन दोनों राष्ट्रों के दृष्टिकोण के अनुसार ही निश्चित होगा। ऐसी परिस्थिति में दोनों का मत-वैभिन्य सारी मानवता के लिए एक अशुभ लक्षण है, जिससे अकेले रूस या अमेरिका को ही हानि नहीं पहुँचेगी, बल्कि सारा मानव-समाज क्षारशेष हो जायेगा।

यू० एन० ओ० के सामने आज ये आपत्तियां हैं, जिनका सामना सारी मानवता को समवेत रूप से करना होगा। अभी इस वस्तुस्थिति का प्रारम्भ ही है और थोड़ा-सा विश्वास और साहस सारे भयाक्रान्त भविष्य का नकशा बदल सकता है। ऐक्य के प्रयत्नों का अभी प्रयोग ही कितना किया गया है? यों तो इतिहास का साक्ष्य है कि राजनीति के आदर्श कभी कार्यान्वित ही नहीं किये जा सकते हैं, जो भी इतिहास वे बनाते हैं वह उनको कार्यान्वित करने के प्रयत्नों का लेखा है। यह अनुभूति हमें आज की परिस्थितियों में प्रोत्साहन दे सकती है। हमें अपने संकल्प की गांठें दृढ़ करनी पड़ेगी और अपने आपको और भी सहिष्णु बनाना पड़ेगा—हमें समत्व भाव से एक-दूसरे को समझना और समझाना होगा। लेकिन साथ ही हमें यह भी सावधानी रखनी पड़गी कि हम कहीं सिद्धान्तों की हत्या के लिए समझौता नहीं करें जैसे पहले फासिस्टों के साथ किया था।

देश-घातक का स्वार्थ

रचयिता, श्री चन्द्रप्रकाशसिंह

गहन तमी में स्वतन्त्रता का नव-प्रकाश फिर आया,
गान्धी का सन्देश देश के प्राण प्राण में छाया।
पुण्य प्रभा प्रकटी, उलूक बन जीने की क्यों ठानी,
कब तक देकर घूस करोगे तुम गर्हित मनमानी?
घूसखोर से भी बढ़कर हो तुम पापी अन्यायी,
देकर लोभ बनाते रहते हो तुम उसे कसाई।
चांदी के टुकड़ों पर बजता है असत्य का डंका,
याद रहे जल जाएगी ऐसी सोने की लंका।
देकर घूस दूसरे का तुम प्राप्य भाग हरते हो,
धन के बल से नित समाज में नरक सृजन करते हो।
स्वाधिकार का प्राप्य भाग तुम पाने में डरते हो,
कायरता है, इसे घूस देकर ढोते फिरते हो।
आत्मघात है, अधःपात है, है यह पाप तुम्हारा,
सोचा तुमने कभी? कभी इसका परिणाम विचारा?
आफिसरों को नोटें देकर कहते पान खिलाते,
छिप न सकोगे, लाल तुम्हारा भी मुँह, क्यों इठलाते?
छल न सकोगे अधिक दिनों तक लगा लगाकर डाली,
पछताओगे हाय, देश की दुर्गतियां कर डाली।
कब मिथ्या के आडम्बर में छिपकर सत्य रहा है,
होगा परदा फाश एक दिन, समय पुकार रहा है।
भारत के विकास में गुरुतर त्याग न यदि तुम साधो,
तो कम से कम अवनति का रोक स्वार्थ तुम न आराधो।

मजदूरों का मई दिवस क्या

(पेज ६ का शेष)

राष्ट्र-रक्षा की दुहाई दी मजदूर से मेहनत करने, कमर अपील की जाती है।

मेहनत करने की मजदूर की आदत है। लेकिन कमर कसने की किस लिए? बेकारी बढ़ाने के वह बढ़ना शुरू हो गई। मुनाफे के लिए? वे भी बढ़ते चले मँहगी कम करने के लिए? वह नहीं होता। मजदूर की कमर कस पट्टी कस गई है, पेट पीठ से लग लेकिन पेट से पट्टी बांध कर तो सो सकता।

राष्ट्र। किसका राष्ट्र? खोरों अथवा मजदूरों का?

पुराण कहते हैं यह कलियुग यह सतयुग नहीं ब्राह्मण-सत्ता का नहीं। यह पंडित-पण्डों, मुल्ला-मौ पोप-पादरियों का युग नहीं। आज के नाम पर दिमागों पर ताले जा सकते।

यह त्रेता नहीं, क्षत्रिय-सत्ता, शाही का युग नहीं। आज मनुष्य मनुष्य का दास बनाने का प्रयत्न नहीं हो सकता। तीर और तलवार मदद से आज के भगवान् राम अछूत नहीं रख सकते।

द्वापर भी गया। व्यापारियों सत्ता डगमगा रही है, उसका अन्त रहा है।

यह कलियुग है। कहते हैं कलियुग है। पापियों का युग युग में वर्णभेद, भेद-भाव, मिट जाएँगे। वर्णसंकर जाति

सत्-असद्, पाप-पुण्य की करे? इस संबंध में प्रत्येक विचार हैं और विचार स्वार्थों पर रित हैं। परन्तु यह सत्य है कि की अपनी समस्याएँ हैं, इस युग के हल हैं, अपने नए मोल हैं।

कलियुग अछूतों का युग है, आज मुट्ठी भर को छोड़ कौन अछूत नहीं? यह दरिद्रनारायण, का युग है, उसकी दुनिया है। परन्तु बहुमत के पास अपनी बेड़ियों के खोने को और है क्या? यह युग का, लोकतन्त्र, प्रजातन्त्र, समाज युग है।

और मई दिवस मजदूर जन सत्ता का प्रतीक है जिसके अन्य सत्ताएँ कम्पायमान हैं।

गांधी-अभिनन्दन-ग्र
सम्पादक—श्री सोहनलाल
प्राक्कथन—सर सर्वपल्ली
संस्कृति, हिन्दी, उर्दू, राती, सिन्धी, मराठी, तामिल, मलयालम, कन्नड़, अंगरेजी और भाषाओं में महात्मा गांधी जी हुई सर्वोत्तम कविताओं का संग्रह भाषा में अर्थ-सहित।
बड़ा आकार, सुन्दर छपाई के अनेक चित्र। प्रशंसित।
सादी जिल्द ६॥) कपड़े की
मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस,

दिल्ली रेडियो पर ब्रजभाषा कवि-सम्मेलन

आल इंडिया रेडियो दिल्ली से २८ अप्रैल को रात के १० बजे एक कवि सम्मेलन ब्राडकास्ट करने का आयोजन किया गया जिसमें ब्रजभाषा के निम्नलिखित प्रमुख कविगण ने भाग लिया था––

सर्वश्री डा० रामप्रसाद त्रिपाठी, डा० रामशंकर शुक्ल रसाल, पं० अनूप शर्मा, हरदयालुसिंह, अमृतलाल चतुर्वेदी, सत्यनारायण पाण्डेय, कान्तानाथ पाण्डेय, पं० जगमोहननाथ अवस्थी, द्वारकाप्रसाद सेवकेन्द्र, हृदयनारायण पाण्डेय, हृदयेश, नवीबख्श फलक, गोपालप्रसाद व्यास।

––संवाददाता

* * *

कुठाड़ (डाक से) नवनिर्मित हिमाचल प्रदेश के प्रजामंडलों का दूसरा भारी राजनैतिक सम्मेलन श्री बुद्धिसागर नौटियाल के सभापतित्व में कुठाड़ रियासत के "वनलागी" नामक पवित्र स्थान पर धूमधाम के साथ हुआ। इस स्थान का यह पहला अवसर था जब राजनैतिक सम्मेलन में उपस्थित जनता में लगभग पांच सौ महिलाएँ भी उत्सुकता से भाग ले रही थीं।

सम्मेलन में एक विशेष प्रस्ताव द्वारा सर्वप्रथम पूज्य बापू के प्रति श्रद्धांजलि एवं उनके निधन पर शोक प्रकट किया गया। एक दूसरे प्रस्ताव द्वारा "हिमाचल प्रदेश" की स्थापना पर जनता को बधाई और रियासती सचिवालय को धन्यवाद दिया गया। साथ ही भारत-सरकार से "हिमाचल प्रदेश" की सलाहकार समिति से राजाओं को हटाए जाने की मांग की गई, तीसरे प्रस्ताव द्वारा चम्बा से टिहरी, गढ़वाल और कालका से तिब्बत तक के तमाम शेष हिस्सों को भी 'हिमाचल प्रदेश' में सम्मिलित करने तथा शराबबन्दी की जोरदार शब्दों में मांग की गई।

—संवाददाता

* * *

कसौली (डाक से) नवनिर्मित हिमाचल प्रदेश अस्थायी कांग्रेस कमेटी का एक वृहद् सम्मेलन श्री बुद्धिसागर नौटियाल, की अध्यक्षता में गढ़रवल में हुआ।

सम्मेलन में सर्वप्रथम पूज्य बापू के प्रति श्रद्धांजलि एवम् उनके निधन पर शोक प्रकट करते हुए उनके बताये मार्ग पर दृढ़ता से चलने की प्रतिज्ञा की गई, दूसरे प्रस्ताव द्वारा "हिमाचल-प्रदेश" की स्थापना पर जनता को बधाई और रियासती सचिवालय को धन्यवाद दिया गया। साथ ही भारत-सरकार से हिमाचल प्रदेश की सलाहकार समिति से राजाओं को हटाने की मांग की गई, इनके अतिरिक्त यह भी निश्चय हुआ कि चम्बा से टिहरी गढ़वाल और कालका से तिब्बत तक के शेष भागों को भी हिमाचल प्रदेश में सम्मिलित किया जाय। कसौली, गढ़रवल आदि बाजारों की शराब की दूकानों को शीघ्रातिशीघ्र उठा देने की मांग हिमाचल प्रदेश सरकार से की गई।

––संवाददाता

* * *

फतेहपुर जिले के प्रमुख कांग्रेस नेता श्रीयुत पं० दयाशंकर जी मिश्र, "सूर्य" को संयुक्तप्रान्तीय सरकार ने हाल ही में जिला प्रान्तीय रक्षा-दल चुनाव कमेटी का सदस्य नामजद किया है। श्रीयुत मिश्र जी दुबारा पुनः जिला डेवलपमेंट बोर्ड के भी सदस्य प्रान्तीय सरकार द्वारा नामजद किये गये हैं। इस समय भी आप जिला डेवलपमेंट बोर्ड की कार्यसमिति के सदस्य हैं।

––संवादाता

कानपुर में स्वावलम्बी महिला विद्यालय—महिलाओं और लड़कियों को साहित्य की प्रवेशिका, विनोदिनी, विदुषी, विशारद, साहित्यरत्न इत्यादि परीक्षाओं के अतिरिक्त पंजाब की भूषण और प्रभाकर तथा देवघर और गीताप्रेस की परीक्षाओं की तैयारी भी कराई जाती है। "गन्धर्व भारतीय आर्य संगीत पाठशाला" की ओर से इसी विद्यालय के अन्तर्गत कोर्स के अनुसार संगीत और सब प्रकार के वाद्ययन्त्रों का भी शास्त्रीय अभ्यास कराया जाता है। साहित्य और संगीतकला के साथ ही मराठी, गुजराती, बंगाली, तामिल, तेलगू इत्यादि प्रान्तीय भाषाएँ सीखने सिखाने का भी समुचित प्रबन्ध है। सिलाई, बुनाई, कढ़ाई इत्यादि सुई के काम के अलावा चर्खा क्लास में धुनाई, कताई, बुनाई इत्यादि का अभ्यास भी महिलाओं को कराया जाता है। शरणार्थी महिलाओं को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। प्रत्येक कला की शिक्षा के लिए योग्य अध्यापिकाओं का प्रबन्ध किया गया है।

विद्यालय––प्रातःकाल––६॥ बजे से ८॥ बजे तक, सायंकाल—५ बजे से ७ बजे तक, मध्याह्न––११ से १ तक खुलता है।

नोट—विद्यालय का स्थान गांधीनगर, जवाहर पार्क सिंधी गुरुद्वारा के सामने पं० लक्ष्मीधर बाजपेयी का मकान नं० १०६।२७७, कानपुर।

––ज्वालादेवी शर्मा

* * *

पिलानी (जयपुर) में हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ पुस्तक का कार्य चालू हो गया है। किन्तु अभी पूरी संख्या में पत्र नहीं मिले हैं। सम्पादक-गण अपने मण्डल का पूरा-पूरा विवरण लिख भेजें और पत्रकार कला-सम्बन्धी लेखों का भी स्वागत होगा। इस विषय में हर प्रकार की सम्मतियों एवं सुझाव पर विचार होगा।

एक बार पुनः प्रार्थना है कि जो सम्पादकगण पत्र के नमूने की प्रति भेजना भूल गये हों वे कृपया शीघ्र ही भेज दें। सहयोग की प्रतीक्षा में।

––गीण्डाराम वर्मा 'चंचल'

* * *

अजमेर में कायस्थ मोहल्ले के श्री रघुनाथ जी के मन्दिर में इस वर्ष रामनवमी का उत्सव बड़े समारोहपूर्वक मनाया गया। जिसमें सर्वश्री चंद्रगुप्त वार्ष्णेय, रमेशचन्द्र जी शास्त्री, दौलतराम सिंधी के भाषण और सुश्री गोदावरी देवी, शान्तादेवी, पद्मादेवी, तथा सुश्री दीप्ती बोस के सुमधुर गायन विशेष उल्लेखनीय हैं। उत्सव के संयोजक श्री गोवर्धन जी दिवाकर नें सबको धन्यवाद देकर सभा समाप्त की।

—संवाददाता

* * *

गंगानगर (बीकानेर) में रामनवमी के शुभ अवसर पर गंगानगर के हरिजनों एवं अन्य दलित वर्गों के एक जलूस ने स्थानीय प्रजा-परिषद्, बन्धु-वर्ग एवं विद्यार्थी-क्लब के प्रयत्नों से, सनातन-धर्म सभा की मंजूरी पर स्थानीय सत्यनारायण जी के बड़े मन्दिर में प्रवेश किया। सब आगन्तुकों ने भक्तिभाव से दर्शन किए तथा पुजारी ने सबको चरणामृत बांटा एवं गंगानगर के समस्त नागरिकों ने इस अवसर पर अत्यधिक हर्ष प्रकट किया। रात को पब्लिक पार्क में एक विराट् सभा हुई।

—संवाददाता

* * *

दिल्ली का सुप्रसिद्ध सिने-साप्ताहिक 'चित्रपट' जून, ४८ से अपने १६वें वर्ष में पदार्पण कर रहा है। उसका जून का अंक पूज्य बापू की स्मृति में बड़ी सज-धज के साथ सुन्दर व आकर्षक रूप में प्रकाशित हो रहा है। इस अंक के लिए सर्वोत्तम लेखों, कविताओं, कहानियों तथा चित्रों का संचयन किया गया है। इस अंक का मूल्य ३) होगा।

––संवाददाता

वनवास

कवि ने रामचन्द्र जी के वनवास का अनोखा वर्णन किया है। कवि राजाराम चित्रकूट के पड़ोसी हैं और वहीं पर वनवास की अनेक मुख्य घटनाएँ हुई थीं। इस कारण यह 'वनवास' अपने ढंग की एक ही पुस्तक है। मूल्य ॥।=) चौदह आने।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

जब जिसने देखा, मुग्ध हो गया

मंजरी

श्रेष्ठ कथाकारों की सरस कहानियाँ और कथा-साहित्य पर गम्भीर तथा आलोचनात्मक लेख आकर्षक मुद्रण-विन्यास के साथ प्रस्तुत करनेवाली 'मंजरी' सांस्कृतिक मनोरंजन की एकमात्र कहानी-पत्रिका है।

एक सम्मति

प्रोफेसर शिवपूजन सहाय, भूतपूर्व सम्पादक 'हिमालय'—'मंजरी' के तीन अंक देखे और तीनों को देखकर यही धारणा हुई कि कथा-साहित्य की सबसे अच्छी प्रतिनिधि-पत्रिका 'मंजरी' ही है। छपाई सफाई और सजावट के लिए तो इंडियन प्रेस का यशस्वी नाम ही प्रमाण है, सम्पादन-कौशल में आपने भी अपनी कला का आकर्षक प्रदर्शन किया है। साज-सज्जा और सामग्री-संकलन में सुरुचि का समावेश सर्वथा सराहनीय है। कृपया विदेशों के कथा-साहित्य का ज्ञान भी हिन्दी पाठकों को कराइए। भिन्न भाषाओं की कहानियाँ देकर आप हिन्दी पाठकों को काफी तृप्त कर रहे हैं। बहुत से पाठकों ने यह मत व्यक्त किया है कि आपकी पत्रिका ही सब कहानी-पत्रिकाओं में श्रेष्ठ एवं उपयोगी है। मैं आपकी आरम्भिक सफलता पर आपको शत-शत बधाइयाँ देता हूँ।

× × ×

प्रतिमास 'मंजरी' पढ़कर आप भी अपना और अपने परिवार का सांस्कृतिक मनोरंजन कीजिए।

वार्षिक मूल्य ६) छः रुपये **प्रति अङ्क आठ आने**

सम्पादक :
देवीदयाल चतुर्वेदी

प्रकाशक :
इंडियन प्रेस लि०, प्रयाग

राष्ट्रीय स्मारक कोष !

गत सप्ताह में भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भारतीय जनता से अपील करते हुए कहा है कि सारे देशवासी राष्ट्रीय स्मारक कोष में अत्यन्त उदारतापूर्वक चन्दा दें, हमारे विचार से तो ऐसी महत्त्वपूर्ण और जिम्मेदार बात के लिए समाचारपत्रों में इसकी घोषणा बार बार न होनी चाहिए, यदि हम अपनी इतनी बड़ी जिम्मेदारी के लिए स्वयं नहीं सोच सकते तो यह बात हमारे नैतिक ह्रास का कारण बनती दीख पड़ती है, महात्मा जी की मृत्यु सम्भवतः हजारों वर्षों के पश्चात् हमें फिर सजग और जागरूक बनाने आई है, महल और झोपड़ी दोनों ही गांधी जी के निधन से अश्रुपूरित हुए।

हां, इस अवसर पर केवल आंसू बहाने से काम न चलेगा, और न यह किसी उन्नत राष्ट्र के सिद्धान्त की महत्ता ही प्रकट कर सकेगा, बल्कि हमें महात्मा जी के बताये हुए मार्ग पर चलने का प्रयास करना चाहिए, हम उनके आदर्शों को एक दिन में न समझ सकते हैं न उन पर अमल ही कर सकते हैं। किन्तु चरित्र और आदर्श के गौरव को न भूलना चाहिए, वैसे तो अभी तक महात्मा जी की स्मृति स्थायी रखने के लिए किसी भौतिक रूप के निर्माण का कोई अन्तिम निश्चय नहीं किया गया, लेकिन इतना तो निश्चय है कि उनका स्मृति-चिह्न ईंट और गारे की एक मीनार ही न होगी बल्कि इसके बजाय कोई शिक्षण-संस्था जैसी चीज बनेगी जिसमें अध्ययन करनेवाले महात्मा जी के सच्चे अनुयायी होंगे, उन्हीं के सिद्धान्तों और आदर्शों की शिक्षा ही उस संस्था की प्रणाली होगी।

आधुनिक युग में ऐसी शिक्षण-संस्थाओं का स्थापित होने का अर्थ साधारण नहीं, इसका निर्माण, धन, जन और मानवीय सेवा की शक्ति से ही हो सकता है। देश में बहुत सी आदर्श संस्थाएँ हैं, जिनमें प्रतिवर्ष लाखों रुपया खर्च होता है, इसलिए ऐसी अवस्था में यह विचार करना कि गांधी जी की स्मृति में समस्त संस्थाओं से आदर्श संस्था बने जिसमें धन भी न लगे, यह यदि कठिन नहीं तो आसान भी नहीं है। फिर भी ऐसे पुण्य और महत्वपूर्ण कार्य के लिए हमें इस समय राष्ट्रीय कोष में उसी उदारता से धन देना चाहिए, जिस तरह हमने स्वतंत्रता-संग्राम में अपने शीश दिये हैं, इस कार्य के अन्तर्गत हमारे जीवन के उच्च आदर्शों के उदय छिपे हैं, इस कार्य की सफलता हमारी नैतिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और मानवीय उन्नति का द्योतक होगी।

—यशपाल

पंक्ति पावन सरयूपारी ब्राह्मण

सरयूपारीण ब्राह्मणों के गर्ग-गौतम, शाण्डिल्य पाराशर अत्रि, भरद्वाज आदि सोलह घर अपने-अपने डीह (स्थान) से प्रसिद्ध हैं अभी तक परस्पर इन्हीं घरों को ऊँच नीच मानकर विवाह-सम्बन्ध की प्रथा चली आ रही है समान अधिकार रखते हुए भी इस छोटे-बड़े के भेद भाव द्वारा समाज में पर्याप्त विषमता फैलती जा रही है।

उच्च कुल कहलानेवाले ब्राह्मणों के दरवाजे कन्या-दाताओं के नाक रगड़ने की कथाएँ कौन नहीं जानता? और उधर निम्न कुल की उपाधि प्राप्त ब्राह्मण वर्ग अपने बालकों के विवाह के लिए समाज की ओर टकटकी लगाये ही रह जाता है समाज द्वारा प्रचारित इस भेद बुद्धि ने ब्राह्मणों के एक बड़े भाग के प्रति जो अन्याय किया वह विचारणीय है। आखिर ब्राह्मणों की लघुता-गुरुता की कसौटी क्या है? यही न कि वे पयासी के मिश्र और इटार के पाण्डे हैं अतः ऊँचे हैं और वे उपाध्याय तथा पाठक हैं अतः नीचे हुए।

ब्राह्मणों के आवश्यक कर्त्तव्यों को ताक में रख केवल इन्हीं थोथी बातों पर लड़नेवाले अदूरदर्शी एवं स्वार्थी दलों से साधारण स्थिति के परिवार पिसते चले गये, विवाहेच्छुक पुरुषों को समाज में समय पर शादी न मिलने से उत्पन्न अनीति की जिम्मेदार क्या यह भेद नीति न होगी? इसी भांति कन्याओं की शादी दक्षिण की ओर न की जाय, समाज की यह मनोवृत्ति दक्षिणस्थ ब्राह्मणों का घोर तिरस्कार करती है, आखिर यह उपेक्षा क्यों और कब तक।

हर्ष का विषय है कि 'सभी ब्राह्मण एक समान हैं। का नारा लगाते हुए पंक्ति पावन ब्राह्मण समाज, सोहागी (रींवा) ने समाज की नाड़ी पहचान खानदानी परन्तु उपेक्षित घरों के ब्राह्मणों के आंसू पोंछने का सराहनीय कार्य किया है—पर निष्पक्ष विद्वानों का यथेष्ट सहयोग न मिलने से यह संस्था अभी तक व्यापक रूप से समाज-सेवा में न बढ़ सकी।

क्या इस उन्नतिशील युग में भी अन्धपरम्पराओं का कोरा पालन ही अभीष्ट है? समाज में वाहवाही पाने के लिए न मालूम कितने घर कुलीनों के यहां कन्या देने में अपना अस्तित्व खो बैठे--बड़ों का पल्ला पकड़ने के लिए ये मिट गये पर बड़े ऐसे स्वार्थी निकले कि उन्होंने कन्या-दाता को सदैव नीच समझकर ही अपना बड़प्पन स्थिर किया।

अगणित कर्त्तव्य परायण घर समाज की विषमता फलस्वरूप अनीति की ओर झुकने के लिए विवश हुए क्रमवार भी यह आदान-प्रदान प्रचलित रहता तो गनीमत थी पर होता क्या है 'विवाह बैर और प्रीति बराबरवालों से ही करना चाहिए' छोड़कर कवर्गक व्यक्ति छलांग मारकर पवर्ग में ही पहुँचना चाहता है।

अब प्रश्न यह है कि सरयूपारीण ब्राह्मणों में ऊँच-नीच की कौन-सी कसौटी न्याय-संगत है? प्रचलित भेद-बुद्धि कहां तक ठीक है? अथवा दक्षिणस्थ विप्रों को लड़की न देना किस सिद्धान्त का प्रतिपादन है? आदि

प्राचीन नियमों के विपरीत कहने के फैशन से घृणा रखते हुए हम नम्रतापूर्वक समाज के कर्णधारों एवं विद्वज्जनों का ध्यान इस ओर आकर्षित कर आशा करते हैं कि वे वस्तुस्थिति को परख इस गम्भीर एवं आवश्यक समस्या को सुलझाने के लिए अवश्य समय निकालेंगे।

कृष्ण कुटीर —बालकृष्ण पाण्डेय
ग्राम परसरा प्रयाग

मनोरञ्जक चुटकुले

हैदराबाद हमारे अर्थमंत्री की तरह है बेचारा पाकिस्तान सरकार के लिए हिन्दुस्तान को भी नष्ट करना चाहता है जैसे हमारे अर्थमंत्री राज्य को धन देने के लिए टैक्सों की भरमार किये हैं।

× × ×

भारत के खाद्य मंत्री श्री जयरामदास दौलतराम ने कहा है कि अन्न का दुरुपयोग किसी प्रकार भी न किया जाय, हमारे विचार से तो देश के तमाम कुत्तों को बेकार ही भोजन दिया जाता है वे काटने के अलावा कुछ नहीं करते।

× × ×

भारत के अर्थमंत्री ने कहा है कि कोई भी ईमानदार व्यापारी लखपती नहीं हो सकता लेकिन आजकल तो बेईमानी छिपाने के लिए खद्दर की टोपी सबसे उत्तम चीज है!

× × ×

एक साहब कमरे में बैठे
में काली पालिश कर रहे थे,
मित्र कमरे में गये उन्होंने
'आप अपने जूते स्वयं काले
उत्तर मिला, "और आप
काले करते हैं?"

× ×

एक बहरे आदमी के
साइकिल पर चढ़े सज्जन गिर
उन्होंने उससे कहा, "क्यों जी
से घंटी बजा रहा हूं सुनते
बहरे आदमी ने जवाब दिया
हैं घंटी तो उनके लिए है, अब
सुनते उनके लिए भी कुछ लगवा

× × ×

एक मिल-मालिक को एक
की जरूरत हुई, उसके लिए
दरख्वास्तें आईं एक आदमी
मालिक ने उससे कहा अपनी
लाइए, उसने जवाब दिया,
की क्या जरूरत मेरे हाथ में
के सामने बी० ए० लिखा है,
पूछा—'उमर क्या है?' उसने
दिया "आपसे छोटी और आपकी
बड़ी।"

× × ×

एक सम्पादक से एक व्यापारी
कहा कि आपका अखबार तो कोई
पढ़ता, सम्पादक ने कहा आप कोई
छपवाइए तो देखिए—तीसरे दिन
ने उसी अखबार में छपने के लिए
लड़की की शादी का समाचार
सम्पादक ने जान-बूझकर न
यह हुआ कि शादी के दिन कोई
व्यापारी दौड़कर आया सम्पादक
कहा, "आप ही तो कहते थे कि
अखबार कोई नहीं पढ़ता, इसलिए
आज छापा ही नहीं।"

× × ×

सिद्धराज-समीक्षा

लेखक, व्रजभूषण शर्मा, एम० ए०

सिद्धराज-समीक्षा श्री मैथिलीशरण जी गुप्त के ऐतिहासिक खण्ड काव्य 'सिद्धराज' का सर्वाङ्ग-पूर्ण विवेचन प्रस्तुत करती है। कथावस्तु, कथोपकथन, चरित्र-चित्रण, भाव-वर्णन, विचार-धारा, भाषा-शैली आदि सभी आलोच्य विषयों की इस पुस्तक में समीक्षा की गई है। परिशिष्ट में कठिन अंशों के अर्थ तथा अंतर्कथाएँ दे दी गई हैं। इस प्रकार यह पुस्तक उक्त काव्य को समझने तथा विभिन्न दृष्टिकोणों से अध्ययन करने की सभी सामग्री प्रस्तुत करती है। मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

हमारे कुछ साहित्यिक ग्रन्थ

कामायनी-अनुशीलन

महाकवि 'प्रसाद' के महाकाव्य 'कामायनी' पर अनेक समीक्षकों ने विचार प्रकट किये हैं। इस पुस्तक में लेखक श्री रामलालसिंह एम० ए०, बी० टी०, साहित्यरत्न ने कामायनी के ऐतिहासिक तत्त्व, प्रकृति वर्णन, चरित्र-चित्रण, छन्द-विधान, भाषा और रस-संचार आदि पर बड़ी मार्मिकता से अनुशीलन किया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३) तीन रु०

कामायनी का विवेचन

प्रसिद्ध कवि प्रसाद जी के महाकाव्य 'कामायनी' को समझने में सहायता देने के लिए पंडित व्रजभूषण शर्मा एम० ए० ने इस विवेचन को प्रस्तुत किया है। इसमें काव्य के तात्त्विक तथा मनोवैज्ञानिक सिद्धांत को स्पष्ट किया गया है। पुस्तक बड़े काम की है। मूल्य १) एक रु०।

तुलसी के चार दल

प्रथम और द्वितीय भाग

गोस्वामी तुलसीदास के रामलला नहछू, बरवै रामायण, पार्वती-मंगल तथा जानकी-मंगल का आलोचनात्मक परिचय तथा इन चारों ग्रन्थों की अध्ययनपूर्ण टीका। मूल्य प्रथम भाग का ३) तीन रुपये, द्वितीय भाग का २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

साहित्य-प्रकाश

यह पुस्तक डा० रमाशंकर शुक्ल रसाल की लिखी है। इसमें साहित्यिक सिद्धान्तों का विवेचन किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना जड़ से नष्ट करने में हमारे **"वीर्य संजीवनसत"** ने मान और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ **"तिला मस्ताना"** कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५।।=), डाक खर्च अलग।

लास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

मरदों की गलतीयाँ कीमत बाद

गलतियां हो चुकी हैं तो भी विवाह से पूर्व, विवाह के पश्चात् हम असंख्य रहे व सहे मरीज़ों को शर्तिया ठीक कर चुके हैं। हट्टे कट्टे अन्दर से खोखले कमजोर से कमजोर अहजा यानी ढीले ढाले शरीर से नवीन अवस्था का चमत्कार देखकर आप दंग रह जायेंगे। यदि हस्तकारी औषधियों और नीम हकीमों की ठगियों ने आपको हम तक आने से रोक रखा है तो मैं फिर कहता हूँ कि जिस दिन मरजी हो आइए, रहने का प्रबन्ध हमारे जिम्मे, यदि किसी कारण से लाभ न हो तो यात्रा का खर्च जेब से दूंगा इसके अतरिक्त जो डाक्टर, हकीम वैद्य सब इश्तहार झूठे समझते हैं आइए हमारे सामने हमारी औषधियों को हानिकारक सिद्ध करें तो एक हजार रुपया पुरस्कार में लें। मूल्य वाजबी।

कविराज हीरोजी वज़ीरावादी, मैनेजर दी हीरो फारमेसी रजिस्टर्ड।
डाकखाना दरियागंज की पिछली तरफ दिल्ली।

साड़ी आकर्षक डिज़ाईन

३-४ इंच चौड़ा वार्डर
८ ९ ५ गज
२३) २८)
बाकी वी० पी० से
व्यापारियों को खास सुभीता

इन्डस्ट्रीज,
नं० ६ कानपुर

ती कीमतों में

ऊंचे दर्जे की ठीक समय देनेवाली, आधुनिक आकार की घड़ियाँ। प्रत्येक घड़ी की गारंटी दो साल। गोल या चौकोर आकार की क्रोमियम केस १६), सुपीरियर १८), ४ जुवेल की २१), सेन्टर सेकंड २४)। रेक्टेंगुलर क्रोमियम केस ४०), १५ जुवेल की ८०)।

ड कं०, (D.A.)
ऐशबाग, लखनऊ

खुजली

और चमड़ीका दर्दोंके लीए

५० वर्षों से जग विख्यात

खराब नहीं करती।

नकालों से सावधान

सापट लोशन

को, डिस्ट्रीब्यूटर U.P.,AD.I.

चेहरे की सुन्दरता के लिये आपको दो क्रीम की आवश्यकता है

POND'S
COLD CREAM
Cleansing
POND'S
VANISHING CREAM
Foundation

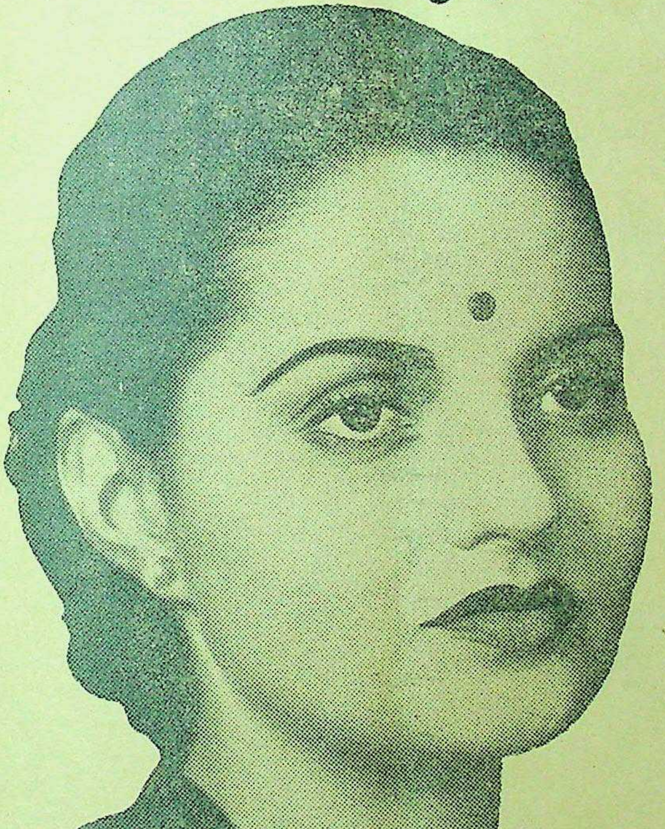

एक स्वच्छता और दूसरा सुरक्षा के लिये

परिपूर्ण सुन्दरता के लिये आपके चेहरे को दो विभिन्न क्रीम की आवश्यकता है। पहिला, गहराई में प्रवेश करते हुये निर्मलता देनेवाले **तेलों** के उत्तम मिश्रण से बनाया गया क्रीम--पांड्स कोल्ड क्रीम। दूसरा, दिन के समय अदृश्य सुरक्षा के लिये सूक्ष्म, चिकनाई-रहित क्रीम—पाँड्स वेनिशिंग क्रीम।

पांड्स कोल्ड क्रीम से अपने चेहरे को स्वच्छ कीजिये। प्रत्येक रात्रि को अपने चेहरे और गले पर इस सघन और कोमल क्रीम को लगाइये। छिद्रों में जमे हुये धूल और मैल को ढीला करने की दृष्टि से तैलों को अन्दर प्रविष्ट करने के लिये उसे हल्के-हल्के थपथपाइये। तब पोंछ दीजिये। अब देखिये आपका चेहरा कितना स्वच्छ और उज्ज्वल दिखता है!

पांड्स वेनिशिंग क्रीम से प्रति सवेरे अपने रूप की रक्षा कीजिये। यह क्रीम चिकनाई–रहित है। जब आप उसे लगाते हैं तो वह शरीर में रम जाता है—किंतु उसकी संरक्षक फिल्म धूप और गर्मी से दिन भर बचाव करती है। पांड्स वेनिशिंग क्रीम आपके चेहरे को पुष्पवत् परिपूर्ण शृंगार देता है।

स्मरण रखिये ग्रीष्म की कठोर गरमी और सर्दी की शीत दोनों ही हमारे शरीर के प्रकृत तेलों को सुखाकर उसे काला और भद्दा बना देती हैं।

यह भी स्मरण रखिये कि छिद्रों की गहराई में धूल या मैल के कणों से ही शरीर में अधिकांश दाग पैदा हो जाते हैं।

पांड्स

व्यापारिक विवरण के लिये——
एल. डी. सेमूर एंड कम्पनी (इंडिया) लिमि०
बम्बई–कलकत्ता–दिल्ली–मद्रास–नोवा गोवा–कराची

पांड्स के दैनिक, नियमित प्रयोग से चेहरा स्वच्छ, उज्ज्वल और निर्मल हो जावेगा—यह सदैव युवा दिखेगा। आपके 'सौंदर्य-नियमन' के इन साधन को प्रति दिन पांड्स के दो क्रीम से पूरा कीजिये।

साधनमाला—मंत्र, तंत्र और शक्ति - उपासना-सम्बन्धी हिन्दी में अकेली मासिक पुस्तक-माला । वार्षिक मूल्य ८) । एक प्रति १) ।

कल्याण-मन्दिर, कटरा, प्रयाग ।

मुफ्त

हमारी फर्म की सिलवर जुबली मनाई जानेवाली है । इसलिए हमने उस खुशी के अवसर पर बहुमूल्य असली फैंसी रिस्ट वाच बांटने का निश्चय किया है । कृपया आज ही दो पैसे का कार्ड लिखकर मुफ़् घड़ी प्राप्त कीजिये । ऐसा अवसर फिर कभी हाथ नहीं आयेगा ।

अमेरिकन प्राइज़ कारपोरेशन
WWZ पठानकोट (ई० प०)

जानवरों की मज़ेदार कहानियाँ

मोर और कौआ, लोमड़ी और गधा, चालाक बुढ़िया, सोने की चिड़िया, सिंह और सियार आदि कहानियाँ पढ़िए और इनका चमत्कार देखिए । मोटे टाइपों में अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य ॥≈)

आविष्कारों की कथा

मशीनें कैसे बनीं ? तरह-तरह के औजार कैसे बनें ? रेल, जहाज, तार और सिनेमा वगैरह कैसे बने ? नई-नई चीज़ें बनाकर या नये काम करके क्या आप दुनिया में प्रसिद्ध हो सकते हैं ? इन सारी बातों को जानने के लिए यह पुस्तक जरूर पढ़िए । मूल्य १)

अन्नू सरदार

भरोस सरदार के लड़की के सिवा कोई सन्तान न थी । और भरोस था ऐसा लठैत जिससे पुलिस भी डरती थी । एक जमींदार के यहाँ भरोस नौकर था । उसने अपनी बेटी को भी लाठी चलाना सिखला दिया था । इसका ब्याह जिस अनन्त (अन्नू) से किया गया था वह भरोस से सवाया था । एक झमेले में बड़ी मार-काट हुई । इसमें अन्नू की स्त्री भी मारी गई और भतीजा प्रताप पागल-सा हो गया । पुलिस ने अन्नू को गिरफ्तार कर सज़ा करा दी । इधर प्रताप भी चल बसा । यह कहानी है तो बड़ों के लिए भी रोचक, परन्तु बच्चों को बहुत पसन्द आवेगी । सुन्दर सरल भाषा, कई चित्र और कवर-पृष्ठ रंगीन । मूल्य केवल बारह आने ।

परीदेश।

यह पुस्तक खास कर छोटे बच्चों के लिए है । इसमें ऐसी एक भी बात नहीं जिसको समझने के लिए माथापच्ची करनी पड़े । इसमें रोजमर्रा की बातें बड़े ही अच्छे ढंग से लिखी गई हैं । बड़े आकार की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों और फूल-पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है । मूल्य ॥)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

---

५०० पौंड का इनाम

चौबीस घंटे के अन्दर जवानी वापस

"ओटोजन" (जड़ी बूटियों से निर्मित) पार्कर एण्ड डैविस द्वारा प्रस्तुत पहले २४ घंटे के अन्दर ही
स्फूर्ति प्रचारित करने में आश्चर्यजनक है । इसके उपयोग से स्त्री तथा पुरुष दोनों अपने वास्तविक आयु से
छोटे मालूम पड़ने लगते हैं । यह पौरुषहीनता, स्मरणशक्ति की कमी, शारीरिक दुर्बलता, रक्त-विकार, चर्मरोग,
अनिद्रा तथा शारीरिक शक्ति ह्रास को दूर करने के लिए उपयोगी है। इसके प्रयोग से २ से ४ इंच तक आपकी
तथा ५ से १० पौण्ड तक शरीर का वजन बढ़ जायेगा। आपके चेहरे पर लालिमा आ जायगी तथा आपकी
दुगनी हो जायगी। आपकी त्वचा कोमल तथा चिकनी हो जायगी। जिससे आपके चेहरे पर जवानी की
आ जायगी। ओटोजन से आपके व्यक्तित्व में वृद्धि होगी, आंखों में रौनक आ जायगी, ओठों तथा गालों पर
जायगी। इसके प्रयोग से पकते हुए बाल स्थायी रूप से काले हो जायेंगे तथा वृद्धावस्था में नये दांत निकल आवेंगे
गिरते हों, सिर रूखा हो अथवा चँदला हो गया हो तो उस समय 'ओटोजन' (टानिक) विशेष लाभप्रद सिद्ध
"ओटोजन" का प्रयोग प्रोफेसर ए० पी० पार्कर ने स्वीटजरलैंड में १०० वर्ष के शक्तिहीन बुड्ढे पर किया था।
एक मास के नियमित सेवन के बाद इस आश्चर्यजनक औषधि ने उस १००. वर्ष के रोगी को तीस वर्ष का-सा
बना दिया। थोड़े समय बाद ही एक नवयुवती से विवाह कर लिया। फिल्म-जगत् के अभिनेता व अभिनेत्रियां
औषधि के प्रयोग से ८० तथा ९० वर्ष की वृद्धावस्था में भी सौन्दर्य तथा उत्साहपूर्ण बनी रहती हैं तथा फिल्म-
निरन्तर काम करती हैं। प्रारम्भिक अवस्था से ओटोजन का प्रयोग करने से स्त्रियां सदा नवयुवती बनी
तथा उनके सौन्दर्य में किसी प्रकार की कमी नहीं आती। पुरुषवर्ग युवास्था से ओटोजन का प्रयोग करने से
पहले बूढ़े नहीं होते। बाल काले बने रहते हैं। चेहरे पर कान्ति तथा स्वास्थ्य बना रहता है। इसके प्रयोग से
अपनी वास्तविक आयु से वर्षों छोटा प्रतीत होता है।

यह बीसवीं सदी का आश्चर्यजनक आविष्कार तथा संसार का ८वां वैचित्र है। ओटोजन के प्रयोग से
स्त्रियों में तरुणाई तथा चपलता का संचार हो जाता है। तथा ओटोजन के प्रयोग के बाद स्त्री तथा पुरुष दोनों के
दिन वापस आ जाते हैं। अभी से ओटोजन का प्रयोग आरम्भ कर दें तथा सौ बरस तक स्वस्थ तथा शक्ति-सम्पन्न
इससे क्षुधा इतनी प्रज्वलित होती है कि एक पौंड अथवा इससे भी अधिक मक्खन कमजोर व्यक्ति भी पचा
इस विचित्र "ओटोजन" टानिक के प्रभाव को देखकर दुनिया के बड़े बड़े वैज्ञानिक तथा अनुभवी डाक्टर चकित

OTOGEN
OTOGEN
SOVEREIGN TONIC
OTOGEN
OTOGEN LABORATORIES

"ओटोजन" अपने प्रकार का
टानिक है जिसे संसार के स्त्री
दोनों उपयोग में लाते हैं।
विज्ञान के इतिहास में यह
निराला है आज से ही इसका
आरम्भ कर इसके गुणों का अनुभव
आरम्भ करने के पहले अपना वजन
तथा आईने में अपनी आकृति
फिर एक सप्ताह के बाद अपनी
शीशे में पुनः देखें और गौर करें कि
आकृति में तथा उत्साह में ओटोजन
व्यवहार से कितना परिवर्तन हो

भारतवर्ष में इस औषधि का
करने के निमित्त इसका मूल्य
कशन के ५) प्रतिबाक्स कर
है। आगे चल करके इसका असली दाम ३०) प्रतिबाक्स चार्ज
वर्तमान परिस्थितियों के कारण माल थोड़ा बच रहा है। अतः
आज ही भेजें सम्भव है कल पर छोड़ने से आप पीछे रह जायें।

गारंटी–५०० पौंड का नकद इनाम किसी भी वैज्ञानिक आयुर्वेदवेत्ता
साधारण को दिया जायगा जो इस आश्चर्यजनक खोज को गुणहीन साबित

नोट–"ओटोजन" अन्य शक्तिदायक औषधियों के विपरीत अपने
अकेली औषधि है जो उष्णकटिबन्ध की गर्मियों में, जाड़े में नम
मौसम में प्रसंशनीय प्रभाव दिखाती है।

उष्ण कटिबन्ध की तीक्ष्ण गर्मी में जिस समय कि आप पूर्णतः शक्तिहीन हो गये हों उस समय ओटोजन
संचय करने में विचित्र प्रभाव दिखायेगा। हमने अपनी शाखा लाहौर से हटा ली है तथा १५ अगस्त १९४७ से
लय इंगलैंड से हिन्दुस्तान आ गया है।

प्रमुख औषधि-विक्रेताओं से खरीदें अथवा हमारे यहां से शीघ्र मंगायें।

दी ओटोजन लेबोरेट्रीज

भारतवर्ष का आफिस :—पोस्ट बाक्स नं० ४४७, बंबई ।

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्र द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड १८ ... रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

सचित्र
साहिक
र्षिक मूल्य ७॥)
ति संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

९ मई, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 9th May, 1948

आचार्य विनोबा भावे
पर दिल्ली की प्रतिक्रिया

हिन्दी भाषा भाषी
भारतीय जनता का पत्र

महात्मा गांधी की विनोदप्रियता कैसी ?
शांति के ये ढोंगी पुजारी हैं

चिरस्थायी व दिमाग़ी ताक़त बढ़ाने के लिए सेवन करो
डॉ.गौतमराव केशव टॉनिक फॉस्फरस पिल्स
PILLS
डॉ.वामन गोपाळ सार्सापरिल्ला डेपो मुंबई नं २.

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी एल० एस० धोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

जब जिसने देखा, मुग्ध हो गया

मंजरी

श्रेष्ठ कथाकारों की सरस कहानियाँ और कथा-साहित्य पर गम्भीर तथा आलोचनात्मक लेख आकर्षक मुद्रण-विन्यास के साथ प्रस्तुत करनेवाली 'मंजरी' सांस्कृतिक मनोरंजन की एकमात्र कहानी-पत्रिका है।

एक सम्मति

प्रोफेसर शिवपूजन सहाय, भूतपूर्व सम्पादक 'हिमालय'—'मंजरी' के तीन अंक देखे और तीनों को देखकर यही धारणा हुई कि कथा-साहित्य की सबसे अच्छी प्रतिनिधि-पत्रिका 'मंजरी' ही है। छपाई सफाई और सजावट के लिए तो इंडियन प्रेस का यशस्वी नाम ही प्रमाण है, सम्पादन-कौशल में आपने भी अपनी कला का आकर्षक प्रदर्शन किया है। साज-सज्जा और सामग्री-संकलन में सुरुचि का समावेश सर्वथा सराहनीय है। कृपया विदेशों के कथा-साहित्य का ज्ञान भी हिन्दी पाठकों को कराइए। भिन्न भाषाओं की कहानियाँ देकर आप हिन्दी पाठकों को काफी तृप्त कर रहे हैं। बहुत से पाठकों ने यह मत व्यक्त किया है कि आपकी पत्रिका ही सब कहानी-पत्रिकाओं में श्रेष्ठ एवं उपयोगी है। मैं आपकी आरम्भिक सफलता पर आपको शत-शत बधाइयाँ देता हूँ।

× × ×

प्रतिमास 'मंजरी' पढ़कर आप भी अपना और अपने परिवार का सांस्कृतिक मनोरंजन कीजिए।

वार्षिक मूल्य ६) छः रुपये **प्रति अङ्क आठ आने**

सम्पादक :
देवीदयाल चतुर्वेदी

प्रकाशक :
इंडियन प्रेस लि०, प्रयाग

सारिडन
सर्व्वप्रकारका दर्द दूर करता है
10 Saridon BRAND ANALGESIC TABLETS
Saridon

१९४८ में क्या होनेवाला है

इस वर्ष आकाश में तारा-मण्डल की कौंसिल में एक बड़ी भारी उथल-पुथल होनेवाली है। अगर आप इस साल में होनेवाले परिवर्तनों यानी अपनी भली या बुरी दशा समय से पहले ही जानना चाहते हैं तो आज ही केवल एक पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी फूल का नाम लिखकर भेज दें। बस फिर हम ज्योतिष विद्या द्वारा आपके आनेवाले १२ महीने का लाभ या हानि, किस तिजारत से फायदा होगा, किस जरिये से रुपया मिलेगा, नौकरी, तरक्की, तनज्जली, स्त्री सन्तान का सुख, स्वास्थ्य, बीमारी, दूर की यात्रा, मुकदमा और सफलता सगाई, शादी, जमीन या जायदाद का सुख, किसी से नया मेल या नया सट्टा व लाटरी या किसी अज्ञात साधन से धन का मिलना, सारांश यह कि कार्ड लिखने की तारीख से लेकर १ वर्ष तक होनेवाली कुछ बातों का खुलासा यानी माहिक वर्षफल बनाकर केवल १।) में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाकखर्च ऊपर से लगेगा। बुरे ग्रहों की शान्ति के उपाय भी लिखा जायगा जिससे आनेवाली कठिनाइयों को दूर किया जा सके। एक बार परीक्षा से ही आपको भली भांति मालूम पड़ जायगा कि हमको कहां तक ज्योतिष विद्या में ज्ञान प्राप्त है।

श्री स्वामी योगीराज ज्योतिष आश्रम (D.D.A) फगवाड़ा
रियासत कपूरथला

T.B. टी.बी. "तपेदिक" फेफड़ों का हो, या अँतिड़ियों का, बड़ा भयंकर रोग है।

पहली स्टेज	दूसरी स्टेज	तीसरी स्टेज	चौथी स्टेज	अंतिम स्टेज
मामूली ज्वर खाँसी	ज्वर-खाँसी की अधिकता	शरीर का सूखना ज्वर खाँसी की भयंकरता	हालत खराब, दस्त आदि शुरू हो जाना	रोगी की मौत भयंर जर्मों का इधर-उधर फैलना
(Jabri)	(जबरी)	(Jabri)	(जबरी)	

[T. B. टी. बी.] तपेदिक और पुराने ज्वर के रोगियो देखो—

(२) श्रीमान् तीसलहुसेन साहब रईस मौजा मुसेपुर पो० भरतकुण्ड जि० फैजाबाद से अपने ताजे पत्र में लिखते हैं कि—आपके यहां से जिस रोगी के लिए दवा 'जबरी' हमने मंगाई थी, बहुत लाभ हो रहा है, हम तो समझते थे कि इस भंयकर रोग की कोई भी दवा नहीं है। परन्तु आपकी दवा 'जबरी' ने हमारे विचार को बदल दिया। यथार्थ में 'जबरी' इस रोग के लिए आश्चर्यजनक शक्तिशाली औषधि है, हमारी तरफ से आपको हार्दिक धन्यवाद है। परमात्मा आपको दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की दे।

श्री नागेश्वरप्रसाद तिवारी—मास्टर स्कूल नडुगावां पो० "डालटनगंज" बिहार से लिखते हैं। मैं अनेक दिनों से ज्वर खांसी से बीमार था बलगम आदि की परीक्षा पर तपेदिक (राजयक्ष्मा) रोग ही साबित हुआ। मैं रोग का नाम सुनते ही बहुत घबड़ा गया। इसी बीच परमात्मा की कृपा से आपकी अमृतरूपी दवा 'जबरी' का नाम सुना। मैंने तुरन्त आर्डर देकर पार्सल प्राप्त किया। दवा को विधिपूर्वक सेवन किया, उसके अमृतरूपी गुणों ने मुझे आश्चर्य में डाल दिया, थोड़े ही दिनों में शरीर का रंग ही बदल गया, ऐसा मालूम होने लगा जैसे कुछ रोग ही नहीं रहा। अधिक लिखना व्यर्थ हैं। यथार्थ में आपकी औषधि इस दुष्ट रोग के लिए अमृततुल्य है। जितनी भी प्रशंसा की जावे कम है।

इसी प्रकार के पचासों प्रशंसापत्र पहिले भी आप इन्हीं कालमों में देख चुके हैं, भारत के कोने-कोने में लोगों ने यह मान लिया है कि इस भंयकर रोग से रोगी की जान बचानेवाली यदि कोई औषधि है तो वह एकमात्र 'जबरी' (Jabri) ही है। 'जबरी' के नाम में ही भारत के पूज्य ऋषियों के आत्मिक बल का कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि प्रथम दिन से ही इस दुष्ट रोग के जर्म नष्ट होना शुरू हो जाते हैं। यदि आप सब तरफ से हताश हो चुके हैं तो परमात्मा का नाम लेकर एक बार जबरी की परीक्षा करें, परीक्षार्थ ही हमने १० दिन का नमूना भी रख दिया है, जिसमें आपको तसल्ली हो सके। बस—आज ही आर्डर देकर रोगी की जान बचावें। अन्यथा फिर वही कहावत होगी कि—अब पछताये क्या होत है, जब चिड़ियां चुग गई खेत। इसे डाक्टर, हकीम, वैद्य अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तारद्वारा आर्डर देते हैं। तार आदि के लिए हमारा पता केवल 'जबरी' जगाधरी (Jabri, Jagadhri) लिख देना ही काफ़ी है। तार से यदि आर्डर दें तो अपना पूरा पता दें। मूल्य इस प्रकार है—

'जबरी' स्पेशल नं० १ अमीरों के लिए जिसमें साथ साथ ताकत बढ़ाने के लिए सोना, मोती, अभ्रक आदि की मूल्यवान् भस्में भी पड़ती हैं मूल्य पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन के लिए २०) रु०। जबरी नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान जड़ी-बूटियां है पूरा कोर्स २०) रु०, नमूना १० दिन के लिए ६) रु०। महसूल आदि अलग है। आर्डर में पत्र का हवाला तथा नं० १ या नं० २ साफ साफ लिखें। तुरन्त आर्डर देकर रोगी की जान बचा लें।

रायसाहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड बैंकर्स (D) 'जगाधरी' पूर्व पंजाब (E. P.)

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ

सम्पादक—श्री सोहनलाल द्विवेदी
प्राक्कथन—सर सर्वपल्ली राधाकृ

संस्कृति, हिन्दी, उर्दू, बंगला, गु राती, सिन्धी, मराठी, तामिल, ते मलयालम, कन्नड़, अँगरेजी और भाषाओं में महात्मा गांधी जी पर हुई सर्वोत्तम कविताओं का संग्रह— भाषा में अर्थ-सहित।

बड़ा आकार, सुन्दर छपाई, के अनेक चित्र। बढ़िया जिल्द। प्रशंसित।

सादी जिल्द ६।।) कपड़े की जिल्द

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लि०

मुफ्त

हमारी फर्म की सिलवर जुबली जानेवाली है। इसलिए हमने उस के अवसर पर बहुमूल्य असली वाच बांटने का निश्चय किया है। आज ही दो पैसे का कार्ड लिखकर घड़ी प्राप्त कीजिये। ऐसा अवसर फिर हाथ नहीं आयेगा।

अमेरिकन प्राइज़ कारपोरेशन
WWZ पठानकोट (ई०

ेशदूत

[रविवार, ९ मई, १९४८

संख्या ३५]

बापू के बलिदान पर हिन्दी के कवियों से*

लेखक, श्री 'बच्चन'

[स्वर्गीय पूज्य बापू पर हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि बच्चन ने स्वतन्त्र रूप से दो नई रचनाएँ तैयार की हैं। उनमें से एक का नाम है 'सूत की माला'। पाठकों को स्मरण होगा कि पूज्य बापू के शव को सूत की माला पहनाई गई थी। इस रचना में बलिदान-सम्बन्धी घटनाओं पर १०९ कविताएँ हैं। दूसरी रचना है 'खादी के फूल।' यह रचना, हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि श्री सुमित्रानन्दन पंत और बच्चन जी दोनों के सहयोग से तैयार हुई है। इसमें ८० गीत हैं, ६४ बच्चन जी के और १६ पंत जी के, पूज्य बापू की ८० वर्ष की आयु के अनुरूप। दोनों रचनाएँ पूज्य बापू की स्मृति में श्रद्धाञ्जलि-स्वरूप लिखी गई हैं। दोनों रचनाएँ शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाली हैं। बच्चन जी की अन्य रचनाओं की भांति यह दोनों रचनाएँ भी अत्यधिक लोकप्रिय और हिन्दी-साहित्य में अन्यतम स्थान ग्रहण करेंगी, इसमें सन्देह नहीं—सम्पादक]

ओ राष्ट्र महाकवि, राष्ट्र-नाद, मैथिलीशरण,
हो गया राष्ट्र के पुण्य पिता का महामरण,
होकर अनाथ यह आर्त जाति मांगती शरण,
कुछ कहो देवता, दैन्य, शोक, संताप हरण!

तुम कहां छिपे हो युग-प्रवर्त्तक सूर्यकान्त,
युग पुरुष लुप्त हो गया तिमिर छाया नितान्त,
सम्पूर्ण देश हो रहा आज दिग्भ्रान्त-क्लान्त,
बिखराओ अपने प्रखर स्वरों की शीघ्र कान्ति!

मत रहो मौन यों बहन महादेवी बोलो,
कुछ तो रहस्य उस दुर्घट घटना का खोलो,
ओ नीर भरी बदली, क्यों उमड़ नहीं आती,
क्या रक्त सनी रह जाएगी मां की छाती?

उठ दिनकर, भारत का दिनकर हो गया अस्त,
शृंगार देश का क्षार-धूम्र में ग्रस्त-ध्वस्त,
वाणी के उदयाचल से ऐसी छेड़ तान,
तम का मसान हो नई रोशनी का निशान!

तू कहां आज भाई शिवमंगलसिंह 'सुमन',
है खड़ा हो गया वक्त आज बनकर दुश्मन,
वाणी में भरकर ब्रह्मचर्य हो जा तयार,
कर चुका नहीं है शत्रु अभी अंतिम प्रहार!

तुमसे मेरी प्रार्थना, सुमित्रानन्द (न) पंत,
सन्तों में सुमधुर कवि, कवियों में सौम्य संत,
आ पड़ी देश पर, बंधु, आपदा यह दुरन्त,
टूटे सत्यं, शिव, सुन्दरता के तन्तु-तन्तु;

माने क्या हैं जो हुआ देश पर यह अनर्थ,
बोलो वाणी के पुत्रों में सबसे समर्थ!

वंदित वीणा पर गाकर अपना ज्ञान-गान
सुस्थिर कर दो भारत माता के विकल प्राण,
ले करामलकवत भूत, भविष्यत, वर्तमान
ओ कविर्मनीषी, करो विश्व का समाधान!

---

*'खादी के फूल' से।

धी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

में होनेवाले भारत के विश्व-
के प्रतिनिधियों ने अपनी
निश्चय किया है कि पांच
शिक्षा का माध्यम अँगरेजी
राम की समझ में नहीं
आखिर वही पुराना राग क्यों
रहा है? माननीय मौलाना
आजाद ने पिछले वर्ष पटना
में दीक्षान्त भाषण देते
अलापा था। इस वर्ष
के कुलपतियों ने
साहब के पूर्व विचार
। सच तो यह है कि
चले गये लेकिन अँगरेजी
के प्रेमी अभी अपनी
हुए हैं। न नौ मन
नाचेंगी। काहे के
स्पीड में नाचेगी
तथा अँगरेजियत
पिंड छूटेगा?
कि हिन्दी का हौआ
के सामने ऐसा खड़ा
जमींदारी छिनने-
तरह जमींदार और
दारी छिनने से परेशान
कारों के मार्ग में तरह-
रहते है उसी तरह
हिन्दी को राष्ट्रभाषा
कूद मचाने पर अमादा
लेकिन यह सब कब तक?
ही ऐसी चाल चलते रहे
तो दिन लद ही गये।
हिन्दुस्तानी के हिमायतियों
ही वाले हैं, यह सही है।

*

के एक मंत्री महोदय ने
कारों की शक्ति का कोई
सकता है। अपने राम का
है। उर्दू के प्रसिद्ध शायर
भी हैं कि—इनकी नेकियों
ऐ अकबर, ये चाहें तो
टुकड़े कर दें। हैदराबादी
की खुदाई से भी बढ़कर
है। उधर डाक्टर राम-
ने कहा था कि यदि भारत
तो एक दिन में हैदराबाद
कर सकती है, श्री अरुणा
भी ऐसी ही बातें कही थीं।
है कि रजाकारों की
है कि भारत-सरकार की
। मामला कुछ सुलझता
पड़ता। ऐसी हालत में
भगवान् ही खैर करे।
अब चले ही जा रहे हैं।
थोड़ी-बहुत पिसपिस जारी
बेचारे लार्ड लुई माउंटबेटेन
किन्तु अब पांसा उलटा है।
काश्मीर का फैसला नज-

*

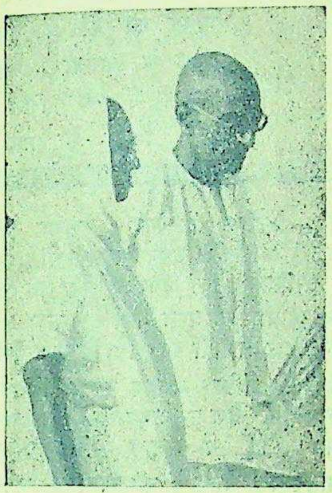

भारत के नये गवर्नर जनरल चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचार्य आगामी २१ जून से नया पद ग्रहण करेंगे।

संयुक्तप्रांतीय हिन्दुस्तानी एकेडमी की भांति बिहार में भी हिन्दुस्तानी एकेडमी कायम हो रही है। संयुक्तप्रांत में जमींदारी-प्रथा के खात्मे के लिए पहले पहल निश्चय हुआ था, बिहार ने भी उसी आधार पर कदम बढ़ाया और वहां भी जमींदारी-प्रथा के उन्मूलन का बिल असेम्बली में स्वीकार हो गया। अपने राम के कहने का मतलब यह है कि शायद बिहारी बंधुओं को यह नहीं मालूम कि संयुक्तप्रांत की हिन्दुस्तानी एकेडमी ने क्या क्या पापड़ बेले हैं? क्या अब उसी तरह का पापड़ बिहार में भी बेला जानेवाला है? हिन्दी भाषाभाषी प्रांतों के लिए इसी तरह के पापड़ बेलनेवाली तोपें तैयार की जा रही हैं। लेकिन बिहार बिहार है संयुक्तप्रांत नहीं। पापड़ बेलनेवाली तोपें एक झापड़ में दुरुस्त हो जायेंगी। उम्मीद ऐसी ही है, यों बिहारीपन से कोई और बात हो जाये तो बात दूसरी है।

* * *

नकल करना बुरा नहीं। बिहार यदि संयुक्तप्रांत की नकल कर रहा है तो कुछ बेजा नहीं। किंतु नकल करने में बिहार की दशा उस नट की सी न हो जाये जिसने नकल तो पूरी तरह से की लेकिन अंत में मूँछ लगाना ही भूल गया। इसलिए मूंछ लगाने का ध्यान अंत में अवश्य रहना चाहिए। नहीं तो संयुक्तप्रांत बाजी मार ले जायेगा। बिहार में हिन्दुस्तानी एकेडमी के बन जाने पर भी अगर हिन्दी का रुतबा ज्यों का त्यों बना रह गया, तो फिर बात ही क्या रही। इसलिए बिहार को नकल करते समय मूंछ लगाने की कला को न भूल जाना चाहिए।

* * *

संयुक्तप्रांतीय सरकार अश्लील चल-चित्रों पर प्रतिबंध लगानेवाली है। वाकई है यह बड़े खेद की बात। देखना है जनता-पार्टी इस मामले में क्या रुख लेती है? क्योंकि आखिर पार्टी के सदस्यों का मनोरंजन कैसे होगा? बंबई की पाकिस्तानी फिल्म-कम्पनियों से अश्लील चित्र इस प्रान्त में खूब दिखाये जाते हैं और ज्यादातर देखनेवाले होते हैं पाकिस्तान के परम पुजारी और जिन्ना साहब के नियाज़ का नारा लगानेवाले। जनता-पार्टी के नेता मिस्टर लारी देखना है किधर करवट लेते हैं?

* * *

काश्मीर के नेता शेख अब्दुल्ला ने कहा है कि पाकिस्तान के लिए काश्मीर की समस्या के निर्णय के लिए अब केवल दो ही रास्ते हैं। या तो जनमत गणना कराई जाये अथवा युद्ध किया जाये। अपने राम की समझ में भी यही आता है कि पाकिस्तानी नेता दोनों हाथों से हलुआ खाना अब छोड़ दें। या तो न्यायपूर्वक मत-गणना के आधार पर काश्मीर की समस्या हल की जाये या युद्ध करके हार-जीत का निर्णय कर लिया जाये। लेकिन कौन सुनता है? पाकिस्तान के आका लोग जैसी नाच नचायेंगे लियाकत अली साहब वैसा ही नाचेंगे। काश्मीर जाये भाड़ में, उन्हें क्या? पाकिस्तानी अखाड़ा कायम रहना चाहिए, इसी में अँगरेज और पाकिस्तान दोनों का भला है।

* * *

माननीय श्रद्धेय पुरुषोत्तमदास टंडन को 'राजर्षि' की पदवी मिलते ही अपने को महान् पंडित समझनेवालों के दिलों पर सांप लोट गये। अपने राम की राय में इससे कोई लाभ तो होता नहीं। श्रद्धेय टंडन जी कर्म और धर्म से 'राजर्षि' तो बन ही गये; अब तो जो होना था सो हो गया, यदि कुछ लोगों को आगे लपकना है तो 'महर्षि' 'देवर्षि' 'ब्रह्मर्षि' और 'सप्तर्षि' की गद्दियां अभी खाली पड़ी हैं। यह युग तो कंपटीशन का है। बाबू जी को तो लोग 'राजर्षि' के घोड़े पर चढ़ाकर निकाल ले गये किंतु अब तो लंबे कानवालों का ही सहारा मात्र है, देखना है किस ऋषि तक पहुँचने में किसे सफलता मिलती है?

सम्पादक का पृष्ठ

अन्न और वस्त्र की समस्या

अभी थोड़े ही दिन पहले भारत-सरकार ने जनता के कष्टों को कम करने के लिए अन्न ओर वस्त्र के ऊपर से नियंत्रण हटा लिया है, इसके लिए महात्मा जी की भी आज्ञा थी, किन्तु आज की वर्तमान परिस्थिति तथा जनता और पूंजीपतियों दोनों की नैतिकता देखकर कष्ट होता है। हमारी समझ में नियंत्रण तो केवल इसीलिए समाप्त किया गया था कि उसके द्वारा घूसखोरी और जनता के कष्ट बढ़ रहे हैं, किन्तु अब वही सारी बातें जो नियंत्रण-काल में चोरी से होती थीं खुलेआम हो रही हैं, विशेषतया कपड़ों की बढ़ती हुई कीमतों को देखकर ऐसा ज्ञात होता है कि यदि परिस्थितियां ऐसी ही रहीं तो वह समय दूर नहीं जब कि लोगों को अपना शरीर ढकना भी दूभर हो जावेगा। सड़कों के किनारे-किनारे छोटे-छोटे दूकानदार बरसाती मेंढकों की तरह दिखाई पड़ते हैं, कपड़ों पर जो कीमत छपी है उससे तिगुने दाम लेकर बेचना तो उनके लिए साधारण बात है। कभी कभी मूल्य का औसत लिखी कीमत से पांच गुना तक हो जाता है। ऐसी दशा में जनता की आर्थिक दृष्टि से जो दुर्दशा हो रही है वह बहुत दुखमय और गम्भीर है!

इन छोटे छोटे दूकानदारों के अतिरिक्त हमें मिल-मालिकों की दशा पर भी दुख होता है, महात्मा जी ने मिल-मालिकों की एक कमेटी द्वारा यह भी निश्चय किया था कि वे लोग नियंत्रण हटने के पश्चात् अधिक मुनाफा न खायेंगे, उन्होंने वचन भी दिया था लेकिन आज वे सारी प्रतिज्ञाएँ और वचन समाप्त कर दिये गये हैं। वचन के अनुसार कुछ भी नहीं किया जा रहा है, इस प्रकार हमें बड़ी निराशा होती है कि आज हम स्वतन्त्र होने पर भी अपनी जन्मभूमि के प्रति ईमानदार नहीं बन रहे हैं। सरकार को जनता के कल्याण के लिए यह व्यवस्था शीघ्र ही काबू में लानी चाहिए, अन्यथा जनता की तड़पती हुई शक्ति में तूफान आने की सम्भावना है, जो देश के हित की दृष्टि से किसी प्रकार भी हितकर न होगी।

कपड़े के अतिरिक्त अन्न-सम्बन्धी समस्या भी सुलझने के बजाय उलझती जा रही है। फसल को देखकर जनता और सरकार दोनों के बीच एक आशा-मिश्रित प्रसन्नता की लहर आई थी, किन्तु आज अन्न की मँहगी को देखकर हृदय सिहर उठता है, और ऐसा प्रतीत होने लगता है कि यदि कन्ट्रोल का ही युग रहता तो जनता ऐसी परेशान न रहती, गेहूँ, चावल और मोटे अनाज की महँगाई की ठोकर सम्पन्न वर्ग तो सह ही सकता है किन्तु मध्यम श्रेणी के लोगों के लिए यह परिस्थिति कदापि हितकर नहीं। व्यापारियों के पास गल्ला कितना भी क्यों न हो लेकिन उसके भाव में कोई भी अन्तर नहीं मिलता। इस प्रकार जीवन की इन आवश्यक वस्तुओं की महँगी देखकर अपने भविष्य के प्रति बड़ी चिन्ता उत्पन्न होती है!

गीत

लेखक, प्रोफेसर अञ्चल एम० ए०

किसी की याद में जागे तुम्हारे नैन रतनारे।
किसी का स्वप्न बुनते, रह गये ये रात भर चंचल,
लगाकर पंख तितली के सितारों सँग उड़े पागल,
शमा के आंसुओं में घुल गया इनका नया काजल,
किसी की याद में जागे तुम्हारे नैन कजरारे।
पिरोते रह गये ये रात भर किस रूप की माला,
बसन्ती चांद की किरणें न इनकी हर सकीं ज्वाला,
छलकता रह गया लबरेज इनकी प्यास का प्याला,
किसी की याद में जागे तुम्हारे नैन रतनारे।
छमासी हो गई थी रैन किसकी इन्तजारी में,
अधूरी गीत की कोमल कड़ी किसकी खुमारी में,
न जल पाया हृदय का दीप पूजा की तयारी में,
किसी की याद में जागे तुम्हारे नैन रतनारे।
सुबह की नींद में मुंह-बन्द कलियों से खुले जाते,
हवा के शर्बती झोंके इन्हें झूला झुला जाते,
कफ़स में बन्द खंजन से उलझते पर न उड़ पाते,
किसी की याद में जागे तुम्हारे नैन रतनारे।

राष्ट्रभाषा हिन्दी का अपमान

राष्ट्र भाषा का प्रश्न भारतीय स्वतन्त्रता के पूर्व हमारे सामने आया था किन्तु आज तक केन्द्रीय सरकार उसका कोई हल नहीं दे सकी। इसका कारण चाहे कुछ भी हो किन्तु इतना अवश्य है कि जब तक राष्ट्र भाषा का प्रश्न नहीं सुलझता तब तक हमारी आजादी की पूर्णता किसी न किसी दिशा में शंकित अवश्य रहेगी, जिसका प्रभाव हमारे देश पर अच्छा न होगा। अभी अभी बम्बई में प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने राष्ट्रभाषा के विषय में जो कुछ कहा उसे जानकर निराशा हुई। एक तरफ वे यह भी स्वीकार करते हैं कि भाषा कोई भी हो लेकिन मुझे 'हिन्दुस्तानी' शब्द तो बिलकुल ही पसन्द नहीं और फिर उन्होंने महात्मा जी पर अपनी श्रद्धा प्रकट करते हु कि उनकी इच्छा तो हिन्दुस्ता ही राष्ट्रभाषा बनाने की थी, इस विषय में मैं उनका विरोध सकूंगा, इस प्रकार की तो हम किसी एक निश्चित नहीं पहुँचते।

स्वतन्त्रता प्राप्त करने की जो स्थिति थी वह भाषा के लिए न किसी हद तक बहुत डांवाडोल थी, किन्तु देश के के पश्चात् अब हिन्दुस्तानी तक को जी नहीं चाहता, आज के में हिन्दू-मुस्लिम समस्या के बीच भाषा की हत्या नहीं देखना चाहते। समझ में नहीं आता कि केन्द्रीय सरकार हिन्दुस्तानी दामन क्यों नहीं छोड़ती जब कि अधिकांश जनता हिन्दी को ही के रूप में स्वीकार करने के लिए बार बार हिन्दुस्तानी का नाम अर्थ नहीं रखता, केवल इसके कि एक विशेष संप्रदाय को प्रसन्न करना है। वास्तव में यह नीति सर्वथा क्योंकि स्वतन्त्र भारतवर्ष में भाषा पर इस प्रकार की धींगाधींगी लज्जाजनक है। जनता के ऊपर के लादने का विचार कहां तक यदि हिन्दुस्तानी के नाम पर की भावना नहीं है और न सन्तुष्ट करने का प्रश्न है तो फिर के अतिरिक्त, बंगला, गुजराती आदि भाषाओं का नाम क्यों जाता ?

हम अपने नेताओं और से प्रार्थना करते हैं कि वे लिए कोई ऐसी अनुचित राय न वह जनता की सद्भावनाएँ खो बैठें। जो बड़ी सरलतापूर्वक सुलझाई है, उसे स्वयं हमारे नेता लोग ही जटिल बनाते जा रहे हैं, अथवा राष्ट्रीय सरकार को तुरन्त ही देवनागरी को करके जनता को अपनी प्रोत्साहित करे।

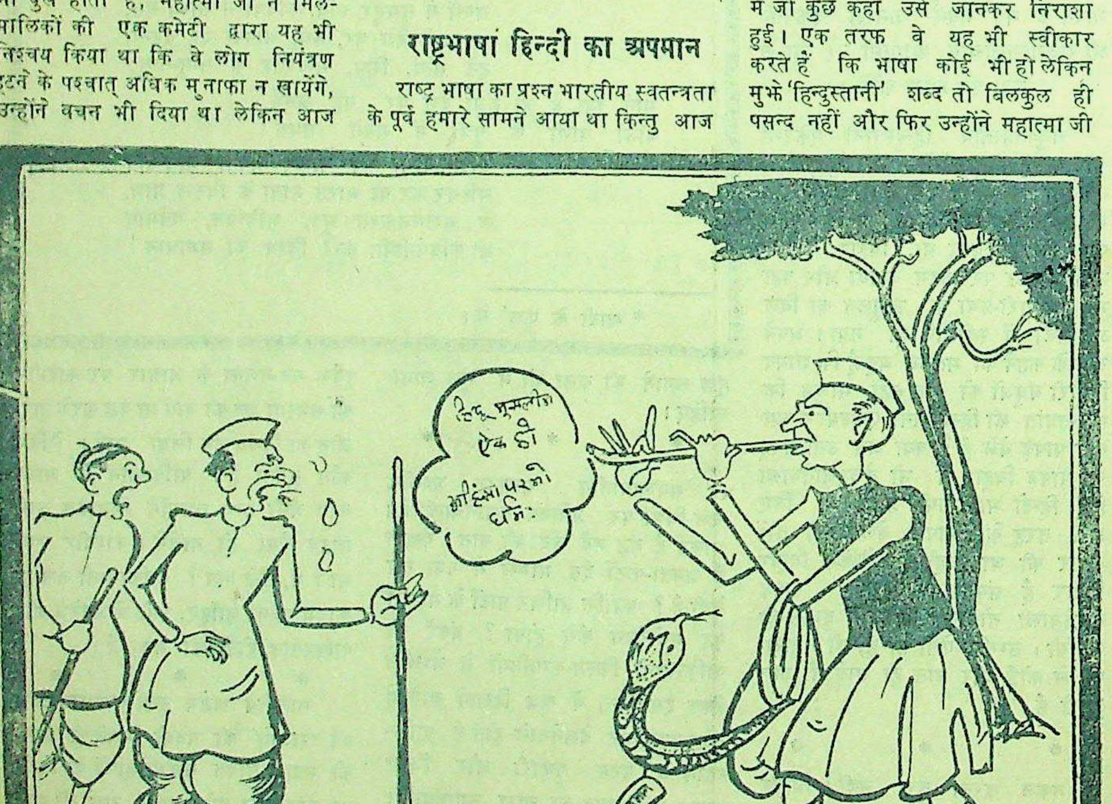

जनेवा में पाकिस्तान के प्रतिनिधि श्री जौआद ने एक सम्मेलन में कहा है कि हिन्दुस्तान में अभी ४ करोड़ ५ लाख मुसलमान मौजूद हैं; भारतीय मुसलमानों के लिये यह समझ रखने की बात है।

साम्राज्यवादी राष्ट्र और काश्मीर

भारत को अन्तर्राष्ट्रीय षड्यंत्र के व्यूह से पार जल्द ही निकलना है

लेखक, श्री श्यामविहारी विरागी, बी० ए०

साम्राज्यवादी राष्ट्रों ने काश्मीर की समस्या को लेकर सुरक्षा-परिषद् में एक प्रकार के षड्यंत्र का प्रारम्भ कर दिया है। इस प्रकार काश्मीर का प्रश्न दिन-प्रति-उलझता जा रहा है। ऐसे षडयंत्र की प्रतिक्रिया भारत पर होनी अनिवार्य है। इस लेख में लेखक ने काश्मीर की स्थिति को स्पष्ट करते हुए यह बतलाया है कि भारत-सरकार अब दृढ़तर होती जा रही है। वह काश्मीर के संबंध में उत्पन्न की जानेवाली बाधाओं का सामना करने के लिए तैयार है।

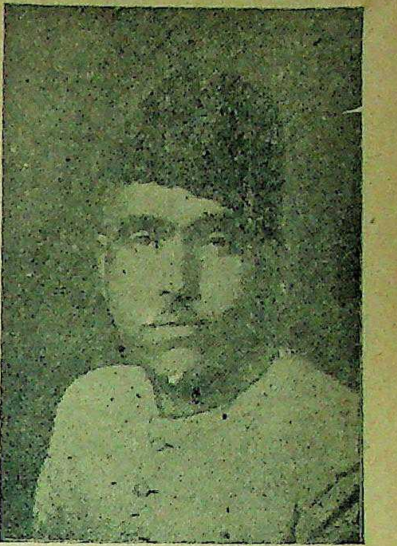

काश्मीर के प्रधान मंत्री और जनप्रिय नेता शेख अब्दुल्ला।

गुटबन्दी किशोरावस्था में थी। परन्तु दक्षिणी अफ्रीका के तानाशाह जनरल स्मट्स ने संघ के निर्णय को ठुकरा दिया। भारत ने फिर उस प्रश्न को रखा और संघ का निर्णय भारत के विरुद्ध हुआ। संघ का यह निर्णय उसके नैतिक दिवालियापन की प्रथम चेतावनी थी। भारत ने फिर हिम्मत की। काश्मीर का प्रश्न संघ में आया। चार महीने टालमटोल, धींगाधींगी तथा कूटनीतिक संघर्ष के बाद काश्मीर पर संघ का जो निर्णय हुआ है उसे देखकर प्रगतिशील राष्ट्रों का संघ से यदि बिलकुल विश्वास उठ जाय तो इसमें कोई आश्चर्य की बात न होगी। काश्मीर के प्रश्न का सीधा सम्बन्ध यद्यपि भारत से है, फिर भी इस निर्णय से विश्व में जो प्रतिक्रिया होगी उसका प्रभाव संघ की प्रतिष्ठा पर पड़े बिना नहीं रह सकता और यदि इसके बाद भी संघ की आंखें न खुलीं तो विश्व का भविष्य अन्धकारमय ही समझना चाहिए। जिस घर का मालिक पक्षपातपूर्ण होता है तथा मस्तिष्क में स्वार्थों को लेकर काम करता है उस घर की हालत कुछ दिनों में ही शोचनीय हो जाती है और आपसी एकता समाप्त होकर उस घर के सौन्दर्य को सदैव के लिए नष्ट कर देती है। आज विश्व की भी वही हालत है। संघ मालिक के स्थान पर इसलिए रखा गया था कि वह अपने नैतिक प्रभाव से अन्तर्राष्ट्रीय एकता कायम रखे और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आदर्श को चरितार्थ करके विश्व को मानवता के सच्चे विकास के योग्य बनाये। आज कुछ ही महीनों में संघ का वास्तविक रूप हमारे सामने आ गया और अब यह स्पष्ट होने लगा कि अन्तर्राष्ट्रीय एकता के लिए विश्व को कोई और जरिया निकालना पड़ेगा।

अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र

भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कई बार यह घोषित किया है कि भारत किसी भी राजनीतिक गुटबन्दी में शामिल नहीं होगा। अभी हाल में बम्बई में होनेवाली कांग्रेस महासमिति के अधिवेशन में दिये गये अपने भाषण में उन्होंने कहा है, "इस बात की आम शिकायत है कि भारत को संसार के राजनीतिक कार्यों और दांव-पेंचों से अलग रखा गया है। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भारत की नीति तटस्थता की रहेगी। हम प्रत्येक देश से मित्रता रखना चाहते हैं और प्रत्येक प्रश्न पर हम अपनी निजी नीति रखेंगे और उन बातों में तटस्थ रहेंगे जिनका प्रत्यक्ष रूप से हमसे सम्बन्ध न रहेगा।" उन्होंने आगे चलकर फिर बतलाया, "संसार इस समय राष्ट्रों के दो गुटों में विभाजित हो गया है। युद्ध की कुछ चर्चा हो रही है; परन्तु मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि निकट भविष्य में तृतीय विश्व-युद्ध नहीं होगा। हम इस बात की सावधानी रखेंगे कि हम अस्थायी लाभ के लिए किसी गुट्ट में शामिल न हों।"

काश्मीर की न्यायपूर्वक रक्षा के लिये लड़ने की घोषणा करनेवाले भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू।

तृतीय युद्ध के विषय में पंडित जी की धारणा सच होगी या नहीं, यह तो आगे का समय बतायेगा। परन्तु उनके कथन से एक बात तो सच है ही कि भारत के विरुद्ध जो अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र कायम हो रहा है उसका मुख्य कारण भारत की विदेशी नीति है जिसके द्वारा राजनीतिक गुटबन्दी में इस देश ने पूर्ण तटस्थ रहने का संकल्प किया है। विश्व के साम्राज्यवादी राष्ट्रों को भारत से उनकी शोषण नीति में सहयोग की; आशा नहीं अतएव अन्तर्राष्ट्रीय चालों से वे भारत को शक्तिहीन बनाकर अपने स्वार्थों को पूरा करना चाहते हैं। काश्मीर का निर्णय उनकी इस नीति का एक ऐसा सबूत है जिस पर किसी को शंका नहीं हो सकती। ईमानदारी का रास्ता बहुधा संकट का रास्ता होता है। भारत बापू द्वारा निर्धारित सत्य के मार्ग पर चलना चाहता है; अतएव उसे बेईमान बनाने के लिए विश्व के कुछ बड़े राष्ट्र षड्यन्त्र करें तो इसमें अस्वाभाविकता नहीं।

संयुक्तराष्ट्र की सुरक्षा-समिति द्वारा स्वीकृत काश्मीर के प्रस्ताव पर भारत-सरकार की क्या नीति होगी, इसका आभास पंडित नेहरू के इन शब्दों से मिलता है, "भारत के लिए वह प्रस्ताव मानना असम्भव है। इस प्रश्न पर सरकार का अन्तिम निर्णय भारतीय प्रतिनिधि दल के लौटने पर होगा। जब तक काश्मीर भारत का भाग बना रहेगा तब तक उसकी रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है और जो कोई भी उसकी स्वतन्त्र सत्ता को खतरा पहुँचायेगा हम उससे लड़ेंगे।" प्रधान मंत्री के इन शब्दों से यह स्पष्ट है कि भारत-सरकार को सुरक्षा-समिति का निर्णय मान्य नहीं होगा। यह मुनासिब भी है। इस कलुषित निर्णय को मानना केवल भारत का ही अपमान नहीं बल्कि इससे सत्य और ईमानदारी का अपमान होता है। ऐसे संघ में जहां खुले बाजार न्याय का गला घोंटा जा रहा है वहां भविष्य में भारत की ओर से किसी प्रश्न को भेजना भी अपमान है। भारत को अपनी समस्याएँ स्वयं सुलझानी हैं। किसी भी राष्ट्र से आशा करना ठीक नहीं। भारत की स्वतन्त्रता को नष्ट करने के लिए बड़े से बड़े अन्तर्राष्ट्रीय हथकंडे इस्तेमाल किये जावेंगे और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए भारत का विभाजन भी हुआ है। आज काश्मीर का प्रश्न है। कल हैदराबाद का भी सवाल खड़ा हो सकता है। भारत ने अन्तर्राष्ट्रीय लुटेरों की चालों को अब समझ लिया है।

महात्मा गांधी की विनोद-प्रियता

राष्ट्रीय जीवन की कुछ सुन्दर और मनोरंजक घटनायें

लेखक, राजनीति का एक विद्यार्थी

महात्मा गांधी संसार के महापुरुष और गम्भीर महामानव तो थे ही, साथ ही दैनिक जीवन में बड़े विनोदप्रिय थे। अपने आस-पास तथा समीप रहनेवाले अथवा मिलने-जुलनेवालों से वह विनोद भी किया करते थे। उनके विनोद बड़े मार्मिक और गम्भीर होते थे। इस लेख में लेखक ने गांधी जी की विनोद-प्रियता की कुछ घटनाओं का उल्लेख किया है, जो रोचक तथा आकर्षक हैं।

महात्मा गांधी के व्यक्तित्व को लोगों ने अनेक दृष्टिकोणों से देखा है, लेकिन गांधी जी एक सुधारक, राजनीतिज्ञ, साधु और मनुष्य के अतिरिक्त एक कुशल विनोदी भी थे। लेखकों और कलाकारों का ध्यान गांधी जी के विनोद-पक्ष की ओर कम आकृष्ट हुआ। विनोद से मेरा तात्पर्य दूसरे के ऊपर हँसने का नहीं है, बल्कि इससे भी बहुत कठिन काम यह कि दूसरों पर अपने विनोद का प्रभाव पड़ जाय। दूसरों के साथ कुछ भद्दा मजाक करके हँसना एक कुशल विनोदी का लक्षण नहीं है। जैसे कभी-कभी आपस की मित्रता के साथ देखने को मिलता है, किसी विद्वान् ने कहा भी है कि 'विनोद मानवीय जीवन के संस्कारों को श्रीहीन न करके उन्हें तेजयुक्त करता है'।

बुद्धिमान् आदमी कभी-कभी अपनी बातों से एक शिष्ट हास्य की उत्पत्ति करते हैं, लेकिन उस हास्य से किसी को चोट नहीं लगना चाहिए नहीं तो तलवार और साहित्य में अन्तर ही क्या? जब हास्ययुक्त बातचीत अथवा कोई ऐसी कहावत कही जाती है तो यदि उससे श्रोता के हृदय को कुछ चोट लगे तो ऐसा हास्य लाभ करने के बदले नुकसान अधिक कर सकता है। ऐसे वाक्यों के प्रयोग कभी-कभी बहुत गम्भीर और भयावह होते हैं। लेकिन महात्मा जी की विनोदपूर्ण बातें किसी व्यक्ति के लिए कष्टप्रद कभी नहीं हुईं। एक दर्शक ने गांधी जी से पूछा 'आपका स्वास्थ्य कैसा है?' गांधी जी ने उत्तर दिया, 'मैं एक पेंसिल की तरह स्वस्थ हूँ' इसी प्रकार लन्दन में एक विद्यार्थी ने गांधी जी से पूछा था कि 'आप शराब पीनेवालों से घृणा क्यों करते हैं?' गांधी जी ने उत्तर दिया "मैं आदमी से घृणा नहीं करता बल्कि शराबी के कारनामों से।"

एक बार गांधी जी बकिंघम पैलेस (लंदन) से एक राजा साहब के साथ आ रहे थे। किसी ने महात्मा जी के वस्त्रों की कमी पर कुछ कहा। गांधी जी ने उत्तर दिया, "राजा साहब मेरे हिस्से के भी कपड़े पहने हैं इसलिए मैं इसी तरह हूँ।" इसी प्रकार एक स्काट-निवासी से गांधी जी ने पूछा आप अपनी पोशाक को किस नाम से पुकारते हैं? स्काट-निवासी ने कहा चार जोड़। थोड़ी देर बाद स्काट-निवासी ने गांधी जी से पूछा 'आप अपने गहनों से क्या आनन्द पाते हैं?' महात्मा जी ने उत्तर दिया, 'चार घटाओ।' इस प्रकार की बात सुनकर वह महात्मा जी से अत्यधिक प्रभावित हुआ।

एक अमेरिकन महिला ने गांधी जी से पूछा—"आप कब हमारे देश में पधारेंगे?"

महात्मा जी ने उत्तर दिया—'निकट भविष्य में तो आशा नहीं ह।'

महिला ने दुबारा कहा—'लेकिन मेरे देशवासी आपको देखने के लिए अधीर हो रहे हैं।'

गांधी जी ने कहा—'हां हां, मुझे मालूम है कि आपके देशवासी मुझे अजायबघर में रखना चाहते हैं।' महिला जोर से हँसी। उसके साथ महात्मा जी भी खिलखिलाकर हँस पड़े।

एक बार सरदार पटेल ने महात्मा जी से पूछा कि समाचारपत्रों में लिखा है कि लार्ड लिनलिथगो ने अपने भविष्य में दिये जानेवाले भाषण की प्रति आपके पास भेजी है, क्या उन्होंने आपसे सुधार चाहा है? या कुछ और जानना चाहते हैं, महात्मा जी ने उत्तर दिया, 'यह बुद्धिमत्ता से बोली गई झूठ है जो कुछ सलाह और सुधार नहीं चाहती।'

एक बार श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर ने महात्मा जी का स्वागत करते हुए कहा कि शान्तिनिकेतन तो हमारे हृदयों की नवयौवना रानी है, आइये आपका स्वागत है।" गांधी जी ने कहा "ऐसा, तब तो बिना दांतवाले आदमी भी कुछ आशा कर सकते हैं।" दूसरी बार ठाकुर रवीन्द्रनाथ टैगोर ने गांधी जी से पूछा, "जेल से कौन आदमी जल्दी ही ज्यादा सजा काटकर निकला है?" गांधी जी ने उत्तर दिया, "मैं तो जेल न जानेवाली औषधि चाहता हूँ, जिसका प्रयोग आप करते हैं।"

एक बार एक अँगरेज महाशय जहाज से विलायत जा रहे थे। उन्होंने गांधी जी के ऊपर कुछ कविता लिखी थी, जिसे जहाज के सारे यात्रियों को दिखाते थे। गांधी जी भी उसी जहाज में थे। दूसरी बार वही महाशय कई पृष्ठों पर एक लम्बी कविता बनाकर गांधी जी के पास लाये। गांधी जी ने देखा और पृष्ठों से आलपीन निकालकर उस कविता को फाड़कर रद्दी कागजों की टोकरी में फेंक दिया। उस अँगरेज कवि ने पूछा, 'आपको इस कविता में कुछ सार अवश्य मिला होगा?" गांधी जी न उत्तर दिया, 'हां, मैंने इसका सार रख लिया" और वही आलपीन उसे
दिखा दी जो उन्होंने अपने
ली थी।

बहुत दिन नहीं हुए जब मह
को एक चीनी ने एक दुशाला
था। दुशाले की प्रशंसा में महात्मा
कहा था—"यदि चीन-निवासि
भी लड़की ऐसा शाल बुन दे तो
होते हुए भी उससे शादी कर

अमरीकन पत्रकार लुई
बार जब सेवाग्राम गये थे तो
से सेवाग्राम तक एक तांगे में
था। मार्ग ठीक नहीं था, उनका
शरीर दर्द से दुखने लगा था।
पहुँचकर जब वे महात्मा जी की
में पहुँचे तो उनका गिरा चेहरा
महात्मा जी ने कहा था—"
शायद गद्दीदार हवाई जहाज से
है?" जितने लोग वहां बैठे थे
पर हँसी नाच गई, फिर उन
शान्तिपूर्वक बैठाया गया।

श्रीमती सरोजिनी नायडू और
जी के बीच की विनोद-प्रियता
एक बार श्रीमती सरोजिनी
कहा था कि बैडमिन्टन का
चाहिए। गांधी जी ने कहा, वैसे
कभी यह खेल, नहीं खेला लेकिन मैं
खेलूंगा और खेल में हारूंगा नहीं।
ही क्षण गांधी जी और श्रीमती
नायडू बायें हाथ में रैकेट लेकर
में आये। सरोजिनी जी की
कलाई में मोच थी, इसीलिए
रैकेट बायें हाथ में लिया था।
के बाएँ हाथ में रैकेट देखकर
नायडू ने कहा, "गाधी जी आप
कैसे सकते ह? आपको यह भी
कि किस हाथ में रैकेट लेना
गांधी जी ने कहा, "फिर आप क्यों
हाथ में रैकेट लिये हैं?" श्रीमती
नायडू ने उत्तर दिया, "दायें
कलाई में चोट होने के कारण।"
अच्छा कहकर बाएँ हाथ से ही
बाद में गांधी जी के खेल से श्रीमती
को आश्चर्य हुआ, लेकिन उन्होंने
"आपने अपनी गलती तो नहीं
महात्मा जी और श्रीमती नायडू
बराबर रहा; फिर गांधी जी ने कहा
तो वह गलती थी, लेकिन अब मैं
नहीं समझता, क्योंकि मैं एक
चोट से अनुचित लाभ नहीं
चाहता।'

इसी प्रकार की अगणित
बातें महात्मा जी से सम्बन्धित
सिद्ध होता है कि साधु-प्रकृति
के व्यक्तिगत विश्वास की
उड़ाती। गांधी जी के बारे
धारणा निश्चित की जा सकती
न जाने कितनी बार निरा
जिनके आधार पर उन्होंने
किया है कि मैंने हिमालय जैसी
की है। महात्मा जी संघर्षों के
जीवन को बराबर दांव में
दुर्गम परिस्थितियों में भी उनके
मुसकान ही विराजती थी।
३० जनवरी को प्रार्थना-स
कुछ देर हो गई थी, फिर भी
आवा और मनु गांधी के
करते प्रार्थना-सभा में आ
जब आप घड़ी नहीं देखते तो
से क्या लाभ?' आवा ने पूछा।
लोग स्वयं ही मुझे समय बता
घड़ी देखने की क्या आवश्य
ने उत्तर दिया, 'लेकिन आप
हम लोगों को भी नहीं देखते
और मनु हँसने लगीं। वहीं
के होठों पर इस भौतिक विश्व
मुसकान थी।

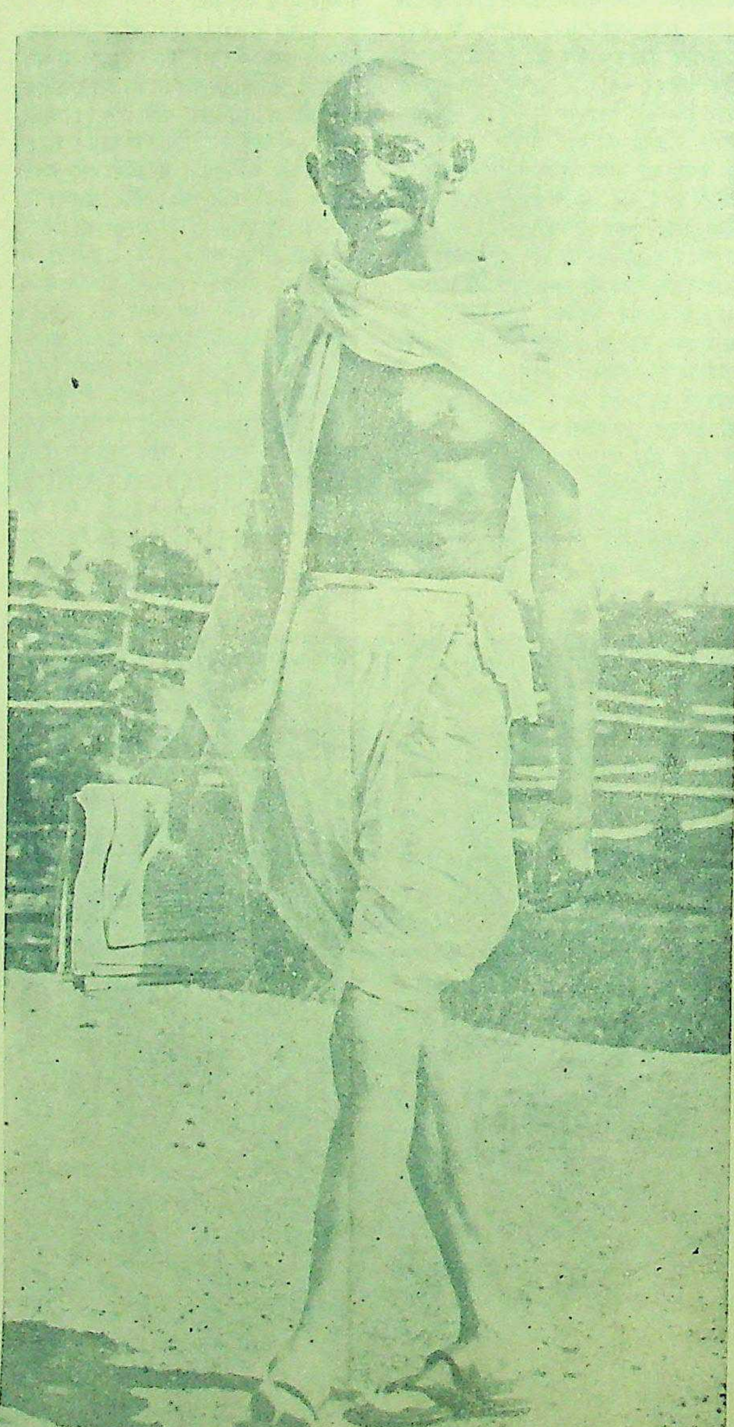

विश्ववंद्य महात्मा गांधी लंदन की राउंडटेबुल कांफ्रेंस में सम्मिलित होने जा रहे हैं।

शान्ति के ये ढोंगी पुजारी

युद्ध हमारे आर्थिक जीवन के बढ़े विकास के कारण ही होते हैं

लेखक, प्रोफेसर जे० सी० कुमारप्पा

आज विश्व को शांति की आवश्यकता है, किन्तु अब भी कुछ ऐसे राजनैतिक हैं जो युद्ध और अशांति की चिनगारी सुलगाते रहते हैं। यही नहीं उनका ध्येय यह भी है कि बिना युद्ध के संसार का कल्याण नहीं हो सकता। भारत में गांधी जी ही युद्ध के विरोधी थे, यदि संसार उनके उपदेशों के विरुद्ध चला तो मानव-जाति की भयंकर हानि होगी। लेख में इस विषय पर गांधीवाद के प्रमुख विचारक श्री कुमारप्पा ने गम्भीरतापूर्वक प्रकाश डाला है।

सुप्रसिद्ध गांधीवादी विचारक और नेता प्रोफेसर कुमारप्पा।

आवश्यकता है। दूसरी अवस्था तो एक सामाजिक जीवन के अयोग्य ही है। यदि वह समाज का एक सदस्य है और उसके ऐसे जीवन में भाग लेता है जिसका नतीज़ा आखिर में युद्ध होता है तो उसकी रणविमुखता कायरता और कर्त्तव्यच्युतता होगी। यदि वह युद्ध-विरोधी है तो उसे अपनी जीवन-प्रणाली इस प्रकार की बनानी पड़ेगी कि जिसमें युद्ध का कोई स्थान ही न हो। अगर उसे प्राणि-हत्या का विरोध करना है तो उसे गोश्त खाना छोड़ना पड़ेगा।

पैसिफिज्म या शान्तिप्रियता

'पैसिफिस्ट' (शान्तिप्रिय) कहलानेवालों के साथ सवाल केवल व्यक्तिगत समस्या ही नहीं है, वे तो सामाजिक या राष्ट्रीय दृष्टि से विचार करते हैं। वे मानव मानव के बीच 'शान्ति' चाहते हैं। आपसी झगड़े और द्वेष निःशस्त्रीकरण या सारी दुनिया की संयुक्त सरकार स्थापन करके वे दूर करना चाहते हैं।

वे यह भूल जाते हैं कि लड़ाई करनेवाले फरीक न्याय करनेवाले से भी बड़े हो सकते हैं और उस परिस्थिति में न्यायाधीश अपने निर्णय को कार्यरूप में परिणत नहीं करा पायेगा। कभी तो झगड़नेवाले अपने ही मामले के खुद जज बन जायँगे। लीग आफ नेशन्स की यही कमियां थीं।

जब दो लोग झगड़े पर ही तुले हों तो निःशस्त्रीकरण से कोई लाभ नहीं होता। आप 'अणुबम' पर रोक लगा दीजिए तो बन्दूकें काम में आएँगी। वे भी न हों तो तीर-कमान हैं—छुरी-लाठी हैं। क्या प्रथम महायुद्ध के बाद जर्मनी के निःशस्त्रीकरण से द्वितीय महायुद्ध रुक गया?

हम मानव-निर्मित नियमों पर कोई विश्वास नहीं रख सकते हैं। वे उतने ही कार्यक्षम होते हैं। उनका पालन करवाने की शक्ति विश्व सरकार में भी नहीं है, उससे कोई लाभ नहीं होगा।

रोगी को चारपाई पर लिटा रखने और डाक्टर की आज्ञानुसार बर्फ की पट्टी देने से उसका बुखार कुछ कम हो जायगा; परन्तु असली काम तो रोग का निदान करके उसका इलाज करना है और बाद में मरीज से ऐसा जीवन व्यतीत कराना है कि उसे दोबारा बुखार न धर दबाये।

अहिंसा

पिछले दोनों विश्वव्यापी महायुद्धों के क्या कारण थे, ये हमें गौर से निरीक्षण करने होंगे। एक बार यदि कारण का पता चल जाय तो हममें इतना नैतिक साहस और विश्वास होना चाहिए कि उसके उपचार में जो भी रुकावटें आयें, सहने को तैयार रहें। समाज से युद्ध का बहिष्कार करने के लिए उसकी पुनर्रचना ऐसे आधारों पर करनी चाहिए कि जिनको स्थिर रखने के लिए सामयिक युद्धों की आवश्यकता न पड़े। इसका मतलब होगा अपने दैनिक जीवन को अहिंसा पर आधारित करना। ऐसे आधारों पर बने समाज में युद्धों का कोई स्थान ही नहीं रहेगा।

अगर हम सच्चे दिल से सोचें तो पता चलेगा कि ये युद्ध हमारे आर्थिक जीवन के बढ़े विकास के परिणाम हैं। कच्चे मालों के क्षेत्रों और चालक शक्ति के लिए पेट्रोल आदि चीजों की खोज और बिक्री-स्थलों पर नियंत्रण की आवश्यकता आदि ही सारे अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों की जड़ें हैं। हमें अपना जीवन ऐसा बनाना चाहिए कि हमारी आवश्यकताएँ हमारे उत्पादन से ही पूरी हों। हमारी आवश्यकता और उत्पादन इनमें जितना अन्तर अधिक है उतनी ही पड़ोसी से हमारे उलझने की आशंकाएँ अधिक हो जाती हैं। इस वैमनस्य और झगड़े के आकार और प्रकार में भिन्नता हो सकती है। हमें ऐसे सारे अवसरों को ही दूर करना होगा जो प्रतिद्वन्द्विता, लालच और वैमनस्य को जन्म दे सकते हैं। क्या हम अपना जीवन इन तरीकों पर चलाने को तैयार हैं? जीवन का अहिंसक रास्ता, मानव-समाज में शान्ति और सद्भावना स्थापित करने के लिए कुछ महँगा नहीं है?

हमारी अपनी तो यह धारणा है कि प्राथमिक आवश्यकताओं में स्वयं पूर्ण होना आर दुनिया में शान्तिस्थापन करना ये दोनों एक ही हैं। जब तक हम, हमारा राष्ट्रीय जीवन इस आधार पर नहीं अधिष्ठित करते हैं तब तक शान्ति-स्थापना की कितनी भी उत्कट इच्छा बेकार है। केवल ऊपरी लक्षणों को दूर करने से असली रोग थोड़े ही दूर होगा?

आज योरोप को युद्ध से एकदम घृणा है, पर उसे कैसे टाला जाय, यह देखने का उसे समय नहीं है। वहां के नेता अपने-अपने राष्ट्रों को तथाकथित युद्धोत्तर पुनर्निर्माण के कार्यों में बड़ी द्रुतगति से ले जा रहे हैं। पर वह यह नहीं सोच रहे हैं कि वस्तुतः उन्हें एक गहरी खाई की ओर अग्रसर कर रहे हैं। हिन्दुस्तान में भी अकेले गांधी जी ही थे जो इनके विरुद्ध चेतावनी दे रहे थे। क्या हम उससे चेत जायँगे या अनेकों के साथ हम भी भावी आग में पड़कर भस्म हो जायँगे?

उपनिवेशों के मंत्री तथा सुरक्षा-परिषद् में ब्रिटेन के प्रतिनिधि आर्थर ग्रीक जान्स लेकसक्सेस की एक प्रेस कांफ्रेंस में फिलिस्तीन की समस्या पर भाषण दे रहे हैं।

जुकाम सर्दी पर अकसीर उपाय
अमरोद
१८९६
नीलगिरि तेल
मो. खोडालेकर बंधु बम्बई ४.

शान्तिदूत आचार्य विनोबा भावे

गांधीवाद के प्रकांड विद्वान्, साधु तथा तपस्वी

लेखक, आचार्य नित्यानन्द सारस्वत

> गांधीवाद के प्रमुख आचार्य विनोबा भावे, अपनी तपस्या, त्याग और विद्वता के लिये अत्यन्त लोकप्रिय हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से विनोबा जी के स्तर का व्यक्तित्व नहीं के बराबर है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने विनोबा जी के त्यागमय जीवन पर सुंदर प्रकाश डाला है जो आकर्षक और पठनीय है।

महापुरुषों के सिद्धान्त शाश्वत होते हैं। उनसे समस्त भूमण्डल प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सदा ही प्रभावित हुआ है। उनके बड़े बड़े अनुयायी भी होते हैं, जिनका जनता पर यथेष्ट प्रभाव पड़ता है। बापू का यह वैशिष्टय आश्चर्य की बात नहीं। वे हमें और कुछ भी दे गए हैं, जिनमें बापू के पट्ट शिष्य उल्लेखनीय हैं। जो सत्य और अहिंसा के परम उपासक एवं प्रतिक्षण कार्यनिरत जनता के सच्चे सेवक हैं। इनकी तुलना भारत के आर्षकालीन-सन्त महर्षियों से ही की जा सकती है। इनको अपनी प्रसिद्धि का जरा भी खयाल नहीं, बल्कि वे लोक-ख्याति से घबराते हैं। किन्तु अब ज्योतिमय बापू के अस्त हो जाने से वे अपनी उज्ज्वलता न छिपा सकेंगे। वैसे भी उनके आदर्श-जीवन की महक चारों ओर फैलती जा रही है। उन महर्षिकल्प सन्तों में से एक श्री 'विनोबा' हैं।

आप बड़े ही अध्ययनशील और गांधीवाद के पूर्ण मर्मज्ञ हैं। आपका धार्मिक अध्ययन बड़ा गहरा है। आदर्श बहुत ऊँचे हैं और आचरण भी उनसे कम नहीं। इनके आहार-विहार, आचार और विचार में एकसूत्रता है, इसलिए उनका जीवन मधुरतम हो गया है। कवि की वाणी में वह 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' है।

विनोबा जी की मा धर्म में बड़ी श्रद्धालु थीं। भोजन बनाने से पहले कड़ी से कड़ी बीमारी से उठने के बाद भी चाहे ठण्डे से ठण्डा मौसम क्यों न हो, वे स्नान अवश्य कर लेतीं। कितने ही मराठी सन्तों के भजन उन्हें याद थे। उनमें से कुछ तो मानो उनकी आत्मा से निकला करते थे। वे भोजन बनाते समय भी इनको गुनगुनाती रहतीं। कभी कभी तो दाल में नमक भी दुबारा पड़ जाता और कभी बिलकुल ही भूल जातीं। विनोबा जी तो उस समय भी सात्विक-चिन्तन में मस्त रहा करते, उन्हें पता तभी चलता, जब छोटे भाई बालकोबा जी इसकी शिकायत करते।

इनकी धर्मप्राणा मा धर्म के वास्तविक तथ्य भी इन्हें बतलाया करती थीं। वह प्राचीनता की उपासिका होने पर भी निरर्थक रीति-रिवाजों को तोड़ने के भाव, इनमें भरा करतीं। एक बार गुप्तदान के बारे में बतलाया कि "हम पण्डितजी को निमन्त्रण देते हैं। उस समय गुप्तदान के लिए लड्डू में चवन्नी रख दी जाती है। पंडितजी के दांत टूटने और निगलने से बचाने के लिए कान में कह देते हैं कि 'जरा धीरे चबावें, अन्दर चवन्नी है।' ऐसी हालत में वह गुप्तदान कहां रहता है? जब हममें ठकुरसोहाती का लोभ-संवरण करने की शक्ति ही नहीं, तो मिथ्या रूढ़िवाद को क्यों निभावें?'"

बचपन की ऐसी सूक्तियों को विनोबा जी ने याद ही नहीं रखा, अपितु उनका स्वरूप और भी निखरा डाला। कुछ वर्षों पहले एक दानवीर इनके पास आए। उन्होंने सात्विक दान की अभिलाषा प्रकट की। विनोबा जी ने एक सार्वजनिक इमारत में यह रुपया लगाने का सुझाव दिया। किन्तु जब उनको पता लगा कि वे दानवीर (!) इमारत के उस हिस्से पर अपना नाम लिखे जाने की भी इच्छा रखते हैं, तो विनोबा जी ने बातचीत का सिलसिला वहीं बन्द कर दिया। 'नेकी कर और नदी में डाल' वाली सलाह और ऐसे सात्विक दान (!) को ग्रहण न कर सकने की असामर्थ्य प्रकट की।

जब विनोबा जी कालेज के द्वितीय वर्ष में थे, तभी आपने घर छोड़ दिया। उस समय भी आप दृढ़निश्चयी थे। जैसे हम रेल पर सवार होने से पहले अपने गन्तव्य स्थान का निर्णय कर लेते हैं, वैसे ही आपने भी अपनी जीवनयात्रा की सांगोपांग रूपरेखा तभी बना ली थी। घर छोड़ने से पहले आपने अनेक विषयों में दक्षता के प्रमाणपत्र अग्नि में स्वाहा कर दिए। एक भी सार्टिफिकेट न बचा। मा की ममता ने तो जलाने के लिए रोका भी, किन्तु आप गम्भीर स्वर में बोले--'जब मुझे इस जीवन में इनसे कोई काम लेना ही नहीं है, तब घर में रखकर कूड़ा-करकट बढ़ाने से फायदा ही क्या?' अपने आप पर इनको तब भी पूरा भरोसा था। ये आज तक न कभी 'संशयात्मा' बने, और न कभी 'विनश्यति' का मौका आया।

खादी के आप अनन्य भक्त हैं। वे दूसरों को 'हाथ का कता और हाथ का बुना' ही किन्तु 'पूरी मजदूरी देकर बनाया हुआ' कपड़ा ही पहनने का परामर्श देते हैं। आप तो अपने हाथ का पहनते ही हैं। कताई में आपको अहिंसा की प्रतिमूर्ति दीखने के साथ ही आनन्द भी आता है। लगातार आठ घण्टे कातना तो इनके बांयें हाथ का काम है। बैठे बैठे रीढ़ की हड्डी भले ही दर्द करती रहे, किन्तु आपने जहां कातना शुरू किया, पालथी लगाई कि चार घण्टे बाद ही उठेंगे। आसन-मुद्रा बदलने तक का काम नहीं। मौन-साधना भी साथ साथ चलती रहती है। कातते समय इनका सूत कभी टूटता नहीं। एकरस तार चलता रहता है। आप जहां जाते हैं सूत्रयज्ञ के उपादान साथ रखते हैं। आपको ऐसा मेहमान अच्छा नहीं लगता, जो अपना चरखा या तकली घर भूल आया हो।

आपकी वेश-भूषा बिलकुल साधारण है। जगद्गुरु शंकराचार्य की "कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः" वाली विचार-शैली पर निर्भर है। एक भाई ने तो विनोद में यहां तक कहा था कि 'विनोबा जी गरीब से गरीब किसान के प्रतीक हैं, लेकिन जब तक उनकी धोती सफ़ेद है, वे पूरे किसान नहीं माने जा सकते। 'गिबन' ने ठीक ही कहा है 'रोम गिरा कैसे?' भोग-विलास से। 'रोम चढ़ा कैसे? सादगी से।'

अपरिग्रही विनोबा जी छोटे से छोटे ग्रामोद्योग को प्रोत्साहन देते हैं। अपनी कुशाग्रबुद्धि से दूसरों को जो प्रेरणा देते हैं, उसको पहले स्वयं उपयोगिता की कसौटी पर कसते हैं। अपने आश्रम की झाड़ू तक आप स्वयं अपने हाथ से बनाते हैं। उसी झाड़ू से सारा 'परंधाम' स्वच्छ होता है। अपने विद्यार्थियों को जहां वे अध्यात्मवाद के गूढ़ तत्त्व समझाया करते हैं, वहां झाड़ू निकालने के सक्रिय सूत्र भी। आपका विश्वास है कि बापू का महात्मापन उनकी अध्यात्मप्रवणता और राजनीति-कुशलता से नहीं, किन्तु गांधी जी के कातने, पीसने, जूता गांठने और पाखाना साफ करने से कायम हुआ है।

कर्मवीर विनोबा जी अपने हाथ से ही पीसते ह। आप प्रो० भनसाली की तरह रात के ११ बजे से सवेरे के ४ बजे तक तो नहीं पीस सकते, किन्तु 'साबरमती आश्रम'-वाली डेढ़ घंटा नियम से पीसने की आदत आज भी रूढ़मूल है। पीसना व्यायाम के रूप में भी जीवन का एक आवश्यक अंग है। व्यायाम के मामले में 'चट रोटी पट दाल' आपको पसन्द नहीं। शनैः शनैः किया हुआ व्यायाम ही नस और पचनेन्द्रिय को

गांधीवाद के आचार्य और तपस्वी विनोबा भावे।

जीवनशक्ति देता है। चटपटी 'मसल्स' तो भले ही बन जायं; सुदृढ़ पेशियों की उपमा हरी-भरी से ही दी जा सकती है, जो नाश कर देती है। 'फिफ्टीन एक्सरसाइज्' जैसे व्यायामों से गहरी चिढ़ है। आपका खयाल है थोड़ी देर के व्यायामों से शारीरिक स्थता होने पर मानस की प्रभावित होती है। आचार्य बतलाया था कि कार्लाइल तत्त्वान्वेषी के ग्रंथों में मूल कारण शरीर-विकृति ही है। सिरदर्द के कारण ही यह दोष आ गया था।

संयमी विनोबा जी कला विहीनः' के कायल तो हैं, की परिस्थिति उन्हें में ही कला की झांकी करती है। एक बार एक मिलने चले आए। मित्र सम्पन्न ही नहीं, किन्तु सुरुचिपूर्ण कला को उनकी पुरानी आदत है। कीमती चित्र था। जिसमें सौन्दर्य का अनूठा चित्रण हुआ देखकर आप अन्यमनस्क ही नहीं भी हो गए। १९४० सन् में सर्वप्रथम सत्याग्रही चुने जाने असाधारण ख्याति से भी निर्लिप्त रहनेवाले सन्त के विषाद की गहरी रेखा लाला जी ने समझा चित्र-कला नहीं है। विनोबा जी ने कि मैं चित्रकला का परम इस निर्जीव चित्र के रुपए हमें को समुन्नत बनाने में लगाने के गुलाबी रंग को मनोहर पहले जरूरी है कि हरिजन गालों की सुर्खी नयनाभिराम

समय के आप बड़े विषय में खुद बापू ने प्रशंसा की है। एक बार की आकांक्षा से एक वर्ष का आश्रम से बाहर चले गए। पर ठीक उसी तिथि को आश्रम में घुसे जिस टाइम था। महान् बापू भी समय से आश्चर्यचकित हो गए।

बापू का 'काल करे वाला भजन उन्हें बहुत पसन्द है। जब आप ही थे, तब की बात है। एक अपने उसी ग्राम के हरिजन खाना पकाना न आने का दिन से इस कमी की पूर्ति के

शेष पृष्ठ १४

[illegible] भाषण कर रहे हैं।

मातृमंदिर

तीय नारी का आदर्श नारी का वास्तविक और सिद्धांत क्या है ?

श्रीमती पद्मिनी सेन-गुप्ता

निक युग में विज्ञान के द्वारा की शान्ति कांप रही है। इनमें ही नहीं, बल्कि इसके अतिरिक्त पीढ़ी भी कुछ दूसरी ही दिशा अग्रसर होती हुई जान पड़ती स्थिति में गृह-शान्ति और घरेलू को काबू में रखने के लिए नारी में हमारी वैदिक तपस्या की आना आवश्यक जान पड़ता हिन्दू संस्कृति तो नारी को आदर्शों को पाने के लिए चुनौती दे रही है। मेरा अर्थ कि भारतीय नारियां सीता, अथवा दमयन्ती ही बन जायँ, अपनी संस्कृति और सभ्यता लिए तो उन्हें अपने में एक न लानी ही पड़ेगी। वर्तमान युग नारी की वाह्य सुन्दरता को देने लग गया है, और स्त्रियों के सामने किसी भी नहीं सोचता। सम्भवतः ऐसी बातें अवश्य हैं, जो में अपने पुरुष के लिए हिए। दूसरे शब्दों में पुरुष र राजनैतिक कार्यों में अपने शासन की जंजीर, और न स्त्री को ही अधिकारों के जीतने की चाहिए। पुरुष और नारी दूसरे की शक्ति के विना अपने अधिकारों का प्रयोग सुचारु रूप से नहीं कर सकते।

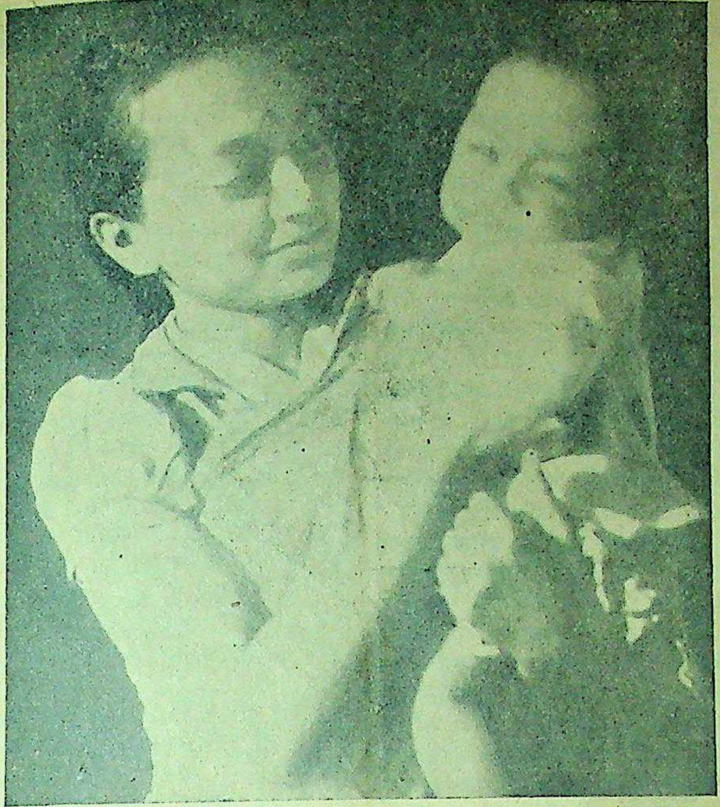

श्रीमती सुधाराय बी० ए० अपने नवजात बच्चे के साथ। आप मध्य-प्रांतीय असेम्बली में अपनी माता स्वर्गीय श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान के रिक्त स्थान के लिए उम्मीदवार हुई हैं।

हिन्दुत्व का आदर्श वर्तमान समय की प्रगति के अनुसार स्त्रियोचित सिद्धान्तों का अध्ययन विशेष रूप से चाहता है। सर्वप्रथम तो यह कि पुरुषों के द्वारा स्त्रियों को वही स्थान प्राप्त होना चाहिए, जो 'देवी' अथवा 'घर की लक्ष्मी' कहने से प्रकट होता है, और वास्तव में भारतीय सिद्धान्त भी इसी बात की पुष्टि करता है। वेदों में तो प्रत्येक स्त्री को देवी ही माना गया है, लेकिन घर की चहारदीवारी के अन्दर रहकर बच्चों को मारने-पीटने तक ही एक हिन्दू महिला का आदर्श समाप्त नहीं हो जाता। संसार में अब भी ऐसी नारियां हैं जो घर के काम-काज के अतिरिक्त वाहरी कामों को करके भी अपना स्थान देश में अपनी ही शक्ति से गौरवपूर्ण बनाती हैं। वास्तव में ऐसी नारियां देवी हैं। घर के अन्दर रहकर जीवन के प्रति अपनी संकीर्णता को पालते रहना ही नारी के लिए आदर्श-युक्त नहीं है, किन्तु इसके अतिरिक्त घर की सुविधा को बनाए रहकर बाहर काम करना नारी के लिए दुस्तर तो अवश्य है, लेकिन इससे आदर्श की वृद्धि अधिक होती है।

वास्तव में आखिर हिन्दू नारी का आदर्श क्या है ? एक ओर जो स्त्री जनता के बीच काम करती है, जो क्लब जाती है और इसी प्रकार की अन्य बातों में वह अपने को समर्पण करती है, दूसरी ओर जो नारी इसी प्रकार की बल्कि इससे भी अधिक काम की बातें घर के भीतर करती है, वह पहली नारी की अपेक्षा पुरुषों के द्वारा हेय क्यों समझी जाती है ? इसका एकमात्र कारण यही हो सकता है कि आधुनिक फैशन और शासन-प्रणाली ने हिन्दू-दिमाग पर भी अधिकार पा लिया है, इसलिए नारी जाति को आज अपनी वर्तमान अवस्था से बहुत ऊँचे उठना है। उसे पुरुषों की तरह जनता के बीच में सारे काम करने चाहिए, किन्तु इसके साथ ही साथ ऐसी स्त्री को यह कभी न भूलना चाहिए कि यह सब होते हुए भी नारी घर की रानी है। उसे अपने पति और बाल-बच्चों के बीच एक आदर्श ही रखकर रहना चाहिए।

एक बार एक भारतीय विद्वान् ने एक समाज-सेविका महिला के लिए कहा था कि वह एक देवी है। सामाजिक सेवाएँ करने के अतिरिक्त उसे अपने पति के सुख और बच्चों की भूख-प्यास का ध्यान बराबर रहता है। वह घर को साफ करके नियमित समय पर भोजन तैयार करके अपने सम्बन्धियों को देती है। इसके अतिरिक्त वह पास-पड़ोस में भी काम कर देती है और नाच-गाने में भी उपस्थिति देती रहती है। क्या ऐसी नारी हिन्दुत्व के उच्च आदर्श का उत्तम प्रतीक नहीं है ? मनुष्य के लिए ऐसी नारियां चन्द्रमा और सूरज का काम करती हैं।

नाटा। वार्डन और सुपरि-
जाते हैं चुपचाप।)
—(सहसा चौंककर) मैं
का पालन करूँगा। आज
छोड़ दूंगा।
का मुख दयार्द्र हो जाता है।
की तरफ देखकर सुपरिण्टेण्डेंट
और सुरेश के कंधे पर हाथ
कहता है—]]
—आप रहें, सुरेश बाबू!
की मर्यादा मानव से है। हम
के साथ सहानुभूति है।
—और नीला?
और सुपरिण्टेण्डेंट चुपचाप
जाते हैं]
(पटाक्षेप)

१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल रजिस्टर्ड के सेवन करने से बाल हमेशा के लिए काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है, और उनको लम्बे, घुंघरवाले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न उगते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता है और सिर को ठण्डक पहुंचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २॥) तीन शीशी पूरा कोरस की रियायती कीमत ६॥)। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक फैंसी म्यूट रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्दन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती है।

जरूरी नोट :—माल पसन्द न होने पर कीमत शीघ्र वापस कर दी जाती है। तीन शीशी दवाई के खरीदार को डाक खर्च बिलकुल माफ; और चार अंगूठी लन्दन न्यू गोल्ड, और चार घड़ियां बिल्कुल मुफ्त इनाम दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार-बार हाथ न आयेगा। आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ लिखें।

लंडन कमर्शियल कम्पनी, बाग रामानन्द [D.A.] अमृतसर
London Commercial Co, Bagh Ramanand [D.A.] Amritsar.

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य नी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्य संजीवनसत" ने मान है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा । कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा सिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५।=), डाक और पैकिंग खर्च अलग।

विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

फूल आपकी किस्मत बतायेगा

भारतवर्ष की जगत्-प्रसिद्ध सच्ची साइन्स ज्योतिष विद्या. गहरे अन्धकार में सूर्य की रोशनी है, यदि आप शीघ्र ही इस संसार में बदलनेवाली अपनी किस्मत के उलट-फेर का ठीक उतरा हुआ फोटो समय से पहले देखना चाहते हैं तो आज ही पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी दिलपसन्द फूल का नाम लिखकर भेज दें तो हम ज्योतिष विद्या के हिसाब से आपके आनेवाले १२ मास का लाभ, हानि, नौकरी, उन्नति, व पतन, स्त्री संतान का सुख, तन्दुरुस्ती, रोग, किसी से नया मेल-जोल, दिलपसन्द सगाई, मुकदमा परीक्षा में सफलता, लाटरी, सल्तत, किसी गुप्त ढंग से धन की प्राप्ति अर्थात् तिथि कार्ड से लेकर कुल एक वर्ष में होनेवाली सब बातों का विवरण अर्थात् मासिक वर्षफल बनाकर केवल १।) में वी० पी० द्वारा भेज देंगे डाक-व्यय इसके अतिरिक्त होगा। साथ ही बुरे ग्रहों की शान्ति का उपाय भी लिख दिया जायगा ताकि आनेवाले कष्टों को दूर किया जा सके। एक बार का अनुभव आपको बता देगा कि हम ज्योतिष विद्या में कितना ज्ञान रखते हैं ठीक न हो तो दुगुनी कीमत वापिस झूठा साबित करनेवाले को १००) रुपया देने की गारन्टी है।

श्री भृगु संहिता ज्योतिष आश्रम (D.D.) गाजियाबाद (यू० पी०)

सम्पादक के नाम चिट्ठियां

वेद के प्रति ऐतिहासिक विद्वानों की धींगा धींगी

'देशदूत' के किसी पिछले अंक में वेदों की समानकालिकता का प्रमाण दे चुका हूँ। यहां मैं यूरोपियन ऐतिहासिक विद्वानों की युक्ति के संबंध में कुछ बातें लिख रहा हूँ। यूरोपियन विद्वानों का कथन है कि आर्य लोग भारत के निवासी नहीं थे। वे एशिया से यहां आये और जब वह पंजाब तक आ गये थे उस समय ऋग्वेद बना और वही वैदिक काल के नाम से हिस्ट्री के विद्वानों में प्रसिद्ध है। उनका, प्रमाण यह है कि उस समय जिन वस्तुओं और स्थानों के नाम उनको ज्ञात थे, उन्हीं को वे ऋग्वेद में लिख सके, अवशिष्ट का नाम ज्ञानाभाव से नहीं लिख सके; इत्यादि यही सिद्धान्त इस समय सत्य माना जाता है। उसमें सर्वप्रथम समुद्र है। उन लोगों का कथन है कि समुद्र का ज्ञान इन लोगों को नहीं था इससे ऋग्वेद में समुद्र का नाम नहीं है तथा खाने की वस्तुओं में मछली का नाम नहीं आया है और पंजाब के बाहर के भूगोल को न जानने से उसे तथा व्याघ्र, चावल, हाथी और अंजीर को ऋग्वेद में नहीं लिख सके। बाद में बंगाल पहुँचने पर इन्होंने जाना तब अन्य वेदों में लिखा। यही सिद्धान्त आजकल प्राचीन इतिहास के अध्यापक एकस्वर से पढ़ाते हुए विश्वविद्यालयों के छात्रों को सुशिक्षित बना रहे ह। अब यह विचारास्पद ह कि वेद साहबों के सिद्धान्तानुसार केवल गड़रियों के गीत-मात्र ही हैं और उनमें उनके प्रलाप-मात्र ही हैं तो ऐसे ग्रन्थ सभ्य समाज में प्रमाण नहीं माने जा सकते। उनके आधार पर कोई बात का निश्चय करना विद्वत्समाज में उपहासास्पद ही होना है। यदि उनमें कुछ था तो क्या था, इत्यादि विचार करने पर संस्कृत-साहित्य में हिन्दुओं के सर्वस्व वेद थे तो अवश्य उनमें कोई अपूर्व वस्तु रही होगी, इसका विचार किया जाय तो वेदों के पढ़ने से स्फुट आपको ज्ञात हो जायेगा कि वेद आर्य-जाति के सर्वस्व और अन्त में स्वर्ग तथा मोक्ष के दाता थे, है, तथा रहेंगे।

वेदों में दो भाग हैं, प्रथम भाग कर्मकांड ह और द्वितीय भाग ज्ञानकांड कहा जाता है। कर्मकांड में यज्ञों का वर्णन है और ज्ञानकांड में आत्मज्ञान का वर्णन है। कर्मकांड आवश्यक वस्तुओं की प्राप्ति के लिए देवताओं की सहायता द्वारा मनुष्यों की इच्छा पूरी होने के उपायरूप यज्ञों का उपदेश करता है जिससे यज्ञ द्वारा एहलौकिक और पारलौकिक वस्तुओं की प्राप्ति करता हुआ मनुष्य सुखपूर्वक जीवन निर्वाह तथा अन्त में स्वर्ग-सुख का भागी हो सकता है।

दूसरा भाग ज्ञानकांड है जो संसार को असार बतलाकर संसारी पदार्थों से वैराग्य पैदाकर आत्मज्ञानाभिमुख बना आत्मज्ञान द्वारा जीव को सच्चा स्वराज्य अर्थात् मोक्ष का भागी बनाता है। वेदों में हमारे बाहर से आने न आने का वर्णन कहीं भी नहीं है और न किसी प्रान्त के भूगोल का ही वर्णन है। देवताओं की स्तुतियों में आये शब्द कहीं कहीं पर भूगोलादि की झलक मार देते हैं।

ऐसी दशा में उसमें आए शब्द आर्यों के उन शब्दों के ज्ञान को अवश्य बतलाते हैं परन्तु उनमें न आनेवाले शब्दों के अज्ञान का किंचित्-मात्र भी सूचन नहीं कर सकते। यदि भूगोल का वर्णन वेद करते होते तो उनमें न आनेवाले विषय उनके उन विषयों के अज्ञान को अवश्य सूचित करते। ऐसा होने पर भी यदि यूरोपियन विद्वानों की युक्ति सत्य है तो सन् १९४० में लखनऊ यूनिवर्सिटी के सुप्रसिद्ध विद्वान् राधाकमलजी द्वारा निर्मित इक्नामिक्स की पुस्तक में वाइस चांसलर या डीन का नाम न देखकर उस समय यूनिवर्सिटी में वाइस चांसलर और डीन की प्रथा न होने का प्रमाण केवल मुकरजी के न लिखने से मान लें और प्रमाण में यह कहें कि यदि यह प्रथा होती तो मुकरजी अवश्य जानते होते और यदि जानते होते तो अवश्य लिखते। उन्होंने नहीं लिखा; अतः डीन व वाइस चांसलर की प्रथा यूनिवर्सिटी में उस समय तक नहीं थी, इत्यादि असंगत प्रलापी की युक्ति भी सत्य माननी होगी। जो ग्रन्थ जिस विषय का वर्णन करता है उसमें वर्णन में जो बात छूट जाय तो लेखक का उसका अज्ञान माना जा सकता है न कि उदासीन विषय का भी। ऐसी दशा में यज्ञों के और आत्मज्ञान के वर्णन में समुद्रादि का वर्णन प्राकरणिक न होने से अनावश्यक है। अनावश्यक का वर्णन न करने से उनका अज्ञान किस प्रकार माना जा सकता है और उसमें न आये शब्द यूरोपियन विद्वानों के कथन में किसी प्रकार प्रमाण नहीं दे सकते हैं। यद्यपि उनके कहे हुए बहुत से शब्दों को अगले लेख में आपके सामने उपस्थित करने का प्रयत्न करूँगा, इस लेख को लम्बे हो जाने के भय से छोड़ देता हूँ।

विश्वविद्यालय
लखनऊ

—गिरीशचन्द्रअवस्थी
व्याकरणाचार्य

इधर उधर की

अपूर्व कीटनाशक मशीन

एक मशीन जो बहुत आवश्यक है, ब्रिटेन ने तैयार किया है, जिसका नाम है, क्लिगलाउड स्पीडेसी, यह इंजन में भी पंखे का काम कर सकती है, अर्थात् यह मशीन एक स्थान से दूसरे स्थान में भी आसानी से आ-जा सकती है—१० पौंड से ७०० पौंड तक धूल जिसका अनुपात प्रायः एक एकड़ है, इस मशीन के द्वारा सरलतापूर्वक कीड़ों-मकोड़ों से रहित की जा सकती है। वायु में भी जो कीटाणु हैं इसके द्वारा वे भी समाप्त किये जा सकते हैं। कुछ लोगों का मत है कि वायु में धूल के रूप में एक पाउडर होता है, जिसके द्वारा यह कीटाणु पलते हैं, पानी और अन्य ऐसी ही चीजों में इस मशीन का प्रयोग सरलता से हो सकता है। इस मशीन में कई पम्प होते हैं, एक पम्प ६० फीट तक काम कर सकता है, किन्तु केवल भूमि के धरातल पर यह ५० फीट तक काम करेगा।

यह भूमि के किसी भी भाग पर लगाई जा सकती है। थोड़ा-बहुत परिवर्तन अर्थात् इसके नलों को तनिक साफ करते रहें तो अधिक अच्छा काम करेगी। नल का काम, पिसाई का काम, जड़ें खोदने का काम और गल्ला साफ करने का काम भी मशीन से लिया जा सकता है।

* * *

बहिरापन की अत्यधिक सहायता

लन्दन के विकास-विभाग द्वारा बहिरेपन के लिए एक मरहम तैयार हुआ है जो इसके पहले अमेरिका में भी नहीं बना था। इसके द्वारा अधिकाधिक सुनने में सहायता मिल सकती है, इसके तैयार होने के पश्चात् इसका वितरण भी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से अच्छी तरह हुआ, रेडियो द्वारा भी इसका प्रचार हुआ, इसके द्वारा विदेशों में अच्छा प्रभाव पड़ा और इंग्लैंड को आर्थिक सहायता भी मिली।

शान्तिदूत आचार्य विनोबा

(पत्र ८ का शेष)

पाकशास्त्र सिखलाने लगे। (
'पौनार' के धर्माभिमानियों (!) ने
जी का मुफ्त का मट्ठा तक छोड़ दिया
आचार्य विनोबा जी की
पाण्डित्यपूर्ण विचार-धारा से
पुस्तक-पाठ जोरों से चलने का
खयाल है, किन्तु आप पढ़ने में भी
ऐरी गैरी किताबों के फेर में न
चन्द चुनी पुस्तकें पढ़ते हैं। जो
उस पर पूरा मनन करते हैं। उसे
सर्वतन्त्र स्वतन्त्र विचार-पद्धति से
करते हैं। उत्कृष्ट प्रमाणित हो
अपने विचार-कोष में सम्मिलित
हैं। किसी भी 'वाद' की पोथी
सहसा प्रभावित हो जाना, आपकी
कुण्डली में नहीं लिखा है। गंगा जी
कर गंगादास और जमुना जी के
जमुनादास हो जाना सभी के लिए निकृ
'दुःखेष्वनुद्विग्नमना सुखेषु
स्पृहः' होकर आप स्थितप्रज्ञों की
बहुत पहले पहुँच चुके हैं। सन्
बापू ने 'भारत छोड़ो' का नारा
पहले अवश्यम्भावी गिरफ्तारी पर
द्वारा आत्मबलिदान करने का
जाहिर किया था। उनका विश्वास था
प्रबल हिंसा के प्रतिरोध में परम
का पावन रक्त निःशेष हुए बिना
कायरता की मौत मर जाएगी।
आश्रम में इस विचार का पता
ही वहां श्मशान का-सा सन्नाटा छा
ऐसा प्रतिरोध देखा तो क्या सुना भी
भाई महादेव देसाई तो थर्राने
की पुतलियां ऊपर चढ़ गईं।
जी ने धीरज धरकर तर्क चालू
सबको अन्तिम भरोसा विनोबा जी पर था।
वे आए। बापू ने अपने मन्तव्य
बतलाया। बापू के अनन्यभक्त विनोबा
ने सारी बातें सुनीं। फिर अपने
शब्दों में कहा 'आपका विचार ठीक
ऐसी स्थिति में अहिंसक का आत्म
उसके कर्त्तव्य की परिधि में
पर, अन्तिम निर्णय व्यक्ति स्वयं ही
सकता ह।' बापू इस पर दो चार दिन
मनन करने की अवधि भी देने लगे।
जी ने बिना किसी हिचकिचाहट के इतना
कहा :—'मेरे लिए इसमें और सोचने
क्या है ?' जैसे पौनार से शान्त
आए थे। वैसी ही सौम्य मुद्रा में उसी
चल पड़े। जिस बात से दूसरे
पुरुषों के हृद्गतिरोध की आशंका
थी, वह भी विनोबा जी के लिए मानो
आनन्द की बात थी। सच तो यह
'या निशा सर्वभूतानां तस्या
संयमी।'

मा-बाप के शादी करने के
प्रयत्न करने पर भी आप पूर्ण
ब्रह्मचारी हैं। स्वर्गीय महादेव
शब्दों में 'बापू के बाद आप ही ऐसे
हैं; जिनकी मेधा निरन्तर विकसित
रहती है।' बापू के यम नियमों की
साकार प्राण-प्रतिष्ठा है। आज स
की निगाहें स शान्तिदूत की
देखें, हिन्दुस्तान के निवासी ऐसे
शिरोमणि के प्रयत्न से अपने नैतिक
को कितना ऊँचा उठाते हैं ?

प्रतिमा
इस संग्रह में सुकवि राजाराम
की एक से एक बढ़िया ५० कविता
इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा है।
भाषा और क्या भाव सभी
रंगीन आवरण, बढ़िया छपाई और
केवल १) एक रुपया।
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इला

जुल्फे बंगाल हेयर आयल
KAPOOR ART PRESS
हम ने आपना व्यापार देहली में आरम्भ कर दिया है !
अब आप अपने आर्डर इतयादि निमन लिखत पत्ते पर भेजें
दी क्रोऊन फारमेसी
दिलशाद गार्डन · शाहदरा · देहली

मारा रंग-मंच

मीन-आसमान

रों की समस्या-सम्बन्धी फ़िल्म

ने अमरत्व की कहानी कहकर कितनी भयंकर होड़ ली है। अन्य महाद्वीपों की भांति भारत- एक वह समाज है, जिसकी नोटों के ढोकों से परिपूर्ण रहती वह समुदाय जिनकी हांड़ियां नमक की कंकड़ियों से भी हीं। प्रथम समाज (पूंजीपति) (मजदूर) पर शासन करता वह समय आ गया है जब समस्त उन अन्नदाताओं को, जिन्होंने से अपनी आंतों पर उनके कल- रखी है, भिखारी समझते मानव की मानवता, मनुष्य के के कर्तव्य और उपकारों के । परन्तु रहस्य एक दिन होगा और उन धन-लोलुपों नत-मस्तक हो जायेंगे। हैं, परन्तु "मजबूर" मजदूरों की जटिल पूंजीपतियों के चातुर्यमय डालते हुए सौभाग्य तम भेंट, "जमीन- प्रोडक्शन्स ने निर्मित निर्देशन श्री द्वारका है।

का एक धनाढ्य व्यापारी अपने पुत्र रवि त्यागकर परलोक रवि के चाचा जी, निर्मला के संचालक, रवि को एक के रूप में निर्मित इंगलैंड भेजते हैं। अपनी ओं को समाप्त करने के अपने देश की ओर प्रस्थान वृद्ध होने के कारण रवि के को मिल का सर्वसर्वा तथा निर्मला से विवाह करने के परन्तु रवि इस ओर अपना आकृष्ट नहीं करता। एक रवि अपनी वायु परिवर्तित गौरीपुर की ओर प्रस्थान एक दिन रवि की एक नवयुवती, आश्रम की अनाथ भेंट हो जाती है। 'निर्मला- में मजदूरों की हड़ताल करने के लिए रवि के चाचा जी, गौरीपुर रवि को अपने साथ भेजते हैं। दुर्भाग्यवश निर्मला, कल्पना (कमला का द्वितीय प्रेम-लीला को दृष्टिपात करने प्राप्त कर लेती है और जी के समीप जाकर उनके में चिनगारी का कार्य मजदूरों के अधिकार एवं कल्पना शान्तिमय बनाने के लिए को प्रस्थान करता है; और भारतीय-आश्रम भी। मजदूरों चाचा जी में घोर संघर्ष रवि अपने चाचा को ठुकराता दिन वह अपने चाचा के पास दिखाने के लिए जाता चाचा जी रवि की मृत्यु के के लिए बन्दूक का प्रयोग करते हैं; परन्तु उनकी पुत्री निर्मला, रवि तथा [illegible] सम्मुख आती है। विवश होकर आसमान (पूंजीपति) जमीन (मजदूर) को गले लगाता है।

यद्यपि प्रस्तुत समस्या से सम्बन्धित अनेक चित्र ('मजदूर', 'जस्टिस', 'रोटी', 'हमराही' आदि) हमारे सम्मुख प्रदर्शित हो चुके हैं; परन्तु प्रस्तुत चित्र की कहानी के लेखक पं॰ गिरीश ने अत्यधिक सफलता प्राप्त की है। कहानी में प्रेमालाप को निम्नकोटि का स्थान दिया गया है, जो चित्र की सबसे बड़ी विशेषता है। कहानीकार ने नायक-चरित्र, मजदूर-पूंजीपति-मिलन, नूतन-कल के आविष्कार में अत्यन्त असतर्कता का प्रयोग किया है। कहानी-लेखक ने नायक को गांधीवादी और नायिका को साम्यवादी का रूप प्रदान किया है। कथा-लेखक ने सैनिक-अभिवादन एवं चुल्लू-द्वारा पानी पिलाने का अत्यधिक रुचिकर दृश्य प्रदर्शित किया है। समाचार है श्री गिरीश जी को उनकी आगामी कृति "मानसरोवर" में उन्हें आशातीत असफलता मिली है। पं॰ गिरीश द्वारा लिखित संवाद यद्यपि अत्यन्त व्यंगात्मक हैं; परन्तु शत-प्रतिशत उर्दू भाषा ने संवाद की भावुकता पर एक असहनीय कुठाराघात किया है। उदाहरणार्थ—"'काश' पढ़े-लिखे, पढ़े-लिखे होते", "आप लोगों का मैं 'तहेदिल से शुक्रिया अदा' करता हूँ", "तुम्हारे पास कफन के लिए पैसे हैं, लेकिन पेट भरने के लिए पैसे नहीं, क्योंकि तुम 'दौलतमन्द' हो", "बेशकीमती-जिन्दगी", इत्यादि-इत्यादि। 'तुम' और 'आप' के अन्तर में नायिका कहती है—"मैं आपको इसलिए 'तुम' कहती हूँ कि हम लोग 'गरीब' हैं।" मैं पूछता हूँ कि आखिर यह हिन्दी-उर्दू का दुधमुंहा दोगला कब तक हिन्दी-साहित्य की छाती पर कोदो दरेगा? क्या वास्तव में गिरीश जी का इतना नैतिक पतन हो गया है? यद्यपि श्री फैयाजहश्मी ने द्वितीय श्रेणी के गीतों की रचना की है; परन्तु कुछ गीतों में 'जीवन', 'जवानी' आदि जैसे अश्लील शब्दों का प्रयोग किया गया है। उदाहरण-स्वरूप—'एक गीत सुनाना है', 'माता के गुण गाओ', 'माता नाम मिटने नहीं पाये, चाहे तुम मिट जाओ', [illegible] दिये पर कभी न जाते देखा' आदि। सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ श्री कमलदास गुप्ता का संगीत-निर्देशन सन्तोषजनक हुआ है। गीतों की 'ट्यून्स' अत्यधिक रुचिकर हैं; परन्तु 'मार्चिग-सांग्स' की भी ट्यून्स साधारण रूप में प्रदर्शित की गई है, जिससे स्थल की भावुकता पर अकल्पनीय आघात हुआ है। चित्रा-लेखन निम्नकोटि का हुआ है। कला-निर्देशन तृतीय श्रेणी का है। सम्पादन-कार्य दोषपूर्ण है। 'मेक-अप' साधारण हुआ है।

अभिनय-कला की दृष्टि से सबसे सुन्दर एवं कलात्मक कार्य कमला की कल्पना में रंजना ने अभिनीत किया है। संवादों की भावुकता एवं लोकप्रियता के लिए आप विशेष रूप से श्रेयस्कर हैं। श्रीमती कल्याणी दास द्वारा आपका 'बैक-ग्राउण्ड' अत्यन्त अस्वाभाविक हुआ है। नायक रवि की भूमिका में जीवन ने सन्तोषजनक कार्य किया है। आपके चरित्र-चित्रण एवं 'प्लेबैक' ने आपकी उच्चता पर शोचनीय आघात किया है। श्री हेमन्तकुमार का दिग्दर्शन आप पर फबता नहीं है। द्वितीय नायिका निर्मला के आवरण में कुसुम देश पाण्डेय ने अत्यधिक निम्नकोटि का अभिनय प्रदर्शित किया है। शेष पात्रों में रमेश सिनहा आदि ने सन्तोषप्रद अभिनय अभिभूत किया है।

सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री काननबाला।

समस्त कलाकारों को प्रसिद्ध होने के कारण अभिनय-कला की दृष्टि से श्री खोसला जी का दिग्दर्शन नाममात्र के लिए हुआ है। केवल जगमोहन द्वारा तीन-तीन पात्रों का 'प्लेबैक' अत्यधिक अरुचिकर तथा अस्वाभाविक प्रतीत होता है। अन्य चित्र-शिल्पियों के कार्यों में भी आपका दिग्दर्शन निम्नकोटि का दृष्टिगोचर होता है। प्रकाश जैसे उच्च कोटि के चित्रालय के चित्र की इतनी निकृष्ट कला निरखकर हमें अत्यधिक आश्चर्य व दुख होता है। यदि कुछ दिनों तक प्रकाश की यही दशा रही तो लोग विजय भट्ट जी एवं 'प्रकाश' से घृणा करने लगेंगे। कहानी में कोई नूतनता नहीं है। पात्रों के मुख 'बैक-ग्राउण्ड' के स्वरों की समान गति से नहीं अग्रसर होते। वास्तव में दिग्दर्शक श्री द्वारका खोसला जी ने चाय का पान करते हुए चित्र का दिग्दर्शन किया है। पात्र-परिचय अत्यन्त निचली श्रेणी का किया गया है। आशा है, श्री खोसला जी ने अपनी भावी रचना "सावन" में इससे अधिक उच्चता का परिचय प्रदर्शित किया होगा।

संक्षेप में, यद्यपि चित्र "जमीन-आसमान" एक सामाजिक कृति है; परन्तु केवल एक बार देखने योग्य है। प्रकाश पिक्चर्स की आगामी सृजनों, "घूंघट", 'सावन', "समाज को बदल डालो" की अपने-अपने नगरों के प्रिय सिनेमा-गृह में प्रतीक्षा कीजिए।

चित्रपट-विषयक विशेष खबरें

शान्ती लोकचित्र 'गोपीनाथ' नामक चित्र निर्मित कर चुका है, इसका उद्घाटन श्री मंगलदास पकवासा बिहार के गवर्नर ने किया था। इसके 'कथाकार और दिग्दर्शक श्री महेशचन्द्र कोल हैं। चित्र के प्रधान पात्र राज कपूर हैं।

* * *

मद्रास के प्रसिद्ध दिग्दर्शक और कथाकार चित्तूर नागे बहुत ही शीघ्र एक चित्र स्वामी रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाओं के आधार पर तैयार करने जा रहे हैं।

* * *

मुरारी पिक्चर का प्रसिद्ध चित्र 'सन् १८५७' निर्मित हो गया है। इसमें भारत के पहले विद्रोह के समय के सम्पूर्ण चित्र उपस्थित करने का प्रयत्न किया गया है। चित्र भारतीय नेताओं से भी प्रशंसित है। मुख्य पात्र, सुरैया, वास्ती, सुरेन्द्र और मेनका हैं। इसके दिग्दर्शक श्री मोहनसिंह हैं।

* * *

शालीमार के प्रसिद्ध चित्र 'मन की जीत' पर अमेरिका ने बन्धन लगा दिया है कि वह वहां प्रदर्शित न किया जाय।

* * *

सिनेमा-व्यवसाइयों ने तय किया है कि 'बापू की अमर यात्रा' नामक चित्र का सम्पूर्ण लाभ उनके स्मारक बनाने के काम में लाया जायेगा।

—दर्शक

सेवाग्राम
रंग-बिरंगी छपाई अनेक रंगीन चित्र
रचयिता श्री सोहनलाल द्विवेदी
संरक्षक श्री घनश्यामदास बिड़ला
जनता की भाषा में, जनता के भावों का, जनता का काव्य कवि की राष्ट्रीय रचनाओं का सुन्दर संग्रह। बड़ा आकार, बढ़िया काग़ज़, कपड़े की मज़बूत जिल्द। मूल्य दस रुपये।

अपराजिता
यह श्रीयुत रामेश्वरप्रसाद शुक्ल एम॰ ए॰, 'अञ्चल' की कतिपय सुन्दर कविताओं का संग्रह है। कविताएँ नवीन युग की नूतन सांस्कृतिक रुचि और प्रगति के साथ हैं। कवि 'अंचल' की रचनाओं का आनन्द प्राप्त करने के लिए अपराजिता को अवश्य देखिए। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३) तीन रुपये।

गुदड़ी के लाल
इस पुस्तक की कहानियाँ बहुत ही सरल और रोचक भाषा में लिखी गई हैं। इनको पढ़कर बच्चे बेहद खुश होते हैं। ऐसी पुस्तक अपने बच्चों को जरूर दीजिए। मूल्य ।।)
मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लि॰, प्रयाग

हास परिहास

भंग की तरंग

समाजवादियों ने जिला बोर्डों का चुनाव लड़ा। इस लड़ाई में वही आनन्द आया जो मियां-बीवी की लड़ाई में आता है।

* * *

हैदराबाद के रिजवी मियां को लोग बहुत कोस रहे हैं। मैं समझता हूँ कि कोसना उचित नहीं है। इन्हें किसी डाक्टर को दिखाना चाहिए।

* * *

हिन्दू लोगों पर हैदराबाद में बड़ा अत्याचार हो रहा है। पता नहीं, कहां तक यह ठीक है, किन्तु एक हिन्दू वहां के मंत्रिमण्डल में अवश्य है।

* * *

उनका कहना है कि हमारे हमला करने के समय देश के सारे मुसलमान हमारा साथ देंगे। यह तो आप न कहते तब भी हम समझ सकते थे।

* * *

अम्बेदकर का कहना है कि अछूतों को कांग्रेस से अलग रहना चाहिए। क्या भारत सरकार के मंत्रिमण्डल से नोटिस मिल गया?

* * *

यह भी सम्भव है कि पाकिस्तान के किसी प्रान्त की गवर्नरी खाली हो और आपसे पूछा गया हो।

* * *

आपका कहना है कि कांग्रेस के साथ रहने में अछूत अपना अस्तित्व खो देंगे। अछूत के साथ यह भी तो सोचना है कि आपका अस्तित्व रहता है कि नहीं?

* * *

इँगलैंड में फांसी का दंड पांच वर्षों के लिए स्थगित कर दिया गया है। 'आशंका' है कि अब इँगलैंड में हत्याएँ नहीं होंगी।

* * *

प्रयाग की एक तहसील में चुना
समय कोई बैलट-बक्स ही लेकर
आगे से पोलिंग अफसर बैलट-बक्
पर बैठा करें तो ऐसी घटना न
सकती।

* * *

अमेरिका से समाचार मिला
परमाणु बम से भी अधिक शक्ति
टीन के शस्त्र बनाये गये हैं। यह
बना-बनाकर रखते क्यों हैं? इनका
कर डालना चाहिए।

* * *

सुहरावर्दी कहते हैं कि अल्प
साहस और धैर्य से काम लें। कुछ
भी बता देते तो अच्छा होता।

* * *

खुरो साहब ने सिंध के प्रधान
के पद से इस्तीफा दे दिया। जान प
है खुरो महोदय कायदे आजम को
दण्डवत करने नहीं जाते थे।

* * *

बिहार के मुस्लिम नेता अब्दुल
अन्सारी कहते हैं मुसलमान
पाकिस्तान चले जायँ। वहां जाकर
मरें। वहां रहने से भोजन मिलेगा, नौ
मिलेगी और समय आने पर धर्म
झण्डा भी ऊँचा करेंगे।

—अगड़धत्त

गीत

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

तुम्हारी याद में मोती प्रिये बिखरा रहा हूँ।
कहां से जल मिला इतना हृदय को,
निरन्तर नैन में आता चला है?
किया इसने बहुत लज्जित प्रलय को।
कहां का कूट हिम का यह गला है?
बहाकर अश्रु सावन को प्रिये शरमा रहा हूँ।
नयन की तुम हमारे पुत्तली हो,
मनोहर ओह मंजुल और कोमल।
कचौड़ी शुद्ध घी में ज्यों तली हो,
तुम्हीं हो राह की मेरे सु-सबल।
तुम्हीं को विश्व में मैं देख जी बहला रहा हूँ।
नयन में रात दिन है आग जलती,
नहीं ठंडक मिली इसको किसी से।
तुम्हारी मूर्ति इसमें है टहलती,
न तुमको कष्ट हो कुछ भी इसी से।
निरन्तर अश्रु-जल से मैं इसे नहला रहा हूँ।
नहीं सरिता बुझाती प्यास मेरी,
हृदय को प्रेम-रस की चाह होती।
नहीं व्यंजन—-खगों का मैं अहेरी,
न मेरी जीभ भोजन हेतु रोती।
तुम्हारे द्वार पर मैं नित्य धक्का खा रहा हूँ।

500
Marriage Proposals, Officers, Millionairs, Girls 16 to 40 years.
READ & ADVERTISE IN
"MARRIAGE GAZETTE"
BARNA STREET, SADDAR BAZAR, DELHI.
Subscription Rs. 10/-

अपने भाग्य की परीक्षा एक बार अवश्य करें, अवश्य ही विजयी होंगे
३०००) रुपया इनाम अवश्य जीतिये

"प्रभात" प्रतियोगिता नं० ३

पूर्तियां भेजने की अन्तिम तारीख २७-५-४८ ई०, खुलने की तारीख १-६-४८ ई०

जोड़ २१०

	७०	

हर कोने से जोड़ने से २१० आना चाहिए एक संख्या दो बार या खाली सून्य इस्तेमाल नहीं होना चाहिए, इसका शीलबंद उत्तर स्थानीय भारत बैंक में जमा है।

१८० का हल

१७	६४	६६
११२	६०	८
५१	२६	१०३

इनाम १४००) रु० सर्व शुद्ध हल पर, ५००) ऊपर की दो पंक्ति या नीचे की दो पंक्ति मिलने पर, २००) रु० कोई भी एक पंक्ति मिलने पर, ५००) रु० सील बंद की पूरी संख्यायें किसी भी प्रकार से मिलने पर, ३००) रु० ७ संख्यायें किसी भी प्रकार पर, १००) रु० सबसे अधिक भेजनेवाले को दिये जायँगे।

फीस १ पूर्ति का १), चार का ३), अधिक के लिए ॥) प्रति पूर्ति अधिक जैसे ५ का ३॥), १० का ६), पूर्तियां एक ही सादे कागज पर, पोस्टकार्ड पर, मनीआर्डर कूपन के नीचे भरकर भेज सकते हैं। मनीआर्डर कूपन के पीछे ओर पूर्तियों के नीचे नाम व पुरा पता साफ लिखा आना चाहिये। परिणाम फल हर शामिल होनेवालों के पास १०-६-४८ तक पहुँच जायगा, उत्तर के लिए टिकट आना चाहिए, पत्र का हवाला अवश्य दें। धन राशि कम आने से इनामों में भी उसी अनुपात से कमी की जा सकती है। मैनेजर का निर्णय कानूनन मान्य होगा, हर जगह हमारी पूर्तियां भरवाकर भेजनेवाले एजेन्टों की आवश्यकता है।

पता "प्रभात" ट्रेडिंग कम्पनी (प० वि० ११) सेव का बाजार आगरा।

मरदों की गलतीयाँ कीमत बाद

गलतियां हो चुकी हैं तो भी विवाह से पूर्व, विवाह के पश्चात् हम असंख्य
सहे मरीज़ों को शर्तिया ठीक कर चुके हैं। हट्टे कट्टे अन्दर से खोखले कमजोर
जोर अहजा यानी ढीले-ढाले शरीर से नवीन अवस्था का चमत्कार देखकर आप दंग
जायेंगे। यदि दस्तकारी औषधियों और नीम हकीमों की ठगियों ने आपको हम
आने से रोक रखा है तो मैं फिर कहता हूँ कि जिस दिन मरजी हो आइए, रहने
प्रबन्ध हमारे जिम्मे, यदि किसी कारण से लाभ न हो तो यात्रा का खर्च जेब से
इसके अतिरिक्त जो डाक्टर, हकीम वैद्य सब इश्तहार झूठे समझते हैं आइए
सामने हमारी औषधियों को हानिकारक सिद्ध करें तो एक हजार रुपया पुरस्कार में
मूल्य वाजबी।

कविराज हीरोजी वज़ीरावादी, मैनेजर दी हीरो फारमेसी रजिस्टर्ड
डाकखाना दरियागंज की पिछली तरफ दिल्ली।

शरद् बाबू के उत्तमोत्तम उपन्यास

छुटकारा

एक निठल्ले और बेरोजगार भाई की सहायता उपार्जनशील भाइ को किस प्रकार करनी चाहिए, यह बात इस उपन्यास से भली भाँति सीखी जा सकती है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

नव-विधान

पाश्चात्य सभ्यता के अन्धानुकरण में पड़कर अत्यन्त अशान्तिमय जीवन व्यतीत करनेवाले पति का प्राचीन पद्धति से गृहकार्य का संचालन करनेवाली गृहिणी किस प्रकार सुखी करने में समर्थ हुई, यह बात इस उपन्यास में दरसाई गई है। मूल्य १।≈) एक रुपया दस आने।

मँझली दीदी

एक सोतेली बहन अपने माता-पिता से हीन भाइ के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार कर सकती है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

वाददाताओं के पत्र

ला में नवनिर्मित हिमाचल प्रदेश कांग्रेस कमेटी का एक विराट में श्री काहनसिंह सौहठा, हिमाचल प्रदेश अस्थायी कांग्रेस की अध्यक्षता में हुआ। के प्रमुख राजनैतिक श्री बुद्धिसागर नौटियाल भी थे। कई रियासतों की कार्य- प्रमुख और जनता बड़ी के साथ भाग ले रहे थे। में कुछ प्रस्ताव स्वीकृत किये प्रदेश सरकार के कार्य- संभालने का अवसर हिमाचल- को भी दिया जाय, जैसा कि का सच्चा स्वरूप जनता जन्मसिद्ध अधिकार है। प्रदेश सरकार जनता के की एक सलाहकार समिति (३) बुशहर राज्य में चलते चक्र को तुरन्त रोक दिया के मामले की जांच करने निष्पक्ष जांच-समिति नियुक्त उस जांच-समिति के निर्णय के राजनैतिक वन्दियों को रिहा कर दिया जाय, साथ ही व्यवस्थापक की इस पाकि- की घोर निन्दा की गई।

—संवाददाता

* *

खबर है कि श्री सत्यदेव बुशहर राज्य प्रजामंडल, ने जेल में वन्द कर हाथ-पैरों पर भारी दी गई थीं जो कि करते पर उतार दी गईं। उनके साथ अमानुषिक जा रहा है। बुशहर प्रधान मंत्री श्री आनूलाल में वन्द कर दिया गया है मंत्री श्री सरनदास के नाम वारंट है।

—संवाददाता

* *

कन्या-गुरुकुल का २४वां ७,८,९ व १० मई १९४८ में मनाया जायेगा। उत्सव मान्यनेता पधारेंगे। उत्सव में सम्मेलन, संस्कृति-सम्मेलन, आर्य- व्यायाम-सम्मेलन आदि अनेक का आयोजन किया गया है। विषयों पर निवन्ध और होंगी। दीक्षान्त संस्कार भी होगा। नवीन वालिकाओं का किया जायेगा।

—चन्द्रावती लखनमाल

* *

(जयपुर) की हिन्दी-साहित्य- 'हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ' नामक करवा रही है उसमें पुरानी का भी विवरण होगा। जो पत्रिकाएँ भेजने में समर्थ हों की एक प्रति भेजकर पुण्य- बँटाएँ। कुछ सम्पादकों की है कि उनके पत्र वहां तक पहुँ- वे अपने पत्रों के के नाम भेजने का कष्ट नहीं किन्तु समिति अपनी स्वयं की चाहती है। ग्रीष्म-अवकाश खुलते ही समिति पत्रों की यह प्रदर्शित करने के लिए पत्रों की संख्या किसी भाषा से होगा। पत्रकारिता-सम्बन्धी लेखों सामग्री इस पते पर गीगाराम वर्मा 'चंचल' हिन्दी-पत्र-पत्रिकाएँ कार्यालय बिड़ला कालेज पिलानी (जयपुर स्टेट)

—संवाददाता

* * *

लखनऊ हिन्दी विद्यापीठ की प्रतिनिधि परिषद् की सभा अमीनाबाद इंटर कालेज में लाला श्रीनाथ सेठ स्पेशल मजिट्रेस्ट के सभापतित्व में हुई जिसमें आगामी वर्ष के लिए पदाधिकारी निर्वाचित हुए—

लाला श्रीनाथ सेठ सभापति, कुमारी कंचनलता सब्बरवाल, पं० नरेन्द्रनाथ शास्त्री, श्री अशोक जी सम्पादक 'स्वतन्त्र भारत', उपसभापति श्री ब्रह्मदत्त तिवारी 'नागर'; प्रधान मंत्री कुमारी रामासिंह, श्रीमती इन्द्रावतीसिंह, कुमारी शीला कंकण, पं० कृष्णचन्द्र भार्गव, श्री जगदीशप्रसाद पांडे, श्री गोपाल जी सिनहा, श्री कृष्णमणि त्रिपाठी, श्री यमुनाप्रसाद शास्त्री, भुवनेश्वरीचरण सक्सेना, तथा प्रयागदत्त पांडे विभागीय मंत्रीगण।

—प्रेमलता तिवारी

दिल्ली में आल इंडिया रेडियो दिल्ली से २८ अप्रैल को रात के १० बजे एक कवि-सम्मेलन ब्राडकास्ट करने का आयोजन किया गया था जिसमें ब्रजभाषा के निम्नलिखित प्रमुख कविगणों ने भाग लिया था। सर्वश्री डा० रामप्रसाद त्रिपाठी, डा० रामशंकर शुक्ल रसाल, पं० अनूप शर्मा, हरदयालुसिंह, अमृतलाल चतुर्वेदी, सत्यनारायण पांडेय, कान्तानाथ पांडेय, पं० जगमोहननाथ अवस्थी, द्वारकाप्रसाद सेवकेन्द्र, हृदयनारायण पांडेय हृदयेश, नवीवख्श फलक तथा गोपालप्रसाद व्यास।

—संवाददाता

पृथ्वी की कहानी

पृथ्वी कैसे बनी, पृथ्वी पर पहले-पहल कौन आया; नद-नदियाँ, पहाड़, जंगल, रेगिस्तान, बर्फीले देश, जानवर, पक्षी और आदमी कैसे बने; धर्म और जातियाँ, राजा और कानून कैसे बने; पुरानी यादगारें, आज की दुनिया, पृथ्वी का अन्त आदि बातों का वर्णन इस पुस्तक में बड़े अच्छे ढंग से किया गया है। मूल्य ||=)||

मैनेजर इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग

अपनी फसल को सूखने न दीजिये

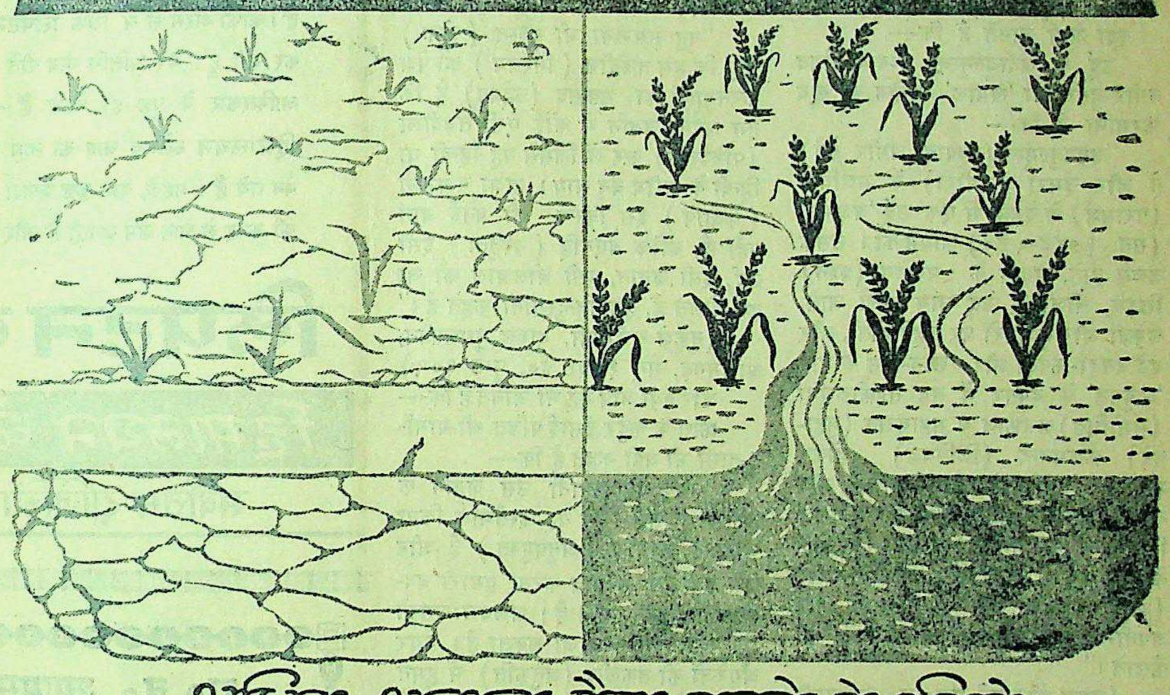

अधिक अनाज पैदा करने के लिये
पटे या सूखे तालाबों को गहरा कीजिये

प्रायः पानी की कमी के कारण किसान की फसलें नष्ट हो जाती हैं, जिससे उसके सारे सुख स्वप्न टूट जाते हैं। किसान देखता ही रह जाता है और उसकी हरी फसल सूख जाती है। किन्तु हमारे किसान वैज्ञानिक साधनों की सहायता से सिंचाई का प्रबन्ध कर लें तो उन्हें इस संकट से छुटकारा मिल सकता है। किसानों को इस संकट से मुक्त करने के लिये संयुक्त प्रान्त की जनप्रिय सरकार ने तालाब खोदने की एक बड़ी योजना चलाई है जिसमें दस लाख रूपये से भी अधिक खर्च होने की सम्भावना है। अतः यह ज़रूरी है कि किसान व्यक्तिगत रूप से इस योजना में दिलचस्पी लें। सहकारी समितियां बनायें और पटे तथा सूखे हुये अधिक से अधिक तालाबों को गहरा करें। ये तालाब वैज्ञानिक प्रणाली पर सिंचाई के लिये सहायक होने के साथ साथ सूखे समय में जलकोष के रूप में भी काम आयेंगे। समय कम रह गया है, अतः अपनी सरकार के साथ कंधे से कंधा मिला कर इस योजना को सफल बनाने में सहयोग दीजिये।

इसके लिये आपको क्या करना चाहिये :

(क) अपने निकटवर्ती सुधार संघ को यह सूचित करें कि कौन कौन से तालाबों को गहरे करने की ज़रूरत है।

(ख) कृषि विभाग की इंजीनियरिंग शाखा के कर्मचारियों की सहायता से यह निश्चित करें कि तालाब कितना गहरा किया जाय और सिंचाई के रास्ते कहां रखे जायं।

(ग) अपने निकटवर्ती सुधार संघ या कांग्रेस कमेटी के नेतृत्व में काम का आयोजन करके कार्यक्रम और काम शुरू करने का दिन भी निश्चित कर लें।

(घ) काम शुरू करने के लिये जो दिन निश्चित किया जाय उसकी घोषणा पहले से अपने और पास पड़ोस के गावों में कर दीजिये काम पूरी लगन के साथ शुरू करें और यथा शीघ्र समाप्त कर दें। हर हालत में यह काम बरसात शुरू होने के पहले अवश्य समाप्त हो जाय, ताकि वर्षा का पूरा पूरा लाभ उठाया जा सके।

(ङ) तालाब की घास-पात निकाल कर कम्पोस्ट के गड्ढों में जमा कर दें जिससे उनका खाद के रूप में इस्तेमाल किया जा सके।

(च) पटे या सूखे तालाबों के ऊपर की खुदी हुई गीली मिट्टी खेतों में डाल दीजिये। यह मिट्टी खाद का काम करेगी।

(छ) तालाबों को खोदने से जो मिट्टी निकले उसे पानी निकलने के लिये रास्ते छोड़ कर, तालाब के किनारे जमा कर दें और उन पर पेड़ लगा दें।

संयुक्त प्रान्तीय सरकार के सूचना विभाग द्वारा प्रचारित

SAA

UPTB-H1

क्या आप जानते हैं ? हिन्दुस्तानी का दम क्यों भरते हैं ?

लेखक, श्री चन्द्रबली पांडेय, एम० ए०

क्या आप जानते हैं कि—

उर्दू के आदि आचार्य प्रसिद्ध कवि सैयद इंशा अल्लाह खां का स्वयं स्पष्ट कहना है कि—

"शाहजहानाबाद के खुशबयानो (शिष्ट-वक्ताओं) ने मुत्तफ़िक़ (सहमत) होकर मुताद्दिद (परिगणित) ज़बानों से अच्छे-अच्छे लफ़्ज़ निकाले और बाज़े इबारतों (कतिपय वाक्यों) और अलफ़ाज़ (शब्दों) में तसर्रुफ़ (परिवर्त्तन) करके और ज़बानों से अलग एक नई ज़बान पैदा की जिसका नाम उर्दू रक्खा।"

(दरिया-ए-लताफ़त (सन् १८०८ ई०), अंजुमन तरक्क़ी उर्दू, दिल्ली, सन् १९३५ ई०, पृष्ठ २)

क्या आप जानते हैं कि—

उर्दू के अदीबुल्मुल्क नव्वाब सैयद नसीर हुसैन खां 'खयाल' साहिब का खुद फरमाना है कि—

"उमदतुल्मुल्क (नव्वाब अमीर खां) ने और उमरा (अमीरों) के मशविरा (परामर्श) से देहली में एक उर्दू 'अंजुमन' (सन् १७४४-५ ई०) क़ायम की। उसके जलसे होते, ज़बान के मसलेय (प्रश्न) छिड़ते, चीज़ों के उर्दू नाम रक्खे जाते, लफ़्ज़ों और मुहावरों पर बहसें होतीं, और बड़े रगड़ों-झगड़ों और छान-बीन के बाद 'अंजुमन' के दफ़्तर में वह तहक़ीक़शुदा (संशोधित) अलफ़ाज व महावरात (मुहावरे) क़लमबन्द (लिपिबद्ध) होकर महफ़ूज़ (सुरक्षित) किए जाते; और बक़ौल 'सियरुल् मुताखरीन' इनकी नक़लें हिन्द के उमरा (अमीरों) व रूसा (रईसों) के पास भेज दी जातीं और उनकी तक़लीद (अनुकरण) को फ़ख (गर्व जानते और अपनी-अपनी जगह उन लफ़्ज़ों को फैलाते।"

(मुग़ल और उर्दू, एम० ए० उसमानी एंड संस, फियर्स लेन, कलकत्ता, सन् १९३३ ई०, पृष्ठ ६०)

क्या आप जानते हैं कि—

उर्दू के परम प्रतिष्ठित कोषकार मौलवी सैयद अहमद देहलवी आप ही बताते हैं कि—

"यह लोग तुर्की उन्नस्ल (तुर्कवंशी) थे या फ़ारसी उन्नस्ल (फ़ारस-वंशी) या अरबी उन्नस्ल (अरबवंशी) यह हिन्दी की मुताबक़त (अनुकूलता) किस तरह कर सकते थे ?"

(फ़रहंगे आसफ़िया, जिल्द अव्वल का मोक़द्दमा, रिफ़ाहे आम प्रेस लाहौर, सन् १९०१, पृष्ठ ८)

और क्या आप जानते हैं कि—

उर्दू के प्रमुख तबलीग़ी नेता ख़ाजा हसन निजामी देहलवी साहिब आप ही सब को समझाते हैं कि—

"यह हिन्दी ज़बान ममालिक मुत्तहदा (युक्तप्रदेश) अवध और रुहेलखंड और सूबा बिहार और सूबा सी० पी० और हिन्दुओं की अक्सर देशी रियासतों में मुरव्वज (प्रचलित) है। गोया, बंगाली और बरमी और गुजराती और मरहठी वग़ैरह सब हिन्दुस्तानी ज़बानों से ज़्यादा रिवाज हिन्दी यानी नागरी ज़बान का है। करोड़ों हिन्दू औरत-मर्द अब भी यही ज़बान पढ़ते हैं और यही ज़बान लिखते हैं, यहां तक कि तक़रीबन एक करोड़ मुसलमान भी, जो सूबा यू० पी० और सूबा सी० पी० और सूबा बिहार के देहात में रहते हैं या हिन्दुओं की रियासतों में बतौर रियाया के आबाद हैं और उनके हिन्दू रियासतों के खास हुक्म के सबब से हिन्दी ज़बान लाज़मी तौर से हासिल करनी पड़ती है, हिन्दी के सिवा और कोई ज़बान नहीं जानते।"

(कुरान मजीद के हिन्दी अनुवाद की भूमिका, सन् १९२९ ई०)

और क्या आप जानते हैं कि—

मुसलिम साहित्य के प्रकांड पंडित, देशभक्त अल्लामा सैयद सुलैमान साहिब नदवी का खुला निर्देश है कि—

"हम अपने बदगुमान (भ्रान्त) दोस्तों को बावर (सचेत) करना चाहते हैं कि यह लफ़्ज़ 'हिन्दुस्तानी' मुसलमानों के इसरार (हठ) से और मुसलमानों की तिफ़्लतसल्ली (सुखसन्तोष) के लिए रक्खा गया है, और इससे मुराद (इष्ट) हमारी वही ज़बान है जो हमारी आम बोलचाल में है। हमको जो शिकायत है वह यह है कि हिन्दी और हिन्दुस्तानी को हममानी (एकार्थवाची) और मुरादिफ़ (पर्याय) क्यों ठहराया गया है ?"

और—

"यह समझना भी दुरुस्त (ठीक) नहीं कि इस तजवीज़ (निश्चय) को पेश करनेवालों का मक़सद (उद्देश्य) है कि हम अपनी ज़बान में कोई ऐसी तबदीली (परिवर्त्तन) कर लें जिससे यह हिन्दी या हिन्दी के करीब बन जाय। हाशा व कल्ला (कदापि) इस किस्म की कोई बात नहीं है, बल्कि बेऐनहि (वस्तुतः) इसी उर्दू, इसी ज़बान, इसी बोलचाल को जो हम बोलते हैं, हम हिन्दुस्तानी कहते हैं।"

(नुक़ूशे सुलैमानी, दारुल् मुसन्नफ़ीन, आजमगढ़, सन् १९३८ ई०, पृष्ठ १०९)

और क्या आप यह भी जानते हैं कि—

फ़्रांस के कट्टर ईसाई पंडित श्री गार्सां-द-तासी भी यही कहते हैं कि—

"लफ़्ज़ हिन्दुस्तानी उस ज़बान के हक़ में, जिसके लिये यह इस्तैमाल किया जाता है, नामौज़ूं (अनुपयुक्त) है और उसे इस नाम से याद करना हमारी बदमज़ाक़ी (दुर्वासना) है। अलबत्तः उसको हिन्दुस्तानियत कहा जा सकता है। मगर अँगरेजों की तक़लीद (अनुकृति) में हमने भी इसकी इब्तदाई (आरम्भिक) शक्ल (आकृति) को क़ायम रखा जैसा कि नाम से ज़ाहिर (प्रकट) है। हिन्दुस्तानी अहल हिन्दुस्तान की ज़बान है। मगर यह ज़बान अपने हक़ीक़ी हुदूद (निजी सीमा) से बाहर भी बोली जाती है। खुसूसन् (विशेषकर) मुसलमान सिपाही इसको तमाम ज़जीरहनुमा (समस्त प्रायद्वीप) हिन्दोस्तान नीज़ (भी) ईरान, तिब्बत और आसाम में भी बोलते हैं। बस इस ज़बान के लिये लफ़्ज़ 'हिन्दी' या 'इंडियन' जो मुब्तदा (आदि) में इसको दिया गया था और जिस नाम से अक्सर (बहुधा) बाशिंदे (निवासी उस मुल्क के अब तक इसको मौसूम (नामी) करते हैं, उस नाम से ज्यादा मौज़ूं (उपयुक्त) है जो अहल यूरप ने एखतयार (स्वीकार) किया है। अहल यूरप लफ़्ज़ हिन्दी से हिन्दुओं की बोली मुराद लेते हैं जिसके लिए 'हिन्दवी' बेहतर है। और मुसलमानों की बोली के वास्ते 'हिन्दुस्तानी' का नाम क़रार दे लिया है।"

(खुतबात गार्सां-द-तासी; अंजुमन तरक्क़ी उर्दू, १८५२ ई० का व्याख्यान, पृष्ठ १७-१८)

तो फिर आज आप उस उर्दू या हिन्दुस्तानी का दम किस देश के नाते भरते हैं और क्यों नहीं हिन्दी के हो रहते ? और यदि नहीं जानते तो कृपा कर इस पुस्तक को पढ़ डालिए फिर देखिए कि आपका अन्तःकरण क्या कहता है और आपका हाथ किधर उठता है। स्मरण रहे, हम आपसे न्याय चाहते हैं बहलाव नहीं। न्याय! अविलम्ब!!

लिपटन के प्रेमी :

मैं पार्टियों में लिपटन की हिमालयन ब्लेण्ड चाय परोस देती हूँ चारों ओर से प्रश्नों की बौछार होने लगती है

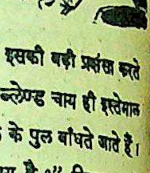

गृहिणी

मैं अपने अतिथियों को अच्छी चाय पिलाती हूँ और वे इसकी बड़ी प्रशंसा करते हैं। काफी अरसे से मैं सिर्फ लिपटन की हिमालयन ब्लेन्ड चाय ही इस्तेमाल कर रही हूँ। मेरे अतिथि चाय पीते जाते हैं और तारीफ के पुल बाँधते जाते हैं। आखिरकार वे पूछ ही बैठते हैं—"यह कौन सी चाय है?" लिपटन की हिमालयन ब्लेण्ड चाय का नाम बताने पर लिपटन के बहुत से जीवन साथी बन गये हैं। पहले, दाम कुछ ज्यादा मालूम पड़ता है परन्तु क्वालिटी बढ़िया होने की वजह से चाय कम लगती है और आखिरकार यही सस्ती पड़ती है।

लिपटन की हिमालयन ब्लेण्ड

सर्वोत्तम दार्जिलिंग चाय

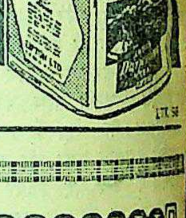

LTR.58

रा० ब० श्यामसुन्दर लिखित पुस्तकें।

भाषा-रहस्य

इस ग्रन्थ में भाषाशास्त्र के सभी मुख्य प्रकरणों का विवेचन है। योरपीय भाषाओं के सम्बन्ध में भी इसमें विवेचना है। पुस्तक भारतीय विद्यार्थियों की आवश्यकता के अनुरूप है। बड़ा आकार, अच्छा काग़ज़, पृष्ठ ४०० से ऊपर। सजिल्द प्रति का मूल्य चार रुपये ग्यारह आने।

हिन्दी-साहित्य

इसमें विद्वान् लेखक ने प्रत्येक युग की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख कर यह बतलाया है कि साहित्य की प्रगति किस समय किस ढंग की थी। कवियों के विषय में इधर जो नये अनुसन्धान हुए हैं उनके आधार पर साहित्यिक स्थिति का वर्णन करके कवियों की रचना के उदाहरण भी दिये हैं। अच्छा काग़ज़, उत्तम छपाई, पृष्ठ ४५० से ऊपर। सजिल्द प्रति का मूल्य चार रुपये।

हिन्दी-कोविद-रत्नमाला

पहले भाग में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से लेकर नामी चालीस हिन्दी-लेखकों का संक्षिप्त सचित्र जीवन-चरित है। यह रत्नमाला अपने ढंग की अनूठी है। मूल्य दो रुपये पाँच आने।

दूसरे भाग में जोधपुर के मुंशी देवीप्रसाद आदि प्रमुख चालीस लेखकों का सचित्र संक्षिप्त जीवन-चरित है। मूल्य दो रुपये ग्यारह आने।

मिलने का पता—

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

मुफ्त

! यदि आपनी भूल से यौवन
हो, अथवा विवाहित जीवन
दुखी हो तो भारत भर में
सिद्धहस्त गुप्त रोग विशेषज्ञ
स्वरूप बी० ए० लाहौरवाले
(D.A.) देहली से मशविरा
पुस्तक लेकर अपना जीवन

की फकीरी बूटी

इस बूटी से केवल
और १५ रोज में पूर्ण
की गारंटी, अगर आप नकली
कीमती दवा इस्तेमाल करके
हैं तो एक बार इस बूटी
कर इसके चमत्कारी गुणों
। बेफायदा साबित करने पर
अगर चाहें तो डेढ़ आने का
शर्त लिखा लें। मूल्य ३) रुपये
शक्ति आश्रम मुहल्ला—
पो०—कदमकुआँ, पटना

साड़ी
आकर्षक डिज़ाईन

इंच चौड़ा वार्डर
९ ९ गज
२८)
वी० पी० से
को खास सुभीता

इन्डस्ट्रीज,
नं० ६ कानपुर

सरदार

के लड़की के सिवा
। और भरोस था ऐसा
भी डरती थी। एक
भरोस नौकर था। उसने
भी लाठी चलाना सिखला
ब्याह जिस अनन्त
गया था वह भरोस से
झमेले में बड़ी मार-
अनन्त की स्त्री भी मारी
प्रताप पागल-सा हो
ने अनन्त को गिरफ़ार कर
प्रताप भी चल बसा।
के लिए भी रोचक,
बहुत पसन्द आवेगी।
, कई चित्र और कवर-
केवल बारह आने।

परदेश

कर छोटे बच्चों के
ऐसी एक भी बात नहीं
के लिए माथापची करनी
रोजमर्रा की बातें बड़े ही
लिखी गई हैं। बड़े आकार
चित्रों और फूल-
मनोहर है। मूल्य ॥)
प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

वनवास

कवि ने रामचन्द्र जी के वनवास का अनोखा वर्णन किया है। कवि राजाराम चित्रकूट के पड़ोसी हैं और वहीं पर वनवास की अनेक मुख्य घटनाएँ हुई थीं। इस कारण यह 'वनवास' अपने ढंग की एक ही पुस्तक है। मूल्य ॥।=) चौदह आने।

पूजागीत—द्विवेदी जी की नवीनतम राष्ट्रीय कविताओं का संग्रह। प्रत्येक कविता जीवन में स्फूर्ति का संचार करती है। फेदरवेट पीले काग़ज़ पर छपी हुई पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

साधनमाला—मंत्र, तंत्र और शक्ति-उपासना-सम्बन्धी हिन्दी में अकेली मासिक पुस्तक-माला। वार्षिक मूल्य ८)। एक प्रति १)।

कल्याण-मन्दिर, कटरा, प्रयाग।

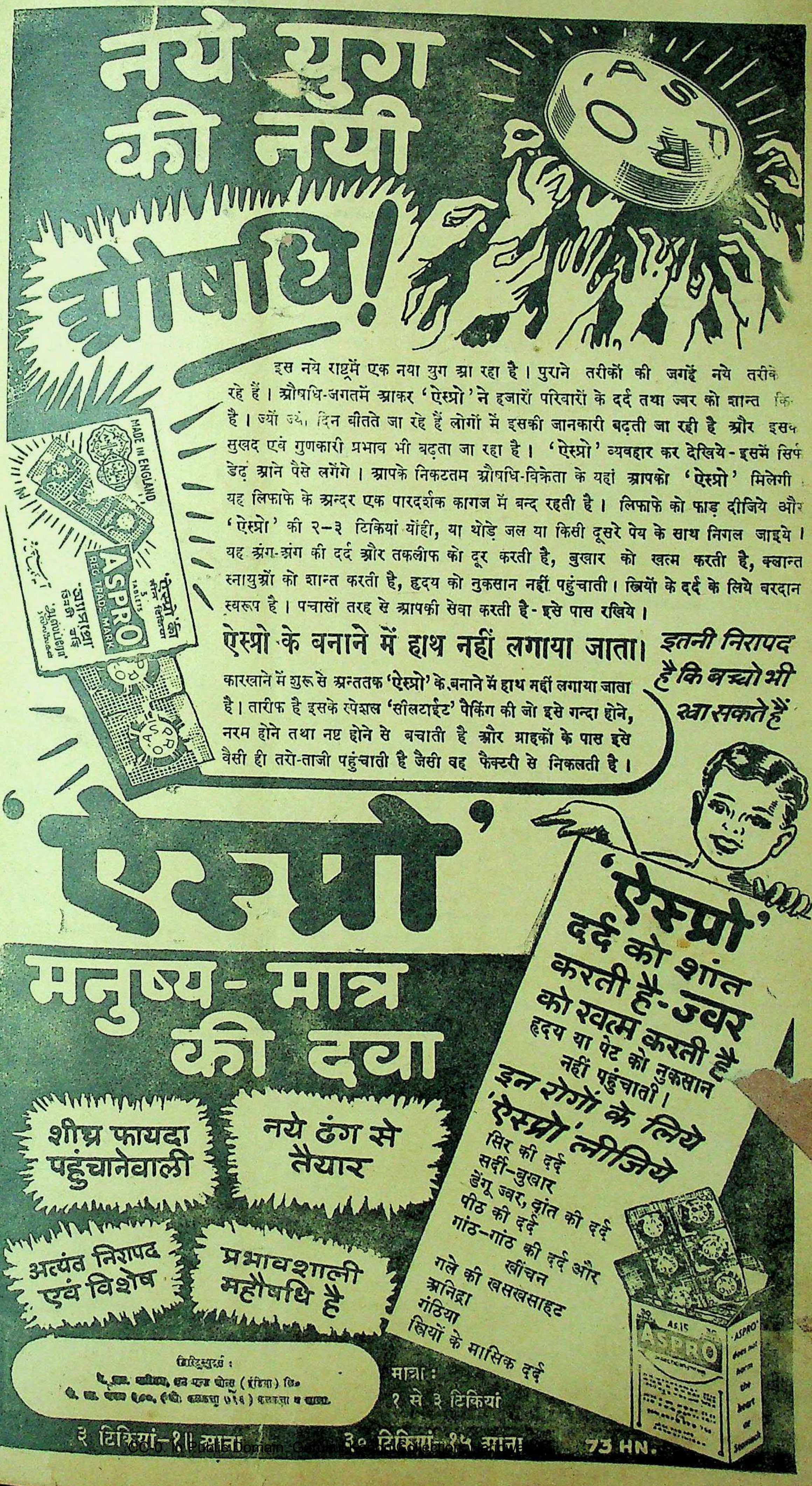

नये युग की नयी औषधि!

इस नये राष्ट्रमें एक नया युग आ रहा है। पुराने तरीकों की जगहें नये तरीके रहे हैं। औषधि-जगतमें आकर 'ऐस्प्रो' ने हजारों परिवारों के दर्द तथा ज्वर को शान्त कि है। ज्यों ज्यों दिन बीतते जा रहे हैं लोगों में इसकी जानकारी बढ़ती जा रही है और इसक सुखद एवं गुणकारी प्रभाव भी बढ़ता जा रहा है। 'ऐस्प्रो' व्यवहार कर देखिये-इसमें सिर्फ डेढ़ आने पैसे लगेंगे। आपके निकटतम औषधि-विक्रेता के यहां आपको 'ऐस्प्रो' मिलेगी यह लिफाफे के अन्दर एक पारदर्शक कागज में बन्द रहती है। लिफाफे को फाड़ दीजिये और 'ऐस्प्रो' की २-३ टिकियां योंही, या थोड़े जल या किसी दूसरे पेय के साथ निगल जाइये। यह अंग-अंग की दर्द और तकलीफ को दूर करती है, बुखार को खत्म करती है, क्लान्त स्नायुओं को शान्त करती है, हृदय को नुकसान नहीं पहुंचाती। स्त्रियों के दर्द के लिये वरदान स्वरूप है। पचासों तरह से आपकी सेवा करती है-इसे पास रखिये।

ऐस्प्रो के बनाने में हाथ नहीं लगाया जाता।

कारखाने में शुरू से अन्ततक 'ऐस्प्रो' के बनाने में हाथ नहीं लगाया जाता है। तारीफ है इसके स्पेशल 'सीलटाईट' पैकिंग की जो इसे गन्दा होने, नरम होने तथा नष्ट होने से बचाती है और ग्राहकों के पास इसे वैसी ही तरो-ताजी पहुंचाती है जैसी वह फैक्टरी से निकलती है।

इतनी निरापद है कि बच्चो भी खा सकते हैं

'ऐस्प्रो'

मनुष्य-मात्र की दवा

शीघ्र फायदा पहुंचानेवाली

नये ढंग से तैयार

अत्यंत निरापद एवं विशेष

प्रभावशाली महौषधि है

'ऐस्प्रो' दर्द को शांत करती है-ज्वर को खत्म करती है
हृदय या पेट को नुकसान नहीं पहुंचाती।
इन रोगों के लिये 'ऐस्प्रो' लीजिये
सिर की दर्द
सर्दी-बुखार
डेंगू ज्वर, दांत की दर्द
पीठ की दर्द
गांठ-गांठ की दर्द और खींचन
गले की खसखसाहट
अनिद्रा
गंठिया
स्त्रियों के मासिक दर्द

डिस्ट्रिब्युटर्स :
[illegible]

मात्रा :
१ से ३ टिकियां

२ टिकियां—१॥ आना
३० टिकियां—१५ आना

73 HN.

मुफ़्त ! मुफ़्त !! मुफ़्त !!!

आप घर बैठे मैट्रिक, एफ० ए०, बी० ए० पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से और होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ़्त मगायें। पता :—

इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

फ़सल के उपरान्त भी

फ़सलीफल

फल—प्रकृति का सर्वोत्तम उपहार है परन्तु फ़सल निकल जाने पर फल सुलभ नहीं रहते परीक्षा कीजिए

इन-री-हो फ्रूट ड्राप्स तथा रेशमी मिठाइयां

क्रीमोला टाफ़ी

प्रायः सभी दूकानों पर मिलती हैं या सीधे नीचे पते से मँगाइए

इण्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इलाहाबाद

सोल एजेंट:—बंगाल, बिहार, उड़ीसा और आसाम के लिए—
मेसर्स सत्याचरण दत्त
६१।२, कैनिंग स्ट्रीट, कलकत्ता

एलाइड लाउडस्पीकर पर
इत्मिनान रखिये
ब्याह
मेले
जलसे
सरकस
तथा
हर मौके पर इस्तेमाल कीजिये
RAJAN

खरीदिये या किराये पर लीजिये

एलाइड एलेक्ट्रिक एण्ड रेडियो कारपोरेशन
हज़रतगंज कैनिंग रोड
लखनऊ एलाहाबाद

५०० पौण्ड इनाम

चौबीस घंटे के अन्दर जवानी वापस

"ओटोजन" (जड़ी बूटियों से निर्मित) पार्कर एण्ड डैविस द्वारा प्रस्तुत पहले २४ घंटे के अन्दर ही स्फूर्ति प्रचारित करने में आश्चर्यजनक है। इसके उपयोग से स्त्री तथा पुरुष दोनों अपने वास्तविक आयु से छोटे मालूम पड़ने लगते हैं। [illegible] हीनता, स्मरणशक्ति की कमी, शारीरिक दुर्बलता, रक्त-विकार, चर्मरोग, अनिद्रा तथा शारीरिक शक्ति ह्रास को दूर करने के लिए उपयोगी है। इसके प्रयोग से २ से ४ इंच तक आपकी तथा ५ से १० पौण्ड तक शरीर का वजन बढ़ जायेगा। आपके चेहरे पर लालिमा आ जायगी तथा आपकी दुगनी हो जायगी। आपकी त्वचा कोमल तथा चिकनी हो जायगी। जिससे आपके चेहरे पर जवानी की आ जायगी। ओटोजन से आपके व्यक्तित्व में वृद्धि होगी, आंखों में रौनक आ जायगी, ओठों तथा गालों पर मुला जायगी। इसके प्रयोग से पकते हुए बाल स्थायी रूप से काले हो जायेंगे तथा वृद्धावस्था में नये दांत निकल आवें गिरते हों, सिर रूखा हो अथवा गंदला हो गया हो तो उस समय 'ओटोजन' (टानिक) विशेष लाभप्रद सिद्ध "ओटोजन" का प्रयोग प्रोफेसर ए० पी० पार्कर ने स्वीटजरलैंड में १०० वर्ष के शक्तिहीन बुड्ढे पर किया था। एक मास के नियमित सेवन के बाद इस आश्चर्यजनक औषधि ने उस १०० वर्ष के रोगी को तीस वर्ष का-सा बना दिया। थोड़े समय बाद ही एक नवयुवती से विवाह कर लिया। फिल्म-जगत् के अभिनेता व अभिनेत्रि औषधि के प्रयोग से ८० तथा ९० वर्ष की वृद्धावस्था में भी सौन्दर्य तथा उत्साहपूर्ण बनी रहती हैं तथा फिल्म- निरन्तर काम करती हैं। प्रारम्भिक अवस्था से ओटोजन का प्रयोग करने से स्त्रियां सदा नवयुवती बनी तथा उनके सौन्दर्य में किसी प्रकार की कमी नहीं आती। पुरुषवर्ग युवास्था से ओटोजन का प्रयोग करने से पहले बूढ़े नहीं होते। बाल काले बने रहते हैं। चेहरे पर कान्ति तथा स्वास्थ्य बना रहता है। इसके प्रयोग से अपनी वास्तविक आयु से वर्षों छोटा प्रतीत होता है।

यह बीसवीं सदी का आश्चर्यजनक आविष्कार तथा संसार का ८वां वैचित्र है। ओटोजन के प्रयोग से स्त्रियों में तरुणाई तथा चपलता का संचार हो जाता है। तथा ओटोजन के प्रयोग के बाद स्त्री तथा पुरुष दोनों के दिन वापस आ जाते हैं। अभी से ओटोजन का प्रयोग आरम्भ कर दें तथा सौ बरस तक स्वस्थ तथा शक्ति-सम्पन्न ससे क्षुधा इतनी प्रज्वलित होती है कि एक पौंड अथवा इससे भी अधिक मक्खन कमजोर व्यक्ति भी पचा इस विचित्र "ओटोजन" टानिक के प्रभाव को देखकर दुनिया के बड़े बड़े वैज्ञानिक तथा अनुभवी डाक्टर चकित

OTOGEN
SOVEREIGN TONIC
OTOGEN
OTOGEN LABORATORIES
OTOGE

"ओटोजन" अपने प्रकार का टानिक है जिसे संसार के स्त्री व दोनों उपयोग में लाते हैं। विज्ञान के इतिहास में यह निराला है आज से ही इसका आरम्भ कर इसके गुणों का अनुभव आरम्भ करने के पहले अपना वजन तथा आईने में अपनी आकृति फिर एक सप्ताह के बाद अपनी शीशे में पुनः देखें और गौर कर आकृति में तथा उत्साह में ओटो व्यवहार से कितना परिवर्तन हो

भारतवर्ष में इस औषधि करने के निमित्त इसका मूल्य क्शन के ५) प्रतिबाक्स कर है। आगे चल करके इसका असली दाम ३०) प्रतिबाक्स चार्ज किया वर्तमान परिस्थितियों के कारण माल थोड़ा बच रहा है। अतः आज ही भेजें सम्भव है कल पर छोड़ने से आप पीछे रह जायें।

गारंटी—५०० पौंड का नकद इनाम किसी भी वैज्ञानिक आयुर्वेदवेत्ता साधारण को दिया जायगा जो इस आश्चर्यजनक खोज को गुणहीन साबित

नोट—"ओटोजन" अन्य शक्तिदायक औषधियों के विपरीत अपने अकेली औषधि है जो उष्णकटिबन्ध की गर्मियों में, जाड़े में नम मौसम में प्रसंशनीय प्रभाव दिखाती है।

उष्ण कटिबन्ध की तीक्ष्ण गर्मी में जिस समय कि आप पूर्णतः शक्तिहीन हो गये हों उस समय ओटोजन संचय करने में विचित्र प्रभाव दिखायेगा। हमने अपनी शाखा लाहौर से हटा ली है तथा १५ अगस्त १९४७ से लय इंगलैंड से हिन्दुस्तान आ गया है।

प्रमुख औषधि-विक्रेताओं से खरीदें अथवा हमारे यहां से शीघ्र मंगायें।

दी ओटोजन लेबोरेट्रीज

भारतवर्ष का आफ़िस :—पोस्ट बाक्स नं० ४४७, बंबई।

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० बोप [के० मिश्र-द्वारा इंडियन प्रेस लिमिटेड [illegible] प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

सचित्र
साप्ताहिक
र्षिक मूल्य ७॥)
प्रति संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

१६ मई, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 16th May, 1948

की आर्थिक स्थिति कैसी ?
रवादी' हैदराबाद किधर ?

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

वर्तमान तुर्की पर संकट के बादल
माननीय सरदार वल्लभ भाई पटेल

हमारी विविध विषय की उत्तमोत्तम पुस्तकें

हिन्दी साहित्य—यह हिन्दी साहित्य का परिवर्द्धित और परिमार्जित संस्करण है। पहले की दो आवृत्तियों में यह हिन्दी भाषा और साहित्य के नाम से प्रकाशित हुआ था, किन्तु अब इसे स्वतन्त्र रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। कवियों के विषय में जो नये अनुसंधान हुए हैं उन सबका इसमें समावेश किया गया है। साहित्यिक स्थिति के वर्णन में भी आवश्यक परिवर्तन किये गये हैं। हिन्दी साहित्य के प्रत्येक विद्यार्थी को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ४) चार रुपये।

काव्यकला—साहित्यालोचन का यह संक्षिप्त संस्करण है। लोगों का कथन है कि इस नवीन रूप में इस पुस्तक का उपयोग ऊँची श्रेणी के विद्यार्थी सफलतापूर्वक कर सकते हैं। इसमें साहित्य-शास्त्र के सभी अंगोपांगों का विवेचन तो है किन्तु साथ ही वे अंश निकाल दिये गये हैं जो जटिल और खंडन-मंडनात्मक हैं। इसके संकलनकार भी लेखक के पुत्र श्री गोपाललाल खन्ना हैं। मूल्य २) दो रुपये।

चिन्तामणि—(पहला भाग) लेखक, आचार्य पंडित रामचन्द्रजी शुक्ल। इस पुस्तक में आचार्य शुक्ल जी ने भिन्न-भिन्न विषयों पर लिखे गये अपने सत्रह निबन्धों का संग्रह किया है। ये सभी निबन्ध बहुत ही गंभीर और अध्ययनपूर्ण हैं, जिनके द्वारा मनुष्य की विभिन्न प्रकार की आन्तरिक भावनाओं पर आलोचनात्मक ढंग से प्रकाश डाला गया है। इस रचना पर मंगलाप्रसाद पारितोषिक मिल चुका है। मूल्य २) दो रुपये।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ—लेखक, पंडित उमेशचन्द्र मिश्र। इस पुस्तक में विश्वकवि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर की प्रामाणिक जीवनी और उनकी समस्त कृतियों—कविता-संग्रह, नाटक-नाटिका, कहानियाँ उपन्यास, यात्रा-वर्णन, विज्ञान के ग्रंथ, निबन्ध, साहित्यिक समालोचना, चित्रकला आदि—का विवेचनात्मक परिचय दिया गया है। उदाहरणों में कवि की प्रायः समस्त सुप्रसिद्ध और चुनी हुई रचनायें आ गई हैं। फुटनोट में उनके सरल अर्थ दिये गये हैं। इसके द्वारा आप रवीन्द्रनाथ और उनकी काव्य-कृतियों का पूरा-पूरा परिचय प्राप्त कर सकते हैं। विश्वभारती (शान्तिनिकेतन) के विद्वानों ने भी इसकी प्रशंसा की है। मूल्य केवल ५) पाँच रुपये।

द्विवेदी मीमांसा—लेखक, श्रीयुत प्रेमनारायण टण्डन। हिन्दी के नवीन युग की धाराओं और प्रवृत्तियों के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। साधारण पाठकों के अतिरिक्त सम्मेलन के परीक्षार्थियों व विश्वविद्यालयों के छात्रों के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य २) दो रुपये।

पं० शान्तिप्रिय द्विवेदी की कुछ पुस्तकें

कवि और काव्य—श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी ने काव्य के गुण-दोष से सम्बन्ध रखनेवाले कितने ही उपयोगी विषयों का इसमें विशद्‌रूप से विवेचन किया है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

संचारिणी—लेखक, श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी। यह श्रेष्ठ रचना अभी अभी पाठकों के सामने आई है। इसमें भक्ति-काल से लेकर आज के संक्रांति-काल तक की साहित्यिक चेतनाओं का मर्म स्पर्श है। मूल्य २) दो रुपये।

युग और साहित्य—लेखक, श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी। 'युग और साहित्य' भी हिन्दी-निबन्धों का एक आदर्श उपस्थित करती है। इसमें १३ मौलिक निबंध हैं, जिन्हें विद्वानों ने बहुत पसन्द किया है। मूल्य २।।≡) दो रुपये ग्यारह आने।

देवपुरस्कार-विजेता हरदयालुसिंह की कुछ व्रजकाव्य की समीक्षायें

देवदर्शन—देवपुरस्कार - विजेता श्री हरदयालुसिंह लिखित व्रजकाव्य समीक्षाएँ—इसमें व्रजभाषा के प्रख्यात कवि देव की जीवनी और उनके समस्त काव्यों का आलोचनात्मक परिचय दिया गया है। व्रजकाव्य के प्रेमियों के अतिरिक्त साहित्य के विद्यार्थियों के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

पूर्ण-पराग—इसमें व्रजभाषा के प्रसिद्ध आधुनिक कवि श्री देवीप्रसाद 'पूर्ण' की जीवनी और उनके काव्य का समालोचनात्मक परिचय है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मतिराम-मकरन्द—इसमें काव्यालोचन के साथ-साथ कवि मतिराम के ३ प्रसिद्ध ग्रंथों—मतिराम सतसई, ललितललाम और रसराज का संक्षिप्त सरस संग्रह भी कर दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

बिहारी-विभव—इसमें महाकवि बिहारी की कविता का आलोचनात्मक परिचय, उनकी जीवनी तथा सतसई के चुने हुए दोहे संकलित हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

भूषण-भारती—इसमें महाकवि भूषण की जीवनी और उनके समस्त काव्य ग्रन्थों—का विवेचनात्मक परिचय दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

महादेवी का विवेचनात्मक गद्य—संकलनकर्त्ता, श्री गंगाप्रसाद पांडेय, एम० ए०, साहित्य की नवीन शैली का अध्ययन करनेवालों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य २।।) दो रुपये बारह आने।

आलोचनादर्श—इस पुस्तक के लेखक हैं डाक्टर रामशंकर शुक्ल 'रसाल', एम० ए० डी० लिट। इसमें आलोचना-कला का मार्मिक और शास्त्रीय विवेचन किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

साहित्य-प्रकाश—यह पुस्तक भी डाक्टर रसाल की ही लिखी है। इसमें साहित्यिक सिद्धान्तों का विवेचन किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

साहित्य-समीक्षा—इस पुस्तक में हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक श्रीयुत कालिदास कपूर, एम० ए० एल-टी० के साहित्यिक तथा समालोचनात्मक लेखों का संग्रह किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

प्राचीन साहित्य—इस पुस्तक में रवीन्द्र बाबू के कई प्राचीन साहित्य, विशेषतः संस्कृत साहित्य के आलोचनात्मक निबन्धों का संग्रह है। मूल्य १) एक रुपया।

महाकवि अकबर—उर्दू के प्रसिद्ध कवि अकबर का आलोचनात्मक परिचय तथा उनकी उत्कृष्ट रचनाओं का अर्थ-सहित संग्रह। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

शिक्षा—हम अपने बालकों तथा बालिकाओं को किस तरह सुशिक्षित तथा सदाचारी बना सकते हैं, यह बात इस पुस्तक में विस्तारपूर्वक बतलाई गई है। इसके मूल लेखक सुप्रसिद्ध दार्शनिक 'हर्बर्ट स्पेन्सर' हैं और अनुवादक स्वर्गीय आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी। मूल्य ४।।≡) चार रुपये ग्यारह आने।

भारतवर्ष में पश्चिमी शिक्षा—वर्त्तमान शिक्षा-विभाग के क्रम-विकास का संक्षिप्त इतिहास। मूल्य ।।) आठ आने।

अर्थमेटिक शिक्षा-प्रणाली—यह पुस्तक नार्मल स्कूलों और ट्रेनिंग क्लासों के विद्यार्थियों तथा स्कूलों के अध्यापकों को अर्थमेटिक पढ़ाने के उत्तम से उत्तम ढंग सिखलाने के उद्देश्य से लिखी गई है। मूल्य १) एक रुपया।

संगीत-सम्बन्धी पुस्तकें

ध्रुपद-स्वर-लिपि—इस पुस्तक के लेखक काशीनिवासी श्री हरिनारायण मुकुर्जी ध्रुपद के विशेषज्ञ हैं। मूल्य २।।≡) दो रुपये ग्यारह आने।

संगीत-सुदर्शन—सब प्रकार की राग-रागिनियों का शास्त्रीय-विवेचन। मूल्य १।।≡) एक रुपया ग्यारह आने।

विविध विषय की पुस्तकें

मन की अद्‌भुत शक्ति—अपने मन की अद्‌भुत शक्तियों पर पूर्णरूप से अधिकार प्राप्त करके तथा उनका सदुपयोग करके मनुष्य किस प्रकार अपने जीवन को अधिक से अधिक सार्थक बना सकता है, इस बात की इस पुस्तक में विवेचना की गई है। मूल्य ।।।-) तेरह आने।

ऋद्धि—जो लोग धनहीन हैं, ऋण-ग्रस्त हैं, बहु-कुटुम्बी हैं, साथ ही आय भी बहुत कम है, वे इस पुस्तक के उपदेश के अनुसार चलकर सुख से जीवन बिता सकते हैं। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

मानसिक आकर्षण-द्वारा व्यापारिक सफलता—व्यापारिक सफलता के लिए संपर्क में आनेवाले व्यक्तियों पर मानसिक आकर्षण की शक्ति का प्रयोग करने की विधि। मूल्य ।-) पाँच आने।

गोपालन—विभिन्न प्रकार की गौओं के रूप-रंग तथा गुण-दोष का विस्तृत वर्णन। इसमें गौओं का पालन-पोषण करने तथा उन्हें अधिक से अधिक दुधार बनाने की विधि बतलाई गई है। मूल्य १) एक रुपया।

लकड़ी के दाम निकालने की जंत्री—इस पुस्तक की सहायता से लकड़ी का दाम सरलतापूर्वक निकाला जा सकता है। मूल्य २) दो रुपये।

बहीखाता—हिसाब-किताब रखने का उत्तम से उत्तम ढंग। मूल्य ।।-) नौ आने।

भारतीय चित्रकला-पद्धति—कलात्मक चित्र, कार्टून आदि बनाने की आसान विधि। मूल्य १) एक रुपया।

स्काउट मास्टरी और ट्रूप संचालन—पुस्तक में स्काउट मास्टरों के लिए बहुत-सी व्यावहारिक बातें बताई गई हैं। इस पुस्तक के अनुसार चलनेवाले स्काउट मास्टर ट्रूप संचालन में निस्सन्देह सफल होंगे। मूल्य १) एक रुपये।

अग्निकांड में सेवा—अग्निकांड में स्काउट लोग किस प्रकार सफलतापूर्वक दूसरों के जीवन और संपत्ति की रक्षा कर सकते हैं यह बात इस पुस्तक में विस्तारपूर्वक लिखी गई है। पुस्तक सचित्र है। मूल्य १) एक रुपया।

स्काउट ड्रिल और खेल—यह पुस्तक अपने ढंग की बिलकुल अकेली है। स्काउटों के लिए जितने प्रकार के भी ड्रिल और खेल आवश्यक हैं, वे सभी इसमें विस्तारपूर्वक बतलाये गये उनके नियमों तथा उपयोग पर भी समुचित प्रकाश डाला गया पुस्तक सचित्र है। मूल्य पहला १) एक रुपया दूसरा भाग २) दो

बाल शब्द-सागर—रायबहादुर श्यामसुन्दरदास, बी० ए० ने का यह शब्द-कोष विशेष विद्यार्थियों के उपयोग के लिए है। किन्तु अपनी व्यावहारिक उपयो के कारण यह सभी के काम आ है। मूल्य २।।≡) दो रुपये ग्यारह

कुछ संस्कृत पुस्तकें

प्रबन्ध प्रकाश—लेखक, मंगलदेव शास्त्री इस पुस्तक के प्रारम्भ में सरल भाषा में प्रबन्ध रचना सम्बन्धी आ श्यक नियम दिये हैं। इसके उदाहरण-स्वरूप सुप्रसिद्ध प्राचीन आधुनिक विद्वानों के तथा स्वयं ग्रन्थ के लिखे हुए परीक्षोपयोगी दिये गये हैं। पुस्तक के अन्त में पद्यमय सुभाषित तथा लोकन्याय गये हैं। मूल्य १।-) एक रुपया आने।

संस्कृत गद्य रत्नावली—पंडित अमर झा, वाइस चान्सलर प्रयाग वि विद्यालय। यह पुस्तक संस्कृत गद्य विभिन्न प्रकार की शैलियों का है। संस्कृत के सभी प्रतिष्ठित ग्रन्थों अवतरण लिये गये हैं। किन्तु का ध्यान रखा गया है कि कोई कठिन न हो। मूल्य १।-) एक पाँच आने।

मेघदूत—यह महाकवि कालिदास मेघदूत का बहुत ही उत्तम और संस्करण है। हर एक श्लोक के राजा लक्ष्मणसिंह का किया पद्यानुवाद दिया गया है। गद्य में ही सरल और विस्तृत अर्थ भी गया है। पाद टिप्पणियों में संस्कृ कठिन शब्दों के समास, विग्रह प्रतिशब्द आदि भी दिये गये हैं। ।।।-) तेरह आने।

पंचतंत्र—संस्कृत में यह पुस्तक ही प्रसिद्ध है। इसके सुन्दर सं का अभाव देखकर हमने इसे प्रका किया है। आवश्यक टिप्पणियाँ बाद अन्त में हिन्दी अनुवाद भी शित किया गया है। मूल्य ।।≡) आने।

संक्षिप्त वाल्मीकीय रामायण— रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा संपादित कवि वाल्मीकि मुनि प्रणीत वाल्मी रामायण संस्कृत में बहुत बड़ी पु है। श्री रवीन्द्रनाथ जी ने इसे कया है। किन्तु पुस्तक का क्रम भी टूटने नहीं पाया है। मूल्य एक रुपया पाँच आने।

कादम्बरी—सम्पादक स्वर्गीय म पाध्याय पंडित गंगानाथ झा पंडित काशीराम एम० ए०। की कादम्बरी संस्कृत में बेजोड़ है। परन्तु यह ग्रन्थ इतना बड़ा इस युग के लोगों के लिए कठिन हो गया है। इस कठिनाई को के लिए इसका यह संक्षिप्त सं निकाला गया है। मूल्य १) एक

संक्षिप्त बिहारी—महाकवि बिहारी दोहों का यह बहुत अच्छा है। बिहारी की सतसई में अधिक अश्लील दोहे थे, वे इसमें से निकाल दिये गये हैं। २) दो रुपये।

संख्या ३६] [रविवार, १६ मई, १९४८

धी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

र विधान-परिषद् ने अभी राष्ट्र- स्या हल नहीं की किन्तु र ने राष्ट्रभाषा के सम्बन्ध में र ही दी। मद्रास में अब षा का प्रचलन सरकारी कर दिया गया है। अपने में यह उचित ही हुआ है भाषा के साथ ही नागरी का प्रचलन भी अनिवार्य कौन नहीं जानता कि भाषाओं में संस्कृत शब्दों इसलिये वहाँ की भाषा लेकिन अगर हिन्दु- कोई बात नहीं किन्तु दाहने और बायें हाथों प्रकृतिक जान पड़ता हलुआ नहीं खाया खाता है तो वह बेव- । इसलिये मद्रास सरकार उर्दू लिपियों के सिखाये बहुत शोभनीय नहीं है। ? सरकार सरकार ही है सरकार एक अजीबो- है।

* *

ने सोना और चाँदी का ना बन्द कर दिया है। है। पाकिस्तान को सोना- ही क्या है? पाकिस्तान का देश है, मिस्टर जिन्ना वहाँ सब कुछ है। सीमाप्रांत इधर-उधर लूटपाट कर हैं, गवर्नरों और उनके लम्बी रकम मिल ही जाती नौकरों को राशन की दूकानों राशन मिल ही जाता है, के लिये पाकिस्तानी फुरसत ही नहीं है, इसलिये यदि भारत से वहाँ जाये भी लिए किस काम का? कहावत जाने अदरक का स्वाद! ना-चांदी लेकर क्या करेगा? कि वह अपने आकाओं को भेंट कर दे। इसलिये सगुन अच्छी साइत से पाकिस्तान के ने सोना-चांदी भेजना बन्द

* *

बड़ा विचित्र जीव होता है। उसके पलायन के दिन आये ऐसा गड़बड़झाला या घोटाला नहीं बनता। हिन्दुस्तान से जब वह चला तो बँटवारा करके और साम्प्रदायिक हाथापाई का ब्याज दे करके। भारत में हिन्दुस्तान और पाकिस्तान क्या बना, हैदराबाद और काश्मीर का एक नया अखड़ा तैयार कर दिया गया, इसलिए सुरसा के बदन के समान बँटवारे का मुँह फैलता ही जा रहा है। इसी तरह फिलिस्तीन का हाल भी यही है। अँगरेज वहाँ से १५ मई से कूच करने का डंका पीट रहे हैं, लेकिन उनके चलने के पहले ही वहाँ अरब-यहूदी-सम्मेलन का डंका पिटने लगा है। जब अँगरेजों के वहाँ से कूच करने में अभी एक सप्ताह की देर है तब तो वहाँ आपसी लड़ाई का यह हाल है और जब वह १५ मई को रफूचक्कर हो जायेंगे तब तो जान पड़ता है कि वहाँ जो न हो जाए सो थोड़ा। लेकिन वाह रे अँगरेज! बड़ी बहादुर कौम है, या तो खुद खाओ और मौज करो नहीं तो नाली में ढरका दो। कम से कम किसी के हिल्ले न लगे। फिलिस्तीन में आज यही हो रहा है।

* * *

लेकिन अब प्रश्न यह है कि संयुक्त-राष्ट्रसंघ इस वक्त कहाँ सो रहा है? संयुक्तराष्ट्र-संघ के साम्राज्यवादियों ने ठेका ले रखा है कि संसार में यदि कहीं गड़बड़घोटाला होगा तो वह बीच में पड़कर शान्ति का पाठ पढ़ायेगा और दो मूजियों की खटपट को, अपने बचने की झटपट फिक्र करते हुए, बन्दरबाँट की रस्म अदा करेगा, इसलिए अपने राम का कहना है कि संयुक्तराष्ट्र-संघ आखिर अब कब फिलिस्तीन के मामले में समझौता करायेगा? घर में आग लगा कर जमालो दूर खड़ी। फिलिस्तीन में लड़ाई की आग तो लग ही चुकी है। राष्ट्र संघ जमालो की तरह दूर से टुकुर-टुकुर देखता ही रहेगा या सचमुच कुछ करेगा? संयुक्तराष्ट्र-संघ की यह परीक्षा का अवसर है, देखना है वह परीक्षा में पास होता है या फेल?

* * *

लड़ाई के बाद इंगलैण्ड में जब मजदूर सरकार आई तो दुनिया ने समझ लिया कि मिस्टर चर्चिल अब धराशायी हो गये; किंतु अपने राम को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि चर्चिल साहब ने योरोपियन शक्तियों का संगठन करना शुरू कर दिया है। कहना यह चाहिए कि योरोप की गोरी जातियों का एक नया संगठन होना प्रारंभ हो गया है। मिस्टर चर्चिल हैं बड़े दूरंदेश। उन्हें पता है कि योरोप में आगामी दस वर्ष के बाद भूचाल आनेवाला है, एशियाई देशों पर से गोरों का प्रभुत्व समाप्त होगा और खुदा ने चाहा तो योरोप और एशिया अर्थात् गोरों और कालों का एक नया टंटा शुरू होगा। भविष्य के इस होनहार की नींव तो अभी से पड़ने लगी है। भारत से एशियाई राष्ट्रों के संगठन से आवाज उठने लगी है तो भला चर्चिल साहब योरोपियन राष्ट्रों के संगठन की आवाज क्यों न बुलंद करें? वृक्ष लग गया है। अभी १०-१५ वर्ष की देरी है।

* * *

पाकिस्तान में मुस्लिम लीग भंग हो गई है और उसकी जगह मुसलमानों का एक नया संगठन बननेवाला है, लेकिन अफसोस है कि सीमाप्रांत के गांधी खान अब्दुल गफ्फार खाँ तथा उनके लाल कुर्तीवाले मुस्लिम लीगियों के संगठन में शामिल न होंगे। बड़ी मुसीबत है, एक तो मिस्टर जिन्ना एण्ड कम्पनी ने पाकिस्तान बनवाया, बादशाहत हासिल की, लेकिन लाल कुर्तीवाले अपनी ही धुन में मस्त हैं। अपने राम की राय में पाकिस्तान क्या बना, एक आफत बरपा कर दी गई? कोई तीर घाट तो कोई मीर घाट। सच तो यह है कि पाकिस्तान में दो बादशाहों की भिड़ंत का मामला है। देखना है कि मिस्टर जिन्ना की लीडरी रहती है या बादशाह खान की बादशाहत!

* * *

बंबई में होनेवाले अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन में बिगुल बजानेवाली स्वयंसेविका।

अभिनवी

लेखक, श्री नरेन्द्र शर्मा, एम० ए०

अभिनव छंदों के भुजबंधन में बाँधूँ तुमको कैसे?
ओ कनकाम्बरा प्रिया मेरी, मैं जड़ीभूत हूँ भय से!
मेरे प्रयत्न सब विफल हुए,
अब तुम्हीं यत्न कर आओ!
लय लुप्त हुई जिस मानस की
तुम आकर उसे जगाओ!
तुम आकांक्षा से दूर, सूर्य से दूर चाँदनी जैसे!
लघु स्वार्थ सिद्ध कर, गँवा दिया
परमार्थ बुद्धि के बल से!
थी ऊर्ध्वमुखी ज्वाला उर में,
सींची सुविधा के जल से!
आओ, प्रसुप्त संज्ञायें फिर अवगत हों प्रेमाशय से!
अनुभूति, कल्पना, स्वप्न, सत्य,
अनुराग, राग लयवाणी!
तुम मुसकाओ बन इन्द्रधनुष की
सतरँग ज्योति सुहानी!
मैं बिना सहज सौन्दर्य सुधा क्या गाऊँ जैसे-तैसे!
अभिनव छंदों के भुजबंधन में बाँधूँ तुमको कैसे?

सम्पादक का पृष्ठ

हैदराबाद और काश्मीर

भारतीय विभाजन के बाद ऐसी आशा की जाती थी कि यहाँ के राजनीतिक क्षेत्र में शांति और सुव्यवस्था की स्थापना हो जायेगी, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान, दोनों भारतीय राष्ट्र आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा शासन की दृष्टि से अपने अपने राष्ट्र की उन्नति की ओर अग्रसर होंगे; किंतु ब्रिटिश सरकार ने भारतीय विभाजन जिस भावी नीति के अवलम्बन पर किया उसकी प्रतिक्रिया अब दिन पर दिन स्पष्ट होती जा रही है। उत्तर में काश्मीर और दक्षिण में हैदराबाद दोनों देशी रियासतों की समस्या इस समय व्यापक प्रभाव उत्पन्न कर रही है। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान ही नहीं, वरन् सुदूर योरोपीय राष्ट्र भी इन दोनों रियासतों की समस्या की ओर आकर्षित हो उठे हैं। साम्राज्यवादी राष्ट्रों का वह गुट्ट, जो सुरक्षा-परिषद् के नाम से संसारव्यापी प्रसिद्धि प्राप्त कर रहा है या यों कहिए कि संसार के प्रजातंत्र राष्ट्रों में उत्पन्न होनेवाले आंतरिक संघर्षों को हल करने का जिसने एकमात्र ठेका ले रखा है, भारत की इन रियासतों की उलझी समस्या की ओर विशेष दिलचस्पी ले रहा है। इस पर भी हैदराबाद और काश्मीर की समस्या का कोई हल नहीं निकल रहा है। उलझन बढ़ती ही जा रही है। प्रत्यक्ष रूप से साम्राज्यवादी राष्ट्र तथा परोक्ष रूप से ब्रिटेन भारतीय विभाजन की सफलता पर प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं।

वास्तविकता यह है कि काश्मीर और हैदराबाद दोनों राज्यों की स्थिति राजनैतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। उत्तर और दक्षिण में सैनिक दृष्टि से भी यह रियासतें अपनी विशेषता रखती हैं। काश्मीर का शासक एक हिन्दू है किंतु वहाँ की जनता मुसलमान है, जिनका वहाँ बहुमत है। हैदराबाद का शासक मुसलमान है, किंतु वहाँ की जनता हिन्दू है, जिसे बहुमत प्राप्त है। ऐसी स्थिति में अँगरेजों तथा साम्राज्यवादी राष्ट्रों के लिये यह एक अच्छा अवसर प्राप्त हुआ है, वह भारतीय बँटवारे के बाद इन रियासतों की राजनैतिक स्थिति, राष्ट्रीय मतभेद तथा साम्प्रदायिक मनोमालिन्य की भावना से लाभ उठायें और एकता की स्थापना की आड़ में अपनी कुटिल नीति की स्थापना में सफलता प्राप्त करें। यही कारण है कि हिन्दुस्तान की औचित्यपूर्ण इच्छा होते हुए भी काश्मीर तथा हैदराबाद की राजनैतिक स्थिति के सुधार में कोई आशा नहीं दिखाई दे रही है। पाकिस्तान आज काश्मीर की समस्या के सुलझाने में जिस प्रकार बाधक हो रहा है, उसका कारण भी पाकिस्तान ही, वरन् ब्रिटेन के वही कट्टरपंथी हैं जिन्होंने विभाजन की आड़ में इन दोनों रियासतों की विषम समस्याएँ उत्पन्न की हैं।

जहाँ तक भारत का सम्बन्ध है वहाँ तक दोनों रियासतों के संबंध में उसकी नीति स्पष्ट है। काश्मीर से जब तक कि पाकिस्तानी आक्रमणकारी निकाल नहीं दिये जायेंगे तब तक भारतीय फौजें वहाँ से नहीं हटेंगी। यदि काश्मीर के प्रश्न का हल होना है तो वह मतगणना के आधार पर किया जा सकता है। साम्राज्यवादी राष्ट्रों की सुरक्षा-परिषद् अपना कोई भी निर्णय जबरदस्ती भारत पर नहीं लाद सकती। जनता ही किसी भी प्रजातंत्र राष्ट्र की कसौटी होती है जो वहाँ के शासन का निर्णय कर सकती है। काश्मीर की जनता भारतीय संघ के अनुकूल है। इसलिए पाकिस्तान तथा सुरक्षा-परिषद् को व्यर्थ में काश्मीर की समस्या के हल में रोड़ा अटकाने का कोई अधिकार नहीं है। हैदराबाद की जनता यही चाहती है कि राज्य भारतीय संघ में सम्मिलित हो जाये। किन्तु वहाँ के शासक निजाम तथा अल्पसंख्यक साम्प्रदायिक समुदाय एकछत्र शासन की स्थापना के लिए उतावला हो रहा है, इसलिए हैदराबाद की समस्या भी मतगणना के द्वारा हल की जा सकती है। भारत-सरकार को पूरा अधिकार है कि वह जनता की इच्छा के अनुसार निजाम पर पूरा दबाव डाले कि वह भारतीय संघ में सम्मिलित हो जाये, यदि ऐसा वह नहीं करता है तो इसका परिणाम अवसर के अनुसार उसे अवश्य भुगतना होगा, इसमें संदेह नहीं है।

इस प्रकार जहाँ तक भारत की नीति का संबंध है, दोनों राज्यों के प्रति स्पष्ट है। यदि इस न्यायोचित मार्ग में सुरक्षा-परिषद् अथवा पाकिस्तान बाधक होते हैं तो समस्त जिम्मेदारी उनके सर आती है। इसीलिए भारत ने काश्मीर और हैदराबाद के संबंध में अपनी नीति स्पष्ट कर दी है। समस्या तो आज सुलझ सकती है, मार्ग आज प्रशस्त हो सकता है, किन्तु साम्राज्यवादी राष्ट्रों का गुट्ट-सुरक्षा-परिषद् तथा उनके इशारे पर चलनेवाला पाकिस्तान यदि दोनों चाहें तो। कहा नहीं जा सकता कि काश्मीर और हैदराबाद की समस्या के सुलझाने में हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान में युद्ध होगा अथवा शान्तिपूर्वक समझौता होगा? लेकिन दोनों में से एक तो होगा ही।

प्रथम भारतीय गवर्नर-जनरल

भारत के वाइसराय लार्ड लुई माउन्टबेटेन निकट भविष्य में अवकाश ग्रहण करने जा रहे हैं। उनके स्थान पर चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचारी भारत के भावी गवर्नर-जनरल नियुक्त हुए हैं। सन् १६३८-३६ में राजा जी ने मद्रास के शासन-प्रबन्ध में अपनी योग्यता का परिचय दिया था। मद्रास-प्रान्त का मन्त्रिमण्डल अपनी कार्यकुशलता के लिये प्रसिद्ध रहा है, लेकिन इस समस्त सफलता का श्रेय राजा जी को प्राप्त है। कुछ समय पूर्व वाइसराय लार्ड माउन्टबेटेन की अनुपस्थिति में श्री राजगोपालाचारी स्थानापन्न गवर्नर-जनरल नियुक्त किये गये थे, उस समय उन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता, व्यवहार-कुशलता और कार्यक्षमता का सुंदर परिचय दिया था। लार्ड माउन्टबेटेन ने अपनी सरलता और दूरदर्शिता से अपने को अनुमान से अधिक प्रिय बनाया है; लेकिन फिर भी भारतीय जनता स्वभाव से यही चाहती थी कि

बम्बई में होनेवाली अखिल भार कमेटी के अधिवेशन में मौलाना कलाम आजाद। चित्र में बम्ब आपको थैली समर्पित कर रहे

गवर्नर-जनरल के पद पर भी कोई ही आसीन हो तो अच्छा है। इस हमारी दासता का रक्तरंजित इति

हमें विश्वास है कि लार्ड मा भारतीय सरकार की सुखद स्मृ न भूलेंगे। यहाँ से जाने के बाद अपनी सद्भावनाओं द्वारा सम्बन्ध विदेशों से दृढ़ करवाने शील रहेंगे, ऐसी आशा की जाती है इस ऐतिहासिक परिवर्तन का करते हैं और आशा करते हैं कि गोपालाचारी जी भारतीय शासन अधिकाधिक दृढ़ बनाते हुए राष्ट्र की स्थापना में सफलता प्राप्त करेंगे।

* *

पत्नी की बेवफाई या बेहयाई ?

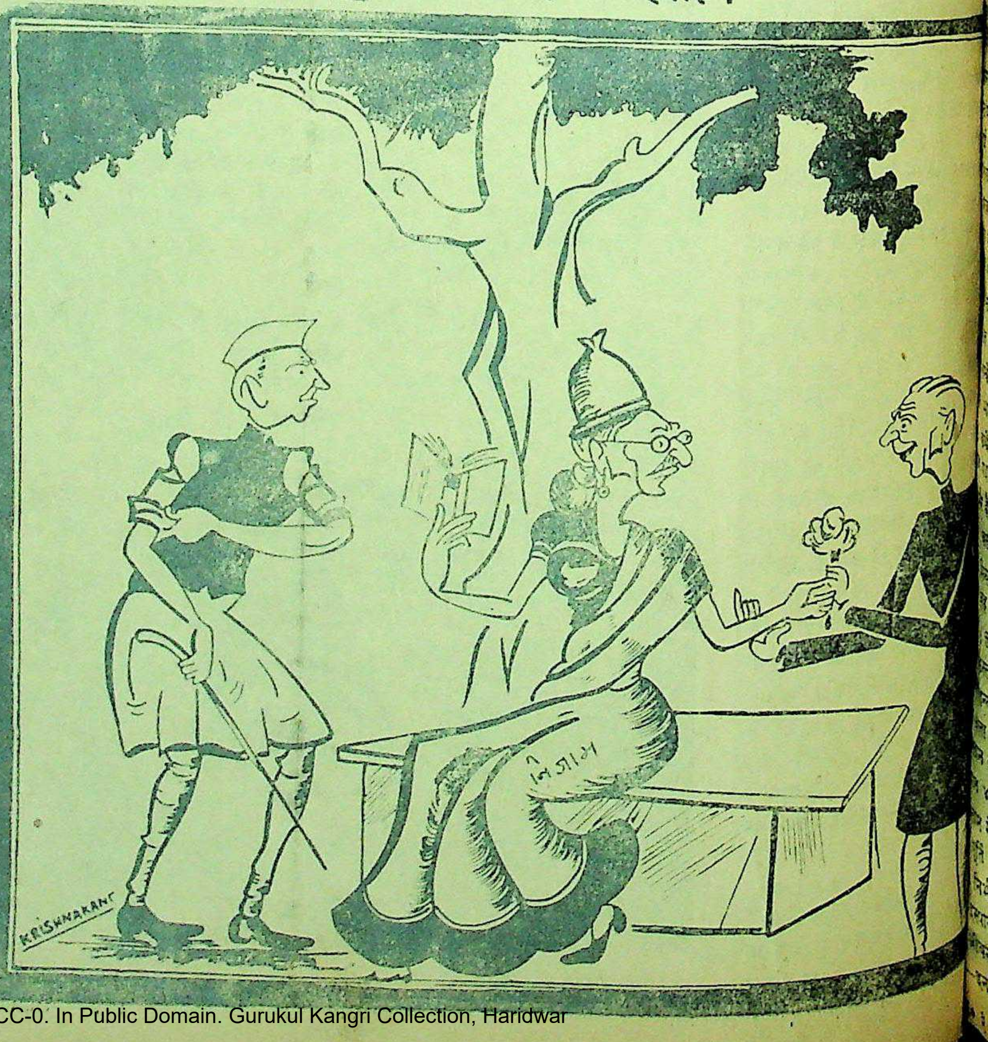

भारत की आर्थिक स्थिति कैसी ?

भारत-सरकार के १९४८-४९ के बजट पर एक दृष्टि

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

भारतवर्ष की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए सरकार के अतिरिक्त जनता को भी प्रयत्न करना चाहिए। उत्पादन शक्ति में वृद्धि करके वितरण को और भी अधिक परिष्कृत करना चाहिए। विभाजन के पश्चात् देश की आर्थिक स्थिति पर क्या प्रभाव पड़ा है, लेखक ने इस संबंध पर दृष्टिपात करते हुए भारत-सरकार के नये बजट की आलोचना की है। साथ ही आज की आर्थिक स्थिति को भी स्पष्ट किया है। भारत की आर्थिक स्थिति को समझने के लिये लेख पूर्णरूपेण पर्याप्त, पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

निर्भर है। इस परिस्थिति में यह आवश्यक था, यदि आर्थिक जीवन को विभाजन के परिणाम से अछूता और अस्पृष्ट रखना था; कि दोनों भागों में शान्ति, मैत्री, सद्भाव और सौमनस्य रहे। पर विभाजन के बाद घटी घटनाओं ने ऐसी स्थिति का उत्पन्न होना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य कर दिया है।

इसका फल क्या हुआ? भारत-सरकार की आमदनी २५० कोटि रु० है। भारत-सरकार की आमदनी के मुख्य स्रोत हैं :—

		करोड़ रु०
जकात	...	८२
एक्साइज ड्यूटी	...	४८
आय-कर	...	१००
विविध स्रोत	...	२०
		२५०

आय-कर की आमदनी में से प्रान्तों को ४० लाख रु० मिलता है। यह इससे अलग है। इस आय में से आधी आमदनी हवाई, नौ और स्थल सेना पर खर्च होती है। १२५ कोटि रु० सैनिक व्यय भारत की आय का ५० प्रतिशत होता है। पर आत्म-रक्षा जरूरी है। अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्थिति को देखते हुए सैनिक व्यय को घटाना सम्भव नहीं है। व्यय की दूसरी भारी मद है, ब्याज। राष्ट्रीय ऋण का सूद और पेंशनों में ४५ करोड़ रु० खर्च होता है। इससे प्रकट है कि २५० कोटि रु० में १७० करोड़ रु० ऐसा व्यय है, जो भारत-सरकार कम नहीं कर सकती और जिसको करने के लिए वह बाध्य है। इस खर्च के बाद ८० करोड़ रु० बच जाता है। इससे सारा शासन-व्यय भी चलाना है और राष्ट्र-निर्माण और जनमंगलकारी कार्यों को भी सम्पादित करना है। भारत-सरकार की आर्थिक नीति के आलोचकों को पहले उसकी आय पर अवश्य दृष्टिपात कर लेना चाहिए। भारत-सरकार की शक्ति और साधनों और मर्यादा को जाने बगैर उससे आशा बांधना और पूरी न होने पर निराशा होकर आलोचना करना लाभजनक नहीं हो सकता।

अन्न-समस्या

इस शेष ८० करोड़ रु० में से १० करोड़ रु० शरणार्थियों के पुनर्वासन के लिए अलग कर दिया गया है। २० करोड़ रु० आयात अन्न को सहायता देने में खर्च होता है, क्योंकि आयात अन्न जिस भाव पर खरीदा जाता है, वह भारत की कीमतों से कई गुना अधिक है। इन दोनों के अन्तर को दूर करने और जनता को कण्ट्रोल रेट पर अनाज देने के लिए भारत-सरकार को २० कोटि रु० खर्च करना पड़ता है। भारत को अनाज देनेवाले देश मनमाने दर पर अनाज बेच रहे हैं। उनके अपने देश के अन्दर जो कीमत है, उससे तीन गुना अधिक भाव पर अनाज वे भारत को देते हैं। भारत आज उनकी दया पर निर्भर है।

भारत की आन्तरिक आर्थिक अवस्था और उसके आर्थिक तन्त्र को स्वस्थ और स्थिर करने के लिए यह आवश्यक है कि भारत अन्न की दृष्टि से आत्म-निर्भर बने। ५० लाख टन अन्न की कमी है। इस समय भारत ४ करोड़ टन अनाज उत्पन्न करता है। यदि और ५० लाख टन उत्पन्न करने लगे तो अन्न-समस्या हल हो जावेगी। इसलिए भारत की पहली समस्या अनाज की दृष्टि से भारत को स्वाश्रयी और आत्म-निर्भर बनाना है। महानदी, दामोदर, रामपद सागर, कृष्ण नदी की योजनाएँ पूरी होने के बाद अन्न-समस्या भारत के लिए न रहेगी। पर इन योजनाओं के पूरा होने में भी कम से कम दस साल लगेंगे। क्या दस साल अन्न का आयात करने के लिए प्रतिवर्ष १ अरब रु० खर्च करता रहे, अन्न-समस्या के कारण भारत अपने औद्योगिक विकास और उन्नति के लिए आवश्यक मशीनरी और प्लाण्ट नहीं मंगा सकता और न उपयोग का सामान ही आयात कर सकता है। अन्न-समस्या देश के औद्योगीकरण में बाधक है। इसलिए आन्तरिक और बाह्य दोनों दृष्टियों से आर्थिक अवस्था को स्थिर और उन्नति बनाने के लिए यह आवश्यक है कि भारत सर्वप्रथम अन्न-समस्या को हल करे। जितनी जल्दी यह समस्या हल होगी उतना ही जल्दी उसकी औद्योगिक प्रगति की सबसे बड़ी बाधा दूर होगी।

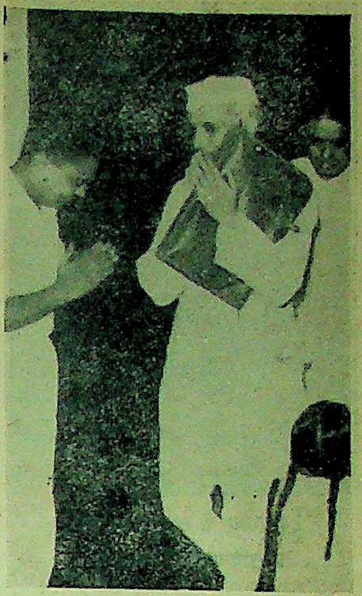

बम्बई में होनेवाले अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी में पंडित नेहरू।

पूँजीगत-व्यय

शरणार्थी और अन्न-समस्या का व्यय पूरा करने के बाद ५० करोड़ रु० बच जाता है। देश के शासन-व्यय और राष्ट्र-निर्माण के लिए केवल इतनी रकम बचती है। इससे प्रकट है कि देश का चालू आय का कोई भाग राष्ट्र-निर्माण और जनमंगलकारी तथा आर्थिक विकास के लिए उपयोग में नहीं आ सकता। इनके लिए गवर्नमेन्ट को कर्ज का ही भरोसा करना होगा। जब से राज्य 'पुलिस स्टेट' नहीं रहा है, और सामाजिक और आर्थिक राज्य हो गया है, वह ऋण से होनेवाली आय पर अधिकाधिक निर्भर रहने लगा है। भारत भी इसका अपवाद नहीं हो सकता।

राष्ट्रीय राजस्व सच्चे अर्थों में विकासात्मक होना चाहिए यह अब मान लिया गया है। इसलिए किसी देश का केवल बजट अब हानि-लाभ का 'बैलेंस शीट' नहीं रह गया है। अब इसका प्रबन्ध राष्ट्रीय राजस्व से निकट सम्पर्क बनाकर करना चाहिए। वस्तुतः वार्षिक बजट राष्ट्र के आर्थिक बजट को

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

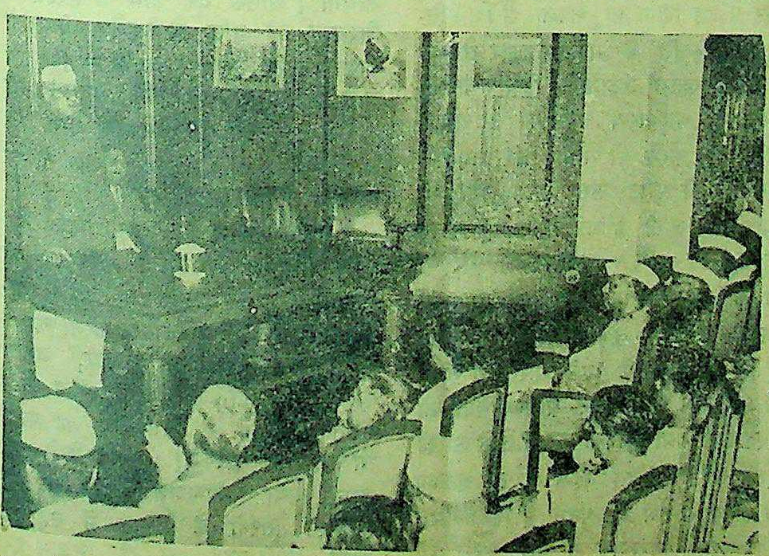

भारत के खाद्य सदस्य श्री मंगलदास पकवासा कृषि अनुसंधान समिति के सामने भाषण करते हैं।

प्रतिक्रियावादी हैदराबाद किधर?

वह भारतीय संघ में सम्मिलित होगा या निकट भविष्य में युद्ध का द्वार खोलेगा?

लेखक, श्री राधानाथ चतुर्वेदी

भारत के देशी राज्यों की राजनीति में हैदराबाद का प्रश्न कितना महत्त्वपूर्ण है, यह अब स्पष्ट हो गया है। भारत-सरकार ने भाषा के अनुसार विभाजन स्वीकार करने के लिए भी अपना मत दिया है। इस दृष्टि से भी हैदराबाद भारतीय संघ से अलग नहीं रह सकता है। अब हैदराबाद के सामने दो मार्ग हैं, युद्ध या समझौता। लेखक ने हैदराबाद की स्थिति पर प्रकाश डालकर स्पष्ट किया कि निकट भविष्य में भारतीय राजनीति का नक़शा सही रूप में निर्मित होनेवाला है। लेख विचारपूर्ण और उपयोगी है।

हैदराबाद के तानाशाह और प्रतिक्रियावादी निजाम

हैदराबाद तथा भारत के सम्बन्धों की राजनीति भी एक विचित्र रस्साकशी का रूप दिन-प्रतिदिन धारण करती जा रही है। पंडित नेहरू की कांग्रेस महासमिति में "युद्ध या विलयन" की चेतावनी तथा उसकी वापसी के बाद भी समस्या का अन्त साधारणतः दृष्टिगोचर नहीं होता।

आज हैदराबाद की राजनीति के दो चित्र हमारे सामने उपस्थित हैं। पहला तो हवाई दौड़ों का जो नियमित रूप से निरंतर नई दिल्ली और हैदराबाद के बीच लगाए जा रहे हैं। निजाम सरकार के वैधानिक सलाहकार सर वाल्टर मॉकटन और प्रधान मंत्री मीर लायक अली हवाई जहाज से दिल्ली आए। पहले दिन समाचार छपा। दूसरे संवादपत्रों ने प्रकाशित किया "सर वाल्टर मॉकटन तथा मीर लायक अली ने लार्ड माउन्टबेटेन और पंडित जवाहरलाल नेहरू या सरदार पटेल से भेंट की। तीन घंटे बातें हुईं।" तीसरे दिन कहीं एक कोने पर समाचारपत्र में पाठकों ने तिरस्कृत समाचार के रूप में पढ़ा, "नई दिल्ली...अप्रैल। हैदराबाद सरकार के वैधानिक सलाहकार सर वाल्टर मॉकटन तथा प्रधान मन्त्री लायक अली आज हवाई जहाज द्वारा वापस लौट गए।" अन्त में ४ दिन बाद प्रकाशित हुआ "निजाम ने भारत-सरकार से समझौता-वार्ता भंग कर दी।"

यह है हैदराबाद-भारत के भावी सम्बन्धों की राजनीति का चित्र जो बार बार समाचारपत्र पाठक के सामने दिखाया जाता है। पहले हैदराबाद प्रतिनिधि मंडल के आने से आशा, उच्चाधिकारियों से ३-३ घंटे परामर्श करने से और आशा, तीसरे दिन की मूक वापसी से बेचैनी और अन्त "वार्ता भंग" के समाचार से फिर मामला जहाँ का तहाँ। कहा तो जाता है कि "नौ दिन चले अढ़ाई कोस" किन्तु यहाँ घंटों में सैकड़ों मील की दूरी पूरी करने के बाद महीनों के परामर्श और विचार के बाद सारा मामला "यथास्थिति" में आ जाता है।

यह चित्र साधारण नागरिक को अत्यन्त बेचैन कर देता है और यह बेचैनी उस समय तो अपनी शीर्षतम स्थिति में पहुँच जाती है जब हैदराबाद की सीमावर्ती उपद्रवों के समाचार पढ़ने को मिलते हैं और इस व्यथा की अग्नि में घृताहुति का काम करते हैं कासिम रिजवी के "विस्मयजनक रीति से दिए गये अनुत्तरदायी भाषण।"

क्या हैदराबाद से सैनिक संघर्ष अवश्यंभावी है? क्या हैदराबाद को हम ज्यों का त्यों एक स्वतंत्र सत्ता के रूप में छोड़ सकते हैं?

दोनों प्रश्नों के उत्तर एक साथ और एक शब्द में तो नहीं, किन्तु दूसरे प्रश्न का उत्तर निश्चयतः नकारात्मक रूप में ही दिया जा सकता है। पहले प्रश्न के सम्बन्ध में "हाँ" या "ना" का उत्तर देने की अपेक्षा हमें देशी सचिवालय के अध्यक्ष सरदार पटेल की नीति में अत्यधिक विश्वास है।

कांग्रेस महासमिति में हैदराबाद और काश्मीर की समस्याओं के सम्बन्ध में विस्तृत रूप से अपने विचार अभिव्यक्त कर देने के बाद दिल्ली के राजनीतिक अंचलों का मत था कि अब संभवतः पंडित नेहरू श्री गोपालस्वामी आयंगर से परामर्श करने के बाद शीघ्र ही कोई वक्तव्य न देंगे। किन्तु आशा के विपरीत पंडित जवाहरलाल नेहरू ने एक पत्रकार-सम्मेलन बुलाया और अत्यन्त विस्तृत रूप से दोनों समस्याओं की व्याख्या की। पंडित नेहरू ने कहा—"भारत-सरकार आर्थिक राजनीतिक और सैनिक दृष्टि से किसी भी प्रकार हैदराबाद का एक ऐसी स्वतन्त्र सत्ता के रूप में रहना स्वीकार नहीं कर सकती जो किसी भी विदेशी राष्ट्र से पारस्परिक संधि करने की क्षमता रखती हो।" इन शब्दों का अर्थ ऊपरी तौर से यह लिया जा सकता है कि प्रतिकूल परिस्थिति में भारत-सरकार सैनिक-संघर्ष का खतरा उठाने से हिचकिचाएगी नहीं और वह समय आने पर हैदराबाद से युद्ध भी करने को तैयार हो जायगी। इस मत की पुष्टि उस समय और भी अधिक हो जाती है जब पंडित नेहरू यह कहते हैं कि—"हम हैदराबाद की अशान्ति जनक परिस्थितियों को यों ही नहीं टाल सकते और न यही देखते रह सकते हैं कि हैदराबाद के गुण्डे भारत की सीमा में घुस आयें और हमारे ग्राम-वासियों को व्यवस्थित तथा अत्यन्त क्रूर रीति से उनकी हत्या करें।" पंडित नेहरू के इस वक्तव्य में ही आगे हम यह पढ़ते हैं कि "भारत की मंशा हैदराबाद से युद्ध करने की कदापि नहीं है। भारत केवल इतना ही चाहता है कि हैदराबाद में शान्ति और व्यवस्था स्थापित हो जाय और वहां की जनता की उत्तरदायी सरकार की स्थापना हो जाय।" वस्तुतः भारतीय जनता की इच्छा भी यही है।

भारतीय जनता हैदराबाद से मैत्री तथा स्नेह के सम्बन्ध बनाए रखना चाहती है। हैदराबाद की भौगोलिक सांस्कृतिक, सामाजिक तथा राजनीतिक परिस्थितियाँ इतनी अधिक एक-दूसरे से संलग्नित हैं कि हम लोग शत्रु के रूप में रह ही नहीं सकते।

जब पण्डित जवाहरलाल नेहरू यह कहते हैं कि हम "सैनिक दृष्टि से हैदराबाद का स्वतंत्र सत्ता के रूप में रहना स्वीकार नहीं कर सकते" उस समय उनके कथन का तात्पर्य यह होता है कि यदि हैदराबाद को स्वतंत्र सत्ता के रूप में छोड़ दिया जाय तो भारत को हैदराबाद राज्य की ८२,६९८ वर्गमील में फैली भूमि की सीमा की रक्षा के लिए सेना का प्रबन्ध करना पड़ेगा। यदि सेना का प्रबन्ध नहीं किया जाता तो सीमा-प्रदेशों की निवासी भारतीय जनता कभी सुख और शान्ति से रह ही नहीं सकती। सीमा पर सेना रखने का अर्थ यह है कि सैनिक-संघर्ष होने का भय तो बराबर बना ही रहेगा, साथ ही भारत-सरकार को व्यर्थ अपनी आय का काफी लम्बा हिस्सा सैनिक-व्यय की मद में देना पड़ेगा। इसके विपरीत यदि हैदराबाद में उत्तरदायी सरकार की स्थापना हो जाती है तो उससे दो लाभ होंगे। पहला लाभ तो यह कि कासिम रिजवी जैसे प्रतिक्रियावादी व अराजकता फैलानेवाले तत्त्वों का दमन हो जायगा। शान्ति स्थापित हो जायगी। आतंक दूर होने से पारस्परिक विश्वास की वृद्धि होगी और सीमावर्ती भारतवासियों से अच्छे सम्बन्ध स्थापित हो जाने के कारण सब बातें पूर्ववत् हो जायँगी। इसका परिणाम यह होगा कि भारत-सरकार एक प्रकार के सैनिक अपव्यय से बच जायगी।

सैनिक-स्थिति का दूसरा पहलू यह है। निजाम उत्तरदायी सरकार की स्थापना करने को प्रस्तुत नहीं है। प्रजातंत्रवादी तत्त्वों का दमन करना चाहते हैं और कर रहे हैं। इसलिए, जनता का सहयोग तो उन्हें कभी मिल नहीं सकता। जनता के असहयोग का फल, निजाम के सरकारी कर्मचारियों का दमन तथा अराजकतावादी स्थितियाँ फासिस्ट तत्त्वों के विकास में सहायक होंगी। अभी चाहे भले ही निजाम इन फासिस्टवादी तत्त्वों का समर्थन करे, भले ही वह मूक ही क्यों न हो और जैसा

कि वह कासिम रिजवी और
मुसलमीन के अराजकतावादी
ओर से आँखे मूंद कर रहे हैं,
वह भी पायेंगे कि यह फासिस्ट
उलट देनेवाले हैं और सत्ता
हाथ में ले लेना चाहते हैं। ऐसी
जब भारत-सरकार से भी उनकी
चुकी होगी तो वह विदेशी
सहारा लेंगे और वह विदेशी
कोई नहीं, ब्रिटिश साम्राज्यवादी
यह सत्य है कि अन्त में यह
साथ न देगा और निजाम
हिमायतियों सहित मुँहकी खानी
किन्तु भारत को अनावश्यक चिन्ता
और सैनिक-संघर्ष का सामना
पड़ेगा और कोई नहीं कह सकता
मामला आगे कितना लम्बा
उसका हमारे राष्ट्रीय विकास पर
प्रतिकूल प्रभाव पड़े। उन्हीं
कारणों से भारत यह सहन
सकता कि हैदराबाद स्वतंत्र
के रूप में रहकर विदेशी शक्तियों
कूटनीति का अखाड़ा बने।
सशक्त प्रभुत्व सत्ता-सम्पन्न पड़ोसी
किसी भी देश के लिए रक्षा
होते हैं; किन्तु इसके विपरीत
तथा स्वतंत्र सत्ता-सम्पन्न राष्ट्र
तो नाश करते ही हैं, पड़ोसी
भी ले डूबते हैं। भारत इस
स्वयं बचना चाहता है और हैदराबाद
भी बचाना चाहता है।

हैदराबाद राज्य का
भी त्रुटिपूर्ण है। सामाजिक तथा
दृष्टि से भी वह स्पष्टतः तीन क्षेत्रों
हुआ है। तामिल, तेलगू तथा
भारत-सरकार भाषा के आधार पर
प्रान्तों का राजनीतिक पुनर्गठन
स्वीकार कर चुकी है। यह निश्चय
या कल अवश्य ही कार्यान्वित होगी
स्थिति में हैदराबाद के महाराष्ट्र
भाषी हैदराबाद निजाम के
अफफिया राज-वंश की ख्याति
मात्र के लिए ही महाराष्ट्र
रहना पसन्द क्यों करेंगे? यही
भाषा-भाषी क्षेत्रों पर भी लागू
इसका अर्थ पुनः क्रान्ति है। इस
अशान्ति का चक्र बराबर घूमता

हैदराबाद के राजवंश को
भाँति अनुभव कर लेना
परिस्थितियां अब बहुत बदल
१५ अगस्त की आधी रात को
स्वतंत्र हुआ था उस समय
ही नहीं, प्रत्युत स्वतः भारत
भाग घोर निद्रा में सो रहा
ऐसा नहीं है। भारत का
जाग उठा है। ऐसा कोई भी
नहीं है जहाँ उत्तरदायी सरकार
राष्ट्र का अंग अंग नवजागरण
हो उठा है। प्रजातंत्र का
गगन ही नहीं हिमांचल प्रदेश
पर्वतों से लेकर समुद्र की लहरों
करनेवाले कन्याकुमारी के प्रदेश
हो चुका है। इसलिए अब
लिए यह संभव नहीं है कि वह
माँग को ठुकरा सके और
धारा के विरुद्ध जा सके। जो
वादी शक्तियां इतिहास की
जूझने का दुस्साहस करेंगी, वह
ही शक्तिशालिनी क्यों न
बहनेवाली तेज नदी की
इतिहास की धारा प्रतिक्रिया
को काटकर फेंक देगी।

कहानी

तलाक

लेखक, श्री श्रीराम शर्मा 'राम'

जवानी में हृदय पहचानने की शक्ति नहीं रहती। प्रायः बाह्य सौंदर्य पर जवानी फिसल पड़ती है। रूप नहीं हृदय ही सब कुछ होता है। एक विधवा ने एक युवक की आँखों का मैल केवल एक वाक्य से निकाल लिया। कहानी में आधुनिक समाज और युवकों के प्रति अविश्वास का चित्रण किया गया है, साथ ही यह भी प्रगट किया गया है कि यदि रूप की कमी के आधार पर एक पुरुष अपनी स्त्री को त्याग दे तो यह किसी प्रकार भी उचित नहीं। कहानी सुंदर और आकर्षक है।

तो एकाएक अपना मत नहीं दिया। जो स्त्रियाँ उसकी हितचिन्तिका थीं, उन्होंने कहा—तू महेश बाबू को मत आने दे—तो तब भी यशोदा ने ऐसा कोई निर्णय नहीं किया कि वह महेश बाबू को न आने दे, उन्हें अपने यहाँ आने के लिए रोक दे। उस अवस्था में यशोदा ने केवल इतना अवश्य पाया कि वह अपने-आपको जितनी भारी और ठोस मानती थी, वह उतनी नहीं। उसने देखा कि वह नारी है, पाप और पुण्य की दीवारों में उसकी काया चारों ओर से बन्द कर दी गई है। यद्यपि, अपने वैवाहिक-काल में उसने पति के मुँह से बाजार की वेश्याओं के विषय में अनेक बार सुना था। उसने अपने पति से यह भी पाया था कि बाजार की वे नारियाँ पेट के लिए ही उस रास्ते पर जाती हैं, कुछ पथ-भ्रष्ट भी कर दी जाती हैं। यशोदा ने यह सुना—और बात को टाल दिया था। उसे उन नारियों के विषय में कोई विशेष आकर्षण नहीं लगा था। परन्तु आज, जब कि वह स्वयं नारी बनी हुई, एक ऐसे स्थल पर आ टिकी है कि जहाँ वह भ्रष्ट कही जाती है, शायद वेश्या; तो सचमुच ही उस युवा नारी के अन्तर में जो बरबस ही ज्वालामुखी पर्वत जैसा एक बड़ा लावा भड़क उठा, तो उसने चाहा कि वह जल जाये, समाज भस्म हो जाये...यह नारी यह पुरुष चट-चट आग के अंगारों में चटक जाये...

निःसन्देह, अपनी उस दुर्दमनीय अवस्था में ही यशोदा ने सोचा, हाय! हाय! यह नारी कितनी भ्रष्ट है....कितनी हल्की...कितनी मूर्ख...

—'और वह वेश्या है....बाजार की भ्रष्ट नारी...'

—वह नारी...वह वेश्या...वह जघन्य...वह क्रूर...'

अपनी उस अवस्था को लिये-लिये ही, यशोदा की छाती पर जो घूँसा लगा, उससे तिलमिला कर, उसने चाहा कि वह घर से निकल पड़े और समाज के प्रत्येक नर और नारी के मुँह पर कहे—'बताओ, मैं वेश्या हूँ...मैं नीच...

उसके मन में आया कि वह उस समाज के मुँह पर थूक दे, उसका मुँह नोंच ले और कह दे—'पापी तुम हो....तुम मूर्ख!'

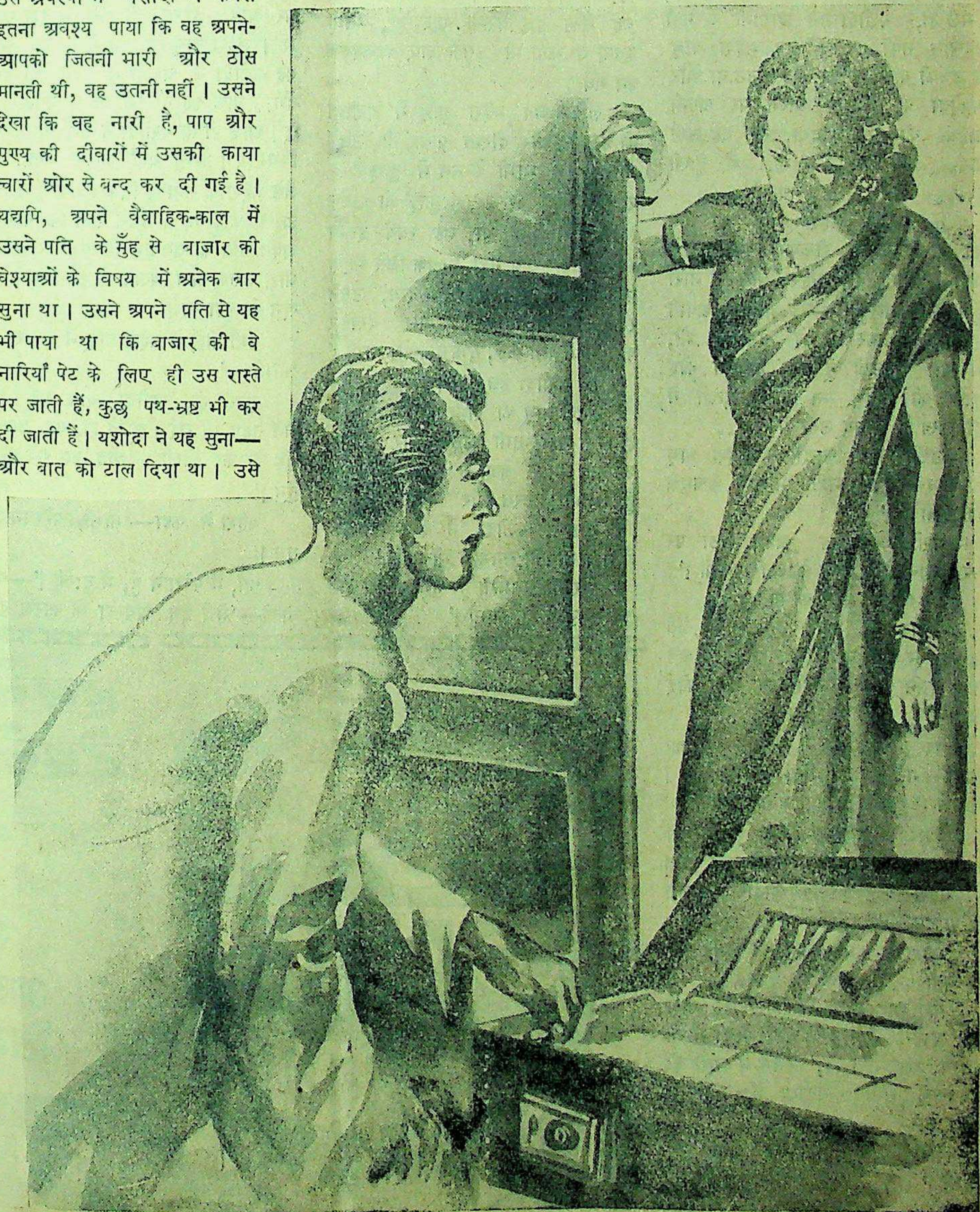

महेश ने कहा—'भाभी परेशान हो तुम?' हाँ परेशान हूँ मैं'—यशोदा ने कहा।

लेकिन, हाय! हाय! यशोदा की यह भी कैसी विवशता थी कि उसने इतना नहीं किया—नहीं। उसने जिस-जिस से बात को सुना, उत्तर में केवल क्षीण-सा और सूखा-सा मुसकरा दिया। यह देख, स्वभावतः सोचा गया कि जब उत्तर नहीं मिला, प्रतिरोध नहीं, तो सत्य जरूर है, कम हो, है जरूर। इसलिए, वह बात चली और चलती गई।

एक दिन महेश बाबू जब यशोदा के पास आये, तो यशोदा ने कहा—सुना है, तुम अपनी पत्नी से लड़ते हो। तुम मारते हो, पत्नी को।

उस समय, महेश बाबू जैसे निश्चय ही, किसी कठिन अवस्था में था। वह स्वयं अपनी एक समस्या में उलझा था। निदान, यशोदा की बात सुनकर वह चौंका नहीं, अपितु और अधिक गम्भीर बन गया। उसने यह भी देखा कि उसकी वह यशोदा भाभी जो धानी रंग की साड़ी पहने हुए थी, वह उसके गोरे और सलोने बदन पर बड़ी भली और खुशनुमा लग रही थी। वहाँ आते-आते महेश ने यही देखा। उस समय उसके मन में कुछ और भी था। वह क्या था, भले ही, यशोदा उसे आसानी से नहीं पहचान सकी, परन्तु जब महेश बाबू ने उसकी बात सुनकर, मुँह उठाया और यशोदा की मधुर आँखों पर अपनी आशा को टिका दिया, तो वह उसी अवस्था में बोला—'भाभी, मैं दुःखी हूँ...इस जीवन से ऊब गया हूँ...

तुरन्त ही, महेश बाबू की बात को बीच में ही रोककर यशोदा ने कहा—'देखते हो, महेश बाबू मैं नारी हूँ। मैं विधवा हूँ!'—वह बोली—'अपनी इतनी-सी अवस्था को देखकर भी, मैं यह समझती हूं कि अवस्था कोई दुःख की नहीं। मन की इच्छाओं में ही दुःख है, शायद उसी में सुख...

उसी समय, जल्दी से महेश बाबू ने कहा—'ऐसा नहीं, भाभी! सचमुच मैं दुःखी हूँ।'

यशोदा ने तब अपने होठों पर सरल भाव लेकर कहा—'आखिर क्यों?'

'मैं अयोग्य नारी का पति हूं।'

यशोदा ने इतना सुना, तो जैसे उसके सिर पर वज्र गिर पड़ा। उसे अब तक इतना पता नहीं था कि कोई अयोग्य है, नारी या पुरुष......

परन्तु महेश ने लाल बनकर कहा—'न, भाभी! ऐसा सन्तुलन है। समाज में ऐसा ही देखा जाता है।'

सुनकर, यशोदा सूखे दाँतों से हँस पड़ी—'यह तो दृष्टि-भेद की बात है, महेश बाबू! यह तुम्हारा अपना ही अधिकार।'

महेश ने बात को सुना और मौन रह गया।

यशोदा फिर बोली—यही नारी का दुर्भाग्य है। पुरुष और नारी में जो वैषम्य आ गया है, उसने न नारी को पुरुष के समीप बैठाया है, न पुरुष नारी के—

महेश ने कहा—'यह गलत है, भाभी।'

सदय भाव में यशोदा ने महेश बाबू की ओर देखा—'तो फिर विरोध क्यों! क्यों है, यह अनबन!'

'मेरी स्त्री मूर्ख है।'

सुनकर, यशोदा ने अपना मत नहीं दिया। कदाचित् उसने देना नहीं चाहा।

उसी समय, महेश बाबू ने फिर कहा—'नारी का जो एक नारीपन है, जब नारी में उसी का अभाव हो, तो भला कैसे पुरुष और नारी का मतैक्य बन सकता है? मानता हूँ, दोष पुरुष का भी है।'

परन्तु इतनी बात सुनकर भी, यशोदा ने अपना मत रोक लिया। उसकी दृष्टि ऊपर आसमान की ओर उठ गई और तभी उसने देखा कि दो उड़ते हुए पंछी उसके सामने से निकले और दूर चले गये। उन पंछियों को देख, बरबस ही, यशोदा के मन में आया—अहा! एक यह भी जीवन है, इन परिन्दों का...इनके पास भी है अपनी इच्छा और दम्भ! परन्तु तभी जैसे वह काँप गई और अपने मन में एक सिहरन सी अनुभव कर उस महेश बाबू की ओर इस प्रकार देखने लगी कि जैसे वह एक अपरिचित व्यक्ति है और उसके पास नया-नया ही आया है। वह कैसा है, कितना रहस्यपूर्ण, मानो इतना समझना भी उसके लिए आवश्यक बन गया।

लेकिन जब महेश बाबू ने यशोदा को अपनी ओर दीखते पाया, तो उसने समझा कि भाभी के मन में कुछ है—शायद कुछ! परन्तु वह 'कुछ' जो उसके मन में आ गया था, वह स्वयं इतना सरल और पुण्य नहीं था कि जिसे महेश पा लेता और सुन लेता। निदान, उसने स्वयं ही यशोदा की ओर देखकर कहा—'मैं क्या करूँ, मुझे बताओ, भाभी!'

तब यशोदा हँस पड़ी।

महेश बाबू को लगा कि भाभी सरल है, भारी नहीं; तभी उसने और अधिक अनुरक्त बनकर कहा—'मैं जीवन चाहता हूँ, भाभी! सरस और निर्मल जीवन।'

सुनकर, यशोदा ने कहा—'इतना मैं नहीं जानती, समझती भी नहीं।'

'पर मैं समझता हूँ, तुम जानती हो। तुम समझती हो, भाभी!'

यशोदा ने इतना सुना, तो वह तब भी गम्भीर नहीं बनी, वह पूर्ववत् हँसती हुई बोली—'हाँ, इतना समझती हूँ तुम अपनी इच्छाओं के दास हो...पुरुषरूप में तुम जिस प्रकार अपने समाज को ठगते हो, कदाचित् उसी तरह अपने घर में बैठी हुई उस सरल नारी को भी ठग लेना चाहते हो...उसे भ्रष्ट करना चाहते हो, महेश बाबू!'

महेश ने कहा—यह गलत है—यह सत्य नहीं, भाभी!'

लेकिन यशोदा को तो उस बात में उलझना था नहीं, इसलिए वह खड़ी होकर बोली—'ईश्वर करे, यह गलत हो—सही नहीं।'

महेश भी खड़ा हो गया।

अपने एक कमरे की ओर जाते हुए यशोदा ने कहा—'वैसे अब तक यही सुना है—देखा भी यही!'

महेश कुछ कहता, लेकिन जब यशोदा स्वयं चली गई; तो वह उस मकान से बाहर निकल गया। वह चला गया।

*　　*　　*

शहर सो गया था। आधी रात का पहर। उसी समय, महेश बाबू यशोदा के घर आये। भाग्य की बात कि द्वार खुला था। महेश बाबू के मन में था कि आज वह यशोदा के चरणों में अपने को डाल देंगे...साफ कह देंगे कि उसे तू चाहिए...तू! आज ही तो यशोदा ने उन्हें आमन्त्रित किया था। परन्तु वहाँ जाकर देखा, तो जैसे महेश के सनाका निकल गया। उसकी आँखें फैल गईं। उसने देखा कि यशोदा अपने पति की तसवीर को सामने रखे बैठी थी। उसके बाल बिखरे थे और माथे से खून बह रहा था।

तभी पीछे से महेश बाबू ने पुकारा—'भाभी—'

सुनते ही, यशोदा चौंक गई। वह जैसे तड़प भी गई। छूटते ही, वह अपना मुँह फेर कर बोली—'ओह, आ गये तुम! तुम!'

महेश ने कहा—'भाभी, परेशान हो तुम!'

'हाँ, मैं परेशान हूँ, मैं दुःखी!'—वह बोली—'मेरी इस अवस्था के कारण तुम हो—तुम!'—उसने कहा— तक पति को खोकर दुःख परन्तु तुमने मेरे चरित्र पर किया, मेरे जीवन पर; बताओ, कौन-सा उपकार किया।

जल्दी से महेश बाबू ने 'भाभी—'

किन्तु भाभी ने जैसे और क्षोभ से पूर्ण बनकर अपनी पत्नी का बहिष्कार मुझे ठग लिया...मुझे समाज में उपहास और ईर्ष्या का दिया। अच्छा ही था यह कह देती, यहाँ न आना। परन्तु तुम्हारा अपमान समझा। और तुमने समझा होगा, भाभी भाभी भूखी;—ओह!'—उसी यशोदा ने फिर कहा—'तुमने को इसलिए बहिष्कृत किया कि नहीं, वह तुम्हारे अनुरूप नहीं। तड़पकर बोली—'पर तुमने भी देखा—अपना ही रूप! है इस दुनिया में जो तुमको देखे, प्रति प्रेरणा पाये, अपने मन सिर झुकाकर कहा—'नारी नहीं चाहिए, महेश बाबू! हृदय भावना चाहिए!'

उसी समय, महेश बाबू ने यशोदा के पति की तसवीर और देख रही है और हँस लिए, उन तमाम विपरीत पा, महेश बाबू ने उल्टे पैरों कहा—'ओह, जो देखा, अच्छा नहीं। सुना, वह भी नहीं—सच!' वह तेजी से बाहर चला गया।

—और यह अचरज था कि दूसरे दिन महेश बाबू ने में दाखिल किये गये उस वापिस ले लिया कि जो उन्होंने पत्नी को बहिष्कृत कर देने के किया था। परन्तु मोहल्ले की लिए यह रहस्य का ही विषय फिर बाद में महेश बाबू यशोदा के घर आते-जाते हुए पाया।

जुल्फे बंगाल हेयर आयल

हम ने आपना व्यापार देहली में आरम्भ कर दिया है!

अब आप अपने आर्डर इतयादि निमन लिखत पत्ते पर भेजें

दी क्रोऊन फारमेसी

दिलशाद गार्डन • शाहदरा • देहली

KAPOOR ART PRESS

देशदूत चित्रावली

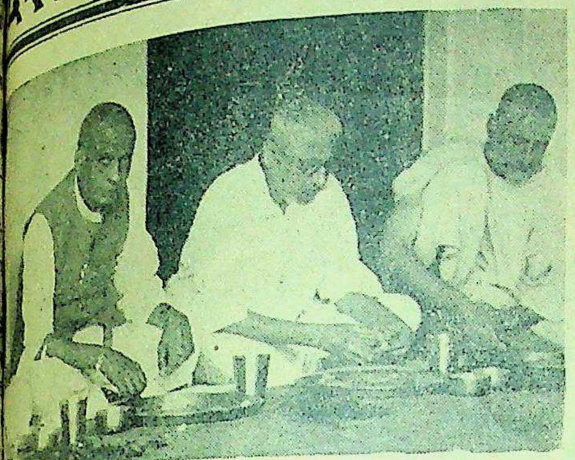

ल्लभभाई पटेल अपने मित्र मौलाना आजाद, सीमाप्रांत के गांधी तथा डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद के साथ भोजन कर रहे हैं।

भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू श्रीमती नंदिता कृपलानी को उनके सफल अभिनय के लिए बधाई दे रहे हैं।

श्री राजगोपालाचार्य को, दिल्ली पहुँचने पर सैनिकों द्वारा गार्ड आफ आनर दिया ना रहा है। चित्र में श्री राजगोपालाचार्य सैनिकों के पीछे चलते हुए दिखाई दे रहे हैं।

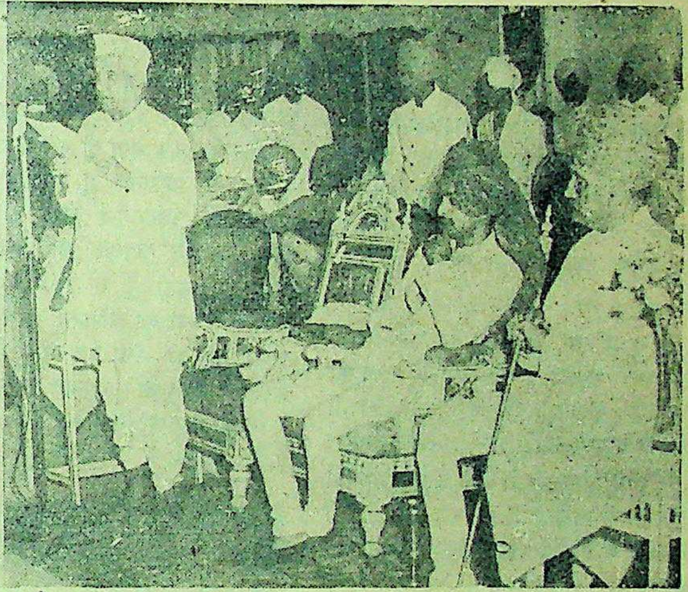

पिछले दिनों रीवां में विन्ध्य-प्रदेश-संघ का उद्घाटन माननीय गाडगिल ने किया था। चित्र में श्री गाडगिल भाषण दे रहे हैं। दाहिनी ओर राजप्रमुख महाराजा रीवां और उपराजप्रमुख महाराजा पन्ना बैठे दिखाई दे रहे हैं।

न की गवर्नर माननीया श्रीमती सरोजिनी नायडू, माननीय सरदार वल्लभभाई पटेल के साथ, जो पिछले दिनों लखनऊ पधारे थे, गवर्नमेंट हाउस में भोजन कर रही हैं।

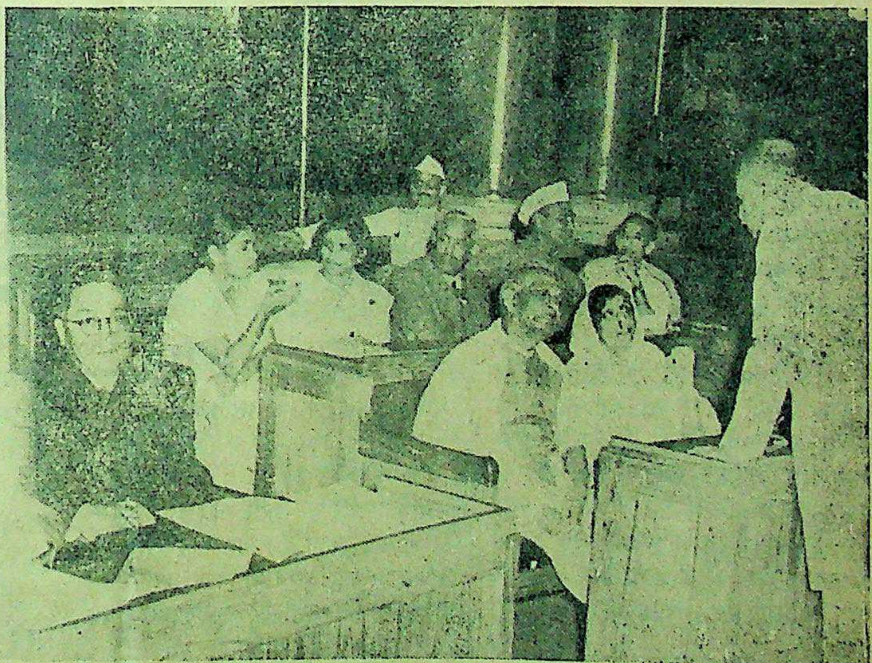

पिछले दिनों दिल्ली में एशियाई देशों के प्रतिनिधियों का एक सांस्कृतिक सम्मेलन हुआ था। चित्र में सरदार वल्लभभाई पटेल राजकुमारी अमृतकौर के साथ, बैठे हुए दिखाई दे रहे हैं और डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी से वार्ता कर रहे हैं।

हमारा रंग-मंच

'राम जोशी'

निर्देशक शान्ताराम का सफल पौराणिक फिल्म

लेखक, श्री पूरन खत्री

अँगरेजी के प्रसिद्ध कवि शैली ने एक स्थान पर लिखा है —"जो देश स्वतन्त्र न होगा, उस देश की कला भी स्वतन्त्र न होगी।" कला जाति-पाँति का भेद नहीं देखती। लगन ही कला में सफलता प्राप्त करने का एकमात्र उपाय है। राम जोशी के कथाकार जी० डी० मंगलूरकर ने कथा को इसी के आधार पर लिखा है; और अब आजाद हिन्दुस्तान में शान्ताराम का यह सफल चित्र बना है। वैसे तो यों ही शान्ताराम एक सफल दिग्दर्शक हैं, उनके कुछ चित्र तो विदेशों में भी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं, जिनमें आदमी, पड़ोसी और तुकाराम का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इनके चित्रों में मनोभावों का विकास ज्यादातर "लाइट एण्ड शेड" से होता है। डाक्टर कोट्नीस की अमर कहानी के बाद उनका यह पहला सफल चित्र है।

* * *

इस फिल्म का कथानक इस प्रकार है—बात आज से १७० साल पहले की है जब कि समूचा दक्षिण भारतवर्ष अपनी आपसी फूट के कारण छिन्न-भिन्न हो रहा था, तभी शोलापुर में राम जोशी के गीतों ने भरमार मचा दी। वह भाड़ों की मण्डली में शरीक होकर गीत लिखने और गाने लगा। उसके भाई को यह बात पसन्द न आई, क्योंकि इससे उसकी इज्जत में बट्टा लगता था। सो वह घर से निकाल दिया गया। वह अपनी मंडली के साथ इधर-उधर घूमता रहा और इस तरह उसने अपना खूब नाम पैदा किया। एक दिन वह पूना में बया नाम की एक वरांगना से अचानक मिल गया। और जो अपनी हार मानकर हमेशा के लिए रामजोशी की हो गई। अब पूर्ण रूप से उनकी एक सफल मंडली हो गई जिसने इधर-उधर घूमकर खूब नाम पैदा किया। इसी तरह उसकी पहुँच माधवराव पेशवा के दरबार तक हुई, जहाँ वह सर्वश्रेष्ठ कलाकार माना गया। पर इसके साथ-साथ पेशवा ने उसको मदिरा की सुराही में भी ढकेल दिया, जिससे वह सब कुछ भूल बैठा। मुसीबत के दिनों में बया ने उसका खूब साथ दिया। अन्त में बया ही की सहानुभूति से उसने फिर से अपनी खोई हुई इज्जत पैदा की और वह वैरागी हो गया। हाथ में करताल लेकर बया के साथ सड़कों पर वैराग्य के गीत गाने लगा।

* * *

प्राचीन सांस्कृतिक भारतीय नृत्य का प्रदर्शन, आजकल रंगमंचों पर प्रायः होता रहताहै।

अभिनय की दृष्टि से चित्र में सर्वश्रेष्ठ अभिनय राम जोशी का कृष्णमोहन ने किया है। नये कलाकार के अभिनय में श्रेष्ठता पाई जाती है। अभिनय को देखते हुए सन्त तुकाराम का अभिनय बरबस ही याद आ जाता है। विलासी पुरुष का अभिनय करने में इसने अपनी वास्तविकता को छिपाकर एक नया ही रूप दिखाया है। वास्तव में अभिनय में वास्तविकता को छिपाना ही पड़ता है। श्रेष्ठ अभिनय में हाथ पैर और मुखमुद्रा का संचालन भी बहुत ही जरूरी है; सो इसमें पूर्ण रूप से हुआ है। बया का अभिनय शान्ताराम की सफल तारिका हंसा वाड़कर ने किया है। असल में देखा जाये तो यह शान्ताराम ही के चित्रों में अपना सफल रूप प्रकट कर पाती है जैसे सादिक के चित्रों में सुरैया। इसका अभिनय आदमी के धरातल से कुछ ही नीचे हुआ है, फिर भी वरांगना का अभिनय करने में यह हमेशा से सफल हुई है। निर्भीकता और मर्मस्पर्शी बातें इसके अभिनय में पाई जाती हैं। माधवराव पेशवा का अभिनय चाहे जिसने भी किया हो, उत्तम रहा। बाकी कलाकार यथास्थान उत्तम रहे।

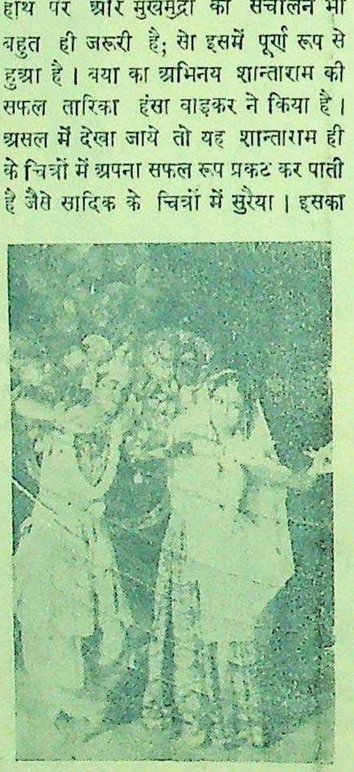

राधाकृष्ण नृत्य का एक दृश्य।

टेक्निक के लिए शान्ताराम सदा से मशहूर है। वह बात दूसरी है कि लोग उनको समझ न पाये फिर भी वह लोगों के दिलों में साधारण तौर से स्थान प्राप्त कर लेते हैं। मन के एकाग्र न होने पर चलते चलते राम जोशी की धोती में मदिरा की सुराही को उलझा देना—मुसीबत के दिनों में बया का धोती सीना आदि बातें बड़ी ही उत्तम बन पड़ी हैं। चित्रालेखक हैं इनके छोटे भाई श्री भी० अवधूत। मनोभावों का विकास बहुत ही उत्तम ढंग से यह अपने मित्रों में करता है। कैमरे की कटिंग और कम्बीनेशन बड़ी ही प्रशंसनीय हुई है। इन्होंने अपने आपको अपने पुराने मित्र "पड़ोसी" के धरातल तक पहुँचा दिया है।

गीतकार हैं श्री नरेन्द्र शर्मा जिन्होंने खासकर शृङ्गार-रस के गीत बड़ी ही उत्तमता से लिखे हैं। मालूम होता है उन्होंने संस्कृत काव्यों का अच्छा अध्ययन किया है। गीत मनोभावों के विकास के साथ साथ परिस्थिति अनुकूल भी है। इसलिए बरबस ही जनता को अपनी ओर खींच लेते हैं। संगीत-दिग्दर्शक हैं श्री बसन्त देसाई जो खास तौर से "स्टेजआरकेस्टा" के लिए प्रसिद्ध हैं। शर्मा जी ने और श्री देसाई ने एक साथ बैठकर परिश्रम है, इसलिए कम्पोजीशन बहुत ही हुई है। प्रथम गीत—सुन्दर सुकमार-नयन कर चार... आकर्षित कर लेता है। एक और है :—हम सारा आलम भूल परिस्थिति अनुकूल जरूर है; शब्दों ने अच्छे स्थान ले लिये अठारहवीं शताब्दी के बोलचाल की से नहीं मिलते हैं।

* * *

पौराणिक चित्रों में वेश-भूषा, दिग्दर्शन और संवाद ही उनकी हैं। चित्र के धरातल को देखते हुए सब चीजों में कमी नहीं है। अपनी परम्परा के कारण शान्ताराम टेक्नीक का चुनाव उत्तमता से करता है। भी उत्तम है। माधवराव के हाथ संगीत का एकदम से बन्द हो जाना वैराग्य के गीत में बाजार के लोगों भनभनाहट सभी प्रशंसनीय हैं।

मरदों की गलतीयाँ | कीमत वा

गलतियां हो चुकी हैं तो भी विवाह से पूर्व, विवाह के पश्चात् हम असंख्य सड़े मरीज़ों को शर्तिया ठीक कर चुके हैं। हट्टे कट्टे अन्दर से खोखले कमजोर जोर अहजा यानी ढीले-ढाले शरीर से नवीन अवस्था का चमत्कार देखकर आप जायेंगे। यदि हस्तकारी औषधियों और नीम हकीमों की ठगियों ने आपको आने से रोक रखा है तो मैं फिर कहता हूँ कि जिस दिन मरजी हो आइए, प्रबन्ध हमारे जिम्मे, यदि किसी कारण से लाभ न हो तो यात्रा का खर्च जेब इसके अतिरिक्त जो डाक्टर, हकीम वैद्य सब इश्तहार झूठे समझते हैं आइए सामने हमारी औषधियों को हानिकारक सिद्ध करें तो एक हजार रुपया पुरस्कार मूल्य वाजबी।

कविराज हीरोजी वज़ीराबादी, मैनेजर दी हीरो फारमेसी रजि
डाकखाना दरियागंज की पिछली तरफ दिल्ली।

मातृमण्डल

लड़के और लड़कियों का यह भेद-भाव क्यों ?

माता-पिता और कुटुम्ब के लिए पुत्री एक पवित्र धरोहर और सम्पत्ति है

लेखिका, श्रीमती पद्मिनी सेन-गुप्त

जो स्त्रियाँ डाक्टर और नर्स के रूप में काम करती हैं, वे समाज में बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से देखी जाती हैं। दूसरी ओर अध्यापन कार्य में भी स्त्रियों ने असाधारण उन्नति दिखलाई है। उदाहरण के लिए हम श्रीमती सरोजनी नायडू, श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित और श्रीमती राजकुमारी अमृतकौर के विषय में सोच सकते हैं। एक राजदूत, गवर्नर और स्वास्थ्य-मंत्री के पद पर काम करना पुरुषों के लिये सरल नहीं है। लेकिन आज हम देखते हैं कि नारी-जाति, पुरुष-जाति की चुनौती हर दिशा में स्वीकार कर रही है।

पुत्री और उसके माता-पिता के बीच क्या सम्बन्ध है? आज लड़की पहले समय की अपेक्षा क्यों अधिक प्रिय है? इसका कारण केवल यह है, कि माता-पिता पुत्री के स्थान को समझने लगे हैं। अभी भारतवर्ष में लड़की को इतनी स्वतन्त्रता नहीं प्राप्त है, कि वह जो भी चाहे कर सकती है। विशेषतः शादी आदि के विषय में तो पुत्रियाँ तनिक भी अधिकार नहीं रखतीं। अपनी ससुराल में लड़की अपने माता-पिता और भाई का सत्कार स्वतन्त्रतापूर्वक नहीं कर सकती। विधवा स्त्री यदि सन्तानहीन है तो वह भी अपनी इच्छानुसार हर काम नहीं कर सकती। लड़कियाँ माता बनने के पश्चात् कुछ-कुछ अधिकार प्राप्त करने लगती हैं।

जिस प्रकार माता-पिता एक पुत्री से आशा करते हैं, लगभग उसी प्रकार पुत्री भी उनसे कुछ न कुछ अधिकार चाहती है। प्रायः साधारण श्रेणी के मनुष्य तो लडकियों की शादी करने की बात सबसे पहले सोचते हैं, इसके लिए वे दहेज के रूप में काफी धन भी खराब करते हैं; लेकिन पुत्री स्वयं ही पावन सम्पत्ति है। वह आजीवन अपने माता-पिता और ससुरालवालों की सेवा ही करती रहती है। सच तो यह है कि पुत्री की सेवाओं का मूल्य माता-पिता किसी प्रकार भी नहीं चुका पाते, किन्तु इतना होते हुए भी न जाने माता-पिता अपनी पुत्रियों के प्रति क्यों उदासीन रहते हैं। एक माता अपनी पुत्री का विवाह करने के लिए बहुत इच्छुक थी। एक नवयुवक जो शादी में कम से कम दस हजार रुपया दहेज के रूप में चाहता है, अगर रुपया मिल जाता है तो वह आदमी तुरन्त हो शादी कर लेता है। यदि वह रुपया नहीं पाता तो विवाह करने से इनकार कर सकता है। इस प्रकार लड़की के कारण माता-पिता को यह सब बातें सहनी पड़ती हैं। वे अपने सम्बन्धी को प्रसन्न करने के लिए कुछ न कुछ सदैव ही उसे दिया करते हैं। कभी-कभी कुछ अयोग्य आदमी अपनी स्त्रियों को छोड़कर समाज में बड़ी भयंकर परिस्थितियाँ पैदा कर देते हैं। इस प्रकार न जाने कितनी अबलाएँ अपना जीवन असमय ही खो देती हैं।

इस तरह की कहानियाँ सुनकर हमें अपनी बढ़ती हुई पीढ़ी से बहुत निराशा है। आजकल तो पढ़े-लिखे लोग अपने लड़के और लड़कियों को समान रूप से शिक्षा देते हैं। वे लोग सोचते हैं कि जो कुछ हम दहेज में देंगे उसी धन के द्वारा हम अपनी लड़की को पढ़ा-लिखाकर योग्य बना सकते हैं। यदि कभी आवश्यकता हो तो शिक्षित लड़की अपने पति की सहायता भी कर सकती है। समझदार आदमी अपनी पुत्रियों का विवाह पैसा देखकर नहीं बल्कि आदमी देखकर करते हैं। लड़की पढ़-लिखकर भी यदि अपनी व्यवस्था न सुधार सकी तो उसके परिवारवालों से उसे कुछ न कुछ कष्ट मिलना स्वाभाविक हो जाता है।

[illegible] की श्रीमती सुशीला यावलकर, सुप्रसिद्ध कलाकार और शिल्पी श्री नागेश यावलकर की पत्नी, ने अपने चित्रों का प्रदर्शन [illegible] हॉल बम्बई में किया था। चित्र में श्रीमती सुशीला यावलकर चित्रों के साथ [illegible] दे रही हैं।

दाद, खुजली
और
हरेक मेलका चमडीका दर्दोंके लीए
गत ५० वर्षों से
जग विख्यात
कपड़े खराब नहीं करती।
नकालों से सावधान
सपट
लोशन

सपट एन्ड को, डिपार्टमेंट U.P, DAI.
बम्बई २

मुफ्त

युवको! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीवन फीका हो चुका हो तो भारत भर में सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त रोग विशेषज्ञ कविराज ब्रह्मसरूप बी० ए० लाहौरवाले फतेहपुरी (D.A.) देहली से मशविरा (सम्मति) मुफ्त लेकर अपना जीवन सुधार लें।

प्रजातन्त्र तुर्की पर संकट के बादल

(पेज ७ का शेष)

एक ही राजनीतिक दल है। हाल ही में प्रेसीडेंट इनान्यू ने नवीन विधान को पाश्चात्य पार्लमेंटरी-प्रणाली पर आधारित करने की घोषणा की है और एक नवीन राजनीतिक दल और खड़ा किया गया है; किन्तु दोनों दलों में विचार-धारा के स्तर पर कोई भेद नहीं है। ब्रिटेन, फ्रांस और अमेरिका में जिस प्रकार राजनीतिक सिद्धान्तों के मौलिक वैभिन्य पर दलों का निर्माण होता है वैसा तुर्की में अभी सम्भव नहीं हो सका है। जनता की कुंठित राजनीतिक चेतना का इससे आभास मिल जाता है।

इस प्रकार तुर्की में क्रांतिकारी परिवर्तनों को अंकुरित होने का अवसर नहीं मिल रहा है और इस आंतरिक दौर्बल्य का परिपूर्ण शोषण करने के लिए वैदेशिक शक्तियां तुर्की के सामने नये-नये प्रलोभन और आकर्षण फेंक रही हैं। हां, इतना अवश्य है कि राजनीतिक एवं आर्थिक संकटों की इन घटाओं की छाया में भी तुर्की के समस्त राजनीतिक वर्ग सामूहिक रूप से तुर्की के राष्ट्रीय सार्वभौमत्व को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए संकल्पबद्ध हैं। यही कारण है कि इन भेद-भावों के बावजूद भी तुर्की की वैदेशिक नीति में अभी तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

सोवियत रूस के साथ तुर्की के सम्बन्ध दिन-प्रतिदिन काफ़ी अप्रिय होते जा रहे हैं—तुर्कों के लिये सर्वाधिक चिंता का विषय यही है। अधिकांश तुर्क मंत्रि-संधि को दोहराने के पक्ष में हैं; किन्तु देश के राजनीतिक सार्वभौमत्व एवं आर्थिक नियंत्रण को वे किसी विदेशी शक्ति के दर्प-प्रदर्शन पर बलि चढ़ाने को तैयार नहीं हैं। साथ ही सोवियत रूस ने जो दावे पेश किये हैं उनकी अभिव्यक्ति इतनी निरादरपूर्ण है कि तुर्कों के स्वाभिमान को उससे आघात पहुँचता है। तुर्कों के मन में रूस के प्रति संदेह करने के और भी कारण हैं, किन्तु सबसे प्रबल कारण यह है कि रूस ने उसके एक भूभाग पर भी दावा किया है।

फान पेपन की कूटनीति

रूस और तुर्की के सम्बन्धों को विषाक्त करने का अधिकांश दायित्व तीसरी रीख के चतुर राजदूत फ्रांज़ फान पेपन को है। कूटनीतिक षड्यन्त्रों को जितनी सूक्ष्मता और सफलता के साथ फान पेपन ने फैलाया और समेटा उसका स्वयं अपना निजी इतिहास है। जर्मनी के इस चाणक्य ने मित्रराष्ट्रों को तुर्की के मामले में जितना छकाया, उतना उन्हें कभी किसी ने नहीं छकाया था। पेपन की कूटनीति ने एक ही प्रहार में कई लक्ष्यों का भेद किया था। बोल्शेविक-विरोधी प्रचार को उसने इस उँचाई तक पहुँचाया कि तुर्क और रूसी परस्पर मिल नहीं सके और दूसरी ओर मित्रराष्ट्रों को भी तुर्की की तटस्थता को भंग करने में सफलीभूत नहीं होने दिया। जब तक कि रीख समाप्त नहीं हो गई और मित्रराष्ट्रों की सेनाएं रूर-प्रदेश में नहीं घुस सकीं तब तक पेपन ने तुर्की की तटस्थता नहीं भंग करने दिया। युद्ध की प्रारम्भिक अवस्था में मित्रराष्ट्रों ने तुर्की को कई भांति फुसलाया कि वह जर्मनी के साथ की गई सन्धि को तोड़ दे और मित्रराष्ट्रों के साथ युद्ध में सहयोगी बन जावे। किन्तु फान पेपन के सामने मित्रराष्ट्रों की कूटनीतिक चालें निष्फल रहीं। केवल रूस के दबाव को ही इस क्षेत्र में सफलता मिल सकी था। तुर्की जर्मनी का युद्धरत साथी न बन सका रूस के लिए इससे बढ़कर प्रसन्नता की बात और हो ही क्या सकती थी? पेपन यदि इसे भी पूरा कर लेता तो द्वितीय महायुद्ध का सारा इतिहास ही बदल गया होता।

मित्रराष्ट्र तुर्की को अपने खेमे में लाने के लिए जिन कारणों से प्रेरित हुए थे उन कारणों में से एक प्रमुख कारण यह भी था कि वे रूस को सेनाएँ और युद्ध-सामग्री भेजने के लिए दर्रे दानियाल के जल-मार्ग का उपयोग करना चाहते थे। रूस के आंतरिक भागों के विभिन्न मोर्चों पर सहायता और युद्ध-सामग्री पहुँचाने के लिए दर्रे दानियाल की अपेक्षा दूसरा सीधा एवं सुरक्षित मार्ग और कोई नहीं था, रूस के अंतराल में तीव्र प्रगति से प्रविष्ट होती हुई जर्मन सेनाओं को शीघ्रातिशीघ्र रोकने के लिए इतना छोटा जलमार्ग ही विशेष रूप से आवश्यक था। तुर्की ने मित्रराष्ट्रों को यह लाभ नहीं लेने दिया। मन्त्रि के समझौते की आड़ लेकर वह युद्ध-क्षेत्र की सीमा पर बैठा-बैठा दोनों पक्षों के भविष्य की भाग्य-लिपियां पढ़ता रहा। इस बार वह बाजी लगाना नहीं चाहता था। क्योंकि तुर्की ने अपनी राजनीतिक आयुष्य का अभी शैशवकाल भी समाप्त नहीं किया था। सुलतानों के शोषण से खोखला बन गया तुर्की अपने घावों को भी अभी नहीं भर सका था। ऐसी परिस्थिति में तुर्की के नेता जुआ खेलना नहीं चाहते थे। इस राष्ट्रीय आवश्यकता से प्रेरित होकर ही तुर्की अपने पड़ोसी रूस को अनुगृहीत नहीं कर सका। रूस की सैन्य-परिस्थित पर इसका प्रभाव बड़ा बुरा पड़ा। प्रथम महायुद्ध में जब तुर्की कैसर का सहयोगी था उस समय दर्रे दानियाल पर फौजी यातायात का निर्णयात्मक प्रभाव पड़ा था।

रूस की माँगें

१९४३ से ही रूस-तुर्की सम्बन्धों का जो नया अध्याय शुरू हुआ उसके भीतर अनेक जटिल समस्याओं के पनपने की सामग्री है और आज की व्यापक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में जो असंख्य नई-नई उलझनें आ गई हैं रूस-तुर्की की समस्या भी उनके साथ बड़ी महत्त्वपूर्ण होती जा रही है। ऐसा प्रतीत होता है मानो दर्रे दानियाल में फिर वही नेपोलियन और क्राइमियन युद्ध का युग आ गया है—इतिहास की पुनरावृत्ति हो रही है। रूस ने फिर अपनी वही पुरानी मांग पेश की है और इस बार वहाँ अपने ही भार से बोझिल जारशाही नहीं है, वरन् साम्यवादी सोवियत है और स्तालिन के हाथों में शतरंज की चाल है। द्वितीय महायुद्ध की विजयों ने सोवियत् रूस के स्वाभिमान और आत्मविश्वास को आशातीत रूप से गगनचुम्बी बना दिया है। आज वह अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में उपेक्षित शक्ति नहीं है, वरन् संसार की केवल दो महान् शक्तियों में से एक है और भावी विश्व-निर्माण का एकमात्र निर्णायक एवं निर्माता बनने के लिए प्रतियोगिता कर रहा है। चारों दिशाओं में रूस अपने प्रभुत्व-क्षेत्र को विस्तीर्ण कर रहा है और बोल्शेविकों की आरम्भकालीन राजनीतिक तटस्थता और विश्व-क्रान्ति की अनावश्यक भ्रान्ति के आवरणों को चीरकर राजनीति की नवीन गतिदिशा में बड़े प्रबल आत्म-विश्वास के साथ आगे बढ़ रहा है। सन् १९४३ में जब कि जर्मनी की पराजय सम्भावना से सत्य में परिणत होने लगी थी तभी से सोवियत् रूस ने अपने यूरोपीय और एशियाई पड़ोसी-राष्ट्रों के विषय में भावी सम्बन्धों की योजनाएँ बना ली थीं। आज वह एक-एक करके उन योजनाओं को कार्यान्वित करता जा रहा है। तुर्की के भविष्य के सम्बन्ध में भी मास्को में ऐसी ही एक योजना बन चुकी है। दर्रे दानियाल से परे इस योजना का अपना कोई विशेष महत्त्व नहीं है। रूस की लोलुप-दृष्टि फिर दर्रे दानियाल पर केन्द्रित हुई है और उसने १९३९ की माँगों को फिर से पुनर्जीवित किया है। इस बार फ्रांस और ब्रिटेन शक्तिहीन हैं और वे रूस की माँगों के मार्ग में बाधक बनने का साहस नहीं कर सकते। दूसरे, बाल्कन में आज जर्मनी के बजाय रूस ही सबसे प्रबल शक्ति है। सारा बाल्कन सोवियत् के प्रभाव के भीतर है। तुर्की के साथ राजनीतिक सौदा करने का इससे उपयुक्त अवसर और दूसरा क्या हो सकता है? यही कारण है कि सोवियत् रूस अपनी १९३९ की अतिरंजित माँगों तक ही आज सीमित नहीं रह सका है। उसने और भी माँगें और शर्तें तुर्की के ऊपर लादने का संकल्प कर लिया है। इस संकल्प के भीतर कम्यूनिस्टों के मतानुसार सोवियत् रूस की जनता का मनोवैज्ञानिक प्रतीकार है। सोवियत् रूस की जनता जब नाजी सेनाओं की नारकीय यन्त्रणाओं से आर्तनाद कर रही थी तब तुर्की ने अपने पड़ोसी-धर्म का पालन नहीं किया और एक षड्यन्त्रात्मक तटस्थता का बहाना लेकर वह तमाशा देखता रहा था।

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ० ए०, बी० ए० पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से और होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ्त मँगायें। पता:—
इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

मुफ्त:—"ओटो-फ्लावर्स" सुमधुर सुगंध के लिए विख्यात है। आज ही मँगाकर नाम रजिस्टर कीजिये। प्रत्येक सेट (छै दर्जन की बिक्री पर रजिस्टर नं० अनुसार मुफ्त में एक असली—"रिस्ट-वाच" दी जा रही है। कम से कम छै शीशी भेजी जाती है। की० नौ रु० दर्जन, डाक पैकिंग अलग।
ALBERT (D.A.) एलबर्ट
पो० बक्स ४७: जमशेदपुर।

सरदार पटेल।

(पेज ८ का शेष)

के मजदूरों ने तो उन्हें अपना
माना था। गुजरात के मिल-
आज्ञा पर तोप का मुँह फेर
रखते थे। अहमदाबाद की
भविष्य उनकी आज्ञा ही पर
सरदार पटेल स्वयं कृषक-परिवार
हुए। उन्हें अपने जीवन-काल
दारुण कष्ट भी उठाने पड़े
भारतीय जनता के साधारण
अनुमान आसानी से कर लेते हैं
देश को 'खूब अन्न उपजाओ'
दिया जा रहा है, किन्तु किसानों
तक कोई ठोस परामर्श नहीं प्राप्त
यह सारी परिस्थितियां सरदार
अधिक समय तक अनजान नहीं
वे भारतीय जनता का रहन-सहन
उच्च करेंगे। केन्द्रीय और प्रान्तीय
दोनों ही ग्रामीण क्षेत्रों की चिन्ता
और इसके फलस्वरूप बहुत कुछ
गया है। सरदार पटेल ने मिल
को राय दी है कि वे जनता को
साधारण स्तर से नीचे न गिरने
देश के प्रति वे वफादार न बन सके

* *

सरदार पटेल व्यक्तिगत
विचार से न तो अधिक
स्वाभाविक बुद्धि से अधिक
तक किसी बात को रख सके
पन अथवा प्रचार की इच्छा न
शासन के सम्बन्ध में वे हृदय
बल्कि दिमाग से काम लेते हैं।
सरदार भावना-प्रधान न होकर
के लिए आशा से अधिक सरल
धान हैं। किसी विद्वान् ने बड़ा
अधिक गम्भीरता जीवन के
को कुछ शुष्क बना डालती है,
दार पटेल के विषय में यह बा
न कुछ दुर्बल जान पड़ती है।
होकर भी बादलों की तरह
सुखकर हैं। उनके निर्णय विद्व
भी सिद्धांतों पर ही आधारित रहते
के लिए सरदार जैसे नेता कितने
हैं यह तो हमारी वर्तमान
स्वयं बता रही हैं। विशेषकर
की मृत्यु के पश्चात् सरदार पटेल
लिए कुछ और ही बन गये हैं।

---

१००) रु० इनाम
!! विश्वविजय यन्त्र !!
सिद्ध वशीकरण यन्त्र। इससे
जिस स्त्री या पुरुष को आप चाहें
जायगी। इससे दुर्भाग्य और शत्रु
नौकरी, सन्तान, धन की प्राप्ति,
लाभ, परीक्षा में पास, मुकदमे
लाटरी में जीत, कठिन से कठिन
छुटकारा होकर भाग्योदय होता है
ताँबा २॥), सिलवर ३), सोने का
बेफायदा साबित करने पर १००)
पता—श्री विश्वशांति
मुहल्ला—सलीमपुर
पो० कदम कुआँ, (पटना)

मनोरंजक चुटकुले

एक आदमी डाक्टर के पास जाकर बोला—मुझे नींद नहीं आती है।

डाक्टर ने कहा—सोने के एक घंटे पहले भोजन कर लिया करो।

बीमार ने कहा—आपने दो महीने पहले मना किया था कि सोने के पहले कुछ न खाया करो।

डाक्टर ने कहा—यह तो दो महीने पहले की बात है न, अब तो डाक्टरी विद्या बहुत आगे बढ़ गई है, शायद तुम्हें यह नहीं मालूम।

* * *

'तुम प्रार्थना करते हो?' राम ने श्याम से पूछा।

'अवश्य' श्याम ने उत्तर दिया।

'तुम समझते हो कि तुम भी पूजा करके मेरी तरह सोने की घड़ी पा जाओगे' राम ने कहा।

'मैं तुम्हारी घड़ी किसी प्रकार ले लूँगा और सबसे कहूँगा कि भगवान् ने मुझे प्रार्थना करने पर दी है।' श्याम ने कहा।

'तो जेल का द्वार तुम्हारी राह देख रहा है' राम ने उत्तर दिया।

* * *

किसी किसान से एक डाक्टर साहब ने कहा—'तुम क्या चाहते हो?'

'सब आदमी स्वस्थ रहें' किसान ने उत्तर दिया।

'तो तुम मुझे जिन्दा नहीं रहने देना चाहते क्या?' डाक्टर ने कहा।

* * *

किसी आदमी को दो चोरों ने पकड़ा। वह पूछने लगे—'तुम्हारे गांव में सबसे धनी आदमी कौन है?'

'मेरे चाचा' उस आदमी ने उत्तर दिया।

चोरों ने उस आदमी से सब कुछ छीन लिया और कहा कि अपने चाचा से रुपया लेकर फिर खरीद लेना, तुम्हें कमी किस चीज की है?

* * *

एक बुढ़िया भोजन बना रही थी। किसी लड़के ने उसे छू लिया। बुढ़िया ने कहा—'तुमने मुझे क्यों छू लिया?'

'मैंने आज नहाया नहीं था, सोचा आप रोज गंगा-जल पीती हैं, मैं भी आपको छूकर पवित्र हो लूं' लड़के ने जवाब दिया।

* * *

मौसम की मनमानी का क्या भरोसा

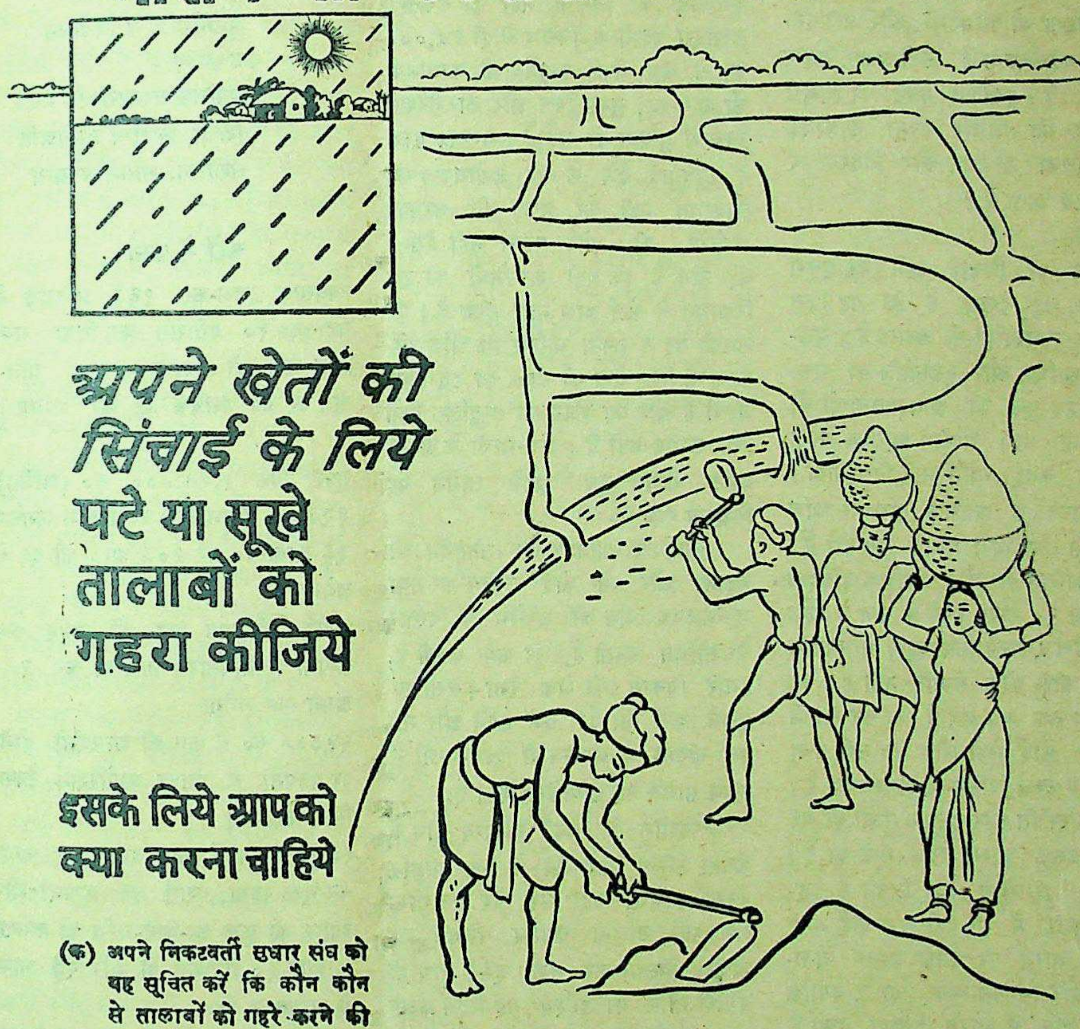

अपने खेतों की सिंचाई के लिये पटे या सूखे तालाबों को गहरा कीजिये

इसके लिये आपको क्या करना चाहिये

(क) अपने निकटवर्ती सुधार संघ को यह सूचित करें कि कौन कौन से तालाबों को गहरे करने की ज़रूरत है।

(ख) कृषि विभाग की इंजीनियरिंग शाखा के कर्मचारियों की सहायता से यह निश्चित करें कि तालाब कितना गहरा किया जाय और सिंचाई के रास्ते कहां रखे जाये।

(ग) अपने निकटवर्ती सुधार संघ या कांग्रेस कमेटी के नेतृत्व में काम का आयोजन कर के कार्यक्रम और काम शुरू करने का दिन भी निश्चित कर लें।

(घ) काम शुरू करने के लिये जो दिन निश्चित किया जाय उसकी घोषणा पहले से अपने और पास पड़ोस के गावों में कर दीजिये। काम पूरी लगन के साथ शुरू करें और यथा शीघ्र समाप्त कर दें। हर हालत में यह काम बरसात शुरू होने के पहले अवश्य समाप्त हो जाय, ताकि वर्षा का पूरा पूरा लाभ उठाया जा सके।

(ङ) तालाब की घास पात निकाल कर कम्पोस्ट के गड्ढों में जमा कर दें जिससे उनका खाद के रूप में इस्तेमाल किया जा सके।

(च) पटे या सूखे तालाबों के ऊपर की खुदी हुई गीली मिट्टी खेतों में डाल दीजिये। यह मिट्टी खाद का काम करेगी।

(छ) तालाबों को खोदने से जो मिट्टी निकले उसे पानी निकलने के लिये रास्ते छोड़ कर, तालाब के किनारे जमा कर दें और उन पर पेड़ लगा दें।

संयुक्त प्रान्तीय सरकार के सूचना विभाग द्वारा प्रचारित

भारत की आर्थिक स्थितकैसी ?

(पृष्ठ ५ का शेष)

सूचित करता है। इस अवस्था में पूँजीगत व्यय का भारी परिमाण में होना अनिवार्य है। यह भारी व्यय कर्ज से ही पूरा होगा। इसलिए आजकल कर्ज की मात्रा बढ़ जाने से कोई घबराता नहीं है। कर्ज अपने चुकाने का इन्तजाम भी आप कर लेता है। आय बढ़ाने और उत्पन्न करनेवाली योजनाओं में कर्ज में ली गई रकम खर्च होती है। इसलिए राष्ट्रीय ऋण को राष्ट्रीय आमदनी के साथ गिनना चाहिए। इस कारण राष्ट्रीय आर्थिक नीति का राष्ट्रीय ऋण एक आवश्यक भाग है और राष्ट्र की उत्पादन-क्षमता बढ़ाने का एक उत्तम साधन है। ऊँची सतह पर प्रगतिशील कर लगाना और सार्वजनिक व्यय जिस प्रकार गरीब जनता की आमदनी और उत्पादन-क्षमता बढ़ानेवाला है, उसी प्रकार राष्ट्रीय ऋण भी है। इसलिए बजट पर विचार करते हुए यह विचार करना आवश्यक है कि इसका उत्पादन और वितरण पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

मुद्रास्फीति

बजट पर विचार करने का दूसरा दृष्टिकोण यह देखना है कि यह किस सीमा तक मुद्रास्फीति को घटाता है। युद्ध-काल में आर्थिक और मुद्रानीति का एक-मात्र उद्देश्य युद्ध की आवश्यकताओं को पूरा करना था। राष्ट्रीय आर्थिक मंगल की ओर कतई ध्यान नहीं दिया गया। फलतः भारत के आर्थिक तन्त्र पर आज मुद्रास्फीति का भारी प्रभाव पड़ रहा है। युद्धोत्तरकालिक भारतीय आर्थिक इतिहास का आरंभ २० अरब रुपये के कर्ज से होता है। इसमें से ५ अरब रुपया ऋण अनुत्पादक है, उसके पीछे कोई सम्पत्ति नहीं है। कर इस सीमा तक बढ़ गये हैं कि कर लगाने का और कोई नया स्रोत शेष नहीं बचा है। राष्ट्रीय खर्च अधिकतर अनुत्पादक है। इससे मुद्रास्फीति और अधिक ऊँची हो गई है और इसके कारण बजट घाटे का है। संयुक्तराष्ट्र अमरीकी और ब्रिटेन के युद्ध-कालिक बजटों में भी यही बात पाई जाती थी, पर भारत पर इनका प्रभाव विनाशात्मक और विघटनात्मक पड़ा है, क्योंकि आर्थिक दृष्टि से भारत पिछड़ा हुआ है और प्रतिव्यक्ति की आमदनी निम्न स्तर पर है। राष्ट्रीय गवर्नमेंट को विदेशी गवर्नमेंट से यह स्थिति उत्तराधिकार में मिली है। देश के विभाजन ने इस समस्या को और अधिक उग्र बना दिया है। इसलिए आज जब देश उत्पादन-संकट में पड़ा है, यह प्रश्न पूछना स्वाभाविक है कि चेट्टी-बजट किस अंश तक मुद्राकुंचनवाला और मुद्रास्की-तिविरोधी है ?

कारखानेदारों को सुविधा

पिछले साल मि० लियाकतअली खाँ-द्वारा पेश किया गया बजट 'जनता का बजट' कहा गया था। अनेकों ने उसको समाजवादी भी कहा था। पर घटनाओं ने बतला दिया कि लियाकतअली का बजट जन-मंगल की भावना से प्रेरित होकर नहीं बनाया गया था; अपितु पाकिस्तान के लाभ और भारत के अहित के लिए बनाया गया है। यदि वस्तुतः वे उन बातों और सिद्धान्तों को स्वीकार करते तो पाकिस्तान बन जाने पर उसको भूल नहीं जाते। श्री चेट्टी के सामने इसलिए लियाकतअली खाँ की नीति के कारण उत्पादन-शक्ति में आई कमी के कारणों को दूर करना और उत्पादन को प्रोत्साहन देनेवाला वातावरण उत्पन्न करना था। इसलिए श्री चेट्टी का बजट पूंजीवादी विरोधी नहीं हो सकता, क्योंकि भारतीय आर्थिक ढाँचे का आधार ही वैयक्तिक सम्पत्ति, पूँजी और प्रतियोगिता है। जब तक इस आधार पर मूलतः परिवर्तन नहीं होता, समाजवादी बजट की बात सोचना गलत होगा। इसलिए राष्ट्रीय गवर्नमेंट का बजट पूँजीवाद का विरोधी नहीं हो सकता। उत्पादन बढ़ाने के विचार से ही २५,००० रु० से कम नफा कमानेवाली कम्पनियों को आय-कर, सुपर टैक्स और कारपोरेशन टैक्स में सुविधा दी गई है। सरकार द्वारा ये सुविधाएँ देने के बाद उद्योगपति यह शिकायत नहीं कर सकते कि सरकार उद्योगों की ओर ध्यान नहीं देती। यह ठीक है कि बड़ी कम्पनियों को इस रिआयत से कोई लाभ नहीं हुआ है। पर उनको यह न भूलना चाहिए कि औद्योगीकरण के लिए देश की साख का दृढ़ होना जरूरी है और वह बजट को सन्तुलित किये बगैर सम्भव नहीं है। अर्थ-मन्त्री ने अपना बजट बनाते हुए अपने सामने यह सिद्धान्त रखा है—

'सर्वोपरि आवश्यकता उत्पादन को बढ़ाना और जो कोई राजस्व का नया प्रबन्धात्मक बात जो उद्योग के विस्तार को सीमित करती है, या कम करती है, हमारे विकास को रोक देगा। इसलिए पुराने करों की दर कम करने और नये कर लगाने के सम्बन्ध में अर्थ-मन्त्री ने अपने सामने यह दृष्टिकोण रखा है:—

"उद्योग को जहाँ सामान्य कोष में अपना उचित भाग देने के लिए आह्वान करना चाहिए, वहाँ उस पर इस सीमा तक भार डालना चाहिए, जिससे वह अपना विस्तार कर सके। इसके साथ ही हमारी नीति का उद्देश्य यह प्राप्त करना होना चाहिए कि समाज के धनी सम्पन्न लोगों पर कर-भार उचित रूप से जहाँ ज्यादा हो, जिससे वह राज्य की सामान्य आवश्यकता की पूर्ति में समान रूप से अपना भाग अदा करे, वहाँ बचत के लिए वास्तविक मार्जिन छोड़ देना चाहिए, जो कि पुनः पूँजी लगने के प्रवाह में मिल जायेगा और समाज के उत्पादक धन को बढ़ायेगा...। हमारी कर-पद्धति में इस प्रकार का फेर-फार होना चाहिए, जिससे लाभ को नये व्यवसाय और कारोबार में लगाने की वास्तविक प्रेरणा और उत्साह प्राप्त हो।" अर्थ-मन्त्री द्वारा प्रतिपादित इन सिद्धान्तों की दृष्टि से बजट के आँकड़ों पर दृष्टिपात करना चाहिए।

प्रस्ताविक बजट—

१९४८-४९ का बजट

आय	२३० कोटि ५२ लाख रु०
खर्च	२५७ कोटि २७ लाख रु०
घाटा	२६ कोटि ८५ लाख रु०

आय के स्रोत

	(करोड़ रु० में)
आयात-निर्यात पर जकात	८१·७५
केन्द्रीय एक्साइज ड्यूटी	३४·००
आय-कर	९२·१३
टकसाल	९·४०
डाक और आय	१३·२४
	२३०·५२

खर्चे

सेना व संरक्षण	१२१.०८ कोटि रु०
मुल्की खर्च	१३६.२९ कोटि रु०
योग	२५७.३७ कोटि रु०

मुल्की खर्च का ब्यौरा

	(करोड़ रु० में)
निर्वासितों का पुनर्वासन	१०·१४
अन्न धान्य	१९·९१
कर वसूल करने का व्यय	८·९८
ब्याज, पेंशन आदि	४३·८६
पुनर्निर्माण व नियोजन	३·१५
टकसाल	२·२०
प्रान्तिक सरकारों को मदद	२·९५
शिक्षा, आरोग्य ग्रामोन्नति	२०·९३
संशोधन, शासन व अन्य	२४·२७
	१३६·२९

करों में कमी	आय में कमी
व्यवसाय लाभ-कर १६⅔ प्रतिशत से घटाकर १० प्रतिशत कर दिया गया और कर दो लाख रु० या ६ प्रतिशत पर जो अधिक हो, कर लगेगा।	२ करोड़ रु० पर चूँकि इस परिवर्तन से अ आमदनी १ करोड़ रु जायगी, इसलिए करोड़ रु० की ही होगी।
सुपर टैक्स १,५०,००० रु० (अर्जित) १२०००० (अनर्जित) पर अब न लगकर ३½ लाख रु० पर १०½ आ० की दर से लगेगा।	१ करोड़ रु०
पेचीदे डिविडेण्ड कर की जगह अब कम्पनी के अवितरित लाभ पर कर १ आना कम लगेगा	२ करोड़ रु०
२५००० रु० से कम की आमदनी होने पर कम्पनी से आधा कार्पोरेशन टैक्स लिया जावेगा।	१२ लाख रु०
स्वीकृत संस्थाओं को दिया गया चन्दा कर-मुक्त रहेगा, बशर्ते वह कम्पनी और व्यक्ति की कुल कर-योग-राशि का क्रमशः ५ और १० प्रतिशत हो और २½ लाख से अधिक न हो।	७५ लाख रु०
सुपारी पर से कर हटा दिया गया	३० लाख रु०

करों में यह रिलीफ और राहत देने के बदले घाटा पूरा करने के लिए अर्थ-मन्त्री ने कुछ नये कर भी लगाये हैं। वे नये कर क्या हैं और उनसे कितनी आमदनी की आशा है यह नीचे देखिए :—

तप्रस्तावि नये कर	प्रत्याशित आमदनी
कार्पोरेशन टैक्स अगाऊ जमा करने से	१० करोड़ रु०
तेलहन पर ८० रु० प्रतिटन और वनस्पति घी पर २०० प्रतिटन निर्यात कर	२५ कोटि रु०
मैग्नीज पर २० प्रतिटन निर्यात कर	८० लाख
आयात करों में छोटे-मोटे परिवर्तन	६२ लाख
सिगरेट पर एक्साइज ड्यूटी २५ प्रतिशत	७ करोड़ रु०
तैयार न किये गये तम्बाकू पर एक्साइज ड्यूटी	२ करोड़ रु०
चाय पर एक्साइज ड्यूटी दुगना कर देने, चाय और काफी पर कर लगाने से	२·१ करोड़ रु०
वनस्पति घी उत्पादन पर ५० प्रतिशत कर-वृद्धि	४० लाख रु०
दियासलाई पर २ रु० ८ आना कर लगाने से	१·५ करोड़ रु०
डाक और फोन के रेट में परिवर्तन करने से	४० लाख रु०

शेष पेज १७ पर देखिए

(करोड़ रु० में)
८१.७५
३४.००
६२.१३
६.४०
१३.२४
२३०.५२
१२१.०८ कोटि रु०
१३६.२६ कोटि रु०
२५७.३७ कोटि रु०

(करोड़ रु० में)
१०.१४
१६.६१
८.६८
४३.८६
३.१५
२.२०
२.६५
२०.६३
२४.२७
१३६.२६
आय में कमी
रोड़ रु० पर चूँकि
र्तन से अ.दक्ष
नी १ करोड़
ी, इसलिए
रु० की ही होगी।

करोड़ रु०

करोड़ रु०

लाख रु०

लाख रु०

लाख रु०
के लिए अर्थ-
कितनी आमदनी

त आमदनी
करोड़ रु०

कोटि रु०
ाख
ाख
ड़ रु०
ड़ रु०

करोड़ रु०
लाख रु०
करोड़ रु०
लाख रु०
१७ पर देखिए

वाददाताओं के पत्र

ा (डाक से) "हिमालय प्रदेश" राजनैतिक नेता श्री बुद्धिसागर बुशहर में पिछले दमनचक्र के हुई जनता की क्षति तथा वहाँ राजनैतिक परिस्थिति की जाँच- के लिए एक टोली के साथ आज रहे हैं।

रहे, बुशहर में 'भलकू' नामक का घर जलाए जाने पर साल की लड़की 'झाती' र गई।

—संवाददाता

* *

पुर से अखिल भारतीय कुमार हित्य-सम्मेलन के प्रधान मन्त्री शर्मा ने कुमार-सम्मेलन की शाखाओं १३ मई को (सूरजयंती) मनाने का आदेश दिया है और किया है कि महाकवि सूरदास हिन्दी की सभी संस्थाओं को ीर।

—सवाददाता

* *

से बृहत्तर ग्वालियर पत्रकार मंत्री श्री शम्भूनाथ सक्सेना है कि पत्रकार संघ के सदस्यों सभा 'जीवन' कार्यालय में जी मिलिन्द के अध्यक्षता में सर्वसम्मति से यह किया गया कि मध्य-भारत भाषाओं के पत्रकारों ३ और ४ जुलाई १९४८ बुलाया गया। आशा है सम्मेलन को सफल बनाने के के सब पत्रकार बन्धुओं संघ को प्राप्त रहेगा। और पत्रकारों के पते भी रहते हैं अतः प्रान्त के से विनम्र निवेदन है कि वर्तमान पत्रो की सूचना पत्रकार संघ कार्यालय ग्वालियर के पते पर मुझे कृपा करें, जिससे निमंत्रण- अन्य सूचनाएँ सुरक्षित रूप में सकें।

—शम्भूनाथ सक्सेना

* *

राज्य आदि आयुर्वेद प्रगति कार्यालय, पो० सलामपुर के उपाध्यक्ष सर्वश्री सागरमल और रामनिवास जी प्राणाचार्य, भालाल जी शास्त्री और राम- शास्त्री तथा कोषाध्यक्ष कस्तूर- वैद्यराज हैं। श्री चिरंजीलाल और मनोहरलाल जी वैद्यराज प्रचार के लिए दौरा किया, विद्यापीठाध्यक्ष श्री एम० के० भी प्रार्थना की है। नवीन ग्रन्थ- १०१) रुपये का "प्रजावैद्य वेद दिया जाएगा। सभापति जी ने और जयपुर के प्रसिद्ध वैद्यों श्रेणी तोड़ने की जोरदार 'आम्रत चौथ्या' 'पत्थर चट्टी' नाम ज्ञात हों तो लिखें।

हमें आयुर्वेद मार्तण्ड मणिराम जी भिषगाचार्य का शुभाशीर्वाद प्राप्त हो गया है। दौसा-सम्मेलन में जाने की समस्या विचाराधीन है। आगामी कार्य-कारिणी में सुयोग्य वैद्यराजों को प्राणाचार्य की उपाधि देने और कम्पाउण्डरी की परीक्षा लेने पर विचार होगा।

—वैद्य विरंचीलाल शास्त्री, प्रचार-मंत्री

* * *

दिल्ली से 'साधु' नामक सचित्र मासिक पत्र आध्यात्मवाद के सिद्धान्तों के प्रचार के लिये श्री १०८ बाबा काली कमलीवाला पंचायत क्षेत्र ऋषिकेष का प्रमुख पत्र प्रकाशन हो रहा है। पहला अंक वैशाख शुक्ला पूर्णिमा ता० २२ मई को प्रकाशित होगा।

—संवाददाता

* * *

कलकत्ता श्रमजीवी हिन्दी पत्रकार संघ के मन्त्री श्री सूर्यदेव उपाध्याय अनुरागी सूचित करते हैं कि संघ का वार्षिक अधिवेशन जो श्रीकृष्णदत्त जी पालीवाल की अध्यक्षता में मई के प्रथम सप्ताह में होनेवाला था, कलकत्ते में प्लेग की शिकायत के कारण अब मई के तृतीय सप्ताह में होगा। अधिवेशन की सफलता के लिये स्थानीय पत्रकार प्रयत्न कर रहे हैं।

—संवाददाता

* * *

इलाहाबाद में गत ४ मई को सायंकल एक स्काउट रैली तथा कैम्पफायर का आयोजन गोमती सरलाशंकर प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर बालिका-विभाग की अध्यक्षता में किया गया। बालक एवं बालिकाओं की उपस्थित-संख्या ५० के लगभग थी, जिन्होंने, लेजिम शारीरिक व्यायाम, खेल तथा छोटे छोटे अन्य खेलों का प्रदर्शन किया। जनता विशेष आकर्षित थी।

हमारा यह प्रदर्शन श्री कमलाकान्त जी रिटायर्ड चीफ जस्टिस के सभापतित्व में होनेवाला था, परन्तु अकस्मात् बीमार हो जाने के कारण वे उस अवसर पर न पहुँच सके।

श्री चूड़ामणि जी प्रान्तीय प्रचार कमिश्नर ने इस ट्रुप की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। इस रैली की सफलता शिक्षकों के उत्साह एवं लगन का प्रमाण है।

—आर्गनाइजिंग कमिश्नर

* * *

क्या आप जानते हैं ?

सन् १९४६ में ब्रिटेन में लगभग ९०,००,००० मील लम्बी फिल्म दिखाई गई थी।

* * *

चीन में कुल मिलाकर ३०० सिनेमा हाल हैं।

* * *

ब्रिटेन में अब १५,००० से भी अधिक रेडियो स्टेशन हैं।

* * *

सफेद और लाल रंग तितलियों को अधिक प्रिय होते हैं।

* * *

संसार की चावल की उत्पत्ति का ९५ फी सदी चावल एशिया में उत्पन्न किया जाता है।

* * *

भारत की आर्थिक स्थिति कैसी ?

(पेज १६ का शेष)

अर्थ-मन्त्री ने बजट के घाटे को पूरा करने के लिए प्रत्यक्ष करों का सहारा न लेकर अप्रत्यक्ष करों का अधिकतर सहारा लिया है। इसका कारण श्री चेट्टी ने बताया है कि १९३७-३८ से १९४८-४९ तक प्रत्यक्ष करों में ८½ गुना वृद्धि हुई है। पर प्रत्यक्ष करों में केवल २ गुना वृद्धि हुई है। इसलिए अर्थ-मन्त्री ने अप्रत्यक्ष करों का आश्रय लेना अधिक उचित समझा है।

बचत की सम्भावना

चाय, काफी, तम्बाकू पर कर लगाते हुए देखकर स्वभावतः प्रश्न उठता है कि क्या वस्तुतः १९४८-४९ में २६ कोटि रु० का घाटा होगा? क्योंकि विगत नवम्बर में साढ़े सात मास का बजट पेश करते हुए भी अर्थ-मन्त्री ने २६ कोटि २४ लाख रु० का घाटा दिखलाया था। पर संशोधित अनुमान बताते हुए अर्थ मन्त्री ने बताया कि घाटा घटकर ६ करोड़ ५२ लाख रु० ही रह गया है। इस बीच कपास पर प्रतिपौण्ड ६ आना और कपड़े पर प्रति वर्गगज ४ आना निर्यात कर लगाया गया। इतने पर भी अर्थ-मन्त्री को विश्वास है कि ६ करोड़ ५२ लाख का सम्भावित घाटा भी न रहेगा। घाटा दूर होने का एक बड़ा कारण यह है कि वस्त्रों और चीनी पर से कण्ट्रोल हटाने से व्यापारियों ने जो लाभ उठाया, उसमें सरकार ने भी एक हिस्सा लिया। शरणार्थियों पर खर्च होने का जितना अनुमान था वह सब खर्च नहीं हुआ। इसी प्रकार सैनिक और मुल्की खर्च में अनुमान से १२ कोटि १० लाख रु० कम खर्च होने का अनुमान है।

इसी प्रकार इस वर्ष भी अनेक मदों में बचत की आशा की जा सकती है। पिछले साल की अपेक्षा इस साल देश के अन्दर ९ लाख टन अधिक उत्पन्न हुआ है। दूसरे आयात अन्न पिछले साल की अपेक्षा कुछ सस्ते भाव से मिलने की आशा है। अतः अर्थ-मंत्री द्वारा सम्भावित घाटा न होगा। यह ठीक है कि अन्न-स्थिति सुधरने की आशा नहीं है, क्योंकि दुनिया की आबादी २० कोटि और अधिक बढ़ गई है, पर अन्न-उत्पादन ७ प्रतिशत घट गया है। यह होते हुए आशा करनी चाहिए कि यदि कर-वसूली कड़ाई से की गई, तो २॥ कोटि का सम्भावित घाटा साल के अन्त में न रहेगा। इस आशा और विश्वास का एक कारण है। भारत और पाकिस्तान के बीच भी अब जकात लगने लगा है। इससे भारत को ९ करोड़ रु० की आय होने की आशा है। यदि यह सम्भावना पूरी हुई तो बचत घाटे का न होकर बचत का होगा। उस अवस्था में जीवनोपयोगी और जीवन-व्यवहार की चीजों पर कर लगाने का समर्थन करना कठिन है।

मुद्रास्फीति

मुद्रास्फीति की समस्या टेढ़ी होती जाती है। अर्थ-मंत्री का कहना है—'जहाँ मुझे मुद्रास्फीति से लड़ना है, वहाँ राष्ट्रीय व्यय का भी मुझे इस प्रकार नियंत्रण करना चाहिए, जिससे मुद्रास्फीति न बढ़े बल्कि जनता के रोजगार में वृद्धि हो।' आर्थिक ढाँचे से मुद्रास्फीति के भार को कम करने, और धीरे धीरे मूल्य गिरने देने के उद्देश्य से यह आवश्यक है कि अत्यधिक क्रम-शक्ति करों-द्वारा जनता को बाण्ड बेचकर दूर कर दी जाय। इसके साथ ही वेतन और मुनाफे में भी कण्ट्रोल होना चाहिए। बजट दर इस विषय में चुप है। माल और सेवा के रूप में वास्तविक आय और मुद्रा-आय के बीच के अन्तर को उत्पादन के प्रयत्नों को बढ़ाने से ही दूर किया जा सकता है। इस दृष्टि से आर्थिक विकास और राष्ट्र-निर्माण के कार्यों पर पूँजीगत व्यय का बहुत महत्त्व है।

राष्ट्रीय ऋण

भारत का राष्ट्रीय ऋण इस समय १८ अरब रुपया है। इसके अतिरिक्त पोस्टल सेविंग बैंक, कैशसार्टिफिकेट, सेविंग बैङ्क, प्रावीडेण्टफण्ड की जिम्मेदारी गवर्नमेन्ट पर है। यह ४ अरब रुपया है। इस प्रकार कुल राष्ट्रीय ऋण २२ अरब रु० है। इसमें से १३ अरब रु० आय-उत्पादक कार्यों में लगा हुआ है। अकेले रेलवे में ७ अरब रु० लाभ हुआ है। प्रान्तीय सरकारों और रियासतों को भी कर्ज दिया हुआ है। पाकिस्तान पर भारत का ३ अरब रु० कर्ज है। पाकिस्तान यह कर्ज ५० सालों में चुकायेगा। भारत इस कारण से पाकिस्तान को दिवालिया होता हुआ कभी न देख सकेगा। इसके अतिरिक्त २५० कोटि रु० नगदी है; जो इस साल के अंत में १५० कोटि रु० रह जायगा। इसलिए भारत पर ७५० कोटि रु० का ही ऐसा कर्ज है, जो उसको चुकाना है। यदि भारत की राष्ट्रीय आमदनी ४५ अरब रु० मान ली जाय तो मालूम होगा कि भारत के लिए ७५० कोटि रु० कर्ज असह्य नहीं है। इसलिये गवर्नमेंट दामोदर नदी, महानदी, कोसी नदी, ताप्ती, चम्बल और नर्मदा नदी घाटी की योजनाओं के लिए सरकार विश्वास के साथ कर्ज ले सकती है और सरकार द्वारा कर्ज लेने की योजनाओं के पूर्ण सफल होने में कोई सन्देह नहीं किया जा सकता।

भारत की आर्थिक स्थिति दृढ़ है और उसका भविष्य उज्ज्वल है। घाटे का बजट १९४८-४९ में ही सन्तुलित हो जायगा, इसलिए सरकार की बचत-योजनाओं को सफल बनाने में जनता को पूर्ण सहयोग देना चाहिए।

* * *

लंदन में एक वेसवले स्टेशन है जहाँ एक समय ९९,००० आदमी रह सकते हैं।

* * *

स्काटलैंड में स्वच्छ पानी का धरातल २,००,००० एकड़ है। नदियों द्वारा ढकी भूमि ६,५०० मील है।

* * *

विलायत के शिक्षित समुदाय में ५१ प्रतिशत कहानियाँ, ३४ प्रतिशत नाटक और १५ प्रतिशत साहित्य का अध्ययन करते हैं।

* * *

स्वास्थ्य और व्यायाम

पपीता

स्वास्थ्य के लिए एक उपयोगी फल

लेखक, श्री छेदीलाल त्रिपाठी वैद्य

स्वास्थ्य को चिरस्थायी बनाने के लिये फलों का प्रयोग करना आवश्यक हो जाता है। आसानी से प्राप्त होनेवाले फलों में हम आम, अमरूद और पपीता की बात सोच सकते हैं। पपीता अधिक रसीला फल न होते हुये भी शरीर के रक्त को स्वस्थ बनाने की शक्ति रखता है। आम की तरह यह भारी नहीं होता। पपीता दूसरे फलों की अपेक्षा जल्दी तैयार होता है। उदाहरण के लिये इमली में पैंतीस या चालीस वर्ष के पश्चात् फल लगते हैं, लेकिन पपीता लगाने के कुछ ही महीनों बाद फलने लगता है।

वाशिंगटन नाम का पपीता अमेरिकन किस्म का है, इसके दूध की कीमत इसके फल से कहीं अधिक होती है। इसके दूध से पेपसिन नाम की दवा बनती है। इनके पौधों की उँचाई जब ३-४ इंच हो जाती है तो उसमें कुछ अच्छी खाद दी जानी चाहिए, फिर उन्हें थोड़ी थोड़ी दूर पर लगवा देना चाहिए। इसके पेड़ों को धूपवाली जगह में लगाना चाहिए।

किसी इमारत का पूर्वीय भाग पपीता लगाने के लिये ठीक होता है। इस फल के वृक्ष की सेवा बहुत अधिक होनी चाहिए। पानी इन्हें बहुत अन्दाज से देना चाहिए। थोड़ा-सा भी ज्यादा पानी इनकी जड़ों को खराब कर देता है। कम पानी देने से पौदा ठीक न उगेगा। लाल चींटियाँ अकसर इसकी जड़ में लग जाती हैं, इनके बचाने के लिये गोबर की खाद और मिट्टी का तेल प्रयोग में लाना चाहिए।

माघ-पूस में लोग इसका पौदा नहीं उगाते। गर्मी में कहते हैं कि धूप में कौन परिश्रम करे, ऐसा न सोचना चाहिए, क्योंकि पपीता का पेड़ तो अपने आंगन में भी लगाया जा सकता है, लेकिन इस पेड़ को लगाने के पहले इसकी जमीन को ठीक कर लेना चाहिए। इसकी मिट्टी में गोबर, करंज की खली, हड्डी की बुकनी और राख मिलानी चाहिए। इसमें मिलाई जानेवाली राख लकड़ी की होनी चाहिए। इन सब चीजों के अतिरिक्त इसकी मिट्टी के साथ चूना अवश्य रहना चाहिये। इस प्रकार खाद तैयार करके पपीता के पेड़ लगाने चाहिए।

पपीता की खेती करने में तीन बातें बहुत आवश्यक होती हैं।

(१) पपीता ऊँची जमीन में लगाना चाहिये।

(२) पपीता की जड़ के पास पानी नहीं इकट्ठा रहना चाहिए,—पानी थोड़ी देर रुककर बह जाना चाहिये।

(३) खाद और निकौनी का ध्यान बराबर रहना चाहिए।

प्रायः देखा जाता है कि बरसात बीत जाने के बाद लोग इनके पेड़ों को पानी कम देते हैं, लेकिन ऐसा करना भारी भूल है। पपीता एक सुकुमार पेड़ होता है। एक पखवारे में कम से कम इसे दो बार पानी अवश्य देना चाहिए। पपीता सितम्बर में फूलकर मार्च में फलने लगता है। अगर किसी पेड़ में फल अधिक लग जायँ तो उनको तोड़कर कम कर देना चाहिए, क्योंकि अधिक फल लगने से फलों की बाढ़ रुक जाती है। फलों में जब तक पीलापन न दौड़ जाय उस समय तक फल को तोड़ना न चाहिए। जो फल डाल में ही पकता है उसका स्वाद तोड़कर पकाये हुए फल की अपेक्षा अधिक स्वादिष्ट होता है। पपीता लगाने से लोगों को लाभ अधिक होता है, क्योंकि यह अधिक महँगा नहीं होता। साधारण आदमी इसकी फसल के दिनों में इसे खरीद सकता है।

खाद के अलावा इस फल में वि
श्रम भी नहीं है। किसानों को
अवकाश के समय में वह पपीता
अवश्य करें, इससे उनकी आय
होने के साथ उनका और उनके
का स्वास्थ्य भी सुधर सकता है।

"ये हैं आनन्द मिश्र...

अभी आफिस से घर आये हैं, बढ़िया चाय पीने के लिये बेताब हैं। पर बेचारे को अच्छी चाय नहीं मिल सकती क्योंकि केतली का पानी सुबह से अब तक खौल ही रहा है। अच्छी चाय के लिये फौरन खौले पानी की जरूरत होती है।

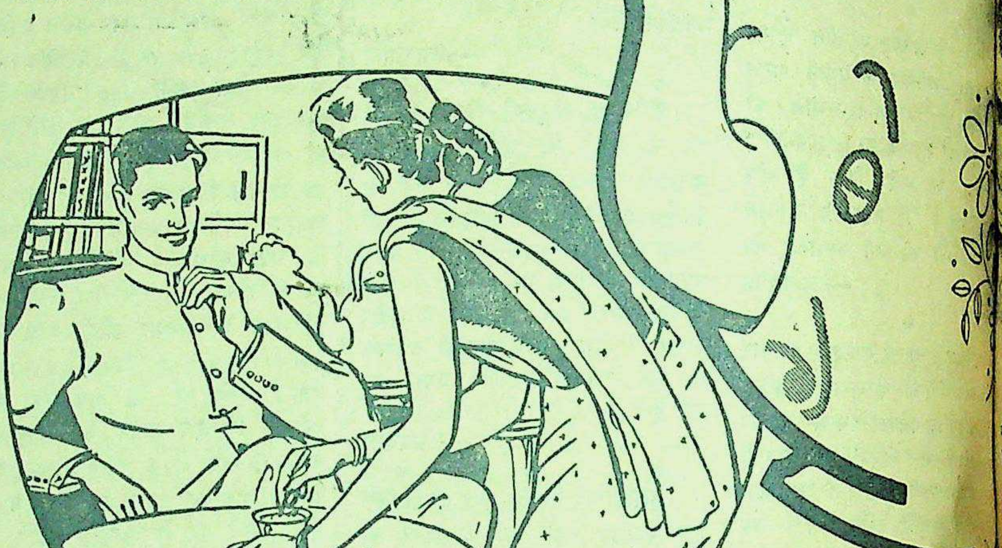

खुशी और तरोताजगी हासिल करने के लिये करोड़ों व्यक्ति चाय पीते हैं। कितने अफसोस की बात है कि बहुत से चाय पीने वाले इतना भी नहीं जानते कि अच्छी चाय कैसी होती है या कैसे बनाई जाती है। अच्छी चाय बनाने में कोई विशेष खर्च या तकलीफ नहीं होती, सिर्फ पांच सरल नियम मानना काफी है। अपने पैसों की पूरी कीमत और चाय का पूरा स्वाद लेना हो तो इन नियमों को याद कर लीजिये और घर में उनका हमेशा पालन हो इसका ख्याल रखिये।

पाँच सरल नियम

★

१. सिर्फ ताजा और फौरन् खौला पानी लीजिये। २. चाय के बर्तन को पहले गर्म कर लीजिये। ३. हर व्यक्ति के लिये एक चम्मच और एक चम्मच बर्तन के लिये सूखी चाय डालिये। ४. तीन से पाँच मिनट तक चाय को सीझने दीजिये। ५. दूध प्याले में मिलाइये, बर्तन में नहीं।

चाय-चर्चा नामक पुस्तिका अंगरेजी, हिन्दी, बंगला, उर्दू या तामिल किसी भी भाषा में कमिश्नर, इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड, १०१, नेताजी सुभाष रोड, पोष्ट बक्स २१७२, कलकत्ता से आवेदन कर मुफ्त मँगाई जा सकती है।

सबसे अच्छी

अच्छी-बनी

चाय

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

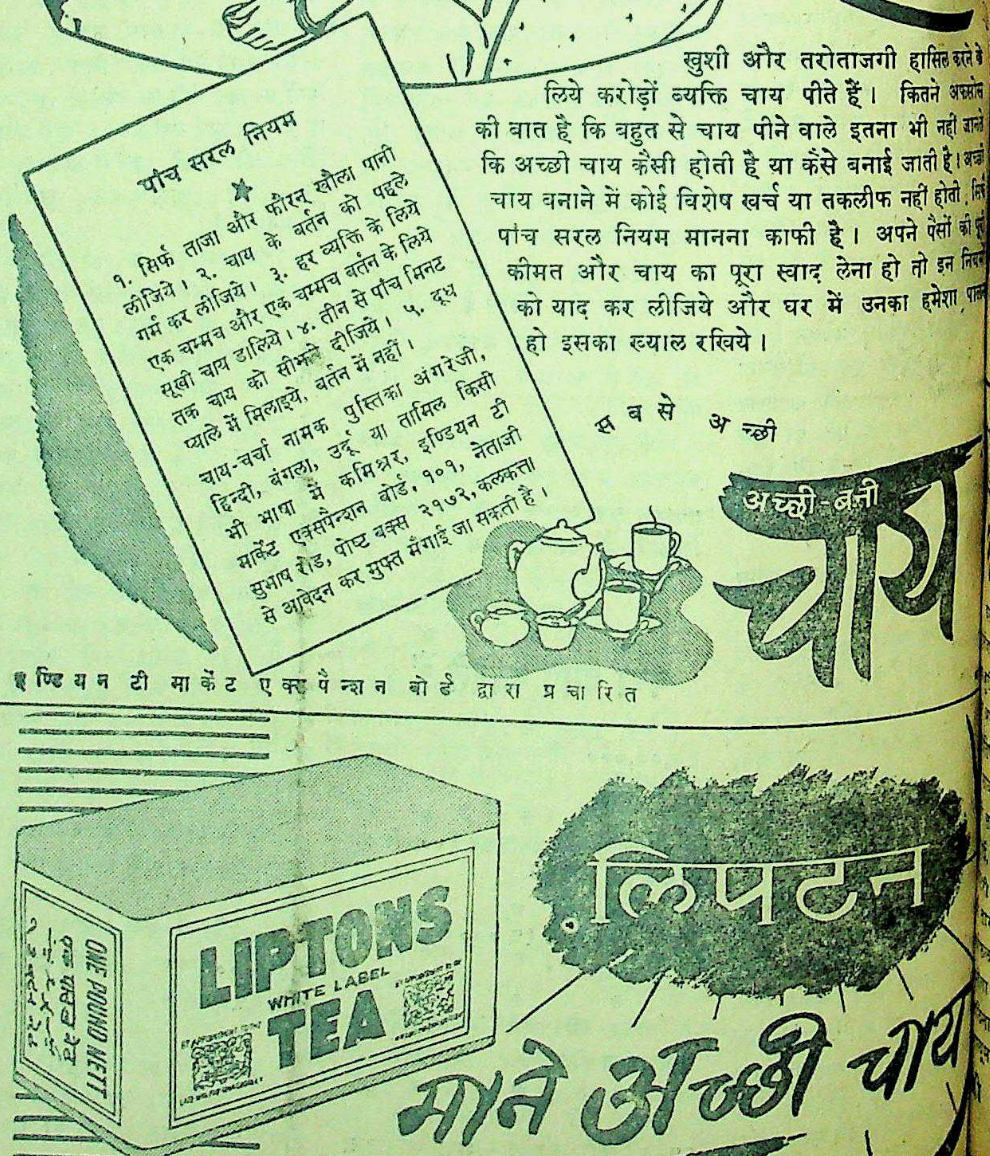

तो केवल ऑमलेट —

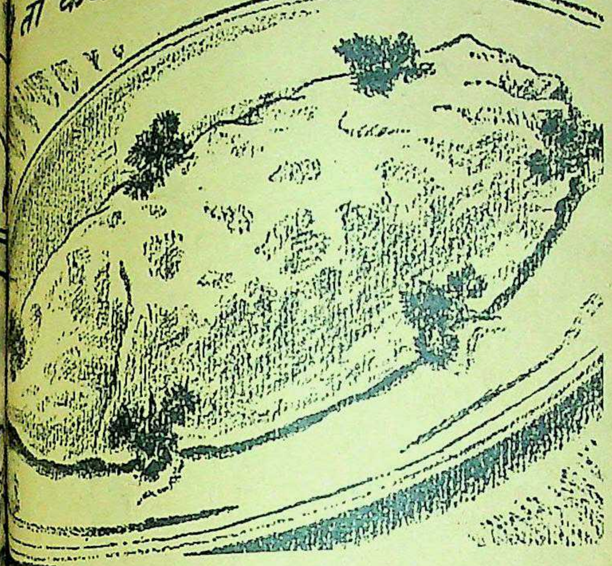

परन्तु **डालडा** में

बनाने से कितना स्वादिष्ट !

ल्दी को अन्डे के पोले भाग से पृथक करें और सफेदी को गाढ़ा होने तक फिर अन्डे के पोले भाग को इस में मिलाकर ५ मिनिट तक फेंटिये। इस में कतरे हुए कुचले हुए मटर अथवा टमाटर के बारीक बारीक टुकड़े, नमक और काली मिर्च लाने के लिये डालिये। एक तवे पर डालडा को गरम कीजिये और इस में डेलिये। एक तरफ़ कुछ लाल होने तक तलिये फिर दोहरा कर के पलट दूसरी ओर भी पहिली तरह लाल कीजिये और गरम गरम परोसिये। आप इसे गे।

आप अपने राशन के अनाज को अधिक समय तक कैसे चला सकते हैं?

मुफ़्त सलाह के लिये लिखिये:

दि डालडा

एड्वायज़री सरविस

पोस्ट बॉक्स नं० ३५३, बम्बई १

HVM. 70A-172 HI

१९४८ में क्या होनेवाला है

वर्ष आकाश में तारा-मण्डल की कौंसिल में एक बड़ी भारी उथल-पुथल रही है। अगर आप इस साल में होनेवाले परिवर्तनों यानी अपनी भली दशा समय से पहले ही जानना चाहते हैं तो आज ही केवल एक पोस्टकार्ड पूरा पता और किसी फूल का नाम लिखकर भेज दें। बस फिर हम विद्या द्वारा आपके आनेवाले १२ महीने का लाभ या हानि, किस तिजारत होगा, किस जरिये से रुपया मिलेगा, नौकरी, तरक्की, तनज्जली, सन्तान का सुख, स्वास्थ्य, बीमारी, दूर की यात्रा, मुकदमा और सफलता शादी, जमीन या जायदाद का सुख, किसी से नया मेल या नया सट्टा व या किसी अज्ञात साधन से धन का मिलना, सारांश यह कि कार्ड लिखने तारीख से लेकर १ वर्ष तक होनेवाली कुछ बातों का खुलासा यानी मासिक बनाकर केवल १।) में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाकखर्च ऊपर से । बुरे ग्रहों की शान्ति के उपाय भी लिखा जायगा जिससे आनेवाली आपदाओं को दूर किया जा सके। एक बार परीक्षा से ही आपको भली भांति पड़ जायगा कि हमको कहां तक ज्योतिष विद्या में ज्ञान प्राप्त है।

स्वामी योगीराज ज्योतिष आश्रम (D.D.A) फगवाड़ा

रियासत कपूरथला

भारत माता

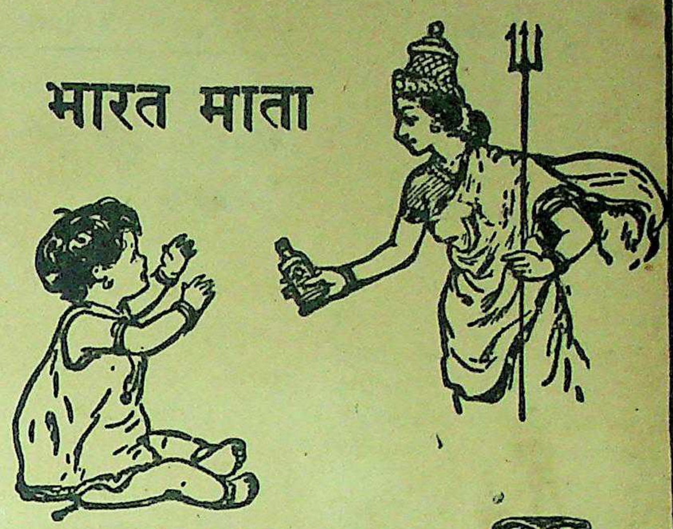

अपने बच्चों से कहो ! कि

वुड वर्ड का ग्राइप वाटर

बच्चों को तंदुरुस्त रखता है

WOODWARD'S

GRIPE WATER

keeps baby well

“सर्प से लड़ता हुआ बालक” ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की हिचान है इसलिये माता जी ! आप अपने बालक के हित के लिए इसको अवश्य देख लिया करें।

WW 117—117 W. WOODWARD LTD., LONDON. ENGLAND.

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे “वीर्य संजीवनसत” ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ “तिला मस्ताना” की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५।=), डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

500

Marriage Proposals, Officers, Millionairs, Girls 16 to 40 years.

READ & ADVERTISE IN

“MARRIAGE GAZETTE”

BARNA STREET, SADDAR BAZAR, DELHI.

Subscription Rs. 10/-

मेरी तरह तन्दुरुस्ती हासिल करो
खराब खून को साफ करता है
डा. वामन गोपाल
आयोडाइज्ड सार्सापरिला
हर जगह मिलता

[illegible]ाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद
[illegible]लाल जौहरी एल० ए० ओ०धोलकिया
[illegible]

५०० पौण्ड इनाम

‘ओटोजन’ टानिक आपने परिष्कृत सूत्र में विगत वर्षों की अपेक्षा चौगुना शक्तिदायक और प्रभावशा उपयोग से स्त्री या पुरुष अपनी वास्तविक उम्र से १५ से २० साल तक छोटे दीखने लगते हैं। प्रारम्भिक २४ ही सजीवता और शक्ति में होनेवाली आश्चर्यजनक वृद्धि उल्लेखनीय है। यदि आप शक्तिहीनता, क्षीण स्मृति शून्यता, अशुद्ध रक्त, अस्वस्थ त्वचा, खिन्नता, अनिद्रा, घुमनी, मानसिक अथवा शारीरिक थकावट आदि से ग्रस्त हैं, पार्कर द्वारा आविष्कृत ओटोजन (टानिक) में आपके लिए एक नवीन आशा है। एक सप्ताह में ही यह ५ से वजन बढ़ा देता है। आपके गालों पर लाली आ जाती और आपकी मुद्रा शत-प्रतिशत उन्नत दीखने लगती है। आभा और दीप्ति वैसी ही हो जाएगी जैसी कि तरुणाई में थी जब कि आपकी चमड़ी मुलायम और ताजी थी। आपकी आकृति को उन्नत बनाता और आंखों में एक दीप्ति, गालों और ओठों पर ललायी भर देता है। ओटोजन अधिक के एक दुर्बल रोगी पर आजमाया गया था। इस अलौकिक औषध के लगातार एक महीने के सेवन से, सौ रोगी ने ३० वर्षीय तरुण-जैसा स्वास्थ्य प्राप्त किया था। हालीवुड के अभिनेता और अभिनेत्रियां, ८० और ९० वर्ष उम्र में भी इस औषध के सेवन से छबीले, तरुण और आकर्षक हैं और रंगमंचों पर उत्साहपूर्वक अभिनय कर रहे हैं और इंगलैंड में हजारों व्यक्तियों ने इसकी परीक्षा और सराहना की है और अब भारतवर्ष में भी यह उपलब्ध है।

बीसवीं सदी का यह आश्चर्यजनक आविष्कार और संसार का आठवां आश्चर्य है। **ओटोजन** के सेवन से की कली का सौन्दर्य और स्कूल की छात्राओं जैसा आकर्षक रूप प्राप्त कर लेती हैं। मधुर, उज्ज्वल और भाग्यशाली दिन और स्त्रियों—दोनों को—पुनः प्राप्त हो जाते हैं, जो **ओटोजन** का सेवन करने लगते हैं। **ओटोजन** का सेवन शीघ्र और १०० वर्ष तक तरुण, चुस्त, शक्तिशाली और मुख पर गुलाब की लाली के साथ स्वस्थ रहिए। इससे भूख जाती है कि एक कमजोर व्यक्ति भी एक पौंड अथवा इससे भी अधिक मक्खन प्रतिदिन आसानी से पचा सकता है। का प्रभाव देखकर संसार के बड़े-बड़े वैज्ञानिक तथा अनुभवी डाक्टर चकित रह गए।

ओटोजन अपने ढंग का एक ही टानिक है, जिसका प्रयोग संसार भर के स्त्री-पुरुष करते हैं। चिकित्सा इतिहास में यह अभूतपूर्व और आश्चर्यजनक आविष्कार है। आज से ही ‘ओटोजन’ का सेवन प्रारम्भ कर दें और देखें। हां, प्रारम्भ करने के पूर्व अपना वज़न तथा दर्पण में अपनी आकृति देख लें। एक सप्ताह के बाद पुनः ध्यान दें कि वास्तव में आप कैसे दीखने लगे हैं और **ओटोजन** के सेवन का क्या प्रभाव पड़ा है।

प्रति डिब्बे की कीमत ५) पांच रुपए (डाकखर्च और पैकिंग अलग)।

गारण्टी—किसी भी वैज्ञानिक या आयुर्वेदवेत्ता अथवा जन-साधारण को इस आश्चर्यजनक आविष्कार सिद्ध करने पर ५०० पौंड इनाम दिया जाएगा।

प्रमुख औषध-विक्रेताओं अथवा भाण्डारों में बेचा जाता है अथवा सीधे मँगवाइए—

दी ओटोजन लेबोरेट्रीज़

भारतवर्ष का आफिस :—पोस्ट बाक्स नं० ४४७, बंबई।

जुकाम सर्दीपर अकसीर उपाय

अमोद

१८६६

नीलगिरि तैल

[illegible]

पी. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

सभी दर्द २० मिनटों में दूर करने के लिये

सारिडन

स्वास्थ्य में चमकते हुये बालों के लिये

“सुरैया”
जमुना प्राडक्शन्स कृत
“दो-दिल”

Vaseline
POMADE
CHESEBROUGH MFG. CO.
NEW YORK, U.S.A.

कोमलता से सुगंधित किया गया वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।

वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।

T B
टी० बी० **“तपेदिक” रोग के हताश रोगियो—**

जबरी (jabri) का नाम नोट कर लो, यही इस दुष्ट रोग से रोगी को बचानेवाली शक्तिशाली औषधि है। एक बार परीक्षा करके देख लो, ही नमूना रखा गया है, जिसमें तसल्ली हो सके। मूल्य नं० १ (स्पेशल) पूरा दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन २०) रु०। ‘जबरी’ नं० २ पूरा २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु० महसूल आदि अलग है। आज ही देकर रोगी की जान बचावें। तार का पता “jabri” jagadhri

पता :—रायसाहब क० एल० शर्मा, रईस (D) ‘जगाधरी’ (E.

गुरुकुल. कांगड़ी.

सचित्र
साप्ताहिक
(वार्षिक मूल्य ७॥) : प्रति संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

२३ मई, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 23th May, 1948

पारिभाषिक शब्दों का निर्माण
युद्ध की क्या संभावनायें हैं ?

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

आज की हवाई यात्रा का क्या रहस्य है
रंगमंच, मातृमन्दिर और हास-परिहास

मुफ़्त

युवको ! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीवन फीका हो चुका हो तो भारत भर में प्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त रोग विशेषज्ञ कविराज ब्रह्मसरूप बी० ए० लाहौर वाले फतेहपुरा (D.A.) देहली से मशविरा (सम्मति) मुफ़्त लेकर अपना जीवन सुधार लें।

मुफ़्त :—"ओटो फ्लावर्स" सुमधुर सुगंध के लिए विख्यात है। आज ही मँगाकर नाम रजिस्टर कीजिये। प्रत्येक सेट (३ दर्जन की बिक्री पर रजिस्टर नं० अनुसार मुफ़्त में एक असली—**"रिस्ट-वाच"** दी जा रही है। कम से कम छै शीशी भेजी जाती है। की० नौ रु० दर्जन, डाक पैकिंग अलग।

ALBERT (D.A.) एलबर्ट
पो० बक्स ४७: जमशेदपुर।

मुफ़्त ! मुफ़्त !! मुफ़्त !!!

आप घर बैठे मैट्रिक, एफ० ए०, बी० ए०, पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से और होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ़्त मँगायें। पता :—

इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

एलाइड लाउडस्पीकर पर
इत्मिनान रखिये
ब्याह
मेले
जलसे
सरकस
तथा
हर मौके पर इस्तेमाल कीजिये
ALLIED
खरीदिये या किराये पर
लीजिये
एलाइड एलेक्ट्रिक एण्ड
रेडियो कारपोरेशन
हज़रतगंज कैनिंग रोड
लखनऊ एलाहाबाद

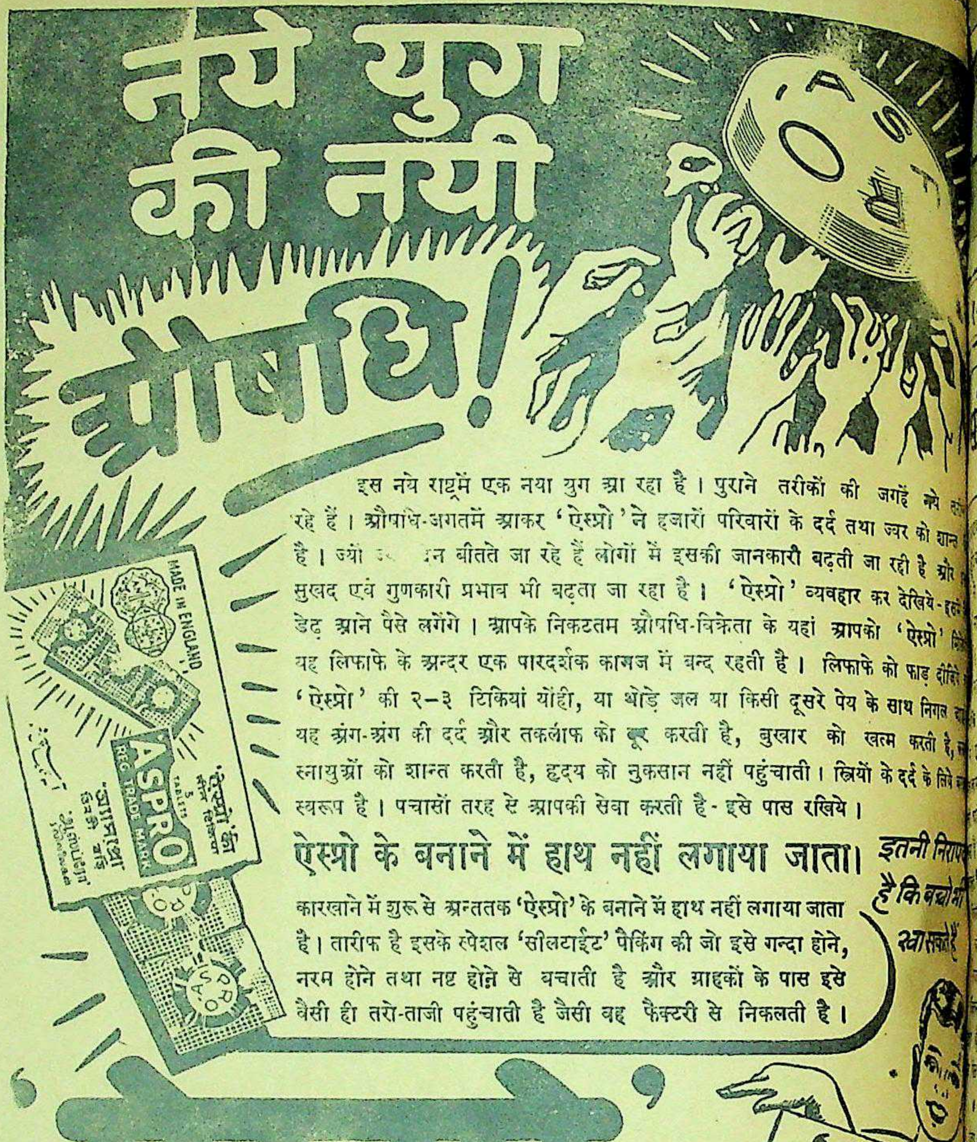

नये युग
की नयी
औषधि!
ASPRO
MADE IN ENGLAND
इतनी निराप
है कि बच्चे भी
खा सकते हैं
'ऐस्प्रो'
मनुष्य-मात्र
की दवा
शीघ्र फायदा
पहुंचानेवाली
नये ढंग से
तैयार
अत्यंत निरापद
एवं विशेष
प्रभावशाली
महौषधि है
73 HN.

इस नये राष्ट्रमें एक नया युग आ रहा है। पुराने तरीकों की जगहें नये रहे हैं। औषधि-जगतमें आकर 'ऐस्प्रो' ने हजारों परिवारों के दर्द तथा ज्वर को शान्त है। ज्यों ज्यों दिन बीतते जा रहे हैं लोगों में इसकी जानकारी बढ़ती जा रही है और सुखद एवं गुणकारी प्रभाव भी बढ़ता जा रहा है। 'ऐस्प्रो' व्यवहार कर देखिये-इस डेढ़ आने पैसे लगेंगे। आपके निकटतम औषधि-विक्रेता के यहां आपको 'ऐस्प्रो' यह लिफाफे के अन्दर एक पारदर्शक कागज में बन्द रहती है। लिफाफे को फाड़ दीजि 'ऐस्प्रो' की २-३ टिकियां योंही, या थोड़े जल या किसी दूसरे पेय के साथ निगल यह अंग-अंग की दर्द और तकलीफ को दूर करती है, बुखार को खत्म करती है, स्नायुओं को शान्त करती है, हृदय को नुकसान नहीं पहुंचाती। स्त्रियों के दर्द के लिये स्वरूप है। पचासों तरह से आपकी सेवा करती है- इसे पास रखिये।

ऐस्प्रो के बनाने में हाथ नहीं लगाया जाता।

कारखाने में शुरू से अन्ततक 'ऐस्प्रो' के बनाने में हाथ नहीं लगाया जाता है। तारीफ है इसके स्पेशल 'सीलटाईट' पैकिंग की जो इसे गन्दा होने, नरम होने तथा नष्ट होने से बचाती है और ग्राहकों के पास इसे वैसी ही तरो-ताजी पहुंचाती है जैसी वह फैक्टरी से निकलती है।

'ऐस्प्रो'
दर्द को शांत करती है-ज्वर को खत्म करती है
हृदय या पेट को नुकसान नहीं पहुंचाती।

इन रोगों के लिये 'ऐस्प्रो' लीजिये

- सिर की दर्द
- सर्दी-बुखार
- डेंगू ज्वर, दांत की दर्द
- पीठ की दर्द
- गांठ-गांठ की दर्द और खींचन
- गले की खसखसाहट
- अनिद्रा
- गंठिया
- स्त्रियों के मासिक दर्द

डिस्ट्रिब्युटर्स :
[illegible] (इंडिया) लि.
[illegible] कलकत्ता व शाखा.

मात्रा :
१ से ३ टिकियां

२ टिकियां-१॥ आना ३० टिकियां-१५ आना

देशदूत में विज्ञापन देकर लाभ उठाइए

[रविवार, २३ मई, १९४८
संख्या ३७]

बापू के बलिदान पर उर्दू के कवियों से*

लेखक, श्री 'बच्चन'

तुम पिए पड़े हो कहाँ 'शायरे इन्कलाब,'
देखो जो भारत के सिर के ऊपर अजाब,
गांधी की हत्या ! 'जोश', बात कितनी अजीब,
अब करो होश, हिन्दोस्तान के तुम नकीब।

तुम किस 'फिराक' में पड़े हुए रघुपति सहाय,
बापू के उठने से है भारत निःसहाय,
'शब नमिस्तान' के मोती पर मत हो निसार,
हिन्दोस्तान के आँसू भी करते पुकार ।

हजरते 'मोहानी' भारत के सबसे महान
नेता का फिरकेबन्दी ने ले लिया प्राण,
तुम अब भी उसके घेरे से बाहर आओ,
अपने यौवन का क्रांतिपूर्ण स्वर दुहराओ !

ओ 'जिगर' देश का जिगर गोलियों का शिकार,
छाया है तुम पर अब भी जामों का खुमार,
ख्वाबी खुशियों में मुल्क-मुसीबत मत भूलो,
गिरती कौमों के शायर ही दारोमदार।

'सागर', अब संत तुम्हारा गांधी चला गया,
वह नफरत के कालिया नाग से छला गया,
इस दो मुँह-जिह्वा के जहरीले कीरे को,
कीलो कोई जादू का गाकर गीत नया।

सरदार जाफरी, जाति आज सरदार हीन,
भारत माता का चेहरा मातम से मलीन,
इन्सानों में से इंसानियत मिटाने को
तैयार आज हिन्दू-मुस्लिम के धर्म दीन।
तेरी जबान में ताकत है, दिल है दिलेर,
है जानदार तेरी कविता का शेर-शेर,
उठ अपना रोशन कलम उठा, मत लगा देर,
मुल्की सियाहपन को करता है तुझे जेर,
है हमें बनाना नया एक हिन्दोस्तान,
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई जिसमें समान !

---

*'खादी के फूल' से

धी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

के निजाम की दशा साँप
हो रही है। एक ओर
मचा रखा है। दूसरी
उन्हें दिल्ली बुलाने
वह है कि हैदराबादी
की बात क्यों मानने
तो हिन्दुस्तानियों की
अब उनके आक़ाओं के
माउन्टबेटेन ने उन्हें
निमंत्रित किया है।
साहब किधर करवट
तो ठीक है लेकिन
टाली जाये यही एक
साहब की कृपा से
पका रहे हैं।
राज्य में करते बन
देखना है हैदराबादी
है ?

* * *

भीषण हत्याकाण्ड में
हुई थी वह किसी से
ही हिन्दू महिलाओं
कर गये। मुस्लिम
के गले पड़ीं। बहर-
कि जो दुर्दशा हुई
हृदयविदारक है।
हिन्दुस्तान और पाकि-
हुआ कि अपहृत
वापस कर दे।
स्त्रियाँ पाकिस्तान को
है किंतु पाकिस्तान कान में
है। नेहरू सरकार बड़े न्याय
रही है, लेकिन पाकिस्तानी
बिरादर और हवाई सरकार स्त्रियों को वापस भेजने की तनिक भी जरूरत नहीं समझता। यह है हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का समझौता। पाकिस्तानी भला कब स्त्रियों को लौटालने लगे ? वह तो स्त्रियों के भूखे हैं हां।

* * *

पाकिस्तानी पार्लामेंट ने एक प्रस्ताव पास किया है कि मुस्लिम लीग को अरबों के प्रति सहानुभूति दिखानी चाहिए। जरूर दिखानी चाहिए, क्योंकि सहानुभूति दिखाने में गाँठ का क्या खर्च होता है ? पाकिस्तान पहले अपने घर तो सँभाल ले और वहाँ के मुसलमानों का भला करने पर तैयार हो जाये तो कुछ बात भी है। सुदूर अरबों से कोरी सहानुभूति दिखाने से कुछ हाथ नहीं लगेगा। मिस्टर जिन्ना और मिस्टर लियाकत अली की बुद्धि अब कहाँ चली गई ? अब तक उन्होंने गोरों के साथ कितनी सांठ-गांठ की; गोरे योरोप में गोरों का ही राज्य चाहते हैं कालों का नहीं, यह भी समझने की बात है।

* * *

सोवियट रूस इस वक्त यहूदियों से सहानुभूति प्रकट करते हुए अमरीका का साथ दे रहा है। इसको कहते हैं रूसी राजनीति। कहावत है कि दुश्मन अगर कुएँ में पैर लटकाकर बैठ जाये तो पीछे से उसे उसमें ढकेल देना ही बुद्धिमानी है। चर्चिल एण्ड कम्पनी योरप में गोरों का सङ्गठन कर रही है तो अमरीका और ब्रिटेन कब चाहेंगे कि लम्बी दाढ़ीवाले अरब योरप में आकर अपना राज्य स्थापित करें ? योरोपियनों के न जाने किस पाप से टर्की ही योरोप में जा पहुँचा है। एक गलती हुई तो हुई अब अरबों को फिलिस्तीन में घुसेड़कर गोरे अपनी बेवकूफी का प्रदर्शन नहीं कर सकते। सोवियट रूस का दाँवपेंच समझने योग्य है।

* * *

रही बात यहूदियों की। इसमें तो कोई संदेह ही नहीं है कि फिलिस्तीन यहूदियों का ही है। जेरूसलम ईसा की जन्मभूमि है। ईसा मसीह भी यहूदी ही थे। फिर अरबों का वहाँ घुसना और घुसकर बैठने और सोने की जगह बनाने की हरकत वाकई बेजा है। अरब अपने यहाँ रहें और यहूदी फिलिस्तीन में। लेकिन इस निर्णय का सुननेवाला कौन है ? लेकिन अब तो अरबों के मददगार पाकिस्तानी लोग हैं, फिर काहे की चिन्ता ? अँगरेजों की अगर चली तो फिलिस्तीन में भी पाकिस्तान बना देंगे, और अरब वहाँ मौज करेंगे। योरोपियन बन्दरबाँट की कार्यवाही जारी किये रहेंगे। इतना ही क्या कम है ?

* * *

नागरी-प्रचारिणी सभा ने अपने सभापति बाबू सम्पूर्णानन्द पर अंगरेजी शब्दों के प्रयोग के कारण पाँच आना जुर्माना किया है। पता नहीं सभापति ने जुर्माना अदा किया या नहीं ? अपने राम की राय में सभा को चाहिए, जुर्माने की रकम वसूल होने पर सभापति की स्मृति में एक वार्षिक पदक देने की घोषणा कर देनी चाहिए। यह कार्य एक स्थायी कार्य होगा।

* * *

काश्मीर की समस्या हैदराबाद की भाँति लटकी हुई है फिर भी शेरे काश्मीर ने फौजों के जरिए पाकिस्तानी दुश्मनों को मार भगाने का जो संकल्प किया उसका कार्यक्रम जारी है। अपने राम की राय में संसार की सुरक्षा का ठेका लेनेवाली सुरक्षा परिषद् यदि काश्मीर के मामले में मौन हो जाए और अँगरेज अपनी तिकड़मबाजी छोड़ दें तो काश्मीर का फैसला आज हो जाए। लेकिन दाल-भात के मूसलचन्द बननेवालों से पहले भगवान् काश्मीर की रक्षा तो करे ? फैसला होने में कठिनाई नहीं है।

* * *

दिवातिया सौराष्ट्र हाईकोर्ट
जज नियुक्त हुए हैं।

लेफ्टिनेंट श्री एस० डी० गुप्त का काश्मीर के युद्ध में स्वर्गवास हो गया।

सम्पादक का पृष्ठ

प्रान्तीय रक्षा दल

संयुक्तप्रान्तीय सरकार ने प्रान्त की आन्तरिक सुरक्षा की दृष्टि से प्रान्तीय रक्षा-दल के संगठन का कार्य प्रारम्भ किया है। सरकार ने प्रान्त में १२ लाख व्यक्तियों की एक ऐसे सैनिक संगठन की योजना प्रस्तुत की है जिसके द्वारा प्रत्येक गाँव में सुरक्षा का कार्य संचालित किया जा सकेगा। वर्तमान स्थिति को देखते हुए और भावी परिस्थिति की कल्पना करके प्रान्तीय रक्षा-दल के संगठन की योजना अत्यन्त उपयोगी है और सरकार की दूरंदेशी का एक जागरूक प्रमाण है। प्रधान मन्त्री के पार्लामेन्टरी सेक्रेटरी पंडित जगनप्रसाद रावत इस कार्य की सफलता के लिए चिन्तित और क्रियाशील भी हैं। रावत जी ने अपने एक वक्तव्य में रक्षा-दल की उपयोगिता, तथा जनता के हित के सम्बन्ध में पूर्ण प्रकाश डालते हुए लोगों से अनुरोध किया है कि वह कांग्रेस सरकार की इस कार्य में सहायता करें और रक्षा-दल में अधिक से अधिक संख्या में भर्ती होकर योजना को सफल बनाने में योग-दान दें।

फिर भी प्रान्तीय रक्षा-दल का कार्य जिस गति से अग्रसर होना चाहिए उस गति से नहीं हो रहा है। ऐसा क्यों हो रहा है? जहां तक प्रान्त की सुरक्षा का प्रश्न है, वहाँ तक इस संगठन से कौन सहमत न होगा? फिर भी उदासीनता क्यों दिखाई दे रही है? जनता रक्षादल के संगठन की ओर आकर्षित क्यों नहीं हो रही है? क्या जिलों के अधिकारी वास्तविक रूप से सचेत होकर इस कार्य की सफलता की ओर बढ़ रहे हैं? यह प्रश्न है जिनकी ओर ध्यान आकर्षित होना अनिवार्य है। जहाँ तक उदासीनता का प्रश्न है वहाँ तक यह स्पष्ट स्वीकार किया जाना चाहिए कि कांग्रेस तथा कांग्रेसजनों का पारस्परिक मतभेद इस समय बड़े से बड़े जनहित के कार्य में बाधक हो रहा है। यद्यपि कांग्रेस की ओर से अब एक निश्चित नीति की घोषणा की जा चुकी है, सभी कांग्रेसजनों को लोकहित के कार्य में एकमत होना ही चाहिए, कांग्रेस सरकार तथा प्रान्तीय कांग्रेस की दृष्टि में लोकहित के कार्य में मतभेद की गुंजाइश न होनी चाहिए, लेकिन बात कुछ इसके विपरीत है। कांग्रेस मंत्रिमंडल तथा प्रांतीय कांग्रेस कमेटी में बाह्य रूप से दलदल समाप्त हो जाने पर भी आन्तरिक दलदल अभी बना हुआ है। इसकी वास्तविकता का अनुभव जिलों के घाघ अधिकारी भली भांति समझते हैं, इसीलिए वह प्रान्तीय रक्षादल के कार्य में क्रियाशील होते हुए भी अकर्मण्य हैं। वह रक्षादल के कार्य की खानापूरी तो कर रहे हैं लेकिन वास्तव में कर्मठ नहीं हैं।

यदि सरकार प्रान्तीय रक्षादल की योजना की सफलता चाहती है तो उसे जिलों के अधिकारियों को चेतावनी देनी चाहिए, उन्हें एक सीमित समय के भीतर ही अपना कार्य समाप्त कर देने का आदेश देना चाहिए। इसके सिवा सरकार ने प्रान्तीय रक्षादल के प्रति जो कुछ व्यय करने का निर्णय किया है, उसमें वृद्धि करनी चाहिए, क्योंकि अभी गाँवों में वह चेतना नहीं है कि वह राष्ट्रीय सुरक्षा का वास्तविक अनुभव कर सकें। एक तो गरीबी का जीवन, दूसरे पैसे के लोभ में सर्वस्व अर्पण करने की आदत। सरकार को इस दृष्टि से भी व्यय-सम्बन्धी मद में विचार करना चाहिए। तीसरी बात यह है कि उसे अनिवार्य भर्ती का आदेश जारी करना चाहिए और प्रान्तीय रक्षादल की उपयोगिता का प्रचार प्रत्येक गाँव में होना चाहिए। शहरी अखबारों की धूमधाम से ही काम पूरा होनेवाला नहीं है। यह तो अंगरेजों का पुराना ढंग है। हमें गाँवों में व्यापक रूप से इस सम्बन्ध में प्रचार करना चाहिए और अधिकारियों को सचेत और क्रियात्मक दृष्टि से कार्य करने के लिए आगाह करना चाहिए।

इस समय आवश्यकता है अनुशासन की। हम सच पूछिए तो अनुशासन-विहीन हो गए हैं। इस पर भी पारस्परिक मतभेद विशेषकर कांग्रेसजनों का मतभेद जनता को और अनुशासनहीन बना रहा है, क्योंकि वह अनुशासन तथा अनुशासनहीनता का भेद ही नहीं समझ पाती। हम जानते हैं कि राष्ट्र के सैनिक-संगठन में कितना बड़ा अनुशासन है? प्रान्तीय रक्षादल में सम्मिलित होनेवाले को सैनिक अनुशासन की दृष्टि से ही ट्रेनिंग दी जायेगी, इसलिए अनुशासन के भय से भी प्रायः लोग उदासीन हैं। हमें पता है कि प्रान्तीय रक्षादल के प्रारम्भिक संगठन के कार्य में उच्च पदों पर कई कांग्रेसजन चुने गये, उनके बड़े-बड़े स्वप्न थे, किन्तु जहाँ वह सैनिक अनुशासन के बीच पहुँचे उनका स्वप्न भंग हो गया। वह इस्तीफा देकर अलग हो गए। यदि कांग्रेस राज्य है तो इसका यह अर्थ नहीं है कि कांग्रेसजन यदि किसी पद पर नियुक्त हो जाएँ तो अनुशासन की कोई परवाह न करें? कम से कम सैनिक अनुशासन के यह विपरीत है। वहाँ अनुशासनहीनता कभी भी सहन नहीं की जा सकती, चाहे वह कांग्रेसी हो या गैर-कांग्रेसी, ब्राह्मण हो अथवा हरिजन। इसलिए आवश्यकता है जनता को अनुशासन-पालन के कर्तव्य की ओर आकर्षित करने की।

हम अगले अंक में इस सम्बन्ध में विस्तृत प्रकाश डालेंगे, किन्तु यदि इन सुझाओं की ओर ध्यान दिया जाए तो प्रान्तीय रक्षादल के संगठन-कार्य की व्यापकता बढ़ सकती है।

क्या फिलिस्तीन में शान्ति होगी?

फिलिस्तीन का घोषणापत्र ऐतिहासिक दृष्टिकोण से विशेष महत्त्व रखता है। जेरूसलम के विनाश के पश्चात् फिलिस्तीन के बहुतेरे निवासी संसार के विभिन्न देशों में जा बसे थे। इन भागे हुए लोगों के साथ इनका धर्म सुरक्षित था और आज इसी आधार पर उन्होंने फिलिस्तीन का निर्माण करने का निश्चय किया है। लगभग २,००० वर्ष पूर्व से फिलिस्तीन के निवासी भारत के लिए वफादार थे। इस लम्बे अर्से में उन्हें अनेक आपत्तियाँ सहनी पड़ीं। किन्तु इतना होते हुए
देश के लिए अपना सक्रिय सहयोग
रहे। यहूदियों ने कला, विज्ञान,
और अन्य क्षेत्रों में बहुत कुछ
है, इसलिए हम इस बहादुर
सफलता के इच्छुक अवश्य हैं,
हुए भी घोषणापत्र में अभी बहुत
और रखनी शेष हैं। अरबों के
अन्याय हुआ है उसका बहुत
उत्तरदायित्व ब्रिटिश सरकार पर भी
है। ऐसी स्थिति में पाकिस्तान के
खिदमदगार जिन्ना साहब का यह
कि अरबों और यहूदियों की
ठीक हिन्दू और मुसलमान की तरह
अलग हैं, राजनीतिक दृष्टि से एक
खलबली पैदा कर देनेवाला है।
एक देश में दो देशी सरकारों
देखना खतरे से खाली नहीं है,
अथवा जनता की अशान्ति
अरबों के लिए लाभप्रद नहीं हो
इसी विचार से संयुक्तराष्ट्र अमेरि
निश्चय किया कि इन दोनों जाति
बीच मध्यस्थता करना आवश्यक
लेकिन संयुक्तराष्ट्र के छः सदस्य जो
लम में अपनी सफलता के लिए
उनका यहूदियों द्वारा बुरी तरह से
किया गया। उन सदस्यों को अपना
भी अपने हाथों से बनाना पड़ा था।
कुछ भी हो, फिलिस्तीन में शान्ति
व्यवस्था करना प्रत्येक अरब और
का कर्तव्य है। हमें आशा है कि
यहूदियों के बीच संसार के श्रेष्ठ
शांति-स्थापना का प्रयत्न करेंगे
अशांति जगत्व्यापी महाअशांति का
ग्रहण कर ले।

रजाकार या कजाकार ?

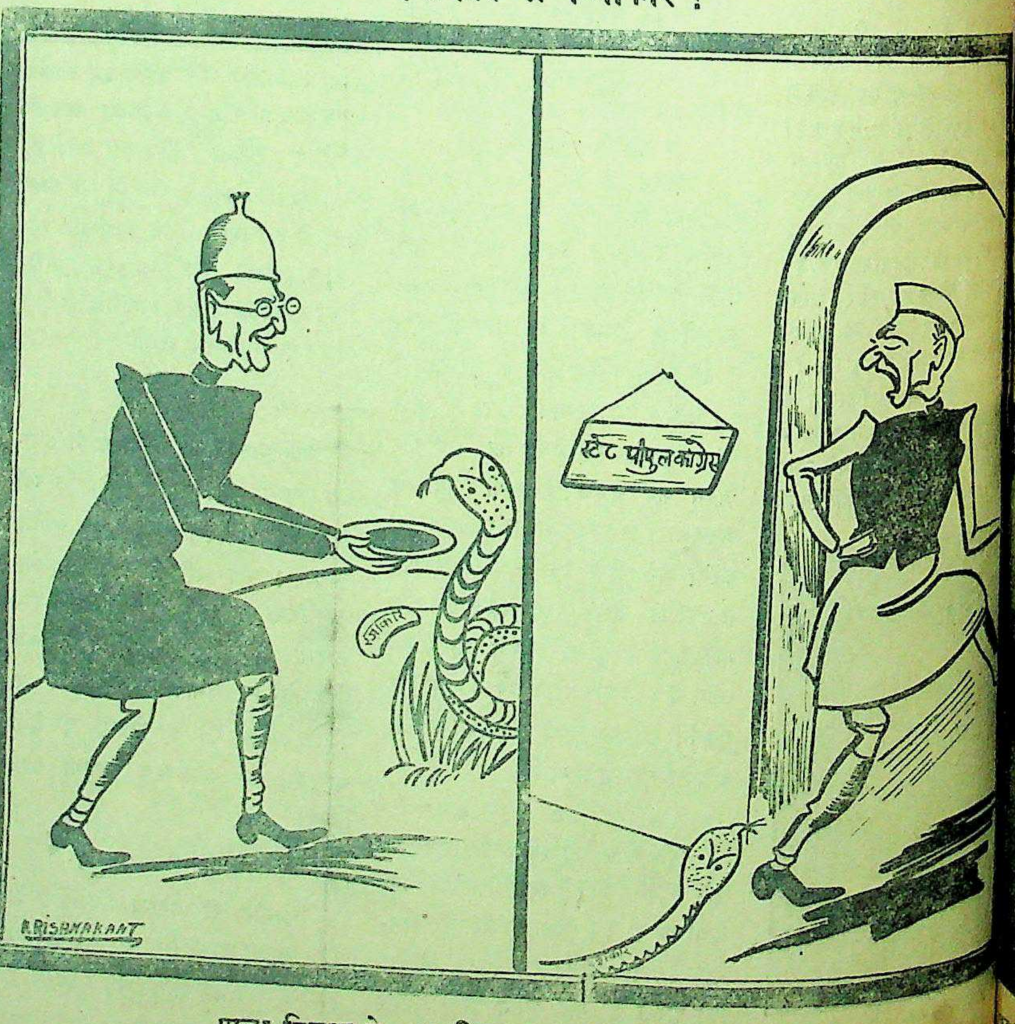

पाला निजाम ने दूध पिला, वह रजाकार संगठन बना।
जनता के लिये जरा देखो, वह कजाकार संगठन बना।

क्या महायुद्ध की संभावनाएँ हैं ?

संसार के साम्राज्यवादी राष्ट्रों पर इसकी जिम्मेदारी कहाँ तक है ?

लेखक, प्रोफेसर आशाराम, एम० ए०
(राजनीति विभाग, प्रयाग-विश्वविद्यालय)

> संसारव्यापी तृतीय महायुद्ध की कल्पना आजकल राजनैतिक क्षेत्रों में प्रायः की जा रही है। युद्ध होगा या नहीं, यदि होगा तो उसके क्या क्या कारण हैं और साम्राज्यवादी राष्ट्रों पर ही इसकी जिम्मेदारी भी होगी। इस लेख में विद्वान् लेखक ने युद्ध की संभावनाओं तथा असंभावनाओं पर तर्कपूर्ण विचार किया है। साथ ही यह भी बतलाया है कि यदि युद्ध होगा तो किन कारणों से। लेख पूर्णरूप से विचारणीय तथा पठनीय है।

में नित नई कहानियाँ गढ़ी जाती हैं। कभी कोई प्रमुख नेता वक्तव्य देता है, कभी कोई बड़ा सैनानी इसी प्रकार की बातें कहता है, कभी इस प्रकार की अफ़वाह फैलाई जाती है। जनता को रात-दिन यही बतलाया जाता है "कि रूस उसका शत्रु है, वह युद्ध की तैयारी कर रहा है, वह देशों को गुलाम बना रहा है, अमरीका संसार की स्वतन्त्रता के लिए चिन्तित है, वह युद्ध की तैयारी कर रहा है। अमरीका शक्तिशाली है, उसके पास एटम बम और भयावह शस्त्र हैं, वह शत्रु को परास्त कर देगा।"

इस प्रकार का प्रचार रूस देश और उसके सिनेमा, पत्र और रेडियो से नहीं किया जाता। पाठक आश्चर्य करते हैं कि इस संकटकाल में भी स्टालिन चुप है और मोलोतोव कभी-कभी और वह भी बहुत कम बोलता है। रूसी पत्र निर्माण-कार्य के समाचार देते हैं संहार-कार्य के नहीं।

कहा जाता है कि रूस युद्ध चाहता है; परन्तु सत्य यह है कि युद्ध की तैयारियों पर अमरीका का व्यय रूस से अधिक है और यदि साथी देशों के व्यय को भी जोड़ लिया जाए तब इस व्यय का भेद और भी स्पष्ट हो जाएगा। अमरीका युद्ध-काल की अपेक्षा आज युद्ध की तैयारियों पर अधिक व्यय कर रहा है। वह लगभग दुगना है। रूस का व्यय युद्ध-काल की अपेक्षा लगभग चौथाई है। युद्ध की तैयारियों पर रूस की अपेक्षा अमरीका लगभग छः गुना व्यय कर रहा है, यद्यपि उसकी जन-संख्या रूस से आधी है।

स्वयं ही नहीं, अमरीका अपने साथी देशों को भी युद्ध की तैयारी के लिए मजबूर करता है। ब्रिटेन ने युद्धकालीन सैन्य-शक्ति को अक्षुण्ण रखा है। यही हाल फ्रांस, बेल्जियम और हालैंड का है। अमरीका से प्रभावित पश्चिमी योरप के अन्य देश और मध्य और दक्षिणी अमरीकी देश भी इन तैयारियों में व्यस्त हैं।

कहा जाता है रूस साम्राज्यवादी है, अपना प्रसार चाहता है, अतएव उसको सीमित करना आवश्यकीय है। परन्तु उसको सीमाबद्ध करने का क्या ढंग है? यही कि सीमान्त प्रदेशों को शक्तिशाली बनाया जाए; परन्तु यह अमरीकी नीति नहीं। अमरीका को इन सीमान्त देशों और उनकी नीति पर भरोसा नहीं। अतएव वह अपनी सेनाओं को इन देशों में डाल देता है। इन देशों में अमरीकी सेनाओं के अड्डे हैं; परन्तु एक देश दूसरे देश की सेनाओं का आसानी से स्वागत नहीं करता। अतएव अमरीका इन देशों पर दबाव डालता है। आर्थिक, सैन्य और राजनैतिक धमकी देता है। जब अमरीकी सेनाएँ इन देशों में पहुँचती हैं तब वे उन देशों की राजनैतिक, आर्थिक और सैन्य स्वतन्त्रता का अपहरण आरम्भ करती हैं। अतएव, अमरीकी हस्तक्षेप के कारण संसार के अधिकांश देश उपनिवेश प्रायः बन गए हैं। वे अमरीका को कच्चा माल बेचते हैं और उसके पक्के माल की खपत करते हैं।

अमरीका की इस नीति के कारण उपरोक्त देशों की जनता इस देश के विरुद्ध हो चली है। ग्रीस और चीन में गृह-युद्ध आरम्भ हो गए हैं। इटली, जर्मनी, फ्रांस आदि पश्चिमी योरप के देशों की यही दशा हो चुकी है और ठीक अमरीका की नाक के नीचे मध्य और दक्षिणी अमरीका के अनेक देशों में क्रान्तियाँ फूट पड़ती हैं।

कहते हैं, रूस साम्राज्यवादी है; परन्तु साम्राज्यवाद के क्या अर्थ हैं? आर्थिक शोषण और राजनैतिक तथा सैन्य-नियंत्रण। अमरीका साम्राज्यवादी है, क्योंकि वह अनेक देशों का आर्थिक शोषण करता है। वह साम्राज्यवादी है, क्योंकि उसने यूनान, चीन, इटली आदि अनेक देशों का राजनैतिक और सैन्य-नियन्त्रण कर रखा है; परन्तु कौन सा ऐसा देश है जो रूस की लाल सेनाओं अथवा लाल शासकों के अधिकार में है? संसार का ऐसा कौन सा देश है जहाँ पर रूस की बैंक-पूँजी लगी है? उसके कल-कारखाने और बैंक हैं? कौन सा ऐसा देश है जिसका औद्योगीकरण, जिसकी आर्थिक उन्नति, रूस ने रोकी हो? प्रत्युत, पूर्वी योरप के देश जिनको रूस का उपनिवेश समझा जाता है युद्ध के पूर्व ब्रिटेन, जर्मनी अथवा फ्रांस के उपनिवेश-मात्र थे। यह भारत की भांति कृषि-प्रधान देश थे। आज रूस की सहायता के कारण इन देशों में उद्योग-धन्धे शुरू किए जा रहे हैं और कृषि का भी औद्योगीकरण किया जा रहा है।

युद्ध क्यों होते हैं, यह एक जटिल समस्या है। अनेक गांधीवादी और भारतीय तथा अन्य धार्मिक संस्कृतियों के पुजारियों का कहना है कि युद्धवृत्ति मनुष्य-स्वभाव का एक आवश्यक अंग है। मनुष्य

शेष पेज १६ पर देखिए

ली के उग्र साम्यवादी तथा समाजवादी नेता पेट्रो नेनी।

इटली के कम्यूनिस्ट विरोधी नेता गिस्पी सारगोट।

इटली के कम्यूनिस्ट नेता पालमीरो टूलियाटी।

गोआ का राष्ट्रीय आन्दोलन

क्या वर्तमान दमन राष्ट्रीयता को रौंद डालेगा?

लेखक, श्री रामेश्वरदयाल दुबे, एम० ए०

भारतीय राजनीति में गोआ की राष्ट्रीय समस्या विशेष महत्त्व रखती है। गोआ फ्रांसीसी उपनिवेश के अधीन है। वहाँ की जनता स्वतन्त्र रहना चाहती है, यही वहाँ का राष्ट्रीय आन्दोलन है। विद्वान् लेखक ने इस लेख में गोआ के स्वतन्त्रता-आन्दोलन पर सुन्दर प्रकाश डाला है, जो पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

गोआ दक्षिण भारत के पश्चिमी समुद्र-तट पर एक छोटा-सा पुर्तगाली उपनिवेश है। इसकी लम्बाई ६२ मील और चौड़ाई ३० मील है। यहाँ की जन-संख्या लगभग ८ लाख है। गोआ के अधिकांश निवासी महाराष्ट्रीय हैं। यहाँ की जन-भाषा कोंकणी है, जो मराठी का ही रूपान्तर है। किन्तु यहाँ के सरकारी कामों में राजभाषा पुर्तगाली का ही प्रयोग होता है।

समुद्र-तट पर बसा हुआ यह छोटा-सा प्रान्त प्रकृति-सौन्दर्य का अनुपम भंडार है। हरे-भरे वृक्षों और लताओं से सजा हुआ यह प्रदेश, अपने ही जलाशय के दर्पणों में अपनी शोभा देखकर मुग्ध रहता है। जिधर भी निकल जाइए फल-फूलों से लदी, हँसती हुई हरियाली आनन्दविभोर कर देती है। समुद्र-तट पर नारियल के वृक्षों की पाँति और चंचल लहरों का नर्तन किसे मुग्ध न करेगा?

किन्तु गोआ-प्रदेश का यह बाह्य रूप है। गोआ की आन्तरिक स्थिति दयनीय है। यह भारत की ही तरह सदियों से पराधीन देश है। सन् १५१० में पुर्तगालियों ने यहाँ कब्जा किया था। तब से अब तक शासन के नाम पर यहाँ के निवासियों ने जो अत्याचार सहे हैं, उनकी कहानी बहुत करुण है। क्रूर शासन की शृंखलाओं में जकड़ी हुई यहाँ की जनता नागरिक स्वतंत्रता का अर्थ समझने में भी असमर्थ रहती रही है। पुर्तगालियों के तानाशाही शासन और उसके द्वारा किये गये अत्याचारों की जानकारी के लिए पंडित सुन्दरलाल जी द्वारा लिखित 'भारत में अँगरेजी राज्य' नामक पुस्तक के पृष्ठ देखने चाहिए।

गोआ में पुर्तगालियों की धर्मान्धता अपनी चरम सीमा पर रही थी। हिन्दुओं को किसी प्रकार की धार्मिक स्वतंत्रता न थी। उन्हें अपने धार्मिक उत्सव मनाने का भी अधिकार न था। इतना ही नहीं, जो हिन्दू, रोमन, कैथलिक धर्म को स्वीकार करके ईसाई नहीं बनते थे उन्हें प्राणदण्ड तक की सजा दी जाती थी।

गोआ में आज तक शासन का अर्थ शोषण ही है। गोआ के समस्त आर्थिक साधनों पर पुर्तगालियों का अधिकार है। जनता की आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय है। जनता की शिक्षा की ओर बिलकुल ध्यान नहीं दिया जाता है। फलतः ८५ प्रतिशत लोग निरक्षर हैं।

शासन-व्यवस्था की तो बात ही क्या, यहाँ की जनता को सामान्य नागरिक अधिकार भी प्राप्त नहीं हैं। यहाँ न कोई सार्वजनिक रूप से सभा कर सकता है और न बिना सेंसर के कोई समाचार प्रकाशित कर सकता है। आज तो यहाँ पर दमन-चक्र अपनी तीव्र गति से चल रहा है। जनता की आजादी की भावनाओं को कुचलने के लिये सब कुछ किया जा रहा है। हब्शी फौजों द्वारा यहाँ पर जनता-द्वारा उठाये गये राष्ट्रीय आन्दोलन को कुचला जा रहा है।

* * *

स्वतंत्र होकर जीवित रहने का अधिकार मनुष्यमात्र का है। गोआ की जनता भी, भले ही सदियों से पददलित होकर जीवन-यापन करती रही हो, कुछ वर्षों से जाग गई है। गोआ भारत का ही एक भाग है। इसलिए भारत की प्रत्येक गति-विधि का उस पर असर पड़ना स्वाभाविक है। स्वातंत्र्य भावना की जो हिलोर समस्त भारत में लहरा रही है उससे गोआ की जनता कब तक अछूती रह सकती थी? भारत के स्वाधीनता-संग्राम से प्रेरणा पाकर गोआ की जनता भी राष्ट्रीय जागरण का प्रभात देख रही है। आज से करीब १६ वर्ष पहले देश भक्त श्री कुनहा ने गोआ में "कांग्रेस समिति" स्थापित की थी। तब से आज तक अदम्य उत्साह और साहस के साथ यहाँ की जनता अपने नागरिक अधिकार प्राप्त करने के लिए लड़ती रही है और लड़ रही है। इस लड़ाई में उसे कितना त्याग करना पड़ा है, कितना बलिदान करना पड़ा है वह कभी स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा।

पुर्तगाली शासन का वर्तमान रूप एकदम फासिस्टवादी है। वहाँ के नियम-कानून में जनता का कोई हाथ नहीं है। गोआ-निवासी आज शान्तिमय रीति से अपने नागरिक अधिकार प्राप्त करने के लिए जन-आन्दोलन कर रहे हैं। इन स्वाभाविक आन्दोलनों को पुर्तगाली सरकार क्रूर दमन द्वारा कुचलने का प्रयत्न कर रही है।

गोआ की राष्ट्रीय कांग्रेस ने निश्चय किया है कि वह नागरिक अधिकारों के लिए अन्त तक संघर्ष करेगी। उसकी दृष्टि में पुर्तगाल सरकार ने गोआ-वासियों के लिये जो नया राजनीतिक सुधार किया है वह इतना सारहीन है कि उसकी चर्चा करना भी व्यर्थ है।

गोआ-सरकार ने एक तरफ तो नया राजनीतिक सुधार सामने रखा, दूसरी तरफ दमन प्रारम्भ कर दिया है। पुर्तगाली गोआ में योरोपियन टुकड़ियाँ भेजी जा रही हैं। ४,००० सैनिक गोआ में पहले ही पहुँच चुके हैं। यह भी सुनने में आया है कि गोआ की सीमाओं पर किलेबन्दी जारी कर दी गई है, किनारे पर सड़कें बनाई जा रही हैं और सशस्त्र गाड़ियाँ चारों ओर गस्त लगा रही हैं।

गोआ की राष्ट्रीय कांग्रेस ने जनता से अपील की है कि जो संघर्ष आज दो वर्ष से चालू है उसे कायम रखना है और दुःशासन का मुकाबला करने के लिए सारी जनता को एक सूत्र में बँध जाना चाहिए।

आज गोआ की जेलें राजबन्दियों से भरी हैं। गिरफ्तारियों का तांता लगा है। गोआ का जन-आन्दोलन आज तीव्र हो रहा है। दमन से जन-आन्दोलन रुका नहीं करते। आज गोआ का जन-आन्दोलन वहाँ की तानाशाही सरकार से डटकर मोर्चा ले रहा है।

गोआ के इस जन-आन्दोलन के प्रति भारत के राष्ट्रीय नेताओं की पूरी सहानुभूति है। गत वर्ष पूज्य महात्मा गांधी ने गोआ के गवर्नर-जनरल डा० बोसा से पत्र-व्यवहार किया था। डा० राममनोहर लोहिया ने तो गत वर्ष एक प्रकार से वहाँ के जन-आन्दोलन का संचालन ही किया था। आज भी भारत के नेताओं का ध्यान इस ओर है।

गोआ-सरकार की समझ में आयेगा कि तानाशाही के दिन गये हैं। जन-जागरण की इन बड़े-बड़े साम्राज्य झुक-झुककर अस्तित्व की रक्षा करना चाहते हैं, उनके लिए सम्भव नहीं हो रहा बड़े साम्राज्यों का यह हाल है तब जो एक अत्यन्त छोटा राष्ट्र है, गिनती में है?

पुर्तगाली सरकार ने गोआ ऐसे व्यक्ति और दल पैदा कर जनता का विरोध और सरकार करने के लिये प्रोपेगैंडा कर रहे हैं। जनता का सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ लोग पुर्तगाली शासन की प्रशंसा नहीं थकते हैं।

इन प्रशंसकों में तीन दल लूसो-इण्डियन, आर्चविशप और लूसो-इण्डियन भारतीय 'एंग्लो की तरह का ही दल है जो भारतीय की अपेक्षा अपने को पुर्तगाली गौरव अनुभव करता है। ये अगर पुर्तगाली सरकार का समर्थन आश्चर्य क्या? न जाने कितने अधिकार 'लूसो-इण्डियन' होने के इन्हें प्राप्त हैं।

आर्चविशप पुर्तगाल से ही इन चर्चों पर पुर्तगाल-सरकार लाख रुपया खर्च करती है। पर अशिक्षित जनता का आर्चविशप किया करते हैं का उन्हें अधिकार प्राप्त है। फिर वे क्यों सरकार के गुण न गावें? इतना होने पर भी राष्ट्रीय विचारों ईसाई जनता के साथ हैं।

तीसरा वर्ग स्वामियों का है। लोग संस्कृत के प्रकांड पण्डित हुआ थे, किन्तु आजकल तो धन ही परमेश्वर है। गोआ में जनता के में इनका भी हाथ है। इसलिये सरकार विरोध करके ये कहाँ रह सकते हैं?

इन तीनों का समर्थन भी सरकार बचा न सकेगा, क्योंकि जन-जन के में जो ज्वाला उठ खड़ी हुई है वह शान्त न होगी।

आज भारत स्वतन्त्र है। राष्ट्रीय सरकार यह कभी बरदाश्त न कि उसी की भूमि पर एक विदेशी अपने मन-माने अत्याचारों के द्वारा तीयों का अपमान करता रहे।

अगर गोआ की सरकार ने गति को नहीं पहचाना तो यह है कि उसे जल्दी ही पछताना पड़े गोआ बहुत दिनों तक परतन्त्र रह सकता, यह निश्चित है।

* * *

गीत

लेखक, श्री परमानन्द शुक्ल

मैं तो अलि अब, जलन बन गई।
जल जलकर सुधि विरह आरती, जलनमयी मैं मिलन बन गई।
यौवन श्लथ, कम्पित पग दुर्बल,
पथ अशेष पाथेय न सम्बल,
शरण शरण की रट में विह्वल, मैं अशरण अब शरण बन गई।
नाच नाच सुधि ताल मधुर गति,
मैं अलंघ्य बन गई लाँघ यति,
चपल चरण के सलज सरण में, मैं नूपुर की रणन बन गई।
अर्पित कर सुधियों के शतदल,
कोटि कोटि उर के मुक्ताफल,
नवल चाह की आहुति देकर, मैं महिमामय स्तवन बन गई।
मैं जलती जलते युग दृग-जल,
नयनों की मधु माया अविकल,
साधों की जलती होली भर, मैं मधु-ऋतुमय, स्मरण बन गई।

विवाहित जीवन
को रसमय बनानेवाली पुस्त
कोकशास्त्र (सचित्र) १।)
८४ आसन (सचित्र) १।)
१०० चुम्बन (सचित्र) १।)
तीनों पुस्तकें एक साथ लेने पर
पोस्टेज ।।) अलग।
पता—अनिल कम्पनी (
फुलट्टी बाजार, आगरा।

आज की हवाई यात्रा या ढुलाई!

क्या सांस्कृतिक तथा सामाजिक विकास की दृष्टि से इस प्रकार की यात्रा घातक है?

लेखक, प्रोफेसर जे० सी० कुमारप्पा

आधुनिक युग में हवाई जहाज की यात्रा महत्त्वपूर्ण मानी जाने लगी है। इस प्रकार की यात्रा मानवीय जीवन को बल देती है, अथवा उसका वास्तविक परिष्कार करती है, लेखक ने इस समस्या को इस लेख में भली प्रकार सुलझाया है। क्या अमीरों की यात्रा साधारण मनुष्यों के यात्रा-सुख का अनुभव कर पाती है? यह लेख इस प्रश्न का अच्छा उत्तर है। प्रत्येक यात्रा-प्रेमी के लिए प्रोफेसर कुमारप्पा का यह लेख सामायिक और विचारणीय है।

इस लेख के लेखक प्रोफेसर जे० सी० कुमारप्पा।

…से दिन बीतते जा रहे हैं वैसे …के कम अमीरों के लिए तो हवाई …साधारण बात होती जा रही …कार की यात्रा को बढ़ावा देने …के तरह से प्रयत्न किया जा …लिए समाज में हवाई यात्रा …स्थिति को समझ लेना हमारा …हो जाता है।

…ब किसी को 'काफी भ्रमण …मनुष्य' कहते हैं तो उससे हम …को कितना महत्त्व देते हैं, …की जा सकती है। ऐसे …आशा करते हैं कि उसने …के मनुष्यों और विभिन्न …परिस्थितियों से अनुभव …है। इसलिए दूसरे लोगों …निकट परिचय प्राप्त होने के …से मनुष्य को विकसित दृष्टि- …समझकर उससे सुसंस्कृत होने …सकते हैं। इस प्रकार की यात्रा …से स्वार्थ सम्बन्धित हैं। …में भारत में तीर्थयात्राएँ, …इन्हीं पहलुओं पर आधारित थीं, …धार्मिक रंग दे दिया गया था। …की यात्रा में अलग अलग …अलग अलग प्रकार के मनुष्यों …पड़ता है। वह उन जनों से …करता है, उनकी विचार-धारा से …प्राप्त करता है और उनके रीत- …पर ध्यान देता है। फिर इन सबकी …देश की परिस्थिति से तुलना …है। यही आदत अंततोगत्वा सांस्कृ- …का साधन बनती है। इसीलिए …बालकों को यात्रा-सम्बन्धी …पढ़ने को प्रोत्साहित करते हैं जिससे …शिक्षा प्राप्त हो सके और मानव के …उनकी जानकारी बढ़ सके। यदि …इस दृष्टि से देखें तो इन 'हवाई …की युक्ति गलत सिद्ध होती है। …जो हवाई यात्रा है वह साफ साफ …ढोना भर है। अभी मनुष्य यहाँ है, …हवाई जहाज के द्वारा वह दूर …जाता है। एक यात्री आज सुबह …में है और आज ही रात्रि को लंदन …सकता है। लेकिन उसके ज्ञान, …अथवा जानकारी में कोई भी …नहीं होगी। यह सामान का ढोना …कि दूसरे मालों का, उदाहर- …के एक गट्ठे का होता। …कहा जा सकता है कि इसमें समय का बचाव होता है। पर क्या इस समय की बचत से आदमी के जीवन की लम्बाई में कुछ असर नहीं पड़ा? इसका तो केवल यही अर्थ हुआ कि मनुष्य ने अपनी जिन्दगी के समय का कुछ अंश सांस्कृतिक विकास में न लगाकर अपने व्यवसाय में लगा लिया। क्या जब छोटे बच्चे को स्कूल न भेजकर उसे जानवर चराने के लिए भेजते हैं तो उसके समय की बचत होती है? हम उस बालक को उसके संस्कृति के हिस्से से वंचित कर देते हैं। जीवन का अर्थ अपना समय, सारा का सारा समय अपने ही व्यवसाय में लगा देना नहीं होगा। यदि मनुष्य को सामाजिक जीव बना रहना है तो उसे अपना विकास करके अपने भाई-बन्दों से आपसी समीप का सम्बन्ध स्थापित करना होगा। हवाई यात्रा मनुष्य को सामाजिक जीव बनने देने के स्थान पर एकाकी और स्वयं की पूर्तिवाला बना देती है। कह सकते हैं कि वह स्वार्थ को प्रोत्साहन देती है। इसलिए समय की बचत यथार्थ में समय को सांस्कृतिक बातों से निकालकर स्वार्थ के कार्यों में लगाने का ही दूसरा नाम है। जब हम जीवन की सुन्दरता को उसके भौतिक रूप में न देखकर उसे सांस्कृतिक विकास के पैमाने से नापते हैं तो समय की बचत में कोई गुण नहीं दिखाई देता। दूसरे शब्दों में कहें तो यह जीवन के मानवी पहलू का संकोच कर पाशविक पहलू का विस्तार करना है। एकान्त कैद की भी यही नींव है। हवाई यात्रा में पंखे की बहरा बनानेवाली आवाज और स्थान की कमी में साथी यात्रियों से कोई बातचीत कर सकना असम्भव-सा हो जाता है।

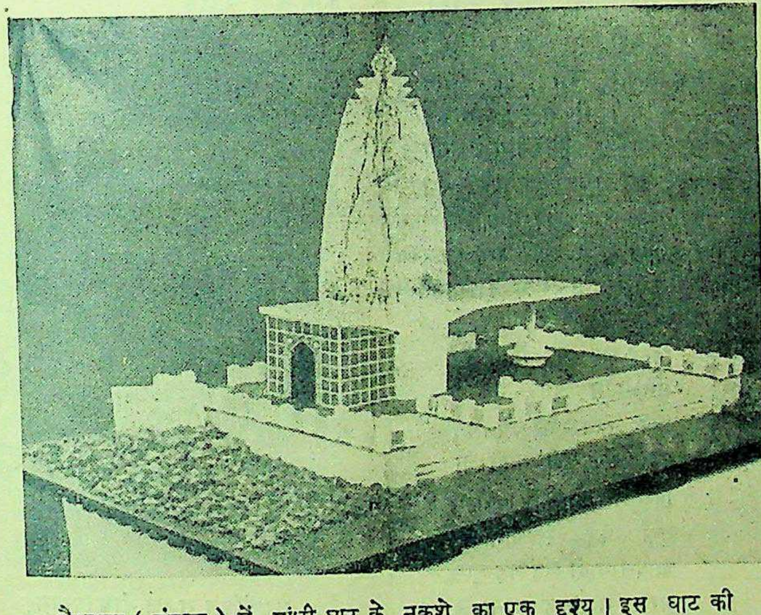

बैरकपुर (बंगाल) में गांधी घाट के नकशे का एक दृश्य। इस घाट की नींव माननीय श्री राजगोपालाचार्य ने रखी थी।

यह बिलकुल इसी तरह है, जैसे कि किसी मनुष्य को कमरे की सब खिड़कियाँ बन्द करके उसमें एक कुर्सी पर यात्रा-काल तक लगातार बैठा रहने को कहा जाय। कुर्सी चाहे कितनी ही आरामप्रद क्यों न हो असहनीय हो जाती है। चारों तरफ देख नहीं सकते। एक तो खिड़कियाँ छोटी होती हैं और दूसरे खाली आँख से कुछ दिखाई भी नहीं देता। लम्बी दूरी पूरी करनेवाले जहाज जमीन से १५ से १८ हजार फुट की उँचाई पर उड़ते हैं। इसका अभिप्राय हुआ कि आप तीन मील दूर की वस्तु ही देख सकते हैं। इससे ज्यादातर नीचे धुँधला नीला और ऊपर गहरा नीला दिखाई देता है, और उतरने के स्थानों के आस-पास को छोड़कर बहुत कम पेड़ या इमारतें तक पहचान में आती हैं। दिमाग बन्द, नजर धुँधली और कान बहरे, ऐसी स्थिति में यात्री घंटों दिन हो या रात—एक स्थान पर बैठा रहता है, और जब उतरता है तो पीठ दर्द करती है और वह "लक्ष्य स्थान तक पहुँच गये" कहता हुआ ठण्डी साँस लेता है। यह है 'आधुनिक यात्रा।'

जहाँ तक भोजन का सम्बन्ध है, खाद्य सामग्री के पैकेट खाने के निश्चित घंटों पर दिए जाते हैं। अभी तक भोजन परोसने में हिन्दुस्तान का कोई ध्यान नहीं रखा जाता। चाहे यात्री निरामिष भोजी हो अथवा नहीं, पैकेट में ठण्डे मांसाहारी खाद्य पदार्थ ही होते हैं। बड़ी कठिनाई से अपनी आवश्यकता के लिए अलग से मक्खन-रोटी का टुकड़ा प्राप्त हो जाता है। यह सुझाव दिया जा सकता है कि जो हवाई मार्ग हिन्दुस्तान से होकर जाते हैं उनमें निरामिषभोजियों के लिए व्यवस्था आवश्यक है।

रास्ते पर मोटर से और रेलगाड़ी से यात्रा करने में जो आनन्द आता है उसका कारण यह है कि मनुष्य को तेज यात्रा का एक खास आनन्द प्रतीत होता है। जन्तु के समान छोटा-सा यह मनुष्य ४०, ५० या ६० मील प्रतिघन्टा की तेजी से हवा से सरसराता हुआ जब निकलता है तो उसे असीम आनन्द प्राप्त होता है, क्योंकि वह इस बात से परिचित है कि अपने तईं इतनी गति प्राप्त करना उसे सम्भव नहीं। परन्तु हवाई यात्रा में यह आनन्द भी नहीं आता। इतनी ऊँचाई पर स्थित होने से यह होता है कि यद्यपि जहाज ३०० मील प्रतिघन्टा की गति से ही क्यों न चल रहा हो, नीचे की भूमि मस्त बादल की तरह धीरे-धीरे सरकती दिखाई देती है। इस तरह तेजी-प्रियता की मानसिक इच्छा भी पूरी नहीं हो पाती।

अगर यात्रा के इस तरीके का शास्त्रीय विवेचन करें तो हमें दीखता है कि इसमें पेट्रोल बड़ी भारी मात्रा में खर्च होता है। यह वस्तु निश्चित मात्रा में ही प्राप्त हो सकती है और संसार के विभिन्न भागों में भूगर्भ से निकाली जाती है। वह उपभोक्ताओं में दूसरे संग्रह-स्थलों को हथियाने की इच्छा बढ़ती जाती है। इससे अन्त में लालच, बैर, घृणा और सन्देह का बाजार गर्म होता है और परिणामस्वरूप जागतिक महायुद्ध छिड़ जाते हैं। इसलिए यात्रा के इस तरीके में अस्वाभाविक वृद्धि से पड़ोसियों में कटुता का प्रादुर्भाव होगा।

इस सबका यह अर्थ नहीं कि हवाई यात्रा रहे ही नहीं; परन्तु केवल इतना ही कि इसकी बुराइयों से हम सावधान रहें और इसके उपयोग में पूर्ण सावधानी रखें। तथा कथित समय की बचत इतनी नहीं है कि उसके साथ जुड़े हुए अनेकों दुर्गुणों को छोड़ दिया जाय। आज की हवाई यात्रा को तो 'हवाई ढुलाई' कहना ही अधिक उचित होगा। आज मानव को आवश्यकता है मानसिक विश्रान्ति की, पर हवाई ढुलाई बोझ को बढ़ा देती है।

* * *

१००) रु० इनाम

!! विश्वविजय यन्त्र !!

सिद्ध वशीकरण यन्त्र। इसके धारण से जिस स्त्री या पुरुष को आप चाहें वश में हो जायगी। इससे दुर्भाग्य और शत्रु का नाश, नौकरी, सन्तान, धन की प्राप्ति, व्यापार में लाभ, परीक्षा में पास, मुकदमे जुआ और लाटरी में जीत, कठिन से कठिन रोगों से छुटकारा होकर भाग्योदय होता है। मू० ताँबा २॥), सिलवर ३), सोने का १०)—बेफायदा साबित करने पर १००) इनाम।

पता—श्री विश्वशांति आश्रम,
मुहल्ला—सलीमपुर अहरा,
पो० कदम कुआँ, (पटना) D.W.

भक्त कबीर!

जनता के मन में रमनेवाला वह लोकप्रिय संत

लेखिका, श्रीमती रामेश्वरी नेहरू

बूढ़े भारत ने अनेक साधु-सन्तों को जन्म दिया है। यहाँ के लम्बे इतिहास में बहुतेरे उतार-चढ़ाव हुए! अच्छे और बुरे जमाने आते और जाते रहे; परन्तु इस देश की रत्नगर्भा भूमि ने हर जमाने में किसी न किसी ऐसे महापुरुष को पैदा किया, जिसने भूली-भटकी हुई जनता को ठीक रास्ता दिखाया उसको भगवान के सच्चे मार्ग की ओर ले जाकर धर्मपरायण बनाया। पाप-वृत्ति, अन्ध-विश्वास और अज्ञान से निकाल कर सच्चाई का प्रकाश दिखाया। इन साधुओं की कमाई भारत की पूँजी है। गरीब भारत को उसी ने अमीर बना रक्खा है। इस पूँजी की वारिस भारत की निरक्षर जनता है, गाँवों की झोंपड़ियों में रहनेवाले दरिद्र स्त्री पुरुष और बालकों के रोम-रोम में इन साधुओं की दी हुई शिक्षा समा गई है। मैंने हरिजनों की झोंपड़ियों से निरक्षर ग्रामीणों के हृदयों से यहाँ तक कि दरिद्र मुसलमानों की जबानों से संतों की वाणी की धुनि सुनी है। य[illegible] संतों की वाणी हमारी निरक्षर जनता की कि[illegible] है, जिससे उनको शिक्षा और सभ्यता का पाठ मिला है। यही उनके वेद पुराण हैं, जिनके आधार पर अब भी उनका जीवन कायम है।

इन्हीं सन्तों की परम्परा के एक सन्त कबीर हुए हैं, जिनके भजन और बानी घर घर व्याप्त है। वह मन्दिरों में, महलों में और झोंपड़ियों में एक समान गाए जाते हैं। संगीत-परिषदों में बड़े-बड़े गायक इन भजनों को ताल-सुर के साथ उसी आनन्द से गाते हैं, जैसे गली-कूचों में माँगनेवाला भिखारी। हर बार और हर स्थान पर वे एक समान पतितपावन और पापनाशक प्रभाव डालते हैं।

संत कबीर की उत्पत्ति की ठीक तिथि मालूम नहीं, परन्तु यह सब मानते हैं कि वे १५ वीं शताब्दी में हुए थे, और उनका शरीरत्याग १५१८ में हुआ। बहुत लोगों का विश्वास है कि वे १२० की अवस्था तक जिन्दा रहे, परन्तु निश्चय रूप से यह बात नहीं कही जा सकती। कबीर रामानन्द स्वामी के चेले थे। बनारस में पैदा हुए थे परन्तु उनकी परवरिश नीरू नाम के एक जुलाहे के घर पर हुई थी। वह एक भगवान् के माननेवाले थे और उसी का रूप सारे संसार में देखते थे। कहा है—

एकै मटिया, एक कुम्हारा,
एक सबन का सिरजन हारा,
एकै चाक, बहु चिह्न बनाया,
और नाद बिन कबीर बनाया!

वह हिन्दू धर्म को मानते थे, परन्तु इस्लाम धर्म का समान आदर करते थे। राम-रहीम को एक ही भगवान् का एक ही अवतार कहते थे। मसजिद और मन्दिर भगवान् के घर थे। दोनों पवित्र और पूजा के योग्य थे। परन्तु उनके लिए भगवान का सबसे पवित्र और विशाल मन्दिर मन का मन्दिर था और उसी में वे ईश्वर की मूर्ति की स्थापना चाहते थे। जहाँ मन का मन्दिर भगवान् से शून्य हो वहाँ बाहर की सब वस्तुएँ उनके लिए गौण थीं। उन्हीं के वचनों में :—

इस लेख की लेखिका श्रीमती रामेश्वरी नेहरू

माला, लकड़, ठाकुर, पत्थर,
सब तीरथ हैं पानी,
कहत कबीर सुनो भाइ साधो,
चारो वेद कहानी।

वह मन की सच्चाई चाहते थे। समस्त संसार को मन के ही भीतर देखते थे, उनकी वाणी में सुनिये :—

घट घट धुन्ध अँधियारा रे सन्तो,
यह घट भीतर बाग-बगीचे,
यही से सिरजन हारा रे।
या घट भीतर चन्द्र और सूरज,
यही में नौलख तारा रे।
या घट भीतर कासी द्वारका,
यही है ठाकुरद्वारा रे!
कहे कबीर सुनो भाई सन्तो,
यही में गुरू हमारा रे!
यह घट घट अँधियारा रे सन्तो
यह घट धुन्ध अँधियारा रे।

इसी मन के घट को प्रकाशित करना उनका उद्देश्य था! और इसी कारण वे हिन्दू-मुस्लिम दोनों मतों को मानते थे। कहते हैं :—

हिन्दु कहु तो मैं नहीं,
मुसलमान भी नहीं।
पाप तत्त्व का पुतला,
गह में खेले माही॥
हिन्दु कहै मोहे राम पियारा,
तुर्क कहै रहिमाना।
आपस में दो लड़ लड़ मुए,
मरम न काहू जाना॥
हिन्दु कहै दाया नहीं,
मेहर तुर्क के नाही।
कहे कबीर दोनों गए,
लख चौरासी माही॥
हिन्दु तुर्क हटा नहीं माने,
स्वाद सबन को मीठा।
हिन्दु तुर्क की एक राह है,
सदगुरु ईह बताई।
कहे कबीर सुनो हे संतो,
राम न कहे औ खुदाई॥

वह फिर कहते हैं :—

हिन्दु, तुर्क कि बूढ़ा बारा,
नीर पुरुष मिल करो विचारा।
ऊंच नीच है मध्यम बानी,
एकै पवन एक ही पानी॥

कबीरदास जी को हिन्दू तो हिन्दू मानते ही हैं, और मुसलमान उनको

शेष पृष्ठ १३ पर देखिए

पारिभाषिक शब्दों का निर्मा

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने क्रियात्मक कदम उठा

लेखक, महापंडित राहुल सांकृत्यायन

राष्ट्र की राष्ट्र भाषा हिन्दी है, इसलिए यह आवश्यक है कि उच्च शिक्षा
नये ग्रंथों तथा पारिभाषिक शब्दों का कोश निर्माण हो। हिन्दी-साहित्य-स
महापण्डित राहुल सांकृत्यायन की देख-रेख में पारिभाषिक शब्द-कोश के नि
कार्य प्रारम्भ किया गया है। इस लेख में राहुल जी ने पारिभाषिक शब्दों के
तथा उनकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला है। लेख सामयिक और विचारणीय

स्वतंत्र भारत की शिक्षा अपनी भाषा में हो, यह कहने की आवश्यकता नहीं। ऐसा कोई भी स्वतंत्र देश नहीं जिसकी अपनी स्वतंत्र भाषा न हो, या कि जो दूसरी भाषा में शिक्षा देता हो। हमारे लिए ऐसी भाषा हिन्दी है यह निर्विवाद है।

परन्तु हिन्दी प्रांतीय भाषाओं का स्थान नहीं लेना चाहती। सब प्रांतों में अपनी-अपनी भाषाओं में उच्च विश्वविद्यालयीन शिक्षा देनी चाहिये। हिन्दी भाषा का तो हिन्दी-भाषी प्रांतों के अतिरिक्त, सारे भारत की राष्ट्रभाषा होने के कारण कर्तव्य और भी बढ़ जाता है। हिन्दी उच्च अध्ययन के लिये पारिभाषिक शब्दों की कमी को पूरा करके अपनी ही नहीं परन्तु सभी भारतीय भाषाओं की सहायता कर सकती है। इस काम में सभी प्रान्तीय भाषाओं को भाईचारे से काम लेना चाहिये।

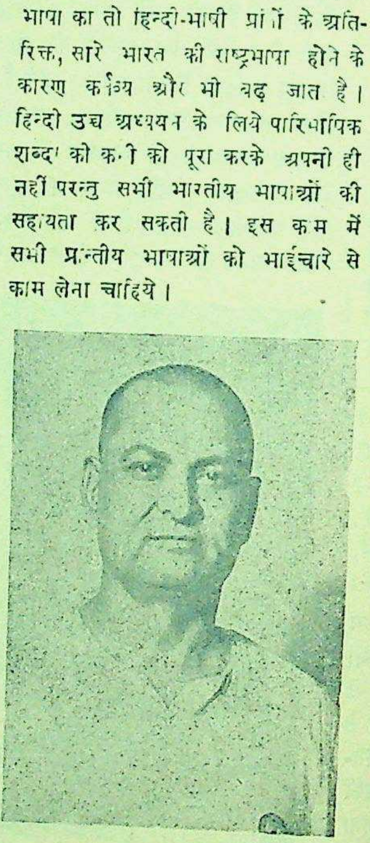

महापंडित राहुल सांकृत्यायन

परन्तु यह काम बहुत बड़ा जान पड़ता है कि समूचे ज्ञान-विज्ञान को हिन्दी में लाया जाये। जिस काम को दूसरे देशों ने २००-३०० वर्षों में किया है, उसे हमें बहुत थोड़े समय में करना है। परन्तु यह काम हमें जल्दी से जल्दी करना है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने इस काम को अपने हाथ में लिया है। शासन-शब्द-कोश १०००० से ऊपर शब्दों का बनकर तैयार है, जो प्रेस में जाने तक १५००० शब्दों का हो जायेगा। शुद्ध विज्ञान और कला के अन्य विषयों पर पारिभाषिक शब्द-निर्माण-कार्य अन्य संस्थाएँ कर रही हैं; इसलिये सम्मेलन ने पहले व्यावहारिक विज्ञान की २३ शाखाओं के शब्दों का काम हाथ में लिया है। इसमें करीब सवा लाख शब्द होंगे। [illegible] आवश्यक सहयोग मिले और पर्याप्त परिश्रम किया जाये तो

यह काम एक साल में हो सक
वैज्ञानिक पारिभाषिक कोश
तैयार होगा—चिकित्सा, शिल्प,
निर्माण, भूगर्भ, नौ-निमान, रसा

पारिभाषिक शब्द बनाने में
नियम रखे हैं। हिन्दी-साहित्य
की ओर से जो शासन-विषयक
व्यावहारिक विज्ञानों के लिये
शब्दावली और कोश बन रहे
भाषा-विषयक नीति नीचे दिये
पर आधारित होगी, जिसके अनु
का चुनाव तथा निर्माण किया जा

प्रचलित शब्द

जन-प्रचलित शब्द रखने की
कोशिश की जायेगी। पारिभाषिक
भी आखिर जन-साधारण के
ही तो बन रहे हैं। वह केवल
लिये ही तो नहीं हैं। बढ़ती हुई
और उद्योगीकरण के साथ
व्यावहारिक विज्ञान को अपनी
समझेगी और समझायेगी
समय किसी भी जन-प्रचलित
केवल वह विदेशी है अथवा
इसलिये त्याज्य मानना, भाषा
उद्देश्य जन-सुलभता और जन
विरुद्ध होगा। अतः कोई भी शब्द
वह अहिन्दी प्रान्तों का हो,
हो या अन्य विदेशी भाषा का,
बहुप्रचलित है और वह यथार्थ
दे सकता है तो उसे यथासंभव लेना

परन्तु इन जन-प्रचलित शब्दों
में यह ध्यान रखा जाये कि ये
भारत की दृष्टि से लिये जायं। पा
शब्द कुछ ऐसे भी हो सकते हैं
भिन्न प्रान्तों में भिन्न-भिन्न अर्थों
होते हैं, उनमें से कई संस्कृत के
भी हैं—वहाँ प्रधानता ऐसे रूपों
जाय जो अधिकाधिक प्रान्तों में
हों। यदि कुछ शब्द नये भी
तो तीसरे कालम में, यानी दूसरे
देते समय, सर्व-भारतीय शब्द ही दिये

अप्रचलित शब्द

सभी अप्रचलित नये शब्द
लिये जायँ। क्योंकि वही हमारे
भाषाओं की ही नहीं बल्कि वृहत्तर
भाषाओं की मूलभाषा है।
भी उच्चार-सौकर्य का ध्यान रखा
साथ ही अर्थ की अनेक बारीकियों
व्यक्त करने की सुविधा संस्कृत से
सकेगी! शब्दों की व्युत्पत्तियाँ
से सहज साध्य हैं।

नये शब्द बनाते समय दो
सुझाई जाती हैं—एक अंतर्राष्ट्रीय

शेष पेज १४ पर

सोने का सिक्का

समस्त संसार में जुआ आज भी खेला जाता है। इस खेल के द्वारा मनुष्य किस प्रकार बिगड़ता है और फिर किस प्रकार बनता है, कहानी में इसी का चित्रण है। साधारण घटना भी जीवन की धारा को मोड़ने की शक्ति रखती है, कहानी में प्रधान पात्र बिगड़कर कैसे सँभलता है, पढ़कर बहुत कुछ सुधार हो सकता है। कथा नैतिक शक्ति को उत्साह देनेवाली है, साथ ही मनोरञ्जक और सुन्दर भी है।

५ फ्रैंक उधार दे दीजिये, आप मुझ पर हँसेंगे तो, परन्तु मैं वादा करता हूं कि ठीक १२ बजे, जिस समय घड़ी आधी रात का घंटा बजायेगी, आपके पैसे वापस कर दूंगा।"

ल्यूसेन ने अपने कन्धे सिकोड़े, उस समय उसके पास था ही क्या कि वह डिरोनस्की की बात पर विचार करता। भीतर कमरे में जाकर उसने अपना कोट पहना, टोपी उठाई और शीघ्रता से सीढ़ियाँ पार करता हुआ नीचे बाजार में जा पहुँचा।

इन चार घंटों में, जो ल्यूसेन ने जुए-घररूपी नरक-कुण्ड में व्यतीत किये थे, बाहर काफी बर्फ पड़ चुकी थी, और यह बाजार—जो पैरिस के मध्य में था, तंग और ऊँचे-ऊँचे मकानों से घिरा हुआ—बर्फ से बिलकुल सफेद हो चुका था। नीले आकाश में तारे चमक-चमककर पेरिस में ज्योति का संचार कर रहे थे।

अस्थिर चित्त जुआरी अपने वस्त्रों में काँप रहा था, वह एक ओर चलने लगा। बेढंगे विचार मस्तिष्क में आ-जा रहे थे, इस समय शायद अपने पिता के पिस्तौलों का विचार उसे सबसे अधिक सता रहा था; परन्तु थोड़ी ही दूर गया था कि सहसा ठिठककर रह गया, सामने एक बीभत्स दृश्य था।

एक सुन्दर और बड़े मकान के सामने पत्थर की एक पुराने ढङ्ग की बेंच पर एक नन्हीं बालिका बर्फ में बैठी हुई थी। उसकी आयु लगभग छः-सात वर्ष की होगी। वह काले रंग के फटे-पुराने वस्त्र पहने हुए थी। बेचारी थकान से चूर होकर, विकट शीत होने पर भी, वहीं सो गई थी। उसके सिर और कन्धे बर्फ से ढके हुए थे। बालिका का एक जूता बेंच से नीचे लटके हुए उसके पैर से अलग होकर सामने पड़ा था, मानो अपनी स्वामिनी की दयनीय दशा पर आँसू बहा रहा हो।

ल्यूसेन का हाथ स्वयं कोट की जेब की ओर बढ़ा, मगर उसे याद आ गई कि अभी कुछ ही देर पहले उसके पास जुए-घर के सेवक को बखशीश देने के लिए भी कुछ नहीं निकला था, फिर भी वह दयार्द्र होकर बालिका के निकट गया कि उसे शीत से बचाये। बालिका को उठाने ही वाला था कि दृष्टि नीचे गिरे हुए जूते में किसी चमकदार चीज पर जा पड़ी। उसने झुककर देखा, बीस फ्रैंक का सोने का सिक्का था। कोई भला आदमी अथवा कोई महिला, इधर से निकलती हुई अनाथ बालिका पर दया करके यह सोने का सिक्का उसके जूते में डाल गई थी।

बीस फ्रैंक! अनाथ बालिका के लिए यह रकम कई दिन का काम चला सकती थी। ल्यूसेन बालिका को जगाकर यह सुसंवाद सुनाने ही वाला था कि उसे मालूम हुआ कि जैसे वृद्ध डिरोनस्की अपने वही शब्द उसके कानों के निकट दुहरा रहा है।

* * *

इस समय २३ वर्षीय इस नवयुवक के हृदय में एक बड़े भयानक विचार का सञ्चार हुआ। वह नवयुवक, जो एक भले घर में उत्पन्न हुआ था और जिसके भले विचारों ने कभी उसका साथ नहीं छोड़ा था; अब एक घृणित विचार से प्रेरित हुआ। उसने अपने चारों ओर दृष्टि डाली और यह जानकर कि उसे कोई देख नहीं रहा है, एक बार फिर नीचे झुका और काँपता हुआ हाथ बढ़ाकर जूते में से सोने का सिक्का चुरा लिया और फिर पूरी तेजी के साथ जुए-घर की ओर भागा। कुछ ही मिनटों में ल्यूसेन फिर वहीं मौजूद था, जहाँ से कुछ देर पहले गया था। इधर वह कमरे में पहुँचा, उधर घड़ी ने १२ बजाये। उसने पहुँचते ही २० फ्रैंक हरे रंग पर लगा दिए और तुरन्त "जीत लिया" की आवाज लगाई। अब की बार सोने के ३६ सिक्के लाल रंग पर डाल दिए और फिर "लाल भी जीत लिया" की आवाज लगाई। उसने ७२ के ७२ सिक्के लाल रंग पर ही पड़े रहने दिए, लाल फिर निकल आया। वह तीन बार तक दुगनी की दुगनी रकमें लगाता गया और प्रत्येक बार भाग्य उसका साथ देता रहा। अब ल्यूसेन के सामने नोटों और सोने के सिक्कों का ढेर लग गया था। वह पागलों की भांति कभी किसी रंग पर और कभी किसी नम्बर पर लगाता गया और जीतता गया। यह बिलकुल आशा के प्रतिकूल था, ऐसा कभी-कभी ही हुआ है। ऐसा ज्ञात होता था कि नवयुवक की दृष्टि ने सफेद रंग की उस नन्हीं-सी गेंद पर, जो जुए की मेज पर विभिन्न रंगों के खानों में इधर-उधर कूदती फिरती थी, जादू कर दिया था; वह उसके इशारे पर चलती मालूम होती थी।

* * *

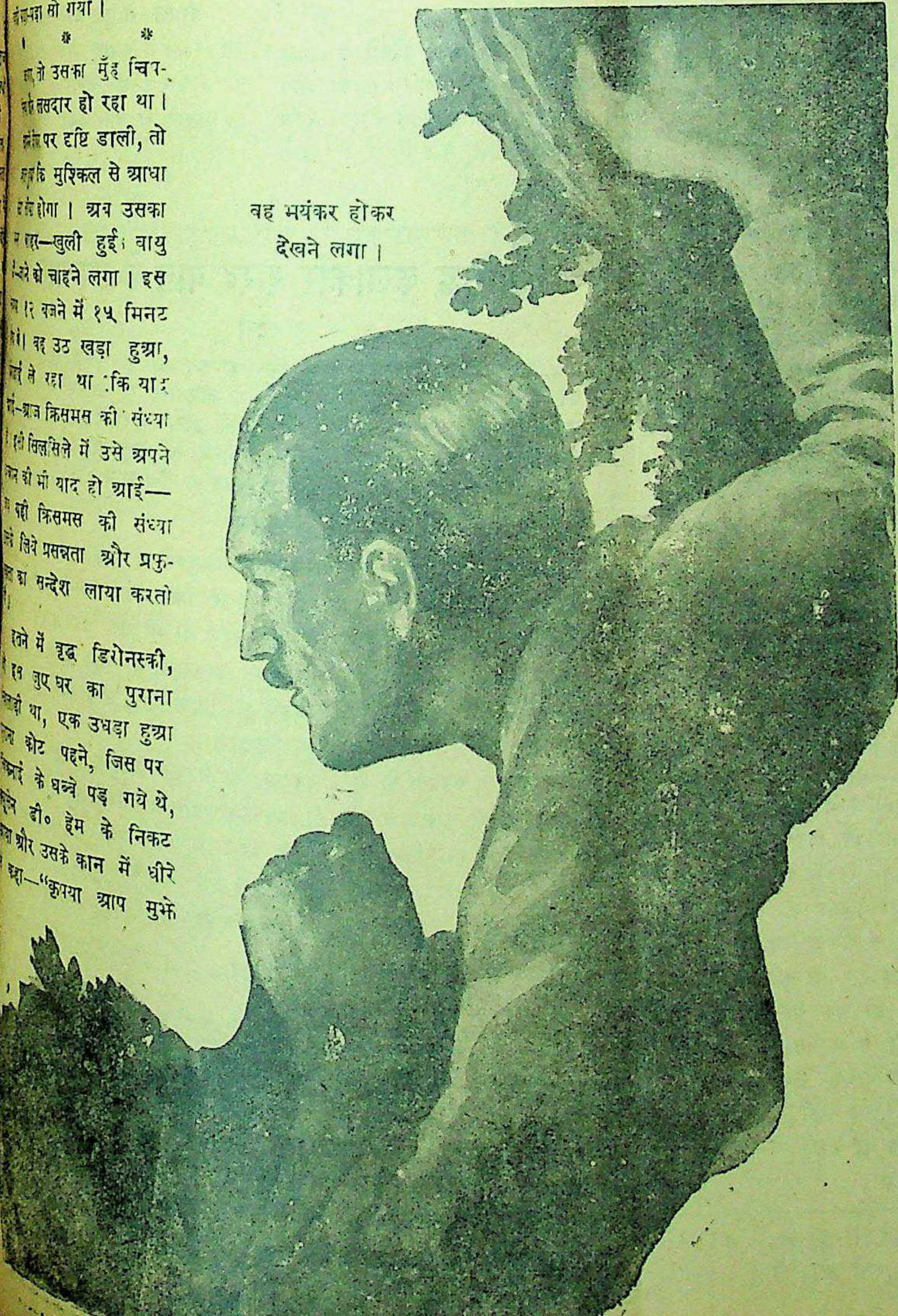

वह भयंकर होकर
देखने लगा।

थोड़ी देर खेलने के पश्चात् ही ल्यूसेन के पास काफी रकम इकट्ठी हो गई। उसने सोने के सिक्कों, नोटों और बैंक के चिकों से अपनी जेबें भरनी आरम्भ कर दीं। यद्यपि अब उसकी जेबें भरी थीं, फिर भी वह परेशान था; एक विचार था, जो उसे रह-रहकर सता रहा था। उसे नीले आकाश की छत के नीचे बर्फ के नगर में बाहर सोई हुई एक अनाथ बालिका बार बार दिखाई दे रही थी—

"वह वहीं पड़ी होगी... मैं शपथ खाता हूँ, मैं अभी छोड़ता हूँ इसे... मैं सोती हुई को गोदी में उठाकर घर ले जाऊँगा, उसे अपने बिस्तर पर सुला दूँगा... मैं उसे अपने बालक की भाँति पालूँगा, उसे प्यार करूँगा... मैं उसे बहुत दहेज दूँगा, उसका ख्याल रखूँगा, सदैव...हाँ, सदैव।"

घड़ी ने एक का घंटा बजाया, फिर सवा, डेढ़, पौने दो। मगर ल्यूसेन अभी तक मेज के सामने बैठा जुए में मस्त था। आखिर दो बजकर एक मिनट पर जुए घर का चौकीदार सहसा नींद से चौंककर बड़बड़ाने लगा—"सज्जनो, अब बहुत खेल चुके, बस करो।"

ल्यूसेन चौंककर उठ खड़ा हुआ और दूसरे जुआरियों को, जो उसके आस-पास खड़े अद्भुत दृष्टि से उसे घूर रहे थे, लापरवाही से इधर-उधर ढकेलता हुआ बाहर निकल आया। जीने से छलाँगें मारता हुआ नीचे उतरकर पत्थर की बेंच की ओर तेजी से चल दिया, जैसे दौड़ रहा हो। कुछ दूर पर लैम्प की हल्की-सी रोशनी में वह नन्हीं बालिका दिखाई दे रही थी। वह जल्दी से उसके पास पहुँच गया और उसका हाथ पकड़ लिया। "इसका शरीर कितना ठण्डा है!"

उसने उसे गोद में उठा लिया, बेचारी का सिर एक ओर को लुढ़क गया, मगर उसने आँखें न खोलीं।

"यह बालक भी कैसी बला की गहरी नींद सोते हैं" ल्यूसेन ने उसे हृदय से चिपटा लिया, जिससे उसके ठण्डे शरीर को कुछ तो गर्मी पहुँचे। गहरी नींद से जगाने के लिए ल्यूसेन ने उस नन्ही बालिका के नेत्रों का चुम्बन लिया। उसे ज्ञात हुआ कि लड़की की आँखें अभी खुली हुई हैं, जिनमें से ज्योति-हीन पुतलियाँ स्पष्ट दिखाई दे रही हैं। वह काँप गया और एक भयावह कल्पना विद्युत्-गति के साथ उसके मस्तिष्क में दौड़ गई। वह अपना मुख लड़की के मुख के निकट ले गया, मगर उसकी साँस बन्द हो चुकी थी।

जिस समय ल्यूसेन चुराये हुए सिक्के से जुआ खेलकर धन जमा करने में तन्मय था, बेचारी अनाथ बालिका बर्फ के ढेरों के बीच सर्दी में पड़ी हुई दम तोड़ रही थी।

* * *

अगले दिन ल्यूसेन ने अपना नाम अफ्रीका जानेवाली पल्टन की सूची में लिखवा दिया। अब ल्यूसेन डी० हेम लेफ्टनेंट है। उसकी आय केवल उसका वेतन है, परन्तु वह एक मुस्तकिल मिजाज अफसर है, जो भूले से भी दान कभी बाजी नहीं लगाता। सुना जाता है कि वह वेतन में से कुछ बचा भी लेता है, क्योंकि अभी दो एक दिन की बात है कि उसके साथी ने जो एलजीरिया के बाजार में उसके पीछे पीछे चला जा रहा था, उसे एक नन्हीं भिखारिन को कुछ देते हुए देखा था। साथ ही वह यह भी मालूम करना चाहता था कि ल्यूसेन ने क्या दान किया है और यह देखकर उसके आश्चर्य की सीमा न रही, कि नन्हीं भिखारिन के हाथ में बीस फ्रैंक का एक सोने का सिक्का रखा हुआ था। *

---

* एक विदेशी कहानी के आधार पर—अनुवादक, श्री आनन्दीप्रसाद मिश्र 'निर्द्वंद्व'।

* * *

हास्य परिहास

भंग की तरंग

हैदराबाद को भारत-सरकार ने पेट्रोल भेजना बन्द कर दिया है। भारत-सरकार को पता नहीं कि केवल भारत-सरकार ही नहीं अमेरिका भी पेट्रोल भेज सकता है।

* * *

मद्रास के इंजन-चालक कहते हैं कि हम आठ घंटे से अधिक काम नहीं कर सकते। यदि दिल्ली सरकार की ओर से प्रबंध हो सके तब शायद यह संभव हो।

* * *

ऐसा खबर है कि सिंध में मकानों की कमी है। इतने सिन्धी मकान छोड़ आये उस पर भी वहाँ मकान की कमी हो रही है, आश्चर्य है! शायद एक-एक मुसलमान दो-दो मकान चाहता होगा।

* * *

हिमालय की तराई में नब्बे फुट लंबा जीव दिखाई पड़ा है। सुना जाता है कि यह ऊँट का परदादा है और पाकिस्तान की खोज में निकला है।

* * *

कौंसिल के कुछ सदस्य इसलिये रुष्ट हो गये कि सभा के सचिव लोग फाइलों को पढ़कर नहीं आते। मंत्री होने पर भी पढ़ने-लिखने की आवश्यकता है; पढ़ना-पढ़ाना होता तो कहीं मास्टर न होते?

* * *

निज़ाम-सरकार धड़ाधड़ बाहरी पत्रों पर रोक लगा रही है। आवश्यकता इस बात की भी है कि हवा को इधर से न जाने दे। रावण ने भी हवा को बाँध रखा था।

* * *

बलिया में एक कानिस्टबिल घूस लेने में पकड़ा गया। जिस जिले ने स्वतंत्रता-संग्राम में इतना बलिदान किया उसे कुछ तो छूट होनी ही चाहिये।

* * *

खरे साहब का कहना है कि देश की उन्नति में जाति-भेद का अंत हो। किंतु जिला बोर्डों के चुनाव में जाति का ही पहाड़ा गाया गया।

* * *

समाचार है कि पश्चिमी पंजाब में १०६ पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित की जायगी। हमारी राय में उतनी होनी चाहिये जितने पढ़नेवाले हैं, जिससे प्रत्येक व्यक्ति समझे कि यह हमारी निजी पत्रिका है।

* * *

एक महोदय कहते हैं कि जून में हैदराबाद से युद्ध छिड़ेगा। समय अच्छा है। कुछ सैनिक गोली से मरें, कुछ लू से और कुछ कालरा से। युद्ध शीघ्र समाप्त होने की संभावना है।

* * *

हमारे प्रांत के मंत्री विदेशों में भ्रमण करने जायेंगे। वहाँ नई बातें सीखकर आप लोग अपने प्रांत का विकास और उन्नति करेंगे। पश्चिमवाले पश्चिम ही से आते थे इसलिये सरलता से उन्नति कर सके थे। पूरबी बेचारे क्या करें? और परदेश गये बिना उन्नति हो भी नहीं सकती।

* * *

पाकिस्तान में भी जनता का दल बन रहा है, किंतु उन्हें जानना चाहिये कि पाकिस्तान युक्तप्रांत की सरकार नहीं है कि जो अनाप-शनाप बक दिया जाय और सरकार शांत बैठी रहे।

* * *

बंगाल से कुछ व्यापारी चोरी चोरी पाकिस्तान में कपड़ा भेजते थे। क्या बंगाल की सरकार इतनी बलशाली है कि इस प्रकार का कार्य करना पड़ता है!

—अगड़बम शर्मा

बेढब की बहक

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

जब नजर आती है सूरत किसी मतवाली की,
मस्त होकर के मैं कह उठता हूँ जय काली की।
खूब आनंद उठाता हूँ मैं मेम्बर बनकर,
मुझको लोगों की है परवाह न कुछ गाली की।
रच रहे आप हैं साहित्य नया क्या कहना,
गीत का रूप है धुन उसमें है कव्वाली की।
टेक की राह पर उनके नहीं बस चल सकता,
जिस तरह टेक कड़ी हो किसी हड़ताली की।
प्लेट मिट्टी की हो उसकी भी बड़ी इज्जत है,
पूछ कुछ भी नहीं चाँदी की मगर थाली की।

सुप्रसिद्ध कलाकार शरद बाबू के उपन्यास

लेनदेन

यह शरद बाबू के बँगला उपन्यास का रूपान्तर है। इसमें चण्डीगढ़ की भैरवी षोडशी तथा वहाँ के ज़मींदार जीवानन्द का चरित्र बहुत ही उत्तम ढंग से चित्रित किया गया है, जिसके द्वारा सहृदय पाठकों का जहाँ मनोरंजन होगा वहीं मानव चरित्र के सम्बन्ध की बहुत-सी ज्ञातव्य बातें भी इन्हें मालूम होंगी। मूल्य ३।-) तीन रुपये पाँच आने।

परिणीता

एक निर्धन परिवार की भोली-भाली नवयुवती ने एक साधन-सम्पन्न परिवार के युवक के प्रति आकर्षित होकर किस प्रकार खेल-खेल में ही उसके साथ विवाह कर लिया और दूर रहने पर भी उसे सदा हृदय से अपना पति मानती रही, यह कहानी इस उपन्यास में बहुत ही प्रभावोत्पादक ढंग से लिखी गई है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

नव-विधान

पाश्चात्य सभ्यता के अन्धानुकरण में पड़कर अत्यन्त अशान्तिमय जीवन व्यतीत करनेवाले पति को प्राचीन पद्धति से गृहकार्य का संचालन करनेवाली गृहिणी किस प्रकार सुखी करने में समर्थ हुई, यह बात इस उपन्यास में दरसाई गई है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर—(बुक-डिपो) इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

नवयुवक और युवतियों के लिये मनचाहा उपहार

विवाह-सम्बन्धी विज्ञापन और पाँच सौ पढ़ी-लिखी लड़कियों और ऊँचे घराने के लड़कों का पूर्ण विवरण चित्र आदि "मैरज गजट" में देखिये।

एजेन्सी के इच्छुक शीघ्र लिखें—सेम्पुल कापी ५) भेजकर मँगायें।

मैरिज गजट, सदर बाज़ार, वर्ना स्ट्रीट, देहली।

चन्दा १०)

ी,
ली की।
,
ली की।
,
ी की।
,
ो की।
,
ी की।

से उन्नति कर स
या करें? और प
भी नहीं सकती।

*

ी जनता का दल
जानना चाहिये कि
की सरकार नहीं
ाप तक दिया
टी रहे।

*

व्यापारी चोरी
भेजते थे। क्या
लशाली है कि
करना पड़ता है!

—अगड़चन्द

न्यास

में चण्डीगढ
त्र बहुत ही
टकों का जहाँ
ज्ञातव्य बातें

साधन-सम्पन्न
न-खेल में ही
दा हृदय से
ही प्रभावो-
आने।

अशान्तिमय
का संचालन
यह बात इस
ने।
प्रयाग।

हा उपहार
कियों और
में देखिये।
कर मंगायें।
देहली।

देशदूत चित्रावली

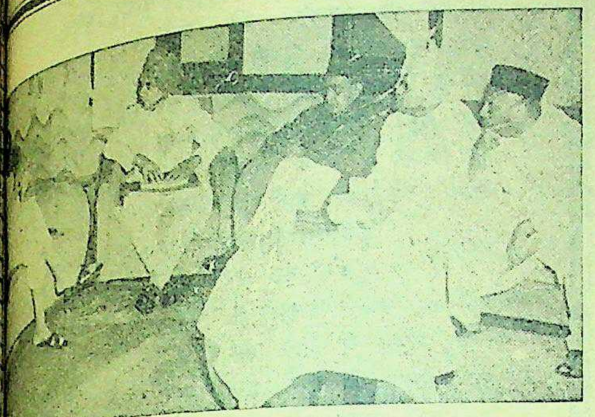

ल्लभभाई पटेल दक्षिणी देशी राज्यों के राजाओं से वार्ता कर रहे हैं। सरदार पटेल के बंबई पधारने के अवसर पर हुई थी। वार्ता के अवसर दक्षिणी राज्यों के कई राजा बैठे हुए दिखाई दे रहे हैं।

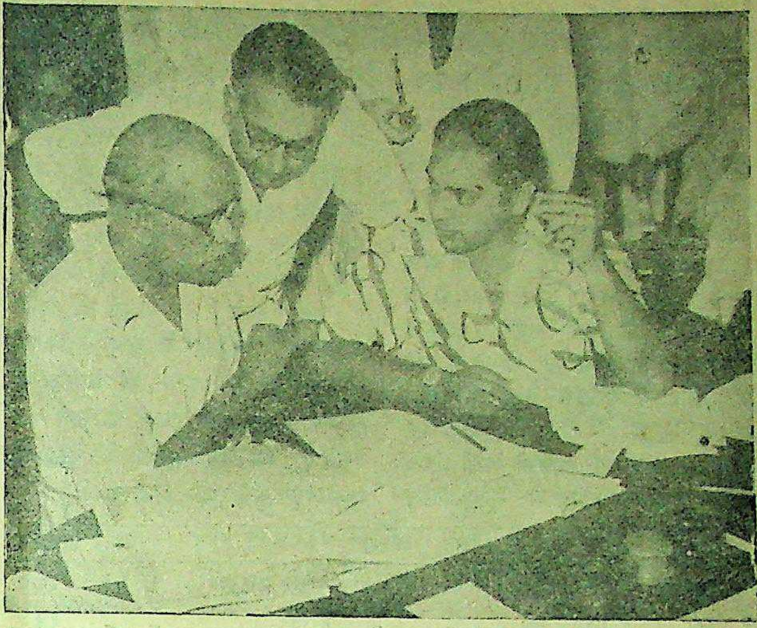

देशी राज्य-विभाग के मंत्री श्री वी० पी० मेनन मालवा संघ के राजप्रमुख महाराजा ग्वालियर से वार्ता कर रहे हैं। पीछे की ओर ग्वालियर सरकार के राजनैतिक सलाहकार श्री जे० एन० सहानी दिखाई दे रहे हैं।

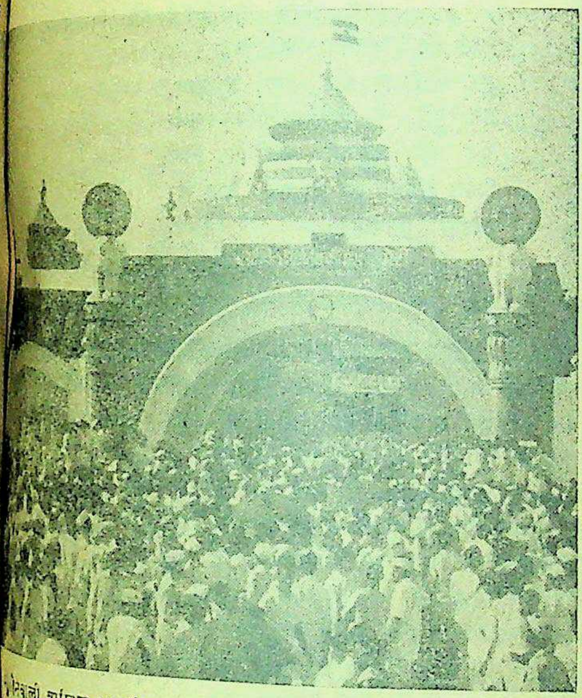

होनेवाली अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन जहाँ हुआ था नाम था 'गांधी नगर'। यह चित्र गांधी नगर के प्रमुख द्वार का है। भीड़ का अपार समूह खड़ा हुआ दिखाई दे रहा है।

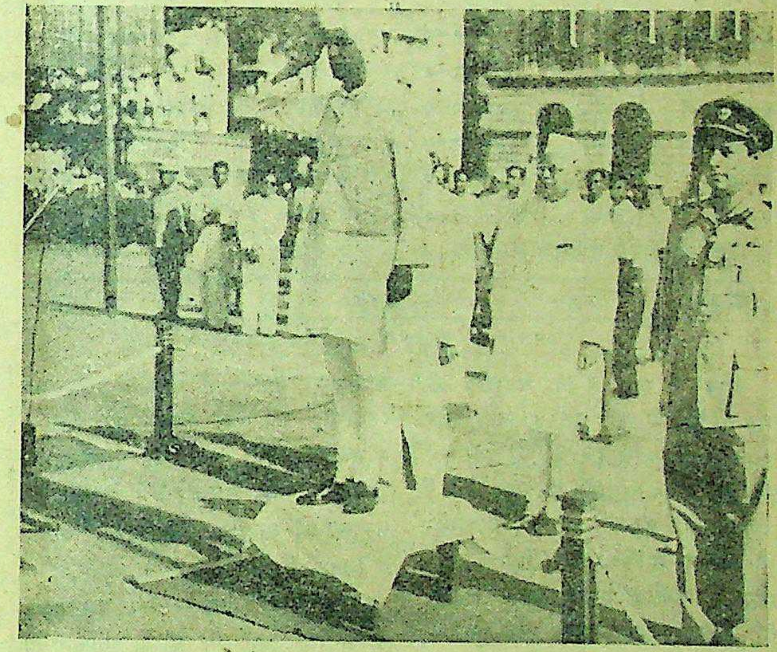

बंबई में होनेवाली अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन के अवसर पर भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू होमगार्ड्स का गार्ड आफ आनर स्वीकार कर रहे हैं।

बंबई में होनेवाली अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के खुले अधिवेशन में पंडित जवाहरलाल नेहरू व्याख्यान दे रहे हैं।

सम्पादक के नाम चिट्ठियाँ

अन्न और कपड़े की महँगी कब दूर होगी ?

भारतीय जनता ने 'कन्ट्रोल' के विरुद्ध आवाज उठाई, इस आवाज के साथ अहिंसा के पुजारी महात्मा जी ने भी सरकार से निवेदन किया कि 'कन्ट्रोल' शीघ्र ही समाप्त कर दिया जाय। गरीबों को ढाढ़स हुआ कि अब राष्ट्रीय सरकार के शासन-काल में चीजों की कीमत में कमी होगी और वे सरलता से प्राप्त होंगी। नियंत्रण के युग में ही चीजों की कीमत कम न थी, साधारण आदमी किसी प्रकार महँगी से लड़कर परिवार का भरण-पोषण करता था। आज जब 'कन्ट्रोल' से मुक्ति मिलने जा रही है तब भी कीमतों की दशा में कोई परिवर्तन नहीं दिखाई पड़ता। दिनों दिन वस्तुओं के मूल्य में बढ़ती होती चली जा रही है। नीचे के चौखटे में उन वस्तुओं का व्यौरा दिया गया है, जो एक साधारण आदमी के लिये आवश्यक है। इससे स्पष्ट है कि पिछले दो महीनों से साधारण वस्तुओं के मूल्य में कितनी ज्यादती हुई है। आय की अवस्था पर विचार करके हम दृढ़ता के साथ कह सकते हैं, कि इन वस्तुओं के मूल्य में अभी बहुत कुछ सुधार होना बाकी है।

वस्तुएँ	कन्ट्रोल की कीमत		प्रतिशत	आज का मूल्य	दर	प्रतिशत
१ गेहूँ	३ सेर ४ छ०	१ रु०	१००	१ सेर १२ छ०	१ रु०	१८७
२ चना	४ सेर ८ छ०	,, ,,	,,	३ सेर	,, ,,	१५०
३ बाजरा	५ सेर	,, ,,	,,	३ सेर ८ छ०	,, ,,	१४३
४ चावल	२ सेर ४ छ०	,, ,,	,,	२ सेर ४ छ०	,, ,,	१००
५ जौ	५ सेर	,, ,,	,,	३ सेर	,, ,,	१६७
६ शक्कर	१ सेर	०-६-३	,,	१ सेर	०-१५-०	१६७
७ नमक	१ सेर	०-१-०	,,	१ सेर	०—२-६	२५०
८ लंकलाट	१ गज	०-१०-०	,,	१ गज	२-८-०	४००
९ मारकीन	१ गज	०—८-०	,,	१ गज	१—८-०	३००
१० मलमल	१ गज	०-१०-०	,,	१ गज	२—८-०	४००
११ पापलीन	१ गज	०-१२-०	,,	१ गज	३—० ०	४००
१२ धोती	१ जोड़ा	५—०-०	,,	१ जोड़ा	१२—८-०	२५०
१३ साड़ी	१ साड़ी	५—०-०	,,	१ साड़ी	१३—०-०	२६०
१४ मिट्टी का तेल	१ बोतल	० — ३-३	,,	१ बोतल	० ३-६	११७
१४ वस्तुएँ			१४००			३२६१

१४०० ÷ १४ = १०० ; ३२६१ ÷ १४ = २३५

चौखटे से स्पष्ट है कि वस्तुओं की कीमत कन्ट्रोल के बाद २·३५ गुनी और सन् १९३९ के पश्चात् ८·५ गुनी बढ़ी है। इतना ही नहीं वस्तुओं के मूल्य में अब भी वृद्धि होने की सम्भावना है। अभी-अभी सरकार ने बिक्री-कर (Sales tax) लगाया है, जिसका भार दूकानदारों पर नहीं बल्कि खरीदनेवालों पर पड़ेगा। हिसाब लगाने से इस कर के कारण रहन-सहन का खर्च सन् १९३९ की अपेक्षा ९ गुना अधिक बढ़ जायेगा। वास्तव में भारतीयों के लिए यह दुःख का विषय है कि ऐसी विषम परिस्थितियों में पलते हुए भी उन्हें बिक्री-कर भी अदा करना पड़ेगा।

वस्तुओं की महँगी में परिवर्तन न होने का कारण सरकार की प्रबन्ध-शक्ति की निर्बलता ही कही जा सकती है। उत्पत्ति का वितरण यदि समुचित रूप से होता तो 'कन्ट्रोल' के द्वारा जनता के सुखों की रक्षा आसानी से की जा सकती थी। यदि महँगी से उकताकर सरकार ने फिर 'कन्ट्रोल' की व्यवस्था बनाई तो चोरबाजार पिछले सालों की तरह फिर जनता का शोषण करने लगेगा। अब 'कन्ट्रोल' के द्वारा वितरण होना असम्भव-सा प्रतीत होता है। जब तक उत्पत्ति के भागों से नियंत्रण न उठा लिया जावेगा, तब तक वितरण में सफलता का स्वप्न देखना मूर्खता है। सबसे पहले हमें उत्पादन शक्ति की ओर ध्यान देना चाहिए, फिर इसके पश्चात् वितरण का प्रश्न आता है। कच्चे माल पर मूल्य का निर्धारण, पूँजीपतियों के लाभ-हानि की व्यवस्था, जब तक सरकार की ओर से न सुधारी जायेगी, तब तक परिस्थितियों पर विजय पाना मुश्किल है। सरकार को वस्तुओं की उत्पत्ति और उनके वितरण के नियमों के प्रति कड़ा होना पड़ेगा, तभी बापू के आदर्शों का स्वरूप बन सकता है, अन्यथा 'स्वर्ण-युग' की बात सोचना तो बच्चे की तरह चन्द्रमा के लिए हठ करना ही होगा। हमें आशा है सरकार जनता की आवश्यक वस्तुओं के प्रति अधिक से अधिक विचार करेगी।

प्रयाग —रमानाथ अवस्थी
१० मई ४८

* * *

हिन्दी-दिवस मनाइए

इधर कुछ दिनों से फिर हिन्दुस्तानी की चर्चा होने लगी है और कुछ लोग यह स्वप्न देखने लगे हैं कि जो कार्य महात्मा गांधी के जीवन में न हो सका वह उनके नाम पर उनकी मृत्यु के बाद कर लिया जाय। मानव-जीवन में नाम का बड़ा महत्त्व है और इसी से किसी भी राष्ट्रभाषा के नाम की उपेक्षा नहीं हो सकती। नाम के साथ ही साथ लिपि को ही देखकर हम चटपट कह उठते हैं कि यह हिन्दी है, उर्दू है; या अँगरेजी है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने सदा से हिन्दी नाम और सदा उसके रूप नागरी लिपि को राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि के रूप में देखा है और सदा उसी के लिए उद्योग भी किया है। जब हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रश्न सामने था और दोनों का मिला-जुला रूप राष्ट्र का लक्ष्य था तब भी सम्मेलन ने अपने सिद्धान्त को नहीं छोड़ा। उर्दू की फारसी अरबी लिपि के लिए उसने छूट अवश्य दी किन्तु कभी उसने नागरी लिपि के समकक्ष उसे नहीं ठहराया। ऐसी स्थिति में जब कि उर्दू भाषा और उर्दू लिपि की उन्नति तथा वृद्धि के लिए अलग क्षेत्र ही बन गया तब हिन्दी के क्षेत्र में किसी प्रकार के मीन-मेख की क्या आवश्यकता? भारतीय सङ्घ की भाषा और लिपि हिन्दी और नागरी ही मान्य है और होगी भी, किन्तु यह तभी सम्भव है जब सचमुच जनमत का आदर और लोकध्वनि का सम्मान हो। जब कि हिन्दी के मुख्य क्षेत्र युक्तप्रान्त और बिहार ने यह निश्चित घोषणा कर दी है कि उसकी लोकभाषा हिन्दी ही है और विधान-परिषद् की उपसमिति ने भी हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा के रूप में प्रस्तावित किया है तब हिन्दी भाषा और नागरी लिपि के प्रतिकूल किसी प्रकार की चर्चा का अर्थ है किसी हिन्दुस्तानी को फिर से उर्दू के रूप में चालू करना। अथवा अपनी सुविधानुसार मई मास की किसी तिथि को अपने प्रान्त में विशेष रूप से हिन्दी-दिवस मनाएँ और उस दिन प्रान्त के सभी प्रमुख नगरों और स्थानों पर सभाएँ कर वहाँ के प्रमुख व्यक्तियों को प्रभावित करें और अपने यहाँ के विधान-परिषद् के सदस्यों को सूचित करें कि हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि को ही राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि के रूप में स्वीकार करें और इसके विपक्ष में किसी प्रकार का योग कभी न दें।

कृपा कर यह भी सूचित करने का कष्ट करें कि आप इस अवसर पर सम्मेलन से किस प्रकार का सहयोग चाहते हैं। आपकी सुविधा के लिए एक छपा पत्र साथ में भेज रहे हैं। आप अपने के गण्यमान्य व्यक्तियों के हस्ताक्षर कर विधान-परिषद् के अध्यक्ष के पास भेजें तथा तार और पत्र-द्वारा उन्हें स्मरण दिलाते रहें कि भारतीय राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्रलिपि स्वीकार की जाय। आपके इस राष्ट्रभाषा की समस्या की सम्मेलन को बल मिलेगा।

आशा है, आप अपनी बराबर सम्मेलन को सूचित करते शीघ्र अपने कार्यक्रम का विवरण कष्ट करेंगे।

—बालमुकुन्द गुप्त,
प्रचार

३ मई, १९४८

* *

चाँद का साथी अकेला आसमान

लेखक, श्री रमानाथ अवस्थी

चांद का साथी अकेला आसमान,
चांदनी के साथ है सारा जहान।
बादलों से रूठकर बूंदे चलीं
भूमि पर जीवन लुटाने के लिए,
सूर्य की किरणें हृदय में आग भर
चल पड़ीं दुनिया जगाने के लिए;
फूल खिलते हैं चमन में हर सुबह
देवता के द्वार जाने के लिये,
कोकिला को प्यार करता चमन का सुनसान,
फूल को तो सर चढ़ाते हैं स्वयं भगवान्।
रात की चोली सितारों से जड़ी
किन्तु सूरज के लिए बेकार है,
फूल सुन्दर हैं जियें हरदम यहां
यह नहीं तूफान को स्वीकार है;
बुझ न पाई प्यास चातक की अभी
इसलिए सावन तुम्हें धिक्कार है,
दीप से जग मांगता है रोशनी का दान,
पर पतिंगे दान देते हैं इसे निज प्रान।
सुबह की किरणें चलीं सिन्दूर ले
हर कली की मांग भरने के लिए,
इस खुशी में तितलियां-भँवरे सभी
चल पड़े मधुपान करने के लिये;
किन्तु दुनिया फूल का सर काट कर
मांगती वरदान तरने के लिये;
जो न चाहे कुछ करे सब कुछ यहां बलिदान,
समझ लो वह देवता है, है नहीं इन्सान।

फिल्मी दुनिया मु
सिनेमा की दुनिया का
रहस्य जानने के लिये 'फिल्मी
पुस्तक आज ही मुफ्त मँगाइ
पता— मधुर मन्दिर, हाथरस

मातृमण्डल

संसार में तलाक की विभिन्न प्रथायें कैसी हैं ?

क्या भारत में भी तलाक-लीला का तेज़ी से प्रारंभ होनेवाला है ?

लेखिका, कुमारी विमलादेवी राजदान, बी० ए०

ब्रह्मा में तलाक की प्रथा असाधारण है। स्त्री और पुरुष दोनों थोड़ी सी खराबी होने पर अपना अपना विचार कानून को सौंपते हैं। अभी ब्रह्मा में इस प्रथा की अधिकता नहीं है। ब्रह्मा का दाम्पत्य जीवन विशेषतत: सुखी और सम्पन्न होता है।

तिब्बत में तलाक की प्रथा नहीं है। यदि स्त्री और पुरुष के बीच में किसी प्रकार की अनुपयुक्त भावना उपस्थित होती है तो भी तलाक देने का प्रश्न नहीं उठता। गम्भीर परिस्थितियों में तलाक एक निश्चित समय के लिये दिया जाता है। फिर स्त्री-पुरुष साथ साथ रहने लगते हैं।

श्याम में पुरुष अपनी स्त्री को तलाक दे सकता है लेकिन उसे बेचने का अधिकार नहीं रखता। भावी पत्नी को वह बेच सकता है। पहली स्त्री को अपनी पहली संतान साथ ले जाने का अधिकार है। शेष लड़के और लड़कियाँ अपने पिता के साथ रहेंगे, उन पर उनकी माता का कोई अधिकार न होगा।

फिलीपाइन द्वीप-समूह में यदि पुरुष अपनी स्त्री की उपस्थिति में कोई दूसरी स्त्री लाकर घर में रख ले तो इसका अर्थ यह है कि वह पहली स्त्री को छोड़ना चाहता है। परिस्थितियों के अनुसार वह नई स्त्री से विवाह करके पहली स्त्री को छोड़ने का अधिकार रखता है।

साइबेरिया में यदि पुरुष अपनी स्त्री का घूँघट फाड़ दे तो उसका विवाह गैर-कानूनी घोषित किया जायेगा। वह पुरुष फिर दूसरी शादी करने के लिये स्वतंत्र है।

चीन का निवासी यदि किसी प्रकार अपनी जीवन-संगिनी से असंतुष्ट हो जाय तो वह बिना किसी कारण ही उसे छोड़ने का अधिकार रखता है, यदि स्त्री गृहस्थी के कामों में दक्ष नहीं, यदि वह बुरे स्वभाव की है तो भी वह अपने पुरुष के द्वारा छोड़ी जा सकती है। यदि स्त्री अपने पति से संतुष्ट नहीं तो वह अपनी असंतुष्टता प्रकट करके अपने पति से अलगाव स्थापित कर सकती है।

जापान में तलाक-प्रथा अमेरिका की भाँति प्रचलित है। पुरुष अपनी पत्नी को कोई भी कारण उपस्थित करके छोड़ सकता है। वर्तमान समय में यदि स्त्री-पुरुष पचीस वर्ष के पूरे हो चुके हैं और वे एक दूसरे को छोड़ना चाहते हैं तो उन्हें एक रजिस्ट्रार के पास जाकर अपने विवाह को समाप्त करवाना पड़ता है। पचीस वर्ष से कम अवस्थावाले स्त्री-पुरुष भी कुछ विशेष परिस्थितियों में तलाक देने का अधिकार रखते हैं।

कोचीन में तलाक की प्रथा बिलकुल सरल है। यदि स्त्री-पुरुष दोनों दो-तीन आदमियों के सामने अपनी भोजन करने की शलाका (Chopsticks) तोड़ दें, तो वे एक-दूसरे को छोड़ सकते हैं।

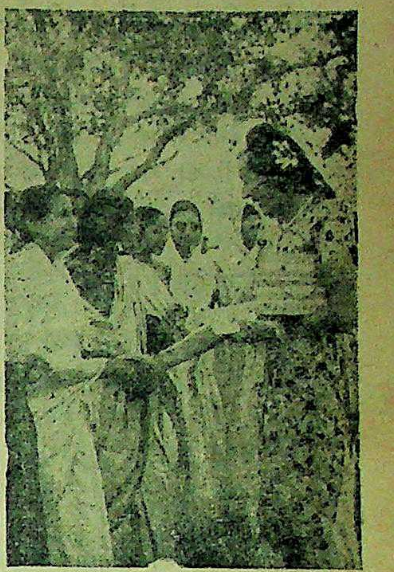

दिल्ली में लेडी माउंटबेटेन ने पिछले दिनों हाथ की बनी वस्तुओं का उद्घाटन किया था। लेडी माउंटबेटेन कुछ महिला कार्यकत्रियों से वार्ता कर रही हैं।

तलाक की प्रथा कम हो रही है। उदाहरण के लिये सन् १९३३ में विवाह की संख्या ४,८६,०५८ थी जब कि तलाक की संख्या ४९,२८३ थी। सन् १९३२ में तलाक की संख्या केवल २,१५५ थी। इस प्रकार अब तलाक-प्रथा का अंत भी होता जा रहा है।

* * *

जवान बनिए

२४ घंटे में

पार्कर एण्ड डेविस द्वारा प्रस्तुत 'ओटोजन' सजीवता और स्फूर्ति में २४ घंटे में ही आश्चर्यजनक वृद्धि करता है। यदि आप शक्ति की कमी, क्षीण स्मृति और शरीर-शून्यता, अशुद्ध रक्त, अस्वस्थ चमड़ी, खिन्नता, अनिद्रा, घुमनी, मानसिक अथवा शारीरिक थकावट आदि से ग्रस्त हैं, तो आपके लिए यह नवीन आशा है। इससे एक सप्ताह में ही अच्छी भूख तथा वजन में ५ से १० पौंड तक वृद्धि हो जाती है। आपके गालों पर ललामी आ जाती और आपकी मुद्रा शत-प्रतिशत उन्नत हो जाती है। आपके मुख पर वैसी ही आभा और चमक आ जायगी जैसी कि तरुणाई में थी जब कि आपकी चमड़ी ताजी और मुलायम थी। 'ओटोजन' आपकी मुद्रा में सुधार करता, आंखों में दीप्ति भरता, गालों और ओठों पर गुलाबी चमक लाता है। इँगलैंड में हजारों व्यक्तियों ने इसकी परीक्षा और सराहना की है और अब भारतवर्ष में भी यह प्राप्य है। अन्यथा सिद्ध करने पर ५०० पौंड दिये जायँगे। हिदायतों के साथ प्रति डिब्बे की क़ीमत ५) पांच रुपये।

ओटोजन पोस्टबाक्स ४४७ बम्बई

जवानी और शक्ति के लिए

प्रतिमा

इस संग्रह में सुकवि राजाराम श्रीवास्तव की एक से एक बढ़िया ५० कविताएँ हैं। इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा है। क्या भाषा और क्या भाव सभी अनुपम हैं। रंगीन आवरण, बढ़िया छपाई और मूल्य केवल १) एक रुपया।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

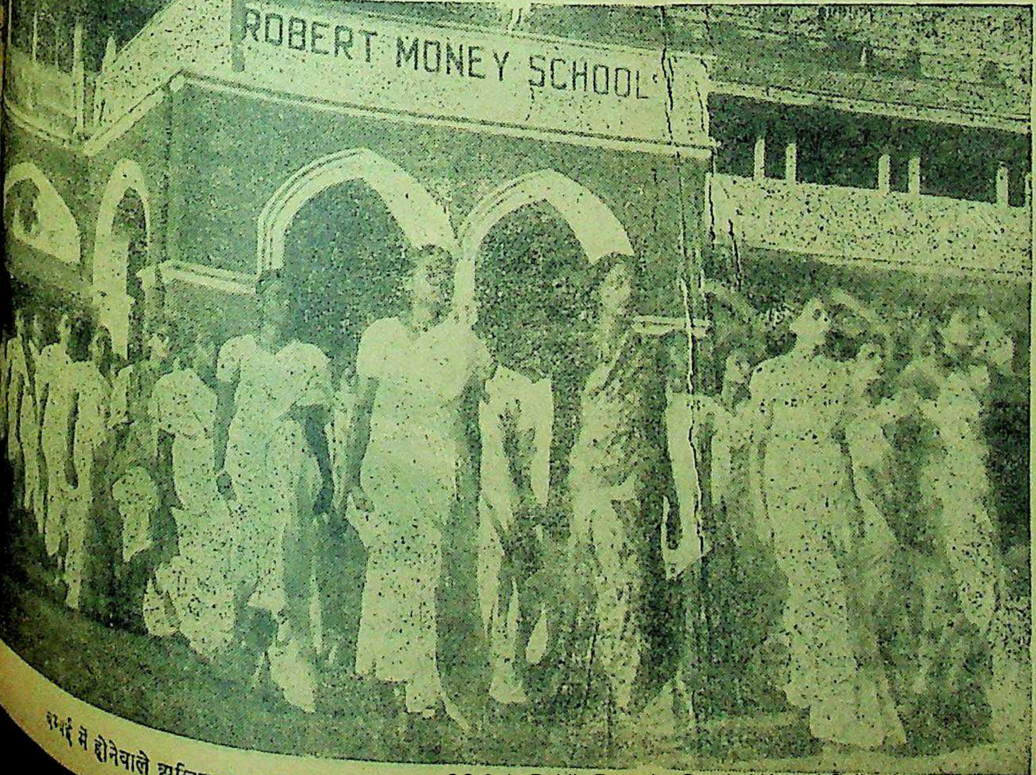

बम्बई में होनेवाले अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अवसर पर महिला स्वयं सेविकाओं की विशाल रैली।

पारिभाषिक शब्दों का निर्माण

(पेज ८ का शेष)

को ज्यों का त्यों ले लिया जाये, और दो, सब शब्द केवल संस्कृत से लिये जायें। दोनों पद्धतियों की चरम सीमा तक पहुंचना ठीक नहीं। दोनों विचारों में ग्राह्य अंश है उसे लेकर तीसरा नया, मध्यम मार्ग स्वीकार करना होगा।

(अ) अंतर्राष्ट्रीय शब्द कहकर जो अँगरेजी, जर्मन या फ्रेंच शब्दों की दुहाई दी जाती है, वे केवल पश्चिमी योरप तक सीमित शब्द हैं। पूर्वी योरप, रूस, चीन, जापान और दक्षिण-पूर्वी एशिया में वे शब्द प्रचलित नहीं। वहाँ अनुवादित शब्द प्रचलित हैं।

(आ) परन्तु जो अंतर्राष्ट्रीय शब्द वस्तुओं के साथ जनता तक पहुंच गये हैं, उन्हें लेना है, जैसे टेलीफोन, रेडियो, इंजीनिया, डाक्टर, सब्मैरीन, विजा, फौज के पद (लेफ्टनेंट, मेजर, कमिसार) आयुध-नाम (मशीनगन, ब्रेनगन, टारपीडो) आदि। परन्तु निराकार भाववाचक शब्द या अप्रचलित साकार वस्तुओं के व्यंजक शब्द संस्कृत से लिये जायँ।

(इ) जो शब्द वस्तुओं के साथ जनता तक पहुंच गये हैं, उनके लिये संस्कृत शब्द गढ़ना अनावश्यक है, जैसे रेल, टाइपराइटर, टिकिट, सिग्नल आदि। परन्तु जहाँ संस्कृत शब्द और देशज शब्द की स्पर्द्धा हो, देशज शब्द को प्रधानता दी जाये।

(ई) संस्कृत शब्द जो तत्सम के रूप में शिक्षित जनता के सामने पहुंच गये हैं उनसे संस्कृत के मूल शब्द लिये जायँ। वही नये शब्द गढ़ने का मूल उपादान होगा।

इस प्रकार ऐसे अंतर्राष्ट्रीय या संस्कृत शब्द जो कि अप्रचलित हों या केवल विशेषज्ञों में प्रचलित हों, अग्राह्य हैं। सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक विज्ञान में निश्चय ही संस्कृत-मूलक शब्द अधिक आवेंगे।

परिभाषा-निर्माण-पद्धति

किसी भी अंगरेजी या अन्य पारिभाषिक शब्द का पर्यायवाची पहले प्रचलित, देशज शब्दों में देखें। यदि न हो तो फिर नया शब्द बनाया जाय, जिसमें शब्द को प्रयोग में लानेवाले वर्ग या जन-साधारण का ध्यान रखा जाये। जहाँ केवल सैद्धांतिक अथवा विभाजन-विषय शब्दावली हो (जैसे वनस्पति-विज्ञान, प्राणी-विज्ञान आदि में) वहाँ संस्कृत से सहायता लेना आवश्यक है। इसमें इन बातों का ध्यान रखा जाये:

(अ) शब्दों के समान-व्युत्पत्तिक-ग्रहण में एकता का ध्यान रखा जाये परन्तु वह एकता यंत्रिक न होकर भाषा के विकास में जैसी विकास की स्वतंत्रता देखी जाती है, वैसा ही ध्यान में रखकर हो।

(आ) शब्दों के निर्माण में समास में संस्कृत-असंस्कृत का कोई विचार न रखा जाये। केवल यह ध्यान अवश्य रखा जाये कि वह जन-साधारण को खटकनेवाला न हो।

(इ) बड़े, सामासिक, उच्चारण-क्लिष्ट शब्दों की अपेक्षा समानार्थी, सरल शब्द सदा अधिक उपयोगी होंगे।

हम सभी शिक्षा-प्रेमियों, टेकनिकल शिक्षा-विशारदों, वैज्ञानिकों, भाषा-शास्त्र-विदों तथा साहित्यिक, वैज्ञानिक, औद्योगिक संस्थाओं से आशा रखते हैं कि हमारे इस काम में वे पूरा सहयोग देंगे। इस विषय में जो भी परिभाषा निर्माण-कार्य कहीं भी, भारतीय भाषा में हुआ हो और हो रहा हो उसकी भी हमें सूचना दें। जो भी व्यक्ति इस काम को करना चाहे, या जो कर रहे हों या कर चुके हों वे कृपया अपने नाम और पते और कार्य का विवरण हमें दें, और इस महान् अनुष्ठान को सफल बनायें।

* * *

भक्त कबीर!

(पैज ८ का शेष)

मुसलमान ही मानते हैं। आम लोग कहते हैं कि उनका मृतक संस्कार हिन्दू रीति से हुआ था, परन्तु दूसरों का विचार है कि मुसलमानों ने उनके शरीर को अपनी रीति के अनुसार दफन किया था। जो कुछ भी हो यह तो सिद्ध ही है कि वह हिन्दू मुसलमानों दोनों को एक समान मानते थे और दोनों को समान प्रेम की दृष्टि से देखते थे। हिन्दुओं में कबीर-पन्थी के नाम एक अलग मत बन गया है, जिसके माननेवाले कबीर के सिद्धांतों पर चलते हैं।

कबीर जा [illegible] भक्ति अपार थी। मीराबाई की तरह वह भी ईश्वर के दर्शन के लिए व्याकुल रहते थे, वह एक भजन में कहते हैं:—

अविनाशी दुल्हा कब मिलहो
भक्तन के रक्षपाल।
जल उपजो जल ही के नेहा,
रटत पियास पियास
मैं ठाढ बरहन मग जोऊ,
प्रियतम तुम्हारी आस
दिवस न भूख, रैन न निदिया,
घर आँगन न सुहाए
सेजरिया बैरन भई हमको,
जागत रैन बिहाए
हम तो तुम्हारी दासी सजना,
तुम हमारे भरतार!
दीनदयाल दया कर आवो,
सनाथ सिरजनहार
कै हम प्राण तजत है प्यारे,
कै अपनी कर लेव
दास कबीर बिरह अति बाढ्यो,
हमको दरसन देव।

दूसरा कहना है:—

हरि अब बनिहै नहीं बिसारे।
दीनदयाल कृपानिधि स्वामी,
गिनियत दोष हमारे।
गीध अजामिल गणिका तारक,
जापन पै तुम तारे
है कृपाल अपनोपन सोई
बनि है नाथ सम्हारे॥

उपरोक्त शब्दों में कितनी मिठास है, कितनी सचाई है, कितनी तड़प और कितना प्रेम है? इसको कौन अनुभव नहीं करता? सच्चे हृदय के उद्गार हैं इसी से सीधे हृदय में जाकर बैठ जाते हैं। शताब्दियाँ बीत गईं पर इनका असर कम नहीं हुआ। हो भी कैसे? प्रेम और सच्चाई कभी बूढ़े नहीं होते, वे तो सदा बलवान् हैं सदा रहनेवाले हैं, अजर और अमर हैं! जो इस पवित्र वाणी को नहीं सुनते उनका दुर्भाग्य है। ईश्वर हम सबको शक्ति दे कि हम इस भक्त की वाणी को सुनें, उसे अपने हृदय में रक्खें, उस पर अमल करें और अपने जीवन को उसके ढांचे में ढालकर अपने आपको और संसार को पवित्र बनाये। सच्चे रूप से इस रीति पर चलना सहज नहीं है।

भक्ति करे कोई सूरमा,
जाति वरण कुल खोय।
परन्तु हमको सूरमा ही तो बनना है।

* * *

मनोरंजक चुटकुले

एक लड़के ने मास्टर से पूछा 'नौ दो ग्यारह कहावत के माने क्या होते हैं?'

'भाग जाना' मास्टर ने जवाब दिया।

दूसरे दिन हिसाब पढ़ाते समय मास्टर ने लड़के से पूछा 'नौ और दो कितने होते हैं?'

यह सुनकर लड़का किताबें लेकर चला गया।

* * *

सन् १९४७ में ब्रिटेन के बा
से २,७१,४०,००,००० तार कि
बाहर से आनेवाले पत्रों की
७,१२,००,००,००० है। पोस्टका
पार्सल आदि की रकम ३,३५,४०,००
पौंड है।

* * *

सन् १९४७ में कनाडा में स्का
मेम्बरों की संख्या १,०३,७५६ तक
थी।

* * *

ब्रिटेन में स्थानीय शिक्षा के
जिला बोर्डों और म्यूनिसिपैल्टियों
सरकार की ओर से १७,६०८ करोड़
मिलता है।

* * *

विलायत की मिलिटरी से जून १९
में ५०,००,००० आदमी और औरतें
गये हैं।

* * *

हिमालय पर्वत की सबसे लम्बी
लगभग १,६०० मील लम्बी है।

* * *

नित्यप्रति की झंझटें
चाय
से मिटाइ
इन्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रसारि

फिल्म-अभिनेत्री गीता निजामी

एक सिनेमा-प्रेमिका की भेंट का मनोरंजक वर्णन

लेखक, श्री गोपाल मेहरोत्रा

समाज से बहिष्कृत होने के बाद आई। किसी ने 'यह', किसी ने 'वह' और... इत्यादि, इत्यादि। अभी तक यह नहीं मालूम हुआ कि निजामी साहबा किस प्रकार सिने-संसार में आईं?"

"बड़ा सरल प्रश्न है, इसका जवाब तो मैं दे सकती हूँ।"

"लेकिन मुझे तो निजामी साहबा से भेंट करनी है?"

"मिल लीजियेगा। 'वह भागी तो नहीं जा रही हैं।' हाँ, तो मैं कह रही थी कि—श्रीमती गीता निजामी श्री हैदर बख्श कुरेशी की पुत्री हैं, जिनका जन्म करीब १९२६ में एक ऊँचे खानदान में हुआ था। संगीत-कला से बहुत ज्यादा मुहब्बत होने के कारण सिर्फ आठ वर्ष की ही उम्र में नाच और गाने के 'आर्ट' में बहुत काफी काबलियत रखने लगीं। हैरत तो इस बात की है कि उसने किसी से सीखा नहीं था। श्रीमती गीता देवी के माँ-बाप ने उसे सिनेमा देखने का बहुत मौका दिया। उन चित्रों के जरिये उसने वह सीखा, जो आज वह है। सन् १९४२ से ४४ तक पंजाब में 'टूर' करती हुई एक थियेटरिकल-कम्पनी में 'डान्स' करती हुई उसने फिल्मों में खूब नाम कमाया। उसका सबसे पहला निर्माण 'पटोला' हुआ। यहाँ पर उसके जीवन की पहली झाँकी समाप्त हुई। इसके बाद निजामी जी ने शालीमारकृत 'मन की जीत' में एक नर्तकी का अभिनय किया और फिर उसने 'नवयुग चित्रपट' कम्पनी की 'पन्ना' नामक फिल्म में काम किया। दर्शकों ने उसकी प्रसंशा भी की......।"

प्रसिद्ध फिल्म-अभिनेत्री गीता निजामी।

"दर्शकों ने कि 'आँखों ने'? छोड़िए इस बात को। अच्छा उसके बाद क्या हुआ?"

"पन्ना-चित्र के अभिनय पर उसे सन् १९४५ के इनाम में एक 'मेडल' मिला। फिर 'कमरा नं० ९', 'मोती', 'पारो' आदि चित्रों में काम करने का 'कान्ट्रैक्ट' किया। 'कमरा नं० ९' और 'पारो' तो पूरा हो ही गया है, लेकिन 'मोती' की अभी 'शूटिंग' चल रही है। इससे पहले उसने रमणीक प्रोडक्शकृत 'गाँव की गोरी' में एक नर्तकी का काम किया था। गीता देवी आशा करती हैं कि 'मोती', 'पारो' और 'कमरा नं० ९' उनकी आगामी तीन शानदार सफलताएँ होंगी।"

"अजी साहब, कैसी बातें कर रही हैं आप। इन लोगों ने तो सब मटियामेट कर दिया है, जहाँ देखिए 'टायलेट-सोप' की आवश्यकता हो तो अभिनेत्री गीता निजामी की पसन्द खरीदिए और रजतपट पर तो कहना ही क्या है—कहाँ पत्तों की बन्द कोठरी, 'छिप-छिपकर मत देखो जी भँवर जी' और कहाँ 'काली घटा छाई हो 'राजा'? बुरा न मानिएगा निजामी साहबा? बहुत कुछ मिलकर उनसे कहना चाहती हूँ?"

"उसमें केवल एक ही आदमी का तो हाथ नहीं और फिर गीतों में दर्शकों की रुचि भी तो देखनी पड़ती है। 'टायलेट-सोप' के विज्ञापन किस तरह से होते हैं—यह तो नहीं जानती।"

"हाँ साहब! आप क्यों जानेंगी? देखिए, श्रीमती जी यदि रास्ता काटकर निकलना चाहती हों तो मैं भी चलूँ?"

"अरे! आप रूठ गईं? मैं तो कह रही थी कि अभिनेत्रियाँ कितनी पराधीन होती हैं और 'पराधीन सपनेहु सुख नाहीं' भी तो दाँत बाए खड़ा रहता है दिग्दर्शकों के सामने...।"

"ना! ना!! ऐसा न कहिए। जब मिल-मजदूर, मिल-मालिकों की खिलाफत कर सकता है तो क्या अभिनेत्रियाँ, जो 'रूप-राशि' की खान हैं, कुछ नहीं कर सकतीं? यह तो स्वयं ही नग्नता को निर्लज्जता के रूप में प्रदर्शित करती हैं।"

"आप नहीं समझीं श्रीमती जी!"

"वाह! खूब कही आपने भी। कला को उच्छृङ्खलता का रूप प्रदान करना ही क्या सिनेमा-कलाकारों का कर्तव्य है?"

"हाँ! कुछ अंशों में आप ठीक कह रही हैं, लेकिन उसे कार्य-रूप में किस तरह बदला जाय?"

"बड़ा आसान है। अगर आप चाहती हैं कि कला के सात्विक रूप को भारतीय आत्माओं के हृदयों में कुरेदें तो आपको अपने एक निश्चित ध्येय को रखकर निर्देशक निर्माताओं के विरुद्ध विद्रोह करना चाहिए। वास्तविकता तो यह है कि मैंने अभी तक जितनी अभिनेत्रियों की दिनचर्याएं देखी हैं—कोई कुत्ते पलने का प्रेमी है, तो कोई हार्स-रेस के मैदान में दो-दो तीन-तीन हजार की बाजियाँ लगाती हैं। कोई डाइरेक्टरों को प्रसन्न करने के लिए उनके व्यसन का साधन बनती हैं। क्या इसमें कुछ हो सकेगा? गीता निजामी की दिनचर्या में विशेषता क्या है?"

"मेरे विचार से न तो बेचारी कुत्ते पालती हैं और न घोड़े के मैदान में जाती हैं। बल्कि उनके सम्पर्क में आनेवाला व्यक्ति उनका हृदय से एक बार स्वागत जरूर करता है। उनका दिन का अधिक से अधिक समय मित्रों के साथ ही बीतता है। आपसे भी यदि मिलेंगी तो छूट नहीं सकतीं। हाँ तो आप कह रही थी कि...।"

"आप क्रान्ति करना चाहती हैं—फिल्म-क्षेत्र में?"

"इसका मैं हृदय से स्वागत करती हूँ।"

क्या आप अपनी सहयोगिनी मुझे बना सकेंगी?"

"क्यों नहीं? क्यों नहीं?"

तभी 'रेस्टयूरेन्ट के ब्वाय' ने रसीद लाकर मेज पर रख दी। मेरे अत्यधिक आग्रह करने पर भी उन्होंने ही 'पेमेन्ट' किया। रात्रि का आगमन समीप ही था। हम लोग प्रस्थान करने के लिए प्रस्तुत थे कि सहसा कुछ विचार हृदय में उमड़ पड़े और मैंने उनके करों में 'आटोग्राफ-बुक' दे दी। मृदु हास करते हुए गंगा निजामी ने उस पर हस्ताक्षर कर मेरे हाथों में दे दिया। सहसा एक आगन्तुक को आते निरखकर मैं सकुचा गई। तभी श्रीमती गंगा निजामी जी ने कहा—"हल्लो डियर डार्लिंग! आइये, मैं आज अपनी एक नई सहेली से आपका परिचय करा दूँ।"

"आप ही हैं वह...?" वेदी साहब ने मेरी ओर संकेत करते हुए कहा—"अरे भाई! यह तो तुम्हारा रोज का काम है।"

"जी! यह हैं मेरी सहेली श्रीमती... समालोचिका..." और वेदी साहब की ओर इङ्गित करते हुए कहा—"यह हैं मेरे पतिदेव! मिस्टर वेदी।"

यह सुनकर मैं चकरा गई। सहसा मेरी दृष्टि 'आटोग्राफ-बुक' पर गई। जिसमें अंकित था—'सप्रेम—'गीता निजामी'।

विस्मित होकर मैंने कहा—"आप...।"

श्रीमती गीता निजामी ने एक हल्की सी चोट मेरे मुख पर कर दी और मुसकाते हुए कहा—"हाँ तेरी सहेली गीता-निजामी।" और इतना कहकर वे दोनों 'मोटर कार पर बैठकर जाने लगे। तीन मुखों से 'नमस्ते' शब्द का उच्चारण हुआ और क्षणभर में वे दोनों (मोटर सहित) मेरे नयनों से ओझल हो गए।

मेरे सम्मुख गंगा निजामी जी की कला एवं चतुरता नाच उठी। मैंने विचार किया और हृदय ने कहा—'रजतपट पर वह कैसी भी क्यों न हों, परन्तु वह चतुर एवं प्रभावशाली—अभिनेत्री हैं। कितना हँसमुख चेहरा और उस पर घुंघराली केश-राशि, सुघर नीलिमा से परिपूर्ण नेत्र, सुन्दर शरीर, श्वेत रंग, धनुषाकार भौंहें...मेरे सम्मुख अनुपम छटा बिखेर रही हैं, अपने मित्रों के लिए वह लहलहाती हुई मधुरतम वाणी आज मेरे हृदय में कल्लोल कर उठती है, कितना प्रसन्न एवं प्रभावित होता है वह मानव, जो उनसे भेंट करता है। आप जब मिलेंगे, एक नया जीवन प्राप्त होगा यह मेरी आशा है।

* * *

साहित्य-चर्चा

'हिन्दी शार्ट हैंड'*

लेखक, श्री अलगूराय शास्त्री, एम० एल० ए०

प्रसन्नता की बात है कि पं० निश्कामेश्वर मिश्र जी ने हिन्दी शार्ट हैंड का तीसरा संस्करण प्रकाशित किया है। मिश्र जी की इस निष्काम प्रणाली से मेरा सम्बन्ध १९२० से है। श्रीशचन्द्र वसु जी के साथ १९०६ में मिश्र जी ने जब इस प्रणाली का अविष्कार किया था तब से अब तक इसमें बहुत सुधार और बहुत उन्नति हुई है। शार्ट हैंड के विद्यार्थी को हिन्दी शीघ्र लिपि के इतिहास के चाव के साथ पढ़ने के लिये एक बड़ी सामग्री मिल सकती है यदि वह इन तीनों संस्करणों का भली प्रकार अध्ययन करे। मुझको तो पहले संस्करण से यह वस्तुत: तीसरा संस्करण ऐसा विकसित और पूर्ण प्रतीत होने लगा है जैसे गंगोत्री से निकली हुई गंगा भागीरथी बनकर समुद्र में मिलती है। उसका मूल रूप वही है जिसे वसु जी और मिश्र जी ने पिटमैन को आधार मानकर आज से ४०-४२ वर्ष पहले निकाला था। किन्तु अब शब्द-चिह्न, वाक्य-चिह्न, और पद-चिह्नों से भरी हुई यह पुस्तक जलराशि से भरी हुई भागीरथी बन गई है। निष्काम प्रणाली "हिन्दी शार्ट हैंड" हिन्दी-जगत् में अपनी तुलना नहीं रखती सन् १९१९ के साहित्य-सम्मेलन के आठाईसवें अधिवेशन पर जो प्रतियोगिता शीघ्र लिपि में हुई थी उसमें १७० तथा १९० की गति से लिखनेवाले इसी प्रणाली के विद्यार्थी थे। जिनको प्रथम और द्वितीय स्थान मिला था। सन् १९२३ के साहित्य-सम्मेलन में मुझे स्वयं इस प्रणाली के अनुसार लिखने पर स्वर्ण-पदक साहित्य-सम्मेलन के लाहौर-अधिवेशन में दिया गया था। जो दूसरी प्रणालियाँ बाद में निकली हुई हैं वह इसकी तुलना में नहीं ठहरतीं। आश्चर्य है कि जिस साहित्य-सम्मेलन ने इस प्रणाली को प्रतियोगिता में स्वयं सर्वश्रेष्ठ पाया उसका आज तक उसको पूरा आशीर्वाद नहीं मिला। मैं नागरी-प्रचारिणी-सभा को धन्यवाद देता हूँ कि उसने इस उपयोगी प्रणाली को प्रोत्साहन दिया है। सब हिन्दी-प्रेमियों को जो हिन्दी शीघ्र लिपि का विकास चाहते हैं, इस प्रणाली को अपनाना चाहिये। अक्षरों के चुनाव, स्वरों के आकार हिन्दी भाषा की शैली में कृदन्त-तद्धित आदि प्रत्ययों संधियों, उपसर्गों और विभक्तियों की विशेषता को ध्यान में रखकर इस प्रणाली को व्याकरण के नियमों से इस प्रकार बाँधा गया है कि गति बढ़ाने और शब्दों को सुगमता से लिखने में दूसरी पद्धति की अपेक्षा इससे बहुत मदद मिलती है। हिन्दी के शार्ट हैंड, धातु-प्रत्यय, उपसर्ग आदि के लिए जब तक सुगम नियम न हों तब तक न गति ही बढ़ सकती है और न शब्दों का रूप ही अच्छा बन सकता है।

धातु-प्रत्यय "कृदन्त एवं तद्धित" उपसर्ग, समास हिन्दी-साहित्य की विशेषतायें हैं। व्याकरण की इन जटिलताओं से शब्दसागर का सम्बन्ध है। शब्दों को शीघ्र लिखना ही शार्ट हैंड का काम है। मिश्र जी ने धातु प्रत्ययों के साथ अपने शब्द-चिह्नों तथा अक्षरों को रूपान्तरित पूरा लिखने की एक ऐसी सुगम रीति निकाली है कि जिससे गति बढ़ाने तथा शब्दों को सुन्दर सुन्दर छोटे रूप में लिखने की सुविधा प्राप्त होती है।

वर्णमाला, स्वर एवं व्यञ्जनों का चुनाव अत्यन्त वैज्ञानिक है। एक झटके से अधिक में कोई अक्षर नहीं लिखा जाता। झटका या stroke भी ऐसा भी जो अक्षर जितना अधिक प्रयोग में आता है, उसके लिए झटका उतना ही सुगम तथा सरल? अन्य प्रणालियों में एक अक्षर।

जैसे क, घ, छ, अ आदि के लिये ऐसे चिह्न लिखे गये हैं कि जिनमें दो स्ट्रोक लगता है। शार्ट हैंड के लिये इसमें अवैज्ञानिक क्या बात हो सकती है। कभी भी ये पद्धतियाँ गति को एक सीमा से आगे नहीं ले जा सकतीं। निष्काम प्रणाली इस मौलिक दोष से मुक्त होने के कारण गति बढ़ाने के लिये सर्वथा विमुक्त है।

फिर शब्द-चिह्न, वाक्य-चिह्न, पदावली चिह्नों का पाठ पाठ के साथ प्रारम्भ से ही ऐसा अभ्यास करा दिया गया है कि विद्यार्थी प्रारम्भ से ही अभ्यस्त होता जाता है। इन चिह्नों के नियत करने में विशेष वैज्ञानिकता से काम लिया गया है। वाक्य, पदों, पदावलियों के अन्तर्गत आनेवाले शब्दों के मुख्यांश उन शब्दों में समाविष्ट होते हैं। अतः स्मरण रखने में सुविधा होती है।

अभ्यास के लिये पुस्तक की कुंजी साथ रखना विद्यार्थी के लिये हितकर है। इससे अपने आप छात्र स्वयं अपने घर पर यह उपयोगी कला सीख सकता है। मिश्र जी ने तृतीय संस्करण में इस पुस्तक तथा कुंजी को साथ रखकर एक ही पुस्तक में दोनों को छापकर बड़ा उपकार किया है।

शार्ट हैंड के पुराने सेवक तथा उस कला के सार्वभौम विकास की उत्कट इच्छा रखने के नाते मैं यह चाहता हूँ कि हिन्दी-प्रेमी इस पद्धति को अपनायें, ताकि प्रतियोगिता में हिन्दी की बढ़ती हुई आवश्यकता पूर्ति करने में हिन्दी शार्ट हैंड उपादेय प्रमाणित हो।

इस प्रणाली की मुख्य विशेषतायें जो अब तृतीय संस्करण में विकसित होकर आई हैं निम्नलिखित हैं।

१—घर बैठे अभ्यास करने में यह प्रणाली अत्यन्त सुगम है।

२—वर्णों, स्वरों, अन्तस्थ, उस्माक्षरों, पदों, शब्दों के निर्माण वैज्ञानिक, सुगम हैं एवं सरल हैं।

३—कम से कम stroke अथवा झटकों से बड़े से बड़े शब्द, पद, वाक्य लिखे जाते हैं।

४—शब्द-चिह्न, वाक्यचिह्नों का निर्माण वैज्ञानिक होने से स्मरण करने में बहुत सुविधा होती है।

---

*हिन्दी शार्ट हैंड (निष्काम प्रणाली)—लेखक, श्री निश्कामेश्वर मिश्र बी० ए० एल० टी०, प्रकाशक, लेखक स्वयं, लाहौरी टोला, बनारस। मूल्य चार रुपया।

क्या महयुद्ध की संभावनाएँ हैं ?

(पृष्ठ ५ का शेष)

प्रतिस्पर्धी, युद्ध-प्रिय प्राणी है। वह इस कुत्सित वृत्त का शिकार है। यदि उसके पास एटम बम अथवा अन्य शस्त्रास्त्र न होंगे तो वह ईंट-पत्थर और डंडों से लड़ेगा। अतएव विश्वशांति के लिए वासनाओं का दमन करना चाहिये, निशस्त्रीकरण नहीं।

उपरोक्त दलील पोच है। पहले एक गाँव दूसरे गाँव से, एक शहर दूसरे शहर से, एक प्रान्त दूसरे प्रान्त से लड़ जाते थे। आज ऐसा नहीं होता। प्रत्येक राष्ट्र भी दूसरे राष्ट्र से नहीं लड़ता। केवल कुछ साम्राज्यवादी देश हैं, जो अपने स्वार्थों के लिए लड़ना चाहते हैं। युद्ध समाप्त होने के साथ ही संसार के पूंजीपति तृतीय महायुद्ध शुरू करना चाहते थे। इटली के नेता नीनी और ब्रिटिश विद्वान् श्री वेल्स ने इसकी चेतावनी भी दी थी। रूस युद्ध नहीं चाहता। ब्रिटेन और अमरीका भी यह भली भाँति जानते हैं, युद्ध-काल में रूस की भारी क्षति हुई है। वहाँ पर जान और माल का संहार हुआ है। प्रत्येक रूसी शांति चाहता है, निर्माण चाहता है। रूस, उसके नेता और उसकी नीति शांति के प्रतीक बन गये हैं।

अमरीकी पूँजीवाद और साम्राज्यवाद के लिए युद्ध अवश्यंभावी हो गया है। वह अपनी विरोधी समाज-व्यवस्था अर्थात् कम्यूनिज्म की उन्नति, उसका प्रसार सहन नहीं कर सकता। गत महायुद्ध में योरपीय और एशियाई देशों में पूंजी और साम्राज्यशाही का खोखलापन सिद्ध हो गया था, अतएव इन देशों में कम्यूनिज्म (साम्यवाद) की अभिवृद्धि हुई। अमरीका को यह परिवर्तन असह्य है, क्योंकि वह जानता है कि कम्यूनिस्ट संसार के अन्दर अमरीकी साम्राज्यवाद का रहना असंभव है।

दूसरा कारण भी है। युद्धकाल में पूँजीवादी आर्थिक ढाँचा ठीक तरह चलता है, क्योंकि लड़ाई के मैदान में बहुत-सी सामग्री का संहार होता है अतएव उत्पादन बढ़ता है, मुनाफा बढ़ता है; परन्तु युद्ध के बाद बाजार नरम हो जाता है, बिक्री कम हो जाती है, मुनाफों की दर गिरने लगती है और सेठ लोग दिवालिया हो जाते हैं। देश में बेकारी फैलती है, मजदूर उत्तेजित होने लगते हैं, क्रान्ति का सहारा लेते हैं। युद्ध के बाद अमरीका की यही दशा हुई है। बेकारी बढ़ी है, उत्पादन के कम होने का खतरा है। अभी पिछले दिनों खाद्य पदार्थों के दाम गिरने लगे थे। मजदूर बेचैन हैं और हड़तालें करने लगे हैं। इस कारण, अमरीकी साम्राज्यशाही नए बाजार चाहती है और नए बाजारों के लिए अपनी सैन्य-शक्ति का सहारा लेती है।

तीसरा कारण नए बाजारों के लिए ही युद्ध की आवश्यकता नहीं। युद्ध स्वयं भी पूंजीवादी संकट से बचने का एक उपाय है। युद्ध के नाम पर युद्ध-सामग्री का उत्पादन किया जाता है और इस प्रकार मुनाफों की दर को समाज के श्रम और शोणित का शोषण कर कायम रक्खा जाता है।

अतएव रूस को युद्ध की आवश्यकता नहीं, अमरीका को है।

युद्ध होगा अथवा नहीं, यदि तो कब? यह केवल भविष्यवक्ता सकता है। समाजशास्त्र और राजनीति विद्यार्थी को केवल इतना तक अधिकार है कि अमुक परिस्थिति युद्ध हो सकता है, उनके अभाव में नहीं

रूस और उसके साथियों के होने पर युद्ध की संभावना की जा है। अनेक विद्वानों का मत है कि यट देश और पूर्वी योरप अम तथा ब्रिटेन और अन्य पाश्चात्य देशों अपेक्षा दुर्बल हैं! इसमें संदेह नहीं उपरोक्त देशों की औद्योगिक शक्ति से बड़ी है; परन्तु उद्योग-धन्धों में भी रूस से आगे था। युद्ध में वि लिए औद्योगिक शक्ति पर्याप्त सामाजिक ऐक्य परमावश्यक है अमरीका तथा पाश्चात्य देशों में सामा एकता का अभाव है। प्रत्येक देश, दलों, दो राष्ट्रों में बँट गया है। और गरीब, शोषक और शोषित, पति और मजदूर। उपरोक्त दोनों ही संघर्ष में व्यस्त हैं। और वर्ग-संघर्ष, युद्ध की अवस्था में कोई भी देश नहीं छोड़ सकता।

रूस से लड़ने के लिए अमरीका योरपीय देशों का सहारा चाहिए; पर कोई योरपीय देश ऐसा नहीं जहाँ रीकाविरोधी कम्यूनिस्ट आंदोलन उग्र धारण न कर चुका हो, जहाँ मजदूर कम्यूनिस्टों का साथी न हो।

इसके अतिरिक्त, युद्ध छिड़ते ही उपनिवेश एक बार फिर सर उ इन देशों में क्रांति आरम्भ हो चु उपनिवेशों की क्रांति रूस के विरुद्ध रूस के पास कोई उपनिवेश न अफ्रीकी और एशियाई उपनिवेश रीका और उसके साथी पाश्चात्य दे (जैसे हालैंड, इँगलैंड, फ्रांस और बे यम) के विरुद्ध लड़ रहे हैं। चीन, जर्मनी, फिलिस्तीन, इण्डोचीन, नेशिया, मिस्र, ईराक आदि देशों की रूस के विरुद्ध नहीं, अमरीका और उ साथियों के विरुद्ध है।

* * *

उपरोक्त धारणाएँ सत्य नहीं। अवश्य है कि प्रगतिवादी और क्रांति शक्तियाँ युद्ध के लिए उत्तरदायी इसका उत्तरदायित्व पूँजीवाद पर है युद्ध चाहती भी नहीं, केवल पूँजीवाद उसका उच्चतम स्वरूप साम्राज्यवा युद्ध चाहता है। हाँ, इसमें संदेह युद्ध की परिस्थितियों में भी क्रान्ति और प्रगतिगामी दल अपना का छोड़ते और अपने ध्येय की ओर बढ़

परन्तु युद्ध को रोक देना स्वयं कारी शक्तियों की विजय है, समाजवादी शक्ति ही युद्ध को रोक है। वह युद्ध के पूर्व ही पूँजीवाद कुचल सकती है। आज की परि युद्ध का छिड़ना प्रगति की शक्ति केवल पराजय का सूचक होगा, पूँजीवादी देशों में। अतएव पूँजीवादी के प्रगतिवादी, समाजवादी और क्रांति आंदोलनों का कर्त्तव्य है कि वे देशों को युद्ध की ओर बढ़ने से रो

यदि युद्ध आरम्भ हुआ तो उससे अलग न रह सकेगा। अतएव को युद्ध का विरोध करना चाहिए में अमरीकी और ब्रिटिश पत्र और संवाददाता युद्ध का प्रचार इससे भी सचेत रहना चाहिए।

* *

शोलापुर की खबर है कि नेता फैजुला बेग वकील जो ईतेहादुल मुस्लमीन लीग के सदर हैं, उनके नेतृत्व में स्वयं चार बजे लगभग २०० गुण्डे और रजाकारों ने गोविन्दराव पटवारी के घर को लूटना आरम्भ किया। प्रतिकार करनेवाले शंकरराव जाधव इत्यादि ४० व्यक्तियों पर गोलियाँ चलाई गईं। पटवारी के घर में लगभग ३० हजार की लूट हुई। इसी प्रकार शरणप्पाकुमार के घर में १० हजार-सोनवा कृष्ण जी २५ हजार-वीरपक्ष अप्पा १ हजार की लूट हुई। शरणप्पा और विट्ठलदास की दूकानें लूट ली गईं। जन-संख्या ६ हजार है। जिसमें से २ हजार के ऊपर लोग भारत-संघ में चले गए हैं।

शोलापुर जानेवाली माल से लदी हुई २० बैलगाड़ियों को निजामी सरहद पर हैदराबाद की फौज ने लूट लिया। गाड़ीवानों के सिवा गाड़ियों पर तीन स्त्रियाँ और ५ मर्द थे। इन्हें मिलेट्री ने गायब कर दिया। एक गाड़ीवान मरा और कुछ घायल हुए। शोलापुर के कलेक्टर के पास शिकायत हुई है।

शोलापुर जिले के शहर शोलापुर, बार्शीपंढ़रपुर, अक्कलकोट आदि स्थानों में हैदराबाद स्टेट के लगभग ३० हजार हिन्दू निर्वासित आए हुए हैं। प्रतिदिन उनका प्रवाह बढ़ता जा रहा है। केवल बीदर, उस्मानाबाद जिला के दस हजार निर्वासित आए हुए हैं। —संवाददाता

देहरादून कन्या गुरुकुल का २४ वाँ वार्षिकोत्सव गत ७ मई से १० मई तक बड़े उत्साह से मनाया गया। दीक्षान्त समारोह का आधिपत्य श्रीमती सुशीला नायर ने किया। श्रीमती चन्द्रवती लखनपाल, आचार्या कन्या गुरुकुल ने नवस्नातिकाओं को विद्यालंकृता की पदवी प्रदान की। श्रीमती सेन्ट निहालसिंह, जो अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की महिला हैं, ने दीक्षान्त भाषण दिया। आपने इस शताब्दी के प्रारम्भ से अब तक स्त्री-जाति के स्वाधीनता-संग्राम का वर्णन किया और भारतीय नारी की मुक्ति का जोरदार समर्थन किया। स्त्री-जाति के प्रति की गई कन्या गुरुकुल की सेवाओं की ओर ध्यान खींचते हुए आपने प्रान्तीय तथा केन्द्रीय सरकारों से आग्रह किया कि कन्या गुरुकुल की स्थिर सहायता करें।

इस शुभ अवसर पर युक्तप्रान्त की गवर्नर महोदया माननीया श्रीमती सरोजिनी देवी, माननीय पं० जवाहरलाल जी नेहरू प्रधान मन्त्री, माननीय पं० गोविन्दवल्लभ पंत तथा शिक्षासचिव माननीय श्री सम्पूर्णानन्द जी ने अपने-अपने शुभ-सन्देश भेजे थे।

शारीरिक व्यायाम सम्मेलन, देहरादून के पुलिस सुपरिन्टेन्डेंट श्री स्वरूप के सभापतित्व में हुआ। कन्या गुरुकुल की छात्राओं ने शारीरिक व्यायाम के साथ लाठी, लेजिम, छुरे तथा तलवार के खेलों का प्रदर्शन किया। यह निश्चय किया कि कन्या गुरुकुल की छात्राओं को बन्दूक तथा राइफल चलाने की विशेष शिक्षा भी सरकार के प्रान्तीय रक्षा-दल के अनुशासन में दी जाय।

प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार की अपील पर विभिन्न प्रयोजनों के लिए ३० हजार रुपए दान में प्राप्त हुए। देहरादून म्युनिसिपल बोर्ड ने उदारतापूर्वक १०००० रु० भवन-निर्माण के लिए, २००० रु० चिकित्सालय के लिए, श्री पं० ठाकुरदत्तजी शर्मा, अमृतधारावालों ने ५००० रु० इस संस्था की कन्याओं के स्नानार्थ एक घाट बनाने के लिए दिया। ५० नई कन्याओं का इस वर्ष प्रवेश कराया गया, निश्चय हुआ कि आगामी वर्ष संस्था की रजत-जयन्ती मनाई जाय। —संवाददाता

बम्बई के हिन्दी-ज्ञानमन्दिर लिमिटेड की वार्षिक सभा में अध्यक्ष श्रीमान् घनश्यामदास जी पोद्दार जे० पी० ने एक भाषण दिया। आपने संसार के सर्वश्रेष्ठ महापुरुष राष्ट्रपिता पूज्य महात्मा गांधी की हत्या पर दुख प्रकट किया। तत्पश्चात् हिन्दी-ज्ञानमन्दिर लि० के सन् १८४७ के तलपट (बैलेन्स शीट) और हिसाब को लेकर हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशन-व्यवसाय पर प्रकाश डाला। आपने कहा कि देश के पुनर्निर्माण की दृष्टि से शिक्षण और साहित्य-प्रसार की नितांत आवश्यकता है। हिन्दी-हिन्दुस्तानी राजभाषा हो जाने से उसके साहित्य की माँग एकदम बढ़ जाएगी। उस राष्ट्रीय माँग को पूरा करने के लिए देश के व्यवसायी, उद्योगपति रियासतें और सरकार आदि सबको कदम उठाना चाहिए। इस धंधे में आज बड़े पैमाने पर पूँजी लगनी चाहिए। हिन्दी ज्ञानमन्दिर इस दिशा में पूरी तरह से सजग और प्रयत्नशील है। हिन्दी का क्षेत्र बढ़ रहा है। हिन्दी प्रकाशन-व्यवसाय उद्योगपतियों के लिए एक सुनहला अवसर है। मुझे विश्वास हो गया है, कि इस नाते "हिन्दी-ज्ञानमन्दिर" का भविष्य उज्ज्वल है। —संवाददाता

आगरा से निष्पक्ष और स्वतन्त्र विचारों का समर्थक, मौलिक, नवीन, सरस एवं विद्वत्तापूर्ण कृतियों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करनेवाला यह सचित्र हिन्दी साप्ताहिक पत्र प्रकाशित होनेवाला है।

—व्यवस्थापक

प्रयाग साहित्य-परिषद् हिन्दू छात्रालय के तत्त्वावधान में यह प्रतियोगिता मार्च, १६४८ में आयोजित हुई थी, उसका निर्णय इस प्रकार है :—

सर्वश्रेष्ठ विचित्र, मार्मिक एवं मनोवैज्ञानिक कथा के विशेष पुरस्कार कुमारी करुणा देवी, एक "स्वर्ण विजय चिन्ह" के रूप में भेंट किया गया। कुमारी जयदेवी पाण्डे बनारस (प्रथम) श्रीयुत पुरुषोत्तम कठल, सागर सी० पी० (द्वितीय) कुमारी मालती ढिन्डा, बदायूँ को (तृतीय) पुरस्कार दिया गया। कुमारी लावण्य बोस, प्रयाग, कुमारी लक्ष्मी वर्मा, प्रयाग, श्री दिनेश द्विवेदी, बनारस को साधारण विशेष स्थान सूचक पुरस्कार दिया गया। प्रतियोगिता के निर्णायक समिति में श्री इलाचन्द्र जोशी सम्पादक "संगम" श्री पहाड़ी और श्री माधव जी सम्पादक "प्रभात" थे। प्रतियोगिता के सभापति—डा० रामशंकर शुक्ल 'रसाल' डी० लिट० तथा संयोजक—श्रीयुत कृष्ण माधव चौधरी "अनजान" साहित्य-मंत्री हिन्दू छात्रालय, प्रयाग थे। —संवाददाता

लाहौर से कुछ वर्ष पूर्व से 'आर्यावर्त्त' नाम जो मासिक पत्रिका श्री हितैषी अलावलपुरी सम्पादक प्रकाश के संरक्षण तथा शकुन्तला भूषण के सम्पादकत्व में प्रकाशित होता था अब पुनः उसी प्रबन्ध में जालंधर से आगामी जून पहले सप्ताह से निकलना आरम्भ होगा। —संवाददाता

मथुरा देशबन्धु पुस्तकालय की कार्यकारिणी ने निश्चय किया है कि वार्षिक अधिवेशन इस वर्ष गर्मी के कारण अगस्त में न होकर शरद्पूर्णिमा पर होगा। इस अधिवेशन में पत्र-पत्रिका प्रदर्शनी का आयोजन होगा। —बैजनाथ दानी

जुल्फे
बंगाल
हेयर आयल
KAPOOR ART PRESS

हम ने आपना व्यापार
देहली में आरम्भ कर
दिया है !

अब आप अपने
आर्डर इत्यादि निम्न
लिखत पत्ते पर भेजें

दी क्रोऊन फारमेसी
दिलशाद गार्डन • शाहदरा • देहली

राजधानी का रंगमंच

जमीन्दारी उन्मूलन बिल तैयार हो गया है

जमीन्दारी मिटाने के बाद भूमि का अधिकारी किसान हो अथवा राज्य—प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी की घुड़दौड़—प्रान्तीय धारा-सभा का उपनिर्वाचन

(अपने विशेष प्रतिनिधि-द्वारा)

प्रान्तीय सरकार का जमींदारी-उन्मूलन बिल प्राय: तैयार है और उसे एसेम्बली के एक विशेष अधिवेशन में, जो जुलाई के आखीर अथवा अगस्त के प्रारम्भ में बुलाया जाएगा, पेश किया जाएगा। यह अधिवेशन अल्पकालीन होगा, क्योंकि माननीय मन्त्रियों तथा सदस्यों में से अनेक को भारतीय विधान-परिषद् की बैठक, जो उन्हीं दिनों नवीन विधान स्वीकृत करने के लिए प्रारम्भ होगी, दिल्ली जाना होगा। इस अधिवेशन में बिल को एक विशिष्ट समिति (सेलेक्ट कमेटी) के सिपुर्द कर दिया जाएगा और वह एक-डेढ़ मास में अपनी रिपोर्ट दे देगी।

* * *

विशिष्ट समिति की रिपोर्ट आ जाने के पश्चात् एसेम्बली के हेमन्त-अधिवेशन में, जो नवम्बर में प्रारम्भ होगा, बिल पर विचार प्रारम्भ होगा और दिसम्बर तक उसे दोनों परिषदों से स्वीकृत करा लिया जाएगा। १९४९-५० का बजट जमींदारी-उन्मूलन के बाद की आर्थिक व्यवस्था का ढाँचा लेकर ही प्रेषित होगा।

* * *

अभी तक यह निश्चय नहीं हो पाया है कि जमींदारी मिटने के बाद भूमि का स्वामी किसान हो अथवा राज्य? प्रथम सिद्धान्त के समर्थकों का कहना है कि इन दिनों किसान बड़ा समृद्ध है और यदि भूमि पर उसका स्वामित्व मान लिया जाए, तो जमींदारों की क्षतिपूर्ति का दायित्व उसी पर आ जाएगा और वह अपनी वर्तमान समृद्धि में सरलता से यह दायित्व निभा सकेगा। जो न निभा सकें, उन्हें सरकार ऋण दे सकती है, जिसे वे शनैः-शनैः अदा कर देंगे। दूसरे सिद्धांत के पक्षपातियों का कहना है कि लगान में जमींदारों के अंश से सरकार को इतनी आय होगी कि वह जमींदारों की क्षतिपूर्ति अपनी ४०वर्षीय योजना के अन्तर्गत कर दे, तब भूमि के राष्ट्रीयकरण का यह अनुपम अवसर क्यों खोया जाए? जमींदारी-उन्मूलन समिति की अन्तिम बैठक ८ जून को होगी, तब इस मामले पर अन्तिम निर्णय हो जाएगा।

* * *

प्रान्तीय कांग्रेस इस समय राजनीतिक स्पर्धा का विचित्र अखाड़ा बनी हुई है। कांग्रेस कार्य-समिति के आदेशानुसार आगामी १३ जून को प्रान्तीय कांग्रेस के पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी के सदस्यों तथा प्रांतीय कांग्रेस पार्लामेण्टरी बोर्ड का चुनाव होगा। संघर्ष प्रांतपति के पद के लिए है। श्री पालीवाल का दक्षिणपंथी दल इस पद के लिए श्री रफी अहमद किदवई का समर्थक है और श्री चन्द्रभानु गुप्त के नेतृत्व में कांग्रेस के रहे-सहे समाजवादी स्वयं गुप्त जी को इस पद के लिये खड़ा कर रहे हैं। इस पद के लिए संघर्ष की छीछा-लेदर बचाने के लिए कुछ प्रतिष्ठित कांग्रेस-जनों ने श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन से यह पद-भार ग्रहण करने का अनुरोध किया था। टण्डन जी ने इसी शर्त पर इस अनुरोध को स्वीकार करने का वचन दिया कि दोनों प्रस्तावित उम्मेदवार निर्वाचन के अखाड़े से हट जाएँ। किन्तु दुर्भाग्यवश वे राजी न हुए।

* * *

प्रान्तीय धारा-सभा के उपनिर्वाचनों को लेकर प्रधान मंत्री की नीति से न केवल समाजवादियों बल्कि स्वयं कांग्रेसजनों में ही मतभेद है। प्रधान मंत्री ने जून में ही ये निर्वाचन करने चाहे हैं। समाजवादियों का कहना है कि जून में भयंकर लू चलती है, अतएव देहाती मतदाता अपने अधिकार का समुचित उपयोग न कर सकेंगे और वोटिंग ठीक न होगी, पर प्रधान मंत्री तो जैसे समाजवादियों को कोई मौका देना ही नहीं चाहते। कांग्रेस पार्लामेण्टरी बोर्ड की २० मई वाली बैठक का विरोध पं० श्रीकृष्णदत्त पालीवाल ने भी किया है। इस बैठक में इन उपनिर्वाचनों के लिए कांग्रेस उम्मेदवार चुने जाएँगे।

पालीवाल जी का कहना है कि जून को नया पार्लामेण्टरी बोर्ड जायगा और यह कार्य उसी के सम्पन्न होना चाहिए। पार्लामेण्टरी की पिछली बैठक में पालीवाल जी ने माँग को जोरों से रखा था और स्वीकृत न होने पर वे प्रान्तीय कांग्रेस एक विशेष अधिवेशन बुलाने की करेंगे। इसी बैठक में कुछ समाज सदस्यों ने सुझाव दिया कि आचार्य नरे देव की प्रतिष्ठा तथा उनकी पूर्व सेवा को देखते हुए कांग्रेस उनके विरुद्ध अ उम्मेदवार न खड़ा करे और उन्हें निर्वि चुन जाने दे। पं० पन्त ने इसका भी विरोध किया और यह स्वीकृत न हुआ।

* * *

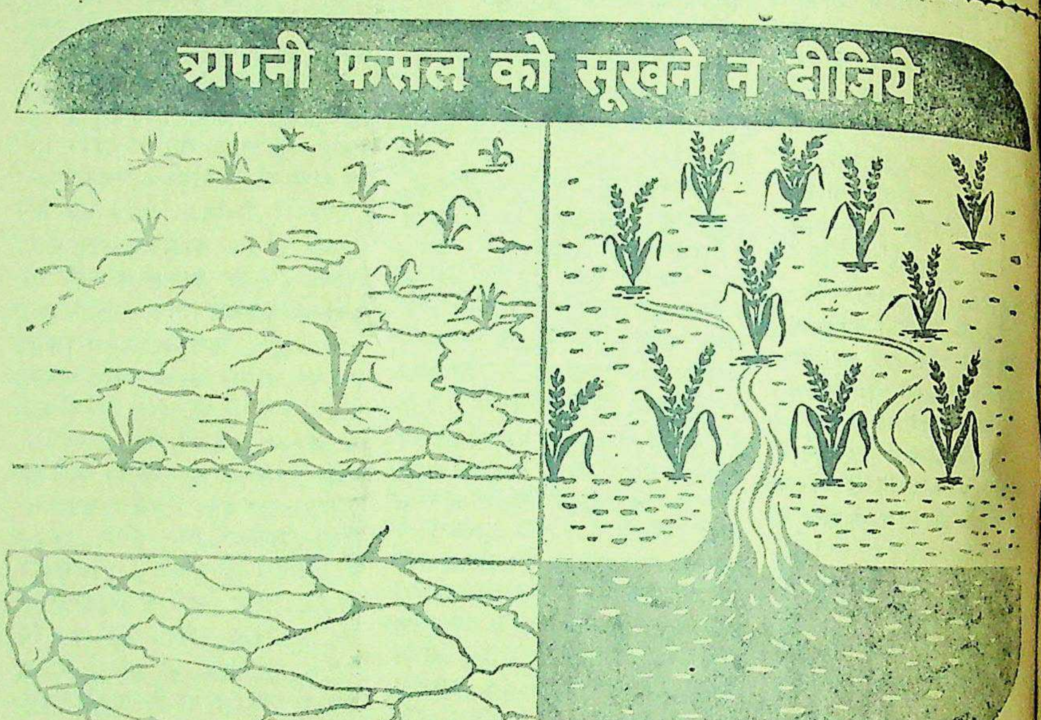
अपनी फसल को सूखने न दीजिये

अधिक अनाज पैदा करने के लिये
पटे या सूखे तालाबों को गहरा कीजिये

प्रायः पानी की कमी के कारण किसान की फसलें नष्ट हो जाती हैं, जिससे उसके सारे सुख स्वप्न टूट जाते हैं। किसान देखता ही रह जाता है और उसकी हरी फसल सूख जाती है। किन्तु हमारे किसान वैज्ञानिक साधनों की सहायता से सिंचाई का प्रबन्ध कर लें तो उन्हें इस संकट से छुटकारा मिल सकता है। किसानों को इस संकट से मुक्त करने के लिये संयुक्त प्रान्त की जनप्रिय सरकार ने तालाब खोदने की एक बड़ी योजना चलाई है जिसमें दस लाख रुपये से भी अधिक खर्च होने की सम्भावना है। अतः यह ज़रूरी है कि किसान व्यक्तिगत रूप से इस योजना में दिलचस्पी लें। सहकारी समितियां बनायें और पटे तथा सूखे हुये अधिक से अधिक तालाबों को गहरा करें। ये तालाब वैज्ञानिक प्रणाली पर सिंचाई के लिये सहायक होने के साथ साथ सूखे समय में जलकोष के रूप में भी काम आयेंगे। समय कम रह गया है, अतः अपनी सरकार के साथ कंधे से कंधा मिला कर इस योजना को सफल बनाने में सहयोग दीजिये।

इसके लिये आपको क्या करना चाहिये :

(क) अपने निकटवर्ती सुधार संघ को यह सूचित करें कि कौन कौन से तालाबों को गहरा करने की ज़रूरत है।

(ख) कृषि विभाग की इंजीनियरिंग शाखा के कर्मचारियों की सहायता से यह निश्चित करें कि तालाब कितना गहरा किया जाय और सिंचाई के रास्ते कहां रखे जायं।

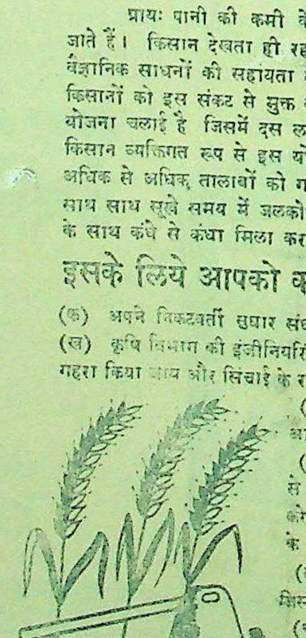

(ग) अपने निकटवर्ती सुधार संघ या कांग्रेस कमेटी के नेतृत्व में काम का आयोजन करके कार्यक्रम और काम शुरू करने का दिन भी निश्चित कर लें।

(घ) काम शुरू करने के लिये जो दिन निश्चित किया जाय उसकी घोषणा पहले से अपने और पास पड़ोस के गावों में कर दीजिये काम पूरी लगन के साथ शुरू करें और यथा शीघ्र समाप्त कर दें। हर हालत में यह काम बरसात शुरू होने के पहले अवश्य समाप्त हो जाय, ताकि वर्षा का पूरा पूरा लाभ उठाया जा सके।

(ङ) तालाब की घास-पात निकाल कर कम्पोस्ट के गड्ढों में जमा कर दें जिससे उनका खाद के रूप में इस्तेमाल किया जा सके।

(च) पटे या सूखे तालाबों के ऊपर की पटी हुई नीली मिट्टी खेतों में डाल दीजिये। यह मिट्टी खाद का काम देगी।

(छ) तालाबों को खोदने से जो मिट्टी निकले उसे पानी निकलने के लिये रास्ते छोड़ कर, तालाब के किनारे जमा कर दें और उन पर पेड़ लगा दें।

संयुक्त प्रान्तीय सरकार के सूचना विभाग द्वारा प्रचारित

SAA

UOTD-11

सिंचाई का मसला एक आदमी हल नहीं कर सकता

इसके लिये मिल जुल कर काम कीजिये

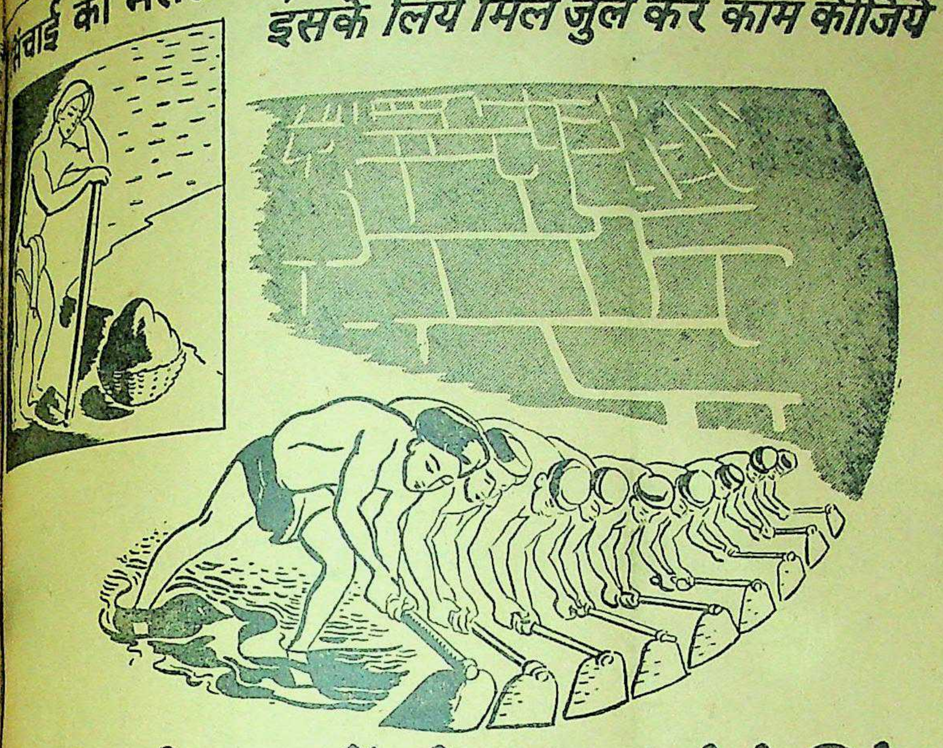

सूखे और पटे तालाबों को गहरा करने के लिये सहकारी समितियां बनाइये

चावल की खिचड़ी पकाने का समय चला गया। अब तो मिल जुल कर ही आप कोई काम कर सकते हैं। प्रान्तीय सरकार ने प्रान्त के करोड़ों गरीब किसानों की मदद करने के लिये तालाबों को गहरा करने की योजना जिससे सिचाई की कठिन समस्या ही न हल की जा सकेगी, बल्कि अनाज की पैदावार बढ़ाकर हम अपने देश खुशहाल बना सकेंगे। इस समय हर किसान का यह कर्तव्य है कि वह ज़्यादा से ज़्यादा तालाबों को गहरा करने के लिये समितियों का निर्माण करे। सरकार इस काम के लिये आर्थिक और अन्य प्रकार की सभी सहायता देगी।

इसके लिये आपको क्या करना चाहिये

अपने निकटवर्ती सुधार संघ को यह सूचित करें कि कौन कौन से तालाबों को गहरे करने को ज़रूरत है।

कृषि विभाग की इंजीनियरिंग शाखा के कर्मचारियों की सहायता से यह निश्चित करें कि तालाब कितना गहरा किया जाय और सिचाई के रास्ते कहां रखे जायं।

अपने निकटवर्ती सुधार संघ या कांग्रेस कमेटी के नेतृत्व में काम का आयोजन कर के कार्यक्रम और काम शुरू करने का दिन भी निश्चित कर लें।

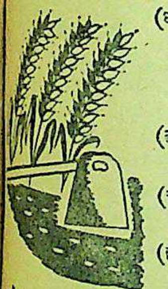

(घ) काम शुरू करने के लिये जो दिन निश्चित किया जाय उसकी घोषणा पहले से अपने और पास पड़ोस के गावों में कर दीजिये। काम पूरी लगन के साथ शुरू करें और यथा शीघ्र समाप्त कर दें। हर हालत में यह काम बरसात शुरू होने के पहले अवश्य समाप्त हो जाय, ताकि वर्षा का पूरा पूरा लाभ उठाया जा सके।

(ङ) तालाब की घास-पात निकाल कर कम्पोस्ट के गडढो में जमा कर दें जिससे उनका खाद के रूप में इस्तेमाल किया जा सके।

(च) पटे या सूखे तालाबों के ऊपर को खुदी हुई गीली मिट्टी खेतों में डाल दीजिये। यह मिट्टी खाद का काम करेगी।

(छ) तालाबों को खोदने से जो मिट्टी निकले उसे पानी निकलने के लिये रास्ते छोड़ कर, तालाब के किनारे जमा कर दें और उन पर पेड़ लगा दें।

संयुक्त प्रान्तीय सरकार के सूचना विभाग द्वारा प्रचारित

UP ID-H8

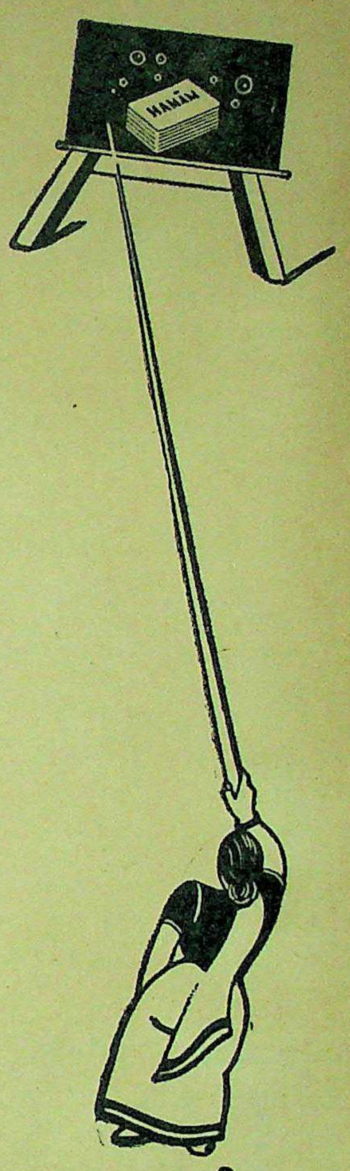

स्वच्छता का पहिला पाठ

प्रतिदिन हमाम साबुन से नहाइये

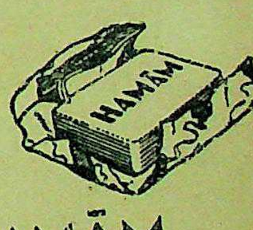

HAMĀM

हमाम साबुन

दी टाटा आयल मिल्स कं० लिमिटेड

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्य संजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ **"तिला मस्ताना"** की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५।।=), डाक और पैकिंग खर्च अलग।

विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

गांधी-अभिनन्दन ग्रन्थ

सम्पादक—श्री सोहनलाल द्विवेदी
प्राक्कथन—सर सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

संस्कृति, हिन्दी, उर्दू, बंगला, गुजराती, सिन्धी, मराठी, तामिल, तेलगू, मलयालम, कन्नड़, अँगरेजी और चीनी भाषाओं में महात्मा गांधी जी पर लिखी हुई सर्वोत्तम कविताओं का संग्रह—हिन्दी भाषा में अर्थ-सहित।

बड़ा आकार, सुन्दर छपाई, पूरे पेज के अनेक चित्र। बढ़िया जिल्द। सर्वत्र प्रशंसित।

सादी जिल्द ६।।) कपड़े की जिल्द ७।।)

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लि० प्रयाग

[illegible]

आरोंदा

१८६६

नीलगिरि तेल

[illegible]

पी. सांडामेकर बंधु [illegible]

अन्तू सरदार

भरोस सरदार के लड़की के सिवा कोई सन्तान न थी। और भरोस था ऐसा लठैत जिससे पुलिस भी डरती थी। एक जमींदार के यहाँ भरोस नौकर था। उसने अपनी बेटी को भी लाठी चलाना सिखला दिया था। इसका ब्याह जिस अनन्त (अन्तू) से किया गया था वह भरोस से सवाया था। एक झमेले में बड़ी मार-काट हुई। इसमें अन्तू की स्त्री भी मारी गई और भतीजा प्रताप पागल-सा हो गया। पुलिस ने अन्तू को गिरफ़ार कर सज़ा करा दी। इधर प्रताप भी चल बसा। यह कहानी है तो बड़ों के लिए भी रोचक, परन्तु बच्चों को बहुत पसन्द आवेगी। सुन्दर सरल भाषा, कई चित्र और कवर-पृष्ठ रंगीन। मूल्य केवल बारह आने।

परीदेश

यह पुस्तक ख़ास कर छोटे बच्चों के लिए है। इसमें ऐसी एक भी बात नहीं जिसको समझने के लिए माथापच्ची करनी पड़े। इसमें रोजमर्रा की बातें बड़े ही अच्छे ढंग से लिखी गई हैं। बड़े आकार की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों और फूल-पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है। मूल्य ।।)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

T.B. टी.बी. "तपेदिक" फेफड़ों का हो, या अँतिड़ियों का, बड़ा भयंकर रोग

पहली स्टेज	दूसरी स्टेज	तीसरी स्टेज	चौथी स्टेज	अंतिम स्टे
मामूली ज्वर खाँसी	ज्वर-खाँसी की भयंकरता	शरीर का सूखना ज्वर खाँसी की भयंकरता	हालत खराब, दस्त आदि शुरू हो जाना	रोगी की मौत भयं का इधर-उधर फै
(Jabri)	(जबरी)	(Jabri)	(जबरी)	

[T. B. टी. बी.] तपेदिक और पुराने ज्वर के रोगियो देखो—

(२) श्रीमान् तीसलहुसेन साहब रईस मौजा मुसेपुर पो० भरतकुण्ड जि० फैजाबाद से अपने ताजे पत्र में लिखते हैं आपके यहां से जिस रोगी के लिए दवा 'जबरी' हमने मंगाई थी, बहुत लाभ हो रहा है, हम तो समझते थे कि इस भयंकर रोग भी दवा नहीं है। परन्तु आपकी दवा 'जबरी' ने हमारे विचार को बदल दिया। यथार्थ में 'जबरी' इस रोग के लिए आ शक्तिशाली औषधि है, हमारी तरफ से आपको हार्दिक धन्यवाद है। परमात्मा आपको दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की दे।

श्री नागेश्वरप्रसाद तिवारी—मास्टर स्कूल नडुगावां पो० "डालटनगंज" बिहार से लिखते हैं। मैं अनेक दिनों से ज्वर बीमार था बलगम आदि की परीक्षा पर तपेदिक (राजयक्ष्मा) रोग ही साबित हुआ। मैं रोग का नाम सुनते ही बहुत घबड़ा बीच परमात्मा की कृपा से आपकी अमृतरूपी दवा 'जबरी' का नाम सुना। मैंने तुरन्त आर्डर देकर पार्सल प्राप्त किया। दवा को पूर्वक सेवन किया, उसके अमृतरूपी गुणों ने मुझे आश्चर्य में डाल दिया, थोड़े ही दिनों में शरीर का रंग ही बदल गया, ऐसा होने लगा जैसे कुछ रोग ही नहीं रहा। अधिक लिखना व्यर्थ है। यथार्थ में आपकी औषधि इस दुष्ट रोग के लिए अमृत जितनी भी प्रशंसा की जावे कम है।

इसी प्रकार के पचासों प्रशंसापत्र पहिले भी आप इन्हीं कालमों में देख चुके हैं, भारत के कोने-कोने में लोगों ने यह मान लि इस भंयकर रोग से रोगी की जान बचानेवाली यदि कोई औषधि है तो वह एकमात्र 'जबरी' (Jabri) ही है। 'जबरी' के ना भारत के पूज्य ऋषियों के आत्मिक बल का कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि प्रथम दिन से ही इस दुष्ट रोग के जर्म नष्ट होना जाते हैं। यदि आप सब तरफ से हताश हो चुके हैं तो परमात्मा का नाम लेकर एक बार जबरी की परीक्षा करें, परीक्षार्थ ही दिन का नमूना भी रख दिया है, जिसमें आपको तसल्ली हो सके। बस—आज ही आर्डर देकर रोगी की जान बचावें। अन्यथा फिर कहावत होगी कि—अब पछताये क्या होत है, जब चिड़ियां चुग गई खेत। इसे डाक्टर, हकीम, वैद्य अपने रोगियों पर व्यवहार नाम पैदा कर रहे हैं और तारद्वारा आर्डर देते हैं। तार आदि के लिए हमारा पता केवल 'जबरी' जगाधरी (Jabri, Jag लिख देना ही काफी है। तार से यदि आर्डर दें तो अपना पूरा पता दें। मूल्य इस प्रकार है—

'जबरी' स्पेशल नं० १ अमीरों के लिए जिसमें साथ साथ ताकत बढ़ाने के लिए सोना, मोती, अभ्रक आदि की मूल्यवान् पड़ती हैं मूल्य पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन के लिए २०) रु०। जबरी नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान जड़ी-बू पूरा कोर्स २०) रु०, नमूना १० दिन के लिए ६) रु०। महसूल आदि अलग है। आर्डर में पत्र का हवाला तथा नं० १ या नं० साफ लिखें। तुरन्त आर्डर देकर रोगी की जान बचा लें।

रायसाहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड बैंकर्स (D) 'जगाधरी' पूर्व पंजाब

मर्दों की गलतीयाँ कीमत बाद

गलतियां हो चुकी हैं तो भी विवाह से पूर्व, विवाह के पश्चात् हम असंख्य रहे व सहे मरीज़ों को शर्तिया ठीक कर चुके हैं। हट्टे कट्टे अन्दर से खोखले कमजोर से कमजोर अहजा यानी ढीले-ढाले शरीर से नवीन अवस्था का चमत्कार देखकर आप दंग रह जायेंगे। यदि दस्तकारी औषधियों और नीम हकीमों की ठगियों ने आपको हम तक आने से रोक रखा है तो मैं फिर कहता हूँ कि जिस दिन मरजी हो आइए, रहने का प्रबन्ध हमारे जिम्मे, यदि किसी कारण से लाभ न हो तो यात्रा का खर्च जेब से दूंगा इसके अतिरिक्त जो डाक्टर, हकीम वैद्य सब इश्तहार झूठे समझते हैं आइए हमारे सामने हमारी औषधियों को हानिकारक सिद्ध करें तो एक हजार रुपया पुरस्कार में लें। मूल्य वाजबी।

कविराज हीरोजी वज़ीराबादी, मैनेजर दी हीरो फारमेसी रजिस्टर्ड। डाकखाना दरियागंज की पिछली तरफ दिल्ली।

१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इ

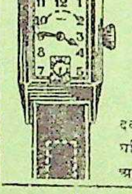

हमारे प्रसिद्ध काला तेल रजिस्टर्ड के सेवन करने से बाल हमेशा के लिए काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है, और उनको लम्बे, घुंघराले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न आते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता है और सिर को ठण्डक पहुंचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २॥) तीन शीशी पूरा कोरस की रियायती कीमत ६॥)। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक फैंसी म्यूट रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी (लन्दन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती है।

जरूरी नोट :—माल पसन्द न होने पर कीमत शीघ्र वापस कर दी जाती है। दवाई के खरीदार को डाक खर्च बिलकुल माफ; और चार अंगूठी लन्दन न्यू गोल्ड, घड़ियां बिलकुल मुफ्त इनाम दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार-बार हाथ न आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ लिखें।

लंडन कमर्शियल कम्पनी, बाग रामानन्द [D.A.] अमृतसर

London Commercial Co, Bagh Ramanand [D.A.] Am

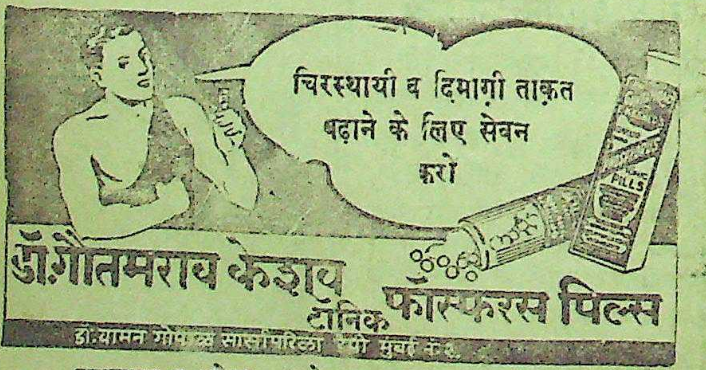
चिरस्थायी व दिमाग़ी ताक़त बढ़ाने के लिए सेवन करो
PILLS
डॉ॰ गौतमराव केशव टॉनिक फॉस्फरस पिल्स
डॉ॰ यासन गोपाळ सासी परेला मुंबई

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जोहरी एल० एस० बीलांकिया एन्ड ब्रदर्स।

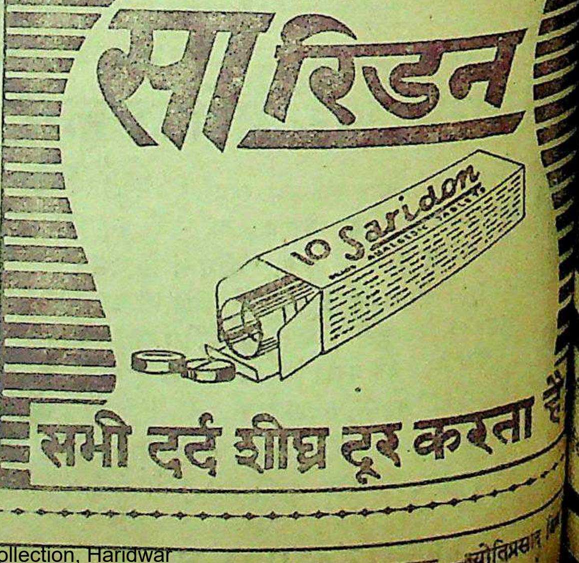
सारिडन
10 Saridon
सभी दर्द शीघ्र दूर करता है

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्र-द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड १४ पन्नालाल रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद

सचित्र
साप्ताहिक
(...वा ७॥) : प्रति संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

३० मई, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 30th May, 1948

स्तीन में युद्ध क्यों हो रहा है ?
श्रीकृष्णदत्त पालीवाल कौन हैं ?

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

हैदराबाद स्टेट के रजाकार किधर ?
मातृमंदिर रंगमंच और स्वास्थ्य चर्चा

हमारी कुछ चुनी हुई पुस्तकें

रवीन्द्र-ग्रन्थावली

योगायोग—कवीन्द्र का यह उपन्यास जैसा कवित्वमय है वैसा ही मनोविज्ञान की बारीकियों से परिपूर्ण। इसमें बंगाल के समाज का अपूर्व चित्रण है। नायिका है धर्म-प्राण कुमुद और नायक है राजा बहादुर मधुसूदन घोषाल जो गरीब घर का लड़का होकर अपने पौरुष से बहुत बड़ा मालदार हुआ है। अपने विरोधी घराने की बेटी से विवाह करने पर उसके चित्त में जो विरोध के बादल उमड़ते हैं उनका गर्जन और नई दुलहिन कुमुद का शान्त-शिष्ट प्रतिकार देखकर बरबस लेखक की सराहना करनी पड़ती है। इसमें गृहिणी की क्षमता का अपूर्व उदाहरण है। भाषा, भाव और कथानक सभी दृष्टियों से 'योगायोग' कवीन्द्र के उपन्यासों में सर्वश्रेष्ठ है। इसे एक बार पढ़कर दुबारा-तिबारा पढ़ने को जी चाहता है। अच्छा कागज, बढ़िया जिल्द, पृष्ठ सवा तीन सौ से अधिक। मूल्य केवल चार रुपये।

विश्व-परिचय—यह विज्ञान-विषयक पुस्तक है। इसमें परमाणुलोक, नक्षत्रलोक, सौरजगत्, ग्रहलोक और भूलोक आदि शीर्षकों में विषय का विशद विवेचन है। एक स्थान पर लेखक ने लिखा है "वस्तुएँ सब रंगों को ग्रहण नहीं कर सकतीं, किसी किसी को वापस कर देती हैं। वह लौटाया हुआ रंग ही हम देखते हैं। ब्लाटिंग पेपर जिस रस को सोख लेता है वह किसी काम नहीं आता—जिस रस को वह ले नहीं सकता वही बचा हुआ रस हमारा प्राप्य है।" इस प्रकार सरल रीति से कठिन विषय समझाया गया है। पुस्तक बालकों के लिए होने पर भी वयस्क विद्वानों को कम आनन्द न देगी। अच्छे कागज पर छपी हुई सुन्दर सजिल्द पुस्तक का मूल्य दो रुपये।

रूस की चिट्ठी—डाक्टर रवीन्द्रनाथ ठाकुर वृद्धावस्था में रूस गये थे। वहाँ का आँखों देखा हाल उन्होंने चिट्ठियों में लिखकर भेजा था। वह बड़ा विचित्र है। इधर तो रूस के सम्बन्ध में बहुत सी बातें प्रकट हो गई हैं पर जिस समय रवि बाबू वहाँ गये थे, रूस का हाल हमें विकृत रूप में बताया गया था। उसको कवि ने सुन्दर भाषा में प्रकट किया है। पुस्तक सचित्र और सजिल्द है। अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य दो रुपये।

चार अध्याय—इस पुस्तक में सचमुच चार अध्यायों में ही कथानक पूरा किया गया है। एला सुशिक्षित युवती है, भले घर की बेटी। उसने कुछ तो पुस्तकों की प्रेरणा से और कुछ विद्यार्थी-समाज के चक्रवर्ती इन्द्रनाथ की सलाह से गृहस्थी के बन्धन में न बँधने की प्रतिज्ञा कर ली। फिर इन लोगों का सम्पर्क विप्लवपन्थियों से हुआ। उन लोगों के कार्यकलाप, उद्देश्य और विवादों के वर्णन से पाठकों को दाँतों तले उँगली दबानी पड़ती है। राजनीति, समाज की उलझन, नारी-चरित्र और प्रेममन्त्र सभी कुछ इसमें हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य एक रुपया आठ आने।

वैकुण्ठ का विल—मूल लेखक, स्वर्गीय डा० शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय। यह उपन्यास है तो छोटा किन्तु बहुत ही भावपूर्ण है। मानव-हृदय की स्वाभाविकता इसके प्रत्येक पात्र से प्रकट हो रही है। शरद् बाबू उपदेश देने की दृष्टि से रचना नहीं करते; किन्तु उपदेश अज्ञात रूप से अपना काम किये बिना कब रहता है। यह बात उनके इस उपन्यास में भी अपवाद नहीं हो सकी। मूल्य ॥≡)।

पथ-भ्रान्त पथिक—अनुवादक, पण्डित सुन्दरलाल त्रिपाठी और पण्डित ठाकुरदत्त मिश्र। श्री चारुचन्द्र बन्द्योपाध्याय-लिखित इस उपन्यास का उपन्यास-प्रेमियों में अच्छा स्थान है। हिन्दी के उपन्यास-पाठकों की प्रेरणा से ही इसका हिन्दी अनुवाद हमने पहली बार प्रकाशित कराया है। उपन्यास की रोचकता और महत्ता के लिए चारुचन्द्र बाबू का नाम ही पर्याप्त है। मूल्य २॥≡)।

कृष्णकान्त का विल—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। यह बंकिम बाबू का एक अत्यन्त लोकप्रिय उपन्यास है। एक भारतीय पतिव्रता का जैसा सुन्दर चित्र इस उपन्यास में खींचा गया है वैसा अन्यत्र न मिलेगा। मूल्य १)।

युद्ध और शान्ति—अनुवादक, श्री रुद्रनारायण अग्रवाल। टॉल्सटॉय के 'वार एण्ड पीस' नामक प्रसिद्ध रूसी उपन्यास का यह हिन्दी-रूपान्तर है। इसमें लेखक ने मानव-जीवन का सम्पूर्ण चित्र, अपने समय के रूस के दरबार और राष्ट्रों की खींच-तान बड़ी खूबी से चित्रित किया है और जीवन तथा मृत्यु के रहस्य का उद्घाटन किया है। मूल्य ५।-)

कपाल-कुण्डला—अनुवादक, श्रीयुत पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी, 'निराला'। यह बंकिम बाबू की कपाल-कुण्डला का हिन्दी-रूपान्तर है। कथानक की रोचकता तथा वर्णन की अपूर्वता के कारण यह उपन्यास इतना लोकप्रिय हो चुका है कि इसका नये सिरे से परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। कपाल-कुण्डला के हिन्दी में आज तक जितने भी अनुवाद प्रकाशित हुए हैं, यह अनुवाद उन सबसे बहुत सुन्दर हुआ है। मूल्य १॥)।

शनि की दशा—अनुवादक पण्डित ठाकुरदत्त मिश्र। श्रीमती काञ्चनमाला देवी के 'शनिर दशा' नामक बँगला उपन्यास का यह अनुवाद है। लेखिका महोदया ने उपन्यास की नायिका के चरित्र में जिस मधुरता और महिमा का समावेश किया है, वह विश्व के महिला-समाज में हिन्दू-महिलाओं को गौरवपूर्ण पद दिलाने के लिए सर्वथा उपयुक्त है। मूल्य २)

रिक्ता—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। श्री नीहारबाला देवी के इस उपन्यास में पति-प्रेम वंचिता नारी का ऐसा सजीव और भावपूर्ण चित्र अंकित हुआ है कि पढ़ते-पढ़ते हृदय द्रवित हो जाता है। ऐसे भाव-पूर्ण उपन्यास आपके पढ़ने में कम आये होंगे। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-)।

श्रीकान्त—(प्रथम और द्वितीय भाग)—अनुवादक, श्री रूपनारायण पाण्डेय। 'श्रीकान्त' शरद् बाबू का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना गया है। इसमें शरद् बाबू की अमर लेखनी ने उनके कलाकार का मँजा और सधा हुआ रूप चित्रित किया है, अत्यन्त मनोरम है। प्रत्येक भाग का मूल्य

ब्राह्मण की बेटी—मूल लेखक, श्री शरच्च चट्टोपाध्याय, अनुवादक, पंडित रूपनारायण पाण्डे शरद् बाबू भारत के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास-लेखक जाते हैं। उनका यह उपन्यास लोक-प्रियता चरित्र-चित्रण की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मूल्य सजिल्द पुस्तक का १।-)।

आनन्दमठ—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठ निराला। मुसलमानों और अँगरेज़ों को हिन्दुस्ता से बाहर करने के लिए, बंगाल में वैष्णवों ने विद्रोह किया था, उसी का इस उपन्यास में उ न्यास-सम्राट श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने ब खूबी से वर्णन किया है ऐसा सुन्दर चित्रण इ उपन्यास में है कि पढ़कर मातृ-भूमि के लिए दि फड़क उठता है। मूल्य १।-)।

संसार की प्रसिद्ध कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत रामशेर बहादुरसिंह, बी० ए०। इस पुस्तक में योरप के संसार-प्रसिद्ध कलाकारों की चुनी हुई कुछ कहानियाँ संगृहीत की गई हैं। वे सभी कहानियाँ बहुत ही कलापूर्ण और मनोरंजक हैं। यदि आपको योरप के कथा-साहित्य की बानगी लेनी हो, तो इस पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़ें। मूल्य १)।

मोपांसा की चुनी हुई कहानियां—अनुवादक, श्रीयुत गोपीनाथ जी कानूनगो। इस पुस्तक में मोपाँसा की चुनी हुई ग्यारह कहानियों का संग्रह किया गया है। मोपाँसा की रचनाओं की बानगी लेने के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य १)।

ब्रजनाथ का विवाह—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। आश्चर्यमयी घटनाओं से परिपूर्ण यह सामाजिक उपन्यास पढ़ने में ऐसा रोचक है कि एक बार आरम्भ करने पर फिर बिना समाप्त किये चैन नहीं पड़ता। मूल्य १।-)

स्काटलैंड-यार्ड की जासूस स्त्री—यह पुस्तक लेडी मॉली की ९ जासूसी कहानियों का संग्रह है। इस पुस्तक की एक-एक कहानी इतनी मनोरंजक और कौतूहलवर्द्धक है कि आप इस पुस्तक को पूरा पढ़े बिना चैन नहीं पा सकते। लेडी मॉली के जितने कहानी-संग्रह अब तक प्रकाशित हुए हैं, यह उन सबसे अच्छा है। मूल्य ॥।-)।

जीवन-क्रान्ति—लेखक, पंडित गौरीशंकर मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी०। अनुभवी तथा विद्वान् लेखक ने इस उपन्यास में सेठ-साहूकारों तथा बड़े आदमी कहे जानेवाले व्यक्तियों की नर-पिशाचता, पुलिस तथा अन्य अधिकारियों के हथकण्डों और धन के लाभ से निरपराधी को अपराधी ठहराकर कारागार की नारकीय यातना भोगने के लिए विवश करने के माया-जाल का बहुत ही आकर्षक शैली में वर्णन किया है। उपन्यास की एक-एक पंक्ति ओजपूर्ण और हृदय में घर कर लेनेवाली है। मूल्य २॥≡)।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

शदूत

१०, संख्या ३८]

[रविवार, ३० मई, १९४८

ीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

के ऐतिहासिक लाल किले में की हत्या करनेवाले श्री हिन्दू-महासभा के भूतपूर्व क्टर सावरकर का मुकदमा है। महासभा के सभापति डाक्टर सावरकर के मुकदमे ड़ेंगे। अपने राम की राय में बहुत पहले ही चलना प्रारम्भ था, किन्तु हो रहा है ऐसे हैदराबादी लीला अपनी पहुंची है। सुना है गोडसे वकालत करेंगे, क्यों चाहिये। लाल किले में वालों का भी मुकदमा गोडसे एण्ड कम्पनी है। देखना है प्रसिद्ध बाजी मारती है या रह जाते हैं।

* *

व्यवसायी सेठ घन- ने १,२२० करोड़ रुपये की योजना प्रकाशित कराई है। योजना तो दुरुस्त और पहले देश में शांति और स्थापित हो, फिर योजना की जायेगी। हैदराबाद की समस्या राष्ट्रीय एकता कर रही है, चारों ओर हुई है, जो व्यवसाय इस उसी को पहले सँभाला अन्न और कपड़े की वर्तमान आये जिससे कम से कम में जान तो आये। न कि को कार्यरूप में परिणत योजनायें तो कितनी ही रूप में परिणित हो जायेंगी, पूंजीपतियों की वर्तमान स्थिति हुए शांति और व्यवस्था की योजना को कार्यान्वित कराना राम यही समझते हैं, आगे है।

* *

फिलिस्तीन के युद्ध में समर्थन कर रहे हैं। वरना अंगरेज तो चारों ओर पानी नहीं रखता।

चर्चिल अपनी नई खिचड़ी पका रहा है, वह तो केवल गोरों के संगठन में विश्वास करता है। वर्तमान मजदूर सरकार अरब तथा मुस्लिम राष्ट्रों को पीछे से ढकेल रहा है। इधर हिन्दुस्तान में वह पाकिस्तान की मदद में भी परेशान ही है। पाकिस्तान और फारस का गठबंधन अंगरेज करा रहा है, क्योंकि उसकी नजर ईरान के तेल के पीपों पर लगी है और रूस से भी वह छुनक रहा है। इस वक्त अरब का पक्ष लेकर अंगरेज अमरीका को भी अँगूठा दिखा रहा है। है तो बात सही, अगर इस वक्त मुस्लिम राष्ट्रों का पक्ष लेना बन्द कर दे तो वह कहीं का न रहे। क्योंकि उसे योरोपियन अमरीकनों का भय नहीं, वरन् भय है रूसी भालुजी महराज का। हिन्दुस्तान से कांग्रेसियों ने अंगरेजों को भगा दिया। पाकिस्तान ही उनका साथी है, इसलिये वह मुस्लिम राष्ट्रों की खैर न मनायें तो क्या करें? आखिर उन्हें भी तो जिन्दा रहना ही है।

* * *

इस समय रजाकार अपना पैंतरा खूब बदल रहे हैं। कहावत है कि चींटी के जब पर लगते हैं तो समझ लेना चाहिए उनका अंतिम दिन आ गया। हैदराबादी सरकार के रजाकारी पर लग गये हैं। रजाकारों के अत्याचार की सीमा बढ़ती जा रही है। अभी तक वह राज्य के भीतर ही लूट-मार मचाते रहे किन्तु अब उन्होंने रेलों पर भी छुरेबाजी और छीना झपटी शुरू कर दी है। क्यों न हो रजाकार जो ठहरे और निजाम सरकार की पोष्य प्रजा। अच्छा है अनाचार का फल भी जल्दी ही मिलता है। ऊंट जब बलबलाने लगता है तो समझ लेना चाहिए कि पश्चिम में वह सरपट भागना चाहता है। रजाकार भी अब भगने ही वाले हैं किन्तु किधर उनका पयाम होगा यह तो भविष्य ही बतायेगा।

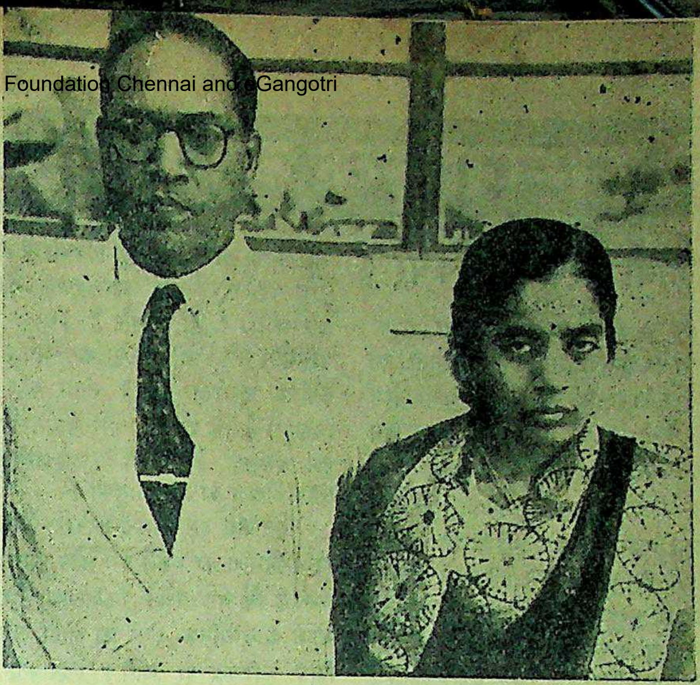

भारत-सरकार के कानून-सदस्य डाक्टर अम्बेडकर और उनकी नई विवाहित पत्नी श्रीमती डाक्टर लक्ष्मी कबीर।

* * *

कहा जाता है कि पाकिस्तान और ईरान में समझौता होने जा रहा है। आखिर इसमें नई बात कौन-सी है? बात यह है कि अफगानिस्तान तो पठानिस्तान से प्रभावित है, और वह करांची आदि को अपने राज्य में शामिल करना चाहता है इसलिये पाकिस्तानियों की वहाँ लात लगने की कोई आशा नहीं है। इसलिये अँगरेज भी मन मसोसकर बैठ रहा है। किन्तु अँगरेज बेवकूफ नहीं। उसने सोचा कि अफगानिस्तान को मारो गोली और उसके पड़ोसी फारस और ईरान को पकड़ो। पड़ोसी को मूँड लिया जायेगा तो कभी न कभी अफगानिस्तान भी चिराग के नीचे आ ही जायेगा। इसीलए पाकिस्तान-ईरान गठबन्धन हो रहा है, देखना है इस गठबन्धन के बाद किस खुराफात का जन्म होता है?

* * *

लार्ड लुई माउन्टबेटेन अब हिन्दुस्तान से पधारनेवाले हैं। अपने राम की राय में बेचारे हिन्दुस्तान में कब तक रहें? काश्मीर का मामला जब तक गरमागरम था तब तक तो वह किसी तरह दिन गुजारते रहे किन्तु हैदराबाद की हड्डी जब से गले में अटकी है तब से परेशानी बढ़ गई है। इसीलिये उन्होंने सोचा कि खैर इसी में है कि यहाँ से चलते-फिरते नजर आओ। बात यह है कि इधर भारतीव संघ का है मामला, और भारत के हैं वह वाइसराय। उधर हैदराबाद अपनी एक नई ही चाल चल रहा है, हिन्दू रियासत होती तो कोई बात नहीं, लेकिन है वह मुस्लिम रियासत फिर कैसे वह बेचारे बेमुरौअत होवें? क्योंकि आगे तो मुस्लिम जगत् से ही अंगरेजों को आनंद उठाना है। फिर लार्ड लुई माउन्टबेटेन भी तो अँगरेज ही हैं। पंडित नेहरू से उनकी दोस्ती है तो क्या हुआ? बिरादरी के खिलाफ कैसे जायेंगे?

* * *

किसी से

लेखक, प्रोफेसर 'अंचल' एम० ए०

कहीं रहूँ मैं पर मन मेरा तेरे पास रहा करता है,
मुक्त समय दूरी की परिमिति से चिर तृप्ति लहा करता है।
जब मिलता हूँ तब मेरा तन तुमसे दूर चला जाता है,
नश्वर मिलन अनश्वर जीवन तृष्णा विकल सहा करता है।

* * *

अंग अंग में नव उमंग के गहने दमक रहे हैं तेरे,
किस सुमधुर इच्छा से दृग में सपने चमक रहे हैं तेरे।
किस सुधि के दर्पण में अपने रक्तिम होंठ सँवार रही है,
किस बहार से बिंधे प्रेम के गुच्छे गमक रहे हैं तेरे।

* * *

रिमझिम पावस की घड़ियों में याद तुम्हारी आ जाती है,
लाज भरी सन्ध्या-सी डूबी मूर्ति हृदय पर छा जाती है।
नभ की ओर निरख मेघों से भरे नयन नत कर लेता हूँ,
एक अधखिली अँगड़ाई क्षण भर मन में मुस्का जाती है।

* * *

कोई नहीं विश्व में मेरी पूजा जो तुम तक ले जाता,
कोई नहीं, बतलाता मेरी जो तुमसे कहता समझता।
जो न स्वयं मैं कह पाया उसको तुमसे प्रिय कौन कहेगा,
कोई नहीं—सुना दे कितनी बार तुम्हें मैं रोता हुलता।

सम्पादक का पृष्ठ

निजामी हैदराबाद किधर ?

भारत की विशेष कर हैदराबाद की समस्या दिन-प्रतिदिन भयावह होती जा रही है। हैदराबादी सरकार ने कभी नरम और कभी गरम नीति का अवलम्बन करके स्थिति को इतना जटिल बना दिया है कि उसका सुलझना सरल नहीं जान पड़ता। भारत-सरकार भी अपनी राष्ट्रीय नीति के कारण इस प्रश्न के हल के सम्बन्ध में कर ही क्या सकती थी ? या तो वह युद्ध की घोषणा करती या निजामी रवैये को देखते हुए समझौते के लिये तैयार रहती। निजामी सरकार की नरम-गरम नीति का ही यह परिणाम हुआ है कि रजाकारों का संगठन आज इतना प्रबल और उग्र रूप धारण करता जा रहा है। रजाकार-दल का अत्याचार जन-साधारण तक ही अब सीमित नहीं रहा, वरन् भारतीय संघ की रेलगाड़ियों पर भी उन्होंने आक्रमण करना प्रारम्भ कर दिया है। शोलापुर से हैदराबाद राज्य कांग्रेस की ओर से जो विज्ञप्तियाँ हमें प्राप्त होती रहती हैं उनसे यह स्पष्ट हो गया है कि रजाकारों ने अपना सैनिक सङ्गठन काफी दृढ़ बना लिया है और सीमा पर उन्होंने मोर्चेबन्दी भी करनी प्रारम्भ कर दी है। राज्य में इस प्रकार का सैनिक सङ्गठन क्यों किया गया और निजाम सरकार ऐसे साम्प्रदायिक सङ्गठन में कितना हाथ रखती है, यह भी भली भाँति समझने की बात है। भारत-सरकार भी ऐसे खतरनाक सङ्गठन से अवगत न रही हो, यह तो निश्चित ही है। निजाम अपनी सर्वोच्च सत्ता को अक्षुण्ण बनाये रखना चाहता है, इसीलिये यह सब कुछ हो रहा है; परन्तु यह परिस्थिति कब तक रहेगी ? कब तक निजाम अपनी कूटनीतिक चाल चलता रहेगा और भारत-सरकार की की राष्ट्रीय दृष्टि कब तक वर्तमान सङ्कटपूर्ण स्थिति के निबटारे में समझौते का रुख लेती रहेगी ?

हम स्पष्ट रूप से यहाँ कह देना चाहते हैं कि भारत-सरकार थोड़ी-बहुत मुगालते में है। अब उसे दृढ़तापूर्वक एक निर्णय पर पहुँचना ही पड़ेगा। एक ओर पाकिस्तानियों की कृपा से काश्मीर के युद्ध मोर्चे का अभी सुरक्षा-परिषद् के बीच-बचाव करने पर भी, कोई निर्णय नहीं हो सका है, दूसरी ओर हैदराबाद के युद्ध-मोर्चे की नीति भी नई दिशा की ओर मुड़नेवाली है। हमारी समझ में अब यह आ रहा है कि हैदराबाद का निजाम, लार्ड लुई माउन्टबेटेन के यहाँ से पधारने के अन्तिम दिन की बाट जोह रहा है। हो सकता है कि अंगरेजों के सर्वोच्च व्यक्ति के यहाँ से जाते ही हैदराबादी समस्या को लेकर किसी षड्यंत्र का भंडाफोड़ हो या किसी नये टंटे या बखेड़े का प्रादुर्भाव हो ? फिलिस्तीन से अँगरेज गये और अरब-यहूदियों के युद्ध का श्रीगणेश कर गये, इसलिये ऐसा न हो कि लार्ड माउन्टबेटेन के पधारते ही हैदराबाद के मामले को लेकर हिन्दू-मुसलमानों में संघर्ष तथा मतभेद का कोई नया दुखद नाटक प्रारम्भ हो ? हो सकता है कि हमारा अनुमान गलत हो, किन्तु असम्भव नहीं; क्योंकि अंगरेजों को तो संसार को यह दिखाना है कि शान्ति और सुव्यवस्था के हम औलिया हैं। जहाँ से हम हटे और मुड़कुचौअल का प्रारम्भ हुआ।

इसलिए हम भारत-सरकार के देशी राज्य-विभाग का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हैं कि वह सचेत क्रियात्मक ढंग से भावी आनुमानिक संघर्ष का लोहा लेने के लिये कटिबद्ध हो जाये। हैदराबाद का प्रश्न किसी मुस्लिम शासक का प्रश्न नहीं है। प्रश्न है भारत-सरकार के देशी राज्य-विभाग की नीति और सिद्धान्त का। और सबसे बड़ा प्रश्न है हैदराबाद की बहुमत प्राप्त लाखों जनता तथा प्रजा का जो अपने स्वत्व की रक्षा तथा उसकी प्राप्ति के लिये आतुर और इच्छुक है। जो अपने बलिदान से राष्ट्रीयता की वहाँ रक्षा कर रही है। हैदराबाद में रजाकारों का संगठन तो शक्तिशाली हो ही गया है, इसके साथ ही बरार की जन-संख्या में भी साम्प्रदायिक मुसलमानों की भयंकर वृद्धि हुई है; इसलिये बरार की आन्तरिक स्थिति भी खतरे से खाली नहीं है। इसलिये भारत सरकार को जरूरत है पूर्णरूप से सचेत होने की और किसी भी समय मुकाबले के लिये तैयारी की।

इसमें संदेह नहीं है कि भारत-सरकार बड़ी शांति से समझ-बूझकर आगे कदम बढ़ा रही है, वह राष्ट्रीयता की रक्षा करते हुए जाति-भेद की परवाह नहीं कर रही है, किन्तु इस समय राष्ट्र-विरोधी और कांग्रेस सरकारों को बदनाम करनेवाला भारत में एक ऐसा पंचमांग दल मौजूद है जो अँगरेजी राज्य का भीतर पृष्ठपोषक है, किन्तु ऊपर से वह बना हुआ शरणार्थी है तथा राष्ट्रवादिता का चोगा पहने हुए है। समय आने पर वह देश-द्रोही बन बैठे तो क्या आश्चर्य है ? हम समझते हैं कि राष्ट्र की रक्षा करना तथा शांति-व्यवस्था को कायम रखना ही किसी भी लोकप्रिय शासन का परम कर्तव्य है, किन्तु उसके लिये अब सचेत होने का अवसर भी आ गया है। जिस प्रकार उसने अँगरेजी शासन का विरोध करके उसकी इतिश्री कर दी, उसी तरह पंचमांगी दल तथा आंतरिक सुरक्षा को भ्रष्ट करनेवाले गिरोहों को भी समाप्त करने की ओर भी उदासीनता न दिखानी चाहिए।

* * *

पाकिस्तान का प्रजातन्त्र

पूर्वी पंजाब के प्रधान मंत्री ख्वाजा नाजिमुद्दीन ने मुस्लिम लीग को मुसलमानों की एकमात्र सर्वश्रेष्ठ संस्था बतलाया है। उन्होंने प्रत्येक मुसलमान को विश्वास दिलाते हुए कहा है कि मुस्लिम लीग की विरोधी अन्य संस्थाएँ मुसलमानों के हितों की रक्षा नहीं कर सकतीं। ख्वाजा मियाँ कि राय है कि पाकिस्तान अपनी ही शक्ति से एक आदर्श राष्ट्र बनेगा। सच पूछा जाय तो प्रधान मंत्री की यह राय सत्य से दूर और कल्पना के निकट है। वह भी एक साधारण कट्टरपंथी मुसलमान की भाँति मुस्लिम लीग की ढोल पीट रहे हैं। यह समझने की बात है कि एक ओर तो पूर्वी
बंगाल के प्रत्येक निवासी को, कि
अल्पसंख्यक समुदाय को यह
दिलाया गया था कि पाकिस्तान
धर्मों के अनुयायी पूर्ण स्वतंत्र
सकेंगे, किन्तु आज वहाँ के प्रधान
यह राय प्रकट की है कि पाकिस्तान
संस्था मुस्लिम लीग है इसलिये
अतिरिक्त हम किसी अन्य राजनैति
को महत्त्व नहीं दे सकेंगे। जब
लीग में सदस्यता का द्वार केवल मु
के ही लिये खुला है तब तो
शंका और भी स्पष्ट हो जाती है।
विकता यह है कि प्रजातन्त्र-रा
निर्माण में दो बातें बहुत ही आवश्य
एक तो राज्य की दृष्टि में सभी
समान स्थान, दूसरे सभी रा
पार्टियाँ क़ानून के अनुसार समान
जायें। लेकिन इसके विपरीत पाकि
सरकार का दृष्टिकोण प्रजातन्त्र
लिये बिलकुल दूसरा ही है। मिस्टर
और उनके अनुयायी विदेशियों की
में अपने पाखंडपूर्ण आदर्श की
तो चाहते हैं लेकिन वास्तव में
के निर्माण में वह किसी प्रकार
विक निर्माण-कार्य नहीं कर रहे हैं।

हमारी समझ में नहीं आता कि
अयोग्य व्याख्यान-दाताओं को
क्यों नहीं जाता ? जनता का
कष्ट हिन्दू और मुसलमान किसी
बेकार नहीं देखना चाहता। हमें
कि पाकिस्तान के अधिकारी
की उपेक्षा न करके उनकी
लिए विविध उपाय करें तो अधिक
है। प्रजातंत्र के आदर्शों की
मुस्लिम जनता का कल्याण असंभव है।

* * *

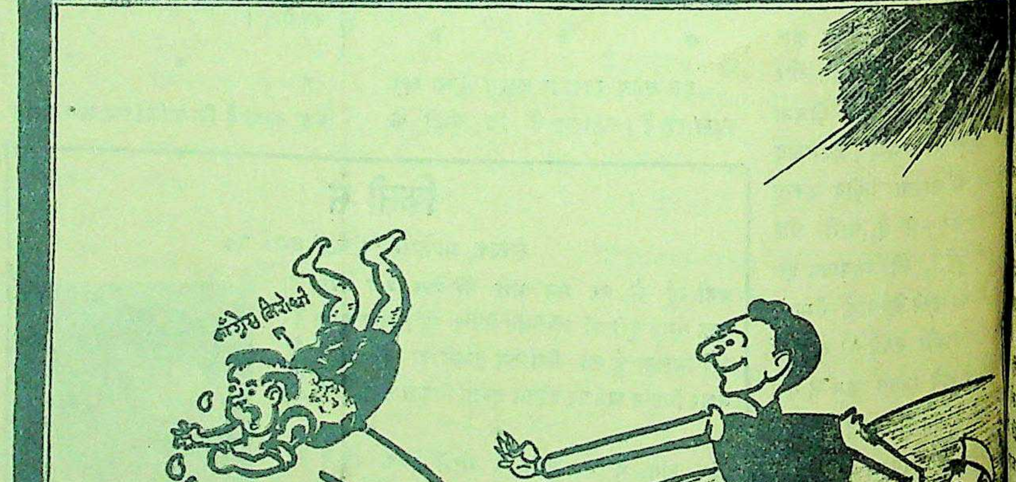

कांग्रेसजन—आखिरकार कांग्रेस ने प्रांतीय डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चुनाव में बाजी मार ही ली।

फिलिस्तीन में युद्ध क्यों हो रहा है ?

क्या अमरीका और ब्रिटिश शक्ति के रहते वहाँ राष्ट्रीय एकता और शांति स्थापित हो सकती है ?

लेखक, प्रोफेसर आशाराम एम० ए०

(राजनीति-विभाग, प्रयाग-विश्वविद्यालय)

फिलिस्तीन का युद्ध दिन-प्रति दिन उग्र होता जा रहा है। अरब और यहूदी संघर्ष विश्वव्यापी युद्ध का रूप ग्रहण करता जा रहा है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने फिलिस्तीन की राजनीतिक स्थिति का वर्णन करते हुए यह बतलाया है कि क्या कारण है आज राष्ट्रीय एकता के विरुद्ध पारस्परिक युद्ध प्रारम्भ हो गया है। लेख अत्यन्त सामयिक और पठनीय है।

मंत्री मिस्टर एटली की राष्ट्र का साथ दे रही है

के पढ़नेवालों के लिए एक पहेली बन गया है। और अरबों की युद्ध-समाचार पढ़ते पढ़ते कान इस पहेली को समझना प्रश्न के समझने से ब्रिटिश में कुछ ऐसे रहस्य प्रकट के लिए बड़े लाभ-

(१९१४) के पूर्व फिलि- आदि अरब देश थे। वे तुर्की साम्राज्य। तुर्की देश ब्रिटिश राष्ट्रों के विरुद्ध युद्ध में कर रहा था। अतएव मित्रराष्ट्रों ने तुर्की जनता में विद्रोह की। ब्रिटिश जासूस लोरेंस काफिलों और नेताओं और उनको विश्वास वे मित्रराष्ट्रों की मदद लड़ाई के बाद उनको

अथवा तिधारी तलवार बार से दो या तीन शिकार करते हैं। जहाँ एक देशों को स्वतन्त्रता का दूसरी ओर ब्रिटिश ने गुप्त रीति से युद्ध- यहूदियों को भी विश्वास फिलिस्तीन प्रदेश को देगा और उनको अपना करने में मदद देगा।

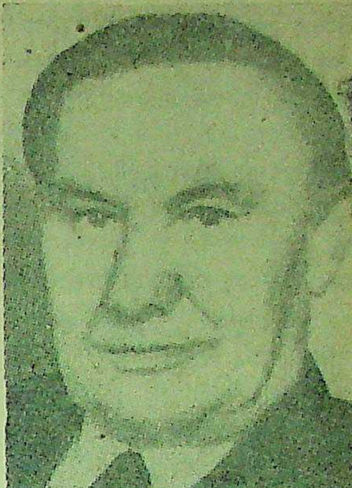

ब्रिटेन के वैदेशिक मंत्री मिस्टर बेविन फिलिस्तीन के युद्ध में अमरीका की परवाह नहीं कर रहे हैं।

यहूदियों को इस तरह का आश्वासन देने का भी एक कारण था। सारा योरप यहूदियों को अछूत समझता है। उनको ईसा को वध करनेवाली जाति समझता है। उनको लालची, कञ्जूस, शोषक समझता है। इसलिए, धनिक, विद्वान् सभ्य होते हुए भी ईसाई देशों में यहूदी जाति नीच समझी जाती है। कहीं कहीं तो उनके साथ घोर दुर्व्यवहार और अत्याचार होता है। उनकी यह दशा थी जर्मनी और उसके साथी, अर्थात् हंगरी, आस्ट्रिया, बलगेरिया आदि देशों में। इसलिए यहूदी अपना देश, अपना राज चाहते थे; और ब्रिटेन ने इस राज को बनाने का वचन दिया। इसलिए संसार भर के यहूदी एक हद तक ब्रिटेन और मित्रराष्ट्रों के साथी हो गए और हिटलर को यहूदियों से बड़ी शिकायत थी कि जर्मनी के पतन का वे ही एकमात्र कारण थे।

युद्ध समाप्त हुआ। वादे पूरा करने का समय आया। जर्मनी की हार हुई और ब्रिटेन वगैरह मित्रराष्ट्रों की जीत। अरब जनता ब्रिटेन से स्वतन्त्रता माँगने लगी, यहूदी अपना राज माँगने लगे। लेकिन ब्रिटिश गूढ़ और कूटनीति का कौन पार पा सकता है ? उन्होंने तुर्की साम्राज्य और स्वयं तुर्की देश का युद्ध के बीच ही चार देशों—ब्रिटेन, फ्रांस, रूस और अमरीका के बीच बँटवारा कर डाला था। भाग्यवश रूस में क्रान्ति हुई और वह प्रतियोगिता से अलग हो गया। अमरीका भी कुछ कारणोंवश मल्लयुद्ध से भाग खड़ा हुआ। इसलिए यह सारे देश ब्रिटेन और फ्रांस के हाथ लग गए। फ्रांस छोटा साथी था, इसलिए उसको सीरिया और लेबनान देश मिले, अंगरेज बड़े भाई थे, उनको ईराक, फिलिस्तीन, ट्रांस जोर्डन आदि शेष प्रदेश मिले। इस प्रकार अरब जनता के पैरों की बेड़ियाँ ज्यों की त्यों रह गईं।

के प्रेसिडेंट स्टैलिन।

यहूदियों को भी स्वतन्त्र फिलस्तीन न मिल सका। ब्रिटेन ने अपने मध्य-पूर्वीय साम्राज्य को कायम रखने के लिये इस जाति का प्रयोग करना शुरू किया। यह नीति भी ब्रिटेन के लिये नई नीति नहीं। हिन्दुस्तान में राज करने के लिए वह योरोपीय जातियों, ऍंग्लो इण्डियन और ईसाइयों का प्रयोग करता रहा, बर्मा और मलाया को गुलाम रखने के लिये चीनी और हिन्दुस्तानी जातियों को काम में लाता रहा और अफ्रीका के [illegible] कायम रखने के लिये योरोपीय और हिन्दुस्तानी—दोनों जातियों का प्रयोग करता रहा।

इस नीति के अनुसार ब्रिटेन ने यहूदियों को फिलिस्तीन में भरना शुरू किया। सन् १९२२ से लेकर सन् १९४४ तक यहूदियों की संख्या ८४ हजार से लेकर साढ़े पाँच लाख हो गई। उनकी जन-संख्या ७०० प्रतिशत बढ़ गई; लेकिन इसी काल में अरब जाति, जो बहुमत जाति है, केवल छः लाख से दस लाख तक बढ़ सकी, अर्थात् केवल ७० प्रतिशत के लगभग बढ़ी। सन् १९४६ के अन्त में जन-संख्या इस प्रकार थी—अरब मुस्लिम ११ लाख ४३ हजार; यहूदी छः लाख, ईसाई एक लाख ४५ हजार, कुल अन्य जाति मिलाकर १९ लाख बारह हजार।

इस प्रकार फिलिस्तीन के यहूदियों के रूप में मध्य-पूर्व के अपने साम्राज्य को कायम रखने के लिये ब्रिटेन ने एक अच्छा खासा पाँचवाँ दस्ता तैयार कर लिया।

अरबों के साथ यहूदियों का बर्ताव भी कुछ अच्छा न था। अरब जाति गरीब है। यहूदी अपने पैसे के बल पर उनकी जमीन छीन चुके हैं। अपने उद्योग-धन्धों के कारण धनी हो गये हैं और अरबों को मजदूरी भर का अधिकार रह गया है। इसलिए अगर अरब जाति यहूदियों को अपना दुश्मन समझती है तो ठीक ही है।

परन्तु इस पिछले युद्ध (१९३९-४५) में अनेक परिवर्तन हुए। अरब देशों में राष्ट्रीयता की भावनाएँ जड़ पकड़ चुकी हैं। वहाँ पर क्रान्तियाँ भड़क उठती हैं। इस अवस्था में ब्रिटेन इन देशों से लड़ाई मोल नहीं लेना चाहता और कूटनीति से काम चलाना चाहता है। वह अरब देशों के नेताओं को खरीदना चाहता है और इसलिए यहूदियों के विरुद्ध कुछ करना जरूरी है।

इसी कारण ब्रिटेन अरब नेताओं का पक्षपात करता है और उनको हथियार आदि भी देता है। इधर अमरीका देश में यहूदियों का प्रभाव है। इसलिए अमरीका की नीति ढुलमुल है। एक ओर तो वह अरब देशों का मित्र बनकर उनका शोषण करना चाहता है, विशेषकर उनका मिट्टी का तेल लेना चाहता है, दूसरी ओर वह यहूदियों को भी अपना विरोधी नहीं बनाना चाहता, क्योंकि अमरीकी चुनाव में लगभग दस प्रतिशत वोट यहूदियों का होता है।

[illegible] है। जब तक मध्यपूर्व के देश ब्रिटेन और अमरीका के चंगुल में रहेंगे, झगड़े चलते रहेंगे और मध्यपूर्व इनका गुलाम उस समय तक रहेगा जब तक ब्रिटेन की सेनाएँ यहाँ रहती हैं। अतएव शान्ति और स्वातन्त्रता के लिए ब्रिटिश सेनाओं का इस प्रदेश से हटना जरूरी है। इसी कारण वह फिलिस्तीन की स्वतन्त्रता के पक्ष में है, क्योंकि फिलिस्तीन ही वह प्रदेश है जहाँ से ब्रिटेन और अमरीका रूस से लड़ना चाहते हैं। यही वह प्रदेश है जहाँ से ब्रिटेन और अमरीका मध्यपूर्व पर शासन करते हैं, यही वह देश है जहाँ ब्रिटेन का मध्यपूर्व का सबसे बड़ा अड्डा है। अतएव रूस चाहता है कि किसी प्रकार इस क्षेत्र से ब्रिटेन और अमरीका का प्रभाव खतम हो।

रूस जानता है कि यहूदी जाति में भी कमजोरियाँ हैं, लेकिन अब इस सात लाख जनता को नहीं हटाया जा सकता। इस कारण इस जाति को स्वतन्त्रता मिलना जरूरी है। संघ-शासन फिलिस्तीन में असंभव है। जिस कारण भारत एक न रह सका उसी कारण फिलिस्तीन का मिलकर संघ-शासन और एक राज में रहना कठिन है। हाँ, एक बार स्वतन्त्रा मिलने पर अँगरेज और अमरीकी प्रभाव समाप्त होने पर शान्ति और एकता संभव है।

फिलिस्तीन का क्या भविष्य होगा ? यह कहना कठिन है, क्योंकि ब्रिटेन और अमरीका इन प्रदेशों पर अपना अधिकार रखना चाहते हैं और अपनी सेनायें यहाँ रखना चाहते हैं वे गृहयुद्ध की आग भड़काकर अरब-राष्ट्रीयता को कुचल देना, उसको कमजोर बना देना चाहते हैं।

* * *

अमरीका के प्रेसिडेंट ट्रूमन।

भारत का राजनीति गगन जिन उज्ज्वल नक्षत्रों से आज देदीप्यमान है उनमें संयुक्तप्रान्तीय सरकार के राजकोष एवं सूचना सचिव-माननीय पं० श्रीकृष्णदत्त पालीवाल भी हैं। उनकी प्रतिभा का प्रकाश युक्तप्रांत के घर घर में फैल चुका है और उनके व्यक्तित्व का प्रभाव सर्वत्र प्रकट है। बाल्यकाल से ही अखंड देश-सेवा-व्रत धारण कर उन्होंने जो साधना की है उसके समतुल्य बहुत थोड़े उदाहरण उपलब्ध होंगे। स्वतंत्रता-संग्राम में उन्होंने एक कुशल सेनानी की भाँति ब्रिटिश सत्ता से निरन्तर युद्ध किया, बड़े बड़े संकटों का सहर्ष सामना किया और कभी पीछे पग न हटाया। उनमें बृहत् जन-समूह का नेतृत्व करने की अद्भुत शक्ति है। उनकी एक आवाज पर लाखों नर-नारी देश-हित के लिये कटिबद्ध हो जाते हैं। शत्रुओं का दिल दहलानेवाली उनकी तीव्र लेखनी विदेशी सत्ता की धज्जियाँ उड़ाने में सदैव प्रवृत्त रही है। अतएव जगत्वन्द्य बापू के पुण्य प्रताप से जिस आजादी का आज हम उपभोग कर रहे हैं, उसको प्राप्त करने में उनके जिन अनुगामियों ने भगीरथ प्रयत्न किया है उनमें पालीवाल जी का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। पालीवाल जी वास्तव में, अदम्य साहस, अप्रतिम लगन और अटूट देश-प्रेम के प्रतीक हैं। उनमें रचनात्मक कार्यों के लिये संगठन करने की अपूर्व क्षमता है और वे सुयोग्य प्रबन्धक भी हैं। सारांश यह कि उनमें जन्मजात नेता होने के सभी लक्षण विद्यमान हैं।

विद्यार्थी-जीवन

पालीवाल जी का जन्म विक्रमी संवत् १९५१ की श्रावणी को आगरे जिले की सदर तहसील में यमुना-तटस्थ तानौरा ग्राम में हुआ था। वे आरम्भ से ही बड़े कुशाग्रबुद्धि थे। गाँव के स्कूलों में मिडिल तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने हाई-स्कूल फर्स्ट डिवीजन में पास किया और उत्तीर्ण विद्यार्थियों में उनका श्रेष्ठ स्थान रहा। उन्होंने अपना अध्ययन जारी रखा और इलाहाबाद विश्वविद्यालय की एम० ए० परीक्षा अर्थशास्त्र लेकर पास की। एम० ए० में भी उत्तीर्ण विद्यार्थियों में उनका द्वितीय स्थान था। यों तो जब वे आगरा कालेज में सेकंड इयर के विद्यार्थी थे, उसी समय उन्होंने इतिहास में साहित्य-रत्न की परीक्षा पास कर ली थी। साहित्य-रत्न का स्तर एम० ए० डिग्री के बराबर होता है। यद्यपि पालीवाल जी कालेज में बड़े अच्छे विद्यार्थी गिने जाते थे, फिर भी वे कभी किताबी कीड़ा बनकर नहीं रहे। उनका दृष्टिकोण सदा विस्तृत रहा। छोटी-सी अवस्था में विद्यार्थी जीवन के साथ साथ उन्होंने सामाजिक तथा राजनीतिक आन्दोलनों में सक्रिय रूप से भाग लेना आरम्भ कर दिया था।

महात्मा गांधी जिस समय दक्षिणी अफरीका में आन्दोलन कर रहे थे और उसके अनुरूप भारत में भी जब आन्दोलन छिड़ा उस समय पालीवाल जी ने बड़े चाव के साथ उसमें भाग लिया। इसके बाद जब स्वर्गीय लोकमान्य तिलक एवं डाक्टर एनी बेसेन्ट ने होमरूल-आंदोलन

चारु-चरितावली

पंडित श्रीकृष्णदत्त पालीवाल

निर्भीक, साहसी और सक्रिय राष्ट्रीय नेता की जीवन-झाँकी

लेखक, श्री 'रामचन्द्र'

माननीय पंडित श्रीकृष्णदत्त पालीवाल हिन्दी-जगत् के प्रसिद्ध पत्रकार, राष्ट्रवादी नेता तथा संयुक्तप्रान्तीय सरकार के अर्थ तथा सूचना-सचिव के पद पर प्रतिष्ठित हैं। इस लेख में विद्वान् लेखक ने पालीवाल जी के राष्ट्रीय जीवन पर सुन्दर प्रकाश डाला है, जो पठनीय तथा ज्ञातव्य है।

चलाया तो पालीवाल जी उसमें भी शामिल हुए। कुछ समय के बाद उन्होंने विद्यार्थियों की एक सभा स्थापित की, जिसका उद्देश्य सदस्यों की शारीरिक, बौद्धिक और नैतिक उन्नति करना था। इसी सभा के द्वारा उन्होंने "विद्या पढ़ो" शीर्षक अपना पहला पैम्फलेट प्रकाशित कराया। उसी वर्ष आगरे में प्लेग का भीषण प्रकोप हुआ और रोगग्रस्त जनता की सेवा करने में उन्होंने प्रशंसनीय साहस

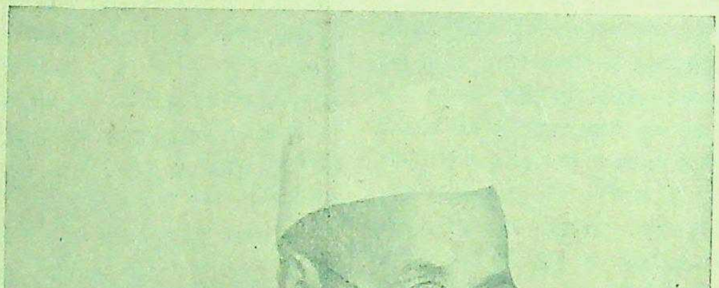

संयुक्तप्रांत के अर्थ तथा सूचना-मंत्री माननीय पंडित श्रीकृष्णदत्त पालीवाल।

एवं स्फूर्ति का परिचय दिया। सभा की अन्तरंग ने यह भी निश्चय किया था कि अपने एक साथी को लेकर पालीवाल जी अमेरिका जायें। किन्तु उसी वर्ष लड़ाई छिड़ गई और यह विचार सफल न हो पाया। सभा के दो सदस्यों, जिनमें एक पालीवाल जी भी थे, ने तभी से यह निश्चय कर लिया था कि हमें देश स्वतंत्र करना है। [illegible] सोई हुई भारतीय जनता को जगाकर आजादी की लड़ाई लड़ना है और विजयी होने के बाद स्वदेश को एक सुदृढ़ राष्ट्र बनाना है। यही उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बनाया, जिसके लिए उन्होंने सतत प्रयत्न एव संघर्ष किया। जब कि उनके अन्य साथी अपनी आर्थिक उन्नति करने में लगे थे और बड़े बड़े उद्योग स्थापित करने की कोशिश कर रहे थे, पालीवाल जी, सच्चे संयमी की भाँति अहर्निश स्वदेश को परवशता से मुक्त करने में संलग्न पाये जाते थे।

मैनपुरी षडयन्त्र केस

इस उत्कट अभिलापा को लेकर पालीवाल जी आजादी के लिए दीवाने बन गए और भारत से अँगरेजों को निकालने का उपाय ढूँढ़ने लगे। उन्होंने एक सशस्त्र क्रांतिकारी दल का संगठन किया और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध कार्य आरम्भ कर दिया। मैनपुरी षड्यन्त्र केस [illegible] करार दिये गये। उनकी तलाशी हुई और अदालत में जाँच की

गई। किन्तु भेद खोलनेवा लोगों के बयान पर वे बन्दी गये थे, वे इन पर जिरह पहले ही हवालात से भाग गये। बाद पालीवाल जी साहित्यिक क्षेत्र और स्वतन्त्र रूप से पत्रों में छपवाने लगे। उनके लेख आरम्भ कानपुर के "प्रताप" और गोर "स्वदेश" में छपते रहे। हिन्दी- निमित्त उन्होंने आगरे की नागरी- सभा में भी काम किया। आगरा उन्होंने कुछ पत्रों का सम्पादन भी इसी काल में आगरा कालेज के वर्ग ने उनके भीषण राजनीतिक कलापों के कारण उन्हें कालेज नहीं किया। अतएव वे अलीगढ़ और वहाँ मुस्लिम कालेज में गये। यहाँ उन्होंने कानून का किया और "देवदत्त" उपनाम विशेष रूप से लेखन-कला को उन्होंने अकेले ही हिन्दी की नामक एक मासिक पत्रिका का किया। इसी काल में उन्होंने " के नाम से हिन्दी की एक छोटी-सी लिखी, जिससे यह पता चलता है कि समय से पालीवाल जी को भारत की जनता की आर्थिक उन्नति करने कितनी चिन्ता रहती थी। समय उनके जो सम्पादकीय लेख उनके अनुवाद सन् १९ बाद की संयुक्तप्रान्तीय सरकार एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्टों में उद्धृत हैं। जिस समय पालीवाल जी एल० बी० की परीक्षा देने इलाहाबाद थे, उस समय रास्ते में श्रद्धेय श्री शङ्कर विद्यार्थी से मिलने के लिए उतर पड़े। विद्यार्थी जी उन दिनों बरेली हत्याकाण्ड में इज्जत हक मामले में व्यस्त थे। अतः उन्हें कुशल सहायक की आवश्यकता विद्यार्थी जी को चिन्तामुक्त करने पालीवाल जी ने परीक्षा देने का छोड़ दिया और उनके प्रेस का सँभाल लिया। पालीवाल जी के मुद्रक, प्रकाशक और प्रधान का काम एक साथ करते रहे और "प्रभा" भी निकालते रहे। इस होता है कि पालीवाल जी में कित कुशलता और क्षमता है। आरम्भ पत्रकार-कला में उनकी वास्तविक रुचि थी, क्योंकि जब विद्यार्थी जी के लिए हरद्वार जाते थे तो वे जी को गर्मियों की छुट्टी में सम्पादन का कार्य-भार सौंप जाते

सैनिक की संस्थापना

अध्ययन समाप्त करने के प विद्यार्थी जी से पत्रकार उद्योग के विषय में सम्यक् दीक्षा लेकर १९२४ में आगरे आ गये और "सैनिक" की संस्थापना की। तक वे साप्ताहिक और दैनिक "सै साम्पदन स्वयं करते थे। भारत के में उन्हें गौरवपूर्ण पद प्राप्त हु उनकी योग्यता का लोहा सभी इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण अखिल भारतीय हिन्दी-पत्रकार

शेष पृष्ठ १८

जकल गर्मी में लोग उटकमंड, नैनीताल और मसूरी जाते हैं

दूत चित्रावली

ने के लिये रेलवे लाइन का टेढ़ा-मेढ़ा दिखाई दे रहा है।

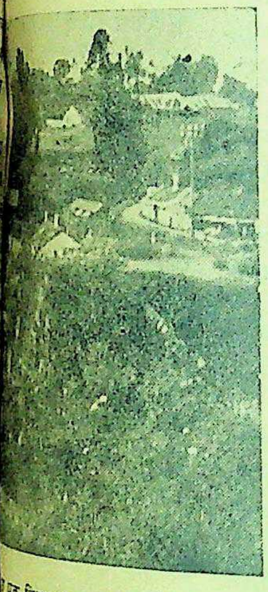

एक विहग दृश्य, रहने के लिये मकान पहाड़ियों पर बने हैं।

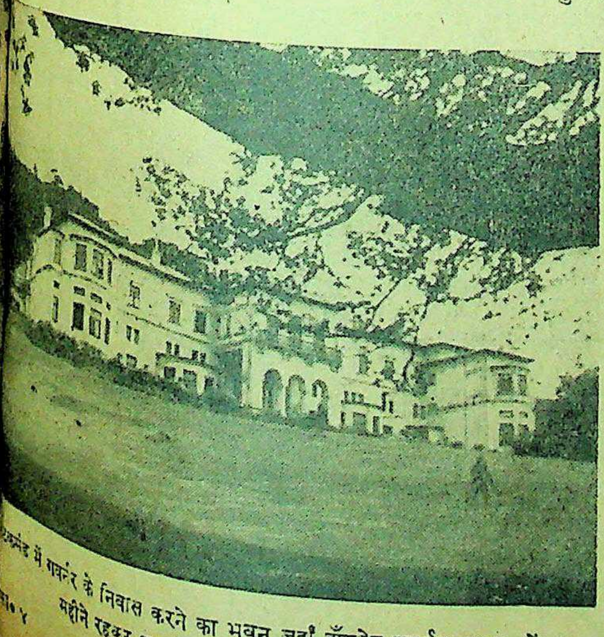

में गवर्नर के निवास करने का भवन जहाँ अँगरेज गवर्नर साल में छः महीने रहकर अपना सुन्दर समय बिताते थे।

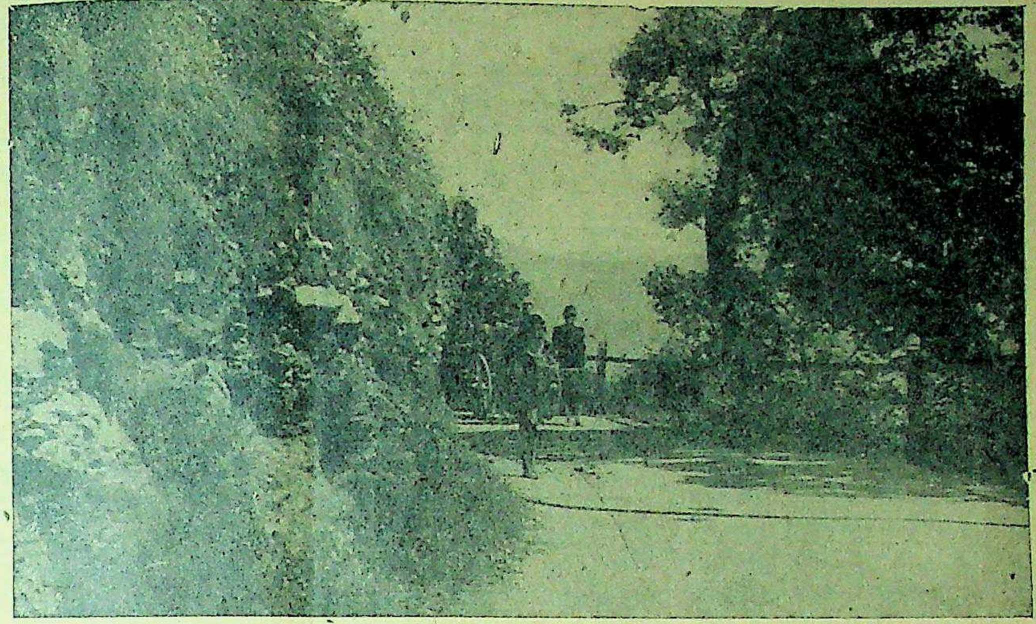

मसूरी में गर्मियों में खूब चहल-पहल रहती है। हवा खोरी करनेवाले लोग यहाँ पहुँच जाते हैं। यह चित्र मंसूरी के कैमल्स बैक-रोड का है। मसूरी के उपवन का यह एक दृश्य है।

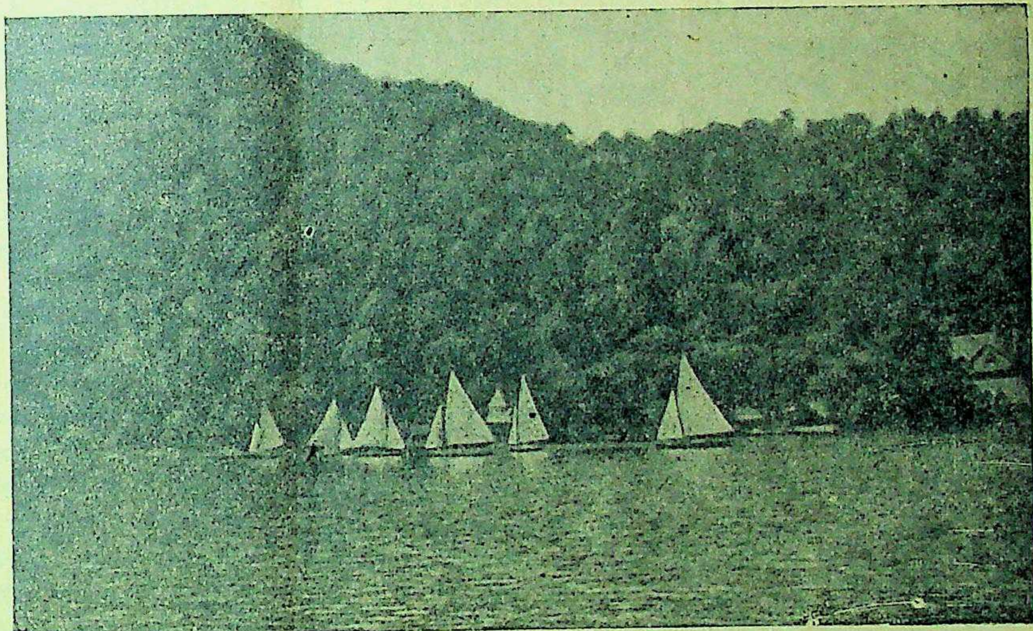

संयुक्तप्रांत में नैनीताल ऊँचाई पर स्थित है। इस वर्ष प्रांतीय सरकार के कई मंत्री गर्मी से व्याकुल होकर नैनीताल पहुँचे हैं। यह चित्र नैनीताल के तालाब का है जिसमें नावें चल रही हैं।

उटकमंड के 'स्टोन हाउस हिल' के भवनों का दृश्य जहाँ गर्मी के दिनों में मद्रास सरकार का सेक्रेटेरियट चला जाता है।

हैदराबाद के रजाकार किधर ?

जनता के अधिकारों तथा राष्ट्रीयता पर कुठाराघात

लेखक, श्री अखिल विनय

हैदराबाद में आजकल रजाकार-दल जनता पर भयंकर अनाचार कर रहा है। राष्ट्रीयता को कुचल डालने का क्रियात्मक उपाय जारी है। इस लेख में हैदराबाद की स्थिति तथा रजाकारों के संगठन के खतरे पर प्रकाश डालते हुए भारत-सरकार का ध्यान आकर्षित किया गया है। लेख पठनीय तथा सामयिक है।

हैदराबाद के निजाम जो रजाकारों के संगठन के जिम्मेदार हैं।

भारत से ब्रिटिश नौकरशाही का बोलबाला खत्म हुआ। अब गवर्नर जनरल भी एक भारतीय श्री राजगोपालाचारी बन रहे हैं। अंगरेजों के निरंकुश शासन को आगे बढ़ाने में देशी राज्यों ने बहुत योग दिया था। आज प्रायः अधिकांश रियासतें भारतीय संघ में सम्मिलित हो गई हैं; परन्तु सदा से ब्रिटिश सरकार की चाटुकारिता पर जीनेवाला हैदराबाद का 'निजाम' आज अपने को स्वतन्त्र घोषित किया चाहता है। जनता के अधिकारों को कुचलकर जनता के दिलों पर राज्य किया चाहता है। सन् १८५७ के भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के खिलाफ निजाम ने ब्रिटिश सरकार को खूब सहायता दी थी। प्रथम महायुद्ध के समय तत्कालीन सरकार को सहायता देने के उपलक्ष में उसे 'हिज ऐग्जाल्टेड हाइनेस' की उपाधि मिली थी तथा सम्राट् जार्ज पंचम ने ब्रिटिश सरकार के विश्वास-पात्र मित्र ('फेथफुल एलाई') का पद प्रदान किया था, हम भुला नहीं सकते। आज भी हैदराबाद के निजाम उसी परम्परा को निभाने चले हैं।

हैदराबाद के राज्य में ८५ प्रतिशत आबादीवाले लोगों के अधिकारों को कुचलकर १० प्रतिशत आबादीवालों की रक्षा के नाम पर आज निरंकुशता और अन्याय को प्रश्रय मिला है। राज्य का शासक मुसलमान है और क्या इसीलिए मुसलमानों को वहाँ ऊँचे और महत्त्वपूर्ण स्थान मिलने चाहिए? उस राज्य की पुलिस में ९५ प्रतिशत मुसलमान हैं जिनमें अरब, पठान, अफरीदी, रुहेले और मोहमदीज हैं। हिन्दू और सिक्ख नाममात्र को हैं। पुलिस के ही समान वहाँ की सेना में भी ४५ प्रतिशत संख्या मुसलमानों की ही है। राज्य की नौकरियों में ७५ प्रतिशत मुसलमान ही हैं जैसा कि निम्न तालिका से स्पष्ट होगा—

नाम महकमा	मुसलमान	हिन्दू	अन्य	कुल
शिक्षा-विभाग के अफसर	२३७	६५	२७	३२९
सप्लाई अफसर	२५	७	९	१३
अन्य विभागों का योग	७६३	२०९	४३	१०१५
नौकरी में प्रतिशत	७५	२०	५	

हैदराबाद राज्य के शासन की एक ही विशेषता है और वह यही कि सब लोगों के अधिकारों को कुचलकर मुसलमानों के प्रति घोर पक्षपात। आज कहने को वहाँ ५० ५० का अनुपात माना जाता है पर लायकअली के मन्त्रिमण्डल से पहले तो और भी अन्याय का दौर-दौरा था। वह इससे स्पष्ट हो जायगा कि विभिन्न विभागों के मन्त्रियों में राज्य में ११ व्यक्तियों में ९ मुसलमान और केवल २ हिन्दू थे। सभी गजेटेड अफसरों का यही हाल था और अब भी है। राज्य का शासन ही साम्प्रदायिक आधार पर होता है। वहाँ की प्रबन्धकारिणी कौंसिल की अर्जदास्त (सन् १९३९) में स्पष्ट कहा गया है—"इस राज्य में मुसलमानों की ऐतिहासिक स्थिति और राजनीतिक दर्जे के कारण इस जाति का महत्त्व ऐसा स्पष्ट है कि व्यवस्थापक सभा में इसको अल्पसंख्यक की स्थिति नहीं दी जा सकती। हर एक आदमी को यह बात माननी चाहिए कि मुसलमानों की यहाँ ऐसी स्थिति है कि उसके कारण इस राज्य के राजनीतिक तथा नैतिक शक्ति बढ़ाने में उन्होंने जो योग दिया है, वह कभी भी हिन्दुओं से कम नहीं रहा है। निर्वाचित और नामजद सदस्यों में हिन्दुओं तथा मुसलमानों की संख्या बराबर रहे।"

वहाँ की धारासभा के ७६ निर्वाचित सदस्यों में ३८ हिन्दू व इतने ही मुसलमान हैं। ४३ नामजद सदस्यों में २० हिन्दू और इतने ही मुसलमान, २ ईसाई व १ पारसी है। पदेन सदस्यों में केवल १ हिन्दू और ११ मुसलमान तथा १ ईसाई (यूरोपियन) है। इस प्रकार स्पष्ट है कि हिन्दुओं की आबादी में ८५ प्रतिशत होने पर भी ४५ प्रतिशत प्रतिनिधित्व दिया गया है और मुसलमानों को ४३ प्रतिशत। फिर ५०,५० का अनुपात रखने की बात का क्या अर्थ होता है? इस प्रकार १२ प्रतिशत अल्पसंख्यकों को बहुमत में परिणत कर दिया गया है और इसीलिए स्टेट कांग्रेस ने इसका बहिष्कार किया। राज्य में तेलगू भाषाभाषी सर्वाधिक होने पर भी राज्य की भाषा उर्दू है। शिक्षा का माध्यम उर्दू है और इस कार्य के लिए करोड़ों रुपया व्यय किया गया है।

केवल यही नहीं, हैदराबाद में इत्तहादुल मुसलमीन नामक एक फासिस्ट संस्था के अर्द्ध-सैनिक प्रयत्न 'रजाकारों' ने बीदर, वरंगल, औरंगाबाद, नलगुण्डा और करीमनगर आदि जिलों को बरबाद कर दिया है। इन जिलों के १८३ से ऊपर ग्राम जलाकर खाक कर दिए गए हैं। लूटमार, आग लगाना, औरतों-बच्चों पर नारकीय अत्याचार करना सब प्रकाश रूप में रजाकारों द्वारा किया जा रहा है। उनके शमन में निजाम सत्ता की मौनता से ही उसकी नीति स्पष्ट है। इत्तहादुल मुसलमीन के प्रधान सैयद कासिम रजवी साहब के शरारत-भरे वक्तव्य 'कह मुकरनी' की भाँति दाल-रोटी बन गए हैं। उनके हिंसा और अत्याचार को प्रोत्साहन देनेवाले भाषणों से, रजाकारों को उत्तेजना मिली है और उनके काले कारनामों से सब परिचित ही हैं। आज नहीं, आज से ६ महीने पहले से उनके साम्प्रदायिकता को उभाड़नेवाले भाषण जारी हैं! मौलवी कासिम रिजवी का एक वक्तव्य हैदराबाद से होनेवाले पत्र "पयाम" के ४७वें ता० २३ नवम्बर ४७ को छपा है, कुछ अंश देखिए—"तारीख इस्लाम को दोहरा रही है। शहीदाने कर्बला खून उफक (क्षितिज) दकन पर (लालिमा) बनकर फूलने [illegible] जमीन (प्रदेश) दकन मैदान कर्बला बनने को है। अब हर मुसलमान बनकर हक व सदाकत व आजादी देकर रसूल के नवासे अली के जिगर फातमा के लख्ते जिगर की तरह दवामी (चिरजीवन) हासिल करना है मुसलमानों! अब कफन सर से और मरने के लिए तैयार हो जाओ हर मुसलमान को हुसेन बनकर आजादी के लिए जान कुर्बान कर मरनेवाले जिन्दाबाद व जौक जिन्दाबाद।" उफ! कितना [illegible] कता का जहर उगला गया है!

* *

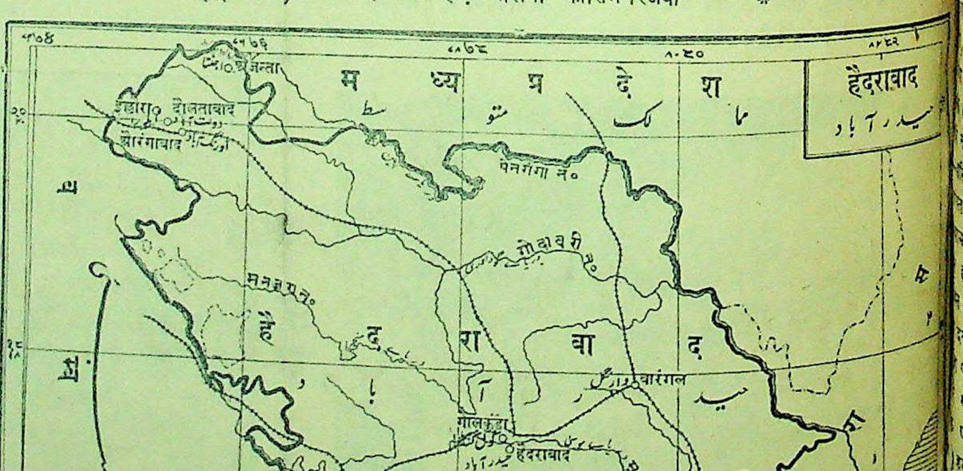

गीत

लेखक, श्री श्रीपालसिंह 'क्षेम'

मुसका रहे प्राण! मुसका र
तम से भरी राह
में मिल गई चाह,
उड़ती सुरभि की लहर-
सी, बिखर आह!
बनकर पुलक प्राण में छा रहे
पारंग - मय हास
रस - भींगती सांस
बन इन्द्रधनु शून्य
में लहरती प्यास
लहरा रहे स्वप्न से दृष्टि के
ऊपर गगन - गान
की शबनमी तान
नीचे धरा - प्राण
के मुक्त वरदान
पथ पर बरसते नयन-रश्मि के

नाटक

जीने का आश्वासन

लेखक, श्री रामचरण राय बी० ए०, एल्-एल० बी०

निर्धनता मनुष्य से कभी कभी बड़े भयंकर काम करवाती है। गरीब का जीवन, उसके बच्चे, उसकी जायदाद अमीरों के आनन्द करने के लिये ही हैं। एक पिता स्वयं अपने ही हाथों से अपने पुत्र के प्राण लेने को उद्यत हो जाता है। लेखक ने इस एकांकी में मानव की इस मनोवैज्ञानिक अवस्था का चित्रण बड़ी मार्मिकता से किया है, जो जीवन की वास्तविकता को प्रकट करती है। एकांकी मनोरंजक, सुन्दर और पठनीय है।

शांत पड़कर) हाँ—कह सकते हो। कोई उपाय नहीं है! प्रकृति भी तो हमारे पास आकर बदल जाती है। हमारे आनंद में पागल का उन्माद, हमारी हँसी में करुणा, और हमारी शांति में नशे की बेखबरी—ओह! हमारे मानव में अनेकों छेद हो गए हैं। जिस पोटली में अपने सर्वस्व को जतन से बटोरकर बाँध रखा था कोई उसे बिना जताए चुरा ले भागा। (खूनी आँखों से देखता है)

श्याम—चलो, जरा बाग में घूम आएँ।

हरि—नहीं, श्याम! वहाँ...मगर मुझको विस्मृति की आवश्यकता भी है। मानव के, शुद्ध प्राकृतिक प्रेरणाओं से उद्भूत अधिकारों से आज तक कैसे बेखबर रहा—यही आश्चर्य है! मगर आज जब वे सब खलमलाकर उठ बैठे हैं तो सोचता हूँ—मन फट जाएगा—आह! यह किसने याद दिलाई!

[एक वृद्धा—जर्जर गात, निस्तेज मुख, अशक्त, जीर्ण शीर्ण कपड़ों में, प्रवेश करती है]

वृद्धा—हरि बेटा! बच्चे की हालत खराब हो रही है। दवा...

हरि—(टोंककर) दवा? (टकटकी बाँधे माँ का मुँह देखता रह जाता है)

माँ—हाँ, बेटा! दवा। जरा दौड़कर डाक्टर के पास चला जा, मेरे लाल!

हरि—डाक्टर! (भाव-हीन मुद्रा)

माँ—हाँ, हाँ, डाक्टर! इस तरह मेरे मुँह की तरफ टकटकी बाँधे क्या देखता है, बेटा!

हरि—(सहसा झोंके के साथ उठकर) माँ! अब तुम विश्राम करो। जब से तुमने होश की आँख खोली, तब की तो मैं कुछ कह नहीं सकता, मगर मैंने होश में तो तुम्हें अब तक एक क्षण भी शांति पाते न देखा। गृहस्थी की फटी गुदड़ी में थेगले लगाते-लगाते तुम्हारे हाथों से खून गिरने लगा है, मगर सुई की नोक का भार वह जर्जर गुदड़ी कैसे सहे! माँ—अब मैं तुम्हें अधिक चिन्ता न करने दूँगा। सेवा भी न कर सका और जुल्मों की सीमा भी नहीं रही (दृढ़ निश्चय के स्वर में) अब दवा और डाक्टर की जरूरत नहीं है। तुम जाकर सो रहो, माँ!

माँ—कह क्या रहा है, हरि! श्याम! इसे आज क्या हो गया?

हरि—मुझसे ही पूछो, माँ! श्याम जवाब नहीं दे सकेगा। आज मैंने सत्य से साक्षात् किया है।

माँ—मगर दवा...

हरि—वह असत्य जो है। जिनके हाथ मानव के रक्त से नहीं रँगे हैं वे इस असत्य से कलंकित न हों।

माँ—मेरे लाल! दवा ले आ।

हरि—दवा नहीं मिलेगी, माँ! डाक्टर के दिल पर जो फाटक लगा है वह चाँदी का रुपया दिखाए बिना खुलता ही नहीं। अच्छा, माँ! तुम बतला सकती हो दवा की जरूरत ही क्यों है?

माँ—कहता क्या है रे! लड़का...

हरि—(टोंककर) मगर, माँ! लड़के को जिन्दा ही क्यों रहना चाहिए, बता सकती हो? हमारे पास तो ऐसा कुछ है नहीं जिसके भरोसे उसे जीवित रखने की बात सोचें या हिम्मत करें। इससे तो अच्छा हो कि वह भगवान् की गोद में जा सोए। (गला भर आता है)।

माँ—(उद्विग्न होकर) राम, राम! कैसी कुलच्छन की बात करते हो, बेटा! सई-साँझ ऐसी बात मुँह पर लाना भी नहीं चाहिए।

हरि—नहीं, माँ! आज मुझे सत्य बोलने दो। भाषा का स्थिति से दुराव मत करो। मैं कहता हूँ—बच्चे को मर जाने दो, माँ! बेचारे को जिन्दा रख-

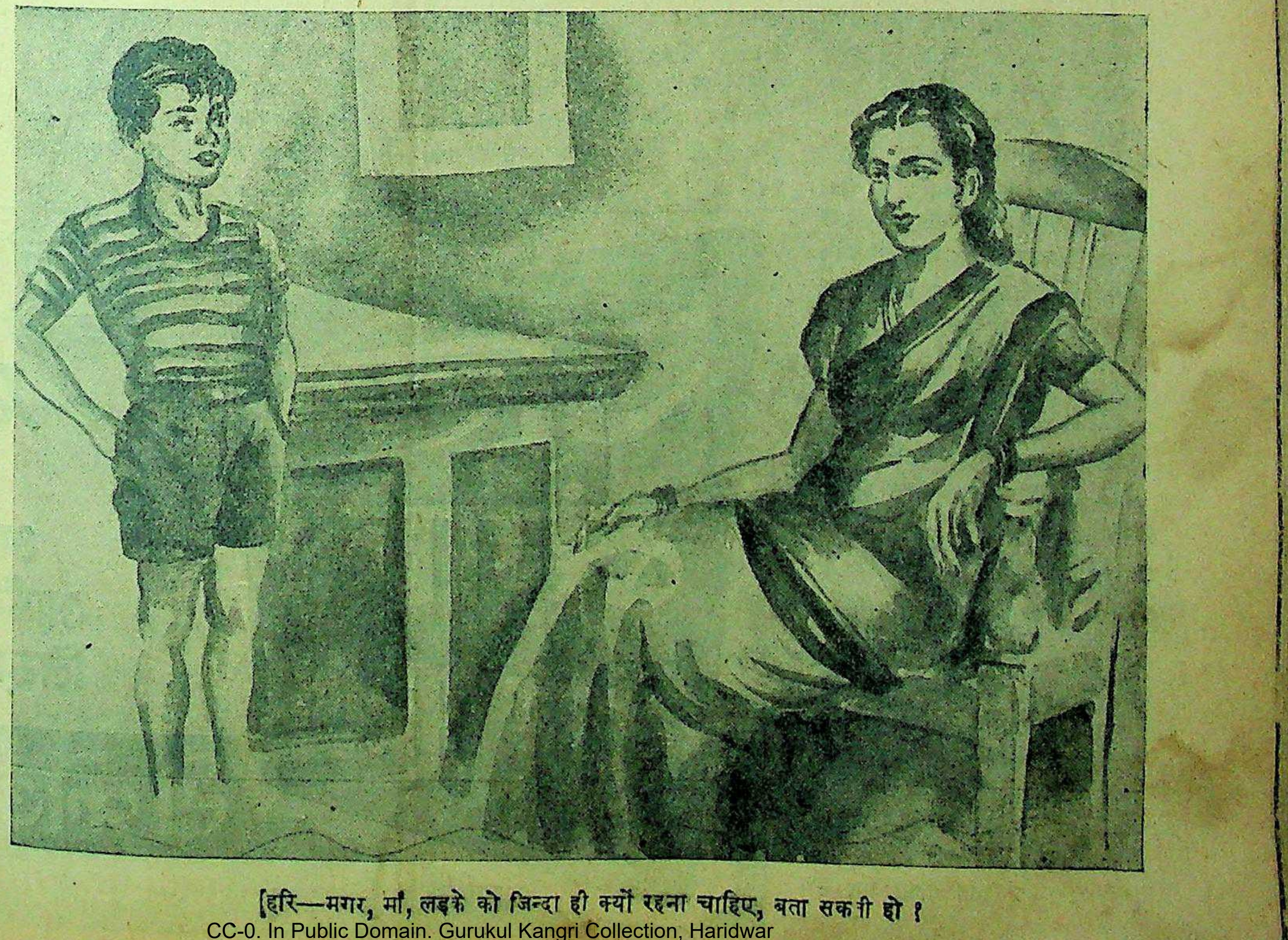

[हरि—मगर, माँ, लड़के को जिन्दा ही क्यों रहना चाहिए, बता सकती हो?

कर काँटों से भरी दुनिया में आखिर किस दिल से फेंकना चाहती हो ? हम उसके लिए कुछ कर न सकेंगे। रोटियों के भिक्षुक—हम ! पेट की जरूरतों से जो ऊपर न उठ सके।

माँ—(विवश भाव, दीन मुद्रा) श्याम ! तू ही समझा, बेटा ! यह तो पागल-सा हुआ जा रहा है।

हरि—(श्याम को जो आगे बढ़ता है एक हाथ लंबा करके रोकता है)

श्याम—नहीं समझा सकेगा, माँ ! इस आग को सात समुन्दर भी नहीं बुझा सकते। हमारी जिन्दगी में है क्या ! निरंतर प्रवंचना से तुम न मालूम कैसे अपने मन का समझौता बनाए रख सकीं, मगर मैं तो उसे सहन न कर सकूँगा, माँ, मेरा दिल....कल्पना करो,

माँ—जब दो रोटियाँ बृहदाकार होकर तुम्हारे लाल के लोक-परलोक पर छा जाएँगी तब उस अंधकार में....ओह !

[अन्दर से रोने की आवाज आती है—बच्चे की क्षीण-सी आवाज है। वृद्धा व्यस्त भाव से अन्दर जाती हैं]

श्याम—हरि भैया ! तुम्हारे इन उच्छ्वासों से संभव है, विष को बहाकर मन हलका हो जाता हो, मगर माँ के साथ तो तुम अत्याचार ही कर रहे हो।

हरि—(अनसुनी करके) माँ ! इसे यहाँ ले आओ।

[श्याम देखता रह जाता है। हरि के मुख पर कठिन संघर्ष के भाव]

[माँ का प्रवेश। रुग्ण बच्चा—जो शरीर ४ साल तक पाला-पोसा गया मानव-परिवार के पवित्रतम, उष्णतम और सर्वमंगला को अपूर्ण प्यार के साथ वही जर्जर-गात वृद्धा की छोटी-सी गोद में सिमट गया है]

हरि—(आगे बढ़कर बच्चे को गोद में ले लेता है) जिसे हम माँ-बाप होकर भी भर पेट खाने को नहीं दे सकते उसे लेकर मन में आग जलाने का प्रयोजन क्या और फल क्या, माँ ? बेटे ! मर जाओ—इसी क्षण (आँखें फाड़कर उसकी तरफ देखता है)

माँ—(आर्त-स्वर में चीत्कार) भगवान् !

हरि—(अपनी धुन में यथावत् देखता हुआ) जीवन के अभिशाप का टीका माथे पर लगाकर यह मानव का बच्चा दिशा-विदिशा का मजाक न बने। ओह ! भगवान् ! कदम-कदम पर तड़पन का यह आयोजन—मिनट मिनट के पर्दे में इतनी वंचना बटोरते रहने से मन तो जीता न बच सकेगा। इसलिये यदि यह जिन्दा बच रहा तो एक दिन संतप्त हृदय से अपने ही नाखूनों से अपना सीना फाड़ना चाहेगा।

माँ—हरि बेटा ! यह हमारी गरीबी का आसरा है।

हरि—(अनसुनी करके) सुनता हूँ गुरुजनों की दुआ से संतान सुख को प्राप्त करती है। मैं—तुम्हारा पिता आज सर्वान्तःकरण से आशीर्वाद देता हूँ, बेटा ! (आँखों में आँसू छलछला आते हैं, गला भर्राने लगता है) बेटा ! तुम निर्विलम्ब मृत्यु को पाकर जीवन की यातना से छुटकारा पाओ।

[माँ अत्यधिक संतप्त होकर धम से बैठ जाती है। उनकी आँखों में सूनापन कालिमा से भरता जाता है। श्याम निरुपाय-सा टुकुर-टुकुर दोनों का मुँह देखता है। बच्चा गोद में तड़पता है।]

हरि—क्यों ! क्या प्राण नहीं निकलते ? लाओ मैं तुम्हारी मदद कर दूँ, बेटा ! बाप को कलंकित करनेवाली इस अवस्था से तुम्हारा छुटकारा हो जाने से मेरा लाभ भी कम नहीं है। आओ, मैं तुम्हें विश्रांति तक आसानी से पहुँचा दूँ। [आँखों में पागलपन का भाव—मुँह को सख्ती से बन्द करता है जिससे ओंठों से खून निकलने लगता है। एक हाथ बच्चे के गले की तरफ बढ़ाता है।

माँ चीखकर दौड़ पड़ती है। श्याम भी दौड़ता है और हरि के हाथ को पकड़ लेता है। माँ बच्चे को झपट ले जाती है।]

हरि—ओह ! (आँखें फाड़े एक मिनट खड़ा रहता है।) माँ बच्चे को छाती से लगाती है और भयभीत सी अन्दर चली जाती है।

[एक मिनट भयानक सन्नाटा। श्याम हरि को सान्त्वना देने का मूक प्रयास करता है, मगर हरि के मुख को देखकर पीछे हट जाता है। इसी समय आकुल मगर व्यस्त-सी वृद्धा माँ का प्रवेश। बच्चे को वे भीतर छोड़ आई हैं।]

वृद्धा—(स्नेहाकुल, भर्राये हुए कंठ से) बेटा !

हरि—सहसा चौंकता और फिर माँ के चेहरे पर आँखें गड़ा देता है।

वृद्धा—बेटा !......

हरि—मत बोलो, माँ ! बेटे को कलंकित करनेवाला यह स्वरूप—ओह ! इसे वाणी मत दो, माँ ! मेरी अच्छी माँ ! (माँ के मुँह की तरफ देखता है तो सहसा स्तब्ध-सा रह जाता है) ओह ! तुम्हें कष्ट होता है। तो जाने दो, माँ !

वृद्धा—बेटा ! शान्त हो जाओ। (सिर पर हाथ रख देती है। उसकी आँखों में आँसू हैं।)

[सहसा अन्दर से एक चीख की आवाज आकर एकाएक सबको हिला जाती है। सब चौंककर, भयभीत मुद्रा में, उस तरफ देखते हैं। हरि की पत्नी कपड़े में लपेटे हुए बच्चे को दहलीज के इस तरफ रख देती है। माँ घबराकर बच्चे की तरफ बढ़ती है।]

वृद्धा—(बच्चे पर झुकती हुई) क्या हुआ, बहू ?

[अन्तराल वर्जिनी का मौन स्वयं उत्तर बन जाता है। वृद्धा चीख मारकर बच्चे को गोद में उठा लेती है।]

श्याम—क्या हुआ, माँ !

हरि—क्या हुआ, माँ ? (माँ के विस्फारित नेत्रों की तरफ देखकर समझ जाता है।) क्यों, माँ ! मर गया ?

माँ—(कठिनता से बोल पाती है, रोती हुई) हाँ, बेटा ! हमें छोड़कर चला गया ? (खिसकती हुई)

हरि—इसका निर्णय कैसे हो माँ, कि उसको हमारा साथ अच्छा न लगा या हम उसको न रख सके।

श्याम—(स्वयं में) हरि भैया !

हरि—नहीं, श्याम ! घबराओ नहीं, मैं इसका निर्णय नहीं करूँगा। चाहे कितना ही यथार्थवादी होऊँ, मगर आखिर इन्सान हूँ। इस प्रश्न के निर्णय की घोर लज्जा की छाया में खड़ा नहीं रह सकूँगा। मगर मैं कहता हूँ, माँ, कि यह जो हुआ अच्छा ही हुआ। मृत्यु ने उसके समस्त दुःखों, और हमारी आदमियत की निर्लज्जता का अन्त कर दिया।

माँ—(आर्त स्वर में) बेटा !

हरि—ठीक कहता हूँ, माँ ! (हाथ जोड़कर ऊपर देखता हुआ) जीवन के उपादानों के दाता ! यदि तुम अभी तक शैतान से पूर्णरूपेण पराजित नहीं हुए हो तो तुम्हारे चरणों में तुम्हारी एक संतान के कोटिशः नमन्।

श्याम—(हरि के गले से लिपट जाता है) भैया !

हरि—(स्नेह एवं आकुल संवेदना के पाश से अपने को मुक्त करता हुआ, पूर्ववत् ऊपर देखता हुआ) तड़पते प्राणों को, तुम्हारी सर्वोच्च कृति मानव के दग्ध मन को, यदि तुम्हारी इसी कृपा का विश्वास हो जाए...

श्याम—(पीड़ित स्वर में) यह तो वज्राघात है, भैया......

हरि—(अविचलित भाव से ऊपर देखता हुआ) मुँहमाँगी मौत देकर मानव के कष्टों का सहज अन्त करने का आश्वासन दे दो, भगवान्! तो मानव बल पाकर भयानक विपत्तियों में भी ठहाका मारकर हँस सकेगा। आशंकाओं और भयों से

पाकर...

वृद्धा—बेटा हरि !

हरि—(सहसा घूमकर) माँ ! जीने

घड़ियों का आश्वासन माँगता

बीती मौत के द्वारा।

श्याम—चेतो, हरि भैया ! आ

आश्वासन मिल गया तो

जिएगा, मगर आदमियत

जायेगी !

हरि—इस आदमियत को बचाने

मत करो, श्याम ! यह

हाथों में शरीफों और

दबाने का हव्वा बन गई है।

इसको एक बार मर ही

हम फिर नई आदमियत

नई सुखी दुनिया आबाद कर

श्याम—नई आदमियत बनाने

गलत है, भैया ! (काँपकर)

जितने धीरे कदम-कदम

लाखों साल में इतनी थोड़ी-सी

मियत बना पाई, भाई ! उसको

कर नए सिरे से बनाने की

हिम्मत ही हार बैठेंगे। बच्चे

जाने पर तुम खुद को और

मुबारकबाद दे सकते हो।

बतलाओ तो; क्या बहुत से बच्चे

हुआ करते हैं, इसलिए बच्चा

देना भी आदमी के ही हाथ

हो गई ? शायद चाहकर

नहीं कर सकते, अनायास

पैदा होते हों।

वृद्धा—इधर आ ! हरि ! मेरे पास

[हरि विनीत बालक की तरह

पास जा बैठता है। माँ उसके सिर

हाथ फेरने लगती है। उनकी आँखें

आँसू छलछला आते हैं। हरि एक

तक उनके चेहरे की तरफ आँखें

देखता है। फिर सहसा अपने हाथ से

आँसुओं को पोंछ देता है।]

हरि—मत रोओ, माँ ! अब मैं तुम्हें

न दूँगा।

माँ उसके सिर को अपनी छाती

छिपा लेती है। माँ और बेटे की

से आँसुओं की धार बह निकलती

श्याम अपने आँसू पोंछता हुआ

की तरफ जाने लगता है। अन्दर से

की एक चीख...

(पटाक्षेप)

जुल्फे बंगाल हेयर आयल
KAPOOR ART PRESS

हम ने आपना व्यापा
देहली में आरम्भ क
दिया है !

अब आप अपने
आर्डर इतयादि निमन
लिखत पत्ते पर भेजें

दी क्रोऊन फारमे
दिलशाद गार्डन · शाहदरा · दे

मातृमण्डल

देश-विदेश में नारी-आन्दोलन की प्रगति

पुरुष को मिलकर कार्य-क्षेत्र में आगे बढ़ना ही ठीक है

लेखिका, श्रीमती सेंट निहालसिंह

में मेरी यह चौथी यात्रा पहले-पहल ३८ वर्ष हुए आई इसका कुछ समय पूर्व ही स्मरण कुछ सज्जन मुझसे मिलने आए। थे। उनमें लगभग एक १६ आयु की लड़की भी थी। वह जहाँ कि वह व्यायाम-कला का करने गई थी, अभी हाल ही में। उसकी इच्छा थी कि वह स्कूल जाय और वहाँ लड़कियों कला का शिक्षण दे। उसके उसके आदर्श थे। वह लड़कियों और बलवती बनाना चाहती थी, में ऐसे बच्चों को जन्म शक्तिशाली नर और नारी स्पष्ट शब्दों में यह सब शरमाती थी। उसने जो उससे उसका यह अभिप्राय की माँ भी साथ थी। जब तुम अपनी लड़की तुम अपने से इतनी दूर का साहस नहीं कर सकती ऐसी चाहतीं भी तो तुम्हें दिया जाता। व्यायाम-कला औरों को सिखाने का विचार आता, और यदि ऐसा विचार तो कोई भी उसमें तुम्हारे नहीं दिखाता और न ही तुम्हारी सहायता करता, उत्तर दी। वह मुस्कराहट अर्थ-

समय लड़कियों की और स्त्रियों के सम्बन्ध में लोगों के दिल में विचार थे। सन् १०-११ में जब भ्रमण कर रही थी, तो ऐसी जिन्हें स्मरण करके मुझे आज है, कोई असाधारण बात नहीं बार बार पूछा जाता था कि क्यों स्कूल में पढ़ने भेजा जाय, स्कूल में भेजना तो समझ में क्योंकि उसे अपने और अपने लिए आजीविका कमानी है; को पढ़ाने की क्या आवश्य- लड़की विवाहित हो जायगी उसकी चिन्ता करेंगे बचपन माता-पिता उसकी चिंता क्यों शब्द कहे जाते थे तो यह था कि इस विषय में जो को था वह सब कुछ कह है, शिक्षा और आर्थिक समस्या वस्तुएँ नहीं समझी जाती थीं। विचार का परिणाम यह था कि नहीं किया जाता था कि मस्तिष्क रखती हैं और उनके की आवश्यकता है, लड़कियों के शरीर भी हैं और उनके शरीरों को विकसित और बलिष्ठ बनाए जाने की आवश्यकता है। ऐसे अवसर आ सकते हैं जब कि उन शरीरों और उनकी पतिव्रता की रक्षा का प्रश्न खड़ा हो सकता है, आज से ४० वर्ष पहले उस समय किसी को यह विचार नहीं आता था कि स्त्रियाँ अपने चरित्र की रक्षा के लिए लड़ भी सकती हैं। उस समय लड़कियों की शिक्षा के सम्बन्ध में कैसी वाहियात बातें कही जाती थीं। पढ़-लिखकर वे घर के काम से नाक भौं सिकोड़ने लगेंगी और वे निठल्ली और भ्रष्टाचारिणी हो जाएँगी, ऐसी बातें स्त्री और पुरुष दोनों ही कहा करते थे; और स्त्रियाँ ऐसी बातें अधिक कहती थीं। वे स्वयं सर्वथा अशिक्षित होने के कारण इस सम्बन्ध में अधिक नहीं जानती थीं।

मैं उनसे कहा करती थी कि देखो मुझे तो शिक्षा ने घर के कामों से दूर नहीं हटाया है। मुझे तो स्वादिष्ट भोजन बनाने में उतना ही आनन्द आता है जितना कि एक अच्छा लेख लिखने में आता है। घर का कोई काम नहीं है जिसे मैं खुशी से नहीं कर सकती। उलटा शिक्षा के कारण मैं घर के कामों को अधिक अच्छी प्रकार कर सकती हूँ। उदाहरण के लिए मैंने विज्ञान पढ़ा है। विज्ञान ने मुझे बताया है कि स्वच्छता और अस्वच्छता की अवस्था में, गोदी के बच्चे और बालकपन की अवस्था में, बच्चापन की अवस्था में और वृद्धावस्था में, शरीर को किस किस वस्तु की आवश्यकता पड़ती है। विज्ञान ने मुझे भोजन के घटकों और उनके गुणों के सम्बन्ध में भी ज्ञान दिया है। विज्ञान ने मुझे यह भी बताया है कि अपने वस्त्रों के धब्बों को हटाने के लिए किन किन रासायनिक पदार्थों का कितनी मात्रा में प्रयोग करना चाहिए। इसी प्रकार और भी अनेक बातें शिक्षा से मैंने जानी हैं।

अखिल भारतीय बालसंघ का अधिवेशन नई दिल्ली में कुमारी पामेला माउंटबेटेन की अध्यक्षता में हुआ था! चित्र में सभा नेत्री तथा अन्य बालक-बालिकायें दिखाई दे रही हैं।

यह तो हुई घर की बात। १९१० व ११ में स्त्रियों के घर से बाहर के संसार में आकर लाभदायक काम करने के सम्बन्ध में भी लोगों के कितने संकुचित विचार थे। स्त्रियों को घर में ही रहना चाहिए। उन्हें घर से बाहर नहीं जाना चाहिए, यदि वे घर से बाहर जायेंगी तो यह "कुल" के लिए लज्जा की बात होगी।

जो स्त्रियाँ इन व्यर्थ की बातों को नहीं मानती थीं और घर से बाहर जाकर कुछ करना चाहती थीं उनके लिए कार्य का क्षेत्र बहुत सीमित था। केवल दो काम उनके लिए खुले थे। एक पढ़ाने का और एक चिकित्सा का। लेखन और समाज-सेवा के काम भी थे। पर इनसे कोई आय नहीं होती थी। कुछ स्त्रियाँ लिखती थीं, पर केवल उन्नति के लिए। उनको लेखन-कला से धन कुछ भी नहीं प्राप्त होता था और सभी पैसे स्त्रियों के लिए अनुपयुक्त समझे जाते थे। यह सबके सब मनुष्यों के सुरक्षित क्षेत्र समझे जाते थे और पुरुष स्त्रियों को उसमें घुसने नहीं देते थे। एक भारतीय पारसी लड़की ने अपने माता-पिता के साथ इँग्लैंड में रहते हुए कानून पढ़ लिया। पर उसे पुरुषों की बराबरी में वकालत का पेशा नहीं करने दिया गया। उससे कहा गया कि वह पर्दानशीन स्त्रियों को उनके सम्पत्ति-सम्बन्धी अधिकारों के विषय में सम्मति देने का काम कर सकती है। उसको इतना अवसर भी न दिया जाता, यदि उसने कई तरह के प्रभाव से काम न लिया होता।

मुझे स्मरण है कि उस समय भारतीय लड़कियों के लिए चिकित्सा की शिक्षा प्राप्त कर सकना कितना कठिन था। सन् ८०-९० के सालों में एक बंगाली लड़की ने डाक्टर बनने का निश्चय किया। उसे कलकत्ते की किसी संस्था में प्रविष्ट नहीं किया गया। वह लड़की बड़े दृढ़ निश्चय की थी। उसने मद्रास जाकर वहाँ के मेडिकल कालेज में शिक्षा ग्रहण की।

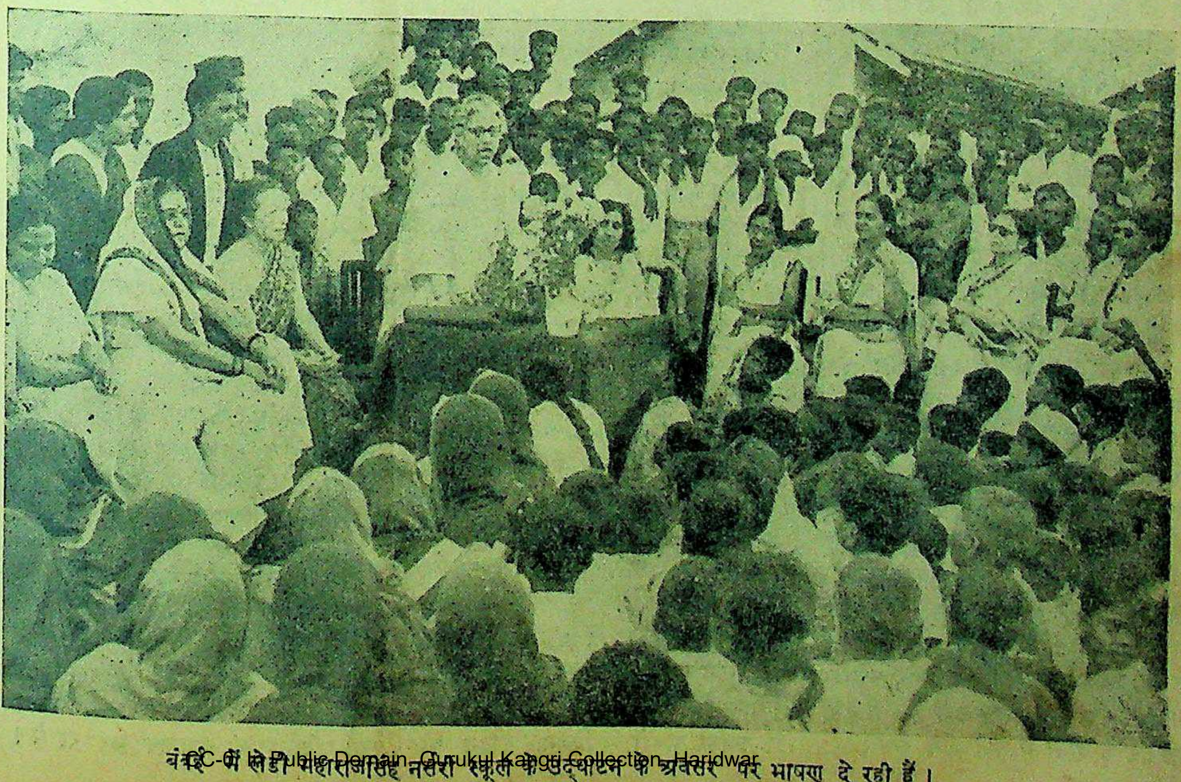

बंबई में लेडी महाराजसिंह नर्सरी स्कूल के उद्घाटन के अवसर पर भाषण दे रही हैं।

उसकी एक सहेली ने मुझे बताया कि उसके मार्ग में कितनी कठिनाइयाँ आईं और उन पर उसने किस प्रकार विजय प्राप्त की। यह केवल ६० वर्ष पहले की बात है। वह देवी अभी तक जीवित है। उसका नाम अबला वसु है और वह संसार-प्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीशचन्द्र वसु की धर्मपत्नी है। जो लोग उस देवी से परिचित हैं, वे जानते हैं कि उसने स्त्रियों के लिए विभिन्न द्वार खोलने में कितना अधिक परिश्रम किया है। वह मार्गरेट नोबल को, जो बहन निवेदिता के नाम से प्रसिद्ध है, अपने घर ले गई। दोनों ने मिलकर एक शिक्षणालय खोला। इस शिक्षणालय का उद्देश्य लड़कियों के मस्तिष्क का आधुनिकतम ज्ञान से आलोकित करना था; परन्तु प्राचीन भारतीय ज्ञान से भी उन्हें वञ्चित नहीं रखा जाता था। इस कारण वे लड़कियाँ पश्चिम की बातें सीखकर भी भारतीय ही रहेंगी। प्रत्युत अधिक अच्छी भारतीय बनेंगी। यह कार्य प्रारम्भ होने के थोड़े समय पीछे ही निवेदिता की मृत्यु हो गई; परन्तु अबला वसु ने उस काम को जारी रखा। और वह संस्था अब तक चल रही है जिसके द्वारा भारतमाता के उस भाग के नर-नारियों की आँखों को खोलने का बड़ा सुन्दर काम हुआ।

मैं इस बात पर इसलिए बल दे रही हूँ कि मेरी सम्मति में स्त्रीवर्ग एक ऐसा दीपक है कि जिससे सदा ही दूसरे दीपक प्रज्ज्वलित होते हैं, यह एक ऐसा दीपक नहीं है जो अपने में के प्रकाशमात्र से सन्तुष्ट हो जाय प्रत्युत यह एक ऐसा दीपक है जो आनन्द और आलोक को दूसरों तक बखेरने में आनन्द अनुभव करता है। इसे दान में गौरव अनुभव होता है। जो भी इस दीपक की किरणों के दायरे में आता है, वह चाहे बालक, पति, पिता, चाचा, मित्र और शत्रु कोई भी क्यों न हो, इसके प्रकाश और उष्णता से लाभ प्राप्त करता है।

इसीलिए स्त्रियों की शिक्षा बड़े महत्त्व की वस्तु है और सामाजिक दृष्टि से पुरुषों की शिक्षा की अपेक्षा भी अधिक महत्त्व वस्तु है, बालक की शिक्षा तो एक व्यक्ति की ही शिक्षा है, परन्तु बालिका की शिक्षा एक समुदाय की शिक्षा है।

४० वर्ष पहले स्त्रियों की शिक्षा के सम्बन्ध में जो प्रतिबन्ध मैंने भारत में देखे थे वे भारत की ही खास वस्तु नहीं थे। अन्यत्र भी स्त्रियों को उस प्रकार की बाधाओं को सहना पड़ रहा था। स्त्री का जगत् उन दिनों दूसरे देशों और द्वीपों में भी अत्यन्त संकुचित था। प्रत्युत अन्यत्र स्त्री-विषयक विचार अधिक संकुचित थे।

मैं एक अपना उदाहरण देती हूँ। मैंने पत्रकार बनने का निश्चय किया। जब मैंने अपने पिता जी से जिक्र किया तो बड़े क्रुद्ध हुए। उन्होंने कहा कि तुम किसी अखबार के कार्यालय में जाओ, इसकी अपेक्षा तो यह अधिक अच्छा होगा कि तुम मर जाओ। पत्रकार का पेशा लड़कियों के लिए अच्छा नहीं है। अगर तुम आजीविका की दृष्टि से स्वतन्त्र होना चाहती हो तो तुम अध्यापिका बन सकती हो, पत्रकार का पेशा स्त्रियों के योग्य नहीं है। मैं तुम्हें अखबार के दफ्तर में नहीं जाने दूँगा।

मेरे पिता अपने समय के एक बहुत शिक्षित व्यक्ति थे। वे बड़ा सुन्दर भाषण करते थे और स्वतन्त्रता पर व्याख्यान दिया करते थे। परन्तु जब उनकी अपनी लड़की के लिए स्वतन्त्र रूप से कोई कार्य चुनने का प्रश्न सामने आया तो वे बहुत क्रोधित हुए, क्योंकि इस विषय में उनके विचार अपने समय के विचारों से अधिक उन्नत नहीं थे, परन्तु मैं अपने विश्वास पर दृढ रही। मैंने अध्यापिका आदि बनने से सर्वथा इनकार कर दिया। भाग्य की मुझ पर कृपा रही। मैं अपने पेशे में सुखी रही हूँ और इसके द्वारा मैं दूसरों की भी कुछ सेवा कर सकी हूँ। यह अमेरिका का हाल था। मेरे अनेक साथियों को बड़ा कष्ट सहना पड़ा है। मेरी एक मित्र बेटवा लौकवुड थी। वह वकील बनना चाहती थी। उसको कानून की शिक्षा लेने में भारी कठिनाइयाँ आईं; परन्तु वह घबराई नहीं। आखिर वह नेशनल यूनिवर्सिटी ला कालिज में प्रविष्ट हो सकी और १८७३ में उसने वहाँ से उपाधि प्राप्त की। उसका कानून का ज्ञान असाधारण था। वह निर्भय होकर कचहरी में जाकर खड़ी हो गई। जब जज की दृष्टि उस पर पड़ी तो उसने उससे पूछा कि वह कचहरी में किस लिए आई है। उसने उत्तर दिया कि मैं अपने मुवक्किल की ओर से यहाँ खड़ी हूँ। इस अहंकार पर जज ने कहा कि यह काम पुरुषों का है। यह कहकर वह अपने काम में लग गया। वह अगले दिन फिर कचहरी में गई; परन्तु परिणाम वही रहा। यह बात अनेक बार दुहराई गई। हर बार उसे फटकार मिली। सफलता पाने के लिए उसका निश्चय दृढ़तर होता गया। उसने १८७६ में अमेरिका की कांग्रेस से इस सम्बन्ध में एक कानून पास करवाया। यह कानून पास होने के पश्चात् उसकी वकालत की कठिनाई दूर हो गई। शीघ्र ही उसकी कानूनी प्रतिभा सारे अमेरिका की चर्चा का विषय बन गई। वह अपनी इस प्रतिभा का प्रयोग असहाय लोगों के विशेषकर स्त्रियों के अधिकारों की रक्षा में करती थी। उसे उस योग्यता के कारण एक विश्वविद्यालय ने "डाक्टर आफ ला" की उपाधि दी और स्त्रियों के दल ने अमेरिका के राष्ट्रपति-पद के चुनाव में अपने प्रार्थी के रूप में उसे खड़ा किया। उसने मुझे बताया कि जब वह एक बार वाशिंगटन से बाजारों में साइकिल पर चढ़ी जा रही थी, तो क्षुद्राशय लोगों ने इस पर हो-हल्ला मचाया था। यह काम सर्वथा अमहिलोचित समझा गया था। उसकी साइकिल उससे छीन ली गई थी। आज तो लड़कियाँ और स्त्रियाँ संसार में सभी जगह साइकिलों पर चढ़ती हैं। इससे पता लगता है कि अब संसार कितना बदल गया है; और यह परिवर्तन इसलिए आया है कि अबला वसु और बेटवा लौकवुड जैसी नारियों में अज्ञान एवं अंध-विश्वास पर आश्रित क्षुद्र विचार-धारा के आगे झुकी नहीं।

जब मैंने लंदन में निवास आरम्भ किया इससे पहले ही मैं प्रगतिशील नारियों की कठिनाइयों के सम्बन्ध में पढ़ा और सुना करती थी। जब मैं उन देवियों के सम्पर्क में आई तो मैंने अनुभव किया कि उनका आन्दोलन कितना कठिन और उससे कितनी कड़ुवाहट उत्पन्न हो गई थी। स्त्रियों को उच्च एवं पेशे-सम्बन्धी शिक्षा देने से रोकने के लिए इँग्लैण्ड के पुरुष इतने कटिबद्ध थे कि स्त्रियों को अपने स्वतन्त्र शिक्षालय खोलने पड़े थे। क्या आप विश्वास करेंगे कि अभी हाल तक इँग्लैण्ड के विश्वविद्यालय इन शिक्षालयों द्वारा दी हुई उपाधियों को स्वीकार नहीं करते थे। मैं चाहती हूँ कि डाक्टर गैरट ऐण्डरसन की जौहर का कुछ विस्तार से वर्णन कर सकती। बाधायें और कुछ कारणों से हतोत्साह न होकर उसने चिकित्सा-शास्त्र की शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद उसने लंदन में एक कालेज और एक औषधालय खोला। ऐण्डरसन और उसकी छात्राओं ने तब तक विश्राम नहीं लिया जब तक स्त्रियों को भी पुरुषों के सामने चिकित्सा-शास्त्र पढ़ने और चिकित्सा-व्यवसाय करने की सुविधा नहीं मिल गई; और पुरुषों का इस क्षेत्र का एकाधिपत्य विनष्ट नहीं कर दिया गया।

मैं चाहती हूँ कि मैं उसकी छोटी बहन मिलिसेन्ट फासेट के सम्बन्ध में भी कुछ कहूँ। उसने डाक्टर फासेट से विवाह किया। जो फासेट पार्लियामेंट में भारत का समर्थन करते रहने के कारण, भारतीय मेम्बर के नाम से कहे जाने लगे थे। जब डाक्टर फासेट मन्त्रिमंडल के सदस्य थे और डाक-विभाग के मन्त्री थे, तो वे एकाएक अन्धे हो गये। तब मिलिसेन्ट ने उसकी आँखों का काम किया। वह सब सरकारी कागजात पढ़कर सुनाया करती थी और सब तरह से उसके काम में सहायता करती थी। डाक्टर फासेट, भी अपनी पत्नी के स्त्रियों की उन्नति-सम्बन्धी कामों में सदा भरपूर सहायता करता था। उसकी पत्नी का मुख्य कार्य स्त्रियों को पुरुषों के हाथ से राजनीतिक शक्ति के एकाधिपत्य को छीनने के लिए संगठित करना था।

जिन दिनों मैं ब्रिटेन में पत्रकार का कार्य कर रही थी उन दिनों यह आन्दोलन पूरे यौवन पर था। लोग दो दलों में बँट गये थे। अत्यधिक जोशीले लोगों को वैधानिक तरीके में विश्वास नहीं रहा था। स्त्रियों को राजनैतिक क्षेत्र में पुरुषों की समानता का अधिकार प्रथम महायुद्ध के बाद मिल सका, जब कि स्त्रियों ने पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करके दिखाया।

यहाँ भारतवर्ष में स्त्रियों के आन्दोलन में कड़ुवापन नहीं आया है। प्रत्युत स्त्रियों को अवसर प्रदान करने में और उनके रास्ते की बाधाएँ दूर करने में पुरुषों ने स्त्रियों की सहायता की है। १९१० में जब मैं जालन्धर गई तो मैंने चाचा देवराज जी द्वारा स्थापित शानदार संस्था कन्या महाविद्यालय को देखा। इस संस्था का संचालन यदि मेरी स्मृति धोखा नहीं दे रही, तो श्रीमती लज्जावती जी कर रही थीं। फिरोजपुर में भाई तख्तसिंह इसी प्रकार की एक संस्था चला रहे थे। बीबी हरनाम कौर जिन्होंने तख्तसिंह के साथ मिलकर यह संस्था खोली थी, मर चुकी थी। परन्तु आज्ञाकौर इस शुभ कार्य में उनकी सहायता कर रही थीं। बम्बई प्रान्त में स्त्रियों की उन्नति के काम में मैंने पुरुषों को स्त्रियों के साथ मिलकर काम करते देखा। प्रो० टी० के० गज्जर वनिता विश्राम नामक संस्था के संचालक अपनी बहन मणिभान की सहायता कर रहे थे। यह संस्था मणिभान और उनकी एक विधवा अपने आभूषण बेच एकत्र किये धन से सूरत में चला रही

इसी प्रकार श्रीयुत भवानीदास नरो दास मोतीवाला ने भी ऐसा ही किया अद्वितीय देशभक्त श्री महादेव गोवि रानाडे की धर्मपत्नी श्रीमती रमाबाई रान और सर्वेन्ट-आफ इंडिया सोसायटी श्रीयुत जी० के० देवधर ने सामाजि सुधार के कामों में जो संयुक्त प्रय किये थे, उनकी भी मैं सदा प्रशंसक हूँ। श्रीयुत द्रोण्डो केशव कर्वे ने में जो संस्थाएँ खोली थीं उनसे भी प्रभावित हुई हूँ उनमें से एक संस्था तो एक महिला विश्वविद्यालय बन चुकी है

स्त्रियों की शिक्षा का यह कार्य नि न्तर उन्नति करता गया है। मैं स्वयं इस साक्षी दे सकती हूँ। मैंने जब जब भारत यात्रा की है—जो भारत ४२ वर्ष से मातृभूमि है और इस देश के एक भाग दूसरे भाग में जब जब मैं घूमी हूँ—तब मैं इस दिशा में हो रहे कार्य को देख अत्यधिक प्रभावित हुई हूँ।

ज्यों-ज्यों वर्ष बीतते गये हैं, हिन्दु के उस सिद्धान्त में मेरा विश्वास दृढ़ होता चला गया है जो मनुष्य-समाज नारी के साथ बाँधता है, नारी शक्ति नारी के बिना नर शक्तिशाली नहीं सकता। मेरा विश्वास है कि दोनों के सहयोग के बिना वैयक्तिक और सामाजि जीवन में अच्छे परिणाम उत्पन्न नहीं सकते।

लड़कियों की शिक्षा का प्रश्न आवश्यक और महत्त्वपूर्ण है। इस दिशा में जितना अधिक ध्यान दिया जाय समाज के लिये उतना ही अधिक अच्छा परिणाम निकलेगा, लड़कियों की विभि शक्तियों को विकसित करने के लिये जितना प्रयत्न किया जायगा उतना ही अधिक कल्याण उस लड़की का और समाज का होगा। बालिका के आगे जितना विवि प्रकार का बौद्धिक भोजन परोसा जाय उतनी ही अधिक सर्वांगपूर्ण उन्नति उस होगी।

लड़की को यह स्वयं चुनना है कि उसे जीवन में, किस क्षेत्र में कार्य कर है। उसे यह चुनाव तब करना चाहिए जब वह परिपक्व हो जाय, जब उसकी विच शक्ति-पूर्ण रूप से खिल चुके, जिन्हों उसे पैदा किया है और पाल-पोसकर किया है वह केवल उसे सलाह सकते हैं और उनके शिक्षक भी उ सलाह ही दे सकते हैं। उन्हें केवल स ही देनी चाहिये, उन्हें लड़की पर शा नहीं करना चाहिए। उसे दबाना बिलकुल ही नहीं चाहिए, बीते हुए स में लड़कियों को बहुत दबाया जाता मनुष्य नारी से अपनी बात मनवाता है और यह मनवाना प्रायः स्वार्थवृ परिपूर्ण रहा है।

अच्छी और निःस्वार्थ भावना से नहीं। वह घर से बाहर के जगत् में भी अपने लिए चुन सकती है। वा दोनों ही क्षेत्र को भी अपने लिए सकती है, इन दोनों क्षेत्रों में एक काम कर सकना कठिन अवश्य है, असम्भव नहीं। मैं अपने अनुभव से कह सकती हूँ।*

---

*कन्या गुरुकुल देहरादून के अधिवेशन के अवसर पर किये गये भाषण का मुख्यांश।

चित्रपटों का यथार्थवादी दृष्टिकोण क्या है ?

वर्तमान भावना तथा विचारधारा से जनता का नैतिक स्तर ऊँचा हुआ है ?

लेखक, श्री 'चक्रपाणि'

धुनिक विज्ञान ने चित्रपट को बनाकर जनता के हृदय और हृदय को जीतने में कुछ अंशों तक सफलता प्राप्त की है, किन्तु अभी के हृदय में चित्रपट के विविध जो कृत्रिमता से निर्मित होकर सामने आते हैं, अपनी रूपरेखा नहीं है! हमारी प्राचीन नाट्य-कला के चित्रपट जनता का मनोविनोद साथ उसे कला के मूलतत्त्वों नहीं दे सके! रामायण, महा- अन्य पौराणिक कथानकों के कृष्णार्जुन युद्ध, रामराज्य, नाथ जैसे धार्मिक चित्रों का इन चित्रों के द्वारा जनता सभ्यता और संस्कृति तो किन्तु चित्रों की प्राचीनता यदा-कदा आधुनिक वातावरण हुआ, जो जनता की मनो- वृत्तियों को पूर्णरूप से चित्रों के न करा सका, जो कुछ ने ग्रहण किया वह तो केवल संस्कृति के प्रभाव का कारण- है।

* *

चित्रपट, नृत्य में उन्नत होते रंगमंच पर वैदिक काल जैसी नहीं अपना सका, आधुनिक के साथ संगीत और स्वर-ताल पाश्चात्य शैली से प्रभावित हैं, अभिनय-कला में कथावस्तु कलाकार की आत्मा भी कुछ डालती रहती है, इसलिये ऐसे यदि सम्भव हो सके तो आव- अधिक कोई बनाव-शृंगार न दर्शकों के दिमाग से यदि उतर गई तो नृत्य की सम्पूर्ण ही डावाँडोल हो जाती है, में विचारों की अपेक्षा अपने अधिक महत्त्व दिया जाता है, नृत्यकला में भी ताल-स्वर अंग-संचालन एवं मुद्राओं को दिया जाना चाहिये।

भारतीय चित्रपटों में विशेषतः और अभिनय का अभाव नाटकीय कम्पनियों का अब भी हमारे नाटकों में मिलता पारसी कम्पनियों ने किसी समय देश को बुरी तरह अपने अभिनय आधार बनाया और सिनेमा-क्षेत्र में कम्पनियाँ अपना प्रभाव डालती लेकिन साधारण बातें रंगमंच पर बड़ी सरलता से प्रदर्शित की गईं, लेकिन जनता पर उनका प्रभाव जितना चाहिये था, न पड़ सका। 'महाभारत' चित्र में पारसी कम्पनियों के प्रभाव के चिह्न मिलते हैं। दुःशासन द्रौपदी की चीर खींचता है, लेकिन वह अनन्त लम्बी दिखाई जाती है। यह दृश्य देखकर आज ऐसा प्रतीत होता है जैसे कोई मदारी कुछ अजीब तमाशा दिखा रहा हो, इसका कारण केवल यही है कि चित्रपट में आधुनिकता आवश्यकता से अधिक आ गई है। इसीलिये हम अपनी सांस्कृतिक भूमिका का आधार भूलते से जा रहे हैं।

अवस्थाओं के अनुसार अभिनय में भी प्रभाव पड़ता है, कभी कभी तो नृत्य और अभिनय में मन की गूढ़ स्थितियों का दिग्दर्शन कराने का प्रयत्न किया जाता है; भारतीय चित्रपट की अवस्था इस समय न अच्छी है न बुरी। कहानियों के साथ कभी कभी एक ही बात कई बार कही जाती है, कहीं कहीं पर कुछ बातें तो केवल कहकर ही समाप्त कर दी जाती हैं, इसके अतिरिक्त दर्शकों को समयानुकूल कुछ भयानक दृश्य भी देखने को मिलते हैं जिनका प्रभाव जनता पर अच्छा नहीं पड़ता।

भारतीय जीवन नाटकीय क्षेत्र में प्रायः बुद्धिप्रधान अधिक है, कला के सूक्ष्म और सत्य रूप विधि रूपों में होकर भी अभी तक सफल नहीं हो सके। जातीय मतभेद, पश्चिमी आर्थिक संकटों का प्रभाव, राजनैतिक और सामाजिक परिवर्तन चित्रपट संसार को भी प्रभावित कर चुका है, किन्तु इतना होते हुए भी नाटकीय परिस्थितियाँ अब भी कभी कभी गम्भीर कथानकों को अत्यधिक सरल बनाती हैं। नाटककार विज्ञान की सहायता से अपनी दुर्बलताओं पर विजय पाना चाहते हैं, लेकिन विज्ञान उनकी सहायता कितनी कर सकेगा, इसका निर्णय भविष्य ही करेगा।

इन सारी बातों के होते हुए भी भारतीय चित्रपटों के द्वारा नाटकों में सज-धज का अभाव नहीं है ? आधुनिक समय में सिनेमा के द्वारा जनता में नाटकों के प्रति जो आकर्षण उत्पन्न किया गया है वह किसी अंश तक संतोषप्रद तो है, हमारे सामाजिक और भक्तिपूर्ण चित्र एक ओर हमें धर्म की गहनता के पास खींचते है तो दूसरी तरफ साधारण मनोरंजन से सम्बन्धित चित्र हमें उस ओर जाने से रोकते हैं। चित्रों के द्वारा अभी तक जन-साधारण में जो भावना आई है, वह हमारे नैतिक स्तर को कोई विशेष शक्ति नहीं दे सकी।

* * *

जब जिसने देखा, मुग्ध हो गया
मंजरी
श्रेष्ठ कथाकारों की सरस कहानियाँ और कथा-साहित्य पर गम्भीर तथा आलोचनात्मक लेख आकर्षक मुद्रण-विन्यास के साथ प्रस्तुत करनेवाली 'मंजरी' सांस्कृतिक मनोरंजन की एकमात्र कहानी-पत्रिका है।
एक सम्मति
प्रोफेसर शिवपूजन सहाय, भूतपूर्व सम्पादक 'हिमालय'—'मंजरी' के तीन अंक देखे और तीनों को देखकर यही धारणा हुई कि कथा-साहित्य की सबसे अच्छी प्रतिनिधि-पत्रिका 'मंजरी' ही है। छपाई सफाई और सजावट के लिए तो इंडियन प्रेस का यशस्वी नाम ही प्रमाण है, सम्पादन-कौशल में आपने भी अपनी कला का आकर्षक प्रदर्शन किया है। साज-सज्जा और सामग्री-संकलन में सुरुचि का समावेश सर्वथा सराहनीय है। कृपया विदेशों के कथा-साहित्य का ज्ञान भी हिन्दी पाठकों को कराइए। भिन्न भाषाओं की कहानियाँ देकर आप हिन्दी पाठकों को काफी तृप्त कर रहे हैं। बहुत से पाठकों ने यह मत व्यक्त किया है कि आपकी पत्रिका ही सब कहानी-पत्रिकाओं में श्रेष्ठ एवं उपयोगी है। मैं आपकी आरम्भिक सफलता पर आपको शत-शत बधाइयाँ देता हूँ।
× × ×
प्रतिमास 'मंजरी' पढ़कर आप भी अपना और अपने परिवार का सांस्कृतिक मनोरंजन कीजिए।
वार्षिक मूल्य ६) छः रुपये **प्रति अङ्क आठ आने**
सम्पादक : **देवीदयाल चतुर्वेदी**
प्रकाशक : **इंडियन प्रेस लि०, प्रयाग**

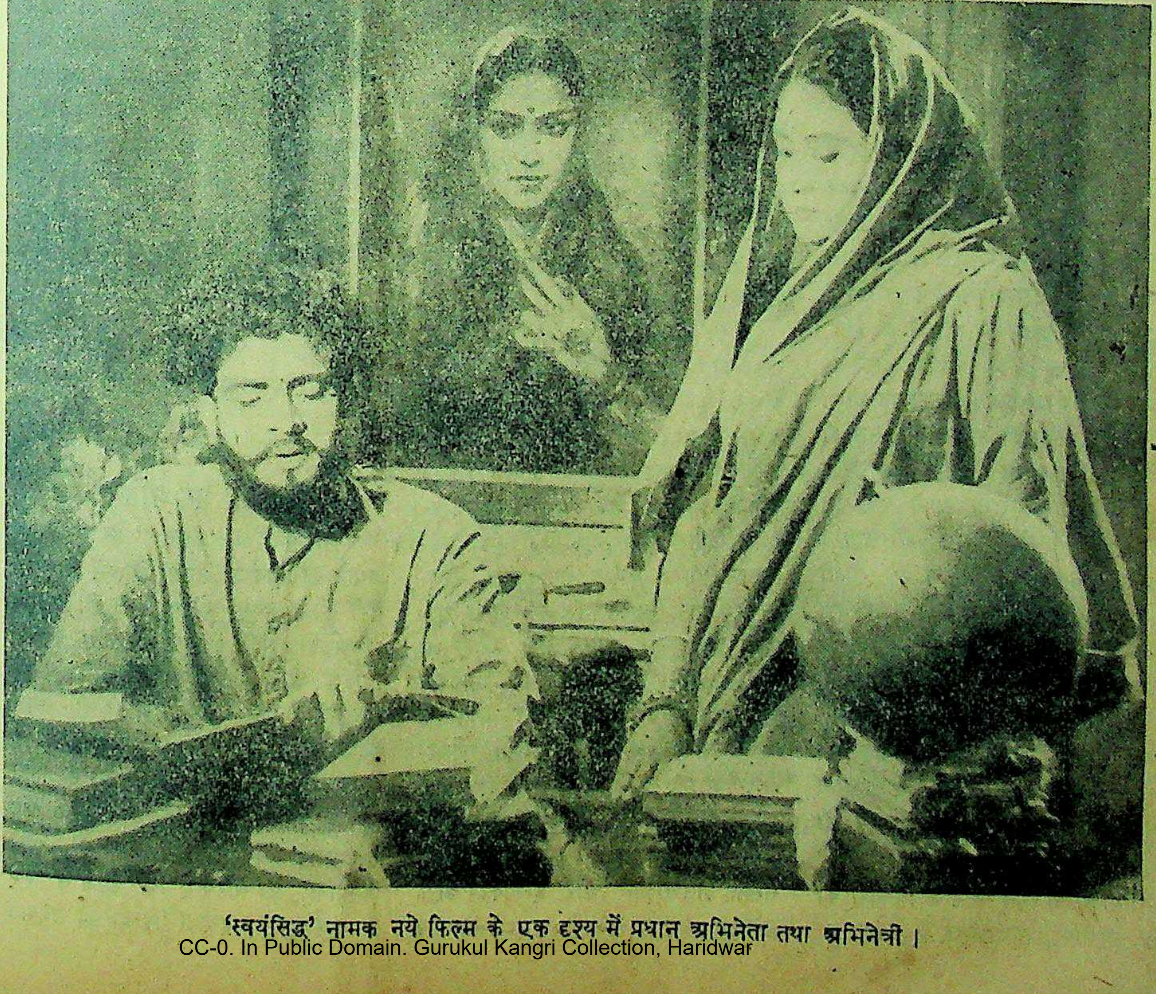

'स्वयंसिद्ध' नामक नये फिल्म के एक दृश्य में प्रधान अभिनेता तथा अभिनेत्री।

सम्पादक के नाम चिट्ठियां

गांधीजी का 'आर्थिक आदर्शवाद'

आल इन्डिया रेडियो लखनऊ की "गांधीवाद के आदर्श" भाषणमाला में आर्थिक आदर्शवाद पर १८ मई १९४८ को एक भाषण ब्राडकास्ट करते हुए उड़ीसा के गवर्नर हिज एक्सीलेन्सी डा० कैलाशनाथ काटजू ने कहा—

"आजकल अकसर कहा जाता है कि गांधीजी अपने समय में सबसे बड़े साम्यवादी यानी सोशलिस्ट थे और अगर हम उनके आश्रम-जीवन को देखें जिसको वह सबसे ज्यादा पसन्द करते थे, तो हम कह सकते हैं कि वह बड़े कम्यूनिस्ट थे। उनके आश्रमों में सब नर और नारी बराबर दर्जे बिला किसी मतभेद के रहते थे। हर एक अपनी शक्ति-अनुसार उसमें काम करता था और आश्रम-वासियों की सेवा करता था और हर एक को उसकी आवश्यकतानुसार सब जरूरी चीजें मिलती थीं; परन्तु यह सब होते हुए भी, माननीय डा० काटजू ने आगे चलकर कहा—"अगर हम आजकल की विचार-धारा के मानी में गांधीजी को कम्युनिस्ट या सोशलिस्ट कहें तो हमारी बड़ी गलती होगी और गांधीजी [illegible] साथ बड़ा अन्याय होगा। गांधीजी [illegible] साम्यवाद (सोशलिज्म) और कम् [illegible] प चलता था उनके सत्य तथा अहिं [illegible] साथ साथ। गांधीजी की नजरों में शु [illegible] उचित उपाय का भी बड़ा दर्जा [illegible] की दृष्टि में लक्ष्य भी [illegible] हो और [illegible] हासिल करने का उपाय भी उचित और शान्तिपूर्वक होना चाहिये। वह दूसरों को समझा-बुझाकर अपनी आत्मशक्ति से अपने लक्ष्य को पूरा कराना चाहते थे, अपने विरोधी को कष्ट देना या उसको शारीरिक तकलीफ पहुँचाना उनको मंजूर नहीं था बल्कि वह खुद कष्ट और तकलीफ स्वयं अपने आप उठाकर विरोधी का दिल पिघलाना चाहते थे और उसको अपनी तरफ खींचना।

गांधीजी के एक श्रेणीहीन समाज में विश्वास का वर्णन करते हुए डाक्टर काटजू ने फरमाया—वह सरमायादारी को जरूर खत्म कर देना चाहते थे, मगर इस तरह कि सरमायादार अपने आप ही अपनी सरकार और अपने नागरिकों के लिए अपनी पूँजी का अपने आपको ट्रस्टी या अमानतदार समझने लगें। उनका यह कहना था कि जितनी जिसको जरूरत हो उतना ही उसको अपने पास धन रखने का अधिकार है, इससे ज्यादा अगर वह अपने पास धन रखता है और अपने उपयोग में लाता है तो उसका चलन ऐसा ही है जैसे किसी व्यक्ति का किसी ने चोरी किया हुआ माल हासिल किया हो; और ऐसे अधिक धन का अपने पास रखना वह पाप समझते थे, जिस धन का दूसरों की भलाई के लिए उपयोग न किया जाय। अगर गांधीजी का यह सिद्धान्त सब लोग मानने लगें तो आप देखेंगे कि सरमायादारी अपने आप ही खत्म हो जायगी।

गांधीजी के रहन सहन के विचारों का उनके आर्थिक आदर्शवाद के प्रभाव पर डाक्टर काटजू ने कहा—वह एक शुद्ध सरल जीवन चरित्र के बड़े हामी थे। वह चाहते थे कि हर एक नर-नारी गृहस्थ आश्रम का पालन करे। छोटे मगर अच्छे सीधे-सादे, साफ-सुथरे हवादार मकान में रहे, खुली जगह हो, फूल-फुलवारी हो और ऐसी गृहस्थी अधिक तौर पर दूसरों के ऊपर निर्भर न हो, अपनी मेहनत से ही जहाँ तक हो सके, आवश्यकतायें पूरी की जायें, इसीलिए वह खादी के प्रेमी थे और खादी का प्रचार करते थे और चरखा वह एक निशानी समझते थे एक पवित्र और सरल जीवन की।"

अपना भाषण समाप्त करते हुए माननीय गवर्नर महोदय ने कहा "गांधीजी के आर्थिक आदर्श या और किसी विषय पर उपदेश को समझने और जाँचने में आप सदा उनके बुनियादी सिद्धान्तों को कभी न भूलें। उनके बुनियादी सिद्धान्त सत्य, अहिंसा और असहयोग उनके सारे विचारों में जैसे धागे में मोती पिरोये होते हैं, उसी तरह लगे हुए हैं। अगर आप बुनियादी सिद्धान्तों को सही मानते हैं तो जो चित्र मनुष्यजाति के लिए गांधीजी ने खींचा है वह आपको बहुत सुन्दर और शोभित मालूम होगा; और अगर आपको उन सिद्धान्तों में विश्वास न होगा, तो सम्भव है कि यह तसवीर आपको न भाये।

—डाक्टर कैलाशनाथ काटजू

* * *

'शिक्षा'

माननीय शिक्षा-मन्त्री, युक्तप्रान्त के तत्त्वावधान में 'शिक्षा' नामक एक त्रैमासिक पत्र शिक्षा-विभाग द्वारा जुलाई १९४८ से प्रकाशित होगा, जो युक्तप्रान्त की शिक्षा-सम्बन्धी उन्नति और उद्देश्यों पर प्रकाश डालेगा। प्रान्तीय सरकार की ओर से इस प्रान्त में शिक्षा-पद्धति के पुनर्संगठन के लिए जो विकासशील योजनायें कार्यान्वित हुई हैं, वे प्रांजलता के साथ इस पत्र द्वारा समझाई जायँगी। इसके अतिरिक्त इस पत्र में प्रतिष्ठित शिक्षा-विशारदों के ऐसे गम्भीर लेख भी रहेंगे, जो रचनात्मक शिक्षा की विभिन्न गति-विधियों से सम्बन्ध रखेंगे। पत्र में लगभग एक दर्जन विभाग होंगे, जिनका दायित्व निम्नलिखित विशेषज्ञ विद्वान् करेंगे—

(१) सैनिक शिक्षा लेफ्टि० कर्नल एस० जी० तिवारी, डाइरेक्टर, मिलिटरी, ट्रेनिङ्ग, यू० पी०। (२) शारीरिक शिक्षा श्री डी० डी० माथुर, सक्रेटरी, कौंसिल आफ फिजीकल कल्चर यू० पी०। (३) समाजिक सेवा श्री पी० एन० माथुर, डाइरेक्टर सोशल सर्विस, यू० पी०। (४) मनोविज्ञान लेफ्टि० कर्नल सोहनलाल, डाइरेक्टर आफ साइकोलाजिकल ब्यूरो, यू० पी० इलाहाबाद। (५) प्रौढ़ शिक्षा श्री ए० काजमी, एजुकेशन एक्पेंशन आफिसर, यू० पी०। (६) वैज्ञानिक शोध सर के० एस० कृष्णन, चेयरमैन, साइन्टिफिक ग्रांट्स कमेटी। (७) प्राच्य विभाग प्रिन्सिपल, संस्कृत कालेज, बनारस। सहायक: इन्स्पेक्टर आफ संस्कृत पाठशालाएँ और इन्स्पेक्टर आफ एरेबिक मदरास यू० पी०। (८) प्राच्य विभाग श्री एस० के० घोष, डिप्टी डाइरेक्टर आफ एजूकेशन, यू० पी०। [अ] स्त्री-शिक्षा कुमारी ई० सी० विलियम्स, असिस्टेण्ट डाइरेक्टर आफ एजुकेशन (स्त्री) यू० पी० इलाहाबाद। [ब] प्राइमरी शिक्षा श्री के० एन० मालवीय, आफिसर आन स्पेशल ड्यूटी आफिस आफ डाइरेक्टर आफ एजुकेशन, यू० पी०, इलाहाबाद। [स] माध्यमिक शिक्षा श्री ए० के० सन्याल, आफिसर आन स्पेशल ड्यूटी, आफिस आफ डाइरेक्टर आफ एजुकेशन, यू० पी०, इलाहाबाद। [ड] विश्वविद्यालय-शिक्षा श्री परमानन्द, सेक्रेटरी, यूनिवर्सिटी कमेटी, यू० पी०। [इ] शिक्षकों की शिक्षा श्री आर० के० सूर, प्रिन्सिपल, गवर्नमेंट ट्रेनिंग कालेज, इलाहाबाद। [फ] परिगणित जातियों और पिछड़ी जातियों की शिक्षा श्री छेदीलाल, आफिसर आन स्पेशल ड्यूटी, आफिस आफ डाइरेक्टर आफ एजुकेशन, यू० पी०, लखनऊ। [ग] कला और संस्कृति श्री मदनमोहन नागर, क्यूरेटर, लखनऊ म्यूजियम। [९] नीति-विभाग डा० आई० आर० खान, डिप्टी सेक्रेटरी गवर्नमेंट यू० पी०, एजुकेशन डिपार्टमेंट, लखनऊ। (१०) विदेशी शिक्षा और पुस्तक-समीक्षा श्री एस० के० घोष०, डिप्टी डाइरेक्टर आफ एजुकेशन, यू० पी० इलाहाबाद।

पत्र हिन्दी में प्रकाशित किया जाएगा; परन्तु कुछ विशेष विषयों पर अँगरेजी में भी प्रकाशित किये जा सकेंगे। पत्र के लिए रचनाएँ इस पते पर नाम लिखकर भेजनी चाहिए—प्रबन्ध सम्पादक श्री मनबोधनलाल श्रीवास्तव, आफिसर आन स्पेशल ड्यूटी, आफिस आफ डाइरेक्टर आफ एजुकेशन, यू० पी इलाहाबाद।

पाण्डुलिपि फुलिस्केप कागज पर या तो टाइप हो अथवा बहुत ही स्पष्ट लिपि में लिखी होनी चाहिये। चित्र, फोटो आदि जिनका उपयोग रचनाओं के साथ आवश्यक हो, रचनाओं के साथ ही आने चाहिये। इस पत्र में प्रकाशित लेखों का कापीराइट शिक्षा-विभाग के नाम सुरक्षित रहेगा। पत्र के किसी विशेष अंक के लिए लेखों का चुनाव एक सम्पादक-मण्डल करेगा। विशुद्ध शिक्षा-सम्बन्धी विज्ञापन भी स्वीकार किये जायँगे। दर की जानकारी प्रबन्ध-सम्पादक से प्राप्त की जा सकती है। पत्र का वार्षिक मूल्य ७) रु० होगा, एक अंक का २) रु०।

सी० यल० साहनी,
डाइरेक्टर आफ एजुकेशन, यू० पी०
प्रधान सम्पादक

* * *

'कल्याण' पर प्रतिबन्ध

और कहीं से 'कल्याण' पर प्रतिबन्ध लगाने की आवाज उठती तो हमें आश्चर्य नहीं होता, परन्तु गोरखपुर से ही इसकी शुरुआत हुई है। आज यह तो सबको विदित ही है कि भारत में प्रकाशित सब भाषाओं के पत्रों में 'कल्याण' के ही सबसे अधिक ग्राहक हैं। यह ग्राहक-संख्या एक लाख से कुछ ही कम है। हिन्दी को इस बात का गौरव है कि 'कल्याण' जैसा पत्र उस भाषा में प्रकाशित होता है; और 'कल्याण' को गौरव है कि आज से २२ वर्ष पूर्व उसने राष्ट्रभाषा 'हिन्दी' को समुन्नत बनाने के लिए अपना जन्म लिया। हम निस्संकोच कह सकते हैं कि हिन्दी की सेवा में अकेले 'कल्याण' द्वारा जितना हुआ है उतना अन्य किसी पत्र से नहीं।

आज भी 'हिन्दी-हिन्दुस्तानी' के झगड़े हमारे दिमाग को चैन नहीं लेने देते। आज से २२ वर्ष पूर्व ही कल्याण में विशुद्ध हिन्दी का प्रयोग हुआ और प्रकार हिन्दी की उन्नति में अप्रतिहत से वह संलग्न है। इसका अधिकांश श्रे उसके सुयोग्य सम्पादक श्री हनुमान पोद्दार को है। उनकी लेखनी में जहाँ है, वहाँ उनका भाषा-प्रेम भी सराह- नीय है, लेकिन लोगों की राय है कि 'कल्याण' ने हिन्दी के भाग्य को उज्ज्वल किया पर दिया घासलेटी साहि ही, पुराणों का और पोंगापंथी साहित्य ही। हम इस बात से सहमत नहीं।

'कल्याण' द्वारा जनता का कल्याण अधिक हुआ है। प्रतिवर्ष 'कल्याण' अपना विशेषाङ्क निकालकर जो प्रसिद्धि कर ली है वह किसी से छिपी नहीं है। 'गीता तत्त्वाङ्क', 'साधनाङ्क', 'सन्ताङ्क', 'गोअङ्क' निकालकर इसने हिन्दी-साहित्य के भण्डार में वृद्धि की है। २२वें वर्ष का प्रथम अङ्क "नारी विशेषाङ्क" आज हमारे हाथों में है। इसकी महत्ता से कोई इनकार नहीं कर सकता। नारीविषयक सभी विषयों पर इसमें समुचित प्रकाश डाला गया है। सभी उच्च कोटि के विद्वानों का सहयोग इसे प्राप्त है; और 'कल्याण' में अश्लील विज्ञापन नहीं छपते। विज्ञापन लिये ही नहीं जाते। 'कामोत्तेजक तिला', 'महामायी का तावीज', 'शर्तिया सफलता' आदि धोखाधड़ी के विज्ञापनों को इसमें स्थान नहीं मिलता।

आज जो 'कल्याण' पर प्रतिबन्ध लगाने का नारा बुलन्द कर रहे हैं, क्या उन्होंने कभी इस विषय पर तनिक विचार किया है? कोई माने या न माने 'कल्याण' में प्रतिमास प्रकाशित श्री 'चक्र' की कहानियों और श्री 'शिव' की कल्याण कामनाओं से अनेक व्यक्तियों को लाभ पहुचा है। मुझे अच्छी तरह याद है कि पिछले दिनों "हिन्दी ही राष्ट्रभाषा है" शीर्षक एक लेख सीतामऊ के डा० रघुवीरसिंह जी का लिखा था जो कितने ही पत्रों में उद्धृत हुआ था। यह सब होते हुए भी हम यह मानने को तैयार नहीं हैं कि 'कल्याण' से जनता का जितना भला होना चाहिए था, हुआ। 'कल्याण' के द्वारा रूढ़िवाद और विश्वासों को भी प्रोत्साहन मिला है। जब टीकमगढ़ गया था, पं० बनारसीदास चतुर्वेदी ने पत्रों की ग्राहक-संख्या न के कारण पर प्रकाश डालते हुए था—"हमारी गिद्दी पर हो 'कल्याण' छे।" ऐसी ही मनोवृत्ति के, कल्याण के अधिकांश ग्राहक हैं। बहुत-से तो सामने हाथ जोड़कर ग्राहक बन जाने से ही अपने को कृतकृत्य समझते हैं। कर किसी अङ्क में कोई लेख पढ़ लिया तो दूसरी बात है। चतुर्वेदी जी ने के पृष्ठों में कई बार लिखा था कि "अखण्ड भारताङ्क" प्रकाशित कर का सही पथ-प्रदर्शन करे। हम चाहते कि कल्याण पर प्रतिबन्ध न लगाया उसे आगे बढ़ने दिया जाये।

—अखिल

पिलानी (जयपुर)
३-५-४८

पना जन्म लिया।
कते हैं कि हिन्दी
ाषा' द्वारा जितना
न्य किसी पत्र से नहीं
दी-हिन्दुस्तानी' के
न नहीं लेने देते।
पूर्व ही कल्याण
प्रयोग हुआ और उ
न्नति में अपति हत
इसका अधिकांश
दक श्री हनुमानप्रसा
ी लेखनी में जहाँ
भाषा-प्रेम भी
लोगों की राय है
दी के भाग्य को
दिया घासलेटी साहि
पोंगापंथी साहित्य
हमत नहीं।
जनता का कल्याण
प्रतिवर्ष 'कल्याण'
ालकर जो प्रसिद्धि
किसी से छिपी
'साधनाङ्क', 'सन्त
इसने हिन्दी-साहि
की है। २२वें वर्ष
विशेषाङ्क" आज
महत्ता से कोई इनकार
नारीविषयक
मुचित प्रकाश
कोटि के विद्वानों
है; और
विज्ञापन नहीं
ीं जाते। 'कामोत्ते
का तावीज', 'शक्ति
ाधड़ी के विज्ञापनों
नता।
' पर प्रतिबन्ध
रहे हैं, क्या उन्होंने
तनिक विचार कि
माने 'कल्याण'
'चक्र' की कहानि
कल्याण कामनाओं
लाभ पहुंचा है।
है कि पिछले दि
है" शीर्षक एक
वीरसिंह जी का नि
में उद्धृत हुआ
हम यह मानते
ल्याण' से जनता
चाहिए था,
रूढ़िवाद और
त्साहन मिला है।
था, पं० बनारसीदा
ग्राहक-संख्या न
श डालते हुए
पर हो 'कल्याण'
वृत्ति के, कल्याण
बहुत-से तो बि
ग्राहक बन जाते
त्य समझते हैं।
ई लेख पढ़ लि
तुर्वेदी जी ने
लखा था कि
प्रकाशित कर
करें। हम चा
न्य न लगाया
जाये।
—अखिल

विज्ञान-वार्ता

वैज्ञानिक वर्षा

भविष्य में पानी बरसाया जा सकेगा ?

र्षा का न होना या अधिक होना ोप समझा जाता है। वर्षा न होने ों का अनुष्ठान किया जाता है। बच्चों की टोलियाँ "धरती माता" के नारे लगाती हुई वर्षा की रती हैं। मन्दिरों और गिरजाघरों और प्रार्थनाएँ की जाती हैं; ब वे दिन दूर नहीं हैं जब वैज्ञा- विष्कारों द्वारा वरुण देवता पूरी हमारे वश में हो जायँगे। हम जब बादलों को अपने नगर के ऊपर गे और उन्हें पानी बरसाना । इस असम्भव को सम्भव कर े ही वैज्ञानिक अपनी विजय '—उपरोक्त शब्द इलाहाबाद के डाक्टर सत्यप्रकाश ने रेडियो लखनऊ की 'असम्भव- वार्ता में वैज्ञानिक वर्षा पर बातचीत प्रसारित करते

ध्यान लगभग एक वर्ष की ओर आकर्षित करते या—४ अप्रैल, सन् १९४७ विधि से कई हजार मन पानी के एक स्थान पर बरसाया गया। र्षा का श्रेय पोर्टलैंड ओरि- के ऋतु-विभाग के अध्यक्ष कर्नल लीसन' को है। कर्नल एलीसन वाई जहाज में उड़कर बादलों पहुँच गए। ये बादल बिना बरसे के ऊपर से भागे चले जा रहे थे सम्भावना न थी, कि ये बरसते। जानेवाले इन मेघों में कर्नल ने ठोस कार्बन डाइ आक्साइड की छितरानी आरम्भ कीं। ठीक उसी जैसे किसान खेतों में बीज बोते ेफ्तलीन की गोलियाँ होती हैं, र अत्यधिक ठंडी। ये कार्बन डाइ की गोलियाँ वेग से जाते हुए से बो दी गई। थोड़ी ही देर के न बरसनेवाले ये बादल घोर काले पानी से लद गये और बड़े जोर न पानी की ही वर्षा हुई, प्रत्युत बरसे। नीचे खेतों में खड़ी हुई मूसलधार वर्षा को देखकर डर उठी। उन्हें क्या मालूम था यों कर्नल एलीसन के प्रयोग का उसने तो उसे कोई आकस्मात् ही समझा है।

मिनट के बाद ही कर्नल एली- एक दूसरे मेघ मण्डल में ९ सेर हिम" अर्थात् ठोस कार्बन डाइ की गोलियों को छितराया। अपने इस प्रयोग के फल को देखने पूर्वक हवाई जहाज से नीचे आए। उन्होंने अपनी देखा कि जिन बादलों में उन्होंने के बीज बोए थे, उनसे बर्फ के पत्रों की वर्षा पृथ्वी पर हो रही है। दस मिनट तक वायुवान द्वारा उन्होंने इस कृत्रिम वर्षा के कौतूहल का स्वाद लिया। कर्नल एलीसन के इस सम्बन्ध में ये शब्द हैं— समीप के स्थानों में अन्यत्र इस समय कहीं वर्षा नहीं हो रही थी, अतः यह पूर्ण निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि यह वर्षा इसी कारण हुई कि मेघमण्डलों में—"शुष्क हिम" का चयन किया गया है।

वैज्ञानिक वर्षा के आधुनिक इतिहास पर प्रकाश डालते हुए डा० सत्यप्रकाश ने बतलाया—"कृत्रिम वर्षा का प्रथम विचार प्रो० लैंगम्यौर के हृदय में उत्पन्न हुआ। ये महोदय अमरीका के प्रसिद्ध रसायनज्ञ हैं और इन्हें अपनी खोजों के उपलक्ष में नोबेल पुरस्कार भी मिल चुका है। इनका एक सहयोगी डा० शेफर भी है जिसने लैंगम्यौर के विचारों को कार्य-रूप में परिणत करने के लिए १९४३ से ही प्रयोग आरम्भ कर दिए थे। शेफर और लैंगम्यौर ने उन समस्त कारणों पर विचार किया जिनके आधार पर बादल बनते हैं और फिर बरसते हैं।"

अपनी बातचीत समाप्त करते हुए डा० सत्यप्रकाश ने बताया कि "वैज्ञानिक वर्षा की यह कृत्रिम विधि युद्ध-कार्य के लिए आविष्कृत की गई थी और युद्ध-विभाग ने इसको प्रश्रय दिया। अब वे दिन दूर नहीं हैं जब कि शत्रुओं की सेना को छकाने के लिए इस प्रकार की वैज्ञानिक वर्षा की जाया करेगी। इन कृत्रिम बादलों की ओट में छिपे-छिपे ऊपर हमारे वायुयान शत्रुओं के देश में अनजाने ही प्रविष्ट हो सकेंगे। बहुत सम्भव है कि शीघ्र ही मेघों पर अधिकार जमाने के लिए परस्पर युद्ध हों। यदि हमारी पड़ोसी राष्ट्र से खटपट हो गई, और यदि उसके राष्ट्र में बरसानेवाले मेघ हमारे ही राष्ट्र से होकर जाते हों, तो शायद हम उन्हें वहाँ पहुँचने देने से पूर्व ही अपने देश में बरसा लें और वे तरसते रह जायँ। सम्भव है कि हम मेघों का व्यापार करने लगे। आज तो ये बातें हमें आश्चर्य मालूम होती हैं, पर सम्भव है कि किसी दिन ये सच हो जायँ और नई समस्याएं उत्पन्न कर दें।

* * *

सिंचाई का मसला एक आदमी हल नहीं कर सकता

इसके लिये मिल जुल कर काम कीजिये

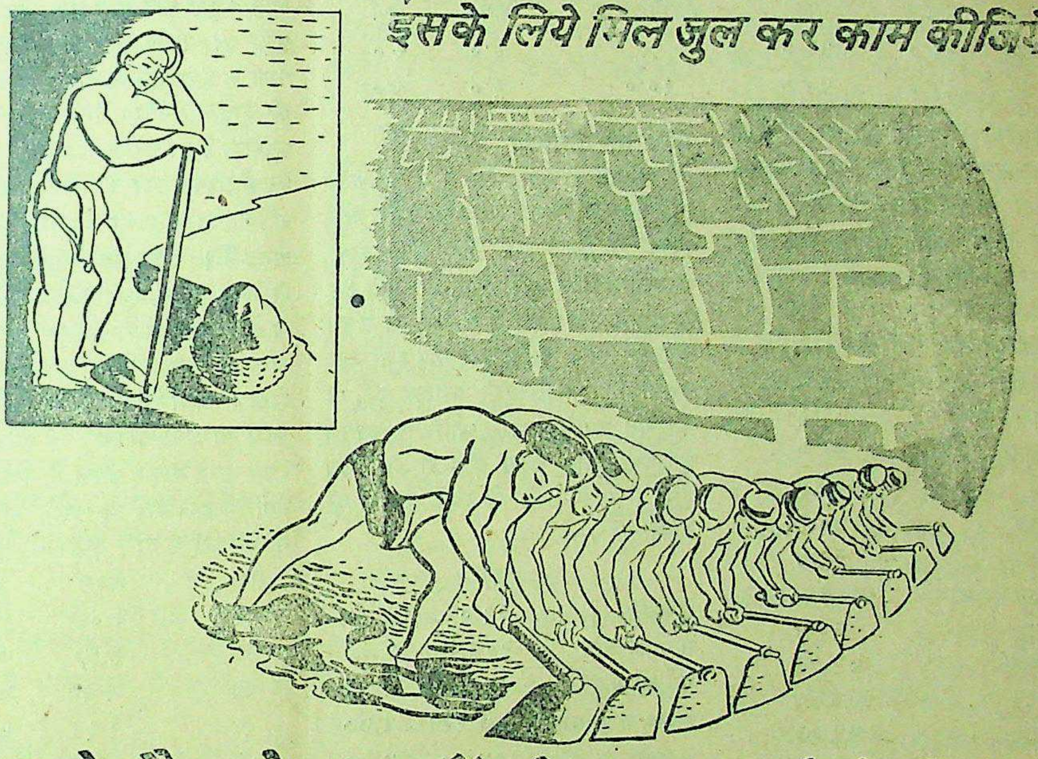

सूखे और पटे तालाबों को गहरा करने के लिये सहकारी समितियां बनाइये

डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाने का समय चला गया। अब तो मिल जुल कर ही आप कोई काम कर सकते हैं। हमारी प्रान्तीय सरकार ने प्रान्त के करोड़ों गरीब किसानों की मदद करने के लिये तालाबों को गहरा करने की योजना चलाई है जिससे सिंचाई की कठिन समस्या ही न हल की जा सकेगी, बल्कि अनाज की पैदावार बढ़ाकर हम अपने देश को समृद्ध बना सकेंगे। इस समय हर किसान का यह कर्तव्य है कि वह ज़्यादा से ज़्यादा तालाबों को गहरा करने के लिये सहकारी समितियों का निर्माण करे। सरकार इस काम के लिये आर्थिक और अन्य प्रकार की सभी सहायता देगी।

इसके लिये आपको क्या करना चाहिये

(क) अपने निकटवर्ती सुधार संघ को यह सूचित करें कि कौन कौन से तालाबों को गहरे करने की ज़रूरत है।
(ख) कृषि विभाग की इंजीनियरिंग शाखा के कर्मचारियों की सहायता से यह निश्चित करें कि तालाब कितना गहरा किया जाय और सिंचाई के रास्ते कहां रखे जायं।
(ग) अपने निकटवर्ती सुधार संघ या कांग्रेस कमेटी के नेतृत्व में काम का आयोजन कर के कार्यक्रम और काम शुरू करने का दिन भी निश्चित कर लें।

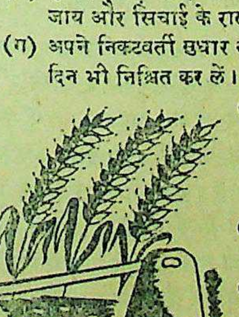

(घ) काम शुरू करने के लिये जो दिन निश्चित किया जाय उसकी घोषणा पहले से अपने और पास पड़ोस के गावों में कर दीजिये। काम पूरी लगन के साथ शुरू करें और यथा शीघ्र समाप्त कर दें। हर हालत में यह काम बरसात शुरू होने के पहले अवश्य समाप्त हो जाय, ताकि वर्षा का पूरा पूरा लाभ उठाया जा सके।
(ङ) तालाब की घास-पात निकाल कर कम्पोस्ट के गड्ढो में जमा कर दें जिससे उनका खाद के रूप में इस्तेमाल किया जा सके।
(च) पटे या सूखे तालाबों के ऊपर की खुदी हुई गीली मिट्टी खेतों में डाल दीजिये। यह मिट्टी खाद का काम करेगी।
(छ) तालाबों को खोदने से जो मिट्टी निकले उसे पानी निकलने के लिये रास्ते छोड़ कर, तालाब के किनारे जमा कर दें और उन पर पेड़ लगा दें।

संयुक्त प्रान्तीय सरकार के सूचना विभाग द्वारा प्रचारित

SAA

UP TD-H3

स्वास्थ्य और व्यायाम

मूँगफली

खाद्य-समस्या का एक हल

लेखक, आचार्य नित्यानन्द सारस्वत

करीब १५ वर्ष पहले की बात है। रेल पर सवार था। अचानक किसी स्टेशन पर 'चीनिया बादाम, चीनिया बादाम' विचित्र से लहजे में सुनाई पड़ा। ऐसी निराली चीज खाई तो क्या, कभी सुनी भी न थी। चीज को देखने का मौका न था। बँधी-बँधाई पुड़िया थी, चिलमियाँ टाईप की। कीमत केवल दो पैसे। सौदा कुछ महँगा न था। पुड़िया खुलते ही देखा कि वे न तो चीन से आए थे और न बादाम ही थे। थी केवल 'मूँगफली'। अब सोचता हूँ कि वे गरीबों के तो बादाम हैं ही; किन्तु अमीरों को भी बादाम से कम गुणकारी नहीं हैं।

बादाम और मूँगफली

मूँगफली का रासायनिक संगठन बादाम से मिलता-जुलता है। कुछ तत्त्व तो बादाम से भी मात्रा में अधिक हैं, किन्तु 'कारबोहाइड्रेट' नाममात्र का होता है। इस कमी से भी उसकी उपादेयता में कोई कमी नहीं आ सकती। यह वस्तु घी, मक्खन, तैल और सभी प्रकार के मांसों में भी नहीं पाई जाती। बादाम और मूँगफली के अवयवों की तुलना करें :—

नाम	प्रोटीन	वसा	कारबोहाइड्रेट	लवण	जल
मूँगफली	३१·०	५६·०	×	४·०	२·०
बादाम	२४·०	५४·०	१०·०	३·०	६·०

भारतीयों के लिए कारबोहाइड्रेट की कमी चिन्ता की बात नहीं। यह अवयव गरीब से गरीब को भी अन्न और दालों से प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता है। इनमें कारबोहाइड्रेट की अधिकता देखें :—

आटे का नाम	कारबोहाइड्रेट
चावल	७८·८
जौ	७३·३
बाजरा	७१·२
गेहूँ	७०·९२
मकई	७०·६
ज्वार	६९·४

दाल का नाम	कारबोहाइड्रेट
मटर	६१·४
अरहर	७२.७५
उड़द	५६·४
मसूर	५५·०३
मूँग	५३·४५
आलू	२१·४

ऊपर की तालिका से स्पष्ट है कि सिद्धान्ततः बादाम से मूँगफली में कारबोहाइड्रेट की कमी होने पर भी हमारे दैनिक व्यवहार में यह कमी घातक नहीं हो सकती। यह भी ध्यान में रखने लायक बात है कि शरीर में कारबोहाइड्रेट की कमी होने पर 'वसा' और कुछ विद्वानों के मत से प्रोटीन भी कारबोहाइड्रेट के रूप में परिणत हो जाता है।

मांस और मूँगफली

बादाम ही नहीं, मांस से भी मूँगफली बहुत श्रेष्ठ है। इसमें शरीर का वर्द्धन और पालन करनेवाले सब हिस्से हैं। उनका परिमाण मांस से कहीं ज्यादा है। यदि हम दो समान व्यक्तियों में से एक को उत्तम से उत्तम मांस खिलाकर और दूसरे को पर्याप्त मूँगफली खिलाकर परीक्षण करें, तो निश्चित रूप से मूँगफली खानेवाला अधिक हृष्टपुष्ट और वजन में भारी प्रमाणित होगा। मांसवर्ग से भी इसके अवयवों की तुलना करें :—

	प्रोटीन	वसा	कारबोहाइड्रेट	लवण	जल
मूँगफली	३१·०	५६·०	×	४·०	१२·०
गाय का मांस	२०·९६	५·४१	×	१·१७	७२·०३
मुर्ग का मांस	१९·७२	१·४२	×	१·३७	७६·२२
हिरण का मांस	१७·११	५·७७	×	१·३३	७५·८९
मछली	१५·००	७·००	×	२·००	७६·००
अण्डा (सफेदी)	१२·६	०·२५	×	०·५९	८५·७

देश और विदेश में

आज से सवा सौ वर्ष पहले अमेरिका में केवल सुअरों और गुलामों के लिए मूँगफली बोई जाती थी। किन्तु अब जैतून के तेल के नाम पर मूँगफली के तेल को बरता जाता है और उसकी खली को पीसकर, केक और बिस्कुट बनाये जाते हैं। अमेरिका के कुछ हिस्सों में वह बादाम की जगह बरती जाने लगी है। वहाँ के मुकाबले हिन्दुस्तान में बहुत कम मूँगफली पैदा की जाती है और खाने के लिए ऐसी उपयोगी चीज का भी बहुत कम व्यवहार होता है। जो खाते हैं, वे भी मूँगफली को भूनकर खाते हैं। वास्तव में कच्ची मूँगफली खाना अधिक लाभदायक है। मध्यप्रान्त और बम्बई के कुछ हिस्सों में शक्कर के उपयोग से इसकी पट्टी बनाने का भी रिवाज है। पर, अब हमें इसका प्रयोग वक्ष्यमाण तरीके पर गेहूँ की जगह करना चाहिए। पिछले वर्ष भारतीय संघ में मूँगफली २२,७४,००० टन हुई है, जब कि गेहूँ ४१,९९,७४० टन पैदा किया गया।

दवा में मूँगफली

चिकित्सकों को शास्त्रीय प्रणाली पर मूँगफली का पाक और मुरब्बा बनाकर व्यवहार में लाना चाहिए। इसमें लागत बहुत कम है और सभी गुण बल, वीर्य की वृद्धि कर शरीर को पुष्ट करते हैं। मूँगफली के वृष्य होने से वह प्रमेह और वीर्य की कमी से पीड़ित रोगी के लिए नितान्त उपयोगी है। जिन्होंने विज्ञापनी टानिकों के फेर में पड़कर सदा के लिए खटिया पकड़ ली है, उनको भी मूँगफली वास्तविक अमृत है। राजयक्ष्मा—चाहे अनुलोमक्षय हो, चाहे प्रतिलोमक्षय दोनों—में भी मुनक्का के साथ मूँगफली का सेवन कराना रामबाण है। यही हाल अग्निमांद्य में भी होगा। उसमें मूँगफली के साथ सेंधा नमक का प्रयोग होना चाहिए। यह दूषित मल को रेचन द्वारा उत्कृष्ट तरीके से निकालनेवाला सर्वोत्तम द्रव्य है। यह ध्यान रहे कि रोगों में मूँगफली के द्वारा चिकित्सा करते समय दूध अवश्य देना चाहिए।

आज के भारत में वनस्पति घी का उपयोग बहुत बढ़ रहा है। उसकी बुराइयाँ अनुसन्धान-शालाओं में प्रत्यक्ष हो गई हैं, किन्तु गरीबी के कारण जनता उसके प्रयोग के लिए बाध्य है। उसकी जगह भी मूँगफली का प्रयोग विशुद्ध रूप में करना अभिनन्दनीय है। इससे गरीबों को बड़ी राहत मिलेगी।

गेहूँ की जगह मूँगफली

प्रत्येक भारतीय को प्रातःकाल के नाश्ते में कम से कम १०-१५ दाने मूँगफली के अवश्य खाने चाहिए। मूँगफली को पीसकर उसकी मिठाइयाँ भी बनाई जा सकती हैं। महात्मा गांधी ने भी साबरमती-आश्रम में मूँगफली के प्रयोग कर आंशिक सफलता प्राप्त की थी। काठियावाड़ में गेहूँ का आटा तीन भाग और मूँगफली का दो भाग मिलाकर फुलके और पूरी बनाने के सफल प्रयोग हुए हैं। मैंने स्वयं अनुभव किया है कि ये चपातियाँ रासायनिक दृष्टिकोण से पूर्ण आहार ही नहीं बल्कि खाने में अत्यन्त स्वादिष्ट होती हैं। मूँगफली

भारत-सरकार ने १० अप्रैल की विज्ञप्ति में १९४८ वर्ष के पेशगी कोटे के रूप में ५०,००० टन मूँगफली और २०,००० टन मूँगफली के तेल के निर्यात की स्वीकृति के लिए प्रार्थना-पत्र देने की तिथि १२ मई से हटाकर १२ जून कर दी है। हमारा नम्र निवेदन है कि मूँगफली के निर्यात की अन्तिम स्वीकृति से पहले आयुर्वेद के धुरन्धर विद्वान् लेखक के "गेहूँ की जगह मूँगफली" के अनुसन्धान का पर्याप्त परीक्षण कर लिया जाए।

का आहार में उपयोग कर भारत में की कमी पूरी की जा सकती है।

हमारी राष्ट्रीय सरकार द्वारा इन प्रयोगों को प्रोत्साहन देना ही हमारी खाद्य-समस्या का हल होगा। इस वर्ष भारत से मूँगफली के निर्यात की घोषणा हो चुकी है, अगले वर्ष इसे हमारे खाद्य में शामिल करना जरूरी है। वास्तव में मूँगफली का प्रयोग आहार शास्त्र को आमूल परिवर्तित कर आज नहीं तो कल एक चमत्कार सिद्ध होगा।

* * *

दक्षिण भारत का एक खिलाड़ी जो प्रतियोगिता में विजयी हुआ था।

मुफ़्त :—"ओटो-फ्लावर्स" मधुर सुगंध के लिए विख्यात है। अभी मँगाकर नाम रजिस्टर कीजिये। प्रत्येक सेट (छै दर्जन) की बिक्री पर रजिस्टर नं० अनुसार मुफ़्त में एक असली—"रिस्टवाच" दी जा रही है। कम से कम शीशी भेजी जाती है। की० नौ रु० दर्जन डाक पैकिंग अलग।

ALBERT (D.A.) एल
पो० बक्स ४७, जमशेदपुर।

मुफ़्त ! मुफ़्त !! मुफ़्त !!!
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ० ए०, ए०, पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी और होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी स पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ़्त मँगायें। पता :—
इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड)

१००) रु० इनाम
!! विश्वविजय यन्त्र !!
सिद्ध वशीकरण यन्त्र। इसके धारण से जिस स्त्री या पुरुष को आप चाहें वश में हो जायगी। इससे दुर्भाग्य और शत्रु का नाश, नौकरी, सन्तान, धन की प्राप्ति, लाभ, परीक्षा में पास, मुकदमे, लाटरी में जीत, कठिन से कठिन रोगों से छुटकारा होकर भाग्योदय होता है। ताँबा २॥), सिलवर ३), सोने का बेफायदा साबित करने पर १००) इनाम।
पता—श्री विश्वशांति आश्रम
मुहल्ला—सलीमपुर अहरा
पो० कदम कुआँ (पटना)

संवाददाताओं के पत्र

शोलापुर उस्मानाबाद जिले के सीमा ान की ओर से अधिक सैनिक ी की सूचना मिली है। हर तीन रजाकारों का केन्द्र है। उनके ोर के समाचार भेजने का प्रबन्ध ुवेरान से सकेत द्वारा समाचार प्रबन्ध तथा प्रकाश रखा गया स्थानों पर चौबीस घण्टे पहरा ता है। परंडा तालुका में नया न्द्र स्थापित किया गया है।

ाकारों के एक दल ने गुडमिदा- िला महबूब नगर पर आक्रमण ियों ने छतों से पत्थरों की वर्षा ी देर में कुछ किसान सहायता पहुँच गये। कुछ रजाकार घायल ा गये।

ला महबूब नगर में ग्यारह ग्रामों ारों ने लूट मचाई। २५ हजार की ानि हुई। तीन स्थानों से रजा- ड़े गये।

ा महबूब नगर के कांग्रेसी कार्य- े गिरफ्तार करने के लिए जो छिड़कर आन्दोलन का संचालन , पुलिस और ५०० रजाकारों को घेर लिया; किन्तु तीन निरन्तर यत्न करने पर भी फलता नहीं मिली।

जिला बीदर से कालगापुर को तीन बैलगाड़ियों में कुछ जा रहे थे। भालकी और ंदकलधारी कुछ रजाकारों ने बोल दिया। पुरुषों को या। स्त्रियों से बलपूर्वक आभू- लिये गये। केवल वीर संगवा घायल होकर शोलापुर पहुँच ापुर में उसका इलाज किया ै।

—संवाददाता

* *

री राज्य-प्रजा-मण्डल की महा- ने जिसमें राज्य के करीब निधि उपस्थित थे, निश्चय किया का भावी शासन एक अलग रूप में चलाया जाये।

रहे कि १५ जनवरी को टिहरी मण्डल द्वारा अपनी सरकार ने के बाद भारत-सरकार ने शासन अपने हाथ में ले लिया र बाद को एक अतःकालीन ी, जिसमें ४ प्रजा-मण्डल के एक रियासती विभाग नोनीत चीफ मिनिस्टर है, स्थापना रियासती विभाग ने राज्य के भावी के सम्बन्ध में फैसला देने का राज्य की विधान-सभा को ा था, क्योंकि इस समय राज्य की जनता का प्रतिनिधित्व करनेवाली राजनैतिक संस्था प्रजामण्डल , इसलिये प्रजामण्डल में फैसले की सुकता से प्रतीक्षा की जा ी थी।

र्यसमिति के नीति-सम्बन्धी प्रस्ताव करते हुए श्रीकृष्णसिंह जी ने राज्य की पिछड़ी हुई हालत पर प्रकाश डाला। प्रजामण्डल के प्रधान मन्त्री भी सुन्दरलाल जी ने प्रस्ताव का स्पष्टीकरण व समर्थन करते हुए कहा कि "इस समय टिहरी की जनता के सामने दो ही विकल्प थे, उत्तरदायी शासन को, जो आज की स्थिति में जब कि जनता ने राजा के खिलाफ अपना मत दे चुकी है, कतई स्वीकार नहीं किया जा सकता। एकदम विलीनीकरण की स्थिति में हमारी पिछड़ी हुई हालत का विशेष हितों की सुरक्षा का आश्वासन मिले बिना सम्भव नहीं। प्रस्ताव में विलीनीकरण के लिये तैयारी करने को कुछ समय मांगा गया है, जो सबसे अच्छा रास्ता है। प्रस्ताव एकमत से स्वीकार किया गया।

प्रजामडल के प्रधान श्री नेगी ने प्रतिनिधियों से अपने महान् निश्चय पर दृढ़ रहने के लिए अमर शहीद श्री देव सुमन के उन वाक्यों की याद दिलाई जब कि उन्होंने जेल जाने से पहले कहा था कि "तुम मुझे तोड़ सकते हो, पर मोड़ नहीं सकते हो।

—संवाददाता

* * *

सागर से शीघ्र प्रकाशित होनेवाले दैनिक सागर के सम्पादक श्री गिरिराजसिंह चौधरी के बैग की चोरी कटनी जाते समय सगौनी और सलैया स्टेशन के बीच हो गई। बताया गया है कि बैग में प्रेस-सम्बन्धी १०००) का सामान था। श्री चौधरी ने रेलवे पुलिस कटनी तथा स्थानीय पुलिस में रिपोर्ट कर दी है। मामले की जाँच सतर्कता से होनी चाहिए।

आजकल बीना जबलपुर पैसेंजर ट्रेनें बहुत लेट हो रही हैं ! रेलवे-विभाग ध्यान दे।

सागर से शीघ्र ही एक गांधीवादी साप्ताहिक पत्र 'सन्मति' श्री कृष्णचन्द्र जी नेपाली के सम्पादकत्व में प्रकाशित हो रहा है।

यहाँ ता० १ मई से ५ सप्ताह के लिए प्रान्तीयसरकार-द्वारा रात्रि में प्रौढ़ शिक्षा का कार्यारम्भ हो गया है। ३३ केन्द्रों में अभी तक कुल १००० अपढ़ प्रौढ़ स्त्री-पुरुष शिक्षा पा रहे हैं। पर बरातों का मौसम होने के कारण उपस्थिति ठीक नहीं रहती। प्रचार कार्य के लिए श्री ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी, डा० बी० बी० राय, मास्टर बल्देवप्रसाद आदि सज्जनों की एक समिति बन चुकी है। महिला-प्रचारकों में सर्वश्री हरदयाल कौर तथा रामदुलारी पाठक का कार्य सराहनीय है तथा पुरुषों में श्री बिहारीलाल गोयल एवं श्री नारायण शंकर घगट, भट्ट जी तथा श्री ठाकुर का कार्य प्रशंसनीय है।

—लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

* * *

शिमला (रामपुर) में नवनिर्मित "हिमाचल-प्रदेश" के प्रमुख राजनैतिक नेता श्री बुद्धिसागर नौटियाल-गैर सरकारी जाँच समिति के साथ यहाँ आये। आपने निम्न-पत्र प्रकाशनार्थ भेजा है।

"बुशहर में हुए अत्याचारों का वर्णन करते हुए मेरे रोंगटे खड़े हो रहे हैं और शर्म से सिर झुका जाता है। मेरी अपनी कांग्रेस सरकार ने सरदार श्री बलदेवसिंह को बुशहर में सुख-शान्ति बरसाने के लिए अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजा था; परन्तु बलदेवसिंह ने अपने काले कारनामों द्वारा हमको भी शर्मिन्दा करने में कोई कसर न छोड़ी।

कुछ लोगों ने इस अकस्मात् हमले से आतंकित होकर पास बहती 'सतलज' नदी में डुबकी लगा दी, गौरा गाँव का 'कातकू' हरिजन डूबकर मर गया, 'गणपत' दूकानदार का 'हार्टफेल' हो गया। शेष की संख्या का अभी पता नहीं।

रामपुर की नौजवान लड़कियों का सतीत्व जबरदस्ती नष्ट किया गया, रामपुर में अपना कालापिशाच जौहर दिखलाकर बलदेवसिंह ने अपने राक्षसी पुलिसवालों को देहातों का खून चूसने के लिए दौड़ा दिया। —संवाददाता

* * *

गोलाघाट (आसाम) प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन की कार्यकारिणी की बैठक में यह प्रस्ताव स्वीकृत हुए—

सम्मेलन के कार्यों को अग्रसर करने के लिए पदाधिकारियों के अलावा स्थानीय ११ सदस्यों की स्थायी समिति का निर्माण किया गया।

डिब्रूगढ़ में ता० १५ अगस्त को मनाए जानेवाले मातृ-मुक्ति दिवस का जोरों से प्रचार-कार्य किया जाय एवं उसमें कार्यकारिणी तथा स्थायी समिति के सदस्यों को सपत्नीक शामिल होना आवश्यक है। कांग्रेस, सरकारी अधिकारियों एवं सार्वजनीक संस्थाओं से अधिकाधिक सम्पर्क स्थापित करना हिन्दी स्कूलों 'में असमियर भाषा पढ़ाने की समुचित व्यवस्था करना। बढ़ती हुई समाज में दहेज-प्रथा का विरोध करते हुए श्री हनुमानबक्स जी कनोई द्वारा प्रस्तावित नियमावली को कार्यान्वित करना तथा इस प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन करना। गोरक्षा के लिए गोशालाओं का सुधार करना तथा गोवध रोकने के लिये सरकारी अधिकारियों, लोकलबोर्ड तथा म्युनिसिपलबोर्ड से लिखा-पढ़ी करना।

डेडगाँव के असाम प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन के सहमन्त्री श्री सुरतराम खदरिया ने पितामह के श्राद्धोपलक्ष में मृतक बिरादरी भोज न करने का निश्चय किया था। —भगवतीप्रसाद लडिया

* * *

इधर उधर की

हवाई खेती

विज्ञान का एक नया प्रयोग अमेरिका में किया गया है। अधिकांश खेती करनेवाले इस नये प्रयोग से काम भी करते हैं। जहाज की तरह एक यन्त्र तैयार किया गया है, जिसके द्वारा खेतों में बीज डाले जाते हैं। एक दिन में तीन सौ एकड़ भूमि सरलतापूर्वक बोई जा सकती है। इस साधन से जानवरों की बचत है, लेकिन साधारण श्रेणी का आदमी इतना अधिक धन मशीनों में व्यय नहीं कर सकता। इसलिये अभी इस यन्त्र की प्रसिद्धि अधिक नहीं हो सकी।

यह हवाई यन्त्र समय और परिश्रम की बचत करते हैं। एक बार खरीद लेने से फिर खेती के सामान्य खर्च में अनुमानतः ६० प्रतिशत खर्च की कमी होती है। इन यन्त्रों के द्वारा खेती की रक्षा कीड़ों आदि से भी की जा सकती है। कुछ यन्त्र ऐसे भी बने हैं जिनमें दवाई भरकर खेतों में बड़ी सफलतापूर्वक डाली जा सकती है। इस प्रकार कीड़े आसानी से नष्ट किये जा सकते हैं। सन् १९४७ में इन यन्त्रों की मदद से ४,१३,००० एकड़ भूमि कीड़ों से साफ की गई थी। अभी शीघ्र ही सरकार की ओर से इन यन्त्रों के प्रयोग के लिये नई नई प्रणालियाँ बनाई गई हैं।

* * *

खून भी बनाया जा सकता है

विलायत के प्रसिद्ध विज्ञान यन्त्रालय लिस्टर इंस्टीट्यूट में वहाँ के वैज्ञानिकों ने एक प्रयोग द्वारा बनावटी रक्त तैयार किया है। इस प्रयोग के बाद वैज्ञानिकों ने कहा है कि रक्त विज्ञान की सहायता से बनाया जा सकता है। इस प्रकार का रक्त तैयार करने में कुछ मीठे पदार्थ भी काम में लाये जाते हैं। इन वस्तुओं के अतिरिक्त रक्त तैयार करने में कुकुरमुत्ता का प्रयोग बहुत अधिक किया जाता है। वैज्ञानिकों के मतानुसार इस रक्त का प्रयोग प्राकृतिक रक्त की भाँति किया जा सकता है। उदाहरण के लिये यदि किसी के शरीर में रक्त देना है तो उस स्थान पर यह बनावटी रक्त काम में लाया जा सकता है। इस रक्त के साथ जो कमी है वह यह कि शरीर के अन्दर जाकर यह रक्त स्नायुओं को प्राकृतिक रक्त की भाँति नहीं रख सकता।

इस खोज का प्रारम्भ पिछले महायुद्ध के पूर्व ही हो चुका था। युद्ध की परिस्थितियों ने वैज्ञानिकों को दूसरी ओर लगा दिया। इसीलिये यह प्रयोग आज किया गया है।

* * *

बुढ़ापा एक बीमारी है

कोलम्बिया के डाक्टर फिलिप ने मानवीय दुर्बलता पर एक खोज की है। इन अनुसन्धानों में कुछ बातें बिलकुल नई हैं। उन्होंने सिद्ध किया है कि यदि किसी नौजवान की नाड़ी-क्रिया दुर्बल हो जाय तो वह जवान नहीं रह सकता। खून दिमाग की आयु का भी जिम्मेदार होता है। खून में जब किसी कारण गर्मी कम हो जाती है, तो दिमाग की स्मृति रेखाएँ मनुष्य को शनैः शनैः भुलावा देकर दुर्बल बनाती हैं। आदमी यदि अपने शरीर के रक्त की गर्मी की रक्षा के लिये कुछ करता रहे तो बुढ़ापा कभी नहीं आ सकता।

बाहरी शृंगार के द्वारा शरीर थोड़ी देर के लिए सुन्दर हो सकता है, लेकिन हृदय की शक्ति पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार यह प्रभाव मनुष्य की आयु को अपने काबू में कर लेता है। डाक्टर ने यह भी घोषित किया है कि अगर कोई आदमी अपने सिर पर धूप न लगने दे तो उसके बाल कभी भी सफेद नहीं हो सकते। आयु के विचार से वह कितना ही बूढ़ा क्यों न हो।

* * *

साहित्य-चर्चा

क्रौञ्च-वध—(खण्ड काव्य) लेखक, श्री द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी, एम० ए० प्रकाशक, ओंकार प्रेस, प्रयाग। मूल्य १।) पृष्ठ-संख्या ७८।

पुस्तक का विषय नाम से ही स्पष्ट है। आदि कवि वाल्मीकि ने 'क्रौञ्च-वध' किया, आचार्यों ने इस घटना के तत्त्व को ही कविता का उद्गम कहा। कवि ने अपनी पुस्तक में उसी आदि-कथा को रखा है। नये कवि ने नया विषय भी चुना यह निर्विवाद सत्य है।

प्रकृति-चित्रण के अतिरिक्त कवि ने जीवन और जगत् के साम्य पर भी विचार किया है। जगत् जीवन के लिए सुलभ नहीं है। क्योंकि,

'अन्तिम श्वासें भी पीड़ित की
सहने जो जग तैयार न हो।'

इस प्रकार क्रौञ्च का वध हो जाने के पश्चात् महर्षि वाल्मीकि ने जो कुछ सोचा और उस विचार से जग को क्या मिला: संसार ने काव्य के रूप को कैसे ग्रहण किया। इस विचार पर कवि के ऊपर कथा की सत्यता के अतिरिक्त अंगरेजी के प्रसिद्ध कवि शैली का भी प्रभाव पड़ा। स्वभावतः कथा की उत्पत्ति के लिये एक सत्य को ग्रहण करना ही पड़ा।

'बन गया शोक ही आदि श्लोक'

कविता के प्रादुर्भाव की अभिव्यक्ति कवि ने विषय के अनुकूल ही किया है।

कथावस्तु को प्रस्तुत करने में कवि को यथेष्ट सफलता मिली है। कहीं कहीं भाषा का गद्यात्मकता खलती है। विषयानुकूल कवि ने जैसी भाषा प्रयोग की वह संतोषप्रद है। जैसे—

'झाँप लगे मुंदित करने विचार'
अथवा
"परिवर्तन आज हुआ सहसा
साहित्य-जगत के जीवन में"

'क्रौञ्च-वध' से हिन्दी-साहित्य को एक योग मिला, इसके पूर्व इस विषय पर ऐसी पुस्तक नहीं थी। आशा है 'क्रौञ्च-वध' हिन्दी की आदृत पुस्तकों में गिनी जायेगी।

* * *

मकरन्द—(कविता-संग्रह) लेखक, श्री अवधविहारी 'सुमन' प्रकाशक, नया विहार प्रेस, लिमिटेड, पटना। पृष्ठ-संख्या ६१, मूल्य दस आने।

पुस्तक में कुल मिलाकर चौबीस रचनाएँ संग्रहीत हैं। सभी आधुनिक गीत शैली के आधार पर हैं। गीतों में गाये गये विषय प्रायः प्राचीन हैं। अधिकांश गीतों की ध्वनि, शैली और उनका उतार-चढ़ाव 'बच्चन' के निशा-निमंत्रण में संग्रहीत गीतों का स्मरण कराते हैं। यदा-कदा 'दिनकर' के स्कूल की भी छाप पड़ी है। कवि का यह पहला प्रयास है, इसलिए भविष्य आशाजनक जान पड़ता है।

* * *

चिन्ता—(कविता-पुस्तक) लेखक, श्री इन्दुभाल शुक्ल 'दिव्य', प्रकाशक, सेन्ट्रल प्रिंटिंग प्रेस प्रयाग। पृष्ठ-संख्या १६, मूल्य २ आना।

'चिन्ता' में कवि की वन्दना प्राचीन परिपाटी के अनुसार की गई है, पुस्तक में छन्दों का रूप 'आँसू' के छन्दों की तरह है। पुस्तक से कवि का भविष्य आशाजनक है।

* * *

पण्डित श्रीकृष्णदत्त पालीवाल

(पेज ६ का शेष)

वे दो बार सभापति चुने गये—सन् १९३७ और सन् १९४२ में।

लेखक

सम्पादन-कला में निपुण होने के साथ-साथ पालीवाल जी कुशल लेखक भी हैं। उनकी अनेक महत्त्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। सन् १९१८ में, जब कि वे कालेज के विद्यार्थी थे, उनकी पहली पुस्तक "सेवामार्ग" के नाम से छपी थी। सन् १९२५ में "अमरपुरी" और सन् १९३७ में 'सेवा-मार्ग और सेवा-धर्म" का प्रकाशन हुआ। सन् १९४५ में "हमारा स्वाधीनता संग्राम और किसान राज्य की पञ्चवर्षीय योजना" प्रकाशित हुई। सन् १९४६ में "गांधीवाद और मार्क्सवाद" छपा तथा सन् १९४८ में पालीवाल जी ने गीता पर अपने विचार व्यक्त करते हुए एक बड़ी सुन्दर पुस्तक "गीतामृत" के नाम से प्रकाशित कराई। इस प्रकार हम देखते हैं कि उनकी लेखनी उपयोगी ग्रंथों को लिखने में अबाध गति से प्रचालित रही है।

पालीवाल जी के स्वतन्त्र लेखों, सम्पादकीय टिप्पणियों और पुस्तकों को जिन लोगों ने पढ़ा है वे जानते हैं कि उनकी भाषा-शैली अतिशय प्रवाहपूर्ण और सरल होती है। बड़ी से बड़ी बातों और गम्भीरतम विचारों को वे अपने सीधे-सादे शब्दों के द्वारा बोधगम्य बना देते हैं। उनकी शब्दावली बड़ी सजीव, ओजपूर्ण और नुकीली होती है जो पाठक के हृदय और मस्तिष्क को समान रूप से प्रभावित करती है।

राजनीतिक सम्मान

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, पालीवाल जी का मुख्य क्षेत्र राजनीतिक है। वे विद्यार्थी जीवनकाल से ही स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिए लड़ने में मस्त थे। अपनी प्रगाढ़ देशभक्ति और अदम्य कार्य-शक्ति के द्वारा वे राजनीतिक क्षेत्र में निरन्तर उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होते गये और इस नरपुंगव को जनता ने बार बार उच्च पद देकर उनके प्रति अपनी श्रद्धा का परिचय दिया।

सन् १९२१ में ही वे कानपुर सिटी कांग्रेस कमेटी और मजदूर-सभा के सभापति चुने गये और उसी वर्ष प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य भी चुन लिए गए थे। उस समय से अब तक वे इन दोनों समितियों के सदस्य होते आ रहे हैं। सन् १९२३ में वे कानपुर जिला स्वराज्य पार्टी के सभापति चुने गए और उसी वर्ष के अन्त में संयुक्तप्रान्तीय लेजिस्लेटिव कौंसिल के सदस्य चुन लिए गये। आगरा सिटी कांग्रेस कमेटी के सभापति वे सन् १९२५ में बनाये गये और आगरा जिला कांग्रेस कमेटी के सन् १९२६ में। सन् १९२४ से लेकर सन् १९२६ तक संयुक्त-प्रान्तीय लेजिस्लेटिव स्वराज्य पार्टी के प्रचार एवं संगठन-मन्त्री रहे और सन् १९२६ में उन्होंने इंडियन नेशनल कांग्रेस के अधिवेशन की स्वागत समिति के पब्लिसिटी आफिसर और ज्वाइंट सेक्रेटरी का काम किया। अलीगढ़ में सन् १९२७ में यू० पी० वर्कर्स कान्फ्रेंस के वे अध्यक्ष बनाये गये। सन् १९२८ से लेकर सन् १९३४ तक यू० पी० कांग्रेस कमेटी के वे सेक्रेटरी रहे और सन् १९३४ में केन्द्रीय असेम्बली के सदस्य चुने गये और सन् १९४८ की फरवरी तक वहाँ की कार्यवाइयों में महत्त्वपूर्ण भाग लेते रहे। सन् १९४० से लेकर सन् १९४६ तक संयुक्त-प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पद पर आरूढ़ रहे। जिस काल में वे युक्तप्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे वह भारतीय राजनीति के लिए एक कठिन काल था। सन् १९४२ के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन की भीषणता के समय बड़ी संकटपूर्ण परिस्थितियाँ उत्पन्न हो गई थीं। पालीवाल जी ने उन परिस्थितियों का बड़ी गम्भीरता, धैर्य तथा चातुर्य के साथ सामना किया और व्यग्र जनता का बड़े कौशल से नेतृत्व किया। जनता ने आन्दोलन के कार्यक्रम को अभूतपूर्व रीति से पूरा किया और आजादी के लिये महान् बलिदान किया।

उपर्युक्त उल्लेखों से इस बात का प्रमाण मिलता है कि राजनीति क्षेत्र में उनका कितना महत्त्व है। संयुक्तप्रान्त के सर्वमान्य अग्रणी नेताओं में उनका विशिष्ट स्थान है। महात्मा गांधी जी के आदेशानुसार जब-जब राजनीतिक आन्दोलन हुए, पालीवाल जी सिंह की भाँति गरजते हुए मैदान में आये और नौकरशाही का विरोध करते हुए अनेक बार जेल गये। राजनीतिक आन्दोलनों के दिनों में जिन लोगों को उनके ओजस्वी भाषणों के सुनने का अवसर प्राप्त हुआ है, वे जानते हैं कि उनकी वाणी में कितना आकर्षण है। उनके इशारे पर लोग जेल जाने के लिए तैयार हो जाते थे और राष्ट्र की बलि पर सर्वस्व अर्पण करने को तत्पर रहते थे। पालीवाल जी के नेतृत्व में कांग्रेस का जो संगठन हुआ वह अत्यन्त श्लाघ्य है। अतः राष्ट्रीय आन्दोलनों के इतिहास में पालीवाल जी की कीर्ति सदा अमर रहेगी।

ग्रामोन्नति

पालीवाल जी का जीवन भारत के गरीब किसानों और मजदूरों की उन्नति में विशेष रूप से व्यस्त रहा है। उन्होंने सन् १९२६ में आगरा टेनेंसी संशोधन बिल के सम्बन्ध में किसान-आन्दोलन प्रारम्भ किया था। सन् १९२७ ई० में उन्होंने आगरा जिला किसान एसोसियेशन की स्थापना ट्रेड यूनियन के सिद्धान्तों पर करके किसानों को संगठित किया। उसके पश्चात् उनके राजनीतिक कार्यों का क्षेत्र किसानों, मजदूरों और प्रजा की उन्नति करना रहा है। गांधी जी के आदेशानुसार उनका सदैव यह विश्वास रहा है कि भारत की वास्तविक उन्नति तभी हो सकती है, जब गाँवों में रहनेवाले किसानों के जीवन को सुखमय बना दिया जाय। इसी उद्देश्य से उन्होंने सन् १९३१ में अनवल ग्राम सेवा-संघ की स्थापना की और उसके अध्यक्ष के पद पर कार्य करते हुए अपना अधिकांश समय ग्रामोन्नति के कार्यों में व्यय करना आरम्भ कर दिया।

गाँवों की उन्नति में विशेष अभिरुचि रखने के कारण, जब सन् १९३७ में प्रांत में कांग्रेस मन्त्रिमंडल बना, उस समय उन्होंने मंत्रिमण्डल के आग्रह पर अवैतनिक ग्राम-सुधार अफसर बनकर ग्रामोन्नति के कार्यों की सुचारु व्यवस्था की। सन् १९३८ ई० में वे केन्द्रीय असेम्बली में किसान दल के सदस्यों के अध्यक्ष गये।

किसानों से सम्बन्ध में उनकी योजना रही है। सन् १९४५ में उन्होंने "किसान राज्य" नाम की एक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में किसानों की दशा सुधारने के सम्बन्ध में एक पञ्चवर्षीय योजना बताई गई है। इस योजना देखकर कोई भी उनके विचारों से प्रवाहित हुए नहीं रह सकता। प्रान्त किसान उन्हें अपना नेता तथा मार्ग विधाता समझते हैं। आगरा डिवीजन ग्रामीण क्षेत्र में सन् १९४५ में वे निर्विरोध केन्द्रीय असेम्बली के सदस्य गये। उनके द्वारा की गई किसानों सेवा का सम्मान केवल संयुक्त-प्रान्त में नहीं हुआ वरन् समस्त भारत की मानवता ने उन्हें अपना नेता स्वी किया। सन् १९४६ में वे दिल्ली के पीपुल्स एसोसिएशन के अखिल भार संघ के प्रधान मन्त्री चुने गए। अखि भारतीय किसान कांग्रेस के भी वे प्र मन्त्री चुने गए। संयुक्तप्रान्तीय कि कांग्रेस के तो वे बहुत समय तक अध्य रहे। अभी कुछ मास पूर्व उन्होंने 'ग्रा सेवा कार्य' नामक एक पुस्तक भी लिखी है। आगरा जिला बोर्ड के वे सन् १९३ में चेयरमैन चुने गये और तब से लेकर सन् १९४७ तक अर्थात् मन्त्रिमंडल में प्रवेश करने के पूर्व तक वे उस पद पर आरूढ़ रहे।

केन्द्रीय और प्रांतीय लेजिस्लेटिव असेम्बली के सदस्य के रूप से भी उनका प्रयत्न जहाँ तक सम्भव हो सका, जनता के हित के लिए ही रहा है। उन्होंने केन्द्रीय असेम्बली में एक पाई पोस्टकार्ड और गाँव गाँव में डाकखाने स्थापित करने के सम्बन्ध में प्रश्न उपस्थित किया था। उनकी सदैव यही कामना रहती है कि हमारे गाँवों में फिर से दूध-दही की नदियाँ बहने लगें। वहाँ के निवासी हृष्ट-पुष्ट और विद्वान् हो जायँ, उनमें सहकारिता की भावना का उदय हो ताकि वे कृषि और ग्राम्य व्यवसाय की उन्नति कर सकें, ग्रामीण जनता के रहन-सहन का स्तर ऊँचा हो, उनके घर स्वच्छ और सुन्दर हों। सारांश यह कि हमारे ग्रामवासी भी हर प्रकार से सम्पन्न और खुशहाल हों। भगवान् चाहेंगे तो लोकप्रिय कांग्रेस शासन-काल में पालीवाल जी की मनोकामना पूरी होगी। सौभाग्य से वे जनप्रिय मंत्रिमंडल के एक प्र सचिव हैं; अतः अब वे निश्चय ही प्रयासों में सफल होंगे।

श्रीयुत पालीवाल जी के जीवन की इस झाँकी से यह स्पष्ट हो जाता है कि उनका जीवन विशेष रूप से किसानों जनता के हित में सतत संलग्न है। उन्होंने सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यिक क्षेत्र में ही अपनी असीम प्रतिभा परिचय नहीं दिया, वरन् भारत कोटि-कोटि जनता की सांस्कृतिक आर्थिक उन्नति के लिए भी वे प्रयत्नशील रहे हैं। भारतीय संस्कृति पृष्ठभूमि पर उन्होंने आधुनिक अर्थ के प्रकाश में जिस नव निर्माण की की और जिसकी पूर्ति के लिए वे प्रयत्नशील रहे उसकी प्रशंसा ने भी मुक्तकंठ से की है। पालीवाल हमारे देश की उन विभूतियों में पर हमें गर्व है, जिनसे हमें अब भी बड़ी आशाएँ हैं और जिनके द्वारा नवप्रकाश के दर्शन हो रहे हैं।

* *

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य
ी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना
को जड़ से नष्ट करने में हमारे **“वीर्य संजीवनसत”** ने मान
ैं और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा
। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि
गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा
हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ **“तिला मस्ताना”**
ा कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती,
आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५।।=), डाक
खर्च अलग।

विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

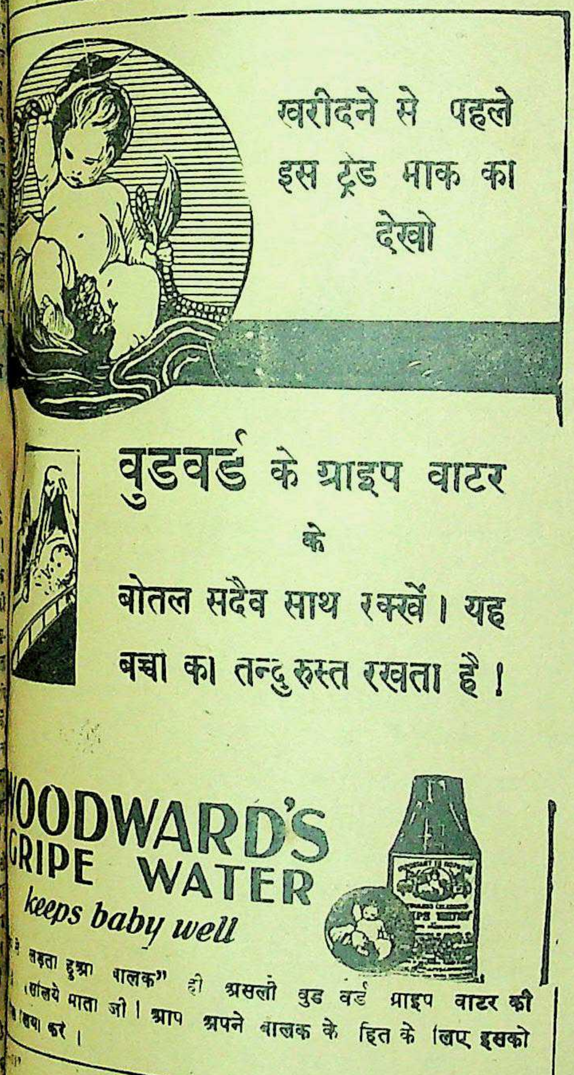

खरीदने से पहले
इस ट्रेड माक को
देखो

वुडवर्ड के ग्राइप वाटर
के
बोतल सदैव साथ रक्खें। यह
बच्चा को तन्दुरुस्त रखता है।

“लड़ता हुआ बालक” ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की
लिये माता जी। आप अपने बालक के हित के लिए इसको
या करें।

W. WOODWARD LTD. LONDON. ENGLAND

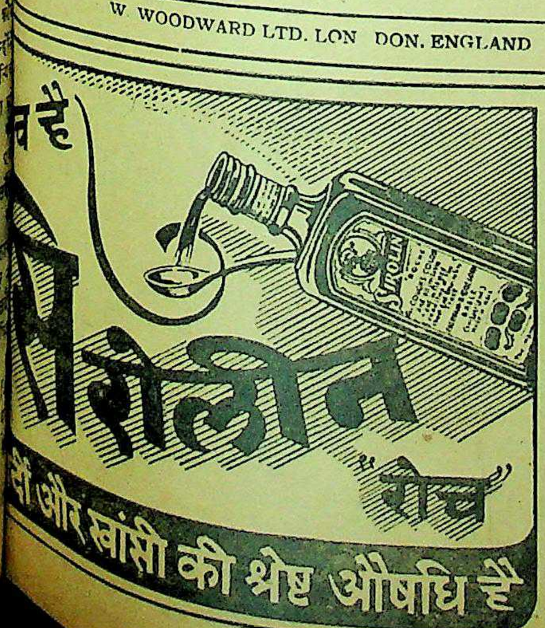

है
सेलीन
“रोच”
सर्दी और खांसी की श्रेष्ठ औषधि है

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ

सम्पादक—श्री सोहनलाल द्विवेदी
प्राक्कथन—सर सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

संस्कृति, हिन्दी, उर्दू, बँगला, गुजराती, सिन्धी, मराठी, तामिल, तेलगू, मलयालम, कन्नड़, अँगरेजी और चीनी भाषाओं में महात्मा गांधी जी पर लिखी हुई सर्वोत्तम कविताओं का संग्रह—हिन्दी भाषा में अर्थ-सहित।

बड़ा आकार, सुन्दर छपाई, पूरे पेज के अनेक चित्र। बढ़िया जिल्द। सर्वत्र प्रशंसित।

सादी जिल्द ६।।) कपड़े की जिल्द ७।।)

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लि० प्रयाग

[illegible] सर्दीपर असरकारक उपाय

प्रमोद
१८६६
नीलगिरि तैल

[illegible]

पी. सांडालेकर बंधु बम्बई ४.

राष्ट्र का शत्रु

बिना टिकट की यात्रा करनेवाला व्यक्ति भारतीय रेलवे के लिये प्रत्येक वर्ष दस करोड़ रुपये की हानि का कारण बन रहा है। यह क्षति हमारे राष्ट्रीय खजाने की है। वास्तव में बिना टिकट का यात्री राष्ट्र का सबसे बड़ा शत्रु है।

बिना टिकट की यात्रा के खतरे को दूर करने के प्रयास में रेलवे अधिकारी आपकी कार्मिक सहायता और सहयोगिता की आशा रखते हैं। कोई भी व्यक्ति जो बिना टिकट की यात्रा करता है अथवा बिना टिकट के यात्री के अपराध को छिपाने की कोशिश करता है, अवश्य पकड़ा जाना चाहिये और उसे सजा मिलनी चाहिये।

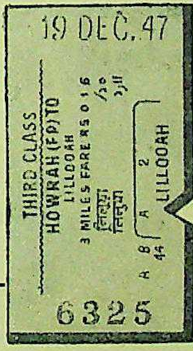

बिना टिकट की
यात्रा को रोकने में
हमारी मदद कीजिये—

एक राष्ट्रीय कार्य में सहायता कीजिये

पब्लिक रिलेशन्स आफिसर द्वारा प्रकाशित

ईस्ट इण्डियन रेलवे **बङ्गाल नागपुर रेलवे**

३०० लड़कियाँ

शरणार्थी और ऊँचे घराने से सम्बन्धित पढ़ी-लिखी वैश्य, कायस्थ, खत्री, ब्राह्मण इत्यादि शुभ सन्देश में देखिये। मूल्य २।)

शुभ सन्देश, बर्नी गली, सदर बाज़ार, देहली।

T. B.
टी० बी०

“तपेदिक” रोग के हताश रोगियो—

जबरी (jabri) का नाम नोट कर लो, यही इस दुष्ट रोग से रोगी की जान बचानेवाली शक्तिशाली औषधि है। एक बार परीक्षा करके देख लो, परीक्षार्थ ही नमूना रखा गया है, जिसमें तसल्ली हो सके। मूल्य नं० १ (स्पेशल) पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन २०) रु०। ‘जबरी’ नं० २ पूरा कोर्स २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु० महसूल आदि अलग है। आज ही आर्डर देकर रोगी की जान बचावें। तार का पता “jabri” jagadhri काफी है।

पता :—रायसाहब के० एल० शर्मा, रईस (D) ‘जगाधरी’ (E.P.)

मेरी तरह तन्दुरुस्ती हासिल करो
खराब खून को साफ करता है
डा. वामन गोपाल
आयोडाइज्ड सार्सापरिला

[illegible]बाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद
[illegible] लाल जौहरी एल० एम० [illegible]
[illegible]

जवान बनिए

२४ घंटे में

पार्कर एण्ड डेविस द्वारा प्रस्तुत 'ओटोजन' सजीवता और स्फूर्ति में २४ घंटे में ही आश्चर्यजनक वृद्धि करता है। यदि आप शक्ति की कमी, क्षीण स्मृति और शरीर-शून्यता, अशुद्ध रक्त, अस्वस्थ चमड़ी, खिन्नता, अनिद्रा, घुमनी, मानसिक अथवा शारीरिक थकावट आदि से ग्रस्त हैं, तो आपके लिए यह नवीन आशा है। इससे एक सप्ताह में ही अच्छी भूख तथा वजन में ५ से १० पौंड तक वृद्धि हो जाती है। आपके गालों पर ललामी आ जाती और आपकी मुद्रा शत-प्रतिशत उन्नत हो जाती है। आपके मुख पर वैसी ही आभा और चमक आ जायेगी जैसी कि तरुणाई में थी जब कि आपकी चमड़ी ताजी और मुलायम थी। 'ओटोजन' आपकी मुद्रा में सुधार करता, आंखों में दीप्ति भरता, गालों और ओठों पर गुलाबी चमक लाता है। इंगलैंड में हजारों व्यक्तियों ने इसकी परीक्षा और सराहना की है और अब भारतवर्ष में भी यह प्राप्य है। अन्यथा सिद्ध करने पर ५०० पौंड दिये जायेंगे। हिदायतों के साथ प्रति डिब्बे की क़ीमत ५) पांच रुपये।

ओटोजन पोस्टबाक्स ४४७
बम्बई

जवानी और शक्ति के लिए

मौसम की मनमानी का क्या भरोसा

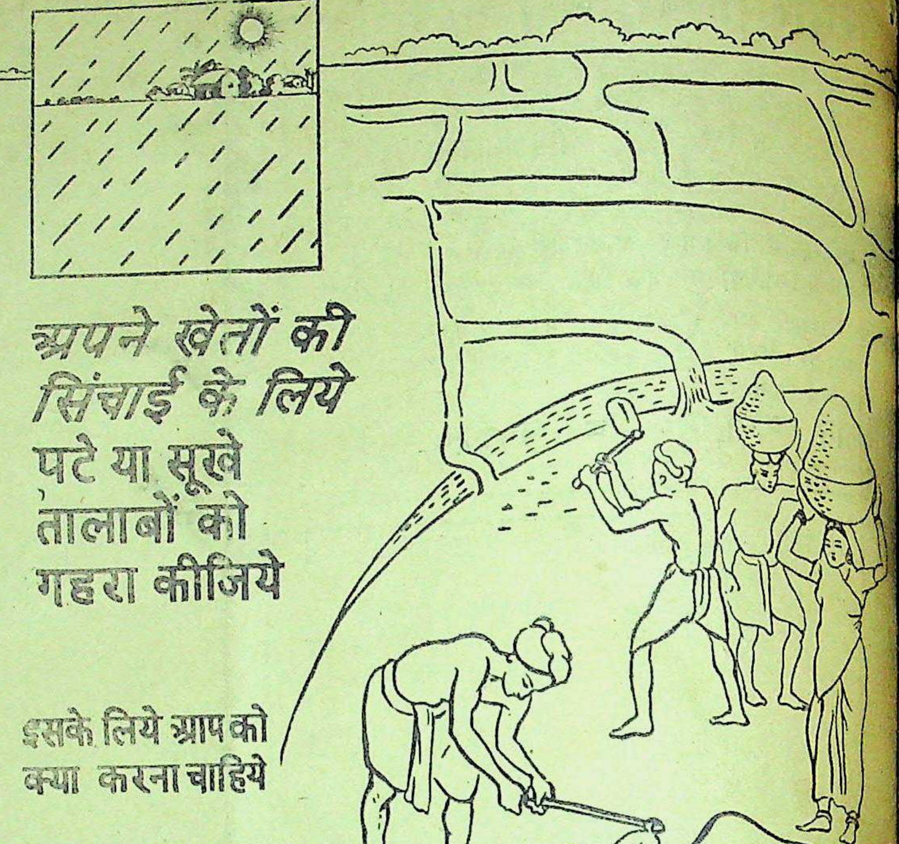

अपने खेतों की सिंचाई के लिये पटे या सूखे तालाबों को गहरा कीजिये

इसके लिये आप को क्या करना चाहिये

(क) अपने निकटवर्ती सुधार संघ को यह सूचित करें कि कौन कौन से तालाबों को गहरे करने की ज़रूरत है।

(ख) कृषि विभाग की इंजीनियरिंग शाखा के कर्मचारियों की सहायता से यह निश्चित करें कि तालाब कितना गहरा किया जाय और सिंचाई के
कहां रखे जाये।

(ग) अपने निकटवर्ती सुधार संघ या कांग्रेस कमेटी के नेतृत्व में काम का आयोजन कर के कार्यक्रम और काम शुरू करने का दिन भी निश्चित कर लें।

(घ) काम शुरू करने के लिये जो दिन निश्चित किया जाय उसकी घोषणा पहले से अपने और पास पड़ोस के गावों में
कर दीजिये। काम पूरी लगन के साथ शुरू करें और यथा शीघ्र समाप्त कर दें। हर हालत में यह काम बरसात
शुरू होने के पहले अवश्य समाप्त हो जाय, ताकि वर्षा का पूरा पूरा लाभ उठाया जा सके।

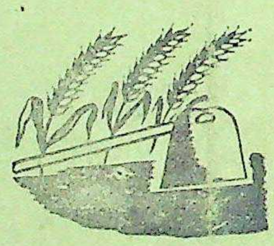

(ङ) तालाब की घास पात निकाल कर कम्पोस्ट के गड्ढों में जमा कर दें
उनका खाद के रूप में इस्तेमाल किया जा सके।

(च) पटे या सूखे तालाबों के ऊपर की खुदी हुई गीली मिट्टी खेतों में
दीजिये। यह मिट्टी खाद का काम करेगी।

(छ) तालाबों को खोदने से जो मिट्टी निकले उसे पानी निकलने के लिये
छोड़ कर, तालाब के किनारे जमा कर दें और उन पर पेड़ लगा दें।

संयुक्त प्रान्तीय सरकार के सूचना विभाग द्वारा प्रचारित

बालों को स्वस्थ और सुंदर रखता है
Vaseline POMADE

कोमलता से सुगंधित किया गया वेसलीन ब्लू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।
वेसलीन ब्लू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।

सभी दूकानों पर

Copyright.

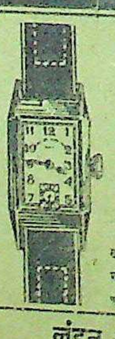
१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त

हमारे प्रसिद्ध काला तेल रजिस्टर्ड के सेवन करने से बाल हमेशा के
हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते
रोकता है, और उनको लम्बे, घुंघरवाले और चमकदार बनाता है।
जाते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज
सिर को ठण्डक पहुंचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी
पूरा कोरस की रियायती कीमत ६॥)। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए
साथ एक फैंसी म्यूट रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर है और एक
(लन्दन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ़्त भेजी जाती है।

जरूरी नोट :—माल पसन्द न होने पर कीमत शीघ्र वापस कर दी
[illegible] के खरीदार को डाक खर्च बिलकुल माफ़ और चार अंगूठी
घड़ियां बिलकुल मुफ़्त इनाम दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार-बार
आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ़ लिखें।

लंडन कमर्शियल कम्पनी, बाग रामानन्द [D.A.]
London Commercial Co, Bagh Ramanand [D.A.]

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, १८ पन्नालाल रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद

सचित्र
साप्ताहिक
ा)) : प्रति संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

, ६ जून, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 6th JUN, 1948

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

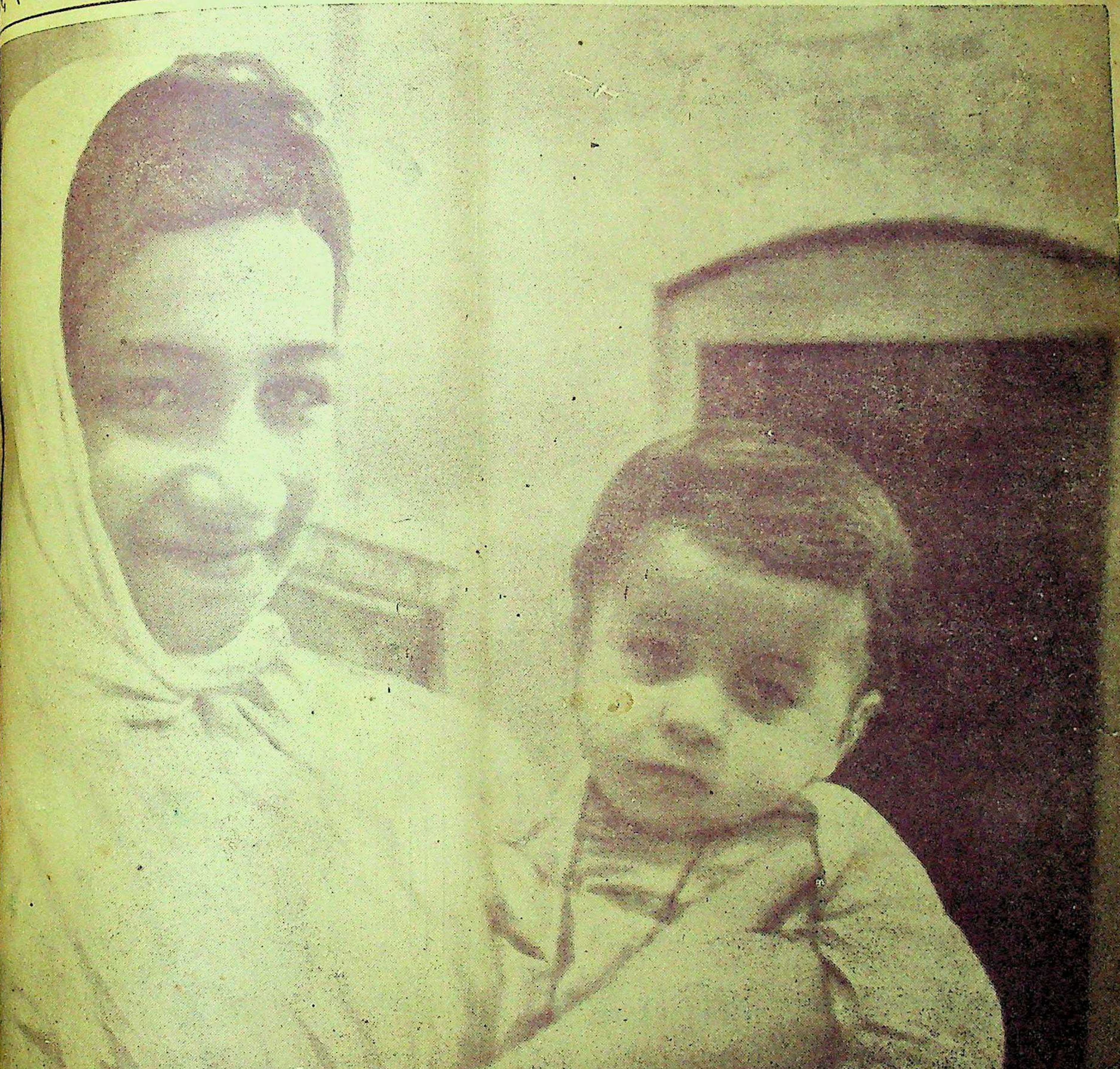

नेहरू और सरदार पटेल।
"किधर" जा रहा है?

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

फिलिस्तीन का राजनैतिक युद्ध
मातृ-मंदिर, रंगमंच और हास-परिहास

T. B. टी. बी. "तपेदिक" चाहे फेफड़ों का हो या अँतड़ियों का बड़ा भयंकर रोग है

(१) पहला स्टेज	(२) दूसरा स्टेज	(३) तीसरा स्टेज	(४) चौथा स्टेज	अंतिम स्टेज
मामूली ज्वर खाँसी	ज्वर-खाँसी की अधिकता	शरीर सूखना, ज्वर-खाँसी की भयंकरता	सब ही बातों की भयंकरता शरीर पर वर्म, दस्त आदि का शुरू होना	रोगी की मौत और भयंकर जर्मों का इधर-उधर फैलना
(जबरी)	(Jabri)	(जबरी)	(Jabri)	

T. B. टी. बी. "तपेदिक" और पुराने ज्वर के हताश रोगियो ! देखो—

श्री नागेश्वरप्रसाद तिवारी, मास्टर स्कूल नडुगावाँ, पो० डाल्टनगंज (बिहार) से लिखते हैं—मैं अनेक दिनों से ज्वर-खाँसी से बीमार था। बलगम आदि की परीक्षा पर "तपेदिक" (राज्यक्ष्मा) रोग ही साबित हुआ। मैं रोग का नाम सुनते ही बहुत घबड़ा गया इसी बीच परमात्मा की कृपा से आपकी अमृतरूपी दवा "जबरी" का नाम सुना। तुरन्त आर्डर देकर पार्सल प्राप्त किया। दवा को विधिपूर्वक सेवन किया। उसके अमृतरूपी गुणों ने मुझे आश्चर्य में डाल दिया। थोड़े ही दिनों में शरीर का रङ्ग ही बदल गया। ऐसा मालूम होने लगा, जैसे कुछ रोग ही न रहा, अधिक लिखना व्यर्थ है। यथार्थ में आपकी औषधि इस दुष्ट रोग के लिए अमृततुल्य है। जितनी भी प्रशंसा की जावे कम है।

(२) डा० टाकुरसिंह नेपाली मु० कटैया पो० हरलखी जिला दरभंगा से लिखते हैं। आपकी भेजी दवा "जबरी" बहुत ही लाभदायक प्रतीत हुई। कृपया लौटती डाक से पूरा कोर्स भेज दें।

इसी प्रकार के पहले भी दसों प्रशंसापत्र आप इन्हीं कालमों में देख चुके हैं। भारत के कोने-कोने में लोगों ने यह मान लिया है कि इस दुष्ट रोग से रोगी की जान बचानेवाली यदि कोई औषधि है तो वह एकमात्र "जबरी" ही है। "जबरी" के नाम में ही भारत के पूज्य ऋषियों के आत्मिक बल का कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि प्रथम दिन से ही इस दुष्ट रोग के जर्म नष्ट होना शुरू हो जाते हैं। यदि—आप इस तरफ से हताश हो चुके हों तो भी परमात्मा का नाम लेकर एक बार "जबरी" की परीक्षा करें। परीक्षार्थ ही हमने १० दिन का नमूना रख दिया है, जिसमें तसल्ली हो सके। बस—आज ही आर्डर दें। अन्यथा फिर वही कहावत होगी कि—अब पछताए क्या होत है—जब चिड़िया चुग गई खेत। सैकड़ों डाक्टर, हकीम, वैद्य अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार-द्वारा आर्डर देते हैं। हमारा तार का पता केवल "जबरी" जगाधरी (JABRI-JAGADHRI) काफी है। तार में अपना पूरा पता दें। मूल्य इस प्रकार है—जबरी स्पेशल नम्बर १ जिसमें साथ साथ ताकत बढ़ाने के लिए मोती, सोना, अभ्रक आदि मूल्यवान् भस्में भी पड़ती हैं। पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन २०) रु०। जबरी नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान् जड़ी-बूटियाँ हैं, पूरा कोर्स २०) रु०, नमूना १० दिन का ६) रु०, महसूल अलग है। आर्डर देते समय नं० १ या नं० २ तथा पत्र का हवाला जरूर दें।

पता—रायसाहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड बैंकर्स (D) 'जगाधरी' पूर्व पंजाब (E. P.)

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ

सम्पादक—श्री सोहनलाल द्विवे
प्राक्कथन—सर सर्वपल्ली राधाकृ

संस्कृति, हिन्दी, उर्दू, बंगला, रा ती, सिन्धी, मराठी, तामिल, मलयालम, कन्नड़, अँगरेजी और भाषाओं में महात्मा गांधी जी पर हुई सर्वोत्तम कविताओं का संग्रह—भाषा में अर्थ-सहित।

बड़ा आकार, सुन्दर छपाई, के अनेक चित्र। बढ़िया जिल्द। प्रशंसित।

सादी जिल्द ६॥) कपड़े की जिल्द

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लि०

[illegible]

आरो

१८९६

नीलगिरि ते

[illegible]

गो. सांठाकेकर बंधु

सुव्यवस्थित बालों में आप रौबिले दिखेंगे
Vaseline POMADE
CHESEBROUGH MFG. CO.

कोमलता से सुगंधित किया गया वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।

वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।

सभी दूकानों पर

Copyright:

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे **"वीर्य संजीवनसत"** ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमज़ोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ **"तिला मस्ताना"** की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५।=), डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

LUX
LUX TOILET SOAP

सुन्दरी **नजमा** अपनी त्वचा को सुन्दर बनाये रखने के लिये **लक्स टॉयलेट साबुन** का प्रयोग करती है

LTS. 182-111 HI

★फिल्मी अभिनेत्रियों का सौंदर्य साबुन

दे[illegible] में विज्ञापन दीजिए

देशदूत

१०, संख्या ३९] [रविवार, ६ जून, १९४८

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

प्रान्त की मुस्लिम लीग पार्टी किस्तान बनाने में अपना एड़ी- पसीना बहाकर कामयाब हुई है, वाद की आड़ में जनता पार्टी है। अपने राम की राय में लीगी बड़े चालाक उन्होंने देखा कि के नाम पर आज प्रांतों पर रही है, तो क्यों न जनता के घसीटा जाय। अब जनता नया रंग दिखाने जा रही है। के नेता श्री जहरूल हसन समाजवादी पार्टी के नेता न्द्रदेव से समझौते के लिए रहा है। जनता पार्टी बड़े समजवादी पार्टी ज्वाइन है। बात तो ठीक ही है आजकल कांग्रेस पार्टी के और जनता पार्टी कांग्रेस पार्टी दुश्मन है। इसलिए अगर दरों का मेल खुदा न खास्ता तो कोई अनहोनी घटना

*　　　*

देखा गया है कि समाज- समाजवादी दल में शामिल सरल काम हो गया है। बात वक्त कांग्रेस दल से बहुत हो गये हैं। असंतुष्टों की क्यों बढ़ गई है इसका भी। किसी को कांग्रेस टिकट पर क्ट बोर्ड में नेता बनने का मिला, किसी को मिनिस्टरों परमिट नहीं दिया है। किसी बाजार में चोर बाजारी करते हुए गया है, किसी को खद्दर के गांधी टोपी के नाम पर घूस पुलिस के हवाले कर दिया गया को नगर और शहर कांग्रेस में मौज मारने का अवसर नहीं, किसी को मिनिस्टरों और मेन्टरी सेक्रेटरियों ने लम्बे रकम नहीं दिलवाये हैं, किसी के चचा, और नातेदारों, रिश्तेदारों को नहीं दी हैं और किसी को सर- में नहीं रखा है। तब भला इतना बड़ा मजमा, इतना बड़ा करे और कहाँ जाय? उसके दो रास्ते हैं या तो वह सोशलिस्ट या कम्युनिस्ट। क्योंकि आजकल बनना बड़ा सरल और सहज हो गया है। खुदा का शुक्र है कि आचार्य नरेन्द्रदेव ऐसे विद्वान् और सुयोग नेता समाजवादी दल के लिए शहतीर का काम दे रहे हैं, नहीं तो यह समाजवादी दल और उसके साथ लगे-लिपटे स्वार्थियों का यह दल जाने कहाँ हवा हो जाता। लेकिन यह तो राजनीतिक क्षेत्र है यहाँ तो अखाड़ा कायम रखना चाहिये, कौन क्या है इसे कौन पूछता है।

*　　　*　　　*

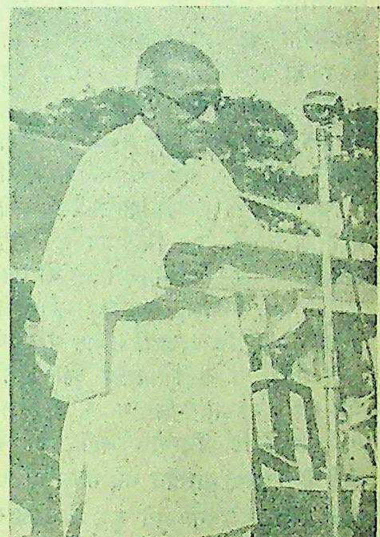

भारत के भारतीय वाइसराय माननीय श्री राजगोपालाचार्य।

संयुक्तप्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के सभापतित्व के चुनाव की रस्साकशी होनेवाली है। एक ओर शुद्ध गांधीवादी कहना यह चाहिये कि कांग्रेसी और दूसरी ओर प्रत्यक्ष में कांग्रेसी अप्रत्यक्ष में समाजवादी और भीतर से कुछ नहीं खींच-तान में लगे हैं। बीच में माननीय पुरुषोत्तमदास जी टंडन और सम्भावतः श्री रफी अहमद किदवई तमाशा देखने के लिये खड़े हैं। कौन जीतता है यह तो १३ जून के बाद मालूम हो ही जावेगा, लेकिन सच पूछिये तो यह जमाना है तिकड़मबाजों का, अवसरवादियों का, और यदि उनकी जीत, अन्त में होती है तो कोई नई बात नहीं। इस कलियुग में ऐसा ही होता है। गंगा का प्रवाह उलटा बहने लगता है। संसार में ऐसे समुदाय की वाहवाही होती है। अपने राम की राय में [illegible] टंडन जी इस पद के सर्वथा [illegible] उनका त्याग तो सबसे निर[illegible] माननीय पंत जी से कम वयोवृद्ध भी नहीं हैं। किन्तु [illegible] आने के बाद ही कुछ कहा जा सकेगा अभी नहीं।

*　　　*　　　*

हैदराबाद राज्य कांग्रेस के विभिन्न नेताओं ने पंडित नेहरू और सरदार पटेल को तार दिया है, कि यहाँ की बहुमत-प्राप्त जनता के जान-माल की रक्षा का अब कोई प्रबन्ध नहीं रह गया है। संगठित आक्रमण, हत्या, लूट-मार और आगजनी की घटनाएँ व्यापक रूप से बढ़ रही हैं। अपने राम की राय में इत्तहादुल मुसलमीन और उसके सरगना रिजवी अब चरम सीमा की ओर बढ़ रहे हैं। बात यह है कि रिजवी-मण्डली ने यह समझ लिया है कि यह कांग्रेसी सरकार इत्तहाद की इतनी भूखी है कि इत्तहाद के नाम पर कुछ भी किया जा सकता है। निजाम सरकार ऊपर से तो यह ढिंढोरा पीटती है कि रजाकारों के संगठन से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है, और समझौते की वार्ता के लिये वह दिल्ली तक दौड़-धूप भी लगाये हुए है लेकिन रजाकारों की उत्पत्ति निजाम साहब के घर से ही हुई है। यह कितने अचम्भे की बात है कि हैदराबाद की रियासत में रजाकार लूट-मार मचा रहे हैं और निजाम सरकार एलान करती है कि रजाकारों से उसका कोई सम्बन्ध ही नहीं। चिराग के तले अँधेरा इसी को कहते हैं। देखना है पंडित नेहरू पर निजामी प्रतिक्रिया का क्या प्रभाव पड़ता है। सरदार वल्लभभाई पटेल तो इस समय बीमार पड़े हैं, इस वक्त बागडोर पंडित नेहरू और मौलाना आजाद के हाथों में ही है। देखना है निजाम साहब से अभी कितने दिनों तक प्रेमालाभ होता रहता है। खुदा हाफिज।

*　　　*　　　*

भारत-सरकार ने प्रान्तीय सरकारों को यह आदेश दिया है कि यदि १५ जून तक कपड़े के व्यापारियों ने कपड़े के मूल्य में कमी न की तो उचित कार्रवाई की जावेगी। अपने राम की समझ में यही क्या कम है, कि कपड़े के बेचनेवालों और व्यापारियों को दो-तीन हफ्ते का समय मिल गया। जब से कन्ट्रोल उठा है तब से उन्होंने गरीब जनता का लम्बा चौड़ा शोषण किया। अब इस दो-तीन हफ्ते में शोषण के सिवाय अपने काले कारनामों को ढकने का भी प्रबन्ध कर लेंगे। पन्द्रह दिन के बाद जैसी स्थिति उत्पन्न होगी उसी के अनुसार फिर चाल चलने लगेंगे। बात यह है कि लड़ाई के समय से जब से कपड़े और वस्तुओं पर कन्ट्रोल लगा तब से यहाँ का छोटा से छोटा व्यापारी बड़ा ही अवसरवादी और समय के अनुसार केंचुल बदलना सीख गया। दूसरे अर्थ में इसको यों कहा जा सकता है कि वह चोरबाजारी में इतना बेहया और लतमरुआ हो गया है कि सरकार चाहे जितने ही आर्डर निकाला करे उनके कान पर जूँ न रेंगेगी। सरकार का काम आदेश जारी करना है और उनका काम चोरबाजारी करना। सरकार की सत्ता को यह समुदाय खूब समझता है। सरकार बहुत ज्यादा गड़बड़ घोटाला करेगी तो यह चोरबाजारवाले व्यापारी और मिल-मालिक समाजवादी या कम्युनिस्ट बन जावेंगे। क्योंकि इन दलों को भी तो पैसे की जरूरत है इन्हें तो कहीं देना चाहिये कांग्रेसी न सही तो सोशलिस्ट और कम्युनिस्ट ही सही। देखना है कि भारत-सरकार के आदेशों का पालन किस सीमा तक कियाजाता है।

आम बौरा !

लेखक, श्री नरेन्द्र शर्मा एम० ए०

आम बौरा !
बन गया मन मत्त भौंरा !
आम बौरा !
घूम-फिरकर चेतना
फिर फिर सुरभि को भेंटती है !
नियत-क्रम-व्यापार की
तसवीर छिन में मेंट दी है !
सुरभि सुधि बन गई, ओढ़े
इन्द्रधनु-रंजित पिछौरा !
आम बौरा !
फिर समेटे सात रँग,
मधुअंगना उर में समाई !
ज्यों कुहर में किरन, वह
गत कल्पना-सी दी दिखाई !
अतल अंतर में धँसी मणि-सी
सरल सुकुमार गौरा !
आम बौरा !

*　　　*　　　*

कांग्रेस के भूतपूर्व सभापति आचार्य कृपलानी ने कहा है कि स्वराज्य मिल जाने के बाद भी जनता के खाने और कपड़े की समस्या हल नहीं हुई है। कांग्रेसजन भी केवल शान और शासनसत्ता के पीछे दौड़ रहे हैं। अपने राम की समझ में आचार्य कृपलानी ने कही तो बड़े पते की बात है, लेकिन प्रश्न तो यह है कि आखिर कांग्रेसजन करें क्या? इस समय आवश्यकता है घर भरने की। अब तक तो अँगरेजी-शासन था जेलखाने का दरवाजा खुला था किन्तु अब स्वराज्य मिला है। और विशेषकर जब अपनी सरकार है तो फिर भय किसका। जो भी करना है सब कुछ कर लेना चाहिये अगर कहीं अँगरेज-शासन फिर आ गया तो ऐसा सुनहला अवसर हाथ से जाता रहेगा। सच पूछा जाय तो आजकल के कांग्रेस-जन सचमुच अपने लिए रचनात्मक कार्यक्रम की पूर्ति में लगे हैं। इस समय यशोलिप्सा, पदलोलुपता, और पैसे की भूख इतनी अधिक बढ़ गई हैं कि उसके आगे आचार्य कृपलानी के आदर्शवाद को कौन पूछेगा। आचार्य कृपलानी महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम का उपदेश देते जायँ, और शासन-सत्ता और शान के भूखे कांग्रेस-जन अपने लिए रचनात्मक कार्यक्रम की पूर्ति करते जायँ यही आज का समय पुकार-पुकार कर कह रहा है।

*　　　*　　　*

सम्पादक का पृष्ठ

हैदराबाद !

निजाम हैदराबाद की राजनीतिक उलझन सुलझ नहीं रही है। वार्ता अभी बराबर जारी है। एक ओर निजाम सरकार और उसके अधिकारी भारत-सरकार से समझौते के लिए वार्ता जारी किये हुए हैं और दूसरी ओर रियासती रजाकार अत्याचार की सीमा का उल्लंघन करते चले जा रहे हैं। वार्ता करते करते निजाम सरकार की नाक के नीचे एक ऐसा साम्प्रदायिक संगठन तैयार हो गया है जो राज्य में अशांति, लूटमार, अत्याचार करके बहुमतप्राप्त जनता को आतंकित कर रहा है। हम नहीं समझते कि निजाम सरकार ने इत्तिहादुल मुसलमीन के संगठन को इस प्रकार शक्तिशाली बनाने के लिए क्यों तरह दी, इसमें क्या रहस्य है? और दूसरी ओर भारत-सरकार से समझौता भी करने के लिए वह उत्सुकसा दिखाता जा रहा है। फिर भी परिणाम कुछ भी नहीं दिखाई देता। आखिर निजाम सरकार इस प्रकार की कूटनीतिक चाल क्यों चल रही है? क्या हम इसका अर्थ यह लगा सकते हैं कि निजाम किसी उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा में है, इस समय वह भारत-सरकार से संघर्ष में नहीं आना चाहता। इसके विपरीत वह अपनी आन्तरिक सुरक्षा की ओर विशेष प्रयत्नशील है। इस प्रकार की द्वैध नीति को देखते हुए समझ में नहीं आता कि हैदराबाद की राजनीतिक समस्या निकट भविष्य में कैसे सुलझ सकेगी?

हमने पहले भी कई बार लिखा है कि अँगरेजों ने जिस वक्त भारत का बंटवारा किया उसी समय उन्होंने हैदराबाद और काश्मीर की उलझन का बीजारोपण कर दिया था, वही आज फूलता-फलता दिखाई दे रहा है। काश्मीर की समस्या तो बहुत आगे बढ़ चुकी है, यहाँ तक की संसार के राष्ट्रों में शांति-स्थापना का ठेका लेनेवाली सुरक्षा-परिषद् भी उसकी उलझन को सुलझाने में सफलता नहीं प्राप्त कर रही है एक ओर काश्मीर में पाकिस्तानी आक्रमण का भारत-सरकार प्रत्युत्तर दे रही है, दूसरी ओर सुरक्षा-परिषद् अपने ढङ्ग से वहाँ की समस्या सुलझाने का नाटक रच रही है। इस प्रकार काश्मीर के प्रश्न के हल की भी कोई सूरत नहीं दिखाई दे रही है। हैदराबाद की उलझन भी काश्मीर की ही भाँति है, वहाँ भी पाकिस्तान के स्थान पर रजाकारों के नवीन संगठन को स्थान दिया गया है। साथ ही भारत-सरकार से समझौते की वर्ता भी चल रही है। यदि यही क्रम जारी रहा है, और किसी प्रकार का समझौता न हुआ तो अंतिम समय में सुरक्षा-परिषद् का दरवाजा लटखटाया जायेगा। ऐसा अनुमान होता है। सुरक्षा-परिषद् में काश्मीर के जोड़ का हैदराबादी नाटक का अभिनय प्रारम्भ होगा। किन्तु इसके लिए अभी समय की प्रतीक्षा है। हम नहीं समझते कि भारत-सरकार में जहाँ बड़े से बड़े कूटनीतिज्ञ मौजूद हैं, हैदराबाद की भावी परिस्थिति से अपरिचित हों। लेकिन कहा जाता है कि भारत-सरकार इस समय कछुए की चाल चल रही है। जिसका फल अंततोगत्वा अच्छा ही होगा।

जो कुछ भी हो किन्तु भारत-सरकार को अब अंतिम निर्णय दे ही देना चाहिए। हैदराबाद और भारत-सरकार के बीच जितने दिनों से वार्ता चल रही है, उस बीच में कई बार हैदराबादी मंत्रिमंडल में उलट-फेर हुए और वार्ताएँ भी नये सिरे से प्रारम्भ हुईं? आखिर कब तक इस प्रकार की गपड़चौथ चलती रहेगी? कब तक हैदराबाद को समझौते के लिए वार्ता का अवसर दिया जाता रहेगा? वार्ता के लिये अवसर देना न्याय-संगत और उचित ही है किन्तु जब विरोधी पक्ष वार्ता में सचाई के साथ योग देता हो तब तो? निजाम हैदराबाद की ओर से सचाई की कमी है। फिर पूरब और पश्चिम के मेल की घड़ी कब प्राप्त होगी, इसे तो विधि ही समझ सकता है। इसलिये भारत-सरकार के लिये अब यह आवश्यक है वह अपने सम्मान की रक्षा करे, अपना अंतिम निर्णय देकर तदनुसार कार्यवाही करे, इसीमें जनतंत्र का हित निहित है। हैदराबादी कूटनीति के तथा उसके दाँव-पेंच के इन्द्रजाल में पड़कर कब तक तरह देती रहेगी? देशी राज्यों के सम्बन्ध में जब एक नीति अपना ली गई तो उसी के अनुसार तुरन्त आचरण करना चाहिए। भारत-सरकार जितना ही तरह देती जायेगी और हैदराबादी अवसरवादिता का शिकार होती जायेगी, उतना ही प्रश्न और जटिल होता जायेगा साथ ही वह अपनी सुरक्षा के लिये शक्ति संचित करता जायेगा। भारत के बड़े बड़े देशी राज्य इस समय भारतीय संघ के अन्तर्गत हैं और उन्होंने सामूहिक संगठन द्वारा जनतंत्र के इतिहास में एक नवीन दिशा की ओर प्रयाण किया है, फिर हैदराबाद के कौन सा सुरखाब का पर लगा है कि उसके लिये किसी प्रकार की ढिलाई की जाये। भारत-सरकार को हैदराबाद को संघ के राष्ट्रीय झंडे के नीचे लाने के लिये शक्तिशाली और दृढ़ कदम उठाना चाहिए। साथ ही हम भारत-सरकार का ध्यान विशेष परिस्थिति के मुकाबले के लिये भी आकर्षित करना चाहते हैं। हो सकता है कि हैदराबाद से अन्त में भारत सरकार को लोहा ही लेना पड़े, इसलिये लोहा लेने के पूर्व बंगाल और पंजाब में भारत और पाकिस्तान की सीमा की रक्षा की और भी दृढ़ता से मोर्चेबंदी कर लेना चाहिए, साथ ही भारत में निवास करनेवाले 'पंचमांगी दल' पर भी जो राष्ट्रीय होने का दावा करता हुआ उपयुक्त अवसर की ताक में बैठा है, पूरी निगरानी रखने का प्रबन्ध कर लेना चाहिए। क्योंकि, हैदराबादी काण्ड की प्रतिक्रया—ईश्वर करे ऐसा अवसर न आवे—बड़ी भयानक हो सकती है और राष्ट्र की रक्षा के लिये पहले से सचेत और तैयार रहना बुद्धिमत्ता का कार्य है।

* * *

मध्यभारत-संघ

भारतवर्ष को आजादी मिलने के बाद भारतीय नेताओं के सामने देशी रियासतों के प्रबन्ध का प्रश्न अधिक गम्भीर रहा है। १५ अगस्त सन् १९४७ तक देश में ६०० रियासतें थीं। इनमें से अधिकांश रियासतें प्रान्तीय शासन के अन्तर्गत भी गईं, और कुछ रियासतों ने मिलकर अपना स्वतंत्र संगठन भी निर्माण किया है। इन रियासतों के संगठन में 'मध्य भारत संघ' प्रमुख है। इस संघ का उद्घाटन गत सप्ताह भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने किया। मध्य-भारत-संघ के क्षेत्र की जनसंख्या ७०,००,००० है, क्षेत्रफल ४७ वर्गमील और लगान ८ करोड़ है। मध्यभारत का प्राचीन इतिहास उज्ज्वल और गौरवमय है। प्राचीन काल में उज्जैन को धार्मिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक, केन्द्र होने का गौरव प्राप्त था। गुप्त-साम्राज्य जैसे विशाल युग में उज्जैन को राजधानी होने का भी सौभाग्य प्राप्त हो चुका है।

'मध्यभारत-संघ, का निर्माण सरदार वल्लभभाई पटेल की बुद्धिमत्ता, और दूरदर्शिता का प्रतीक है। अँगरेज तो सदैव ही शासन की बंदरबांट-शैली पर विश्वास करते थे, इसी कारण उनके समय में रियासतों की संख्या ६०० थी। जो देश रियासतों के रूप में असंख्य भागों में विभाजित हो उसकी शक्ति दृढ़ कभी नहीं हो सकती, यह निर्विवाद है। इसी दृष्टि से सरदार पटेल ने रियासतों को एक सूत्र में बँधने के लिए विभिन्न नरेशों से विचार-विमर्श किया, जहाँ सम्भव था स्वयं मिले और कहीं कहीं विशेष व्यक्ति भी भेजे गये। राजनीति-विभाग के सिविल-सर्विसवालों को विश्वास नहीं था कि कोई भी रियासत भारतीय संघ में सम्मिलित होगी। लेकिन इतना होते हुए भी सरदार पटेल ने रियासत के बीच से दुरभमान दूर करके उन्हें भारतीय संघ का अंग बना लिया। भारतवर्ष के इस नूतन चित्र के लिए हम माननीय सरदार पटेल को बधाई देते हैं।

भारत की अधिकांश रियासतें जो निरंकुश अपने शासन के लिए प्रसिद्ध थीं, उनको मुँह की खानी पड़ी। उन्हें भी भारतीय संघ के अन्तर्गत आकर अपनी गलती ठीक करनी पड़ी। सौभाग्यवश अँगरेजों के जाने के बाद रियासतों ने अपनी गलतियाँ स्वीकार कर लीं। अब वह द्वैध शासन नीति पर भी विश्वास नहीं रखतीं। मध्य-भारत-संघ के उद्घाटन के अवसर पर महाराजा ग्वालियर का भाषण इसकी पुष्टि करता है। उन्होंने स्पष्ट कहा है कि देश की भलाई के लिए हमें अपनी सम्पूर्ण शक्ति बिना किसी हिचक के लगानी चाहिए। मध्य-भारत-संघ का शासन-प्रबन्ध भी महाराजा के भाषण को अत्यधिक स्पष्ट करता है। मध्यभारत की जनता के लिए यह संगठन लाभदायक प्रमाणित होगा।

इस समय हैदराबाद का कुचक्र देश के साफ खून में जहर मिला रहा है। भारतीय सरकार का कर्तव्य है कि वह है राबाद को जिस प्रकार भी सम्भव हो पर ले आवे और देशी राज्यों पर वाले कलंक को धो देने के लिए सर हो।

* * *

जनरल स्मट्स की हार

दक्षिण अफ्रीका के प्रधान मंत्री जाति के परम हितैषी जनरल स्मट्स पार्टी को पार्लियामेन्ट के चुनाव में लता नहीं मिली, यहाँ तक कि स्वयं प्र मंत्री महोदय को भी अपना स्थान छो पड़ा। जनरल स्मट्स के पिछले कारनामों हमें विश्वास था कि वे विजयी हों ब्रिटेन और अमेरिका भी उनके अनुभ का लोहा मानते हैं। १९४२ से महायु में जब जनरल स्मट्स विलायत में थे अँगरेजों ने कहा था कि हमें ऐसे व्यक्ति युद्ध के लिये बहुत कुछ प्राप्त होग इसमें सन्देह नहीं कि जनरल स्मट्स उस समय जो संदेश अँगरेजों को दि था अब वह एक ऐतिहासिक तत्व की हो गई है। जनरल स्मट्स ने कहा था ईमानदारी और लगन से काम करने प्रवृत्ति ही सम्भवतः राष्ट्रीय और अ राष्ट्रीय सुधार योजनाओं का मूल आ है। इस संदेश ने युद्ध में लगे देशों एक चेतना दी थी। अभाग्यवश जनरल स्मट्स के उन्हीं आदर्शों नहीं हो पा रहा है क्योंकि स्वयं अब जो कुछ कहते हैं, लगन हिटलर के विचार से आर्य और यहूदी नहीं रह सकते और जनरल स्मट्स विचार से भी योरोपीय तथा अन्य देशों निवासी साथ-साथ नहीं रह सकते। राष्ट्र अमेरिका ने भारतवर्ष का उदा देकर जनरल स्मट्स से प्रार्थना की आने इस आदर्श को वापस लें। स्मट्स ने इसे स्वीकार नहीं किया वह अपनी पुरानी लीक पीटते रहे।

इन समस्त परिस्थितियों के होते हुए हमें विश्वास नहीं होता कि जनरल की पराजय से भारतीयों और अफ्री निवासियों को तनिक भी संतोष सकेगा। इसका कारण यह है कि मैलन जिनकी विजय हुई है सीमा तक जनरल स्मट्स से अधिक युक्त व्यक्ति नहीं हैं। डाक्टर मैलन तीयों और अफ्रीका-निवासियों के कारों अवहेलना सम्भवतः जनरल से भी अधिक करेंगे। पेरिस के महायुद्ध में डाक्टर मैलन ने उगला वह हिटलर के अनुकूल और वता के विरुद्ध था।

इस प्रकार जो दल इस समय शाली है उससे भविष्य की आशाएं नहीं हैं। डाक्टर मैलन ने तक ब्रिटिश साम्राज्य के सर्वत्र में कहा। जो कुछ भी हो हमें जनरल की हार से संतोष तो हुआ है किन्तु मैलन की विजय से घोर निरा हुई है।

विशेष रूप से 'देशदूत' के लिए लिखित

नेहरू और पटेल

भारतीय संघ के राष्ट्रीय नेतृत्व के दो शक्तिशाली स्तंभ

लेखक, डाक्टर बालकृष्ण केसकर पी० एच० डी०

(भूतपूर्व प्रधान मंत्री, अ० भा० कांग्रेस कमेटी)

पंडित जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभभाई पटेल भारतीय संघ के नेतृत्व के दो महान् स्तंभ हैं। दोनों नेता पारस्परिक सहयोग से राष्ट्रीय समस्या को सुलझाते हुए स्वतंत्र भारत को एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाने में प्रयत्नशील हैं। सुप्रसिद्ध समाजवादी विद्वान् और नेता डाक्टर केसकर ने इस लेख में दोनों नेताओं की राष्ट्र-सेवा, व्यक्तित्व तथा सफल नेतृत्व का बड़ा सजीव और सुंदर चित्रण किया है। लेख विशेष रूप से पठनीय तथा ज्ञानवर्द्धक और सामयिक है।

नेहरू-पटेल-धुरी प्रत्येक दृष्टिकोण से एक आश्चर्यजनक संगठन है। यह दो विरोधी तत्त्वों का एक मिश्रण है, जो परस्पर एक दूसरे की क्षतिपूर्ति है। पंडित नेहरू जन्मजात एक रईस हैं। वे एक धनी तथा बुद्धिजीवी परिवार के हैं। बचपन से ही उनका पालन-पोषण इँगलैंड में हुआ इसलिए अधिकतर जीवन पर उनका दृष्टिकोण पश्चात्य ढंग का है। बौद्धिक रूप से तो वे समाजवाद के प्रशंसक तथा समर्थक हैं, किन्तु स्वभावतः अपने निजी और सामाजिक जीवन में वे सर से पैर तक एक रईस हैं। दूसरे राजनीतिज्ञों की तरह नेतृत्व की मंज़िल तक पहुँचने के लिये उनको कोई संघर्ष नहीं करना पड़ा। अपने राजनैतिक जीवन के आरम्भ काल से ही, वे अपने पिता और गांधी जी का समर्थन पाकर नेता बन गये थे।

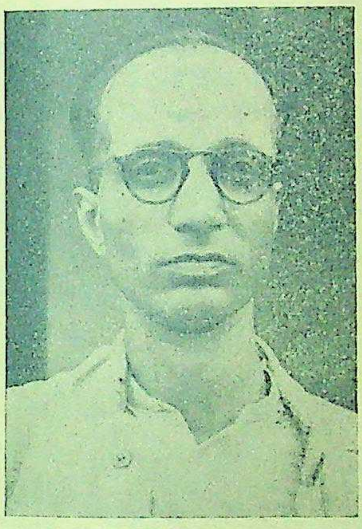

इस लेख के लेखक डाक्टर केसकर।

जवाहरलाल जी ने अपने महान् गुणों द्वारा अपने आपको उनके समर्थन के योग्य सिद्ध किया। उनका स्वभाव एक सीमा तक अत्यन्त उदार है। उनका व्यक्तित्व आकर्षक और प्रभावशाली है। उनका सांस्कृतिक धरातल ऊँचा है। उन्हें कविता से बहुत प्रेम है तथा वे स्वयं एक उच्च कोटि के साहित्यिक हैं। उनको कूटनीति और राजनीतिक दाँव-पेंचों में कोई दिलचस्पी नहीं है, वे हृदय से आदर्शवादी हैं। उनकी बीस वर्षों से अबाध चली आनेवाली लोकप्रियता ने उनके लिए जन-समूह का प्रेम प्राप्त किया है, और वे उमड़ती

सरदार वल्लभभाई पटेल।

हुई अपार भीड़ और उसके अभिनन्दन पर प्रसन्न भी होते हैं।

सरदार पटेल का जन्म एक कठिन परिश्रम करनेवाले मितव्ययी किसान के परिवार में हुआ। गुजरात में उनके जन्म-स्थान के आसपास रहनेवाले बड़े सांसारिक तथा कठोर स्वभाववाले होते हैं। सरदार पटेल भी इसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। वह और उनके भाई विट्ठलभाई हमेशा ही संघर्षों में प्रमुख भाग लेते आये हैं। अपने भाषणों में वे खरी बात कहने से कभी नहीं चूकते, उनका दृष्टिकोण भी सर्वथा भारतीय है वे एक महान् योद्धा तथा संगठनकर्ता हैं। राजनीतिक दाँव-पेचों से उनको विशेष प्रेम है और दलबन्दी की कला में भी वे अद्वितीय हैं। यदि कोई व्यक्ति राजनैतिक दृष्टि से सरदार के काम में असुविधाजनक है तो फिर उसकी खैर, नहीं। वे एक महान् पथप्रदर्शक हैं तथा भीषण समस्याओं को वे सहज में ही सुलझा लेते हैं। उनकी व्यावहारिक बुद्धि, संकट के इन दिनों में देश के लिए एक अमूल्य निधि सिद्ध हुई है। उनकी इच्छा शक्ति लौहिक है। उनको भारत का बिस्मार्क कहा जा सकता है। उनका व्यक्तित्व कठोर तथा आतङ्कित करनेवाला है यद्यपि उनके निकट जाने पर सभी उनके गुणों पर मुग्ध हो जाते हैं। वे गम्भीर स्वभाव के हैं, भावुकता तो उनमें लेशमात्र भी नहीं है। समाजवाद और समाजवादियों से उन्हें चिढ़ है।

पण्डित नेहरू उस नक्षत्र की तरह हैं जो आसमान में अकेला ही चमकता है। उन्होंने अपने आपको सदैव कांग्रेस के पार्टी (दलगत) के ऊपर रखने का प्रयत्न किया है। अब तो उनकी यह आदत-सी बन गई है। उनको राजनैतिक शिक्षा ही इस प्रकार की मिली कि उन्हें पार्टी कूटनीति और दाँव-पेंच से अत्यन्त अरुचि है। हर समय प्रशंसकों और समर्थकों से घिरा रहना उन्हें रुचता नहीं; इसको वे अपनी मर्यादा के विरुद्ध समझते हैं। अपने उत्थान और पतन में वे सर्वथा एकाकी हैं। अपनी पार्टी के वे अकेले ही एक सदस्य हैं।

दूसरी ओर सरदार पटेल जन्म से ही एक पार्टी-निर्माता हैं। यह उनके लिए बिलकुल स्वाभाविक है। उन्होंने कठिन संगठन कार्य तथा कुशाग्र बुद्धि के द्वारा ही इतनी ख्याति संचित की है। उन्होंने

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

क्षण भर के परिचय में

लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस्-सी०, एल्-एल० बी०

क्षण भर के परिचय में—आकाश हँसा, रंगीन दिशाएँ बोल उठीं।

क्षण भर कोकिल कूकी वन में,
कलियाँ चहकीं, गुन्चे महके,
मलयानिल ने की मनमानी
मधुपों के मन बहके, बहके।
क्षण भर के परिचय में—वन-फूल हँसा, मधुऋतु-गलियाँ दृग खोल उठीं।

क्षण भर चपला च की घन में
केकी नाचा, केकिनि गाई।
रिमझिम पर सावन थिरक उठा
तरु लिपटी लतिका बल खाई।
क्षण भर के परिचय में—सावन बिहँसा, मधु भरी घटाएँ डोल उठीं।

क्षण भर तुमने मुझको देखा
मन फूल हँसा, तन भूल उठा।
संध्या हँस दी, रजनी मधु की
प्राची का मृदुल दुकूल उठा।
क्षण भर के परिचय में—आशाएँ मचलीं, अभिलाषाएँ डोल उठीं।

क्षण भर, ऊषा चमकी नभ में
भूतल पर बरसी सिन्दूरी।
कंचन-सी काया चमक उठी
कलियों में छलकी अंगूरी।
क्षण भर के परिचय में—आकाश हँसा, रंगीन दिशाएँ बोल उठीं।

फिलिस्तीन का कूटनीतिक युद्ध

क्या अमरीका और सोवियट रूस पुनः संसार की शांति के लिए घातक बन रहे हैं ?

लेखक, श्री राधानाथ चतुर्वेदी

जरूसलम का नेता ग्रांड मुफ्ती।

फिलिस्तीन का युद्ध चल रहा है। सुरक्षा परिषद् योरोप में शांति-स्थापना के नाम पर प्रस्ताव स्वीकृत करती जा रही है; किन्तु क्या फिलिस्तीन का युद्ध समाप्त होगा ? क्योंकि यह साम्राज्यवादी राष्ट्रों का कूटनीतिक युद्ध है। इस लेख में लेखक ने इसी कूटनीतिक युद्ध की कई दृष्टियों से परीक्षा की है, जो पाठनीय तथा सामयिक है।

फिलिस्तीन का युद्ध संसार की दो महान् शक्तियों का कूटनीतिक युद्ध है। ब्रिटेन भी अवसर देखकर बढ़ रहा है। क्या इन कूटनीतिज्ञों की कूटनीति संसार की शांति को पुनः भंग करनेवाली तो न प्रमाणित होगी ?

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीत के कूटनीतिक शतरंज के दो खिलाड़ी दल—अमरीका और सोवियट रूस मानवता को आश्वस्त करते हैं। वह कहते हैं—"हम विश्व-शान्ति स्थापित करेंगे। लोकतंत्र की विजय करायेंगे। ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करेंगे, जिनमें इस नीले आकाश के निवासी समानता, भ्रातृत्व की भावना से परिपूर्ण वातावरण में जीवन व्यतीत कर सकें।" किन्तु क्या दोनों दल ऐसा ही कर रहे हैं ? दोनों के हृदय स्वच्छ हैं ?

* * *

१५ मई को फिलिस्तीन का ब्रिटिश संरक्षणाधिकार समाप्त हुआ। दूसरे ही दिन या उसी दिन पांच अरब राष्ट्रों ने फिलिस्तीन पर हमले आरम्भ कर दिए। इन घटनाओं के ठीक ११ दिन पूर्व गत ४ मई को वेंडेल स्मिथ-मोलोटोव पत्र-व्यवहार आरम्भ हुआ। मास्को ने अमेरिका के सोवियतस्थित राजदूत श्री वेंडेल स्मिथ के पत्र का हवाला देते हुए एक घोषणा प्रकाशित की। घोषणा में कहा गया था—"सोवियत रूस अमेरिका की सरकार से अपने मतभेदों को निपटाने के लिए वार्ता-हेतु प्रस्तुत है।"

* * *

अमेरिका के सोवियत रूस स्थित राजदूत श्री वेंडेल स्मिथ ने गत ४ मई को रूस के विदेश मंत्री मोशिए मोलोटोव को एक पत्र में लिखा—"अमेरिकन जनता और सरकार" दोनों देशों के (रूस व अमेरिका) बिगड़ते हुए सम्बन्धों के कारण "अत्यन्त निराशा उत्पन्न कर रही है। अमेरिका का दरवाजा पारस्परिक मत-भेदों को दूर करने के लिए पारस्परिक वार्तालाप के लिए सदैव खुला है।" इस पत्र का उत्तर देते हुए रूस के परराष्ट्र-सचिव मोशिए मोलोटोव ने उत्तर दिया—"संयुक्तराष्ट्र अमेरिका की सरकार की इस इच्छा के प्रति कि दोनों देशों के पारस्परिक सम्बन्ध सुधरें, सोवियत-सरकार अपनी स्वीकारात्मक नीति की घोषणा करती है और इस बात पर राजी है कि दोनों देश अपने पारस्परिक मत-भेदों को वार्ता-द्वारा दूर कर लें।" श्री वेंडेल स्मिथ ने अपने पत्र में रूस पर अनेक आरोप भी लगाए थे और मोशिए मोलोटोव के पत्र में उनका प्रत्युत्तर दिया गया था। अमेरिका की इस आशंका का; कि सोवियत रूस अपना प्रभाव-क्षेत्र व्यापक बना रहा है; खण्डन किया गया था और प्रत्युत्तर में सोवियत ने अमेरिका पर आरोप लगाया था कि वह अनावश्यक सैनिक तैयारियां कर रहा है। पत्र-व्यवहार में वार्ता का कोई निश्चित आधार या रूप-रेखा प्रस्तुत नहीं की गई थी।

* * *

मत-भेदों को निपटाने का प्रस्ताव अमेरिका ने उपस्थित किया था। रूस ने उसे स्वीकार कर लिया। स्वीकारोक्ति की घोषणा के १२ घण्टों के अन्दर वाशिंगटन ने अपना प्रस्ताव वापस ले लिया। जार्ज मार्शल—अमेरिका के विदेश मंत्री ने—एक पत्रकार सम्मेलन में घोषणा की कि वह रूस के साथ वार्ताहेतु प्रस्तुत नहीं है।

जार्ज मार्शल द्वारा पत्रकार-सम्मेलन में वार्ताहेतु अमेरिका की प्रस्तुत न होने की घोषणा से अमेरिका के राजनीतिक अंचल अत्यन्त रुष्ट हो गये। पत्रों ने जार्ज मार्शल की अत्यन्त कड़ी आलोचनाएँ कीं। एक अमेरिकन पत्रकार गुंथरस्टीन ने न्यूयार्क के एक पत्र का मत उद्धृत करते हुए लिखा—"जार्ज मार्शल की अस्वीकृति ने यह स्पष्ट कर दिया है कि रूस के सामने अमेरिका को कूटनीति के अखाड़े में गहरी पराजय खानी पड़ी है।"

* * *

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री एटली और वैदेशिक मंत्री बेविन फिलिस्तीन के युद्ध से प्रसन्न हैं।

प्रेसीडेंट ट्रूमैन ने एक वक्तव्य में बतलाया—"हमने रूस के साथ सुन्दर और उचित सम्बन्धों की जो मांग की है उसका यह तात्पर्य नहीं है कि अमेरिका की विदेश-नीति में कोई क्रांतिकारी परिवर्तन होनेवाला है।" प्रेसीडेंट ट्रूमैन के वक्तव्य से स्पष्ट है कि यह स्पष्टीकरण उन्हें शीघ्रातिशीघ्र इसलिए प्रकाशित करना पड़ा कि रूस से समझौते की बातचीत कहीं अन्य राष्ट्रों में भ्रम उत्पन्न न कर दे। भ्रम उत्पन्न होना स्वाभाविक था, क्योंकि गत मार्च मास की ही फिलिस्तीन-नीति-सम्बन्धी घोषणा जनता के सामने थी। यह घोषणा पुष्टि-प्रमाण का कार्य कर सकती थी।

* * *

इस बीच में तृतीयदलीय अमेरिकन राष्ट्रपतित्व के उम्मीदवार श्री हेनरी वालेस ने मार्शल स्टालिन को एक खुला पत्र भेजा। इस पत्र में अमेरिका के भूतपूर्व उपराष्ट्रपति तथा स्वर्गीय प्रे० रूजवेल्ट के सहयोगी श्री वालेस ने रूस-अमेरिका की पारस्परिक वार्ता के लिए एक षट्‌अंगीय रूपरेखा आधार-हेतु प्रस्तुत की थी। श्री वालेस की षट्‌अंगीय योजना के शीर्षक थे (१) शस्त्रास्त्र-निर्माण कटौती की जाय, (२) आणविक शस्त्रास्त्रों पर प्रतिबन्ध लगाये जायँ, (३) जर्मनी और जापान से शांति-संधियाँ हों, (४) जो जो राष्ट्र संयुक्तराष्ट्र संघ के सदस्य हैं वहाँ कोई भी देश सैनिक

अड्डे न बनाएँ, (५) समस्त देशों में
रिकता के अधिकारों और प्रजातन्त्र
रक्षा की जाय और (६) चीन के
में अमेरिका हस्तक्षेप न करे तथा
को दोनों देश स्वतन्त्र कर दें।
स्टालिन ने १८ मई की रात को
रेडियो से श्री वालेस के पत्र के
एक भाषण ब्राडकास्ट किया। श्री
के पत्र को "युग का सबसे मह
दस्तावेज" बतलाते मार्शल स्टालि
कहा—"श्री वालेस की योजना अ
सफल वार्ता का आधार बन सकती
रूस की ओर से स्वयं मार्शल स्
द्वारा समझौते के लिए यह दूसरी बा
बढ़ाया गया था। दूसरे दिन अमेरि
पुनः प्रत्यक्ष वार्ता का यह दूसरा प्रस्
अस्वीकृत कर दिया। रायटर ने १६
वाशिंगटन से समुद्री तार-द्वारा यह
चार भेजा—"आज रात को अमेरि
सरकारी तौर से मार्शल स्टालिन के
झौता-वार्ता के लिए तैयारी के उस
को अस्वीकृत कर दिया जो श्री
वालेस के पत्र पर आधारित था।"

* *

अमेरिका की गत १६ मई की
कृति के उपरान्त पुनः अमेरिकन वि
विभाग ने एक वक्तव्य प्रकाशित कि
इस वक्तव्य में ११ भागों में यह दि
गया कि अमेरिका ने किस किस प्रकार
किन किन प्रश्नों पर समझौता करने की
चेष्टा की और सिद्ध किया कि यह
की चेष्टा रूसी गतिरोधक नीति के कारण
ही असफल रही और यही रूसी-नीति
मान जटिल अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति
उत्तरदायी है। अपनी पूर्व-नीति के अनु
इस बार भी सोवियत रूस मौन नहीं
२२ मई को रूस की सरकारी सम
समिति ने उक्त अमेरिकन वक्तव्य
उत्तर प्रकाशित किया। इस वक्तव्य
अमेरिकन आरोपों के विरुद्ध रूस ने
स्थिति स्पष्ट की। उसने बतलाया कि
रिका संयुक्तराष्ट्र-संघ के प्रस्ताव
निःशस्त्रीकरण के निर्णय का पालन
कर रहा है। इसके विपरीत वह
लैण्ड से हवाई द्वीप तक सैनिक अ
निर्माण की गतिविधियों को आगे
के लिए लाखों और अरबों डा
स्वीकृति दे चुका है। युद्ध स
जाने पर और विशेषतः संयुक्तरा
रहते इन सैनिक अड्डों के निर्माण
में कोई दलील नहीं सुनी जा
जर्मनी और जापान की शांति-
होने का कारण यह है कि अमेरि
भी रूसी प्रस्ताव को मानने के लि
नहीं है। चीन में अमेरिकन फौजों
स्थिति वहाँ के गृहयुद्ध को भड़का
अमेरिका यूनान आदि देशों में
प्रतिगामी तत्त्वों का महत्त्व दे रहा
प्रजातन्त्रवादी तत्त्वों का दमन कर
रूस उसका विरोधी है।

* *

वेंडेल-स्मिथ-मोलोटोव,
वालेस और रूसी-अमेरिकन विदे
के आरोप-अभियोगमय उ
सूचक वक्तव्यों में से मन्थन

शेष पृष्ठ १७

हैदराबाद किधर जा रहा है ?

स्वतन्त्र सर्वोच्च सत्ता की स्थापना के लिये साम्प्रदायिक संगठन और षड्यंत्र

लेखक, एक हैदराबादी

हैदराबाद की वर्तमान स्थिति आजकल जन-साधारण तथा भारतीय राजनैतिक क्षेत्र की एक प्रधान वार्ता बन गई है। इस लेख में एक भुक्तभोगी हैदराबादी ने वर्तमान स्थिति, साम्प्रदायिक संगठन तथा षड्यन्त्र का मार्मिक वर्णन किया है। लेख सुन्दर, सामयिक और पठनीय है।

राजनीति में हैदराबाद
काफी महत्त्व रखता है।
स्थिति यह है कि हैदराबाद
शरीर का घाव बना हुआ है।
दक्षिण की शान्ति के भंग
सम्भावना है। यदि शीघ्र ही इस
न दिया गया या विलम्ब हुआ
भी स्थिति को काबू में लाने के
सरकार को बड़ी शक्ति लगानी
हैदराबाद, वहाँ के शासक और वहाँ
को समझना बड़ी टेढ़ी

हैदराबाद की शक्ति भारत-
शक्ति के सामने कोई अस्तित्व
तथापि इस समय हैदराबाद
ई० की अपेक्षा अधिक
है। यदि १५ अगस्त को
थोड़ी भी सख्त बन जाती
हुकूमत पर दबाव डालती
ही हैदराबाद घुटने टेक देता।
उस समय हैदराबाद को काबू
सरकार के लिये बहुत
और आज की भाँति उसको
के लिए किसी सैनिक
की आवश्यकता अनुभव
उस समय सरकारी क्षेत्रों
और चिन्ता फैली हुई
वह दर्शाने पर विवश
ई० को हैदराबाद की
में सफल रही। कार्य-
करना और वचन भंग
दी सरकार के विशेष
न बातों में हुकूमत व
पृथक् नहीं किया जा
और 'जैसे थे' के समझौते
वायदे किये थे वे तोड़ने
गये थे।

काल में शासक व शासन-
इस बात का भय लगा हुआ
की आज्ञा के भंग से
ही नाश हो जायगा और
हुकूमत से भी हाथ धोना
खुशामद, धन देकर
से अपने अस्तित्व को बनाये
रखा गया। आज वहाँ के शासक व शासन-यन्त्र के मस्तिष्क में यह विचार किसी प्रकार से दृढ़ हो गया है कि भारत-सरकार का विरोध और शत्रुत्व से हैदराबाद का कुछ बिगड़नेवाला नहीं है, यद्यपि इसमें सत्यता हो या न हो। आज हैदराबाद का एक एक मुसलमान और शासक इस भ्रम में पड़ा हुआ है कि वह भारत से किसी तरह कमजोर नहीं है और यह कि पाकिस्तान और भारत के मुसलमान तथा संसार के इस्लामी राष्ट्र इसकी सहायता करेंगे और यही विश्वास हैदराबाद की सबसे बड़ी राजनैतिक भूल है। यदि आज हैदराबाद को यह भय लग जाये कि भारत-सरकार की आज्ञाओं का उल्लंघन और शत्रुता से उसके अस्तित्व को ही धक्का पहुंचेगा तो निश्चित ही दूसरे ही दिन वह नतमस्तक हो जायगा।

* * *

रियासत की सियासत में मजलिस इत्तेहादुल मुसलमीन, रजवी और रजाकार भी पर्याप्त महत्त्व पाये हुए हैं। इनका अस्तित्व और इनका वर्तमान महत्त्व सब आला हजरत की राजनीतिज्ञता का एक नमूना है। यह उन्हीं के मस्तिष्क की उपज और उन्हीं के आदेश पर पोशित होनेवाली दो संस्थाएँ हैं। वर्तमान प्रजातंत्र-प्रिय युग में स्वच्छंद-एकाधिपत्य शासन-पद्धति को प्रजातन्त्र के रूप में प्रकट करने की यह एक राजनैतिक चाल है। मजलिस के कार्यों में आला हजरत को इतनी दिलचस्पी है कि कभी कभी यह संदेह हो जाता है कि मजलिस का प्रत्येक कार्य उन्हीं के इशारे पर चलता है। नवाब बहादुर यारजंग भूतपूर्व प्रधान की मृत्यु के बाद मजलिस के प्रधान पद के निर्वाचन में आला हजरत ने फरमानों और मुस्लिम नेताओं से मन्त्रणा करके जिस गहरी दिलचस्पी का परिचय दिया वह उल्लेखनीय है। यहाँ तक कि नवाब बहादुर यारजंग की मृत्यु के बाद जब उनकी पत्नी ने मजलिस के कार्यों में बहुत दिलचस्पी लेनी शुरू की तो उसको भी आला हजरत ने अपने फरमान से रोक दिया। अबुल हसन सय्यद अली, जो नवाब बहादुर यारजंग के उत्तराधिकारी थे, अपनी विशाल वृत्ति के कारण मुसलमानों में बदनाम हो गये तो उन्हें अध्यक्षपद से पृथक् करके अंत में कासिम रजवी जैसे को उस पद पर लाने में आला हजरत ने पर्याप्त भाग लिया। यदि मजलिस को अर्ध-सरकारी संस्था कहा जाय तो कुछ अनुचित न होगा। इसी मजलिस की सैनिक शक्ति यह रजाकार हैं। इस संगठन को हुकूमत यथावश्यकता नगररक्षक पुलिस या सेना में बदल दे सकती है।

इस स्थान पर इन रजाकारों के संबंध में कुछ प्रकाश डालना आवश्यक है। सर्वसाधारणतः यह समझा जाता है कि ये बहुत बहादुर और सच्चे अर्थों में 'जांबाज' हैं। यह भ्रम-मात्र है। इनकी वीरता उसी समय तक है जब तक पुलिस और सेना उनकी सहायता पर तत्पर है। इस समय रजाकार वहाँ की हिन्दू-जनता पर अत्याचार कर रहे हैं, उनकी बस्तियों को जला रहे हैं, उन्हें मार रहे हैं, उन्हें लूट रहे हैं, हिन्दू महिलाओं पर बलात्कार कर रहे हैं इसलिए कि हुकूमत चुप ही नहीं है अपितु उन्हें प्रोत्साहित कर रही है। यदि पुलिस व सेना कहीं उनके साथ नहीं होती तो किसी ग्राम पर आक्रमण करते हुए ये रजाकार घबराते हैं और यदि कहीं मुकाबले पर पाँच या दस युवक तत्पर हो जाते हैं तो ये बहादुर रजाकार भागते हुए नजर आते हैं। इस प्रकार का अनुभव एक से अधिक बार हुआ है। जो लोग ये समझ रहे हैं कि रजाकार सिर से कफन बाँधे तैयार हैं और भय उनसे कोसों दूर है, पूर्णतः असत्य है। प्रश्न हो सकता है कि ऐसी स्थिति में वहाँ की बहुसंख्यक हिन्दू प्रजा क्यों त्रस्त है ? वस्तुतः वहाँ के हिन्दू निहत्थे होकर भी रजाकारों के अत्याचार को रोक सकते हैं और इन रजाकारों के छक्के छुड़ा सकते हैं; किन्तु हिन्दुओं की रक्षात्मक शक्तियों को देखकर स्टेट की पुलिस व सेना की शक्ति गति में आ जाती है और ऐसे स्थानों व व्यक्तियों को पूर्णतः नष्ट किया जाता है। यदि वहाँ के हिन्दुओं को यह विश्वास हो जाय कि उनकी रक्षा के लिए पीछे कोई शक्ति है और उनको यदि यह आश्वासन मिल जाये कि रक्षा करने पर उनका संरक्षण हो जायगा तो निश्चय ही हिन्दू-प्रजा रजाकारों का सामना बिना शस्त्र के ही करेगी। किन्तु उन्हें भविष्य अन्धाकारमय दीख रहा है। इसीलिये वे निराश होकर कष्ट सहन कर रहे हैं। उनके चुप बैठने में यह भी एक बात है कि वे पूर्णतः निःशस्त्र कर दिये गये हैं और रजाकार शस्त्रों से पूर्णतः सज्ज हैं।

रजाकार प्रकट रूप से कहते हैं और इसमें पूरी सचाई है कि हिन्दुओं की यह जायदाद व सम्पत्ति और उनकी औरतें आज नहीं कल उन्हीं के काबू में आनेवाली हैं। यह एक सत्य है कि नगरों को छोड़ ग्रामों से हिन्दुओं का विशेषतः हिन्दू

शेष पेज १२ पर देखिए

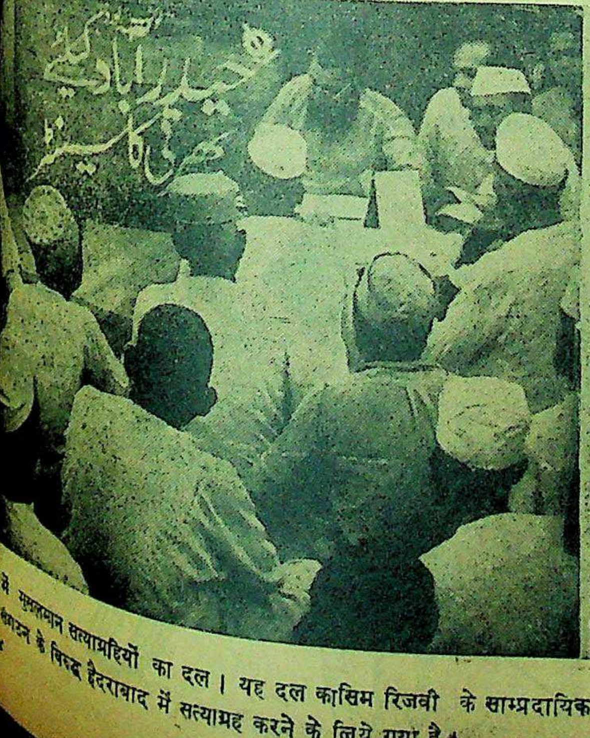

मुसलमान सत्याग्रहियों का दल। यह दल कासिम रिजवी के साम्प्रदायिक संगठन के विरुद्ध हैदराबाद में सत्याग्रह करने के लिये गया है।

हैदराबाद में कासिम रिजवी के रजाकार संगठन के विरुद्ध सत्याग्रह करनेवाला दिल्ली के मुसलमानों का एक जबरदस्त दल।

स्वास्थ्य-चर्चा

पित्त निकलना---खतरे से खाली नहीं है ?

रोग की चिकित्सा और उपचार के कुछ आवश्यक उपाय

लेखक, श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालङ्कार

इस लेख के लेखक श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालंकार।

मेरा परिवार गर्मियों में हर साल शिमला जाया करता था। इस साल जाना न हो सका। मेरी पत्नी को आज तक ऐसी बुरी तरह पित्त कभी नहीं निकला जैसा इस बार निकला है। बच्चे भी पित्त का बुरा शिकार बन गये हैं। लाहौर में तो सचमुच आग बरस रही है। डाक्टर साहब ! क्या किया जाय ?

एक गम्भीर रोगी

पिछले साल की बात है। ये एक बड़े घराने के सज्जन थे और पत्नी को साथ लेकर परामर्श लेने आये थे। मैंने उनकी पीठ की परीक्षा करनी आरम्भ की। छोटे-छोटे लाल रङ्ग के घने दानों से वह बुरी तरह पटी पड़ी थी। नीचे धड़ की तरफ तो दाने कुछ विरल थे; परन्तु ज्यों-ज्यों ऊपर की तरफ जायँ, दाने घनता में बढ़ते जाते थे। गरदन के पीछे और सामने की ओर दानों का आकार भी काफी बड़ा था और उनके सफेद मुखों के अन्दर से पीप झांक रही थी। ब्लाउज को ऊपर उठाते हुए पित्त के दानों पर जो रगड़ लगी उसकी वेदना भी रुग्णा को असह्य प्रतीत होती थी। त्वचा के किसी भी भाग को छूने से वह स्पष्ट रूप से विपरीत प्रकिया दिखाती थी। स्पर्शाक्षमता बहुत बढ़ गई थी। उस सम्भ्रान्त युवती का चेहरा कष्ट से बहुत उद्विग्न दीखता था। वह न रात को सो पाती और न दिन में। पित्त के दानों ने उसके बदन का प्रायः सारा पृष्ठ आवृत कर लिया था। किसी भी करवट लेटना उसके लिए मुसीबत थी। मैंने देखा कि दानों का इतना जोर है कि उसकी गौर त्वचा के ऊपर सारी पीठ और छाती ऐसी लाल नजर आ रही है कि जैसे उस स्थान की सूक्ष्म रक्तवाहिनियां अभी फट जाएँगी और उनसे लहू बह निकलेगा। पीठ और छाती के ऊपर के भाग पर और गरदन पर जो दाने हैं उनमें भरी हुई पीप में से विष रगों में बह रहा है और इसलिए इस सारे भाग में सोज आ गई है जिससे यह स्थान बहुत अकड़ गया है। गले की गिल्टियाँ भी उभरने लगी हैं तथा दर्द करने लगी हैं। गरदन की पेशियाँ अकड़ जाने से रुग्णा को स्वतन्त्रता से गरदन घुमाने में भी व्यथा अनुभव होती है।

* * *

गर्मी इस समय यौवन पर है। कुछ दिनों में पित्त के दाने निकलने आरम्भ हो जायँगे। ऊपर दिये गये उदाहरण की तरह अनेक स्त्री-पुरुष का शिकार होने लगेंगे। आपको सरल उपचार का ज्ञान रहना जिससे आपकी और आपके बच्चे परेशानी न बढ़े। इस रोग के हमने ऊपर के उदाहरण में बता दि अब संक्षेप में चिकित्सा का वर्णन जाता है।

चिकित्सा

इस रोग में क्योंकि शरीर के गरमी अधिक बढ़ जाती है इसलिये दूर करने के लिए सब शीतल का अवलम्ब लेना चाहिए। अन्तः में सामान्यतया किसी औषधि की श्यकता नहीं पड़ती। परन्तु बहुत अवस्थाओं में ऐलोपैथिक चिकित्सक समूह की दवाओं का प्रयोग करते हैं। दानों में पीप पड़ गई हो और तो अवधूलनों (डस्टिंग पाउडरों सल्फा औषधियाँ भी मिला ली इससे तुरन्त लाभ दीखता है औ सूख जाते हैं; परन्तु इस चिकित्सा से मूलतः रोग शान्त नहीं और पित्त का प्रकोप (शरीर की कम नहीं होता। वास्तविक चिकि यह है कि भोजनों में शीतल पदा

शेष पेज १३ पर

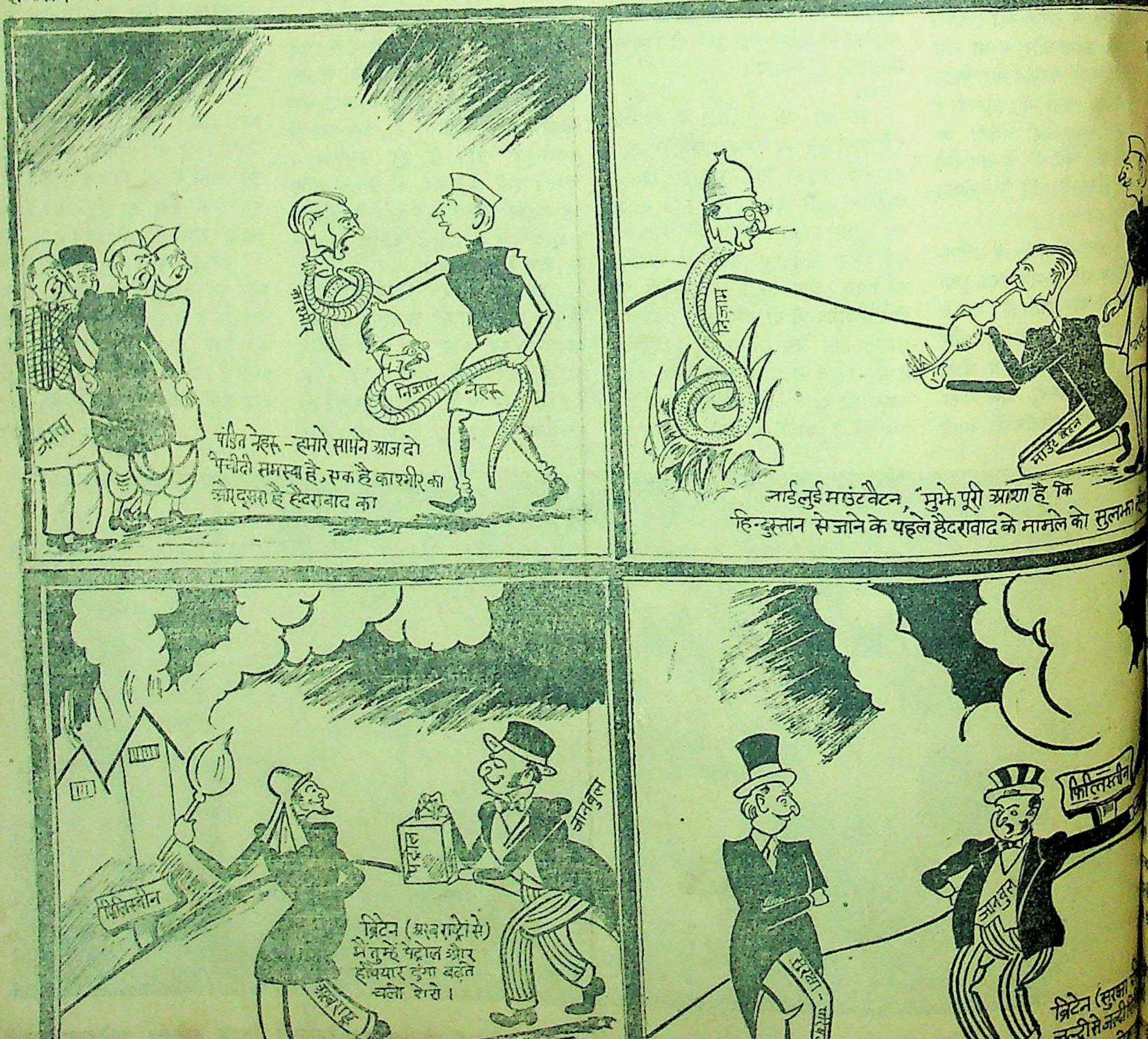
जनता
काश्मीर
निजाम
नेहरू
पंडित नेहरू - हमारे सामने आज दो पेचीदी समस्या हे, एक है काश्मीर का और दूसरा है हैदराबाद का
निजाम
माउंट बेटन
लार्ड लुई माउंटबैटन, "मुझे पूरी आशा है कि हिन्दुस्तान से जाने के पहले हैदराबाद के मामले को सुलझा
फिलिस्तीन
पेट्रोल
जानबुल
ब्रिटेन (अरब राष्ट्रों से) मैं तुम्हें पेट्रोल और हथियार दूंगा बशर्ते चलो ठेरो।
अरब राष्ट्र
KRISHNAKANT
फिलिस्तीन
जानबुल
सुरक्षा - परिषद
ब्रिटेन (सुरक्षा जल्दी से जल्दी युद्ध को बन्द करा दो

कहानी

एकला चलो रे !

लेखक, श्री श्रीराम शर्मा 'राम'

जहाँ हार्दिक प्रेम है वहाँ निर्धनता की परवाह नहीं होती। पुरुष अपनी पत्नी को केवल हृदय ही देकर प्रसन्न रख सकता है। यद्यपि सामाजिक बन्धन भी प्रेम को पंगु बनाने का प्रयत्न करते रहे, तब भी हरखू और उसकी पत्नी में कुछ परिवर्तन नहीं हुआ। पत्नी के निर्मल प्रेम ने पति की निर्धनता में भी चार चाँद लगा दिये। कहानी में हरखू और उसकी पत्नी का स्वाभाविक चित्रण बड़ी सुन्दरता से किया गया है, जो पठनीय तथा आकर्षक है।

गरम तवे के समान भुन रहा था, तो तब भी, उसके मन में डोल रहा था कि शाम को घर जाते ही, वह जब रमिया को रुपये देगा, तो साथ में कहेगा—ऐ रमिया! सच, मैं तुझे प्यार करता हूँ...तेरे लिए जीवन की कठिनतर मुसीबत भी उठा सकता हूँ मैं!' लेकिन, हाय! हाय! वह इतना कह भी न पाया कि रमिया ने रुपये देखते ही, माथे में बल डाल लिये। आँखों की भवें चढ़ा लीं। रुपयों को न रखने की भी बात कह दी। इसका परिणाम यह हुआ कि हरखू का मन उस सन्ध्या के धूमिल आवरण में दिन भर की तपिश के कारण ठण्डा और सुखपूर्ण होने के बजाय और अधिक वेदना से पूरित बन गया। उसने एकाएक रमियाँ की बात सुनकर अपना मत भी नहीं दिया। वह मौन बन गया। झोपड़ी के बाहर काले हो आये अन्तरिक्ष पर दृष्टि फैल गई और हरखू ने उसी अवस्था में सोचा, यह भी मुसीबत है...यह भी दुर्भाग्य है, उसका!...

हरखू को उसी अवस्था में रमिया ने फिर टँकोरा—'सुनते हो, रख लो, अपने ये रुपये! यह महीने भर की कमाई! इससे खाना और

उसी समय, अतिशय वेदना से पूरित बन, हरखू ने झटके के साथ, अपना मुँह फिर रमिया की ओर किया। उसने दीनता के स्वर में कहा—'रमिया...'

रमिया बोली—'दोष तुम्हारा क्या, मेरा है। भाग्य फूटा है, मेरा!' और उसने घुटनों पर सिर रखकर रोना आरम्भ कर दिया।

इतना देख, हरखू ने फिर नितान्त कातर भाव में अपना हाथ रमिया के सिर पर रखा। उसकी यह भी कैसी विवशता थी कि उस समय, वह हाथ रमिया के सिर पर रख तो सका, परन्तु जैसे अपने-आप में डर गया। उसका मानस तड़प गया! मन ने कहा, तू अयोग्य है...इस रमिया के लिए सार्थक नहीं...

उसी समय, रमिया ने झल्लाकर रोष से पूर्ण होते हुए कहा—'ऐसा ही था, तो विवाह न करना था—तुम्हें यह घर न बसाना था।'

सुनकर, हरखू की छाती पर जैसे सांप लोट गया। वह सहम गया। उसे लगा कि हाँ, सचमुच ही, उसने पाप किया... एक भूल! उसे विवाह नहीं करना था। अपनी ऐसी अवस्था में रमिया सरीखी सुन्दर और अपनी इच्छाओं की मूरत बनी हुई स्त्री को उसे घर में नहीं लाना था। इस प्रकार उसकी इच्छाओं का दमन करना उसके लिए किसी प्रकार भी न्याय का विषय नहीं। अतएव, रमिया की बात सुनकर, सचमुच ही, हरखू जैसे जड़ बन गया, निरा अर्थहीन! वह अपना मुँह नहीं खोल सका! वह रमिया को इतना भी नहीं बता सका कि मैं अकेला था, घर सूना था, जिन्दगी में कोई भी मेरी सुननेवाला नहीं था!

तभी, जैसे चौंककर, अपनी भूल मानते हुए ही, हरखू ने नितान्त उद्वेलन लिए हुए स्वर में कहा—"तो क्या हो...तुझे क्या करना है, रमिया!"—वह बोला—'सच, मैंने तुझे ठगा नहीं... साफ ही तो कह दिया था तेरे बाप से कि मैं दस रुपये महीना पाता हूँ। वैसे भी अकेला हूँ।'

और लुगाई रखना चाहते थे—घरवाली के मालिक बनना चाहते थे, इन्हीं दस रुपयों में! रमिया ने कुपित स्वर में कहा।

लेकिन हरखू ने सुना, तो वह फिर छाती पर घूँसा खा गया। वह तड़प गया। मानो उसके सोते हुए पुरुषत्व के भाव को उस रमिया ने जगा दिया। उस हरखू में जो आग थी, जिस पर राख पड़ी थी, उसे गोरी और सुन्दर रमिया ने कुरेद दिया। परन्तु, वह अशिक्षित, वह मजदूर, वह सभ्य-समाज से अलग रहनेवाला हरखू, उस अवस्था में भी शाश्वत और धीर बना रहा। उसके मन में जो रुक्ष तथा कठोर भाव था, उसे नहीं उठने दिया। अपितु, वह पूर्ववत् अवस्था में बोला—'हाँ, यही मेरी भूल थी, रमिया!'

रमिया ने चिढ़कर कहा—'तुम्हारी भूल थी और इस रमिया की जिन्दगी...'

हरखू ने फिर सफाई देकर कहा—'पर मैंने झूठ नहीं बोला—सच!—तेरे पिता से सभी कुछ कह दिया था।'

तपाक से रमिया ने कहा—उन्हें भी तो अपने गले से मरा हुआ सांप निकालना था...वही उन्हें डस रहा था। उन्हें तो बस इस रमिया का ब्याह कर देना था, भूखी रहे, चाहे अघाई...'

सुनकर, हरखू ने फिर अपना मत नहीं दिया। रमिया ने रुपये वहीं रख दिये और पानी लाने के लिए घड़ा उठा लिया। वह बाहर गई तो तभी, पीछे से हरखू ने मन में कहा—'इसका भी दोष क्या...जवानी है, उमंगे हैं, यही दिन तो इसके खेलने-खाने के! पर, हाय! हरखू क्या करे! कैसे करे! निदान, जब उसने अपनी स्थिति और शक्ति को देखा, तो वह परकटे पंछी की तरह, बल खाकर अपनी खटिया पर गिर गया। उसकी दृष्टि के सामने ही जमींदार का महल दीखता था। बड़ा सुन्दर और भव्य! हरखू ने सोचा, जमींदार के महल में जो बेटों की बहुएँ हैं वे रेशमी साड़ियाँ पहनती हैं, पान चबाती हैं, मीठे और रसदार भोजन करती हैं...वह बोला—एक यह रमिया है—मेरी स्त्री!

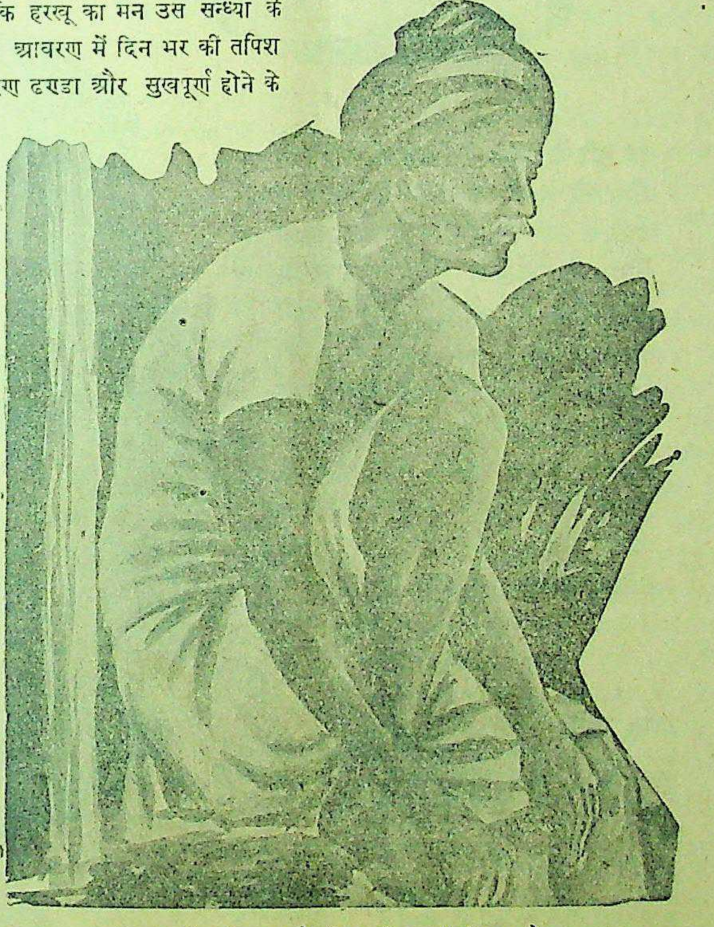

हरखू अब वृद्ध हो गया है, फिर भी उसमें चेतना है।

सच, यह भी उतनी ही सुन्दर है। उतनी ही मोहक! पर इसे कुछ नहीं .. कुछ...

रमिया कुएँ से पानी का घड़ा भर लाई। उसने जौ-चने की मिश्रित रोटियाँ और सरसों का साग परोसकर खटिया के पास रख दिया, एक लोटा पानी; परन्तु न तो उसने हरखू से रोटी खाने के लिए कहा और न स्वयं हरखू ही, रोटी खा लेने की अपने में इच्छा पा सका। सचमुच में, उस समय, हरखू का मन जिस विषाद के काले-काले बादलों से ढक गया, उससे वह उद्विग्न और उपेक्षित तो हुआ ही, साथ ही, जीवन में पहली बार उसके मन में आया कि आदमी वह भी है...रमिया भी नारी है, इच्छा और अभिलाषायें हैं, इसके साथ! उसके मन में इतनी-सी भावना के उदित होने का परिणाम यह हुआ कि रमिया ने जितना भर कहा, वह मानो सच; और उसने रमिया के साथ जो विवाह किया, वह मानो अन्याय और एक नारी के साथ झूठा व्यवसाय! इसलिए जैसे ही, उसमें यह बात पैदा हुई, तो तभी, रमिया के हाथों से बर्तनों की खड़खड़ को सुन, हरखू चौंक गया। उसका ध्यान टूट गया। उसने रमिया की ओर देखा। उसी ओर देखकर, मन में बोला—'यह भी रानी होती...पटरानी!' पर, अफसोस! इतना कहना तो जैसे हरखू के लिए एक पाप ही था। अपनी औकात से दूर! निदान, वह खड़ा हुआ और रमिया के पास जाकर, याचक-भाव में उसने कहा—'रमिया, बता तो, अब मैं क्या करूँ; क्या!'

लेकिन इतनी देर में रमिया के अन्तर में कुछ रह नहीं गया था। वह पानी भरकर लाई, हरखू को रोटी परोसी और अब बर्तन साफ करने बैठ गई। तो, इतने कामों में लगे रहने पर भला उसके मन का बोझ कैसे टिक सकता था। निदान, उसने हरखू की ओर बिना देखे हुए ही कहा—'वह रोटी रखी है, जाकर खाओ।'

'हाँ, रोटी तो खानी ही है, रमिया!'—हरखू बोला—'पर तू बता, तुझे कैसे सुख हो। तुझे कैसे मुझसे प्रीति हो।'—उसने कहा—'देखती हो, मेरी मा मुझे बचपन में ही छोड़कर मर गई। बाप भी चला गया। यों, मैं इस भले गाँव में—इस दुनिया में अकेला ही रह गया। तेरा बाप आया, सम्बन्ध के लिए राजी हुआ, तो मैंने यही सोचा, चलो, अब मिलेगा एक साथी, अपनी कहनेवाला, मेरी सुननेवाला—

रमिया ने झिड़की के भाव में, तब हरखू की ओर देखा। उसने कहा—'देखते हो, मैं काम में लगी हूँ। एक वक्त में एक ही काम कर सकती हूँ। जाकर रोटी खाओ।'

तो तू! तू!

'हाँ, मैं हूँ मैं! इस घर में जीने और इसी घर में मरने के लिए!

हरखू ने तब जाने कितने गहरे मन के साथ कहा—'रमिया'—

रमिया बोली—लोग आगे बढ़ते हैं, दूसरों को पीछे हटाते हैं और तुम हो कि दूसरों के साथ भी नहीं चलते। आगे भी नहीं बढ़ना चाहते।'

हरखू ने उल्लास और हर्ष भरे स्वर में कहा—'अब बढ़ूँगा मैं! मैं कोशिश करूँगा।'

तब इतनी-सी बात सुनकर, बलात् रमिया ने मुसकरा दिया। उसने आँखों से भी हँस दिया।

हरखू बोला—'ओह!'

रमिया ने कहा—'देखते तो हो, तुम हो, तो मेरा जीवन है—मेरा सुहाग!'

गद्गद भाव में हरखू ने कहा—'आह! रमिया!'

* * *

दिन बीत गये। जवानी के दिन भी पार हो गये। जाने कितने संघर्ष किये हरखू ने कि वह जर्जर हो गया, नितान्त दीन! रमिया पर भी बुढ़ापा आ गया। असमय ही, दोनों ने अपनी विवशता को स्वीकार कर लिया। हरखू कुछ देर पूर्व ही जंगल से मेहनत करके आया था। पसीना उसके बदन पर था। आँखों में अँधेरा! बाहर उसके बच्चे खेल रहे थे—हरखू के प्राण! परन्तु हरखू ने उनकी ओर नहीं देखा, रमिया की ओर भी नहीं; उसने अपने अन्तर के परमेश्वर को साक्षी कर, मानो उसी के सामने चिल्लाकर एकाएक कहा—'अब तो उठा, ईश्वर! मेरे राम!'

सच, हरखू थक गया। कृश हो गया, बेचारा! उसने देखा कि बच्चे बाहर खेलते हैं, रमिया पीस रही है—मानो सभी अपनी धुन में हैं। सभी के अपने धन्धे हैं, अपने! कदाचित्, यही था कि हरखू को अपने पर घृणा उपेक्षा पैदा हुई और उसने जाने की इच्छा की। उसने सोचा, मर जाये, चला जाये, इस जहान से पत्थर है...वह मिट्टी....

परन्तु जब हरखू ने यह देखा आज के बाद भी दिन है, महीने वर्ष; तो वह सिहर गया और फन हुए सर्प की तरह तड़पकर रह गया वह हरखू!

* * *

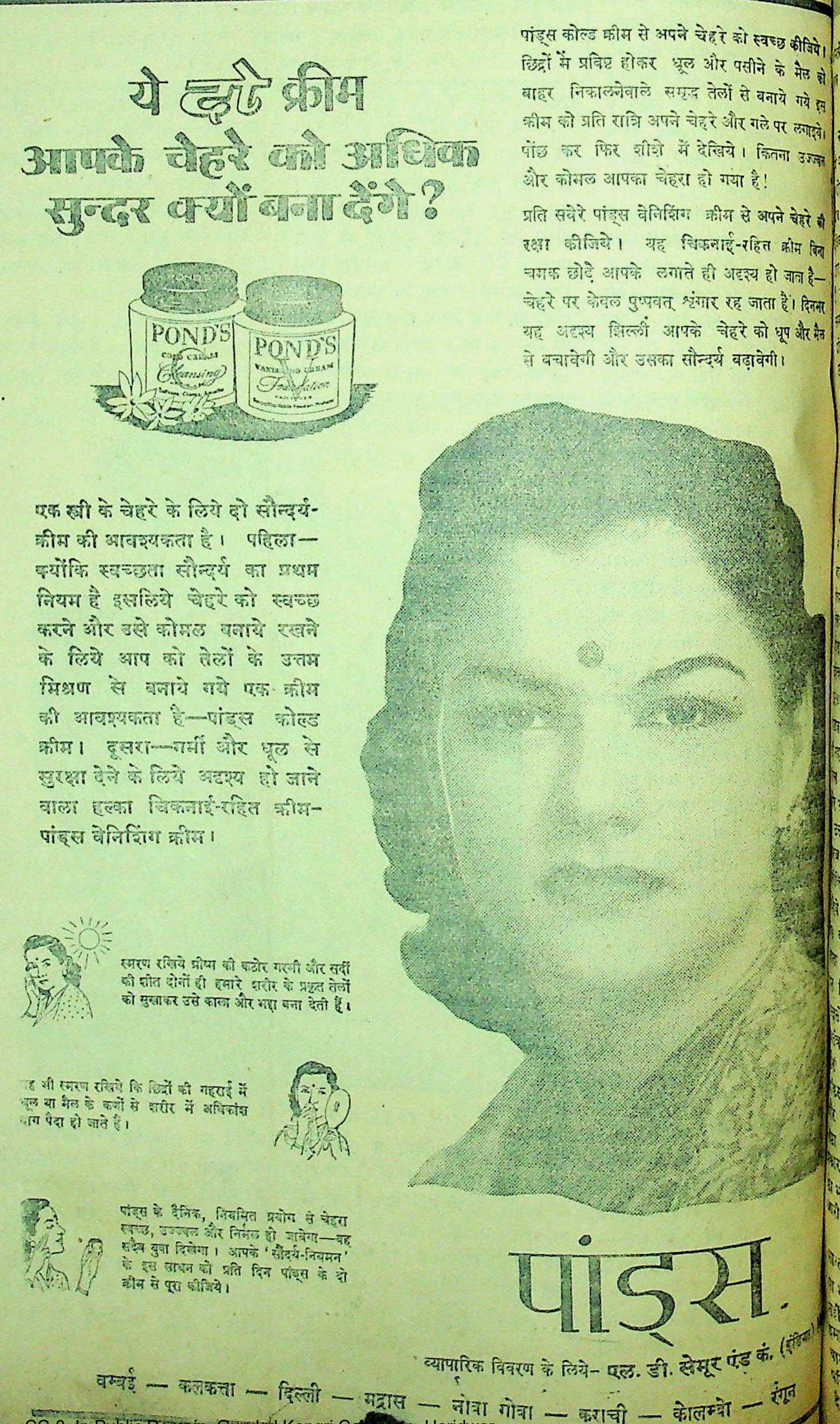

ये दो क्रीम आपके चेहरे को अधिक सुन्दर क्यों बना देंगे?

एक स्त्री के चेहरे के लिये दो सौन्दर्य-क्रीम की आवश्यकता है। पहिला—क्योंकि स्वच्छता सौन्दर्य का प्रथम नियम है इसलिये चेहरे को स्वच्छ करने और उसे कोमल बनाये रखने के लिये आप को तेलों के उत्तम मिश्रण से बनाये गये एक क्रीम की आवश्यकता है—पांड्स कोल्ड क्रीम। दूसरा—गर्मी और धूल से सुरक्षा देने के लिये अदृश्य हो जाने वाला हल्का चिकनाई-रहित क्रीम—पांड्स वेनिशिंग क्रीम।

पांड्स कोल्ड क्रीम से अपने चेहरे को स्वच्छ कीजिये। छिद्रों में प्रविष्ट होकर धूल और पसीने के मैल को बाहर निकालनेवाले समृद्ध तेलों से बनाये गये इस क्रीम को प्रति रात्रि अपने चेहरे और गले पर लगाइये। पोंछ कर फिर शीशे में देखिये। कितना उज्ज्वल और कोमल आपका चेहरा हो गया है!

प्रति सवेरे पांड्स वेनिशिंग क्रीम से अपने चेहरे की रक्षा कीजिये। यह चिकनाई-रहित क्रीम बिना चमक छोड़े आपके लगाते ही अदृश्य हो जाता है—चेहरे पर केवल पुष्पवत् श्रृंगार रह जाता है। दिनभर यह अदृश्य झिल्ली आपके चेहरे को धूप और मैल से बचावेगी और उसका सौन्दर्य बढ़ावेगी।

स्मरण रखिये ग्रीष्म की कठोर गरमी और सर्दी की शीत दोनों ही हमारे शरीर के प्रकृत तेलों को सुखाकर उसे काला और भद्दा बना देती हैं।

यह भी स्मरण रखिये कि छिद्रों की गहराई में धूल या मैल के कणों से शरीर में अधिकांश दाग पैदा हो जाते हैं।

पांड्स के दैनिक, नियमित प्रयोग से चेहरा स्वच्छ, उज्ज्वल और निर्मल हो जावेगा—वह सदैव युवा दिखेगा। आपके 'सौंदर्य-नियमन' के इस साधन को प्रति दिन पांड्स के दो क्रीम से पूरा कीजिये।

पांड्स.

व्यापारिक विवरण के लिये- एल. डी. सेमूर एंड कं. (इंडिया)

बम्बई — कलकत्ता — दिल्ली — मद्रास — नोवा गोवा — कराची — कोलम्बो — रंगून

मातृमण्डल

अपहृत महिलाओं के प्रत्यागमन के पश्चात् सरकारी तथा गैर-सरकारी दृष्टि से किस उपाय का अवलंबन करना चाहिए ?

लेखक, श्री युगलकिशोर गुप्त, एम० ए०, बी० एल०

ने मेसकरने, ट्रावंकोर कांग्रेस की कार्यकर्त्री स्टेट विधान सम्मेलन की सदस्या चुनी गई हैं।

श्रीमती कोट्टा यशोदा देवी को आन्ध्र के इतिहास पर पुस्तक लिखने के लिये मद्रास विश्वविद्यालय ने डी० लिट् की उपाधि दी है।

रियों का अपहरण भारतवासियों के एक अमिट कलंक है। पाकिस्तान- के पूर्व भी पूर्वी बंगाल तथा में हिन्दू तथा सिक्ख विवाहित, तथा विधवाओं के मुसलमानों हरण के असंख्य उदाहरण मिलते खाली और त्रिपुरा के दंगों के ऐसी घटनायें अनेक हुईं। उसकी स्वरूप जो दंगा बिहार में हुआ में एक महत्त्वपूर्ण किरण कि किसी भी मुस्लिम नारी के वारदात की पुष्टि नहीं हुई। तक जिन हिन्दू महिलाओं को ततायी अपहरण करके उनका करते थे उनका हिन्दू-समाज स्थान नहीं था। वे या तो मुसलमानों करके उनके हरम की शोभा या वेश्यालयों में अपने रूप और की हाट लगातीं। हिन्दू-समाज के ठेकेदार उन्हें हिन्दू-समाज में ने के नितान्त प्रतिकूल थे, परन्तु पंजाब में मार्च १९४७ से अक्टूबर तक जिस नृशंस अमानुषिकता का हुआ और अब भी कश्मीर में है और जिस संख्या में हिन्दू तथा महिलायें विधर्मियों द्वारा अपहृत की जा रही हैं यदि हिन्दू-समाज पर दृष्टिपात नहीं किया तो हिन्दू- का विनाश अवश्यम्भावी है। हिन्दू-समाज की रक्षा के नाते वा शुद्ध मानवता के नाते भारतीय की सरकार का यह परम कर्तव्य हो है कि पश्चिमी पाकिस्तान में स्थित हिन्दू देवियों को उन मुसलमान के चंगुल से निकालकर भारत की हवा में सांस लेने का अवसर दे; यह काम भारतीय संघ की फौजें स्तान द्वारा प्रस्तुत अत्यन्त बाधाओं कठिनाइयों के बावजूद करने की कर रही हैं। कई हजार देवियाँ इस उद्धार की गई हैं और शेष महिलाओं भी भारत लाने का प्रयत्न निरन्तर है।

परन्तु सच पूछिये इन देवियों को में ला देने से ही भारत-सरकार का भारतीय हिन्दू-समाज का कर्तव्य शेष हो जाता। इन देवियों का उद्धार तो कर्तव्य का केवल श्रीगणेश है। कर्तव्य तो उन्हें उनके अपने में सम्मानपूर्ण स्थान प्रदान, अनाथ के विवाह का प्रबन्ध या उनकी जीविका का प्रबन्ध या जो लड़कियाँ अभी जीविका उपार्जन करने में असमर्थ हों उनकी शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध करके अन्ततः उनके लिए विवाह, नौकरी या रोजगार का प्रबन्ध करना है। इन सभी कार्यों में सबसे कठिन काम इन देवियों के परिवार को बाध्य करता है कि वे इन पवित्रता और सतीत्व की प्रतिमाओं को अपने परिवार में वही स्थान प्रदान करें जो इस दुःखद दुर्घटना के पूर्व इन्हें प्राप्त था।

जिन अपहृत नारियों को उद्धृत करके भारतीय संघ के शरणार्थी शिविरों में लाया गया है उनकी हम तीन श्रेणियाँ कर सकते हैं।

(१) जो अपहरण के समय विवाहिता थीं या विधवाएँ थीं। इस श्रेणी में पत्नी, पुत्री, मातायें, पुत्रवधुएँ, बहनें आदि आती हैं।

भारत-सरकार के शरणार्थी पुनर्वास विभाग को सबसे बड़ी कठिनाई इस बात की पड़ती है कि प्रथम तो इन उद्धृत नारियों के पति, पुत्र, पिता या अन्य निकट-सम्बन्धी या अभिभावक का पता लगायें, क्योंकि वह समस्त भारत में फैले हुए हैं; और यदि इन सम्बन्धियों का पता लग भी जाये तो वह इन देवियों को अपने परिवार में पुनः ग्रहण करने से इनकार कर देते हैं। जिन पतियों की कोई सन्तान है—चाहे पुत्र या पुत्री—उनका कहना यह है कि हमारे परिवार की एक स्त्री तो भ्रष्ट हो ही गई है यदि उसे हम ग्रहण कर लें तो परिवार के सभी के सभी सदस्य भ्रष्ट हो जायेंगे, क्योंकि उस बिरादरी के अन्य सदस्य इस परिवार के साथ रोटी-बेटी का नाता करना नहीं पसंद करेंगे। यही कठिनाई विवाहिता या विधवा पुत्र-वधुओं के पुनः ग्रहण करने में है। कई बार ऐसा होता है कि पति अपनी पत्नी की निस्सहायता का अनुभव करके उसे अपनी जीवन-संगिनी बनाने को तो तैयारी हैं; परन्तु उसके माता-पिता या अन्य अभिभावक ऐसा करने की अनुमति नहीं देते। यदि पुत्र ऐसा करने पर प्रस्तुत हो जाता है तो उसे वे उत्तराधिकार से वंचित करने की धमकी देते हैं। बहुत से युवक तो इस धमकी से सहम जाते हैं और बिरले ही अपने माता-पिता की अवहेलना करके सत्य का पक्ष ग्रहण करते हैं। हमारे पुरुषों और बड़े-बूढ़ों का यह मत शान्तिकाल में बेशक दुरुस्त हो जब कि अपहृत स्त्री स्वयं आततायी के साथ भागने में सहमत हो; परन्तु जब वह भली भाँति जानते हैं कि उनकी कायरता का लाभ उठाकर स्वयं उनकी आँखों के सामने इन असहाय नारियों को आततायी उठा ले गये, उनका सतीत्व भंग किया, [illegible] का क्या दोष था? यदि किसी का दोष है तो इन ऊँची नाकवाले नामर्दों का जो अपने प्राण रहते अपनी माँ-बहनों और पत्नियों की इज्जत लुटते देखते रहे। उन्हें तो वहीं पर कट जाना था। कम से कम कहने के लिए तो यह होता कि अपने प्राण रहते इन्होंने अपने परिवार की प्रतिष्ठा होने नहीं दी; परन्तु नहीं, इन्हें तो लुंठित अपने तन, मन, धन के रक्षा की चिन्ता इन देवियों के प्रति कर्त्तव्य से अधिक थी। जो महिलायें पाकिस्तान में स्वयं अपनी ही दृष्टि में हेय थीं और जब उन्हें फुसलाकर भारतीय संघ में लाया गया और उनके साथ अपने परिवार के लोग इस प्रकार का अमानुषिक व्यवहार करें तो उन्हें वापस पाकिस्तान लौट जाने, आत्महत्या करने या वेश्या-वृत्ति करने के सिवा और चारा ही क्या है?

(२) दूसरी श्रेणी ऐसी अपहृत महिलाओं की है जो अपहरण के पूर्व वाग्दत्ता थीं। उनका विवाह-सम्बन्ध स्थिर हो गया था और थोड़े ही दिनों में उनका विवाह भी सम्पन्न होनेवाला था। ऐसी महिलाओं को उनके भावी पतियों ने या उन पतियों के अभिभावकों ने अपने परिवार में ग्रहण करने से इनकार कर दिया है। भला जिन महिलाओं के माता-पिता, भाई उनके सतीत्व की रक्षा नहीं कर सके उनको ग्रहण करके अपने परिवार की प्रतिष्ठा क्यों वह धूल में मिलायें। उनका पुत्र या सम्बन्धी स्वस्थ है, युवक है, जीविका उपार्जन कर सकता है उनके लिए एक से एक अक्षतयोनि ताजा माल प्राप्त हो सकता है तो भला क्यों जूठा या बासी माल ग्रहण करें। इसका उत्तर यही है कि इस दैवी प्रकोप या अदमनीय आन्दोलन या अराजकता के समय जब सरकार अमन कायम रखने में असमर्थ हो तो जो उन अभागी महिलाओं के साथ बीती वही उनकी पुत्री के साथ भी बीत सकती थी।

(३) अविवाहित कन्याएँ—निरन्तर तामसिक या राजसी भोजन करने के कारण मुसलमानों में कामान्धता की मात्रा अत्यधिक है। अराजकता के समय उनकी इस पाशविक मनोवृत्ति की तृप्ति का उन्हें अपूर्व सुयोग मिलता है। जिस इस्लाम में अपनी ममेरी, फुफेरी, चचेरी बहन तक को अपनी पत्नी बनाने की आज्ञा दी गई है उसमें हिन्दू काफिर कन्याओं की रक्षा का प्रश्न तो उठ ही नहीं सकता। मुसलमानों में अधिकतर इतनी कामवासना रहती है कि यदि उनका वश चले तो अपनी माता और सहोदर बहन को छोड़कर संसार भर की स्त्रियों का सतीत्व भंग कर सकें। [illegible] के कारण उनकी यह मनोवृत्ति कुछ हद तक बँधी हुई है; परन्तु जहाँ शासन की बागडोर ढीली हुई या अपने हाथों में आई अपनी कुत्सित मनोवृत्ति के वह शिकार हो गये। ऐसी अवस्था में यह आशा करना कि अविवाहित कन्यायें अक्षतयोनि होंगी, केवल दुराशा है। उनके रूप और यौवन को तो असंख्य भँवरों ने लूटा होगा; परन्तु चूँकि यह सब उन कन्याओं की विवशावस्था में हुआ, इसलिये वह धर्म और कानून की दृष्टि से निष्पाप हैं।

भारतीय नारी के जीवन का उद्देश्य है विवाह। दाम्पत्य जीवन में ही उसका व्यक्तित्व पूर्णरूपेण परिस्फुटित होता है। वह एक कुशल गृहलक्ष्मी बनना चाहती है और एक वीरप्रसविनी माता। इसलिये यह आवश्यक है कि जिन उद्धृत नारियों के पति जीवित हों, उन पतियों को उन्हें अपने परिवार का अंग बनाने के लिये प्रोत्साहित या बाध्य किया जाये और जो अविवाहिता हों उन्हें उनके पिता या अभिभावक के यहाँ पहुँचाया जाये और इन कन्याओं के विवाह के लिये सरकार और समाज प्रत्येक प्रकार की सहायता दे—आर्थिक और सामाजिक।

दूसरी ओर सरकार भारत के सभी दैनिक, साप्ताहिक, मासिक पत्रों में जो विभिन्न भाषाओं में निकलते हों, इस प्रकार के विज्ञापन द्वारा प्रोपेगैंडा करे कि इन उद्धृत नारियों का अपहरण में अपना कोई दोष नहीं था। वह निष्पाप है। जो पाप विवशावस्था में किये जाते हैं वह दण्डनीय नहीं हैं। शास्त्रों के उद्धरण समाचारपत्रों में दिये जायें, जिससे जनता का मनोभाव इन उद्धृत नारियों के पक्ष में हो जाये। प्रायः एक वर्ष तक निरन्तर प्रोपेगैंडा करने से सफलता की कुछ आशा की जा सकती है और इस प्रकार हम प्रायः २० या २५ लाख भारतीय देवियों को प्रतिष्ठापूर्ण जीवन बिताने का अवसर प्रदान कर सकते हैं।

यदि हमने इस कर्तव्य से अपना मुँह मोड़ा तो यह देवियाँ पुनः पाकिस्तान लौट जायेंगी और प्रजनन-द्वारा हमारे दुश्मनों की संख्या बढ़ायेंगी। उनके रोम रोम में हिन्दू-धर्म और समाज के प्रति वैमनस्य की ज्वाला प्रज्वलित रहेगी और वह सुअवसर पाकर प्रतिशोध लेने की चेष्टा करेंगी। जो पाकिस्तान न लौट सकेंगी वह या तो आत्महत्या कर लेंगी या हमारे वेश्यालयों की संख्या बढ़ाकर अनाचार का प्रचार करेंगी—क्या यह वाञ्छनीय है? विचार करके निश्चय कीजिए।

* * *

हास्यपरिहास

भंग की तरंग

राजनीतिक लोग चाहते हैं कि भारत अँगरेजी साम्राज्य में बना रहे। दिमाग और दिल तो बना ही है। विधान में भी हो जाय तो क्या हानि है ?

* * *

लोग कहते हैं कि निजाम का अत्याचार बढ़ता जा रहा है। हमारा विचार इसके विपरीत है! हमारे धीरज की परीक्षा कर रहे हैं कि देखें अहिंसावादी भारत कहाँ तक शान्तिप्रिय है ?

* * *

पाकिस्तानवाले कहते हैं कि देश का बना ही कपड़ा पहनना चाहिये। पहले तो कातना, धुनना, बुनना उन्हीं का काम था। अब कांग्रेस ने अपना लिया। अपने पुराने व्यवसाय में लोग चले आये तो आश्चर्य क्या है ?

* * *

पाकिस्तान में चरखा-प्रचार का आयोजन किया जा रहा है। कायदे आजम महात्मा गांधी की पूरी बराबरी बिना किये नहीं रह सकते।

* * *

लखनऊ में छिपे-छिपे अफीम की भी बिक्री बहुत हो रही है। सरकार तो नशा-पानी बन्द कर रही है। यदि छिपे-छिपे भी लोग अफीम का सेवन करें तो लखनऊ नगर ही तबाह हो जाय।

* * *

बंगाल-सरकार का कहना है कि बिहार का वह भाग काटकर बंगाल में मिला दिया जाय जहाँ बँगला बोली जाती है। तब कलकत्ता का शासन संयुक्तप्रान्त के सुपुर्द करना चाहिये। वहाँ तो हिन्दी ही अधिक बोली जाती है।

* * *

हैदराबाद के पले आदमियों ने चलती रेल पर हमला कर दिया है। भारतवासी सोचते हैं कि पूरब में नोआखाली में हो गया, पश्चिम में लाहौर में आततायीपन हो गया, अब दक्षिण में भी हो जाय, पूरा त्रिकोण बन जाय तब आगे की बात सोची जाय।

प्रभु जो रसना अगर न होती ?

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

प्रभु जी रसना अगर न होती ?
कवि-सम्मेलन में हम कैसे कविता मधुर सुनाते,
कविता के पश्चात् मिठाई कैसे जमकर खाते;
पुलिस भला फिर कैसे गाली खोज खोज कर देती,
गाड़ीवानों से पैसे वह किसके बल पर लेती;
कैसे गान प्रशंसा का हम दरबारों में गाते,
शाल, दुशाला और नगद हम पुरस्कार पा जाते;
चिकनी चिकनी जीभ चलाकर बड़े बड़ों के आगे,
बड़े बड़े ओहदे वह पाते जो थे सदा अभागे;
तेरे बिना गरम भाषण नेता कैसे दे पाते,
तेरे बिना दावतें कैसे बड़ी बड़ी वह खाते;
तेरे ही बल से रूठी प्रेमिका दुलक आती है,
तू निर्बल तो आई हुई प्रेमिका उठ जाती है;
मित्रों की परोक्ष में निन्दा कैसे हम सब करते,
आलोचना-सुमन कैसे लोगों के मुख से झरते;
मोती कैसे घोंघा बनती, घोंघा कैसे मोती।
प्रभु जी रसना अगर न होती॥

राजा गजनफरअली कहते हैं कि पचास हजार मुस्लिम महिलाएं पूर्वी पंजाब में हैं। जान पड़ता है पूर्वी पंजाब में केवल अपहृत महिलाएं ही हैं और कोई हैं ही नहीं।

* * *

डाक्टर गोपीचन्द का कहना कि है पश्चिमी पंजाब ने अपहृत महिलाएं अधिक संख्या में नहीं लौटाई। पंजाब में सबसे बड़ी कठिनाई इस बात की है कि कहा नहीं जा सकता यह हिन्दू हैं कि मुसलमान, इसलिये गणना में गड़बड़ी हो सकती है।

* * *

पूर्वी पाकिस्तान में ढाका में सब सिनेमाघर बन्द होनेवाले हैं, क्योंकि फ़िल्म नहीं मिल रहे हैं। पाकिस्तान में जो नित्य नाटक वहाँ के रहनेवाले खेला करते हैं उसी का चित्र क्यों नहीं ले लिया जाता; क्या कम रोमांचकारी है ?

* * *

अरबवालों की सहायता तो सारे मुसलमान राज कर रहे हैं। यहूदियों की सहायता कौन करेगा ? वह लोग इस समय कहाँ हैं जो जर्मनी को इसलिये कोस रहे थे कि वह यहूदियों को निष्कासित कर रहा है।

* * *

हजरत ईसा मसीह को सूली पर चढ़ाने का तीन अभिशाप था। उसमें एक पहला था कि तुम संसार में भटकोगे तुम्हारा कोई घर न होगा। अभी पता चलेगा कि वह अभिशाप सत्य था कि झूठ ?

* * *

—अगड़धत्त शर्मा

हैदराबाद किधर जा रहा है।

(पेज ७ का शेष)

महिलाओं का व उनके आभूषणों का स्टेट से बाहर जाना-आना नित्य-प्रति बन्द हो रहा है।

रजाकारों के व्यय की पूर्ति भी एक समस्या है। हुकूमत की ओर से या उसकी सहायता से जो आर्थिक प्राप्ति है सो है ही किन्तु हिन्दुओं की लूट से जो विपुल धन प्राप्त हो रहा है उसका बहुत बड़ा भाग इन रजाकारों के व्यय के काम आ रहा है। भारत-सरकार तथा अन्य क्षेत्रों से यह माँग की जा रही है कि रजाकारों के सङ्गठन को तोड़ दिया जाय। यह हुकूमत के लिए कोई कठिन बात नहीं। हुकूमत इस अर्ध-सरकारी संगठन को कभी भी सिविक गार्ड या पुलिस व सेना में बदल सकती है। यह भी हो सकता है कि हुकूमत इस सङ्गठन को गैरकानूनी घोषित करने की कागजी आज्ञा निकाल दे; किन्तु अमल करना न करना उसी के हाथ की बात है।

हैदराबाद रेडियो और मजलिस इत्तेहादुल मुसलमीन की ओर से यह दावा किया जा रहा है कि रजाकारों के सङ्गठन में हिन्दू भी भाग ले रहे हैं और वे इसको पसन्द भी करते हैं। यह एक धोखा है। वास्तविक स्थिति यह है कि वहाँ के हरिजन नेता और शिक्षण-मन्त्री बी० एस० व्यंकटराव अपने अनुयायी हरिजनों को यह उपदेश देते फिर रहे हैं कि लूट-मार में वे भी रजाकारों के साथ रहें। इस उद्देश्य-पूर्ति के लिए हुकूमत बहुत-सी सरकारी भूमि हरिजनों को खेती के लिए दे रही है और उन्हें यह विश्वास दिलाया गया है कि हिन्दुओं की जिन जमीनों पर वे कब्जा कर लेंगे वह उन्हीं की समझी जायेंगी। ऐसे हरिजन रजाकारों के साथ लुटेरे बने फिर रहे हैं। इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे भी लोग हैं जो कत्ल या लूटमार के भय से इन रजाकारों के इच्छानुकूल कार्य करने पर बाधित हो जाते हैं। ऐसे ही लोगों से समय समय पर या हिन्दुओं के बनावटी नामों से ऐसे बयान ब्राडकास्ट करवाये जाते हैं जिनमें यह दर्शाया जाता है कि हिन्दू रजाकारों के पक्ष में हैं और स्वतन्त्र हैदराबाद उनका ध्येय है।

* * *

वस्तुतः वहाँ की स्थिति इतनी खराब हो गई है कि वहाँ उस समय तक अच्छी हुकूमत स्थापित नहीं हो सकती जब तक कि वहाँ के विद्रोही मनोवृत्ति और रजाकारों के सङ्गठन पर कोई कड़ी चोट नहीं पड़ती। यदि आज वहाँ उत्तरदायित्वपूर्ण शासन दिया गया तो भी हुकूमत की मिश्नरी में मुस्लिम जनता तथा वर्तमान स्थिति में उत्पन्न हुए विद्रोही मनोवृत्तिवाले इतनी अधिक संख्या में घुसे हुए हैं कि उनकी इच्छा के विरुद्ध अच्छी हुकूमत चलाना दूभर हो गया है। हुकूमत के अन्दर व बाहर फैले हुए इन विद्रोही कीटाणुओं को जब तक कुचला नहीं जाता उस समय तक किसी अच्छी हुकूमत का स्थापित होना असम्भव है।

इस प्रकार की स्थिति से जो भयभीत होकर स्टेट से बाहर आ रहे हैं हर प्रकार के लोग हैं। धनवान् तो बाहर भी आराम से रह रहे हैं, किन्तु मध्य वर्ग और साधारण वर्गवाले इस समय अधि चिंतित और परेशान हैं। पड़ोसी प्रान्तों और विशेषतः बम्बई के प्रान्त में इन पर जो बीत रही है वह बहुत करुणाजनक है। उनके लिए किसी भी रिलीफ कार्य के लि खानगी यत्न अपूरे हैं और प्रान्तीय सरकार व म्युनिसिपैलिटी इसलिए भाग नहीं लेती हैं कि भारत-सरकार ने एक सम यह घोषणा की है कि वह हैदराबादियों को शरणार्थी ही नहीं समझती।

हैदराबाद में प्रायः शस्त्रास्त्रों के रखने की स्वतन्त्रता थी किन्तु कुछ वर्षों से गोली व बारूदवाले शस्त्रों पर लायसन्स का बन्धन लगाया गया; किन्तु जब से वर्तमान आन्दोलन प्रारम्भ हुआ है हुकूमत ने स्टेट की हिन्दू जनता से सम्पूर्ण शस्त्र छीन लिए हैं। इसके सिवा अँगरेजों के काल से शस्त्र बनाने के छोटे-बड़े कारखाने और यन्त्र वहाँ थे। अँगरेजों के प्रस्थान के बाद से उन्होंने जूँ-तूँ इस प्रकार के यन्त्रों व कारखानों में वृद्धि ही की और अब स्टेट में अच्छी प्रकार की रायफलें व रिवाल्वर बड़े रूप में बन रहे हैं। इनके लिये आवश्यक कच्चा माल और फौलाद तथा विस्फोटक द्रव्य विपुल धन खर्च करके मँगवाया गया है और अब भी मँगवाया जा रहा है। हमें यह ज्ञात हुआ है कि भारत के प्रान्तों से मुँहमाँगे दाम देकर फौलादी सामान जैसे सब्बल आदि मँगवाया जा रहा है। पड़ोसी प्रान्तों से इस प्रकार के सामान के आगमन पर जैसा बन्धन और नाकाबन्दी होनी चाहिये थी; नहीं हुई। वर्तमान स्थिति का हाल हम नहीं बता सकते। अनेक स्थानों पर यह भी देखा गया है कि हिन्दुओं से लिए हुए शस्त्रास्त्र रजाकारों के हवाले किये गये। इसके अतिरिक्त धारदार शस्त्र और पेट्रोल मुसलमानों में बहुत बाँटा गया है। धारदार शस्त्रों की तैयारी मुसलमानों द्वारा खुल्लमखुल्ला हो रही है। इस समय बारूद का कार्य सम्पूर्ण रियासत में मुसलमानों के ही हाथों में है। प्रत्यक्ष अनुभव से यह कहा जा सकता है कि पड़ोसी प्रान्तों के सीमा पर के स्वार्थी और लालची लोगों ने प्रति गेलन २० रुपये लेकर रियासत में पेट्रोल भेजा है। तथापि भारत-सरकार की शक्ति के सामने हैदराबाद की तैयारी कोई महत्त्व नहीं रखती तब भी कुछ परेशानी और सिरदर्दी का कारण अवश्य बन सकती है।

* * *

जल्दी कीजिये अथवा पछताओगे!

५ रुपये लगाकर ३२५५ रुपये बैठे कमाओ। मेम्बरशिप फीस एक रु भेजें और पत्र तथा १॥ आने का टि भेजकर हिन्दी, उर्दू अथवा अँगरेजी में उत्तर की प्रतीक्षा करें। पता ऐसा लि जिससे आपको आसानी से मनीआ मिल सके।

ईश्वरदास कपूर एण्ड कम्पनी
१२०९ ए. मोरीगेट देहली

ादक के नाम चिट्ठियाँ

-सरकार और हिन्दी का भविष्य

तक बड़ी आशा हो रही थी कि भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में सर- र पर स्वीकृत हो जायेगी साथ ही विधान-परिषद् भी वैधानिक दृष्टि घोषणा कर देगी। यद्यपि विधान के द्वारा राष्ट्रभाषा के सम्बन्ध में अभी निर्णय नहीं हुआ है। इधर विश्व- से पता चल रहा है कि भारत- कुछ अधिकारी नेता तथा तिकड़मी राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति षड्यन्त्र- सहिष्णुता दिखा रहे हैं। उससे चल रहा है कि हिन्दी का भविष्य दृष्टि से आशाजनक नहीं है। यह चला है कि भारत-सरकार के कुछ कर्मचारी और हिन्दी के शत्रु को अपदस्त करने की नीति का कर रहे हैं। अभी पिछले दिनों भारतीय विश्वविद्यालयों के वाइस- ने एक सभा में यह निश्चय किया आगामी ५ वर्ष तक विश्वविद्या- शिक्षा का माध्यम अँगरेजी ही । इस प्रकार के निर्णय की प्रति- सरकार के अन्य विभागों के पड़ना प्रारम्भ हो गया है। हमें है कि आल इंडिया रेडियो के विरुद्ध एक षड्यन्त्र चल हिन्दी प्रोग्रामों की आजकल 'पुनर्मूषकोभव' की दृष्टि से अर्थात् उर्दू बनाने का जोरदार किया जा रहा है।

गया है कि हिन्दुस्तानी की आड़ के हिमायतियों ने प्रधान मन्त्री को किया है कि रेडियो में हिन्दी कास्ट में जिस भाषा का प्रयोग , वह भारत के पड़ोसी राष्ट्रों के के अनुकूल नहीं है, इसलिए हिन्दुस्तानी (अर्थात् उर्दू) में हों। यह भी खबर है कि इस के सुझाव को कार्यान्वित करने के आल इंडिया रेडियो के अधिकारियों आदेश भी दिया गया है। यदि यह सच है तो इसमें सन्देह नहीं है कि भाषा हिन्दी के प्रति यह एक महान् है।

इसी प्रकार के अन्य षड्यन्त्र भी -विरोधियों द्वारा हिन्दी के हित के हो रहे हैं। विधान-परिषद् के में भी जो हिन्दी के प्रति सहानु- रखते हैं, विरोधी प्रचार किया जा है। पिछले वर्ष माननीय श्री पुरुषो- दास टण्डन तथा सेठ गोविन्ददास जी प्रयत्न से विधान-परिषद् के आधे से अधिक सदस्यों ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पक्ष में अपनी स्वीकृति दे दी थी, सुना गया है कि अब उन्हें भी ा जा रहा है। हमें तो यह भी मिली है कि हिन्दी के विरोध में एक मोर्चा तैयार किया जा चुका है। और इसका संचालन राष्ट्र के नेता तथा उनके एक उर्दू मुसाहिब जोरों कर रहे हैं। रेडियो में पक्षपातियों का बोलबाला है, जो उर्दू के पक्षपाती हैं, इसलिए वह तो नित्य माला जप रहे हैं; हिन्दी के ब्राडकास्ट से उनका कब पिंड छूटेगा ? भारत सरकार में मद्रासी ऊँचे ऊँचे पदों पर प्रतिष्ठित हैं, इसलिये वह अँगरेजी का पक्ष ले रहे हैं। हिन्दी के बनिस्पत अँगरेजी उनके निकट अधिक है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि राष्ट्रभाषा हिन्दी का पक्ष कमजोर होता जा रहा है। इस प्रकार राष्ट्रभाषा हिन्दी का विरोधी प्रचार देखकर कांग्रेस के प्रमुख अधिकारी ने यहाँ तक कह डाला है कि बदलती परिस्थिति देखकर ऐसा लगता है कि राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी ही होगी, भले ही वह कार्यरूप में परिणत न हो सके।

भारत-सरकार के उपसभापति सरदार वल्लभभाई पटेल आजकल बीमार पड़े हैं। हम जानना चाहते हैं कि हिन्दी के विरुद्ध जो षड्यन्त्र हो रहा है, विशेष कर आल इंडिया रेडियो-विभाग में, क्या उनकी जानकारी में ऐसा हो रहा है ? सरदार पटेल ने हिन्दी ब्राडकास्टिंग के सम्बन्ध में भारत-सरकार की नीति का जो स्पष्टीकरण पहले किया था क्या उनकी इच्छानुसार उसमें परिवर्तन होने जा रहा है ? इन पंक्तियों की ओर हम सरदार वल्लभभाई पटेल का ध्यान आकर्षित करते हैं, क्योंकि हिन्दी-जगत् में इस समय बड़ा भ्रम फैल रहा है।

देहरादून —हिन्दीवाला
२८, मई ४८

* * *

हिन्दी पत्रों का विवरणात्मक ग्रन्थ व प्रदर्शनी

पिछले दिनों 'देशदूत' के द्वारा उपर्युक्त ग्रंथ के सम्बन्ध में विज्ञप्ति प्रसारित की गई थी। हमें हर्ष है कि अनेक पत्र-सम्पादकों ने हमारी प्रार्थना पर ध्यान देकर अपनी पत्र-पत्रिकाओं की नमूने की प्रतियाँ भेजी हैं। इस प्रकार प्राप्त हुए पत्रों की संख्या १५० से ऊपर है। अनेक सम्पादकों ने अपने पत्रों का संक्षिप्त परिचय भी भेजने की कृपा की है। लेकिन हिन्दी आज राष्ट्र-भाषा है, आज लगभग ५०० से ऊपर पत्र-पत्रिकाएँ हिन्दी में प्रकाशित हो रही हैं। ग्रंथ को पूर्ण बनाने के लिये हमें प्रत्येक पत्र-पत्रिका के सम्बन्ध में निम्न जानकारी अपेक्षित है।

(१) पत्र के प्रथमाङ्क प्रकाशन की तिथि, नीति, कौन से विशेषाङ्क अब तक प्रकाशित किये।

(२) पत्र के संचालक व आदि सम्पादक का नाम।

(३) पत्र के वर्तमान सम्पादक का संक्षिप्त परिचय (यथा कौन से ग्रंथादि लिखे, रुचि का विषय विशेष, अन्य ज्ञातव्य बातें आदि) तथा सहायक सम्पादक। सम्पादकों की नामावली।

(४) पत्र नियमित निकल रहा है अथवा प्रकाशन स्थगित हुआ तो कब से कब तक ? यदि पत्र अब नहीं निकलता तो प्रकाशन कब बन्द हुआ आदि।

(५) पत्र में लेखों के लिये लेखकों को—पारिश्रमिक देने के नियम हैं अथवा नहीं ? यदि लेखों के लिये पारिश्रमिक दिया जाता है तो पारिश्रमिक की दरें। अथवा अन्य ज्ञातव्य समाचार।

(६) पत्र के नमूने की प्रति। सम्भव हो सके तो प्रथमाङ्क की प्रति भी भेजी जाय। जिन पत्रों का प्रकाशन स्थगित हो गया है या जो बहुत पहले बन्द हो गए हैं, पुरानी प्रति अपेक्षित है।

हिन्दी-संसार को यह जानकर भी हर्ष होगा कि हम "हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं की प्रदर्शनी का आयोजन भी आगामी जुलाई मास में कर रहे हैं ! जिन सज्जनों के पास हिन्दी के पुराने पत्र हों और जो सहर्ष समिति को दान करना चाहें, पत्र-पत्रिकाओं की प्रति। प्रतियाँ, प्रो० कन्हैयालाल सहल, एम० ए०, अध्यक्ष, हिन्दी-साहित्य-समिति (बिड़ला कालेज) पिलानी (जयपुर) के पते पर भेज सकते हैं। ऐसी पत्रिकाओं के लिये सधन्यवाद। प्राप्ति-स्वीकार की सूचना भेजी जायगी।

हिन्दी-पत्र-पत्रिकाओं का विवरणात्मक उपर्युक्त ग्रंथ "हिन्दी के पत्र और पत्रिकाएँ" सर्वश्री अखिल विनय और गिरडाराम वर्मा 'चंचल' के सम्पादकत्व में शीघ्र ही निकल रहा है। हिन्दी भाषा-भाषी सज्जनों, लेखकों व पत्रकारों के आवश्यक सुझाव, सम्मति आदि अपेक्षणीय हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दी को समृद्धिशाली बनाने के लिये इस कार्य में सबका सहयोग हमें चाहिए।

बिड़ला कालेज, —अखिल विनय
पिलानी (जयपुर) (संयोजक)

* * *

पित्त निकलना—खतरे से खाली नहीं ?

(पेज ८ का शेष)

प्रयोग अधिक किया जाय। ककड़ी, खीरा, तरबूज, सत्तू आदि का सेवन, ठण्डे पेयों का बार बार प्रयोग, शीतल पानी की नदियों, जलाशयों और सावर बाक्स में देर तक स्नान करना; ये बातें हैं जिनका पालन रोगी को शान्ति प्रदान करता है। समर्थ लोगों को घर की हर एक खिड़की और दरवाजे पर खस की सिरकियाँ टंगवाकर खूब पानी छिड़कवाते रहना चाहिए।

* * *

गाचनी मिट्टी—दानों की क्षोभ, गर्मी, खुजली और जलन को शान्त करने के लिए शीतल, ग्राही और क्षोभ को कम करनेवाले द्रव्यों का स्थानिक प्रयोग किया जाता है। इनमें सबसे प्रसिद्ध गाचनी मिट्टी है जिसे भारत में हजारों सालों से इस्तेमाल किया जा रहा है। वैसे तो जोहड़ की किसी भी सूखी और चिकनी मिट्टी को भी लोग ले लिया करते हैं। गाचनी मिट्टी (इसे मुलतानी मिट्टी भी कहते हैं) को चन्दन की तरह घिसकर स्नान के पूर्व सारे बदन पर लेप कर देते हैं। लेप जितना गाढ़ा लगाया जाय उतना अच्छा रहता है। लेप जल्दी ही सूख जाता है। कुछ देर तक इसे लगा रहने देना चाहिए। फिर खुले पानी में नहाते हुए हाथों से मल-मलकर धो डालना चाहिए।

सफेद चन्दन—यह अत्यन्त शीतल पदार्थ है। लेप और अवधूलन (डस्टिंग पाउडर) दोनों रूपों में अकेला या दूसरे द्रव्यों के साथ मिलाकर प्रयोग किया जाता है। पानी के साथ घिसकर इसे अकेला या गाचनी मिट्टी में मिलाकर लेप किया जाता है। बारीक कपड़े में चन्दन का छाना हुआ चूर्ण दानों पर अवधूलन की तरह छिड़का जाता है। स्नान के बाद शरीर को नरम तौलिये से पोंछकर चन्दन को नरम रुई से या पफ से दानों पर मोटी तह में बिछाते जाना चाहिए। पित्त पाउडर के अनेक नुस्खों में चन्दन का चूर्ण या तेल मिलाया जाता है।

सौभाग्य जल—पित्त के दानों की जलन और खुजली को शान्त करने के लिए एक तोला सुहागे (सौभाग्य) को एक पाव कपूर जल में घोलकर बनाये घोल को दानों पर रुई से लगाना चाहिए। नरम कपड़े या शोषक रुई को इस घोल में भिगोकर दानों पर रखें। जब गरम हो जाय तो निचोड़ दें और फिर ठण्डे घोल में भिगोकर रखें। इससे रोगी को बहुत आराम मिलता है।

चावल का आटा—चावल के बारीक पिसे हुए आटे को भी डाक्टर वेअरिंग ने पित्त के दानों पर छिड़कने से दाह, क्षोभ और गरमी को शान्त करनेवाला पाया है। इसके लिए साफ चावलों को बारीक पीसकर कपड़े में छान लें। त्वचा पर इसे छिड़ककर मोटी तह बिछा दें। दानों पर यह बहुत शीतल दवा का काम करता है। इसलिए रोगी भी इसे लगाना पसन्द करता है।

पित्तावधूलन—बाजार में 'पित्ता-पाउडर' के नाम से बिकनेवाले पाउडरों में सामान्यतः निशास्ता, सुहागा, जस्ते का फूला आदि द्रव्य होते हैं। मेरे अनुभव में नीचे लिखा नुस्खा बहुत लाभदायक रहता है।

कपूर	२ रत्ती
सफेद चन्दन का चूर्ण	६ माशा
सुहागे का फूला (या बोरिक एसिड)	१ तोला
जस्ते का फूला (या जिंक आक्साइड)	१ „
निशास्ता (एमाइलम)	२ „

दानों में पड़ गई पीप को भी यह सुखाता है, त्वचा की शोथ और क्षोभ को शान्त करता है।

* * *

मुफ्त

युवको ! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीवन फीका हो चुका हो तो भारत भर में सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त रोग विशेषज्ञ कविराज ब्रह्मसरूप बी० ए० लाहौरवाले फतेहपुरा (D.A.) देहली से मशविरा (सम्मति) मुफ्त लेकर अपना जीवन सुधार लें।

इधर उधर की

आपकी घड़ी

अमेरिकन वैज्ञानिकों ने घड़ियों पर नये अनुसन्धान प्रारम्भ किये हैं। वहाँ के प्रसिद्ध डाक्टर एडवर्ड ने इस विषय की ओर बड़ी महत्त्वपूर्ण गवेषणा की है। इनके पिता ने इन्हें शिक्षा दी वह इनके लिये इनकी दृष्टि से पर्याप्त न थी। लार्ड कानविन के समय के सारे अनुभवों का अध्ययन करने के पश्चात् एडवर्ड ने अपने वैज्ञानिक क्षेत्र को दूसरी ही ओर लगाया।

जल और लोहे की सहायता से इन्होंने वर्तमान घड़ियों के रूप में आश्चर्य-जनक परिवर्तन किये हैं। दिन के १५ मिनट यह घड़ियाँ किसी वस्तु-विशेष के नुकसान होने का समय भी निर्देश करती हैं। प्रातःकाल के लिये रात को इसे किसी चीज के सहारे लटकाया जाता है, फिर दिन भर इसका समय बिलकुल ठीक रहता है। इसकी गति और आधुनिक घड़ियों की गति में अधिक अंतर नहीं, फिर भी इन घड़ियों की अपेक्षा यह घड़ियाँ मानव-जाति के समय की अधिक रक्षा करेंगी, ऐसा विश्वास किया जाता है।

* * *

चींटी का परिश्रम

चींटी किसी भी समय बेकार नहीं रहती, जिस प्रकार आदमी सोचता है ठीक उसी गति से चींटी अपने काम में लगी रहती है। अमेरिका के प्रकृति ऐतहासिक अजायबघर में चींटियों के दो झुंड रखे गये हैं, अनुमान किया गया है, कि यह दिन में पाँच सौ गज घूमती थीं। यह भी खोज की गई है कि चींटियाँ दिन में रात की अपेक्षा अधिक घूमती-फिरती हैं।

एक विशेष यन्त्र के द्वारा वैज्ञानिकों ने चींटियों की चलने-फिरने की अवस्था का अनुभव प्राप्त किया है। इनकी इन सारी बातों की खोज का इतिहास अत्यंत मनोरंजक है। यहाँ तक पता चला है कि चींटियाँ भी आपस में व्यक्तिगत ईर्ष्या रखती हैं। चालीस प्रतिशत चींटियाँ अपने भ्रमण का अधिकांश भाग दिन डूबने के पहले समाप्त कर लेती हैं। चींटियों में भी कुछ चींटियाँ रानी की भाँति अपना शासनसूत्र भी सञ्चालित करती हैं।

डाक्टर थ्यूडर अजायबघर के प्रधान चींटियों की इन विभिन्न अवस्थाओं का अनुभव प्राप्त करने के पश्चात् मानव-स्वभाव का भी अध्ययन करेंगे। इस अनुसन्धानात्मक कार्य में अमेरिकन दार्शनिक सोसाइटी, राष्ट्रीय पुरातत्त्व-विभाग, आदि सभी प्रमुख संस्थाएँ भाग ले रही हैं। लगभग २०,००० चींटियाँ अजायबघर के भीतर लाई जा चुकी हैं। धीरे धीरे इनके सारे कार्यों का अध्ययन किया जायेगा। वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि भोजन की खोज में चींटियाँ सदैव झुंडों में जाती हैं। विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों के लिये भी इस प्रकार के अध्ययन की नई व्यवस्था की जा रही है।

* * *

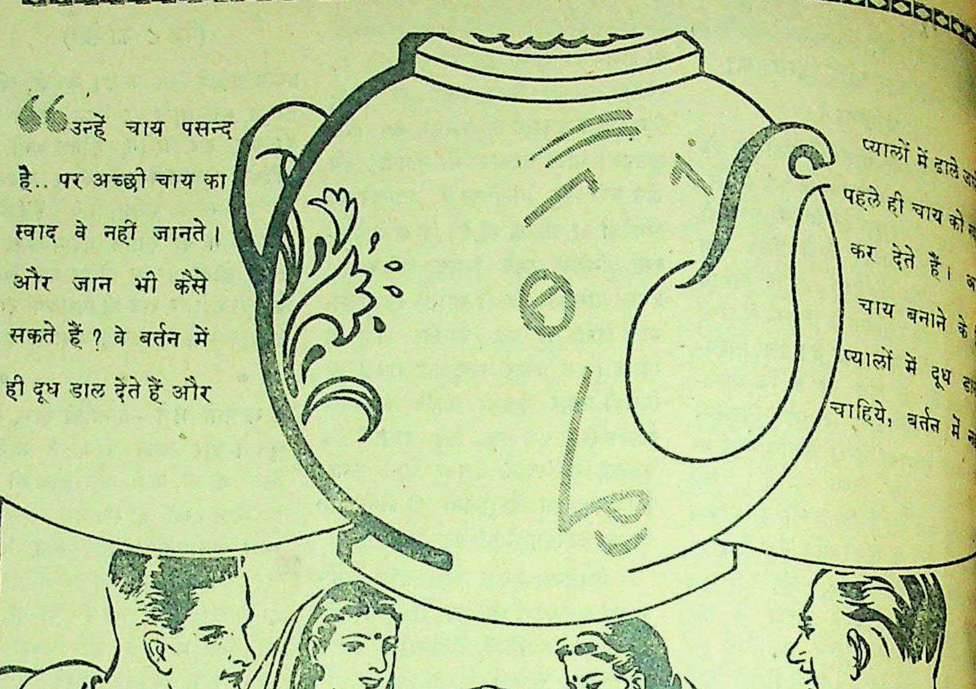

“उन्हें चाय पसन्द है.. पर अच्छी चाय का स्वाद वे नहीं जानते। और जान भी कैसे सकते हैं? वे बर्तन में ही दूध डाल देते हैं और

प्यालों में डाले
पहले ही चाय को
कर देते हैं।
चाय बनाने के
प्यालों में दूध
चाहिये, बर्तन में

खुशी और तरोताजगी हासिल करने के लिये करोड़ों व्यक्ति चाय पीते हैं। कितने अफसोस की बात है कि बहुत से चाय पीने वाले इतना भी नहीं जानते कि अच्छी चाय कैसी होती है या कैसे बनाई जाती है। अच्छी चाय बनाने में कोई विशेष खर्च या तकलीफ नहीं होती; सिर्फ पाँच सरल नियम मानना काफी है। अपने पैसों की पूरी कीमत और चाय का पूरा स्वाद लेना हो तो इन नियमों को याद कर लीजिये और घर में उनका हमेशा पालन हो इसका ख्याल रखिये।

पाँच सरल नियम

१. सिर्फ ताजा और फौरन खौला पानी लीजिये। २. चाय के बर्तन को पहले गर्म कर लीजिये। ३. हर व्यक्ति के लिये एक चम्मच और एक चम्मच बर्तन के लिये सूखी चाय डालिये। ४. तीन से पांच मिनट तक चाय को सीझने दीजिये। ५. दूध प्याले में मिलाइये, बर्तन में नहीं।

चाय-चर्चा नामक पुस्तिका अंगरेजी, हिन्दी, बंगला, उर्दू या तामिल किसी भी भाषा में कमिश्नर, इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड १०१, नेताजी सुभाष रोड, पोष्ट बक्स २१७२ कलकत्ता से आवेदन कर मुफ्त मँगाई जा सकती है।

सबसे अच्छी
अच्छी-बनी
चाय

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

LIPTONS
WHITE LABEL
TEA
ONE POUND NETT
लिपटन
माने अच्छी चाय

ाहित्य-चर्चा

कवि 'अंचल'

ीक से एक अनुभव

लेखक, श्री उमाशंकर शुक्ल

लोगों का कहना है कि कवि हुआ करते हैं। जो मन में बैठते हैं। वे बड़े भावुक होते कविता के आगे किसी भी परवाह नहीं होती। संसार में रहा है, उन्हें पता नहीं रहता। वे क्या सोचते रहते हैं। मैं बहुत लोगों से सुनता आया हूँ— अपनी धारणा इसी तरह की —पर जब मैं चोटी के कवियों आया तो उपरोक्त बात भ्रम दूसरे लोक का जीव नहीं, लोक में विचरण करनेवाला होता है। उनके हृदय होता है, होता है और संसार के सुख-दुःख सुख-दुःख समझते हैं।

वर्ष पहले मध्यप्रांत विदर्भ सम्मेलन का वार्षिक की राजधानी नागपुर में माधुरी के भूतपूर्व संपादक साहित्यिक आदरणीय पं० से मिला था। उन्हीं से 'अंचल' जी उनके सुपुत्र से अंचल जी का और मेरा शुरू हुआ, यों तो अंचल जी मेरे गुरु अकोला-निवासी पं० बहुत बताते थे और मैंने भी कुछ उपन्यास, कहानियाँ, कविताएँ पढ़ी थीं। फिर भी बारे में मैं और कुछ जानने हुआ।

से पत्र-व्यवहार शुरू एक बार उन्होंने मेरे पास का 'सेट' भी मेरे लिखने दिया! वर्धा हिन्दी-साहित्य- परीक्षाओं का केंद्र है और के परीक्षार्थी यहाँ से बैठते 'अंचल' जी का पत्र आया आ रहा हूँ—उत्तमा के मौखिक परीक्षा लेने— पर मिलिए। मुझे बड़ी खुशी अंचल जी को देखा था मुझे ही। मैं सोचने लगा स्टेशन में अंचल जी को कैसे । स्टेशन गया—पर अंचल । दूसरे दिन कहीं वे आये। स्टेशन पहुँचा। बहुत ढूँढ़ा नहीं। सामने देखता हूँ तो एक -सा कोट पहने, बड़े बड़े बाल पाजामा पहने राष्ट्रभाषा प्रचार- और ताँगे पर जाने की तैयारी उस युवक के पास पहुँचा ने मुझे देखते ही कहा— —!' —कौन, अंचल जी! यही था।

*

'अंचल' जी का काव्यगान हमने टाऊनहाल में रखा। पं० भवानीप्रसाद जी मिश्र भी बुलाये गये। भदंत आनंद कौसल्यायन उस साहित्यिक आयोजन के अध्यक्ष बनाये गये और दोनों कवियों का कविता-पाठ हुआ। 'अंचल' जी को हम पहली ही बार सुन रहे थे। खूब मजा आया। उस रात खूब रस बरसा। 'अंचल' जी के पास अगर गला हो तो 'अंचल' जी की कविता में पर लग जायँ। फिर भी 'अंचल' जी की कविताएँ खूब पसंद की गईं। काश्मीरवाली कविता तो बहुत ही अच्छी रही। मैंने देखा—'अंचल' जी प्रसिद्धि से कोसों दूर भागते हैं—वे अपना कार्य करने में ही व्यस्त रहते हैं। इस बार भी वे वर्धा मौखिक परीक्षा के लिए आये थे और उनका भाषण कामर्स कालेज में रखा गया। उन्होंने प्रगतिवाद पर अपने जो सुलझे हुए विचार रखे—उन्हें बहुत ही पसंद किया गया।

'अंचल' जी ने हाल ही में दो उपन्यास लिखे हैं—'नई इमारत' और 'अलका'। दोनों में मैंने नवीनता देखी और दोनों जमाने के साथ चलते हुए पाये गये। 'नई इमारत' १९४२ के अगस्त-आंदोलन को चित्रित करता है। वह उस नई सामाजिक व्यवस्था की स्थापना पर जोर देता है जिसमें मानव को मानव से अलग करनेवाले असहिष्णु, धार्मिक और सांप्रदायिक संस्कारों का स्थान नहीं होता। इसमें अगस्त-क्रांति की चेतन, प्रगतिशील शक्ति को पहचानकर तदनुरूप मनोवैज्ञानिक तीव्रता और क्रांतिकारी अनुभूति का स्वस्थ तटस्थ चित्रण किया गया है। आजादी की लड़ाई और अँगरेजी साम्राज्यवाद की राख पर अभिनव भारत का निर्माण उपन्यास के प्रत्येक पात्र के जीवन की प्रेरक शक्ति है। 'नई इमारत' हमारे राष्ट्र को क्रांतिकारी व्यक्तित्व प्रदान करनेवाली नई चेतना का वाहक कही जा सकती है।

'अंचल' जी कवि पहले हैं—उपन्यासकार बाद में—ऐसा मैं समझता हूँ। अभी अभी उनका पाँचवाँ कविता-संग्रह 'लाल चूनर' प्रकाशित हुआ है। उनका कहना है कि काव्य में प्रगतिशीलता कहलानेवाले उस उपयोगी सामूहिक रस को, सामाजिक स्वतन्त्रता की उस महान् तरङ्ग को, जनता की महत्त्वाकांक्षाओं और स्वार्थों के उस सर्वदेशीय साधारणीकरण को अपनी कविताओं में एक कठोर जीवन देने के लिए जिस क्रांतिकारी मनोबल और जनता के साथ सक्रिय अभिन्नता की आवश्यकता है वह मुझमें नहीं है—ऐसा उनका कहना उनकी नम्रता प्रकट करता है। इसके सिवाय और क्या कहा जाय। अंचल जी का स्थान प्रगतिशील कवियों में से प्रमुख रूप में है। वे क्रांति के अग्रदूत कहे जाते हैं। उनकी कविताओं में हमें प्रकृति का सौंदर्य, जीवन की सत्यता और दुःखी जीवन का चित्रण मिलता है।

'वनफूल' कविता की ये पंक्तियाँ जरा देखिए—कितनी सुन्दर हैं—

"जो अडिग रहता अड़ा
तूफान में बरसात में,
टूट जाता है वही
तारा शरद की रात में,
मुक्त जीवन की प्रगति भी,
द्वंद में संघात में,
फूल काँटों में खिला था
सेज पर मुरझा गया।

कवि श्री 'अंचल' और इस लेख के लेखक श्री उमाशंकर शुक्ल (पत्रकार)

* * *

'लाल चूनर' से पूर्व आपकी कविताओं के संग्रह, "मधूलिका, अपराजिता, किरणबेला, और 'करील' के नाम से निकले हैं। आपका प्रथम उपन्यास 'चढ़ती धूप' है। आपके निबन्ध, 'समाज और साहित्य' के नाम से संकलित हुए हैं। 'अंचल' जी के बारे में व्योहार राजेंद्रसिंह जी ने 'नक्षत्र' में लिखा है कि......दोनों क्षेत्रों में हृदय की अनुभूति की गहराई, भावुकता तथा कल्पना की एकता, भावों तथा भाषा की स्वाभाविकता—अंचल जी के प्रधान गुण हैं। इनके कारण इनकी भाषा में भी स्वाभाविकता तथा प्रभावोत्पादक शक्ति आ गई है।"

* * *

अंचल जी बड़े ही मिलनसार हैं—नम्र भी आवश्यकता से अधिक हैं। उन्हें किसी बात का गर्व नहीं और न वे अन्य कवियों की तरह शर्माते ही हैं। वर्धा में दो बार आये—दोनों बार मेरे ही यहाँ ठहरे। वे इस तरह रहे जैसे अपने घर के ही हों। पहली बार जब वे आये थे तो कविता-पाठ का कार्यक्रम जरा देर से समाप्त हुआ। उन्होंने घर कहला दिया कि सब लोग भोजन कर लें और हम दोनों के लिए ढाँककर रख दें। उस रात हम दोनों ने डेढ़ बजे भोजन किया था। भोजन ठंडा हो गया था। माँ को भी उनके इस सरल स्वभाव से बड़ी प्रसन्नता हुई और कभी-कभी वे पूछ लेती हैं—अंचल जी भला कब आएँगे? मेरी बिटिया, उन्हें कभी कभी 'अंतल दी' के नाम से याद कर लेती है।

'अंचल' जी इस बार आये थे तो साहित्य सेवा-सदन में साहित्य-गोष्ठी का आयोजन किया गया था। 'प्रगतिवाद' के सम्बन्ध में तथा वर्तमान हिन्दी-साहित्य के बारे में प्रो० श्रीनारायण अग्रवाल तथा मराठी साहित्य के प्रतिभाशाली लेखक श्री वामनकृष्ण चोरघड़े से काफी देर तक वाद-विवाद होता रहा। अंचल जी के ज्ञान-भाण्डार का उस दिन पता चला। उनका अध्ययन गम्भीर है और कोई भी बात कहने का उनका अपना तरीका है।

बहुत-सी बातें अंचल जी के सम्बन्ध में कहने को एक साथ मस्तिष्क में आ गई हैं। यह नहीं सूझता कि क्या क्या कहूँ और क्या क्या न कहूँ। एक वाक्य में इतना ही कहना चाहता हूँ कि अंचल जी का भविष्य उज्ज्वल है और वह दिन जरूर आएगा जिस दिन हम 'अंचल' जी का एक विशेष सम्मान करते हुए पाये जायँगे। उनसे हमें बड़ी बड़ी आशाएँ हैं।

'अंचल' जी चिरायु हों और अधिक से अधिक स्वस्थ साहित्य का निर्माण करें यही शुभ कामना है।

[भारतेन्दु हिन्दी सिंडिकेट, वर्धा]

* * *

ऐतिहासिक भौतिकवाद

लेखक, भूतपूर्व काकोरी-कैदी
श्री मन्मथनाथ गुप्त और श्री रमेन्द्र वर्मा
लगभग ५०० पृष्ठों के सजिल्द ग्रन्थ का
मूल्य केवल ६) रुपये।

मार्क्सवाद में ऐतिहासिक भौतिकवाद की गहनता को सरलतापूर्वक समझने के लिए इस ग्रन्थ की उपयोगिता अद्वितीय है। समाजवाद समझनेवालों के लिए इसका अध्ययन अपरिहार्य है।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

नेहरू और पटेल

(पेज ५ का शेष)

बड़ी धीरतापूर्वक कांग्रेस की पार्टी मशीन का निर्माण किया और अब भी स्वयम् उसका संचालन करते हैं। पार्टी के लाभ और हानि की दृष्टि से वे प्रत्येक मनुष्य को आँकते हैं। उनके आस-पास कार्यकर्त्ताओं की भीड़ लगी रहती है जो वे पूर्णतया उनके आदेशों पर चलते हैं। वास्तव में वे कांग्रेस संस्था के 'बड़े सरदार' हैं।

विपरीत स्वभाव की इन दो विभूतियों को एक सूत्र में बाँधनेवाले भारत के भाग्यविधाता महात्मा गांधी थे। गांधी जी सर्वश्रेष्ठ पथप्रदर्शक थे और उन्हें नेहरू और पटेल जैसे व्यक्तियों की श्रद्धा प्राप्त हो सकी थी। निस्सन्देह दोनों ही उनके प्रशंसक और आदर करनेवाले हैं। नेहरू के लिए उनका प्यार बढ़ता गया और वास्तव में वे उनको अपने पुत्र के समान ही समझते थे। जवाहरलाल के अन्दर जो बात उनको अच्छी लगती थी वह थी उनकी उदारता, आदर्शवादिता तथा उनका खरा, निष्कपट स्वभाव। अपने व्यक्तिगत चरित्र के कारण जवाहरलाल जी उनके हृदय के बहुत निकट पहुँच गये थे। किन्तु सरदार पटेल के साथ बाँधनेवाली कड़ियाँ भी बड़ी मजबूत थीं। सरदार उनके सबसे पुराने और निकटतम सहकारियों में से थे। गांधी जी उनके गुणों को जानते थे। सरदार के प्रति उन्हें असीम प्रेम था और उन पर इतना विश्वास करते थे कि बहुत पहले ही वे महात्मा जी का दाहिना हाथ बन गये थे। सरदार ने अपने को पूर्णतया गांधी जी के हवाले कर दिया था।

परन्तु दोनों का कभी कभी गांधी जी से मतभेद होता था। विशेषकर अन्तर्राष्ट्रीयता और समाजवाद के प्रश्न पर नेहरू गांधी जी से स्पष्ट रूप से विरुद्ध रहते थे। पटेल अपनी व्यावहारिक बुद्धि के कारण उनकी बहुत-सी आदर्शवादी योजनाओं पर विश्वास नहीं कर पाते थे तो भी महात्मा जी का निर्णय उनको पूर्णतया मान्य होता था। दोनों को ही उनके इस वर्तमान आसन तक पहुँचने का श्रेय गांधी जी को है। बहुत सोच-विचार के बाद महात्मा जी ने पटेल को गुजरात में अपना विश्वसनीय कार्यवाहक चुना था और तभी से उन पर पूरा भरोसा रखते थे। सरदार पटेल की शक्ति और ख्याति बढ़ने का यह प्रारम्भ-काल था। पण्डित नेहरू को भी हिन्दुस्तान का नेतृत्व प्राप्त करानेवाले गांधी जी ही थे। कांग्रेस के लाहौर-अधिवेशन में महात्मा जी ने उनको सभापति बनाया जो कांग्रेस के इतिहास में सम्भवतः सबसे कम-वयस्क सभापति थे। कांग्रेस की पार्टी मशीन में गांधी जी के नैतिक सहयोग के बिना नेहरू अपनी प्रधानता को स्थित नहीं रख सकते थे। पण्डित जी वोट प्राप्त करने के लिए कूटनीति और दलबन्दी का सहारा नहीं लेते। यह कार्य उनके लिए गांधी जी ने किया और इस बात ने अनेक प्रकार से उनको बिगाड़ने का भी काम किया है।

दोनों नेताओं का दृष्टिकोण एक सीमा तक एक-दूसरे से भिन्न है। नेहरू एक प्रकार के फेबियन समाजवादी तथा अन्तर्राष्ट्रीयता के हामी हैं। वे प्रगतिशील विश्वबंधुत्व में विश्वास करते हैं। अधिकतर समस्याओं पर उनकी पहुँच क्रांतिकारी होती है। साथ ही साथ योरोपीय संस्कृति और रहन-सहन के लिये उनमें एक खास कमजोरी भी है। पटेल अपने रहन-सहन में नख से शिख तक भारतीय हैं। अपनी व्यावहारिकता के कारण किसी विशेष 'वाद' में उनका विश्वास नहीं है तो भी निश्चित रूप से वे पूँजीवाद को समाज के लिये आवश्यक समझते हैं। यह उनकी एक कमजोरी रही है कि बहुत समय तक उन्होंने नई सामाजिक व्यवस्था में श्रम के महत्त्व को अस्वीकार किया। नेहरू मूलरूप से आदर्शवादी हैं, तथा पटेल वास्तविक रूप से एक व्यावहारिक व्यक्ति हैं।

गत काल में दोनों का एक दूसरे से मतभेद रहा। यहाँ तक कि कभी कभी उन्होंने एक दूसरे के प्रस्तावों का विरोध भी किया है। यह इस कारण स्वाभाविक भी था कि वे कांग्रेस के अन्दर भिन्न-भिन्न धाराओं के प्रतिनिधि रहे हैं। उग्रवादी तथा समाजवादी प्रवृत्तियाँ नेहरू के आस-पास एकत्रित होती थीं और अनुदार एवं रूढ़िवादी तत्त्व पटेल को अपना केन्द्र बनाते थे। समय समय पर इन मतभेदों ने उग्र रूप धारण किया है। यह एक प्रत्यक्ष भेद है कि दो-तीन बार किन्हीं आधारभूत सिद्धान्तों पर नेहरू का गांधी से जबर्दस्त मतभेद हो गया था। गांधी जी ने कुशलतापूर्वक समझौते की अवस्था इस कठिनाई को हल कर लिया था। सरदार पटेल ने गांधी जी से कोई मतभेद हो जाने पर उसे कभी बाहर प्रकट नहीं किया।

व्यावहारिक राजनीतिक में नेहरू और पटेल अधिक दृढ़ थे। कांग्रेस ने जब कोई नया कदम उठाया नेहरू ने पूरी तरह गांधी जी का साथ दिया। धीरे धीरे वे जनता के सामने गांधी जी के मुख्य प्रतिनिधि हो गये। पिछले कुछ वर्षों से वे कांग्रेस और गांधी जी के मुख्य सार्वजनिक वक्ता बन गये थे, जब कि पटेल मुख्य संगठनकर्त्ता के रूप में रहे। एक जनता का प्रतीक बन गया तो दूसरे के हाथ में तख्त के पीछे की सारी शक्ति थी। गांधी जी से दोनों के मतभेद का यह एक उल्लेखनीय अवसर था जब कि क्रिप्स-वार्तालाप के समय देश के विभाजन का प्रश्न आया दूसरा महत्त्वपूर्ण अवसर तब आया जब कांग्रेस के भविष्य के बारे में चर्चा की जा रही थी और जिस पर महात्मा जी का मत इन दो नेताओं के मत से बिलकुल भिन्न था। कुल मिलाकर महात्मा जी को गंगा-जमुना की इन दो धाराओं को मिला देने में सफलता प्राप्त हुई। श्रम, राष्ट्रीयकरण तथा आधारभूत अधिकारों के बहुत से महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर गांधी जी और कांग्रेस के दृष्टिकोण को परिवर्तित करने में नेहरू का हाथ रहा है। उन्होंने इन समस्याओं तथा समाजवाद पर गांधी जी के मत को काफी परिवर्तित किया।

इस बात से ना करना व्यर्थ होगा कि अनेक अवसरों पर नेहरू और पटेल में जबर्दस्त मतभेद रहा है। परन्तु इन मतभेदों के जो अर्थ लगाये जाते हैं उनमें सत्यता को बिलकुल तोड़-मरोड़कर उपस्थित किया जाता है। यह आश्चर्य की ही बात होती यदि भिन्न दृष्टिकोणवाले दो व्यक्तियों की राय अनेक महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर एक दूसरे से अलग न होती। अकसर उन्होंने एक दूसरे के प्रस्तावों का घोर विरोध किया। यह बिलकुल स्वाभाविक है। साथ ही उन्हें यह भी पूरी तरह सोच लेना चाहिये कि देश का भाग्य बहुत कुछ उनके साथ साथ काम करने पर ही निर्भर है। गांधी जी की मृत्यु ने उनकी जिम्मेदारी और भी बढ़ा दी है तथा मुख्य क्षेत्रों में आशाओं के विपरीत वे एक दूसरे के अधिक निकट आ गये हैं। यदि वे आपस में अलग होना चाहें तो भी इस संकटकालीन समय में वे ऐसा नहीं कर सकते, क्योंकि इससे देश में संकट उत्पन्न हो जायेगा तथा आज की इस अव्यवस्थित दशा में इसका कुछ भी परिणाम हो सकता है। वास्तविकता तो यह है कि कुछ लोगों द्वारा उनके मतभेदों को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर तथा गाढ़ा रंग देकर बताया जाता है, क्योंकि वे सोचते हैं कि एक को दूसरे के विरुद्ध कर वे अपनी स्वार्थ-सिद्धि कर सकेंगे।

राजनीति के इतिहास में इस प्रकार के और भी आश्चर्यजनक उदाहरण हैं जब कि दो विपरीत विचार-धाराओंवाले राजनीतिज्ञों ने एक ही उद्देश्य के लिये साथ साथ मिलकर काम किया है। नेहरू और पटेल आपस में लड़ सकते हैं, किन्तु साथ ही साथ उनको मिलकर काम भी करना है, क्योंकि वे जानते हैं कि एक होकर ही वे आगे बढ़ सकते हैं। उनके आपसी मतभेदों तथा मिलकर कार्य करने के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। उनके मतभेदों पर जोर देकर लोग उनको बाँधनेवाले तत्त्वों की उपेक्षा कर देते हैं। देश की परिस्थिति की आवश्यकता के अतिरिक्त इन दोनों को सूत्र में पिरोनेवाली कड़ी गांधी जी के प्रति प्रेम और श्रद्धा है। राजनीतिक तथा आध्यात्मिक दोनों दृष्टियों से वे गांधी जी के परिवार के सदस्य हैं। गांधी जी के प्रभाव से नेहरू के समाजवादी दृष्टिकोण की तीव्रता काफी कम हो गई है। एक जमाने से वे साथ साथ काम करने के अभ्यस्त हो गये हैं।

महात्मा जी की तरह अपने उच्चासन और प्रभाव के कारण नेहरू तथा पटेल ने संस्थाओं का रूप धारण कर लिया है। वर्तमान समय में, उद्वेलित जन-भावना के कारण लोग सरकार की नीति पर आक्षेप करते हैं, तथा हाई कमांड द्वारा किये गए कामों की आलोचना भी करते हैं; किन्तु अन्त में इन दो नेताओं के कारण वे शान्त हो जाते हैं। नेहरू और पटेल के पश्चात् और तीसरा व्यक्ति अथवा खुद कांग्रेस ही जनता से इस उदारता का आशा नहीं करती। उन्हें या तो प्रभावशाली होकर अपने कार्य का परिणाम दिखाना होगा या जनता उनको अनुदारतापूर्वक हटाकर अलग फेंक देगी। लोग संभवतः अपनी आदतों के अनुसार नेहरू और पटेल की त्रुटियों को सहन कर लेंगे। किन्तु उनके बाद दूसरों के साथ इसी सहिष्णुतापूर्वक पेश आना जनता [illegible] हो सकेगा। भविष्य के लिए योजना समय विशेषतया कांग्रेस को यह बात में रखनी चाहिए।

जहाँ तक भविष्य का सम्बन्ध दोनों नेता, कांग्रेस तथा देश के पथ-[illegible]र्शक होने के नाते एक बात में असफल रहे हैं और वह कमी है प्रभाव कार्यकर्ताओं की एक दूसरी कतार न कर सकने की जो इनके बाद द्वारा आरंभ किए गए कार्य को और बढ़ा सकते। इन्होंने सुचारु रूप से सहकारी नहीं तैयार किए जो धीरे इनका स्थान ग्रहण कर सकते। 'हमारे राम तुम्हारा मालिक' ही इनका मालूम पड़ता है। देश की गंभीर स्थिति तथा जनता पर इन दोनों के आधिपत्य की दृष्टि से इनकी यह किसी संकटकालीन अवसर पर देश लिए घातक सिद्ध हो सकती है। देश और सरकार के बहुत से दुश्मन तौर पर इस बात को अपने पक्ष में ले रहे हैं। यहाँ तक की इसी पर योजनायें तैयार की जा रही हैं।

जहाँ तक नेहरू का प्रश्न है यह काम समझ में आ सकता है। अपने निजी अनुगामी तथा सैनिकों निर्माणकार्य की सदा ही उपेक्षा की। यह बड़े खेद की बात है और वह नीति त्रुटिपूर्ण है किन्तु ऐसा तो है ही फिर भी यह एक बड़े आश्चर्य पटेल जैसे दूरदर्शी राजनीतिज्ञ और कुशल संगठनकर्त्ता ने नई पीढ़ी के कुछ ऐसे प्रतिभाशाली व्यक्तियों को शिक्षित करने के कार्य की इतनी उपेक्षा की जो उनके को और आगे बढ़ा सकते थे। के सभी प्रमुख एवं प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ पुरानी पीढ़ी के हैं तथा शीघ्र ही वे कार्य के अयोग्य हो जायेंगे। भविष्य अनिश्चत और धुंधला दिखाई पड़ता है। यह आशा ही की जा सकती है आवश्यकता के समय महान् अपने आप सामने आ जायेंगे; इसमें सन्देह नहीं कि राजनीति आनेवाली रूप-रेखा पर इस बात का बड़ा प्रभाव पड़ेगा। इसी स्थान पर जी का सच्चा नेतृत्व सबसे ऊपर उठ है। उन्होंने अपनी प्रेरणा द्वारा प्रतिभावान युवकों की वह टोली तैयार की थी जो इस वर्तमान समय में देश का कर रही है। आज के सभी नेताओं उनके चरणों पर शिक्षा प्राप्त की; इस सम्बन्ध में वे उनकी इस परिपाटी आगे बढ़ाने के योग्य सिद्ध नहीं हुए।

नेहरू और पटेल की इस भविष्य क्या है? जब तक कोई नई नहीं होती तब तक यह स्थिति रहेगी साथ तभी टूट सकता है जब असंभवित परिस्थिति पैदा हो जाय भारतीय राजनीति का वर्तमान बिगड़ जाय अथवा कांग्रेस की में आमूल परिवर्तन हो जाय और ही टूट जाय।

(सर्वाधिकार लेखक-द्वारा

*

का रंगमंच

दायिक संस्थाओं को सरकार की चेतावनी

शरणार्थियों की मांग—हरिजन सहायक विभाग—भवन के लिए सीमेंट—संघों के सुधार के लिए सरकारी प्रयत्न—लखनऊ म्यूनिसिपल बोर्ड

(अपने विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

गांधी की हत्या के पश्चात् सभाइयों, लीगियों, नेश- और खाकसारों की रिहाई जैसे हुई, वैसे ही वैसे प्रान्त की परिस्थिति भी खराब होना गई। उन दिनों लगभग दायवादी नजरबन्द कर लिए बाद में कांग्रेस मंत्रि-मंडल के अन्तर्गत इन नजरबन्दों प्रारम्भ हो गई और आज से अधिक नजरबन्द नहीं को इसी शर्त पर रिहा कि भविष्य में वे किसी आन्दोलन में भाग न लेंगे। के साथ देखा गया है कि अपने वचनों का कोई आदर राष्ट्र के विरुद्ध गुप्त षड्- हैं।

* *

प्रांतीय सरकार के सप्ताह ही कड़ी चेता- बात संघियों के सम्बन्ध ष्ट्रीय स्वयसेवक संघ तो विभिन्न जिलों में संघियों अथवा व्ययामशालाएँ जहाँ वे प्रत्येक सुबह मिल- अपना कार्य-क्रम जारी रखे अनेक क्लबों का छद्म दिये गये हैं। एक दर्जन से में जयहिन्द क्लब नामक आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध संचालक संघी हैं।

* *

आये हुए सिन्धी शरणार्थियों मांग की है कि लखनऊ तथा का प्रदेश उन्हें बसने के जाय, जहाँ वे अपनी भाषा के आधार पर एक पृथक् सिन्धी प्रदेश बना लेंगे। सभी वर्गों द्वारा इस मांग किया जाता है। एक सुगठित पृथक् भाषा तथा संस्कृति एक स्वतन्त्र प्रदेश बनाने जनतापूर्ण है, क्योंकि कालांतर अपनी पृथक् भाषा और नाम पर पृथक् प्रतिनिधित्व सुरक्षा के नाम पर राज- उपस्थित कर सकता है।

* *

सरकार ने एक हरिजन सहा- स्थापित करने का निश्चय इस विभाग के अन्तर्गत हरिजनों उत्थान का प्रयत्न किया विभिन्न कारीगरियों की और उनकी स्त्रियों को कुटीशिल्प की शिक्षा दी जायगी। आगामी सितम्बर में जब शरणार्थियों के लिए मकान बनाने का सरकारी कार्य-क्रम प्रारंभ होगा, तो इन ३०० हरिजनों को राजगीरी की शिक्षा के लिए भर्ती किया जायगा और शिक्षणकाल में उनको ३० रु० मासिकवृत्ति भी दी जायगी। इस विभाग के अन्तर्गत जिलों में हरिजन-सहायक समितियाँ भी स्थापित होंगी।

* * *

भवन-निर्माण के लिए आवश्यक सीमेन्ट तथा लोहे की कमी के कारण न केवल जनता ही त्रस्त है, बल्कि सरकार भी परेशान है, क्योंकि उसकी समस्त योजनाएँ खटाई में पड़ी हैं। उसने अपने निर्माण-विभाग को इसका कोई हल निकलने को कहा था और उसने एक वर्ष के परिश्रमपूर्ण परीक्षण और अन्वेषण के उपरान्त 'सुपुष्ट मृत्तिका' नामक एक मिट्टी का आविष्कार किया है, जिसकी बनी ईंटें तथा पलस्तर सीमेन्ट से कम पुष्ट नहीं होता और वह प्रान्त की साधारण मिट्टी से बनाई जा सकती है।

* * *

प्रांतीय सरकार गधे पालती ही नहीं, उत्पन्न भी करती है। प्रांतीय पशुपालन विभाग की १९४६,४७ की रिपोर्ट में बताया गया है कि जहाँ गाय-भैंसों की नस्ल सुधरने की उसने व्यवस्था की है, भेड़ों, बकरियों, सुअर और घोड़ों के प्रजनन केन्द्र स्थापित किये हैं, वहाँ गधों की नस्ल सुधारने के निमित्त भी उसका एक प्रजनन केन्द्र है। उक्त केन्द्र में ६ अत्युत्कृष्ट गधे पाल रखे गये हैं।

* * *

युक्तप्रान्त की राजधानी के म्युनिसिपल बोर्ड का शासन इतना उत्कृष्ट है कि उसके तीन सौ तथा कुछ कर्मचारियों में से केवल दर्जन डेढ़ दर्जन अधिकारी तो ग्रेजुएट हैं, शेष ३०० कर्मचारियों में से केवल आधा दर्जन हाईस्कूल पास हैं, बाकी या तो मिडिलची हैं या मौलवी चिरागअली के मकतब से निकले हुए घनघोर स्नातक। बोर्ड ने अपना काम हिन्दी में करने का प्रस्ताव महीनों पहले पास किया था, पर आज तक उस पर व्यवहार नहीं हो पा रहा है, क्योंकि नगरपालिका के इन सुयोग्य कर्मचारियों को इस 'जुबान' का ज्ञान ही नहीं है और इन्हीं सुदक्ष कर्मचारियों पर म्युनिसपैलिटी अपनी सम्पूर्ण आय का ६२ प्रतिशत वेतन देने में व्यय कर देती है।

* * *

फिलिस्तीन का कूटनीतिक युद्ध

(पेज ६ का शेष)

निकालना अत्यन्त दुरूह है। इतना अवश्य है कि जो भी निष्पक्ष राजनीतिज्ञ उक्त दस्तावेजों को पढ़ेगा उसके मन में यह भावना उठे बिना नहीं रह सकती कि अमेरिका की नीति लोलुपता-रहित नहीं है। जापान का शस्त्रीकरण, कोरिया से सेना हटाने के लिए किसी भी प्रकार तैयार न होना, अणुबमों और आणुविक शस्त्रास्त्रों, पर एकाधिकार रखने की अमेरिकन नीति और फिर विश्वव्यापी रेखाओं पर आइसलैण्ड से लेकर हवाई द्वीपों तक सैनिक अड्डों के निर्माण के लिए अमेरिकन प्रेसीडेण्ट द्वारा अरबों रुपयों के खर्च की स्वीकृति आदि बातें इस बात की द्योतक हैं कि अमेरिका के मन में भय की मात्रा, रूस के प्रति अविश्वास और सन्देह अनावश्यक रूप से घर कर गये हैं।

अमेरिका और रूस के मतभेदों के बीच कोई न कोई स्थल ऐसा अवश्य है जहाँ वास्तविकता, यथार्थ सत्य है। इस सत्य को पाने के लिए आवश्यक है कि दोनों ही दल आगे बढ़ें। उनमें समझौता करने का दृढ़ निश्चय हो। पारस्परिक सन्देहों को मिटाने के लिए त्याग की शक्ति हो। यह दृढ़ निश्चय और त्याग की भावना ही रूस के लिए, अमेरिका के लिए, रूसी और अमेरिकन जनता के लिए विश्व और अखिल मानवता के महानिर्माण के पथ को प्रशस्त करायगी और भावी सुखी और सौभाग्यमयी कल्पनाओं को मूर्तरूप में परिणत करने का सिंहद्वार खोल देगी।

देवमन्दिर
के लिये
पवित्रता

Godrej
Sandal

गोदरेज लिमड़ा
नीम के जंतुनाशक
और रोगहर गुणोंसे
भरा हुआ साबुन।

नं. १ नं. २
बतनी सॅण्डल
लिमड़ा (नीम)
टर्किश बाथ
शेविंग स्टिक
शेविंग 'राउन्ड'

१०० प्रतिशत शुद्ध
और पशु चर्बी रहित
होनेकी गॅारन्टी।

सफ़ाई और देवत्व साथ साथ रहते हैं। धार्मिक रीतिके पवित्र स्नान के लिये इमें खास पवित्र साबुन का उपयोग करना चाहिये। साबुन में कुछ भी हो सकता है। लेकिन गोदरेज सॅण्डल साबुन में सिर्फ़ शुद्ध आरोग्यदायी वनस्पती तैलों और सुगंधी चीज़ोंका अिस्तेमाल किया गया है जिसतरह गोदरेजकी दूसरी शृंगारकी चीज़ोंमें किया जाता है। प्राणियोंकी घृणादर्शक चरबी उसमें बिलकुल मिलती नहीं। शुद्ध म्हैसूरी चंदन के तैलसे भरपूर प्रमाणमें मिश्रित हुआ गोदरेज सॅण्डल साबुन आनन्ददायी शीतल, मुलायम और खुशबूदार फेन देता है। उसकी वनस्पती तैल युक्त स्निग्ध बनावट शरीरके रन्ध्रोंको साफ़ रखती है और चर्मको मखमल जैसी मुलायम करके देरतक टिकनेवाली ठंडाई देती है। अिसलिये हम अपनेको सवाल करके उसका खुद सचाओसे जबाब देंगे—क्या शरीरकी सफ़ाई के लिये गोदरेज वनस्पती सॅण्डल साबुन के अलावा और दूसरा साबुन हमारे काममें आयेगा!—क्यों की "शरीर देवता का मन्दिर है"।

Godrej Sandal
चाबी छाप

गोदरेज सॅण्डल
(चन्दन)
टॉयलेट [नहानेका] साबुन
सॅण्डल के अन्य साबुनों से ज्यादा वजनदार व ज्यादा अच्छा और कम मूल्य।

गोदरेज सोप्स, लि०—दिल्ली: १६८, चाँदनी चौक।

संवाददाताओं के पत्र

शोलापुर की स्टेट कांग्रेस की ओर से समाचार मिला है कि बीदर के ग्राम गोरटा में जो लूट व हत्याकाण्ड हुआ है उसकी जाँच के लिए जो कार्यकर्ता गये थे उनका कथन है कि दोनों ग्राम इस समय श्मशान और खण्डहर बने हुए हैं। हर जगह लाशें पाई जाती हैं। दोनों ग्राम में केवल कुछ मुसलमानों के घरों में रजाकारों को बैठा हुआ देखा गया। बिना चारा व पानी के जानवर मर रहे हैं। समस्त गाँव राख का ढेर बना पड़ा है। किन्तु ज्वार का सरकारी गोदाम ज्यों का त्यों सुरक्षित है। जाँच करने के लिये गये हुए लोगों ने वहाँ पुलिस मुंतजिम को देखा। पूछने पर पता चला कि चार दिन बाद भी पंचनामा नहीं हुआ था। मुंतजिम का बयान था कि उसे लाशों का कोई पता ही नहीं चला। वहाँ की सच्ची घटनाओं को जब एक किसान ने कार्यकर्ताओं के सामने रखा तो मुंतजिम पुलिस उस पर आगबबूला हो उठा। बर्दापुर मोमिनाबाद बी० पीड की पुलिस ने एक ६ वर्षीय हिन्दू कन्या को पकड़ लिया था। कुछ ग्रामवासी तथा स्टेट कांग्रेस के कार्यकर्ता पुलिस थाने के पास जमा हो गये। उन्होंने कन्या को पुलिस के पाशविकता से मुक्त करने के लिए पुलिस थाने पर आक्रमण कर दिया दोनों ओर से पर्याप्त संघर्ष हुआ। क्रोधित ग्रामीणों व कार्यकर्ताओं ने वीरता से मुकाबला किया। फलस्वरूप तीन कान्स्टेबिल मरे व छः घायल हुए। कन्या को मुक्त करके पुलिस स्टेशन हाउस को आग लगा दी गई। दूसरे दिन मिलिट्री पहुँची। अनेक ग्रामवासी रजाकारों व गुंडों के आक्रमण का बड़ी वीरता से मुकाबला कर रहे हैं। किन्तु कुछ स्थानों से ऐसे समाचार मिले हैं कि ये रजाकार जिस ग्राम पर आक्रमण करते हैं उसके किसी पड़ोसी ग्राम के कुछ प्रतिष्ठित हिन्दुओं को पकड़कर साथ ले जाते हैं। जब ग्रामवासी मुकाबला करने पर तुल जाते हैं तो रजाकार साथ में लाए हुए कुछ हिन्दुओं को सामने करके पीछे से ग्राम पर फायरिङ्ग शुरू करते हैं। इससे ग्रामीण जनता दुविधा में पड़कर प्रतिकार करने में असमर्थ होती जा रही है।

गुलबर्गा स्टेशन पर एक हिन्दू को छुरे से घायल किया गया।

—संवाददाता

हरिद्वार की जनता के कष्ट को देखते हुए तथा शरणार्थी स्त्रियों को शिक्षा देने के उद्देश्य से श्री रामायण आश्रम की ओर से भारामल के घेर में राष्ट्रीय महिला शिल्प-विद्यालय की स्थापना की गई है, इसमें स्त्रियों के लिए सिलाई, कटाई, कढ़ाई तथा बुनाई सिखाने का प्रबन्ध किया गया है। और सब प्रकार के वस्त्रों की सिलाई भी शरणार्थी स्त्रियों द्वारा की जाती है।

पं० रामस्वरूप फरलिया वैद्य जिन्होंने ऋषिकुल आयुर्वेदिक कालेज फार्मेसी से अभी कुछ [illegible] त्यागपत्र दिया था १७ [illegible] हैं। उदन की तरह प्रातः लोटा लेकर स्नान करने गये थे, परन्तु वापस नहीं लौटे, इस तारीख के बाद यदि किसी सज्जन को वह मिले हों या उनका पता हो तो उनके पिता पं० लक्ष्मीनारायण फरलिया प्रेस-रिपोर्टर हरिद्वार को सूचित करें।

हरिद्वार के सुप्रसिद्ध कांग्रेसी म्युनिसिपल कमिश्नर महन्त घनश्याम गिरि जी ने अपने छोटे भाई पूर्ण गिरि एम० ए० (रिसर्च स्कॉलर हिन्दी भाषा-विज्ञान, हिन्दू विश्वविद्यालय काशी) के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में ता० २१ को एक विशेष प्रीति-भोज दिया। विशिष्ट आमंत्रित महानुभावों में युक्तप्रान्तीय सरकार के स्वायत्त शासन मन्त्री माननीय आत्माराम गोविन्द खेर महोदय भी सम्मिलित हुए।

माननीय खेर महोदय ने श्री श्रवणनाथ ज्ञानमंदिर का और श्री श्रवणनाथ धर्मार्थ औषधालय का निरीक्षण किया। आपने वहाँ की सुव्यवस्था देखकर प्रसन्नता प्रकट की।

—संवाददाता

हरिद्वार से कर्मवीर पं० चिरंजीवलाल शर्मा लिखते हैं कि गङ्गातट पर नेता जी श्री सुभाषचन्द्र बोस का संगमरमर का सुन्दर स्टेचू जो कि सात फुट ऊँचे और दस फुट चौड़े चबूतरे पर स्थापित किया गया है, उसके उद्घाटन के लिए प्रसिद्ध नेताओं से पत्र-व्यवहार किया गया है, निश्चय होने पर तिथि की घोषणा की जायगी। वृन्दावन, कुरुक्षेत्र, अयोध्या आदि क्षेत्रों में भी जो स्टेचू कमेटियाँ बनाई गई थीं आशा है वह भी अपना कार्य शीघ्र समाप्त करेंगी।

श्री उत्तराखंड महाविद्यालय ब्रह्मचर्याश्रम की शाखा ए० बी० मिडिल स्कूल भीमगोडा हरिद्वार आजकल दिनों-दिन उन्नति कर रहा है। स्कूल में जब से नये मैनेजर पं० माधोराम बहुखंडी और हेडमास्टर पं० गणेशदत्त पांडेय आये हैं, तब से वहाँ स्कूल के प्रबन्ध में सुधार हुआ है।

शिमला रामपुर बुशहर से श्री बुद्धिसागर नौटियाल ने एक वक्तव्य में कहा है—बुशहर-प्रजामण्डल जाँच-समिति गौरा से देवटी पहुँची, कुहूल गाँव के हरिजन टिकू कोली को हेड कानिस्टिबल गोपी ने बुरी तरह से पीटा और दिन-दहाड़े उसकी जेब से नकद एक सौ रुपया उड़ाकर ले गया। शिमला से १०३ मील दूर मशनू गाँव में पहुँचने पर मालूम हुआ कि हथियार बन्द पुलिस की छापा मारा और आधी रात टोली ने वहाँ के निवासी श्री आतूलाल, प्रधान मंत्री, बुशहर प्रजामंडल के घर पर को घर की महिलाओं पर भी छापा मारने को ही थे कि गाँववालों ने उनकी रक्षा कर ली।

“पक्की जाँच के अनुसार अभी तक बरामद पुलिस की गुण्डागर्दी के साथ मालूम हुआ कि पुलिस ने लगभग तीस हजार रुपए नकद और गहने तथा पाँच हजार का राशन, शराब और बकरे लूट लिए।”

“इस प्रकार की गुण्डागर्दी और लूट-[illegible] के विषय में हमारे पास हजारों पीड़ित [illegible] के लिखित बयान और लूटे गए सामान की सूचियाँ विस्तृत रूप से प्रमाण के रूप में प्राप्त हैं।”

—संवाददाता

लखनऊ मद्यनिषेध कमेटी की ओर से विराट् सभा हुई। श्री मनीराम वाल्मीकि की अध्यक्षता में हुई, करीबन दो सौ हरिजन थे जिसमें सर्वश्री मनीराम, बिहारीलाल मोती लाल, शिवप्रसाद के मद्यनिषेध पर जोरदार भाषण हुए। श्री गयादीन और श्री भगवानदास ने नशा न पीने का प्रण किया। इसके बाद जाटव-जाति के चौधरी बड़ैल और भूराराम मुखिया बड़काराम सोगी राम छड़ीबरदार भगवानदास रामचरण, गंगोलीराम, लछमनराम तथा समस्त जाटव-जाति ने ताड़ी, शराब न चलाने का प्रण किया।

—बिहारीलाल गहरवार

आगरा से 'निर्माण' मासिक पत्रिक का प्रथम अंक १ जून को प्रकाशित हो जाएगा। —संवाददात

शीघ्र आवश्यकता है

अभिनेताओं-अभिनेत्रियों की, वेतन योग्यतानुसार १२५) से १२००) प्रतिमाह। आवेदन करें।

श्री स्वतंत्र फिल्म कं०, ब्रा० हाथरस, यू. पी.

प्रसिद्ध यात्राओं की कथा

प्राचीन चीनी यात्री फाहियान से लेकर वर्तमान युग के एवरेस्ट की चोटी पर चढ़नेवाले साहसी वीरों तक की कथा इस पुस्तक में है। जिन यात्रियों ने प्राणों की बाजी लगाकर स्थल और जल के अज्ञात देशों में भ्रमण किया था और उनके परिश्रम से संसार का जो लाभ हुआ उसका रोचक वर्णन इस पुस्तक में पढ़िए। मूल्य ॥|-)
मैनजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

परीदेश

यह पुस्तक खास कर छोटे बच्चों के लिए है। इसमें ऐसी एक भी बात नहीं जिसको समझने के लिए माथापच्ची करनी पड़े। इसमें रोजमर्रा की बातें बड़े ही अच्छे ढंग से लिखी गई हैं। बड़े आकार की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों और फूल-पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है। मूल्य ॥)
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

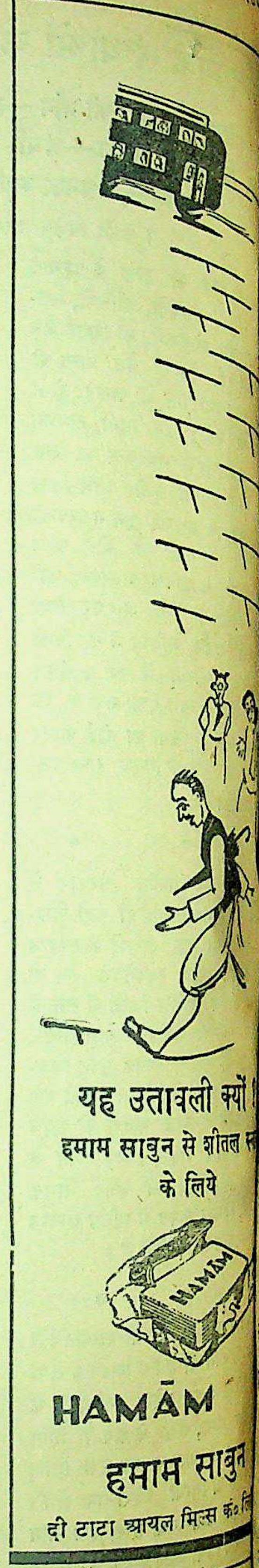

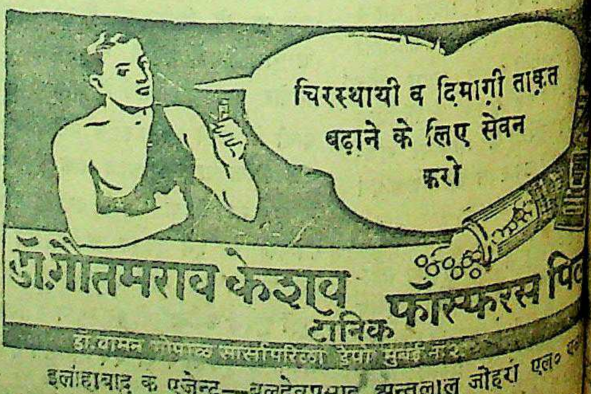
चिरस्थायी व दिमागी ताक़त बढ़ाने के लिए सेवन करो
डॉ. गोतमराव केशव
टानिक
फॉस्फरस पि

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी एल० [illegible] [illegible] एन्ड ब्रदर्स।

रामचरितमानस

टीकाकार—डाक्टर श्यामसुन्दरदास

'मानस' का महत्त्व किसी से छिपा नहीं है। भारतवर्ष में तो इसका मान है ही, अन्य देशों में भी इस अमर ग्रन्थ का आदर है। यह प्रामाणिक संस्करण इधर कई वर्ष से अप्राप्य था। हाल में ही छपकर तैयार हुआ है। ग्राहकों को शीघ्रता करनी चाहिए। अधिक प्रतियाँ नहीं छापी गई हैं।

बड़े आकार के १२०० पृष्ठ। रंग-बिरंगे दर्जनों चित्र। सजिल्द प्रति का

मूल्य १२) रुपये

जहाँ पर हमारी ब्रांच या एजेंसी है वहाँ ख़रीदने से डाकख़र्च की बचत होगी।

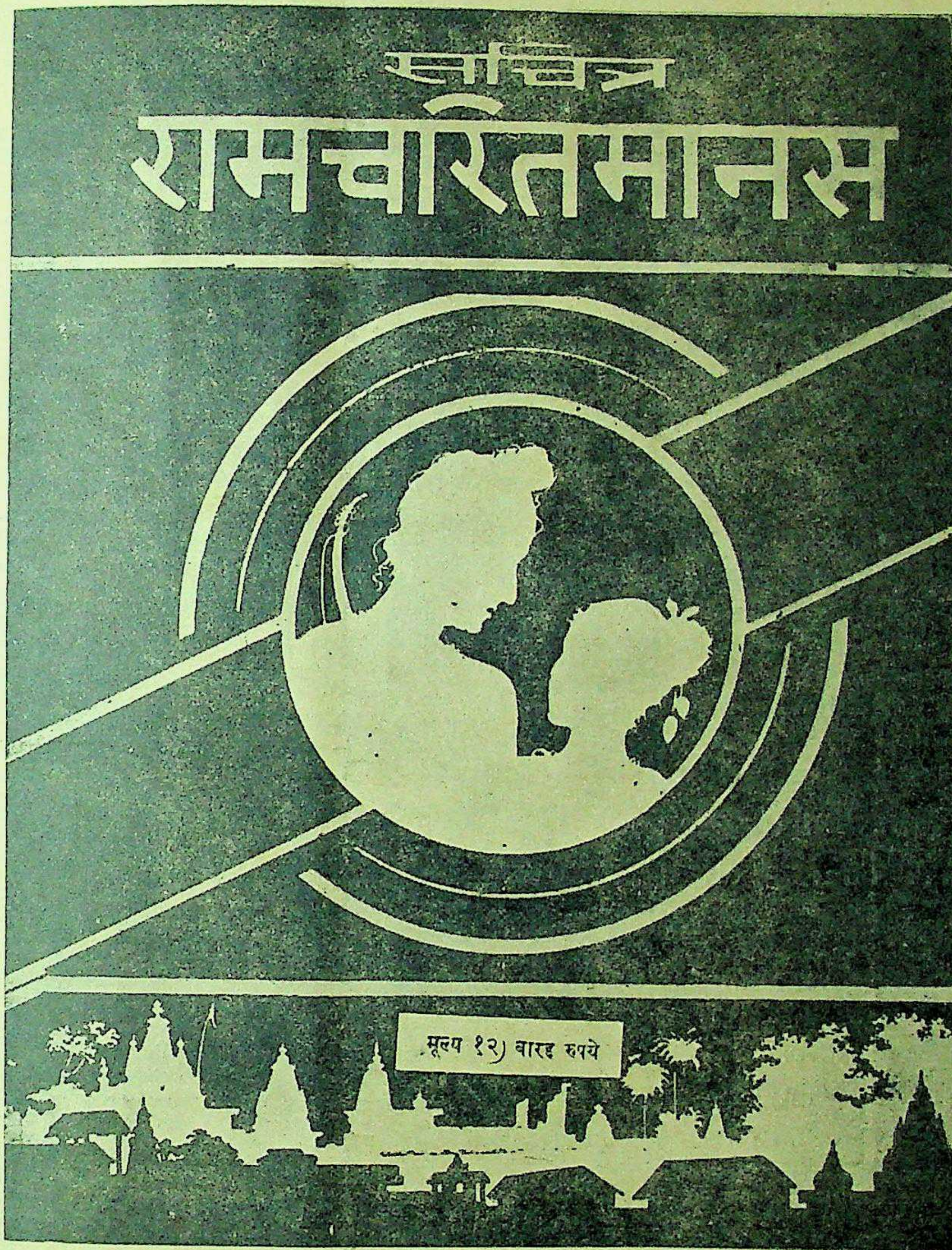

हमारी ब्रांचें और एजेन्सियाँ

इलाहाबाद हेड आफ़िस—इंडियन प्रेस लिमिटेड, ३६ पन्नालाल रोड
इलाहाबाद सिटी—न्यू ऐरा बुकहाउस, हिवेट रोड
आगरा—आगरा पब्लिशिङ्ग हाउस, बाग़ मुज़फ़्फ़र ख़ाँ
अजमेर—इंडियन प्रेस लिमिटेड, कचहरी रोड
अलमोड़ा—डिस्ट्रिक्ट बुकडिपो, लालबाज़ार
बनारस—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, बनारस छावनी
बाँदा—बुंदेलखण्ड पब्लिशिङ्ग हाउस
बरेली—इंडियन बुकडिपो
बम्बई—भारतीय पुस्तक भण्डार, कालबा देवी रोड
बीकानेर—गंगाबुक कम्पनी, कोट के भीतर
कलकत्ता—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, २२।१ कार्नवालिस स्ट्रीट
१२ कानपुर—साहित्य-रत्नालय, श्रद्धानन्द पार्क
१३ दिल्ली—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, नई सड़क
१४ गोरखपुर—पुस्तक-स्थान, बख्शीपुर
१५ ग्वालियर—लायल बुकडिपो, पाटनकर बाज़ार, लश्कर
१६ इन्दौर—नवयुग साहित्यसदन, खजूरी बाज़ार
१७ जयपुर—गोपाल बुकडिपो, त्रिपौलिया बाज़ार
१८ जबलपुर सी० पी०—इंडियन प्रेस, लिमिटेड
१९ लखनऊ—इंडियन बुकडिपो, अमीनुद्दौला पार्क
२० मेरठ—पुस्तक-स्थान, वैस्टर्न कचहरी रोड
२१ पटना—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, पो० ऑ० बाँकीपुर
२२ राँची—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, कोर्ट रोड

मैनेजर-बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

दाद, खुजली
और
हरेक मेलका चमडीका दर्दोंके लीए

गत ५० वर्षों से
जग विख्यात
कपड़े खराब नहीं करती।
नकालों से सावधान

सपट
लोशन

सपट एन्ड को, डिपार्टमेंट U.P, DAI.
बम्बई २

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!

आप घर बैठे मैट्रिक, एफ० ए०, बी० ए०, पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से और होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ्त मंगायें। पता :—

इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

विवाहित जीवन
को रसमय बनानेवाली पुस्तकें

कोकशास्त्र (सचित्र)	१॥)
८४ आसन (सचित्र)	१॥)
१०० चुम्बन (सचित्र)	१॥)

तीनों पुस्तकें एक साथ लेने पर ३॥)
पोस्टेज ॥) अलग।
पता—अनिल कम्पनी (१५)
फुलट्टी बाज़ार, आगरा।

मुफ्त :—"आंटो-फ्लावर्स" सुमधुर सुगंध के लिए विख्यात है। आज ही मंगाकर नाम रजिस्टर कीजिये। प्रत्येक सेट (१ दर्जन) की बिक्री पर रजिस्टर नं० अनुसार मुफ्त में एक असली—"रिस्ट-वाच" दी जा रही है। कम से कम छ शीशी भेजी जाती है। की० नौ रु० दर्जन, डाक पैकिंग अलग।

ALBERT (D.A.) एलबर्ट
पो० बक्स ४७, जमशेदपुर।

फिल्मी दुनिया मुफ्त

सिनमा की दुनिया का असली रहस्य जानने के लिये 'फिल्मी दुनिया' पुस्तक आज ही मुफ्त [illegible]।
पता – मधुर मन्दिर, हा[illegible] पी०

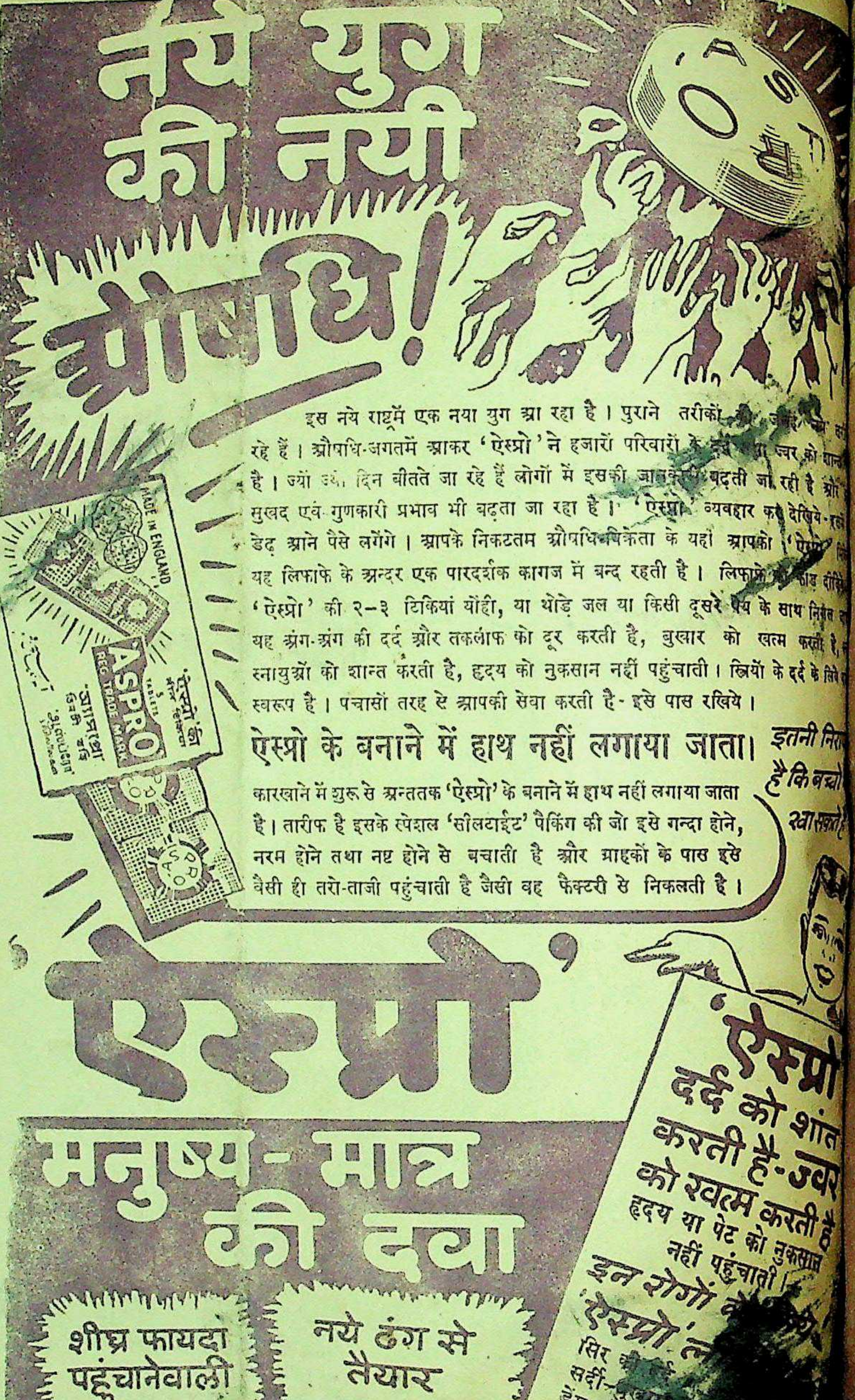

इस नये राष्ट्रमें एक नया युग आ रहा है। पुराने तरीकों [illegible] रहे हैं। औषधि-जगतमें आकर 'ऐस्प्रो' ने हजारों परिवारों के [illegible] ज्वर को शान्त है। ज्यों ज्यों दिन बीतते जा रहे हैं लोगों में इसकी जानकारी बढ़ती जा रही है और सुखद एवं गुणकारी प्रभाव भी बढ़ता जा रहा है। 'ऐस्प्रो' व्यवहार करके देखिये - इसमें डेढ़ आने पैसे लगेंगे। आपके निकटतम औषधिविक्रेता के यहां आपको 'ऐस्प्रो' मि यह लिफाफे के अन्दर एक पारदर्शक कागज में बन्द रहती है। लिफाफे [illegible] फाड़ दीजिये 'ऐस्प्रो' की २-३ टिकियां योंही, या थोड़े जल या किसी दूसरे पेय के साथ निगल यह अंग-अंग की दर्द और तकलीफ को दूर करती है, बुखार को खत्म करती है, स्नायुओं को शान्त करती है, हृदय को नुकसान नहीं पहुंचाती। स्त्रियों के दर्द के लिये स्वरूप है। पचासों तरह से आपकी सेवा करती है- इसे पास रखिये।

ऐस्प्रो के बनाने में हाथ नहीं लगाया जाता।

कारखाने में शुरू से अन्ततक 'ऐस्प्रो' के बनाने में हाथ नहीं लगाया जाता है। तारीफ है इसके स्पेशल 'सीलटाईट' पैकिंग की जो इसे गन्दा होने, नरम होने तथा नष्ट होने से बचाती है और ग्राहकों के पास इसे वैसी ही तरो-ताजी पहुंचाती है जैसी वह फैक्टरी से निकलती है।

इतनी निरा
है कि बच्चे
खा सकते है

ऐस्प्रो
दर्द को शांत
करती है-ज्वर
को खत्म करती है
हृदय या पेट को नुकसान
नहीं पहुंचाती।
इन रोगों [illegible]
'ऐस्प्रो' [illegible]
सिर [illegible]
सर्दी-[illegible]
डेंगू ज्वर, दां[illegible]
पीठ की दर्द
गांठ-गांठ की [illegible]
गले की खसखसा[illegible]
खींचन
अनिद्रा
[illegible]मासिक द[illegible]

डिस्ट्रिब्यूटर्स :
ई. एच. मॅरीसन, एन्ड [illegible] (इंडिया) लि.
पो. बा. बक्स १८०, (टे. [illegible] ७११) कलकत्ता व शाखा.

३ टिकियां—१॥ आना
२० टिकि[illegible]

देशदूत में विज्ञापन दे[illegible]

चित्र
साहिक
: प्रति संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

१३ जून, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 13th JUNE, 1948

जी का सत्य और अहिंसा
नवीन जागृति और सुधार

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

राष्ट्रलिपि बदेनागरी में सुधार
मातृ-मंदिर, रंगमंच, स्वास्थ्य-चर्चा

५०० पौण्ड इनाम

चौबीस घंटे में जवान बनिये

"ओटोजन" (जड़ी बूटियों से निर्मित) पार्कर एण्ड डेविस द्वारा प्रस्तुत पहले २४ घंटे के अन्दर ही शक्ति तथा स्फूर्ति प्रचारित करने में आश्चर्यजनक है। इसके उपयोग से स्त्री तथा पुरुष दोनों अपने वास्तविक आयु से १५-२० वर्ष छोटे मालूम पड़ने लगते हैं। यह पौरुषहीनता, स्मरणशक्ति की कमी, शारीरिक दुर्बलता, रक्त-विकार, चर्मरोग, हतोत्साह, अनिद्रा तथा शारीरिक शक्ति ह्रास को दूर करने के लिए उपयोगी है। इसके प्रयोग से २ से ४ इंच तक आपकी लम्बाई तथा ५ से १० पौण्ड तक शरीर का वजन बढ़ जायेगा। आपके चेहरे पर लालिमा आ जायगी तथा आपकी कान्ति दुगनी हो जायगी। आपकी त्वचा कोमल तथा चिकनी हो जायगी। जिससे आपके चेहरे पर जवानी की आभा पुनः आ जायगी। ओटोजन से आपके व्यक्तित्व में वृद्धि होगी, आंखों में रौनक आ जायगी, ओठों तथा गालों पर गुलाबी दौड़ जायगी। इसके प्रयोग से पकते हुए बाल स्थायी रूप से काले हो जायेंगे तथा वृद्धावस्था में नये दांत निकल आयेंगे। बाल गिरते हों, सिर रूखा हो अथवा चंदला हो गया हो तो उस समय 'ओटोजन' (टानिक) विशेष लाभप्रद सिद्ध होगा। "ओटोजन" का प्रयोग प्रोफेसर ए० पी० पार्कर ने स्वीटजरलेंड में १०० वर्ष के शक्तिहीन बुड्ढे पर किया था। केवल एक मास के नियमित सेवन के बाद इस आश्चर्यजनक औषधि ने उस १०० वर्ष के रोगी को तीस वर्ष का-सा नौजवान बना दिया। थोड़े समय बाद ही एक नवयुवती से विवाह कर लिया। फिल्म-जगत् के अभिनेता व अभिनेत्रियां इस औषधि के प्रयोग से ८० तथा ९० वर्ष की वृद्धावस्था में भी सौन्दर्य तथा उत्साहपूर्ण बनी रहती हैं तथा फिल्म-जगत् में निरन्तर काम करती हैं। प्रारम्भिक अवस्था से ओटोजन का प्रयोग करने से स्त्रियां सदा नवयुवती बनी रहती हैं तथा उनके सौन्दर्य में किसी प्रकार की कमी नहीं आती। पुरुषवर्ग युवावस्था से ओटोजन का प्रयोग करने से समय से पहले बूढ़े नहीं होते। बाल काले बने रहते हैं। चेहरे पर कान्ति तथा स्वास्थ्य बना रहता है। इसके प्रयोग से मनुष्य अपनी वास्तविक आयु से वर्षों छोटा प्रतीत होता है।

यह बीसवीं सदी का आश्चर्यजनक आविष्कार तथा संसार का ८वां वैचित्र है। ओटोजन के प्रयोग के बाद स्त्रियों में तरुणाई तथा चपलता का संचार हो जाता है। तथा ओटोजन के प्रयोग के बाद स्त्री तथा पुरुष दोनों के भाग्यशाली दिन वापस आ जाते हैं। अभी से ओटोजन का प्रयोग आरम्भ कर दें तथा सौ बरस तक स्वस्थ तथा शक्ति-सम्पन्न बने रहें। इससे क्षुधा इतनी प्रज्ज्वलित होती है कि एक पौंड अथवा इससे भी अधिक मक्खन कमजोर व्यक्ति भी पचा सकता है। इस विचित्र "ओटोजन" टानिक के प्रभाव को देखकर दुनिया के बड़े बड़े वैज्ञानिक तथा अनुभवी डाक्टर चकित रह गये।

OTOGEN
SOVEREIGN TONIC
OTOGEN
OTOGEN
OTOGEN LABORATORIES

"ओटोजन" अपने प्रकार का अकेला टानिक है जिसे संसार के स्त्री व पुरुष दोनों उपयोग में लाते हैं। चिकित्सा-विज्ञान के इतिहास में यह अभी तक निराला है आज से ही इसका उपयोग आरम्भ कर इसके गुणों का अनुभव करें। आरम्भ करने के पहले अपना वजन ले लें तथा आईने में अपनी आकृति देख लें। फिर एक सप्ताह के बाद अपनी आकृति शीशे में पुनः देखें और गौर करें कि आपकी आकृति में तथा उत्साह में ओटोजन के व्यवहार से कितना परिवर्तन हो गया।

भारतवर्ष में इस औषधि का प्रचार करने के निमित्त इसका मूल्य मय डायरेक्शन के ५) प्रतिबाक्स कर दिया गया है। आगे चल करके इसका असली दाम ३०) प्रतिबाक्स चार्ज किया जायगा। वर्तमान परिस्थितियों के कारण माल थोड़ा बच रहा है। अतः अपना आर्डर आज ही भेजें सम्भव है कल पर छोड़ने से आप पीछे रह जायें।

गारंटी—५०० पौंड का नकद इनाम किसी भी वैज्ञानिक आयुर्वेदवेत्ता अथवा जनसाधारण को दिया जायगा जो इस आश्चर्यजनक खोज को गुणहीन साबित कर देगा।

नोट—"ओटोजन" अन्य शक्तिदायक औषधियों के विपरीत अपने प्रकार की अकेली औषधि है जो उष्णकटिबन्ध की गर्मियों में, जाड़े में नम तथा साधारण मौसम में प्रशंसनीय प्रभाव दिखाती है।

उष्ण कटिबन्ध की तीक्ष्ण गर्मी में जिस समय कि आप पूर्णतः शक्तिहीन हो गये हों उस समय ओटोजन आपकी शक्ति संचय करने में विचित्र प्रभाव दिखायेगा। हमने अपनी शाखा लाहौर से हटा ली है तथा १५ अगस्त १९४७ से हमारा कार्यालय इंगलैंड से हिन्दुस्तान आ गया है।

प्रमुख औषधि-विक्रेताओं से खरीदें अथवा हमारे यहां से शीघ्र मंगायें।

दी ओटोजन लेबोरेट्रीज

भारतवर्ष का आफिस :—पोस्ट बाक्स नं० ४४७, बंबई।

गांधी-अभिनन्दन-

सम्पादक—श्री सोहनलाल
प्राक्कथन—सर सर्वपल्ली

संस्कृति, हिन्दी, उर्दू, बंग
राती, सिन्धी, मराठी, तामि
मलयालम, कन्नड़, अंगरेजी
भाषाओं में महात्मा गांधी की
हुई सर्वोत्तम कविताओं का संग्र
भाषा में अर्थ-सहित।

बड़ा आकार, सुन्दर छपाई
के अनेक चित्र। बढ़िया जिल्द
प्रशंसित।

सादी जिल्द ६।।) कपड़े की जि

सेवाग्राम

रंग-बिरंगी छपाई अनेक रंगे
रचयिता श्री सोहनलाल
संरक्षक श्री घनश्यामदास

जनता की भाषा में, जनता
का, जनता का काव्य कवि
रचनाओं का सुन्दर संग्रह।
बढ़िया काग़ज़, कपड़े की मज़बूत
मूल्य दस रुपये।

अपराजिता

यह श्रीयुत रामेश्वरप्रसाद
ए०, 'अञ्चल' की कतिपय सुन्दर
का संग्रह है। कविताएं
नूतन सांस्कृतिक रुचि और
हैं। कवि 'अंचल' की रचनाओं
प्राप्त करने के लिए अपराजिता
देखिए। सजिल्द पुस्तक का मूल्य
रुपये।

गुदड़ी के लाल

इस पुस्तक की कहानियां
सरल और रोचक भाषा में
हैं। इनको पढ़कर बच्चे
हैं। ऐसी पुस्तक अपने बच्चों
दीजिए। मूल्य ॥)

आविष्कारों की

मशीनें कैसे बनीं!
औजार कैसे बनें? रेल, जहाज,
सिनेमा वगैरह कैसे बने!
बनाकर या नये काम करके
दुनियां में प्रसिद्ध हो सकते हैं
बातों को जानने के लिए यह
पढ़िए। मूल्य १)

अन्तू सरदार

भरोस सरदार के लड़
कोई सन्तान न थी। और भरोस
लठैत जिससे पुलिस भी
जमींदार के यहाँ भरोस नौकर
अपनी बेटी को भी लाठी
दिया था। इसका ब्याह
(अन्तू) से किया गया था
सवाया था। एक झगड़े
काट हुई। इसमें अन्तू की
गई और भतीजा प्रताप
गया। पुलिस ने अन्तू को
सज़ा करा दी। इधर प्रताप
यह कहानी है तो बड़ों के लि
परन्तु बच्चों को बहुत
सुन्दर सरल भाषा, कई
पृष्ठ रंगीन। मूल्य केवल

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन

संख्या ४०] [रविवार, १३ जून, १९४८

राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद यूनाइटेड प्रेस आफ इंडिया के दिल्ली-आफिस में टेलीप्रिंटर का उद्घाटन कर रहे हैं।

धी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

भूतपूर्व प्रधान मंत्री मियाँ म्प्रदायिक सद्भावना और करनेवाले नेता हैं। यह है जिन्होंने बंगाल में हत्याकाण्ड की किसी समय बताई थी कि यदि वह की शरण में न जाते तो जाते, लेकिन बिल्ली है। बिल्ली के हाथ में उसने चूहा का खूब लेकिन शक्ति छिनकर हाथ में पहुँची तब उसने हाथ में माला ग्रहण कर रावर्दी बंगाल में जहाँ वना की स्थापना की देते हैं और पाकिस्तान अपने असली स्वरूप कर देते हैं। पिछले रावर्दी पूर्वी पाकिस्तान लौंही घर दबाये गये। में वास्तविकता तो यह में दो तलवारें नहीं रह में या तो नाजिमुद्दीन ही या फिर मियाँ सोहरावर्दी का प्रचार मियाँ सोहरा- करना चाहते हैं, इसे तो

* *

और हिन्द-सरकार के बीच की वार्ता चल रही है। अपने में जरूर चलना चाहिए। चलाये चलने से कम से कम तरह से कट ही रहा है। बेटेन के दिन भी अब चलने सच तो यह है कि या तो बेटेन के जाने के पहले तक मामला तय ही हो जायेगा। या ही में पड़ जायेगा। अभी तो का थोड़ा-बहुत लिहाज है, शक्ति है और कहना यह वार्ता को लम्बा बनाने का एक है लेकिन जहाँ पर्दाफाश हैदराबाद महाशय कुछ नहीं । रजाकारों का संगठन मजबूत गया है, हिन्द-हैदराबाद की मोर्चेबन्दी कर ही ली गई की संख्या बढ़ाने में एड़ी- एक किया ही जा रहा है । अँगरेज पाकिस्तानी खड़े ही हैं, फिर सबसे पंचमांगी समुदाय की शरण हलुआ- और शरणार्थी का [illegible] होने की डोंडी पट रहा है। इसलिए हैदराबाद को भय किस लिए। अगर लार्ड माउन्टबेटेन के रहते मामला कुछ सध जाता है तो ठीक ही है और यदि नहीं सधता तो फिर खुदा हाफिज !

* * *

अरब-राष्ट्रों का कहना है कि फिलिस्तीन में इसराइल का जो पाकिस्तान बनाया गया है उसे खत्म कर दिया जाना चाहिए। यह भी एक अच्छी खासी दिल्लगी है। यदि इसराइल का पाकिस्तान ही समाप्त कर दिया गया तो धिक्कार है अँगरेजों की कूटनीति को। भला ऐसा भी कहीं हुआ है? हिन्दुस्तान में पाकिस्तान इसीलिए बनाया गया है कि अँगरेजों का प्रभुत्व वहाँ किसी न किसी तरह कायम रहे। फिलिस्तीन में भी इसराइल का यहूदी राज्य इसीलिए कायम किया गया है कि अँगरेज अपना लासा लगाये रहें। सच तो यह है कि हिन्दुस्तान में अँगरेज पाकिस्तानियों के साथ हैं और योरोप में यहूदियों के साथ। दुनिया को दिखाने के लिये वह एकता का महान् प्रचारक और शांति का पुजारी है लेकिन भीतर से वह ऐसी चाल चल रहा है कि वह किसी का साथी नहीं, केवल अपने स्वार्थ का। इसलिए इसराइल साहब अब कायम हो गये। एक नहीं सात सुरक्षा-परिषद् फैसला करें, लेकिन अरब-राष्ट्र अब नीबू-नोन चाटें। फिलिस्तीन में अरब-यहूदी राज्य तो कायम ही होगा, किन्तु बीच में इसराइल साहब नाप-तोल करने की कला का प्रदर्शन करते ही जायेंगे। गोरी कूटनीति का यह एक ज्वलंत प्रमाण है।

* * *

पाकिस्तान के सैनिक काश्मीर के मोर्चें पर पहुँचते जाते हैं। एक ओर तो सुरक्षा-परिषद् में पाकिस्तान के पुजारी यह कहते हुए नहीं थकते हैं कि काश्मीर के युद्ध से उनका कोई वास्ता नहीं है और दूसरी ओर काश्मीर के मोर्चें पर पाकिस्तानी सैनिक कब्जा करने की फिक्र में परेशान हैं। समझ में नहीं आता कि पाकिस्तानी अपनी तिकड़मबाजी कब तक जारी किये रहेंगे? वास्तविकता यह है कि सुरक्षा-परिषद् की ओर से काश्मीर की समस्या की जाँच के लिये जो कमीशन आ रहा है, पाकिस्तान उससे सहयोग करके अपनी माया फैलायेगा. फिर माया काहे की, चोर चोर मौसेरे भाई, जैसे पाकिस्तानी वैसे ही सुरक्षा-परिषद् के कूटनीतिज्ञ। न तुम कहो हमारी और न हम कहें तुम्हारी। भीतर से मिली भगत और ऊपर जाँच करने का पाखंड। हिन्द-सरकार जाँच कमीशन से अभी सहयोग करने नहीं जा रही है। इसलिये देखना है कि कमीशन के सदस्य किस दिशा की ओर क्रियाशील होते हैं।

* * *

संयुक्तप्रांतीय असेम्बली में जमींदारी उन्मूलन बिल अगले अधिवेशन में पेश होनेवाला है। जमीदारों के लिये यह खबर बिजली गिरने के समान है और किसानों के लिये स्वाती के बूँद की तरह। मान लीजिए कि असेम्बली ने बिल को स्वीकार कर लिया तब क्या होगा? लेकिन अपने राम को विश्वस्तसूत्र से खबर मिली है कि जमींदार और ताल्लुकेदारों को कलेजे पर पत्थर रखकर तत्काल बैठ जाने की जरूरत नहीं है। अभी तो प्रांतीय असेम्बली के रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिये चुनाव होने जा रहा है। चुनाव हो जाने के बाद कहीं असेम्बली की बैठक होगी। अभी तो जमींदार तथा ताल्लुकेदारों को कांग्रेस उम्मीदवारों को विजयी बनाने में एड़ी-चोटी का पसीना बहाना चाहिए। यदि कांग्रेस उम्मीदवारों की सोलह आना विजय हो गई तो उसका कुछ मुआवजा तो उन्हें मिलेगा ही। मुआवजे में गहरी रकम की उम्मीद नहीं की जानी चाहिए, हाँ यह हो सकता है कि जमींदारी के समाप्त होने में कुछ और समय दे दिया जाये? आखिर किसी न किसी दिन जमींदारी की समाप्ति तो होगी ही। लेकिन फिलहाल मामला अटकाया जा सकता है, बशर्ते कि जमींदार लोग समाजवादी बनने की ओर न मिल पड़ें, क्योंकि या तो समाजवादी ही बन जाया जाये या फिर जमींदारी के उन्मूलन में थोड़ी मुहलत मिल जाये; क्योंकि दोनों हाथों से लड्डू नहीं खाया जा सकेगा।

* * *

बापू !

लेखक, प्रोफेसर 'अंचल', एम० ए०

हर सदियों का दासत्व देश के सिर का पर्वत भार हरा
ज्वाला-जर्जर जीवन में तुमने अमृत-मेघ-भंडार भरा
तुम सत्य-सिन्धु जिसकी हिल्लोलों में नूतन अमरत्व ज्वार
तुम महादेव जन-गंगा को जिसने मस्तक पर लिया धार
तुम मानवता के शुभ मुहूर्त निर्मलता को निर्मल करते
करते पवित्रता को पवित्र—आशीषों के निर्झर झरते
विस्तृत अनन्त पथ मुक्त हुआ किरणों में स्वर के प्राण सजे
सीमाएँ सीमाहीन हुईं युग की वाणी के तार बजे
उदयाचल नई ज्योति लेकर अभिनन्दन को दौड़ा आया
बलि की मुक्ताएँ ले यौवन का पारावार उमड़ आया
युग युग की परवशता को तुमने मस्तक देना सिखलाया
ललनाओं ने सिन्दूरों की होली का 'स्वधा' मंत्र पाया
हे देव! मरी मिट्टी में तुमने नई चेतना चमकाई
सिरजी है ऐसी क्रान्ति न जिससे बड़ी कथाओं ने गाई
नर को ऐसी नरता दे दी जिसके सम्मुख पशुता दहली
संगठित दनुजता पर नरत्व की जाति देखता विश्व बली
ओ! ओ! अशेष के अभिमानी! ओ दिव्य स्वप्न के सेनानी
दासों के महाद्वीप में तुमने कैसी ज्वाला पहचानी
साहस के रुद्ध कपाट भस्म कर मन पर छा जानेवाली
समिधा की अरुण तुला पर खंडित ग्रीवा तुलवानेवाली
कब रुके देश के चरण झुका कब विद्रोही मस्तक उभरा
तूफानी गति से चढ़ा न फिर संघर्ष-सिंधु का जल उतरा
किस सर्वजयी ज्वाला का घर घर महाकेतु उड़ता लहरा
सदियों का विजित भाव हर तुमने विजय शंख फूँका गहरा

सम्पादक का पृष्ठ

सावधान !

हमने इन्हीं कालमों में कई बार सरकार का ध्यान आकर्षित किया है कि पंचमांगी दल से सावधान रहने की आवश्यकता है। प्रसन्नता की बात है कि प्रांतीय सरकार अब सजग हुई है और उपयुक्त अवसर पर, उसने प्रांतीय रक्षा-दल के सैनिकों तथा अफसरों के नाम इस प्रकार का आदेश जारी किया है कि हैदराबाद तथा पाकिस्तान से बहुत मुसलमान हिन्दुस्तान में वापस आ गये और आ रहे हैं। सम्भावना है कि हैदराबाद और हिन्द-सरकार के बीच मतभेद हो जाने के कारण ऐसे लोग पंचमांगी दल का अथवा यहाँ की खबरें दूसरी जगह भेजने में गुप्तचर का कार्य करें, इसलिये इस ओर पूरी तरह सजग और सावधान रहना चाहिए।

हमें भली भाँति मालूम है कि इस समय पाकिस्तान बनाने में हुल्लड़ मचानेवाले समुदाय का कहीं भी ठिकाना नहीं है। विभाजन अर्थात् पाकिस्तान की स्थापना के बाद यह समुदाय बड़ी संख्या में पाकिस्तान में घर बसाने के लिये गया किन्तु वहाँ उनकी तनिक भी पूछ नहीं हुई। पाकिस्तान के मूल निवासियों ने इन पाकिस्तान-प्रेमियों की जड़ वहाँ नहीं जमने दी, इसी कारण से उन्हें पुनः हिन्द-सरकार की शरण लेनी पड़ी। इस प्रकार लगभग ३ लाख पाकिस्तान के पुजारी पाकिस्तान से हिन्दुस्तान में पुनः वापस आ गये हैं। हिन्द-सरकार ने उन्हें पुनः हिन्दुस्तान में बसने की सुविधाएँ दी हैं। इसके अतिरिक्त हैदराबाद तथा अन्यान्य पाकिस्तानी क्षेत्रों से कितनी ही मुस्लिम जनता भयवश हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान की सीमा से लगे प्रान्तों में आकर निवास करने लगी है। इस प्रकार कई लाख पाकिस्तान-प्रेमी, भूख, परेशानी, अव्यवस्था तथा अशांति से बचकर अपनी जान बचाने के लिए वापस आ गये हैं। साथ ही यह भी है कि हिन्दुस्तान में ऐसी मुस्लिम जनता भी है जो भारत को अपनी जन्म-भूमि या मातृ-भूमि समझती आई है। वह ज्यों के त्यों अपनी स्थिति दृढ़ बनाये हुए हिन्द सरकार के संरक्षण में जमे हुए हैं। उन्हें पाकिस्तान से किसी प्रकार का प्रेम नहीं है। जिस पाकिस्तानी समुदाय ने पाकिस्तान का सृजन किया, सच पूछा जाये तो उन्हें हिन्दुस्तान जाने और पुनः आकर बसने का कोई अधिकार न होना चाहिए। जिस पाकिस्तान के प्रेम के बल पर वह वहाँ गये थे, उन्हें कदापि वापस नहीं आना चाहिये था। उन्हें पाकिस्तान में जीवन के प्रत्येक खतरे का सामना करते हुए वहीं निवास करना चाहिये था, किन्तु यह स्वार्थी समुदाय कब का त्यागी? गये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास की मसल उन पर पूरी तरह चस्पा होती है; परन्तु हमारी समझ में नहीं आता कि जब एक निर्णय हो गया, भारत का विभाजन हिन्दू-मुस्लिम दृष्टि से स्वीकार कर लिया गया तो फिर पाकिस्तान में निवास करने में कठिनाई ही क्या रह गई है। हिन्द-सरकार की शरण में दुबारा आने की आवश्यकता ही क्या थी? किन्तु आजकल तो विध्वंसक कार्यों में आदर्शवाद चलता है और निर्माण-कार्य में स्वार्थ-लिप्सा। इसलिये अवसर पड़ने में यह पाकिस्तान-प्रेमी समुदाय हिन्द सरकार के विरुद्ध पञ्चगांमी दल का कार्य करने लगे तो क्या आश्चर्य है? ऐसा ही समुदाय प्रत्यक्ष रूप से हिन्द-सरकार से भी लाभ उठाना चाहता और गुप्त रूप से पाकिस्तान के प्रति अपना महान् अनुराग प्रकट करना चाहता है।

इसलिये आवश्यकता है सावधान होने की। संयुक्तप्रांतीय सरकार ने प्रांतीय रक्षा-दल के सैनिकों तथा अफसरों के नाम जो आदेश निकाला है वह समय के अनुकूल और खतरे की सुरक्षा के लिए एक उचित उपाय है। हमें पता चला है कि मध्यप्रांत, बिहार, बंबई, मद्रास तथा आसाम सरकारों ने रक्षादल के सैनिकों, होमगार्डों सिपाहियों तथा अफसरों को भी समय के पूर्व खतरे का सामना करने के लिए सावधान किया है। हम फिर कहते हैं कि प्रांतीय सरकारों तथा हिन्द-सरकार को इस प्रकार के पंचमांगी समुदाय तथा गुप्तचरों से पूरी तरह सावधान हो जाना चाहिए। यदि किसी प्रकार की अशांति उत्पन्न भी हो तो वह कार्यरूप में परिणत न हो सके। हम तो चाहते हैं सरकार पाकिस्तान से वापस आनेवालों की एक गुप्त तालिका तैयार करे; साथ ही ऐसे 'नेशनलिस्ट' समुदाय पर भी ध्यान रखे जो अवसरवादी हैं और जिनके कौल-फेल का कोई ठिकाना नहीं है; क्योंकि सरकार का कर्तव्य है जनता में शांति और सुरक्षा को स्थापित किये रहना। जनता को भी अब सतर्क हो जाने का अवसर आ गया है।

* * *

भारत-सरकार में हिन्दी-विरोधी नीति क्यों

राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा राष्ट्रलिपि देवनागरी के प्र

आखिर अन्याय क्यों हो रहा है?

लेखक, ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल

समस्त हिन्दी संसार का वातावरण पुनः विक्षुब्ध हो उठा है। भारत-सरकार की राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्रलिपि देवनागरी के प्रति उपेक्षा तथा अन्यायपूर्ण नीति ग्रहण करने की खबर चारों ओर व्यापक रूप से फैल गई है। पिछले वर्ष से यह आशा हो चली थी कि भारतीय विधान-परिषद् वैधानिक दृष्टि से हिन्दी को राष्ट्रभाषा और देवनागरी को राष्ट्रलिपि स्वीकार कर लेगी किंतु इस संबंध में अब निराशापूर्ण समाचार आ रहे हैं। हिन्दी के प्रति सबसे बड़ा अन्याय तो उस अवसर पर किया गया जब कि भारतीय विश्वविद्यालयों के वाइस चांसलरों ने दिल्ली में एकत्रित होकर यह घोषित किया कि पाँच वर्ष तक उच्च शिक्षा अँगरेजी के माध्यम द्वारा ही दी जायेगी, इस प्रकार के निर्णय के कुछ समय पूर्व भारत के शिक्षा-सचिव मौलाना अबुल कलाम आजाद ने भी पटना विश्वविद्यालय में दीक्षांत भाषण करते हुए अपनी इसी प्रकार की सम्मति प्रकट की थी। विश्वविद्यालयों के वाइस चांसलरों ने शिक्षा-सचिव के उसी मत की पुष्टि की है, इसमें संदेह का कोई कारण नहीं है। अब तो विधान-परिषद् के सदस्यों में भी हिन्दी-विरोधी प्रचार किया जा रहा है। इसके सिवा आल इंडिया रेडियो में भी हिन्दी-विरोधी नीति के व्यापक विस्तार की नीति अपनाई जानेवाली है। कहा यह जाता है कि चूँकि भारत के पड़ोसी राष्ट्र संस्कृत-मिश्रित हिन्दी भाषा के ब्राडकास्ट को नहीं समझ सकते इसलिये हिन्दुस्तानी अर्थात् उर्दू में ब्राडकास्ट की व्यवस्था होनी चाहिए। हमारी समझ में नहीं आता कि भारत-सरकार को पड़ोसी राष्ट्रों पर अकारण कृपा करने की इतनी फिक्र क्यों पड़ गई है? हिन्दी भाषा तथा भारतीय संस्कृति को बलि देकर पड़ोसियों को सन्तुष्ट करने की ओर क्यों बढ़ने की तैयारी हो रही है? हम पूछते हैं कि क्या पड़ोसी राष्ट्र भी अपनी संस्कृति और भाषा को बलि देकर भारत की ओर तनिक भी आँख उठाकर देखने को उत्सुक हैं? फिर भारतीय रेडियो में हिन्दी-विरोधी नीति अपनाने की ओर क्यों परेशानी दिखाई दे रही है।

वास्तविकता कुछ और ही है। इस समय भारत-सरकार में कुछ ऐसे महापुरुष शक्ति-सम्पन्न हैं जो हिन्दी तथा देवनागरी लिपि के प्रबल विरोधी हैं। संस्कृत के वह शत्रु हैं। अँगरेजी तथा उर्दू के पक्षपाती हैं। वह नहीं चाहते हैं कि हिन्दी तथा देवनागरी को अखिल भारतीय शक्ति प्राप्त हो। वह राष्ट्र में दो संस्कृतियों की स्थापना के खुल्लम-खुल्ला पक्षपाती हैं। मुस्लिम संस्कृति के समर्थक और भारतीय संस्कृति को घृणा की दृष्टि से देखनेवाले हैं। विदेशी अथवा विलायती संस्कृति के हामी हैं। फिर यह कैसे आशा की जा सकती है कि वह हिन्दी, देवनागरी अथवा भारतीय संस्कृति के पुनर्जीवन में स्पष्ट रूप से सहयोग देने की ओर आगे बढ़ेंगे? यही कारण है कि पड़ोसी राष्ट्रों के हित की आड़ में [illegible] तथा राष्ट्रलिपि

देवनागरी का बलिदान किया
है। उर्दू से हमारा विरोध नहीं
साहित्य की उन्नति की हम अपेक्षा
किन्तु हिन्दुस्तानी के नाम पर उर्दू
की राष्ट्रभाषा कदापि नहीं मानी
और न उर्दू लिपि को राष्ट्र लिपि
संख्यकों की भाषा बहुमत की
लादी नहीं जा सकती। यदि ऐसा
तो हिन्दी के करोड़ों समर्थक इस
अन्याय की कदापि उपेक्षा नहीं कर
हिन्दी की उपेक्षा और उसके विरोध
षड्यन्त्र चल रहा है, वह ऐसे
द्वारा संचालित रहा है जो भीतर से
तथा अंगरेजियत के परम पोषक
ऊपर से 'राष्ट्रीय' होने की डौंडी
हैं। यही नहीं वह कट्टर सम्प्रदाय
हैं। वह जानते हैं कि उर्दू नाम से
कम अब, विभाजन हो जाने के बाद
का भला नहीं किया जा सकता
महात्मा गांधी के नाम का उपयोग
हिन्दुस्तानी के समर्थक बनने का दावा
जा रहा है। ऐसे ही संकीर्ण कूटनीति
तथा षड्यन्त्रों द्वारा पाकिस्तान की
हुई है। एक ओर मौलाना
करांची से यह ऐलान करते
एक भी उर्दूवाला भारत में
वह वहाँ उर्दू का प्रचार करना
करेंगे। लेकिन हम तो यहाँ कहेंगे
डाक्टर अबुल हक के दोस्त
'विशुद्ध राष्ट्रीय' हैं दिल्ली में ही
उनके उद्देश्य की पूर्ति में लगे हैं
भारत में उर्दू के प्रचार की परेशानी
की क्या आवश्यकता है?
की संख्या भारत में इतनी अधिक
डाक्टर अबुलहक के आदर्शों की
ही रहेगी। सच तो यह है कि
दुश्मन का तो मुकाबला तो
सकता है लेकिन घर ही में
उत्पन्न हो जाता है तो क्या उपाय है
पूछा जाय तो घर ही के शत्रु
भाषा हिन्दी और देवनागरी लिपि
में बाधक बन रहे हैं, वास्तव में
परिताप और दुख की बात है।

फिर भी घबराने का समय
हिन्दी-संसार का प्रत्येक
तथा किसी व्यक्ति के हिन्दीविरो
का लोहा लेने के तैयार रहना
हिन्दी का प्रश्न एक देशीय नहीं
राष्ट्र का है। साम्प्रदायिक नहीं
राष्ट्रीय तथा राजनैतिक है।
तथा देवनागरी लिपि ही द्वारा राष्ट्र
ता स्थापित तथा सांस्कृतिक चेत
हो सकती है। हमें हिन्दी के द्वारा
राष्ट्र में पुनः भारतीय संस्कृति
करना है, पंचमांगी समुदाय
अपने षड्यन्त्र द्वारा बालू
खड़ा करता रहेगा? कब तक
होने की पुकार के सहारे भारतीय
के नाश की युक्तियाँ निकाली
जिस प्रकार राष्ट्र के करोड़ों
बलिदान से डेढ़ सौ वर्ष
स्वतन्त्रता हमें आज प्राप्त हुई
प्रकार करोड़ों हिन्दी भाषा

शेष कालम २ के नीचे

(कालम ४ का शेष)

बलिदान से किसी न किसी दिन हिन्दी राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित होगी, इसमें सन्देह नहीं, केवल समय की अपेक्षा है और कुछ नहीं। उस समय अपनी राष्ट्रीय तथा सांस्कृतिक एकता स्थापित कर सकेंगे।

अंत में हम भारत-सरकार के वास्तविक राष्ट्रवादियों तथा विधान-परिषद् के सदस्यों से अनुरोध करेंगे कि (डाक्टर भगवानदास जी के कथनानुसार) ईश्वर, खुदा या गाड के नाम पर हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि के प्रति अन्याय कदापि न होने दिया जाना चाहिए। प्रत्येक हिन्दी भाषा-भाषी-प्रेमी तथा साहित्य-सेवी के लिये अब अवसर आया है कि वह सावधान हो और जब तक भारत-सरकार अपनी हिन्दी-विरोधी नीति का त्याग न करे, विधान-परिषद् हिन्दी को राष्ट्रभाषा तथा देवनागरी को राष्ट्रलिपि स्वीकार न करे। 'नेशनलिस्ट' तथा उनके साथ गठबन्धन करनेवाले अवसरवादियों तथा स्वार्थियों के षड्यन्त्र की समाप्ति न हो जाये तब तक बराबर आन्दोलन जारी रहना चाहिए, क्योंकि हिन्दी के लिये यह संकट का अवसर है।

* * *

नीति क्यों
नागरी के
ा है ?

बलिदान किया
मारा विरोध नहीं
व्रति की हम अपेक्षा
नी के नाम पर उर्दू
दापि नहीं मानी
लपि को राष्ट्र लिपि
ाषा बहुमत की
सकती। यदि ऐसा
करोड़ों समर्थक इस
दापि उपेक्षा नहीं कर
ता और उसके विरोध
हा है, वह ऐसे
रहा है जो भीतर से
के परम पोषक
' होने की डोंडी
वह कट्टर सम्प्रदाय
हैं कि उर्दू नाम से
जन हो जाने के बाद
किया जा सकता
नाम का उपभोग
समर्थक बनने का दावा
ही संकीर्ण कूटनीति
द्वारा पाकिस्तान को
ओर मौलाना
लान करते हैं
ा भारत में
प्रचार करना
हम तो यहां कहेंगे
हक के दोस्त
हैं दिल्ली में ही
ी पूर्ति में लगे हैं
प्रचार की परेशानी
पकता है ? पञ्च
त में इतनी अधिक
क के आदर्श की पूर्ति
तो यह है कि
मुकाबला तो
न घर ही में
है तो क्या उपाय है
ही के शत्रु
र देवनागरी लिपि
हैं, वास्तव में
व की बात है।
राने का समय
प्रत्येक समय
क को हिन्दीविरोधी
तैयार रहना
एक देशीय नहीं
म्प्रदायिक नहीं
अनैतिक है।
लपि ही द्वारा रा
सांस्कृतिक चेतना
में हिन्दी के द्वारा
रतीय संस्कृति
भोगी समुदाय
द्वारा चालू
? कब तक
के सहारे भारतीय
याँ निकाली
के करोड़ों
द सौ वर्ष
आज प्राप्त हुई
न्दी भाषा
लम २ के नीचे

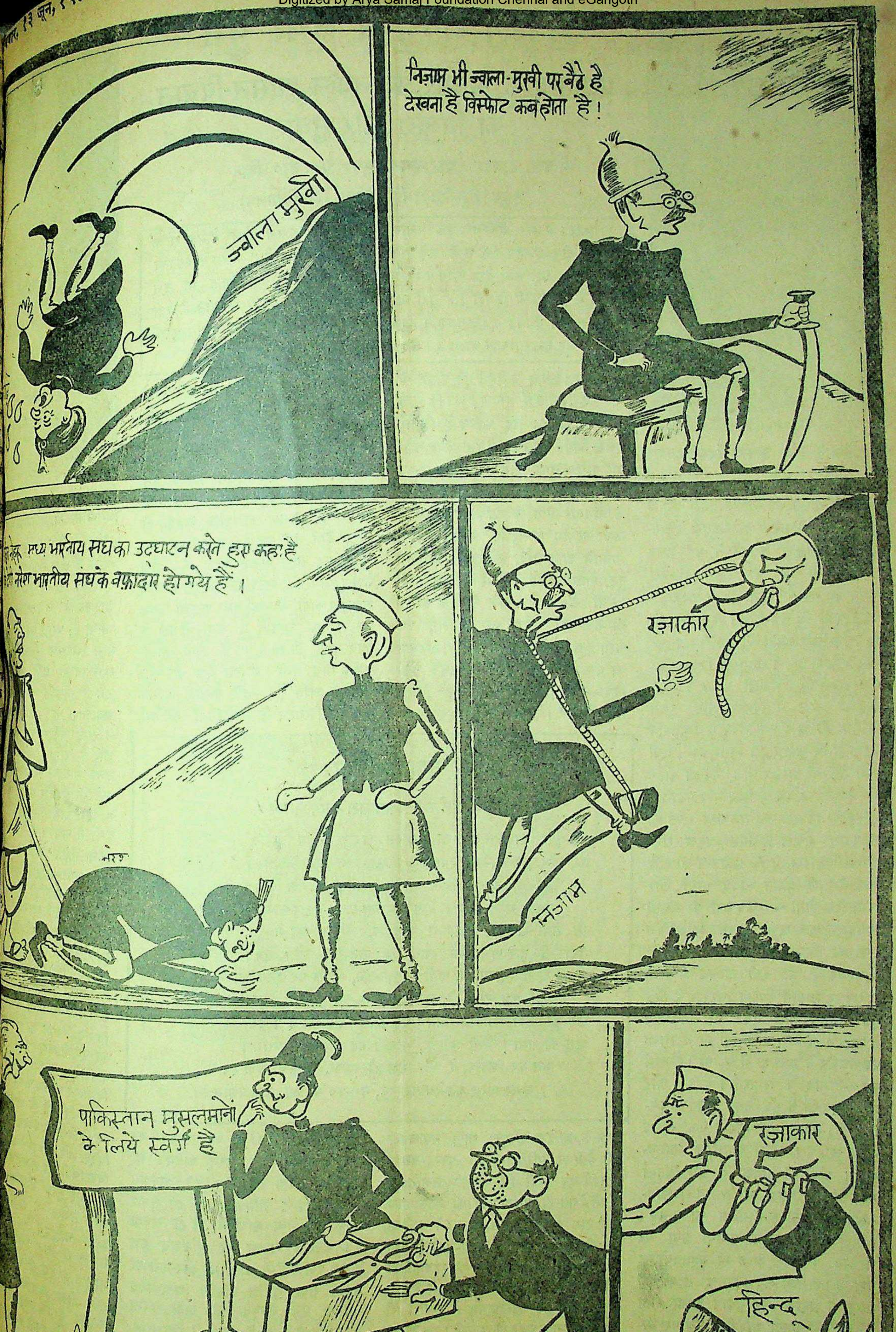
ज्वाला मुखी
निज़ाम भी ज्वाला-मुखी पर बैठे है
देखना है विस्फोट कब होता है !
मध्य भारतीय संघ का उदघाटन करते हुए कहा है
नरेश भारतीय संघ के वफ़ादार होगये हैं।
नरेश
रज़ाकार
निज़ाम
पाकिस्तान मुसलमानों के लिये स्वर्ग है
रज़ाकार
हिन्द
KRISHNAKANT 48

नेपाल राज्य में नया युग

प्रजातन्त्र के आधार पर नवीन शासन-विधान का निर्माण और सुधार

लेखक, डाक्टर ईश्वरीप्रसाद एम० ए० डी० लिट्
(अध्यक्ष, राजनीति-विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय)

भारत के उत्तर में नेपाल एक प्राचीन हिन्दू राज्य है। नैपाल अपनी सैनिक शक्ति और प्राचीन भारतीय संस्कृति के लिये ऐतिहासिक महत्त्व रखता है। भारत के स्वतन्त्र हो जाने पर जहाँ अन्य देशी राज्य परिवर्तन की ओर बढ़ रहे हैं, वहाँ नैपाल भी इस दिशा में अग्रगामी हो रहा है। वहाँ भी शासन-सुधार में क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहा है। इस लेख में विद्वान् इतिहासज्ञ ने नैपाल में आनेवाले नवयुग और शासन-सुधार पर सुन्दर प्रकाश डाला है। लेख पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

इस लेख के लेखक डाक्टर ईश्वरीप्रसाद।

अभी हाल में नैपाल राज्य के प्रति एक बलवती जिज्ञासा की जागृति हमारे देश में हुई है। जिसके बारे में हम ब्रिटिश शासन-काल में बिलकुल अज्ञान थे, वह आज हमारे समाचार-पत्रों का एक महत्त्वपूर्ण विषय बन गया है। अनेक अटूट सांस्कृतिक शृङ्खलाओं से सुसम्बन्धित इस देश की सहधर्मावलंबनी जनता की परिस्थिति की ओर आकृष्ट हमारी सामूहिक जिज्ञासा का एक कारण तो है नैपाली कांग्रेस के प्रधान केन्द्र की बरार में स्थिति और दूसरा विशिष्ट कारण है इस राज्य में प्रजातंत्रीय प्रवृत्तियों की असाधारण जागरूकता। ऐसी दशा में यही सम्भव है। नैपाली कांग्रेस का प्रमुख उद्देश्य है पाश्चात्य पद्धति के अनुकरण पर एक पूर्ण प्रजातन्त्र राज्य की स्थापना। नैपाल के समस्त प्रमुख राजनीतिज्ञों का मत है कि प्रजातन्त्र की ओर किसी देश की प्रगति सदैव धीमी और स्वाभाविक होनी चाहिये। वहाँ के समस्त व्यवहार-कुशल एवं दूरदर्शी व्यक्ति इस बात पर सहमत हैं कि अब परिवर्तन आवश्यक है और इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर उन्होंने नैपाली सरकार के वि० सं० २००४ वाले ऐक्ट को सर्वसम्मति से मान्यता दी है जिसकी घोषणा महाराजा पद्मशमशेर ने हाल ही में की थी। मैं स्वयं सुधार-समिति के परम्परागत रूढ़ियों और अन्धविश्वासों से हुए सतत संघर्ष से परिचित हूँ। नैपाल कालान्तर से एक सैनिक राज्य रहा है। उसकी आधुनिक शासन-पद्धति अब भी सैनिक है और जिसका स्पष्ट प्रमाण है वहाँ की समस्त राजकीय-संस्थाओं पर सैनिक-व्यवस्था का प्रभुत्व। सम्पूर्ण राज्य-व्यवस्था सामन्त प्रथा पर आश्रित है और आज भी महोत्सवों पर वहाँ के महाराजा के दर्शनार्थ सहस्रों की संख्या में अपार जन-समुदाय इकट्ठा होता है। वहाँ की जनता अशिक्षित एवं परम्परागत रूढ़ियों और रीति-रिवाजों में इस बुरी तरह जकड़ी हुई है कि हम उस विचित्र स्थिति की कल्पना भी नहीं कर सकते। उपरोक्त ऐक्ट द्वारा निर्धारित शासन-प्रणाली उत्कृष्ट आदर्श की प्रतिपादिका नहीं है और उसमें अनेक दोष भी हैं; परन्तु फिर भी वर्तमान स्थिति को देखते हुए इतना भी एक महान् प्रगति का प्रमाण है। प्रत्येक राज्य भक्त नैपाली का यह कर्त्तव्य है कि वह इसकी कार्यमय परिणत में इस प्रकार सहायक हो कि समय आने पर किसी कठिनाई के बगैर उसमें महान सुधार हो सके। बर्क के अनुसार-नीति से अधिक महत्वपूर्ण है जन सहयोग। सर्वश्रेष्ठ शासन-व्यवस्था मनमाने असहयोगी, स्वेच्छक राजनीतिक दुस्साहसियों द्वारा मिट्टी में मिल जाती है। १९वीं श० के मध्यकाल में एक अँगरेज जो फ्रांस की यात्रा कर रहा था, एक चरवाहे से पूछा कि उसने कभी राजविधान का नाम सुना है? इस पर उसने उत्तर दिया—"हाँ! हाँ! वह तो लुई फिलिप की पत्नी है"। ऐसी अनाचारपूर्ण अज्ञानता से वह देश परिपूर्ण था। नैपाल की भी वैसी ही परिस्थिति है; परन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं कि उसकी उन्नति भी रेंगते रेंगते ही अथवा वहाँ की जनता हाथ पर हाथ रखकर उस दिन की प्रतीक्षा करती रहे जब वहाँ का बच्चा-बच्चा शिक्षित हो जाय। इसलिए नैपाल के राजनीतिज्ञों ने इस ऐक्ट पर अपनी स्वकृति दी है।

समय के अतिक्रमण से सुधारों की शिथिल गति दुरूह हो जायगी। यह शासन व्यवस्था राजतंत्र एवं प्रजातत्रीय व्यवस्थापिका सभा की दो प्रतिकूल दिशाओं में मध्यस्थित व्यवस्था है और कदाचित् नैपाल की वर्तमान परिस्थिति में इसके अतिरिक्त और कोई सम्भावना भी नहीं। लार्ड ऐक्टन के अनुसार—"कोई किसी क्रान्ति का भविष्य नहीं बतला सकता—वह हमें हमारे लक्ष्य की ओर भी ले जा सकती है और पतन के अन्धकारपूर्ण गर्भ में भी ढकेल सकती है जहाँ से बचकर निकलना भी असम्भव है। अतएव राजनीतिज्ञों को इस मध्यममार्ग का अनुसरण ही श्रेयस्कर है जो हमें हमारे लक्ष्य की ओर अवश्य ही पहुँचा देगी चाहे उसमें कुछ अधिक समय लगे। युद्ध एवं शासन कला में प्रवीण नैपाल का एक सामन्त वर्ग भी है जिसकी राजकीय कार्यों में अवहेलना अथवा उसके उन्मूलन की चेष्टायें न केवल नैपाल के लिए वरन् समस्त भारत के लिए हानिकारक सिद्ध होगी। गोरखा एक वीर और युद्धप्रिय जाति है। उसे तत्काल न्यूयार्क अथवा वाशिंगटन के निवासियों की तरह प्रजातन्त्रीय नागरिकों में परिणत करने का कार्य दुष्कर ही नहीं, वरन् असंभव सा ही प्रतीत होता है। देश की अशांति को मिटानेवाले सैनिक-शासन का सुधार सतर्क और योग्य हाथों से ही हो सकता है। वर्तमान शासन की बुनियाद कुछ कुशल व्यक्तियों ने डाली थी और उस पर नवीन तथा सुडौल दीवारें असाधारण सतर्कता एवं योग्यता से खड़ी करना आवश्यक है। अभी हाल में सिंहासनारूढ़ नवीन महाराजा एक दक्ष राजनीतिज्ञ हैं। २९ वर्ष तक वे अपने पिता के हजूरिया थे और सम्पूर्ण राज्य का कार्य उन्हीं के हाथों हुआ करता था। वह एक महान् शासनकर्त्ता हैं जिनका राजनीतिज्ञ अनुभव सम्पूर्ण राज्य में असाधारण एवं

नैपाल के वर्तमान प्रधान मंत्री म
धिराज सर मोहन शमशेर जंगबहादु

सर्वोत्कृष्ट है। वे दानशील एवं
व्यक्ति हैं और नैपाल में उनके दा
दया की अनेक कहानियां प्रच
आलोचकों ने उन्हें सुधार का
बताया है; परन्तु यह बात ठीक न
मान प्रजातन्त्र युग में क्रांति
व्यक्तित्व के प्रति शङ्कायें
उनकी प्रकृति जो सर्वदा
अवाचाल है। क्रांति की
से उन्हें विकास का मार्ग अधिक
और वे शासन सुधारों के इच्छु
उनके मास्तिष्क में अनेक महत्त्वपू
नायें भी हैं और यदि उनको
सहयोग प्राप्त होगा तो वे नैपाल
देशों में अवश्य ही एक ऊँचे
पहुँचा सकेंगे। अभी नैपाल की
पूर्ण आवश्यकतायें निम्नलिखित
(१) ग्रामीणों में शिक्षा-प्र
आर्थिक एवं व्यावसायिक उ
न्याय के क्षेत्र में शीघ्र अथवा स
(४) नौकरी की कसौटी यो
चाहिए। (५) परंपरागत एवं अं
के मिटाने के लिए सामाजिक
समाज में समानता का प्रचार।
विधायनी सभा की सुव्यवस्था
का एकत्रीकरण। (८) देश के
के शिक्षण के लिए एक सं
विद्यालय की स्थापना। (९)
सैनिक-विभागों की अलग
(१०) विज्ञान एवं व्यवसाय-
विदेश जाकर अध्ययन करने के
विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति देने

यह कुछ ऐसी समस्यायें
और नैपाल के हितचिंतकों
जाना चाहिए। उनके नि
नैपाल की उन्नति निर्भर है।
नीतिज्ञ को देश की परिस्थि
ज्ञान होना आवश्यक है
कर्त्तव्य है कि वह देश
दुर्व्यवस्था से बचाने का प्रय
नातिक उत्कर्ष, व्यवस्था एवं
वह विषय है जो सदा के लि
प्रगतिशील होता रहता है
राजनीतिज्ञ को यह
रखना चाहिए।

वर्षा-निमंत्रण

लेखक, प्रोफेसर चन्द्रप्रकाश वर्मा, एम ए०

जल-बूँदों का स्वागत करने, तन-मन अधीर, जीवन अधीर,
आ, घहर घहर घन-घटा श्याम, अब बरस-बरस सर-सरित-तीर।
छर-छर-छर-छर बौछार छोड़, चपला की चंचल चमक बीच,
वह मूर्च्छित मरुथल देख और वह सजल-सफल सागर उलीच।
ओ मेघराशि! दे अन्न, न दे संदेश, न बन अब मेघदूत,
बूँदों के तार चलें जैसे खादी के शत-शत धवल सूत।
टीलों पर टप-टप, पातों पर छन-छन, छप्पर पर छनन-छनन—
बूँदों का नर्तन हो, क्षण-क्षण सन-सन पुरवैया सनन-सनन।
उस ओर देख, ओ नम्र नयन! वह कृषक कर रहा है प्रणाम,
ऋतु की रानी! कैसी मोहक, उसकी यह पहली राम-राम।
मत कर विलम्ब, दे चीर नील की छाया, आकुल भील श्याम,
तू चपल चरण घन-रथ पर चढ़, नभ-पथ पर आ, मेरा प्रणाम।

महात्मा गांधी का सत्य-अहिंसा

भारतीय स्वतंत्रता की प्राप्ति का यही एकमात्र साधन था

लेखक, माननीय श्री लालबहादुर शास्त्री, एम० एल० ए०

(गृह तथा पुलिस-मंत्री संयुक्तप्रांत)

विश्ववंद्य महात्मा गांधी के सत्य और अहिंसा के अमोघ अस्त्र के द्वारा आज भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई है, इस लेख में श्री लालबहादुर शास्त्री ने गांधी जी के सत्य और अहिंसा के सिद्धांत तथा उपयोगिता का प्रतिपादन किया है। लेख विद्वत्तापूर्ण, पठनीय तथा ज्ञान-वर्द्धक है।

बीच भी सही विचारधारा उन्नति करती रही है।

अहिंसा की विचारधारा के सम्बन्ध में भी यही स्थिति है। आज संसार हिंसा से भरा हुआ देख पड़ता है और पिछली दो लड़ाइयों ने तो उसे और भी भयानक बना दिया है। फिर भी इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि इस हिंसा के बीच भी मानव-हृदय युद्ध से घबरा रहा है और शान्ति चाहता है। हाँ थोड़े से राजनीतिज्ञ चाहे इसके विपरीत प्रयत्न में हों। पिछली शताब्दियों में समाज के स्वरूप की जो धारणा थी वह बदली जा रही है। क्रमशः लोकतंत्र विचार स्वातंत्र की भावनाएँ बढ़ी हैं। सबके राजनीतिक और नागरिक अधिकार समान हों तथा समाज में न्याय-युक्त आर्थिक समानता हो, महिलाओं के अधिकार कम न हों, मुजरिम को अपनी बात कहने का मौका दिया जाय, कैदी के साथ भी सख्ती का बरताव कम से कम हो, बच्चों की शिक्षा में कड़ी सजाएँ न दी जायँ। क्या यह सब अहिंसा का ही स्वरूप अथवा विकास नहीं है?

परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि अहिंसा को जो प्रगति गांधी जी ने इधर दी है वह शायद ही किसी और ने न दी हो। अहिंसा को उन्होंने संसार में एक जीती जागती चीज बनाने का प्रयत्न किया और उसमें वह सफल हुए। उनकी सबसे बड़ी विशेषता अहिंसा को व्यावहारिक स्वरूप देने में थी। न केवल कौटुंबिक अथवा सामाजिक क्षेत्र में ही अपितु राजनैतिक क्षेत्र में भी उन्होंने उसका सकुशल प्रयोग किया। संसार में शायद ही किसी ने यह प्रयोग अब तक और इस वृहद् रूप में किया हो।

संसार में जो बात जितनी बड़ी और गंभीर होगी, अथवा जो व्यक्ति जितना ही महान् होगा उतना ही वह द्वन्द्वमय दिखाई पड़ेगा। गांधी जी विभिन्न तथा विपरीत गुणों के समुचय थे आदर्शवादिता के साथ साथ जिस व्यावहारिकता के वे पुजारी थे वह उनके बड़प्पन और ऊँचेपन का एक सुन्दर समन्वय था। साधारणतः कहा जाता है कि राजनैतिक क्षेत्र में अहिंसा की कहाँ जगह है? बात एक हद तक ठीक है; परन्तु यह भी सोचने का विषय है कि क्या इसे मानकर समाज में शान्ति, कलह तथा युद्ध बन्द करने का प्रयत्न न किया जाय? जिस किसी ने राजनीति के विकास को इस दृष्टि से देखा है कि उससे जनहित बढ़े, समाज में सुख और शान्ति की वृद्धि हो, लोगों में सद्भावना रहे, हर एक की मर्यादा की रक्षा हो, यदि अहिंसात्मक समाज बनाने का लक्ष्य भी उनके सामने से हट जाय तो उनका उत्साह मन्द पड़ जायगा। जीवन की प्रेरणा इसी में है कि अप्राप्य को प्राप्त करना जो दूर है उसे समीप लाना और कल्पना को भी एक सीमा तक वास्तविकता प्रदान करना। यदि ऐसा न हो तो समाज का विकास ही रुक जाय। यू० एन० ओ० की आज अस्थापना अंतर्राष्ट्रीय शान्ति बनाये रखने के लिये की हुई है। यू० एन० ओ० से पहले निःशस्त्रीकरण आदि पर पिछली लड़ाई के बाद विचार हुआ था। यह प्रश्न सच्चाई से रक्खे जाते हों या न रक्खे जाते हों; परन्तु इतना तो स्पष्ट ही है कि उस ओर प्रयास करना वांछनीय समझा जाता है। इसमें सफलता जल्दी मिलनेवाली नहीं इसमें संदेह ही क्या है। परन्तु क्या उस पर विचार करना, लोगों का मत बनाना और उस ओर प्रयास करना भी छोड़ दिया जाय?

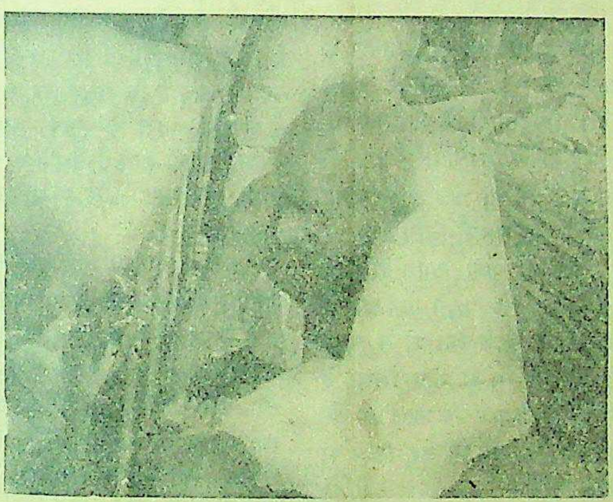

विश्ववंद्य महात्मा गांधी, जिनके सत्य अहिंसा के प्रयोग से भारत स्वतंत्र हुआ है।

सत्य और अहिंसा है क्या? सत्य की दार्शनिक परिभाषा करना चाहे तो वह ब्रह्म की ही परिभाषा होगी परन्तु साधारण जीवन में सत्य क्या है यह निर्णय करना भी सरल नहीं। प्रायः कहा जाता है कि सत्य आपेक्षिक वस्तु है, आज जो सत्य है वह कल असत्य हो सकता है। गांधी जी का भगवान् में भरोसा था और वह यही कहते थे कि जो अन्तरतम कहे, अन्तरतम से जो एक मूक आवाज सी आये वही सत्य है और उसको मानना चाहिये। सत्य का स्वरूप नकारात्मक है जहाँ स्वार्थ नहीं वहाँ सत्य है। जहाँ दम्भ नहीं वहाँ सत्य है, जहाँ तक आदमी "मैं" को "हम" में और व्यक्ति को समष्टि में मिला सकता है वहाँ तक वह सत्य के समीप है। राजनैतिक क्षेत्र में अथवा गवर्नमेंट संचालन में व्यक्ति और समष्टि का, कुटुम्ब और समाज का, एक राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र से संतुलन और समन्वय ही राजनैतिक विचारकों का ध्येय है। फिर सत्य से कोई राष्ट्र कैसे हट सकता है और जैसे कोई राजनीतिक उसकी उपेक्षा कर सकता है?

अहिंसा का अर्थ सभी समझते हैं। किसी को न मारना ही नहीं बल्कि पीड़ा तक न पहुँचाना अहिंसा है। उसका क्रियात्मक स्वरूप प्रेम है। सत्य की तरह हिंसा और अहिंसा को भी आपेक्षिक कहा जा सकता है। विशेष स्थिति और विशेष अवस्था में अहिंसा हिंसा और हिंसा अहिंसा मानी जा सकती है। इसलिए इसके निर्णय की कसौटी की क्या हिंसा है और क्या अहिंसा, प्रेम है। जिस व्यक्ति अथवा समाज की आत्मा दूसरों के प्रति जितनी ही प्रेम की तीव्रता रक्खेगी उतना ही उसका हिंसा और अहिंसा का निर्णय यथार्थ होगा। गांधी जी ने अपने को मानव में मिला दिया था इसलिये वे सत्य के सच्चे और सफल शोधक निकले। जन-समूह से उनका अगाध प्रेम था। किसी को पीड़ा पहुँचाने की कल्पना उनके लिए दुखदायक थी। संसार में जो बुरा है उसका निराकरण कैसे हों उसके लिये उन्होंने शान्तिमय सत्याग्रह का मार्ग निकाला।

भारतवर्ष को कर्मभूमि बनाकर गांधी जी ने समस्त संसार को सत्य और अहिंसा का संदेश पहुँचाया। सारी दुनिया ने चकित होकर उनका संदेश सुना। संसार के प्रख्यात पुरुषों ने इस व्यक्ति की महानता का अनुभव किया और माना। गांधी जी एक ऐसे प्रकाशस्तम्भ के समान थे जो जीवनपर्यन्त कुछ मूल सिद्धान्तों पर संसार को आलोकित करते रहे। अब वे नहीं हैं। क्या भारतवर्ष उस निधि को जिसे वे छोड़ गये, जिसके द्वारा वह हमें संसार के चित्र-पट पर ले आये, भुला देगा? समय था जब एशिया हमारी तरफ आँख लगाये था, समय था जब योरोप के बौद्धिक और दार्शनिक गांधी जी को चाव से देखते थे। उन्हें गांधी जी की बातों में सत्य और संसार की शान्ति का आभास मिलता था। श्री फेनर ब्राकवे ने ही कहा था, "संसार के क्रांतिकारी आन्दोलन को गांधी जी की अहिंसा प्रणाली उनकी सबसे बड़ी देन

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

राष्ट्र-लिपि देवनागरी में सुधार

भारत की राष्ट्र-भाषा के लिये सरल और वैज्ञानिक लिपि

लेखक, श्री रामेश्वरदयाल दुबे, एम० ए०

भारत की राष्ट्र-भाषा जिस प्रकार हिन्दी है उसी प्रकार लिपि भी देवनागरी है। देवनागरी-लिपि भारत की समस्त भाषाओं की लिपियों से सरल और वैज्ञानिक है। किन्तु इसमें थोड़े-बहुत सुधार की आवश्यकता है। विद्वान् लेखक ने इस लेख में देवनागरी-लिपि के सुधार के सम्बन्ध में कुछ सम्मान किये हैं, जो विचारणीय और पठनीय हैं।

सम्मेलन के प्राण माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन।

जहाँ तक भारतवर्ष के लिए राष्ट्र-भाषा का प्रश्न है वह लगभग हल हो रहा है। सर्वसम्मति से हिन्दी को राष्ट्र-भाषा का पद मिलने जा रहा है जिसकी अधिकारिणी वह अपने सहज गुणों के कारण प्रारम्भ से ही है।

राष्ट्र-भाषा के साथ-साथ राष्ट्र-लिपि का प्रश्न भी जुड़ा ही हुआ है। राष्ट्र-लिपि का प्रश्न भी काफी विवाद का विषय बना रहा है। राष्ट्र-लिपि के लिए तीन लिपियों का नाम लिया जाता रहा है—देवनागरी, उर्दू और रोमन।

रोमन जैसी विदेशी लिपि को राष्ट्र-लिपि बनाने के पक्ष में हमारे कुछ भारतीय विद्वान् रहे हैं। रोमन-लिपि का मुख्य लाभ इतना ही है कि छापने और टाइप करने में यह लिपि आसान पड़ती है। किन्तु यह भी पूर्ण सत्य नहीं है। रोमन लिपि के ज्ञाता अच्छी तरह जानते हैं कि यद्यपि रोमन लिपि के २८ अक्षर माने जाते हैं परन्तु लिखने के और छापने के भिन्न-भिन्न अक्षर होते हैं साथ ही लिखने के काम में आनेवाले अक्षर भी दुहरे होते हैं। इसलिए संख्या की दृष्टि से यह कहना कि रोमन लिपि में अक्षरों की संख्या कम है—सत्य नहीं है।

अक्षर-संख्या का प्रश्न अगर छोड़ भी दें तो भी रोमन को अपनाया नहीं जा सकता। करोड़ों मनुष्यों को इसे सिखाने में जो मेहनत पड़ेगी उसे देखते हुए रोमन लिपि से मिलनेवाले लाभ का कोई मूल्य नहीं है।

रोमन-लिपि के पक्ष में जो लोग अन्तर्राष्ट्रीय-लिपि का नाम लेते हैं उन्हें समझ लेना चाहिए कि केवल लिपि की एकता से ही काम नहीं चल सकता। भिन्न भाषाओं के ज्ञान की कठिनाई को लिपि की एकता हल नहीं कर सकती।

उर्दू-लिपि भी (जिसका शुद्ध नाम फारसी-लिपि है) एक प्रकार से विदेशी लिपि है। उर्दू-लिपि का नाम भी राष्ट्र-लिपि के लिये लिया जाता है।

यद्यपि गुणों की दृष्टि से नागरी-लिपि और उर्दू-लिपि की तुलना हो ही नहीं सकती, फिर भी हमारे कुछ राष्ट्रीय नेता, जिनमें पूज्य महात्मा गांधी जी भी शामिल थे, उर्दू-लिपि को नागरी-लिपि के साथ-साथ राष्ट्र-लिपि का आसन देना चाहते हैं।

राजनीति के क्षेत्र में हमारे ये नेता-गण प्रत्येक प्रश्न पर साम्प्रदायिक दृष्टि-कोण से विचार करने के आदी हो गये हैं। इसलिये वे राष्ट्रीय प्रश्नों पर भी उसी दृष्टिकोण से देखना पसन्द करते हैं। उर्दू-लिपि को राष्ट्र-लिपि बनाने में और कोई कारण नहीं है। वास्तव में तो राष्ट्रीय प्रश्नों को तो शुद्ध राष्ट्रीय दृष्टि से ही हल करना चाहिए।

कुछ वर्षों से राष्ट्र-भाषा के लिये हिन्दुस्तानी और राष्ट्र-लिपि के लिये देवनागरी और उर्दू-लिपि—दो का नाम बड़े जोरों से पेश किया जाता रहा है। इतना ही नहीं, इसी मत का प्रचार करने के लिये पूज्य महात्मा गांधी जी की प्रेरणा से हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा की स्थापना सन् ४२ में की गई थी जिसका उद्देश्य है दोनों लिपियों को अनिवार्य रूप में सिखाना।

देश की बदली हुई परिस्थितियों के कारण आज इस मत का समर्थन ढीला पड़ रहा है। हिन्दुस्तानी के जो कर्णधार अब तक उर्दू-लिपि को नागरी-लिपि के बराबर का दर्जा देते थे, अब अपने आग्रह को छोड़ रहे हैं और नागरी-लिपि को प्रधान और उर्दू-लिपि को गौण स्थान देने लगे हैं। हरिजन सेवक के पिछले एक अङ्क में श्री काका साहब कालेलकर जी ने राष्ट्र-लिपि के सम्बन्ध में जो नोट लिखा है उससे स्पष्ट हो जाता है कि अब उन जैसे हिन्दुस्तानी के हिमायती भी उर्दू-लिपि का आग्रह छोड़ रहे हैं।

राष्ट्र-भाषा और राष्ट्र-लिपि के सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय तो विधान-समिति में होनेवाला है। सम्भावना ऐसी ही है कि भाषा का नाम जो भी रहे राष्ट्र-लिपि के लिये नागरी-लिपि ही स्वीकृत होगी।

नागरी-लिपि के सम्बन्ध में हरिजन सेवक में गांधी जी ने बहुत पहले लिखा था—"मैं अपनी यह राय तो जाहिर कर ही चुका हूँ कि हिन्दुस्तान में सर्वमान्य हो सकनेवाली अगर कोई लिपि है तो वह देवनागरी ही है।"

इतना ही नहीं, उन्होंने एक दूसरे स्थान पर लिखा है—"मैं बरसों से एक लिपि का प्रतिपादन कर रहा हूँ। मुझे याद है कि दक्षिण अफ्रीका में गुजरातियों के साथ भारत-सम्बन्धी पत्र-व्यवहार में एक हद तक मैंने देवनागरी लिपि का व्यवहार भी शुरू कर दिया था।

"अगर एक ही स्रोत से निकली हुई भाषायें एक ही लिपि में लिखी जावें तो बहुत थोड़े समय में विविध प्रान्तों की खास खास भाषाओं का कामचलाऊ ज्ञान मैं प्राप्त कर लूँगा। और जहाँ तक देवनागरी का प्रश्न है सौन्दर्य और सजावट की दृष्टि से लज्जित होने जैसी कोई बात उसमें नहीं है। इसलिये देवनागरी-लिपि को अगर ग्रहण कर लिया जाय तो निश्चय ही भावी सन्तति के परिश्रम और समय की काफी बचत होगी।"

जो हो, यह स्पष्ट है कि देवनागरी-लिपि का भविष्य उज्ज्वल है। भारत की आधी से अधिक जनता उससे पूर्ण रूप से परिचित है। जो नहीं परिचित है वह थोड़े समय में थोड़े प्रयत्न से परिचित हो सकती है, हो रही है। देवनागरी अपने सहज गुणों के बल पर राष्ट्र-लिपि की अधिकारिणी है; वह राष्ट्र-लिपि है।

किन्तु यहाँ एक बात की ओर ध्यान देना है। देवनागरी को जब राष्ट्रलिपि के आसन पर बैठना है तो उसे अपने को उस पद के लिये योग्य भी बनना पड़ेगा। यह ठीक है कि देवनारी-लिपि में अनेकगुण हैं। वैज्ञानिक दृष्टि से वह पूर्ण है। परन्तु यह भी सत्य है कि उसमें कुछ दोष भी हैं ही और सुधारों के लिये उसमें काफी स्थान है। जो दोष हैं उन्हें दूर करना है, साथ ही उसे और अधिक सुलभ बनाना है।

समाचारपत्रों में कभी कभी देवनागरी-लिपि सुधार-सम्बन्धी लेख देखने को मिल जाते हैं पर इससे अधिक कुछ नहीं हो रहा है। इन लेखों द्वारा हमारे ये लिपि-विशारद और लिपि - सुधार में रस लेनेवाले व्यक्ति अपने-अपने सुझाव जनता के सम्मुख रखते हैं और कार्य वहीं समाप्त हो जाता है।

लिपि-सम्बन्धी सुधार के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि उसे समाचार-पत्रों का, प्रकाशन-संस्थाओं का पूरा-पूरा सहयोग मिले। हमारी राष्ट्रीय सरकारें इस दिशा में बहुत कुछ कर सकती हैं, परन्तु अभी तक कुछ विशेष हो नहीं रहा है। महाराष्ट्र में नागरी-लिपि के कुछ नये सुधारों को अपनाया गया है, वहाँ के कुछ पत्र इस सुधरी हुई देवनागरी लिपि का प्रयोग करते हैं। हिन्दी के क्षेत्र में अभी इन सुधारों का कहीं विशेष स्वागत नहीं किया गया है। खँडवा से निकलनेवाला 'हिन्दी स्वराज्य' ही शायद एकमात्र हिन्दी पत्र है जो इन सुधारों को अपना रहा है।

नागरीप्रचारिणी सभा और हिन्दी-साहित्यम्-समेलन, नागरी-लिपि सुधार की दिशा में बहुत कुछ कर सकते थे। श्री काका साहब कालेलकर के प्रयत्न से

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभ
पंडित राहुल सांकृत्यायन

सम्मेलन ने नागरी-लिपि के कुछ
को स्वीकृत किया था परन्तु उ
अपनाया नहीं। हाँ, वर्धा की रा
प्रचार-समिति ने अपना सा
सुधारी हुई लिपि में छापकर अ
कार्य किया है।

जो सुधार महाराष्ट्र में अ
हैं और जिन्हें खँडवा के 'स्व
राष्ट्र-भाषा प्रचार-समिति ने अ
अत्यन्त साधारण हैं और उन्हें
करने में किसी को आपत्ति न
चाहिये। वे सुधार इस प्रकार हैं—

'क' अथवा अन्य किसी अक्ष
विभिन्न पाइयाँ लगाकर हम बा
बना लेते हैं जैसे—

क का कि की कु कू के कै
कं कः

ठीक इसी तरह 'अ' में भी
पाइयाँ अगर लगा ली जावें तो
बारहखड़ी इस प्रकार तैयार होगी

अ आ अि अी अु अू अे अै
अं अः

इसमें से अ आ ओ औ
हम परिचित हैं ही। अ अक्षर
ा और ाः की पाई लगाकर
आये हैं। अब अगर इसी तरह
े और ै की पाई भी अ में
तो सहज हो "इ ई उ ऊ
छः अक्षर लोप हो सकते हैं।
कमी लिपि को सरल ब
लिखी रीति अपनाने से कुछ
हो सकता है और किसी प्र
लिपि में अथवा उच्चारण में
पाता है।

संयुक्ताक्षर का अर्थ है
का जोड़। नागरी-लिपि में जो
हैं उन्होंने अपना स्वतंत्र रू
है। उनके रूपों में सुधार क
है। त्र अक्षर त और र
बना है। किन्तु त्र में स्पष्ट
दिखाई देता और न र
"त्र" इस रूप में लि
हानि नहीं दीखती।

इसी तरह से क और
'क्ष' अक्षर बना है। कि
'क' अक्षर का पता है और

शेष पृष्ठ १

कहानी

हीरे की अँगूठी

लेखक, श्री ब्रह्मदत्त भवानीदयाल

र और साहसी पुरुष जीवन की गंभीर अवस्था में भी तनिक भी शंकित नहीं ह डाकू होकर भी पुलिस इन्सपेक्टर की गोलियों का शिकार आसानी । इन्सपेक्टर के हृदय में कल्लूसिंह के हाथ की अँगूठी ने उसके प्रति प्रत कर दी, कल्लूसिंह मरने के पश्चात् भी अपने बहादुरी के लिये द किया जाता है। कहानी जीवन की अनेकों गंभीर परिस्थितियों को ता रखती है। कहानी का आदर्श मनुष्य को ऊँचा उठाने में समर्थ हो सकता है। कहानी रुचिकर और सुन्दर है।

ने एक ही साँस में गिलास ालीन से मुँह पोंछा और हुआ रुपया ठेकेवाले के हुए कहा:—"एक गिलास

समुद्र में डूबते-उतराते वस्त के हवाले किया शराब उँडेलकर गिलास जबान से बोला, "जरा पुलिस इन्सपेक्टर अभी है। शायद तुम्हारी

की कौन परवाह हल्की चुस्की लेते हुए भरे लहजे में बोला, करके जेल में ठूँसने के दुबारा जन्म लेना पड़े। गिरफ्तार करना किसी के है। हाँ, अगर धोखे से गया तो मेरी लाश ही । जीते जी मैं तो किसी में आनेवाला नहीं! मेरे साल चक्की पीस चुका हूँ जाने की इच्छा नहीं है। से तो मौत ही बेहतर है। अँगूठी को तो देखो, कैसी ने अन्तिम वाक्य के साथ ठेकेवाले के सामने अव- दिया। तीसरी अँगुली पर ती हुई हीरे की अँगूठी थी, जिसकी चमक से ठेके- एक क्षण के लिए झिप सी

की है—पुलिस इन्स- ठेकेवाला आश्चर्य में आकर इसे अच्छी तरह से पहचा- कि उसके हाथ में कई वार

बक़ूफ़ की है," कल्लू- र्व से बोला, अरे "अभी दो है उसने मुझको गिरफ्तार की थी। सचमुच मैंने छोड़ दी थी। क्योंकि मैं पुलिस के सिपाहियों से घिर पर मैंने अपने दिल और दिमाग और तनिक भी घबराहट के न होने दिये। ज्यों ही पुलिस हथकड़ी डालने के लिए आगे बढ़ा त्यों ही मैंने उसकी कलाई मजबूती से पकड़ ली। उस शैतान ने भी अपने फौलादी पञ्जों से मुझको काबू में करना चाहा पर एक जोर से धक्का देते हुए, पलक मारते ही मैं एक तङ्ग गली में घुस गया और सबकी आँखें बचाकर एक मकान में छिप गया। कुछ देर के बाद जब शोर बन्द हुआ तब मैं बाहर निकला (अपनी छाती ठोकते हुए) इस शेर-बबर को पकड़ना कोई बच्चों का खेल नहीं है।"

"कल्लूसिंह, तुम निहायत एक बहादुर आदमी हो," ठेकेवाला अपने पीले दाँत दिखलाते हुए प्रशंसात्मक शब्दों में बोला, "पकड़े जाने का इतना खतरा बने रहने पर भी तुम शहर में आने का साहस कर सकते हो। पाँच हजार की मोटी रकम भी तुमको गिरफ्तार करने या करानेवाले को इनाम के रूप में मिलने की सरकारी घोषणा है। पर फिर भी तुम आम सड़क पर इस तरह घूमते हो मानो तुम्हें किसी की परवाह नहीं है।"

"अरे मेरे दोस्त, मेरी चिन्ता मत करो," कल्लूसिंह जोरों से हँसता हुआ बोला, "शहरवालों में किसकी हिम्मत है कि मेरे ऊपर हाथ भी रख ले। हाँ, पुलिस के जवान हैं जिनको मैंने नाको चने चबवा दिये हैं!"

"इस अँगूठी का क्या करोगे?" ठेकेवाले ने नितान्त कौतूहलवश प्रश्न किया, "बहुत किमती मालूम होती है।"

करूँगा क्या", कल्लूसिंह लापरवाही से बोला, "बस मेरे अँगुली में पड़ी रहेगी। जब जब मेरी नजर इस पर पड़ेगी तब तब मेरे 'दोस्त' शमशेरसिंह, पुलिस इन्सपेक्टर की याद कर लूँगा।"

"पर मैंने लोगों को अकसर कहते सुना है कि हीरा हर एक को फलता नहीं है—बहुतों को इसके धारण करते ही कोई न कोई विपद् सिर पर आ ही जाती है। खैर, इसका प्रभाव तुम पर कैसा होगा यह तो निश्चय-पूर्वक कहा नहीं जा सकता।"

एक क्षण के लिये कल्लूसिंह के माथे पर सिकुड़न पड़ गई मानों ठेकेवाले के कथन में वह कुछ वास्तविकता का अंश टटोल रहा हो पर दूसरे ही क्षण एक उपेक्षा-युक्त हँसी उसके अधरों पर खेल गई। "तुम भी इस अंध-विश्वास के चक्कर में पड़े हो और साथ साथ मुझे भी उसमें शामिल करने का प्रयत्न कर रहे हो," "कल्लूसिंह अँगूठी की तरफ निहारते हुए बोला, "यह बेजान पत्थर मेरा क्या बिगाड़ लेगा पर उलटे मेरे हाथ की शोभा बढ़ायेगा। अगर मैं ऐसी मामूली चीजों से भय खाता तो दिलेरी में इतना मशहूर न होने पाता। सुनो, थोड़ी-सी शराब और दो, पर पैसे नहीं मिलेंगे क्योंकि जेब खाली है।"

* * *

कल्लूसिंह कानून को न माननेवाले व्यक्तियों में से था। उसके उस्ताद तो छोटी-मोटी रकम पर हाथ साफ कर संतोष कर लेते थे पर उनको भी कम आश्चर्य नहीं हुआ जब शागिर्द उनसे डेढ़ हाथ आगे बढ़ गया और मामूली जेब कतरने के बजाय बड़े-बड़े डाके डालने का साहस करने लगा। किसी की जान लेना तो वह महज मामूली बात समझता था। अल्प समय में ही उसकी कुकीर्ति की पताका सर्वत्र फैल गई। जनता, खासकर मालदार लोगों का, रात का सोना हराम हो गया। और पुलिस उसका नाम सुनते ही परेशानी की आहें भरने लगती। पुलिस के शिकंजे में अनेक बार पड़कर भी वह उनकी आँखों में धूल झोंककर भाग निकला था। उसको ईश्वर की सबसे बड़ी देन थी, उसका फुर्तीला और चपल शरीर जिसके सहारे वह उनके पञ्जों से उसी तरह निकल जाता जिस तरह मछली कलबलाकर अनाभ्यस्त हाथों से पुनः जल में पहुँच जाती है।

पुलिस इन्सपेक्टर शमशेरसिंह तो उसके करतूतों से तङ्ग आ गये थे। यद्यपि उन्होंने बहुत से बदमाशों को ठिकाने लगा दिया था पर कल्लूसिंह से उन्होंने मन ही मन हार मान ली थी।

कल्लूसिंह का विशाल शरीर और ऐंठी हुई काली मूँछें जिस पर उसके हाथ सदा फिरते ही रहते थे, किसी पर भी अपना आतङ्क जमाने के लिए पर्याप्त थे। उसे देखते ही लोग घबराकर इधर-उधर बिखर जाते। उसको पकड़ना तो दूर रहा, उससे आँखें मिलाने का भी साहस किसी में नहीं था। ऐसी स्थिति में उसे पकड़ने में पुलिस को जनता के सहयोग से वञ्चित ही रहना पड़ता था। किसी की जान इतनी सस्ती तो थी नहीं कि जान-बूझकर शेर के माँद में प्रवेश करने का साहस करे।

एक बेचारे टेक्सीवाले की तो उसने बड़ी बुरी गति बनाई थी। भारी इनाम के लोभ में पड़कर उसने कल्लूसिंह को पुलिस से गिरफ्तार करना चाहा। पर हमेशा की तरह कल्लूसिंह बच निकला। दो तीन-दिन के बाद टेक्सीवाले का मृत शरीर एक वृक्ष के डाल से झूलता हुआ पाया गया। मोटर के हेन्डिल पर एक चिट बँधी मिली जिसमें लिखा था:—

"मुझको धोखा देनेवालों को भविष्य में इससे भी कड़ी सजा दी जायगी।"

इस बीभत्स घटना से लोगों में ऐसी सनसनी फैली कि वे कल्लूसिंह के नाममात्र से ही काँप उठते थे।

कल्लूसिंह को शराब से अत्यन्त प्रेम था और इसी मुख्य कारण से उसका बस्ती में आना अनिवार्य हो जाता था। उसका कोई खास अड्डा नहीं था क्योंकि वह कभी भी और किसी भी जगह अचानक प्रकट होता और व्यक्तियों के रुपये-पैसे, आभूषण इत्यादि छीनकर नौ-दो ग्यारह हो जाता। यद्यपि बहुतों ने अपनी बहुमूल्य चीजों को लूटते देखकर उसका मुकाबला करने का साहस भी किया पर उसके अचूक गोलियों के शिकार बनकर असमय में ही इस लोक से कूच कर गये थे।

बस्ती में आने-जाने के लिये वह कुछ समय के वास्ते किसी की मोटर या मोटरसाइकिल पर कब्जा कर लेता और अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचकर अपने 'उधार' लिये वाहन का किसी गली-कूचे में परित्याग कर देता था।

* * *

शमशेरसिंह का क्रोध अपनी सीमा का उलङ्घन कर गया ज्यों ही उन्हें पता लगा कि कल्लूसिंह उनकी अँगूठी पर हाथ

कल्लूसिंह ने सोचा कि अब दूसरी चाल चलनी चाहिए।

साफ कर गया है। उनका क्षोभ स्वाभाविक था क्योंकि अँगूठी कीमती होने के साथ साथ उनके जीवन की एक महत्त्वपूर्ण घटना से सम्बन्धित थी। वर्षों पहले जब से एक मामूली पद पर थे, तब कुछ दुस्साहसी डाकुओं के गिरफ्तारी में उन्होंने असीम वीरता का परिचय देकर एक जागीरदार साहब से इनाम के रूप में यह अँगूठी प्राप्त की थी।

उन्होंने दृढ़ निश्चय किया कि अपने प्राणों को हथेली पर रखकर जब तक कल्लूसिंह को गिरफ्तार नहीं कर लेंगे, तब तक चैन नहीं लेंगे। शमशेरसिंह ने उसी वक्त हर एक नाके पर पुलिस के सिपाहियों को तैनात करके उन्हें सख्त ताकीद कर दी कि कल्लूसिंह को देखते ही उसका पीछा करो और जरूरत पड़ने पर गोली भी मार दो।

इस तरह मोर्चाबन्दी करके शमशेरसिंह खुद उसकी टोह में निकले। शराबखाने में ठर्रा की गिलासें साफ करते हुए कल्लूसिंह को उनकी भीष्मप्रतिज्ञा का कोई आभास न था।

कल्लूसिंह ने ज्यों ही वहाँ से जाने का उपक्रम किया त्यों ही शराबखाने के दरवाजे पर शमशेरसिंह की रौद्र मूर्त्ति दिखाई पड़ी। उनके हाथ में पिस्तौल था और उनके पीछे दो-चार पुलिस के आदमी भी थे। शमशेरसिंह ने आगे बढ़ते हुए कड़कती आवाज में कहा, "तुम्हारा खेल अब खतम हो चुका है, कल्लूसिंह! अब किसी भी हालत में तुम नहीं बच सकते। खैर चाहते हो तो अपनी पिस्तौल नीचे फेंक दो। कानून और अमन के नाम पर मैं तुम्हें गिरफ्तार करूँगा। तुमने अगर भागने या हम पर हमला करने की तनिक भी कोशिश की तो बस समझो कि ढेर हुए।"

कल्लूसिंह ने ऐसी नाजुक घड़ी में भी घबराहट के कोई चिह्न प्रकट न होने दिये। हँसने की कोशिश करते हुए कल्लूसिंह बोला, "वाह, मेरे शेर! क्या कहूँ आपके जवाँमर्दी को! मैंने तुम्हें अपने ही समान एक बहादुर व्यक्ति समझ रखा था पर निकले तुम आखिरकार एक बिल्ली। वास्तव में इस तरह पीछे से आकर किसी पर हमला करके उसे परास्त करना तो कमजोर और बुजदिलों का काम है।"

वह बोले जा रहा था और साथ ही इस विपद से छूटने का उपाय भी ढूँढ रहा था। आज जरूरत से ज्यादा समय उसने शहर में बिता दिया था जिसके लिये अब पछताने के सिवाय कुछ और नहीं सूझ रहा था। पर कल्लूसिंह के भाग्य का सितारा अभी मन्द नहीं पड़ा था क्योंकि अकस्मात बत्तियाँ बुझ गईं। शायद "फ्यूज-वायर" जल गया था।

कल्लूसिंह को इससे अच्छा मौका और क्या मिल सकता था और अँधेरा होते ही वह दरवाजे के बाहर निकल चुका था। बाहर शमशेरसिंह की मोटर साइकिल खड़ी थी। कल्लूसिंह फुर्त्ति से उस पर सवार हुआ, इंजिन चालू किया और जिस वेग से तीर कमान से छूटता है उसी गति से साइकिल हवा को चीरती हुई भाग निकली। शमशेरसिंह भी उसके पीछे भागते हुए बाहर आये पर तब तक कल्लूसिंह उनकी साइकिल पर द्रुतगति से भागा जा रहा था।

शमशेरसिंह ने आगे-पीछे का विचार न कर जल्दी से एक दूसरे की मोटर साइकिल लेकर, जो भाग्यवश वहीं खड़ी थी, कल्लूसिंह का पीछा किया। कुछ ही मिनटों में शहर बहुत पीछे छूट गया। दोनों प्रतिद्वन्द्वी सुनसान और अँधेरी सड़क पर सरपट दौड़ रहे थे। दोनों के बीच में लगभग हजार गज का फासला था।

अकस्मात शमशेरसिंह ने देखा कि कल्लूसिंह ने साइकिल को रोक दिया है और सड़क को त्याग कर ऊबड़-खाबड़ पगडंडी पर भागा जा रहा है। पेट्रोल खत्म हो गया था और कल्लूसिंह ने सोचा कि सड़क छोड़कर खेतों में छिप जाने में ही उसकी भलाई है।

शमशेरसिंह ने देखा कि उनका शिकार फिर से चकमा देकर उनके हाथों से निकला जा रहा है, और उनके ध्येय की पूर्ति में फिर से बाधा पड़ रही है परन्तु फिर भी उन्होंने हिम्मत और आशा नहीं छोड़ी। ज्यादा सोचने, विचारने का समय नहीं था क्योंकि हर गुजरता सेकन्ड कल्लूसिंह को उनकी आँखों से ओझल करने में सहायक बन रहा था। शमशेरसिंह ने झट से साइकिल का रुख उस भागती हुई काली आकृति की ओर फेरा और उस ऊबड़-खाबड़ पगडंडी पर साइकल को दौड़ाया।

कल्लूसिंह ने सोचा कि अब किसी अन्य नीति का प्रयोग करना ही श्रेयस्कर होगा अन्यथा शमशेरसिंह के हाथों में पड़ने के सिवाय और कोई चारा न रहेगा। सामने खेत के किनारे एक टूटा-फूटा झोपड़ा दीख पड़ा जो एक समय शायद किसी किसान का निवास स्थान रहा होगा। पर अब तो निशाचरों का अड्डा बना हुआ था। कल्लूसिंह ने शीघ्रता से उसमें पनाह ली। शमशेरसिंह भी उसका पीछा करते हुए आये पर दरवाजे पर ही ठिठक गये। अन्दर की ओर झाँका तो विकट अँधेरा पाया। हाथ को हाथ सूझना कठिन था और उस घने अँधेरे में छिपा था एक भयंकर ठग। वे पिस्तौल हाथ में लिये इसी उधेड़-बुन में उलझे थे कि अन्दर प्रवेश करना बुद्धिमत्ता होगी या नहीं कि भीतर से अंधकार को चीरता हुआ एक भयानक अट्टहास उनके कानों से टकराया।

"क्यों शमशेरसिंह," कल्लूसिंह की बुलन्द आवाज अन्दर से आई, "अब तुम्हारे होश ठिकाने आये हैं। अब मेरी बारी है। तुम मुझको इस अँधेरे में हरगिज नहीं देख सकते पर मैं तुम्हें अच्छी तरह से देख रहा हूँ। मेरे गोलियों के तुम अच्छे निशान बन सकते हो। बस अब बहुत देर नहीं है। अपनी मौत के लिये तैयार हो जाओ। तुमने मुझको बहुत परेशान किया है पर अब नहीं कर सकोगे। तुम्हें मौत के घाट उतारने की तो सचमुच इच्छा नहीं है पर इसके अलावा और कोई चारा नहीं है। बस एक मिनट का और समय है और तुम दम तोड़ते नजर आओगे। कल सुबह तक अगर चील और गिद्धों ने [illegible] तो तुम्हारा मृत शरीर तुम्हारे आदमियों को मिलेगा।"

इतना कहकर कल्लूसिंह चुप हो गया। शमशेरसिंह पसीने से तर हो गये। यद्यपि वे बहादुर थे और उन्हें मौत से लेशमात्र भी भय नहीं था पर इस तरह का मरना—एक कुत्ते की मौत उनको पसन्द नहीं था।

शमशेरसिंह के कानों में निस्तब्धता को भंग करती हुई 'खट-खट' का शब्द सुनाई दिया। उन्होंने आवाज सुनकर अनुमान किया कि शायद कल्लूसिंह अपनी पिस्तौल के घोड़े को आजमा रहा था। शमशेरसिंह ने अपनी आकुल निगाहें इधर-उधर दौड़ाईं। उनके आदमियों में से किसी एक का भी पता नहीं था।

सहसा अँधेरे में कोई वस्तु जुगनू के समान चमक पड़ी। शमशेरसिंह की तीक्ष्ण बुद्धि को इस नवीन रहस्य के उद्घाटन करने में सिर्फ निमिषमात्र का समय लगा। उनके सारे शरीर में एज सिहरन दौड़ गई। वक्त कम था! शमशेरसिंह की पिस्तौल उस प्रकाश-विन्दु को लक्ष्य करती हुई एकबारगी तड़प उठी! बिजली कौंधी, एक हलकी चित्कार के साथ-साथ किसी वजनी चीज के गिरने की आवाज और फिर निस्तब्धता छा गई!

टार्च की रोशनी कल्लूसिंह के निर्जीव शरीर पर फेंकते हुए शमशेरसिंह झुके और उसके अँगुली से अँगूठी निकालकर अपनी अँगुली में धारण करते हुए आप ही आप बोल उठे :—"आज इस अँगूठी के बदौलत ही मेरी जान बची है अन्यथा कल्लूसिंह की जगह मैं ही शहीद हो जाता। खैर, मुझे खेद है कल्लूसिंह, कि तुमको यह हीरे की अँगूठी बहुत ही अशुभ सिद्ध हुई, पर मेरी तो इसने रक्षा ही की है।"

शमशेरसिंह ने कल्लूसिंह के मृत शरीर पर एक नजर दौड़ाकर टार्च को गुल किया। अँधेरे में अँगूठी का पत्थर चमक उठा।

फ़सल के उपरान्त भी
फ़सली फल
फल—प्रकृति का सनातन उपहार है परन्तु
फ़सल निकल जाने पर फल सुलभ नहीं रहते
परीक्षा कीजिए
इन·री·हो फ्रूट ड्राप्स तथा रेशमी मिठाइयाँ
क्रीमोला टाफ़ी
[illegible] सभी दुकानों पर मिलती है या
[illegible]
इण्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इलाहाबाद
सोल एजेन्ट:—बंगाल, बिहार, उड़ीसा और आसाम के लिए—
मेसर्स सत्याचरण दत्त
[illegible] स्ट्रीट, कलकत्ता

राष्ट्र-लिपि देवनागरी मे

(पेज ८ का शेष)

इस संयुक्ताक्षर 'क्ष' भ
भी बिगड़ चुका है। कई स्थ
यह 'छ' का उच्चारण देने लग
'क्ष' के स्थान पर 'क्श'
करना उचित है।

यहाँ पर केवल कुछ मोटे
का जिक्र किया गया है जिन्हें
और संस्थाओं ने काफी अरसे
रखा है। जरूरत इस बात की
सुधारों को व्यापक रूप से अपना

लिपि सुधार का प्रश्न जि
णीय बनाया जा रहा है उस
नहीं। जिस लिपि को जनता
बनना है, उसे शीघ्र से शीघ्र
और दोषहीन बन जाना चाहि
के साथ उसे चलना होगा।
आवश्यकताओं की पूर्ति उसे कर

प्रेस की दृष्टि से, टाइप
से अनेक सुधार नागरी लिपि में
हैं। जो काम हमें बहुत पहले
चाहिए था उन्हें हम अगर अ
करेंगे तो हम बहुत पिछड़ ज
रोमन लिपि को हम शीघ्र मात

आवश्यकता इस बात की
लिपिसुधार के क्षेत्र में हम
छोड़कर आगे आवें और
को शीघ्र अपनायें। समय
में ही जीवन है।

नागरी लिपि में सुधार
की हमारी एक बहुत बड़ी आवश्
उसे शीघ्र पूरा करना चाहिए।

मुफ़्त! मुफ़्त!!
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ०
ए०, पंजाब तथा आगरा यूनि
और होम्योपैथिक बायोकैमिक
आसानी से पास कर सकते हैं।
मुफ़्त मँगायें। पता:—
इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड

खराब खून की साफ
डा. वामन गो
आयोवे
शास्त्री
इलाहाबाद के एजेन्ट—
बन्नूलाल जौहरी एल० एन
एन्ड ब्रदर्स

ब्रज-साहित्य-मंडल

में होनेवाले सम्मेलन के कुछ अनुभव और संस्मरण

लेखक, श्री रामनारायण अग्रवाल, 'साहित्यरत्न'

अ॰ भा॰ ब्रज-साहित्यमंडल का पंचम सम्मेलन एटा नगर (यू॰ पी॰) धूमधाम से सम्पन्न हो गया। वैसे ल २३ को ही समाप्त हो गया एटा कवि रंग की जन्मभूमि है। वहाँ के काव्य-प्रेमियों ने कवियों प्त किया कि वह तारीख २४ मई मेहता पार्क के दिव्य पंडाल को रखें, यद्यपि कार्यव्यस्त प्रति- तारीख २३ मई से ही लौटने लगे

एटा अभी रेलवे का कृपापात्र नहीं लिए वहाँ बिना कारवाले नेताओं पहुँचना कष्टजनक था। इसका एक कारण यह है कि पं॰ श्रीनारायण चतुर्वेदी भी इस वार्षिक सम्मेलन से कारण अनुपस्थित रहे। दूसरा कारण गर्मी की प्रचण्डता। इन दोनों से हिन्दी की इनी-गिनी विभूतियाँ तक पहुँच पाईं। और तो और आश्चर्य यह है कि बीकानेर के श्री नाहटा तक ने भी स्वागत गर्मी के कारण एटा न पहुँचने की असमर्थता प्रकट कर दी। पंडित जी चतुर्वेदी ने भी गर्मी से होकर एक हिन्दुस्तानी कविता भेजी—

का आन पहुँचा है महीना।
एड़ी से चोटी तक पसीना॥
गुम हो गई ब्रजवासियों की।
जाना इस महीने में है कीना॥

और यह कहकर आना अस्वीकार किया कि—

यहीं पर हमें मरना है यारो,
कुछ और दिन बाकी है जीना॥"

इस प्रकार यदि साहित्य-महारथियों उपस्थिति के आधार पर सम्मेलन की का निर्णय किया जाय तो सम्मेलन प्रतिशत असफल रहा। केवल देखने- योग्य नेताओं में पालीवाल जी थे। तारीख २३ मई को वर्षा के कारण आगरावालों का मस्तिष्क शीतल हुआ और श्री पं॰ हरिशंकर शर्मा, श्री महेन्द्र जी और श्री मुतकी- डिप्टी कलक्टर के साथ २४ मई समय एटा पहुँचे जब प्रतिनिधियों अन्तिम दल एटा से वापस आने को बिस्तर बाँध रहा था।

कार्य-क्रम, स्वागत-सत्कार और की दृष्टि से यह सम्मेलन अपूर्व। प्रतिनिधिगण ब्रज के गाँव-गाँव और तथा बम्बई जैसे दूरस्थ स्थानों एटा पधारे थे। स्वागत-समिति ने भी सौजन्य प्रतिनिधियों का स्वागत किया। भोजन की सुव्यवस्था सम्मेलन के अधिवेशन का स्मरण दिलाती थी यद्यपि भोजनों में विविधता उतनी अधिक न थी परन्तु स्नेह और सत्कार का भाव कहीं अधिक था। सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष दास जी जब स्वयं हाथ से परोसने लगते तो उनके आग्रह के कारण किसी से भी मना करते न बनता था। प्रतिनिधि सोकर पीछे उठते किन्तु स्वागताध्यक्ष श्री शिवशंकरप्रसाद जी के साथ स्वागताध्यक्ष श्री दास जी प्रतिनिधियों को बगीचा ले जाने के लिए मोटर लिए पहले ही से उपस्थित रहते। ऐसा हार्दिक अभिनन्दन हमने आज तक किसी भी सम्मेलन में नहीं देखा।

अधिवेशन में इस बार जो प्रस्ताव स्वीकृत किए गये हैं वह बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण हैं जो देश की इस परिवर्तित स्थिति के सर्वथा अनुकूल भी हैं। सम्मेलन में नौ महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत हुए हैं इसमें पहला प्रस्ताव शोक-प्रस्ताव है।

एटा में होनेवाले ब्रज-साहित्य-मंडल के सभापति पंडित श्रीकृष्णदत्त पालीवाल।

दूसरे प्रस्ताव में बलपूर्वक विधान-परिषद् से केन्द्र में हिन्दी की स्थापना की जोरदार माँग की गई है। तीसरे प्रस्ताव में संयुक्त-प्रांत की सरकार को हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार करने के लिए धन्यवाद दिया गया है। चौथे प्रस्ताव में मंडल ने देश में बिखरे कृष्ण-साहित्य के संग्रह व उनके एक आवश्यक जीवन-चरित्र के प्रकाशन का निर्णय किया है। यह एक महत्त्वपूर्ण कार्य है जो मंडल ने उठाया है। पाँचवाँ प्रस्ताव कि संयुक्तप्रांत का नाम युक्तप्रांत कर देने के लिए सरकार से अनुरोध किया जाय। यह प्रस्ताव डा॰ वासुदेवशरण जी का था। प्रतिनिधियों ने इस प्रस्ताव का खुले अधिवेशन में कड़ा विरोध किया। वह ब्रजकौशल के पक्ष में थे परन्तु अन्त में प्रस्ताव भारी बहुमत से पास हो गया। सातवें प्रस्ताव में केन्द्रीय सरकार से ब्रज-क्षेत्र में एक रेडियो स्टेशन स्थापित करने का अनुरोध था। और नवें प्रस्ताव में सरकार से सूरदास जी का स्मारक बनाने की माँग की गई थी। छठा प्रस्ताव सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है जिसमें ब्रज के वन उपवनों, जलाशयों और सांस्कृतिक स्थलों की सुरक्षा करके वहाँ रेगिस्तान के बढ़ते हुए प्रभाव को रोकने के लिए सरकार को प्रेरित किया गया है, वास्तव में रेगिस्तान की समस्या ब्रज के जीवन-मरण की समस्या है। ब्रज की रमणीकता की रक्षा केवल ब्रजवासियों के हित की दृष्टि से ही नहीं वरन् सम्पूर्ण देश की सांस्कृतिक और धार्मिक भावनाएँ वहाँ केन्द्रित होने के कारण भी की जानी चाहिए।

ब्रज-साहित्य-मण्डल के यह सभी प्रस्ताव एटा में पधारे हुए प्रतिनिधियों की जागरुकता और दूरदर्शिकता के प्रतीक हैं।

सम्मेलन में एक और प्रस्ताव विषय-निर्वाचिनी द्वारा अधिवेशन में उपस्थित किया जाने को था। उसमें महात्मा तुलसीदास के जन्मस्थान के विवाद को सिमटा देने के लिए सरकार से प्रार्थना की गई थी और इस कार्य के लिए मंडल द्वारा एक उपसमिति भी बनाई जाती थी परन्तु कासगंज और सोरों के प्रतिनिधि सोरों को तुलसीदास की जन्मभूमि मान्य कराने के लिए इतने व्यग्र थे कि वह सरकार के निर्णय में होनेवाले विलम्ब की प्रतीक्षा से पहले ही घबड़ा उठे। उनका उत्साह तो सराहनीय था, परन्तु उससे काम बिगड़ गया। अतः अधिवेशन ने यह मामला मंडल की स्थायी समिति को विचारार्थ सौंप दिया है।

इस अधिवेशन में प्रथम बार एक सांस्कृतिक यात्रा की आयोजना की गई। स्वागत समिति द्वारा कार और लारी से प्रतिनिधिगण सोरों ले जाये गये। वहाँ महाकवि तुलसीदास जी के नवनिर्मित स्मारक के अतिरिक्त प्रतिनिधियों ने सोरों सामग्री के भी दर्शन किये। गुरु नरहरि जी की पाठशाला, श्री तुलसीदास जी के तथाकथित भवन के दर्शनों के अतिरिक्त कुछ प्राचीन मूर्तियों को देखने का भी सुयोग हुआ। यात्रा बड़ी आनन्दप्रद थी।

एटा के म्युनिसिपिल बोर्ड ने प्रतिनिधियों की एक जलपान गोष्ठी की तथा सभापति महोदय को अभिनन्दन पत्र भेंट किया। कवि-सम्मेलन तो था ही अपूर्व इस प्रकार वह एटा-सम्मेलन मंडल के सब अधिवेशनों में कई दृष्टियों से निराला रहा।

मैं तुम्हारे दर्शनों का प्यासा राहगीर हूँ।

लेखक, श्री रमानाथ अवस्थी

चल चुका तमाम और अब भी राह शेष है
बोल मन के मीत कितनी दूर तेरा देश है ?
मैं न आसमान औ' जहान में कहीं रुका
मृत्यु के समक्ष जिन्दगी सदृश नहीं झुका
किन्तु मैं तुम्हें न पा सका अभी इसीलिये, दर्द-सा तबाह और अश्रु-सा अधीर हूँ।
तुम मिलो हृदय के बन्द द्वार अपने खोल दूँ
रोम रोम से छलकता प्यार तुमको तोल दूँ
फूल-सा लिपट गले से मैं तुम्हें सँवार लूँ
मिटते मिटते हँस के मैं तनिक तुम्हें निहार लूँ
जो सितार-तार-सा पुकारता तुम्हें सदा, मैं उसी की आँख का मचलता अश्रुनीर हूँ।
सिन्धु की लहर ठहर सकी नहीं कभी कहीं
वायु के समान वह स्वतंत्र हो सदा बही
मैं लहर समान अपने दिल को जब टटोलता
तब जहान भर का दर्द मेरे दिल में बोलता
मेरे एक कंठ से हैं बोलते हजार कंठ, मैं तो बूँद में समाया सिन्धु का शरीर हूँ।
बादलों में बन्द हो के बिजलियाँ पुकारतीं
अश्रु ढार ढार रात विश्व क्यों सँवारती
मैं तो रात और दिन का एक ही गुलाम हूँ
मैं ही करनेवाला और मैं ही अपना काम हूँ
एक एक साँस पर हजार आसरा धरे, मैं किसी के टूटे दिल की मीठी मीठी पीर हूँ।
स्वप्न और प्राण पर शरीर को गुमान है
सृष्टि के लिये यही तुम्हारा एक दान है
दान मिल गया परन्तु तुम अभी नहीं मिले
रो रहा हूँ किन्तु मेरे देवता कहाँ हिले
देने आ रहा हूँ दान, तुमने जो दिया मुझे, दानी होके भी तुम्हारे प्रेम का फकीर हूँ।

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हज़ारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५।=), डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

हमारा रंग-मंच

प्रणवनाथ टैगोर

कला सच्चे आनन्द की प्रतीक है

लेखक, श्री सुधीर खास्तगीर

मैं सन् १६३६ में देहरादून आया, स्टेशन से दून स्कूल जाते हुए पहले दिन ही मुझे एक विशाल भवन बड़ी चहारदीवारी के अंदर बहुत से हरे-हरे पेड़ों-सहित देखने को मिला। मन में इस भव्य भवन के मालिक का नाम जानने की इच्छा उत्पन्न हुई, फाटक पर लिखा था—"टैगोर आवास।" उस क्षण से आज तक जब भी मैं उस रास्ते से गुजरता हूँ तो इस सुन्दर भवन पर निगाह डालता हूँ, लेकिन कभी-कदा किसी को देख न सका। लोगों से सुना कि घर श्री राजा पी० एन० टैगोर का है जो कभी कभी आकर इसमें ठहरते हैं। मैं उनसे कभी भी मिल न सका।

श्री प्रणवनाथ टैगोर, खिलौना बनाने के कारखाने में।

दो वर्ष बाद एक दिन मैं खिलौनों की दूकान पर गया, कुछ ऊन से बने खिलौनों को देखकर मैंने जानना चाहा कि यह कहाँ बनाये जाते हैं। मेरे आश्चर्य पर सत्य ने धक्का लगाया और ज्ञात हुआ कि यह 'टैगोर आवास' में बनते हैं। दूकान से लौटते समय मैं 'टैगोर आवास' के अन्दर गया और पूछा, 'क्या मैं खिलौने बनानेवाले महाशय को देख सकता हूँ?'

एक नवयुवक बाहर आया और स्वयं ही अपना परिचय देते हुए कहने लगा—"अवश्य आप दूकान और दूकानदार दोनों को देख सकते हैं।" फिर वह मुझे शीघ्र ही अंदर ले गया।

अंदर जाकर एक छोटे-से कमरे में देखा जिसमें छोटे छोटे तमाम खिलौने बने रखे थे और कुछ खिलौने आधे बने पूरे होने को थे। तरह तरह के औजार और रंग कमरे के अंदर इधर-उधर पड़े थे। कुछ आदमी काम कर रहे थे और कुछ आदमी रंग तैयार कर रहे थे।

मैंने पूछा कि खिलौनों के मालिक अपनी दूकान का विज्ञापन क्यों नहीं करते? क्या उनको बाहर से काफी आर्डर खिलौने बनाने के लिये मिलते हैं?

मुझे मालूम हुआ कि वे व्यापार से पैसा नहीं कमाना चाहते बल्कि उनको इस काम से शौक है। वह कभी भी व्यापारी नहीं हो सकते। यह तो उनका शौक है। इस अच्छे शौक से वे वास्तविक आनन्द प्राप्त करते हैं। उन्हें अब भी खिलौने के आकार-प्रकार और उनके डिजाइन से संतोष नहीं है। वे सदैव यह चाहते हैं कि हर नया खिलौना नये ढंग से बनाया जाय। इसलिये वे दूसरे खिलौना बनानेवाले व्यापारियों की अपेक्षा भले ही कम रहें; क्योंकि वे व्यापारी कुछ थोड़े से डिजाइन ही अपने खिलौनों में रखते हैं। उनके बिकने में भी पैसा कम खर्च होता है।

कारखाना दिखलाने के पश्चात् वे मुझको अपने बैठकवाले कमरे में ले गये। इस कमरे में बहुत से प्राचीन तैल-चित्र लगे थे। कुछ जस्ते और ताँबे पर ढले हुए चित्र भी थे। एक कोने में राजा टैगोर के जीवन-काल का तैल-चित्र रखा है। मैंने इसे निकट से जाकर देखा यह तैल-चित्र अनेकों रंगों से विभूषित था।

इस चित्र को डी० पी० चौधरी ने तैयार किया था। वास्तव में यह श्रेष्ठ कला का प्रतीक था। टेबुल के ऊपर भी अवनीन्द्रनाथ टैगोर का चित्र रखा था। मैंने जानना चाहा कि इस चित्र को किसने बनाया है। श्री प्रणवनाथ टैगोर ने मुस्कराते हुए स्वीकार किया कि यह उन्हीं का बनाया हुआ था। बड़ी सहिष्णुता से उन्होंने अपनी कुछ और कला-कृतियाँ मुझे दिखलाईं। वास्तव में वे सभी बहुत आकर्षक थीं। मैं अपने निवास-स्थान पर अत्यंत प्रसन्न मुद्रा के साथ आया।

श्री प्रणवनाथ टैगोर, राजा टैगोर के सबसे छोटे पुत्र हैं। इनका जन्म सन् १६१२ में हुआ और इनका अध्ययन-काल कलकत्ता में व्यतीत हुआ। इन्होंने इंडियन ओरियन्टल स्कूल में श्री क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार की छत्रछाया में कला की शिक्षा पाई। श्री प्रणवनाथ टैगोर के चित्रों में हमें अवनीन्द्रनाथ टैगोर की प्राचीन कृतियों के दर्शन की झलक मिलती है। इन्होंने अपने बहुत से चित्रों की परीक्षा भी अवनीन्द्रनाथ टैगोर से अपने अध्ययन-काल में करवाई थी।

प्रणवनाथ टैगोर ने चित्रकला को अपना शौक माना है। व्यापारिक दृष्टि से वे इनका निर्माण नहीं करते। जब वह और कामों से थक जाते हैं तो चित्र बनाने लगते हैं। वे बड़े ही प्रसन्नचित्त और विशाल हृदयवाले व्यक्ति हैं।

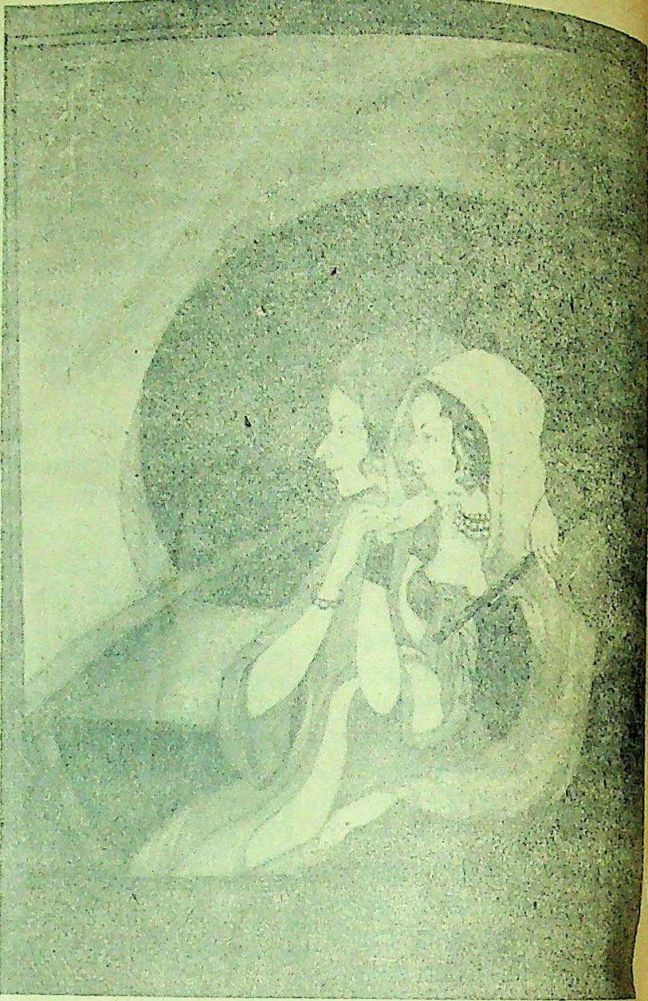

नाव पर—श्री प्रणवनाथ टैगोर द्वारा निर्मित एक तिरंगे पेंटिंग का चित्र।

फिल्मी दुनिया मुफ्त

सिनेमा की दुनिया का असली रहस्य जानने के लिये 'फिल्मी दुनिया' पुस्तक आज ही मुफ्त मँगाइये।

पता—मधुर मन्दिर, हाथरस, यू० पी०

हमारे कुछ साहित्यिक ग्रन्थ

कामायनी-अनुशीलन

महाकवि 'प्रसाद' के महाकाव्य 'कामायनी' पर अनेक समीक्षकों ने विचार प्रकट किये हैं। इस पुस्तक में लेखक श्री रामलालसिंह एम० ए०, बी० टी०, साहित्यरत्न ने कामायनी के ऐतिहासिक तत्त्व, प्रकृति वर्णन, चरित्र-चित्रण, छन्द-विधान, भाषा और रस-संचार आदि पर बड़ी मार्मिकता से अनुशीलन किया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३) तीन रु०

कामायनी का विवेचन

प्रसिद्ध कवि प्रसाद जी के महाकाव्य 'कामायनी' को समझने में सहायता देने के लिए पंडित व्रजभूषण शर्मा एम० ए० ने इस विवेचन को प्रस्तुत किया है। इसमें काव्य के तात्त्विक तथा मनोवैज्ञानिक सिद्धांत को स्पष्ट किया गया है। पुस्तक बड़े काम की है। मूल्य १) एक रु०।

तुलसी के चार दल

प्रथम और द्वितीय भाग

गोस्वामी तुलसीदास के रामलला नहछू, बरवै रामायण, पार्वती-मंगल तथा जानकी-मंगल का आलोचनात्मक परिचय तथा इन चारों ग्रन्थों की अध्ययनपूर्ण टीका। मूल्य प्रथम भाग का ३) तीन रुपये, द्वितीय भाग का २॥≥) दो रुपये ग्यारह आने।

साहित्य-प्रकाश

यह पुस्तक डा० रमाशंकर शुक्ल रसाल की लिखी है। इसमें साहित्यिक सिद्धान्तों का विवेचन किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

देशदूत चित्रावली

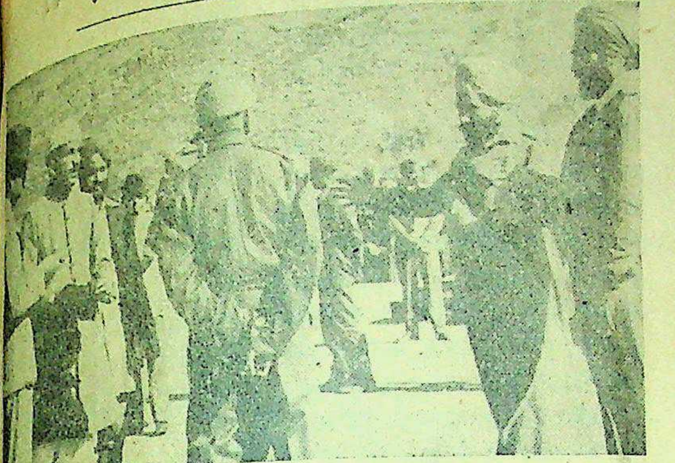

(दाईं ओर) मेजर जनरल कुलवंतसिंह, काश्मीर में भारतीय सैनिकों के प्रधान कारी, काश्मीर के सैनिक अफसरों से वार्ता कर रहे हैं। (बाईं ओर) काश्मीर के डिप्टी प्रधान मंत्री बख्शी गुलाम हुसेन खड़े दिखाई दे रहे हैं।

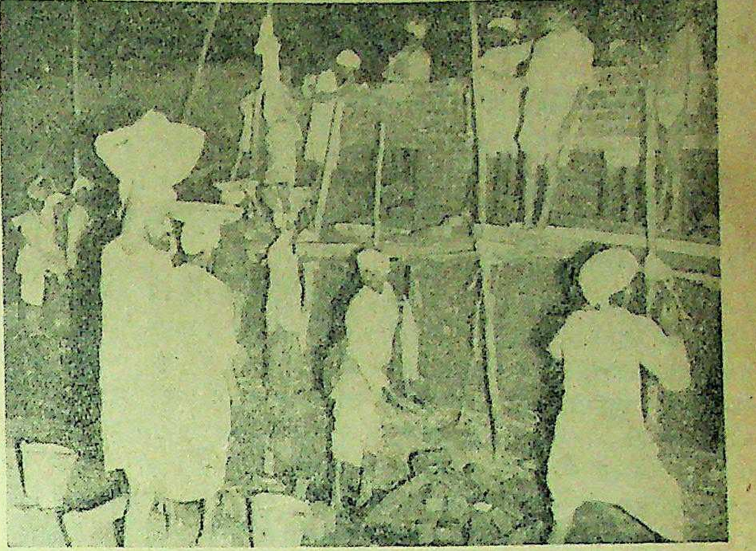

दिल्ली में शरणार्थियों को बसाने तथा उनकी समस्त सुविधाओं का उपाय भारत सरकार कर रही है। चित्र में एक दुकान का दृश्य है जहाँ शरणार्थी को किसी भी समय सामान खरीदने की पूरी सुविधा है।

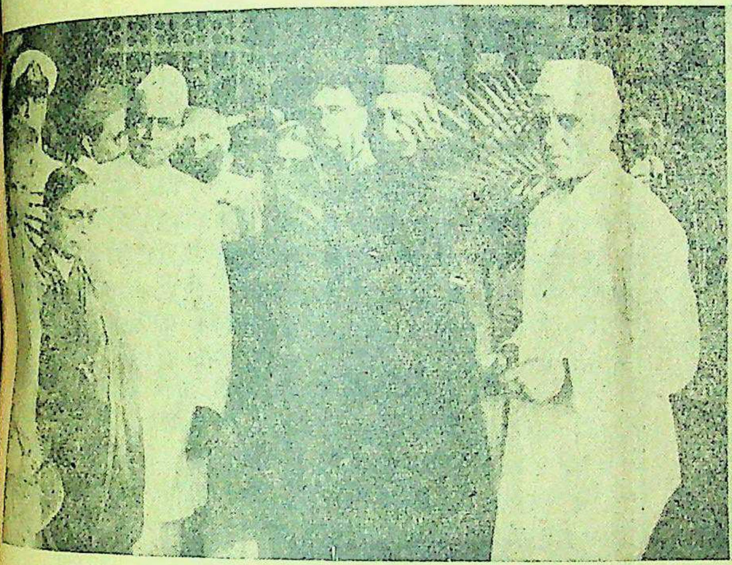

पिछले दिनों पंडित जवाहरलाल नेहरू जब बंबई गये थे, तब उनके स्वागत में प्रधान मंत्री बी० जी० खेर ने एक पार्टी दी थी। चित्र में पंडित नेहरू सर महाराजसिंह, लेडी महाराजसिंह तथा श्री बी० जी० खेर के साथ दिखाई दे रहे हैं।

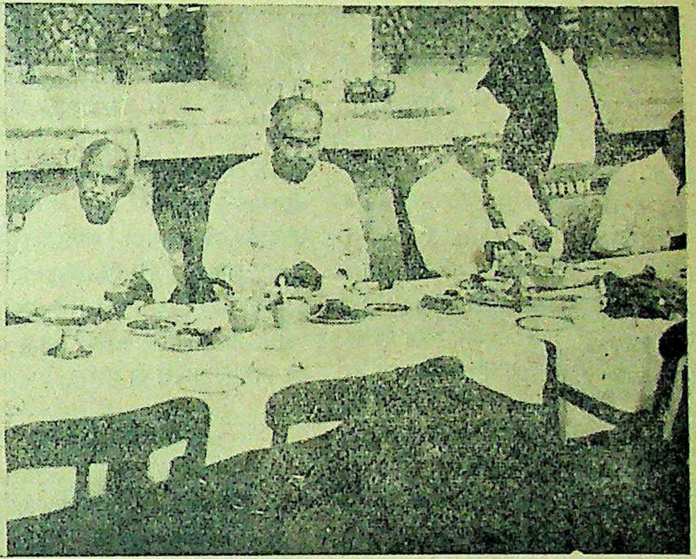

पिछले दिनों डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी मद्रास गये थे। मद्रास विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर सर मुदालियर ने उनके सम्मान में एक दावत दी थी। चित्र में डाक्टर मुकर्जी और सर षणमुखम् चेट्टी वाइस चांसलर के साथ बैठे हैं।

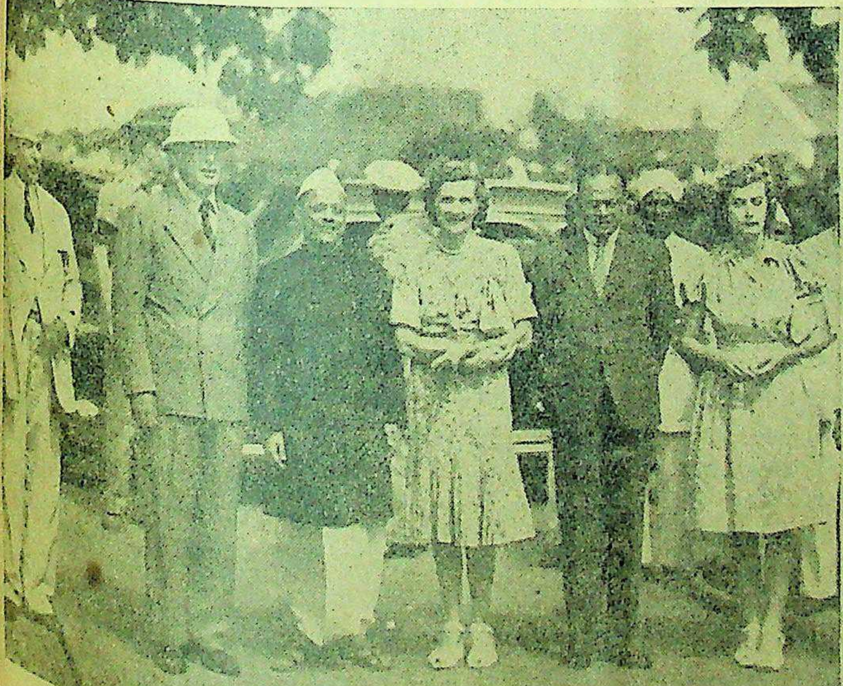

लार्ड लुई माउन्टबेटेन, लेडी माउन्टबेटेन और उनकी सुपुत्री पामेला माउन्टबेटेन पिछले दिनों मैसूर गई थीं। चित्र में मैसूर के प्रधान मंत्री के साथ वाइसराय, लेडी माउन्टबेटेन तथा अपनी पुत्री पामेला माउन्टबेटेन के साथ, खड़े दिखाई दे रहे हैं।

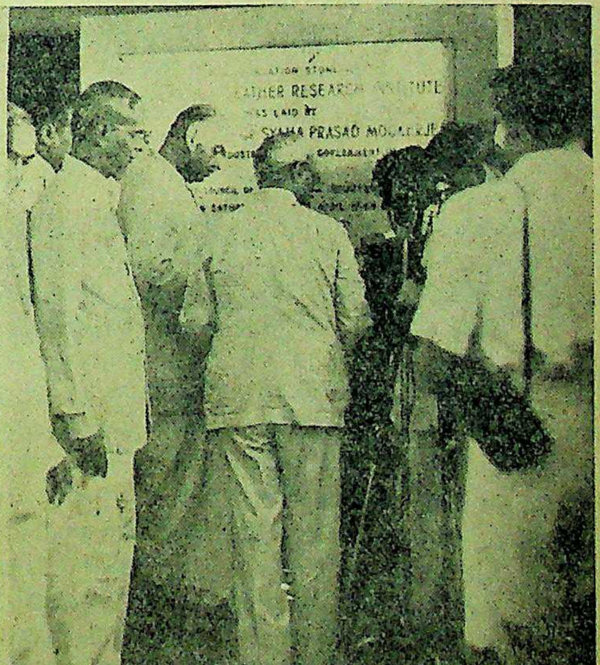

डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी ने मद्रास में गुंलादी स्थान पर चर्म अन्वेषण समिति के भवन का शिलान्यास किया था। चित्र में डा० मुकर्जी अर्थ मंत्री श्री षणमुखम् चेट्टी के साथ दिखाई दे रहे हैं।

सम्पादक के नाम चिट्ठियाँ

साहित्यकारों तथा साहित्य-समितियों से निवेदन

माननीय पंडित द्वारकाप्रसाद मिश्र, एम० एल० ए०, मन्त्री, स्वायत्त शासन-विभाग, मध्यप्रान्त-बरार ने समाज-शिक्षा की एक नवीन योजना प्रस्तुत की है, जिसमें राष्ट्र के साहित्यकारों तथा साहित्य-समितियों को सहयोग के लिये आमन्त्रित किया गया है। योजना इस प्रकार है—

समाज-शिक्षा का इस प्रांत में बीजारोपण हो रहा है और उसके उद्देश्य ये हैं—(अ) जनता को सतत परिवर्तनशील सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन की गति-विधि से परिचित कराना तथा उसके हृदय में आत्म-विश्वास की प्रतिष्ठा कर उसे देश के उज्ज्वल भविष्य के प्रति निष्ठावान बनाना। (ब) जनता में राज-काज के कामों, राष्ट्रीय विकास के कार्यक्रमों तथा सामाजिक पुनर्निर्माण की समस्याओं के प्रति जीवंत रुचि उत्पन्न करना। (स) जनता को वर्त्तमान युग-परिवर्त्तन के महत्त्व से परिचित कराना तथा इस संधियुग में उत्पन्न घातक बाधाओं से अवगत कराना और उसे समाज-विरोधी कृत्यों से संघर्ष करने की शिक्षा देना। (ड) जनता को अपने प्रतिवेशियों के साथ सुखमय, शांतिमय जीवन व्यतीत करने का मूलमंत्र देना और उसे सामाजिक जीवन को छिन्न-भिन्न करनेवाले समाज-विरोधी तत्त्वों के विरुद्ध संगठित करना। (इ) जनता को स्वस्थ जीवन व्यतीत करने की शिक्षा देना तथा घर-बाहर को स्वच्छ रखने और सामाजिक जीवन को अधिक उपयोगी एवं आनन्ददायक बनाने की कला सिखाना। (फ) जनता को अविलम्ब व्यापक अशिक्षा का मूलोच्छेद करने के लिए संगठित करना तथा शीघ्रातिशीघ्र शिक्षा का प्रसार करना।

इन उद्देश्यों के प्रकाशन द्वारा यह पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाता है कि सरकार का आशय किसी भी प्रकार शिक्षा की योजना के अन्तर्गत भाषा-ज्ञान तथा परम्परागत शिक्षा-प्रणाली (पठन, लेखन तथा गणित) के मूल्य को घटाना नहीं है; किन्तु यह भी सत्य है कि सरकार शिक्षा के उपर्युक्त साधनों के सीमा-बंधनों से भी पूर्णतया परिचित है। सरकार इस सत्य से भी परिचित है कि साक्षरता-प्रसार की गति दुर्निवार रूप से मंद होगी, क्योंकि उसके विकास की गति केवल उन्हीं अल्पसंख्यक व्यक्तियों को दृष्टि में रखकर निर्धारित करनी होगी जो इस समय शिक्षण-कार्य के लिए उपलब्ध हैं। सरकार आगे इस सत्य से भी परिचित है कि केवल अक्षर-ज्ञान ही इस प्रांत के नर-नारियों को अपने तथा समाज के कल्याण के योग्य न बना सकेगा। 'वास्तविक शिक्षा तो सामाजिक पुनर्निर्माण के द्वारा ही मिलती है और सामाजिक पुनर्निर्माण सच्ची शिक्षा द्वारा ही संभव है।' साथ ही सरकार कुशिक्षा-जनित दुष्प्रवृत्तियों के उन भयावह परिणामों की ओर भी पूर्ण चिन्ता और सतर्कता से देख रही है जो साम्प्रदायिकता की विपाक्त भावना तथा प्रांतीयता और भाषाजन्य भेद के अस्वस्थ दुर्भाव को जाग्रत कर समाज को खंड-खंड करने में प्रयत्नशील हैं। राष्ट्र के भविष्य-निर्माण के लिए सरकार इस आवश्यकता का अनुभव करती है कि इस भाँति जो व्यक्ति कुशिक्षा के प्रभाव से पथ-भ्रष्ट हो गए हैं, तथा अनुचित उत्तेजनाओं के लक्ष्य बन चुके हैं, उन्हें पुनः सुपथ पर लाया जाये। यह एक तत्त्वपूर्ण बात है कि जन-समूह को—जो सही अर्थ में राष्ट्र का ही स्वरूप है—समाज-विरोधी और राष्ट्र-विरोधी विचार-धाराओं के फलस्वरूप घटित होनेवाले उन कुपरिणामों को जान लेना चाहिए जो सामाजिक जीवन के पवित्र वातावरण को दूषित कर जन-समाज को कलह-ग्रस्त दलों में विभाजित कर देते हैं। राष्ट्र की अग्नि-परीक्षा की इस महत्त्व-पूर्ण घड़ी में यह पूर्णरूप से घातक सिद्ध होगा कि जनता विभाजन और राष्ट्र-दौर्बल्य की अशुभ धारणाओं का लक्ष्य-बिन्दु बने। सरकार इस समाज-शिक्षा की योजना का एक महत्त्वपूर्ण अंग इस सत्य को मानती है कि जनता में संगठन तथा सुदृढ़ता की भावना बलवती हो। साथ ही वह चाहती है कि जन-समूह लोक-हित के लिए पारस्परिक सहयोग दे तथा उसमें अपने भौतिक और आध्यात्मिक विकास का सामर्थ्य उत्पन्न हो।

माननीय पंडित द्वारकाप्रसाद मिश्र, मंत्री, स्वायत्त शासन-विभाग, मध्यप्रांत।

समाज-शिक्षा की योजना के अंतर्गत निर्धारित, उस विशिष्ट शिक्षा का प्रचार केवल अशिक्षा का निराकरण करनेवाले साधनों द्वारा ही नहीं, किन्तु अन्य विभिन्न प्रभावपूर्ण साधनों द्वारा भी किया जाना चाहिए। साक्षरता-प्रचार की सहज मंद गति तथा उसके सीमित परिणामों तक ही पहुँचानेवाले प्रयत्नों के जाल में उलझकर हमें समाज-शिक्षा की अन्य व्यापक और कल्याणकर योजनाओं की गति को रुद्ध नहीं कर देना चाहिए। यह आवश्यक है कि हम समाज-शिक्षा के कार्यक्रम को शिक्षण की अनेक स्वीकृत प्रणालियों, जैसे मौखिक उपदेश, सूचना-पत्र, चल-चित्र, रेडियो आदि के द्वारा कार्यान्वित करते हुए अग्रसर होते रहें। साथ ही साथ यह भी आवश्यक है कि इन उपर्युक्त साधनों-द्वारा जनता के हृदय में परम्परागत सामाजिक संस्कृति-धन की उन गौरवमय सुप्त भावनाओं का पुनर्जागरण हो जो नाटक, लोक-गीतों, लोक-नृत्यों, लोक-संगीत तथा लोक-रागों में बिखरी पड़ी हैं और इस भाँति समाज का नव गठन किया जाये जिससे वह अपनी नवार्जित स्वतन्त्रता को स्थायी बना सके।

इन उद्देश्यों की सिद्धि के लिए सरकार ऐसे गतिशील साहित्य के निर्माण को अनिवार्य समझती है जो जनता के जीवन में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो। समाज-शिक्षा की विभिन्न धारणाओं और विषय-प्रसंगों को जन-जीवन से सम्बन्धित सामयिक कहानी, नाटक, प्रबन्ध, निबन्ध आदि के द्वारा जनता तक पहुँचाना होगा। समाज-शिक्षा में सहायक, साहित्य के विभिन्न स्वरूपों की संख्या इतनी अधिक है कि यहाँ उनकी पूर्ण गणना कराना एक कठिन कार्य होगा। निस्सन्देह, यह साहित्य प्रांत की दो प्रमुख भाषाओं हिन्दी और मराठी में तो आवश्यक है ही पर वे सब प्रयत्न भी अभिनन्दनीय हैं जो इस साहित्य को स्थानीय वातावरण देंगे तथा प्रांत की प्राणमय जन-बोलियों जैसे, बुन्देलखंडी, छत्तीसगढ़ी, गोंड़ी आदि में भी इसकी रचना करेंगे। समाज-शिक्षा-साहित्य तथा अन्य आवश्यक उपकरणों की रचना के लिए लोक-गीत, जनश्रुति और देशी धुनों से पूर्ण लाभ उठाया जा सकता है और यह सब साहित्य कृत्रिम भाषा-बन्धनों के अभाव में सहज रूप से कार्य सिद्ध करता हुआ, जनता के जीवन में व्याप्त हो सकेगा। सरकार सब साहित्य-समितियों तथा साहित्यिक अभिरुचि से सम्पन्न देश के नर-नारियों से आग्रह करती है कि वे विभिन्न विधियों से इस नव साहित्य के सृजन में सहायक हों। जनता का जीवन और उसका साहित्य अविच्छेद्य रूप से गुँथा हुआ है तथा साहित्य के नेतृत्व के बिना जन-जीवन का पूर्ण विकास सम्भव ही नहीं है। इस राष्ट्रीय अत्यावश्यक प्रयोजन की सिद्धि के लिए सरकार सभी साहित्यिकों के सहयोग को आमन्त्रित करती है।

समाज-शिक्षा में सहायक विषय-प्रसंगों को सूची दे सकना, जिसके प्रकाश में साहित्य के अनेक स्वरूपों का निर्माण हो, नितान्त असम्भव नहीं, तो एक कठिन कार्य अवश्य है। इतना ही नहीं; यह एक अविवेकपूर्ण बात होगी कि साहित्य-रचना के इस व्यापक विचार-पूर्ण प्रयोग-क्षेत्र को किसी भी प्रकार सीमा-बद्ध कर दिया जाये। ये बन्धन योजना की जीवन-शक्ति, मौलिकता और सृजनात्मक प्रेरणा, दोनों ही के लिए घातक सिद्ध होंगे। उचित भावना, उचित दृष्टिकोण तथा उचित उद्देश्य से प्रेरित साहित्यिकों को समाज-शिक्षा के क्षेत्र में योग देने के लिए अपनी व्यक्तिगत प्रतिभा के अनुकूल साहित्यिक रूपों का चयन और सामग्री का इच्छानुसार उपयोग करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। साहित्य-रचना के प्रयत्नों को परिभाषा-बद्ध या सीमा-बद्ध करने के लिए नहीं, किन्तु साहित्य-निर्माण के संकेत-स्वरूप ही यहाँ एक सूची देने का प्रयत्न किया जाता है:—

(अ) निम्न प्रसंगों की विवेक-व्याख्या करते हुए पूज्य बापू के जीवन तथा आदर्शों की विवेचना—सहिष्णुता और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना। निस्वार्थ सेवा का सिद्धान्त। ग्राम्य मितव्ययता की धारणा। आत्म-निर्भरता के द्वारा आर्थिक स्वतंत्रता की प्राप्ति। सामाजिक तथा राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के सिद्धान्तों की विवेचना। लोकतंत्र का सच्चा स्वरूप—कर्तव्य-पालन ही अधिकार-प्राप्ति का मार्ग है। मतदान और लोक-संस्थाओं के पदों का महत्त्व। अस्पृश्यता का निराकरण। राष्ट्रीय ऐक्य और संगठन। जीवन की कला, आदर्शों के प्रकाश में जीवन-यापन, प्रेम, सत्य, अहिंसा और सेवा के सिद्धान्त।

१—(ब) सुरक्षा की समस्याएँ—आर्थिक-सुरक्षा। अन्न, अधिक अन्नोत्पादन, उत्पादन के उपाय। वस्त्र—कातने और बुनने की कला का महत्त्व, स्वावलंबन की शिक्षा। गृह—ग्राम और ग्रामीण गृह, अच्छे गृहों, ग्रामों और नगरों का निर्माण।

(ड) धन-सम्पत्ति—ग्राम्य हस्त-कला और छोटे-बड़े ग्रामोद्योगों की उन्नति। व्यावसायिक उत्पादन में राष्ट्र का जीवन और उसकी उपेक्षा में राष्ट्र का मरण है। उत्पादन को गतिशील बनाने की आवश्यकता और उसमें प्रत्येक का व्यक्तिगत योग। जनता के धन को बढ़ानेवाले उपकरण और उस धन के निर्माण की विधि।

(२) सामाजिक-सुरक्षा—सामाजिक जीवन की कला, स्वास्थ्य के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक स्वास्थ्य-रक्षा, जाति-जीवन की रक्षा, प्रसूति की समस्याएँ और शिशु-पालन। शारीरिक सामर्थ्य—सुंदर, स्वस्थ और सबल और शरीरों का निर्माण, सबल और स्वस्थ जाति की आवश्यकता जो मानसिक और शारीरिक विकृतियों से मुक्त हो। पौष्टिक और संतुलित आहार की आवश्यकता। रोगों की रोक और मद्य-निषेध का महत्त्व। समाज-सेवा।

प्राथमिक उपचार, अग्नि-शांति-दल, प्राण-रक्षक संस्थाएँ। ग्रामों और नगरों को स्वच्छ, आकर्षक और सुव्यवस्थित बनानेवाली संस्थाएँ, मार्ग नियम।

सामूहिक-जीवन को विकसित करने वाली संस्थाएँ। सेवा-समिति, नगर-सेना, ग्राम-पंचायत और न्याय-पंचायत। सामाजिक और राष्ट्रीय पर्वों का पुनर्निर्माण, मनोरंजन, खेल, खेल प्रतियोगिताएँ, स्थानीय गीत एवं नृत्य, ग्राम-पुस्तकालय, समाज-शिक्षा का कार्यक्रम, नाटक समितियों और रंगमंचों का विकास और उनकी व्यवस्था।

(३) राष्ट्रीय सुरक्षा—राष्ट्रीय चरित्र निर्माण और अनुशासन, राष्ट्रीय ऐक्य और सम-रसता का महत्त्व, संकीर्ण साम्प्रदायिकता के भय, प्रान्तीयता और धार्मिक असहिष्णुता तथा अन्य राष्ट्र-विरोधी कृत्यों से उत्पन्न होनेवाली बाधाएँ, जीवन के प्रत्येक क्षण में भारतीयता की अखंड भावना, 'हम भारत के, भारत हमारा'—की महिमामयी भावना जो हमारा भाल उन्नत रखे। लोक-हित और राष्ट्र-हित के लिए सदा उमंगपूर्ण कार्य-तत्परता तथा त्याग। कांग्रेस का इतिहास

शेष पृष्ठ १७ पर देखिए

मातृमण्डल

सुधाकुमारी राय बी० ए० अपनी माता श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान पर निर्विरोध मध्यप्रांतीय धारा सभा की सदस्या चुनी गई हैं।

भारतीय महिलाओं में जागृति

भारतीय राष्ट्रीयता की उन्नति की कुञ्जी नारियाँ ही हैं

लेखिका, कुमारी विमला देवी राजदान बी० ए०

को ऊँचा और समुन्नत बनाने में कठिनाई नहीं है, जितनी सौ वर्ष पहले थी। आधु- में मानवीय ज्ञान और विज्ञान असभ्यता पर विजय प्राप्त की, बन्धन कट गया, हमारा दृष्टि- कुल स्पष्ट है। उनकी बोई काटने का अधिकार हमें है, परिस्थितियों पर विचार आवश्यक है। अब भी आँख बन्द अन्धकार को केवल हाथ से रहे हैं। अब समय दूसरा है, हमारे देश का सर्वस्व उन्नत होना है।

आज हम भारतीय स्त्रियों में एक राजदूत हैं, एक प्रांत की गवर्नर एक स्वास्थ्य में मंत्राणी के पद हैं हम गर्व के साथ अपना ऊँचा कर सकती हैं। चालीस वर्ष चिल्लाती थीं कि भारतीय स्त्रियाँ हाथों की कठपुतली-मात्र हैं; बीसवीं सदी में आज भारतीय समुचित रूप से सम्मानित किया है। भारतवर्ष में आज भी अन्धविश्वास कम नहीं। वर्तमान सरकार ने स्त्रियों को इस बात की पूर्ण स्वतन्त्रता दी है कि वे देशीय प्रबन्ध कार्यों में अपनी शक्ति के अनुसार काम कर सकें। फिर भी जब हम गाँवों की ओर दृष्टिपात करते हैं तो देखने को मिलता है कि एक छोटी लड़की का विवाह एक अधेड़ के साथ; और कहीं नवयुवती विधवा आँसू पीकर जीवन के दिन पूरे कर रही है। सामाजिक बन्धनों के कारण मानव-समाज इन स्त्रियों को पशु की तरह प्रयोग करते हैं। इसका मुख्य कारण है जाति और वर्णभेद।

* * *

पचास साल पहले विशेषकर स्त्रियों की एक बड़ी संख्या आज की तरह कठिन सामाजिक नियमों से बँधी न थी। भारतवर्ष अपनी खराब बातों और दुख-पूर्ण विषयों को जीतने के लिए आज पूर्ण रूप से प्रगतिशील हो रहा है। स्त्रियोचित अधिकारों का रूप आज पहले जैसा नहीं है। इस शताब्दी के प्रारम्भ में स्त्रियों की लम्बी नींद टूटती मालूम पड़ी। ऐसा ज्ञात होता था मानो सुन्दरता ही सोकर उठी है। आज जागृत नारियों ने पुरुषों के कंधों पर भी बल रख दिया। कुछ समय पहले हमने स्त्रियों को देखा कि उन्होंने मार्ग किस प्रकार निर्माण किया। पण्डित रामबाई ने लिखा है 'हिन्दुओं की ऊँची जाति की स्त्रियाँ, सन् १८८३ में इस पुस्तक ने भारतीय सुधारकों और विद्वानों की आँखें खोल दीं। पुस्तक में स्त्रियों के पतन के कारण विशेष रूप से बतलाये गये थे। इस पुस्तक के साथ ही साथ हजारों वर्षों की शांति टूट गई। मुसलमानों के आक्रमण के पहले तक भारतीय स्त्रियों ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति का पूरा पूरा लाभ उठाया। सन् १९०६ में श्रीमती सरोजिनी नायडू ने कहा, "यह मुझे आश्चर्यजनक मालूम होता है। पलक मारते ही सुखों और दुखों का मिलाप हो गया। साथ ही यह भी कहा था कि हमें सम्पूर्ण देश में घूम-घूमकर यह कहना चाहिये, कि स्त्रियों के अधिकारों और उनके अध्ययन की व्यवस्था का ध्यान रक्खा जाय। वह विचार आज इस वर्तमान युग में पूर्णरूपेण सफल होकर हमारे सामने आ गया है। उदाहरण के लिये जो स्त्रियाँ जनता की सेवा करती हैं उनका ध्यान किसी भी भाँति भुलाया नहीं जा सकता।

* * *

भारतीय नारी की स्वतन्त्रता और उसकी आजादी का प्रश्न विक्टोरिया के काल से प्रारम्भ हो चुका था। मिसेज मारग्रेट ने अपनी पुस्तक 'भारतीय-महिला समाज' नामक पुस्तक में उन्होंने भारतीय नारी के आदर्श को रखा है। साथ ही नारी-जागरण के समय का भी इतिहास रखा गया है। सन् १८५४ में सरकार ने स्त्रियों की शिक्षा के लिये पैसे मंजूर किये। गाँवों में लड़कों के पढ़ने के लिए जो स्कूल खोले गये थे स्त्रियों को उत्साह देने के लिये उन स्कूलों में भी स्त्रियों को जाकर पढ़ने की आज्ञा मिल गई। सन् १८३७ और १८८६ के बीच ब्रह्मसमाज और आर्यसमाज ने स्त्रियों की सहायता की जिससे बहुत-सी स्त्रियाँ डाक्टरी और अध्यापन का काम करने लगीं। इस प्रकार स्त्रियों ने भी कमाना प्रारम्भ किया और देश की आर्थिक दशा में एक प्रकार की स्वतन्त्रता का अनुभव होने लगा। भूपाल की बेगम, मैसूर और बड़ौदा के राजाओं ने अपने अपने राज्य में कालेज और अस्पताल खुलवाये। उस समय के और आज के महिला-समाज में बहुत अन्तर है।

डाक्टर एनी-बेसेन्ट ने भारतीय नारियों को ललकारा इसी आधार पर सन् १९१४ में भारतीय नारी की चेतना जागी। इसके परिणामस्वरूप सन् १९१७ में 'भारतीय नारी-संघ' की स्थापना हुई, सम्भवतः यही सबसे पहला स्त्रियों का स्वतन्त्र प्रयोग था।

* * *

इसी प्रकार 'रेड क्रास सप्ताह' के द्वारा 'अखिल भारतीय शिशु संघ' की स्थापना की गई जिससे स्त्रियों में जागृति आई। जो स्त्रियाँ बच्चों की ओर अधिक मुस्तैद न थीं उनको इस संघ के द्वारा अब उस काम में आनन्द आने लगा।

* * *

आज भारतवर्ष में स्त्रियों की जागृति प्रशंसनीय है। जैसा किसी ने कहा भी है "कि भारतीय उन्नति की कुञ्जी यहाँ की स्त्रियाँ हैं। वे अपनी कार्यकुशलता से सभ्यता और संस्कृति को ऊँचे स्थान पर आसीन कर सकती हैं।" हमें आशा है कि भारतीय नारी एक बार देश में फिर गौतम के आदर्श को लाने में समर्थ होगी।

प्रसिद्ध यात्राओं की कथा

प्राचीन चीनी यात्री फाहियान से लेकर वर्तमान युग के एवरेस्ट की चोटी पर चढ़नेवाले साहसी वीरों तक की कथा इस पुस्तक में है। जिन यात्रियों ने प्राणों की बाजी लगाकर स्थल और जल के अज्ञात देशों में भ्रमण किया था और उनके परिश्रम से संसार का जो लाभ हुआ उसका रोचक वर्णन इस पुस्तक में पढ़िए। मूल्य ॥।–)

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग

परीदेश

यह पुस्तक ख़ास कर छोटे बच्चों के लिए है। इसमें ऐसी एक भी बात नहीं जिसको समझने के लिए माथापच्ची करनी पड़े। इसमें रोजमर्रा की बातें बड़े ही अच्छे ढंग से लिखी गई हैं। बड़े आकार की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों और फूल-पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है। मूल्य ॥)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

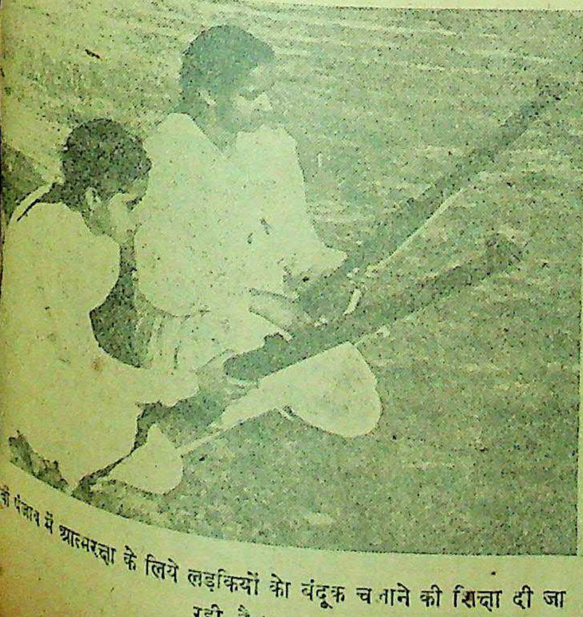

पंजाब में आत्मरक्षा के लिये लड़कियों को बंदूक चलाने की शिक्षा दी जा रही है।

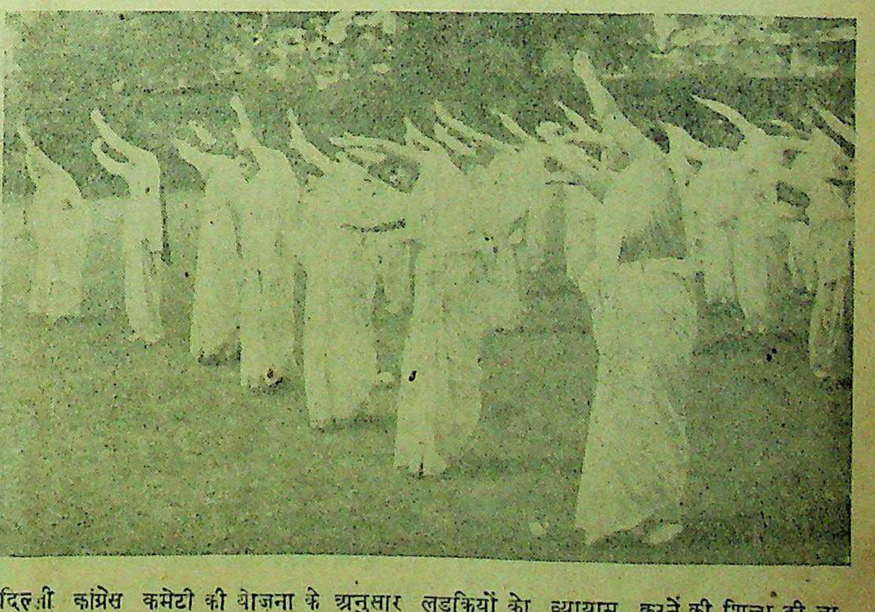

दिल्ली कांग्रेस कमेटी की योजना के अनुसार लड़कियों को व्यायाम करनें की शिक्षा दी जा रही है।

स्वास्थ्य व्यायाम

गर्मी में दिनचर्या क्या हो ?

स्वस्थ जीवन के कुछ उपाय

लेखक, श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालङ्कार

सरदियों के मुकाबले में गरमियों में हमारे शरीर में निम्नलिखित परिवर्तन होते हैं। पसीना अधिक आता है। रक्त-वाहिनियों में तनाव कम हो जाता है और मूत्र की उत्पत्ति भी कम हो जाती है। फेफड़े फैल जाते हैं। गरम वायु में ठण्डी वायु की अपेक्षा कम अम्लजन (प्राणवायु) होती है, इसलिए शरीर के सामान्य मेटाबोलिज्म में भी कमी आ जाती है।

इस लेख के लेखक श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालंकार।

गरम वायु को सहन कर सकने या न कर सकने की क्षमता वायु की आर्द्रता पर निर्भर करती है। वायुमण्डल में आर्द्रता अधिक होने पर पसीना खूब नहीं उड़ सकेगा (जैसा कि बरसात में होता है) और इससे गरमी अधिक अनुभव होगी। बरसात की अपेक्षा इन दिनों पसीना कम अनुभव होने का यही कारण है कि वह वायुमण्डल में झटपट मिलता रहता है।

ठण्डे प्रदेशों में रहनेवाले लोग जब गरम प्रदेश में रहने के लिए आते हैं तो उनमें निम्नलिखित लक्षण स्पष्ट दिखाई देते हैं। दिमागी कार्य करने की शक्ति में कमी, सामान्य निर्बलता, भूख मर जाना, पाचन, श्वास-चक्र और रक्त-संचार में गड़बड़ी। गरम स्थानों में रहनेवाले लोगों में भी गरमियों में ये लक्षण प्रकट हो जाया करते हैं परन्तु उन्हें गरमी को सहन करने की आदत अपेक्षाकृत अधिक होती है, इसलिए ये लक्षण इतने अधिक स्पष्ट नहीं दीखते। गरमियों के बुरे प्रभाव से बचने के लिये जो उपाय किये जाते हैं उनमें सबसे मुख्य और महत्त्वपूर्ण शायद स्नान है।

स्नान

सौभाग्यवश हमारे देश में शीतल पानी की अनेक नदियाँ बहती हैं। उनके किनारे बसनेवाले लाखों आदमियों को उनमें स्नान का आनन्द प्राप्त करने की सुविधाएँ हैं। इसलिए हम उनको पूरा महत्त्व देते हुए इस मौसम की चर्या का प्रतिपादन करेंगे।

सुबह का स्नान

छः और सात के बीच में गंगा या नदी में अथवा बहते कुएँ में किया जाय। इस समय हवा में जरा ठण्डक होती है और पानी ठण्डा होता है इसलिये स्नान से पूर्व हलकी मालिश भी की जा सकती है। सुबह घूमने के लिये जब आप निकलें तो तेल, साबुन, अँगोछा आदि स्नान के लिए आवश्यक सामान साथ लेते जाइए!

दुपहर का स्नान

दुपहर को जब आप शाला से भोजन करने आते हैं और नदी पास में ही है तो अवश्य नहा लीजिए। गंगा का शीतल पानी आपको ताजा बना देगा। आप भोजन को अधिक रुचि से खायेंगे। नौकरी-पेशा लोगों को और दुकानदारों को अवकाश मिले तो दुपहर का स्नान नहीं चूकना चाहिए। बेशक आप घर पर ही स्नान कर लें।

व्यायाम

इस ऋतु में कोई भी भारी व्यायाम करना अभीष्ट नहीं होता। ऋतु के अनुकूल सब से अच्छा व्यायाम तैरना है। जो आदमी तैरना नहीं जानते वे सुबह पाँच-छः बजे के बीच में और शाम को सात-आठ के बीच में नदियों के किनारे या पार्कों की खुली हवा में घूमने निकल सकते हैं।

तैरना—आदर्श व्यायाम

शाम के स्नान के लिये आप सबके पास पर्याप्त समय होगा। पाँच बजे छुट्टी होते ही सीधा गंगा या नदी की ओर लपकिये। घाट पर कपड़े उतारकर गंगा के साथ-साथ मील-पौन मील तक चले जाइये। इस समय लू चल रही होती है। उससे बचने के लिए शरीर को अँगोछे से लपेट लीजिये या पतली-सी बनियाइन पहने रहिये। तैरने के लिए कूदने से पूर्व पाँच मिनिट पास के वृक्ष की छाया में ठहर जाइये। आपका पसीना सूख जायगा। अब आप छलाँग लगा दीजिये। चार-पाँच आदमियों की टोली में आप भी मजे में बातें करते हुए और पानी से खेलते हुए तैरते चले आ रहे हैं। हाथ लगातार मारिये। उतावलेपन से नहीं, स्थिरता से। बीच-बीच में डुबकी लगाते जाइये। उलटी तैरी भी लगाइये। मील-पौन मील की तैरी में आपकी त्वचा के तापमान को गङ्गा का बर्फीला पानी नीचे ले जायगा। दिन भर की थकान, काम काज की चिन्ताएँ तो जैसे हिरन हो जाती हैं।

गरमियों में भी सर्वोत्तम स्वास्थ्य

मेरे एक साथी दो-तीन बरस से गङ्गा में स्नान और तैरने की इस चर्या को नियम से चला रहे हैं। पन्द्रह अप्रैल से उनका यह कार्य-क्रम आरम्भ हो जाता है और महीनों पहले ही वे पन्द्रह अप्रैल से तैरने की मधुर स्मृतियों की चर्चा करके प्रसन्न हुआ करते हैं। इस मौसम में सामान्यतया लोगों का स्वास्थ्य गिर जाया करता है परन्तु नियमित रूप से गङ्गा में तैरनेवाले ये सज्जन कहा करते हैं कि किसी भी मौसम में मेरा स्वास्थ्य इतना अच्छा नहीं होता जितना गरमियों में रहता है।

स्नान करते हुए शरीर को गीले अँगोछे से अच्छी तरह मलकर मैल छुड़ाना तथा पसीने की दुर्गन्ध निकालना आवश्यक होता है।

इधर उधर की

न जलनेवाला तेल

छः वर्ष के अनुसन्धान के पश्चात् अमेरिका की बीरमिंघम यूनिवर्सिटी ने विज्ञान की सहायता से एक तेल बनाया है जो किसी भी तापक्रम में जलता नहीं है। प्रोफेसर मारिस प्रसिद्ध वैज्ञानिक ने और भी ऐसे ही तेलों की खोज की है, जो इंजन आदि के चलाने में बहुत ही लाभप्रद सिद्ध हुए हैं। घर के साधारण कामों में जैसे दरवाजों पर लगाना, अथवा किसी और काम में प्रयोग करने के लिये यह तेल बहुत ही लाभप्रद हैं।

यूनिवर्सिटी की विज्ञान-परिषद् ने इन तेलों को बनाकर सिद्ध कर दिया है, कि तेलों के निर्माण में अभी वैज्ञानिक बहुत कुछ करेंगे। तेल के निर्माण में २० जहरीली वस्तुएँ, जो ८० वर्ष से भी अधिक प्राचीन—हैं लेकिन प्रयोग में न आई थीं, मिलाई गई हैं।

* * *

दिमाग का स्थान

दिमाग की वास्तविक स्थिति का अनुमान करना साधारण काम नहीं है। दिमाग के कुछ भाग कुछ विशेष काम करने के लिये अधिक सुगम होते हैं। जैसे देखने और सुनने की क्रिया, अथवा हाथ-पैर की गति पर अधिकार रखना। इसके अतिरिक्त सूँघना, चोट का अनुभव करना आदि सारी क्रियाएँ दिमाग के दूसरे भाग के द्वारा की जाती हैं। इन सभी परिस्थितियों के साथ दिमाग की दशा में भी परिवर्तन होता रहता है।

बोस्टन के मासचेट जनरल अस्पताल में दिमाग की विविध अवस्थाओं का अध्ययन किया गया है। डाक्टर विलियम ने अस्पताल की लेबोरोटरी में इस प्रकार की खोज की है। दिमाग की स्थिति में जब खून का उतार-चढ़ाव साधारण स्थिति की अपेक्षा अधिक होता है तब उसकी संचालन शक्ति में भी अन्तर मालूम होने लगता है। डाक्टरी के पश्चात् जो नई खोजें हुई हैं वे दिमागी शक्ति को जानने के लिए पर्याप्त न होते हुए भी दिमाग की कुछ साधारण परिस्थितियों का ज्ञान तो करवाती हैं।

* * *

सारिडन
10 Saridon
सभी दर्द शीघ्र दूर करता है

मनोरंजक चुटकुले

गोविन्द ने कहा—'हर चीज
रही है।'

''मैं नहीं जानती, उदाहरण के
मेरी राय में आप और आपकी राय
बद रही हूँ। पड़ोसियों की राय में
दोनों। पता नहीं असलियत क्या है
स्त्री ने जवाब दिया।

* * *

श्याम ने अपनी पत्नी से कहा—
मैं देर से आया हूँ। क्या तुम मेरे
आने का कारण बता सकती हो?'

'हाँ यदि आप अपनी पूरी
कह दें तो मैं अवश्य बतला सकूँगी
स्त्री ने जवाब दिया।

* * *

एक यात्री ने फुटपाथ पर
पुलिस के सिपाही से कहा—
चलने के लिये मुझे क्षमा करना?

'किसी से कहना नहीं, मैं भी
कभी इस पर चलता हूँ, सिपाही
उत्तर दिया।

* * *

सेनापति ने सिपाहियों को
देकर कहा—'बहादुरो जीते रहो,
निर्माण करो।

'हम देश को जान-माल से
रहे हैं, इसमें निर्माण कैसा—
ने उत्तर दिया।

* * *

एक महिला ने एक राजमंत्री
पूछा—राजनैतिक क्षेत्र में क्या क्या
हो रही हैं?

'चीजें नहीं बल्कि आदमी कुछ
हो रहा है'—मंत्री ने उत्तर दिया।

* * *

गनेश ने सुन्दर से कहा—
क्यों हो?

'कुछ घरेलू झंझटों के कारण'
ने कहा।

'तुम कहते थे तुम्हारी स्त्री
गनेश ने कहा—

'हाँ पहले थी लेकिन अब नहीं
सुन्दर ने जवाब दिया।

* * *

ादताओं के पत्र

ोलापुर की स्टेट कांग्रेस की ओर र आई है कि बम्बई के गुण्डे ट स्टेट में लूट-मार के लिये जाते लूट-मार मचा कर तथा कीमती लेकर वहाँ से बम्बई लौटते हैं। र पर कड़ी जाँच का प्रबन्ध किया यह समस्या हल हो सकती है। में सीमा के ग्रामों पर निजामी और रजाकारों का अत्याचार है। अफतुलपुर ग्राम के पास जानेवाली १२ बैलगाड़ियों को गया। एक स्त्री के छः मास के छीन लिया। किन्तु वह देवी के लिए आँख बचाकर भाग रजाकारों के कब्जे में ही है। से भारत-संघ और संघ से आने-जाने वाले पत्रों पर स्टेट में पुलिस की निगरानी बढ़ती जा की पुलिस व सी० आई० न किसी रूप से पत्रों को खोल-यत्न करती रहती है। जिन के पोस्ट नहीं, वहाँ से पत्र लगभग बन्द सा हो गया है। पर निजामी पुलिस स्टेट से आने-जाने वालों को यथा-है। बीड, उस्मानाबाद जिला की सीमा के लगभग ज और रजाकारों के मिले-हुये हैं, जिससे पैदल आने-रुक रहा है।

—संवाददाता

* *

विद्यापीठ के संस्थापक जनार्दनराय जी नागर राज्य के प्रधान मंत्री और से भी परामर्श किया एवं कता पर जोर दिया। इस है कि राजस्थान राज्य के प्रधान मंत्री एवं अन्य कुछ प्रस्ताव को सराहा। माननाय सुखाडिया ने तो यहाँ तक इसमें तो दो मत हो ही नहीं

विद्यापीठ का प्रस्ताव परि-और से श्री गिरधारीलाल जी मंत्री ने उपस्थित किया और बाजपेयी एम० ए० ने उसमें संशोधन रक्खा। लगभग ढाई घण्टे तक बहस और अन्त में सर्वसमिति से विद्यापीठ को राजस्थान विद्यापीठ प्रस्ताव पास कर दिया गया, विधान में आवश्यक परिवर्तन, और परिवर्तन के लिये राजस्थान की एक विधान-समिति तथा समिति ने आदेश दिया समित ता० २५ जून तक समिति में रख दे। विद्यापीठ का रूप आज बदलने जा रहा है। आशा का प्रत्येक व्यक्ति इसको बनाने देगा।

—संवाददाता

सागर के पत्रकार विन्ध्यकेसरी संपादक श्री ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी, पद्मनाभ तैलंग व 'नेता जी' व 'जय हिन्द' के प्रतिनिधि लक्ष्मीप्रसाद मिश्र ने चुनाव देखने की लिखित अनुमति माँगी, पर अनुमति नहीं दी गई। पिछले वर्ष के चुनाव में भी यही हुआ था। पत्रकार इस असम्मान से क्षुब्ध तथा असन्तुष्ट हैं। सागर जिला, तहसील व नगर कांग्रेस-अध्यक्षों का चुनाव हुआ।

सागर—श्री रामसिंह बिसेन रेहली—श्री कुंजीलाल रावत बंडा—श्री भगवानदास मिश्र खुरई—श्री सिद्धनारायण तिवारी नगर—श्री रामसेवक दुबे जिला—श्री स्वामी कृष्णानन्द।

कटरा की सिमेंट रोड बनवाने में केवल २००००) खर्च होने थे; पर ५१०००) खर्च हो गये। म्यु० कमेटी में इसी प्रश्न पर काफी 'चों चों' हुई।

—संवाददाता

* * *

हरिद्वार संयुक्तप्रांतीय सरकार के स्थानीय स्वायत्त शासन-मन्त्री श्रीमान् माननीय आत्माराम गोविन्द खेर ने श्रवणनाथ ज्ञानमन्दिर का निरीक्षण करने के उपरान्त अपनी सम्मति इस प्रकार दी—मैंने आज श्रवणनाथ ज्ञान मन्दिर श्रीमान् महन्त शान्तानन्दजी के साथ देखा, पुस्तकालय तथा सभामंडप जो ठीक श्री गङ्गाजी के तट पर बनाया है, काफी भव्य और लोकोपयोगी है, पुस्तकालय में अनेक शास्त्र व दर्शन की संस्कृत की पुस्तकें तथा वेद पुराण आदि के ग्रन्थ संस्कृत और हिन्दी भाषा अनुवाद सहित मौजूद हैं, वाचनालय में अनेक मासिक, पाक्षिक और दैनिक अखबार आते हैं, जिनसे जनता लाभ उठाती है, निकलते ही एक आयुर्वेदिक औषधालय महन्तजी द्वारा खोला गया है। जिसमें सैकड़ों रोगी रोजाना आकर सहायता प्राप्त करते हैं। महन्तजी पुराने लोक-सेवी हैं और निस्वार्थ कार्य करने में काफी धन खर्च करते आये हैं। कांग्रेस कमेटी को उनके द्वारा अनेक प्रसंगों में सहायता मिली है। हर एक सार्वजनिक हित के कार्य में उनका हाथ रहा है, उनके प्रयास और आशीर्वाद से ज्ञानमन्दिर का और भी अधिक विकास, हो यही ईश्वर से प्रार्थना है।

—संवाददाता

* * *

इन्दौर के सुप्रसिद्ध विशाल चौक में श्री मध्य-भारत हिन्दी-साहित्य-समिति के तत्त्वावधान में हिन्दी-दिवस मनाया गया। उपस्थित जनता में हिन्दी भाषा-भाषी तो थे ही; किन्तु गौरव की बात यह थी कि इतर भाषा-भाषी नागरिक अधिक दिखाई दे रहे थे। हिन्दी को राष्ट्रभाषा तथा देवनागरी को राष्ट्रलिपि बनाने के लिए स्थानीय विद्वानों में श्री भालचन्द्रजी जोशी, श्री हरिहरजी लहरी, श्री प्रो० कमलाशंकर जी मिश्र, श्री बुद्धूखाँ सा० आदि ने अपने विभिन्न दृष्टिकोणों से जनता का ध्यान आकर्षित किया। सभापति श्री शिखरचन्द्र जी जैन ने बड़ा ही सूझपूर्ण भाषण दिया।

एक प्रस्ताव द्वारा भारतीय विधान-परिषद् से हिन्दी को तत्काल राष्ट्रभाषा एवं देवनागरी को राष्ट्रलिपि मान लेने के लिये अनुरोध किया गया।

—संवाददाता

* * *

राजधानी का रंगमंच

प्रांतीय सरकार का पुलिस को 'तैयार रहो' का आदेश

राष्ट्रद्रोही आन्दोलन—प्रांतीय रक्षादल की सतर्कता—स्वायत्त शासन-विभाग में क्रांतिकारी परिवर्तन—शासन-कार्य में हिन्दी का प्रयोग

(विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

प्रान्तीय सरकार ने पुलिस को 'तैयार रहो' आदेश दे दिया है। छुट्टी पर गए अधिकारियों की शेष छुट्टियाँ मंसूख करके उन्हें भी काम पर वापस बुला लिया गया है। इस प्रकार का आदेश विकट संकट-काल में ही दिया जाता है और बताया जाता है कि हैदराबाद की विस्फोटक स्थिति का प्रान्त पर जो प्रभाव पड़ रहा है तथा अनेक राष्ट्र-विरोधी शक्तियाँ प्रान्त में जैसे षड्यन्त्र तथा दुरभिसंधियाँ आयोजित कर रही हैं उनको देखते हुए सरकार द्वारा पुलिस को सावधान तथा सतर्क किया जाना स्वाभाविक ही है।

* * *

गृह-विभाग के एक प्रवक्ता ने मुझे बताया है कि यद्यपि सरकार सचेत अवश्य रहना चाहती है, परन्तु वह आशंकित जरा भी नहीं है, क्योंकि किसी भी राष्ट्रद्रोही आन्दोलन को दबाने का उसके पास यथेष्ट सामर्थ्य है। प्रान्त के आधे लाख पुलिस जवान हैलेट के समय चाहे जैसे हों, इस समय स्वतन्त्र देश के उन्मुक्त वातावरण की नैसर्गिक वायु पीकर उनमें स्वदेश प्रेम की मात्रा पर्याप्त रूप से भर गई है और वे किसी भी राष्ट्र-विरोधी कार्य को दबा सकने में पूर्ण सक्षम हैं। प्रांतीय आर्म्ड कांस्टेबुलरी तथा स्पेशल आर्म्ड कांस्टेबुलरी किसी भी सुशिक्षित सैन्यदल से किसी भाँति कम दक्ष नहीं है। इसके अतिरिक्त इन दोनों ही कांस्टेबुलरियों को मिलाकर उन्हें प्रान्तीय पुलिस से पृथक् कर दिया जायगा तथा उनके लिए एक स्वतन्त्र नियमावली बनाकर उनका अनुशासन और भी अधिक दृढ़ एवं कठोर करके उनको पूर्ण सैनिक स्वरूप दे दिया जायगा।

* * *

इसके अतिरिक्त प्रान्तीय रक्षकदल का संघटन भी तीव्रता से आगे बढ़ रहा है। अब तक प्रायः २० सहस्र व्यक्ति रक्षकदल में भर्ती होकर अत्युत्कृष्ट शस्त्र-विद्या सीख चुके हैं। इस दल का अधिकाधिक विस्तार किया जा रहा है और कालान्तर में १३ लाख प्रान्तवासियों को राइफल और बन्दूक चलाने की शिक्षा देकर उन्हें प्रान्त की आन्तरिक और आवश्यकता पड़ने पर बाह्य सुरक्षा के योग्य भी बना दिया जायगा।

* * *

प्रान्तीय स्वायत्त शासन में श्री आत्माराम गोविन्द खेर क्रान्तिकारी परिवर्तन करने जा रहे हैं। एसेम्बली की अगली बैठक में ही वे नया म्युनिसिपल बिल पेश करने जा रहे हैं, जिसके अन्तर्गत इन स्थानिक बोर्डों के अधिकार विस्तृत हो जाएँगे। अभी तक म्युनिसिपैलिटियों को स्वायत्त शासन, स्वास्थ्य-शिक्षा आदि विभागों के सचिवों की कृपा पर ही सरकारी सहायता मिलती थी, किन्तु अब एक गैर-सरकार म्युनिसिपल अनुदान समिति की सृष्टि की जा रही है, जिसमें सरकार, धारासभा, म्युनिसिपैलिटियों आदि के प्रतिनिधि रहेंगे और यही समिति तय किया करेगी कि किस म्युनिसिपैलिटी को कितनी आर्थिक सहायता सरकार से मिला करे। इस प्रकार इन बोर्डों की वास्तविक आवश्यकता की पूर्ति भी होती रहेगी और वे अपव्यय भी न कर सकेंगे, क्योंकि उनके आय-व्यय पर इस समिति का निरीक्षण रहेगा।

* * *

शासन-कार्य में हिन्दी का उपयोग बढ़ाने के लिए प्रांतीय सरकार दृढ़तापूर्वक सप्रयत्न है। हिन्दी न जाननेवाले कर्मचारियों को पहले हिन्दी सीखने के लिए छः मास का समय दिया गया था, परन्तु कुछ काल बाद यह अवधि तीन मास के लिए और बढ़ा दी गई। प्रांतीय सरकार ने अपने कर्मचारियों को यह स्पष्ट बता दिया है कि अब इस अवधि में वृद्धि न होगी और जो कर्मचारी ३० जून तक हिन्दी में योग्यता प्राप्त न कर लेंगे, उनके लिए सरकारी नौकरी में सभी सुविधायें बन्द हो जाएँगी। उनमें जो स्थायी कर्मचारी होंगे, उनकी तरक्की आगे के लिए तब तक रुकी रहेगी, जब तक वे हिन्दी की योग्यता का प्रमाणपत्र नहीं प्राप्त कर लेते। साथ ही उनको कोई महत्त्व का पद भी न दिया जाएगा। और जो लोग अस्थायी कर्मचारी हैं, उनकी पदपुष्टि (कन्फर्मेशन) तब तक न होगी, जब तक वे हिन्दी नहीं सीखते।

* * *

हिन्दी प्रयुक्त करने में सरकार के समक्ष कठिनाइयाँ भी अनेक हैं। सचिवालय में ही सारा काम हिन्दी में होने के लिए कम से कम ३०० हिन्दी टाइपराइटरों की अनिवार्य आवश्यकता है, पर उसे अब तक केवल ९० टाइपराइटर ही मिल सके हैं। इसी प्रकार के अभाव के कारण पर्याप्त संख्या में हिन्दी टाइपिस्ट नहीं मिल रहे हैं। पर इन कठिनाइयों के बावजूद सरकार अपने प्रयत्नों में सजग है। लखनऊ में इन दिनों बहुतेरे कमर्शल कालेज हिन्दी टाइपराइटिंग की शिक्षा देने लगे हैं।

* * *

महात्मा गांधी का सत्य—अहिंसा

(पेज ७ का शेष)

है...भारतवर्ष स्वतन्त्र और महान् होगा जब कि इँगलैण्ड एक छोटा सा राष्ट्र रह जायगा जैसा कि वास्तव में वह है।"

परन्तु आज भारत गांधी जी को भुलाता हुआ सा मालूम होता है। फिर एशिया और योरोप पर प्रतिक्रिया क्या होगी?

स्वराज्य के आने के बाद जब सत्य और अहिंसा का उपयोग हमें अधिक करना था हम उससे घबराते देख पड़ते हैं। माना कि भारत की वर्तमान परिस्थिति में देश को सैनिक दृष्टि से शक्तिशाली बनाना आवश्यक है। इस संधिकाल में देश की रक्षा बाहर और भीतर दोनों में ही उचित रूप से करना है; परन्तु यह बड़ी भूल होगी अगर हम हर क्षण और हर काम में हथियार और हिंसा की ही बात सोचें। जिस क्षेत्र में और जहाँ तक हम अहिंसा का पालन कर सकते हैं हमें पालन करना चाहिये। उससे हम और हमारे समाज का प्रत्येक व्यक्ति पवित्र और ऊँचा होगा और देश भीतर से ठोस और स्थिर बनेगा। इस अहिंसा का प्रयोग हम कहाँ और कैसे करें उसके सम्बन्ध में संक्षेप में यहाँ कुछ कहना उचित होगा।

कांग्रेस-संस्था आज हमारे देश की प्रधान राजनैतिक संस्था है और सारा देश अब भी उसमें सबसे अधिक विश्वास रखता है। कांग्रेस को अहिंसा से डिगना नहीं चाहिये। हम सब कांग्रेस कार्यकर्ताओं को सेवाभाव बनाये रखकर जनता की वास्तविक सेवा करते रहना चाहिये। आपस की तनातनी या होड़ में भी एक स्तर होना चाहिये जिससे नीचे न जायँ। जहाँ तक हो सरकारी कर्मचारियों से सहायता और सहयोग लें। लेकिन उससे अलग दंड और कानून के डर से काम न लेकर स्वतन्त्र रूप से जनता में काम कर उनकी उन्नति करनी चाहिये और अपना विश्वास उनमें बढ़ाना चाहिये। अपने प्रतिद्वन्द्वियों के साथ भी शान्तिमय और शिष्टता का व्यवहार रखना चाहिये। हमारा व्यवहार ऐसा शिष्ट हो जिससे दूसरे वैसा ही रखने को बाध्य हों। पारस्परिक मेल-जोल से और एक होकर हम काम करें। हमारी कार्यनीति ऐसी हो कि गरीब कमजोर और दबे हुए हमें और कांग्रेस को अपना साथी और हमदर्दी समझें।

दूसरे दल जो बन रहे हैं उन्हें भी इस बात का ध्यान रखने की आवश्यकता है कि वे दल बनाने और उसके संचालन में पश्चिमी देशों की ही नकल न करें। भारतीय संस्कृति की विशेषता का ध्यान तथा गांधी जी ने जो हमें सिखाया उसका कुछ मान रखते हुए, हम यदि एक पार्टी को हटाकर उसका स्थान लेना चाहें तो उसके लिए सौम्यता, मर्यादा तथा सेवा को ही प्रथम स्थान दें। इस समय अपने आदमियों को बुरा और खराब कहना और उसका एलान करना देश को निर्बल और नीचे ले जाना है। इससे वे भी बुरे होने से नहीं बचेंगे जो दूसरों को बुरा कहते हैं। भारतीयों का हृदय इस प्रकार का है कि जो वास्तविक सेवा करे और जो दूसरों से जिनकी वह बुराई करता हो अच्छा हो तभी वे उनकी बात सुनते हैं। अतएव जो भी राजनैतिक दल इस समय हैं या भविष्य में बनें उन्हें उपरोक्त बात का ध्यान रखते हुए यह भी ख्याल रखना चाहिये कि अपना उद्देश्य पूरा करने में वे हिंसा का उपयोग इस समय नहीं कर सकते और असत्य प्रचार से आपसी विद्वेष और कलह नहीं बढ़ा सकते। यदि हिंसा से वे सफल भी हुए तो देश को हिंसा से ही दबाकर वह रख सकेंगे और बाद में किसी न किसी समय वह फिर उनके ही सिर आयेगी। इसलिये राजनैतिक क्षेत्र के सहयोगियों को चाहे वे जिस विचार के हों इस ओर सावधान होना चाहिये।

वर्तमान गवर्नमेंट का भी कर्तव्य और बोझा कुछ कम नहीं है। अपनी शक्ति का प्रयोग हमें कम से कम करना है। शक्ति का प्रयोग कर कभी कभी किसी स्थिति को ठीक कर देना, या दबा देना, सरल जान पड़ता है पर हमें रुकना चाहिये और पूरी तरह सोचकर जब कि कोई दूसरा साधन न हो तभी शक्ति का प्रयोग करना चाहिये। लोकतन्त्र में हमें अपनी टीका-टिप्पणी को सुनने को उद्यत रहना पड़ेगा और जब तक जन-शक्ति खतरे में न हो कानून के उपयोग से बचाना होगा। जहाँ तक परामर्श और बातचीत से कोई बात तय हो सके, करना चाहिये और मजदूर, किसान तथा साम्प्रदायिक प्रश्नों को इसके द्वारा हल करने की कोशिश करना चाहिये।

गवर्नमेंट इससे कहीं अधिक अहिंसा का प्रयोग और उसका उपयोग निम्न क्षेत्रों में कर सकती है। शिक्षा, महिलाओं और हरिजनों की उन्नति, जरायनपेशा और बन्दियों का सुधार, गांवों में उद्योगों तथा राजसत्ता का विकेन्द्रीकरण। इन सब पर विस्तारपूर्वक कहा जा सकता है। परन्तु यहाँ इस ओर ध्यान दिलाना ही पर्याप्त नहीं है।

हमारे यहाँ के नागरिकों का भी इस समय विशेष कर्तव्य है। न्यायप्रियता, सहनशीलता और परस्पर सहिष्णुता और जिसे अधिकार सौंपा उसे मजबूत बनाना, आज की परिस्थिति में अत्यन्त आवश्यक है। सत्य और अहिंसा को यदि हम मानते हैं तो इन गुणों को ग्रहण करना और उन पर आचरण करना हमारा आज प्रथम कर्तव्य है। हिंसा को माननेवाला भी इन गुणों को अपनाना है। कौन सा फौज का सिपहसालार होगा जो इन गुणों पर आचरण करने की सलाह न देता हो। परन्तु अहिंसात्मक सिपाही या कार्यकर्ता के लिए तो इन गुणों को न अपनाना उसे अपने काम के लिए सर्वथा अनधिकारी बना देता है। तो आज हमारे लिये सत्य यही है कि हम सभी अपनी अपनी जगह पर अपना काम और अपनी जिम्मेदारी समझें और उसे निभाने का जी-जान से प्रयत्न करें।

व्यक्ति और समाज का आचरण कैसा हो इस सम्बन्ध में गौतम बुद्ध ने आठ मार्ग बताये थे; वे ये हैं—सम्यक दृष्टि दूसरा सम्यक संकल्प तीसरा सम्यक वा[illegible] चौथा सम्यक कर्मान्त पाँचवाँ सम्यक आजीविका छठवाँ है सम्यक व्यायाम सातवाँ सम्यक स्मृति आठवाँ सम्यक समाधि ये बातें छोटी देख पड़ेंगी; परन्तु इनसे ही हम बनते और बिगड़ते हैं। भारत के नर-नारियों के लिए चरित्र का महत्त्व आज सबसे अधिक है। स्वतन्त्र नागरिकों में चरित्र ही पहली और अंतिम चीज होनी चाहिये। राष्ट्र का निर्माण इसी पर होता है। जिन राष्ट्रों में इसकी कमी होती है, वे गिर जाते हैं, जो इसे अपनाते हैं वह गिरते हुए या भीषण चोट की हालत में भी उठ खड़े होते हैं, बड़ा से बड़ा शत्रु उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकता।

बड़ी से बड़ी फौज रखिये। यदि उसमें चरित्र न हो तो सारी फौज चाहे वह कितनी ही अच्छी हथियारबन्द क्यों न हो, बेकार होगी। बिना चरित्र के हथियार भी बेकार हैं, इसलिये चरित्र पर हमारा पहला ध्यान हो। जैसी नींव इस समय डालेंगे वैसा ही देश हम बना पायेंगे। आज हम पर निर्णय करने का उत्तरदायित्व है कि राष्ट्र किस रूप में बनें। कितना महान् उत्तरदायित्व है? गांधी जी प्रति क्षण इसे सोचते थे। क्या हम अब इसे सोच सकेंगे? वह प्रकाशस्तम्भ आज नहीं है परन्तु उसका छोड़ा हुआ प्रकाश जो सदा रहनेवाला है तो हम उससे आँखें आज क्यों बन्द कर लें? सत्य और अहिंसा को हमने छोड़ा तो भारत का गौरव गिरेगा। अहिंसा से डर प्रायः इस बात का होता है कि अहिंसा हमें कमजोर बना देगी परन्तु अहिंसा का अर्थ दुर्बलता नहीं है। स्वयं गांधी जी ने कहा था—

"मैं कायरता को किसी भी दशा में सहन नहीं कर सकता, मेरे मर जाने के बाद कोई यह न कहने पाये कि गांधी जी ने लोगों को नामर्द बनना सिखाया। अगर आप सोचते हों कि मेरी अहिंसा कायरता के बराबर है, या उससे कायरता ही पैदा होगी, तो आपको उसे छोड़ देने में जरा भी आपत्ति नहीं करना चाहिये। आप निपट कायरता से मरें, इसकी अपेक्षा आपका बहादुरी से प्रहार करते और प्रहार सहते हुए मरना मैं कहीं अच्छा समझूँगा......

जब तक हम अहिंसात्मक समाज नहीं बना लेते हमें फौज आदि रखना ही पड़ेगा। हमें सुदृढ़ राष्ट्र बनाना है लेकिन किसी को हड़पने के लिये नहीं, हाँ हम किसी को अपनी ओर उँगली उठाने नहीं देंगे। इससे आगे जाना अहिंसा की मूल भावना के विरुद्ध होगा। संसार के दूसरे देश अहिंसा की उपरोक्त नीति से दूर जा रहे हैं। आज जो सौदा करनेवाली कूटनीति चल रही है वह भी सत्य से बहुत परे है। भारतवर्ष को इस ओर अपना निश्चय बुद्धिमानी से बरतना है। यह निर्णय वर्तमान परिस्थिति में कठिन और नाजुक है लेकिन नाविक वही है जो बड़े से बड़े तूफान में ही अपनी नौका खे ले जाय। गांधी जी के निधन से हमारा कुशल नाविक खो गया। वह अकेले भी समय समय पर काम कर जाता था परन्तु अब तो सारे देश को [illegible] है। आइए दुनिया की नकल न कर, बहती हुई बयार न दौड़कर हम अपना ऐसा बनावें जिसका प्रभाव एशिया देशों पर पड़े। यह तभी जब हम बुद्ध के बताये हुए और गांधी जी की एकमात्र और अहिंसा को न भुलावें।

सम्पादक के नाम पत्र

(पेज १४ का शेष)

स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए उसका संघर्ष, के आदर्श।

(४) अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा—विश्व अन्य राष्ट्र-वासियों के जीवन तथा विशिष्ट स्वभाव-रुचि का ज्ञान। बंधुत्व की भावना और एक क्षेममय की रचना।

(५) नैतिक-सुरक्षा—उन महापुरु जीवनियाँ जिन्होंने मानवत्व को ही नहीं, किन्तु उसकी गौरव-वृद्धि तथा मानव-मात्र को सुखी धर्मोपदेशक संत, वैज्ञानिक, चिकि कवि, कलाकार, राष्ट्र-निर्माता तथा अब तक उपेक्षित, अप्रसिद्ध किन्तु जीवनवृत्त।

राष्ट्र के वैयक्तिक और जीवन की शुद्धता, उत्तम जीवन- सुंदर कला। भजन, कीर्तन, प्रवचन, पदेश आदि जो सब धर्मों और आदर्शों के प्रकाशन में समर्थ हों। सिक संतुलन और जीवन-मूल्यांकन क्षमता, राष्ट्र का नैतिक चरित्र-गठन।

सरकार का यह विश्वास है कि वांछनीय साहित्य-निर्माण को यथार्थ से पुरस्कृत करना तो दूर रहा, उनके उचित पारिश्रमिक दे सकना भी कार्य है। फिर भी सरकार साहित्यिक कृतियों को आभारपूर्वक कर उनका समाज-शिक्षा की के अन्तर्गत उचित उपयोग करेगी अपने सन्तोष के लिए यथेष्ट पारि की व्यवस्था भी करेगी। सरकार यह रोध करती है कि इस प्रकार की कृतियाँ मध्यप्रान्त और बरार के संचालक (डायरेक्टर आफ पब्लिक क्शन) के पास नागपुर भेजी अन्य आवश्यक ज्ञातव्य बातों के लिए उनसे ही पत्र-व्यवहार किया जावे।

राष्ट्र को सार्थक और समाज-शिक्षा के द्वारा सुरक्षित महान् अनुष्ठान में सरकार सभी त्यिकों और कलाकारों के सहयोग साभार आमंत्रित करती है।

आरो
२८६६
नीलगिरि तै
सांडुमेकर बंधु

रामचरितमानस

टीकाकार—डाक्टर श्यामसुन्दरदास

'मानस' का महत्व किसी से छिपा नहीं है। भारतवर्ष में तो इसका मान है ही, अन्य देशों में भी इस अमर काव्य का आदर है। यह प्रामाणिक संस्करण इधर कई वर्ष से अप्राप्य था। हाल में ही छपकर तैयार हुआ है। ग्राहकों को शीघ्रता करनी चाहिए। अधिक प्रतियाँ नहीं छापी गई हैं।

बड़े आकार के १२०० पृष्ठ। रंग-बिरंगे दर्जनों चित्र। सजिल्द प्रति का

मूल्य १२) रुपये

जहाँ पर हमारी ब्रांच या एजेंसी है वहाँ ख़रीदने पर डाकख़र्च की बचत होगी।

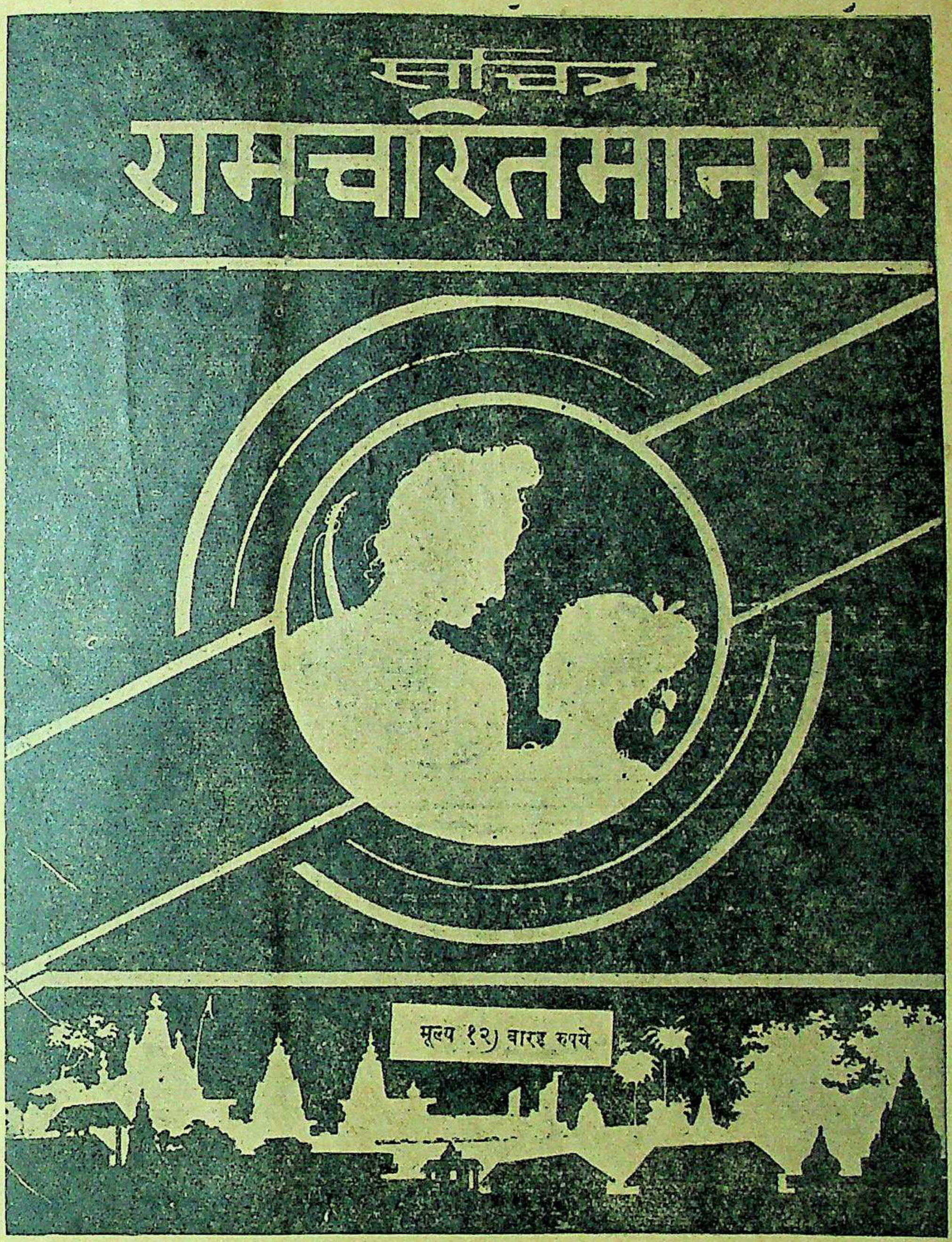

हमारी ब्रांचें और एजेन्सियाँ

१ इलाहाबाद हेड ऑफ़िस—इंडियन प्रेस लिमिटेड, ३६ पन्नालाल रोड
२ इलाहाबाद सिटी—न्यू ऐरा बुकहाउस, हिवेट रोड
३ आगरा—आगरा पब्लिशिङ्ग हाउस, बाग़ मुज़फ़्फ़र ख़ाँ
४ अजमेर—इंडियन प्रेस लिमिटेड, कचहरी रोड
५ अलमोड़ा—डिस्ट्रिक्ट बुकडिपो, लालबाज़ार
६ बनारस—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, बनारस छावनी
७ बाँदा—बुंदेलखण्ड पब्लिशिङ्ग हाउस
८ बरेली—इंडियन बुकडिपो
९ बम्बई—भारतीय पुस्तक भण्डार, कालबा देवी रोड
१० बीकानेर—गगंबुक कम्पनी, कोट के भीतर
११ कलकत्ता—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, २२।१ कार्नवालिस स्ट्रीट
१२ कानपुर—साहित्य-रत्नालय, श्रद्धानन्द पार्क
१३ दिल्ली—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, नई सड़क
१४ गोरखपुर—पुस्तक-स्थान, बख़्शीपुर
१५ ग्वालियर—लायल बुकडिपो, पाटनकर बाज़ार, लश्कर
१६ इन्दौर—नवयुग साहित्यसदन, खजूरी बाज़ार
१७ जयपुर—गोपाल बुकडिपो, त्रिपौलिया बाज़ार
१८ जबलपुर सी० पी०—इंडियन प्रेस, लिमिटेड
१९ लखनऊ—इंडियन बुकडिपो, अमीनुद्दौला पार्क
२० मेरठ—पुस्तक-स्थान, वैस्टर्न कचहरी रोड
२१ पटना—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, पो० ऑ० बाँकीपुर
२२ राँची—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, कोर्ट रोड

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

लिपटन के प्रेमी : ६

जब से मैंने
लिपटन की
हिमालयन ब्लेण्ड चाय
बनवानी शुरू की है,
किसी सदस्य को कोई
शिकायत नहीं रह गई

क्लब सेक्रेटरी

आप जानते हैं, टेनिस के बाद चाय की मांग जो शुरु होती है वह क्लब बन्द होने तक बनी रहती है। बहुत दिनों से क्लब में बनी चाय की शिकायत सुन रहा था। आखिर मैंने फैसला कर लिया कि अच्छी चाय के लिये कुछ ज्यादा भी देना पड़े तो कोई हर्ज नहीं। अब जब से क्लब में लिपटन की हिमालयन ब्लेण्ड बनने लगी है चाय देखते ही लोगों के चेहरे से खुशी जाहिर होने लगती है। क्वालिटी बढ़िया होने की वजह से यह कम खर्च होती है और पैसा पूरा पूरा वसूल हो जाता है।

Flowery Orange Pekoe
HIMALAYAN BLEND
Darjeeling

लिपटन की हिमालयन ब्लेण्ड

सर्वोत्तम दार्जिलिंग चाय

LTK 103

चमकीले स्वस्थ
बालों के लिये
Vaseline
POMADE
CHESEBROUGH MFG. Co.

कोमलता से सुगंधित किया गया वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।

वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही जोर दीजिये।

सभी दूकानों प

Copyright

सच है
सिरोलीन
"रोच"
सर्दी और खांसी की श्रेष्ठ औषधि है

मूल्य की सूचना

WOODWARD'S "GRIPE WATER"

वूडवर्ड्स ग्राइप वाटर का सही फुटकर दाम
निम्नप्रकार है:

प्रति शीशी: २ रुपये

(इसके अतिरिक्त लोकल टैक्सेस जहां लागू हों)

अधिक दाम मत दें

जब आप
वूडवर्ड्स
ग्राइपवाटर खरीदें

तब हर शीशीपर
इस ट्रेडमार्क का
अवलोकन करें

नक़ली मालसे सावधान रहिये!

WW 1-111 HI

W. WOODWARD LTD., LOND

T. B.
टी० बी०
"तपेदिक" रोग के हताश रोगियो—

जबरी (jabri) का नाम नोट कर लो, यही इस दुष्ट रोग से रोगी को बचानेवाला शक्तिशाली औषधि है। एक बार परीक्षा करके देख लो, थोड़ा ही नमूना रखा गया है, जिसमें तसल्ली हो सके। मूल्य नं० १ (स्पेशल) पूरा दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन २०) रु०। 'जबरी' नं० २ पूरा २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु० महसूल आदि अलग है। आज ही देकर रोगी की जान बचावें। तार का पता "jabri" jagadhri

पता :—रायसाहब के० एल० शर्मा, रईस (D) 'जगाधरी' (E.P.)

जब जिसने देखा, मुग्ध हो गया

मंजरी

श्रेष्ठ कथाकारों की सरस कहानियां और कथा-साहित्य पर गम्भीर आलोचनात्मक लेख आकर्षक मुद्रण-विन्यास के साथ प्रस्तुत करनेवाली सांस्कृतिक मनोरंजन की एकमात्र कहानी-पत्रिका है।

एक सम्मति

प्रोफेसर शिवपूजन सहाय, भूतपूर्व सम्पादक 'हिमालय'—"मंजरी' के देखे और तीनों को देखकर यही धारणा हुई कि कथा-साहित्य की निधि-पत्रिका 'मंजरी' ही है। छपाई सफाई और सजावट के लिए तो यशस्वी नाम ही प्रमाण है, सम्पादन-कौशल में आपने भी अपनी कला का प्रदर्शन किया है। साज-सज्जा और सामग्री-संकलन में सुरुचि का सराहनीय है। कृपया विदेशी के कथा-साहित्य का ज्ञान भी हिन्दी पाठकों को भिन्न भाषाओं की कहानियां देकर आप हिन्दी पाठकों को काफी तृप्त कर से पाठकों ने यह मत व्यक्त किया है कि आपकी पत्रिका ही में श्रेष्ठ एवं उपयोगी है। मैं आपकी आरम्भिक सफलता पर बधाइयां देता हूं।

× × ×

प्रतिमास 'मंजरी' पढ़कर आप भी अपना और अपने परिवार का मनोरंजन कीजिए।

वार्षिक मूल्य ६) छः रुपये
प्रति अङ्क आठ आने

सम्पादक :
देवीदयाल चतुर्वेदी

प्रकाशक :
इंडियन प्रेस लि०

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [illegible] मित्र-द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, [illegible] पन्नालाल रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशि

सम्पादक—ज्योतिप्रसाद

सचित्र
साप्ताहिक
) : प्रति संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

२० जून, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 20th JUNE, 1948

का आर्थिक सम्मेलन
कैलाशनाथ काटजू।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र

मध्य - भारत - संघ का संगठन
मातृमंदिर, हास-परिहास, रंगमंच

५०० पौण्ड इनाम

चौबीस घंटे में जवान बनिये

“ओटोजन” (जड़ी बूटियों से निर्मित) पार्कर एण्ड डेविस द्वारा प्रस्तुत पहले २४ घंटे के अन्दर ही शक्ति तथा स्फूर्ति प्रचारित करने में आश्चर्यजनक है । इसके उपयोग से स्त्री तथा पुरुष दोनों अपने वास्तविक आयु से १५-२० वर्ष छोटे मालूम पड़ने लगते हैं । यह पौरुषहीनता, स्मरणशक्ति की कमी, शारीरिक दुर्बलता, रक्त-विकार, चर्मरोग, हतोत्साह, अनिद्रा तथा शारीरिक शक्ति ह्रास को दूर करने के लिए उपयोगी है। इसके प्रयोग से २ से ४ इंच तक आपकी लम्बाई तथा ५ से १० पौण्ड तक शरीर का वजन बढ़ जायेगा। आपके चेहरे पर लालिमा आ जायगी तथा आपकी कान्ति दुगनी हो जायगी। आपकी त्वचा कोमल तथा चिकनी हो जायगी। जिससे आपके चेहरे पर जवानी की आभा पुनः आ जायगी। ओटोजन से आपके व्यक्तित्व में वृद्धि होगी, आंखों में रौनक आ जायगी, ओठों तथा गालों पर गुलाबी दौड़ जायगी। इसके प्रयोग से पकते हुए बाल स्थायी रूप से काले हो जायेंगे तथा वृद्धावस्था मे नये दांत निकल आयेंगे। बाल गिरते हों, सिर रूखा हो अथवा चँदला हो गया हो तो उस समय ‘ओटोजन’ (टानिक) विशेष लाभप्रद सिद्ध होगा ; “ओटोजन” का प्रयोग प्रोफेसर ए० पी० पार्कर ने स्वीटजरलैंड में १०० वर्ष के शक्तिहीन बुड्ढे पर किया था। केवल एक मास के नियमित सेवन के बाद इस आश्चर्यजनक औषधि ने उस १०० वर्ष के रोगी को तीस वर्ष का-सा नौजवान बना दिया। थोड़े समय बाद ही एक नवयुवती से विवाह कर लिया। फिल्म-जगत् के अभिनेता व अभिनेत्रियां इस औषधि के प्रयोग से ८० तथा ९० वर्ष की वृद्धावस्था में भी सौन्दर्य तथा उत्साहपूर्ण बनी रहती हैं तथा फिल्म-जगत् में निरन्तर काम करती हैं । प्रारम्भिक अवस्था से ओटोजन का प्रयोग करने से स्त्रियां सदा नवयुवती बनी रहती हैं तथा उनके सौन्दर्य में किसी प्रकार की कमी नहीं आती। पुरुषवर्ग युवास्था से ओटोजन का प्रयोग करने से समय से पहले बूढ़े नहीं होते। बाल काले बने रहते हैं। चेहरे पर कान्ति तथा स्वास्थ्य बना रहता है। इसके प्रयोग से मनुष्य अपनी वास्तविक आयु से वर्षों छोटा प्रतीत होता है।

यह बीसवीं सदी का आश्चर्यजनक आविष्कार तथा संसार का ८वां वैचित्र है। ओटोजन के प्रयोग के बाद स्त्रियों में तरुणाई तथा चपलता का संचार हो जाता है। तथा ओटोजन के प्रयोग के बाद स्त्री तथा पुरुष दोनों के भाग्यशाली दिन वापस आ जाते हैं। अभी से ओटोजन का प्रयोग आरम्भ कर दें तथा सौ बरस तक स्वस्थ तथा शक्ति-सम्पन्न बने रहें। इससे क्षुधा इतनी प्रज्ज्वलित होती है कि एक पौंड अथवा इससे भी अधिक मक्खन कमजोर व्यक्ति भी पचा सकता है। इस विचित्र “ओटोजन” टानिक के प्रभाव को देखकर दुनिया के बड़े बड़े वैज्ञानिक तथा अनुभवी डाक्टर चकित रह गये ।

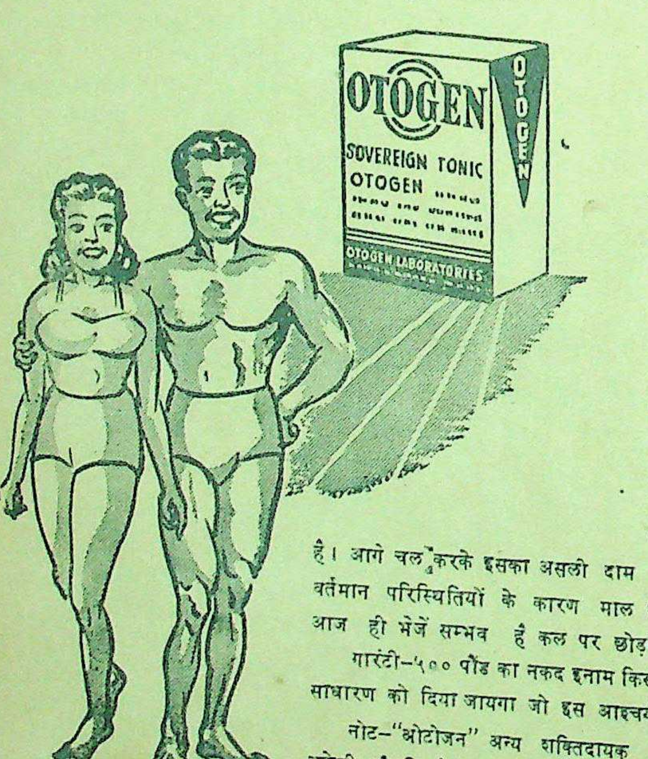

“ओटोजन” अपने प्रकार का अकेला टानिक है जिसे संसार के स्त्री व पुरुष दोनों उपयोग में लाते हैं। चिकित्सा-विज्ञान के इतिहास में यह अभी तक निराला है आज से ही इसका उपयोग आरम्भ कर इसके गुणों का अनुभव करें। आरम्भ करने के पहले अपना वजन ले लें तथा आईने में अपनी आकृति देख लें। फिर एक सप्ताह के बाद अपनी आकृति शीशे में पुनः देखें और गौर कर कि आपकी आकृति में तथा उत्साह में ओटोजन के व्यवहार से कितना परिवर्तन हो गया।

भारतवर्ष में इस औषधि का प्रचार करने के निमित्त इसका मूल्य मय डायरेक्शन के ५) प्रतिबाक्स कर दिया गया है। आगे चल करके इसका असली दाम ३०) प्रतिबाक्स चार्ज किया जायगा। वर्तमान परिस्थितियों के कारण माल थोड़ा बच रहा है। अतः अपना आर्डर आज ही भेजें सम्भव है कल पर छोड़ने से आप पीछे रह जायें।

गारंटी—५०० पौंड का नकद इनाम किसी भी वैज्ञानिक आयुर्वेदवेत्ता अथवा जन-साधारण को दिया जायगा जो इस आश्चर्यजनक खोज को गुणहीन साबित कर देगा।

नोट—“ओटोजन” अन्य शक्तिदायक औषधियों के विपरीत अपने प्रकार की अकेली औषधि है जो उष्णकटिबन्ध की गर्मियों में, जाड़े में नम तथा साधारण मौसम में प्रसंशनीय प्रभाव दिखाती है।

उष्ण कटिबन्ध की तीक्ष्ण गर्मी में जिस समय कि आप पूर्णतः शक्तिहीन हो गये हों उस समय ओटोजन आपकी शक्ति संचय करने में विचित्र प्रभाव दिखायेगा। हमने अपनी शाखा लाहौर से हटा ली है तथा १५ अगस्त १९४७ से हमारा कार्यालय इंगलैंड से हिन्दुस्तान आ गया है।

प्रमुख औषधि-विक्रेताओं से खरीदें अथवा हमारे यहां से शीघ्र मंगायें।

दी ओटोजन लेबोरेट्रीज

भारतवर्ष का आफिस :—पोस्ट बाक्स नं० [illegible]

गांधी-अभिनन्दन

सम्पादक—श्री सोहनलाल
प्राक्कथन—सर सर्वपल्ली

संस्कृति, हिन्दी, उर्दू, राती, सिन्धी, मराठी, तामिल, मलयालम, कन्नड़, अंगरेजी भाषाओं में महात्मा गांधी जी हुई सर्वोत्तम कविताओं का भाषा में अर्थ-सहित ।

बड़ा आकार, सुन्दर छपाई, के अनेक चित्र। बढ़िया जिल्द। प्रशंसित ।

सादी जिल्द ६॥) कपड़े की जिल्द

सेवाग्राम

रंग-बिरंगी छपाई अनेक

रचयिता श्री सोहनलाल
संरक्षक श्री घनश्यामदास

जनता की भाषा में, जनता का, जनता का काव्य कवि की रचनाओं का सुन्दर संग्रह। बढ़िया काग़ज़, कपड़े की मज़बूत मूल्य दस रुपये।

अपराजिता

यह श्रीयुत रामेश्वरप्रसाद शुक्ल ए०, ‘अञ्चल’ की कतिपय सुन्दर का संग्रह है। कविताएँ नूतन सांस्कृतिक रुचि और हैं। कवि ‘अंचल’ की रचनाओं प्राप्त करने के लिए अपराजिता देखिए। सजिल्द पुस्तक का मूल्य रुपये।

गुदड़ो के लाल

इस पुस्तक की कहानियाँ सरल और रोचक भाषा में हैं। इनको पढ़कर बच्चे बेहद हैं। ऐसी पुस्तक अपने बच्चों दीजिए। मूल्य ॥)

आविष्कारों की

मशीनें कैसे बनीं! तरह-तरह औजार कैसे बनें ? रेल, जहाज, सिनेमा वगैरह कैसे बने ? बनाकर या नये काम करके दुनिया में प्रसिद्ध हो सकते हैं! बातों को जानने के लिए यह पढ़िए। मूल्य १)

अन्तू सरदार

भरोस सरदार के लड़की कोई सन्तान न थी। और भरोस लठैत जिससे पुलिस भी डरती जमींदार के यहाँ भरोस नौकर था। अपनी बेटी को भी लाठी चलाना दिया था। इसका ब्याह (अन्तू) से किया गया था वह सवाया था। एक झमेले में काट हुई। इसमें अन्तू की गई और भतीजा प्रताप गया। पुलिस ने अन्तू को सज़ा करा दी। इधर प्रताप भी यह कहानी है तो बड़ों के लिए भी परन्तु बच्चों को बहुत पसन्द सुन्दर सरल भाषा, कई चित्र पृष्ठ रंगीन। मूल्य केवल बारह

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस,

देशदूत

वर्ष १०, संख्या ४१] [रविवार, २० जून, १९४८

भारत के नये वाइसराय माननीय श्री राजगोपालाचारी।

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

मोहनलाल गौतम अकेले ही हैं। पंडित हरिहरनाथ शास्त्री अमरीका चले गये नहीं तो वह भी इस वक्त गौतम जी का ही साथ देते। फिर भी कांग्रेसी समाजवादी चुनाव-चुथौअल में यदि कांग्रेस की जीत हो तो आश्चर्य क्या है, क्योंकि कांग्रेस कांग्रेस है जिसे जनता जानती है किन्तु सोशलिस्ट को गाँव की जनता क्या जाने? यह तो शहरियों का एक तमाशा है और अखबारबाजी की धूमधाम।

* * *

एक पत्रकार का कहना है कि हैदराबाद के रजाकारों का सर्वेसर्वा कासिम रिजवी लखनऊ का रहनेवाला है। पत्रकार का कहना है कि—"कासिम रिजवी विगत शताब्दी में लखनऊ की गलियों में एक मदरसे का चन्दा बटोरा करता था। वह लखनऊ के फिरंगी महली धर्मपंथियों के घराने का एक मौलवी था, वही आज हैदराबाद में पहुँचकर फील्ड-मार्शल, अल्लम-गल्लम और जाने क्या-क्या बन बैठा है।" अपने राम सचमुच अब तक हैरान थे कि हैदराबाद में ऐसा रिज़वी जैसा महापुरुष कहाँ से पैदा हो गया। रिजवी साहब संयुक्तप्रान्त की देन हैं, और वह भी लखनऊ की जहाँ के मियाँ खलीकुज्जमाँ हैं जिन्होंने जिन्दगी में न जाने कितने जोड़े-जामे बदले हैं और अन्त में जन्नतेसदर अर्थात् पाकिस्तान में मारते खाते पहुँच गये हैं। वाह रे संयुक्तप्रांत धन्य है। यह एक ओर जहाँ राष्ट्रभक्तों की जन्मभूमि है वहाँ दूसरी ओर नकटों की भी पितृभूमि है। पञ्चमांगी जितने संयुक्तप्रांत में हैं उतने शायद ही कहीं हों। लखनऊ इसके लिए बधाई का पात्र है? क्योंकि पञ्चमांगियों और नकटों की उत्पत्ति में इसकी परम्परा अभी जारी है। शाही खान्दान शहर जो ठहरा।

* * *

कहा जाता है कि पण्डित जवाहरलाल नेहरू के बीच में पड़ने से संयुक्तप्रांत में राष्ट्र-प्रेमियों में दलबन्दी समाप्त करके प्रेमालाप होनेवाला है। अपने राम की समझ में भला वह दिन आवे तो किसी तरह। लेकिन आयेगा ही क्यों? क्योंकि इस प्रांत के देशभक्तों में वाचालता सीमा लाँघ गई है। दूसरों के लिये आदर्शवाद बघारना तो इस प्रांत की राजनैतिक परम्परा बन गई है लेकिन घर में वही सादे तीन हाथवाली लतिहाउज! करनी कुछ और कथनी कुछ। भला बिहार में तो किसी भी राजनैतिक मामले का अंतिम निर्णय राजेन्द्र बाबू पर ही छोड़ा जाता है किन्तु संयुक्तप्रांत में तो सभी बावन गज के हैं, सभी नेता हैं फिर फैसला कहाँ से हो और कौन करे? प्रांत की राजनीति भगवान् के हाथ है न कि किसी नेता, न कांग्रेसी या सोशलिस्ट के हाथ में।

* * *

सुना जाता है कि अरब-यहूदी फिर लड़नेवाले हैं। अपने राम को गोस्वामी तुलसीदास की वह लाइन याद है कि सबहि नचावहिं राम गुसाईं। संसार साम्राज्यवादी जब चाहते ही नहीं कि संसार में शांति स्थापित रहे तो मुँहकुचौअल कब तक रुकी रह सकती है? चोर चोर मौसेरे भाई, वही लड़ानेवाले, वही बँटवारा करानेवाले और वही शांति-स्थापना का ढिंढोरा पीटनेवाले। आखिर काम कैसे पूरा हो? अभी तो अरब-यहूदी के युद्ध का प्रारम्भ है। उधर योरोप में अरब-यहूदी कुचक्र चल रहा है और इधर एशिया में स्वराज्य प्राप्त करके हिन्दू-मुसलमान जुझाये जा रहे हैं। कहने का मतलब यह है कि इस वक्त गोरी साम्राज्यवादी शक्ति केवल सबमें समझौता कराने और शांति-स्थापना के लिए मारी मारी घूम रही है। वाह कैसी बढ़िया नेकी है। जरा गोरी जातियों का पेट भर जाये और अपने व्यापार का जाल योरोप-एशिया में फैला लें तब देखिए, इन भलेमानसों की लीला। दो भलों को लड़ाना इनकी परम्परा है, नहीं तो इनका काम कैसे बने?

* * *

सुना है कि भारतीय फौजों ने हैदराबाद की सीमा में घुसकर रजाकारों का पीछा किया। अपने राम की समझ में नहीं आया कि वह पैंतरा बदलनेवाला और दिल्ली के लाल किले पर निजामी झण्डा फहरानेवाला रिजवी किस माँद में छिप गया था? रजाकार जान पड़ता है किराये के टट्टू हैं। भला बताइए किराये के टट्टू कब तक निजाम की रक्षा करते रहेंगे? दिल्ली तक आते आते तो उनकी हवा खिसक जायेगी। अभी क्या, अभी तो प्रारम्भ है।

* * *

उन्मद शर्वरी

लेखक, श्री नरेन्द्र शर्मा, एम० ए०

छा रही है हृदय पर
मेरी प्रिया कनकाम्बरी!
आ रही अनुगामिनी बन
मिलन - उन्मद शर्वरी!
कल्पना की कनकरेखा है प्रिया;
भुज, छंद हैं!
रतजगा कैसे करेंगे दृग,
अभी से बंद हैं!
पर न मानेगी निशा,
रतनार यह मणि-मंजरी!
मुग्ध भावों से भरे
चंचल दृगों में थिरक है,
यामिनी मधुयामिनी
भ्रू-भंगिमा में निरत है!
दूर प्रज्ञातीत तट को
जा रही मादन तरी!

सम्पादक का पृष्ठ

रजाकार—शांति-व्यवस्था

हैदराबाद की समस्या सुलझ नहीं रही है। निजाम भारतीय संघ में सम्मिलित होने के लिए तैयार नहीं है। भारत-सरकार तथा निजाम के प्रतिनिधियों की जो वार्ता चल रही थी, केवल दिखाने अथवा समय बिताने के लिये। सम्भवतः वह पुनः चालू की गई है, किन्तु इसमें तनिक भी संदेह नहीं रह गया है कि निजाम सरकार अपनी पाकिस्तानी नीति को छोड़ना नहीं चाहती। इसके विपरीत उसने समझौते की वार्ता चलाने की आड़ में रजाकारों का प्रबल सैनिक संगठन तैयार किया है। इस समय रजाकार ही हैदराबाद की वर्तमान राजनीति में प्रमुख भाग ले रहे हैं। देखते देखते हैदराबादी पुलिस और फौजी संगठन के अतिरिक्त रजाकार-संगठन ने शक्तिशाली रूप ग्रहण कर लिया है। जिस प्रकार भारत के विभाजन के पूर्व मुस्लिम लीग ने नेशनल गार्डों का संगठन किया था उसी प्रकार हैदराबाद ने रजाकार दल का संगठन किया है। नेशनल गार्ड जिस प्रकार एक साम्प्रदायिक राष्ट्र-विरोधी जमात है उसी प्रकार रजाकारों का संगठन भी साम्प्रदायिक है और हैदराबाद की फौजी शक्ति से शक्तिशाली बनाया गया है। दिखाने के लिए स्टेट की फौजों तथा रजाकारों के संगठन दो अलग अलग दल हैं, किन्तु भीतर से दोनों एक हैं। निजाम के प्रोत्साहन तथा शक्ति से ही इस गैर-सरकारी सैनिक संगठन का प्रादुर्भाव हुआ है। इस संगठन को निजाम सरकार ने राज्य की सुरक्षा तथा अवसर पड़ने पर भारत संघ के फौजी शक्ति से मोर्चा लेने के लिए बल दिया है।

हैदराबाद स्टेट कांग्रेस की ओर से जो विज्ञप्तियाँ हमारे पास आती रहती हैं, उन्हें पढ़कर हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि रजाकारों का संगठन बड़ा ही खतरनाक है। यह अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित रहते हैं। राज्य की सीमा पर चारों ओर इन्होंने मोर्चेबन्दी कर रखी है। इसके सिवा हैदराबाद की बहुमतप्राप्त जनता के लिए इनकी हरकतें बड़ी खतरनाक साबित हो रही हैं। लूटपाट मचाना, घरों तथा गाँवों को जला देना, किसानों तथा किसान-स्त्रियों पर अत्याचार करना, इनके दैनिक जीवन का कार्यक्रम बन गया है। राज्य में जब इस दल के जत्थे निकलते हैं तो जन-साधारण में भयङ्कर आतङ्क छा जाता है। इसके नारे और मार्चिङ्ग गीत भी आतङ्क फैलानेवाले तथा दुरभिमान से भरे हुए होते हैं। यह लोग दिल्ली में आसफजाही झंडे के फहराने के दुस्साहसपूर्ण गीत गाकर जनता को आतङ्कित करते हैं। इस दल के नेता हैं कासिम रिजवी साहब। रिजवी साहब कौन हैं ? यह हैदराबाद में कहाँ से एकाएक टपक पड़े और देखते देखते रजाकारों के साम्प्रदायिक नेता बन बैठे। हमें पता चला है कि रिजवी महोदय संयुक्त-प्रांत के लखनऊ जिले के निवासी हैं। यदि यह सच है तो सचमुच वह रजाकारों के नेता बनने के उपयुक्त पात्र हैं। संयुक्त-प्रांत के मुस्लिम लीगी तो सदा से साम्प्रदायिक संगठन तथा पंचमांगी दल के कार्यों के लिये परम प्रसिद्ध रहे हैं। पाकिस्तान के निर्माण में भी संयुक्तप्रांत के लीगियों का हाथ रहा है। फिर रिजवी साहब रजाकारों का संगठन क्यों न करते ? इस प्रकार से साम्प्रदायिक तथा राजनैतिक उथल-पुथल में इस प्रांत के लीगी अपनी समता नहीं रखते। आजमगढ़ के रहनेवाले ब्रिगेडियर उस्मान भी एक मुसलमान हैं जो काश्मीर में पाकिस्तानी फौजों को खदेड़ रहे हैं और भारत-संघ की फौजों का संचालन कर रहे हैं और दूसरे कासिम रिजवी हैं जो भारत-संघ की फौजों से, हैदराबाद की रक्षा के लिए, लोहा लेने के लिए तैयारी में अकड़ रहे हैं। परन्तु हम स्पष्ट कर देना चाहते हैं भारत संघ नामर्द राष्ट्र नहीं है। हाँ, राजनैतिक दृष्टि से तत्काल अवश्य तरह दी जा रही है। यदि निजाम से संघर्ष न हो तो अच्छा है, यदि समस्या किसी प्रकार सुलझ जाती है। भारत संघ के सामने सबसे बड़ी समस्या है राज्य की लाखों जनता की, जिसके बल पर आसफजाही साम्राज्यवाद कायम है। अंत में समस्या के न सुलझने पर इसी आधार पर भारत संघ को फौजी कार्यवाही करनी पड़ेगी। यद्यपि हैदराबाद-हिन्दुस्तान की सीमा पर सुरक्षा के लिए भारतीय फौजों की प्रारम्भिक कार्यवाही प्रारम्भ हो गई है, लेकिन यदि निजाम ने अपनी वर्तमान राजनीति में परिवर्तन नहीं किया और रजाकारों के संगठन के बल पर राज्य में बहुमतप्राप्त जनता की शांति और व्यवस्था खतरे में पूरी तौर से डाली गई तो भारतीय संघ के लिए यह अनिवार्य हो जायेगा हैदराबाद के साथ लोहा ले और कार्यवाही करने के लिए आगे समझते हैं कि निर्णय का समय है। २१ जून को लार्ड लुई माउन्ट भारत से पधारते ही हैदराबाद सिद्धान्तों का अतिक्रमण और रजा अपने वास्तविक स्वरूप का प्रदर्शन कर सकते हैं। भारत-संघ और वाद के सम्बन्ध-विच्छेद की वह एक नाक घड़ी होगी।

हम भारत-सरकार तथा प्रांती कारों से अनुरोध करेंगे कि वह दायिक संगठनों की ओर नज़र भारत संघ की उदारता के कारण प्रांतों में एक ऐसा दल आ गया अवसर आने पर गुप्तचर तथा पंचमां का कार्य करेगा, इसके सिवा आतङ्कपूर्ण तथा साम्प्रदायिक अफवाहें कर उत्तेजना फैलायेगा तथा शां सुव्यवस्था को भंग करने का यत्न यद्यपि प्रांतीय सरकारें सचेत हो गई हैं जनता में शांति और व्यवस्था बनाये के लिये पुलिस तथा फौजी दृष्टि से वाही कर रही हैं, यह प्रसन्नता की फिर भी असावधानी तनिक भी नहीं चाहिये। जनता को भी कदापि आ नहीं होना चाहिये क्योंकि भारत संघ प्रांतीय सरकारें शांति और सुव्यवस्था स्थापना में पूर्ण रूप से [illegible] हैं। प्रत्येक जन-सेवक तथा भारत-संघ को सरकार की पूर्ण रूप से सहायता चाहिये, इसी में स्वतन्त्र भारत कल्याण है।

* * *

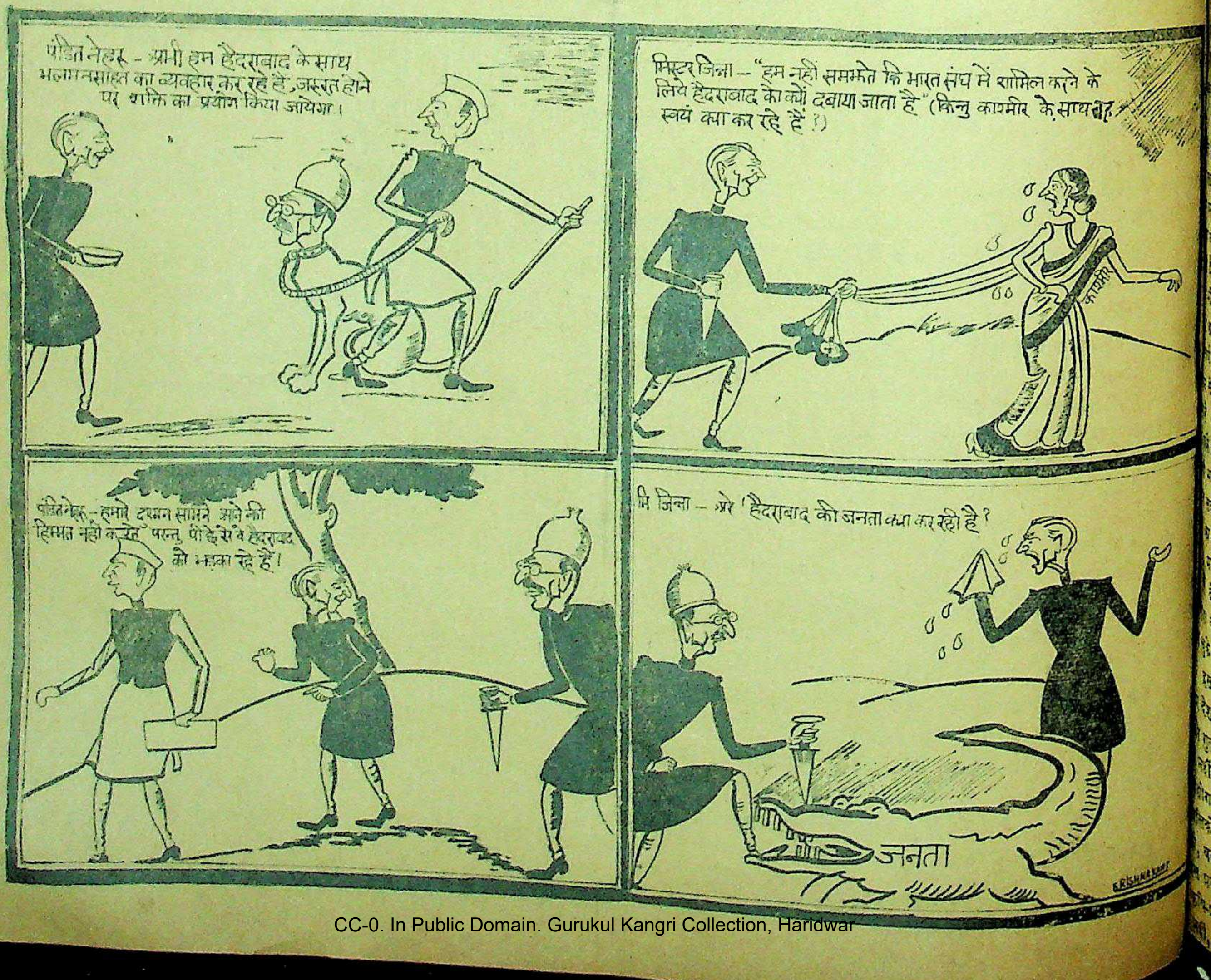
पंडित नेहरू - अभी हम हैदराबाद के साथ भलामनसाहत का व्यवहार कर रहे हैं, जरूरत होने पर शक्ति का प्रयोग किया जायेगा।
मिस्टर जिन्ना — "हम नहीं समझते कि भारत संघ में शामिल करने के लिये हैदराबाद को क्यों दबाया जाता है" (किन्तु काश्मीर के साथ वह स्वयं क्या कर रहे हैं ?)
काश्मीर
पंडित नेहरू - हमारे दुश्मन सामने आने की हिम्मत नहीं करते परन्तु पीछे से वे हैदराबाद को भड़का रहे हैं।
मि जिन्ना — अरे 'हैदराबाद की जनता क्या कर रही है ?
जनता
KRISHNA

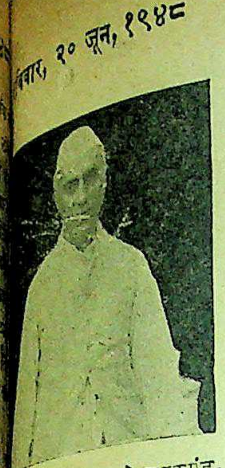

जवाहरलाल नेहरू ने ऊटकमंड-
न का उद्घाटन किया था।

हो में मद्रास-प्रांत के ऊटकमंड दक्षिण-पूर्वीय और सुदूर पूर्वीय प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन इसकी तुलना एशियन कान्फ्रेंस जा सकती, क्योंकि उसमें समस्त प्रतिनिधित्व था और विदेशी देशों का प्रतिनिधित्व न था। स्वतन्त्र एशिया की प्रतिनिधि सम्मेलन में एशिया के स्वतन्त्र थे। साथ ही परतन्त्र देशों अर्थात् ब्रिटेन, फ्रांस, हालैंड देशों का प्रतिनिधित्व कर और अमरीका भी आमन्त्रित कुल अठारह देशों के इस सम्मेलन में भाग

पूर्व एशियन कान्फ्रेंस हुई और स्वतन्त्र एशिया किया था। उसमें एशिया देश और परतन्त्र देशों के आन्दोलन सम्मिलित थे; परन्तु का मुख्य ध्येय एशिया की व्यवस्था में सुधार करना

बीच योरोपीय देशों को भारी पड़ी। एशिया के भी अनेक देशों हुई और वहाँ काफी बड़े पैमाने हुई है। जिन देशों में युद्ध नहीं की आर्थिक व्यवस्था भी बिगड़ जैसे भारतवर्ष कृषि-प्रधान देश है, वह अपनी आवश्यकता भर के उत्पन्न नहीं कर सकता और लगभग १०० करोड़ रुपये का अन्न मँगाना पड़ता है। लड़ाई के बीच उद्योग-धन्धे पुराने और निकम्मे क्योंकि योरपीय और अम- जिनके हम आश्रित हैं, नहीं इञ्जिन न मिलने के कारण बुरा हाल है। इसी प्रकार चीन, इण्डोनेशिया, इण्डोचीन देशों की अवस्था का अन्दाज जा सकता है। ये देश समराङ्गण है।

अतिरिक्त, एशियाई देश पिछड़े रहे हैं। वे गुलाम देश रहे हैं; गुलाम देश केवल विदेशी शासन से नहीं बनता, आर्थिक शोषण और से भी गुलाम रहता है। विदेशी ने न केवल आर्थिक उन्नति नहीं उसकी उन्नति को रोका भी। एशिया के लगभग सारे देश हैं और कृषि का ढङ्ग भी नया आदम के जमाने का है।

दक्षिण और सुदूर पूर्व एशिया

ऊटकमंड में होनेवाले आर्थिक सम्मेलन पर एक विहग दृष्टि

लेखक, प्रोफेसर आशाराम, एम० ए०

(राजनीति-विभाग, प्रयाग-विश्वविद्यालय)

> पिछले दिनों ऊटकमन्ड में दक्षिण-पूर्व और सुदूर पूर्व के देशों के प्रतिनिधियों का एक आर्थिक सम्मेलन हुआ था। कई देशों के प्रतिनिधि सम्मेलन में उपस्थित थे। भारत के प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने सम्मेलन का उद्घाटन किया था। सम्मेलन में इस प्रश्न पर विचार हुआ था कि इन देशों तथा भारत के बीच आर्थिक दृष्टि से किस प्रकार का सम्बन्ध स्थापित हो। इस लेख में विद्वान् लेखक ने इसी सम्बन्ध में विचारपूर्ण विवरण देते हुए सम्मेलन के महत्त्व पर प्रकाश डाला है। लेख अत्यन्त सामयिक, पठनीय तथा सुंदर है।

अतएव एशिया के सम्मुख प्रश्न है आर्थिक उन्नति का, औद्योगीकरण, कृषि-सुधार, व्यापार-वृद्धि, यातायात के साधनों का, समुचित प्रबन्ध का।

इन प्रश्नों पर विचार करने के लिए उपरोक्त आर्थिक सम्मेलन का आयोजन हुआ, परन्तु इस सम्मेलन में भी दो दल दीख पड़ते हैं। एक वह दल है जो एशिया को स्वतन्त्र देखना चाहता है, उसकी आर्थिक उन्नति चाहता है। इस दल में सम्मिलित हैं भारतवर्ष, पाकिस्तान, बर्मा और रूस। दूसरी ओर वह दल है जो एशिया को गुलामी की जञ्जीरों में जकड़ना चाहता है, जो एशिया की आर्थिक और राजनीतिक उन्नति में बाधक है। इस दल के मुखिया हैं अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस, हालैंड और उनके पिछलग्गू फिलीपाइन द्वीपसमूह, न्यूजीलैंड आस्ट्रेलिया आदि। चीन, थाईलैंड आदि भी अपने मालिकों के खिलाफ मुँह नहीं खोलते, स्वतन्त्रता का साथ नहीं देते।

उपरोक्त कथन की पुष्टि दो उदाहरणों से होती है। इस कान्फ्रेंस में इण्डोनेशिया प्रजातंत्र की सदस्यता और एशिया-संबंधी आर्थिक नीति पर विचार-विनिमय और निर्णय हुए हैं और इन दोनों प्रश्नों पर दो पक्षों ने दो मत प्रकाशित किए हैं। वे इस प्रकार हैं—

(१) इण्डोनेशिया प्रजातन्त्र की सदस्यता का प्रश्न। पाठक जानते हैं कि इण्डोनेशिया प्रजातंत्र आज भी अपनी स्वतन्त्रता के लिए साम्राज्यशाही हालैंड के विरुद्ध लड़ रहा है। यह देश एशिया के प्रमुख देशों में से है इसकी जन-संख्या सात करोड़ है, इसकी आर्थिक शक्ति महान् है। यहाँ रबर, मिट्टी का तेल, चीनी, टीन आदि पैदा किए जाते हैं।

भारतवर्ष ने प्रस्ताव रक्खा कि इण्डोनेशिया आर्थिक दृष्टि से एशिया का महत्त्वपूर्ण देश है। इसको स्वतन्त्र रूप से सम्मेलन का [illegible] चाहिए। लगभग एक-तिहाई इण्डोनेशिया पर स्वतन्त्र प्रजातन्त्र शासन स्थापित हो चुका है, शेष को स्वतन्त्र होना है। इस देश को एक प्रकार से अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में समानता का स्थान मिल ही चुका है, जैसे हवाना कान्फ्रेंस में। इस देश का प्रतिनिधित्व हालैंड नहीं कर सकता, और न हालैंड अधिकृत इण्डोनेशिया के अन्य भाग ही कर सकते हैं, क्योंकि वे स्वतन्त्र नहीं और उनका प्रतिनिधि हालैंड की कठपुतली होगा।

पाकिस्तान ने इसका समर्थन किया और कहा कि साम्राज्यशाही देशों को अपने गुलामों के स्थान में बोलने का कोई अधिकार नहीं। इस प्रश्न पर रूस और बर्मा ने भारतवर्ष का साथ दिया। आस्ट्रेलिया ने भी।

परन्तु हालैण्ड ने इसका भरसक विरोध किया। हालैण्ड का कहना था कि कानून की दृष्टि से इण्डोनेशिया का कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं। वह हालैण्ड-साम्राज्य का एक प्रान्त है और इस साम्राज्य का नैतिक प्रतिनिधि इण्डोनेशिया का प्रतिनिधि है, फिर इण्डोनेशिया की एकता के हित में यही है कि स्वतन्त्र और प्रजातन्त्र इण्डोनेशिया को भी परास्त और गुलाम दो-तिहाई इण्डोनेशिया के साथ नत्थी कर दिया जाए। आपने, इस संबंध में हॉलैण्ड-साम्राज्य की प्रशंसा भी की।

साम्राज्यवाद के पोषक अमरीका, ब्रिटेन और फ्रांस ने अपने मित्र का साथ दिया; परन्तु आश्चर्य तो यह कि एशियाई देश कहलानेवाले फिलीपाइन ने अपने मालिक अमरीका को भी मात कर दिया और निर्लज्जता के साथ अमरीकी और हालैंड के दृष्टिकोण का समर्थन किया; और अपने को स्वतन्त्र कहनेवाली चीनी और थाई सरकारों ने डर के मारे मुँह खोलने से इनकार कर दिया।

इस प्रश्न पर साम्राज्यवादियों की जीत हुई और इण्डोनेशिया देश इस सम्मेलन का स्वतन्त्र सदस्य न बन सका।

(२) एशिया की आर्थिक उन्नति का प्रश्न। इस प्रश्न पर भी दो विपरीत मत हैं।

एशिया ने गुलामी देखी है। अब वह अँगड़ाइयाँ ले रहा है और स्वतन्त्र होना चाहता है। वह दासता की बेड़ियों को पहचानता है। अतएव भारतीय तथा कुछ अन्य प्रतिनिधियों की ओर से माँग है कि एशिया की आर्थिक उन्नति की जाए। यह उन्नति ऐसी हो जिससे एशिया के देश स्वतन्त्र हों, गुलाम न रह जायँ।

एशिया के सम्मुख अनेक औद्योगिक यातायात और कृषि-सम्बन्धी समस्याएँ हैं। औद्योगीकरण के बिना राष्ट्र की सम्पत्ति नहीं बढ़ सकती। औद्योगीकरण भी मूल व्यवस्थाओं और यातायात के साधनों तथा कृषि-प्रणाली का होना चाहिए जिससे उपरोक्त देश केवल कच्चा माल बेचनेवाले भर न रह जायँ।

एशिया को योरोपीय सहायता की अत्यन्त आवश्यकता है। सहायता के बिना औद्योगीकरण असम्भवप्राय होगा। एशिया को मशीनों की आवश्यकता है। इधर बदले में एशिया कच्चा माल बेच सकता है; परन्तु योरपीय और अमरीकी देशों की यह सहायता बिना बन्धनों के

शेष पेज १६ पर देखिए

भारत के चलते-चलाते वाइसराय लार्ड लुई माउंटबेटेन दिल्ली-स्थित ईरानी राजदूत से हाथ मिला रहे हैं।

डाक्टर कैलाशनाथ काटजू

सुप्रसिद्ध राष्ट्रवादी नेता तथा पश्चिमी बंगाल के नये गवर्नर

लेखक, श्री पुरुषोत्तमदास टंडन, बी० ए०, एल्-एल० बी० (पत्रकार)

सुप्रसिद्ध राष्ट्रवादी और नेता डाक्टर कैलाशनाथ काटजू की योग्यता तथा देश-सेवा से कौन परिचित नहीं है ? डाक्टर काटजू बहुत दिनों तक संयुक्तप्रांतीय सरकार के विकास तथा न्याय-मंत्री के पद पर प्रतिष्ठित थे। इसके बाद आप उड़ीसा के गवर्नर के पद पर नियुक्त हुए और अब आप माननीय श्री राजगोपालाचार्य के रिक्त स्थान की पूर्ति के लिये पश्चिमी बंगाल के गवर्नर के पद पर २१ जून को प्रतिष्ठित हो रहे हैं। इस लेख में पत्रकार ने डाक्टर काटजू के राष्ट्रीय जीवन तथा उनकी सेवाओं पर सुंदर प्रकाश डाला है, जो पठनीय तथा सामयिक है।

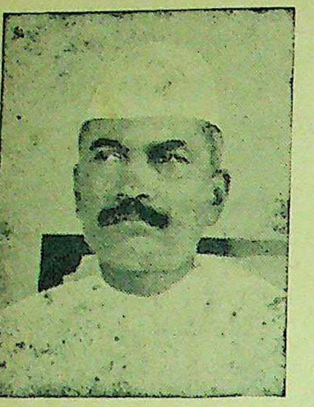

पश्चिमी बंगाल के नये गवर्नर डाक्टर कैलाशनाथ काटजू।

भाग्य ने हिज एक्सलेन्सी डा० कैलाशनाथ काटजू के ऊपर विविध तरीकों से अपनी कृपापूर्ण दृष्टि डाली है। उनको एक वकील के रूप में, बगैर किन्हीं निराशाओं का सामना किये ख्याति प्राप्त हो गई थी। वे कांग्रेस के नेता बगैर अत्यधिक कष्ट सहन के ही हो गये थे जिसके कारण लोगों में अकसर कटुता उत्पन्न हो जाती है। मंत्रित्व पद पर वे बिना किसी दाँव-पेंच के ही आसीन हो गये थे। उनके माँगे हुए बगैर ही उनको एक प्रान्त की गवर्नरी दे दी गई। उड़ीसा के गवर्नर के पद पर उनके नियुक्त हो जाने का समाचार जब मुझे मिला तो मैंने उनसे कहा कि उनको एक दूर-स्थित बियाबान में राजनैतिक देशनिकाले का दंड दिया गया है। उन्होंने चुपचाप उत्तर दिया, "युवक तुम यह नहीं जानते कि यहाँ अथवा वहाँ काम करना कोई मेरे बस की बात नहीं, एक बार जब तुम किसी संस्था में हो, तुम्हें बगैर किसी चीं-चपड़ के किसी भी हैसियत से कार्य करने के लिये तैयार रहना चाहिए। मुझे उड़ीसा जाने को कहा गया है और मैं जा रहा हूँ।" वे एक महान् अनुशासनवादी हैं। वे अर्थहीन बातचीत तथा असंगत वाद-विवाद को बिलकुल नापसन्द करते हैं। वे बड़ा मानसिक संयम रखते हैं। अनुशासन-हीन व्यक्ति के लिये उनके निकट कोई स्थान नहीं। वे तब तक बड़े धैर्यशाली हैं जब तक कि कोई बगैर किसी विषयान्तर के, सीधे-सीधे तर्कपूर्ण ढंग से, बुद्धिमत्ता-पूर्वक विवाद कर रहा है। उन लोगों के साथ उनके धैर्य का बिलकुल अन्त हो जाता है जो सम्बन्धित विषय पर न जाकर इधर-उधर की अर्थहीन बातचीत करते हैं। अपनी वकालत के समय में उन्होंने अपने कुछ मुवक्किलों को, उनकी असंगत और अर्थहीन बातचीत का शिकार बनने से इनकार करके, नाराज कर दिया था।

एक बार उनके कक्ष में एक मुवक्किल ने उनको कुछ फाइलों में व्यस्त देखा और ऐसी चीजों के बारे में बातें करने लगा जिनसे होनेवाले मुकदमे का कोई भी सम्बन्ध नहीं था। उन्होंने उस मुवक्किल से कहा कि वे फाइलों से ही सब आवश्यक बातें जान लेंगे और उसे चुप हो जाना चाहिए; पर मुवक्किल बड़बड़ाता ही चला गया और डा० काटजू ने एक कागज निकालकर उसको पढ़ना आरंभ कर दिया। अपने वकील की उपेक्षा पर जिसको कि वह एक अच्छी रकम देने जा रहा था, मुवक्किल आश्चर्यचकित रह गया, किन्तु उन्हें छोड़ने का उसे साहस न हुआ, क्योंकि मुकदमें के लिए डा० काटजू को, जैसा कि बार में उन्हें पुकारा जाता था, इस मुवक्किल के विपक्षी निश्चित रूप से अपनी ओर लगा लेते और वह हार जाता। उसके चले जाने पर डा० काटजू ने कहा, "मैं नहीं जानता कि लोग मेरे पास क्यों आते हैं ? मैं तुम्हें बताऊँ कि कानून की मेरी जानकारी पर्याप्त नहीं है।" "आप की जानकारी कानून के विषय में पर्याप्त नहीं है ?" मैंने आश्चर्य में प्रश्न किया। उन्होंने उत्तर दिया, "हाँ, मैं चाहता हूँ कि तुम इस पर विश्वास कर लो।" कानून का अधिक गहरा ज्ञान चाहे उन्हें न हो, किन्तु अपने पक्ष का समर्थन करने में वे अत्यन्त दक्ष हैं तथा तथ्यों की उनकी विवेचना बड़ी ही विकराल है। इसके अतिरिक्त वे अपने निर्णायकों को अपने मुकदमों से भी अधिक अच्छी तरह जानते थे और इसी बात का बहुत महत्त्व हुआ करता था।

मैंने डा० काटजू का बाहर की अपेक्षा जेल के अन्दर अधिक पर्यवेक्षण किया। वे नैनी सेन्ट्रल जेल में आदरणीय बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन तथा स्वर्गीय श्री आर० एस० पंडित के साथ रखे गये थे। उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं था, किन्तु उनकी हालत और भी खराब होने का कारण "कार्य का अभाव" था। वे एक कठिन परिश्रम करनेवाले, तत्क्षण विचारक तथा एक अत्यधिक सतर्क व्यक्ति हैं। उनकी मानसिक जागरूकता, तथा तथ्यों का तात्कालिक पारिग्रहण उल्लेखनीय है। जेल में इस कार्यहीनता को उन्होंने शीघ्र ही समाप्त कर दिया और नियमित घंटों में अध्ययन-कार्य आरम्भ कर दिया। वहीं पर उन्होंने संस्कृत का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया और दूसरी बहुत सी किताबें पढ़ीं। नैनी सेन्ट्रल की एक कोठरी में ही उन्होंने आत्म-कथा के ढंग की, उससे बहुत कुछ मिलती-जुलती हुई, एक किताब लिखी जो आज तक प्रकाशित नहीं हुई है तथा जो केवल कुछ मित्रों द्वारा ही पढ़ी गई है। जीवित लोगों के उस कब्रिस्तान—जेलखाने में वह एक अच्छे सहवासी थे। अपने साथ के कैदियों से वे साथियों का-सा व्यवहार करते थे तथा उनके साथ बराबरी का बर्ताव रखते थे। वे उनके दुख-सुख दोनों में ही समान रूप से भाग लेते थे। वे उनके साथ तास खेला करते थे तथा और दूसरे कैदियों में सम्मिलित होते थे। एक कैदी के रूप में डा० काटजू

सार और उदार थे, एक वकील की हैसियत से, एक 'मुकदमा जीतनेवाले' तथा एक जबर्दस्त विपक्षी, एक मन्त्री के रूप में, कार्य-दक्ष तथा न्याययुक्त, तथा एक गवर्नर के रूप में वे अत्यन्त राजसी तथा उदार, एवम् एक मित्र की हैसियत से वे प्रेमपूर्ण तथा सहायता करने को सदा उद्यत हैं।

सफलता अकसर मृगमरीचिका के नाम से पुकारी जाती है; किन्तु डा० काटजू के सम्बन्ध में यह अधिकतर वैज्ञानिक ढंग से क्रम के अनुसार सम्भवतः पूर्व योजना द्वारा प्राप्त की गई है। उनको अपने सम्बन्ध में कभी कोई गलतफहमी तथा दूसरों के विषय में कोई गलत धारणा नहीं हुई। ईमानदारी और कठिन परिश्रम द्वारा उन्होंने देश में अपने लिये एक स्थान बना लिया है। उन्होंने दलगत राजनीति से अपने को अलग रक्खा है तथा वस्तुओं को वे किसी संकीर्ण तथा दलगत दृष्टिकोण से नहीं देखते। वे किसी पार्टी में सम्मिलित नहीं हुए, किसी दल मे उन्होंने कोई सम्बन्ध नहीं रखा और न वे किसी गुट-बन्दी में शामिल हुए। उन्होंने किसी का भी व्यक्तिगत उद्देश्य की पूर्ति के लिये समर्थन नहीं किया, न व्यक्तिगत मनमुटाव अथवा शत्रुता के कारण किसी का विरोध किया; किन्तु उन्होंने हमेशा अपना मत साफ साफ प्रकट किया; तथा वही कार्य किया जिसे उन्होंने उचित और ठीक समझा। इसका परिणाम यह है कि युक्तप्रान्त में डा० काटजू को अपने देश-भाइयों की प्रशंसा प्राप्त है; किन्तु उनके अनुयायियों की संख्या कम है, क्योंकि वे किसी पार्टी के नेता नहीं और न किसी दल से उनका सम्बन्ध है। वे बिना पार्टी के नेता हैं। वे स्वयं अपने नेता, स्वयं अपनी पार्टी तथा स्वयं अपने अनुगामी हैं। इस अर्थ में एक तरीके से, जवाहरलाल के साथ उनका साम्य है।

डा० काटजू का जन्म जौरा में १८८७ की १७ जून को हुआ था। छोटे कैलाश की शिक्षा के लिये उनके माता-पिता के पास बहुत नियमित साधन थे; किन्तु पढ़ने के लिये अपने बच्चे का उत्साह देखकर उन्होंने उसके लिये अपने भरसक प्रयत्न किये। काटजू को अपने माँ बाप की आर्थिक सीमाओं का हमेशा ख्याल रहा तथा हाल ही में उन्होंने लिखा "मेरे माता-पिता ने मुझे लाहौर और इलाहाबाद भेजकर अपने ऊपर बहुत बोझ डाल लिया

मैट्रीकुलेशन पास किया और में बी० ए० की डिग्री प्राप्त वे विज्ञान के डाक्टर होना चाहते किन्तु कानून के डाक्टर हुए उनके मस्तिष्क के इस अचानक प के विषय में एक दिलचस्प कहानी पंजाब यूनिवर्सिटी से बी० ए० करने पश्चात् वे कानून का अध्ययन कर लिये प्रयाग आये। उन्होंने १९० इलाहाबाद विश्वविद्यालय से ए० और एल्-एल० बी० की प पास कीं जिसने अभी हाल में डाक्टर की उपाधि प्रदान की। कथा प्रकार है कि युवक काटजू ने अपने वार का बोझ हलका करने के विचा किसी रियासत में एक नौकरी प्राप्त का यत्न किया; किन्तु वह उन्हें नहीं मि इसने उस समय चाहे उनको निरुत्सा कर दिया हो, किन्तु बाद में उन्हें अ यह प्रतीत हुआ होगा कि उनकी असफलता उनके लिये एक महान् सौभा की बात हुई। यदि वे उन दिनों रियासती नौकरी में चले गये होते तो कुसंगत में नष्ट अथवा बिलकुल लो होते। १९०८ में वे कानपुर आये पंडित पृथ्वीनाथ की छत्रछाया में अप वकालत आरंभ कर दी जो कि उनका बड़ा ख्याल रक्खा करते थे। वे अब भी इन महान् पंडित की चर्चा आदर और कृतज्ञता के शब्दों में किया करते हैं। उनके साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करनेवाले दू व्यक्ति प्रसिद्ध काश्मीरी ब्राह्मण सर ते बहादुर सप्रू थे और वे उनके प्रति आभारी हैं। १९१४ में वे इलाहाबाद हा कोर्ट की बार के एक सदस्य हो गये। उनकी प्रारम्भिक अवस्था थी किन्तु उन्हें अपने मन में कहा कि किसी न किसी दि वे हाईकोर्ट के सबसे चमकदार का सितारों में से होंगे। यह अपने से कि गया एक वादा था और उसको उन्हों पूरा किया। यहाँ तक कि इस समय भी उ अकसर अपने मुवक्किलों के बधाई के मिलते रहते हैं जिनके मुकदमों की उन्हों पैरवी की थी और निर्णय अब सुनाये रहे हैं। कानूनी कार्य के लिये उनके अन्दर उत्कट प्रेम था और कभी कभी गवर्न हाउस में कभी जागते हुए कभी सोते हु किसी मुकदमे, किसी न्यायाधीश, कि न्यायालय का स्वप्न वे अवश्य देखते हों पुराने प्रेम की गाँठ बड़ी कठिनता से छु छूटती है और कवि की ये पंक्तियाँ उन पूरी तौर से लागू होती हैं।

ओ कानून ! तुझे मैंने था
अपने ढँग से प्यार किया,
इस अति प्रेम पुराने ने तो
है मुझको बीमार किया॥

डा० काटजू की बातचीत बड़ी दि चस्प होती है। उनके अन्दर एक आ की भावना है। वे दूसरों की तथा अपनी भी की गई हँसी-दिल्लगी का आ उठाते हैं। उनके चेहरे पर एक आ रहती है जब कि उन्हें प्रतीत होता उनके सुननेवाले बुद्धिमान हैं तथा को समझते हैं और शून्य आँखों से, झूठमूठ सर हिलाते हुए अबुद्धिमा ढंग से हाँ में हाँ करनेवाले नहीं

देशदूत चित्रावली

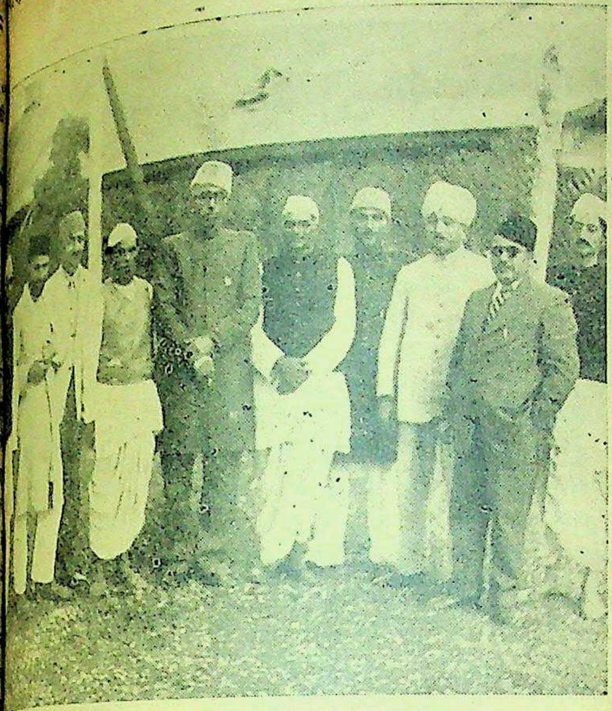

प्रजामंडल के कार्य-कर्ताओं तथा पदाधिकारियों के साथ शेरे काश्मीर ।राज्य-प्रजामंडल के यह कार्य-कर्ता शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में काश्मीर में स्थापना में लगे हुए हैं। शत्रुओं के आक्रमण से भी यह काश्मीर की रक्षा कर रहे हैं।

काशी विश्वविद्यालय के डाक्टर सद्गोपाल प्रथम भारतीय हैं जो अमरीकन तैल खोज-समिति के सदस्य नियुक्त हुए हैं।

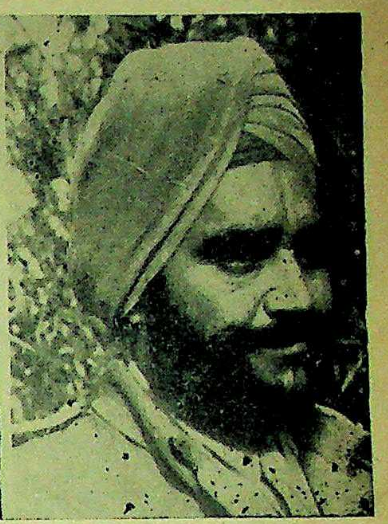

लेफ्टिनेन्ट कर्नल लखवीरसिंह, पूर्वी पञ्जाब में प्रान्तीय स्वयंसेवक दल के प्रधान कमांडर बनाये गये हैं।

पीर इलाहीबख्श नवाजाली सिंध के प्रधान मंत्री बनाये गये हैं। भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री खूरो निकाल दिये गये।

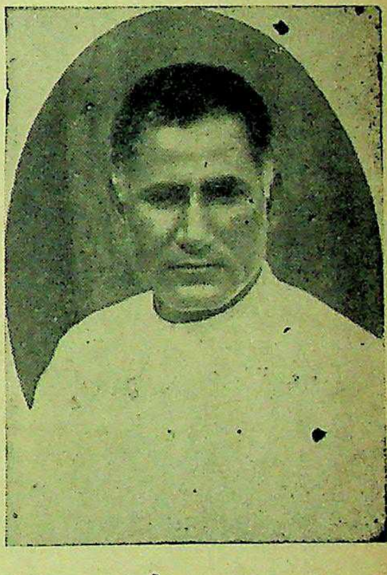

सरदार हरलालसिंह, जयपुर राज्य-प्रजामंडल के नये सभापति चुने गये हैं। आप किसानों के नेता हैं।

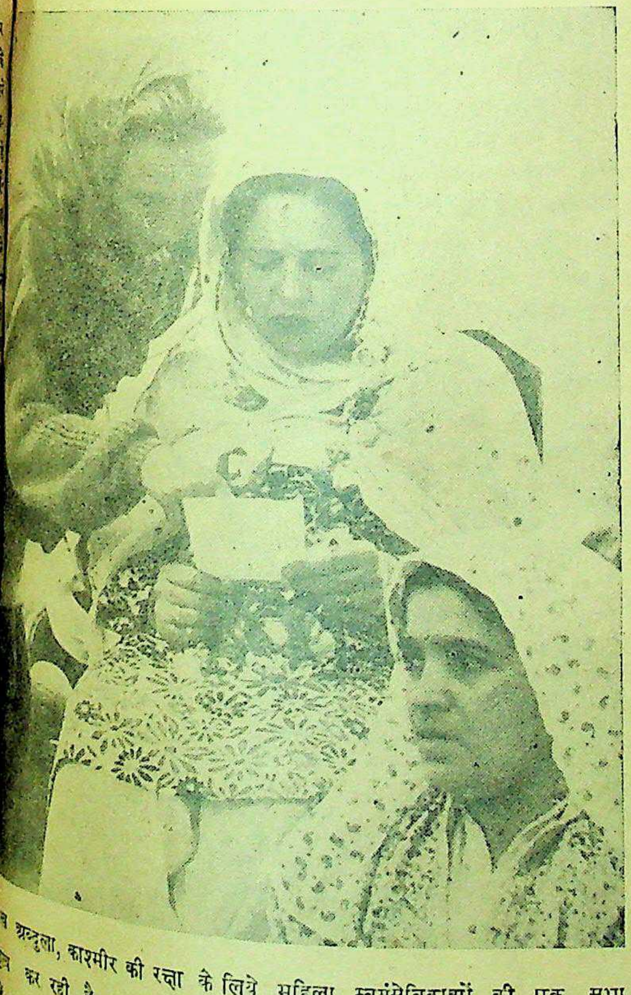

अब्दुल्ला, काश्मीर की रक्षा के लिये महिला स्वयंसेविकाओं की एक सभा कर रही है। आप श्री फरीदा वेदी से बातें करती हुई दिखाई ।काश्मीर में महिला स्वयंसेविकाओं का एक विशाल संगठन किया गया है, ओं से देश की रक्षा करने में योग दे रहा है। बेगम शेख अब्दुल्ला इस दल का नेतृत्व करती हैं।

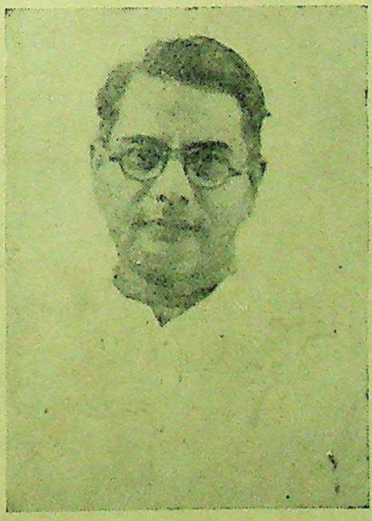

श्री के० के० कृष्णम्माचारी, मध्य-प्रान्तीय धारा-सभा के सदस्य, लन्दन में होनेवाले पौंड-पावने की वार्ता में प्रतिनिधि बनकर गये थे।

पंडित टीकाराम पालीवाल, जयपुर राज्य-प्रजामंडल के भूतपूर्व सभापति जयपुर के नये अर्थ-मंत्री बनाये गये हैं।

मध्य-भारत-संघ का संगठन

रियासतों को एक सुदृढ़ इकाई में सुदृढ़ होने का मार्ग प्रशस्त है

लेखक, श्री सहदेव चक्रवर्ती विद्यालङ्कार (पत्रकार)

> मध्य-भारत-संघ की स्थापना हो चुकी है। पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने संघ का उद्घाटन किया था। संघ के राजप्रमुख महाराजा ग्वालियर हैं। इस लेख में विद्वान् लेखक ने मध्य-भारतीय संघ के संगठन पर ज्ञातव्य प्रकाश डाला है, जो पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

मध्यभारत संघ के राजप्रमुख महाराजा ग्वालियर।

मध्यभारत संघ के प्रधान मंत्री लीलाधर जोशी।

अट्ठाईस मई को मध्य-भारत की २२ रियासतों के संघ का उद्घाटन भारत के प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने किया। अब यह संघ भारत-संघ का एक अविच्छिन्न अंग बन गया है। अब मध्य-भारत के संघ की रियासतों को संगठित करने की समस्या शेष रह गई है। मध्य-भारत की संगठन-समिति इस दिशा में सन्तोषजनक तथा सराहनीय प्रयास कर रही है। किन्तु इस संगठन-समिति को अपना कार्य करते समय कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। संगठन-सम्बन्धी इन समस्याओं को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है—(१) राजनीतिक संगठन, (२) शासनात्मक संगठन, जिसमें विभागों, कानूनों और भूमि-अधिकार नियम का भी संगठन सम्मिलित है, और (३) भौगोलिक संगठन और जिलों का निर्माण।

मध्य-भारत-संघ की रियासतों का संगठन करते समय निम्न चीजों का भी ध्यान रखना होगा—

(१) अन्तरिम काल में भी (अर्थात् संघ-सरकार के नये सेक्रेटेरियट और विभागों द्वारा सब स्थानों पर कार्य आरंभ होने से पूर्व) जब शासक नियुक्त किये जायँ तो जनता का उन्हें शासन-प्रबन्ध में सक्रिय सहयोग प्राप्त होना चाहिये। इस दिशा में जनता की इच्छा तथा लोकतन्त्र का भी ध्यान रखा जाय।

(२) अन्तरिम काल, जिसमें संगठन का कार्य चालू रहेगा, बहुत लम्बा होने की अपेक्षा अत्यन्त सीमित होना चाहिये।

(३) प्रमुख पदों पर नियुक्त करते समय मध्य-भारत की जनता को प्राथमिकता दी जाय। यदि बाहर के व्यक्तियों को पदों पर आसीन करने की आवश्यकता अनुभव भी हो तो उन्हें इस शर्त पर नियुक्त किया जाय कि वे अधिक से अधिक एक वर्ष की अवधि में मध्य-भारत के सब नये कर्मचारियों को उनके कार्य में निपुण कर देंगे। इससे मध्य-भारत संघ को अपने पैरों पर खड़ा होने का अवसर मिलेगा।

संगठन की समस्या

संगठन-समिति को मध्य-भारत की रियासतों का राजनीतिक संगठन करते समय कोई विशेष कठिनाई अनुभव नहीं होगी। समझौता-पत्र में राजप्रमुख को संघ का वैधानिक शासक स्वीकार किया गया है। संघ की एक शासन-परिषद् और धारा-सभा भी होगी। एक शासन-विभाग भी बनेगा। संघ के हाईकोर्ट की शाखाएँ इन्दौर और ग्वालियर दोनों स्थानों पर रहेंगी। इस समय राजप्रमुख की नियुक्ति तो हो चुकी है। केन्द्रीय शासन-परिषद् की भी घोषणा हो जायगी और अन्तरिम धारा-सभा का भी निर्माण हो रहा है। इस प्रकार राजनीतिक संगठन की समस्या तो हल हो ही जायगी।

किन्तु शासन के संगठन की समस्या अत्यन्त जटिल है। इस समस्या के अन्तर्गत नाना प्रकार के सेक्रेटेरियट विभाग, चुंगी व कर, हिसाब-किताब की प्रणाली, पुलिस, न्यायालय और भूमि-अधिकार को नियम का संगठन सम्मिलित है। इस चीज का भी ध्यान रखना पड़ेगा कि मध्य-भारत की छोटी और बड़ी रियासतों का भूमि-अधिकार-नियम, हिसाब-किताब, बजट-व्यवस्था और कानून भिन्न-भिन्न हैं। इन सबको समान आधार पर संगठित करने तथा उनके एकीकरण की आवश्यकता है। निःसन्देह इस कार्य की पूर्ति में पर्याप्त समय लगेगा। फिर भी संगठन का यह कार्य थोड़े समय में सम्पन्न हो जाना चाहिये।

शासन का सर्वोत्तम प्रकार

मध्य-भारत-संघ का शासन-केन्द्र सचिवालय (सेक्रेटेरियट) होना चाहिए। संघ-सरकार के सब विभागों तथा शासन के संचालन के लिये ८ या ९ मन्त्री नियुक्त करने चाहिये। प्रत्येक विभाग के मन्त्री की सहायता के लिये सेक्रेटरी भी नियुक्त किये जायँ। इन सेक्रेटरियों को सब प्रकार की दफ्तरी कार्रवाई को नियमित रूप से सम्पन्न कराने का पूर्ण अधिकार होना चाहिये। विभागों के मन्त्री शासन के सम्बन्ध में जो नीति निर्धारित करें उसे चालू करने का काम सेक्रेटरियों का ही है।

मध्य-भारत की पब्लिक सर्विस कमीशन भिन्न-भिन्न राज्यों में कार्य कर रहे सेक्रेटरियों को संघ-सरकार के सेक्रेटरी नियुक्त कर सकता है। क्योंकि संघ में ग्वालियर और इन्दौर दो प्रमुख रियासतें हैं, इसलिये नियुक्तियाँ करते समय उनकी ओर ध्यान देना आवश्यक है। सेक्रेटेरियट की तरह विभागों का संगठन भी किया जाना चाहिये। जहाँ तक कर स
सम्बन्ध है, सब रियासतों में
तथा कर-सम्बन्धी प्रतिबंधों को ह
जाना चाहिये। इन दोनों पर के
सरकार का ही नियन्त्रण हो।
आय-कर, मृत्यु-कर और कार
म्युनिसिपल करों को संचित
सुचारु प्रबन्ध न हो जाय तब तक
की सीमाओं पर कर संचित होने
जाय। भिन्न-भिन्न रियासतों के
को परिवर्तित करके संघ
१ जनवरी से ३१ दिसम्बर तक
किया जाय। संघ की पुलिस
सी० आई० डी० भी सम्मिलित
के इन्स्पेक्टर-जनरल पुलिस का
होना चाहिये।

कानून और न्यायालय

कानूनों और न्यायालयों के
का कार्य संगठन-समिति के लिये
परिश्रमसाध्य होगा। इस सम्बन्ध
भारत को भी वही योजना
चाहिये जो बम्बई के न्याय वि
दक्षिण की रियासतों के प्रान्त में
के बाद अपनाई थी। बम्बई के
विभाग ने बम्बई-सरकार के
प्रान्त में मिली रियासतों में
कानूनों के अध्ययन के लिये
कारियों को भेजा था। अब उन

शेष पेज १४ पर

भारत सरकार, पाकिस्तान, पश्चिमी तथा पूर्वी पंजाब के प्रतिनिधि भारत-पाकिस्तान के बीच बहनेवाली नहरों के संबंध में वार्ता कर रहे हैं।

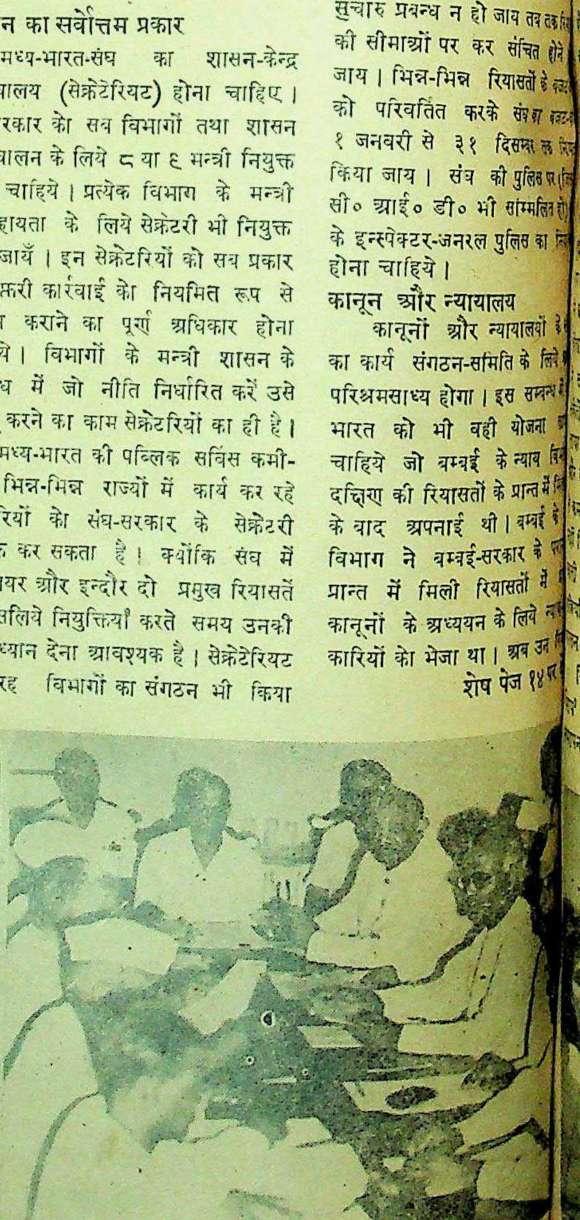

भारत सरकार के देशी राज्य विभाग के मंत्री श्री मेनन, देशी राज्यों [illegible] से नये विधान पर वार्ता कर रहे हैं।

पत्नियाँ अपने पतियों का नाम क्यों लेती हैं ?

'कामरेडशिप' की नवीन भावना अपनी चरम सीमा पर

लेखिका, कुमारी विमलादेवी राजदान, बी० ए०

आजकल 'कामरेडशिप' की भावना विचार-धारा सामाजिक जीवन में युग उत्पन्न कर रही है। पति त्नी एक दूसरे का नाम लेकर करते हैं। ऐसे 'कामरेडों' और डानियों' का एक अलग ही वर्ग जा रहा है। यह वर्ग शहरों में पढ़ी-जमात में उत्पन्न हो रहा है। यद्यपि आबादी ४० करोड़ है और इनमें खे स्त्री-पुरुष भी सम्मिलित हैं; किन्तु में अभी वही प्राचीन-रीति नीति त्नी के बीच कायम है। पति को नाम लेते हुए तो सुना, देखा भी गया है; किन्तु पत्नी पति लेकर संबोधित करती हो ऐसा दृष्टि से कभी नहीं सुना गया। से पढ़ी-लिखी जमात में स्त्री-युक्त मोर्चे की स्थापना की चर्चा और सार्वजनिक जीवन में बराबरी से कार्य करने की ओर प्रवृत्ति से 'कामरेडशिप' अपना व्यापक ने लगा है। गोस्वामी तुलसीदास रामायण में राम के मुख से नाम कहलवाया है; किन्तु सीता स्थलों पर जब अवसर आया द्वारा ही राम को अपना पति बत-है। पत्नियाँ सदैव ही शील, संकोच की देवियाँ रही हैं, इसलिए कम उन्होंने कभी मर्यादा का उल्लंघन किया। यही परम्परा सदा से भारत में आई है। पढ़ी जमात हो अनपढ़ी आज भी अपनी उसी मर्यादा का करती आ रही हैं।

किन्तु अब तो नया युग है। 'कामरेड- सहयोग और संयुक्त मोर्चे की ना की भावना व्यापक बनती जा रही है। पुरुष के लिए वीरता, स्पष्ट-वादिता तथा भौतिकता की आवश्यकता नहीं और स्त्री के सामने शील, संकोच और लज्जा की कोई कीमत नहीं। अब पति को संबोधन करने की 'यह' और 'वह' की परिपाटी समाप्त हो रही है। कुटुम्ब में माता, पिता, बहन तथा अन्य बड़े अपने से छोटों का नाम लेकर जिस तरह पुकारते हैं, उसी प्रकार पत्नी भी पति का नाम लेकर सम्बोधन करती है। परोक्ष में पति महोदय शायद यह आवाज भाँप जाएँ कि उन्हें कौन पुकार रहा है, नहीं तो उन्हें क्या पता कि पत्नी उनका नाम लेकर बुला रही है या माता। 'कामरेडशिप' के विस्तार की यह चरम सीमा वास्तव में चरम सीमा पर पहुँच रही है। सच तो यह है कि जब पति और पत्नी में पति-पत्नी होने की भावना ही नहीं है और उसका स्थान ले लिया है सार्वजनिक मित्रता ने तो लज्जा, शील, संकोच और पत्नीत्व की भावना की आवश्यकता क्या है ? जीवन-क्षेत्र में फिर पति को 'यह' 'वह' पुकारने से काम नहीं चल सकता।

वास्तविक बात यह है कि मुझे इसका पहले कुछ ज्ञान भी नहीं था। मुझे इसका अनुभव उस दिन एकाएक हुआ जब मैं अपनी एक सहपाठिनी शीला के यहाँ चाय पीने गई। हम लोग चाय पीने के लिए बैठे। शीला, उसका पति और मैं। शीला ने अपने पति से मेरा परिचय देते हुए कहा—चंचल (शीला का पति) यह मेरी सहपाठिनी मिस राजदान हैं। चंचल ने मुझसे हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया; किन्तु मैंने दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार किया। चंचल मेरे हाथ न मिलाने से कुछ संकोच में पड़ गया। शीला भी कुछ विचित्र दृष्टि से मेरी और चंचल की ओर देखने लगी। हम लोग चाय पीने लगे। चाय पीते समय शीला ने कितनी ही बार अपने पति का नाम लिया और उसे अमुक अमुक चीज लाने और ले जाने का हुक्म देती रही। बेचारा चंचल शीला का हुक्म बजाने में अपना अहोभाग्य समझ रहा था। चाय पीना समाप्त हुआ। चंचल किसी काम से भीतर चला गया। मैंने शीला से पूछा—क्यों जी, यह सब तुमने कहाँ से सीखा ? क्या विवाह होते ही तुम्हारी दुनिया बदल गई ?

शीला—क्यों क्यों, मुझसे ऐसी कौन-सी खता हो गई ?

मैं—यही कि तुम अपने पति का नाम लेती हो और ऐसी बेतुकी तरह से। तुम्हारे अन्य भाइयों और बहनों को तो ऐसी हवा नहीं लगी; किन्तु तुम्हारी दुनिया तो मुझे कुछ अजीब-सी जान पड़ती है।

शीला बड़े जोर से ठहाका मारकर हँस पड़ी और बोली—बस यही खता हुई, मैंने सोचा कि ऐसी कौन-सी भूल मुझसे हो गई।

मैं—यह कोई भूल ही नहीं है ?

शीला—बहन इसमें बुरा लगने की कोई बात नहीं। चंचल तनिक भी बुरा नहीं मानता। बात यह है कि विवाह के बाद ही से हम लोग एक 'मित्र' और 'सहयोगी' की भाँति रहते हैं। किसानों और मजदूरों में सेवा-कार्य करना पड़ता है। शरणार्थियों के लिए चन्दा वसूल करना पड़ता है। इसी तरह की सेवायें करना हम लोगों का प्रतिदिन का कार्य है। सार्वजनिक जीवन में बताइये पति-पत्नी का शिष्टाचार व्यावहारिक रूप से कैसे निभाया जा सकता है ?

मैं—हाँ-हाँ, सेवा करना तो सुन्दर कार्य है; किन्तु पति-पत्नी की भावना की व्यावहारिकता और शिष्टाचार की रक्षा करते हुए यदि सेवा-कार्य हो तो क्या बुरा है ?

शीला—हाँ कहती तुम ठीक हो, किन्तु हम लोग प्रगतिवादी हैं। प्रगतिवाद का सिद्धांत है आगे बढ़ना, सामाजिक जीवन तथा रूढ़ियों को तोड़ते हुए। तुम्हें यह पता नहीं है कि आजकल हम लोग परम स्वतंत्र हैं। न उनको मेरी फिक्र और न मुझे उनकी। मित्र की भाँति रहते हैं। सचमुच हम लोग बड़े आनन्द से जीवन बिताते हैं।

मैं—यह प्रसन्नता की बात है तुम लोग सुख से रहते हो किन्तु तुम्हारा व्यवहार पति के साथ मुझे प्रिय नहीं लगा, इस पर जरा धैर्य से सोचना। इतने में चंचल आ गया। हम लोग एक दूसरे से विदा हुए।

घर आकर मैं इस सम्बन्ध में बहुत देर तक सोचती रही किन्तु मेरी समझ में नहीं आया कि प्रगतिवाद के आदर्शों का यह कौन-सा नया पहलू है। मार्क्स के दृष्टि-कोण से भी मैंने विचार किया किन्तु दुविधा दूर नहीं हुई। इस प्रकार से पति-पत्नी रूप में रहनेवाले 'मित्रों' और 'सहयोगियों' की संख्या कुछ न कुछ बढ़ ही रही है और समाज में एक सृष्टि का उदय हो रहा है; किन्तु मैं पूछती हूँ कि क्या ऐसे पति-पत्नी का वैवाहिक जीवन वास्तव में सुखी है ? यह तो पति-पत्नी के हृदय से ही पूछा जा सकता है। क्या पत्नी को अपने पति का नाम लेकर पुकारने पर वह 'आत्मतोष' प्राप्त होता है जो संकेत से उसे बुलाने में होता है ? वास्तव में इस प्रकार पति-पत्नी शरीरवादी हैं, प्रगतिवादी नहीं। हृदयवाद तो उन्हें छू तक नहीं गया है। यही पश्चिमी जड़वाद है।

*　*　*

अमृतसर गोविन्द बाग में शरणार्थी महिलाओं को सिलाई की शिक्षा दी जा रही है।

सेंट थामस गर्ल्स स्कूल कलकत्ता की कुछ व्यायाम करनेवाली लड़कियां।

फिल्म ऐक्टर

यदि आप फिल्म ऐक्टर बनकर १००) रु० से १५००) रु० मासिक तक कमाना चाहते हों तो आज ही लिखें। थोड़ा लिखा पढ़ा होना जरूरी है। अपना नाम व पूरा पता साफ लिखें

डायरेक्टर इम्पीरियल चैम्बर,
(फिल्म डिपार्टमैंट)
पो० ब० ६१ (D.D.A.) अमृतसर

सम्पादक के नाम चिट्ठियाँ

देश की साहित्य-संस्थाओं तथा साहित्यकारों से

समाज-शिक्षा की आयोजना में निरक्षरता दूर करने के साथ ही साथ जनता को ऐसी शिक्षा भी देनी है जिससे उसके हृदय और मस्तिष्क का सम्यक् विकास हो सके और वह अपनी राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों से परिचय प्राप्त कर सके; पिछले पाँच सप्ताह में समाज-शिक्षा की जो योजना माननीय मंत्री द्वारकाप्रसाद मिश्र जी द्वारा प्रचारित हुई उसका समस्त प्रांत ने हृदय से स्वागत किया है और सुदूर ग्रामों में भी शिक्षा के लिए बलवती उमंग उत्पन्न हो गई है। इसमें सन्देह नहीं कि इस प्रगति के समय निकट भविष्य में ही प्रांत में जो जन-जागरण होगा वह देश के इतिहास में अभूतपूर्व होगा और अशिक्षा अतीत की वस्तु हो जायगी।

साक्षरता के अनन्तर जनता को हमें स्वस्थ और सुरुचिपूर्ण साहित्य देना है, वह साहित्य उनके जीवन में नवीन ज्योति भरे और हमारे देश में तथा उसके बाहर होनेवाली सभी नवीन बातों से परिचित कराये। पहले तो उन्हें हमारे देश, समाज और राज्य-व्यवस्था का ही ज्ञान होना चाहिये। इसके लिए अनेक विषय चुने जा सकते हैं। किन्तु यह योजना प्रारंभ करने के लिए अभी प्रारम्भ में यह लिखित विषय दिये जाते हैं। १—गाँव की सफाई। २—अच्छी खेती। ३—देश की बातें। ४—बापू की जीवनी। ५—रामायण की कथा। ६—ग्राम-पञ्चायत। ७—सरकार की रूप-रेखा। ८—प्रजातन्त्र में हमारा कर्त्तव्य। ९—'मत' उसका महत्त्व। १०—संसार के दूसरे देश और उनके राज्यशासन की कहानियाँ।

हमें सरलतम भाषा और सीधी शैली में यह साहित्य शीघ्र ही चाहिये। लेखकों और कवियों से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक ३२ पृष्ठों में उपर्युक्त विषयों पर सरल कविता, नाटक, निबंध या कहानी के रूप में छोटी छोटी पुस्तिकाएँ लिखकर भेजें। पुस्तिकाएँ हिन्दी या बुंदेली, छत्तीसगढ़ी, गोंडी भाषा, ग्रामीण बोली में लिखी जा सकती हैं। श्रेष्ठ पुस्तकों पर यथेष्ठ पारिश्रमिक भी दिया न जायेगा। पुस्तक की पाण्डु-लिपि २० जून तक हमारे पास पहुँच जानी चाहिये।

—रामकुमार वर्मा, एम० ए०, पी० एच०डी०, उपसंचालक, सार्वजनिक शिक्षा-विभाग, समाज शिक्षण मध्यप्रांत और बरार।

* * *

श्री दादू-जयन्ती

हम भारतीयों के लिए यह हर्ष का विषय है कि हम प्रथम बार स्वतंत्र भारत में विगत ३१ मई को "श्री दादू श्रद्धांजलि-दिवस" मना चुके हैं। कहना न होगा कि मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति के साथ ही साथ उसकी मानसिक स्वतंत्रता और नैतिक उत्थान की पहली आवाज महात्मा दादूदयाल जी ने ही लगाई थी। इनकी गणना भारत के महान् पुरुषों में की जाती है। ये उपासना के क्षेत्र में एकेश्वरवाद के प्रबल समर्थक थे। जिन दिनों इन्होंने 'सांभर' में एक युग (१२ वर्ष) तक प्रचण्ड तपस्या की थी, उन दिनों वहाँ साम्प्रदायिक संघर्ष चालू था। इसका अप्रत्यक्ष असर इस सन्त पर भी पड़ा और इन्होंने जीवन भर साम्प्रदायिक एकता के लिए प्रयत्न किया। इनके ५२ शिष्यों में रज्जब जी, बखनाजी, वाजिन्दजी, निजाम आदि अनेकों प्रमुख शिष्य मुसलमान भी थे:—

दादू दोनों हाथ पग, दोनों भाई कान।
दोनों भाई नैन हैं, हिन्दू मूसलमान॥

इनकी आध्यात्मिक सूक्तियाँ विख्यात हैं। हिन्दी साहित्य-भण्डार अधिकांश रूप में ऐसे संतों की कृतियों से गौरवान्वित है। महात्मा दादूदयाल और उनके प्रमुख शिष्यों ने अपने पीछे विशाल वाङ्मय छोड़ा है। जो कि जनता को कल्याण-मार्ग का अनुगमन कराने और आध्यात्मिक गुत्थियाँ सुलझाने को अनुपम है। उदाहरण के लिए इनके शिष्य सुन्दरदास जी की उचित रूप में प्रकाशित 'सुन्दर ग्रंथावली' को देखा जा सकता है।

इनकी अपनी और शिष्य-सम्प्रदाय की भाषा कहीं भी दुरूह नहीं, भाव-गाम्भीर्य अवश्य है। इनके सम्प्रदाय की करीब ६० अप्रकाशित रचनाएँ देखने का मुझे अवसर मिला है जो कि प्रकाशित होकर हिन्दी का गौरव बढ़ा सकती हैं। गुलामी दिनों में हमारी निगाहें विदेशों की ओर रही हैं, पर अब हमें आत्म-निरीक्षण कर, ऐसे सन्तों को उनका न्याय-संगत स्थान दिलाना चाहिए। आशा है, मनस्वी साहित्यिक "श्री दादूपन्थ" के उपादेय वाङ्मय का पर्यालोचन करेंगे।

पिलानी —आचार्य नित्यानंद सारस्वत
१५ जून, ४८

* * *

जयपुर राज्य
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

आज संसार में चौथे नम्बर पर सबसे अधिक बोली जानेवाली भाषा हिन्दी है। जयपुर रियासत की राजभाषा घोषित हो चुकी है। यहाँ बहुत पहले अ० भा० हिन्दी साहित्य-सम्मेलन भी हो चुका है; किन्तु अभी तक राज्य के साहित्यिकों के संगठन की कमी खटकती रही है। इसी से 'जयपुर राज्य हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन' की आयोजना के लिए संयोजक-समिति बनी है। पूरी योजना की जानकारी और सुझाव भेजने को "श्री अखिल विनय, जयपुर राज्य हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन संयोजक-समिति कार्यालय, पोस्ट पिलानी (जयपुर)" या "श्री हनुमत्प्रसाद साहित्य-रत्न, हिन्दी विद्याभवन, सीकर" से पत्र-व्यवहार करें।

—आचार्य नित्यानन्द सारस्वत

* * *

मध्य-भारत संघ का संगठन

(पेज ८ का शेष)

के कानून भी बम्बई-प्रान्त के कानूनों के समान होंगे। मध्य-भारत-संघ में सम्मिलित रियासतों की संख्या बहुत अधिक है और वहाँ प्रचलित कानूनों में भी बहुत अन्तर है। इसलिये कानूनों के संगठन के कार्य में पर्याप्त परिश्रम की अपेक्षा रहेगी। मध्य-भारत का न्याय-विभाग शासन-विभाग से सर्वथा पृथक् और स्वतन्त्र हो। यह विभाग सब रियासतों में कानूनों के अध्ययन के लिये अपने अधिकारियों तथा न्यायाधीशों (जजों) को भेजे। इन व्यक्तियों द्वारा कानूनों का संग्रह करने के बाद संघ के लिये प्रगतिशील कानून बनाने के लिये एक विशेष समिति नियुक्त की जाय।

मध्य-भारत के लिये हाईकोर्ट बनाने के सम्बन्ध में १ जुलाई १९४८ से पहले एक कानून बनाया जाय। इसके बाद एक प्रधान न्यायाधीश (चीफ जस्टिस) और आठ अन्य न्यायाधीश (जज) नियुक्त किये जायँ। भिन्न-भिन्न रियासतों में स्थगित पड़े हुए सब मामले संघ का हाईकोर्ट बनने के बाद उसमें पेश किये जायँ। न्याय-विभाग का संगठन इसी ढंग से होना चाहिये।

भूमि-कर-प्रणाली

भूमि-कर-संगठन की समस्या को सुलझाने में भी कोई कम समय तथा परिश्रम नहीं लगेगा। भूमि-कर-संगठन के प्रश्न के साथ नम्बरदारी, जागीरदारी, जमींदारी और भूमि-अधिकार-नियम भी सम्बद्ध हैं। उदाहरणार्थ, ग्वालियर रियासत में नम्बरदारी-प्रथा जमींदारी-प्रथा से सर्वथा भिन्न है, क्योंकि बहुत से व्यक्ति नम्बरदार होते हुए भी स्वयं खेतिहर हैं। ग्वालियर में जागीरदारों के पास पर्याप्त जमीन है; किन्तु इन्दौर में जागीरदार हैं ही नहीं। जागीरदारी, नम्बरदारी, जमींदारी और भूमि-अधिकार-नियम की प्रथाएँ किसी समय किसानों से भूमि कर उगाहने के उद्देश्य से ही जारी की गई थीं। अब जनता के हितों को ध्यान में रखते हुए इन सब प्रथाओं का नये रूप से संगठन करना होगा।

संघ के लिये एक केन्द्रीय भूमि-कर अधिकारी की नियुक्ति या भूमि-कर- की स्थापना की आवश्यकता है। इस भूमि-कर-अधिकारी का एक सहायक न्यायाधीश होना चाहिये जो भूमि-कर के सम्बन्ध में सबकी अपीलें सुन सके। भिन्न-भिन्न रियासतों में भूमि-कर-प्रणाली का अध्ययन करने के लिये अनुभवी अधिकारियों को भेजा जाय। इनका कार्य भूमि-कर के सम्बन्ध में सामग्री संचित करना हो। अन्तरिम काल में भूमि-कर-सम्बन्धी अपीलों की सुनवाई के लिये रियासतों में न्यायाधीशों को भी भेजना आवश्यक है।

जिलों का निर्माण

मध्य-भारत की भिन्न-भिन्न रियासतों की सीमाओं के संगठन और संघ के जिलों के निर्माण की समस्या भी कोई कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। इस विषय में एक चीज का ध्यान रखना आवश्यक है और वह यह कि जिलों का निर्माण करते समय बरवानी, धार और देवास आदि पुरानी रियासतों की प्रथा को महत्त्व नहीं दिया जाना चाहिये। मध्य-भारत संघ का सम्पूर्ण क्षेत्र उपयुक्त भौगोलिक जिलों में विभक्त किया जाय। जिलों के निर्माण के सम्बन्ध में एक विशेष समिति अविलम्ब नियुक्त की जाय।

जिलों के निर्माण से पहले शासन-कार्य के संचालन के लिये शासक नियुक्त किये जायँ। जिलों के निर्माण का कार्य केन्द्रीय सचिवालय या केन्द्रीय विभाग शासकों के सहयोग से करे। यह काम करते समय केन्द्रीय सचिवालय को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिये। उसके लिये कुछ समय तक यह विषय मुख्य और अन्य गौण हों। छोटी रियासतों को बड़ी रियासतों में मिला दिया जाय, इन रियासतों के संघ बनाकर उन्हें जिलों में विभक्त किया जाय। किन्तु इस सम्बन्ध में यह ध्यान रखा जाय कि इस कार्य के लिये विशेषज्ञों की एक समिति नियुक्त हो। यदि इन सब उपायों का अवलम्बन किया गया तो मध्य-भारत-संघ की रियासतों को एक सुदृढ इकाई में संगठित होने में कोई विलम्ब नहीं लगेगा।

* * *

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।–) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५।।=), डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

लन चल रहा था। राजकुमार एडवर्ड, आजकल ड्यूक आफ विण्डसर, को हिन्दू-विश्वविद्यालय से डाक्टर की उपाधि दी जानेवाली थी। आचार्य कृपलानी ने प्रायः ३० छात्रों के साथ कालेज से असहयोग किया था।)..."मुझे एक साल की सजा मिली थी, किन्तु पाँच महीनों के बाद ही सन् १९२१ की जनवरी में मुझे जेल से बाहर कर दिया गया। कैद की अवधि पूरी करने के लिए मैंने अपने घर से अलग एक मकान भाड़े पर लेकर रहने का निश्चय किया। मेरे साथ असहयोग करनेवाले छात्र तथा चन्द अध्यापक थे। वहीं फरवरी सन् १९२१ में काशी विद्यापीठ का प्रारम्भ हुआ, जिसके लिये बाद में शिवप्रसाद गुप्त ने १० लाख की रकम दान करके एक ट्रस्ट बना दिया। नियमित रूप में विद्यापीठ का उद्घाटन गांधी जी ने मोतीलाल नेहरू, अबुल कलाम आदि नेताओं की उपस्थिति में किया।" भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम में विद्यापीठ के स्नातकों, विद्यार्थियों, अध्यापकों का सदैव सक्रिय सहयोग रहा है। आज विद्यापीठ के स्नातक और सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री कमलापति त्रिपाठी एम० एल० ए० के प्रधान सम्पादकत्व में काशी विद्यापीठ के द्वारा, इस युग के महानतम मानव गांधी जी के जीवन, कार्यक्रम और मिशन के प्रचार-प्रसार के हेतु 'गांधी जी' ग्रन्थमाला का प्रकाशन किया जा रहा है। यह प्रयास सर्वथा स्तुत्य है।

'गांधी जी' ग्रंथमाला में २६ खण्ड प्रकाशित किये जायेंगे। जिनमें निम्न प्रकार की सामग्री रहेगी—(१) भारतीय नेताओं की श्रद्धांजलियाँ, (२) भारतीय, देशी रियासत तथा पाकिस्तानी नेताओं की श्रद्धांजलियाँ, (३) संसार के समाचार-पत्र तथा पत्रकारों की श्रद्धांजलियाँ, (४) विदेशों की श्रद्धांजलियाँ, (५) कवियों की श्रद्धांजलियाँ, (६) जीवनी, (७) संस्मरण, (८) भारत को गांधी जी की देन, (९) भाषण, (१०) पत्र—महत्त्वपूर्ण मूल पत्रों के चित्र-सहित, (११) अहिंसा, (१२) हिन्दू-मुस्लिम एकता, (१३) अछूतोद्धार, (१४) शिक्षा, (१५) महिलाएँ, (१६) गांधीजी का राजनीतिक दृष्टिकोण, (१७) दृष्टिकोण, (१८) धार्मिक दृष्टिकोण, (१९) गांधी जी के 'राम', (२०) प्रार्थनोत्तर प्रवचन (२१) गांधी जी के प्रयोग, (२२) प्रवासी भारतीय, (२३) विद्रोही गांधी, (२४) गांधी जी का 'स्वराज्य', (२५) चित्रावली, (२६) विविध। प्रत्येक खण्ड बापू के विभिन्न चित्रों से सुसज्जित रखने की आयोजना है। ग्रंथमाला का प्रथम खण्ड हमारे हाथों में है; सम्पन्न-सामग्री के अतिरिक्त इसमें आर्ट पेपर पर छपे १६ चित्र हैं। चिरनिद्रा में लीन अमर बापू—चित्र में गोलियों के निशान स्पष्ट अंकित हैं। इसके अतिरिक्त महायात्रा का दृश्य, शोक-सभा, अस्थि-प्रवाह स्थल आदि बापू से संबंधित चित्र तथा केन्द्रीय और प्रांतीय सरकारों के गवर्नरों, मंत्रियों के चित्र हैं।

'गांधी जी' ग्रंथमाला के प्रथम खण्ड में प्रारम्भ में हमारे नैतिक पतन की उस गाथा का वर्णन है, जब साम्प्रदायिकता की बलिवेदी पर देश और विश्व के लिए उस महापुरुष ने अपने प्राण त्याग दिये तथा संगम में उनका भस्म प्रवाहित किया गया। इस ग्रंथ में सम्पादकों ने उसी भाषा का प्रयोग किया है, जो जहाँ महात्मा जी ने प्रयोग की थी। अँगरेजी भाषा में जो कहा, लिखा या बोला गया है, उसका हिन्दी में अनुवाद कर दिया गया है। स्पष्ट है कि गांधी जी की भाषा 'हिन्दी' ही है, जो कि राष्ट्रभाषा के पद के अनुकूल है। प्रथम पृष्ठों में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के प्रस्ताव रखे गए हैं—और उनके द्वारा महासमिति दोहराती है—"हमारे कर्तव्यों की याद दिलाने और अपनी निष्ठा द्वारा हमारे मिशन में हमें प्रेरणा देने के लिए जब राष्ट्र-पिता शरीर से हमारे बीच नहीं हैं, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी पुनः अपना निश्चय दोहराती है कि वह उसी मार्ग का अनुसरण करती रहेगी जिसे उन्होंने हमारे लिये प्रकाशमान किया है और जिस महान् कार्य को वे अधूरा छोड़ गये हैं उसे पूरा करने में अपनी पूर्ण शक्ति लगा देगी।" इन्हीं में 'गांधी राष्ट्रीय स्मारक निधि' का प्रस्ताव भी सम्मिलित है।

प्रस्तुत खण्ड में भारतीय नेताओं की श्रद्धांजलियाँ संगृहीत की गई हैं। सर्वप्रथम भारतीय विधान-परिषद् के अध्यक्ष, डा० राजेन्द्रप्रसाद तथा फिर भारतीय संघ के मन्त्रि-मण्डल के सदस्यों की श्रद्धांजलियाँ। इसके बाद क्रमशः युक्तप्रांत, बम्बई और पूर्वी बंगाल के गवर्नरों, मंत्रि-मण्डल व प्रमुख व्यक्तियों की, राष्ट्र-पिता के निधनावसर पर समर्पित श्रद्धांजलियाँ हैं। कुछेक माननीय महोदयों ने अपने हृदयोद्गार चंद पंक्तियों में ही व्यक्त किये हैं। जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं :—मान० रफी अहमद किदवई "इस भयंकर दुर्घटना की निंदा करने के लिए शब्द नहीं मिलते! हम लोगों में ऐसा अभागा कौन होगा, जिसने असमय उन्हें खो दिया! भारत उनका सदा ऋणी रहेगा।" मान० डा० अम्बेदकर "गांधी जी को खोकर वस्तुतः भारत ने अपना बहुत कुछ खो दिया है। मानवता को उन पर गर्व था। दलितों और पीड़ितों का एक सहारा चला गया। उनका जीवन ही परोपकार के लिये था; वे उसी के लिये जिये और उसी के लिये मरे! भारतीय राजनीति को उनकी देन अमर है और है प्रेरणात्मक!" मान० डा० जानमथाई "गांधी जी महान् थे और उनके कार्य तो और भी महान् थे। उन्हें खोकर मानवता ने अपना एक श्रेष्ठ उपासक खो दिया। उनका व्यक्तित्व बहुत ही भव्य एवम् आकर्षक था।" मान० गिरधारीलाल (मंत्री, आबकारी एवं जेल-विभाग, युक्त-प्रान्त) "महात्मा गांधी के प्रति यह देश सदैव ऋणी रहेगा। उन्होंने इस देश को, इस देश के शोषितों, पीड़ितों और उपेक्षितों को ऊँचा उठाया, मान और सम्मान दिया। हम उनके बताये मार्ग पर चलकर ही उनके प्रति अपनी सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकेंगे।" मान० मोरार जी देसाई (गृह-मंत्री, बम्बई) "राष्ट्र-पिता के प्रति सर्वश्रेष्ठ श्रद्धांजलि यही हो सकती है कि हम उनके द्वारा प्रदर्शित सत्य, अहिंसा और शांति के मार्ग पर चलें।"

---

* 'गांधी जी' : श्रद्धांजलियाँ, संपादक-मण्डल सर्वश्री कमलापति त्रिपाठी, कृष्णदेवप्रसाद गौड़, काशीनाथ उपाध्याय भ्रमर, करुणापति त्रिपाठी, विश्वनाथ शर्मा (प्रबन्धक)। प्रकाशक—काशी विद्यापीठ–प्रकाशन-विभाग, बनारस छावनी। एक प्रति का मूल्य १॥)। साइज, पृष्ठ-संख्या १६० ग्रन्थमाला के स्थायी ग्राहक बनने से सब खण्ड केवल २६)

* * *

चिरस्थायी व दिमाग़ी ताक़त बढ़ाने के लिए सेवन करो
डॉ. गौतमराव केशव
टॉनिक फॉस्फरस पिल्स
डॉ. वामन गोपाळ सास्पिरिला डेपो मुंबई नं. २
PILLS

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जोहरी एल० एस० धोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

दक्षिण और सुदूर पूर्व एशिया

(पेज ५ का शेष)

मिलनी चाहिए। उसमें गुलाम बनाने अथवा राजनैतिक अधिकार स्थापित करने की भावना नहीं होनी चाहिए।

पाकिस्तान का भी यही कहना है कि सहायता शोषण की भावना से नहीं मिलनी चाहिए।

अमरीकी दृष्टिकोण इसके विरुद्ध है। अमरीकी प्रतिनिधि कहता है कि वह औद्योगीकरण का विरोधी नहीं; परन्तु इस मार्ग में अनेक अड़चनें हैं, विशेषकर सुविधा और साधनों की। अमरीका उद्योग-धन्धों को बढ़ानेवाली मशीनें एशिया को नहीं दे सकता। एशिया को कृषि की उन्नति से सन्तोष करना चाहिए। इस उन्नति में भी अमरीकी पूँजीपति केवल कुछ शर्तों पर सहायक हो सकता है। वह समाजवाद और क्रान्ति की बातें नहीं सुनना चाहता। इन देशों में शान्ति चाहिए और इसके अर्थ हैं कम्यूनिज्म का दमन और रूस का विरोध। इन देशों में राष्ट्रीयकरण की चर्चा नहीं होनी चाहिए; और इसके अर्थ हुए समाजवाद अथवा और किसी प्रकार के उग्र विचार और प्रगतिवाद का विरोध। एशियाई देशों में अमरीकी माल पर कोई तट-कर अथवा रोक नहीं लगनी चाहिए जिसके अर्थ हुए एशिया के उद्योग-धन्धों की समाप्ति। एशियाई देशों को अमरीकी पूँजी को वे सब सुविधाएँ देनी चाहिए जो उपरोक्त देश अपनी पूँजी को देते हैं, जिसके अर्थ हुए इन देशों का अमरीका द्वारा निर्विरोध शोषण। अमरीका की धमकी है कि उसकी रकम और उसके माल को लेनेवाले दुनिया में बहुतेरे देश हैं। यदि उपरोक्त शर्तें मंजूर नहीं तो सहायता नहीं मिल सकती।

ब्रिटेन, फ्रांस, हालैंड आदि देश अमरीकी दृष्टिकोण के समर्थक हैं। इँगलैंड ने यह भी कहा कि एशिया को घरेलू उद्योग-धन्धों को प्रोत्साहन देना चाहिए। मानो एशिया को इसका सबक भी ब्रिटेन से ही सीखना होगा।

इसके विरुद्ध रूस भारतीय दृष्टिकोण का समर्थक है। वह एशियाई देशों का स्वतंत्र औद्योगीकरण चाहता है, कृषि में भी मशीनों का प्रयोग चाहता है जिससे खाने भर के लिए भी एशिया को दूसरे देशों का मुँह न देखना पड़े। परन्तु सोवियट देश इससे आगे बढ़ता है। उसका कहना है कि औद्योगीकरण के लिए मानव सामग्री, सधे और सीखे हुए मजदूरों की आवश्यकता है। अतएव इस तरह के मजदूरों के तैयार करने का प्रबन्ध होना चाहिए। साथ ही उत्पादन बढ़ाने के लिए मजदूर को प्रोत्साहन देना आवश्यकीय है, अतएव उसको समुचित वेतन, विश्राम तथा अन्य सुविधाएँ देनी चाहिए। इसी प्रकार कृषि में भी किसान को उधार रुपये देने, कृषि-व्यवस्था ठीक करने आदि का प्रबन्ध करना चाहिए। रूस बिना शर्त औद्योगीकरण में सहायता देने को तैयार है।

ऊटी-सम्मेलन के सामने कतिपय गहन प्रश्न हैं, कुछ-खतरे भी हैं। साम्राज्यवादी देशों का प्रयत्न है कि भारत को अपने साथ मिला लें। वे पिछड़े हुए एशियाई देशों का प्रलोभन देते और उस लूट में भारत को साथी बनाना चाहते हैं। सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए नेहरू जी ने कहा कि एशिया का स्वतंत्रता-संग्राम समाप्तप्राय है; परन्तु सम्मेलन में उनकी

डाक्टर कैलाशनाथ काटजू

(पेज ६ का शेष)

अच्छे तर्क का उसी प्रकार आनन्द लेते हैं जिस प्रकार लोग अच्छी केक का। उनकी बातचीत बहुत अधिक प्यारी नहीं होती, किन्तु कठोर भी नहीं होती। वह हर समय एक वकील रहते हैं, केवल बार बार हुजूर-हुजूर वे नहीं किया करते। वे वकालत करेंगे, दलीलें देंगे और अपने पक्ष का समर्थन करेंगे पर धाँधलेबाजी नहीं करेंगे। वे एक कुशल लेखक भी हैं। एक बार वे यदि लिखने का वादा कर लेंगे तो प्रेस के लिये समय पर एक अच्छी कापी के लिये आप उन पर हमेशा निर्भर कर सकते हैं। मैं अकसर यह अनुभव करता हूँ कि मुख्य लेख के लेखक के रूप में उन्हें अच्छी सफलता प्राप्त होती; किन्तु एक संपादक की हैसियत से वे पत्र को अत्यन्त गम्भीर, तथ्यपूर्ण तथा भारी भरकम-सा बना देते। पत्रिका-विभाग हर प्रकार के विषयों पर लिखे गये तथा लम्बे लेखों के प्रति उनको कोई प्रेम नहीं है। जिस पत्र का उन्होंने सम्पादन किया होता वह अत्यन्त संजीदा और एक विधवा का-सा स्वरूप लिए हुए होता। एक बार मैंने उनसे दो लेख लिखने के लिए कहा और वे बोले, "लेख तैयार है और आपको मेरे लिये केवल एक अच्छा स्टेनो-टाइपिस्ट भेजना है।" मैंने सोचा कि शायद वे अतिशयोक्ति कर रहे हैं; मगर बाद में मुझे मालूम हुआ कि वे सही थे। उन्होंने अगली सुबह को मुझे वे दो लेख दे दिये और मैं आश्चर्य-चकित रह गया।

डा० काटजू एक पुराने राजनीतिज्ञ हैं, लेकिन उनमें एक युवक की कार्यक्षमता तथा उत्साह है। एक प्रान्त की गवर्नरी उनके जीवन की आखिरी चोटी नहीं है और वे कह सकते हैं, "मेरे साथ-साथ बढ़ते रहो। सबसे ऊँचे शिखर पर चढ़ना अभी बाकी है।"

* * *

भी यहाँ कितना जोर है। इण्डोनेशिया को सदस्यता न देना और इन देशों के औद्योगीकरण में बाधाएँ डालना एशिया के लिए चुनौती है; और मलाया, इण्डोचीन, इण्डोनेशिया आदि देशों की गुलामी को भुलाया नहीं जा सकता। इधर इससे यह भी पता चलता है कि चीन, स्याम (थाई लैण्ड), सीलोन (लंका) फिलीपाइन आदि देश केवल नाममात्र के लिए स्वतंत्र हैं।

* * *

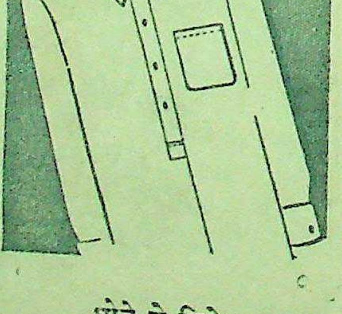

धोने के लिये

५०१ साबुन

दी टाटा आयल मिल्स कं० लिमिटेड

रेशमी कपड़ा एक रुपया गज

आपको किसी जगह नहीं मिल सकता। परन्तु हम आपको बाजार बहुत ही सस्ते निरखों पर दे सकते हैं। जो कि आपको कौड़ियों के पड़ेगा। अमरीकन सफेद सिल्की पैराशूट १२ कलीवाला बिना जोड़ के रेशमी डोरी के साथ कीमत ८ रुपये फी पैराशूट पैकिंग मुफ्त। महसूल डाक १।=) इकट्ठे ३ मँगवाने पर महसूल डाक ३।॥=) आयेगा। नमूना मँगवाकर आर्डर देकर फायदा उठायें। यह माल दूसरे सिल्की कपड़ों की निस्बत अच्छा है, और रियायत है। पहले इसकी कीमत बहुत ज्यादा थी। मगर स्टाक खतम करने के लिये यह रियायती थोक का भाव है। ३ पैराशूट महसूल डाक-समेत आपको घर में २७॥=) पड़ेंगे। जरूर मँगवावें। फौरन मँगवावें वरना स्टाक खतम होने पर पछताना पड़ेगा। क्योंकि और माल अमरीका से नहीं आ रहा है।

नोट :—हर आर्डर के साथ पाँच रुपये बजरिये मनीआर्डर आना जरूरी है। दस पैराशूट इकट्ठे मँगवाने और उनकी कीमत पेशगी भेजने पर एक रिस्टवाच जिसकी खूबसूरती की गारण्टी दस साल है, मुफ्त दी जायेगी।

सोल एजेंट—अमरीकन कारपोरेशन D. A. पुतलीघर, अमृतसर

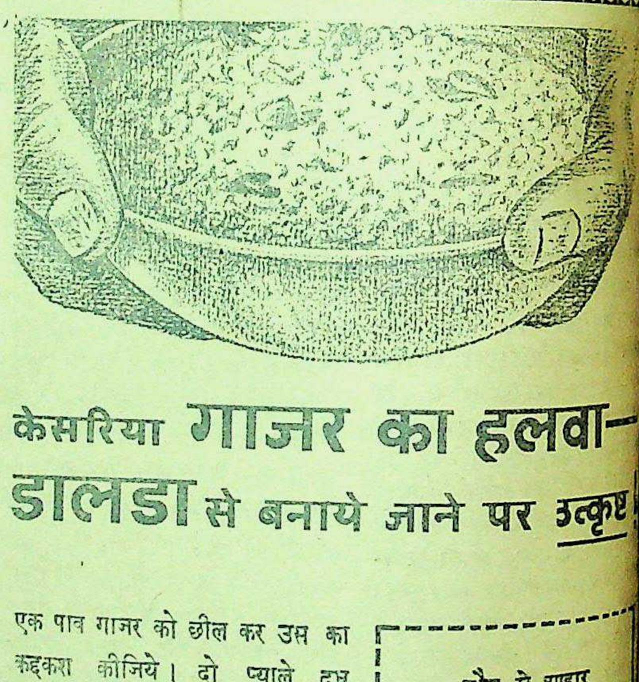

केसरिया गाजर का हलवा—

डालडा से बनाये जाने पर उत्कृष्ट

एक पाव गाजर को छील कर उस का कद्दूकश कीजिये। दो प्याले दूध उबालिये, गाजर डाल कर हल्की आग पर तब तक हिलाते रहिये जब तक गाजर दूध को लग भग सोख न ले। डेढ़ प्याला चीनी, कुतरे हुये बादाम, पिस्ता, किशमिश डालिये। इस को लगभग सूख जाने तक पकाइये। आधा प्याला डालडा गरम कीजिये, और क्रमशः डालते जाइये—जब तक कि मिलाव सुर्ख़ न हो जाये। थोड़ा सा कुचला हुआ इलायचीदाना और पानी में मिश्रित केसर पाव चाय का चम्मच मिलाइये। डालडा के पृथक होने तक पकाइये। गरम अथवा ठंडा परोसिये।

कौन से आहार "स्वास्थ्य रक्षक" हैं!

ऐसे आहार जो रोग के प्रतिकूल हैं। इस विषय पर मनोरंजक सूचना पाने के लिये लिखें।

मुफ्त सलाह के लिये आज ही लिखिये—अथवा किसी भी दिन!

दि डालडा एड्वायज़री सरविस

पोस्ट बॉक्स नं० ३५३, बम्बई

DALDA
VANASPATI

वाददाताओं के पत्र

लनऊ में श्री मोहनलाल जी गौतम न्तीय कांग्रेस पार्लियामेंटरी बोर्ड के सिलसिले में सुलतानपुर तथा में अनेक सभाओं में भाषण देते कि आज विश्व की महान् गया हैं, इसीलिये हम उनमें से साथ गठबन्धन करना ठीक नहीं आपने बताया कि सोशलिस्ट की अपनी बैठक में वैदेशिक नीति में इसी आशय का निश्चय । आज लोहिया साहब का यह है कि भारत-सरकार की नीति ठीक नहीं है जब कि जय- उसे ठीक समझते हैं।

र के मोर्चे को अन्तर्राष्ट्रीय ते हुए आपने कहा कि मुंशी के सभापतित्व में जो सोश- की नेशनल एक्जीक्यूटिव के यह प्रस्ताव पास हुआ कि काश्मीर में मिलना चाहिये और मत- इसलिये हम इस बात का प्रयत्न के नागरिक पाकिस्तान में ने के लिये वोट करें। जय- ने भी उनकी इस नीति का है।

भी कहा कि इस चुनाव मीदवारों की हार-जीत तक। बल्कि इस चुनाव के परि- जानना चाहते हैं कि जनता न्द करती है या सोशलिस्ट आपने बताया कि हम समझ आप कांग्रेस को कमजोर कर सरकार को हटा दें। पर मैं के साथ कह सकता हूँ आज में कोई ऐसा संगठन नहीं है जो लाल नेहरू, सरदार पटेल, आजाद, पं० गोविन्दवल्लभ पन्त ले सके।

जानते हैं कि कांग्रेसी सरकार के होने पर देश की क्या दशा होगी? अराजकता फैल जायगी, जिसकी भैंस की कहावत चरितार्थ हो या फिर कोई विदेशी सत्ता आकर को गुलाम बनायेगी।

आपके सामने चुनने के लिए हैं। या तो आप कांग्रेस को वोट ग्रेस सरकार को मजबूत बनायें काश्मीर, हैदराबाद तथा देश की समस्याओं को हल करे। या ग्रेस को कमजोर करें जिससे देश कता फैल जायगी और हो सकता प्राप्त आजादी को भी खो बैठें। लिये हमारी भावी संतानें हमारे देंगी और हमें धिक्कारेंगी। में आपने बताया कि हमें व्यक्ति- की बलिवेदी पर सिद्धान्तों नहीं देनी चाहिये। और जिस ने आपको आजादी दिलाई है, जो रक्षा करेगी उसे ही वोट देकर बनाना चाहिये।

—संवाददाता

*

कलकत्ता २७ जून रविवार को समिति का समारोह सम्पन्न होने जा रहा है। पश्चिम बंगाल के माननीय शिक्षा-मंत्री राय हरेन्द्रनाथ चौधरी महाशय सभापति का आसन ग्रहण करेंगे। समय तथा स्थान की सूचना यथासमय दी जायगी। इस उत्सव में हिन्दी-साहित्य सम्मेलनान्तर्गत वर्धा राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति द्वारा फरवरी १९४८ में गृहीत राष्ट्र-भाषा-परीक्षाओं में उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को उपाधिपत्र, प्रमाणपत्र तथा पुरस्कार प्रदान किये जाएँगे। इस आयोजन को सफल बनाने के लिए हिन्दी-प्रेमी महानुभावों से सानुनय अनुरोध है कि समिति की सहायता कर कृतार्थ करें। प्राय: ६०० व्यक्तियों को प्रमाणपत्र इत्यादि प्रदान किये जायँगे जिनमें महिलाएँ हैं, पुरुष हैं, कक्षा ७ का छात्र है तो एम० ए०पी० एच०डी० हैं, ११ वर्ष का बालक है तो ६३ वर्ष के वृद्ध हैं। कार्यालय का पता—४२।१ बी हाल-दारपाड़ा रोड, कालीघाट, कलकत्ता २६।

—सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या सभापति
—रेवतीरञ्जन सिनहा प्रधान मंत्री

* * *

टिहरी में ३० और ३१ मई को ठीक १७ साल बाद टिहरी के आजाद होने पर प्रजामंडल के आदेशानुसार शहीदों की यादगार में गढ़वाली रस्म के अनुसार मेले हुए। इस अवसर पर तिलाड़ी के मैदान में जो चकरोता से ३० मील दूर यमुना के बायें किनारे पर है, एक विशाल सम्मेलन हुआ। दस हजार से ऊपर उपस्थिति थी। प्रजामंडल के प्रधान मंत्री श्री रामचन्द्र उनियाल की अध्यक्षता में एक विराट् सभा हुई। सभा में भाषण देते हुए प्रजामण्डल के प्रधान श्री त्रेपन-सिंह नेगी ने खाई के लोगों की आजाद-पसन्द परम्परा की सराहना करते हुए, आजादी की रक्षा करने के लिए अपील की। इसी अवसर पर अन्तर्कालीन सरकार के स्वास्थ्य-मन्त्री माननीय डा० गैरोला व शिक्षा-मंत्री माननीय श्री कृष्णसिंह जी तथा वयोवृद्ध किसान नेता श्री दौलतराम जी को अभिनन्दन-पत्र दिया।

—संवाददाता

* * *

जोधपुर मारवाड़ कुमार साहित्य-परिषद् के अनुरोध फलस्वरूप सांस्कृतिक एवं राजभाषा-आंदोलन के लिए मारवाड़ के कई लब्ध-प्रतिष्ठित एवं नेताओं का सहयोग प्राप्त हो चुका है, जिनमें श्री रावराजा इन्द्रसिंह, श्री इन्द्रनाथ मोदी एम० एल० ए०, श्री अचलेश्वरप्रसाद शर्मा, श्री द्वारकादास जी पुरोहित (मेयर), निमाज ठाकुर साहब; झरना, राष्ट्रपताका, लहर, जनपक्ष, राष्ट्रवाणी आदि के संपादक मंडलों ने विशेषतः बौद्धिक एवं आर्थिक सहायता प्रदान की है।

—संवाददाता

* * *

गंगानगर में नवयुवक सार्वजनिक पुस्तकालय का शिक्षा-सप्ताह का विराट आयोजन ता० १५ जून से २१ जून १९४८ ई० तक किया गया है।

—संवाददाता

*

इधर उधर की

हृदय-रोग

अमेरिका के द्वितीय महायुद्ध में अनुमानतः ३,२५,००० आदमी ,उसी देश के काम आये थे। उसी समय अमेरिका के २०,००,००० स्त्री-पुरुष हृदय-रोग से मरे थे। आज इस रोग का प्रभाव उस समय से कहीं अधिक है। गणना से अनुमान किया गया है कि अमेरिका में तीन मौतों में एक हृदय-रोग से ही होती है। इस रोग की अवस्थाएँ भी कई प्रकार की हैं, जैसे मूर्छा आना, एकाएक गिर पड़ना; जोर से बोल न सकना आदि। इस प्रकार की घटना प्रायः ४५ वर्ष की अवस्था के पश्चात् ही घटती है। वैसे तो आज की प्रमुख बीमारियों में, हृदय-रोग का स्थान विशेष है।

अभी तक जो काम किया गया है उसमें भी कुल मिलाकर चालीस प्रतिशत सफलता मिल सकी है। रक्त-प्रवाह की गति बढ़ जाने से इस बीमारी की प्रगति में बढ़ती होती है। पिछले पचीस वर्षों से विज्ञान ने ऐसी बीमारियों की ओर जो काम किया है वह महत्त्वपूर्ण है।

* * *

मुफ्त ! मुफ्त !!

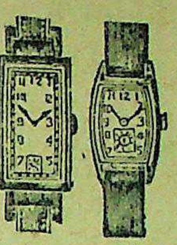

लन्डन न्यू गोल्ड के जेवरात को मशहूर करने के लिए हमने डायरी कैलेन्डर १९४८ और असली रिस्ट-वाच गारंटी १५ साल मुफ्त देने का फैसला किया है यदि आप बिलकुल मुफ्त लेना चाहते हैं तो आज ही अपना नाम व पूरा पता साफ २ लिख कर भेज दें मगर जल्दी करें वरना यह समय बार २ हाथ ना आयेगा।

लंडन सी० कम्पनी,
(D.D.A.) पो० ब० २, अमृतसर।

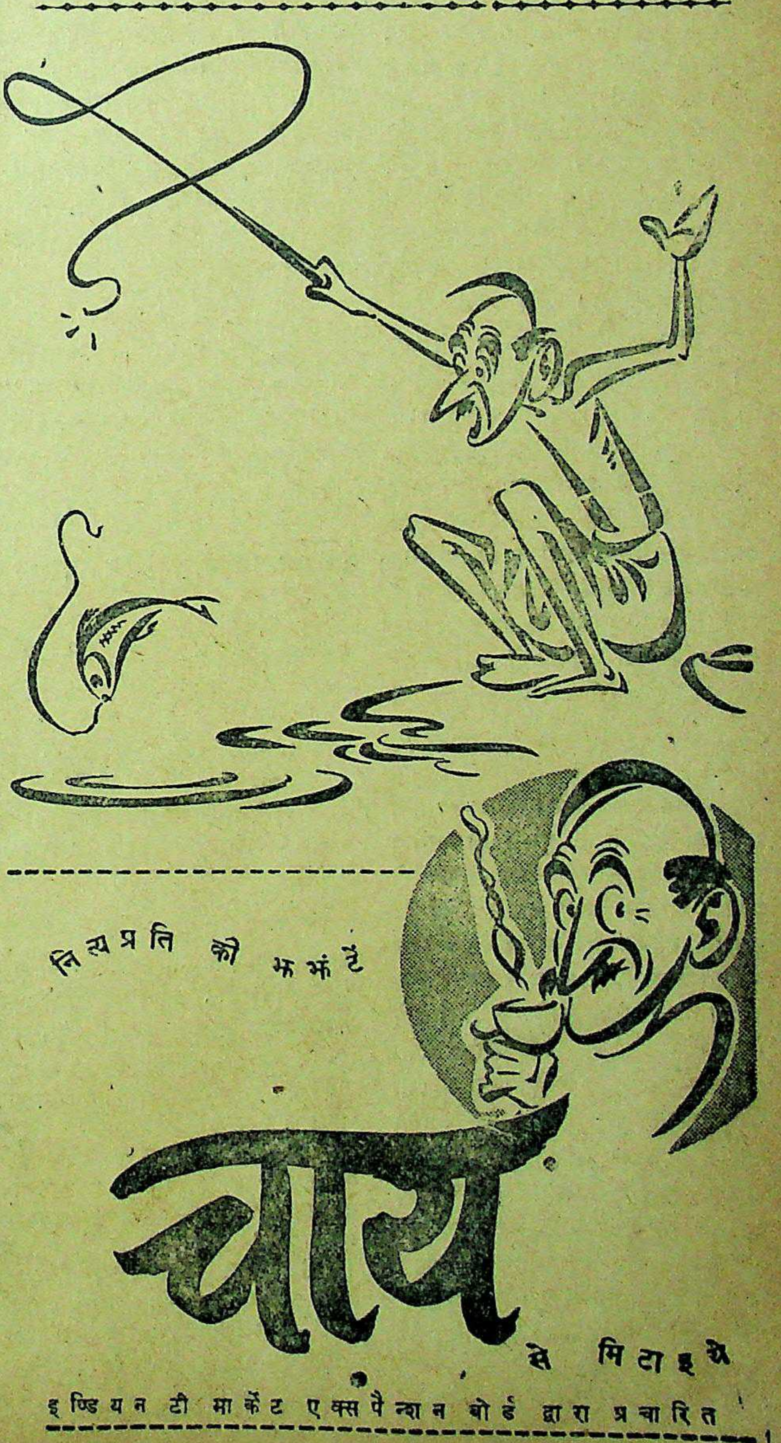
नित्यप्रति की झंझटें
चाय
से मिटाइये
इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित
LK 307

राजधानी का रंगमंच

जेल के कैदियों के बौद्धिक विकास की तैयारी

पंडित पालीवाल का त्यागपत्र—प्रांतीय कांग्रेस-कमेटी का चुनाव—अनिवार्य शिक्षा और म्युनिसिपल बोर्ड—लखनऊ के अफीम-चोर—पति-पत्नी फिर मिले—सौन्दर्य की वेदी पर दो बलि।

(अपने विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

जेल-विभाग के पार्लामेंटरी सेक्रेटरी श्री गोविन्दसहाय ने बन्दियों के बौद्धिक उत्कर्ष के निमित्त एक सर्वथा नवीन आयोजन किया है, जिसके अन्तर्गत प्रति-सप्ताह प्रान्त तथा बाहर के प्रमुख नेता एवं समाज-सेवक बन्दियों के समक्ष भाषण देकर उन्हें विश्व की वर्तमान प्रगति एवं देश की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति का परिचय देते हुए उन्हें सुनागरिक बनने की प्रेरणा देंगे। भारत में अपने ढंग का यह सर्वथा नवीन प्रयास है और उसका प्रयोगात्मक उपयोग मेरठ जेल में प्रारम्भ हो गया है, जहाँ पिछले दिनों विधान परिषद् की सदस्या श्रीमती कमला चौधरी तथा प्रांतीय कौंसिल के सदस्य श्री विचित्र-नारायण शर्मा ने बन्दियों के समक्ष भाषण किये। यदि मेरठ का प्रयोग सफल हुआ, तो प्रान्त की अन्य जेलों में भी इस योजना का विस्तार किया जायगा।

* * *

सूचना-मंत्री पं० श्रीकृष्णदत्त पालीवाल के पदत्याग ने जन-साधारण को स्तम्भित अवश्य कर दिया है, परन्तु यह केवल संयोग की ही बात है कि पालीवाल जी को उन परिस्थितियों में त्यागपत्र देना पड़ा, जो उनके लिए शोभनीय नहीं कही जा सकतीं, परन्तु वैसी बातें राजधानी में होती ही रहती हैं। यों तो पालीवाल जी मार्च से ही पदत्याग करने के इच्छुक थे, क्योंकि उन्हें मन्त्रि-मण्डल से स्वतंत्र होकर प्रांतीय कांग्रेस की राजनीति में प्रकट रूप से कुछ ऐसे व्यक्तियों का विरोध करना था, जिनका विरोध वे मन्त्रि-मण्डल में रहकर नहीं कर सकते थे। परन्तु यह खेद की बात है कि अनेक वर्गों और विशेष कर एक कांग्रेस दैनिक ने उनके सम्बन्ध में अनेक भ्रमोत्पादक लन्तरानियाँ उड़ाईं।

* * *

प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष तथा नये पदाधिकारियों के चुनाव की सरगर्मी कमेटी की १३ जूनवाली बैठक स्थगित हो जाने के बावजूद अभी कम नहीं हुई है। राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद ने यह बैठक केवल पण्डित नेहरू के इस आश्वासन पर स्थगित की थी कि वे प्रांतीय कांग्रेस के दोनों दलों में समझौता करा देंगे, ताकि प्रांतीय कांग्रेस निर्वाचन-संघर्ष से मुक्त रहे। परन्तु पण्डित नेहरू अपने इस प्रयास में सफल हो सकेंगे—इसमें सन्देह है। अध्यक्ष पद के दो उम्मीदवार हैं—श्रद्धेय पुरुषोत्तमदास टण्डन और श्री रफी अहमद किदवई। टण्डन जी दृढ़ संकल्प व्यक्ति हैं। पहले तो वे इस चुनाव में खड़े ही नहीं होना चाहते थे, पर जब सदस्यों के निरन्तर आग्रह से खड़े हो गए, तो वे अब बैठ नहीं सकते—ऐसा उन्होंने कल ही प्रकट किया। श्री किदवई पं० नेहरू के विश्वासी मित्र हैं। ऐसी दशा में पं० नेहरू द्वारा उनका समर्थन स्वाभाविक है। टण्डन जी से पंडित नेहरू का विरोध भी सर्वविदित है। इन परिस्थितियों में क्या होगा, कहा नहीं जा सकता, परन्तु इतना निश्चित है कि ४ जुलाई को यदि निर्वाचन हुआ, तो टण्डन जी बहुमत से विजयी होंगे।

* * *

प्रांतीय शिक्षा-विभाग को शिकायत है कि अनिवार्य शिक्षा जारी करने में प्रांत के छोटे छोटे म्युनिसिपल-बोर्ड उसके संग उचित सहयोग नहीं कर रहे हैं। शिक्षा-विभाग की अनिवार्य शिक्षा शाखा के अधिकारी ने एक भेंट में बताया कि सरकार ने आगामी दो वर्षों में प्रांत के सभी म्युनिसिपल नगरों (लगभग ७५) के सभी वार्डों में प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य करने की योजना बनाई है। बड़े बड़े म्युनिसिपल बोर्डों ने उसे कार्यान्वित करने की व्यवस्था कर ली है, परन्तु छोटे छोटे बोर्डों की प्रगति सन्तोषप्रजनक नहीं है, यद्यपि सरकार ने इस सम्बन्ध में होनेवाले व्यय का अधिकांश स्वयं वहन करने का आश्वासन दिया है।

* * *

लखनऊ में अफीम के तस्कर-व्यापार का एक बहुत बड़ा मुकदमा शीघ्र चलनेवाला है, जिसमें एक अंतर्राष्ट्रीय दस्युदल का भंडाफोड़ होगा। युक्तप्रांत में इस दल का मुख्य प्रतिनिधि अमरनाथ पांडेय बताया जाता है, जो अपनी ग्रेजुएट पत्नी वेणु पांडेय के साथ गिरफ्तार किया जा चुका है। पांडेय दम्पति की गिरफ्तारी के पश्चात् देश के कई भागों में तलाशियाँ और गिरफ्तारियाँ हुईं, जिनमें कलकत्ता का एक करोड़पति व्यापारी भी है। साथ ही अनेक गोरी और अधगोरी लड़कियाँ भी पकड़ी गई हैं। ये युवतियाँ धनी महिलाओं के वेश में रेल के फर्स्ट क्लास अथवा विमानों द्वारा यात्रा करती थीं और गुप्त रूप से अफीम ले जाती थीं, जो पूर्वी एशिया के देशों में २००० से २५०० रुपये सेर तक बिकती थी।

* * *

पति पर चोरी और जालसाजी का मुकदमा चलाने के बाद एक दिन श्रीमती कुसुमरानी शीरीं वसु अपने पति के हाथ में हाथ डाल अदालत में उपस्थित हुईं और राजीनामा करने की अनुमति माँगी। श्रीमती वसु ने अपने पति पर अपनी कुछ वस्तुएँ चुराने तथा एक जाली चेक द्वारा कई सौ रुपये ठग लेने का मामला चलाया था। उनके पति ने उन्हें व्यभिचारिणी कहा था। मजिस्ट्रेट ने यह कहकर कि पति-पत्नी के मामले में राजीनामा ही श्रेष्ठ है, इसकी अनुमति दे दी। श्रीमती कुसुमरानी शीरीं वसु अवध चीफ कोर्ट के भूतपूर्व चीफ जस्टिस सर जार्ज टामस की भतीजी तथा एक रिटायर्ड जिला मजिस्ट्रेट श्री टामस चौधरी की पुत्री हैं और उनके पति कैप्टेन एन० वसु सैन्य-विभाग के एक उच्च पद पर हैं।

लखनऊ जिले की शोडषवर्षीया सुंदरी अभी तक अपने सौंदर्य की वेदी पर दो बलि ले चुकी है, फिर भी उसके आस-पास
भौंरों का मँडराना नहीं रुका है।
इटौंजा थाने के इतसुवा ग्राम में
जहाँ उसके पीछे दो ठाकुरों में
और एक मारा गया। तब उसके
मंडियाँव थाने के एक गाँव में आ
यहाँ भी युवकवृन्द उसे देखकर
गया और दो दलों में झगड़ा होने
मारा गया। पुलिस दोनों हत्याओं
जाँच कर रही है। 'सुन्दरी' को
विचार से लखनऊ ले जाने की
गई है।

* *

१६।।) में ज्वेलवाली रिस्ट

स्वीसमेड ठीक समय देनेवाली
गारण्टी। गोल या स्क्वायर सेप
सुपिरियर २०), फ्लाट सेप क्रोमियम
३०), फ्लाट सेप रोल्ड गोल्ड
गारण्टी ५५), फ्लाट सेप १५
क्रोम केस ३८), फ्लाट सेप ११
रोल्ड गोल्ड ७५)।

रेक्टेंगुलर, कर्भ या टोनो सेप क्रोमियम
केस ४२), सुपिरियर
६०), रोल्ड गोल्ड
९०) अलार्म टाइम पीस कीमत १८),
बीग साइज २५) पोस्टेज अलग
घड़ी लेने से माफ।

एच० डेभिड, एण्ड. को० (S
पो० बक्स नम्बर ११४२४, कलक

T. B. टी. बी. "तपेदिक" चाहे फेफड़ों का हो या अँतड़ियों का बड़ा भयंकर रोग है

(१) पहला स्टेज	(२) दूसरा स्टेज	(३) तीसरा स्टेज	(४) चौथा स्टेज	अंतिम स्टेज
मामूली ज्वर खाँसी	ज्वर-खाँसी की अधिकता	शरीर सूखना, ज्वर-खाँसी की भयंकरता	सब ही बातों की भयंकरता शरीर पर वर्म, दस्त आदि का शुरू होना	रोगी की मौत और भयंकर जर्मों इधर-उधर फैल

(जबरी)——————(Jabri)——————(जबरी)——————(Jabri)

T. B. टी. बी. "तपेदिक" और पुराने ज्वर के हताश रोगियो! देखो—

श्री नागेश्वरप्रसाद तिवारी, मास्टर स्कूल नडुगावाँ, पो० डाल्टनगंज (बिहार) से लिखते हैं—मैं अनेक दिनों से ज्वर-खाँसी से बीमार था। बलगम आदि की परीक्षा पर "तपेदिक" (राज्यक्ष्मा) रोग ही साबित हुआ। मैं रोग का नाम सुनते ही बहुत घबरा गया इसी बीच परमात्मा की कृपा से आपकी अमृतरूपी दवा "जबरी" का नाम सुना। तुरन्त आर्डर देकर पार्सल प्राप्त किया, दवा को विधिपूर्वक सेवन किया। उसके अमृतरूपी गुणों ने मुझे आश्चर्य में डाल दिया। थोड़े ही दिनों में शरीर का रङ्ग ही बदल गया। ऐसा मालूम होने लगा, जैसे कुछ रोग ही न रहा, अधिक लिखना व्यर्थ है। यथार्थ में आपकी औषधि इस दुष्ट रोग के लिए अमृततुल्य है। जितनी भी प्रशंसा की जावे कम है।

(२) डा० ठाकुरसिंह नेपाली मु० कटैया पो० हरलखी जिला दरभंगा से लिखते हैं। आपकी भेजी दवा "जबरी" बहुत लाभदायक प्रतीत हुई। कृपया लौटती डाक से पूरा कोर्स भेज दें।

इसी प्रकार के पहले भी दसों प्रशंसापत्र आप इन्हीं कालमों में देख चुके हैं। भारत के कोने-कोने में लोगों ने यह मान लिया है कि इस दुष्ट रोग से रोगी की जान बचानेवाली यदि कोई औषधि है तो वह एकमात्र "जबरी" ही है। "जबरी" के नाम में भारत के पूज्य ऋषियों के आत्मिक बल का कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि प्रथम दिन से ही इस दुष्ट रोग के जर्म नष्ट होना शुरू हो जाते हैं। यदि—आप इस तरफ से हताश हो चुके हों तो भी परमात्मा का नाम लेकर एक बार "जबरी" की परीक्षा करें। परीक्षार्थ ही हमने १० दिन का नमूना रख दिया है, जिसमें तसल्ली हो सके। बस—आज ही आर्डर दें। अन्यथा फिर वही कहावत होगी कि—अब पछताए क्या होत है—जब चिड़िया चुग गई खेत। सैकड़ों डाक्टर, हकीम, वैद्य अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार-द्वारा आर्डर देते हैं। हमारा तार का पता केवल "जबरी" जगाधरी (JABRI JAGADHRI) काफी है। तार में अपना पूरा पता दें। मूल्य इस प्रकार है—जबरी स्पेशल नम्बर १ जिसमें साथ साथ ताकत बढ़ाने के लिए मोती, सोना, अभ्रक आदि मूल्यवान् भस्में भी पड़ती हैं। पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन २०) रु०। जबरी नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान् जड़ी-बूटियाँ हैं, पूरा कोर्स २०) रु०, नमूना १० दिन का ६) रु०, महसूल अलग है। आर्डर देते समय नं० १ या नं० २ तथा पत्र का हवाला जरूर दें।

पता—रायसाहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड बैंकर्स (D) 'जगाधरी' पूर्व पंजाब (E.

रामचरितमानस

टीकाकार—डाक्टर श्यामसुन्दरदास

'मानस' का महत्व किसी से छिपा नहीं है। भारतवर्ष में तो इसका मान है ही, अन्य देशों में भी इस अमर काव्य का आदर है। यह प्रामाणिक संस्करण इधर कई वर्ष से अप्राप्य था। हाल में ही छपकर तैयार हुआ है। ग्राहकों को शीघ्रता करनी चाहिए। धिक प्रतियाँ नहीं छापी गई हैं।

बड़े आकार के १२०० पृष्ठ। रंग-विरंगे दर्जनों चित्र। सजिल्द प्रति का

मूल्य १२) रुपये

जहाँ पर हमारी ब्रांच या एजेंसी है वहाँ ख़रीदने पर डाकख़र्च की बचत होगी।

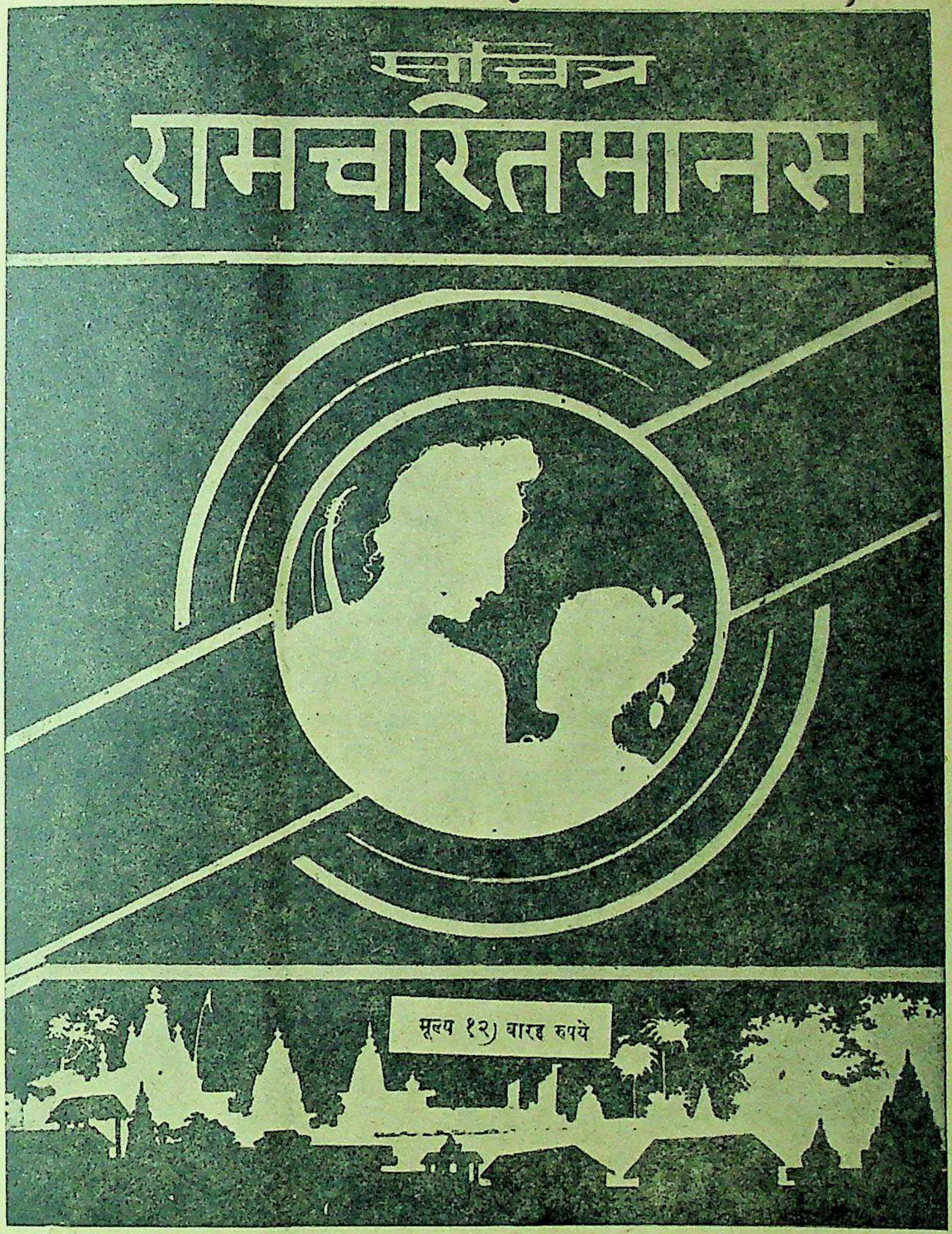

हमारी ब्रांचें और एजेन्सियाँ

१ इलाहाबाद हेड आफ़िस—इंडियन प्रेस लिमिटेड, ३६ पन्नालाल रोड
२ इलाहाबाद सिटी—न्यू ऐरा बुकहाउस, हिवेट रोड
३ आगरा—आगरा पब्लिशिङ्ग हाउस, बारा मुजफ्फर ख़ाँ
४ अजमेर—इंडियन प्रेस लिमिटेड, कचहरी रोड
५ अलमोड़ा—डिस्ट्रिक्ट बुकडिपो, लालबाजार
६ बनारस—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, बनारस छावनी
७ बाँदा—बुंदेलखण्ड पब्लिशिङ्ग हाउस
८ बरेली—इंडियन बुकडिपो
९ बम्बई—भारतीय पुस्तक भण्डार, कालबा देवी रोड
१० बीकानेर—गर्गबुक कम्पनी, कोट के भीतर
११ कलकत्ता—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, २२।१ कार्नवालिस स्ट्रीट
१२ कानपुर—साहित्य-रत्नालय, श्रद्धानन्द पार्क
१३ दिल्ली—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, नई सड़क
१४ गोरखपुर—पुस्तक-स्थान, बख्शीपुर
१५ ग्वालियर—लायल बुकडिपो, पाटनकर बाज़ार, लश्कर
१६ इन्दौर—नवयुग साहित्यसदन, खजूरी बाजार
१७ जयपुर—गोपाल बुकडिपो, त्रिपौलिया बाज़ार
१८ जबलपुर सी० पी०—इंडियन प्रेस, लिमिटेड
१९ लखनऊ—इंडियन बुकडिपो, अमीनुद्दौला पार्क
२० मेरठ—पुस्तक-स्थान, वैस्टर्न कचहरी रोड
२१ पटना—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, पो० ऑ० बाँकीपुर
२२ राँची—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, कोर्ट रोड

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

नये युग की नयी औषधि!

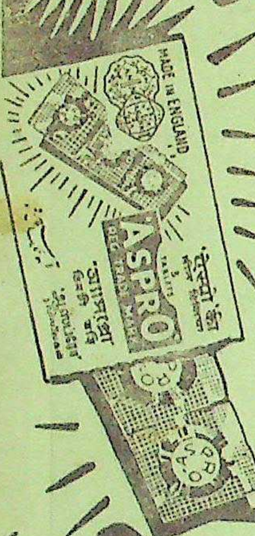
MADE IN ENGLAND
ASPRO

इस नये राष्ट्रमें एक नया युग आ रहा है। पुराने तरीकों की जगहें नये तरीके ले रहे हैं। औषधि-जगतमें आकर 'ऐस्प्रो' ने हजारों परिवारों के दर्द तथा ज्वर को शान्त किया है। ज्यों ज्यों दिन बीतते जा रहे हैं लोगों में इसकी जानकारी बढ़ती जा रही है और इसका सुखद एवं गुणकारी प्रभाव भी बढ़ता जा रहा है। 'ऐस्प्रो' व्यवहार कर देखिये - इसमें सिर्फ डेढ़ आने पैसे लगेंगे। आपके निकटतम औषधि-विक्रेता के यहां आपको 'ऐस्प्रो' मिलेगी। यह लिफाफे के अन्दर एक पारदर्शक कागज में बन्द रहती है। लिफाफे को फाड़ दीजिये और 'ऐस्प्रो' की २--३ टिकियां योंही, या थोड़े जल या किसी दूसरे पेय के साथ निगल जाइये। यह अंग-अंग की दर्द और तकलीफ को दूर करती है, बुखार को खतम करती है, क्लान्त स्नायुओं को शान्त करती है, हृदय को नुकसान नहीं पहुंचाती। स्त्रियों के दर्द के लिये वरदान स्वरूप है। पचासों तरह से आपकी सेवा करती है - इसे पास रखिये।

ऐस्प्रो के बनाने में हाथ नहीं लगाया जाता।

कारखाने में शुरू से अन्ततक 'ऐस्प्रो' के बनाने में हाथ नहीं लगाया जाता है। तारीफ है इसके स्पेशल 'सीलटाईट' पैकिंग की जो इसे गन्दा होने, नरम होने तथा नष्ट होने से बचाती है और ग्राहकों के पास इसे वैसी ही तरो-ताजी पहुंचाती है जैसी वह फैक्टरी से निकलती है।

इतनी निरापद है कि बच्चे भी खा सकते हैं

'ऐस्प्रो'

मनुष्य-मात्र की दवा

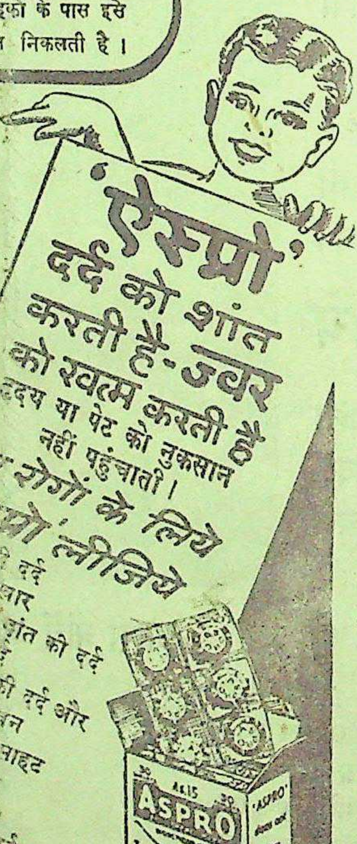
'ऐस्प्रो'
दर्द को शांत करती है-ज्वर को खत्म करती है
हृदय या पेट को नुकसान नहीं पहुंचाती।
इन रोगों के लिये
'ऐस्प्रो' लीजिये
सिर की दर्द
सर्दी-बुखार
डेंगू ज्वर, दांत की दर्द
पीठ की दर्द
गांठ-गांठ की दर्द और खींचन
गले की खसखसाहट
अनिद्रा
गठिया
स्त्रियों के मासिक दर्द
ASPRO

शीघ्र फायदा पहुंचानेवाली

नये ढंग से तैयार

अत्यंत निरापद एवं विशेष

प्रभावशाली महौषधि है

डिस्ट्रिब्यूटर्स :
[illegible]
[illegible]

मात्रा :
१ से ३ टिकियां

३ टिकियां—१॥ आना
३० टिकियां—१५ आना

73 HN.

देशदूत में विज्ञापन देकर लाभ उठाइए।

मुफ्त ! मुफ्त !! मु

आप घर बैठे मैट्रिक, एफ० ए०, पंजाब तथा आगरा यूनी और होम्योपैथिक बायोकैमिक आसानी से पास कर सकते हैं। नि मुफ्त मँगायें। पता :—

इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड)

फिल्मी दुनिया मुफ्त

सिनेमा की दुनिया का रहस्य जानने के लिये 'फिल्मी पुस्तक आज ही मुफ्त मँगाइये।

पता—मधुर मन्दिर, हाथरस,

मुफ्त

युवको ! यदि अपनी भूल से नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित फीका हो चुका हो तो भारत सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त रोग कविराज ब्रह्मसरूप बी० ए० ला फतेहपुरी (D.A.) देहली से (सम्मति) मुफ्त लेकर अपना सुधार लें।

दाद, खुजली

और

हरेक मैलका चमड़ीका दर्दों

गत ५० वर्षों से
जग विख्यात
कपड़े खराब नहीं करती।
नकालों से सावधा

रापट लोशन

सपट एन्ड को, डिपार्टमेंट U.P.
बम्बई २

प्रतिमा

इस संग्रह में सुकवि राजाराम की एक से एक बढ़िया ५० कवि इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा भाषा और क्या भाव सभी रंगीन आवरण, बढ़िया छपाई केवल १) एक रुपया।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इला

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [कि० मित्रा-द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, १४ [illegible] मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

देशदूत

र्ष १०, संख्या ४२] [रविवार, २७ जून, १९४८

० गांधी की हत्या का मामला

युक्तों पर मुकदमा कायम—स्पेशल जज तथा सरकारी वकील का बयान

ा गांधी जी की हत्या के े लाल किले में श्री आत्माचरण में मुकदमा प्रारंभ हो गया है। आठ अन्य अभियुक्तों की लाल किले में हुई। अभियुक्तों अभियोग लगाया गया था सुनाया गया। जज ने प्रत्येक के वकील के बारे में पूछा। छोड़कर शेष सारे अभियुक्तों की रखे गये हैं। अभियुक्त बयान देते हुए अपने को । उसने यहाँ तक कहा यन्त्र में भी शामिल नहीं मदनलाल ने यह भी कि २० जनवरी १९४८ मेरे अतिरिक्त और कोई

की ओर से सरकारी वकील कहा कि मैं प्रथम अभियुक्त को सकता हूँ। ३० जनवरी १९४८ जी की हत्या हुई। गांधी जी अन्तर्राष्ट्रीय पुरुष थे, वे अपने सिद्धान्तों की रक्षा के लिये मरे। प्रधान अभियुक्त को स्वीकार कर लेना चाहिये कि हत्यारा वही है। सरकारी वकील ने आगे कहा कि हत्या के १० दिन पूर्व डा० सावरकर और डा० परचुरे को छोड़कर शेष सभी अभियुक्त दिल्ली में उपस्थित थे। २० जनवरी १९४८ को मदनलाल ने प्रार्थना-सभा में हथगोला चलाया। उस दिन डा० परचुरे और डा० सावरकर के अतिरिक्त सभी अभियुक्त प्रार्थना-सभा के इर्द-गिर्द मौजूद थे। इन सब बातों से स्पष्ट ज्ञात होता है कि इन लोगों के दिल्ली में एकत्र होने का कोई उद्देश्य रहा होगा। सरकारी वकील ने यहाँ तक बतलाया है कि २० जनवरी को ही गांधी जी की हत्या कर डालने का इरादा था लेकिन कुछ कारणों से घटना नहीं हो सकी। ३० जनवरी को नाथूराम गोडसे, आप्टे और केकरे फिर दिल्ली आये। गोडसे ने गांधी जी की हत्या की उस समय शेष दो अभियुक्त आप्टे और केकरे भी आस-पास उपस्थित थे। इस प्रकार की उपस्थिति बिना किसी उद्देश्य के सम्भव नहीं है। वकील ने आगे कहा कि १५ अगस्त के पश्चात् गांधी जी हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए जोर देते रहे। नाथूराम गोडसे ने अपने पत्र 'अंग्रणी' में गांधी जी के सिद्धान्तों की कटु आलोचना की। इस प्रकार गांधी जी के विरुद्ध यह सारे षड्यन्त्र पहले से ही चल रहे थे। वकील ने कहा कि मेरे पास इस बात का प्रमाण है कि २० जनवरी की घटना के पहले दोनों प्रधान अभियुक्त डा० सावरकर के पास गये। श्री सावरकर को केवल न इतना ज्ञान ही था कि क्या होने जा रहा है बल्कि बिना उनकी सलाह के यह काम होना सम्भव ही न था।

जनवरी २० और ३० के बीच दोनों अभियुक्त डा० परचुरे और नाथूराम गोडसे ग्वालियर गये थे। वहाँ डा० परचुरे ने जो पिस्तौल प्राप्त की थी वही पिस्तौल गांधी जी की हत्या के काम में लाई गई थी। डा० सावरकर को यह मुख्य अभियुक्त अपना पथ-प्रदर्शक मानते हैं। नाथूराम गोडसे का पत्र डा० सावरकर को प्रिय था, यहाँ तक कि उस पत्र को डा० सावरकर आर्थिक सहायता भी देते थे। पत्र में प्रत्येक अंक के मुखपृष्ठ पर डा० सावरकर का चित्र रहता था। बम्बई में जहाँ डा० सावरकर रहते थे उनके पास छोटे बड़े सभी राजनीतिज्ञ जाते थे। उन जानेवालों में नाथूराम गोडसे और डा० परचुरे भी थे। इन अभियुक्तों का हिन्दू जाति की रक्षा करना मुख्य धर्म था। इसी के फलस्वरूप हिन्दू राष्ट्रीय-दल की कार्रवाइयाँ भी चलीं और इन्हीं विचारों को सामने लाने के लिये 'अग्रनी' नामक पत्र का प्रकाशक भी हुआ था। गांधी जी प्रारम्भ से ही हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिये जोर देते रहे, बाद में ऐसी ही और अन्य बातों के कारण साम्प्रदायिक कटुता बढ़ती गई। अंतरकालीन सरकार

का हिन्दू महासभा के नेताओं ने घोर विरोध किया। गांधी जी के इन सभी विचारों की कटु आलोचना 'अग्रणी' नामक पत्र में की गई।

इस प्रकार गांधी जी की नीति इन अभियुक्तों से कभी न मिली। इसी विचार के आधार पर गांधी जी की हत्या करने का षड्यन्त्र रचा गया। श्री दफ्तरी ने कहा है कि बिड़ला भवन का पुनः निरीक्षण किया जाय, जिससे अदालत के सामने स्पष्ट चित्र आ सके। सफाई पक्ष के वकील श्री भोपटकर ने कहा है कि मैं और अभियुक्त फिर से बिड़ला-भवन जाने को तैयार हैं। श्री दफ़्तरी ने इस बात पर आपत्ति प्रकट की कि अभियुक्त एक ही साथ बिड़ला-भवन में जायँ। अदालत ने नाथूराम से पूछा 'क्या तुम जाना चाहते हो?' उसने उत्तर दिया 'अवश्य।' श्री दफ़्तरी ने आगे कहा कि अभियुक्त जाय तो पुलिस का कड़ा पहरा होना आवश्यक है। न्यायाधीश ने श्री दफ़्तरी की बात मान ली। इस प्रकार अदालत ने मामले की प्रारम्भिक कार्रवाई शुरू कर दी है।

* * *

गांधी जी की हत्या का मुकदमा करनेवाले स्पेशल जज श्री आत्माराम आई० सी० एस०, नई दिल्ली।

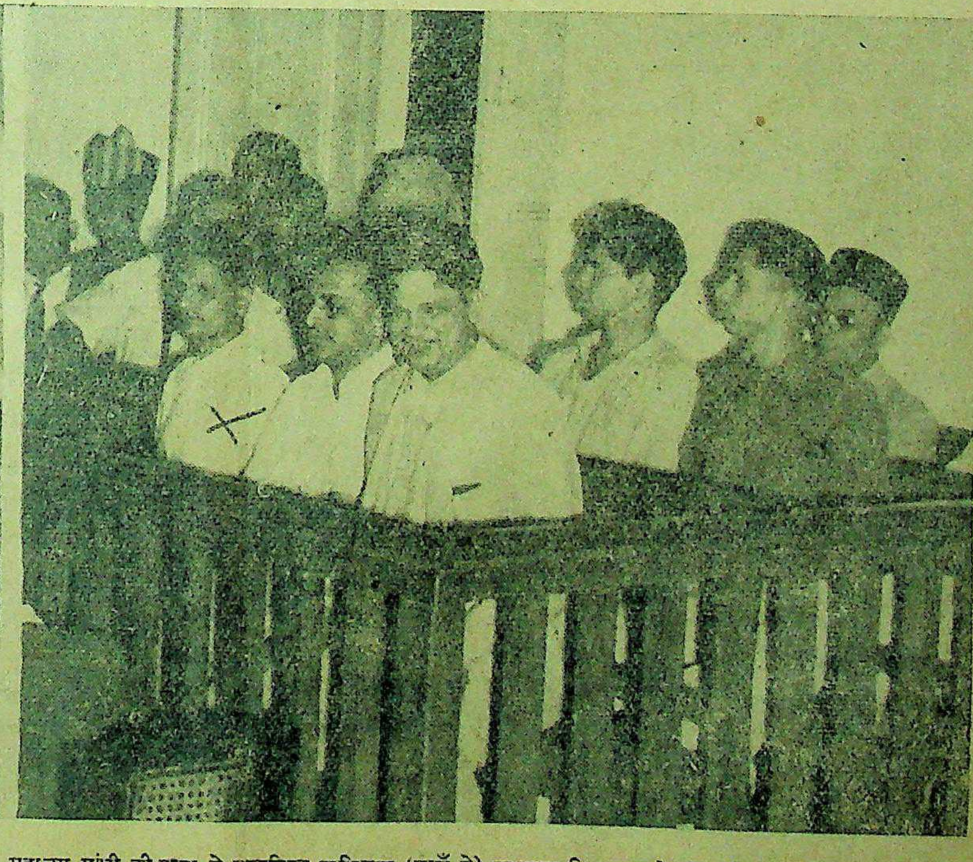

महात्मा गांधी की हत्या से सम्बन्धित अभियुक्त (दाएँ से) नाथूराम विनायक गोडसे, (चिन्ह ×) नारायण डी० आप्टे, विश्नु आर० फारकरे, मदनलाल, नाथूराम का भाई गोपाल विनायक गोडसे, सावरकर और दत्तात्रय पाचुरे।

सम्पादक का पृष्ठ

लार्ड लुई माउन्टबेटेन

भारतवर्ष के इतिहास में २१ जून, १९४८ एक स्मरणीय तिथि रहेगी। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रसिद्ध कार्यकर्ता बर्क ने कहा था "कि अँगरेज अफसर लहरों की भाँति आये और चले गये। उनकी दृष्टि में देश के प्रति अथाह प्रेम और श्रद्धा थी। उनकी उड़ान अनन्त थी," किन्तु लार्ड माउन्टबेटेन की बिदाई अँगरेज कर्मचारियों की उड़ान का अनन्त प्रतीक है। भारतवासियों ने लार्ड माउन्टबेटेन को बिदाई देकर इतिहास को एक नया योग दिया है। भारतवर्ष के निवासियों की इच्छा से लार्ड माउन्टबेटेन गवर्नर-जनरल नियुक्त हुए थे, उन्होंने अपनी कार्यपटुता और राजनीतिक बुद्धि से एक वफादार कार्यकर्ता की परिभाषा प्रस्तुत की। लार्ड माउन्टबेटेन के भारत आने पर मिस्टर एटली ने कहा था कि भारत की आजादी के पश्चात् लार्ड माउन्टबेटेन भारतीय नेताओं के बीच अपनी सहानुभूति का परिचय देंगे। आज उनकी बात पूरी पूरी सही मालूम हुई।

भारत में आने के साथ ही लार्ड माउन्टबेटेन ने आजादी की कठिनाइयों को हल किया, वे आदर्श भले ही न बन सके हों, किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि इनके पूर्व किसी पदाधिकारी ने इस समस्या का हल प्रस्तुत नहीं किया। भारत के विभाजन की बात कांग्रेस के नेताओं ने स्वीकार कर ली, जनता ने इसकी कटु अलोचना की। इसके लिए लार्ड माउन्टबेटेन को कुछ नहीं कहा जा सकता, क्योंकि भारतीय जनता के बीच कुछ ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो गई थीं जिनका उत्तर केवल विभाजन ही हो सकता था। विभाजन के मूल तत्वों को समझने का काम लार्ड माउन्टबेटेन ने बड़ी योग्यता से किया। १५ अगस्त १९४७ को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। जातीय मतभेदों और राजनीति की उलटी चालों के कारण भयानक मारकाट हुई; इन दुर्घटनाओं के कारण हम लार्ड माउन्टबेटेन को बुरा इसलिए नहीं कह सकते कि उनके आने के पहले भी मुस्लिम लीग के कारण ऐसी और घटनाएँ घटी थीं। इस भयंकर मारकाट, लूट, आगजनी और जङ्गलीपन ने देश का अहित किया, लेकिन हमें इन घटनाओं को भूल ही जाना चाहिये, क्योंकि इनकी यादगार भी मनुष्य जाति के पतन का कारण होगी।

भारतीय सरकार ने देश की इन भीषण परिस्थितियों को काबू में लाने के लिये अनेकानेक प्रयत्न किये, इन सारे प्रयत्नों में लार्ड माउन्टबेटेन का आदर्श सदैव ऊँचा ही रहा है। पाकिस्तान के असंतोष और उसके झूठे धर्माडम्बर ने ही रक्त से धरती को रँगा है, अन्यथा भारतवर्ष को ऐसी विषम परिस्थितियों से कभी न गुजरना पड़ता। उदाहरण के लिये लार्ड माउन्टबेटेन की राय के कारण ही पाँच सौ देशी रियासतें स्वतंत्र हुईं। इसके अतिरिक्त सरदार वल्लभभाई पटेल की दूरदर्शिता ने सारी देशी रियासतों को भारतीय संघ में सम्मिलित किया। अभाग्यवश हैदराबाद इस सुविधा में योग नहीं दे सका। इसमें सन्देह नहीं कि भारतवर्ष में आपसी एकता आज ब्रिटिशकाल की अपेक्षा कहीं अधिक है। रियासतों के सम्बन्ध में लार्ड माउन्टबेटेन ने अपनी योग्यता का सफल परिचय दिया है। इनका प्रभाव सदैव देश की भलाई की ही ओर रहा है। लार्ड माउन्टबेटेन ने सदैव यह विचार सामने रखा है कि वे भारतवासियों के स्वतंत्र गवर्नर-जनरल हैं। आज हैदराबाद का ही प्रश्न प्रधान और गम्भीर है। उसके लिये हमें आशा है कि वह अत्यंत शीघ्र ही सफलता के साथ तय हो जायेगा। काश्मीर की व्यवस्था को देखकर हमें हैदराबाद के प्रति भी सहानुभूतिपूर्ण आशा है। देश की भलाई में लार्ड माउन्टबेटेन का स्थान उन्नत है यह निःसन्देह सत्य है।

लार्ड माउन्टबेटेन ने महात्मा गांधी का भी विश्वास जीता है, उनकी हत्या से लार्ड माउन्टबेटेन को देश के नाते बहुत ही महान् कष्ट मिला है। लेकिन जातीय एकता के लिये गांधी जी का बलिदान व्यर्थ नहीं गया। पाकिस्तान और भारतवर्ष में लोग विचार करने लगे हैं कि आपसी द्वेष और युद्ध जीवन को कठिनाइयों से मुक्त न कर सकेगा। भारतवर्ष और पाकिस्तान दोनों को ही अपनी आर्थिक अवस्था उन्नत करनी है। एशिया और योरप से घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित करने के लिये पाकिस्तान और भारत को अपनी आर्थिक अवस्था सुधारनी पड़ेगी। गांधी जी के आदर्श मानवीय संस्कृति और सभ्यता को असानुषिक अत्याचारों और झूठे धर्म युद्धों से बचावेंगे, इसी विश्वास पर लार्ड माउन्टबेटेन ने वचन दिया है कि मैं ब्रिटेन और भारत में मैत्रीपूर्ण सद्भावनाओं को बनायें रखने का प्रयत्न करूँगा।

पन्द्रह अगस्त १९४७ के पश्चात् लार्ड माउन्टबेटेन ने भारतीय राजनीति को जो योग प्रदान किया है वह भारतवासियों के द्वारा सदैव याद रखा जावेगा। १५ अगस्त के पश्चात् लार्ड लाउन्टबेटेन केवल वैधानिक सदस्य के ही रूप में रहे हैं। इसका कारण यह है कि उनके हाथ में वे अधिकार नहीं रहे जो उनको स्वतंत्रता के पूर्व प्राप्त थे। भारतीय सरकार के विरुद्ध उन्होंने कभी कुछ करने का साहस तक नहीं किया। यही कारण है कि नेताओं और लार्ड माउन्टबेटेन के बीच प्रेमपूर्ण सद्भावनाएँ रहीं। इतना ही नहीं वरन् जनता के द्वारा भी उन्हें सहानुभूति मिली।

भारत के सामाजिक जीवन में लार्ड और लेडी माउन्टबेटेन ने बहुत भाग लिया। उन्हें पूर्वी लोगों के साथ सम्बन्ध स्थापित करने की कला ज्ञात थी। भारतवर्ष की इस प्राचीन जाति के साथ उनकी ईमानदारी, मैत्री और सद्भावना सदैव जीवित रहेगी। लेडी माउन्टबेटेन ने इधर शरणार्थियों की सेवा करके भारतीयों के प्रति जो सहानुभूति प्रकट की है उसके लिये हम उनके आभारी हैं। भारतीय महिलाओं की उन्नति के लिये भी लेडी माउन्टबेटेन सदैव तत्पर रहीं। लार्ड माउन्टबेटेन भारतवर्ष से दूर रहकर भी भारतीयों के हृदय में रहेंगे, ऐसा विश्वास है। एशिया ने लार्ड माउन्टबेटेन के रूप में भारत को एक ईमानदार और वफादार आदमी दिया। इस बात की गवाही लार्ड माउन्टबेटेन और उनकी धर्मपत्नी लेडी माउन्टबेटेन की सेवाएँ हैं हमें विश्वास है कि वे इगलैंड जाकर भारतवर्ष को भूलेंगे नहीं, वरन् इसके सम्बन्ध को वे अपने देश से दृढ़-करने का प्रयत्न करेंगे। लार्ड माउन्टबेटेन के पश्चात् गवर्नर-जनरल के पद पर चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचारी आसीन होंगे। उनकी दूरदर्शिता, प्रतिभा और राजनीतिज्ञता से सभी परिचित हैं। आशा है वे अपनी योग्यता से देश को दिनों-दिन उन्नति के मार्ग में लावेंगे।

भोजन आवश्यक है या बिजली?

अँगरेजी सत्ता की यह देन है कि विदेशी विशेषज्ञों से सलाह ली जाये और असामयिक योजनायें बनाई जायें

लेखक, प्रोफेसर जे० सी० कुमारप्पा

अँगरेजी सत्ता की एक देन यह भी है कि प्रत्येक कार्य में विदेशी माहिरों की सलाह ली जाय। ऐसे विषयों में जिनमें विदेशों ने विशेषता प्राप्त कर ली है, उनके माहिरों को बुलाकर सलाह ली जा सकती है; लेकिन जो विषय ऐसे हैं जिनमें लोगों के वातावरण और उनके अपने विषय विशेष ज्ञान की आवश्यकता है, ऐसा रवैया अनैतिक है। परतन्त्रता का एक रोग, अपने को नीचा समझना, शीघ्र दूर नहीं होता।

इस लेख के लेखक प्रोफेसर कुमार

हमारे राष्ट्र के योग्य औद्योगिक योजना के विषय में सलाह देने के हेतु आस्ट्रेलिया की क्वीन्सलैंड की सरकार के आर्थिक सलाहकार श्री कॉलिन ग्रँट क्लार्क को बुलाया गया था। उनके उपरोक्त शब्द महत्त्वपूर्ण हैं:—

"यदि मैं एक भारतीय मंत्री होता तो मैं यह कहता कि "घरेलू धन्धों को जितना बढ़ा सको उतना बढ़ाओ। बड़े कारखाने एक आवश्यक बुराई समझो।"

यह एक ऐसी बात थी जिसकी उनसे आशा नहीं की जाती थी। इसलिए उनको धन्यवादपूर्वक विदा कर दिया गया।

दया की दृष्टि से

नई देहली में होनेवाली औद्योगिक कान्फ्रेंस ने घरेलू उद्योग-धन्धों को इतनी ही मान्यता दी कि वे तभी तक ठीक हैं जब तक कि बड़े पैमाने के धन्धों की सहायता करने में आवश्यक होते हैं— जैसे मरम्मत इत्यादि। घरेलू धन्धों को दया के रूप में रहना पड़ेगा। हमने अभी तक यह नहीं सीखा कि चित्र इसका बिलकुल उलटा है। हम बड़े पैमाने के उद्योगों को तभी चलायें जब कि उन उद्योगों की घरेलू धन्धों को आवश्यकता हो। उनको हम जनता के उद्योगों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए 'आवश्यक बुराइयों' के रूप में ही गवारा कर
सकते हैं। अगर लोहार को
के पहियों में लगाने के लिए लोहे
जरूरत है तो लोहे के कारखाने
उसकी पूर्ति करना होगा। देहाती
कारियाँ जनता का प्रधान भोजन हैं
बड़े पैमाने के उद्योग ऐसे विष हैं
कभी-कभी दवाई के रूप में
मार्फिया और कुनैन के लड्डू
रह सकते। लेकिन इन दोनों
थोड़ी मात्रा में रोगी को आवश्यकता
पर दवा के रूप में दिया जा सकता है।

कौन सी चालक शक्ति?

कारखानेवाले उद्योगपति
ज्यादा माल बनाने के लिए शक्ति
योग करने की योजनाएँ बना रहे हैं।
लिए योग्य सुविधाएँ और
करोड़ों रुपयों की मशीनें मँगवा
सरकार से सहायता माँग रहे हैं।
बात को बिलकुल भुला देते हैं कि
काम करनेवाले इंजन हमारे
सामने बेकार पड़े हैं। उनको
लाओ या न लाओ उन्हें ईंधन तो
पड़ता है। प्रत्येक मानव एक
है जिसे काम चाहिए और
को भोजन चाहिए। यह कहाँ की
मानी है कि इन इंजनों को,
को तो प्रत्येक परिस्थिति में देना
बेकार रक्खा जाय और बाहर से
करने के लिए इंजन मँगाये
बात के निर्णय में कोई बड़े
आवश्यकता नहीं है, लेकिन
अच्छे से अच्छे मनुष्य गलत
के दोषी हो रहे हैं। अगर कुछ
व्यापारी लोग मशीनों के
अपनी जेबें भरना चाहें, जब कि
समाज को अपने बेरोजगार
काम मिलनेवाले लोगों का
पड़े, तो हमारी समझ में आ
लेकिन दुर्भाग्यवश हमारे
यह ज्ञात होता है कि हमारे
पुर्जे और व्यापारियों की
गये हैं।

शेष पेज १८

कासिम रिजवी और रजाकार

हैदराबाद के साम्प्रदायिक सैनिक संगठन की रोमांचक कथा

लेखक, श्री उमाशंकर शुक्ल

> हैदराबाद की समस्या दिन-प्रतिदिन जटिल होती जा रही है। भारत-संघ के विरोध के लिये वहाँ रजाकार संगठन का प्रादुर्भाव हो चुका है। रजाकार संगठन क्या है और किस उद्देश्य से इसकी स्थापना हुई है, साथ ही रजाकारों का नेता कासिम रिजवी कौन है, इन सबका सुंदर और सामयिक वर्णन इस लेख में किया गया है। लेख अत्यन्त सुंदर, पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

हैदराबाद में बहुमत पर अनाचार प्रारंभ हो गया।

प्रसिद्ध गांधीवादी प्रोफेसर भंसाली रजाकारों के अत्याचार के विरुद्ध हैदराबाद में सत्याग्रह कर रहे हैं।

समय दक्षिण हैदराबाद की ही विकट है। वहाँ पर सैयद रिजवी और रजाकारों ने बहुत ही मचाया है। समाचारपत्रों के के अत्याचारों से परिचित हैं। में यही कहा जा सकता है कि नवता को ताक पर रखकर शैता- पूजा की जा रही है।

हैदराबाद की राजनीति में को जो श्रेष्ठ स्थान प्राप्त उसे स्वयं निजाम को भी भय । उसका सिंहासन उसे हिलता है। क्योंकि दो वर्ष पूर्व कोई नहीं जानता था किन्तु तेजक भाषणों द्वारा और आन्दोलन से रियासत के मुसलमानों के हृदयों में बना लिया है। इधर छः रिजवी ही रिजवी है। उसने में बहुत बड़ी जागृति कर दी कृत्य करने में तो उसने के शाहंशाह मिस्टर जिन्ना को दिया है। केवल धमकी के बल विख्यात हो गया। इस हिटलर को पहले कोई नहीं और आज रियासत के मुसल- स्वयं आश्चर्य हो रहा है। हिन्द आवाहन देकर वह उसे करने की भाषा बोलता है—यह और कैसे उत्पन्न हुआ? उसके कैसे थे? हैदराबाद के राज- में पुच्छल तारा कैसे आया? रिजवी का पेशा वकालत का आठ-दस वर्षों से उसने अपना दिया है और इस्लामी सत्ता का दी—इसका पेशा अख्तियार वकालत छोड़ते समय उसके कोई बात न थी। उसने वका- पेशा क्यों छोड़ा—उसके कई हैं। सच पूछा जाय तो वह मुकदमे लड़ाकर वकीली नहीं उसका मूल निवासस्थान है। उसमानिया यूनिवर्सिटी पास करने पर उसने उसमाना- अपनी प्रेक्टिस शुरू की। पर दूसरे ढंग की थी। दो-चार लेकर आस-पास के गाँवों में जाना और कभी छापा मार- दबाव डालकर वह पक्षकार यह वकीली करने की उसकी एक बार अगर पक्षकार उसके चंगुल में आया भर कि वह उसे बिना उसका घर-बार हड़पे उसे छोड़ता भी न था। इस प्रकार वह पैसे पैदा करता और ताड़ी पीता था। अधिकारियों से दोस्ती बढ़ाता और गाँवों में गुंडागिरी करता। यही उसका कार्यक्रम था। राजकीय बातों में उसे कोई रस नहीं था। बीच बीच में अगर कोई इस्लामी धर्म-प्रचारक उसमानाबाद आता, तो वह उसकी मदद कर दिया करता था—बस यहीं तक उसकी राजनीति मर्यादित थी।

रिजवी फरार हो गया

दस वर्ष पूर्व लातूर में एक भयानक घटना घटी। उसी समय से रिजवी का जीवन दूसरी ओर मुड़ा। १९३८ में लातूर में आर्य-समाज की परिषद् भरी थी। रियासत के तथा रियासत से बाहर के कई प्रख्यात आर्य-समाजी विद्वान तथा कार्यकर्ता पधारे थे। प्रेक्षकों की भी संख्या काफी थी। सरकारी आज्ञा से ही वह परिषद् भराई गई थी। अधिवेशन का कार्य प्रारम्भ हुआ। इतने में ही सभा-मण्डप के बाहर बन्दूकों की आवाजें आने लगीं। सभा के लोग बाहर आकर देखते हैं तो डेढ़ सौ सशस्त्र मुसलमान पण्डाल की ओर बन्दूकें चला रहे थे। आत्मरक्षणार्थ आर्य-समाजियों ने भी बन्दूकें चलाईं। सभा-क्षेत्र रणक्षेत्र में परिवर्तित हुआ। सभा पर गोलियाँ चलाई गईं। कई आदमी मरे और कितने ही घायल हुए। सभा में सम्मिलित होने के लिए दूर दूर से आये हुए सज्जनों को लूटा गया। सभा-गृह को आग लगा दी गईं। लातूर शहर में दङ्गे की आग भड़क उठी। मुस्लिम गुण्डों ने इस अवसर पर खूब लूट-मार की। रिजवी मुसलमानों का अगुआ बना था। रिजवी पर खून का अभियोग लगाया गया और उसकी गिरफ्तारी के लिए वारण्ट छूटा। पर रिजवी वहाँ से भाग गया। दो साल तक वह फरार रहा। दङ्गे में जो व्यक्ति पकड़े गये थे उन पर मुकदमा चला। जब मुकदमा समाप्त हो गया तो रिजवी हैदराबाद में 'भले मानुस' बनकर घूमने लगा। तब से उसने उसमानाबाद एकदम से छोड़ दिया और वह हैदराबाद में रहने लगा।

खाकसार से रजाकार

द्वितीय महायुद्ध के प्रारम्भ में हिन्दुस्तान में खाकसारों का बहुत जोर था। हैदराबाद रियासत से तो खाकसारों के संगठन को भरपूर आर्थिक सहायता प्राप्त होती थी। इसके अतिरिक्त इत्तेहादुल मुसलमीन संस्था की ओर से कई तरुण खाकसारों के केन्द्रीय कार्यालय दिल्ली में शिक्षा लेने गये थे। कासिम रिजवी ने इसका लाभ उठाया। खाकसार शिक्षण लेने के बाद जब वह हैदराबाद लौटा तो उसे खाकसारों के दल में बहुत महत्त्व प्राप्त हो गया। पश्चात् भारत-सरकार ने खाकसारों पर प्रतिबन्ध लगाया और उनका संगठन भंग हो गया। उसी समय कासिम रिजवी व उसके साथियों ने उसी संगठन को 'रजाकार' नाम के अंतर्गत परिणत किया। रजाकारों के संगठन का कार्य प्रारंभ हुआ। हैदराबाद की राजनीति में कासिम रिजवी को स्थान प्राप्त हुआ।

दिल्ली में लार्ड लुई माउन्टबेटेन के सभापतित्व में देशी राज्यों के प्रतिनिधियों का सम्मेलन

एत्तेहादुल और रजाकार

हैदराबाद रियासत के मुसलमानों के संगठन का कार्य नवाब बहादुर यारजंग नामक एक जागीरदार ने किया। उसने १९२८ में "एत्तेहादुल मुसलमीन" संस्था की स्थापना की। एत्तेहादुल का मतलब होता है ऐक्यवर्द्धक। मुसलमानों में ऐक्य भाव पैदा कर दक्षिण में निजाम का राज्य बनाये रखना व इस्लामी संस्कृति की महानता प्रस्थापित करना—यही उक्त संस्था का ध्येय था। यह नवाब छः वर्ष पूर्व गुजर गया। उसके बाद 'एत्तेहादुल मुसलमीन' की बागडोर हैदराबाद के दो प्रमुख वकीलों ने सँभाली। पर उनके पास नवाब के समान संगठन-कौशल्य का अभाव था; और न कोई कार्यक्रम ही उनके पास था। उस समय 'रजाकारों' की संस्था खूब फल-फूल रही थी। कौन जानता था कि उक्त संस्था भविष्य में इतने उत्पात मचायेगी। रजाकार का मतलब होता है 'स्वयंसेवक'। सैनिक पद्धति के अनुसार रजाकारों की कवायतें होने लगीं। मुसलमान समाज में उसके प्रति आकर्षण बढ़ा। धीरे धीरे सरकारी नौकर भी उसमें शामिल होने लगे। पुलिस की परेडें रजाकारों की परेडों के आगे फीकी पड़ गईं। रिजवी का आत्म-विश्वास बढ़ा। उसने तुरन्त ही एत्तेहादुल मुसलमीन संस्था से निकट का संबंध प्रस्थापित किया। उस संगठन के अंतर्गत चुनाव की राजनीति प्रारंभ हुई।

मुस्लिमों का सैनिकीकरण और युद्ध

१९४५ में भारतीय राजनीति में बड़े बड़े परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए। लार्ड वैवेल और भारतीय नेताओं में चर्चा होना शुरू हुई। सभी रियासतों को अपने भविष्य की चिंता महसूस होने लगी। निजाम ने भी आग लगने के पूर्व कुआँ खोदना शुरू किया। एत्तेहादुल मुसलमीन व रजाकारों के संगठन से निजाम व अन्य मुसलमानों को आशा बँधी कि ये संगठन संकट के समय सहायता करेंगे। प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से निजाम सरकार ने इन संस्थाओं की आर्थिक मदद करना शुरू कर दिया। जो सरकारी नौकर रजाकार होते, उन्हें बहुत-सी सुविधाएँ निजाम की ओर से दी जाने लगीं। वहाँ के नवाब, जागीरदार और व्यापारियों ने आर्थिक मदद देना प्रारम्भ किया। हथियार भी रजाकारों को दिये गए। रेडियो द्वारा उनका जोरों से प्रचार किया जाने लगा। रिजवी ने परिस्थिति अपने अनुकूल पाकर एत्तेहादुल मुसलमीन के सामने लश्करी कार्य-क्रम रखा और मुसलमानों को सैनिकीकरण का महत्त्व बतला दिया। इन घटनाओं का यह परिणाम हुआ कि रिजवी के लिये एत्तेहादुल मुसलमीन संस्था के अध्यक्ष-पद का स्थान खाली कर दिया गया और १९४६ में रिजवी अध्यक्ष बना। वह दोनों संस्थाओं का सर्वेसर्वा बन गया। आज वह जो कुछ कर रहा है वह किसी से अप्रकट नहीं है।

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

पिंडारी की मनोरंजक यात्रा

उत्तरी भारत के प्राकृतिक और सुहावने स्थानों तथा दृश्यों की एक झाँकी

लेखक, श्री चतुरबिहारी दुबे, पी० सी० एस०

यह समय गर्मी का है, कितने ही लोग जलवायु बदलने तथा यात्रा का आनन्द लेने के लिये उत्तरी भारत के शीतल, सुहावने तथा मनोहर स्थानों की यात्रा करते हैं। इस लेख में लेखक ने अपनी पिंडारी-यात्रा का सुन्दर वर्णन किया है। यात्रा में उत्तर-भारत के कई प्रसिद्ध स्थलों का भी वर्णन किया गया है, जो पठनीय, मनोरंजक और सामयिक है।

प्रकृति और जीव का अभिन्न सम्बन्ध है। आज से नहीं, सृष्टि के आरम्भ ही से यह चला आया है और सनातन तक रहेगा। प्रकृति जीवों की उदरपूर्ति करती है। पशुओं से ऊँचा मानव, शारीरिक तृप्ति के अलावा मानसिक तृप्ति के लिए भी प्रकृति के आँचल में मुँह छिपाने को आकुल हो उठता है। ऊँचे ऊँचे पर्वतों की पुकार, नन्हें निर्झरों की संगीतमय ध्वनि उसे उन्मत्त बना देती है। गगन-चुम्बी श्रेणियों के पैरों में खड़ा मानव तब अपनी लघुता का अनुभव करता है। वह अपना स्वत्व भूल इस अलौकिक रूप-रेखा राशि में अपनी आत्मा को विलीन कर देने के लिए लालायित हो उठता है। कुछ ऐसी ही मेरी आत्मा की भी पुकार थी जिसने मुझे पिंडारी-प्रदेश के दर्शनों के लिए उस चिलचिलाती धूप में घर से बाहर निकाल फेंका।

२ जून १९४० को मेरी यात्रा आरंभ हुई। मेरे साथी एम० सी० पन्त और श्री यू० एस० खाती थे। २ जून की सुबह हम सब अलमोड़ा में मिले और आठ बजे एक बस सोमेश्वर के लिए किराए पर ले ली। हम लोगों ने भोजन-सामग्री तथा अन्य आवश्यक चीजें रानीखेत से चलने से एक दिन पहिले डोडियालों पर लाद घोड़ों के रास्ते से बागेश्वर भेज दी थी। पर्वतों के अन्तस्थ भाग में जाने के लिए अलमोड़ा प्रान्त में रानीखेत ही ऐसा स्थान है जहाँ डोडियाल सुगमतापूर्वक मिल जाते हैं। कुंवरसिंह सब डोलियों का नेतृत्व कर रहा था। वह पिंडारी और उसके ऊपर के प्रदेशों में कई बार घूम चुका था। नन्दादेवी का जलाशय भी पहले देख चुका था।

हम लोग सोमेश्वर पहुँचे। यह अलमोड़ा से २४ मील दूर अलमोड़ा गरुड़ की सड़क पर है। सोमेश्वर कोसी नदी के किनारे एक छोटा सा नगर है। मोटर की सड़क के किनारे बसा होने के कारण रहने-सहने और खाने-पीने की सभी साधारण सुगमताएँ प्राप्त हो जाती हैं।

सोमेश्वर में कुछ समय विश्राम करने और खाना खाने के पश्चात् हम लोग डिस्ट्रिक्ट बोर्ड द्वारा बनवाए गए घोड़ों के रास्ते से बागेश्वर के लिए चल दिये। सड़क अत्यन्त ढालू थी। पर्वत नग्न, कहीं कहीं दो चार चीड़ के वृक्ष तने खड़े थे। इस छायाहीन पथ के चिन्ह हम लोगों के भाल पर चमक उठे। किन्तु यात्रा के उत्साह ने क्षण भर रुकने भी न दिया। हम लोग कुछ आगे बढ़े। सड़क क्रमशः समतल हो चली और कुछ समय बाद हमारा दल एक सुन्दर घाटी में पहुँच गया। सारी घाटी धान के खेतों की हरीतिमा में ढकी थी। धान के नन्हें नन्हें पौधे चिहुँक रहे थे। उन लज्जाहीन नंगे पर्वतों के बाद यह सकुचाए खेत अत्यन्त सुन्दर लग रहे थे। रास्ता ऊँचे पर्वत पृष्ठ के निकट से गुजर रहा था। ऐसे ही सुन्दर दृश्य लगभग पाँच मील तक हम लोगों के संगी रहे। जैसे जैसे सड़क ऊँची हो 'चीना ग्रे पास' की ओर बढ़ती गई; चीड़ के वृक्षों का स्थान क्रमशः बतून के वृक्षों ने ले लिया। चारों ओर सुन्दर पहाड़ी युवतियाँ ईंधन बटोरने और खेतों में काम करने में व्यस्त दिखाई दीं। मनुष्य के द्वारा बार बार काटे जाने के फलस्वरूप दो-चार वृक्ष ही पूर्णतः पनप पाए थे। हम लोग कुछ समय तक दर्रे की चोटी पर रुके। दोनों दिशाएँ कान्तिमान् दृश्य से सजी थीं। कुहरे में छिपे बागेश्वर की चोटियों की धुंधली सी झलक दिखाई पड़ी। जैसे स्वप्न की अस्पष्ट रेखाएँ।

अब उतराई आरम्भ हुई। लगभग दो फर्लाङ्ग चल लेने के बाद हम लोग ठन्डे पानी के एक जल-प्रपात पर पहुँचे। इस निर्झर को गाँववाले प्यारा पानीः प्रियः पानीः नाम से पुकारते हैं। हम लोगों ने ठण्डा पानी गले के नीचे उतार, फिर अपनी यात्रा आरम्भ कर दी। हमारा रास्ता सोप स्टोन की चट्टानों के ऊपर से गुजरता था। इसी कारण पथ में बड़ी फिसलन थी। सूरज डूबने लगा और जैसे जैसे उसकी अंतिम किरणें पेड़ों से विदा माँग आगे बढ़ रही थीं, झरनों का कलरव भी बढ़ने लगा। धरातल की नीचाई के कारण ओक के वृक्षों के स्थान पर चीड़ के वृक्ष आ खड़े हुए। जिस घाटी में हम लोग जा रहे थे उसकी सबसे आकर्षक वस्तु थी ऊँची ऊँची श्रेणियाँ, भीमकाय चीड़ के वृक्षों से ढकी। हम लोग आठ बजे के करीब बोर गाँव पहुँचे। अंधेरा काफी हो गया था। बागेश्वर यहाँ से ढाई मील दूर था। यहाँ पर हम लोगों ने "जीतसिंह कारपेन्ट्री वर्क शाप" देखी। यह पानी की शक्ति से संचालित है और फिर चांदनी में बागेश्वर की ओर चल दिए। सड़क और भी ढालू हो गई थी। बागेश्वर में झिलमिलाती हुई रोशनी यहाँ से दिखाई पड़ रही थी। हम लोग शीघ्र ही गोमती और सरयू के पुल पार कर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के डाक बंगले में पहुँचे जो सरयू नदी के बाएँ किनारे बसा सुन्दर तथा स्वच्छ मकान था हमारा सामान पहले ही यहाँ पहुँच गया था। हमें १४ मील चलने की थकान दूर करने के लिए तुरन्त बिस्तरों में घुस जाना पड़ा।

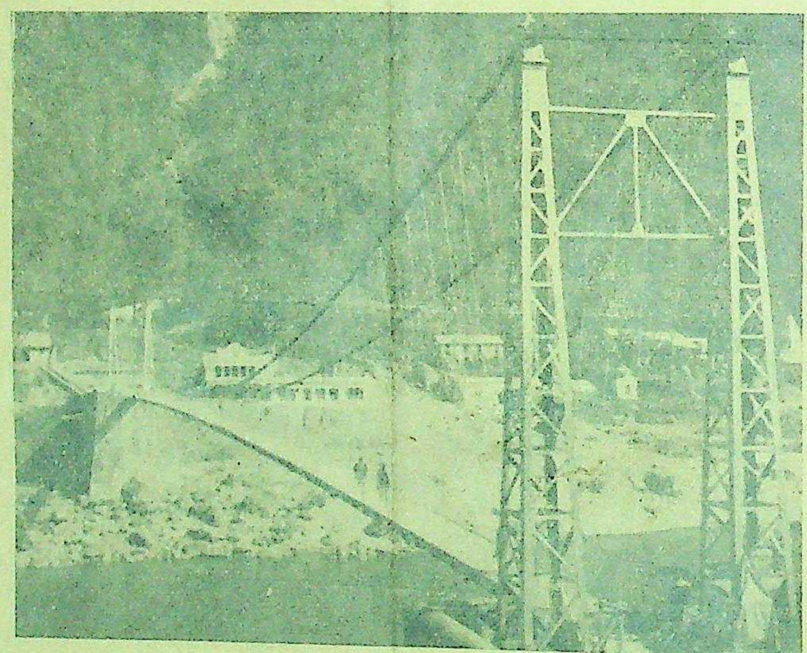

हृषीकेश का सुप्रसिद्ध लछमनझूला।

बागेश्वर की गणना जिले के मुख्य नगरों में होती है। यह सरयू और गोमती नदी के संगम पर घाटी में, जिसकी ऊँचाई ३५०० फुट है, बसा हुआ दानपुर और जोहार परगने का मुख्य व्यावसायिक केन्द्र है। यहाँ पर एक बहुत पुराना मंदिर है। कहा जाता है इस मंदिर का निर्माण आठवीं शताब्दी में हुआ था। प्रत्येक वर्ष जनवरी के माह में यहाँ बहुत जोरों का मेला होता है, इसे यहाँ के निवासी "उत्तरानी मेला" कहते हैं। नगर पहाड़ी सुन्दरता से परिपूर्ण है। यहाँ एक छोटा सा औषधालय भी है और कई स्कूल तथा पोस्ट आफिस [illegible]। डाक बँगला बहुत बड़ा और आरामदेह है। प
को मेहतर और खानसामा भी
जाते हैं।

बागेश्वर की घाटी में जून के म
बेहद गर्मी पड़ती है। इस गर्मी में दो
के समय यात्रा करना अत्यन्त कष्टप्रद
है। अपने को इस गर्मी से बचाने के
यात्रियों को तड़के ही यात्रा आरम्भ
देनी पड़ती है। हम लोग शेरसिंहजी
जो सरकार की ओर से पिंडारी-प्रदे
रम्य स्थानों के चित्र उतारने के लिए नि
हुए थे, इन्तजार करते रहे। जब उ
आने की कोई आशा शेष न रही तो
लोग आठ बजे बागेश्वर से चल दि
सड़क का जो सकरा पहाड़ी मार्ग
नदी के किनारे था, न अधिक चढ़ाव
उतराई। बागेश्वर से तीन मील पहाड़
दामन में मुंह छिपाए एक झरना बड़ा
लगा। पर्वत चीड़ के ऊँचे ऊँचे वृ
ढँके थे। सरयू के गहरे पानी में मछ
की भरमार थी, किन्तु मैं न जाने किस
शकुन को लेकर चला था कि ए
मछली हाथ न लगी। गोल खेत में
झरने के समीप हम लोगों ने विश्राम कि
और खाना खाया। सरयू के
और उथले तल को देखकर न
की तीव्र इच्छा हुई। स्नान क
और कुछ खा पी लेने के बाद ह
लोग तीन बजे आगे बढ़ चले
मार्ग में एक पेड़ पर हरियलों का
एक झुंड दिखाई दिया। जिनमें
मेरी बन्दूक के दो शिकार हुए।

सूर्यास्त के समय हम लो
कापकोट पहुँचे और रात को व
डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के डाक बँगले
विश्राम किया। कापकोट का
बड़ा गाँव है। बागेश्वर से १४ मी
दूर सरयू के दाहिने किनारे
घाटी में बसा हुआ है। इ
ऊँचाई लगभग बागेश्वर के ब
है। घाटी में काफी गर्मी थी। क
में सोना कठिन था, अतः ह
बरामदे में बिस्तर लगाए। इ
बँगले में न तो मेहतरों का प्र
था न रसोइये का। बागेश्व
अतिरिक्त किसी और डाक बँगले
हम लोगों को इस प्रकार की सु
प्राप्त नहीं हुई। दूसरे दिन जब ह
लोग चलने की तैयारियाँ कर र
शेरसिंहजी अपने एक मित्र स्वरूप
के साथ आ पहुँचे। पैर छालों से
थे। थकान के कारण चूर चूर हो रहे
किन्तु हम लोगों ने उस दिन यात्रा
गित करना उचित नहीं समझा। शे
जी को यात्रा के विषय में आवश्यक
बता हम लोग लोहार खेत की ओ
चले। कापकोट से दो मील चलने के
पुल पारकर सड़क सरयू के बाएँ
दौड़ने लगी। नदी के दोनों किनारे
पर्वतों में गहरी गहरी गुफाएँ थीं।
और सरयू के संगम से, सड़क सर
छोड़कर श्यामा के किनारे गुजरने
संगम से कुछ आगे बढ़ने पर ठ
पारकर श्यामा के दाहिने किनारे हो
श्यामा सुरमई चट्टानों पर बहने

शेष पेज १४ पर

ारामदेह है। पं
खानसामां भी
घाटी में जून के
। इस गर्मी में
ा अत्यन्त कष्टप्रद
र्मी से बचाने के
ही यात्रा आरम्भ
म लोग शेरसिंह
ीर से पिंडारी-प्रदे
उतारने के लिए नि
करते रहे। जब
शा शेष न रही तो
गेश्वर से चल दि
करा पहाड़ी मार्ग
न अधिक चढ़ा
से तीन मील पहा
ए एक झरना बड़ा
इ के ऊँचे ऊँचे
गहरे पानी में मछ
न्तु में न जाने कि
चला था कि ए
ी। गोल खेत में
लोगों ने विश्राम
खाया। सरयू के
तल को देखकर
श्रा हुई। स्नान
ा पी लेने के बाद
जे आगे बढ़ च
पेड़ पर
खाई दिया।
के दो शिकार हु
के समय हम
ुंचे और रात को
र्ड के डाक बंगले
ाया। कापकोट
। बागेश्वर से १४
दाहिने किनारे
ा हुआ है।
नग बागेश्वर के
काफी गर्मी थी।
कठिन था, अतः
बिस्तर लगाए।
ो मेहतरों का
ये का। बागेश्व
और डाक बंगले
प्रकार की
ूसरे दिन जब
तैयारियां कर
क मित्र स्वराज्य
पैर छालों से
ा चूर चूर हो
उस दिन यात्रा
हीं समझा।
य में आवश्यक
ार खेत की
दो मील चलने के
सरयू के बाएँ
के दोनों किना
ी गुफाएँ थीं।
से, सड़क सरयू
किनारे गुजरने
बढ़ने पर
हिने किनारे
ानों पर बहने
ा पेज १४ पर

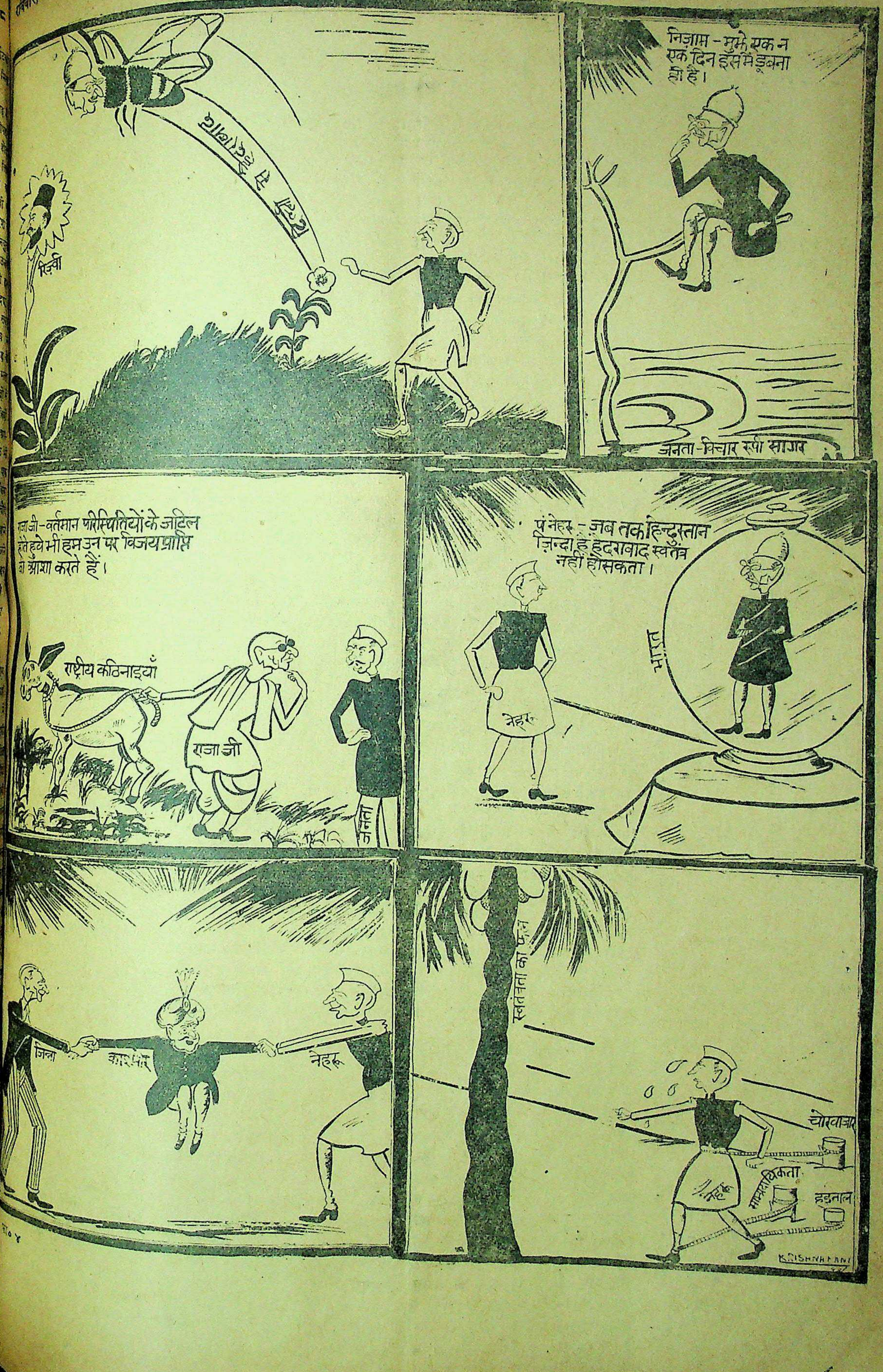
रिज़्वी
निज़ाम - मुझे एक न एक दिन इसमें डूबना ही है।
जनता-विचार रूपी सागर
राजाजी-वर्तमान परिस्थितियों के जटिल होते हुये भी हम उन पर विजय प्राप्ति की आशा करते हैं।
राष्ट्रीय कठिनाइयाँ
राजाजी
जनता
पं नेहरू - ज़ब तक हिन्दुस्तान ज़िन्दा है हैदराबाद स्वतंत्र नहीं हो सकता।
भारत
नेहरू
जिन्ना
काश्मीर
नेहरू
स्वतंत्रता का फल
चोरबाजार
साम्प्रदायिकता
हड़ताल
नेहरू
K.RISHNAKANT

तीसरे महायुद्ध की तैयारियाँ

अणु-बम के बहिष्कार की पार्श्वभूमि क्या है ?

लेखक, श्री कुमार योगी एम० ए०

क्या तीसरे महायुद्ध की तैयारियाँ हो रही हैं, साम्राज्यवादी राष्ट्र शस्त्रास्त्रों के द्वारा क्या संसार में शांति स्थापित कर सकते हैं ? इस लेख में विद्वान् लेखक ने शस्त्रास्त्रों तथा अणु-बम के बहिष्कार के पार्श्वभूमि पर प्रकाश डाला है। लेख विचारणीय तथा पठनीय है।

अन्तर्राष्ट्रीय युद्धों का मूल कारण पड़ोसी के आक्रमणों के विरुद्ध सुरक्षा के अभाव की भावना है। व्यक्ति की भाँति राष्ट्र भी आत्मरक्षा के लिये सदैव तैयारियाँ किया करते हैं। हिंसात्मक साधनों से युद्ध किये जाते हैं। अतः अपनी सुरक्षा के लिये संसार के राष्ट्र हिंसात्मक साधनों के अधिकाधिक संग्रह को ही आवश्यक समझते हैं। शस्त्रीकरण की ये योजनायें धीरे-धीरे प्रतिद्वंद्विता के स्तर पर आ जाती हैं जिसकी अंतिम परिणति युद्ध में होती है। अणु-शक्ति के नियंत्रण की जो योजना बनी है वह व्यापक निःशस्त्रीकरण का ही आंशिक रूप है। जेनेवा के राष्ट्रसंघ ने निःशस्त्रीकरण की जो योजना बनाई थी उसकी प्रशंसा संसार के प्रत्येक राष्ट्र ने की थी, किन्तु किसी भी राष्ट्र ने उसे मूर्तरूप नहीं दिया था, क्योंकि उनके सामने ऐसा कोई आश्वासन नहीं था कि निःशस्त्रावस्था में भी उनके अधिकारों की रक्षा हो सकती है और बाह्याक्रमणों से वे सुरक्षित रह सकते हैं। इसी अविश्वास की शिला से टकराकर वह योजना खंड-खंड हो गई थी। आज की अणु-शक्ति नियंत्रण-संस्था की सिफारिशों के सामने भी इतिहास की यही पुनरावृत्ति है। युद्ध के मौलिक स्रोत आत्मरक्षा के अभाव की भावना का स्पर्श भी यह योजना नहीं करती है। ऐसी परिस्थिति में आक्रमण के विरुद्ध सुरक्षा का फिर वही शस्त्रीकरण का उपाय शेष रह जाता है जिसका अभिप्राय यह है कि संसार के समस्त राष्ट्र सैन्य-शक्ति-संवर्धन को अपने राष्ट्रीय विकास का मूल ध्येय बना लें; क्योंकि अणुशक्ति-नियंत्रण-संस्था आक्रमण के विरुद्ध उन राष्ट्रों को कोई आश्वासन नहीं देती है जो सबल नहीं हैं।

युद्धोपयोगी शस्त्रास्त्र सुव्यवस्था के प्रतीक न होकर अराजकता के प्रतीक होते हैं। शस्त्रीकरण की छाया में जो व्यवस्था और शांति कायम रक्खी जाती है वह व्यक्ति के विकास और उत्कर्ष की शर्तों को पूरा नहीं करती है; वरन् उनके स्वाभाविक उन्मेष के लिये उलटी आपत्ति-जनक होती है। गांधी जी की दृष्टि में शस्त्रीकरण का मोह मनुष्य के पतनोन्मुख दृष्टिकोण का लक्षण है। यह हिंस्र भावना उनकी दृष्टि में मानवता की सबसे बड़ी महामारी है। हिंसा का निर्विकल्प निषेध ही उनके विचार में स्थायी शांति की मनोवैज्ञानिक बुनियाद है। अतः जब तक विश्व-व्यापी स्तर पर हिंसा के साधनों के संवर्ष का सक्रिय बहिष्कार नहीं किया जायेगा तब तक उस संघर्ष को सीमित करने या आंशिक रूप से उसे क्षीण करने के सारे प्रयत्न निष्फल साबित होंगे। पिछले वर्षों [illegible] इतिहास इस सत्य का साक्षी है। अणु-शक्ति को नियंत्रित करने-वाली किसी भी संस्था के सामने यही चेतावनी है। वस्तुस्थिति यह है कि जब तक संसार के राष्ट्रों को आत्मरक्षा के प्रसंग की कोई विश्वसनीय गारंटी नहीं मिल जाती है तब तक यह स्वाभाविक है कि उनसे अणु-बम जैसे निश्चयात्मक युद्धास्त्र के परित्याग की आशा नहीं करनी चाहिये। अणु-शक्ति के अन्तर्राष्ट्रीय नियंत्रण के द्वारा जो सुरक्षा का आश्वासन दिया जाता है, वह पुंसत्वविहीन है। अणु-बम के अलावा अन्य शस्त्रास्त्रों पर उसका नियंत्रण नहीं है। अतः युद्ध का उन्मूलन उसके द्वारा नहीं होता है; और युद्ध जब अनिवार्य हो जाता है तो अणु-बम का प्रयोग भी अनिवार्य हो जाता है।

युद्ध का निषेध एवं शस्त्रीकरण का बहिष्कार न होने का स्वाभाविक परिणाम यह होना चाहिये कि संसार के अन्य राष्ट्र प्रचलित युद्धास्त्रों को और भी घातक बनायें और नये शस्त्रों का नित्य-प्रति विकास करें। आज जो सूचना प्राप्त हो रही है उससे स्पष्ट हो गया है कि अणु-बम से भी भयंकर युद्धास्त्र बनाये जा रहे हैं। आज संसार के अनेक देशों की प्रयोग-शालाओं में असाध्य रोगों के कीटाणुओं का विकास और पोषण किया जा रहा है जिन्हें हवाई जहाजों से निर्दोष जन-समाज पर छिड़का जायेगा। 'मृत्यु-किरणों' और 'मृत्यु-बादल' के अनुसंधानों की सूचना अभी मानवता को भय से प्रकंपित कर चुकी है। इसी प्रकार सुदूरगामी राकेटों के निर्माण के क्षेत्र में भी उत्तरोत्तर प्रतियोगिता चल रही है। अणु-शक्ति-नियंत्रण संस्था का सबसे बड़ा अभाव यही है कि उसने शान्ति के स्थायित्व की बुनियाद विस्फोटात्मक भूमि पर बनाई है। उसकी भ्रांत धारणा यह है कि युद्ध-बहिष्कार की समस्या को हल किये बिना ही अणु-बम के नियंत्रण की समस्या हल हो जायेगी। रिपोर्ट इस निष्कर्ष को मानने को तैयार नहीं है कि जब तक राष्ट्रों को स्वयं युद्ध के उन्मूलन का विश्वास नहीं हो जायेगा तब तक वे युद्धास्त्रों के क्षेत्र में प्रतियोगिता करना नहीं छोड़ेंगे; जब तक उनके सामने उनके अनिवार्य भेद-भावों को मिटाने की दूसरी प्रणाली पेश नहीं की जायेगी तब तक निःशस्त्रीकरण और युद्ध की समस्या सुलझ नहीं सकेगी। अतः अणु-बम के बहिष्कार की सबसे पहली शर्त यह है कि उसकी कर्मभूमि का रूपान्तर किया जाये।

संयुक्त राष्ट्र संघ में सोना, चाँदी तथा अन्य धातुओं के विशेषज्ञों की समिति की एक बैठक का दृश्य।

अणु-शक्ति के अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर विकास के द्वारा मनुष्य का शांतिकालीन भविष्य इतना उज्ज्वल है कि मनुष्य ने अभी तक उसकी कल्पना भी नहीं की थी। लेकिन यह आशा फलवती तभी हो सकती है जब कि राष्ट्रों के पारस्परिक सम्बन्धों में कोई मौलिक परिवर्तन किया जाये। वर्तमान राष्ट्र-तंत्र में इतनी पात्रता नहीं है कि इन अनंत वरदानों का वह समुचित लाभ उठा सके। आधुनिक राष्ट्र जब तक आत्म-रक्षा के लिये सैन्य-शक्ति पर निर्भर रहने का प्रयत्न करते रहेंगे तब तक उनके नागरिकों में उस सहयोग और सौहार्द्र का उद्रेक नहीं हो सकता जो आज के वैज्ञानिक अनुसंधानों के द्वारा मानव-समाज के सारे परितापों और अभावों को पराभूत कर
केवल अणु-बम ही नहीं वरन् सारी मनु
कृत महामारियाँ और सारे लोक-विना
शस्त्र राष्ट्रीय सरकारों और उनके ना
द्वारा निषिद्ध हो जाने चाहिये।
राष्ट्र-संघ के विधान में इस आवश्यक
अनुकूल परिवर्तन होने चाहिये और
शस्त्रास्त्रों के स्वामित्व को
राष्ट्रों द्वारा हिंसा के अवलम्बन
करने के लिये राष्ट्र-संघ को वैधानिक
और वास्तविक शक्ति दी जानी चा
कोरे कानूनों से काम नहीं चलता।
पीछे इतनी शक्ति भी होनी चाहि
वे अपने अनुशासन को कार्यान्वित
सकें। राष्ट्रीय सरकारों का निःशस्त्री
कभी सम्भव नहीं हो सकता जब त
एक केन्द्रीय सत्ता में आवश्यक
संचित नहीं कर दी जायगी और रा
वैयक्तिक रूप से यह आश्वासन नहीं
जायेगा कि पड़ोसी के आक्रमण का
सदैव के लिए पराभूत किया जा चु

युद्धास्त्र के रूप में अणु-बम की
सबसे प्रथम एच० जी० वेल्स के
में उदित हुई थी। वे मनीषी साहि
थे और इसलिये एक दूरदर्शी
और भविष्यद्रष्टा थे। पिछले
वर्षों से अणु-शक्ति के विकासार्थ जो
किये जा रहे हैं, उन पर उनकी
प्रवीण दृष्टि थी। १९१४ में
"दी वर्ल्ड सेट फ्री" नाम की
लिखी। उस समय इस पुस्तक का
कथित 'यथार्थवादी' समाज ने
हास किया था, क्योंकि अंतरिक्ष
गिराने की कल्पना पर कोई विश्
करते थे। युद्ध की इस प्रणाली को
समाज अपनावेगा ऐसा किसी को
ही नहीं होता था। अतः ऐसे
एवं विश्वास के वातावरण में वेल्स
दय की चेतावनी को समाज कपोल-
या 'यूटोपिया' कहे तो उसमें अ
बात ही कौन सी है ?

लेकिन ठीक तीस वर्ष बाद
जो लिखा था वह अक्षरशः सत्य
श्री वेल्स ने जिस अणु-बम की

शेष पेज १० पर

संयुक्त राष्ट्र संघ में दो कूटनीतिज्ञों का [illegible] परामर्श हो रहा है।

मारा रंग-मंच

ल्म-अभिनेत्री शोभना समर्थ वन की कुछ मनोरंजक और आकर्षक घटनायें

लेखक, श्री गोपाल मेहरोत्रा

रे एक फिल्म-प्रेमी मित्र कुछ दिन बंबई गये थे। उन्होंने कई फिल्म- तथा अभिनेत्रियों से वहाँ भेंट की। बंबई से लौटने पर एक दिन अभिनेत्री शोभना समर्थ के बारे में जिक्र छेड़ दिया। मैंने उत्सुकता कई प्रश्न किये। उन्होंने मेरे का जो उत्तर दिया वह इस है।

ज ने कहा—हम लोग सुविख्यात क-निर्माता श्री विजय भट्ट जी के में बैठे थे और भट्ट जी अपनी "राम-बाण" की 'शूटिंग' के निरीक्षण करने में व्यस्त थे। तभी मैंने —"भट्ट जी! चित्र की प्रधान जी अभी तक नहीं आईं?"

'शोभना देवी के बारे में आप पूछ । पाँच बजे का 'एप्वाइन्टमेंट' है बजने में केवल दो मिनट शेष भी हो, वह समय का सदैव ती हैं।"

र घड़ी को पाँच बजाते देखा और शोभना देवी को उनके श्री कुमार सेन समर्थ के साथ मैं आश्चर्यचकित हो गया। न होने के कारण उस समय कोई वार्तालाप न हो सका। मैं समाप्त होने की प्रतीक्षा में कभी ओर कभी 'शूटिंग' की ओर बारह बजे 'शूटिंग' समाप्त और श्री विजय भट्ट ने मेरी और समर्थ की भेंट कराई। शोभना पूर्वक पूछा—"यदि आपको कष्ट तो कल की चाय हमारे ही।"

"तो फिर तुम तो अवश्य गये होगे?" से पूछ बैठा।

"बुलायें—और मैं न जाऊँ? पर उन्होंने मेरा स्वागत बातों ही बातों में बातें चल पड़ीं। रहते हैं? क्या करते हैं? विवाह हुआ नहीं? इत्यादि-इत्यादि दो-चार के प्रश्न हुए।"

"तो यार बड़ा आनन्द रहा ?"

"हाँ हाँ क्यों नहीं, वहाँ उनके पति- श्री कुमार सेन समर्थ जी डटे थे।"

"अच्छा फिर क्या हुआ?"

"मैंने उनसे अपनी जीवनी पर थोड़ा डालने के लिये कहा तो उन्होंने दिया—"मेरा जन्म सत्रह (१७) सन् १९१६ में बम्बई में हुआ मेरे पिता स्वर्गीय डा० पी० एच० एम० ए० पी० एच० डी० नगर के एक जन-प्रिय 'बैंकर' थे। साहित्यिक नाम सरोज शिलोत्री है। दस वर्षों की ही अवस्था में मैं अपने के साथ केवल अफ्रीका के अतिरिक्त समस्त विश्व की यात्रा कर चुकी थी। दुर्भाग्यवश न्यूयार्क में मेरे पिता जी के दिवालिया हो जाने के कारण उनकी...।" इतना कहते-कहते उनके नेत्रों से अश्रु-विन्दु ढुलक पड़े। मेरी अत्यधिक सान्त्वना देने के पश्चात् उनका रोदन समाप्त हुआ।"

"अच्छा फिर?"

"ममतावश, कुमार सेन जी के नेत्रों में भी आँसू आ गये। तत्पश्चात् शोभना देवी ने कहा—"दो वर्षों तक न्यूयार्क तथा अमेरिका के अन्य स्थानों में रहने के पश्चात् बम्बई आने पर मैं केवल एक वर्ष से अधिक कैथेड्रल-स्कूल में विद्याध्ययन न कर सकी। कुछ दिनों तक यत्र-तत्र बालक-बालिकाओं को शिक्षा दी। उस समय बोलपट का अत्यधिक बोलबाला होने के कारण मेरा ध्यान सिनेमा-संसार की ओर आकृष्ट हुआ, परन्तु मेरे चाचा जी मुझे रजतपट पर अभिनय करते देखने के पूर्व मर जाना अच्छा समझते थे। अतः मैं रक्त का घूँट पीकर रह गई। किसी भाँति दीन-बन्धु दीनानाथ ने मेरी सुनी और एक धनाढ्य तरुण युवक......से......होने के पश्चात् मेरी और उसकी...हो गई।" इस अन्तिम वाक्य को न समझने के कारण मैंने उनसे प्रश्न किया—

"क्या से क्या होने के पश्चात् क्या हो गई?" मेरे इस प्रश्न को सुनकर कुमार सेन जी ने हँसते हुए खाँस दिया; परन्तु मैं कुछ न समझ सका।

शोभना ने कहना शुरू किया—"हाँ तो मैं कह रही थी कि उन्होंने मुझे 'फिल्म' में कार्य करने की अनुमति दी, जिसके लिये मैं उनकी जन्म-आजन्म आभारी हूँ।"

मैंने फिर पूछा—"शोभना देवी! यह तो बताइये कि आपने किन-किन चित्रों में कार्य किया?"

"मेरा सर्वप्रथम चित्र 'आरफन-आफ-सोसाइटी', द्वितीय 'पति-पत्नी' और तृतीय 'इन्डस्ट्रियल इन्डिया' था। तत्पश्चात् मैंने 'साधना', 'कोकिल', 'कौन किसी का' आदि चित्रपटों में अभिनय किया।"

"परन्तु उस समय आप बड़ी 'उचक्की' सी प्रतीत होती थीं।"

"जी...जी...! आपने क्या कहा?"

"जी...कुछ नहीं।"

"सौभाग्यवश प्रकाश पिक्चर्स कं० के सर्वेसर्वा एवं सुविख्यात निर्देशक-निर्माता श्री विजय भट्ट ने प्रकाश की सामाजिक व ऐतिहासिक रचनाओं—'स्वामीनाथ', 'भरत-मिलाप', 'राम-राज्य' आदि—में कार्य किया। सौभाग्यवश जनता ने भी इनका सहर्ष स्वागत किया। इस स्वागत एवं मेरी लोक-प्रियता के लिये भट्ट जी अनेक बार साधुवाद के पात्र हैं। 'श्रीकृष्ण-अर्जुन-युद्ध' के पश्चात् मैं शोभा', 'अनबन', 'नल - दमयन्ती', 'तारामती', 'वीर-कुणाल', 'वीरांगना' आदि चित्रों में प्रदर्शित हुई। मेरा वर्तमान चित्र 'उर्वशी' 'शाहकार' और 'राम-बाण' है। 'उर्वशी' और 'शाहकार' तो पूर्ण हो गया है और 'राम-बाण' तो आप कल देख ही चुके हैं।"

"मैंने राज से पूछा — उनकी रुचि क्या है?"

"तैरना, नृत्य करना...।"

"यह वस्तुएँ किसी भी चित्र में नहीं दृष्टिगोचर हुईं राज।"

"एक बड़े मजे की बात तो सुनो। शोभना देवी को कुत्ते पालने की विशेष रुचि है—चाहे वह किसी भी जाति का क्यों न हो?"

"और नहीं तो क्या हम जैसे जानवरों को?"

"हार्स-रेस में भी आप भाग लेती हैं।"

राज ने अन्त में कहा कि मैंने उनसे संदेश माँगा तो उन्होंने कहा—

आज जिसको देखिये वही निर्माताओं एवं निर्देशकों की ओर उँगली उठाता है। पहले अपनी ओर (जनता) तो दृष्टि घुमाइये। आपकी माँगें कितनी निम्न हैं? यदि भारतीय नवयुवक-वर्ग तथा तृतीय वर्ग की जनता सामूहिक रूप में घोषित कर दे—"हमें अश्लील चित्रों की आवश्यकता नहीं है। हम आज से केवल सुन्दर एवं उच्च कोटि के सामाजिक व राष्ट्रीय चित्र देखेंगे"—और कहने के साथ ही साथ दृढ़प्रतिज्ञ होकर रचनात्मक रूप से कार्य करें तो मैं देखूँ—कौन माई का लाल निर्माता 'रतन', 'हाय जानी', 'सोना चाँदी', 'एलान', 'सम्राट् अशोक' जैसे निकृष्ट चित्रपटों के निर्माण करने का दुस्साहस करता है? परन्तु कहें कैसे? जब तक आप स्वयं बहुमत से शिक्षित होकर निर्माताओं के विरुद्ध 'सत्याग्रह' न करेंगे—उनकी ओर उँगली उठाना सर्वथा निष्फल है। भारतवर्ष में आज तक असंख्य लेख फिल्म-क्षेत्र पर प्रकाशित हो चुके; परन्तु मैंने यह आज तक नहीं सुना कि अमुक लेख को पढ़कर किसी निर्माता ने अपने चित्र को नूतन जीवन प्रदान किया। मेरी आपसे यह हार्दिक प्रार्थना है कि—सर्वप्रथम आप अपने को सँभालिये, तत्पश्चात् दूसरों पर आँख उठाइये। जब आप इस समय किसी को जन्म नहीं दे सकते तो आपको मार डालने का क्या अधिकार है?

सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री शोभना समर्थ।

* * *

वास्तव में शोभना समर्थ की सुन्दरता, मधुरकण्ठता, कलात्मक अभिनयों तथा ऐतिहासिक चित्रों ने ही उन्हें ख्याति की चरम सीमा पर सुशोभित किया है। गृहस्थ जीवन के अनुसार आप भारतीय नारी-सा आदर्श रखती हैं तथा तीन पुत्रों की माँ होने पर भी आप निरन्तर चित्र-जगत् में कार्य कर रही हैं। इस समय आपके पतिदेव एक 'फिल्म' के दिग्दर्शक हैं। आपकी यह हार्दिक इच्छा है कि—वह ३५ वर्ष की उम्र से पूर्व एक बार रंगीन चित्र में अवश्य अभिनय करें। आपके गायन में अत्यधिक मधुरता रहती है। हिन्दी बहुत सुन्दर बोलने का अभ्यास है। कुछ मास पूर्व आप इँगलैण्ड भी गई थीं। आशा है भविष्य में भी शोभना समर्थ इसी भाँति भारतीय कलाकृतियों में उच्च अभिनय का प्रदर्शन करती हुई भारतीय जनता को सम्मान से विभूषित करती रहेंगी।

मुफ्त

असली फोन्टेनपेन और असली रिस्टवाच गारन्टी १२ साल, मुफ्त हासिल करने के लिये आज ही लिखें। वरना मौका हाथ न आयेगा।

Imperial Corporation (D. A.)
Halka No. 22. Amritsar

T. B.
टी० बी०
"तपेदिक" रोग के हताश रोगियो—

जबरी (jabri) का नाम नोट कर लो, यही इस दुष्ट रोग से रोगी की जान बचानेवाली शक्तिशाली औषधि है। एक बार परीक्षा करके देख लो, परीक्षार्थ ही नमूना रखा गया है, जिसमें तसल्ली हो सके। मूल्य नं० १ (स्पेशल) पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन २०) रु०। 'जबरी' नं० २ पूरा के २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु० महसूल आदि अलग है। आज ही [illegible] यत नहीं देकर रोगी की जान बचावें। तार का पता "jabri" jagadhri

पता :—रायसाहब के० एल० शर्मा, रईस (D) 'जगाधरी'

(पेज ६ का शेष)

सुन्दर नदी है। सभी धारा कच्चे पहाड़ों के बीच में से बहकर जाती है। समतल मैदान इस प्रदेश में कम दिखाई देते हैं। पर्वतों पर चीड़ के जंगल हैं। पुल पार करने के बाद बड़ी भयंकर चढ़ाई आरंभ हुई। खारबागढ़ केवल एक मील रह गया था। चढ़ाई के अन्त से सरयू की गहरी घाटी फिर दिखाई देने लगी। पथ ऊँचे पर्वत-पृष्ठ के बीच से दौड़ रहा था। चारों ओर मनमोहक दृश्य। वनस्पति से विपुलता आ चली। चारों तरफ हरीतिमा ही छा रही थी, चीड़ के स्थान पर बतून के वृक्ष पथ के संगी बने। नाचेटी नामक गाँव में रुके और चाय पी। नाचेती सबसे ऊँचे पहाड़ के मध्य में बसा हुआ है। उतार आरम्भ हुआ। दो मील के बाद सरयू पर बने लकड़ी के पुल को हम लोगों ने पार किया। यह पुल अल्पकालीन होते हैं और "तुरतुरिया" नाम से संबोधित किये जाते हैं। यह नाम पर्वत तल की एक गुफा की छत से बहनेवाले निर्झर के नाम पर पड़ा है।

इसके बाद लोहार खेत की लम्बी चढ़ाई शुरू हुई। लगभग एक मील तक चढ़ाई कठिन न थी। पर धीरे धीरे चढ़ाई कठिनतर होती गई और अचानक चढ़ाई अत्यन्त भयंकर हो गई। लोहारखेत की चढ़ाई से बढ़कर और कोई कष्टप्रद वस्तु नहीं जो यात्री को इस सीमा तक तंग करने में सामर्थ्य रखती हो। दिन भर कापकोट की समतल सड़क पर चलने के बाद शाम को लोहारखेत की विकट चढ़ाई वास्तव में बड़ी दुःखद लगती है।

दस मील चलने के बाद हम लोग रात्रि के आरम्भ में लोहारखेत पहुंचे और जाकर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के "इन्सपेक्शन हाऊस" में जा पड़े। थकावट के कारण शरीर पके फोड़े की भाँति दुख रहा था। कुछ भी होश न था अपना। लोहारखेत छोटा सा गाँव है और ५३५० फुट की ऊंचाईवाले पर्वत पर आबाद है।

दूसरे दिन सुबह ५ जून को हम लोग कर्मी के लिये रवाना हुए। कर्मी में हमें कुछ सरकारी काम करना था। लोहारखेत से पाँच मील दूर धकुरी से पिन्डारी के लिए सीधी सड़क गई है। धकुरी से लोहारखेत की चढ़ाई बहुत विकट है। धकुरी की ऊंचाई ६२०० फुट है। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के डाक बंगले से चारों तरफ के पहाड़ों का सुन्दर दृश्य दिखाई पड़ता है।

कर्मी छोटा सा गाँव है। यहाँ के निवासी अपनी उन्नति के इच्छुक हैं। गाँव में उन की कोआपरेटिव सोसाइटी है। गाँव में बैंक भी है। मधुमक्खी पालने की एक संस्था है। शिक्षा की भी दो कक्षाएं हैं। इस गाँव की आत्मा हैं श्री त्रिलोकसिंह जिनके उद्योग से गाँव ने इतनी उन्नति की है। कर्मी में हम लोग केवल एक ही दिन रुके। कर्मी से दस मील चलने के बाद खाती में पहुँचकर [illegible] पकड़ी। सड़क पिन्डार नदी के [illegible] ऊँचे पर्वत-पृष्ट के निकट से होकर करने [illegible] थी। वनस्पति के अन्तर से के सारे [illegible] ना में न रह सका। नीचे पिछले वर्षों [illegible] के अतिरिक्त कुछ और दिखाई ही नहीं पड़ता था; किन्तु जैसे जैसे पर्वत सिर उठाने लगे ऊँचे ऊँचे देवदार के पेड़ लहराते दिखाई पड़े। पृथ्वी स्निग्ध थी। चट्टानों और वृक्षों के तने काई और जोंकों के भार से पीड़ित थे। फर्न के नन्हें पौधे मटमैली चट्टानों को ढकने का प्रयत्न कर रहे थे। झाड़ियों में सफेद और गुलाबी गुलाब के फूल मुस्काने लगे। थोड़ी थोड़ी दूर पर झरनों की वेगवती धारा मानो महोत्सव की बधाई देती डोल रही थी। सारा दृश्य जैसे स्वर्गलोक का प्रतीक सा लगता था। किन्तु यहाँ पर सबसे बड़ा अभिशाप थीं जोंकें। इनके कारण बार बार रुक जाना पड़ता था। मेरे साथी और मैं इस अमृत का रसास्वादन अधिक समय तक न कर सके और आगे बढ़ने के लिये मजबूर हो गए। लम्बे लम्बे पग धरते हुए हम काफी ऊँचाई पर आ गये। इस पर्वत-पृष्ठ की चोटी पर कहीं कहीं समतल भूमि थी वहीं घास पर भेड़ों के झुंड चरते हुए मिले।

हम लोग खाती छः बजे शाम को पहुँचे। कमरे में जाकर बैठे ही थे कि शेरसिंह जी तथा उनके मित्र श्री जौहरी जी की पगध्वनि कानों से टकराई। यह दोनों लोहारखेत से सीधे यहाँ चले आ रहे थे। बहुत थके मालूम हो रहे थे।

खाती का डाक-बँगला लगभग ७२५० फुट की ऊँचाई पर बना हुआ है। खाती बहुत छोटा गांव है। लगभग १५० जीवात्माएँ स्पन्द करती हैं इसके वातावरण में! गाँव के रहनेवाले अज्ञान अशिक्षित हैं। अभी तक हजारों पुरुष पुराने रीति रिवाजों के शिकंजों में जकड़े हुए हैं। यहाँ के लोक-नृत्य वास्तव में आकर्षक होते हैं। नृत्य में स्त्री और पुरुष दोनों भाग लेते हैं। बड़े मादक ढंग से पग मिलाकर नाचते हैं। भावों में लचक, गति में संगीत होता है। किन्तु दुर्भाग्यवश मल्ला दानपुर के आधुनिक सुधारवादी इन नृत्यों में अश्लीलता की झलक देख इनके लिये शोर मचाते हैं। मैंने तो इस नृत्य में किसी प्रकार की निर्लज्जता का आभास नहीं पाया और मेरी इच्छा नहीं कि कला का इतना सुन्दर नमूना यों दफना दिया जाय। बल्कि मैं तो इनकी उन्नति और विकास की शुभकामना ही करूँगा। शेरसिंह जी ने इस नृत्य के कई चित्र भी खींचे।

दूसरे दिन तड़के ही हम फुरकिया के लिये रवाना हो गए। वनस्पति में कुछ विशेष अन्तर न था। जैसे कर्मी और खाती की वनस्पति थी वैसी ही रही। किन्तु सघनता आ चली थी। मार्ग में डोडियालों के मुख शिकार की रोमांचकारी कहानियाँ सुन हृदय में उथलपुथल होने लगी। हम लोगों ने अपनी बन्दूकों के मुख कारतूसों से भर लिए और होशियार होकर चलने लगे। किन्तु हममें से किसी को भी जीव-हत्या का पाप अपने सिर न लेना पड़ा। सब जानवर पहिले ही जंगल में जा छिपे थे। हमें मुंह लटकाए रोते हाथ ही आगे बढ़ना पड़ा।

गत दो दिनों से जौहरी जी कुछ अस्वस्थ से दीख रहे थे। हम लोग जब पिंडार [illegible] रहे थे जौहरी जी की शिथिलता अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई। वह बेदम से हो गए। आगे चलने का साहस उनमें न रह गया था। हम लोग भी परेशान हुये। निकटतम डाक-बँगला भी डोआली में लगभग दो मील के फासले पर था। इतनी विकट परिस्थिति थी कि कल्पना नहीं की जा सकती। मैं अपने साथ दवाओं का जो बक्स था लेकर चला था। दुर्भाग्यवश वह पहले ही अन्य वस्तुओं के साथ डोआली भेज दिया गया था। जौहरी जी को वहाँ छोड़ मैं और पन्त जी राम राम करते हुए डोआली की ओर चल दिए। नक्षत्र कुछ अनुकूल थे। डाक-बँगले पर पहुँचकर कुछ कुली जो डाक-बंगले की मरम्मत कर रहे थे, ठेकेदार की सहायता से सुगमतापूर्वक मिल गए। कुलियों के साथ एक पलंग भी नीचे भेज दिया। जौहरी जी बड़ी कठिनता से डाक-बँगले में लाए गए। जोहरी जानडिस रोग से पीड़ित थे। अतः उन्हें शेरसिंह के निरीक्षण में वहीं छोड़ हम लोग फिर यात्रा के पक्ष में आ खड़े हुए। मुझे उस समय आन्तरिक पीड़ा हो रही थी; किन्तु क्या करता लाचारी थी। प्रकृति की शायद यही इच्छा थी।

डोआली समुद्र-तट से ८४५० फुट की ऊँचाई पर स्थित है। फुरकिया का डाक-बंगला जो इस मार्ग पर अन्तिम विश्रामगृह है यहाँ से केवल तीन मील दूर है। यहाँ से वनस्पति एकदम ऊँचे पर्वतों की सी हो चली। बतून के सीधे सगर्व खड़े वृक्षों के स्थान पर देवदार के प्रहरी ऊंघ रहे थे। जैसे जैसे बड़े देवदार की जगह भोजपत्र से और भोजपत्र के बदले रोडोडेंड्रान घास के मैदान ऊँचाई का आभास देने लगे। कुछ दूर चलने के बाद घास भी न रही और नग्न पर्वत बर्फ में तन छिपाने का प्रयत्न करते हुए मिले। सड़क ऊँचे पर्वतों के चारों ओर घूमकर जङ्गलों में से गुजर रही थी। कुछ रोडोडेंड्रान फूल रहे थे जो देखने में बड़े प्यारे लग रहे थे। पर्वत थे लम्बाकार, चोटियाँ बर्फ से ढकी थीं। अनेक झरने सड़क के दोनों ओर शोर करते हुए झर रहे थे। सामने की नन्दकोट की धुँधली रेखाएँ बर्फ की चादर से झिलमिल कर रही थीं। क्रमशः वनस्पति का अभाव बढ़ने लगा। घास को छोड़कर कुछ भी न था। घास पर भेड़ों के झुन्ड चर रहे थे। जैसे ही हम ऊपर चढ़े, एकाएक फुरकिया के डाक-बंगले के दि[illegible] गए। दिन भर की यात्रा के बाद [illegible] पर हमारा विश्राम-स्थान था।

पुरकिया १०३०० फुट की [illegible] पर बसा है। इसके चारों ओर [illegible] ऊंचे पर्वतों पर बर्फ जमी है। इनके [illegible] कितने ही निर्झर का रूप ले बहते [illegible] हैं। बाहर बैठने की हिम्मत न थी, क्योंकि ठंड बेहद थी इसीलिये डाक-बंगले में आ[illegible] के सहारे खाकर बैठ गए। इसी समय [illegible] का चौकीदार चार बड़ी बड़ी पोथि[illegible] लेकर आया जिसमें सन् १८९४ से लेकर अब तक के समस्त पिन्डारी दर्शकों [illegible] यात्रा-अनुभव अंकित थे। इन पोथियों में मनोरंजन का काफी मसाला था। हममें से प्रत्येक ने अपने कुछ मित्रों [illegible] हस्ताक्षर लिखनेवालों की सूची में [illegible] जो भूत में पिन्डारी-प्रदेश की सुषमा [illegible] के भागी बन चुके थे।

दूसरे दिन ८ तारीख को [illegible] हम लोग बहुत जल्दी ही सोकर [illegible] गए। इसी दिन हमें पिन्डारी [illegible] दर्शनों की लालसा लेकर इतना [illegible] पथ पार किया था उसकी ओर चल[illegible] था। हृदय में उमंग थी, कम्पन [illegible] तीव्रता। आठ बजते बजते हम लोगों [illegible] लगभग आठ मील का सफर तय [illegible] लिया। भाग्यवश उस दिन शाम के चा[illegible] बजे तक आकाश साफ रहा। बादलों के एक भी टुकड़े ने उसकी नीलि[illegible] करने की चेष्टा न की। हम लोग [illegible] दिन उस अलौकिक दृश्य को देखते हु[illegible] आगे बढ़ रहे थे।

पिन्डारी ग्लेशियर घाटी में है। घा[illegible] तीन तरफ ऊँचे ऊँचे पर्वतों से घिरी हु[illegible] है। चौथी दिशा में फुरकिया बसा है। घाटी वृक्षहीन है। जमीन बर्फ से [illegible] बल्कि घास और कहीं कहीं रोडोडेंड्रा[illegible]

शेष पृष्ठ १८ पर देखि[illegible]

आरोंद १८९६ नीलगिरि तेल [illegible] बम्बई

सच है सिरोलीन रोच सर्दी और खांसी की श्रेष्ठ औषधि है

रेडियो स्त्रियों के लिये जीवन-यात्रा है

पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ अधिक क्रियाशील और उपयुक्त हैं।

लेखिका, कुमारी विमलादेवी राजदान, बी० ए०

...धुनिक समय में पुरुषों की भाँति ...भी जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में काम ...रही हैं। वैसे स्त्रियों के लिये यह ...नहीं है कि वे पुरुषों का प्रतिनिधित्व ...दिशा में करें। मनुष्यों के सामने ...की ओर से उदासीनता की भावना ...सभ्यता को उन्नत नहीं कर सकती। ...के अनुसार कोई भी स्त्री पुरुष की ...को किसी भी समय चुनौती दे ...है। इसी प्रकार का काम रेडियो है। ...डियो केवल मनोरंजन का ही साधन ...है, शिक्षा ग्रहण करने के लिये ...दूसरे सभी आधुनिक यंत्रों से ...सफल है। पिछली शताब्दी के ...में सिद्ध हो चुका है कि ...युद्धकाल और शांति-समय में ...स्थान रखता है।

...में इस समय रेडियो की ...है फिर भी अभी रेडियो केवल ...और मनबहलाव का ही साधन ...आशा की जाती है कि आधु...ब्दी के आधे समय तक रेडियो ...अधिक होगी और तब इसकी ...व्यवस्था में सुधार भी होगा।

...प्रकार भारतीय महिलाओं के ...आनेवाला समय स्वर्णयुग है। ...महिला-जीवन की गति और ...हो सकती है। प्रोग्राम में ...होगा। यहाँ तक कि ग्रामीण ...महिलायें रेडियो के द्वारा समाज... आदर्श ऊँचा कर सकती हैं। ...तः एक रेडियो-स्टेशन में केवल स्त्रियों की ही अधिकता न होने पायेगी। फिर भी कार्यक्रम को रुचिकर बनाने के लिये स्त्रियों की सहायता आवश्यक होगी। स्त्रियों के द्वारा बच्चों, किसानों और स्कूलों के लिये अत्यन्त सुन्दर प्रोग्राम बनाये जा सकते हैं। इस प्रकार के प्रोग्राम व्यक्तिगत चरित्रों से विशेष सम्बन्धित होंगे, लड़कों के लिये देहाती प्रोग्राम भी बनाया जाना आवश्यक होगा। जैसे ड्रामा, छोटे छोटे और खेल के कार्यक्रम। इस क्षेत्र में महिलाओं के जीवन को उन्नत होने का पूरा पूरा अवसर है।

भारती सूचना-विभाग में स्त्रियों की संख्या उतनी अधिक तो न हो सकेगी फिर भी कार्यक्रम के अनुसार काम करने के लिये पुरुष और महिलायें तो रक्खी ही जायेंगी। ऐसी व्यवस्था करने के लिये समय के अतिरिक्त धन की भी आवश्यकता होगी। इन बातों के अतिरिक्त रेडियो के अन्तर्गत महिलाओं द्वारा और दूसरी नई योजनाएँ बनाई जायेंगी।

रेडियो के प्रोग्राम अधिक शान से ही न लदे होने चाहिए। सूचना-सम्बन्धी काम महिलाएँ पुरुषों से अच्छी दशा में कर सकती हैं। पुरुष स्वयं महिलाओं की मदद से अपने में एक दूसरी ही शक्ति का अनुभव करेंगे।

व्यक्तिगत रूप से रेडियो महिलाओं के लिये उन्नति का साधन है। पुस्तकों के अध्ययन के अतिरिक्त स्वतन्त्र रूप से भी कार्यक्रम निश्चित करना महिलाओं की एक प्रवृत्ति होना चाहिए। सबसे पहले तो समालोचनात्मक अध्ययन की आवश्यकता होगी। दूसरे कार्यक्रम को मनोरंजक बनाने के लिए हमें साधारण रूप से थोड़ा बहुत कल्पना और साहित्यिक उड़ान से भी काम लेना पड़ेगा।

रेडियो सुनकर कोई भी आदमी अपने में लिखने की शक्ति रख सकता है। रेडियो आधुनिक समय की साहित्यिक और असाहित्यिक सभी प्रकार की बातें जनता के बीच लाता है। इस विभाग के द्वारा ड्रामा, कहानियाँ अच्छी तरह से काम में लाई जा सकती हैं। इतना ही नहीं, वरन् इन्हीं बातों की उन्नति के लिये भारतवर्ष में तमाम नये रेडियो स्टेशन तैयार हो रहे हैं।

इस समय रेडियो-विभाग में स्त्रियों की संख्या सन्तोषजनक तो नहीं है, लेकिन भविष्य में आशा की जाती है कि इस विभाग में महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा कहीं अधिक सावधानी प्राप्त होगी। जहाँ तक प्रबन्ध का प्रश्न है वहाँ पर पुरुषों को स्त्रियों की अपेक्षा अधिक महत्त्व दिया जायेगा।

रेडियो केवल हँसी-मजाक की चीज नहीं है। इस दिशा में काम करने के लिए समय और बुद्धि की बराबर बराबर आवश्यकता है। इसमें काम करने के लिये साधारण ज्ञान की आवश्यकता है। बहुत थोड़े से व्यक्ति हैं जो सफलता-पूर्वक ब्राडकास्ट करने की क्षमता रखते हैं। रेडियो आश्चर्यजनक यन्त्र है। शिथिलता तो इसको छू तक नहीं गई। भारतीय रेडियो की नीति में अभी बहुत कुछ आवश्यक सुधार होने शेष हैं।

आल इंडिया रेडियो के 'स्त्रियों के प्रोग्राम' में एक महिला का भाषण।

ऐतिहासिक भौतिकवाद

लेखक, भूतपूर्व काकोरी-कैदी
श्री मन्मथनाथ गुप्त और श्री रमेन्द्र वर्मा
लगभग ५०० पृष्ठों के सजिल्द ग्रन्थ का
मूल्य केवल ६) रुपये।

मार्क्सवाद में ऐतिहासिक भौतिकवाद की गहनता को सरलतापूर्वक समझने के लिए इस ग्रन्थ की उपयोगिता अद्वितीय है। समाजवाद समझनेवालों के लिए इसका अध्ययन अपरिहार्य है।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

[illegible] आपरेटर रेडियो की मशीनों में काम करती हुई दिखाई दे रही है

फूल आपकी किस्मत बतायेगा

भारतवर्ष की जगत्-प्रसिद्ध सच्ची साइन्स ज्योतिष विद्या गहरे अन्धकार में सूर्य की रोशनी है, यदि आप शीघ्र ही इस संसार में बदलनेवाली अपनी किस्मत के उलट-फेर का ठीक उतरा हुआ फोटो समय से पहले देखना चाहते हैं तो आज ही पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी दिलपसन्द फूल का नाम लिखकर भेज दें तो हम ज्योतिष विद्या के हिसाब से आपके आनेवाले १२ मास का लाभ, हानि, नौकरी, उन्नति, व पतन, स्त्री संतान का सुख, तन्दुरुस्ती, रोग, किसी से नया मेल-जोल, दिलपसन्द सगाई, मुकदमा परीक्षा में सफलता, लाटरी, सल्लत, किसी गुप्त ढंग से धन की प्राप्ति अर्थात् तिथि कार्ड से लेकर कुल एक वर्ष में होनेवाली सब बातों का विवरण अर्थात् मासिक वर्षफल बनाकर केवल १।) में वी० पी० द्वारा भेज देंगे डाक-व्यय इसके अतिरिक्त होगा। साथ ही बुरे ग्रहों की शान्ति का उपाय भी लिख दिया जायगा ताकि आनेवाले कष्टों को दूर किया जा सके। एक बार का अनुभव आपको बता देगा कि हम ज्योतिष विद्या में कितना ज्ञान रखते हैं ठीक न हो तो दुगुनी कीमत वापिस।

श्री शिवशंकर ज्योतिष आश्रम (रजिस्टर्ड)
(D.D.) राहों (इ० पी० आर)

स्वास्थ्य-चर्चा

इमली—गरमियों का उपयोगी पदार्थ

आजकल यदि लोगों के लिये यह लाभदायक है

लेखक, श्री रामेश वेदी आयुर्वेदालङ्कार, हिमालय हर्बल इंस्टिट्यूट, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार।

इमली का कच्चा फल खट्टा होता है। पके फल में खटास के साथ-साथ मिठास भी आ जाती है। चिकित्सा की अपेक्षा भोजनों में फल का अधिक उपयोग होता है। संयुक्तप्रांत, पञ्जाब आदि के गाँवों में जैसे साल भर के उपयोग के लिए गुड़ आदि चीजें रख ली जाती हैं, उसी तरह बंगाल के देहातों में इमली को घड़ों में भरकर रख लेते हैं। दाल, सब्जी और चटनियों में फलों का उपयोग होता है। उड़ीसा और दक्षिण बंगाल में चावलों के साथ इमली का रस पीते हैं। खट्टी होने से कोमल पत्तियों की चटनी बनाई जाती है। बच्चे कोमल पत्तियां और फूलों को चाव से खाते हैं। श्रीयुत सखाराम अर्जुन (बॉम्बे ड्रास, १८७९) के अनुसार इमली की एक किस्म से 'लाल इमली' प्राप्त की जाती है। यह पोषक होती है और सूखे खजूरों की तरह खाई जाती है।

गरमियों में हितकर

पकी इमली में प्यास को शान्त करने का गुण है। सरसाँव (सन स्ट्रोक) में इमली के शीत पेय का उपयोग किया जाता है। पके फल से अनेक प्रकार के मधुर स्वादु शीतल पेय तैयार किये जाते हैं जिनमें से पना रूप से अधिक प्रचलित पेय है।

पना—स्वादिष्ट शीतल पेय

इसे बनाने के लिए सामान्यतया दस छटाँक पानी में आधी छटाँक पकी इमली का गूदा घोल लेते हैं। गूदे को, पहले धोकर साफ कर लें। पानी में भिगोकर रख दें। सुबह मलकर गूदे को पानी में घोल लें। कपड़े में छानकर बीज और तन्तुओं को अलग कर दें। इसमें काफी खाँड डालने से यह बड़ा स्वादिष्ट पेय बन जाता है। इस पेय को संयुक्तप्रांत में पना कहते हैं। पीनेवाले अपनी रुचि के अनुसार इसमें जरा-सा नमक, काली मिरच और जीरा भी मिला लेते हैं। देहातों में तो यह शक्कर या गुड़ से बनाया जाता है परन्तु शहरों में खाँड या चीनी से तैयार किया जाता है।

गरमियों में गरमी और लू के असर से बचने के लिए लोग इसका उपयोग खूब करते हैं। शौकीन लोग तो इसे बरफ में ठंडा करके शीत पेयों की तरह दिन में दो-तीन बार पी लेते हैं। सुन्दर रङ्ग के इस स्वादु और सस्ते पेय ने अमीरों के घरों में भी अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली है। यद्यपि यह गरीबों का सस्ता पेय है परन्तु आकर्षक डिजाइनोंवाले शीशे के छोटे-छोटे चमकदार गिलासों में परोसा हुआ यह सम्पन्न भोजनालयों में नारङ्गी रस के गिलास से कम लुभावना नहीं दीखता। बोतलों में भरकर स्वादु पेयों को बेचनेवाले व्यापारियों [illegible] मैं सलाह दूँगा कि वे इमली के इस [illegible] को भी बड़े पैमाने पर बाजारों करने [illegible] जिससे इमली का अधिक के सारे [illegible] अच्छा उपयोग किया पिछले वर्षों

बूंदी और आलू डालकर जिस तरह दही का रायता बनाते हैं, उसी तरह इसके रसे में बूँदी और आलू डालकर भोजनों में व्यञ्जन के रूप में रोटी के साथ गरमियों में खाया जाता है।

गरमियों की दुर्गन्ध दूर कीजिये

पसीना अधिक आने से और शरीर के मलों का पसीने के रूप में त्वचा द्वारा अधिक निकलने से कइयों के शरीर में एक विशेष प्रकार की दुर्गन्ध आया करती है। ऐसे लोगों को शोढल बताते हैं कि इमली के बीजों को पीसकर शरीर पर लेप करना चाहिये। यह लेप जब कुछ सूख जाय तो हथेली से मलकर बत्तियाँ उतार दें। खुले पानी में शरीर को मलते हुए नहा डालिये। आपका शरीर ताजा और दुर्गन्ध-रहित हो जायगा।

इतिहास

सामान्यतया यह समझा जाता है कि इसका मूल देश पूर्वीय ऊष्ण कटिबन्धीय अफ्रीका में अबीसीनिया से दक्षिण की ओर जाम्बेजी तक है। परन्तु अब यह गरम देशों में सब जगह बोया जा रहा है।

भारत से अरबों ने इसका चिकित्सा में प्रयोग सीखा, टैमेरिण्ड का अरबी में अर्थ है—भारतीय खजूर। इससे पता चलता है कि मध्यकालीन व्यापार में यह भारत से प्रवेश पाई होगी। भारत में यह न केवल गूदे के लिये परन्तु बीजों, पत्तों और लकड़ी के लिए भी उपयोगी वृक्ष है। इँग्लैंड में इमली से फल ईस्ट और वेस्ट इण्डीज दोनों से बहुत अधिक आयात किये जाते हैं।

देहरादून और सहारनपुर के जिलों में सब जगह इमली के वृक्ष बोये जाते हैं। हरिद्वार के आस-पास तो यह प्राकृतिक अवस्था में स्वयं उग आता है। पञ्जाब में इसके वृक्ष कम होते हैं।

विविध उपयोग

बीजों के अन्दर का भाग पीसकर लेई बनाया जाता है जो जिल्दसाजी में और प्लाइवुड उद्योग में तख्तों को जोड़ने के लिये अत्यन्त उपयोगी पदार्थ है।

बाहरी लकड़ी पीताभ, श्वेत, कठोर और पास-पास कणोंवाली होती है। बहुत पुराने वृक्षों में जामनी से पिंगल रङ्ग की आबनूस की लकड़ी के सदृश थोड़ी अन्तःकाष्ठ होती है जो बहुत टिकाऊ होती है। वार्षिक चक्र अस्पष्ट। प्रतिघन फुट का भार करीब पचहत्तर पौंड। लकड़ी पर काम बहुत कठिनता से होता है। फिर भी, इसका मूल्य बहुत ऊँचा है। सर ब्रैण्डिस के अनुसार यह पहियों, हथौड़ियों, मुद्गरों, हवाई जहाजों, चावल कूटने के उखलों, तेल और गन्ना पेरने के कोल्हुओं को बनाने में काम आती है। काला और मैला इसका गोंद किसी काम नहीं आता।

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=), डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

सारिडन
10 Saridon
सभी दर्द शीघ्र दूर करता है

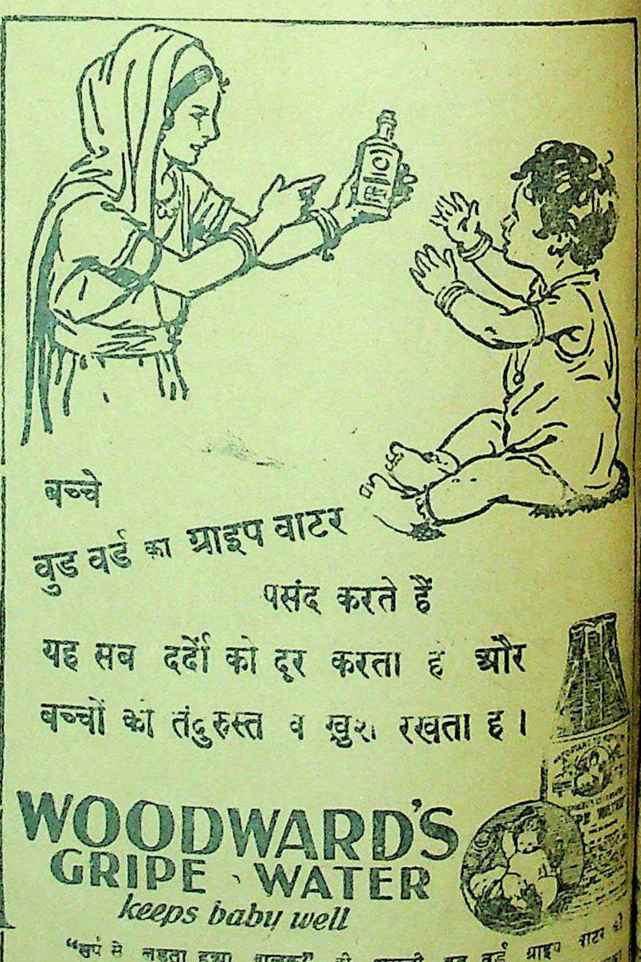
बच्चे
वुड वर्ड का ग्राइप वाटर
पसंद करते हैं
यह सब दर्दों को दूर करता है और
बच्चों को तंदुरुस्त व खुश रखता है।
WOODWARD'S
GRIPE WATER
keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिए इसको अवश्य देख लिया करें।

1-WW 118—117 W WOODWARD LTD. LONDON. ENGLAND

धर्मान्तर करने पर बाधित किया किन्तु देवी ने बड़ी दृढ़ता के साथ रजाकारों के हाथ से छुटकारा पाया।

सारोला जिला उस्मानाबाद पर तहसील के नेतृत्व में रजाकारों व पुलिस ने आक्रमण करके खूब लूटा। यह भी समाचार मिला है कि सैकड़ों मन अनाज और खेती का सामान भी छीन लिया गया है।

उस्मानाबाद के कलेक्टर के नाम से हजारों पर्चे ग्रामीण जनता में बाँटे गये हैं, जिसमें यह लिखा गया है कि सरकार ने कांग्रेसियों को गिरफ़ार कर लिया है। अतः किसी को भयभीत होने की आवश्यकता नहीं। पर्चों में इस बात का भी आश्वासन दिया गया है कि जिन किसानों को कांग्रेसी ने लूटा है और उनके घरों को जलाया है, सरकार उनकी टीन, खेती का सामान और धन से सहायता करेगी। जब कुछ पीड़ित किसानों ने सहायता की याचना की तो उन्हें धर्म-परिवर्तन करने को कहा गया। यह भी समाचार मिला है कि कांग्रेसी कार्यकर्ताओं की जमीनें और घरों को जब्त करके मुसलमानों के हवाले किया गया है। उन्हें खेती का सामान और आर्थिक सहायता भी दी गई है। किन्तु प्रचार यह किया जा रहा है कि सम्पूर्ण सहायता हिन्दू जनता को ही दी जा रही है। कुछ किसानों को जिनके घर लूटे व जलाये गये थे, बुलवाकर सहानुभूति दिखाई गई तथा उन्हें आर्थिक सहायता करने का इस शर्त पर आश्वासन दिया कि वह स्टेट कांग्रेस के विरुद्ध जनता में प्रचार करें।

—संवाददाता

* * *

बहराइच की एक सार्वजनिक सभा में भाषण करते हुए यू० पी० कांग्रेस पार्लियामेंटरी बोर्ड के संयोजक श्री मोहनलाल जी गौतम ने असेम्बली के उपचुनाव के सम्बन्ध में बताया कि इस समय इतिहास का निर्माण हो रहा है। आपने सदियों के बाद आजादी हासिल की है, वह इसलिए नहीं कि हम आजाद कहलायें बल्कि इसलिए कि हिन्दुस्तान को और सारे संसार के प्रत्येक मानव को भोजन, वस्त्र तथा सुख के साधन दे सकें। हमें वह रास्ता नहीं अपनाना चाहिये जिससे हमारी आजादी की रक्षा न हो। हम चाहते हैं कि देश के ऊपर जो संकट आये हैं, हैदराबाद, काश्मीर आदि की जो समस्याएँ हैं उनको हमारी सरकार सम्मानपूर्वक तथा दृढ़तापूर्वक हल कर सके और हम देश को, हर तरह से सम्पन्न और सुखी बना सकें। यह तभी होगा जब आप कांग्रेस को कांग्रेसी सरकार को मजबूत बनावेंगे और उसके प्रति अपने विश्वास को प्रकट करेंगे। जिन नेताओं ने अपने जीवन भर हर तरह के कष्ट और यातनाएँ बर्दाश्त कर देश को आजाद किया है वे पं० जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, मौलाना अबुल कलाम आजाद, पं० गोविन्दवल्लभ पन्त, आज देश को रसातल को ले आयेंगे यह कहाँ तक सत्य है। अगर आप कांग्रेस को, कांग्रेसी सरकार को मजबूत करके देश को मजबूत और प्रत्येक साधनों से सम्पन्न कर सके तो आपकी भावी सन्तानें आपके ऊपर गर्व करेंगी, आपका अभिनन्दन करेंगी पर अगर आपने इन्हें कमजोर किया तो एक बात अवश्य याद रखिये कि अभी देश में कोई ऐसा संगठन, ऐसी कोई संस्था नहीं है जो इनका स्थान ले सके। काश्मीर के मोर्चे पर हारने का क्या मतलब हो सकता है? आप जानते हैं उस पर हमारी आजादी और गुलामी मुनहसर करती है। कांग्रेस सरकार के हटने के बाद अराजकता फैल जायगी कोई शासन नहीं रहेगा और हो सकता है कि कोई विदेशी शक्ति हमें पुनः गुलाम बना ले। उस समय आपकी भावी सन्तानें आपको धिक्कारेंगी और शर्म से उनका मस्तक झुक जायगा। वे कहेंगी कि हम नालायक थे। आजादी तो इत्तिफ़ाक से मिल गई थी और हमने उसे खो दिया तो मेरा कहना है कि आप इन दो रास्तों में से चुन लें। इस चुनाव में हम व्यक्ति को लेकर नहीं आये हैं। हमारे पास मेम्बरों की कमी नहीं है।

काश्मीर-सम्बन्धी सोशलिस्ट पार्टी की नीति के बारे में मुंशी अहमद्दीन की सफाई की चर्चा करते हुए आपने बताया कि मुंशी अहमद्दीन साहब की याददाश्त कमजोर हो गई है वे उस मीटिंग में सभापति थे। उनका यह कहना है कि उनके विरोध के बावजूद सोशलिस्ट पार्टी ने काश्मीर को पाकिस्तान में सम्मिलित होने का प्रस्ताव पास किया था। इस सम्बन्ध में आपको यह बता देना चाहता हूँ कि पञ्जाब की पार्टी मुंशी अहमद्दीन के जेब की चीज है और सोशलिस्ट पार्टी के १४ साल के जीवन में एक बार भी मुंशी अहमद्दीन की राय के खिलाफ़ वहाँ की सोशलिस्ट पार्टी ने प्रस्ताव नहीं पास किया। मुंशी अहमद्दीन अपने विरोधियों को तुरन्त निकाल देते रहे।

अंत में आपने बताया कि कांग्रेस और सोशलिस्ट पार्टी के उद्देश्य तथा कार्यक्रम एक ही हैं। सोशलिस्ट पार्टी के लोगों को पद न मिले इसलिये वे असन्तुष्ट होकर निकल गये और सोशलिस्ट पार्टी कांग्रेस-विरोधियों का एक मोर्चा बन गई। आपका वोट कीमती है। आप वोट देकर वह साबित करेंगे कि आपका किस पर विश्वास है और आप देश को किधर ले जाना चाहते हैं।

—संवाददाता

* * *

ऋषिकेश में बाबा काली कमलीवाला पंचायती क्षेत्र के रामनगर बगीचे में संसार के कल्याणार्थ ४० ब्राह्मणों द्वारा एक मास तक गायत्री पुरश्चरण होता रहा जिसमें स० पटेल के शीघ्र आरोग्य होने के लिये प्रार्थना की गई। इस यज्ञ का सारा खर्च रा० ब० से० रामेश्वरलाल जी साहरिया डबरूगढ़ ने क्षेत्र के अवैतनिक व्यवस्थापक पं० श्रीदत्त जी द्वारा करवाया।

बाबा काली कमलीवाले क्षेत्र में निर्जला एकादशी के दिन १२०० साधु, सन्यासी, ब्राह्मण तथा यात्रियों को ठंडाई, शर्बत, फलहार आदि दिया गया। दिन के १० बजे एक सभा हुई जिसमें कई महानुभावों के गवेषणापूर्ण भाषण हुए। रा० ब० पं० श्रीदत्त जी ने अपने भाषण में कहा कि हमारे ऋषि, महर्षियों ने राष्ट्र की रक्षा और देश के कल्याणार्थ ही व्रतों आदि की आयोजना की थी।

—संवाददाता

प्रयाग, महेवा, पोस्ट नैनी से आचार्य, हिन्दी विद्यापीठ लिखते हैं—

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की गत परीक्षाओं के पश्चात् गत मार्च से यमुना-तट पर स्थित हिन्दी विद्यापीठ, प्रयाग में अब पुनः पढ़ाई की व्यवस्था हो गई है। विद्यापीठ में सदा की भाँति सम्मेलन की प्रथमा, मध्यमा तथा उत्तमा परीक्षाओं के साहित्य विषय की निःशुल्क शिक्षा का प्रबन्ध है। शिक्षार्थियों के निवास तथा यथासम्भव पुस्तकों का प्रबन्ध भी निःशुल्क रहता है। छात्रवृत्ति का कोई प्रबन्ध नहीं है। पढ़ाई प्रारम्भ हो गई है अतः परीक्षार्थियों को शीघ्र आ जाना चाहिये। विशेष विवरण के लिए उक्त पते से पत्र-व्यवहार करें।

मुफत ! मुफत !!

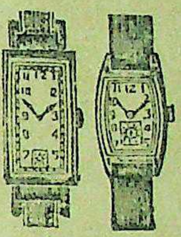

लन्डन न्यू गोल्ड के जेवरात को मशहूर करने के लिए हमने डायरी कैलेन्डर १९४८ और असली रिस्ट-वाच गारंटी १५ साल मुफ्त देने का फैसला किया है यदि आप बिलकुल मुफ्त लेना चाहते हैं तो आज ही अपना नाम व पूरा पता साफ साफ लिखकर भेज दें मगर जल्दी करें वरना यह समय बार बार हाथ न आयेगा।

लंडन सी० कम्पनी,
(D.D.A.) पो० ब० २, अमृतसर।

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ

सम्पादक—श्री सोहनलाल द्विवेदी
प्राक्कथन—सर सर्वपल्ली रांधाकृष्णन्

संस्कृति, हिन्दी, उर्दू, बँगला, गुजराती, सिन्धी, मराठी, तामिल, तेलगू, मलयालम, कन्नड़, अँगरेजी और चीनी भाषाओं में महात्मा गांधी जी पर लिखी हुई सर्वोत्तम कविताओं का संग्रह—हिन्दी भाषा में अर्थ-सहित।

बड़ा आकार, सुन्दर छपाई, पूरे पेज के अनेक चित्र। बढ़िया जिल्द। सर्वत्र प्रशंसित।

सादी जिल्द ६।।) कपड़े की जिल्द ७।।)

सेवाग्राम

रंग-बिरंगी छपाई अनेक रंगीन चित्र
रचयिता श्री सोहनलाल द्विवेदी
संरक्षक श्री घनश्यामदास बिड़ला

जनता की भाषा में, जनता के भावों का, जनता का काव्य कवि की राष्ट्रीय रचनाओं का सुन्दर संग्रह। बड़ा आकार, बढ़िया काग़ज़, कपड़े की मज़बूत जिल्द। मूल्य दस रुपये।

गुदड़ी के लाल

इस पुस्तक की कहानियाँ बहुत ही सरल और रोचक भाषा में लिखी हैं। इनको पढ़कर बच्चे बेहद ख [illegible] नहीं हैं। ऐसी पुस्तक अपने बच्चों [illegible] दीजिए। मूल्य ॥)

मैनेजर बुकडिपो, इं

(पेज १४ का शेष)

की प्रफुल्लित झाड़ियों से ढकी है। मार्ग में बर्फ से ढके कई नाले हमें पार करने पड़े। किन्तु इन्हें छड़ी की सहायता से बड़ी आसानी से पार किया जा सकता है।

पिन्डारी ग्लेशियेर उत्तर पूर्व में नन्दकोट के एक पर्वत पृष्ठ से ढलकता है। इसी पर्वत पृष्ट से बनकता नामक दूसरा ग्लेशियर भी आकर पिन्डारी में मिल जाता है। इन दोनों को एक पहाड़ी कतवार विभक्त कर देती है। इस कतवार को मध्यास्थ कतवार कहते हैं। इस कतवार के आगे यह दोनों फिर एक हो जाते हैं और लगभग आध मील तक साथ साथ बहने के पश्चात् एक थूथनाकार भाग में गिरते हैं। यहीं से पिन्डार नदी की वेगवती धारा बहने लगती है। दर्शकों से ग्लेशियर की रक्षा करने के लिये ऊँची कतवार जिसे वाम पार्श्व कहा जाता है बनाई गई है। वाम पार्श्व से देखने पर पिन्डारी ग्लेशियर बर्फ की विशालकाय चट्टान की भाँति दृष्टिगोचर होती है। किन्तु बबकट ग्लेशियर को पत्थर के टुकड़े कीचड़ और वाम पार्श्व के पर्वत पृष्ट से झरे कूड़ा करकट ने ढक रखा है।

हम लोगों ने कतवार के निचले पार्श्व में बैठकर खाना खाया। नाश्ता करने के बाद हम लोग ग्लेशियर को अच्छी तरह से देखने के हेतु उसकी चोटी से और भी ऊपरी भाग की ओर बड़ गए। यहाँ से हम लोगों ने ग्लेशियर के बहुत से चित्र भी उतारे। हमारे दल के साहसी युवक खाती जी ने कतवार के नीचे उतर बनकट ग्लेशियर को पार किया और फिर मध्यस्थ कतवार पर चढ़कर ग्लेशियर को खूब पास से देखा। जिस रूपमाधुरी को मैं न देख सका उसे वह देख आए। वास्तव में उनके भाग्य से मुझे ईर्ष्या हुई। उन्होंने इस सौन्दर्य की हमसे खूब प्रशंसा की। खाती जी ने हमें बताया कि वहाँ पर एक छोटी सी घाटी है जो पीले और लाल रंग के फूलों से आच्छादित है। थोड़े से फूल वह हम लोगों के लिये भी तोड़कर ले आए थे।

कतवार के बगल की चोटी से बंकट ग्लेशियर थूथनाकार पर्वत की ओर धीरे धीरे रेंगता हुआ दिखाई पड़ा। पत्थर के टुकड़े बराबर अपना स्थान बदल रहे थे। जैसे जैसे सूरज आकाश में ऊँचा उठा ग्लेशियर के ऊपर नन्हीं नन्हीं जलधाराएँ क्रीड़ा करती दिखाई देने लगीं। और बर्फ में दरारें भी बढ़ने लगी। हम लोगों के दूसरी ओर एक भीमाकार झरना पर्वत से उतर ग्लेशियर के बर्फ से खो गया था। कभी कभी पर्वतों से बर्फ के टुकड़ों के गिरने की आवाजें पर्दों से टकरा जाती थीं।

हममें से कुछ लोग पहाड़ के ढाल पर जमी बर्फ पर स्केटिंग करने चल दिये। खाने के वक्त हम सब फिर मिल गए। खाने के बाद थूथनाकार भाग पर चढ़ने का निश्चय हुआ। यहाँ का ढाल बहुत भयानक था। दृश्य भी कम चकित करनेवाला न था। बीस फुट बर्फ का विशाल वृत्तखंड इस थूथनी का आकार करने । इसी से पिन्डार नदी निकलती के सारे प्रखंड से थोड़ा सा बर्फ तोड़कर पिछले वर्षों खा लेने के बाद हम लोगों ने फिर अपने बोझिल पग फुरकिया की ओर बढ़ा लिए। फुरकिया पहुँचते पहुँचते सारी घाटी घने बादलों से छिप गई और वर्षा भी होने लगी। शाम के पाँच बजे थे। फुरकिया पहुँचने पर ज्ञात हुआ कि शेरसिंह जी हम लोगों की अनुपस्थिति में मनरौली तक पहुँचे और अपने बीमार मित्र की देखभाल करने के लिये लौट गए।

हमारी पिन्डारी-यात्रा समाप्त हो गई। दूसरे दिन घर के लिये प्रस्थान करना था। हम लोग उन्हीं उन्हीं स्थानों में रुके जहाँ आते समय विश्राम किया था। उधर इतना ही था कि हम लोगों ने खाती से लोहारखेत का सीधा रास्ता पकड़ा। कापकोट में डोडियाली के भयंकर नृत्य ने यात्रा की थकान को कुछ कम कर दिया। शेरसिंह और जोहरी हम लोगों के साथ ही थे। अधिकांश समय सरकारी काम करने में बीता। १३ तारीख को हम लोग बागेश्वर में अपना सरकारी काम समाप्त करने के हेतु रुके। घाटी में भीषण गर्मी थी। मार्ग में केवल दो ही झरने चालू थे जिनसे पीने का पानी मिल सकता था। गरुर में जो अलमोड़ा से ४० मील है एक डाक ले जानेवाली बस के दर्शन हुए। हम लोग उसी में बैठकर चल दिए और नौ बजे रात को अलमोड़ा पहुँचे। जोहरी जी और शेरसिंह उसी समय अपनी जीप में बैठकर नैनीताल के लिये रवाना हो गए। घर पहुँचने की जल्दी में अपने सब वायदे भी भूल गए। विदा समय की औपचारिकताएँ भी उस दिन उन्हें याद न रहीं।

(पेज ५ का शेष)

अमानुषिक कृत्यों की बाढ़

यों तो निजाम सरकार की आँखों में हिन्दू खटकते रहे हैं जब कि वहाँ हिन्दू अधिक संख्या में हैं। हिन्दुओं पर तरह तरह के जुल्म सरकारी अधिकारियों द्वारा किए जाते रहे हैं। किन्तु रजाकारों ने 'अति' ही कर दी। अभी तो हम फासिस्टों के क्रूर कारनामों का वर्णन अखबारों में ही पढ़ते थे, किन्तु अब तो रजाकारों ने वहाँ की जनता को प्रत्यक्ष बताया कि क्रूरता क्या है ? मानवता को तिलांजलि दे शैतानियत की पूजा वहाँ की जा रही है। लूट-मार, अग्निकांड, स्त्रियों के साथ बलात्कार व उन्हें भगाने की अनेकों घटनाएँ आज वहाँ हो रही हैं। हिन्दू जनता अपना सब कुछ छोड़कर वहाँ से भागकर हिन्द में शरण ले रही है। रास्ते में भी तुम्हें लूटा जाता है। अब तक न जाने कितनी संपत्ति लूटी गई और न जाने कितने ही व्यक्तियों को कत्ल किया गया। अमानुषिक कृत्य उनके लिए हाथ का मैल बन गया है। रजाकारों का सामना करना यानी मृत्यु को निमंत्रण देना है। हिन्दू जनता असहाय है, उसके पास न हथियार हैं और न कोई दूसरी ही ताकत। वह तो भारत-सरकार से ही सहायता की आशा करती है अभी उस दिन कुछ हैदराबादी शरणार्थी वर्धा में मुझे मिले। उन्होंने रोते हुए जो कुछ कहा उससे कठोर से कठोर हृदय पसीज सकता है। उन्होंने बताया कि जब वे वापस आ रहे थे तो निजाम की पुलिस की सहायता से रजाकारों ने रेल में चढ़कर उन्हें मारा पीटा और छातियों पर बंदूकें अड़ाकर उनके पास जो कुछ भी था—सब छीन लिया गया।

२८) रु० में रजाकार

प्रत्येक मुसलमान रजाकार हो—ऐसा वहाँ नियम-सा बन गया है। १८) में बंदूक और दस रुपये में पोशाक खरीदा कि बन गया रजाकार। उसके बाद दो किस्म की ट्रेनिंग उसे लेनी पड़ती है। एक तीन सप्ताह का अस्थायी शिक्षण और दूसरा तीन माह का स्थायी शिक्षण। शिक्षण-काल में हथियार चलाना, युद्ध की शिक्षा देना तथा हिन्द सरकार व हिन्दुओं के खिलाफ जितनी जहरीली बातें बताई जायँ उतनी बातें बताना—बस यही कार्य-क्रम।

महिला रजाकार व बाल रजाकार

मुसलमान स्त्रियों व बच्चों में भी रजाकार बनने की भावना घर कर गई है। इस समय रजाकारों की संख्या करीब दो लाख तक पहुँच गई है। गाँवों गाँवों में वे घूमकर हिन्दू जनता पर अपना प्रभाव डालते हैं और देखा कि कहीं कोई हिन्दू सिर उठाता है तो उसे वहीं कुचल दिया जाता है। जनता में घबराहट फैल गई है। रिजवी स्वयं रजाकारों के करतबों का निरीक्षण करने निकलता है। उसका सर्वत्र मुसलमानों द्वारा तथा सरकारी नौकरों द्वारा स्वागत होता है। रिजवी की उम्र करीब पैंतालीस वर्ष की है। उसका चेहरा क्रूर व भयावना है। दया तो उसे छू नहीं गई। हिन्दुओं को मारने में वह पुण्य समझता है। उसका व्यक्तित्व उतना आकर्षक नहीं है किन्तु वह जो कुछ हिन्द सरकार के खिलाफ उत्तेजक भाषण देता है—उससे उसकी धाक रियासत में जमी हुई है। अब तो यह स्थिति आ गई है कि स्वयं निजाम भी उससे भय खाने लगे हैं और कासिम रिजवी अब अनभिषिक्त राजा-सा बन गया है। उसके इशारों पर सब कचहरियाँ बंद हो सकती हैं। राज्ययंत्र बंद करने के उसके सामर्थ्य से निजाम को स्वयं धोखा महसूस होने लगा है।

रिजवी के अत्याचारी कृत्यों से मुसलमानों को उससे बड़ी बड़ी आशाएँ हैं। मुसलमानों के मस्तिष्क का संतुलन खो गया है और उनकी विचार-शक्ति नष्ट हो गई है। हिन्द सरकार व हिन्दू जनता के संबंध में वे जो कुछ बोलते हैं—उससे मालूम होता है कि उन्हें किसी बात की सुधि-बुधि नहीं रह गई है। वे अचेतन हैं। उन्हें शुद्धि पर लाने के लिए अब एक ही उपाय है कि भारत-सरकार अपने सामर्थ्य और फौजी ताकत का उपयोग करे। रिजवी नामक अशुभ पुच्छल तारे का जो उदय हुआ है—वह राजा का, जनता का तथा रियासत का नाश करेगा—इसमें संदेह नहीं, निजामी हिटलर रिजवी का अब खात्मा ही होना चाहिए तभी वातावरण में निर्मलता होगी। हिन्दुस्तान की जनता का कर्तव्य है कि वह परिस्थिति का मुकाबला करने के लिए तैयार रहे। हमें अपनी आजादी की रक्षा करना है और जो गिरे हुए हैं उन्हें उठाना है।

(भारतेंदु हिन्दी सिंडिकेट, वर्धा)

*

(पेज ४ का शेष)

उपभोग

यदि सरकार ग्राम-उद्योगों यता व संरक्षण देना चाहती है तो प्रथम कर्त्तव्य यह है कि उसे चीजें तैयार हों वहीं उपयोग चाहिए। सरकार के राजस्व और का अधिकांश हिस्सा साधारण आता है इसलिए न्याय की आशा ये फिर साधारण जनता को लौटाये सरकार के 'स्टोर सप्लाई विभाग' अपनी सरकार की उत्पादन-नीति अनुसरण करना पड़ता है।

असैद्धान्तिक

आज की आवश्यकता है लोगों खाना, कपड़ा और रहने की दिलाना, न कि ऐसी "हाइड्रो इले की योजनायें बनाना जिनको हिसाब लगाने में असंख्य राशियाँ लानी पड़ें। आज सरकार को ताकत लोगों की आवश्यकताएँ पूरी में लगानी चाहिए। प्राप्त अधिकारों कारखाने के मालिकों के लाभ के उपयोग करना अमानत में खयानत श्री घनश्यामदास बिड़ला का अपनी नीति की घोषणा कर कहना बिलकुल अनुचित है। लोग चाहते हैं कि उनकी भी कोई है या कि वे औद्योगीकरण शतरंज की निरी मोहरें भर हैं।

कलकत्ते में असोसिएटेड चेम्बर कॉमर्स के सामने भाषण देते हुए मंत्री प० जवाहरलाल नेहरू ने स्पष्ट की, आशा है उसे उनकी जिसके वे मुखिया हैं, कार्यान्वित उन्होंने प्रश्न किया, "आज अनगिनती लोगों को—चाहे वे काम करनेवाले हों या और बढ़ने और ऊँचे उठने के कौन से हैं ? मैं इस बात को महसूस करता कृषकों का और रैय्यत का हमारे प्रथम अधिकार है।" उन्होंने कि हमारा प्रथम कार्य आम आर्थिक परिस्थिति सुधारने का बोले, 'पहली बात तो देखनी जनता का भला किसमें है ? सम्पूर्ण इसी पैमाने से नापनी है।' क्या करें कि देश के सामने जितनी उनको अमल में लाने में सरकार दृष्टिकोण को रक्खेगी ? आजकल अहमियत crucial के दिन हैं ऐसी सरकार, जिसकी स्थापना पर हुई है, आम जनता की करेगी उतनी ही अपने को करेगी न कि उसकी नीति के कारण करोड़पति बन जाते हैं।

मुफ्त ! मुफ्त !!
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ० ए०, पंजाब तथा आगरा यूनी और होम्योपैथिक बायोकैमिक आसानी से पास कर सकते हैं।
मुफ्त मँगायें। पता :—
इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड)

रामचरितमानस

टीकाकार—डाक्टर श्यामसुन्दरदास

'मानस' का महत्व किसी से छिपा नहीं है। भारतवर्ष में तो इसका मान है ही, अन्य देशों में भी इस अमर ग्रन्थ का आदर है। यह प्रामाणिक संस्करण इधर कई वर्ष से अप्राप्य था। हाल में ही छपकर तैयार गया है। ग्राहकों को ता करनी चाहिए। क प्रतियाँ नहीं छापी ई हैं।

बड़े आकार के १२०० ष्ठ। रंग-विरंगे दर्जनों चित्र। सजिल्द प्रति का

मूल्य १२) रुपये

जहाँ पर हमारी ब्रांच या एजेंसी है वहाँ ख़रीदने पर डाकख़र्च की बचत होगी।

सचित्र
रामचरितमानस
मूल्य १२) बारह रुपये

हमारी ब्रांचें और एजेन्सियाँ

१ इलाहाबाद हेड आफ़िस—इंडियन प्रेस लिमिटेड, ३६ पन्नालाल रोड
२ इलाहाबाद सिटी—न्यू ऐरा बुकहाउस, हिवेट रोड
३ आगरा—आगरा पब्लिशिङ्ग हाउस, बाग़ मुज़फ़्फ़र ख़ाँ
४ अजमेर—इंडियन प्रेस लिमिटेड, कचहरी रोड
५ अलमोड़ा—डिस्ट्रिक्ट बुकडिपो, लालबाज़ार
६ बनारस—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, बनारस छावनी
७ बाँदा—बुंदेलखण्ड पब्लिशिङ्ग हाउस
८ बरेली—इंडियन बुकडिपो
९ बम्बई—भारतीय पुस्तक भण्डार, कालबा देवी रोड
१० बीकानेर—गंगबुक कम्पनी, कोट के भीतर
११ कलकत्ता—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, २२।१ कार्नवालिस स्ट्रीट
१२ कानपुर—साहित्य-रत्नालय, श्रद्धानन्द पार्क
१३ दिल्ली—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, नई सड़क
१४ गोरखपुर—पुस्तक-स्थान, बख़्शीपुर
१५ ग्वालियर—लायल बुकडिपो, पाटनकर बाज़ार, लश्कर
१६ इन्दौर—नवयुग साहित्यसदन, खजूरी बाज़ार
१७ जयपुर—गोपाल बुकडिपो, त्रिपौलिया बाज़ार
१८ जबलपुर सी० पी०—इंडियन प्रेस, लिमिटेड
१९ लखनऊ—इंडियन बुकडिपो, अमीनुद्दौला पार्क
२० मेरठ—पुस्तक-स्थान, वैस्टर्न कचहरी रोड
२१ पटना—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, पो० ऑ० बाँकीपुर
२२ राँची—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, कोर्ट रोड

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

५०० पौण्ड इनाम

चौबीस घंटे में जवान बनिये

"ओटोजन" (जड़ी बूटियों से निर्मित) पार्कर एण्ड डेविस द्वारा प्रस्तुत पहले २४ घंटे के अन्दर ही शक्ति तथा स्फूर्ति प्रचारित करने में आश्चर्यजनक है। इसके उपयोग से स्त्री तथा पुरुष दोनों अपने वास्तविक आयु से १५-२० वर्ष छोटे मालूम पड़ने लगते हैं। यह पौरुषहीनता, स्मरणशक्ति की कमी, शारीरिक दुर्बलता, रक्त-विकार, चर्मरोग, हतोत्साह, अनिद्रा तथा शारीरिक शक्ति ह्रास को दूर करने के लिए उपयोगी है। इसके प्रयोग से २ से ४ इंच तक आपकी लम्बाई तथा ५ से १० पौण्ड तक शरीर का वजन बढ़ जायेगा। आपके चेहरे पर लालिमा आ जायगी तथा आपकी कान्ति दुगनी हो जायगी। आपकी त्वचा कोमल तथा चिकनी हो जायगी। जिससे आपके चेहरे पर जवानी की आभा पुनः आ जायगी। ओटोजन से आपके व्यक्तित्व में वृद्धि होगी, आंखों में रौनक आ जायगी, ओठों तथा गालों पर गुलाबी दौड़ जायगी। इसके प्रयोग से पकते हुए बाल स्थायी रूप से काले हो जायेंगे तथा वृद्धावस्था में नये दांत निकल आयेंगे। बाल गिरते हों, सिर रूखा हो अथवा चँदला हो गया हो तो उस समय 'ओटोजन' (टानिक) विशेष लाभप्रद सिद्ध होगा; "ओटोजन" का प्रयोग प्रोफेसर ए० पी० पार्कर ने स्वीटजरलेंड में १०० वर्ष के शक्तिहीन बुड्ढे पर किया था। केवल एक मास के नियमित सेवन के बाद इस आश्चर्यजनक औषधि ने उस १०० वर्ष के रोगी को तीस वर्ष का-सा नौजवान बना दिया। थोड़े समय बाद ही एक नवयुवती से विवाह कर लिया। फिल्म-जगत् के अभिनेता व अभिनेत्रियां इस औषधि के प्रयोग से ८० तथा ९० वर्ष की वृद्धावस्था में भी सौन्दर्य तथा उत्साहपूर्ण बनी रहती हैं तथा फिल्म-जगत् में निरन्तर काम करती हैं। प्रारम्भिक अवस्था से ओटोजन का प्रयोग करने से स्त्रियां सदा नवयुवती बनी रहती हैं तथा उनके सौन्दर्य में किसी प्रकार की कमी नहीं आती। पुरुषवर्ग युवावस्था से ओटोजन का प्रयोग करने से समय से पहले बूढ़े नहीं होते। बाल काले बने रहते हैं। चेहरे पर कान्ति तथा स्वास्थ्य बना रहता है। इसके प्रयोग से मनुष्य अपनी वास्तविक आयु से वर्षों छोटा प्रतीत होता है।

यह बीसवीं सदी का आश्चर्यजनक आविष्कार तथा संसार का ८वां वैचित्र है। ओटोजन के प्रयोग के बाद स्त्रियों में तरुणाई तथा चपलता का संचार हो जाता है। तथा ओटोजन के प्रयोग के बाद स्त्री तथा पुरुष दोनों के भाग्यशाली दिन वापस आ जाते हैं। अभी से ओटोजन का प्रयोग आरम्भ कर दें तथा सौ बरस तक स्वस्थ तथा शक्ति-सम्पन्न बने रहें। इससे क्षुधा इतनी प्रज्ज्वलित होती है कि एक पौंड अथवा इससे भी अधिक मक्खन कमजोर व्यक्ति भी पचा सकता है। इस विचित्र "ओटोजन" टानिक के प्रभाव को देखकर दुनिया के बड़े बड़े वैज्ञानिक तथा अनुभवी डाक्टर चकित रह गये।

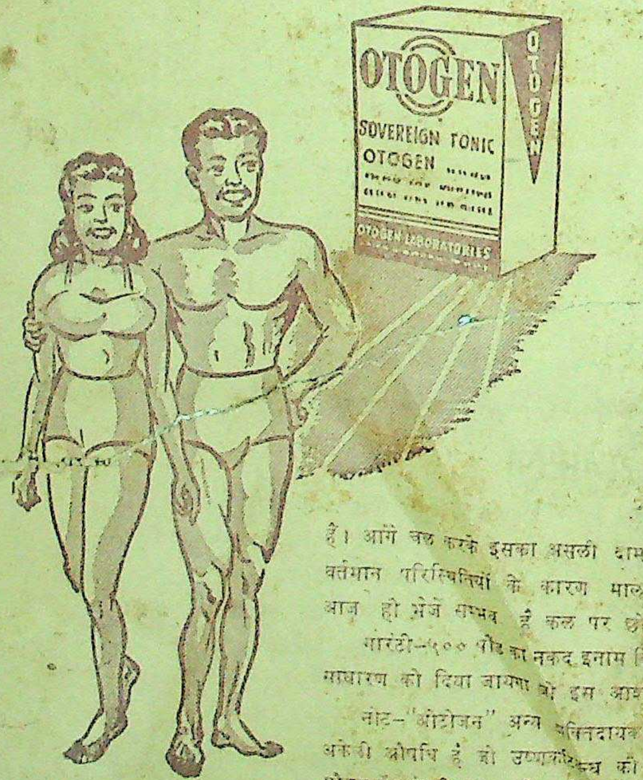

"ओटोजन" अपने प्रकार का अकेला टानिक है जिसे संसार के स्त्री व पुरुष दोनों उपयोग में लाते हैं। चिकित्सा-विज्ञान के इतिहास में यह अभी तक निराला है आज से ही इसका उपयोग आरम्भ कर इसके गुणों का अनुभव करें। आरम्भ करने के पहले अपना वजन ले लें तथा आईने में अपनी आकृति देख लें। फिर एक सप्ताह के बाद अपनी आकृति शीशे में पुनः देखें और गौर करें कि आपकी आकृति में तथा उत्साह में ओटोजन के व्यवहार से कितना परिवर्तन हो गया।

भारतवर्ष में इस औषधि का प्रचार करने के निमित्त इसका मूल्य मय डायरेक्शन के ५) प्रतिबाक्स कर दिया गया है। आगे चल करके इसका असली दाम ३०) प्रतिबाक्स चार्ज किया जायगा। वर्तमान परिस्थितियों के कारण माल थोड़ा बच रहा है। अतः अपना आर्डर आज ही भेजें सम्भव है कल पर छोड़ने से आप पीछे रह जायें।

गारंटी—५०० पौंड का नकद इनाम किसी भी वैज्ञानिक आयुर्वेदवेत्ता अथवा जनसाधारण को दिया जायगा जो इस आश्चर्यजनक खोज को गुणहीन साबित कर देगा।

नोट—"ओटोजन" अन्य शक्तिदायक औषधियों के विपरीत अपने प्रकार की अकेली औषधि है जो उष्णकटिबन्ध की गर्मियों में, जाड़े में नम तथा साधारण मौसम में प्रशंसनीय प्रभाव दिखाती है।

उष्ण कटिबन्ध की तीक्ष्ण गर्मी में जिस समय कि आप पूर्णतः शक्तिहीन हो गये हों उस समय ओटोजन आपकी शक्ति संचय करने में विचित्र प्रभाव दिखायेगा। हमने अपनी शाखा लाहौर से हटा ली है [illegible] १५ अगस्त १९४७ से हमारा कार्यालय इंगलैंड से हिन्दुस्तान आ गया है।

प्रमुख औषधि-विक्रेताओं से खरीदें अथवा हमारे यहां से शीघ्र मंगायें।

दी ओटोजन लेबोरेटरीज

भारतवर्ष का आफिस :—पोस्ट बाक्स नं० [illegible] ७, बंबई।

मुफ्त

युवको ! यदि अपनी भूल से नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित फीका हो चुका हो तो भारत सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त रोग कविराज ब्रह्मसरूप बी० ए० फतेहपुरी (D.A.) देहली से (सम्मति) मुफ्त लेकर अपना सुधार लें।

ये सब
क्यों दौड़ते
हमाम साबुन से अपने दैनि
के लिये

हमाम साबुन

दी टाटा आयल मिल्स कं०

न्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [लि० [illegible] इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

देशदूत

वर्ष १०, संख्या ४३]   [रविवार, ४ जुलाई, १९४८

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

पत्रा के सबसे चर्चिल फिर मैदान में उतरे ने हाउस आफ कामन्स में रोना रोया है कि हिन्दुस्तान निकल गया और बादशाह 'सम्राट्' नहीं कहे जायेंगे। की समझ में यह कोई नई है। चर्चिल साहब सारी जिन्दगी रहे और हिन्दुस्तान स्वतंत्र हो हिन्दुस्तान को स्वतंत्रता और अँगरेज अपना बिस्तर ब्रिटेन रवाना हो गये तो सलामत यदि 'सम्राट्' नहीं रह इसमें परेशानी किस बात की? हैदराबाद के संबन्ध में भी बड़े है। चिंतित होना ही चाहिये, साम्प्रदायिक मुसलमानों ने का विभाजन कराया और टोरी दल उनकी सहायता। हैदराबाद आज जो कुछ कार्य कर रहा है, उसमें भी मुस्लिम नेता मिस्टर जबरदस्त हाथ है। मिस्टर साहब की सहायता कर रहे हैदराबाद की जिन्ना ऐण्ड चर्चिल ऐण्ड कंपनी दोनों कर रही हैं। लेकिन देखना सहायता कितने दिनों है?

* * *

के नामी-गरामी नेता रजा- भारतीय मुसलमानों को कि तुम लोग अपना काम सरकार से हैदराबाद के लेंगे। अपने राम की महोदय की सलाह स्तान के ज्यादातर मुस्लिम गुप्तचर तो हैं ही, उनके लिये कौन कम काम की सुरक्षा का प्रश्न। चर्चिल, जिन्ना, निजाम की रजाकार जब सब इकट्ठे हो कुछ दिनों तक तो हैदरा- ही जायेगी। इसमें विशेष गुंजाइश नहीं। अभी तक से समझौते की वार्ता करते ने रजाकारों का संगठन अब भविष्य में थोड़ी बहुत तिकड़मबाजी करते हुए हिन्दुओं को हैदराबाद से निकालने और मुसलमानों को बसाने का पेशा अख्तियार किया जा रहा है। यदि यही हाल रहा तो यदि हैदराबाद का बहुमत अल्पमत और अल्पमत बहुमत बन जाये तो आश्चर्य नहीं। अँगरेजी नीति यही है। उँगली पकड़कर फिर पहुँचा पकड़ना।

* * *

भारत के प्रधान मंत्री पंडित नेहरू कहते हैं कि हैदराबाद कभी हिन्दुस्तान के बाहर नहीं रह सकता। ऊँट को कभी न कभी पहाड़ के नीचे आना ही पड़ेगा। इसके सिवा पंडित नेहरू कहते हैं कि हम लोग हैदराबाद के मामले में बहुत सोच विचार कर काम कर रहे हैं। अपने राम की समझ में पंडित नेहरू का कहना गलत नहीं है किन्तु समझ-बूझकर चलते चलते तो हैदराबाद रजाकारी बन गया और यदि भारत-सरकार इसी तरह समझ-बूझकर कदम बढ़ाती रही तो कुछ ही दिनों में हैदराबादी बहुमत अल्पमत हो जाये तो कोई आश्चर्य नहीं है। भारत-सरकार को शायद यह पता नहीं है कि हैदराबाद के एजेंट और गुप्तचर इस समय हिन्दुस्तान में घूम-घूमकर मुसलमानों को नौकरी का तोहफा बाँट रहे हैं। भारी संख्या में मुसलमान हैदराबाद ले जाये जा रहे हैं। हैदराबाद की बहुमतप्राप्त हिन्दू जनता को या तो स्टेट के बाहर खदेड़ा जा रहा है, या उन्हें वहीं दोजख का रास्ता दिखाया जा रहा है। उन हिन्दुओं का रिक्त स्थान नौकरी के बहाने हिन्दुस्तान से ले जाये जानेवाले मुसलमानों द्वारा किया जा रहा है। कहने का मतलब यह है कि बहुमत को अल्पमत बनाने का काम हैदराबाद में जोरों से चालू हो गया है। क्योंकि यदि भविष्य में वहाँ जन गणना हो तो मुसलमानों का बहुमत सिद्ध किया जा सके। क्या भारत-सरकार का इधर भी ध्यान है या वह कछुए की ही चाल चलती रहेगी?

* * *

चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचारी भारत के गवर्नर-जनरल हो गये, इससे जिन्ना साहब भी बड़े प्रसन्न हैं। जान पड़ता है कि जिन्ना साहब को सी० आर० की उस पुरानी मित्रता का स्मरण हो आया है। अपने राम जानते हैं कि सी० आर० से बढ़कर उपयुक्त नेता वाइसराय के पद के लिये दूसरा ढूँढ़ने से नहीं मिल सकता था। नये वाइसराय के पास माउन्टबेटेन की भाँति न तो सुन्दरता ही है और न वह बीबीवाले ही हैं। स्वतंत्र भारत का यह सौभाग्य है कि बिना बीबीवाले नेता वाइसराय के पद पर प्रतिष्ठित हुए हैं। बात यह है कि कुछ परंपरा ही ऐसी चली आ रही है। पंडित नेहरू और सरदार वल्लभभाई पटेल बिना बीबीवाले नेता हैं ही तो फिर वाइसराय बीबीवाले कैसे हो सकते थे? है परम सुन्दर रँडुए शासक बेहतरीन होते हैं। बीबी-बच्चों का झमेला पालकर भारत को फौजी राष्ट्र बनाने में पूरी सहायता न मिलेगी। अभी हैदराबाद से भी भिड़ना है। इसलिये जोरू-जाँता लेकर कोई कुछ कर ही क्या सकता है?

* * *

सरदार वल्लभभाई पटेल ने एक वक्तव्य में कहा है कि निजाम का रवैया जो अभी तक बेतुका बना हुआ है उसकी जिम्मेदारी चर्चिल एण्ड कम्पनी पर है। बात तो पते की है। लेकिन चर्चिल एण्ड कम्पनी अपनी ताकत रहते निजाम को गले से बाँधे रहने में कसर न उठा रखेंगे। पाकिस्तान बन जाने से चर्चिल एण्ड कम्पनी अभी भारत की ओर से निराश नहीं हुई हैं। इसीलिये हैदराबाद के मामले में भी वह टाँग अड़ा रहे हैं। लेकिन सरदार वल्लभभाई पटेल अब स्वस्थ हुए हैं। हैदराबाद के स्वास्थ्य की भी अब पूरी तौर से परीक्षा होगी। समय नजदीक आ रहा है। बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी? हैदराबाद कितने दिनों तक उछल-कूद मचाता रहेगा। बीबीवाले माउंटबेटेन तो यहाँ से गये। पहले तो लेडी माउन्टबेटेन को तोहफा देकर लाट साहब को प्रसन्न भी किया जा सकता था किंतु अब तो रँडुए वाइसराय से निजाम का पाला पड़ा है। वहाँ तोहफा नहीं चलेगा क्योंकि नये वाइसराय महोदय का मामला सूखा है। वहाँ तो दिमागी कवायद से ही लोहा लेना पड़ेगा यह परम और दीर्घ सत्य है।

* * *

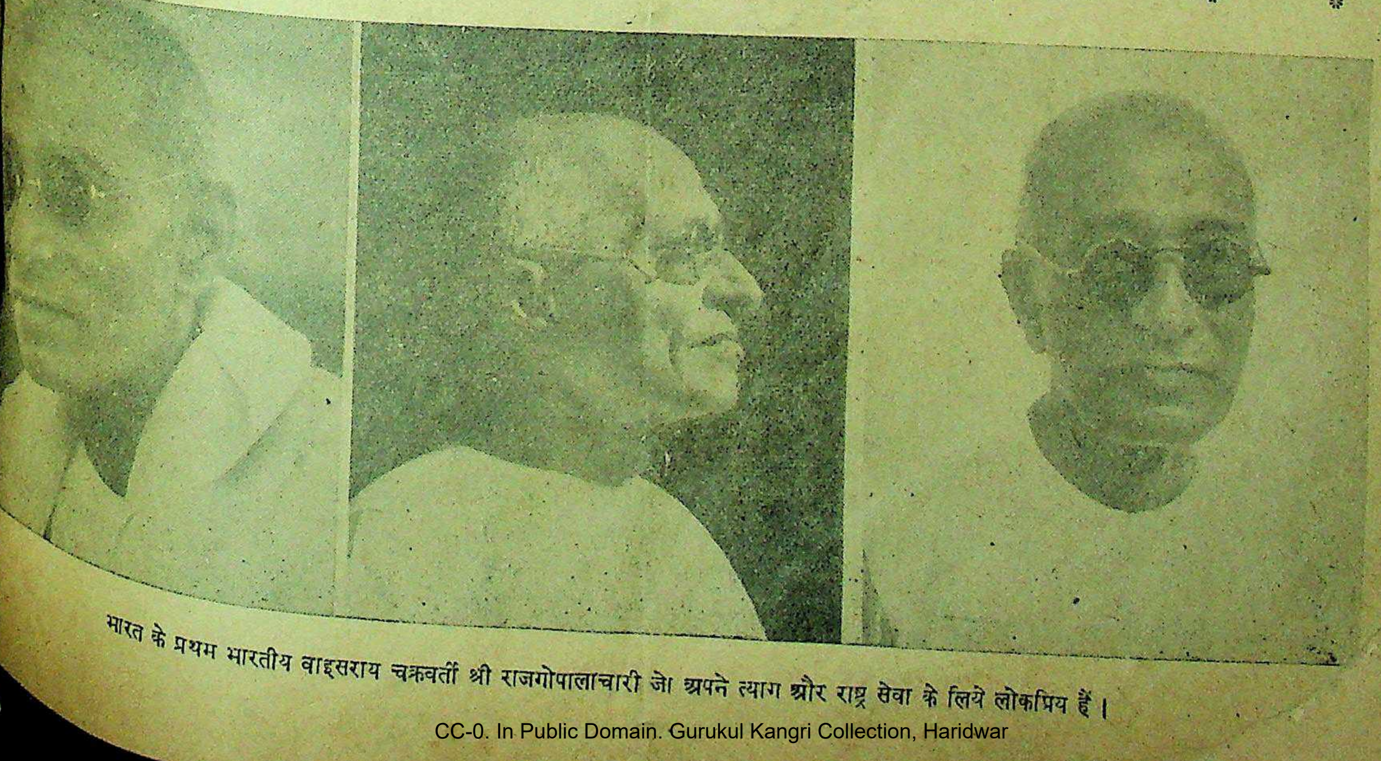

भारत के प्रथम भारतीय वाइसराय चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचारी जो अपने त्याग और राष्ट्र सेवा के लिये लोकप्रिय हैं।

सम्पादक का पृष्ठ

संयुक्तप्रांतीय राजनीति में कांग्रेसी और समाजवादी

भारतीय स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद यों तो समस्त भारत की राजनीति बड़े अव्यवस्थित रूप मे चल रही है, किन्तु संयुक्तप्रांतीय राजनीति ने तो एक विचित्र ही रूप ग्रहण कर लिया है। बम्बई, बिहार, मध्यप्रदेश, पश्चिमी बंगाल मद्रास, आसाम, पूर्वी बंगाल तथा उड़ीसा का राजनैतिक वातावरण फिर भी किसी न किसी प्रकार गनीमत है। वर्तमान आर्थिक स्थिति के शिकार तो सभी प्रान्त हैं फिर संयुक्तप्रान्त अपने को उससे कैसे अलग रख सकता है? किन्तु जब से अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने अपने विधान में परिवर्तन किया और कांग्रेस समाजवादी दल कांग्रेस से अलग होकर विशुद्ध समाजवादी दल बन गया तब से संयुक्तप्रांतीय राजनीति की गति-विधि एक प्रकार से विशृंखल धारा की ओर प्रवाहित होने लगी है। यों तो संयुक्तप्रांत सदा से ही स्वतन्त्र विचार धारा का पृष्ठ-पोषक रहा है और कहना तो यह चाहिये कि भारतीय राजनीति का बहुत कुछ उलट-फेर संयुक्तप्रांतीय राजनीति पर ही निर्भर होता आया है। इसका प्रधान कारण है पंडित जवाहरलाल नेहरू ऐसे विश्व विख्यात राजनीतिज्ञ की राजनीति। पंडित नेहरू अपने जीवन में कभी भी विशुद्ध गांधीवादी नेता नहीं रहे हैं, वह समाजवादी विचार धारा का पृष्ठपोषण करते हुए कांग्रेस के अन्तिम निर्णय की मान्यता देते रहे। यही कारण था कि कांग्रेस में जहाँ बहुमत में गांधीवादी विचारधारा के नेता रहे, वहाँ अल्पमत में कांग्रेस समाजवादी दल के नेता भी पंडित नेहरू के सहारे बने रहे। कांग्रेस समाजवादी दल की स्थापना भी प्रयाग में ही हुई और पंडित नेहरू इस दल के एक संस्थापकों में से रहे हैं। महात्माजी के जीवन तक कांग्रेस में एक प्रकार का सामंजस्य स्थापित रहा। यदि नेताओं में कभी कभी मतभेद हो जाता तो गांधीजी बीच में पड़कर स्थिति सँभालते रहते थे; किन्तु गांधीजी के स्वर्गवास के बाद स्थिति बदल गई, कांग्रेस विधान में भी परिवर्तन हुआ और अब कांग्रेसवादी तथा समाजवादी दोनों एक प्रकार के प्रतिद्वंद्वी राजनीतिक दल बन बैठे हैं। कांग्रेस तथा कांग्रेस दल के हाथ में समस्त भारत की बागडोर है और समाजवादी दल शक्ति पाने के लिये कांग्रेस तथा कांग्रेसी सरकारों की आलोचना करता हुआ विरोधी दल के रूप में मैदान में डट गया है। संयुक्तप्रांत में असेम्बली के उपनिर्वाचन की समस्या को लेकर दोनों राजनीतिक दल क्रियात्मक अनुभव प्राप्त करने की ओर अग्रसर हैं।

अब हम देख रहे हैं कि कांग्रेस के सारे प्र[illegible] बड़े नेता जो समाजवादी दल के पिछले वर्षों [illegible]मचिंतक थे, उनके विरोधी बन बैठे हैं अर्थात् विशुद्ध कांग्रेसवादी और समाजवादी अलग अलग मोर्चा स्थापित किये हुए हैं। हम यहाँ इस विवाद में नहीं पड़ना चाहते हैं कि कांग्रेसवादी दल की नीति दुरुस्त है अथवा समाजवादी दल की। किन्तु यह तो स्पष्ट ही है कि कांग्रेस की प्रतिष्ठा को अक्षुण्ण बनाये रखने की परीक्षा का यह अवसर अवश्य है। समाजवादी जनतंत्र के आदर्शों का कौन कायल नहीं है? हम यह भली भाँति जानते हैं कि एक समय आयेगा जब कि भारत में समाजवादी जनतंत्र के अनकूल शासन-व्यवस्था को सफलता प्राप्त होगी ही। साथ ही यह स्पष्ट सत्य किससे छिपा हुआ है कि इस देश का किसान, मजदूर, कर्मचारी तथा मध्यम श्रेणी का प्रत्येक व्यक्ति जन्मजात समाजवादी है। इतना बड़ा समूह समाजवादी दल के बनाने से समाजवादी नहीं बनेगा। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने पिछले दिनों लखनऊ की एक सार्वजनिक सभा में कहा था "मैं अपने को समाजवादी मानता हूँ। एक समय आयेगा कि यहाँ समाजवादी राज्य-व्यवस्था स्थापित होगी। इसलिये समाजवादी आदर्शों तथा सिद्धान्तों के अनुसार कार्य करना अलग चीज है और वर्तमान समाजवादी दल के कथनानुसार कार्य करना दूसरी।" हमें पंडित नेहरू के इन विचारों में बहुत बड़ा तथ्य दिखाई पड़ता है। आखिर समाजवादी दल आज चुनाओं में जो दिलचस्पी ले रहा है, वह क्यों? इसलिये कि शासन की बागडोर उसके हाथ में आ जाय? हम पूछते हैं कि वर्तमान समाजवादी दल के हाथ में क्या इतनी शक्ति है कि वह समस्त प्रांतों के शासन की बागडोर सँभाल सकता है? आचार्य नरेन्द्रदेव ऐसे कितने विद्वान् समाजवादी पार्टी में हैं? प्रांतों की तथा केन्द्र की बागडोर जिन प्रमुख राजनीतिज्ञों के हाथ में है, समाजवादी दल में उस पाये के कितने राजनीतिज्ञ हैं? शासन करने तथा आलोचना करने के कार्य में जमीन आसमान का अन्तर है। सच तो यह है कि समाजवादी दल को वर्तमान किसी भी चुनाव में भाग न लेकर गाँवों और शहरों में समाजवादी आदर्शों तथा सिद्धान्तों के प्रचार को व्यापक बनाना उचित था, क्योंकि हम जानते हैं कि भारत के लाखों किसानों तथा अधिकांश पढ़े-लिखे भी अभी तक यह नहीं जानते हैं कि समाजवाद है क्या और समाजवादी दल किस चिड़िया का नाम है? जनता तो केवल कांग्रेस तथा महात्मा गांधी को जानती है। अब वह पंडित नेहरू को भली भाँति जान गई है। आचार्य नरेन्द्रदेव तथा श्री जयप्रकाशनारायण का नाम भी जनता जानती अवश्य है, किन्तु समाजवादी होने के नाते नहीं वरन् कांग्रेस के नाते और उनके त्याग और बलिदान के कारण।

इसलिये आवश्यक है कि समाजवादी दल क्रियात्मक ढङ्ग से भविष्य में जनता जनार्दन की सेवा की ओर अग्रसर हो। वह अपने दल का एक ठोस विधान तैयार करे जो जनतन्त्र के सिद्धान्तों के अनुकूल हो और उसी आधार पर वह अपने दल को संगठित करके दृढ़ता प्राप्त करे, यदि समाजवादी दल इस ओर कदम बढ़ाता है तो यह निश्चय है कि कांग्रेस सरकारें उसकी सहायता भी करेंगी। आज का समय क्रांति का है, पारस्परिक सहयोग और संयुक्त मोर्चे का है, मतभेद और तोड़-फोड़ का नहीं। कांग्रेस सरकारों

कलकत्ता में आयलैंड के नेता डी०
श्री शरद्चन्द्र बोस के साथ।

की आलोचना करने से ही शासन
डोर समाजवादी दल के हाथ
आ जायेगी वरन् जनता के संग
ही उसके हाथ में शासन-सूत्र आ
है। हमें यह मानते हैं कि कांग्रेस
की ओर से भी जनता की उपेक्षा हो
किंतु उनके सामने भी राष्ट्र के संग
उन्नति की एक सामूहिक समस्या है,
हल करने के मार्ग में अनेक
हैं किन्तु समाजवादी तो
असंगठित हैं, जनता पर
दल का कोई प्रभुत्व नहीं है,
शासन-सूत्र सँभालने की
कैसे हो सकेगी? समाजवादी दल
अपने को पहले दृढ़ बनाना
रूप से वैधानिक दृष्टि से।

हमें दुःख है कि संयुक्तप्रांत
नीति पर कांग्रेसी तथा
का काफी प्रभाव पड़ रहा है।
जनता पर कांग्रेस का ही प्रभाव
समाजवादी प्रचार से भ्रम
स्वाभाविक है। अब तो
पार्टी की ही गुंजाइश है।
कांग्रेस से अलग हो ही गये
कांग्रेसवादियों को पूर्ण रूप
होना चाहिए। उनमें फूट
न होनी चाहिए। जो कांग्रेसी
समाजवादी थे उन्हें अब
कांग्रेसी बन जाना चाहिए या
समाजवादी ही। अवसरवादि
नीति से अब प्रांत की
वास्तविक सेवा न हो सकेगी।
स्वार्थलिप्सा तथा पदों के
बना रहना तथा भीतर से
गुप्तचर का कार्य करना यह
के लिये अनुचित कार्य है।
में ऐसे राजनीतिज्ञ कम नहीं
भविष्य की राजनीतिक
अस्तव्यस्तता तथा गंदगी के
व्याप्त बनाने में ऐसे
जिम्मेदार होंगे। अब तो
ही लेना चाहिए कि शासन
विशुद्ध कांग्रेसवादियों के
तभी हमारे प्रांत की
गीयता आयेगी, अनुशासन
नीति के आधार पर हो
प्रांत के कांग्रेस नेता इधर

*

मननीत

लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस० सी०, एल्-एल० बी०

पास होकर भी प्रिये तुम दूर कितनी।

दृष्टि का पर्दा मुझे कब चाहिए था,
स्पर्श का सौदा मुझे कब चाहिए था?
चाहता दूरी तुम्हारी और अपनी
प्राण से काया निकट भरपूर जितनी।

रूप ने जब प्रेम का उन्माद जाना,
चाँद ने तब चाँदनी का स्वाद जाना,
छू सको मेरा प्रिये मन तो कहूँ मैं
चाँदनी कितनी मधुर, रसपूर कितनी।

व्यर्थ है सामीप्य, मैंने व्याप्ति माँगी,
खो सकूँ जिसमें स्वयं वह प्राप्ति माँगी,
सिद्धि पाकर भी रुकी कब साधनाएँ
हाय अभिलापा विकल मजबूर कितनी।

जल रही तम के हृदय में दीप की लौ,
पल रही तम के हृदय में प्रात की पौ,
क्या हुआ आशा पली मेरे हृदय जो,
किन्तु आशा पूर्णिमा से दूर कितनी।
पास होकर भी प्रिये तुम दूर कितनी।

आज के जर्मनी का भविष्य

अमरीका तथा सोवियट रूस की प्रतिक्रिया

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

जर्मनी की क्या स्थिति है? अमरीका और रूस दोनों राष्ट्र जर्मनी की स्थिति को और भी अधिक नाजुक बना देना चाहते हैं। राजनीति के विद्वान् ने इस लेख में जर्मनी की वर्तमान राजनीतिक और आर्थिक स्थिति का वर्णन अमरीका तथा रूस के दाँवपेंचों का सुन्दर वर्णन किया है, साथ ही स्पष्ट कि जर्मनी जो पहले था, उसे उस स्थिति पर पहुँचने में अभी बहुत देर है। लेख सुन्दर और सामयिक है।

समृद्धि बनाम सैनिक सुरक्षा

और पेचीदा प्रश्न इतिहास में भी कभी इस रूप में उपस्थित नहीं कहना कठिन है; पर भविष्य ने इन प्रश्नों को इस में सामने उपस्थित किया है कि से एक को चुनना कठिन हो गया नेशनल असेम्बली द्वारा जर्मनी के विषय में छः राष्ट्रों के लन्दन- बड़ी शर्तों के साथ स्वीकार बात की पुष्टि की है। फ्रांस लन्दन-करार का स्वीकार करना करने के बराबर है।

है?

भविष्य को मित्रराष्ट्रों के सब कोण और एक ही विचार इस दृष्टि-भेद और दृष्टि- के कारण उनमें जहाँ मत- का भविष्य भी निश्चित । जर्मनी का विभाजन होने पर भी पश्चिमी जर्मनी यह समस्या बनी रहती है। के प्रभाव से अधिक से अधिक को मुक्त रखने की अभि- पश्चिमी यूरोप का जर्मनी को जाने की उद्दाम आकांक्षा के जर्मनी का विभाजन करना गया है। पर पुराना इति- भारत-पाकिस्तान, फिलिस्तीन- और आयर-अलस्टर का अनुभव विभाजन से समस्या हल नहीं उसके कारण एक और हो जाती है। यही बात विभाजन करने से हुई है।

सदी में दो महायुद्ध हुए की भूमि दोनों बार जर्मन बूटों से रौंदी गई। फ्रांस के भीति बैठ गई है। जर्मनी में, वह पुनः उस भय को मूर्त रूप में देखना चाहता है। इच्छा है कि जर्मनी को इतने में विभक्त कर दिया जाय, कभी संयुक्त ही न हो सके महान् जर्मन शक्ति का पुनः हो, जिसका उसने बिस्मार्क, हिटलर के समय दर्शन किया अमरीका भी अपनी के कारण संघ-राज्य को है, संयुक्तराज्य (युनिटरी) पसन्द नहीं करता। इसमें की आक्रमणात्मक शक्ति कमजोर हो जायगी और विभिन्न स्टेटों और प्रान्तों को अधिक से अधिक अधिकार और सत्ता प्राप्त हो जायगी। पर ब्रिटेन और बेनेलक्स (बेलजियम, नीदरलैण्ड और लक्समबर्ग) को समस्या के इस हल की सफलता में सन्देह है।

जर्मनी का अधिकाधिक अकेन्द्रीकरण वाञ्छनीय होते हुए भी, क्या जर्मन-प्रतिरोध के आगे यह सम्भव होगा? नैपोलियन द्वारा खण्ड-खण्ड में विभक्त जर्मनी जैसे एक हो गया, क्या उसी प्रकार मित्रराष्ट्रों की दखलकारी सेना के हटने पर पुनः केन्द्रीय रीश उत्पन्न न हो जायगा? दूसरी बात यह है कि यदि राजनीतिक दृष्टि से जर्मनी विभक्त कर दिया जाता है, तो आर्थिक दृष्टि से भी जर्मनी विघटित हो जायगा। आर्थिक दृष्टि से विघटित जर्मनी समृद्ध न होकर गरीब होगा। अगले एक दशक में जो जर्मनी आत्मनिर्भर और स्वाश्रमी नहीं हो सकता, वह यूरोप के आर्थिक पुनरुद्धार में भाग ले सकेगा, यह कल्पना ही नहीं की जा सकती। फ्रांस जर्मनी को राजनीतिक दृष्टि से असहाय और आक्रमण करने के अयोग्य बनाने के लिए बड़ी से बड़ी कीमत देने को तैयार है। वह जर्मनी को पंगु रखने के लिए सब कुछ त्याग कर सकता है। पर बेनेलक्स यह नहीं कर सकते, यद्यपि फ्रांस के समान वे भी जर्मन-सैनिकों के बूटों द्वारा रौंदे गये हैं, क्योंकि उनकी आर्थिक समृद्धि जर्मनी की समृद्धि से बँधी है। एक उदाहरण काफी होगा। एण्टवर्थ और राटरडम बन्दरगाहों की समृद्धि और उनका वैभव रूर और उत्तरी जर्मनी के माल बनानेवाले प्रदेश के साथ होनेवाले व्यापार पर निर्भर है।

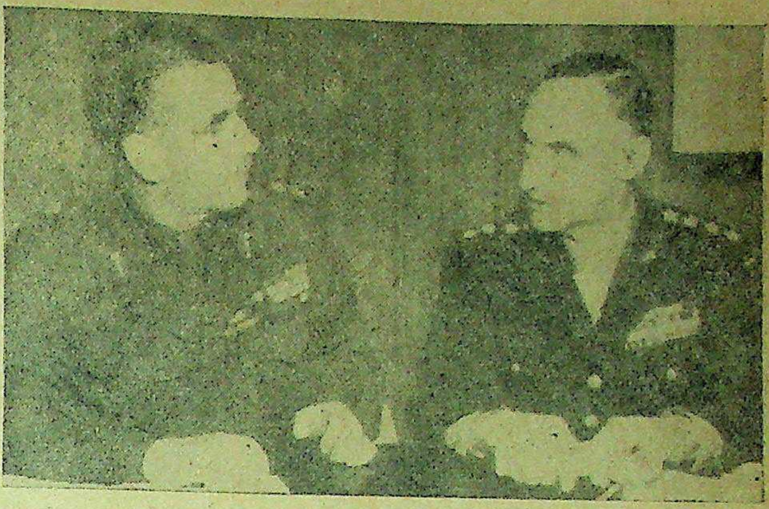

जर्मनी की भूतपूर्व राजधानी बर्लिन में राबर्टसन (बाईं ओर) मिस्टर क्ले से परामर्श कर रहे हैं।

ब्रिटेन का यद्यपि औद्योगिक प्रदेश रूर के प्रतिदिन के जीवन से प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं है। पर ब्रिटेन का जर्मनी और विशेषतः ब्रिटिश जोन के आत्म-निर्भर और स्वाश्रयी होने से घनिष्ठ सम्बन्ध है। ब्रिटेन के करदाताओं पर जर्मनी को पालने का भार न पड़े, यह उसकी हार्दिक इच्छा है। पर रूर के उद्योग-पतियों को सैनिकवादी जर्मन गवर्नमेंट की सहायता के लिए मुक्त भी नहीं छोड़ा जा सकता। इस प्रकार आर्थिक समृद्धि और सैनिक सुरक्षा के बीच यहाँ भी मेल नहीं बैठता।

केवल दस वोट से

फ्रेंच नेशनल असेम्बली ने केवल दस अधिक वोटों से लन्दन-करार को अमल में लाने के कार्य में भाग लेने की सरकार को अनुमति दी है। पर इसके साथ जो शर्तें लगाई हैं, उनसे इस प्रस्ताव की उपयोगिता नष्ट हो जाती है और कहा जा सकता है कि फ्रांस ने लन्दन-करार को अस्वीकार कर दिया है और जर्मनी के भविष्य के सम्बन्ध में जो योजना छः राष्ट्रों ने बनाई है वह कागजी रह गई है।

फ्रांस की शर्तें हैं:—(१) रूर का अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण हो, (२) रूर के उत्पादन पर प्रभावशाली नियन्त्रण हो, (३) जर्मनी पर अधिक समय तक सैनिक अधिकार रख कर फ्रांस को सुरक्षा की गारण्टी दी जाय, (४) करार का क्षेत्र इतना व्यापक किया जाय जिससे रूस भी इसमें सम्मिलित हो सके, (५) समस्त यूरोप में अधिकतम निकट का आर्थिक सहयोग स्थापित किया जाय।

रूर के सम्बन्ध में फ्रांस और ऐँग्लो-अमरीका के बीच भारी भेद है। ऐँग्लो-अमरीका ने उसके उत्पादन—कोयला, कोक और इस्पात—के वितरण के लिये ही केवल अन्तर्राष्ट्रीय करार चाहते हैं। पर फ्रांस रूर की खानों और बड़े तथा भारी उद्योगों के प्रबन्ध पर भी अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण चाहता है। ऐँग्लो-अमरीका को यह स्वीकार नहीं है।

फ्रांस को लाभ

लन्दन-करार को फ्रांस ने एकदम से अस्वीकार नहीं किया। इसका एक कारण है। लन्दन-करार में ऐँग्लो-अमरीका ने फ्रांस की माँगों को एक बड़ी सीमा तक मान लिया है। यथा ऐँग्लो-अमरीका रूर के लिए पहले विशेष शासन स्थापित करने के पक्ष में नहीं थे। रूर फ्रेंच जोन में नहीं है, फिर भी एक सीमा तक उसका उस पर नियन्त्रण स्थापित हो गया है। फ्रांस को सैनिक सुरक्षा की गारण्टी दी गई है, यद्यपि फ्रांस की नजरों में वह अपर्याप्त है। फ्रेंच परराष्ट्र मन्त्री मो० बिदो ने फ्रेंच असेम्बली से लन्दन-करार को स्वीकृत करने के पक्ष में सबसे अधिक जबर्दस्त जो युक्ति दी वह यह कि यदि मित्रराष्ट्र विभक्त हो गए तो इससे जर्मनों का बल बढ़ जायगा। इस कारण मित्रराष्ट्रों की एकता को बनाए रखने के लिए लन्दन-करार को फ्रेंच असेम्बली ने स्वीकार किया।

विरोध का कारण

फ्रांस लन्दन-करार का विरोधी क्यों है? इस प्रश्न का उत्तर फ्रेंच असेम्बली में इस पर हुई बहस में बोलते हुए मो० पीरे को दिया है। आपने कहा कि लन्दन-करार में जर्मनी पर फ्रांस के क्षतिपूर्ति के दावे का परित्याग कर दिया गया है, रूर पर अपर्याप्त नियन्त्रण रखा गया है और यूरोप में इसने अनैक्य लड़ाई का नया बीज बो दिया है। फ्रेंचों का यह भी कहना है कि पश्चिमी जर्मनी का निर्माण १६ राष्ट्रों द्वारा किया गया है। इससे रूस मिट जायगा। यह रूस को प्रत्यक्ष चुनौती है। इस चुनौती के मिलने पर रूस पूर्वी जर्मनी के साथ मिलकर जो करेगा, उसका सामना फ्रां

शेष

योरोप के सोलह राष्ट्रों के संगठन-सम्मेलन में संधिपत्र पर हस्ताक्षर हो रहा है। ब्रिटेन के वैदेशिक [illegible] कर रहे हैं।

हैदराबादी निजाम कौन हैं ?

वर्तमान संघर्ष और कशमकश पर एक ऐतिहासिक दृष्टि

लेखक, प्रोफेसर जयचन्द्र विद्यालंकार

हैदराबाद के निजाम कौन हैं ? वर्तमान संघर्ष और कशमकश का क्या कारण है ? भारतीय इतिहास के सुप्रसिद्ध विद्वान् जयचन्द्र जी ने ऐतिहासिक दृष्टि से हैदराबाद के निजाम तथा वहाँ के वर्तमान संघर्ष पर सुन्दर प्रकाश डाला है, जो पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

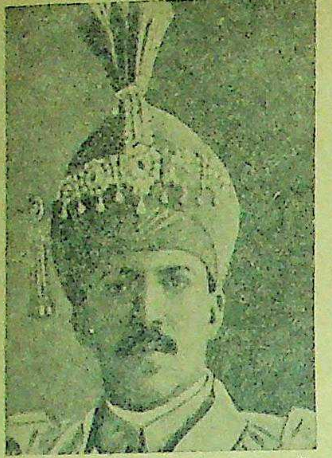

हैदराबाद के निजाम, जिनके राज्य में अनाचार हो रहा है।

इस लेख के लेखक सुप्रसिद्ध भा- तीय ऐतिहासिक विद्वान प्रोफे जयचन्द्र विद्यालंकार।

दक्खिन भारत के केन्द्र भाग में डेढ़ करोड़ जनता सिर उठाकर खड़ी होने को कशमकश कर रही है। निजाम का खड़ा किया हुआ गुण्डा दल लूट, आगमार, अपहरण और बलात्कार से उसे दावे रखना चाहता है। यह निजाम कौन है ? क्यों और कैसे यह आज इतने बड़े जनसमुदाय की गर्दन पर चढ़े बैठा है ?

औरंगजेब के जमाने में समरकन्द के आलम शेख का बेटा ख्वाजा आबिद नौकरी की तलाश में भारत आया था। शाही नौकरी करते हुए गोलकुंडा के मुहासरे में वह गोले से मारा गया (१६८७)। उसका बेटा मीर शहाबुद्दीन मेवाड़ के युद्ध में पहले-पहल बादशाह की नजर पर चढ़ा; पीछे दक्खिन और बुन्देलखंड के युद्धों में उसने और यश तथा गाजिउद्दीन फीरोजजंग का पद पाया। पिछली आयु में वह बीमारी से अन्धा हो गया। उसके बेटे मीर कमरुद्दीन को भी बहादुरशाह के राज्यकाल (१७०७–१७१२) में गाजिउद्दीन फीरोजजंग (२य) का पद मिला।

औरंगजेब के राज्यकाल से मुगल दरबार में हिन्दुस्तानी मुसलमानों और 'मुगलों' अर्थात् विदेशी मुसलमानों में बड़ी खींचतान रहती थी। सन् १७१३ में फर्रुखसियर को जिन सैयद अब्दुल्ला और सैयद हुसेन अली ने गद्दी दिलाई थी, वे दोनों भाई हिन्दुस्तानी मुसलमानों के नेता थे। वे हिन्दुओं के साथ होली-दशहरा मनाते और उनके सलाहकार और साथी प्रायः सब हिन्दू ही थे। उनकी समूची नीति हिन्दुओं के साथ मेल-जोल कर रहने की थी। फर्रुखसियर से उन्होंने पहला फरमान जजिया हटाने का निकलवाया था। मराठों के राजा शाहू से उन्होंने मुगल सम्राट् की सन्धि करा दी थी जिससे शिवाजी के जीते प्रदेशों पर शाहू का पूरा अधिकार तथा समूचे दक्खिन पर आधिपत्य माना गया था।

"मुगलों" में दो दल थे, एक ईरानी, दूसरे तूरानी। फर्रुखसियर के समय तूरानियों के नेता गाजिउद्दीन फीरोजजंग (२य) तथा उसका चचा मुहम्मद अमीन थे। इसी गजिउद्दीन को पीछे जाके निजामुल्मुल्क का पद मिला। सुविधा के करने [illegible] हम उसे यहीं से निजाम कहेंगे। के सारे [illegible] १७१६ में सैयद भाइयों ने पिछले वर्षों [illegible] लवे की सूबेदारी दी। कुछ समय बाद उसे दिल्ली वापस आने का हुक्म मिला तो वह विद्रोह कर दक्खिन भागा। उसका वह विद्रोह सफल हुआ और उसके चचा के सहयोग से सैयद भाइयों का अन्त हुआ। १७२१ में निजाम नये बादशाह मुहम्मदशाह का वजीर नियत हुआ। लेकिन दो बरस बाद वह छुट्टी लेकर दिल्ली से हट गया और १७२४ में फिर विद्रोह कर दक्खिन भागा। बराड में शकरखेड़ा पर उसने शाही फौज को हराकर दक्खिन की सूबेदारी हथिया ली।

मराठों के दूसरे पेशवा बाजीराव ने शकरखेड़ा में निजाम का साथ दिया। बाजीराव को जब यह पेशवाई मिली (१७२०), तब मराठा राज्य की नीति क्या हो, इस पर शाहू की सभा में विचार हुआ था। दक्खिनी दल का कहना था कि पहले हम समूचा दक्खिन अधीन कर लें तब उत्तर की तरफ बढ़ें। पर बाजीराव ने कहा, मुगल-साम्राज्य समृद्ध और क्षीण है, उसकी जड़ पर चोट करो तो शाखायें स्वयं गिर पड़ेंगी। यही नीति थी जिससे उसने विद्रोही निजाम का साथ दिया। उसे भरोसा था कि फुरसत के समय वह पेड़ से टूटी इस डाल को उठाकर फेंक देगा। निजाम भी बाजीराव से खूब सशंक था। इसलिए उसने महाराष्ट्र से दूर हटाकर हैदराबाद में राजधानी बनाई और शाहू के आधिपत्य को चुनौती देते हुए चौथ देना बन्द कर दिया। बाजीराव ने तब उस पर एकाएक चढ़ाई कर दौलताबाद के पच्छिम पालखेड में उसे घेर लिया। निजाम ने चौथ की सब बाकी रकम देकर सन्धि-भिक्षा की। मुंगी शेवगाँव की सन्धि से इस विद्रोही सरदार की पहली स्थिति निश्चित हुई (मार्च १७२८)। वह राजा शाहू के सामन्त रूप में दक्खिन में स्थापित हुआ।

तीन वर्ष बाद उसने मराठा राज्य के विरुद्ध षड्यन्त्र किया (१७३१)। उसके अपने साथियों से अलग होने के चार दिन के भीतर बाजीराव ने उस पक्के षड्यंत्र को कुचल दिया। निजाम ने तब बाजीराव को वचन दिया कि वह उसका रास्ता न काटेगा।

इसके बाद मराठों की उत्तर तरफ बाढ़ जारी रही। १७३७ में बाजीराव ने दिल्ली पर चढ़ाई की तो उसने वहाँ का रंग-ढंग देखकर लिखा—बादशाह और हिन्दुस्तानी मुसलमान हमसे सन्धि करना चाहते हैं, पर मुगल नहीं करने देते। बाजीराव को रोकने के लिए निजाम को दिल्ली की वजारत फिर सौंपी गई। भोपाल के पास दुराहासराय पर बाजीराव ने उसे फिर पूरी तरह घेर लिया और चम्बल तक का सारा प्रदेश मराठों को देने की सन्धि करा के छुटकारा दिया (जनवरी १७३८)। अगले साल नादिरशाह की चढ़ाई के समय भी निजाम दिल्ली का वजीर था, पर दिल्ली के दूसरे नेताओं की तरह वह भी देश को बचा न सका। १७४० में वह दक्खिन लौट आया और आठ बरस तक और हैदराबाद में शासन किया।

यों सन् १७२४ से १७४८ तक के खुदमुख्तार सूबेदार तथा मराठा के सामन्त रूप में निजामुलमुल्क शासन किया उसी से हैदराबाद की नींव पड़ी।

२१ मई १७४८ को उसकी मृ पर दक्खिन की सूबेदारी के लिए धिकार के झगड़े शुरू हुए। मरा तीसरे पेशवा बालाजीराव ने सम कि मुगल-साम्राज्य का पेड़ ढह चु और दक्खिन भारत में उसकी गिरी शाखाओं को बटोरने का काम उसे पेशवाई में कर डालना है। बालाजीरा यह कर ही डालता, पर तभी दो शक्ति उसकी राह में आड़े आ गई।

निजाम के उत्तराधिकार के में दखल देकर डूप्ले ने भारत में साम्राज्य खड़ा करना चाहा। निजाम के दोहते मुजफ्फरजंग को का सूबेदार बनाकर खड़ा किय मुजफ्फर के मरने पर उसके मामा जंग को। १७४८ से १७५६ त बाद की रियासत यदि मराठों के में खड़ी रही तो फ्रांसीसियों पुतली बनकर।

१७५६ में दक्खिन में फ्रां अँगरेजों ने तोड़ दी। सलाबत फोर्ड के मुकाबले को गया हुआ उसके भाई निजामअली ने सब अधिकार हथिया लिये। नि ने पेशवा के रोकने पर भी साँठगाँठ की। इसलिए उ अन्त में सदाशिवराव के नेतृत्व सेना उस पर भेजी गई। निजामअली की पूरी हार जनवरी १७६० में उसने उससे यह लगने लगा कि कु बरसों में उसकी रियासत जायगा। लेकिन पानीपत जो धक्का लगा उससे उठे गई। पैंतीस बरस बाद नाना जमाने में, फिर उससे निप आया। इस बार निजाम का काम परशुरामभाई पटव गया था। खर्डा पर पालखेड़, और उद्‌गीर की कहानी निजामअली ने पूरी अधीनता की सन्धि की।

शेष पेज

गीत

लेखक, श्री सोती, बी० ए०

गीत जीवन का सहारा।
स्वप्न का पंछी सलोना,
वेदना के पंख खोले।
चञ्चु में तिनका लिये सुख–
का विजन बन बीच डोले।
पंख में है शक्ति जितनी उड़ रहा उतना विचारा।
कामना की बूँद से भर,
घन धरा को घेर छाये।
रह गये लेकिन बरसकर,
तृप्ति का कण भी न पाये।
रिक्त नभ का उर मिला और शून्य सागर का किनारा।
प्यार का वरदान दूँगा,
मैं विरह की वेदना में।
शक्ति जीवन की भरूँगा,
मैं मरण की चेतना में॥
आँसुओं के प्यार से गाकर मुझे किसने पुकारा।

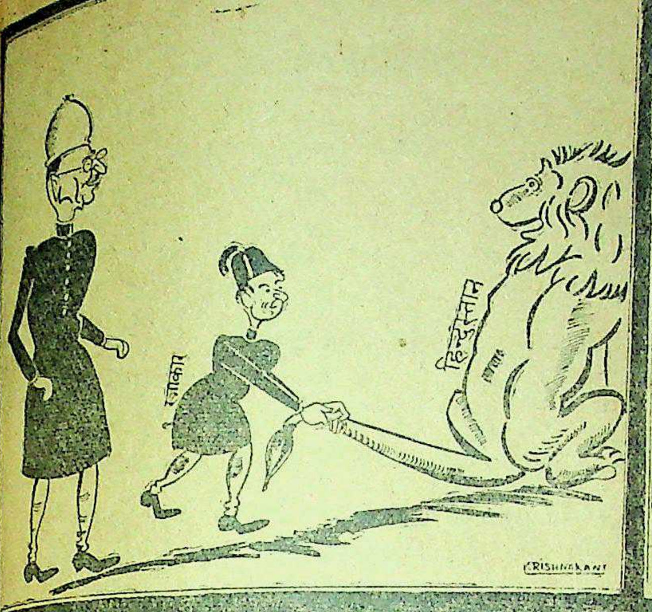
रज़ाकार
हिन्दुस्तान
KRISHNAKANT

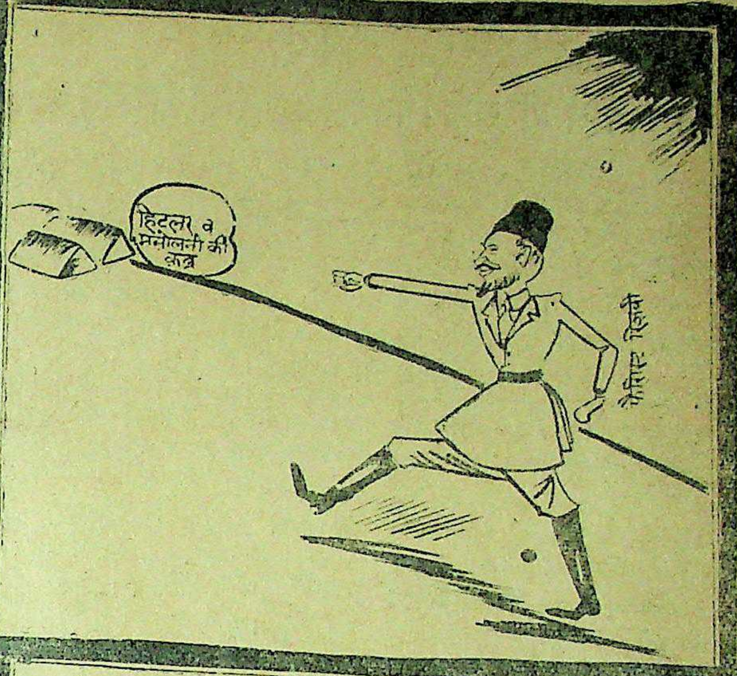
हिटलर व मसोलनी की क़ब्र
कासिम रिज़वी

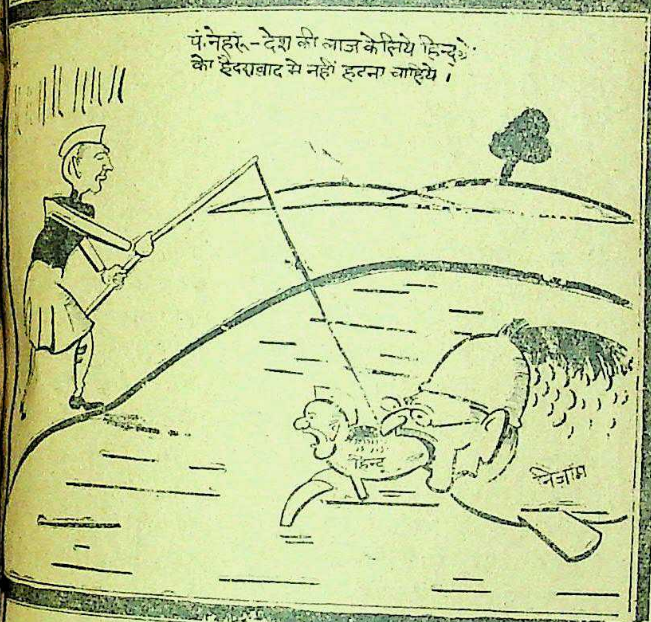
पं. नेहरू – देश की लाज के लिये हिन्दुओं को हैदराबाद से नहीं हटना चाहिये।
हिन्दू
निज़ाम

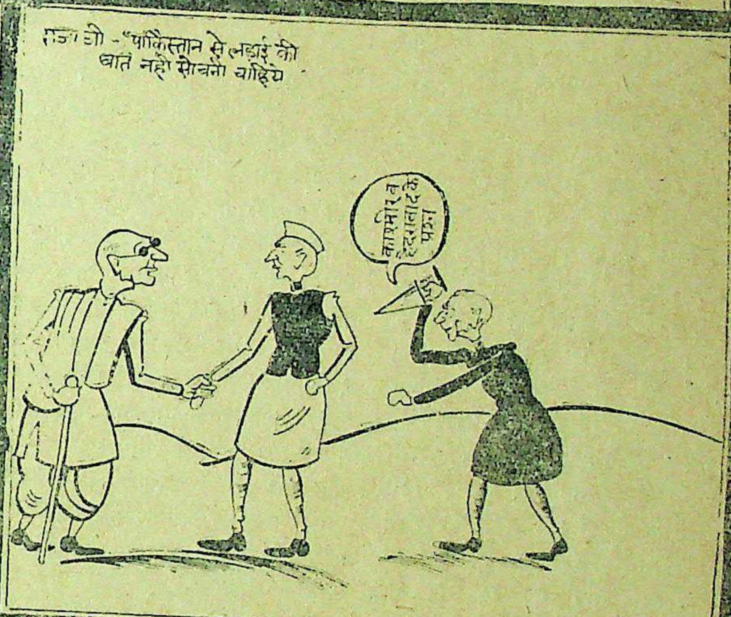
राजा जी – "पाकिस्तान से लड़ाई की बातें नहीं सोचनी चाहिये
काश्मीर व हैदराबाद के प्रश्न

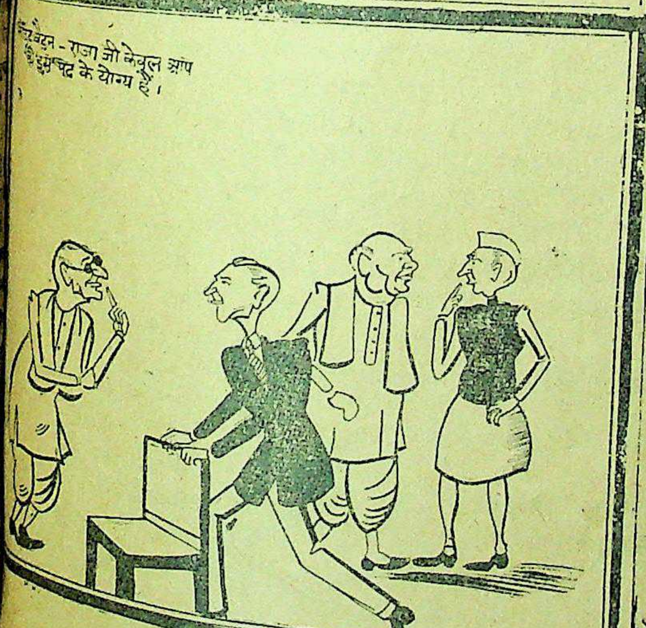
माउन्टबेटन – राजा जी केवल आप ही इस पद के योग्य हैं।

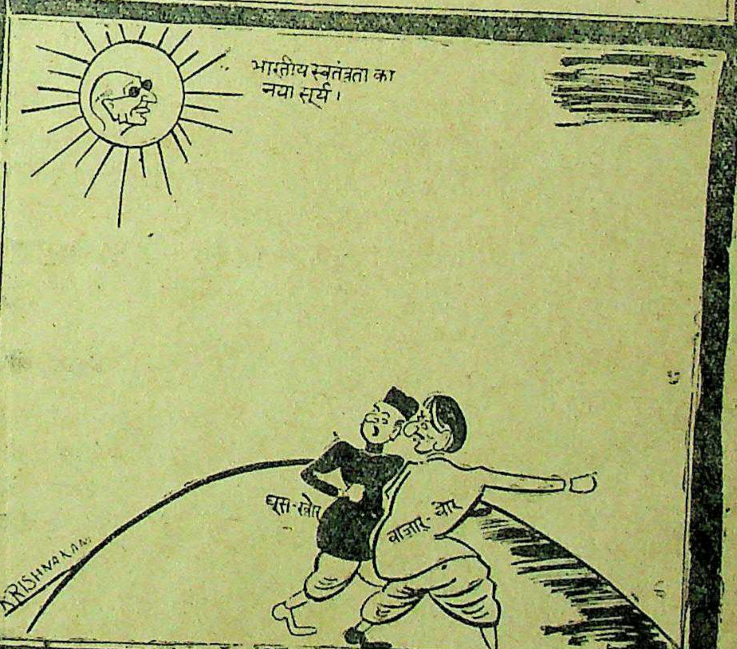
भारतीय स्वतंत्रता का नया सूर्य।
घूस-खोर
बाज़ार-चोर
KRISHNAKANT

प्रान्त की नई रूप-रेखा—रक्षा

रक्षा-कार्य से ही राष्ट्रीय निर्बलता दूर हो सकती है

लेखक, श्री चतुर्बिहारीलाल दुबे, एम्० एस० सी०, पी० सी० एस०

भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई है, इसलिये अब इसकी सुरक्षा की व्यवस्था करना आवश्यक है। संयुक्तप्रान्तीय सरकार ने प्रान्त की रक्षा का कार्य क्रियात्मक रूप से प्रारम्भ कर दिया है। विद्वान् लेखक ने 'रक्षा' की ऐतिहासिक परम्परा तथा आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए विषय के सामयिक महत्त्व को इस लेख में स्पष्ट किया है। लेख सामयिक और पठनीय है।

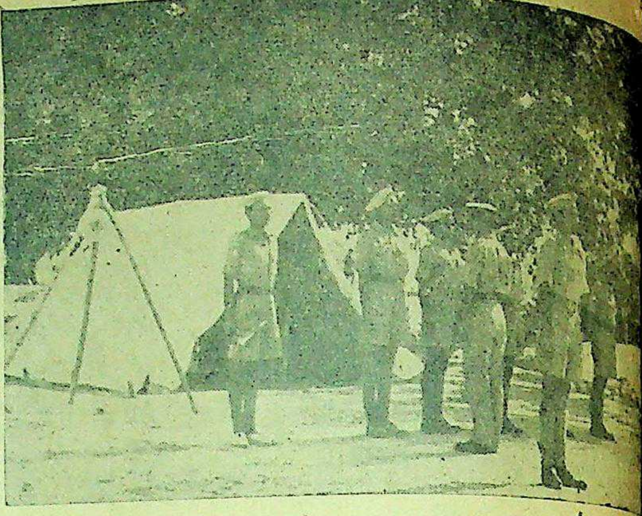

सैनिक पहरेदार—रक्षा-दल के सिपाहियों को सैनिक शिक्षा दी जा रही है।

१५ अगस्त, १९४७ ई० हमारे देश के इतिहास में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण दिन समझा जायगा। हमने अपनी स्वतंत्रता अँगरेजों के हाथ अन्तिम रूप से १८वीं शताब्दी के मध्य में खो दी थी। हमारे पतन के कारण अनेक हैं किन्तु देश की समुचित रक्षा के लिये उत्तम संगठन का अभाव उनमें से एक बहुत बड़ा कारण रहा है। सारे मध्यकालीन युग में हमारे राजाओं ने सामन्तवादी सेवायें रक्खीं किन्तु उनमें स्वभवतः सामंजस्य, अनुशासन तथा संयत नियंत्रण न था। सैनिकों का दृष्टिकोण धन उपार्जन करना ही था और उनमें राजनीतिक जागृति न थी और राजनीतिक शिक्षा की कोई व्यवस्था न होने के कारण उन्हें अपने देश के शासन में तनिक भी अभिरुचि नहीं थी। इसका परिणाम यह हुआ कि जब कभी भी किसी महत्त्वाकांक्षी और शक्तिशाली शासक गवर्नर या सामन्त को शक्ति ग्रहण करने का अवसर मिला तो वह देश से अलग हो गया और उसने स्वयं अपना शासन स्थापित कर लिया। सैनिकों को सिर्फ अपने वेतन से मतलब था और जब तक उन्हें अच्छा वेतन मिलता रहा तब तक उन्हें देश के अनेक स्वतंत्र तथा युद्धरत इकाइयों में बँट जाने पर कभी चिन्ता नहीं हुई।

जो इतिहासकार सिकन्दर महान् के साथ उत्तरी भारत के आक्रमणों में थे उन्होंने लिखा है कि किसानों को अपने देश की रक्षा में बिलकुल ही अभिरुचि नहीं थी। जब लड़ाइयाँ लड़ी जा रही थीं और किसान अपने खेत जोतते चले जा रहे थे उन्होंने यह कभी नहीं सोचा कि समीप ही जो लड़ाई हो रही है उसका क्या परिणाम होगा। इस देश के औसत नागरिक में इस अभिरुचि के अभाव के कारण ही हम उन विभिन्न आक्रमणकारियों का, जिन्होंने इस देश में उत्तर-पश्चिमी घाटियों से आक्रमण किये, कभी कभी जमकर सामना नहीं कर सके। प्रत्येक संग्राम ने हमारे भाग्य का निर्णय किया है। बहुधा हमारे राजा ही स्वयं सेनाओं का नेतृत्व करते थे और उनके धराशायी हो जाने पर सेनायें तुरन्त ही भागते हुए जनसमूह में परिणत हो जाती थीं। अतः कुछ ही हजार दृढ़संकल्प आक्रमणकारियों ने शताब्दियों के लिये हमारे भाग्य का निर्णय कर दिया।

हमारे प्राचीन सम्राटों ने जिनमें से चन्द्रगुप्त मौर्य और अशोक के नाम के सारे [illegible] हैं, प्रथम श्रेणी की सेनाओं को पिछले वर्षों और औसत नागरिक के हृदय में देश की रक्षा के प्रति गर्व की भावना का संचार करने का प्रयत्न अवश्य किया था और उन्हें काफी सफलता भी मिली थी। अतः लगभग एक शताब्दी तक भारत अपने शस्त्रों के उत्तम संगठन के कारण विदेशी आक्रमणकारियों से सुरक्षित रहा। इसी प्रकार के प्रयत्न समुद्रगुप्त, स्कन्दगुप्त तथा हर्षवर्धन द्वारा भी बड़ी सफलतापूर्वक किये गये थे, परन्तु हमारे दुर्भाग्य से जो भावना उन्होंने उत्पन्न की थी वह अधिक काल तक नहीं टिकी और साधारण जनता में देश की रक्षा-सम्बन्धी समस्याओं के प्रति फिर वही स्वाभाविक उदासीनता आ गई। हमारे पूज्य राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के प्रयत्नों से वह दिन फिर आ गया है जब हमें अपने भविष्य को बनाने अथवा बिगाड़ने की शक्ति प्राप्त है। १५० वर्ष से भी अधिक काल तक हम विदेशी शोषण के निस्सहाय शिकार रहे हैं। हम पूर्ण रूप से निःशस्त्र कर दिये गये और हमारे शासकों के आपस में फूट उत्पन्न कर शासन करने की नीति द्वारा हमारे बीच जान-बूझकर दलबन्दियाँ पैदा की गई हैं। शस्त्रों का प्रयोग सीखने और अपने घरों की रक्षा करने के लिये हमें कोई अवसर दिया ही नहीं गया था। साधारणतः बन्दूकों से लैस थोड़े से डकैत सारे गाँव को बिना किसी रुकावट के पूरी तरह लूट सकते थे। अकेला एक गुण्डा सारे मोहल्ले को आतंकित कर सकता था। मनुष्योचित गुण, पराक्रम और साहस जो प्राचीन काल में सब में पाये जाते थे लोप हो गये। आत्मसम्मान की बात तो हम प्रायः भूल ही गये। हममें से उन्होंने जिनमें कल्पना-दृष्टि शेष थी, स्वतंत्रता प्राप्त करने के विभिन्न उपायों को सोचा; परन्तु उन्हें निराशा ही मिली। ऐसे समय में महात्मा गांधी देश के राजनीतिक मंच पर आये और वे ही ऐसी महान् विभूति थे जिन्होंने अहिंसा पर आधारित सत्याग्रह का अचूक शस्त्र निकाला। उन्होंने जो आत्मसम्मान उत्पन्न किया और जो साहस प्रदान किया उसी के कारण हजारों नर-नारियों ने अनेक कठिनाइयों और यातनाओं का सामना किया और इसी के फलस्वरूप आज हम स्वतंत्र हैं।

महात्मा गांधी अब नहीं हैं। हमारा कर्तव्य है कि हम अपने को उनके योग्य बनायें और इस स्वतंत्रता को बनाये रक्खें जो उनके प्रयत्नों से हमें प्राप्त हुई है। एक प्रश्न उठता यह है कि क्या हम स्वतंत्रता बनाये रखने के लिये उसी शस्त्र का आश्रय ले सकते हैं या नहीं जिसका उपयोग उन्होंने स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिये किया था। यह एक गंभीर प्रश्न है और इसका उत्तर देना अत्यन्त कठिन है। यदि हम महात्मा गांधी द्वारा निर्दिष्ट मार्ग का अनुकरण करें तो इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि हम सफल होंगे किन्तु मार्ग इतना कठिन है कि हममें से अधिकांश लोगों को इस पर चलने का नैतिक साहस न होगा और यह भय है कि अन्य उपाय अर्थात् देश की रक्षा पूरी तैयारी करने का सहारा न उन्होंने जिस वृक्ष का किया उसके फलों का उपभोग हम कर सकेंगे। इसलिये हमें काम करना चाहिये और अपनी नता की रक्षा के लिये प्रान्त तथा तैयार करना चाहिये। शान्ति रखने का एक मान्य उपाय युद्ध तैयार रहना है। अपने देश की के अनुसार हम कदाचित् कभी भी मणकारी नहीं होंगे। किसी देश पर आक्र मण करना अथवा अनुचित लाभ उठाना हमारा लक्ष्य नहीं रहा है। फिर भी हमें रखना चाहिये कि दुर्बलता से आती है और किसी भी दिशा से वाले किसी भी प्रकार के आक्रमण की रक्षा के निमित्त तैयारियों दुर्बलता को अवश्य समूल करना होगा।

मैं यह बता चुका हूँ कि हमारी निर्बलता का मुख्य कारण यही साधारण नागरिक ने स्वदेश कभी दिलचस्पी नहीं ली। इ बहुत ही विशाल है और यहाँ तथा अन्य वस्तुओं के विशाल

शेष पृष्ठ १४

रक्षा-दल के सिपाहियों को व्यायाम की शिक्षा दी जा रही है।

कहानी

प्रणय--प्राचीन और नवीन

लेखक, श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी

अनुवादक, श्री शिवचन्द्र नागर, बी० ए०

मनुष्य स्वभाव से ही प्राचीन परंपराओं तथा वस्तुओं के प्रति उदार और विचारशील रहा है। स्मृति रूप में स्थापित कल की वस्तुएँ आज ऐतिहासिक महत्त्व प्राप्त कर रही हैं। इस कहानी में सुप्रसिद्ध उपन्यासकार श्री मुंशी ने एक इस्लामी प्राचीन परंपरा का चित्रण करते हुए उसके नवीन भावनाओं को अंकित किया है। कहानी सुंदर तथा आकर्षक है।

एक वृद्ध का वेष अपरिचित था। इसकी लंबी लाल दाढ़ी इसकी छाती पर फैल रही थी, हरी विशाल पगड़ी सुन्दर वार्धक्य में रमणीय लगती हुई मस्तक की रेखाओं पर छत्र की तरह सुशोभित हो रही थी। सुरमे से सुरमई बनी हुई पलकों में से मदमस्त नयन चमक रहें थे। उसके हाथ में तेल का एक दीपक लटक रहा था और दूसरे हाथ से वह हुक्का पी रहा था। वह आया और साथ में इत्र की महकती हुई खुशबू फैलती हुई आई।

मैं घबराया। इस समय कारावास के द्वार किसने खोले? न वार्डर, न जमादार और न जेलर; पर यह था कोई उमर खय्याम के मित्रों में से चला आया हुआ वृद्ध! मैंने बोलने का प्रयत्न किया पर बोला नहीं गया। धीरे-धीरे वह आया, दीवार के आले में दीपक रक्खा और जहाँ मैं बैठा था, वहाँ मेरे सामने मेरे क्षोभ की अपनी मंद हँसी से मजाक उड़ाकर वह पल्थी मारकर बैठ गया। अपरिचित मनुष्यों का आगमन रात में एकान्त भवन में किसे अच्छा लगने लगा? और उसमें भी इस दरवेशवेशी पुराने हुक्केबाज की समीपता से तो मेरा हृदय काँप ही उठा।

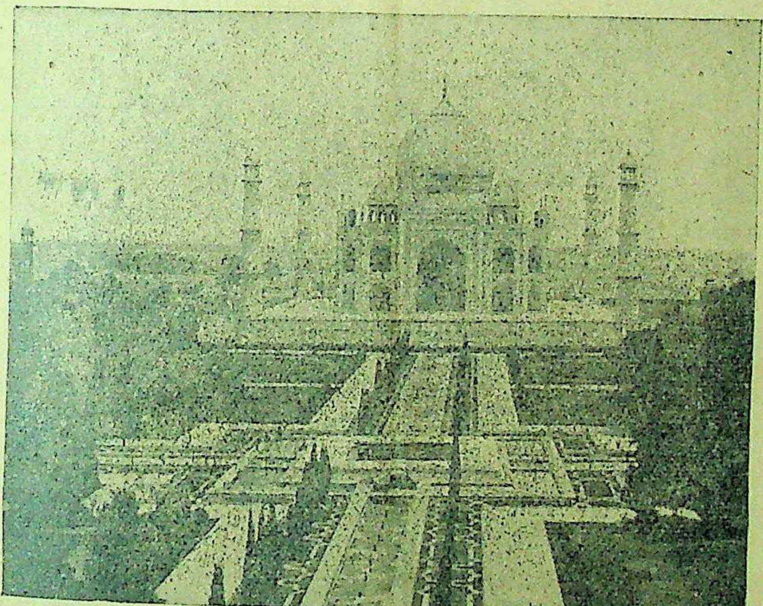

मुमताज महल का संसारप्रसिद्ध मकबरा ताजमहल।

"तुम कौन हो?" मैंने थोड़ी देर में पूछा।

"बच्चा, जिसको तूने याद किया था न—वह इस खंड का अधिष्ठाता।" उसने मजाक में कहा।

"नाम क्या है तुम्हारा जनाब?" विवश होकर मुझे विनय का ध्यान आ गया। एक अपरिचित के बच्चा बनने का सौभाग्य मुझे अच्छा नहीं लगा।

"मेरा नाम हाफिज!" जईफ ने कहा।

"हाफिज" मैंने अपना स्मरण-कोष टटोला पर यह नाम मुझे कहीं मिला नहीं।

"क्या बात! मेरी गजलों से तो संसार ने प्रणय-गान का पाठ सीखा है।"

"हाफिज, हाफिज" कुछ कुछ याद आया।

"हाफिज जिसने सनम के गाल के काले तिल पर दे दिये थे समरकन्द और बुखारा वह" वृद्ध खिलखिलाकर हँसा।

"हाँ, वही मैं—वही हूँ मैं हाफिज बच्चे! पर संशयात्मक होने पर भी मैंने सिर हिला दिया।

"पर कविराज, तुम कहाँ से यहाँ बीजापुर में?"

"बेटा, यहाँ रहता था मेरा एकआध परम शागिर्द! वह मेरी गजलें गाता और प्रत्येक शब्द का सार समझता था और प्रत्येक क्षण उसका इश्की दिल उनके रस में डूबा रहता। अभी ये दीवारें उसके शब्दों की प्रतिध्वनि से गूँजती हैं। मधुर कंपायमान और ग्लानिपूर्ण। अभी इन कमानों में, मेहराबों में छिपा हुआ है उस दीवाने का अंतिम विश्वास। जो मैंने गाया वह उसने अनुभव किया, जो मैंने सिखाया उसे उसने सुधारा। मैं तो सनम के लिये समरकंद और बुखारा ही खो बैठा था पर इसने तो खोई अपनी यौवन-मदमाती जवानी! और इसी कारण मैं आता हूँ—अपने आत्मसंतोष के लिये तथा अपने गीतों को फिर से सुनने के लिये।"

प्रणय की परीक्षा में अपने को प्रवीण समझनेवाला मैं, इस पुराने इश्क की आत्मश्लाघा को सहन नहीं कर सका, "जनाब! प्रणय गाना सहज है किंतु प्रणय का आदान-प्रदान बड़ा कठिन है। समरकंद और बुखारा आपके नहीं थे इसलिये उनका देना तो सदा ही सहज था। मैंने भी सहा है प्रणय का आघात और मैंने भी स्वीकार की है प्रणय की तपस्या। मैने भी थोड़ा-बहुत सिखाया है प्रणय पागल नर-नारियों को।"

वृद्ध की आँखें चमकीं और उसने दाढ़ी पर हाथ फेरा। खंड में हिना की महक फूट पड़ी और हुक्का जैसे हँस रहा हो इस प्रकार गड़गड़ा उठा।

"नादान जिगर के जंजालों को तू क्या जाने, इश्क के मोहवैविध्य तुझे क्या पता? बता कितनी नाजनियों की, की है तूने कदमबोसी?"

मैं कंधा उचकाकर हँसा--इस जमाने में अच्छी लगे ऐसी छटा से। "मुरब्बी! हम नवयुग के पुरुषों को नहीं अच्छी लगती यह कदमबोसी की गुलामगिरी! और हमारी आधुनिक रीतियाँ नहीं कहने देतीं अपनी पूजी हुई नाजनियों की सूची।"

कविराज हँसे, जो जानता है वही कह सकता है, जो कह सकता है वही जानता है। जो जानता नहीं और कहता नहीं वह इश्क को नहीं पहचानता।" और तिरस्कार से हुक्का गड़गड़ाया।

"अर्वाचीन युवकों के अभिमान का पार नहीं; पर हमने जो देखा, जाना और अनुभव किया है उसका तो शतांश भी तुम्हारे कर्म में नहीं लिखा। सरों के वृक्ष की संकीर्ण छाया में बैठकर, बहते हुए झरनों में दिलदार की आँखें देखी हैं? एक शराब के जाम में से दोनों ने इश्क का पान किया है? और चिराग की तरह चाँद जब मसजिद की मीनारों को चूम ले तब देखी है किसी की काली नुकीली आँखों में अपनी तसवीर?"

"मैंने क्या किया यह मैं कहना नहीं चाहता," मैंने कहा, "युग युग में मदन अपना स्वरूप बदलता है, आत्मा भी बदलती है।"

"और अँधेरी रात में संगमरमर सदृश गोरी काकेशश की सुन्दरी के हृदय पर सिर रखकर तारे गिने हैं। और पूर्णिमा की आधी रात में ईरानी रमणी के गाल के तिल पर जीवन न्यौछावर किया है। और उगते हुए आफताब में काश्मीरी...?"

"बहुत हुआ कविराज! हम अर्वाचीन युग के युवक तो हैं आग्रही। हमारा प्रणय यह तो है, एक धर्म—एक जन्म में एक ही बार स्वीकार किया हुआ। इसी में हम मरते हैं और इसी में हम जीवित रहते हैं।"

"कैसा दुर्भाग्य! एक गुलाब चुनने से कोई बागवान हुआ है। एक परी महर के कदम चूमने से कोई इश्की नहीं हुआ, आज की इस नाजनी के नयनों में क्या कोई जुदा जादू भरा है?"

"मियाँ साहब! हम अर्वाचीन अपने प्रियतमा के गुलाम तो हैं, पर उसके अतिरिक्त दूसरी के नेत्रों में हम जादू की खोज नहीं करते और प्रशंसा भी नहीं करते। और हमारे घरों में बाँदियाँ नहीं बैठीं कि हम परी महरों के कदम चूमने जायें और वे सहन करती रहें। ये तो हैं योगमायायें—हमको खा जायें; पूरा का पूरा।

"मुझे लग रहा था कि इस जमाने में कुछ ऐसी बेवकूफी होनी ही चाहिये। बेवकूफी!"

"कविराज! हमारा जमाना ठीक पत नहीं हमारे लिये।"

* *

नैपाल राज्य के नये महाराणा

महाराणा मोहन शमशेर जंगबहादुर ने शासन की बागडोर नई गतिविधि के साथ सँभाली है

लेखक, श्री महेशचन्द्र उपाध्याय, एम० ए०

नैपाल प्राचीन हिन्दू राज्य है। यहाँ के पुराने महाराणा के त्यागपत्र दे देने पर नये महाराणा उत्तराधिकारी हुए हैं। लेखक ने नये महाराणा तथा उनकी नई गतिविधि का सुंदर वर्णन इस लेख में किया है। लेख पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

नैपाल के महाराणा मोहन शमशेर जंगबहादुर

नैपाल के इतिहास में हाल में एक नवीन युग आरम्भ हुआ है। महाराज पद्म शमशेर ने अस्वस्थ होने के कारण राज-पद से इस्तीफा दे दिया है और उनके स्थान में उनके चचेरे भाई श्री मोहन शमशेर जो नैपाल के मुल्की लाट थे, प्रधान मंत्री के पद पर नियुक्त हुए हैं। वर्तमान स्थिति में नैपाल और भारत का मित्रता-सम्बन्ध अधिक होना चाहिये। इस विषय में कोई मतभेद नहीं है। महाराज मोहन शमशेर के राज्याभिषेक के समय भारत के प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने जो बधाई का समाचार भेजा है उसमें आशा प्रकट की है कि भविष्य में भी नैपाल-भारत की मैत्री स्थिर ही नहीं बल्कि अधिक दृढ़ हो जायगी। नैपाल गोरखों का राज्य है। गोरखा लोग एक वीर, रण-पिपासु जाति हैं। उनकी अद्भुत वीरता इतिहास के पृष्ठों में स्वर्णाक्षरों में अङ्कित है। कांग्रेस सरकार ने आरम्भ ही से नैपाल के प्रति सहानुभूति प्रकट की है और मित्र-भाव को सुदृढ़ बनाने का आश्वासन दिया है। हमारे गण्यमान्य नेताओं ने नैपाल के प्रति सद्भाव ही प्रकट किये हैं। हमारा नैपाल के साथ धार्मिक तथा सांस्कृतिक सम्बन्ध घनिष्ठ है। इसीलिये इस बात की आवश्यकता है कि भारतीय जनता नैपाल के विषय में अधिक ज्ञान प्राप्त करे और राज्य के प्रति मित्रता का सम्बन्ध रखने में सहायता करे। शासन-सुधार का काम नैपाल में हो रहा है। जनता अधिकांश अशिक्षित तथा रूढ़िवादी है इसलिये शीघ्र सफलता नहीं होती; परन्तु नैपाल के राजनीति विशारद तथा अधिकारी इस बात की चेष्टा कर रहे हैं कि अर्वाचीन संस्थायें उनके देश में स्थापित हों जिससे प्रजा का कल्याण हो।

राणा-वंश के बारे में बहुत-सी भ्रमोत्पादक बातें कही जाती हैं। इतिहासवेत्ता जानते हैं कि श्री० जंगबहादुर ने किस [illegible]कार इस देश की अराजकता से रक्षा की [illegible] राजवंश दुराचार में निमग्न था। [illegible] एक नैपाल-नरेश अयोग्य सिद्ध हुए। प्रजा त्रसित होकर हाहाकार करने लगी। ऐसी स्थिति में पंच यंत्र द्वारा श्री जंगबहादुर ने राज्य की बागडोर अपने हाथ में ली और देश में शान्ति स्थापित की। आधुनिक शासन का आरंभ श्री जंगबहादुर के समय से होता है। जंगबहादुर की सन्तान को अपने षड्यन्त्रों के कारण नैपाल छोड़ना पड़ा। उस समय से राज्य उनके भतीजे वीर शमशेर और उनके भाइयों के हाथ आ गया। शमशेर भ्राताओं ने देश की स्थिति को सँभाला और अराजकता का अन्त कर सुदृढ़ शासन की व्यवस्था की। किसी देश की संस्थाओं का उचित और सही ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसके इतिहास का जानना आवश्यक है, इस बात को नैपाल-शासन की आलोचना करनेवाले सज्जन बहुधा भूल जाते हैं। महाराज चन्द्र, महाराज भीम, महाराज जुद्द शमशेर इत्यादि प्रधान मन्त्रियों ने नैपाल को उन्नतिशील बनाया-शासन-सुधार किया, प्रजा के हित के लिए अनेक कार्य किये। भारत के साथ भी उन्होंने सहानुभूति प्रकट की। विश्वविद्यालयों, धर्म-संस्थाओं को लाखों रुपया प्रदान किया। हाल ही में भूतपूर्व महाराज जुद्द शमशेर ने काशी-विश्वविद्यालय को एक लाख रुपया दान किया, पं० नेहरू को असहायों की रक्षा के लिये एक लाख भेंट किया और हाल ही में नैपाल राज्य की ओर से प्रयाग-विश्वविद्यालय में एशियाई इतिहास तथा संस्कृति की शिक्षा का प्रबन्ध हुआ है।

वर्तमान प्रधान मंत्री श्री मोहन शमशेर महाराज चन्द्र-शमशेर के ज्येष्ठ पुत्र हैं। आपको राजकार्य का काफी अनुभव है, क्योंकि आप अपने पिता के शासनकाल में हुजूरिया जनरल थे। हुजूरिया जनरल का पद नैपाल में महत्त्वपूर्ण है। उसी के हाथों से राज्य का सारा कार्य होता है। मि० लैन्डन ने अपनी पुस्तक में श्री० महाराज मोहन के गुणों की प्रशंसा की है। सुप्रसिद्ध प्रोफेसर सिलवन लेवी ने भी अपनी पुस्तक में महाराज मोहन के व्यक्तित्व का वर्णन किया है। यदि भविष्य भूत तथा वर्तमान पर निर्भर है तो हमें पूर्ण आशा है कि महाराज मोहन के हाथ से नैपाल का कल्याण होगा और भारत के साथ सम्बन्ध भी दृढ़तर हो जायेगा।

महाराज मोहन मितभाषी हैं; परन्तु जो बात कहते हैं उसे पूरी करते हैं। कर्तव्य-पालन पर जोर देते हैं। न स्वयं मर्यादा का उल्लंघन करते हैं और न किसी को करने देते हैं। इस कारण आधुनिक क्रान्तिकारी युग में संघर्ष हो सकता है, परन्तु देश तथा समाज की उन्नति के लिये इस प्रकार का संघर्ष भी आवश्यक है। वे अन्य नैपाल नरेशों की तरह धार्मिक पुरुष हैं। शास्त्रानुसार हिन्दू धर्म को मानते हैं। स्नान, जप, पूजा-पाठ, दान, गोपूजा इत्यादि प्रतिदिन नियमानुसार होते हैं। धर्म ही उन्नति का आधार है। ऐसी उनकी धारणा है। आधुनिक राजनीतिक इस बात से सहमत न हों, परन्तु यह स्वीकार करना पड़ेगा कि धर्म के अभाव के कारण ही राष्ट्रीय आदर्शों का ह्रास हो रहा है। संसार की भयङ्कर स्थिति, मनुष्य की लोलुपता, रण-लिप्सा, धर्म के अभाव के कारण ही बढ़ती जाती हैं। सर्वत्र अशान्ति है, झूठ का प्रचार है, सत्य की अवहेलना की जाती है। इसके क्या कारण हैं। यह विद्वानों को अच्छी तरह ज्ञात है।

वर्तमान समय में कोई नरेश जनता के प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष नियंत्रण से मुक्त नहीं रह सकता, इसलिये इस बात की आवश्यकता है कि वह सदैव राजकार्य में संलग्न रहे और अपने कर्तव्य का पालन करे। महाराज मोहन कर्तव्यनिष्ठ पुरुष हैं सवेरे से शाम तक काम में व्यस्त रहते हैं। चौबीस घंटे में कुल मिलाकर चार पाँच घंटे सोते हैं। शेष समय सब धार्मिक कृत्यों तथा राजकार्य करने में व्यतीत होता है।

महाराज मोहन शमशेर की दानशीलता नैपाल में प्रसिद्ध है। कोई आर्त-पुरुष उनके प्रसाद से रिक्तहीन नहीं लौटता। दीन, दुखी, विद्यार्थी, असहाय, क्षुधा-पीड़ित सबको यथोचित सहायता प्रदान की जाती है। यहाँ तक कि नैपाल में उनकी दानशीलता के अनेक किस्से-कहानी प्रचलित हैं। जन-साधारण उन्हें युधिष्ठिर के नाम से पुकारते हैं।

नैपाल देश में बहु-विवाह की प्रथा है। राजवंश में तो इसका बहुत ही प्रचार है। परन्तु महाराज मोहन ने अपना आदर्श बहुत ऊँचा रक्खा है। उनके केवल एक ही पतिपरायणा साध्वी महारानी हैं। इसी अनुपम आदर्श को सम्मुख रखकर महाराज मोहन ने अब तक अपना जीवन व्यतीत किया है।

भारत-सरकार ने महाराज मोहन को प्रधान मंत्री का पद मिलते ही अपनी फौज का अनरेरी लेफ्टिनेन्ट जनरल और इण्डियन गुर्खा राइफल्स में आनरेरी कर्नल का उच्च पद प्रदान करके सम्मान किया है। ब्रिटेन की सरकार ने भी [illegible] कर्नल-इन-चीफ की पदवी प्रदान [illegible] भारत के प्रधान मंत्री पं० नेहरू [illegible] उन्हें इसी प्रकार सम्मानित कि[illegible] अमरीकन राजदूत ग्रेडी ने भी मुक्त[illegible] से महाराज की प्रशंसा की है और आशा प्रकट की है कि उनके [illegible] काल में नैपाल उन्नतिशील होगा। अ[illegible] के सेक्रेटरी आफ स्टेट्स जार्ज मार्श[illegible] भी अपने बधाई-पत्र में लिखा है कि [illegible] पूर्ण विश्वास है कि महाराज मोहन [illegible] नेतृत्व में हमारे दोनों देशों के [illegible] सम्बन्ध सुदृढ़ और सुसंगठित हो जा[illegible] पर्सिवल लैण्डन ने कई वर्ष हुए [illegible] था कि यदि छोटे कार्य की सफ[illegible] बड़े कार्य की परीक्षा है तो अपने [illegible] के पद पर पहुँचने के समय श्री [illegible] शमशेर से बहुत कुछ आशा की [illegible] सकती है।

नैपाल-राज्य के सम्मुख इस [illegible] अनेक समस्याएँ उपस्थित हैं। [illegible] विचार करना होगा। नैपाल की [illegible] नीति की व्यवस्था भी देश-[illegible] अनुसार होगी। आन्तरिक मामले [illegible] भी जनता की स्वतंत्रता, समान[illegible] खयाल रखते हुए देश को समृद्ध[illegible] बनाने की चेष्टा की जायगी। [illegible] है कि जिस कठिन परिस्थिति में [illegible] शमशेर ने राज्य की बागडोर अपने [illegible] में ली है उसमें जनता को उनके [illegible] सहयोग करना चाहिये। [illegible] गया है। भारत का राष्ट्र [illegible] नई ध्वनियों से गूँज रहा है। [illegible] हलचल मची हुई है। इस [illegible] में नैपाल के लिये तटस्थ रहना [illegible] असम्भव है। नैपाल को भी उन्न[illegible] मार्ग पर अग्रसर होने का प्रयास [illegible] चाहिये। यदि नैपाली जनता [illegible] होकर आधुनिक अधिकारों को [illegible] देश को सम्पत्तिवान बनाने में [illegible] करेगी तो महाराज मोहन शमशेर [illegible] नाम इतिहास में अजर-अमर हो [illegible] वर्तमान समय एक अद्भुत समय है। [illegible] बड़े राजनीतिज्ञ कसौटी पर रक्खे [illegible] हैं। विचारों तथा आदर्शों का सं[illegible] है। हमें पूर्ण आशा है कि महाराज [illegible] नैपाल को प्रगतिशील बनाकर उ[illegible] शिखर पर पहुँचायेंगे।

* *

धोने के लिये
५०१ साबुन
दी टाटा आयल मिल्स कं०

मारा रंग-मंच

मी क्षेत्र में अनैतिकता

सरकार तथा जनता ध्यान देगी ?

लेखक, श्री उमेश जोशी

दुनिया में आजकल अनैतिकता आ गई है। इधर जब से पंजाबी महिलायें बम्बई में आई हैं तब की दुनिया में अनैतिकता का जोरों के साथ आया हुआ है। की चपेट में उच्च कोटि के भी आ गये। वे अपने को बचा इसी बात का हमें अफसोस है। व्यक्तियों तक ही यह तूफान ता तो कोई ऐसी हर्ज की बात रन्तु तूफान का दायरा बढ़ता और इतना बढ़ा कि आज बम्बई में, सड़कों पर, बसों पर, ट्रामों यह सब जगह फैल गया। व्यक्ति ने तूफान को रोकने का नहीं किया। मैंने इस तूफान में प्रसिद्ध निर्माताओं, कलाकारों को देखा है जो कि हमेशा की डींग मारा करते थे। चरित्र-निर्माण ही सब कुछ फिल्मी दुनिया के चरित्र-मशहूर थे। वे भी अब भयंकर तूफान में सूखे पत्ते गये। आज फिल्मी संसार में जाइये, उधर ही यौवन और प्रदर्शन मिलेगा। पन्द्रह या की लड़कियाँ अपने को सजाये की दुनिया में घूमा करती हैं, आशा से कि वह प्रधान हीरो-जायें। परन्तु हीरोइन के चक्कर बेशकीमती अस्मत को भी है। आज इन निर्माताओं के मार्केट में एजेन्ट लगे हुए हैं, काम नई नई चिड़ियाओं को ही होता है। ये एजेन्ट अपने ही एक्सपर्ट होते हैं। इनको रकम तनख्वाह के रूप में मिला करती है। जहाँ कहीं से भी पंजाबी लड़की मिल गई, बस उसी को फँसा लिया। आज कल लड़के-लड़कियाँ सिनेमा की चमक से जल्दी प्रभावित हो जाते हैं। वे अपने को प्रसिद्ध करने के लिये अपना सब कुछ बलिदान करने को तैयार हो जाते हैं। बम्बई का ताजमहल होटल तथा ग्रीन होटल इस अनैतिकता के बड़े अड्डे बने हुए हैं। इन्हीं होटलों में प्रायः अनैतिकता के नाटक हुआ करते हैं।

अमेरिका के सिने पिक्चर ने अपने एक लेख में भारतीय निर्माता का एक पत्र प्रकाशित किया है जो कि एजेन्ट को दिये जाते हैं। उस पत्र से भारतीय निर्माताओं की मनोवृत्ति का परिचय मिलता है। उस पत्र ने लिखा है कि भारतीय पत्र तथा भारतीय प्रेस हम विदेशियों की नैतिकता पर उँगली उठाते हैं, लेकिन वे अपनी ओर नहीं देखते। चिराग तले अँधेरा क्यों? पत्र की कुछ लाइन इस प्रकार है—

कल तुम क्यों नहीं आये उस लड़की को लेकर। मैं चार घण्टे तक हैंगिङ्ग गार्डन में प्रतीक्षा करता रहा, पर निराश होकर घर लौटा। देखो मन्टू किसी को पता न लग जाये तुमको मैं मालामाल कर दूँगा। पर हाँ, उसी लड़की को लाना जिसे तीन-चार दिन हुए तुमने चौपाटी पर घूमते हुए दिखाया था। मुझे वह लड़की अधिक पसन्द है। कल तुम उसी जगह आना मैं वहीं इन्तजारी करूँगा। आपका

....

पत्र आगे लिखता है कि आज भारतीय फिल्मी दुनिया में भी नैतिकता हमारे ही ढंग की है। वे हमसे किसी भी दृष्टिकोण से ऊँचे नहीं।

अभी हाल में हालीवुड के सुप्रसिद्ध कलाकार टी० बी० हाई बम्बई आये। उन्होंने भारतीय सिनेमा-संसार को काफी देखा-भाला। यहाँ से लौटकर लन्दन के सुप्रसिद्ध पत्र टाइम्स में लेख दिया है। लेख का कुछ अंश इस प्रकार है—"मैंने भारतीय निर्माताओं, दिग्दर्शकों, कलाकारों को नजदीक से टटोला। उनके जीवन के रवैये को देखकर मुझे सन्तोष नहीं हुआ, क्योंकि मुझे बहुत कुछ आशायें थीं। मैं समझता था कि जिस पवित्र देश में टैगोर, बापू, जवाहर जैसी विभूतियाँ पैदा हुई हों, उस देश के फिल्मी-निर्माता व कलाकार हमारे देश से कहीं नैतिकता में ऊँचे होंगे। परन्तु मेरा यह स्वप्न, स्वप्न ही रहा। मैंने देखा कि भारतीय निर्माता उसी प्रकार विलासिता में संलग्न हैं, जिस प्रकार हालीवुड के कलाकार। वे उनसे किसी भी हालत में कम नहीं हैं। मैंने देखा कि भारतीय फिल्मी-संसार में पंजाबी लड़कियों का ही अधिक प्रभाव है। उन्हीं की चहल-पहल पर फिल्मी संसार में चमक है।

भारतीय निर्माताओं को शर्म आनी चाहिए कि उनकी वजह से विदेशों में भारत का नाम बदनाम होता है। उनको अब सँभल जाना चाहिए। आज के युग में अब इस प्रकार की रंगीनी का प्रदर्शन नहीं चल सकता। उन्हें भारतीय संस्कृति का ख्याल करना चाहिए। स्वतन्त्र भारत में श्रेष्ठ चित्रपट निर्माण करें और भारतीय नैतिकता को किसी भी प्रलोभन पर गिरने न दें। जिस निर्माता या कलाकार का चरित्र ठीक नहीं वह निर्माता या कलाकार कभी कला की दुनिया में आगे नहीं बढ़ सकता। यदि उन्होंने समय के तकाजे को नहीं सुना तो उनका पतन निकट भविष्य में निश्चय है।

आज हम सबको फिल्मी दुनिया से गन्दगी निकालने का प्रयत्न करना चाहिए। हमें पूर्ण शक्ति से इस ओर कदम उठाना चाहिए और जो गैर-जिम्मेदार व्यक्ति इसमें आ गये हैं उनको तुरन्त निकाल देना चाहिये या उनके विरुद्ध कठोर कार्रवाई करनी चाहिए। सिने-पत्रों से भी हमारा नम्र निवेदन है कि वे फिल्मी दुनिया कि अनैतिकता को हटाने में अपना सहयोग प्रदान करें।

(लेखक-द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

* * *

प्रसिद्ध भारतीय नृत्य-कला विशारदा प्रवीना वशी मैनपुरी नृत्य की मुद्रा में दिखाई दे रही हैं

नटराज वशी, इन्द्र के रूप में आशीष देते हुए दिखाई दे रहे हैं।

प्रवीना मैनपुरी नृत्य की मुद्रा में राधा-कृष्ण की प्राप्ति में संलग्न।

प्रवीना शंख के साथ तथा नटराज वशी डमरू लेकर संगीत की उत्पत्ति का नहीं संकेत करते दीख पड़ रहे हैं।

सम्पादक के नाम चिट्ठियाँ

भोजपुरी साहित्य

भोजपुरी भाषा से मेरा मतलब उस जन-भाषा से है, जो भोजपुर प्रान्त (बलिया, आरा, छपरा आदि) में बोली जाती है। भोजपुरी भाषा की लिपि देवनागरी ही है; परन्तु हिन्दी तथा भोजपुरी के लिखावट तथा शब्दों में अन्तर है। भोजपुरी भाषा का साहित्य अति सुन्दर तथा मूल्यवान् होते हुए भी संग्रहीत नहीं है। ऐसे तो भोजपुरी साहित्य में अनेक मूल्यवान् सामग्रियाँ उपस्थित हैं; परन्तु दुःख के साथ कहना पड़ता है कि उन मूल्यवान् सामग्रियों का मूल्यांकन नहीं हो पाया है। इधर हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने भोजपुरी साहित्य की ओर ध्यान दिया है, तथा दो-चार महत्त्वपूर्ण पुस्तकें भी भोजपुरी साहित्य-सम्बन्धी प्रकाशित की हैं। भोजपुर प्रान्त के विद्वानों ने भी इधर भोजपुरी की ओर यथेष्ट ध्यान दिया है। हमारे देश में अनेक जन-भाषायें प्रचलित हैं। उनमें से भोजपुरी का एक अलग स्थान है। व्रजभाषा को छोड़कर शायद ही कोई अन्य, जन-भाषा भोजपुरी की बराबरी कर सके। भोजपुरी के प्रत्येक शब्द में एक मधुर मिठास रहती है। एक वस्तु के लिए भोजपुरी में उसके अनेकों पर्यायवाची शब्द हैं। जैसे लाठी के लिए—गोजी, डन्टा, लउरू, पैना, सटका इत्यादि। भोजपुरी की विशेषता एक बात में और है, देखिये—हिन्दी में हम खूब पीले रंग को गाढ़ा या अधिक पीला ही कहेंगे, परन्तु भोजपुरी खूब पीले रंग को पीयर दहदह कहेंगे, पीयर दहदह कहते ही आँखों के सामने पीले रंग का मनमोहक चित्र उपस्थित हो जाता है।

इसी प्रकार हरा को हरियर कचकच, पीला को पीयर दहदह तथा लाल को लाल टीहीरीका कहेंगे। भोजपुरी के गीत इतने मधुर तथा सुन्दर होते हैं कि श्रोतागण अवश्य आनन्दविभोर हो उठेंगे। देखिये श्री रघुबीरनरायन द्वारा रचित बटोही नामक शीर्षक कविता का कुछ अंश :—

"सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देसवा से,
मोरे प्रान बसे हिम खोह रे बटोहिया ॥
एक द्वार घेरे राम हिम कोतवालवा से,
तीन द्वार सिन्धु घहराई रे बटोहिया ॥
जाहु-जाहु भैया रे बटोही हिन्द देखि आऊँ,
जहवाँ कुँहु की कोइली बोले रे बटोहिया।
पवन सुगन्ध मन्द अगर चन्दनवा से,
कामिनि विरह राग गावे रे बटोहिया ॥"

(अपूर्ण)

भोजपुरी में अभी तक जो कुछ भी लिखा गया है, वह अधिकतर पद्य में लिखा गया। है यहाँ तक की विज्ञापन भी कवितामय होता है। देखिये :—

"मिसिर जी के आटा कल के
आटा बड़ महीन बा।
नया बाटे इंजिन ओकर,
नया कुल मशीन बा ॥
चक्की के हवाल गइया
बिलकुल नवीन बा।
टोला गाँव हटे,
पुल के दखिन बा ॥"

मेरा जहाँ तक अनुमान है कि पद्य में अधिकांश साहित्य रचे जाने का अभिप्राय यही था कि गद्य की अपेक्षा पद्य जनता अधिक चाह से पढ़ती तथा याद करती है। प्रकाशन के अभाव के कारण ही इस साहित्य की रचना अधिकांश पद्य में हुई है। बड़े हर्ष का विषय है कि इधर गद्य का निर्माण बड़े जोरों के साथ हो रहा है। भोजपुरी में मुहाविरों की भरमार है। एक से एक सुन्दर से सुन्दर उपयुक्त मुहाविरे आप भोजपुरी में देख सकते हैं। प्रयाग विश्वविद्यालय के अध्यापक तथा भोजपुरी परम प्रेमी डा० उदयनरायन जी तिवारी ने भोजपुरी के मुहाविरों का सुन्दर संग्रह किया है। महात्मा कबीर के अधिकांश गीत भोजपुरी साहित्य की अनुपम निधि हैं। सन्त कबीर तथा भोजपुरी के विषय कभी प्रकाश डाला जायेगा, अभी इतना ही। भोजपुरी का आधुनिक काव्य-विभाग आधुनिक समय के साथ है। भोजपुरी के महाकवि श्री भिखारी ठाकुर को आधुनिक भोजपुरी काव्य का निर्माता तथा पथप्रदर्शक की पदवी से विभूषित किया जाये, तो अनुचित न होगा। इस बात में तनिक भी संशय नहीं, कि आधुनिक भोजपुरी का महाकवि श्री भिखारी ही हैं।

श्री भिखारी ठाकुर ने अपनी कुशल लेखनी के द्वारा जो अपार धन-राशि भोजपुरी को प्रदान की है, वह अकथनीय है। भोजपुरी का आधुनिक युग, भिखारी युग के नाम से प्रसिद्ध हो जायेगा।

जहाँ भिखारी ने अपनी कोमल कल्पना से कविता-कानन को सींचा, वहाँ गद्य-कानन को भी खाली नहीं रखा।

महाकवि ने नाटकों की रचना कर वास्तव में भोजपुरी के एक महत्त्वपूर्ण अंग की पूर्ति की।

हमारे महाकवि, कवि, लेखक तथा नाटककार ही नहीं हैं, साथ ही आप कुशल गायक तथा नृत्यकार हैं।

भोजपुर प्रान्त में आपका नाच इतना प्रसिद्ध है कि हजारों की भीड़ टूट पड़ती है, अपने महाकवि का नृत्य देखने के लिये।

कवियों का जीवन सदा आर्थिक दशा से कष्टदायक हुआ करता है! कवियों के लिये तो आर्थिक दशा अभिशाप होती है। अतः आर्थिक दशा के निवारण-मात्र के लिये हमारे नृत्यकुशल महाकवि ने अपनी एक नृत्य-मंडली स्थापित कर ली है। अपने बनाये नाटकों का ही प्रदर्शन करते हैं। जब आप किसी भी नायक का पार्ट करने लगते हैं तो मालूम पड़ता है कि असली रूप में सामने खड़ा है। हमारे महाकवि का जन्म छपरा (सारन) जिले के कुतुबपुर नामक ग्राम में हुआ था। आप जाति के नाई (हज्जाम) हैं। आप बड़े मिलनसार तथा हँसमुख व्यक्ति हैं। अधिक अवस्था हो जाने के कारण आप कुछ थकित से हो गये हैं; परन्तु अभी नृत्य का कार्य जारी है। परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि हमारा महाकवि चिरकाल तक जीवित रहकर भोजपुरी साहित्य को निरन्तर सेवा करता रहे।

सोनबरसा बलिया —वीरेन्द्रनाथ उपाध्याय
२०-६-४८

* * *

प्राकृतिक जीवन ही सर्वोत्तम है

पूज्य बापू जी ने जो हमें कई महत्त्वपूर्ण देन दी हैं उनमें से कुछ जैसे खादी, हरिजन, ग्रामोद्योग, नई तालीम गो-सेवा आदि का काम और चर्चा करनेवाली संस्थायें तो हमारे सामने हैं। पर प्राकृतिक जीवन, ठीक ठीक समय पर खाना, सोना, काम करना, टहलना आदि जिनके कारण वह न केवल शरीर से स्वस्थ रहे बल्कि मानसिक प्रसन्न होने के कारण वह इतना काम कर सके जितना साधारण मनुष्य कल्पना भी न कर सकता था।

उनका भोजन लिया जाय। वह सूर्यास्त के पहले खाते थे। मुझे याद है कि बेलगाँव कांग्रेस के १९२४ में वह अध्यक्ष थे। अधिवेशन हो रहा था। उनके भोजन का समय हो गया। बा मंच पर बैठी परेशान थीं कि क्या किया जाय। उन्होंने एक दाई को बुलाकर कहा कि जाओ बापू जी से कह दो कि भोजन का समय हो गया। वह दाई बापू जी के पास गई। बापू जी ने अपना भोजन भरी सभा में मँगवाया और हजारों भाई-बहनों के बीच उनका भोजन भी होता था और सभा का संचालन भी। कितनी तत्परता थी समय पर भोजन करने की। जेल-जीवन में देखा गया है कि संध्या के पहले कैदी को भोजन करना पड़ता है। अनुभव यह बताता है कि उससे कैदी कई प्रकार के बन्धन और मानसिक चिन्ताग्रस्त रहने पर भी बाहरवालों से अधिक स्वस्थ रहता है और दिन भर काम भी खूब करता है। पशु-पक्षियों का जीवन भी उसी प्रकार का होता है। इसलिये वे अधिक स्वस्थ और प्रसन्न रहते हैं।

जो हालत भोजन की वही हालत आराम की। बापू जी ठीक समय पर ही सोते थे और प्रातः उठकर काम करना शुरू कर देते थे। ३ बजे उठना तो नियम-सा था। ब्राम्ह मुहूर्त में जो सद्विचार, जो स्फूर्ति, जो प्रेरणा उन्हें मिलती थी, उन्हीं सबके कारण वह हमारे ही राष्ट्र के नहीं पर विश्व के वंद्य प्रेरक बन सके। सबेरे सोना और सबेरे जागना मनुष्य को स्वस्थ, सम्पन्न और ज्ञानी बना देता है यह जो एक कहावत है उसी का रूप पूज्य बापू जी थे।

उससे क्या यह साफ नहीं होता कि हमें भी अगर अपने अभी अभी स्वतंत्रता प्राप्त राष्ट्र को स्वस्थ, सम्पन्न और दूरदर्शी बनाना है तो पूज्य बापू जी के पदचिन्हों पर चलना पड़ेगा।

आज हमारे शासक और शासन इन दोनों की ओर से इस महत्त्वपूर्ण जीवनादेश की जो अवहेलना हो रही है, उससे हृदय कोप उठता है और एक आवाज कान में आती है कि कहीं हमारा यह कृत्रिम अस्वस्थ जीवन लाखों माबहनों के बलिदान, तपस्या और कठिन परिश्रम से प्राप्त स्वतंत्रता को कहीं नष्ट तो न कर देगा?

जैसे तुर्की के पिता श्री कमाल ने केवल राष्ट्र को सकट से बचाने के जीवन के कुछ नियमों को पालन करवाया था, क्या यह विचारक और शासक कभी इस भी अनुभव करेंगे कि खान-पान, विश्राम, व्यायाम के समय की राष्ट्र के सभी भाई-बहनों, छोटे-बड़े, पालन कराने के लिये कटिबद्ध होकर आदेश देंगे। अगर राष्ट्र को जीवित है तो यह काम करना पड़ेगा। जो और प्रसन्न होता है वही राष्ट्र शासन कर सकता है। यह पुरानी और आज भी पूज्य बापू ने इसको जीवन में चरितार्थ कर हमारे सचित्र पाठ रखा है।

लखनऊ —केशवदेव
१५ जून, ४८

* * *

हिन्दी के साथ खिलवाड़

हिन्दी ही भारत की एक और भाषा और देवनागरी ही लिपि है राष्ट्र की भाषा तथा शिक्षा के का स्थान प्राप्त होना ही चाहिए सरल, सुबोध, सुंदर, वैज्ञानिक राष्ट्रीय आदि होने के नाते हिन्दी की योग्यता पर संशय करने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता है। कुछ लोग इसे दक्षिण भाग के लिए मानकर इसे उपेक्षित करना चाहते हैं। पर यह तो सिद्ध भी हो चुका है कि प्रांतीय भाषाओं का हिन्दी से निकटम सम्बन्ध है। दक्षिण की भाषाएं (तेलगू, तामिल, मलयम, कनाड़ी आदि अधिकांश संस्कृतमय होती हैं, बोलनेवालों की संख्या ४,६७,१८,००० लगभग है। संस्कृत हिन्दी की जननी है अतः दक्षिणी भाषायें हिंदी की ही होती हैं। अतः हिन्दी से विरोध का प्रश्न ही नहीं पैदा होता है। इधर प्रांत, विहार, राजस्थान, मालवा, प्रांत आदि में हिन्दी भाषा-भाषियों ही अधिक तादाद है। प्रजातंत्रवाद युग में बहुमत प्रजा की भावना का दर करना किसी भी राष्ट्रीय सरकार लिए उचित नहीं है—जब तो फिर शाही के अतिरिक्त और यह क्या अगर सरकार को विश्वास नहीं है जनमत लेकर इसका निर्णय कर भारतीय लोक-सभा के २६४ में से सदस्य तो हिन्दी को राजभाषा के हेतु हस्ताक्षर तक कर चुके हैं, यह फिर निर्णय में विलंब क्यों! माँग किंचित-मात्र भी सांप्रदायिक है जैसा कि कुछ लोगों द्वारा जाता है। हम चुनौती के साथ कि हिन्दी राष्ट्रीय है। उसका तो में ही लालन-पालन हुआ और वह के मंजिल तक भी उसी राष्ट्रीयता के अग्रसर हुई है।

जोधपुर —नेमिचंद्र जैन
२० जून, ४८

* *

मोतीलाल के० ईरानी, प्रथम महिला हैं जो
म्यूनिसिपल बोर्ड की प्रेसीडेंट चुनी गई हैं।

भारत-सरकार की स्वास्थ्य-मन्त्रिणी श्रीमती राजकुमारी अमृतकौर दफ़्तर में बैठी हुई काम कर रही हैं।

कुमारी शोभाराय, कलकत्ता विश्व-विद्यालय से संस्कृत विषय लेकर एम० ए० में प्रथम उत्तीर्ण हुई हैं।

मातृमण्डल

महिलाओं को जीवन में सफलता कैसे मिले ?

स्त्री को किसी न किसी कला की जानकारी आवश्यक है

लेखिका, कुमारी विमला देवी राजदान, बी० ए०

रिका और ब्रिटेन के पत्रों में के सामाजिक जीवन पर विशेष डाला जाता है। चीन के महिला- में भी स्त्रियों के सामाजिक पर अब विशेष ध्यान दिया जाने । विदेशों की यह महिलाएँ अपने के अनुकूल कुछ इच्छाएँ रखती देश की सैर करना, उपन्यासों करना और सिलाई-बुनाई करना। भारतीय महिलाओं के क्षेत्र हैं जिनके द्वारा उनका स्थित रहता है। जैसे भोजन गुण और चर्खा कातने की देखा गया है कि यदि कोई स्त्री बना लेती है तो एक दूसरी इस कार्य में दक्ष नहीं है उससे ईर्ष्या रखती है। इनके अतिरिक्त बातें हैं जिनके करने में स्त्रियों को आनन्द प्राप्त होता है। जैसे का संग्रह करना, भाँति भाँति के और तेलों का प्रयोग करना अथवा कपड़ों का प्रयोग करना।

य नारी

भारतीय नारी का जीवन अन्य देशों नारियों की अपेक्षा अधिक गम्भीर स्त होता है। आज तक भारतवर्ष महिलायें यही चाहती हैं कि उनके बच्चों की शादी शीघ्र हो जाय। परिणाम यह होता है कि जल्दी शादी से सन्तान-उत्पत्ति के अतिरिक्त जीवन वास्तविक आनन्द स्त्री और पुरुष से हो जाता है। लड़कों-बच्चों के बीच की स्वतन्त्रता नहीं के बराबर हो जाती । भारतीय सामाजिक परम्परा के अनु- स्त्री पुरुषों के साथ उठ-बैठ नहीं ती। परिणाम यह होता है कि धीरे धीरे यों की साधारण बुद्धि भी शेष हो जाती । इस प्रकार भारतीय नारी का जीवन न सामग्री की तरह भस्म होकर परि- को कुछ न कुछ मूक संदेश देता ता है।

अध्ययन और भाषाएँ

भारतीय नारी में एकाग्रचित्त होने की शक्ति अन्य देशों की नारियों की अपेक्षा अधिक है। उदाहरण के लिये दर्शन-शास्त्र मनोविज्ञान को ले लीजिये, इस विषय का अध्ययन नारी के जीवन को अत्यधिक गम्भीर बना देता है। वैसे तो भारतीय साहित्य नारी के मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को जीवन के प्रति सुलझा देता है। फिर भी यदि कोई स्त्री अँगरेजी नहीं जानती तो वह मातृभाषा के द्वारा ही अपना सामयिक ज्ञान वर्द्धन कर सकती है। स्त्रियों के लिये कई भाषाओं का समान ज्ञान प्राप्त करना सरल नहीं, क्योंकि पुरुषों की अपेक्षा उनमें काम करने की शक्ति कम होती है। वर्तमान समय में हर स्त्री को हिन्दी पढ़ने का शौक पैदा करना चाहिये, यदि कोई हिन्दी पढ़ चुकी हैं तो उनको संस्कृत पढ़ने का अभ्यास करना चाहिये। इस प्रकार भारतीय नारियाँ अपने प्राचीन और गौरवपूर्ण साहित्य का परिचय प्राप्त कर सकेंगी। जिस प्रकार अँगरेजी में शेक्सपियर के नाटक प्रधान हैं उसी प्रकार भारतीय साहित्य में कालिदास के ग्रन्थ महान् और साहित्यिक सामग्री से पूर्ण हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि अध्ययन करने की आदत डालना प्रत्येक महिला का ध्येय होना चाहिये।

दूसरी कलाएँ भी हैं जो स्त्रियों का जीवन उन्नत कर सकती हैं। स्त्रियों को कला की दृष्टि से सिलाई-बुनाई और रँगाई की कला मालूम होनी चाहिये। कुछ स्त्रियाँ तो एक मिनट के लिए भी बेकार नहीं बैठतीं वह अपने लिये नहीं तो अपने किसी सम्बन्धी अथवा मित्र के लिए कुछ न कछ सिलाई का काम किया करती हैं। एक विदेशी महिला ने संलग्न रहकर पत्थर पर मूर्ति बनाने की कला प्राप्त की थी।

संग्रह

वस्तुओं के संग्रह करने की कला भी नारियों के लिए उपयुक्त है। चीन में स्त्रियाँ कोई न कोई वस्तु अपने पास इकट्ठा करती रहती हैं। भारतीय नारियों में भी यह प्रवृत्ति मिलती है, आज भी देहातों में आप किसी गृहस्थ की स्त्री से यदि सात या आठ वर्ष का पुराना चावल या गुड़ माँगिये तो वह सरलतापूर्वक दे सकेगी। इसी प्रकार स्त्रियों को अपने बच्चों को भी किसी वस्तु के संग्रह करने की बात समझानी चाहिये। उदाहरण के लिए यदि बच्चों को टिकटों के संग्रह करने का अभ्यास कराया जाय तो एक दिन इस प्रकार का संग्रह किसी सरकार अथवा इतिहास के लिए महत्त्वपूर्ण काम होगा।

जनता के बीच भाषण देने की आदत भी बुरी नहीं। यह आदत समाज को अच्छी मदद दे सकती है। उदाहरण के लिए जैसे किसी स्त्री की आदत गाने याद करने की है तो उसे भाँति भाँति के गाने स्मरण रखने चाहिये, उनमें साहित्यिक, ग्रामीण और प्राचीन सभी प्रकार के गीत सम्मिलित होंगे। इस प्रकार एक स्त्री केवल कुछ गानों को याद करके अपने में एक अच्छी आदत उत्पन्न कर सकती है। इसके अतिरिक्त स्त्रियों को सामाजिक सेवा करने के लिए और मार्ग हैं। जैसे डाक्टरी की शिक्षा प्राप्त करना, लोगों की राय के अनुसार रोगी एक स्त्री डाक्टर के द्वारा पुरुष डाक्टर की अपेक्षा जल्दी स्वस्थ हो सकता है। अमेरिका में एक रोगी ने एक महिला डाक्टर से कहा था कि मैं आपसे विवाह करना चाहता हूँ, उस महिला डाक्टर ने हँसकर उत्तर दिया था कि तुम जैसे ही अच्छे हो जाओगे मैं तुरन्त शादी करूँगी। परिणाम यह हुआ कि इस बलवती आशा ने रोगी को शीघ्र ही स्वस्थ कर दिया। तब महिला डाक्टर ने उस रोगी से कहा मैंने तुम्हें प्रसन्न करने के लिये यह कहा था मेरी तो शादी हो चुकी, बच्चे भी हैं। इस उदाहरण से नारी की योग्यता स्पष्ट है।

नारी जाति के लिए ऐसी ही तमाम बातें हैं जिनके द्वारा उसका जीवन किसी भी देश के लिए उपयोगी हो सकता है। अच्छी आदत का बनना जीवन का सँभलना है। इसलिए प्रत्येक नारी को अपने में एक न एक अच्छी आदत डालनी चाहिये।

* * *

फ़सल के उपरान्त भी
फ़सलीफल
फल—प्रकृति का सर्वोत्तम उपहार है परन्तु फ़सल निकल जाने पर फल सुलभ नहीं रहते

इन·रा·हा फ्रूट ड्राप्स तथा रेशमी मिठाइयां
क्रीमोला टाफ़ी
प्रायः सभी दुकानों पर मिलती हैं या सीधे नीचे पते से मँगाइए
इण्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इलाहाबाद
सोल एजेन्ट:—बंगाल, बिहार, उड़ीसा और आसाम के लिए—
मेसर्स सत्याचरण दत्त
६११, कैनिंग स्ट्रीट, कलकत्ता

प्रान्त की नई रूप-रेखा—रक्षा

(पेज ८ का शेष)

यदि हममें से प्रत्येक व्यक्ति यह निश्चय कर ले कि वह अपने देश की उस समय तक रक्षा करेगा जब तक कि एक भी मनुष्य जीवित रहेगा तो संसार की कोई भी शक्ति हमें दासता में पुनः नहीं बाँध सकती। किसी देश की शक्ति उसके विभिन्न अंगों की शक्ति पर निर्भर होती है। हम लोगों को इस प्रान्तवासियों को चाहिये कि स्वरक्षा के लिये तैयार होकर हम देश का प्रदर्शन करें। आज रात को मैं आप लोगों को यह बताना चाहता हूँ कि इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हमें कौन-से उपाय करने चाहिये।

हममें से प्रत्येक व्यक्ति को चाहे वह किसी जाति या धर्म का हो, चाहे उसकी वृत्ति कुछ भी हो और पुरुष हो या स्त्री, अपने प्रान्त की रक्षा के निमित्त हथियार ग्रहण करने के लिए तैयार रहना चाहिये। शस्त्र ग्रहण करने के लिए यह आवश्यक है कि प्रांत का प्रत्येक नागरिक हथियारों का शिक्षण प्राप्त करे। हमारी प्रांतीय सरकार ने प्रांतीय रक्षादल का संगठन किया है जिसमें प्रांत का प्रत्येक नागरिक भर्ती हो सकता है। प्रत्येक नागरिक को शस्त्रों की शिक्षा देने की व्यवस्था की जा रही है। अब इस अवसर से लाभ उठाना प्रत्येक नागरिक का काम है।

उद्देश्य यह है कि प्रत्येक ग्राम अथवा किसी नगर, नोटीफाइड एरिया-म्युनिसिपैलिटी आदि के प्रत्येक वार्ड में एक सेक्शन लीडर के अधीन ११ व्यक्ति संगठित किये जायँ और एक ग्रूप लीडर से अधीन ऐसे ४ सेक्शन रखे जायँ।

प्रांत के प्रत्येक तहसील में १२० निर्वाचित ग्रूप या सेक्शन लीडरों को मिलाकर एक कम्पनी बनाई जायगी जिसका नाम उस तहसील के नाम पर रक्खा जायगा। प्रत्येक जिले में ऐसी ४ या ५ कम्पनियों को मिलाकर एक बटैलियन बनाई जायगी। जिस जिले में तहसीलों की संख्या पाँच से अधिक होगी वहाँ एक और बटैलियन बनाई जायगी और उसका नाम द्वितीय जिला बटैलियन होगा।

बटैलियन रक्षकदल का सक्रिय अंग होगा और ग्रूप रिजर्व में रखे जायेंगे। सक्रिय अंग की सदस्यता की अवधि केवल ३ वर्ष की होगी। तत्पश्चात् वे रिजर्व में रखे जायेंगे। वहाँ वे दो वर्ष रहेंगे, उसके उपरान्त उन्हें दल से मुक्त कर दिया जायगा। ऐक्टिव अर्थात् सक्रिय शाखा में उनका स्थान निर्वाचित ग्रूप या सेक्शन लीडर लेंगे जो रिजर्व से लिये जायेंगे और ग्रूप सेक्शन लीडरों की संख्या नये व्यक्तियों की भरती करके पूरी की जायगी। प्रांत के १० बड़े नगरों में इसी तरह की "एक्टिव" शाखा की एक अतिरिक्त कम्पनी, बाद में एक बटैलियन, बनाई जायगी। प्रांत के पहाड़ी भागों के लिए इस संगठन में साधारण-सा परिवर्तन किया गया है।

सम्पूर्ण संगठन पूरे समय काम करनेवाले एक वैतनिक पदाधिकारी के अधीन [illegible]ो ऐडमिनिस्ट्रेटिव कमान्डेन्ट कहलाजा[illegible] [illegible]न को पाँच रीजनों अर्थात् भागों करने [illegible] किया जायगा और प्रत्येक के सारे प्र[illegible]

पिछले वर्षों

रीजन पूरे समय काम करनेवाले एक वैतनिक पदाधिकारी के अधीन होगा जो रीजनल कमान्डेन्ट कहलायेगा। पदाधिकारियों के शिक्षण के लिए हेडक्वार्टर्स पर एक स्थायी शिविर पूरे समय काम करनेवाले कैम्प कमान्डेन्ट नामक अफसर के अधीन होगा।

प्रत्येक जिले में इस दल की "ऐक्टिव" तथा रिजर्व दोनों शाखायें डिस्ट्रिक्ट कमान्डेन्ट नामक एक अवैतनिक पदाधिकारी के अधीन होगा जो जिला मैजिस्ट्रेट या सरकार द्वारा निर्धारित अन्य अधिकारी के प्रबन्ध-सम्बन्धी नियंत्रण में रहेगा। यह पदाधिकारी "ऐक्टिव" शाखा से चुना जायगा और उसे हेडक्वार्टर्स के शिविर में ट्रेनिंग दी जायगी।

अन्य पदाधिकारी भी, जिनमें प्लैटून तथा कम्पनी कमान्डर सम्मिलित हैं, अवैतनिक होंगे।

दल के वैतनिक कर्मचारी, जिनमें डिस्ट्रिक्ट आर्गनाइजर्स, डिस्ट्रिक्ट फील्ड इन्स्ट्रक्टर्स, थाना या वार्ड आर्गनाइजर्स और थाना या वार्ड फील्ड इन्स्ट्रक्टर्स सम्मिलित हैं, नान कमीशन्ड पदाधिकारियों के बराबर होंगे। उनका कार्य दल के साधारण सदस्यों को ट्रेनिंग देना, दल के कार्यालयों को चलाना और उनके साज-सामाज की देखभाल करना है।

प्रत्येक तहसील में दल के सदस्यों की भर्ती करने के लिए एक छोटी समिति स्थापित की गई है जिसके सदस्य हाकिम परगना और जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा चुने गये दो सदस्य हैं। ये समितियाँ जिला समिति के अधीन, जिसके अध्यक्ष जिला मैजिस्ट्रेट हैं, कार्य करेंगी। साधारण जनता का प्रतिनिधित्व इन समितियों में पूर्ण रूप से है।

रक्षक दल के रिजर्व सिपाही को पैदल सेना की साधारण ड्रिल, छोटे छोटे हथियारों का प्रयोग करना, डकैतों तथा दंगा करनेवालों के विरुद्ध रक्षा-सम्बन्धी प्रारम्भिक युद्ध-विद्या और यातायात के साधनों तथा अन्य सार्वजनिक सम्पत्ति को बचाने के उपायों की शिक्षा दी जायगी। साधारणतः उनका हथियार भाला होगा, किन्तु प्रत्येक ग्राम में कुछ चुने सदस्यों को बन्दूक का लाइसेन्स भी दिया जायगा।

"ऐक्टिव" शाखा को अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत शिक्षा दी जायगी। उन्हें छोटे छोटे और स्वतः चलनेवाले शस्त्रों का प्रयोग करने, युद्ध विद्या में साधारण तथा युद्ध-विद्या-सम्बन्धी साधारण चालों आदि की विशेष शिक्षा दी जायगी। जब वे ड्यूटी पर होंगे तो साधारणतया उनका शस्त्र ३०३ की रायफिल होगी।

शिक्षण का कार्यक्रम इस प्रकार होगा

दल के वैतनिक सदस्यों को, जिनकी संख्या लगभग १८०० है, लखनऊ तथा कानपुर के शिविरों में पहले ही शिक्षा दी जा चुकी है। इन्होंने १ मई से प्रत्येक तहसील में "ऐक्टिव" शाखा की तहसील कम्पनियों के शिक्षण का कार्य आरम्भ कर दिया है। यह शिक्षा दो माह तक दी जायगी। उसके बाद "ऐक्टिव" शाखा के सदस्य अपने अपने गाँवों में चले जायेंगे और वहाँ रिजर्व सदस्यों को ट्रेनिंग देंगे। "ऐक्टिव" शाखा के सदस्यों की [illegible] और रिजर्व शाखा के सदस्यों की संख्या १२,००,००० होगी।

दल के शस्त्रों और अन्य सामग्री का संग्रह रखने के लिये प्रत्येक तहसील में एक शस्त्रागार बनाया जायगा।

दल की वर्दी में एक पतलून, एक बुश शर्ट फौजी बूट जूते और एक फोरेज टोपी रहेगी।

सक्रिय अंग के सिपाही को रिफ्रेशर्स कोर्स देने अर्थात् ट्रेनिंग का अभ्यास कराने के निमित्त प्रत्येक तहसील में प्रतिवर्ष १५ दिन का एक कैम्प रचा जायगा। यदि किसी नये शस्त्र की शिक्षा प्रदान करना आवश्यक होगा तो कैम्प की अवधि बढ़ा दी जायगी।

प्रान्तीय रक्षक-दल प्रत्येक नागरिक को शस्त्रों का उपयोग सीखने और स्वदेश की रक्षा के लिये तत्पर हो जाने का अवसर देता है। दल के सदस्य को अनेक लाभ प्राप्त होंगे। उसे एक विशेष अधिकारप्राप्त दल का सदस्य होने का गर्व होगा। उसे अपनी आकर्षक वर्दी और बैज पहनने का अधिकार होगा। वह शस्त्रों का लाइसेन्स ले सकेगा और यदि उसने अच्छा कार्य किया तो दल की सदस्यता के समय वह किसी पद पर रहेगा। इसके बदले में सरकार उससे राज्य और देश के प्रति पूर्ण निष्ठा के अतरिक्त, जो कि प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है; और किसी बात की आशा नहीं करती। नागरिक को स्वयं होनेवाले अनेक लाभों में से कुछ बताये जा सकते हैं। डकैती, जो कि देहातों में एक भय की वस्तु है, दल का संगठन हो जाने पर बन्द हो जायगी। पंचमांगी लोग, जो कि देश को अपार हानि पहुँचा सकते हैं, कभी सक्रिय न होंगे। शान्ति भंग करनेवाले लोग पूरी तरह से गायब हो जायेंगे और यदि कोई देश हमारे ऊपर आक्रमण करने की मूर्खता करेगा तो वह प्रत्येक गाँव को एक दुर्ग पायेगा। अब वह भागते हुए नागरिकों को न देखेगा, अब हमारी स्त्रियों की प्रतिष्ठा भंग न की जा सकेगी और अब देश के भाग्य का निर्णय किसी एक लड़ाई में पराजित होने पर निर्भर न होगा। प्रान्तीय रक्षक-दल के संगठन से हमारी सेना की भी शक्ति अधिक बढ़ जायगी। युद्ध-काल में प्रान्तीय रक्षक दल यातायात के साधनों की रक्षा करने, पंचमांगियों पर कड़ी नजर रखने, देश में किसी प्रकार प्रवेश कर तोड़-फोड़ करनेवाले विदेशी सैनिकों की कार्रवाइयों से रक्षा करने के कार्यों के उत्तरदायित्व से सेना को मुक्त कर सकेगा और किसी दीर्घकालीन युद्ध अथवा आन्दोलन के कारण सेना में रिक्त स्थानों की पूर्ति में भी प्रान्तीय रक्षक-दल सहायता दे सकेगा।

प्रान्तीय रक्षक-दल के सामाजिक महत्त्व पर अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। शस्त्रों के उपयोग की शिक्षा पाने के अतिरिक्त उसका कोई सदस्य नागरिकता और प्रान्त के ग्राम्य और नागरिक जीवन की समस्याओं के सम्बन्ध में शिक्षा प्राप्त करेगा। इससे अनुशासन और स्वयं सहायता करने की भावना पैदा होगी जो कि गाँवों के सामान्य कल्याण में बहुत सहायक होती है।

आइये, हम उठें और प्रान्तीय दल में सम्मिलित हों। हमें छोटी असुविधाओं की लेशमात्र भी न करनी चाहिये जो हमें हो हमको छोटे खर्च की परवाह न चाहिये जो हमें अपनी वर्दी के लिये करना पड़े। आइये, राष्ट्र और की मर्यादा के लिये हम इस योजना सफल बनाने का दृढ़ संकल्प करें।

मुफ्त

असली फोन्टेनपेन और रिस्टवाच गारन्टी १२ साल, मुफ्त करने के लिये आज ही लिखें। मौका हाथ न आयेगा।

Imperial Corporation (D. A.)
Halka No. 22. Amritsar

मृगी (हिस्टीरिया) फिट
विश्वविख्यात अनुभवसिद्ध जड़ी

इस बूटी को केवल एक ही बार के समय रोगी को सुँघा देने से साथ ही काले रंग का कीड़ा मरकर आवेगा और रोगी सदैव के लिये हो जावेगा।

मँगाने का पता—महात्मा त्यागी
अनुसुइया-आश्रम, पो० चित्रकूट,

१८६६
नीलगिरि तैल

दाद, खुजली
और
हरेक मेलका चमड़ीका दर्दोंके लीए
KADAM
गत ५० वर्षों से
जग विख्यात
कपड़े खराब नहीं करती।
नक्कालों से सावधान
सपट
लोशन

सपट एन्ड को, डिपार्टमेंट U.P, D.A.
बम्बई २

-चर्चा

ड नहीं, शहद खाइये कल इससे आपका स्थ्य अच्छा रहेगा

श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालङ्कार, लय हर्बल इंस्टीट्यूट, गुरुकुल-कांगड़ी, हरिद्वार

प्राचीन समय से शहद भोजन- में इस्तेमाल हो रहा है और सौ साल पहले तक मीठा करने- मुख्य पदार्थ था, फिर खाण्ड परिमाण में संसार में आई और के लोगों के लिये थोड़ा-बहुत । भोजन के रूप में शहद का स्थान है। प्रकृति में सान्द्र पदार्थ केवल यही है। परिष्कृत के लिये पिछले कुछ समय से सभ्य प्रतिक्रिया होने लगी है इसको (व्हाइट पॉयज़न) नाम दिया । इसके स्थान पर प्राचीनतम और सबसे सुरक्षित शहद का दैनिक भोजन में विस्तृत रूप से करना चाहिये। अमेरिका तथा अन्य अनेक सरकारें शहद की खपत को रही हैं।

विषैला प्रभाव

या गन्ने से बनाई गई के निर्माण में हानिप्रद द्रव्यों का प्रयोग अनिवार्य कि मक्खियों के एक समुदाय रूप से खिलाना होता है और सामान्य खाण्ड इस प्रयोजन गई है तो परिणाम साधारण- होता है कि आधा समुदाय उन से विषाक्त हो जाता है जिनसे में खाण्ड का परिष्कार किया । मक्खियों पर इसका यह प्रभाव मनुष्य पर भी इसका यही फल चाहिए, यद्यपि उन नाजुक जीवों तुलना में यह प्रभाव स्पष्ट नजर नहीं ।

बच्चों के लिये

शर्कराओं का सम्मिश्रण होने इसको सुगमता से हजम कर लेता पाचकों में यह बहुत उत्तम है श्लैष्मिक आवरणों में (म्यूकस) पर इसका कोई दुष्प्रभाव । बच्चों के लिये दूध के बाद उत्तम भोजन है। स्वस्थ माता का दूध बच्चे के लिए सर्वोत्तम होता है, परन्तु जब बच्चा बड़ा जाता है तो दूध के गुण और में कमी होती जाती है इस में मा के दूध के स्थान पर या दूध की कमी पूरी करने के लिये गौ का दूध दिया जाता है। शिशु की आवश्यकताओं के अधिक बनाने के लिये गोदुग्ध में अनेक पदार्थ मिलाये जाते हैं। उस प्रयोजन लिये ग्लूकोज (डेक्स्ट्रोज) या शर्कराओं का बहुत अधिक किया जाता है। शहद उन के अपेक्षा सस्ता है और गोदुग्ध के के अनुरूप बनाने के लिए की तुलना में अधिक अच्छा है।

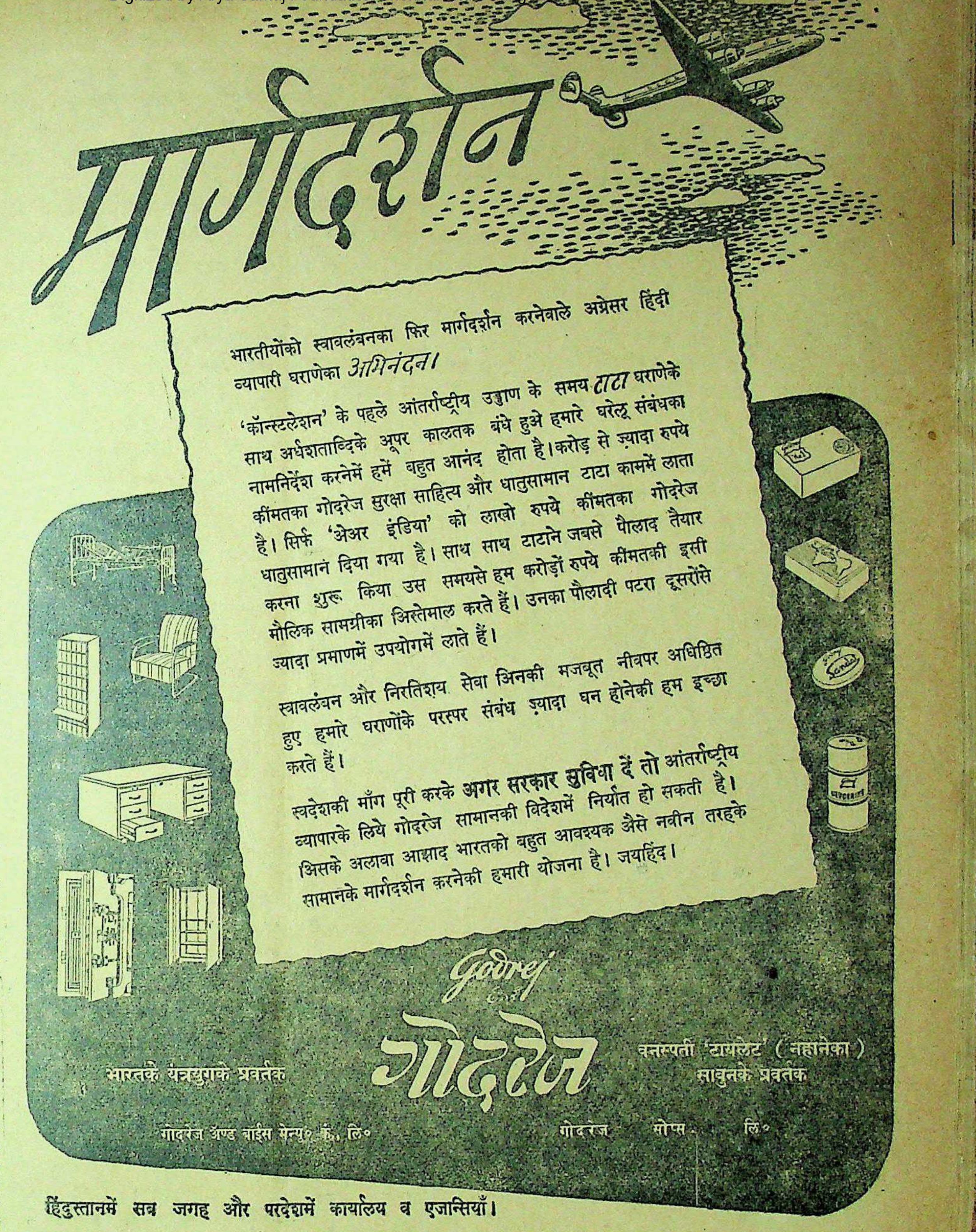

भारतीयोंको स्वावलंबनका फिर मार्गदर्शन करनेवाले अग्रेसर हिंदी व्यापारी घराणेका *अभिनंदन।*

'कॉन्स्टलेशन' के पहले आंतर्राष्ट्रीय उड्डाण के समय **टाटा** घराणेके साथ अर्धशताब्दिके ऊपर कालतक बंधे हुओ हमारे घरेलू संबंधका नामनिर्देश करनेमें हमें बहुत आनंद होता है। करोड़ से ज़्यादा रुपये कीमतका गोदरेज सुरक्षा साहित्य और धातुसामान टाटा काममें लाता है। सिर्फ 'अेअर इंडिया' को लाखो रुपये कीमतका गोदरेज धातुसामानं दिया गया है। साथ साथ टाटाने जबसे पौलाद तैयार करना शुरू किया उस समयसे हम करोड़ों रुपये कीमतकी इसी मौलिक सामग्रीका अिस्तेमाल करते हैं। उनका पौलादी पटरा दूसरोंसे ज्यादा प्रमाणमें उपयोगमें लाते हैं।

स्वावलंबन और निरतिशय सेवा अिनकी मजबूत नीवपर अधिष्ठित हुए हमारे घराणोंके परस्पर संबंध ज़्यादा घन होनेकी हम इच्छा करते हैं।

स्वदेशकी माँग पूरी करके **अगर सरकार सुविधा दें तो** आंतर्राष्ट्रीय व्यापारके लिये गोदरेज सामानकी विदेशमें निर्यात हो सकती है। अिसके अलावा आझाद भारतको बहुत आवश्यक अैसे नवीन तरहके सामानके मार्गदर्शन करनेकी हमारी योजना है। जयहिंद।

भारतके यंत्रयुगके प्रवर्तक

वनस्पती 'टायलेट' (नहानेका) साबुनके प्रवर्तक

गोदरेज अॅण्ड बाईस मेन्यु० कं०, लि०

गोदरेज सोप्स लि०

हिंदुस्तानमें सब जगह और परदेशमें कार्यालय व एजान्सियाँ।

गरम मत कीजिये

स्वाभाविक रंग तथा स्वादवाला अपरिवर्तित शहद प्रयोग के लिए उत्तम होता है। रासायनिक दृष्टि से गन्ने की खाण्ड में जहाँ केवल एक शर्करा होती है वहाँ इसमें तीन होती हैं। इनमें से एक फलों की खाण्ड या लेवुलोज़ सामान्य खाण्ड से मधुरतर है और इसलिये शहद की मिठास उसमें विद्यमान फलों की खाण्ड के अनुपात के अनुसार भिन्न भिन्न होती है। फलों की खाण्ड सामान्य खाण्ड से कम शीघ्रता से स्फटिक बनती है। इसलिये मधुरता और स्फटिक बनने की प्रवृत्ति में शहद और सामान्य खाण्ड में भिन्नता है। विभिन्न प्रकार की शर्कराओं और फूलों के कई प्रकार के उड्डनशील तेलों के मधु में होने के कारण यह स्वाद और गन्ध में सामान्य खाण्ड से कहीं भिन्न है। गरम करने से ये तेल उड़ जाते हैं और शर्कराएँ, खासकर फलों की खाण्ड जल जाती है, जिससे इसका स्वाद और गन्ध दोनों ही खराब हो जाते हैं, इसलिये शहद के उपयोग में ऊष्मा की कमी का सदा ध्यान रखना चाहिये।

क्या कुछ लोग शहद नहीं खा सकते?

शहद खाने के कुछ ही देर बाद कई लोगों को तीव्र वेदना आरम्भ हो जाती है जैसे कि कभी कभी आमाशय-शूल होती है। ऐसे लोग इस विश्वास पर कूद पड़ते हैं कि शहद उनके अनुकूल नहीं है और इसका उपयोग उनके लिये हानिकर है। शहद जब पेट में पहुँचता है तो इसके गाढ़े खाण्ड के घोल को हलका करने के लिये वेग से जल आकर्षण-क्रिया प्रारम्भ हो जाती है। इसका अभिप्राय यह है कि शहद पेट की दीवारों से आर्द्रता खींच रहा होता है। आमाशय की दीवारों से पानी खींचे जाने का कार्य इतनी तीव्रता से होता है कि कई लोगों में यह वेदना उत्पन्न कर देता है। आमाशय को आवृत करनेवाली झिल्ली के दोनों ओर दो घोल होते हैं। एक शहद होता है जो शर्करा का सान्द्र घोल है और दूसरे शरीर के द्रव्य होते हैं जिनमें शर्करा की कम सान्द्रता होती है। जलशोषण में द्रव में कम से अधिक सान्द्र पार्श्व की ओर जाने की प्रवृत्ति होती है। इस नियम के अनुसार इस घोल उदाहरण में आमाशय गुहा की ओर आर्द्रता का प्रवाह होगा। यदि यह कार्य बहुत तीव्रता से हो रहा है और आमाशय इस कार्य के लिए बहुत नाज़ुक है तो परिणामतः वेदना होने लग जायगी। हमारी इस विवेचना से स्पष्ट है कि शहद में कोई हानिकर पदार्थ नहीं है जो वेदना उत्पन्न करता है। जल-आकर्षण के कार्य की तीव्रता को मन्द करने के लिए युक्तियुक्त उपाय यह है कि शहद की सान्द्रता को पानी मिलाकर कम कर लिया जाय। ऐसे व्यक्ति शहद को पानी से हलका करके खाएँ या भोजन के साथ खाएँ तो उन्हें वेदना की शिकायत नहीं होती।

इधर उधर की

बिजली के दिमाग

यह नवीन आविष्कार छोटा होकर भी बहुत काम का है। यह आकार में एक आफिस डेस्क से बड़ा नहीं। यह मशीन देखते देखते गणित और अर्थशास्त्र के कठिन प्रश्नों को हल करती है। एक समय में यह १५ या २० आदमियों की शक्ति के बराबर काम कर सकती है। डाक्टर नारबर्ट विनर दर्शनशाताओं के साथ काम करके यह सीखा है कि दिमाग की उत्पत्ति भी बिजली की तरह की जा सकती है। मनुष्य के शरीर में अभी बहुत सी गुप्त शक्तियाँ हैं जिनका सम्बन्ध विशेष रूप से दिमाग से ही है। आशा की जाती है कि निकट भविष्य में यह भी प्रकट किया जाय कि दिमाग आवश्यकतानुसार बदला भी जा सकता है। इस परिवर्तन से आदमी को उसकी उन्नति के लिये बहुत कुछ करना पड़ेगा।

* * *

सब भाषाओं का एक टाइपराइटर

ब्रिटिश औद्योगिक विकास के सम्बन्ध में एक लड़की ने 'पालनटाइप' मशीन निर्मित करने का विचार किया है। उस प्रकार की मशीन इससे पहले नहीं बनी थी। यह लड़की पूर्ण रूप से कोई भाषा नहीं जानती लेकिन इस मशीन के द्वारा वह सारी भाषाओं को टाइप करने की व्यवस्था कर रही है। वास्तव में इस प्रकार की मशीन दुनिया के लिये एक नई वस्तु होगी।

* * *

वायुमापक यन्त्र

अमेरिका के औद्योगिक विकास के अन्तर्गत एक यन्त्र प्रस्तुत किया गया है। इस यन्त्र के द्वारा वायु की शक्ति नापी जा सकती है। उदाहरण के लिये मान लीजिये आँधी आनेवाली है, यह यन्त्र यह बतला सकेगा कि आँधी के साथ अनुमानतः कितनी शक्ति होगी। इसी आधार पर पेड़ों, इमारतों और अन्य नुकसानों का भी अनुमान लगाया जा सकता है। आकार में यह यन्त्र बहुत बड़ा नहीं, लेकिन काम करने में यह यन्त्र बहुत बड़ी कठिनाइयाँ हल करता है।

* * *

चमड़े के कपड़े

विदेशों में विज्ञान की सहायता से चमड़े के कपड़े बनाने का प्रबन्ध किया जा रहा है। इस प्रकार का विचार प्राचीन इतिहास में भी आया है। लेकिन अब इस सभ्य युग में फिर वही पुरानी रीतियाँ दोहराई जायेंगी। चमड़े को इस प्रकार बनाया जायेगा कि न जाननेवाला व्यक्ति यह न समझ सके कि यह चमड़े का कपड़ा है। इसके लिए अनेक युक्तियाँ काम में लाई जायेंगी। आशा है शीघ्र ही इस प्रकार के वस्त्र देखने को मिलेंगे।

* * *

हृदय का आपरेशन

अमेरिका में विज्ञान की सहायता से हृदय का आपरेशन भी सम्भव किया गया है। इसके पहले हृदय का आपरेशन सम्भव नहीं था। अभी इस क्रिया में बहुत कुछ होना शेष है, लेकिन आशा की जाती है कि हृदय का आपरेशन कुछ समय के पश्चात् इतना असम्भव न ज्ञात होगा जितना आज मालूम होता है।

"ये हैं आनन्द मिश्र...

अभी आफिस से घर आये हैं, बढ़िया चाय पीने के लिये बेताब हैं। पर बेचारे को अच्छी चाय नहीं मिल सकती क्योंकि केतली का पानी सुबह से अब तक खौल ही रहा है। अच्छी चाय के लिये फौरन खौले पानी की जरूरत होती है।

खुशी और तरोताजगी हासिल करने के लिये करोड़ों व्यक्ति चाय पीते हैं। कितने अफसोस की बात है कि बहुत से चाय पीने वाले इतना भी नहीं जानते कि अच्छी चाय कैसी होती है या कैसे बनाई जाती है। अच्छी चाय बनाने में कोई विशेष खर्च या तकलीफ नहीं होती; सिर्फ पांच सरल नियम मानना काफी है। अपने पैसों की पूरी कीमत और चाय का पूरा स्वाद लेना हो तो इन नियमों को याद कर लीजिये और घर में उनका हमेशा पालन हो इसका ख्याल रखिये।

पांच सरल नियम

★

१. सिर्फ ताजा और फौरन खौला पानी लीजिये। २. चाय के बर्तन को पहले गर्म कर लीजिये। ३. हर व्यक्ति के लिये एक चम्मच और एक चम्मच बर्तन के लिये सूखी चाय डालिये। ४. तीन से पांच मिनट तक चाय को सीझने दीजिये। ५. दूध प्याले में मिलाइये, बर्तन में नहीं।

चाय-चर्चा नामक पुस्तिका अंगरेजी, हिन्दी, बंगला, उर्दू या तामिल किसी भी भाषा में कमिश्नर, इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड, १०१, नेताजी सुभाष रोड, पोष्ट बक्स २१७२, कलकत्ता से आवेदन कर मुफ्त मँगाई जा सकती है।

सबसे अच्छी

अच्छी-बनी चाय

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

LIPTONS
WHITE LABEL
TEA
ONE POUND NETT
लिपटन
माने अच्छी चाय

छात्र-छात्राओं के लिये

जन आश्रम प्रयाग स्थानीय में प्रमुख स्थान रखता है जो रचनात्मक कार्यों द्वारा निर्धन, तथा अन्य अधिकारी वर्गों की सेवा किया करता है। आश्रम स्टेशन के पास गंगा के तट के एक सुन्दर स्थान पर स्थित है और कार्य-क्षेत्र सैकड़ों बीघे भूमि में फैला है।

के निर्धन छात्र-छात्राओं को नागरिक बनाना आश्रम का एक उद्देश्य है। इसकी पूर्ति के लिये का 'विद्या-विहार' जो छात्रों के धार से प्रमाणित हाईस्कूल है की शिक्षा देता है और नई के अनुसार शीघ्र ही १२वीं श्रेणी जायेगा। 'विद्या-विहार' एक हाईस्कूल है जहाँ आद्योगिक द्वारा छात्रों में आत्मनिर्भरता का प्रयत्न हो रहा है। विद्या-विहार वास में दूर दूर के- लड़के आकर और शिक्षा पाते हैं। हरिजन तथा सब लड़के स्कूल में भर्ती होते सब प्रकार की सुविधायें प्रदान हैं। मिडिल पास लड़के जो भर्ती वे प्रधानाध्यापक से बातचीत रें।

'बालिका विद्या उद्यान' में प्रवेशिका तथा विद्या विनो- ओं के लिए तैयार किया जाता छात्रावास में उनके रहने इत्यादि महिलाओं के संरक्षण में प्रबन्ध के लिये जून में पत्र व्यवहार किया है।

का 'उद्योग-भवन' आद्योगिक के लिये लड़कों को जुलाई में भर्ती है। इसमें भर्ती हुए लड़के २ वर्षों रोटी का प्रश्न हल कर है। लड़कों की पढ़ाई-लिखाई खान- इत्यादि का पूर्ण प्रबन्ध आश्रम है।

पत्र द्वारा आश्रम के प्रति मैं व्यक्तियों का ध्यान आकर्षित हूँ और यह आशा करता हूँ वे छात्र-छात्राओं को यहाँ भेजकर जीवन सुन्दर बनाने का प्रयत्न ।

—श्यामबिहारी विरागी व्यवस्थापक
हरिजन आश्रम, प्रयाग

* *

अकोला (मध्य प्रांत) से श्री प्रभु- अग्निहोत्री प्रधान मंत्री, मध्य प्रांत हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन लिखते हैं— प्रान्तीय सम्मेलन की ओर से एक बुलेटिन प्रकाशन की योजना ई है। इस बुलेटिन में प्रान्त की गतिविधि और सम्मेलन की रहा करेगी। सम्मेलन से सम्बद्ध ओं के कार्य का संक्षिप्त विवरण भी में रहेगा। पहला बुलेटिन जुलाई द्वितीय सप्ताह में प्रकाशित होगा। सम्बन्धित समाचार और विज्ञप्तियाँ श्री प्रभुदयाल अग्निहोत्री प्रधान मन्त्री प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन आकोला के पते पर भेजने का कष्ट करें।

प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के आकोला अधिवेशन के अवसर पर श्रीमती राधादेवी जी गोयनका साहित्य-रत्न एम० एल० ए० ने सम्मेलन को प्रतिवर्ष ५००) रु० देने की घोषणा की थी। यह रकम "श्री गोयनका पारितोषिक के रूप में प्रतिवर्ष सम्मेलन के अवसर पर प्रान्त की सर्वश्रेष्ठ मौलिक रचना पर उसके लेखक को दी जायगी। रचनाएँ ३ भागों में विभक्त होंगी—(१) साहित्य (कविता-उपन्यास, नाटक, गद्यकाव्य, कहानी, निबन्ध, समालोचना) (२) शास्त्र (अर्थ, राजनीति, समाज, मनोविज्ञान, शिक्षा, भूगोल, इतिहास, वाणिज्य, उद्योग, व्यवसाय, धर्म, दर्शन) (३) विज्ञान (भौतिक विज्ञान, ज्योतिष, वैद्यक, गणित, रसायन, जन्तु-विज्ञान, वनस्पति विज्ञान)

इस वर्ष का पारितोषिक साहित्य विषय पर दिया जायगा। लेखक महोदयों से प्रार्थना है कि वे अपनी प्रकाशित रचना की पाँच और अप्रकाशित रचना की दो दो प्रतियाँ १५ अगस्त १९४८ तक श्री प्रभुदयाल अग्निहोत्री प्रधान मंत्री प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन आकोला के पते पर रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा भेजने का कष्ट करें। विशेष जानकारी के लिये सम्मेलन कार्यालय नागपुर अथवा उपर्युक्त पते से पारितोषिक नियमावली प्राप्त की जा सकती है।

जयपुर शहर की महिलाओं में जयपुर सेवा संघ अच्छा काम कर रहा है। संघ की स्थापना प्रसूती गृह आदि खोलने और चलाने के लिए स्त्रियों को उपयोगी काम काज सिखाने के लिए संस्थायें चलाने और अस्पतालों में मरीज स्त्रियों एवं बच्चों की देख भाल एवं सहायता करने के लिए है। महारानी साहबा श्री गायत्रीदेवी जी संघ की संरक्षिका हैं। श्रीमती कृष्णमाचार्य उप संरक्षिका और अध्यक्षा हैं। आप दोनों संघ के काम में बहुत दिलचस्पी लेती है सितम्बर १९४७ से संघ की स्थापना के बाद सदस्याओं ने शहर में अनेक उपयोगी कार्य किये हैं। बच्चों की देख भाल के लिये संघ ने दो केन्द्र श्री चाँद सिलाई स्कूल और महिला कला मंदिर खोले हैं। एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया जिसमें ३००० बच्चों ने भाग लिया। गरीब, अमीर, फकीर अपढ़ सभी वर्गों के लोगों ने इसमें बड़ी दिलचस्पी दिखलाई।

संघ ने अपने सहायता केन्द्र राज्य के मुख्य अस्पताल और जनाना अस्पताल खोले हैं। सदस्य हरिजनों और शरणार्थियों से भी सहायता कार्य करती रही हैं।

राजस्व सचिव पंडित टीकारामजी पालीवाल ने कार्यभार सँभालने के बाद ही अपने विभाग के प्रमुख कर्मचारियों का एक सम्मेलन बुलाया था। उसमें आपने कहा था कि जो कर्मचारी अपनी सेवा से अपने अधिकारियों को संतुष्ट करेंगे उनको समुचित प्रोत्साहन दिया जायगा और जो कर्मचारी दंड के योग्य होंगे उनके विरुद्ध समुचित कार्यवाही की जायेगी। राजस्व सचिव ने तब से अनेक व्यक्तिगत मामलों में जाँच की है।

सवाई जयपुर के नाजिर श्री रामचंद्र और वर्नाक्यूलर क्लर्क श्री मनमोहनलाल का वेतन २० रुपये मासिक बढ़ा दिया है। इन्होंने २५ साल तक मेहनत और ईमानदारी से काम किया है। अपने पद का दुरुपयोग करने के कारण तहसीलदार सरदार सतवन्तसिंह नौकरी से अलग कर दिये गये हैं।

—संवाददाता

* * *

हरिद्वार सेवा समिति हरिद्वार द्वारा ४ मास में जो जनता की सेवा हुई है वह इस प्रकार है—

१२५ लड़कियाँ, १५४ लड़के २३ स्त्रियाँ और ७ पुरुषों की जो भूले भटके थे उनके संरक्षकों तथा उनके निवास स्थान पर पहुँचाया। ४ छूत के और १३ साधारण रोगियों को जनरल अस्पताल पहुँचाया। कई डूबते हुये बच्चों को निकालने के अतिरिक्त २५ असहाय निर्धन मुर्दों का हिन्दू रीति के अनुसार दाह संस्कार कराया गया। समिति के औषधालय गङ्गा तट पर ८५०० और इसकी शाखा भीमगोड़ा खड़खड़ी में १२०० रोगियों ने लाभ उठाया और वाचनालय में समाचार-पत्र पढ़नेवालों की संख्या २०००० रही। चन्द्र व सूर्य ग्रहण या श्री चंडीदेवी के मेले पर श्री चौ० रामभजजी म्यु० कमिश्नर की संरक्षता में स्वयंसेवक दल जनता की सेवा में तैनात रहें। समिति के प्रधान मन्त्री घनश्याम गिरि और प्र० मंत्री चौ० बाबूराम त्यागी हैं।

कलकत्ता बङ्गाल राष्ट्र भाषा-प्रचार समिति का समावर्त्तनोत्सव २७ जून १९४८ को आशुतोष कालेज भवन में (भवानीपुर) सम्पन्न हो गया। वर्धा समिति की राष्ट्र-भाषा परीक्षाओं में उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को प्रमाणपत्र तथा पुरस्कार प्रदान किया गया। माननीय शिक्षामन्त्री राय हरेन्द्रनाथ चौधरी ने सभापति का आसन अलंकृत किया था तथा सम्पादकाचार्य पण्डित अम्बिकाप्रसाद बाजपेयी ने दीक्षान्त अभिभाषण किया।

—मन्त्री

* * *

चिरगाँव (झांसी) में लगभग एक महीने से चिरगाँव में मेहतरों की जो हड़ताल चल रही थी वह समाप्त हो गई है। इस पर व्यक्तिगत रूप में एवं ग्राम-सेवा-दल, चिरगाँव से संयोजक के रूप में मैं उनको हार्दिक धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने गाँव की सफाई के काम में सहानुभूति दी और सक्रिय सहायता पहुँचाई है।

ऐसा प्रसंग इससे पहले ग्रामवासियों के सामने कभी नहीं आया था; परन्तु गाँव को रोग और गन्दगी से बचाने के लिए जिस तरह रूढ़ संस्कारों को त्यागकर हमारे नागरिक एकदम तत्पर हो गये वह दृश्य देखने के योग्य था। सबका भाव यह था कि अपने ग्राम को स्वच्छ और शुद्ध हम न रक्खेंगे तो कौन रक्खेगा। पूज्य बापू ने हरिजनों के लिए जो कार्य किया था, उसका एक अच्छा निदर्शन चिरगाँव की इस हड़ताल में हो गया।

जो अब तक अछूतों का काम था उसे ही गाँववालों ने अपनाया और पूरा किया। इस सेवा से ग्राम-सेवा-दल, चिरगाँव के सदस्यों ने मेहतरों के समझे जानेवाले काम को श्रेष्ठता और महत्ता दी है जिसका मूल्य हरिजन आगे चलकर ही निर्धारित कर सकेंगे।

अन्त में इस अवसर पर एक बात और कहनी है। वह यह कि इस समय हमें कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिए जो देश की कठिनाइयों को बुढ़ापे। राजनैतिक उद्देश्य से कराई गई हड़तालें ऐसे ही काम हैं।

—चारुशीलाशरण गुप्त

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ
सम्पादक—श्री सोहनलाल द्विवेदी
प्राक्कथन—सर सर्वपल्ली राधाकृष्णन्
संस्कृति, हिन्दी, उर्दू, बँगला, गुजराती, सिन्धी, मराठी, तामिल, तेलगू, मलयालम, कन्नड़, अँगरेजी और चीनी भाषाओं में महात्मा गांधी जी पर लिखी हुई सर्वोत्तम कविताओं का संग्रह—हिन्दी भाषा में अर्थ-सहित।
बड़ा आकार, सुन्दर छपाई, पूरे पेज के अनेक चित्र। बढ़िया जिल्द। सर्वत्र प्रशंसित।
सादी जिल्द ६॥) कपड़े की जिल्द ७॥)
सेवाग्राम
रंग-बिरंगी छपाई अनेक रंगीन चित्र
रचयिता श्री सोहनलाल द्विवेदी
संरक्षक श्री घनश्यामदास बिड़ला
जनता की भाषा में, जनता के भावों का, जनता का काव्य कवि की राष्ट्रीय रचनाओं का सुन्दर संग्रह। बड़ा आकार, बढ़िया काग़ज़, कपड़े की मज़बूत जिल्द। मूल्य दस रुपये।
मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

बाइसकिल, पुरजे, टायर्ज, ट्यूब, एभररेडी (Eveready), टार्चेज, बल्ब, शेल आदि।
थोक और परचून के लिये
बालमुकन्द एण्ड ब्रादर (आफ लाहौर)
एस्पलैनेड रोड; दिल्ली।
ब्रांच:—मिलरगञ्ज, लुधियाना को याद रखें।

मनोरंजक चुटकुले

नीलम ने साइकिल देखकर शशि से पूछा, 'यह किसकी है ?'

'लोहे की है' शशि ने उत्तर दिया।

'इसको ले सकता हूँ ?' नीलम ने पूछा।

'लोहे से पूछ लो' शशि ने कहा।

* * *

मालिक ने नौकर से पूछा, 'तुम कहाँ रहते हो ?'

'जहाँ भोजन मिलता है' नौकर ने जवाब दिया।

'जहाँ इज़्ज़त और भोजन दोनों मिले' मालिक ने कहा।

'वहाँ स्त्री-बच्चों सहित रहता है' नौकर ने जवाब दिया।

* * *

डाक्टर से मरीज़ ने दवाई लेकर पूछा, इसका प्रयोग कैसे करूँगा ?

'इसके अंदर पर्चा बंद है' डाक्टर ने कहा।

* * *

एक किसान ने एक बाबू से पूछा, साहब पानी कब बरसेगा ?

'जब खून बरसना बन्द होगा तब पानी बरसेगा' बाबू ने उत्तर दिया।

* * *

जूते की दूकान पर जाकर एक साहब ने पूछा, मेरे लिये जूते दे सकते हो ?

दूकानदार ने कहा, "हाँ हाँ, साहब, जितने चाहिए उतने, जूते लेने की तरकीब मालूम होनी चाहिए जूतों की कमी नहीं है।"

* * *

वैद्य जी से रोगी ने पूछा, "मैं जी जाऊँगा कि नहीं ?"

वैद्य ने उत्तर दिया, "यह तो राम जाने या फिर मेरी दवा ?"

* * *

प्रसिद्ध यात्राओं की कथा

प्राचीन चीनी यात्री फाहियान से लेकर वर्तमान युग के एवरेस्ट की चोटी पर चढ़नेवाले साहसी वीरों तक की कथा इस पुस्तक में है। जिन यात्रियों ने प्राणों की बाजी लगाकर स्थल और जल के अज्ञात देशों में भ्रमण किया था और उनके परिश्रम से संसार का जो लाभ हुआ उसका रोचक वर्णन इस पुस्तक में पढ़िए। मूल्य ॥।-)
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग,

परीदेश

यह पुस्तक ख़ास कर छोटे बच्चों के लिए है। इसमें ऐसी एक भी बात नहीं जिसको समझने के लिए माथापच्ची करनी पड़े। इसमें रोजमर्रा की बातें बड़े ही अच्छे ढंग से लिखी गई हैं। बड़े आकार की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों और फूल-पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है। मूल्य ॥)
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

आज के जर्मनी का भविष्य

(पेज ५ का शेष)

सकेगा। इसके विरुद्ध अमरीका को सैनिक-सुरक्षा की गारण्टी देनी चाहिए। मार्शल योजना के अतिरिक्त अमरीका जल, थल और नभ सेना पर इस साल १३ अरब डालर खर्च कर रहा है। पर फ्रांस को इससे सन्तोष नहीं है। एँग्लो-अमरीका ने फ्रांस को आश्वासन दिया है कि उससे सलाह किए बगैर वे जर्मनी से अपनी सेना नहीं हटायेंगे। यही नहीं उन्होंने यह भी आश्वासन दिया है कि जब तक यूरोप पूर्ण रूप से सुरक्षित न हो जायगा वे अपनी सेनायें यूरोप से नहीं हटायेंगे। दखलकारी सेना जब हटा भी ली जायेगी, तब भी इस बात का इन्तजाम किया जायेगा कि नाकों पर मित्रसेना बनी रहे, और जर्मनी के निशस्त्रीकरण और असैनिककरण की उचित-व्यवस्था की जायगी। पर जब दखलकारी मित्रसेना हटा ली जायगी, तब नाकों और जर्मनी के निरीक्षण के लिए सेना कहां से आवेगी ? सम्भवतः भविष्य में बर्लिन के बजाय मित्रसेना का सदर मुकाम रूर बने।

अमरीकी सेना अनिश्चित काल तक यूरोप में रहेंगी। इस अवस्था में यदि रूस ने पश्चिम की ओर बढ़ने का प्रयत्न किया तो वह अमरीकी सेना से लड़कर ही आगे बढ़ सकेगा। यदि ऐसा हुआ तो अमरीका को लड़ाई में बरबस कूदना पड़ेगा। पर फ्रेंचों को इससे सन्तोष नहीं है, क्योंकि लन्दन-करार जर्मनों को अपनी गवर्नमेंट दे रहा है। अतः सदा के लिये अमरीकी सेना नहीं रखी जा सकती। दूसरे आज जो अमरीकी सेना जर्मनी में है वह पूर्व से आक्रमण होने पर शान्ति कायम रखने के लिये अपर्याप्त है। अमरीका से कुमुक आने में कई मास लग जायेंगे। इस बीच लाल सेना फ्रांस को रौंद डालेगी।

रूर की व्यवस्था के लिये जो अन्तर्राष्ट्रीय कमेटी होगी, उसमें ब्रिटेन, फ्रांस, अमरीका और जर्मनी को तीन-तीन वोट देने का हक होगा और बेनेलक्स के देशों को एक एक। फ्रांस का कहना है कि जर्मनी को इसमें प्रतिनिधित्व और तीन वोट देकर एँग्लो-अमरीका ने कुल १५ वोटों में से ९ वोट अनायास प्राप्त कर लिये हैं। फ्रेंच कम्युनिस्टों का कहना है कि रूर अमरीकी पूँजीपतियों को दे दिया गया है और वे इसका विकास करके रूस से लड़ेंगे।

पुनरावृत्ति

दस साल पहले हुई घटना की पुनरावृत्ति होने की सम्भावना उत्पन्न हो गई है। फ्रांस में ३० लाख कम्युनिस्ट हैं। कर्मलिन के आदेश से फ्रेंच कम्युनिस्ट आज पुनः फ्रेंचों की हिम्मत तोड़ रहे हैं जैसे कि उन्होंने १९३९-४० में मेजिनों क्षेत्र पर लड़ रही फ्रेंच सेना की स्तालिन-हिटलर के आदेश से हिम्मत तोड़ी थी। आज पुनः दोनों में मैत्री है। आज की मैत्री स्टालिन और हिटलर मोलोटोव और रिब्बनट्राप के बीच नहीं है, बल्कि रूस और जर्मनी विद्यमान शक्तिशाली कम्यूनिस्ट पार्टी के बीच है। इस साल पहले रूस जर्मनी [illegible] जर्मनी की ओर से किया गया था आज कर्मलिन की ओर से किया जा रहा है। इसका फल क्या होगा ? जर्मन नेशनलिस्टों और स्लाव अधिनायकत्व के बीच टक्कर। जार के समय से रूस और जर्मनी के बीच सन्धि रही है और रूसी और जनरल स्टाफ के बीच मेल रहा है। फ्रांस में हिटलर के दक्षिण-पक्षी राजनीतिक आर्थिक क्षेत्र मित्र थे। रूस का साथ देने के लिये शक्तिशाली फ्रेंच कम्युनिस्ट पार्टी है और संख्या की दृष्टि से सबसे अधिक प्रबल है। रूस के पास तुरुप का पत्ता है। वह पश्चिमी जर्मनी को अपने साथ मिलाने के लिये जर्मनी का पूर्वी भाग, जो उसने पोलैण्ड को दे दिया है, पुनः जर्मनी को वापस कर सकता है।

असन्तुष्ट जर्मन

जर्मन-विषयक किसी भी योजना की सफलता इसी पर निर्भर है कि जर्मन जनता उसको प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर ले और मित्र सेना जर्मनी से ले जाने के बाद भी वह उसको मानती रहे और उसके अनुसार कार्य करती रहे। क्या लन्दन-करार के विषय में यह कहा जा सकता है ? वेस्टर्न लैण्डर के प्रधान मंत्री का कहना है कि रूर पर अन्तर्राष्ट्रीय सत्ता जर्मन कभी स्वीकार न करेंगे। यदि समस्त यूरोप के आर्थिक स्रोतों पर अन्तर्राष्ट्रीय नियंत्रण स्थापित हो तब जर्मनी को भी सम्भवतः आपत्ति न हो। जर्मन रूर पर अपना नियन्त्रण चाहते हैं। वे यह भी वचन देने को तैयार हैं कि रूर के उत्पादन का युद्ध-कार्य में उपयोग नहीं किया जायेगा। जर्मनों की यह भी माँग है कि पश्चिमी जमनी में फेडरल (संघ-राज्य) या यूनिटरी (संयुक्त राज्य) स्थापित हो, इसका निर्णय करने का भार उन पर ही छोड़ दिया जायगा।

रूस की प्रतिक्रिया

पश्चिमी जर्मनी में यदि एँग्लो-अमरीका जर्मन गवर्नमेंट बनाने की घोषणा कर रहे हैं, तो सोवियट रूस उनसे इससे पीछे नहीं है। मास्को द्वारा स्थापित जर्मन गवर्नमेंट पश्चिमी राष्ट्रों द्वारा बनाई जर्मन गवर्नमेंट से जर्मनों की नजरों में अधिक आकर्षक और प्रभावशाली होगी। इस प्रकार जर्मनी के लिये रस्साकशी होनी स्वाभाविक है। पश्चिमी जर्मनी मार्शल-योजना में एकदम से भाग लेगा। उसका औद्योगिक उत्पादन बढ़ेगा, उनको अधिक भोजन मिलेगा और जर्मनों को अपनी फैक्टरियाँ बनाने के लिये उत्साहित किया जायेगा। पूर्वी जर्मनी को एँग्लो-अमरीकी परिभाषा की और शरण की स्वाधीनता शायद रूस न प्रदान करे। मगर उनका आत्मसम्मान और महत्त्व बढ़ाया जायगा। उनसे कहा जायगा कि यह संयुक्त जर्मनी की गवर्नमेंट है। यदि वे पश्चमी जर्मनी को आकर्षित और प्रभावित कर सकेंगे, तो वे पूर्वी जर्मनी का खोया हुआ भाग पुनः प्राप्त कर सकेंगे और उनको अपनी सेना का निर्माण करने दिया जायेगा। इस नीति का फल यह होगा कि अगले

प्रतियोगी जर्मन गवर्नमेंटें बन

और दोनों अपने को संयुक्त

की गवर्नमेंट बतावेंगे, ये दोनों

गर्वनमेंट जर्मन सेना के केन्द्र

होंगे।

स्थिति यह है कि जर्मनी को

करने में जो मित्रराष्ट्र एक और

थे वे आज विभक्त हैं और

प्रत्येक जर्मनी की मैत्री और

की कोशिश कर रहा है। हर एक

दूसरे से अधिक जर्मनी के प्रति

दिखाने के लिये उत्सुक है। पूर्व

पश्चिमी जब संयुक्त थे तब जर्मनी

पराजित हो गया था, पर आज

विभक्त हैं, शान्ति काल में

विजयश्री जर्मनी के गले में

माल डाले।

* *

हैदराबादी निजाम और

(पेज ६ का शेष)

रियासत के ढहते खण्डहर को

मिल गई अँगरेज शक्ति की।

निजाम ने वेलेजली की "आश्रि

रख ली। तब से १५ अगस्त

वह अँगरेजों पर आश्रित ही

आश्रय आज खसक चुका है।

निजाम के पिट्ठू उसके

अधिकारों की दुहाई दे रहे हैं

उनकी बदौलत डेढ़ करोड़

मनुष्यता से वंचित किये रखना

जो आज दुनिया में कहीं कोई

कर पा रही। इतिहास यह कहता

आज से सवा दो सौ बरस पहले

विदेशी सैनिक ने एक ढहते पेड़ की

दक्खिनी भारत में रोपनी चाही

पचीस बरस तक वह गिरते-पड़ते

सँभाले रहा, तब से दो सौ बरस

दूसरों की टेक लेकर खड़ी रही,

टेक हट गई है और वह घुन

ठूँठ जिसकी जड़ें अपनी पेंदी में कभी

नहीं गईं, एक ठुड्डा खाकर गिर

को है।

निजाम का बड़ा ठाठ है, उस

से उसका दिमाग फिरा लगता है।

इतिहास यह कहता है कि दो सौ

उसका जो भी ठाठ रहा वह

कठपुतली का ठाठ था। और समय

तकाजा है कि वह कठपुतली का

आज खतम किया जाय।

ऊब चुकी है।

हैदराबाद रियासत का

तेलंगाना—आन्ध्रदेश—है। उसके

मार्द्ध के उत्तरी पाँच जिले महाराष्ट्र हैं

दक्खिनी तीन कन्नड। भारतीय भाषा

के क्षेत्र भारतीय जनता के तीन

वर्ष के इतिहास की उपज हैं।

का मुतालबा यह है कि प्रत्येक भाषा

एक स्वतन्त्र प्रान्त हो। जनता की

तीन हजार बरस की रचना को दो

बरस का कठपुतलियों का खेल मिटा

सका। वह उसे सिर्फ मकड़ी के

की तरह ढके हुए है। आज उस

को साफ करने का दिन आ गया है।

(कापीराइट, आजाद हिन्द पत्रसमवाय

ल आपकी किस्मत बतायेगा

र्ष की जगत्-प्रसिद्ध सच्ची साइन्स ज्योतिष विद्या गहरे अन्धकार में रोशनी है, यदि आप शीघ्र ही इस संसार में बदलनेवाली अपनी किस्मत र का ठीक उतरा हुआ फोटो समय से पहले देखना चाहते हैं तो आज कार्ड पर अपना पूरा पता और किसी दिलपसन्द फूल का नाम लिखकर हम ज्योतिष विद्या के हिसाब से आपके आनेवाले १२ मास का लाभ, नौकरी, उन्नति, व पतन, स्त्री संतान का सुख, तन्दुरुस्ती, रोग, किसी मेल-जोल, दिलपसन्द सगाई, मुकदमा परीक्षा में सफलता, लाटरी, किसी गुप्त ढंग से धन की प्राप्ति अर्थात् तिथि कार्ड से लेकर कुल एक होनेवाली सब बातों का विवरण अर्थात् मासिक वर्षफल बनाकर केवल वी॰ पी॰ द्वारा भेज देंगे डाक-व्यय इसके अतिरिक्त होगा। साथ ही की शान्ति का उपाय भी लिख दिया जायगा ताकि आनेवाले कष्टों को दूर सके। एक बार का अनुभव आपको बता देगा कि हम ज्योतिष विद्या में ज्ञान रखते हैं ठीक न हो तो दुगुनी कीमत वापिस ।

श्री शिवशंकर ज्योतिष आश्रम (रजिस्टर्ड)
(D.D.) राहों (इ॰ पी॰ आर)

रेशमी कपड़ा एक रुपया गज

आपको किसी जगह नहीं मिल सकता। परन्तु हम आपको बाजार से बहुत ही सस्ते निरखों पर दे सकते हैं। जो कि आपको कोड़ियों के भाव पड़ेगा। अमरीकन सफेद सिल्की पैराशूट १२ कलीवाला बिना जोड़ के रेशमी डोरी के साथ कीमत ८ रुपये फी पैराशूट पैकिंग मुफ्त। महसूल डाक १।।≡)। इकट्ठे ३ मँगवाने पर महसूल डाक ३।।।≡) आयेगा। नमूना मँगवाकर थोक आर्डर देकर फायदा उठायें। यह माल दूसरे सिल्की कपड़ों की निस्बत बहुत अच्छा है, और रियायत है। पहले इसकी कीमत बहुत ज्यादा थी। मगर अब स्टाक खतम करने के लिये यह रियायती थोक का भाव है। ३ पैराशूट महसूल डाक-समेत आपको घर में २७।।।≡) पड़ेंगे। जरूर मँगवावें। फौरन मँगवावें! वरना स्टाक खतम होने पर पछताना पड़ेगा। क्योंकि और माल अमरीका से नहीं आ रहा है।

नोट :—हर आर्डर के साथ पाँच रुपये बजरिये मनीआर्डर आना जरूरी है। दस पैराशूट इकट्ठे मँगवाने और उनकी कीमत पेशगी भेजने पर एक रिस्टवाच जिसकी खूबसूरती की गारण्टी दस साल है, मुफ्त दी जायेगी।

सोल एजेंट—अमरीकन कारपोरेशन D. A. पुतलीघर, अमृतसर

टी, मजेदार, सुन्दर एवं सस्ती पुस्तकें

ती अप्सरायें—५० फिल्मी अभिनेत्रियों की रंगीन जीवनी एवं उनमें मनो- । मूल्य २।=)

जलतरंग—नये एवं पुराने ने हुये गानों का मनोहर १।=)

की चाँदनी रातें—बम्बई के त का मनोरंजक वर्णन दिया मूल्य १।=)

की चिठ्ठियाँ—इसमें फिल्म में होनेवाले व्यभिचार का भंडा- गया है। मूल्य २।=)

* चित्रमय रजतपट—भारत की प्रमुख अभिनेत्रियों के ३६ तिरंगे चित्रों का एलबम। मूल्य ३।।)

* लखनऊ की रंगीन रातें—लखनऊ के विलासी जीवन की १० रंगीन एवं नग्न कहानियाँ। मूल्य १।=)

* फिल्मी सितारे—प्रसिद्ध अभिनेताओं की जिन्दगी के मनोरंजक हालात दिये हैं। मूल्य १।=)

* विवाहित मनोरंजन—प्रथम मिलन की भाँति मादक यह पुस्तक आपके विवाहित जीवन को सुखमय बना देगी मूल्य १।।=)

ता—अनिल कम्पनी (१२) फुलट्टी, आगरा

ऐतिहासिक भौतिकवाद

लेखक, भूतपूर्व काकोरी-कैदी
श्री मन्मथनाथ गुप्त और श्री रमेन्द्र वर्मा
लगभग ५०० पृष्ठों के सजिल्द ग्रन्थ का
मूल्य केवल ६) रुपये।

मार्क्सवाद में ऐतिहासिक भौतिकवाद की गहनता को सरलतापूर्वक समझने के लिए इस ग्रन्थ की उपयोगिता अद्वितीय है। समाजवाद समझनेवालों के लिए इसका अध्ययन अपरिहार्य है।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

टी. "तपेदिक" चाहे फेफड़ों का हो या अँतड़ियों का बड़ा भयंकर रोग है

पहला स्टेज	(२) दूसरा स्टेज	(३) तीसरा स्टेज	(४) चौथा स्टेज	अंतिम स्टेज
मामूली ज्वर खाँसी	ज्वर-खाँसी की अधिकता	शरीर सूखना, ज्वर-खाँसी की भयंकरता	सब ही बातों की भयंकरता शरीर पर वर्म, दस्त आदि का शुरू होना	रोगी की मौत और भयंकर जर्मों का इधर-उधर फैलना

(जबरी)——(Jabri)——(जबरी)——(Jabri)

T. B. टी. बी. "तपेदिक" और पुराने ज्वर के हताश रोगियो ! देखो—

श्री नागेश्वरप्रसाद तिवारी, मास्टर स्कूल नडुगावाँ, पो॰ डाल्टनगंज (बिहार) से लिखते हैं—मैं अनेक दिनों से ज्वर-खाँसी र था। बलगम आदि की परीक्षा पर "तपेदिक" (राज्यक्ष्मा) रोग ही साबित हुआ। मैं रोग का नाम सुनते ही बहुत घबड़ा सी बीच परमात्मा की कृपा से आपकी अमृतरूपी दवा "जबरी" का नाम सुना। तुरन्त आर्डर देकर पार्सल प्राप्त किया। विधिपूर्वक सेवन किया। उसके अमृतरूपी गुणों ने मुझे आश्चर्य में डाल दिया। थोड़े ही दिनों में शरीर का रङ्ग ही बदल । ऐसा मालूम होने लगा, जैसे कुछ रोग ही न रहा, अधिक लिखना व्यर्थ है। यथार्थ में आपकी औषधि इस दुष्ट रोग के लिए मूल्य है। जितनी भी प्रशंसा की जावे कम है।

(२) डा॰ ठाकुरसिंह नेपाली मु॰ कटैया पो॰ हरलखी जिला दरभंगा से लिखते हैं। आपकी भेजी दवा "जबरी" बहुत ही दायक प्रतीत हुई। कृपया लौटती डाक से पूरा कोर्स भेज दें।

इसी प्रकार के पहले भी दसों प्रशंसापत्र आप इन्हीं कालमों में देख चुके हैं। भारत के कोने-कोने में लोगों ने यह मान लिया है इस दुष्ट रोग से रोगी की जान बचानेवाली यदि कोई औषधि है तो वह एकमात्र "जबरी" ही है। "जबरी" के नाम में ही न के पूज्य ऋषियों के आत्मिक बल का कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि प्रथम दिन से ही इस दुष्ट रोग के जर्म नष्ट होना शुरू जाते हैं। यदि—आप इस तरफ से हताश हो चुके हों तो भी परमात्मा का नाम लेकर एक बार "जबरी" की परीक्षा करें। र्थ ही हमने १० दिन का नमूना रख दिया है, जिसमें तसल्ली हो सके। बस—आज ही आर्डर दें। अन्यथा फिर वही न होगी कि—अब पछताए क्या होत है—जब चिड़िया चुग गई खेत। सैकड़ों डाक्टर, हकीम, वैद्य अपने रोगियों पर करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार-द्वारा आर्डर देते हैं। हमारा तार का पता केवल "जबरी" जगाधरी (JABRI-JAGADHRI) काफी है। तार में अपना पूरा पता दें। मूल्य इस प्रकार है—जबरी स्पेशल नम्बर १ जिसमें साथ साथ ताकत ने के लिए मोती, सोना, अब्रक आदि मूल्यवान् भस्में भी पड़ती हैं। पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु॰, नमूना १० दिन २०) रु॰। जबरी नं॰ २ जिसमें केवल मूल्यवान् जड़ी-बूटियाँ हैं, पूरा कोर्स २०) रु॰, नमूना १० दिन का ६) रु॰, महसूल अलग है। आर्डर समय नं॰ १ या नं॰ २ तथा पत्र का हवाला जरूर दें।

ता—रायसाहब के॰ एल॰ शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड बैंकर्स (D) 'जगाधरी' पूर्व पंजाब (E. P.)

मुफ्त ! मुफ्त !!

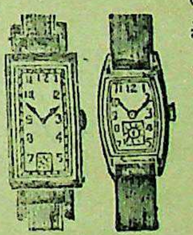

लन्डन न्यू गोल्ड के जेवरात को मशहूर करने के लिए हमने डायरी कैलेन्डर १९४८ और असली रिस्ट वाच गारंटी १५ साल मुफ्त देने का फैसला किया है यदि आप बिलकुल मुफ्त लेना चाहते हैं तो आज ही अपना नाम व पूरा पता साफ साफ लिखकर भेज दें मगर जल्दी करें वरना यह समय बार बार हाथ न आयेगा।

लंडन सी॰ कम्पनी,
(D.D.A.) पो॰ ब॰ २, अमृतसर।

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!

आप घर बैठे मैट्रिक, एफ॰ ए॰, बी॰ ए॰, पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से और होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ्त मँगायें। पता :—

इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

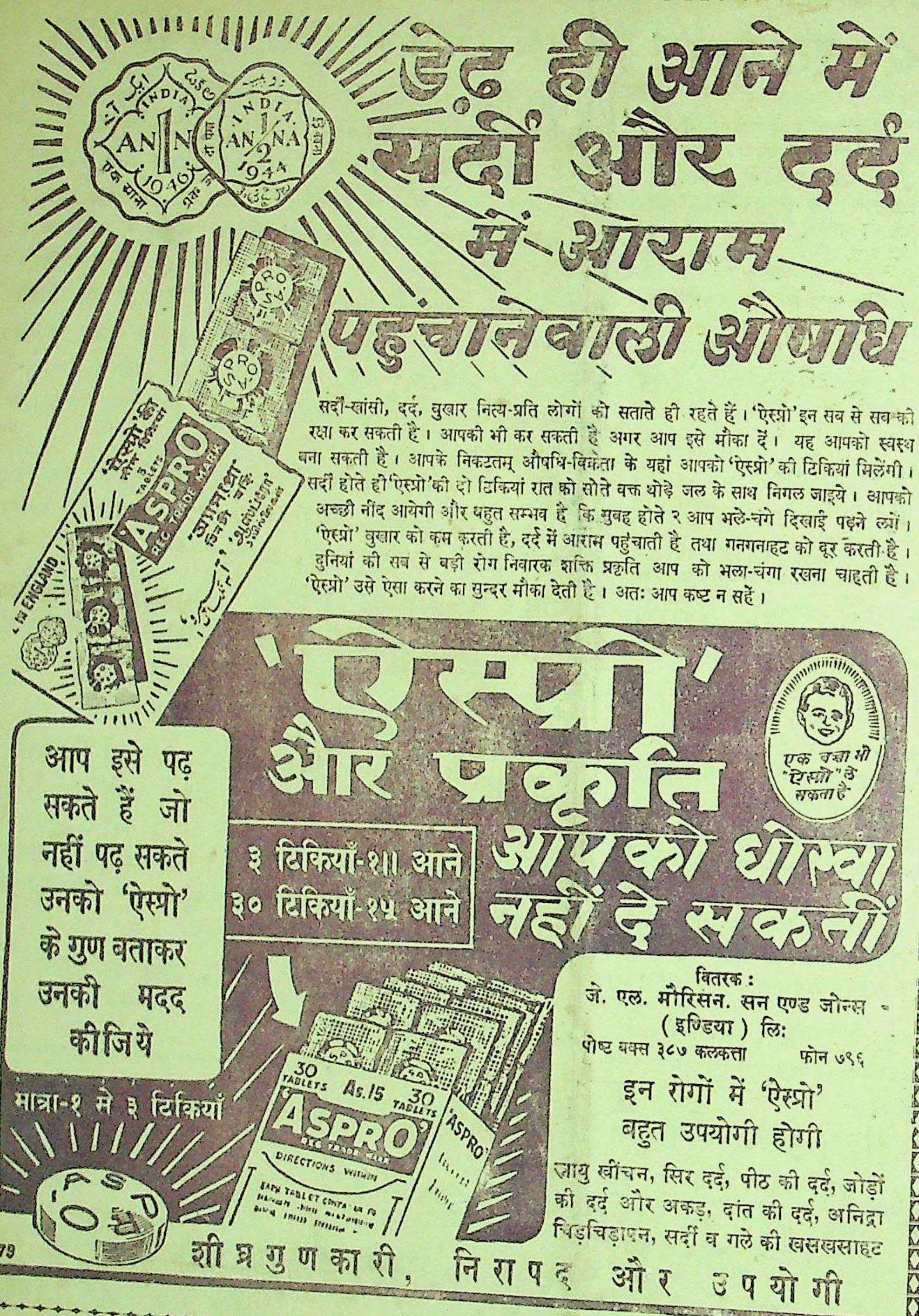
INDIA
1
ANNA
1946
एक आना
INDIA
1/2
ANNA
1944
ASPRO
ASPRO
REG. TRADE MARK
ENGLAND
एक बच्चा भी "ऐस्प्रो" ले सकता है
30 TABLETS As.15 30 TABLETS
ASPRO
DIRECTIONS WITHIN
ASPRO
79

डेढ़ ही आने में सर्दी और दर्द में आराम पहुंचानेवाली औषधि

सर्दी-खांसी, दर्द, बुखार नित्य-प्रति लोगों को सताते ही रहते हैं। 'ऐस्प्रो' इन सब से सब की रक्षा कर सकती है। आपकी भी कर सकती है अगर आप इसे मौका दें। यह आपको स्वस्थ बना सकती है। आपके निकटतम् औषधि-विक्रेता के यहां आपको 'ऐस्प्रो' की टिकियां मिलेंगी। सर्दी होते ही 'एस्प्रो' की दो टिकियां रात को सोते वक्त थोड़े जल के साथ निगल जाइये। आपको अच्छी नींद आयेगी और बहुत सम्भव है कि सुबह होते २ आप भले-चंगे दिखाई पड़ने लगें। 'ऐस्प्रो' बुखार को कम करती है, दर्द में आराम पहुंचाती है तथा गनगनाहट को दूर करती है। दुनियां की सब से बड़ी रोग निवारक शक्ति प्रकृति आप को भला-चंगा रखना चाहती है। 'ऐस्प्रो' उसे ऐसा करने का सुन्दर मौका देती है। अतः आप कष्ट न सहें।

'ऐस्प्रो' और प्रकृति आपको धोखा नहीं दे सकतीं

आप इसे पढ़ सकते हैं जो नहीं पढ़ सकते उनको 'ऐस्प्रो' के गुण बताकर उनकी मदद कीजिये

३ टिकियाँ-१॥ आने
३० टिकियाँ-१५ आने

मात्रा-१ से ३ टिकियाँ

वितरक :
जे. एल. मौरिसन. सन एण्ड जोन्स
(इण्डिया) लि:
पोष्ट बक्स ३८७ कलकत्ता फोन ७९६

इन रोगों में 'ऐस्प्रो' बहुत उपयोगी होगी

वायु खींचन, सिर दर्द, पीठ की दर्द, जोड़ों की दर्द और अकड़, दांत की दर्द, अनिद्रा चिड़चिड़ापन, सर्दी व गले की खसखसाहट

शीघ्रगुणकारी, निरापद और उपयोगी

फिल्म ऐ

यदि आप फिल्म ऐक्टर बनकर १००) रु० से १५००) रु० मासिक तक कमाना चाहते हों तो आज ही लिखें। थोड़ा लिखा पढ़ा होना जरूरी है। अपना नाम व पूरा पता

डायरेक्टर इम्पीरियल
(फिल्म डिपार्टमेंट)
पो० ब० ६१ (D.D.A.)

१६॥) में ज्वेलवाली

स्वीसमेड ठीक समय देनेवाली

गारण्टी। गोल या स्क्वायर सुपिरियर २०), फ्लाट सेप ३०), फ्लाट सेप रोल्ड गारण्टी ५५), फ्लाट क्रोम केस ३८), फ्लाट रोल्ड गोल्ड ७५)।

रेक्टेंगुलर, कर्व या टोनो केस ४२), सुपिरियर ६०), रोल्ड गोल्ड १५ ९०) अलार्म टाइम पीस कीमत बीग साइज २५) पोस्टेज अलग घड़ी लेने से माफ।

एच० डेभिड, एण्ड को०
पो० बक्स नम्बर ११४२४,

फिल्मी दुनिया मुफ्त

सिनेमा का भेद बतानेवाली "फिल्मी दुनिया" अपना और के पूरे पते लिखकर मुफ्त मँगाइ
पता—मधुर मन्दिर, हाथरस,

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=), डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

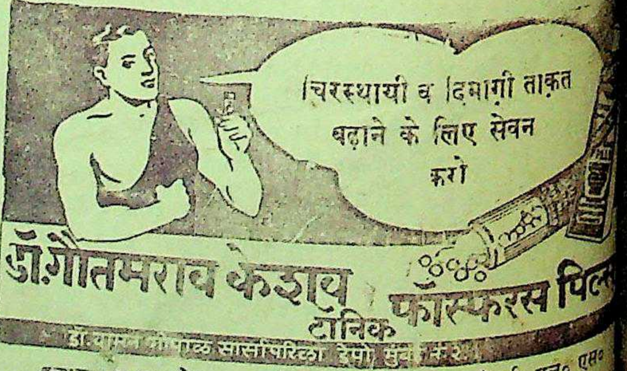
चिरस्थायी व दिमागी ताक़त बढ़ाने के लिए सेवन करो
डॉ. गौतमराव केशव
टॉनिक
फॉस्फरस पिल्स

इलाहाबाद क एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्नूलाल जौहरी एल० एस०
धोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [कि० मित्रा-[illegible] लिमिटेड, १४ प[illegible]ल रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

र, ४ जुलाई,
म ऐ
आप फिल्म
कर १००)
५,००) रु०
क कमाना
तो आज ही
ीड़ा लिखा
जरूरी है।
व पूरा पता
इम्पीरियल
फिल्म डिपार्टमेंट
६१ (D.D.A.)
ीं ज्वेलवाली
ठीक समय देनेवाली
ल या स्वायर
), फ्लाट सेप क्रोमि
सेप रोल्ड गोल्ड
, फ्लाट
=), फ्लाट
५)।
कर्ण या दोनों
सुपिरियर ४५)
गोल्ड १५
इम पीस कीमत
) पोस्टेज अलग
।
, एण्ड को०
म्बर ११४२४,
दुनिया मुफ्
भेद बतानेवाली
" अपना और
कर मुफ्त मँगा
दर, हाथरस,
ताक़त
न
स पिल
एल० एम०
प्रसाद मिश्र

सचित्र
ाहिक
७।।) : प्रति संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

११ जुलाई, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 11th JULY, 1948

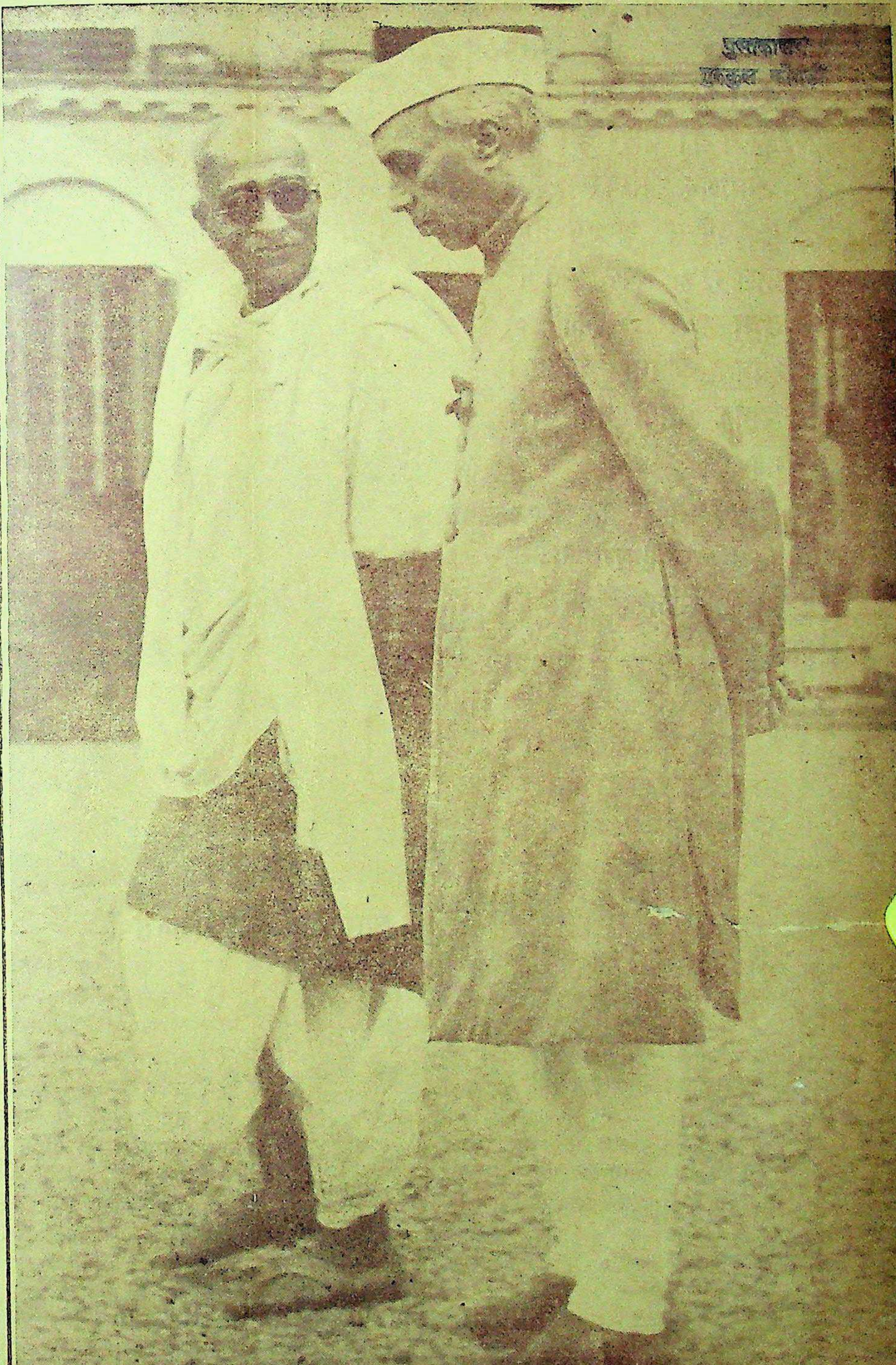

हिन्दी भाषा-भाषी

भारतीय विधान के कुछ पहलू

रामचरितमानस

टीकाकार—डाक्टर श्यामसुन्दरदास

'मानस' का महत्त्व किसी से छिपा नहीं है। भारतवर्ष में तो इसका मान है ही, अन्य देशों में भी इस अमर काव्य का आदर है। यह प्रामाणिक संस्करण इधर कई वर्ष से अप्राप्य था। हाल में ही छपकर तैयार हुआ है। ग्राहकों को शीघ्रता करनी चाहिए। अधिक प्रतियाँ नहीं छापी गई हैं।

बड़े आकार के १२०० पृष्ठ। रंग-बिरंगे दर्जनों चित्र। सजिल्द प्रति का

मूल्य १२) रुपये

जहाँ पर हमारी ब्रांच या एजेंसी है वहाँ ख़रीदने पर डाकख़र्च की बचत होगी।

सचित्र
रामचरितमानस
मूल्य १२) बारह रुपये

हमारी ब्रांचें और एजेन्सियाँ

१ इलाहाबाद हेड आफ़िस—इंडियन प्रेस लिमिटेड, ३६ पन्नालाल रोड
२ इलाहाबाद सिटी—न्यू ऐरा बुकहाउस, हिवेट रोड
३ आगरा—आगरा पब्लिशिङ्ग हाउस, बाग़ मुज़फ़्फ़र ख़ाँ
४ अजमेर—इंडियन प्रेस लिमिटेड, कचहरी रोड
५ अलमोड़ा—डिस्ट्रिक्ट बुकडिपो, लालबाज़ार
६ बनारस—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, बनारस छावनी
७ बाँदा—बुंदेलखण्ड पब्लिशिङ्ग हाउस
८ बरेली—इंडियन बुकडिपो
९ बम्बई—भारतीय पुस्तक भण्डार, कालबा देवी रोड
१० बीकानेर—गर्गबुक कम्पनी, कोट के भीतर
११ कलकत्ता—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, २२।१ कार्नवालिस स्ट्रीट
१२ कानपुर—साहित्य-रत्नालय, श्रद्धानन्द पार्क
१३ दिल्ली—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, नई सड़क
१४ गोरखपुर—पुस्तक-स्थान, बख़्शीपुर
१५ ग्वालियर—लायल बुकडिपो, पाटनकर बाज़ार, लश्कर
१६ इन्दौर—नवयुग साहित्यसदन, खजूरी बाज़ार
१७ जयपुर—गोपाल बुकडिपो, त्रिपौलिया बाज़ार
१८ जबलपुर सी० पी०—इंडियन प्रेस, लिमिटेड
१९ लखनऊ—इंडियन बुकडिपो, अमीनुद्दौला पार्क
२० मेरठ—पुस्तक-स्थान, वैस्टर्न कचहरी रोड
२१ पटना—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, पो० आ॒० बाँकीपुर
२२ राँची—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, कोर्ट रोड

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

देशदूत

र्ष १०, संख्या ४४] [रविवार, ११ जुलाई, १९४८

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

काश्मीर के युद्ध में लड़ते हुए डियर उस्मान को वीरगति प्राप्त ई, यह अत्यन्त दुखद घटना है। डियर उस्मान आजमगढ़ जिला युक्तप्रांत) के रहने वाले थे और स्तानियों के कट्टर दुश्मन थे। र में नौशारो के युद्ध में ब्रिगेडियर न ने दुश्मनों के दाँत खट्टे कर दिये विजय प्राप्त की। काश्मीर पर करने वाले पाकिस्तानी पिछले से ब्रिगेडियर उस्मान के जान बन गये थे, क्योंकि उस वीर की कुशल रणनीति के आगे अंग्रेजों तथा काश्मीर हड़प नीयतवालों की दाल नहीं किन्तु ईश्वरीय लीला भी । मनुष्य सोचता कुछ है और कुछ। ब्रिगेडियर उस्मान के प्राप्त होने से भारतीय सेना कुशल सेनापति से रहित हो गई, ही परिताप की बात है। इस किस्तानी दुश्मन प्रसन्नता के दीप रहे होंगे। किन्तु समय पलटा और ब्रिगेडियर उस्मान का भूत स्तानियों को कभी न कभी धर । क्या भारत के पंचमांगी जासूस ब्रिगेडियर उस्मान ऐसे से शिक्षा ग्रहण करेंगे? भारत भी जायेंगे और पाकिस्तानियों से सहायता करते रहेंगे?

* * *

जाता है कि हैदराबाद के निजाम गद्दी छोड़कर टर्की भागने की तैयारी रहे हैं। उनकी जगह उनके सुपुत्रजान पर बैठने वाले हैं। अपने राम की में भी यही आता है कि अंत में तो होगा ही। जूनागढ़ के नवाब साहब ने पलायन करके अपने को आफत से था। निजाम साहब को भी यदि ही करना पड़े तो आश्चर्य की बात । बकरे की माँ कितने दिन तक खैर गी? निजाम न जाने कितने दिनों भारत सरकार से समझौते की वार्ता करते रजाकार बन बैठे और अब उन्हें खिदमतगार तो बनना ही पड़ेगा। है कि निजाम साहब स्वतन्त्र रहना हैं, भारत सरकार के बन्धन में नहीं। अंग्रेजी हुकूमत थी तब तक तो हलुआ, पूड़ी और परेंठा सब कुछ था किन्तु जब से अँगरेज भारत से चले गये और भारतीयों का शासन शुरू हुआ तब से केवल परेंठा ही उन्हें पसन्द आता है। इसलिए अब वह परेंठा खाने के लिए टर्की की ओर पलायन करने की सोच रहे हैं। उनके सुपुत्र पूड़ी खाने के लिए हैदराबाद में रहने की इच्छुक हैं। देखना है, पूड़ी, परेंठा और हलुआ अभी क्या क्या गुल खिलता है?

* * *

काश्मीर की समस्या की जाँच करने के लिए संयुक्तराष्ट्र संघ की ओर से नियुक्त कमीशन शीघ्र ही दिल्ली आ रहा है। यह कमीशन काश्मीर की समस्या की जाँच करेगा और संयुक्त राष्ट्रसंघ के सामने अपनी रिपोर्ट पेश करेगा। पाकिस्तान के अधिकारी कमीशन से सहयोग करेंगे किन्तु भारत के अधिकारी पूरी तरह से सहयोग करने के लिए अभी तैयार नहीं हैं। अपने राम की समझ में कमीशन में जितने सदस्य शामिल हैं वह अमेरिका और ब्रिटेन के पक्के भेदिये हैं। वह काश्मीर का फैसला नहीं करने आ रहे हैं बल्कि पाकिस्तानियों की सहायता की तिकड़म करने के लिए आ रहे हैं कि काश्मीर किसी प्रकार पाकिस्तान में सम्मिलित किया जा सके। सच तो यह है कि इस कमिशन का बहिष्कार भारत की ओर से उसी तरह होना चाहिये जिस तरह कांग्रेस ने किसी समय ‘साइमन कमीशन’ सहयोग न करने का सबसे सुन्दर उपाय यही है। किन्तु नेहरू सरकार इस समय कमीशन के सम्बन्ध में लटकन मंत्र का जाप कर रही है। खुदा हाफिज!

* * *

हैदराबाद की पैंतरेबाजी देखकर भारत सरकार ने आर्थिक प्रतिबन्ध का हथियार उठाया है। अब हैदराबाद में भारत से सोना-चाँदी, नोट, रुपये-पैसे का अदान-प्रदान नहीं हो सकेगा। निजामी सिक्के निजामी सीमा के भीतर चक्कर काटेंगे और भारतीय सिक्के तथा कागजी नोट निजामी सीमा के बाहर। अपने राम की समझ में भारत-सरकार ने काम तो अच्छा किया है किन्तु हैदराबाद के पास अभी खाने के लिए कुछ दिन तक के लिए है। करोड़ों की सम्पत्ति निजाम ने इकट्ठी कर रखी है। फिर यदि कमी भी होगी तो रजाकार किस दिन! काम आवेंगे? एक तरह से हैदराबाद में रजाकारों की लूट-मार से निजाम का खजाना ही तो भरा जा रहा है। देखना है आसफजाही झंडा लाल किले पर लगता है या राष्ट्रीय तिरङ्गा झंडा निजाम के किले पर?

* * *

खबर मिली है कि हैदराबाद में अब वह समय जल्दी आने वाला है, जैसी स्थिति द्वितीय महायुद्ध के समय भारत की थी। उस समय भारत में ए० आर० पी०, हवाई जहाजों के अड्डों का निर्माण और पैराशूटों की कवायद जोरों से चालू की गई थी। निजाम-सरकार के सामने भी भारत-सरकार का वही भूत बड़े भयंकर रूप में दिखाई दे रहा है कि युद्ध का डंका किसी न किसी समय बजाने लगेगा। निजामी-राज्य में भी आज-कल पैराशूटों की कवायद, ए० आर० पी० की स्थापना, हवाई जहाजों के अड्डों की मरम्मत और बम की गोलों से बचने के लिए सुरक्षित स्थानों का निर्माण-कार्य शुरू हो गया है। अपने राम की राय में चूँकि निजाम स्वतंत्र रहना चाहते हैं और रजाकार लाल किले पर आसफजाही झंडा फहराना चाहते हैं उसी का मोहन भोग उन्हें मिल रहा है।

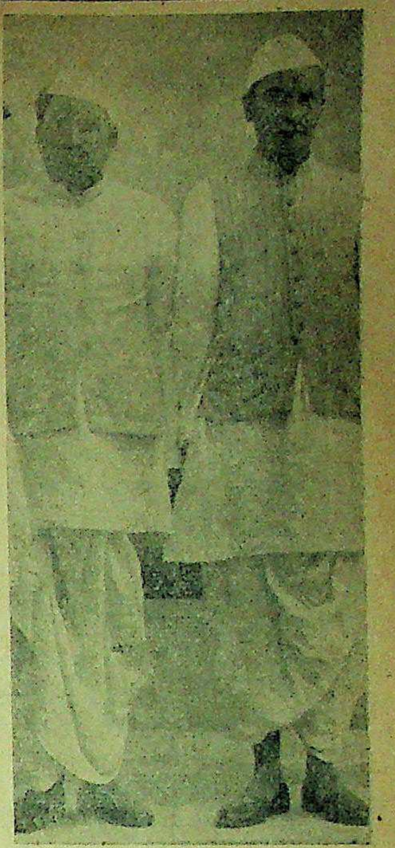

राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद और माननीय श्री जगजीवनराम, श्रम-मन्त्री भारत सरकार। दोनों नेता आजकल मजदूरों तथा श्रमजीवियों की समस्या को सुलझाने में लगे हैं।

अभी क्या, अभी तो सिर्फ आर्थिक प्रतिबंध का ही कार्य प्रारम्भ हुआ है जब हवाई जहाजों के गड़गड़ाने की आवाज सुनाई देगी तब निजाम को उर्द अरहर का भाव मालूम होगा। अँगरेज, अमरीकी और पाकिस्तानी उस समय एक भी काम न आवेंगे, सिवाय इसके कि वह सब इकट्ठे होकर संयुक्त राष्ट्रसंघ का दरवाजा खटखटायें। अंत में यही होगा ही।

* * *

अँगरेज एक और नया नाटक शुरू करने वाले हैं। जब से अफगानिस्तान ने पाकिस्तान से कँराची आदि की माँग की है तब से अंगरेजों के कान खड़े हो गये हैं। अंगरेज अफगानिस्तान के भूतपूर्व बादशाह अमानउल्ला खाँ को बुलाकर पेशावर में एक नकली अफगानी राज्य कायम करने वाले हैं। अपने राम जानते हैं कि इन्हीं अंगरेजों ने एक जमाना था जब कि अमानउल्ला को अफगानिस्तान की गद्दी से निकलवाकर जहन्नुम में भेजवा दिया था किन्तु अब मतलब पर जहन्नुम के उस गड़े मुर्दे को निकालकर बड़ी आवभगत के साथ फिर बादशाहत दिलाने की फिक्र में परेशान हो उठे हैं। पाकिस्तान अभी क्या क्या करायेगा यह तो आगे आगे दिखाई पड़ेगा। अंगरेजों ने पाकिस्तान की स्थापना इसीलिये की है, नहीं तो आज योरोप के सिवा और कहीं दिखाई न पड़ते। अँगरेज तकदीर के अभी सिकंदर हैं, इसमें सन्देह की गुंजाइश नहीं।

* * *

बापू!

लेखक, प्रोफेसर ‘अंचल’ एम० ए०

रक्त-रंजित युग खड़ा निष्कंप तुमको सोचता!
दीप आँधी भर जला पर शान्त नभ में बढ़ गया
दासता में साथ था वह मुक्ति में क्यों कढ़ गया
मूर्ति सूनी—देवता बलिवेदिका पर चढ़ गया
रक्त-रंजित युग खड़ा—
रो रहा खो सिन्धु जिसकी बिन्दु वह कितना सजल
तप अनोखा है—तपस्वी बन स्वयं जाये अनल
है चकित—देखी न उसने साधना ऐसी विमल
रक्त-रंजित युग खड़ा—
है अचल विश्वास कितना है अडिग कितना हृदय
है अनश्वर जीव कितना है अभी कितना अभय
भव्य है कितना मरण—संकल्प है कितना अजय
रक्त-रंजित युग खड़ा—
है निरामय देह कितनी प्राण कितने ज्योतिधर
है समर्पण सत्य कितना मौन कितना है मुखर
है शिखा वह ऊर्ध्व कितनी—भस्म है कितनी अमर
रक्त-रंजित युग खड़ा निष्कंप तु·को सोचता!

सम्पादक का पृष्ठ

माननीय टंडन जी !

संयुक्तप्रांत के वयोवृद्ध और त्यागी राष्ट्रीय नेता माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुन लिये गये। माननीय श्री रफी अहमद किदवई अन्तिम समय में चुनाव से हट गये। पिछले कई महीनों से प्रान्त में सभापति सम्बन्धी निर्वाचन के प्रश्न को लेकर कांग्रेस-जनों में पारस्परिक मतभेद और कटुता उत्पन्न हो गई थी। पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा कांग्रेस के सभापति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ने पारस्परिक एकता तथा मतभेद को दूर करने का विशेष प्रयत्न किया किन्तु अन्त में माननीय टंडन जी विजयी हुए और अध्यक्ष चुने गये। टंडन जी की संयुक्तप्रांत ही नहीं भारतवर्ष के उन कर्मठ और तपस्वी राष्ट्रवादियों में गणना होती है जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता की प्राप्ति और उसकी रक्षा के लिये अपने जीवन का बलिदान किया है। हम जानते हैं कि जहाँ तक चरित्र, बलिदान, त्याग तथा तपस्या का प्रश्न है वहाँ तक टंडन जी की कोटि के नेता इने ही गिने हैं। टंडन जी ने तपस्वी जीवन व्यतीत करते हुए राष्ट्रीय प्रगति में भाग लिया है और आज तक वह उसी मार्ग पर अविचलित रूप से चले जा रहे हैं। यदि वह बड़े बाप के बेटे होते अथवा पूँजी की कमी न होती तो आज वह जाने कहाँ से कहाँ पहुँच गये होते क्योंकि उनकी सुयोग्यता में किसी प्रकार की कमी नहीं है। उनकी स्पष्टवादिता भी उनके मार्ग में बाधक रही है। राजनैतिक क्षेत्र में जो कुछ भी उन्हें समयानुसार उचित समझ पड़ा उसे स्पष्ट करने में उन्होंने कभी आगा-पीछा नहीं किया। उन्होंने राष्ट्र तथा जनता के वास्तविक हित की ओर अधिक ध्यान दिया, अपनी तथा अवसरवादिता की ओर नहीं। हिन्दी के भारतीय प्रश्न को लेकर वह पिछली अर्द्ध-शताब्दी से युद्ध करते हुए आगे बढ़ते चले जा रहे हैं और इसके विपरीत किसी प्रकार का समझौता करने के लिये तैयार नहीं। भारतीय संस्कृति के पुनर्जीवन, राष्ट्रीय एकता की स्थापना, अनुशासन का पालन तथा आचरण की विशुद्धता में टंडन जी का आदर्श और स्पष्टवादिता सदा से प्रसिद्ध है। भारतीय सिद्धान्तों और आदर्शों की रक्षा के लिये वह कठिन से कठिन त्याग करने को तत्पर रहते हैं। यह सब टंडन जी का एक विशुद्ध चारित्रिक तथा नैतिक गुण है।

यदि माननीय टंडन जी सर्वसम्मति से इस समय प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं तो कांग्रेस-जनों ने उन पर किसी प्रकार की कृपा नहीं की, वरन् वह इस पद के पूर्ण रूप से अधिकारी हैं, और इस प्रांत के चोटी के राष्ट्रीय नेताओं में वह वयोवृद्ध भी हैं। कम से कम राष्ट्र की इस नाजुक परिस्थिति में जब कि प्रांत संघर्ष के बीच गुजर रहा है, जनता की कठिनाइयाँ दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं, भ्रष्टाचार सीमा पार कर रहा है, स्वार्थ और लोलुपता कांग्रेस-जनों में पराकाष्ठा को पहुँच रही है, पारस्परिक राग-द्वेष और पदलोलुपता जीवन में कटुता लाती जा रही है, ऐसे समय में टंडन जी का सभापति चुना जाना इस बात की चुनौती है कि प्रांत में नवीन जीवन और स्फूर्ति का उदय होना आवश्यक है जिससे राष्ट्रीय वातावरण शांत, विशुद्ध और भारतीयता से पूर्ण हो। हम माननीय टंडन जी को बधाई देते हैं कि प्रांत की राष्ट्रीय बागडोर उनके हाथ में आई है और आशा होती है कि यहाँ का राजनैतिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक स्तर अवश्य ऊँचा होगा। साथ ही हम प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के उन सभी सदस्यों को बधाई देते हैं जिन्होंने एकमत से ऐसे चरित्रवान और कर्मठ राष्ट्रीय नेता का अध्यक्ष-पद के लिये चुनाव किया। हमें आशा है कि टंडन जी के आदर्शों, नैतिक आचरणपूर्ण कार्यों तथा कर्मठता का जनता पर ही नहीं प्रांतीय सरकार पर भी प्रभाव पड़ेगा, और प्रांत का भविष्य उज्ज्वल होगा।

* * *

कांग्रेस और देशी रियासतें

कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने कांग्रेस के आगामी अधिवेशन के स्थान के लिए जयपुर को चुना है। इसके पूर्व कांग्रेस के अधिवेशन देशी राज्य में नहीं हुए थे। वर्तमान रियासती-परिस्थिति पर दृष्टिपात करने से वर्किंग कमेटी का यह निर्णय सर्वथा उपयुक्त है। ब्रिटेन की टोरी पार्टी को भारतीय स्वतन्त्रता की सुरक्षा पर विश्वास नहीं था। उसके कट्टरपंथी नेता यह सोचते थे कि भारतीयों द्वारा भारत का शासन-कार्य एक निश्चित काल तक के लिए ही सम्भव है, लेकिन नेहरू सरकार के सफल प्रयोगों ने उनकी आशाओं पर पानी फेर दिया। साथ ही भारतवर्ष को एक देश न मानकर ब्रिटेन की टोरी पार्टी ने इसे ६०० रियासतों का बण्डल कहकर पुकारा है। कुछ भी हो लेकिन टोरी पार्टी की आशाएँ निराशा में परिणत हो चुकी हैं। देशी रियासतों के सम्बन्ध में सरदार पटेल की सेवाएँ, और उनके विविध प्रयत्न सराहनीय हैं। सरदार पटेल ने रियासतों के लिए सभी उन्नत दृष्टिकोणों से महत्त्वपूर्ण उपाय किये हैं। इसलिये रियासतों को एक सूत्र में बाँधने की सफलता पर विचार करते हुए कांग्रेस का अधिवेशन जयपुर में करने के लिए उचित ही हुआ है।

कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने निश्चय किया है कि रियासतों की पर्लियामेंट्री कार्रवाइयाँ प्रान्तीय शासन के आधार पर होनी चाहिये। वास्तव में यह निर्णय सारगर्भित है। बहुत-सी रियासतों के प्रजामण्डल प्रान्तीय धारासभा के अनुकूल नहीं पड़ते। इस प्रकार की समस्त समस्याएँ इस निश्चय के साथ हल हो जायेंगी। इस समय जो कुछ पाकिस्तान में हो रहा है वह भारतीय संघ की सतर्कता को जागृत करने का एक साधन है। पश्चिमी पञ्जाब में मियाँ मुमताज और मुहम्मद खाँन दौलताना के भाषण 'इस्लाम खतरे में है' के विकृत रूप हैं। इस दृष्टि को ध्यान में रखते हुए कांग्रेस वर्किंग कमेटी का उपर्युक्त निर्णय प्रजा और सरकार दोनों के लिए लाभप्रद हो सकता है, यदि उसका प्रयोग गम्भीरता और बुद्धिमानी से किया जावे।

रियासती राजनीति के अन्तर्गत इस समय हैदराबाद का प्रश्न विचारणीय है। भारतीय सरकार इस सम्बन्ध में अभी तक तार्किक बुद्धि से काम करती आ रही है। फिर भी निजाम अपने राज्य में लोकप्रिय सरकार की स्थापना के लिए तैयार नहीं है। लेकिन इतना अवश्य है कि जनता के ऊपर नवाबी नीति जबरदस्ती नहीं लादी जा सकेगी। निजाम इसके प्रत्यक्ष प्रतीक हैं। इसलिए भारतीय सरकार को इस कठिनता के सुलझाने में एक स्पष्ट नीति का अवलम्ब लेना चाहिये। हमें आशा है कि नेहरू सरकार काश्मीर और हैदराबाद की ओर से तनिक भी गाफिल न रहेगी।

* * *

'शिक्षा' त्रैमासिक पत्रिका

संयुक्तप्रांत के शिक्षा-विभाग की ओर से शिक्षा-सचिव माननीय श्री संपूर्णानंद जी की संरक्षता में 'शिक्षा' नामक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ है। जुलाई का अंक हमारे सामने है। इसके प्रधान संपादक शिक्षा-विभाग के डाइरेक्टर श्री चुन्नीलाल सहानी तथा प्रबंध-संपादक श्री मनबोधनलाल श्रीवास्तव हैं। वार्षिक सात रुपया और प्रति अङ्क का मूल्य दो रुपया लागत-मात्र रखा गया है।

प्रांत में लोकप्रिय सरकार की स्थापना के बाद शिक्षा की दिशा में क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहा है। सार्वजनिक उपयोगिता की दृष्टि से शिक्षा की प्रगति में व्यापकता बढ़ती जा रही है। शिक्षा-प्रसार का विस्तार हो रहा है। अनिवार्य शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, औद्योगिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, स्वास्थ्य शिक्षा, सामाजिक शिक्षा तथा सैनिक शिक्षा की सफलता के नये नये आयोजनों तथा प्रयोगों को सफल बनाने का कार्यक्रम निर्धारित किया जा रहा है। इस दृष्टि से 'शिक्षा' का प्रकाशन अत्यन्त उपयोगी तथा उपयुक्त समय पर हुआ है। क्योंकि इसके द्वारा जन-साधारण को भी यह ज्ञात होगा कि लोकप्रिय सरकार शिक्षा की उन्नति तथा विकास की दिशा में किस प्रकार की प्रगति की ओर अग्रसर हो रही है तथा मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक तथा नैतिक उन्नति की दृष्टि से जनता का भविष्य कितना सुरक्षित है। भारत के विभिन्न प्रांतों के शिक्षा-विभागों की प्रगति को ध्यान में रखते हुए संयुक्तप्रान्तीय शिक्षा-विभाग द्वारा इस प्रकार का उपयोगी प्रकाशन अपने ढंग का अकेला, अद्वितीय और प्रथम है। 'शिक्षा' के द्वारा अन्य प्रांतीय लोकप्रिय सरकारों का मार्ग भी प्रशस्त होगा, इसमें संदेह नहीं है।

'शिक्षा' के नये अंक में शिक्षा के उन सभी नये प्रयोगों तथा योजनाओं पर प्रकाश डाला गया है जो सरकार द्वारा शिक्षा-विभाग के अधिकारियों द्वारा सम्पन्न किया जा रहा है। शिक्षा-सचिव माननीय संपूर्णानंद जी ने प्रांत में शिक्षा की प्रगति पर अत्यन्त सारगर्भित और उपयोगी लेख लिखा है। इसके अतिरिक्त श्री अवनिकुमार सान्याल, श्री कैलाशनाराण मालवीय, श्री रामेश्वर सिंह, श्री जफरुद्दीन अहमद, डाक्टर आनंदस्वरूप, मिस विलियम्स, श्री परमानंद, श्री रमणीकांत सूर, श्री केशरी लाल, श्री सुन्दरलाल, श्री असदुल्ला काजमी, श्री प्रकाशनारायण माथुर, डाक्टर मंगलदेव शास्त्री, डाक्टर ब्रह्मानंद अग्निहोत्री, आचार्य वीरबलसिंह, श्री सुधीरकुमार घोष और श्री देवनारायण मुकर्जी आदि विद्वानों ने, जो शिक्षा के विभिन्न अंगों के विशेषज्ञ हैं, शिक्षा के विभिन्न विषयों पर सुन्दर प्रकाश डाला है। प्रत्येक लेख सुरुचि तथा जानकारी से पूर्ण हैं। लेखों की भाषा प्रांजल, शुद्ध और एकरूपता लिये हुए है।

'शिक्षा' के प्रारंभ में भारत के शिक्षा-सचिव मौलाना अबुल कलाम आजाद का उर्दू लिपि में संदेश प्रकाशित हुआ है। प्रांत के प्रधान मंत्री माननीय पंडित गोविन्दवल्लभ पंत तथा माननीय श्री संपूर्णानंद जी का संदेश भी 'शिक्षा' की उपयोगिता के अनुकूल ही है। प्रधान संपादक श्री चुन्नीलाल सहानी ने अंग्रेजी में और प्रबंध-संपादक श्री मनबोधनलाल श्रीवास्तव ने हिन्दी में 'शिक्षा' की आवश्यकता, उपयोगिता तथा प्रांत में शिक्षा की प्रगति पर एक विहग प्रकाश डाला है। 'आत्म निवेदन' के अन्तर्गत प्रबंध-संपादक ने 'शिक्षा' के प्रकाशन के ध्येय पर प्रकाश डालते हुए लिखा है—"शिक्षा द्वारा उच्च शिक्षा-संम्बधी नवीन योजनाओं का यथार्थ परिचय और उनकी क्रमागत उन्नति की अभिज्ञता सर्वसाधारण को प्राप्त होगी......साथ ही शिक्षा के नवीन प्रयोगों का विवरण उपस्थित करके यह पत्र......मार्गदर्शक का भी काम करेगा।......'शिक्षा' समाज की सेवा के भाव से प्रेरित होकर अवतरित हो रहा है।" इन पंक्तियों से शिक्षा की उपयोगिता का पर्याप्त ज्ञान हो जाता है। हमें आशा है कि जनता तथा शिक्षा प्रेमियों के लिये 'शिक्षा' अत्यन्त उपयोगी प्रमाणित होगी।

पत्रिका के प्रारंभ में महात्मा का सुन्दर चित्र है। भीतर भी की आवश्यकतानुसार रंगीन चित्र दिये गये हैं। कवर नयनाभिराम और आकर्षक है। छपाई-सफाई गेट-अप सुन्दर है। पृष्ठ-संख्या दो सौ से ऊपर। प्रति अंक का मूल्य भी उपयुक्त है। हम ऐसे लोकोपयोगी तथा अनिवार्य प्रकाशन के लिये प्रांतीय शिक्षा-विभाग के अधिकारियों को बधाई देते हैं।

* * *

ारत का विदेशों से सम्बन्ध

त को संसार पर विजय प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त और दृढ़ करना है

लेखक, श्री रतनलाल जोशी एम० ए०

स्वतन्त्रता प्राप्त करने के बाद भारतवर्ष को अपने वैदेशिक, सम्बन्धों का मार्ग
रना है, साथ ही आजादी को बनाये रखने के लिए उसे किन किन परिस्थि-
र विजय प्राप्त करना है, आदि प्रारम्भिक और आवश्यक समस्याओं पर
इस लेख में गम्भीरतापूर्वक विवेचन किया है। भारतवर्ष को संसार का नेतृत्त्व
लिए तैयार होना है, इसकी नींव को और भी सुदृढ़ करना है। भारतीय
की वर्तमान स्थिति पर लेख में सुन्दर और विवेचनापूर्ण दृष्टि डाली गई है।

राजनीतिक सार्वभौमत्त्व प्राप्त
का भारत जिस अंतर्राष्ट्रीय को
है उसे मध्यवर्ती मार्ग न कहकर
से 'भारतीय नीति' कहना
होगा। मध्यवर्ती मार्ग ग्रहण
के सांस्कृतिक वैभव एवं
साधन-सम्पन्नता के प्रति
औचित्य का दृष्टिकोण नहीं है।
से भारत ने ब्रिटिश साम्रा-
शोषण का उच्छेदन कर दिया
सम्मान पलायन या अव-
स्वीकृति नहीं है। आज की
नीति में भारत के लिये केवल
है जिसका उसे अवलम्बन
का नेतृत्व या आत्म-हत्या!
भारत अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति
के त्रस्त मानव-समुदाय
को नहीं अपनाता है तो
मानवता के इतिहास में
नहीं रखती है और युगावतार
अन्वेषण जिस प्रयोगशाला
भूमि के जलवायु में शेष
कोई संवेदना नहीं है।

को जब स्वातन्त्र्य-संग्राम में
प्राप्त हुआ था तब संसार के
एवं निर्बल राष्ट्रों के ध्वस्त
में स्फुलिंग-मात्र अवशेष आशा
नवजीवन मिला था—सबने
प्रेरित अभिनन्दन के संदेश
के पास भेजे थे। बड़े-बड़े
शुभेच्छायें काफी अंशों में वाह्य
ही थीं। किंतु काफी संख्या में
राष्ट्रों से भी संदेश आये थे
की स्वाधीनता से निश्चित
हुई थी। एशिया के छोटे-
का संदेश था:—
में नव-प्रभात का उदय
एशिया की निरीह और निरुपाय
लिए इससे बढ़कर प्रसन्नता की
ही क्या सकती है। हम इस
भीतर अनेक उज्ज्वल आशायें
....."
ने इन शब्दों में हमारे पास
भेजा था:
उच्चादर्शों की मेहती भूमि पर
स्वाधीनता प्राप्त की है उससे
अधःपतित मान्यताओं को नया
है। संसार के समस्त निर्बल एवं
भारत के प्रति ऐसे नवीन
की कामना करते हैं जो अंततः
का प्राचीर बन सके।"
के वैदेशिक मन्त्री,
ने पंडित नेहरू के पास
हार्दिक आल्हाद का संदेश भेजते हुये जो आशा प्रकट की थी उसका आशय यह था :—

"शिविरबद्ध राजनीति से त्रस्त विश्व-शांति को परित्राण देने के लिए हमने जिस योजना को कार्यान्वित किया है उसमें एकांत रूप से भारत ही हमारे उत्साह का प्राचीर है......"

आदर्शवाद का आलोक

हमारी आज की अंतर्राष्ट्रीय नीति पिछले एक दशक में कांग्रेस द्वारा स्वतंत्र रूप से निर्धारित और विकसित नीति है। इस नीति के मूल बिंदुओं और आधारभूत तत्त्वों के निश्चय का सारा श्रेय पंडित जवाहरलाल नेहरू को है। स्पेन और चीन को मेडिकल मिशनें इसी नीति को मूर्त करने के लिये भेजी गई थीं और अगस्त मास में सत्याग्रह छेड़ने से पूर्व युद्धोद्देश्यों को व्यक्त करने का मित्रराष्ट्रों से जो आग्रह किया गया था वह भी इसी नीति का नैतिक तकाजा था। अपने वार्षिक अधिवेशनों में कांग्रेस इस नीति के सम्बन्ध में प्रस्ताव स्वीकृत करके इसकी समुचित मर्यादा कायम रखती थी। स्वातंत्र्य-प्राप्ति के बाद जब कांग्रेस के हाथों में देश के शासन की बागडोर आई तो विदेशी राष्ट्रों से सम्बन्ध बनाये रखने के लिये उसने अपनी निजी अंतर्राष्ट्रीय नीति को ही अपनाया। कांग्रेस के लिये स्वाभाविक भी यही था, क्योंकि आज की राजनीति मूलतः अंतर्राष्ट्रीय वातावरण की ही उपज होती है। विदेशों में जो राजनीतिक और आर्थिक उत्क्रांतियाँ होती हैं उनके प्रभावों से आज कोई भी अस्पर्श्य नहीं बना रह सकता है।

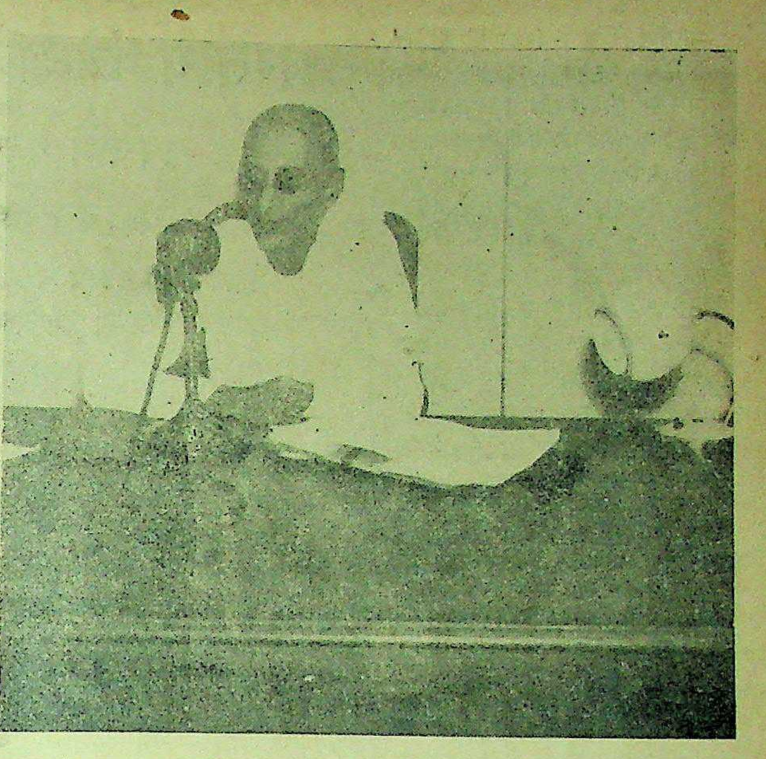

भारत के वाइसराय चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचार्य दफ्तर में बैठे हुए कार्य कर रहे हैं और आने वाले टेलीफोन का उत्तर दे रहे हैं।

स्वातंत्र्य-दिवस के दिन पंडित जवाहरलाल नेहरू ने समाचार-पत्रों के सामने भारत की अन्तर्राष्ट्रीय नीति को स्पष्ट करते हुये कहा था :—

"भारत में हमारे लिये यह महत्त्वपूर्ण घड़ी है—हमारे ही लिये क्यों! सारे एशिया और सारे संसार के लिये भी भारत के भाग्य की यह घड़ी बड़ा महत्त्व रखती है। एक नया नक्षत्र उदित हुआ है, एक नई आशा ने रूप ग्रहण किया है; लम्बे काल से जिस स्वप्न का हम अपनी कल्पना में पोषण कर रहे थे वह साकार हो गया है। हमारी कामना है कि यह नक्षत्र कभी अस्त न हो और हमारी आशा विश्वासघात न करे।......संसार की अन्य जातियों और राष्ट्रों को हम अपनी शुभेच्छायें भेजते हैं और प्रतिज्ञा करते हैं कि शांति, स्वातंत्र्य और जनतंत्र की परिस्थितियों के निर्माण में हम उनके साथ पूरा-पूरा सहयोग करेंगे।"

भारत-सरकार की आज जो अन्तर्राष्ट्रीय नीति है उसका आधार ऊपर के इन शब्दों में व्यक्त आशावाद है। कोई स्पष्ट, सुलझी हुई और पूरी-पूरी तसवीर इन शब्दों से बन नहीं पाती है, किन्तु इसके भीतर जिस आदर्शवाद का आलोक है वह दृढ़संकल्प, एवं उच्च कोटि की नैतिक सामर्थ्य का परिचायक है। इस वाक्य-लड़ी को पढ़ते समय हमें फ्रांसीसी क्रांति, अमेरिकन स्वाधीनता और रूस की लाल क्रांति के समय घोषित की गई शुभेच्छाओं और प्रतिज्ञाओं का स्मरण हो आता है।

कर्मयोग की प्रयोगशाला

इन देशों की प्रतिज्ञायें आज जिस रूप में मूर्त हुई हैं वह रूप हमारे सबके सामने मध्याह्न दोपहरी की भाँति स्पष्ट है। क्रांति-स्रष्टाओं को सम्बोधित करते हुए इसीलिये एक बार मो० त्रास्की ने कहा था :

"क्रांति का स्वप्न बड़ा आकर्षक और प्रकाशमान होता है। विजय या

शेष पेज १६ पर देखिए

पंडित जवाहरलाल नेहरू को, अमृतसर पहुँचने पर, एक शरणार्थी लड़की माला पहना रही है

भारतीय विधान-परिषद् की आलेख-समिति ने सन् १९३५ के भारतीय विधान के आधार पर ही देश का नया विधान प्रस्तुत किया है। इस नये विधान का अधिकांश भाग सन् ३५ के विधान का अनुकरण-मात्रा है और इसका शेष भाग अन्य देशों के भिन्न-भिन्न विधानों से ग्रहण किया गया है। इस नये विधान में मौलिकता की कमी है इसमें भारत के प्राचीन राजशास्त्र तथा संस्कृति का आभास-मात्र ही दृष्टि-गोचर होता है। हमारे विचार में भारत के नये विधान का आधार भारतीय राज्य का प्राचीन आदर्श होना चाहिये, न कि रूसी या पाश्चात्य राज्य का आदर्श। यह कितने आश्चर्य की बात है कि एक ओर तो भारत की राष्ट्रीय पताका पर स्वदेशी अशोकचक्र का चिह्न अङ्कित है और दूसरी ओर देश का विधान विदेशी राजशास्त्र के आधार पर प्रस्तुत किया जा रहा है।

भारतीय विधान के कुछ पहलू

क्या वह प्राचीन पंचायत-प्रणाली के आधार पर बनाया गया है ?

लेखक, श्री सहदेव चक्रवर्ती विद्यालंकार (पत्रकार)

भारत का नया विधान प्रायः तैयार हो गया है, शीघ्र ही वह जन साधारण में वितरण के लिए प्रकाशित होगा। नया विधान प्रायः अमरीका, रूस तथा ब्रिटेन के जनतन्त्रवादी सिद्धान्तों के आधार पर निर्मित हुआ है। इस लेख में लेखक ने विधान के कुछ पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए आलोचना की है और विदेशी जनतन्त्र का महत्त्व बतलाया है। लेख सुन्दर और विचारणीय है।

प्राचीन भारत में गाँव, तालुका, जिला और प्रान्त की पंचायतें ही अपने-अपने क्षेत्र में जनता का प्रतिनिधित्व करती थीं और जनता में इनका आदर भी था। इन पंचायतों में कानूनी अधिकार जनता द्वारा निहित थे। हमारे विचार में भारतीय विधान को पाश्चात्य आदर्शों पर आधारित करने की अपेक्षा गाँव, तालुका, जिला और प्रान्त की पंचायतों पर आधारित करना ही श्रेयस्कर है। गाँव-पंचायतों का चुनाव वयस्क मताधिकार के आधार पर हो। किन्तु प्रान्तीय तथा संघीय धारा-सभाओं का चुनाव जिला पंचायतें ही करें, जो गाँव-पंचायतों द्वारा चुनी जायँ। प्रान्तीय तथा संघीय धारा-सभाओं के इस प्रकार के अप्रत्यक्ष चुनाव से दोनों का शासन-कार्य सरल हो जायगा।

भारत की पञ्चायत

इस पद्धति के ग्रहण करने से वैधानिक संगठन अत्यन्त सरल हो जाता है। देश में एक केन्द्रीय लोकसभा होगी। इसे भारत की पञ्चायत या पार्लियामेंट कह सकते हैं। केन्द्र की तरह प्रत्येक प्रांत में भी एक प्रांतीय पञ्चायत होगी, जिसका नामकरण प्रांत के आधार पर होगा।

भारतीय पञ्चायत एक सार्वभौम संस्था होनी चाहिये, जिसमें सार्वभौम सत्ता निहित हो। यह इसी प्रकार हो, जैसे समस्त ब्रिटिश साम्राज्य की सत्ता ब्रिटिश पार्लियामेंट में निहित होती है। केन्द्रीय पार्लियामेंट को अपनी भिन्न-भिन्न वैधानिक इकाइयों के निरीक्षण तथा नियन्त्रण का भी अधिकार होना चाहिये। संघीय विषयों के अतिरिक्त सब अवशिष्ट विषयों में प्रांतीय पञ्चायतें स्वाधीन होनी चाहिये। केन्द्रीय तथा प्रांतीय धारा-सभाओं के विषय संयुक्त न होकर पृथक्-पृथक् होने चाहिये। केन्द्रीय विषयों की परिभाषा अत्यन्त स्पष्ट होनी चाहिये। देश का विधान संकीर्ण न हो। परिस्थितियों के अनुसार इसमें परिवर्तन होना आवश्यक है।

अध्यक्ष की आवश्यकता नहीं

भारत की सार्वभौम सत्ता सम्पन्न पञ्चायत अपना प्रमुख शासक स्वयं चुने। यह शासक प्रधान मन्त्री ही हो तो अधिक अच्छा है। प्रधान मन्त्री को अपनी शासक-परिषद् के सदस्य स्वयं चुनने का अधिकार होना चाहिये। यह सब सदस्य इकाई के रूप में केन्द्रीय पञ्चायत के प्रति उत्तरदायी हों। नये वैधानिक संगठन में अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा गवर्नर नाम की कोई चीज नहीं होनी चाहिये।

हमारे देश में गवर्नरों को नियुक्त करने की परम्परा पिछले नौकरशाही शासन का एक अंग है। एक सार्वभौम सत्ता-सम्पन्न पार्लियामेंट पर एक अध्यक्ष या उपाध्यक्ष नियुक्त करने की परम्परा को भी हम अनावश्यक समझते हैं। प्रधान मन्त्री स्वयं दोहरा काम कर सकता है। पार्लियामेंट को भङ्ग करने आदि कार्य के लिए यदि किसी विशेष अधिकारी की आवश्यकता भी अनुभव हो तो प्रधान मन्त्री को ही ऐसा करने का अधिकार होना चाहिये। अन्ततोगत्वा, भारत में ब्रिटिश शासन काल के समय सम्राट् के प्रतिनिधि गवर्नर-जनरल (वायसराय) को भी तो यह अधिकार प्राप्त था। हम संघ में अध्यक्ष तथा प्रधान मन्त्री नाम के दो व्यक्तियों के शासनाधिकारी होने के पक्ष में नहीं हैं। क्योंकि इन दोनों व्यक्तियों के लिये एक साथ मिलकर काम कर सकना सम्भव नहीं।

पार्लियामेंट को पाँच वर्ष की अवधि के पश्चात् भङ्ग कर देने का भी नियम होना चाहिये। पार्लियामेंट के भङ्ग होने के बाद शासक-परिषद् को तब तक भङ्ग न किया जाय, जब तक कि नई पार्लियामेंट न बन जाय।

न्याय और शासन-विभाग

जहाँ तक देश के उच्च न्यायालयों का सम्बन्ध है, न्यायालय-पद्धति पर केन्द्र का अधिकार होना चाहिये। न्याय-विभाग तथा शासन-विभाग दोनों सर्वथा पृथक् हों। शासन-विभाग को न्याय-विभाग के अधिकार-क्षेत्र में हस्तक्षेप करने का अधिकार बिलकुल नहीं होना चाहिये। जनता की स्वाधीनता की सुरक्षा का भी यही एकमात्र

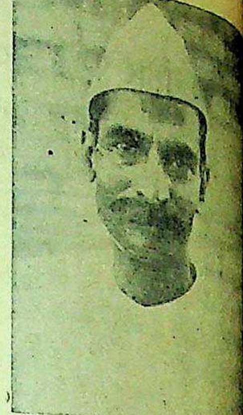

भारतीय विधान-परिषद् के सभा
माननीय बाबू राजेन्द्रप्रसाद।

साधन है। अन्यथा विधान में जनता स्वाधीनता के सम्बन्ध में दिये गये आश्वासन निरर्थक सिद्ध होंगे।

पहले के ब्रिटिश शासनकाल की अब भी प्रांतों के गवर्नर न्याय-विभाग प्रभुत्व स्थापित करने का स्वप्न देखते और वे समय-समय पर न्याय-विभाग कार्यों में नोंक-झोंक भी करना चाहते इस तरह वे न्यायालयों के अधिकारों कुठाराघात करने का यत्न करते हैं।

देश का नया विधान बनाने से भारतीय विधान-परिषद् को अपने सामने एक आदर्श या सिद्धान्त मान लेना चाहिये। यह विधान अंग्रेजी की अपेक्षा यदि हिन्दी में हो तो अधिक अच्छा है। क्योंकि देश की अधिकांश जनता को अँगरेजी में प्रस्तुत विधान के समझने में अत्यन्त कठिनाई अनुभव होगी। विधान की हिन्दी प्रति लाखों की संख्या में छपवाकर भारत-सरकार को सार्वजनिक रूप से बँटवानी चाहिये। आशा है, भारतीय विधान-परिषद् के सदस्य इस दिशा में अपने उत्तरदायित्व का अनुभव करेंगे।

फिल्मी दुनिया मुफ्त
सिनेमा का भेद बतानेवाली पु
“फिल्मी दुनिया” अपना और
के पूरे पते लिखकर मुफ्त मँगाइये
पता—मधुर मन्दिर, हाथरस, यू

नई दिल्ली में भारतीय एसेम्बली के विशाल भवन का दृश्य।

भारतीय विधान हिन्दी में

शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा है

मध्य-प्रान्त तथा बरार प्रान्तीय धारा के माननीय स्पीकर श्री घनश्याम-गुप्त और डाक्टर रघुवीर ने भारतीय विधान की व्यवस्था-सम्बन्धी नियमा- का हिन्दी में अनुवाद किया है। पांडु लिपि गवर्नमेन्ट प्रेस नागपुर प्रकाशनार्थ भेजी जा चुकी है। की जाती है कि इसका प्रकाशन मध्य के आसपास हो जायेगा। शासन- के पारिभाषिक शब्दों का कोष पन्द्रह या बीस दिन के बाद होगा। प्रेस प्रतिनिधियों से करते हुये यह समाचार कौंसिल के माननीय श्री घनश्यामसिंह गुप्त है।

हिन्दी अनुवाद के सम्बन्ध में बतलाते श्री घनश्यामसिंह गुप्त ने कहा कि अनुवाद विशुद्ध हिन्दुस्तानी में हुआ लज्जित होना पड़ेगा; और यदि की भाषा संस्कृतमय होती है तो आपत्ति न होगी। उन्होंने आगे इस प्रकार का हिन्दी अनुवाद वर्ग के लिये नहीं होगा। शासन-सम्बन्धी यह अनुवाद धुरंधर के लिये होगा जो किसी भी वाक्य यह बतला सकेंगे कि शासन- कितने नये-तुले होते हैं। के पूर्व माननीय डाक्टर से पूछा गया था कि वे किस अनुवाद पसन्द करेंगे। राजेन्द्र शाब्दिक अनुवाद का समर्थन। यह तो निःसन्देह सत्य था कि में साधारण बोलचाल की नहीं हो सकती थी। किसी का शासन-विधान साधारण नहीं बना है। उदाहरण के लिये शब्द अत्यधिक प्रचलित है, शासन-विधान में इसी प्रकार के शब्द हैं जिनका अनुवाद में होना बिलकुल असम्भव है। शब्दावली के द्वारा हम पेचीदे शब्दों का अनुवाद नहीं। एक शब्द के लिये अनेक की शक्ति तो संस्कृत में ही है। हमारे सामने संस्कृत की सहायता अनिवार्य रूप से आता है। इस अनुवाद में भाषा की दुरूहता नहीं छोड़ा जा सकता।

एक ऐसी भाषा का जन्म होने है जो साधारण कोटि के व्यक्ति से बाहर होगी।' एक प्रेस ने माननीय गुप्ता जी से पूछा। उत्तर देते हुये कहा कि भाषा की के कारण ही आज हममें से अनेक लोग अँगरेजी और हिन्दी के प्रयोग गलत करते हैं। हम तो के लिये चिन्तित हैं जो एक बिलकुल न जानेंगे, उसके भाषा का निर्माण अत्यन्त है। श्री गुप्त ने यह भी कहा पर जोर दिया जाना कि वे संस्कृत का अध्ययन जितना में कर सकते हों, करें। कठि- सुलझाने के लिये हिन्दी उपयोगी हो सकता है।

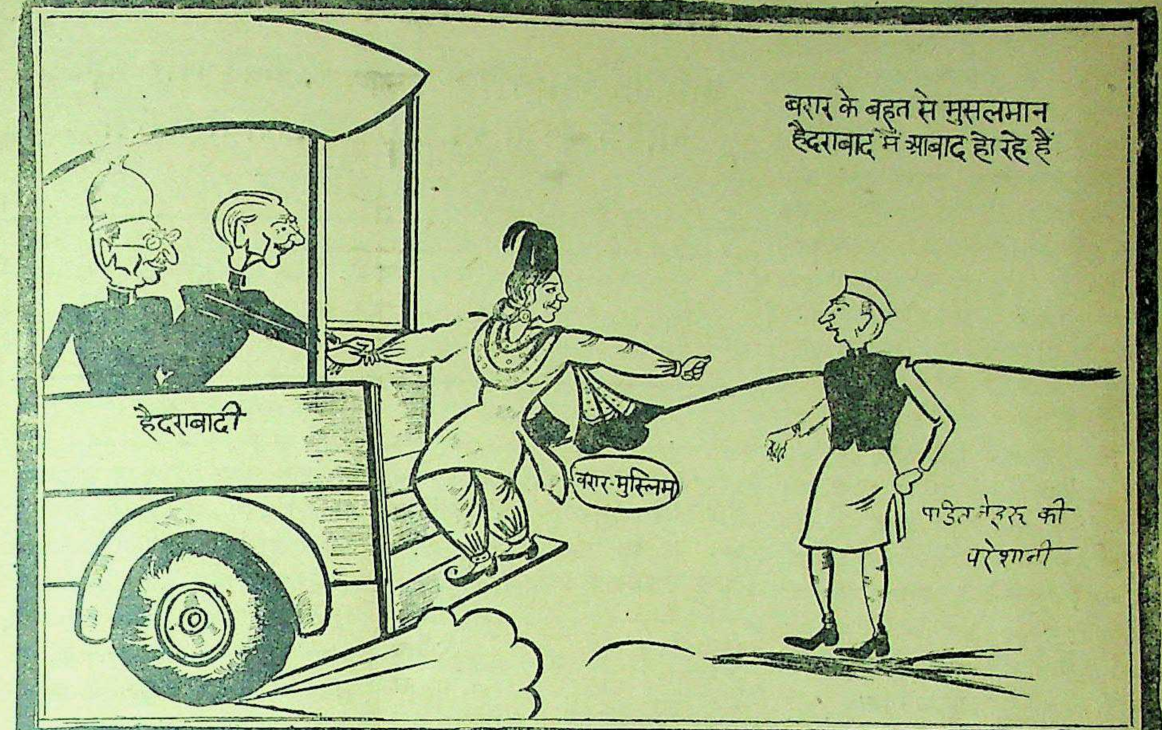
बरार के बहुत से मुसलमान हैदराबाद में आबाद हो रहे हैं
हैदराबादी
बरार-मुस्लिम
पंडित नेहरू की परेशानी

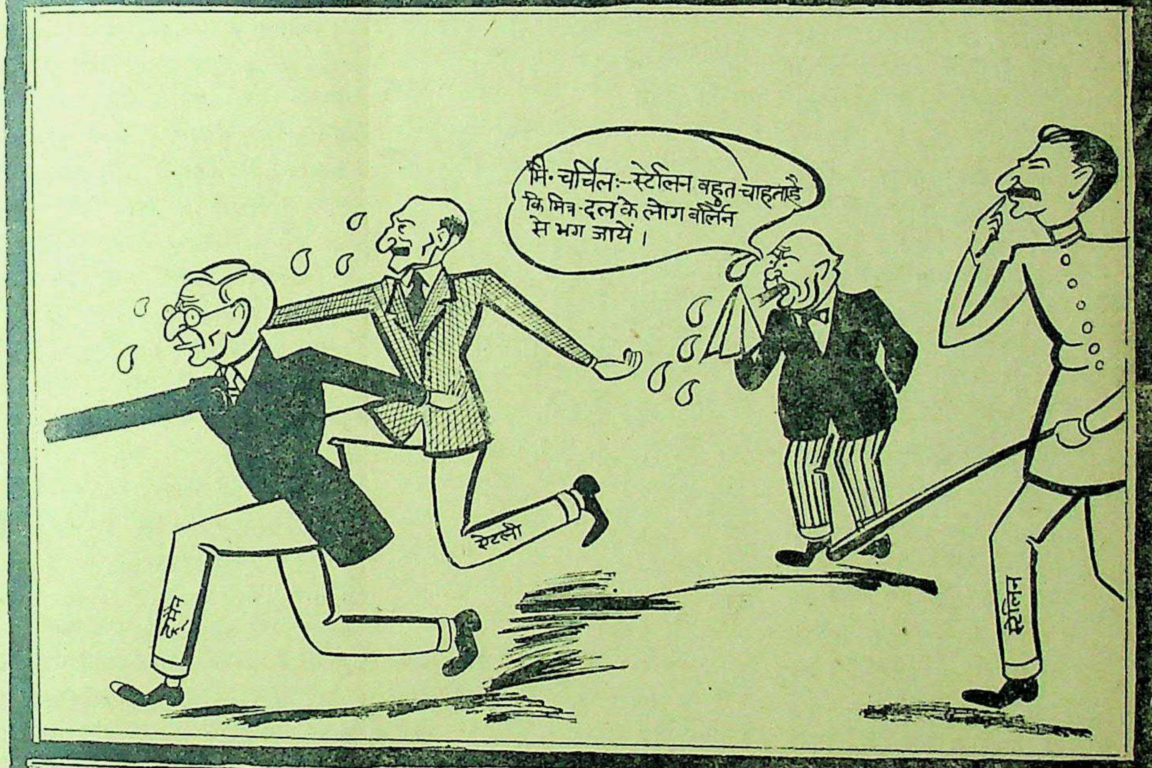
मि• चर्चिल:-स्टेलिन बहुत चाहताहै कि मित्र-दल के लोग बर्लिन से भग जायें।
ट्रूमैन
ऐटली
स्टेलिन

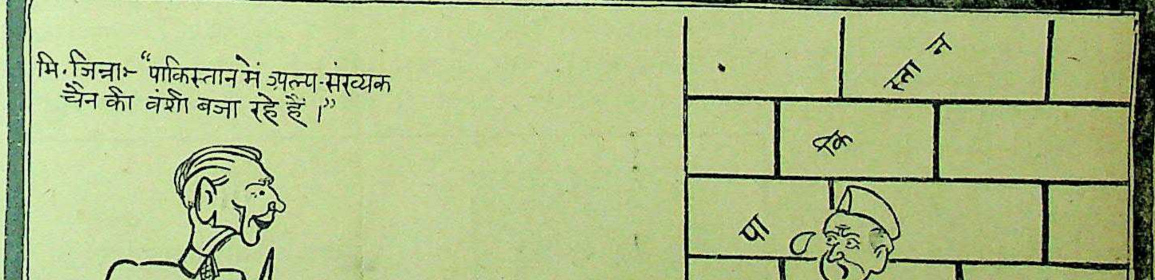
मि• जिन्ना:- "पाकिस्तान में अल्प-संख्यक चैन की बंशी बजा रहे हैं।"
पा
क
स्ता न
अल्प-संख्यक
KRISHNAKANT

सत्याग्रही प्रोफेसर भंसाली

हैदराबाद की सीमा के भीतर सत्याग्रह और साम्प्रदायिक एकता का नारा लगानेवाला तपस्वी

लेखक, श्री उमाशंकर शुक्ल

महात्मा गांधी के शिष्य प्रोफेसर भंसाली आजकल हैदराबाद की सीमा के गाँवों में घूम-घूमकर रजाकारों द्वारा किये जानेवाले अत्याचारों का विरोध कर रहे हैं। इस लेख में पत्रकार ने प्रोफेसर भंसाली के त्यागमय जीवन पर सुंदर प्रकाश डाला है, जो पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

आज दक्षिण हैदराबाद में जो कहर बरस रहा है, जो अत्याचार हो रहे हैं और रजाकारों की शैतानियत की जो बाद हो रही है—उसे देखकर कलेजा मुँह को आता है। वहाँ की स्थिति बद से बदतर हो रही है। जैसे जैसे दिन बीतते जाते हैं, हैदराबाद की समस्या पेचीदा होती जा रही है। समझौते के कई प्रयत्न असफल हुए हैं। कासिम रिजवी के इशारों पर सब काम हो रहा है। स्त्रियों का अपहरण हो रहा है और उन पर अमानुषिक अत्याचार किए जा रहे हैं। देश के नेता यह चाहते हैं कि वहाँ शांति स्थापन हो और इसके लिए वे प्रयत्नशील भी हैं—पर निजाम का कहना है कि मेरे मुर्गे की एक टाँग। वर्तमान लक्षणों से पता चलता है कि युद्ध होकर रहेगा। कुछ भी हो हैदराबाद का भविष्य अन्धकारमय है और यह निश्चित है कि एक न एक दिन निजाम को झुकना पड़ेगा और वहाँ जनता का राज्य होगा।

भंसाली जी की ऐतिहासिक यात्रा

जिस समय नोआखाली में भीषण मार-काट मची थी, उस समय वहाँ शांति स्थापित करने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी पहुँचे थे और उन्होंने वहाँ की शस्य श्यामला भूमि पर जो खून से तर थी—पैदल यात्रा की थी और मानवता का संदेश सुनाया था। जहाँ कोई नहीं पहुँचा वहाँ बापू पहुँचे थे। आज बापू नहीं हैं—यह हमारा दुर्भाग्य है और क्या कहा जाय। अगर बापू होते तो हैदराबाद की समस्या इतनी न उलझती जितनी कि आज वह उलझी हुई है। वे उसे सुलझाते और हैदराबाद में मार-काट न होने पाती। हैदराबाद में बापू के शिष्य प्रोफेसर भंसाली सत्याग्रह का महान् व विजयी अस्त्र लेकर गये हैं। संभवतः प्रोफेसर भंसाली का वहाँ जाना साधारण बात आज मालूम होती हो पर इसे ऐतिहासिक महत्त्व है। गांधी जी के सिद्धांतों का प्रचार वहाँ पर प्रोफेसर भंसाली पैदल घूम घूम कर कर रहे हैं। यह वही प्रोफेसर भंसाली हैं जिनकी आत्मा सन् ४२ के दिनों आष्टी व चिमूर में स्त्रियों पर होनेवाले अत्याचारों को देखकर काँप उठी थी और जिन्होंने निष्पक्ष जाँच कराने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाई थी। ब्रिटिश नौकरशाही को आखिर प्रोफेसर भंसाली के आगे झुकना पड़ा और तिरसठवें दिन उनका आमरण अनशन सकुशल समाप्त हुआ। भंसाली जी दक्षिण हैदराबाद पहुँचे हैं। उन पर पूज्य बापू का बरद हस्त है। उनके साथ सत्य व अहिंसा की शक्ति है और बापू के अमर सिद्धांत हैं जिनके बल पर भंसाली जी ने शैतानों की दुनिया में प्रवेश किया है। वे निश्चय ही विजयी होकर लौटेंगे।

गांधी जी के सिद्धांतों का प्रचार

भगवान् बुद्ध के बाद उनके शिष्यों ने बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों व भगवान् बुद्ध के उपदेशों का दुनिया के कोने-कोने में जाकर प्रसार किया था—आज भी वही हो रहा है। महात्मा गांधी के सिद्धांतों का प्रचार उनके शिष्य कर रहे हैं। सन्त विनोबा भावे, आचार्य काका कालेलकर, आचार्य मश्रूवाला, श्रीकृष्णदास जाजू, प्रोफेसर भंसाली, आचार्य श्रीमन्नारायण अग्रवाल, आचार्य आर्यनायकम् आदि अनेकों उनके शिष्य बापू के सत्य व अहिंसा के सिद्धांतों का प्रचार कर रहे हैं ताकि शांति व सुख का साम्राज्य स्थापित हो। प्रोफेसर भंसाली बापू के उन शिष्यों में से हैं जिन पर बापू को बहुत ही विश्वास था। एक बार आगाखाँ भवन से बापू ने भंसाली जी को लिखा था कि उस गुरु को बड़ी प्रसन्नता होती है जिसका शिष्य उससे बढ़ जाता है।

विचित्र जीवन

प्रोफेसर भंसाली का जीवन बहुत सी विचित्रताओं का अजायबघर है। खाने-पीने में कोई उनका नियम नहीं है। समय पर जो कुछ मिला खा लेते हैं। पकाया खाना नहीं खाते, कच्चा ही खाते हैं। कभी आटा घोलकर ही पी लिया तो कभी कच्चा कुम्हड़ा ही खा लिया। कभी इमली का पानी पीते हैं तो कभी नीम की पत्तियाँ ही। मूँगफली, लहसुन, गुड़, तेल, तिल्ली, दूध, मठा, सेपरेटेड मिल्क आदि चीजें उनके भोजन की आवश्यक वस्तुएँ हैं। परिश्रमी तो खूब ही हैं। सेवाग्राम आश्रम में दो पीपों की काँवड़ बनाकर कुएँ से पानी भरते हैं, खेत में काम करते, सफाई करते, चक्की पीसते और आस-पास के गाँवों में पैदल जाकर गाँवों की सफाई करते हैं। उन्हें धूप व ठंड की कोई परवाह नहीं है। वस्त्र के नाम पर सिर्फ एक अँगौछा लपेटते हैं। पास में एक छोटी सी लाठी रखते और जहाँ जाते वहाँ पैदल ही जाते हैं, चरखा तो उनका जीवन-साथी ही समझिए। आश्रम की बहनों व बच्चों को पढ़ाते रहते हैं। हर भाषाओं का उन्हें ज्ञान है। अगर कोई उनके पास जाता है तो बड़े ही प्रेम से उससे बात करेंगे। वे उपदेश देने के बजाय स्वयं काम करके दिखाते हैं और कहते हैं कि इस तरह काम किया जाता है। गत तीस वर्षों से उनका और गांधी जी का सम्बन्ध रहा है। भंसाली जी हिमालय की यात्रा कर चुके हैं—उन्होंने योग-साधन भी किये हैं।

सेवाग्राम में न उनकी कोई कुटिया है और न उनके पास कुछ सामान ही है। बस एक चरखा, एक अँगौछा, लाठी व पढ़ाने का कुछ साहित्य। बहुत हुआ तो एक कम्बल रख लिया। बाल बनवाने के सम्बन्ध में कोई नियम नहीं। कभी समय मिला तो बाल बनवा लिए नहीं समय मिला तो दाढ़ी घास की तरह बढ़ते रहती है। उन्हें कोई फिक्र नहीं। फिक्र एक बात की है और वह है काम की। उनका कहना है कि देश को आज रचनात्मक कार्य-कर्ताओं की जरूरत है। कार्यकर्ता गाँवों में ही हैं। उन्हें हमें ढूँढ़ना है। बापू के बताये हुए रचनात्मक कार्य से ही भारत के देहातों में सुख व शान्ति का साम्राज्य स्थापित होगा।

नौ मास तक मुँह बन्द

प्रोफेसर भंसाली ने एक बार नौ महीने तक अपना मुँह सी लिया था और वे कुछ भी नहीं बोलते थे। जब गांधी जी को यह बात मालूम हुई तो सन् १९३२ में राजकोट में उन्होंने मुँह खोलने को कहा। यह पूछने पर कि उन्होंने अपना मुँह क्यों सी लिया था—उन्होंने बताया कि एक बार मैं घूमते घूमते राजपूताने के

सत्याग्रही प्रोफेसर भंसाली।

एक गाँव में चला गया। ठंढ के दिन थे। रात की बात थी। मुझे नींद आ रही थी। मैंने एक किसान से सोने के लिए जगह माँगी। उसने कहा कि जाओ, उस कोने में सो रहो। मैं गया और कोने में लेट रहा। नींद भी लग गई। रात को अकसर आग जलाकर लोग तापते हैं और हुक्का गुड़गुड़ाते हैं। जहाँ मैं सोया था एक आदमी तमाखू लेने आया। अँधेरा होने के कारण उस आदमी का पैर मुझ पर पड़ गया। मैंने कह दिया—अरे! बस मेरा मौन भंग हो गया। मैंने उससे कहा कि मेरा मौन भंग हो गया है। उस आदमी ने कहा मुँह सी लो फिर मौन भंग न होगा। मैं वहाँ से चल पड़ा। सबसे कहता कि भाई मेरा मुँह सी दे पर कोई सीता न था। साधारण बात सी ही थी। राजपूताने से घूमते घूमते मैं कठियावाड़ पहुँचा और वहाँ फिर एक दर्जी ने मेरा मुँह सी दिया। उस समय कच्चा आटा घोलकर पीता था।

तपस्वी जीवन

भंसाली जी यरवदा जेल में डेढ़ तक रह चुके हैं। ये पहले हिंसावादी पर बाद में गांधी जी के प्रभाव में सन् २५-२६ से अहिंसावादी हो भंसाली जी हठयोगी हैं।

आप अखबार नहीं पढ़ते। कहाँ क्या होता है—यह उन्हें वासियों द्वारा बताने पर मालूम होता भंसाली जी का जीवन एक तपस्वी जीवन है। आज भंसाली जी हैदराबाद रियासत में गाँव-गाँव घूम हैं। उन्हें अपने काम में सफलता प्राप्त यह मंगल कामना है।

[भारतेंदु हिन्दी

गीत

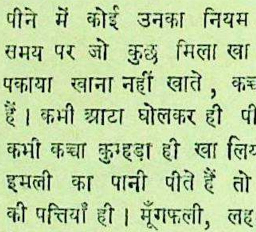

लेखक, श्री नर्मदाप्रसाद खरे

जीवन - तरु में नीड़ बनाया।
सुख-दुख के तृन-तृन चुन-चुनकर,
मन में सदा नाम गुन - गुनकर,
सोचा—वास करेगी आकर
परिचित एक सुनहली छाया।
आशा के मृदु बन्दनवारे,
प्राण - पात से सजा सँवारे,
रोम-रोम ने भू-नभ खोजा पर न मिला फिर भी मनभाया।
साँस - साँस की डाल - डाल पर,
सपनों का सोना बिखराकर,
आकुल नयन प्रतीक्षा की है पर बिछुड़ा पंछी कब आया?

फिल्म ऐक्टर
यदि आप फिल्म ऐक्टर बनकर
रु० से १५००) रु० मासिक तक
चाहते हों तो आज ही लिखें।
लिखा पढ़ा होना जरूरी है।
नाम व पूरा पता साफ लिखें।
अमेरिकन कार्पोरेशन
(फिल्म डिपार्टमेंट)
हलका नं० २२ (D.A.)

मातृमण्डल

स्त्रियों को चलती-फिरती तसवीर नहीं बनना चाहिये

शरीर को स्वस्थ तथा सुन्दर बनाने के लिये व्यायाम की आवश्यकता है

लेखिका, कुमारी विमलादेवी राजदान, बी० ए०

के काम काज और बच्चों के के अतिरिक्त स्त्री को कुछ व्यायाम अवश्य करना चाहिये। अथवा शारीरिक परिश्रम के ही भारतीय नारी तीस वर्ष की ही अपना शारीरिक सौन्दर्य है। भारतीय नारी प्राचीन इस प्रसिद्धि के लिए मान- हम नहीं कह सकते कि किस भारतीय नारी अपनी अर्द्धावस्था शारीरिक सौन्दर्य को खो अन्य देशों में पैंतीस या चालीस अवस्था में स्त्री पूर्ण नवयौवना है; लेकिन भारतवर्ष में इस नारी अपने आपको वृद्ध सम- है। इस आयु में प्रायः ऐसा को मिलता है। बुढ़िया हो गई। अब मुझे बाह्य सौंदर्य पर क्यों ध्यान अथवा अच्छे कपड़े ही क्यों ने चाहिये ?" लेकिन बुढ़ापा जाता है जब एक स्त्री अपने स्वास्थ्य और सौन्दर्य पर विचार करती है। सत्य तो यह है कि नारी जिस दृष्टि-कोण से अपने को देखने लगती है ठीक उसी प्रकार उसको अपनी आयु का भी अनुभव होने लगता है।

व्यायाम एक मुख्य साधन है जो प्रत्येक स्त्री और पुरुष को नवीन बनाये रह सकता है। भारतीय परम्परा में प्रातःकालीन प्रार्थना में 'सूर्यनमस्कार' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। स्त्रियों के लिए तो यह साधन पुरुषों की अपेक्षा अधिक लाभप्रद है लेकिन दिनोंदिन अब इस परिपारी का प्रभाव ही क्षीण होता जा रहा है। खेल-कूद का भी स्थान इस दिशा की ओर अच्छा ही है। यह बड़े दुःख का विषय है कि कुछ स्त्रियाँ जिनके पति टेनिश खेले बिना नहीं रह सकते वे उस खेल को जानती भी नहीं। वर्तमान समय में टेनिश की अपेक्षा नृत्य आदि भी स्वास्थ्य-रक्षा के लिए बहुत ही आवश्यक बताये गये हैं। टेनिस भारतीय महिलाओं के लिए एक उपयुक्त और आदर्श खेल है। गर्मियों में तैरना भी एक अच्छी कसरत है; लेकिन भारतवर्ष में अभी तक महिलाओं के तैरने के लिए कोई प्रबन्ध भी नहीं रहा, इसकी ओर ध्यान जाना स्वाभाविक होना चाहिये।

काश्मीर की हथियारबन्द महिला स्वयंसेविकायें, जो आक्रमणकारियों को मार भगाने के लिये तैयार हैं।

काश्मीर की हथियारबन्द महिला स्वयंसेविकायें बन्दूक चलाना सीख रही हैं।

एक अमेरिकन पत्र में मैंने कसरत के कुछ उदाहरण देखे हैं जो मेरे विचार से भारतीय महिलाओं के सर्वथा अनुकूल हैं। इसलिये मैं उन्हें संक्षेप में रख रही हूँ। उनमें शक्ति है कि वे एक निश्चित काल में शरीर के वजन और उसकी शोभा को बढ़ा सकते हैं। हमारी बहुत सी माताएँ भीतरी रोगों से पीड़ित रहती हैं; इन कसरतों के द्वारा उन रोगों पर आसानी से विजय प्राप्त की जा सकती है। इसके लिए तुम्हें फर्श पर अपने दोनों पैर फैलाकर बैठना चाहिये, कन्धों को सीधा करके गर्दन को इतना झुकाओ कि छाती घुटनों से छू जाय। फिर धीरे धीरे अपने सर को दाएँ-बाएँ घुमाओ। इस व्यायाम को दिन में पाँच बार करना चाहिये। दूसरी कसरत के लिए पैरों के बीच फासला लेकर सीधे खड़े होइये, बाँहें कन्धों की सीध में फैली रहें। तब कमर को नीचे की ओर झुकाइये और धीरे धीरे ऊपर उठिये। तीसरी दशा में अँगूठे के ऊपर खड़े होकर बाँहें कन्धे की सीध में फैलाओ, घुटनों के बल बैठकर हाथ फैलाइये और फिर बाँधिये।

शरीर की मांस-पेशियों के बढ़ाने के लिए भी बहुत सी और कसरतें हैं। यह थोड़ी सी कसरतें नित्यप्रति की जानी चाहिये। शाम को या सवेरे टहलने की भी आदत डालनी चाहिये। इस प्रकार व्यायाम को प्रधानता देकर भारतीय नारी को अपना शरीर और सौन्दर्य चिरस्थायी बनाने का प्रयत्न करना चाहिये। भारतीय नारी को अमीरी भोजन और चावल न खाना चाहिये। इन चीजों को हमेशा के लिए नहीं तो सदैव इनका प्रयोग कदापि न करना चाहिये; लेकिन इनके अतिरिक्त घी और शक्कर खाने का प्रयास करना चाहिये। संक्षेप में सादा भोजन करने के साथ ही व्यायाम को स्थान देते रहकर शरीर को स्वस्थ और सुंदर बनाने का प्रयत्न प्रत्येक भारतीय नारी को करना चाहिये।

* * *

·इस दुनिया ...

गांधी-अभिनन्दन...

सम्पादक—श्री सोहनलाल द्विवेदी
प्राक्कथन—सर सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

संस्कृति, हिन्दी, उर्दू, बँगला, गुजराती, सिन्धी, मराठी, तामिल, तेलगू, मलयालम, कन्नड़, अँगरेजी और चीनी भाषाओं में महात्मा गांधी जी पर लिखी हुई सर्वोत्तम कविताओं का संग्रह—हिन्दी भाषा में अर्थ-सहित।

बड़ा आकार, सुन्दर छपाई, पूरे पेज के अनेक चित्र। बढ़िया जिल्द। सर्वत्र प्रशंसित।

सादी जिल्द ६॥) कपड़े की जिल्द ७॥)

सेवाग्राम

रंग-बिरंगी छपाई अनेक रंगीन चित्र
रचयिता श्री सोहनलाल द्विवेदी
संरक्षक श्री घनश्यामदास बिड़ला

जनता की भाषा में, जनता के भावों का, जनता का काव्य कवि की राष्ट्रीय रचनाओं का सुन्दर संग्रह। बड़ा आकार, बढ़िया काग़ज़, कपड़े की मज़बूत जिल्द। मूल्य दस रुपये।

गुदड़ी के लाल

इस पुस्तक की कहानियाँ बहुत ही सरल और रोचक भाषा में लिखी गई हैं। इनको पढ़कर बच्चे खुश होते हैं। ऐसी पुस्तक अपने बच्चों को जरूर दीजिए। मूल्य ॥)

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

म्पादक के नाम चिट्ठियाँ

श्चात्य वेदज्ञों की अकारण निन्दा क्यों ?

'देशदूत' के ६ मई के अंक (संपादक म चिट्ठियाँ) में श्री गिरीशचन्द्र ी व्याकरणाचार्य ने यूरोपीय विद्वानों द के प्रति 'धींगा-धींगी' का आरोप है। जिससे सर्व-साधारण में गलतफहमी फैलने की संभावना से उसका निराकरण आवश्यक है। मेरा उद्देश्य पाश्चात्य विद्वानों की वकालत करना नहीं है, फिर भी वास्तविक तथ्य को प्रकट करना आवश्यक है। राजनैतिक कारणों से अँगरेजों पर क्रुद्ध जनता की दृष्टि में उन्हें साहित्य-क्षेत्र में प्राप्त न्यायोचित पद से भी गिराने की चेष्टा अवसरवादिता है, इस प्रकार के प्रयत्न से अपनी गिनती पाँच सवारों में कराने की लालसा आज बलवती हो उठी है। स्वतन्त्र भारत के विद्वानों को इससे बचना चाहिये। हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि 'शत्रोरपि गुणा वाच्याः, दोषा वाच्या गुरोरपि।'

जिस समय हम वेद भगवान् का जुलूस निकालने और अर्थों को समझे बिना ही केवल मंत्रोच्चारण मात्र से सन्तुष्ट थे, उस समय पाश्चात्य विद्वानों ने वेदों की ओर विश्व का ध्यान खींचा। उनका यह कार्य सूक्ष्म रूप से १७५० ई० में प्रारम्भ हो गया था और १८३५ के बाद तो वेदों के मनन की सुव्यवस्थित शृङ्खला चालू हो गई थी, जो आज भी जीवित है। कितने ही विद्वानों ने अपनी सारी जिन्दगी ही वेदों के अनुशीलन में खपा दी।

यूरोपीय वेदज्ञों पर एक सिरे से 'वेदों को गड़रिये के गीत' कहने का दोष लगाना हमारी ज्ञानहीनता का ही नहीं, किन्तु कृतघ्नता का भी परिचायक है। कितने ही पश्चात्य विद्वानों ने वेदों की भूरि भूरि प्रशंसा की है। श्री ओल्डन बर्ग की वेदों के सम्बन्ध में सच्ची आलोचना पढ़कर हमारा मस्तक श्रद्धा से नत हो जाता है। स्वयं मैक्समूलर ने ऋग्वेद के दशम मण्डल की भूमिका में जो निष्पक्ष घोषणा की है, उससे कौन भारतीय असहमत होगा ?

"यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावदृग्वेद महिमा लोकेषु प्रचरिष्यति ॥"

यह ठीक है कि कुछ पाश्चात्य विद्वानों ने ऋग्वेद में समुद्र, चावल और मछली आदि का जिक्र न देख ऐतिहासिक अर्थ निकालने की चेष्टा की है। किन्तु वह भी एक शैली है, भले ही उससे हमारी धार्मिक श्र को धक्का लगता हो। यह बात दूसरी कि वे उस तह तक नहीं पहुँच सके, हाँ पर सच्चाई है। स्वयं अवस्थी जी के तर्कों का कोई युक्तियुक्त उत्तर न दे सके। किसी यूनिवर्सिटी का नाम औ ओछले तर्कों से ऋग्वेद में समुद्र आदि उल्लेख न होने को सिद्ध करना एक उपपद प्रयत्न है।

वास्तविक यह है कि चारों वेदों के मंत्र समका हैं। प्रारम्भ में वे संहिता-रूपों में । वैसे रचना तथा उपयोग भेद से भिन्न थे। अथर्वा ऋषि ने उन्हें संहिताओं में विभक्त किया। जिन मंत्रों का यज्ञादि कर्म में उपयोग नहीं था, वे 'ऋचा' नाम के मंत्र होने पर भी 'ऋग्वेद' में स्थान न पा सके और 'अथर्ववेद' नाम से प्रसिद्ध हुए। यही कारण है कि ऋग्वेद और अथर्ववेद के मंत्र लोक, देवता और रचना के खयाल से समानधर्मा हैं, उनका परस्पर भेद केवल संहिता के नाम से ही हो सकता है।

वेदतत्त्वार्थज्ञ, 'अथर्वा' ऋषि के द्वारा मंत्रों का जो विभाजन एक काल में हुआ था, उसी को कालान्तर में विभिन्न ऋषियों ने मण्डल, सूक्त, अनुवाक, काण्ड, प्रपाठक आदि में विभक्त किया। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य का मनन करने पर यही अभिप्राय स्पष्ट रूप से निकला है। इसी के अभाव में यूरोपीय विद्वानों के साथ ही अवस्थी जी भी बहक गए हैं।

वेद में कर्मकाण्ड और ज्ञानकाण्डरूपी दो भागों को ही मानना भी वैदिक परम्परा के अनुकूल नहीं है तीसरा उपासनाकांड भी मानना पड़ेगा। वेद, ब्राह्मण और उपनिषदों में १ आध्यात्मिक (वैयक्तिक), २ आधिभौतिक (सामाजिक व प्राणि-समष्टिविषयक) और तीसरे आधिदैविक में अग्नि आदि सम्पूर्ण देवताविषयक प्रकरण हैं।

मैं स्वयं पाश्चात्य वेदज्ञों की अनेक बातों से सहमत नहीं हूँ, किन्तु उनकी अपनी निराली प्रणाली पर अखण्ड और निष्पक्ष वैदिक पर्यालोचना को हमें आदर की दृष्टि से देखना चाहिये और मतभेदों के वास्तविक कारणों को ढूँढ़कर उनको प्रकाश में लाना चाहिए। लखनऊ विश्वविद्यालय विद्वानों के लिए प्रसिद्ध है। विद्वान् लोग अपनी गलती तुरन्त मान लिया करते हैं। आशा है, अवस्थी जी इसके अपवाद सिद्ध न होंगे और भविष्य में अपना जो भी मतभेद प्रकट करेंगे, वह युक्तियुक्त और अकारण ही पाश्चात्य वेदज्ञों को जनता की दृष्टि में गिरानेवाला न होगा।

पिलानी —आचार्य नित्यानन्द सारस्वत
जयपुर

* * *

बंगाल राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति

"आज बँगला भाषा को विश्व के दरबार में प्रतिष्ठा मिल गई है, इसके कारण प्रत्येक बँगला-मातृभाषी गर्व अनुभव करता है, इसलिये जो इस भाषा को हिन्दी राष्ट्रभाषा के साथ साथ अन्यतम राष्ट्रभाषा मान लेने के लिये आन्दोलन चला रहे हैं, सफल हों; किन्तु उन्हें साथ साथ यह भी स्पष्ट रूप से ध्यान में रखना चाहिये कि भारतीय संघ ने आपाततः केवल हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा मान लिया है तथा समयानुकूल कुछ दिनों के लिये अँगरेजी को वैकल्पिक राष्ट्रभाषा का पद मिल गया है। यदि इसके साथ आन्दोलन के फलस्वरूप बँगला भी राष्ट्रभाषा मान ली जाती है तो भी आन्तःप्रादेशिक योगायोग तथा विचार-विनिमय के लिये हिन्दी का स्थान अक्षुण्ण रहेगा, क्योंकि भारतीय संघ में हिन्दी-मातृभाषी तथा हिन्दी ज्ञाता व्यक्ति संख्याधिक्य रहेंगे और उनकी हिन्दी भाषा राष्ट्रभाषा भी रहेगी। परिणाम यह होगा कि बँगला-मातृभाषी बँगला को राष्ट्रभाषा पाकर हिन्दी न सीखेगा, इससे वही घाटे में रहेगा क्योंकि संख्यागरिष्ट हिन्दी भाषा-भाषी श्रेष्ठ साहित्य के नाते भले ही कुछ संख्या में बँगला सीख लें किन्तु राष्ट्रभाषा के नाते नहीं सीखेंगे। इससे बंगाल की जनता अपर प्रांतीय जनता से भाव आदान-प्रदान करने में सर्वथा असमर्थ रहेगी। अतः हिन्दी सीखने में किसी प्रकार की आपत्ति समीचीन नहीं है। भारत के भाषागत ऐक्य की दृष्टि से यदि एकमात्र हिन्दी को ही भारतीय संघ द्वारा राष्ट्रभाषा मान लिया जाता है तो इसे स्वीकार करने में भी बंगाल को द्विधाबोध नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे भारतीय एकता का विरोध करना ही प्रमाणित होगा। बँगला भाषा और उसका साहित्य अपने ऐश्वर्य एवं श्रेष्ठत्व के कारण राष्ट्रभाषा न होने पर भी सदा विशाल, प्रगतिशील तथा अमर बना रहेगा।"—बंगाल राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति कलकत्ता के समावर्त्तनोत्सव के सभापति पद से भाषण देते हुए बंगाल के माननीय शिक्षामंत्री राय हरेन्द्रनाथ चौधरी ने उच्छ्वसित भाषा में अपने मनोभाव प्रकट किये।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के भूतपूर्व सभापति सम्पादकाचार्य पंडित अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी ने दीक्षान्त भाषण देते हुए कहा कि हिन्दी क्यों राष्ट्रभाषा है, उसके क्या क्या गुण हैं। हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानकर हम उसे कृतार्थ नहीं कर रहे हैं, वरन् अपनी सुबुद्धि और सुविवेचना का परिचय दे रहे हैं। जो लोग 'हिन्दुस्तानी' के नाम से हिन्दी के साथ उर्दू को भी प्रश्रय देना चाहते हैं उन्हें मालूम होना चाहिये कि अब वह किसी भी प्रांत की राजकीय भाषा भी न बन सकी। संयुक्तप्रांत में तथा पंजाब में केवल हिन्दी तथा हिन्दी के साथ गुरमुखी को राजभाषा बना दिया गया है। फिर उर्दू को समस्त भारतीय जनसमुदाय पर 'हिन्दुस्तानी' के नाम पर लादना कहाँ की बुद्धिमत्ता है? वंगमातृभाषी जनता का हिन्दी सीखने का आग्रह तथा उत्साह देखते हुये पंडित जी ने बड़ा सन्तोष प्रकट किया और कहा कि बंगाल अल्प समय में ही हिन्दी को सीख लेगा, क्योंकि यह प्रांत विदेशी भाषाओं को सीखने में बड़ा पटु है और अग्रसर रहा है तो फिर हिन्दी को जो कि बँगला की मौसेरी बहन है, अपनाने में विलम्ब क्यों करेगा ?

समिति के सभापति डाक्टर सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ने कहा कि भारत की समस्त भाषाओं में हिन्दी ही को सर्वप्रथम अधिकार है कि वह राष्ट्रभाषा बनाई जाय—यह अकाट्य सत्य है। आन्तःप्रादेशिक भाषा के रूप में देवनागरी-हिन्दी ही सर्वश्रेष्ठ वाहन है। भारतीय सङ्घ में जितने भी प्रान्त हैं उनमें अधिक से अधिक संख्या हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानने के पक्ष में हैं। हिन्दी भाषा के सीखने से बंगाली युवक-युवतियों को एक विस्तृत क्षेत्र प्राप्त होगा, जहाँ उन्हें भविष्यत जीवन निर्माण करने का सुअवसर उपलब्ध होगा।

समिति के मन्त्री श्री रेवतीरंजन ने समिति का संक्षिप्त इतिहास, विवरण, असुविधायें तथा आवश्य का उल्लेख करते हुए कहा कि हि व्यापकता उसके गुणों के कार हिन्दी का प्रचार किसी व्यक्ति अथवा दलगत स्वार्थसिद्धि के लि किया जा रहा है और न इसके हिन्दी का एकछत्र साम्राज्य स्थापि जा रहा है। हिन्दी न जानने को के कारण बंगाल भविष्यत भारतीय की प्रगति में पिछड़ा न रहे, यही मात्र इसका उद्देश्य है।

कलकत्ता
२६ जून, ४८ —रेवतीरंजन
मंत्री

* *

राजर्षि टन्डन जी।

बाबू पुरुषोत्तमदास टन्डन नाम लेते ही न जाने क्यों उनके हृदय में अगाध श्रद्धा उत्पन्न हुए नहीं रहती। श्री टन्डन जी हमारे के वयोवृद्धि कांग्रेसी नेता हैं। त्याग और सेवाओं से वे बाबू से नीय हो गए हैं। हिन्दी की जो सेवा टन्डन जी ने की है, उसका साक्षी हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन है।

माननीय टन्डन जी इसी प्रान्त के ही नहीं, परन्तु वे समस्त देश के तपे-तपाये अनुभवी नेता हैं। समस्त देश की आँखें आपकी ओर लगी हुई आप अपने विचारों के पक्के हैं। इसीलिये कुछ लोग आपको जिद्दी हैं; परन्तु यह कहनेवालों की माननीय टन्डन जी का हृदय अति है, पर साथ ही कुछ कठोर भी मर्यादा का प्रश्न होता है वहाँ आप त्तम के रूप में उपस्थित रहते हैं जहाँ सेवा का भाव होता है वहाँ दास के रूप में हर घड़ी तैनात रहते

माननीय टन्डन जी का दर्शन क्या किसी साधु का दर्शन करना है। बड़ी-बड़ी दाढ़ी, चाँदिल सर पक्के बाल, मुख पर अनुपम आभा दुबला-पतला शरीर, उज्ज्वल का कुर्त्ता, तथा उज्ज्वल खद्दर की आपकी शुद्धता का परिचय देती हैं।

माननीय टन्डन जी का प्रत्येक त्यागमय रहा, और है। लोभ तो नामक वस्तु तो वे बिलकुल ही नहीं।

टन्डन जी ही ऐसे व्यक्ति स्पीकर होते हुए भी जनता-जनार्दन

अभी हाल ही में देवरिया गोरखपुर की जनता ने अपने को राजर्षि की महान् पदवी से किया है। परन्तु दुःख है कि कुछ को टन्डन जी को राजर्षि कहना लाना उचित नहीं लगा। माननीय जी राजनैतिक क्षेत्र के वास्तव हैं। यदि जनता ने राजर्षि उ माननीय टन्डन जी को सम्मानित तो बेजा क्या किया ?

—वीरेन्द्रनाथ
सोनबरसा,
बलिया

उस दिन प्रातः से ही पटवारी राम-
के दिमाग में उलझन पैदा हो गई,
ग्गू की जमीन का पट्टा होनेवाला
हाँ से बड़ी रकम की प्राप्ति की
थी। अतएव, जग्गू चौधरी तो
हीं, पटवारी रामलाल को स्वयं
के पास जाना था। अपना स्वार्थ
मीलान करना, खसरा और
भरना भी पड़ा था। कागज
करने का टाइम भी आ चुका
नगो कागज देखने के लिए तीन-
टोक चुका। लेकिन प्रातः के
में, पटवारी रामलाल को जो
त्वपूर्ण काम दीखा, वह यह कि
हुई, न तो अभी लड़का
, न पैसों का प्रबन्ध। अतएव,
तीन-चार लड़के देखे, उनमें से
के पटवारी के लड़के को रोक
लगा। रात में यही उसने
त्नी से बातचीत करके तय भी
पत्नी ने कहा—'उन्हें कुछ
तो सचमुच ही मुन्शी राम-
ने अपना दोष एकबारगी मान

हुक्का भरकर रख गया था।
गिलास ताजा-ताजा दूध पेट के
चुका था। तभी गाँव के तीन-
वहाँ आये। साथ में एक
गाँव के चमार थे, काश्तकार।
वृद्ध ने पटवारी रामलाल को
और नीचे जमीन में
—'दीवान जी, तो क्या
मारना है ?'
, अपने सिर पर इतने बड़े
बोझ रामलाल का दिमाग नहीं
। एकाएक क्षुब्ध और
में उसने कहा—'मैं कसाई

को गुस्से में देख, वृद्ध ने
—'अपने माई-बाप से ऐसे ही
है, दीवान जी !' वह बोला—
यह सच है न, तुम रमलू की
छिनवा रहे हो। सुना है,
हजार रुपया दे रहा है।'
रामलाल ने बात को सुन
और उत्तर नहीं दिया। बाद में
में दम मारा।
कहा—'पेट हमारा भी है।
इन्सान हैं। बाल-बच्चे हैं। बताओ
छूट जायगी, तो क्या खायेंगे ?'
में पगड़ी रख दी और कहा—
परमेश्वर हो, दीवान जी !'
हुक्के की नली को छोड़कर
रामलाल ने उन सबकी ओर
कहा—'चेता, तूने गलत समझा
रमलू का काम है, वही जाने।'
तो तुम्हारी चलती है, दीवान
उसने पूछा था। उसे कहीं
मिल रहे हैं, यह भी उसने

खड़ी हुई चेता की स्त्री ने
'तुम हमारी तरफ देखोगे, तो
नहीं लेगा।'
वारी रामलाल ने फिर हुक्के में
और तभी चेता ने अपनी टेंट
निकालकर सामने रखते हुए
जाओ।'

करेप्शन

लेखक, श्री श्रीराम शर्मा 'राम'

गाँवों की वर्तमान अवस्था शिक्षा के अभाव से कितनी गिरी है, स्पष्ट है। पटवारी रामलाल अशिक्षा के कारण ही किसानों का शोषण करता हुआ पैसेवाला तो हुआ लेकिन किसी का मित्र न बन पाया। समय ने उसे शिक्षा दी कि पैसा ही नहीं मानव होना भी आवश्यक है। उसी समय से वह सारे दुर्गुणों को छोड़कर मानव के सुख-दुख का साथी बना और गाँववाले उस पर हृदय न्यौछावर करने लगे। कहानी चरित्र पर प्रभाव डालनेवाली, सुन्दर और पठनीय है।

देखकर रामलाल चौंका—'इतने से काम नहीं चलेगा।'

'आलू खड़े हैं, खुदेंगे, तो बेचकर और भी दे जाऊँगा।'

रामलाल ने सुबह की बौनी के रुपये उठा लिये और कहा—'अच्छा, मैं बात करूँगा। तुम जाओ।'

सब चले गये। रामलाल पटवारी ने सोचा, शायद दिन अच्छा रहेगा, आज का। और कहा उसने, अजीब मुश्किल है! बड़ा झंझट है, इस पटवारी के पेशे में! चारों ओर दुश्मनी, चारों ओर खींच-तान, एक जान है, कहाँ-कहाँ फिरे, किस-किस को खुश करे—यह अकेला रामलाल—ओह!

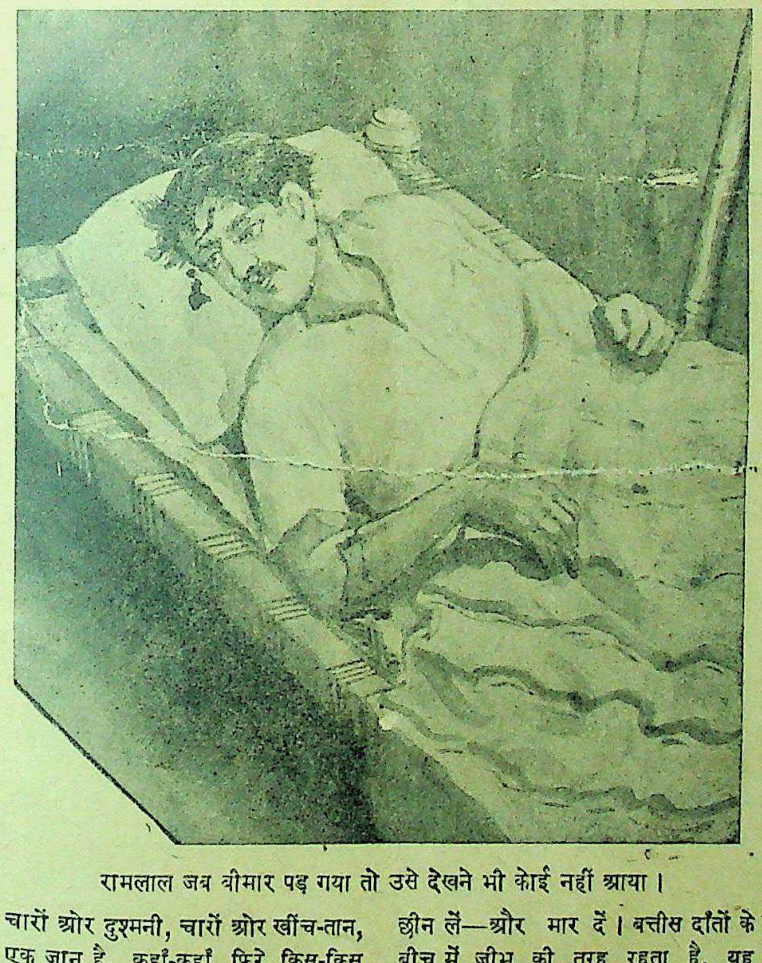
रामलाल जब बीमार पड़ गया तो उसे देखने भी कोई नहीं आया।

उसी समय पड़ोसी छीतर आया और बोला—'कुछ सुना दीवान जी, रात चौपाल में राजपूत कह रहे थे, यह पटवारी गाँव की दीमक है, जिसके ऊपर एक बार लगती है, छूटती नहीं। वह कह रहे थे, कलक्टर को अर्जी देंगे कि पटवारी गाँव में फिसाद कराता है। अपने पैसों के लिए एक-दूसरे में दुश्मनी।'

इतना सुनना था कि पटवारी रामलाल ने अपनी मूँछों पर बल दिया और छीतर कहीं हीनता न जान ले, इसलिए रोबीले स्वर में कहा—'अरे, छीतर! तू भी बुद्धू रहा। तू तो अब आकर कह रहा है, मैं तो रात ही सुन चुका। ऐसी बातें सुनता ही रहता हूँ। घोड़े पर चढ़ना और रकाब में पैर रखना मौत को दावत देना है। पटवारी का पेशा भी आसान नहीं। बालू से तेल निकालता है, यह पटवारी रामलाल! इन जानवरों को न लड़ाऊँ, तो जानता है, यह मुझे खा जायें। बस्ता छीन लें—और मार दें। बत्तीस दाँतों के बीच में जीभ की तरह रहता है, यह रामलाल!'

छीतर बोला—'लेकिन दीवान जी, अब तुम भी सोचो, अपने तरकसों के तीरों को म्यान में रखो। जिन्दगी इन्सान की है, कुछ रहम करो, कुछ पुण्य!'

सुनकर पटवारी रामलाल हँसे—'मूर्ख!' वह बोले—'घर का जो इतना खर्चा है, वह कौन चलायेगा। तनख्वाह के अठ्ठारह रुपये मिलते हैं, वह कानूनगो ले लेता है। तहसीलदार अलग माँगता है। एक छोटा-सा चपरासी जब गाँव में आता

है, तो वह भी पत
कहते हुए रा 'मेहन
और कहा—' पानी',
हुई। पाँच ह गलत
है। लड़के ब जिन्दगी'
हैं, गाय है, लिये कमल्लू
खर्चा है—त लेते, तुम की
तो, यह कैसे राम से
से ही तेल 'ईश्वर न

छीतर न चकित भाव में कहा—'बड़ा खर्चा है।'

'जी, अगर बुद्धू रहूँ, अपने तरकश के तीरों को न चलाऊँ, तो जानता है, न नौकरी रहेगी, न गाँव में इज्जत! बच्चे भी भूखे मर जायेंगे, इस रामलाल के!'

छीतर ने पूछा—'चेता आया था, क्यों ?'

'जैसे और आते हैं इस रामलाल के पास!'

'कुछ दे गया ?'

'हाँ, दे गया—दस रुपये।'

'लो, कमा लिये न, सुबह ही सुबह दस रुपये! बैठे-बिठाये।'

रामलाल ने हँसकर कहा—तू 'बुद्धू है।'

छीतर बोला—'बड़ा गरीब है, चेता। कुटुम्ब बड़ा है।'

रामलाल ने कहा—'मैं यह नहीं जानता। जो यहाँ आयेगा, काम करायेगा, तो देकर जायगा।'

सुनकर छीतर हँस दिया—'तुम काम भी कहाँ करते हो। लेते हो और आँख दिखाते हो।'

उत्तर में रामलाल ने भी हँस दिया—'इस दुनिया में ऐसा ही चलता है—रे, छीतर!'

सुनकर, तब छीतरे मौन रह गया।

* * *

सम्भवतः यह दुर्भाग्य की ही बात थी कि मुन्शी रामलाल के विपरीत गाँव के लोग दिन-दिन बढ़ रहे थे। कई बार उन पर हमले भी हो चुके थे। घर भर परेशान था। दिखता यह था कि पैसे ने मुन्शी रामलाल को अन्धा बना दिया। न्याय-अन्याय, पाप, पुण्य, मानो उनकी दृष्टि में केवल भाषा के वह शब्द थे कि जिनसे पुरुष को ठगा जा सकता था। रात-दिन उन्हें पैसों की चिन्ता रहती थी। घर-खर्च भी पहले से बढ़ गया था। इसलिए इस सबका जो प्रभाव उनके मस्तिष्क पर पड़ा, उससे मानसिक स्तर पहले की अपेक्षा और अधिक बिगड़ गया। बात-बात पर खिजलाहट होती। अपना और पराया, घर और बाहर बस एक ही बात दिखाई देती कि सब दुश्मन हैं, स्वार्थी हैं सब, जो कभी भी लूट लेंगे और मार देंगे।

यह देख, पत्नी ने एक दिन अवसर पाकर कहा—'तुम्हें हुआ क्या है! क्या सोचा है ?'

रामलाल ने कहा—मुझे पागल बना दिया है, तुम सबने!

पत्नी निरुत्तर बन गई। वह नहीं बोली।

रामलाल ने फिर कहा—'मुझे चैन नहीं। आराम नहीं।'

पत्नी बोली—'हो कैसे ?'

रामलाल ने कहा—'मैं सबका हूँ। मेरा कोई नहीं।'

आ नी ने कहा—'सभी ऐसा कहते हैं।'
बरस रहे झूठ नहीं कहता हूँ, पार्वती !'
और रजा ती बोली—'मैं कहती हूँ, तुमने
हो रही समझा है। यह दुनिया है।
आता है का सफर है। मन की शांति के
हो रही ही ईश्वर का नाम भी तो नहीं
हैदराबाद !'
रही है। लाल ने झुँझलाकर कहा—
हुए हैं। हीं है। ढोंग है।'

आश्चर्य से पार्वती ने उनकी ओर आँख काढ़कर देखा।

रामलाल ने कहा—'आदमी ही देवता है, आदमी ही राक्षस !'

उसी समय पार्वती के मन में कुछ डोल रहा था। वह उमड़-घुमड़कर उसकी जिह्वा पर भी आ रहा था। तभी उसने कहा—'मैं कहती हूँ, तुम क्यों नहीं देवता बनते ? हम भूखे रह लेंगे। एक समय खा लेंगे।......'

'अरे, तू भी मूर्ख बन गई है, पार्वती ! मैं पटवारी हूँ। मैं गाँव की हकीकत जानता हूँ।'

'तुम कुछ नहीं जानते। कुछ नहीं समझते।' वह बोली; कल चेता चमार की स्त्री आई थी। रो रही थी। कहती थी, रुपये भी लिये और जमीन भी छिना दी।' उसने कहा—जानते हो, उसके भूखे बच्चों की आत्मा हमें कोसती है। वह मुँह पर ही कह गई, बाल बच्चेदार हैं पटवारी, इतना नहीं सोच पाया—खाक नहीं !'

रामलाल ने क्षुब्ध बनकर कहा—'जिसने अधिक पैसे दिये, काम उसका किया। उसने पचास दिये, दूसरे ने सौ......'

'पर पचास तो लौटा देने थे, उसके।'

खिसियाने भाव से रामलाल ने पार्वती की ओर देखा और तुरन्त ही, अपने कागज उठा धर छोड़ दिया। हाथ में कागज थे, मिलान करने जाना था, परन्तु मन ऐसा उचाट हुआ कि कहीं नहीं गये, चारपाई पर पड़ गये। नींद आ गई, जब जागे तो देखा, उन्हें सिर बुखार था। भारी। आँखों में जलन।

देखकर पार्वती ने कहा—'हे राम !'

रामलाल ने कहा—'बुखार है, कल उतर जायगा।'

परन्तु बुखार उतरा नहीं। बढ़ता गया। चौथे दिन पटवारी रामलाल को सरसाम हो गया। गाँव ने सुना, तो लोगों ने कहा, 'अच्छा ही है कि मर जाये कम्बख्त ! फिसादी है। लुटेरा।'

और आश्चर्य की बात यह कि पटवारी रामलाल को जो प्रलाप हुआ तो उसने एक बार नहीं, कई कई बार गाँव के अन्य लोगों के साथ चेता का भी नाम लिया और कहा, हाँ, बुरा किया...... मैंने छल किया.......

जब रोग का वेग उतरा, तो अनायास ही, पटवारी रामलाल को मालूम हुआ कि कोई उसके पास नहीं आया। गाँव के सभी लोगों ने उसका मरना चाहा।

रामलाल पटवारी ने सुना और अपने अन्तर के गहनतम अन्धकार में उतार लिया। वह स्वस्थ हो गया।

लेकिन गाँव के व्यक्तियों के लिये यह अचरज का ही विषय बन गया कि पटवारी रामलाल अब रिश्वत नहीं लेता। वह अपने दुश्मनों के भी पास जाता है। उनके दुःख-दर्द में सम्मिलित होता है। कहीं झगड़े होते हैं, तो वह बिना बुलाये जाता है और पंच बनता है। अवश्य ही कुछ दिन तक लोगों ने इसे भी रामलाल का कोई शस्त्र समझा; परन्तु जब एक दिन उसने चेता के रुपये लौटा दिये, जमीन दिलवा दी और उसकी स्त्री के पैरों में गिरकर क्षमा माँगी तो लोगों ने समझा, सच, आदमी ही बना दीखता है, पटवारी रामलाल !

निश्चय ही, पटवारी रामलाल के पास अब पैसा नहीं, परन्तु उसे सन्तोष है और सुख है। गाँव उसका मित्र है। उसे विश्वास है अगर वह मर जायगा तो उसका परिवार भूखा नहीं मरेगा—वह अकेला नहीं है। आज उसे पछतावा है कि आज तक जो कुछ किया, अच्छा नहीं किया। यही कारण है कि वह पटवारियों में बैठकर भी यही कहता है और समर्थन पाना चाहता है।

* * *

राजकुमारी एलिजाबेथ गैलरा म्यूजियम (पेरिस) का उद्घाटन करते हुए दिखाई दे रहीं हैं। [illegible] रेडियो से ब्राडकास्ट भी हुआ था।

इधर उधर की

रेडियो के रूप में नवीनता

अभी तक रेडियो मेज पर ही रखकर बजाये जाते थे। किन्तु वैज्ञानिकों ने रेडियो बनाया है जो इतना छोटा है कि हम उसे जेब में रख सकते हैं। इस रेडियो की आवाज उतनी तेज नहीं है जितनी कि बड़े रेडियो की होती है। लेकिन हम शान्त होकर इससे भी वही सुन सकते हैं जो बड़े रेडियो से सुनते हैं। इस रेडियो के आविष्कार से हमें अधिक लाभ तो नहीं हुआ लेकिन इतना अवश्य है कि यह आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाया जा सकता है। इसके भीतर सब कुछ बड़े रेडियो की तरह नहीं है। देखने में यह सुंदर और आकर्षक मालूम होता है। यदि संभव हुआ तो शीघ्र ही यह जनता के बीच पहुँच जायेगा।

* * *

दूर की चीजें देखने की मशीन

अमेरिका के विज्ञान-परिषद् ने एक यन्त्र तैयार किया है जिसके द्वारा हम किसी समय भी किसी की तसवीर देख सकते हैं। रेडियो और इस मशीन में बहु
साम्य है। जिस प्रकार रेडियो में
की आवाज आती है, उसी प्रकार इस
में उसका चित्र लाने की कला मौ
इस यन्त्र के बनाने का विचार सन् १
में हुआ था, लेकिन कुछ कारण
इसका निर्माण सम्भव नहीं हो सका
वास्तव में यह यन्त्र बीसवीं सदी की
निक उन्नति का आदर्श स्थापित करता
अभी तक इस यन्त्र में कुछ सुधार बाकी
आशा की जाती है कि निकट भविष्य
यह सम्पूर्ण बातें सुधार करके यह
हमारे सामने आयेगा।

* * *

जलवर्षक यन्त्र

जर्मनी में एक यन्त्र का निर्मा
किया गया है। इस यन्त्र के द्वारा
निश्चित भूमि-भाग में पानी बरसाया
सकता है। इस यन्त्र को काम में लाने
पहले समुद्र में इसका कुछ भाग डुबा
आवश्यक है। समुद्र का पानी यह
उसी प्रकार खींचता है जैसे प्रकाश
बिजली खींचती है। इस यन्त्र की सहा
यता से उन भागों में भी खेती होना
हो सका है जहाँ की भूमि बिल्कुल बेकार
थी। इस यन्त्र का लेना अभी इसकी ऊँची
कीमत के कारण सम्भव नहीं फिर भी
आने पर इस यन्त्र का प्रयोग व्यक्ति
रूप से नहीं तो सरकारी तौर पर
साधारण के लिए सम्भव हो सकेगा,
विश्वास किया जाता है।

* * *

केशों के लिए एक अद्भुत वस्तु

अमेरिका की वैज्ञानिक शोधशाला
एक 'टानिक' तैयार किया है।
विषय में कहा जाता है कि इसके
करने से बाल कभी सफेद नहीं हो
इसके बनाने में बहुत सी भारतीय
धियाँ और जड़ी-बूटियाँ भी शामिल
लेकिन अधिकतर वैज्ञानिक तरीकों
प्रयोग प्रधान है। इसके लगाने से
थोड़ी देर तक चिकने रहते हैं फिर
न कोई सुगन्ध रहती है और न कोई
नाहट। अभी तक इसका पूर्ण प्रयो
नहीं हो सका, लेकिन आशा की
कि शीघ्र ही इस 'टानिक' का प्रयोग
भी मिलेगा।

* * *

मुफ्त

असली फोन्टेनपेन और
रिस्टवाच गारन्टी १२ साल, मुफ्त
करने के लिये आज ही लिखें।
मौका हाथ न आयेगा।

Imperial Corporation (D.
Halka No. 22. Amri

जन-प्रिय अभिनेत्री सुरैया कौन है ?

…भिन्न फिल्मों में सुन्दर अभिनय और प्रदर्शन

लेखक, श्री गोपाल मेहरोत्रा

…नेत्री सुरैया यही है।

…प्रेमी मित्र ने पिछले …प्रिय अभिनेत्री सुरैया …की थी। उन्होंने जो …लिखा था, उसका मनो- …प्रकार है—

…परेशानी के बाद मुझे …बेगम (नर्गिस देवी) का …जी की उपस्थिति की …करने पर चपरासी से मैंने …भेजा। मैं द्वार की ओर …कि सहसा श्रीमती नर्गिस …सहित) को देखकर मेरे …'नमस्कार' करने के हेतु …न्होंने अन्दर आने का संकेत …के मध्य में सुसज्जित …पर बैठने का संकेत करती …सामने बैठ गईं। मैंने उनसे …"आपकी माता जी नहीं …क्या कहीं गई हैं?"

…'कान्ट्रैक्ट' तय करने गई …। अरे हाँ, यह तो बताइये …यहाँ आने की तकलीफ …?"

…सुरैया देवी" से मिलने …नवीनतम चित्र "शक्ति" …भी निरन्तर चल रही है, …अवकाश भी न होगा। …अधिकतर विचार एक …आपको ही कष्ट इस …तो. क्या बेजा है?" …कोई बात नहीं, कहिए।" …बताइये कि क्या सुरैया के …प्रवेश करने की कोई कथा

…तो शायद वह सन् १६२६ में …के 'पेरिस' लाहौर में हुई थी। उसने तालीम भी काफी दिलचस्पी से हासिल की। अल्लाह के फजल से उसने परवान चढ़ने की उम्र में 'सीनियर कैम्ब्रिज' भी बेहतरीन नम्बरों से 'पास' किया। उन्हीं दिनों मेरी सहेली को उर्दू की शायरी से भी काफी दिलचस्पी पैदा हो गई, जो आज भी उसका जी बहलाने में काफी मदद देती है। उसके माँ-बाप उसकी शादी के फेर में बड़े परेशान रहने लगे। खुशनसीबी या बदनसीबी से कहिये कि—उसे कुछ हिन्दुस्तानी फिल्मों को देखने का मौका मिला। धीरे-धीरे फिल्मी दुनिया से उसका लगाव गहरा होता गया। हालाँकि रंग भी साँवला था और फिल्मों के लिये चेहरा भी आबदार नहीं।"

"अच्छा फिर?"

"उन्हीं दिनों "इशारा" फिल्म के डाइरेक्टर नन्दा साहब एक 'एक्ट्रेस' की खोज में थे। किसी तरह डाइरेक्टर साहब ने उसे एक पड़ोस की नाटक-मण्डली में नाच और गाना गाते देखा और खुदा के शुक्र से वे उसकी ओर खिंच गये। मेरी सहेली ने अपने माँ-बाप से कहा, लेकिन सब बेकार हुआ। आखिर में मिस्टर नन्दा और उनके गुलामों के बहुत कहने-सुनने पर उसके माता-पिता माने। इस तरह उसकी पहली फिल्म "इशारा" तैयार हुई।"

"अच्छा तब फिर?"

"उसके बाद उसने करीब-करीब एक साल तक बम्बई टाकीज की श्रेष्ठ फिल्म "हमारी बात" में नाच और गाने का 'पार्ट' अदा किया। शायद आपको वह गाना याद हो?"

"कौन सा?"

"वही! बन्दर भी नाचता है कैलन्दर के सामने।"

"हाँ, हाँ, अब याद आ गया।"

"फिर क्या हुआ?"

"होता क्या? जो होना था वही हुआ। कई चित्रों में 'बैक-ग्राउंड म्युजिक' दिया। वह दिन-दूनी और रात चौगुनी मशहूर होने लगी। फिर क्या था? उसने लगातार 'सम्राट् चन्द्रगुप्त', 'फूल', 'मैं क्या करूँ', 'तदबीर', उमर खैय्याम' में काम किया। हिन्दुस्तानी डाइरेक्टरों ने सुरैया का नसीब चाँद की तरह चमकीला परखकर अपनी फिल्मों 'अनमोल घड़ी', 'परवाना', 'दो दिल', 'डाक-बँगला', 'जग बीती', 'सन् १८५७', 'नाटक', 'दर्द', 'आज की रात', 'काजल', 'जीत', 'पिया', 'सिंगार' वगैरह-वगैरह में काम करने का मौका दिया। इसके अलावा देखनेवालों ने भी उसकी बड़ी तारीफ की।"

"जी हाँ! की होगी। परन्तु उन्होंने आज तक शायद ही किसी सामाजिक अथवा राष्ट्रीय चित्र में कार्य किया होगा। केवल प्रेमालाप सम्बन्धी फिल्मों को छोड़कर।"

"बात तो आप ठीक कहते हैं किन्तु इसके लिये 'डाइरेक्टर्स' दोषी हैं, सुरैया नहीं।"

"आप कैसी बातें कर रही हैं? आप लोग 'कान्ट्रैक्ट' स्वीकार करते समय चित्र की कहानी पर नाम-मात्र के लिये भी ध्यान नहीं देतीं और केवल पैसा और ख्याति पर फिसल पड़ती हैं। सुरैया देवी को ही देखिये—वह स्वयं को रजतपट पर इस भाँति प्रदर्शित कराती हैं कि एक सप्तवर्षीय बालक भी 'हाय' कहकर देखता रह जाता है।

"लेकिन मैंने तो कभी ऐसा नहीं सुना।"

"हो सकता है कि आपने न सुना हो। अच्छा तो अब कुछ विवाह समाचार भी बतला दीजिए।"

"शायद मि० एम० सादिक साहब ('रतन', 'डाक - बँगला', 'जग-बीती', 'काजल') से।"

"और उनके नये मजनू साहब?"

"ऐसे-ऐसे न जाने कितने उल्लू 'मजनू' इन अभिनेत्रियों के नामों की मालाएं जपते रहते हैं। खास तौर से नौ-जवानों में।"

"अच्छा यह तो बताइये कि सुरैया देवी की रुचि क्या है?"

"यही....समुद्र के किनारे घूमना, घुड़सवारी करना, लम्बी-लम्बी डींगें हाँकना, हालीउड की फिल्में देखना, पुस्तकें पढ़ना।"

"पढ़ाना नहीं। और क्या देश के हित के लिये कोई रचनात्मक कार्य करेंगी? मैंने सुना है कि उन्हें अपनी इस मिथ्यापूर्ण लोकप्रियता पर बड़ा गर्व हो गया है, जिसके कारण उन्होंने कई निर्देशक-निर्माताओं की उपेक्षा करना भी प्रारम्भ कर दिया है?

* * *

खाने का वक्त हो गया था। मैंने नमस्ते किया और उठ खड़ा हुआ।

* * *

८०००)रु० नकद इनाम

पहिला इनाम—ठीक हल के लिए ६०००) रु० (जो एक से अधिक हल ठीक होने पर बराबर बांट दिया जावेगा)। दूसरा इनाम—सब से अधिक हलों के लिये १०००) रु०। तीसरा इनाम—सर्वसे पहिले ठीक हल भेजने वाले के लिये १०००) रु०।

हल क्या करना है? सामने दिये हुए नौ खानों में १०० तक के कोई से अङ्क इस भाँति से भरिये कि जिस ओर से भी जोड़े उत्तर ७५ हो। एक अङ्क एक ही बार लिखा जा सकता है।

७५	७५	७५	७५	७५
७५	२२			७५
७५		२५		७५
७५			२८	७५
७५	७५	७५	७५	७५

दाखला फीस—एक रुपया प्रति हल।

नियम—हर एक आदमी एक या एक से अधिक जितने हल चाहे सफेद कागज पर एक रुपया प्रति हल के हिसाब से फीस के साथ भेज सकता है। फीस दाखला मनीआर्डर या पोस्टल आर्डर द्वारा भेजनी चाहिये। मनीआर्डर की रसीद हलों के साथ आनी चाहिये अथवा ऐसा हो सकता है कि आपके हल मुकाबले में सम्मिलित न हो सकें। सही हल वही समझा जावेगा जो हमारे मुहरबन्द हल के साथ जो सम्पादक महोदय दैनिक 'अमर भारत' के पास रखा गया है खाना दर खाना मिलेगा। इनामी नतीजे की कापी के लिये दो आने के टिकट और अपने पते का लिफाफा भेजें। इनाम की रकम दाखला फीस की आई हुई रकम के अनुसार कमी बेशी हो सकती है पर सही हल के इनाम का कम से कम ५०) रु० की गारण्टी है। हलों के रास्ते में खो जाने या डाकखाने के कारण देर से पहुंचने के हम जिम्मेवार न होंगे। प्रवेश फीस किसी अवस्था में भी वापिस न होगी मैनेजर साहिब पहेली का फैसला कानूनी व हर प्रकार से मानने योग्य होगा। हर मामले का फैसला देहली ही होगा। अपना पता हलों पर व मनीआर्डर कोपन पर साफ लिखें। हल ३१ जुलाई तक डाक में डाल देने चाहियें। इसके पश्चात् भेजा हुआ कोई हल स्वीकार न किया जावेगा। सही हल १५ अगस्त को प्रकाशित कर दिया जावेगा।

ई० टी० एण्ड कम्पनी, पोस्ट बैग नं० ५२ ए०, दिल्ली।

E. T. & Company, Post Bag No 52 A, Delhi.

स्वतन्त्र नारी सभा

स्वतन्त्र नारी ही देश और जाति की सबसे महान् शक्ति है। जो इस समय सम्बन्धियों और पुरुषों के अत्याचार और दासता में अपना व्यक्तित्व खो चुकी है। देश की स्वतन्त्रता के साथ साथ स्त्री जाति की स्वतन्त्रता—शारीरिक और मानसिक उन्नति चाहनेवाली बहनें हमारे साथ सहयोग के लिए तुरन्त मिलें या पत्र-व्यवहार करें और अपनी परिचित सब दुखित बहनों को हमारी सभा के विषय में सूचित करें ताकि यथाशक्ति उनकी सहायता की जाये।

आपकी बहन—सरलादेवी, संचालिका—स्वतन्त्र नारी सभा
५१५५ बरना गली, सदर बाज़ार, देहली

देशदूत में विज्ञापन दीजिए

साहित्य-चर्चा

'कचनार'

औपन्यासिक सम्राट् श्री वृन्दावनलाल वर्मा का नया उपन्यास

लेखक, श्री उमेश जोशी

ऐतिहासिक उपन्यास लिखने में श्री वृन्दावनलाल वर्मा हिन्दी-संसार में सर्वश्रेष्ठ हैं। वर्मा जी बड़े मिलनसार एवं सहृदय कलाकार हैं। उनकी ग्रहण-शक्ति बहुत तीव्र है। इन्सान के परखने की शक्ति उनके अन्दर प्रबल है। अध्ययन तो उनका विशाल तथा गहरा है। फिर भी वह नई बात को सीखने के लिए हर वक्त तत्पर रहते हैं। छोटी-छोटी कहानियाँ लिखने में भी आप बहुत सिद्धहस्त हैं। निगाह आपकी बहुत पैनी है, इसीलिए तथ्यों के झुरमुट से कोई भी उपकरण छूट नहीं पाता। वास्तव में वह कल्पना के सहारे ऐतिहासिक तथ्यों को इतना चमत्कारिक बना देते हैं, कि पाठक अपने अस्तित्व को भूलकर उपन्यास के पात्रों की बनी दुनिया में घुल-मिल जाता है और मजा यह कि उच्च कोटि की सूझ-बूझ की पृष्ठ-भूमि पर ऐतिहासिक तथ्यों की सत्यता पर कहीं भी कुठाराघात नहीं होता। यही वर्मा जी की लेखनशैली की सबसे बड़ी विशेषता है। कल्पना के धरातल के इर्द-गिर्द वर्मा जी ऐसा ऐतिहासिक तथ्यों का घना तानाबाना बुन देते हैं कि पाठक तथ्यों की गहराई में ज्यों ज्यों उतरता जाता है त्यों त्यों उसे कल्पना की रंगीन व उज्ज्वल रेखाओं से निर्मित रम्य प्रकोष्ठ का दर्शन होता है, इसीलिये वह आगे बढ़ता है और बढ़ता ही जाता है। उसकी आगे बढ़ने की दिली ख्वाहिश तब तक पूरी नहीं होती जब तक कि वह भावनाओं के अन्तिम छोर पर नहीं पहुँच जाता। वर्मा जी की लेखनशैली में एक और चमत्कार यह है कि वह अपने पाठकों के लिये एक ऐसी सुन्दर पगडण्डी बना देते हैं कि जिस पर चलकर पाठक फिर पीछे की ओर लौटने की कोशिश नहीं करता, बल्कि वह उस पगडण्डी पर चलता ही जाता है जब तक कि भावनाओं के रम्य झुरमुट से निकलकर स्वच्छ एवं दिव्य मानवता के जाज्वल्यमान परकोटे में नहीं पहुँच जाता और इसी परकोटे में उसे "सत्यं शिवं सुन्दरम्" का यथार्थ दर्शन होता है यहीं पर वर्मा जी की कला का चरम उत्कर्ष देखने को मिलता है। तथ्यों के फैलाव व प्रसार में वर्मा जी बड़े सिद्धहस्त हैं और उस वक्त बड़ा सुन्दर दृश्य हो जाता है जब कि वह ऐतिहासिक तथ्यों के फैलाव पर मानव-हृदय के चढ़ाव-उतार के तारतम्य को गुम्फित करते हैं तब पाठक की सम्पूर्ण सहानुभूति वर्मा जी के प्रति उमड़ पड़ती है। यही कलाकार के कला के चित्रण की सार्थकता है।

पाठक का एक बार पढ़ने से जी नहीं अघाता वह फिर पढ़ता है, फिर भी उसकी तबीअत नहीं भरती, ज्यों ज्यों वह पढ़ता है त्यों त्यों उसे नवीन भाव वर्मा जी के "कचनार" में मिलते [illegible] जाते हैं। "कचनार" की यही सबसे बड़ी विशेषता है। पाठक का दिल इस उपन्यास को कई बार पढ़ने के लिए बेकरार रहता है। उसकी तृप्ति नहीं होती। "कचनार" एक लड़की का नाम है, उसी के नाम पर उपन्यास का नामकरण किया गया है। "कचनार" का चरित्र-चित्रण बड़ा ही उच्च कोटि का किया गया है। हिन्दी-साहित्य में इस प्रकार का चरित्र-चित्रण उँगलियों पर गिने जाने लायक है। "कचनार" के पवित्र एवं दिव्य स्वरूप का चित्र चतुर कथाशिल्पी के औपन्यासिक रंगों से इतना दमक उठा है कि हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासों में सदा सूर्य की तरह चमकता रहेगा। इस प्रकार के उपन्यास कालेजों के विद्यार्थियों के लिये बड़े ही सुन्दर हैं। मैं दावे के साथ कहता हूँ कि यदि "कचनार" उपन्यास बी० ए० और एम० ए० के कोर्स में रक्खा जाये तो विद्यार्थियों का चरित्र-निर्माण ही होगा। मुझे आशा है कि अधिकारीवर्ग इस तरफ अवश्य ध्यान देंगे। वर्मा जी के सभी उपन्यास विद्यार्थियों के लिये अमूल्य निधि हैं। विशारद एवं साहित्य-रत्न के कोर्स में भी वर्मा जी के उपन्यासों में से किसी एक को अवश्य रखना चाहिए।

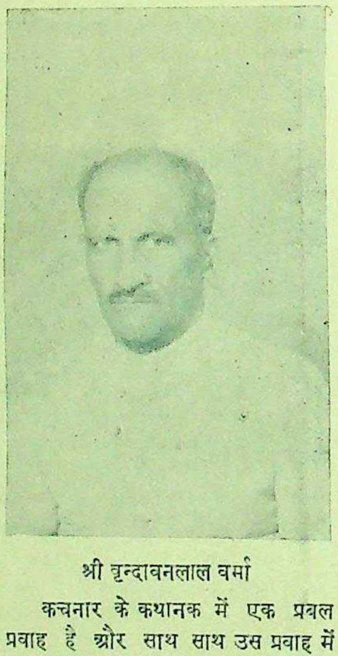

श्री वृन्दावनलाल वर्मा

कचनार के कथानक में एक प्रबल प्रवाह है और साथ साथ उस प्रवाह में एक आकर्षण भी है। शैली में रोचकता भी है और भाषा के सम्बन्ध में तो कहना ही क्या, उस पर तो वर्मा जी का पूरा अधिकार है। ऐतिहासिक सामग्री तथा कल्पना के तो वर्मा जी महासागर हैं। छोटे से छोटे तथ्य के गर्भ से एक बड़ा ऐतिहासिक नकशा खींच डालना वर्मा जी के बाएँ हाथ का कार्य है और हाँ इतने पर भी कहीं भी उनके चित्रण में कृत्रिमता नहीं आने पाती। उपन्यासकार ने स्वाभाविकता का निर्वाह बड़े कलात्मक ढंग से किया है।

(१) तथ्यों का स्पष्टीकरण टेकनिकल ढंग से हुआ है।

(२) तथ्यों की गहराई तक में कहानीकार ने प्रवेश किया है।

(३) भावनाओं को काफी अच्छी तरह से सुलझाया गया है। प्रत्येक भावना को खूब झकझोरा है, इसलिये प्रत्येक भावना की उम्र पर गर्द-गुबार नहीं रहा।

(४) तथ्यों को सिस्टेमेटिक स्टाइल से सजाया गया है। सारे के सारे तथ्य एक ढेर की शक्ल में प्रस्तुत नहीं किये गये। कोई भी तथ्य असुन्दर प्रतीत नहीं होता।

(५) उपन्यास लिखने से पूर्व, कथाकार ने जीवन की गलियों को स्पष्ट रूप से देखा है, इसीलिये प्लाट का फैलाव कृत्रिमता से नहीं हो पाया।

(६) कथाकार वासना की परिधि से निकल आया है, उसके कुल पात्रों के मनोभाव वासना के प्रकोष्ठ में ही घुमड़कर नहीं रह गये। यही कथाकार की बहुत बड़ी विशेषता है।

(७) कहानी लिखते वक्त जीवन की उच्छृङ्खल रेखाओं से काम नहीं लिया गया, इसीलिये कहानी या प्लाट के इर्द-गिर्द एक ऐसा परकोटा खिंच गया है कि जिसमें आत्मा की सजीवता का उज्ज्वल घरौंदा बन गया।

(८) कला और सौन्दर्य की रक्षा "कचनार" में बड़ी बहादुरी एवं दिलेरी के साथ की गई है। इससे प्लाट में स्वाभाविक रुचि का आविर्भाव हो गया।

(९) कथा के प्रवाह में कहीं भी झटके नहीं लगते, इसीलिये कचनार का प्लाट बड़ी आसानी एवं स्वाभाविक ढंग से अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ता जाता है।

(१०) नये ख्यालातों, नये उसूलों, नये जजबातों की पृष्ठभूमि पर कथा की बुनियाद रक्खी गई है। इसीलिये कहानी में कहीं भी लचक नहीं दीखती। कहानी जीवन की ऊँची-नीची घाटियों को पार करती हुई धारावाहिक रूप से प्रवाहित होती हुई विकास की मंजिल की तरफ बही चली जाती है।

(११) कथा को जीवित बनाने के लिये मानवत्व के नये दृष्टिकोण का प्रयोग किया गया है।

(१२) जीवन-संघर्ष में कथाशिल्पी काफी पड़ा है। जीवन से वह काफी जूझा भी है, तब कहानी लिखने बैठा है। कचनार का स्कैच खींचने में काफी हिम्मत से काम किया है। कहीं भी कथाकार मायूसी के घने अन्धकार में नहीं पड़ा, बल्कि उसको चीरता हुआ मंजिल तक सफलता के साथ पहुँचा है।

(१३) ग्रहण-शक्ति का कचनार में काफी विस्तार किया गया है। इसी के विस्तार पर कचनार की रूप-रेखा अवलम्बित है।

(१४) शृङ्गार के प्रवाह में वास्तविक तथ्यों को नहीं छोड़ा गया। कथा के प्रारम्भ से लेकर अन्त तक जीवन की वास्तविकता का ध्यान रखा गया है।

(१५) प्लाट को हर प्रकार की गन्दगी से दूर रखा गया है। इसीलिये कचनार के स्वरूप में काफी चमक आ गई है और पवित्रता का तो कहना ही क्या?

(१६) भाषा की रवानगी में स्फूर्ति का नकशा चित्रित है।

(१७) कलाकार ने आदर्शवाद को वास्तविकता की सजीव पृष्ठ-भूमि पर बड़ी सफलता के साथ उतारा है, उतारने में कहीं भी भावनाओं के पर्तों में सिकुड़न नहीं आ पाई। प्रत्येक भावना का पर्त "आइरन" किया हुआ मालूम देता है।

(१८) वर्मा जी वार्तालाप
भी बड़े प्रवीण हैं। कहानी की
लाप हुआ करती है। सफल
लेखक लिख सकता है, जिसके
की वास्तविकता का ज्ञान हो,
विषमताओं की बीचियों में से
रना पड़ा हो।

(१९) प्लाट में कहीं भी
का मजार नहीं बनाया गया।
की दुनिया से कचनार को बड़ी
के साथ बचाया है। बचाने में
का प्रयोग किया गया है।

(२०) एक तथ्य को
जोड़ने में कहीं भी क्रियात्
से काम नहीं लिया गया। जोड़
आकार नहीं मालूम पड़ता, यही
है। पूरी कहानी में कहीं भी
लगा मालूम पड़ता। कहानी देखने
स्वच्छ मालूम पड़ती है। कथा
एवं अन्तर रूप दोनों ही सुन्दर
चित्र-निर्माताओं के लिये सुअवसर

चित्र-निर्माताओं से भी हमारा
दन है कि वे "कचनार" को
उतारें तो उनको धन तो मिलेगा
उसके साथ साथ यश भी
जायेगा। मैंने "कचनार" का
चित्रपट टैकनिक के हिसाब से
और जो कुछ मुझे चित्र पर
अनुभव है उसके आधार पर
साथ कह सकता हूँ कि "कचनार"
फिल्म निर्माण करने में
हाथ लगेगी। बोक्स आफिस
के हिसाब से मतलब यह
"कचनार" फिल्म के लिए
इसलिये चित्रपट-निर्माताओं को
अवश्य ध्यान देना चाहिए।
रजतपट पर उतारकर
व समाज की बड़ी सेवा कर
अपना राज है। स्वतन्त्र भारत
मनोरंजनयुक्त चित्रपट बनें
तभी देश का कल्याण होगा।
का स्क्रीनप्ले बनाने में भी
नहीं पड़ेगी। "कचनार"
सिनेमेटिक स्टाइल से लिखे
वर्मा जी की लेखन-शैली
स्टाइल भी काफी है। चित्र-
लिये यह सुअवसर है कि
मिल करके अथवा उनसे
करके "कचनार" के सम्बन्ध
टर्मस तय कर लें, नहीं तो
ही रह जायेंगे। वास्तव
उपन्यास हिन्दी-संसार का
प्रकार के उपन्यास हिन्दी-
को बढ़ा सकते हैं।
हिन्दी-संसार को बहुत आशा

मुफ्त

युवको! यदि अपनी
नष्ट कर चुके हो, अथवा
फीका हो चुका हो तो
सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त
कविराज ब्रह्मसरूप बी०
फतेहपुरी (D.A.) देहली
(सम्मति) मुफ्त लेकर
सुधार लें।

हिन्दुस्तानी शीघ्रलिपि तथा हिन्दी टाइपराइटर

विधान-परिषद् द्वारा नियुक्त समिति की ओर से

प्रकाशित प्रश्नावली

धान-परिषद् द्वारा नियुक्त हिन्दु- स्तानी शीघ्रलिपि तथा हिन्दी टाइपराइटर समिति ने निम्नलिखित निकाली है। इसके उत्तर समिति कौंसिल हाउस नई देहली को जें।

आपकी सम्मति में उत्तम और शीघ्रलिपि में कौन कौन से गुण तत्त्व होने चाहिये। (२) गुणों और तत्त्वों को ध्यान हुए वर्तमान समय में अँगरेजी भाषाओं में प्रचलित शीघ्र- में से क्या किसी एक को शीघ्रलिपि का आधार बनाया है यदि हाँ तो किसे और आप हिन्दुस्तानी भाषा तथा को ध्यान में रखते हुए नई पद्धति का आविष्कार, या अन्य किसी भाषा की हो, आवश्यक समझते हैं ऐसा समझते हैं तो क्यों? जी की वर्तमान पद्धतियों हिन्दुस्तानी शीघ्रलिपि के आधार पर ज्यों का त्यों आपकी सम्मति में सम्भव है तो कहाँ तक? (५) लिपि को पूर्ण बनाने के जी तथा अन्य पद्धतियों तरीके अपना सकते हैं? उपयोग कैसे किया जाये? की सभी भाषाओं के लिए शीघ्रलिपि तैयार करने में आपके क्या विचार हैं? हिन्दुस्तानव्यापी शीघ्रलिपि तो उसमें किस हद तक सकेगी? (७) उत्तम शीघ्र- ध्वनि प्रधान पद्धति ठीक ? (८) हिन्दुस्तान की योजना को ध्यान में स्तानी शीघ्रलिपि के लिए जन की कौन सी व्यवस्था (४) शब्दों के प्रारम्भ में आनेवाले स्वरों तथा संयुक्त स्वरों की आपने क्या व्यवस्था की है? (५) १ रेखाओं के मोटे पतले का भेद, २ उनके आधा दुगना करने की रीति, ३ स्वर चिह्नों को साथ मिलाकर या अलग लिखने की पद्धति और ४ चिह्नों को लकीर के ऊपर लकीर पर, और लकीर को काटकर लिखने की तरकीबों का आपने कहाँ तक उपयोग किया है और इस बारे में आपका अनुभव क्या है? (६) क्या आपने अपनी पद्धति के अनुसार शब्द संकेत और शब्द संक्षेप और वाक्यांश बनाये हैं? अगर बनाये हैं तो उनसे गति बढ़ने में कितना लाभ हुआ है? (७) क्या आपकी पद्धति कहीं अमल में है? और अगर है तो क्या आप उसके प्रसार और सफलता के बारे में प्रमाणिक आँकड़े दे सकते हैं? और यदि ऐसा कर सकते हों तो कृपया आँकड़े भेजें। (८) आपकी पद्धति के अनुसार १ पत्र लेखक तथा २ संवाददाता दोनों प्रकार के विद्यार्थियों को तैयार करने के लिए मामूली तौर पर कितना समय लगता है? (९) क्या आप मानते हैं कि आपकी पद्धति हिन्दुस्तानी के अलावा दूसरी देशी भाषाओं के लिए भी काम में आ सकती है, अगर अन्य भाषाओं के लिए भी कहीं अमल में हो तो उसकी गति तथा अन्य बातों के विषय में आवश्यक जानकारी दें। (१०) आपकी योजना की विशेष जानकारी हासिल करने के लिए और उस योजना की सफलता की जाँच करने के लिए यदि कमेटी आपको देहली तक बुलावे तो क्या आप आ सकेंगे?

के आविष्कारकों के लिए प्रश्नावली

पया अपनी पद्धति के लिखे हुए प्रश्नों का उत्तर

लिपि के अनुसार एक से अधिक कितने शब्द हैं? शब्दों की गणना के के अनुसार कारक प्रत्यय जायेंगे। (२) आदर्श शीघ्र- की शीघ्रता के साथ और वाचन सुगमता आवश्यक में प्रचलित पद्धतियों में जाते हैं उन्हें हटाने के लिये उपाय काम में लाते हैं? अक्षर के लिए आपने जो हैं वैसी चिह्न रखने के है यानी किस सिद्धान्त पर निश्चित किये गये हैं?

प्रमाणित मान्य मुद्रा-लेखन यंत्र

(१) प्रमाणित उपयोगी नागरी लेखन यंत्र में आप किन किन अक्षरों तथा मात्राओं का समावेश आवश्यक समझते हैं (२) सभी भारतीय भाषाओं के लिए अगर एक ही प्रमाणित नागरी लेखन यंत्र बनाना हो तो उसमें और किन किन ध्वनि चिह्नों का समावेश होना चाहिए। (३) नागरी लिपि को लेखन यंत्र के लिए ज्यादा उपयुक्त बनाने के लिए आप इस लिप में क्या क्या परिवर्तन सुझा सकते हैं, आप अपने सुझावों का पूरा ब्यौरा दें। (४) नागरी लेखन यंत्र में अक्षरों तथा मात्राओं के अतिरिक्त आप किन किन अन्य चिह्नों का समावेश चाहेंगे? (५) अच्छी गति, सुन्दरता, किफायत और सम्पूर्णता के ख्याल से नागरी लेखन यंत्र में कुल कितने बटन चाहिए? (६) नागरी लेखन यंत्र के वर्तमान मुद्रा-यंत्रों में आप क्या कमी पाते हैं? अगर आप ने इस बारे में कोई छान बीन की हो तो ब्योरेवार लिखें। (७) नागरी व रोमन लिपि के लेखन यंत्रों की जो वर्तमान रचना है उससे भिन्न कोई दूसरी यंत्र रचना आप सुझा सकते हैं? या वर्तमान यंत्रों में ही कोई परिवर्तन सुझा सकते हैं? जिससे गति और बटनों की संख्या बढ़ सके तथा मुद्रण में आसानी हो? (८) नागरी के अक्षरों की संख्या, संयुक्त अक्षर तथा उसकी जटिलताओं का ख्याल करते हुए मुद्रा-लेखक के दिमाग पर जो जोर पड़ता है उसमें कमी करने के लिए आप क्या कोई तरीका सुझा सकते हैं?

(९) प्रमाणित यंत्र लेखन के लिए क्या आपने कोई की बोर्ड बनाया है? अगर हो तो कृपया उसका नकशा भेजें। और इस बात का ब्यौरा दें। अक्षरों तथा चिह्नों के स्थान निश्चित करने में आपने किन किन सिद्धान्तों का ख्याल रखा है? अगर आपने गति की जाँच की हो तो उसका नतीजा भी दे दें। (१०) सुन्दरता तथा सुवाच्यता के ख्याल से वर्तमान समय में लेखन यंत्रों अथवा मुद्रण यंत्रों में जो नागरी अक्षर प्रचलित हैं उनमें किस टाइप को आप पसंद करते हैं? अगर उनमें से कोई भी टाइप आपको पसंद न हो तो आप अपने टाइप की कल्पना दें। (११) सारे हिन्दुस्तान में एक से प्रमाणित अंक प्रचलित करने के लिए आप मुद्रा लेखन के लिए कौन से अंकों के रूप पसंद करेंगे? वर्तमान नागरी अंकों को सभी भाषाओं के लिए उपयोगी बनाने में क्या आप कोई सुधार पेश कर सकते हैं? नागरी के बजाय रोमन अंक लेने के सम्बन्ध में आपकी क्या राय है? (१२) प्रमाणित मुद्रा यंत्र के कितने प्रकार होने चाहिए? बड़े और छोटे यंत्रों की बोर्ड में आप कोई फर्क रखना चाहते हैं? (१३) क्या वर्तमान अँगरेजी मुद्रा यंत्र नागरी में परिवर्तन किया जा सकता है? किफायत, सुविधा सुलभता तथा उपयोगिता का ख्याल रखते हुए अगर आप इसे सम्भव समझते हैं तो आपके सुझाव क्या हैं? (१४) आपके सुझावों का टाइप राइटर के वजन, मूल्य तथा आकार पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

ऊपर के सवालों का जवाब देते समय कृपया नीचे लिखी बातों का ख्याल रखें—लिपि सुधार का पूरा आधार वर्तमान प्रचलित नागरी लिपि ही हो। कोई भी मुद्रा यंत्र आपके सुझाव के अनुसार बहुत बड़ा न हो जिससे उसका दाम तथा वजन बढ़े या गति कम हो। यंत्र निर्माण में अगर आप परिवर्तन सुझायें तो यंत्र की जटिलता न बढ़े, बल्कि उसकी सरलता बढ़े। जो परिवर्तन सुझाया जाय वह बड़ी तादाद में यंत्र बनाने के लिए सुविधाजनक सिद्ध हो।

इस प्रश्नावली के उत्तर समिति के मंत्री के पास २२ जुलाई सन् १९४८ तक पहुँच जाने चाहिए।

सुरैया की त्वचा
लक्स टॉयलेट
साबुन
के कारण से ही
सुन्दर है

इस सुन्दर फिल्मी अभिनेत्री का कहना है कि :—"लक्स टॉयलेट साबुन पाकर मैं स्वयं भाग्यशाली मानती हूँ। इस का मलाईदार और सुगंधियुक्त झाग मेरी त्वचा को साफ़ और मृदु रखता है। मुलायम एवं पुष्प के सदृश कोमल त्वचा का मान करनेवाली हर स्त्री को मेरी अनुमति है कि वह लक्स टॉयलेट साबुन के सौन्दर्य उपचार का अनुभव करे।"

लक्स टॉयलेट साबुन
फिल्मी अभिनेत्रियों का सौन्दर्य-साबुन
LUX
LUX TOILET SOAP

भारत का विदेशों से सम्बन्ध

(पेज ५ का शेष)

क्रांति की सफलता का सवेरा तो और भी अधिक सम्मोहक होता है, लेकिन भविष्य की आँच में तपने पर कई बार सुनहरा सोना ताँबे का टुकड़ा साबित होता है। इसीलिए तो क्रांतिकाल से अधिक उसका अनुगामी शांतिकाल संकटाच्छन्न होता है। नेतृत्व की सच्ची कसौटी वह शांतिकाल है जिसमें क्रांति द्वारा ढाये गये भग्नावशेषों पर नई इमारतें खड़ी की जाती हैं।"

भारतवर्ष ने अभी एक क्रांति समाप्त की है और आज जिस युग में वह साँस ले रहा है वह शांति का युग है। क्रांति अपने उद्देश्य में संघर्ष-मूलक और विध्वंसात्मक होती है। क्रांति के चरणों में सतर्कता नहीं होती, किंतु शांति का प्राचीर इस विद्युत्वेग से नहीं बन सकता। उसमें तो एक-एक ईंट को विश्वास और व्यवस्था के साथ रखना पड़ता है। हमारी अंतर्राष्ट्रीय नीति के सामने आज यही चेतावनी है। महात्मा गांधी ने अपने कर्मयोग की प्रयोगशाला में हमारी प्रसुप्त सांस्कृतिक शक्ति की परीक्षा की थी और उनके निष्कर्ष से हम अवगत हैं कि सारी मानवता को परित्राण देने की सामर्थ्य भारतवर्ष में है। अतः हमारे सामने आज सिर्फ यही चुनौती है कि या तो हमें संसार के राष्ट्रों का नेतृत्व करना चाहिये या नष्ट हो जाना चाहिये। एटम बम को व्यर्थ कर देनेवाला महापुरुष हमें हमारी परम्परा का यह सन्देह स्वयं अपनी अनुभूति द्वारा दे गया है। नेतृत्व का हमारा अभिप्राय हिटलर या स्तालिन की विश्व-स्वामित्व की लिप्सा नहीं है अपितु मानव-मात्र को मुक्त और सुखी जीवन प्रदान करने की हमारी शुभ निष्ठा है; हमारी मंगल-बुद्धि है, जिसने हमें पिछले पच्चीस वर्षों से एक अभूतपूर्व क्रांति का सैनिक बना रक्खा है।

यह हमारी अंतर्राष्ट्रीय नीति की भाव भूमि की विस्तृत और उज्ज्वल परिधि है। आज की दुनिया के वातावरण में पोषित संकीर्ण मनोवृत्ति के ज्ञान-तंतु उसके महत्त्व को हृदयङ्गम नहीं कर सकते। इसीलिये हमारे दृष्टिकोण को कहीं-कहीं असंतुलित बताया जाता है। किंतु हमारे मंतव्य स्पष्ट हैं। हमारे अहिंसक संग्राम के विषय में भी लोगों की प्रायः यही सम्मति थी, लेकिन हमारे संकल्प ने आज सारे संसार को अपनी सम्मति बदल देने के लिये विवश कर दिया है। हमारी अंतर्राष्ट्रीय नीति के सम्बन्ध में भी हमें अपने संकल्प की गाँठों को इसी प्रकार दृढ़ करना होगा।

नवीन मार्ग का अवलम्बन

भारतीय राजनीति में गांधी जी के प्रवेश के पूर्व हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन के दो रूप थे—विधानवादी वर्ग और उग्रतावादी वर्ग। दोनों वर्गों का अन्तर इतना अपरिमित था कि किसी प्रकार भी दोनों एकाकार नहीं हो सकते थे। साम्राज्यवादी सरकार को यह अंतर अभिप्रेत था और उसका निरन्तर यह प्रयत्न रहता था कि इस खाई को और भी चौड़ा किया जावे। विधानवादियों को सरकार प्रलोभनों, खिताबों और सरकारी ओहदों द्वारा पालतू बना सकती थी। सरकार को हमारे बुद्धिवादी वर्ग के इस नैतिक दौर्बल्य का ज्ञान था और जब उसने हमें कसौटी पर परखा तो वस्तुतः हम उसके छद्म अनुग्रह के जाल में फँस गये। कांग्रेस के प्रारम्भिक मंच से काफी बुद्धिवादी वर्ग ने इस प्रकार सरकार से सहयोग करके जनता के प्रकृत अधिकारों पर विदेशी स्वामित्व का पंजा मजबूत करने में सहायता दी। सरकार को इस प्रकार बुद्धिवादी वर्ग से भय की आशंका नहीं थी। उग्रतावादियों से उसे खतरा अवश्य था; किंतु सरकार उनकी परिमित शक्ति, प्रभाव और संगठन-हीनता से भली भाँति परिचित थी। सहयोगी बुद्धिवादी वर्ग की सहायता से वह उनका दमन कर सकती थी।

ऐसी परिस्थिति में हमारा स्वातंत्र्य-आन्दोलन ऐसे जलयान की भाँति था जिसके मल्लाह न तो अपने गंतव्य से परिचित थे, न उन्हें जहाज चलाने की प्रणाली का ज्ञान था और न उनमें सहयोग और सहानुभूति की वह सामूहिक भावना थी जो संघ-शक्ति का अपेक्षित उद्रेक करती है। गांधी जी के आविर्भाव से हमारे नवोदित राष्ट्रवाद के क्षेत्र की यह अराजकता तिरोहित हो गई। विधानवादी वर्ग की नैतिक दुर्बलता का उन्हें भली भाँति ज्ञान था। दक्षिण-अफ्रीका के सत्याग्रह-आन्दोलन में व्यावहारिक रूप से वे बुद्धिवादी वर्ग की परीक्षा कर चुके थे। अतः विधानवादियों के साथ उन्होंने सहयोग उचित नहीं समझा। उग्रतावादियों की कार्य-प्रणाली से वे संतुष्ट नहीं थे, क्योंकि त्याग और लगन की गहरी भावना के होते हुये भी उनके साधन ऐसे थे जिनके फलस्वरूप एक बृहत् एवं व्यापक जन-संगठन कभी नहीं बन सकता था। वे दार्शनिक दृष्टि से भारत की समन्वय-प्रधान संस्कृति के प्रतिनिधि थे। अतः उन्होंने दोनों मार्गों का परित्याग करते हुये एक नवीन मार्ग का अवलम्बन किया। दोनों वर्गों की आंतरिक दुर्बलताओं की उपेक्षा करते हुये उन्होंने दोनों वर्गों के मौलिक सिद्धान्तों को एक सूत्र में आबद्ध कर दिया और सामान्य जन-स्तर पर एक ऐसे व्यापक और बलवान राष्ट्रीय संगठन का निर्माण किया जो अल्पकाल में ही संसार का सबसे बड़ा राजनीतिक संगठन बन गया। इस प्रकार गांधी जी के आविर्भाव से भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन न तो विधानवादी विनम्रता में उलझा रहा और न वह उग्रतावादियों के छोटे समुदायों तक ही सीमित रहा, वरन् समाज के प्रत्येक स्तर में सामान्य रूप से प्रविष्ट होकर व्यापक जन-समाज के लिये एक अत्यन्त शक्तिशाली और प्रेरक तत्त्व बन गया।

साधन और साध्य

गांधी जी की दृष्टि सर्वाङ्गीण थी। राष्ट्रवाद की व्यापक हिलोर पर भी उनकी दृष्टि गई। उसके उद्वेलित उन्माद को देखकर उन्हें जर्मनी, इटली, रूस और [illegible] गामी राष्ट्रवादों का स्मरण हो आया। उन्होंने इस बवंडरों के रूप में प्रस्फुटित उन्मत्त राष्ट्रीयता के परिहार को आवश्यक समझा। प्राणिमात्र के प्रति निश्छल प्रेम-भाव को हमारी साध्य-प्राप्ति का साधन बनाकर उन्होंने एक बड़े अद्भुत तरीके से राष्ट्रवाद के भीतर छिपे विष का परिमार्जन कर दिया। साध्य-साधन की एकरूपता ने इस कार्य को और भी सरल कर दिया। प्रकट रूप से गांधी जी की अहिंसा एवं साध्य साधन का ऐक्य और दोनों का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध पूर्णतया राजनीतिक दृष्टिकोण के प्रतिकूल पड़ते थे; किंतु उनके भीतर राष्ट्रवाद से उत्पन्न आज के संसार की अनेक व्याधियों का बड़ा अचूक इलाज छिपा हुआ था। वे दूरदर्शी थे। पाश्चात्य देशों में प्रचलित राष्ट्रवाद की कमजोरी का उन्हें ज्ञान था। फ्रांस, अमेरिका और रूस की क्रांतियों का इतिहास उनके सम्मुख था। इन क्रांतियों के उद्देश्य कितने महान् आकर्षक थे; किन्तु बाद में उनके स्वप्नद्रष्टाओं ने जिन मार्गों का अवलम्बन किया उनसे वे किस ध्येय पर पहुँचे! भारत में भी क्रांति की परिस्थितियाँ नई पीढ़ी के जागृत दृष्टिकोण का पोषण पाकर परिवर्तन का व्यापक समारोह करनेवाली थीं। अतः उन्होंने साधन और साध्य की अनुरूपता को विपथगामिता से सुरक्षित रहने के लिए आवश्यक समझा। जागरण का जो संदेश लेकर वे चले थे, वह एकांत रूप से राजनीतिक

या आर्थिक ही नहीं था, वरन्
सर्वाङ्गीण क्षेत्र का स्पर्श करता
उसकी प्रेरणा का स्रोत सामाजिक
होकर आध्यात्मिक स्तर था। अतः
लिए यह स्वाभाविक ही था कि वे
असत्य और हिंसा की भावनाओं
असहयोग करें तथा अपने आ
संसार को उनसे दूर रखने का प्रयत्न
आचरण की भूमि में उतरकर
आदर्श अपनी मर्यादा के प्रति
हो जाता है कि साध्य तक गौण है
है और साधन ही सर्वस्व हो
साधन की विशुद्धता स्वमेव ही
पहुँचाने की क्षमता रखती है।
जी को एक पत्र में गांधी जी ने
परिस्थिति स्पष्ट करते हुए इसी
को प्रकट किया है—"मैं तो यह
करता हूँ कि हमारे साधन जितने
होंगे उतनी तीव्रता से हम अपने
की ओर अग्रसर होंगे। मैं यह
कि यदि हम अपने साधनों के
सावधानी रखेंगे तो हमारे ध्येय
निश्चित है।......अब गुप्त
के विषय में भी मैं अपनी स्थिति
दूँ। सदैव की भाँति आज भी मैं
ही दृढ़ हूँ कि वे अनिवार्य रूप से
कर दिये जाने चाहिए। अतः
भावना के विकास के साथ
गोपनीयता की संगति नहीं बैठती।"

क्रांति के ध्येय की दिशा
प्रथम निदान और प्रथम उपचार था।

लिपटन के प्रेमी :

"अब वे बड़े चाव से
आते हैं"। मैं उन्हें
लिपटन की
हिमालयन ब्लेण्ड
चाय पिलाता हूँ

कैण्टीन मैनेजर

कारख़ाने के मज़दूरों को चाय की ख़ासी अच्छी पहचान होती
पहले तीन महीने तक मैंने उन्हें भाँति भाँति की कीमती पत्ती
पिलाई, पर उन्हें किसी तरह पसंद ही न आती थी और वे
शिकायत करते रहते थे। एक दिन मैंने देखा कि चौकिदार अपनी
बना रहा है और लिपटन की हिमालयन ब्लेण्ड इस्तेमाल
रहा है। मैंने इसको पीके देखा और तब से मैंने इसी चाय
लिया है। पिछले दो साल से कैण्टीन में यही चाय व्यवहार
रही है। तब से शिकायत सुनने को मिली ही नहीं। बहुत बढ़िया
के साथ साथ यह चाय कमखर्च भी है।

Lipton's Flowery Orange Pekoe

लिपटन की
हिमालयन ब्लेण्ड
सर्वोत्तम दार्जिलिंग चाय

और लूटमार के समय रजाकारों द्वारा लाये गये हैं। यह भी समाचार मिला है कि जिलों के सरकारी यतीमखानों में भी ऐसे बहुत से बच्चे हैं।

सलगरा जिला गुलबर्गा में नारायण-राव पटेल, विश्वम्भरराव पटेल और अन्य धनवानों को अचलेर के कुछ रजाकारों ने गिरफ्तार करके अपने पड़ाव में कैद में डाल दिया और उनके हाथों को गन्ने की तरह पेंच देकर इतना कष्ट दिया कि वेहोश हो गये। अंत में उनसे दो हजार रुपया लेकर छोड़ दिया। अब भी उन्हें ग्राम से बाहर जाने नहीं दिया जाता और न इलाज करने की छुट्टी है।

हैदराबाद स्टेट कांग्रेस उस्मानाबाद विभागके मन्त्री विश्वम्भरराव हगलकर, उनके भाई गहनीनाथ हगलकर करनसप्पा संगशेट्टी, बसवण अप्पा संगशेट्टी और देवराव की जमीनों पर रजाकारों ने कब्जा कर लिया है।

—संवाददाता

* * *

गोंडा तखगंज की एक सार्वजानिक सभा में भाषण देते हुए प्रान्तीय कांग्रेस पार्लियामेंटरी बोर्ड के संयोजक श्री मोहनलाल जी गौतम ने कहा कि अब अँगरेज यहाँ से चले गये हैं। और हम आजाद हो गये हैं। अँगरेज यहाँ से मुहब्बत से नहीं गये हैं हमने उन्हें निकाल दिया और घूँसा मारकर निकाल दिया है। हमने आजादी ली है इसलिये कि हम सबके लिये भर पेट भोजन, वस्त्र, दवा का प्रयत्न कर सकें और सबको शिक्षित कर सकें। अँगरेजों के शासनकाल में यहाँ से अनाज बाहर भेजा जाता था। बंगाल में अकाल पड़ा और करीब ३५ लाख व्यक्ति मर गये। जब से कांग्रेस ने शासन सँभाला हमने एक भी आदमी को भूखों नहीं मरने दिया। जो वेकार जमीन है उसको खेती के योग्य बनाया जा रहा है। ग्राम-पंचायत ऐक्ट बनाया गया है जिससे किसानों के झगड़ों को ग्राम पंचायत में ही निपटा दें और वे कचहरी जाने की बरवादी से मुक्त हो जाय।

आपने अनुशासन का महत्व बतलाया और उसे पालन करने पर जोर दिया। इसके बाद कैम्प के इन्चार्ज ने गौतम जी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुये उन्हें धन्यवाद दिया।

—संवाददाता

* * *

हरिद्वार के श्री सनातम धर्म हाई स्कूल के वार्षिए परीक्षा फल के अवसर पर सफल लड़कों को पारितोषिक वितरण करते समय कर्मवीर पं० चिरंजीवलाल शर्मा ने अपने भाषण में कहा कि लड़कों को उर्दू की बजाय हिन्दी की ओर ध्यान देना चाहिए ताकि अपनी मातृभाषा की उन्नति के मार्ग पर चलकर शिक्षा में इस प्रांतवालों के साथ चल सकें। आपने शरणार्थी बच्चों का जिक्र करते हुए दुःखी दिल से कहा कि पाकिस्तान बनने से इन बेचारों को बड़ी हानि उठानी पड़ी। इनका यह अमूल्य समय जो कि विद्याध्ययन में व्यतीत होता अब परिश्रम और मजदूरी में नष्ट हो रहा है। आपने हिन्दी अध्ययन के लिए लड़कों में उत्साह पैदा करने के लिए १०) रु० मासिक का वजीफा नियत किया जो हिन्दी में प्रथम आनेवाले को दिया जायेगा। पं० श्यामसुन्दर बी० ए० हेडमास्टर ने अंत में धन्यवाद दिया।

हरिद्वार संयुक्तप्रांत के स्वायत्त शासन-विभाग के मन्त्री श्री ए० जी० खेर ने मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, रायपुर, देहरादून, राजपुर, मसूरी, डोईवाला, भोगपुर तथा ऋषिकेश आदि स्थानों का दौरा किया आपने देहरादून में बोर्ड द्वारा संस्थापित टैक्नीकल इन्स्टीट्यूट का उद्घाटन किया। इस संस्था में मोटर, बिजली और बढ़ई का काम सिखलाया जायेगा। म्युनिसिपल तथा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, मुजफ्फरनगर, एम्प्लोइज एसोसियेशन सहारनपुर, तथा संगीत समिति देहरादून की ओर से श्री खेर को मानपत्र भेट दिये गये। आपने इस इलाके में कांग्रेस के प्रतिनिधि श्री दीनदयाल शास्त्री और श्री शान्तिप्रपन्न के समर्थन में कई सभाओं में भाग लिया।

—संवाददाता

* * *

गंगानगर (बीकानेर राज्य) में हर साल की तरह इस वर्ष भी नवयुवक पुस्तकालय गंगानगर द्वारा लोक-शिक्षण और शिक्षा-प्रसार के लिए 'शिक्षा-सप्ताह मनाया गया। पहले दिन प्रभात-फेरी निकाली गई और रात्रि को बीकानेर राज्य के शिक्षाध्यक्ष श्री० एम० एन० तोलानी के उद्घाटन-भाषण के साथ सप्ताह की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। सातों दिन हिन्दी सम्मेलन, शिक्षा-सम्मेलन और नागरिक शास्त्र-सम्मेलन आदि विभिन्न सम्मेलन हुए जो खूब ही सफल रहे। बीकानेर राज्य के लोकप्रिय शिक्षा-सचिव आचार्य गौरीशंकर जी, डूँगर कालेज के प्रिन्सिपल श्री जुगलसिंह जी खीची एम० ए० और स्वामी केशवानन्द जी महाराज ने भी सप्ताह की कार्यवाही में भाग लिया जनता ने सारे कार्यक्रम में खूब दिलचस्पी ली। इस आयोजन ने नगर की जनता में शिक्षा के लिए एक नई लगन—एक नई चेतना पैदा कर दी।

—रामधनदास गोयल

* * *

जयपुर में दक्षिणी पूर्वी विभाग तथा उत्तरी विभाग के स्कूल निरीक्षकों के हेडक्वार्टर शहर से हटाकर शीघ्र ही सवाई माधोपुर तथा नीमका थाना में स्थापित किये जावेंगे, ताकि स्कूलों का निरीक्षण भले प्रकार से किया जा सके, सहायक स्कूल निरीक्षकों के हेडक्वार्टर भी स्कूल निरीक्षकों के हेडक्वार्टर के साथ ही रहेंगे ताकि वे स्कूल निरीक्षकों के काम में सहायता दे सकें। सब डिप्टी इन्सपेक्टर के हेडक्वार्टर तहसीलों में रहेंगे।

ऐजूकेशन बोर्ड तथा शिक्षा विभाग के अन्य कार्यों में 'वर्नाक्यूलर' शब्द के स्थान पर हिन्दी शब्द प्रयोग किया जावेगा।

सरकार ने निम्नलिखित २१ स्थानों पर वर्नाक्यूलर प्राइमरी स्कूल खोलने की स्वीकृति दे दी है:—पिलुवाड़ा, सायवाड, गाडाखेड़ा, ईटावा, सानकोटडा, लाडी का बास, जाटु का बास, तोगड़ा, मढ़ी नौपुरा, छाजा की नागल समरथपुरा, गीलों की ढाणी, डुमोली, छोटी, बसगाँव, इम्भोली, पीपलखेडा, लरावली, पिपलवाडा, कुचतला, बीरपुर।

—संवाददाता

* * *

आरोंदा
१८६६
नीलगिरि तेल
बंधु मुम्बई ४.

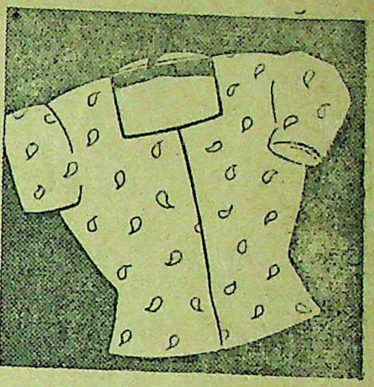

धोने के लिये

५०१ साबुन

दी टाटा आयल मिल्स कं० लिमिटेड

२०||) में ज्वेलवाली रिस्टवाच

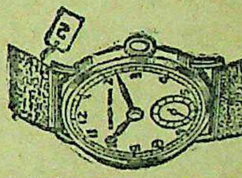

स्वीसमेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्ष की गारण्टी। गोल या स्क्वायर सेप) सुपिरियर २०||), फ्लाट सेप क्रोमियम केस ३०), फ्लाट सेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५), फ्लाट सेप १५ ज्वेल क्रोम केस ३८), फ्लाट सेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड ७५)।

रेक्टेंगुलर, कर्भ या टोनो सेप क्रोमियम केस ४२), सुपिरियर ४५), गोल्ड ६०), रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेलयुक्त ६०) अलार्म टाइम पीस कीमत १८), २२) बीग साइज २५) पोस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेने से माफ।

एच० डेभिड, एण्ड को० (S.P.)
पो० बक्स नम्बर ११४२४, कलकत्ता

फिल्म ऐक्टर

यदि आप फिल्म ऐक्टर बनकर १००) रु० से १५००) रु० मासिक तक कमाना चाहते हों तो आज ही लिखें। थोड़ा लिखा पढ़ा होना जरूरी है। अपना नाम व पूरा पता साफ लिखें

डाइरेक्टर इम्पीरियल चैम्बर,
(फिल्म डिपार्टमेंट)
पो० ब० ६१ (*D. D. A.*) अमृतसर

राजधानी का रंगमंच

एसेम्बली के उपनिर्वाचन में समाजवादियों की हार

फतेहगढ़ सेन्ट्रल जेल के बन्दी—पत्रकार श्री हरगोविन्द की गिरफ्तारी—प्रान्त में यांत्रिक कृषि का उत्कर्ष—बाल-अपराधियों का सुधार

(अपने विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

प्रान्तीय एसेम्बली के उपनिर्वाचनों में समाजवादियों की १०० प्रतिशत पराजय वास्तव में आश्चर्य की बात है। पक्के से पक्का कांग्रेसजन भी समझता था कि दो एक समाजवादी अवश्य चुन जायेंगे—विशेषकर आचार्य नरेन्द्रदेव और श्री रघुकुल तिलक के सम्बन्ध में लोगों की ऐसी ही धारणायें थीं, क्योंकि ये दोनों ही विद्वान् तथा प्रतिष्ठित, समाजवादी उम्मेदवार शहरी क्षेत्रों से खड़े हुए थे—और शहरों के निवासी समाजवाद की ओर अधिक आकृष्ट समझे जाते हैं। परन्तु इन निर्वाचनफलों ने सिद्ध कर दिया कि शहरवासी भी कांग्रेस के साथ हैं। फिर भी आचार्य नरेन्द्रदेव जैसे विद्वान् राजनीतिज्ञ का, जिनसे एसेम्बली की ही शोभा बढ़ती थी, धारासभा से पृथक् रह जाना दुर्भाग्य की बात है। पर राजनीति में पार्टी के नाम पर अप्रिय काम करने ही पड़ते हैं। जिस प्रकार सिद्धान्तों के नाम पर आचर्यजी कांग्रेस से पृथक् हुए थे, उसी प्रकार सिद्धान्त के ही नाम पर कांग्रेस को उनका सामना करना पड़ा।

* * *

फतेहगढ़ सेन्ट्रल जेल में कुछ कम्युनिष्ट बन्दियों के अनशन के प्रश्न को लेकर पत्रों में बड़ा विवाद चल पड़ा है और इसका सूत्रपात किया है कम्युनिष्ट संचालित नागरिक स्वतन्त्रता संघ ने। परन्तु युक्तप्रान्तीय सरकार ने एक विज्ञप्ति में सारी स्थिति स्पष्ट कर दी है। उसका कहना है कि कानपुर के कम्युनिष्ट नेता श्री सन्तसिंह यूसुफ तथा रघुवीरप्रसाद नामक एक कार्यकर्ता रात्रि में फतेहगढ़ जेल पहुँचे। चूँकि जेल बन्द हो चुका था, अतएव उन्हें एक विशेष कमरे में रखा गया, जहाँ बाहर सोने की व्यवस्था न थी। दूसरे दिन जेल सुपरिण्टेण्डेण्ट ने उन्हें आश्वासन दिया कि वे बाहर सो सकेंगे, परन्तु उन्होंने अनशन प्रारम्भ कर दिया। उनकी माँग थी कि सभी कम्युनिष्ट बन्दियों को एक साथ रखा जाय और उनसे विशेष व्यवहार हो। सरकार ने उन्हें द्वितीय श्रेणी का राजनीतिक बन्दी मान लिया है, पर सुरक्षा की दृष्टि से सबको एक साथ रखना सम्भव नहीं है। यूसुफ के समर्थन में अनशन करनेवालों में से आधे बन्दी दो दिन बाद अपना अनशन भंग कर चुके हैं।

* * *

लखनऊ के हिन्दी पत्रकार श्री हरगोविन्द को विगत २८ जून को सिंगापुर में मलय अधिकारियों द्वारा संकटकालीन नियमों के अन्तर्गत बन्दी बना लिया गया है। श्री हरगोविन्द युक्तप्रान्त के अनेक पत्रों का प्रतिनिधित्व करते हुए सिंगापुर गए थे और भारतीय नागरिक हैं। उनकी गिरफ्तारी न केवल भारतीय नागरिकता का अपमान है, बल्कि पत्रकारों की स्वाधीनता पर भी एक क्रूर प्रहार है। वैदेशिक विभाग—विशेषकर प्रधान मन्त्री नेहरू—को इस सम्बन्ध में तुरन्त जाँच का आदेश देना चाहिए और मलय स्थित भारतीय प्रतिनिधि के द्वारा श्री हरगोविन्द की रिहाई की माँग की जानी चाहिए।

सरकार ने प्रांत में यान्त्रिक कृषि के उत्कर्ष को प्रोत्साहित करने के लिए इसी वर्ष स्वयं भी ७ बृहद् फार्म खोलने का निश्चय किया है। साथ ही लखनऊ, बरेली, मेरठ और झाँसी में एक एक कारखाना भी कृषि-यन्त्र निर्माण के लिए खोला जायगा। प्रांत के दस ग्रामीण कस्बों में कृषि यन्त्रों की मरम्मत आदि के लिए भी छोटे छोटे कारखाने खोले जाएँगे, जहाँ किसानों को कृषियन्त्रों का सञ्चालन और मरम्मत सिखाई जायगी। इन कारखानों को स्थापित करने में २६ लाख रुपया व्यय होगा और उनके परिचालन में १२॥ लाख रुपया वर्षिक व्यय होगा।

* * *

सिनेमा में अपराध-दृश्य संरक्षकों की असावधानी विमाता की क्रूरता—ये कारण हैं बालकों में अपराध-वृत्ति बढ़ने के बाल-अपराधियों के मनोवैज्ञानिक अध्ययन के लिए सरकार ने जो विशेषज्ञों की समिति बनाई थी, उसने प्रान्त की बाल-जेलों से अकस्मात छोटे हुए ५० बालकों के पूर्व इतिहास और मनोवृत्ति का अध्ययन करके उपरोक्त सम्मति दी है। समिति ने ५० बाल अपराधियों में से ११ ऐसे पाये, जो संरक्षकों द्वारा उचित जेब खर्च न मिलने तथा विमाता की क्रूरता से चोरी करना सीख गए, ३५ की देख रेख उनके संरक्षकों द्वारा उचित रूप से नहीं हुई, जिससे कुसंगति में पड़कर वे दुराचरण में पड़ गये, ३ सिनेमा में अपराध-दृश्य देखकर शौकिया जेब काटने लगे और एक ने अपने मालिक के दुर्व्यवहार से तङ्ग आकर केवल उसे चिढ़ाने के लिए चोरी करना शुरू किया।

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ० ए०, बी० ए०, पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से और होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ्त मँगायें। पता :—
इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

मेरी तरह तन्दुरुस्ती हासिल करो
खराब खून को साफ करता है
डा. वामन गोपाल
आयोडाइज्ड सार्सापरिला
हर जगह मिलता है

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद
[illegible] जौहरी एल० एम० घोलकिया
एन्ड ब्रदर्स।

बाइसिकिल, पुरजे, टायर्ज, ट्यूब, एभररेडी (Ever
टार्चेज, बल्ब, शेल आदि।
थोक और परचून के लिये
बालमुकन्द एण्ड ब्रादर (आफ लाहौर)
एस्पलैनेड रोड, दिल्ली।
ब्रांच :—मिलरगञ्ज, लुधियाना को याद रखें।

वर की आवश्यकता है!
१६, २०, ३० वर्ष की पढ़ी-लिखी सुन्दर कन्याओं के लिए वर की आवश्यकता है। फोटो और सैकड़ों लड़कियों की सूची ५) भेजकर मँगवायें
मदनगोपाल बी० ए० मैनेजर—हैपी मैरीज, वरना स्ट्रीट,
सदर बाज़ार, देहली

T. B
टी० बी०
"तपेदिक" रोग के हताश रोगियो—
जबरी (jabri) का नाम नोट कर लो, यही इस दुष्ट रोग से रोगी को बचानेवाली शक्तिशाली औषधि है। एक बार परीक्षा करके देख लो, ही नमूना रखा गया है, जिसमें तसल्ली हो सके। मूल्य नं० १ (स्पेशल) दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन २०) रु०। 'जबरी' नं० २ २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु० महसूल आदि अलग है। आज ही देकर रोगी की जान बचावें। तार का पता "jabri" jagadhri
पता :—रायसाहब क० एल० शर्मा, रईस (D) 'जगाधरी' (E.P

मृगी (हिस्टीरिया) फिट की
विश्वविख्यात अनुभवसिद्ध जड़ी (बूटी)
इस बूटी को केवल एक ही बार दौरे के समय रोगी को सुँघा देने से छींकों के साथ ही काले रंग का कीड़ा मरकर निकल आवेगा और रोगी सदैव के लिये निरोग हो जावेगा।
मँगाने का पता—महात्मा त्यागी बाबा, अनुसुइया-आश्रम, पो० चित्रकूट, बाँदा

परीदेश
यह पुस्तक ख़ास कर छोटे लिए है। इसमें ऐसी जिसको समझने के लिए पड़े। इसमें रोजमर्रा अच्छे ढंग से लिखी गई है। की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है।
इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

हर मौसम में हर समय
सर्दी और खाँसी के
SIROLIN
ROCHE
FOR COUGHS COLDS
निर्भरयोग्य औषधि
सिरोलीन "रोश"
सारे संसार में व्यवहार होता

हमारी कुछ चुनी हुई पुस्तकें

रवीन्द्र-ग्रन्थावली

योग—कवीन्द्र का यह उपन्यास जैसा मय है वैसा ही मनोविज्ञान की बारीकियों से र्ण। इसमें बंगाल के समाज का अपूर्व चित्रण नायिका है धर्म-प्राण कुमुद और नायक है राजा मधुसूदन घोषाल जो गरीब घर का लड़का अपने पौरुष से बहुत बड़ा मालदार हुआ है। विरोधी घराने की बेटी से विवाह करने पर चित्त में जो विरोध के बादल उमड़ते हैं उनका और नई दुलहिन कुमुद का शान्त-शिष्ट प्रति- देखकर बरबस लेखक की सराहना करनी पड़ती गृहिणी की क्षमता का अपूर्व उदाहरण , भाव और कथानक सभी दृष्टियों से कवीन्द्र के उपन्यासों में सर्वश्रेष्ठ है। इसे पढ़कर दुबारा-तिबारा पढ़ने को जी चाहता कागज, बढ़िया जिल्द, पृष्ठ सवा तीन सौ । मूल्य केवल चार रुपये।

परिचय—यह विज्ञान-विषयक पुस्तक है। लोक, नक्षत्रलोक, सौरजगत्, ग्रहलोक आदि शीर्षकों में विषय का विशद विवे- स्थान पर लेखक ने लिखा है "वस्तुएँ ग्रहण नहीं कर सकतीं, किसी किसी को हैं। वह लौटाया हुआ रंग ही हम ब्लाटिंग पेपर जिस रस को सोख लेता है नहीं आता—जिस रस को वह ले वही बचा हुआ रस हमारा प्राप्य है।" सरल रीति से कठिन विषय समझाया पुस्तक बालकों के लिए होने पर भी वयस्क कम आनन्द न देगी। अच्छे कागज पर सुन्दर सजिल्द पुस्तक का मूल्य दो रुपये।

ी चिट्ठी—डाक्टर रवीन्द्रनाथ ठाकुर में रूस गये थे। वहाँ का आँखों देखा चिट्ठियों में लिखकर भेजा था। वह है। इधर तो रूस के सम्बन्ध में बहुत सी हो गई हैं पर जिस समय रवि बाबू वहाँ का हाल हमें विकृत रूप में बताया गया कवि ने सुन्दर भाषा में प्रकट किया है। और सजिल्द है। अच्छे कागज पर का मूल्य दो रुपये।

याय—इस पुस्तक में सचमुच चार ही कथानक पूरा किया गया है। एला युवती है, भले घर की बेटी। उसने कुछ की प्रेरणा से और कुछ विद्यार्थी-समाज इन्द्रनाथ की सलाह से गृहस्थी के बँधने की प्रतिज्ञा कर ली। फिर इन सम्पर्क विप्लवपन्थियों से हुआ। उन लोगों , उद्देश्य और विवादों के वर्णन से दाँतों तले उँगली दबानी पड़ती है। समाज की उलझन, नारी-चरित्र और कुछ इसमें हैं। सजिल्द पुस्तक का रुपया आठ आने।

बैकुण्ठ का विल—मूल लेखक, स्वर्गीय डा० शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय। यह उपन्यास है तो छोटा किन्तु बहुत ही भावपूर्ण है। मानव-हृदय की स्वाभाविकता इसके प्रत्येक पात्र से प्रकट हो रही है। शरद् बाबू उपदेश देने की दृष्टि से रचना नहीं करते; किन्तु उपदेश अज्ञात रूप से अपना काम किये बिना कब रहता है। यह बात उनके इस उपन्यास में भी अपवाद नहीं हो सकी। मूल्य ॥≤)।

पथ-भ्रान्त पथिक—अनुवादक, पण्डित सुन्दरलाल त्रिपाठी और पण्डित ठाकुरदत्त मिश्र। श्री चारुचन्द्र वन्द्योपाध्याय-लिखित इस उपन्यास का उपन्यास-प्रेमियों में अच्छा सम्मान है। हिन्दी के उपन्यास-पाठकों की प्रेरणा से ही इसका हिन्दी अनुवाद हमने पहली बार प्रकाशित कराया है। उपन्यास की रोचकता और महत्ता के लिए चारुचन्द्र बाबू का नाम ही पर्याप्त है। मूल्य २॥≤)।

कृष्णकान्त का विल—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। यह बंकिम बाबू का एक अत्यन्त लोकप्रिय उपन्यास है। एक भारतीय पतिव्रता का जैसा सुन्दर चित्र इस उपन्यास में खींचा गया है वैसा अन्यत्र न मिलेगा। मूल्य १)।

युद्ध और शान्ति—अनुवादक, श्री रुद्रनारायण अग्रवाल। टॉल्सटॉय के 'वार एण्ड पीस' नामक प्रसिद्ध रूसी उपन्यास का यह हिन्दी-रूपान्तर है। इसमें लेखक ने मानव-जीवन का सम्पूर्ण चित्र, अपने समय के रूस की तसवीर और राष्ट्रों की खींच-तान बड़ी खूबी से चित्रित किया है और जीवन तथा मृत्यु के रहस्य का उद्घाटन किया है। मूल्य ५।-)।

कपाल-कुण्डला—अनुवादक, श्रीयुत पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी, 'निराला'। यह बंकिम बाबू की कपाल-कुण्डला का हिन्दी-रूपान्तर है। कथानक की रोचकता तथा वर्णन की अपूर्वता के कारण यह उपन्यास इतना लोकप्रिय हो चुका है कि इसका नये सिरे से परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। कपाल-कुण्डला के हिन्दी में आज तक जितने भी अनुवाद प्रकाशित हुए हैं, यह अनुवाद उन सबसे बहुत सुन्दर हुआ है। मूल्य १॥)।

शनि की दशा—अनुवादक पण्डित ठाकुरदत्त मिश्र। श्रीमती काञ्चनमाला देवी के 'शनिर दशा' नामक बँगला उपन्यास का यह अनुवाद है। लेखिका महोदया ने उपन्यास की नायिका के चरित्र में जिस मधुरता और महिमा का समावेश किया है, वह विश्व के महिला-समाज में हिन्दू-महिलाओं को गौरवपूर्ण पद दिलाने के लिए सर्वथा उपयुक्त है। मूल्य २)

रिक्ता—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। श्री नीहारबाला देवी के इस उपन्यास में पति-प्रेम वंचिता नारी का ऐसा सजीव और भावपूर्ण चित्र अंकित हुआ है कि पढ़ते-पढ़ते हृदय द्रवित हो जाता है। ऐसे भाव-पूर्ण उपन्यास आपके पढ़ने में कम आये होंगे। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-)।

श्रीकान्त—(प्रथम और द्वितीय भाग)—अनुवादक, श्री रूपनारायण पाण्डेय। 'श्रीकान्त' शरद् बाबू का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना गया है। इसमें शरद् बाबू की अमर लेखनी ने उनके कलाकार का मजा और सधा हुआ रूप चित्रित किया है, जो अत्यन्त मनोरम है। प्रत्येक भाग का मूल्य २)।

ब्राह्मण की बेटी—मूल लेखक, श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक, पंडित रूपनारायण पाण्डेय। शरद् बाबू भारत के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास-लेखक माने जाते हैं। उनका यह उपन्यास लोक-प्रियता और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मूल्य सजिल्द पुस्तक का १।-)।

आनन्दमठ—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। मुसलमानों और अँगरेज़ों को हिन्दुस्तान से बाहर करने के लिए, बंगाल में वैष्णवों ने जो विद्रोह किया था, उसी का इस उपन्यास में उपन्यास-सम्राट श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने बड़ी खूबी से वर्णन किया है। ऐसा सुन्दर चित्रण इस उपन्यास में है कि पढ़कर मातृ-भूमि के लिए दिल फड़क उठता है। मूल्य १।-)।

संसार की प्रसिद्ध कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत शमशेर बहादुरसिंह, बी० ए०। इस पुस्तक में योरप के संसार-प्रसिद्ध कलाकारों की चुनी हुई कुछ कहानियाँ संगृहीत की गई हैं। ये सभी कहानियाँ बहुत ही कलापूर्ण और मनोरंजक हैं। यदि आपको योरप के कथा-साहित्य की बानगी लेनी हो, तो इस पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य १)।

मोपाँसा की चुनी हुई कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत गोपीनाथ जी कानूनगो। इस पुस्तक में मोपाँसा की चुनी हुई ग्यारह कहानियों का संग्रह किया गया है। मोपाँसा की रचनाओं की बानगी लेने के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य १)।

ब्रजनाथ का विवाह—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। आश्चर्यमयी घटनाओं से परिपूर्ण यह सामाजिक उपन्यास पढ़ने में ऐसा रोचक है कि एक बार आरम्भ करने पर फिर बिना समाप्त किये चैन नहीं पड़ता मूल्य १।-)

स्काटलैंड-याड की जासूस स्त्री—यह पुस्तक लेडी मॉली की ६ जासूसी कहानियों का संग्रह है। इस पुस्तक की एक-एक कहानी इतनी मनोरंजक और कौतूहलवर्द्धक है कि आप इस पुस्तक को पूरा पढ़े बिना चैन नहीं पा सकते। लेडी मॉली के जितने कहानी-संग्रह अब तक प्रकाशित हुए हैं, यह उन सबसे अच्छा है। मूल्य ॥।-)

जीवन-क्रान्ति—लेखक, पंडित गौरीशंकर मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी०। अनुभवी तथा विद्वान लेखक ने इस उपन्यास में सेठ-साहूकारों तथा बड़े आदमी कहे जानेवाले व्यक्तियों की नर-पिशाचिता, पुलिस तथा अन्य अधिकारियों के हथकण्डों और धन के लोभ से निरपराधों को अपराधी ठहराकर कारागार की नारकीय यातना भोगने के लिए विवश करने के माया-जाल का बहुत ही आकर्षक शैली में वर्णन किया है। उपन्यास की एक-एक पंक्ति ओजपूर्ण और हृदय में घर कर लेनेवाली है। मूल्य २॥≥)।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

फूल आपकी किस्मत बतायेगा

भारतवर्ष की जगत्-प्रसिद्ध सच्ची साइन्स ज्योतिष विद्या गहरे अन्धकार में सूर्य की रोशनी है, यदि आप शीघ्र ही इस संसार में बदलनेवाली अपनी किस्मत के उलट-फेर का ठीक उतरा हुआ फोटो समय से पहले देखना चाहते हैं तो आज ही पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी दिलपसन्द फूल का नाम लिखकर भेज दें तो हम ज्योतिष विद्या के हिसाब से आपके आनेवाले १२ मास का लाभ, हानि, नौकरी, उन्नति, व पतन, स्त्री संतान का सुख, तन्दुरुस्ती, रोग, किसी से नया मेल-जोल, दिलपसन्द सगाई, मुकदमा परीक्षा में सफलता, लाटरी, सल्लत, किसी गुप्त ढंग से धन की प्राप्ति अर्थात् तिथि कार्ड से लेकर कुल एक वर्ष में होनेवाली सब बातों का विवरण अर्थात् मासिक वर्षफल बनाकर केवल १।) में वी० पी० द्वारा भेज देंगे डाक-व्यय इसके अतिरिक्त होगा। साथ ही बुरे ग्रहों की शान्ति का उपाय भी लिख दिया जायगा ताकि आनेवाले कष्टों को दूर किया जा सके। एक बार का अनुभव आपको बता देगा कि हम ज्योतिष विद्या में कितना ज्ञान रखते हैं ठीक न हो तो दुगुनी कीमत वापिस ।

श्री शिवशंकर ज्योतिष आश्रम (रजिस्टर्ड)
(D.D.) राहों (इ० पी० आर)

चटपटी, मजेदार, सुन्दर एवं सस्ती पुस्तकें

- फिल्मी अप्सरायें—५० फिल्मी अभिनेत्रियों की रंगीन जीवनी एवं उनमें मनोहर चित्र। मूल्य २।=)
- फिल्मी जलतरंग—नये एवं पुराने फिल्मों के चुने हुये गानों का मनोहर संग्रह। मूल्य १।=)
- बम्बई की चाँदनी रातें—बम्बई के सिनेमा क्षेत्र का मनोरंजक वर्णन दिया गया है। मूल्य १।=)
- मजनू की चिट्ठियाँ—इसमें फिल्म स्टूडियोज में होनेवाले व्यभिचार का भंडाफोड़ किया गया है। मूल्य २।=)
- चित्रमय रजतपट—भारत की प्रमुख अभिनेत्रियों के ३६ तिरंगे चित्रों का एलबम। मूल्य ३॥)
- लखनऊ की रंगीन रातें—लखनऊ के विलासी जीवन की १० रंगीन एवं नग्न कहानियाँ। मूल्य १।=)
- फिल्मी सितारे—प्रसिद्ध अभिनेताओं की जिन्दगी के मनोरंजक हालात दिये हैं। मूल्य १।=)
- विवाहित मनोरंजन—प्रथम मिलन की भाँति मादक यह पुस्तक आपके विवाहित जीवन को सुखमय बना देगी मूल्य १॥=)

पता—अनिल कम्पनी (१२) फुलट्टी, आगरा

ऐतिहासिक भौतिकवाद

लेखक, भूतपूर्व काकोरी-कैदी
श्री मन्मथनाथ गुप्त और श्री रमेन्द्र वर्मा
लगभग ५०० पृष्ठों के सजिल्द ग्रन्थ का
मूल्य केवल ६) रुपये।

मार्क्सवाद में ऐतिहासिक भौतिकवाद की गहनता को सरलतापूर्वक समझने के लिए इस ग्रन्थ की उपयोगिता अद्वितीय है। समाजवाद समझनेवालों के लिए इसका अध्ययन अपरिहार्य है।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५।=), डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

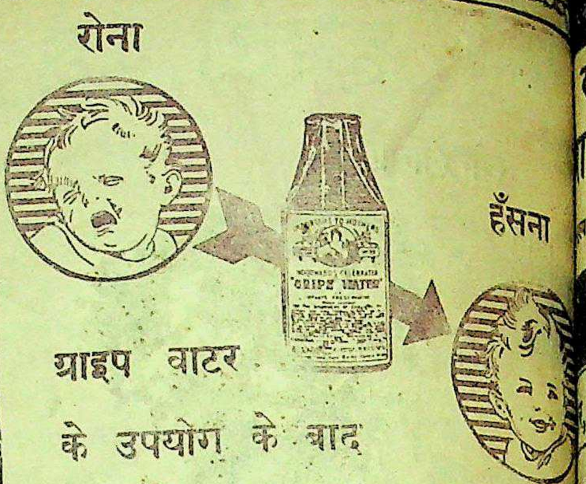

ग्राइप वाटर
के उपयोग के बाद
पेट के दर्द व खट्टे डकार से
छुटकारा मिलता है।

WOODWARD'S GRIPE WATER

— keeps baby well

"दर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के अवश्य देख लिया करें।

1-WW 116—117 W. WOODWARD LTD. LONDON, ENGLAND

बालों को सुश्रृंगारि
रूप से बनाकर र

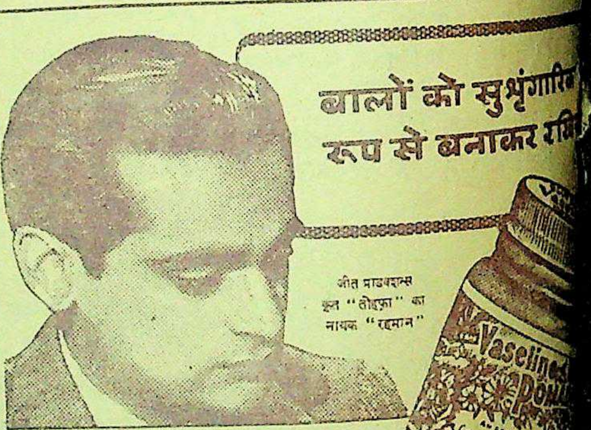

जीत प्राडक्शन्स
कृत "तोहफ़ा" का
नायक "रहमान"

कोमलता से सुगंधित किया गया वेस्लीन ब्लू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।
वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।

Copyright

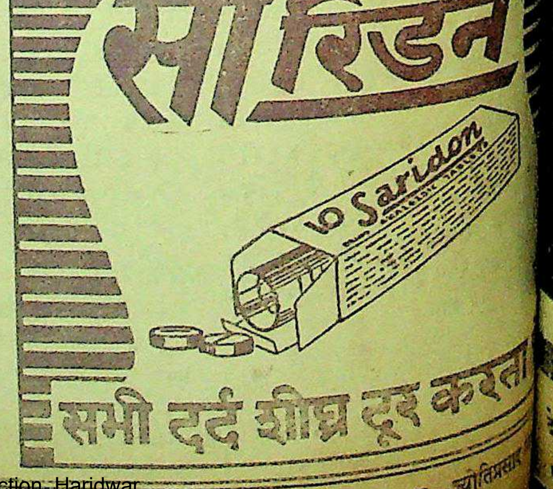
सारिडन
Saridon
सभी दर्द शीघ्र दूर करता

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद

सचित्र
साप्ताहिक
७॥) : प्रति संख्या ≡)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

१८ जुलाई, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 18th JULY, 1948

देशी रियासतें और भारत
की प्राचीन गुफायें

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

कृषि सुधार की नई योजनायें
रंगमंच, मातृमंदिर, साहित्य - चर्चा

रामचरितमानस

टीकाकार—डाक्टर श्यामसुन्दरदास

'मानस' का महत्त्व किसी से छिपा नहीं है। भारतवर्ष में तो इसका मान है ही, अन्य देशों में भी इस अमर काव्य का आदर है। यह प्रामाणिक संस्करण इधर कई वर्ष से अप्राप्य था। हाल में ही छपकर तैयार हुआ है। ग्राहकों को शीघ्रता करनी चाहिए। अधिक प्रतियाँ नहीं छापी गई हैं।

बड़े आकार के १२०० पृष्ठ। रंग-बिरंगे दर्जनों चित्र। सजिल्द प्रति का

मूल्य १२) रुपये

जहाँ पर हमारी ब्रांच या एजेंसी है वहाँ ख़रीदने पर डाकख़र्च की बचत होगी।

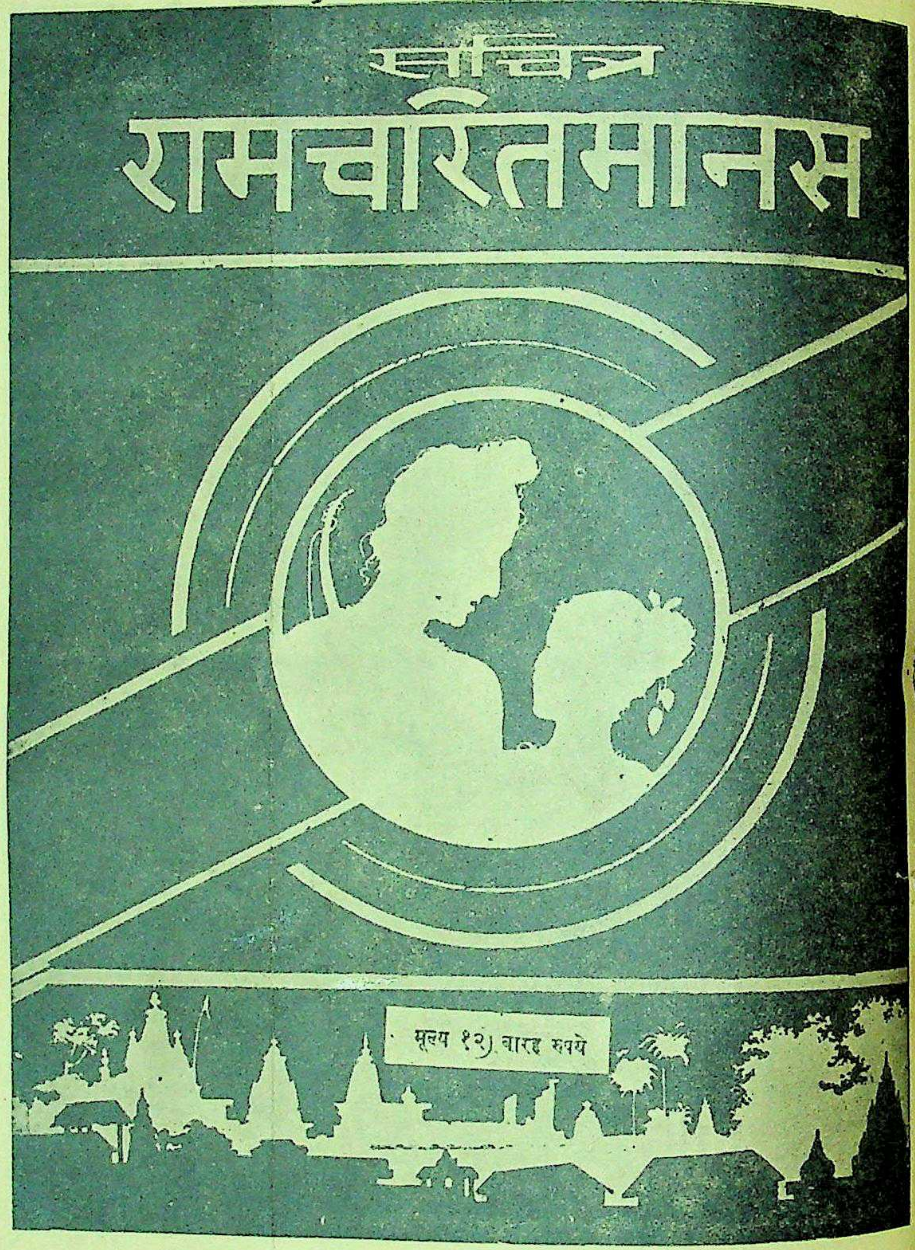

हमारी ब्रांचें और एजेन्सियाँ

१ इलाहाबाद हेड आफ़िस—इंडियन प्रेस लिमिटेड, ३६ पन्नालाल रोड
२ इलाहाबाद सिटी—न्यू ऐरा बुकहाउस, हिवेट रोड
३ आगरा—आगरा पब्लिशिङ्ग हाउस, बाग़ मुज़फ़्फ़र खाँ
४ अजमेर—इंडियन प्रेस लिमिटेड, कचहरी रोड
५ अलमोड़ा—डिस्ट्रिक्ट बुकडिपो, लालबाज़ार
६ बनारस—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, बनारस छावनी
७ बाँदा—बुंदेलखण्ड पब्लिशिङ्ग हाउस
८ बरेली—इंडियन बुकडिपो
९ बम्बई—भारतीय पुस्तक भण्डार, कालबा देवी रोड
१० बीकानेर—गर्गबुक कम्पनी, कोट के भीतर
११ कलकत्ता—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, २२।१ कार्नवालिस स्ट्रीट
१२ कानपुर—साहित्य-रत्नालय, श्रद्धानन्द पार्क
१३ दिल्ली—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, नई सड़क
१४ गोरखपुर—पुस्तक-स्थान, बख़्शीपुर
१५ ग्वालियर—लायल बुकडिपो, पाटनकर बाज़ार, लश्कर
१६ इन्दौर—नवयुग साहित्यसदन, खजूरी बाज़ार
१७ जयपुर—गोपाल बुकडिपो, त्रिपौलिया बाज़ार
१८ जबलपुर सी० पी०—इंडियन प्रेस, लिमिटेड
१९ लखनऊ—इंडियन बुकडिपो, अमीनुद्दौला पार्क
२० मेरठ—पुस्तक-स्थान, वैस्टर्न कचहरी रोड
२१ पटना—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, पो० ऑ० बाँकीपुर
२२ राँची—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, कोर्ट रोड

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

देशदूत

१०, संख्या ४५] [रविवार, १८ जुलाई, १९४८

रोगी ने कहा, "कल पानी
से मुझे जाड़ा लगा, तब मैंने
नहीं खाई।"
उत्तर दिया, "शायद तुम्हें
दोष ज्ञात थे, यदि ऐसे
होने लगें तब कुछ दिनों
और डाक्टर स्वयं रोगी से
प्रयोग पूछेंगे।"

* *

लेकर लड़के ने दूकानदार
दिये, दूकानदार ने कहा,
तुम मुझे चार पैसे और दो।"
ने कहा, "बाबू जी ने कहा कि
होता है।" दूकानदार ने
लेकर एक पुराना अखबार
ने कहा यह लो चार पैसे-

बाबू जी को दिया, वे गुस्सा
ने उत्तर दिया, चार पैसे-
है, और दो आनेवाला

* *

ने लड़के से पूछा, "तुम
नहीं आये?" लड़के ने
"क्योंकि परसों आप भी
थे।"

* *

रहा था, दारोगा जी ने
"काम के समय सो क्यों

ने उत्तर दिया, "मैं सो नहीं
सपना देख रहा था कि हुजूर
बीमार हैं।"
जी ने तुरन्त सिपाही को
तुम कल सबेरे जाओ और जब
न हो मत आना।" सिपाही
सबेरे तक सोया, और दारोगा
लगा; हुजूर, आपके पहले
यह उनकी स्त्री के लिए

* *

अँगूठी से सोनार ने थोड़ा
निकाल लिया, किसी तरह श्याम
हो गया।
ने पूछा, "इससे सोना क्यों
सोनार ने कहा, "इसलिए
अपने बाप तक को नहीं

* *

ने एक मुसलमान से कहा,
हो जाओ तो तुम्हें चन्दन
हूँ।"
मान ने उत्तर दिया, "यदि तुम
हो जाओ तो तुम्हें चन्दन छुड़ाना

* *

एक औरत ने डाक्टर से कहा, "मेरे बच्चे नहीं होते।" डाक्टर ने उत्तर दिया, तुम्हारे पुरुष में कोई खराबी होगी।" डाक्टर ने कहा, "मेरे भी तो संतान नहीं होती।" स्त्री शर्मिन्दा होकर चली गई।

स्त्री ने कहा, "वे तो बिलकुल आपकी ही तरह हैं?"

* * *

केशव ने अपने मित्र से पूछा, "तुम साँवले क्यों हो?" मित्र ने उत्तर दिया, 'भगवान् जाने।"

केशव ने कहा, "भगवान् का अंश तो सब में है।" मित्र ने कहा, "तो तुम गोरे क्यों हो?"

केशव ने कहा, "यह मेरे माता-पिता बतला सकते हैं?"

एक बुढ़िया ने बच्चे से पूछा, 'बेटा तुम्हारा नाम क्या है?' लड़के ने उत्तर दिया, 'मेरा नाम कुछ नहीं है'। बुढ़िया ने कहा, 'झूठ तो नहीं कहते'। लड़के ने कहा, 'झूठ और सत्य दोनों बोलता हूँ जहाँ जैसा बन पड़ा काम निकालता हूँ।'

* * *

एक ज्योतिषी जी ने देहात में जाकर सूचना दी कि इस साल पत्थर गिरेंगे। थोड़े समय बाद पंडित जी ने गाँव वालों से भोजन माँगा, लोगों ने कहा, 'अन्न नहीं जब पत्थर गिरें तो वही खाना'।

* * *

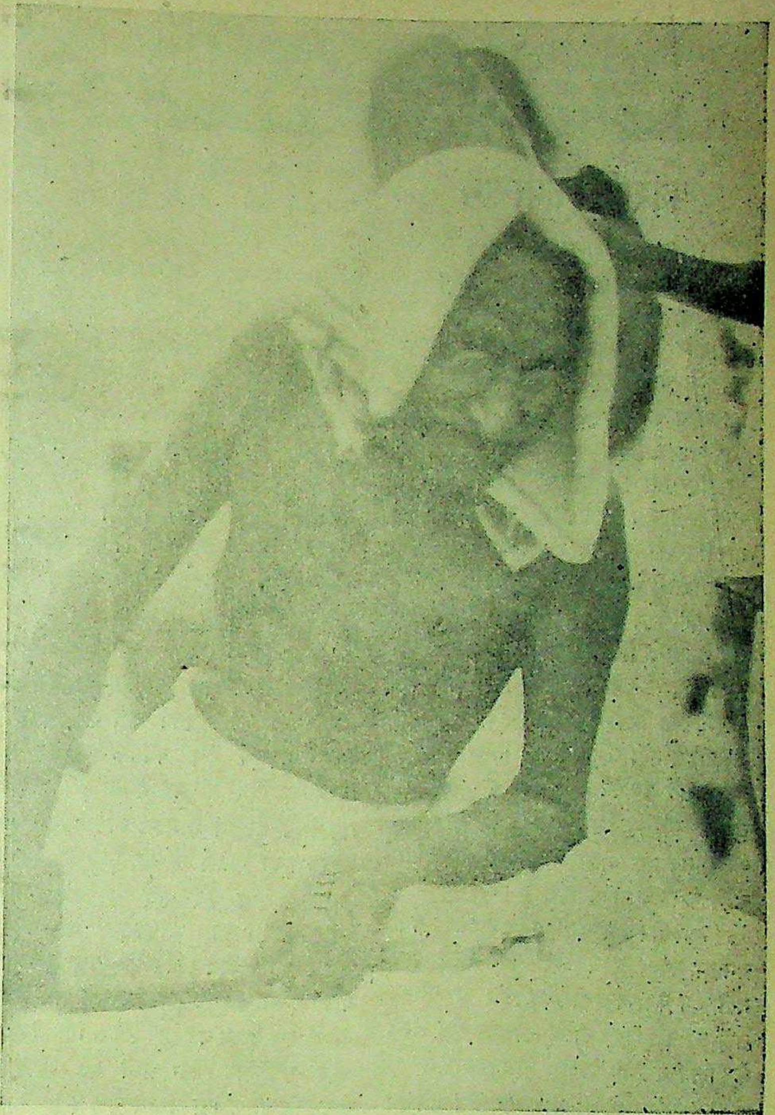

युग पुरुष महात्मा गांधी के राष्ट्रीय स्मारक कोष में दान दीजिए और सहायता कीजिए।

एक लड़के ने अपने पिता से कहा कि वह डाक्टर होना चाहता है। पिता ने कहा बेटा जल्दी हो जावो तो मेरा भी रोग ठीक करो।

लड़के ने कहा, 'आप समझे नहीं, दवाई वाला डाक्टर नहीं मैं विज्ञान का डाक्टर होना चाहता हूँ।'

* * *

'दूध क्या हिसाब है' सिपाही ने दूध वाले से पूछा।

'चार आने सेर' दूध वाले ने कहा।

'३ सेर दो' सिपाही ने कहा।

दूध लेकर सिपाही चला गया, दूध वाले ने घर जाकर पैसे का तकाजा किया।

सिपाही ने कहा, लो यह दूध बैठ गया है; इसे लौटा लो।

* * *

'चोर से थानेदार ने पूछा, 'तुम चोरी क्यों करते हो?

चोर ने जवाब ने दिया, 'हुजूर मेरा बाप बहुत मशहूर डाकू था। उसके नाम को बनाये रखने के लिए करता हूँ।'

° ° °

एक अपढ़ रेल के जनाने डब्बे में बैठा था, बाबू ने पूछा इसमें क्यों बैठे हो?

वह सीट पर बैठ गया। दूसरे बाबू ने कहा खड़े क्यों हो?

आदमी ने कहा, 'औरत हूँ क्या जो लेटूँ'

* * *

एक्केवाले ने बाबू जी से पूछा, 'कहाँ जाइयेगा?

बाबू जी ने कहा, 'तुमसे मतलब?'

एक्केवाले ने कहा, एक्के पर चलिये?

बाबू जी ने कहा, 'मेरी स्त्री मोटर पर चलती है मैं एक्के पर क्यों चढ़ूँ'

इक्केवाले ने कहा, तो आप मोटर के ऊपर बैठकर चलिए।'

* * *

वर्तमान

लेखक, प्रोफेसर अंचल एम० ए०

मैं अपनी जीवन-वीणा के कोमल तारों को तोड़ चुका।
बिन छेड़े जिनके मीठे स्वर कलिका से सौरभ-से निकले,
जिनकी रागिनियों में बहते सपने बनकर साकार चले,
जिनकी मीड़ों से मादकता चन्दा की किरणों-सी फूटी,
सौन्दर्य उनींदी करुणा के दीपक सुन जिनका नाद जले।
मैं संघर्षों की कटुता में सब छलना के घट फोड़ चुका।

× × × ×

मैं अपनी गीतों की माला के छिन्न भिन्न कर चुका तार।
मैंने वे परिमल के प्रतीक पाटल सुकुमार मसल डाले,
जिनकी सुवास की मदिरा में अरमान पड़े थे मतवाले,
जिनकी पंखड़ियों में चित्रित थी मेरे यौवन की क्रीड़ा
मेरी मुकुलित मंजरियों को पड़ गये प्राण के ही लाले।
मैंने गीतों की माला का खंडित कर डाला मधु-सिंगार।

× × × ×

मेरी कल्पना हंसिनी के झुलसे पंखों की नत उड़ान।
कवि की कुमारिका चिन्ता अब करती न गगन के मेघ पार,
युग की कठोर ज्वालाओं ने ली सोख रूप-रस-गन्ध धार,
मोती के मेघानत कुंजों में बीते दिन बीती रातें—
छवि की तुषार-रंजित झीलों में बीत चुके कितने बिहार।
कम समय—बहुत कम समय—क्रान्ति का महालक्ष्य कितना महान।

सम्पादक का पृष्ठ

काश्मीर-कमीशन

संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा-समिति की ओर से नियुक्त कमीशन, काश्मीर के संबन्ध में जाँच करने के लिये, भारत आ गया है। कमीशन के प्रधान ने दिल्ली में एक वक्तव्य देते हुए यह आशा प्रगट की है कि जाँच के बाद काश्मीर की समस्या का कोई उचित हल अवश्य निकलेगा साथ ही हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान का पारस्परिक अच्छा संपर्क भी स्थापित होगा। वास्तविकता यह है कि सुरक्षा परिषद ने काश्मीर की समस्या के हल करने के लिये जिस कमीशन की नियुक्ति की है, भारतीय संघ ने उसके निर्माण के पूर्व अपनी असहमति प्रगट की है। अभी भारतीय संघ काश्मीर-कमीशन से सहयोग करने के लिये उत्साहित नहीं हैं क्योंकि संघ की ओर से कुछ शर्तें उपस्थित की गई हैं। जब तक सुरक्षा परिषद उन शर्तों की पूर्ति नहीं करेगा तब तक भारत कमीशन से सहयोग करने के लिये बाध्य नहीं है।

काश्मीर-कमीशन क्या है और क्यों बनाया गया है, यह भी कम रहस्य पूर्ण नहीं है। क्या काश्मीर-कमीशन के सदस्य सचमुच काश्मीर की समस्या को हल करने के लिये यहाँ आये हैं? क्या कमीशन के सदस्य पाकिस्तान की ओर आकर्षित नहीं हैं? क्या अँग्रेजों तथा अमरीकनों द्वारा निर्मित यह कमीशन सचमुच काश्मीर की समस्या सुलझाने आया है या पाकिस्तान की स्थिति दृढ़ करने अथवा हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान के बीच मतभेद की गहरी खाई और अधिक व्यापक बनाने? इन प्रश्नों के वास्तविक उत्तर की ओर हमारा पूर्ण रूप से ध्यान है। हम जानते हैं कि अँगरेज काश्मीर को पाकिस्तान में सम्मिलित करने के पक्षपाती हैं। आज भी प्रछन्न रूप से पकिस्तान में अंगरेजी शासन है। पाकिस्तान के वाइसराय तथा अन्य प्रधान शासक तो अँगरेजों के कठपुतले हैं। विशेष कर पाकिस्तानी सेना का वास्तविक संचालन अँगरेजों के ही हाथ में है। काश्मीर उत्तर भारतीय राजनीति की कुंजी है। यदि वह भारतीय संघ के अन्तर्गत निश्चित रूप से आ जाता है तो अँगरेजों को अपने पड़ोसी शत्रु राष्ट्र का भय बना रहता है क्योंकि भारतीय संघ को अँगरेज संदेह की दृष्टि से देखते हैं। यही कारण है कि पाकिस्तानी सेना, सीमाप्रांत के खानाबदोशों को लेकर काश्मीर विजय की ओर पिछले कई महीनों से उद्योगशील है। यदि काश्मीर पाकिस्तान में सम्मिलित कर लिया जाता है तो अँगरेज इसके लिये भी राजी हो सकते हैं कि जम्मू प्रदेश भारतीय संघ में सम्मिल्लित किया जा सकता है। तात्पर्य यह है कि काश्मीर को अँगरेज पाकिस्तान की आड़ में किसी भी स्थिति में भारतीय संघ को देने के इच्छुक नहीं हैं। इसीलिये अँगरेजों ने काश्मीर की समस्या को सुलझाने के लिये एक अन्तर्राष्ट्रीय मार्ग का अवलंबन किया है, अर्थात् काश्मीर-कमीशन की स्थापना। नाक सीधी न पकड़ कर चक्करदार एक ढंग से पकड़ने का कार्य प्रारंभ किया गया है। आंतरिक स्थिति कुछ ऐसी ही है। यही कारण है कि पाकिस्तान कमीशन को पूर्ण सहयोग देने के लिये तैयार है। अँगरेजों की राजनीति की यही परंपरा रही है कि वह जो कुछ करना चाहते हैं पाखंडपूर्ण, प्रजातंत्रात्मक और नाटकीय ढंग से। दिखाने के लिये तो सुरक्षा परिषद ने कमीशन की नियुक्ति की है लेकिन कमीशन क्या करेगा, इसका भविष्य बहुत कुछ हमारी दृष्टि के सामने भी है।

काश्मीर-कमीशन भारतीय संघ तथा काश्मीर की वर्तमान स्वतंत्रता-प्रिय जनता की इच्छा पूर्ति कदापि नहीं कर सकता, यह निश्चय है। क्योंकि योरोप के साम्राज्यवादियों की यह नीति है कि जिस प्रकार फिलिस्तीन के प्रश्न को लेकर अरब और यहूदी जुझाये जा रहे हैं, उसी प्रकार काश्मीर तथा हैदराबाद के प्रश्न को लेकर भारत तथा पाकिस्तान का संबंध बद्तर होता जाये। अंत में साम्राज्यवादी वही करेंगे जो कुछ वह करना चाहते हैं किन्तु इस समय वह पूर्ण रूप से न्यायदर्शक और शांतिप्रिय होकर आगे बढ़ रहे हैं। कूटनीति ही उनका प्रधान गुण है।

हमें भारतीय संघ के अधिकारियों से स्पष्ट कहना है कि जब तक काश्मीर के सम्बन्ध में उनकी उठाई हुई शर्तों की पूर्ति न हो जाये तब तक वह किसी प्रकार से भी कमीशन से सहयोग न करें। सुरक्षा परिषद् ने भारतीय संघ की अवहेलना की है और पाकिस्तान के साथ पक्षपात किया है। काश्मीर की जनता कदापि पाकिस्तान के पक्ष में नहीं है। काश्मीर एक प्राचीन भारतीय राज्य है। उसका सम्बन्ध भारत से अविछिन्न है। वह कदापि भारत से अलग नहीं किया जा सकता। कहा जाता है कि पाकिस्तान स्वतन्त्र राष्ट्र है किन्तु आज सीमाप्रान्त के स्वतन्त्रता प्रेमी पठानों तथा उनके आन्दोलन को किस प्रकार नष्ट किया जा रहा है यह किसी से छिपा नहीं है। हिटलर की हिटलरशाही तो संसार-प्रसिद्ध है ही किन्तु मिस्टर जिन्ना की जिन्नाशाही भी आज सीमाप्रान्त में अपना नग्न प्रदर्शन कर रही है। काश्मीर कमीशन एक प्रकार से पाकिस्तानी ही है। भारत को इसके भुलावे में नहीं पड़ना चाहिए। इस समय कमीशन के सदस्य दिल्ली पहुँचकर भारतीय संघ के नेताओं को भुलावे में डालना चाहते हैं, अपनी मधुर तथा चतुराई-पूर्ण वार्ता से पंडित नेहरू तथा सरदार पटेल को अपनी ओर आकर्षित करना चाहते हैं, साथ ही कमीशन से सहयोग करने के लिये उन्हें राजी करना चाहते हैं किन्तु ऐसा कदापि नहीं होगा। काश्मीर के प्रश्न को लेकर भारतीय नेता कभी भी अपनी स्थिति से डिगनेवाले नहीं हैं। हमारी तो अन्तिम राय यह है कि यदि सुरक्षा परिषद काश्मीर के सम्बन्ध में भारतीय संघ द्वारा उठाये हुए प्रश्नों का समुचित हल न कर सके तो इस कमीशन का वहिष्कार उसी प्रकार होना चाहिए जिस प्रकार किसी समय 'साइमन कमीशन', का हुआ था। काश्मीर निश्चित रूप से भारतीय संघ में रहेगा, यदि काश्मीर कमीशन के सदस्य अथवा सुरक्षा परिषद, इसके लिये वचनवद्ध होते हैं तो भारत सरकार को कमीशन से सहयोग करना चाहिए, अन्यथा पाकिस्तानी आक्रमण एकदम जाना चाहिए, भारतीय संघ की काश्मीर से वापस नहीं हटाई आदि प्रश्नों का निर्णय पहले हो चाहिए। काश्मीर कमीशन से अथवा असहयोग का प्रश्न तभी उठ है, इसके सिवा दूसरा कोई मार्ग नहीं

गीत

लेखक श्री, परमानंद शुक्ल

कोई गाये गीत मीत जब मेरे मन के—चुपचाप सुनूँ, मैं मौन रहूँ।
मैं अपने उर की बीणा पर
बार-बार वह ध्वनि दुहराऊँ
प्राणों का स्वर उसमें भर-कर
मैं अपने प्रिय को गुहराऊँ
मचल पड़ूँ बन गीत-लहरियाँ रस-स्रोत बहूँ, पर मौन रहूँ!
मैं चलूँ पिया की ओर मीत
के रथ पर चढ़ स्वप्न सँवारे
श्लथ चरण शरण की ओर बढ़ूँ
पर अशरण को शरण कहाँ रे
प्रतिध्वनि-सी तब लौट पड़ूँ जब ढूँढ थकूँ, मैं मौन रहूँ!
प्रान विफलता की चिनगारी
उर के शत शत स्वप्न जलाए
आहत मन-पंछी का स्वर जब
वृथा शून्य से जा टकराये
कूक-कूक बन फूट पड़ूँ तब प्रिय, रह न सकूँ मैं जो न रहूँ!

नित्यप्रति की झंझटें
चाय
से मिटा
इंडियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

देशी रियासतें और भारत

केवल एक वर्ष में जनतन्त्रात्मक दृष्टि से क्रांतिकारी परिवर्तन

लेखक, डाक्टर लीलाधर पांडवीय एम० ए०, डी० फिल

भारत की देशी रियासतों की एक इकाई स्थापित हो गई। भारत-सरकार के ...मन्त्री सरदार वल्लभभाई पटेल की राजनीति से देशी नरेशों में प्रजातन्त्रा- ...तथा विचारधारा की ऐसी लहर उत्पन्न हुई कि एक नई परम्परा स्थापित ...। इस लेख में देशी रियासतों का सुंदर विवरण प्रस्तुत किया गया है, जो पठनीय है।

...रियासतों का भारत में सम्मि- ...देश के इतिहास की बड़ी महत्त्व- ...थी। इसका पूरा महत्त्व तभी ...सकता है यदि हम इसकी पृष्ठ- ...साथ इस पर विचार करें। ...शताब्दी से अधिक काल से ...भारत के सार्वजनिक नेताओं के ...रियासतें एक मुहरबन्द पुस्तक ...थीं। रियासतों में स्वतन्त्रता और ...की भावना को पैदा होने से ...लिए ऊँची ऊँची राजनीतिक ...की गई थीं। फूट डालने- ...को जान-बूझकर पैदा किया ...प्रोत्साहित किया गया है तथा ...अनेकों पृथक् पृथक् ...निर्माण की चर्चा की जा ...से लोग ऐसे हैं जिन्हें यह ...कि देश के विभाजन और ...खण्ड खण्ड होने के बोझ से ...सरकार कंधा डाल बैठेगी।

...कठिनाइयों और बाधाओं के ...स्वतन्त्र भारतीय संघ की ...प्रान्त तथा रियासतें दोनों ...हैं, साधारण काम नहीं था। ...के बाद प्रथम बार भारत एक ...इकाई के रूप में संयुक्त हो...

* *

...रियासतों के प्रान्तों में मिल ...रियासतों का शासन केन्द्रीय सर- ...में आ जाने का प्रश्न है वहाँ ...पद्धति का स्वयं सूत्रपात हो ...क्योंकि रियासतें जिन प्रांतों में ...हैं, उनका तथा केन्द्रीय सर- ...शासन प्रजातन्त्रात्मक है। जब ...क्षेत्रों से जनता के प्रतिनिधि ...सभाओं के लिए न चुने जाय ...के लिए रियासती जनता को ...के सम्पर्क में लाने के लिए ...किये गये हैं। रियासतों में ...शासन स्थापित किये जाने ...रियासतों के नये संघ के प्रत्येक ...यह स्पष्ट स्वीकार किया गया ...के हाथों में शासन-भार पूर्ण ...देना चाहिये। इन रियासतों ...निर्वाचित विधान-परिषदें तैयार ...जब तक नये विधान अमल में ...शासन-कार्य लोकप्रिय ...के हाथों में रहेगा।

जो बड़ी बड़ी रियासतें विलय या एकीकरण के आयोजना से प्रभावित नहीं हुई हैं, उनमें दायित्वपूर्ण शासन का आन्दोलन तीव्र गति से फैल गया है और हैदराबाद रियासत को छोड़कर प्रायः इन सभी रियासतों ने यों तो जनता को सत्ता सौंप दी है या निकट भविष्य में दायित्वपूर्ण सरकार स्थापित करने की घोषणा कर दी है।

रियासतों के एकीकरण के सम्बन्ध में भारत-सरकार ने तीन प्रणालियों को स्वीकार किया है किस रियासत या रियासतों के गुट के साथ कौन-सी प्रणाली लागू की जाय यह रियासत के आकार, भौगोलिक स्थिति तथा अन्य बातों पर आश्रित रखा गया है।

पहली प्रणाली रियासतों को सन्निकट प्रान्त में सम्मिलित करने की है। इस प्रणाली के अन्तर्गत २१९ रियासतों को प्रान्तों में मिला दिया गया है। इनके क्षेत्रफल, जनसंख्या राजस्व आदि का पूरा विवरण इस प्रकार है—

प्रान्त	सम्मिलित की गई रियासतों की संख्या	क्षेत्रफल (वर्ग मील में)	जनसंख्या (लाखों में)	राजस्व (लाख रुपयों में)
उड़ीसा	२३	२३,६३७	४०·४६	९८·७४
मध्यप्रान्त और बरार	१५	३१,७४९	२८·३४	८८·३१
विहार	२	६२३	२·०८	६·४५
मद्रास	२	१,४४४	४·८३	३०·८१
पूर्वी पंजाब	३	३७०	·८०	१०·
बम्बई	१७४	२६,९५१	४३·६७	३०७·१५
जोड़	२१९	८४,७७४	१२०·१८	५४१·८४

दूसरी प्रणालियों से अन्तर्गत कुछ रियासतों को केन्द्रीय सरकार द्वारा शासित क्षेत्रों में संगठित कर दिया गया है। अब तक यह प्रणाली २२ रियासतों पर लागू की गई है और उन्हें निम्न दो गुटों में संगठित किया गया है।

नये क्षेत्रों के नाम	सम्मिलित की गई रियासतों की संख्या	क्षेत्रफल (वर्ग मीलों में)	जनसंख्या (लाखों में)	राजस्व (लाख रुपयों में)
हिमांचल प्रदेश	२१	१०,६००	९·३६	८४·५६
कच्छ	१	८,४६१	५·०१	८०·००
जोड़	२२	१९,०६१	१४·३७	१६४·५६

रियासतों को संगठित करके नये गुट बनाने की तीसरी प्रणाली है। इस प्रणाली के अन्तर्गत १,५०,४०० वर्गमील क्षेत्रफल की २९१ रियासतों को निम्न नये गुटों में विभाजित कर दिया गया है।

नये गुटों का नाम	सम्मिलित की गई रियासतों की संख्या	क्षेत्रफल (वर्ग मीलों में)	जनसंख्या (लाखों में)	राजस्व (लाख रुपयों में)
सौराष्ट्र	२१७	३१,८८५	३५·२२	८००·००
मत्स्य	४	७,५३६	१८·३८	१८३·०६
विन्ध्य प्रदेश	३५	२४,६१०	३५·६९	२४३·३०
राजस्थान	१०	२९,९७७	४२·६१	३१६·६७
मध्य-भारत	२०	४६,२७३	७१·५०	७७६·४२
पटियाला तथा पूर्वी पंजाब रियासत संघ	८	१०,११९	३४·२४	५००·००
जोड़	२९१	१,५०,४००	२३७·६४	२,८१९·४५

जिन रियासतों को आत्मभरित मान लिया गया है और जो किसी गुट में मिली नहीं हैं उनकी एक पृथक् श्रेणी है।

सरकारी विवरण पत्र में उस वक्तव्य से एक उद्धरण दिया गया है जो सरकारी नीति के सम्बन्ध में १५ मार्च, १९४८ को भारतीय पार्लमेंट में दिया गया था। इस उद्धरण में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि जिन रियासतों को आत्मभरित मान लिया गया है उन पर किसी प्रकार की विलय की या एकीकरण की योजना नहीं लागू की जायगी, जब तक कि नरेश और वहाँ के लोग ऐसा नहीं चाहेंगे।

सरकारी विवरण पत्र के अनुसार, कुछ ऐसी छोटी छोटी रियासतें बची हैं जो विलय की या एकीकरण की योजना से प्रभावित नहीं हुई हैं। इस पत्र में बताया गया है, कि भारत-सरकार भौगोलिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्थिति तथा शासन सुविधा और भाषा के आधार पर इन रियासतों का एकीकरण करना चाहती है। इन रियासतों में कुछ ये हैं—सन्दूर (दक्षिण भारत), बनारस और रामपुर (युक्तप्रांत), त्रिपुरा, खासी पहाड़ी रियासतें और कूचबिहार।

सरकारी विवरण पत्र के अन्त में कहा गया है कि भारतीय रियासतों के नये रूप को कार्यान्वित करने में लम्बी अवधि तक बातचीत करनी पड़ी है और अध्यवसाय तथा परिश्रम से काम करना पड़ा है। इसका जो परिणाम प्राप्त हुआ है उसकी भारत के इतिहास पर एक छाप लग जायगी। नरेशों और जनता, दोनों के समान हित में जो विशाल परिवर्तन हुए हैं, वे नरेशों के देश प्रेमपूर्ण सहयोग के बिना संभव नहीं हो सकते थे। लोगों की आकांक्षाओं का तत्काल अनुभव करके उन्होंने रियासतों के एकीकरण और जनता को सत्ता सौंपने का कार्य सुगम बना दिया। स्वतंत्र और प्रजातंत्रीय भारत के निर्माण में जिसमें प्रान्तों और रियासतों के लोग समान रूप से स्वतंत्रता का उपभोग करेंगे और स्वतंत्र भारत के नागरिकों की हैसियत से साथ साथ अग्रसर होंगे, भारतीय नरेश अपने आप को सह निर्माता कह सकते हैं।

* * *

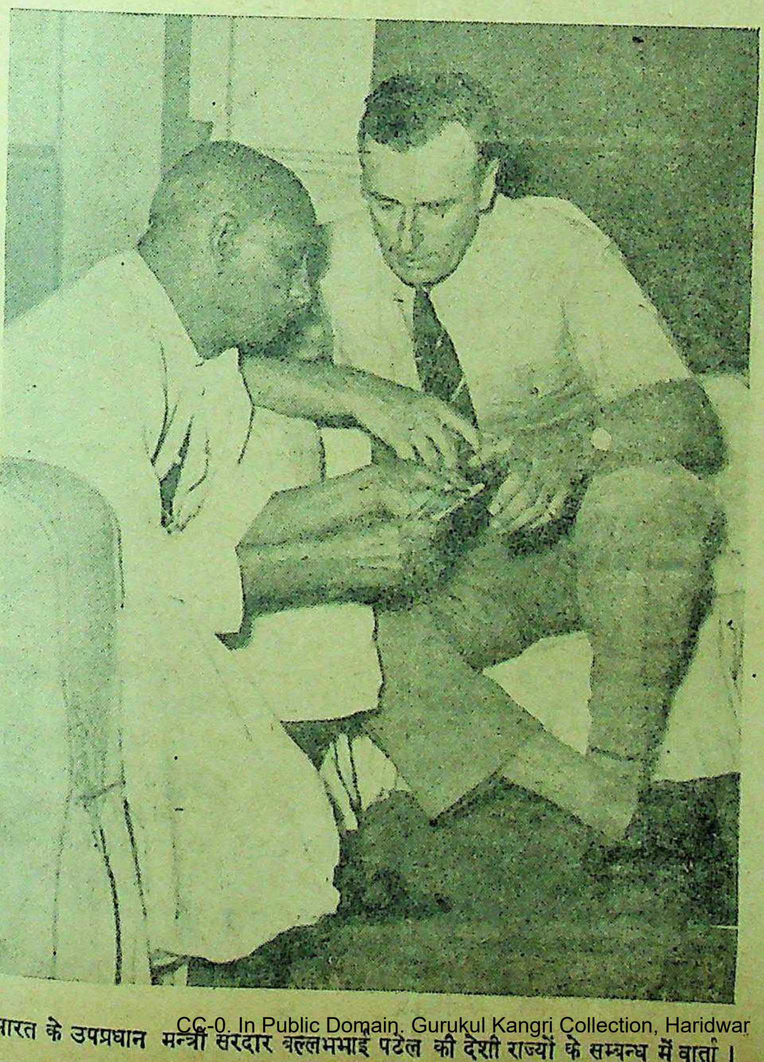

भारत के उपप्रधान मन्त्री सरदार वल्लभभाई पटेल की देशी राज्यों के सम्बन्ध में वार्ता।

एलौरा की प्राचीन गुफायें

चित्र तथा मूर्तिकला की ऐतिहासिक भूमि की यात्रा का आँखों देखा वर्णन

लेखक, श्री जगदीशचन्द्र खन्ना

> भारतीय गौरव की प्राचीन सामग्री राष्ट्र के कोने कोने में मौजूद हैं। उनमें से एलोरा की गुफायें प्रस्तर-काल के कलात्मक चित्र-कला तथा मूर्ति-कला के लिये संसार में प्रसिद्ध हैं। आज भी यह स्थल दर्शनीय है। इस लेख में लेखक ने एलोरा-यात्रा का सुंदर और रोचक वर्णन किया है, जो पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

एलोरा की गुफाएँ अपनी प्रसिद्धि के लिये दर्शनीय बन गई हैं। हैदराबाद में औरंगाबाद का जिला उस राज्य में दूसरे नम्बर का नगर है, इसी नगर के ६० मील पश्चिम की ओर एक छोटा-सा गाँव है जिसे 'एलोरा' के नाम से याद करते हैं। औरंगाबाद हैदराबाद के दक्षिण-पश्चिम लगभग ३५० मील की दूरी पर स्थित है, यह स्थान रेलवे-लाइन द्वारा प्रसिद्ध नगर मनमाड़ से मिला है। इसलिये कोई भी यात्री मनमाड़ और दक्षिणी-पश्चिमी हैदराबाद की ओर से जाकर इस ऐतिहासिक भूमि का दर्शन कर सकता है।

हम अपनी यात्रा में सूर्योदय के कुछ समय पूर्व औरंगाबाद पहुँच गये थे। रेल-यात्रा में दिन के समय हमें औरंगाबाद के आस-पास की छवि देखने को मिली थी। स्टेशनों के नाम मराठी और तेलगू भाषाओं में लिखे देखकर हमें महाराष्ट्रों का ऐतिहासिक जीवन और पहनाव स्मरण आने लगा। वहाँ पर हमें महाराष्ट्रीय पोशाक को देखकर हँसी भी आई। रेलवे स्टेशनों से किराये की मोटरें आसानी से मिलती थीं, जो एलोरा और अजन्ता की गुफाओं तक ले जाती थीं। थोड़ी देर के बाद ही हमने भी एक मोटर तय की और अपने निश्चित स्थान की ओर चल पड़े। इस समय हमारा हृदय प्रसन्नता से फूल रहा था क्योंकि हमें भारतीय चित्रकला, कौशल, और चरित्र की निकटता प्राप्त थी।

मोटर वहाँ पहुँची, उस क्षेत्र में हमें कुछ और ही अनुभव हो रहा था। पर्वतीय मार्ग, कन्दराओं की टेढ़ा-मेढ़ी, और मार्ग की बीहड़ता हृदय में उल्लास और आनन्द की सृष्टि कर रही थी। इन्हें देखकर हमें अपने इतिहास का वही स्वर्ण-युग याद आने लगा जो पहले इतना स्पष्ट और विश्वस्य न था। खिलजी, तुगलक, तुर्क और मुगल-कालीन ऐतिहासिक वातावरण इन कन्दराओं को देखकर बिलकुल नया हो गया। इसके पहले पुस्तकों के द्वारा हमें इतनी ज्ञानपूरित और आकर्षक स्थिति न प्राप्त हुई थी।

कुछ समय के पश्चात् हमें दौलताबाद के निकट से जाने को मिला। दौलताबाद देवगिरि की प्राचीन हिन्दू राजधानी थी। मुहम्मद बीन तुगलक ने इसी राजधानी को बाद में भारतवर्ष की राजधानी बनाया था। इस स्थान के दर्शन से मुगलों के अन्तिम बादशाह औरङ्गजेब के ऐतिहासिक तत्त्वों की सत्यता का प्रमाण मिलना प्रारम्भ हो गया। इस क्षेत्र का प्राचीन नष्ट-भ्रष्ट भाग काफी दूर तक चला गया था। दौलताबाद का यह दृश्य वास्तव में हमारे सामने भारतीयता का पूरा पूरा काल्पनिक चित्र उपस्थित करता है।

दौलताबाद से लगभग दस मील आगे चलकर हमारे मोटर ड्राइवर ने हमें छोड़ दिया। अब हम ऐलोरा की कन्दराओं के प्रवेश-द्वार पर खड़े थे। यहाँ से कन्दराओं का प्रारम्भ होता है। ड्राइवर ने हमें एक पर्वतीय मार्ग की ओर संकेत किया। इस मार्ग में जाकर हमें पूर्ण रूप से नूतनता का अनुभव होने लगा। हम सोचने लगे क्या यह भव्य दृश्य कभी स्वप्नों से बँध सकते हैं। ओह, एलोरा, भारतीय सांस्कृतिक विस्तार की आत्मा है।

बातचीत करते हुए हम दूसरी ओर चले, यहाँ का दृश्य भी असाधारण था, हमारे दाहिनी ओर एक बड़ा लम्बा-चौड़ा सा हाल था, जो ८० फीट गहरा था। उसके अन्दर और बहुत-सी मनोहर कारीगरी का नमूना था। इस विशाल भवन के सामने दो द्वारपाल खड़े थे, जो शाही युग की तसवीर उपस्थित कर रहे थे। इन्हें देखकर हृदय में एक उमंग उठी, जो प्राचीन ऐतिहासिक विचारों से सम्बन्धित थी। इसके दोनों ओर दो पत्थरों पर इसके विषय में खुदा हुआ विवरण भी उपस्थित था। प्रत्येक गुम्बद की शक्ल कमल के गुलदस्ते की भाँति थी।

एलोरा की गुफा में कैलाश-मंदिर के प्रमुख द्वार का एक दृश्य। इसी प्रकार के प्राचीन भवन एलोरा में सैकड़ों की संख्या में हैं।

हम लोग इसी हाल के अन्दर बढ़े। पहले-पहल भगवान् बुद्धि की प्रस्तर मूर्ति थी। इस चित्र में भगवान् बुद्ध का रूप सुंदर और शांतिपूर्ण था। दोनों हाथ वक्षस्थल की ओर लगे सुन्दर प्रतीत होते थे। इस मूर्ति के दर्शन पाकर हम थोड़ी देर अवाक् रहे। हमें ज्ञात हुआ कि चित्रकला भी रूप को जीवन देना जानती है। सुन्दर हाथ, भव्य शरीर और भरा चेहरा मानो बोलनेवाले हों, शांति का तो कहना ही क्या था। [illegible] कुशल चित्रकार की बुद्धि ने इस सफल चित्र का निर्माण किया। वास्तव में चित्रकार इस नाते महान् है। दीवारों के चारों ओर भगवान् बुद्ध के अनेकों चित्रों का दर्शन हुआ, प्रत्येक चित्र की भाव-भंगिमा अलग ही व्यक्तित्व रखती थी।

इस भवन से बाहर निकलते ही हमें एक सुन्दर भूमि-भाग दिखाई पड़ा, इसे देखकर हम उतना ही प्रसन्न हुए थे जितना पहले-पहल गुफा को देखकर आत्म-विभोर हुए थे। नीचे उतरकर देखा तो एक मूर्ति एक पुस्तक बन्द किये गंभीर मुद्रा में थी, इस मूर्ति में कलात्मकता विशेष रूप से चित्रित की गई थी। इन चित्रों को देखकर विचार करते रहे कि विद्यार्थी, शिक्षक और दर्शक इन पहाड़ी चट्टानों में वास्तविक ज्ञान का अनुमान करते हैं, तभी उतनी दूर दूर से आकर इसके दर्शन करते हैं।

इसके पश्चात् जब हम आगे बढ़े तो हमें देशी कला के विभिन्न चित्र देखने को मिले। यह सारे चित्र प्राचीन सुन्दरता का परिचय देते थे, यदि इनके बारे में लिखा जाय तो अनगिन पृष्ठ पूरे हो सकते हैं। कहीं पर कोई अपंग और लँगड़ा आदमी चित्रित किया गया है। कहीं पर कोई मूर्ति पुस्तकों का अध्ययन करती दीख रही है, इन चित्रों के साथ ही इनके निर्माता कलाकार का संक्षिप्त परिचय भी
है। बहुत-सी कन्दराएँ दो मंजिल की
वास्तव में इन्हें कन्दरा नहीं कहना
यह तो एक गहरे कुएँ की तरह मालूम
थीं। इन कन्दराओं के बरामदों में
भाँति के चित्र निर्मित थे, जो कला-
रदों की कला का पूर्ण परिचय देते

वहाँ पर बारह गुफायें केवल
सम्बन्धित थीं। ब्राह्मनिकल कन्दराओं
संख्या सत्रह है। इन गुफाओं का नि
काल प्रायः एक ही समय का ज्ञात
है। इन गुफाओं में हिन्दू देवी-देव
के चित्र और मूर्तियाँ हैं। शिव,
भैरव, काली, इन्द्र, गणेश और
हिन्दुओं के इष्ट प्रकट रूप से दिखा
हैं। कहीं रावण को कैलाश पर्वत
दिखलाया गया है। इसी प्रकार
विषय में भी चित्र उपस्थित किये

एलोरा का कैलाश मन्दिर
प्रभावशाली है। जिसका निर्माण
राष्ट्रकूट के समय में हुआ था। मन्दि
आस-पास अनेकों और दूसरे चित्र
पड़ रहे थे। बहुतेरे चित्रों में प्राचीन
रतों की जानकारी होती थी।
इमारतों के यह खण्ड हमारे सामने
भी बहुत-सी नई नई बातें लाते हैं।
बाजे, खिड़कियाँ, गलियाँ, छत और
इमारती बातें देखकर आश्चर्य
होने लगता है। इमारतों में
सुन्दर चित्र भी बनाये गये हैं
शोभा को अधिक आकर्षक करते हैं।
समस्त चित्र हिन्दू-पुराणों के
आये हुए हैं। प्रायः अधिकांश चित्र
पुराणों के आधार पर ही निर्मित
गये हैं। कहीं किसी चित्र में आक्र
दृश्य अङ्कित किया गया है।

एलोरा की गुफाओं का दर्शन
के हृदय में स्थायी प्रभाव डालता है।
की मूर्तियों के द्वारा जो पावन
स्थिरता अनुभव होती है उसका
अत्यधिक पड़ता है। प्रायः भारत के
भागों की बौद्धिक उन्नति का
एलोरा में आसानी से हो जाता
समस्त अनुभवों और विभिन्न
देखकर हमें अपने प्राचीन
विश्वास होने लगता है। प्रत्येक
को अपनी इस अमर कला का दर्शन
चाहिये।

फिल्म ऐक्
यदि आप फिल्म ऐक्टर बनना
रु० से १५००) रु० मासिक
चाहते हों तो आज ही लिखें
लिखा पढ़ा होना जरूरी है
नाम व पूरा पता साफ लिखें
अमेरिकन कार्पोरेशन
(फिल्म डिपार्टमेंट)
हलका नं० २२ (D.A.)

मुफ्त
असली फोन्टेनपेन और
रिस्टवाच गारन्टी १२ साल,
करने के लिये आज ही
मौका हाथ न आयेगा।
Imperial Corporation
Halka No. 22, A

(एक बालिका महाविद्यालय का
कक्ष। सामने की भूमि गद्दे और
चादरों से आच्छादित है। चारों
के खुले वातायन पर पुष्पित लति-
वेष्टित हैं। सामने महात्मा गांधी
सरस्वती के दो बड़े उज्ज्वल चित्र
हैं। नीचे धरती पर बिछी चाँदनी
विविध वाद्ययंत्र रखे हैं। गद्दे से कुछ
बराबरी से दो कुर्सियाँ और उसी
कर एक मेज रखी है। पहली
पर एक खद्दरधारी युवक बैठा है,
दाहिनी ओर की दूसरी कुर्सी पर
महिला। महिला की वेश-भूषा से
, विद्वत्ता के साथ पूर्ण रूप से
निकता प्रकट हो रही है। फर्श पर
साधारण वेशभूषा में दूसरी युवती
, जिसकी गोद में बायाँ और भूमि
हिना तबला रक्खा है।)
—अपनी दाहिनी ओर बैठी
की ओर देखकर—"आचार्या जी!
विद्यालय की तो कोई छात्रा शेष
, परीक्षा देने को!'
, अब तो सभी दे चुकीं, तारा तो
ही पढ़ गई है। अब प्राइवेट
की बारी है" कहती हुई आचार्या
की ओर देखती हैं।"
अपने सामने के रक्खे सूची-
देखकर—"स्नेहलता!"
द्वार से स्वच्छ वस्त्र में एक
करती है और उन दोनों
जाकर दोनों हाथ जोड़कर
करती हुई फर्श पर जाकर बैठ
)
—"तुम्हारे वाद्ययंत्र कहाँ
(छात्रा इशारे से एक छोटे हारमो-
दिखाकर अपने पास खींच
)
—"अरे! तानपूरा नहीं है?"
—"जी, नहीं।"
—"फिर! कैसे तुम परीक्षा
! भारतीय संगीत की गायन परीक्षा
पर ही होती है। जब वाद्य ही
पास नहीं है, तब उसकी
देंगी?"
—"वह तो मेरे पास नहीं है,
मोनियम के एक-दो स्वर पर दे
।" (परीक्षक की पलकें सिकुड़
, फिर थोड़ा सिर झटककर)
, तो तुम उस पर गा नहीं
!"
र्थिनी—"ा सकती हूँ...
......।"
—'किन्तु या? जब वह
पास है ही नहीं, तब तुम्हारे पास
साधना ही कहाँ होगी?' (अपना
समाप्त करते हुये परीक्षक ने
की ओर देखा।)
—"ो सकता है कि प्राइवेट
सम्मिलित होने के पहले किसी
में शिक्षा प्राप्त करते समय
कर लिया हो; फिर किसी कारण-
छोड़ दिया हो, अतएव...।
की ओर देखकर।) "यदि तुम
तो उनमें से किसी एक तानपूरे को
सकती हो, जिसे श्रीमती शर्मा जी
समझें।"

नाटक

स्नेहलता

लेखिका, श्रीमती चन्द्रप्रभा द्विवेदी

आधुनिक समय में भारतीय नारियाँ पुरुषों की भाँति विभिन्न कार्यों को सफलतापूर्वक करने की क्षमता रखने लगी हैं। साहित्य, संगीत और सामाजिक सेवायें स्त्रियों को देश के प्रति किस प्रकार प्रभावित करती हैं, यही इस नाटक का मूल विषय है। राष्ट्र की उन्नत एकता को दृढ़ करने के लिये हमें प्रत्येक कला सीखनी चाहिये। स्नेहलता इसी विचार की प्रधान पात्रा है। नाटक सर्वांग सुन्दर और आकर्षक है।

प्रसन्नतापूर्वक छात्रा हाथ जोड़कर नम्रता से "इस कृपा के लिये अनेक धन्यवाद!"

(छात्रा उत्साहित होकर श्रीमती शर्मा की ओर देखती है। श्रीमती शर्मा गोद से तबले को फर्श पर, धीरे से रखकर एक तानपूरा उठाती हैं, उस पर अपनी अँगुलियाँ नचाकर नकारात्मक सिर हिलाकर फिर वहीं रख देती हैं।)

श्रीमती शर्मा ने कहा—"नहीं, नहीं यह नहीं।"

(फिर दूसरा। उसे भी उसी प्रकार रखकर तीसरा, चौथा उठाती हैं और उसी प्रकार रखती जाती हैं। छात्रा उमंग भरे नेत्रों से देखती हुई उनके निकट जाकर धीरे से बगलवाले तानपूरे की ओर इंगित करके, जिसे वह अभी ही उठाकर रख चुकी थीं।)

छात्रा—"यदि आप आज्ञा दें, तो मैं इसे लूँगी।"

"इसे?"

श्रीमती शर्मा उपेक्षापूर्ण दृष्टि से देखती हुई तानपूरे पर हाथ रखकर-"इसे? यह जानती हो?? कितना मूल्यवान् है??? उसे लो, वह! जो दूर पर रक्खा है। मैं उसे ही खोज रही थी।"

(छात्रा उसे उठा लेती है और चुपचाप बैठकर स्वर मिलाती है।)

श्रीमती शर्मा—"तुम्हारा तबला कौन बजायेगा? उसे भी बुलाओ।" (छात्रा उनकी ओर याचना भरी दृष्टि से देखती है।)

श्रीमती शर्मा उसका आशय समझती हुई, सिर हिलाकर—"मेरा हाथ दुखने लगा है–इतनी देर से बजाते-बजाते और अब......।"

आचार्या उन दोनों की ओर बारी-बारी से देखती हुई—"क्या बात है? अब क्या कमी है??"

श्रीमती शर्मा—-(शिकायत के स्वर में) "जी, इसका कोई तबला भी बजानेवाला नहीं है। अब तो बीस छात्राओं का, जो कि अपने विद्यालय की ही थीं, उनका बजाते-बजाते कंधा टूटा जा रहा है। बड़ी देर से मैं पीड़ित हो रही हूँ फिर यह भी......।" (आचार्या उठकर खड़ी हो जाती हैं।)

आचार्या – "बड़ी कठिनाई पड़ती है, इन व्यक्तिगत रूप से सम्मिलित होनेवाली परीक्षार्थिनों से। पता नहीं, इसके मुख्य विषयों की तैयारी कैसी होगी, परीक्षा-फल कैसा होगा? हाँ, व्यग्रता अवश्य झेलनी पड़ती है, हम लोगों को। किसी का वाद्य नहीं, वादक नहीं और कुछ भी नहीं। फिर भी हाईस्कूल की छात्रा तैयार हैं। अपने विद्यालयों की एक नहीं बीसियों छात्राओं में भी यह कुछ नहीं। हाँ, इन दो-एक के भी होने पर एक समस्या उत्पन्न हो जाती है। देखती हूँ, बाहर जो दूसरी उम्मीदवार है, उसके साथ एक शिक्षक भी है।"

(आचार्या चल देती हैं। पीछे-पीछे श्रीमती शर्मा भी बाहर चली जाती हैं। छात्रा अपराधी-सा सिर झुकाये खड़ी हो जाती है, और चलने को उद्यत-सी होती है, फिर भी रुकी ही रहती है।)

(परीक्षक उसकी ओर ध्यान से देखता है, धीरे से पैर हिलाता है, फिर भाव-भरे ढंग से सिर भी हिलाने लगता है।)

स्नेहलता सिर झुकाये खड़ी ही है। परीक्षक मेज की रक्खी सूची-पृष्ठिका की ओर देखकर धीरे से सीटी सा बजाता हुआ--"स्... स्... स्ने...ह . ल्... ता...।" "स्ने... ह... ल्ता ...स्नेहिलता...।" "श्रीमती स्नेहलता...।"

(छात्रा उनकी ओर पलकें उठाकर एक बार देखती है। परीक्षक गंभीरता से

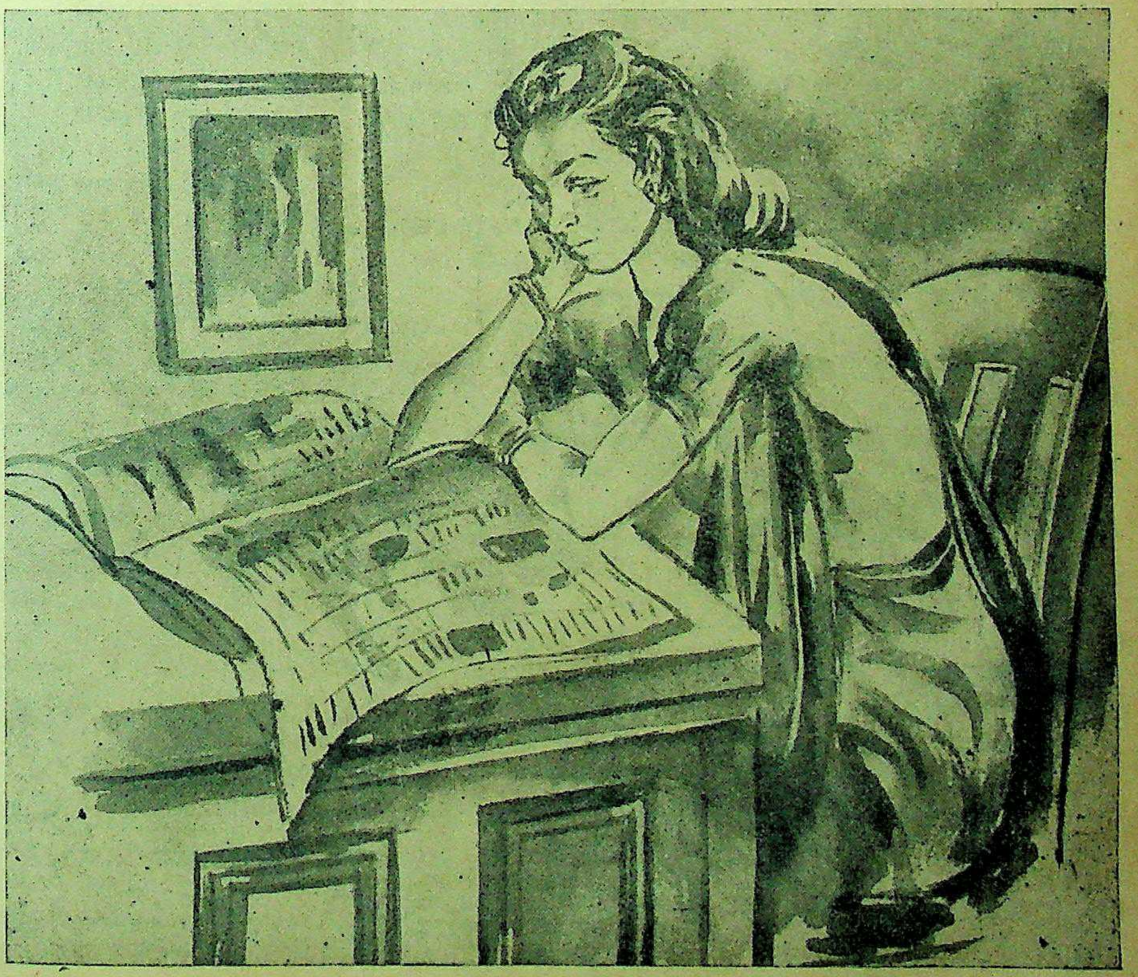

स्नेहलता परीक्षक की सूची-पृष्ठिका की ओर ध्यान से देख रही है।

सिर हिलाता है। उसकी पलकें गिर जाती हैं। परीक्षक पूर्ववत् पैर हिलाता ही रहता है। फिर सहसा ओंठ काटकर तनता हुआ बैठ जाता है। प्रधान द्वार से आचार्या और श्रीमती शर्मा, आगे-पीछे प्रवेश करती हैं।)

आचार्या कुर्सी पर बैठती हुई—"लीजिये, वह महाशय चले गये। उन्हें देरी हो रही थी, परीक्षा क्या खेल है, एक तमाशा।" श्रीमती शर्मा की ओर आग्रहपूर्वक देखकर—"अब आप ही कष्ट उठायें।"

श्रीमती शर्मा नाक सिकोड़ती हुई बैठ जाती हैं और फिर पूर्ववत् तबले रखकर, छात्रा से—"ताल और मात्रा सँभालना।"

छात्रा—"बहुत अच्छा।"

परीक्षक—खड़े होकर हाथ में चाक उठाते हुये स्नेहलता से—"मैं श्यामपट पर जो लिखता हूँ, उसे ध्यान से देखो।"

श्यामपट, जो सामने स्टैंड पर रक्खा है उस पर लिखते हैं—

१—सा, निं, सा।
२—सा, धं, निं, सा।
३—धं, निं, सा, रे, प।
४—सां, नि, ध, नि ध प।
५—सां रें, नि, ध, प, म, ग।

फिर अपनी कुर्सी पर बैठकर, छात्रा को दिखाते हुये।—"हाँ—अब इनका क्रमशः आलाप करो।"

(छात्रा तानपूरे पर अकार में, आज्ञानुसार ही आलाप करती है।)

परीक्षक—सूची-पुष्ठिका पर कुछ लिखते हुये)—"पहले अंक का लिखा अक्षर संगीत में क्या है?"

छात्रा—"शुद्ध षड्ज।"

परीक्षक—"पाँचवें का सातवाँ?"

छात्रा—"कोमल गन्धार।"

परीक्षक—"अच्छा, अब मेरा स्वर पहचानो।" वह केवल एक स्वर अकार से बोलता है।

छात्रा—"शुद्ध षड्ज।'

परीक्षक—"दूसरा आलाप करके—"अब?"

छात्रा—"मंद्र का कोमल निषाद और धैवत।"

परीक्षक—"अच्छा, अब?" (वह फिर आलापता है।)

छात्रा—"मध्य का कोमल रिषभ, गंधार, धैवत, निषाद।"

परीक्षक—(प्रसन्नतापूर्वक कुछ लिखता हुआ)—"अच्छा, अब राग बोलो—सारंग का आरोह, देश का अवरोह।"

छात्रा—अलग अलग दो बार आलाप लेती है।

परीक्षक—"भीमपलासी और भूपाली का आरोह अवरोह दोनों।"

छात्रा—आलाप में ही सरगम बोलती है।

आचार्या (श्रीमती शर्मा की ओर देखती हैं। शर्मा नाक सिकोड़ लेती हैं। आचार्या अत्यन्त गम्भीर हो जाती हैं और परीक्षक के प्रसन्न मुख पर चुभती-सी दृष्टि डालकर मुँह फेर लेती हैं। परीक्षक ध्यानपूर्वक सुनने के पश्चात् उसके चुप हो जाने पर।)

"अच्छा, अब राग पहचाना होगा।"

(परीक्षक समाज की पकड़ आलापता है।)

स्नेहलता—आतुरता से—"विलावल।"

परीक्षक—इस बार विलावल की ही पकड़ आलाप कर। अब?

(छात्रा लज्जित होकर श्रीमती शर्मा की ओर देखती हुई)—"बागेश्री।"

परीक्षक—"अच्छा, अब ध्यान से सुनो।" वह बागेश्री की पकड़ अलापता है।

(स्नेहलता श्रीमती शर्मा की ओर देखती है। श्रीमती शर्मा घृणा से मुँह फेर लेती हैं। स्नेहलता की आँखों में आँसू छलछला आते हैं) वह गम्भीरता से।

"भीमपलासी।"

(आचार्या तथा श्रीमती शर्मा खिलखिला उठती हैं। परीक्षक का मुँह तमतमा उठता है, वह अधीरता-पूर्वक मेज पर हाथ पटककर चीख पड़ता है।)

"भीमपलासी? भीमपलासी?? उसकी जाति क्या है?"

स्नेहलता—"ओडव-सम्पूर्ण।"

परीक्षक—उसी प्रकार—"ओडव-सम्पूर्ण?"

स्नेहलता—"जी हाँ; ओडव-सम्पूर्ण।"

परीक्षक—("उत्तेजनापूर्वक)—"इसका लक्षण गीत सुनाओ।"

स्नेहलता—आरोह-अवरोह के पश्चात् गायन आरम्भ करती है।

धन, धन भीमपलासी रागिनि।
ग, नि कोमल करि म, सा संवादिनि।

(श्रीमती शर्मा तबला बजाती हुई सहसा बंद कर देती हैं। स्नेहलता गाती ही जाती है। तब वह फिर आरम्भ कर देती हैं।)

ओडव-सम्पूरनि यह मानत।
तृतिय प्रहर दिन गावनि।

(एक फटके से तबला फिर बन्द हो जाता है। स्नेहलता का गला अटकने-सा लगता है, फिर भी वह गाती ही जाती है।)

रे ध स्वर आरोह में वर्जित।
काफी थाट कहावनि।

(एक झटके से स्नेहलता सिहर उठती है। आचार्या तथा परीक्षक एक साथ)

"क्या हुआ?"

स्नेहलता—(करुणापूर्ण नेत्रों से देखती हुई)—"मुझे जल चाहिये।"

"जल?"

(आचार्या स्वयं प्रश्न करती हुई बाहर जाती हैं और तुरन्त ही साथ में एक छात्रा को जलपात्र सहित लेकर प्रवेश करती हैं। छात्रा जल-भरा पात्र उसे देती है। वह लेकर पहले थोड़ा सा, फिर प्यास अधिक होने के कारण सब पी जाती है। फिर आँखें बन्द कर स्तब्ध हो जाती है)

आचार्या—विनोदपूर्वक—

"तुमने संगीत किससे सीखा है?"

स्नेहलता—"पुस्तकों से।"

"पुस्तकों से?"

(तीनों एक साथ चौंक पड़ते हैं।)

आचार्या) भौंहें सिकोड़कर ')

"बिना किसी शिक्षक के ही?"

स्नेहलता (दुःखित स्वर से)—"जी हाँ, कौन मुझे शिक्षा देता?"

श्रीमती शर्मा (शीघ्रता से)—"जिसे तुम रुपये देतीं।"

स्नेहलता—"रुपये...?"

(आचार्या खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं फिर हास्यपूर्वक—)

"पुरानी किंवदन्ती है कि कोदो देकर पढ़ा है और अब जब समय इतना मूल्यवान् हो उठा है, तो बिना पैसे ही विद्यार्थी सब सिद्धि लूट लेना चाहता है। शिक्षा नहीं, भिक्षा हो गई कि सड़क पर भी बैठकर माँग लेंगे, तो बहुत हो जायगी। आखिर ऐसी परीक्षा में सम्मलित होने से क्या लाभ! यदि निर्धनता पर ही शिक्षा बरसती, तो न इतने बड़े-बड़े विद्यालयों का ही निर्माण होता और न इतने शिक्षक हर साल तैयार होते और न राज्य तथा धनिकों की पूँजियाँ उनके जेब में जातीं। कहीं, ऐसे भी विद्या आती है? यहाँ दो-दो वर्ष की अविराम सतत श्रमयुक्त परीक्षा, और तब भी पूर्ति नहीं, वहाँ इनके लिए है—एक तमाशा!"

(वह अपने आपही) फिर हँस पड़ती हैं, श्रीमती शर्मा घृणा व्यक्त करती हुई नाक सिकोड़ लेती हैं। परीक्षक (तीखे स्वर से—)"अच्छा, अब अपनी रुचि का गाना तुम तभी सुना सकती हो, जब कि उसका आलाप और तान दोनों ही ठीक हो अन्यथा नहीं। तैयार है, ऐसा?"

स्नेहलता—स्वीकृतिसूचक सिर हिलाती है।"

परीक्षक—(अविश्वासपूर्वक)—"निश्चय है?"

स्नेहलता—"जी, हाँ।"

(फिर वह तानपूरे को ठीक से लेकर बैठ जाती है और फिर आलाप—तानसंयुक्त स्वर निर्झर धीरे-धीरे फूट पड़ा श्रीमती शर्मा अनिच्छा से धीरे-धीरे तबला बजाती हैं।)

कल्याणराग

शोभा सिंधु न अन्त रही री।
नन्द भवन भरि पूरि उमंग चलि,
बृज की वीथिन फिरत वही री।
देखी जाई आजु गोकुल मैं,
घर-घर बेचति फिरति दही री।
कहँ लगि कहौं बनाय बहुत विधि,
कहत बहु मुख सहसहुँ निबही री।

* * *

दूसरा अंक

(सामने एक लड़की कुर्सी पर बैठी है। दूसरी उसकी पीठ पर सहारा दिये खड़ी है। दोनों की वेशभूषा बड़ी भड़कीली और मूल्यवान् है। बैठी हुई युवती बड़ी और खड़ी हुई उससे कुछ छोटी है। बड़ी-छोटी से—सान्त्वनापूर्वक।)

"फिर भी जब तक मुझे स्पष्ट न बताओगी, तब तक मैं कैसे समझूँगी कि उसने किस प्रकार तुम्हारा अपमान किया है?"

छोटी—(आवेश के साथ)—"इतना घमंड? लीला, जब मैं उस दृश्य को सोचती हूँ, तब आश्चर्य होता है। मैंने तो स्वप्न में भी नहीं अनुमान किया था, नहीं तो तुम्हारे मना करने पर भी क्यों उसके यहाँ जाती और गान में सम्मिलित होने को आमंत्रित करती।"

लीला—(उसका हाथ पकड़कर सामने की ओर खींचती हुई)—"आखिर कुछ स्पष्ट भी कहोगी?"

छोटी—"स्पष्ट! अभी भी तुम्हारे सामने स्पष्ट नहीं हुआ? मैं आज के घर गई, और केवल इसलिये विद्यालय की सहपाठिनी है, इसके उसके घर जाने और अपने घर बुलाने अपना बड़प्पन न सामने रखना चाहिये

"तब? चम्पा??" (लीला उत्सुक पूर्वक देखकर।)

चम्पा—"तभी तो उसका दिमा सातवें आकाश पर जा पहुँचा। मेरे का क्रम को सुनकर बड़ी शान से दिया—"यह तो विलासिता है और काटने का व्यर्थ तरीका। जो मुझे नहीं अवनत करता है मैं क्षमा माँगती हूँ

(लीला भी आवेश के साथ खड़ी हो जाती है)—"अच्छा! विलासी हैं? और स्वयं वह??

चम्पा—(व्यंग से)—"वह तो वीरांगना हैं।"

लीला—"अच्छा, यह बात है! तुम जब उसके पास पहुँची थी उस वह कर क्या रही थी?"

चम्पा—"उसके पास, उस विद्यालय में जो स्नेहलता नाम की छात्रा आई थी, वही बैठी अपना हिन्दी का अँगरेजी अनुवाद दिखा रही थी। और न जाने कौन थीं, जो कुछ पढ़ने में तल्लीन थीं। उन्हीं के सामने बड़े से मेरे आमंत्रण का प्रतिवाद कर दिया मुझे इतना दुःख हुआ कि मैं सकी, उल्टे पैर लौट ही रही थी उसकी माँ आ पहुँची। अब जैसे सारी परिस्थिति से वह पूर्ण परिचित थीं। उन्हें देखते ही तो शिष्यायें हवा हो गईं और वह होकर उठ खड़ी हुई। माँ ने दहाड़ते पूछा—"यह क्या हो रहा था क्या यह तेरे दुर्भाग्य की ही सूचना नहीं, मैं देख रही हूँ? नीच-दरिद्रियों की दासता में ही तेरे का उदय हो रहा है? मैं नहीं चाहती मेरे घर पर यह कूड़ाखाना तैयार यदि तुझे ऐसा ही नाम कमाने जी बनने का शौक चर्राया है, तो हो कि इसी वर्ष कहीं ट्रेनिंग लेकर कर ले और मेरे घर से मुँह काला दूर हो जा।"

"केतकी की सारी शोभा सामने काफूर हो गई, वह हाथ गिड़गिड़ाती हुई बोली—"ऐसा आप कह रही हैं, माँ मैं........!"

(बीच ही में बात काटकर कहा)—"मैं इसीलिए कहती हूँ चार अक्षर सीखकर ही इतनी हो गई कि सेठ जी की लड़की अपमान करने लगी? जो इस ही नहीं, शहर के चोटी के रईसों

(लीला आनंदातिरेक से हुई)—"तब?"

चम्पा—"वह तुरन्त ही अपनी देती हुई बोली—"नहीं, माँ? यह सर्वथा अन्यायपूर्ण है, मेरे जीवन किसी का अपमान करना नहीं है माँ? आज जब मेरा विभा दासत्व की शृंखला से मुक्त है,

शेष पेज १२ पर

अनुपयुक्त सामाजिक बंधन क्यों है ?

...री समाज को स्वर्गीय सुख देने की क्षमता रखती है

लेखिका, कुमारी विमलादेवी राजदान बी० ए०

...यह जानकर आश्चर्य हुआ कि ...अब भी शादी के लिये बैठी है। यह ...र एक सुशिक्षित व्यक्ति से प्राप्त

...ने उन महाशय से पूछा, 'क्या ...यह जानकर दुःख नहीं हुआ?' ...आपको समझ नहीं सका' आदमी ...दिया, मैंने उनसे फिर वही ...हुये कहा, "रीता अब भी शादी ...रही है।"

...कोई लड़की कुमारी है तो ...अर्थ नहीं कि वह विवाह के ...रही हैं' मैंने उत्तर दिया। संभव ...अपनी पसन्द का साथी न ...के काम में दिलचस्पी न ...क्या आप समझते हैं कि रीता ...में बैठकर शादी के लिये ...चाहती है। जैसा कि मैंने ...। वह एक आदर्श लड़की है, ...सम्बन्धी चार व्यक्तियों को ...उत्तर दिये हैं। मैं उसकी ओर ...विश्वास दिलाती हूँ कि उसका ...होनेवाला पुरुष निःसन्देह ...व्यक्ति ही होगा।

...एक अविवाहित लड़की पर ...ठीक नहीं समझता, मेरे मित्र ...दिया, वैसे तो विवाह एक स्त्री ...जीवन-यापन का सर्वोत्तम साधन ...में वह स्त्री अजीब है जो बिना ...और पुरुष के जीवन के साथ ...करती है।

मैं इस बात से सहमत हूँ कि कोई भी लड़की हृदय से शादी के लिये इनकार नहीं कर सकती। लेकिन दूसरी ओर मुझे उन लड़कियों पर आश्चर्यमिश्रित हर्ष होता है जो अपने माता-पिता की इच्छा पाते हुये भी विवाह से दूर भागती हैं। क्या कारण है कि भारत वर्ष में पुरुष स्त्रियों की अपेक्षा अधिक प्रशंसा के पात्र होते हैं? शादी होने के पहले लड़के को रुपया-पैसा देकर वचन क्यों लिया जाता है? इस प्रकार की खींचातानी में या तो लड़के का पागलपन है या फिर लड़की के माता-पिता का। किसी पुरुष को यह कहते कभी नहीं सुना गया कि वह बाजार में बैठकर अपनी शादी के प्रश्न पर विचार करे। यह अवश्य है कि पुरुष में स्त्रियों के प्रति प्रभावित होने की प्राकृतिक शक्ति होती है। वह पत्नी पाने के लिये उतनी इच्छाएँ नहीं रखता जितनी एक नवयुवती के हृदय में होती हैं। लड़कियों को स्वतः स्वयं के लिये वर चुनने की स्वतंत्रता नहीं, लेकिन पुरुष अपने मन की लड़की चुनने के लिए पूर्ण स्वतंत्र है। सच्ची और सुशील लड़की को विवाह-प्रस्ताव भंग करने की अपेक्षा उसे अपने बंधनों से मुक्ति का मार्ग निकालना चाहिए। लेकिन ऐसा विश्वास है कि स्त्री-पुरुष की समान स्वतंत्रता अभी सम्भव नहीं है।

कोई भी अपने माता-पिता की आज्ञा शादी के लिए एकाएक भंग नहीं कर सकता; किन्तु आधुनिक समाज के नवयुवक इस नियम के प्रतिवादस्वरूप हैं। प्राचीन परिपाटी के पोषक पुरुष भी अपनी पुत्रियों का विवाह नये युवकों के साथ करने को इच्छुक रहते हैं जब कि उनकी पुत्रियाँ पढ़ी-लिखी नहीं हैं। इस प्रकार का सम्बन्ध जीवन को मधुर और उन्नत बनाने में सफल नहीं। किसी भी दशा में यह ठीक नहीं कि लड़की को अपढ़ रखकर उसके लिए आधुनिक प्रणाली से शिक्षित वर ढूँढ़ा जाय।

लड़कियों को सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक दृष्टिकोणों से उतनी स्वतंत्रता अवश्य प्राप्त होनी चाहिए, जिसके द्वारा वह गंभीरता के साथ अपने जीवन-साथी को संतुष्ट रखकर स्वयं को प्रसन्न रख सकें। आर्थिक दृष्टिकोण से स्त्रियों की स्वतंत्रता पुरुषों की उन्नति में बाधक नहीं बन सकती। नारी देश, समाज और परिवार को स्वर्गीय सुख देने की क्षमता रखती है। किन्तु जब वह कदम कदम पर अनुपयुक्त सामाजिक बन्धनों से बँधी है तो उसके लिये यह सारी जिम्मेदारी व्यर्थ हो सकती है।

* * *

...में होनेवाले एशियाई आर्थिक सम्मेलन में श्रीमती स्वामिनाथन् अन्य महिलाओं के साथ।

मृत्यु को ललकार दे जो

लेखक, श्री रमानाथ अवस्थी

मृत्यु को ललकार दे जो वह करे स्वीकार मेरा प्यार मैं तैयार हूँ।
मैं प्रलय के पाँव में भी डालता हूँ प्रीति की जंजीर
खेलता हूँ मैं समय के साथ धरकर दाँव में तकदीर
मैं किसी के आँसुओं का शव उठाकर चल रहा दिन रात
आग मन में जग रही पर सो रही है नयन में बरसात
जो भरे अंगार से दामन करे स्वीकार मेरा प्यार मैं तैयार हूँ।
पूजता हूँ मूर्ति जिसमें ले रहा है साँस मेरा प्यार
चूमता हूँ दो चरण जिनसे बँधी है जीत भी औ' हार
कर रहा हूँ मैं नरक की शक्ति से ही स्वर्ग का शृङ्गार
कर रहा हूँ प्राण देकर मृत्यु की नाराजगी को प्यार
स्वर्ग पर अधिकार ले जो वह करे स्वीकार मेरा प्यार मैं तैयार हूँ।
चाहता हूँ पुतलियों में कैद करना मैं गगन का तन
चाहता हूँ जो हुआ पैदा न देखे मृत्यु का नर्तन
मैं करूँगा स्वर्ग को बरबाद करने भूमि को आबाद
मैं करूँगा मृत्यु से संग्राम करने प्राण को आजाद
जो समझ ले मृत्यु को जीवन करे स्वीकार मेरा प्यार मैं तैयार हूँ!
जो मिला था कल मुझे वह रह न पाया साथ मेरे आज
जी रहा हूँ क्योंकि रखना है मुझे इस जिन्दगी की लाज
बह रहे हैं साँस रोके सात सागर पुतलियों के बीच
पर हृदय की अधजली आवाज कहती सिन्धु मुझको सींच
जो बना ले प्यास को पत्थर करे स्वीकार मेरा प्यार मैं तैयार हूँ।

'कथा-साहित्य की सबसे अच्छी प्रतिनिधि पत्रिका'

मंजरी

श्रेष्ठ कथाकारों की सरस कहानियाँ और कथा-साहित्य पर गम्भीर तथा आलोचनात्मक लेख आकर्षक मुद्रण-विन्यास के साथ प्रस्तुत करनेवाली 'मंजरी' सांस्कृतिक मनोरंजन की एकमात्र कहानी-पत्रिका है।

एक सम्मति

प्रोफेसर शिवपूजन सहाय, भूतपूर्व सम्पादक 'हिमालय' —'मंजरी' के तीन अंक देखे और तीनों को देखकर यही धारणा हुई कि कथा-साहित्य की सबसे अच्छी प्रतिनिधि-पत्रिका 'मंजरी' ही है। छपाई सफाई और सजावट के लिए तो इंडियन प्रेस का यशस्वी नाम ही प्रमाण है, सम्पादन-कौशल में आपने भी अपनी कला का आकर्षक प्रदर्शन किया है। साज-सज्जा और सामग्री-संकलन में सुरुचि का समावेश सर्वथा सराहनीय है। भिन्न भाषाओं की कहानियाँ देकर आप हिन्दी पाठकों को काफी तृप्त कर रहे हैं। बहुत से पाठकों ने यह मत व्यक्त किया है कि आपकी पत्रिका ही सब कहानी-पत्रिकाओं में श्रेष्ठ एवं उपयोगी है। मैं आपकी आरम्भिक सफलता पर आपको शत-शत बधाइयाँ देता हू।

× × ×

प्रतिमास 'मंजरी' पढ़कर आप भी अपना और अपने परिवार का सांस्कृतिक मनोरंजन कीजिए।

वार्षिक मूल्य ६) छः रुपये — प्रति अङ्क आठ आने

प्रकाशक :
इंडियन प्रेस लि०, प्रयाग

स्नेहलता

(पेज १० का शेष)

मनोमालिन्यवर्द्धक यह, दीन असमर्थों के प्रति उपेक्षा और निर्दयता का भाव उचित है?" माँ ने बिगड़कर उत्तर दिया—"मैंने इन अभागिनों का ठेका नहीं ले रक्खा है। पाठशाला क्या विद्यालय में क्यों नहीं सम्मिलित हो जाती?

लीला—"ठीक कहा, घर में भूनी भाँग नहीं, माँ जी चली भुनाने। खाने-पहनने का तो ठिकाना नहीं है—पढ़ने की धुन सवार है, कि जिसमें चार शिक्षित और सम्पन्न घरों में घुसने और नामवरी लूटने का सुयोग मिले, सड़ रही हैं—झोपड़े में, महलों के सपने देखती हैं। अब तो जिसे देखो वही शिक्षा-शिक्षा की रट लगाये हैं, इसी से तो शिक्षितों और हम लोगों का वह सम्मान नहीं है। ऊँचे-नीचे सब एक ही स्तर पर गिर गये, इसी से सब धान बाइस पसेरी हो रहे हैं। हम लोगों में फूट पड़ रही है और छोटे पद रहे हैं। अच्छा तब?"

चम्पा—उसने कहा "ठेका क्यों नहीं है माँ? आखिर हम सब एक देश, एक ही राज्य के तो अंग हैं, क्या अपनी एक असमर्थ बहन की मैं अंगुली पकड़ लूँगी। तो गिर जाऊँगी? यदि वह बेचारी इतनी सम्पन्न होती, तो मेरे यहाँ झिड़कियाँ सहने दौड़ी आती? आज हमारी राष्ट्रीय सरकार इस अशिक्षा और दीनता का दलन करने के लिये भले ही योजनायें बना रही है। गाँव-गाँव में बच्चों की अनिवार्य शिक्षा, राज्य नियम बनाकर पाठशालायें खोलने जा रही है, किन्तु पाठशालाओं तक इन बहनों की कहाँ पहुँच है? जो अपना शैशव समाप्त कर चुकी हैं। तरुणावस्था में ही पत्नी और माँ बन बैठी हैं; अभाव और विषमता का दारुण सामंजस्य जो फैला है आखिर उसमें पिसती हुई, यह जीवित रहने का कुछ भी उपकरण पा सकने की अधिकारी नहीं हैं? राज्य की ओर से जो हो रहा है, वह तो एक दशाब्दी आने की तैयारी है, जो आज के विनाशमय अभावों को दावा में मरती-झुलसती शेष रहेंगी, उनको सँवारने के लिये है और वह भी इसलिये कि यही दीन-हीन देशवासी असभ्य से सभ्य हों; वह समाज के प्रति, मानव के प्रति और राष्ट्र के प्रति तथा चराचर के प्रति अपना कर्तव्य निभा सकें। यह घृणा और अहंकार की दुर्वृत्ति त्यागकर अपने देशवासियों से बंधुत्व स्थापित कर अपने को देश को, समुन्नत करें, इसलिये नहीं कि किसी को अपमानित कर......।"

(बीच ही में बात काटकर माँ ने कहा)—"मैं तेरा भाषण सुनने नहीं आई हूँ, बल्कि स्पष्ट कहती हूँ कि अब तू सावधान हो जा और भविष्य में ऐसी चेष्टा से मुक्त हो जा, जो मेरी भलाइयों में आघात पहुँचाती हैं।"

लीला—(कुछ गंभीरता से)—"तब?"

चम्पा—(केतकी घुटनों के बल हाथ जोड़कर बैठ गई और याचना भरे स्वर में आकाश की ओर देखती हुई बोली)—"हाय, मेरे देश! आदि सभ्यता के महत्तम प्रदेश! आज तुम्हारी यह दुर्दशा? क्या महाराज मनु की वह दहाड़ आज उन्हीं पर नहीं हँस रही है कि विश्व को यदि सभ्यता सीखनी है तो वह आदि गुरु भारत से सीखे। वही सिंह भारत दीर्घकालीन जर्जरता के जाल को जब भेदन कर अपने को कर्मक्षेत्र में प्रस्तुत कर रहा है, तब अमेरिका, इँगलैंड ही नहीं अपने पड़ोसियों तक के सम्मुख एक शृगाल सा हो रहा है। क्यों नहीं—

'पंगु भये मृगराज आज नख रद के टूटे।'

"माँ! मैं आपके स्वार्थ में आघात पहुँचाती हूँ। भलाइयों का आघात! हो सकता है, माँ! किन्तु धृष्टता क्षमा हो, मैं इन चरणों की विनम्रतापूर्वक वंदना कर निवेदन करती हूँ कि मेरा यह दृढ़ निश्चय इस शरीर के रहते नहीं छूट सकता। योग्य पात्र के हाथों में विद्यादान का सा मंगलमय अवसर? कभी नहीं छोड़ा जा सकता। देखो प्रकृति का अंतराल भी कितना महान्, कितना विशाल है। मैं आपके घर पर नहीं, राजकीय महिला-उद्यान में जाकर—या जहाँ भी हो सकेगा, वहाँ से जितनी मेरी योग्यता है मैं सर्वस्व उसके अनुसार देने को प्रस्तुत हूँ। यही तो प्रभु का वरदान है?"

लीला—(व्यंग से हँसकर) अच्छा नाटक था।"

चम्पा—(इसी समय एक दासी आई और नमस्कार करके एक लिफाफा केतकी की ओर बढ़ा दिया। माँ ने झपटकर उसके हाथ से लिफाफा छीन लिया। दासी ने रजिस्टर उनकी ओर हस्ताक्षर करने के लिए बढ़ा दिया। माँ ने हस्ताक्षर करके लिफाफा खोला। प्रसन्नता से उनका मुख चमकने लगा, वह आश्चर्य के साथ बोलीं) "क्या मैं स्वप्न देखती हूँ?"

मैंने उत्सुकतापूर्वक पूछा—"क्या हुआ?"

माँ ने इतराते हुए कहा—"महिला अधिकारिणी महापरिषद् की मंत्राणी ने परिषद् की सदस्याओं में केतकी नाम लिख लिया है और उसे परिषद् में आज ही भाषण देने को बुलाया है।"

लीला—"मंत्राणी जी ने?"

चम्पा—"हाँ, तुम चलोगी, वहाँ?"

पटाक्षेप

तृतीयांक

स्थान—(सभाभवन—एक ओर सम्पन्न और दूसरी ओर साधारण वर्ग की युवतियाँ बैठी हैं। दोनों दल के बीच में पर्याप्त अंतर है; जिसके आरंभ में उस ओर गद्देनुमा एक उच्च तथा उज्जवल आसन बिछा, जो कि अभी रीता ही है, आसन से कुछ ऊँचा उठकर एक परदा लटक रहा है। परदे के पास एक युवती खड़ी है। वह अन्य सब बहनों की ओर देखकर विनम्रता से)—"आदरणीया बहनों"।

सौभाग्य का विषय है कि आज हम एक दूसरे के निकट एक उद्देश लेकर एकत्र होने में समर्थ हैं। वह कोई साधारण अवसर नहीं है। इस परिषद् का वैसे तो नाम ही अपना उद्देश व्यक्त कर रहा है फिर भी [illegible] प्रचलित प्रणाली द्वारा आवश्यक है कि इस समय की परिषद् नेत्री भी एक हों; जिन्हें आप अपने में ही सर्वसम्मति से निश्चित कर लें कि वह कौन हों? क्योंकि बिना राजा के राज्य या बिना चन्द्र के तारक भरे नभमंडल की जैसे कोई शोभा रजनी के लिए नहीं है वैसे ही बिना सभानेत्री के सभा की शोभा और सम्पूर्णता नहीं होती है, अतएव मेरा विनम्र निवेदन है कि इसको आप लोग शीघ्रतापूर्वक कर लें। तब उसकी अन्य कार्यवाही हो।

(सभा में स्तब्धता छा जाती है फिर सम्पन्न वर्ग में से ही एक खड़ी होकर)

"मैं तो इसके उपयुक्त बालिका विद्यालय की संगीताचार्या श्रीमती शर्मा को समझती हूँ क्योंकि आचार्या नहीं आ सकी हैं।

उन्हीं में से दूसरी उठकर—"मैं उनका अनुमोदन करती हूँ।"

मंत्राणी—"और कोई?"

साधारण वर्ग के बड़े दल में से—"आदरणीया—केतकी रानी।"

दूसरी—"मैं अनुमोदन करती हूं।"

तीसरी—"मैं भी।"

चौथी—"मैं भी।"

पहले वर्ग से भी दो युवतियाँ—"मैं भी केतकी का अनुमोदन करती हूँ।"

केतकी खड़ी होकर—"मेरी भी एक विनय है—आप लोग मेरे नाम को प्रस्तावित कर अनुमोदित कर रही हैं, मेरे लिये प्रसन्नता की बात है मैं इसकी हृदय से आभारी हूँ, किन्तु क्षमा-याचना के साथ मैं अपना नाम इस कृपापूर्ण पद से वापस लेती हूँ।"

सब आश्चर्य से उसे देखती हैं। वह फिर भी बिना रुके ही।

"कारण यह है कि सभानेत्री जैसा महत्त्वपूर्ण पद केवल विलासिता या मनोरंजन के लिए नहीं है। उसके लिए ठोस कर्मशील अनुभवी मस्तिष्क की आवश्यकता है आप लोग मेरे नाम के पीछे संभवतः उसे जुड़ा हुआ भी कह सकती हैं, किन्तु वह एक अन्य कर्मवीरा बहन के समक्ष हेय है, अतएव मैं अपना मत उन्हें देती हूँ, क्योंकि जन-सेवा करने का सुयोग उन्हें मुझसे कहीं अधिक प्राप्त हुआ है और जन-सेवा वही कहलाती है जो बिना किसी स्वार्थ के, बिना भय के और बिना किसी प्रकार की प्रतिकार की भावना के की जाती है। वही मान्य है। यदि मैं किसी संस्था की वेतनभुक्त सेविका होकर भी संस्था के परे दीनों की, असमर्थ उद्योगियों की सहायक नहीं हूं, या किसी प्रकार के प्रतिकार की भावना से किसी को सहयोग देती हूँ, तो वह कभी उचित नहीं है। ऐसा आसन तो उस महान् हृदय की शोभा है जो अपने अगाध हृदय सिंधु को सदैव दीन असमर्थों की सेवा के लिए हाथों पर लिये हो, फिर भी किसी से उसका ढिंढोरा न पीटती हों, सेवा और मौन सेवा, सहायता और सच्ची सहायता ही देश और राष्ट्र की सेवा है।"

तालियाँ बज उठती हैं।

"तो मैं एक ऐसे ही नाम को प्रस्तावित करती हूँ श्रीमती स्नेहलता जी; जो अपने साहित्य-सृजन से समाज की गुत्थियों को, साहस से दुर्वृत्तियों को, सेवा से अस[illegible] को और उत्साह से निर्बलता को नष्ट कर, कृतज्ञता से सबके हृदय को [illegible] दित करती हैं।"

दो-चार को छोड़कर शेष एक [illegible] से—"मैं भी हृदय से उन्हें ही अनु[illegible] दित करती हूँ।"

मंत्राणी जी—"मैं भी श्रीमती [illegible] लता जी का अनुमोदन करती हूँ। [illegible] कृपा करके इस आसन को अपनी [illegible] शोभित और ऊर्ज्जस्वित करें।"

(स्नेहलता साधारण वर्ग के बीच [illegible] निकलकर सभानेत्री के आसन के [illegible] जाती है और उसे झुककर नम[illegible] करती हुई मंत्राणी जी के सहित उस[illegible] खड़ी होकर (दोनों दल की [illegible] देखकर)—"आदरणीया बहिनो! आ[illegible] दिये इस आसन को प्राप्त कर [illegible] बुद्धि कुछ भ्रमित सी हो रही [illegible] वह इसलिये कि मैं इस [illegible] वैसी स्वतन्त्र नहीं हूँ जैसी इसके पूर्व [illegible] अब तो आपकी आज्ञा का अनुमोदन [illegible] आप ही से निवेदन करना, मेरा [illegible] कर्तव्य होगा। फिर भी एक प्रस्ता[illegible] रूप में मैं एक निवेदन आपसे कर[illegible] जिसे अपने मतानुसार आप जैसा [illegible] करेंगी, वैसा ही हमारा कार्य होगा।

वह प्रस्ताव यही है कि शताब्दियों [illegible] पराधीनता का जो दुर्योग हमारे देश [illegible] छाया था, उसने हमारी बड़ी महत्[illegible] लूटकर, हमारी प्राण-संजीवनी शक्ति [illegible] चूस लिया है। हमारे देश [illegible] विदेशी हो गया है। इसी से हम देखते [illegible] हैं कि जिन भाग्यशाली बहनों के पास [illegible] होता है वह अपने को उससे हीन [illegible] को चाहे वह उनकी सहोदरा ही [illegible] नहीं हैं, घृणा से दूर ही रखती हैं। [illegible] ही आप इस बात को एक [illegible] सकती हैं। केवल वास्तविक रूप है, [illegible] अर्थों में विद्या के स्थान को [illegible] वहाँ पर भी विद्या-वैभव सम्पन्नता [illegible] उसका मेल है। यह कितनी दारुण [illegible] है, कि हम अपने ही मन-प्राण [illegible] हैं। हमको अपना ज्ञान ही एक [illegible] मिलाता और अज्ञान ही विभक्त [illegible] है। फिर यदि हम चालीस करोड़ [illegible] कर तीस और उससे भी बँटकर [illegible] केवल अपने ही को पाते हैं [illegible] कितनी बड़ी अधोगति सामने [illegible] अतः अब इससे भी मुझे [illegible] करना है। तब सच्ची स्वतंत्रता प्राप्त [illegible] राजतन्त्र में अपना अपना तंत्र और [illegible] तंत्र में राजतंत्र हो, अभी वह [illegible] दूर है। उसे शीघ्र से शीघ्र [illegible] के लिये शिक्षा ही अमोघ शक्ति [illegible] शिक्षा को प्राप्त करने के लि[illegible] प्रयत्न हो रहे हैं पर उनमें एक [illegible] होना आवश्यक है कि जो [illegible] अल्पावस्था में महत्त्वपूर्ण [illegible] प्राप्त करनेवाला माताएँ, [illegible] कार्यें भी यदि इस दिशा [illegible] ओर प्रोत्साहन प्राप्त करें, [illegible] आगामी दशाब्दी ही कितनी [illegible] समृद्ध हो जाय। कल का [illegible] ही क्यों न आरम्भ कर दिया [illegible] जानती हूँ कि यह समस्या न [illegible] है बल्कि दुःखःपूर्ण भी है पर [illegible]

शेष पेज १८

इधर उधर की

जेब में रखनेवाला टेलीफोन

मोटर, आफिस और दूसरी ऐसी जगहों से बातचीत करने के लिये अमेरिका के विज्ञान-विभाग में एक बेतार के तार का टेलीफोन निर्माण किया जायेगा। इसी मशीन में लाइट देकर रेडियो का भी आनन्द उठाया जा सकेगा। इसे 'सिटीजन रेडियो सरविस' के नाम से पुकारेंगे। अमेरिका के विज्ञान की नवीन योजनाओं के आधार पर आज की सम्पूर्ण मूल्यवान् वस्तुएँ जन-साधारण के लिये सरल कर दी गई। इस प्रकार का टेलीफोन और रेडियो कोट की जेब में सुविधापूर्वक रक्खा जा सकेगा। 'बैटरी' के द्वारा भी इसका कार्य-संचालन होगा। इस रेडियो और टेलीफोन की मशीनरी आज के रेडियो और टेलीफोन की भाँति है, लेकिन इनके बनाने में लागत और परिश्रम अधिक लगता है। इस प्रकार के टेलीफोन मोटर, सड़क और आफिस के लिये अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होंगे।

आशा की जाती है कि जनता इस प्रकार के टेलीफोन अधिक पसन्द करेगी। आज के रेडियो में एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाने का प्रश्न सरल नहीं है। इसका चलाना आसान है, जो आज रेडियो बजा सकता है उसके लिये इन यंत्रों का प्रयोग मुश्किल न होगा। इसका वजन भी दो पौंड से अधिक न होगा।

* * *

विस्तर स्वास्थ्य को क्षीण करता है

न्यूयार्क के प्रसिद्ध डाक्टर जान ... ने वहाँ के मेडिकल कालेज में भाषण देते हुये बताया है, कि एक स्वस्थ और दृढ़ मनुष्य के लिये अधिक मोटे बिस्तरे पर देर तक पड़ा रहना ठीक नहीं। इससे उसके शरीर के अंगों का प्रसरण रुक जाता है। इस प्रकार के कई प्रयोग किये जा चुके हैं जिनके द्वारा यह सिद्ध हो गया है कि देश की बीमारी के एक हिस्से का कारण यह भी है। डाक्टर की दवाइयाँ मरीज के लिये इस दशा में अनुमानित लाभ नहीं दे सकतीं। ऐसा देखा गया है कि यदि एक स्वस्थ आदमी एक सप्ताह तक विस्तर पर पड़ा रहे तो उसके क्षीण स्वास्थ्य को पुनः सुधरने में कम से कम तीन सप्ताह लगेंगे। यह प्रयोग भिन्न भिन्न आयुवाले लोगों के द्वारा किये गये हैं।

डाक्टर ने यह भी प्रकट किया है कि शरीर में एक प्रकार का रस होता है जो उसके बाह्य स्वरूप को तेज प्रदान करता है। बिस्तर पर अधिक समय काटने से उस रस का प्रभाव कम होता है। धीरे धीरे फिर शरीर की कांति का ह्रास होने लगता है। इस प्रकार वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि शरीर के लिये विस्तर लाभ-प्रद वस्तु नहीं है। इस आधुनिक युग में सम्भवतः और भी ऐसे ही असाधारण प्रयोग किये जायेंगे जो मनुष्य को उसके बिस्तर से अलग रखने का काम करेंगे।

पा० ४

* *

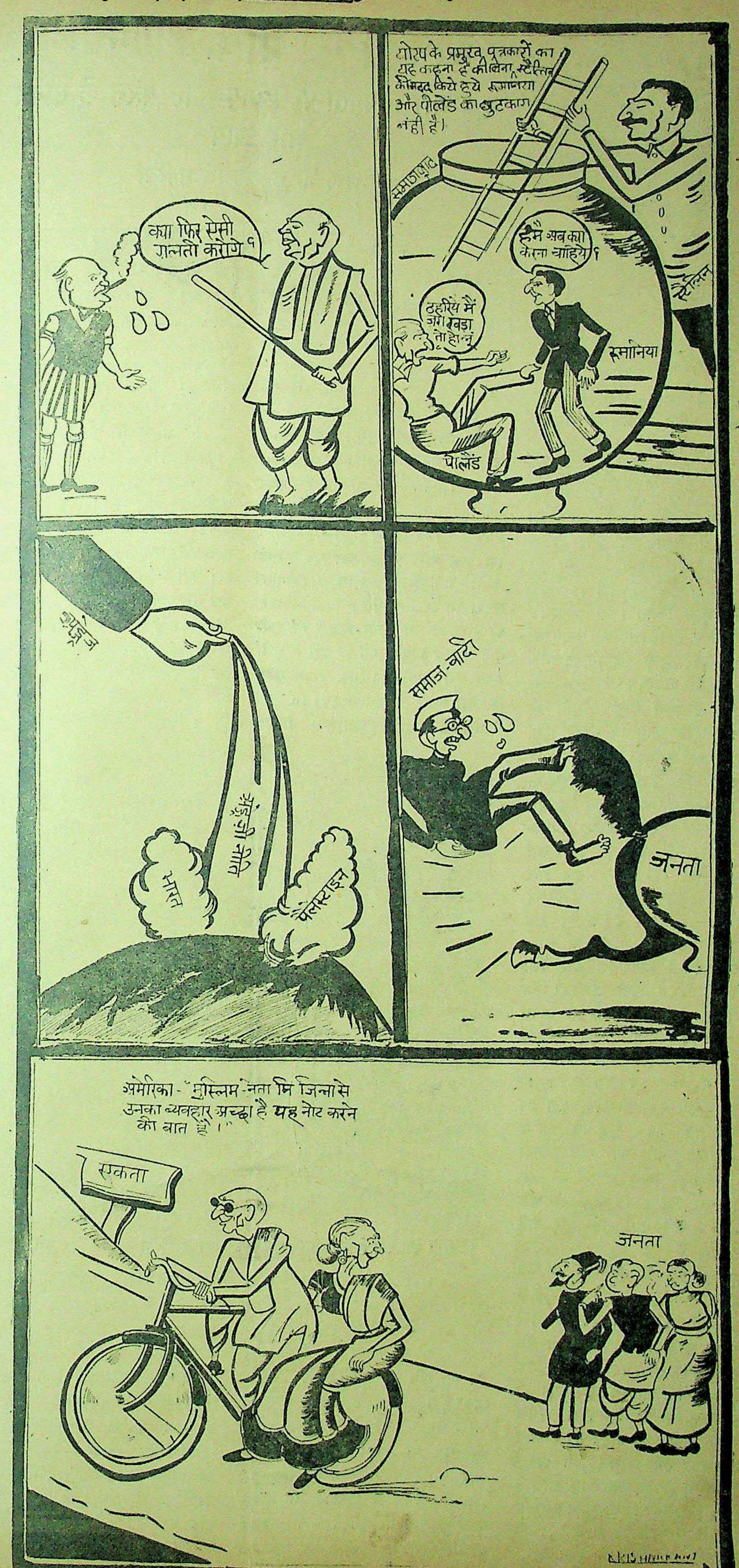
क्या फिर ऐसी ग़लती करोगे?
योरप के प्रमुख पत्रकारों का यह कहना है की बिना स्टैलिन की मदद किये हुये रूमानिया और पोलैंड का छुटकारा नहीं है।
समाजवाद
स्टालिन
हमें अब क्या करना चाहिये?
ठहरिये मैं भी खड़ा तो हो लूं
रूमानिया
पोलैंड
अंग्रेज
अंग्रेजी नीति
भारत
पैलस्टाइन
समाज-वादी
जनता
अमेरिका - "मुस्लिम-नेता मि॰ जिन्ना से उनका व्यवहार अच्छा है यह नोट करने की बात है।"
एकता
जनता

कृषि-सुधार की नई योजनायें

भूख और निर्धनता पर विजय प्राप्त करने के साधन और उपाय

लेखक, श्री कृष्णविहारी भाटिया

(विकास कमिश्नर, संयुक्तप्रान्त)

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद राष्ट्रीय सरकारों द्वारा कृषि के विकास और उन्नति के लिये अनेक सामयिक और प्रगतिशील योजनाओं को कार्यान्वित किया जा रहा है। इस लेख में प्रान्तीय कृषि के विशेषज्ञ लेखक ने सरकार के कार्यों का वर्णन करते हुए विकास के उपयोगी साधनों तथा उपायों का उल्लेख किया है। लेख सामयिक और जानकारी से पूर्ण है।

संयुक्तप्रांतीय सरकार के विकास मंत्री माननीय पंडित केशवदेव मालवीय।

संयुक्तप्रान्त में हर १०० बीघे पीछे ६० बीघे जमीन खेती के काम आती है। जमीन का इतना बड़ा हिस्सा खेती के लिये शायद और किसी प्रान्त या देश में नहीं दिया जाता और दोआब यानी गंगा और जमुना के बीच का मैदान का तो इससे भी बड़ा भाग खेती में लगा हुआ मिलेगा। यह आवश्यक भी है, क्योंकि हमारे प्रान्त की जनसंख्या अधिक है और उसको खिलाने का भार यहाँ की भूमि पर पड़ता है। प्रति एक मनुष्य के हिस्से में खेतिहर भूमि का केवल ३।५ एकड़ यानी एक पक्का बीघा आता है। नतीजा यह होता जा रहा है कि हमारी भूमि उपजाऊ होते हुए भी इधर तो जनसंख्या बढ़ती जाती है और उधर खेती के भार से जमीन की प्रति-बीघा उपज घटती जाती है। हमारे यहाँ गेहूँ, धान तथा गन्ने की पैदावार और देशों के मुकाबिले में केवल एक तिहाई है या उससे भी कम है। अर्थात् यदि हम अपनी भूमि से उतना ही अन्न आदि उत्पन्न कर सकें जितना कि और देशों में होता है तो हम अपनी आधी ही भूमि से मौजूदा पैदावार से अधिक उत्पन्न कर सकते हैं। तथा विशेष उपजाऊ भूमि से चारा-लकड़ी और फलों की पैदावार में उन्नति कर सकते हैं। इनकी उन्नति से खेत की उपज और बढ़ती है। पर आजकल तो हम कुछ ऐसे चक्र में पड़े हैं कि अनाज की माँग जितनी बढ़ती जाती है जमीन की पैदावार हम उतनी नहीं बढ़ा पाते। आज इस चक्र के तोड़ने के सम्बन्ध में मुझे कुछ बातें आपसे कहनी हैं।

यह तो हम सब जानते हैं कि खेत की उपज बढ़ाने के लिये भूमि को पौधे के खाद्य पदार्थ देने की आवश्यकता होती है। खेत से फसल के बाद फसल तो लेते जायँ और उसके स्थान पर पौधों को खूराक न पहुँचायें तो पैदावार अपने आप ही कम हो जायगी। खेत में पौधे की खूराक खाद और पानी है। आइये पहले खाद की समस्या पर नजर डालें। सबसे अच्छी खाद गाँव की ही प्राकृतिक खाद होती है जो गोबर, गो-मूत्र, कूड़ा-कचड़ा तथा पत्ती सड़ाने से बनती है। इसके विपरीत नमक की कृत्रिम खाद न तो इतनी लाभदायक होती है और न आवश्यकतानुसार मिलती ही है। गाँव की खाद अधिक से अधिक बने और अच्छी बने इसके लिये हमें पूरा प्रयत्न करना है और इसके लिये प्रान्तीय सरकार हर प्रकार की योजनायें चला रही है। इसके बनाने के तरीके ठीक से समझाने और सिखाने के लिये प्रांत में बहुत से कर्मचारी इस विषय की विशेष शिक्षा देकर गाँव में भेजे गये हैं। यह लोग खाद बनाना प्रत्यक्ष बनाकर सिखायेंगे। विकास-विभाग की तरफ से जो सुधार-केन्द्र (डिबलपमेन्ट ब्लाक) चुने गये हैं वहाँ के कर्मचारी इस बात का भरसक प्रयत्न करेंगे कि उन केन्द्रों के अंतर्गत १४००० गाँवों में जितनी खाद की आवश्यकता होती है वह उन गाँवों में ही बन जाय। कृषि-खाद-विभाग की ओर से प्रत्येक शहर और कस्बे में वहाँ के कूड़े इत्यादि की खाद बनाने का प्रबन्ध कर दिया गया है। जो गाँव इन शहरों और कस्बों के निकट हैं वह इस खाद को सस्ते दामों में खरीद कर ले जा सकते हैं। प्रत्येक चीनी की मिल पर ईख-विभाग की ओर से खाद बनाने का पृथक् प्रबन्ध किया गया है। इस योजना के अन्तर्गत गन्ना लानेवाला किसान घर लौटते समय गाड़ी में यह सस्ती खाद अपने साथ लेता जायगा। उपरोक्त योजनाओं के विषय में इतनी चर्चा हो रही है कि आप इन सबसे भली प्रकार परिचित हो चुके होंगे।

इस सम्बन्ध में एक और भी खाद का जिक्र आपसे कर देना चाहता हूँ, वह है हड्डी की खाद। गाँव से हड्डियाँ इकट्ठा करके बाहर भेज दी जाती हैं और फिर फासफेट के रूप में वह बड़े महँगे दामों में आपको मिलती हैं। यह खाद फलीदार पौधों—जैसे मटर, चना, अरहर तथा ईख और धान की फसलों के लिए बड़ी लाभदायक होती है। इस खाद को गाँव में ही सस्ती और बनाने के यत्न ढूँढ़े जा रहे हैं। परन्तु किसान यदि चाहे तो हड्डी की खाद अपने आप भी बना सकते हैं, क्योंकि इसकी विधि कठिन नहीं है। हड्डियों को मामूली सा जलाकर पीस देने से काफी अच्छी खाद बन जाती है और आपका धन आपके पास ही रह जाता है।

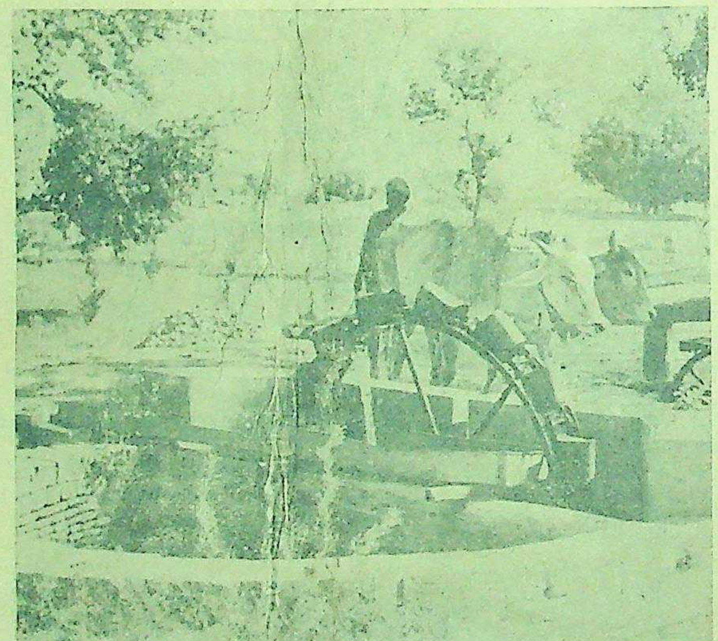

खेतों की सिंचाई के लिये किसान रहट चलाकर जमीन से पानी निकालते हैं।

इस विषय की कुछ बुनियादी समस्याओं पर भी विचार करना चाहिए।

खाद बनाने के लिए गोबर की आवश्यकता होती है। गोबर को हम लोग बहुधा उपले बनाकर जलाने के काम में लाते हैं। लड़ाई के जमाने में इतने बाग और पेड़ काट डाले गये कि ईंधन की कमी गाँव में भी होने लगी है। मेरी समझ में पहली समस्या इस कमी को दूर करने की है। पेड़ों को लगाने से केवल ईंधन की ही दूर नहीं होती, वरन् कई कृषि-स समस्यायें भी हल हो जाती हैं। वृक्ष फल-फूल तन्दुरुस्ती के लिए आवश्यक पेड़ वर्षा को बढ़ाने ही में सहायता देते, इनके रहने से खेतों का कटा जाता है और खेत की उपजाऊ मिट्टी के साथ बहने नहीं पाती। भीषण गर्मी समय पेड़ मनुष्य तथा पशु-पक्षियों छाया प्रदान करते हैं इसलिए हम अधिक से अधिक संख्या में वृक्ष ल चाहिए और उनकी उसी तरह देख- करनी चाहिए जिस तरह हम अपने की करते हैं; तब वह बड़े होकर हमारे आयेंगे।

दूसरी समस्या हमारे सामने गो- की है। यों तो अधिकतर किसान गो हैं; परन्तु कितने उनकी अच्छी तरह भाल करते हैं वह आप स्वयं ही सोच हमारे प्रांत में गाय साधारणतया तीन दूध भी तो प्रतिदिन नहीं देती, क्योंकि उसकी पूरी खूराक उसे नहीं दे पाते। गाय पंजाब में यहाँ से तिगुना और तक दूध देती है। इसलिए जब यह आ श्यक है कि प्रत्येक किसान अपने गोठ एक जोड़ी गाय रक्खे, वहाँ यह भी आ श्यक है कि वह अपने खेत में चारे की वार की ओर भी ध्यान दे। कृषि-वि ने कई गाँव में यह प्रत्यक्ष कर के दि दिया है कि गाय पालने तथा में यथायोग्य चारा उपजाने से किसान आमदनी और अनाज की उपज है, घटती नहीं।

तीसरी समस्या सिंचाई की है। सम्बन्ध में भी बहुत सी योजनाओं आप सुन चुके होंगे। मैं पूर्वी जि ध्यान विशेष रूप से इस ओर करना चाहता हूँ। इधर नहरें तो है और उनके बनाने की जो योजना कुछ वर्षों में ही पूरी हो सकेंगी सिंचाई यहाँ पर अधिकतर तालाबों है। परन्तु तालाबों की उचित देख- होने से वे सूखते और उथले होते उनको गहरा और साफ रखना का अपना काम है। कोई भी सरकार कर्मचारियों द्वारा यह किसान पूरा नहीं कर सकती। इस साल इन तालों को सुधारने की प्रतिज्ञा इन जिलों के गाँव गाँव में इ चल रही है और आशा की ज बरसात आने पर यदि प्रत्येक ताल का काम समाप्त कर लेगा तो कम २,३ लाख एकड़ की सिंचाई से बढ़ जायगी। इन तालों के किनारे वृक्ष अवश्य लगाइये। इससे आप पहली समस्या को सकेंगे और इन पेड़ों की आम आप इन तालों की 'मरम्मत' प्रतिवर्ष स्वावलम्बी रूप से आपको सरकार आपकी सहायता बड़े बड़े तालाबों और नदियों उठाने के यंत्रों का प्रबन्ध कर

पेड़ लगाना, चारा उत्पन्न तालों को ठीक रखना इन तीनों खेती से कितना घनिष्ठ सम्ब

शेष पेज १८

"मतवाला शायर राम जोशी" कैसा है !

सुप्रसिद्ध निर्देशक शान्ताराम की दिग्दर्शन-कला क्या प्रगति की ओर है ?

लेखक, श्री गोपाल मेहरोत्रा

मानव-जीवन की उत्ताल-तरङ्गें श्रृङ्गार, हास्य आदि रसों से विभू- हैं। इस परिवर्तनशील जगत् में कभी करुण होकर दया-भाव से मचल और कभी क्रोधाग्नि में भस्मीभूत हो आत्महत्या कर बैठता है। जब एक रस का पान करते-करते व्याकुल है तो उसे नवीन वस्तुओं की होती है। पूर्णतया समान आज से नहीं वरन् विश्व-गति चला आ रहा है। जीवन की परिस्थितियों को सहते सहते लोग कराह उठते हैं और सहसा कहने लगते हैं—"यदि मेरी मृत्यु हो जाती....।" ऐसी शोचनीय दशा में मानव विश्व-चिन्तन त्यागकर शान्ति की खोज में निकल पड़ता है। निराशा के हेतु कुछ आशा और आशा के हितार्थ जीवन एवं हृदय-मनोरञ्जन की कुछ सामग्रियाँ चाहिए, परन्तु भारतीय चित्र-जगत् जो कुछ भी आज भारतीयों को प्रदान कर रहा है—वह उनके लिए कुछ नहीं है। हमें सीधी-सादी हँसी की आवश्यकता है (जो हमारा मनोरञ्जन कर सके) कामुकता के नग्न प्रदर्शन की नहीं! इसी कारणवश मतवाले शायर राम जोशी की सरल कविताओं की आवश्यकता उस युद्ध-भूमि में पड़ी। उसी आवश्यकता को अनुभव करके निर्देशक-निर्माता श्री व्ही० शान्ताराम तथा बाबूराव पेन्टर ने उस गति को, राजकमल कला-मन्दिरकृत "मतवाला शायर राम जोशी" की रचना कर, जनता के सम्मुख प्रदर्शित किया है।

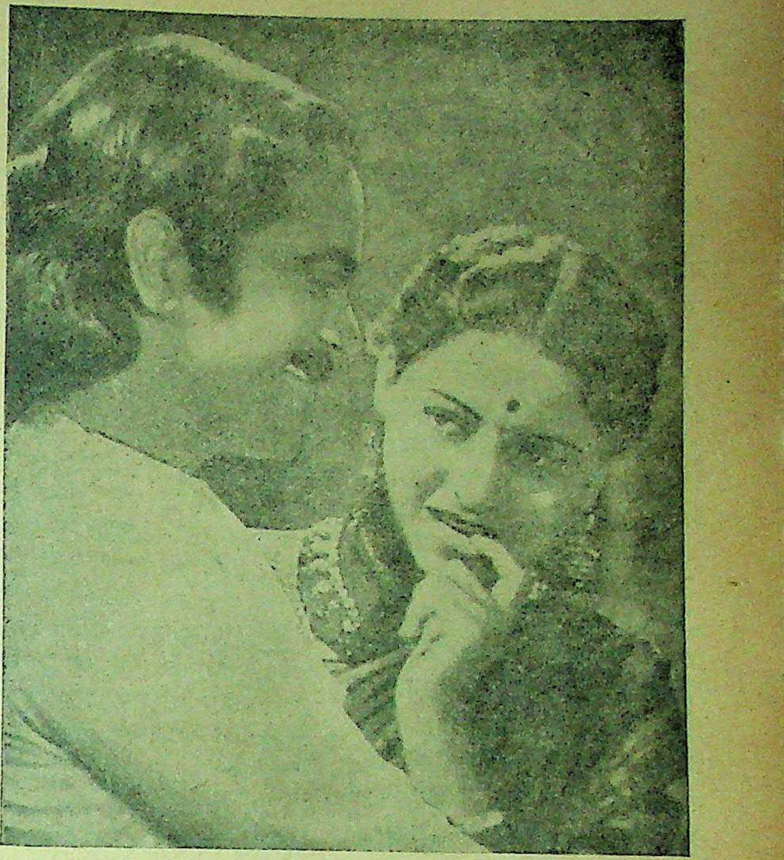
मनमोहन (राम जोशी) और हंसा वाडकर (बया बाई) फिल्म 'राम जोशी' के दो पात्र।

महाराष्ट्र की ऐतिहासिक घटनाओं के अन्तर्गत पेशवाओं का भी एक युग था। उसी युग के अन्तिम भाग के मराठी-साहित्य में कुछ ऐसे श्रृङ्गारमय काव्यों की रचना हुई, जिसका रसास्वादन सदैव किया गया एवं किया जायेगा। लाउनी व रसिया के वेष में मतवाले शायर राम जोशी ने उन दिवसों जिन श्रृङ्गार-रस से परिपूर्ण लोकगीतों की रचना की तथा ग्राम-ग्राम में घूम-घूमकर सुनाया, उनके द्वारा उन्होंने तत्कालीन कवियों में अत्यन्त उच्च स्थान प्राप्त किया और मराठी-साहित्य में अपना नाम अमर कर दिया, जिसका वृहद चित्रण भारतीय रजतपट पर निम्न रूप में प्रदर्शित किया जाता है :—

पेशवा-राज (ब्राह्मण राज्य) में शोलापुर-निवासी एक कट्टर कर्मनिष्ठ ब्राह्मण वंश में संवत् १७८५ में राम जोशी अवतीर्ण हुए थे। उनके बड़े भ्राता मुग्दल शास्त्री जोशी परिवार के जीविकोपार्जनार्थ उस गाँव की पुरोहिती करते थे। यद्यपि उनका ध्यान राम जोशी की शिक्षा एवं धर्म शास्त्र अध्ययन पर अत्यधिक रहता, परन्तु राम जोशी की रुचि बाल्यावस्था से ही कविता की ओर होने के कारण वे आठों प्रहर नीच वर्ग के पुरुषों का मनोरञ्जन किया करते और मुग्दल शास्त्री सदैव अपनी चेष्टाओं में असफल रहते। शनैः शनैः राम जोशी अपनी काव्य-कला सहित एक भाँड़-मंडली में डूब गये। परिस्थितियों के कुचक्र से वे गृह से निकाल दिये गये और उनकी पत्नी, उमा अपने दुर्भाग्य पर रो उठी।

राम जोशी उस भाँड़-मंडली द्वारा सरल भाषा में जन-साधारण को काव्य-रस का पान कराने लगे। जनता उनके लोकगीतों से अत्यधिक आकर्षित हुई और सम्पूर्ण महाराष्ट्र झूम उठा। वे अपने ब्राह्मण विरोधियों के सम्मुख ही ब्राह्मणों के सम्राट् यानी 'श्री हुजूर पेशवा' के कर कमलों द्वारा बहुमूल्य शिरपेंच पारितोषिक में प्राप्त किया। इतना ही नहीं वरन् स्वयं श्री हुजूर ने 'कवि-सिरताज' की उपाधि से उन्हें विभूषित किया। उनकी इस महान्-विजय का एकमात्र कारण था—उनकी मृदुभाषिणी, लेखनी और बया (प्रतियोगिता में विजयी पंच वर्षीय लोकप्रिय नर्तकी)। दुर्भाग्यवश अपूर्व यश-कीर्ति एवं द्रव्यप्राप्ति के मद में चूर होने के कारण अभिमान ने राम जोशी पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया और वे दो मुट्ठी अन्न के लिये तरसने लगे। बया के अतिरिक्त उसके समस्त साथी उसे ठुकराकर चले गये। राम जोशी पतन की पराकाष्ठा को चूमने ही वाले थे कि ठोकरों ने उन्हें पुनः ज्ञान-चक्षु एवं चर्म-चक्षु प्रदान किया। रोग से पीड़ित बया एवं एक सुहृदय की उनसे प्रार्थना करने पर उनकी सद्विवेक बुद्धि पुनः जाग्रत हो उठी और वे मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी के प्रति गुनगुना उठे—'सोन-भँवर उड़ जायेगा।' सौभाग्यवश वहाँ पर महाराष्ट्र के विख्यात आर्य-रचयिता महाकवि मोरोपंत से उनकी भेंट हो गई। उनके उपदेशामृत द्वारा पश्चात्ताप की अग्नि में जलते हुए राम जोशी, स्वर्ण की भाँति तपकर जाज्वल्यमान हो गया। श्रृंगार से ओत-प्रोत राम जोशी की काव्य-धारा ज्ञान-वैराग्य की ओर प्रवाहित हो उठी और उन्होंने अपनी बया के साथ समस्त विश्व को भक्ति-भाव के भजन में रँगना प्रारम्भ कर दिया। तत्पश्चात् राम जोशी तथा उनके भ्राता का पुनः मिलन हुआ,

शेष पेज १८ पर देखिए

'मतवाला शायर राम जोशी' फिल्म में अभिनेत्री हंसा वाडकर का सुन्दर नृत्य।

सम्पादक के नाम चिट्ठियां

रेडियो को 'हिन्दी' शब्द से चिढ़

रेडियो के कार्यक्रमों, विशेषतः समाचार बुलेटिनों से हिन्दी शब्दों को निकालने का जो प्रयत्न हो रहा है उसकी तह में रेडियो के किसी गुट विशेष का हाथ जान पड़ता है। भारत-सरकार की यह नीति कदापि नहीं कि रेडियो की भाषा उर्दू कर दी जाय। यह तो बीचवालों की करतूत जान पड़ती है। ये बीचवाले बड़े कुचक्री हैं। इन्हें ऊपर के अधिकारियों का डर नहीं रह गया। ये हिन्दी के विरुद्ध मनमानी करने में एक दूसरे से बाजी मार ले जाना चाहते हैं।

राष्ट्रीय सरकार की स्थापना होने पर रेडियो में हिन्दी को उसका उपयुक्त स्थान दिलाने के लिए भारत-सरकार ने एक विज्ञप्ति निकालकर रेडियो की भाषा में हिन्दी का प्रतिशत संतुलित रखने का आदेश दिया था। किन्तु आज की स्थिति यह है कि रेडियो के समाचार बुलेटिनों में हिन्दी शब्दों का प्रतिशत सम्भवतः २० से भी नीचे आ गया है।

उच्च अधिकारियों के सरल हिन्दी के प्रयोग के आदेश से रेडियो के समाचार संगठनवालों का हौसला बढ़ गया है। सरल हिन्दी के नाम पर अब ये उर्दू शब्दों का प्रयोग खुलकर करने लगे हैं।

अखिल भारतीय रेडियो के दिल्ली केन्द्र में कैसी धांधांगर्दी मची हुई है और किस प्रकार हिन्दी-विरोधियों का गुट हिन्दी को दबाता जा रहा है। उसका एक उदाहरण दशमलव-सम्बन्धी भारत सरकार के आदेश की अवज्ञा है।

भारत-सरकार ने अपनी विज्ञप्ति में बहुत ही असंदिग्ध भाषा में इस बात का आदेश दे रखा है कि अँगरेजी के 'डेसिमल' शब्द के स्थान पर हिन्दी के 'दशमलव' शब्द का प्रयोग किया जाय। 'डेसिमल' शब्द 'दशमलव' का अँगरेजी अपभ्रंश है। जो व्यक्ति 'डेसिमल' समझ सकता है वह 'दशमलव' भी समझ सकता है, किन्तु रेडियो के समाचार-संगठन ने भारत-सरकार के इस आदेश को हवा में उड़ा दिया है। दिल्ली रेडियो पहले 'दशमलव' को 'आशारिया' कहा करता था, किन्तु सूचना और ब्राडकास्टिंग विभाग ने फरवरी १९-४७ में एक विज्ञप्ति निकालकर 'आशारिया' शब्द का प्रयोग बन्द करने और उसके स्थान पर 'दशमलव' का प्रयोग करने का आदेश दिया था। किन्तु अखिल भारतीय रेडियो का समाचार-संगठन उस आदेश का मनमाने ढङ्ग से पालन करता है। वह अब 'आशारिया' कहने का दुःसाहस तो नहीं करता, परन्तु साथ ही 'दशमलव' भी नहीं कहता और इस प्रकार प्रकट रूप से उच्च अधिकारियों के आदेश की अवज्ञा करता है। परिणामतः अब रेडियो तरंगों की लम्बाई की जो संख्या बताई जाती है वह अत्यन्त भ्रामक होती है। समाचार बुलेटिन सुनाने के समय समाचार-संगठन का घोषक ३३८·६; ४१·१५ और ३१·१५ को जिस ढंग से सुनाता है उसमें दशमलव का संकेत न होने से ये संख्यायें क्रमशः ३३८६, ४११५ और ३११५ जान पड़ती हैं। यह बात स्पष्ट रूप से समझ में आ जाय इसलिए इसे अच्छी तरह बता देना आवश्यक है। रेडियो का समाचार बुलेटिन उपर्युक्त समस्त मीटरों पर सुनाया जाता है, किन्तु मीटर-संख्या गलत सुनाई जाती है। उदाहरण के लिए ३३८·६ को 'तीन सौ अड़तीस दशमलव छै' कहना चाहिये। किन्तु कहा जाता है 'तीन सौ अड़तीस छः।' इसी प्रकार 'इकतालीस दशमलव पन्द्रह को' केवल 'इकतालीस पन्द्रह' कहा जाता है। तीसरे मीटर की संख्या से भी दशमलव उड़ा दिया जाता है। इस प्रकार की घोषणा अत्यन्त भ्रममूलक और सरकारी आदेश के सर्वथा विरुद्ध है, किन्तु समाचार-संगठन अभय प्राप्ति के लिए बुखारी नाम का स्मरण करके भारत सरकार के सर्वोच्च अधिकारियों को भी धता बताने में सफल हो रहा है।

दशमलव की चर्चा केवल निश्चित उदाहरण देने के लिए की गई है। रेडियो का समाचार-संगठन तो हिंदी का 'शत्रुसंख्या १' जान पड़ता है। अभी उस दिन भारत के भूतपूर्व गवर्नर जनरल लार्ड माउन्टबेटेन की विदाई के उपलक्ष में दिल्ली के नागरिकों की ओर से उन्हें मानपत्र दिया गया था। इस अवसर पर लार्ड माउन्टबेटेन ने अपना भाषण पहले दो-तीन मिनट तक हिन्दी में और फिर अँगरेजी में दिया। एसोसियेटेड प्रेस और यूनाइटेड प्रेस और समाचार एजेंसियों ने भी अपने संवादों में यही बता रखा था कि लार्ड माउन्टबेटेन का भाषण पहले हिन्दी में होगा और फिर अँगरेजी में। किन्तु रेडियो ने अपने श्रोताओं को यह बताया कि लार्ड माउन्टबेटेन ने अपना भाषण हिन्दुस्तानी में दिया। नीचे लार्ड माउन्टबेटेन के उसी भाषण का अविकल रूप दिया जाता है जिससे पाठकों को वास्तविकता का पता चल जायेगा—

'दिल्ली के निवासियो,

मैं और मेरी श्रीमती बहुत खुश हैं कि इस समय यहाँ इतनी बड़ी पार्टी जमा हुई है। हम दोनों आपसे विदा होने आये हैं। इस जुदाई से हम दोनों को बड़ा रंज है लेकिन आपकी दोस्ती और प्रेम हमेशा हमारे दिल में रहेगा। मैं हिन्दी कम जानता हूँ इसलिए मैं पूरा भाषण हिन्दी में नहीं कर सकता। बाकी अँगरेजी में बोलूँगा। मैं और श्रीमती जी आपका धन्यवाद करते हैं। ईश्वर आपकी सहायता करे।'

इस उद्धरण के बाद अब किसे इस बात का भ्रम रह जायगा कि भाषण हिन्दी में हुआ या हिन्दुस्तानी में। 'मुद्दई सुस्त और गवाह चुस्त' की इससे अच्छी मिसाल क्या हो सकती है! अपनी इस भाषा को 'हिन्दुस्तानी' समझने की भूल लार्ड माउन्टबेटेन ने तो नहीं की किन्तु रेडियो की दृष्टि में लार्ड माउन्टबेटेन ने इसे हिन्दी कहकर बहुत बड़ी भूल कर डाली है जिसका संशोधन किये बिना रेडियो से नहीं [illegible]। कहने की आवश्यकता नहीं कि भाषण में हिन्दी शब्दों का प्रतिशत ६० से अधिक है किन्तु रेडियो के उर्दू पोषकों को तो स्वार्थवश हिन्दी को रसातल पहुँचाना है इसलिये हिन्दी शब्द का उच्चारण भी वे क्यों करने लगे!

इस समय हिन्दीवालों की स्थिति प्रायः वैसी ही है जैसी ब्रिटिश शासन में कांग्रेस की थी। कांग्रेस का पक्ष सदा ही न्यायपूर्ण रहता था; किन्तु ब्रिटिश सरकार को मुस्लिम लीग की माँगों में ही सार्थकता दिखाई देती थी। हिन्दी के पक्ष में हिन्दीवालों की माँगें शत-प्रतिशत उचित हैं, किन्तु अधिकारी उन पर सहानुभूति के साथ विचार करना भी नहीं चाहते। इसके विपरीत वे उर्दूवालों की छोटी के छोटी शिकायत को भी दूर करने के लिये व्यग्र हो उठते हैं। आज किसी मौलाना को रेडियो के समाचार बुलेटिन का कोई हिन्दी शब्द अखरता है और कल ही उसका प्रयोग बन्द कर दिया जाता है।

जब तक श्री एन० सी० मेहता भारत-सरकार के सूचना और ब्राडकास्टिंग विभाग में थे तब तक तो हिन्दी की गाड़ी लस्टम-पस्टम चलती रही, लेकिन उनके जाते ही दिल्ली रेडियो में हिन्दी के कुदिन आ गये। कहते हैं कि जिस दिन श्री मेहता सूचना और ब्राडकास्टिंग-विभाग से विदा हुये उस दिन रेडियो के हिन्दी-विरोधियों ने खूब उत्सव मनाये और बाद में भी कई दिनों तक दावतों के दौर चले। यह भी सुना जाता है कि श्री मेहता के हिमाचल प्रदेश के चीफ कमिश्नर नियुक्त किये जाने का समाचार रेडियो के समाचार-बुलेटिन में सम्मिलित कर लिया गया था; किन्तु एक रेडियो अधिकारी ने उस बुलेटिन से उनका नाम निकाल दिया।

रेडियो के समाचार-संगठन को इस बात का विश्वास होने लगा है कि उनका मुँह पकड़नेवाला कोई न रहा। हिन्दीवालों के उपेक्षा भाव से उनकी इस भावना को बल मिल रहा है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन और काशी नागरी-प्रचारिणी-सभा को हिन्दीवालों की इस उदासीनता को दूर करने का तत्काल प्रयत्न करना चाहिए।

अपनी ओर से हम रेडियो के समाचार-संगठन के हिन्दी-विरोधियों को सावधान कर देना चाहते हैं कि रेडियो में हिन्दी की स्थिति सदा ऐसी ही न बनी रहेगी। वह दिन दूर नहीं जब भारत में हिन्दी को उसका समुचित स्थान मिलकर रहेगा और उस समय हिन्दी के पंचमांगियों को इस शोचनीय स्थिति के लिए सन्तोषजनक उत्तर देना ही पड़ेगा।

दिल्ली —शिवाधार कातयायन
१० जुलाई ४८

* * *

उदयपुर का राजस्थान विद्यापीठ

राजस्थान विद्यापीठ की स्थापना २१ अगस्त, १९३७ को अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षाओं के पाठ्यक्रम के नियमित अध्ययन-अध्यापन को लेकर की गई थी। पर धीरे धीरे आवश्यकतानुसार इसके काम को फैलाया गया। परिणामस्वरूप आज यह न केवल अ० भा० हि० सा० स० की परीक्षाओं की केन्द्र ही रही है अपितु सर्वांगीण लोक-शिक्षण का काम करनेवाली एक राष्ट्रीय विद्यापीठ बन गई है। इसकी आधार-भूमि लोकतं पद्धति पर अवलम्बित है। इसका आ रिक उद्देश्य कर्तव्य पर स्थिति जीवन उत्पन्न करना है।

ज्यों ज्यों इसका काम बढ़ता गया त्यों इसका खर्चा भी बढ़ते बढ़ते चार हजार रुपये मासिक तक पहुँच है एवं एक सौ से अधिक कार्यकर्ता समय संस्था में काम कर रहे हैं। इस काम न केवल मेवाड़ और राजस् के लिए ही महत्त्व रखता है अपितु देश के लिए उपयोगी है।

२४ मई के पूर्व राजस्थान विद्या का नाम उदयपुर विद्यापीठ था लेकिन मई को इसे राजस्थान विद्यापीठ दिया गया एवं इसका क्षेत्र समस्त राजस् प्रान्त कर दिया गया है। इधर राजस् राज्य का निर्माण हो चुका है और रा सत्ता जनप्रिय मन्त्रियों के हाथों में चुकी है। तब स्वाभाविक ही विद्यापीठ मौजूदा विकास को दृष्टि में रखकर प्रान्तीय विद्यापीठ के रूप में परि करने का फैसला किया गया।

इस समय इस संस्था के अन्त निम्नलिखित कार्य विभिन्न शाखा-संस्था में किया जा रहा है जिनके नाम हैं- सरस्वती मन्दिर, महात्मा गांधी लोक-वि लय, जनपद, प्राचीन साहित्य शोध-संस्थ मोहता आयुर्वेद सदन, राम इंस्टीट्यूट और कला-केन्द्र।

इस तरह राजस्थान विद्यापीठ सर्व मुखी शिक्षण की प्रवृत्तियाँ चला और राजस्थान के साहित्यिक, सं एवं शैक्षिक जीवन में गति ला प्रयास कर रहा है। लोक-शिक्षण, शिक्षण, श्रमजीवी शिक्षण, का शिक्षण, एवं राष्ट्रभाषा द्वारा उच्च और नवीन साहित्य-सृजन का बहुमु कर जनतन्त्रात्मक आधार पर लो के निर्माण का विगत ११ वर्ष आपका प्यारा विद्यापीठ राजस्थान जीवन को ऊपर उठाने से नैतिक क्रियात्मक काम करता आ रहा आप यह तो मानेंगे कि इस विद्या विकास एक सीमा तक किया जा अब स्पष्ट है कि या तो इसे दृढ़ता के साथ विकसित और दिया जाय या फिर उसी चलाया जाय। उसी अवस्था में तो अब राजस्थानी जनता की पूरी नहीं हो सकती इसलिये होंगी इसे राजस्थान विद्यापीठ बदल देने से।

इसलिये अब आवश्यक है देश के प्रत्येक व्यक्ति से आशा है हर एक जिम्मेदार पुण्य-कार्य में सहायता देगा।

—गिरधा

उदयपुर
५ जुलाई, ४८

फिल्मी दुनिया
सिनेमा का भेद बताने
"फिल्मी दुनिया" अपना
के पूरे पते लिखकर मुफ्त
पता—मधुर मन्दिर, हा

साहित्य-चर्चा

नल-कण—लेखक, श्री भागवत बी० ए०, एल्-एल० बी० एडवो- गाजीपुर। प्रकाशक—रुक्मिणी कुटीर, गाजीपुर। मूल्य १) पुस्तक श्री भागवत जी मिश्र १९४२-४७ के बीच लिखी गई का संग्रह है। उसे उन्होंने क्रान्ति के अमर शहीदों की पावन समर्पित किया है। मिश्र जी का कवि अपनी सच्ची राष्ट्रीय भावना में कविताओं में वह पड़ा है। हिन्दी के प्रसिद्ध तरुण कवि श्री सिंह एम० ए०, काशी का भी है। जिससे मिश्र जी के की पृष्ठभूमि अत्यन्त स्पष्ट हो है। मिश्र जी समाज-चेता कवि और व्यक्तिवाद के छिछले रोमांस दूर हैं। अपनी पूरी ईमानदारी कवि ने अपनी भावनाओं का अमर राष्ट्र-शहीदों को चढ़ाया है। रचना द्रष्टव्य है—

जलता अनल-कण हूँ।
हृदय में दाह मेरे
बल की थाह मेरे
जो सृष्टि को मैं—
का प्रथम क्षण हूँ।

इसमें क्रान्ति की मानसिक कर उसका अभिनन्दन किया ही उसकी आस्थामयी वाणी में कहती है—

जय-जयकार करो।
हूँ कालकूट प्रलयंकर,
का दंड भयंकर,
चिर देख भयानक,
न तनिक चीत्कार करो।

उनका तटस्थ कवि क्रान्ति के उठता है—

यह तूफान कैसा ?

दुनिया की वास्तविक नग्नता से है—

मद में चूर दुनिया!
कहाँ परमार्थ सीखें
वहाँ पर स्वार्थ सीखें
रही कोमल हृदय को
चकनाचूर दुनिया

के आँसुओं में 'मा का चित्र—

श्यामला भूमि उदासी,
नयन, दर्शन की प्यासी
रही है बाट तुम्हारी
हाथ जयमाल कहाँ हो ?

प्रकार कवि का जागरूक मानस स्वी स्वर में गीतों की इस लड़ी देव के चारणों पर चढ़ाकर ता है—

गीतों को अपना लो ना!
है जीवन-गान भरे,
के नव अरमान भरे
भरे इन गीतों को
स्वर में भर गा लो ना।

जी से आशा है कि वे अपने अन्तिम क्षणों तक साहित्य- हिन्दी का भंडार भरेंगे। कागज सुन्दर, चिकना तथा छपाई सन्तोषदायक है।

—श्रीपालसिंह 'क्षेम' एम० ए०

वरदान—लेखक, श्री भागवत मिश्र बी० ए०, एम्-एल० बी०, प्रकाशक—रुक्मिणी साहित्य कुटीर, गाजीपुर। मूल्य एक रुपया।

प्रस्तुत पुस्तक मिश्र जी की एक साल की (संवत् २०००) स्फुट रचनाओं का संग्रह है। मिश्र जी हिन्दी के एक वयोवृद्ध साहित्य-सेवी और ओजस्वी लेखक हैं। वरदान उनकी प्रथम प्रकाशित पुस्तक है। आनुभूतिक सत्यता और उसकी ईमानदारी के साथ प्रांजल भाषा में अभिव्यक्ति ही मिश्र जी की कविता का प्राण है। जो लोग मिश्र जी के व्यक्तिगत जीवन से परिचित हैं वे जानते हैं कि साँस के समान उनका जीवन उनके काव्य में उतर आया है। सुललित भाषा में बिना अधिक बनाव-शृंगार के भावों का हृदय-स्पर्शी चित्रण मिश्र की प्रधान अभिरुचि है।

सबसे बड़ी विवशता यह है कि मिश्र जी वृद्धावस्था की सीमा में प्रविष्ट हैं किंतु उनकी जीवनी-शक्ति अभी वृद्ध नहीं। जीवन के प्रति उनकी आशावादिता अटूट है।

"सृष्टि कहाँ है दुःखमयी ?
सकल सृष्टि आनन्दमयी।"

प्रकृति के प्रति एक सच्ची भारतीय जीवन-अवस्था की भाँति उनकी दृष्टि आशामयी ही है। वे प्रकृति में 'तीक्ष्ण-हिंस्र-स्वरूप' की कल्पना नहीं करते—

'सदा प्रकृति को हँसते पाया।'

कवि की प्रवृत्ति साहित्य में 'कला कला के लिये' न होकर 'कला जीवन के लिये' की ओर है। यही कारण है कि उनकी कविता जीवन के अन्तरंग और बहिरंग दोनों को समान आनुभूतिक सत्यता के साथ स्पर्श करती है। उन्होंने अपने दैनिक जीवन के विषयों पर भी पुष्कल रूप और सफल रूप में लेखनी चलाई है। उनका आदर्शवाद भारतीय और सांस्कृतिक है। वादों की जटिलता से दूर भावों की प्रांजल साधना में अग्रगण्य कवियों से मिश्र जी का नाम स्मरणीय होगा। 'चलो चलें उस पार प्रिये' रचना इसकी द्योतक है।

मिश्र जी से हिन्दी को बड़ी आशा है। छिछले प्रचार से दूर एकान्त-साहित्य-साधना के इस साधक की वाणी साहित्य-जगत् में अभिनन्दनीय हो, ऐसी मेरी शुभकांक्षा है। छपाई सुन्दर और जिल्द आकर्षक है।

—श्रीपालसिंह क्षेम एम० ए०

देहाती इलाज—लेखक—श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालङ्कार। दूसरा संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण, मूल्य १), डाक-खर्च ।=)। मिलने का पता—हिमालय हर्बल इंस्टिट्यूट, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार।

हमारे पाठक श्रीयुत बेदी से सुपरिचित हैं। लाहौर से बेदी जी जिस 'भारतीय द्रव्यगुण ग्रन्थ-माला' का प्रकाशन कर रहे थे उसकी प्रायः पाँच सौ खोजपूर्ण ग्रन्थों की पाण्डुलिपियाँ दंगाइयों ने नष्ट कर दीं। प्राचीन भारतीय गौरवमय विद्याओं को आधुनिक प्रकाश में लाने का बेदी जी का प्रयत्न महान् था। भारत के सांस्कृतिक उत्कर्ष में अभिरुचि रखनेवाले सब सज्जनों के लिए बेदी जी द्वारा तैयार किये गये साहित्य का विनाश महान् दुःख का विषय है। फिर भी, हमें यह जानकर सान्त्वना प्राप्त होती है कि बेदी जी ने नये सिरे से गुरुकुल कांगड़ी में उत्साहपूर्वक कार्य आरम्भ कर दिया है। त्रिफला, लहसुन, प्याज, तुलसी, सोंठ, अंजीर और देहाती इलाज की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। 'देहाती इलाज' के इस नये संस्करण में छत्तीस अध्यायों के अन्दर खाँसी, दमा, गठिया, कब्ज, पेट के रोग, पेशाब के रोग, बच्चों के रोग, कान, आँख आदि के रोगों का घर, बाजार के और देहात में सब जगह सुगमता से मिलनेवाली सस्ती और सरल दवाओं से अपना इलाज आप करने के तरीके बताये हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की इच्छा से यह पुस्तक लिखी गई थी। देहात और शहरवालों दोनों के लिए यह बड़े काम की पुस्तक है।

—जगदीश

दतिया का जन-आन्दोलन—लेखक, और प्रकाशक श्री हरिमोहनलाल श्रीवास्तव, एम० ए०, एल० टी०, साहित्य-रत्न, दतिया; पृष्ठ ११४ मूल्य २) रु०।

किसी भी जन-आन्दोलन की सफलता, उसके कुशल संचालन पर निर्भर करती है। और, जन-आन्दोलनों की सफलता के रहस्यों का उद्घाटन उतना ही रोचक होता है जितना कोई दिलचस्प उपन्यास। मध्य भारत के दतिया राज्य में भी सन् १९४६ में वहाँ के अप्रिय अधिकारियों को हटाने के लिए जन-साधारण ने जो आन्दोलन छेड़ा, अनेक कष्ट सहे, त्याग किए, और अन्त में सफलता का वरण किया, उसका रोचक यथासंभव निष्पक्ष विवरण इस पुस्तक में दिया गया है।

युक्तप्रांत के कर्मठ कांग्रेसी नेता पं० श्री कृष्णदत्त पालीवाल ने इस आन्दोलन के सिलसिले में दतिया की जनता को संदेश देते हुये कहा था—'हिन्दुस्तान के देशी राज्यों की प्रजा के आन्दोलन में दतिया का यह संग्राम अनुपम और अद्वितीय है। दतिया की जनता और वहाँ के कार्यकर्ताओं ने केवल अपने बल-बूते पर जितनी बहादुरी और कामयाबी के साथ यह आन्दोलन चलाया, उसकी बराबरी का जोड़ मुश्किल से ही मिल सकता है।'

लेखक को अपने प्रयत्न में सफलता मिली है। यह पुस्तक दतिया राज्य के घर-घर में रहनी चाहिये। अन्य लोग भी जो जन-आन्दोलन के इतिहास-प्रेमी हों, इस पुस्तक से लाभ उठा सकते हैं।

पुस्तक के अन्त में लेखक ने जो संकेत किया है, उससे न केवल दतिया के शासक, प्रत्युत प्रजामंडल और पीपुल्स कमेटी को भी लाभ उठाते हुये दूसरे राज्यों के लिये आदर्श उपस्थित करना चाहिये।

प्रूफ की गलतियाँ बहुत रह गई हैं।

देवीदयाल 'मस्त'

* * *

अरोंदा
१८९६
नीलगिरि तैल
सांबलेकर बंधु बम्बई ४.

८०००) रु० नकद इनाम

पहिला इनाम—ठीक हल के लए ६०००) रु० (जो एक से अधिक हल ठीक होने पर बराबर बांट दिया जावेगा)। दूसरा इनाम—सब से अधिक हलों के लिये १०००) रु०। तीसरा इनाम—सबसे पहिले ठीक हल भेजने वाले के लिये १०००) रु०।

हल क्या करना है? सामने दिये हुए नो खानों में १०० तक के कोई से अङ्क इस भांति से भरिये कि जिस ओर से भी जोड़े उत्तर ७५ हो। एक अङ्क एक ही बार लिखा जा सकता है।

२२		
	२५	
		२८

दाखला फीस—एक रुपया प्रति हल।

नियम—हर एक आदमी एक या एक से अधिक जितने हल चाहे सफेद कागज पर एक रुपया प्रति हल के हिसाब से फीस के साथ भेज सकता है। फीस दाखला मनीआर्डर या पोस्टल आर्डर द्वारा भेजनी चाहिये। मनीआर्डर की रसीद हलों के साथ आनी चाहिये अथवा ऐसा हो सकता है कि आपके हल मुकाबले में सम्मिलित न हो सकें। सही हल वही समझा जावेगा जो हमारे मुहरबन्द हल के साथ जो सम्पादक महोदय दैनिक 'अमर भारत' के पास रखा गया है खाना दर खाना मिलेगा। इनामी नतीजे की कापी के लिये दो आने के टिकट और अपने पते का लिफाफा भेजें। इनाम की रकम दाखला फीस की आई हुई रकम के अनुसार कमी बेशी हो सकती है पर सही हल के इनाम की कम से कम ५०) रु० की गारण्टी है। हलों के रास्ते में खो जाने या डाकखाने के कारण देर से पहुंचने के हम जिम्मेवार न होंगे। प्रवेश फीस किसी अवस्था में भी वापिस न होगी मैनेजर साहिब पहेली का फैसला कानूनी व हर प्रकार से मानने योग्य होगा। हर मामले का फैसला देहली ही होगा। अपना पता हलों पर व मनीआर्डर कोपन पर साफ लिखें। हल ३१ जुलाई तक डाक में डाल देने चाहियें। इसके पश्चात् भेजा हुआ कोई हल स्वीकार न किया जावेगा। सही हल १५ अगस्त को प्रकाशित कर दिया जावेगा।

ई० टी० एण्ड कम्पनी, पोस्ट बैग नं० ५२ ए०, दिल्ली।
E. T. & Company, Post Bag No 52 A, Delhi

संवाददाताओं के पत्र

जयपुर राज्य के राजस्व-सचिव पंडित टीकाराम जी पालीवाल ने बामनवास, नादौली और गंगापुर आदि का दौरा किया। बामनवास में भाषण देते हुये आपने लोगों से प्रार्थना की कि गरीबी तथा अज्ञानता को दूर करने में सरकार सहायता करेगी। आपने विश्वास दिलाया कि सरकार इस दिशा में जितना बन पड़ेगा वह अवश्य करेगी। परन्तु यह कार्य केवल सरकार द्वारा ही नहीं किया जा सकता है इसमें जनता के सहयोग की अति आवश्यकता है। भ्रष्टाचार को खतम करने के लिए आपने लोगों से सहयोग की अपील की। आपने कहा कि सरकार तभी सफल हो सकती है जब कि जनता का पूरा सहयोग हो और कहा कि रिश्वत देनेवाला भी उतना ही दोषी है जितना कि लेनेवाला। अतएव लोगों को चाहिये कि सरकारी कर्मचारियों को रिश्वत देना बिलकुल बन्द कर दें। चाहे ऐसा करने में नुकसान ही उठाना पड़े। अन्त में जनता को राज्य कर्मचारियों की इज्जत करने की सलाह दी। गंगापुर में नागरिकों की ओर से एक बहुत बड़ी सभा में भी राजस्व-सचिव का स्वागत किया गया। आपने कहा, यह सही है कि आजकल जयपुर में राज्य-कार्य का भार प्रजा के लोगों पर है और जयपुर राज्य प्रजा-मंडल ने अपने कुछ सेवकों का भरोसा करके इस काम के लिए भेजा है। देखना यह है कि कहाँ तक हम इस कार्य को चलाने में सफल होते हैं, मैं आप अपनी ओर से तथा अपने साथियों की ओर से विश्वास दिला सकता हूँ कि हम अपनी सारी शक्ति इस ओर लगा देंगे और किसी भी प्रकार की कसर नहीं रखेंगे। यह तो आप जानते ही हैं कि आदमी की शक्ति सीमित होती है तथा हमारे सामने कई कठिनाइयाँ भी हैं। इन कठिनाइयों को हम जनता के सहयोग से ही दूर कर सकेंगे। ऐसा मेरा विश्वास है। राजस्व-सचिव ने विश्वास दिलाया कि गंगापुर में पानी के नलों का इन्तजाम सरकार शीघ्र ही करेगी। अन्त में आपने लोगों से देश को मिली स्वतन्त्रता का महत्त्व समझाने और अपने देश की रक्षा करने के लिए सदैव कटिबद्ध रहने की अपील की।

जयपुर शहर में रहनेवाले सिन्धी शरणार्थी बच्चों की शिक्षा का निम्नलिखित प्रबन्ध किया गया है—नवीं और दसवीं श्रेणी के विद्यार्थी महाराजा हाईस्कूल, जयपुर में भरती किये जायेंगे, कक्षा तीसरी से आठ तक के विद्यार्थियों के लिए महाराजा हाईस्कूल, जयपुर में स्कूल समय के अतिरिक्त पढ़ाने का अलहदा स्टाफ आदि स्वीकृत किया गया है। ईफेन्ट कक्षा से दूसरी कक्षा तक के विद्यार्थियों की पढ़ाई का प्रबन्ध महाराजा मिडिल स्कूल, जयपुर में पहले के अनुसार ही चलता रहेगा। जो सिन्धी अध्यापक मई सन् १९४८ से कार्य कर रहे हैं उन्हें मई सन् १९४८ से ही वेतन दिया जावेगा, यह प्रबन्ध तीन साल के लिए किया गया है।

—संवाददाता

* * *

नई दिल्ली से हिमाचल प्रदेश के प्रमुख राजनैतिक कार्यकर्ता श्री बुद्धिसागर नौटियाल ने टिहरी तथा राज्य-प्रजा मंडल की वर्तमान परिस्थिति के विषय में निम्नलिखित रिपोर्ट प्रकाशित की है:—

टिहरी राज्य प्रजा-मंडल आज अपने जन्मदाता अमरशहीद श्री देव सुमन द्वारा प्रारंभ किये गए रचनात्मक कार्य-क्रम के मार्ग से दूर होता जा रहा है। आज टिहरी राज्य प्रजा-मंडल सुमन जी के प्रजा-मंडल की किसी भी शर्त को पूरा नहीं करता और न अखिल भारत कांग्रेस कमेटी के विधान की शर्तों को ही। प्रजा-मण्डल के प्रधान तथा मन्त्री जी से लेकर कई अन्य कार्यकर्ता भी कानून को अपने हाथ में लेकर सरकारी कर्मचारियों के कामों में सीधा हस्तक्षेप किया करते हैं। बेचारे मजिस्ट्रेट, कोतवाल आदि कर्मचारी चुपचाप देखते रह जाते हैं। प्रजामण्डल की चोटी के नेता स्वयं ही अनुशासित नहीं फिर लोग उनके अनुशासन में क्योंकर रह सकते हैं। फलतः आज जिस क्षेत्र में ताकत है वही उस क्षेत्र का राजा बन बैठा है। लगभग दो करोड़ कीमती जङ्गल गुण्डों द्वारा जलाकर खाक कर दिये गये। स्त्रियों का अपहरण हुआ, रिश्वतखोरी, चोरबाजारी और मनमानी का बाजार गरम हुआ। प्रजा-मण्डल मंत्रिमण्डल को अपनी देख-रेख और अनुशासन में रखने के बजाय स्वयं ही मंत्रिमण्डल की जीपकारों की कठपुतली बन गया है।

प्रजा-मण्डल कार्यालय में "जनयुग" की एजन्सी खुली हुई है और तिस पर भी विशेषता यह कि यही प्रजा-मण्डल कार्यालय कम्यूनिस्टों का रात-दिन टिकने व काम करने का अड्डा बना हुआ है। टिहरी सरकार को यह सब कुछ मालूम है फिर भी मौनता है क्योंकि कम्यूनिस्ट टिहरी को "स्वतन्त्र इकाई" के रूप में रखने के लिये उनका हाथ बँटा रहे हैं।

टिहरी की तरह टिहरी प्रजा-मण्डल भी महान् "स्वतन्त्र इकाई" के रूप में रहना चाहता है। यही कारण है कि उसने अपने आप को न तो किसी रीजनल कौन्सिल और न अखिल भारत कांग्रेस कमेटी के अन्दर ही विलीन किया है, यदि टिहरी शीघ्र ही विलीन न किया गया तो तिलङ्गाना की तरह टिहरी भी कम्यूनिस्टों की खोह बन जायगा।

—संवाददाता

* * *

फतेहपुर जिले की प्रमुख राष्ट्रवादिनी महिला एवम् जिले के प्रमुख कांग्रेस नेता श्रीयुत पं० दयाशङ्कर मिश्र, "सूर्य्य" की पूजनीया माता श्रीमती जगरानी देवी जी मिश्र का हाल ही में स्वर्गवास हो गया। आपका शव मोटर द्वारा आपके ग्राम खदरा लाया गया—जहाँ से सैकड़ों ग्रामीण जनता आपके शव के साथ पुनीत गंगा जी के तट शिवराजपुर तक गई और वहाँ आपके कनिष्ठ पुत्र श्रीयुत "सूर्य्य" जी ने आपका दाह-संस्कार किया। आपके शोक में खदरा बाजार व प्राइमरी स्कूल खदरा में पूर्ण हड़ताल रही। आपके ज्येष्ठ पुत्र श्री कृपाशंकर मिश्र फतेहपुर के प्रमुख एडवोकेट व गवर्नमेन्ट प्लीडर हैं। आप एक दानशीला, परोपकारिणी अत्यन्त उदार-हृदया महिला थीं।

संयुक्तप्रान्तीय यूनियन ऐण्ड प्रोग्रेस कमेटी ने हाल ही में सर्वसम्मति से अपनी बैठक में संयुक्तप्रान्तीय यूनियन ऐण्ड प्रोग्रेस कमेटी की कार्य-समिति में फतेहपुर जिले के प्रमुख कांग्रेस नेता श्रीयुत पं० दयाशंकर मिश्र, "सूर्य्य" को निर्वाचित किया है। इस कमेटी के प्रान्तीय संयोजक माननीय हाफिज मोहम्मद इब्राहीम मिनिस्टर प्रान्तीय सरकार व अखिल भारतीय कमेटी के इसके अध्यक्ष मौलाना अबुल-कलाम आजाद हैं।

बुन्देलखण्ड की सुप्रसिद्ध सार्वजनिक संस्था श्री हिन्दी विद्यार्थी सम्प्रदाय ने अपनी वार्षिक चुनाव बैठक में श्री दयाशंकर जी मिश्र, "सूर्य्य" को अपनी कार्यकारिणी कमेटी का सदस्य सर्वसम्मति से आगे वर्ष के लिये निर्वाचित किया है।

"सूर्य्य" को सन् १९४८ ई० व सन् १९४९ ई० के लिये फतेहपुर जिला डेवलपमेन्ट बोर्ड की कार्यकारिणी कमेटी का सदस्य नामजद किया है।

फतेहपुर जिला डिस्चार्ज्ड प्रिजनर्स ऐड सोसाइटी ने हाल ही में अपनी वार्षिक चुनाव बैठक में सर्वसम्मति से दुबारा पुनः श्रीयुत पं० दयाशंकर जी मिश्र, "सूर्य्य" को अपनी कार्यकारिणी कमेटी का सदस्य निर्वाचित किया है।

—संवाददाता

* * *

हरिद्वार में ज्वालापुर रोड पर रंजीत फिल्म आर्ट (रजिस्टर्ड) ने अपना पहला ट्रेनिंग कार्य प्रारम्भ कर दिया है। जिससे शरीफ घरों के लड़के और लड़कियों को ट्रेनिंग देकर इस योग्य बनाने की घोषणा की गई है कि वह फिल्मों में बिना किसी झिझक के काम कर सकें और सही अर्थों में धार्मिक और सामाजिक फिल्मों में सेवा करनेवाले अभिनेता बन सकें।

धर्म्मशाला रक्षा-सभा की मीटिंग में पं० आनन्दस्वरूप शर्मा बी० ए० प्रधान मन्त्री के पेश करने पर धर्म्मशाला सूरजमल के अध्यक्ष सेठ बद्रीप्रसाद तुलसियान की आकस्मिक मृत्यु पर शोक-प्रस्ताव पास हुआ। आपकी धर्मशाला हरिद्वार में सबसे बड़ी है जिसमें लगभग दस हजार तक यात्री आराम कर सकते हैं। इसमें लगभग १ वर्ष से १०० शरणार्थी परिवार जिसमें एक हजार के लगभग स्त्री-पुरुष व बच्चे हैं रह रहे हैं। धर्मशाला का मैनेजर भी हरद्वारीलाल सेवा-भाव से इनकी देखभाल कर रहा है।

—संवाददाता

* * *

नई दिल्ली में टिहरी राज्य प्रजा-मण्डल का एक शिष्ट मण्डल जो टिहरी का विलीनीकरण चाहता है रियासती विभाग के मन्त्री श्री वी० पी० मेनन तथा कांग्रेस के नेताओं से मिला और उन्हें राज्य की वर्तमान अव्यवस्था के विषय में अवगत कराया। शिष्ट मण्डल ने "स्वतन्त्र इकाई" की माँग के पीछे कम्यूनिस्टों की योजना का भण्डाफोड़ किया और रियासती सचिवालय की माँग पर राज्य की परिस्थिति के विषय में एक सच्ची रिपोर्ट पेश की। रियासती सचिवालय ने इस विषय पर शीघ्र ही दृढ़ कदम उठाने का आश्वासन दिया।

—संवाददाता

* * *

सादड़ी (जोधपुर) कुमार
परिषद् के तत्त्वावधान में एक
आयोजन किया गया। श्री दान
रेचा संयोजक थे। परिषद् के प्रधान
श्री नेमिचन्द्र जैन 'भावुक' और
ध्यक्ष श्री उपासक जी के प्रभाव
भाषण हुए। भावुक जी ने विशेषकर
षद् को दृढ़ से दृढ़ बनाकर ग्राम प्र
हिन्दी का प्रचार करने हेतु
किया। देसूरी जिला कुमार साहित्य
षद् की स्थापना भी हो गई।

—संवाद

* * *

जोधपुर कुमार साहित्य-परिषद्
श्री नेमिचंद्र जैन भावुक लिखते हैं -

कुमार साहित्य परिषद् के तत्त्वा
में हस्तलिखित पत्रिकाएँ 'भारती'
'धरती के लाल' क्रमशः कुमार तथा
बन्धुओं के लिए १ अगस्त से निकल
रही हैं। सुविधानुसार शीघ्र ही उन
प्रकाशन भी आरम्भ हो जायगा।
कुमार भाई-बहन रचनाओं द्वारा सह
प्रदान करें। कृपया यह अवश्य लिख
कि रचनाएँ किस पत्रिका के लिये भेजी
हैं। उत्तम रचनाएँ पुरस्कृत भी
जायँगी।

* * *

२०॥) में ज्वेलवाली रिस्ट

स्वीसमेड ठीक समय देनेवाली
गारण्टी। गोल या स्क्वायर
सुपिरियर २०॥), फ्लाट सेप क्रोमियम
३०), फ्लाट सेप रोल्ड गोल्ड
गारण्टी ५५), फ्लाट सेप १५
क्रोम केस ३८), फ्लाट सेप १५
रोल्ड गोल्ड ७५)।

रेक्टेंगुलर, कर्ब या टोनो सेप क्रो
केस ४२), सुपिरियर ४५),
६०), रोल्ड गोल्ड १५
९०) अलार्म टाइम पीस कीमत १८)
बीग साइज २५) पोस्टेज अलग
घड़ी लेने से माफ।

एच० डेभिड, एण्ड को०
पो० बक्स नम्बर ११४२४,

६०) रुपये में अमेरिकन रेडिय

जिसमें न बिजली की जरूरत न बैटरी की

यह रेडियो पहले दफ़ा अमेरिका से आये हैं, जो कि बिजली और बैटरी
चलते हैं। आप घर पर हों या सफ़र में, गाँव में हों या शहर में, झोपड़ी
महल में। ग़रज़े कि जहाँ पर चाहें आल इण्डिया रेडियो के गाने और ख़बरें
सुन सकते है। लुत्फ़ यह कि यह रेडियो कभी ख़राब नहीं होता। क़ीमत
लेकिन रेडियो की मशहूरी के लिए ३१ जुलाई तक आर्डर भेजनेवालों के लिए
यती क़ीमत सिर्फ़ ६०) रखी गई है। आज ही आर्डर भेजें वरना स्टाक ख़तम
आइन्दा स्टाक का इन्तज़ार करना पड़ेगा। हर आर्डर के साथ आधी
३०) पेशगी आना ज़रूरी है वरना आर्डर की तामील न होगी।

एजेंटों और स्टाकिस्टों की हर शहर व क़स्बा में जरूरत है।

JOLLISONS जौलिसन्स

23 E चित्रगुप्त रोड, नई दि

राजधानी का रंगमंच

संयुक्तप्रान्तीय सूचना-विभाग का पुनर्गठन

वर्षा का जोर और हैजा—बाबुओं की धमकी—१५ जुलाई से काम हिन्दी में होगा—ईस्ट इंडियन रेलवे

युक्तप्रान्तीय सूचना-विभाग का पुन-होने जा रहा है—ऐसा आश्वासन के नये पार्लामेंटरी सेक्रेटरी श्री सहाय ने स्थानीय 'मेफेयर' में से बातचीत करते हुए दिया। विभाग प्रान्तीय सचिवालय का एक विभाग है, जिसकी चंचलता के का प्रयत्न उसके प्रथम पति अर्थात् कैलाशनाथ काटजू ने किया। उसके श्री केशवदेव मालवीय, श्री तथा अन्त में श्री श्रीकृष्णदत्त ने अपना पौरुष आजमाया। जी पत्रकार वर्ग से उठकर मन्त्री अतएव आशा की जाती थी कि वे विधवा को 'ठीक' कर सकेंगे, अनेक आसन परिवर्तन करते हुए ही में पदस्खलित हो गए। प्रधान मन्त्री गोविन्दवल्लभ इसका पाणिग्रहण किया, पर व्यवस्था और कार्याधिक्य को उन्होंने उसे अपने सभा-सचिवों 'नौजवान' गोविन्दसहाय दिया।

* * *

गोविन्दसहाय का नाम पत्रकारों नहीं है। युद्ध से पूर्व गोविन्द-पत्रकार ही थे और इसी व्यवसाय विदेश-यात्रा भी कर चुके हैं। सरकारी पद पाकर भी से विलग नहीं हैं। सरकारी अवकाश पाते ही वे अब भी पुस्तकें लिखने का समय ही लेते हैं। श्री गोविन्दसहाय में है, बुद्धि है और यह कार्य भी का है। अतएव यदि वे करेंगे, तो अपने उद्देश्यों में अवश्य होंगे।

उन्होंने कोई ऐसी योजना भी नहीं बनाई है, जो कल्पना के क्षेत्र में ही रह जाय। वे चाहते हैं कि प्रकाशकों से साहित्य खरीद कर बाँटने के बजाय, सरकार स्वयं सुयोग्य पत्रकारों से साहित्य सर्जन कराए और उन्हें स्वयं छपाकर वितरित करे। इससे लेखकों को, जिन्हें चूसकर प्रकाशकगण सरकार से लम्बे बिल वसूल करते हैं, अच्छा पारिश्रमिक भी मिल सकेगा और सस्ता प्रकाशन होने के कारण राज्य का धन भी बचेगा, जो मोटी तोंदवाले प्रकाशकों की चर्बी बढ़ाने के बजाय अन्य लोकोपयोगी कार्यों में व्यय हो सकेगा।

* * *

सूचना-विभाग को श्री गोविन्दसहाय केवल सरकारी कार्य-कलापों का प्रचार यंत्र ही नहीं बनाये रखना चाहते। उनका इरादा उसे प्रान्त के इतिहास-परम्परा संस्कृति कला-कौशल, उद्योग सम्पत्ति-साधन आदि का ज्ञान कोषागार बना देने का है, जिससे जनता अपने प्रान्त की सम्पूर्ण प्रगति तथा उसके प्राकृतिक साधनों एवं अन्य ज्ञातव्य बातों से सुपरिचित हो सके।

* * *

गर्मी की विकटता तथा अब जल-वर्षा ने प्रांत में हैजे की वृद्धि कर दी है। पिछले मौसम में अर्थात् मार्च से जून तक हैजा ने प्रांत के १० हजार प्राणों की बलि ली है, जिसमें केवल बस्ती जिले में ही ४००० मरे। स्वास्थ्य-विभाग ने इस रोग का सामना करने में ५ लाख रुपया अतिरिक्त व्यय किया। उसने ४५० मन लाल दवा तथा ५५० मन ब्लीचिंग पाउडर एवं अपरिमित परिमाण में अन्य औषधियाँ रोगग्रस्त क्षेत्रों में बाँटी। इसी अवधि में २५ लाख से अधिक व्यक्तियों के हैजा-निरोधक टीके भी लगाए गए।

* * *

बोर्ड आव रेविन्यू के सुपरिण्टेण्डेण्टों तथा अन्य बाबुओं ने सरकार को धमकी दी है कि यदि उन्हें रहने के लिये शीघ्र मकान न मिले, तो वे हड़ताल कर देंगे। यह दफ़्तर पहले इलाहाबाद में था, जहाँ से व्यापक विरोध के बावजूद उसे यहाँ ले ही आया गया। कर्मचारियों के रहने की कोई व्यवस्था नहीं की जा सकी, अतएव उन्होंने माँग की है कि या तो उन्हें प्रयाग वापस लौटा दिया जाए अन्यथा वे काम बन्द कर देंगे। यह उल्लेखनीय है कि इन लोगों के परिवार प्रयाग में पड़े हैं और वे यहाँ रहन-सहन का दोहरा व्यय बर्दाश्त कर रहे हैं।

* * *

प्रान्तीय सरकार ने सचिवालय के कर्मचारियों को सूचित कर दिया है कि १५ जुलाई से सचिवालय का सारा काम हिन्दी में होने लगेगा और इस परिवर्तन के लिए उन्हें तैयार रहना चाहिए। यह स्मरणीय है कि विगत अक्तूबर में जब सरकार ने हिन्दी को राजभाषा घोषित किया था, उस समय हिन्दी न जाननेवाले कर्मचारियों को हिन्दी सीखने के लिए छः मास का समय दिया गया था, जो बाद में तीन मास के लिए और बढ़ा दिया गया। अब सरकार इस अवधि में कोई भी वृद्धि करने को प्रस्तुत नहीं है और जो कर्मचारी अब भी काम चलाऊ हिन्दी न जानते होंगे, उनको महत्त्व का कोई पद न मिलेगा।

* * *

स्वतन्त्र भारत में भी दक्षिण अफ्रीका की नकल करनेवाली एक जगह है और वह है लखनऊ में ईस्ट इंडियन रेलवे का इंस्टीट्यूट, जहाँ से एक भारतीय चिकित्सक को केवल 'काला आदमी' होने के कारण निकाल दिया गया था, यद्यपि वह अपनी गोरी पत्नी के साथ वहाँ गया था। पत्नी ठहर सकती थी, पर पति नहीं। प्रान्तीय सरकार ने इस संस्था के विरुद्ध समुचित कार्रवाई करने का निश्चय किया है।

* * *

प्रसिद्ध यात्राओं की कथा

पांसद चीनी यात्री फाहियान से लेकर वर्तमान युग के एवरेस्ट की चोटी पर चढ़नेवाले साहसी वीरों तक की कथा इस पुस्तक में है। जिन यात्रियों ने प्राणों की बाजी लगाकर स्थल और जल के अज्ञात देशों में भ्रमण किया था और उनके परिश्रम से संसार का जो लाभ हुआ उसका रोचक वर्णन इस पुस्तक में पढ़िए। मूल्य ॥।–)

परीदेश

यह पुस्तक ख़ास कर छोटे बच्चों के लिए है। इसमें ऐसी एक भी बात नहीं जिसको समझने के लिए माथापच्ची करनी पड़े। इसमें रोजमर्रा की बातें बड़े ही अच्छे ढंग से लिखी गई हैं। बड़े आकार की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों और फूल-पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है। मूल्य ॥)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

T. B. टी. बी. "तपेदिक" चाहे फेफड़ों का हो या अँतड़ियों का बड़ा भयंकर रोग है

(१) पहला स्टेज	(२) दूसरा स्टेज	(३) तीसरा स्टेज	(४) चौथा स्टेज	अंतिम स्टेज
मामूली ज्वर खाँसी	ज्वर-खाँसी की अधिकता	शरीर सूखना, ज्वर-खाँसी की भयंकरता	सब ही बातों की भयंकरता शरीर पर वर्म, दस्त आदि का शुरू होना	रोगी की मौत और भयंकर जर्मों का इधर-उधर फैलना
(जबरी)	(Jabri)	(जबरी)	(Jabri)	

T. B. टी. बी. "तपेदिक" और पुराने ज्वर के हताश रोगियो ! देखो—

श्री नागेश्वरप्रसाद तिवारी, मास्टर स्कूल नड्डुगावाँ, पो० डाल्टनगंज (बिहार) से लिखते हैं—मैं अनेक दिनों से ज्वर-खाँसी से बीमार था। बलगम आदि की परीक्षा पर "तपेदिक" (राज्यक्ष्मा) रोग ही साबित हुआ। मैं रोग का नाम सुनते ही बहुत घबड़ा गया इसी बीच परमात्मा की कृपा से आपकी अमृतरूपी दवा "जबरी" का नाम सुना। तुरन्त आर्डर देकर पार्सल प्राप्त किया। दवा को विधिपूर्वक सेवन किया। उसके अमृतरूपी गुणों ने मुझे आश्चर्य में डाल दिया। थोड़े ही दिनों में शरीर का रङ्ग ही बदल गया। ऐसा मालूम होने लगा, जैसे कुछ रोग ही न रहा, अधिक लिखना व्यर्थ है। यथार्थ में आपकी औषधि इस दुष्ट रोग के लिए अमृततुल्य है। जितनी भी प्रशंसा की जावे कम है।

(२) डा० ठाकुरसिंह नेपाली मु० कटैया पो० हरलखी जिला दरभंगा से लिखते हैं। आपकी भेजी दवा "जबरी" बहुत ही लाभदायक प्रतीत हुई। कृपया लौटती डाक से पूरा कोर्स भेज दें।

इसी प्रकार के पहले भी दसों प्रशंसापत्र आप इन्हीं कालमों में देख चुके हैं। भारत के कोने-कोने में लोगों ने यह मान लिया है कि इस दुष्ट रोग से रोगी की जान बचानेवाली यदि कोई औषधि है तो वह एकमात्र "जबरी" ही है। "जबरी" के नाम में ही भारत के पूज्य ऋषियों के आत्मिक बल का कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि प्रथम दिन से ही इस दुष्ट रोग के जर्म नष्ट होना शुरू हो जाते हैं। यदि—आप इस तरफ से हताश हो चुके हों तो भी परमात्मा का नाम लेकर एक बार "जबरी" की परीक्षा करें। परीक्षार्थ ही हमने १० दिन का नमूना रख दिया है, जिसमें तसल्ली हो सके। बस—आज ही आर्डर दें। अन्यथा फिर वही कहावत होगी कि—अब पछताए क्या होत है—जब चिड़िया चुग गई खेत। सैकड़ों डाक्टर, हकीम, वैद्य अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार-द्वारा आर्डर देते हैं। हमारा तार का पता केवल "जबरी" जगाधरी (JABRI-JAGADHRI) काफी है। तार में अपना पूरा पता दें। मूल्य इस प्रकार है—जबरी स्पेशल नम्बर १ जिसमें साथ साथ ताकत बढ़ाने के लिए मोती, सोना, अभ्रक आदि मूल्यवान् भस्में भी पड़ती हैं। पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन २०) रु०। जबरी नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान् जड़ी-बूटियाँ हैं, पूरा कोर्स २०) रु०, नमूना १० दिन का ६) रु०, महसूल अलग है। आर्डर देते समय नं० १ या नं० २ तथा पत्र का हवाला जरूर दें।

पता—रायसाहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड बैंकर्स (D) 'जगाधरी' पूर्व पंजाब (E. P.)

स्नेहलता

(पेज १२ का शेष)

मुझे निराशा नहीं है। राष्ट्रहित ही जीवन का प्रमुख हित है, उसे हम सभी बहनें यदि कटिबद्ध होकर अपने हाथों में, अपनी शक्ति तक शपथ एवं प्रतिज्ञावत् पालन करने की चेष्टा करूँगी, तब राज्य से भी सहायता प्राप्त हो जायगी। क्योंकि झूठे अंध विश्वास प्रतिहिंसा और आलस्य आदि दुर्गुण अशिक्षा का ही प्रतिविम्ब है और हमें शिक्षालोक से उसे नष्ट कर देना होगा।"

देश को इस समय ऐसी ही पुत्रियों की बहनों की, पत्नियो और माताओं की आवश्यकता है कि वे सब कुछ करें। क्या देश को उन बहनों से कोई लाभ है? जो प्रभात से संध्या तक केवल कृत्रिमता एवं विलासिता में ही अपनी संपत्ति तथा समय को खोया करती हैं? यह क्यों? इसीलिये तो कि जन्मजात अशिक्षा ने मेरी उस पूर्वकालीन चेतना का विनाश कर दिया है जिससे मेरा स्वर्णमय देश आत्मोन्नति के भी चरम-सोपान पर पहुँच चुका था, और भयानक हिंसा के क्रूर समय में भी विश्वदीप बापू को प्रदान किया है जो अपनी आन पर शान के साथ बलिदान हुये हैं ऐसे शांति और सेवा के अनन्य पुजारी की पुत्रियों? जाग पड़ो, कल का भविष्य मेरी आज की कर्तव्य वेदी का वरदान होगा। नहीं तो आज का दुर्भाग्य कल का सौभाग्य कभी न होगा, हाँ आज की प्राप्त सिद्धि का विनाशक अवश्य हो जायगा। अब मुझे अपनी उन अभावग्रस्ता बहनों तथा बच्चों को अपनी समर्थता से सहारा देकर आगे बढ़ाना है; अपने मन की मिथ्याभिमान की लहरों का अंत करना है जिसमें केवल अपनी श्रेष्ठता और अपने से परे की निकृष्टता का बोध होता है। क्योंकि इससे परिणाम यह होता था कि हमको उनसे बातें भी करने में संकोच होता है। हृदय की क्षुद्रता का इससे बड़ा और क्या प्रमाण हो सकता है कि जहाँ दो विभिन्न आर्थिक स्थित की दो बहनें एकत्रित होती हैं वहाँ देश एवं कर्तव्य के प्रति एक भाव होने पर भी बीच में अलगाव रखती कुछ सीमायें होती हैं। यहाँ भी दो वर्ग प्रस्तुत हैं। क्या हम स्वतंत्रता और समानता के महत्त्व को इस प्रमाण से समझ सके हैं, जैसे उसका रूप है? क्या हम अपनी इस छोटी सीमा को तोड़कर एक नहीं हो सकते और एकाकार होकर असीम?

यहाँ वैभव से परे, शिक्षित बहनों से मेरा यही निवेदन है कि वे वास्तविक अर्थों में शिक्षा को समझें और उसी के अनुरूप आचरण भी करें। वह चाहे आर्थिक उन्नति के लिये शिक्षित हों और चाहे बौद्धिक। इसमें धनिक और निर्धन दोनों ही सम हैं। यही हमारा वास्तविक श्रृंगार और धन है कि अपने चारों ओर के वातावरण को सम्पन्न, सुखी और शान्तिमय बनाये रक्खें। जो शिक्षा से ही संभव है जिसके वितरण से समाज का स्तर उच्च होगा और फिर उन्हीं उपेक्षितों से बातें करने में लज्जा के स्थान पर गौरव का बोध होगा। क्योंकि वह भी उन्हीं के समान मानवी है जिनकी चटुलता करने में अपना आत्मसम्मान भी खोना पड़ता है क्योंकि बड़ों से ही छोटों का पोषण तथा शिक्षण होता है। अब इस निवेदन को स्वीकार करना या भुला देना जो भी आपको मान्य होगा, वही मेरा कर्तव्य होगा।

(तालियों के साथ पटाक्षेप)

रंगमंच

(पेज १३ का शेष)

उनकी पत्नी प्रसन्नता के आवेग में नाच उठी, शोलापुर ने उन्हें स्वीकार किया और :—

"धूप छाँव के खेल-खेल में
जीवन बीता जाये रे......।"

अठारहवीं एवं उन्नीसवीं शताब्दी के मराठी-साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात् "मतवाला शायर राम जोशी" निरख कर हृदय-ग्लानि से परिलुप्त हो उठा। कथाकार श्री जी० डी० माडगुलकर ने कथा-वस्तु के साथ अन्याय कर अन्य सिनेमा-कहानीकारों की भाँति अपने उज्ज्वल मुख पर कलंक का टीका सुशोभित करने की सफल कुचेष्टा की है। राम जोशी का उद्देश्य जन-साधारण की सेवा करना था--मनोरंजन की ओट में श्रृंगार-रस की रचना करना नहीं। इसके अतिरिक्त राम जोशी की समस्त कृतियों में केवल दस प्रतिशत ही श्रृंगार-रस व प्रेम सम्बन्धी होंगी। राम जोशी का गृह से निकाल दिये जाने का कारण उनकी श्रृंगारमयी एवं प्रेम-सम्बन्धी कविताएँ नहीं थीं। यद्यपि श्री माडगुलकर ने कथा-वस्तु के लेखन में अपनी कुशल लेखनी का प्रयोग किया है, परन्तु चित्र का अन्त अधूरा होने के कारण पूर्ण चित्रपट काल्पनिक प्रतीत होता हैं। राम जोशी की मृत्यु-घटना एवं मृत्यु-तिथि? उनकी अमर कृतियाँ? राम जोशी ने बया को त्याग कर अपनी उमा को अपनाया अथवा दोनों को? यदि उसने अपनी पत्नी को अपनाया तो बया का क्या हुआ—इत्यादि, इत्यादि। परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं है कि कथा-लेखक ने मानव-जीवन की जीवनी से यह नग्न रूप में सिद्ध कर दिया है कि—कला, ईर्ष्यान्त-वस्तु है। नारी-सुरा तथा कला में उतनी ही प्रतिद्वन्द्विता है, जितनी प्रकाश और अंधकार में। श्री निरंजन श्रीवास्तव द्वारा लिखित संवाद भावुक एवं उच्च विचारों से परिपूर्ण हैं, परन्तु उनकी भाषा ९९ प्रतिशत उर्दू है। उदाहरणार्थ—"इस 'दुनिया' में 'दिल' को 'पत्थर' और 'पत्थर' को रब कहकर पुकारा जाता है।" "... 'अगर' तुम कृष्ण बनो तो..."—राम जोशी ने कहा—आदि। समझ में नहीं आता यह हिन्दी-उर्दू का दुध-मुँहा दोगला कब तक भारतीयता एवं हिन्दी-साहित्य पर कोदो दलता रहेगा? 'मतवाला शायर' शब्द ही से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि प्रस्तुत चित्र में अत्यधिक विशेषता कविता की होगी। श्री नरेन्द्र शर्मा, निरंजन श्री वास्तव तथा बेहजाद द्वारा रचित गीत आदि से अन्त तक एक साँचे में ढले हुए द्वितीय श्रेणी के होने के कारण चित्र की लोकप्रियता में और चार चाँद लग गए हैं, जिनकी प्रियता का एकमात्र कारण श्री वसंत देसाई ('शकुन्तला' के ख्याति-प्राप्त संगीत-निर्देशक) का कर्ण-प्रिय संगीत-प्रदर्शन। राम जोशी तथा लोकप्रिय तारिका बया की गीत-प्रतियोगिता में श्री नरेन्द्र एवं निरंजन ने अपनी पूर्ण प्रतिभा का परिचय दिया है। स्मरण कीजिये :—

राम जोशी—"हो! रुक, कहाँ चली?
ओ चन्द्रबरन चन्दा की किरन..."
बया—"तुम कवि, ज्योतिषी,
पंडित, ज्ञानी, वैद्य;
मधुर चाँदनी गर्म या ठंडी
कहो बता दो भेद?"
राम जोशी--चाँद की पतली कोर क्या,
चमके तेज सूरज की आगे?
पिया बिना हो गरम चाँदनी,
पी बिन ठंडी लागे।"

* * *

राम जोशी—"अधखिली कमलिनी
देख सूरज को,
क्यों खिल जाती है
एक पल में?
पूनम का चाँद निकलते ही—
क्यों लहरे उठतीं समुन्दर में?"
बया—"..............................,"
....
राम जोशी—"सूरज निकले कमल खिलाये,
चाँद निकले लहरों को उठाये;
अपने सजन को देख के सजनी,
खुश हो जाये, मिलने धाये।"

यद्यपि श्री जी० बालकृष्ण का चित्रालेखन साधारण कोटि का है, परन्तु 'यमुना तट पर खेलें होरी' गीत से सम्बन्धित नृत्य-प्रदर्शन में आपकी उच्च कला का प्रमाण प्राप्त होता है। कितनी शीघ्रता से श्री राधाजी माधव एवं नागरिया का रूप धारण करती हैं? रंगीन दृश्यों में प्रदर्शित रासलीला का चित्रण नेत्र-प्रिय है, परन्तु उसमें स्वच्छता केवल दस प्रतिशत ही दृष्टिगोचर होती है। नृत्य-प्रदर्शन में नित्य-निर्देशक की उच्चता का परिचय प्राप्त होता है। श्री डी० एन० जाधव का कला-निर्देशन साधारण है। 'मेक-अप' में श्री शंकर कारेकर ने सफलता प्राप्त की है। श्री मिनू टुम्पल का चरित्र-चित्रण प्रशंसनीय है। वेष-भूषा परिवर्तन सराहनीय है। साजों का प्रयोग नूतन ढंग से किया गया है। ध्वनि-आलेखन निर्दोष तथा मृदंग-प्रदर्शन उच्च कोटि के हैं।

अभिनय-कला की दृष्टि से नायिका बया की कल्पना में हंसा वाडकर ने सर्वश्रेष्ठ अभिनय किया है। अम्बाला निवासी जोहरा की 'बैक-ग्राउन्ड-म्युजिक' ने कहीं-कहीं पर अपनी उत्कृष्टता पर कुठाराघात किया है। सुन्दर वेष-भूषा-परिवर्तन तथा 'मेक-अप' ने आपकी पूर्व कृतियों को भी लज्जित कर दिया है। 'अब तो है हमारा यह आलम्' गीत-प्रदर्शन में आप उत्यधिक फबी हैं। श्रीमती हंसा वाडकर का आगामी आकर्षण है "धन्यवाद" है। मतवाले शायर राम जोशी की भूमिका में लाहौर-निवासी मनमोहन कृष्ण ने अपने प्रथम अभिनय-प्रदर्शन में ही स्वयं को एक उच्च कोटि का कलाकार घोषित करने का सफल प्रयत्न किया है। आपके स्वरों में मधुरता है। राम जोशी की प्रारम्भिक-संगिनी चिम्मा के आवरण में शकुन्तला ने प्रशंसनीय कार्य किया है। आपके नृत्य में मृदंग-संगीत उच्च कोटि का है। ढोंडी भाँड़ की काया में परशराम का कार्य उत्तम है। आपके चरित्र-चित्रण में विशेष ध्यान आकृष्ट किया गया है।

"मतवाला शायर राम जोशी", जिसका प्रारम्भिक निर्देशन श्री बाबूराव पेन्टर ने किया था और शेष श्री शान्ताराम तथा पेन्टर ने। इस फिल्म को देखकर समस्त जनता एक बार अवश्य झूम उठती है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि इतनी शुष्क-सी वस्तु को इतने बाह्य एवं प्रभावशाली रूप में प्रदर्शित करना उनकी प्रतिभा का ही नग्न उदाहरण है। शान्ताराम ही एक ऐसे प्रथम व्यक्ति हैं, जिन्होंने भाँड़-भाड़िनों की कहानी के चित्रपट-रूप पर सफलता प्राप्त की है। उन्होंने अपना नवीन रूप "अंधों की दुनिया" में प्रदर्शित किया है, जो शीघ्र ही आपके सम्मुख प्रदर्शित होगा।

मुफ़्त! मुफ़्त!! मुफ़्त!!!
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ० ए०, बी० ए०, पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से और होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ़्त मंगायें। पता :—
इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

कृषि-सुधार की नई योजना

(पेज ८ का शेष)

हमारे किसान भाई स्वयं ही समझते हैं लिए हमारे पूर्वजों ने इनको महान् कार्य माना है। इन कार्यों को पूरा से करने के लिए हमारी सरकार ने योजनायें जैसा कि मैं पहले कह चुका लित को है।

कृषि-सुधार सम्बन्धी और भी नायें चलाई जा रही हैं उनका हाल बताने का समय तो आज नहीं परन्तु यहाँ पर उनका कुछ जिक्र कर मैं आवश्यक समझता हूँ। उत्तम लिये उत्तम बीज अनिवार्य है। विभाग उत्तम बीज पैदा करने के कई बड़े बड़े फार्म खोल रहा है। बीज को सँभाल कर रखना और यह जनता का काम है। सरकारी का नहीं। इसलिए बीज-गोदाम की ग्रामीण सहकारी समितियों को रहे हैं। अपना काम अपने आप होता है। इन गोदामों की देख-भाल लिये आपको अपनी समितियों पंचायत में ऐसे प्रतिनिधि चुनने हैं इस कार्य को निःस्वार्थ भाव से किसान को आजकल तो अपने अनाज बढ़े हुये दाम मिल रहे हैं परन्तु यह सदैव न रहेंगे। गिरते हुये भावों बचने का एकमात्र उपाय यही है अपनी पैदावार का व्योपार सामूहिक से सहकारी समिति द्वारा स्वयं ही जाय। इस विधि से लाभ शोषण सारी मध्यस्थ संस्थाओं से बचकर के सदस्य अपनी पैदावार का अधिक लाभ उठा सकते हैं। समितियों से एकत्रित किये हुये को सँभाल कर रखने की व्यवस्था होती है। सरकार ने पिछले दिनों पक्की खत्तियाँ अनाज सुरक्षित रखने लिये बनाई गई थीं अब उनको समितियों को सौंपने का विचार रहा है ताकि आगे चलकर आपको द्वारा व्यापार करने का पूरा पूरा मिल सके। जमींदारी प्रथा समाप्त के पश्चात् किसान को यह करने का अवसर भी मिल सकेगा अपनी कृषि-प्रणाली में क्या क्या करे कि जिससे उसके खेत की बढ़े और उसकी आमदनी भी। रूप से खेती कहाँ तक हो प्रांतीय सरकार कुछ गाँवों में का अन्वेषण करने जा रही है।

राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त पश्चात् हम सबके सामने मुख्य भूख और निर्धनता पर विजय है। मुझे आशा ही नहीं विश्वास कि इसी युद्ध में हमारे देश के सिपाही किसी भी देश के किसानों नहीं रह सकते।

रदों की गलत
यौवन नष्ट करनेवाले, गुप्त रोग अथवा अन्दर से खोखले नीम-हकीमों के पास न फँसें सख्श स्पेशलिस्ट कविराज वजीराबाद वाले मैनेजर फार्मेसी (रजिस्टर्ड), डाक पीछे दरियागंज, देहली से आराम के बाद दें, घर मँगवाने पी०। अन्दरूनी बेरूनी ताकत का पूरा समान रह जायेंगे।

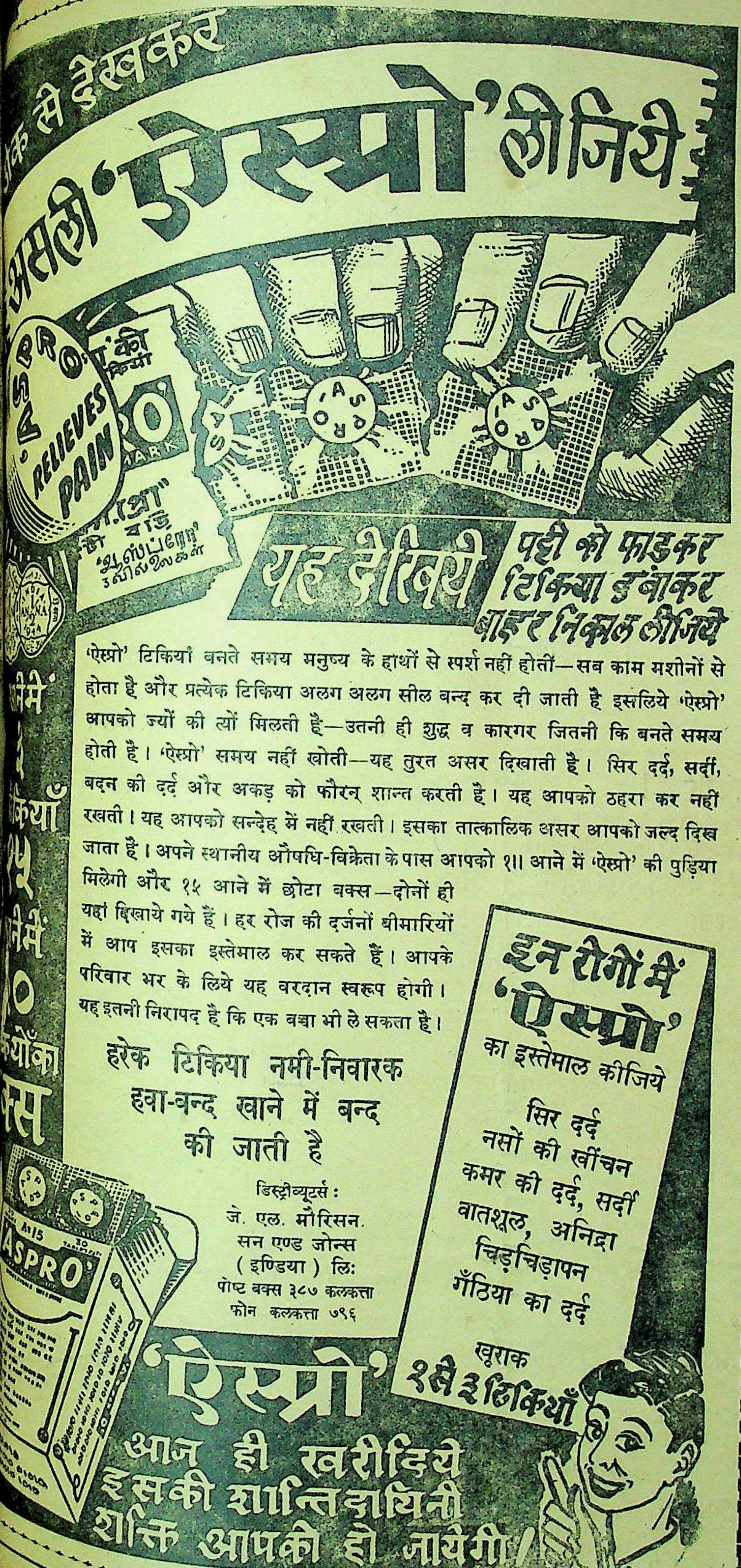
क से देखकर
असली 'ऐस्प्रो' लीजिये
ASPRO
RELIEVES PAIN
यह देखिये
पट्टी को फाड़कर
टिकिया दबाकर
बाहर निकाल लीजिये
टिकियाँ
ASPRO
'ऐस्प्रो'
खूराक
१से३ टिकियाँ
आज ही खरीदिये
इसकी शान्तिदायिनी
शक्ति आपकी हो जायेगी।

'ऐस्प्रो' टिकियाँ बनते समय मनुष्य के हाथों से स्पर्श नहीं होतीं—सब काम मशीनों से होता है और प्रत्येक टिकिया अलग अलग सील बन्द कर दी जाती है इसलिये 'ऐस्प्रो' आपको ज्यों की त्यों मिलती है—उतनी ही शुद्ध व कारगर जितनी कि बनते समय होती है। 'ऐस्प्रो' समय नहीं खोती—यह तुरत असर दिखाती है। सिर दर्द, सर्दी, बदन की दर्द और अकड़ को फौरन् शान्त करती है। यह आपको ठहरा कर नहीं रखती। यह आपको सन्देह में नहीं रखती। इसका तात्कालिक असर आपको जल्द दिख जाता है। अपने स्थानीय औषधि-विक्रेता के पास आपको १॥ आने में 'ऐस्प्रो' की पुड़िया मिलेगी और १५ आने में छोटा बक्स—दोनों ही यहां दिखाये गये हैं। हर रोज की दर्जनों बीमारियों में आप इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। आपके परिवार भर के लिये यह वरदान स्वरूप होगी। यह इतनी निरापद है कि एक बच्चा भी ले सकता है।

हरेक टिकिया नमी-निवारक हवा-बन्द खाने में बन्द की जाती है

डिस्ट्रीब्यूटर्स :
जे. एल. मौरिसन.
सन एण्ड जोन्स
(इण्डिया) लि:
पोष्ट बक्स ३८७ कलकत्ता
फोन कलकत्ता ७९६

इन रोगों में 'ऐस्प्रो' का इस्तेमाल कीजिये

सिर दर्द
नसों की खींचन
कमर की दर्द, सर्दी
वातशूल, अनिद्रा
चिड़चिड़ापन
गँठिया का दर्द

बराबर तौल रखनेवाले
प्रयोग करते हैं ?

HAMĀM
हमाम साबुन
दी टाटा आयल मिल्स कं० लिमिटेड

मुफ्त

युवको! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीवन फीका हो चुका हो तो भारत भर में सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त रोग विशेषज्ञ कविराज ब्रह्मसरूप बी० ए० लाहौरवाले फतेहपुरी (D.A.) देहली से मशविरा (सम्मति) मुफ्त लेकर अपना जीवन सुधार लें।

शदूत में विज्ञापन देकर लाभ उठाइए।

चिरस्थायी व दिमाग़ी ताक़त बढ़ाने के लिए सेवन करो
डॉ. गौतमराव केशव टॉनिक फॉस्फरस पिल्स
PILLS

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी एल० एस० धोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

स्वतन्त्र नारी सभा

स्वतन्त्र नारी ही देश और जाति की सबसे महान् शक्ति है। जो इस समय सम्बन्धियों और पुरुषों के अत्याचार और दासता में अपना व्यक्तित्व खो चुकी है। देश की स्वतन्त्रता के साथ साथ स्त्री जाति की स्वतन्त्रता—शारीरिक और मानसिक उन्नति चाहनेवाली बहनें हमारे साथ सहयोग के लिए तुरन्त मिलें या पत्र-व्यवहार करें और अपनी परिचित सब दुखित बहनों को हमारी सभा के विषय में सूचित करें ताकि यथाशक्ति उनकी सहायता की जाये।

आपकी बहन—सरलादेवी, संचालिका—स्वतन्त्र नारी सभा
५१५५ वरना गली, सदर बाज़ार, देहली

वर की आवश्यकता है!

१६, २०, ३० वर्ष की पढ़ी-लिखी सुन्दर कन्याओं के लिए वर की आवश्यकता है। फोटो और सैकड़ों लड़कियों की सूची ५) भेजकर मँगवायें।

मदनगोपाल बी० ए० मैनेजर—हैपी मैरीज, वरना स्ट्रीट,
सदर बाज़ार, देहली

ऐतिहासिक भौतिकवाद

लेखक, भूतपूर्व काकोरी-कैदी

श्री मन्मथनाथ गुप्त और श्री रमेन्द्र वर्मा

लगभग ५०० पृष्ठों के सजिल्द ग्रन्थ का मूल्य केवल ६) रुपये।

मार्क्सवाद में ऐतिहासिक भौतिकवाद की गहनता को सरलतापूर्वक समझने के लिए इस ग्रन्थ की उपयोगिता अद्वितीय है। समाजवाद समझनेवालों के लिए इसका अध्ययन अपरिहार्य है।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे **"वीर्यसंजीवनसत"** ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमज़ोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ **"तिला मस्ताना"** की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=), डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० [illegible]

मूल्य की सूचना

WOODWARD'S "GRIPE WATER"

वूडवर्ड्स ग्राइप वाटर का सही फुटकर दाम निम्नप्रकार है:

प्रति शीशी: २ रुपये

(इसके अतिरिक्त लोकल टैक्सेस जहां लागू हों)

अधिक दाम मत दें

अब आप
वूडवर्ड्स
ग्राइपवाटर खरीदें

तब हर शीशीपर
इस ट्रेडमार्क का
अवलोकन करें

नक़ली मालसे सावधान रहिये!

WW. L.111 E.

W. WOODWARD LTD., LONDON,

सच है
सिरोलीन
सर्दी और खांसी की श्रेष्ठ औषधि

स्वास्थ्य में च
हुये बालों के
"सुरैया"
जमुना प्राडक्शन्स कृत
"दो-दिल"
Vaseline

कोमलता से सुगंधित किया गया वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।

वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।

गुरुकुल कांगड़ी

ंक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

ार, २५ जुलाई, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 25th JULY, 1948

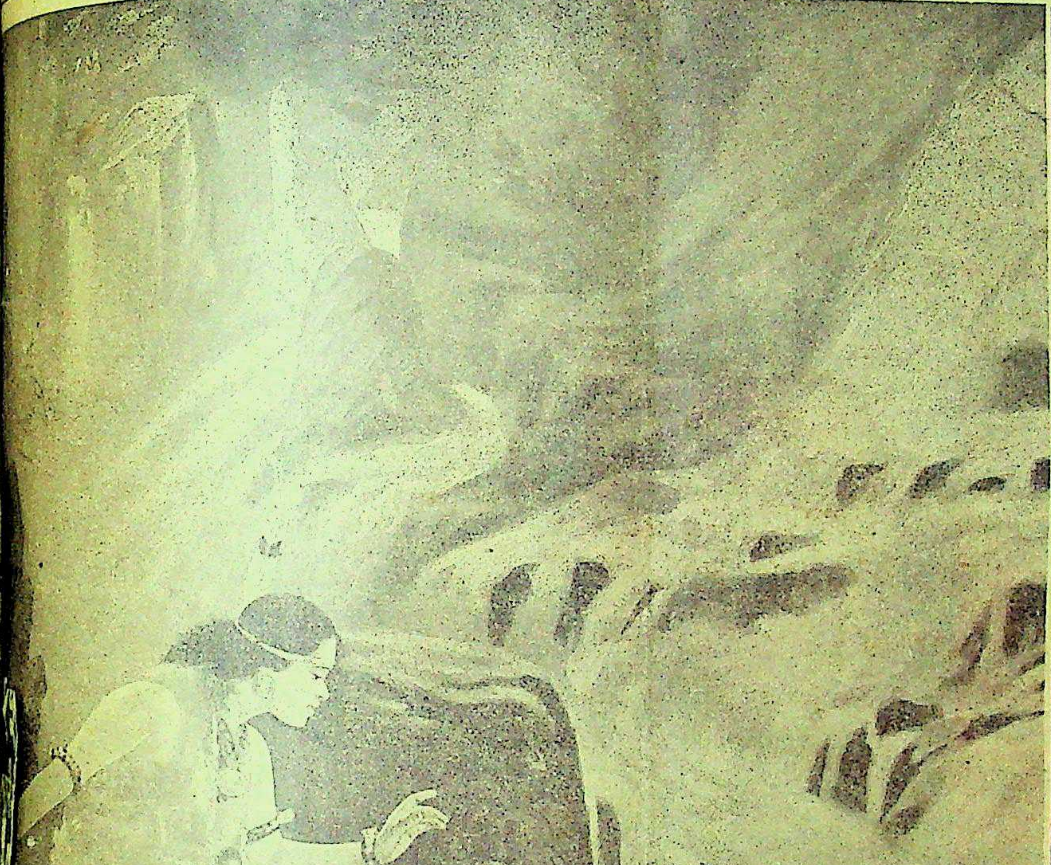

ें समाज शिक्षा का आन्दोलन
की बेकारी कब दूर होगी

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

आज का इटली का द्वंद्वग्रस्त राजमंच
रंगमंच, मातृमंदिर, स्वास्थ्य - चर्चा

जुलाई,
RD'S
TER"
कर दाम
रुपये
ाँ लागू हों)
त दें
रहिये!
RD LTD., LONDON,
उनको
प्रचार
आपको
पूरा
समास
औषधि
स्य में
ालों के
Vaseline

रामचरितमानस

टीकाकार—डाक्टर श्यामसुन्दरदास

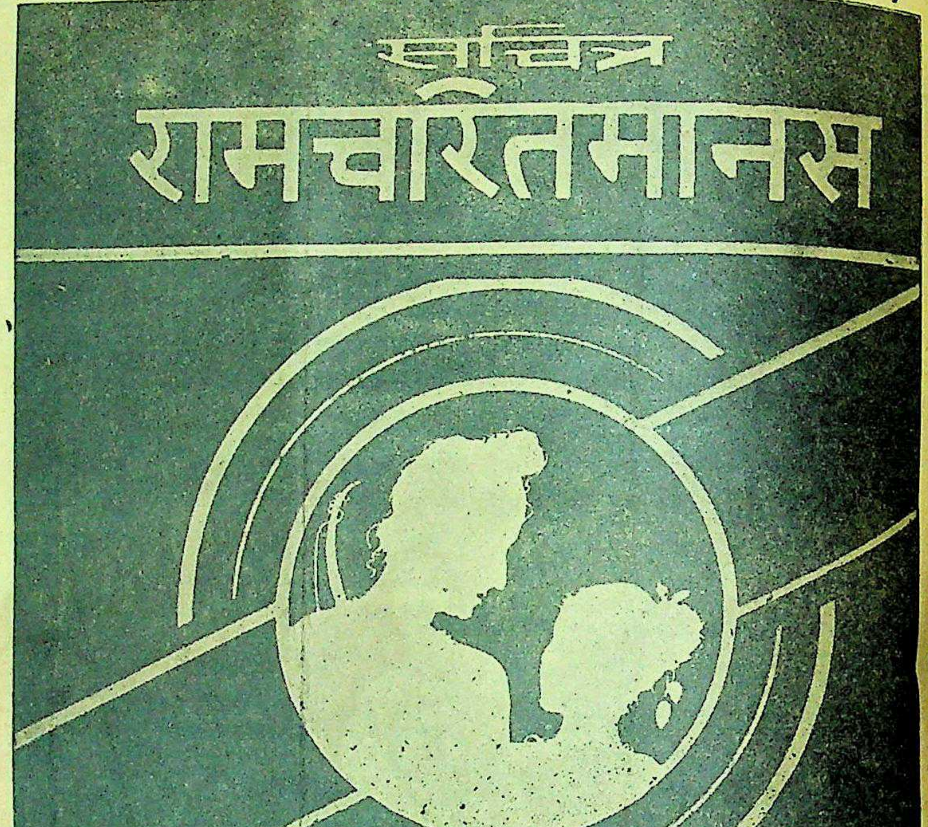

'मानस' का महत्त्व किसी से छिपा नहीं है। भारतवर्ष में तो इसका मान है ही, अन्य देशों में भी इस अमर काव्य का आदर है। यह प्रामाणिक संस्करण इधर कई वर्ष से अप्राप्य था। हाल में ही छपकर तैयार हुआ है। ग्राहकों को शीघ्रता करनी चाहिए। अधिक प्रतियाँ नहीं छापी गई हैं।

बड़े आकार के १२०० पृष्ठ। रंग-बिरंगे दर्जनों चित्र। सजिल्द प्रति का

मूल्य १२) रुपये

जहाँ पर हमारी ब्रांच या एजेंसी है वहाँ ख़रीदने पर डाकख़र्च की बचत होगी।

हमारी ब्रांचें और एजेन्सियाँ

१ इलाहाबाद हेड आफ़िस—इंडियन प्रेस लिमिटेड, ३६ पन्नालाल रोड
२ इलाहाबाद सिटी—न्यू ऐरा बुकहाउस, हिवेट रोड
३ आगरा—आगरा पब्लिशिङ्ग हाउस, बाग़ मुज़फ़्फ़र ख़ाँ
४ अजमेर—इंडियन प्रेस लिमिटेड, कचहरी रोड
५ अलमोड़ा—डिस्ट्रिक्ट बुकडिपो, लालबाज़ार
६ बनारस—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, बनारस छावनी
७ बाँदा—बुंदेलखण्ड पब्लिशिङ्ग हाउस
८ बरेली—इंडियन बुकडिपो
९ बम्बई—भारतीय पुस्तक भण्डार, कालबा देवी रोड
१० बीकानेर—गर्गबुक कम्पनी, कोट के भीतर
११ कलकत्ता—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, २२।१ कार्नवालिस स्ट्रीट
१२ कानपुर—साहित्य-रत्नालय, श्रद्धानन्द पार्क
१३ दिल्ली—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, नई सड़क
१४ गोरखपुर—पुस्तक-स्थान, बख़्शीपुर
१५ ग्वालियर—लायल बुकडिपो, पाटनकर बाज़ार, लश्कर
१६ इन्दौर—नवयुग साहित्यसदन, खजूरी बाज़ार
१७ जयपुर—गोपाल बुकडिपो, त्रिपौलिया बाज़ार
१८ जबलपुर सी० पी०—इंडियन प्रेस, लिमिटेड
१९ लखनऊ—इंडियन बुकडिपो, अमीनुद्दौला पार्क
२० मेरठ—पुस्तक-स्थान, वैस्टर्न कचहरी रोड
२१ पटना—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, पो० ऑ० बाँकीपुर
२२ राँची—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, कोर्ट रोड

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

देशदूत

१०, संख्या ४६] [रविवार, २५ जुलाई, १९४८

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

रदार वल्लभभाई पटेल ने पटियाला की रियासतों की एकीकरण में भाषण देते हुए कहा है कि शरीर का जब आपरेशन तो उचित यह है कि शरीर के कम अंग काटा जाय और अच्छा हो जाय। अपने राम की है भारत-सरकार इसी नीति के हैदराबाद का शारीरिक आप- की तयारी कर रही है। यह है कि इस समय भारत-सरकार के विरुद्ध जो प्रतिबन्ध लगा वान आपरेशन का केवल है। हैदराबाद के निजाम बडीगार्ड कासिम रिजवी ने चाल-चलन दुरुस्त न की तो एक दिन होना ही है। क्यों व्यापक हो गया है, निजाम से वार्ता करते करते इतने हो गये हैं कि यदि इस उपचार से कोई लाभ न हुआ सख्ती से किया जाय; और जानते हैं कि आपरेशन के की दो ही स्थिति होती है या से वह खुदा के घर की राह अपने पुरानेपन पर पुनः आ तो समय बतायेगा कि आप- होगा या माइनर।

* *

की लड़ाई में अब तो यह गया है कि पाकिस्तानी सेनाएँ के खानाबदोशों का संचालन है और काश्मीर को हड़प करने भारतीय फौजों से युद्ध कर रही स्तान के वैदेशिक मंत्री सर जफ- ने महीनों से भारतवर्ष में और कुछ संयुक्तराष्ट्र-संघ की सभा में अपना का गर्दभ स्वर अलापा कि मानो के युद्ध से पाकिस्तान का कोई ही नहीं है, लेकिन आज की स्थिति यह मालूम हो रहा है कि जैसे में अप्रत्यक्ष रूप से पहले रजा- ने घोटाला किया है उसी प्रकार ने कबाइलियों को आगे करके सिद्ध करने की पूरी कोशिश यद्यपि सर जफरुल्ला बकवास करते किन्तु भारत-सरकार और भारतीय को यह पूरी तरह से मालूम था काश्मीर के युद्ध में पाकिस्तान का पूरा युद्ध प्रारम्भ से रहा है। अच्छा है इधर काश्मीर कमीशन भी भारत में आ पहुँचा है। भारत-सरकार के पाकिस्तान की सचाई की पोल खोलने के लिये अच्छा मसाला भी मिल जायेगा। पाकिस्तान के संचालक अँगरेज तो काश्मीर को हड़प ही करना चाहते हैं यह तो आगे और भी स्पष्ट हो जायेगा। लेकिन चलते-चलाते पाकिस्तानिओं का पोलखाता भी खुलकर ही रहेगा और यह भी पता चलेगा कि मिस्टर जिन्ना ने मुसलमानों की स्वतंत्रता के लिये पाकिस्तान का निर्माण नहीं कराया, बल्कि अगरेजों को हिन्दुस्तान में बनाये रखने के लिये एक जाल रचा है।

* * *

संयुक्तराष्ट्र-संघ के बीच में पड़ने के बाद ही फिलिस्तीन में युद्ध जारी है। अरब विराम-सन्धि के लिए राजी नहीं हो रहे हैं। एक कहावत है कि 'आग लगाकर जमालो दूर खड़ी' अँगरेजों ने पहले तो अरबों को तोप, बन्दूक, रुपया, पैसा दे-दिवाकर एक टंटा खड़ा कर दिया और जब फिलिस्तीन में जोरों की आग जलने लगी तो अँगरेज कूद-फाँदकर निकल भागे और वहाँ शान्ति-स्थापना के नाम पर अमरीका समझौता कर लिया। अब अँगरेज कदापि नहीं चाहते कि फिलिस्तीन में अरब और यहूदी आपस में लड़ें। सच तो यह है कि अँगरेजों के कौल-फेल का कभी भी ठिकाना नहीं रहा। वह सदैव राजनैतिक क्षेत्र में पक्के अवसरवादी रहे हैं और दो को जुझाने में उनकी कूटनीति की कोई समता कर भी नहीं सकता। यही दशा हिन्दुस्तान में हो रही है और फिलिस्तीन में भी इसी का प्रभाव जोरों पर है। आग लग गई है यदि संयुक्त-राष्ट्र-संघ की हजार बार गरज हो तो आग बुझाये। आग लगाने में अँगरेज अग्रगामी थे और अब आग बुझाने में वह संयुक्तराष्ट्र-संघ, कहना यह चाहिए कि अमरीका के साथ पूरी तरह से हैं। इसका अर्थ यह है कि अँगरेज सभी जगह हैं और कहीं भी नहीं। फिलिस्तीन में आग लग चुकी है। थोड़े समय के लिये बुझ सकती है, किन्तु फिर जल सकती है। योरोप के साम्राज्यवादी राष्ट्र इसी प्रकार से मारते-खाते रहेंगे और यहूदी और अरबके लोग लड़ते रहेंगे।

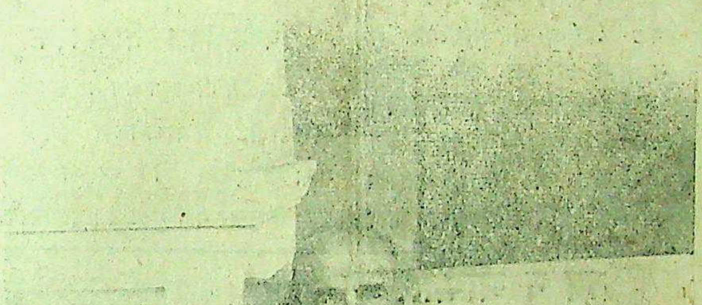

संयुक्त प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के सभापति राजर्षि श्री पुरुषोत्तम दास टंडन।

* * *

भारतीय यूनियन में इस समय प्रत्येक प्रांत की सरकारें निजाम के भेदियों की छानबीन बड़े जोरों से कर रही हैं। निजाम के भेदिये इस समय संयुक्तप्रांत, बिहार, बम्बई, मद्रास, मध्यप्रांत तथा राजपूताने की रियासतों में घूम-घूमकर मुसलमानों को हैदराबाद में नौकरियाँ दिलाने का प्रलोभन देकर ले जाने की चेष्टा में लगे हैं। साथ ही तिकड़मबाजी, धूर्तता, साम्प्रदायिक उत्तेजना उत्पन्न करने की दृष्टि से वह गड़बड़-घोटाला करते हैं। पाकिस्तानी सेना के अफसर भी निजाम सरकार की ओर से हिन्दू बहुमत प्रान्तों में घूम-फिरकर अहले इस्लाम के कायम करने की चेष्टा में लगे हैं। अभी पिछले दिनों पाकिस्तानी सेना का एक अफसर लखनऊ में गिरफ्तार हुआ जो छुट्टी बिताने के बहाने यहाँ आया हुआ था और भारत-विरोधी कार्रवाइयाँ कर रहा था। अपने राम कितनी ही बार लिख चुके हैं कि भारत-सरकार को निजाम के ही भेदियों पर नहीं भारतवर्ष में रहनेवाले उन भेदियों पर भी सख्त निगरानी रखनी चाहिये जो भारत यूनियन में गुलछर्रे उड़ा रहे हैं और निजाम की दलाली करते हैं। यह प्रसन्नता की बात है कि भारत-सरकार और प्रान्तीय सरकारें इस ओर पूरी तरह से अब सचेत हो गई हैं। हम तो यहाँ तक कहेंगे कि राष्ट्रीयता की सफेद पोशी में रँगे हुए इन इस्लामपरस्त बिरादरों की ओर भी सरकार का ध्यान रहना चाहिये—हमारा मतलब नेताओं से नहीं है—तब वह अपने काम में पूरी तरह सफल हो पायेंगे, क्योंकि हमारे यहाँ की एक पुरानी मसल चली आ रही है कि 'घर का भेदी लङ्का ढाहे,' बाहर के भेदिये की हरकतें जो कुछ होती हैं वह ठीक ही हैं; लेकिन घर का भेदिया तो जिस पत्तल में खाता है उसी में छेद करता है, इसलिये यह सबसे खतरनाक है। समय का तकाजा यही है यों सरकार की इच्छा। क्योंकि राष्ट्रीयता की आड़ में इस समय जनता के साथ जो जो अनर्थ हो रहे हैं वह उससे छिपा नहीं है।

* * *

आजकल हिन्दी के क्षेत्र में आल इंडिया रेडियो की भाषा-नीति के सम्बन्ध में आलोचनाएँ और प्रत्यालोचनाएँ हो रही हैं। हिन्दी-संसार का कहना है कि रेडियो की भाषा पहले से अब अधिक उर्दू मय हो गई है, अर्थात् हिन्दुस्तानी। अपने राम जानते हैं कि हिन्दी-संसार के आन्दोलन में वास्तविकता अवश्य है। रेडियो की भाषा अधिक उर्दू मय इसलिये हुई है कि अफगानिस्तान, ईरान, अरब, पाकिस्तान तथा मुस्लिम पड़ोसी राष्ट्र जिससे भारत की राजनीति से समय समय पर परिचित होते रहें। प्रधान मंत्री पंडित नेहरू की नीति तो अच्छी है, किन्तु क्या भारत यूनियन के पड़ोसी राष्ट्र भी यह चाहते हैं कि उनकी राजनीति का भी भारतीयों को ज्ञान प्राप्त हो। कहावत है कि 'काजी जी दुबले काहे को, शहर के अंदेशे में।' पड़ोसी मुस्लिम राष्ट्रों को भारत की उतनी चिन्ता नहीं है जितनी चिन्ता भारत के वैदेशिक विभाग को विशेषकर आल इंडिया रेडियो को अपने पड़ोसियों की। देखना है पड़ोसियों की फिक्र में भारतीय संस्कृति और भाषा की कब तक उधेड़-बुन की जाती है।

* * *

सम्पादक का पृष्ठ

अन्न की महँगी क्यों ?

महायुद्ध के पश्चात् जनता के सामने अनेकों समस्याएँ उपस्थित हुईं। उन परिस्थितियों के अनुकूल जनता का जीवन किसी प्रकार चलता रहा। आज उसी अतीत की परिस्थितियों ने कुछ गहन संघर्ष उत्पन्न कर दिया है। जीवन की प्रारम्भिक आवश्यकताओं में भोजन का स्थान स्पष्ट है। इस समय इस आवश्यकता के प्रति जनता को जो कष्ट उठाने पड़ रहे हैं, वह भयावह हैं। भोजन की कमी देश की परिस्थिति को अशांत कर रही है। कन्ट्रोल के समय जनता के सामने कुछ साधारण कठिनाइयाँ थीं, देश की आवाज कन्ट्रोल के विरुद्ध उठी, सरकार ने विचार किया और शनैः शनैः कन्ट्रोल उठा लिया गया। कन्ट्रोल के बाद लोगों को आशा थी कि अनाज की महँगी कम होगी, उसकी मात्रा में वृद्धि होगी और आसानी से अन्न मिलने लगेगा। इन धारणाओं की सफलता का प्रमाण आज की परिस्थिति से जाना जा सकता है। अब तो अनाज की महँगी इतनी असीम हो गई है कि सरकार को इस सम्बन्ध में ध्यान देना अनिवार्य हो गया है; अन्यथा, अकाल पड़ने की संभावना भी हो सकती है।

सरकार ने अपनी विज्ञप्तियों में कुछ समय पूर्व कहा था कि अन्न की परिस्थिति काबू में है। भविष्य में यह समस्या अत्यधिक सरल हो जायेगी, किन्तु सरकारी सूत्रों से ही यह भी प्रकट हुआ है कि अनाज का आयात और उसकी उत्पत्ति में पहले की अपेक्षा वृद्धि हुई है, इतना ही नहीं वरन् फसलें भी अच्छी हुई हैं। इन बातों के जानने के पश्चात् आश्चर्य होता है कि अन्न की परिस्थिति में पहले की अपेक्षा बहुत अधिक कठिनाई अब क्यों है? दूसरे साधनों से भी ज्ञात हुआ है कि ग्रामीण क्षेत्रों में अनाज इकट्ठा किया जाता है, किसान उसे बेचने में हिचकते हैं। शहरों में भी सेठ साहूकारों ने अन्न एकत्र किया है, इस प्रकार अन्न के संग्रह से क्या प्रकट होता है? यह प्रश्न गम्भीर है। दूसरी ओर व्यापारी और गल्लेवालों की शिकायत है कि अन्न को बाजार ले जाने के लिये कोई साधन नहीं है। रेलें और मोटरें पर्याप्त न होने के कारण असुविधाएँ और भी गम्भीर और व्यापक होती जा रही हैं।

अनाज ले आने की असुविधाएँ सरकार की सहायता चाहती हैं। बाजार में जो कुछ अनाज मोटरों से आता है उसमें खर्च इतना अधिक होता है कि व्यापारी को उसे अधिक दाम पर बेचना ही पड़ता है। भोजन जनता की आवश्यक वस्तु है इस कारण उसे तत्काल किसी भी कीमत में खरीदना ही पड़ता है। जहाँ तक व्यापारियों की शिकायत का सम्बन्ध है, वह उचित ही जान पड़ती है। रेल-कर्मचारियों में जनता की सेवा-भावना तो छू तक नहीं गई है, सामान लाने और ले जाने की कौन कहे, केवल आने-जाने में भारी कठिनता का अनुभव करना पड़ता है। महँगी को काबू में लाने के लिये दो ही उपाय हैं, एक तो व्यापारियों में सद्भावना उत्पन्न की जानी चाहिए, दूसरे अस्वाभाविक लाभ-प्रवृत्तियों को रोकना चाहिये, यह अनुशासन पैसा पानेवालों को अच्छा न लगेगा फिर भी देश की इस भयानक खाद्य-परिस्थिति को दूर करने के लिये हार्दिक प्रेम और सौहार्द्र की आवश्यकता है। किसानों और व्यापारियों के एकत्रित धन को जनता के बीच लाने का काम सरकार को करना चाहिये। यदि सरकार की ओर से ऐसी व्यवस्था न की गई तो यह संकट दिनोदिन बढ़ता ही जायेगा, इसमें सन्देह नहीं है।

सरकारी सूचना के आधार से ज्ञात हुआ है कि दिल्ली में प्रधान मंत्रियों की बैठक में भी भोजन और अन्न की परिस्थित की समस्या पर भी विचार विनिमय हुआ है। युक्तप्रान्त, बंबई, बिहार और पूर्वी पंजाब में अन्न-संकट अधिकाधिक भयंकर होता जा रहा है। कहा जाता है कि यदि निकट भविष्य में परिस्थिति में सुधार न हुआ तो कुछ प्रान्त केन्द्रीय सरकार से कन्ट्रोल के लिये प्रेरित करेंगे। हम कन्ट्रोल की व्यवस्था से तो सहमत नहीं हैं, क्योंकि अन्न पर सरकारी प्रतिबन्ध विशेष परिस्थितियों में ही लगाया जाना [illegible] देश स्वतंत्र है, हमें अपनी स्वतंत्रता की शक्ति सुदृढ़ बनाने के लिये स्वयं प्रबन्ध करना चाहिये। जब तक सेठ, साहूकार, किसान, सरकारी नौकर और व्यापारी आदि देश की उन्नति के लिये प्रयत्नशील न होंगे तब तक भविष्य में अनेकानेक अनियंत्रित कठिनाइयाँ उठानी पड़ेंगी, ऐसा विश्वास किया जाता है। जिन प्रान्तों में दाम अधिक चढ़ रहा है उन्हें तो केन्द्रीय सरकार से सहायता लेनी ही पड़ेगी। यह अवश्य है कि सरकारी नियंत्रण हमारे लिये स्थायी सुविधाओं का संग्रह तो नहीं कर सकता, फिर भी राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को दिन-प्रतिदिन बढ़ते हुए भ्रष्टाचार को रोकने का प्रयत्न करना चाहिये।

अन्न-संकट उत्पादन की वृद्धि पर निर्भर है। पैदावार बढ़ने पर आज का अन्न-संकट कल के लिये सरल बन सकता है। हमें विश्वास है कि केन्द्रीय तथा प्रांतीय सरकारें कुछ ऐसा निश्चय करेंगी जिससे जीवन की आवश्यकताओं की प्राप्ति में आज की जैसी दुरूहता न रहे।

* * *

वस्त्र-संकट की समस्या

भारतीय नागरिक संघ ने अपनी सरकारी रिपोर्ट में स्पष्ट किया है कि कच्चे माल की सुविधा होने पर भी कपड़े के मूल्य में सुधार नहीं हुआ है। इस रिपोर्ट के
अनुसार साधारण कपड़े की कीमत
की अपेक्षा ७५ प्रतिशत बढ़ी है, अ
की कीमत उसी अनुपात से १००
बढ़ी है। इन आँकड़ों से कपड़े की
और उसकी महँगी का अनुमान
सकता है। कपड़े की बढ़ती होने
कीमत में कमी नहीं बल्कि वह बढ़
जा रही है। पिछले तीन महीनों में
रण प्राप्ति के अतिरिक्त जनता
३६५ करोड़ गज कपड़ा आया है।
स्तान की माँग के कारण उड़ीसा
कर अन्य प्रान्तों में कपड़े का कष्ट
की तरह ही गम्भीर है।

कुछ प्रान्तीय सरकारें कपड़े के
रियों से कपड़े की खरीद के लिए
आँकड़े तय करने की बात सोच
लेकिन व्यापारी इस बात को अच्छी
जानते हैं कि कपड़े की खपत कुछ
जनता के बीच अधिक से अधिक
इन परिस्थितियों में जनता को भी
का ध्यान रखना चाहिये कि उसे वास्त
कितने वस्त्रों की आवश्यकता है,
प्रायः देखा जाता है कि कन्ट्रोल के
की परेशान जनता आज वस्त्र खरीदते
तनिक भी विचार नहीं करती। कुछ
त्योहारों के बीच में कपड़े
एकबारगी बढ़ जाती है। जनता को
ओर ध्यान रखना चाहिए कि
एक संकटकालीन समय से गुजर रही
दूसरे शब्दों में अपनी वास्तविक आव
कता पर विचार करके ही कपड़ा खरी
चाहिए।

भारतीय सरकार ने विभिन्न प्रान्तों
प्रधान मंत्रियों की एक बैठक
दिनों बुलाई थी; इस सम्मेलन में
समस्या पर गम्भीरतापूर्वक विचार
गया है। लेकिन सरकार का काम
के लिये उतना ही सहायक हो
जितना जनता चाहेगी, यानी
बनाये नियमों का पालन जन-सा
ओर से अत्यन्त दृढ़तापूर्वक होना
यदि यह अवस्था ज्यों की त्यों बनी
तो एक दिन वह भी आ सकता है
जनता को बदन ढाँकने के लिये
प्राप्त न हो सके। कन्ट्रोल जनता
कर सकता है, लेकिन जनता के
हुई चोरबाजारी को जनता ही रोक
है। भोजन और वस्त्र की समस्या
चरित्र की दृढ़ता चाहती है हमें
दार होकर देश की वस्तुओं के
होना चाहिए। इसी मार्ग से
वर्तमान कठिनाइयों को दूर करने
हो सकते हैं।

*

तुम न आये....

लेखक, प्रोफेसर 'अंचल' एम० ए०

तुम न आये—बीतते जाते चले ये मधु-दिवस भी!
मिटने पाती—बन न पाती अधमिटी मैं अधबनी मैं
हूँ प्रतीक्षाकुल शिशिर के मेघ जैसी अनमनी मैं
कौन नूतन गीत गा मलयज समीरण को रिझाये
कौन चम्पक की सुनहली प्यालियों में रस पिलाये
बोलती श्यामा—अँधेरे में विरह की पीर भरती
तुम न आये—गन्ध-विह्वल फाल्गुनी रजनी सिहरती।
यह अतिद्रित चाँदनी कब तक निहारे पथ तुम्हारा
फूल कुसुमित बन लताओं ने तुम्हें कितना पुकारा
तुम न आये—बीतते जाते चले ये मधु-दिवस भी!
लाज रक्तिम गात पीली ओढ़नी में कसमसाता
जाफ़रानी प्यार मन के रेशमी पर्दे उठाता
है रही जाती दबी झंकार नूपुर कंकणों की
है रही जाती रुकी मनुहार छवि के बंधनों की
कर रहा है मन न जाने आज कैसा गूँजता-सा
है भरी आती व्यथा—जलसिक्त आँखों में निराशा
उल्लसित पुलकित बकुल का कुंज सुधियों से जड़ा सा
शून्यता के मन्द मर्मर में शिथिल लिपटा पड़ा-सा
तुम न आये—बीतते जाते चले ये मधु-दिवस भी!
है घुला जाता पवन की पीर में मन लुब्ध मेरा
डूब जाता है कुहा से में लजे तन का बसेरा
झाँक लेता है खनक कर चूड़ियों से स्वर प्रणति का
बढ़ रही जी की थकन ज्यों धुन्ध डूबी छाँह-लतिका
तुम न आये तो सुरभि की साँस में मर्मर न जागा
मुग्ध केसर के कपोलों ने अरुण चुम्बन न माँगा
स्वर्ग से भूपर न उड़ती रागिनी यौवन-वरण की
है न छाई बन-पथों पर स्वर्ण-रज स्वप्ना भरण की
तुम न आये—बीतते जाते चले ये मधु-दिवस भी!

इटली का द्वंद्वग्रस्त राजमंच

साम्राज्यवादी राष्ट्रों के शोषण के लिये वहाँ की भूमि उर्वर बनती जा रही है

लेखक, श्री रतनलाल जोशी, एम० ए०

इटली की आज की राजनैतिक स्थिति संघर्षपूर्ण है। कम्यूनिस्ट, समाजवादी ...समाजवादी, विरोधी राजनैतिक दलबंदियों का राष्ट्र के शासन पर काफी प्रभाव ...रहा है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने इटली की आंतरिक स्थिति का वर्णन करते ...हुए बतलाया है कि संसार के साम्राज्यवादी इटली को शोषण का स्थान बनाना चाहते हैं। लेख सामाजिक और पाठनीय है।

आधुनिक यूरोप का घटनाचक्र ...दों के बीच से घूम रहा है। पूँजी- ...और कम्यूनिज्म दोनों अपनी प्रसारो- ...प्रवृत्तियों के द्वारा यूरोप के जन- ...को नई-नई उलझनों में जकड़ते ...हे हैं। पूर्वीय यूरोप की सारी राज- ...और आर्थिक प्रेरणायें सोवियत रूस ...तिक चक्र के साथ बँध गई हैं। ...क क्षेत्र का यह सहयोग आर्थिक ...के ऐक्य की योजनाओं को भी ...करने की दिशा में जब एक- ...गा तब पूर्वीय यूरोप और सोवि- ...के बीच में राष्ट्रीय सार्वभौमत्व से ...कोई भी अन्तर बाकी नहीं रह ...। चेकोस्लोवेकिया के मौन और ...पटाक्षेप ने कम्यूनिस्टों के ...और महत्त्वाकांक्षाओं का जो ...उसके दर्शन से सारा यूरोप ...सहसा प्रकम्पित हो गये हैं। ...अमेरिका ने निर्वाचन के समय ...व्यवस्था की थीं उसके भीतर ...राष्ट्रों की आशंकाओं की गहराई ...थी। अमेरिका इटली को चेको- ...की मौत मरने देना नहीं ...था। जर्मनी के आत्म-समर्पण के ...आज तक सोवियत रूस ने अपने ...विस्तार के लिये जिन साधनों का ...ग्रहण किया है वे नाजियों की ...से काफी साम्य रखते हैं। ...का प्रयोग हिटलर की तरह ...ने भी दो वर्ष से बाल्कन के ...में बड़ी सफलता के साथ किया ...भौगोलिक विजय के क्षेत्र में ...हिटलर से अधिक चतुर साबित ...है। हिटलर के प्रभुत्व-विस्तार की ...योजनायें सैनिक विजयों पर आधा- ...थी। अतः विजित देशों की जनता ...नाजियों का कोई मैत्री-सम्बन्ध ...नहीं हो सकता था। इसके विपरीत ...रूस के प्रसार की प्रणाली का ...कम्यूनिस्ट-आन्दोलन है, जिसके ...की सारी बागडोर सीधी मास्को ...रहती है। इस आन्दोलन का मूल ...किसी देश की असन्तुष्ट परि- ...का शोषण करते हुए कम्यूनिज्म ...प्रसार के लिये मार्ग प्रशस्त करना और ...अधिक संख्या में लोगों को कम्यूनिस्ट ...होता है। हिटलर की प्रणाली भी ...पैदा करने की थी; किन्तु दोनों ...काफी अन्तर है। सोवियत रूस की ...असन्त आकर्षक और कूटनीति- ...होती है और लोकतन्त्र के नाम पर सारे षड्यन्त्रों को पोषित किया जाता है। नात्सीवाद से कम्यूनिज्म का प्रेरणा-क्षेत्र काफी विस्तृत और ग्राह्य है और उपयुक्त प्रचार का सम्बल मिल जाने से उसकी क्षमता और भी अपरिमित हो जाती है। प्रचार के क्षेत्र में तो आज का सोवियत रूस नाजी जर्मनी से भी काफी मील आगे बढ़ गया है। सारे बाल्कन एवं पूर्वीय यूरोप के देशों को ऍंग्लो-अमेरिकन संघ की जर्मनी-विषयक योजनाओं से भयभीत करके जिस कौशल से रूस ने उन्हें अपने पंजे में समेट लिया वह सारे संसार के लिये आश्चर्य की बात है। मार्शल-योजना का विश्लेषण करके भी रूस यूरोप के देशों को इसी प्रकार आशंकित कर रहा है।

कम्यूनिस्टों की विजय

२ जुलाई, १९४६ को इटली में जो निर्वाचन हुआ था, उसके नतीजों और नवीन निर्वाचन के नतीज़ों की तुलना यह स्पष्ट कर देती है कि कम्यूनिस्टों ने इस निर्वाचन में कोई क्षति नहीं उठाई है, उल्टे अपना आसन और भी दृढ़ बना लिया है, क्योंकि पहले चुनाव में कम्यूनिस्टों को सिर्फ १९ प्रतिशत वोट ही मिले थे; लेकिन इस चुनाव में उनके पक्ष में ३१ प्रतिशत वोट आये हैं। इस चुनाव में कम्यूनिस्टों का प्रतिनिधित्व १०५ से बढ़कर १३९ हो गया है; अर्थात् उसमें ३२ फी सदी की वृद्धि हुई है। क्रिश्चियन डेमाक्रेटों का प्रतिनिधित्व भी २०४ से ३०३ हो गया है, अर्थात् उसमें करीब-करीब ५० प्रतिशत की वृद्धि हुई है। लेकिन क्रिश्चियन डेमाक्रेटों ने इस चुनाव में ये जो अधिक वोट प्राप्त किये हैं वे कम्यूनिस्टों के अधिकार से छीने गये वोट नहीं हैं, वरन् दक्षिण-पक्षीय अन्य दलों की पराजय के फलस्वरूप प्राप्त वोट हैं। इन दक्षिणपंथी दलों में सोशल-डेमाक्रेटों की पार्टी सबसे प्रमुख है। २ जुलाई, १९४६ के चुनाव में सोशल डेमाक्रेटों को ११५ सीटों का प्रतिनिधित्व मिला था; किन्तु नवीन चुनाओं में ये आँकड़े ७१ पर उतर आये और उनमें भी दो परस्पर विरोधी दल हो गये—नेनी ब्लाक और सरगाट सोशलिस्ट ब्लाक। क्रिश्चियन डेमाक्रेटों की भाँति कम्यूनिस्टों को भी जो अधिक वोट मिले हैं, वे सोशल डेमाक्रेटों की पराजय के कारण ही मिले हैं। अतः यह स्पष्ट है कि कम्यूनिस्टों को इस चुनाव में क्षति पहुँचने के बजाय लाभ ही हुआ है। क्रिश्चियन डेमाक्रेटों को जो सफलता मिली है वह पराये घर की निधि से न मिलकर अपने ही घर के अन्य अंगों से मिली है।

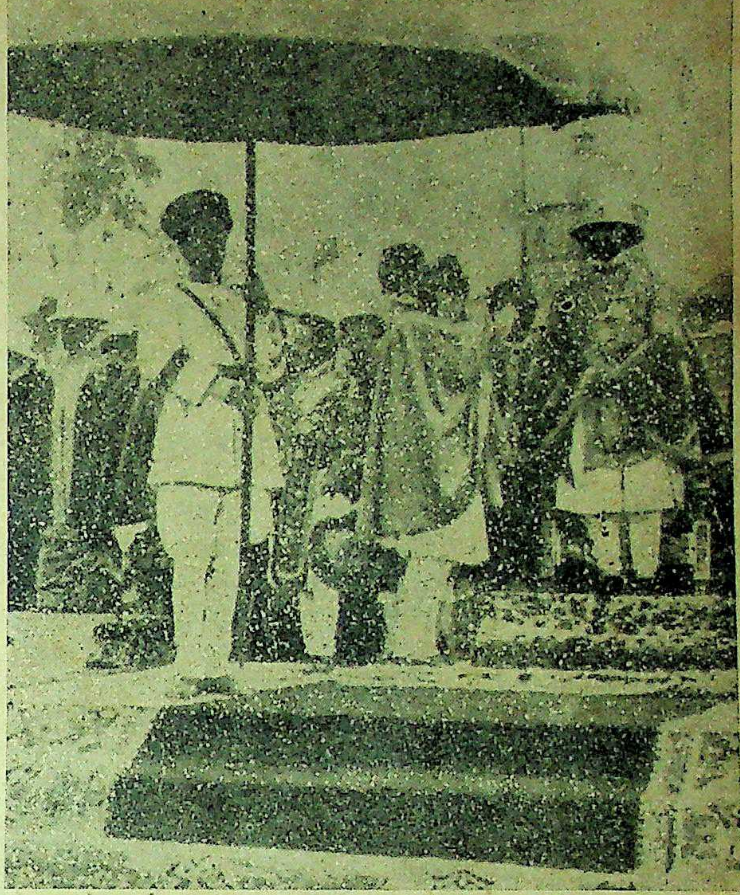

सन् १९३० में इथोपिया के बादशाह रासतफारी के राजगद्दी के अवसर पर लिया गया एक चित्र।

सोशल डेमाक्रेटों की इस पराजय का भाग्य-विधाता उनका अनुभवी नेता पायत्रो नेनी है, जो फासिस्ट शासन में काफी वर्षों तक निर्वासित रहा है और जिसने समाजवाद को लोकतंत्र से सदैव अधिक महत्त्व दिया है। स्पेन-युद्ध और उसके परवर्ती काल से ही नेनी अपने इस निष्कर्ष को घोषित करता आया है कि राजनीतिक शक्ति के उपार्जन का एकमात्र मार्ग वामपक्षीय दलों को एक सुदृढ़ संघ में संगठित करना ही है। इसी निष्कर्ष के फलस्वरूप उसने सदैव कम्यूनिस्टों के साथ सहयोग करने की नीति अपनाई है। इस नीति का परिणाम आज यूरोप में स्पष्ट है। कम्यूनिस्टों ने सोशलिस्टों से सहयोग करके सारी सत्ता अपने हाथों में केन्द्रित कर ली है। हंगरी, रूमानिया और चेकोस्लोवेकिया में कम्यूनिस्ट-विजयों की यही प्रणाली रही है। फ्रांस में भी कम्यूनिस्टों ने इस प्रणाली को अपनाया था, किंतु वहाँ के सोशलिस्ट समय पर सजग हो गये। अतः इटली में क्रिश्चियन डेमाक्रेट यदि साहस और दूरदर्शिता से काम नहीं लेते तो आज नेनी की भाँति के फलस्वरूप इटली पर भी कम्यूनिस्टों की सरकार स्थापित हो जाती। नेनी की इस नीति से उसकी स्वयं की पार्टी खंड-खंड हो गई थी।

इटैली

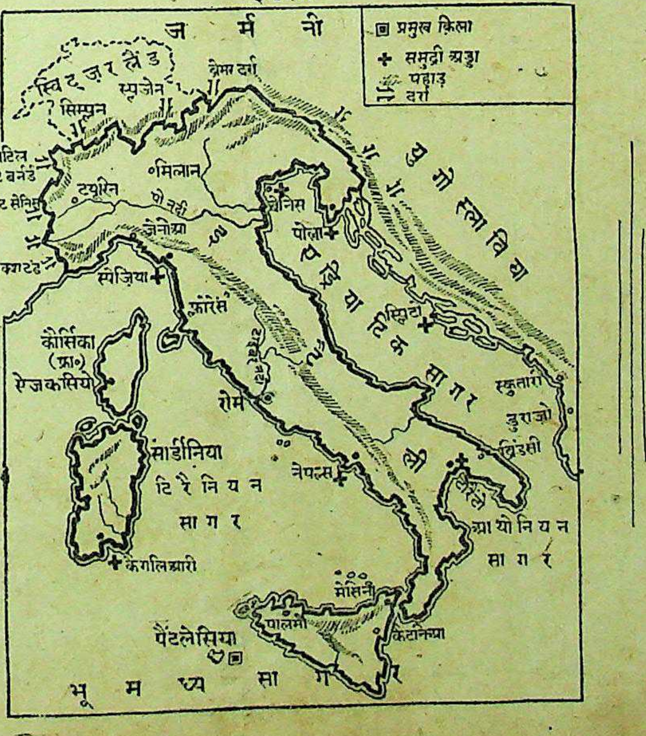

शेष पेज १८ पर देखिए

समाज-शिक्षा का नया आन्दोलन

केन्द्रीय तथा प्रांतीय सरकारों को भारतीय स्तर ऊँचा करने के लिये क्या करना चाहिए।

लेखक, श्री सहदेव चक्रवर्ती विद्यालंकार (पत्रकार)

> भारत के शिक्षा-मन्त्री मौलाना अबुल कलाम आजाद ने समाज-शिक्षा की एक नई योजना प्रस्तुत की है। इस लेख में लेखक ने समाज-शिक्षा की उपयोगिता का वर्णन करते हुए उसकी आवश्यकता बतलाई है। लेख सुन्दर और पठनीय है।

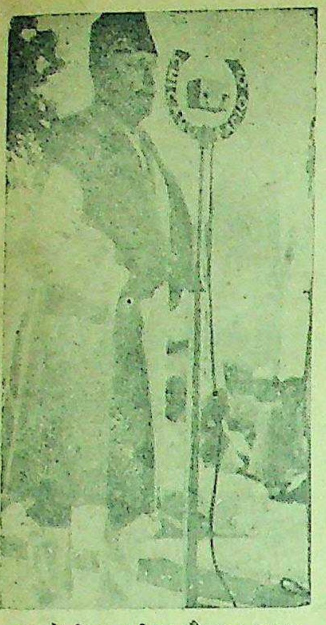

भारत के शिक्षा-सचिव मौलाना अबुल-कलाम आजाद।

भारत-सरकार के शिक्षा-मन्त्री मौलाना अबुलकलाम आजाद ने गत ३१ मई को दिल्ली के एक पत्रकार-सम्मेलन में केन्द्रीय सरकार की भावी शिक्षा-नीति पर प्रकाश डालते हुए देश में समाज-शिक्षा के सूत्रपात का भी संकेत किया था। शिक्षा-मन्त्री ने समाज-शिक्षा के सम्बन्ध में दी गई एक घोषणा में कहा था कि पहले भारत-सरकार का शिक्षा-विभाग बुनियादी शिक्षा के साथ-साथ दिल्ली-प्रान्त के शिक्षालयों में समाज-शिक्षा के क्षेत्र में भी परीक्षण करेगा। इसके बाद उसकी न्यूनताओं तथा प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करने के बाद समाज-शिक्षा को अन्य प्रान्तों में भी पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग बना दिया जायगा। वस्तुतः हमारे देश में समाज-शिक्षा के प्रचार की अत्यन्त आवश्यकता है। इससे स्वतन्त्र लोकतन्त्रीय भारत की जनता में अपने उत्तरदायित्व तथा कर्तव्य-भावना को हृदयङ्गम करने का प्रबल विचार उत्पन्न होगा। देश में नये विधान के अन्तर्गत वयस्क मताधिकार की परम्परा के सूत्रपात के साथ मतदाताओं को अपने नागरिक अधिकारों के प्रयोग का भी ज्ञान होना अनिवार्य है। यदि मतदाताओं को लोकतन्त्र तथा नागरिकता की उच्च शिक्षा दी जाय तो कोई भी दल-विशेष अथवा स्वार्थी व्यक्ति उन्हें पथभ्रष्ट करने में सफल न हो सके।

समाज-शिक्षा पाठ्यक्रम का वह अंग है जिससे जनता में स्वतः नागरिकता की भावना उत्पन्न होकर उसमें सामाजिक रूप से संगठित होने का विचार पैदा होता है। समाज-शिक्षा की सरल-सीधे शब्दों में यही परिभाषा है। ब्रिटेन और अमरीका में समाज-शिक्षा का प्रचार पर्याप्त मात्रा में है और वहाँ इसे 'उच्च शिक्षा' तथा 'औपचारिक शिक्षा' के नाम से स्मरण किया जाता है।

समाज-शिक्षा के उद्देश्य

समाज-शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य, यह हैं—

(१) जनता को सतत परिवर्तनशील, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन की गति-विधि से परिचित कराना तथा उसके हृदय में आत्म-विश्वास की प्रतिष्ठा कर उसे देश के उज्ज्वल भविष्य के प्रति निष्ठावान बनाना।

(२) जनता में राजकाज के कामों, राष्ट्रीय विकास के कार्यक्रमों तथा सामाजिक पुनर्निर्माण की समस्याओं के प्रति जीवित-जागृत रुचि उत्पन्न करना।

(३) जनता को अपने पड़ोसियों के साथ सुखमय, शान्तिमय जीवन व्यतीत करने का मूलमंत्र देना और उसे सामाजिक जीवन को अधिक उपयोगी तथा आनन्द-दायक बनाने की कला सिखाना।

(४) जनता को वर्तमान युगपरिवर्तन के महत्त्व से परिचित कराना और उसें समाज-विरोधी कृत्यों से संघर्ष करने की शिक्षा देना।

(५) जनता को स्वस्थ जीवन व्यतीत करने की शिक्षा देना तथा घर-बाहर को स्वच्छ रखने की प्रेरणा करना।

(६) जनता को अविलम्ब व्यापक अशिक्षा तथा अज्ञान का मूलोच्छेद करने के लिये संगठित करना और यथाशीघ्र शिक्षा तथा ज्ञान का प्रसार करना।

समाज-शिक्षा के उपर्युक्त उद्देश्यों का यह अभिप्राय नहीं कि शिक्षणालयों में छात्रों को इतिहास, राजनीति, विज्ञान तथा गणित आदि विषयों की शिक्षा नहीं दी जायगी। परम्परागत शिक्षा-प्रणाली यथापूर्व बनी रहेगी। किन्तु इसके साथ इतना तो स्वीकार करना ही पड़ेगा कि केवल साक्षरता-प्रचार से ही भारतीय जनता का कल्याण नहीं हो सकता। वास्तविक शिक्षा तो सामाजिक पुनर्निर्माण के द्वारा ही मिलती है और सामाजिक पुनर्निर्माण सच्ची शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। भारत में दी जानेवाली समाज-शिक्षा के अन्तर्गत जनता को नागरिकता की भावना का ज्ञान कराया जायगा, लोकतन्त्रीय कार्यों के सम्पादन का उपाय बताया जायगा, इतिहास, भूगोल और देश की सामाजिक स्थिति का परिचय कराया जायगा; शिल्प, कला और उद्योगों की शिक्षा दी जायगी, ग्राम्य-गीत, नृत्य और नाटक को महत्त्व दिया जायगा और सबसे बढ़कर जनता को सहिष्णुता, सहानुभूति, विनोद और सद्व्यवहार आदि आचारशास्त्र के आधारभूत सिद्धान्तों की शिक्षा दी जायगी। भारतीय समाज के दैनिक जीवन में घटित होनेवाली घटनायें इस बात का ज्वलन्त प्रमाण हैं कि अभी हमारे देश में इन सब चीजों का अभाव है।

लोकतन्त्र और समाज-शिक्षा

अभी भारत में दूसरे देशों और विशेषतया ब्रिटेन तथा अमरीका के इतिहास की पुनरावृत्ति की अपेक्षा है। जब इँग्लैण्ड में प्रथम सुधारबिल स्वीकार किया गया था तो उस समय एक अँगरेजी राजनीतिज्ञ ने कहा था कि 'जनता ही हमारी वास्तविक स्वामी है। अतः हमें उसे उचित ढंग से शिक्षित करना चाहिये।' इन शब्दों से उसका अभिप्राय यह था कि सर्वसाधारण को इतना शिक्षित कर दिया जाय कि वह उन सब अधिकारों का स्वतन्त्र प्रयोग कर सकें जो उसे लोकतन्त्र नागरिकता के द्वारा प्राप्त हुए हैं। की भी आज यही स्थिति है। नये के निर्माण के बाद देश में केन्द्रीय प्रान्तीय धारा सभाओं, कारपोरे म्युनिसिपैलिटियों तथा ग्राम्य-पंचायतों आम चुनाव होंगे। यदि मतदाता मतदान के अधिकार का उचित प्रयोग न कर सके तो यह हमारे दुर्भाग्य की बात होगी। यह सम्पूर्ण स्थिति इस बात का स्पष्ट प्रमाण है देश में राजनीतिक लोकतन्त्र सफल के लिये प्रौढ़ शिक्षा के साथ साथ शिक्षा का प्रसार भी अनिवार्य है। हमने सामाजिक शिक्षा के लिये आन्दोलन न किया तो हमारे लिये प्रकार के संकट उत्पन्न होने की सम्भावना बनी रहेगी। सामाजिक केवल नागरिक ही उत्पन्न नहीं अपितु उत्तम स्त्रियों तथा पुरुषों को जन्म देगी। इस समय हमारे देश की बड़ी आवश्यकता भी यही है।

साहित्य-निर्माण की आवश्यकता

भारतीय जनता में समाज-शिक्षा प्रचार के लिए तत्सम्बन्धी साहित्य-निर्मा की भी अत्यन्त आवश्यकता है। पाश्चात्य लेखकों ने इस विषय पर अत्यन्त महत्त्व पूर्ण ग्रन्थ लिखे हैं। सर्वश्री एच॰ जी॰ वेल्स, हैरल्ड जे॰ लास्की, जार्ज बर्नार्ड शा, जूनियर हक्सले तथा कार्लाइल आदि आधुनिक लेखकों ने उत्कृष्ट कोटि के नागरिकता-सम्बन्धी साहित्य का सृजन किया है? अमरीकी लेखक श्री कार्नेगी की 'हाऊ टु मेक फ्रैण्ड्स एण्ड इन्फ्लुएन्स दी पीपल' नामक पुस्तक की कई लाख प्रतियाँ अब तक हाथों-हाथ बिक चुकी हैं। किन्तु इन लेखकों का सारा साहित्य अँगरेजी में है। भारतीय जनता अँगरेजी से अनभिज्ञ है। अतः उसके ज्ञान के लिये जनता की भाषा में साहित्य लिखा

शेष पेज १८ पर देखिये

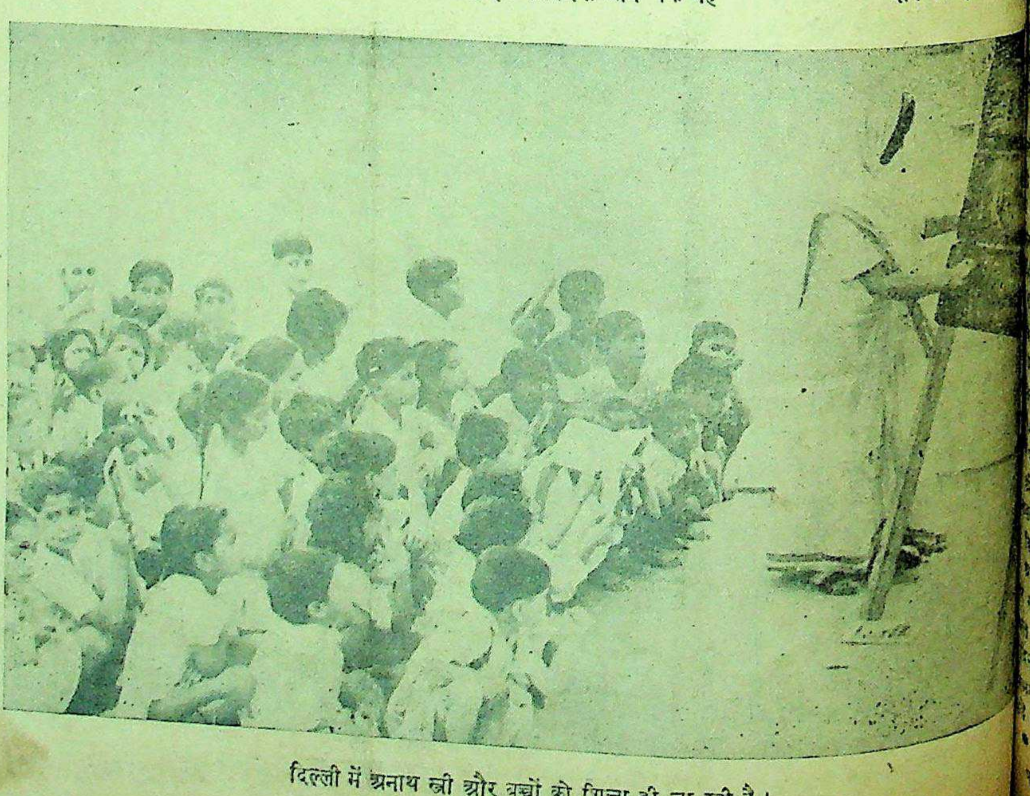

दिल्ली में अनाथ स्त्री और बच्चों को शिक्षा दी जा रही है।

का स्वतन्त्र
तो उसे लोकतन्त्र
प्राप्त हुए हैं।
स्थिति है। नये
द देश में केन्द्रीय
सभाओं, कारपोरे
तथा ग्राम्य-पंचायतों
। यदि मतदाता
र का उचित शिक्षा
ै तो यह हमारे
गी। यह सम्पूर्ण
का स्पष्ट प्रमाण है
लोकतन्त्र सफल
के साथ साथ सामाजिक
भी अनिवार्य है।
शिक्षा के लिये
तो हमारे लिये
उत्पन्न होने की
गी। सामाजिक शिक्षा
उत्पन्न नहीं
ं तथा पुरुषों को
मय हमारे देश की
ी यही है।'

की आवश्यकता

में समाज-शिक्षा
म्बन्धी साहित्य-निर्माण
वश्यकता है। पाश्चात्य
य पर अत्यन्त महत्त्व
। सर्वश्री एच० जी०
लास्की, जार्ज
ी तथा कार्लाइल
ने उत्कृष्ट कोटि के
साहित्य का सृजन
लेखक श्री
एड्स एण्ड इन्स्ट्रूमेन्ट
पुस्तक की कई
हाथों-हाथ बिक चुकी
कों का सारा
भारतीय जनता अँग्रेजी
: उसके ज्ञान के लिये
साहित्य लिखा
ष पेज १८ पर देखिये

---

१५ अगस्त !

स्वाधीनता-दिवस मनाने के लिए राष्ट्रपति की अपील

राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ने भारत की जनता से १५ अगस्त स्वाधीनता-दिवस मनाने का अनुरोध किया है। आपने कहा है कि यह दिन अपने पिछले त्याग और सेवाओं के स्मरण करने तथा भविष्य के लिए दृढ़प्रतिज्ञ होने का है।

राष्ट्रपति ने कांग्रेस कमेटियों से खास तौर पर प्रार्थना की है कि वे उस दिन किसी प्रकार का रचनात्मक कार्य अवश्य करें तथा दोपहर के बाद सार्वजनिक सभा करें, जिसमें भविष्य के लिए सेवा और त्याग करने का व्रत लें।

१५ अगस्त समीप है, इसी दिन को अंग्रेजों के हाथों से सत्ता हमारे हाथ में आई थी। हम स्वाधीन हुए थे। इस से समूचे भारतवर्ष में पूरी खुशियाँ मनाई गई थीं। उस दिवस का ऐतिहासिक स्वाधीनता-दिवस का वार्षिक समारोह इस वर्ष भी खूब समारोहपूर्वक मनाना चाहिये। इस दिन हम अपने पिछले त्याग अपनी सेवाओं और तपस्याओं पर विचार करें, एवं भविष्य के लिए त्याग तपस्या करने का व्रत लें।

आपने आगे बताया कि कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को यह स्मरण रखना चाहिये कि अंग्रेजों से आजादी प्राप्त करनेवाला कार्य पूरा हो गया और हम स्वाधीन हो गए, पर देश तथा यहाँ की जनता को सबल एवं सुखी-सम्पन्न बनाने का काम अभी बाकी है; और यह काम रचनात्मक कार्यक्रम द्वारा ही पूरा होगा।

राष्ट्रपति ने आगे बताया कि देश जब से स्वाधीन हुआ तब से ही साम्प्रदायिक कलह और द्वेष यहाँ अपने विकराल रूप में रहा, हालांकि उसका वह रूप बहुत कुछ बदला, उसमें शिथिलता आ गई है फिर भी पारस्परिक सम्भावना तथा सद्भाव का अभी बहुत अभाव है। करोड़ों शरणार्थियों के, जो बे-घर-बार के होकर इधर उधर मारे-मारे फिर रहे हैं, बसाने का महत्त्वपूर्ण काम करना है। अपने पड़ोसियों के साथ हमें पूरी सम्भावना तथा सद्भाव रखना चाहिये।

देशी रियासतों के सम्बन्ध में चर्चा करते हुए राष्ट्रपति ने बताया कि सिवा एक रियासत के प्राय: सभी रियासतें भारत-संघ में या तो प्रवेश कर गई हैं या बाकी भी निकटभविष्य में ही प्रवेश कर लेंगी। आपने बताया कि इन रियासतों से हमारा सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण ढंग से हो गया है, यह बड़ी खुशी की बात है। आपने बताया कि वह एक रियासत सभी रियासतों से बड़ी है और उसके भारत-संघ में प्रवेश न करने से बड़ी विषम परिस्थिति उत्पन्न हो गई है।

अन्त में राष्ट्रपति ने बताया कि आज सबसे महत्त्वपूर्ण काम हमें करना है वह यह है कि हमें पिछले स्वतन्त्रता-संग्राम से अधिक त्याग एवं तपस्या करने को तैयार रहना चाहिये, और इसीलिये १५ अगस्त को स्वाधीनता-दिवस मनायें और उस दिन अपने पिछले त्याग और तपस्याओं का स्मरण करें तथा भविष्य के लिये बड़े से बड़ा त्याग तथा तपस्या करने का व्रत लें।

*

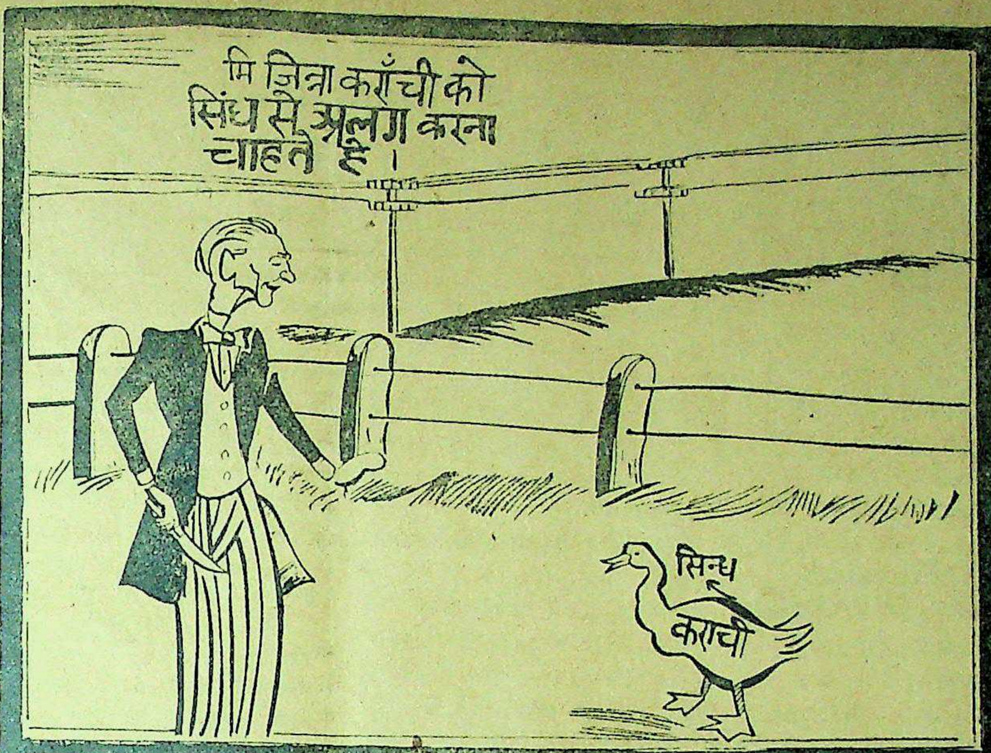
मि जिन्ना कराँची को सिंध से अलग करना चाहते हैं।
सिन्ध
कराँची

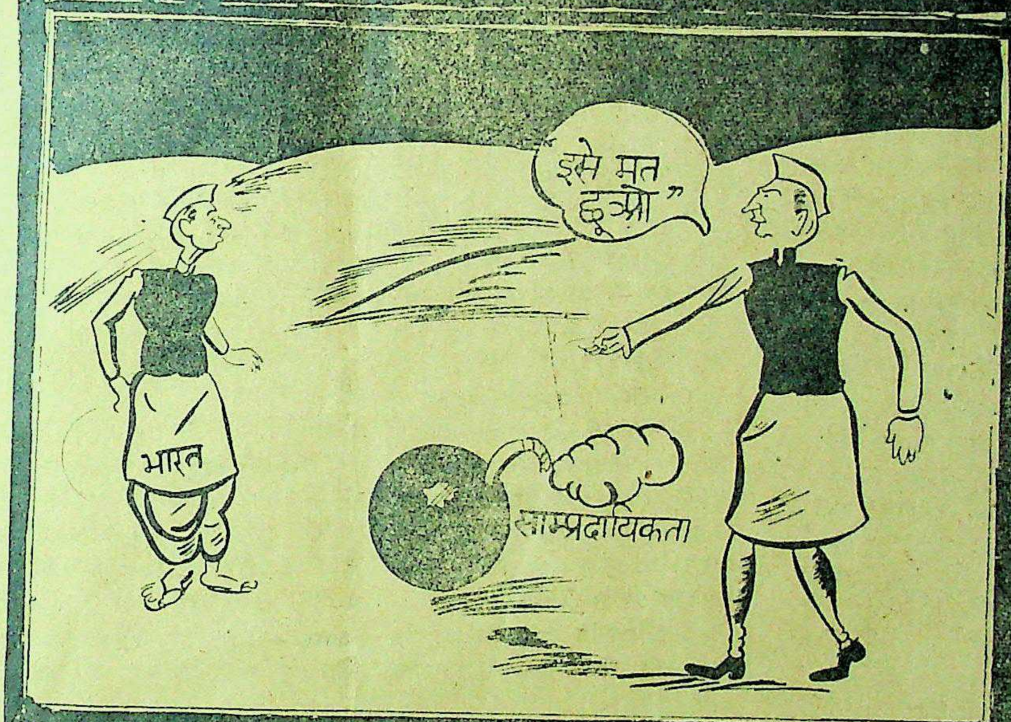

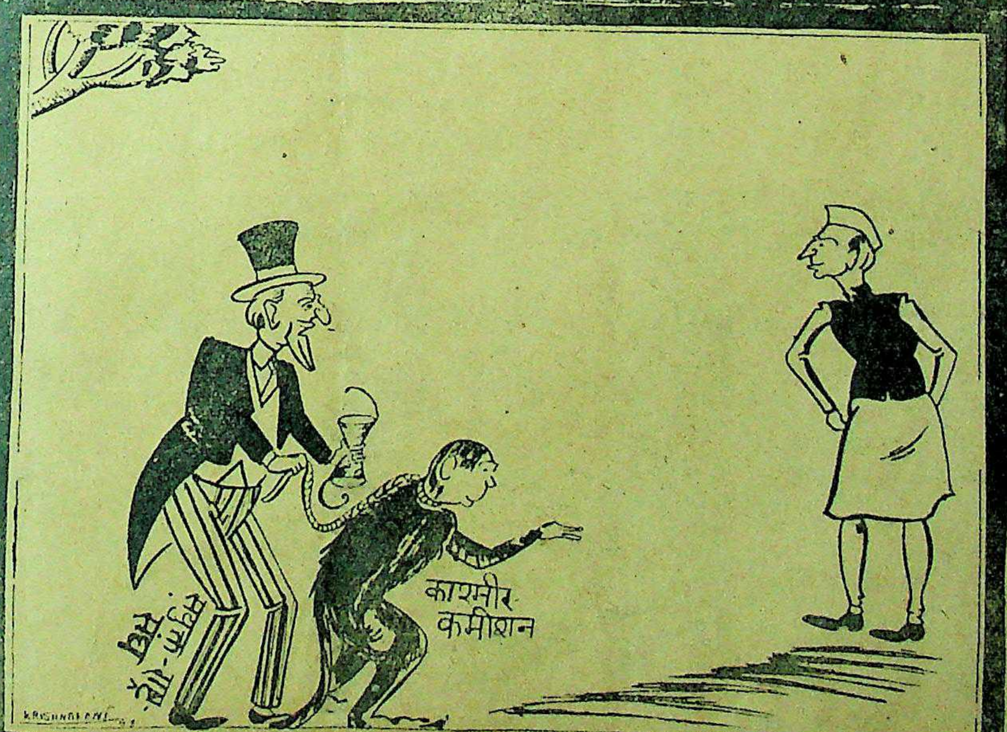

आज की बेकारी कब दूर होगी ?

केन्द्रीय सरकार ने ब्रिटेन की भाँति भारत में भी इस समस्या के हल का मार्ग निकाला है

लेखक, श्री. परिपूर्णानन्द वर्मा

आज शिक्षित तथा अशिक्षित जनता म बेकारी का प्रभाव बढ़ रहा है। पिछले युद्ध के अवसर पर बेकारों की खपत किसी हद तक हुई थी, किंतु इस समय बेकारी समस्या कम चितनीय नहीं है। भारतीय इस समस्या के हल के लिये सचेष्ट हैं। इस लेख में लेखक ने बेकारी की समस्या के उपाय बताये हैं और सरकारी दृष्टि से होनेवाले वैज्ञानिक उपायों पर प्रकाश डाला है। लेख सामयिक और जानकारी से पूर्ण है।

सन् १९३१ की जनगणना के अनुसार हमारी आबादी का केवल ११ प्रतिशत नगरों में रहता था, शेष ग्रामीण थे। सन् १९४१ की गणना के अनुसार यह प्रतिशत बढ़कर १३ हो गया। यानी, ८७ प्रतिशत् लोग देहातों में रहते थे। पिछले आठ साल के भीतर कुछ थोड़ा परिवर्तन हुआ होगा। अब संभवतः १५ प्रतिशत लोग शहरों में होंगे। विशेषज्ञों का अनुमान है कि केवल ४०, ४५ लाख भारतीय इस समय नौकरी पेशा हैं। शेष बेकार हैं, ऐसी दशा में हमारे देश की बहुत बड़ी संख्या बेकार है, बेबस है; महायुद्ध के बाद बेकारी और भी बढ़ गई है। रणक्षेत्र में प्राण देने के लिये तैयार लोग आजकल भूखों मर रहे हैं। बेकार हैं, अतः चोरी-डाका भी बढ़ रहा है।

खेती का काफी सहारा है, पर उस पर बोझ बहुत अधिक है। तीन आदमी पीछे एक एकड़ जमीन पड़ती है। उससे क्या काम चलेगा? अधिकांश भूमि आबपाशी के बिना खराब पड़ी है। अशिक्षा यों ही खाये जा रही है। १००० में कम से कम ८५० आदमी अपढ़ हैं, अतएव बेकारी कैसे दूर हो।

साधारण नियम तो यह रहा है कि हमारी सरकार बेकारों को अपने भाग्य पर छोड़ देती थी। वे जो चाहते करते। सरकार उनके प्रति जरा भी जिम्मेदारी नहीं महसूस करती थी। पर, समय बदल गया है, अब हम यह महसूस करने लगे हैं कि बी० ए०, एम० ए० पास करके महज सरकारी नौकरी के पीछे दौड़ना बेकार है। इससे कोई कल्याण नहीं होता। हमको अपना उद्धार करने के लिये अनिवार्यतः उद्योग-धन्धों की ओर, दस्तकारी इत्यादि की ओर बढ़ना पड़ेगा। पर, क्या काम करें, कौन-सा काम करें, क्या पेशा अख्तियार करें, यह बतानेवाला भी नहीं मिलता। साधन न ज्ञात होने के कारण लाखों बे-रोजगार सड़क पर मारे मारे घूमा करते हैं। जिनको काम करनेवाला चाहिये, उन्हें भी काम करनेवाले कठिनाई से मिलते हैं। तलाश करने पर योग्य आदमी नहीं मिलते। पता नहीं चलता कि अमुक काम के लायक कहाँ से आदमी ढूँढ़ा जावे।

नौकरी-विभाग

पश्चिमीय देशों ने इसके लिये बड़ा वैज्ञानिक संगठन किया है। सरकार की ओर से बेकारी का मुहकमा खोल दिया गया है। वहाँ पर सभी बेकार अपना नाम रजिस्टर करा आते हैं। उनकी योग्यता इत्यादि लिख ली जाती है, मालिक लोग भी अपनी आवश्यकतायें उसी दफ्तर को भेज देते हैं।" दफ्तर उचित आदमी छाँटकर उचित स्थान पर भेज देता है, इस प्रकार किसी बेकार को दर दर ठोकरें नहीं खानी पड़तीं। उसकी योग्यता के अनुसार काम भी मिल जाता है। उसका आत्मसम्मान भी बना रहता है। हर एक व्यक्ति राष्ट्र के लिये मूल्यवान् है। राष्ट्र अपनी मानव-शक्ति का ह्रास सहन नहीं कर सकता, ऐसी दशा में देश का उत्थान रुकता नहीं। ये दफ्तर तो काम करते ही हैं। ये कोई फीस भी नहीं लेते। इनके अलावा कमीशन लेकर नौकरी दिलानेवाली एजेन्सियाँ भी होती हैं; पर, इनमें धूर्तता भी काफी होती है।

अब सरकारी दफ्तरों ने एक नया काम शुरू किया है। उन्होंने कुछ काम सिखाने के लिये स्कूल भी खोल रखे हैं। इन स्कूलों के द्वारा वे समाज के लिये उपयोगी दस्तकारी या यंत्रीय काम सिखा देते हैं और उसके बाद, पासशुदा आदमी को उचित काम दिला देते हैं।

इँगलैंड में

ऐसी काम दिलानेवाली संस्था को "इम्प्लायमेंट एक्सचेंज" कहते हैं। "अनेकेली" ने अपने एक लेख में बतलाया है कि सन् १९३८ में इस संस्था का जन्म इँगलैंड में हुआ था। पहले एक केन्द्रीय रजिस्टर रखा गया था जिसमें सब नाम दर्ज कर लिए जाते थे। इन रजिस्टरों में नाम छाँटनेवाले तथा उचित काम के लिये उचित योग्यता निर्धारण करनेवाले बड़े योग्य व्यक्ति होते थे। हर साल यह विभाग २५, ३० हजार बेकारों को काम दिलाता है, अच्छे काम करनेवालों की तलाश करनेवालों को बड़ी सुविधा हो जाती है। द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति के बाद, इस एक्सचेंज द्वारा ६०,००० व्यक्तियों को काम दिया जा चुका है, इनमें एक हजार स्त्रियाँ भी थीं।

टेकनिकल में मामलों, जिनकी शिक्षा अधूरी रह गई है, उनको शिक्षा दिलाकर काम दिलाने का भार भी यह दफ्तर लेता है। अगर कोई आदमी डाक्टरी पढ़ता था और पढ़ाई छोड़कर लड़ाई पर चला गया तो उसकी शिक्षा पूरी कराने में औसतन १९,९६५) रुपया खर्च करके भी यह संस्था डाक्टर बना देगी; इँगलैंड में पढ़ाई का खर्च काफी पड़ता है। पाठकों को आश्चर्य होगा कि सन् १९४७ में भिन्न विषयों में ९४,३९२ व्यक्तियों की शिक्षा पूरी कराकर इस संस्था ने सनद दिया था। इनके अलावा इसने ६,००० व्यक्तियों को व्यापार-कुशल बना दिया है, इसके तैयार किये आदमी इस समय ५०० पौंड से ७५० पौंड यानी ६,६५५) से ९,९८२) रुपया वार्षिक वेतन कमा रहे हैं।

भारत में

हमारे देश में भी केन्द्रीय सरकार के श्रम-विभाग ने इम्प्लायमेंट एक्सचेंज का दफ्तर संगठित किया है। अभी यह कार्य दो वर्ष पुराना समझिये पर इसी बीच में इसकी ५३ शाखायें खुल गई हैं और सन् १९४८ के अन्त तक ७१ शाखा देने का निश्चय है। संयुक्तप्रान्त में इस सबसे बड़ा दफ्तर लखनऊ तथा कान में है। इतने बड़े देश में केवल दिल्ली प्रधान कार्यालय से काम नहीं चल स था; अतएव कलकत्ता में उपप्रधान का लय खुलनेवाला है। शुरू शुरू में इस जन्म विघटित सेना के सैनिकों के यानी काम पर लगाने के लिये हुआ पर, अब यह संस्था हर प्रकार के बे को काम पर लगाने तथा काम सि और काम दिलाने के काम में लगी हुई संयुक्तप्रान्त में तो यह बड़ा भारी कर रही है। समूचे भारत में यह कम १५,१६ हजार बेकारों को हर काम दिला रही है, क्लर्कों से मिस्त्री या कुली तक का काम भी है तथा मैनेजर और प्रबन्धक भी द्वारा प्राप्त किये जा सकते हैं। इस का कार्यक्षेत्र बहुत ही विस्तृत है।

इसने अपने तत्त्वावधान में काम सि के केन्द्र भी खोले हैं। उदाहरणार्थ और दर्जी का काम, धोने और रंग काम, मोजा बनियाइन का काम, बनाना, ठप्पा बनाना, छापना तथा कई मिलों में काम सिखाने प्रबन्ध हुआ है।

इस प्रकार हमारे देश में वैज्ञानिक ढंग से बेकारी दूर प्रयास हो रहा है। यदि मिल- सरकारी तथा सार्वजनिक दफ्तर अन्य व्यवसाय के लोग इस संस्था लें तथा बेकार भी इसी के द्वारा प्राप्त करें तो निश्चयतः देश कल्याण होगा।

इस लेख के लेखक श्री परिपूर्णानन्द

पूर्वी पंजाब के नये अर्थमंत्री चौधरी कृष्णगोपाल दत्त बड़े राष्ट्रप्रेमी तथा राष्ट्रीयता के पोषक हैं।

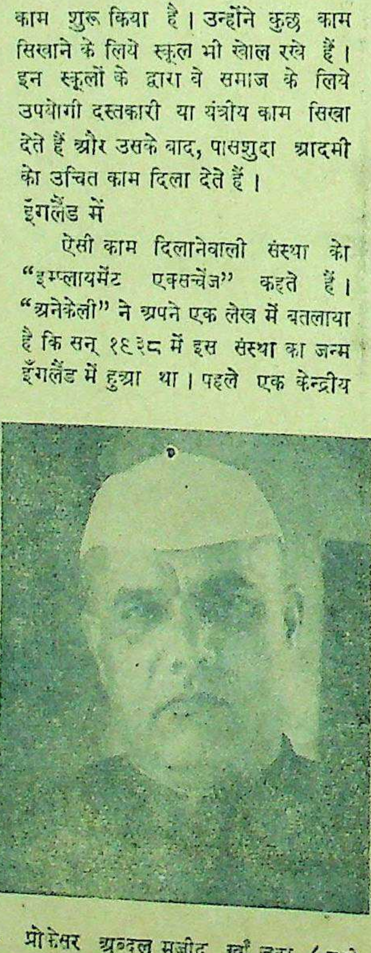

प्रोफेसर अब्दुल मजीद खाँ जहा (सूदो अरब) में हाल ही में भारतीय सलाहकार नियुक्त हुए हैं।

ज्ञानी करतार सिंह, पूर्वी पंजाब के कृषि, जंगलात और सहयोग के मंत्री नियुक्त किये गये हैं।

बी डी० जी० मुहल्कर जापान की ओर से व्यवसाय कमिश्नर किये गये हैं।

रेन्ड साहब! मुझे बचाने का अब छोड़ दो तो ठीक होगा, आपके उपकार के नीचे मैं हूँ। आपने अपने पुत्र के समान अपनाया, यह सत्य है, परन्तु मेरे भाग्य में ऐसे हैं, कि सुख की झाँकी मेरे भाग्य में लिखा ही नहीं, आज समाज और संसार से अन्याय और कुछ भी नहीं मिला, मैंने धैर्यपूर्वक सहा। परन्तु अब ही मेरे ऊपर अन्याय करने को हो गया है; तब मैं क्या करूँ? करने के लिये शुद्ध भाव से जाने लोग मेरे प्राणों को ही लेने को हो गये। इससे मुझे लगता है कि भी अन्याय करने में हाथ डालता भी कोई न कोई कारण अवश्य चाहिये। मानुषी और ईश्वरी दोनों मेरे विरुद्ध पड़ते हैं। इससे मैं हूँ कि मैं अन्याय का भोग बनने ही जन्मा था, इस शरीर के ही ऐसे पड़े हैं कि इसमें न्याय ही बन जाता है; इसलिये इस छूट जाऊँ यही मेरी इच्छा । आप फिर भी मुझे इस संसार का भोग बनने के लिये जिन्दा इन्जेक्शन सुई शरीर में चुभो अधिक दुःख मत दीजिये, शान्ति चरणों में मन को लगाने जिससे सुख और शान्ति से इस छोड़ सकूँ।

मार्टिन ने कहा, "भाई इस घबरा, प्रभु दयालु हैं, वे कभी भी नहीं छोड़ते, तू अवश्य स्वस्थ । इस प्रकार की एक-दो में ही मनुष्य घबरा जावे तो वह कमजोरी समझी जाती है। बीमारियों में इस प्रकार की किस प्रकार चल सकती है? के दुःखी मनुष्यों को सुख की देने के लिये मेहनत करनेवाले दुःख से किस प्रकार हार कर

मनहरलाल ने कहा, "आपका कहना साहब! यदि यह मेरे जीवन की ही कसौटी होती और मैं इसमें , तो जरूर मैं आपकी बात सत्य परन्तु मैं तो जन्म की पहली घड़ी आज तक ऐसा का ऐसा ही पा रहा हूँ। इसीलिये आपके के वचनों में भी मुझे मोह नहीं जीवन के कुछ ही घण्टे शेष हैं, जानता हूँ। इसीलिये अपने जीवन आपसे कहता हूँ; इसको सुनकर आपकी इच्छा मुझे जिन्दा रखने तो वह भी मिट जायेगी। मेरी कथा को सुननेवाला इस संसार में नहीं है। मेरे जीवन के बाद भी और जमनादास के सिवाय कोई आदमी आँसू बहानेवाला भी है।

माता मेरे जन्म के एक घण्टे ही हृदय के बन्द हो जाने से परलोक गई थी, इससे मेरे लिये माता का दूर रहा, परन्तु माता के दूध की भी नसीब नहीं हुई। मेरे पिता की आयु में एकलौते लड़के

कहानी

अन्याय का ग्रहयोग

मूल लेखक, डाक्टर प्राणजीवन मेहता

अनुवादिका, श्रीमती शान्ता अत्रिदेव गुप्त

सामाजिक सेवा मनुष्य को प्रिय बनाने के अतिरिक्त साहसी और दृढ़ प्रतिज्ञ भी बनाती है। सेवा के साथ आत्मा का संयम, मन का संकल्प और आचरण की पवित्रता का कितना सम्बन्ध है, यह मनहरलाल के जीवन से स्पष्ट है। तनिक कदम डगमगाया कि जीवन उलट गया, मनहरलाल जीवन की निर्धनता, मित्रों के प्रेम और अपनी दृढ़ता का कितना हामी था यह उसकी सामाजिक सेवा से स्पष्ट है। नीचे गिरकर उठने की कला मनहरलाल में थी, इस गहन प्रश्न का उत्तर ही इस कथा का सार है। कहानी सुंदर और पठनीय है, साथ ही जीवन के सत्य को निकट लाकर अपना प्रभाव स्थायी बनाती है।

के जन्म के कारण अत्यधिक खुश हुए, परन्तु माता की अकाल मृत्यु के कारण घर के होश बिगड़ रहे थे। मेरे पिता की स्थिति बहुत अच्छी थी, इज्जत भी बहुत थी, इसलिये सब सगे-सम्बन्धियों के आग्रह से मुझे पालने के लिये उन्होंने नई शादी करी। परन्तु भगवान् को मुझे सुख देना नहीं था, इसी से विवाह के दूसरे साल मेरे पिता जी भी मुझे छोड़कर चल बसे। इससे हमारे घर का मालिक मेरा नया मामा बन गया। उसने व्याज का लोभ दिखाकर मेरी नई माता से, पिता जी का छोड़ा हुआ दो-तीन लाख रुपया कब्जे में कर लिया। उसने इस रुपये से सट्टा खेलना शुरू किया। और सात-आठ साल में तो दिवाला निकालकर बम्बई छोड़कर वह भाग गया। हमारे ऊपर एक लाख रुपये का कर्ज छोड़ गया। इस तरह सब जब्त हो गया और मेरी नई माँ इस आघात में रो-रोकर अपघात करके मर गई। इससे संसार में आठ साल की आयु में मैं अकेला पड़ गया। न कोई घर-बार, न पैसा, न कोई सगा-सम्बन्धी। दूर के कुटुम्बियों ने रहम करके मुझे एक बोर्डिंग हाउस में दाखिल कर दिया। मेडिकल कालेज के दूसरे वर्ष में प्रथम श्रेणी में पहले नम्बर से मैं पास हुआ। तब तक

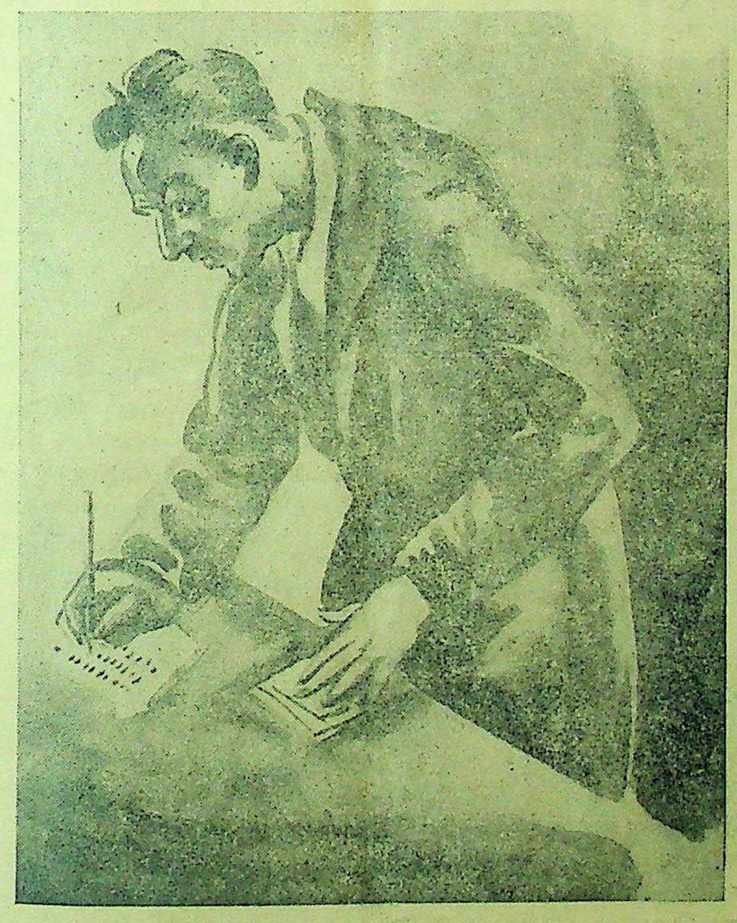

रेवरेन्ड मार्टिन ने कहा—भाई इस प्रकार न घबरा, प्रभु दयालु हैं।

सब उसी प्रकार चला। इस परीक्षा के पीछे एक दिन सर नारायण हमारे बोर्डिंग के वार्षिक उत्सव में प्रमुख, के रूप से पधारे, वहाँ पर मुझे दो इनाम मिले। इससे प्रमुख की दृष्टि मेरी ओर खिंची। जमनादास भाई ने और उसने मेरी हकीकत पूछी। बोर्डिङ्ग के सब विद्यार्थियों में मैं अधिक होशियार और चालाक था। डाक्टरी परीक्षा में मैं अवश्य ही प्रथम श्रेणी में पहला नम्बर ले सकता हूँ, यदि मुझे मदद मिल जाये, साथ ही विलायत में भी कोई अवश्य कामयाबी हासिल कर सकता हूँ। इस प्रकार जमनादास भाई के पास से सुनकर सर नारायणदास ने एकाएक अपनी पुत्री का विवाह मेरे साथ करने का विचार किया। हमारी जाति छोटी, इसलिये लड़कियों की बहुत मुश्किल, अपनी बराबरी का कुटुम्ब में एक भी नहीं; और अकसर लड़कों की शादी छुटपनं में ही हो जाती है; और जो थोड़े बाकी हों, वे बिलकुल साधारण पढ़े-लिखे होने के कारण नारायणदास को पसन्द न पड़ें। ऐसी स्थिति में सर नारायणदास मेरी जाँच करने के लिये थोड़े थोड़े दिनों में आने लगे और कुछ ही दिनों बाद जमुनादास के साथ मुझे अपने बँगले पर भी बुलाया। और थोड़े दिनों के बाद जमनादास भाई ने मुझसे इस सम्बन्ध के विषय में बात कही और आग्रह भी किया। मेरा कोई सगा-सम्बन्धी भी नहीं था, जिससे इस विषय में सलाह लेता। परन्तु जमुनादास बहुत लायक और बोर्डिङ्ग के छात्रों को पुत्र के समान गिनते थे। जीवन की सब इच्छाओं को मारकर अपनी जाति के विद्यार्थियों की सेवा में सारा समय व्यतीत करता था। मैंने उससे सलाह पूछी; उन्होंने स्वीकार करने को कहा, फिर मैंने सम्मति भी दे दी।

एक दिन जमनादास भाई मुझे सर नारायणदास के बँगले पर ले गये। सर नारायणदास ने मुझे कहा कि 'देखो भाई मनहर! तुम्हारी सम्मति से मैं बहुत प्रसन्न हुआ हूँ। आज से हम दोनों इस सम्बन्ध में बँधते हैं। परन्तु यह बात जब तक तुम पास न हो जाओ तब तक अभी गुप्त रखनी होगी। वह दिन मेरा बहुत आनन्द में गया और लगभग डेढ़ साल भी इसी प्रकार से बीत गया। असहकार की हवा चली। कालेज के कितने ही लड़के तो इस वायु के सामने बह गये और कितनों पर इसका कुछ भी असर नहीं हुआ। हम दस लड़कों ने बहुत आगे न बढ़कर केवल मात्र स्वदेशी खरीदने और स्वदेशी वस्त्र पहनने में ही संतोष मान लिया। परीक्षा आई, मैं खादी की टोपी और खादी का सूट पहनकर परीक्षा देने गया। परीक्षकों में किसी किसी को खादी से घृणा थी, इतना ही नहीं अपितु कड़ी दुश्मनाई थी। इनमें से एक ने उलटे-सीधे सवाल पूछकर मुझको घबरा दिया। अब तक के सब परिणामों में कभी भी दूसरे नम्बर के मार्क न लेनेवाला मैं, इस परीक्षा में मुश्किल से पास हो सका। सबको आश्चर्य हुआ; परन्तु मेरी बात कौन माने? भले ही मेरी बात सत्य हो परन्तु जँची किसी को नहीं! सर नारायणदास का मेरे प्रति जो स्नेह था, वह भी कम होने लगा। मेरा हाल सुनकर उलटा वह मुझे ही कहने लगे कि परीक्षा पास आवे, तब तो ठीक याद रखना चाहिये न? अब तक के परिणामों से तुम अपनी शक्तियों पर अधिक विश्वास करके बैठे होगे; परन्तु कहीं ऐसा हो सकता है? बाकी अपनी भूल देखने के स्थान में परीक्षकों में दोष देखना विद्यार्थी-मात्र का स्वभाव है? मुझे इससे बहुत ही आघात लगा। असहकार की छाया में मैं कहाँ से

आया ? अब जब परीक्षा का परिणाम एक बार मालूम हो चुका; तो अब क्या हो सकता है ? अब तो मुझे अपना पानी दिखाने का एक ही उपाय था कि विलायत जाकर किसी नई परीक्षा में चमककर बाहर आऊँ। परन्तु यह बात तभी हो सकती थी जब कि सर नारायणदास मदद करें। जमनादास भाई से मैंने अपना विचार कहा; इन्होंने यह बात नारायणदास से कही। नारायणदास ने 'देखेंगे' कहा। यह बात सुनकर मैं फिर घर आया। तीन मास तक मैंने सर नारायणदास के उत्तर की प्रतीक्षा की परन्तु जब किसी प्रकार के उत्तर की आशा न रही, तब निराश होकर नौकरी की तलाश करनी शुरू की। इसी ही अवसर पर म्युनिसिपैलिटी में हेल्थ अफिसर का स्थान खाली हुआ। इसकी खबर मैंने अपने सहपाठी मित्र चमनलाल को दी; और उसकी सलाह पूछी। चमनलाल हमारी जाति का बम्बई का रईस था। परन्तु अब उसकी स्थिति साधारण थी। पढ़ने में कमजोर; इसलिये दूसरे-तीसरे साल में फेल हुआ, परन्तु अन्तिम परीक्षा की प्रैक्टिकल में मैंने उसकी पूरी मदद कर दी थी, इसलिये वह पहले ही समय पास हो गया। मेरे सम्पूर्ण कालेज-जीवन में यदि मैत्री हुई थी, तो केवल इसी के साथ थी। सर नारायणदास के साथ सम्बन्ध की भी इसको खबर थी। मैंने इसको यह समाचार दिखाया; परन्तु इसका इस विषय पर अच्छा अभिप्राय न हुआ। "यह स्थान कोई आकर्षक नहीं; तुझे किस लिये इस स्थान का मोह करना चाहिये। इससे तो बेहतर है कि सर नारायणदास के पास से पैसा लेकर विलायत जा। इसमें तेरा खर्च क्या होता है ?" इसने मुझे कहा। परन्तु सर नारायणदास के साथ यही एक बात करने की मेरी इच्छा नहीं थी। मुझे अब तो कहीं स्थिर हो जाना चाहिये। इसलिये मैंने इसको अरजी की रूप-रेखा तैयार करने को कहा। अरजी वगैरह तैयार हो जाने पर मैंने इसको लिफाफे में रखकर पोस्ट में डालने के लिये भी चमनलाल को कहा। परन्तु उत्तर की प्रतीक्षा करते करते मैं अधीर बन गया। बीस दिन में मुझे खबर मिली कि यह स्थान तो चमनलाल को मिल गया। मुझे यह स्थान नहीं मिला—इसका दुःख तो जरूर हुआ; परन्तु यह स्थान चमनलाल को मिला; इसका इससे भी ज्यादा आनन्द हुआ। इसलिये आनन्द के उल्लास में मैं उसको अभिनन्दन देने के लिये उसके आफिस में गया, परन्तु उस समय चमनलाल वहाँ न था; परन्तु हेल्थ आफिसर जो हमारे कालेज में प्रोफेसर था, वह वहाँ था। यह मुझको अच्छी तरह से पहचानते थे। एक होशियार विद्यार्थी के रूप में ये मेरे ऊपर अतिशय स्नेह रखते थे। इनके साथ बात करते हुए मैंने इस स्थान के लिये अरजी भेजने का भी जिक्र किया। अरजी की फाइल मँगाई, अरजियाँ देखी परन्तु मेरी अरजी इसमें की नहीं मिली। वह और मैं दोनों आश्चर्य में डूब गये। चमनलाल आया; उसके साथ बात करते ही उसके मुख पर लज्जा की रेखायें पड़ गईं। परन्तु तुरन्त ही इसने अपना साहस इकट्ठा कर लिया, और हँस-हँसकर कहने लगा—"यह तो ऐसे ही चलता है; यार ! तुझे नौकरी का क्या टोटा है ? मुझे मेरे भाई ने इस स्थान के लिये अरजी करने को कहा; इसलिये मैंने अरजी करी; तुम्हारी अरजी दो-तीन पोस्ट आफिस से रह गई, और फिर देर हो गई। इससे व्यर्थ समझकर मैंने फिर डाक में नहीं डाली। ठीक हुआ; परन्तु तेरे ऊपर तो सर नारायणदास की छाया है न ? तुझे क्या कमी है ? चलो चाय पीओ।"

मुझे इस बात को सुनकर बहुत आघात पहुँचा। चमनलाल ने अरजी दी है; यह बात पहले उसने मुझसे नहीं की। यदि यह बात पहले ही इसने मुझसे कह दी होती तो मैं कभी भी अरजी नहीं भेजता। मेरा इतना भी विश्वास यह नहीं कर सका। उलटा इस ढंग से मेरा विश्वासघात किया। मुझे तो अपने नीचे की भूमि खिसकती दीखने लगी। परीक्षा में श्रेणी गई। मित्र के विश्वास से नौकरी गई। यदि सर नारायणदास भी सम्बन्ध के लिये तैयार न हों तो ? जमनादास भाई से मैंने सारी बात कही ! जमनादास भाई ने गम्भीर होकर कहा, "कुछ नहीं; इस कलयुग में जो न हो, सो ठीक ! परन्तु तुमको इतना अधिक निराश होने की जरूरत नहीं। विलायत जाने में तो समय लगेगा ! इससे तुम कुछ उद्यम न करो ? देखो हमारे बढ़वाण में मेरे बहुत से परिचित हैं। वहाँ तुम निजी प्रैक्टिस शुरू करो तो ? शुरू के खर्च का प्रबन्ध मैं कर दूँगा। जमनादास भाई का विचार मुझे ठीक लगा। इससे मैं बढ़वाण गया और वहाँ मैंने दवाखाना खोला। मैं नया डाक्टर था, इसलिये मेरे विषय में अनेक प्रकार की गप्पें उड़ने लगीं। मेरा कम्पाउंडर रोज आकर मुझे ये गप्पें सुनाता। कोई कहता कि यह नया पास हुआ डाक्टर है, इसलिये इसे आज तक के सब प्रयोग मालूम हैं। कोई कहता कि यह तो कोरा पढ़ा हुआ ही है। इतने में एक घटना घट गई। किसी बनिये के लड़के का सिर छत पर से गिरने के कारण फट गया था और वह तत्काल मर गया। गाँव का एक डाक्टर भी उसे देख गया था, उसने भी कहा लड़का मर गया है। सगे-सम्बन्धी, मा-बाप, सब मिलकर रोने पीटने लगे। इतने में वहाँ तो खादीधारी एक समाज-सेवक आ पहुँचा। यह भाई सारे गाँव का चलता-फिरता अखबार था। मुफ्त में अखबार लेकर उसे अथ से लेकर इति तक एक एक अक्षर पढ़ जाता था। इसे समाचार-पत्र का गहरा ज्ञान था। समाज-सेवक बोल उठा—'किसी देश में मरे हुए पुरुष के हृदय को चाक करने की खबर मैंने कहीं पढ़ी है। इस बात का, इस डाक्टर को जरूर पता होना चाहिये। इसलिये इसको बुलाओ। और मुझे बुलाया गया। अपने होश में मैंने यह पहली ही विजिट की थी। मुरदे को मैंने देखा और कहा कि खोपड़ी के फूट जाने से इसकी मृत्यु हुई है। समाज-सेवक बोला—यह तो हम सबको खबर है; व्यर्थ में समय बरबाद न करो। इस लड़के में नई पद्धति से जीवन-संचार करने का प्रयत्न करो। मैं तो कुछ भी नहीं समझ सका। समाज-सेवक ने मेरी हँसी करना शुरू किया। यदि मरे हुए [illegible] करना नहीं आता, तो यहाँ धन्धा किस लिये शुरू किया। यदि आखिरी से आखिरी शोध आती है, तो रहा यह केस, इसे करो जिन्दा ? और नहीं तो बोरिया-बँधना उठाकर चलते बनो। गरीब हिन्दुस्तान का पैसा तुम जैसे लेभगुओं को देने के लिये नहीं है। हिन्दुस्तान के एक कोने में रहनेवाले इस समाज-सेवक के दिल में सारे हिन्दुस्तान की भलाई करने की इतनी प्रबल इच्छा देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। परन्तु अन्तिम से अन्तिम प्रयोग जानने का मेरा दावा नहीं था; इससे मै चलता बना। समाज-सेवक ने तो बम्बई से सर्जन को बुलाकर लड़के को जिन्दा कर देने की प्रवृत्ति उठाई। परन्तु भाग्य से लड़के के सगे-सम्बन्धियों में कोई कोई तो होशियार था; इसलिये समाज-सेवक की सलाह मानने के बदले उन्होंने लड़के की श्मशान-क्रिया कर डाली। फिर भी समाज-सेवक तो अपनी मान्यता पर अटूट श्रद्धा होने से और लड़के को मैं जिन्दा नहीं कर सका; इससे मेरा शत्रु बन गया। उसने तो मेरे विरुद्ध स्थान स्थान पर बातें करके अपनी समाज-सेवा के लिये एक नया क्षेत्र खोल लिया।

इतने में एक दूसरा प्रसंग बन गया। एक दिन शाम को मेरे दवाखाने में एक मोटर आकर रुकी। मोटर में से नगर-सेठ, कारभारी का भाई और रुई का बड़ा व्यापारी उतरा। हँसकर कारभारी का भाई बोला, डाक्टर साहब ! आज आपके लिये ठीक ठीक काम लाया हूँ। डाक्टरी धन्धा ही परमार्थ का है। हमारे चौकीदार का भाई तीन-चार दिन से बीमार पड़ा है। गरीब आदमी ठहरा, दवा-दारू भी कहाँ से करे। और उसने किसी से कहा तक भी नहीं। यह तो तब पता चला कि जब हमारा चौकीदार काम पर नहीं आया कि उसका भाई बीमार है। मैंने कहा, चलो गरीब मनुष्य का भी काम कर देना चाहिये। नगर-सेठ की मोटर मँगाकर तो यहाँ तक आया। सो डाक्टर साहब ! यह परोपकार का काम जरूर कर देना। जो यह गरीब कुछ फीस न दे सके तो कुछ चार्ज न करना। आपके परमार्थी स्वभाव की बहुत-सी बातें भाई जमनादास ने मुझसे कही थीं। इसलिये मैंने सोचा कि यदि डाक्टर साहब को कहूँगा तो सब ठीक हो जायेगा। और वह इधर नजदीक भी रहते हैं। और यदि हमारा चौकीदार आपको बुलाने आये, तो आप अवश्य ही जाना; जल्दी ही उस आदमी को तन्दुरुस्त कर देना। आपको पुण्य होगा। यह कहकर सब मोटर में बैठकर चले गये। चौकीदार बुलाने आया; उसके साथ जाकर उसके भाई को देखकर वापस लौटा और दवा भी दे दी। आठ दिन तक प्रतिदिन मुझे इसी प्रकार फिरना पड़ा, अन्त में कारभारी के चौकीदार का भाई बिलकुल ठीक हो गया। परन्तु उसके बाद न तो कारभाई का चौकीदार दिखाई दिया, और न उसके भाई का पता लगा। विजिट मुफ्त, दवा मुफ्त और दवा की बोतल भी डाक्टर की ही, परमार्थ हुआ दूसरों का। यह संसार का न्याय कैसा ? तीनों लक्षाधिपति मोटर में आये और मैं निर्वाह के लिये पूरा भी कमा नहीं पाता। इनको अपनी गाँठ का चन्दन घिसकर करने के लिये पैरों में महावर और अपने आप बड़ी-बड़ी बातों की गठड़ी बाँधे; मोटर में बड़े बनकर रहे। होगा—जैसी भगवान् की इच्छा

चार दिन के पीछे नगर-सेठ खाने में आया। और हँसकर मुझे लगा—डाक्टर साहब ! आज नब्ज देखो। पहले की बीती हुई सारी हकीकत विस्तार के साथ एक तक सुनाता रहा; फिर डेढ़ घण्टे तक परीक्षा की गई। फिर मैंने दवा कम्पाउंडर को बनाने के लिये कहा। पर सेठ ने कहा कि प्रिस्क्रीप्शन दे दो ! देखो ! डाक्टर अभी मुझे दवा नहीं लेनी। देशी वैद्य की दवा रही है। हँसकर बात उसने आगे अभी तुम हो नौसिखये; सौ रोगी नहीं, तब तक डाक्टर बने नहीं। मुझे उसका भोग नहीं बनना। तुमको अनुभव की अभी जरूरत है। और तुमको मुझसे मिला—मेरा केस विचित्र था, इससे तुमको ज्ञान इस परोपकार वृत्ति से मैं यहाँ तुम्हारे पास आया था। मैं तुम्हारी की पद्धति से बहुत प्रसन्न हुआ हूँ पीछे मिलेंगे। 'साहब जी—कहकर बना। इस प्रकार उत्तरोत्तर अनुभवों के पाठ से तो मेरे होश ही गये। खर्च नहीं चलता था; चार मास पीछे फिर जमनादास से खर्च के लिये उसके ऊपर यह अनुभव; इतने में भाग्यवश कारभारी के भाई, जिनको महीने से थोड़ा-थोड़ा बुखार रहता जिनकी और जगह दाल गलती नहीं उन्होंने नगर-सेठ से मेरी परीक्षा की तारीफ सुनकर मेरे से दवा कराने विचार किया।

कारभारी साहब के भाई होने काम बातों में ही निकालने के ठहरे। दवाखाने आये और मुझे लगे कि देखो डाक्टर साहब ! अब भाग्य का चक्कर फिरा है; आज विडम्बना तुमने भोगी है; वह सब का मेरा विचार है। मैंने भाई के तुमको गाँव में बड़ा मान विचार किया है। इसी प्रकार एक रकम पर्स के रूप में देने का भी किया है। इसलिये तुमको खूब और प्रयत्न के साथ काम करना बात इस प्रकार है कि मुझे एक शाम को रोज साढ़े निन्यानबे जाता है। साथ में कुछ-कुछ टसका है। ऐसी कोई खास नहीं है; परन्तु मुझे लगा कि जब दवा करनी ही है, तो इस का ही भला करना चाहिये; और इसमें सफलता मिली तो उसे धकेल देंगे। फीस का और पैसे का मन में न करना; मैं तो तुमको कर दूँगा। मैं होश में आ गया लगाकर एक मास तक दवा की; ठीक भी हो गया। दो मास तक बदलकर वापस आया। उसके दो बार मिला भी परन्तु पैसे, सभा का नाम भी नहीं लिया।

शेष पेज १२ पर

मातृमण्डल

भारतीय महिलाओं की कुछ समस्यायें

स्त्रियों को अपनी, अपने देश की और परिवार के सफल निर्माण की चिन्ता करनी चाहिए

लेखिका, कुमारी विमलादेवी राजदान, बी० ए०

उनसे बहुत डरते हैं।" उन्होंने जवाब दिया।

जब मैं चलने लगी तो चारों ओर देखा लेकिन सासु जी को न देख सकी, एकाएक दृष्टि पड़ी वे एक दीवार के कोने में बैठी थीं। उनकी मुख-मुद्रा से ज्ञात होता था कि घर के सारे काम-काज इन्हीं की आज्ञा से संचालित किये जाते हैं। इसके बाद मैं मकान के प्रबन्धक घर के बड़े लड़के से मिला, बड़े परिवार के प्रति बातचीत की। इसके पश्चात् ज्ञात हुआ कि यह लोग एक बड़ा लेकिन संयुक्त परिवार चाहते हैं।

"आपकी माता इतनी कठोर क्यों हैं।" मैंने पूछा आगे फिर तनिक हँसकर पूछा, "यह अपनी पुरानी लकीरें लड़कियों पर क्यों लादती हैं?"

वे मुस्कराये, "वह वृद्धा हैं," उन्होंने कहा, वह थोड़े समय की मेहमान हैं, हम उनकों प्रसन्न रखकर उनका आशीर्वाद चाहते हैं। उनके न रहने के पश्चात् हमें सब कुछ करने की स्वतन्त्रता होगी।"

ठीक इसी प्रकार के विचार आज अनेकों पुरुषों के हैं। पुराने लोगों की श्रद्धा को पालने में वे बहुत कुछ सहते हैं। उनको प्रसन्न करने को जाति-पाँति का भेद, विधवा का अविवाहित रहना, और लड़कियों को अपढ़ रखना आवश्यक है। मध्यवर्गीय लोग भी पुराने लोगों की बात मानने के लिये सदैव तत्पर रहते हैं। घर की बूढ़ी स्त्री को वे लोग डरते हैं, उसकी आज्ञा का आदरपूर्वक पालन करते हैं। लेकिन इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि आनेवाले समय में नई पीढ़ी इन परम्पराओं को समाप्त करेगी। सम्भवतः उसी दशा में भारतीय नारी का उत्थान अति शीघ्र होगा।

आगे आनेवाली नारी-स्वतंत्रता खतरनाक भी हो सकती है। यदि किसी युवक अथवा युवती पर शासन नहीं तो उनकी स्वतंत्रता उन्हें नुकसान देकर पथ-भ्रष्ट भी कर सकती है। ऐसी दशा में उन्हीं वृद्धाओं का स्थान घर के पुरुषों को लेना आवश्यक होगा। इसमें सन्देह नहीं कि यह धारणाएँ आगे आनेवाली पीढ़ी को समाप्त ही कर देंगी—लेकिन इनसे सावधान रहने के लिये प्रत्येक नारी को अपने सम्भव सुधार करना आवश्यक है। इस श्रेणी की नारियाँ अपने बच्चों की भी देखभाल कर सकेंगी, इसमें सन्देह है। इस समस्या के सुलझाने के लिये हमें युवतियों पर तो निगाह रखनी ही पड़ेगी। शनैः-शनैः जब हमारा बौद्धिक विकास होगा तो हमारी स्वतंत्रता के रूप भी सँभल जायेंगे। इन परिस्थितियों के देखते हुए देश के प्रति भारतीय नारियों की जिम्मेदारी अत्यधिक है, क्योंकि आज का लड़का कल को नागरिक होगा और आज की युवती कल को माता बनेगी।

* *

२०।।) में ज्वेलवाली रिस्टवाच

स्वीसमेड ठीक समय देनेवाली ३वर्ष की गारण्टी। गोल या स्क्वायर सेप सुपिरियर २०।।), फ्लाट सेप क्रोमियम केस ३०), फ्लाट सेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५), फ्लाट सेप १५ ज्वेल क्रोम केस ३८), फ्लाट सेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड ७५)।

रेक्टेंगुलर, कर्भ या टोनो सेप क्रोमियम केस ४२), सुपिरियर ४५), गोल्ड ६०), रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेलयुक्त ६०) अलार्म टाइम पीस कीमत १८), २२) बीग साइज २५) पोस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेने से माफ।

एच० डेभिड, एण्ड को० (S.P.)
पो० बक्स नम्बर ११४२४, कलकत्ता

मुफ्त

युवको! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीवन फीका हो चुका हो तो भारत भर में सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त रोग विशेषज्ञ कविराज ब्रह्मसरूप बी० ए० लाहौरवाले फतेहपुरी (D.A.) देहली से मशविरा (सम्मति) मुफ्त लेकर अपना जीवन सुधार लें।

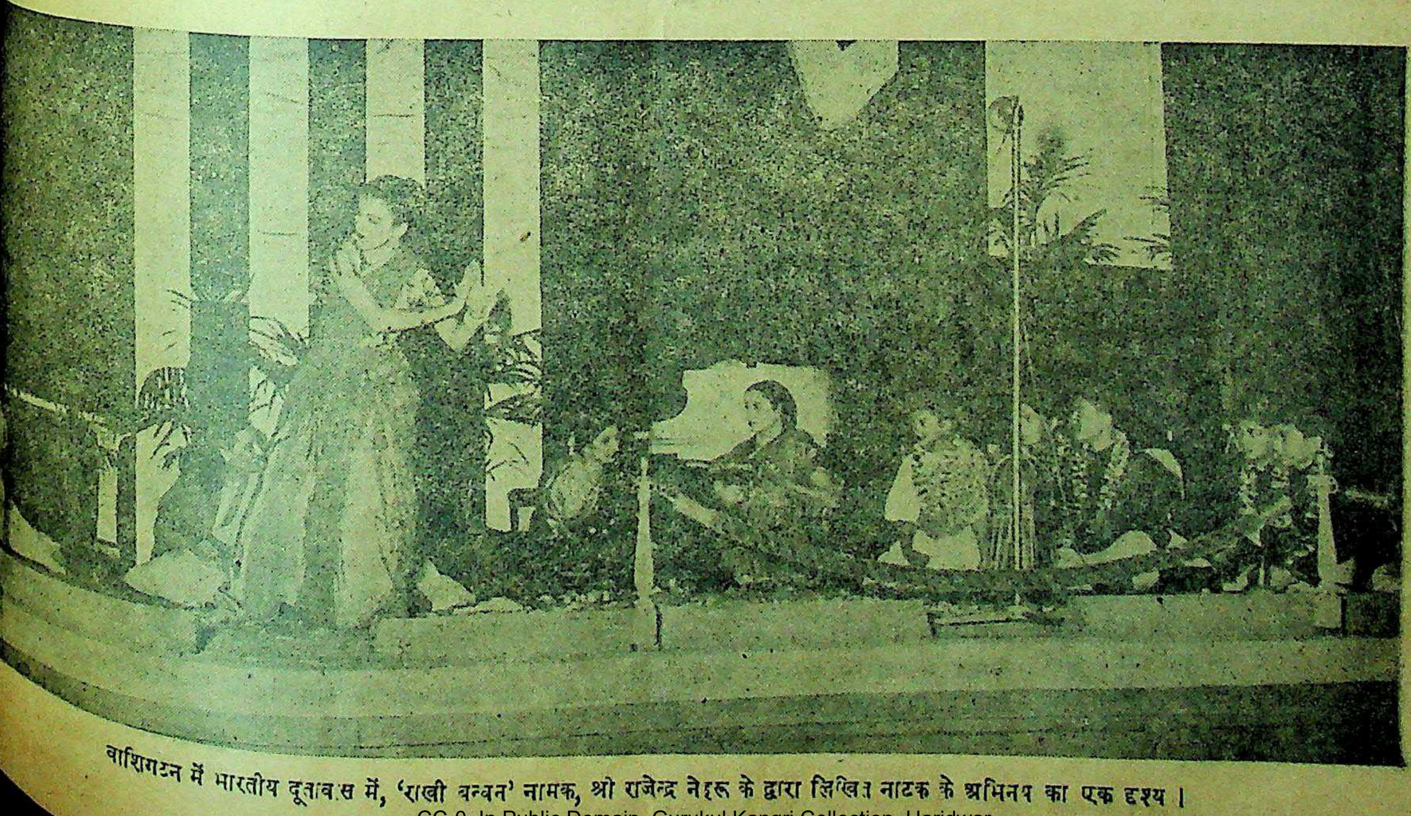

वाशिंगटन में भारतीय दूतावास में, 'राखी बन्धन' नामक, श्री राजेन्द्र नेहरू के द्वारा लिखित नाटक के अभिनय का एक दृश्य।

अन्याय का ग्रहयोग

(पेज १० का शेष)

अपने धन्धे की हानि का विचार करके मैंने ही बात छेड़ी; परन्तु कारभारी के भाई ने उतावली न करने की सलाह दी। सब हो जायेगा; घी के घड़े में घी ही पड़ेगा; तुम्हारा गुण भुलाया जा सके, ऐसा नहीं है। चूँकि कारभारी साहब का कहना है; इसलिये इसकी सत्यता में सन्देह करने की गुंजायश नहीं थी। फिर भी मैंने एक-दो मास तक प्रतीक्षा की; परन्तु कुछ आशा न देखकर मेरी पैसे की चिन्ता बढ़ने लगी।

इधर जमनादास भाई से भी पैसे कब तक मँगाये जाऊँ? इसलिये मैंने दुबारा फिर कारभारी के भाई को कहा कि अधिक जो करना हो, वह तुम तो अनुकूलता से पीछे करते रहना; अब तो मुझे मेरे बिल का ही पैसा दे दो जिससे मेरा खर्च तो चले। कारभारी के भाई को यह बात अच्छी नहीं लगी, वह नाराज हो गया; उसने कहा, 'देखेंगे' इस प्रकार यह छोटा सा जवाब देकर उसने छुटकारा पाया। थोड़े दिनों के बाद मेरा कम्पाउंडर खबर लाया कि कारभारी का भाई मेरे ऊपर बहुत नाराज है; और मेरे से बदला लेने का कोई उपाय ढूँढ रहा है। इससे मुझे कुछ चिन्ता तो जरूर हुई; परन्तु साथ ही तुरन्त मुझे विचार आया कि मैंने अपना बिल माँगने के सिवाय और तो कुछ भी कारभारी साहब के भाई का बिगाड़ा नहीं है। मैंने तो उलटा उन पर उपकार किया है; अपनी प्रामाणिक मेहनत के पैसे माँग रहा हूँ; इसमें मेरा अपराध ही क्या? ईश्वर तो सबको ही देखता है न? इस प्रकार मन को समझाकर मैं बैठा ही था कि इतने में फिर से कारभारी का भाई मेरे पास आया; और उसने बुखार के लिये दवा माँगी, और मैंने उसे दे दी। दिन छिपने के समय यह फिर दवाखाने में आया, शाम का समय था, इसलिये लोगों की भी चहल-पहल थी। इसका लाभ लेकर वह मुझे उलाहने देने लगा। इस दवा में क्या मिलाया है डाक्टर? चिकित्सा कहीं की भी है; या यों ही गाँव को मारने निकले हो। इस प्रकार कुनीन दी जाती है? इतनी गरम दवा? मेरे तो बवासीर के मस्सों से खून गिरने लगा। यदि तुमको दवा भी देना नहीं आता, तो दूकान बन्द कर दो?

यदि मेरे भाई को खबर लग गई तो हाल बेहाल हो जायेगा। क्या बड़ा डाक्टर बनकर आया है? गाँव के लोग इकट्ठे हो गये; हो गया होगा भाई नया-नया है, इसलिये दवा में फेर-फार हो गया होगा। यह कहकर कितने ही लोगों ने कारभारी के भाई को रुखसत दी। परन्तु मेरी आँखों के सामने अँधेरा छा गया। इस संसार में यह कैसा न्याय? परोपकार करने जायें, वहाँ पर ऐसे को ऐसा अनुभव? मैं तो उसी रात को बम्बई आ गया और जमनादास भाई से सब बातें कहीं। और अन्त में बदनामी से मैंने दवाखाना भी उठा लिया। बदनामी की छः मास की प्रैक्टिस में पन्द्रह सौ रुपया कर्ज हो गया था। इसलिये बम्बई में आकर कोई काम करने की हिम्मत नहीं हुई। और कहीं पर नौकरी ढूँढ़ने का विचार करता था; कि इतने में अचानक मुझे खबर मिली कि चमनलाल की पत्नी गुजर जाने से सर नारायणदास की पुत्री के साथ उसका विवाह होनेवाला है। यह खबर सुनकर जितना आघात मुझे लगा; उतना ही जमनादास भाई को पहुँचा। जमनादास भाई सर साहब के पास भी गये, परन्तु सर साहब तो पक्के व्यवहारी बन गये! उन्होंने कोई वचन शादी के लिये दिया था, इसका भी उनको याद नहीं रहा। और यदि वचन याद भी रहा हो तो वह वचन के अनुसार अपनी पुत्री का विवाह मेरे साथ करने को तैयार नहीं हैं, क्योंकि इस वचन के लिये कोई प्रमाण या आधार नहीं था। लड़का बहुत दुःखी हो तो मदद के रूप में दो सौ, पाँच सौ रुपये ले जाये; परन्तु उसके साथ विवाह की बात अब करनी नहीं। यह कहकर सर नारायणदास ने जमनादास भाई को विदा किया। यह प्रसंग बनते ही मेरे सबरस संसार से चले गये। जिसे संसार में जन्म से ही अन्याय मिलना शुरू हुआ उसको संसार में जीने से क्या लाभ? दुःखी जीवन का अन्त करने का विचार लिया। जमनादास के पन्द्रह सौ रुपये का कर्ज मेरे ऊपर था; उसको दिये बिना मैं कैसे मर सकता था। जमनादास भाई ये रुपये माँगते भी नहीं थे और न उन्होंने ये रुपये मुझे वापस लेने के लिए ही दिये थे। ऐसा उन्होंने कई बार मुझे कहा; परन्तु मेरा दिल इस प्रकार इनका पैसा डुबाना नहीं चाहता था। आठ दिन तक मैंने धक्के खाये; परन्तु एक भी रास्ता नहीं सूझा; फिर भी एक दिन रात्रि में दरिया में कूद पड़ा।

दरिया में कूदने पर भी मेरा भाग्य तो मुझसे एक पग आगे ही था। एक मिशनरी ने मुझे बचा लिया; वह मुझे मिशन हस्पताल में ले गया। मेरा हाल सुनकर उसने और उसके भाई ने मुझे परदेश भेजने का विचार किया। बड़ा खर्च करके डाक्टरी के अभ्यास के लिये यूरोप या अमेरिका आदि भेजा जाये, तो वातावरण भी बदल जायेगा और समय का भी सदुपयोग होगा। मेरे जीवन को शान्ति भी मिलेगी। परन्तु इसके लिए बड़े खर्च की जरूरत है; और वह खर्च तब किया जा सकता है, जब मैं क्रिश्चियन हो जाऊँ; और यदि मैं क्रिश्चियन नहीं होता, तब कुछ नहीं हो सकता। यहाँ का मेरा जीवन तो मृत के समान हो ही गया था। समाज मुझे सँभाल सके, इसकी कोई आशा दीखती नहीं थी। इससे यदि धर्म-परिवर्तन में इतना पाप करना पड़े, तो इस पाप के प्रायश्चित्त रूप में मन-वचन और कर्म से केवल परमार्थ भाव से जीवन बिताने का निश्चय करके क्रिश्चियनटी स्वीकार कर ली।

मैं अमरीका गया, वहाँ चार साल रहा। सर्जरी की खास डिग्री सम्मान के साथ लेकर मैं मिशन अस्पताल में सर्जन के रूप में आया। अमेरिका में ईनाम आदि में मिले रुपयों में से बचाकर मैंने जमनादास भाई को दिये; और उसके ऋण से मुक्त हुआ और मैंने अपना सेवा-कार्य आपके साथ शुरू किया। गाँव गाँव फिरकर घर-घर जाकर बीमारों की सेवा करने का प्रयत्न करने लगा; और फिर थोड़े दिनों में यह बनाव बन गया। फिर एक गरीब किसान के लड़के के पैर में कुछ काट गया था; और वह पक गया था। पक जाने के कारण सारा पैर सूज गया था; लड़का बेचारा मौत के मुँह में पड़ा हुआ था। इसके माँ-बाप को समझाकर मैं इसको अस्पताल ले आया। आपरेशन करने का नम्बर भी दूसरे सर्जन ही का था। परन्तु उसके वहाँ हाजिर न होने से, दया के खातिर थके-थकाये मैंने तात्कालिक आपरेशन किया। आपरेशन करते समय मेरे सुई चुभ गई। परन्तु अपने उत्साह में, तथा काम करने की धुन में मैंने उसकी परवाह नहीं की। आपरेशन, दवा, इंजेक्शन आदि से लड़के की जान का जोखिम तो टल गया। परन्तु उसके तीसरे ही दिन मुझे सर्दी के साथ सख्त बुखार चढ़ा; और जहाँ सुई चुभी थी, वहाँ भी चसका होने लगा। आपने तथा दूसरे डाक्टरों ने मुझे देखा; और मेरे खून की भी परीक्षा की। इससे आपको चिह्न अच्छी प्रकार दिखाई दिये हैं। आज चार दिन से आप कितनी मेहनत कर रहे हैं, परन्तु रोग काबू में नहीं आता। इसलिये मुझे लगता है कि मेरा ईश्वर ही मेरे उपर अन्याय करने बैठा है; मेरा मन निराश हो गया है। इसीलिये मैं आपको अधिक तकलीफ न लेने का आग्रह कर रहा हूँ। मुझे पुनर्जीवन देने के लिये, आपने इतना परिश्रम किया; उसका बदला मैं आपको किस प्रकार दूँगा। एक आपने और एक जमनादास भाई ने; मुझे अपने ऋण के नीचे दबा रक्खा है। जमनादास भाई के पैसे का ऋण तो मैंने चुका दिया था, परन्तु यदि उसको आपका तार मिल गया हो और वह मेरी आँख मीचने से पहले मुझे मिल जाये तो मैं मुक्त हो जाऊँ!

मनहरलाल की आवाज धीमी पड़ गई; रेवरेन्ड मार्टिन का हृदय भी यह कथा सुनकर पिघल गया और इतने में जमनादास भाई आ पहुँचे। मनहरलाल को जैसे नया जीवन मिला; इस तरह वह बिस्तर पर बैठ गया और कहने लगा कि आ गये जमनादास भाई! यदि तुम नहीं आते, तो मैं अशान्ति से मरता। मैं सदा अन्याय का भोग बनता आया हूँ। इस पर भी प्रभु ने मेरे ऊपर थोड़ी बहुत दया तो रक्खी है; इसलिये प्रभु को दोष नहीं देता, मनुष्य को भी दोष नहीं देता। दोष तो मैं अपने ग्रहयोग को ही देता हूँ। मेरे ग्रहयोग ही ऐसे हैं, तो फिर दूसरा उसमें क्या करे? इस पर भी जमनादास भाई! मेरे जीवन के अन्तिम समय अपने दो स्नेह भरे सज्जनों की दृष्टि के सामने में अपनी जीवनलीला समाप्त कर रहा हूँ, यह क्या कम आत्मसंतोष की बात है; प्रभु तुम्हारा कल्याण करे। इतना कहकर मनहरलाल बिस्तर पर गिर पड़ा, आँखें चढ़ गईं, और दो हिचकी के साथ वह इस संसार के परले पर किसी नई सृष्टि में चला गया।

* * *

आरोग्य
१८६६
नीलगिरि तेल
गो. लोखांडेकर बंधु

फिल्म ऐक्टर
यदि आप फिल्म ऐक्टर बनकर रु० से १५००) रु० मासिक तक चाहते हों तो आज ही लिखें। लिखा पढ़ा होना जरूरी है। नाम व पूरा पता साफ लिखें।
अमेरिकन कार्पोरेशन
(फिल्म डिपार्टमेंट)
हलका नं० २२ (D.A.) अमृतसर

मुफ्त
असली फोउन्टेनपेन और रिस्टवाच गारन्टी १२ साल, करने के लिये आज ही लिखें। मौका हाथ न आयेगा।
Imperial Corporation (D. A.)
Halka No. 22. Amritsar

वर की आवश्यकता है
१६, २०, ३० वर्ष की पढ़ी सुन्दर कन्याओं के लिए योग्य की आवश्यकता है।
मदनगोपाल बी० ए०, बरना
सदर बाजार, देहली।

मेरी तरह तन्दुरुस्ती हासिल करो
खराब खून को साफ करो
डा. वामन गोपाल
एजेन्ट
जौहरी
एन्ड ब्रदर्स

महाराष्ट्र के हँसोड़ और हास्य-अभिनेता

दामू अन्ना मालवनकर से एक मनोरंजक भेंट का वर्णन

लेखक, श्री उमाशंकर शुक्ल

जैसी कि लोगों की धारणा बन गई है कि सिनेमा में काम करनेवाली अभिनेत्रियों का चरित्र दूषित हो जाता है—यह कहाँ तक ठीक है ?

अभिनेत्रियों पर इस तरह का लांछन लगाना ठीक नहीं है। बहुत-सी अभिनेत्रियाँ पवित्र जीवन सम्मान के साथ व्यतीत करती हैं; उनमें कोई बुराई नहीं। अपनी अपनी भावना है। और फिर सिनेमा ही क्यों—सिनेमा के बाहर क्या भ्रष्टाचार नहीं फैला है ? सिनेमा को बदनाम यों ही किया जाता है।

* * *

दामू अन्ना मालवनकर की कम्पनी अधिकतर मनोरंजक खेल ही रंगमंच पर लाती है। उसमें दामू अन्ना की भूमिका बहुत ही उत्कृष्ट होती है। बिलकुल स्वाभाविक ढंग से वे काम करते हैं। दर्शकों को पता तक नहीं चलता कि वे नाटक देख रहे हैं या स्टेज पर और कुछ। 'उधार उसनवार' संशयकल्लोल एकच प्याला, भाव-बंधन, मानापमान, उसना नवरा, आदि खेलों में विभिन्न भूमिकाओं में दामू अन्ना रंगमंच पर आते हैं और शुरू से अन्त तक दर्शकों को हँसा हँसा कर लोट-पोट कर देते हैं। प्रभाकर नाट्यमंदिर के अन्य कलाकारों का अभिनय भी उत्कृष्ट होता है। कुछ कलाकारों के नाम हैं—वैशंपायन, जोगलेकर, मास्टर काशीनाथ, लता, केसरबाई बड़ोदेकर आदि। मास्टर काशीनाथ स्त्री-पार्ट करते हैं—पहले-पहल देखनेवालों को भ्रम हो जाता है और यह समझ लिया जाता है कि वह सचमुच स्त्री ही है। स्त्रियों के समान हाव-भाव, बोल-चाल आदि सब।

दामू अन्ना पूना के रहनेवाले हैं। आप पहले-पहल बलवन्त संगीत नाटक-कम्पनी में काम करते थे। जब सिनेमा का युग आया तो उक्त मंडली ने सिनेमा-चित्र तैयार करना प्रारम्भ किया। शुरू शुरू में कृष्णार्जुन युद्ध व ठगीचे लग्न में काम किया। उस समय दामू अन्ना को सिर्फ ४५) मासिक वेतन मिलता था। बाद में बाबूराव पेंढारकर के सहयोग में आपने सिनेमा में काम किया और बाईस महीनों तक काम करते रहे। ब्रह्मचारी, देवता, सुखाचा शोध, ब्रांडी ची बाटली, अर्धांगिनी, फिल्मों में काम किया। इस समय उन्हें १००) माहवार मिलता था। धीरे धीरे आप लोकप्रिय होते गये और फिर २०००) माहवार में काम करने लगे और नवयुग फिल्म कम्पनी के, लपंडाव, लग्न पहावे करून, सरकारी पाहुणे में काम किया। माझवाल, चिमुकला संसार, गजाभाऊ, सुभद्रा, बड़ी माँ में भी आपने काम किया। अब तो आप 'कांट्रैक्ट' से काम करते हैं और एक एक फिल्म में काम करने का दस दस हजार रुपये तक लेते हैं। अभी अभी 'चूल और मूल' में आपने काम किया है।

महाराष्ट्र के प्रसिद्ध हँसोड़ अभिनेता श्री दामू अन्ना मालवनकर, 'देशदूत' के तिनिधि श्री उमाशंकर शुक्ल (पत्रकार) के साथ

इतने बड़े अभिनेता होते हुए भी आप बहुत ही सादगी से रहते हैं। न पान खाते हैं, न सिगरेट पीते हैं और न दारू छूते हैं। बातचीत कहने में आपकी नम्रता प्रकट होती है। किसी बात का गर्व नहीं। कोई भी उनके पास बिना 'विजिटिंग कार्ड' के पहुँच सकता है। दिन को आप शहर में नहीं निकलते, क्योंकि उनके पीछे लड़कों का झुंड लग जाता है। दूसरे अभिनेताओं की तरह वे पैसा फूँकते नहीं हैं; किन्तु उसका सदुपयोग करते हैं और उन्हें जो भी आय होती है वह नाटक-कंपनी को बढ़ाने में लग जाती है। यद्यपि नाटक-कंपनी चलाने में उनको आर्थिक दृष्टि से कोई विशेष लाभ नहीं है, पर उनके सामने एक महान् व विशिष्ट उद्देश्य है, जनता की भावनाओं की रक्षा करते हुए उसका मनोरंजन करना। उनका कहना है, कि सिनेमा बीच में बंद हो सकते हैं, क्योंकि सिनेमा के निर्माताओं के पास अब कोई नया प्लाट नहीं बचा है। वही पुराने प्लाटों को थोड़ा-सा हेर-फेरकर दर्शकों के सामने रखा जाता है। दर्शक भी अब ऊब गये हैं और कह उठते हैं कि क्या धरा है इन प्रेम-कहानियों में। जनता नित नूतन परिवर्तन चाहती है, क्योंकि परिवर्तन-शील संसार है। जब सिनेमा का प्रादुर्भाव हुआ तब लोगों ने उसमें विशेषतायें देखीं किन्तु आज तो स्थिति ही दूसरी है किन्तु नाटकों में वह बात नहीं। नाटक नित नया है। उसमें लोगों का आकर्षण बढ़ता है। नाटक में साहित्य, संस्कृति व सभ्यता की त्रिवेणी प्रवाहित होती है, जिसमें दर्शक अवगाहन करके अपने को धन्य समझता है। 'एकच प्याला' खेल पचीस साल पहले का है, फिर भी आज वह समाज को एक नये साँचे में ढालने का यत्न करता है। नाटकों का समाज में अपना एक विशेष स्थान है। पाश्चात्य देशों में भी नाटकों का अपना एक विशेष महत्त्व है। हिन्दुस्तान में तो प्राचीन काल से नाटकों के प्रति प्रेम रहा है। शकुंतला नाटक में कालिदास ने उस समय का जो चित्र खींचा है, आज भी पढ़कर आँखों में आँसू छलकने लगते हैं। जान रस्किन ने लिखा है कि मैं तो उस वस्तु को कला की सबसे महान् वस्तु मानता हूँ जो किसी भी मार्ग द्वारा हृदय में सबसे अधिक और सबसे महान् विचारों को उत्पन्न कर सके।

नाटकों का भविष्य उज्ज्वल है और जनता में अब उसके प्रति आस्था बढ़ने लगी है। देश के कोने-कोने में नाटकों का महत्त्व है। कोई भी बात अगर हमें समाज से कहना है तो नाटकों के जरिये विशेष पुरअसर होती है।

दामू अन्ना मालवनकर अपने उद्देश्य में सफल हों और रंगमंच की प्रगति में वे सहायक हों—यह मंगल कामना है।

(हिन्दीसिंडिकेट, वर्धा)

* * *

परीदेश

यह पुस्तक ख़ास कर छोटे बच्चों के लिए है। इसमें ऐसी एक भी बात नहीं जिसको समझने के लिए माथापच्ची करनी पड़े। इसमें रोजमर्रा की बातें बड़े ही अच्छे ढंग से लिखी गई हैं। बड़े आकार की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों और फूल-पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है। मूल्य ॥)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

सम्पादक के नाम चिट्ठी

राष्ट्रीय गायन की आदर्श रूप-रेखा

राष्ट्रीय गीत से अद्भुत स्फूर्ति, बल, साहस तथा सत्प्रेरणा का प्राप्त होना निर्विवाद है। विवाद का विषय उसके निर्वाचन में ही है। अभी तक भारत सरकार द्वारा एतद्विषयक किसी स्थायी घोषणा को व्यक्त नहीं किया गया है। हाँ, अन्तरिम काल के लिए गुरुदेव के 'जनगण मन' नामक गायन को प्रारम्भ करने की सिफारिश की है। परन्तु इतने पर भी 'वन्दे मातरम्' से आकर्षण छूट नहीं सका है। मद्रास सरकार की ही बात लीजिये। उसने शिक्षा-संस्थाओं को आदेश दिया है कि 'जनगण मन' और 'वन्दे मातरम्' दोनों का ही व्यवहार राष्ट्रीय गीत के रूप में किया जा सकेगा।

विश्वास है कि जन-साधारण और भारतीय नेता इन दोनों में से ही किसी एक को चुनना चाहते हैं। हमारा उनसे नम्र निवेदन है कि इस प्रश्न को अन्तिम रूप से निर्णय करते समय हमारी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को नहीं भुला देना चाहिये। दूसरे देश यदि आज और कल के कवियों की रचना को राष्ट्रगीत के रूप में अपनाते हैं, तो हमें उनका अनुकरण आँखें मूँदकर करने की आवश्यकता नहीं। हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि अधिकांश देशों के पास आज चिर-पुरातन की कोई परम्परागत पूँजी है ही नहीं, पर भारत के पास तो वह अमूल्य सम्पत्ति है, जिसे संसार भर के विद्वानों ने संसार भर का सबसे पुराना वाङ्मय मान लिया है।

मेरे ख्याल से इस वाङ्मय की कुछ पंक्तियों को राष्ट्रीय गायन में अवश्य लिया जाना चाहिए, क्योंकि इस वाङ्मय ने उस समय से भारत को राष्ट्रीय चेतना और सिर ऊँचा रखने लायक स्फूर्ति प्रदान की है, जिसका वर्णन आज कोई इतिहास नहीं कर सकता। केवल दो में से ही एक चुनने की परिधि में हमें नहीं रहना चाहिए, उपयुक्त गायन को उसका न्यायतः प्राप्त अधिकार दिलाना भी हमारा कर्तव्य है। स्वयं मद्रास सरकार ने उपर्युक्त दोनों गायनों के साथ तामिल-नाड में 'वेसीयसैनतमिल' गीत की प्रारम्भिक दो पंक्तियों को राष्ट्रीय गीत के रूप में चुन लिया है।

वैदिक साहित्य में से राष्ट्रीय गीत के चयन के लिए अनेकों सूक्त के सूक्त पेश किये जा सकते हैं। किन्तु संक्षेप के दृष्टि-कोण से केवल दो या पाँच मंत्रों को इस कार्य के लिए चुनना चाहिए। यदि दो का ही निर्वाचन हमें अभीष्ट हो, तो एक मंत्र ऋग्वेद से और एक अथर्ववेद से लिया जाना चाहिए। ऋग्वेद में बतलाया गया है कि विश्व-शान्ति की आकांक्षा रखनेवाले और दूरदर्शी तुम सब और हम सभी विद्वान् मिल-जुलकर, परम विस्तृत और बहुजन की सहायता से सदा-सर्वदा सांगोपांग स्वराज्य-व्यवस्था चलाने को सर्वथा समुद्यत और प्रयत्नशील रहेंगे (ऋग्वेद ५। ६६। ६)

दूसरा मंत्र अथर्ववेद के उस सूक्त में से लिया जाना चाहिए, जिसके बारे में चतुर्वेद भाष्यकार सायणाचार्य ने कहा है कि "गाँव, कस्बे और नगर की रक्षा के लिए आरोग्य, खेती-बाड़ी सत्पुत्र, मणि-मुक्ता-सुवर्ण आदि धन और भू-मंडल में अपार शांति की कामना के लिए यह भूमि सूक्त है।" वास्तव में यह मातृभूमि की गौरव-गाथा और उसकी निष्कपट वन्दना का पूर्ण द्योतक है। मन तो ऐसा करता है कि यह ज्यों का त्यों हमारे राष्ट्रीय गान के रूप में मान लिया जाए। किन्तु विस्तार के कारण यह अशक्य होने से इसका एक मंत्र अवश्य लिया जाना चाहिए। जिसमें निर्देश है कि 'हमारी जिस पृथ्वी पर जौ चावल आदि विविध अन्न होते हैं और जिस पर भूमि, जल, तेज, वायु और आकाश से सम्बन्धवाले चराचर बसते हैं। वर्षा से सुजला और शश्य श्यामला उस मातृभूमि को हमारी सविनय वन्दना है (अथर्ववेद १२। १। ४२)।

यदि पाँच लिये जा सकें, तो इस सूक्त का एक मन्त्र और हो। जिसमें सर्वतो-मुखी कल्याण और कभी पतन न होने की आकांक्षा प्रकट की है (अथर्ववेद १२। १। ३१) इसी प्रकार छत्तीसवें में भी भारत में होनेवाली छहों ऋतुओं के नाम निर्देश के साथ दीर्घ आयुष्य और पूर्णता की कामना की है। इनमें से कोई एक ले लिया जाए। चतुर्थ मंत्र ऋग्वेद का हो, जिसमें स्वराज्य के अनुरूप उत्कृष्ट कार्यकर्त्ताओं द्वारा ईश्वरोपासना और विविध सात्त्विक नियमों के पालन का उल्लेख है (ऋग्वेद १। ८४। १२) अन्त में व्यक्तिगत, समाजगत और विश्वगत शान्ति की प्रार्थना (वा० य० ३६। १७) हों।

इस मातृभूमि वन्दना की भाषा-विषयक काठिन्य की आपत्ति तो नहीं होनी चाहिए, क्योंकि 'वन्देमातरम्' और 'जनगण मन' भी तो सरल भाषा के नमूने नहीं हैं। बाकी रही संगीत की कसौटी पर खरे और कर्णमधुर होने की बात। संगीत-विषयक सफलता के निर्देशन के लिए भी हम तैयार हैं, बशर्ते कि रेडियो के आयोजकों को कृत्रिम भाषा-निर्माण और उसके प्रचार से कुछ फ़ुरसत मिले।

हमें पूर्ण विश्वास है कि राष्ट्रीय गायन की महत्त्वपूर्ण समस्या पर गम्भीर विचार-विनिमय करते समय विश्व के सर्वप्राचीन वैदिक वाङ्मय से सम्बन्ध रखनेवाले इस सुझाव को एक साम्प्रदायिक ग्रन्थान्तर्गत मानकर उपेक्षा से नहीं देखा जाएगा। वेद भले ही कभी किसी सम्प्रदाय-विशेष से अधिक सम्बन्ध रखते हों, किन्तु आज वे भारत की सबसे कीमती निधि हैं। स्वयं हमारे प्रधान मन्त्री नेहरू जी ने अपनी 'हिन्दुस्तान की कहानी' में इसे स्वीकार किया है।

विरला संस्कृत कालेज, पिलानी, जयपुर —आचार्य नित्यानन्द सारस्वत

* * *

आदर्श शिक्षण-संस्था श्री त्र्यम्बक विद्यामन्दिर, नासिक

छोटी छोटी हरी-भरी पहाड़ियों की मनोहर उपत्यका में—जहाँ कलकल नाद-शीला सरिता भी अठखेलियाँ करती बह रही हो—शिक्षण-संस्था की सुन्दर कल्पना कितनी मनमोहक है! यदि ऐसा स्थान समुद्र की सतह से हजारों फीट ऊँचा भी हो तो कहना ही क्या! स्वास्थ्य-प्रद जलवायु और प्रकृति की गोद में पढ़ा हुआ पाठ चिर-स्थायी होता है। त्र्यम्बक विद्यामन्दिर ठीक ऐसी ही जगह है। प्रसिद्ध तीर्थस्थान नासिक से ७ मील दूर शान्त और रमणीय स्थान में समुद्र की सतह से २२०० फीट की उँचाई पर २५० एकड़ जमीन में यह फैला हुआ है। कुछ मीलों की दूरी पर पेशवाओं का इतिहास-प्रसिद्ध श्री त्र्यम्बकेश्वर का मन्दिर, पाण्डवों की गुफाएँ और पंचवटी आदि दर्शनीय स्थान इसकी उपयोगिता बढ़ाने के साथ ही सांस्कृतिक वातावरण का भी सृजन करते हैं।

इसकी स्थापना प्रचलित शिक्षा-पद्धति की त्रुटियों को दूर करने एवं भारत के भावी सूत्रधारों की सर्वाङ्गीण उन्नति के साथ उनमें सच्चरित्रता और सफल नेतृत्व की दृढ़ भावना भरने के लिए हुई थी। इस संस्था ने अब तक काफी प्रगति की है। मामूली सम्पर्क में आनेवाला भी जान सकेगा कि यहाँ के विद्यार्थियों की दिनचर्या भारतीय संस्कृति, सहिष्णुता-पूर्ण धार्मिक शिक्षा, शारीरिक एवं मानसिक विकास करनेवाले उच्च स्तर के मनोवैज्ञानिक प्रयत्नों से किस प्रकार ओतप्रोत की जाती है।

एकता एवं समानता की भावना को प्रोत्साहन देने और जाति भेद एवं पीढ़ियों से रूढ़मूल भेदभाव की कल्पना को तोड़ने के लिए ब्राह्मण से लेकर हरिजन तक के बच्चों की शिक्षा-दीक्षा का एक साथ और समान प्रबन्ध है। यहाँ की व्यवस्था-प्रणाली को देखकर तक्षशिला और नालन्दा के प्राचीनतम विश्वविद्यालयों की जनश्रुतियाँ ताजी हो आती हैं, जहाँ कि बिना जातीय या रंगसम्बन्धी भेदभाव के कोई भी ज्ञानगंगा के अमृत का जल-पान कर सकता था। सब विद्यार्थी समान रूप से ऊँचे उठकर आगे बढ़ सकते थे। उनमें जैसे संसार के सभी देशों के विद्यार्थी पढ़ते थे, उसी प्रकार यहाँ भारत के विभिन्न भागों के होनहार विद्यार्थी आते हैं। अब तक यहाँ १२८ विद्यार्थियों के निवास और शिक्षा का प्रबन्ध है।

यहाँ के शिक्षकों और छात्रों का सम्बन्ध नितान्त स्नेहमय है। सब आपस में प्रेम, सहयोग और सद्भावना के सूत्रों से इस प्रकार बँधे हैं कि एक ही परिवार के सदस्य मालूम पड़ते हैं। संस्कृति, सदाचार और स्वाभिमान की रक्षा में यहाँ के सभी निवासी प्रयत्नशील हैं। यहाँ दूसरे विद्यालयों की भाँति रोटी और रोजगार की समस्या ज्यों-त्यों हल करने पर ही सारा जोर नहीं लगाया जाता, बल्कि पहले मानव को मानव बनाना यहाँ का प्रमुख लक्ष्य है, पीछे और कुछ। यह सब यहाँ के सुयोग्यतम अध्यापकवर्ग के उपलब्ध हो जाने से ही

सका है।

अध्ययन के साथ ही
कौशल, संगीत, चित्रकला,
कूद और सैनिक-शिक्षा देने की
व्यवस्था है। धार्मिक और
में चरित्र-गठन पर विशेष
जाता है। पूर्ण नागरिकता के
लिए सभा, भाषण-प्रतियोगिता,
छोटी छोटी यात्राएँ, रात्रिशाला,
स्टोर, समाज-सेवा, स्काउटिंग,
क्लब तथा विज्ञान-समिति आदि
प्रबन्ध है। विद्यार्थी के स्वास्थ्य
और पूरा ध्यान रखा जाता है।
शारीरिक, मानसिक और
का पूरा विवरण रखा जाता है
समय पर अभिभावकों को उससे
कराया जाता है।

छात्रावास और विद्यालय
बड़े ही कलापूर्ण और उपयोगी
सज्जित हैं। यहाँ सब छात्रों को
और एक-सा दिया जानेवाला
विटामिन और कैलोरियों से
है, जिनका कि स्वस्थ शरीर और
आत्मा के लिए होना आवश्यक
नियमित व्यायाम और छात्रालय
वाले स्वाध्याय तक में शिक्षकों
निरीक्षण की व्यवस्था है।

सच तो यह है कि सारी
सांगोपाङ्ग जानकारी इस अपूर्व
देखकर ही की जा सकती है।
ही यह विश्वास हो सकता है कि
उच्च स्तर की शिक्षा-संस्थाएँ
में विद्यमान हैं। क्यों न हो,
हैदराबादस्थित भारत-सरकार के
जनरल, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के
अध्यक्ष श्री के० एम० मुंशी जैसे
शास्त्री यहाँ की प्रबंध-संचालन-समिति
अध्यक्ष और सर्वश्री घनश्यामदास
शुकदेव पाण्डे तथा ठक्कर
शिक्षा-विशेषज्ञ सदस्य हैं।
बिरला एजूकेशन ट्रस्ट ने त्र्यम्बक
मन्दिर के रूप में एक
अनुकरणीय आदर्श रखा है।

पिलानी (जयपुर) —अखिल

मरदों की गलती

यौवन नष्ट करनेवाले,
गुप्त रोग अथवा अन्दर से खोखले
नीम-हकीमों के पास न फँसें
सख्श स्पेशेलिस्ट कविराज डी०
वजीराबाद वाले मैनेजर
फार्मेसी (रजिस्टर्ड), डाकखाना
पीछे दरियागंज, देहली से
आराम के बाद दें, घर मँगवाने
पी०। अन्दरूनी बेरूनी खाज
ताकत का पूरा समान देखकर
रह जायेंगे।

मुफ्त! मुफ्त!!
आप घर बैठे मैट्रिक,
ए०, पंजाब तथा आगरा
और होम्योपैथिक बायोकैमिक
आसानी से पास कर सकते हैं।
मुफ्त मँगायें। पता:—
इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड)

मयिक समाचारों और विचारों पर यह चित्र क्या बतलाते हैं

पूर्वी राष्ट्रों पर आर्थिक शासन करने का कोई अधिकार नहीं—पण्डित जवाहरलाल नेहरू ओटी-सम्मेलन का उद्घाटन कर रहे हैं।

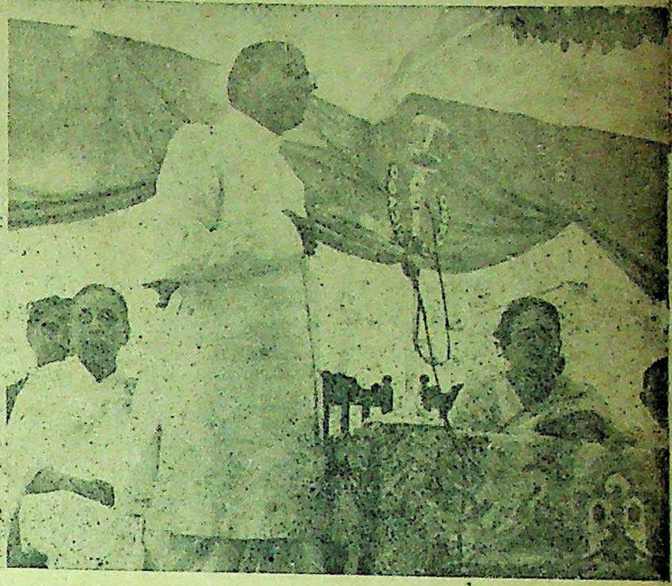

बम्बई के प्रधान मन्त्री माननीय श्री बी० जी० खेर बम्बई में लक्ष्मीनारायण निव गृह पुस्तकालय का उद्घाटन कर रहे हैं।

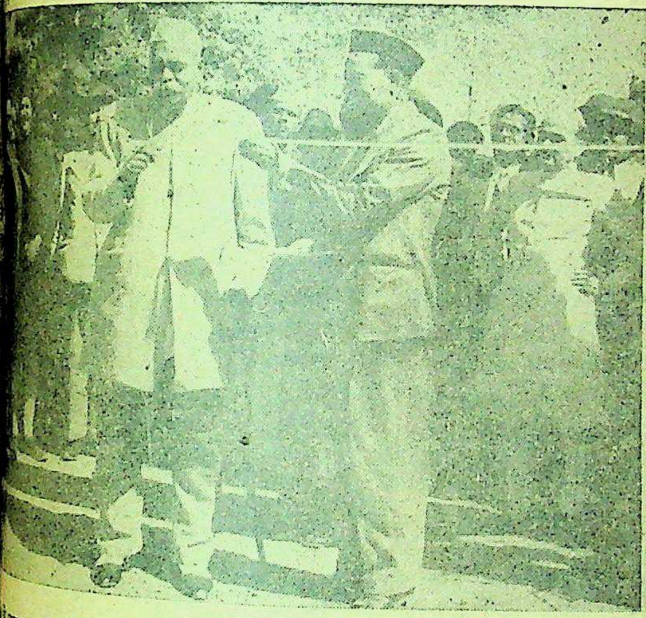

मन्त्री पण्डित गोविन्दवल्लभ पन्त कलाखान (नैनीताल) में भुवाली रोड का शिलान्यास कर रहे हैं।

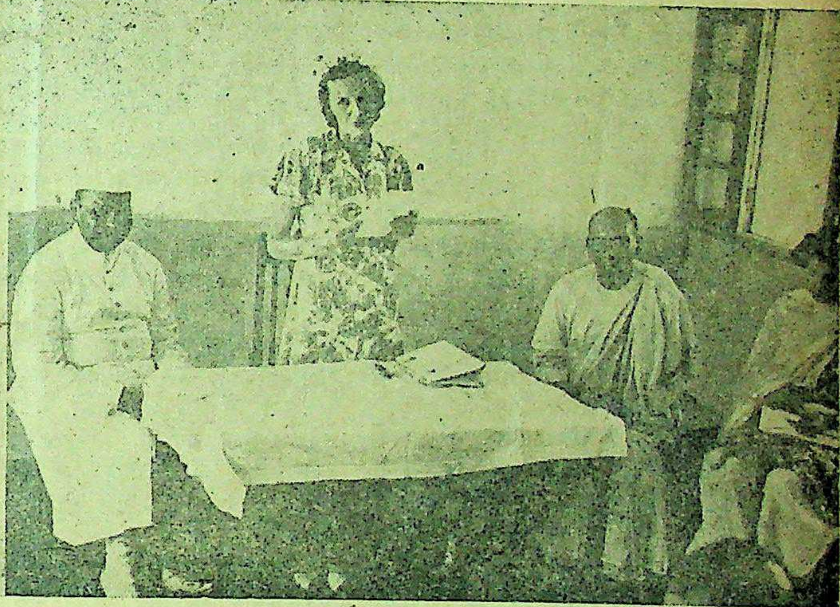

लेडी माउण्टबेटेन भारत से जाने के पूर्व करोलबाग दिल्ली में राम-कृष्ण मिशन स्वास्थ्य-गृह द्वारा दिये जानेवाले मान-पत्र के उत्तर में भाषण दे रही हैं।

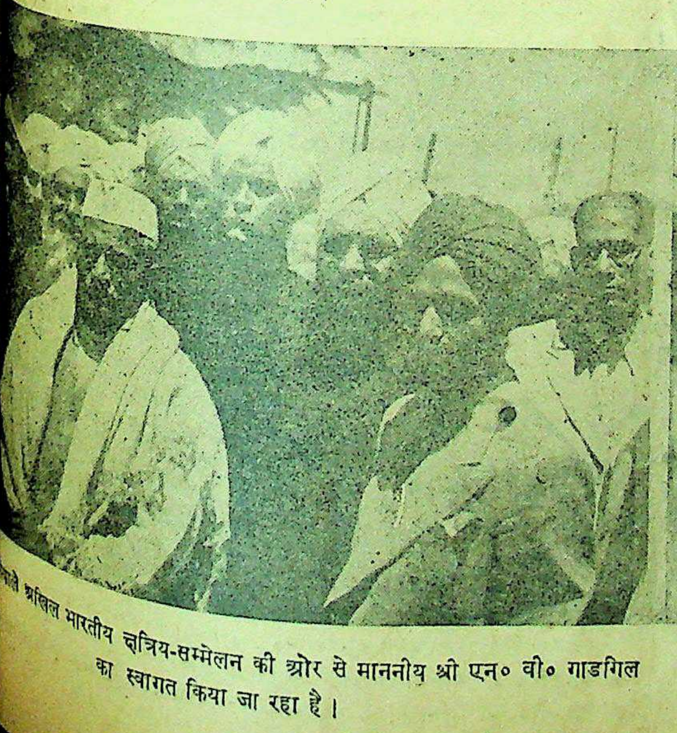

भारतीय क्षत्रिय-सम्मेलन की ओर से माननीय श्री एन० वी० गाडगिल का स्वागत किया जा रहा है।

डाक्टर जानमथाई, दिल्ली के यातायात सर्विस का, जिस पर सरकारी अधिकार हो गया है, उद्घाटन कर रहे हैं।

संवाददाताओं के पत्र

शोलापुर की स्टेट कांग्रेस की खबर है कि मुगली नामी ग्राम जिला उसमानाबाद में उमरगा पयागशाह से तीन मील दूरी पर है। ग्राम में भारतीय संघ का झण्डा बहुत दिनों से लहरा रहा था। झण्डे को निकालने के लिये रजाकारों ने ग्राम पर आक्रमण किया किन्तु ग्रामवालों ने तीन बार रजाकारों को मार भगाया जिसमें एक रजाकार की मृत्यु हुई और कई घायल हुये। रजाकारों के इस पराजय का बदला लेने के लिये उमरगा पायगाह के कलेक्टर, मुन्सिफ, पुलिस अधिकारी और निजामी पुलिस मुगली पहुँची। दो मास पूर्व जेल से छूटे हुये ६०वर्षीय श्रीनिवास राव वकील के घर पर इस दल का आक्रमण हुआ। उन्हें घर से बाहर घसीटकर गोली से मार दिया गया। उनके भाई गोपल राव को पेड़ से बाँधकर गोली से मारा गया। उनकी गर्भवती पत्नी को पुलिस ने लातों से मारा। दोनों के मृतक शरीर का घोर अपमान किया गया। तत्पश्चात् उन्हीं के घर के सामने दोनों को जला दिया गया। जिस समय गोली चलाई गई, कलेक्टर ने यह उद्‌गार निकाले कि "कांग्रेस में जाने का यही नतीजा होता है।" श्रीनिवास रावजी के मकान को जलाकर भस्म कर दिया गया। तत्पश्चात् रजाकारों ने सम्पूर्ण ग्राम को लूट लिया। संवाददाता

* * *

सरनवाडी जिला बीदर पर रजाकारों ने आक्रमण किया और सम्पूर्ण गाँव को लूट लिया। उसके बाद ग्राम के लगभग दो सौ हिन्दुओं को बलपूर्वक मुसलमान बना दिया। अब तक बीदर जिले में सात ग्रामों में सामूहिक धर्म परिवर्तन का समाचार मिला।

हैदराबाद की हुकूमत ने सैकड़ों ईरानियों को पाल-पोसकर रखा है, जो घूमते रहते हैं और चोरी, डाका तथा उपद्रव मचाते हैं। इन पर रियासती पुलिस की निगरानी होती तो है लेकिन केवल इसलिये कि उनकी लूट-मार मुसलमानों के घरों में न हो। जिला बिड के अहमदपुर तालुके में इस प्रकार का एक बड़ा जत्था घूम रहा है। इन इरानियों का एक दल हैदराबाद से चाकुर आया और आसपास के वडवल, जानवल, और तिवट घाट नामी ग्रामों में लूटमार मचाई है। पुलिस कोई प्रबंध नहीं करती। उन्होंने तीन ग्रामिणों की हत्या भी की है।

नेलवाड जिला गुलबर्गा में कल्याणी के मुसलमान वकील और सब इन्सपेक्टर पुलिस ने ग्राम के हिन्दू-मुसलमानों की एक शांति सभा बुलाई और दोनों को मिलकर रहने का उपदेश दिया। जब हिन्दुओं को यह विश्वास हो गया की उनका ग्राम उपद्रव से बच गया तो अचानक कल्याणी, प्रतापपूर, बेलूर और नेलेवाडी के रजाकारों ने मिलकर ग्रामवासियों पर आक्रमण किया और दिल खोलकर लूटमार मचाइ। पता चला है कि यह सब-इन्सपेक्टर पुलिस का षड्‌यन्त्र था।

—संवाददाता

* * *

जयपुर राज्य में सवाई माधोपुर जिले में एक नया ग्रामोन्नति केन्द्र खोला गया है और उसका प्रधान स्थान सूरवाल में रखा गया है।

जयपुर सरकार ने श्री गुलाबचन्द जी काला द्वारा सम्पादित 'पंजाब में पाकिस्तानी गुंडाशाही' और श्री खेमराज प्रेमा द्वारा सम्पादित 'कांग्रेस का खूनी इतिहास' नामक दो पुस्तकों को जब्त कर लिया है। यह दोनों पुस्तकें हिन्दू पुस्तक भंडार, जयपुर से प्रकाशित हुई हैं।

जयपुर राज्य की सीमाओं के बाहर चोरी से माल जाने की रोक-थाम करने के लिए जो फौजी टुकड़ी काम कर रही है, उसने मई महीने में लगभग ३० हजार रुपये का सामान बरामद किया है। इससे गैर कानूनी शराब, अनाज, बनस्पति घी और तम्बाकू के २८ मामले शामिल हैं। गैर-कानूनी शराब के मामले कम हो गये हैं, क्योंकि लेफ्टीनेन्ट कर्नल रणजीतसिंह ने जयपुरवाटी की सीमाओं पर दौरा करके वहाँ की भट्ठियों को नष्ट करने का बहुत प्रयत्न किया है। अनाज के मामले बढ़े हैं, क्योंकि फौजी टुकड़ी ने इस ओर विशेष ध्यान दिया है और राज्य के बाहर विशेषकर जोधपुर राज्य को जानेवाले अनाज को रोका है, जयपुर राज्य में बनस्पती घी की आमद पर रोक है, फिर भी लुहारु, पटियाला, और अजमेर से रेलों और लारियों द्वारा यह आता रहता है, इसकी रोक-थाम के लिये भी फौजी टुकड़ी कोशिश कर रही है।

जयपुर शहर में इस बात की व्यवस्था कर दी गई है कि जो बच्चे स्कूलों में भरती होना चाहें उनमें से जहाँ तक हो सके किसी को भी निराश न होना पड़े, इस वर्ष सरकारी मोती कटला स्कूल में ४००, ऐंग्लो हिन्दी मिडिल स्कूल में ५०० और मन्दिर मुरली मनोहरजी के स्कूल में ३००, इस तरह कुल १२०० लड़कों की भरती का प्रबन्ध किया गया हैं। महाराजा हाईस्कूल दरबारहाईस्कूल, खंडेवाल हाईस्कूल और अग्रवाल हाईस्कूल में ऊँची कक्षाओं के और सैकशन खोले गए हैं। महाराजा हाईस्कूल, जयपुर से पाँचवीं-छटवीं कक्षाएँ हटाकर मोती कटला मिडिल स्कूल, जयपुर में भेज दी गई हैं।

देहातों में स्कूलों के अध्यापक और अध्यापिकाओं का माह मई, १९४८ का वेतन मनीआर्डर द्वारा भेजकर पोस्ट आफिस के सम्बन्धित अधिकारियों को ऐसा प्रबन्ध करने के लिये लिख दिया गया था कि जिससे अध्यापकों को वेतन ग्रीष्मावकाश के बाद स्कूल खुलते ही १ जुलाई को अवश्य मिल जाय।

जयपुर शहर में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा लागू करने के उद्देश्य का प्रयत्न जारी है और स्कूल के लिए इमारतें जनता के सहयोग और अधिकारियों के प्रयत्न से बराबर मिलती जा रही हैं। शहर में ज्यादा स्कूल तब तक नहीं खोले जा सकते जब तक स्कूलों के मकानों की व्यवस्था नहीं हो जाती। इस काम में जनता के सहयोग की और अधिक आवश्यकता है। सरकार ने मन्दिरों में स्कूल खोलने का निश्चय किया है। और बहुत से मन्दिर इस काम के लिए ले लिए गए हैं। अब ऐसे जैन मन्दिर बाकी हैं जहाँ स्कूल नहीं खोले जा सके हैं। सरकार चाहती है कि इन मन्दिरों के व्यवस्थापक भी इस जरूरी काम में सरकार का हाथ बटायेंगे।

—संवाददाता

* * *

ग्वालियर स्टेट कांग्रेस के मुरेना अधिवेशन का कार्य जोरों से चल रहा है। [illegible] के संयोजक कार्यकर्ता अपने अपने विभागों का कार्य तेजी से कर रहे हैं। आगन्तुक मेहमानों के निवास-स्थान का कार्य करीब करीब समाप्त हो चुका है। प्रचार कार्य मोटर द्वारा लाउड स्पीकर पर किया जाने को श्री प्रहलादसिंह व श्रीगोपाल जी शहरी क्षेत्र व देहातों में निकल पड़े हैं। स्वागताध्यक्ष पं० रामनिवास जी समस्त विभागों का कार्य-संचालन कर रहे हैं।

—संवाददाता

* * *

नई दिल्ली शाखा के टिहरी राज्य प्रजामण्डल, के भूतपूर्व प्रधान श्री परशुराम बढ़ोनी 'दीपक' ने एक बातचीत के दौरान में घोषित किया कि "मैं साम्यवाद पर विश्वास करता हूँ। इसलिये मैं हृदय से कम्यूनिस्ट हूँ।" आप भी टिहरी को "स्वतन्त्र इकाई" के रूप में रखने के लिए भारत-सरकार तथा पन्त-सरकार के विरुद्ध खुले आम प्रचार करते हुए पाए गए हैं। स्मरण रहे, श्री परशुराम बढ़ोनी 'दीपक' इससे पूर्व अपने आपको समाजवादी कहा करते थे।

टिहरी राज्य प्रजामण्डल की दिल्ली शाखा के प्रमुख कार्यकर्ताओं से मुलाकात करने पर मालूम हुआ कि टिहरी का विलीनीकरण वे लोग "हिमाचल प्रदेश" में होना पसन्द करते हैं, उन लोगों ने बतलाया कि हमारी राजनैतिक, आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक तथा भौगोलिक स्थिति हिमालय प्रदेश से भली भाँति मिलती है।

—संवाददाता

* * *

पंचपुरी (हरिद्वार, कनखल और ज्वालापुर) की जनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि श्री सनातनधर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब लाहौर (हाल-बिरला मन्दिर नई दिल्ली) के मान्य प्रधान मन्त्री श्री त्यागमूर्ति पूज्य गोस्वामी गणेशदत्त जी महाराज ने यहाँ की बढ़ती हुई आबादी के साथ साथ स्कूलों की कमी का अनुभव करते हुये कनखल में राज दरभंगा हाऊस जो अभी महाराजाधिराज हिज हाईनेस दरभंगा नरेश ने श्री स० ध० प्रतिनिधि सभा पंजाब को दान दिया है—के विशाल भवन में श्री सनातनधर्म हाईस्कूल ८ जुलाई से प्रारम्भ किया है। स्कूल की शिक्षा - प्रणाली यू० पी० के शिक्षा-विभाग के अनुसार होगी। इसके अतिरिक्त शारीरिक और धार्मिक शिक्षा का विशेष तौर पर प्रबन्ध किया गया है। स्कूल को सफल बनाने के लिये श्री पं० महेशदास जी बी० ए० बी० टी० जो गत २८ वर्षों से निरन्तर स्कूलों में हेड मास्टर के पद पर कार्य करते रहे हैं, उनकी सेवाएँ प्राप्त कर ली गई हैं।

—चिरंजीवलाल शर्मा, मन्त्री

* * *

अमेठी (सुल्तानपुर) श्री रणबीर विद्यालय हायर सेकण्डरीस्कूल के रूप में खुल गया। वेद-मंत्रों द्वारा हवन तथा ईश्वर-प्रार्थना के पश्चात् भारी जन-समूह के सम्मुख मुख्याध्यापक श्री बदरीप्रसाद सिंह एम० ए० (प्रीवियस) एल० टी० के अनुरोध पर अमेठी राज्य के युवराज श्री रणञ्जयसिंह जो एक्स-एम० एल० ए० (केन्द्रीय) ने हायरस्कूल का उद्घाटन करते हुये अपने भाषण में कहा—परमपिता परमात्मा की कृपा से आज एक

स्वप्न पूर्ण हुआ। दुर्भाग्य से हमार
नपुर जिला शिक्षा में अपने अन
जिलों से पिछड़ा हुआ है। जब
काशी-हिन्दू-विश्वविद्यालय का
महोत्सव देखकर मेरे स्वर्गीय
राजकुमार श्री रणवीरसिंह जी
उद्देश्यों के साथ १-८-१६ को
वर्ष की अवस्था में आनन्दपाठ
रूप में इस विद्यालय की स्थापना
तब लोग इसे बच्चों का एक खेल
थे और इसके चलने में सन्देह
उन दिनों सुल्तानपुर के देहात
अन्यन्त्र कहीं भी कोई अँग्रेज
नहीं था।

अमेठी के तहसीलदार श्री
मिश्र एम० ए० ने अपने भाषण
लय के स्वास्थ्यप्रद सुन्दर स्थान
करते हुए आशा प्रकट की कि
इसकी उन्नति में सहायक होंगे।

—संवाददा

* * *

पिलानी (जयपुर) के
अखिल विनय और गीएडाराम
'चंचल' द्वारा सम्पादित होनेवा
'हिन्दी-पत्र-पत्रकाएँ' के लिए
पत्रों की एक विराट् प्रदर्शिना
में हो रही है। इन पत्रों की संख्या
२०० के है। बराबर नये नये
हैं। नये समाचार-पत्र नीचे लिखे
आने चाहिए। व्यवस्थापक-हिन्दी
पत्रिकाएँ कार्यालय बिड़ला
जयपुर राज्य

—संवाद

* * *

टिहरी राज्य प्रजामण्डल के
श्री भेपनसिंह जी नेगी ने
को अमर शहीद श्री देव 'सुमन'
बलिदान दिवस मनाने के लि
निम्नलिखित अपील निकाली है—

टिहरी की नारकीय जेल
शहीद श्री देव सुमन ने घोषणा
"मैं अपने शरीर का कण-कण
तक टिहरी के नागरिक अधिकार
करूँगा"। और अन्त में जालिम
शाही की जेल के अन्दर
भूख-हड़ताल के बाद सुमन जी
राज्य की पीड़ित जनता के
लिए अपने प्राण त्याग ही दिये
जी के बलिदान से प्रेरणा पाकर
अधूरे उद्देश्य को पूरा करने
हैं। आजाद टिहरी में हमें
मौका मिला है कि हम अपने
के प्रति श्रद्धाञ्जलिअर्पित कर
जलाई गई 'इन्कलाब' की
रख सकें।

निवेदन है कि इस साल
के दिन को बड़े समारोह
'सुमन' जी का बलिदान
लिए ही नहीं, बल्कि सब
सामन्तशाही के खिलाफ एक
जिसके द्वारा यह स्पष्ट हो
अपने प्राणों की बाजी लगाकर
मिक युगी बर्बरता के इन
धो डालेंगे। हमें आशा है
हासिल करने पर रियासती
जी को भूली न होगी।

स्थ्य और व्यायाम

तुलसी का पौधा भारत का नहीं है?

श्री रामेश वेदी आयुर्वेदालङ्कार,
हर्बल इंस्टिट्यूट, गुरुकुल
काँगड़ी, हरिद्वार

त, ब्रह्मदेश और लङ्का में सब तुलसी पाई जाती है। भारत में र आठ हजार फीट की ऊँचाई ती है। धर्म-कर्मों में उपयोग करने हिन्दू इसे बहुत बोते हैं। श्रीयुत को पंजाब में किसी जगह जंगलों उगी हुई तुलसी नहीं मिली। के घरों में या बागों में उगाई मिलती है। सम्भव है कि इस ह निसर्ग में उगती ही न हो फ्लोरा फार दि पंजाब)। प्रभाव से दूर जंगलों में न मिलने श्रीयुत जार्जवार (डिक्शनरी इकोनोमिक प्राडक्ट्स आफ ने भी सन्देह प्रकट किया है कि भारत की मूल उपज है या नहीं!'

* *

एशिया और अरब से आस्ट्रेलिया तथा प्रशान्त यह पौधा अब फैल चुका है।

* *

देशों में तुलसी पवित्र मानी मेडिटरेनियन के तटवर्ती प्रदेशों रूप से स्वास्थ्य प्रदान पौधा समझा जाता है। (लन्दन, १६०३, पृष्ठ और बुर्नेल का तुलसी है। इसमें जी॰ टी॰ वेगट की इक्लेड्स (१८८५, पृ॰ ३२८) दिया गया है। तुलसी के उद्धरण हमें बताता है कि ग्रीस अपने रहस्यमय गुणों के लिये कहा जाता है कि यह ईसा उग आई थी और इसलिये में यह प्रायः पूजी जाती उत्सव' (सेन्ट बेसिलन्स महिलाएँ इस पौधे की शाखाएँ आशीर्वाद लेने के लिये गिरजे में लौटने पर उसमें से कुछ फर्शों पर एक और रख देती आनेवाला साल उनके लिये हो। घर में रहनेवाले सब तुलसी खाते हैं और बाकी आलमारियों में रख देते हैं। इस कि उनके कपड़े-लत्ते करीब एक चूहों, चुहियों और झींगुरों आदि ।

*

विवरण से ज्ञात होता है कि बाहर यह पौधा लगभग दो से तो अवश्य पवित्र और समझा जाता रहा है। नई तथा और ग्रीक भाषाओं में बेसिल का अँगरेजी नाम) को 'शाही' 'राजा के सदृश' कहते हैं। तुलसी के अँगरेजी और फ्रेंच नामों का अर्थ है—'पवित्र शाही पौदा', या 'पुरोहित का शाही पौदा,' अथवा 'सन्तजनों का शाही पौदा'। लैटिन नाम (ओसियम सेक्ट्स) भी पवित्रता-सूचक है। इन नामों के अनुसार, यूरोप में भी यह पौदा उसी तरह पूज्य और सम्मानित रहा है जैसे भारत में यह मध्ययुग से पूजा जाने लगा था।

* * *

भारत में तुलसी की पूजा का प्रारम्भ हम इतना प्राचीन नहीं खोज पाते। दवा के रूप में भारत में यह प्रायः तीन सौ ईसवी पूर्व से इस्तेमाल हो रहा है। परन्तु, इसकी पूजा तो हम मध्य-युग से पूर्व नहीं खोज पाते। यह कहना भी कठिन है कि ईसवी पूर्व तीन सौ साल से पहले भारतीय तुलसी को जानते भी थे या नहीं? वेदों, आरण्यकों तथा ब्राह्मण ग्रन्थों में तुलसी का उल्लेख तक नहीं मिलता और न ही सर्वमान्य प्राचीन बारह उपनिषदों में ही किसी में।

* * *

लोक में इस पौदे का सबसे अधिक प्रचलित नाम तुलसी है। यह नाम बहुत पुराना नहीं। चरक, शुश्रुत आदि संहिताओं में हम इस नाम को नहीं देखते। उस समय इसे सुरस और अपेत राक्षसी (अपइत राक्षसी, रोगरूप राक्षसों को परे भगा देनेवाला पौदा) कहा जाता था। चरक-संहिता में प्रायः अकरान्त पुल्लिङ्ग शब्द सुरस का प्रयोग हुआ है और शुश्रुत संहिता में अकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द सुरसा का। शुश्रुत का टीकाकार उल्लण सुरसा का अर्थ। 'तुलसी इति लोके' लिखता है। इसका मतलब है कि उल्लण के समय (१०६०-१२६० के बीच में) इस पौदे को लोक में तो अवश्य तुलसी कहने लग गये थे। संस्कृत साहित्य में इस नाम का उल्लेख हमें पहले पहल मध्यकाल में लिखे गये पुराणों में मिलता है। इन पुराणों का रचना-काल सातवीं शताब्दी है। फिर बाद के बने द्रव्यगुण के ग्रन्थों में इस नाम का समावेश कर लिया गया। पुराणों में इसका अति प्रसिद्ध एक नाम वृन्दा है। आयुर्वेद के चिकित्सा-ग्रन्थों में और द्रव्यगुण के निघण्टुओं में भी यह नाम कहीं नहीं आया। चरक शुश्रुत के सुरस व अपेत राक्षसी नाम पौराणिक साहित्य में नहीं उपलब्ध होते।

* * *

शंख और लिखित के धर्मशास्त्र में एक स्थल पर तुलसीपत्र खाने का उपदेश मिलता है। इस धर्मशास्त्र की अब तक मूल प्रति नहीं मिली। इधर-उधर बिखरे हुए अंशों को संग्रह करके भण्डारकर इंस्टिट्यूट ने इसे छपवाया है। इसकी प्राचीनता प्रामाणित मानी जाय तो स्वीकार करना पड़ेगा कि बहुत देर से तुलसी व्यवहार में आ चुकी थी। शंख लिखित तुलसीदल खाने के साथ-साथ चक्र आदि के चिह्न धारण करना भी लिखा है। ये सब वैष्णव सम्प्रदाय की बातें हैं जिनका उद्भव हम बहुत प्राचीन नहीं खोज पाते। धर्मशास्त्र का काल तो प्राचीन है, परन्तु मूलरूप में न मिल सकने से संकलित करके छपाये गये धर्मशास्त्र की प्रामाणिकता में सन्देह पैदा होता है।

अथर्ववेदीय परिशिष्ट में काली राई के प्रकरण में एक स्थल पर तुलसी भू शब्द आया है। पाणिनि के सूत्रों में तुलसी या इसका पर्यायवाची कोई शब्द नहीं। गण पाठों में भी तुलसी शब्द तो नहीं, परन्तु सुरस शब्द आया है। इसका अर्थ तुलसी किया जाय तो इस समय यह पौदा उपयोग में रहा होगा।

* * *

इस प्रकार हमने देखा कि समस्त वैदिक वाङ्मय तुलसी के सम्बन्ध में मौन है। चिकित्सा-शास्त्र की प्रारम्भिक संहिताओं में इस पौदे को तुलसी से भिन्न नामों के अन्दर पहले-पहल वर्णन किया गया। पुराणों में और त्रिपाद्विभूति महानारायणोपनिषद्, सामरहस्योपनिषद्, रामरहस्योपनिषद्, वासुदेवोपनिषद् आदि वैष्णव उपनिषदों में तुलसी नाम से इस पौदे की स्तुति की गई। तुलस्युपनिषद् नाम से एक छोटी सी उपनिषद् ही अलग मिलती है, जिसमें इस पौदे की महिमा तोड़ने की रीति, पानी देना और पूजा-पाठ में इसे बरतने के बारे में निर्देश दिये गये हैं। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए और रोगों को नष्ट करने के लिए इसका उपयोग किया जा सकता है, इस बात की ओर भी तुलस्युपनिषद् कुछ संकेत देती है।

* * *

देवमन्दिर
के लिये
पवित्रता
Godrej
Sandal

सफ़ाई और देवत्व साथ साथ रहते हैं। धार्मिक रीतिके पवित्र स्नान के लिये हमें खास पवित्र साबुन का उपयोग करना चाहिये। साबुन में कुछ भी हो सकता है। लेकिन गोदरेज सॅण्डल साबुन में सिर्फ़ शुद्ध आरोग्यदायी वनस्पती तैलों और सुगंधी चीज़ोंका अिस्तेमाल किया गया है जिसतरह गोदरेजकी दूसरी शृंगारकी चीज़ोंमें किया जाता है। प्राणियोंकी घृणादर्शक चरबी उसमें बिल्कुल मिलती नहीं। शुद्ध म्हैसूरी चंदन के तैलसे भरपूर प्रमाणमें मिश्रित हुआ गोदरेज सॅण्डल साबुन आनन्ददायी शीतल, मुलायम और खुशबूदार फेन देता है। उसकी **वनस्पती तैल युक्त** स्निग्ध बनावट शरीरके रन्ध्रोंको साफ़ रखती है और चर्मको मखमल जैसी मुलायम करके देरतक टिकनेवाली थंड़ाई देती है। अिसलिये हम अपनेको सवाल करके उसका खुद सचाअीसे जवाब देंगे—क्या शरीरकी सफ़ाई के लिये गोदरेज वनस्पती सॅण्डल साबुन के अलावा और दूसरा साबुन हमारे काममें आयेगा!—क्यों की "शरीर देवता का मन्दिर है"।

गोदरेज लिमड़ा
नीम के जंतुनाशक और रोगहर गुणोंसे भरा हुआ साबुन।

नं. १ वतनी लिमड़ा (नीम), टर्किश बाथ, शेविंग स्टिक, शेविंग 'राउन्ड'
नं. २ सॅण्डल

१०० प्रतिशत शुद्ध और पशु चर्बी रहित होनेकी गॅरन्टी।

Godrej चाबी छाप Sandal

गोदरेज सॅण्डल
(चन्दन)
टॉयलेट [नहानेका] साबुन
सॅण्डल के अन्य साबुनों से ज्यादा वजनदार व ज्यादा अच्छा और कम मूल्य।

गोदरेज सोप्स, लि॰—दिल्ली: १६८, चांदनी चौक।

इधर उधर की

पानी पर नये प्रयोग

अमेरिका के प्रसिद्ध डाक्टर काले अपने न्यूनतम प्रयोगों के द्वारा जल-चिकित्सा को नियमित रूप से ऊँचा उठा रहे हैं। अभी तक जल के प्रयोग केवल कुछ साधारण रोगों पर प्रयोग में आये थे, लेकिन डाक्टर काले के प्रयोगों ने यह सिद्ध कर दिया है कि कठिन से कठिन अवस्था भी जल के उपचार से काबू में लाई जा सकती है।

भारतीय पद्धति के अनुसार जल-चिकित्सा का महत्त्व बहुत कुछ है। पश्चिमी प्रयोगों के द्वारा हमें भी अपनी उन्नति को ऊपर उठाना चाहिये। अभी इसके प्रयोग जारी हैं। आशा की जाती है कि निकट भविष्य में यह काम सफलता के साथ पूरा हो जायगा।

* * *

कीड़ा देखने की मशीन

अमेरिका की विज्ञान-परिषद् ने एक यन्त्र तैयार किया है, जो बिलकुल नया और लाभप्रद है। इसके पहले ऐसे किसी प्रकार के यन्त्र का निर्माण नहीं हुआ था। इस यन्त्र के द्वारा हम छोटे छोटे कीड़ों-मकोड़ों को सरलतापूर्वक देख सकते हैं। यहाँ तक कि हवा में जो कीड़े रहते हैं वे भी इस मशीन की सहायता से देखे जा सकते हैं। आकार में तसवीर खींचनेवाले केमरा की तरह है, एक स्थान से दूसरे स्थान आसानी से ले जाई जा सकती है। अभी केवल नमूने के लिये बनाकर विज्ञान-परिषद् को दी गई है। आशा की जाती है कि निकट भविष्य में इस यंत्र का पूरा पूरा प्रयोग समस्त विश्व में सम्भव हो सकेगा।

* * *

समाज-शिक्षा का नया आन्दोलन

(पेज ६ का शेष)

चाहिये। यदि यह साहित्य प्रान्तीय भाषाओं में लिखा जाय तो बहुत अच्छा हो। केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारों को समाज-शिक्षा-सम्बन्धी साहित्य के निर्माण के लिये लेखकों तथा साहित्यकारों को आमन्त्रित करना चाहिये और लेखक तथा साहित्यकार भी उचित भावना, उचित दृष्टिकोण तथा उचित उद्देश्य से प्रेरित होकर साहित्य का निर्माण करें। लेखकों और साहित्यकारों को अपना उत्तरदायित्व समझते हुए समाज-शिक्षा की विभिन्न धाराओं और जन-समस्याओं को सामयिक नाटक, कहानी, गल्प, प्रबन्ध तथा निबन्ध-लेखन द्वारा जनता तक पहुँचाने का प्रयत्न करना चाहिये। किन्तु इस सम्बन्ध में एक बात विचारणीय है और वह यह कि केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारें लेखकों तथा साहित्यकारों के लिये उचित पारिश्रमिक (पुरस्कार) का भी प्रबन्ध करें। इस प्रकार यदि समाज-शिक्षा के प्रचार-आन्दोलन पर ध्यान दिया गया तो हमारे देश को दिन-दूनी और रात-चौगुनी सामाजिक तथा नागरिक उन्नति करने में तनिक भी विलम्ब नहीं लगेगा।

शुभ सूचना

समस्त हिन्दी-प्रेमियों, विद्यालयों तथा कृपालु ग्राहकों को यह शुभ सूचना देते हुए हमें हर्ष हो रहा है कि हमारी लाहौरवाली ब्रांच फिर से दुर्गाचरण रोड, अम्बाला कैंट (पूर्वी पञ्जाब) में आप लोगों की पूर्ववत् सेवा के उद्देश्य से स्थापित हो चुकी है।

मैनेजर
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

हमारे जानवर
लेखक, कुँवर सुरेशसिंह
१०० जानवरों का सचित्र रोचक वर्णन

यह हिन्दी में अपने विषय की पहली पुस्तक है। हम अपने पास-पड़ोस के पालतू जानवरों को जरूर पहचानते हैं। उनकी आदतें और स्वभाव के बारे में भी थोड़ा बहुत जानते हैं, लेकिन इतने ही से क्या हम कह सकते हैं कि हमें सारे पशु-जगत् की जानकारी हो गई है?

इतना ही क्यों, हमें चिड़ियाखाना देखने का भी मौका मिला होगा। लेकिन वहाँ जिस सरसरी निगाह से हमने जानवरों को देखा होगा उनसे भी हम किसी पर विश्वास नहीं दिला सकते कि हमें पशुसमाज का काफी ज्ञान है।

ऐसी दशा में अपने देश के जंगल, पहाड़, बस्तियाँ और मैदानों में फैले हुए सैकड़ों पशुओं के बारे में तरह तरह की मनोरञ्जक बातें जानने के लिए एक ही उपाय है कि आप "हमारे जानवर" की एक प्रति आज ही मँगावें। आपको प्रायः सभी जानवरों का सचित्र वर्णन इस पुस्तक में मिलेगा। मूल्य ४)

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

खुफिया कोकशास्त्र

इसमें स्त्री-पुरुषों के अद्भुत ८४ आसनों की जोड़दार फोटो, ब्लाक की रङ्गीन तसवीरें, यौवन के आनन्द प्राप्त करने के पोशीदा तरीके, प्राचीन जमाने के ऐसे ऐसे भेद जिनका लिखना सभ्यता के विरुद्ध है। जो शादीशुदा न हो उसको यह पुस्तक नहीं दी जाती। मूल्य २॥) रुपया, डाक-खर्च माफ।

खुफिया तस्वीरों के कार्ड
२५ कार्ड का सेट २॥) रुपये में
पता:—कामा को० (D D A) लाहौर रोड—अमृतसर

इटली का द्वन्द्वग्रस्त राजमञ्च

(पेज ५ का शेष)

अमेरिका का कर्तव्य

क्रिश्चियन डेमाक्रेटों की सफलता के रूप में एँग्लो-अमेरिकन संघ ने इटली में जो प्रभुत्व प्राप्त कर लिया है उसका भविष्य और भी अंधकार-ग्रस्त है यदि अमेरिका गेस्परी-सरकार को देश में सामाजिक और आर्थिक सुधारों की योजनायें अत्यंत तीव्र गति से कार्यान्वित करने में सहायता नहीं देगी—इस सहायता के अभाव में डेगेस्परी की क्रिश्चियन डेमाक्रेटिक पार्टी का ही अंत नहीं हो जायेगा, किंतु इटली का ध्वस्त-ग्रस्त समाज बोल्शेविक क्रांति की भाँति एक भीषण परिवर्तन को अपनाने के लिये भी कटिबद्ध हो जायेगा। अमेरिका के सामने यह एक चुनौती है। वास्तव में इटली ही ऐसा प्रधान यूरोपीय देश है जो रूसी नियंत्रण के बजाय अमेरिकन नियंत्रण में शामिल हुआ है। रूसी नियंत्रण में जो देश आये हैं वहाँ राजनीतिक समस्यायें चाहे जैसी हों, किंतु सामाजिक और आर्थिक स्तर पर वहाँ बड़े क्रांतिकारी सुधारों की ठोस योजनायें अपनाई गई हैं। जनता की मूलभूत समस्यायें हल करने के क्षेत्र में पूर्वीय यूरोप के देशों ने काफी लम्बी मंजिल तय कर ली है। इटली की जनता अपने यहाँ किये गये सुधारों के साथ स्वाभाविक रूप से, उनकी तुलना करेगी। यही तत्त्व अमेरिका को हृदयंगम करना है। यूरोप के अन्य राष्ट्र इटली के भावी निर्माण के प्रतिबिम्ब में अमेरिका के शुभ-अशुभ मंतव्यों का मूल्यांकन करेंगे। यदि अमेरिका वर्तमान यूरोपीय राजनीति के विभिन्न और शक्तिशाली तत्त्वों की प्रतिक्रिया को भली भाँति समझ सकेगा तो पूर्वीय यूरोप के रूस-नियंत्रित राष्ट्रों के मनोविज्ञान पर अमेरिकन लोकतंत्र की सत्यनिष्ठा का बड़ा श्रेयस्कर असर पड़ेगा और अंततः यही अनुभूति सारे यूरोप को एक सूत्र में आबद्ध करने में सफलता प्राप्त कर सकेगी, जिसके ऊपर स्थायी शांति की रूप-रेखा आधारित है।

इटली की सामाजिक और आर्थिक व्याधियाँ काफी जटिल और विस्तृत हैं। राजनीतिक क्षेत्र में जो अराजकता है और प्रतिक्रियावाद के षड्यंत्रों के फलीभूत होने के लिये जो उर्वर स्तर हैं उन्हें निष्क्रिय करना कितना कठिन है, इसका आभास ऊपर दिये गये आँकड़ों में ही मिल सकता है। स्वयं नेनी ने इटली की खाद्य-स्थिति के विषय में लिखा है:—

"इटली की आर्थिक कठिनाइयाँ इस राजनीतिक संघर्ष को और भी तीव्र कर देती हैं...अगले शरद्काल में दुर्घटना ऐसी हो सकती है कि सारे देश को अपने चंगुल में वह जकड़ सकती है। प्रतिदिन नगरों की जन-संख्या के लिये खाद्य-प्रबंध करने की समस्या चिंताजनक होती जा रही है...यदि एकदम कोई व्यवस्था नहीं की गई तो सारी मानवता को अपने कान बंद करने पड़ेंगे, क्योंकि वह इटली
के नगरों की जन-संख्या के आतं
सुन नहीं सकेगी।"

भौगोलिक वातावरण

सर्वांगीण अभावों से प्रता
वातावरण में राजनीतिक असन्तो
आन्दोलन के कीटाणुओं को वि
लिये बड़ा उर्वर क्षेत्र मिल
सदियों के निरंकुश राजतंत्र और
पूरे दो दशक तक फासिज्म के
से पीड़ित जनता की मनःस्थिति में
से अत्यन्त त्वरित मुक्ति के लि
छटपटाहट पैदा हो गई है
शाब्दिक रूप से आकर्षक
योजना को स्वीकार करने के लि
है। भारत की तरह इटली का
वातावरण भी कम्यूनिज्म के लिये
वातावरण नहीं है। साथ ही पूर्वी
के देशों के साथ भी इटली
नहीं बैठती। इटली आध्यात्मिक
से मुख्यतः पाश्चात्य यूरोप के
परिधि में पड़ता है—उसकी सारी
परम्परा ही पाश्चात्य विचार-
प्रवाह में ढली है। यूरोपियन स
मूल केन्द्र भूमध्यसागर रहा है।
संवत् से लेकर अमेरिका के
तक भूमध्यसागर से आवृत्त देश
पाश्चात्य संस्कृति का प्रेरणा-स्रोत
रोमन साम्राज्य का सदर मुकाम इट
और यूरोप की सारी पौराणिक
का विकास रोमन साम्राज्य के उ
काल में ही हुआ है। मध्ययुग में
नगर पोपशाही की सत्ता
सारे केथोलिक संसार की
कला और साहित्य के क्षेत्र में
और वाणिज्य-व्यापार के क्षेत्र में
वेनिस नगर का इतिहास
यह सांस्कृतिक पार्श्व-भूमि कम्यू
सिद्धांतों के लिये स्वस्थ आहार
सकती।

लेकिन इसका यह अभिप्राय
कि इटली की वर्तमान अभाव-पीड़ि
जड़, शान्त और उद्वेगविहीन
रहेगी। आर्थिक अभाव अपने
णामों से असम्बद्ध नहीं किये
उनकी प्रतिक्रिया होती है और
विग्रह, विरोध और विद्रोह की
फैले बिना नहीं रह सकती। इ
आर्थिक व्यवस्था आज ऐसी ही
हो गई है। ग्राम्य और औद्योगिक
क्षेत्रों में आर्थिक असन्तोष तीव्र
होता जा रहा है। १५ लाख
व्यक्ति आज मजदूरी नहीं पा
शेष यूरोप और ब्रिटेन के साथ
व्यापार अभी तक बन्द पड़ा
अमेरिका के आयातों की
प्रतिदिन बहुगुणित होती जा
इनके विपरीत इटली के
आवागमन बिलकुल स्थगित हो
इसका सीधा अभिप्राय यह है कि
अपनी पूँजी इटली में लगाता
इटली के हवाई यातायात और
के कारखानों पर अमेरिकन
आर्थिक प्रभुत्व स्थापित हो चुका
के नाविक बेड़े को अपने नियंत्र
के लिये भी अमेरिका ने
कर दिया है। निर्बल सरकार
ही इटली की परिस्थितियाँ
वैदेशिक शोषण के फलने-फूलने
उर्वर क्षेत्र बनती जा रही हैं।

'कथा-साहित्य की सबसे अच्छी प्रतिनिधि पत्रिका'

मंजरी

कारों की सरस कहानियाँ और कथा-साहित्य पर गम्भीर तथा क लेख आकर्षक मुद्रण-विन्यास के साथ प्रस्तुत करनेवाली 'मंजरी' सांस्कृतिक मनोरंजन की एकमात्र कहानी-पत्रिका है।

एक सम्मति

र शिवपूजन सहाय, भूतपूर्व सम्पादक 'हिमालय'—'मंजरी' के तीन अंक ों को देखकर यही धारणा हुई कि कथा-साहित्य की सबसे अच्छी प्रति- 'मंजरी' ही है। छपाई सफाई और सजावट के लिए तो इंडियन प्रेस का ही प्रमाण है, सम्पादन-कौशल में आपने भी अपनी कला का आकर्षक है। साज-सज्जा और सामग्री-संकलन में सुरुचि का समावेश सर्वथा है। भिन्न भाषाओं की कहानियाँ देकर आप हिन्दी पाठकों को काफी तृप्त । बहुत से पाठकों ने यह मत व्यक्त किया है कि आपकी पत्रिका ही सब काओं में श्रेष्ठ एवं उपयोगी है। मैं आपकी आरम्भिक सफलता पर बधाइयाँ देता हू।

× × ×

'मंजरी' पढ़कर आप भी अपना और अपने परिवार का सांस्कृतिक मनोरंजन कीजिए।

ल्य ६) छः रुपये प्रति अङ्क आठ आने

प्रकाशक :
इंडियन प्रेस लि०, प्रयाग

हासिक
कवाद

लेखक, भूतपूर्व काकोरी-कैदी
श्री मन्मथनाथ गुप्त और श्री रमेन्द्र वर्मा
लगभग ५०० पृष्ठों के सजिल्द ग्रन्थ का
मूल्य केवल ६) रुपये।

हासिक भौतिकवाद की गहनता को सरलतापूर्वक समझने ग्रन्थ की उपयोगिता अद्वितीय है। समाजवाद समझनेवालों के लिए इसका अध्ययन अपरिहार्य है।

, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

रमात्मा पर भरोसा करो

विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा । कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५।।=), डाक खर्च अलग।

लास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

"तपेदिक" रोग के हताश रोगियो—

bri) का नाम नोट कर लो, यही इस दुष्ट रोग से रोगी की जान शक्तिशाली औषधि है। एक बार परीक्षा करके देख लो, परीक्षार्थ रखा गया है, जिससे तसल्ली हो सके। मूल्य नं० १ (स्पेशल) पूरा ४० ७५) रु०, नमूना १० दिन २०) रु०। 'जबरी' नं० २ पूरा कोर्स नमूना १० दिन ६) रु० महसूल आदि अलग है। आज ही आर्डर की जान बचावें। तार का पता "jabri" jagadhri काफी है।

—रायसाहब के० एल० शर्मा, रईस (D) 'जगाधरी' (E.P.)

सुदीर्घ अनुभवों पर आधारित
SIROLIN ROCHE
स्वांसी और सर्दी के लिये
सिरोलीन 'रोच'
समग्र संसार में व्यवहृत होता है

सारिडन
सर्व्वप्रकारका दर्द दूर करता है
10 Saridon
BRAND ANALGESIC TABLETS

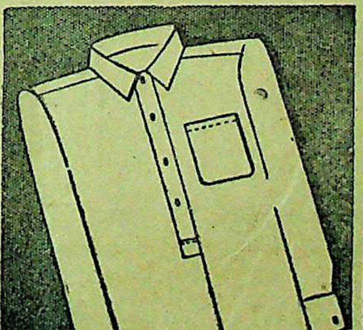

धोने के लिये
५०१ साबुन
दी टाटा आयल मिल्स कं० लिमिटेड

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ

सम्पादक—श्री सोहनलाल द्विवेदी
प्राक्कथन—सर सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

संस्कृति, हिन्दी, उर्दू, बँगला, गुजराती, सिन्धी, मराठी, तामिल, तेलगू, मलयालम, कन्नड़, अँगरेजी और चीनी भाषाओं में महात्मा गांधी जी पर लिखी हुई सर्वोत्तम कविताओं का संग्रह—हिन्दी भाषा में अर्थ-सहित।

बड़ा आकार, सुन्दर छपाई, पूरे पेज के अनेक चित्र। बढ़िया जिल्द। सर्वत्र प्रशंसित।

सादी जिल्द ६।।) कपड़े की जिल्द ७।।)
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

मृदुला की त्वचा लक्स टॉयलेट साबुन से मृदु एवं सुन्दर रहती है

सौन्दर्यवती मृदुला कहती है:—"मैं लक्स टॉयलेट साबुन का प्रयोग करती हूं, और मेरे सौन्दर्य उपचार के लिये केवल यही एक उपाय पर्याप्त है। इस की उत्तम, क्रियाशील झाग मेरी त्वचा को अत्यंत ही साफ़, मृदु और सुन्दर बना देती है। हर एक स्त्री को, जो त्वचा-सौन्दर्य की अभिलाषी है, शांतिप्रद लक्स टॉयलेट साबुन का नियमित प्रयोग करना चाहिये।"

LUX
LUX
TOILET SOAP

लक्स टॉयलेट साबुन

फिल्मी अभिनेत्रियों का सौन्दर्य-साबुन

LTS. 187-172 HI

८०००) रु० नकद इनाम

पहिला इनाम—ठीक हल के लए ६०००) रु० (जो एक से अधिक हल ठीक होने पर बराबर बांट दिया जायेगा)। दूसरा इनाम—सब से अधिक हलों के लिये १०००) रु०। तीसरा इनाम—सबसे पहिले ठीक हल भेजने वाले के लिये १०००) रु०।

हल क्या करना है? सामने दिये हुए नौ खानों में १०० तक के कोई से अङ्क इस भाँति से भरिये कि जिस ओर से जोड़ें उत्तर ७५ हो। एक अङ्क एक ही बार लिखा जा सकता है।

७५	७५	७५	७५	७५
७५	२२			७५
७५		२५		७५
७५			२८	७५
७५	७५	७५	७५	७५

दाखला फीस—एक रुपया प्रति हल।

नियम—हर एक आदमी एक या एक से अधिक जितने हल चाहे सफेद कागज पर एक रुपया प्रति हल के हिसाब से फीस के साथ भेज सकता है। फीस दाखला मनीआर्डर या पोस्टल आर्डर द्वारा भेजनी चाहिये। मनीआर्डर की रसीद हलों के साथ आनी चाहिये अथवा ऐसा हो सकता है कि आपके हल मुकाबले में सम्मिलित न हो सकें। सही हल वही समझा जावेगा जो हमारे मुहरबन्द हल के साथ जो सम्पादक महोदय दैनिक 'अमर भारत' के पास रखा गया है खाना ब खाना मिलेगा। इनामी नतीजे की कापी के लिये दो आने के टिकट और अपने पते का लिफाफा भेजें। इनाम की रकम दाखला फीस की आई हुई रकम के अनुसार कमी बेशी हो सकती है पर सही हल के इनाम की कम से कम ५०) रु० की गारण्टी है। हलों के रास्ते में खो जाने या डाकखाने के कारण देर से पहुंचने के हम जिम्मेवार न होंगे। प्रवेश फीस किसी अवस्था में भी वापिस न होगी। मैनेजर साहब पहेली का फैसला कानूनी व हर प्रकार से मानने योग्य होगा। हर मामले का फैसला देहली ही होगा। अपना पता हलों पर व मनीआर्डर कोपन पर साफ लिखें। हल ३१ जुलाई तक डाक में डाल दिये जाने चाहियें। इसके पश्चात् भेजा हुआ कोई हल स्वीकार न किया जावेगा। सही हल १५ अगस्त को प्रकाशित कर दिया जावेगा।

ई० टी० एण्ड कम्पनी, पोस्ट बैग नं० ५२ ए०, दिल्ली।
E. T. & Company, Post Bag 52 A, Delhi.

क्या आपने मसाला दोशा खा कर देखा डालडा से बना हुआ

डेढ़ बड़े चम्मच चावल और आधा चम्मच उरद को छः घंटों के लिये पानी में भिगो रखिये और पृथक पृथक इन को महीन रगड़िये। दोनों को मिलाइये और स्वाद के लिये नमक डालिये, इस मिलाव को बारह घंटों तक पड़ा रहने दीजिये। तत्पश्चात् इस मिलाव में पानी मिलाइये और दस मिनिट तक, जब तक कि वह ठीक तरह से गाढ़ा हो जाये, फेंटते रहिये। चपटे तवे को गरम करके डालडा इस पर मल मिलाव के एक बड़े चम्मच डालिये और चम्मच के उल्टे की सूरत में फैलाइये। थोड़ासा के किनारों पर डालिये और तो दूसरी ओर से पकने के दीजिये। कुचले हुए मसालेदार इस पर धर कर दोहरा कर गरम गरम खाइये।

क्या अपक्व भोजन पके हुये भोजनों से उत्तम हैं?
मुफ्त सलाह के लिये आज ही लिखिये—
अथवा किसी भी दिन!
दि डालडा एड्वायज़री सरविस
पोस्ट बॉक्स नं० ३५३, बम्बई १

HVM. 78-172 HI

ESTD 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेंट रिकगनाइज्ड

सिन्हा होमियो मेडिकल कौ

—पो० लहेरियासराय, बिहार—

आज हिन्दी उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस H.L.M.S. १०), H.M. H.M.D.S. २५)। पुस्तकें—प्र० परिवारिक १॥), बायोकेमिक मेडिका १॥) मेडिकल-डिक्शनरी २) आर्गेनन १॥) फार्माकोपिया १॥) सीम्पटम्स १॥) कुल किताबें १०) में एक साथ दी जायँगी डा० ख० दवाइयाँ ३०-=)॥ २००—≡) ड्राम, फी औंस ॥), घरेलू बक्स शीशी का ८)। सुगर और गोली २॥) फी पाउण्ड।

(१) वृ० इन्जेक्शन चिकित्सा ३)। वृ० अ० परिवारिक चिकित्सा

नोट:—वृहत् सूची मुफ्त—सचित्र मेडिकल मैगजीन मासिक ॥)

संरक्षक—राय साहब डा० यदुवीरसिंह एम० डी० एस० (U.S.

देशदूत में विज्ञापन दीजि

मूल्य ७।।)
पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी.

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

१ अगस्त, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 1st AUGUST 1948

और ब्रिटिश साम्राज्य
पौंड-पावना समझौता

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित से भेंट
रंगमंच, मातृमंदिर, स्वास्थ्य - चर्चा

T. B. टी. बी. "तपेदिक" चाहे फेफड़ों का हो या अँतड़ियों का बड़ा भयंकर रोग है

(१) पहला स्टेज	(२) दूसरा स्टेज	(३) तीसरा स्टेज	(४) चौथा स्टेज	अंतिम स्टेज
मामूली ज्वर खाँसी	ज्वर-खाँसी की अधिकता	शरीर सूखना, ज्वर-खाँसी की भयंकरता	सब ही बातों की भयंकरता शरीर पर वर्म, दस्त आदि का शुरू होना	रोगी की मौत और भयंकर जर्मों का इधर-उधर फैलना

(जबरी)————(Jabri)————(जबरी)————(Jabri)

T. B. टी. बी. "तपेदिक" और पुराने ज्वर के हताश रोगियो ! देखो—

श्री नागेश्वरप्रसाद तिवारी, मास्टर स्कूल नड़ुगावाँ, पो० डाल्टनगंज (विहार) से लिखते हैं—मैं अनेक दिनों से ज्वर-खाँसी से बीमार था। बलगम आदि की परीक्षा पर "तपेदिक" (राज्यक्ष्मा) रोग ही साबित हुआ। मैं रोग का नाम सुनते ही बहुत घबड़ा गया इसी बीच परमात्मा की कृपा से आपकी अमृतरूपी दवा "जबरी" का नाम सुना। तुरन्त आर्डर देकर पार्सल प्राप्त किया। दवा को विधिपूर्वक सेवन किया। उसके अमृतरूपी गुणों ने मुझे आश्चर्य में डाल दिया। थोड़े ही दिनों में शरीर का रङ्ग ही बदल गया। ऐसा मालूम होने लगा, जैसे कुछ रोग ही न रहा, अधिक लिखना व्यर्थ है। यथार्थ में आपकी औषधि इस दुष्ट रोग के लिए अमृततुल्य है। जितनी भी प्रशंसा की जावे कम है।

(२) डा० टाकुरसिंह नेपाली मु० कटैया पो० हरलखी जिला दरभंगा से लिखते हैं। आपकी भेजी दवा "जबरी" बहुत ही लाभदायक प्रतीत हुई। कृपया लौटती डाक से पूरा कोर्स भेज दें।

इसी प्रकार के पहले भी दसों प्रशंसापत्र आप इन्हीं कालमों में देख चुके हैं। भारत के कोने-कोने में लोगों ने यह मान लिया है कि इस दुष्ट रोग से रोगी की जान बचानेवाली यदि कोई औषधि है तो वह एकमात्र "जबरी" ही है। "जबरी" के नाम में ही भारत के पूज्य ऋषियों के आत्मिक बल का कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि प्रथम दिन से ही इस दुष्ट रोग के जर्म नष्ट होना शुरू हो जाते हैं। यदि—आप इस तरफ से हताश हो चुके हों तो भी परमात्मा का नाम लेकर एक बार "जबरी" की परीक्षा करें। परीक्षार्थ ही हमने १० दिन का नमूना रख दिया है, जिसमें तसल्ली हो सके। बस—आज ही आर्डर दें। अन्यथा फिर वही कहावत होगी कि—अब पछताए क्या होत है—जब चिड़िया चुग गई खेत। सैकड़ों डाक्टर, हकीम, वैद्य अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार-द्वारा आर्डर देते हैं। हमारा तार का पता केवल "जबरी" जगाधरी (JABRI-JAGADHRI) काफी है। तार में अपना पूरा पता दें। मूल्य इस प्रकार है—जबरी स्पेशल नम्बर १ जिसमें साथ साथ ताकत बढ़ाने के लिए मोती, सोना, अभ्रक आदि मूल्यवान् भस्में भी पड़ती हैं। पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन २०) रु०। जबरी नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान् जड़ी-बूटियाँ हैं, पूरा कोर्स २०) रु०, नमूना १० दिन का ६) रु०, महसूल अलग है। आर्डर देते समय नं० १ या नं० २ तथा पत्र का हवाला जरूर दें।

पता—रायसाहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड बैंकर्स (D) 'जगाधरी' पूर्व पंजाब (E. P.)

२०॥) में ज्वेलवाली रिस

स्वीसमेड ठीक समय देनेवाली
गारण्टी। गोल या स्क्वायर सुपिरियर २०॥), फ्लाट सेप क्रोमि ३०), फ्लाट सेप रोल्ड गोल्ड १ गारण्टी ५५), फ्लाट सेप १५ क्रोम केस ३८), फ्लाट सेप १ रोल्ड गोल्ड ७५)।

रेक्टेंगुलर, कर्भ या टोनो सेप केस ४२), सुपिरियर ४ ६०), रोल्ड गोल्ड १५ ६०) अलार्म टाइम पीस कीमत १८), बीग साइज २५) पोस्टेज अलग घड़ी लेने से माफ।

एच० डेभिड, एण्ड को०
पो० बक्स नम्बर ११४२४, कल

फिल्मी दुनिया मुफ्त

सिनेमा का भेद बतानेवाली "फिल्मी दुनिया" अपना और के पूरे पते लिखकर मुफ्त मँगाइये।
पता—मधुर मन्दिर, हाथरस, यू० पी०

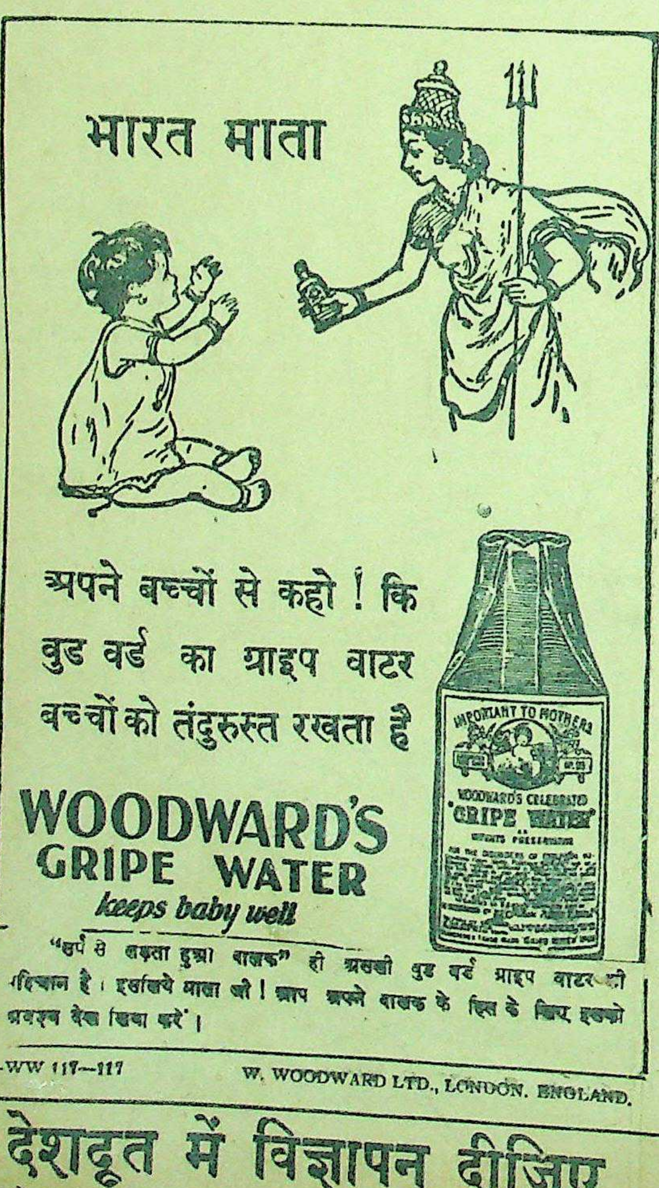

"हर्ष से बढ़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिए इसको अवश्य देख लिया करें।

WW 117—117

W. WOODWARD LTD., LONDON. ENGLAND.

देशदूत में विज्ञापन दीजिए

'कथा-साहित्य की सबसे अच्छी प्रतिनिधि पत्रिका'

मंजरी

श्रेष्ठ कथाकारों की सरस कहानियाँ और कथा-साहित्य पर गम्भीर आलोचनात्मक लेख आकर्षक मुद्रण-विन्यास के साथ प्रस्तुत करनेवाली सांस्कृतिक मनोरंजन की एकमात्र कहानी-पत्रिका है।

एक सम्मति

प्रोफेसर शिवपूजन सहाय, भूतपूर्व सम्पादक 'हिमालय'—'मंजरी' के तीन देखे और तीनों को देखकर यही धारणा हुई कि कथा-साहित्य की सबसे अच्छी निधि-पत्रिका 'मंजरी' ही है। छपाई सफाई और सजावट के लिए तो इंडियन यशस्वी नाम ही प्रमाण है, सम्पादन-कौशल में आपने भी अपनी कला का प्रदर्शन किया है। साज-सज्जा और सामग्री-संकलन में सुरुचि का समावेश सराहनीय है। भिन्न भाषाओं की कहानियाँ देकर आप हिन्दी पाठकों को कर रहे हैं। बहुत से पाठकों ने यह मत व्यक्त किया है कि आपकी पत्रिका कहानी-पत्रिकाओं में श्रेष्ठ एवं उपयोगी है। मैं आपकी आरम्भिक सफलता आपको शत-शत बधाइयाँ देता हूँ।

× × ×

प्रतिमास 'मंजरी' पढ़कर आप भी अपना और अपने परिवार का सां मनोरंजन कीजिए।

वार्षिक मूल्य ६) छः रुपये **प्रति अङ्क आठ आने**

प्रकाशक :
इंडियन प्रेस लि०, प्रयाग

ऐतिहासिक भौतिकवाद

लेखक, भूतपूर्व काकोरी-कैदी
श्री मन्मथनाथ गुप्त और श्री रमेन्द्र
लगभग ५०० पृष्ठों के सजिल्द ग्रन्थ
मूल्य केवल ६) रुपये।

मार्क्सवाद में ऐतिहासिक भौतिकवाद की गहनता को सरलतापूर्वक के लिए इस ग्रन्थ की उपयोगिता अद्वितीय है। समाजवाद के लिए इसका अध्ययन अपरिहार्य है।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

देशदूत

१०, संख्या ४७]

[रविवार, १ अगस्त, १९४८

के निजाम साहब अब संघ का दरवाजा खटखटाने- आपने ब्रिटिश बादशाह सलामत किया है कि वह भारत-सरकार राबाद में बीच-बिचाव करें क्योंकि उनका तख्ता उलटने की फिक्र में बड़े जोर-शोर से आन्दो- किया गया है कि अँगरेज भाइयो भारत-सरकार हैदराबाद को रहा है। अपने राम की समझ आता है और पहले से ही हैदराबाद अंत में संयुक्तराष्ट्र जायेगा ही। इसके सिवा सकता है? रजाकार और बहुमत प्राप्त जनता अत्याचार कर रहे हैं और निजाम लंदन की दौड़ लगा नहीं जा सकता कि ब्रिटिश फिर ढुलकते हैं किन्तु संयुक्त- हैदराबादी समस्या अगर पेश आश्चर्य क्या है!

* * *

जवाहरलाल नेहरू कहते हैं में इस वक्त गुण्डों का राज्य है, निजाम संयुक्तराष्ट्र-संघ के पास जा रहे हैं तो 'गुंडे' निजाम के घर की मेहमानदारी कर रहे हैं।

* * *

'लन्दन टाइम्स' का कहना है कि हैदराबाद को भारतीय संघ में सम्मिलित हो जाना चाहिए। बात तो ठीक है किंतु जब पाकिस्तान और मिस्टर चर्चिल पार्टी चाहे तब तो!

* * *

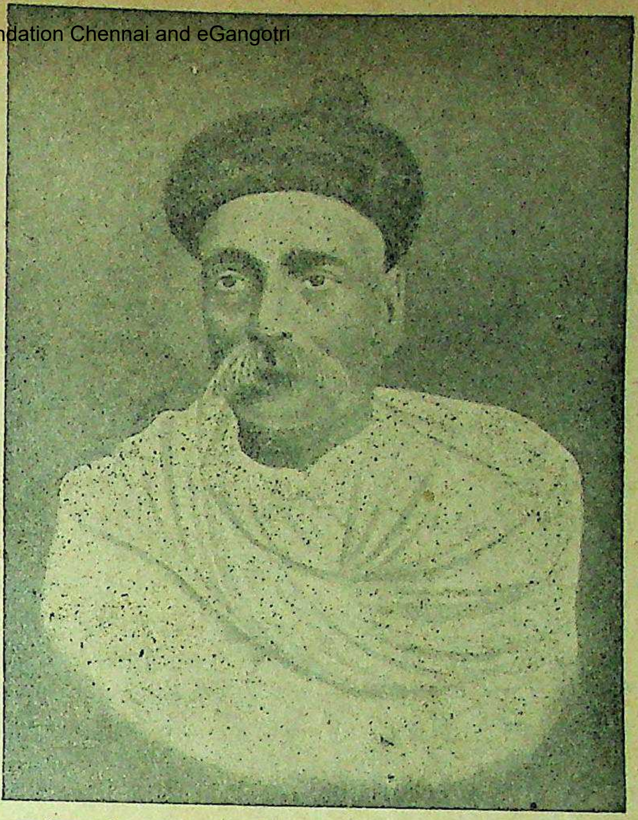

स्वर्गीय बालगंगाधर तिलक की पुण्यतिथि समस्त राष्ट्रों में समारोहपूर्वक मनाई जा रही है।

पंडित नेहरू कहते हैं कि भारत संघ के विरुद्ध जो युद्ध की घोषणा करेगा उसका उत्तर युद्ध से दिया जायेगा। आदर्श तो परमोत्तम है किंतु हैदराबाद अपने राज्य में होनेवाले 'जेहाद' से तो पहले फुर्सत पाये, इसके बाद पाकिस्तान की यदि कृपा हुई तो युद्ध का डंका पिट जायेगा। अभी तो काम बदस्तूर चल रहा है, जल्दी क्या है?

* * *

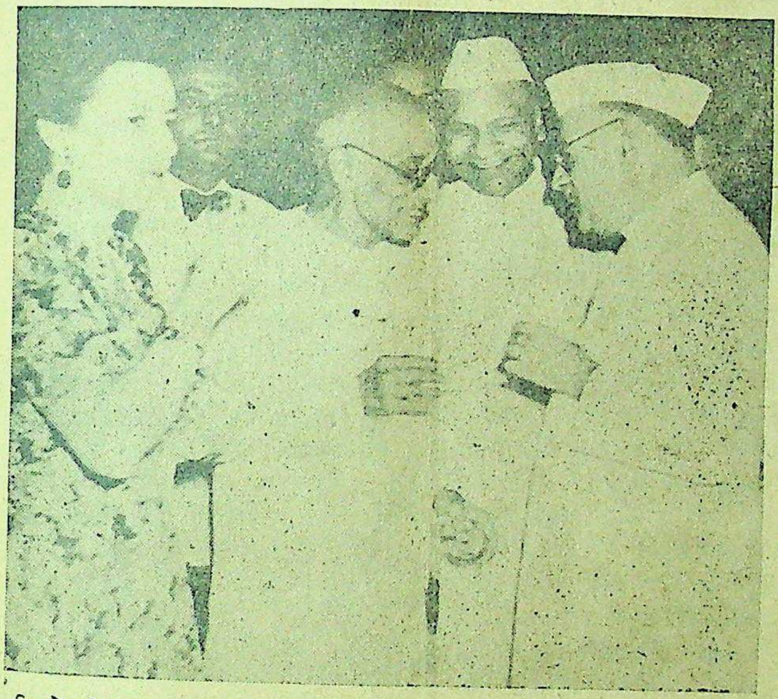

पिछले दिनों नई दिल्ली में स्याम का राष्ट्रीय दिवस अनेक नेताओं की उपस्थिति में मनाया गया था। चित्र में माननीय श्री राजगोपालाचार्य, श्री जयरामदास दौलतराम सर शंकरलाल मनोरंजक वार्ता कर रहे हैं।

प्रसिद्ध यात्राओं की कथा

प्रसिद्ध चीनी यात्री फाहियान से लेकर वर्तमान युग के एवरेस्ट की चोटी पर चढ़नेवाले साहसी वीरों तक की कथा इस पुस्तक में है। जिन यात्रियों ने प्राणों की बाजी लगाकर स्थल और जल के अज्ञात देशों में भ्रमण किया था और उनके परिश्रम से संसार का जो लाभ हुआ उसका रोचक वर्णन इस पुस्तक में पढ़िए। मूल्य ॥।-)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

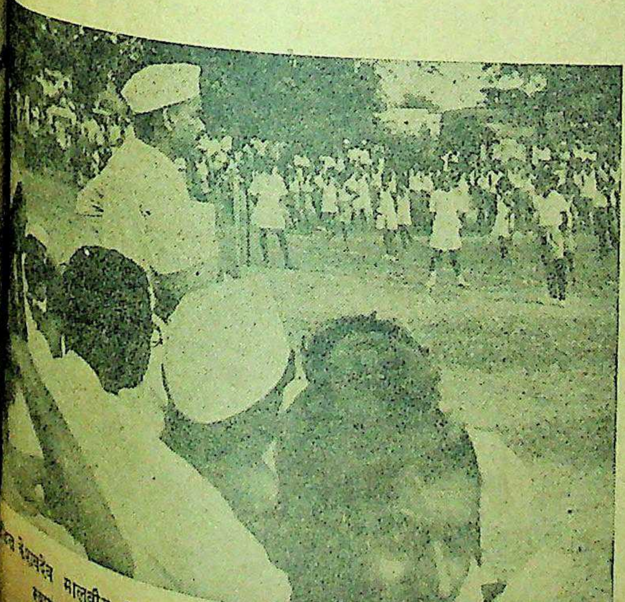

शवदेव मालवीय, विकास मंत्री संयुक्तप्रांत विक्टोरिया पार्क लखनऊ में स्वास्थ्य रक्षा निर्माण के एक प्रदर्शन में भाषण दे रहे हैं।

काश्मीर के प्रधान मंत्री शेख अब्दुल्ला का अमृतसर में स्वागत। फूलों का हार पहने हुए शेख अब्दुल्ला के साथ प्रमुख नगर निवासी खड़े हैं।

सम्पादक का पृष्ठ

संस्कृति, भाषा, सभ्यता

राष्ट्र-विभाजन के बाद हमारी संस्कृति, भाषा और सभ्यता के परोभव के कई मार्ग प्रशस्त हो रहे हैं। विभाजन के पूर्व ऐसा अनुभव होने लगा था कि यदि मुस्लिम लीग पाकिस्तान का निर्माण चाहती ही है और इस कार्य में ब्रिटेन उसका सहायक बन रहा है, तो यदि विभाजन अंततोगत्वा हो जाये तो कोई हर्ज नहीं, कम से कम राष्ट्रीय एकता तो स्थापित रहेगी तथा हिन्दुस्तान और पाकिस्तान सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक, भाषा तथा सभ्यता की दृष्टि से अपनी उन्नति में संलग्न हो जायेंगे तो राष्ट्र का भविष्य कल्याणमय ही होगा। कांग्रेस के सामने भी कुछ ऐसा ही दृष्टिकोण उत्पन्न हुआ और इसी दृष्टि से उसने ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल के विभाजन-सिद्धान्त को स्वीकार किया था। किंतु विभाजन के बाद दोनों राष्ट्र जिस परिस्थिति में अग्रगामी हो रहे हैं, उससे तो ऐसा जान पड़ता है कि अनेकता का प्रादुर्भाव असीम गति से तीव्र होता जा रहा है। सांस्कृतिक, राजनैतिक, भाषा, प्रांत तथा सभ्यता की दृष्टि से पारस्परिक संघर्ष और मतविभिन्नता का मार्ग प्रशस्त हो रहा है। हम पाकिस्तान के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहना चाहते, क्योंकि वहाँ की स्थिति ही कुछ ऐसी दिशा की ओर बढ़ रही है कि उसका अंत क्या होगा, अभी कुछ कहा नहीं जा सकता। मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान का निर्माण करके ब्रिटिश कूटनीतिज्ञों के लिये एक ऐसा मार्ग प्रशस्त किया है जिसका प्रभाव भारत के लिये अत्यन्त हानिकर सिद्ध हो रहा है।

हिन्दुस्तान की नीति राष्ट्रीय है किन्तु यहाँ के मुसलमान विशुद्ध राष्ट्रीय नीति को न अपनाकर अपनी एक अलग संस्कृति, भाषा और सभ्यता का स्वप्न देख रहे हैं। पाकिस्तान की स्थापना के बाद भी भारत-संघ में निवास करनेवाले मुसलमानों को क्या अधिकार है कि वह भारत में अनेकता की स्थापना में योग दें अथवा अपनी एक अलग संस्कृति की स्थापना करें? भारत की संस्कृति भारतीय है, जो सभी के लिए है जो भी भारत-संघ में निवास करता है। प्रांतीयता का विष भी व्यापक होता जा रहा है जो हमारी राष्ट्रीय परंपरा के लिए घातक प्रमाणित हो रही है। भाषा के संबंध में भी अनस्थित दिन-प्रति-दिन व्यापक बनती जा रही है। यह स्पष्ट है कि भारत की राष्ट्रभाषा उर्दू नहीं हो सकती, राष्ट्रभाषा का पद तो केवल हिन्दी को ही प्राप्त हो सकता है, किन्तु जनता के नाम पर एक 'हिन्दुस्तानी' भाषा का सृजन हुआ है और जिसकी आड़ में पिछले दस-पंद्रह वर्ष से ऐसी भाषा का सृजन किया गया है जो फारसी और अरबी, बेतुके और अव्यवहृत शब्दों से परिपूर्ण है। 'हिन्दुस्तानी' इस दृष्टि से काफी बदनाम हो चुकी है। मुस्लिम नेता भी इस समय जो कुछ लिखते हैं वह भी 'हिन्दुस्तानी' के नाम पर फारसी तथा अरबीमयभाषा का व्यवहार करते हैं। हम इस पक्ष के नहीं हैं कि जनता की भाषा को विशुद्ध संस्कृतमय बना दिया जाये किन्तु 'हिन्दुस्तानी' की स्थिति तो स्पष्ट ही एकांगीय तथा पक्षपात-पूर्ण है। इसीलिये हम राष्ट्रभाषा का नाम 'हिन्दी' ही होना उचित समझते हैं, 'हिन्दुस्तानी' नहीं। 'हिन्दी' नाम से कम से कम भारतीय संस्कृति की रक्षा होगी, किन्तु यदि राष्ट्रभाषा 'हिन्दुस्तानी' होती है तो इसकी आड़ में स्पष्ट मुस्लिम संस्कृति, अरबी, फारसी तथा सभ्यता को पुष्ट बनाने में पूर्ण योग दिया जायेगा। इसलिये हम राष्ट्रभाषा 'हिन्दी' के ही पक्षपाती हैं। 'हिन्दुस्तानी' भी प्रांतीयता के विष की भाँति एकांगीय, पारस्परिक दुर्भावना तथा अनेकता उत्पन्न करनेवाली है। इसी प्रकार सभ्यता का प्रश्न भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। हमारी सभ्यता भारतीय है। भारतीय सभ्यता के अन्तर्गत भारत की विभिन्न जातियाँ तथा धर्म उन्नत होते आये हैं। किन्तु संस्कृति तथा भाषा की विभिन्नता की भाँति सभ्यता की विभिन्नता की डोंड़ी पीटी जा रही है। सभ्यता की एकता का अर्थ तभी व्यापक माना जा सकता है जब कि विदेशी भारतीयों से मिलकर यह अनुभव करें कि यह भारतीय विशुद्ध भारतीय सभ्यता में पला हुआ है। सभ्यता की साम्यता का वास्तविक अर्थ यही है। किन्तु भारत में राष्ट्रीयता की स्थापना के बाद भी प्रत्येक यह अनुभव करता है कि अमुक मुसलमान और अमुक हिन्दू। लेकिन आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक यह अनुभव करे कि यह भारतीय है। स्वतंत्रताप्राप्ति तथा राष्ट्रीयता की व्यापकता का यही चिह्न है। यों भारतीय उपनिवेश सदा से विभिन्न संस्कृतियों का एक केन्द्रस्थल रहा है। किंतु राष्ट्र-विभाजन के बाद तो संस्कृति, भाषा तथा सभ्यता में एकरूपता की स्थापना अवश्य ही हो जानी चाहिए। कांग्रेस यदि आज इस ओर कदम उठाये तो सफलता अवश्य प्राप्त हो सकती है। किंतु वहाँ की स्थिति भी विचित्र है। बाह्य रूप से भारतीयता, राष्ट्रीयता तथा एकता का सभी दावा करते हैं, किंतु संस्कृति, भाषा, व्यवहार, तथा सभ्यता की दृष्टि से विभिन्नता ही दिखाई देती है। भारत स्वतंत्र अवश्य हो गया है, किंतु आवश्यकता है सांस्कृतिक, धार्मिक भाषा तथा सभ्यता-संबंधी एक मार्ग के अवलंबन की। यदि ऐसा नहीं होगा तो हम राष्ट्रीयता तथा एकता झूठे प्रदर्शन से राष्ट्रीय स्वतंत्रता की कब तक रक्षा कर सकते हैं, कुछ कहा नहीं जा सकता।

* * *

काश्मीर-कमीशन किस ओर

क्या भारतीय संघ तथा काश्मीर की जनता के प्रति वास्तव में न्याय होगा?

लेखक, श्री कृष्णमुरारीलाल गुप्त, एम० ए०

काश्मीर-कमीशन में आये हुए संयुक्त राष्ट्र-संघ के सदस्य आजकल हमारे अतिथि हैं। अतिथियों का उचित आदर-सत्कार हो रहा है। लेकिन हमें ऐसा प्रतीत होता है कि ये भारत के वैसे ही अतिथि हैं जैसा मानसिंह महाराणा प्रताप का, अथवा मंगलसिंह राजपूत वीर अजीतसिंह का अतिथि था। ये लोग काश्मीर के झगड़े का समझौता कराने आये हैं। समझौता कराने का काम बड़ा आदर्श कार्य है और समझौता करानेवाला भी बड़ा आदर्श व्यक्ति होता है। लेकिन अभी तक संयुक्तराष्ट्र-संघ ने जितने कार्य किये हैं, उनमें तो आदर्श की अपेक्षा अनादर्श ही अधिक झलकता है, इसलिये हमें तो इनसे किसी न्यायपूर्ण समझौते की आशा नहीं है। प्रत्येक आँखोंवाला व्यक्ति देख रहा है कि संयुक्तराष्ट्र-संघ में धाँधली के अतिरिक्त और कुछ नहीं चल रहा है। संसार के दो शक्तिशाली दल केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिये, अपनी अपनी शक्ति को बढ़ाने के लिये, अधिक से अधिक राष्ट्रों के आपस में सिर लड़वाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

फिलस्तीन में क्या हुआ? यहूदियों और अरबों को लड़वाना था। अमेरिका ने यहूदियों को सहारा दिया, अँगरेजों ने अरबों के कान में फुसफुसा दिया, "चढ़ जा बैटा सूली पर राम भला करेगा।" लड़ाई शुरू हो गई; और लड़ाई आरम्भ होते ही अँगरेज अपने हाथ झाड़कर अलग खड़े हो गये। क्या ऐसे ही लोग संसार में शान्ति स्थापित करायेंगे?

काश्मीर का मामला जैसे ही संयुक्त-राष्ट्र-संघ में पहुँचा न्यायप्रिय और शान्तिप्रिय राष्ट्रों ने रंग पलटना शुरू किया। काश्मीर का झगड़ा निपटाने के लिये सबसे पहले उन्हें पाकिस्तान और भारत के दूसरे झगड़े, मारकाट आदि पर विचार करने की आवश्यकता दिखाई दी। क्या इसी तरह न्याय हुआ करता है? यदि संयुक्त-राष्ट्र-संघ अपने को ठीक समझता था, उन्होंने पं० नेहरू के कथन का, जिसमें उन्होंने संयुक्तराष्ट्र-संघ को बेकार की बातों में टाँग अड़ाने के लिये मना कर दिया था, उत्तर क्यों नहीं दिया? काश्मीर-कमीशन भारत में आने से पहले कराँची ठहरता है और नई दिल्ली से काश्मीर जाने के लिये भी उन्हें कराँची होकर जाने के अतिरिक्त और कोई रास्ता दिखाई नहीं पड़ता! और यह जब, जब कि पाकिस्तान कहता है कि काश्मीर के झगड़ों में उनका कोई हाथ नहीं।

पाकिस्तान की सरकार अनेकों बार कह चुकी है कि उसका काश्मीर के गद्दारों से कोई सम्बन्ध नहीं है। फिर काश्मीर-कमीशन भारत और पाकिस्तान का इस मामले में कैसा समझौता कराना चाहता है? पाकिस्तान गद्दारों की सहायता कर रहा है—यह तो नक्शे में गद्दारों की तैयारी करने के और हमला करके लौटने के स्थान को देखकर ही पता चल सकता था। लेकिन दूसरे कार्य सिद्ध करने के लिये और दिखाने के और खाने के दाँतों की विभिन्नता चरितार्थ करने के लिये तो 'कमीशन' का ढोंग रचना आवश्यक था।

हम न्याय से नहीं घबराते
जानते हैं कि हमारा पक्ष काठ
नहीं है जो न्याय की आँच के
ठहर सके। लेकिन संयुक्तराष्ट्र-
उस बंदर के समान न्यायप्रिय है
कभी दो बिल्लियों का झगड़ा
था। ऐसा प्रतीत होता है भारत
पहले यह बात समझ रही थी,
उसने काश्मीर-कमीशन का
करने की धमकी दी थी। लेकिन
के सदस्य ज्यों ज्यों सपेरे की तरह
बजाते हुए आगे बढ़ रहे हैं, हमारी
उनके लिए जगह करती जा रही
न्यायाधीश से हम नहीं डरते,
सपेरों और ऐय्यारों से बचने ही में
मानी है, विशेषतः जब कि यह मालूम
कि उनका एकमात्र उद्देश्य जाल
हमें फाँसने का है।

कहा जा सकता है कि जब तक
कमीशन कोई अनुचित बात नहीं
या करता हमें चुप रहना चाहिए;
प्रश्न यही है कि इस समय चुप
बाद में, जब हमारे हाथ बँध
चिल्लाने से क्या लाभ होगा? एक
गारी को बुझाया जा सकता है, लेकिन
चिनगारी गगनचुम्बी लपट बन
बुझाना सम्भव नहीं रहता। काश्मीर-
शन इस समय ऐसा बहाना कर
जैसे वे भारत और पाकिस्तान में
झौता कराना चाहते हों। बाद में
कमीशन के निर्णय को अस्वीकार
क्या संयुक्तराष्ट्र-संघ को भारत के
पाकिस्तान की ओर से बोलने का
नहीं मिल जायगा?

इँगलैंड और अमरीका का
बहुत बड़ा स्वार्थ है। वे चाहते
तरह बँटवारा करके भारत को
दिया जाय और काश्मीर को
के हवाले कर दिया जाय। पा
साथ अँगरेजों की साँठ-गाँठ पुरानी
वे पाकिस्तान में काश्मीर मिला
की ओर रूस से लड़ने के लिए
तैयार करना चाहते हैं। इसीलिए
काश्मीर के बारे में विचार करने
तत्परता दिखा रहे हैं। अफ्रीका
वासियों पर जो अत्याचार हो रहे
रोकने के लिए संयुक्तराष्ट्र-संघ
जल्दी नहीं दिखाई।

भारत-सरकार को खूब
चाहिए कि संयुक्तराष्ट्र-संघ
संस्था नहीं है कि न्याय जैसी
चक्कर में पड़े। काश्मीर के
अभी तक की संयुक्तराष्ट्र-संघ की
यथेष्ट प्रमाण है कि वे केवल
करने की चिन्ता में हैं। भारत
लार्ड माउण्टबेटेन ने भी
लन्दन में कहीं बोलते हुए
भारत को जम्मू देकर पाकिस्तान
काश्मीर को मिलाने का उन
अधिक से अधिक काश्मीर-
स्तीनवाला नाटक फिर से
सकता है। एक ऐसा ही कमीशन
एक बार भारत में आया था
साइमन कमीशन था।

भारत और ब्रिटिश साम्राज्य

अमेरिका, ब्रिटेन और रूस की राजनीति कैसी है ?

लेखक, डाक्टर रामप्रसाद त्रिपाठी, एम० ए०, डी० एस्-सी० (लंदन)
(अध्यक्ष, इतिहास-विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय)

> भारत को स्वतन्त्रा तो प्राप्त हो गई है किंतु अभी वह ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत है। भारतीय राजनैतिक क्षेत्र में इस प्रश्न पर विचार-विनिमय हो रहा है क्या भविष्य में भी भारत ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत रहेगा अथवा पूर्ण रूप से उससे संबंध-विच्छेद कर लेगा ? इस लेख में इतिहास के विद्वान् लेखक ने इसी समस्या पर अपने महत्त्वपूर्ण विचार व्यक्त किये हैं। लेख का प्रथम अंश यहाँ दिया जा रहा है, शेष अंश अगले अंक में प्रकाशित होगा।

भारतवर्ष को अभी रुका रहो आगे देखा जायेगा वाली नीति ग्रहण करने की सामर्थ्य नहीं है, क्योंकि उसे अपने पुनरुत्थान तथा उन्नति के लिये दूसरे देशों से बहुत सा आवश्यक सामान चाहिये। यह उसके हित में होगा कि वह अपना निश्चय जल्दी से कर ले और इस बदलती हुई दुनिया की तेज रफ्तार के साथ कदम मिलाने की शक्ति प्राप्त करने के लिये स्वयं भी तेज चले।

वर्तमान परिस्थिति में भारत या तो रूसी या आँग्ल-अमेरिकन दल के साथ चल सकता है, क्योंकि राष्ट्र-संघ के संगठन ने अभी इतनी काफी मजबूती या स्थिरता नहीं हासिल की है कि छोटे संगठनों की कोई आवश्यकता ही न रहे, अकेले राष्ट्र और विश्व राष्ट्र-संघ के बीच एक बड़ा रिक्त स्थान जँभाई ले रहा है; जिसमें केवल मध्यस्थ संगठनों का पुल बँध सकता है; जो कुछ भी हो अभी यह स्पष्ट नहीं हुआ है कि संयुक्तराष्ट्र-संघ लीग आफ नेशन्स से अधिक प्रभावशाली और मजबूत साबित होगा अथवा उसी तरह की गति को प्राप्त होगा। प्रत्येक तुरुस्त दिमाग वाला व्यक्ति संयुक्तराष्ट्र-संघ (यू० एन० ओ०) को मजबूत बनाना चाहेगा ताकि वह प्रभावशाली बन सके। फिर भी केवल उसी दाँव पर अपना सब कुछ लगाकर छोटे संगठनों की उपेक्षा करना होशियारी का काम नहीं होगा, क्योंकि ये छोटे संगठन अधिक परखे हुए हैं और इन्होंने दुनिया का नक्शा बनाने में बड़ा हिस्सा लिया और ले रहे हैं।

यह साफ है कि आजकल तीन खास गुट्ट हैं जो दुनिया की राजनीति पर असर करते हैं। एक अमेरिकावाला, दूसरा ब्रिटेनवाला और तीसरा रूसी। बुनियादी रूप से भिन्न आदर्श और नीति होने के कारण रूस और अमेरिका बहुत बिछुड़े हुए से मालूम पड़ते हैं। अमेरिका का दृष्टिकोण प्लूटोक्रेसी वाला सम्पन्न (जनसत्तात्मक) है और रूस का कम्यूनिस्ट (साम्यवादी)। इन दो परवर्तियों के बीच में ब्रिटिश साम्राज्य खड़ा है। इसकी राजनैतिक और सांस्कृतिक घनिष्ठता रूस के मुकाबले में अमेरिका से अधिक है फिर भी इनकी दृष्टि मिलकर एक नहीं है और ब्रिटिश साम्राज्य डौलर के साम्राज्यवाद से डरता है। यह बात नहीं है कि ब्रिटिश जनता को रूस बिलकुल असह्य हो, तुलनात्मक रूप से देखिये तो वह रूस का साथ देने के लिये अधिक व्यग्र है और कम से कम यह तो अवश्य ही चाहती है कि जहाँ तक हो सके उसके साथ मुठभेड़ से बची रहे। इस कारण वह कोशिश में है कि अमेरिकन और रूसी दलों के संतुलनात्मक पलड़ों को बराबर बनाकर थाम रक्खे। इस विषय में उनकी नीति उसी राजनैतिक परम्परानुगत है जो उन्होंने योरप में हमेशा बरती और उनकी प्रतिभा के अनुकूल है। वे अमेरिका का सहयोग विभिन्न कारणों से कर रहे हैं पर इसके लिये प्रस्तुत नहीं हैं कि उसके व्यक्तित्व के अनुकूल हो जायें।

एशियाई देशों के कुछ नेता एशिया के देशों का किसी तरह का संगठन बनाने का स्वप्न देखा करते हैं। ऐसे आदर्श की प्राप्ति के मार्ग में कई रोड़े हैं। उनमें से मुख्य यह है कि एशिया में एक भी राज्य ऐसा नहीं है जिसके साधन और शक्ति इतने प्रचुर हों कि वह ऐसे संगठन का केन्द्र बिन्दु बन सके, जापान के पतन के बाद किसी ऐशियाई राज्य संघ के स्थापन की संभावना बहुत क्षीण हो गई है। विश्व का महाप्रदेशों में बँटवारा भौतिक और व्यावसायिक भूगोल के अध्ययन के लिये तो ठीक है पर राजनैतिक कार्यों के लिये बेकार है। राजनीति ने भौगोलिक भूखंडों में सीधे घुसकर खड-प्रतिखंड किये हैं और अब यह सम्भव नहीं है कि एतिहासिक युग के पूर्वकाल की पुनर्यात्रा हो सके। वर्तमान परिस्थिति में ऐशियाई राज्यों के एक नये संगठन को बनाने की चेष्टा का परिणाम शायद यह होगा कि यूरोपीय और अमेरिकन शक्तियों में गहरी आशंकायें पैदा होंगी, उनकी ओर से व्यक्त अथवा गुप्त विरोध की चेष्टा होगी और षड्यन्त्रों तथा कुचक्रों का सूत्रपात होगा जिससे एशियाई देशों के पुनरुत्थान और प्रवृद्धि में गहरा धक्का लगेगा। चूँकि भारत को अपनी गम्भीर घरेलू समस्याओं का सामना करने के लिये सम्पूर्ण शक्ति तथा विचारों को समेटकर लगाने की दरकार है इसलिये वह इस समय एशिया के देशों का संघ स्थापित करने का महान् बीड़ा नहीं उठा सकता। ऐसा प्रयास उसकी सामर्थ्य और साधन के बाहर होगा और उसको अन्तर्राष्ट्रीय गुत्थियों के ऐसे दलदल में फँसा देगा जो शायद बहुत अटपटा और सम्भवतः साङ्घातिक साबित होगा।

चूँकि भारत का दूसरों से कोई सम्बन्ध न रखकर अकेली राह पर चलना सम्भव नहीं है इसलिये उसको इन तीन दलों में से किसी एक राष्ट्र दल के साथ निकट सम्पर्क स्थापित करना पड़ेगा। भारत की गरीबी पर कल्पना-प्रधान तथा मनीषी जनता का रूसी आदर्शवाद की तरफ एक विशेष आकर्षण रहते हुए भी यह वास्तविक रूप से असम्भव है कि रूस से मिलकर वह कोई व्यावहारिक लाभ उठा सके। इसका कारण सामान्य है। न तो भारत के पास, न रूस ही के अधिकार में, इतने यातायात साधन हैं जो पारस्परिक वस्तुओं के आदान-प्रदान अथवा सैन्य सहायता के लिये आवश्यक हैं, यदि आँग्ल-अमेरिकन तथा रूसी गुट में युद्ध छिड़ गया तो भारत को आसानी के साथ आर्थिक और सामरिक क्षेत्रों से काट कर अलग कलेजा किया जा सकता है और इस तरह उसका हिसाब जल्दी चुकाया जा सकता है। इसलिये हमारे लिये यह होशियारी की बात नहीं होगी कि जब तक दुनिया का मौजूदा राजनैतिक नक्शा नहीं बदलता तब तक अपने को रूस के भाग्य के साथ जोड़ दिया जाय।

तो क्या भारत को अमेरिका के दल में शामिल होना चाहिये ? अमेरिका रईस, शक्तिमान् तथा साधन-सम्पन्न है, उसने जापान में अपने पैर मजबूती के साथ जमा लिये हैं और चीन तथा प्रशान्त महासागर में बहुत बड़ा प्रभाव स्थापित कर रक्खा है। उसका दावा है कि उसके पास सबसे अधिक शक्तिशाली हवाई और जहाजी बेड़े हैं। उसके पास सांघातिक शस्त्र हैं और वह बहुत आगे बढ़े हुए यन्त्रों से सज्जित है। इस सबके ऊपर यह विश्वास किया जाता है कि उसके पास इतनी सामर्थ्य है कि वह संसार के हारे, थके और गरीब देशों को धन दे सकता है। ये सब भड़कीले आकर्षण हैं फिर भी लोग उसकी नीति से शंकित और घबराये हुए-से रहते हैं। चारों ओर एक आशंका सी है कि अमेरिका एक नये तरह का साम्राज्यवाद स्थापित कर रहा है जिसको किसी दूसरे उपयुक्त शब्द के अभाव में डौलर का साम्राज्यवाद कहा जाता है। निस्सन्देह यह अमेरिका की नीति का बड़ा भोंडा विशेषीकरण है। न इसमें कोई नूतनता है। यह प्रकट सी बात है कि अगर अमेरिका धन को कर्ज में देता है या भारी वस्तुओं को बेचता है तो उसे यह देखना पड़ता है कि उसकी पूँजी सुरक्षित है और अपने बेचे हुए सामान की कीमत किसी

शेष पेज १८ पर देखिए

ब्रिटिश साम्राज्य के प्रधान मन्त्री मिस्टर एटली।

माननीया श्रीमती पंडित से भेंट

मास्को में एक पत्र-संवाददाता से मनोरंजक वार्तालाप

माननीया श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित इस समय मास्को (रूस) में भारतीय राजदूत के पद पर प्रतिष्ठित हैं। अभी हाल में एक पत्र के संवाददाता ने आपसे भेंट की थी। भेंट में श्रीमती पंडित ने ऐसे विचार व्यक्त किये जिनका भारतीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से एक महत्त्व है। लेख पठनीय रोचक तथा जानकारी से पूर्ण है।

मास्को में भारतीय राजदूत माननीया श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित।

मास्को के बीचोंबीच सेमोलंस्की बोलेवर्ड में स्थित भारतीय दूतावास में जब मैं राजदूत श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित से मिला, तब वह एक आकर्षक कालीन पर बैठी थीं। आपके पास ही फर्श पर पत्र-व्यवहार की फाइलें, एक छोटा सूटकेस, समाचारपत्र और पुस्तकें तथा दूसरे कागज बिखरे थे। पास ही टेलीफोन रक्खा था। मेरे मुख पर आश्चर्य-भाव देखकर श्रीमती पंडित मुस्कराईं और बोलीं, "एक राजदूत के लिए ये सब अव्यवहारिक-सा है, मैं मानती हूँ; लेकिन बात यह है कि अभी हमारा ढंग पूरी तरह जमा नहीं है। स्टाकहोम से अभी दफ्तर के लिए फर्नीचर आनेवाला है। कुछ थोड़ी-सी कुर्सियाँ हैं, जैसे-तैसे उन्हीं से काम चल रहा है। मैं तो नित्य ही इसी प्रकार काम करती हूँ और इसमें मुझे कोई कष्ट नहीं होता! पहले तो मेरे रूसी कर्मचारी यह देखकर चकित हुए, फिर मुस्कराए और अब वह इसे अपने राजदूत की एक विचित्र सनक समझते हैं।"

श्रीमती पंडित ने दूसरी राजधानियों में भी मकानों और बँगलों की कमी का उल्लेख करते हुए कहा कि "वास्तव में हम तो सोवियत अधिकारियों के प्रति कृतज्ञ हैं कि यह भवन हमें मिल गया।"

श्रीमती पंडित के साथ मैं एक सोफे पर आराम से बैठकर बात-चीत करने लगा। वह बोलीं, "यदि स्वतंत्रता दिवस" से पहले ही दूतावास में सब कुछ ठीक-ठाक हो जाय, तो अच्छा रहेगा। पर मैं इस ओर से निश्चित नहीं हूँ, क्योंकि वक्त बहुत थोड़ा है और काम अभी कुछ हुआ नहीं।"

* * *

नया दूतावास मास्को के अत्यन्त व्यस्त केन्द्र में है और वह छोटा भवन भी वहाँ से दूर नहीं है जिसे श्रीमती पंडित ने हाल ही में खाली किया है। यह एक सुदृढ मकान है, जो संभवत: क्रांति से पूर्व किसी धनी व्यापारी के पास रहा होगा। खिड़कियों की इसमें कमी नहीं है और विशाल कमरे भी काफी हैं। प्रवेशद्वार के पास ही बाईं ओर चौड़े सफेद पत्थरों का जीना है, जो पहली मंजिल तक गया है। जीना समाप्त होते ही मारबल के स्तम्भ हैं। श्रीमती पंडित ने यहाँ कहा कि "मैं दीवारों पर लगाने के लिए भारत से कुछ कलापूर्ण चित्र मँगाना पसंद करूँगी और हो सका तो कुछ ऐसे पर्दे भी लटकाए जा सकते हैं जो चित्रांकित हों। और यह सब भी अपने सीमित बजट में ही पूरा करना है।"

श्रीमती पंडित का दफ्तर इसी पहली मंजिल में है और आपका वह दोनों पुत्रियों—तारा और चन्द्रलेखा—का शयन-कक्ष भी यहीं है। इसी मंजिल में बाजार के रुख एक बड़ा 'हाल' भी है जिसे 'डाइनिंग रूम' बनाया जायगा। इतना ही बड़ा एक और कमरा भी है जो किसी भी राजनीतिक उत्सव, सभा या समारोह के लिए पर्याप्त लम्बा-चौड़ा है।

* * *

एक कमरे में तो दूतावास के कौंसिलर श्री राजेश्वरपाल द्वारा निर्मित दो तैलचित्रों को सुशोभित किया जा चुका है। इनमें से एक तो 'डाचा' (देहात का छोटा मकान) का आकर्षक चित्र है जो ठीक मास्को के बाहर स्थित है और जिसे श्रीमती पंडित ने गर्मियों के लिए किराए पर लिया है। 'डाइनिंग रूम' में काश्मीर, ताजमहल, बनारस तथा भारतीय जीवन के दूसरे कलापूर्ण चित्र लटकाए गए हैं। इनमें प्रसिद्ध चित्रकार मनीषी डे का 'कृषक बाला' सर्वोत्कृष्ट कहा जा सकता है।

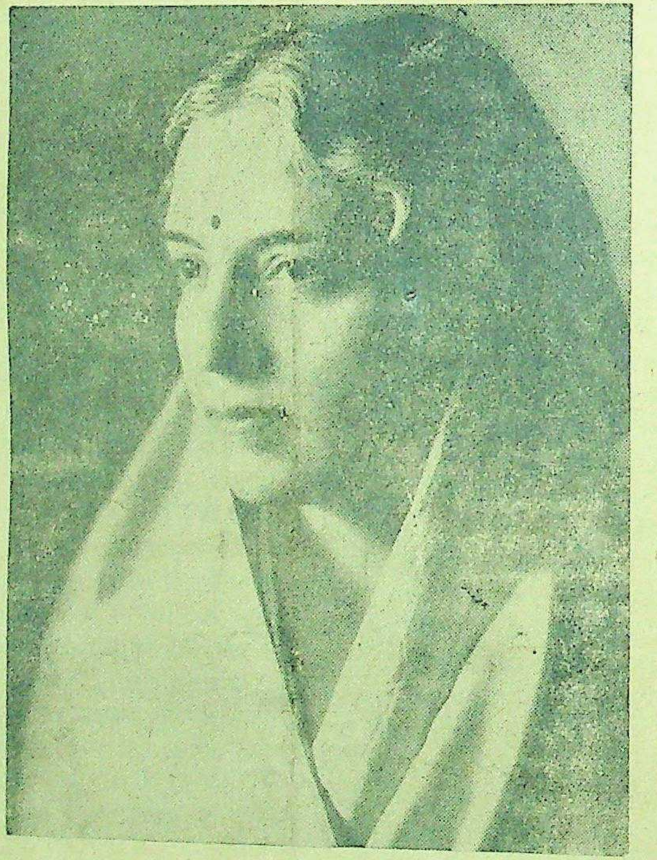

श्रीमती पंडित इस समय मास्को (सोवियट रूस) में राजदूत के पद पर भारत का प्रतिनिधित्व कर रही हैं।

दूतावास का कार्यालय नीचे की मंजिल में है, जहाँ स्टाफ मेट्रोपोले होटल से फाइलें, सेफ और दूसरा सामान ला-लाकर जमा रहा है। दूतावास के जूनियर भारतीय स्टाफ के लिए क्वार्टर भी इसी मंजिल में है।

नए दूतावास-भवन के मिलने पर श्रीमती पंडित बहुत प्रसन्न हैं। आपने कहा कि 'कई वर्ष की यात्रा के बाद अब आखिर एक मकान तो मिला मुझे। अनेकों वर्ष बाद अब ऐसा अवसर आया है जब कि मैं एक स्थान पर कुछ समय ठहर सकूँगी—और तारा व चन्द्रलेखा के यहाँ होने से तो मुझे बड़ी खुशी है।

लेकिन वास्तव में कुमारी तारा पंडित मास्को में अब न ठहर सकेंगी, क्योंकि हाल ही में श्री गौतम सहगल से उनका सम्बन्ध घोषित हो चुका है, विवाह दिल्ली में होगा। कब? यह श्रीमती पंडित के अवकाश मिलने पर पुत्रियों के साथ दिल्ली पहुँचने पर ही निर्भर है। 'बड़े दिन' (क्रिसमस) से पहले ही शायद वह इस विवाह को सम्पन्न देखना चाहती हैं और इसी लिए नवम्बर में वह संभवत: दिल्ली लौटेंगी।

हम बातचीत कर ही रहे थे कि श्रीमती पंडित अपने सेक्रेटरी से नई दिल्ली रेडियो के ताजे समाचारों को सुनने के लिए कुछ देर ठहर गईं। वह नित्य स्वयं रेडियो सुनती हैं या फिर बुलेटिन का सारांश सुन लेती हैं।

* * *

मैंने श्रीमती पंडित से पूछा कि "क्या आपको नेहरू जी के प्रोग्राम के बारे में कुछ पता है? क्या पंडित जी भविष्य में मास्को आएँगे?"

श्रीमती पंडित ने बड़ी प्रसन्नता भव करते हुए बताया कि उनके पास मन्त्री एटली और प्रे० ट्रूमैन के सरकारी तौर पर भेंट का निमंत्रण है। मुझे आशा है कि विश्व की राजधानियों का दौरा करना उनके सम्भव हो सके, क्योंकि सहयोग मित्रता के लिए दूसरे राष्ट्रों के अधि से सम्पर्क रखना आज अनिवार्य गया है और जहाँ तक मुझे मालूम उनके पास किसी अन्य देश का निमं नहीं पहुँचा है। मैं सोचती हूँ, यह रूप से मालूम पड़ जाय कि सप्ताह भारत से बाहर जाने का रखते हैं, तो दूसरे देशों से भी उन्हें न्त्रण भेजे जा सकेंगे।

श्रीमती पंडित रूसी संस्कृति जीवन में बड़ा अनुराग रखती हैं इसका नये से नया ज्ञान स्वयं ही करती रहती हैं।

* * *

"मास्को आने पर पहले छः से मास तक तो काम जमाने में ही हैं; क्योंकि आपको राह खोजनी होती इसके बाद जब आप यहाँ के लोगों से मिलेंगे और सांस्कृतिक परिचय प्राप्त तो वातावरण अनुकूल जान पड़ेगा, आसान हो जायगा।

"मैंने स्वयं स्कूलों का दौरा अध्यापकों व बच्चों से बातचीत कुछ सीखा है। भारत और रूस चीजों में बड़ी समानता है। में हमारे सामने वही समस्याएं हैं जि रूस से पिछले ३० वर्षों में सामना कि है। शिक्षा, कृषि और भूमि-सुधार ही समस्याएँ है।

"लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि उन्हीं उपायों को आँख मूँदकर जो रूस से अपनाये थे। हम नाएँ बनाते समय रूस के अनुभव रख सकते हैं।"

* * *

श्रीमती पंडित ने बताया कि हमारे सांस्कृतिक सम्बन्ध भी रहे हैं। कुछ प्राचीन ग्रन्थों का रूसी विद्वानों ३५-४० वर्ष पहले अनुवाद कि जर्मन विद्वानों ने भी बहुत शोध कि लेकिन भारतीय ग्रन्थों का अध्ययन मे रूसी उनसे आगे थे।

श्रीमती पंडित ने बताया कि वर्ष की अवस्था में मैं राजनीति से लेना चाहती हूँ।' अभी आप ४० हैं। आपने कहा कि "मैंने जीवन में उतार-चढ़ाव देखे हैं और स्नायु पर बड़ा दबाव रहा है।"

जब मैंने पूछा कि 'आप स्मृतियाँ लिखेंगी?' तो श्रीमती पंडित बताया कि "मैं किसी दिन अपनी लिखूँगी अवश्य, जिनमें मेरे जीवन राजनीतिक अनुभवों के साथ ही कुछ तीय नेताओं का उल्लेख भी में ऐसी पुस्तक लिख रही थी, भी ली थी, लेकिन जब मैं अमरीका तो कुछ अध्याय खो गए। मैं लिए कुछ पुस्तकें लिखने पर भारत में ऐसी पुस्तकों की बड़ी प्रकाशन का काम अब कर रहा है और हिन्दी में पाठकों व्यापक क्षेत्र है।"

इधर उधर की

नये शहर खोज लिये गये

अमेरिका के पुरातत्त्व-विभाग ने ...०० वर्ष पुराने शहर की खोज निकाला ... आधार पर ब्रिटेन ने भी अपने अनुसन्धान किया है, जिसके फलस्वरूप ...र पुराने शहरों की खोज लिया ... के इतिहास में यह पहला अवसर ... इस प्रकार के अनुसन्धान से ... विस्तृत क्षेत्र का पता लगाया गया

... खोज के सम्बन्ध में बहुत सी ... प्राप्त हुई है। कहा जाता है कि ... के कारण यह नगर शताब्दियों ... भी नष्ट नहीं हो सके। ईजिप्ट ... के अनुसार अभी और भी बहुत ... हैं जो हमारे सामने नहीं आये। ... नगरों की कुछ इमारतों को ... अनुमान किया गया है कि यह ... के सभ्यता के प्रतीक हैं। कुछ ... विशाल फाटक भी स्पष्ट रूप से ... जाते हैं। सड़कें और गुम्बदों ... भी स्पष्ट देखे जाते हैं।

* * *

... रोग

... महायुद्ध में अमरीकी क्षेत्रों में ... संख्या ३,२५,००० है। ... संयुक्तराष्ट्र के स्त्री-बच्चे ... जिनकी गणना लगभग ...०० है हृदय-रोग से मर गये। ... बीमारी के कारण जनसंख्या ... नुकसान पा रही है। अनुपात से ... मृत्युएँ केवल इस बीमारी ... हैं। लगभग ४५ वर्ष के बाद यह ... किसी न किसी रूप में आने ...।

... के अनुसार कहा जाता है ... क्षेत्र में यह बीमारी कभी होती ... निवासियों पर इसका प्रभाव ... तक होता है। चालीस प्रति- ... केवल हृदय-रोग पर निर्भर है। ... पचीस वर्ष से विज्ञान इसका ... खोज रहा है, किन्तु अभी तक कुछ ... नहीं प्राप्त हुई।

* * *

... रस और दाँत

... और ऐसे ही खट्टे फलों का रस ... उष्णता को कायम रखने के ... बहुत ही लाभप्रद है। जहाँ तक ... प्रश्न है यह अच्छा नहीं— ... दाँतों को थोड़ी देर के लिये ... देता है। पश्चिमी डाक्टरों ... है कि नीबू का रस दाँतों की ... की शक्ति को नष्ट करके ... को भी दुर्बल बनाता है। ... इस फल के रस की उपयोगिता ... खोजें की हैं। इसमें कोई ... कि नीबू का रस भोजन के ... में असाधारण काम करता है। ... की अपेक्षा सस्ता होते हुए ... अपना अलग प्रभाव रखता

* * *

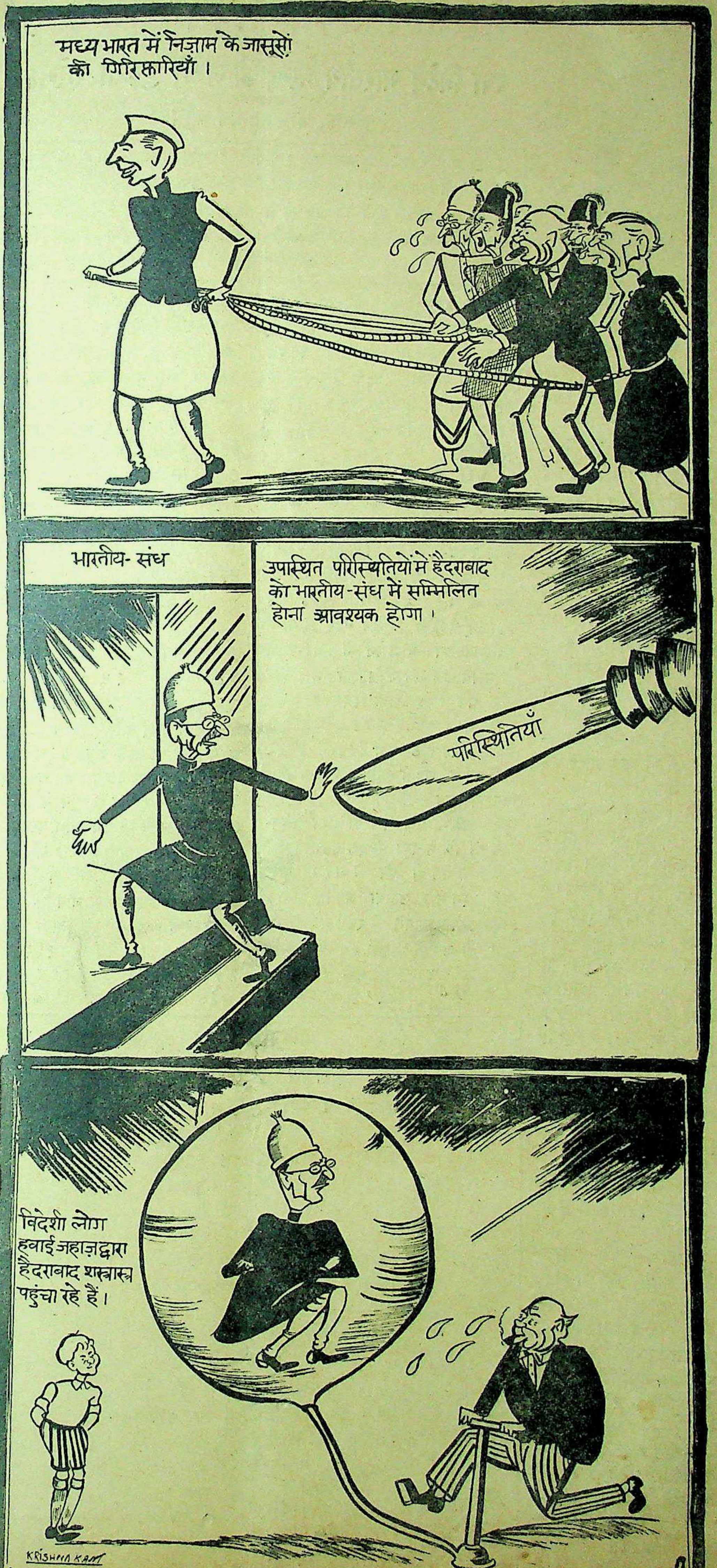
मध्य भारत में निज़ाम के जासूसों की गिरफ़्तारियाँ।
भारतीय- संघ
उपस्थित परिस्थितियों में हैदराबाद को भारतीय-संघ में सम्मिलित होना आवश्यक होगा।
परिस्थितियाँ
विदेशी लोग हवाई जहाज़ द्वारा हैदराबाद शस्त्रास्त्र पहुंचा रहे हैं।
KRISHNA KANT

भारतीय पौण्ड-पावना समझौता

क्या ब्रिटेन भारतीय ऋण को जल्दी चुकता करेगा ?

लेखक, श्री राधानाथ चतुर्वेदी

भारत और ब्रिटेन के बीच गत ६ जुलाई को पौंड-पावना के संबंध में समझौता हो गया। पौंड-पावना की स्थिति के कारण व्यापारी तथा उद्योगीवर्ग में जो असंतोष बढ़ रहा था, उसकी तत्कालीन इति श्री हो गई। इस लेख में लेखक ने पौंड-पावने के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए समझौते की आलोचना की है। लेख सुंदर, विचारपूर्ण और सामायिक है।

पौंड-पावने पर भारत से समझौता करनेवाले ब्रिटेन के अर्थमंत्री श्री क्रिप्स।

भारत और ब्रिटेन के बीच पौण्ड-पावना समझौता हो गया। गत ६ जुलाई को जिस समझौते पर हस्ताक्षर किये गए थे उस समझौते की धाराओं की घोषणा १५ जुलाई को लन्दन और दिल्ली से एक साथ हो गई। भारतीय व्यसाय एवं उद्योगपतियों तथा उन सब व्यक्तियों के लिए यह एक अत्यन्त सन्तोष और शांति का समाचार सिद्ध हुआ है। शंकाओं, संदेहों और अविश्वास के बीच पलनेवाली धारणाओं की समाप्ति हो गई और इन शंकात्मक और सन्देहग्रस्त धारणाओं के कारण भारत की जो औद्योगिक गतिविधियाँ स्थिर हो गई थीं अब उनकी एक निश्चित गति निश्चित हो गई।

पौण्ड-पावने को लेकर बड़ी बड़ी शंकाएँ की गई थीं। अविश्वास प्रकट किया गया था, यद्यपि वह बिलकुल निर्मूल सिद्ध नहीं हुआ फिर भी प्रस्तुत समझौते ने उसे अतिशयोक्तिपूर्ण अवश्य सिद्ध कर दिया है। जैसा कि गत १७ जुलाई की "अमृतबाजार पत्रिका" के सम्पादकीय लेख में आरम्भ में कहा गया है कि "समझौते को पढ़ने के बाद जो पहली प्रतिक्रिया हमारे ऊपर हुई वह यह थी कि चेट्टी ने दिवालिए ऋणी से जितना अच्छे से अच्छा सौदा बन पड़ा वह किया है।" सचमुच ब्रिटेन के समझौते का जो प्रकार है वह इसी ढङ्ग का है और इसी दृष्टि से उसे सन्तोषजनक भी कहा जा सकता है, क्योंकि साधारणतया जनता का यह विश्वास न था कि ब्रिटेन से मामला इतनी सीधी तरह सुलझ जायगा।

अधिकांश एँग्लो-अमरीकी अनुदार पंथियों का मत यह था कि कर्ज को टाला जाय और "भारत-रक्षा" के नाम पर उसमें अधिकाधिक कमी की जाय। अभी उस दिन तक ब्रिटिश युद्ध-नेता तथा कट्टरपंथी नेता चर्चिल ने जिन्होंने सर्वदा भारत के साथ शत्रु नम्बर १ के व्यवहार का निर्वाह किया है—कहा था कि ब्रिटेन पौण्ड के पावने की सारी रकम देने के लिए विवश नहीं है क्योंकि उसने भारत के ४० करोड़ निवासियों की रक्षा में अपरिमित साधनों का उपयोग किया है। चर्चिल को छोड़कर अन्य कोई भी अपनी वाग्मिवरता से यथार्थ स्थिति को उतना उलटा नहीं रख सकता जितना कि उन्होंने रखा है। ब्रिटेन ने भारत की रक्षा की, या भारत ने ब्रिटेन की—इसका फैसला तो उसी समय हो सकता था जब कि सन् १९४२ का राष्ट्रीय आन्दोलन सफल हो गया होता और जनक्रान्ति ने ठोकर मारकर चर्चिल-शासन को भारतीय सीमा के बाहर फेंक दिया होता।

अस्तु जो हो चर्चिल और उनके अनुयायियों के चोटी से एड़ी तक का पसीना एक कर दिए जाने के बाद भी न तो पौण्ड-पावने को टाला ही जा सका और न उसमें कोई कमी ही की जाने की बात की गई। यद्यपि श्री आर० के० षणमुखम् चेट्टी के अनुसार "सर क्रिप्स ने अपने वार्तालाप के दौरान में पौण्ड-पावने को घटाने के संबन्ध में कोई बात नहीं की" और अब "यह दावा दिया जा सकता है कि पौण्ड पावने की रकम के घटने के भूत से पिण्ड छूट गया है" फिर भी हम इस मत से अपनी सहमति व्यक्त किये बिना नहीं रह सकते कि "समझौते में इस आशय की भी एक धारा का होना आवश्यक था कि भविष्य में इस समझौते की अवधि समाप्त हो जाने के बाद भी ऐसा कोई प्रश्न नहीं उठाया जायगा जिसके अनुसार पौण्ड-पावने की रकम में कोई भी कमी की जायगी" और इस प्रकार की शर्त का छूट जाना बड़ी "महत्वपूर्ण भूल" और "दुर्भाग्यपूर्ण" घटना है।

भारत का पौण्ड-पावना युद्ध के लिए दिया गया कोई ऋण नहीं है। न तो यह रकम स्वेच्छा से दी गई थी और न इसे ऋण ही कहा जा सकता है। यह रकम भारतीय श्रम से उत्पादित उस माल की कम से कम कीमत है जो एक गुलाम से उसका मालिक चीज खरीदते वक्त उसे देता है। वस्तुतः भारत की रक्षा पर जितनी रकम खर्च हुई थी वह तो भारत-सरकार ने अलग से दी है और यह पौण्ड-पावना तो उस भारतीय श्रम का मूल्य है जो भारत से जबर्दस्ती कराया गया था।

जिस समय भारतीय प्रतिनिधि-मण्डल ने लन्दन में इस समझौते के लिए वार्तालाप आरंभ किया था उस समय ब्रिटेन के ऊपर हमारा १,५४७ करोड़ पौण्ड ऋण था। भारत को इस रकम की राष्ट्र के उद्योगीकरण और विकास के लिए आवश्यकता थी ताकि राष्ट्र के जीवन के मानदंड को ऊँचा उठाया जा सके जिसे ब्रिटिश शासन-शोषण के युग ने मानव-जीवन के स्तर से भी निम्नतल पर ढकेल दिया है। दरिद्र भारतीय जनता की पौंड-पावना एक बड़ी और महत्वपूर्ण पूँजी है, और जिसका उसके भावी जीवन के लिए बड़ा मूल्य है। अपनी इस गाढ़ी कमाई की पूँजी में से भारत ने लगभग १३३ करोड़ ३ लाख रुपया तो उस ब्रिटिश सैनिक सम्पत्ति के लिये दे दिया है जो किसी भी अवस्था में ब्रिटेन अपने साथ ले जा सकता था और फिलस्तीन तथा में ऐसी सम्पत्ति को उसे अनिवार्य नष्ट कर देना पड़ा है। ऐसी नष्ट देने योग्य सामग्री का मूल्य, खाते चाहे उसका मूल्य ५०० करोड़ क्यों न लिखा हो, १३३ करोड़ रुपया दिया जाना परदे की आड़ चोरी करने तुल्य है। यद्यपि सर क्रिप्स ने संधिवार्ता के दौरान में पौंड-पावने को कम करने की बात तो कहीं भी की; किन्तु वह लाभ तो उससे भी ले गए जो संभवतः इस रकम में किए जाने के प्रस्ताव को स्वीकार लिए जाने के बाद भी न कर पाते। दृष्टि से भी समझौता बहुत अधिक प्रद नहीं है और यहाँ भी "भागते की लँगोटी ही सही" वाली कहावत चेट्टी चरितार्थ करके आए हैं।

इसके बाद लगभग १६७ रुपया अँगरेज अफसरों की पेंशन के दिया गया है। कहा जाता है कि अँगरेज अधिकारियों ने भारतीय के उपरान्त सरकारी सेवाओं से अवकाश ग्रहण कर लिया है उन्हें जो पेन्शन जाती है उसका व्यय लगभग ८ करोड़ रुपया प्रतिवर्ष पड़ता है। भारत सरकार ने १६७ करोड़ रुपये से ऐसी खरीद ली है जिसकी आय से ६० बरसों तक पेन्शनें चुकाई जा और इसके साथ ही यह रकम भी हो जायगी। इस स्थल पर स्मरण करना कुछ कटु तो अवश्य किन्तु आवश्यक जान पड़ता है कि जान लें यह रुपया किन्हें दिया जा है। यह रकम उन अँगरेज अधिकारियों को दी जा रही है जिन्होंने अपने भर भारतीय जनता का अधिक से दमन किया और जिन्होंने अपने उस शासन-व्यवस्था का एक क्रियाशील अंग सिद्ध कर दिया था अपना लक्ष्य जनता का रक्त-शोषण बना चुकी थी। यह रुपया उन लोगों दिया गया है जिनके हाथ निःशस्त्र जनसमूह पर गोलियाँ चलाते हुए नहीं काँपे—जिनके हाथों में सत्याग्रहियों पर बन्दीगृहों में कोड़े कभी जरा-सा दर्द तक नहीं हुआ। अधिकारियों की कीर्ति-गाथा आज १९४२ के आन्दोलन में तबाह हुए और जले हुए घर गाते हैं। किस तर्कशास्त्र की कौन-सी आधार पर हमारी लोकतंत्रवादी और प्रिय सरकार ने इन "अलोक तंत्रवादी" और "अजनप्रियों" को किस कार्य के लिए १६७ करोड़ लम्बी रकम देना स्वीकार कर लिया।

कहा जाता है कि आगामी के लिए यह समझौता किया गया है अनुसार भारत को खर्च के रुपये की रकम दी गई है। किस्त-ब-किस्त ३ बरस में जायगी। पहले बरस भारत पौण्ड स्टर्लिंग क्षेत्र के बाहर में समर्थ होगा और इसके बाद

शेष पृष्ठ १४ पर

गीत

लेखक, श्री परमानंद शुक्ल

नयन में जो पल रही तृष्णा बनी अभिशाप
एक दिन बुझ जायगी यह प्यास अपने आप!
मोतियों का सिन्धु प्यासा
ओस की मधु-प्रात
स्वाति की चातक-पिपासा
प्यास की रस-रात
दाह की प्यासी चकोरी चाह की क्या माप?
एक दिन जल जायगी यह चाह अपने आप!
एक दिन बुझ जायगी
तृप्ति की प्रिय आस
और मृगतृष्णा सलोनी
जायगी बन साँस
तब न तुम घन बन उमड़ना हरने हृदय-सन्ताप
जो जला बुझ जायगा वह एक दिन चुपचाप!
तुम न रस-कन घन बरसना
साँवले रस-गात
सजल सिहरन भर हृदय में
सुख विरल अवदात
चाह की दुनिया भली है, तृप्ति में अनुताप
जल न यह प्रिय की निशानी प्यास [illegible]

कहानी

आपरेशन किसका ?

लेखक, डाक्टर प्राणजीवन मेहता

अनुवादिका, श्री शान्ता अत्रिदेव गुप्त

मानव-स्वभाव बड़ा विचित्र होता है। सन्देह करने का वह एक सजीव पुतला है। गणपतराम के सन्देह ने भी उनके जीवन को विषम बना दिया। किस प्रकार, इसका सुन्दर, मनोरंजक और घटनामय चित्रण इस कहानी में किया गया है। सामाजिक भावनाओं के आधार पर निर्मित कहानी बड़ी सुन्दर और रोचक है।

गणपतराम पंड्या यह पंड्या और ओ नाम की मशहूर सौलीसीटर पेढी के एक सीनियर पार्टनर हैं। इनको कानून के सिवाय साहित्य में भी रस है। यद्यपि गणपतराम का नाम अभी तक विद्वानों की नामावलि में पूरे रूप से नहीं लिया जाता, फिर भी पढ़े-लिखों की श्रेणी में इनका नाम लिखा जाता है। जूहू के अपने बँगले में प्रति रविवार के दिन पढ़े-लिखे स्त्री-पुरुषों का जमघट जरूर जमवाते थे। भिन्न भिन्न देशों में होनेवाली नई प्रवृत्ति की चर्चा अनेक दृष्टि से की जाती थी। नाद, ताल, नृत्य, चित्र, छन्द, लेखन इन सब बातों की समीक्षा होने के सिवाय विद्वान् किस विषय में अपना चातुर्य, सिद्धहस्तता बतानी चाहिये, इसकी भी नई योजनायें गढ़ी जाती थीं। इस प्रकार घण्टे तक मस्तिष्क का आंदोलन होने के पीछे पेट का आन्दोलन चलता था। इसमें तो काठियावाड़ियों को भी मात दिखानेवाली गणपतराम की मेहमानदारी, और नाना प्रकार की भिन्न भिन्न व्यंजनों के परोसना, गणपतराम भाई की भावना, और भर पेट खाने की छूट इन सबसे गणपतराम भाई को चारों ओर से वाह वाह मिलने के साथ साथ गणपतराम भाई की कीर्त्ति-साहित्य की भिन्न भिन्न चर्चा के साथ साथ होती थी।

बम्बई के बाहर अन्य शहरों की विद्वान् मण्डली में लगभग प्रत्येक वैयक्तिक सूची में गणपतराम भाई का नाम मित्र-श्रेणी में सबसे ऊपर लिखा होता था। बम्बई में गणपतराम भाई के रहने का स्थान कालबादेवी के ऊपर था। इसलिये बाहर के बहुत से मेहमानों को यह स्थान अनुकूल पड़ता था। प्रभावती बहन नडियाद के एक संस्कारी कुटुम्ब की कन्या थी। उसने थोड़ी शिक्षा ली थी परन्तु कुशल और समझदार थी। पति का साहित्य एवं विद्वत् प्रेम प्रभावती को अच्छा लगता था। कुछ समय तक तो इसमें बहुत आनन्द रहा। परन्तु पीछे से इस प्रेम का अतिरेक हो जाने से अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ और न्यूनतायें सामने आने लगीं। और कई बार तो उसका मन होने लगा कि पति के सामने अपना विरोध स्पष्ट कर दूँ। परन्तु सोलिसिटर जैसा उच्च स्थान रखनेवाला, और पुरुषोचित आत्माभिमान के कारणवाला पुरुष एक स्त्री की सलाह स्वीकार करे; इसमें तो आर्यत्व की भावना का लोप है। अपनी मंडली में गणपतराम भाई का स्थान ऊँचा होता था, इसलिये सामाजिक मंडल भी गणपतराम भाई को अपने मण्डल में लेने का प्रयत्न करने लगे। राजकीय मण्डल भी वक्त बे-वक्त गणपतराम भाई के यहाँ दीखने लगा। गणपतराम भी तो सब जगह नेता की भाँति गिने जाने लगे। नेता किस बात में हैं, यह अभी निश्चय नहीं हुआ। परन्तु सब मण्डलों के लोग इनको मानपूर्वक बुलाते थे। बहुत सी सभाओं के प्रमुख चुने जाते थे। जीवदया मण्डली; आयुर्वेदिक सभा, एन्टीवैकसीनेशन लीग, इन सब संस्थाओं में इस बर्ष के लिये प्रमुख के रूप में गणपतराम भाई का चुनाव हुआ था, और सबने अपना अपना थोकबन्द साहित्य प्रमुख को भेज दिया था।

एन्टीवैकसीनेशन लीग की सभा गारडन हाल में भरी थी। गिन-चुने थोड़े से सभासद और दो-चार प्रेक्षक बैठे थे। परन्तु हाल खूब सजाया गया था। गणपतराम भाई को साहित्य पढ़कर तैयार होने की फुर्सत नहीं थी, इसीलिये उड़ती नजर से सब देख डाला। मुख्य वक्ता ने अपना भाषण खूब दलीलों के साथ दिया। दूसरे ने इसका अनुमोदन किया और प्रमुख ने इस पर अपनी मोहर लगा दी।

गणपतराम भाई के पुत्र की आयु एक साल की थी। आज गरमी है, चौमासा है, तबियत कमजोर है, इस प्रकार के कारणों से माता का टीका लगवाने में ढील होती जा रही थी। मगसिर महीना चल रहा था। जिससे प्रभावती बहन का विचार हुआ कि अब जरूर टीका लगवा देना है। भोजन करते करते टीका लगवाने की बात चली। परन्तु आज तो एन्टीवैकसीनेशन लीग का आन्दोलन पूरे जोर के साथ चल रहा था; इसमें वह स्वयं प्रमुख था इसलिये गणपतराम भाई ने कहा कि अब टीका नहीं लगवाना। आज तक तो पिता टीका लगवाने का आग्रह करता था, और माता का हृदय अन्दर से धुक्धुक करता था। परन्तु आज तो उलटा बनाव बन गया। प्रभावती ने कहा—नहीं, टीका लगवाये बिना नहीं छुटकारा। किसलिये फिजूल का जोखम उठाया जाये। पाँच दिन जरा तकलीफ में निकल जायेंगे। नहीं आज तो गणपतराम भाई नैपोलियन का निश्चय करके बैठा था। हमको टीका किसी भी प्रकार से नहीं लगवाना; टीका लगवाने से जरा भी लाभ नहीं है; और नुकसानी बहुत है, साथ में जीवहिंसा है। प्रभावती ने कहा कि यदि लाभ नहीं तो लाखों-करोड़ों आदमी क्यों टीका लगवाते हैं? तुमने टीका लगवाया है; मैंने टीका लगाया है। हमको कुछ भी नुकसान नहीं हुआ और भी जब माता का रोग फैलता है, तो टीका लगवानेवाले बच जाते हैं, यह तो साफ दीखता है। इससे

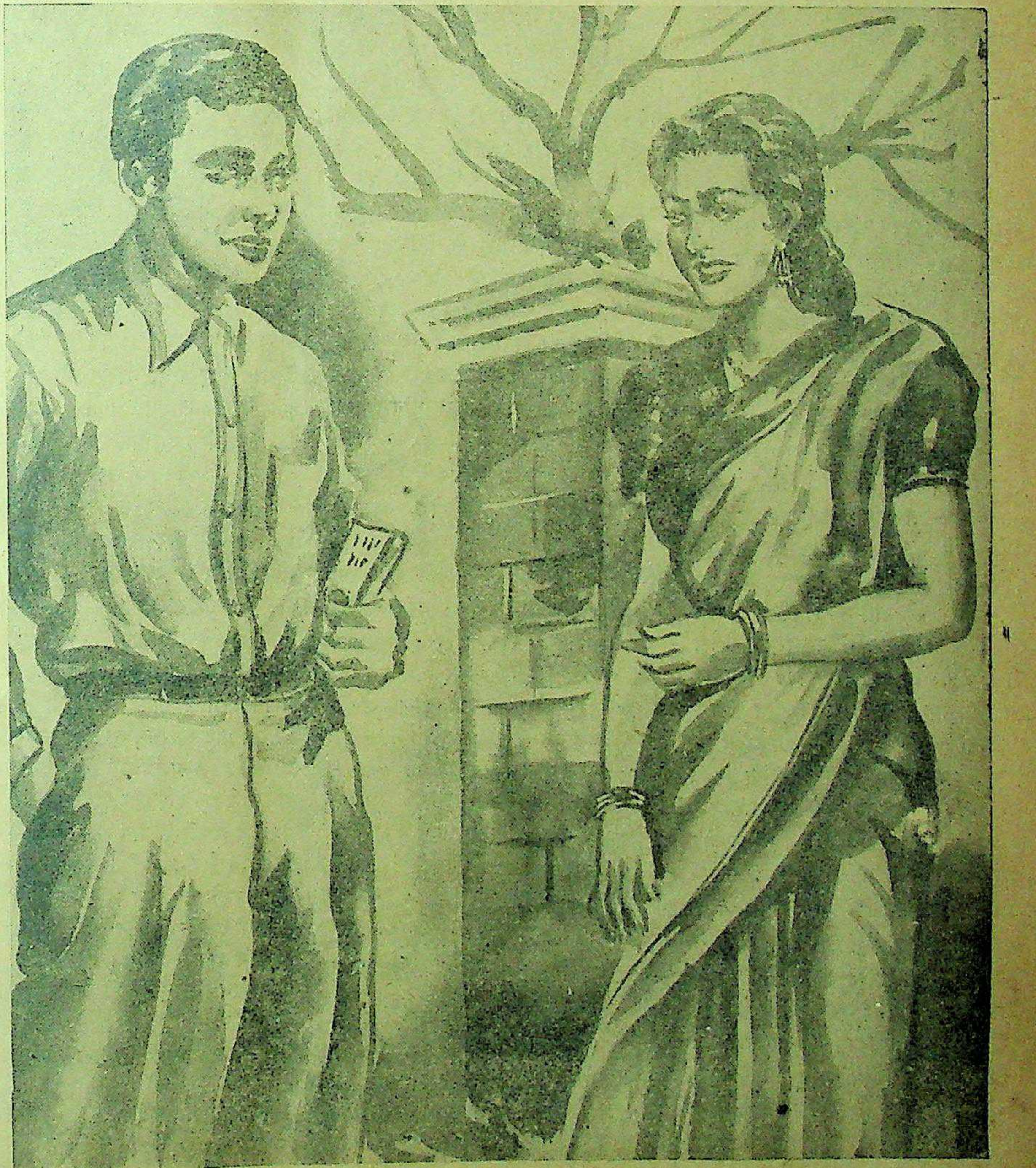

गणपत पंड्या ने प्रभावती से कहा कि बच्चा तो हमारा नहीं जान पड़ता।

बहुत पढ़-पढ़कर घर में परीक्षण नहीं होंगे। मैं तो आज ही टीका लगवाऊँगी। गणपतराम के यह बात सहन हो, यह असम्भव था। उससे गुस्सा रोका जाना असम्भव हो गया। 'इस लड़के के तो माता का टीका लगने ही नहीं दूँगा, दुनिया उलटे रास्ते जा रही है; बस पीछे तो हवा चली। भारत के प्राचीन ऋषि क्या मूर्ख थे; कि उन्होंने टीके के लिये कुछ नहीं लिखा। और क्या टीका न लगवाने से भारत की संस्कृति कुछ घट जाती है। यह तो केवल पाश्चात्य सुधार का अभिमान-मात्र है। प्रभावती के आप इसका जवाब देने के लिये एक वकील का दिमाग नहीं था। इसलिये वह रो पड़ी। वीररस निष्फल जाता देखकर करुणरस की मदद ली। उसने कहा कि तुम तो बड़ी-बड़ी सभाओं में दूसरों को परास्त कर देते हो, वहाँ मेरी क्या हस्ती? परन्तु मैं अपने लड़के को टीका जरूर लगवाऊँगी। मेरा एक ही लड़का है; इसको मैं जोखम ने नहीं डालूँगी। बचपन का लड़का तो माता का ही माना जाता है; मा को जितना स्नेह होता है, उतना बाप को नहीं होता। इस समय के वातावरण में वकील का दिमाग इस दलील को मानने के लिये तैयार नहीं था। इस समय तो अपने दिये हुए निर्णय को किसी भी प्रकार से अमल में आता हुआ देखना था—इसलिये गुस्से में ही बोल उठा—'बस' मुझे इस फिजूल की बकवाद में नहीं पड़ना; बेबी को किसी भी तरह कभी भी टीका लगवाने में नहीं दूँगा। और प्रभावती के लिये इस फैसले को स्वीकार करने के सिवाय दूसरा कोई रास्ता नहीं था।

आज इस बात को चार वर्ष हो गये। बम्बई में शीतला का रोग फूट निकला। अरुण इसमें फँस गया। और आठ दिन की बीमारी के पीछे मर गया। एक ही लड़का; पुत्र की मौत से माता का हृदय कितना फटता है, इसको तो अनुभवी माता ही जान सकती है। और इसमें भी शीतला से मौत हो, यह और भी दुःख का कारण हुआ। गणपतराम को कितनी चोट पहुँची, यह लिखा नहीं जा सकता। दिन-रात यही सुनाई पड़ता था कि इस बच्चे का खूनी कहीं मैं तो नहीं? परन्तु वकील के हृदय पर सभ्यता की इतनी मोटी तह जम गई थी, कि मन की बात न तो किसी को कह सकता था और न स्वयं सहन कर सकता था। इस चोट ने इसके हृदय पर बहुत आघात किया। आफिस के सिवाय की सब प्रवृत्तियाँ बन्द हो गई। औफिस में भी काम में मन ठीक नहीं लगता था। कई बार तो दिल में आता था कि प्रभावती से माफी माँगकर दिल का बोझ हलका कर लूँ। पर पुरुष जाति का ज्ञान, आत्म-सम्मान इसमें आगे आता था। और अन्त में इस आघात-प्रत्याघात के थपेड़ों से शरीर और मन का बल दिन-प्रतिदिन कम होने लगा। जिससे हवा खोरी के लिये छुट्टियों में महाबलेश्वर जाने का निश्चय किया। मुश्किल से दो-एक वर्ष के पीछे शरीर रास्ते पर आया और सारी बात भूल-सी गई।

और भी दो एक वर्ष बीत गये। परन्तु बालक के अभाव में घर सूना-सूना लगता था। नई मण्डली का आना-जाना बन्द हुआ तो पुराने सगे-सम्बन्धियों ने इनका स्थान लिया। और धीरे-धीरे 'बालक बिना घर नहीं।' यह बात वक्त बे-वक्त सुनाई देने लगी। सन्तति की लालसा दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी। मानव सहज-यत्न कोशिश से कुछ सफलता होती नहीं दिखाई दी।

रामु काकी इस विषय पर सलाह पर सलाह देने के लिये पूर्ण रूप से घर में अड्डा जमा बैठी। अमुक व्रतों से बहुतों के सन्तति हुई है; इस प्रकार के उदाहरण और युक्तियाँ पेश करती थी। बालक तो भगवान् की माया है। मनुष्य की मेहनत से कुछ नहीं होता। शुभ व्रतों के करने से देवी-देवताओं को प्रसन्न करने पर ही मनोकामना पूरी होती है। रविवार के दिन गणपतराम भाई घर पर ही होते थे। उस दिन रामु काकी की यह चर्चा जोर से चलती थी। गणपतराम भाई सुधारे हुए जमाने के गिने जाते। परन्तु अब शरीर के निर्बल होने से मन भी कमजोर होगया। गणपतराम को भी सन्तान के बिना घर सूना मालूम देता था। रामुकाकी की बात सुनकर कहने लगा कि इसमें कुछ हानि नहीं है; उपवास से तो शरीर भी सुधारता है; घर के आदमी की सलाह निकालकर फेंक देने की नहीं होती। बस अबसे व्रत नियम का प्रारम्भ हुआ।

रामु काकी ने जमाना देखा हुआ था; बहुत अनुभवी तथा चालाा बृद्धा थी। व्रत-नियम पालन करते भी दो महीने बीत गये। फिर रामु काकी ने एक जन्त्र लाकर दिया; और कहा कि इसको एक महीने तक शरीर पर धारण करे रहो। अमुक तिथि को ब्राह्मण जिमा कर उनको दक्षिणा दिलाई; ब्राह्मण से देवी-पाठ के मन्त्र जपवाये; अमुक मंगलवार को मन्दिर में दर्शन कराने के लिये साथ में ले गई; वहाँ पर खास मन्दिर के पुजारी के पास से प्रसाद में भभूत लाकर प्रभावती के माथे और बायें पैर के अँगूठे पर लगाई। आठ दिन तक पीपल को जल दिया। परिक्रमा ली, पूजा करी; फिर दो एक दिन पीछे मन्त्रों से डोरा डालकर प्रभावती के गले में बाँध दिया। कुछ दिन पीछे रामु काकी प्रभावती को एक स्थान पर बड़ा पीर आया है; यह कहकर वहाँ ले गई; और फिर फकीर के पास से नीले कपड़े की लोर लेकर प्रभावती के बाजू में बाँध दी; और एक माला उससे लेकर उसके गले में पहना दी। इस माला को सात दिन तक न उतारने का आदेश दिया।

कुलदेवी, कालबादेवी; गामदेवी; मायादेवी; हनुमान; सूर्यनारायण—इस प्रकार लगभग सभी देवी-देवताओं की मानता कराई; सवा रुपये से लेकर एक सौ एक रुपये तक इन देवी-देवताओं को मनाने में खर्च किये।

बम्बई का देव इस जमाने में हाजर हजूर पर्चा न बता सका; इधर उपवास के कारण प्रभावती का शरीर दिन-प्रतिदिन कमजोर पड़ने लगा। इतने परिश्रम के अन्त में भी जब सफलता मिलती नहीं दिखाई दी, तो प्रभावती के शरीर पर असर होने लगा। गणपतराम का शरीर तो निर्बल था ही, अब दोनों बीमार जैसे रहने से दिल उचाट होने लगा। घर में भी दिल कम लगता था। इस कमजोरी को देखकर गणपतराम भाई के एक पारसी वकील मित्र सोराब जी ने मांस, अण्डा और शराब लेने का आग्रह किया। कुछ दिनों तक तो गणपतराम ने इनकी बात सुनी-अनसुनी कर दी। परन्तु पीछे से कायदे के दिमाग ने रास्ता निकाला कि हिन्दू के लिये मांस तो नहीं खाना, परन्तु शराब के लिये कोई खास बाधा नहीं है। सोमरस का उपयोग तो शास्त्रों में भी किया है। इसलिये शराब का निषेध नहीं। इससे निर्बल मन को मजबूत बनाने के लिए शराब लेना आरंभ किया। निराशा की बेचैनी को शराब के नशे में भूलने का प्रयत्न आरम्भ हुआ।

गणपतराम के मन में तो किसी किसी समय यह बात आती थी, कि मेरे अपने शरीर में से ही चेतना जाती रही है। यहाँ पर रामु काकी के डोरे-धागे क्या के काम कर सकते हैं। परन्तु अपनी दुर्बलता की यह बात किसी को जाहिर नहीं होने देता। दो-चार डाक्टरों के साथ घुमा-फिराकर इस बात की चर्चा उसने चलाई। अन्त में सार यह निकला कि डाक्टरी विद्या में इस काम के लिये दवायें हैं नहीं। रोग हो तो रोग की परीक्षा करके दवाई दी जा सकती है। परन्तु इस प्रकार की शक्ति की दवा—ये तो असम्भव वस्तु है। इन डाक्टरों के पास शरीर-परीक्षा की हिम्मत गणपतराम को न हुई। इसलिये न डाक्टर आया, न उसके पास हिम्मत करके शरीर की परीक्षा के लिये गया। पहले तो भाषा की मुश्किल; परन्तु आखिर में जैसे-तैसे परीक्षा करके डाक्टर ने कहा कि और सब कुछ ठीक है; केवल शरीर में रक्त कम है। इसके लिये आराम, शुद्ध वायु, पाचन की यह दवा; खून के लिये लोहभस्म और सोमल का इंजेक्शन लो। इन दवाइयों से सब ठीक हो जायेगा। जब इन सबसे काम चलता न दिखाई दिया तब शरीर-परीक्षा कराने के बहाने से इन्श्योरेन्स (बीमा) उतरवाने का निश्चय किया। परन्तु इसमें तो डाक्टर ने शरीर के अवयव पूरे देखें—या न देखे केव एजेन्ट से बात करके फार्म भर दिया। इन सब बातों से थककर समय व्यतीत करने के लिये एक दिन अखबार के पन्ने पलट रहा था, पृष्ठ पलटते-पलटते शक्तिवर्धक इलाज का इश्तिहार सामने आ गया। इश्तिहार पढ़कर इसको अजमाने के लिये मन ललचाने लगा। उसने दवाई मँगवा ली। कुछ दिन आजमायश करके भी देखा। परन्तु परिस्थिति वही की वही रही। इसमें कुछ अदल-बदल न हुआ। इन सब प्रयत्नों की तथा मनोमन्थन की कुछ भी खबर प्रभावती को नहीं थी।

जब रामु काकी ने देखा कि बम्बई के देवी-देवता कुछ भी मदद नहीं करते, तो उसने बाहर से मदद लेने का निश्चय किया। पहाड़ में दूर एकान्त में रहनेवाले संन्यासी के पास स्वयं जाकर आशीर्वाद और सिद्ध मंत्र लेने के लिये कहा। और दूसरे जितने देवी-देवताओं के पास जा सकते थे—फिर से सबके पास हो आये। परन्तु इसमें भी कुछ फल न मिला। अब रामु काकी ने अपने प्रयत्न की दिशा बदली। उसने एक समाचारपत्र में इश्तिहार दिखाया कि यदि लड़का चाहिये तो दुर्गा की दवा खाओ। यह विज्ञापन गणपतराम भाई को दिखाकर रामु काकी प्रभावती बहन को दुर्गाबाई के दवाखाने ले गई। वहाँ उसे आशा बँधाकर दवा दी गई; दो महीने तक भी कुछ असर दिखाई न पड़ा। रामु काकी ने सलाह दी कि किसी अच्छे डाक्टर से सलाह ली जाये। स्त्री रोगों के विशेषज्ञ दो स्त्री डाक्टर और एक पुरुष डाक्टर को प्रभावती को दिखाया गया। स्त्री डाक्टर ने कोई भी खास आशाजनक बात नहीं कही। पुरुष डाक्टर ने आपरेशन का चान्स लेने के लिये सलाह दी। आपरेशन का नाम सुनकर प्रभावती के होश उड़ गये। अब तक जो सहन किया, उसकी तो कुछ गिनती ही नहीं; और उस पर यह नई आफत सिर पर आई। हिम्मत करके डाक्टर से उसने पूछा कि 'आपरेशन किस लिये करवाना है।' डाक्टर ने कहा कि गर्भस्थान का मुख जरा खोलना है। प्रभावती ने पूछा क्या संकुचित है। मेरे एक बच्चा हो चुका है; फिर वह कैसे हुआ। डाक्टर ने कहा कि कोई खास संकोच तो नहीं है; परन्तु खासकर ऐसा हो जाता है, इसलिये इस आपरेशन से गर्भ रहने का चान्स कई बार हो जाता है। आप चान्स अजमाओ; आगे आपका प्रारब्ध रहा। गणपतराम ने डाक्टर के साथ बात करी, और आपरेशन करने का पूरा निश्चय कर लिया। चार दिन के पीछे आपरेशन हो भी गया। दो-तीन महीने तो आशा में बिताये। परन्तु फल कुछ नहीं आया। परन्तु अभी रामु काकी थकी नहीं थी—उसके पास तो बच्चा दिलवाने के नये नये मार्ग तैयार ही रहते थे। कुटुम्ब की वंश-बेल की शाखा बढ़नी ही चाहिये; यह उसका एक सिद्धान्त था। प्रभावती पर दैवी और मानुषी सब प्रयोग अजमा लिये—इनसे कुछ भी फल नहीं हुआ।

वंश-वृद्धि के लिये एक नया पात्र रखने की सलाह रामु काकी ने दी। रामु काकी की बहिन की लड़की अठारह साल की थी। रामु काकी ने उसके साथ सौदा पक्का करने का प्रयत्न किया। धीमे धीमे प्रभावती को कुटुम्ब के भले के लिये—सौत लाने के लिये राजी भी कर लिया। परन्तु गणपतराम के पास जब यह बात आई, तो उसने साफ इनकार कर दिया। प्रभावती रामु काकी के हाथ मिल गई; उस बेचारी को यह पता नहीं था कि गणपतराम किस लिये इनकार कर रहा है। पन्द्रह-बीस दिन की हाँ, ना के पीछे गणपतराम ने मन में हाँ भरी, और फिर थोड़े दिनों में विवाह हो भी गया। विवाह के पीछे रामु काकी एकदम बदल गई। लगभग सारे घर की मालकिन वह बन बैठी। क्षण क्षण में प्रभावती का अपमान होने लगा। लीलावती तो रामु काकी के हाथ के नीचे पहले से ही दबी हुई थी। इसलिये सारी सत्ता रामु काकी

शेष पेज १२ पर देखिये

मातृमण्डल

सफल गृहस्थ जीवन क्या है ?

सभी परिस्थितियों में सुखी मन रहना सर्वोत्तम है

लेखक, श्री प्रोफेसर लालजीराम शुक्ल, एम० ए०, बी० टी०

श्रीमती सरला भार्गव, संयुक्त राष्ट्र संघ सेक्रेटेरियट में ट्रेनिंग के लिये भारत से भेजी गई हैं।

समाज की जितनी सेवा एक गृहस्थ कर सकता है उतनी सेवा एक भिक्षु अथवा संन्यासी नहीं कर सकता। आर्थिक दृष्टि से गृहस्थ ही समाज के सभी लोगों का पोषण करते हैं। नैतिक दृष्टि से समाज के लोगों का नैतिक उत्थान सच्चे गृहस्थ के द्वारा ही होता है। उसके आचरण का अनुकरण दूसरे लोग करते हैं। यदि भिक्षु अथवा संन्यासी सच्चा त्यागी, निर्भीक और अक्रोधी हुआ तो साधारण जन-समुदाय ऐसे लोगों के आचरण से उतना लाभ नहीं उठाते जितना गृहस्थ लोगों के सदाचार से उठाते हैं। साधु की ईमानदारी सुलभ मान ली जाती है और गृहस्थ की दुर्लभ। अतएव यदि गृहस्थ सच्चा रहता है तो वह दूसरे लोगों के समक्ष अच्छा आदर्श खड़ा करता है।

कितने ही लोग समय के पूर्व लौकिक जीवन को छोड़ देते हैं और साधु बन जाते हैं। यह अपनी और समाज की दृष्टि से भूल है। जीवन की जिम्मेदारियों से भागनेवाले व्यक्ति को कहीं भी शान्ति नहीं मिलती। जो व्यक्ति गृहस्थ जीवन में दुःखी रहता है वह संन्यासी होने पर भी दुःखी ही रहता है। वह न तो अपना उपकार करता है और न दूसरों का। अपनी इच्छाओं की पूर्ति न होते देख जो लोग संसार से निराश हो जाते हैं वे आध्यात्मिक शान्ति प्राप्त करने के लिए उचित साधना भी नहीं कर पाते। उनकी इच्छाएँ उनके मन को सदा अशांत बनाये रखती हैं। जिस मनुष्य के पास इच्छाओं के तृप्त करने का साधन नहीं है, उसे अपनी कमजोरियों का ज्ञान नहीं हो पाता। इच्छाएँ उसी समय होती हैं जब कि उपयुक्त भोग्य पदार्थ के समक्ष रहता है। भोग्य पदार्थ की अनुपस्थिति में हमें अपनी इच्छाओं का ज्ञान भी नहीं होता। ऐसी अवस्था में मन सदा अशान्त ही बना रहता है।

मनुष्य के ज्ञान की परख कर्म-क्षेत्र में होती है। मनुष्य के सामने अनेक प्रकार के प्रलोभन के अवसर तभी आते हैं जब वह संसार में घुसता है। इस समय अपने ऊपर नियन्त्रण रखने की आवश्यकता होती है। अपने आपके ऊपर नियन्त्रण वह व्यक्ति नहीं रख सकता जो धर्म-रहित है। भोग्य पदार्थों की सत्यता में विश्वास करनेवाला तथा आध्यात्मिक ज्ञान से विरत व्यक्ति काम, क्रोध और लोभ के आवेश को नहीं रोक सकता। अपने आपको जाने बिना अर्थात् अपनी कमजोरियों का ज्ञान प्राप्त किये बिना अपने आपको काबू में नहीं लाया जा सकता। इसे जानने के लिए उपयुक्त वातावरण की आवश्यकता होती है। यह वातावरण गृहस्थ-जीवन में ही आता है।

संसार में अनेक प्रकार के दुःख होते हैं। इनमें से अधिक दुःखों का कारण मानसिक होता है। अपनी मानसिक झंझटों को हम दूसरों के ऊपर आरोपित कर देते हैं और उन्हें अपना शत्रु बना लेते हैं। इस प्रकार के अनेक कल्पित दुखों के द्वारा हम पीड़ित होते रहते हैं। इनसे घबड़ाकर कभी-कभी मनुष्य जंगल की ओर भागता है, पर इससे उसका लाभ कुछ भी नहीं होता। जो व्यक्ति घर में नरक की....भोगता है वह घर के बाहर भी मिलते रहते हैं। यदि कोई भी बाहरी शत्रु न मिले तो भी मनुष्य शान्त मन न होकर दुःखी ही रहता है। उसका मन अपने आपका शत्रु बना रहता है।

जब मनुष्य अपनी आश्रितों के विषय में उतनी ही चिन्ता करता है जितना आवश्यक है, तो उसका जीवन शान्त रहता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने पुराने कर्मों के अनुसार अर्थात् अपने प्रारब्ध के अनुसार दुःख-सुख पाता रहता है। इन दुःख सुखों का होना उसके अध्यात्मिक विकास के लिए आवश्यक होता है। हमें जहाँ तक हो सके उनकी सेवा और सहायता करनी चाहिए। पर हम किसी भी व्यक्ति के प्रारब्ध को मिटा नहीं सकते। अपने प्रयत्न से पूर्व कर्म के संस्कार मनुष्य भले ही मिटाने में समर्थ हो जाय, दूसरा व्यक्ति इस कार्य में समर्थ नहीं होता। अतएव निर्लिप्तता के साथ जो व्यक्ति अपने आश्रितों के प्रति कर्तव्य करता है वही सुखी और शान्त रहता है।

सच्चा त्याग इच्छा का त्याग है। बाहरी त्याग दिखावा-मात्र है। इच्छा के न रहने पर मनुष्य चाहे जैसी परिस्थिति में रहे वह सुखी ही रहता है। इच्छा का त्याग एकाएक नहीं होता। इसके लिए प्रतिदिन के अभ्यास की आवश्यकता होती है। मनुष्य को एक ओर प्रतिदिन संसार की निस्सारता पर विचार और दूसरी ओर मनो को रोकने का अभ्यास करना चाहिए। हम जिस ओर अपनी चेतना को ले जाते हैं उसी ओर आलोक हो जाता है अर्थात् उसी ओर हमें सुन्दरता और सुख दिखाई देने लगते हैं। आध्यात्मिक चिन्तन से रहित व्यक्ति को सांसारिक पदार्थ ही सत्य दिखाई देते हैं। जैसे जैसे मनुष्य की जेतना अन्तर्मुखी होती है, वह संसार के पदार्थों से मोहित नहीं होता।

आधुनिक मनोविज्ञान के पण्डित प्रोफेसर चार्ल्स झुंग महाशय का कथन है कि जो मनुष्य आत्म. साक्षात्कार करना चाहता है उसे बड़ी ही एकाग्र चित्तता की आवश्यकता होती है। उसे अपने कामों को सदा साक्षीभाव से देखना पड़ता है। पर इसके लिए यह भी आवश्यक है कि मनुष्य अपने जीवन के साधारण कृत्यों को न भूलें। उसे अपने जीवन के कार्यों को अब नई दृष्टि से करना चाहिए। जो काम दूसरे लोगों के लिए बन्धन के कारण बन जाते हैं वे ही काम साधक के लिए आत्मज्ञान के कारण बनते हैं। सांसारिक पुरुषों की लौकिक कामों में सहज प्रवृत्ति होती है। अतएव ऐसे कामों से उनकी वासनाएँ प्रबल होती हैं। इससे चरित्र-बल न बढ़कर कमजोर ही होता है। पर निष्क्रियात्मक मनवाले व्यक्ति को सांसारिक कामों में रुचि नहीं होती। उसे इन कामों को कठिनाई के साथ करना पड़ता है। अतएव ऐसे कामों से उसकी इच्छा-शक्ति दृढ़ होती है और आत्मज्ञान का लाभ होता है।

सफल गृहस्थ-जीवन उस व्यक्ति का है जो सभी परिस्थितियों में सुखी मन रहता है। सभी गार्हस्थ जीवन तभी संभव है जब मनुष्य नित्यप्रति आध्यात्मिक विचार को और अपने मन को रोकने का अभ्यास करें। ऐसे व्यक्ति को आत्मा की शक्ति का भी ज्ञान होता है। जब तक मनुष्य संकट में नहीं पड़ता तब तक उसे किसी आध्यात्मिक शक्ति की सहायता की आवश्यकता ही नहीं पड़ती और न उसे यह शक्ति प्राप्त होती है। गृहस्थी का भार लेने पर यह आवश्यकता पड़ती है और जब व्यक्ति देखता है कि उसे अकस्मात् अज्ञात् जरिये से समय पर सहायता मिल जाती है तो उसे उस शक्ति की उपस्थिति में विश्वास हो जाता है। इस तरह गृहस्थ-जीवन आध्यात्मिक शक्तियों के साक्षात्कार करने का उपाय है और जो व्यक्ति जितना ही उन शक्तियों का साक्षात्कार करता है उसका जीवन उतना ही सफल है।

कारवाँ क्लब, नई दिल्ली में कुछ प्रमुख स्त्रियाँ लेडी पमेला माउन्टबेटन को भारत से जाने के समय विदाई दे रही हैं।

* * *

मरदों की गलतीयाँ

यौवन नष्ट करनेवाले, जीवन फीका, गुप्त रोग अथवा अन्दर से खोखले इश्तहारी नीम-हकीमों के पास न फँसें बल्कि मशहूर सख्श स्पेशेलिस्ट कविराज डी० आर० वजीराबाद वाले मैनेजर दी हीरो फार्मेसी (रजिस्टर्ड), पीछे डाकखाना दरियागंज, देहली से मिलें। कीमत आराम के बाद दें, घर मँगवाने से वी० पी०। अन्दरूनी बेरूनी खास इलाज से ताकत का पूरा समान देखकर आप दंग रह जायेंगे।

परीदेश

यह पुस्तक ख़ास कर छोटे बच्चों के लिए है। इसमें ऐसी एक भी बात नहीं जिसको समझने के लिए माथापच्ची करनी पड़े। इसमें रोजमर्रा की बातें बड़े ही अच्छे ढंग से लिखी गई हैं। बड़े आकार की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों और फूल-पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है। मूल्य ॥)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

आपरेशन किसका ?

(पेज १० का शेष)

हाथ में ही रही। प्रभावती ने हवा खोरी करने के लिये जूहू के बँगले पर रहने का निश्चय किया। वहाँ हवा अच्छी थी, फिर भी उसका शरीर सूखने लगा। रामु काकी के हाथ नीचे चलते गृह-संसार में गणपतराम सुखी हो सकेंगे—ऐसा उसको नहीं लगा। लीलावती भी रामु काकी की शिक्षा के अनुसार चलती। इससे गणपतराम की स्थिति त्रिशंकु जैसी हो गई। नई पत्नी को खुश करने में—वह रोज सिर पर चढ़ती जाती थी। रामु काकी का जोर बढ़ गया था। प्रभावती दिन-प्रतिदिन कमजोर होती जाती थी। अपने आप एक इज्जतदार गृहस्थ; इसलिये इस स्थिति की बात किसी को कह भी नहीं सकता था। इससे अपनी तबियत पर दिन-प्रतिदिन आघात होने लगे। इस प्रकार बारह महीने बीत गये। परन्तु संतति के चिह्न लीलावती में दिखाई नहीं दिये। रामु काकी घबराई और उसने धागे के प्रयत्न अजमाये। अब तो किसी न किसी प्रकार से—जोहो—बालक चाहिये ही, यह भावना रामु काकी के कलेजे में घर कर बैठी। उसने आँख मीचकर दौड़-धूप शुरू कर दी। मन्दिर के ब्रह्मचारी ने धागे के सिवाय वैद्यक का भी ज्ञान अपना बताया, और बहुत आशा दिलाई।

रामु काकी के सामने तो एक ही बात थी कि गर्भ रहे; चाहे जैसे हो। ब्रह्मचारी जी ने दवा के बहाने या कथा के बहाने वक्त बे-वक्त घर में आना आरम्भ किया। रामु काकी ने ब्रह्मचारी की जान-पहचान गणपतराम भाई से भी करवा दी। परन्तु पता नहीं किस कारण से गणपतराम भाई को इस ब्रह्मचारी का सत्संग अच्छा नहीं लगा। परन्तु रामु काकी ने ब्रह्मचारी की सज्जनता का इतना अधिक बखान किया कि गणपतराम को चुप होना पड़ा। ब्रह्मचारी और नववधू-युवती को विशेष एकान्त मिलने लगा। इस प्रकार से तीन-चार महीने बीत गये। एक दिन प्रातः रामु काकी के मुख पर प्रकाश की किरण चमकी। उसने हँसते हँसते गणपतराम भाई से कहा कि बहुत सालों की मेहनत अब फली है। भगवान् ने यह शुभ दिन दिखाया है। इस खबर को सुनकर जितना हर्ष गणपतराम को होना चाहिये था, उतना आनन्द उसे नहीं हुआ। रामु काकी ने सारे घर में, सब सगे-सम्बन्धियों में इस शुभ समाचार की सूचना और बधाई देनी आरम्भ कर दी। सगे-सम्बन्धी गणपतराम को मुबारकबादी देने के लिये आने लगे। प्रभावती को भी खबर लगी, वह भी प्रसन्न मन से हँसते हुए गणपतराम के पास आई, और मुख को ऊँचा उठाकर गणपतराम को कहने लगी कि भगवान् ने इतने दिनों पीछे यह शुभ अवसर दिया, और तुम चुप बैठे हो। गणपतराम ने कहा कि मेरी तबीअत ठीक नहीं रहती, यह कहकर पिण्ड छुड़ाया। थोड़े महीने पीछे पुत्र-जन्म हुआ। और सारा घर खुशी में डूब गया। लीलावती का आनन्द तो स्वाभाविक था। रामु काकी का दिमाग आज तो आसमान पर था। प्रभावती भी आनन्द में आ गई और गणपतराम भी आज प्रसन्न थे। बालक जब एक-आध महीने का हो गया तो रामु काकी ने मनहर को खिलाने के लिये गणपतराम की गोद में दे दिया। बच्चे को खिलाने के लिये गणपतराम भाई हिचके में झुलाने लग गये। बालक को देख-देखकर गणपतराम आत्म-सन्तोष मनाने लगे। मुख को बार-बार देखते थे। मुख को बारीकी से देखने पर किसी का आभास मिलता है, ऐसा उनको अनुभव होने लगा। गालों का उभार, माथे की उँचाई; भौं का टेढ़ापन, आँख का देखाव, नाक का घुमाव, गोल-मटोल चेहरा, एकदम निर्मल गेहुँआ [illegible]; इन सब लक्षणों के साथ नई आकृति कल्पना चित्र में आने लगी। ये लक्षण न तो मेरे में हैं, और न लीलावती में हैं, फिर किससे मिलते हैं। अपने पूर्व जन्म के आये होंगे ? एक पीढ़ी में पूर्व जन्म के लक्षण उतरते हैं, ऐसा डाक्टर लोग मानते हैं। इस प्रकार से जब कल्पना-चित्र खींच रहा था, इतने में ब्रह्मचारीजी सत्संग के लिये घर में आ पहुँचे।

रामु काकी बड़े उत्साह के साथ ब्रह्मचारी जी को गणपतराम के पास ले गई। और ब्रह्मचारी जी के शुभाशीषों के गुणों को सुनाने लगी। ब्रह्मचारी जी की मूर्त्ति आँखों के सामने सम्पूर्णरूप में खड़ी थी। ब्रह्मचारी जी की आकृति में और बच्चे की आकृति में पूरा मेल मिलता—गणपतराम को नजर पड़ा। इससे दिमाग में सारा चित्र समझ में आ गया। इससे हृदय हाथ से बाहर निकल पड़ा। गणपतराम आज रामु काकी की बात सुनने को तैयार नहीं था। वह कभी तो ब्रह्मचारी के मुख को देखता और कभी बालक के मुख को देखता। इन दोनों स्थानों के सिवाय उसकी निगाह तीसरे स्थान पर नहीं जाती थी। रामु काकी गणपतराम को इस प्रकार देखते हुए बोल उठा! यह क्या बात है ? गुरुमहाराज पधारे हैं; इनके चरण छुओ; आशीर्वाद प्राप्त करो; इनके ही अशीर्वाद से तो आज अपना घर भरा है। अपनी इकहत्तर पीढ़ियाँ तर गई। इन गुरुमहाराज का जितना उपकार मानो उतना थोड़ा है।

गणपतराम का दिमाग आज अपने काबू में नहीं था। मनोवेदना रोकी जा सके, ऐसा नहीं था। वह बोल उठा—रामु काकी तूने ही सारा सत्यानाश किया है। ऐसे बदमाशों को घर में लाई। इसके आशीर्वाद से पुत्र नहीं हुआ, अपितु इसके पाप-कर्म से यह पुत्र हुआ है। रामु काकी गरम हो गई। उसने कहा—लड़के जरा शरम से बोल, गुरुमहाराज को कटु शब्द कहकर इनकी कृपा को खो बैठेगा। और बालक से भी हाथ धो बैठेगा। इस प्रकार का झूठा कलंक लगाने में तुझे शरम नहीं आती। गणपतराम ने बालक को रामु काकी की गोद में फेंकते हुए कहा कि देख मैं झूठा कलंक लगाता हूँ। यदि तुझे ऐसा लगता हो तो यह रहा सबूत। मनोहर का मुख देख, और फिर देख इस ब्रह्मचारी का मुख; दोनों एक जैसे हैं, या नहीं। फिर पीछे क्या मुख लेकर मुझे कहने आते हो; यह मैं भी देखूँगा। मैं अपने पाप के फल भोग रहा हूँ। रामु काकी दोनों के मुख को बार-बार देखने लगी; दोनों के मुख को मिलता देखकर ढीली पड़ गई। बात इस हद तक पहुँच जायेगी, इसका रामुकाली को ख्याल भी नहीं था। भोला स्वभाव होने से इसके आशीर्वाद में श्रद्धा रक्खी थी। ब्रह्मचारी बाजी को हाथ से जाता देखकर गुस्से का आविर्भाव करके चलता बना और जाते समय धमकी देता गया कि यदि तूने मेरा नाम कहीं भी लिया तो सब बात खोलकर रख दूँगा और साथ में हैरान कर दूँगा। गणपतराम का मस्तिष्क अस्थिर हो गया। पागल की भाँति वह बर्ताव करता है; ऐसी बातें अपने मण्डल में फैला दूँगा, फिर तुम्हारी बात कोई भी नहीं सुनेगा। गणपतराम ने सारी स्थिति अब समझ ली। रामु काकी के भोलेपन का लाभ ब्रह्मचारी ने लिया। लीलावती की छोटी उमर देखकर उसे फुसलाया, बच्चे के लिए ललचाकर अपने फन्दे में कर लिया। जिससे यह सब बनाव बना। रामु काकी और लीलावती बिलकुल निर्दोषी थी। पुत्र के लालच से ब्रह्मचारी के चंगुल में आ फँसी।

ब्रह्मचारी की आशा पूरी नहीं हुई, धन की लालसा अभी बाकी थी; इतने में यह बात बीच में फूट गई। गणपतराम के दिल पर इसका असह्य आघात पड़ा। इसको जीवन की आशा जाती रही, मरण शय्या पर पड़ गया। प्रभावती बेचारी को इस घटना का कुछ भी पता नहीं था। वह पति को प्रसन्न करने की अनेक चेष्टायें करने लगी। दवा, सेवा, धन, सम्बन्धी कोई ऐसी वस्तु आज नहीं थी, जो गणपतराम की बेचैनी दूर करके तबीअत ठीक रास्ते पर ले आयें। प्रभावती ने एक दिन सोचा कि शायद पुत्र का चेहरा देखकर पिता के हृदय को संतोष मिले—जिससे सम्भवतः तबीअत सुधर जायेगी। इसलिये लुक-छिपकर मनहर को उठा लाई और गणपतराम के बिस्तर पर डाल दिया। और रोते रोते कहने लगी कि इस मनहर को देखकर दिल शान्त करो भगवान् आपको आराम करेंगे। गणपतराम इस भोली निर्मल स्त्री के आत्मा का तेज सहन न कर सका, और रो पड़ा—बोला—प्रभा, मैंने कुछ बातों में तुझे अन्धार में रक्खा है; और सदा के लिये अँधेरे में रखूँगा। आज मैं पुरुष की स्वार्थ वृत्ति और सामाजिक रचना की वेदी पर आत्मभोग देने को तैयार हुआ हूँ। मुझे अब कोई रोक सके—ऐसा नहीं है। पुरुष और स्त्री दोनों संतान की चाह रखते हैं। स्त्री की संतति के लिये अधिक चाह होने पर भी पुरुष को दूसरी स्त्री रखने का अधिकार दिया जा सकता है, परन्तु स्त्री को न दिया जाये। संतति न हो इसमें पुरुष या स्त्री दो में से एक का दोष गिना जा सकता है। अथवा दोनों का दोष होना सम्भव है। आधुनिक समाज की रचना ने स्त्रियों पर नाना प्रकार के बन्धन, भिन्न भिन्न परीक्षण करने को बताये हैं, परन्तु पुरुष के लिये एक भी नहीं। व्रत, बाधा, और दवा एवं आपरेशन तेरे पर कराये। इनको कराते समय मैं जानता था कि मेरे में शक्ति नहीं है। और मुख्य रूप में संतति के अभाव का मैं ही कारण हूँ। तू समझ न सकी और मैं जीभ से कह नहीं सका। धर्म या विज्ञान किसी ने भी यह रास्ता नहीं बताया, डाक्टरों के पास इलाज नहीं, यह जानते हुए भी विद्वान् गिने जानेवाले मैंने तेरे पर आपरेशन कराया। आपरेशन से मुझे बहुत आघात पहुँचा, मैंने बहुत बड़ा पाप किया। परन्तु डाक्टरों ने मुझसे इतना भी नहीं पूछा कि तुममें तो कोई दोष नहीं है। और तेरे पर आपरेशन कर डाला। मेरे पापों ने फिर शादी करवा दी परन्तु मैं जानता था कि मेरे भाग्य में पिता कहलाना अब नहीं लिखा। फिर भी पुत्र के लोभ में रहा—परन्तु जब कुदरत ने पुकार कर पाप बताया, तब सच्ची बात समझी। प्रभा! तेरे पर मैंने जुल्म किया है पहला पुत्र मरा वह मेरी भूल से, जानते हुए भी तेरे पर औपरेशन कराया। आपरेशन कराते समय तेरे मन की दशा की मैंने पर्वाह नहीं की, आपरेशन किसको करवाना चाहिये था? तेरा या मेरा? प्रभु यह मेरा पाप कभी भी माफ नहीं करेंगे। प्रभु मैं जाता हूँ मुझे क्षमा करो। प्रभावती रो पड़ी और बोली नाथ! इस प्रकार के विचार न करो, मेरा तो छोटा-सा आपरेशन डाक्टर ने मुझसे पूछकर और मुझे समझाकर किया था उसका जख्म तो आठ-दस दिन में भर गया था। परन्तु आपके ऊपर तो सामाजिक जीवन ने प्राण लेने का आयोजन किया है, तुम्हारा भोग लेने को तैयार है। गणपतराम की आँख में कोई अलग ही नूर चमकने लगा, उसने आँखें फाड़कर प्रभा की ओर देखा। हृदय के अन्तस्तल में से निकलते शब्द की तरंगें मुख के रास्ते से बाहर आती दीखने लगीं-"प्रभा तू देवी है; तेरी बात सत्य है, तेरे पर शस्त्र-क्रिया का आपरेशन हुआ; मेरे पर सामाजिक औपरेशन हुआ। परन्तु इन सब कारणरूप पुरुषोचित स्वार्थ वृत्ति का क्या ? और गणपतराम की आवाज बन्द हो गई। हे प्रभु ! अब मैं क्या करूँ ! इस प्रकार कहते कहते प्रभावती गणपतराम की मूर्च्छित देह पर लुढ़क पड़ी

* * *

शुभ सूचना

समस्त हिन्दी-प्रेमियों, विद्यार्थ तथा कृपालु ग्राहकों को यह शुभ सूच देते हुए हमें हर्ष हो रहा है कि हमा लाहौरवाली ब्रांच फिर से दुर्गाचरण अम्बाला कैंट (पूर्वी पञ्जाब) में लोगों की पूर्ववत् सेवा के उद्देश्य से हो चुकी है।

मैनेजर

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रया

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त

आप घर बैठे मैट्रिक, एफ० ए०, ए०, पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी और होम्योपैथिक बायोकैमिक आसानी से पास कर सकते हैं। नियम मुफ्त मँगायें। पता :—

इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड)

रजतपट पर महात्मा गांधी का जीवन-फिल्म "बापू"

अमरीकन हालीवुड के अभिनेता नई दिशा की ओर

लेखक, श्री उमेश जोशी

गांधी के जीवन का फिल्म बन रहा है।

हात्मा गांधी का जब से निर्वाण हो है, तब से विश्व में अन्धकार ही र छा गया है। गांधी जी विश्व की योति थे, उनके उज्ज्वल एवं दिव्य से हिन्दुस्तान का घना अन्धकार हुआ। अब उनकी श्रेणी का विश्व में सरा महापुरुष नहीं रहा। उनके श्मन भी अपनी हार स्वीकार करता था। वह सबके लिये भलाई की बात सोचते थे, ई भी जाति एवं रंग का हो, वह सबके प्यारे थे। उनकी निया में तहलका मच गया। ने इस महामानव के प्रति अमर श्रद्धाञ्जलियाँ भेंट कीं। गुआई में ही हिन्दुस्तान ने अपनी शृंखला को तोड़ा। हिन्दुस्तान के इतिहास में एक ऐसा राष्ट्र बिना खून की नदियाँ बहाये, और अहिंसा के बल पर उपलब्ध की, क्या यह कम और बात है। पूज्य बापू ने विश्व दिया कि आज दुनियावाले धिकारों के लिये एक दूसरे का खून परन्तु यह तरीका गलत है और हैवानों का तरीका है। जब अहिंसा से ही अपने अधिकार सकते हैं, तब फिर क्यों हैवानियत किया जाये। जिस राष्ट्र की में हैवानियत की ईंटें लगी हैं, कभी उत्थान के प्रशस्त मार्ग पर नहीं हो सकता। गांधी जी का यह था, कि गुलामी को दूर लिये हमें इन्सानियत का प्रयोग चाहिए। इन्सानियत के सामने भी फेल हो जाते हैं, इस तथ्य को ने अच्छी तरह समझ लिया था, न्होंने सत्य और अहिंसा को अपनी महान् अस्त्र-शस्त्र बनाया था। नियावाले अब बापू की कीमत। अब उनका अभाव खटका है, उनके पवित्र उसूल एवं आदर्शों किया जा रहा है। हिन्दुस्तान विभिन्न तरीकों से उनका प्रचार हो है, किन्तु फिल्म-कला का सबसे केन्द्र-स्थान हालीवुड ने भी इस कदम उठाया है। यह उनका पहला है कि वह किसी हिन्दुस्तानी नेता का जीवन रजतपट पर उतार रहे हैं। इस सम्बन्ध में हालीवुड सीनेट में डाइरेक्टरों की एक बैठक हुई, जिसमें सुप्रसिद्ध निर्माता मिस्टर हेरी हेग ने "बापू" को रजतपट पर उतारने का प्रस्ताव रक्खा। बड़ी जोरों की बहसें हुई। मिस्टर हेरी हेग ने अपने प्रस्ताव का समर्थन करते हुए कहा—"मैं महात्मा गांधी को विश्व की निधि मानता हूँ उनका जीवन सबके लिये उपयोगी होगा, उन्होंने सबकी भलाई के लिये कार्य किया। हमें अपने दिमागों से संकीर्णता निकाल देनी चाहिए। जब अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय रूजवेल्ट का चित्रपट निर्माण हो सकता है, तो फिर क्यों नहीं बापू का चित्रपट बन सकता। मैं तो बापू को उनसे भी पूज्य और महान् समझता हूँ आज के युग को पूज्य बापू के उज्ज्वल उसूलों की सख्त जरूरत है आज दुनिया को बापू की बहुत आवश्यकता है, यद्यपि अब वह इस दुनिया में नहीं रहे, लेकिन उनके दिव्य प्रवचन तो अब भी अमर हैं, फिर हम क्यों न उनके अमर प्रवचनों से लाभ उठायें। हमारा कर्तव्य है कि उनके पवित्र सन्देशों को दुनिया के कोने कोने में पहुँचायें। मुझे पूर्ण आशा है कि आप सब मेरे प्रस्ताव को स्वीकृत करेंगे।" विश्व की सुप्रसिद्ध अभिनेत्री ग्रेटा गार्बो ने कहा—"मैं मिस्टर हेरी हेग के प्रस्ताव का समर्थन करती हूँ। और मैं बोर्ड ऑफ डाइरेक्टर्स से अनुरोध करती हूँ कि शीघ्र से शीघ्र इस ओर कदम उठाया जाये। ऐसे जरूरी कार्य में सुस्ती नहीं करनी चाहिए। मैं बापू को एक महान् कलाकार भी समझती हूँ। वह सिर्फ एक राजनैतिक एवं अध्यात्मक नेता ही नहीं थे बल्कि वह विश्व के एक महान् कलाकार भी थे। उनके प्रत्येक प्रवचन में कला और सौंदर्य कूट-कूटकर भरा रहता था। ऐसे महामानव के जीवन को रजतपट पर लाने के लिये कौन इनकार कर सकता है चाहे इसमें कितना ही रुपया क्यों न खर्च हो जाये।"

विश्वविख्यात डाइरेक्टर एलेक्जेंडर कोर्डा ने 'बापू' को रजतपट पर उतारने के सम्बन्ध में कहा—"बापू के जीवन को रजतपट पर चित्रण करने के लिये कम से कम ३० लाख रुपया खर्च होगा, लेकिन बापू के जीवन के सामने यह रकम कोई बहुत बड़ी नहीं है। उनके जीवन को रजतपट पर उतारने का काम कोई आसान नहीं है। अनेक कठिनाइयाँ हमारे मार्ग में आवेंगी। लेकिन हमें उन कठिनाइयों से घबड़ाना नहीं चाहिए। यदि हमने बापू के जीवन को सही रूप में रजतपट पर उतार दिया तो हम एक महान् उत्तरदायित्व को पूरा कर लेंगे। मैं बापू की इसलिये श्रद्धा करता था कि उनमें इन्सान के परखने की महान् शक्ति थी। वह शान्ति के अग्रदूत थे। आज दुनिया में चारों तरफ अशान्ति का कुहरा छाया हुआ है, उस कुहरे में सिर्फ बापू के दिव्य सिद्धान्त ही प्रकाशमान हो रहे हैं। उस दिव्य प्रकाश को हमें दुनिया के रंगमंच पर फैलाना है ताकि इन्सान, इन्सान को समझे। एक दूसरे के खून का प्यासा न रहे।"

सुप्रसिद्ध भारतीय अभिनेता साबू ने बहस में बड़े जोरों के साथ पार्ट लिया। यही सिर्फ एक भारतीय अभिनेता है जो कि हालीवुड सीनेट का डाइरेक्टर है। उसने कहा—"मैं अपने खाली वक्त में बापू के प्रवचन पढ़ा करता हूँ। हालीवुड का नाम विश्व के अन्दर अमर हो जायेगा यदि उसने बापू के जीवन को रजतपट पर कामयाबी के साथ उतार दिया। बापू विश्व की महान् ज्योति थे, ऐसी ज्योति जिसकी कि प्रकाश की छाया में मानव-विकास क्षितिज की ओर प्रयाण करता है। वास्तव में विश्व को बापू की अमूल्य देन सत्य और अहिंसा थी, यह देन उनकी दुनिया के लिये एक बहुत बड़ी नियामत है। इस नियामत से हमें लाभ उठाना चाहिए।

सुप्रसिद्ध कलाकारिणी टी० बी० लावा ने कहा—"गांधी जी के जीवन का चित्रपट बनाने के लिये तीन व्यक्तियों की एक कमेटी बना देनी चाहिए, जो कि हिन्दुस्तान जाये और गांधी-साहित्य का अध्ययन करे। गांधी जी के सम्बन्ध में स्केचेस एकत्रित करे उनके बिखरे हुए प्रवचनों का संकलन किया जाये। उनके सम्बन्ध में जो लघु चित्र अब तक बन चुके हैं उनको भी एकत्रित किया जाये। एक कमेटी ६ व्यक्तियों की बनानी चाहिए जिसका काम आई हुई सामग्री को काट-छाँटकर अपने योग्य बनाना हो। दो व्यक्तियों स्क्रीन प्ले लिखने के लिये रक्खे जायें। इस चित्र के संवाद किसी विश्व-विख्यात लेखक से लिखवाने चाहिए। यदि वह लेखक गांधी के सम्पर्क में भी रह चुका हो तो और भी अच्छा हो। संवाद-लेखक का चुनाव करने के लिये दो व्यक्तियों की एक अलग कमेटी बनाई जाये। सीनोरियो लिखने के लिये विश्व के चार बड़े एक्सपर्ट रक्खे जायें। गांधी का पार्ट करने के लिये उनसे मिलता-जुलता व्यक्ति रक्खा जाये। चित्रपट की स्वाभाविकता को हमें किसी भी हालत में नहीं जाने देना चाहिए, चाहे इस कार्य के लिए कितना भी खर्च क्यों न करना पड़े।"

लौरेंटा यंग, जो कि विश्व की एक लोकप्रिय अभिनेत्री है, बापू के प्रति श्रद्धाञ्जलि भेंट करते हुए कहा—"जब मैं

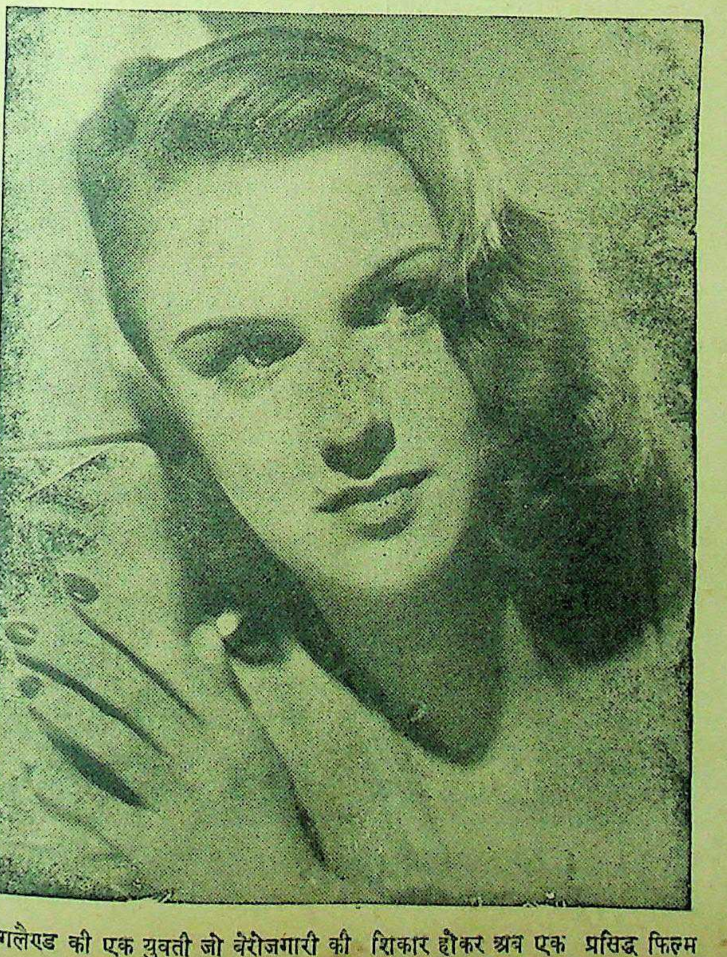

इंगलैण्ड की एक युवती जो बेरोजगारी की शिकार होकर अब एक प्रसिद्ध फिल्म कम्पनी में अभिनय का कार्य सीख रही है।

सर्वप्रथम बापू से हिन्दुस्तान में मिली, तो पहली भेंट में ही मैं उनके दिव्य व्यक्तित्व से प्रभावित हो गई, मुझे ऐसा मालूम हुआ कि मानो मैं स्वर्ग के किसी देवता के सामने बैठी हुई हूँ। उनके चेहरे पर अपूर्व आभा बिखर रही थी। मैं उनके ऊपर एक पुस्तक भी लिखना चाहती हूँ। उनका दिया हुआ खादी का सूत अब भी मेरे पास सुरक्षित रक्खा हुआ है उस सूत के दाम हालीवुड में दो लाख तक लग गये हैं, लेकिन मैं उस सूत को क्यों देने लगी। वही तो अब मेरे पास उनका पवित्रतम उपहार है, एक यादगार के रूप में। इस यादगार की कीमत दुनिया में किस की शक्ति है जो दे सके। जब मैंने यह सुना कि पूज्य बापू को किसी पागल हत्यारे ने मार डाला तो मुझको बड़ा दुख हुआ, और इतना बड़ा दुख हुआ जितना कि मुझे, अपने माता-पिता के मर जाने पर भी नहीं हुआ था। दो दिन तो मैंने खाना भी नहीं खाया और न मैं घर से बाहर निकली।

अब मुझे यह बात जानकर हर्ष हुआ कि हालीवुडवाले बापू के जीवन को रजतपट पर चित्रित कर रहे हैं। मैं पूर्ण सहयोग करने को तैयार हूँ।"

मिस्टर हेरी हेग का प्रस्ताव भारी बहुमत से पास हो गया। तीन व्यक्तियों की जो कमेटी भारत में आने के लिये बनी, उनमें निम्नलिखित कलाकार हैं—(१) मिस्टर एच० एल० हाकी, मिस्टर डी० बी० टोर्न, कुमारी जार्डा। यह कमेटी आजकल हिन्दुस्तान में आई हुई है और वह बापू के जीवन के सम्बन्ध में खोज-बीन कर रही है।

बापू सम्बन्धी लिटरेचर को काँट-छाट करनेवाली कमेटी में निम्नलिखित छः व्यक्ति हैं—(१) एम० फ्रेंकलिन, (२) रिचर्ड ब्राऊन, (३) मिस्टर डेस्टन, (४) पी० एच० पोल, (५) मिस्टर कोर्लफोर्न, (६) मिस्टर बोल्डसन। स्क्रीनप्ले लिखने के लिए दो व्यक्ति हैं—(१) श्रीमती कर्मारना, (२) मिस्टर भोकडर्न। संवाद-लेखक का चुनाव करने के लिए दो सुप्रसिद्ध निर्माता वे निर्देशक हैं जो कि आजकल वैनिर ब्रादर्स कम्पनी में कार्य कर रहे हैं। उनके नाम ये हैं—(१) श्री होपसन, (२) श्री लेकहोर्न। मुख्य अभिनेता का काम सुप्रसिद्ध कलाकार ए० बी० कैरोल करेंगे। आपने अपने को बहुत कुछ गांधी के अनुरूप बना लिया है। आजकल आप अपना पेट कम करने में लगे हुए हैं। यदि साठ पौंड वजन कम हो जाये तो वह बड़ी आसानी से गांधी जी का रोल कर सकते हैं। आप भी आजकल हिन्दुस्तान आये हुए हैं और निकट भविष्य में वह पं० जवाहरलाल नेहरू से मिलेंगे। आप नोआखाली भी जायेंगे। सेवाग्राम को भी आपकी देखने की इच्छा है। आप पूरी लगन और उत्साह के साथ गांधी जी सम्बन्धी साहित्य का अध्ययन कर रहे हैं। उनका यह भी कहना है कि यदि मैं इस अमर भूमिका में सफल उतर गया तो मैं अपने को बड़ा सौभाग्यशाली समझूँगा। यह भूमिका बहुत ही दुस्तर है। ईश्वर ही मेरी रक्षा करेगा। आजकल आप बापू जी की प्रार्थना टडी कर रहे हैं। वह उन सब चीजों को देख रहे हैं जिनका कि प्रयोग गांधी जी प्रार्थना-सभा में किया करते थे, या प्रार्थना-सभा से आने से पूर्व या बाद में किया करते थे। उन सब सामग्री का मिस्टर कैरोल ने फोटोग्राफ भी ले लिया है। मिस्टर कैरोल का व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली है। हालीवुडवालों ने बड़ी सोच समझ के आपको रक्खा है।

हालीवुडवालों का वास्तव में बापू को रजतपट पर उतारने का एक नया कदम चित्रपट-संसार में है। कई विदेशी कम्पनियाँ बापू का चित्रपट बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं, पर हालीवुडवालों ने बड़े जोर-शोर के साथ क्रियात्मक कदम उठाया है, और उनके पास साधन भी अच्छे हैं। इसीलिए वह बापू का चित्रपट निर्माण करने के पूर्ण अधिकारी हैं। हालीवुड की सुप्रसिद्ध एवं लोकप्रिय कम्पनी "वार्नर ब्रादर्स" ने बापू के चित्र बनाने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली है। इस कम्पनी के अध्यक्ष मिस्टर ए० डब्लू० डौन गांधी जी की मृत्यु के बाद हिन्दुस्तान आये थे और वह गांधी जी के भस्म-प्रवाह के उत्सव में शामिल हुए थे। आपने भारत से लौटने के बाद अमेरिका की सुप्रसिद्ध पत्रिका "सिनेलाइट" में एक लेख दिया है, जिसका शीर्षक है—"दि लाइट आफ द वर्ल्ड" इस लेख में आपने लिखा है—"बापू का चित्रपट निर्माण करके हमारी कम्पनी के इतिहास में एक नया पृष्ठ जुड़ जायेगा। अभी हमने बापू का चित्रपट निर्माण करने के लिये ३० लाख रुपया निश्चित किया है, यदि इससे अधिक की आवश्यकता हुई, तब भी हम पीछे कदम न उठायेंगे। जो कदम हमने आगे बढ़ा दिया है, वह तो अब प्रगति की ओर बढ़ता ही जायेगा। यह चित्र विश्व की चार बड़ी भाषाओं में बनाने का निश्चय हुआ है। चार बड़ी भाषाओं के अन्दर हिन्दी भी होगी। हिन्दी के लिए भी हमें एक योग व्यक्ति की जरूरत पड़ेगी। यदि किसी भारतीय निर्देशक ने हिन्दी-विभाग का कार्यभार सँभाल लिया तब तो सबसे अच्छा होगा। इस चित्रपट का उद्घाटन पं० जवाहरलाल नेहरू से करवाया जायेगा। यह पहला अवसर होगा जब कि भारतीय तिरङ्गा झण्डा हालीवुड के रजतपट पर आ रहा है। बापू ने जो हमें नई रोशनी दी, उसको हम विश्व के विशाल रङ्गमंच पर फैलायेंगे। आज दुनियावालों को उनकी पवित्र रोशनी की बड़ी आवश्यकता है। यह चित्रपट बापू के चरणों में ही अर्पित किया जायेगा। चित्र की कहानी लिखने के लिए विश्व-विख्यात नाटककार जार्ज बर्नार्ड शा से प्रार्थना की गई है। उनसे अच्छा और कौन हो सकता है। और फिर उन्होंने गांधी जी के जीवन को काफी अच्छी तरह से समझा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह हमारे प्रस्ताव को अवश्य ही स्वीकार कर लेंगे। कहानी का पारिश्रमिक एक लाख दिया जायेगा। यह सबसे रकम होगी आज तक दी जाने रकमों से। यह हमारा सौभाग्य है कि बापू के जीवन का चित्रपट बना रहे हैं

हमारा अन्त में भारतीय नि से भी निवेदन है कि उनका बापू के पर बना हुआ चित्रपट हालीवुड निम्न कोट का न हो। हालीवुड नया कदम अब तक के उसके इतिहास में प्रशंसनीय एवं महत्त्व

(लेखक-द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षि

खोज

लेखक, श्री रामेश्वरलाल खंडेलवाल एम० ए०

यह जग गुलाब की है झाड़ी, डालों में अगणित शूल भरे!
हैं भरे पत्र, कोंपल, कलियाँ, सौरभमय सुन्दर फूल भरे!
मैं मधु का प्यासा उलझ उलझ, इसकी कण्टकमय डालों में!
निस खोज रहा खिलते किस पथ, जीवन के मधुमय चारु सुमन!
है इन्द्रजाल सा जटिल, जगत्, इसमें है कितना संघर्षण!
दारुण क्रन्दन अम्बर-व्यापी, दुख सुख, आशा-भय, जन्म-मरण!
प्रतिपल है निष्ठुर नियति यहाँ, कर रही प्राणियों से क्रीड़ा!
मैं खोज रहा फिर भी इसमें, मानव-आत्मा का शाश्वत धन!
अपनी ही अन्तर्ज्वाला में, संसार जल रहा है सारा!
'पी' 'पी' कर नित प्यासा मरता, प्राणों का चातक बेचारा!
जिनसे अन्तर की प्यास बुझे, उपजें मन में उज्ज्वल मोती!
मैं खोज रहा वे धन जिनसे, मिलते नव शीतल स्वाती कण!
जिस ओर दृष्टि जाती जग में, दिखती बर्बरता, नाश, मरण!
मर्माहत लखकर व्यथित हृदय, मैं चिर उदास रहता प्रतिक्षण!
अव्यक्त व्यथा का भार लिये, जो पड़ा धरा पर मूर्छित हो!
मैं खोज रहा हूँ उनके हित, रस एक अलौकिक संजीवन!
बन सका जगत् में आ अब तक, मैं किसी चरण की धूल नहीं!
बन किसी वक्ष पर सजा कभी, मैं किसी हृदय का फूल नहीं!
अपने प्राणों का प्राण समझ, जिसको सब कुछ अर्पित कर दूँ!
मैं खोज रहा हूँ धरती पर, कोई ऐसा निज जीवन-धन!
जिसके प्रकाश में मानस का, कटुतम बन्धन सब खुल जावे!
जिसकी स्वर्गिक स्वर्णाभा से, जीवन का सब तम धुल जावे!
जिसकी आभा पा दमक उठे, छवि-हीन मरण-मुख भी श्यामल!
मैं खोज रहा हूँ धरती पर, वह चिर प्रकाश की अमर किरण!
मैं खोज रहा हूँ प्राण, जहाँ से, मिलता है जग को स्पन्दन,
मैं खोज रहा वह तार—जहाँ से मिलता है जग को गुंजन!
मैं खोज रहा उस छविमय को, जो फूट उषा की लाली में!
वासन्ती कुसुमों में मुसका, बरसा जाता स्वर्गिक कंचन!
मुझ आदर्शों के प्रेमी को, इस जग में अब तक मिली नहीं!
सौन्दर्य प्रेम सुख-शान्ति अमर, स्वर्गिक प्रकाशक की ज्योति कहीं!
मैं एक स्वप्न की सृष्टि मधुर, रच रहा [illegible]!
इस जग के पीड़ित प्राण जहाँ, पायेंगी सादर अभिनन्दन!

भारतीय पौंड-पावना समझौता

(पेज ८ का शेष)

१९५१ तक शेष रकम का भी किया जा सकेगा।

बूँद बूँद करके चुकाने की इस के अनेक कारण ब्रिटेन की ओर से जा रहे हैं। गत महासमर के बाद से की आर्थिक स्थिति इतनी भयंकर गिर गई है कि वह उसे स्थिर करने में समर्थ नहीं हो पा रहा है। यही कि पहले तो अमेरिका से लम्बे लम्बे लेकर ब्रिटेन ने काम चलाया इसके अन्तर्राष्ट्रीय बैंक से सहायता ली अब सर्वान्त में वह आजकल अमेरिका यूरोपियन सहायता-योजना पर निर्भर रहा है। यूरोपियन सहायता-योजना अन्तर्गत पश्चिमी यूरोप के जिन राष्ट्रों सहायता दी जा रही है उनमें ब्रिटेन एक ऐसा देश है जिसे सबसे डालर सहायता मिली है। अमेरिका इतनी लम्बी लम्बी सहायता ले लेने कारण ब्रिटेन की आर्थिक स्थिरता रूप से अमेरिका की कृपा पर ही करती है। अमेरिका चाहता यह है किसी प्रकार एक-दो बार की आर्थि सहायता द्वारा ब्रिटेन अपनी स्थिति सँभा ले। उसे भय है कि यदि आर्थिक का उपयोग ब्रिटेन ने अपने ऋणदाताओं का रुपया चुकाने में कर लिया तो बिगड़ जायगी। ऐसी स्थिति में यह न करना कि सर क्रिप्स की दशा संकटमय थी वास्तविकता से मोड़नी होगी।

हमें दीर्घकालीन समझौते पर अधिक आपत्ति नहीं है जितनी की के फालतू कट जाने की है। वस्तुतः के लिए दी गई १६७ करोड़ रुपये की और ब्रिटिश सैनिक सम्पत्ति के लिए गई १३३·३ करोड़ रुपये की रकम एक भेंट है जो ब्रिटेन को भारत ने आशा से दी है कि वह अपने भावी सन्तुलित और मित्रतापूर्ण बनाए रखे

* * *

सेवाग्राम
रंग-बिरंगी छपाई अनेक रंगीन
रचयिता श्री सोहनलाल
संरक्षक श्री घनश्यामदास
जनता की भाषा में, जनता
का, जनता का काव्य कवि की
रचनाओं का सुन्दर संग्रह। बड़ा
बढ़िया काग़ज़, कपड़े की
मूल्य दस रुपये।
मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस,

प्ताहिक समाचारों तथा विचारों की चित्रावली

मरीका) के भारतीय दूतावास के नये जन-संपर्क-अफसर कर्नल था उनकी पत्नी का यह चित्र जाने के पूर्व लिया गया है।

उड़ीसा के नये गवर्नर श्री आसफअली, यह चित्र नियुक्ति के पूर्व लिया गया था।

राजा सर अन्नमलाई चेटियर, अन्नमलाई विश्वविद्याल के संस्थापक का देहान्त हो गया।

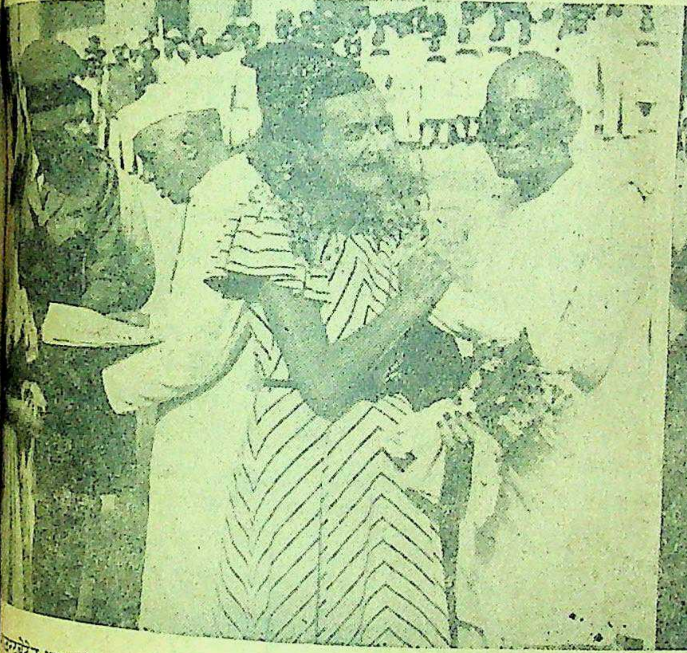

न्टबेटेन भारत से चलते समय गवर्नर-जनरल श्री राजगोपालाचार्य से मिल रही हैं। साथ में पंडित नेहरू तथा पमाला माउन्टबेटेन भी दिखाई दे रही हैं।

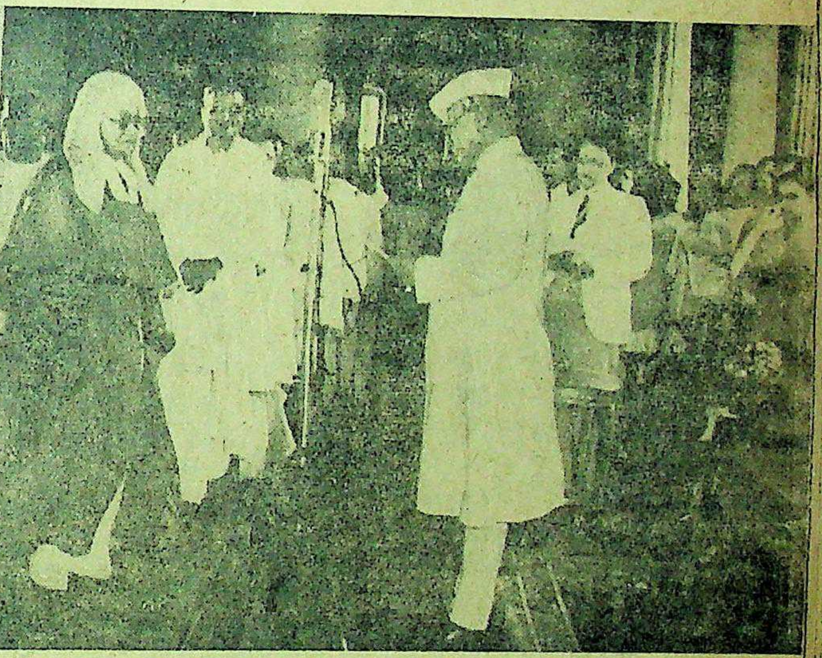

पश्चिमी बंगाल के नये गवर्नर जनरल डाक्टर कैलाशनाथ काटजू, गवर्नमेंट हाउस कलकत्ता में अपने पद की शपथ कर रहे हैं।

गोविन्ददास (सदस्य विधान-परिषद्) मध्यप्रांतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं।

अन्नमलाई विश्वविद्यालय के डाक्टर चंद्रशेखर पेरिस में खोज के कार्य के लिये गये हैं।

सीलोन (लंका) के नये पोस्टमास्टर जनरल श्री ए० आई० पेटिया अभी हाल ही में नियुक्त हुए हैं।

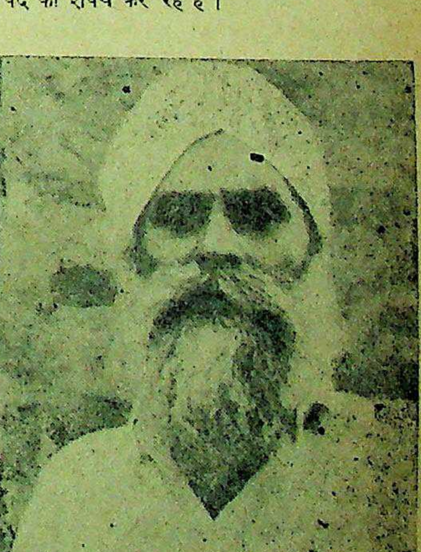

ज्ञानी गुरुमुखसिंह 'मुसाफिर' पंजाब प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष बनाये गये हैं।

सम्पादक के नाम चिट्ठियां

प्राचीन पांडुलिपियों का संग्रह

हमारे देश के इतिहास की अतीत-कालीन घटनाओं का विवरण यथार्थता से बहुत दूर है। इतिहासकारों ने प्राचीन शासकों से प्रभावित होने के कारण वास्तविक घटना को विकृत कर दिया है। उन इतिहासकारों ने तत्कालीन स्वतंत्र लेखकों एवं कवियों की कृतियों को आधार नहीं माना है। ऐसे लेखकों एवं कवियों की शासकों एवं जनता-द्वारा समान रूप से कृतियाँ उपेक्षित रहीं तथा उनमें से अधिकतर तो आक्रमण एवं युद्ध की ज्वाला में नष्ट हो गईं। ऐसी कृतियों का जो कुछ भी शेष रह गया है, अभी तक एकत्रित नहीं किया गया है और बहुत सी आवश्यक पुस्तकें अँधेरे घरों तथा दीमक लगी संदूकों में पड़ी हुई हैं।

यदि इस प्रकार का साहित्य खोज निकाला जाये तो अति उत्तम और सुसम्पादित रूप में प्रकाशित किया जाये तो अति उत्तम हो। प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि इस प्रकार की साहित्यिक, कलासंबंधी एवं ऐतिहासिक प्राचीन पांडुलिपियाँ एकत्रित करें एवं उन्हें विनाश होने से बचावें।

समाज-शिक्षा-विभाग इस प्रकार की प्राचीन पांडुलिपियाँ प्रकाशन तथा संग्रह के हेतु सहर्ष ग्रहण करेगा। पांडुलिपियाँ निम्नलिखित सूचना के साथ भेजने की कृपा करें।

पांडुलिपि का नाम, लेखक या कवि का नाम, उसके लिखे जाने या उसकी प्रतिलिपि की तिथि, उसके अधिकारी का नाम, स्थान जहाँ से खोज निकाली गई है, पृष्ठ-संख्या।

नागपुर —रामकुमार वर्मा
उपसंचालक, सार्वजनिक शिक्षा-विभाग, समाज-शिक्षण, मध्यप्रांत और बरार

* * *

राजस्थान विद्यापीठ

सन् १९३७ ई० २१ अगस्त को स्थापित उदयपुरस्थ हिन्दी विद्यापीठ ने अब तक अपने इस ११ वर्ष के कार्य-काल में राजस्थान के लोक-जीवन के निर्माण, सामान्य लोक-शिक्षण, प्राचीन साहित्य तथा लोक-साहित्य की शोध-खोज, राष्ट्र-भाषा द्वारा विभिन्न विषयों के उच्च शिक्षण की व्यवस्था आदि प्रवृत्तियों के द्वारा राजस्थान की जो सेवा की है, उसका परिचय तथा लेखा, समय समय पर पत्रों, विज्ञप्तियों, प्रकाशनों तथा समाचार-पत्र-पत्रिकाओं के द्वारा बराबर दिया जाता रहा है। सम्मेलन की प्रथमा और मध्यमा परीक्षाओं के लिए विद्यार्थी तैयार करने के काम से प्रारम्भ कर आज यह विद्यापीठ शनैः शनैः विकसित होकर अपने आप में एक विशेष शक्ति बन चुका है।

इन ग्यारह वर्षों तक निरन्तर लोक-शिक्षण के लिए अपनी विविध प्रवृत्तियों द्वारा कार्य करते रहने के बाद इस उदयपुर विद्यापीठ की समिति की गत २४ मई की बैठक में यह निश्चय किया गया कि विद्यापीठ द्वारा अपने आप में अब तक की प्राप्त और संचित की हुई शक्ति और क्षमता को देखते हुए तथा देश की नवीन परिवर्तित परिस्थिति की आवश्यकता का विचार करते हुए इस उदयपुर विद्यापीठ को राजस्थान विद्यापीठ के रूप में बदल दिया जाय जिसका प्रभाव और कार्य-क्षेत्र सम्पूर्ण राजपूताना हो। इन गये वर्षों में राजपूताने के कोने-कोने में इस प्रकार के अखिल राजस्थान के लिए आयोजित और प्रतिष्ठित विद्यापीठ की आवश्यकता का बराबर अनुभव किया गया है तथा उदयपुर विद्यापीठ से इस बात की माँग होती रही है कि वह इस अभाव की पूर्ति करे।

ता० २१ अगस्त को इस राजस्थान विद्यापीठ के नियमित और विधिवत् कार्यारम्भ के पूर्व हम हमारे राष्ट्रीय स्वतन्त्रता-दिवस १५ अगस्त से लेकर २१ अगस्त तक राजस्थान विद्यापीठ महोत्सव मना रहे हैं। स्वतन्त्रता-दिवस से प्रारम्भ और विद्यापीठ के स्थापना-दिवस को समाप्त यह राजस्थान विद्यापीठ स्थापना-महोत्सव, हमारी भावनाओं और मनोदृष्टि का आपको स्वतः परिचय देगा।

राजस्थान विद्यापीठ —अर्जुनलाल महता
उदयपुर

* * *

टिहरी राज्य किधर ?

टिहरी की जनता बड़ी बहादुरी से ता० १५ जनवरी सन् १९४८ को टिहरी शहर आकर सर्वसम्मति से अपना शासन-भार में महाराजा से लेकर सहर्ष घर लौटे, परन्तु कुछ लोगों ने अपने स्वार्थ के लिए तरह तरह के हथकन्डे चलाकर एक अन्तः-कालीन मन्त्रिमण्डल प्रजा द्वारा पदच्युत किये हुए राजा को रखकर कायम किया। इसके बाद हमारी यह माँगें पूरी नहीं हुईं। जिसके लिए हमने आन्दोलन किया था। जैसे न कस्टम ही टूटा, न नजराना ही वापस हुआ, न उसका लाभ ही मिला, न किस्त ही कम हुई, न भारतीय गढ़वाल जैसा कानून ही हुआ।

राज्य भर में जातीय विद्वेष का बीज राजतन्त्रियों द्वारा बोया जा रहा है जैसा ब्राह्मण, क्षत्रिय देशी, पहाड़ी, अछूताछूत, बाहर, भीतर का सवाल उठा हुआ है, सरकार पार्टीबाजी में पड़कर इस ओर ध्यान नहीं देती और इस उपरोक्त वातावरण को पैदा करनेवाले वह अवसरवादी राजतन्त्री कम्युनिस्ट हैं, जो कि प्रजातन्त्र से नाजायज लाभ उठाकर प्रजा-मंडल में घुसकर संस्था को बदनाम कर बैठे हैं। बाहर भीतर के नारे को रट प्रजामण्डल का जामा पहनकर उन अमर शहीद नेताओं का नारा लगाकर एवं त्याग तपस्या का गलत प्रचार कर हमारी पाँच लाख मूक और गरीब जनता में भ्रम-जाल फैलाकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे हैं और 'स्वतन्त्र इकाई' का नारा देश एवं राष्ट्र में विपरीत लगा रहे हैं जिससे आज राज्य भर में अराजकता, अव्यवस्था, घबराहट और अशान्ति मची हुई है।

हम अपने गरीब और मूक भाइयों से विनयपूर्वक प्रार्थना करते हैं कि हम लोगों का कल्याण राजतन्त्ररूपी दोहरे शासन की चक्की में न पीसे जाकर जिससे कि हमारा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष करों द्वारा दोहरा शोषण होना है। स्वार्थ त्याग कर निःस्वार्थ भावना से अपने राज्य का सारा भार देश के गण्यमान्य नेता श्री सरदार पटेल, पं० नेहरू, माननीय गोविन्दवल्लभ पन्त (भारतीय सरकार) के सिपुर्द कर देना चाहिए। वे लोग हमारे पिछड़ेपन को दूर करने में समर्थ हैं और अवश्य दूर करेंगे; क्योंकि केन्द्र में कांग्रेस सरकार के सत्तारूढ़ होने से ही हमें राजशासन से छुटकारा मिला। यदि कोई प्रतिक्रियावादी शक्ति विलीनीकरण के बीच में रोड़ा अटकाती है तो हमें दृढ़ता से सत्य और अहिंसा द्वारा गांधी जी के पथ का अनुसरण कर उनका मुकाबिला करना चाहिए। इस पवित्र ध्येय की प्राप्ति से हमारी रक्षा भारत की एकता में वृद्धि, भारतीय शासन से सुख और समृद्धि न्याय एवं हर प्रकार के कर कम होने से हम टिहरी-निवासी किसान मजदूर एवं सब जनता का सब है। हम लोगों की भारतीय सरकार गण्यमान्य नेताओं तथा अखिल भा कांग्रेस से विनम्र निवेदन है कि हमारे जनवरी ४८ के उस प्रस्ताव को रखते हुए हमें युक्तप्रान्त का एक जि रूप में अंग बनाकर जिसमें को भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक सम्बन्ध अनन्त काल से आ रहा है। उसमें शीघ्र विलीन कर जाय और भारत-सरकार सम्पूर्ण का भार अपने हाथ में लेकर हमारी कर दुःख को दूर करे और इसमें देरी होगी हम उतने और दुःखी उत्पीड़ित होंगे जिससे बराबर हम आन्दोलित अवस्था में रहकर पार्टीबाजी चक्की में इस छोटे से राजतन्त्र में रहेंगे और कभी भी अपनी उन्नति विकास नहीं कर सकेंगे।

टिहरी के गरीब मूक ना
(६० हस्ताक्षर)

ESTD 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेंट रिकगनाइजड AIDED
सिन्हा होमियो मेडिकल कौलेज
—पो० लहेरियासराय, बिहार—
आज हिन्दी उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्सन सहित फीस H.L.M.S. १०), H.M.B.S. H.M.D.S. २५)। पुस्तकें—अ० पारिवारिक १॥). बायोकेमिक १॥) मेडिका १॥) मेडिकल डिक्सनरी २) आर्गेनन १॥) फार्माकोपिया १॥) सीम्पटम्स १॥) कुल किताबें १०) में एक साथ दी जायँगी डा० ख० माफ। दवाइयाँ ३०—=)॥ २००—≡) ड्राम, फी औंस ॥), घरेलू बक्स पुस्तक सहित शीशी का ८)। सुगर और गोली २॥) फी पाउण्ड।
(१) वृ० इन्जेक्सन चिकित्सा ३)। वृ० अ० पारिवारिक चिकित्सा ६)।
नोट:—वृहत् सूची मुफ्त—सचित्र मेडिकल मैगजीन मासिक ॥) सालाना—
संरक्षक—राय साहब डा० यदुवीरसिंह एम० डा० एस० (U.S.A.)

परमात्मा पर भरोसा करो
और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष. प्रमेह, निर्बलता, का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।–) डाक और पैकिंग खर्च अलग। आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=), और पैकिंग खर्च अलग।
रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ घनकुट्टी,

गुदड़ी के लाल
इस पुस्तक की कहानियाँ बहुत ही सरल और रोचक भाषा में लिखी गई हैं। इनको पढ़कर बच्चे बेहद खुश होते हैं। ऐसी पुस्तक अपने बच्चों को जरूर दीजिए। मूल्य ॥)
प्रतिमा
इस संग्रह में सुकवि रजाराम की एक से एक बढ़िया ५ इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा भाषा और क्या भाव सभी रंगीन आवरण, बढ़िया छपाई केवल १) एक रुपया।
दि इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

वाददाताओं के पत्र

झाँसी जिले के दरौना, नैनवाग और ग्रामों की १० हजार एकड़ खेती के भूमि का काँस की अधिकता के कारण से उपयोग न हो पाता था। प्रान्तीय ने ट्रैक्टरों द्वारा काँस की सफाई की कराकर प्रायः ७५०० एकड़ भूमि करा दिया है और अब वहाँ कुछ सामूहिक रूप से सहकारी खेती किया जा रहा है।

शुक्रवार को माननीय विकास- दुबेकर एम० एल० ए०, श्री के० देवी एम० एल० ए०, अमेरिकन श्री अलवर्ट मेयर कमिश्नर, श्री जिलाधीश विकास कमिश्नर, श्री माटिया तथा कोआपरेटिव सोसा- रजिस्ट्रार श्री दीक्षित और उक्त लगे हुए कृषि और सहकारी के कर्मचारियों के साथ उक्त क्षेत्र ।

मन्त्री ने कहा कि मैं जानता लोगों के दिलों में कुछ सन्देह कुछ समय के लिये हमारा दीजिये और हम जो कहते हैं उस पर भरोसा कीजिये। जा रहे हैं वही आपके लिये समझाना बहुत कठिन है। अपने खेतों का बढ़ा हुआ की बढ़ी हुई कीमतें और खरीदने और पालने में मितव्य- तो यह आप मान लेंगे कि है जिसे आपको अनुकरण ।

ट्रैक्टर द्वारा जोते हुए क्षेत्र किया और वहाँ एकत्र संक्षिप्त में सरकार की योजना । कुछ किसानों ने आशंका प्रकट कहा कि यद्यपि उनके खेत द्वारा जोते जा चुके हैं, परन्तु वे से पृथक् होना चाहते हैं। परन्तु अधिकारियों तथा स्थानीय के समझाने से वे—जिनकी संख्या ५७ परिवारों में ३-४ से अधिक राजी हो गये। मालवीय जी ने जो किसान सहयोग न देंगे वे मिलनेवाली सरकारी सहायता रहेंगे। जो स्वयं अपनी मदद आगे नहीं आते सरकार उनकी करने को बाध्य नहीं है और इसलिये के गाँवों में जहाँ सहकारी खेती की कार्यान्वित की जा रही है, गलत- न हो कि कोई किसान व्यक्तिगत रूप स्वार्थ के लिये योजना की प्रगति बहुसंख्यक जनता द्वारा स्वीकार की है बाधक बन सकता है।

इसके बाद विकास-मंत्री काँस-क्षेत्र स्टेशन सैदपुर गये जहाँ ग्रामीणों स्वागत किया और विश्वास कि उन लोगों में सहकारी समि- लोकप्रिय हो रही हैं। यहाँ पुलिस महोदय को सलामी दी।

विकास-मन्त्री किसानों की सभा में भी काँस-योजना-सम्बन्धी मसलों पर हुआ। ग्रामीणों ने १९४८ रवी की फसल की क्षतिपूर्ति की माँग की, क्योंकि ट्रैक्टर का काम चालू होने के कारण वे खेत न बो सके थे। मंत्री महोदय ने इस प्रश्न पर विचार करने का वचन दिया।

इसके पूर्व विकास मन्त्री एक सार्वजनिक सभा और कार्यकर्ताओं की सभा में भी शामिल हुए। तथा ललितपुर सोप फैक्टरी का निरीक्षण किया। आप रात में झाँसी लौटे जहाँ एक विशाल सभा में भाषण दिया दूसरे दिन सुबह आप कांग्रेसी कार्यकर्ताओं से मिले और स्थानीय समस्याओं पर विचार किया।

आप झाँसी सुबह पधारे थे और सरकिल हाउस में बुन्देलखण्ड विकास सम्मेलन की अध्यक्षता की। क्षेत्रिक आधार पर आर्थिक समस्याओं को हल करने के लिये आपने ऐसे सम्मेलनों की आवश्यकता पर जोर दिया। आपने क्षेत्रिक अधिकारी की नियुक्ति की घोषणा की। फिलहाल डिवीजनल कमिश्नर ही यह कार्य-भार ग्रहण करेंगे। आपने आगे कहा कि जिला डेवलपमेन्ट एसोसियेशन मध्यम और लघु श्रेणी की योजनाओं को जो जन-सम्पर्क और अल्प सरकारी सहायता से चलाई जा सकती है, बनाने तथा कार्यान्वित करने में सरकार और उनके अधिकारियों को अधिक सहायता और योग दें। आपने कहा कि वे दिन गये जब सरकारी और गैर-सरकारी व्यक्तियों के बीच एक दीवाल खड़ी रहती थी। मैं सरकारी आदमियों से यह अनुरोध करूँगा कि वे प्रजातांत्रिक दृष्टिकोण अपनायें और नई परिस्थियों के अनुकूल नये ढाँचे में ढल जायें अथवा वे दूसरों के लिये अपने स्थान छोड़ दें।

—संवाददाता

* * *

ऋषिकेश (डाक से) गांधी चौक में गढ़वाल-निवासियों का एक विराट् सम्मेलन श्री गिरधारीलाल आचार्य की अध्यक्षता में हुआ, सम्मेलन में टिहरी के लोकप्रिय नेता श्री बुद्धिसागर नौटियाल तथा श्री प्रेमलाल वैद्य का स्वागत हुआ और ऋषिकेश कांग्रेस मंडल के मन्त्री श्री परिवर्तन स्वामी, श्री भगवानदास मुल्तानी आदि अनेक कार्यकर्ताओं के ओजस्वी भाषण हुए जिनमें टिहरी में बढ़ती हुई प्रान्तीयता को रोकने तथा टिहरी को शीघ्रातिशीघ्र युक्तप्रान्त में विलीन करने का जोर दिया गया और टिहरी में वर्तमान अव्यवस्था के लिये सरकार के प्रति रोष प्रकट किया गया, एक प्रस्ताव सर्वसंमति से स्वीकृत हुआ।

यह सम्मेलन टिहरी में दिन-प्रतिदिन बढ़ते हुए अराजकता व भ्रष्टाचार से टिहरी की जनता की सुरक्षा के लिये भारत सरकार से अनुरोध करता है कि वह टिहरी का शासन-भार शीघ्रातिशीघ्र युक्तप्रान्तीय सरकार को सौंप दे।

—संवाददाता

* * *

अमेठी (सुलतानपुर) कल स्थानीय श्री रणवीर हाइयर सेकन्डरी स्कूल में उसके संस्थापक स्वर्गीय राजकुमार श्री रणवीरसिंह जी की जयन्ती श्री उमाचरण मिश्र बी० ए० एल-एल० बी० के सभापतित्व में समारोह पूर्वक मनाई गई। अनेक छात्रों के कविता-पाठ एवं व्याख्यान उक्त राजकुमार महोदय के विषय में हुए। अमेठी राज्य के युवराज श्री रणञ्जयसिंह जी एक्स एम० एल० ए० (केन्द्रीय) ने अपने भाषण में स्वर्गीय अग्रज के प्रति अनुपम भक्ति प्रदर्शित करते हुए उनके गुणों का दिग्दर्शन कराया और श्री रणवीर विद्यालय की सहायता के लिए जनता से अपील की। आपने विद्यार्थियों को विशेष रूप से उपदेश दिया। रायबहादुर सूबेदार मेजर वाले तिवारी, श्री विजयपाल पाण्डेय आदि के भी भाषण हुए। सभापति जी ने स्वर्गीय राजकुमार महोदय के अलौकिक गुणों की भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए जनता से प्रार्थना की कि स्कूल की सहायता करें। सर्वश्री वंशीधर कैप्टेन प्रतापसिंह कोठी प्रतापगढ़ रा० ब० सूबेदार मेजर वाले तिवारी, चन्द्रभानु, विजयपाल पाण्डेय, इन्द्रजित् गुप्त, रामकिशोर, ए० बी० लाल तथा देवानन्द ओझा ने स्कूल की आजीवन सदस्यता के लिए वचन दिया। अन्त में श्री युवराज रणञ्जयसिंह जी की ओर से ५०० से अधिक छात्रों को मिठाई बाँटी गई।

—संवाददाता

* * *

अमेठी (सुलतानपुर) शाइरन तथा गौरीगंज में महती सभाएँ हुईं। गौरीगंज की सभा में ५,००० से अधिक जन-समूह के सम्मुख भाषण करते हुए सभापति अमेठी राज्य के युवराज श्री रणञ्जयसिंह एच० ए० आर० ओ० ने कहा कि उपनिर्वाचनों में कांग्रेस की शत-प्रतिशत विजय से यह प्रमाणित हो गया कि जनता समाजवादियों की कोरी बकवास में न पड़कर अब रचनात्मक कार्य चाहती है। वर्त्तमान सरकार के साथ सहयोग करके देश को सुदृढ़ बनाना हमारा कर्त्तव्य है। माननीय राजर्षि श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन जी के प्रान्तपति निर्वाचित होने से प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी का गौरव बढ़ गया है। उसे वर्त्तमान समय में आप ही जैसे स्पष्टवादी निर्भीक नेता की आवश्यकता थी।

अन्त में आपने देश की रक्षा के लिये सुसंघटित सेना की आवश्यकता बतलाते हुए लोगों से भर्ती होने की प्रार्थना की। आपने कहा कि पुराने सैनिकों को विशेषता दी जायगी और यह भी सूचित किया कि आजाद हिन्द सेनावालों को भी भर्ती होने की अनुमति मिल गई है। भर्ती होने के लिये चाहे लोग सीधे लखनऊ जायँ या मेरे पास आयें। मैं भी आनरेरी असिस्टेन्ट रिक्रूटिंग आफिसर हूँ मैं उन्हें भर्ती करवा दूँगा।

सभा में जिला बोर्ड के अध्यक्ष श्री देवकलीदीन शर्मा, श्री विद्याधर बाजपेयी एम० एल० ए०, श्री गिरिराजसिंह तथा श्री रामनाथसिंह के भी भाषण हुए।

—संवाददाता

* * *

हरिद्वार के जूनियर हाईस्कूल मोहनचट्टी (गढ़वाल) का उद्घाटन सेठ श्री पन्नालाल भल्ला के द्वारा श्री उमरावसिंह जी एम० ए० एल० टी० प्रधानाध्यापक की अध्यक्षता में धूम-धाम से हो गया। स्कूल के छात्रों द्वारा स्वागत-गान के पश्चात् मैनेजर ने आय-व्यय का चिट्ठा पढ़कर सुनाया। जनता व स्कूल की ओर से श्री भल्ला जी की सेवा में मानपत्र भेंट किया गया। श्री भल्ला जी की ओर से स्कूल-कार्य की प्रशंसा के बाद श्री भवानीगिरि जी का शिक्षा-सम्बन्धी भाषण हुआ।

—संवाददाता

* * *

उदयपुर में राजपूताना प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री गोकुलभाई भट्ट के द्वारा राजस्थान संघ के शिक्षा-सचिव श्री प्रेमनारायण जी माथुर की अध्यक्षता में १ अगस्त को महिला-मंडल द्वारा संचालित महिला-सेवादल का उद्घाटन होना निश्चित हो गया है। साथ ही पुस्तकालय सप्ताह का श्रीगणेश राजस्थान सरकार के प्रधान मन्त्री श्री माणिक्यलाल जी वर्मा के हाथों होना तय पाया है। पुस्तकालय-सप्ताह में उदयपुर के नागरिकों से पुस्तकालय के लिये कम से कम एक श्रेष्ठ ग्रन्थ देने की प्रार्थना की जायगी।

ता० १ अगस्त को मध्याह्न में दम्पत्ति सम्मेलन का आयोजन भी श्री मोहनलाल जी सुखाड़िया (विकास मंत्री) की अध्यक्षता में हो रहा है। जिसमें दम्पत्ति-जीवन के कई उपयोगी मुद्दों पर विचार होगा—यह मंडल की एक सामाजिक प्रवृत्ति है।

—संवाददाता

* * *

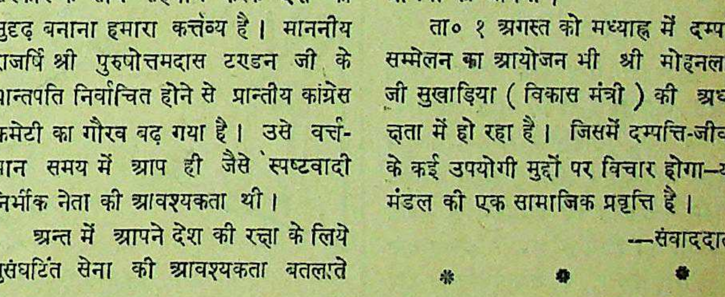
चिरस्थायी व दिमाग़ी ताक़त बढ़ाने के लिए सेवन करो
डॉ. गौतमराय केशव
टानिक
फॉस्फरस पिल्स
डॉ. वामन गोपाळ ऍण्ड सन्स रिडा डेपो मुंबई नं. २

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी एल० एस०
धोतकिया एन्ड ब्रदर्स।

भारत और ब्रिटिश साम्राज्य

(पेज ५ का शेष)

न किसी रूप में पूरी तरह से वसूल हो जाती है। अमेरिका की नीति के प्रति दूसरे देशों में जो आशंका है उसके सिवा भारत के सामने दो और भी भारी तथ्य हैं। अमेरिका की जन-सत्ता में भारतीय स्वभाव के लिये बहुत कम आकर्षण है। उसकी भीतरी राजनीति न तो बहुत उज्ज्वल रही है न स्थिर। उसकी बाह्य नीति का आरम्भ हाल ही में हुआ और काफी समय तक उसकी परीक्षा नहीं हुई है। वूड्रो विल्सन तथा रूजवेल्ट ने जो आशायें दिलाई थीं वे अधिक काल्पनिक और कम वास्तविक निकलीं। इनके अलावा यह बात भी है कि हिन्द महासागर और अरब सागर में उसका कोई जहाजी असर नहीं है जिसके साथ भारत का मुख्य सम्बन्ध है। इन समुद्रों में अधिकांश महत्वपूर्ण स्थान ब्रिटेन के हाथ में हैं और ब्रिटिश साम्राज्य के देशों की एक शृङ्खला वहाँ फैली हुई है, इसलिये भारत को इन वास्तविकताओं को ध्यान में रखना है। इन देशों को अगर अलग अलग करके देखा जाय तो कोई भी न तो पूरी तरह से उन्नत है न शक्तिशाली। यह भी स्पष्ट बात है कि ब्रिटिश राजनीति ने दक्षिणी एशिया में अपनी शक्ति अभी नहीं गँवाई है। इस कथन की पुष्टि में वह घटनायें प्रस्तुत की जा सकती हैं जो हाल में पूर्वी मेडिटरेनियन, लाल सागर, अरब, फारस और भारत में भी तथा मलाया में हुई हैं। ब्रिटेन का इतिहास यह प्रकट करता है कि ब्रिटिश जनता की पुनरुत्थान और संकलन की शक्ति कितनी अद्भुत है। यह बहुत सम्भव है कि वह वर्तमान संकट को पार कर जाय और विश्व की राजनीति में बदलती हुई परिस्थिति के अनुकूल अपने को बना ले। ब्रिटेन के नेतृत्व में जो साम्राज्य है उससे भारत विरक्त और पूरी तरह से अलग कैसे हो सकता है?

ऊपर से ऐसा लग सकता है कि भारत असहाय है और चूँकि वह राजनैतिक और भौगोलिक कठिनाइयों से निकल नहीं सकता, इसलिये उसको अवश्यंभावी परिस्थिति को आत्मसमर्पण करना पड़ रहा है। इसमें संदेह नहीं कि यह बात बहुत कुछ सच है, पर वस्तुस्थिति को गौर से देखने पर दूसरे कारणों पर प्रकाश पड़ेगा जो वर्तमान काल में साम्राज्य को हमारा स्वाभाविक साथी बना देते हैं। भारत के आधुनिक जगत् में पदन्यास का साधन ब्रिटेन रहा है। हमारे राजनैतिक जीवन का ढाँचा जिस नींव पर खड़ा है वह ब्रिटिश संस्कृति, ब्रिटिश दृष्टिकोण और ब्रिटिश कानून तथा संस्थायें हैं। हमारे राजनैतिक नेताओं की कई पीढ़ियों को लॉक, बर्क, मिल, ग्लैडस्टन, मोर्ले, वेल्स, बर्नार्ड शा और आजकल लास्की से प्रेरणा मिली है और उन्होंने हमारे राजनैतिक विचारों को बनाया है। महात्मा गांधी तक ने रस्किन के प्रति अपने को ऋणी माना है और श्री जवाहरलाल नेहरू ने मेरेडिथ, टाउनसेन्ड, आस्कर वाइल्ड, वाल्टर पीटर, मोरले तथा बर्ट्रेन्ड रसल का। नेहरू जी की शिक्षा हैरो और कैम्ब्रिज में हुई। इस तरह के उदाहरण कई दिये जा सकते हैं। भारत और इँगलैंड के बीच अगणित, मानसिक और नैतिक शृङ्खलायें हैं। पिछली डेढ़ शताब्दी में कई तीव्र तथा कटु झगड़ों, निराशाओं तथा तकलीफों के बावजूद भारतीय और अँगरेज लोगों ने एक दूसरे को बेहतर तरीके पर समझना सीख लिया है और कई एक ही तरह की बातें पैदा कर ली हैं जो हमको जल्द एक ऊँचे राजनैतिक स्तर तथा जीवन की ओर बढ़ाने में शायद मदद देंगी।

रूस और अमेरिका की समता में साम्राज्य भारत के नजदीक है और उसके आर्थिक तथा सैन्य स्वार्थ भारत के स्वार्थों से आबद्ध हैं। भारत ब्रिटिश साम्राज्य का हृदय था और सम्भवतः कामनवेल्थ का भी रहेगा। ब्रिटेन तथा कामनवेल्थ के कई सदस्य राष्ट्र यह महसूस करते हैं कि उनके स्वार्थों की सुरक्षा तथा भारत के सहयोग से बेहतर तरीके पर हो सकती है जब कि उसका गैर दोस्ताना रुख शायद बहुत अड़चन पैदा करनेवाला और नुकसानदेह साबित होगा। दूसरे विश्व-युद्ध ने निश्चित रूप से भारत की अहमियत को न सिर्फ कामनवेल्थ के लिये साबित कर दिया है बल्कि आंग्ल-अमेरिकन हितों के लि
ब्रिटिश कॉमनवेल्थ के सम्बन्धों के लि
तीसरी गैर सरकारी कान्फ्रेन्स की
की रिपोर्ट इसको साफ मानती
"साम्राज्य के दूसरे देशों को
और सामरिक कारणों से भारत की
श्यकता है।"

खुफिया कोकशास्त्र

इसमें स्त्री-पुरुषों के अद्भुत ८४ आसनों की जोड़दार फोटो, ब्लाक की
तसवीरें, यौवन के आनन्द प्राप्त करने के पोशीदा तरीके, प्राचीन जमाने के ऐसे ऐसे
जिनका लिखना सभ्यता के विरुद्ध है। जो शादीशुदा न हो उसको यह पुस्त
दी जाती। मूल्य २॥) रुपया, डाक-खर्च माफ।

खुफिया तसवीरों के कार्ड

२५ कार्ड का सेट २॥) रुपये में

पताः—कामा को० (DDA) लाहौर रोड—अमृतसर

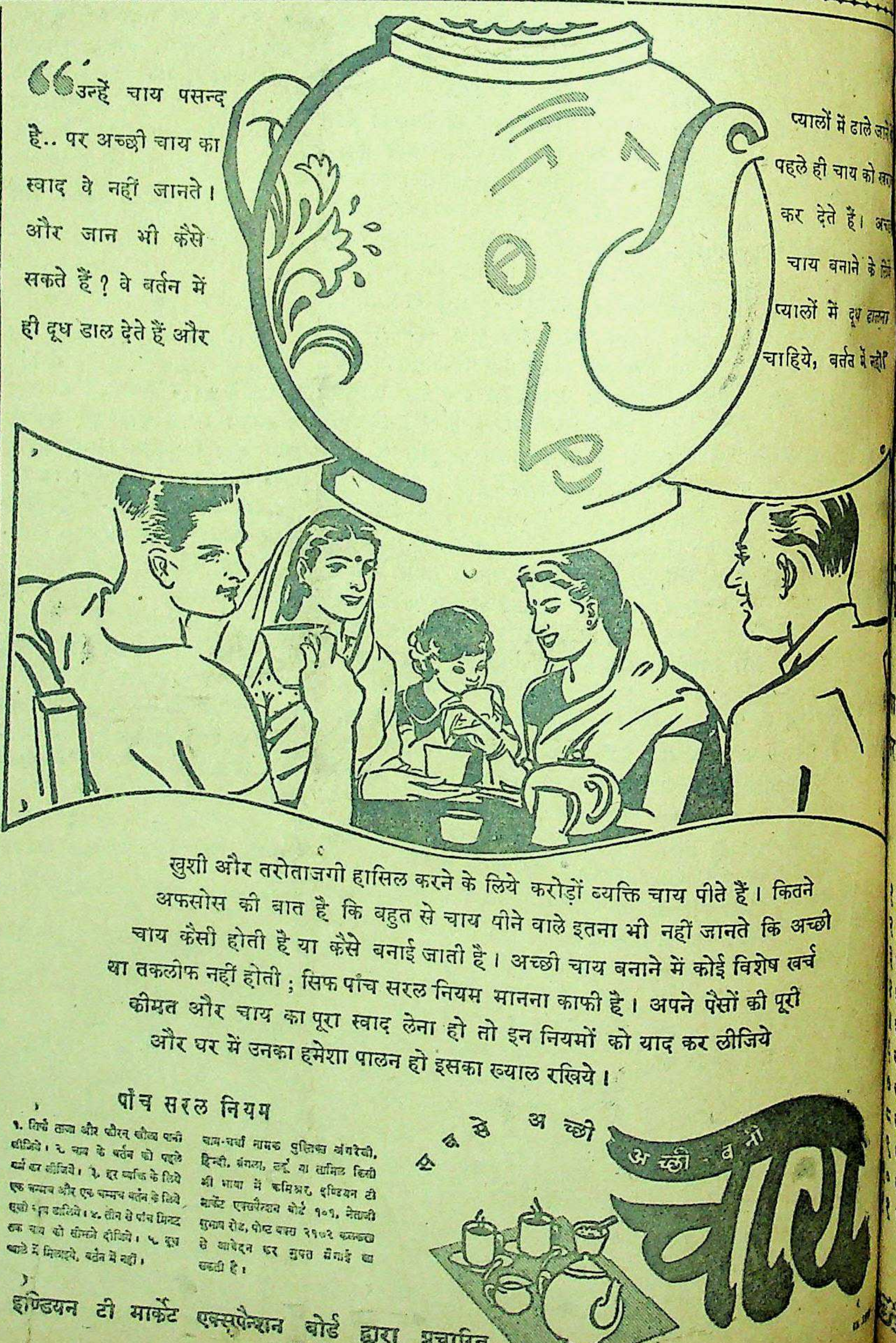

"उन्हें चाय पसन्द है.. पर अच्छी चाय का स्वाद वे नहीं जानते। और जान भी कैसे सकते हैं? वे बर्तन में ही दूध डाल देते हैं और प्यालों में ढाले जा
पहले ही चाय को
कर देते हैं। अ
चाय बनाने के लि
प्यालों में दूध डालना
चाहिये, बर्तन में नहीं

खुशी और तरोताजगी हासिल करने के लिये करोड़ों व्यक्ति चाय पीते हैं। कितने अफसोस की बात है कि बहुत से चाय पीने वाले इतना भी नहीं जानते कि अच्छी चाय कैसी होती है या कैसे बनाई जाती है। अच्छी चाय बनाने में कोई विशेष खर्च या तकलीफ नहीं होती; सिर्फ पाँच सरल नियम मानना काफी है। अपने पैसों की पूरी कीमत और चाय का पूरा स्वाद लेना हो तो इन नियमों को याद कर लीजिये और घर में उनका हमेशा पालन हो इसका ख्याल रखिये।

पाँच सरल नियम

१. सिर्फ ताजा और खौलता खौला पानी लीजिये। २. चाय के बर्तन को पहले गर्म कर लीजिये। ३. हर व्यक्ति के लिये एक चम्मच और एक चम्मच बर्तन के लिये इसी प्रकार डालिये। ४. तीन से पाँच मिनट तक चाय को सीझने दीजिये। ५. दूध प्याले में मिलाइये, बर्तन में नहीं।

चाय-चर्चा नामक पुस्तिका अंगरेजी, हिन्दी, बंगला, उर्दू या तामिल किसी भी भाषा में कमिश्नर, इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड १०१, नेताजी सुभाष रोड, पोस्ट बक्स २१७२ कलकत्ता से आवेदन कर मुफ्त मँगाई जा सकती है।

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

रामचरितमानस

टीकाकार—डाक्टर श्यामसुन्दरदास

'मानस' का महत्व किसी से छिपा नहीं है। रतवर्ष में तो इसका न है ही, अन्य शों में भी इस अमर न्थ का आदर है। यह माणिक संस्करण इधर ई वर्ष से अप्राप्य था। ल में ही छपकर तैयार आ है। ग्राहकों को ता करनी चाहिए। प्रतियाँ नहीं छापी ई हैं।

बड़े आकार के १२०० । रंग-बिरंगे दर्जनों । सजिल्द प्रति का

ल्य १२) रुपये

जहाँ पर हमारी ब्रांच एजेंसी है वहाँ ख़रीदने डाकख़र्च की बचत होगी।

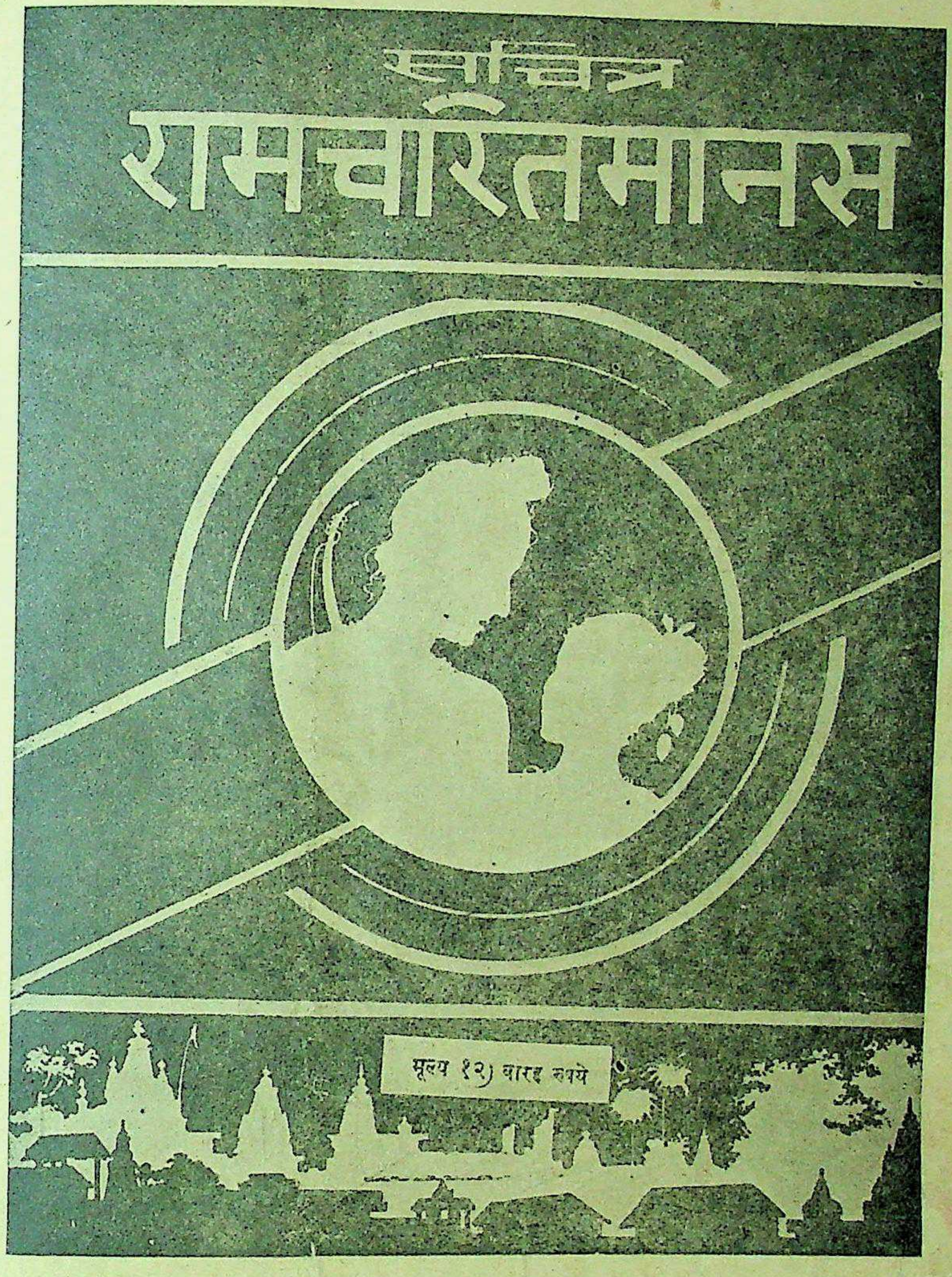

हमारी ब्रांचें और एजेन्सियाँ

१ इलाहाबाद हेड आफ़िस—इंडियन प्रेस लिमिटेड, ३६ पन्नालाल रोड
२ इलाहाबाद सिटी—न्यू ऐरा बुकहाउस, हिवेट रोड
३ आगरा—आगरा पब्लिशिङ्ग हाउस, बाग़ मुज़फ़्फ़र खाँ
४ अजमेर—इंडियन प्रेस लिमिटेड, कचहरी रोड
५ अलमोड़ा—डिस्ट्रिक्ट बुकडिपो, लालबाज़ार
६ बनारस—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, बनारस छावनी
७ बाँदा—बुंदेलखण्ड पब्लिशिङ्ग हाउस
८ बरेली—इंडियन बुकडिपो
९ बम्बई—भारतीय पुस्तक भण्डार, कालबा देवी रोड
१० बीकानेर—गर्गबुक कम्पनी, कोट के भीतर
११ कलकत्ता—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, २२।१ कार्नवालिस स्ट्रीट
१२ कानपुर—साहित्य-रत्नालय, श्रद्धानन्द पार्क
१३ दिल्ली—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, नई सड़क
१४ गोरखपुर—पुस्तक-स्थान, बख्शीपुर
१५ ग्वालियर—लायल बुकडिपो, पाटनकर बाज़ार, लश्कर
१६ इन्दौर—नवयुग साहित्यसदन, खजूरी बाज़ार
१७ जयपुर—गोपाल बुकडिपो, त्रिपौलिया बाज़ार
१८ जबलपुर सी० पी०—इंडियन प्रेस, लिमिटेड
१९ लखनऊ—इंडियन बुकडिपो, अमीनुद्दौला पार्क
२० मेरठ—पुस्तक-स्थान, वैस्टर्न कचहरी रोड
२१ पटना—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, पो० ऑ० बाँकीपुर
२२ राँची—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, कोर्ट रोड

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

डेढ़ ही आने में सर्दी और दर्द में आराम पहुंचानेवाली औषधि

सर्दी-खांसी, दर्द, बुखार नित्य-प्रति लोगों को सताते ही रहते हैं। 'ऐस्प्रो' इन सब से सब की रक्षा कर सकती है। आपकी भी कर सकती है अगर आप इसे मौका दें। यह आपको स्वस्थ बना सकती है। आपके निकटतम् औषधि-विक्रेता के यहां आपको 'ऐस्प्रो' की टिकियां मिलेंगी। सर्दी होते ही 'ऐस्प्रो' की दो टिकियां रात को सोते वक्त थोड़े जल के साथ निगल जाइये। आपको अच्छी नींद आयेगी और बहुत सम्भव है कि सुबह होते २ आप भले-चंगे दिखाई पड़ने लगें। 'ऐस्प्रो' बुखार को कम करती है, दर्द में आराम पहुंचाती है तथा गनगनाहट को दूर करती है। दुनियां की सब से बड़ी रोग निवारक शक्ति प्रकृति आप को भला-चंगा रखना चाहती है। 'ऐस्प्रो' उसे ऐसा करने का सुन्दर मौका देती है। अतः आप कष्ट न सहें।

'ऐस्प्रो' और प्रकृति आपको धोखा नहीं दे सकती

एक बच्चा भी "ऐस्प्रो" ले सकता है

आप इसे पढ़ सकते हैं जो नहीं पढ़ सकते उनको 'ऐस्प्रो' के गुण बताकर उनकी मदद कीजिये

३ टिकियाँ-१॥ आने
३० टिकियाँ-१५ आने

मात्रा-१ से ३ टिकियां

वितरक :
जे. एल. मौरिसन. सन एण्ड जोन्स
(इण्डिया) लि:
पोष्ट बक्स ३८७ कलकत्ता फोन ७०९१

इन रोगों में 'ऐस्प्रो' बहुत उपयोगी होगी

स्नायु खींचन, सिर दर्द, पीठ की दर्द, जोड़ों की दर्द और अकड़, दांत की दर्द, अनिद्रा चिड़चिड़ापन, सर्दी व गले की खसखसाहट

79 शीघ्रगुणकारी, निरापद और उपयोगी

आरो
१८६६
नीलगिरि

फिल्म ऐ

यदि आप फिल्म ऐक्टर
रु० से १५००) रु० मासि
चाहते हों तो आज ही
लिखा पढ़ा होना जरूरी
नाम व पूरा पता साफ

अमेरिकन कार्पो
(फिल्म डिपार्ट
हलका नं० २२ (D.A.)

मुफ्त

असली फोउन्टेनपेन और
रिस्टवाच गारन्टी १२ साल,
करने के लिये आज ही
मौका हाथ न आयेगा।
Imperial Corporation
Halka No. 22.

वर की आवश्य

१६, २०, ३० वर्ष की
सुन्दर कन्याओं के लिए
की आवश्यकता है।
मदनगोपाल बी० ए०,
सदर बाजार,

बालों को स्वस्थ और सुंदर रखता है

कोमलता से सुगंधित किया गया वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।
वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।

सभी दूकानों पर

Copyright

Vaseline POMADE

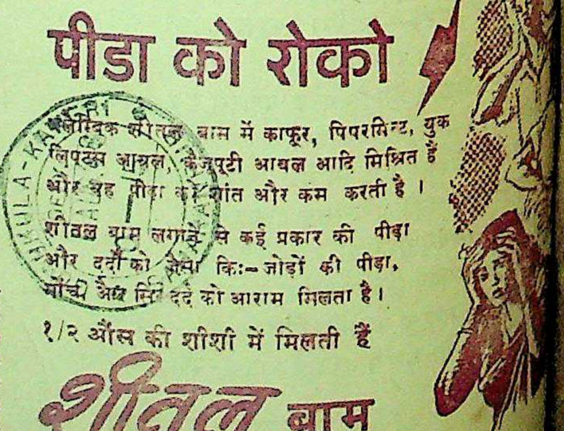

पीडा को रोको

अलेम्बिक शीतल बाम में काफूर, पिपरमिन्ट, युकलिप्टस आयल, केजपूटी आयल आदि मिश्रित हैं और यह पीड़ा को शांत और कम करती है।

शीतल बाम लगाने से कई प्रकार की पीड़ा और दर्दों को जैसा कि:- जोड़ों की पीड़ा, मोच और सिर दर्द को आराम मिलता है।

१/२ औंस की शीशी में मिलती हैं

शीतल बाम

एक अलेम्बिक औषधि

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
स्वतन्त्रता अंक

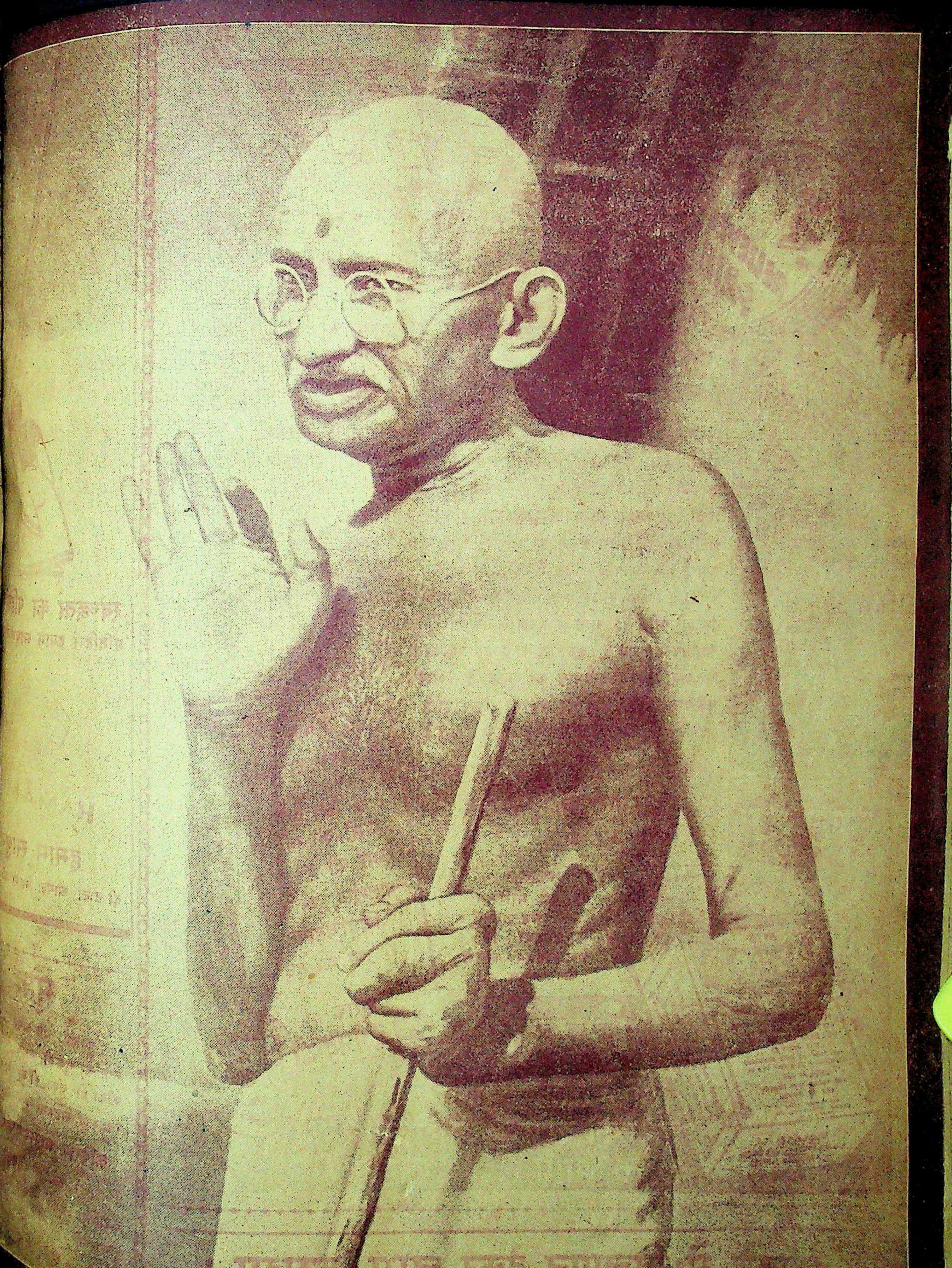

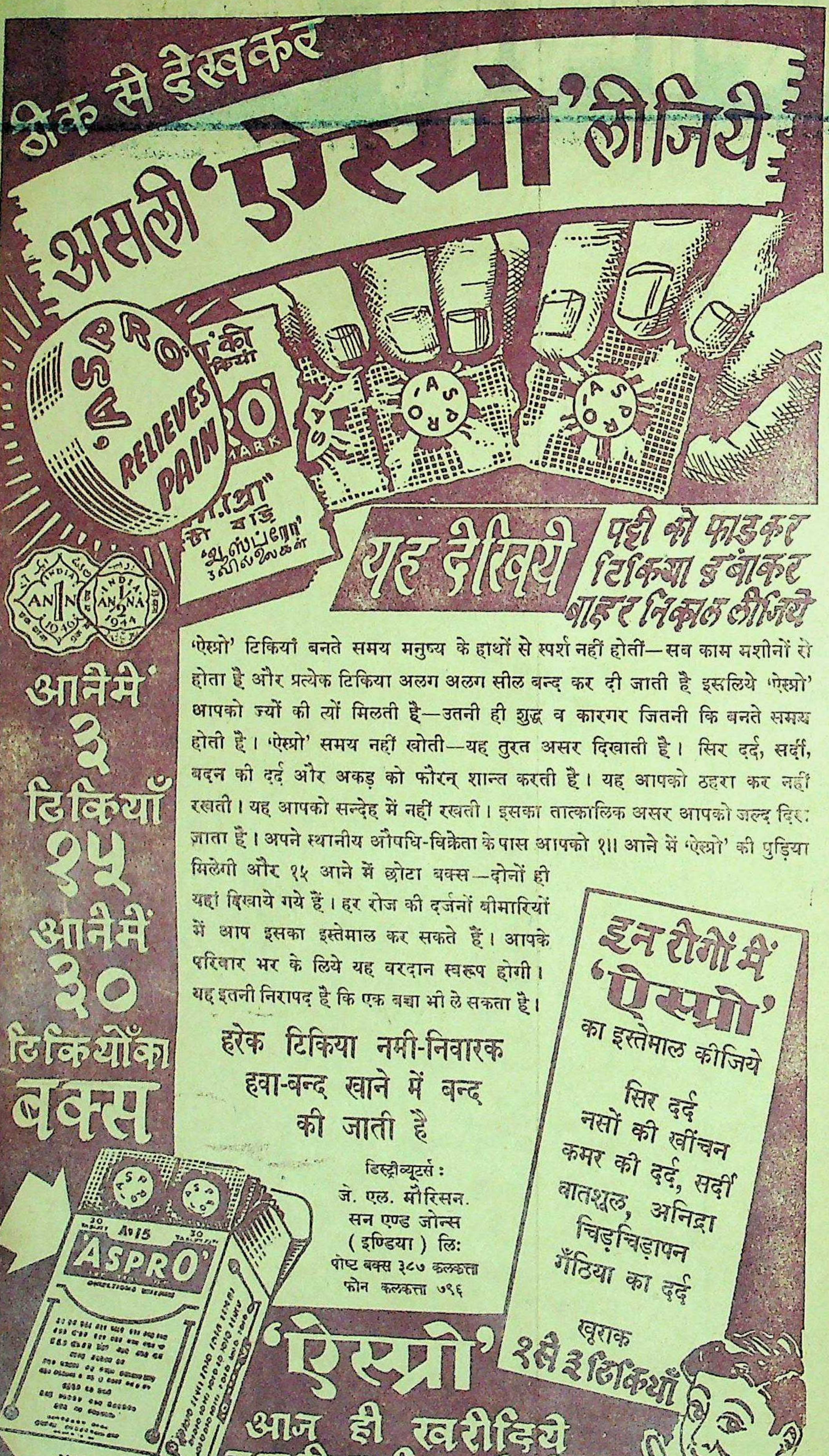
ठीक से देखकर
असली 'ऐस्प्रो' लीजिये
ASPRO
RELIEVES PAIN
यह देखिये
पट्टी को फाड़कर
टिकिया दबाकर
बाहर निकाल लीजिये
INDIA 1 ANNA 1940
INDIA ½ ANNA 1944
आनेमें
३
टिकियाँ
१५
आनेमें
३०
टिकियोंका
बक्स
ASPRO
'ऐस्प्रो'
आज ही खरीदिये
इसकी शान्तिदायिनी
शक्ति आपकी हो जायेगी!
78

'ऐस्प्रो' टिकियाँ बनते समय मनुष्य के हाथों से स्पर्श नहीं होतीं—सब काम मशीनों से होता है और प्रत्येक टिकिया अलग अलग सील बन्द कर दी जाती है इसलिये 'ऐस्प्रो' आपको ज्यों की त्यों मिलती है—उतनी ही शुद्ध व कारगर जितनी कि बनते समय होती है। 'ऐस्प्रो' समय नहीं खोती—यह तुरत असर दिखाती है। सिर दर्द, सर्दी, बदन की दर्द और अकड़ को फौरन् शान्त करती है। यह आपको ठहरा कर नहीं रखती। यह आपको सन्देह में नहीं रखती। इसका तात्कालिक असर आपको जल्द दिख जाता है। अपने स्थानीय औषधि-विक्रेता के पास आपको १॥ आने में 'ऐस्प्रो' की पुड़िया मिलेगी और १५ आने में छोटा बक्स—दोनों ही यहाँ दिखाये गये हैं। हर रोज की दर्जनों बीमारियों में आप इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। आपके परिवार भर के लिये यह वरदान स्वरूप होगी। यह इतनी निरापद है कि एक बच्चा भी ले सकता है।

हरेक टिकिया नमी-निवारक
हवा-बन्द खाने में बन्द
की जाती है

डिस्ट्रीब्यूटर्स :
जे. एल. मौरिसन.
सन एण्ड जोन्स
(इण्डिया) लि:
पोष्ट बक्स ३८७ कलकत्ता
फोन कलकत्ता ७९६

इन रोगों में
'ऐस्प्रो'
का इस्तेमाल कीजिये

सिर दर्द
नसों की खींचन
कमर की दर्द, सर्दी
वातशूल, अनिद्रा
चिड़चिड़ापन
गँठिया का दर्द

खुराक
१ से २ टिकियाँ

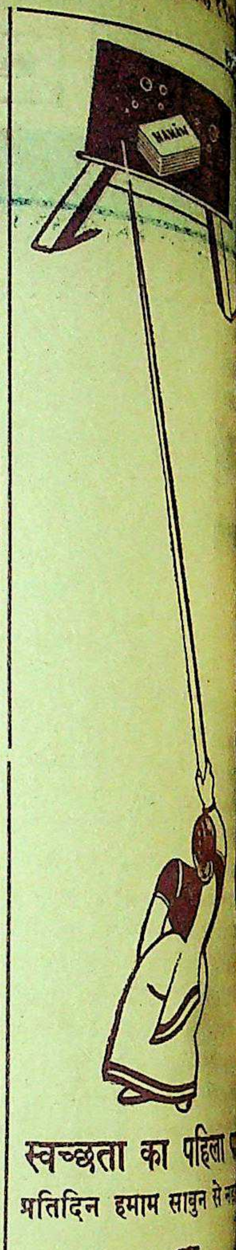
HAMAM
HAMAM

स्वच्छता का पहिला
प्रतिदिन हमाम साबुन से

HAMAM
हमाम साबुन
दी टाटा आयल मिल्स कं०

मुफ़्त

युवको ! यदि अपनी
नष्ट कर चुके हो, अथवा
फीका हो चुका हो तो
सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त

कविराज ब्रह्मस्वरूप
(D.A.) फतेहपुरी देहली
मशविरा मुफ़्त करके
सुधार लें।

देशदूत में विज्ञापन देकर लाभ उठाइए।

देशदूत

र्ष १०, संख्या ४९] [रविवार, १५ अगस्त, १९४८

पन्द्रह अगस्त के प्रति

लेखिका, श्रीमती सुमित्रा देवी सिनहा

शुभ दिवस आओ, तुम्हारा आज स्वागत है !
वर्ष भर के सुख दुखों की आज ले झोली,
तिलक करते हैं तुम्हारा नवल ले रोली,
कोटि मस्तक आज चरणों में हुए नत हैं !
आज श्रद्धांजलि समर्पित, देव ! है अर्चन !
देश का कण कण तुम्हारा कर रहा वन्दन !
कोटि उर, नव ज्योति-वर की साधना-रत हैं !
उमड़ते आनन्द के हैं, पृष्ठ में, दृग-जल,
शक्ति दो हमको कि रक्षित रख सकें प्रणबल,
विगत की विश्रान्ति, नूतन स्फूर्ति-परिणत है !
आज नव संदेश दो हो सृष्टि, प्रलयों में,
ज्वलित है जन करो अमृत-वृष्टि निलयों में,
पार करने अभी बाधा-सिन्धु शत शत हैं !
शुभ दिवस, आओ तुम्हारा आज स्वागत है !

ो महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय तिथियाँ

तीय स्वाधीनता की दृष्टि से ६ और १५ अगस्त का महत्त्व

लेखक, श्री गोविन्दसहाय एम० एल० ए०

(पार्लामेंट्री सेक्रेटरी गृह तथा सूचना विभाग संयुक्त प्रांत)

तीय इतिहास में ६ और १५ ो महत्त्वपूर्ण दिन रहेंगे। ८ अगस्त इंडिया कांग्रेस कमेटी ने 'अँग्रेजों छोड़ो' का प्रस्ताव पास किया। ने वायसराय को पत्र लिखने का । ६ अगस्त को अन्य दिनों रोज भी बम्बई में एक भयंकर की जा रही थी। चारों घिरे हुए थे। तूफान अवश्य वह राजनीतिक। इस तूफान राजनीति के सारे रूप को ही । सवेरे चार बजे से ब्रिटिश ने अपनी पूर्व संगठित योजना कांग्रेस पर विद्युत् आक्रमण । यह जापानियों के पर्ल हार- गए ओछे हमले से भी कहीं था। सारे देश में ६ अगस्त को नौकरशाही ने अपना हमला बोल दिनों पहले से ही नेताओं की के वारन्ट हर जिले में भेजे जा पब्लिक सरकुलर द्वारा केन्द्रीय प्रान्तीय सरकारों को कुछ हिदा- दी कि किस प्रकार उन्हें कांग्रेस माँग के विरुद्ध यहाँ तथा में जनमत तैयार करना यह सब बातें इस बात का सुबूत ब्रिटिश नौकरशाही ने अपने से एक निश्चित व पूर्ण आक्रमण के लिए तैयार कर रक्खा के पास होते ही ब्रिटिश नौकर- ि विन और सैनिक मशी- में आ गई। कार्य-समिति के हर सूबे, जिले, शहर और गाँव नेता पकड़ लिए गए। अख- चोट दिए गए। आर्डिनेंसों -रक्षा कानून का राज्य स्थापित आर्डिनेंसों का एक ही अभि- कि जनता में नेताओं की गिर- विरुद्ध कोई प्रदर्शन न हो। गैर कानूनी करार कर दिया दफ्तरों पर ताले पड़ गए व को जब्त कर लिया गया। सारे देश में अर्द्ध फौजी कानून किया गया। सारा ही देश एक ना बन गया और कांग्रेस तथा जबरदस्ती संघर्ष लादा गया। स्वभावतः इसकी प्रतिक्रिया हुई। जोश व रोष से परिपूर्ण जनता ने विरोध प्रदर्शन किए। सभाएँ कीं, हड़तालें कीं, दफा १४४ को तोड़ा, और 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' के नारे से प्रभावित तथा खुले विद्रोह की प्रवृत्ति से प्रोत्साहित जनता विभिन्न कार्यक्रमों की तलाश में भटकने लगी। वह उठी और गोलियों की बौछारों में आगे बढ़ी। इस तरह ९ अगस्त सन् १९४२ को खुले विद्रोह का आरम्भ हुआ और उस क्रान्ति का अन्त १५ अगस्त १९४७ की सफलता में आया। इसी लिए यह दोनों तारीखें भारतीय इतिहास में सदैव अमर रहेंगी।

९ अगस्त के भारतीय राष्ट्रवाद पर ब्रिटिश साम्राज्यशाही वार ने लड़ाई के सारे नक्शे ही को बदल दिया। इस तरह अब दुनिया के तीन क्षेत्रों में एक ही उसूल के लिए लड़ाई प्रारम्भ हुई और सभी ठीक सोचनेवाले लोगों ने एक ही माँग दुनिया के सामने रक्खी। ब्रिटिश और अमरीकन गुट्ट के लोगों ने जर्मन और जापान से आत्म समर्पण की माँग की और उसकी यही दलील दी कि चूँकि जर्मन और जापान ने बिना किसी कारण के केवल अपनी शक्ति के आधार पर पोलैंड और पर्ल हारबर पर आक्रमण किया इसलिये उन्हें बिना किसी शर्त के हथियार डालने होंगे। इस गुट्ट के लोगों की दलील ही यह थी कि जो शक्ति सैनिक बल के आधार पर इस तरह न्याय को रौंदना चाहती है उनको हमारा एक ही उत्तर है कि वह बिना किसी शर्त के हथियार डाल दें। ९ अगस्त सन् १९४२ को हिन्दोस्तान में भी ब्रिटिश साम्राज्यशाही ने अपनी सैनिक शक्ति के आधार पर निहत्थे हिन्दोस्तानियों की आकांक्षाओं और अभिलाषाओं पर बिना किसी कारण प्रहार किया और इस क्षेत्र में अपने सैनिक-बल के जोर पर न्याय का गला घोटना चाहा। इस तरह लड़ाई के हर क्षेत्र में हमलावरों के विरुद्ध लड़ाई शुरू हुई और अन्त में लड़ाई का वही फैसला हुआ जो कि न्यायप्रिय दुनिया चाहती थी। जर्मन ने यूरप में बिना किसी शर्त के आत्मसमर्पण किया। सुदूर पूर्व में जापान का भी यही हाल हुआ। और हिन्दोस्तान में भी ब्रिटिश साम्राज्यशाही ने बिना किसी शर्त के अपना प्रहार वापस ले लिया। और भारतीय राष्ट्र को पूर्ण स्वाधीनता होने की घोषणा १५ अगस्त सन् १९४७ से अँग्रेजी राज के खातमें पर हुई। इसलिये १५ अगस्त भी हमारे इतिहास में एक अनोखा और महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इस रोज भी ९ अगस्त की भाँति लाखों आदमी बड़े उत्साह और जोश से उठे। और इस प्रकार समुद्र की भाँति उमड़े हुए जनसमूहों के अपूर्व दृश्य देखने में आए। अपनी इस अपूर्व खुशी में करोड़ों हिन्दोस्तानियों ने गांधी जी, जवाहरलाल की जय के नारों के साथ साथ लार्ड माउन्टबेटेन के जय के नारे भी लगाये। और इस तरह ब्रिटिश और भारतीय जनता में काफी वर्षों से पैदा हुई कटुता का अन्त होकर एक नए सिरे से प्रेम का गठबन्धन हुआ। और दोनों ही ने एक दूसरे की शक्ति, अधिकार और गौरव को जाना।

आज ब्रिटिश शासन का अन्त हो चुका है। पर हमारे सामने नई नई पेचीदगियाँ और परेशानियाँ पैदा हो गई हैं। यह प्रकृति का नियम है कि जब कोई बड़ा दरख्त गिरता है तो उसके आसपास की जमीन भी हिल जाती है। ब्रिटिश साम्राज्य भी एक बड़ा तनावर दरख्त था जिसकी शाखाएँ हर गाँव में पहुँच चुकी थीं और जिसने समाज में अपनी जड़ें जमा ली थीं। उसके अकस्मात् गिर जाने से देश में जोर का धमाका हुआ, काफी उथल-पुथल हुई और दबी हुई भावनाएँ उमड़ीं और इस तरह मालूम पड़ा कि समस्त आस-पास की भूमि हिलकर हमारी सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक व्यवस्था को अस्तव्यस्त करना चाहती है। लाखों आदमियों के इस धमाके में हाथ पैर फूले और मस्तिष्क का तारतम्य भी बदला। दबी हुई सारी बीमारियाँ एक साथ उठ पड़ीं। और ऐसा दिखाई पड़ने लगा कि अपनी परेशानी और वेदना में मरीज जैसा सोचता है कि इस वेदना के मुकाबिले में तो पहली ही जिन्दगी अच्छी थी, वैसा ही यहाँ की जनता भी सोचने लगी। संकट-काल में साधारण आदमी ऐसे ही सोचने लगते हैं। देश में काफी तौर से चर्चाएँ और आलोचनाएँ होने लगीं। कुछ लोग पिछली बातों को भूल गए और रोजाना की जिन्दगी की कठिनाइयों से ऊबकर कहने लगे कि इस वर्तमान से तो भूत ही अच्छा था। इसके विपरीत उत्साही व प्रगतिशील लोगों ने वर्तमान को अपनी परीक्षा का समय समझा और इसे समय की स्वाभाविक देन समझकर आगे बढ़ने की ओर कदम उठाए। किन्तु आए दिन चीजों की कमी व महँगाई व परेशानी इत्यादि ने हमारे सोचने की शक्ति पर गहरा प्रभाव डाला है और आज हम एक चौराहे पर खड़े हैं। एक रास्ता है साहस से आगे बढ़ने का, अपने प्राचीन के गौरव से उन्मादित होकर वर्तमान को अपना साथी बनाकर उज्ज्वल भविष्य की प्रतीक्षा में आगे चलने का। दूसरा रास्ता है वर्तमान कष्टों से ऊबकर और इसकी जिम्मेदारी दूसरों के सर मढ़कर पीछे की ओर लौटने का। कांग्रेस नेतृत्व ने हमें पहले वक्त रास्ता दिखाया है। इनका प्राचीन हमारे सामने है और वर्तमान में जैसी कार्य-कुशलता से इन्होंने एक ओर देश को साम्प्रदायिक अराजकता से बचाया है कि पंजाब की लपटों को सहारनपुर से आगे ही रोक दिया। देश में अमन को कायम रक्खा। शासन-व्यवस्था की शक्ति काफी क्षीण होते हुए भी उससे ऐसे संकटकाल में काम लिया। यहाँ यह बताना अनुपयुक्त न होगा कि ब्रिटिश शासनकाल में इस शासन-व्यवस्था को १२५० बड़े बड़े आफिसर चलाते थे। उनमें से ६०० के करीब अँगरेज आफिसर थे और १२५ मुसलमान। इसी काल में यह अँगरेज करीब और ८० व ९० मुसलमान इस व्यवस्था को संकट काल में छोड़कर चले गए। यह दूसरी बात है कि उन लोगों को हमने भेजा था वे स्वयं गए। तात्पर्य सिर्फ इतना है कि इस संकटकाल में जो कुछ काम शान्तिकाल में १२५० आदमी करते थे वह लगभग ५५० आदमियों को करना पड़ा और जब कि काम पहले से कई गुना एक साथ बढ़ा। देश के इस एक साल में साम्प्रदायिकता, प्रान्तीय संकीर्णता व जातीयता इत्यादि काफी आन्दोलन भी एक साथ उठे। दिल्ली की गद्दी प्राप्त करने के लिए राजाओं के भी कई षड्यन्त्र सुने गए। पर इस नेतृत्व ने देश को सभी खतरों से बचाया और इन सब के साथ ही राष्ट्र-

देश-सेवा का पुनः व्रत लें

स्वातंत्र्य वार्षिक समारोह पर पंडित नेहरू का संदेश

पन्द्रह अगस्त का दिन आया और स्वतन्त्रता-प्राप्ति पर हमें प्रसन्नता अवश्य हुई, यद्यपि देश के विभाजन की कसक हमारे दिलों में मौजूद थी। हमने स्वतन्त्रता के सूर्य का आवाहन किया और स्वाधीनता के सुफलों की हम आशा करने लगे। स्वतन्त्र सूर्य उदय तो हुआ परन्तु शीघ्र ही इस पर काले बादल छा गये और हमारे लिये उसका प्रकाश मंद पड़ गया। अँधियारा अभी तक दूर नहीं हुआ। स्वतन्त्रता के सूर्य को हम पर अभी चमकना है। स्वतंत्रता, राजनीतिक मसविदों एवं नये विधानों अथवा इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण आर्थिक प्रणालियों से ही सीमित नहीं हो जाती। सच्ची स्वतंत्रता का सम्बन्ध मन और हृदय से होता है। यदि हमारे मन संकीर्ण हैं या हमारे हृदयों में द्वेष है तो सच्ची आजादी हमें अभी हासिल करनी है।

आज फिर १५ अगस्त है और बावजूद उसके जो इस साल में बीता है हमारे लिए यह पुनीत दिन है। विगत वर्ष में हमने काफी सफलता पाई है और हम राष्ट्र-निर्माण के पथ पर थोड़ा बहुत आगे अवश्य बढ़े हैं। पिछला साल हमारे लिए घोर दुःख और संताप का भी रहा है, क्योंकि हम भारत की गौरवमय परम्परा के प्रति वफादार न रह सके। गत वर्ष में हमारे देश में शैतान की जीत हुई, जिसका घोर दुष्परिणाम राष्ट्रपिता गांधी की हत्या हुई। क्या इससे भी अधिक लज्जा और दुःख की कोई बात हमारे लिए हो सकती थी?

हमें इस पवित्र दिवस को मनाना है, परन्तु हम इसे मिथ्या आडंबर और झूठे नारों अथवा प्रदर्शनी द्वारा न मना कर सचाई से मनायें। आज का दिन हमारे लिए आत्मनिरीक्षण और पिछली प्रतिज्ञाओं के दोहराने का होना चाहिए। हम अपनी सफलता पर उतना ध्यान न दें जितना इस बात पर कि अभी हमारा काम कितना और बाकी है और पिछले साल में हमने क्या क्या भूलें की हैं। आज के दिन हमें उन लाखों शरणार्थियों की शोचनीय दशा पर विचार करना चाहिए, जो घर बार खोकर अभी भी मारे मारे फिर रहे हैं। हमें हिन्दुस्तान की साधारण जनता का भी ख्याल करना चाहिए, जो आज भी पीड़ित है और जो हमसे आश लगाये बैठी है।

हमें भारत के उन महान् साधनों की ओर भी ध्यान देना चाहिए जिनका यदि हम सार्वजनिक हित के लिए सदुपयोग करें तो हमारे देश का नक्शा बदल सकता है। आइये इस महान् कार्य के लिए हम सब अपनी सेवाएँ अर्पित करें। पर साथ ही, हम महात्मा गांधी के महान् उपदेशों और आदर्शों को स्मरण रखें। यदि हमने उन आदर्शों को भुला दिया तो हम अपने देश के साथ विश्वासघात करेंगे।

अतः इस स्वतंत्रता के प्रथम वार्षिक समारोह पर हम सब अपने देश और देशवासियों की सेवा का पुनः व्रत लें। हम सब स्वतंत्र भारत के योग्य हों।

जय हिन्द

—जवाहरलाल नेहरू

निर्माण की ओर भी काफी हाथ बढ़ाया। जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति करने के कुछ न कुछ प्रयत्न किए गए। सड़कों, बिजली, कुओं, नदी, जमीन को तोड़ने, टैंकों को खोदने, शराबबन्दी, रक्षा के उपयुक्त साधन, कोआपरेटिव विचारधारा की वृद्धि, शरणार्थी समस्या व शिक्षा आदि सभी क्षेत्रों में उन्नति करने के प्रयत्न किए गए। इस तरह १५ अगस्त सन् १९४७ से आज सन् १९४८ में हमारी स्थिति पहले से हर क्षेत्र में अधिक सुदृढ़ है। हमारी आजादी का यह पहला साल है। खतरे अब भी बाकी हैं। पर इस साल खतरों का मुकाबिला करते करते खतरा अपना एक बड़ा अच्छा सहयोगी बन गया है। आज काश्मीर और हैदराबाद की समस्या भी हमारे सामने है। इन सारी समस्याओं को हल करने का एक ही साधन है और वह है धैर्य, आत्मविश्वास, कार्य करने की इच्छा, बलिदान करने की प्रवृत्ति और अपने नेतृत्व और भविष्य में विश्वास।

एक सैनिक किसी चीज के लिए उसी वक्त लड़ सकता है जब कि वह उसे प्यार करता हो और वह उसे प्यार जभी करता है जब वह उससे पूर्णतः परिचित हो और परिचित होने के लिए उसे उसका पूरा ज्ञान होना भी आवश्यक है। अतः अपने देश से प्रेम करने के लिए अब हमारे लिए आवश्यक है कि यहाँ की हर वस्तु को अपनी समझें। देश की भूमि, पहाड़, नदी, नाले, छिपी हुई प्राकृतिक दौलत, वेशभूषा, सभी को हम प्यार करें और सभी के बारे में हमें उपयुक्त ज्ञान हो।

१५ अगस्त के पश्चात् आजादी के वातावरण में हमारे देश में काफी परिवर्तन हुए। हमारी दबी हुई शक्ति कार्यक्षेत्र में उतरी। उस शक्ति को हमें ठीक तरीके से प्रयोग करना होगा। उसको प्रयोग करने के लिए रचनात्मक योजनाएँ बनानी होंगी, वरना हो सकता है कि कोई रचनात्मक कार्य न मिलने से हमारी यह शक्ति किसी बुरी दिशा में न बिखर जाय और हमें क्षीण कर डाले। इसलिए समय आया है कि हम अपने इस एक साल के बाद एक नए उत्साह, आशा, धारणा और योजना से आगे बढ़ें। अपने देश की संवृद्धि को बढ़ायें। उसकी दौलत को जानें और हर प्रकार से उस दौलत का उचित प्रयोग करें। हम जो कुछ इस एक साल में कर पाये हैं उसका कोई प्रभाव नहीं हो सकता। क्योंकि हमारे देश की हालत काफी बिगड़ी हुई थी। गर्मी और धूप से तपी हुई भूमि पर पहली बड़ी से बड़ी मूसलाधार बारिश समा ही जाती है। और उसका समा जाना स्वाभाविक भी है। अतः हम जो कुछ भी इस एक साल में कर पाये हैं, यद्यपि इससे जनता के जीवन में कोई खास तब्दीली नहीं हो पायी पर फिर भी जो कुछ हम कर पाये हैं उसमें आनेवाले भविष्य की नींव को अवश्य रक्खा है। हमें केवल यही सन्तोष है कि ऐसी परिस्थिति में जो कुछ हम कर सकते थे उसे हमने करने का भरसक प्रयत्न किया।

हाँ, हम इतना अवश्य कह सकते हैं कि यदि हमने इन दिशाओं में उचित कदम न उठाया होता तो हालत इससे अबतर होती। जो लोग हमसे पूछते हैं कि कांग्रेस ने इस एक साल में क्या किया और उससे देश को क्या लाभ हुआ? तो क्या उन्होंने कभी इसका भी अन्दाज़ा लगाया कि यदि कांग्रेस न होती तो देश को क्या क्षति होती? युद्धकाल का समय सभी सरकारों के लिए एक संकट का समय होता है। चारों ओर युद्धकाल का ढाँचा अस्तव्यस्त होता है। जनता में युद्ध की थकान होती है। चारों ओर बेचैनी और परेशानी के चिह्न दृष्टिगोचर होते हैं। युद्धकाल की दबी हुई आकांक्षाएँ उमड़ती हैं और इन सब समस्याओं के बोझ के नीचे आज सभी देशों की सरकारें लड़खड़ा रही हैं। हमारा कोई नया मामला नहीं है। जो लोग हमारे यहाँ की स्थिति को जानना चाहें वह हमारे देश की तुलना किसी अन्य देश से कर सकते हैं और उसके लिए पाकिस्तान काफी उपयुक्त होगा, क्योंकि वह भी हमारे साथ बना है। इँगलैंड तो प्रारम्भ से ही स्वतन्त्र है। पर जो खबरें वहाँ से लौटकर आए हुए लोगों से मिली हैं उसके आधार पर हम इतना ही कह सकते हैं कि हमारे देश में खाने, कपड़े, चमड़े का सामान, मकान आदि की समस्या इँगलिस्तान से कई बातों में अच्छी है। यह कोई सन्तोष की बात नहीं है। पर इस दुनिया में हम केवल तुलनात्मक दृष्टि से ही अपनी बात का कुछ अन्दाज़ा लगा सकते हैं। हमें केवल अपनी सुविधा से देश की प्रगति को नहीं आँकना चाहिए, बल्कि अपनी असुविधाओं को सहर्ष स्वीकार करके देश

दौलत को बढ़ाने के लिए अधिक

करने की ओर सोचना चाहिए।

हमारी वास्तविक समस्या पैदा

की कमी है। देश को समृद्धशाली

के लिए हमें इसकी भूमि को पैदावार

योग्य बनाना होगा। नई जमीनें

तोड़ना होगा। इसके पहाड़ों और दरि

में छिपी विद्युत्-शक्ति को खोज निका

होगा और एक निश्चित योजना के

धैर्य और विश्वास को रखते हुए

अधिक करना होगा और बातें कम।

हम एक शक्तिशाली तथा समृद्धि

राष्ट्र की नींव रख सकेंगे। एक एक

जो हम व्यर्थ की आलोचनाओं में

करते हैं और इस तरह अपनी शक्ति

एक दूसरे को घसीटने में क्षीण करते

उससे राष्ट्र के आगे की उन्नति में हम

डालते हैं। राष्ट्र की उन्नति के लिए

मोर्चा सुदृढ़ होना चाहिये। जनता

नैतिक शक्ति का सैनिकीकरण होना,

मिलाप के विचारों का फैलाना,

नेतृत्व व भविष्य पर विश्वास होना

यह सभी बातें ऐसी हैं जिनके बिना

भी राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता।

चौतरफा उन्नति के लिए आवश्यक है

अपनी नैतिक, भौतिक तथा मानसिक

शक्ति का कार्य-क्षेत्र पूर्णतः जुटाया जाय।

* * *

मनोरंजक चुटकुले

बुढ़ापा क्यों आता है?

डाक्टरी विद्या के साधारण ज्ञान से

मनुष्यों की आयु पर अधिकार पाना

सम्भव हो रहा है। अमेरिका के

विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों को शि

दी जाती है कि शरीर के अंग शि

और बेकाम क्यों होते हैं। डाक्टर

सभापति 'अमेरिकन मेडिकल

विश्वास दिलाया है कि कुछ उ

और विधानों के द्वारा मनुष्य १५

तक सरलता से जीवित रह सकता

उन्होंने यह भी खोज की है कि

आदमी ६०, ७० वर्ष के बाद अपने

वृद्ध क्यों समझने लगता है।

साथ दुर्बलता और शिथिलता का

भव करना तो मनुष्य के अनुभवों

भावों पर निर्भर होता है। इन प्रश्नों

हल जानने के लिये अमेरिका में

शालाएँ स्थापित की गई हैं। नई

की उत्पत्ति के कारण भी पहले के

मियों के विचार आयु के विषय

कुल दूसरे हैं। शारीरिक शक्ति

की दुर्बलता के विचार पर ही

मृत्यु भी सम्भव है अन्यथा नहीं।

की जाती है कि अमेरिका के

कुछ समय के बाद मनुष्य को

न दें।

पूजागीत—द्विवेदी जी की

राष्ट्रीय कविताओं का संग्रह।

कविता जीवन में स्फूर्ति का संचार

है। फेदरवेट पीले कागज पर

पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड

अन्तर्राष्ट्रीय श्रम-सम्मेलन

सभी देशों के श्रमिकों के हितों की रक्षा करनेवाले सम्मेलन के प्रति एक अनुभव

लेखक, माननीय श्री सम्पूर्णानंद

(मंत्री, शिक्षा तथा श्रम-विभाग, संयुक्त-प्रान्त)

होते हैं। श्रमिक और कारखानेदार सदस्यों को तो सम्मेलन में उपस्थित उन वर्गों के प्रतिनिधि चुनते हैं परन्तु सरकारी सदस्यों में से आठ ही चुने जाते हैं। आठ देशों को, जो औद्योगिक दृष्टि से पृथ्वी भर में प्रमुख हैं, स्थायी सदस्यता प्राप्त है। वह अपना प्रतिनिधि स्वयं नियुक्त करते हैं। भारत की गणना भी इन आठ प्रमुख राष्ट्रों में है। इस समय भारतीय श्रम-विभाग के सेक्रेटरी श्री श्यामलधारीलाल गवर्निंग बाडी के भारतीत सदस्य हैं।

सम्मेलन के निर्णय दो प्रकार के होते हैं। कुछ को कान्वेंशन दूसरों को रेकमेंडेशन कहते हैं। कान्वेंशन का रूप यह होता है कि सम्मेलन का यह निश्चय है कि अमुक अमुक बात की जाय। रेकमेंडेशन में सम्मेलन यह सिफारिश करता है कि अमुक अमुक बात की जाय। परन्तु कान्वेंशन हो या रेकमेंडेशन, सम्मेलन में स्वीकृत हो जाने-मात्र से कोई निर्णय कार्यान्वित नहीं हो जाता। निर्णयों पर प्रत्येक सरकार विचार करती है और जिनको वह अपने देश में कार्यान्वित करना चाहती है उनकी स्वीकृति (रेटिफिकेशन) की सूचना कार्यालय को दे देती है। साधारणतः यह आशा की जाती है कि जिस निर्णय में किसी देश के प्रतिनिधियों का हाथ रहा हो, उसको वहाँ की सरकार स्वीकार कर लेगी, पर बहुत से अवसरों पर ऐसा नहीं हुआ है।

आजकल राष्ट्रसंघ टूट गया है। उसकी जगह संयुक्त राष्ट्रसंघटन (यूनाइटेड नेशंस आर्गनिजेशन)... यू० एन० ओ०, ने ली है। उसकी शाखास्वरूप कई अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएँ हैं। परन्तु श्रम सम्बन्धी प्रश्नों पर विचार करने के लिए कोई नई संस्था नहीं बनाई गई। यह काम पूर्णरूपेण आई० एल० ओ० के ही सुपुर्द रहा। युद्धोतर काल में इसकी महत्ता और बढ़ गई है।

इस बार का कार्यक्रम बहुत लम्बा था। इतने विचारणीय विषय आज तक कभी उपस्थित नहीं हुए थे। प्रत्येक विषय के लिए एक समिति बन जाती है। समिति के निश्चय सम्मेलन के सामने विचारार्थ आते हैं। सम्मेलन के अधिवेशन के साथ समितियों की बैठकें भी होती रहती हैं। काफी परिश्रम करना पड़ता है। प्रायः १० बजे सबेरे से सायंकाल ६ बजे तक काम होता है, बीच में भोजन के लिए छुट्टी होती है। अवकाश होता तो प्रायः दो घंटे का है परन्तु वस्तुतः मुश्किल से डेढ़ घंटा मिल पाता है। रात में भी काम करना पड़ता है। कभी कभी तीन तीन घंटे लग जाते हैं।

सम्मेलन का काम जिस ढंग से होता है वह भी रोचक है। साथ ही काम करनेवालों की क्षमता का प्रमाण है। सम्मेलन में तीन भाषाओं, अँगरेजी, फ्रेंच और स्पेनिश, को मान्यता प्राप्त है। लोग इनमें से किसी का प्रयोग कर सकते हैं। समितियों में तो ऐसा होता है कि जब किसी वक्ता का भाषण समाप्त होता है वैसे ही दुभाषिये खड़े होकर शेष दो भाषाओं में अनुवाद कर देते हैं। परन्तु प्रधान सम्मेलन में दूसरे उपाय से काम लिया जाता है। प्रत्येक कुर्सी पर एक यन्त्र रक्खा रहता है। इसमें टेलीफोन के दो रेसीवर होते हैं, उनके बीच में धातु की दो पतली चौड़ी लचीली तीलियाँ होती हैं। इसको इस प्रकार पहन लेते हैं कि तीलियाँ सिर पर आ जाती हैं, रेसीवर दोनों कानों पर बैठ जाता है। इस यन्त्र को हेडफोन कहते हैं। कुर्सी की बाँह पर धातु की छोटी सी तख्ती होती है जिस पर १ से लेकर ५ तक के अंक खुदे होते हैं और एक सुई होती है जो घुमाकर किसी भी अंक के सामने लाई जा सकती है। इस तख्ती का सम्बन्ध तार के द्वारा हेडफोन से होता है। वक्ता को अध्यक्ष की कुर्सी के पास नियत स्थान से बोलना होता है। पास ही आड़ में दुभाषिये बैठे होते हैं। उधर वक्ता बोलता जाता है, इधर यह लोग अनुवाद करते जाते हैं। कुशलता का यह हाल है कि वक्ता को अपनी बोलने की गति में कोई हेर-फेर नहीं करना होता पर अनुवाद साथ साथ होता जाता है। यों कह सकते हैं कि तीन भाषाओं में एक साथ भाषण होता है। तारों का ऐसा प्रबन्ध है कि तख्ती पर अंक विशेष के सामने सुई करने से भाषा विशेष का भाषण सुन पड़ता है। जैसे ३ पर अँगरेजी सुन पड़ती थी। वक्ता चाहे फ्रेंच में बोले चाहे स्पेनिश में हेडफोन पहन कर ३ पर सुई कर देने से हमको केवल अँगरेजी का अनुवाद सुन पड़ता था। यही सुविधा फ्रेंच और स्पेनिश जाननेवालों को थी। हेडफोन न लगाने पर वक्ता का मूल भाषण-मात्र सुन पड़ता था। यह भी जान लेना चाहिए कि दिन भर की सारी कार्यवाही तीनों भाषाओं में छपकर दूसरे दिन १० बजे तक मिल जाती थी।

वहाँ जिन प्रश्नों पर विचार हुआ उन सबकी चर्चा करने में तो बहुत समय लगेगा, निदर्शन के लिए मैं केवल उस विषय का ही उल्लेख करता हूँ जो सबसे महत्त्व का था। उसका नाम था ..फ्रीडम आफ असोसिएशन...संगठन की स्वतंत्रता। इसका सीधा-सादा अर्थ तो यह है कि श्रमिकों और व्यवसाइयों को इस बात की स्वतंत्रता रहे कि अपने वर्ग हित की सिद्धि के लिए अपने संगठन बनावें, संगठन बनाने या किसी संगठन का सदस्य बनाने के पहले सरकार या किसी और से अनुमति लेने की आवश्यकता न हो और किसी संगठन का सदस्य होने के कारण किसी को कोई दंड न दिया जाय। यह बड़ी निर्दोष सी बात प्रतीत होती है। सिद्धान्त रूप से भला इसे कौन अस्वीकार कर सकता है। मिल-मालिकों और दूसरे पूंजीपतियों को तो कभी कोई अड़चन पड़ती नहीं परन्तु श्रमिकों को बहुत सी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है, कभी कभी केवल किसी मजदूर संघ के पदाधिकारी होने के कारण नौकरी तक से हाथ धोना पड़ता है। यह प्रतिबन्ध दूर होने चाहिए। परन्तु इसको मानते हुए प्रायः सभी सरकारों ने जोर दिया कि यह स्पष्ट कर दिया जाय कि संगठन की स्वतंत्रता कानून की परिधि के भीतर ही मानी जा सकती है। कानून तोड़कर देश में उपद्रव करना या दूसरों को उकसाना या सशस्त्र विद्रोह द्वारा सरकार को बदलने का प्रयत्न करना, वर्गहित सिद्धि का उचित और वैध उपाय नहीं है और कोई सरकार ऐसी बातों को नहीं होने दे सकती। इस सरकारी सुझाव का जमकर विरोध हुआ। विरोध मुख्यतः उन लोगों ने किया जिनका परोक्ष या अपरोक्ष रूप से कम्युनिस्ट दल से सम्बन्ध था। जैसा कि मैंने वहाँ एक प्रेस कान्फरेन्स में कहा था हमारा तो यह कटु अनुभव है कि कम्युनिस्ट दल को मजदूरों के हिताहित की कोई परवाह नहीं है। वह तो मजदूर को बेवकूफ बनाकर अशान्ति पैदा करना और इस अशान्ति से लाभ उठाकर शासन-अधिकार छीनना चाहता है। इसलिए कानून के भीतर काम करना और उपद्रव न कराना इन लोगों को मान्य नहीं हो सकता था। परन्तु अधिकतर मजदूर प्रतिनिधि भी इनके पक्ष में न थे। एक और स्पष्टीकरण सरकारी प्रतिनिधियों के आग्रह पर हुआ। अपनी आर्थिक माँगों की पुष्टि के लिए सरकारी कर्मचारियों को हड़ताल करने का अधिकार न होगा। सरकार समाज का प्रतीक होती है। सरकार के विरुद्ध हड़ताल करना सारे समाज के जीवन को संकट में डालना है। शरीर का कोई अवयव शरीर के साथ असहयोग नहीं कर सकता। भारत और ब्रिटेन की सरकारों ने यह भी पेश किया था कि संगठन की जो स्वतन्त्रता दी जा रही है वह सेना और पुलिस के लिए लागू न होगी। यह बात मान ली गई।

मुझसे लोग पूछते हैं कि अमेरिका में भारत के प्रति कैसा भाव है। मैं जिस परिस्थिति में गया था उसमें साधारण जनता से तो बहुत मिलने का अवसर मिल नहीं सकता था, इसलिए इस प्रश्न का उत्तर ठीक ठीक देना कठिन है। फिर भी सरकारी गैर-सरकारी लोगों से जहाँ तक मिला मैंने यही पाया कि भारत के प्रति आदर का भाव है। कुछ लोग यह पूछते हैं कि सहानुभूति है या नहीं। मैंने स्वयं किसी से सहानुभूति के स्तर पर बात नहीं की। इतने बड़े देश को सहानुभूति के लिए लालायित होना शोभा नहीं देता। जहाँ तक मैं देख पाया लोग भारत को दया या सहानुभूति का पात्र नहीं समझते। उनकी दृष्टि में भारत विशाल देश है जो शीघ्र ही पृथ्वी के महान् प्रभावशाली राष्ट्रों में परगणित हो सकता है। वह हमको उद्योगीकरण में सहायता देने को तैयार हैं परन्तु यह जानना चाहते हैं कि हम

(शेष पेज १७ पर देखिए)

देशी रियासतें और भारत-संघ

५ जुलाई १९४७ से १५ अगस्त १९४८ तक की डायरी

५ जुलाई १९४७—रियासती विभाग की स्थापना।

सरदार पटेल द्वारा भारत सरकार की रियासतों सम्बन्धी नीति की घोषणा।

२५ जुलाई १९४७—लार्ड माउन्टबैटेन का नरेन्द्र मंडल के विशेषाधिवेशन में भाषण—देशी नरेशों को चाहिये कि वे रक्षा, विदेशी मामलों एवं रेल तार आदि विभागों की सुव्यवस्था की दृष्टि से भारत या पाकिस्तान में सम्मिलित हो जायँ।

१५ अगस्त १९४७—हैदराबाद, जूनागढ़ तथा काश्मीर को छोड़कर भारत की सभी रियासतें भारत में सम्मिलित हुईं।

२७ अक्टूबर, १९४७—काश्मीर का भारत-संघ में प्रवेश।

९ नवम्बर, १९४७—भारत-सरकार ने जूनागढ़ का शासन-प्रबन्ध सँभाला!

१४ नवम्बर, १९४७—हैदराबाद के साथ यथापूर्व समझौते पर हस्ताक्षर।

१४ दिसम्बर, १९४७—उड़ीसा और छत्तीसगढ़ की ३९ रियासतों के शासकों द्वारा भारत-संघ के प्रवेशपत्र पर हस्ताक्षर।

१६ दिसम्बर, १९४७—उड़ीसा और छत्तीसगढ़ रियासतों के साथ हुए समझौते की आधारभूमि के संबन्ध में सरदार पटेल का वक्तव्य।

१ जनवरी, १९४८—उड़ीसा की सरकार ने उड़ीसा की २५ रियासतों का, जिनमें 'ए' श्रेणी की १० रियासतें भी सम्मिलित हैं, शासन-प्रबन्ध सँभाला।

मध्यप्रांत की छत्तीसगढ़ रियासतें मध्यप्रांत में मिल गईं।

२३ जनवरी, १९४८—सौराष्ट्र संघ के समझौते पर हस्ताक्षर।

१ फरवरी, १९४८—मकराया रियासत मध्यप्रांत में मिली।

१५ फरवरी, १९४८—सौराष्ट्र संघ का उद्घाटन।

१९ फरवरी, १९४८—दक्षिण की रियासतों द्वारा बम्बई-प्रांत में मिलने के लिये समझौते पर हस्ताक्षर।

२२ फरवरी, १९४८—बंगनापल्ली मद्रास में मिली।

२३ फरवरी, १९४८—लाहारू पूर्वी पंजाब में मिली।

२८ फरवरी, १९४८—मत्स्य संघ के समझौते पर हस्ताक्षर।

२९ फरवरी, १९४८—जूनागढ़ का ९१ के विरुद्ध १,९०,७७९ मतों से भारत-संघ में प्रवेश करने का निर्णय।

३ मार्च, १९४८—पुडुकोटा मद्रास में मिली।

दूजाना पूर्वी पञ्जाब में मिली।

८ मार्च, १९४८—बम्बई सरकार ने दक्षिण की १७ रियासतों का शासन-प्रबन्ध सँभाला।

पूर्वी पञ्जाब की पर्वती रियासतों के शासकों द्वारा भारत-संघ के प्रवेशपत्र पर हस्ताक्षर।

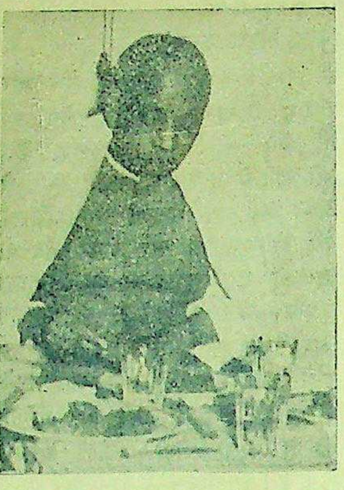

सरदार वल्लभभाई पटेल

१३ मार्च, १९४८—विन्ध्यप्रदेश के समझौते पर हस्ताक्षर।

१७ मार्च, १९४८—गुजरात की रियासतों का बम्बई-प्रांत में मिलने का निश्चय।

१८ मार्च, १९४८—मत्स्य संघ का उद्घाटन।

१९ मार्च, १९४८—गुजरात की रियसतों के शासकों द्वारा बम्बई-प्रांत में मिलने के लिए समझौते पर हस्ताक्षर।

२५ मार्च, १९४८—राजस्थान संघ का उद्घाटन।

४ अप्रैल, १९४८—विन्ध्यप्रदेश संघ का उद्घाटन।।

७ अप्रैल, १९४८—पटौदी पूर्वी पञ्जाब में मिली।

१५ अप्रैल, १९४८—पञ्जाब की २१ पर्वती रियासतों का संघ-बद्ध होना। इस संघ का नाम हिमाचल प्रदेश है और इसका शासन-प्रबन्ध केन्द्रीय सरकार के अधीन है।

१८ अप्रैल, १९४८—उदयपुर सहित पुनर्निर्मित राजस्थान संघ का उद्घाटन।

२२ अप्रैल, १९४८—ग्वालियर, इन्दौर और मालवा संघ के समझौते पर हस्ताक्षर।

४ मई, १९४८—कच्छ नरेश द्वारा भारत-संघ के प्रवेशपत्र पर हस्ताक्षर।

५ मई, १९४८—पटियाला और पूर्वी पंजाब की रियासतों के संघबद्ध होने के लिये समझौते पर हस्ताक्षर।

९ मई, १९४८—कठियावाड़, राजस्थान, विन्ध्यप्रदेश एवं मत्स्य संघ के राजप्रमुख और मंत्रियों का यह निश्चय कि समस्त संघों के राजप्रमुख फिर से नये प्रवेशपत्रों पर हस्ताक्षर करें।

१८ मई, १९४८—सरायकेला और खरसानी रियासतें बिहार को दे दी गईं।

२८ मई, १९४८—ग्वालियर, इन्दौर और मालवा संघ का उद्घाटन।

१ जून, १९४८—कच्छ का शासन भार भारत-सरकार ने सँभाला।

१० जून, १९४८—गुजरात की १८ रियासतें बम्बई-प्रान्त में मिलीं।

१५ जुलाई, १९४८—पटियाला और पूर्वी पंजाब रियासती संघ का उद्घाटन। वीरमग्राम की कर-व्यवस्था भंग। सौराष्ट्र के बंदरगाहों की कर-व्यवस्था पर भारत-सरकार का अधिकार।

१७ जुलाई, १९४८—विधान में प्रतिनिधित्व के लिये रियासतों के समूहीकरण-सम्बन्धी मामलों पर करने के वास्ते ६ राजप्रमुखों, प्रदेश और अजमेर मेरवाड़ा के कमिश्नर, तथा रियासती संघों के प्रधान मन्त्रियों का सम्मेलन।

१८ जुलाई, १९४८—सेनाओं की संख्या तथा संगठन पर करने के लिये राजप्रमुखों और सेनाध्यक्षों की सरदार पटेल से

क्षेत्रफल और जन-संख्या

विभाजन से पूर्व भारत का कुल क्षेत्रफल १५,८१,४१० वर्गमील था। देशी रियासतों का क्षेत्रफल ७,१५,९६४ वर्गमील था, जो भारत के कुल लगभग ४५ प्रतिशत होता है। विभाजन के पश्चात् भारत का कुल क्षेत्रफल ०९९ वर्गमील रह गया, और देशी रियासतों का क्षेत्रफल ५,८७,८८८ वर्गमील संपूर्ण भारत के क्षेत्रफल के ४८ प्रतिशत के बराबर है। इन रियासतों में दो रियासतें हैं—एक काश्मीर, जिसका क्षेत्रफल ८४,४७१ वर्गमील है, और हैदराबाद, जिसका क्षेत्रफल ८२,३१३ वर्गमील है। १५ रियासतें ऐसी हैं, क्षेत्रफल १०,००० वर्गमील से अधिक है, और ६७ ऐसी हैं, जिनका क्षेत्रफल और १०,००० वर्गमील के बीच में है। २०२ रियासतें ऐसी हैं, जिनका क्षेत्रफल वर्गमील से भी कम है।

१९४१ की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जन-संख्या थी, और देशी रियासतों की जन-संख्या ९,३१,८९,२३३ थी, जो भारत की के लगभग २४ प्रतिशत के बराबर थी। विभाजन के पश्चात् भारत की कुल ३१,८९,१२,५०६ रह गई, और देशी रियासतों की ८,८८,०८,४३४ रह गई। प्रकार अब देशी रियासतों की जन-संख्या भारत की जन-संख्या के २७ बराबर है।

दुख का बोझ उठाये युग की छाती पर बढ़ चलनेवालो

लेखक, श्री जगमोहननाथ अवस्थी

दुख का बोझ उठाये युग की, छाती पर बढ़ चलनेवालो।
जो लहरों से होड़ लगाये, वही सफल जीवन है,
अडिग हिमालय से टकराये, वही अमर यौवन है।
बदलेगा पतझर वसन्त से, शूलों पर खिल फलनेवालो।
अभी समय ने करवट ली है, ली न अभी अँगड़ाई,
अरुणाई बन फूट पड़ेगी, अणु अणु में तरुणाई।
कालकूट की सुधा बनेगा, मृत्यु गोद में पलनेवालो।
रे मदान्ध! फल भला न होगा, दोनों का शोणित पीने का,
कभी चुकाना होगा पापी। मूल्य तुझे मरने-जीने का
युग की तृषा बुझाने को, हिम-शिला सदृश गलनेवालो।
धरती पर इन्द्रासन पाकर, सुरपुर को यदि लगे मिटाने,
गाँवों का खर अगर खरोंको, दोनों हाथों लगे खिलाने।
अग्नि सुमन खिलनेवाले हैं, ज्वालाओं में जलनेवालो।
परिवर्तन नूतनता लाता, कहता है इतिहास कहानी,
ज्वालामुखियों पर बैठी वह, मंत्र जगाती क्रु जवानी।
अंगराग ही मान चिता की, भस्म गोद में जलनेवालो।

पृथ्वी की कहानी

पृथ्वी कैसे बनी, पृथ्वी पर कौन आया; नद-नदियाँ, पहाड़, स्तान, बर्फीले देश, जानवर, आदमी कैसे बने; धर्म और और कानून कैसे बने; पुरानी आज की दुनिया, पृथ्वी का बातों का वर्णन इस पुस्तक में ढंग से किया गया है। मूल्य ॥=)

परीदेश

यह पुस्तक खास कर छोटे लिए है। इसमें ऐसी एक भी जिसको समझने के लिए पड़े। इसमें रोजमर्रा की अच्छे ढंग से लिखी गई हैं। की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है।

गांधी-अभिनन्दन-

सम्पादक—श्री सोहनलाल

प्राक्कथन—सर सर्वपल्ली

संस्कृति, हिन्दी, उर्दू, राती, सिन्धी, मराठी, मलयालम, कन्नड़, अंगरेजी भाषाओं में महात्मा गांधी हुई सर्वोत्तम कविताओं का भाषा में अर्थ-सहित।

बड़ा आकार, सुन्दर के अनेक चित्र। बढ़िया प्रशंसित।

सादी जिल्द ६।) कपड़े की

मैनेजर, इंडियन प्रेस,

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

१५ अगस्त का स्वतंत्रता दिवस आपके ही पुण्य के प्रताप से मनाया जा रहा है

महात्मा गांधी ट्रेन से बाहर की ओर देख रहे हैं।

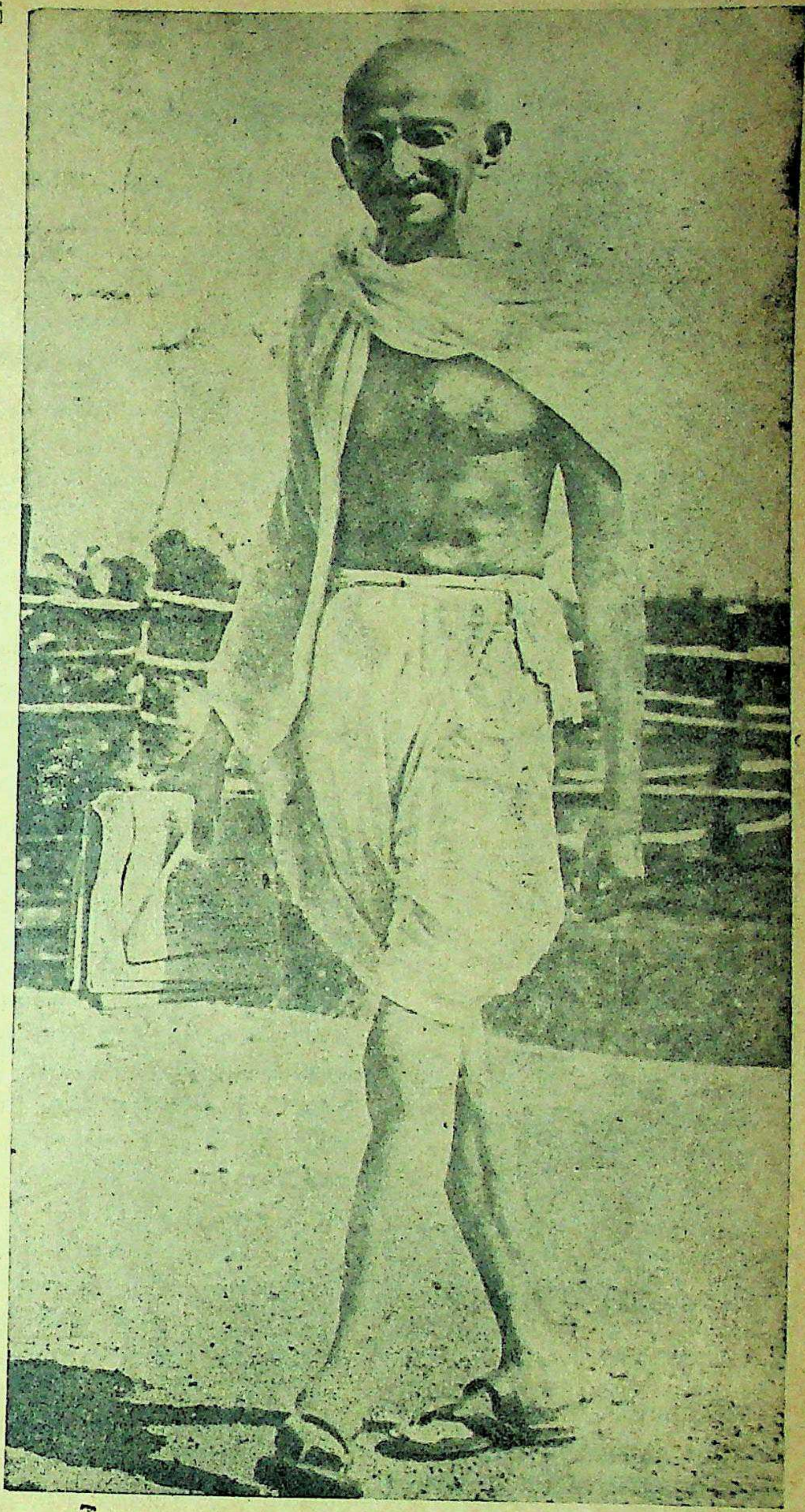

महात्मा गांधी भारतीय स्वतन्त्रता का प्रश्न राउंडटेबुल कान्फ्रेंस में रखने जा रहे हैं।

महात्मा गांधी बच्चों से वार्ता कर रहे हैं।

महात्मा गांधी राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू के साथ।

स्वतंत्र भारत का शिक्षा संगठन

निरक्षरता-निवारण और सामाजिक शिक्षा की योजनाएं तथा टेकनिकल शिक्षण

भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुए एक वर्ष हो गया। पिछले एक वर्ष में भारत-सरकार ने शिक्षा के सम्बन्ध में क्या प्रगति की, निरक्षरता-निवारण के लिये किस प्रकार की योजनायें प्रस्तुत की गईं इसका सम्पूर्ण विवरण इस लेख में किया गया है। लेख जानकारी से पूर्ण और पठनीय है।

भारत-सरकार के शिक्षा सचिव मौलाना अबुलकलाम आजाद।

स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद भारतीय शिक्षा को वास्तविक रूप में राष्ट्रीय बनाना भारत का एक सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है जिससे कि प्रत्येक नागरिक के व्यक्तित्व का पूर्ण रूप से विकास हो सके। प्राय: १५० वर्ष से जो शिक्षा-प्रणाली भारत में प्रचलित रही है उसे न केवल अनुपयुक्त बल्कि हानिकर समझा जाता रहा है। इसलिये स्वतंत्रता के प्रथम वर्ष में स्वतंत्र भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुलकलाम आजाद के नेतृत्व में भारतीय शिक्षा विशारदों ने देश के शिक्षा संगठन की मूल रूप-रेखा तैयार की। एक ओर तो उन्हें यह ध्यान में रखना था कि भारत के जन साधारण में निरक्षरता व्यापक रूप से फैली हुई है दूसरी ओर उन्हें युवकों को विशेष शिक्षा देकर देश की बढ़ती हुई जिम्मेदारियों को संभालने योग्य बनाना था।

अखिल भारतीय शिक्षा-सम्मेलन

भारत-विभाजन के बाद जो अव्यवस्था फैली उसके कारण शिक्षा सचिवालय के काम में कुछ बाधा पड़ी। अखिल भारतीय शिक्षा-सम्मेलन जिसमें प्रान्तीय मंत्री, वाइस चांसलर प्रान्तों के शिक्षा-विभाग के डाइरेक्टर तथा अन्य शिक्षा-विशारद आदि सम्मिलित थे, जनवरी १९४८ में हो सका जब कि वास्तव में इसे जून १९४७ में रखा गया था। इस सम्मेलन से कुछ पहले केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार संघ की १४वीं बैठक भी हुई थी। इन सम्मेलनों में शिक्षा-सम्बन्धी मुख्य नीति निर्धारित कर दी गई थी और कितनी ही उप-समितियां नियुक्त की गई थीं जो प्रत्येक योजना के विवरण तैयार कर रही हैं। निरक्षरता-निवारण के लिये ३ वर्ष के भीतर ५० प्रतिशत लोगों को साक्षर करने की योजना बनाई गई है। दूसरी एक समिति ने माध्यमिक शिक्षा की योजना तैयार की है। तीसरी समिति ने विश्वविद्यालयों में शिक्षा के माध्यम के प्रश्न पर विचार किया है। शिक्षा-सम्बन्धी योजनाओं पर होनेवाले विशाल खर्च की व्यवस्था की योजना तैयार करने के लिये बम्बई के प्रधान मंत्री श्री खेर की अध्यक्षता में एक समिति कार्य कर रही है। संयुक्तराष्ट्रीय शिक्षा-विज्ञान और संस्कृति संघ के सम्पर्क में रहकर शिक्षा-क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की व्यवस्था करने के लिये नियुक्त समिति ने ९८ सदस्यों के एक कमीशन की स्थापना की सिफारिश की है। इस कमीशन की ३ उपसमितियाँ रहेंगी जो क्रमश: शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति से सम्बद्ध होंगी। यह कमीशन अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के लिये भारतीय प्रतिनिधि मंडल का परामर्श भी दिया करेगा। इसके अतिरिक्त केन्द्रीय मनोविज्ञानशाला (सेन्ट्रल इंस्टीट्यूट आफ साइकोलोजी) तथा शारीरिक शिक्षा के ट्रेनिंग कालेज की स्थापना के सम्बन्ध में विशेषज्ञों की समितियाँ कार्य कर रही हैं। भारतीय छात्रों को छात्र-वृत्ति देकर विदेशों में शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजने के सम्बन्ध में नियुक्त समिति ने सिफारिश की है कि भारत में शिक्षा-संस्थाओं को विस्तृत करने पर अधिक व्यय करना चाहिये और यथासम्भव छात्रों की शिक्षा भारत में ही होनी चाहिये।

भारतीय दर्शन का इतिहास

डा० राधाकृष्ण की अध्यक्षता में एक सम्पादक मंडल नियुक्त किया गया था भारतीय दर्शन का इतिहास तैयार करेगा जिससे आधुनिक दार्शनिक विचारधारा के विकास में भारत की सहायता प्रत्यक्ष हो सके। भारतीय इतिहास-परिषद् और भारतीय इतिहास कांग्रेस की गति-विधियों के एकीकरण का भी प्रयत्न किया जा रहा है। संगीत, ड्रामा, नृत्य और कला आदि के विकास के लिए एक ट्रस्ट की स्थापना, भारतीय पुरातत्त्व विभाग के विस्तार और पुरातत्त्व तथा मानव-रचना विज्ञान के केन्द्रीय राष्ट्रीय संग्रहालय स्थापित करने की भी योजनायें बनाई गई हैं।

दिम्बर १९४७ में एक केन्द्रीय शिक्षा-शाला स्थापित की गई थी जिससे कि देश के लिए उपयुक्त अध्यापक तैयार किये जा सकें। देश भर में अन्धों की शिक्षा के लिए जो प्रयत्न हो रहे हैं उनके संगठन और एकीकरण के लिए प्रयत्न किये जा रहे हैं। टेकनिकल शिक्षा में सुधार और उन्नति करने के लिए अधिक धन की व्यवस्था की गई है। इस सम्बन्ध में सबसे महत्वपूर्ण योजना कलकत्ता और बम्बई के पास दो टेकनिकल शिक्षण संस्थायें स्थापित करने की है। इन संस्थाओं में उच्च कक्षा की टेकनिकल शिक्षा दी जायगी। गृह-विज्ञान के सम्बन्ध में शिक्षित अध्यापक तैयार करने के लिए नई दिल्ली के लेडी इर्विन कालेज में व्यवस्था की गई है। विश्वभारती शांतिनिकेतन में कला, विज्ञान, नृत्य और संगीत आदि की ट्रेनिंग की सुविधायें और भी विस्तृत की जायँगी।

निरक्षरता-निवारण

भारत में प्राय: ८५ प्रतिशत जनसाधारण निरक्षर हैं। सार्जेंट योजना में ४० वर्ष में इस समस्या का हल करने का निश्चय किया गया था। जनवरी १९४८ में अखिल भारतीय शिक्षा-सम्मेलन ने इस अवधि को कम करने पर जोर दिया था। केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार संघ द्वारा नियुक्त समिति ने सिफारिश की है कि ३ वर्ष के भीतर ५० प्रतिशत जनता को साक्षर बनाना चाहिये। इसके लिये देश के समस्त साधनों का प्रयोग करना चाहिये और योजना को सफल बनाने के लिये पूरा समय या कुछ समय काम करनेवाले कार्यकर्ताओं की नियुक्ति और स्वेच्छा से सेवा करनेवाले लोगों से पूरा लाभ उठाना चाहिये। मिलों और कारखानों के मालिकों का अपने मजदूरों और उनके परिवारों को शिक्षित करने की व्यवस्था करनी चाहिये और सरकार को यह बाध्य कर देना चाहिये कि तीन वर्ष के भीतर उसके सारे कर्मचारी साक्षर हो जायँ। अध्यापकों के शिक्षण की विशेष व्यवस्था करने की भी योजनायें बनाई गई हैं।

दिल्ली में आधारभूत शिक्षा की योजना १ जुलाई १९४८ से अमल में आना प्रारम्भ हुई है। प्रथम वर्ष में गाँव में रहनेवाले ६ और ७ वर्ष की आयु के समस्त बच्चों के लिये प्रारम्भिक शिक्षा की मुफ्त और बाध्य व्यवस्था की जायगी। इसके बाद प्रतिवर्ष और अधिक आयु के बच्चों को शिक्षित किया जायगा। पाँच वर्ष में छ: और ११ वर्ष के बीच की आयु के सारे बच्चों को बाध्य रूप से मुफ्त शिक्षित कर दिया जायगा। इसके बाद इस योजना को १४ वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिये अमल में लाया जायगा जिससे कि आधारभूत शिक्षा की ४० वर्ष की सार्जेंट योजना ८ वर्षों में ही पूरी हो जायगी। इसी प्रकार केन्द्रीय सरकार द्वारा शासित अन्य क्षेत्रों के लिये भी शिक्षा की योजनायें तैयार की जा रही हैं।

सामाजिक शिक्षा की एक योजना परीक्षक के रूप में दिल्ली में अमल में लाई जायगी। आर्थिक कठिनाइयों के कारण सामाजिक शिक्षा की योजना अभी केवल दिल्ली तक ही सीमित रखी गई है। दिल्ली में सामूहिक शिक्षा की योजना के अन्तर्गत गाँवों के स्कूल शिक्षा के साथ साथ सारे गाँव के लिए खेल-कूद और मनोरंजन के साधन बन जायँगे। स्कूलों में रेडियो सेट रहेंगे, लोकप्रिय नाटकों की व्यवस्था की जाया करेगी और रा तथा अन्य लोक-गीतों के संगी प्रबन्ध हुआ करेगा। गृह-उद्योग, स और सफाई तथा अन्य उपयोगी वि पर व्याख्यान भी हुआ करेंगे।

शिक्षा का माध्यम

शिक्षा के आध्यम से सम्बद्ध स ने, जिसमें भारत के समस्त विश्ववि के वाइस चांसलर सदस्य थे तथा डा एस० एस० भटनागर और डा० सु कुमार चटर्जी केन्द्रीय सलाहकार सं अखिल भारतीय शिक्षा-सम्मेलन सिफारिशों के अनुसार सदस्य नि किये गये थे, १ मई १९४८ का नि किया कि ५ वर्ष का अन्तरिक काल चाहिये जिसमें अँगरेजी ही मा शिक्षा के माध्यम के रूप में रहेगी। बीच में प्राय: या स्थानीय भाषाओं जारी करने का प्रयत्न करना चाहि लेकिन प्रत्येक विश्वविद्यालय में अं का विषय बाध्य रूप से पाठ्यक्रम में चाहिये। माध्यमिक और उच्च शि फेडरल या राष्ट्रीय भाषा के स्थान के में समिति ने सिफारिश की है कि रा भाषा की परीक्षा प्रत्येक छात्र के बाध्य होनी चाहिये लेकिन उसके वि जीवन पर इस परीक्षा के परिणाम कोई प्रभाव नहीं पड़ना चाहिये। लि प्रश्न का निर्णय विधान-परिषद् और वही मान्य होगा।

शिक्षा के माध्यम सम्बन्धी निर्णय अमल में लाने के लिये केन्द्रीय सरकार अपने निरीक्षण में विविध विषयों पुस्तकें तैयार करायेगी जो प्रान्तों लिये सहायता देगी। समस्त भार भाषाओं के लिये एक समान वै शब्दावलि तैयार करने के लिये वि का एक वार्ड नियुक्त किया गया है।

फेडरल पब्लिक सर्विस कमीश परीक्षाओं के लिये भाषा के माध्य प्रश्न पर समिति ने सिफारिश की कि उम्मीदवार को अपनी प्रादेशिक परीक्षा देने का अधिकार होना चा लेकिन सफल होने के बाद उसे फेडर राष्ट्रीय भाषा की योग्यता की प उत्तीर्ण होना पड़ेगा।

टेकनिकल शिक्षा

टेकनिकल शिक्षा की विशे में उपस्थित करने के लिये केन्द्रीय ने पाँच वर्ष में चार टेकनिकल संस्थायें स्थापित करने का निश्चय कि इनमें से दो कलकत्ता और बम्बई स्थापित की जायँगी। प्रत्येक में छात्र रखे जायँगे और ३,०४, रुपये स्थायी खर्च होंगे और ४४, रुपये वार्षिक व्यय होगा। बम्बई की संस्था के लिये उत्तरी कुर्ला स्थान निश्चित किया गया है। बंगाल में जो संस्था स्थापित हो लिये हिजली में जगह निश्चित की यह कलकत्ता से ७३ मील और से ५० मील दूर है तथा बि उड़ीसा की सीमा के पास है।

दक्षिण भारत में तथा उत्तर एक एक संस्था और स्थापित की

शेष पेज १४ पर

कहानी

वीरश्री

लेखिका, श्रीमती उषादेवी मित्रा

शेर को खटका, समझा उस विस्मय के कारण को, फिर कहा—"हाँ, इसकी जवानी, इसकी खूबसूरती ही इस काम को कर सकेगी।"

बस अतीत की कथा है इतनी ही; सो वर्तमान के साथ उसका घनिष्ठ सम्बन्ध रहना स्वाभाविक ही है।

(२)

सौदागर वृषभभानु के दरवाजे रथ आकर रुका। सराय का स्वामी तटस्थ था। बादशाह सलामत का रथ, कर जोड़कर वह खड़ा हो गया।

स्त्री ने पूछा—"इस सराय में भानु सौदागर टिका हुआ है क्या ?"

"हाँ, क्या उसे सरकार में हाजिर करूँ ?"

"नहीं! जवाहिरात देखने की जरूरत है। उसे इत्तला कर दो।"

सौदागर भानु—युवक-सुश्री, सुसभ्य भानु अगवानी के लिए दरवाजे पर पहुँचा और परदे को हटाकर उसके सामने आई वह इन्द्रनील अप्सरा-सी अनारकली। जरा-सी हँसी, जरा-सा छल, जरा-सा कटाक्ष कर वह इठलाकर आसन पर बैठी। उसके कान के हीरे की चमक ने गुलाबी मुख की आभा को और भी मोहक बना दिया। दीर्घायत लोचन की बारीक सुरमा में अपूर्व अनुराग झलक उठा। हाथ की मोती की चूड़ियों के बीच-बीच में काँच की हरी चूड़ियाँ तथा हरे रंग की रेशमी साड़ी में आगे यौवन का रूप बरसने-सा लगा। आत्म-विस्तृत सा सौदागर उसे देखने लगा, देखता ही रहा आया। और शायद वह देखता ही रहा आता यदि न मुसकराकर अनार कहती—"क्या मैं भी कोई जवानी की रात हूँ सौदागर ?"

भानु सहमा, अपने शील-स्वभाव में लौट आया।

बोला—"कल्याणी, आप कौन-सी और किस तरह की चीजें देखना चाहती हैं ?"

अनार मुँह फेरकर हँसी, बोली—"बस, तुम्हीं को।"

"मुझे ?"—मन में एक विद्रोह-सा जागा—कैसी प्रगल्भ नारी है यह ? एक ऐसी नारी की भावना तो उसके संसार में थी ही नहीं।

अनारकली ने तब सहसा ही अपने को गंभीर बना लिया बोली—"हीरा दिखलाइए, यह नहीं। और भी बड़ा।" फिर हीरा देखती हुई बोली—"मेरा जी जाने कैसा कर रहा है, चक्कर—" और इसके बाद उसका बेसुध शरीर लोट पड़ा।

भानु व्यस्त हुआ, उसके बेसुध शरीर को बाँहों में थाम लिया फिर गोद में सुलाकर हवा करने लगा। उसकी खुली आँखों के सामने रूप का दीपक उज्ज्वल था। वैसा रूप उसने शायद ही पहले कभी देखा हो।

रात की चाँदनी के नग्न यौवन में प्रकृति की स्निग्ध मुस्कान भर उठी थी। सो तब एक दूसरे में तन्मय से बैठे थे उसी चाँद की मुस्कान में। अपनी छाया को धरती पर आँक कर वे बैठे थे एकदम चुप। वही अनारकली और सौदागर। "क्या इसे ही प्रेम कहते हैं ? कली—अनारकली, क्या मैं पागल हो गया हूँ ?" —सौदागर शिशु-सा कह उठा। अनार हँसी—विश्वमयी, सगर्व हँसी—"शायद हो,"—कब उन दोनों में प्रेम गंभीर हुआ' एक माह की अवधि कट गई सो भानु कुछ नहीं जानता।

"प्रेम ?"

"हो सकता है। लेकिन कपटी मर्द की जात, तुम्हें विश्वास ही क्या ?"

"विश्वास ? किन्तु सोचता हूँ कि आज तुम्हारी जरूरत पर मैं जीवन भी दे सकता हूँ। ऐसा ही अनुभव हो रहा है न आज।"

"मैं तब इसे सच्ची मुहब्बत मानूँ जब कि कुछ दिनों तक तुम मेरे मेहमान रहो।"

"चलो, मैं तैयार हूँ।" उसने पूछा तक नहीं कि "तुम कौन हो, किस जाति की लड़की हो, मुझे कहाँ लिये जाती हो। नहीं—यह सब कुछ नहीं पूछा। पूर्ण विश्वास अटल निर्भरता के साथ वह अनार के साथ उसके रथ पर जाकर बैठ गया। बस वर्तमान की कथा है इतनी-सी।

(३)

अनारकली की सुसज्जित, सुवासित अट्टालिका, दिन-रात की घड़ियाँ कैसे कट जातीं—सो भानु कुछ नहीं जान पाता, कभी गुनगुनाता—"क्या इसे ही प्रेम कहते हैं ?"

उस दिन भी मुस्कराती अनार बोली—"शायद हो।"

"शायद ?"

"मर्दों का क्या विश्वास सौदागर ?"

"यह जिन्दगी ?"

"नहीं, पहले एक छोटी सी माँग ही पूरी करो।"

"कहो-कहो कली, तुम्हें देने योग्य कौन-सी चीज बच रही है मेरे पास।"

"गढ़ मन्दार के गोपन रास्तों की पहचान।"

"अनारकली की बाँह—जो कि नागिन की तरह भानु के गले में पड़ी प्यार-दुलार से लोट रही थीं उसे हटाकर गढ़ मन्दार का सौदागर पलँग पर उठ बैठा—"क्या कहा तुमने ?"

"यही कि मन्दार के छिपे हुए रास्तों की बड़ी तारीफ सुन चुकी हूँ, उन्हें तुम बतला दो।"

"उन्हें जान-सुनकर आखिर तुम करोगी क्या।"

"मेरी बहुत दिनों की चाह है—यह।"

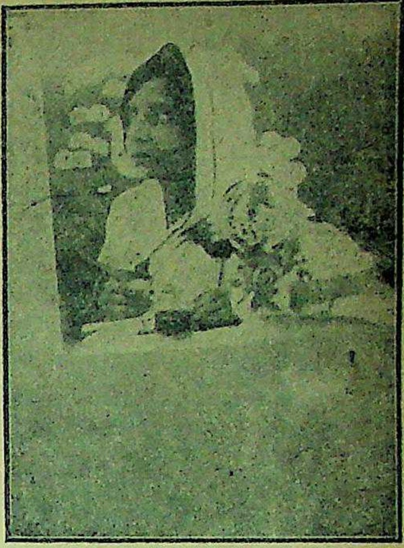

इस लेख की लेखिका श्रीमती उषादेवी मित्रा

"उसे छोड़कर और कुछ माँगो।"

वह रूठकर मुँह फेर बैठी—"जरा-सी सो भी पूरा नहीं कर सकते; तुम क्या दोगे मेरा साथ ?"

"जरा-सी माँग ? नहीं-नहीं, यह एक असम्भव माँग है। प्रेम एक चीज जरूर है, अधिकार उसका असीम है, परन्तु अनार नागरिक का कर्तव्य उससे भी परे है।"

"यानी तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है।"

"सो मैं नहीं जानता, परन्तु उन रास्तों को तुम नहीं जान सकती हो, जानता इतना हूँ।"

"ऐसा ?"—अनारकली का मुख आरक्त हुआ—"क्यों-क्या मैं इसके लायक नहीं हूँ ?"

"सो मैं—मैंने नहीं कहा, किन्तु ऐसा मैं नहीं कर सकता हूँ। मैं क्यों, गढ़मन्दार का एक भी अधिवासी ऐसा नहीं कर सकता है।"

"लेकिन ऐसा तुम्हें करना ही पड़ेगा।"

विस्मय से भानु बोला—"आखिर बात क्या है ?"

"तुम क्या चाहते हो ? मुझे और लाखों रुपयों की जायदाद या जिन्दगी भर—जेल भोगना।"

विस्मय पर विस्मय, हतवाक् हो रहा भानु—आज इस प्रेम-प्रतिमा अनारकली को हो क्या गया है ?

भानु के विचार को अट्टहास-सी करती पुनः बोली—अनार—"कहो—गढ़मन्दार के सौदागर, तुम क्या चाहते हो ? भानु के आत्माभिमान को जैसे किसी ने पददलित किया, दीप्त अहंकार से वह कह उठा—"स्वाधीन गढ़मन्दार के स्वाधीन सौदागर को बन्दी करनेवाला संसार में पैदा नहीं हुआ है अनार।"

ठीक उसी पल में हठात् द्वार खुला और वैसे ही सहसा कई बलिष्ठ हबशियों ने प्रवेश कर उसे हथकड़ी पहना दी, फिर अन्तर्हित हो गए। यह सब ऐसे सहसा, ऐसे हठात् हुआ कि भानु कुछ सोच, समझ तक न पाया, पाया अपनी आँखों के सामने मुस्कराता हुआ स्वयं शेर आलम को।

भोज विद्या ? जादू ? मन्त्रप्रभाव ? होगा शायद यों ही कुछ—मिनट भर के

लिए सोच उठा भानु। पल भर के लिए सब कुछ धुँधला-सा होने लगा। परन्तु—हाँ, पल भर के लिए ही।

तभी वह सहमा, मन के प्राण में आग धधक उठी, कह उठा—"प्रतारणा? धोखा? इसे क्या कहूँ अनारकली?" अनारकली शेर आलम के निकट खड़ी मुस्कराने लगी।

"क्या मुगल-राज्य में नारी का प्रेम ऐसा ही हुआ करता है? क्या कहूँ इसे?"

"राजनीति।"—यह गंभीर उत्तर था स्वयं बादशाह का।

"तो शेर आलम का बाहुबल आज पराजित है?"

"मुँहजोर सौदागर।"

"वरना बाहुबल के बदले—नारी को अन्तस्तल में शेर आलम लाता ही क्यों?" असीम साहस से भानु ने कहा।

"जबान सँभालो। सिर्फ रास्ते का पता बतला दो, इनाम में जो चाहो माँग लो।"

"रास्ता? मन्दार का रास्ता आपको बतला दूँ? किन्तु क्यों?"

"क्योंकि उसे फतह करना चाहता हूँ।"

भानु विद्रोह से हँस उठा—"मैं मन्दार का सौगादर, मन्दार का नागरिक, वहाँ का रास्ता तुम्हें बतला दूँ? देश की स्वाधीनता तुम्हें बेच दूँ? जहाँ मैं जन्मा, पनपा, जिसकी मिट्टी में मेरा शिशु, किशोर, युवक गढ़ा गया है, जिस मिट्टी में मेरे प्रत्येक अवस्था के पदचिह्न अंकित हैं, जहाँ के प्रत्येक बालुकण मेरे अपने हैं वही मेरा अपना देश, अपनी स्वाधीनता तुम्हें बेच दूँ? पता बतला दूँ?

"अब भी सोचो।"

"कुछ नहीं।"

"रात भर सोच लो सौदागर।"

"मैं? किन्तु गद मन्दार का एक छोटा बच्चा भी अपनी स्वाधीनता को नहीं बेचेगा।"

"बात नहीं चाहता, सिर्फ पता जानना चाहता हूँ। या रास्ता बतलाओ या मौत लो।"

"मौत।"

"सौदागर इस खुशी भरी दुनिया—बीच में वह कह उठा—"मेरे अपनी एक जान के लिए देश भर में खून बहाऊँ? अपने देश को बेच दूँ?"

"तो भी सोचो।"

"असम्भव है।"

"तो मरो।"—शाह आलम के इशारे से सन्तरी उसे अन्ध कोठरी में खींच ले गए।

(४)

खुले मैदान में दर्शकों की भीड़ लगी हुई थी, एक पेड़ से बँधा भानु को कोड़े लग रहे थे। चमड़े का चाबुक जब उस मौन-मूक शरीर पर शब्द करता हुआ पड़ता और उसके शरीर के मांस को उठा लेता, रक्त की धारा बह चलती, तब दर्शकों में उल्लास का एक उच्च रोल उठता।

"दागी है, इतनी मार पर भी मुँह से आवाज नहीं निकालता।"—कोई कहता।

बेटे का होश अभी ठिकाने लग जायेगा, जब लाल मिर्च और नमक घाव पर छिड़का जायेगा।

भानु के रक्तरंगीन शरीर पर लाल मिर्च-नमक भरा जाने लगा, परन्तु वह निर्विकार रह गया—शब्दहीन दाँततले ओंठ दबाकर खड़ा रहा आया—मानो इसी की प्रतीक्षा वह कर रहा हो। निर्यातन एक सा चलने लगा—आई लाल चींटी, आए लोहे के अग्नितप्त लाल लाल सीकचे। धीरे धीरे उसका शिथिल शरीर धरती पर लोट गया। दर्शकों के नेत्र में निराशा भर उठी—मजा फीका पड़ गया।

* * *

"उठो विजयी।" कारागार के अन्ध-कूप में प्रदीप हाथ में लिए पुकार उठी—अनारकली।

रक्ताक्त पड़ा हुआ था भानु अन्ध-कूप की भीगी मिट्टी पर। हजारों चींटे रक्त की गन्ध से आकुल उस शरीर पर चिपटे हुए थे। चींटों की कतार चली आ रही थी दीवाल से उसकी ओर।

सभय करुणा से अनारकली ने उस दृश्य को देखा। सिरहाने बैठकर भानु के मस्तक को गोद में उठा लिया।

फिर मुख के निकट झुककर पुकारा—"सौदागर वीरश्री!"

उसकी आँखें बड़ी कठिनाई से खुलीं, और लगा अनार को उन आँखों ने उसे पहचाना भी।—प्रेम? प्रीति? आदर? नहीं-नहीं, लगने लगा अनारकली को—घृणा—मूर्तिमान् घृणा उन आँखों में भर उठी है। अनार ने मुँह फेर लिया। नहीं वह उस घृणा को नहीं सह सकती है। नहीं देख सकती है। आदर पाने के लिए ही न उसका जन्म हुआ है। छात्र, कपटता में ही न उसकी पूर्ति हुई है। फिर यह घृणा वह सहन करे भी कैसे, किस प्रकार से? उसने आँखें फेर ही लीं। फेरे ही रही आवेगी वह। परन्तु न जाने क्यों उसने पुनः उस दृश्य को देखा। कान के पास मुँह रखकर पुकारा—"उठो—वीरश्री, वक्त निकला जा रहा है, सवेरा होना ही चाहता है। चलो उठो भागो।"

किन्तु इस बार उत्तर किसी ने न दिया।

* * *

गहन वन में पत्तों की कुटीर, दिन का प्रकाश वहाँ नवीन बना रहा आता। सूर्य-किरण में वह कुटीर एक जलान्त प्रदीप-सा लगता, भानु ने तब आँखें खोलीं। कुटिया को वह विस्मय से देखने लगा और अतीत घटनाओं को स्मरण करने लगा, ललाट पर पसीनें की बूँदें झलक उठीं। सिरहाने बैठी अनार ने बड़े यत्न से उस पसीना को पोछा।

उस स्पर्श से भानु ने उधर आँखें फेरीं। और तब अनार? हाँ, उस मूर्त घृणा को जैसे वह सहन नहीं कर सक रही थी। तो भी वह कह उठी—"अब कैसे हो सौदागर?"

"मैं कहाँ हूँ?"

"घने जंगल में।"

"यहाँ मुझे कौन लाया?"

"मैं।"

"तुम? परन्तु क्यों?"

"सो मेरे दिल से पूछो। मैं इसका जवाब कैसे दे सकती हूँ? फिर भी घृणा? लेकिन हाँ, छल-कपट करते करते मैं खुद ही एक छल बन गई थी सौदागर, तुम्हारे साथ? उस दिन तो वह एक प्रेम था छल ही था न।"

"बस जाओ, तुम मेरी आँखों के सामने से चली जाओ।" किन्तु मेरी कथा बो, छली मन के परिवर्तन को सुनाए बिना ही चली जाऊँ?"

"जाओ।"

"लेकिन वैसा नहीं हो सकता है, सुनना तुम्हीं को पड़ेगा न।" हाँ, मूर्तिमान् छल ही बन गया था मेरा हृदय। प्रेम निःशेष होकर मर चुका था। अन्ततः मैंने यही समझा था, लेकिन एक दिन महाप्रलय हो गया। आमूल परिवर्तन। कैसे? वही तो एक बात है सौदागर। तुमने नहीं, तुम्हारे वीरश्री ने मेरे मन के प्रेम को जगाकर बैठा दिया—ममतामयी, कर्तव्यपरायण मेरेही नारीत्व में। जिस नारीत्व को एक दिन अवहेलना से दूर हटा दिया था, वही नारीत्व अपना अधिकार, अपना स्वभाव लिए सामने पड़ गई। ... कार करने की स्पर्द्धा मुझमें कहाँ है ... गर उस वीरश्री को आज मैं अपने ... का माला पहनाऊँगी।"

"जाइयो—तुम मेरे सामने से ... ही जाओ।"

"चलो जाऊँ? माला पहनाए ... ही? फिर कैसे? मेरे उस छलनामयी ... की आड़ से आज जो एक वास्तविक ... जाग उठी है उसे टिकाऊँ भी कहाँ?"

पुष्पहार सहित उत्थित अनार के ... को जरा हटाकर भानु बोला—"... ठहरो, उस वीरश्री से शायद तुम ... चुकी हो, परन्तु उस दिन की कुटिल... से तो मैं पहले निपट लूँ।"

शान्त निरीह शिशु की भाँति ... कली सौदागर के निपटने की आ... बैठी रह गई—हाँ, वनगहन के ... एकान्त कुटीर में।

सुव्यवस्थित बालों में
आप रौबिले दिखेंगे
Vaseline POMADE
CHESEBROUGH MFG CO.
कोमलता से सुगंधित किया गया वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें सलोने चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग कीजिये।
वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ...
सभी दूकानों पर
Copyright:

हर मौसम में हर समय
सर्दी और खाँसी के
SIROLIN ROCHE
FOR COUGHS COLDS
निर्भरयोग्य औषधि
सिरोलीन "रोच"
सारे संसार में व्यवहार होता है

ारा रंग-मंच

'मेरा सोहाग'

दर, आकर्षक और एक सामाजिक फिल्म

लेखक, श्री गोपाल मेहरोत्रा

आर्यावर्त का आज जो भी चित्र हमारे गृहों की मान्यताएँ रहे हैं तथा भारतीय नारियाँ को अपने जीवन की अमूल्य- समझती हैं—वह है—पति-पत्नी को नवीनतम एवं भिन्न-भिन्न निरखने के प्रयास! परन्तु....। गृह की मान्यताओं से विभू- जहाँ सोहाग की लीला का इष्ट- और जिसकी सम्पत्ति, जिसका सर्वस्व उसका सोहाग उच्चतम वातावरण से सुसज्जित नवीन दिग्दर्शक श्री अमिय "मेरा सोहाग" में संकलित कर की वर्तमान एवं नवीनतम प्रदर्शन किया है।

प्रगतिशील कहानीकार सुरेश गृह में अपनी धर्मपत्नी पुत्री-पुत्र सहित सुखपूर्वक व्यतीत करते हैं। निर्धन वे एक-दूसरे पर अपना करते हैं। अपना नूतन -लक्ष्मी" प्रकाशित करने के ग्राम में प्रवेश करता है। एक नर्तकी, प्यारी से सुरेश उसकी कला से अत्यन्त है। सुरेश के कारण प्यारी हरलाल की नाटक-संस्था में हो जाता है। प्रकाशक की परिणाम-स्वरूप सुरेश निराश गृह लौटता है। लक्ष्मी के पर वह द्वितीय नाटक अंकित करना प्रारम्भ करता की आशातीत सफलता के फल- नगरों की भाँति मनोहरलाल मंडली सुरेश के नगर में भी है और इस प्रकार प्यारी की पुनः भेंट होती है। प्यारी प्रयत्न से "नर्तकी" प्रदर्शित है; परन्तु सुरेश को असफलता होती है। लक्ष्मी उसे तृतीय "सूरदास" लिखने पर बाध्य है। सौभाग्यवश एक दिवस रंग-मंच पर प्रदर्शित किया है। "सूरदास" की असाधारण का एकमात्र कारण 'लक्ष्मी' उसे क्या ज्ञान था कि यह एक दिन उसका सोहाग उजाड़ने बनेगी? प्यारी की सुन्दरता और आकर्षित कर लेती है मानवता रो उठती है। लक्ष्मी का सोहाग, उसके पुत्र-पुत्री और और प्यारी का प्यार—ऐसी विषम को सहने में असमर्थ होकर, गृह को त्याग कर, प्यारी का लेता है। सुरेश अपने 'सूरदास' अत्यन्त प्रसिद्ध होता है; परन्तु एक घटनावश वह अभिनय करते-करते गिर जाता है और...। अचेतावस्था में उसके ज्ञान-चक्षु खुलते हैं और वह प्यारी को ठुकराकर अपनी लक्ष्मी की खोज में निकल पड़ता है। दीपावली के दिवस सुरेश के न आने के कारण लक्ष्मी के दोनों तारे रूठ जाते हैं, पर वह क्या कर भी सकती थी? ईश्वर की आसीस कृपा एवं शुभाशीर्वाद से दीपावली की रात्रि को लक्ष्मी के सोहाग के बुझे हुए दीपक की शिखा मुसकुरा उठती है।

सुप्रसिद्ध विदेशी अभिनेता साबू और अभिनेत्री बीबी फरीरा एक नये फिल्म में आ रहे हैं।

इतना सुन्दर व उच्चतम गृह-जीवन—इन्द्र के देवलोक में नहीं, पृथ्वी के इन छोटे-छोटे घरोंदों में ही निरखने को प्राप्त हो सकता है। पति-पत्नी के कर्तव्यालोचन पर कटु आलोचना तथा उनके सरल स्वभाव इस भाँति प्रदर्शित किये गए हैं कि हृदय होता है कि दिग्दर्शक तथा कहानीकार की दिग्दर्शन-कला चूम लूँ। लघु बालकों की भावी मान्यताएँ अंकित करना—कथाकार की उच्चता का द्योतक है। वास्तव में आज देश को ऐसे चित्रों और ऐसी कहानियों की अत्यधिक आवश्यकता है, जिसके द्वारा हम अपने जीवन का वास्तविक सुख पुनः प्राप्त कर सकें तथा कन्य देशों को यह दिखला सकं कि आज भी हमारे अंतरीक्ष में पूर्वजों का रक्त अवशेष है। भारत की मानवी आज अपने गृह-जीवन के बन्धनों से ऊब उठी है, सन्तानें उनके जीवन का भार बन चुकी हैं, पति अपनी पत्नी और पत्नी अपने पति के 'रोमान्स' की कल्पना कर रहे हैं—'बसन्त ऋतु आई रामा जुबना उभार के।' लेखक ने प्रारम्भिक दृश्य अत्यन्त ही अस्वाभाविक कलंकमय प्रदर्शित किए हैं तथा दीपावली का दृश्य कहानीकार व निर्देशक के दिवालियेपन का ज्वलन्त उदाहरण है। श्रीवास्तव जी द्वारा अंकित संवाद स्वाभाविक तथा भावुक हैं। कथोपकथन लेखक ने सुरेश का गृह त्यागने का कारण तथा पति-पत्नी के कर्त्तव्यालोचन पर कटु आलोचना के समय अपनी पूर्ण प्रतिभा का परिचय उपस्थित किया है। भाषा की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया गया है। श्री नरेन्द्र द्वारा रचित गीत यद्यपि साधारण कोटि के हैं; परन्तु श्री खेमचन्द्रप्रकाश के अत्यन्त साधारण संगीत के निर्देशन ने उन पर कीचड़ उछालने में आशातीत सफलता प्राप्त की है। कुछ समझ में नहीं आता कि भारतीय छायालोक में निवास कर वहाँ के कलाकार कला की सेवा करना सीखते हैं अथवा घास खोदना। श्री नरेन्द्र जी की कृतियों को दृष्टिगत रखते हुए अब उनका नाम अंकित करते हुए भारतीय सिने-पत्रकारों को अत्यन्त क्षोभ एवं वेदना होने लगी है। श्री नरेन्द्र जी को अपनी इन कुप्रवृत्तियों को शीघ्रातिशीघ्र समाप्त करने का उपक्रम करना चाहिए अन्यथा भविष्य अत्यधिक अन्धकारमय दृष्टिगोचर हो रहा है। श्री मालगोंकर का ध्वनि-आलेखन तृतीय श्रेणी का है। सम्पादक की स्थिति में श्री बी० डी० जोशी ने प्रशंसनीय कार्य किया है। रूप-सज्जा साधारण कोटि का है। दृश्यों में कोई नवीनता नहीं है। वेष-भूषा परिवर्तन स्वाभाविक तथा सराहनीय है। चरित्र-चित्रण-कार्य द्वितीय श्रेणी का हुआ है। प्रतीकवाद के दृश्य सुन्दर हैं।

नायक, नायिका तथा पुत्री के अतिरिक्त अन्य पात्रों के चयन में दिग्दर्शक ने अत्यधिक असतर्कता से कार्य किया है। सुरेश की भूमिका में अरुण ने स्वाभाविक एवं प्रशंसनीय अभिनय प्रदर्शित किया है। आपने हास्यमय दृश्यों में सफलता का परिचय दिया है। स्वाभाविक वेष-भूषा तथा सुघड़-शरीर होने के कारण आप पूर्णतया लेखक प्रतीत हुए हैं। काली-काली मोटी कमानियों से निर्मित चश्मे ने तो आपके लेखक सिद्ध करने में अत्यन्त सहायता प्रदान की है। आपके 'प्लेबैक' ने आपकी अभिनय-सुन्दरता पर असहनीय तमाचा मारा है। आपकी आगामी कृति 'समाज को बदल डालो' है। लक्ष्मी की कल्पना में कमला कोटनीस ने सुन्दर कार्य किया है। वास्तव में आपने एक गृह-लक्ष्मी की छाया में ऐसा कार्य किया है मानो आपके जीवन में ऐसी विषम परिस्थितियाँ उपस्थित हुई हों! ईश्वर न करे ऐसी दुर्घटना घटे। विश्रान्त के पश्चात् अपना अभिनय निरखने योग्य है। आपका भविष्य उज्ज्वल दृष्टिगोचर होता है। आशा है आपने "सीधा रास्ता" में इससे कहीं अधिक सफलता का परिचय दिया गया है।

बालिका बया की काया में बेबी तबस्सुम ने हास्यपूर्ण तथा रुचिकर अभिनय अभिनीत किया है। आपका संवाद कहने का ढंग अत्यन्त मनोरंजक है। प्यारी के आवरण में सुलोचना चटर्जी ने आदि से अन्त तक पूर्णतया निरर्थक कार्य किया है। आपके स्वरों में अत्यन्त घड़घड़ाहट होने के कारण गीत-प्रदर्शन पर भी कुठाराघात हुआ है। पूर्ण चित्र में आप मृत्यु तुल्य-सी प्रतीत हुई हैं। अन्य पात्रों ने अत्यधिक लज्जाजनक कार्य प्रदर्शित किया है, जिससे चित्र की लोकप्रियता तथा भावुकता पर असहनीय कुठाराघात हुआ है, जो दिग्दर्शक की छिछली कला का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि "मेरा सोहाग" एक सामाजिक तथा दर्शनीय रचना है, जो हमारे पुरातन सामाजिकता के नाम पर चित्रित किये गए राष्ट्रघातक-चित्रपटों के मुख पर तमाचा स्थगित करता है; परन्तु निर्देशक श्री अमिय चक्रवर्ती पूर्णतया सफल नहीं उतरे हैं। पात्र-चयन तथा प्रारम्भिक दृश्य में असावधानी प्रदर्शित करने के कारण आपकी दिग्दर्शन कला में जर्जरता विद्यमान-सी प्रतीत होती है। आप जैसे दिग्दर्शकों के चित्र में इतना निम्नकोटि का 'साउन्ड-रेकर्डिङ्ग' कार्य निरखकर मुख लज्जा से नत हो जाता है तथा आर० सी० ए० के पतन का उदाहरण भी प्राप्त होता है। आशा है, आपने अपनी भावी कला-कृतियों में अपनी उच्चतम कला का परिचय दिया होगा।

कसीदाकारी की मशीन

सुन्दर फूल-पत्ते, सीन सीनरी आदि कपड़ों पर कादनेवाली चार सुईयोंवाली बढ़िया मशीन मू० ३॥) तरकीब मुफ्त पोस्टेज ॥) कसीदाकारी की पुस्तक मू० २) पोस्टेज ।=)

सन्तोष ट्रेडिंग कम्पनी
पाठक स्ट्रीट जैगंज अलीगढ़।

फिल्मी दुनिया मुफ्त

सिनेमा का भेद बतानेवाली पुस्तक "फिल्मी दुनिया" अपना और मित्रों के पूरे पते लिखकर मुफ्त मँगाइये।
पता—मधुर मन्दिर, हाथरस, यू० पी०

स्वास्थ्य और व्यायाम

देवों का भोजन—शहद

शरीर को शक्ति प्रदान करनेवाला

लेखक, श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालङ्कार, हिमालय हर्बल इंस्टिट्यूट, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार।

हिन्दुओं, ईसाइयों और मुसलमानों के धर्मग्रन्थों में शहद को स्वर्ग का उपयोग करनेवाले देवताओं का भोजन कहा गया है। भारतीय पुराणों में जिन सात सागरों की कल्पना की गई है उनमें एक शहद का समुद्र भी है। यह दोनों का प्रिय भोजन (देवमधु) है इस प्रकार के वाक्य हमें वेदों में अनेक जगहों पर मिल जाते हैं। धर्मपरायण लोगों को प्रतिज्ञात प्रदेश का दृष्टान्त देते हुए कुरान में कहा गया है—'उसमें विशुद्ध शहद से भरी नदियाँ बहती हैं, फल-फूल और अप्सराएँ हैं। वहाँ जानेवाले लोग पलँग पर लेटेंगे और अप्सराएँ उनकी सेवा करेंगी।'

अरबी में शहद को नहल कहते हैं। इसी नाम का एक अध्याय कुरान-ए-मजीद में है। उसमें कहा गया है 'फी हे शफा उल् लिन्नास्' अर्थात् इस शहद में आदमियों के लिए आरोग्य निहित है। उसमें यह भी बताया गया है कि इसके रंग अलग-अलग होते हैं—मुख्तलवन् अलवानुहूँ। इस छोटे से लेख में मैं पाठकों को देवों के भोजन के सम्बन्ध में कुछ प्रारम्भिक बातें बतलाऊँगा और पाठक चाहेंगे तो किसी दूसरे अङ्क में इसके अद्भुत गुणों पर विस्तार से प्रकाश डालूँगा।

पुष्प-रस का निर्माण

पौदे अपने पोषण के लिये शर्करा बनाते हैं। यह शर्करा इनके छोटे-छोटे अणुओं में विद्यमान रस द्वारा पौदे के विभिन्न भागों तक उपयोग के लिये पहुँचाई जाती है। फूलों में जब गर्भाधान हो जाता है तो गर्भ की वृद्धि और पुष्टि के लिये इस पोषक खाद्य की अपेक्षाकृत अधिक आवश्यकता होती है। इसका प्रबन्ध पौदा पहले से ही कर लेता है और वह इस रूप में कि खिलने के समय फूलों की ओर शर्करा का प्रवाह अधिक हो जाता है। यह प्रवाह इतना अधिक हो जाता है कि फूल इसका उपयोग करके इसे अपना अंग नहीं बना सकते, बल्कि यह बढ़ी हुई शर्करा फूल, गर्भ और बीज के लिये हानिकारक होती है। आवश्यकता से अधिक बढ़ी हुई शर्करा को फूल अपने आधार में स्थित रस-स्रावी ग्रन्थियों से बाहर निकाल देता है जो फूल की पंखुड़ियों के प्याले में मीठे रस के रूप में संचित हो जाता है। यह अन्न अपने उत्पादक फूल या बीज किसी के लिये भी उपयोगी नहीं है, परन्तु प्रकृति वानस्पतिक जगत् के गर्भाधान को इसके द्वारा पूरा करवाती है।

बीजों के निर्माण के लिये यह आवश्यक है कि पुरुष फूल के परागकण मादा फूल तक पहुँचाये जायँ। फूल का आकर्षक वर्ण, हवा में दूर तक फैलती हुई मनोमोहक सुगन्ध और उनमें विद्यमान मधुर रस कीड़ों-पतंगों को हठात् अपनी ओर खींच लेते हैं जिनमें मधुमक्खी बहुत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि पुष्प रस और पराग दोनों ही इसके भोजन हैं। भोजन की खोज में उड़ती हुई मक्खियाँ फूलों पर बैठती हैं और इस मीठे रस को अपनी जीभ द्वारा खींच लेती हैं। अपने पेट में वह इसे पचाती हैं। उसके छत्ते में रख देती है। कुछ समय बाद यह पककर गाढ़ा हो जाता है और शहद बन जाता है। इसके कुछ उपयोगों का उल्लेख हम यहाँ करते हैं।

पेट और आँतों के रोगों में

इक्षु शर्करा पाचक मार्ग में बहुत देर तक पड़ी रहने के बाद पचती है और तब शरीर उसका आचूषण करता है। इसलिए बहुत बार इस शर्करा पर सूक्ष्म जीवाणु आक्रमण कर लेते हैं और तब सड़ाँद (फर्मण्टेशन) पैदा हो जाती है। इसके साथ-साथ प्रायः गैस फर्मण्टेशन भी होती है। पेट अफारे से फूल जाता है और खट्टे डकार आते हैं। डकार के साथ, सड़ने से उत्पन्न अम्ल मुख में आते हैं जो रास्ते में छाती और गले में जलन पैदा करते हैं। बोल-चाल में इसे 'कलेजे की जलन' और चिकित्सकों के शब्दों में 'हृत् प्रदेश की दाह' कहा जाता है, यद्यपि इसका हृदय से कोई सम्बन्ध नहीं होता। जिन व्यक्तियों का पाचन-संस्थान इस प्रकार का है वे यदि खाण्ड के स्थान पर मधु खाएँ तो उन्हें कोई कष्ट न होगा क्योंकि मधु की शर्कराएँ इतनी जल्दी शरीर द्वारा ग्रहण की जाकर रक्त-सञ्चार में मिल जाती हैं कि सड़ाँद पैदा होने का अवसर ही नहीं मिलता और कोई विकार पैदा नहीं होता। पेट के रोगों में महर्षि चरक भी हलके और दीपक पथ्यों में शहद लेने का आदेश देते हैं।

आमाशय और आन्त्र-शोथ जैसी अन्न मार्गों की शोथयुक्त अवस्थाओं में इसे देने से भय नहीं होगा और ग्रीष्मातिसार के रोगियों के लिए भी यह लाभप्रद है। ग्रीष्मातिसार के सब रोगियों को आठ औंस जौ के पानी में एक चाय का चम्मच भर शहद डाल कर दिया जा सकता है।

जच्चा और बच्चा के लिए

शहद की खाण्ड का अधिक भाग फलों की खाण्ड (फ्रक्टोज) होता है जो अन्य प्रकार की खाण्डों और सामान्य खाण्ड की अपेक्षा बहुत जल्दी हज्म हो जाता है और माल्टोज की तरह सड़ाँद उत्पन्न करके ब्युटिरिक अम्ल नहीं बनाती। इसका शीघ्र पच जाना इसे एल्कोहलिक फर्मण्टेशन से बचाता है और शहद खिलाए जाते हुए बच्चों में अफारे के चिह्न कम ही नजर आते हैं। बोतल से दूध पीनेवाले बच्चों के दूध में गन्ने की खाण्ड की जगह शहद डालना चाहिए, जिससे इक्षु शर्करा से होनेवाले अफारे से उनकी रक्षा हो सके।

चरक की सम्मति में गर्भ की पुष्टि के लिए और जननी के स्वास्थ्य के लिए तीसरे महीने गर्भिणी को दूध में शहद और घी मिलाकर पिलाना चाहिए।

कब्ज की प्राकृतिक चिकित्सा

पाचन-सम्बन्धी रोगों की शहदपूर्ण चिकित्सा समझी जाती है। इसमें प्राकृतिक मृदु तथा अनुलोमक शर्कराएँ होती हैं जो मल की कठोरता को कम करती हैं, मलबद्ध दूर करती हैं और आँतों के कार्य को नियमित रखती हैं। अपने अधिक जलशोषक गुण के कारण शहद भोजन-प्रणाली की दीवारों में से आर्द्रता को खींच लेता है। इस आर्द्रता को खींचने के कारण ही सम्भवतः शहद का अनुलोमक कार्य होता है। सुबह प्रातकाल में ठण्डे या कोसे पानी के साथ और रात को दूध के साथ लेने से कब्ज की तकलीफ रहनेवाले व्यक्तियों के लिए यह लाभकारी पेय है। महर्षि मारीच कश्यप के समय (दो हजार से अधिक साल पहले) से हमारे देश में यह प्रथा थी कि नवजात शिशु के मुख में शहद की कुछ बूँदें डाली जायँ। यह मुख, गला और आमाशय की श्लेष्मा को लेखन करता हुआ तथा आँतों के मल को खिसकाता हुआ बाहर निकालकर सारे शरीर की शुद्धि कर देता है। किसी भी अनुलोमक औषध की अपेक्षा शहद निरापद और अच्छा अनुलोमक है। इससे कोई बुरा प्रभाव नहीं उत्पन्न होता। पाचन-संस्थान की नाजुक झिल्ली के लिए यह अक्षोमक है।

हृदय को बल देता है

टाइफायड ज्वर, निमोनियाँ और विशेषतः प्लूरो निमोनियाँ आदि किसी भी लम्बी बीमारी में, जिसमें आँतों का कार्य बहुत अधिक मन्द पड़ जाता है और जिगर का कार्य बुरी तरह से नि जाता है वहाँ हृदय को ऐसा भोजन चाना बहुत आवश्यक हो जाता है यकृत संस्थान द्वारा होकर सामान्य संचार में पहुँचने के लिए आँतों या में किसी प्रकार के रासायनिक परिवर्त जरूरत नहीं होती। इन रोगों में को उत्तेजना देनेवाले ब्राण्डी पदार्थों की अपेक्षा ऐसा पदार्थ देना अच्छा होता है जो हृदय का भोजन और हृदय की मांसपेशी को बल शहद ये सब आवश्यकताएँ पूरी देता है। कोई भी दूसरा भोजन हृदय को उत्तेजना देनेवाला पदार्थ पर इतना स्थिर कार्य नहीं करता शहद। मुख, पेट, आँत या जिगर में जगह भी शहद में रासायनिक परि होने की आवश्यकता नहीं पड़ती। संस्थान से यह सीधा रक्त-संचार में जाता है और वहाँ से शरीर के उस में पहुँच जाता है जहाँ इसकी आवश्यकता होती है।

हृदय को शक्ति देनेवाले पदार्थ रूप में चरक ने इसका प्रयोग किया विष पिया जाने पर वमन और कराने आदि सब उपक्रमों से पूर्व की रक्षा करनी जरूरी होती है। लिए चरक रोगी को शहद चटाते पित्त से हृदय के दूषित होने पर जो उपचार किया जाय उसमें शहद देना होता है।

(कापी राइट लेखक के)

चिरस्थायी व दिमागी ताक़त बढ़ाने के लिए सेवन करो
डॉ. गौतमराव केशव
टानिक
फॉस्फरस पिल्स
डॉ. वामन गोपाळ सारसापरिला डेपो मुंबई नं. २
इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी एल० एस०
धोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

पीडा को रोको

अलेम्बिक शीतल बाम में काफूर, पिपरमिन्ट, युकलिपटस आयल, कैजूपूटी आयल आदि मिश्रित हैं और यह पीड़ा को शांत और कम करती है।

शीतल बाम लगाने से कई प्रकार की पीड़ा और दर्दों को जैसा कि:-जोड़ों की पीड़ा, मोंच, और सिर दर्द को आराम मिलता है।

१/२ औंस की शीशी में मिलती हैं

शीतल बाम

एक अलेम्बिक औषधि

पादक के नाम चिट्ठियां

'हिन्दुस्तानी' क्यों ?

भारत हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
वर्षगाँठ के अवसर पर अपनी
प्रकट करते हुए, माननीय
लाल नेहरू ने हिन्दुस्तानी का
हुए, महात्मा गांधी द्वारा बताये
चलने की दृढ़ता प्रकट की।
हा—"मैं विधान-परिषद् में
रखूँगा। भले ही वह उसे

गांधी जी ने हिन्दुस्तानी का
हिन्दू-मुस्लिम-एकता की
लेकर चलाया था। स्पष्ट है
प्रश्न को जबरन सांप्रदायिकता
जोड़कर उसे और भी उलझा
है। हमने कभी यह सोचने का
कि क्या भाषा की अस्वा-
दोनों जातियों के मध्य
सच्चा माध्यम बन सकती है ?
, हिन्दुस्तानी आन्दोलन के
का इतिहास सामने रखकर
कि हमने हाथ बढ़ाया,
से क्या प्रोत्साहन मिला ?
के मध्य, एकता तो तभी
राजनैतिक ही नहीं, सांस्कृतिक
भी उदारता प्रदर्शित

का विभाजन, सांप्रदा-
हो गया, फिर हिन्दी को
विशेष की भाषा बताकर,
कहना कहाँ का न्याय है ?
हिन्दुओं की ही नहीं रही है।
में तुलसी और सूर के साथ
ने भी उतना ही हाथ
ही आज सांप्रदायिकता के
, मुसलमान भाई हिन्दी
हैं, पर उन्हें यह भी न
कि कुछ ही वर्षों पहले
हिन्दी को माना है और
उनके ही पुरखों द्वारा

ने कहा है कि हिन्दुस्तानी
है, जिसका किसी भी
नहीं है। मैं जानना चाहता
हिन्दी और उर्दू का मिलाप
सरल हो जायगी ? उदा-
नहीं। कुछ ही दिन पहले
की भाषा को ले लीजिये।
'सियासी', 'मुकम्मिल' आदि
कितने लोग समझते थे ? यदि
ने निकाले क्यों गये ? पंडित
कि हिन्दुस्तानी को ज्यादा
है। यह हमारा दुर्भाग्य है कि
के आँकड़े प्राप्य नहीं। पर
ते हैं कि जो भाषा ज्यादा
हो, वही राष्ट्रभाषा बने। मैं
पंडित जी की हिन्दुस्तानी
जनता में से कितने लोग
इतना तो स्पष्ट है कि वहाँ
नहीं के बराबर है।
बापू का नाम लेकर, हर समय,
के लिये, जनता पर दबाव डालना
। इससे उनके प्रति हम न्याय
नहीं करते हैं। बापू के प्रति हमें भी श्रद्धा है, विश्वास है, पर उनकी हर बात को ज्यों का त्यों हम इस परिवर्तित समय में भी मानते जायें, यह तो उन्हीं के प्रति अन्याय करना होगा। अन्ध-विश्वास को वे भी पसन्द नहीं करते थे। फिर हमसे क्यों, प्रत्येक बात, मान लेने का आग्रह किया जाता है, वह भी बापू के नाम पर ?

नेताओं से हमारा निवेदन है कि कम से कम वे भाषा के क्षेत्र में, अपने व्यक्तित्व का उपयोग न करें। न हर समय बापू का नाम लें, क्योंकि उनकी मृत्यु के बाद, हम उनके विचारों का विरोध करके उनकी आत्मा को कष्ट नहीं पहुँचाना चाहते। नेता लोग जो कुछ जनता से कहना चाहते हों अपने बल पर कहें। 'हिन्दुस्तानी' राष्ट्रभाषा कभी नहीं स्वीकार की जा सकती। थोड़े से राष्ट्रीय मुसलमानों के लिये जनता हिन्दी के राष्ट्रीय प्रश्न को उलझन में नहीं डालना चाहती।

वर्धा —जयकान्त पुरवार
१ अगस्त, ४८

* * *

राजभाषा और नेहरूजी

देश की राजभाषा का प्रश्न भारत-संघ की विधान-परिषद् के समक्ष अभी विचाराधीन है। लक्षणों से प्रकट है कि बहुमत हिंदी भाषा और एकमात्र देवनागरी लिपि के पक्ष में है। हमारे प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल जी ने इधर एतदर्थ "हिन्दुस्तानी" का नामोल्लेख किया है। यदि व्यक्तिगत रूप में उन्होंने अपना यह मत प्रकट किया होता तो विशेष चिंता की बात न होती, परंतु अपने ऊपर प्रधान मंत्रित्व का उत्तरदायित्व रखते हुए उन्होंने बहुमत के विपरीत जो मत प्रकाशित किया है उससे न्याय को ठेस लगने की आशंका है।

तथाकथित हिन्दुस्तानी की रूपरेखा निश्चित करने में अब तक जिन लोगों ने एडी चोटी का पसीना एक किया है उन्होंने भी ऐसी कोई कृति प्रस्तुत नहीं की है जो हिन्दुस्तानी का आदर्श हो, जिसमें व्यवहृत सिद्धांतों और रूपों में समता हो अथवा जिसका अनुसरण करके हिन्दी और उर्दू के ज्ञाता स्वतंत्र रूप से उसका ढाँचा खड़ा कर सकें। ऐसी अस्तित्वहीन भाषा की संस्तुति राजभाषा के लिए करना कदापि उचित नहीं है। सारे देश की राजभाषा वही हो सकती है जिसका अपना समृद्ध साहित्य हो, जो देश के कोने कोने में आसानी से बोली समझी जाती हो और सर्वोपरि जिसे राजभाषा के पद पर देश की जनता प्रतिष्ठित करना चाहती हो। व्यक्तिगत इच्छा-अनिच्छा के कारण इस सार्वदेशिक और अत्यन्त गंभीर समस्या के प्रति अन्याय होते देखना देश को कदापि सह्य नहीं होगा।

भारत-सरकार ने इस गंभीर प्रश्न की महत्ता को ध्यान में रखते हुए इस पर अपना कोई तात्कालिक निर्णय न करके, पूर्ण विचार के उपरांत इस सम्बन्ध में कोई निश्चय करने के उद्देश्य से इसे विधान-परिषद् के समक्ष भेजकर प्रजातंत्र के सिद्धांतों के अनुसार जो कार्य किया है वह सर्वथा उचित है। परंतु काशी नागरी-प्रचारिणी सभा को यह जानकर अत्यंत खेद हुआ है कि भारत-संघ के प्रधान मंत्री महोदय ने विधान-परिषद् के निर्णय के पूर्व अपना मंतव्य प्रकाशित करके परिस्थिति को अनजाने उलझा दिया है।

ऊपर राजभाषा में जिन गुणों की आवश्यकता निर्दिष्ट की गई है वह देश में प्रचलित भाषाओं में से केवल हिन्दी में ही सुलभ है। कोई कारण नहीं जब देश अपनी परंपरा से संबंध, सर्वाधिक सरल और बहु-प्रचलित भाषा की माँग कर रहा है तब उसे उससे वंचित करके उस पर भ्रामक हिन्दुस्तानी का जाल फैलाया जाय। अपने स्वाभाविक और सहज गुणों के बल पर अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हिन्दी-नागरी ने आसेतुहिमाचल अपना सिक्का बैठा लिया है। हमें विश्वास है, देश अपनी प्रिय भाषा हिन्दी और अपनी प्रिय लिपि नागरी को किसी भी प्रकार उपेक्षित होते नहीं देखेगा।

नागरी प्रचारिणी —विश्वनाथप्रसाद मिश्र
सभा, काशी प्रधान मंत्री

* * *

राजकीय कोष का प्रकाशन

काशी नागरी प्रचारिणी सभा जो राजकीय कोश प्रस्तुत कर रही है उसकी स्थानिक परिषदों लोकल बोर्ड से संबद्ध अँगरेजी शब्दों के हिन्दी पर्यायवाची शब्दों की सूची सप्ताहांत में छपकर तैयार हो जायगी। सभा ने यह निश्चय किया है कि इसकी एक एक प्रति समस्त स्थानिक परिषदों को बिना मूल्य भेजी जाय, जो नगर परिषद् म्युनिसिपल बोर्ड तथा मंडल परिषद् डिस्ट्रिक्ट बोर्ड इन्हें मँगाना चाहें सभा को लिखकर मँगा सकते हैं।

—विश्वनाथप्रसाद मिश्र,
प्रधान मंत्री

* * *

पशु रक्षा का प्रश्न

देश स्वतन्त्र हो जाने के पश्चात् पशु-रक्षा का प्रश्न कितना महत्त्वपूर्ण हो गया है। उसे प्रायः प्रत्येक मनुष्य जानता है। किन्तु अधिकांश सज्जनों का ध्यान तो इस ओर आकर्षित ही नहीं होता। उन्हें मालूम होना चाहिये कि इस पशु-रक्षा के प्रश्न के हल के बिना न तो हमारे भोजन की ही समस्या हल हो सकती है और न हमें शुद्ध दूध, घी और मक्खन ही पर्याप्त मात्रा में मिल सकता है। अतः इस समय आवश्यकता है कि हम सब भारतीय सच्ची लगन के साथ इस कार्य को सफल बनाकर देश के खाद्य पदार्थों के संकट को दूर करें।

अखिल भार..वर्षीय पशु-रक्षा का प्रथम अधिवेशन आगरे में २॥ वर्ष पहले बड़े समारोह के साथ हो चुका है। किन्तु वार्षिक अधिवेशन अब इतने समय तक रुका रहना निराशता का कारण है। वैसे तो अधिवेशन कराने के पत्र मद्रास, बम्बई, देहली, अम्बाला आदि से आए थे; परन्तु जब उन्हें अधिवेशन के लिए पत्र लिखे गए तो उन्होंने वर्तमान परिस्थितियों को बता कर इनकार कर दिया। अब पशु-रक्षा के भक्तों से निवेदन है कि वह अपने नगर से द्वितीय अधिवेशन के लिये निमंत्रण-पत्र भेजकर शानदार अधिवेशन कराएँ। ताकि पशु-रक्षा-संबन्धी ठोस कार्य को कार्य रूप में परिणत कर इस प्रश्न को हल कर सकें। यदि किसी भी नगर में द्वितीय अधिवेशन न हो सका तो आगरे में ही कराने का विचार करेंगे। आशा है पाठक अपने अधिवेशन-संबन्धी विचार या सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजकर आभारी करेंगे।

आगरा —(सेठ) अचलसिंह कार्यवाहक
सभापति अ० भा० पशु-रक्षा-सम्मेलन

* * *

२०॥) में ज्वेलवाली रिस्टवाच

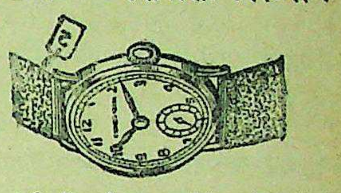

स्वीसमेड ठीक समय देनेवाली ३वर्ष की गारण्टी। गोल या स्क्वायर सेप सुपिरियर २०॥), फ्लाट सेप क्रोमियम केस ३०), फ्लाट सेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५), फ्लाट सेप १५ ज्वेल क्रोम केस ३८), फ्लाट सेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड ७५)।

रेक्टेंगुलर, कर्व या टोनो सेप क्रोमियम केस ४२), सुपिरियर ४५), गोल्ड ६०), रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेलयुक्त ६०) अलार्म टाइम पीस कीमत १८), २२) बीग साइज २५) पोस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेने से माफ।

एच० डेभिड, एण्ड को० (S.P.)
पो० बक्स नम्बर ११४२४, कलकत्ता

मरदों की गलतीयाँ

यौवन नष्ट करनेवाले, जीवन फीका, गुप्त रोग अथवा अन्दर से खोखले इश्तहारी नीम-हकीमों के पास न फँसें बल्कि मशहूर सख्श स्पेशेलिस्ट कविराज डी० आर० वजीराबाद वाले मैनेजर दी हीरो फार्मेसी (रजिस्टर्ड), पीछे डाकखाना दरियागंज, देहली से मिलें। कीमत आराम के बाद दें, घर मँगवाने से वी० पी०। अन्दरूनी बेरूनी खास इलाज से ताकत का पूरा समान देखकर आप दंग रह जायेंगे।

शुभ सूचना

समस्त हिन्दी-प्रेमियों, विद्यालयों तथा कृपालु ग्राहकों को यह शुभ सूचना देते हुए हमें हर्ष हो रहा है कि हमारी लाहौरवाली ब्रांच फिर से दुर्गाचरण रोड, अम्बाला कैंट (पूर्वी पञ्जाब) में आप लोगों की पूर्ववत् सेवा के उद्देश्य से स्थापित हो चुकी है।

मैनेजर
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

स्वतन्त्र भारत का शिक्षा-संगठन

(पेज ८ का शेष)

इनके लिये उचित भूमि प्राप्त करने की व्यवस्था की जा रही है। इसके अतिरिक्त देश की विविध टेकनिकल शिक्षण-संस्थाओं के सुधार और विस्तार के लिये सरकार ने अखिल भारतीय टेकनिकल शिक्षण-परिषद् की सिफारिश पर १·५ करोड़ रुपये एक राशि सहायता तथा ३० लाख रुपये वार्षिक सहायता के रूप में देने का निश्चय किया है। सहायता की शर्तों में मुख्य बात यह है कि इस धन से शिक्षण की जो विशेष सुविधायें होंगी उनसे समस्त भारत के छात्र लाभ उठा सकेंगे। इस सम्बन्ध में पिछड़े हुए प्रान्तों की आवश्यकताओं पर विशेष ध्यान रखा जायगा।

शरणार्थी छात्रों के लिए सुविधायें

शरणार्थी छात्रों की शिक्षा की व्यवस्था करने की एक तात्कालिक समस्या इस वर्ष शिक्षा सचिवालय के सम्मुख उपस्थित हुई। केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारों ने इन छात्रों की शिक्षा जारी रखने के लिये कई प्रकार की सुविधायें प्रदान कीं। दिल्ली में पंजाब विश्वविद्यालय का एक कैम्प कालिज स्थापित किया गया। लाहौर और करांची के मेडिकल कालेज के छात्रों को भारत के विभिन्न मेडिकल कालेजों में प्रविष्ट किया गया है। शरणार्थी छात्रों की शिक्षा के संगठन के लिये एक विशेष अफसर नियुक्त किया गया है। पूर्वी पंजाब विश्वविद्यालय को केन्द्रीय सरकार ने १० लाख रुपये की अग्रिम सहायता दी है। लाहौर के छात्रों की सुविधा के लिए फरवरी १९४८ में हिसार में पशु-चिकित्सा कालेज की स्थापना की गई है। पहले इन छात्रों को बम्बई और मद्रास के कालेजों में भरती करा दिया गया था।

ऐतिहासिक आलेख

शिक्षा सचिवालय ने ऐतिहासिक आलेखों को सुरक्षित रखने का कार्य भी प्रारम्भ किया है। फरवरी १९४८ में जयपुर में ऐतिहासिक 'रिकार्ड कमीशन का अधिवेशन हुआ। उसने सिफारिश की कि भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम के प्रकाशित तथा अप्रकाशित लेखों को सुरक्षित रखने की व्यवस्था होनी चाहिये। कमीशन ने भारत-सरकार तथा महात्मा गांधी-स्मारक-समिति से अनुरोध किया कि या तो महात्मा गांधी के समस्त मूल लेखों तथा अन्य सम्बद्ध लिपियों को पुरातत्त्व विभाग के अधीन रख दिया जाय या पुरातत्त्व विभाग के डाइरेक्टर को इनके संरक्षण-सम्बन्धी व्यवस्थाओं के सम्पर्क में रखा जाय। यह भी सुझाया गया है कि १९०२ से पहले गुप्त कागजात इतिहास के छात्रों के अध्ययन के लिये उपलब्ध कर देने चाहिये।

* * *

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!

आप घर बैठे मैट्रिक, एफ० ए०, बी० ए०, पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से और होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ्त मँगायें। पता :—

इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

इधर उधर की

बुद्धि की नाप-तौल

अमेरिका के वैज्ञानिकों ने घोषित किया है कि उन्होंने एक ऐसी युक्ति सोची है जिसके द्वारा किसी के भी साधारण ज्ञान की परीक्षा कर सकते हैं। इसी को वे लोग दूसरे शब्दों में 'व्यक्तित्व' की परीक्षा भी कहते हैं। इस युक्ति की परीक्षा के लिए बहुत से प्रयोग किये गये, उन प्रयोगों के द्वारा वे वैज्ञानिक इस आशय पर पहुँच रहे हैं कि हर मनुष्य में साधारण ज्ञान होता है उसको जागृत करने के लिए कुछ विशेष उपायों की आवश्यकता होती है। डाक्टर पी० एस० सरगर ने मस्तिष्क के प्रयोगों में यह बात सिद्ध करनी चाही कि किस प्रकार वह इसे पर्दे पर ला सकते हैं। हर एक के मस्तिष्क में कुछ न कुछ स्मृति की रेखाएँ होती हैं जो मनुष्य के हृदय से जानी हुई चीजों को बाहर नहीं निकलने देतीं। इन लहरों को समझने के लिए पहले बहुत परिश्रम की आवश्यकता होती है। मस्तिष्क जिस समय काम में लगा होता है उसकी विविध रेखाएँ अपनी प्राकृतिक दशा में नहीं रहतीं। आशा की जाती है कि संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका के वैज्ञानिक
अध्ययन को शीघ्र ही समाप्त

* *

मुफ्त

असली फाउन्टेनपेन और रिस्टवाच गारन्टी १२ साल, मु
करने के लिये आज ही लिखें।
मौका हाथ न आयेगा।
Imperial Corporation (D.
Halka No. 22. Amri

सुन्दर बनिये-

पांड्स के दो क्रीम से

एक निर्मलता के लिये - एक सुरक्षा के लिये

सुन्दरता के लिये आपको खास अभिप्रायवाले दो क्रीम का प्रयोग करना चाहिये। पहिला, क्योंकि सौन्दर्य-पुस्तक में सब से पहिले स्वच्छता का स्थान है, अतः रोमछिद्रों के विकारों की स्वच्छता के लिये और चेहरे को कोमल बनाये रखने के लिये उत्तम रूपसे मिश्रित, गहराई में प्रवेश करनेवाले तेलों से बनाया गया क्रीम—पांड्स कोल्ड क्रीम। दूसरा, मुख को धूल और गर्मी से सुरक्षित रखने के लिये दिन में अदृश्य रूप से लगा रहनेवाला हलका और चिकनाई-रहित क्रीम—पांड्स वेनिशिंग क्रीम।

प्रति रात्रि पांड्स कोल्ड क्रीम से अपने चेहरे को स्वच्छ कीजिये। काफी मात्रा में उसे चेहरे और गले पर फैलाइये, थोड़ी देर तक मलिये और तब पोंछ डालिये। कुछ दिन का यह उपचार ही आपके मुख को अपूर्व रूप से निर्मल और उज्ज्वल बना देगा।

अपने चेहरे की पांड्स के चिकनाई-रहित वेनिशिंग क्रीम से प्रति सवेरे रक्षा कीजिये। हलके-हलके थपथपाइये और मलिये और देखिये वह गायब हो गया है! लेकिन धूल और सूर्यकिरणों से आपके चेहरे को सुरक्षित रखने के लिये यह अदृश्य क्रीम दिनभर लगा रहता है और मुख को रेशम की तरह कोमल शृंगार देता है। जरा परीक्षा कीजिये।

स्मरण रखिये ग्रीष्म की कठोर गर्मी और सर्दी की शीत दोनों ही हमारे शरीर के प्रकृत तेलों को सुखाकर उसे रूखा और भद्दा बना देती हैं।

यह भी स्मरण रखिये कि छिद्रों की गहराई में धूल या मैल के कणों से ही शरीर में अधिकांश दाग पैदा हो जाते हैं।

पांड्स

पांड्स के दैनिक, नियमित
चेहरा, स्वच्छ, उज्ज्वल और
हो जायेगा—यह सदैव
आपके 'सौन्दर्य-निखार
साधन को प्रतिदिन पांड्स
क्रीम से पूरा कीजिये।

व्यापारिक विवरण के लिये- एल. डी. सेमूर एंड कं. (इंडिया) लि०
बम्बई - कलकत्ता - देहली - मदरास - नोवा गोवा - कराची - कोलम्बो - रंगून

प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू क्या कर रहे हैं ?

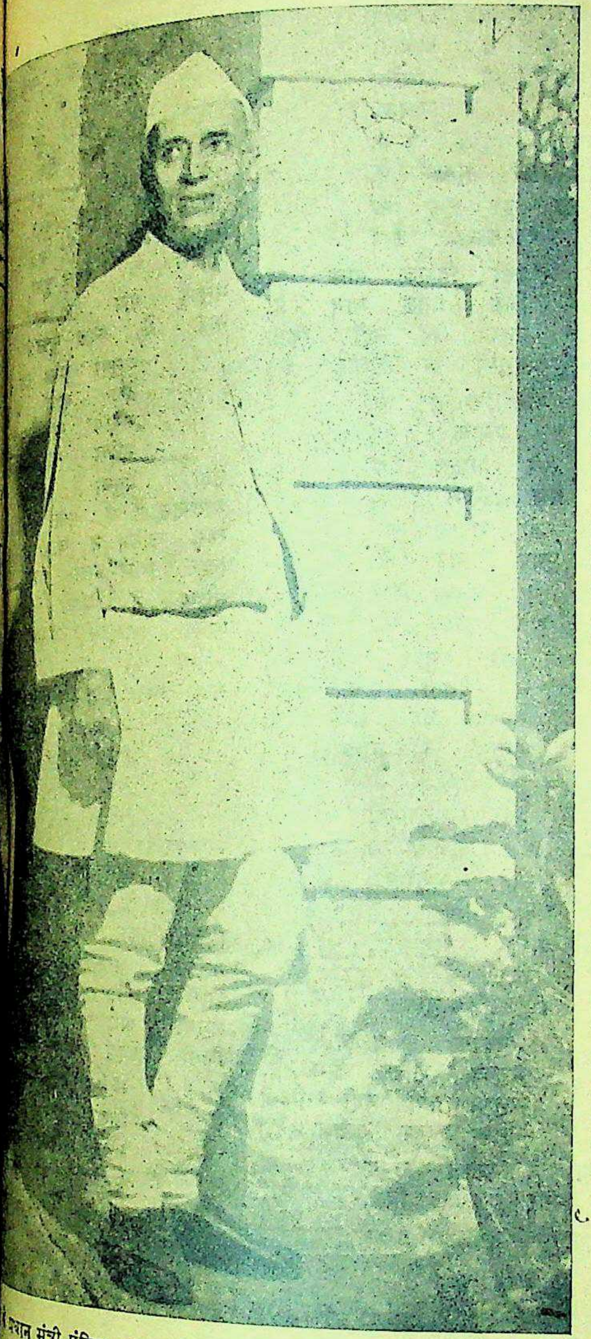

प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू विधान-परिषद् में सदस्यों द्वारा पूछे जानेवाले प्रश्नों का उत्तर दे रहे हैं।

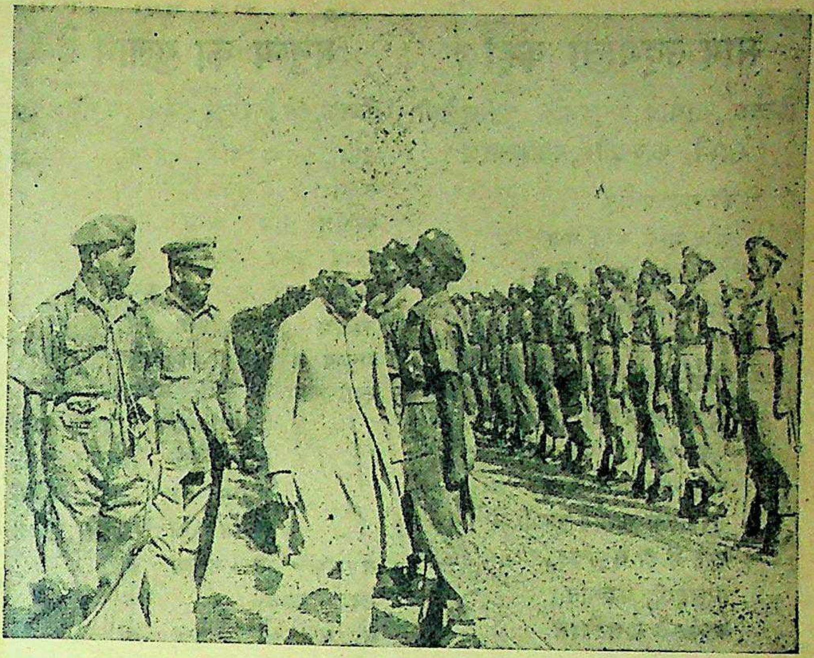

काश्मीर में भारतीय सैनिक पंडित नेहरू का स्वागत कर रहे हैं और गार्ड आफ़ आनर दे रहे हैं। पिछले दिनों पंडित नेहरू काश्मीर गये थे और वहाँ भारतीय सैनिकों का निरीक्षण किया था। उसी समय यह चित्र लिया गया था।

पंडित नेहरू दिल्ली में शरणार्थियों के लिये बनाये जानेवाले मकानों के नक़शे का निरीक्षण कर रहे हैं।

नई दिल्ली में फ्रांसीसी राजदूत से पंडित नेहरू विचार-विनिमय कर रहे हैं।

नई दिल्ली में फ्रांसीसी राजदूत द्वारा प्रादत्त वस्तु का पंडित नेहरू निरीक्षण कर रहे हैं।

कविता-कलाप

साम उद्गाता कहाँ ?

लेखक, आचार्य प्रभुदयाल अग्निहोत्री शास्त्री, काव्यतीर्थ, साहित्यरत्न

हो गया प्रभात
और मन्द मन्द वात
उठी डाल डाल डोल।
प्राची का रक्त-पुता गात
है सस्नात
हुआ निर्मल अवदात।
दिनमणि ले कोटि कर
पवन रज्जु पर पग धर,
पोंछ गया अश्रु-विन्दु
उर्ध्वमुखी अल्हड़ कुमारियों के।
क्षण में ही संकुचित,
निम्नदृगी, श्रद्धानत।
आशा-से बाल विहग
जाग उठे कर कलरव
नीड़ नीड़ पुंज पुंज
कुंज कुंज बोल।
मुक्त धरा, मुक्त गगन
आलोकित वन उपवन।
ग्राम-ग्राम, नगर-नगर
चेतना का चर्चित स्वर,
किल्विष का आत्मघात,
फूट पड़ी कण्ठ-कण्ठ वन्दना,
वेदमंत्र, श्रद्धाहुति, अर्चना
सिद्ध हुई युग युग की साधना।

* * *

खोज रहे पथ-पथ दृग,
अन्तर्हित क्यों ऋत्विम ?
हो चुकी है पूर्णाहुति
शेष किन्तु सामगान
अध्वर के विधि-विधान।
शुक पिक खग लक्ष लक्ष
कूज रहे यत्र तत्र,
"तू कहाँ, तू कहाँ ?"

* * *

अरे कौन ? दिव्य घोष ?
क्या कहा कि ऋत्विम ने
होम दिये आत्मप्राण
वैश्वानर करसमिद्ध
राष्ट्र-सत्र ऋद्धसिद्ध।
ऋत्विम की आत्मबलि
महापाप, लाञ्छन है !
कालिमा है राष्ट्र के वदन पर।
भाग्यनभ धूमकेतु
महत अशुभ हेतु
उदय हुआ था, जिसे
करने को प्रशमित
'सर्वभूत हिते रत'
ऋत्विग ने
झोंक दिये निज प्राण।
ऋत्विम तप तेज प्रबल
आभा वन वन शीतल
व्याप्त हुआ अग जग थल।
द्योतित है भूमण्डल।
आलोकित नभमंडल

* * *

साँझ हुई,
और अब जागरण रात्रि-सत्र,
विजयोत्सव
सज्जित पावन हवित्र।
झूमते हैं द्वार द्वार
तोरण, बन्दन वार।
बालायें आँगन लीप
गा चलीं विजय-गीत,
जाग उठे सान्ध्यदीप,
शोभित मंगल घट,
उड़ रहे ध्वजपट
घर घर स्वस्तिपाठ
वैश्वानर है समिद्ध
अर्चि उर्ध्वमुख, वृद्ध
उन्नत हैं सामगान,
और अवभृत स्नान,
किन्तु कवि-कण्ठ रुद्ध,
व्याकुल से स्वस्ति गीत
प्राणों में, कम्पित कर,
गीले दृग, ढूँढ़ते हैं
"साम उद्गाता कहाँ ?"
"मुक्ति-वर-दाता कहाँ ?"

* * *

भीग उठी रात,
भीग उठे तरु पात,
गीले गीले नभ नैन,
गीले गीले कवि बैन
वेणु वल्लकी प्रगीत
मुक्त कण्ठ-स्वर स्फीत,
मोद मंगल विधान,
मुग्ध धरा, मत्त प्राण
किन्तु कोटि रव चीर,
वेधता है वन तीर
एक प्रश्न बार बार
गूँजता है जहाँ तहाँ
"साम उद्गाता कहाँ ?"
"मुक्तिवर दाता कहाँ ?"

* * *

मनुष्य अब नहीं किसी मनुष्य का गुलाम है

लेखक, श्री निरंकार देव सेवक एम० ए०

उठो मनुष्य नाम धारियों,
सजग सचेत हो,
स्वतन्त्र तुम अगर नहीं
उलट पुलट जहान दो,
जहान क्या न तुम अगर
स्वतन्त्र शान से रहे,
मनुष्य क्या न जो सदैव
स्वाभिमान से रहे।
मनुष्य जन्म सिद्ध स्वत्व
का जिसे विचार है,
मनुष्य वह नहीं किसी
मनुष्य का गुलाम है।

न एक भी मनुष्य जो
सदा अधीन रह सके,
न एक भी मनुष्य जो
सदैव जुल्म सह सके,
न एक भी मनुष्य जो
न हो कभी निडर सके,
न एक भी मनुष्य जो
कभी न क्रान्ति कर सके।
शिकार जो नहीं किसी
विशेष दृष्टि कोण का,
मनुष्य वह नहीं किसी
मनुष्य का गुलाम है।

जिसे स्वदेश जाति धर्म
की असारता पता,
जिसे महान क्षुद्र कर्म
की असारता पता,
जिसे न जयविनाद के
प्रमाद ने छला कभी,
जिसे न व्यर्थ वाद के
विवाद ने छला कभी।
जिसे लुभा सकी कभी
न काल्पनिक स्वतन्त्रता,
मनुष्य वह नहीं किसी
मनुष्य का गुलाम है।

स्वतन्त्रा किसी विशेष
देश की न साधना,
स्वतन्त्रता किसी विशेष
काल की न भावना,
स्वतन्त्रता मनुष्य के
स्वभाव की पुकार है,
स्वतन्त्रता हर एक का
स्वतन्त्र स्वाधिकार है।
इसी विशुद्ध भाव का
जिसे प्रबुद्ध ज्ञान है,
मनुष्य वह नहीं किसी
मनुष्य का गुलाम है।

विमुक्त जो अतीत की
परम्परा प्रमाण से,
विमुक्त जो प्रगल्भ तर्क
शुद्ध ब्रह्म ज्ञान से,
विमुक्त जो मनुष्य स्वर्ग
नर्क पुण्य पाप से,
विमुक्त जो मनुष्य लोक
लाज शाप ताप से।
जिसे मनुष्य के गढ़े
न देवता रुचे कभी,
मनुष्य वह नहीं किसी
मनुष्य का गुलाम है।

किसी सबल दबाव से
झुकी नहीं मनुष्यता,
किसी प्रबल प्रभाव से
रुकी नहीं मनुष्यता,
किसी महान युद्ध से
थकी नहीं मनुष्यता,
किसी विवर्त्त में फँसी
नहीं कहीं मनुष्यता।
मनुष्यता अजेय है
मनुष्य शक्ति धाम है,
मनुष्य अब नहीं किसी
मनुष्य का गुलाम है।

मनुष्य ने अतल समुद्र
में नगर बसा दिये,
मनुष्य ने पहाड़ फूँक
मार कर खसा दिये,
मनुष्य ने महल विशाल
वायु में बना लिए,
न हो सका है काम
कौन सा मनुष्य के किए।
समस्त सृष्टि
अधीन हैं मनुष्य
मनुष्य अब नहीं
मनुष्य का गुलाम

मनुष्य माप दंड दूर
पास के बदल चुका,
मनुष्य माप दंड वर्ष
मास के बदल चुका,
मनुष्य माप दंड क्षय
विकास के बदल चुका,
मनुष्य माप दंड जन्म
नाश के बदल चुका।
मनुष्य आज बढ़
देश काल में
मनुष्य अब नहीं
मनुष्य का गुलाम

उड़ा मनुष्य आज
आसमान में पसार पर,
रहा कठिन न चीन से
सुदूर मिस्र का सफर,
मनुष्य ने विजय किए
अजेय उच्चतम शिखर,
मनुष्य ही समुद्र में
बना पड़ा रहा मगर।
मनुष्य को न आज
हिम जला गला
मनुष्य अब नहीं
मनुष्य का गुलाम

मनुष्य पर न भार अब
कोटि कोटि देवता,
हर एक के विकास औ
विनाश का उसे पता,
मनुष्य जानता रहस्य
आज ज्ञान भक्ति का,
मनुष्य अब न दास है
किसी अदृश्य शक्ति का,
मनुष्य अब स्वतं
सिद्ध, पूर्ण काम
मनुष्य अब नहीं
मनुष्य का गुलाम

॥ ८००० रु० नकद इनाम ॥

पहिला इनाम—ठीक हल के लिए ६००० रु० (जो एक अधिक हल ठीक होने पर
बांट दिया जावेगा)। दूसरा इनाम—सब से अधिक हलों के लिये १००० रु०। तीसरा
सब से पहिले ठीक हल भेजने वाले के लिये १००० रु०।

हल क्या करना है? सामने दिये हुए नौ खानों में १०० तक के कोई से अङ्क इस भांति से भरिये कि जिस ओर से भी जोड़ें उत्तर ८१ हो। एक अङ्क एक ही बार लिखा जा सकता है।

		८१	८१
८१	२१		
८१		२७	
८१			३३
८१		८१	८१

दाखला फीस—एक रु० प्रति हल।

नियम—हर एक आदमी एक या एक से अधिक जितने हल चाहे सफेद कागज पर एक रुपया प्रति हल के हिसाब से फीस के साथ भेज सकता है। फीस दाखला मनीआर्डर या पोस्टल आर्डर द्वारा भेजनी चाहिये। मनीआर्डर की रसीद हलों के साथ आनी चाहिये अथवा ऐसा हो सकता है कि आपके हल मुकाबले में
सम्मिलित न हो सकें। सही हल वही समझा जावेगा जो हमारे मुहरबन्द हल के साथ जो
महोदय दैनिक 'अमर भारत' के पास रखा गया है खाना दर खाना मिलेगा। इनामी
कापी के लिये दो आने के टिकट और अपने पते का लिफाफा भेजें। इनाम की रकम दाखला
की आई हुई रकम के अनुसार कमी बेशी होसकती है पर सही हल के इनाम की कम से कम
की गारण्टी है। हलों के रास्ते में खो जाने या डाकखाने के कारण देर पहुँचने के हम
न होंगे। प्रवेश फीस किसी अवस्था में वापिस न होगी मैनेजर साहिब पहेली का फैसला
हर प्रकार से मानने योग्य होगा। हर मामले का फैसला देहली ही होगा। अपना पता
व मीआर्डर कोपन पर साफ लिखें हल ३१ अगस्त तक डाक में डाल देने चाहियें। इसके
भेजा हुआ कोई हल स्वीकार न किया जावेगा सही हल १५ सितम्बर को प्रकाशित कर दिया

॥ ई० टी० एण्ड कम्पनी, पोस्ट बैग नं० ५२ ए०, दिल्ली ॥

E T & Company, Post Bag No 62 A. Delhi.

वेम्बले में प्रेस-संवाददाताओं के लिये रेडियो का प्रबन्ध किया गया है। संवाददाता रेडियो को सुनकर समाचार संग्रह करता जाता है, और फिर उसे पत्र में भेजता है।

इस प्रकार का प्रबन्ध अभी अन्य देशों में नहीं है किन्तु यदि बेतार के तार की उन्नति अबाध गति से होती रही तो इसमें सन्देह नहीं कि आज के संवाददाताओं का स्थान बेतार के तारवाले रेडियो और टेलीफोन ले लेंगे। इस प्रकार से संवाद देने में पहले बहुत कुछ सीखना पड़ता है। काम सीख लेने के बाद इस प्रकार से संवाददाता का काम करना सरल हो जाता है। आज के बाजार में जितने भी टेलीफोन और रेडियो हैं वे इस काम को करने में समर्थ न होंगे। लेकिन भविष्य में इस काम की सुविधा के लिये ऐसे रेडियो और फोन बनेंगे।

अन्तर्राष्ट्रीय श्रम-सम्मेलन

(पृष्ठ ५ का शेष)

उनकी सहायता करने को कहाँ तक तैयार हैं। उनको यह जानने की उत्सुकता है कि यदि निकट भविष्य में कोई युद्ध हुआ तो भारत किस पक्ष में होगा।

महात्मा जी का नाम तो सब जानते हैं। दूकानदार, कृषक, मजदूरनी सबको उनकी हत्या के लिए दुःख है। उन लोगों के लिए उनके राजनैतिक नेतृत्व का महत्त्व नहीं है वह तो उनको एक प्रकार का साधु समझते हैं और इसीलिए आदर करते हैं। अँगरेजी शासन से छुटकारा दिलानेवाले गांधी का ऋण भारतीयों पर है परन्तु सत्य और अहिंसा के उपदेष्टा महात्मा सारे जगत की विभूति थे और उनकी मृत्यु का दुःख सार्वभौम है।

यों भारत के सम्बन्ध में बहुत अज्ञान हैं। वहाँ के अखबार चुटकुले तो भले ही छाप दें परन्तु ऐसी खबरें कम ही निकालते हैं जिन पर से लोगों को यहाँ का यथार्थ ज्ञान हो। मेरे ऊपर काशी नागरी प्रचारिणी सभा में अँगरेजी शब्दों के प्रयोग के लिए जो पाँच आना जुर्माना हुआ था वह समाचार छप गया था। हाल में बम्बई में जो दङ्गा हुआ था उसका समाचार उसी दिन छप गया। अच्छे पढ़े-लिखे लोगों की जानकारी की यह दशा है कि एक विश्वविद्यालय के बड़े अधिकारी ने मुझसे कहा कि आपके यहाँ की शिक्षा सम्बन्धी नई रिपोर्ट और योजनाएँ तो संस्कृत में होंगी।

अमेरिका में आजकल कम्युनिस्टों के प्रति बहुत क्षोभ है। रूस आई० एल० ओ० का सदस्य नहीं है परन्तु कम्युनिस्ट पक्ष का समर्थन बलगेरिया, पोलैंड और जेकोस्लोवाकिया कर रहे हैं। कई प्रश्नों पर कम्युनिस्ट गैर कम्युनिस्ट दृष्टि से विचार हुआ। मतगणना में यह बात पूरे तौर से स्पष्ट नहीं हो पाई क्योंकि एक ओर तो कुछ ऐसे राष्ट्र हैं जिनको कम्युनिस्टों का इतना भय है कि अपनी वास्तविक सम्मति के प्रतिकूल भी उनके प्रतिनिधियों को वोट देना पड़ा, दूसरी ओर कुछ ऐसे भी राष्ट्र हैं जो अमेरिका के विरुद्ध जा नहीं सकते। जिधर अमेरिका का हाथ उठे उधर उनके हाथ का उठना अनिवार्य है।

सब बातों को देखते हुए सम्मेलन को सफल कहा जा सकता है। हमको इस बात का सन्तोष है कि भारतीय प्रतिनिधियों ने प्रायः ऐसी कोई बात नहीं की जिससे भारत के गौरव को आघात पहुँचता। हमने वहाँ बहुत सी चीजें देखीं और सीखीं। अभी हमारे देश में बहुत सी त्रुटियाँ हैं परन्तु कई बातों में हमारे कानून किसी दूसरे देश से पीछे नहीं हैं। हमको सीखना है परन्तु नकल नहीं करना है। हमें इस बात का पूरा भरोसा है कि भारत शीघ्र ही एशिया का नेतृत्व तो करेगा ही, अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में चोटी के राज्यों में समझा व गिना जायगा।

आविष्कारों की कथा

मशीनें कैसे बनीं? तरह-तरह के औजार कैसे बनें? रेल, जहाज, तार और सिनेमा वगैरह कैसे बने? नई-नई चीज़ें बनाकर या नये काम करके क्या आप दुनिया में प्रसिद्ध हो सकते हैं? इन सारी बातों को जानने के लिए यह पुस्तक जरूर पढ़िए। मूल्य १)

मैनेजर इंडियन प्रेस लिमिटेड

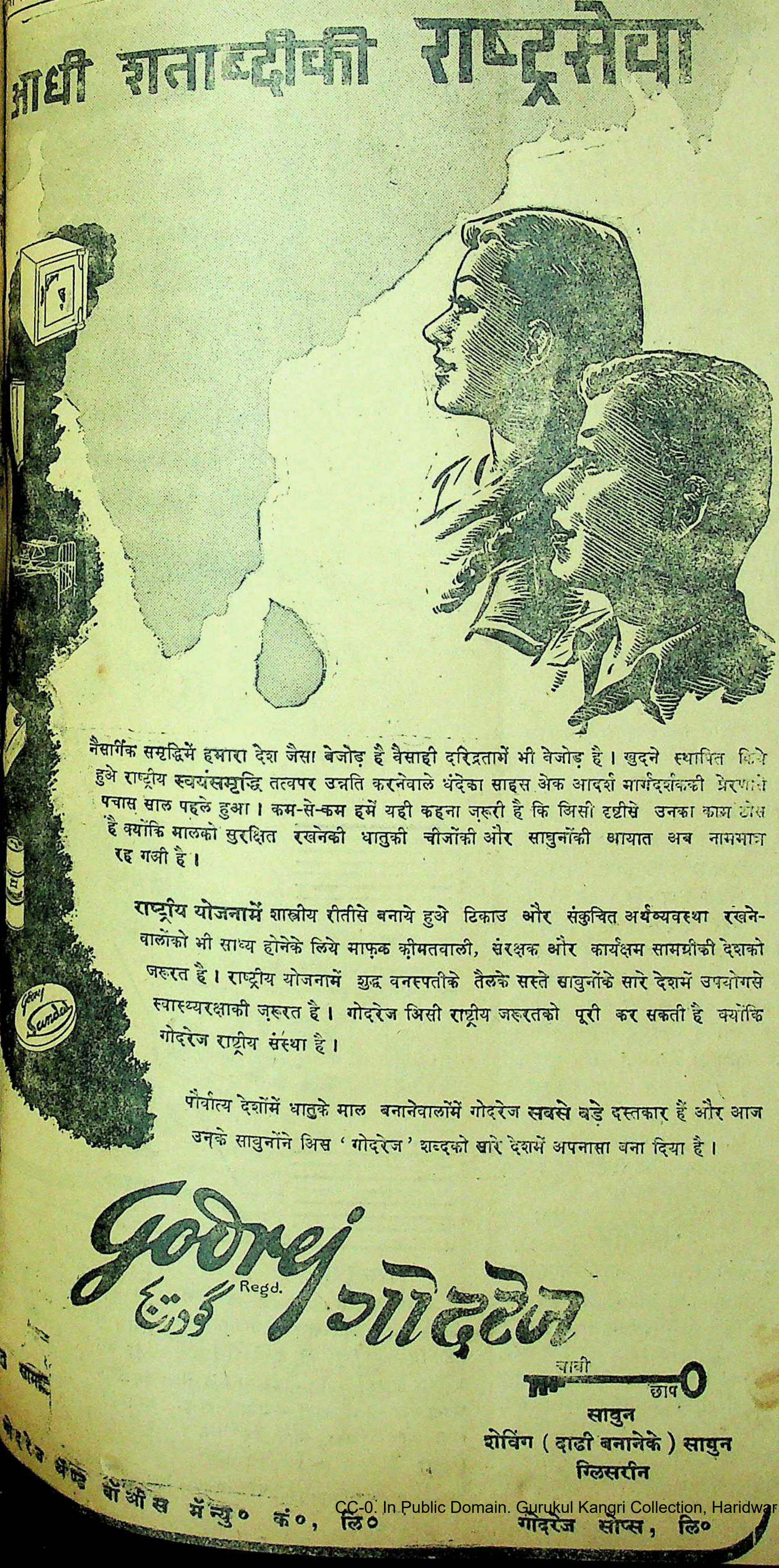
आधी शताब्दीकी राष्ट्रसेवा

नैसर्गिक समृद्धिमें हमारा देश जैसा बेजोड़ है वैसाही दरिद्रतामें भी बेजोड़ है। खुदने स्थापित किये हुअे राष्ट्रीय स्वयंसमृद्धि तत्वपर उन्नति करनेवाले धंदेका साहस अेक आदर्श मार्गदर्शककी प्रेरणासे पचास साल पहले हुआ। कम-से-कम हमें यही कहना ज़रूरी है कि अिसी दृष्टीसे उनका काम ठोस है क्योंकि मालको सुरक्षित रखनेकी धातुकी चीजोंकी और साबुनोंकी आयात अब नाममात्र रह गअी है।

राष्ट्रीय योजनामें शास्त्रीय रीतीसे बनाये हुअे टिकाउ और संकुचित अर्थव्यवस्था रखनेवालोंको भी साध्य होनेके लिये माफ़क क़ीमतवाली, संरक्षक और कार्यक्षम सामग्रीकी देशको जरूरत है। राष्ट्रीय योजनामें शुद्ध वनस्पतीके तैलके सस्ते साबुनोंके सारे देशमें उपयोगसे स्वास्थ्यरक्षाकी ज़रूरत है। गोदरेज अिसी राष्ट्रीय जरूरतको पूरी कर सकती है क्योंकि गोदरेज राष्ट्रीय संस्था है।

पौर्वात्य देशोंमें धातुके माल बनानेवालोंमें गोदरेज सबसे बड़े दस्तकार हैं और आज उनके साबुनोंने अिस 'गोदरेज' शब्दको सारे देशमें अपनासा बना दिया है।

Godrej
گودرج
Regd.
गोदरेज

चावी छाप

साबुन
शेविंग (दाढी बनानेके) साबुन
ग्लिसरीन

गोदरेज ऐण्ड बॉअीस मॅन्यु० कं०, लि०
गोदरेज सोप्स, लि०

लखनऊ की चिट्ठी

१५ अगस्त का स्वतन्त्रता दिवस

रेडियो का कार्यक्रम—लखनऊ रेडियो का पुनर्संगठन—काशीनरेश—नया रेल-पथ—राशनिंग की नई योजना।

(अपने विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

युक्तप्रान्त की राजधानी स्वतन्त्रता-दिवस मनाने के लिए तैयार हो रही है। महात्मा गांधी के महानिर्वाण के कारण नागरिकों के हृदयों में न तो उतना उल्लास है और न उत्साह, फिर भी स्वतन्त्रता देवी की अर्चना के लिए प्रत्येक धर्म, सम्प्रदाय और वर्ग के व्यक्ति प्रस्तुत हो रहे हैं। मन्दिरों, मसजिदों, गुरुद्वारों और गिरजाघरों में विशेष प्रार्थनायें होंगी, शिक्षा-संस्थाओं में खेल होंगे तथा मोहल्लों में स्थानिक कार्यक्रम कार्यान्वित किए जाएँगे। सुबह गवर्नमेण्ट हाउस में गवर्नर सरोजिनी नायडू पुलिस की सलामी लेंगी। उसी समय सर्वत्र राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाएगा। अपराह्न में पुलिस की नगर यात्रा, प्रयाण गीत और वाद्य के साथ होगी। परन्तु गवर्नमेण्ट हाउस की पार्टी और नगर में दीवाली गांधी जी के शोक में स्थगित रहेगी।

* * *

आल इण्डिया रेडियो के लखनऊ स्टेशन ने उस दिन के लिए एक विशेष कार्यक्रम बनाया है। उस दिन रेडियो का समय दो घंटा बढ़ा दिया जायगा और राष्ट्रीय कार्यक्रम प्रसारित होंगे। दो कवि-सम्मेलन भी हैं। शाम को 'बहनों के प्रोग्राम' में कवियित्री सम्मेलन है तथा रात्रि में कवियों का सम्मेलन। प्रचारित कवियों में से सभी आ सकेंगे, इसकी कोई पुष्टि नहीं हो सकी है। 'एकस्ट्रा' के रूप में जिन कवियों को बुलाया गया है, वे प्रोग्राम संचालकों के कृपापात्रों के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं हैं। मैं प्रान्त के अनेक कवियों के नाम गिना सकता हूँ, जिनकी अवहेलना से प्रकट होता है कि लखनऊ रेडियो के 'विदेशी' कर्मचारियों को इस प्रान्त का कितना ज्ञान है। प्रसिद्ध राष्ट्रीय गीत 'झण्डा ऊँचा रहे हमारा' के रचयिता श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' को न बुलाकर रेडियोवालों ने अपनी सामयिक मूर्खता का परिचय दिया है। 'सरोज' जीवन भर राष्ट्रीय कविता लिखते रहे, वे भी नहीं बुलाए गए। पर सस्ते प्रेम-गीत लिखनेवाले अनेक लघुज्ञात कवि फिल्म 'एक्स्ट्राओं' की तरह आमंत्रित हैं।

* * *

लखनऊ के पत्रों ने लखनऊ रेडियो के नवगठन के लिए आन्दोलन प्रारम्भ किया है। वास्तव में लखनऊ रेडियो का एक भी दायित्वपूर्ण अधिकारी युक्तप्रान्त निवासी नहीं है। प्रोग्राम बनानेवाले तक इस प्रान्त के बाहर हैं और वे इस प्रान्त के इतिहास-परम्परा राजनीति समाज सभी से अनभिज्ञ से प्रतीत होते हैं। वे हिन्दी जानते हैं—इतना ही तो काफी नहीं है। पर हिन्दी जाननेवाले केवल तीन अधिकारी लखनऊ रेडियो में हैं और वे भी इस प्रांत के नहीं हैं। यह हाल है '७५ प्रतिशत हिन्दी' वाले स्टेशन का!

* * *

बनारस के महाराज हाल ही में लखनऊ आये थे। उन्होंने काशिराज्य के युक्तप्रान्त में विलीन किए जाने के सम्बन्ध में पं० पन्त से बातचीत की है। ज्ञात हुआ है कि एक तो काशिराज का यह कहना है कि टिहरी तथा रामपुर के विलीन किए जाने से पूर्व ही बनारस का युक्तप्रान्त में मिला लिया जाना अनुचित तथा अशोभनीय है और दूसरे वह यह चाहते हैं कि यदि विलीनीकरण हो, तो उनका निजी व्यय; जो लगभग ३ लाख रुपया साल है, उन्हें पूर्ववत् मिलता जाए। अभी वार्तालाप समाप्त नहीं हुआ है, और १५ अगस्त के बाद पुनः होगा।

* * *

प्रांतीय सरकार के विशेष अनुरोध पर भारत-सरकार ने मिर्जापुर से राबर्ट्सगञ्ज पिपरी विण्ढमगंज आदि होते हुए बिहार की सीमा तक एक रेलपथ बनाने का निश्चय किया है। इस रेलपथ के बन जाने से हिन्द बाँध के निर्माण में बड़ी सुविधा हो जाएगी और यह बाँध बन जाने पर जब सस्ती जलविद्युत् से यह प्रदेश क्रियाशील तथा उद्योग-प्रधान हो उठेगा, तब यह रेलपथ व्यवसायिक दृष्टि से अत्यन्त लाभजनक हो जाएगा।

* * *

प्रान्तीय सरकार की आंशिक राशनिंग योजना, जो शीघ्र ही चालू हो जाएगी, कुछ ही दिनों में पूर्ण राशनिंग में बदल जाएगी—ऐसा यहाँ के राजनीतिज्ञ क्षेत्रों में विश्वास किया जाता है। प्रान्तीय सरकार को आशा है कि भारत सरकार उसे अपने विदेश से आने वाले अन्न से इतनी राशि अवश्य दे देगी कि आगामी अक्टूबर से वह २५० रु० तक आयवाली जनता तथा दिसम्बर से हर किसी को अपनी राशन की दूकानों से सस्ते मूल्य पर अन्न देने लगेगी। इन दूकानों में केवल गेहूँ और मास आ जाने पर चावल ही मिलेगा, मोटा अन्न नहीं, क्योंकि वह बाजार में पर्याप्त मिल रहा है। सरकार के पास यों तो ५० हजार टन मोटा अन्न है, पर वह ग्रामीण क्षेत्रों में कोई आकस्मिक अभाव की स्थिति आ जाने के लिए सुरक्षित रखा जाएगा।

सेवाग्राम
रंग-बिरंगी छपाई अनेक रंगीन चित्र
रचयिता श्री सोहनलाल द्विवेदी
संरक्षक श्री घनश्यामदास बिड़ला
जनता की भाषा में, जनता के भावों का, जनता का काव्य कवि की राष्ट्रीय रचनाओं का सुन्दर संग्रह। बड़ा आकार, बढ़िया कागज़, कपड़े की मज़बूत जिल्द। मूल्य दस रुपये।
मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

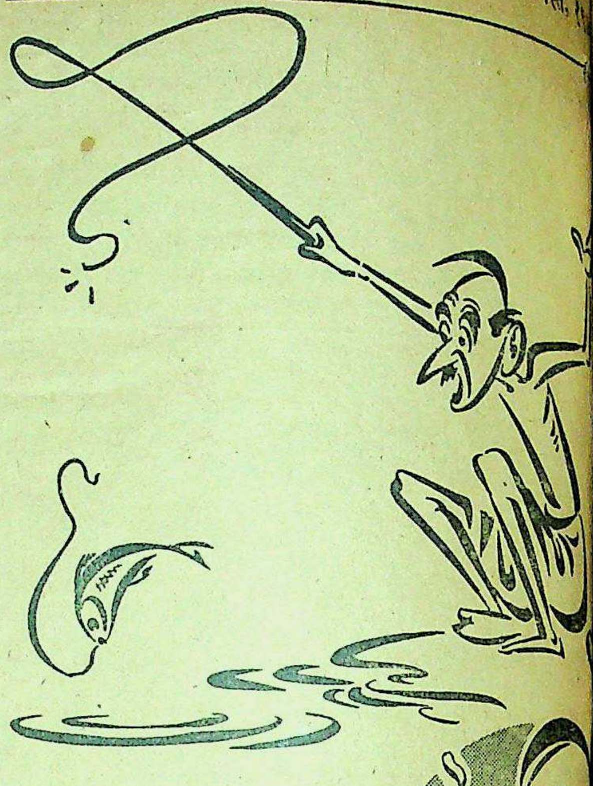

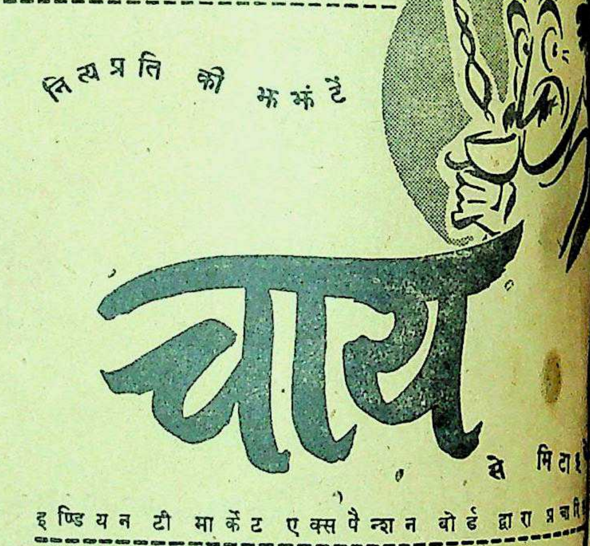
नित्यप्रति की झंझटें
चाय से मिटाइ
इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारि

LIPTONS
WHITE LABEL
TEA
ONE POUND NETT
लिपटन
माने
अच्छी चाय

अन्नू सरदार
भरोस सरदार के लड़की के सिवा कोई सन्तान न थी। और भरोस था ऐसा लठैत जिससे पुलिस भी डरती थी। एक जमींदार के यहाँ भरोस नौकर था। उसने अपनी बेटी को भी लाठी चलाना सिखला दिया था। इसका ब्याह जिस अनन्त (अन्नू) से किया गया था वह भरोस से सवाया था। एक झमेले में
काट हुई। इसमें अन्नू की
गई और भतीजा प्रताप
गया। पुलिस ने अन्नू की
सज़ा करा दी। इधर प्रताप भी
यह कहानी है तो बड़ों के लिए
परन्तु बच्चों को बहुत पसन्द
सुन्दर सरल भाषा, कई चित्र
पृष्ठ रंगीन। मूल्य केवल बारह
मैनेजर बुकडिपो इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

रामचरितमानस

टीकाकार—डाक्टर श्यामसुन्दरदास

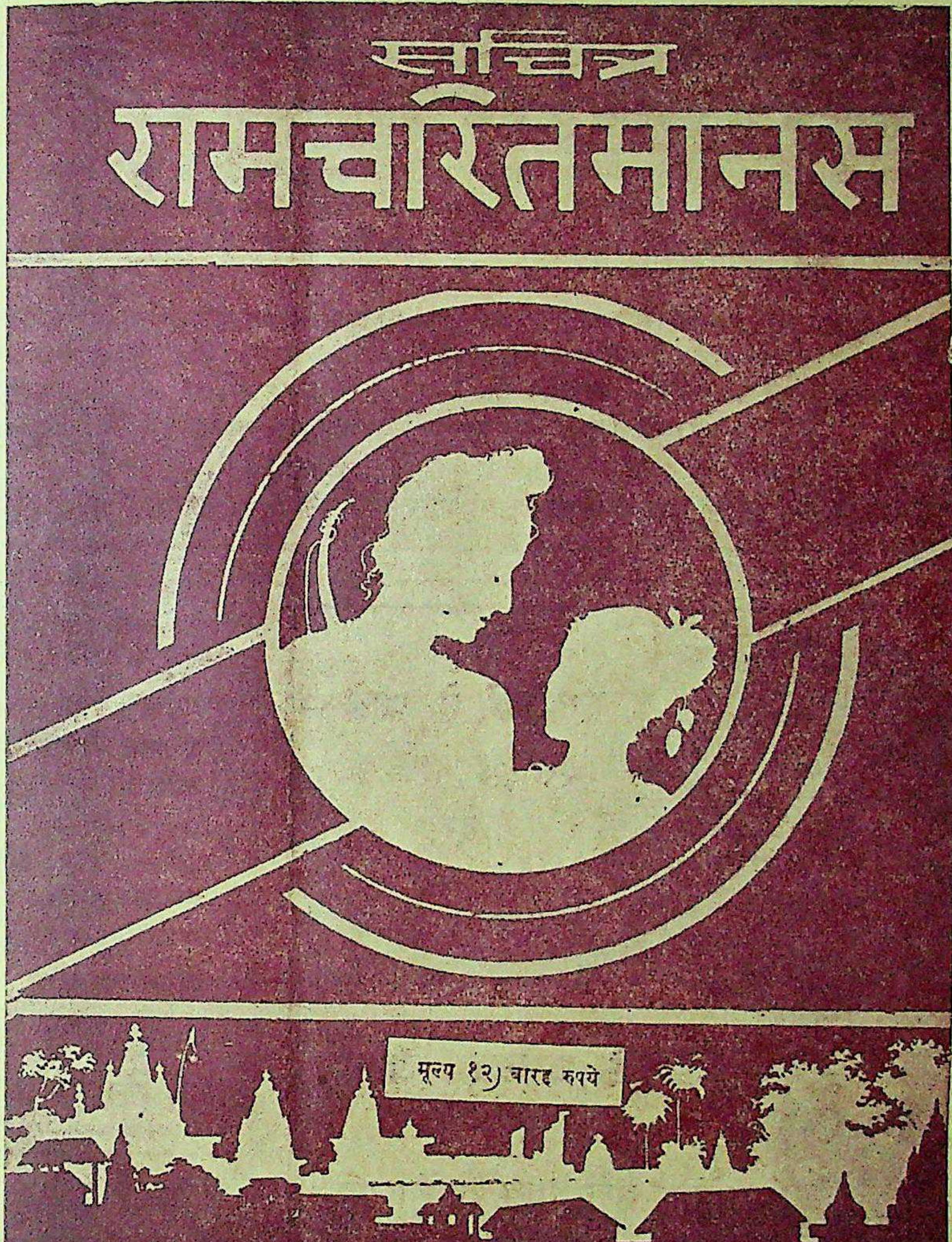

'मानस' का महत्त्व किसी से छिपा नहीं है। भारतवर्ष में तो इसका मान है ही, अन्य देशों में भी इस अमर ग्रन्थ का आदर है। यह प्रामाणिक संस्करण इधर कई वर्ष से अप्राप्य था। हाल में ही छपकर तैयार हुआ है। ग्राहकों को शीघ्रता करनी चाहिए। अधिक प्रतियाँ नहीं छापी गई हैं।

बड़े आकार के १२०० पृष्ठ। रंग-बिरंगे दर्जनों चित्र। सजिल्द प्रति का

मूल्य १२) रुपये

जहाँ पर हमारी ब्रांच या एजेंसी है वहाँ ख़रीदने पर डाकख़र्च की बचत होगी।

हमारी ब्रांचें और एजेन्सियाँ

१ इलाहाबाद सिटी—न्यू ऐरा बुकहाउस, ह्विट रोड
२ आगरा—आगरा पब्लिशिङ्ग हाउस, बाग़ मुज़फ़्फ़र खाँ
३ अजमेर—इंडियन प्रेस लिमिटेड, कचहरी रोड
४ अलमोड़ा—डिस्ट्रिक्ट बुकडिपो, लालबाज़ार
५ बनारस—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, बनारस छावनी
६ बाँदा—बुंदेलखण्ड पब्लिशिङ्ग हाउस
७ बरेली—इंडियन बुकडिपो
८ बम्बई—भारतीय पुस्तक भण्डार, कालबा देवी रोड
९ बीकानेर—गर्गबुक कम्पनी, कोट के भीतर
१० कलकत्ता—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, २२।१ कार्नवालिस स्ट्रीट
११ कानपुर—साहित्य-रत्नालय, श्रद्धानन्द पार्क
१२ दिल्ली—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, नई सड़क
१३ गोरखपुर—पुस्तक-स्थान, बख़्शीपुर
१४ ग्वालियर—लायल बुकडिपो, पाटनकर बाज़ार, लश्कर
१५ इन्दौर—नवयुग साहित्यसदन, खजूरी बाज़ार
१६ जयपुर—गोपाल बुकडिपो, त्रिपौलिया बाज़ार
१७ जबलपुर सी० पी०—इंडियन प्रेस, लिमिटेड
१८ लखनऊ—इंडियन बुकडिपो, अमीनुद्दौला पार्क
१९ मेरठ—पुस्तक-स्थान, वैस्टर्न कचहरी रोड
२० पटना—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, पो० ऑ० बाँकीपुर
२१ राँची—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, कोर्ट रोड
२२ अम्बाला (पूर्वी पंजाब)—इंडियन प्रेस लिमिटेड, दुर्गाचरण रोड

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

T. B. टी. बी. तपेदिक की मशहूर दवा 'जबरी' पर जनता का फैसला

(१) श्री तोसल हुसेन रईस मो० मुसेपुर पो० भरतकुण्ड जि० फैजाबाद।
(२) श्री नागेश्वरप्रसाद तिवारी स्कूल नडुगावाँ पो० 'डालटनगंज' (बिहार)।
(३) डा० ठाकुरसिंह नेपाली मु० कटैया पो० हरलखी जिला दरभंगा।
(४) श्री रामखेलावनराम, भीखूराम पो० बाजार गुसाईं जि० आजमगढ़।
(५) श्री लीलाधर कापरी आर० सी० वार्ड सेनाटोरियम भवाली जि० नैनीताल।
(६) श्री गोविन्दराव चौधरी लायबरेरियन काटन मार्केट नागपुर (सी० पी०)

सब ही आदमियों के पते ठीक हैं, जिससे भी चाहें पूछकर तसल्ली कर सकते हैं। इनके अलावा पचासों प्रशंसापत्र भारत के कोने-कोने से पहले भी आप देख ही चुके हैं। 'जबरी' (JABRI) के विषय में सब का यही कहना है कि यह दवा नहीं, बल्कि रोगी को काल के गाल से बचानेवाली "ईश्वरी शक्ति" अमृत है। फिर हमने तो १० दिन के लिए परीक्षार्थ नमूना भी रख दिया है जिसमें तसल्ली हो सके। यदि आप सब तरफ से निराश हो चुके हों तो भी परमात्मा का नाम लेकर एक बार 'जबरी' की परीक्षा करें।

—T. B. टी. बी. 'तपेदिक' और पुराने ज्वर के हताश रोगियो अब भी समझो—

अन्यथा फिर वही कहावत होगी कि—अब पछताये क्या होत है, जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत। इसलिए तुरन्त आर्डर देकर रोगी की जान बचावें। सैकड़ों डाक्टर, हकीम, वैद्य अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार द्वारा आर्डर देते हैं। तार आदि के लिए हमारा पता केवल 'जबरी' जगाधरी लिख देना ही काफी है। तार से यदि आर्डर दें तो अपना पूरा पता दें। मूल्य इस प्रकार है—

'जबरी' स्पेशल नं० १ अमीरों के लिए जिसमें साथ-साथ ताकत बढ़ाने के लिए सोना, मोती, अभ्रक आदि मूल्यवान् भस्में भी पड़ती हैं। मूल्य पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन के लिए २०) रु०। 'जबरी' नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान् जड़ी-बूटियाँ हैं। पूरा कोर्स २०) रु०, नमूना १० दिन के लिए ६) रु०। महसूल आदि अलग है। आर्डर में पत्र का हवाला तथा नं० १ या नं० २ साफ-साफ लिखें। पार्सल जल्द प्राप्त करने के लिए मूल्य मनीआर्डर से भेजें। जिसमें तुरन्त पार्सल भेज दिया जावे।

पता—रायसाहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड बैंकर्स (D) 'जगाधरी' पूर्व पंजाब (E. P.)

फिल्म ऐक्ट

यदि आप फिल्म ऐक्टर बनकर
रु० से १५००) रु० मासिक तक
चाहते हों तो आज ही लिखें।
लिखा पढ़ा होना जरूरी है।
नाम व पूरा पता साफ लिखें।

अमेरिकन कार्पोरेशन
(फिल्म डिपार्टमैंट)
हलका नं० २२ (D.A.) अमृत

आरोग
१८६६
नीलगिरि तै

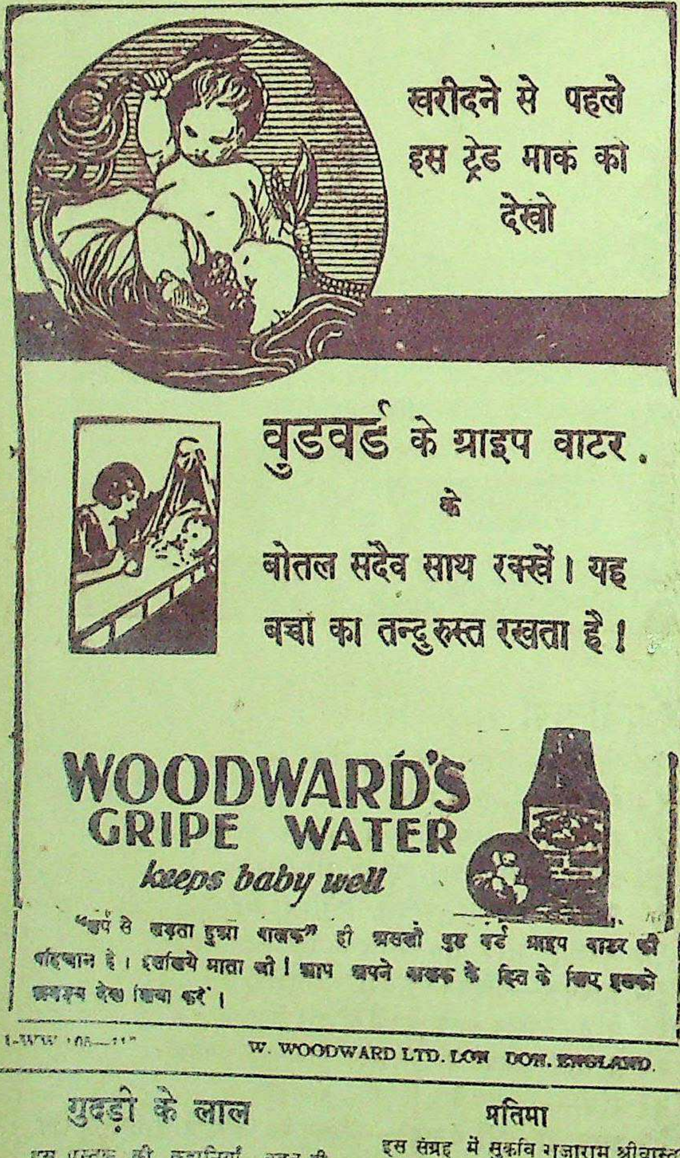
खरीदने से पहले इस ट्रेड मार्क को देखो
वुडवर्ड के ग्राइप वाटर.
के
बोतल सदैव साथ रक्खें। यह बच्चा का तन्दुरुस्त रखता है।
WOODWARD'S GRIPE WATER
keeps baby well

"[illegible] से बढ़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिए इसको अवश्य देख लिया करें।

W. WOODWARD LTD. LONDON. ENGLAND.

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने नाम पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=), डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कान

भारी लूट ? अवसर मत चूकिये आज ही ४) रु० में सात नई पुस्तकें

(१) गृहस्थ शास्त्र—दाम्पत्य जीवन को सुखी, सन्तुष्ट बनानेवाली मू० (२) वशीकरण विद्या—वशीकरण मन्त्रों तथा जादू के खेलों का संग्रह। मू० ॥।) (३) टीचर (हिन्दी) अँगरेजी लिखना-पढ़ना और बोलना सीखिये। मू० १।) (५) परिस्तान आर्ट पेपर पर छपी हुई बढ़िया रंगीन चित्रावली मू० १।) (५) कुंजी मू० ।।) (६) संगीत सोल-गान विद्या तथा छन्द विद्या सिखानेवाली मू० १।) (७) ज्योतिषसार मू० १)

सात पुस्तकों के सेट का मूल्य ४) पोस्टेज पैकिंग ।।)

ग्लोब ट्रेडिंग कं० (न्योसेट सैकरना नं० ४, अलीगढ़)

खुफिया कोकशास्त्र

इसमें स्त्री-पुरुषों के अद्भुत ८४ आसनों की जोड़दार फोटो, तसवीरें, यौवन के आनन्द प्राप्त करने के पोशीदा तरीके, प्राचीन जमाने के जिनका लिखना सभ्यता के विरुद्ध है। जो शादीशुदा न हो उनको यह दी जाती। मूल्य २॥) रुपया, डाक-खर्च माफ।

खुफिया तसवीरों के कार्ड
२५ कार्ड का सेट २॥) रुपये में

पता :—कामा को० (DDA) लाहौर रोड—अमृ

गुदड़ी के लाल

इस पुस्तक की कहानियाँ बहुत ही सरल और रोचक भाषा में लिखी गई हैं। इनको पढ़कर बच्चे बेहद खुश होते हैं। ऐसी पुस्तक अपने बच्चों को जरूर दीजिए। मूल्य ।।)

प्रतिमा

इस संग्रह में सुकवि गजाराम श्रीवास्तव की एक से एक बढ़िया ५० कविताएँ हैं। इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा है। क्या भाषा और क्या भाव सभी अनुपम हैं। रंगीन आवरण, बढ़िया छपाई और मूल्य केवल [illegible] एक रुपया।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

देशदूत में विज्ञापन दीजि

र्षिक मूल्य ७॥)
तिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

, २२ अगस्त, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 22nd AUGUST, 1948

षा हिन्दी ही क्यों हो ?
का आज का संकट क्या है ?

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

आज के स्वतंत्र भारत में व्यवसाय
भारत की रियासतों का एकीकरण

ऐतिहासिक भौतिकवाद

लेखक, भूतपूर्व काकोरी-कैदी

श्री मन्मथनाथ गुप्त और श्री रमेन्द्र वर्मा

लगभग ५०० पृष्ठों के सजिल्द ग्रन्थ का मूल्य केवल ६) रुपये।

मार्क्सवाद में ऐतिहासिक भौतिकवाद की गहनता को सरलतापूर्वक समझने के लिए इस ग्रन्थ की उपयोगिता अद्वितीय है। समाजवाद समझनेवालों के लिए इसका अध्ययन अपरिहार्य है।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

'कथा-साहित्य की सबसे अच्छी प्रतिनिधि पत्रिका'

मंजरी

श्रेष्ठ कथाकारों की सरस कहानियाँ और कथा-साहित्य पर गम्भीर तथा आलोचनात्मक लेख आकर्षक मुद्रण-विन्यास के साथ प्रस्तुत करनेवाली 'मंजरी' सांस्कृतिक मनोरंजन की एकमात्र कहानी-पत्रिका है।

एक सम्मति

प्रोफेसर शिवपूजन सहाय, भूतपूर्व सम्पादक 'हिमालय'—'मंजरी' के तीन अंक देखे और तीनों को देखकर यही धारणा हुई कि कथा-साहित्य की सबसे अच्छी प्रतिनिधि-पत्रिका 'मंजरी' ही है। छपाई सफाई और सजावट के लिए तो इंडियन प्रेस का यशस्वी नाम ही प्रमाण है, सम्पादन-कौशल में आपने भी अपनी कला का आकर्षक प्रदर्शन किया है। साज-सज्जा और सामग्री-संकलन में सुरुचि का समावेश सर्वथा सराहनीय है। भिन्न भाषाओं की कहानियाँ देकर आप हिन्दी पाठकों को काफी तृप्त कर रहे हैं। बहुत से पाठकों ने यह मत व्यक्त किया है कि आपकी पत्रिका ही सब कहानी-पत्रिकाओं में श्रेष्ठ एवं उपयोगी है। मैं आपकी आरम्भिक सफलता पर आपको शत-शत बधाइयाँ देता हूँ।

× × ×

प्रतिमास 'मंजरी' पढ़कर आप भी अपना और अपने परिवार का सांस्कृतिक मनोरंजन कीजिए।

वार्षिक मूल्य ६) छः रुपये **प्रति अङ्क आठ आने**

प्रकाशक :

इंडियन प्रेस लि०, प्रयाग

हमारे जानवर

लेखक, कुँवर सुरेशसिंह

१०० जानवरों का सचित्र रोचक वर्णन

यह हिन्दी में अपने विषय की पहली पुस्तक है। हम अपने पास-पड़ोस के पालतू जानवरों को जरूर पहचानते हैं। उनकी आदतें और स्वभाव के बारे में भी थोड़ा बहुत जानते हैं, लेकिन इतने ही से क्या हम कह सकते हैं कि हमें सारे पशु-जगत् की जानकारी हो गई है?

इतना ही क्यों, हमें चिड़ियाखाना देखने का भी मौका मिला होगा। लेकिन वहाँ जिस सरसरी निगाह से हमने जानवरों को देखा होगा उनसे भी हम किसी पर विश्वास नहीं दिला सकते कि हमें पशुसमाज का काफी ज्ञान है।

ऐसी दशा में अपने देश के जंगल, पहाड़, बस्तियाँ और मैदानों में फैले हुए सैकड़ों पशुओं के बारे में तरह तरह की मनोरञ्जक बातें जानने के लिए एक ही उपाय है कि आप "हमारे जानवर" की एक प्रति आज ही मँगावें। आपको प्रायः सभी जानवरों का सचित्र वर्णन इस पुस्तक में मिलेगा। मूल्य ४)

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

भारी लूट ?

अवसर मत चूकिये आज ही मँगाइये

४) रु० में सात नई पुस्तकें

(१) ग्रहस्थ शास्त्र—दाम्पत्य जीवन को सुखी, सन्तुष्ट बनानेवाली मू० २) (२) वशीकरण विद्या—वशीकरण मन्त्रों तथा जादू के खेलों का संग्रह। (३) इँग्लिश टीचर (हिन्दी) अँगरेजी लिखना-पढ़ना और बोलना सीखिये। मू० ।।।) (४) हुस्न परिस्तान आर्ट पेपर पर छपी हुई बढ़िया रंगीन चित्रावली मू० १।) (५) व्योपार की कुंजी मू० ।।) (६) संगीत सोल-गान विद्या तथा छन्द विद्या सिखानेवाली नई पुस्तक मू० १।) (७) ज्योतिषसार मू० १)

सात पुस्तकों के सेट का मूल्य ४) पोस्टेज पैकिंग ।।)

ग्लोब ट्रेडिंग कं० (न्योसेट सैकरना नं० ४, अलीगढ़)

खुफिया कोकशास्त्र

इसमें स्त्री-पुरुषों के अद्भुत ८४ आसनों की जोड़दार फोटो, ब्लाक की तसवीरें, यौवन के आनन्द प्राप्त करने के पोशीदा तरीके, प्राचीन जमाने के ऐसे जिनका लिखना सभ्यता के विरुद्ध है। जो शादीशुदा न हो उसको यह पुस्त दी जाती। मूल्य २।।) रुपया, डाक-खर्च माफ।

खुफिया तसवीरों के कार्ड

२५ कार्ड का सेट २।।) रुपये में

पता :—कामा को० (D D A) लाहौर रोड—अमृतसर

T. B.
टी० बी०

"तपेदिक" रोग के हताश रोगियो—

जबरी (jabri) का नाम नोट कर लो, यही इस दुष्ट रोग से रोगी की बचानेवाली शक्तिशाली औषधि है। एक बार परीक्षा करके देख लो, परीक्षा ही नमूना रखा गया है, जिसमें तसल्ली हो सके। मूल्य नं० १ (स्पेशल) पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन २०) रु०। 'जबरी' नं० २ पूरा कोर्स २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु० महसूल आदि अलग है। आज ही आर्डर देकर रोगी की जान बचावें। तार का पता "jabri" jagadhri काफी है।

पता :—रायसाहब के० एल० शर्मा, रईस (D) 'जगाधरी' (E.P.)

दाद, खुजली
और
हरेक मेलका चमडीका दर्दोंके लीए
RASIN
सपट
लोशन

गत ५० वर्षों से

जग विख्यात

कपड़े खराब नहीं करती।

नक्कालों से सावधान

सपट एन्ड को, डिपार्टमेंट U.P, DAI.
बम्बई २

मेरी तरह तंदुरुस्ती
हासिल करो
खराब खून को साफ करता
डा. वामन गोपाल
आयोडाइज्ड सार्सापरिला

इलाहाबाद के एजेन्ट—
पन्नूलाल जौहरी एल० एल०
एन्ड ब्रदर्स।

१८६६
नीलगिरि तेल

कसीदाकारी की मशीन

सुन्दर फूल-पत्ते, सीन सीनरी आदि कपड़ों पर काढ़नेवाली चार सुईयोंवाली बढ़िया मशीन मू० ३।।) तरकीब मुफ्त पोस्टेज ।।) कसीदाकारी की पुस्तक मू० २) पोस्टेज ।=)

सन्तोष ट्रेडिंग कम्पनी
पाठक स्ट्रीट जैगंज अलीगढ़।

धोने के लिये

५०१ साबुन

दी टाटा आयल मिल्स कं०

फिल्मी दुनिया मुफ्त

सिनेमा का भेद बतानेवाली
"फिल्मी दुनिया" अपना और
के पूरे पते लिखकर मुफ्त मँगाइये।
पता—मधुर मन्दिर, हाथरस,

देशदूत

र्ष १०, संख्या ५०] [रविवार, २२ अगस्त, १९४८

सप्ताह के समाचार

गांधी-स्मारक डाक-टिकटों की क बिक्री हुई। स्वतन्त्रता-दिवस के पर सिर्फ बंबई के डाक-टिकट- ने एक दिन में दस लाख, आठ ों के ये टिकट बेचे।

न्द के अर्थ-मंत्री श्री षणमुखम् इस्तीफा प्रधान मंत्री पं० नेहरू र कर लिया। श्री चेट्टी का कार्य- ज्य-मंत्री श्री के० सी० नियोगी ।

नगर का समाचार है कि दुश्मन ो कई बाहरी सूत्रों से बराबर त हो रहे हैं। दुश्मन की नेक युद्ध-क्षेत्रों में पीछे हटा ; परन्तु ये फौजें २५ पौण्ड लानेवाली तोपें आदि भीषण के साथ पुनः अपने मोरचे मज- री हैं।

रतीय स्वतंत्रता की प्रथम वर्ष- काश्मीर के प्रधान मंत्री शेख ने कहा कि काश्मीरी अपने देश को आजाद करने की दृढ़ प्रतिज्ञा कर चुके हैं। हिन्द प्रजातन्त्र की शक्तिशाली सहायता मिलने पर कौन कह सकता है कि हमारे स्वप्न पूरे न होंगे?

—स्वतंत्रता-दिवस के अवसर पर आगरे में साम्प्रदायिक दंगा हो जाने के फल-स्वरूप १८ व्यक्तियों के प्राण चले गए और ७५ घायल हो गए। इस संबंध में ४१० व्यक्ति गिरफ्तार किये जा चुके हैं। परिस्थिति काबू में आ चुकी है।

—नागपुर की पुलिस ने १७ अगस्त को दो मुसलिम दूकानदारों की दूकानों तथा एक मुसलिम फेरीवाले के समान की तलाशी ली, जिसमें बहुत-से ऐसे कलम बरामद किए जो हैदराबाद में बने हुए थे। इन कलमों में पाकिस्तान का नकशा बना हुआ था, जिसमें हैदराबाद राज्य, पूर्वी पंजाब, जम्मू-काश्मीर, पश्चिमी बंगाल तथा आसाम पाकिस्तान के अन्तर्गत दर्शाया गया है। पुलिस ने तीन मुसलमानों को भारतीय संघ-विरोधी कार्रवाई करने के अभियोग में गिरफ्तार कर लिया है।

प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू

रतीय स्वतंत्रता की प्रथम वर्षगाँठ पर संसार के कोने-कोने से आपको शुभकामनाएँ प्राप्त हुई हैं।

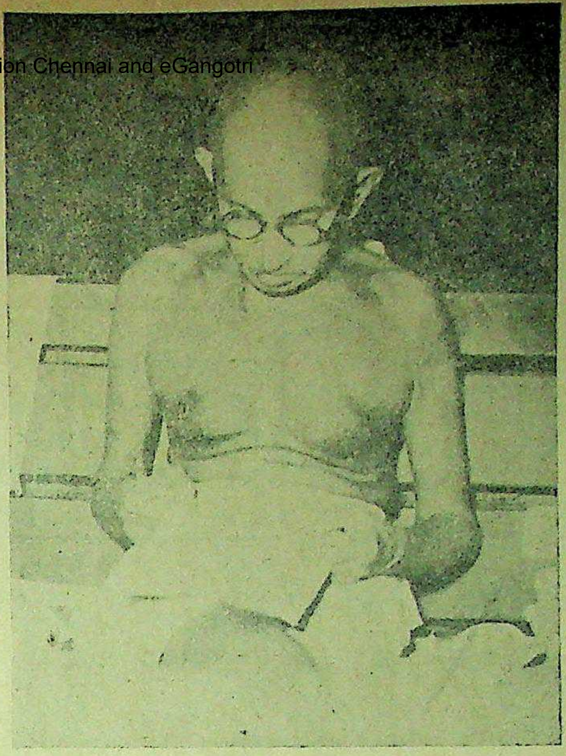

राष्ट्र पिता महात्मा गांधी के प्रति स्वतंत्रता-दिवस पर देश-व्यापी श्रद्धांजलि समर्पित की गई।

—बम्बई की खुफिया-पुलिस ने हैदराबाद तथा रजाकारों के लिए चन्दा जमा करने के सिलसिले में अभी हाल ही पाँच दिनों के भीतर ३० पंचमांगी गिरफ्तार किये हैं।

—स्वतन्त्रता-समारोह के अवसर पर हैदराबाद के रजाकारों ने कांग्रेस-जनों पर हिंसात्मक हमले किए। बोलारम में यह उपद्रव हुआ। नालगुदा स्टेशन पर तीन कांग्रेस-जनों के पेट में भाले मारे गए और ६ व्यक्तियों को मामूली छुरे के घाव लगे।

—नई दिल्ली की खबर है कि भारत-सरकार ने ब्रिटिश सरकार को लिखा है कि काश्मीर के युद्ध में पाकिस्तान की सशस्त्र सेना में जो ब्रिटिश कर्मचारी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से भाग ले रहे हैं, उस पर भारत-सरकार को घोर आपत्ति है।

—आजाद हिन्द फौज के कर्नल जी० एस० ढिल्लन, पूर्वी पञ्जाब सरकार द्वारा जनरल मोहनसिंह पर किये गए आरोपों के विरोध में आमरण अनशन कर रहे हैं।

वेद-ऋचाएँ थीं साँसों में....

लेखक, प्रोफेसर 'अंचल' एम० ए०

वेद-ऋचाएँ थीं साँसों में मुक्ति बसी थी मन में,
दृष्टि भरी थी वरदानों से मूर्त विभा थी मन में;
स्वर्ग विकल होता था बापू की आत्मा के दुख से,
'राम नाम' उज्ज्वल होता था कद उस करुणा-मुख से;
जीवित था निश्वास और संकल्प हृदय-कंपन में,
बिम्बित होती थी शिवता मुस्कानों के दर्पण में;
देह जली पर प्राणों का प्रह्लाद नहीं जल पाया,
कौन जला पाया हिमगिरि को कौन बुझा शशि पाया;
चुका वक्ष कर रक्त—अपरिमित प्रेम सिन्धु जीवन का,
देता रहा मोल जो युग युग के अभिशप्त मरण का;
अभिदेवत्व क्षमा का मानव-ममता की ईश्वरता,
मूर्त हुई थी तापस तन में पर-सेवा-वत्सलता;
कौन सुनेगा अब पुकार पीड़ित जग के जन जन की,
कौन हरेगा दाह-तृषा चेतनता के कण कण की;
हाड़ चाम के पुतलों में बलि को बिजली का चालक,
त्यागा द्युति के शोलों का अरुणाभ—पुण्य का पालक;
ऐसा था देवर्षि हमारा बापू राष्ट्र-विधाता,
ऐसा था वह अमर ज्योति का अबुझ दीप्ति का दाता;
निर्वापित हो गई आरती राम नाम के जप की,
काँप रही हैं नीवें फिर श्रद्धा-निष्ठा की—तप की;
वेद-ऋचायें थीं साँसों में सत्य-शिखा अन्तर में,
पदरज में संतत्व बसा था—देव सृष्टि थी स्वर में;
रोम रोम से चैत्य चाँदनी का चन्दन झरता था,
रोता था प्रभु स्वयं कि जब बापू का मन भरता था;
वह सहिष्णुता का देवल वह शान्ति स्नेह का संबल,
वह तन्मयता का स्वामी—उज्ज्वलता से अति उज्ज्वल;
थी संदेह अवदात विमलता उस निष्कामी तन में,
वेद-ऋचाएँ थीं साँसों में राम मूर्त था मन में;

भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी हो

क्योंकि इसका सम्बन्ध समस्त भारतीय भाषाओं से है।

लेखक, डाक्टर रघुवीर, एम० ए०, पी० एच० डी०, (लन्दन)
डी० लिट्०, (सदस्य, भारतीय विधान-परिषद्)

राष्ट्रभाषा हिन्दी ही क्यों हो ? इस प्रश्न का निर्णय शीघ्र ही भारतीय विधान परिषद् में होनेवाला है। इस समय हिन्दी के विरोधी वातावरण में कुछ मद्रासी भाइयों का हाथ दिखाई दे रहा है। इस लेख में डाक्टर रघुवीर ने यह प्रमाणित किया है कि मद्रास की प्रांतीय भाषाओं में संस्कृत की बहुलता है, ऐसी दशा में यदि हिन्दी राष्ट्रभाषा स्वीकृत हो जाती है तो दक्षिणी भाषाओं की गौरववृद्धि ही होगी। लेख विचारणीय तथा पठनीय है।

हिन्दुस्तान में अनेक भाषायें बोली जाती हैं। अतः प्रश्न यह उठता है कि कौन सी भाषा राष्ट्र-भाषा हो। उत्तरी भारत की भाषाओं में परस्पर अधिक सम्बन्ध है। उसी प्रकार दक्षिण भारत में भी। यदि हम दो भाषाओं को स्वीकार करते; एक उत्तर के लिए और दूसरी दक्षिण के लिए तो विद्वेष की अधिकांश भावना नष्ट हो जाती, परन्तु हम निश्चय ही दो भाषायें नहीं चाहते। हम केवल एक ही चाहते हैं। दक्षिण की भाषाओं का एक अपना ही समूह है। उनके शब्द-कोष का अधिकांश सर्वथा भिन्न है एवं उत्पत्ति की दृष्टि से उनके और उत्तर के व्याकरण में कोई समानता नहीं। उत्तर में प्रचलित भाषाओं में से कोई भी दूसरों द्वारा ली जा सकती है। उसी प्रकार दक्षिण में भी।

कई क्षेत्रों में उत्तरी भारत की भाषाओं को राष्ट्र-भाषा बनाने के प्रति इतना असन्तोष फैला है कि वे अँगरेजी से ही चिपका रहना पसन्द करते हैं। यह एक दुःख का विषय है। इससे यह प्रकट होता है कि हमारे देशवासी और विशेषकर जो नौकरी करते हैं एवं शासन का संचालन करते हैं स्वतन्त्र भारत में अपने उत्तर-दायित्व का अनुभव नहीं करते। राष्ट्र के हित के लिए तनिक भी व्यक्तिगत असुविधा सहन नहीं की जा सकती। यह एक ऐसी परिस्थिति है जो हमारे राजनीतिक एवं शिक्षक वर्ग द्वारा विचारणीय है। भारतवासियों को एक नये राष्ट्र के उत्पन्न होने पर आनन्दित होना चाहिए था और उसके योग्य होने के लिए अधिक से अधिक प्रयत्न करना चाहिए। वे इस तरह दासता का पल्ला पकड़कर आगे नहीं बढ़ सकते; परन्तु कहां हैं ऐसे राजनीतिज्ञ जो तहेदिल (हृदय से) शत प्रतिशत भारतीय हैं? उन्होंने स्वतंत्रता के लिए सोचा है परन्तु भारतीयता के लिए नहीं। उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्त कर ली; परन्तु भारतीयता का कहीं नामो-निशान नहीं। वर्तमान अँगरेजी शिक्षित भारतीय केवल ऊपर से ही भारतीय हैं। उनके एक-एक अस्थि का मज्जा पश्चिम के कीटाणु से पूर्णतः बिंधा हुआ है! दीर्घसूत्रिता ही दृष्टिगोचर होती है परिवर्त्तन नहीं। राष्ट्रीयता की कमी के कारण भ्रष्टता दिखलाई पड़ती है। क्या क्रान्ति के सारे स्रोत जो एक गुलाम भारत को स्वतंत्र भारत का रूप दे सकते थे नष्ट हो गये; अथवा कोई है ही नहीं जो उनके पास जाय और उन्हें उत्तेजित करे? यह निश्चय है कि अभी सांस्कृतिक क्रान्ति प्रारम्भ नहीं हुई है। इस समय हम लोगों का ध्येय धुंधला है। झंझट भी हम लोगों के अनेक हैं। इसलिए हम ठीक दिशा भी निर्दिष्ट नहीं कर पाते।

उदाहरण के लिए राष्ट्रभाषा का ही एक सरल प्रश्न लीजिए। दक्षिण का अँग्रेजी में रँगा वाचाल भाग राष्ट्रभाषा के नाम से ही कांपता है। क्यों नहीं वे उछलकर धर दबोचते राष्ट्रभाषा को? पुनः उत्तर में प्रांतीय प्रतिद्वन्द्विता अत्यन्त कटुता एवं गहराई से काम कर रही है। इन पिछले महीनों में हम लोगों ने देखा कि देश का एक अत्यन्त आगे बढ़ा हुआ भाग रोमन लिपि का समर्थन करता है। अपनी सुन्दर लिपि की जगह उनकी भद्दी लिपि का प्रयोग करना जिन्होंने हमारे अधिकारों को रौंदा; इससे बढ़कर अपमानजनक, आत्मघातक एवं नीचे गिरानेवाली बात हो ही नहीं सकती। भारतीय वस्तुओं के प्रति घृणा, इसकी संसार में कहीं भी समता नहीं और यदि कहीं आंशिक समता है भी तो वह शिक्षाप्रद है।

भारत की कई भाषाओं में रुचि रखने के कारण मैं किसी एक भाषा के प्रति दूसरी भाषाओं के विरुद्ध पक्षपात या विद्वेष नहीं करता। सभी भारतीय आत्मा का ही प्रकट रूप हैं। सभी का एक स्वतंत्र वातावरण में विकास होना जरूरी है। परन्तु यह वातावरण एक दूसरे के प्रति प्रेम का होना चाहिए। यह प्रतिद्वन्द्विता के विष से मुक्त होना चाहिए। इस प्रजातंत्र के युग में संख्या एवं विस्तार का ही ध्यान रक्खा जाता है। सबसे अधिक विस्तार एवं संख्या की ही जीत होती है। अतः इच्छा या अनिच्छा से प्रत्येक द्वारा स्वीकृत है कि यह श्रेय हिन्दी को ही प्राप्त है; परन्तु इस श्रेय के साथ ही हिन्दी पर एक बड़ा भारी उत्तर-दायित्व है जिसका भार उसको वहन करना पड़ेगा अन्यथा उसे रास्ते से हट जाना पड़ेगा। उसका उत्तरदायित्व इस पर निर्भर है कि वह एक पूर्ण विकसित आधुनिक भाषा की तरह जमीन और आसमान के बीच प्रत्येक वस्तु का प्रकटीकरण कर सके। यदि भारत को अपना मस्तक ऊँचा उठाना है तो हिन्दी को अँगरेजी, जर्मन, रूसी एवं जापानी की समता करनी चाहिये। संसार की दूसरी भाषायें अधिक विशेषता नहीं रखतीं। वे बौने के समान हैं।

भाग्यवश हिन्दी अथवा भारत की कोई भी भाषा एक सुन्दर परिस्थिति के कारण इस भार को भली भांति ढो सकती है। हिन्दी को एक अत्यन्त शक्तिशाली विचार-धारा सींचती है। उसके प्रकट करने का साधन भी सम्पुष्ट है। यह स्रोत 'प्राचीन' है। यह अधिक गहरा है। यह व्यापक है। यह अब भी शुद्ध है। यह अनन्त है और चूंकि इसका लगाव विशेष रूप से हिन्दी से ही नहीं बल्कि भारत की प्रत्येक भाषा से समान रूप में है, इस कारण उत्तर एवं दक्षिण की भाषायें पूर्वानुसार इसके द्वारा पनप एवं बढ़ सकती हैं। वर्त्तमान की आवश्यकतायें पूरी हो जायेंगी और भविष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये अधिक शेष रह जायेगा। यह एक पवित्र स्रोत है। हम लोगों ने जन्म से लेकर अपनी माँ के दूध के साथ इसका पान किया है। यह हम लोगों के जीवन एवं विचार का आधार-सा हो गया है। मैं किसी
का उद्घाटन नहीं करता अब मैं सं
का नाम लेता हूँ जो देव-भाषा है।

प्रत्येक प्रांत ने संस्कृत के प्रति
श्रद्धा प्रकट की है। आज मैं तामील
क्षेत्र से जिसको बहुत लोग नहीं
उदाहरण दूंगा। कुछ आधुनिक
उत्साहियों का यह कहना है कि ता
संस्कृत से मुक्त है। द्रविड़ या आर्य जाति
किसी भी भाषा ने ऐसा साहस
किया है। संस्कृत, हिन्दी, बंगाली, आसा
उड़िया, मराठी, गुजराती, तेलगू, कन्न
एवं मलयालम का एकमात्र
है। यह केवल तामील ही है जो
है; परन्तु यह मान लेना चाहिये
तामील और भाषाओं की
संस्कृत के कम शब्द प्रयोग में
हैं; परन्तु साथ ही यह स्वीकार
लेना चाहिये कि कठिनता में
संस्कृत का ऐसा शब्द नहीं जो
दो हजार वर्ष के इतिहास में
लेखकों द्वारा न प्रयुक्त किया गया
आयुर्वेद, खगोल, ज्योतिष एवं
शास्त्र में तामील के विचारकों, कवि
वैद्यों एवं ज्योतिषिज्ञों के
और उनके पन्ने के पन्ने संस्कृत
से भरे पड़े हैं।

वर्णमाला के प्रारम्भ होने
ईसा की दसवीं शताब्दी के निकट
लियों की भाषा स्पष्टतर हो गई।
वर्णमाला अशोक-ब्राह्मी से
है जो भारत की दूसरी लिपियों
भी महाजननी है। अतः तामीली
माला दूसरी वर्णमालाओं की
है। केवल अज्ञान लोग ही यह दावा
सकते हैं कि तामील की वर्णमा
संस्कृत से भिन्न है। स्पष्ट रूप से तामीली
वर्णमाला का तामीली भाग ही इसकी
कमी है। इस तरह से क, ख, ग, घ और
द का काम करता है। और [illegible]
च्छ, ज और झ एवं स और श
काम करता है।

आज के लिये संस्कृत के निर्मित
शब्द जो महा से प्रारम्भ होते हैं
हैं। ये शब्द तामील साहित्य में
प्राचीन काल से लेकर बीसवीं शता
के आरम्भ तक पाये जाते हैं।
उच्चारण एवं विन्यास कुछ भिन्न है।
प्रत्येक तामील शब्द के बाद मैं
का मूल शब्द कोष्ठ में दूंगा। आवश्य
के अनुसार अर्थ भी लिख दिये
मकला - कच्छम (महा - कच्छ)

शेष पेज १८ पर

कुछ शरणार्थी महिलायें जिनका पूर्वी बंगाल में बसाने का प्रबन्ध हुआ है।

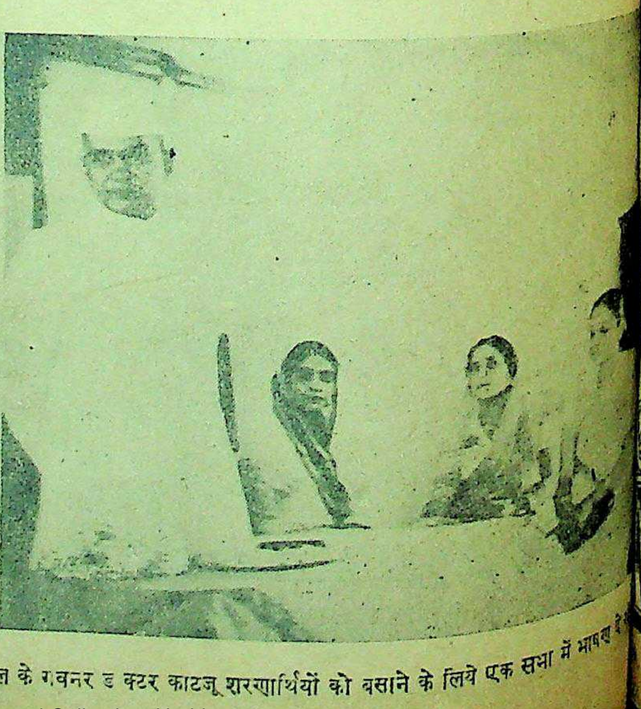

बंगाल के गवर्नर डाक्टर काटजू शरणार्थियों को बसाने के लिये एक सभा में भाषण

है। मैं किसी
करता अब मैं 'सं
नो देव-भाषा है।
संस्कृत के प्रति
। आज मैं तामी
हुत लोग नहीं
कुछ आधुनिक
कहना है कि ता
द्रविड़ या आर्य जाति
ने ऐसा साहस
हिन्दी, बंगाली, आसा
जराती, तेलगू, क
ा एकमात्र
मील ही है जो
ान लेना चाहि
भाषाओं की
शब्द प्रयोग में
ही यह स्वीकार
कठिनता से एक
शब्द नहीं जो
इतिहास में ता
युक्त किया गया
ज्योतिष एवं
क विचारकों,
ोतिषिज्ञों के
के पन्ने संस्कृत

प्रारम्भ होने
ताब्दी के निकट
स्पष्टतर हो गई।
क-ब्राह्मी से
दूसरी लिपियों
। अतः तामीली
र्णमालाओं की
लोग ही यह बात
ामील की वर्णमा
स्पष्ट रूप से तामी
ोली भाषा ही इस
ट से क, ख, ग, घ और
ा है। और छ, ज
, एवं स और श

ये संस्कृत के मि
प्रारम्भ होते हैं
ील साहित्य में
लेकर बीसवीं श
ाये जाते हैं।
ास कुछ भिन्न है।
ब्द के बाद में
ं में दूंगा। आव
ी लिख दिये ग
(महा - कच्छ)

प पेज १८ पर

या में भाषण दे

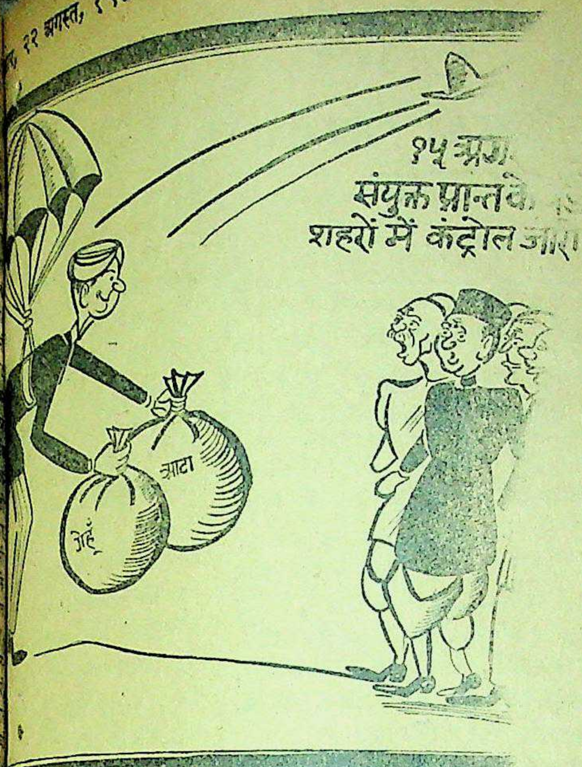
१५ अग
संयुक्त प्रान्त के
शहरों में कंट्रोल जारी
आटा
गेहूँ

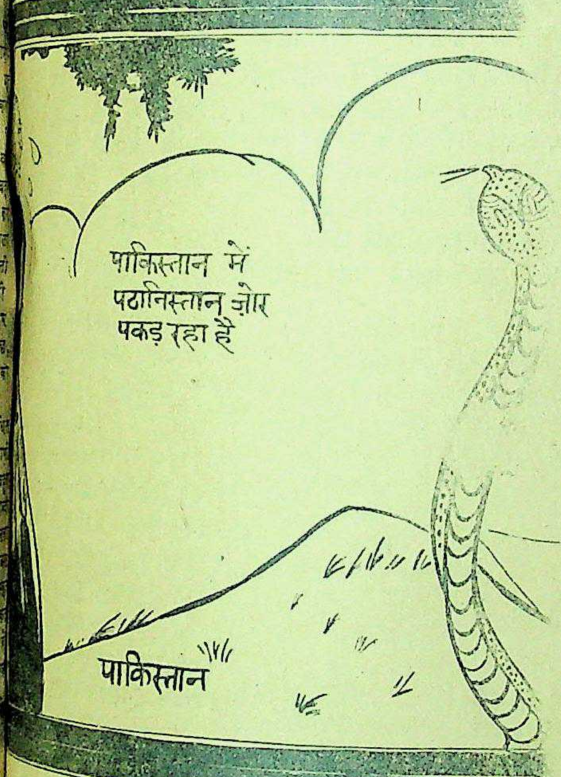
पाकिस्तान में
पठानिस्तान ज़ोर
पकड़ रहा है
पाकिस्तान

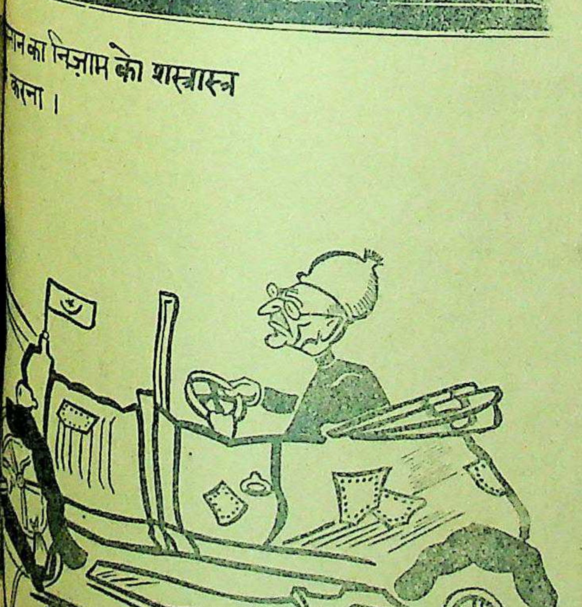
नका निज़ाम को शस्त्रास्त्र
ना।
KRISHNAKAN

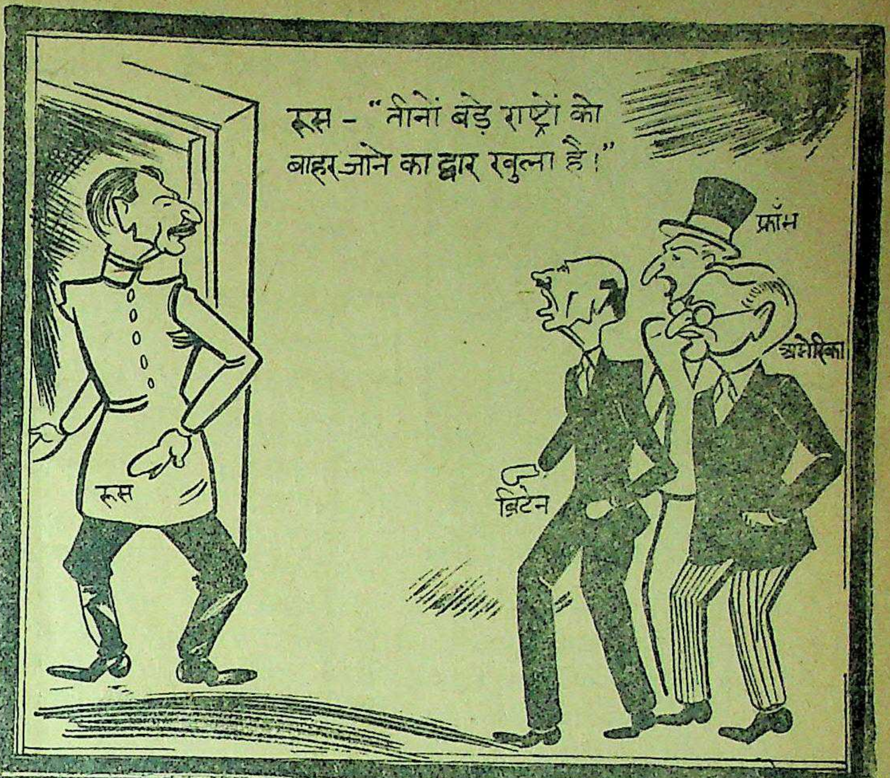
रूस – "तीनों बड़े राष्ट्रों को
बाहर जाने का द्वार खुला है।"
रूस
फ्रांस
अमेरिका
ब्रिटेन

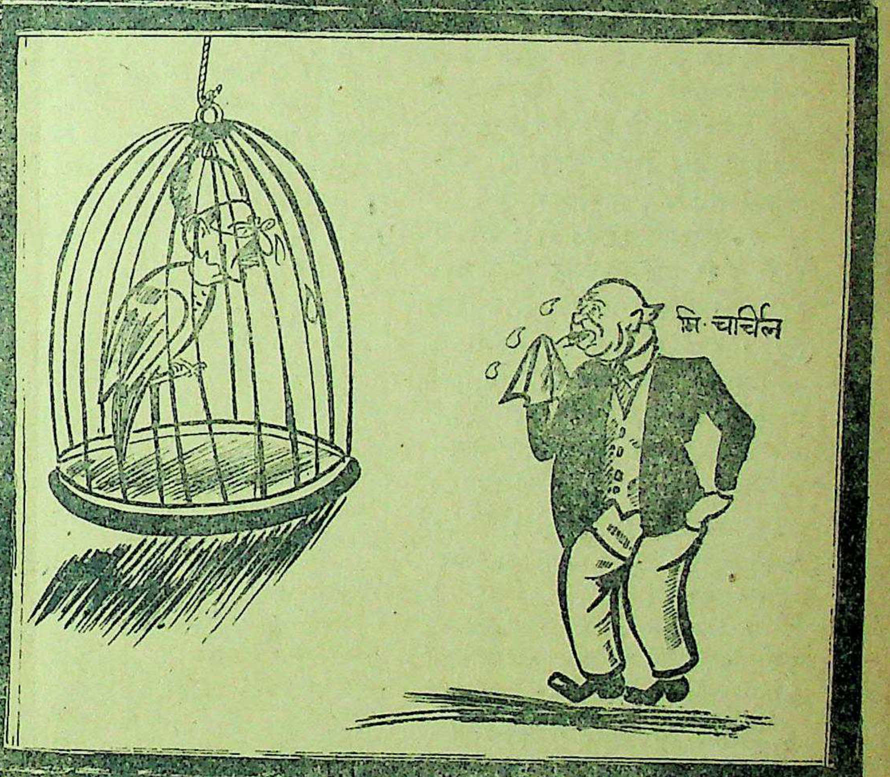

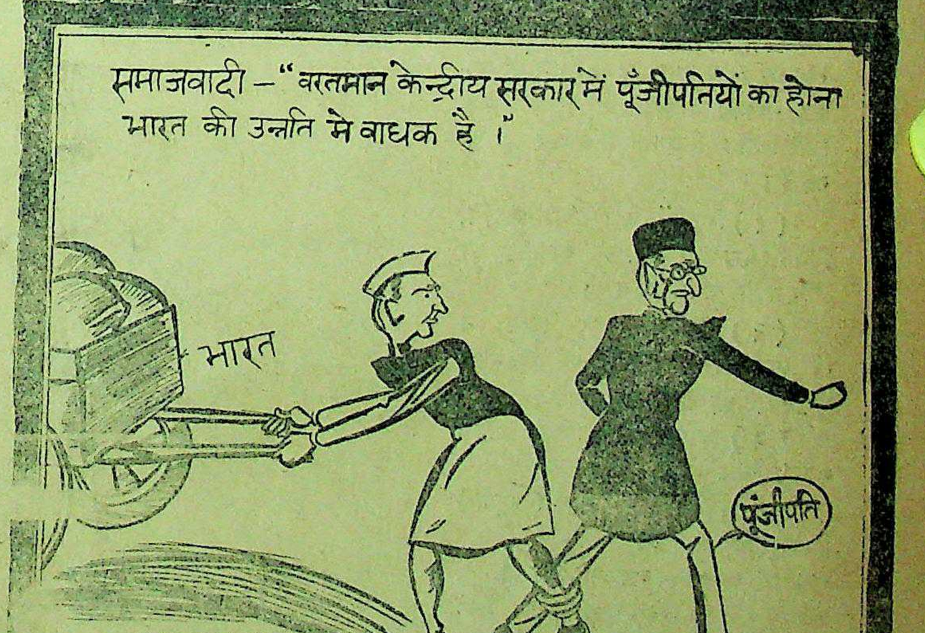
समाजवादी – "वर्तमान केन्द्रीय सरकार में पूँजीपतियों का होना
भारत की उन्नति में बाधक है।"
भारत
पूँजीपति
उन्नति का मार्ग
KRISHNAKANT

स्वतंत्र भारत में व्यवसाय

निर्यात में वृद्धि, क्रमिक अनियंत्रण की नीति तथा अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं से पूर्ण सहयोग

लेखक, श्री रामेश्वर शर्मा, एम० ए०

स्वतन्त्रता की वर्षगाँठ गत १५ अगस्त को समस्त देश में मनाई गई है। इस एक वर्ष में भारत का व्यावसायिक स्थिति कैसी रही, आयात-निर्यात तथा राष्ट्रीय आय की वृद्धि में क्या उद्योग हुआ और किन-किन योजनाओं को कार्यरूप में परिणित किया गया इसका उल्लेख इस लेख में हुआ है। लेख ज्ञानवर्द्धक और जानकारी से पूर्ण है।

भारत के वाणिज्य मंत्री डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी।

गत दो वर्षों में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में शान्ति एवं सामंजस्य की स्थापना के लिए जो प्रयत्न हुए हैं, उनमें भारत ने भी भाग लिया है। इन प्रयत्नों का अन्तिम उद्देश्य एक अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार संस्था स्थापित करना है। इस संस्था का एक अधिकारपत्र होगा, जिसमें तट-कर कम करने की तथा किन्हीं देशों को विशेष रियायतें बन्द करने की व्यवस्था रहेगी।

३० अक्टूबर १९४७ को जिनेवा में संसार के २३ राष्ट्रों ने तट-कर एवं व्यापार-सम्बन्धी साधारण समझौते को स्वीकार किया। यह समझौता १८ नवम्बर को नई दिल्ली में तथा अन्य देशों की राजधानियों में प्रकाशित हुआ। देशों को यह छूट दे दी गई कि वे समझौते के मूल मसविदे पर ३० जून १९४८ तक हस्ताक्षर कर दें तथा हस्ताक्षर करने के पश्चात् ३० दिन के अन्दर तट-कर सम्बन्धी रियासतों को लागू कर दें।

१ नवम्बर १९४७ को अर्थशास्त्रियों की परामर्शदात्री समिति और व्यापार नीति समिति का एक सम्मिलित अधिवेशन बम्बई में, प्रस्तावित अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार-संस्था के अधिकार पत्र के मसविदे पर विचार करने के लिए हुआ। इस अधिवेशन में यह स्पष्ट कर दिया गया कि भारत ने जो तट-कर सम्बन्धी रियायतें दी हैं, वे निम्नलिखित तीन सिद्धान्तों के आधार पर दी गई हैं।

(१) रियासतें ऐसी होनी चाहिये, जिनसे देश की आर्थिक व्यवस्था को हानि न हो, बल्कि लाभ हो।

(२) ऐसी वस्तु पर रियायत न दी जाय, जिस पर तीन वर्ष के भीतर पुनर्विचार की आवश्यकता पड़े।

(३) रियायतों से देश की अधिक राजस्व हानि न हो।

२१ नवम्बर को हवाना (क्यूबा) में संयुक्तराष्ट्र का व्यापार एवं नौकरी-सम्बन्धी सम्मेलन व्यापार अधिकार-पत्र के मसविदे पर विचार करने के लिये हुआ। इस सम्मेलन में भारत की ओर से कहा गया कि समझौते में अनुन्नत देशों का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिये तथा अधिकार-पत्र का संचालन ऐसी संस्था के हाथों में देना चाहिये जो पूर्णतया प्रतिनिधित्व के आधार पर बनाई गई हो।

८ जून १९४८ को राष्ट्र-संघ में भारत के स्थायी प्रतिनिधि ने समझौते के मूल मसविदे पर हस्ताक्षर किये। इसके ठीक एक मास पश्चात् भारत सरकार ने आदेश निकाल कर तट-कर सम्बन्धी रियायतों को लागू कर दिया।

१८७८ के समुद्र-कर कानून की २३वीं धारा के अनुसार, ५९ व्यापारिक वस्तुओं के आयात-कर की दर समझौते में निर्दिष्ट आयात-कर की दर के बराबर करने के लिये, कम कर दी गई। देश-विशेष से वस्तु विशेष मँगाने के विषय में भारत ने जो नीति अपना रखी थी, उसे शिथिल करके अन्य देशों को भी सुविधाएँ प्रदान करने के लिये कानून बनाया जायगा।

भारत ने निम्नलिखित मुख्य व्यापारिक वस्तुओं पर तट-कर सम्बन्धी रियायतें दी हैं—दूध और दूध की बनी हुई चीजें, डिब्बाबंद खाद्य पदार्थ, फल और शाक, निर्दिष्ट रासायनिक पदार्थ, निर्दिष्ट कोलतार के रंग, निर्दिष्ट प्रकार की मशीनें, मोटरगाड़ियाँ, रेडियो सेट, टाइपराइटर, नेत्र-चिकित्सा-यंत्र, कच्चा ऊन, उर्वरक, तथा घरेलू शीतकारक यंत्र।

भारत को निम्नलिखित मुख्य व्यापारिक वस्तुओं के निर्यात पर तट-कर सम्बन्धी रियायतें दीं गई हैं—जूट और जूट की बनी हुई चीजें, सूती वस्त्र, काजू, अभ्रक, लाख, नारियल के रेशे की चटाइयाँ, खेल का सामान, कालीन, मसाले, सुगन्धित तेल, चाय और तम्बाकू।

भारत की आयात व्यापार नीति

"तेते पाँव पसारिये जेती लाम्बी सौर" इस लोकोक्ति के अनुसार भारत-सरकार ने अपनी आय का संचालन किया है। आयात में अथवा वृद्धि विदेशी विनिमय उपलब्ध परिमाण के अनुसार पड़ी है।

१२ दिसम्बर १९४७ को आ निम्नलिखित श्रेणियाँ निर्धारित की

(१) डालर क्षेत्रों से माल, जिसके लिये उदारता से दिया जाय।

(२) डालरविहीन क्षेत्रों से वाला माल, जिसके लिए उदारता सेंस दिया जाता है।

(३) कहीं से भी आनेवाला जिसे लाइसेंस-मुक्त किया जाय।

इस श्रेणी-निर्धारण के समय औद्योगिक और आर्थिक आवश्य का विशेष ध्यान रखा गया था। लिये, यह निश्चय किया गया बड़ी मशीनों और उद्योगों में प्रयु वाले कच्चे माल के लिये दिल लाइसेंस दिये जायें तथा उप वस्तुओं के लिये या तो सर्वथा दिये ही न जायें, और यदि दिये उनके आयात की सीमा निर्धा दी जाय।

१९४८ के आरंभ से ही आ लिये पर्याप्त डालर-विनिमय मुद्रा कठिन हो गया। अतः डालरवाले से तथा स्विटजरलेंड, पुर्तगाल स्वीडन आदि अन्य दुर्लभ मुद्रावाले से आनेवाले माल पर बड़ा लगाना पड़ा। इसके लिये, १ १९४८ को साधारण खुला लाइसें ११ रद्द कर दिया गया और उ दिन के बाद एक सूची प्रकाशित जिसमें उन वस्तुओं का उल्लेख गया जिनके दुर्लभ मुद्रावाले मँगाने के लिये लाइसेंस दिये जायें बड़ी बड़ी मशीनों के लिए ही देने का निश्चय किया गया।

डालर-क्षेत्रों से आयात में के साथ ही साथ डालरविहीन आनेवाली कुछ वस्तुओं के व्यापार में अच्छी उन्नति हुई। १९४८ के पूर्वार्द्ध में व्यापारियों तथा अन्य डालरहीन क्षेत्रों से मोटरलारियाँ, बाइसिकल, बेतार के यंत्र, कोलतार के रंग, और औषधिद्रव्य, रंग, रासाय और वैज्ञानिक यंत्र आदि सूत्र वस्तुओं के लिये उदारता से दिये जाने पर सरकार ने इनके सीमा बढ़ा दी थी।

जब साधारण खुला लाइ ११ रद्द हो गया तो उसके वाली डालरहीन क्षेत्रों की वस्तु भी मुक्तहस्त होकर लाइसेंस लगे। इस खुले लाइसेंस के वस्तुएँ आती थीं, उनमें से वस्तुएँ मुख्य हैं—मशीनों मशीन का बना कपड़ा, औजार, ऊनी और सूती

शेष पेज १८

बापू
MAHATMA GANDHI
2 OCT 1869 30 JAN 1948
1½ as
INDIA POSTAGE
3½ as
12 as
10 Rs

महात्मा गांधी की स्मृति में [illegible] टिकट।

बर्लिन-संकट क्या है ?

रूस और पश्चिमी शक्तियों की प्रतिद्वन्द्विता

लेखक, श्री वंशीलाल पुंडीर, बी० ए०

आज अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में बर्लिन का संकट व्यापक रूप ग्रहण करता जा रहा है। ब्रिटेन, अमरीका तथा रूस में बर्लिन के प्रश्न को लेकर मतभेद उत्पन्न हो गया है, और यदि उलझन बढ़ती ही गई तो तीसरे महायुद्ध के छिड़ जाने की आशङ्का की जा रही है। इस लेख में, बर्लिन संकट क्या है, इसे स्पष्ट किया गया है। लेख सुन्दर और पाठनीय है।

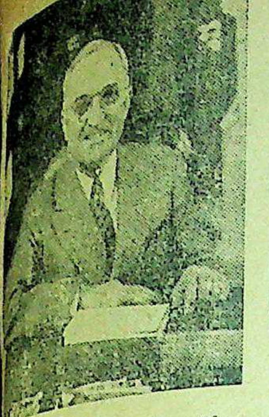

रीका के प्रेसिडेंट ट्रूमन जो बर्लिन संकट से परेशान हैं।

आजकल बर्लिन संकट के सम्बन्ध में पत्रों में बड़े बड़े समाचार छपते हैं और यहाँ तक कि शक्ति प्रयुक्त व युद्ध तक की धमकी दी जाती है। कामन सभा में ब्रिटेन के परराष्ट्र श्री बेविन ने यहाँ तक कह दिया शक्ति प्रयुक्त करने के लिए भी और सेना का विघटीकरण भी बंद गया है। साधारण पाठक के स्थिति कई समस्यायें उत्पन्न कर और वह सोचने लगता है कि कहीं र्लिन के कारण विस्फोट न हो कहीं अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति जाये। अब तक के पिछले दो नी का प्रमुख हाथ रहा है और र भी जर्मनी ही शक्तियों के ड़ने का कारण न बन जाये। र के निर्णय निकालने से पहले स्थिति का अध्ययन कर लेना

के युद्धोत्तर इतिहास पर अगर डालें तो पता चलेगा कि आत्म-पश्चात् जर्मनी पर चार राष्ट्रों है—ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस और राष्ट्रों के क्षेत्र अलग अलग और वे अपने अपने क्षेत्रों का चलाते हैं और इसके साथ न्द्रीय मित्रराष्ट्रीय कौंसिल भी एक विस्तृत रूपरेखा तैयार करती बैठकें समय समय पर हुआ और वे चारों क्षेत्रों का शासन से चलाने की योजना बनाते हैं। इसी तरह बर्लिन भी चार भागों में बँटा हुआ है जो कि बर्लिन के आस-पास का सारा क्षेत्र पूर्व में होने के कारण रूस के आधीन है इसलिए स्वाभाविक रूप में रूस वहाँ एक अच्छी स्थिति में है। जर्मनी का इस प्रकार चार भागों में बँटे रहने के कारण शासन जितनी अच्छी तरह चलना चाहिये था उतनी अच्छी तरह नहीं चल रहा है और आर्थिक कठिनाइयों के कारण असंतोष बढ़ रहा है जिसके फलस्वरूप समय समय पर बड़ी बड़ी हड़तालें हो जाया करती हैं और मजदूर अधिक राशन की माँग करते हैं। इसीलिए कई बार चारों राष्ट्रों की बैठकें हुईं कि आर्थिक प्रगति को ध्यान में रखते हुए जर्मनी को एक कर देना चाहिये और अन्य राष्ट्रों की तरह जर्मनी को भी मार्शल-योजना से समुचित सहायता मिलनी चाहिये ताकि वह अपना पुनर्निर्माण कर सके। स्मरण रहे कि अन्य कई पश्चिमी राष्ट्रों को अपना पुनर्निर्माण करने के लिए अमेरिका सहायता दे रहा है जो कि मार्शल-योजना के नाम से प्रसिद्ध है। कई बार बैठकें करके भी जर्मनी के सम्बन्ध में कोई विशेष निर्णय न लिया जा सका। आज से सात महीने पहिले लन्दन में चारों राष्ट्रों के परराष्ट्र सचिवों की बैठक हुई थी पर वह भी असफल सिद्ध हुई और उसमें भी कोई निश्चय न हुआ। उसी समय से अच्छे आसार नहीं दिखाई देने लगे थे। स्मरण रहे कि जर्मनी की योरोप में केन्द्रीय स्थिति है और योरोप की राजनीति में जर्मनी बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान रखता आया है और भविष्य में भी रखेगा।

के डिक्टेटर मिस्टर स्टैलिन।

जर्मनी की राजनैतिक समस्या न सुलझने के साथ साथ पश्चिमी राष्ट्रों व रूस के पारस्परिक सम्बन्ध बिगड़ रहे थे, क्योंकि अन्य प्रदेशों की राजनैतिक स्थिति का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। योरोप के अन्य देशों में होनेवाली घटनाओं में युद्धकालीन मित्र अब शत्रुओं की भाँति व्यवहार करने लग गये थे। चेकोस्लोवाकिया में हुई कम्युनिस्ट क्रांति के कारण भी पश्चिमी राष्ट्रों को भय पैदा हो रहा था कि रूस अपना प्रभाव-क्षेत्र बढ़ाता चला जा रहा है और सारे पूर्वी योरोप को कम्युनिस्ट बनाकर पश्चिमी देशों को भी प्रभाव में लाना चाहता है। इसके अलावा संयुक्तराष्ट्र संघ की बैठकों व अन्य अवसरों पर भी चारों राष्ट्र एक सम्मति पर नहीं पहुँच सके। इस प्रकार उनके सम्बन्ध सुधरने के बजाय बिगड़ते ही चले गये।

इन्हीं परिस्थितियों में बर्लिन-संकट उपस्थित हुआ है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि सात महीने पहले (फरवरी में) लन्दन में परराष्ट्र सचिवों की बैठक के असफल होने पर इसके आसार दिखाई देने लगे थे कि जर्मनी की समस्या सुलझाना कठिन है। इसके पश्चात् पहिली अप्रैल को रूस ने बर्लिन में आवागमन के नये प्रतिबन्धों को ३६ घंटे की सूचना पर लगा दिया जिससे पश्चिमी मार्ग बन्द हो गये और उनको बहुत धक्का पहुँचा। पश्चिमी राष्ट्र इस सबके लिये तैयार नहीं थे और वे नहीं समझते थे कि रूस एकाएक इस प्रकार का कदम उठायेगा। इसलिये इस चीज का मुकाबला करने के लिये उन्होंने कोई विशेष तैयारी नहीं कर रखी थीं गो कि वे सदा से कहते आये थे कि हम बर्लिन में अवश्य ठहरेंगे। इस वर्ष की लेबर पार्टी कान्फरेंस में श्री बेविन ने यही कहा था। यही उन्होंने कामन सभा में कई बार कहा। अमेरिका की ओर से भी जनरल क्ले ने कहा था कि हम बर्लिन छोड़ने के लिये तैयार नहीं हैं पर सबको इस अवस्था का अचानक सामना करना पड़ा और पश्चिमी राष्ट्रों ने इस प्रकार की स्थिति का अनुमान नहीं लगाया था। बर्लिन के घेरे के कारण पश्चिमी राष्ट्रों के सामने कई समस्याएँ उठ खड़ी हुईं क्योंकि पश्चिमी क्षेत्र के २० लाख जर्मनों को राशन देने और उनका उचित प्रबन्ध करने की एक नैतिक जिम्मेदारी आ जाती है जिसको कि घेरे की अवस्था में निभाना कठिन हो जाता है। इसके साथ साथ वहाँ सेना के तीन गैरीसन भी हैं जिनके लिये सब चीजें भेजनी चाहियें। इस दृष्टिकोण से पश्चिमी बर्लिन को २००० टन अन्न प्रतिदिन चाहिये और २० लाख व्यक्तियों की रोजी का भी उचित प्रबन्ध होना चाहिये ताकि वह पुरानी कड़ी टूट न जाये और जर्मनों के दिलों में पश्चिमी शक्तियों की कमजोरी की भावना घर न कर ले। इसके साथ साथ औद्योगिक कल-कारखानों को कच्चा माल, कोयला और बिजली पानी का भी प्रबन्ध करना है। अन्यथा अधिक गड़बड़ी फैलने की आशंका है। घेरे के कारण कई बार आवागमन के नये नियमों के बनने से बर्लिन-निवासियों को कठिनाइयाँ उठानी पड़ीं और कई बार बिजली न मिल सकने के कारण अँधेरे में ही रहना पड़ा।

इसके साथ साथ जून के महीने में रूस ने पूर्वी जर्मनी व बर्लिन में मुद्रा-सुधार किया जिससे कई समस्यायें उठ खड़ी हुईं। कारखानों में मजदूरी घट गई और उत्पादन भी अव्यवस्थित हो गया। २३ जून तक मजदूरी बहुत घट गई थी और सब लोग बैंकों व अन्य दफ्तरों में अपने पुराने सिक्कों को बदलवाने में व्यस्त रहते थे। बैंकों के सामने लम्बी कतारें खड़ी रहती थीं। मुद्रा-सुधार के कारण पूर्वी और पश्चिमी धन का संबन्ध बदलता रहता था जिससे सारे आर्थिक संसार में अव्यवस्था-सी फैल गई थी। रूसी मुद्रा-सुधार के दो उद्देश्य थे, एक तो पश्चिमी मुद्रा को बाजार से दूर कर देना और दूसरे में उसकी कीमत घटा देना। इस कारण तथा जीवन की अन्य आवश्यक वस्तुओं की कमी के कारण आर्थिक अव्यवस्था फैल रही थी।

पर इस तरह घेरा डालकर रूस चाहता क्या है, यह हमें देखना है। रूस वास्तव में यह चाहता है कि बर्लिन से अन्य शक्तियाँ निकल जायें और पूरे बर्लिन पर उसका अधिकार हो जाये। या इतना न हो सके तो उसे कुछ और सुविधायें प्राप्त हो सकें, क्योंकि यह तो निश्चित है कि बर्लिन के लिये वास्तव में कोई राष्ट्र युद्ध मोल नहीं लेगा अन्यथा यह एक बड़े भारी अन्तर्राष्ट्रीय संकट का रूप धारण कर लेगा। सब चाहते हैं कि यह समस्या भली भाँति सुलझ जाये। अमेरिका और ब्रिटेन चाहते हैं कि पहले घेरा उठ जाये तब हम आगे बातचीत चलायें। अब देखना है कि किस तरह यह समस्या सुलझती है ?

इसके साथ साथ यह भी देखना है कि जर्मनी के और बर्लिन के निवासी क्या चाहते हैं ? क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र उनके सहयोग व सहानुभूति के आधार पर ही वहाँ भली भाँति शासन चला सकता है। अभी तक सैनिक शासन होने के कारण वे लोग अपनी भावनायें प्रदर्शित नहीं कर पाये हैं और राजनैतिक दलों व समाचारपत्रों को उतनी खुली छूट नहीं है फिर भी जितनी है उसके आधार पर कहा जा सकता है कि अधिकांश व्यक्ति सारे जर्मनी का एकीकरण चाहते हैं ताकि आर्थिक और राजनैतिक पुनर्निर्माण हो सके। इसके साथ साथ पश्चिमी क्षेत्रों में असन्तोष काफी दिखाई देता है जैसा कि समय समय पर होनेवाली हड़तालों से विदित होता है। यद्यपि अमेरिकन व ब्रिटिश अखबार कहते रहते हैं कि पश्चिमी जर्मनी पश्चिमी रंग-ढंग

शेष पेज १३ पर देखिए

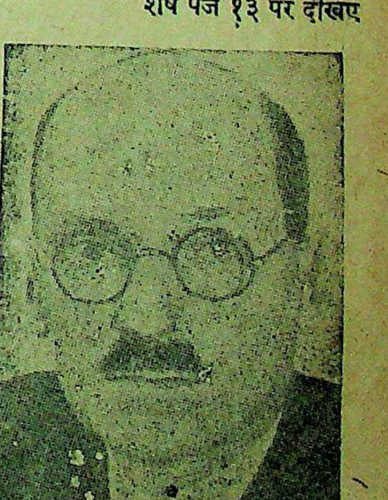

ब्रिटेन के प्रधान मंत्री मिस्टर एटली।

भारत की रियासतों का एकीकरण

स्वाधीनता के प्रथम वर्ष में, रियासती एकता की ऐतिहासिक सफलता

"इसमें सन्देह नहीं कि पीछे की ओर दृष्टि निक्षेप करनेवाला कोई भी इतिहासकार यह अनुभव किये बिना न रहेगा कि आज के भारतीय इतिहास का एक मुख्य अध्याय, भारत में रियासतों का समाहार है।

"किन्तु इस बाह्य समाहार से भी अधिक महत्त्वपूर्ण आन्तरिक समाहार की वह धारा है जो रियासतों में, लोक तंत्रात्मक संस्थाओं एवं उत्तरदायी शासन के 'उत्थान' के रूप में प्रवाहित है।"——पंडित नेहरू

...और इस द्विविध समन्वय की कहानी ही इस लेख का मुख्य विषय है।

अपनी स्थापना के ठीक एक वर्ष बाद, रियासती सचिवालय ने जब ५ जुलाई को अपना विवरणपत्र (व्हाइट पेपर) प्रकाशित किया, तो उसकी साल भर की सफलताओं का चित्र, समस्त राष्ट्र को स्पष्ट हो गया। वर्षपर्यन्त, सरकार की सर्वोत्तम सफलता के प्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में, इस पत्र का प्रायः सर्वत्र ही स्वागत किया गया। यह भी कहा गया कि इस विवरण-पत्र में हैदराबाद तथा काश्मीर की समस्याओं का उल्लेख भी आवश्यक था, क्योंकि उलझी हुई इन समस्याओं की जाँच से पता चलता है कि पाँच सौ से अधिक रियासतों के सिलसिले में, ऐसी समस्याएँ कहाँ तक टाली जा सकीं। यहाँ यह बताना आवश्यक है कि वे समस्याएं दोनों ही 'प्रभुत्व' (पैरामाउंटसी) के शासन और बिना शर्त उसकी समाप्ति के कारण उठी थीं।

'प्रभुत्व' की समाप्ति

सम्राट् की सरकार के ३ जून १९४७ के वक्तव्य द्वारा 'प्रभुत्व' (पैरामाउंटसी) समाप्त कर दिया गया। यद्यपि सिद्धान्ततः एवं वस्तुतः, दोनों ही रूपों में, प्रभुत्व द्वारा रियासतों पर एक विदेशी सत्ता अधिकारारूढ़ की गई थी, किन्तु उससे एक लाभ भी हुआ था। यह लाभ था, भारतपर्यन्त, विशेषकर राष्ट्र-रक्षा, परराष्ट्र विषय तथा संवाद-वहन के मामलों में, शासनात्मक एकसूत्रता, किन्तु "आमतौर पर समस्त भारत की अच्छी शासन-व्यवस्था के लिए।" साथ ही, 'प्रभुत्व' में दो....अनिवार्य दोष भी थे। इनमें से एक दोष यह था कि उसने रियासतों के निकृष्ट पद को निरंतर कायम रखा और दूसरा यह कि उसने रियासती प्रजा की राजनीतिक आकांक्षाओं की न केवल अवहेलना की, बल्कि उनके प्रति शत्रुता के रुख से काम लिया। यही कारण है कि 'प्रभुत्व' की समाप्ति पर देश में किसी को शोक नहीं हुआ। किन्तु यह जरूर हुआ कि इस 'प्रभुत्व' के अंत से ५६० देशी रियासतों के शासकों को वह सैद्धान्तिक स्वाधीनता प्राप्त हुई, जिसके लिए उन्होंने कभी कोई लड़ाई नहीं लड़ी थी और इस प्रकार भारतीय संघ के स्थायित्व के लिए एक चिंताजनक समस्या भी उत्पन्न हो उठी।

यह एक ऐसा खतरा था कि यदि सरदार पटेल तथा नरेशों की सम्मिलित बुद्धिमत्ता द्वारा उसका निराकरण न किया गया होता तो यह देश छोटी तथा बड़ी अगणित स्वाधीन टुकड़ियों में बँट जाता, उसकी अर्थ-व्यवस्था एवं एकता नष्ट हो जाती, सुरक्षा भंग होने का भय प्रतिक्षण उपस्थित रहता और उसकी लोकतंत्रात्मक भावनाओं का उद्वेग दूषित हो जाता तथा यूरोपीय बाल्कन प्रदेश की भाँति वह भी छोटे-छोटे स्वाधीन भू-खंडों में विभाजित होकर अपनी राष्ट्रीय विशालता एवं महत्ता को एक दीर्घकाल के लिए खो बैठता।

सम्राट्-सरकार की हमें सराहना करनी चाहिए कि उसने ऐसी सम्भावना को रोकना चाहा और शायद इसीलिए मंत्रि-मिशन योजना के अंतर्गत उसने अनुरोध भी किया कि रियासतों को किसी एक प्रस्तावित स्वाधीन उपनिवेश डोमिनियन में सम्मिलित हो जाना चाहिए। इस योजना द्वारा सिफारिश की गई कि रियासतें परराष्ट्र विषय, रक्षा तथा संवाद-वहन को संघ के सुपुर्द करके, शेष विषयों तथा अधिकारों को अपने पास रख सकती हैं। साथ ही, १० लाख पीछे १ के हिसाब से, वे विधान-परिषद् में अपने प्रतिनिधित्व भी भेज सकती थीं। किन्तु, ब्रिटिश सरकार की यह सिफारिशें सलाहमात्र के रूप में की गई थीं और इसके अतिरिक्त, रियासती प्रजा का तो उनमें उल्लेख तक न था।

सरदार पटेल-द्वारा स्पष्टीकरण

रियासती विभाग का काम सँभालने के तुरंत बाद, सरदार पटेल ने स्थिति से सम्बन्ध रखनेवाली अनेक बातें स्पष्ट कर दीं। उस अवसर पर दिये गये अपने एक भाषण में उन्होंने बताया कि प्रभुत्व से मुक्त होने की नरेशों की इच्छा इसलिए तो ठीक है कि इस प्रकार वे एक विदेशी आधिपत्य की अधीनता से मुक्ति पा जायेंगे किन्तु आधिपत्य से इस मुक्ति का मतलब यह हर्गिज न होना चाहिये कि उसका प्रयोग भारत के सामान्य हितों के विरुद्ध अथवा जन-कल्याण के प्रभुत्व' के विरुद्ध किया जायगा। साथ ही उन्होंने नरेशों को यह आश्वासन भी दिया कि उनकी नीति रियासती सचिवालय के कार्य का संचालन इस रीति से करने की कभी न रहेगी जिससे प्रतीत हो कि एक पक्ष दूसरे पर आधिपत्य कायम करना चाहता है। उन्होंने कहा कि "यदि किसी प्रकार के आधिपत्य को स्थान भी मिलेगा तो वह हमारे दोनों पक्षों के हित एवं कल्याण का ही आधिपत्य होगा"। दूसरे शब्दों में राष्ट्रीय एकता तथा जनेच्छा की सर्वोपरिता ही रियासतों के मामलों में मुख्य विचारणीय बातें होंगी और नवीन व्यवस्था के अंतर्गत इन रियासतों का पद भी अधिक ऊंचा रहेगा तथा 'संघ' के 'व्यवस्थापक-मंडल' में उनका समुचित प्रतिनिधित्व भी रहेगा।

इसके बाद बीस दिन बाद, २५ जुलाई १९४७ को लार्ड माउंटबटन ने भी, जो अभी वाइसराय के ही पद पर आसीन थे, सरदार पटेल के [illegible] जोर देते हुए नरेशों को सचेत किया और कहा कि उपनिवेश सरकार से आप उसी प्रकार नाता नहीं तोड़ सकते, जिस प्रकार कि आम जनता से, जिसके कल्याण के आप उत्तरदायी हैं, नाता नहीं तोड़ सकते।

नरेशों का देश-प्रेम

भारतीय संघ में सम्मिलित होने की इन अपीलों का असर नरेशों पर अच्छा पड़ा। कुछ नरेशों ने शुरू में कुछ सुस्ती अवश्य दिखाई और थोड़ा विरोध भी किया, किन्तु अंततोगत्वा जूनागढ़, कश्मीर तथा हैदराबाद को छोड़कर, अन्य सारे नरेश १५ अगस्त १९४७ से पहले-पहले 'भारतीय संघ' में सम्मिलित हो जाने के लिए राजी हो गये।

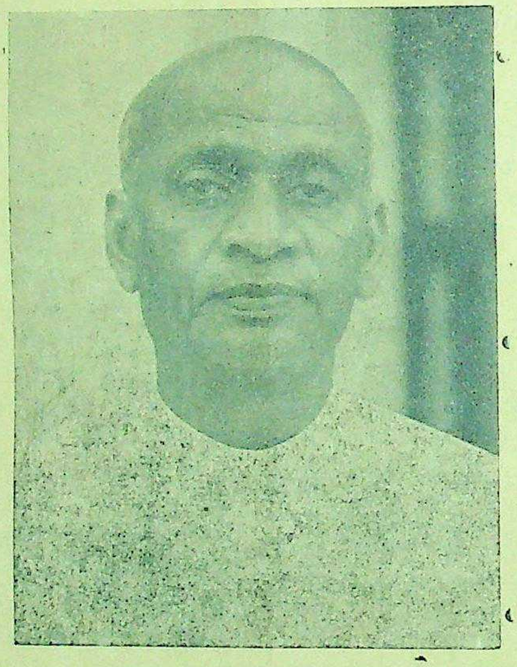

भारत-सरकार के उपप्रधान मंत्री तथा देशी राज्य-विभाग के प्रधान सरदार वल्लभभाई पटेल।

यह एक भारी सफलता थी। जैसा कि रियासती विवरण-पत्र में बताया गया है, "बहुतेरे लोग आशा लगाये बैठे थे कि देश के बँटवारे तथा रियासतों की अस्तव्यस्तता के सम्मिलित भार से भारत सरकार बैठ जायगी।" यह भी उल्लेखनीय है कि जिस समय सरदार पटेल तथा लार्ड माउंटबटन इस बात पर जोर दे रहे थे कि भूगोल, एवं जनेच्छा के कारणों से रियासतों को एक न एक संघ में विवश होकर सम्मिलित होना होगा, उसी समय श्री जिना तथा अन्य पाकिस्तानी नेता, रियासती नरेशों के पूर्ण-स्वाधीन रह सकने के अधिकार का प्रतिपादन कर रहे थे यद्यपि आज कलात तथा कश्मीर रियासतों के प्रति पाकिस्तान के रुख से सभी परिचित हो चुके हैं। [illegible] नरेशों ने, किसी के बहकावे में न आकर, राष्ट्रीय भारत के ही अनुरोध को स्वीकार किया, जो उनके देश-प्रेम का द्योतक है। और भारतीय नेताओं ने उनके इस कार्य का समर्थन समादार भी किया है।

उत्तरदायी शासन की भावना

इस प्रकार, भारतीय संघ में रियासतों के सम्मिलन से राष्ट्रीय एकता के लिए भूमि-मात्र तैयार हुई। राष्ट्रीय एकता वस्तुतः स्थापित करने के लिए यह आवश्यक था कि रियासतों के विधान भारतीय संघ की अन्य 'इकाइयों' के विधानों के सदृश लोकतंत्रात्मक हों। यद्यपि आरंभ से ही, भारतीय विधान के निर्माण का आधार लोकतंत्र रखा गया, पर रियासतों में इस सिद्धांत का अनुसरण कुछ संघर्ष के बाद ही संभव हुआ। इस दृष्टि से हम कह सकते हैं कि यद्यपि १५ अगस्त १९४७ का दिन ब्रिटिश भारत के लिए स्वाधीनता-आंदोलन की समाप्ति का प्रतीक था, किन्तु रियासतों में उत्तरदायी शासन के आंदोलन का जोरदार अध्याय, इस तारीख के बाद ही आरंभ हुआ। हर रियासत में इस आंदोलन का संचालन वहाँ के ही जन-संघटन द्वारा, चाहे उसका नाम रियासती कांग्रेस हो और चाहे प्रजा-मंडल या प्रजा-परिषद्, सम्पन्न हुआ और जब तक उसका स्वरूप अहिंसात्मक तथा असाम्प्रदायिक रहा, केन्द्रीय सरकार का समर्थन भी उसे सदैव प्राप्त होता रहा। ऐसा ठीक ही था, क्योंकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस सदा से ही कहती आई है कि भारतीयों की स्वतंत्रता अविभाज्य है। रियासती जनांदोलन को कांग्रेस का नैतिक समर्थन सदा से प्राप्त रहा है और अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा सम्मेलन की अध्यक्षता, पंडित नेहरू, सरदार पटेल, शेख अब्दुल्ला तथा डा० पट्टाभि सीतारमैया जैसे उसके प्रथम श्रेणी के नेता कर चुके हैं।

नरेशी व्यवस्था

अतएव रियासतों के प्रति भारत सरकार का रुख बराबर ही स्पष्ट, असंदिग्ध एवं गांधी जी के राजनीतिक आदर्शवाद के अनुकूल रखा गया है। यही कारण है कि यद्यपि 'विधान-परिषद्' ने 'भारतीय संघ' को प्रजातंत्र का रूप देने की घोषणा की; किन्तु भारत-सरकार ने रियासतों में से नरेशीय व्यवस्था की समाप्ति का कभी विचार नहीं किया है। इसके विपरीत, उसने केवल यही अनुरोध किया है कि रियासतों को चाहिये कि वे अपने अस्तित्व को लोकतंत्र तथा उत्तरदायी शासन के आधार पर स्थायी करें और नरेशों की स्थिति वैधानिक प्रमुख की हो जाय तथा जन-कल्याण का अहित न करते हुए उनके परम्परागत वैयक्तिक एवं विशेष अधिकार भी कायम रहें। अब तक की राजनीतिक [illegible] की मुख्य बात यही है कि शासक की व्यक्तिगत इच्छा की अपेक्षा [illegible] को घोषित इच्छाओं का बल अधिक [illegible] कांग्रेस द्वारा घोषित नीति के [illegible] भारत-सरकार अब तक सदा ही [illegible] की इच्छा स्वीकार करने को प्रस्तुत है और आवश्यकतानुसार, जन-मत द्वारा जनेच्छा मालूम करने की [illegible] भी उसने स्वीकार की है। इन [illegible] पर चलनेवाली सरकार के लिए [illegible] स्वाभाविक ही है कि वह [illegible] सर्वत्र ही उत्तरदायी शासन-प्रणाली [illegible] विस्तार हो।

पिछले कई महीनों का [illegible] इस बात का प्रमाण है कि रि[illegible] उत्तरदायी शासन की स्थापना का [illegible] रियासती सचिवालय की [illegible]

शेष पृष्ठ १४ पर

हिज मैजेस्टी शाह यूसुफ मिर्जा

लेखक, श्री विजयकुमार मिश्र

अवध के नवाबों की नवाबी अत्यन्त मनोरंजक और प्रसिद्ध है। उनकी नवाबी आज भी लोगों का मनोरंजन करती हैं। यह कहानी भी मनोरंजक है और के नवाबों की पुरानी नवाबी का स्मरण इस समय भी दिलाती है। कहानी पठनीय तथा सुन्दर है।

ज मैजेस्टी अबुल फतेह मोईनुद्दीन र मुलतान ए जमाँ नौशेरवाँ ए हजरत शाह' यूसुफ मिर्जा के त का आज प्रथम वर्ष व्यतीत । १५ अगस्त १९४७ को अँगरेजों छोड़ते ही अवध की सलतनत पर फ का 'अधिकार' हो गया था दिन भारतीय विधान परिषद् तथा पश्चिमी बंगाल एसेम्बली तथा नवाब वाजिदअली शाह के दा यूसुफ मिर्जा अपने पूर्वजों र बैठे।

१९४७ के प्रथम पखवारे में जिला दिल्ली में रेलगाड़ियों जहाजों से लेकर केन्द्रीय टे पापोश तक का बँटवारा में जिन्ना के साथी और के हिन्दू और सिक्ख अल्प- विनष्ट करने के मंसूबे बाँध लखनऊ में वसीकेदार एक वर्ग अवध की सलतनत होने का ख्वाब अफीम की देख रहा था, गंगाप्रसाद कुछ ही दिन पूर्व प्रांतीय के अध्यक्ष महन्त दिग्विजयनाथ ००० हनुमानों और घटोत्कचों सरकार की जड़ हिला देने थी, वहीं एक दिन शाम ने नवाब घड़ों में दबाई हुई रंगी शेरवानियाँ डाटे काकुलें बनाते डेढ़ माशे वजन छीली नुक्कीदार टोपियाँ अवध की सलतनत पर कब्जा बाँध रहे थे। बिना टिकट था, हाल खचाखच भर

ने मुस्लिम लीगी नवीन की निरर्थकता को ताड़कर को सलाम कर चले, उनको के यहाँ रोजगार ही मिल चौड़ी तकरीरें हुई, शायरी और वाशिन्द गाने अवध की मजलिस ने शाह वाजिद- के पोते शाह यूसुफ मिर्जा प्रति वफादारी का हलफ लेते अनुरोध किया कि वे अपने पुराने बेहतर रिआया का दिल ठंडा कश्मीरी पंडित को वजीरे न्यायमंत्री बनाने का लोभ में बुला लिया गया था। देने के वकीलों में हैं और उनके एक भाई किसी समय लखनऊ में कोर्ट इंस्पेक्टर थे। इन्होंने सोचा कि जब सर तेजबहादुर ब्रिटिश भारत के कानून-सदस्य बन सकते हैं, तो मैं ही क्यों न शाहे अवध का वजीर अद्ल बन जाऊँ। आपने बड़ी लच्छेदार उर्दू में तकरीर की, जिसमें फारसी मिलाने में नवाबों को भी मात कर दिया। किस्सह कोतह जलसा बर्खास्त हुआ और शाहजादा यूसुफ को लखनऊ आकर ताजपोशी कराने के लिये सूचना भेज दी गई।

शाहजादा यूसुफ अवध के अन्तिम राजवंश में सबसे बुजुर्ग तो नहीं, किन्तु बुद्धि में अवश्य सबसे बड़े कहे जा सकते हैं, शाह वाजिदअली शाह जब कलकत्ता में नजरबन्द किये गये थे, उसी समय उन पर और उनके निजी परिवार के सदस्यों को नोटिस दे दिया गया था कि वे अधिकारियों की अनुमति के बिना लखनऊ में प्रवेश नहीं कर सकते। यह नोटिस बाद में उनके वंश में पैदा होनेवाले प्रत्येक व्यक्ति के लिये लागू कर दिया गया और शाहजादा यूसुफ मिर्जा पर भी स्वयमेव लागू हो गया। परन्तु लगभग २० वर्ष पूर्व उन पर से यह नोटिस हटा लिया गया, क्योंकि तब तक ब्रिटिश सत्ता अवध में भली भाँति जम चुकी थी और लोग भी नवाबों को भूल चुके थे, बल्कि वाजिदअली के विरुद्ध अँगरेजों के ऐयाशी सम्बन्धी प्रचार के कारण लोग नवाबों से घृणा भी करने लगे थे। परन्तु यह प्रतिबन्ध हट जाने के बाद भी शाहजादा यूसुफ लखनऊ कभी न आये। शाहजादा उच्च शिक्षा प्राप्त विद्वान् और बुद्धिमान् व्यक्ति हैं और अपनी लखनऊ यात्रा की निरर्थकता को समझते थे, शायद पुराने घावों को नया भी न करना चाहते हों। उन्हें अब भी भारत-सरकार से ६००० रु० वार्षिक गुजारा मिलता है और वे उसी में प्रसन्न हैं।

शाहजादा यूसुफ ४५ वर्ष के इकहरे किन्तु सुगठित बदन के व्यक्ति हैं। वे चश्मा लगाते हैं तथा शायरी करते हैं। राजनीति में उन्हें रुचि है और वे विधान-परिषद् के सदस्य हैं। वाजिदअली शाह के १२५ बेगमें तथा ७३ पुत्र थे, किन्तु शाहजादा यूसुफ केवल दो पत्नियों से ही सन्तुष्ट हैं। उनकी बड़ी बेगम उन्हीं की एक बहन है। यह विवाह उनके वंश की परम्परा के अनुकूल ही हुआ है। उनकी दूसरी पत्नी से उन्हें एक पुत्र तथा दो पुत्रियाँ हुई हैं।

शाहजादा यूसुफ अपनी बुआ अर्थात् शाह वाजिदअली शाह की कन्या शाहजादी राजमारा खुदेजा बेगम के बड़े प्रियपात्र थे, शाहजादी की मृत्यु कुछ मास पूर्व ही लखनऊ में हुई है, यथार्थ में अवध में नवाबी कायम करने के समर्थकों का एक वर्ग शाहजादा यूसुफ के विरुद्ध था, वे किसी अन्य शाहजादे के समर्थक थे। किन्तु ९०वर्षीया शाहजादी खुदेजा बेगम ने शाहजादा यूसुफ का पक्ष लिया और उनके

मद्रास के प्रधान मंत्री माननीय श्री रामस्वामी रेड्डियर महात्मा गांधी की मूर्ति का अनंतपुर में उद्घाटन कर रहे हैं

गीत

लेखक, श्री नर्मदेश्वर उपाध्याय

मुखरित हुए गीत पुलकित हुआ गात !
मंथर गति से बयार
खोल रही तिमिर-द्वार
अकाश - वीणा के
झंकृत हुए तार
सुधि के जले दीप जगमग हुई रात !
उर का व्यथा-भार
पल में हुआ क्षार
मन को मिली तृप्ति
जग को मिला प्यार
अपलक रही देख रजनी रजत-स्नात !
स्वर के खिले फूल
परिचित हुए कूल
पूरी हुई साध
उड़ती किरण-धूल
अरुणिम हुई प्रीत स्वर्णिम हुआ प्रात !
मेरे मधुर प्रान
करने सुधा - स्नान
गूँजे फिर अंतर में
सुख के सजल गान
प्राची-तट पर झर-झर झरता निर्मल प्रभात !
मुखरित हुए गीत पुलकित हुआ गात !!

दावे पर अपनी मोहर लगाई। यह आखिरी कागज था, जिस पर शाहजादी ने हस्ताक्षर अंकित किये।

यहाँ शाहजादी खुदेजा बेगम का कुछ जिक्र करना अप्रासंगिक न होगा, दुनिया में अब भी कुछ लोग ऐसे हैं, जो हीनतम स्थिति में पहुँच जाने पर अपनी पुरानी प्रतिष्ठा परम्परा औरस्वभाव नहीं त्यागते। शाहजादी खुदेजा बेगम ऐसी ही रमणी थीं। लखनऊ में एक टूटे दुमंजिले महल में वे रहती थीं। ७५ वर्ष से उस महल की मरम्मत नहीं हुई, क्योंकि शाहजादी को जो २५० रु० महीना वसीका मिलता था, वह उनके खिदमतगारों को ही, जिन्हें नौकरी पर बरकरार रखना उनकी एक शान थी, पूरा नहीं पड़ता था। शाहजादी निहायत गरीबी में रहीं, किन्तु किसी दिन उसने कहीं हाथ नहीं फैलाया। नौकरों की संख्या कम करने के लिये। अनेक हितैषियों ने उन्हें सलाह दी, पर उन्होंने स्वयं किसी नौकर को नहीं हटाया और वे बूढ़े भी उनकी रोटियाँ छोड़कर कहाँ जाते? शाहजादी के लिये मशहूर है कि उन्होंने अपने महल की जनानी ड्योढ़ी के बाहर कभी कदम नहीं रखा और ७५ वर्ष तक वह केवल तीन कमरों और एक आँगन के बाहर कहीं नहीं गई। उनके कमरों की सड़क की ओरवाली खिड़कियाँ सदा बन्द रहती थीं और उन्होंने, जिनकी मृत्यु १९४७ के अन्त में हुई, कभी बिजली, पानी का नल, मोटर, रेल, सिनेमा आदि नहीं देखा। शायद आकाश में उड़ते हुए विमान पर उनकी दृष्टि पड़ गई हो। शाहजादी का कहना था कि फिरंगी के राज्य में बाहर निकलना शाहजादियों के लिये निर्लज्जता की बात है, उनको वाजिदअली शाह की दूसरी पुत्री शाहजादी बउम आरा जकिया बेगम की कब्र के पास दफनाया गया और उनकी अन्त्येष्टि में केवल पाँच सात नवाब ही शामिल थे।

हाँ, तो शाहजादी खुदेजा बेगम के समर्थन पर युसुफ का जोर बढ़ा और उसे लखनऊ आकर ताजपोशी का संदेशा भेज दिया गया, उसके समर्थकों ने अपने नवागत शाह को स्टेशन से जुलूस के साथ लाने का निश्चय किया, किन्तु शान्ति भङ्ग होने की आशंका से पुलिस ने इसकी अनुमति न दी। फिर भी स्टेशन पर सैकड़ों मुसलमानों ने, जिनमें अधिकांश नवाब थे, उनका स्वागत किया और जिस १५ अगस्त को श्रीमती सरोजिनी नायडू युक्तप्रांत के गवर्नर के पद पर प्रतिष्ठित हुईं, उसी दिन शाहजादा यूसुफ मिर्जा की भी ताजपोशी हुई। उनके समर्थकों ने वाजिदअली शाह के तख्त महल को पाने की चेष्टा में विफल होकर तय किया कि शीशमहल में, जो आजकल नवाब शीशमहल नामक ताल्लुकदारों के कब्जे में है, ताजपोशी की जाय। इस शीशमहल में शाहे अवध के बड़े वजीर रहा करते थे।

जो लोग ताजपोशी के समय उपस्थित थे, उनका कहना है कि ताजपोशी की सारी रस्में उसी प्रकार अदा की गई, जैसी इस अवसरों पर होती हैं। शाही खानदान के पुराने पुरोहिती वंश के ८० वर्षीय मौलवी शमसुल उलेमा मौलाना इब्ने हसन ने आयतें पढ़ीं और धार्मिक कृत्य कराये, तथा शाही खानदान के सबसे बड़े जीवित सदस्य ७० वर्षीय शाहजादा हादीहसन मिर्जा ने 'शाह' यूसुफ के सिर पर ताज रखा। शीशमहल का दर्पणों से जड़ा कलापूर्ण हाल शुभ्र प्रकाश से जगमग कर रहा था तथा बादशाही जमाने के दरबार के सारे सामान वहाँ मौजूद थे और सारे कायदे बर्ते जा रहे थे; ताजपोशी के बाद शाह यूसुफ ने घोषणा की कि खुदा के फज्ल और अपनी रियाया की सद्भावनाओं से मैंने अवध की सलतनत सँभाल ली है और मैं अपने पूर्वजों के सिंहासन पर बैठकर अवध में अपनी पूर्ण सत्ता स्थिर करता हूँ। मेरा विश्वास है कि मेरी समस्त रिआया मेरे प्रति पूर्ण राजभक्ति की भावना रखेगी और मैं अपनी सलतनत के प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी को आदेश देता हूँ कि वे मेरी ओर से शासन कार्य पूर्ववत् चलाये जायँ और मेरी सत्ता स्वीकार करें; और साथ ही मैं अपनी रियाया को भी अदेश देता हूँ कि मेरी सलतनत में जो लोग अनियमित और अवैधानिक ढंग से शासनारूढ़ हैं, उनके विरुद्ध अभी कोई प्रत्यक्ष कार्रवाई न की जाय, क्योंकि मैं शीघ्र ही अपनी समस्त प्रजा और उसके प्रत्येक वर्ग की निष्ठा और विश्वास प्राप्त कर लूँगा, इसके दूसरे ही दिन 'शाहे अवध' ने एक प्रेस-कान्फरेंस की।

राजवंश के किसी सदस्य द्वारा यह पहली प्रेस-कान्फरेंस थी और नये 'शाह' ने लजाते हुए पत्रकारों को बताया कि यह प्रचार का युग है और शाहंशाहों को भी प्रचार की उतनी ही आवश्यकता है, जितनी किसी अन्य व्यक्ति को। प्रेस कान्फरेंस के पूरे समय 'शाहे अवध' अपने सिंहासन पर बैठे रहे और कहा कि अँगरेजों ने हमारा राज्य केवल शासन-व्यवस्था के लिये माँग कर लिया था और जाते समय उन्हें उसे हमको लौटा जाना चाहिये था। पर उन्होंने ऐसा नहीं किया। अब मैं अपने देशवासियों से ही इसका न्याय चाहता हूँ। साथ ही आपने उसी दिन एक और घोषणा की कि आज से मैंने श्रीमती सरोजिनी नायडू को अपना गवर्नर तथा पन्त-मंत्रिमंडल को अवध का शासक नियुक्त किया है, क्योंकि मैं अपना स्वास्थ्य सुधारने बाहर जा रहा हूँ।

तब से 'शाहे अवध' पुनः कलकत्ता में हैं और टेनिस तथा बिलियर्ड खेल कर, जिसके वे देशविख्यात खिलाड़ी हैं, अपना स्वास्थ्य सुधार रहे हैं, उन्होंने ब्रिटिश सरकार को अनेक आवेदन-पत्र भेजे तथा संभवतः पं० जवाहरलाल नेहरू को भी एक पत्र लिखा था, पर किसी ने उसका उत्तर तक न दिया फिर भी 'हिज मैजेस्टी शाह यूसुफ मिर्जा' अपने को अवध का बादशाह मानते चले आ रहे हैं और कलकत्ता से उनके हुक्मनामे अब भी उनके 'मन्त्रियों' के पास शाही मोहर के अन्तर्गत आते हैं। 'दिल के समझाने को गालिब ये ख्याल अच्छा है!'

मनोरञ्जक चुटकुले

गणेश ने अपने मास्टर से कहा, "मास्टर साहब क्या पढ़ूँ?" मास्टर साहब ने उत्तर दिया, "जो कुछ पढ़ाया गया हो उसे दोहरा जाओ।"

गणेश ने उत्तर दिया, "यही मालूम होता तो आपसे क्यों पूछता?"

मास्टर ने कहा, "तुम अपने साथ साथ मेरी भी इज्जत बढ़ा रहे हो, वाह रे विद्यार्थी!"

* * *

एक नेता ने गाँव में कहा, "खाद अच्छी बनाकर पैदावार बढ़ाओ।"

एक ने उत्तर दिया, "आदमी जब जानवर खाना छोड़ दें तो आपकी इच्छा पूरी हो सकती है।"

* * *

कृष्ण ने किशोर से कहा, "नशा करना छोड़ दो, अब सरकार उसे बन्द करने जा रही है।"

किशोर ने उत्तर दिया, "सरकारी नशा छोड़कर स्वदेशी नशा करूँगा; अभी जेल नहीं गया इच्छा है कि उसे भी देख लूँ।"

* * *

रहमान ने वकील से कहा, "मेरा मुकदमा लड़ियेगा कि नहीं?"

वकील ने कहा, "दिल खोलकर लड़ूँगा।"

रहमान ने कहा, "दिल तो अपने पास ही रखिये सिर्फ जबान से ही काम चल जायेगा।"

* * *

पंडित जी ने लड़कों से कहा, "गंगा नहाने से स्वास्थ्य खूब ठीक रहता है।"

लड़कों ने कहा, हाँ पंडित जी, आजकल के अन्न से गंगाजल पीना अच्छा है, जिन्दा में भी पीयेंगे और मरने पर भी।"

* * *

लड़के ने जलेबी ली और भाग गया। दूकानदार ने दौड़कर उसे पकड़ा। लड़के से पूछा, "पैसा क्यों नहीं दिया?"

लड़के ने कहा, "हम समझते थे कि कल तुम प्रसाद बाँटोगे। मैंने आज ही ले लिया है, क्योंकि कल यहाँ न रहूँगा।"

* * *

किशोर ने एक चपरासी से पूछा, तुम्हारे दफ्तर में कोई जगह है? चपरासी ने कहा, जगह बहुत है।

किशोर ने पूछा, मैं नौकरी करना चाहता हूँ?

चपरासी ने उत्तर दिया, नौकर तो वहाँ से निकाले जा रहे हैं, अगर आप निकालू कहलाना चाहें तो ठीक है।

* * *

राधे से मुंशी ने पूछा, तुम्हारा घर कितनी दूर है?

राधे ने उत्तर दिया, बारह कोस दस मील एक गज।

मुंशी ने कहा, क्या बकते हो?

राधे ने कहा, तुम्हारी बकबक को क्या करूँ?

* * *

एक लड़का पीठ पर दूध का बर्तन, एक हाथ में मुर्गी और एक हाथ में डण्डा लिये एक नौजवान लड़की के साथ घूम [illegible] लड़की ने कहा, मैं तुम्हारे साथ न जाऊँगी, तुम अकेले में मुझे छेड़ो तो...?

लड़के ने कहा, मेरे दोनों हाथ, पीठ सामान से खाली नहीं, कैसे हँसी करूँगा।

लड़की ने कहा, चोर, छिनार, जुआरी, इनसे गंगा हारी।

* * *

एक सौदागर ने एक मजदूर से कहा 'तुम्हारी शादी कब हुई है?'

मजदूर ने उत्तर दिया, मैं बहुत छोटा था याद नहीं।

सौदागर ने कहा, यही तो तेरी तेरी जाति की नहीं है।

मजदूर ने उत्तर दिया, तो आप यहाँ कोई दूसरी हो तो कृपा कर दीजिये।

बेचारा सौदागर सन्न हो गया।

* * *

एक विद्यार्थी ने दूकानदार से किता माँगते हुए कहा, कि अमुक पुस्तक पिता जी की लिखी है उसे जल्दी नि लिये।

दूकानदार ने कहा, "आपकी मा जी वाली किताब बहुत है पिता जी वाली नहीं है?

* * *

पुजारी ने मंदिर में चढ़कर कहा, शंकर।

एक राहगीर ने पूछा, जय राम क्यों!

पुजारी ने उत्तर दिया, इसे राम जाने।

राहगीर ने कहा, शंकर क्या है!

पुजारी ने कहा, तुम्हारे बाप के बाप, और दादा के दादा।

* * *

पंडित जी ने चमार से पूछा, करेगा कि नहीं?

चमार ने कहा, मालिक मेरे बच्चा की माँ बीमार है।

पंडित जी ने उत्तर दिया, इसके ले जाना, लेकिन घरवालों को साथ ले

चमार ने कहा, आपकी दवाई खाल के खिंचाई?

* * *

२०॥) में ज्वेलवाली रिस्

स्वीसमेड ठीक समय देनेवाली गारण्टी। गोल या स्क्वायर सुपिरियर २०॥), फ्लाट सेप क्रोमि ३०), फ्लाट सेप रोल्ड गोल्ड गारण्टी ५५), फ्लाट सेप क्रोम केस ३८), फ्लाट सेप रोल्ड गोल्ड ७५)।

रेक्टेंगुलर, कर्व या टोनो केस ४२), सुपिरियर ६०), रोल्ड गोल्ड ९०) अलार्म टाइम पीस कीमत बीग साइज २५) पोस्टेज घड़ी लेने से माफ।

एच० डेभिड, एण्ड को० पो० बक्स नम्बर ११४२८,

हमारा रंगमंच

सन् १९४८ की सौन्दर्य प्रतियोगिता की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी मार्टा गारविन का मनोरंजक लेखा-जोखा

लेखक, श्री उमेश जोशी

४८ में भी प्रतिवर्ष की तरह सौन्दर्य-प्रतियोगिता-सम्मेलन की सुन्दरियों ने इसमें विशेषकर यूरोपियन महिलाओं न्दर्य-प्रदर्शन में मार्टा गारविन श्रेष्ठ मानी गई। उसको दे" कहकर पुकारा गया। अभिनेत्रियों में मार्टा गारविन को विशेष महत्त्व दिया जाता उसके अभिनय के संसार पसन्द करते हैं। इसका है कि वह आँखों द्वारा भाव- कुशल है। उसके अभिनय शक्ति होती है कि दर्शक , ठीक उसी तरह जिस सर्प। नम्बर प्राप्त करनेवाली विन का कहना है कि— बड़ी नियामत सौन्दर्य रक्षा करना मानव का । ईश्वर की इस धरोहर बैठते हैं, वे दुनिया में करते हैं। सुन्दरता को लिये हमें अपने आपको गोद में रखना चाहिये। का उपयोग भी नहीं करना सुन्दरता के लिये अधिक । पानी से सुन्दरता अधिक दिन फूलों के बीच में भी चाहिए। मैं तो अधिकतर फूलों के बीच में ही रहती हूँ, यहाँ तक रात को भी मैं फूलों के मध्य में सोती हूँ। बन्द कमरे में सोना मुझे पसन्द नहीं। वर्जिश करना भी सुन्दरता बढ़ाने का विशेष साधन है इस सुन्दरी से विवाह करने के लिये योरोप के लोग लालायित हैं। यह भी सुना गया है कि अमेरिका के प्रेसीडेन्ट ट्रूमैन ने भी मार्टा गारविन से शादी करने का प्रस्ताव रक्खा है, पर मार्टा गारविन ने उस प्रस्ताव को ठुकरा दिया है। वह शादी करना ठीक नहीं समझती। उसका कहना है कि—"शादी करना ही सौन्दर्य को पतन के खण्डहर में डाल देना है। विशेषकर पश्चिमीय शादी, जहाँ सौन्दर्य वासना का खिलौना बना लिया जाता है। उसके पास अनेक शादी के प्रस्ताव आते रहते हैं। परन्तु वह उन्हें रद्दी की टोकरी में डाल देती है। उसकी उम्र इस वक्त करीब बाईस साल की है। कद गठा हुआ है। वह भारतीय ड्रेस पहनना भी पसन्द करती है और अकसर पहना भी करती है। उसके ड्रेसिंग रूम में पंजाबी फैशन, संयुक्तप्रान्तीय फैशन के कपड़े भी रक्खे हुए हैं।

इस छोटी-सी उम्र में उसने इतनी तरक्की कर ली यह सब उसके अनुपम सौन्दर्य का ही फल है। वह संयम को विशेष महत्त्व देती है। उसका कहना है कि—"सौन्दर्य प्रदीप के उज्ज्वल प्रकाश को चिर-प्रकाशित रखने के लिये संयम का तैल रहना आवश्यक है, बिना इसके सौन्दर्य का आलोक गुल हो जायेगा। फिर जीवन में अन्धकार का ही साम्राज्य होगा। इसलिये मानव को जीवन में सुन्दरता रखने के लिये संयम से काम लेना चाहिए। बिना संयम के सौन्दर्य की शोभा उजड़ी हुई बस्ती के समान है।"

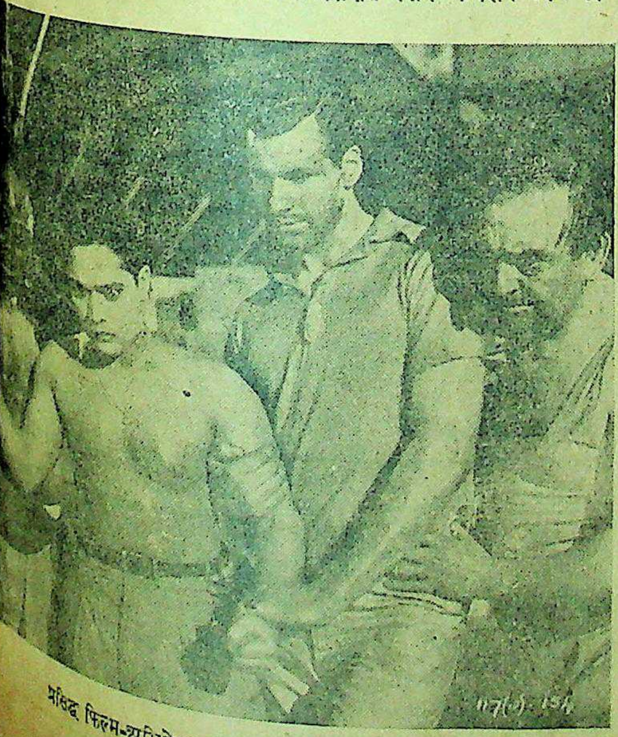

प्रसिद्ध फिल्म-अभिनेता साबू अपने एक फिल्म में।

प्रसिद्ध अभिनेता साबू बीबी फरीरा के साथ।

उसने फिल्मी-दुनिया में प्रवेश बी० ए० पास करने के बाद किया। मार्टा गारविन को वर्डसवर्थ तथा टैगोर की कविताओं तथा नाटकों को अधिक पढ़ने का चाव है। वह भावुक बहुत है। वह खाली वक्त में इन्हीं दो विभूतियों के उत्कृष्ट साहित्य का अध्ययन किया करती है। वह कविता करने की सिर्फ शौकीन नहीं है, बल्कि स्वयं भी कविता करती है। कविता और कहानी इन दोनों का शौक उसे कालेज से ही लग गया था। वह प्रायः कहानियाँ लिखा करती है जो कि जन-समुदाय में काफी आनन्द के साथ पढ़ी जाती है। आपकी कविता में प्रकृति-सुषमा का चित्रण अधिक रहता है। वह कवि से कहानीकार कैसे बनी, इस सम्बन्ध में एक सुन्दर घटना है, जो कि उसके कहानी-लेखन से खास सम्बन्ध रखती है।

एक दिन जब मार्टा गारविन अपने पेन्स गाँव में घूमने निकली, तो रास्ते में उसे एक मकान के सामने एक ऐसा नवयुवक मिला जो कि बन्द किवाड़ों की कुंडी खटखटा रहा था, और साथ साथ हँस भी रहा था। उसका हँसना बन्द नहीं हो रहा था। युवक की उम्र लगभग पचीस वर्ष की थी। वह सिर्फ एक सफेद कमीज तथा पाजामा पहने हुए था। दरवाजा नहीं खुला, पर हाँ दुमंजिले की खिड़की खुली। उस खिड़की में से एक निहायत हसीन लड़की ने नीचे झाँककर कहा—"कल मुझे लौरिन पार्क में साढ़े पाँच बजे मिलना, वहीं दिल खोलकर बातें होंगी, आज तो मैं मजबूर हूँ। समझे मेरे प्रियतम बेरो।"

"मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा। मुझे तो तुमसे अभी मिलना है, पार्क में मिलकर मेरी समस्या हल न होगी! मुझे अपनी आज कहानी सुनानी है और उसके बदले में...."

बात पूरी भी न हो पाई कि उस हसीन लड़की ने कहा—"बेरो इस वक्त मिलने का मौका नहीं है। मैं तो जिन्दगी भर तुम्हारी कहानी सुनती रहूँगी, परन्तु आज से नहीं—बल्कि कल से। मैंने जो वायदा किया है आपसे, उसको मुझे पूरा करना है, समझे बस आज की ही तो बात है। फिर तो हम-तुम दोनों एक ऐसी दुनिया में पहुँच जायेंगे जहाँ पर कि प्रेम और हुस्न का झरना बहता हो।"

"भई मैं तो बेरो नहीं हूँ। मेरा नाम क्रेमा है। मैं तो अपनी पेट की समस्या हल करने आया हूँ, चूँकि आप एक बहुत बड़े करोड़पति की लड़की हैं। आपका इस गाँव में काफी नाम है। इसीलिये मैं सोच रहा था कि मैं तुमको अपनी जीवन-कथा सुनाकर प्रभावित कर सकूँ और मेरी समस्या हल हो सके। पर मेरी समझ में तुम्हारी रहस्यवादी बातें नहीं आतीं।"

जब गेनी को यह मालूम हुआ कि उसका प्रेमी बेरो दरवाजे पर नहीं है जो कि प्रायः इसी वक्त आया करता है, बल्कि कोई और व्यक्ति है तो उसे भी अपने ऊपर बड़ी झुँझलाहट आ गई और उसने बिना सोचे समझे, एक हजार पौण्ड के सिक्के नीचे डाल दिये, यह कहते हुए—"देखो क्रेमा इन सिक्कों से अपनी पेट की समस्या पूरी कर लेना, और यह आज की बात किसी से न कहना।"

क्रेमा ने उन सिक्कों को एक ओर फेंक दिया और वह जोर से हँस पड़ा।

"क्यों मैं इतना नीच हूँ कि मैं इन सिक्कों को लेकर अपनी पेट की समस्या हल करूँ गेनी ने मुझे क्या समझ लिया।"

क्रेमा को यह स्वप्न में भी उम्मीद न थी कि गेनी जैसी सरल लड़की भी कोई अपना प्रेमी रखती है। उसको बड़ी ठेस लगी पेन्स गाँव में गेनी चरित्र के लिये मशहूर थी—पर आज क्रेमा के सामने गेनी के चरित्र का रहस्य खुल गया।

मार्टा गारविन को क्रेमा से यह प्लाट कहानी के लिये मिल गया। उसकी प्रथम

कहानी का शीर्षक था—"गेनी का रहस्य।" इस कहानी में प्रेम और कर्तव्य का सुन्दर चित्र खींचा गया है। यह कहानी इतनी अच्छी बन पड़ी कि अमेरिकन पत्रों ने इस कहानी की प्रशंसा के खूब पुल बाँधे।

धीरे धीरे वह कहानीकार से हालीवुड में अभिनेत्री बन गई। उसका एक कहानी-संग्रह भी प्रकाशित हुआ है। जिसका नाम है—"प्रभात के पुष्प।" इस पुस्तक के अब तक चौदह एडीशन हो चुके। दूसरी पुस्तक का नाम है "कलाकार किस प्रकार बना जाये?" तीसरी पुस्तक का नाम है—"मैं फिल्मी दुनिया में क्यों आई?" अभी आपको फिल्मी संसार में आये हुए सिर्फ चार वर्ष ही हुए हैं। इन चार वर्षों में आपने बारह चित्रों में कार्य किया है। इन चित्रों में कई एक चित्र अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के हैं। उनका सबसे अच्छा काम "सुबह का चुम्बन" में हुआ है। इस चित्र ने मार्टा गारविन को ख्याति की दुनिया में बहुत आगे बढ़ा दिया।

मार्टा गारविन भारत घूमी हुई हैं और वह भारतीय मामलों में बहुत दिलचस्पी लिया करती हैं। पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा महात्मा गांधी जी को वह विशेष श्रद्धा की नजर से देखती हैं।

घुड़सवारी और तैरने का आपको बहुत शौक है। शाम को प्रायः वह घोड़े पर समुद्र-किनारे घूमने जाया करती हैं। तैरने में भी आपने कई एक स्वर्ण-पदक प्राप्त किये हैं। इस सुन्दरी ने वास्तव में विश्व के मानवों को अपनी सुन्दरता के बल पर जीत लिया है। जो कोई भी उसे देखता है, वह उसी की मादकता में बह जाता है। यही उसके सौन्दर्य की विशेषता है।

आपके दो भाई हैं जिनका नाम है रिचर्ड पेन्लड, रिचर्ड फानालि। यह दोनों भाई हालीवुड की लाबोटरी में काम करते हैं। आपके एक छोटी बहन भी है; परन्तु वह आपकी तरह सुन्दर नहीं। आपके माता-पिता नहीं हैं। इस वक्त आपको हालीवुड से ८० हजार रुपये माहवार मिलते हैं। इस बड़ी रकम को वह बड़े अच्छे ढंग से खर्च भी करती हैं। इतनी बड़ी तनख्वाह दुनिया में किसी भी कलाकार को नहीं मिलती। तनख्वाह के क्षेत्र में भी मार्टा गारविन ग्रेटा गार्बो से आगे निकल गई। अब तक ग्रेटा गार्बो को अधिक वेतन मिलता था, परन्तु अब सन् १९४८ से मार्टा गारविन को अधिक वेतन मिलने लगा।

अभी हाल में उसके पास शादी के बड़े-बड़े राष्ट्र के कर्णधारों से अनेक प्रस्ताव आये हैं। उनमें से दो प्रस्ताव अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। यह दोनों प्रस्ताव मार्टा के सामने उस वक्त आये जब कि वह सौन्दर्य-प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ घोषित कर दी गई। प्रस्तावों के नाम ये हैं—फ्रांस के बहुत बड़े जागीरदार रिनाल्ड तथा हालैन्ड के राजकुमार का। पर इन दोनों प्रस्तावों को भी मार्टा ने ठुकरा दिया। अपनी शादी के सम्बन्ध में उसने सिने लाइट में एक लेख दिया है—जिसमें उसने बतलाया है कि—"मैं शादी ऐसे पुरुष से करूँगी जो कि नारी को वासना का खिलौना न समझता हो। अभी मेरी शादी करने की बिलकुल इच्छा नहीं है। जब मेरी उम्र पचास साल की हो जायेगी और जब कि मेरी बाहरी सुन्दरता बिगड़ जायेगी, तब मैं देखूँगी कि कितने मेरे पास शादी के प्रस्ताव आते हैं। इस वक्त तो मेरी यौवन की चमक से प्रभावित होकर प्रस्ताव आते हैं जिनको कि मैं अधिक महत्त्व नहीं देती। मुझे भारतीय सिद्धान्त बहुत पसन्द है—आत्म-सौन्दर्य में आत्मा के सौन्दर्य को सब कुछ समझती हूँ। उसी की बुनियाद पर शरीर का सौन्दर्य टिका हुआ है।

अभी हाल में मार्टा गारविन ने अपनी यह भी इच्छा प्रकट की है कि किसी हिन्दी चित्र में काम किया जाये, पर मार्टा को हिन्दी बिलकुल नहीं आती। उसकी हिन्दी सीखने की अधिक इच्छा है, पर साधन नहीं है। और न अभी हालीवुडवालों ने हिन्दी के चित्र-निर्माण की योजना को आगे बढ़ाया है।

उसका आनेवाला चित्र का नाम है "तैरता हुआ फूल" इस चित्र के सम्बन्ध में कहा जाता है कि यह चित्र दुनिया का एक अद्वितीय चित्र होगा।

(लेखक द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

* * *

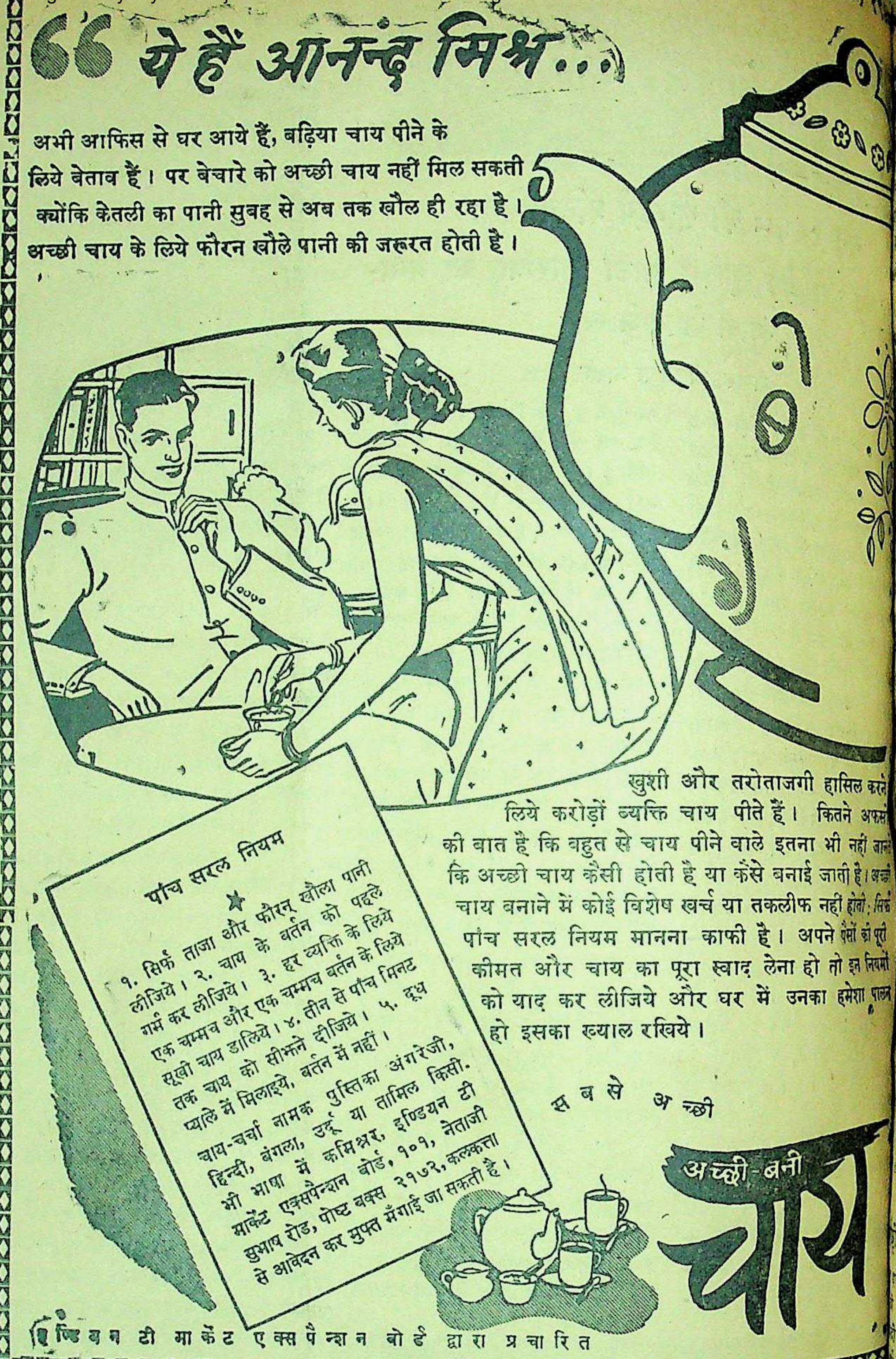
"ये हैं आनन्द मिश्र...

अभी आफिस से घर आये हैं, बढ़िया चाय पीने के लिये बेताब हैं। पर बेचारे को अच्छी चाय नहीं मिल सकती क्योंकि केतली का पानी सुबह से अब तक खौल ही रहा है। अच्छी चाय के लिये फौरन खौले पानी की जरूरत होती है।

पांच सरल नियम

★

१. सिर्फ ताजा और फौरन खौला पानी लीजिये। २. चाय के बर्तन को पहले गर्म कर लीजिये। ३. हर व्यक्ति के लिये एक चम्मच और एक चम्मच बर्तन के लिये सूखी चाय डालिये। ४. तीन से पाँच मिनट तक चाय को सीझने दीजिये। ५. दूध प्याले में मिलाइये, बर्तन में नहीं।

चाय-चर्चा नामक पुस्तिका अंगरेजी, हिन्दी, बंगला, उर्दू या तामिल किसी भी भाषा में कमिश्नर, इण्डियन टी मार्केट एक्सपेन्शन बोर्ड, १०१, नेताजी सुभाष रोड, पोष्ट बक्स २१७२, कलकत्ता से आवेदन कर मुफ्त मँगाई जा सकती है।

खुशी और तरोताजगी हासिल करने लिये करोड़ों व्यक्ति चाय पीते हैं। कितने अफसोस की बात है कि बहुत से चाय पीने वाले इतना भी नहीं जानते कि अच्छी चाय कैसी होती है या कैसे बनाई जाती है। अच्छी चाय बनाने में कोई विशेष खर्च या तकलीफ नहीं होती; सिर्फ पांच सरल नियम मानना काफी है। अपने पैसों की पूरी कीमत और चाय का पूरा स्वाद लेना हो तो इन नियमों को याद कर लीजिये और घर में उनका हमेशा पालन हो इसका ख्याल रखिये।

सबसे अच्छी

अच्छी-बनी चाय

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

मुफ्त

असली फाउन्टेनपेन और असली रिस्टवाच गारन्टी १२ साल, मुफ्त हासिल करने के लिये आज ही लिखें। वरना मौका हाथ न आयेगा।

Imperial Corporation (D. A.)
Halka No. 22. Amritsar.

शुभ सूचना

समस्त हिन्दी-प्रेमियों, तथा कृपालु ग्राहकों को यह शुभ देते हुए हमें हर्ष हो रहा है कि लाहौरवाली ब्रांच फिर से दुर्गाचरण अम्बाला कैंट (पूर्वी पञ्जाब) लोगों की पूर्ववत् सेवा के उद्देश्य से हो चुकी है।

मैनेजर
इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

मुफ्त ! मुफ्त !!

आप घर बैठे मैट्रिक, एफ० ए०, पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी और होम्योपैथिक बायोकैमिक आसानी से पास कर सकते हैं। मुफ्त मगायें। पता :—
इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड)

ठक के नाम चिट्ठियाँ

शरणार्थी महिलाश्रम

के पुनर्वास एवं निरा-
महिला सहायता-विभाग
उदयपुर में एक कैम्प खुल
निराश्रित बहनें एवं बालक
बहनें जिनके कोई पोषक
अथवा जिनके छोटे छोटे
जीवन-निर्वाह का कोई
हाँ प्रवेश पा सकेंगी—
बहनों के रहने, खाने-पीने
अन्य औद्योगिक शिक्षण
व्यवस्था कैम्प से होगी।
भेजते समय उम्र, बच्चों
, यदि पढ़ी हुई हों तो
श्रीमती कमलाकुमारी
निराश्रित शरणार्थी
मण्डल उदयपुर के पास
भेजें।

उदयपुर का सहानुभूति-
महिला-मण्डल उदयपुर
को राजस्थान के राज-
साहब उदयपुर से
तथा उसकी गति-विधि
लिए मिला।
मण्डल की प्रवृ-
देते हुए मण्डल के
ति प्रकट कर अपनी
को सहायता देने का
अपने नवीन शिक्षा-क्रम
मण्डल राजपूताने से
के विस्तार के लिए
आरम्भ करनेवाला है।

—कमलाकुमारी श्रोत्रिय

* *

क्षेत्रों में हिन्दी

का विषय है कि हाल में
अन्तर्राष्ट्रीय भाषातत्त्वविदों
का सम्मेलन हुआ था,
के प्रतिनिधि प्रख्यात भाषा-
कुमार चटर्जी ने आन्त-
के आधार पर पारि-
निर्माण के बारे में भी
कराया है। अन्य देशीय
के प्रति बहुत विशेष
रही है ऐसा डा० सुनीति-
सम्मेलन के प्रधान मन्त्री
पत्र से मालूम हुआ है।
में आज ही प्राप्त हुआ
से उन लोगों की आँखें
जो राष्ट्रीयता और जन-
पर देश के ऊपर निष्प्राण-
हिन्दुस्तानी को लादना

—उदयनारायण तिवारी
एम० ए० डी० लिट्०
प्रधान मन्त्री
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

*

नागरी-लिपि और रेलवे

रेलवे अधिकारीगण राष्ट्र-भाषा हिन्दी तथा राष्ट्र-लिपि नागरी के प्रति कितने उदासीन हैं, यह आपको ज्ञात है। विद्यालय की ओर से इस सम्बन्ध में बहुत दिनों से आन्दोलन भी चल रहा था जो कि रेलवे बोर्ड के आश्वासन पर स्थगित कर दिया गया था, लेकिन रेलवे-बोर्ड ने अभी तक कोई भी प्रयत्न इस सम्बन्ध में नहीं किया है। अतः फिर से इस प्रश्न को उठाना अत्यन्त आवश्यक हो गया है। ऐसी अशुद्धियों के कुछ उदाहरण भी देखिये—

(१) द्वितिय श्रेणी (२) यहाँ पुछिये (३) मंदाना पैखाना (४) मुस्लमानों के (५) हिन्दूवों के लिये (६) गाड़ीयों के लिये (७) सिर्फ घोड़ो और मवेशीयों के लिए (८) कलर्क आफिस (९) अपनी रेजकारी और टिकट का जाँच करके खिरकी छोड़ो। (१०) हिन्दु पीने का पानी (११) इस रास्ता से पलेटफार्म नं० ५ पर जाये।

जब तक ये रेलवे-अधिकारी इन अशुद्धियों का पूर्ण रूप से निराकरण न कर दें तब तक आप अपने 'पत्र' में इस संबन्ध में अवश्य ही कुछ न कुछ लिखते रहें।

हौजकटोरा
काशी —गोविन्दप्रसाद केजरीवाल

* * *

जन्माष्टमी और गोरक्षा

जनता में गोरक्षा-विषयक ठोस जागृति पैदा करने और गोरक्षा का राष्ट्रीय संदेश भारत के कोने कोने तक पहुँचा देने के लिये—जन्माष्टमी का ऐतिहासिक पर्व एक सर्वोतम साधन है। इस महान् उद्देश्य की सिद्धि के लिये संस्था ने महत्त्वपूर्ण गो-साहित्य और हिन्दू-मात्र को गोरक्षा के लिये पतिज्ञाबद्ध करने के लिये गोरक्षा के प्रतिज्ञापत्र बड़ी संख्या में छपाये हैं। जिन्हें संस्था गो-प्रेमियों की सेवा में अपने व्यय से भेजना चाहता है। गोरक्षा के कार्यकर्त्ता शीघ्र मँगा लें।

डालडा का स्वास्थ्य पर पड़नेवाला प्रभाव टेक्टरों और रासायनिक खाद का गोवंश की उपयोगिता एवं कृषि की जीवनी शक्ति पर प्रभाव। इस विषय पर सर्वोत्तम लेख लिखनेवाले को संस्था की ओर से ५१) का नम्र पुरस्कार भेंट किया जायगा। पुरस्कृत लेख प्रकाशित होकर वितरित होगा। लेख जन्माष्टमी तक पहुँच जाना चाहिये।

—संचालक
गोरक्षा प्रचार-विभाग, मु० पो० लखनादौन
(सी० पी०)

जानवरों की मज़ेदार कहानियाँ

मोर और कौआ, लोमड़ी और गधा, चालाक बुढ़िया, सोने की चिड़िया, सिंह और सियार आदि कहानियाँ पढ़िए और इनका चमत्कार देखिए। मोटे टाइपों में अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य ॥≋)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

बर्लिन-संकट क्या है ?

(पृष्ठ ७ का शेष)

को अपना रहा है और पश्चिमी प्रजातंत्र के आदर्शों पर चलने के लिये तैयार है और कम्युनिस्ट एकतन्त्र शासन से बचना चाहता है। इसी आधार पर वे पश्चिमी क्षेत्र की रक्षा करना व कम्युनिस्ट प्रभाव से बचाना अपना नैतिक कर्तव्य समझते हैं।

स्वयं बर्लिन-निवासी क्या चाहते हैं, यह कहना कठिन है। यद्यपि अब बर्लिन में तीनों पश्चिमी शक्तियों ने सम्मिलित शासन बना लिया है फिर भी अन्त में वह तीन शक्तियों का ही शासन है। और 'यह सम्मिलित शासन भी रूस द्वारा घेरा डाले जाने का एक कारण रहा है क्योंकि पहले यह शर्तनामा था कि बगैर चारों की राय के सम्मिलित शासन नहीं बनाया जा सकता। आर्थिक प्रबन्ध के सम्बन्ध में भी चारों शक्तियों की एक राय होनी आवश्यक है और रूस ने मुद्रा-सुधार तब किया जब कि पश्चिमी जर्मनी में भी हुआ। इस प्रकार भी पश्चिमी शक्तियों पर दोष मढ़कर रूस घेरे को उचित बताता है। पर इतना अवश्य कहा जा सकता है कि चार शक्तियों के अधिकार की अपेक्षा बर्लिन-निवासी एक ही शक्ति का अधिकार पसन्द करेंगे, क्योंकि अन्यथा उन्हें शक्तियों की प्रतिद्वन्द्विता का शिकार बनना पड़ता है। संसार के अन्य शान्ति-प्रिय नागरिकों की तरह वे भी अशंकित अवश्य होंगे कि कहीं बर्लिन के कारण युद्ध की घटायें सचमुच ही न बरस पड़ें। इसके कारण उनकी आर्थिक स्थिति पर भी भयंकर आघात पहुँच रहे होंगे क्योंकि आज बर्लिन में मुद्रा-युद्ध चल रहा है, बिजली और कोयले की कमी कर दी गई है और भावी राजनैतिक व आर्थिक गति-विधि का कोई निश्चित मार्ग नहीं है और खाद्यान्नों की भी कमी प्रत्येक व्यक्ति महसूस कर रहा है। बर्लिन-निवासी आज इस बात को अच्छी तरह समझते होंगे कि बर्लिन के कारण पूर्वी और पश्चिमी शक्तियों में प्रतिद्वन्द्विता चल रही है और बर्लिन एक अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की वस्तु बन गई है।

इस तरह बर्लिन योरोपीय शक्तियों की परीक्षा का विषय बन गया है और इस तरह अगर बर्लिन में पश्चिमी शक्तियों की हार हो गई तो पश्चिमी जर्मनी व अन्य राष्ट्रों का उन पर से विश्वास हट जायेगा और मार्शल-योजना का सफल होना कठिन हो जायेगा। इसीलिये परिस्थित भयंकर होने का खतरा है क्योंकि प्रत्येक शक्ति वहाँ पर ठहरना पसन्द कर रही है जहाँ पर कि उसका कब्जा है। रूस पूर्वी बर्लिन में सिटी कौंसिल का पुनर्निर्माण कर रहा है और मेयर व डिप्टी मेयर का चुनाव हो रहा है और पश्चिमी बर्लिनवालों को प्रलोभन दे रहा है कि रूस का कब्जा होते ही २० लाख जर्मनों की रोटी और रोजी का सवाल हल हो जायेगा। इसलिये पश्चिमी राष्ट्र स्टालिन और मास्को के अन्य अधिकारियों से बातचीत कर रहे हैं कि इसका एक हल निकाला जाये। यह कह सकना कठिन है कि किस तरह इसका हल नकल आयेगा। प्रत्येक शक्ति अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर रही है और युद्ध की भाँति हर प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों को एकत्रित कर रही है जिससे कि शान्तिप्रिय नागरिकों के दिलों में भय का संचार हो सकता है कि कहीं सचमुच युद्ध न छिड़ जाये। इस तरह होना संसार के लिये दुर्भाग्य का विषय होगा और हम चाहते हैं कि उन सब शक्तियों में सम्मानपूर्ण समझौता हो जाये और यह संकट एक भयंकर और गंभीर रूप धारण न करे।

* * *

मरदों की गलतीयाँ

यौवन नष्ट करनेवाले, जीवन फीका, गुप्त रोग अथवा अन्दर से खोखले इश्तहारी नीम-हकीमों के पास न फँसें बल्कि मशहूर सख्श स्पेशेलिस्ट कविराज डी० आर० वजीराबाद वाले मैनेजर दी हीरो फार्मेसी (रजिस्टर्ड), पीछे डाकखाना दरियागंज, देहली से मिलें। कीमत आराम के बाद दें, घर मँगवाने से वी० पी०। अन्दरूनी बेरूनी खास इलाज से ताकत का पूरा समान देखकर आप दंग रह जायेंगे।

पृथ्वी की कहानी

पृथ्वी कैसे बनी, पृथ्वी पर पहले-पहल कौन आया; नद-नदियाँ, पहाड़, जंगल, रेगिस्तान, बर्फीले देश, जानवर, पक्षी और आदमी कैसे बने; धर्म और जातियाँ, राजा और कानून कैसे बने; पुरानी यादगारें, आज की दुनिया, पृथ्वी का अन्त आदि बातों का वर्णन इस पुस्तक में बड़े अच्छे ढंग से किया गया है। मूल्य ॥=)॥

परीदेश

यह पुस्तक ख़ास कर छोटे बच्चों के लिए है। इसमें ऐसी एक भी बात नहीं जिसको समझने के लिए माथापच्ची करनी पड़े। इसमें रोजमर्रा की बातें बड़े ही अच्छे ढंग से लिखी गई हैं। बड़े आकार की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों और फूल-पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है। मूल्य ॥)

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ

सम्पादक—श्री सोहनलाल द्विवेदी
प्राक्कथन—सर सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

संस्कृति, हिन्दी, उर्दू, बँगला, गुजराती, सिन्धी, मराठी, तामिल, तेलगू, मलयालम, कन्नड़, अँगरेजी और चीनी भाषाओं में महात्मा गांधी जी पर लिखी हुई सर्वोत्तम कविताओं का संग्रह—हिन्दी भाषा में अर्थ-सहित।

बड़ा आकार, सुन्दर छपाई, पूरे पेज के अनेक चित्र। बढ़िया जिल्द। सर्वत्र प्रशंसित।

सादी जिल्द ६॥) कपड़े की जिल्द ७॥)
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

भारत की रियासतों का एकीकरण

(पेज ८ का शेष)

त्वपूर्ण कार्रवाई का आधार रहा है। इससे भारत-सरकार की उस उत्सुकता का कारण भी स्पष्ट हो जाता है। जिससे प्रेरित होकर निजाम के प्रतिनिधियों के समक्ष, हैदराबाद में उत्तरदायी शासन स्थापित किये जाने की मांग सर्वोपरि रखी और उधर काश्मीर में शेख अब्दुल्ला की अन्तरिम सरकार को स्वीकार किया। भारतीय नेताओं द्वारा उत्तरदायी शासन के पक्ष के जोरदार समर्थन के फलस्वरूप अन्यत्र उदाहरणार्थ त्रावणकोर तथा मैसूर जैसी रियासतों में, जनान्दोलन का जोर बढ़ गया और अंत में उसकी जीत हुई। ग्वालियर, इंदौर, जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर तथा बड़ौदा जैसी रियासतों के मामलों में भी, केन्द्रीय सरकार की प्रत्यक्ष दिलचस्पी के कारण, संतोषजनक परिणाम निकला। इस विषय में, रियासती सचिवालय की दिलचस्पी शीघ्र ही इस पराकाष्ठा को पहुँच गई कि एक समय सरदार पटेल को रियासती प्रजा से अपील करनी पड़ी कि अपने आन्दोलन का रुख वह हिंसात्मक कदापि न होने दे, ताकि शासकों के साथ मामला तय करने का उन्हें पूरा मौका प्राप्त रहे।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि हमारा प्रमुख लक्ष्य रियासतों के लोकतंत्रीकरण का था और किसी भी मूल्य पर उसकी पूर्ति करना था। कहीं समीपवर्ती प्रान्त के साथ किसी रियासत के एकीकरण द्वारा और कहीं संघ में अन्य रियासत की सीमाओं के समाहार द्वारा रियासतों को अपना पुराना स्वरूप खोकर, इस लक्ष्य को प्राप्त करना पड़ा। इसका कारण यह था कि उत्तरदायी शासन का काम आधुनिक ढंग की सक्षम शासन-व्यवस्था के आधार पर ही चलाया जा सकता था, और इसके लिए केवल २० रियासतों के गुटों में ही पर्याप्त साधन उपलब्ध थे।

वैसे इस प्रश्न की ओर पहले भी अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा सम्मेलन के नेताओं का ध्यान जा चुका था और १९३९ में उसके लुधियाना अधिवेशन ने निश्चय किया था कि वे सारी रियासतें, जिनकी जन-संख्या २९ लाख से और वार्षिक आमदनी ५० लाख रुपये से कम हो, समीपवर्ती प्रान्तों में मिल जायँ। तो भी, भारत-सरकार द्वारा निर्धारित, एक आत्मभरित रियासत की वर्तमान कसौटी यह है कि उसकी जन-संख्या कम से कम १० लाख होनी चाहिए! अर्थात् वह, विधान-परिषद् में अपना प्रतिनिधि भेज सकने की अधिकारिणी होनी चाहिए। भारत-सरकार की घोषित नीति यह है कि यद्यपि प्रजा तथा शासकों की इच्छा के बिना वह इन आत्म-भरित इकाइयों के स्वायत्त अस्तित्व में हस्तक्षेप न करेगी, किन्तु फिर भी छोटी रियासतों से यह मनवाने के लिए कार्रवाई करने का उसे अधिकार रहगा कि ये छोटी रियासतें आवश्यकतानुसार या तो समीपवर्ती प्रान्तों के इलाके में शामिल हो जायें, या स्वयं मिलकर एक संघ बना लें। बातचीत, अनुरोध तथा स्थानीय स्थितियों को ध्यान में रखकर आवश्यक परिवर्तनों के द्वारा इस नीति को कार्यान्वित करने के कार्यक्रम के अनुसार कार्य करने में हम सफल हुए हैं और समाहार आन्दोलन, जिसका कार्य क्रान्तिकारी गति से सम्पन्न हुआ है, पूरा होने के बहुत निकट आ गया है।

छोटी छोटी रियासतों के एकीकरण का श्रीगणेश उड़ीसा से प्रारम्भ हुआ। गत दिसम्बर में कटक में एक सम्मेलन में सरदार पटेल ने उड़ीसा की २५ पूर्वी रियासतों के नरेशों को सलाह दी कि वे अपनी रियासतों को उड़ीसा प्रान्त में मिल जाने दें। नरेशों ने यह बात मान ली। कुछ समय पश्चात् सरदार पटेल ने छत्तीसगढ़ की १४ रियासतों के नरेशों को भी ऐसी ही सलाह दी जो उन्होंने स्वीकार कर ली। इसके फलस्वरूप १ जनवरी १९४८ को रियासतों के ये गुट क्रमशः उड़ीसा और मध्यप्रान्त में मिल गये। उड़ीसा में मिलनेवाली रियासतों का क्षेत्रफल १८,००० वर्गमील, जन-संख्या ३० लाख से अधिक तथा वार्षिक राजस्व लगभग ८० लाख रु० है। छत्तीसगढ़ की रियासतों का क्षेत्रफल ३८,००० वर्ग-मील है।

उड़ीसा में पूर्वी रियासतों के सम्मिलित होते ही कुछ क्षेत्र में अव्यवस्था के कारण बृहत्तर उत्कल का आन्दोलन प्रारम्भ हो गया। उड़ीसा की रियासतों के भूतपूर्व नरेशों ने उड़ीसा रियासतों की एक यूनियन बनाने की मांग करके उन्होंने अपनी तथा-कथित सत्ता को फिर से पुनर्जीवित करने का प्रयत्न किया। जनता के विरोध से यह आन्दोलन अब समाप्त हो चुका है।

मयूरभंज रियासत आत्मभरित तथा साधन-सम्पन्न है। इसने प्रान्त से पृथक् रहकर अपना अस्तित्व ज्यों का त्यों कायम रखने का निर्णय किया है।

उड़ीसा और छत्तीसगढ़ की रियासतों के एकीकरण के पश्चात् भारत के विभिन्न भागों की अन्य छोटी-छोटी रियासतों ने भी इसी प्रकार का निर्णय किया। १ फरवरी को मकराई (१५१ वर्ग मील) मध्यप्रान्त में, २२ फरवरी को बंगना पल्ली (२५९ वर्गमील) मद्रास तथा लोहारू २२६ वर्ग मील और पटोदी ५३ वर्गमील पूर्वी पंजाब में सम्मिलित हो गये। एक बहुत बड़ी रियासत, पद्दकोटा (क्षेत्रफल १,१८५ वर्गमील, जन-संख्या ३८ हजार वार्षिक आय २८ लाख रु०) ३ मार्च को मद्रास प्रान्त में सम्मिलित हो गई।

इसी बीच में कोल्हापुर को छोड़कर, १६ दक्षिणी रियासतों ने बम्बई प्रान्तों में मिलना स्वीकार कर लिया। इन रियासतों का क्षेत्रफल ७,१८५ वर्गमील, जन-संख्या १७ लाख और वार्षिक आय १ करोड़ ४२ लाख रु० है। इसके पश्चात् गुजरात की १८ रियासतों ने, जिनका संयुक्त क्षेत्रफल २७,००० वर्गमील, जनसंख्या २६ लाख से अधिक और वार्षिक आय १६५ लाख है, बम्बई प्रान्त में सम्मिलित होने का निर्णय किया। इस प्रकार लगभग ९३,००० वर्गमील क्षेत्र-फल की छोटी छोटी रियासतें प्रान्तों में सम्मिलित हो गईं।

टेहरी गढ़वाल को छोड़कर, पूर्वी पंजाब की समस्त पहाड़ी रियासतों का केन्द्रीय शासन के अन्तर्गत हिमाचल प्रदेश एक पृथक् प्रान्त बन गया है। इस नये प्रान्त का क्षेत्रफल ११,२५४ वर्गमील तथा जनसंख्या लगभग १० लाख है।

जो रियासतें आत्मभरित अथवा साधन-सम्पन्न नहीं हैं और जिनका एकीकरण अभी होना बाकी है उनके नाम ये ये हैं: सन्डूर (मद्रास) टेहरी गढवाल, बनारस और रामपुर (युक्तप्रान्त), जैसलमेर (राजपूताना) कूच बिहार, त्रिपुरा, मणीपुर और सारी पहाड़ी रियासतें (आसाम)।

भौगोलिक तथा अन्य आधारों पर आसपास की कुछ रियासतों को मिलाकर उनके संघ (यूनियन) बना दिये गये हैं। संघ में शामिल होनेवाली रियासतों में से एक के नरेश को संघ का राजप्रमुख बनाया गया है। संघीकरण का उद्देश्य ऐसे बड़े-बड़े गुट बनाना है जो प्रजातंत्रीय शासन के उपयुक्त हों। प्रत्येक संघ में शामिल होनेवाली रियासतों और नरेशों के बीच समझौता हुआ है उसमें राजप्रमुख को परामर्श देने के लिए एक आन्तरिक मंत्रि-मंडल स्थापित करने तथा संघ का विधान बनाने के लिए एक विधान सभा बुलाने की व्यवस्था रखी गई है। इस प्रकार, प्रत्येक संघ का शासन प्रजातंत्रीय है और उसमें सम्मिलित होनेवाली रियासतों का पृथक् अस्तित्व नहीं रहा है। हाँ, उनके नरेशों को निजी खर्च की व्यवस्थासहित कुछ आवश्यक अधिकार दे दिये गये हैं।

सभी संघों के समझौते में एक ऐसी धारा रखी गई है जिसके अन्तर्गत कुछ विषयों के सम्बन्ध में इन संघों के लिए केन्द्रीय धारा के सभा को कानून बनाने का अधिकार होगा।

रियासती संघों का विकास

जब सबसे प्रथम काठियावाड़ में इस प्रकार का पहला संघ बना तो समस्त देश ने इसका स्वागत किया। काठियावाड़ की ये छोटी बड़ी रियासतें और ताल्लुके विभिन्न ८६० भागों में बँटे हुए थे और इनका कुल क्षेत्रफल लगभग ३३,९४६ वर्गमील, जनसंख्या लगभग ४० लाख तथा वार्षिक आय ८ करोड़ रु० थी। इन ८६० भूमि के टुकड़ों में पृथक्-पृथक् राजस्व कानून तथा राहदारी प्रतिबन्ध चालू थे जिनसे राजनीतिक तथा आर्थिक सुधार करना असंभव-सा हो गया था। वास्तव में सरदार पटेल के प्रभाव तथा काठियावाड़ के प्रमुख नरेशों के, विशेषकर नवानगर के जाम साहब और भावनगर के महाराज के देश-प्रेम के फलस्वरूप ही सौराष्ट्र-संघ का निर्माण हो सका है।

इस क्षेत्र में से कच्छ रियासत को भारत-सरकार के शासन के अन्तर्गत ले लिया गया है। जूनागढ़ रियासत का इस संघ में अभी शामिल होना बाकी है, यद्यपि जूनागढ़ के लोगों ने अत्यधिक बहुमत से पाकिस्तान से मिलना अस्वीकार कर दिया है और अब वे सौराष्ट्र में सम्मिलित होने के लिए उत्सुक हैं।

सौराष्ट्र के निर्माण के पश्चात् १७ मार्च १९४७ को अलवर, भरतपुर, धोलपुर, और करोली की रियासतों ने मत्स्य संघ की स्थापना की। मत्स्य-प्रदेश का क्षेत्रफल लगभग ७,६०० वर्गमील, जनसंख्या १८ लाख से अधिक और वार्षिक आय लगभग २ करोड़ रुपये है। इस संघ की राजधानी अलवर है और राजप्रमुख धोलपुर के नरेश हैं। मंत्रिमंडल में ६ लोकप्रिय मंत्री हैं, जिनकी सहायता के लिए भारत-सरकार द्वारा एक एडमिनिस्ट्रेटर नियुक्त किया गया है।

रीवाँ और बुंदेलखंड की ३४ रियासतों को मिलाकर २ अप्रैल १९४८ को विंध्य प्रदेश की स्थापना हो गई। इस प्रदेश का क्षेत्रफल २४,५९८ वर्गमील, जनसंख्या लगभग ३६ लाख और वार्षिक आय २ करोड़ ५० लाख रु० है। रीवाँ नरेश इस संघ के राजप्रमुख हैं।

कोटा, बांसवाडा, बूंदी, डूँगरपुर, मालावाड, किशनगढ़, प्रतापगढ़, शाहपुरा और टोंक की रियासतों को मिलाकर कोटा में २५ मार्च १९४८ को राजस्थान संघ का निर्माण किया गया। १८ अप्रैल १९४८ को इसमें मेवाड़ को सम्मिलित करके उदयपुर में इस संघ का फिर से निर्माण हुआ। पुनर्निर्मित संघ के उदयपुर नरेश राजप्रमुख, कोटा नरेश सीनियर वाइस प्रेसीडेंट तथा बूंदी और डूंगरपुर के नरेश जूनियर वाइस प्रेसीडेंट हैं।

इन संघों के विकास में मालवा संघ (मध्यभारत) का महत्त्वपूर्ण स्थान है। सरदार पटल के शब्दों में "भारत में यह सबसे बड़े संघों में है और जनसंख्या तथा साधन सम्पन्नता में तो कोई भी संघ इसकी तुलना नहीं कर सकता।" इस प्रदेश का क्षेत्रफल ४७,००० वर्गमील, जनसंख्या लगभग ७२,००,००० तथा वार्षिक आय [illegible] करोड़ रु० है। यह प्रदेश सैनिक

दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है
क्षेत्र में भी बहुत आगे बढ़ा
पटियाला और पूर्वी
रियासतों का संघ बन जान
के एकीकरण की तथा
शासन स्थापित करने की
अब समाप्त हो गई है। इस
नाम रखा जायगा, यह तो
सभा ही निर्णय करेगी।
राजधानी का भी
हुआ है। पटियाला-नरेश इसके
राजप्रमुख तथा कपूरथला
प्रमुख होंगे। इस संघ में
सम्मिलित हुई हैं: पटियाला,
नाभा, फरीदकोट, जींद,
नालागढ़ और कलसिया।

शासन-सम्बन्धी समस्याएँ

रियासती सचिवालय
अब कुछ शासन-सम्बन्धी
सरलता और शीघ्रता से
का दायित्व भारत-सरकार
समय पहले सरायकेला और
रियासतों के सम्बन्ध में बिहार
के प्रान्तों में परस्पर झगड़ा
बाद में ये रियासतें बिहार
गईं। ऐसी समस्याओं को
भारत-सरकार का दायित्व
जाता है। रियासती संघों के
पूर्णतया तथा शीघ्रतया कार्यान्वि
का भार भी सरकार पर ही

रियासतों में शासन

सरकारी कार्यालय
आदि की व्यवस्था का पुनर्गठन
के उद्देश्य से रियासती सचिवालय
एक अफसर ने हाल ही में कुछ
का दौरा किया था। कुछ
नई दिल्ली में रियासती संघों
प्रमुखों तथा प्रधान मंत्रियों की
हुई थी। उसमें नवनिर्मित संघों
सम्बन्धी एकीकरण के बारे में
कर लिये गये हैं।

जहाँ रियासती सचिवालय
सभी रियासतों में दायित्व
स्थापित करवाने में सहायता
आवश्यकता पड़ने पर इसने
शासन-व्यवस्था में हस्तक्षेप
है। जैसलमेर की भौगोलिक
देखते हुए, भारत-सरकार ने इस
शासन-प्रबन्ध अपने एक
कर दिया है। महात्मा गांधी
के बाद, राष्ट्र-सेवक-संघ की
के सम्बन्ध के भारत-सरकार
के शासन-प्रबन्ध में हस्तक्षेप
था। इसी प्रकार, महात्मा
हत्या के पश्चात् कोल्हापुर
जो उपद्रव हुए, उनके
होने तक वहाँ के मंत्रिमंडल
गया। मत्स्य प्रदेश के निर्माण
में जनता को भड़काने तथा
पर भरतपुर नरेश की
भाई को कैद करना पड़ा।
की कुचाल चलने पर
नरेश को भी जेल में बन्द
इन सभी मामलों में रियासती
ने रियासत की जनता और
हित को सर्वोपरि ध्यान में
किया है। फलतः रियासत
भारत-सरकार की इस नीति
किया है।

रियासती संघ
कपूरथला भ
गुना भार
अधिकारी प्र
आई० ए०
ए० बनाये गये
रजाकारों की

देशदूत-चित्रावली

कहाँ कौन क्या कर रहा है ?

रियासती संघ के उपराज-प्रमुख कपूरथला भाषण दे रहे हैं।

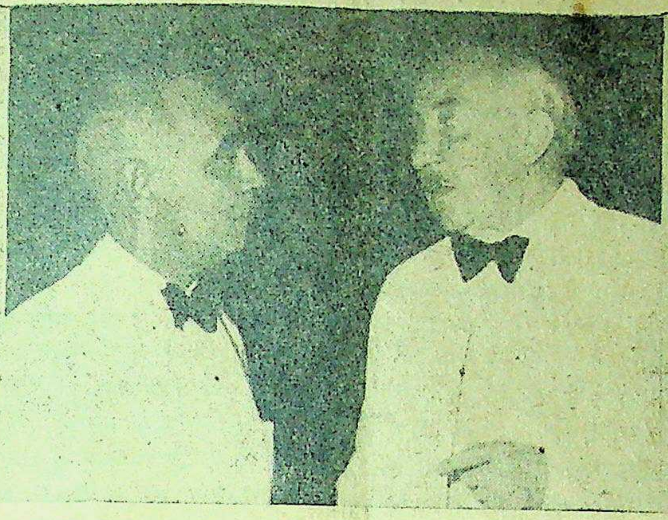

सर गिरजाशंकर वाजपेयी, भारत के आंतरिक समस्याओं के प्रधान मंत्री, संयुक्तराष्ट्र-संघ द्वारा नियुक्त काश्मीर-कमीशन के प्रधान से वार्ता कर रहे हैं।

पूर्वी पंजाब की देशी रियासतों के प्रधान राजप्रमुख महाराजा पटियाला शपथ ग्रहण करते समय भाषण दे रहे हैं।

० गुप्ता भारत इंश्योरेंस अधिकारी प्रथम भारतीय ० आई० ए० तथा एफ० ० ए० बनाये गये हैं।

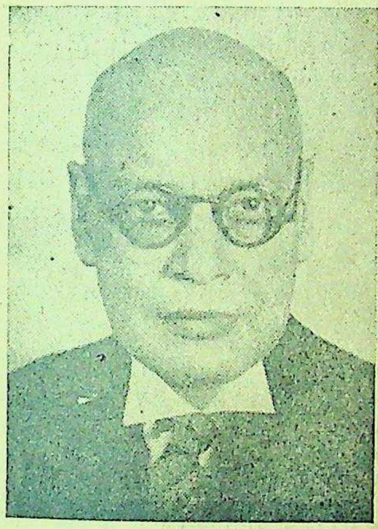

कलकत्ता विश्वविद्यालय के वाइसचांसलर श्री पी० एन० बनर्जी संसार विश्वविद्यालय सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये अमरीका गये हैं।

पटियाला के प्रसिद्ध खिलाड़ी सोमनाथ जो संसार के खेलों की प्रतियोगिता में भाग लेने के लिये लंदन गये हैं।

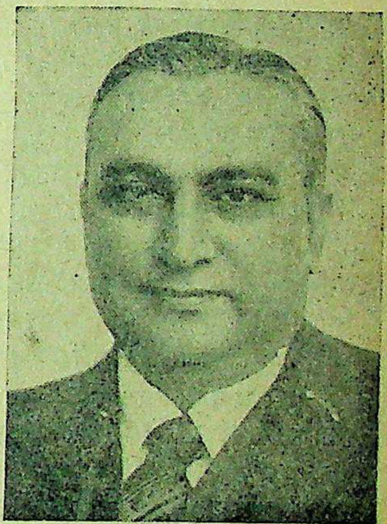

श्री वी० नरहरि राव, भारत-सरकार के प्रधान अर्थ-मंत्री प्रधान आय-व्यय निरीक्षक बनाये गये हैं।

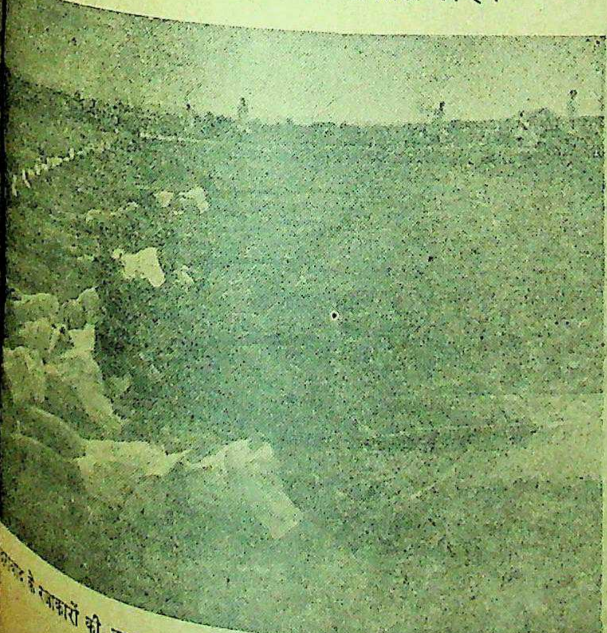

के रजाकारों की क़वायद का एक दृश्य जो भारतीय सीमा पर आक्रमण करते रहते हैं।

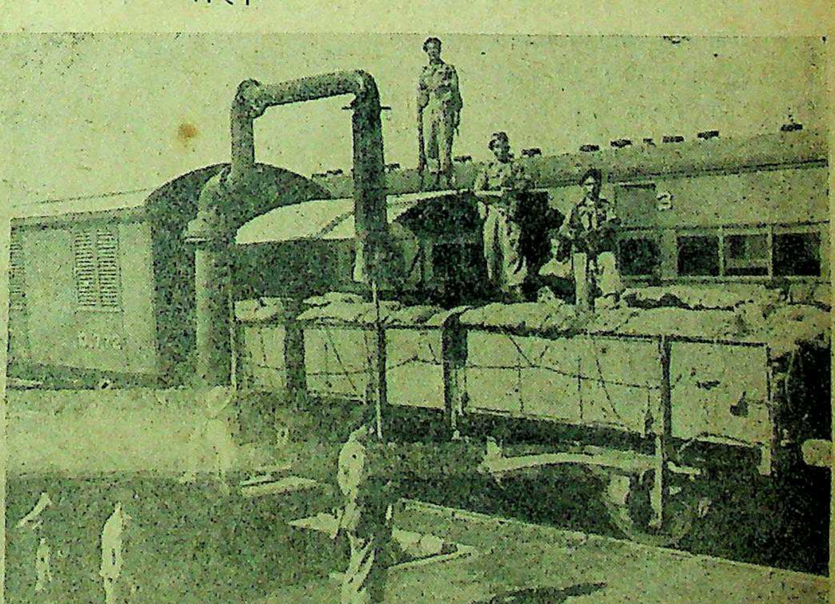

हैदराबाद में शोलापुर तथा गुंटाकल के बीच चलनेवाली ट्रेनों पर भारतीय फौजें रजाकारों के आक्रमण से यात्रियों की रक्षा करती हैं।

अपहृत बहन शान्ता की करुण कहानी

क्या पति ने उसके साथ वास्तव में न्याय किया था ?

लेखक, श्री प्रेम कपूर "कंचन"

श्रीमती कौशल्या पहवा दिल्ली की प्रथम महिला मजिस्ट्रेट बनाई गई हैं।

बहुत कुछ सुना करता था पर कभी भी विश्वास करने को प्रस्तुत न था उस दिन बहुत दुःख हुआ जब शान्ता बहन अपनी गाथा सुनाने लगी। क्या यह सत्य हो सकता है मेरी आँखें उनकी गम्भीर मुद्रा पर जमी थीं हम अपने मित्र से जब सब सुना चुके वह भी विश्वास नहीं कर रहा था। लेकिन फिर भी मैंने उनसे कहा चलिये मैं आपको उनसे मिला दूँ।

मेरे मित्र बहन शान्ता से मिले। उनकी आँखों में आँसू आ गया और तब उन्होंने प्रश्न किया—"खैर, बहन शान्ता आपने अपने पति का नाम नहीं बताया।"

इस बार वे शान्त रह गईं और मैंने कहा आप नाम नहीं लेना चाहतीं सो क्षमा कीजिए इस कागज पर लिख दीजिये ?

उनकी उँगली कागज पर काँप उठी और दूसरे ही क्षण अंकित था—"रामधारी सिंह!"

"इनका पता—?" मैंने प्रश्न किया।

"पता नहीं मालूम......पर क्या होगा।" स्मृतियाँ पलटीं और वे कहती जा रही थी उस शान्तमय गाँव में हमारे चार ही पाँच घर थे। और कितनी शांती से हम लोग निवास करते थे। धीरे धीरे सुनाई पड़ा कि भारत स्वतंत्र होगा लेकिन तभी गाँव में खबरें आ रही थीं चटगाँव और बंगाल की कहानियाँ हमारे भी गाँव में सुनाई पड़ी थीं। जलाल चाचा हमारे पड़ोसी थे। सुना था हमारे घर का और उनका साथ पीढ़ियों का था। और उन्होंने उन समाचारों को सुनकर क्षोभ से होंठ चबा लिये थे।

एक दिन शाम को सभा भी हुई थी—गाँव के पूरे मुसलमानों की भीड़ जमा थी। कितनी चेष्टा करने पर भी गाँव का मुखिया उन्हें न रोक सका था और बस उसी दिन से सबके हृदय में चोर जमा हो गया था। मुझे याद है कुछ दिन पहले जलाल चाचा और मेरे ससुर जो दोनों साथ साथ खेत को जाते थे। जलाल का लाड़ला बेटा अहमद जब भी आँगन में आता भाभी कहते ही उसका मुख सूखता था। लेकिन अब हर एक के मन में चोर समा गया था।

फिर और नये-नये समाचार आने लगे थे। पाकिस्तान का झगड़ा चल रहा था उसकी दया से १५ अगस्त की संध्या समाप्त हुई सबों ने हरे झंडे घर पर लगाये थे। और दूसरे ही दिन आगे के गाँव से जिहाद के समाचार आने लगे। जलाल चाचा ने कहा था जिहाद के लिये जो भी इस गाँव में खड़ा होगा उसे जिहाद हमारी लाशों पर खड़े होकर करना होगा मेरे ससुर को उन्होंने जाने से रोक लिया था..." और कहते-कहते उनका मुख क्षोभ से भर आया था।

कुछ शांत होकर मैंने फिर पूछा—"आगे क्या हुआ आगे।" कहते हुए उसकी आँखें लाल हो उठी थीं।

कुछ क्षण रुककर उन्होंने फिर कहना प्रारम्भ किया—और उस दिन संध्या को जलाल चाचा आकर कह गये—"चौधरी पूरी तैयारी कर लो मुखिया जिहादियों को कल तक के लिये रोके हैं। बस अँधेरा होते ही चल पड़ो।" इतना कहते ही मैंने बाहर झाँककर देखा था वह बुड्ढा काँप रहा था। वह बड़बड़ाता चला जा रहा था—"वाह रे शहरवाले..." यह सब शहरवालों की करनी थी जो गाँववालों को पिशाच बनाकर चला रही थी।

और उसी समय से सब तैयार हो गये थे। नगद रुपये और जेवरों को साथ लेकर झुटपुटा होते ही हम चल पड़े। पर जाने कहाँ किसी को हमारे जाने की खबर मिल गई थी गाँव घिर गया था।

हम लोग रास्ते में ही रोक लिये गये। तभी देखा चार घर की चार औरतों में केवल तीन ही वहाँ खड़ी थीं। कुसुम का पता न था वह नाते में मेरी ननद लगती थी।

भीड़ ने हमको एक ओर खींच लिया। पता नहीं कौन कहाँ गया। दूसरे दिन हम एक बन्द कमरे से निकाली गईं और तभी एक ने प्रश्न किया था चौथी कहाँ है। रक्षक ने कहा, उसने खुदकुशी कर ली। और उसी संध्या हमें मुसलमान बनाकर हम तीनों का निकाह कर दिया गया।

हम तीनों अलग अलग हो गईं। ज्यों ही हमने दूसरे कमरे में पहुँचकर आँखें खोलीं अहमद हमारे सामने खड़ा था.... "तुम मेरे मुँह से निकाला ही था कि उसने.......पैशाचिक हँसी हँस दी और उसके बाद दिन चल पड़े।

दो मास, चार दिन, आठ दिन और इसी प्रकार छः मास बीत गये। सुशीला और अचला पानीवाले कुएँ पर मिली थीं उन्होंने बताया था गाँव में अब फिर लोग आ रहे हैं अपहृत नारियाँ फिर लौटा दी जायँगी मैं इतना सुनते ही खिल उठी थी। उनको देखने की ही इच्छा एक बार मन में उत्पन्न हो उठी।

कई रोज बाद वे फिर मिलीं उनसे मैंने पूछा—'क्यों बहन, तुम्हारे पास भी वालंटियर लोग गये थे।"

हाँ गये तो थे और कह रहे थे कि यदि आप अपने सम्बन्धियों के पास जाना चाहें तो जा सकती हैं। आपके लिए इन्तजाम कर दिया जाएगा। लेकि
अब मैं वहाँ क्या करूँगी जाकर।

"और फिर मैंने दूसरी सहेली
किया पर वह बेचारी बहुत दुः
कुछ नहीं बोली।"

उस माह की १० तारीख
मोटर लेने आई मैं उस पर जा बैठी
गाँव की ओर कोई वहाँ न थी
पूछा तो पता चला कि अचला ने
हत्या कर ली और सुशीला की
पाँच साल हुए वह एक बच्चे
देखने को तरस रही थी और यहाँ

मैं अकेली चल पड़ी और
गाँव में मेरी बहुत-सी अभागिनें
आईं। हम दिल्ली आये और मेरी
लालसा उद्विग्न हो उठी। साथ
तरसा रही थी स्टेशन पर मैंने
देखा मैं ऊब उठी थी। उसी दिन
कैम्प के सामने मुझे उतारा गया।

मैं उन्हें देखते ही उनके चरण
को झुकी पर भाग्य में बदा न था
जा रहे थे मैंने आवेश में तुम्हारा
दिया था। उनकी वाणी में रुखा
था वे कहते जा रहे थे खैर अब
तुम्हारा साथ नहीं निभ सकता।

यह नोट लो और तुम कि
शहर चली जाओ। माँ जी
बैठी पर उन्होंने डाँट दिया और
पर बैठाते हुए उन्होंने कहा
जबरदस्ती किसी को
नहीं रोक सकी......।"

कहते कहते उसका गला भर आ
मेरे मित्र ने कहा बहन जी आप
नहीं आत्महत्या करना पाप है आपने
जीवन के लिए अन्याय किया है
आपको अपने यहाँ स्थान दे
बाद में......!"

ये वे नारियाँ हैं जिनको दु
दबोच लिया है। हमारा यह कर्तव्य
हम उनको अपने समाज में
उनके उखड़े हुए कदम को फिर
और एक नई संस्था का नि
उनको नये जीवन प्रदान करें।

* *

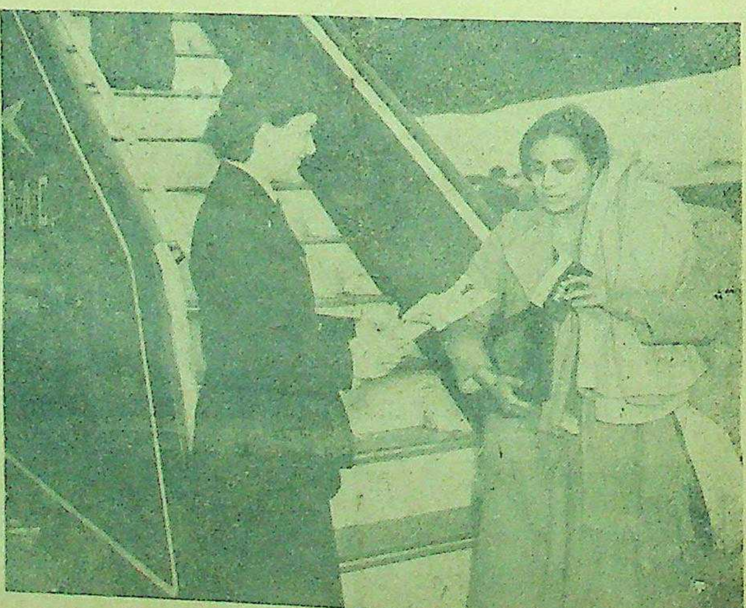

महात्मा गांधी की प्राइवेट सेक्रेटरी कुमारी सुशीला नय्यर आजकल अमरीका का भ्रमण करने गई हैं। इस चित्र में आप [illegible] दिखाई दे रही हैं।

सेवाग्राम
रंग-बिरंगी छपाई, अनेक रंगीन
रचयिता श्री सोहनलाल
संरक्षक श्री घनश्यामदास
जनता की भाषा में, जन
का, जनता का काव्य कवि
रचनाओं का सुन्दर संग्रह।
बढ़िया काग़ज़, कपड़े की मज़
मूल्य दस रुपये।
आविष्कारों की
मशीनें कैसे बनीं!
औजार कैसे बनें! रेल, जहाज,
सिनेमा वगैरह कैसे बने! नई
बनाकर या नये काम करके
दुनिया में प्रसिद्ध हो सकते हैं!
बातों को जानने के लिए यह
पढ़िए। मूल्य १)
मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस,

५० हजार रुपये अलग कर दिये गये हैं, और १७० लाख रुपये विशिष्ट योजनाओं के लि निर्धारित हैं, जिनमें राजपूताना विश्वविद्यालय, मेडिकल कालेज और प्रादेशिक कार्यालयों के लिए इमारतों का निर्माण भी शामिल है।

—अम्बिकाप्रसाद शर्मा
वास्ते प्रकाशन अधिकारी

* * *

जयपुर इस सभा को पूर्ण विश्वास और आशा है कि हमारे नव निर्मित मंत्रिमंडल के राज्य काल में जयपुर की सर्वांगीण उन्नति तथा विकास होगा, और ऐसी अच्छी परम्पराएँ स्थापित की जायेंगी जो न केवल इस राज्य के लिए आदर्श होंगी, बल्कि तमाम राजस्थान की सरकारों के लिए भी एक नमूना होंगी। इन शब्दों के साथ प्रतिनिधि सभा के नेता श्री रामकिशोर जी व्यास ने जयपुर के नये मंत्रिमंडल का स्वागत किया।

आपने कहा : 'जयपुर के इतिहास में यह पहला अवसर है जब कि जयपुर की जनता के माने हुए प्रतिनिधियों ने जयपुर सरकार के मंत्रिमंडल का निर्माण किया है। जयपुर राज्य और जनता के लिए यह कम गर्व की बात नहीं है कि राजस्थान की रियासतों में सर्वप्रथम लोकप्रिय सरकार बनाने का सौभाग्य इसको प्राप्त हुआ है, यह जनता तथा जन नेताओं के परिश्रम तथा त्याग का फल है।

आपने आशा प्रकट की कि देश के व्यापक हित की दृष्टि से राजपूताना प्रान्त के निर्माण की बात जब कभी सामने आवेगी तब भी जयपुर की जनता और जयपुर महाराज साहब का शानदार योग होगा। श्री व्यास जी ने सभा के अध्यक्ष, सर वी० टी० कृष्णमाचार्य को संबोधित करते हुए कहा—यह आपकी ही कोशिशों का फल है जो श्री महाराजा साहब की इच्छा कार्यरूप में परोणित हो सकी है। आपने वर्तमान पेचीदी परिस्थितियों में किस सुन्दरता के साथ शासन सुधार की उलझी हुई गुत्थी को सुलझाने का प्रयत्न किया है।

—संवाददाता

* * *

जयपुर नगर से श्री चिरञ्जीलाल जी अग्रवाल के सुयोग्य सम्पादन में इसी मास से एक राजनैतिक साप्ताहिक पत्र "जनता" का प्रकाशन प्रारम्भ होगा।

—प्रबन्ध-सम्पादक

* * *

हरिद्वार में विश्व-वन्द्य पूज्य बापू जी के महामन्त्र रघुपति राघव राजाराम के भक्त एवं उपासकों का एक विराट सम्मेलन गंगा जी के पवित्र तट हरिद्वार में कार्तिक शुक्ला ५ से १५ पूर्णिमा सं० २००५ तदनुसार तारीख ६ नवम्बर सन् १९४८ से १६ नवम्बर सन् १९४८ ई० तक श्रीराम भक्त शिरोमणि पं० कपीन्द्र जी महाराज रामचरितमानस मर्मज्ञ को संरक्षता में होना निश्चय हुआ है।

इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य वर्तमान दुखित जनता को वास्तविक सुख एवं शान्ति प्राप्त के मार्ग का प्रदर्शन कराना तथा सर्वसाधारण में पारस्परिक प्रेम तथा संगठन की भावना को उत्पन्न करना जिससे हमारे स्वतन्त्र राष्ट्र की जनता के भाव निर्मल तथा उच्च हों।

इसका विशद् कार्यक्रम पृथक् जनता की सेवा में उपस्थित किया जायगा किन्तु साधारण तथा रामायण तथा गीता आदि धर्म के सर्वोच्च ग्रन्थों के आधार पर देश के सुप्रसिद्ध भक्त विद्वानों द्वारा प्रवचन संकीर्तन, यज्ञ तथा रामायण का नवाह्नपाठ व गीता पाठ अखिल भारतवर्षीय महाकवि सम्मेलन तथा संगीत सम्मेलन, चित्र-कला प्रदर्शनी आदि के विशाल आयोजन किये जा रहे हैं। प्रदर्शनी के लिए विशिष्ट हस्त-लिखित चित्र-निर्माताओं को सर्वप्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार भी दिये जायेंगे।

—संवाददाता

* * *

प्रतापगढ़ (कालाकाँकर) हिन्दी समिति की ओर से हनुमत हायर सेकेन्डरी स्कूल के हाल में श्री प्रभाकर सिंह एम० ए० एल० टी० के सभापतित्व में तुलसी-जयन्ती बड़े समारोह के साथ मनाई गई। इस अवसर पर सभाभवन कलापूर्ण ढंग से सजाया गया था। सर्व श्री रामकुमार मिश्र, वीरभानुसिंह, संगीताचार्य राजेन्द्रसिंह, राधाकृष्ण, रामदुलारे, एवं ब्रजलाल दास ने तुलसी की विभिन्न शैलियों की कविताओं को सुमधुर स्वर से गाकर सुनाया। श्रीयुत राजेन्द्रप्रतापसिंह साहित्यरत्न ने महाकवि की जीवनी एवं कृति पर विद्वत्तापूर्ण ढंग से प्रकाश डाला। श्रीवासुदेव मिश्र शास्त्री, साहित्यरत्न ने तुलसी-साहित्य के गंभीर अंगों की विशद विवेचना की। पं० हरदत्त जी शर्मा ने तुलसी का धार्मिक दृष्टिकोण जनता के सामने रक्खा। श्रीलालकुमारसिंह विशारद ने कवि के सगुण एवं निर्गुण मार्गों का दिग्दर्शन कराया। प्रधान सभा ने कवि की भाषा एवं राजनैतिक विचारों पर प्रकाश डालते हुए जनता को तुलसी-साहित्य के स्वाध्याय के लिए प्रोत्साहित किया।

इस अवसर पर श्री रामेश्वरप्रसाद जी एम० ए० ने हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने के लिए प्रस्ताव रक्खा, जिसका समर्थन श्री शाहरजी अहमद ने बड़े जोरदार शब्दों में किया। श्री रामसनेहीसिंह बी० एस० सी० आनर्स एम० ए०, एल टी० प्रिंसिपल ने इस प्रस्ताव के समर्थन में बोलते हुए कहा कि [प्रान्तीयता से दूर रहने के लिए एवं राष्ट्रीयता की ज्योति जगाने के लिए हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाना अनिवार्य है। प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हुए। इसकी एक प्रति माननीय प्रधान मन्त्री, भारत, एवं प्रधान, विधान, परिषद् के पास भेज दी गई।

—वासुदेव मिश्र

* * *

हरिद्वार में श्री बाबा कालीकमलीवाले क्षेत्र के अवैतनिक व्यवस्थापक रायबहादुर पंडित श्रीदत्त जी ने एक प्रेस वक्तव्य देते हुए [कहा है कि देश में दिन प्रति दिन संकट सामने आते दिखाई दे रहे हैं। इस प्रकार की दशा देखते हुए सब भेद-भावों को मिटाकर एक मत से भारत की रक्षा करनी चाहिए। हमारे में से किसी का चाहे कांग्रेस से मतभेद हो! और चाहे पंडित नेहरू जी और और श्री सरदार पटेल से मतभेद हो और चाहे अन्य किसी मिनिस्टर की कार्य प्रणाली से भी मतभेद हो। इसको एकदम भुला देना चाहिए। इस समय कन्धे से कन्धा मिलाकर भारतमाता की रक्षार्थ नेताओं की आज्ञा मानने और उनके आदेशों पर चलने के लिए तैयार रहना चाहिए। जो पाकिस्तान सरकार कश्मीर पर हमला कर रही है और लड़ाई की तैय्यारी में संलग्न है। ऐसी अवस्था में स्वार्थों को लेकर और पृथक् पार्टी बना कर देश में फूट डालना अपना और देश का सर्वनाश करना है। सरकार को भी इस समय देश की परिस्थिति को देखते हुए हिन्दू कोड़ को रोक देना चाहिए और खाद्य सामग्री के भाव निश्चित करने चाहिए। चोर बाजारी, घूसखोरी आदि करनेवालों को फाँसी की सजा मिलनी चाहिए। और योग्य युवकों को फौजी शिक्षा की व्यवस्था हो। इसी प्रकार धनी पुरुषों की ओर से सरकार की सहायता हो। सरकार व जनता मिलकर देश की रक्षार्थ १५वें दिन मन्दिर, मसजिद और गिरजा आदि धार्मिक स्थानों में सम्मिलित प्रार्थनाएँ करें जिससे ईश्वर हमारे संकटों को दूर शान्ति स्थापित करें।

—संवाददाता

* * *

अमेठी हिन्दी परिषद् के तत्त्वावधान में कल स्थानीय श्री रणवीर (विद्यालय) हाइपर सेकन्डरी स्कूल में तुलसी-जयन्ती एवं हिन्दी दिवस श्री सुरेशचन्द्र मिश्र मैनेजर अमेठी राज्य के सभापतित्व में मनाया गया। युवराज श्री रणञ्जयसिंह जी ने प्रस्ताव किया कि यह सार्वजनिक सभा केन्द्रीय सरकार से प्रार्थना करती है कि विधान-परिषद् के द्वारा हिन्दी को राष्ट्रभाषा एवं नागरीलिपि को राष्ट्र-लिपि घोषित करे। प्रस्ताव का अनुमोदन तथा समर्थन सर्वश्री ओङ्कारनारायण तथा चन्द्रभानु ने किया जो सर्वसम्मति से पास हुआ। गोस्वामी तुलसीदास जी के जीवन पर भी अनेक वक्तृताएँ हुईं जिनमें डा० रामसुमेरसिंह बी० ए० का भाषण विशेष उल्लेखनीय है।

—संवाददाता

* * *

उमरिया में श्री तुलसीजयंती समारोह तथा हिन्दी दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया। सायंकाल सार्वजनिक सभा होने के पहले सार्वजनिक पुस्तकालय भवन से जुलूस निकाला गया, जिसमें कीर्तन व तुलसीदास जी के पद गाये गये।

सभा में श्री दीपनारायण जी पाठक, सेठ मोहनलाल आदि अनेक व्यक्तियों ने महान् कवि के जीवन, प्रतिभा और काव्य पर महत्त्वपूर्ण भाषण दिये साथ ही हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनने के सम्बन्ध में भी प्रभावपूर्ण शब्दों में माँग की गई। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित प्रस्ताव भी सर्वानुमति से स्वीकृत हुआ—

"स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद राष्ट्रभाषा का निश्चय भी एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न बन गया था, भाषा के साथ ही यह हमारी सांस्कृतिक और राष्ट्रीय समस्या थी संघ की बहुसंख्यक जनता के विचार-धारानुसार इस सभा का भी यह दृढ़ मत है कि हिन्दी को ही राष्ट्र-भाषा और लिपि देवनागरी स्थिर की जाय एतदर्थ उमरिया के नागरिकों की यह सार्वजनिक सभा भारतीय संघ के प्रधान मंत्री से अनुरोध करती है कि केवल हिन्दी को राष्ट्रभाषा और लिपि देवनागरी घोषित की जाय और विधान परिषद् जन-मत का आदर करते हुए इसे स्वीकार करें।"

—संवाददाता

* * *

जयपुर की प्रतिनिधि सभा में/प्रश्नोत्तर के समय बताया गया कि जयपुर पञ्चायत कानून के अनुसार खालसा के गाँवों में २०३ और जागीरदारों के गाँवों में ५० पञ्चायतें बन चुकी हैं। बाकी गाँवों में पञ्चायतों की स्थापना का काम जारी है। सरकार की ओर से बताया गया है कि इस काम में जो प्रगति हुई है उससे सरकार को पूरा संतोष नहीं है और इस बात की

कोशिश की जा रही है कि ज्यादा से ज्यादा संख्या में पञ्चायतें जल्दी से जल्दी स्थापित हो सकें। पञ्चायतों को ज्यादा अधिकार देने का सवाल भी विचाराधीन है फिर भी, इस बारे में जो दायित्व स्वयं गाँववालों का है, उसको वे भी उठायेंगे, यह सरकार आशा करती है।

राजस्व सचिव पण्डित टीकाराम जो पालीवाल ने एक आवेदन के उत्तर में बतलाया कि सरकार पट्टेदारी कराना लाजिमी नहीं करेगी। परन्तु जो इसका लाभ समझते हैं, उन्हें पट्टेदारी के अन्तर्गत मिलनेवाले अधिकार प्राप्त करने का अवसर मिलना चाहिये। इस बारे में जोर-जबरदस्ती किसी के साथ नहीं की जायगी। सरकार को पट्टेदारी के नजराने से जो रुपया मिलेगा वह सारा का सारा गाँव के लोगों के लाभ के लिए खर्च किया जायेगा। आपने एक दूसरे आवेदन के उत्तर में बताया कि राज्य में जहाँ जहाँ भी चकबन्दी नहीं है वहाँ शीघ्र इसका प्रबन्ध कर दिया जायेगा, अब तक जहाँ चकबन्दी लागू कर दी गई है वहाँ फिर से अनाज में लगान लेने का तरीका शुरू करने का सवाल नहीं उठाया। आपने सभा को यह भी बताया कि सरकार की नीति गाँवों की चराई के लिए जहाँ तक बन सके ज्यादा से ज्यादा जमीन छोड़ने का है और ऐसा ही किया भी जा रहा है। लेकिन बदली हुई परिस्थितियों में खाद्य पदार्थों की उत्पत्ति बढ़ाना इतना आवश्यक हो गया है कि सरकार खेती भी ज्यादा से ज्यादा बढ़ाना चाहती है।

—संवाददाता

* * *

देवप्रयाग में "अगस्त-क्रान्ति-दिवस" बड़ी धूमधाम से मनाया गया और जनता की आम सभा जिसमें कि टिहरी राज्य के विभिन्न इलाकों की जनता भी उपस्थित थी, श्री सुन्दरलाल त्रिपाठी अध्यक्ष थे। टिहरी की क्रान्ति के नेता श्री प्रेमलाल वैद्य तथा ख्यातिप्राप्त नेता श्री बुद्धिसागर नौटियाल मंत्री टिहरी राज्य प्रजा-मंडल विलीनीकरण समिति ने अपने ओजस्वी भाषणों में टिहरी-राज्य के अन्दर की लोक-परिषद्, उत्तरदायित्व-पूर्ण शासकदल, 'स्वतन्त्र इकाई' दल तथा मंत्र-मण्डल की नीति की कड़ी आलोचना की।

टिहरी प्रजामण्डल विलीनीकरण समिति के नेता श्री नत्थाराम रतूड़ी टिहरी जेल में २१ दिन से भूख-हड़ताल पर हैं। आपके साथी श्री सतेसिंह भी टिहरी जेल में बन्द हैं।

—संवाददाता

* * *

गुदड़ों के लाल

इस पुस्तक की कहानियाँ बहुत ही सरल और रोचक भाषा में लिखी गई हैं। इनको पढ़कर बच्चे बेहद खुश होते हैं। ऐसी पुस्तक अपने बच्चों को जरूर दीजिए। मूल्य ।।)

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

स्वतंत्र भारत में व्यवसाय

(पेज ६ का शेष)

और नारियल का तेल, खनिज तेल, कच्चा रेशम, सूत, कच्चा ऊन, लकड़ी की लुगदी, कच्चा चमड़ा और खालें।

३ जुलाई १९४८ को सरकार ने घोषणा की कि भारत की वैदेशिक मुद्रा-विनिमय स्थिति के अर्द्धवार्षिक सिंहावलोकन के फलस्वरूप सरकार ने निश्चय किया है कि पौंडवाले तथा अन्य सुलभ मुद्रावाले देशों से आयात होनेवाली कतिपय श्रेणियों की वस्तुओं पर से नियंत्रण तुरन्त हटा लिया जायगा। इन वस्तुओं के आयात के लिये एक नया साधारण खुला लाइसेंस जारी किया जायगा। इस नई व्यवस्था का प्रभाव विशेष रूप से निम्नलिखित वस्तुओं पर पड़ेगा—जूट-मिलों का सामान, सूती मिलों का सामान, छापने की मशीनें, कोलतार के रंग, बिजली-यंत्र, सूती कपड़े, ऊन के धागे, रेजर ब्लेड, थर्मास बोतल आदि।

टैरिफ बोर्ड

युद्धकालीन उद्योगों की सहायता और सुरक्षा के लिये नवम्बर १९४५ में एक तट-कर बोर्ड की स्थापना की गई थी। आरम्भ में इसमें एक अध्यक्ष और ३ सदस्य थे। गत वर्ष एक सदस्य और बढ़ा दिया गया। विभाजन के पश्चात् बोर्ड में केवल एक ही सदस्य रह गया। अक्टूबर में सरकार ने बोर्ड का पुनर्निर्माण कर दिया। इस समय बोर्ड में अध्यक्ष के अतिरिक्त दो सदस्य हैं।

गत बारह महीनों में इस बोर्ड ने देशी उद्योगों के संरक्षण के लिये जो रिपोर्ट दी है, उन्हीं के आधार पर भारत-सरकार ने कुछ उद्योगों के संरक्षण की आज्ञा दे दी है। कुछ मामले विचाराधीन हैं और कुछ माँगें अस्वीकृत कर दी हैं। और भी कई संरक्षण-संबन्धी प्रार्थना-पत्र आये हैं।

केन्द्रीय निर्यात नीति

पिछले वर्ष भारत की निर्यात नीति पर दो बातों का प्रभाव रहा है—एक तो, विदेशी विनिमय से देश के साधनों को सुरक्षित रखने और उन्नत करने की आवश्यकता और दूसरे विश्व की निर्यात मंडियों में भारत की स्थिति दृढ़ बनाने की आवश्यकता। विशेषकर प्रशांत तथा लाल सागर के इलाकों और सुदूरपूर्व की मंडियों की निर्यात करने की ओर ध्यान दिया गया, जहाँ यूरोपियन देशों और जापान का मुकाबला न रहने के कारण भारत के लिए अच्छा व्यापारिक भविष्य है।

स्वाधीन भारत के भूतपूर्व व्यापार मंत्री श्री सी० एच० भाभा की अध्यक्षता में सर्वप्रथम नवम्बर मास में निर्यात सलाहकार परिषद् की बैठक हुई। इसमें अध्यक्ष महोदय ने इस बात पर जोर दिया कि देश की अंतर्राष्ट्रीय देनदारियों की कमी को पूरा करने के लिए हमें ७५ करोड़ से १०० करोड़ रुपये तक की कीमत का सामान निर्यात करने के लिये प्रयत्न करना चाहिये।

क्रमिक अनियंत्रण

चालू वर्ष में निर्यात को बढ़ाने के विचार से व्यापार सचिवालय ने वस्तुओं का अनियंत्रण करने, निर्यात नीति निर्धारित करने तथा लाइसेंस देने में बड़ी छूट दी। यथासम्भव अधिकाधिक मात्रा में वस्तुओं के निर्यात के कोटे बढ़ाये जा रहे हैं। १९४८ की प्रथम छमाही में २० करोड़ गज सूती कपड़ा निर्यात करने का कोटा निर्धारित किया गया जब कि १९४७ में इतने ही समय के लिए यह संख्या १५ करोड़ गज थी। २ जुलाई से सूती होजरी का माल भेजने की स्वीकृति देने का निश्चय किया गया है।

दुर्लभ मुद्रा के इलाकों को भारतीय सामान का निर्यात करने की विशेष व्यवस्था की जा रही है।

सफल 'निर्यात आन्दोलन'

इस वर्ष की पहली तिमाही में बम्बई, कलकत्ता तथा मद्रास की बन्दरगाहों से किये गये निर्यात से कुल ९७ करोड़ रुपये की आय हुई। अप्रैल में यह संख्या ३१ करोड़ रुपये थी जिसमें अमेरिका ने लगभग ६ करोड़ रुपये का सामान लिया और अन्य दुर्लभ मुद्रा के इलाकों ने लगभग २ करोड़ रुपये का।

दुर्लभ मुद्रा के इलाकों में जूट का अधिक निर्यात होता है। इस वर्ष के पहले चार मास में जूट की बनी ३,३१,००० टन वस्तुओं का निर्यात हुआ जब कि १९४६ के इन्हीं महीनों में २,६०,००० टन सामान का निर्यात हुआ था। कच्चे जूट का निर्यात भी क्रमशः १,१३,००० टन तथा १,६६,००० टन हुआ।

जून में जूट-निर्यात सलाहकार समिति की बैठक के बाद पश्चिमी बंगाल की सरकार के परामर्श से भारत-सरकार ने ३० सितम्बर १९४८ तक के लिये कच्चे जूट के निर्यात पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

१९४६ की अपेक्षा जिन अन्य वस्तुओं के निर्यात में वृद्धि हुई है वे ये हैं। चाय, सूती कपड़ा, मोम, बीज, कच्ची खालें, ऊन, वनस्पति तेल, माइका तथा कच्ची भाँग कुछ वस्तुओं के निर्यात पर से नियंत्रण हटाने के अतिरिक्त सरकार ने उनकी कीमतों पर भी कोई रुकावट नहीं रखी है। अब केवल आस्ट्रेलिया, पूर्वी अफ्रीका तथा सूडान को कपड़ा निर्यात करने पर ही ऐसी रुकावटें रह गई हैं।

पाकिस्तान से व्यापार

विभाजन-परिषद् ने यह निश्चय किया था कि पाकिस्तान तथा भारत के मध्य व्यापार-सम्बन्धी नया समझौता हो जाने तक दोनों उपनिवेशों में बिना रुकावट के सामान का स्थानान्तरण होने देना चाहिये। एक मार्च १९४८ तक ऐसा कोई समझौता न हो सकने के कारण भारत-पाकिस्तान व्यापार भी १९४७ आयात तथा निर्यात नियंत्रण कानून के अधीन आ गया।

मई में कलकत्ता में एक अन्तरोपनिवेशिक सम्मेलन हुआ जिसके परिणामस्वरूप भारत-सरकार ने बिना लाइसेंस के ताजे फलों, ताजी तरकारियों, ताजे दूध, दूध की वस्तुओं, (शुष्क तथा ताजी) मछलियों, मुर्गियों तथा अंडों और स्थानीय मसालों के स्थल-मार्ग से निर्
स्वीकृति दी।

कराची समझौता

२६ मई को भारतीय
सी-सी० देसाई और पाकि
श्री मोहम्मद अली के
में आवश्यक वस्तुओं की
दूसरे को सप्लाई करने के
समझौता हुआ।

समझौते के अनुसार
को निश्चित मात्रा में
तथा सूत, इस्पात,
कतरन, परतदार लोहे
तथा गत्ता, कुछ
की वस्तुएँ, सीमेंट
रोगन तथा वार्निश,
जूट की वस्तुएँ,
ऊन का सामान,
का तेल, साबुन,
चाय की पेटियाँ देगा।
पाकिस्तान ने भारत को
रुई, खाद्यान्न,
तथा चमड़ा, नमक,
तथा ५५० पशु देना

भारत की राष्ट्रभाषा हि

(पेज ४ का शेष)

कटम (महा-गदा) मक्को
गति) मक्का कन्टम (महा
कपिटम (महा-कपिथ)
(महा-कल्प) मक्का कबम
मक्का-कसम (महा-हाम)
(महा-काम) मक्का-किन्
ग्रोव) (अँट) मक्का-कुम्पन
मक्का कैलास (महाकैला
कोटि (महाकोटि) मक्का-
घोष माक्कान्कम (मह
कुवलम (महा - ज्वाल)
(महा-संघ मक्का च्वंकम
महा-कम्पू (जम्बू) मक्का
शय) मक्का-सनम (महा
कुमक (महामुख) मक्का
शूर) मक्कात-तिकम (मह
टुमा (महात्मा) महा-
हन्तम्), महा-टाटु (महायानु)
(महा-ट्रुम) महा-टाम (मह
नाकम (महा-नाग) महा-नि
निधि) महा-निम्बम् (महानि
नीतमम् (महाशील)

उड़ीसा के आधुनिक
मधुसूदन राव की एक कवि
लेख का अन्त करता हूँ।
परिमार्जित एवं सशक्त है
श्रेष्ठ एवं उद्‌गार उत्तम हैं
उड़िया ही नहीं है। यह
यह भारतीय है।

येहि कि से पुन्य-भूमि
सविस्तोर्स रंगभूमि
येहि कि से भारत येर
गम्भोर झंकार पुं
येहि कि से आज्ञा
येर ज्ञानामृत पानं
येर …..
येहि कि से वसुधार
येहि कि से आमृतमय

यही भाषा है जो राष्ट्र के
सम्बन्ध का माध्यम होगी
द्वारा अनुप्राणित होगी जो
कोई प्रतिरोध नहीं
व्याकरण का ढांचा हिन्दी
किया जायेगा।

रामचरितमानस

टीकाकार—डाक्टर श्यामसुन्दरदास

'मानस' का महत्त्व किसी से छिपा नहीं है। ारतवर्ष में तो इसका ान है ही, अन्य ेशों में भी इस अमर ग्रन्थ का आदर है। यह ामाणिक संस्करण इधर ई वर्ष से अप्राप्य था। ाल में ही छपकर तैयार ा है। ग्राहकों को ा करनी चाहिए। प्रतियाँ नहीं छापी हैं।

डे आकार के १२०० । रंग-बिरंगे दर्जनों । सजिल्द प्रति का ल्य १२) रुपये

जहाँ पर हमारी ब्रांच एजेंसी है वहाँ ख़रीदने डाकख़र्च की बचत होगी।

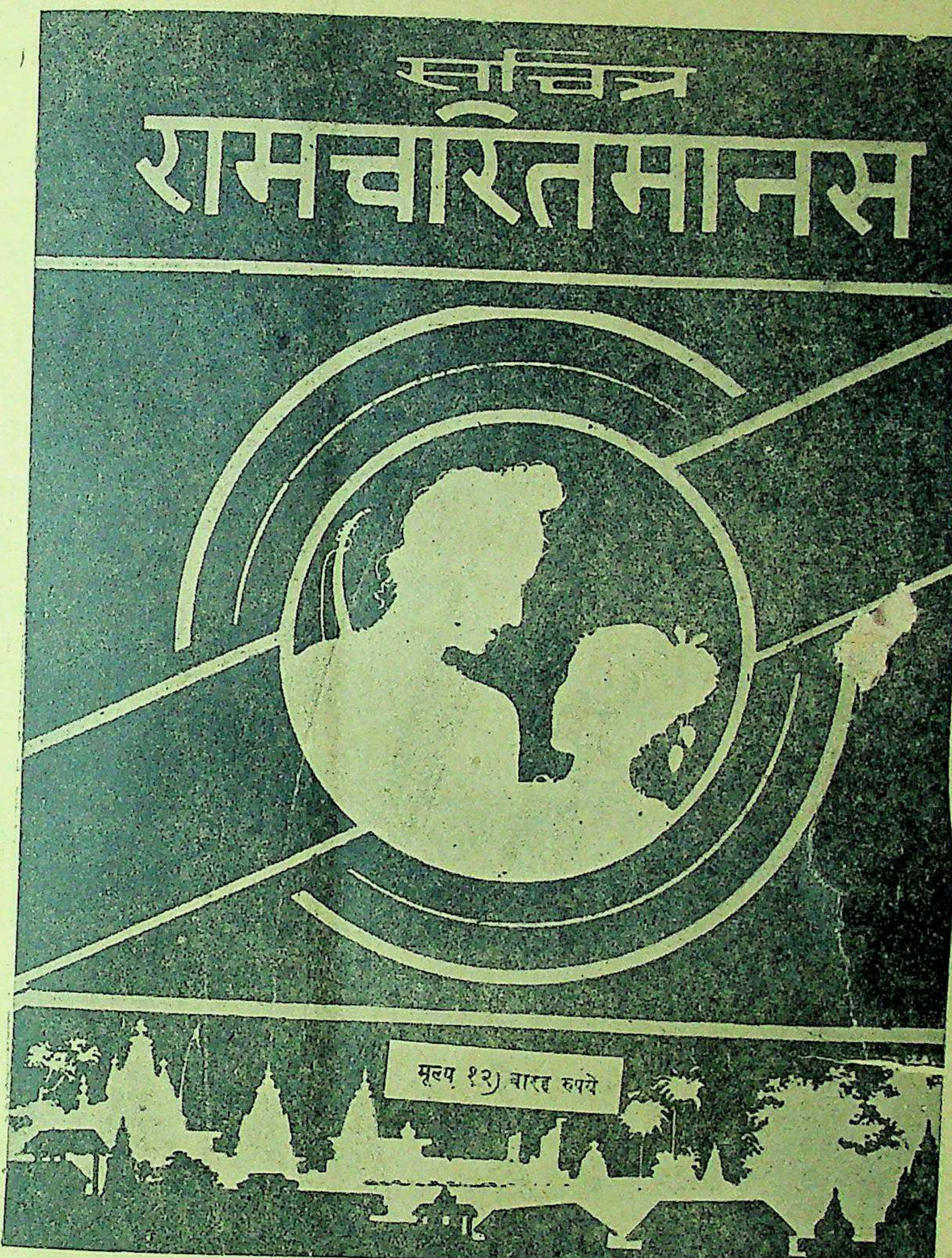

हमारी ब्रांचें और एजेन्सियाँ

हाबाद सिटी—न्यू ऐरा बुकहाउस, हिवेट रोड
आगरा—आगरा पब्लिशिङ्ग हाउस, बाग़ मुज़फ़्फ़र ख़ाँ
जमेर—इंडियन प्रेस लिमिटेड, कचहरी रोड
ल्मोड़ा—डिस्ट्रिक्ट बुकडिपो, लालबाज़ार
नारस—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, बनारस छावनी
ँसी—बुंदेलखण्ड पब्लिशिङ्ग हाउस
ली—इंडियन बुकडिपो
म्बई—भारतीय पुस्तक भण्डार, कालबा देवी रोड
कानेर—गगंनुक कम्पनी, कोट के भीतर
कत्ता—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, २२।१ कार्नवालिस स्ट्रीट
नपुर—साहित्य-रत्नालय, श्रद्धानन्द पार्क
१२ दिल्ली—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, नई सड़क
१३ गोरखपुर—पुस्तक-स्थान, बख़्शीपुर
१४ ग्वालियर—लायल बुकडिपो, पाटनकर बाज़ार, लश्कर
१५ इन्दौर—नवयुग साहित्यसदन, खजूरी बाज़ार
१६ जयपुर—गोपाल बुकडिपो, त्रिपौलिया बाज़ार
१७ जबलपुर सी० पी०—इंडियन प्रेस, लिमिटेड
१८ लखनऊ—इंडियन बुकडिपो, अमीनुद्दौला पार्क
१९ मेरठ—पुस्तक-स्थान, वैस्टर्न कचहरी रोड
२० पटना—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, पो० ऑ० बाँकीपुर
२१ राँची—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, कोर्ट रोड
२२ अम्बाला (पूर्वी पंजाब)—इंडियन प्रेस लिमिटेड, दुर्गाचरण रोड

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

स्वादिष्ट मटर पुलाव—

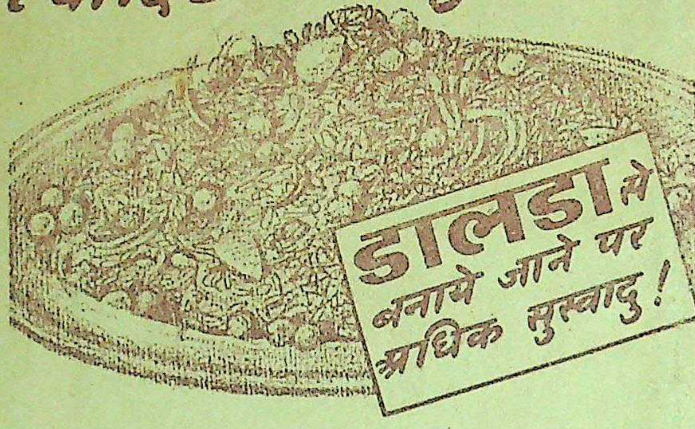
डालडा से बनाये जाने पर अधिक सुस्वादु!

चावल धो कर पानी अच्छी तरह से नियार लीजिये---चावलों को मटरों के साथ गरम डालडा में इतनी देर भुनिये कि डालडा को यह सोख ले और चावल नीचे लगने लगें। फिर पानी (इतना कि इस की सतह से एक इंच उपर रहे) और रुचि के अनुसार नमक, इलायची, दारचीनी और लौंग मिला लीजिये। अच्छी तरह हिला कर और बरतन ढ़क के, जब तक मटर और चावल गल न जायें, धीमी आंच पर पकने दीजिये। यदि चावल लगभग गल गये हों और पानी शेष रह गया हो तो ढ़क्कन थोड़ा सा हटा लीजिये और इस पर थोडे से अंगारे रख दीजिये। तले हुये प्याज़, बादाम और किशमिश से सजा लीजिये।

DALDA VANASPATI

हमें खाना बरतन ढक कर क्यों पकाना चाहिये?

इस का संबंध पौष्टिक आहार के एक महत्वपूर्ण अंग से है।

मुफ़्त सलाह के लिये आज ही लिखिये—अथवा किसी भी दिन!

दि डालडा एड्वायज़री सरविस

पोस्ट बॉक्स नं. ३५३, बंम्बई १

HVM 79-179 HI

॥ ८००० रु० नकद इनाम ॥

पहिला इनाम—ठीक हल के लिए ६००० रु० (जो एक अधिक हल ठीक होने पर बराबर बांट दिया जावेगा)। दूसरा इनाम—सब से अधिक हलों के लिये १००० रु०। तीसरा इनाम सब से पहिले ठीक हल भेजने वाले के लिये १००० रु०।

हल क्या करना है? सामने दिये हुए नौ खानों में १०० तक के कोई से अङ्क इस भांति से भरिये कि जिस ओर से भी जोड़ें उत्तर ८१ हो। एक अङ्क एक ही बार लिखा जा सकता है।

दाखला फीस—एक रु० प्रति हल।

नियम—हर एक आदमी एक या एक से अधिक जितने हल चाहे सफेद कागज पर एक रुपया प्रति हल के हिसाब से फीस के साथ भेज सकता है। फीस दाखला मनीआर्डर या पोस्टल आर्डर द्वारा भेजनी चाहिये। मनीआर्डर की रसीद हलों के साथ आनी चाहिये अथवा ऐसा हो सकता है कि आपके हल मुकाबले में सम्मिलित न हो सकें। सही हल वही समझा जावेगा जो हमारे मुहरबन्द हल के साथ जो सम्पादक महोदय दैनिक 'अमर भारत' के पास रखा गया है खाना दर खाना मिलेगा। इनामी नतीजे की कापी के लिये दो आने के टिकट और अपने पते का लिफाफा भेजें। इनाम की रकम दाखला फीस की आई हुई रकम के अनुसार कमी बेशी होसकती है पर सही हल के इनाम की कम से कम ५० रु० की गारन्टी है। हलों के रास्ते में खो जाने या डाकखाने के कारण देर पहुंचने के हम जिम्मेदार न होंगे। प्रवेश फीस किसी अवस्था में वापिस न होगी मैनेजर साहिब पहेली का फैसला कानूनी व हर प्रकार से मानने योग्य होगा। हर मामले का फैसला देहली ही होगा। अपना पता हलों पर व मनीआर्डर कोपन पर साफ लिखें हल ३१ अगस्त तक डाक में डाल देने चाहियें। इसके पश्चात भेजा हुआ कोई हल स्वीकार न किया जावेगा सही हल १५ सितम्बर को प्रकाशित कर दिया जावेगा।

८१	८१	८१		८१
	२१			
८१		२७		८१
८१			३३	८१
८१	८१	८१		८१

॥ ई० टी० एण्ड कम्पनी, पोस्ट बैग नं० ५२ ए०, दिल्ली ॥

E T & Company, Post Bag No 52 A, Delhi.

मूल्य की सूचना

WOODWARD'S "GRIPE WATER"

वूडवर्ड्स ग्राइप वाटर का सही फुटकर दाम निम्नप्रकार है:

प्रति शीशी: २ रुपये

(इसके अतिरिक्त लोकल टैक्सेस जहाँ लागू हों)

अधिक दाम मत दें

जब आप वूडवर्ड्स ग्राइपवाटर खरीदें

तब हर शी
इस ट्रेडमा
अवलोक

नक़ली मालसे सावधान रहिये!

WW. 1-111 HI

W. WOODWARD LTD, LONDON

सारिडन
10 Saridon
सभी दर्द शीघ्र दूर करता

परमात्मा पर भरोसा

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह,
का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे
आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवन
पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी
कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च
आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती
जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "
की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की
नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३≈), दो
और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुटी

देशदूत में विज्ञापन देकर लाभ उ

प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक

मूल्य ७॥)
संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

२९ अगस्त, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 29th AUGUST, 1948

यही धार्मिक युद्ध हैं ?
की यही अग्नि-परीक्षा है।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

बेलग्रेड द्वारा मास्को को चुनौती।
जर्मनी की नवीन स्थिति और रूस।

हमारी कुछ चुनी हुई पुस्तकें

रवीन्द्र-ग्रन्थावली

योगायोग—कवीन्द्र का यह उपन्यास जैसा कवित्वमय है वैसा ही मनोविज्ञान की बारीकियों से परिपूर्ण। इसमें बंगाल के समाज का अपूर्व चित्रण है। नायिका है धर्म-प्राण कुमुद और नायक है राजा बहादुर मधुसूदन घोषाल जो गरीब घर का लड़का होकर अपने पौरुष से बहुत बड़ा मालदार हुआ है। अपने विरोधी घराने की बेटी से विवाह करने पर उसके चित्त में जो विरोध के बादल उमड़ते हैं उनका गर्जन और नई दुलहिन कुमुद का शान्त-शिष्ट प्रतिकार देखकर बरबस लेखक की सराहना करनी पड़ती है। इसमें गृहिणी की क्षमता का अपूर्व उदाहरण है। भाषा, भाव और कथानक सभी दृष्टियों से 'योगायोग' कवीन्द्र के उपन्यासों में सर्वश्रेष्ठ है। इसे एक बार पढ़कर दुबारा-तिबारा पढ़ने को जी चाहता है। अच्छा कागज, बढ़िया जिल्द, पृष्ठ सवा तीन सौ से अधिक। मूल्य केवल चार रुपये।

विश्व-परिचय—यह विज्ञान-विषयक पुस्तक है। इसमें परमाणुलोक, नक्षत्रलोक, सौरजगत्, ग्रहलोक और भूलोक आदि शीर्षकों में विषय का विशद विवेचन है। एक स्थान पर लेखक ने लिखा है "वस्तुएँ सब रंगों को ग्रहण नहीं कर सकतीं, किसी किसी को वापस कर देती हैं। वह लौटाया हुआ रंग ही हम देखते हैं। ब्लाटिंग पेपर जिस रस को सोख लेता है वह किसी काम नहीं आता—जिस रस को वह ले नहीं सकता वही बचा हुआ रस हमारा प्राप्य है।" इस प्रकार सरल रीति से कठिन विषय समझाया गया है। पुस्तक बालकों के लिए होने पर भी वयस्क विद्वानों को कम आनन्द न देगी। अच्छे कागज पर छपी हुई सुन्दर सजिल्द पुस्तक का मूल्य दो रुपये।

रूस की चिट्ठी—डाक्टर रवीन्द्रनाथ ठाकुर वृद्धावस्था में रूस गये थे। वहाँ का आँखों देखा हाल उन्होंने चिट्ठियों में लिखकर भेजा था। वह बड़ा विचित्र है। इधर तो रूस के सम्बन्ध में बहुत सी बातें प्रकट हो गई हैं पर जिस समय रवि बाबू वहाँ गये थे, रूस का हाल हमें विकृत रूप में बताया गया था। उसको कवि ने सुन्दर भाषा में प्रकट किया है। पुस्तक सचित्र और सजिल्द है। अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य दो रुपये।

चार अध्याय—इस पुस्तक में सचमुच चार अध्यायों में ही कथानक पूरा किया गया है। एला सुशिक्षित युवती है, भले घर की बेटी। उसने कुछ तो पुस्तकों की प्रेरणा से और कुछ विद्यार्थी-समाज के चक्रवर्ती इन्द्रनाथ की सलाह से गृहस्थी के बन्धन में न बँधने की प्रतिज्ञा कर ली। फिर इन लोगों का सम्पर्क विप्लवपन्थियों से हुआ। उन लोगों के कार्यकलाप, उद्देश्य और विवादों के वर्णन से पाठकों को दाँतों तले उँगली दबानी पड़ती है। राजनीति, समाज की उलझन, नारी-चरित्र और प्रेममन्त्र सभी कुछ इसमें हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य एक रुपया आठ आने।

वैकुण्ठ का विल—मूल लेखक, स्वर्गीय डा० शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय। यह उपन्यास है तो छोटा किन्तु बहुत ही भावपूर्ण है। मानव-हृदय की स्वाभाविकता इसके प्रत्येक पात्र से प्रकट हो रही है। शरद् बाबू उपदेश देने की दृष्टि से रचना नहीं करते; किन्तु उपदेश अज्ञात रूप से अपना काम किये बिना कब रहता है। यह बात उनके इस उपन्यास में भी अपवाद नहीं हो सकी। मूल्य ॥≶) ।

पथ-भ्रान्त पथिक—अनुवादक, पण्डित सुन्दरलाल त्रिपाठी और पण्डित ठाकुरदत्त मिश्र। श्री चारुचन्द्र वन्द्योपाध्याय-लिखित इस उपन्यास का उपन्यास-प्रेमियों में अच्छा सम्मान है। हिन्दी के उपन्यास-पाठकों की प्रेरणा से ही इसका हिन्दी अनुवाद हमने पहली बार प्रकाशित कराया है। उपन्यास की रोचकता और महत्ता के लिए चारुचन्द्र बाबू का नाम ही पर्याप्त है। मूल्य २॥≶)।

कृष्णकान्त का विल—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। यह बंकिम बाबू का एक अत्यन्त लोकप्रिय उपन्यास है। एक भारतीय पतिव्रता का जैसा सुन्दर चित्र इस उपन्यास में खींचा गया है वैसा अन्यत्र न मिलेगा। मूल्य १) ।

युद्ध और शान्ति—अनुवादक, श्री रुद्रनारायण अग्रवाल। टॉल्सटॉय के 'वार एण्ड पीस' नामक प्रसिद्ध रूसी उपन्यास का यह हिन्दी-रूपान्तर है। इसमें लेखक ने मानव-जीवन का सम्पूर्ण चित्र, अपने समय के रूस की तसवीर और राष्ट्रों की खींच-तान बड़ी खूबी से चित्रित किया है और जीवन तथा मृत्यु के रहस्य का उद्घाटन किया है। मूल्य ५।-) ।

कपाल-कुण्डला—अनुवादक, श्रीयुत पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी, 'निराला'। यह बंकिम बाबू की कपाल-कुण्डला का हिन्दी-रूपान्तर है। कथानक की रोचकता तथा वर्णन की अपूर्वता के कारण यह उपन्यास इतना लोकप्रिय हो चुका है कि इसका नये सिरे से परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। कपाल-कुण्डला के हिन्दी में आज तक जितने भी अनुवाद प्रकाशित हुए हैं, यह अनुवाद उन सबसे बहुत सुन्दर हुआ है। मूल्य १॥) ।

शनि की दशा—अनुवादक पण्डित ठाकुरदत्त मिश्र। श्रीमती काञ्चनमाला देवी के 'शनिर दशा' नामक बँगला उपन्यास का यह अनुवाद है। लेखिका महोदया ने उपन्यास की नायिका के चरित्र में जिस मधुरता और महिमा का समावेश किया है, वह विश्व के महिला-समाज में हिन्दू-महिलाओं को गौरवपूर्ण पद दिलाने के लिए सर्वथा उपयुक्त है। मूल्य २)

रिक्ता—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। श्री नीहारबाला देवी के इस उपन्यास में पति-प्रेम वंचिता नारी का ऐसा सजीव और भावपूर्ण चित्र अंकित हुआ है कि पढ़ते-पढ़ते हृदय द्रवित हो जाता है। ऐसे भाव-पूर्ण उपन्यास आपके पढ़ने में कम आये होंगे। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-)।

श्रीकान्त—(प्रथम और द्वितीय भाग)—अनुवादक, श्री रूपनारायण पाण्डेय। 'श्रीकान्त' शरद् बाबू का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना गया है। इसमें शरद् बाबू की अमर लेखनी ने उनके कलाकार का मंजा और सधा हुआ रूप चित्रित किया है, अत्यन्त मनोरम है। प्रत्येक भाग का मूल्य २)

ब्राह्मण की बेटी—मूल लेखक, श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक, पंडित रूपनारायण पाण्डेय। शरद् बाबू भारत के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास-लेखक जाते हैं। उनका यह उपन्यास लोक-प्रियता और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मूल्य सजिल्द पुस्तक का १।-) ।

आनन्दमठ—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। मुसलमानों और अँगरेज़ों को हिन्दुस्तान से बाहर करने के लिए, बंगाल में वैष्णवों ने जो विद्रोह किया था, उसी का इस उपन्यास में उपन्यास-सम्राट् श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने बड़ी खूबी से वर्णन किया है। ऐसा सुन्दर चित्रण इस उपन्यास में है कि पढ़कर मातृ-भूमि के लिए दिल फड़क उठता है। मूल्य १।-) ।

संसार की प्रसिद्ध कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत शमशेर बहादुरसिंह, बी० ए०। इस पुस्तक में योरप के संसार-प्रसिद्ध कलाकारों की चुनी हुई कुछ कहानियाँ संगृहीत की गई हैं। ये सभी कहानियाँ बहुत ही कलापूर्ण और मनोरंजक हैं। यदि आपको योरप के कथा-साहित्य की बानगी लेनी हो, तो इस पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य १) ।

मोपाँसा की चुनी हुई कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत गोपीनाथ जी क़ानूनगो। इस पुस्तक में मोपाँसा की चुनी हुई ग्यारह कहानियों का संग्रह किया गया है। मोपाँसा की रचनाओं की बानगी लेने के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य १) ।

ब्रजनाथ का विवाह—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। आश्चर्यमयी घटनाओं से परिपूर्ण यह सामाजिक उपन्यास पढ़ने में ऐसा रोचक है कि एक बार आरम्भ करने पर फिर बिना समाप्त किये चैन नहीं पड़ता। मूल्य १।-)

स्काटलैंड-यार्ड की जासूस स्त्री—यह पुस्तक लेडी मॉली की ६ जासूसी कहानियों का संग्रह है। इस पुस्तक की एक-एक कहानी इतनी मनोरंजक और कौतूहलवर्द्धक है कि आप इस पुस्तक को पूरी पढ़े बिना चैन नहीं पा सकते। लेडी मॉली के जितने कहानी-सग्रह अब तक प्रकाशित हुए हैं, यह उन सबसे अच्छा है। मूल्य ॥।-)

जीवन-क्रान्ति—लेखक, पंडित गौरीशंकर मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी०। अनुभवी तथा विद्वान लेखक ने इस उपन्यास में सेठ-साहूकारों तथा बड़े आदमी कहे जानेवाले व्यक्तियों की नर-पिशाचिता, पुलिस तथा अन्य अधिकारियों के हथकण्डों और धन के लाभ से निरपराधों को अपराधी ठहराकर कारागार की नारकीय यातना भोगने के लिए विवश करने के माया-जाल का बहुत ही आकर्षक शैली में वर्णन किया है। उपन्यास की एक-एक पंक्ति ओजपूर्ण और हृदय में घर कर लेनेवाली है। मूल्य २॥≶) ।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

सैनिक

१०, संख्या ५१] [रविवार, २९ अगस्त, १९४८

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

र के मंत्री सचमुच इस समय ते हैं। वह हवाई बातें कर रहे दिनों रजाकारों ने तथाकथित र हैदराबाद दिवस' मनाया वसर पर हैदराबादी आजाद- अनाप-शनाप बका-बकाया के गुबार निकाले। एक मंत्री कहा कि वह समय जल्द है जब कि आसफजाही के लाल किले पर फहराता येगा। अपने राम की समझ ता है कि मन के लड्डू भी नहीं है। आसान ठकर विशेष लुगाई के प्रायः अपनी वीरता का ते हैं किंतु दिल में उनके भी लगी रहती है कि में मेरी वीरत्वपूर्ण वार्ता नहीं रहा है? हैदराबादी कम्पनी तथा वहाँ के मंत्री इस वक्त अपनी घरेलू अच्छा खासा प्रदर्शन कर पता तो तब चलेगा जब के पकड़ने का दिन आयेगा। बाद की दौड़ इस वक्त की ओर हो रही है। योरोप- इस वक्त बगली काट रहे हैं। के लिये पुरसा हाल नजर है।

* *

के २५० गाँवों ने अपनी घोषणा कर दी। जनता स्वयं का शासन करने लगी है। की तानाशाही समाप्त हो गई है। द्वारा किसान शासन-कार्य का रहे हैं। अपने राम की समझ कि रजाकारों की पल्टनों के लोग यह क्या कर रहे हैं? के हथियारों के खजाने में लग गये? क्या इसी बिरते किले पर आसफजाही झंडा लगाने देखा जा रहा है? एक मसल कि जो बादल गरजते हैं वह । निजामी मंत्री तथा रजाकार रहे हैं, लेकिन भारत-सरकार तरह जानती है कि इस तरह में कितना दम-खम है? हैदरा- स्वतंत्र हो गये और निजामी टुकुर टुकुर ताकते ही रह गये। के दल की लकने की शिकायत । निजाम साहब स्वतन्त्र होना चाहते हैं, लेकिन हैदराबाद की जनता पहले ही स्वतन्त्र बनती जा रही है देखना है निजाम स्वतन्त्र होते हैं या वहाँ की रैयत!

* * *

संयुक्तप्रांत की हिन्दुस्तानी एकैडमी अब 'हिन्दी एकैडमी' के नाम से पुकारी जानेवाली है। एकैडमी गुनहगारों को अक्ल तो आ गई लेकिन देर को। लेकिन अक्ल आने के सिवा कोई चारा भी नहीं था। प्रांतीय सरकार से आखिर रुपया लेना ही है, बिना एड के काम चलने का नहीं और प्रांत की सरकारी भाषा हिन्दी मान ली गई है। कम से कम इस प्रांत में 'हिन्दुस्तानी' नाम पर उछल-कूद मचाने की गुंजाइश भी नहीं रही, इसीलिये यह नया पैंतरा बदला गया है। इसके सिवा हिन्दुस्तानी पैंतराबाजों के सरगना डाक्टर ताराचन्द अब बहुत ऊँचे चढ़ गये हैं, प्रांतीय से वह अखिल भारतीय बन बैठे हैं, इसलिये भी मामले ने कुछ पलटा खाया है। अपने राम को प्रसन्नता है हिन्दुस्तानी एकैडमी के सिपहसालारों को समय की पुकार ने बुद्धि प्रदान की और कहना यह चाहिए कि पैसा-कारड की इतिश्री होने के आतंक ने नई ज्योति उत्पन्न कर दी, नहीं एक तो बार ब्रह्मा भी आकर अगर बीच-बिचाव करते तो नाकामयाबी ही होती। हवा का रुख देखकर चोगा बदलना इसी को कहते हैं।

* * *

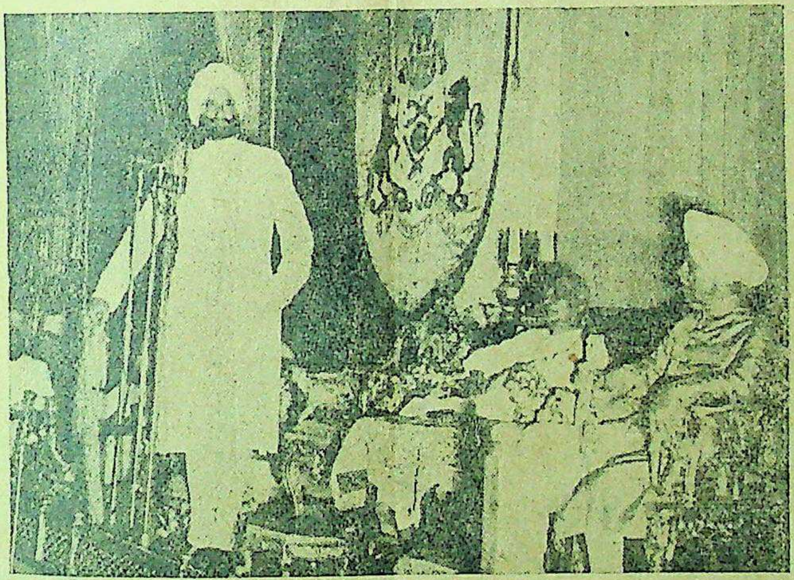

पूर्वी पंजाब की रियासती संघ के राजप्रमुख महाराजा पटियाला भाषण दे रहे हैं। कुर्सी पर सरदार वल्लभभाई पटेल और उपराज प्रमुख महाराजा कपूर्थला बैठे हुए दिखाई दे रहे हैं।

राजगोपालाचार्य ने बंगलौर में मैसूर राज्य हिन्दी प्रचार समिति का शिलान्यास करते हुए कुछ माकूल बातें कहीं और कुछ निहायत गैर-माकूल। खैर हिन्दी के प्रचार के लिये माननीय राजाजी कुछ कहते ही क्यों इसलिये 'हिन्दुस्तानी' प्रचार के संबंध में थोड़ी-बहुत वकालत अवश्य की। लेकिन सबसे अजीब बात राजाजी ने की अँगरेजी-प्रचार के संबन्ध में। देश को स्वराज्य मिल गया, अँगरेज चले गये, अँगरेजियत भी धीरे धीरे गायब होने लगी है, लेकिन खुदा जाने मद्रास के निवासी अँगरेजी को क्यों बनाये रखना चाहते हैं? लुंगियों के देश में अँगरेजी ही क्यों बनी रहे, यह बात समझ में नहीं आ रही है। अँगरेजी को बनाये रखने के लिये श्री राजा ने यह तर्क दिया कि जब अँगरेजों के द्वारा निर्मित रेल, तार, हवाई जहाज आदि सभी का उपयोग हम कर रहे हैं तो अँगरेजी ने ही कौन-सा कुसूर किया है कि उसे दफना दिया जाये? वाइसराय के गौरव के अनुरूप दलील की जितनी तारीफ की जाये उतनी ही कम है। आज गांधीवादी नेता चिल्ला-चिल्ला कर कह रहे हैं कि हमें गांधी के आदर्शों पर चलना है और उनके द्वारा चलाने जानेवाले अधूरे कामों को पूरा करना चाहिये। अँगरेजी की वकालत करके गांधी जी द्वारा चलाये 'हिन्दुस्तानी' के प्रचार की अच्छी खासी सहायता की जा रही है।

* * *

काश्मीर-कमीशन ने हिन्दुस्तान और पाकिस्तान को यह सुझाव दिया है कि दोनों ओर से युद्ध बंद कर दिया जाना चाहिये। कमीशन को हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान ने उत्तर भी दे दिया है। अपने राम की समझ में काश्मीर-कमीशन ने शांति-स्थापना का नाटक तो रचना प्रारंभ कर दिया है लेकिन हिन्दुस्तान क्यों सुनने लगा? और पाकिस्तान तो सुनेगा ही नहीं क्योंकि अँगरेज भला क्यों चाहेंगे? यह भी खबर है कि एक महीने बाद काश्मीर-कमीशन की रिपोर्ट प्रकाशित कर दी जायेगी। ठीक ही है लाखों रुपया खर्च करके काश्मीर के निर्णय के संबंध में कमीशन का जो स्वाँग रचा गया है, उसका कुछ न कुछ तो नतीजा निकलना ही चाहिये। नहीं तो और कुछ न होगा तो सारा खर्च पानी में डूब जायेगा और सोवियट रूस का खतरा अलग खोपड़ी पर सवार होगा। ऐसी स्थिति में अगर कमीशन काश्मीर का बँटवारा कर डाले तो क्या ठिकाना है? गिलगिट आदि मिल जायेगा तो जी को थोड़ी तसल्ली तो होगी? अभी तो दिल की धड़कन बढ़ती ही जा रही है। कम्यूनिस्टों की हिमाकत देखिये कि स्वतंत्र चीन से लड़ते-लड़ते बरमा और मलाया पर भी हावी होने पहुँच गये हैं। यह सरासर हिमाकत है, अँगरेज और अमरीकन बेवकूफ नहीं हैं। सब समझते हैं?

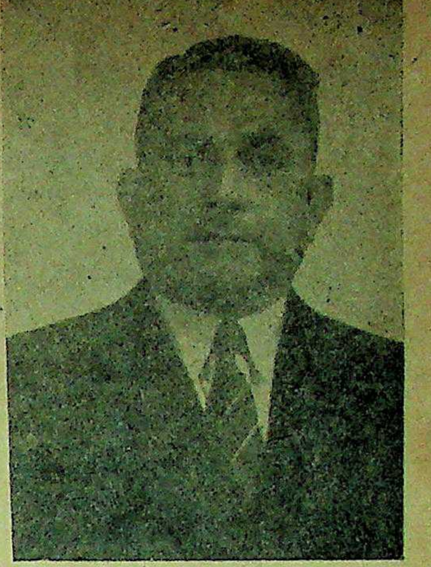

अमरीका में भारत के नये राजदूत सर बी० रामराउ।

* * *

फिलिस्तीन में स्थापित इजराइल राज्य की मान्यता भारत को अभी स्वीकार नहीं है, इसकी घोषणा भारत के प्रधान मंत्री पंडित नेहरू ने पिछले दिनों भारतीय पार्लामेंट में की थी। क्यों जनाब आखिर इजराइल को भारत की ओर से मान्यता देने में कठिनाई कौन सी है? जब कि उसे अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त हो चुकी है, यानी अमरीका और रूस भी इजराइल को स्वीकृत कर चुके हैं। असल बात यह है नेहरू-सरकार मौलानाओं की जबरदस्त खातिर करती है। बात यह है कि अरब राष्ट्र इजराइल के विरुद्ध हैं, और अगर अरब खिलाफ हैं तो भारत के मौलानाओं का खिलाफ होना लाजिमी है और मौलाना खिलाफ हैं तो नेहरू-सरकार का खिलाफ होना जरूरी है। कहने का मतलब है अरब से लेकर भारत तक एक धागे में बँधे हैं। फिर वह टूट कैसे सकती है? यद्यपि सीरिया जो अरब राष्ट्रों का भाई-बंद है, संभवतः संयुक्त राष्ट्र-संघ के सामने हैदराबाद का मामला उठाने की तैयारी कर रहा है, लेकिन नेहरू-सरकार को इससे क्या उसे तो भारत के मौलानाओं का ख्याल करना ही है। और चाहिये भी यही। मुस्लिमलीग इजराइल को मान्यता देगी नहीं, भारत के मुसलमान भले ही भारत संघ के वफादार हों लेकिन इंटरनेशन मामलों में सभी बिरादर हैं। मामला बिरादरी का है, नेहरू सरकार क्या करे?

* * *

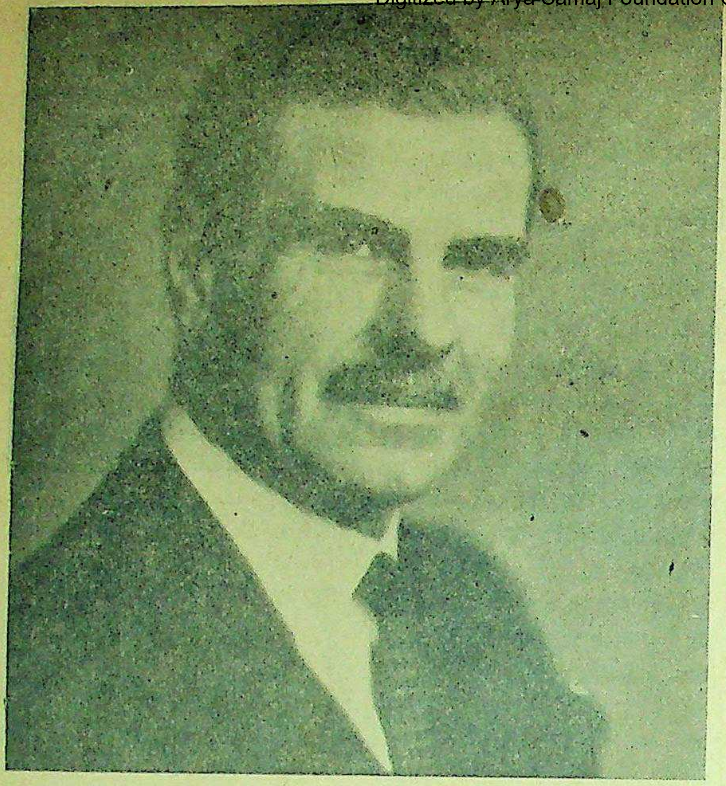

मद्रास के गवर्नर सर आर्चिबाल्ड ने, ब्रिटिश साम्राज्य की ओर से भारत के हाई कमिश्नर के पद पर नियुक्त हुये हैं।

स्वतन्त्रता की पहली वर्षगाँठ

लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०

आज एक वर्ष की हुई स्वतन्त्रता, हो गई स्वतन्त्रता।
प्रात की किरन नवीन मन लिये हुए,
साँझ, साथ चाँद की किरन लिये हुए,
झूमता पवन मदिर नयन लिये हुए,
रात फूल से भरा गगन लिये हुए,
देश का स्वरूप रँग रही स्वतन्त्रता, हो गई स्वतन्त्रता।

राम-राज्य के नये विधान बन रहे,
न्याय पंच गाँव के किसान बन रहे,
बन रही सुई, गगन विमान बन रहे,
द्वेष तजि, मनुष्य सब समान बन रहे,
स्वर्ग सा सृजन सजा रही स्वतन्त्रता, हो गई स्वतन्त्रता।

किन्तु आज राष्ट्र का पिता चला गया,
सूर्य, प्रात के प्रकाश में छला गया,
हँस रहा स्वदेश पर सजल नयन किये,
होंठ पर सिटास शोकमय हृदय लिये,
तुम पिता अमर, बने अमर स्वतन्त्रता, हो गई स्वतन्त्रता।

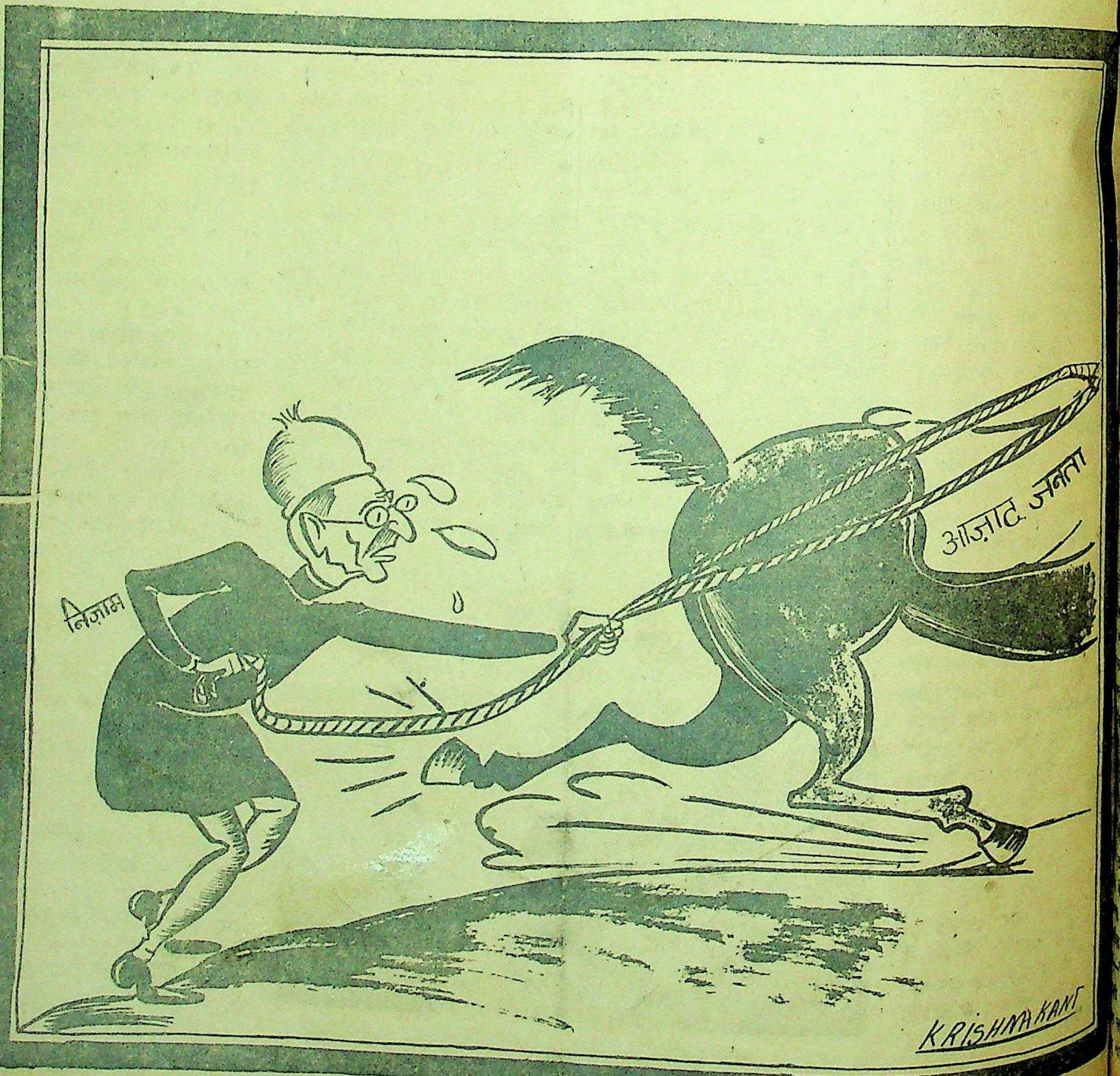

बेलग्रेड द्वारा मास्को को चुनौती

पूर्वीय योरोप की सोवियट रूस द्वारा निर्मित दीवार में एक भारी दरार पड़ गई

लेखक, श्री अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार की ओर से

पूर्वी योरोप में सोवियट रूस की ओर से एक अभेद्य दीवार बनाई गई है, और कम्युनिस्ट अन्तर्राष्ट्रीय सूचना-विभाग की स्थापना बेलग्रेड में की गई है किन्तु आश्चर्य है कि बेलग्रेड ने मास्को को एक चुनौती दी है जो अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र के लिये एक समस्या है। विद्वान् लेखक ने इस लेख में साम्राज्यवादी राष्ट्रों के उथल-पुथल तथा समस्याओं का सुन्दर वर्णन किया है, जो पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

के डिक्टेटर स्टेलिन जर्मनी पर जमे हुए हैं।

राजनीति ने २८ जून को और पलटा खाया। पूर्वीय ओर सोवियत रूस द्वारा अभेद्य समझी जानेवाली लौह- एक भारी दरार पड़ गई। (कम्युनिस्ट इण्टर नेशनल ब्यूरो) की स्थापना बेलग्रेड बेलग्रेड में ही इसका सदर गया था। इसी 'कामिन जून १९४८ को ७००० लम्बा-चौड़ा प्रस्ताव पास टीटो (युगोस्लेविया के राष्ट्र- के तीन प्रमुख सहायकों— उपराष्ट्रपति, एडवर्ड काडैल मन्त्री मिलोवन जीलास, जनरल एलेक्जेण्डर गुप्तचर पुलिस-विभाग का यह अभियोग लगाया कि ये गृह-नीति में मूलतः अलग अनुसरण कर रहे हैं और कम्युनिस्ट पार्टी को कहा गया जगह वह अपना अन्य लोगों । युगोस्लैविया की वर्तमान पार्टी को 'कामिन फार्म' की अलग कर दिया। पर युगो- कम्युनिस्ट पार्टी की जुलाई के में पंचम कान्फरेंस हुई और पुराने नेताओं में विश्वास और उनको पुनः अपना नेता फार्म के अन्य सदस्यों ने में सम्मिलित होने का निमन्त्रण दिया। अन्य कम्युनिस्ट 'प्रवदा' की भर्त्सना और कोई असर नहीं पड़ा और कम्युनिस्ट पार्टी में अपने नेताओं करने और उनको अपने हटाने से इनकार कर दिया। टीटो ने भी अपने पिछले किए के पश्चात्ताप प्रकट किया और कहा कि रूस की सहायता के सफलता प्राप्त की है। मार्शल इस विद्रोह और बगावत का है? अमरीकी सीनेटर ने टीटो के विषय में एक बार कहा स्टालिन की ताल पर नाचने- कठपुतली।' प्रश्न यह है कि पुतली में मास्को को चुनौती देने कैसे उत्पन्न हो गया?

रोम और वाइजेण्टम

युगोस्लेविया लोह-दीवार के पीछे के देशों में एक ऐसा देश माना जाता था, जहाँ कम्युनिस्ट पद्धति का जनतन्त्र पूर्ण रूप से सफल हो रहा था। फिर यह क्यों कहा जा रहा है कि टीटो ट्राटस्की के मार्ग का अनुसरण कर रहा है? क्या रूसी कम्युनिस्ट पार्टी और युगोस्लाव कम्युनिस्ट पार्टी के झगड़े से तीसरा महायुद्ध और अधिक निकट आ गया है? कम्युनिस्ट के अन्दर किसी बात को टाला नहीं जाता और न किसी की उपेक्षा की जाती है। वहाँ निर्णय और समाप्ति आवश्यक है और इसके लिए युद्ध भी अनिवार्य है। इसलिए यदि कामिन फार्म का यह कहना सच है कि युगोस्लेविया 'ट्राटस्कीवाद' की ओर अग्रसर हो रहा है, तो स्टालिन के सामने दो ही मार्ग हैं, कि या तो वह अपनी विचार-धारा की और आदर्श-प्रणाली की गलती माने या फिर उसको नष्ट कर दे। पर अभी तक न तो लाल सेना मार्च करती हुई बेलग्रेड पहुँची है, और न स्टालिन ही ने स्वीकार किया है कि उसकी विचार-धारा गलत है, क्योंकि यह मानी हुई बात है कि विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन का यदि टीटो विरोध करने का साहस करता तो उसको कदापि रूस सहन नहीं करता। युगोस्लाव कम्युनिस्ट पार्टी की पंचम कान्फरेंस मार्शल टीटो ने पुनः एक बार मार्क्स, एंजल और लेनिन तथा स्टालिन के सिद्धान्तों और आदर्शों में आस्था और श्रद्धा प्रकट की है और यह भी कहा हैं कि उनको अपनी निर्दोषिता सिद्ध करने का अवसर दिया जायेगा। मार्शल टीटो ने विश्वास दिलाया है कि रूस की कम्युनिस्ट पार्टी से अच्छा सम्बन्ध स्थापित करने का वे भरसक प्रयत्न करेंगे। इससे प्रकट है कि मार्शल टीटो ने विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन को छिन्न-भिन्न करने का साहस नहीं किया है। इसके साथ ही टीटो ने भी अपनी भूल स्वीकार नहीं की है। इसलिए इनमें लड़ाई होने की आशंका की कल्पना करना मूर्खतापूर्ण है। सम्भव हो यह रोम साम्राज्य के रोम और वाइजेण्टम के समान कम्युनिज्म साम्राज्य के मास्को और बेलग्रेड सिद्ध हों।

आदर्शों की लड़ाई

मास्को और बेलग्रेड का झगड़ा वैयक्तिक महत्त्वाकांक्षा का और राजनीतिक नहीं है, जितना कि यह झगड़ा सिद्धान्तों का है। कट्टर सिद्धान्तवादी जिस प्रकार लड़ते हैं, या हमारे देश में जिस प्रकार वैदिक मन्त्रों के अर्थों और व्याख्या पर सनातनी और आर्यसमाज लड़ते हैं, उसी प्रकार का यह झगड़ा है। कम्युनिज्म और राष्ट्रीयता में मेल बैठ सकता है या नहीं, इनमें सामंजस्य उत्पन्न हो सकता है या नहीं, या दोनों एक दूसरे के विरोधी हैं, दोनों समान्तर रेखाओं पर चलनेवाले हैं और इनमें कभी मेल-सम्भव नहीं है। इस दृष्टि से कामिन फार्म द्वारा लगाए गए अभियोगों और उनकी युगोस्लेविया द्वारा दिए गए जवाब की समीक्षा और मीमांसा करना आवश्यक है। इससे यह भी प्रकट हो जायगा कि कम्युनिस्ट पार्टी के कार्य करने की विधि और रीति-नीति क्या है? हमारे देश में भी कम्युनिस्ट पार्टी का बल बढ़ रहा है। उसके जैसा दृढ़ संगठन और उसके जैसे सच्चे कुशल और निष्ठावान कार्यकर्ता देश के अन्य राजनीतिक दलों में नहीं हैं। मास्को और बेलग्रेड के झगड़े का उस पर प्रभाव पड़े बगैर नहीं रह सकता और यह बहुत सम्भव है कि यह झगड़ा इस देश में वामपक्षी पार्टियों को कम्युनिस्ट पार्टी के साथ मेल करने के लिए भविष्य में कभी उद्यत न करे। इस दृष्टि से भी इस विवाद और झगड़े का अध्ययन करना आवश्यक है।

अमरीका के जार्ज मार्शल जिन्होंने योरोप को सहायता देने की योजना बनाई थी।

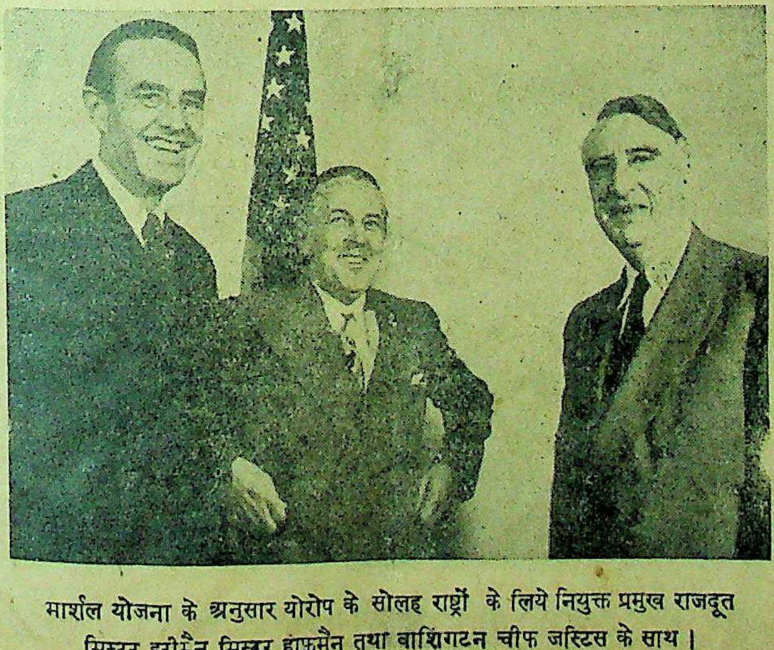

मार्शल योजना के अनुसार योरोप के सोलह राष्ट्रों के लिये नियुक्त प्रमुख राजदूत मिस्टर हरीमैन मिस्टर हाफ़मैन तथा वाशिंगटन चीफ जस्टिस के साथ।

अभियोग

कामिन फार्म ने युगोस्लाव कम्युनिस्ट पार्टी पर निम्न अभियोग लगाए हैं :—

१—परराष्ट्र और गृहनीति-सम्बन्धी मूल प्रश्नों के बाबत गलत मार्ग का अनुसरण कर रही है।

२—उनकी पार्टी का नेतृत्व सोवियत रूस के प्रति अमैत्रीपूर्ण रवैया रखता है, जिसको उन्होंने दूसरा बुर्जुआ मान लिया है और उससे वैसा ही व्यवहार किया है अतः विरोधी है।

३—किसानों के सम्बन्ध में वर्ग-युद्ध के सिद्धान्त को भुलाकर कम्युनिस्ट पार्टी पथभ्रष्ट हो गई है और उसने 'क्षुद्र बुर्जुआ राष्ट्रीयता' को स्वीकार किया है।

४—कम्युनिस्ट पार्टी संयुक्त मोर्चा (पपलर फ्रण्ट) में अपने आपको विलीन कर रही है और अपने घाटे को इसने समझा नहीं है।

५—इसका तरीका अजनतंत्रात्मक है और ट्राटस्काइट है। शासक गृह निर्वाचित नहीं किया जाता।

६—घमण्ड और दर्द के कारण बन्धुत्व भाव से की गई आलोचना को भी बर्दाश्त नहीं किया जाता।

७—पार्टी ने रूसी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा की गई आलोचना का जवाब देने और उसका खण्डन करने के लिए अत्यधिक वामपक्षी प्रकृति का अविचारपूर्ण कार्य जल्दबाजी में किया।

८—कामिन फार्म की अन्तिम बैठक का पार्टी ने बहिष्कार किया।

९—युगोस्लेविया के नेताओं ने साम्राज्यवादियों के साथ मिलकर षड्यन्त्र

किया और राष्ट्रीय नीति का अनुसरण किया।

अविश्वसनीय

युगोस्लेविया की कम्युनिस्ट पार्टी ने इन सब आरोपों को मिथ्या बताया है। यही नहीं उसने सोवियत रूस समेत कामिन फार्म के सब सदस्यों पर अभियोग लगाए हैं, कि उन्होंने दासमनोवृत्ति से चुपचाप इन अभियोगों को मान लिया और रूस सेण्ट्रल कमेटी के अन्दर इन मिथ्या, असत्यपूर्ण, अविश्वसनीय और ईर्ष्यापूर्ण झूठे अभियोगों का खण्डन नहीं किया।

'कामिन फार्म' द्वारा लगाए गये अभियोगों की परीक्षा करने से पहले एक बात ध्यान देने योग्य है कि इनमें परस्पर विरोधी बातें कही गई हैं। राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद को साम्राज्यवाद, पूँजीवाद का पक्षपाती कहा है और ये निश्चय से ट्राटस्काइट नहीं हैं। दूसरी बात यह कि सोवियत रूस के प्रति ईर्ष्या - भाव रखना या उसकी अप्रतिष्ठा करना उतना बड़ा ही अपराध है, जितना कि ट्राटस्काइट होना। इन अभियोगों से यह भी स्पष्ट है कि मास्को का आदेश और निर्देश सर्वोपरि है और उसको न माननेवाली पार्टी के लिए कामिन फार्म में स्थान नहीं है। भारतीय कम्युनिस्ट समय के समय यह करने से नहीं चूकते कि वे मास्को से पथ-प्रदर्शन प्राप्त नहीं करते और न उसके निर्देशों के अनुसार चलते हैं। पर इन अभियोगों से स्पष्ट है कि सच्ची कम्युनिस्ट पार्टी के लिए परराष्ट्र नीति ही नहीं, अपितु घरेलू नीति भी मास्को के आदेश और निर्देश के अनुसार होनी चाहिए। क्या कोई स्वाभिमानी और अपनी स्वाधीनता का प्रेमी इस पराधीनता को सहन कर सकता है? मार्शल टीटो का सोवियत रूस की इसी नीति के विरुद्ध विद्रोह है और वह अपनी आन्तरिक और बाह्य स्वाधीनता की प्रतिष्ठा के लिए लड़ रहा है। प्रश्न यह है क्या कम्युनिज्म राष्ट्रीयता से लड़कर जीवित रह सकेगा?

मार्शल-योजना

पश्चिमी राष्ट्रों से समझौता करने के अभियोग का सम्बन्ध मार्शल योजना से है। सर्वप्रथम जब मार्शल-योजना की घोषणा हुई और चेकोस्लोवाकिया ने उसमें सम्मिलित होने का अपना निर्णय बदला नहीं था, उस समय तक भूल-भाल और प्लाट-मैशीनरी की आवश्यकता रखनेवालों के लिए उसमें आकर्षण था। पर मार्शल-योजना का जैसे जैसे विकास हुआ उससे प्रकट हो गया कि पूँजीवाद विरोधी और स्वाधीन और अमरीकी नियन्त्रण से सर्वथा मुक्त रहना सम्भव नहीं है। मार्शल-योजना के वर्तमान रूप में भाग लेने को मार्शल टीटो इच्छुक हैं, यह 'कामिन फार्म' के अभियोग के बाद भी नहीं कहा जा सकता।

भूमध्य सागर

राष्ट्रीयता की बात का सम्बन्ध इटालियन ट्रीस्ट और आस्ट्रियन केरन्थिया की युगोस्लेविया द्वारा निरन्तर माँग करते रहने से है। कामिन फार्म के अभियोग का आधार यह है, यह कहना कठिन है। क्योंकि यदि ये इलाके युगोस्लेविया के पास रहे तो सोवियत रूस को भूमध्य सागर पहुँचने का मार्ग अनायास मिल जायेगा। इसलिए स्वभावतः प्रश्न उठता है, क्या यह म० मोलोटोव की पश्चिम-विरोधी राजनीतिक व्यूह रचना के अन्तर्गत नहीं है। क्योंकि भूमध्य सागर की ओर पीठ किए हुए एक ओर दक्षिणी स्लाव है। इसलिए युद्ध समाप्त होने के बाद से युगोस्लेविया का जब्त किया हुआ सोना संयुक्तराष्ट्र अमरीका मुक्त कर रहा है। दूसरी ओर सोवियत यूनियन, उत्तरीय स्लाव और जर्मन ओस्टयार्क हैं। पर युगोस्लेविया की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि वह सोवियत रूस का भूमध्य सागर में और इस कारण लेवास्ट और अफ्रीका में बढ़ना रोक सकता है। मार्शल टीटो के अलग हो जाने से स्टालिन की दक्षिणी बाजू असुरक्षित हो जाती है और रूस के लिए उत्तरीय स्केण्डेनेवियन बाजू की रक्षा करना महत्त्वपूर्ण हो जाता है। इसलिए यह आश्चर्य की बात है कि कामिन फार्म युगोस्लेविया द्वारा ट्रीस्ट और केरन्थिया की निरन्तर माँग करने के कारण उसको राष्ट्रीय प्रवृत्ति का कहे।

गुप्तचर

युगोस्लेविया का सोवियत रूस के प्रति विरोधी और अमैत्रीपूर्ण है, यह वह नहीं मानता। इस अभियोग को मिथ्या कहता है। पर कामिन-फार्म की शिकायत है कि युगोस्लेविया स्थित रूसी अफ़सरों और परामर्शदाताओं—और ये प्रत्येक विभाग में रूसी कम से कम दो अवश्य हैं—के पीछे रैनेकोविक ने गुप्तचर पुलिस लगा रखी है। यह प्रश्न राष्ट्रीय प्रतिष्ठा का है और यह इस बात के संघर्ष का सूचक है कि सोवियत अपने अनुवर्ती राष्ट्रों पर पूर्णतया शासन करना चाहता है और उनको मास्को के आधीन एक विभाग बना देना चाहता है, जैसे कभी भारत-सरकार डाउनिंग स्ट्रीट का था; और दूसरी ओर युगोस्लेविया सोवियत यूनियन का अपने को समकक्ष मानता है।

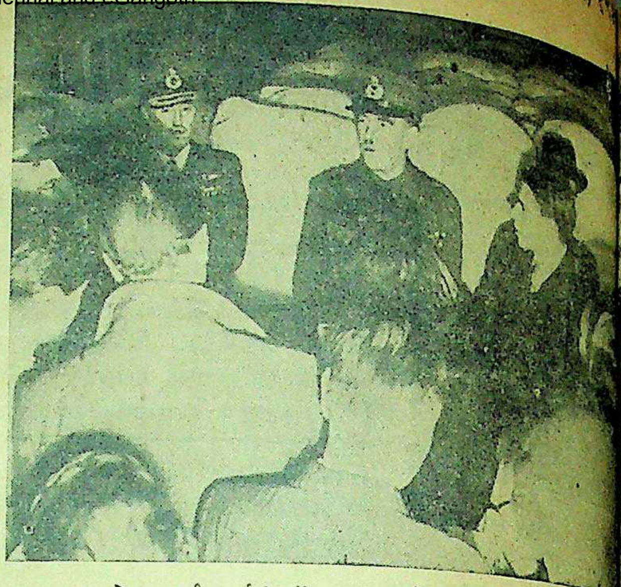

जनरल सर ब्रेन रावर्टन जर्मनी में एकत्रित फौजियों को भविष्य के लि
रहने की सलाह दे रहे हैं।

मार्क्स-मार्ग का त्याग

एक अभियोग है कि युगोस्लेविया ने मार्क्स के वर्ग-युद्ध के मार्ग का परित्याग कर दिया है। युगोस्लेविया युगोस्लाव गाँवों में पूँजीवादी लाभों के उत्पन्न होने और वर्ग-युद्ध के तीव्र होने से इनकार करता है। मार्क्स-लेनिन का कहना है कि जब कोई समाज पूँजीवाद का परित्याग करके कम्युनिज्म को स्वीकार करता है, तब संक्रमण काल में वर्ग-युद्ध तीव्र होता है! युगोस्लेविया श्रेणी-भेद की उपेक्षा करता

है और वैयक्तिक किसान को पूं
है। यद्यपि लेनिन ने कहा है
वैयक्तिक फार्म निरन्तर पूँजीवाद
देते हैं, और बुर्जुआ का प्रति
प्रतिघण्टा बड़े परिमाण पर पोष
हैं। युगोस्लेविया में जमीन का
नहीं किया गया है, बल्कि भूस्वामी
के छोटे छोटे खेत हैं और उन
खरीदने और बेचने का अधि
जमीन का पर्याप्त भाग, अभी तक
के हाथ में है और बड़ी
मजदूर विद्यमान हैं। युगोस्लाव कम्युनि
पार्टी के नेताओं का
बुर्जुआ नेशनलिस्टों के अनुकूल है,
लेनिन वर्ग-युद्ध में विश्वास
का नहीं है।

मार्शल-योजना का विरोध
मोलोटोव-योजना के अन्तर्गत
यूरोप में यह कठिनाई है।
इम्पायर (पवित्र रोमन-साम्राज्य)
अन्दर पोप की व्यवस्थाओं और
का वास्तविक और अधिकृत अर्थ
कहता था वही माना जाता था।
कम्युनिज्म का साम्राज्य
नहीं है, पर कम्युनिज्म का
ग्राह्य है, इस विषय में मास्को
अन्तिम है। क्योंकि युगोस्लाव
पार्टी का कहना है कि उसकी
लेनिन के सिद्धान्तों के अनुकूल है

युगोस्लाव कम्युनिस्ट पार्टी
अभियोग के जवाब में कि पार्टी ने
फ्रण्ट' (संयुक्त मोर्चा) में अपने
कर दिया है, कहना है कि मोर्चे
पार्टी के हाथ में है और
में समाजवाद के लिए लड़ रही है
स्लाव कम्युनिस्ट पार्टी का
अन्य देशों की कम्युनिस्ट पार्टी
पक्ष की एकता के लिए लगाए
नारे के धोखे का पर्दा फाड़
यह बताना है कि कम्युनिस्ट
मेल की बातों का विश्वास नहीं
सकता। भारत के समाजवादी
सत्य को समझ लिया है, और
१९४० के बाद उसने उसके
करने की कभी बात नहीं की है
शेष पृष्ठ १७ पर

जर्मनी में ब्रिटिश अधिकार भाग के हवाई अड्डे पर हवाई जहाजों तथा अन्य अस्त्र-शस्त्रों की सामग्री एकत्रित की जा रही है।

ाँ कौन क्या र रहा है ?

बहराय कायदे आजम श्री लिया। खबर है कि आप अत्यन्त अधिक पीड़ित हैं।

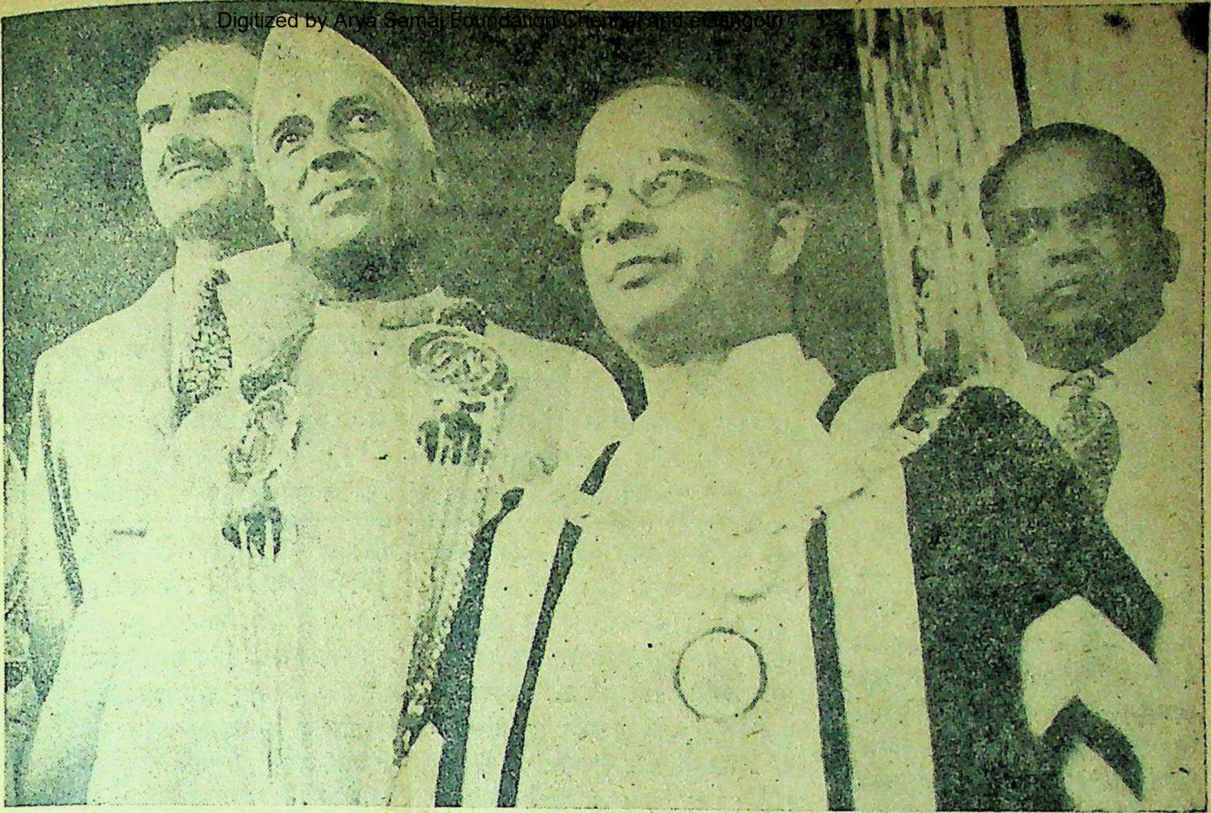

भारत के प्रधान मन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू, डाक्टर यू० कृष्णाराव मेयर तथा सर आर्चिबाल्ड, मद्रास के गवर्नर के साथ। यह चित्र उस समय लिया गया था जब कि पंडित नेहरू ने दक्षिण भारत की यात्रा की थी और मद्रास म्यूनिसिपल कौंसिल द्वारा उनका स्वागत किया गया था।

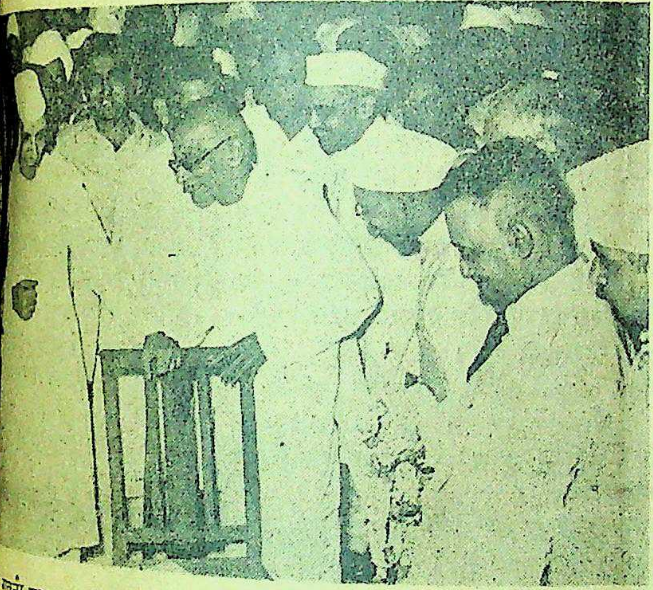

गवर्नर-जनरल श्री राजगोपालाचार्य, प्रधान मन्त्री पंडित नेहरू के साथ दिल्ली के एक मुसलिम मुहल्ले में, जहाँ दिल्ली निवासियों की ओर से आप लोगों का स्वागत किया गया था।

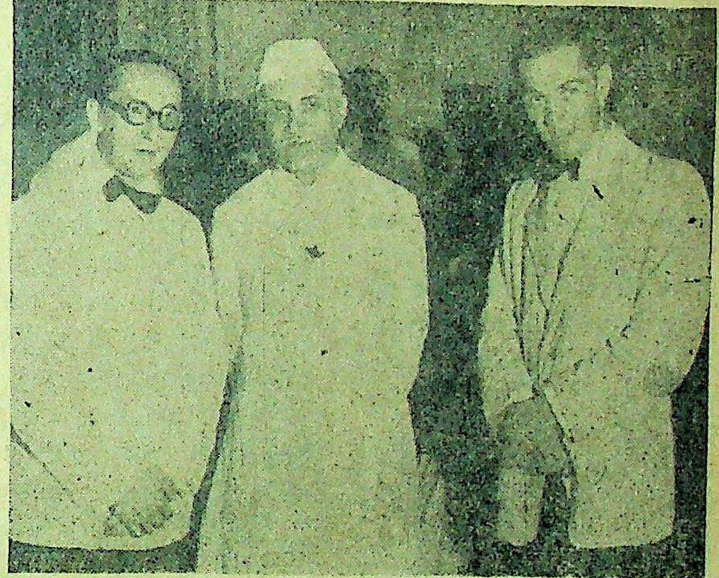

पिछले दिनों दिल्ली में कोलंबिया का स्वतन्त्रता-दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया था। चित्र में पंडित नेहरू, काश्मीर कमीशन के साथ आनेवाले कोलंबिया के प्रतिनिध के साथ दिखाई दे रहे हैं।

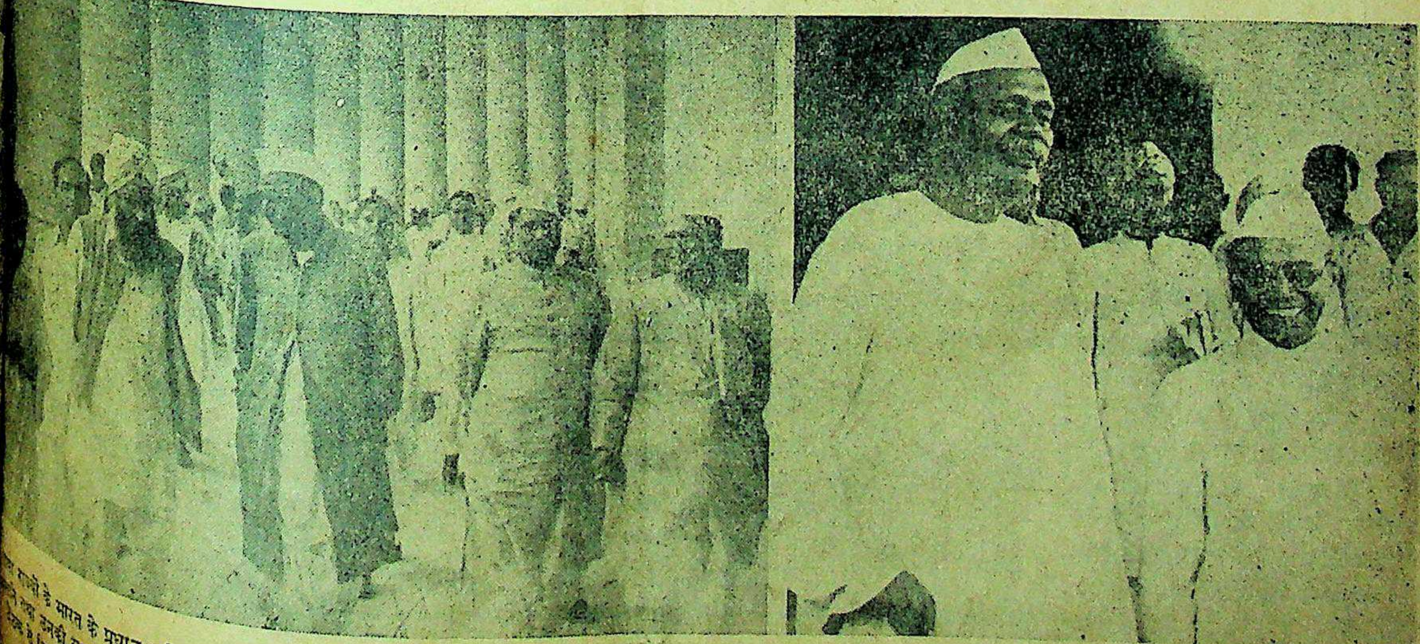

प्रान्तों के भारत के प्रधान मन्त्रियों का एक सम्मेलन डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद कांग्रेस-प्रेसिडेण्ट के सभापतित्व में पिछले दिनों दिल्ली में हुआ था। इस सम्मेलन में शरणार्थियों तथा उनकी सुरक्षा के उपायों पर विचार हुआ था। यह चित्र उसी अवसर पर लिया गया था। (बाई ओर) डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद सरदार प्रतापसिंह के साथ सम्मेलन की बैठक से निकलते हुए दिखाई दे रहे हैं। (दहिनी ओर) संयुक्तप्रांत के प्रधान मंत्री पंडित गोविन्दवल्लभ पंत, बम्बई के प्रधान मंत्री श्री बी० जी० खेर के साथ सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये जाते हुए दिखाई दे रहे हैं।

कांग्रेस की यही अग्नि-परीक्षा है

राष्ट्र की सुरक्षा तथा आन्तरिक क्षोभ का निवारण करना ही समय की पुकार है

लेखक, श्री सहदेव चक्रवर्ती विद्यालङ्कार

इस समय कांग्रेस सरकार का राष्ट्र पर शासन है। कांग्रेसी सरकारों की स्थापना से राष्ट्र को आशायें थीं और आज भी हैं, किन्तु परिस्थितियों के कारण एक प्रकार का आंतरिक विक्षोभ उत्पन्न हो रहा है। उस विक्षोभ को दूर वरना ही कांग्रेस सरकार का कर्तव्य है। कांग्रेस की अग्निपरीक्षा का यही समय है। सुयोग्य लेखक ने इस लेख में इसी समस्या पर रचनात्मक ढंग से प्रकाश डाला है। लेख सामयिक और विचारणीय है।

भारत के प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू।

केवल-मात्र कांग्रेस ही भारत की सर्वप्राचीन विशुद्ध राजनीतिक संस्था है—इस तथ्य को कोई व्यक्ति अस्वीकार नहीं कर सकता। कांग्रेस ने ही विगत सात दशाब्दियों से संसार की महाशक्ति विदेशी ब्रिटिश साम्राज्य से निरन्तर संघर्ष करके निर्धन, निःसहाय एवं निरीह भारतीय जनता को राजनीतिक स्वाधीनता का मार्ग प्रदर्शित किया है। उसके नेताओं, समर्थकों, सेवकों तथा अनुयायियों ने देश की स्वाधीनता के लिये अपने स्वर्गीय गार्हस्थ्य एवं दाम्पत्य सुख, सम्पत्ति और ऐश्वर्य का परित्याग करके कारावास की कालकोठरियों में जो अभूतपूर्व, अश्रुतपूर्व एवं अज्ञातपूर्व कष्ट सहन किये, वे भारतीय स्वाधीनता के इतिहास में अनन्त काल तक चिर-स्मरणीय रहेंगे। जब तक देश राजनीतिक रूप से स्वाधीन नहीं हुआ था, तब तक कांग्रेस के लिये राजनीतिक संस्था के रूप में कार्य करना आवश्यक था। किन्तु अब राजनीतिक स्वाधीनता की प्राप्ति के बाद कांग्रेस को देश की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्वाधीनता के लिये भी सत्प्रयत्न करना ही चाहिये। अब कांग्रेस का उत्तरदायित्व पहले की अपेक्षा और अधिक बढ़ गया है। १५ अगस्त १९४७ को शक्ति हस्तान्तरित होने के पश्चात् कांग्रेस ने ही देश का शासन-सूत्र ग्रहण किया। यह कार्य कर भी कांग्रेस ही सकती थी। उसने विभाजनजन्य समस्याओं का जिस तत्परता एवं दक्षता के साथ सामना किया वह सर्वथा सराहनीय एवं स्तुत्य है। इससे कांग्रेस की थाती खूब जम गई।

किन्तु १५ अगस्त १९४७ के बाद कांग्रेस द्वारा सत्ता ग्रहण करने से उसके कई आलोचक उत्पन्न हो गये। यह आलोचक बरसाती मेढकों की तरह जहाँ-तहाँ दिखाई देने लगे। समाजवादी और अग्रगामी कांग्रेस से पृथक हो गये। उन्होंने कांग्रेस से मतभेद के कारण अपना सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया। उनका ऐसे करने के सम्बन्ध में प्रधान तर्क यह था कि देश के शासन की बागडोर अपने हाथ में लेने के बावजूद कांग्रेस ने देश की परिस्थितियों में कोई आमूलचूल परिवर्तन नहीं किया। पूँजीवाद और उससे उत्पन्न होनेवाली आर्थिक विषमता, भ्रष्टाचार, मित्रपोषण नीति, घूसखोरी, मुनाफाखोरी और पुरानी नौकरशाही के समय की घातक परम्परायें अब भी यथापूर्व विद्यमान हैं। जनता के कई वर्ग तथा व्यक्ति कांग्रेस के शासन से असन्तुष्ट हैं। कांग्रेस के स्तम्भ आचार्य कृपलानी जैसे व्यक्ति भी अपनी संस्था की आलोचना करने से नहीं चूक रहे। यह सब क्यों? यह ठीक है कि कांग्रेस किसी जादू की झड़ी से सब न्यूनताओं का उन्मूलन नहीं कर सकती, फिर भी उसे इस दिशा में कुछ न कुछ प्रयत्न तो करना ही चाहिये—उसके नेताओं और कार्य-कर्त्ताओं को यह स्वीकार करना पड़ेगा कि उनके लिये यह समय अग्नि-परीक्षा का है। यदि वे असफल रहे तो जनता का उनसे विश्वास उठ जायगा, जो एक दुखान्त घटना होगी।

अधिकार-प्राप्ति के लिये संघर्ष

महात्मा गांधी की मृत्यु के बाद कांग्रेस के कार्यकर्त्ताओं ने अधिकार-प्राप्ति तथा स्वार्थ-सिद्धि के लिये परस्पर संघर्ष करना इस प्रकार आरम्भ कर दिया है, जिस प्रकार भारतीय इतिहास में मुगल सम्राटों के मरने के बाद उनके बेटे राज्य एवं सत्ता छीनने के उद्देश्य से आपस में लड़ा करते थे। गांधी जी का नैतिक एवं आध्यात्मिक प्रभाव अभी तक कांग्रेसियों को आपसी संघर्ष से दूर रखे हुए था, किन्तु अकस्मात् उनके बरद हस्तों की छत्रछाया के निरस्त होते ही कांग्रेसियों को लड़ने-भिड़ने का मौका हाथ लगा। यद्यपि गांधी जी ने अपने निधन से पूर्व कांग्रेस का नया विधान बनते समय यह परामर्श दिया था कि कांग्रेस को अब राजनीतिक दलबन्दियों में न पड़कर केवल लोकसेवक संस्था के रूप में ही कार्य करना चाहिये। किन्तु उन्होंने गांधी जी के इस सदुपदेश को भुला दिया। यदि वे इस आदेश का पालन करते तो आज देश में भ्रष्टाचार, अनाचार, घूसखोरी, रिश्वतखोरी और मित्रपोषणनीति की परम्पराएँ चालू न रहतीं। सबसे बड़ी आश्चर्यजनक बात यह है कि कांग्रेस में ही कई दलबन्दियाँ हैं। बाहर के कांग्रेसी शासन पदारूढ़ कांग्रेसियों से ईर्ष्या-द्वेष करते हैं, उन्हें देखकर जलते-भुनते हैं और शासन कार्य में उन्हें सहयोग तक नहीं देते। इसके विपरीत जनता में उनके विरुद्ध प्रचार करते हैं। निःसंदेह कांग्रेसियों का यह पारस्परिक निरर्थक वैमनस्य उनका समूलोन्मूलन कर देगा।

कांग्रेसियों के वैमनस्य के हमारे सामने कई उदाहरण हैं। पंजाब के विभाजन से पूर्व जो लाला भीमसेन सच्चर संयुक्त
पंजाब की धारा सभा में कांग्रेस
नेता थे, आज वे डा० गोपी
मन्त्रिमण्डल की कटु आलोच
फिरते हैं। पूर्वी पंजाब के मन्त्रि
को जिन विषम समस्याओं में से
गुजरना पड़ रहा है—यह हम जा
लाला भीमसेन सच्चर ने डाक्टर
यह माँग की थी कि प्रान्तीय मन्त्रि
में उनके दल का भी एक प्रतिनि
जाय। यह माँग अस्वीकृत होने
ही लाला जी ने मंत्रिमण्डल
अकालियों से सांठ गांठ शुरू
व्यक्ति पहले कांग्रेसी थे, अब वे
लोलुपता के कारण साम्प्रदायिक
समझौता करते फिरते हैं। यह
शोचनीय बात है। यह तो हुई पू
की बात। इसी प्रकार संयु
कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के चुनाव
सर पर यदि श्री रफीअहमद
अपना नाम वापस न ले लेते, तो
किदवई दलों में भी खूब होड़
यह संघर्ष स्वतः ढल गया—इससे
हमारे लिये कोई प्रसन्नता की बात
सकती।

उड़ीसा के कांग्रेसी तो एक क
भी आगे बढ़ गये। वहां जिन
को शासन में कोई पद नहीं
उड़ीसा की रियासतों के राजाओं के
में आकर अब 'पूर्वी रियासत संघ' के
लन में इसलिये व्यस्त हैं, क्योंकि उन्हें
सत्ता पाने का अवसर हाथ लगेगा। किन्तु
उन की यह लालसा पूर्ण नहीं हो सकेगी।
उड़ीसा के गवर्नर श्री आसफअली ने
राजाओं को चेतावनी दी है कि वे
आन्दोलन से पराङ्मुख रहें। इन
हरणों से स्पष्ट ज्ञात होता है कि
किस प्रकार पारस्परिक संघर्ष में
यह संघर्ष सर्वथा त्याज्य है, क्योंकि

शेष पृष्ठ १८ पर

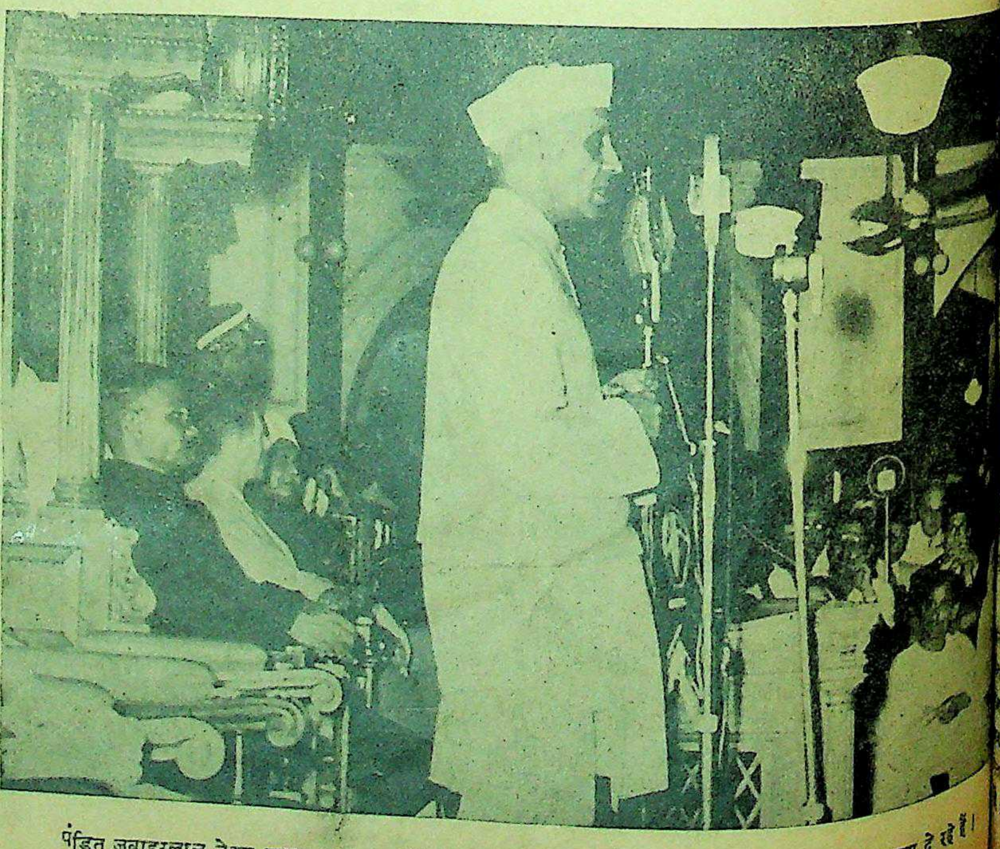

पंडित जवाहरलाल नेहरू मद्रास धारा सभा में श्री राजगोपालाचार्य की मूर्ति का उद्घाटन करते हुए भाषण दे रहे हैं।

कहानी

खुला व्यापार

लेखक, श्री गंगाधर इंदूरकर

स्वाधीनता-संग्राम के सिलसिले में हमारे देश की पुलिस भारी भरकम इनाम के लोभ में जहाँ अपने देशवासियों को गिरफ्तार करने में जमीन-आसमान एक कर डालती थी, वहाँ मातृ-भूमि के उपासक भी पुलिस को छकाने में कुछ उठा नहीं रखते थे। प्रस्तुत कहानी में ऐसा ही एक रोचक और पठनीय कथानक अंकित किया गया है।

यह समाचार मिलने पर तो उसे लगा कि उसका भाग्य उस पर खुश है। उस रात में उसने सचमुच तीन हजार रुपये पाने का सपना देखा।

रामसिंह ने अनुमान लगाया कि प्रकाश गुप्त कमरे में ही छिपकर रहता होगा।

किन्तु जब उसने इस ओर काम शुरू किया तब उसे पता लगा कि जितना आसान वह समझता था, उतना आसान नहीं है। शङ्कर साहु बहुत तेज मिजाज बूढ़ा है और वह किसी के लेने-देने में नहीं रहता, यह उसे खबर लगी। एक बार उसके एक पुराने नौकर ने किसी स्थानीय नेता की गिरफ्तारी के कारण निकाले गये जुलूस में भाग लिया था। इस अपराध पर साहू ने उसे तुरन्त निकाल बाहर किया था। इतने दिनों में उस मकान में खद्दर की टोपी पहननेवाला आदमी भी किसी को दिखलाई नहीं पड़ा था। बूढ़ा एक भूत की तरह उस बड़े मकान में अकेला रहता था। दूर के रिश्ते से उसकी बहन लगनेवाली एक स्त्री उसके लिये रोटी-पानी करती और एक बूढ़ा नौकर। इन तीनों के सिवा उस मकान में और कोई कभी दिखलाई नहीं देता।

किसी समय रामसिंह बूढ़े पर मन ही मन इतना नाराज होता कि बस! पहले दर्जे का कंजूस और मरने पर भी किसी को एक दमड़ी नहीं देगा ऐसी उसकी प्रसिद्धि थी! ऐसी बात होने पर भी बूढ़ा, प्रकाश को आसरा देगा ही यह विश्वास जब उसके मन को न होता तब वह मन ही मन कहता 'बूढ़ा कितना नीच है जो प्रकाश के समान देश-भक्त को, इतनी अच्छी जगह होने पर भी आसरा नहीं देता। किन्तु उसके ये उदास विचार उसके स्वार्थ के पेट से निकले होते थे। क्योंकि उसका मन तुरन्त कहता मेरे तीन हजार पर किसी राहु की तरह मानो यह बैठा हुआ है।

किन्तु इतने विचार के बाद भी चुप बैठने की बात रामसिंह के मन में न आती। वह कभी-कभी सोचता कि यह सब बूढ़े का ढोंग है।

रामसिंह ऐसे सोच-विचार में ही पड़ा हुआ था तब उसे खबर लगी कि तीन-चार दिन हुए, प्रकाश के पिता साहु के मकान में आये थे। इस समाचार से तो उसे विश्वास हो गया कि प्रकाश साहु के मकान में ही छिपा हुआ है। उसने निश्चय किया कि अब तुरन्त कुछ न कुछ करना चाहिए नहीं तो दाँव चूक जायगा।

शाम हो चुकी थी। घर घर दीपक जलना शुरू हो गया था। ऐसे समय रामसिंह शंकर साहु के मकान में घुसा। भीतरी दरवाजा बन्द था। उसने जब दो-तीन बार दरवाजा खटखटाया तब शंकर साहु के बूढ़े नौकर ने दरवाजा खोला और खाँसते हुए पूछा, 'आप किसे चाहते हैं?'

रामसिंह ने उस पर बिगड़कर कहा 'तेरे मालिक कहाँ हैं?'

उसकी यह आवाज सुनते ही बूढ़ा नौकर घबड़ा-सा गया। उसने डरते डरते कहा, "जरा रुकिए। तबियत ठीक नहीं है इसलिए भीतर लेटे हैं। मैं उनसे पूछ कर आता हूँ।" ऐसा कहकर वह दीवानखाने से भीतर गया।

रामसिंह भी भीतर घुसा। दीवानखाना बहुत बड़ा और पुराना दिखलाई दे रहा था। ऊपर छत से काली काली जंजीरें लटकाई गई थीं और उन पर काँच की हड्डियाँ टाँगी गई थीं। उनकी एक समान

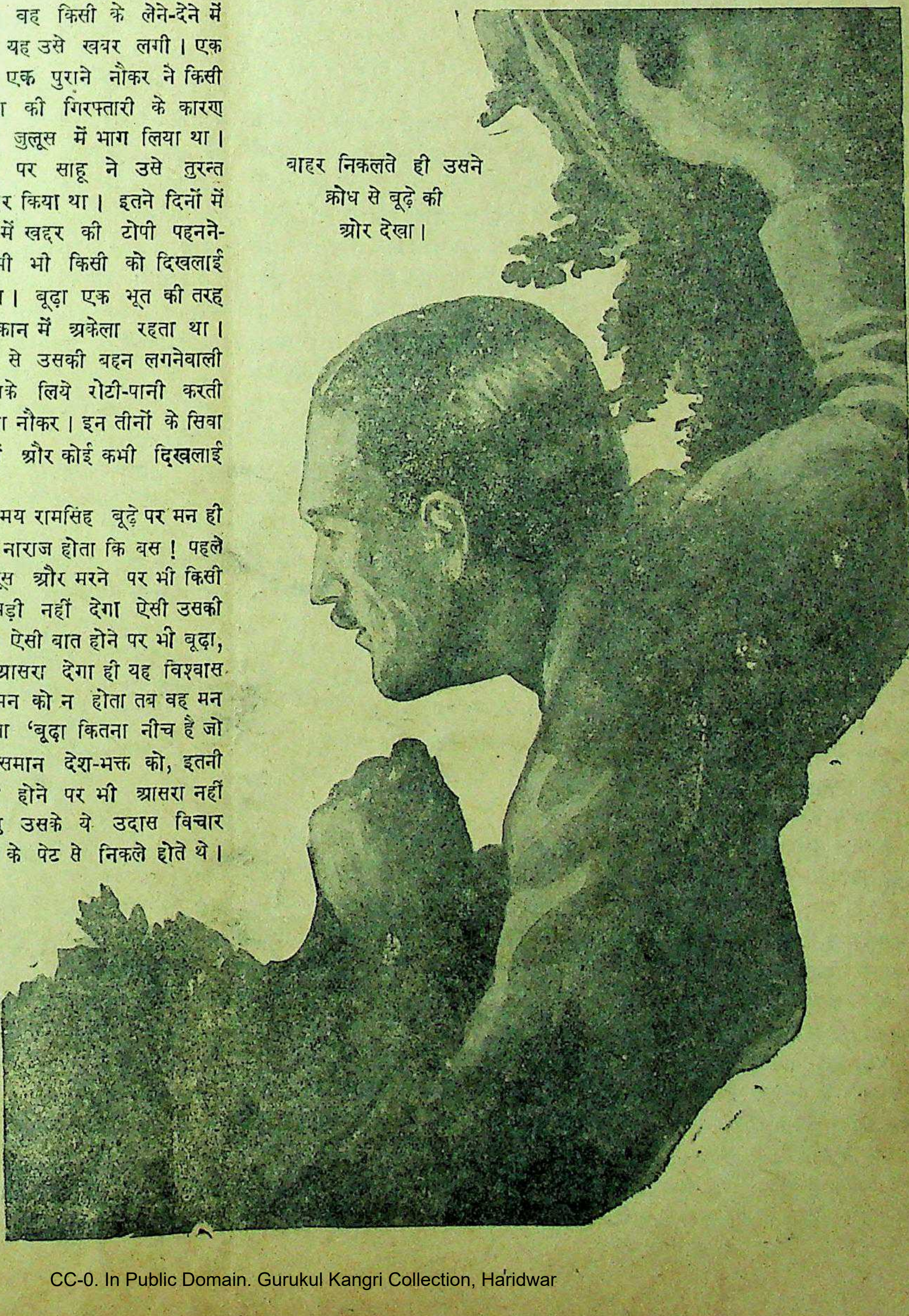

बाहर निकलते ही उसने क्रोध से बूढ़े की ओर देखा।

तीन पंक्तियाँ दिखाई दे रही थीं। दीवाल पर देवताओं की बड़ी बड़ी तसवीरें लगी हुई थीं और उसके सामने एक व्याघ्र-चर्म लटकाया गया था। उसके दोनों तरफ बड़े-बड़े आईने लगे हुए थे। व्याघ्र-चर्म के पास ही बुराने ढंग कि बिछावन बिछी हुई थी और उसके पूरब की ओर एक गोल मेज थी और चारों ओर चार कुर्सियाँ दिखलाई दे रही थीं। पिछली दीवाल में दो बन्दूकें लटक रही थीं। ये सब चीजें रामसिंह ने एक ही नजर से देखीं और वहाँ के आईने में अपना रूप देखते हुए वह एक कुर्सी पर बैठने ही वाला था कि इतने में शंकर साहु का नौकर दीवानखाने में आया और उसने नम्रता के साथ कहा—'मालिक आज किसी से न मिलेंगे। उन्होंने कल आने के लिए कहा है।'

'वाह रे तेरा मालिक! अपने को डिप्टी साहब ही समझता है। चल मुझे लेकर। इसी क्षण मुझे उनसे मिलना है।' रामसिंह ने तेज आवाज से कहा। उसने जरा कुछ रूखेपन से पहले से पेश आने का निश्चय किया था।

'किन्तु साहब, उन्होंने कहा है कि वे आज न मिलेंगे।'

किन्तु मुझे उनसे अभी मिलना है। वे यहाँ न आते होंगे तो मुझे वहाँ जाना पड़ेगा, यह कहकर रामसिंह उठा और थोड़ी देर पहले जहाँ से बातचीत की आवाज आ रही थी उसी दिशा की ओर चला।

उस बूढ़े नौकर ने उसका हाथ पकड़ने का प्रयत्न किया। किन्तु रामसिंह उसे ढकेलकर आगे बढ़ा। धक्का लगते ही बूढ़ा एकदम तन गया और क्रोध से आगे बढ़ा। किन्तु इतने समय में रामसिंह दीवानखाने में से भीतर के दालान में पहुँच चुका था।

शंकर साहु एक बड़े पलँग पर लेटे हुए थे। उनके सिरहाने दीपक मन्द प्रकाश दे रहा था। उनकी वह विशाल देह, बड़ी बड़ी मूँछें और दो सफेद भौंहों के बीच सिन्दूर का बड़ा सा टीका देखकर रामसिंह डरा। किन्तु ऊपर कुछ न दिखाकर दो कदम आगे बढ़ाकर रामसिंह ने कहा—"जयराम जी की शंकर साहु।"

'कौन हो तुम?' शंकर साहु एकदम उठकर बैठते हुए जोर से चिल्लाये। वह हरामी विरुद्धा कहाँ गया। चाहे जो आदमी भीतर घुस आते हैं। विरुद्धा! विरुद्धा मर गया क्या? शंकर साहु फिर एक बार चिल्लाये उन्होंने रामसिंह से कहा, 'आप पहले बाहर जाइये। मैं आज किसी से मिल नहीं सकता।'

'मेरे अलावा—' रामसिंह ने शान्ति के साथ कहा।

शंकर साहु ने भीतर आये हुए विरुद्धा को पकड़कर झकझोरते हुए कहा—"यह भीतर कैसे आया। तू मर गया था?" दिखाते हुए शंकर साहु ने कहा।

विरुद्धा बाहर गया। किन्तु रामसिंह जगह से जरा भी न हिला। उसने शान्ति के साथ कहा—'शान्त हो जाइये बूढ़े बाबा जी, शान्त हो जाइये। मैं बहुत ही जरूरी काम से आया हूँ और वह काम इसी समय होना चाहिये। आपका सरकारी काम कल पर नहीं टाला जा सकता। मैं आपसे यह पूछने आया हूँ कि प्रकाश कहाँ है।'

'वह विद्रोही! उससे मेरा क्या सम्बन्ध? मुझे उससे कुछ नहीं लेना-देना है। और तेरे ऐसे महामूर्ख से भी।'

'मुझसे कुछ लेना-देना न होगा किन्तु उससे जरूर है......।'

'तू पहले यहाँ से बाहर निकल, विरुद्धा, हरामजादा विरुद्धा! कहाँ मर गया। इस गधे को पहले बाहर निकाल।'

'नहीं शंकर साहु। मेरा काम हुए बगैर मैं यहाँ से नहीं निकल सकता। आप जितना सोचते हैं उससे मुझे अधिक जानकारी है।'

'भाड़ में डाल अपनी उस जानकारी को और अपना काला मुँह लेकर मेरे सामने से निकल जा।'

'जाऊँगा, जरूर जाऊँगा, शंकर साहु ......किन्तु प्रकाश को लेकर।'

'तेरे उस प्रकाश का मुँह मैंने दस साल से नहीं देखा। अरे गधे, यदि तूने भी मुझसे कहा कि मैं ही वह प्रकाश हूँ तो भी मुझे वह सच मालूम होगा और मैं तुझे एक लात मारकर घर के बाहर निकाल दूँगा।'

'दस साल से नहीं देखा? तो फिर उसका बाप उस दिन रात में यहाँ छिपकर किसलिये आया था? रामसिंह ने साहु की ओर तीखी नजर से देखते हुए कहा। अपनी इस बात से बूढ़े के चेहरे पर क्या फर्क होता है यह उसे देखना था। किन्तु बूढ़े के चेहरे पर कुछ भी फर्क न हुआ। बूढ़े ने पहले से अधिक जोर से चिल्लाकर कहा, 'मेरा पीछा करते हो तू और प्रकाश का बाप दोनों ही एक ही गधे के धोबी हो। अरे गधे, तेरी तरह उसे भी लगा कि वह बेहूदा लड़का मेरे यहाँ होगा। बेवकूफ कहीं का। उसे लगा कि मैं विद्रोहियों की मदद करूँगा।'

अच्छा! प्रकाश को घर में छिपाकर रखिए। यह कहने के लिये वह आया था किन्तु आपने वह नहीं माना यह आप बहाना चाहते हैं। शंकर साहु! आपकी इस बहानेबाजी से मैं धोखा न खाऊँगा। झूठी बातें कहने से कोई लाभ नहीं। आप चुपचाप अपने घर का गुप्त कमरा दिखला दीजिये।' रामसिंह ने दूसरा तीर चलाया। उसने एकदम आक्रमण का रुख लेने का निश्चय किया।

'किस गधे ने तुझे यह बताया।'

'गधे की कहने की क्या जरूरत? सारा गाँव कह रहा है।'

'आपको भाड़ में जाना पड़ेगा सीधी तरह अपना गुप्त कमरा दिखलाइये नहीं तो मैं वारण्ट तामील कर आपके मकान की तलाशी लूँगा। और फिर यदि प्रकाश मिला तो सोचिये कि आपको कितने साल के लिए चक्की पीसने जाना पड़ेगा।'

'विरुद्धा, लालटेन ले आ। इस गधे को तलघर में मरना है।'—

शंकर साहु के ये शब्द सुनकर रामसिंह को आसमान हाथ में आया-सा लगा। उसे लगा कि बूढ़ा उसकी धमकी में आ गया। उसने साहु से कहा, 'साहु! आपने पहले समझदारी दिखलाई उससे दोनों की तकलीफ बच गई। अब यदि प्रकाश आपके घर में मिला तो भी वह यहाँ मिला यह बात किसी को भी न मालूम होगी। बेकार आपके पीछे खट-खट नहीं! सबके सामने यदि आपकी तलाशी ली जाती तो क्या स्थिति होती आपकी।' रामसिंह ने ऊपर ऊपर यह कहा जरूर। किन्तु वह भी कहाँ चाहता था कि खुले-आम तलाशी हो, क्योंकि तब सब बात थानेदार साहब के हाथ में होती। और तब प्रकाश के पकड़ने का सारा श्रेय उसे न मिलता।'

इतने में विरुद्धा लालटेन लेकर वहाँ आया। उस पर बिगड़कर साहू ने कहा 'गधे! क्या खड़ा है। चल आगे। ओ बेवकूफ के बच्चे सिपाही। चल मेरे पीछे-पीछे।

आगे विरुद्धा उसके पीछे साहु और उसके पीछे रामसिंह इस प्रकार यह पलटन चली। तीन दालान पार करने के बाद बायें हाथ को एक बन्द कमरा दिखाई दिया।

'विरुद्धा, वह कमरा खोल देखता क्या है?' विरुद्धा के उस कमरे को खोलते ही कमरे से बहुत ही उग्र दुर्गन्ध आई। तीनों उस कमरे में घुसे। बायें हाथ को फिर एक बन्द कमरा दिखलाई दिया। इस कमरे में कहीं खिड़की-उड़की नहीं थी। केवल दीवाल में दो आलमारियाँ दिखलाई दे रही थीं। इस कमरे में आते ही बूढ़े ने विरुद्धा के हाथ से लालटेन छीन लिया और बाईं दीवाल की आलमारी खोलकर भीतर की दो पटियाँ अलग अलग कीं। उसके अलग करते ही लालटेन के प्रकाश में उस पार रामसिंह को एक कमरा और दिखलाई दिया। यह कमरा दिखलाई देते ही उसने संतोष की एक साँस ली। उसका मन तीन हजार से खेलने लगा। इतने में साहु की गर्जना से उसे होश आया।

'हाँ। देख लीजिए यह गुप्त कमरा और मन में सन्तोष कर लीजिए।'

रामसिंह ने एक कदम भीतर रखा तो बूढ़ा फिर से चिल्लाया। 'अरे, बेवकूफ अँधेरे में प्रकाश नहीं दिखलाई देगा। यह लालटेन उठा लो।'

रामसिंह ने बूढ़े के हाथ से लालटेन ली और भीतर जाकर चारों ओर दृष्टि दौड़ाई। इतने में पीछे से दरवाजा बन्द करने की आवाज हुई। उसने पीछे घूमकर देखा तो दरवाजा लगा हुआ था और कमरे में वह अकेला!

बाहर से साहु की आवाज आई। 'सिपाही दादा जल्दी नहीं है। आराम से जाँच होने दीजिये। आपके लिए लालटेन रखी है।' इसके बाद बूढ़े की हँसी सुनाई दी और फिर सब शान्त हो गया, जैसे सारा संसार समुद्र के नीचे जाकर शान्त हो जाता है।

क्या हुआ यह समझ में आते ही रामसिंह का हृदय एक क्षण के लिए एकदम रुक गया और फिर एकदम धड़-धड़ करने लगा। मुँह तक आया हुआ तीन हजार का पानी क्षण में सूख गया। और साथ ही उसका मुंह भी सूखने लगा।
सारे शरीर में पसीना आ गया।
को लगा कि उसे चक्कर आ रहा है
देर तक अकर्मण्य हुआ उसका म
विचार के बवण्डर में भटकने लगा।
मन में आया कि बूढ़े ने उसे
समाधि दे दी है। 'मैं यहीं मर
क्या किया यह मैंने! तीन हजार के
पड़कर मैंने अपनी मृत्यु बुलाई।
अकेले को मिले इस आशा से
आया हूँ, यह भी मैंने किसी
बतलाया। अतः कोई खोजने यहाँ
यह भी आशा नहीं है। बूढ़े के
उसके कानों में फिर से गूँजने ल
गधे को तलघर में मरना है। सच
क्या यह बूढ़ा मुझे यहीं बन्द
डालेगा।"

कितनी ही देर तक इस प्रका
बैठा हुआ था। अन्त में सारा साहस
कर वह उठा और लालटेन लेकर
ओर देखना शुरू किया। चारों
में उसे कहीं खिड़की या दरवाजा
दिखलाई दिया। केवल वह जिस द
से भीतर घुसा था वही एकमात्र
बाहर जाने के लिए था; और वह द
भी कितना मजबूत था। रामसिंह
सारी जिन्दगी भर उसके साथ
रहता तो भी वह एक सूत भी न खिस
उसने दरवाजे पर कई बार लात
और अन्त में थककर हताश होकर
पर हाथ लगाकर नीचे बैठ गया।

रात भर उसके मन में विविध विचार
आ रहे थे। "यदि किसी प्रकार मैं यहाँ
से छूटा तो फिर मैं ऐसे चक्कर में कभी
न पड़ूँगा। यदि साहु को दया आ जाये
और वह मुझे इस जीवित समाधि से मुक्त
कर दे तो मैं उसके उपकार को जन्म
न भूलूँगा।"

किन्तु जब दूसरे दिन साहु ने दरवाजा
खोलकर उसे बाहर निकाला तब वह
भर की अपनी सारी परेशानी भूल
किन्तु तब भी अपनी मुक्ति का आनन्द
नहीं हुआ। जब दरवाजा खुल रहा
तब उसका मन प्रतिशोध की भावना
भर उठा था। छूटने की आशा न
हुए भी उसकी मुक्ति हुई थी तो भी
की जगह वह प्रतिशोध के समुद्र में
रहा था। बाहर निकलते ही उसने क्रोध
बूढ़े की ओर देखा किन्तु उसके वि
शरीर की ओर देखकर अधिक कुछ
की हिम्मत उसे नहीं हुई।

कमरे के बाहर आते ही बूढ़े ने
"सारे कमरे की जाँच हो चुकी या
रात में काफी समय था। विद्रोहियों
इस घर में आसरा देकर तेरी तरह
के हाथ में जाने के लिये मैं तैयार नहीं
मुझे यदि जरा भी अक्ल होती तो
पहले ही समझ में आ जाता।
बच्चों से हारने के लिये शंकर साहु
कच्चा खिलाड़ी नहीं है।"

'अच्छा, अच्छा बूढ़े! यदि
बदला नहीं लिया तो अपना नाम
दूँगा।'

'गधे चुपचाप घर के बाहर
और फिर बातें कर।'

"रामसिंह घर लौटा। रात भर
जगा था। केवल जगा ही नहीं था,

शेष पेज १४ पर

महिलायें और समाज

अभागिनी नारियों के उद्धार का क्या उपाय हो रहा है ?

लेखिका, कुमारी सरला देवी

[१]

> महात्मा गांधी की शिष्या कुमारी सरला देवी ने समाज-सेवा के कार्य में अपना जीवन खपा दिया है। आप अलमोड़ा में एक सेवा-आश्रम की स्थापना करके नारी-जाति की सेवा में वर्षों से लगी हुई हैं। इस लेख में कुमारी सरला देवी ने नारी-जाति तथा अभागिन स्त्रियों के सम्बन्ध में अपने अनुभवों को चित्रित किया है। लेख अत्यन्त सुन्दर तथा पठनीय है।

सन्त—और वे लोग हमेशा पापी को एक दूसरा अवसर देने का प्रथम प्रयास करते हैं—"अपने रास्ते पर जाओ और अब से पाप मत करो।"

दूसरों के खिलाफ फैसला देने के पहले अपनी स्वयं परीक्षा कर लेने की सीधी जिम्मेवारी के अलावा आज एक दूसरी परोक्ष जिम्मेवारी भी समाज के ऊपर औरतों के विषय में है, हमारी लड़कियों और औरतों को किसी तरह की सामाजिक या नैतिक शिक्षा नहीं मिलती। त्यौहार के दिन एक मर्मस्पर्शी भावना के साथ वे अपनी पूजा-सामग्री गाँव के मंदिर में ले जाती हैं, पर अपने महान् धर्म का सही आध्यात्मिक या नैतिक अर्थ उनको कुछ भी नहीं मालूम है--यहाँ तक कि उनको वे महान् गूढ़ अर्थवाली कथायें भी नहीं आतीं जिनसे हमारा धार्मिक साहित्य भरा पड़ा है और जिनको इन्हीं जैसी सीधी-सादी विश्वासमयी आत्माओं के पथ-प्रदर्शन के लिये बनाया गया था। उनको रामचन्द्र, सीता पाण्डव, कुन्ती, द्रौपदी, शिवजी तथा पार्वती ये सब नाम तो मालूम हैं, पर वे जानतीं और समझती क्या हैं—उनका पुरुष-समाज ही क्या जानता है—कि इन नामों का उनसे कितना गहरा सम्बन्ध है और उसका नैतिक या सामाजिक अर्थ क्या है ? महाकाव्यों के इन महान् नायक-नायिकाओं के वैवाहिक सम्बन्धों की तह में कितनी पारस्परिक पवित्रता, सहानुभूति, प्रेम, सहनशीलता और परख थी इसका उनको भान नहीं है—और ये महाकाव्य यही सब कुछ जानने के लिये बनाये गये थे—इसलिये नहीं कि कुछ ब्राह्मण पुरोहित जल्दी जल्दी गुनगुनाकर इनका पाठ करें, बल्कि इसलिये कि सीधे-सादे अनपढ़ ग्रामीण लोगों को जीवन का मार्ग दिखलायें। हिन्दू-धर्म की महानता इसमें है कि वह सबके लिये खुला हुआ मार्ग है—प्रत्येक को उसकी मानसिक तथा नैतिक विकास की स्थिति के अनुसार वह नैतिक और अन्ततः आनन्दमय तथा पूर्ण जीवन का एक रास्ता दिखाता है। हम लोग जानकर या अनजानो में इस स्वत्व तथा इस प्रकाश को अपनी कड़ी मिहनत करनेवाली ग्रामीण बहनों तक नहीं पहुँचा पाये।

मेरा दिल उस समय हिल गया जब अपनी दूसरी जेल-यात्रा में मुझको 'सी' क्लास में रहनेवाली दूसरी कारावासिनी साथियों को, "जो अधिकतर अपने अवैध बच्चों की हत्या के अपराध की सजा भुगत रही थीं, पढ़कर सुनाने के लिये सुखसागर ग्रन्थ की एक प्रति मिली। जिस तन्मय और भक्तिपूर्ण ध्यान के साथ वे उन प्राचीन कथानकों को सुनती थीं वह इस बात का परिचायक था कि नैतिक प्रश्नों को उनकी सहज बुद्धि कितना समझ सकती है। उनके भोले-भाले दिलों में यह आसानी के साथ समा जाता था कि त्याग, शौच, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह की तथा बुराई के विरोधी प्रयत्नों की क्या महत्ता है। पर दुःख की बात यह थी कि आरम्भ में वे इस बात के लिये बिलकुल असमर्थ थीं कि इन कहानियों के भाव का अपने दैनिक जीवन की समस्याओं और आचरण के साथ सम्बन्ध स्थापित कर सकें। मुझको तब बहुत प्रसन्नता हुई जब यह पहलू धीरे-धीरे उनकी समझ में आने लगा और जब अन्त में उनमें से एक ने कहा, "यदि हम भी केवल पढ़ सकते और ऐसी पुस्तक पढ़ने के लिये हमारे पास होती, तो यहाँ से छूटने के बाद हम अपना जीवन कितना बदल लेते। इससे हमारे जीवन में कितना अन्तर पड़ जाता ! हमको इन चीजों को इस प्रकार से समझने का कभी मौका ही नहीं मिला।"

अतः, अपनी दुर्भाग्यशालिनो बहनों पर पत्थर फेंकने के पूर्व, हमको गम्भीरता-पूर्वक न सिर्फ यह सोचना है कि जिस यौन आचरण की शुद्धता के माप से गिरने के लिये हम उनको दोष देते हैं उससे हम स्वयं मन, वचन और कर्म में कितने च्युत हैं, बल्कि यह भी सोचना है कि समाज की वर्तमान स्थितियों और रुख ने उनमें बचपन से इन आदर्शों की अवगति कराने में कितनी मदद की है।

न जाने कितने लोग गाँवों में मुझसे गर्भ न होने और उसको गिराने की दवा माँगने आते हैं। हो सकता है कि वे इन दवाओं को इसलिये चाहते हों कि दूसरों की पत्नियों में नहीं बल्कि अपनी ही पत्नियों के सम्बन्ध में इनका प्रयोग करें, पर नैतिकता की दृष्टि से यह प्रश्न कोई फर्क नहीं पैदा करता। इससे आत्म-तृप्ति के लिये स्त्री के साथ सहभोग की एक इच्छा परिलक्षित होती है जो कि उसके साथ सम्बद्ध जिम्मेवारियों से बचना चाहती है; और इस तरह का कर्म उतना ही अनैतिक है चाहे वह विवाह-सूत्र के अन्दर किया गया हो या बाहर। एक बार एक गाँव की अधेड़ औरत मेरे पास गर्भ को रोकने के लिये दवा माँगने को आई तो मैंने उसकी भर्त्सना की और कहा "तुम एक सयानी औरत हो और तुम्हारा बड़ा परिवार है। तुमको इस तरह का काम नहीं करना चाहिये।" उसने उत्तर दिया, "जब वह नहीं मानता और हावी हो जाता है तो मैं क्या कर सकती हूँ ? मैं और अधिक बच्चे पैदा करना नहीं चाहती। इससे समस्या के दो पहलुओं पर प्रकाश पड़ता है। एक तो पुरुष-समाज अपनी पत्नियों को अपनी निम्न वासनाओं की पूर्ति का प्रधान साधन समझता है—इसके साथ ही औरतें भी अपनी आत्माभिमान की आन्तरिक भावना को खो देती हैं। उसका नतीजा यह है कि उन्होंने आदमियों के, चाहे वे अपने पति हों चाहे परपुरुष, प्रस्तावों से अपने को बचाने की शक्ति खो दी है। वे उस स्थिति से कितनी गिर गई हैं जहाँ अत्यन्त बलशाली तथा अनाचारी रावण, अपनी अनन्त सशस्त्र शक्ति के रहते हुए भी सीता के पास उसकी स्वतन्त्रतापूर्वक दी हुई सम्मति मिले बगैर जाने की हिम्मत नहीं रखता था। फिर भी मुझे निश्चित विश्वास है कि जिस दम्पति का मैं ऊपर उल्लेख कर चुकी हूँ वह सबसे पहले अपने गाँव की ऐसी औरत की धार्मिक क्रोध के साथ निन्दा करेगा जो किन्हीं भी कारणों से यौन आचरण के सामाजिक नियमों का उल्लंघन करने के अपराध में लोगों की दृष्टि में हेय हो गई है; और ऐसा करते वक्त वे थोड़ा भी यह महसूस नहीं करेंगे कि मैथुन के प्रति स्वयं अपनी प्रतिक्रिया द्वारा वे स्वयं एक ऐसा वातावरण उपस्थित कर रहे हैं जिसमें यौन नैतिकता को

श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित, मास्को में भारतीय राजदूत।

ढील मिलती है। मैथुन का आनन्द एक पवित्र आनन्द है जिसकी सृष्टि एक पवित्र ध्येय से हुई है—जाति की वृद्ध करना। जब तक हम उसको ऐसा मानते हैं और हमारी इस भावना का पवित्रता, प्रेम और सहानुभूति के साथ दूसरे हिस्सा लेते हैं तब तक यह पवित्र रहता है। ज्यों ही हम इसको काम-वासना की पूर्ति का साधन समझकर अपने साथी की इच्छा के बगैर परवाह किये हुए इसमें लिप्त होते हैं और अपने कर्मों के नैसर्गिक परिणाम से बचने के लिये कर्म के कानून का उल्लंघन करना चाहते हैं, तो यह उसके ध्येय को च्युत करा कर वेश्यागमन के समान है, चाहे वह अपनी भार्या के साथ हुआ या परिणाम सूत्र के बाहर। मुझे आशंका है कि इस दृष्टिकोण से देखने पर हमारे समाज में बिरले ही ऐसे व्यक्ति निकलेंगे जिनमें पहला पत्थर फेंकने की क्षमता होगी।

मैं चाहती हूँ किसी अभागी नारी के पतन के लिये व्यक्ति और समाज कहाँ तक जिम्मेवार है इसका उदाहरण देने के लिये अलमोड़ा जेल के अपने एक साथी का जीवन वृत्तान्त सुनाऊँ।

मुझको जेल में गये हुए दो या तीन दिन हुए होंगे कि एक रोती हुई औरत वहाँ दाखिल हुई। उसने दो-तीन दिन और रात रोने-धोने ही में बिताये। कुछ दनों के बाद जब वह कुछ शान्त हुई और बाद में जब हम लोगों ने सुखसागर की कथाओं के बारे में बातचीत की तो मुझे उसके किस्से का पता चला और सब बात समझ में आई।

उसका जन्म हल्द्वानी में हुआ था जहाँ कि उसका बाप दूकानदार था और उसके बचपन ही में माँ की मृत्यु हो गई थी। उसको जंगल और खेत में कड़ी मिहनत का जो कि साधारण पहाड़ी औरत के भाग्य में बदी रहती है, कोई अनुभव न था, बल्कि इसके विपरीत अपने पिता की एकलौती सन्तान होने के कारण उसको दुलार करके थोड़ा बिगाड़ दिया गया था और नगर में काफी आराम के वातावरण में उसको पाला-पोसा गया था। उसका विवाह, अपने से उम्र में काफी बड़े एक आदमी के साथ किया गया जो दिल्ली में काम करता था, वहाँ वह उसके साथ रही और वहीं उसको लड़का पैदा हुआ।

जब उसका मालिक नौकरी से अवकाश पा गया तो वे लोग पहाड़ में अपने गाँव वापस चले आये और वहीं उस को पहाड़ों के गाँवों की औरतों की कड़ी मिहनत की जिन्दगी का पहला अनुभव हुआ। उसकी आराम की जिन्दगी, पिता और पति भी जो एक भला आदमी था दोनों के दुलार ने उसको शारीरिक और आत्मिक दोनों तरह से कोमल बना दिया था। हमेशा उसकी दिक्कतों से रक्षा करने के लिये उसके पास एक मजबूत साथी था जो कि हर तरह से उसकी मदद करता और राय देता था। अब भी उसके पति ने उसकी नई जिन्दगी के भार और कष्ट को हल्का करने में यथाशक्ति मदद की, पर दुर्भाग्य से वह अधिक जीवित न रहा और दूसरों के मुकाबले में इस अधिक कोमलता के साथ पोसी गई औरत को विधवा बनकर एक कठिन जीवन और दुश्मन दुनिया का मुकाबला बगैर दोस्त तथा बगैर मदद के करना पड़ा।

अब उसको अकेले एक ऐसे कठिनाई-पूर्ण जीवन का सामना करना पड़ा जिसके लिये उसको न तो शिक्षा या अनुभव प्राप्त था और न वह स्वभाव से ही ऐसी परिस्थिति का सामना करने योग्य थी। जंगल और खेत की कई दिनों की कड़ी मिहनत ने उसके शरीर को बिलकुल थका दिया—वह काम को पूरा न कर पाती थी। वह नहीं जानती थी कि अपनी खेती कैसे सँभाले, कैसे अनाज को काटे, इकट्ठा करे या बेचे। उसको उससे गल्ला खरीदने के लिये आनेवाले लोगों से भाव तय करने और मोल तोल करने का कुछ भी अनुभव न था ताकि वह अपने बचे हुए गल्ले को फायदे के साथ बेच सके और खेती का भी इतना कम अनुभव था कि यह बचत घटने लगी। इस हालत में उसका अपनी मदद के लिये अपने देवर का मुँह ताकना ठीक ही था। पर मदद के बदले उसको मिला क्या? विरोध और दुश्मनी। उसके देवर ने उसकी जमीन को हथिया लेने की कोशिश की और एक ईमानदार सहानुभूतिपूर्ण पटवारी ने जैसा बहुत कम होता है, हस्तक्षेप करके उसको ऐसा न करने दिया। उसकी जमीन को हड़पने में सफलता न पाकर उसने उसको घर से निकालकर ही सन्तोष कर लिया, और उसे अपने पति के जीवन की सारी कमाई को अपने और अपने बच्चे के रहने के लिये एक मकान बनाने में खर्च कर देना पड़ा। फिर भी अपने पूरे कारबार को ठीक तरह सँभालने में वह असमर्थ थी और अपने छोटे लड़के के हित में ठीक काम करने की चिन्ता तथा जैसा कि उसके पिता की इच्छा थी लड़के को शिक्षा देने की उत्कंठा में, आखिर निराश होकर उसने अपने कामों में एक आदमी की मदद लेने के लिये संशयपूर्ण कदम उठाया।

आर्थिक दृष्टि से अब उसकी हालत सुधर गई और जीवन भी सरल हो गया—पर हम अपनी नैतिक भूलों के परिणाम से कभी बचकर नहीं भाग सकते। जीवन में कठिनाइयाँ हमारी परीक्षा के लिए भेजी जाती हैं—यदि हम उनका सामना शक्ति और हिम्मत के साथ करते हैं तो हम भविष्य के लिए अधिक अच्छा कर्म संचय कर लेते हैं—यदि हम उन कठिनाइयों के सामने सर झुका देते हैं और कम से कम झंझट-वाला मार्ग ग्रहण करते हैं तो हम पतन के मार्ग पर अग्रसर होते हैं और अपने इस जीवन के बचे हुए हिस्से और भविष्य में आनेवाले जन्मों के लिए दुष्कर्म के बीज बो देते हैं। उस स्त्री ने जल्द ही अपने प्रथम नैतिक पतन का फल पाया और वह एक अवैध पुत्र की मा बनी जिसको कि मार डाला गया—दोनों में से किसने, या किसके कहने से यह मैं नहीं कह सकती। वह और उसका आदमी दोनों पकड़े गये और उसका लड़का, जो अब स्कूल जाता था, अपने चाचा के आसरे छूट गया। उन दोनों को कई महीने रानीखेत की हवालात में बिताने पड़े और आखिर में सेशन के सुपुर्द होकर अल्मोड़ा जेल को भेजे गये।

वहाँ महीने पर महीना बीतता गया, कई आये और गये पर उनकी भयावनी "तारीख" नहीं लगी। अन्त में पकड़े जाने के करीब एक साल बाद वह सेशन से वापस आई, अब भी उसका मुकदमा चल ही रहा था, क्योंकि कोई गवाह पेश नहीं हो पाया था, पर उसका साथी जमानत पर छोड़ दिया गया था। कुछ हफ्तों के बाद उसको फिर रानीखेत बुलाया गया और फिर मुकदमे की तारीख बढ़ाकर वापस भेज दिया गया क्योंकि कोई गवाह नहीं आये थे। उसके खिलाफ प्रधान गवाह उसका देवर और लड़का था और उस लड़के की अनुपस्थिति का क्या कारण हो सकता है यह सोचकर उसकी व्यग्रता की सीमा न रही। सारे दिन भर वह लड़के के लिए चिन्ता प्रकट करती थी और लम्बी और उदास रातों को चुपचाप सिसक-सिसक कर काटती थी। अपने दिल का भार हल्का करने के लिए अब वह अकसर मेरे पास आया करती थी और मुझे ऐसा पता चलता था कि वह एक सीधी, ममतावाली पतिपरायणा औरत है जिसको कि इस बात की तीव्र अनुभूति है कि उसने अपने पति की आत्मा को कितनी चोट पहुँचाई, और उसकी इच्छा आयन्दा इस तरह जीवनयापन करने की थी कि उसके कारण उसके लड़के को बिलकुल भी लज्जित न होना पड़े। पर वह इस बात को भी पूरा महसूस करती थी कि वह कमजोर है और दुनिया का सामना अकेले नहीं कर सकती। सुखसागर तथा अन्य भजनों में जो मैंने उसे सिखाये उसको बहुत शांति मिलती थी और वह कहा करती थी, "रात को अब मैं बगैर नींद के लेटी रहती हूँ, तो अपने लड़के के लिये रोने के बजाय भजनो की पुनरावृत्ति करती हूँ और इससे मुझे शांति मिलती है और इस तरह मैं शांतिपूर्वक सो जाती हूँ। जब मैं जेल से छूटूँगी तो मैं इसे याद रक्खूँगी और फिर से गलती न करने की कोशिश करूँगी।"

इसी बीच बाहर से जिसका डर था वह खबर भीतर खिसक आई। उसके लड़के और देवर की अनुपस्थिति का कारण यह था कि रामगंगा को पार करते वक्त वे दोनों डूब गये थे। मैंने कोशिश की कि इस भयावनी खबर को उस तक न पहुँचने दूँ, आखिर यह कोई पक्की खबर तो थी नहीं, पर असफल र उसकी निराशा की सीमा न रही।

कुछ ही समय बाद मेरी बद नऊ को हो गई और वापस आने पता चला कि अन्त में करीब अठा के बाद उसको सबूत की कमी के रिहा कर दिया गया! मैं इसको के लिए उत्कंठित थी, पर मेरी परिस्थिति कुछ ऐसी डावांडोल उस समय उसके लिए कुछ कर नहीं थी। कुछ महीनों बाद जब मैं इलाके में दौरा कर रही थी तो में पूछने पर मुझको कोई नि मालूम न हो पाई, पर अन्त में जोर किया कि किसी न किसी उससे मुलाकात करनी ही है तो आदमी बोला, "आपको उसके बारे पूछना चाहिये। आप उसको सकतीं। उसका चरित्र अच्छा नहीं

यदि उस स्त्री का चरित्र अच्छा नहीं दोष किसका था? क्या अपराधी थी या उसका भाग्य और विप स्थितियाँ—या वे लोग जिन्होंने समय में अपना कर्तव्य निभाकर मदद करने के बजाय उसको एक जीवन का सामना करने के लिए बन्दोबस्त के निकाल बाहर किया— समाज जिसने उस व्यक्ति को दिया जिसने एक औरत की कमजोरी का नाजायज फायदा उठाया औरत पर सब दोष थोप दिया, या सरकार जो इस तरह की औरतों भी इन्तजाम नहीं करती जिनसे समाज में टक्कर खाने के लिए छोड़ जाता है? यह हमको शोभा नहीं हम उस पर पत्थर फेंकें और दो करें, पर हमें हमेशा याद रखना चा ऐसे उदाहरणों में स्त्री की दुराच आलावा और भी कई परिस्थिति हैं। और इसको याद रखते हुए चाहिये कि विनम्र भाव से हम की कोशिश करें कि अपने को तथ को उन परिस्थितियों से बरी करें तरह से उस अभागी स्त्री की मद ताकि वह अपने रास्ते चल सके पाप न करे।

*

पीडा को रोको

अलेम्बिक शीतल बाम में काफूर, पिपरमिन्ट, युकलिपटस आयल, कैजूपुटी आयल आदि मिश्रित हैं और यह पीड़ा को शांत और कम करती है।

शीतल बाम लगाने से कई प्रकार की पीड़ा और दर्दों को जैसा कि:-जोड़ों की पीड़ा, मोंच, और सिर दर्द को आराम मिलता है।

१/२ औंस की शीशी में मिलती हैं

शीतल बाम

एक अलेम्बिक औषधि

AL 3 HINDI

मारा रंग-मंच

"साजन"

यस कलाकार श्री किशोर हू की निकृष्ट कृति

क, श्री गोपाल मेहरोत्रा

ई-स्थित चित्र-निर्माण-संस्था न लिमिटेड' की स्थापना संस्कृति-वृद्धि तथा कला-विकास गई थी, परन्तु उसकी कृतियों रे नौजवान', 'शिकारी', 'आठ दिन', 'सफर', 'लीला', दो भाई' आदि) को निरखने तीत होता है मानो—अश्लीलता, 'कुरुचिता' तथा राष्ट्रघातकता का पूर्ण दायित्व प्रस्तुत संस्था ने कमलवत-करों में ले लिया हो भारत जैसे स्वतंत्र-महान्-राष्ट्र के प्रति अकल्पनीय सबसे करने में अपनी उच्चता व हैं। यद्यपि श्री किशोर साहू कृत 'सिंदूर' में केवल विधवा ओं को 'जोबना के उभार' 'उस' पर कीचड़ उछालने त किया था, पर उसकी "साजन" में तो श्री साहू भूलकर अपने साथ ही चिड़िया' का भी सर्वनाश राष्ट्र रूप में सिद्ध कर बैठे से श्वान की पूँछ जब भी वह 'टेढ़ी' ही निकलेगी, श्रुति निम्नांकित रूप में -रजतपट पर प्रदर्शित होती

वस्था में विवाहित अशोक- विदेश में शिक्षा-प्राप्ति के मातृ-भूमि पर चरण रखता की प्रथम कक्षा में उसकी वादी युवक रमेश गुप्ता से है। अभाग्यवश वाष्पयान- है। इस दुर्घटना में अशोक अत्यन्त शोचनीय हो जाती है, सुरक्षित रहता है। दोनों के होने के कारण रमेश उसकी ओं-सहित दिल्ली पहुँचता है और अशोक के माता-पिता उसे ही अपना पुत्र समझकर अपने गृह को ले आते हैं। यद्यपि चिकित्सालय में अशोक स्वस्थ हो जाता है, परन्तु स्मरण-शक्ति खो बैठता है। इधर दिन-प्रतिदिन अशोक की पत्नी रेहाना को यह दृढ़ विश्वास होता जाता है कि—रमेश उसका 'पति' नहीं है। एक दिवस वह रमेश के पंजे से मुक्त होकर भाग जाती तथा बंजारों की मंडली में कार्य करना प्रारम्भ कर देती और रमेश......। अशोक नित्यप्रति रेहाना की विक्रम-योग्य वस्तुएँ अत्यन्त शीघ्रता तथा सरलता से विक्रय कर देता है—केवल उसकी एक 'मुस्कान' पर! बंजारों की टोली के दिल्ली आने पर रमेश को रेहाना का ज्ञान होते ही वह उसे एक प्रकोष्ठ में बन्द कर देता है। एक सुघटनावश रेहाना अशोक को अपनी व्यथित कथा सुनाती है। अशोक गृह-द्वार खोलकर रेहाना के प्रकोष्ठ में आ जाता है। वह प्रकोष्ठ की समस्त वस्तुओं को पहचान लेता है। रमेश गुप्ता की व्यूह-रचना समाप्त होती है और रेहाना को उसका पति प्राप्त होता है।

जन' चित्र के निर्माता और डाइरेक्टर श्री किशोर साहू।

ख्याति-प्राप्त साहित्यिक श्री किशोर साहू द्वारा लिखित कहानी वासना, (स्थान-स्थान पर अशोक तथा रमेश का रेहाना की बाँहें पकड़ना, उसे जाने से रोकना, उसके सम्मुख 'जवानी', 'ऐ हम', आदि जैसे अपमानजनक शब्दों के प्रयोग, हाट में रेहाना की ठोंढ़ी पर हाथ धरना, उसे मुसकाने के हितार्थ बाध्य करना, इत्यादि) अस्वाभाविकता, (मातृत्व का अपमान, रमेश गुप्ता द्वारा अशोककुमार के टिकट-प्राप्ति का ज्ञान होने पर भी अशोक का हँसकर टाल देना, टिकट-कलेक्टर के द्वारा इतने अपमानजनक शब्दों के प्रयोग पर भी कुमार तथा गुप्ता का कुछ न कहना, रेहाना का गृह त्यागते ही पूर्णतया बंजारिन सा कार्य करना—जैसे वह जन्म से ही बंजारिन हो, अशोक का रमेश के गृह को खोल लेना, गुप्ता के गृह के ऊपरी भागों से नीचे आने की सुविधायें, वाष्पयान-दुर्घटना पर रोदन, चीत्कार तथा अन्य अवश्य दृश्यों की अनुपस्थिति, रमेश का सुरक्षित रहना, गुप्ता का बंजारिन के वेष रेहाना को न पहचानना, इत्यादि) तथा घृणा (अत्यधिक गीत—वे भी चुराये हुए, बंजारे-बंजारिनों द्वारा राष्ट्रीयता का दुरुपयोग—गीत 'सँभल-सँभल कर जइयो बंजारे दिल्ली दूर है', आदि) से परिपूर्ण है, जो भारतीय छाया-लोक के 'जीनियस' कलाकार तथा 'न्यू-रियलिज्म' के प्रतिपालक जी के दिवालियेपन का ज्वलंत प्रमाण है। अनेक स्थानों पर 'जवानी' शब्द का प्रयोग, रेहाना का गिरगिटान की भाँति अपनी भाषा परिवर्तित करना, रेहाना—'का देई बाबू जी?'—अशोक कुमार—'सिर्फ एक बार मुस्करा दो', जादूगर—'अरे बाबू उसकी 'कमर' देखा है?'—अशोककुमार—'उसके कमर है ही कहाँ?', आदि—पता नहीं कौन आँख के अन्धे ऐसी अश्लीलता का परिचय देकर स्वयं को 'तीसमार खाँ' घोषित करते हैं? भाषा के साथ घोर अन्याय किया गया है। गीतकारों की टोलियों द्वारा रचित गीत सर्वथा निरर्थक, ('तेरे इन्तजार में....',) चोरी किये हुए, ('मैं जोधपुर की बंजारिन', 'तुम हमारे हो न हो', आदि) एवं चित्र के स्याही पुते हुए मुख पर कालिख पोतने वाले ('सँभल-सँभल कर जइयो') हैं। श्री रामचन्द्र चितलकर का संगीत-निर्देशन निम्न कोटि का हुआ है। 'तेरे इंतजार में...', 'मैं जोधपुर की बंजारिन', 'तुम हमारे हो न हो', आदि गीतों की चुराई हुई ध्वनियों से यह स्पष्ट प्रतीत है मानो—आपने चल-चित्र-क्षेत्र में निवासकर केवल 'घास खोदना' तथा 'विश्वासघात' करना ही सीखा हो! केवल वाष्पयान-दुर्घटना के पूर्व के अतिरिक्त श्री के० कपाडिया का चित्रलेखन निकृष्ट श्रेणी का हुआ है। श्री राम त्रिपस की रूप-सज्जा अत्यन्त अश्लील है। श्री वुंदालिका जी के अक्षम्य सम्पादन-कार्य के लिये उन्हें सजा अवश्य मिलनी चाहिये, जिससे वे भविष्य में पुनः अपनी दुष्टता का प्रदर्शन करने के हितार्थ साहस न कर सकें। श्री रफी द्वारा अशोककुमार को, जोहरा द्वारा रणजीत कुमारी का तथा रेहाना के 'प्लेबैक-संगीत' ने चित्र की शेष लोकप्रियता पर एक असहनीय कुठाराघात किया है, जिसके अपराधी श्री चितलकर जी हैं। ध्वनि-आलेखन दोषपूर्ण तथा छायालेखन कुरुचिपूर्ण हुआ है। श्री नारायण का नृत्य-निर्देशन कामुकता का ज्वलंत उदाहरण है।

अभिनय की दृष्टि से नायक प्रकाश की भूमिका में निर्देशक-निर्माता श्री अशोककुमार ने आदि से अन्त तक अपनी असफलता का परिचय दिया है, जिसका पूर्ण दायित्व अस्वाभाविक 'प्लेबैक', रट्टू तोता की भाँति संवाद उच्चारित करना तथा निकृष्ट वेश-भूषा पर है। खल-नायक प्रकाश की काया में पिटे पैसे जैसे आकृत-वाले रमेश गुप्ता ने किसी सीमा तक संतोषजनक अभिनय प्रदर्शित किया है। नायिका कमला की कल्पना में कामुकता को प्रचारिणी रेहाना आदि से अन्त तक अश्लीलता का ही परिचय है। गायन के समय तो आप ऐसी प्रतीत होती हैं कि अब आप स्वर्ग सिधारने ही वाली हैं। संवाद-उच्चारण अत्यधिक असंतोषजनक हुआ है। शेष पात्रों में एस० एल० पुरी, लीला मिश्रा, रणजीत कुमारी, आदि ने भी सर्वथा असफलता का ही परिचय दिया है।

यह थी श्री किशोर साहू की, 'सिंदूर' के पश्चात्, द्वितीय रचना, "साजन"—पतन, वासना, अंधविश्वास तथा असामायिकता की साक्षात् प्रतीक, जिसके बारे में ढोल पीटे जा रहे थे। कहने का तात्पर्य यह है कि विधवा के उज्ज्वल मुख पर 'सिंदूर की कालिमा' सुशोभित होने पर उसके प्रियतम का आगमन अत्यन्त आवश्यक था। अतः देश-द्रोही "साजन" प्रदर्शित हुआ। लज्जा भी न आई होगी श्री साहू जी को इतना अश्लील नाम रखते हुए। अस्वाभाविक, अश्लील, सड़ी तथा जर्जर कहानी पर राष्ट्रीयता का भावुक जामा पहनाकर श्री किशोर साहू ने यह प्रस्फुटित करने की कुचेष्टा की है कि सुरा और सुन्दरी का सदैव रसोपान करते हुए भी हम और फिल्मिस्तान आज भी ध्येयपूर्ण चित्र प्रदान कर रहे हैं, पर पाठकगण! 'वह दिन हवा हुए, जब पसीना गुलाब था।' कथा, संवाद-गीत तथा संगीत की दृष्टि से आपका प्रस्तुत दिग्दर्शन सर्वथा अक्षम्य अपराध है और ऐसी निकृष्ट रचनाओं पर पानी की भाँति द्रव्य बहाने के हितार्थ फिल्मिस्तान के समस्त कर्मचारियों तथा प्रधानाध्यक्ष श्री चुन्नीलाल जी के जीवन को धिक्कार है! रोना तो आपको उस समय आयेगा जब श्री संतोषी जी अपनी 'खिड़की' में ग्यारह-ग्यारह नायक-नायिकाओं का नग्न प्रदर्शन करेंगे। भविष्य की प्रतीक्षा कीजिये—देखिये साहू जी अपनी आगामी कृति 'नदिया के पार' में कामिनी कौशल के साथ कैसे-कैसे पापड़ बेलते हैं। ऐसे ही दृश्यों की रचना करके हमारे भारतीय चंचल-जगत् के साहित्यकार हिन्दी-साहित्य तथा देश-सेवा का दम भरते हैं। फिल्मिस्तान के समस्त कलाकारों को अपनी कुप्रवृत्तियों का शीघ्रातिशीघ्र त्याग करना चाहिए अन्यथा उन्हें 'रोना' ही पड़ेगा—आज का दर्शक उतना पतित नहीं है जितना वे समझते हैं।

'साजन' के प्रधान अभिनेता श्री अशोककुमार यही हैं।

मुफ्त

युवको! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीवन फीका हो चुका हो तो भारत भर में सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त रोग विशेषज्ञ

कविराज ब्रह्मस्वरूप बी० ए०

(D.A.) फतेहपुरी देहली से सलाह मशविरा मुफ्त करके अपना जीवन सुधार लें।

शुभ सूचना

समस्त हिन्दी-प्रेमियों, विद्यालयों तथा कृपालु ग्राहकों को यह शुभ सूचना देते हुए हमें हर्ष हो रहा है कि हमारी लाहौरवाली ब्रांच फिर से दुर्गाचरण रोड, अम्बाला कैंट (पूर्वी पञ्जाब) में आप लोगों की पूर्ववत् सेवा के उद्देश्य से स्थापित हो चुकी है।

मैनेजर

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

खुला व्यापार

(पेज १० का शेष)

की यातनायें भोगा था। किसी दिन मरना पड़ेगा इस कल्पना से भी मनुष्य का हृदय काँप उठता है और वही मृत्यु मुँह फैलाए सामने खड़ी हो तब क्या स्थिति होती है, इसका अधिक वर्णन करने की आवश्यकता ही नहीं है। उसकी वे सारी यातनायें समाप्त हो चुकी थीं फिर भी उसे नींद नहीं आ रही थी। उसका सारा शरीर जल रहा था। क्रोध, प्रतिशोध.........।"

इस घटना को पाँच-सात दिन बीत चुके थे। शाम के समय शंकर साहु अपने दीवानखाने में पड़े-पड़े कुछ पढ़ रहे थे। इसी समय कोई नवयुवक डरता हुआ दीवानखाने में घुसा। उसे देखते ही साहु के माथे पर बल पड़ गया। वे आराम कुर्सी पर उठकर बैठे। आँखों पर से चश्मा निकालकर मेज पर रखकर उठते हुए उन्होंने कहा "कौन है रे तू। चोर की तरह मेरे घर में घुस रहा है?"

उस आगन्तुक ने हाथ से ही चुप रहिये इस प्रकार संकेत कर दरवाजा बन्द कर लिया।

"ए गधे के बच्चे! मेरे सवाल का जवाब दे, [illegible] विरुद्धा कहाँ गया?"

"चचा! चुप रहिये। किसी को न बुलाइये।" उस नवयुवक ने आगे बढ़कर कहा। बूढ़े ने गौर से उसकी ओर देखा। उसके पास आते ही धीमे से कहा, "मेरे पिता जी ने मुझे आपके पास भेजा है।" घबराकर तथा हाँपते हुए उसने कहा।

उसकी उम्र साधारणतः २३, २४ वर्ष की होगी, रङ्ग साँवला, बाल काले और कद मझोला था। उसके बाल बिखरे हुए थे। और सर पर टोपी नहीं थी। कपड़े मैले-कुचैले दिखलाई दे रहे थे। "कल रात से मैं यहाँ हूँ। दिन भर छिप कर रहा। पिता जी ने मुझे आपके पास भेजा है। उन्होंने कहा है कि तू उनके पास जा, वे तुझे कुछ दिन छिपाकर रखेंगे।"

"तेरा बाप गधों का दादा मालूम होता है। कौन है तेरा बाप जिसे मुझ पर इतना विश्वास है। तू और बाप दोनों ही जहन्नुम में जाओ। तेरा वहाँ तुम्हें कोई नहीं देखेगा।"

'चचा चचा! जरा धीरे बोलिये। कोई सुनेगा, कोई देख लेगा।'

उस बूढ़े के चेहरे से अब भी आश्चर्य टपक रहा था। वह नवयुवक के पास आया और उसे हिलाकर बोला, 'लेकिन गधे! पहले यह तो बता कि तू कौन है?'

'क्या? आपने मुझे पहचाना नहीं! मैं हूँ प्रकाश।'

'तू प्रकाश है?' बूढ़ा फिर से कुर्सी पर बैठ गया और कुछ उपहास के साथ बोला, 'किन्तु मेरे पास तेरा क्या काम है। तू पहले बाहर निकल नहीं तो लात मार-कर बाहर निकाल दूँगा।'

'सचमुच आपने मुझे नहीं पहचाना?'

मैंने तुझे पहचाना। ऐसा कहकर वे क्रोध से दो कदम आगे बढ़े और उस युवक के मुँह में तमाचा मारने के लिए अपना हाथ ऊपर उठाया। किन्तु फिर अपने को रोककर वे कुर्सी पर बैठ गये। उनके चेहरे से क्रोध की भावना दूर हटकर वहाँ उपहास लक्षित होने लगा। तेरे पिता से मैंने स्पष्ट कह दिया था फिर भी उन्होंने तुझे मेरे यहाँ भेजा। मेरा घर विद्रोहियों के लिए नहीं है यह क्या तुम लोग नहीं जानते?'

उस युवक का चेहरा एक दम काला पड़ गया। उसने दीनता से कहा, 'मेरी हालत बहुत ही बुरी हुई है। सभी तरह के अत्याचारों में मेरा नाम है। मैं यदि पुलिस के हाथ में लगा तो मुझे फाँसी छोड़कर दूसरी सजा न मिलेगी। शिकारी कुत्तों की तरह पुलिस मेरे पीछे लगी हुई है। अपने गुप्त कमरे में मुझे छिपाकर रखिये।

'कुछ शांति होने पर मैं लौट जाऊँगा। इसमें आपका कोई नुकसान नहीं है। मेरी जान बचेगी और मेरा काम आगे बढ़ सकेगा।'

'तेरा विद्रोहीपन मुझे पसन्द है यह तुझे किसने बताया?'

'यदि मैं गिरफ्तार होकर फाँसी पर गया तो उसका सारा उत्तरदायित्व आप पर आयेगा। जरा सोचिये चाचा, विचार कीजिए।'

'तुझे काला पानी हो या फाँसी दी जाय मैं तेरे लिए राजद्रोह न करूँगा।'

'कितनी आशा से पिता जी ने मुझे यहाँ भेजा। मैं कितनी आशा लेकर यहाँ आया हूँ।'

तेरा बाप महा मूर्ख है। पहले बाहर निकल, नहीं तो मैं पुलिस को बुला ले आऊँगा।

इतने में दरवाजा खुला। दरवाजे में रामसिंह खड़ा था।

"जयराम जी शङ्कर साहु! आपको तकलीफ न हो, मैं स्वयं चला आया हूँ। प्रकाश बाबू आपको भी नमस्ते। कहिये शङ्कर साहु! आज तो चोर पकड़ा गया या नहीं। मैं कब से आपके पीछे लगा हूँ।"

'ऐसा?' शङ्कर साहु ने तिरस्कार की हँसी हँसते हुए कहा।

'अब कहाँ जाइयेगा शङ्कर साहु? पिछली बार साधु का स्वांग बनाया था। चोर कितने ही बहाने बनाये हमसे वह कहाँ छिपकर जा सकता है?'

"ठीक है। चोर को चोर ही पहचानता है। किन्तु अब बड़ बड़ करने में क्यों समय बिताता है? तेरा बन्दी तेरे सामने खड़ा है। उसे अपने कब्जे में ले और चलता बन।" 'उसे अकेले ही? और आप इसमें से कैसे छूटेंगे?'

'मैं! मेरा इससे क्या सम्बन्ध।'

'खूनी, डाकू, तथा फरार लोगों को घर में रखना, इसे कानून अपराध कहता है और उसके लिए सजा भी कड़ी होती है। चलिये आप दोनों को थाने पर ले जाना मुझे आवश्यक मालूम देता है।'

इतने में वह नवयुवक एकदम रामसिंह के पास आया और बोला, 'यह देखिये हवलदार साहब, मुझे गिरफ्तार कर आपको क्या लाभ! मुझे अधिक से अधिक फाँसी दी जायगी। किन्तु उससे आपको क्या लाभ? अपने अभागे देश के लिए आपको दुःख नहीं मालूम होता?'

'मालूम क्यों नहीं होता! किन्तु हमारे भी बाल-बच्चे हैं। आपको गिरफ्तार करने पर मुझे नगद तीन हजार रुपये मिलेंगे। यही क्या कम लाभ है! इनाम मिला तो मेरे बाल बच्चों का जन्म भर का कल्याण हो जायेगा।'

'इतना ही है न आपका कहना! यदि आपको तीन हजार रुपये मिल गये तो...?'

"बात ऐसी है कि हमें आप लोगों पर बहुत तरस मालूम होता है।" रामसिंह ने हँसकर कहा—'तुम्हारे ऐसा युवक बेकार—फाँसी पर जाय यह जरा अच्छा नहीं लगता।'

'चाचा, चाचा सुनी इसकी बात?'

"सुनी, अच्छी तरह सुनी। क्या कहना है फिर तेरा?"

"मुझे तीन हजार उधार दीजिये। पिता जी एक दिन में वापस कर देंगे।"

कब वापस करेंगे, अगले जन्म में? पुराना कर्ज तो वापस करें फिर बाद की बात।

किन्तु आपने अपना विचार नहीं किया। रामसिंह ने बीच ही में कहा—'इस मामले को आये जितना आसान समझते हैं उतना नहीं है। ये दिन कैसे हैं जरा सोचिये! आपके घर में प्रकाश मिला यही आप पर मामला चलाने के लिए काफी है।'

"किन्तु तीन हजार में मामला तय हो जायगा यह तो तय है?"

"वाह प्रकाश बाबू! तीन हजार से कैसे होगा।" रामसिंह ने हँसते हुए साहु की ओर देखते हुए कहा, 'शङ्कर साहू की क्या कोई भी कीमत नहीं। आप दोनों के लिए कम से कम छः हजार तो सही।"

"तुम दोनों ही भाड़ में जाओ।" साहु ने एकदम बिगड़कर कहा और फिर चिल्लाया 'ओ विरुद्धा, विरुद्धा!' रामसिंह के मुँह पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। उसने पूछा—विरुद्धा को क्यों बुला रहे हो।'

चोर कहीं का! तुझे रुपये दिये इसके लिए कोई गवाही नहीं चाहिये? किसी प्रतिष्ठित आदमी को बुला दूँ। नहीं तो पैसे लेकर भी..."

"वाह साहु! ऐसी बातें कहीं गवाही रखकर की जाती हैं। इसमें मैं तो खुद ही फँस जाऊँगा।"

तुझे फँसना ही चाहिये। तू क्या समझा है कि मैं तेरे ऐसे चोर पर विश्वास रखूँगा। अरे बेवकूफ, इसका पीछा कर केवल यहाँ पकड़ने का स्वाँग बनाता है।

'इसका फैसला अदालत करेगी।'

"किन्तु ये हजार बातें चाहिये ही किस लिये?" उस युवक ने बीच ही में कहा—"हवलदार साहब आप इनाम के तीन हजार पर सन्तोष कीजिये।"

"खैर तुम्हारी ही बात सही। शङ्कर साहु जल्दी कीजिये। आपका भी काम होगा, मेरा भी काम होगा और प्रकाश बाबू का भी।"

"तुझे यदि तीन हजार चाहिये तो वे यहाँ हैं।" प्रकाश की ओर उँगली दिखाते हुए शङ्कर साहु ने कहा। यह चेक अपने कब्जे में ले और सरकारी खजाने से पैसे वसूल कर।"

'चाचा, चाचा इतने कठोर मत

बनिये। मुझ पर दया कीजिये। मे
जाने से आपका क्या लाभ होगा?

"देखिए फिर एक बार
शङ्कर साहु।" रामसिंह ने फिर
से कहा—'ऐसा अवसर फिर न मि
मैं इसे अभी ले जाता हूँ और इसके
पीछे आपके लिए वारन्ट लेकर...

"मैं कानून जानता हूँ। तू इसे
चलता बन।"

"चलिये प्रकाश बाबू। अब आप
दोष न दे सकेंगे। इन्होंने अवसर
दिया। इन्हें आप पर दया नहीं
अब यदि सरकार ने चाहा तो
पर दया करेगी।" ऐसा कहते हुए
सिंह ने उस युवक का हाथ पकड़
दरवाजे में खड़े हुए विरुद्धा को
हटाकर वह दरवाजे के बाहर निक

उन दोनों के बाहर जाने
विरुद्धा ने दरवाजा लगा लिया और
के पास आकर बोला, "क्या सचमुच
मूर्ख ने उसे प्रकाश समझा था?"

अरे नहीं, बदमाशी थी। वह
वह साथी था। किन्तु उस गधे को
मालूम कि प्रकाश पहले से ही
उस लड़के ने जब मुझसे बातें
तभी मैं समझ गया कि यह उस
की चाल है। किन्तु वह क्या जाने
शङ्कर साहु है। बड़ों-बड़ों को मैंने
पिलाया है। यह कल का छोकरा
खेल खेलने लगा। अब थानेदार
सूचित करता हूँ कि मेरे यहाँ प्रकाश
माँगने आया था तब रामसिंह उसे
पकड़कर ले गया है। मैं उसे
के लिए तैयार हूँ। मरने दो। मैं
कुछ करूँगा ऐसी उसे कल्पना भी
होगी। देखूँगा फिर वह थानेदार
को क्या बतलाता है? सच्ची बात
बतला ही नहीं सकता। कुछ झूठ-मूठ
कहना पड़ेगा। देखो एक ही पत्थर
चिड़ियाँ मारता हूँ। यदि रामसिंह को
शानी में न डाला तो नाम बदल
मेरा और तेरा भी।"

"मेरा नाम तो पहले ही बदल
गया है प्रकाश से विरुद्धा किन्तु
क्यों आग में हाथ डालते हैं?"

"खेल चाहे आग से हो, किन्तु
जलेगा रामसिंह, मैं नहीं।"

शङ्कर साहु खिलखिलाकर हँसे
बोले और गधे! तू उस कमरे में
बैठने के लिए कह रहा था। यदि
छिपकर बैठा होता तो क्या तेरी
होती। उसी समय मैंने कहा था और
फिर कहता हूँ कि किसी चीज को
छिपाना हो तो उसे मैदान में खुले
रखिए, छिपाकर न रखिए—
व्यापार।"

बूढ़ा फिर हँसा और उसकी
सारा मकान गूँज उठा।

१८६६ नीलगिरि

पादक के नाम चिट्ठियाँ

पू के प्रिय भंगियों पर अत्याचार क्यों ?

दिनों सौराष्ट्र से जो खबरें उनमें हैजा फैल जाने का समा- है। किन्तु उससे भी अधिक विषय है, उन गाँवों में भंगियों अत्याचार। कुछ अन्ध- और अनजान लोगों को विश्वास है कि भंगियों के जादू-टोने के हैजा फैलता है। इसी धारणा भंगियों पर मुसीबत की बाद कितनों को ही मार-पीटकर गाँव दिया गया। कितने ही पुलिस शरण ले सके। गर्भवती स्त्रियों के छोटे बच्चों पर भी दर्द- करने की खबरें सुनने में इस प्रकार हमने भंगियों के साथ चार ही नहीं किया है, अपितु संस्कृति को भी कलंकित

गांधी ने बहुत पहले इस री को महसूस किया था। हृदय नवनीत जैसे मृदुल होते हिन्दुस्तान में भंगी का आरंभ पहले-पहल कल- अवसर पर देखा गया। वह में हुआ था। तब की कांग्रेस में दिन रात से भी । उस समय प्रतिनिधि ाई की कोई परवाह नहीं जहाँ-तहाँ कूड़ा-करकट जमा मूत्र की बदबू इधर-उधर गांधी जी ने इस समस्या पर और अपने हाथ से पाखाना भंगी जाति के कृत्यों के प्रति और सहानुभूति प्रकट करने का तरीका हिन्दुस्तान के इतिहास ही था।

जी केवल १२ वर्ष के बच्चे अपने घर के "तुका" नामक हाथ से छूने में पाप नहीं समझते के दबाव से उसको छू जाने स्नान करना पड़ता। बाद में तो आश्रम में वे व्यवस्थित रूप से हुए। बापू के पट्ट शिष्य जी और उनके छोटे भाई ने अनुसरण किया। तभी से करने का काम आश्रमवासियों लिया। फिर तो श्री बनारसीदास और श्री श्रीराम शर्मा ('विशाल- दक') जैसे साहित्योपासकों को तन रही। जब भाई शर्मा जी एक मास ठहरे थे, तो इस काम दिलचस्पी से करते। सुबह पाँच गेहूँ का आटा पीस डालते पाखाने को साफ कर देते। शब्द ही सेवा का द्योतक है। मूलधातु 'भज सेवायाम्' से बना हुआ 'समाज का परम सेवक।' के समानार्थक 'मेहतर' का यानी महत्तर (सेवा में) है। महाभारत भी हमारे मन्तव्य की पुष्टि करता है। 'राजसूय' में आमंत्रित भंगी को स्वयं महारानी द्रौपदी ने अपनी देख-रेख में बना भोजन 'राजकीय भोजनालय' में कराया था। खुद महाराजा युधिष्ठिर जब उस सामान्य भंगी को बुलाने गये थे, तो वह मैला साफ करके आया था और अपनी टोकरी-समेत झाड़ू को कोने में रख रहा था।

तत्कालीन इस आदर-भाव के सूक्ष्म सूत्र आज भी हमारे रीति-रिवाजों में उपलब्ध हैं। यात्रा के समय झाड़ू और टोकरी-समेत सामने से आते हुए भंगी को मंगलकारी मानने, शवदाह के समय भंगी से प्राप्त अग्नि को शुद्ध समझने, चन्द्र और सूर्यग्रहण के पर्व पर भंगी को विविध दान देने के रूप में वर्तमान है। वास्तव में भंगी समाज-संशोधक है। उसका पेशा हमारे संरक्षण के लिए संजीवन का काम करता है। जैसे एक चिकित्सक फोड़े से निकली हुई गन्दगी को साफ करता है, वैसे ही हमारे पेट की गन्दगी को साफ करने का काम भंगी का है। हमारे लिए चिकित्सक के समान ही भंगी भी अभिनन्दनीय है। उनके प्रति किसी प्रकार के अत्याचार की तो हमें स्वप्न में भी कल्पना न करनी चाहिए। भंगी और उस जैसी जातियों को अधम न मानकर, उनके साथ कृतज्ञतापूर्ण रुख अपनाकर, समाज में न्यायोचित स्थान देते हुए, अपनी प्राचीन संस्कृति और मानव-हृदय के बुरे से बुरे कलंक को मिटा देना चाहिए।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्रान्तिद्रष्टा बापू ने तो १५ जनवरी १९२५ को ही 'काठियावाड़ राजनैतिक परिषद्' के मंच से निम्न घोषणा की थी—"मुझे सेवा-धर्म प्रिय है। इसी से भंगी प्रिय है। मैं तो भंगी के साथ बैठकर खाता भी हूँ।" अब बापू के बाद हमें सर्वोदय के लिए महीने में कम से कम एक बार पाखाना साफ करते हुए जाति-भेद-निराकरण में इतनी शीघ्रता करनी चाहिए कि केवल बापू को ही अन्तिम भंगी कहा जा सके। तभी भंगी और तथाकथित हरिजन-जातियों पर अत्याचार का सर्वथा अन्त होगा।

पिलानी, —आचार्य नित्यानन्द सारस्वत
(जयपुर)

* * *

रेलवे-विभाग और हिन्दी

काशी का 'नवयुग हिन्दी-साहित्य विद्यालय' अपने अन्य साहित्यिक कार्यों के साथ राष्ट्र-भाषा हिन्दी और राष्ट्र-लिपि नागरी के प्रचार-प्रसार में भी यथाशक्ति योगदान करता चला आ रहा है। संप्रति इस संस्था की दृष्टि में तीन कार्य हैं—१—राष्ट्र-भाषा हिन्दी और राष्ट्रलिपि नागरी का प्रचार-प्रसार, २—रेलवे-विभाग की हिन्दी भाषा को शुद्ध करवाना तथा ३—अशुद्ध साइनबोर्डों (विज्ञापन-पट्टों) की हिन्दी भाषा को शुद्ध करवाना। अभी वह अपनी परिमित शक्ति के साथ प्रथम तथा द्वितीय कार्यों की ओर प्रवृत्त है। काशी में तथा इसके बाहर भी 'हमारी राष्ट्र-भाषा हिन्दी तथा राष्ट्र-लिपि नागरी है, इसी का उपयोग करिये' का जो विज्ञापनपट्ट यत्र-तत्र दिखाई पड़ता है, वह इसी संस्था का तुच्छ प्रयास है। हम अपने अनुभव से कह सकते हैं कि इस प्रकार के विज्ञापन-पट्टों के प्रदर्शन से सामान्य जनता में अपनी राष्ट्र-भाषा तथा राष्ट्र-लिपि के विषय में काफी जागरूकता आई है।

दूसरा काम है, रेलवे-विभाग की हिन्दी भाषा को शुद्ध करवाना। हिन्दी भाषा का कोई भी प्रेमी और उसका जानकार रेलवे-विभाग द्वारा प्रयुक्त हिन्दी भाषा को पढ़, देख और सुनकर क्षोभ, दुःख और ग्लानि प्रकट किये बिना नहीं रहता। अँगरेजी सरकार अपने आगमनकाल से ही भारतीय संस्कृति, साहित्य, राजनीति सभी क्षेत्रों की उपेक्षा करती आ रही थी। कुछ दिनों तक तो उसने हमारी आँखों पर पर्दा डालकर हमारी संस्कृति को नष्ट किया और जब हममें चेतना आई, तब उसने हमारे विरोधों, हमारी सही माँगों की उपेक्षा की। हमारी राष्ट्र-भाषा हिन्दी और राष्ट्र-लिपि की सही माँगों की भी उसने बराबर उपेक्षा की थी। अब तो हम स्वतंत्र हैं। ऐसे समय में हम हिन्दीवाले एक क्षण के लिए भी यह सहन नहीं कर सकते कि राष्ट्र-भाषा हिन्दी तथा राष्ट्र-लिपि नागरी का कहीं और किसी प्रकार भी अपमान न हो। हम इसे नहीं सहन कर सकते कि रेलवे-विभाग तथा अन्य सरकारी विभागों में भी हिन्दी भाषा अशुद्ध दृष्टिगत हो, या उसे उचित स्थान न मिले। हिन्दी की शुद्धता स्थापित करने तथा उसे उचित स्थान दिलाने के लिए सर्वप्रथम हम रेलवे-विभाग की ओर ही दत्तचित्त हुए हैं। इस विभागवालों ने इसकी शुद्धता पर कभी ध्यान ही नहीं दिया और आश्चर्य तथा खेद यह देखकर होता है कि आज जब अपनी सरकार स्थापित हो गई है, तब भी इस विभाग का रवैया भाषा की दृष्टि से पूर्ववत् ही है। रेलगाड़ी से यात्रा करनेवाले हिन्दी-प्रेमी या इसके जानकार इस अशुद्धता से अपरिचित नहीं हैं, फिर भी हम उनके सामने कुछ उदाहरण उपस्थित करते हैं···१ द्वितीय श्रेणी, २ यहाँ पुछिए, ३ मर्दाना पैखाना, ४ मुस्लमानों के लिए, ५ हिन्दूवों के लिए, ६ गाड़ीयों के लिए, ७ सिर्फ घोडों और मवेशीयों के लिए, ८ कल्र्क आफिस ९ अपनी रेजकारी और टिकट का जाँच करके खिरकी छोडो, १० हिन्दुपीने का पानी, '११ इस रास्ता से प्लेटफार्म पर जाये।

अत्यन्त खेद के साथ लिखना पड़ता है कि देश में अपनी सरकार कायम हो जाने पर भी इस तरफ कोई सुधार नहीं हुआ है। इसका क्या कारण है ? इसका स्पष्ट कारण यही है कि हमारे राजनीतिज्ञों को अपनी राष्ट्र-भाषा का उतना ख्याल नहीं है, जितना होना चाहिये। इसका स्पष्ट कारण यही है कि राजनीति की पुकार के सामने भाषा और साहित्य पर लोगों का ध्यान कम जा रहा, है इसका मुख्य कारण यही है कि राजनीतिक क्षेत्र में जो साहित्यिक चले गये हैं, वे भी पूर्णतः राजनीति में ही रँग गये हैं; उन्हें अपनी भाषा और अपने साहित्य की सुध कम है, कुछ लोगों को तो बिलकुल ही नहीं है।

ऐसी अवस्था में हम हिन्दीवालों का क्या कर्तव्य है ? क्या हम अपनी भाषा और अपने साहित्य को नष्ट होने दें ? हम समझते हैं, इसे कोई स्वीकार नहीं करेगा। ऐसी परिस्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि साहित्यकारों का भी कुछ न कुछ प्रभाव सरकार में रहे और वे राजनीतिज्ञों को अपना कार्य करने के लिए निश्चित छोड़कर स्वयं सर्वत्र भाषा और साहित्य की शुद्धता तथा विकास पर दृष्टि रखें। सरकार में साहित्यिकों के प्रतिनिधित्व के लिए चर्चा चलाने पर राजनीतिज्ञ कहते हैं कि 'देखिये हमारी सरकार में अमुक-अमुक सज्जन साहित्यिक हैं। ऐसी हालत में साहित्यकारों को तो प्रतिनिधित्व प्राप्त करने की आवाज ही नहीं उठानी चाहिये।' परन्तु सभी सच्चा हिन्दी-प्रेमी जानता है कि आज सरकार में जितने साहित्यिक व्यक्ति हैं, उनमें से कितनों में कितनी साहित्यिकता है और कितनी राजनीतिकता। हिन्दी भाषा और साहित्य की उपेक्षा देखते हुए हमारा तो निवेदन है कि सरकार में साहित्यकारों का सच्चा प्रतिनिधित्व अत्यावश्यक है। जब तक यह कार्य नहीं होता तब तक अनेक मोर्चों पर आन्दोलन करके हिन्दीवालों को व्यर्थ ही शक्ति-क्षय करना पड़ेगा।

जब तक यह कार्य नहीं होता तब तक के लिए हमारा सुझाव है कि सरकार योग्य साहित्यिकों और भाषाविदों की सलाह से, और आवश्यकता पड़ने पर इन्हें द्रव्य देकर भी, अनेक विभागों में वर्तमान हिन्दी भाषा-सम्बन्धी अशुद्धियों का निवारण करे। हम जानते हैं कि हमारी यह आवाज सरकार के कम ही पदाधिकारियों तक पहुँच पायेगी। ऐसी दशा में हम हिन्दीवालों का कर्तव्य है कि इसके लिए हम आन्दोलन करें और अपनी राष्ट्रभाषा की शुद्धता स्थापित करायें।

काशी —गोविन्दप्रसाद केजरीवाल

* * *

आधुनिक ढङ्ग की कलाई-घड़ी १८) रु० में

इस कलाई-घड़ी की बनावट आधुनिक ढङ्ग की है, आकार १३" जुवेल-जड़ित, मजबूत, खटाऊ, लीवर मशीन, ठीक-ठीक समय देनेवाली, क्रोमियस केस, गोल या वर्गाकार, कीमत १८) रु०, डाक-व्यय ।।।) बारह आने, गारण्टी ३ वर्ष। अपना नाम-पता अँगरेजी में स्पष्ट लिखें।

बिृटानिया वाच कं० (डी० ए)
पोस्ट बाक्स ११४०३, क .कत्ता

संवाददाताओं के पत्र

इलाहाबाद हरिजन आश्रम ने धूमधाम से अपने संस्थापक स्वर्गीय मुंशी ईश्वरशरण जी की जन्म-जयन्ती ता० २६ अगस्त १९४८ को मनाई। यह दिवस संस्थापक-सप्ताह का अन्तिम दिवस था, अतः आश्रम में दंगल, मेला आदि का भी आयोजन किया गया था। उसी दिन सन्ध्या समय सन्त श्री विनोवा भावे के सभापतित्व में एक सभा भी हुई।

—श्यामबिहारी 'विरागी'
व्यवस्थापक

* * *

नागपुर से सार्वजनिक शिक्षा-विभाग के उप संचालक डाक्टर रामकुमार वर्मा, सूचित करते हैं कि नवीन निश्चय के अनुसार 'प्रकाश' का प्रकाशन महात्मा गांधी की जन्म-तिथि २ अक्टूबर से होगा। 'प्रकाश'-प्रेमी इस तिथि को ध्यान में रखें और अपना सहयोग देने की कृपा करें।

—संवाददाता

* * *

धौलपुर (मत्स्यप्रदेश) में १५ अगस्त को स्वाधीनता-समारोह बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सरकारी व गैर-सरकारी सभी कार्य्य-क्रम अच्छे थे। सायंकाल स्थानीय गांधी चबूतरे पर डा० मंगलसिंह जी, मंत्री, मत्स्य-प्रदेश की अध्यक्षता में विराट् सार्वजनिक सभा हुई। सभापति तथा अन्य स्थानीय वक्ताओं के अतिरिक्त प्रमुख वक्ता श्री योगिराज धर्मध्रुव जी गौर थे, जो कहिंजरी (कानपुर) से निमंत्रण पर पधारे थे। आप अन्तर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक शान्ति-प्रचार संघ के संस्थापक व संचालक हैं। आपने अपने महत्त्वपूर्ण भाषण में जनता को संबोधित करते हुए कहा कि "राष्ट्र-पिता गांधी जी की नीति (सत्य, अहिंसा) पर चलने से ही देश को स्वाधीनता प्राप्त हुई है। पर विरोधी शक्तियाँ, जो हमारे अन्दर व बाहर काम कर रही हैं, उनके कारण इस स्वतंत्रता की रक्षा व राष्ट्र की उन्नति खतरे में है। हमें इन आसुरी शक्तियों पर विजय पाना है। यह विजय हमारे आत्मबल पर निर्भर करती है।

—संवाददाता

* * *

देवप्रयाग में ता० १५ अगस्त को देवप्रयाग कांग्रेस मंडल, प्रजामंडल विलीनीकरण समिति; प्रजामंडल "स्वतन्त्र इकाई" एवं जनता की ओर से 'स्वतन्त्रता समारोह दिवस' मनाया गया। स्कूलों, अदालतों एवं सरकारी इमारतों पर एक लंबे संयुक्त जुलूस के साथ राष्ट्रीय झण्डे फहराये गये। उत्सव में टेहरी के स्वास्थ्य मंत्री डा० गैरोला ने भी भाग लिया। टेहरी की सरकार की ओर से नगर में मिठाई बाँटी गई। सभा में श्री चक्रधर जी ज्योतिषी की अध्यक्षता में सर्वश्री "निर्मोही", मुरलीधर शास्त्री, रमेश शास्त्री तथा डा० गैरोला के भाषण हुए। प्रान्तीय कांग्रेस के कार्यक्रम के अनुसार १५ एवं १६ अगस्त का सारा कार्यक्रम कवि-सम्मेलन सहित सम्पन्न हुआ।

टेहरी प्रजा मंडल "ओटो नामक" दल ने गढ़वाल जिला बोर्ड के अध्यक्ष को टेहरी राज्य में पधारने को आमंत्रित किया और विधान-सभा के चुनाव के अवसर पर, सुना है कि आप २६ अगस्त से ३१ अगस्त ४८ तक टेहरी राज्य के विभिन्न इलाकों में दौरा करेंगे।

टेहरी के जिम्मेवार अधिकारियों से ज्ञात हुआ है कि वहाँ की सरकार ने राज्य के अन्दर साम्यवादियों के प्रचार को रोकने का निश्चय किया है।

दोनों गढ़वालों में ज्यादा वर्षा होने से सड़कें टूट गई हैं और मोटरों के यातायात में किक्कतें पैदा हो गई हैं। इससे अन्न की महँगाई ज्यादा हो गई है।

—मुरलीधर शास्त्री

* * *

श्रीनगर (काश्मीर) में भारतीय सेनाओं ने भारत की स्वतंत्रता का प्रथम वार्षिकोत्सव बड़े उत्साह किंतु गंभीरता के साथ मनाया।

बारामूला में सैनिकों ने बच्चों को मिठाइयाँ बाँटीं और गरीबों को खाना खिलाया। सिगनेलरों ने एक नाटक खेला, जिसे सभी ने पसंद किया। नाटक के अंत में एक भोज दिया गया, जिसमें सभी अफसर सम्मिलित हुए।

श्रीनगर में सेना के कई दस्तों ने नाटक खेले। इन नाटकों में भारत के वीरों के वीरतापूर्ण कार्यों का प्रदर्शन किया गया था। सेना-सुविधा के लिए बनाई गई स्थानीय महिला-समिति ने शेरे काश्मीर जल-पानगृह में शारीरिक व्यायामका प्रदर्शन किया। इस प्रदर्शन में भाग लेनेवालों को बहुत उत्तम जलपान कराया गया।

प्रदर्शन के अंत में जनरल ने महिलाओं तथा अन्य संगठनकर्ताओं को उनके द्वारा दिये गये सत्कार के लिए धन्यवाद दिया। बेगम अब्दुल्ला ने पुरस्कार-वितरण किया। इस उत्सव में शेख अब्दुल्ला भी पधारे थे। उन्होंने उपस्थित जनता एवं अतिथियों के सामने एक भाषण दिया।

—संवाददाता

* * *

जयपुर में प्रतिनिधि सभा में बजट पर हुई बहस का उत्तर देते हुए जयपुर के राजस्व सचिव पंडित टीकाराम जी पालीवाल ने विश्वास दिलाया कि जितनी जमीन का बन्दोबस्त अब तक नहीं हुआ है, उस सबका एक साल के भीतर बन्दोबस्त करा देने की पूरी कोशिश की जायगी। जहाँ पिछले साल इस काम के लिये २,६०,००० रुपये नियत किये गये थे, वहाँ इस साल इस काम के लिये १०,७५,००० रुपये अलग निकाले गये हैं। लैंड रिकार्ड का काम पूरा करने की ओर भी ध्यान दिया जायगा। इसके लिये पटवारियों की ट्रेनिंग के लिये स्कूलों की संख्या दुगनी कर दी गई है। यदि बन्दोबस्त सारी रियासत में हो जाये और लैंड रेकार्ड बाकायदा रखा जाने लगे तथा पटवारी काम करने लगें तो जागीरदारों और काश्तकारों के बहुत से झगड़े कम हो जायेंगे और दोनों पक्षों को शान्ति मिलेगी।

राजस्व-सचिव ने कहा कि इस सत्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि आज राज के खजाने में केवल रियासत का एक चौथाई भाग कर देता है, अतएव बाकी भाग को सारा का सारा बोझा उठाना पड़ता है। बिना थोड़ा त्याग और कठिइयों का सामना किये इस प्रश्न का संतोषजनक हल नहीं निकलेगा। इन सब बातों का ध्यान रखते हुए किया जायगा कि जागीरदार राज्य को अपनी आय का ३० प्रतिशत दें या ४० प्रतिशत या और कुछ।

राजस्व-विभागों की अदालतों में काम ठीक समय पर हो इस ओर पूरा ध्यान दिया जा रहा है। राजस्व-सचिव ने यह भी कहा कि कर्मचारियों में भ्रष्टाचार की जो शिकायत है, करने की कोशिश वे कर रहे हैं। दो महीने के कार्यकाल में मामले पकड़े हैं और उन्हें तत्काल है। आपने कहा, मैं इससे बेचैन हूँ। इसको जितना जल्दी हो निर्मूल करूँगा। यदि निर्मूल नहीं तो कम से कम अवश्य कर दिया इसमें कर्मचारियों के अलावा सहयोग की भी आवश्यकता है।

टेलीफोन भी कस्बों में पहुँचाने का प्रबन्ध किया जा रहा है। एक टेलीफोनों का सामान जयपुर पहुँच है। सितम्बर में इनको लगा जायगा। इसके अतिरिक्त एक टेलीफोन अगले महीने में आ ४०० टेलीफोन विलायत से मँगाये हैं। इस तरह इस साल मौजूदा टेलीफोनों को मिलाकर ८०० टेलीफोन मिल पानी की कमी की चर्चा करते हुए सचिव ने बताया कि १९२७ में गैलन पानी रोजाना खींचने की सवा लाख जनता के लिये गई थी। आज जयपुर शहर की साढ़े तीन लाख हो गई है, मशीन से काम कैसे चल सकता अतएव पानी की दिक्कत से आश्चर्य होना चाहिये। अब योजना यह गई है कि ३३ लाख गैलन पानी रोज खींचा जाये।

—संवाददाता

प्रतिमा

इस संग्रह में सुकवि राजाराम श्रीवास्तव की एक से एक बढ़िया ५० कविताएँ इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा है। भाषा और क्या भाव सभी अनुपम रंगीन आवरण, बढ़िया छपाई और केवल १) एक रुपया।

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

T. B.
टी. बी. तपेदिक की मशहूर दवा 'जबरी' पर जनता का फैसला

(१) श्री तोसल हुसेन रईस मो० मुसेपुर पो० भरतकुण्ड जि० फैजाबाद।
(२) श्री नागेश्वरप्रसाद तिवारी स्कूल नडुगावाँ पो० 'डालटनगंज' (बिहार)।
(३) डा० ठाकुरसिंह नेपाली मु० कटैया पो० हरलखी जिला दरभंगा।
(४) श्री रामखेलावनराम, भीखूराम पो० बाजार गुसाईं जि० आजमगढ़।
(५) श्री लीलाधर कापरी आर० सी० बार्ड सेनाटोरियम भवाली जि० नैनीताल।
(६) श्री गोविन्दराव चौधरी लायबरेरियन काटन मार्केट नागपुर (सी० पी०)

सब ही आदमियों के पते ठीक हैं, भी चाहें पूछकर तसल्ली कर सकते हैं। अलावा पचासों प्रशंसापत्र भारत के कोने-कोने पहले भी आप देख ही चुके हैं। (JABRI) के विषय में सब का यही कि यह दवा नहीं, बल्कि रोगी को काल के से बचानेवाली "ईश्वरी शक्ति" अमृत है। फिर हमने तो १० दिन के लिए परीक्षार्थ नमूना भी रख दिया है जिसमें तसल्ली सकें। यदि आप सब तरफ से निराश हो चुके हों तो भी परमात्मा का नाम लेकर एक बार 'जबरी' की परीक्षा करें।

—T. B.
टी. बी. 'तपेदिक' और पुराने ज्वर के हताश रोगियो अब भी समझो

अन्यथा फिर वही कहावत होगी कि—अब पछताये क्या होत है, जब चिड़ियाँ चुग गई खेत। इसलिए तुरन्त देकर रोगी की जान बचावें। सैकड़ों डाक्टर, हकीम, वैद्य अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार आर्डर देते हैं। तार आदि के लिए हमारा पता केवल 'जबरी' जगाधरी लिख देना ही काफी है। तार से यदि आर्डर दें तो पूरा पता दें। मूल्य इस प्रकार है—

'जबरी' स्पेशल नं० १ अमीरों के लिए जिसमें साथ-साथ ताकत बढ़ाने के लिए सोना, मोती, अभ्रक आदि मूल्यवान भस्में भी पड़ती हैं। मूल्य पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन के लिए २०) रु०। 'जबरी' नं० २ जिसमें मूल्यवान् जड़ी-बूटियाँ हैं। पूरा कोर्स २०) रु०, नमूना १० दिन के लिए ६) रु०। महसूल आदि अलग है। आर्डर में हवाला तथा नं० १ या नं० २ साफ-साफ लिखें। पार्सल जल्द प्राप्त करने के लिए मूल्य मनीआर्डर से भेजें। जिसमें तुरन्त भेज दिया जावे।

पता—रायसाहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड बैंकर्स (D) 'जगाधरी' पूर्व पंजाब (E.

द्वारा मास्को को चुनौती

(पृष्ठ ६ का शेष)

ो यह कटु अनुभव अनेक बार
े कम्युनिस्ट पार्टी को दीपक
हैं।
लियन चुनाव के बाद से रूसी
पार्टी की नीति बदल गई है।
नीति हो गई है कि अवसर-
और सुधारवादियों का अन्त
आप। क्योंकि बोलशेविक
वर्ग की हरावल है, उसकी
और जनरल स्टाफ है। पार्टी
का सर्वोच्च रूप है और
का मूर्तरूप है। इससे स्पष्ट
युनिस्ट पार्टी की अब अन्य
मिलकर कार्य करने की इच्छा
।

ब पार्टी असहिष्णु है और
नहीं सहती। हेब्रांग और अजो-
तरीकों से पार्टी से निकाल
तथ्य यह है कि अजोविश
में तृतीय इण्टरनेशनल के
निकाला गया था, जिसका कि
ाव कर रहा है।
ने वर्ग-युद्ध में अव्य-
गड़बड़ी उत्पन्न कर दी है।
ले की तैयारी के जल्द-
उद्योगों और फुटकर व्यापार
कर दिया। फिर कृषि-कर
हर के लोगों के लिए
ठिन हो गया है। इससे
को और बेलग्रेड का रूसी
और युलोस्लाव कम्युनिस्ट
कम्युनिज्म की व्याख्या से
और कट्टरता और प्रगति-
के बीच ही यह संघर्ष नहीं
कम्युनिस्ट साम्राज्यवाद
के बीच भी यह संघर्ष है।
वैयक्तिक है

और बेलग्रेड के झगड़े का एक
बताया जाता है और वह
जाता है। रूस के तीन बड़े
ज़्दानोव एक है जो सोवियत
लाभ के लिए अकर्मक
प्रसार में विश्वास करता
प्रतिस्पर्द्धा राष्ट्रीयता के रंग
को रंगने में विश्वास करने-
में है, मास्को और बेल-
झगड़ा बर्लिन-संकट के समय
का अडिग रहना, झुकने
इनकार करना सूचित करता है
उसको कुछ समर्थन मिल
ने मोलोटोव की स्थिति
बनाने के लिए यह कदम
कहाँ तक ठीक है, बताना

और राष्ट्रीयता का युद्ध

का एक और रूप है।
में मैसीडोनियन पीपल्स
प्रधानमन्त्री ने एक भाषण में
टीटो और बलगेरिया
डीमीट्रोव के बीच मैसी-
बलगेरिया के बीच मैत्री
और बलगेरिया के मैसी-
सांस्कृतिक स्वाधीनता

की स्थापना के लिए बातचीत हुई थी और उसने शीघ्र ही दोनों के संयुक्त हो जाने की आशा प्रकट की थी।

मि० लाजर कोसोलेवस्की ने यह भी कहा कि बलगेरियन फादरलैण्ड फ्रण्ट में एक भी ऐसा ईमानदार आदमी नहीं है जो फेडरल युगोस्लेविया के अन्दर 'पीपल्स रिपब्लिक के आधार पर मैसीडोनिया का संयुक्त होने के अधिकार को अस्वीकार करता है। मैसीडोनिया समस्या का यह एक हल है। बलगेरिया के एक प्रमुख कम्युनिस्ट ने कहा था कि कोई मैसीडोनियन प्रश्न नहीं है। यद्यपि साम्राज्यवादी प्रेस इसको जीवित रखना चाहता है। यदि बलगेरियन मैसीडोनियन युगोस्लेविया के अन्दर पीपल्स रिपब्लिक में मिलना चाहते हैं, तो उनकी इच्छा के बारे में दोनों गवर्नमेंटों के बीच मैत्रीपूर्वक विचार कर लिया जायगा। पर बलगेरियन कम्युनिस्ट नेता का कहना था कि उन्होंने ऐसी कोई इच्छा अभी तक व्यक्त नहीं की है। कामिन फार्म जब युगोस्लेविया पर राष्ट्रवादी नीति का अनुसरण करने का आरोप करता है, तब सम्भवत: उसका अभिप्रेम इसी से होता है।

यहाँ यह जान लेना चाहिये कि मैसीडोनिया का अधिकांश भाग न बलगेरिया के अन्दर है और न युगोस्लेविया में है। बल्कि ग्रीस में है और सबसे बड़ा मैसीडोनियन शहर शैलोनिका भी उसी में है। जनरल मार्कोज को इसी प्रदेश से सहायता मिलती है। पर रूस ने मैसीडोनिया के विषय में अभी तक कुछ नहीं कहा है। युगोस्लेविया की आज की स्वाधीन मनोवृत्ति में रूस का इस आन्दोलन को आशीर्वाद प्राप्त होगा, यह भी सन्दिग्ध है।

मार्शल टीटो दक्षिणी युगोस्लेविया की जनता की भावनाओं का आदर करने के लिए बाध्य है, इसलिए वह ग्रीक के मामले में बहुत आगे बढ़ना चाहता है। ग्रीक गुरिल्ला, बलगेरिया और अलबेनिया के साथ फेडरेशन बनाने के प्रश्न के साथ मैसीडोनिया के भविष्य को भी ध्यान में रखना चाहिये।

मौलिक प्रश्न

कामिन फार्म ने युगोस्लेविया को बहिष्कृत करके एक मौलिक प्रश्न को जन्म दिया है। प्रश्न यह है क्या कोई कम्युनिस्ट नियंत्रित गवर्नमेण्ट राष्ट्रीय स्वाधीनता और प्रभुत्व शक्ति क्या कुछ आभास भी रख सकती है या सब बातों और नीतियों में चाहे वे अन्तरिक हों या बाह्य, मास्को के आदेश को बिना किसी आपत्ति के स्वीकार करे।

युद्ध के बाद से और विशेषतः सोवियत ब्लाक बनने के बाद से सोवियत नीति और कम्युनिस्ट सिद्धान्त के बीच बहुत अन्तर रहा है। सोवियत गवर्नमेंट ने समय समय पर राष्ट्रीय स्वाधीनता और राष्ट्रीय प्रभुत्व शक्ति की रक्षा का दम भरा है। माल्टा में रूस ने स्वीकार किया था—जनता किस प्रकार की गवर्नमेंट के नीचे रहे यह चुनने का उसको अधिकार है। विगत सदियों से जब कामिन फार्म की स्थापना हुई थी तब घोषणा की गई थी—"कम्युनिस्ट पार्टियों को राष्ट्रीय स्वाधीनता और अपने देश की प्रभुत्वशक्ति की रक्षा के कार्य को अपने हाथों में लेना चाहिए।" पर इसके साथ ही यह भी कहा जाता है कि "ठीक मार्ग का अनुसरण करो।" ठीक मार्ग वही है जो मास्को और स्टालिन कहें। क्योंकि कट्टर कम्युनिज्म और 'स्टालिनिज्म' यथार्थवादी शब्द हो गए हैं।

पर इससे भी भयंकर और खतरनाक सिद्धान्त एक और है। कामिन फार्म ने युगोस्लेविया की जनता को आह्वान किया है कि वह मार्शल टीटो के नाम को उखाड़ फेंके और उसकी जगह शासन-सूत्र ऐसे नेता और व्यक्ति को दे, जो मास्को का कठपुतली हो। क्या यह मीरज़ाफरी काम नहीं है? क्या यह क्विसलिंग से भिन्न है? देश के बाहर की एक संस्था का कानून से स्थापित दूसरे देश की गवर्नमेण्ट के विरुद्ध जनता को विद्रोह करने के लिए भड़काना और उसकाना क्या उचित है? यह करने के बाद भी क्या रूस को यह शिकायत करने का अवसर रह जाता है कि युगोस्लेविया में रूसियों पर गुप्तचर विभाग नजर रखता है। इस अवस्था में क्या कोई देश कम्युनिस्ट पार्टी को अपने यहाँ जीने देना सहन करेगा?

युगोस्लेविया की घटना एकांगी नहीं है। इसका व्यापक प्रभाव होकर रहेगा। कम्युनिज्म और राष्ट्रीयता का यह संघर्ष है। इनके बीच यदि समझौता न हुआ तो इन दोनों विचार-धाराओं के बीच संघर्ष अनिवार्य है और हर एक देश, जहाँ कम्युनिस्ट पार्टी है, दूसरा चीन और बर्मा बन सकता है। यह खतरा विश्वव्यापी है, अतः कम्युनिज्म और राष्ट्रीयता के बीच संघर्ष भी न्यूयार्क से मास्को तक विश्वव्यापी है। क्या इस संघर्ष के परिणामस्वरूप दोनों धाराएँ वर्तमान रूप में जीवित रह सकेंगी?

* * *

प्रोतिमा दासगुप्ता का
उत्कृष्ट सौंदर्य उपचार
लक्स टॉयलेट साबुन है
LUX
TOILET SOAP
LTS. 191-111 HI
फिल्मी अभिनेत्रियों का सौंदर्य साबुन

खुफिया कोकशास्त्र

इसमें स्त्री-पुरुषों के अद्भुत ८४ आसनों की जोड़दार फोटो, ब्लाक की रङ्गीन तसवीरें, यौवन के आनन्द प्राप्त करने के पोशीदा तरीके, प्राचीन जमाने के ऐसे ऐसे भेद जिनका लिखना सभ्यता के विरुद्ध है। जो शादीशुदा न हो उसको यह पुस्तक नहीं दी जाती। मूल्य २।।) रुपया, डाक-खर्च माफ।

खुफिया तसवीरों के कार्ड
२५ कार्ड का सेट २।।) रुपये में

पता :—कामा को० (D D A) लाहौर रोड—अमृतसर

कांग्रेस की यही अग्नि-परीक्षा है।

(पेज ८ का शेष)

जनता पर दुष्प्रभाव पड़ने की आशा है। प्रतिद्वन्द्विता और वैमनस्य कोई अच्छी चीज नहीं और विशेषतया राष्ट्र के इस संकटकाल में।

शासन-प्रबन्ध में हस्तक्षेप

कई प्रान्तों के जिला मैजिस्ट्रेटों तथा डिप्टी कमिश्नरों ने अपने प्रान्त के प्रधान मन्त्रियों से शिकायत की है कि कांग्रेस के कई कार्यकर्ता शासन-प्रबन्ध के मामलों में अनुचित हस्तक्षेप कर रहे हैं। ऐसे भी विश्वस्त प्रमाण मिले हैं, कई कांग्रेसी कार्यकर्ता न्याय विभाग के निर्णयों और आज्ञाओं की अवहेलना तक कर रहे हैं। कुछ समय पूर्व समाचार-पत्रों में एक समाचार इस आशय का प्रकाशित हुआ था, जिसमें यह कहा गया था कि पाकिस्तान के शरणार्थी मन्त्री श्री गजनफरअली खाँ ने प्रेस को एक वक्तव्य देते हुए कहा है कि उन्हें भारत-सरकार के बिना विभाग के मन्त्री सर गोपाल स्वामी आयंकर ने फोन पर बातचीत करते समय बताया कि भारत-सरकार डा० जोशी के हत्यारे डा० अब्दुलगनी कुरैशी को फाँसी नहीं होने देगी। यद्यपि पूर्वी पंजाब के शिमलास्थित हाईकोर्ट ने हत्या के अपराध में डा० कुरैशी को प्राणदण्ड देने का निर्णय कर दिया था। यदि यह समाचार ठीक है तो इससे स्पष्ट सिद्ध है कि कांग्रेसी सरकार के सदस्य न्याय-विभाग के अधिकार-क्षेत्र में अनुचित हस्तक्षेप कर रहे हैं। यदि यही परम्परा रहनी है तो न्याय-विभाग की आवश्यकता ही क्या है? उसे हटा क्यों न दिया जाय?

होशियार 'पूर्वी पंजाब' जिले में भी यही बात हुई। वहाँ के कांग्रेसियों ने शासन-प्रबन्ध में अनुचित हस्तक्षेप किया था। परिणामतः डिप्टी कमिश्नर सरदार कपूरसिंह ने लाला जगतनारायण तथा उनके साथियों को जेल में ठूँस दिया। इस पर प्रान्त के कांग्रेसी बिगड़ उठे। अब सरदार कपूरसिंह अपने पद से च्युत कर दिये गये हैं और उन्हें कोई और पद दिया गया है। कहने का अभिप्राय यह है कि कांग्रेसी कार्यकर्ता अपने उत्तरदायित्व से निरन्तर विमुख होते जा रहे हैं, जो सर्वथा अनुपादेय है।

जनता की आशाओं पर तुषारापात

कांग्रेस द्वारा देश के शासन की बागडोर अपने हाथ में लेने के बाद जनता को पूर्ण विश्वास था कि अब उन प्रतिज्ञाओं के पूर्ण होने का समय आ गया है जो कांग्रेस समय-समय पर होनेवाले आम चुनाओं के समय उससे किया करती थी। किन्तु अब बात नहीं रही। यहाँ तो 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे' वाला सिलसिला है। अब जनता कांग्रेसियों को सन्देह की दृष्टि से देख रही है। वह समझती है कि जहाँ पहले खद्दर सेवा का चिन्ह समझा जाता था अब उसकी पोशाक से हुकूमत की बू आती है। कांग्रेस कुछ नहीं कर रही है—जनता का यही विचार है। देश में भ्रष्टाचार और चोर बाजार की प्रथाएँ अब भी यथा पूर्व विद्यमान हैं। कपड़े पर से सरकारी नियन्त्रण हटने के बाद साधारण कपड़े के मूल्य में भी ७५ प्रतिशत वृद्धि हो गई है। अच्छे कपड़े के भाव तो २०० प्रतिशत तक बढ़े हैं। कन्ट्रोल हटाये जाने के बाद खाँड के भाव भी नहीं गिरे। अनाज महँगा हो गया है। मनुष्य की यही प्रमुख आवश्यकताएँ हैं। यदि यह भी पूरी न हों तो वह विद्रोही बन जाता है। जब तक सरकार इन कष्टों को दूर करने के लिये कोई कठोर पग न उठाये, तब तक कुछ नहीं हो सकता व्यापारीवर्ग जनता का पेट काटकर और मूँछों पर ताव देकर खूब खुला मुनाफा कमा रहा है। इस दूषित प्रथा को अवरुद्ध करने की आवश्यकता है।

सेवाग्राम

रंग-बिरंगी छपाई, अनेक रंगीन चित्र

रचयिता श्री सोहनलाल द्विवेदी

संरक्षक श्री घनश्यामदास बिड़ला

जनता की भाषा में, जनता के भावों का, जनता का काव्य कवि की राष्ट्रीय रचनाओं का सुन्दर संग्रह। बड़ा आकार, बढ़िया काग़ज़, कपड़े की मज़बूत जिल्द। मूल्य दस रुपये।

आविष्कारों की कथा

मशीनें कैसे बनीं? तरह-तरह के औजार कैसे बनें? रेल, जहाज, तार और सिनेमा वगैरह कैसे बने? नई-नई चीज़ें बनाकर या नये काम करके क्या आप दुनिया में प्रसिद्ध हो सकते हैं? इन सारी बातों को जानने के लिए यह पुस्तक जरूर पढ़िए। मूल्य १)

जानवरों की मज़ेदार कहानियाँ

मोर और कौआ, लोमड़ी और गधा, चालाक बुढ़िया, सोने की चिड़िया, सिंह और सियार आदि कहानियाँ पढ़िए और इनका चमत्कार देखिए। मोटे टाइपों में अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य ॥≥)

गुदड़ी के लाल

इस पुस्तक की कहानियाँ बहुत ही सरल और रोचक भाषा में लिखी गई हैं। इनको पढ़कर बच्चे बेहद खुश होते हैं। ऐसी पुस्तक अपने बच्चों को जरूर दीजिए। मूल्य ॥)

अपराजिता

यह श्रीयुत रामेश्वरप्रसाद शुक्ल एम० ए०, 'अञ्चल' की कतिपय सुन्दर कविताओं का संग्रह है। कविताएँ नवीन युग की नूतन सांस्कृतिक रुचि और प्रगति के साथ हैं। कवि 'अंचल' की रचनाओं का आनन्द प्राप्त करने के लिए अपराजिता को अवश्य देखिए। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३) तीन रुपये।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

चिरस्थायी व दिमाग़ी ताक़त बढ़ाने के लिए सेवन करो
डॉ. गौतमराव केशव
टानिक फॉस्फरस पिल
डॉ. वामन गोपाळ सार्सापरिला डेपो मुंबई नं. २

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी एल० एस० धोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

॥ ८००० रु० नकद इनाम ॥

पहिला इनाम—ठीक हल के लिए ६००० रु० (जो एक अधिक हल ठीक होने प बांट दिया जावेगा)। **दूसरा इनाम**—सब से अधिक हलों के लिये १००० रु०। तीसरा सब से पहिले ठीक हल भेजने वाले के लिये १००० रु०।

हल क्या करना है? सामने दिये हुए नौ खानों में १०० तक के कोई से अङ्क इस भांति से भरिये कि जिस ओर से भी जोड़ें उत्तर ८१ हो। एक अङ्क एक ही बार लिखा जा सकता है।

२१		
	२७	
		३

दाखला फीस—एक रु० प्रति हल।

नियम—हर एक आदमी एक या एक से अधिक जितने हल चाहे सफेद कागज पर एक रुपया प्रति हल के हिसाब से फीस के साथ भेज सकता है। फीस दाखला मनीआर्डर या पोस्टल आर्डर द्वारा भेजनी चाहिये। मनीआर्डर की रसीद हलों के साथ आनी चाहिये अथवा ऐसा हो सकता है कि आपके हल मुकाबले में सम्मिलित न हो सकें। सही हल वही समझा जावेगा जो हमारे मुहरबन्द हल के साथ जो [illegible] महोदय दैनिक 'अमर भारत' के पास रखा गया है खाना दर खाना मिलेगा। [illegible] कापी के लिये दो आने के टिकट और अपने पते का लिफाफा भेजें। इनाम की रकम दाखला [illegible] की आई हुई रकम के अनुसार कमी बेशी होसकती है पर सही हल के इनाम की रकम [illegible] की गारण्टी है। हलों के रास्ते में खो जाने या डाकखाने के कारण देर पहुंचने के हम जिम्मे न होंगे। प्रवेश फीस किसी अवस्था में वापिस न होगी मैनेजर साहिब पहेली का फैसला [illegible] हर प्रकार से मानने योग्य होगा। हर मामले का फैसला देहली ही होगा। अपना पता [illegible] व मीआर्डर कोपन पर साफ लिखें हल ३१ अगस्त तक डाक में डाल देने चाहियें। इसके भेजा हुआ कोई हल स्वीकार न किया जावेगा सही हल १५ सितम्बर को प्रकाशित कर दिया जावे

॥ ई० टी० एण्ड कम्पनी, पोस्ट बैग नं० ५२ ए०, दिल्ली ॥

E T & Company, Post Bag No 62 A. Delhi.

सारिडन
सर्व्वप्रकारका दर्द दूर करता है
10 Saridon
BRAND ANALGESIC
Saridon

अन्तू सरदार

भरोस सरदार के लड़की के सिवा कोई सन्तान न थी। और भरोस था ऐसा लठैत जिससे पुलिस भी डरती थी। एक जमींदार के यहाँ भरोस नौकर था। उसने अपनी बेटी को भी लाठी चलाना सिखला दिया था। इसका ब्याह जिस अनन्त (अन्तू) से किया गया था वह भरोस से सवाया था। एक झमेले में काट हुई। इसमें अन्तू की गई और भतीजा प्रताप गया। पुलिस ने अन्तू को सज़ा करा दी। इधर प्रताप भी यह कहानी है तो बड़ों के लिए परन्तु बच्चों को बहुत पसन्द सुन्दर सरल भाषा, कई पृष्ठ रंगीन। मूल्य केवल

मैनेजर—बुकडिपो इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

रामचरितमानस

टीकाकार—डाक्टर श्यामसुन्दरदास

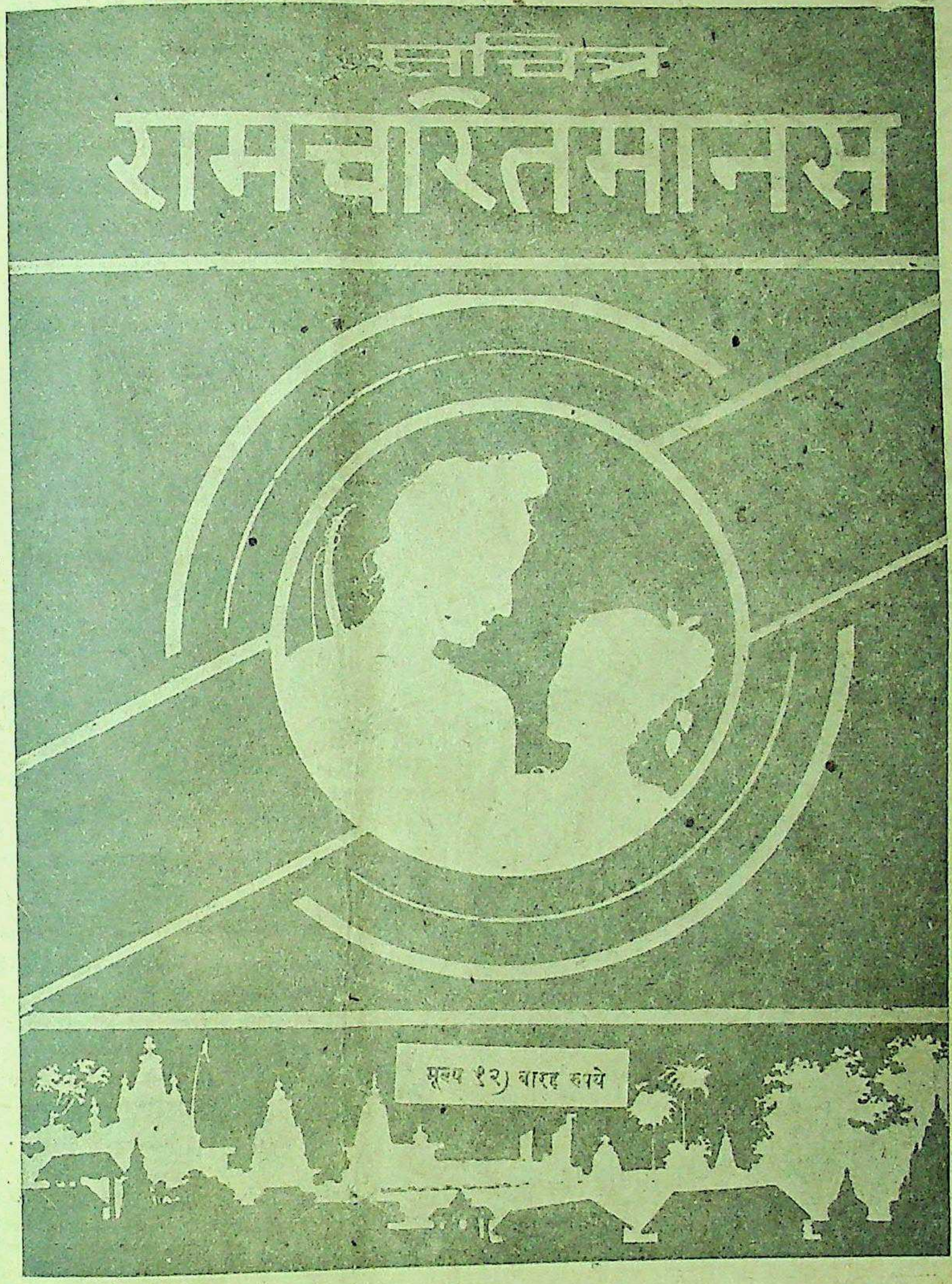

'मानस' का महत्त्व
से छिपा नहीं है।
में तो इसका
है ही, अन्य
में भी इस अमर
का आदर है। यह
संस्करण इधर
से अप्राप्य था।
ही छपकर तैयार
। ग्राहकों को
करनी चाहिए।
तियाँ नहीं छापी

आकार के १२००
रंग-विरंगे दर्जनों
सजिल्द प्रति का
१२) रुपये

हाँ पर हमारी ब्रांच
जेंसी है वहाँ ख़रीदने
डाकख़र्च की बचत
होगी।

हमारी ब्रांचें और एजेन्सियाँ

हाबाद सिटी—न्यू ऐरा बुकहाउस, हिवेट रोड
रा—आगरा पब्लिशिङ्ग हाउस, बाग़ मुज़फ़्फ़र ख़ाँ
र—इंडियन प्रेस लिमिटेड, कचहरी रोड
मोड़ा—डिस्ट्रिक्ट बुकडिपो, लालबाज़ार
रस—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, बनारस छावनी
—बुंदेलखण्ड पब्लिशिङ्ग हाउस
ली—इंडियन बुकडिपो
ई—भारतीय पुस्तक भण्डार, कालबा देवी रोड
कानेर—गर्गबुक कम्पनी, कोट के भीतर
कत्ता—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, २२।१ कार्नवालिस स्ट्रीट
पुर—साहित्य-रत्नालय, श्रद्धानन्द पार्क
१२ दिल्ली—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, नई सड़क
१३ गोरखपुर—पुस्तक-स्थान, बख़्शीपुर
१४ ग्वालियर—लायल बुकडिपो, पाटनकर बाज़ार, लश्कर
१५ इन्दौर—नवयुग साहित्यसदन, खजूरी बाज़ार
१६ जयपुर—गोपाल बुकडिपो, त्रिपौलिया बाज़ार
१७ जबलपुर सी० पी०—इंडियन प्रेस, लिमिटेड
१८ लखनऊ—इंडियन बुकडिपो, अमीनुद्दौला पार्क
१९ मेरठ—पुस्तक-स्थान, वैस्टर्न कचहरी रोड
२० पटना—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, पो० ऑ० बाँकीपुर
२१ राँची—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, कोर्ट रोड
२२ अम्बाला (पूर्वी पंजाब)—इंडियन प्रेस लिमिटेड, दुर्गाचरण रोड

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

जुखाम जोरों से फैल रहा है

वर्तमान आवहवा के कारण सर्दी जुखाम गंठिया आदि रोग अचानक फैल रहे हैं। इनसे बचने के लिये 'ऐस्प्रो' का इस्तेमाल कीजिये। जरूरत के लिये 'ऐस्प्रो' की पुड़िया हमेशा पास रखें ताकि सर्दी जुखाम का आभास पाते ही आप उसे खा लें। 'ऐस्प्रो' आपको बीमार होने से रोकती है—भला-चंगा करना शुरू करती है। 'ऐस्प्रो' की दो टिकियाँ, खाकर दूसरों को हुए सर्दी जुखाम से अपने आपको बचाये रखिये। यह सलाह खासकर इस समय ज्यादा कारगर है क्योंकि :— **इस**

आवहवा में बहुत सतर्क रहना चाहिये

पूर्व-लक्षण दीखते ही 'ऐस्प्रो' लीजिये

बस ऐसा कीजिये

दर्द व गनगनाहट के पूर्व-लक्षण मालूम होते ही 'ऐस्प्रो' की २ टिकियां थोड़े जल के साथ निगल जाइये—बात की बात में ये अपना चमत्कार दिखलायेंगी। नुकसान नहीं पहुंचायेंगी। सोने के पहले एकबार और दो 'ऐस्प्रो' टिकियां खा लें—रात को अच्छी नींद आयेगी—दूसरे दिन सुबह आप फिर तरोताजा और चंगा हो जायेंगे।

१५ आने में ३० टिकियाँ

१॥ आने में ३ टिकियाँ

हर 'ऐस्प्रो' टिकियां अपने पारदर्शक व चमकते हुए खाने में अलग अलग बंद रहती है।

यही है 'ऐस्प्रो' का गुप्त रहस्य

'ऐस्प्रो' इतनी जल्दी फायदा पहुंचाती है क्योंकि यह प्रकृति के अनुकूल रहती है प्रतिकूल नहीं। 'ऐस्प्रो' प्रकृति को वह मौका देती है जो उसे अपनी शान्तिदायिनी शक्तियों को कार्यान्वित करने योग्य बनाता है। यही वजह है कि 'ऐस्प्रो' कभी आपकी हानि नहीं करती—लाभ ही करती है।

अपने निकटतम औषधि-विक्रेता से 'ऐस्प्रो' ले आइये अगर उसके यहाँ खत्म हो गयी हो तो हमें लिखें

डिस्ट्रीब्यूटर्स :
जे. एल. मौरिसन, सन ऐण्ड जोन्स (इण्डिया) लि:
पोस्ट बक्स ३८७ कलकत्ता फोन ७९६

पृथ्वी की कह

पृथ्वी कैसे बनी, पृथ्वी
कौन आया; नद-नदियाँ, पहाड़
स्तान, बर्फीले देश, जानवर,
आदमी कैसे बने; धर्म और
और कानून कैसे बने; पुरानी
आज की दुनिया, पृथ्वी का
बातों का वर्णन इस पुस्तक में
ढंग से किया गया है। मूल्य ।=)

परीदेश

यह पुस्तक ख़ास कर छो
लिए है। इसमें ऐसी एक
जिसको समझने लिए
पड़े। इसमें रोजमर्रा की
अच्छे ढंग से लिखी गई है।
की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों
पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है।

गांधी-अभिनन्दन

सम्पादक—श्री सोहनलाल
प्राक्कथन—सर सर्वपल्ली रा

संस्कृति, हिन्दी, उर्दू, बंग
राती, सिन्धी, मराठी, तामिल,
मलयालम, कन्नड़, अंग्रेजी और
भाषाओं में महात्मा गांधी जी पर
हुई सर्वोत्तम कविताओं का संग्रह—
भाषा में अर्थ-सहित।

बड़ा आकार, सुन्दर छपाई,
के अनेक चित्र। बढ़िया जिल्द।
प्रशंसित।
सादी जिल्द ६।।) कपड़े की जि
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

मुफ्त ! मुफ्त !!

आप घर बैठे मैट्रिक, एफ़०
ए०, पंजाब तथा आगरा यूनि
और होम्योपैथिक बायोकैमिक
आसानी से पास कर सकते हैं।
मुफ्त मगायें। पता :—
इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।–) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५।=), डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

चमकीले स्वस्थ
बालों के लिये
"नर्गिस"
Vaseline
POMADE

कोमलता से सुगंधित किया गया वेसलीन ब्लू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।

वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।

देशदूत में विज्ञापन दीजिए

देशदूत

वार्षिक मूल्य ७॥)
एक प्रति का =)

Annual Price Rs. 7-8-0
Per Copy Annas Two.

सितम्बर, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 5th September, 1948

और राष्ट्रभाषा हिन्दी।
की राजनीति क्या है?

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

आज का जर्मनी और सोवियट रूस।।
कहानी, रंगमंच और मातृमन्दिर।

हमारी कुछ चुनी हुई पुस्तकें

रवीन्द्र-ग्रन्थावली

योगायोग—कवीन्द्र का यह उपन्यास जैसा कवित्वमय है वैसा ही मनोविज्ञान की बारीकियों से परिपूर्ण। इसमें बंगाल के समाज का अपूर्व चित्रण है। नायिका है धर्म-प्राण कुमुद और नायक है राजा बहादुर मधुसूदन घोषाल जो गरीब घर का लड़का होकर अपने पौरुष से बहुत बड़ा मालदार हुआ है। अपने विरोधी घराने की बेटी से विवाह करने पर उसके चित्त में जो विरोध के बादल उमड़ते हैं उनका गर्जन और नई दुलहिन कुमुद का शान्त-शिष्ट प्रतिकार देखकर बरबस लेखक की सराहना करनी पड़ती है। इसमें गृहिणी की क्षमता का अपूर्व उदाहरण है। भाषा, भाव और कथानक सभी दृष्टियों से 'योगायोग' कवीन्द्र के उपन्यासों में सर्वश्रेष्ठ है। इसे एक बार पढ़कर दुबारा-तिबारा पढ़ने को जी चाहता है। अच्छा कागज, बढ़िया जिल्द, पृष्ठ सवा तीन सौ से अधिक। मूल्य केवल चार रुपये।

विश्व-परिचय—यह विज्ञान-विषयक पुस्तक है। इसमें परमाणुलोक, नक्षत्रलोक, सौरजगत्, ग्रहलोक और भूलोक आदि शीर्षकों में विषय का विशद विवेचन है। एक स्थान पर लेखक ने लिखा है "वस्तुएँ सब रंगों को ग्रहण नहीं कर सकतीं, किसी किसी को वापस कर देती हैं। वह लौटाया हुआ रंग ही हम देखते हैं। ब्लाटिंग पेपर जिस रस को सोख लेता है वह किसी काम नहीं आता—जिस रस को वह ले नहीं सकता वही बचा हुआ रस हमारा प्राप्य है।" इस प्रकार सरल रीति से कठिन विषय समझाया गया है। पुस्तक बालकों के लिए होने पर भी वयस्क विद्वानों को कम आनन्द न देगी। अच्छे कागज पर छपी हुई सुन्दर सजिल्द पुस्तक का मूल्य दो रुपये।

रूस की चिट्ठी—डाक्टर रवीन्द्रनाथ ठाकुर वृद्धावस्था में रूस गये थे। वहाँ का आँखों देखा हाल उन्होंने चिट्ठियों में लिखकर भेजा था। वह बड़ा विचित्र है। इधर तो रूस के सम्बन्ध में बहुत सी बातें प्रकट हो गई हैं पर जिस समय रवि बाबू वहाँ गये थे, रूस का हाल हमें विकृत रूप में बताया गया था। उसको कवि ने सुन्दर भाषा में प्रकट किया है। पुस्तक सचित्र और सजिल्द है। अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य दो रुपये।

चार अध्याय—इस पुस्तक में सचमुच चार अध्यायों में ही कथानक पूरा किया गया है। एला सुशिक्षित युवती है, भले घर की बेटी। उसने कुछ तो पुस्तकों की प्रेरणा से और कुछ विद्यार्थी-समाज के चक्रवर्ती इन्द्रनाथ की सलाह से गृहस्थी के बन्धन में न बँधने की प्रतिज्ञा कर ली। फिर इन लोगों का सम्पर्क विप्लवपन्थियों से हुआ। उन लोगों के कार्यकलाप, उद्देश्य और विवादों के वर्णन से पाठकों को दाँतों तले उँगली दबानी पड़ती है। राजनीति, समाज की उलझन, नारी-चरित्र और प्रेममन्त्र सभी कुछ इसमें हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य एक रुपया आठ आने।

वैकुण्ठ का विल—मूल लेखक, स्वर्गीय डा० शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय। यह उपन्यास है तो छोटा किन्तु बहुत ही भावपूर्ण है। मानव-हृदय की स्वाभाविकता इसके प्रत्येक पात्र से प्रकट हो रही है। शरद् बाबू उपदेश देने की दृष्टि से रचना नहीं करते; किन्तु उपदेश अज्ञात रूप से अपना काम किये बिना कब रहता है। यह बात उनके इस उपन्यास में भी अपवाद नहीं हो सकी। मूल्य ॥≡)।

पथ-भ्रान्त पथिक—अनुवादक, पण्डित सुन्दरलाल त्रिपाठी और पण्डित ठाकुरदत्त मिश्र। श्री चारुचन्द्र बन्द्योपाध्याय-लिखित इस उपन्यास का उपन्यास-प्रेमियों में अच्छा सम्मान है। हिन्दी के उपन्यास-पाठकों की प्रेरणा से ही इसका हिन्दी अनुवाद हमने पहली बार प्रकाशित कराया है। उपन्यास की रोचकता और महत्ता के लिए चारुचन्द्र बाबू का नाम ही पर्याप्त है। मूल्य २॥≡)।

कृष्णकान्त का विल—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। यह बंकिम बाबू का एक अत्यन्त लोकप्रिय उपन्यास है। एक भारतीय पतिव्रता का जैसा सुन्दर चित्र इस उपन्यास में खींचा गया है वैसा अन्यत्र न मिलेगा। मूल्य १)।

युद्ध और शान्ति—अनुवादक, श्री रुद्रनारायण अग्रवाल। टॉल्सटॉय के 'वार एण्ड पीस' नामक प्रसिद्ध रूसी उपन्यास का यह हिन्दी-रूपान्तर है। इसमें लेखक ने मानव-जीवन का सम्पूर्ण चित्र, अपने समय के रूस की तसवीर और राष्ट्रों की खींच-तान बड़ी खूबी से चित्रित किया है और जीवन तथा मृत्यु के रहस्य का उद्घाटन किया है। मूल्य ५।-)।

कपाल-कुण्डला—अनुवादक, श्रीयुत पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी, 'निराला'। यह बंकिम बाबू की कपाल-कुण्डला का हिन्दी-रूपान्तर है। कथानक की रोचकता तथा वर्णन की अपूर्वता के कारण यह उपन्यास इतना लोकप्रिय हो चुका है कि इसका नये सिरे से परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। कपाल-कुण्डला के हिन्दी में आज तक जितने भी अनुवाद प्रकाशित हुए हैं, यह अनुवाद उन सबसे बहुत सुन्दर हुआ है। मूल्य १॥)।

शनि की दशा—अनुवादक पण्डित ठाकुरदत्त मिश्र। श्रीमती काञ्चनमाला देवी के 'शनिर दशा' नामक बँगला उपन्यास का यह अनुवाद है। लेखिका महोदया ने उपन्यास की नायिका के चरित्र में जिस मधुरता और महिमा का समावेश किया है, वह विश्व के महिला-समाज में हिन्दू-महिलाओं को गौरवपूर्ण पद दिलाने के लिए सर्वथा उपयुक्त है। मूल्य २)

रिक्ता—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। श्री नीहारबाला देवी के इस उपन्यास में पति-प्रेम वंचिता नारी का ऐसा सजीव और भावपूर्ण चित्र अंकित हुआ है कि पढ़ते-पढ़ते हृदय द्रवित हो जाता है। ऐसे भाव-पूर्ण उपन्यास आपके पढ़ने में कम आये होंगे। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-)।

श्रीकान्त—(प्रथम और द्वितीय भाग)—अनुवादक, श्री रूपनारायण पाण्डेय। 'श्रीकान्त' शरद् बाबू का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना गया है। इसमें शरद् बाबू की अमर लेखनी ने उनके कलाकार का मंजा और सधा हुआ रूप चित्रित किया है, अत्यन्त मनोरम है। प्रत्येक भाग का मूल्य २

ब्राह्मण की बेटी—मूल लेखक, श्री शरच्च चट्टोपाध्याय, अनुवादक, पंडित रूपनारायण पाण्डे शरद् बाबू भारत के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास-लेखक जाते हैं। उनका यह उपन्यास लोक-प्रियता चरित्र-चित्रण की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है मूल्य सजिल्द पुस्तक का १।-)।

आनन्दमठ—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रि निराला। मुसलमानों और अँगरेज़ों को हिन्दु से बाहर करने के लिए, बंगाल में वैष्णवों ने विद्रोह किया था, उसी का इस उपन्यास में न्यास-सम्राट श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने खूबी से बयान किया है। ऐसा सुन्दर चित्र उपन्यास में है कि पढ़कर मातृ-भूमि के लिए फड़क उठता है। मूल्य १।-)।

संसार की प्रसिद्ध कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत शमशेर बहादुरसिंह, बी० ए०। पुस्तक में योरप के संसार-प्रसिद्ध कलाकारों की हुई कुछ कहानियाँ संगृहीत की गई हैं। ये कहानियाँ बहुत ही कलापूर्ण और मनोरंजक यदि आपको योरप के कथा-साहित्य की जानकारी हो, तो इस पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़ें। मूल्य १)।

मोपाँसा की चुनी हुई कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत गोपीनाथ जी क़ानूनगो। इस पुस्त में मोपाँसा की चुनी हुई ग्यारह कहानियों का किया गया है। मोपाँसा की रचनाओं की जानकारी के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चा मूल्य १)।

व्रजनाथ का विवाह—अनुवादक, ठाकुरदत्त मिश्र। आश्चर्यमयी घटनाओं से यह सामाजिक उपन्यास पढ़ने में ऐसा रोचक एक बार आरम्भ करने पर फिर बिना समाप्त चैन नहीं पड़ता। मूल्य १।-)

स्काटलैंड-यार्ड की जासूस पुस्तक लेडी मॉली की ९ जासूसी कहानि संग्रह है। इस पुस्तक की एक-एक कहा मनोरंजक और कौतूहलवर्द्धक है कि आप इ को पूरा पढ़े बिना चैन नहीं ले सकते मॉली के जितने कहानी-संग्रह अब तक प्रकाश हैं, यह उन सबसे अच्छा है। मूल्य ॥-)

जीवन-क्रान्ति—लेखक, पांडेय गोरीश बी० ए०, एल-एल० बी०। अनुभवी लेखक ने इस उपन्यास में सेठ-साहूकार आदमी कहे जानेवाले व्यक्तियों को पुलिस तथा अन्य अधिकारियों के धन के लाभ से निरपराधों को कारागार की नारकीय यातना भोगने के करने के माया-जाल का बहुत ही आकर्ष वर्णन किया है। उपन्यास को ओजपूर्ण और हृदय में घर कर मूल्य २॥≡)।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

देशदूत

११, संख्या १] [रविवार, ५ सितम्बर, १९४८

श्रीमती इंदिरा गांधी मद्रास के प्रधान मन्त्री श्री रामस्वामी रेड्डियर के साथ। यह चित्र पंडित नेहरू की मद्रास-यात्रा के अवसर पर लिया गया था।

काश्मीर का विभाजन शीघ्र ही होगा ?

की समस्या आज राष्ट्र के रूप ग्रहण करती जा रही संघ ने काश्मीर की समस्या जिस कमीशन की नियुक्ति आजकल भारत में आकर जाँच- रहा है, उसके रहस्य का भी प्रारम्भ हो गया है। जो से यह घोषणा करता उसे काश्मीर के युद्ध से कोई उसका पर्दाफाश हो गया रूप में प्रमाणित हो गया सेना काश्मीर पर अधिकार भारतीय फौजों से लोहा ले ब्रिटिश सैनिक अधिकारी भी कर रहे हैं। काश्मीर- दिल्ली, कराची और चक्कर काट रहे हैं और सामग्री एकत्रित करने क्योंकि शीघ्र ही उन्हें एक इसके संयुक्तराष्ट्र संघ की सम्मुख अंतिम निर्णय के करना है। किंतु प्रश्न तो काश्मीर-कमीशन काश्मीर को सुलझाने में समर्थ हो असफलता का एक ज्वलंत है कि कमीशन के 'युद्ध को पाकिस्तान भी नहीं मान के मानने का तो कोई वास्तव में राष्ट्रीय दृष्टिकोण की ओर से जो एक भयंकर उसका कुपरिणाम आज पड़ रहा है और भविष्य होगा। काश्मीर की समस्या में सुलझाने की आवश्य- तीसरे व्यक्ति पंच मानकर। अब तो काश्मीर-कमीशन पर है और उसके कुफल का ही दिखाई देगा।

स्तंभों में लिख चुके हैं का विभाजन होगा, क्योंकि अमरीका और ब्रिटेन है। हिन्दुस्तान का उसे नहीं, इसीलिये उसने पाकि- किया। यदि काश्मीर पाकिस्तान में सम्मिलित कर लिया जाता है तो एँग्लो-अमरीकी गुट की पूर्ति हो सकती है। इस समय पूँजीवादी राष्ट्रों को सोवियट रूस के भय का भूत परेशानी में डाले हुए है। काश्मीर के उत्तर में सोवियट रूस तो है ही साथ कम्यूनिज्म स्वतंत्र चीन होता हुआ पूर्वी द्वीपसमूह, बर्मा तथा मलाया तक अपना पैर फैला रहा है। फिर एँग्लो-अमरीकी दल को यदि परेशानी उत्पन्न होना अनिवार्य है, राजनैतिक दृष्टि से यदि काश्मीर पाकिस्तान में चला जाता है तो सोवियट रूस के क्रियाकलापों को समझने और देखने में एक जबरदस्त साधन उपलब्ध हो जाता है। इसलिये हिन्दुस्तान चाहे जो कहे या समझे किन्तु एँग्लो-अमरीकी समुदाय के सामने तो एक स्वार्थ है, और वह है उनके साम्राज्यवाद की रक्षा। हो सकता है कि सुरक्षापरिषद् की विभाजन नीति का भारत विरोध करे किन्तु पाकिस्तान तो उनके हाथ का खिलौना है ही।

एक बात और हमारी समझ में स्पष्ट आती है कि शेख अब्दुल्ला ऐसा लोकप्रिय नेता काश्मीर में दूसरा कोई नहीं है, यह निस्संदेह है और यही कारण है कि जनता ने शेख को काश्मीर का प्रधान मन्त्री बनाया है। इसलिये वहाँ की बहुमतप्राप्त जनता शेख अब्दुल्ला का पक्षपात करती है; किन्तु यदि मतगणना का प्रमुख प्रश्न सामने लाया जाये और दो विभिन्न सांस्कृतिक दृष्टिकोण से मतगणना की जाये तो जनता का मत पाकिस्तान की ओर जायेगा। यह निश्चित है इस दृष्टि से काश्मीर का बहुमत मिस्टर जिन्ना और मुस्लिमलीग के पक्ष में जायेगा, ऐसी हमारी धारणा है। सांस्कृतिक मामले में मुसलमान किसी तरह का समझौता करने को तैयार नहीं हैं। हाँ, राजनैतिक मामलों में वह भले ही कुछ कर लें। काश्मीर की आन्तरिक स्थिति भी दयनीय हो उठी है। भारत-सरकार का फौजी-विभाग बड़ी वीरता से राष्ट्र की रक्षा अवश्य कर रहा है नहीं तो अब तक काश्मीर की स्थिति कुछ और ही दिखाई देती। किंतु विदेशी पंच का निर्णय तो अंततोगत्वा मानना ही पड़ेगा, कम से कम अंतिम स्थिति कुछ इसी प्रकार की होगी।

लेकिन काश्मीर के संबन्ध में जो कुछ होगा, उसका सामना तो किया ही जायेगा; किन्तु हैदराबाद के मामले में भी सरकार चुप्पी साध बैठा यह न्यायसंगत नहीं है। हैदराबाद में बहुमत पर संगीन अत्याचार हो रहे हैं, निजाम शाही युद्ध की पूरी तैयारी कर चुकी है; किन्तु भारत-सरकार न जाने क्या सोच रही है ? हम समझते हैं कि जनता का धैर्य अब समाप्त हो गया है, इसलिये जन-सुरक्षा की दृष्टि से भारत-सरकार को अग्रगामी जल्दी से जल्दी होना चाहिये। क्योंकि हमें भय है कि काश्मीर की भाँति शत्रु कहीं हैदराबाद में दूसरे युद्ध-मोर्चे का प्रारंभ न कर दे।

* * *

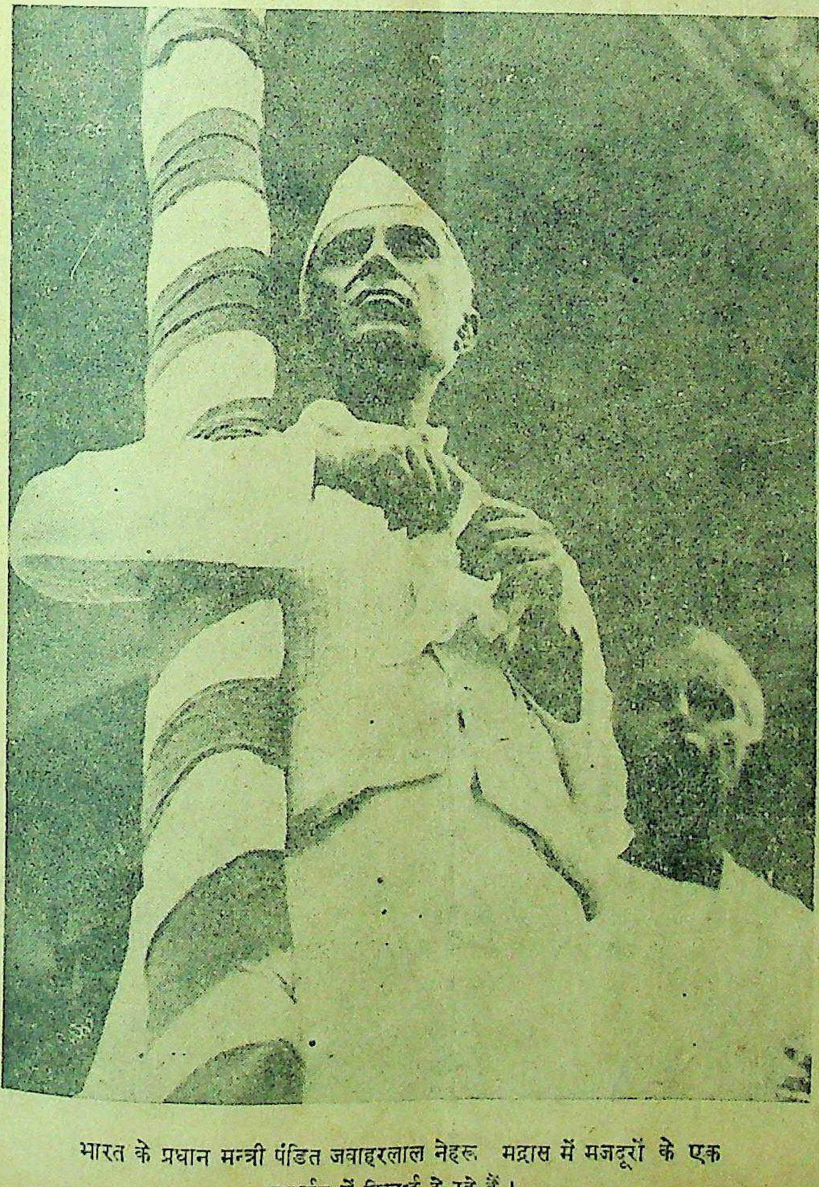

भारत के प्रधान मन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू मद्रास में मजदूरों के एक प्रदर्शन में दिखाई दे रहे हैं।

शुभ सूचना

समस्त हिन्दी-प्रेमियों, विद्यालयों तथा कृपालु ग्राहकों को यह शुभ सूचना देते हुए हमें हर्ष हो रहा है कि हमारी लाहौरवाली ब्रांच फिर से दुर्गाचरण रोड, अम्बाला कैंट (पूर्वी पञ्जाब) में आप लोगों की पूर्ववत् सेवा के उद्देश्य से स्थापित हो चुकी है।

मैनेजर

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

पंचायती अदालत क्या है !

भारतीय ग्रामीणों को सत्य के आधार पर ही अन्तिम निर्णय देना होगा

लेखक, श्री भगवन्नारायण भार्गव, बी० ए०, एल्-एल० बी०

कांग्रेस सरकार शीघ्र ही पंचायत राज की स्थापना करनेवाली है। ग्रामो
समस्त शासन व्यवस्था पंचायतों के सुपुर्द कर दी जायेगी। ग्रामीण ग्रामों की
शासन-व्यवस्था तथा निर्णय स्वयं करेंगे। इस लेख में अधिकारी विद्वान ने पं
राज की उपयोगिता को स्पष्ट किया है, जो जानकारी से पूर्ण है।

पंचायतों का कार्यक्षेत्र दो भागों में विभाजित है एक का सम्बन्ध स्वायत्त शासन तथा नागरिक संगठन से है, दूसरे का न्यायवितरण से है। शासन-सम्बन्धी कार्यक्रम, जिसके अन्तर्गत शिक्षा, स्वास्थ्य, रक्षा, कृषि, उद्योग, सम्पत्ति आदि की समस्याएँ हैं पहले ही मैं बतला चुका हूँ। आज केवल पंचायती अदालत के कर्तव्य तथा अधिकारों के सम्बन्ध में कुछ विशेष विशेष बातें बतलाऊँगा।

यह तो आप जानते हैं कि प्रत्येक ग्राम सभा के सभी वयस्क स्त्री पुरुष पंचायती अदालत के लिये हिन्दी पढ़े लिखे पाँच पाँच पंच चुनेंगे और लगभग तीन से पाँच ग्राम सभाओं के चुने हुए पाँच पाँच पंचों का एक पंचमंडल होगा। ये लोग अपना सरपंच चुनेंगे। सरपंच प्रत्येक मुकदमे के लिए पंचमंडल में से पाँच पंचों की एक बेंच बना देगा। उक्त पाँच पंचों में से एक पंच ऐसा अवश्य होगा जो बयान तथा अन्य कार्यवाही लिखने की योग्यता रखता हो। प्रतिबन्ध यह होगा कि उक्त बेंच में एक पंच ग्राम सभा के उस क्षेत्र का रहनेवाला हो जहाँ दावा करनेवाला रहता हो और एक वहाँ का जहाँ प्रतिवादी या अभियुक्त रहता हो और तीन पंच ऐसे होंगे जो उपरोक्त किसी क्षेत्र के रहनेवाले न हों; परन्तु पुलिस के मुकदमे में एक पंच ऐसा होगा जो गाँव सभा के क्षेत्र में रहता हो जहाँ अपराध किया गया हो। सरकार विभिन्न अवस्था में विशेष बेंचों का विधान नियत कर सकती है।

पंचायती अदालतों को दीवानी, फौजदारी तथा माल के निर्धारित अधिकार रहेंगे। दीवानी के मुकदमा उस पंचायती अदालत में जायेंगे जिसके क्षेत्र में प्रतिवादी, जिस पर दावा किया गया हो, रहता हो अथवा मुकदमा दायर करने के समय कारबार करता हो। फौजदारी का मुकदमा उसके सामने होगा जिसके क्षेत्र में अपराध किया गया हो। माल का मुकदमा उसके सामने होगा जिसके क्षेत्र में सम्बन्धित भूमि या उसका भाग स्थित हो। किसी दशा में कोई पंच या सरपंच ऐसे मुकदमा या कार्रवाई में भाग न लेगा जिसमें वह या उसका निकट-सम्बन्धी, या मालिक, या नौकर या व्यापारिक सहयोगी किसी पक्ष में हो या जिसमें उनमें से किसी का कोई स्वार्थ हो।

पंचायती अदालत को यह भी अधिकार होगा कि यदि किसी माल या दीवानी नालिश के या राजीनामा होने योग्य फौजदारी के मुकदमे के दोनों पक्ष लिखित स्वीकृति उपस्थित कर दें कि उनका दावे का निर्णय उक्त अदालत कर दे तो दावे की मालियत पर ध्यान न देते हुए वह उस नालिश का निर्णय कर देगी। सब दावे लिखित तथा जबानी भी हो सकेंगे। जबानी दावे को हर एक सरपंच या पंच तुरन्त लिखकर प्रार्थी के उस पर हस्ताक्षर लेगा। पंचायती अदालत दोनों पक्षों के गवाहों के बयान लेगी और जो अन्य गवाह वह चाहेगी बुला लेगी तथा अन्य उचित साधन के तथ्यों की छानबीन करके बहुमत से अपना निर्णय देगी।

पंचायती अदालत के फैसले की अपील नहीं होगी, परन्तु यदि किसी मामले में अन्याय किया गया होगा तो उसकी निगरानी दीवानी के मामले के मुनसिफ, माल के हाकिम परगना माल और फौजदारी हाकिम परगना फौजदारी के यहाँ होगी। कोई वकील पंचायती अदालत में पैरवी न कर सकेगा।

यदि नियत समय व तिथि पर वादी उपस्थित न होगा तो दावा खारिज कर दिया जायगा। उसी प्रकार प्रतिवादी की अनुपस्थिति में दावा डिगरी हो जायेगा, परन्तु एक मास के भीतर सन्तोषजनक कारण दिखलाने पर एक तरफा डिगरी खारिज हो सकती है और खारिज किया हुआ दावा उठ सकता है। यदि कोई गवाह सम्मन तामील होने पर हाजिर न होगा तो उस पर मुकदमा चलाया जा सकेगा और वारण्ट भी जारी हो सकता है। पंचायती अदालत अपनी डिगरी वसूल करा सकेगी और आवश्यकतानुसार दूसरी पंचायती अदालतें या मुंसिफ के पास भी इजराय के लिये भेज सकेगी। जुर्माना की वसूली दंड-विधि संग्रह के अनुसार उक्त अदालत स्वयं कर सकती है तथा हाकिम परगना फौजदारी के द्वारा भी उचित कार्य करा सकती है।

दीवानी के १०० रुपये की मालियत तक के मुकदमे करने का अधिकार पंचायती अदालतों को होगा। गवर्नमेंट को अधिकार होगा कि किसी पंचायती अदालत को ५०० रुपया तक की मालियत के मुकदमे करने का अधिकार दे दे। मवेशियों द्वारा की गई क्षति-पूर्ति के दावे की : मियाद: काल अवधि क्षति से ६ मास की होगी। शेष दावों की: मियाद: काल अवधि तीन वर्ष की होगी। परन्तु जिन दावों का सम्बन्ध अचल सम्पत्ति से होगा वे इनके अधिकार से बाहर होंगे। १०० रुपये तक के दावे जो चल सम्पत्ति वा उसके मूल्य या उसकी हानि के सम्बन्ध में हों या मवेशियों द्वारा की गई क्षति की पूर्ति के लिए हों पंचायती अदालत कर सकेगी, परन्तु साझेदारी, वसीयत या गैर वसीयत जायदाद के, सरकारी कर्मचारियों के विरुद्ध, नाबालिग की ओर से या उनके विरुद्ध, या पागलों की ओर से या विरुद्ध, व १९३९ के कब्जा अराजी के दावे नहीं सुन सकेगी। यदि कोई अपना दावा अधूरा करेगा तो छोड़े हुए भाग का दावा बाद में नहीं हो सकेगा।

माल के मुकदमे जिनका सम्बन्ध दुरुस्ती कागजात व दाखिल से होगा और मालगुजारी २०० रुपये प्रतिवर्ष के अधिक न होगी और जिनमें परस्पर पक्षों में झगड़ा होगा, तहसीलदार पंचायती अदालत के पास देगा। परन्तु इन मुकदमों की दरख्वास्त सीधे अदालत में पेश न होगी।

फौजदारी में भारतीय दंड विधान की ३८ धाराओं के मुकदमा, मवेशियों के अनधिकार प्रवेश ऐक्ट २० से २४ धारा के, डिस्ट्रिक्ट बोर्डों के प्राइमरी शिक्षा ऐक्ट की धारा १० के, जुआ के कानून की धारा ३,४,७ के अपराधों के मुकदमे पंचायती अदालत कर सकती है। दंड विधान के कुछ मुकदमे उदाहरणार्थ ये होंगे :—

सार्वजनिक मार्ग पर लड़ाई, सम्मन तामील न करना या उल्लंघन करना, अश्लील क्रिया तथा गीत, मारपीट, हमला, किसी को बन्द करने के लिये हमला, जबरदस्ती बेगार, ५०रुपये से कम मूल्य की चोरी, भूमि व मकान में अनधिकार प्रवेश या अधिकार कर लेना, धमकी, स्त्री की लज्जा अपहरण की चेष्टा आदि।

अदालतें चाहें तो कम गम्भीरता के ऐसे मुकदमें जो भूमि के झगड़ों के सम्बन्धित हों, और दंड विधान की धारा १४३, १४५, १५१, या १५३ के अन्तर्गत आते हों उनको भी पंचायती अदा
भेज सकती है। परन्तु पंचायती
ऐसे अपराधों की सुनवाई नहीं कर
जिसमें अभियुक्त : मुलजिम : को
से अधिक दंड मिल चुका हो, धारा
हो, धारा १०६ या ११० दंड वि
में मुचलका हो चुका हो वा जुआ
में दंड पा चुका हो।

जुर्माना में से अदालत वादी को
दिला सकती है और क्षति पूर्ति
सकती है। यदि अदालत को वि
जावे कि दावा निरर्थक व झूठा
परेशान करने को किया गया है तो
युक्त को वादी से मुआवजा दिला
है जो ५ रुपये से अधिक न होगा।

यदि पंचायती अदालत को
कोई मुकदमा ऐसा हो जिसको सु
उसे अधिकार नहीं अथवा वह
को उचित दंड नहीं दे सकती
इतना पेंचीदा है कि किसी मजि
सुनने के ही योग्य है तो वह उस
के वादी को उसका दावा वापिस
ताकि वह उसे किसी मजिस्ट्रेट के
पेश करे।

यदि पंचायती अदालत के सरपं
यह विश्वास करने का कारण हो कि कि
व्यक्ति की ओर से शांति भंग किये
की आशंका है तो जाँच के पश्चात् पंचा
यत बेंच उस व्यक्ति से १०० रु० तक
जमानत मुचलका १५ दिन तक के लि
ले सकती है।

पंचायती अदालत को कारावा
देने का अधिकार न होगा, केवल
तक जुर्माना करने का अधिकार
परन्तु जुर्माना न देने के बदले में का
का दंड भी नहीं दिया जा सकता।
अदालत को यह भी अधिकार है
प्रथम अपराध विधान, सन् १९
धारा ४ के अनुसार किसी अप
दंड न देकर उसके नेकचलनी के
पर छोड़ दे।

इन बातों से यह निश्चय हो
पंचायती अदालतों को पर्याप्त अधि
गए हैं। इनको प्रयोग करने के
ग्रामीण भाइयों को निश्चित रू
को साक्षी बनाकर शपथ लेना चा
वे किसी के साथ अन्याय न करेंगे
सत्य के आधार पर ही सारे नि
देहातों में सरपंच परमेश्वर के
मुझे विश्वास है, मेरे देहाती भाई
गांधी के उस उपदेश को जिसमें
ईश्वर की सर्वव्यापकता बतलाई
मात्मा का सदा स्मरण करना त
भजन प्रार्थना करना बतलाया
मन, वचन, कर्म से मानेंगे और
सर्वशक्तिमान् के बल के आश्रय
निश्चल और पवित्र न्याय
अदालतों द्वारा प्रदान करके अ
आशीर्वाद ग्रहण करके अपना
सफल करेंगे। यदि आप सर्वदा
अपना साक्षी बनाये रखेंगे तो
द्वारा कभी अन्याय तथा
न होंगे।

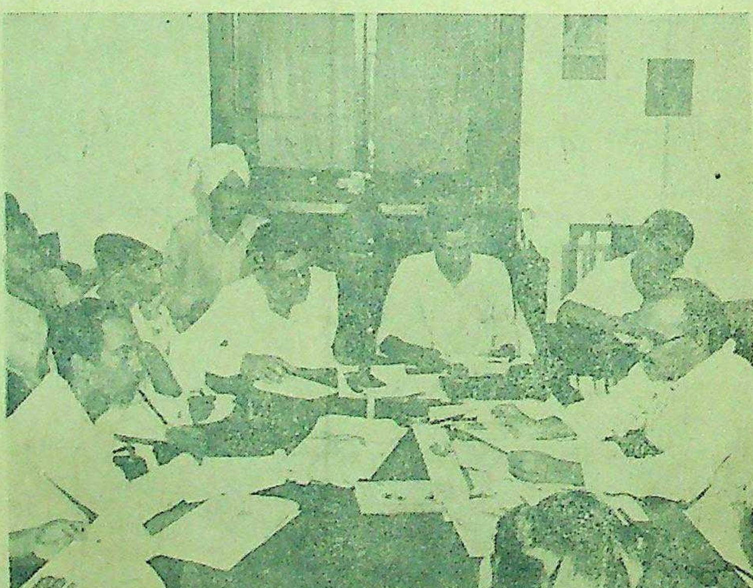

माननीय पण्डित केशवदेव मालवीय सरकार की विकास-नीति पर पत्रकारों की एक सभा में प्रकाश डाल रहे हैं।

र्मा की राजनीति क्या है ?

ता है मार्क्सवाद की विजय होती है अथवा राष्ट्रवाद की ?

लेखक, श्री प्रशान्तकुमार

स समय बर्मा की राजनीति पेचीदी होती जा रही है। स्वतंत्रता प्राप्त हो जाने से शासन-परिवर्तन का कुचक्र चलता ही रहता है, पिछले कुछ ही दिनों से विचारधारा का वहाँ इतना प्राबल्य हो रहा है कि स्वतंत्र बर्मा के अस्तित्व खतरा उत्पन्न हो गया है। लेखक ने इस लेख में इन्हीं सब समस्याओं को बर्मा की राजनैतिक स्थिति पर प्रकाश डाला है। लेख सामयिक और पठनीय है।

भारत का निकट पड़ोसी है की घटनाओं का भारत पर स्वाभाविक है। बर्मा में इस स्तमों है। कम्युनिस्टों और भीषण संघर्ष मचा हुआ है होता जा रहा है। ऊँट बैठेगा, कहा नहीं जा सकता। महायुद्ध के दरम्यान बर्मा में र्तन हुए। घटनाचक्र जिस उसे देखकर आश्चर्य होता स्ट-विरोधी जन स्वातन्त्र्य ड़ी होती और कम्युनिस्ट दोनों मिलकर देश-निर्माण र्य में योग देते तो आज कुछ और ही होती।

एक तरह से सम्पूर्ण बर्मा ला हुआ है। कम्युनिस्ट में देश का कुछ इलाका र हो चुका है और वहाँ सरकार स्थापित हो गई है। पहाड़ी इलाकों में इन काफी प्रभाव है। किसानों उन्हें प्राप्त है और उन्हीं के देश में विद्रोह का वातावरण है।

युद्ध में जापान के प्रवेश पहिले से ही बर्मा की राज-डोल हो रही थी। जनता के ने सर्वत्र जापान-पक्षी रूप धारण कर लिया था। के प्रति खुलेआम सहानुभूति रही थी जापान-पक्षियों द्वारा 'बर्मा फौज' नामक एक बढ़ रहा था। स्वर्गीय आंग के जन्मदाताओं में से एक की स्थापना के कुछ समय सांग अपने कुछ साथियों के शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से वहीं बर्मा को जापानी आधि-की योजना बनी और इसी कार्यान्वित कर जापान ने बर्मा अपने कब्जे में कर लिया। बर्मा फौज ने जापानियों की सहायता की और जापानियों के रूप में सम्पूर्ण बर्मा में गया। किन्तु जापान से आशाएँ पूरी न हो सकीं। नीति प्रारम्भ में ही दिखाई सामान्य जनता उसके आतंक उठी। देश पर अधिकार जापान ने कम्युनिस्ट प्रवृत्तियों के विकास के डर से आंग सांग तथा कुछ अन्य नेताओं के सहयोग से कार्य करने का निश्चय किया। किन्तु उसका यह निश्चय ठीक-ठीक असली रूप नहीं धारण कर सका। जापान की महत्त्वाकांक्षाएँ धीरे धीरे बढ़ने लगी जिससे आंग सांग तथा उनका दल जापान-विरोधी बन गया। अवसर आने पर आंग सांग का यह जापान-विरोध उग्र होने लगा और कुछ समय के उपरान्त उनकी सहानुभूति कम्युनिस्टों के साथ हो गई। बर्मा सरकार के रक्षा-मंत्री के पद पर तो वे रहे, किन्तु इस पद का उपयोग उन्होंने कम्युनिस्टों के हाथ मजबूत करने में किया।

सन् १९४५ तक बर्मा में कम्युनिस्टों तथा कम्युनिस्ट संचालित फासिस्ट-विरोधी जन-स्वातंत्र्य संघ की ताकत बहुत बढ़ गई। इस समय अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में धुरी राष्ट्रों की ताकत के घट जाने से जापान की स्थिति भी डाँवाडोल होने लगी और फिर एटम बम के सामने उसे पराजित होना पड़ा। बर्मा में ब्रिटिश सेना ने प्रवेश किया और इसी समय फासिस्ट-विरोधी जन-स्वातंत्र्य संघ के सैनिकों ने जापानियों पर जबरदस्त आक्रमण कर बर्मा को उनके पंजे से बिलकुल मुक्त कर लिया।

बर्मा की सुप्रसिद्ध नदी इरावदी का एक दृश्य।

जापान की हार के उपरान्त ब्रिटिश शासक मण्डली पुनः बर्मा में आ धमकी। अब देश की स्थिति पहले से बिलकुल भिन्न थी। सारा देश कम्युनिस्ट भावनाओं से ओत-प्रोत था और कम्युनिज्म की ताकत बढ़ती नजर आ रही थी। ब्रिटेन को इससे भय होने लगा और उसने 'फूट डालो और राज्य करो' के अपने पुराने दाँव चलने प्रारम्भ कर दिए। इसमें उसे सफलता भी मिली। कम्युनिस्ट पहले तो आंग सांग का साथ देते रहे किन्तु बाद में उन्होंने अपने को आंग सांग तथा उनके दल से अलग कर लिया। फासिस्ट-विरोधी जन-स्वातंत्र्य संघ में फूट पड़ गई। इसी समय अँगरेजों ने बर्मा को आजादी देने का वादा किया। आंग सांग तथा फासिस्ट-विरोधी जन-स्वातंत्र्य संघ ने इसे अपनी महान् विजय समझी। कम्युनिस्ट भी अब तक दो दलों में विभक्त हो चुके थे। लाल झण्डा कम्युनिस्ट और सफेद झण्डा कम्युनिस्ट; दोनों ने आंग सांग तथा उनके साथियों की ब्रिटेन से समझौते की नीति की अपने-अपने ढंग से आलोचना की। आंग सांग को ब्रिटिश साम्राज्यवाद का एजेंट घोषित किया गया और उसकी नीति के खिलाफ देश भर में कम्युनिस्टों द्वारा प्रचार होने लगा। फासिस्ट-विरोधी जन-स्वातंत्र्य संघ से निकाल दिए जाने के पश्चात् कम्युनिस्टों ने नए सिरे से अपना संगठन किया। कम्युनिस्ट आन्दोलन उग्र रूप धारण करता गया जिससे बाद में सरकार को उसे गैर-कानूनी घोषित करना पड़ा।

जनरल आंग सांग ने ब्रिटेन की घोषणा पर विश्वास किया किन्तु उनसे बर्मा के सभी नेता सहमत न हो सके। कम्युनिस्ट विरोधी थे ही। अन्य राजनीतिक दल भी धीरे धीरे उनके खिलाफ चले गए। यह मतभेद इतना अधिक बढ़ गया कि जनरल आंग सांग को अपने जीवन तक से हाथ धोना पड़ा। केवल ३२ वर्ष की ही अवस्था में उनका अन्त कर दिया गया। विश्व-इतिहास की यह एक अनोखी घटना है।

आंग सांग की हत्या के उपरान्त फासिस्ट-विरोधी जन-स्वातंत्र्य संघ के प्रति कम्युनिस्टों का रुख अत्यन्त उग्र हो गया और बर्मा की राजनीति साफ साफ दो 'कैम्पों' में विभाजित हो गई—कम्युनिस्ट और राष्ट्रवादी। जनवरी १९४८ में स्वतंत्रता प्राप्ति के अवसर पर कम्युनिस्टों ने आजादी को नकली आजादी बतलाते हुए फासिस्ट-विरोधी जन-स्वातंत्र्य संघ और उसके समर्थकों को खुल्लमखुल्ला ब्रिटेन का पिछलग्गू कहा। यहीं से कम्युनिस्टों के नियंत्रण में देश भर में व्यापक विद्रोह की तैयारी प्रारंभ हो गई।

मार्च १९४८ में कलकत्ते में हिन्दुस्तानी कम्युनिस्ट पार्टी का द्वितीय अधिवेशन हुआ। बर्मा कम्युनिस्ट पार्टी के प्रधान मंत्री थानटुन एक विशेष प्रतिनिधि की हैसियत से उसमें शरीक हुए। बतलाया जाता है कि इस सम्मेलन में विभिन्न देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों द्वारा अनेक महत्त्वपूर्ण निश्चय किए गए और समस्त एशिया में कम्युनिस्ट-आन्दोलन का संचालन करने के सम्बन्ध में नई नीति निर्धारित की गई।

कलकत्ता-अधिवेशन के उपरान्त बर्मा के कम्युनिस्टों ने देश भर में सशस्त्र विद्रोह का झण्डा बुलन्द किया। नू सरकार के विरुद्ध खुले संघर्ष का ऐलान किया गया

शेष पृष्ठ ७ पर देखिए

भारत के पूर्वी पड़ोसी: बर्मा और श्याम

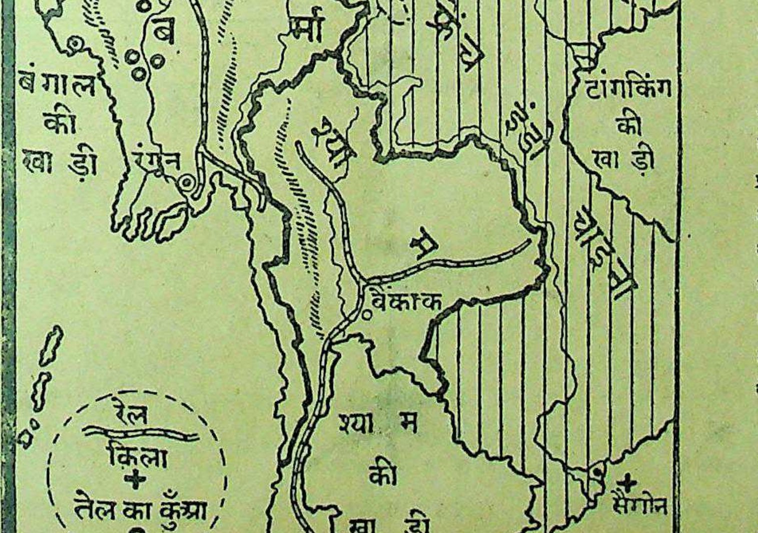

आज का जर्मनी और रूस

क्या बर्लिन तीसरे महायुद्ध का केन्द्र बनेगा ?

लेखक, श्री डब्ल्यू० एन० ईवर

अमरीका तथा रूस की राजनीति से जर्मनी की स्थिति उग्रतर होती जा रही है। साम्राज्यवादी राष्ट्रों के स्वार्थों का द्वंद्व जर्मनी को किस घाट लगायेगा, इसे कौन जाने ? इस लेख में जर्मनी की वर्तमान राजनैतिक स्थिति पर प्रकाश डालते हुए साम्राज्यवादी राष्ट्रों की नीति पर एक दृष्टि डाली गई है। लेख सामयिक है।

जनरल क्ले, जर्मनी में अमरीका के फौजी गवर्नर।

जर्मनी के प्रश्न पर विभिन्न राष्ट्रों में होनेवाली तनातनी की एक मुख्य बात स्वयं जर्मनी की आर्थिक और राजनीतिक स्थिति है। पिछले वर्ष परराष्ट्र मंत्रियों की सभाओं के समय, जो लन्दन और मास्को में हुई थीं और १९४६ के पेरिस-सम्मेलन में भी यह स्पष्ट हो गया था कि पश्चिमी जर्मनी के आर्थिक विनाश में रूस को कितना गहरा विश्वास था। सचमुच रूस की चाल इसी आशा पर अवलम्बित थी।

अब जून, १९४६ में श्री बेविन ने पेरिस में चेतावनी दी और आर्थिक एकता स्थापित करने के उद्देश्य से चार राष्ट्रों द्वारा कार्रवाई का प्रस्ताव सामने रखा तब श्री मोलोटोव ने जर्मन-समस्या पर बहस करने से भी इनकार कर दिया। इस प्रकार लगभग एक वर्ष बर्बाद हो गया और १९४७ की वसन्त ऋतु में मास्को-सम्मेलन के समय आर्थिक दिशा में हर एक कार्रवाई को रोकना, सफलताओं के मार्ग में बाधाएँ उपस्थित करना—स्पष्टतः यही सोवियट प्रतिनिधि-मंडल का लक्ष्य था। ऐसा मालूम होता था मानो यह विश्वास होने पर कि पश्चिमी क्षेत्रों की अर्थ-व्यवस्था सुधारने के प्रयत्न न किये जाएँगे सोवियट प्रतिनिधि-मंडल अनिश्चित समय तक अपनी आक्षेप और आरोप-भरी भाषा में अन्य विषयों पर वाद-विवाद करने के लिये तैयार था।

आशाजनक अनुमान

और यही अवस्था दिसम्बर में लन्दन के सम्मेलन की थी। चार राष्ट्रों द्वारा मिली-जुली कार्रवाई असम्भव बना दी गई। यदि पश्चिमी राष्ट्रों ने अपनी ओर से अलग कुछ करने का प्रयत्न किया तो उन्हें घोर विरोध का सामना करना पड़ा। पश्चिमी राष्ट्रों पर जर्मनी को "छिन्न-भिन्न" करने का दोष लगाया गया और यह भयानक भविष्यवाणी की गई कि यदि पश्चिमी क्षेत्रों के आर्थिक और राजनैतिक पुनर्निर्माण के प्रयत्न बन्द न किए गये तो सबके सामने एक संसारव्यापी संकट आ उपस्थित होगा।

सोवियट के आशाजनक अनुमान की रूप-रेखा इस प्रकार खींची जा सकती है:—यदि चारों राष्ट्रों को मिल-जुलकर काम न करने दिया जाय, यदि तीनों पश्चिमी देशों को किसी प्रकार का प्रभावपूर्ण प्रयत्न करने से रोका जाय तब पश्चिमी क्षेत्रों का आर्थिक विनाश अधिक सरल हो जाएगा और ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाएगी जिसका वे सामना न कर सकेंगे। पश्चिमी क्षेत्र के लोग अपेक्षाकृत अधिक सम्पन्न पूर्वी क्षेत्र से मिलाये जाने की माँग पेश करेंगे जिसे मना करना असम्भव हो जाएगा। कम्यूनिस्ट दल के नेतृत्व में जर्मन जनसाधारण आधिपत्य जमा लेंगे और इस प्रकार एक कम्यूनिस्ट-नियंत्रित "सयुंक्तजर्मनी" का जन्म होगा।

इससे पहले भी सोवियट की आशाओं पर पानी पड़ चुका है और आज भी उनका सुखद स्वप्न सत्य नहीं होने पाया। रूसियों ने यह तो न सोचा होगा—और यदि सोचा भी तो अपनी कल्पना में उन्होंने शायद ही विश्वास किया हो--कि असफल लन्दन-सम्मेलन के बाद पश्चिमी देशों के विदेशी मंत्री आवश्यक सुधार की अपनी योजनाएँ दृढ़ संकल्प के साथ कार्यान्वित करना प्रारम्भ कर देंगे। इन सुधारों और प्रारम्भिक मार्शल सहायता का अच्छा प्रभाव इतनी शीघ्र देखने की आशंका भी उन्हें न रही होगी।

कुछ हो, आज रूस अपने सामने एक ऐसे पश्चिमी जर्मनी का दृश्य देख रहा है जो विनाश की ओर नहीं जा रहा है बल्कि पुनरुत्थान के सफल प्रयत्नों में संलग्न है।

बढ़ती हुई उत्पत्ति

उत्पत्ति की नवीनतम संख्याएँ आश्चर्य-जनक सफलता का परिचय देती हैं। कोयले की उत्पत्ति युद्ध से पहले की अस्सी प्रतिशत है। इस्पात की प्रगति कुछ पिछड़ी है पर उत्पत्ति युद्ध से पहले की पैंतीस प्रतिशत है, अर्थात् ऐसे स्तर पर जिसे प्राप्त करना एक वर्ष पहले असम्भव समझा गया था। १९४७ में कुल जमा औद्योगिक उत्पत्ति युद्ध से पहले की ४० प्रतिशत थी और आज पचास प्रतिशत है। ईंधन और खाद्य वस्तुओं की प्राप्ति अधिक होने पर उत्पत्ति की गति अवश्य बढ़ जायगी।

ईंधन और खाद्य वस्तुएँ सदैव समस्या की मुख्य बातें रही हैं और जहाँ तक खाद्य वस्तुओं का प्रश्न है आज लोगों को जितना राशन मिलता है उतना युद्ध के बाद से कभी प्राप्त नहीं हुआ।

मुद्रा-सुधार के परिणाम आशंका से कम प्रतिकूल निकले। बेकारी में महान् यद्यपि अस्थायी वृद्धि का भय था; पर वास्तव में रूर के महान् औद्योगिक प्रदेश में जिसमें चालीस लाख श्रमिक हैं, बेकारों की संख्या मई में १,२३,००० थी और जुलाई में बढ़कर केवल १,५६,००० तक पहुँची।

इन्हीं कारणों से सोवियट की आशायें कोरी कल्पनायें रह गईं।

सोवियट क्षेत्र की अर्थ-व्यवस्था

साथ ही साथ सोवियट क्षेत्र की अर्थ-व्यवस्था सुधारने के बजाय बिगड़ रही है। अपने आर्थिक साधनों का सोवियट ने अत्यधिक उपयोग किया और परिणाम अब स्पष्ट है। चालू उत्पत्ति से हरजाना लेने और "निर्यात" तथा कब्जा करनेवाली सेना के लिये खाद्य पदार्थ का उपयोग करने की वजह से न केवल सोवियट क्षेत्र का जीवन-स्तर गिर गया है, पर वहाँ की अर्थ-व्यवस्था भी अव्यवस्थित हो गई है।

इसका अर्थ यह नहीं है कि सोवियट-क्षेत्र का नाश निकट है; पर निस्सन्देह सोवियट अधिकारियों को ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ रहा है जिसकी आशंका उन्होंने न की होगी और जिसके कारण नीति में मुख्य परिवर्तन आवश्यक हो सकते हैं। और विश्वसनीय सूत्रों के अनुसार राजनीतिक स्थिति भी रूसी दृष्टिकोण से संतोषप्रद नहीं कही जा सकती। "सोशलिस्ट यूनिटी" दल का प्रभाव घट

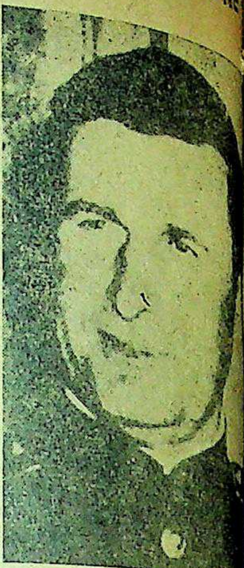

मार्शल सोकोलोवस्की, जर्मनी में
रूस के फौजी गवर्नर।

अशांति और विरोध जोर पकड़
परिणाम के भय से स्थानीय
स्थगित करना आवश्यक समझा

यह है स्थिति। अब तक सो
कार की कार्रवाई पश्चिमी क्षेत्रों की
रता और पूर्वी क्षेत्रों की स्थिरता के
पर आधारित थी। अब यह
आधारहीन हो गई है।

क्या परिवर्तित स्थिति के अनुसा
लिन अपनी नीति में परिवर्तन करे
यदि हाँ तो नई नीति क्या होगी ?
समय के मुख्य प्रश्नों में यह एक है।

* * *

ESTD 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेंट रिकगनाइजड AIDED
सिन्हा होमियो मेडिकल कौले
—पो० लहेरियासराय, बिहार—
आज हिन्दी उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्सन सहित फीस H.L.M.S. १०), H.M.B.S. H.M.D.S. २५)। पुस्तकें—अ० परिवारिक १॥), बायोकेमिक १॥) मेडिका १॥) मेडिकल डिक्सनरी २) आर्गेनन १॥) फार्माकोपिया १॥) रे सीम्पटम्स १॥) कुल कितावें १०) में एक साथ दी जायँगी डा० ख० माफ। दवाइयाँ ३०—=)॥ २००—≡) ड्राम, फी औंस ॥), घरेलू बक्स पुस्तक शीशी का ८)। सुगर और गोली २॥) फी पाउण्ड।
(१) बृ० इन्जेक्सन चिकित्सा ३)। बृ० अ० परिवारिक चिकित्सा ६)।
नोट :—बृहत् सूची मुफ्त—सचित्र मेडिकल मैगजीन मासिक ॥) सालाना
संरक्षक—राय साहब डा० यदुवीरसिंह एम० डा० एस० (U.S.A.)

परमात्मा पर भरोसा करो
और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५।=), और पैकिंग खर्च अलग।
रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कान

बर्मा की राजनीति क्या है ?

(पेज ५ का शेष)

और सर्वत्र प्रदर्शनों तथा हड़तालों की धूम मच गई। इसी समय सफ़ेद झण्डा कम्युनिस्ट दल को भी गैर-कानूनी कर दिया गया। सभी प्रमुख कम्युनिस्ट नेता फरार हो गए और गुप्त रूप से क्रांति का संचालन होने लगा।

आज सम्पूर्ण बर्मा में कम्युनिज्म का प्रभाव बढ़ रहा है। यहाँ तक कि फासिस्ट-विरोधी जन-स्वातंत्र्य लीग तक में कम्युनिस्ट प्रवृत्तियाँ दृष्टिगोचर होने लगी हैं। देश भर में कम्युनिस्टों के गुप्त समर्थक हैं और उनसे सहानुभूति रखनेवालों की तादाद में वृद्धि होती जा रही है। बर्मा के प्रधान मंत्री थाकिन की अभी हाल की घोषणा इस बात का प्रमाण है। प्रधान मंत्री ने कहा था कि सारा देश रूसी सिद्धान्तों का अनुकरण करेगा और मार्क्सवादी सिद्धान्तों का बड़े पैमाने पर प्रचार किया जायगा। इसके पीछे चाहे जैसी बात हो। किन्तु हवा का रुख समझने के लिए यह काफी बड़ा संकेत है। विद्रोहियों की शक्ति बढ़ रही है और सरकारी फौज के कुछ हिस्से भी कहीं कहीं उनसे जा मिले हैं।

आज मध्य बर्मा तथा पहाड़ी हिस्सा कम्युनिस्ट छापामारों का प्रधान अड्डा बना हुआ है। अनेक महत्त्वपूर्ण स्थान उनके कब्जे में हैं। छापेमार अस्त्र-शस्त्रों से लैस हैं और उनके कार्य करने का ढंग बिलकुल आधुनिक है। साधारण किसान, मजदूर और तरुणों का समर्थन उन्हें मिल रहा है और इससे हौसले बढ़ गये हैं। कम्युनिस्टों की बर्मा में कितनी ताकत है, इसका ठीक ठीक अनुमान लगाना कठिन है। कहा जाता है कि लाल सेना की संख्या ८०,००० के लगभग है और किसानों तथा निम्न मध्यमवर्ग में उनका जबरदस्त प्रभाव है। कम्युनिस्ट पार्टी का आन्तरिक संगठन बहुत मजबूत तथा अनुशासन अत्यन्त कठोर है।

बर्मा की ही तरह इस समय सम्पूर्ण एशिया में कम्युनिस्टों की समस्या प्रधान रूप धारण करती जा रही है। ऐसा मालूम पड़ता है कि कम्युनिस्ट सत्ता हस्तगत करने के लिए बिलकुल कमर कसकर उतर पड़े हैं। बर्मा में तो इसके लिये वे जी-तोड़ प्रयत्न कर रहे हैं। कम्युनिस्ट नेता श्री थानटुन ने कहा है कि सन् १९४८ में बर्मा की किस्मत का फैसला होगा। मार्क्सवाद और राष्ट्रवाद दोनों का जबरदस्त मुकाबला है। देखें, विजय किसकी होती है ?

मुक्त

युवको! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीवन फीका हो चुका हो तो भारत भर में सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त रोग विशेषज्ञ कविराज ब्रह्मस्वरूप बी० ए० (D.A.) फतेहपुरी देहली से सलाह मशविरा मुक्त करके अपना जीवन सुधार लें।

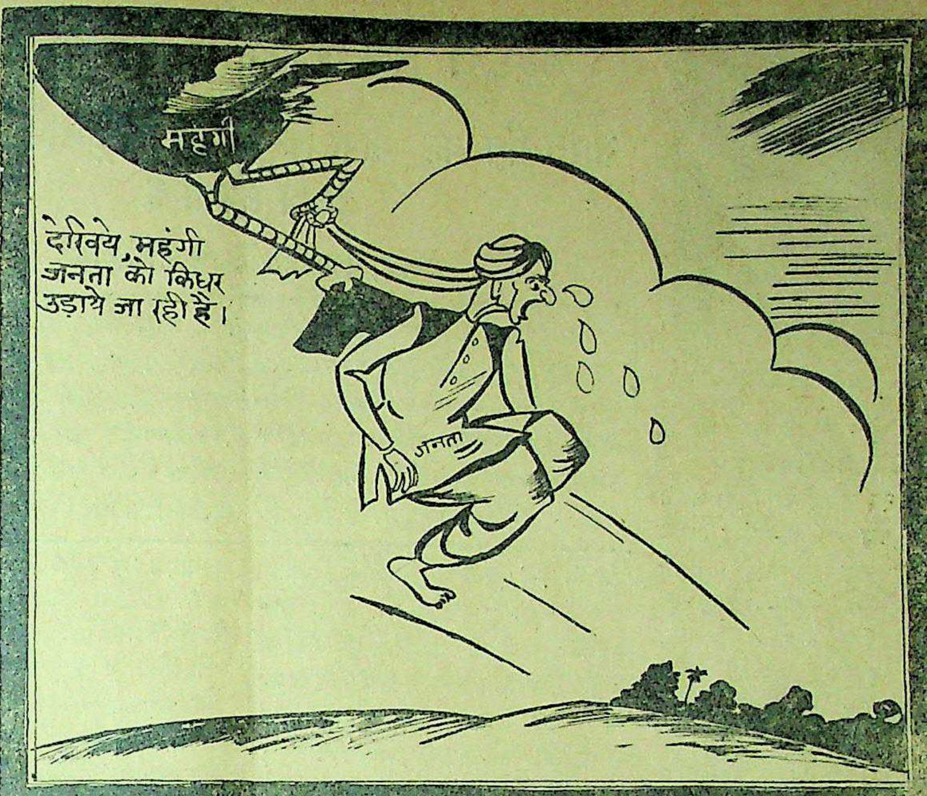

देखिये, महंगी जनता को किधर उड़ाये जा रही है।

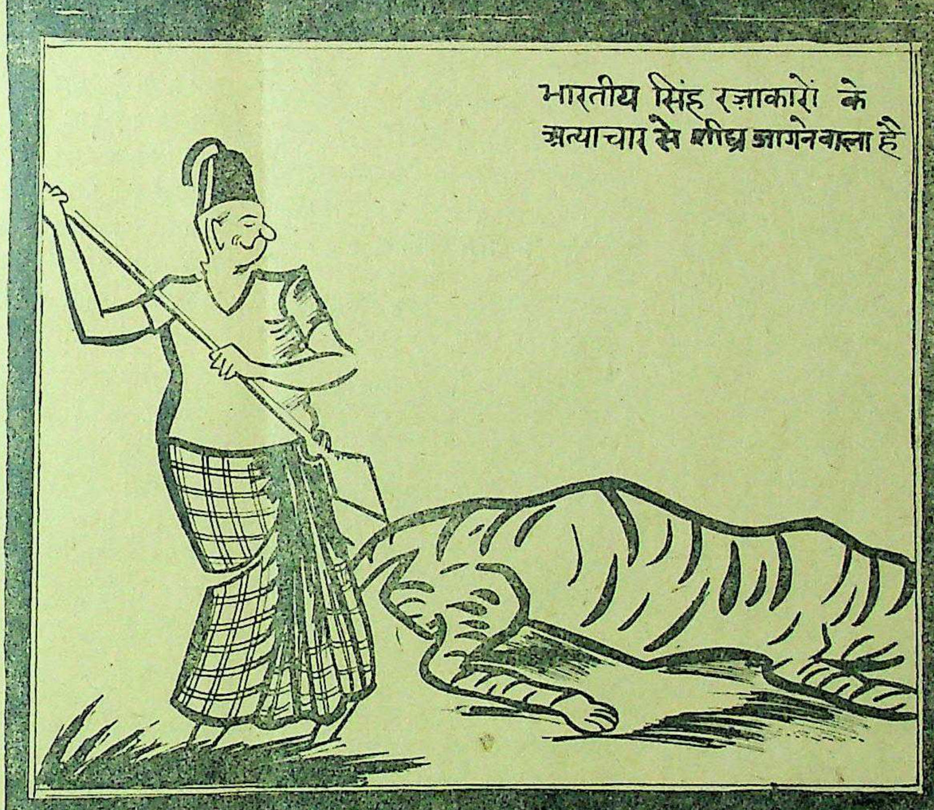

भारतीय सिंह रज़ाकारों के अत्याचार से शीघ्र जागनेवाला है

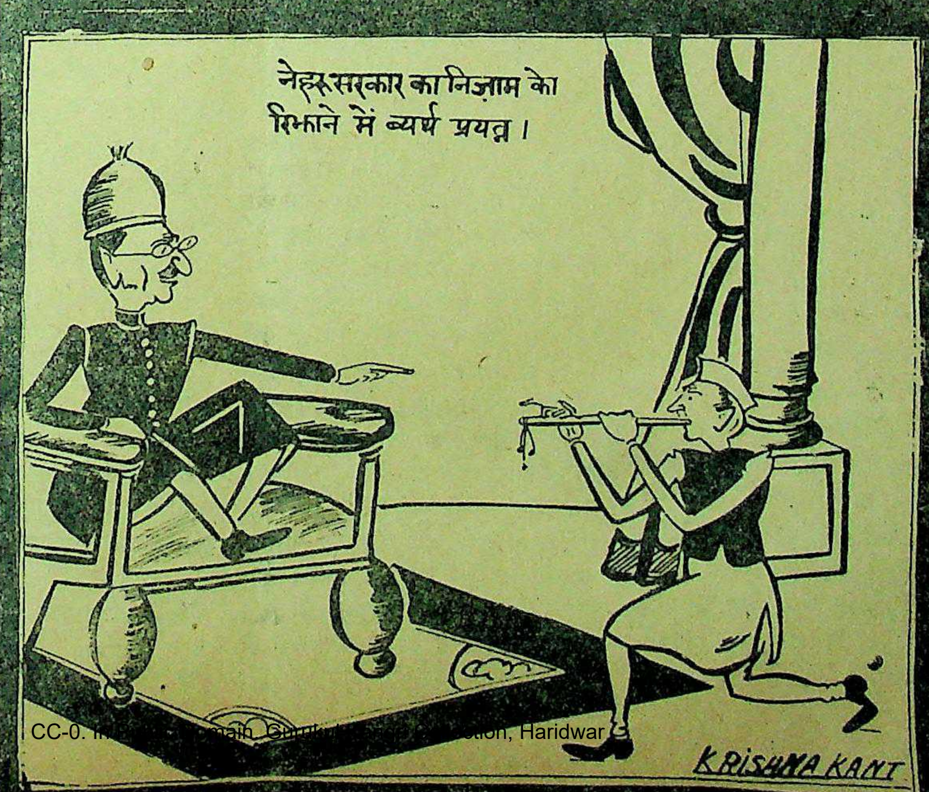

नेहरू सरकार का निज़ाम को रिझाने में व्यर्थ प्रयत्न।

KRISHNA KANT

पंडित नेहरू और राष्ट्रभाषा

भारत-संघ की भाषा हिन्दी और राष्ट्रलिपि देवनागरी ही हो सकती है

लेखक, महापंडित राहुल सांकृत्यायन

'राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्रलिपि देवनागरी है' जनता के इस आन्दोलन का प्रभाव भारत-सरकार पर भली भाँति पड़ रहा है, क्योंकि वह राष्ट्रभाषा का निर्माण करने जा रही हैं; किंतु भारत-सरकार के प्रधान मंत्री पंडित नेहरू हिन्दुस्तानी को राष्ट्रभाषा बनाने के पक्षपाती है, इसका उन्होंने स्पष्टीकरण भी कर दिया है। इस लेख में सम्मेलन के सभापति राहुल जी ने पंडित नेहरू को उत्तर दिया है साथ ही राष्ट्रभाषा हिन्दी की वास्तविकता पर प्रकाश डाला है। लेख सामयिक और पठनीय है।

हिन्दुस्तानी को राष्ट्रभाषा बनाने की चुनौती देनेवाले पंडित नेहरू।

मद्रास में २६ जुलाई को नेहरू जी ने हिन्दुस्तानी के पक्ष में सिंह-गर्जना करके अपने रुख को स्पष्ट कर दिया। इससे बहुत से लोगों का भ्रम-निवारण हो जायगा। राष्ट्रभाषा के सम्बन्ध में विधान-परिषद् में वह वही पक्ष लेने जा रहे हैं जिसे बापू ने ले रखा था, अर्थात् हिन्दुस्तानी भारत की राष्ट्रभाषा हो, जिसमें हिन्दुस्तानी का अर्थ है हिन्दी और उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जानेवाली मौलाना आजाद और दूसरे न जाने किसकी भाषा। जिसका स्पष्ट अर्थ है हिन्द की दो राष्ट्र-लिपियाँ और राष्ट्रभाषाएँ हों—यहाँ यह कहने की आवश्यकता नहीं कि उर्दू लिपि दुनिया की कितनी अवैज्ञानिक और दूषित लिपि है, जिसके कारण उसे तुर्की और मध्य एशिया से हटाया गया। इतना ही नहीं, नेहरू जी इसके लिए भी तैयार नहीं कि अँगरेजों की भाँति भारत पर से अँगरेजी की भी छत्रछाया जल्दी उठा दी जाय। इसीलिए नेहरू जी महात्मा गांधी द्वारा निर्धारित मार्ग या नीति से हटने की हर कोशिश का विधान-परिषद् में विरोध करेंगे। नेहरू जी को साफ दीख रहा है कि भारत के विभाजन के बाद कुछ लोगों ने पाकिस्तान से खफा होकर हिन्दुस्तानी में संस्कृत को ठूँसना शुरू कर दिया है। वह उन लोगों को फटकारते हैं जो समझते हैं कि जनता की भाषा साहित्य-सृजन का उचित माध्यम नहीं हो सकती। नेहरू जी का फतवा है कि हिन्दुस्तानी में संस्कृत या फारसी शब्दों के भर देने से जो भाषा बनेगी वह जनता की भाषा नहीं रहेगी। जनता ऐसी सब कोशिशों का विरोध करेगी और ऐसी सारी कोशिशें असफल रहेंगी। यहाँ शिष्टाचार के नाते यद्यपि नेहरू जी ने फारसी शब्दों को ठूँसने की भी बात की है, किन्तु उनके तीर का मुख्य निशान है संस्कृतनिष्ट हिन्दी।

नेहरू जी का चैलेंज सिर्फ हिन्दीवालों को ही नहीं, भारत के उन सारे ही लोगों के लिए है जो भारत में एक राष्ट्रभाषा और एक राष्ट्रलिपि का समर्थन करते हैं। किन्तु नेहरू जी के सिंहनाद से हिन्दी की जरा भी क्षति नहीं हो सकती, क्योंकि हिन्दी अपने स्थान में अचल रूप से प्रतिष्ठित हो चुकी है। क्या किसी की मजाल है जो हिमाचल प्रदेश, युक्तप्रदेश, बिहार, मध्य-प्रदेश (हिन्दी), मालव संघ, राजस्थान संघ, विन्ध्य-प्रदेश, मत्स्यसंघ और पूर्वी पंजाब से हिन्दी को राजभाषा पद से हटा दे? यह असम्भव है। ऐसा प्रयत्न चट्टान से सिर टकराने जैसा होगा। बड़े-बड़े नेता चट्टान से सिर टकरा भी चुके हैं। उनके सारे प्रयत्नों के बाद भी युक्तप्रान्त की सरकार ने काफी आगा-पीछा करके हिन्दी को राजभाषा घोषित किया। जनता के प्रबल बहुमत ने उसे इसके लिए बाध्य किया। युक्तप्रान्त के पीछे एक-एक करके सारे हिन्दी-भाषी प्रान्तों ने पन्त सरकार का अनुसरण किया। हिन्दुस्तानी के पक्षपाती महानेताओं ने सारी शक्ति लगाकर देख लिया कि मरुभूमि से कोशी के पूर्व तक, हिमाचल से नर्मदा के और दक्षिण तक हिन्दी को हटाया या उसके साथ कोई दूसरी भाषा राजभाषा नहीं बनाई जा सकती।

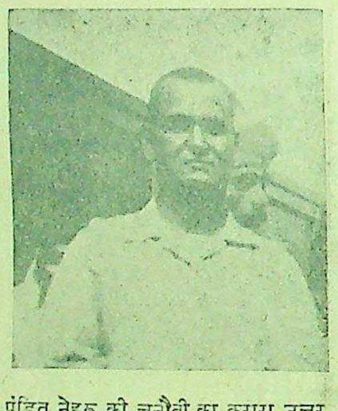

पंडित नेहरू की चुनौती का करारा उत्तर देनेवाले श्री राहुल सांकृत्यायन।

हिन्दी के राष्ट्रभाषा बनाए जाने का यह सबसे बड़ा कारण है जो कि वह भारत के इतने बड़े भूभाग तथा इतनी बड़ी जन-संख्या की सामान्य और राजकाज की भाषा है। अँगरेजी के प्रभुत्व के समय भी इसी कारण अन्य प्रान्तवासियों को हिन्दी-भाषियों के साथ ही नहीं दूसरे प्रान्तवासियों के साथ भी बोलते समय हिन्दी का सहारा लेना पड़ता रहा, यदि वह अँगरेजी या संस्कृत नहीं जानते थे—अँगरेजी या संस्कृत जाननेवाले कितने कम हैं इसे कहने की आवश्यकता नहीं। यदि नेहरू जी और उनके जैसे विचार रखनेवाले हिन्दुस्तानी के नाम पर उर्दू लिपि और भाषा को भी भारत की राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि बनवाना चाहते हैं तो उन्हें विधान-परिषद् में नहीं, पहले हिन्दी को राजभाषा माननेवाले नव हिन्दी प्रान्तों और राज्यसंघों में उसे मनवाना चाहिए। यदि वह भली प्रकार अनुभव करते हैं कि वहाँ कहीं जौ भर भी अँगुली गड़ाने की जगह नहीं है तो उर्दू को सारे भारतवर्ष में राष्ट्रभाषा बनाने का प्रयत्न एक विडम्बना-मात्र है। हिन्दी भाषी प्रान्तों में जहाँ ही अरबी-मिश्रित हिन्दी अर्थात् उर्दू की गुंजाइश होनी चाहिए थी तो उर्दू की कोई बात न पूछे और बंगाल, आसाम, उड़ीसा, आन्ध्र, तामिल नाड, केरल, करनाटक, महाराष्ट्र और गुजरात से कहा जाए कि तुम राष्ट्रभाषा के नाते उर्दू लिपि और भाषा को भी पढ़ो। यह निश्चित ही है कि उर्दू के सम्बन्ध की ऐसी कोई अनिवार्यता अहिन्दी-भाषी-प्रान्तों में भी उसी तरह नहीं चल सकेगी जिस तरह वह हिन्दी-भाषी प्रान्तों में नहीं चल सकी। फिर क्या केन्द्र में उर्दू को भी राष्ट्रभाषा मानकर उसके छापने में हजारों टन कागज बरबाद करने तथा उसके लिए मशीनें खरीदने में धन खर्च करना अपव्यय नहीं है?

नेहरू जी जनता की भाषा में साहित्य-सृजन की बात करते हैं। कौन साहित्य? आज का सर्वतोमुखीन साहित्य, जिसमें केवल साइंस के तीन लाख से ऊपर शब्दों की आवश्यकता होगी। नेहरू जी अपने को साइंस का आदमी कहते हैं। समझ में नहीं आता कि वह किस जनता की भाषा में साहित्य-सृजन की बात करते हैं। आज तक किसी देश की भाषा में ऐसे साहित्य का सृजन बिना किसी क्लासिकल भाषा की सहायता के नहीं हुआ। नेहरू जी ने कई बड़े-बड़े ग्रन्थ लिखे हैं और निश्चय ही उनके ग्रन्थ, इँग्लैंड की जनता की भी उस भाषा में नहीं लिखे गए हैं, जिसमें वहाँ की क्लासिकल भाषा ग्रीक और लातीनी को "ठूँसा" नहीं गया। भारत के साहित्यकार भारी उपकार मानेंगे यदि नेहरू जी साइंस-सम्बन्धी किसी विषय पर एक पुस्तक जनता की भाषा में लिखने की कृपा करें। एक साक्षर संस्कृत ही नहीं लेखक के लिए यह कम लज्जा की बात नहीं है कि वह अपने देश की साहित्यिक भाषा में कुछ लिख न सके। पौन शताब्दी पहले महाकवि माइकेल मधुसूदन दत्त इस तत्त्व को समझ गए थे। और विदेशी भाषा में ख्याति प्राप्त करने का मोह छोड़कर उन्होंने अपने देश की भाषा में साहित्य-सृजन किया था।

हमारे देश में अब भी कितने श्वेत-केश हैं। जिन्होंने अपने बाल्य के वातावरण के प्रभाव को अब तक अक्षुण्ण रखा है। उन्नीसवीं सदी का अन्त और बीसवीं का आरम्भ ऐसा समय था जब

राष्ट्रभाषा हिन्दी के आन्दोलन के जनक माननीय टंडन जी।

युक्तप्रान्त के कितने ही भद्र हिन्दी-चिन्दी को उसी दृष्टि से दे जैसे साहब लोग। अभी उन परिवा परम्परा हमारे देश से उच्छिन्न नहीं है और उनके वातावरण में पले को हिन्दी के महत्त्व का समझना मुश्किल हो रहा है।

अँगरेजी के बाबू सचेत हों

वर्तमान शताब्दी के आरम्भ में बितानेवाले ऐसे लोग आज स्तानी की बात करते हैं, तो उनका विशेष तौर से होता है। जब हिन्दु राष्ट्रभाषा में हिन्दी-उर्दू दोनों शामिल हो गईं, तो वह अपने मन सोचते हैं, हम तो इस जन्म में न हिन्दी ही सीख सकते हैं, न उर्दू ही। किन्तु इन दोनों के झगड़े की आड़ में हमारी जीवन-नैया मजे से पार हो जायगी, अँगरेजी के सहारे। इस बात के लिए नेहरू जी भी ज्यादा उत्सुक हैं हमारे बहुत-से अँगरेजी के बाबू लोग; जो नेहरू जी के के सिंहनाद से गद्गद हो गए होंगे। से अँगरेजी के पदच्युत होने का हो गया है तब से इन लोगों की हराम हो गई है। किन्तु क्या इसे राजनीतिक सूझ कही जा सकती है? हमारी आँखों के सामने ही वर्ष बीतने पाया और विश्वविद्यालयों में रेजी लेनेवाले विद्यार्थियों की भयंकर रूप से ह्रास नहीं दिखाई क्या आज से दस वर्ष बाद पास करनेवाले विद्यार्थियों का का ज्ञान उतना ही नहीं रह जितना फ्रांस, जर्मनी, रूस, जा अँगरेजी को द्वितीय भाषा के तौर पर वाले विद्यार्थियों का? फिर अपने पार करने के लोभ से क्या हम पीढ़ी का अनिष्ट नहीं करेंगे? रखिए लंदन, आक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज पोतकर धाक जमानेवालों के दिन गिने रह गये हैं; और आगे कि उतने ही उत्साह से लोग ठप्पा लगाने जाया करेंगे। यह बाँध लीजिए कि हमारे नौ हिन्दी प्रदेश अपने सारे दफ्तरों का काम हिन्दी में करने को तुले हुए हैं। शीघ्र लिपिक तैयार हो रहे हैं। टाइपराइटरों पर नागरी अक्षर नये नागरिक टाइपराइटरों की पैदा करने में लोग लगे हुए हैं। समय नहीं बीतेगा जब हमारे

शेष पेज १४ पर

कहानी

चित्रकार

लेखक, श्री श्रीराम शर्मा 'राम'

मानव-जीवन में कभी-कभी ऐसी घटनायें भी घट जाती हैं जिनका हृदय पर अमिट प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता। मन दुविधा-पूर्ण होता हुआ भी वास्तविकता के रहस्य का उद्घाटन हो ही जाता है। इस कहानी में लेखक ने चित्रकार तथा उसकी कला और प्रभाव का जो चित्रण किया है वह अत्यन्त सुंदर और हृदय पर छाप छोड़ जानेवाला है। अन्तर्द्वन्द्व से पूर्ण चित्र भी प्रभावपूर्ण हैं।

आपका विश्वास है कि आपका यह प्रयत्न इस एक जीवन की देन नहीं।'

सुनकर, चित्रकार मुसकराया। वह बोला—'हाँ, देवि ! मेरा ऐसा ही विश्वास है। यह मनुष्य का जीवन एक अध्यन है, जिसका कोई अन्त नहीं। अतएव मैं सोचता हूँ, आज मैंने जो कुछ पाया है, देखा है, अनुभव किया है, इसका लेखा-जोखा तो जीवन की उस भूमिका पर ही आश्रित है कि जिसकी पीछे की दुनिया छूट गई। उन साथियों का साथ। आज जिस प्रकार इस जीवन में मैं आपका प्रेम पा सका हूँ, तो क्या यह आपके विश्वास-योग्य बात नहीं कि मेरा गत हुआ जीवन भले ही आज दिखाई नहीं देता, परन्तु उसकी कामना, उसका मूल-भूत सिद्धान्त भला इस आज के प्राप्त हुए जीवन को क्या याद नहीं ? मैं कहता हूँ है। वह आत्मा में निहित है। प्राणों के रेशे-रेशे में मिला है। उस भूत हुए जीवन का प्रसाद है, यह वर्तमान—यह मेरा जीवन !

सुनयना के पिता ने कहा—'यही वेदान्त का कहना है।'

चित्रकार गम्भीर था। बोला—'मैं वेदान्त नहीं जानता। जानने की इच्छा भी नहीं करता। कागज पर चित्र उतारता हूँ—मन की सन्तुष्टि के लिए ! लोग कहते हैं, मैं दुनिया को प्रसन्न करने के लिए चित्र बनाता हूँ। पर मैं कहता हूँ, मैं अपने प्राणों में समाविष्ट कोलाहल को शान्त करने के लिए जीव-जीव में प्रकृति में जो सौन्दर्य देखता हूँ, उसी को चित्रित करता हूँ। कुछ नवीनता नहीं। अलौकिकता भी नहीं। अपना भार वहन करता हूँ। स्वार्थ है मेरा। मेरे अन्तर में जो पीड़ा है, उद्वेग है, उसी को शान्त करता है यह चित्रकार ! कूची का बल पाकर—कागज पर उतारकर।

उसी समय सुनयना ने साँस भरी और चित्रकार की उन भावनामयी आँखों को देखा।

चित्रकार फिर बोला—'सच ही मानिये आप, कलाकार दुनिया से कुछ पाता है, देता कुछ नहीं। आप में जो भावना है, प्रेम है, अनुभूति है, उसी को प्रतिध्वनि-मात्र तो कर पाता है, यह कलाकार ; और कुछ नहीं।

एक व्यक्ति बोला—'तब भी कलाकार पूजनीय है...अमर है।' सुनकर चित्रकार मुसकराया। क्षणएक हँस दिया। वह बोला—'इस दुनिया के छोटे-से-छोटे जीवों की तरह, कलाकार के पास भी अपने प्रति ममता है—जीवन की दासता ! और जानते हैं आप, जो दास है, वह जहाँ अपने कर्तव्य के प्रति ईमानदार बनना पसन्द करता है, तो इसीलिए न कि मालिक उदासीन न रहे उसके प्रति वह मालिक को सन्तुष्ट रखे। बस, यही कलाकार की परिभाषा है। जब कलाकार सृष्टि के कण-कण में सौंदर्य देखता है, तो उसका अर्थ ही यह है कि वह स्वामि-भक्त है, ईश्वर का उपासक। उसी समय उसने जैसे चौंककर कहा—लेकिन इसके यह अर्थ नहीं कि कलाकार परतन्त्र है। वह किसी रेखा में बँधा है। सृष्टि दूत अवश्य है, लेकिन दास नहीं।'—उसने हँसकर कहा—'चूँकि आत्मा का सौन्दर्य स्वयं एक कला है, इसलिये उसके लिये नियमों की आवश्यकता ही नहीं—।' वह सरल भाव लेकर बोला—'मैं दूर का हूँ, आपके बीच का नहीं; इसलिये निश्चिय ही मेरे प्रति आपने ऐसा कुछ भी सुन लिया होगा कि जिसके मैं उपयुक्त नहीं। मैं सीख रहा हूँ। कला की देवि जिस मंदिर में प्रतिष्ठापित है, धीरे-धीरे उस ओर बढ़ रहा हूँ। मैं वहाँ पहुँचूँ, इसके लिए आपका भी आशीष माँगता हूँ।

वार्तालाप समाप्त हो गया। कुछ मित्र चले गये। कुछ रह गये। तभी सुनयना ने चित्रकार के लिए भोजन का प्रबन्ध किया। जब वह भोजन कराने लगी, तो तभी, नन्दन ने अपने अतिथि को लक्ष्य करके कहा—"और सुना आपने। यह सुनयना चित्रकारी पसन्द नहीं करती। देखती ही नहीं मेरा कोई चित्र ! वह जो चिड़ियों का जोड़ा आपने देखा और कहा, प्रेम का अच्छा अभिनय है, तो इसी को देखकर इस सुनयना ने..."

उसी समय नन्दन के पिता ने कहा—"पर भाई..."

लेकिन नन्दन ने जल्दी से कह दिया—"यह सुनयना कहती थी, यह पागल का प्रलाप है, मस्तिष्क का दोष !" और वह जोर से ठहाका मारकर हँस दिया। अवसर की बात थी कि उस हँसी के साथ अन्य व्यक्तियों ने भी हँसकर साथ दे दिया जिसे देखकर, सुनयना को अच्छा नहीं लगा। मानो उसके साथ कोई अन्याय ही किया गया।

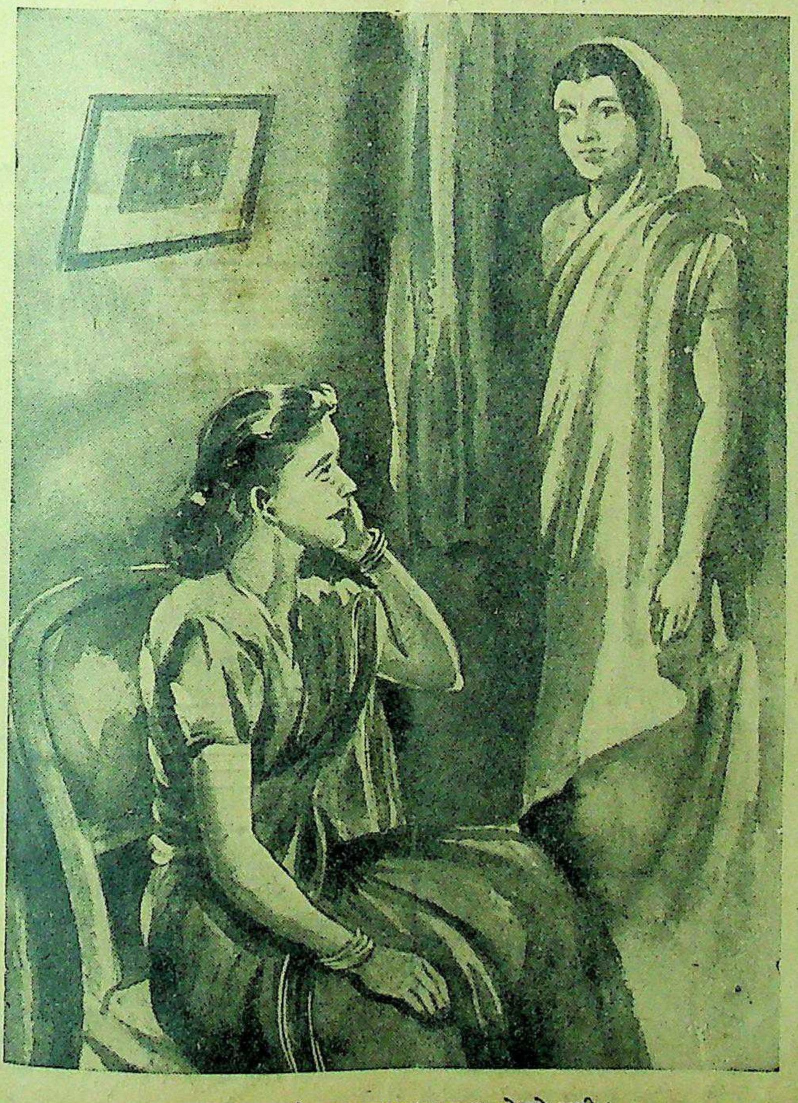

सुनयना न जाने क्या समझ कर कुछ सोचने लगी।

परन्तु जब दिन के बाद सन्ध्या आई और चित्रकार को उस महल के पीछे बाग में जाकर छिपते हुए सूर्य की ओर देखते हुए सुनयना ने पाया, तो वह पास जाकर बोली—"चित्रकार, आप मानते हैं कि इस सृष्टि का रूप गहरा है।" उसने कहा—'आज जो कुछ आपने कहा, वह मैंने सुना। मैंने माना।'

सुनकर, चित्रकार उस सुन्दर सुनयना की ओर देखने लगा।

सुनयना फिर बोली—'कहेंगे तो आप, मैं भी अजीब हूँ, सोचती हूँ, इस सृष्टि के अन्तर में जो आज हाहाकार है, रोदन है, उसके पास है, प्यार है, अनुभूति और अनुराग...ओह, इस सृजन और विसर्जन के मेले में कितना रौनक है, कितना चीत्कार।

सुनकर चित्रकार क्षण भर के लिए मौन रह गया। जैसे हतप्रभ! तब छूटते ही, उसने सुनयना की उन प्रेरणामयी और मधुर आँखों में झाँककर देखते हुए कहा—'सुनयना देवी, मैं समझा, तुम हल्की नहीं हो, शायद सरल नहीं।'—तब ही उसने लौटकर मुँह फेरते हुए फिर बुझते हुए सूर्य की ओर देखते हुए कहा—'देखो इस ओर! अभी यह सूर्य आग उगल रहा था...यह आग का गोला। और अब शीतल दिखाई देता है, सरल—स्निग्ध!' उसने तब सुनयना की ओर लक्ष करके कहा—'हाँ, सुनयना देवी, सृष्टि यही कहती है, प्रकृति यही, तत्त्व दोनों ही पास-पास हैं, सृजन और विसर्जन की शक्ति! दोनों ही एक बेला में घटित होती हैं। बस, यही कलाकार बताता है। कुछ और नहीं।

सुनयना ने कहा—'कला कल्पना है, अनुभूति—और क्या?'

'हाँ, कला कल्पना है। कल्पना ही जीवन। ठोस। स्थिर।'

'ठोस, स्थिर—क्यों?'

'इसलिए कि कल्पना चेतन है, जड़ नहीं। पत्थर नहीं और कला का काम है, निखारना; नित-नित पखारे जाना, इस चेतना को।' वह बोला—'कला संगम है, जीव और प्रकृति के बीच में! दोनों की एक भूमिका! एक रूप।'

सुनयना ने कहा—'आपका नाम तो सुना। चित्र नहीं देखा। आपकी कला सुना, आप बड़े चित्रकार हैं, इस देश के! दूर-दूर तक प्रसिद्ध!'

चित्रकार ने कहा—'अवसर की बात है, शायद भाग्य की बात; वैसे मैं अभी योग्य नहीं।' वह बोला—'हाँ, सुनयना, साध अवश्य है, अच्छे चित्र बनाऊँ। जीवन पाया है, तो देश को कुछ भेंट दूँ, अपनी।'

सुनयना ने कहा आप भाग्यवान् हैं, आप कलाका!'

सुनकर, चित्रकार मन्द-सा मुसकरा दिया। बोला—'एक नारी के रूप में—सुंदर नारी के रूप में—तुम कितनी भाग्यवान् हो, यह भी जानती हो!'—उसने जैसे विनीत बनकर कहा—तुम इतना भर समझो, सुनयना देवी! बस, इतना!

तब सुनयना बोल नहीं सकी, अपना सिर झुका दिया।

दिन हो गये, शायद दो वर्ष से ऊपर कि सुनयना को इसका भी ध्यान नहीं रहा कि घर पर एक चित्रकार आया था। वह कुछ कह गया और कुछ सुन गया। इसी बीच में सुनयना का विवाह भी हो गया। वह अपनी सुसराल चली गई। पति अच्छा मिला। सुन्दर, सुयोग्य। बड़ा घर था ही; आमोद-प्रमोद का अतुल भण्डार था, उस घर में!

परन्तु जब एक दिन, पति के साथ सुनयना प्रदर्शनी देखने पहुँची, तो वहाँ पर बने हुए कला-भवन में जाकर वह एक से एक सुंदर चित्र देखने लगी। उसी समय वह एक चित्र के सामने जाकर खड़ी हो गई। वह चित्र एक नारी का था। दुर्बल, कंकाल नारी का। गोद में बच्चा। भूखा। व्याकुल। वह क्या माँग रही थी, किससे माँग रही थी, यही उस चित्र में प्रदर्शित किया गया था। सुनयना ने चित्र के नीचे चित्रकार का नाम पढ़ा तो वह हर्ष से बोली—'यह आये थे, हमारे घर!'

सुनकर, पति ने उदास भाव में कहा—'हाँ, आये होंगे, पर अब तो इस अमर कलाकार को संसार से गये भी पूरा एक वर्ष हो गया।'

'मर गया, चित्रकार! ओह!' कहते हुए सुनयना ने अनुभव किया कि जैसे किसी ने उसकी छाती पर घूँसा मार दिया, उसके पति ने! उसकी आँखें अँधेरे में छिप गई। उसे याद आया वह कला-प्रेमी, वह सौन्दर्य का उपासक कि जिसने स्वयं ही, सुनयना को सौन्दर्य की रानी कहा था—जाने कैसे मन के साथ वही चला गया। सदा के लिये!

और उसी कलाकार के चित्र को देखने के लिये लोग एक-दूसरे पर गिर रहे थे! वह बढ़ते आ रहे थे, उस चित्र की ओर।

धोने के लिये
५०१ साबुन
दी टाटा आयल मिल्स कं० लिमिटेड

[illegible] सर्दी पर अकसीर उपाय
आरोंदा
१८६६
नीलगिरि तेल
[illegible]

नित्यप्रति की झंझटें
चाय
से मिटाइये
इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

LIPTONS
WHITE LABEL
TEA
ONE POUND NETT
लिपटन
माने
अच्छी चाय

T. B.
टी० बी०　"तपेदिक" रोग के हताश रोगियो—
जबरी (jabri) का नाम नोट कर लो, यही इस दुष्ट रोग से रोगी को [illegible] बचानेवाली शक्तिशाली औषधि है। एक बार परीक्षा करके देख लो, परीक्षा [illegible] ही नमूना रखा गया है, जिसमें तसल्ली हो सके। मूल्य नं० १ (स्पेशल) पूरा [illegible] दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन २०) रु०। 'जबरी' नं० २ पूरा [illegible] २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु० महसूल आदि अलग है। आज ही [illegible] देकर रोगी की जान बचावें। तार का पता "jabri" jagadhri [illegible]
पता :—रायसाहब के० एल० शर्मा, रईस (D) 'जगाधरी' (E.P.)

कहाँ कौन से नये फिल्म बन रहे हैं ?

लेखक, श्री उमेश जोशी

हैं और ११ लड़के हैं। यह चित्र मोहन स्टूडियो अँधेरी में बड़ी तेजी के साथ निर्मित हो रहा है।

* * *

टी० के० स्क्रीन क्लासिक्स (बम्बई)

"बटोही" चित्र बड़ी धूम-धाम के साथ मिस्टर कुमार मेनन निर्देशित कर रहे हैं। इसकी मुख्य भूमिका में इन्द्रपाल, गीता, और वीना पाल हैं। भारत भूषण भी इस चित्र में हैं, जिन्होंने महात्मा कबीर में ख्याति उपलब्ध कर ली है। इसके अलावा समरू, केसरी भी हैं। चित्र के संगीत-निर्देशक एस० के० पाल हैं, जिन्होंने नई ध्वनियाँ देकर चित्र में जान डाल दी है।

* * *

लिबरटी आर्ट डिस्ट्रीब्यूटर्स (बम्बई)

इस कम्पनी के पास "जंजीर" वितरण के लिये तैयार है। जंजीर के निर्देशक किशोर शर्मा हैं। इसकी मुख्य भूमिका में बेगम पारा, बलवन्तसिंह, जगदीश सेठी, लतिका, गोप और के० एन० सिंह हैं। इस चित्र की कहानी राष्ट्रीय तथ्यों के धरातल पर निर्मित हुई है। नृत्य भी इस चित्र में काफी हैं। वास्तव में नृत्य बड़े प्रभावशाली हैं।

* * *

रंगमहल लिमिटेड (बम्बई)

"भूख" यह चित्र कई प्रान्तों में प्रदर्शन के लिये बुक हो चुका है और कई प्रान्तों में बुक होने के लिये बात-चीत चल रही है। यह चित्र एक साथ हिन्दुस्तान के कई प्रान्तों में प्रदर्शित होगा। चित्र की कहानी बड़ी ओजपूर्ण प्रगतिशील तथ्यों को लिये हुए है?

* * *

रणजीत मूवीटोन कम्पनी (बम्बई)

रणजीत के चित्र-निर्माण-शाला में बड़े जोर-शोर के साथ महात्मा गांधी के जीवन पर एक चित्र-निर्माण करने की तैयारी हो रही है। इसके अलावा "पिया घर आ जा" प्रदर्शन के लिये तैयार है। यह सामाजिक चित्र है। इस चित्र का निर्देशन मिस्टर प्रह्लाद दत्त ने किया है। इसकी मुख्य भूमिका में करन दीवान मीना कुमारी आद्या हैं। चित्र के निर्देशक अस्पी हैं। मिस्टर अस्पी ने अपनी ऐतिहासिक चित्र "परदेशी रहमान" पूरा कर लिया। इस चित्र की भूमिका में—विपन गुप्ता राजरानी, हुस्नबानू और शेख हसन हैं। इसके निर्देशक भी प्रह्लाद दत्त हैं। "मिट्टी का खिलौना" भी दूसरे महीने तक पूरा हो जायेगा। इसमें निगार और करन दीवान कार्य कर रहे हैं।

* * *

मोहन स्टूडियो (बम्बई)

"जादू की बाँसरी" प्रदर्शन के लिये तैयार है। जादू की अँगूठी तैयार होने के नजदीक है। "जादू शहनाई" भी चित्र शीघ्र बनने जा रहा है। यह चित्र बहुत बढ़िया होगा। "रंजन मंजरी" भी बनने को जा रहा है। दो नई कम्पनियों का शूटिंग भी मोहन स्टूडियों में चल रहा है। चैनेरुडा पिक्चर्स का "जय हिन्द" निर्मित हो रहा है। नन्नूभाई भट्ट की देख-रेख में यह चित्र बन रहा है। प्रभा पिक्चर्स का "जादू चित्र" बन रहा है। इसका निर्देशन जसवन्त झवेरी कर रहे हैं। भूमिका में हैं—अनिलकुमार और शान्ता पटेल।

* * *

जीवन कला चित्र (बम्बई)

इस कम्पनी का पहला चित्र "हुआ सबेरा" है। इसकी कहानी में भारतीय राजनैतिक वातावरण का चित्रण किया गया है। चित्र की भूमिका में—नयनतारा और सपरू हैं। प्रेमकान्त, दार काश्मीरी, गिरधारी, हीरा तथा अन्य। चित्र का निर्देशन कुलभूषण अग्रवाल ने किया है। कहानीकार पं० वाजपेयी हैं। संगीत निर्देशक ग्यानदत्त हैं। कला-निर्देशक—मनू व्यास, सुमन्त व्यास हैं। यह चित्र फेमस सिने स्टूडियो में बन रहा है।

* * *

नवयुग चित्रपट लिमिटेड (पूना)

"फूल और काँटा" बन रहा है। चित्र के निर्देशन का कार्य अच्युत रांडे कर रहे हैं। अब पूरा होने को है। भूमिका में—ललिता पवार, सान्वी, मोहन सहगल, सरोज बोरकर और शालिनी है।

* * *

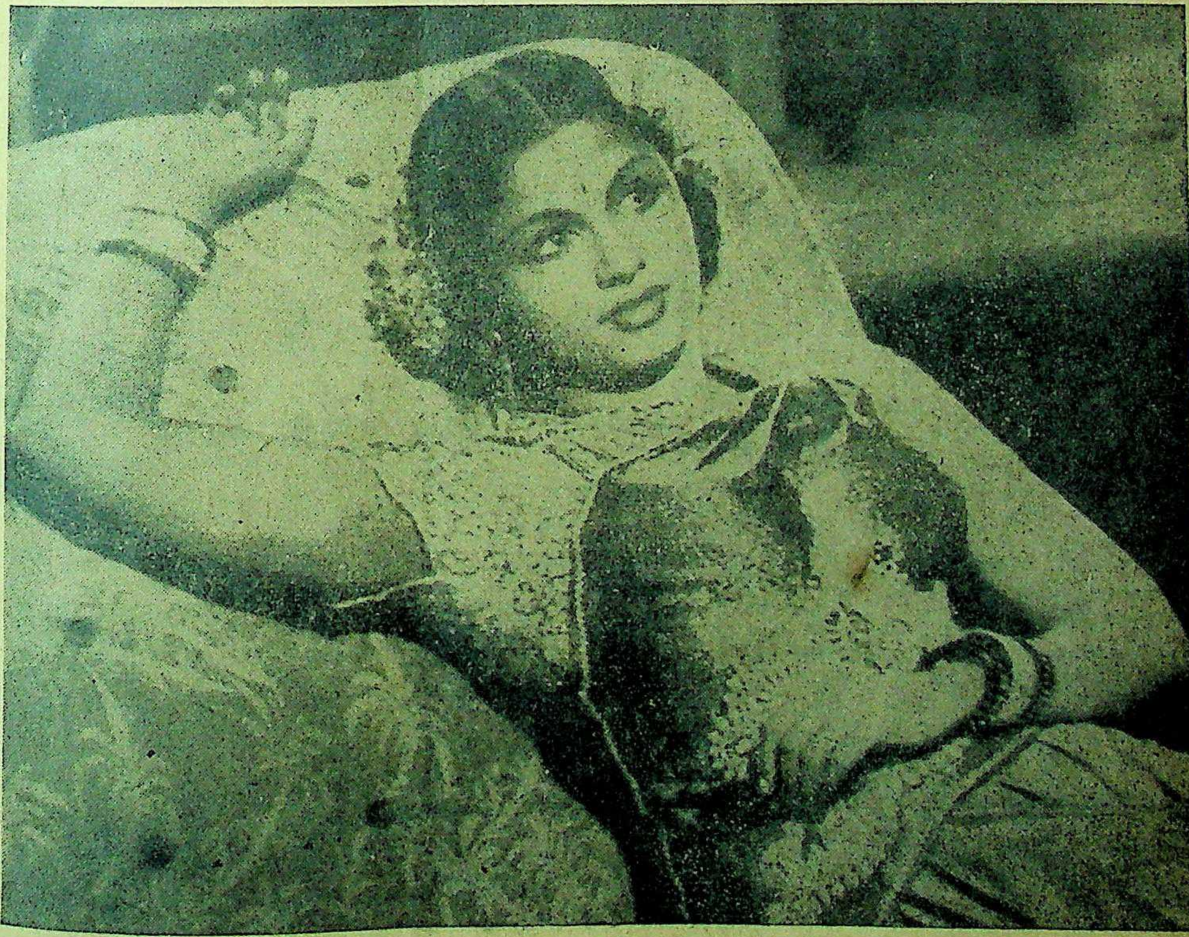

राजकुमारी चंद्रलेखा के रूप में।

स्वास्थ्य और व्यायाम

आलू अधिक खाइये स्वस्थ बनिये और शक्ति बढ़ाइये

लेखक, श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालंकार
(हिमालय हर्बल इंस्टिट्यूट गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार)

दुनिया में सबसे अधिक काम के पौदों में आलू है। समस्त संसार में यह बोया जा रहा है। पूर्व की अपेक्षा पश्चिमीय देशों में इसकी खेती अधिक होती है। मनुष्यों और पशुओं के लिए यह भोजन प्रदान करता है। इससे निशास्ता और व्यापारिक मद्यसार (एल्कौहल) भी बनाई जाती है।

इस देश की धरती का पौदा नहीं है

कहा जाता है कि इक्वेडोर में क्विटो के पड़ोस में पहले-पहल स्पेनिआर्ड्स ने आलुओं का पता लगाया था। यहाँ पर सोलहवीं सदी से इसकी खेती की जा रही थी। पेरू और मेक्सिको में भी यह पाया जाता था और इसे वहाँ पपस कहते थे। पेरू को जीतने के बाद १५३५ में अन्वेषकों ने इसे स्पेन पहुँचा दिया। यह कहा जाता है कि कार्डन नामक भिक्षु इसे पहले पहल पेरू से स्पेन ले गये थे। १५८६ में सर फ्रेन्सिस ड्रेक द्वारा यह इँग्लेंड ले जाया गया और अब बहुत सी जातियों में भोजन का मुख्य पदार्थ बन गया है। आधुनिक लेखकों के ऐसे वर्णनों से प्रतीत होता है कि जैसे इस देश की धरती पर यह पैदा ही नहीं होता था। लेकिन, यह बात ठीक नहीं मालूम देती क्योंकि चरक संहिता, कौटिलीय अर्थशास्त्र आदि संस्कृत के पुराने ग्रन्थों में हम इसका तो उल्लेख देखते ही हैं, इस प्रकार के कुछ दूसरे भोज्य कन्दों का भी वर्णन पाते हैं जिन्हें पिण्डलुक आदि नामों से खाद्य पदार्थों में गिनाया गया है। चरक, चाणक्य आदि ऋषियों ने आलुक नाम से जिस कन्द का वर्णन किया है उसी को आजकल के विद्वान् आलू व्याख्यान करते हैं। आलुक शब्द का अर्थ यदि आलू माना जाय तो स्वीकार करना पड़ता है कि भारत में यह प्रायः दो हजार साल से बोया जा रहा है और हमारे भोजनों का अंग बना हुआ है।

बनावट

तेज चाकू से एक बड़े आलू के बीच में से दो टुकड़े कर दिये जायँ तो नग्न आँखों से ही उसमें तीन तहें स्पष्ट दिखलाई देंगी। सबसे पहले बाहर का पतला छिलका रहता है। छिलके के अन्दर जरा चौड़ी एक पट्टी होती है जो सम्पूर्ण आलू का प्रायः दस प्रतिशतक होती है। इसके अन्दर आलू का गूदा रहता है जो सारे आलू का करीब अस्सी प्रतिशतक भाग होता है।

छिलके समेत खाने का महत्त्व

छिलके के नीचेवाली पट्टी में गूदे की अपेक्षा खनिज लवण और प्रोटीन काफी अधिक परिमाण में रहते हैं। कच्चे आलू के छिलके को चाकू से तराशकर जब फेंक दिया जाता है तो नीचे की तह का कुछ अंश भी साथ ही खुरच लिया जाता है जिसका मतलब है कि हम आलू के बहुमूल्य भाग को भी काफी हद तक नष्ट कर रहे हैं। वैद्य लोग रोगियों को बिना छिलका उतारे ही आलू खाने के लिए जो बतला दिया करते हैं, उसका कारण भी यही है कि आलू के उपयोगी पदार्थ से हम वंचित न रह जायँ।

प्रोटीन अधिक नहीं

आलू के गूदे में अधिकतर निशास्ता तथा नत्रजनीय पदार्थ होते हैं। इसके रस में लवण घुली हुई अवस्था में रहते हैं। यह समझ लेना चाहिए कि आलू का सम्पूर्ण नत्रजनीय पदार्थ प्रोटीन के रूप में ही नहीं विद्यमान रहता; वास्तव में आलू में प्रोटीन का परिमाण बहुत कम होता है। कुछ विद्वानों का विश्वास है कि नत्रजनीय पदार्थ का बहुत सा अंश एस्परेजीन के रूप में विद्यमान रहता है जिसमें न तो तन्तुओं को बनाने की उपयोगिता है और न ही इसमें पोषण प्रदान करने की क्षमता है। इसलिए वे आलुओं को तन्तुओं का निर्माण करनेवाले भोजन के रूप में उपयोगी नहीं समझते।

निशास्ते का उत्तम स्रोत

रासायनिक विश्लेषण में आलू की मुख्य विशेषता तो यह ज्ञात होती है कि इसमें निशास्ता बहुत अधिक होता है जिसके कारण यह व्यापारिक निशास्ते और डेक्स्ट्रीन का मुख्य स्रोत बनता है। इससे उद्योग-धन्धों में काम आनेवाली मद्यसार (एल्कौहल) भी बनाई जाती है।

पकाकर ही खाना चाहिए

आलू के निशास्ते के दाने दूसरे निशास्तों के दानों की तुलना में विशेष रूप से बड़े आकार के होते हैं। पकाया न जाय तो यह सुगमता से पचता नहीं, इसका आचूषण ठीक तरह नहीं होता और यह अफारा पैदा कर देता है। जल्दी सड़ाँध पैदा करने के गुण के कारण, कुछ लोगों के मत में, अजीर्णवालों के लिए यह अच्छा भोजन नहीं साबित होता।

खनिज लवणों का अच्छा स्रोत

आलुओं में मुख्य खनिज पदार्थ पोटाश, कैल्शियम तथा प्रस्फुरक होते हैं। इन लवणों की प्राप्ति हमें मुख्यतया आलुओं से होती है। खाद्योज (विटामिन) सी का एक बड़ा परिमाण हमें आलू प्रदान करते हैं। मशीन के अनाजों की तुलना में खाद्योज की और लोह लवण भी हमें इनसे अधिक मिलते हैं।

छिलके समेत उबालिये

दूसरे सब कन्दों के संघटन की तरह आलुओं का संघटन होता है। इसलिये इनको पकाने के लिए विभिन्न विधियों में इनकी पोषक उपयोगिता भी काफी बदल जाती है। उबालने से पहले यदि इन्हें छीलकर भिगो रखा जाय तो इनके पोषक पदार्थों—प्रोटीनों और खनिज लवणों—का एक बड़ा भाग नष्ट हो जाता है। इसी कारण हमेशा यह सलाह दी जाती है कि आलुओं को छिलके समेत ही उबालना या पकाना चाहिये।

प्रधानमंत्री पंडित नेहरू सावन-झूले से झूलकर आनन्द मना रहे हैं।

पिलपिले आलू नहीं लीजिये

भिन्न-भिन्न आकार-प्रकार के आलुओं के सम्बन्ध में यह जाँच की गई है कि उनका पाचन किस तरह होता है। बिना चबाये ही मोटे-मोटे टुकड़े निगल जाने से वे देर में हज्म होते हैं। बड़े, ताजे और स्वस्थ आलू, पकाने या उबालने के बाद जिनका आटे की तरह चूरा आसानी से बनाया जा सकता है, वे सुगमता से जल्द पच जाते हैं जो पिलपिले हों, हरे हों, उबालने के बाद भी कठोर रहते हों और जो बारीक आटे के रूप में न पीसे जा सकते हों। पाश्चात्य देशों की रसोई में सेविया बनाने की मशीन की तरह एक छोटी सी मशीन होती है जिसमें उबाले हुए आलू ढालकर भींचे जाते हैं। निचले छिद्रों से आलू के छोटे छोटे दाने निकलते हैं वे बिलकुल चावलों के समान दीखते हैं। चावलों के इस साम्य के कारण; इसलिए, अँगरेजी में एक मशीन को राइसर (चावल बनानेवाली मशीन) कहते हैं।

आर्थिक पहलू

भारत में आलू की कुल पैदावार लगभग चार करोड़ नब्बे लाख मन है। इँग्लैण्ड में प्रतिएकड़ दो सौ बीस मन आलू पैदा होता है और भारत में सौ मन प्रतिएकड़। भारत बाहर के देशों से हर साल ग्यारह लाख मन से अधिक आलू मँगा रहा है जिनका मूल्य तेंतीस लाख मन से ऊपर बैठता है। हमारे देश में मैदानी और पहाड़ी प्रदेशों में सब जगह आलू पैदा करने के लिए बेशुमार अनुकूल भूमियाँ होने पर भी यह लज्जास्पद बात मालूम होती है। दूसरे देशों के मुकाबले में प्रति एकड़ पैदावार की इतनी बड़ी
कमी का मुख्य कारण बीजों की खरा
बताया जाता है। खाद, सिंचाई और
सावधानियों का भी पैदावार पर निश्
पर्याप्त असर पड़ता है। परन्तु, यह
गया है कि यदि अच्छी तरह देखे
नीरोग तथा अच्छी किस्म के बीज
जायँ तो बहुत से उदाहरणों में पैदा
प्रतिशतक बढ़ जाती है। जो एक
सौ मन आलू पैदा करता था
तरह दो सौ मन आलू निकालता

भोजन की कमी को दूर करने का

आलू का रासायनिक संघटन
बताता है कि शरीर के लिए उप
की दृष्टि से इसे हम गेहूँ के बरा
सकते हैं। बहुत के देशों में तो यह
तरह मुख्य भोजन के रूप में
रहा है जिस तरह भारत में
चावल। हमारे देश में इस समय
बहुत अधिक कमी है। जो भूभा
पैदा करने के लिए अनुकूल है
हमारे किसान, नये तरीकों से,
फसल खूब बढ़ाकर खाद्य पदार्थों की
को दूर करने में बड़ी सहा
सकते हैं।

आटे के स्थान पर आलू

उत्तर-भारत के बड़े-बड़े शहरों में
समय आलू का मूल्य चार-पाँच
प्रतिसेर रहता है। गेहूँ का
रुपये का दो सेर भी नहीं मिलता
रुपये के चार-पाँच सेर के भाव बिक
हैं। जब इनकी भोजन-संबन्धी उप
गेहूँ के समान ही है तो परिवार के
को चाहिये कि आटे के बड़े खर्च
करने के लिए वह आलू का विनि
में प्रयोग बढ़ा दे।

देशदूत-चित्रावली

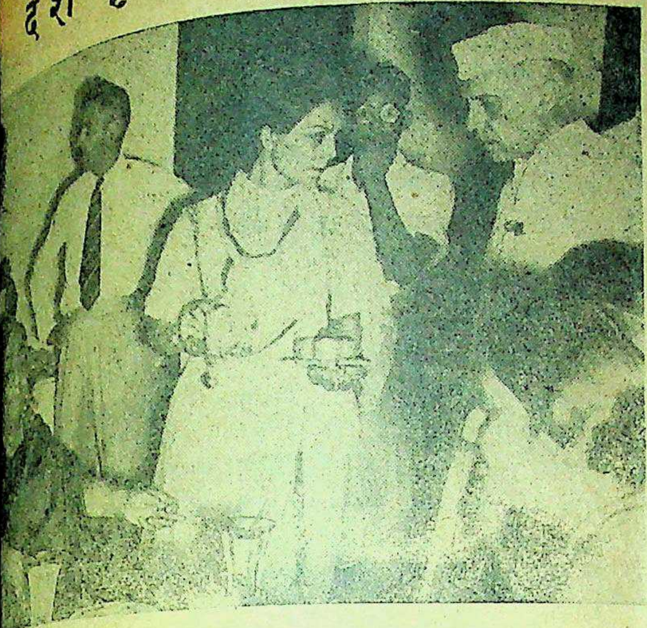

दिल्ली पटौदी राज्य की बेगम का जन्म-दिवस मनाने के अवसर पर एक प्रीति-
दिया गया था। प्रीतिभोज में नवाब पटौदी, श्रीमती सरोजिनी नायडू,
बेगम पटौदी और पंडित जवाहरलाल नेहरू दिखाई दे रहे हैं।

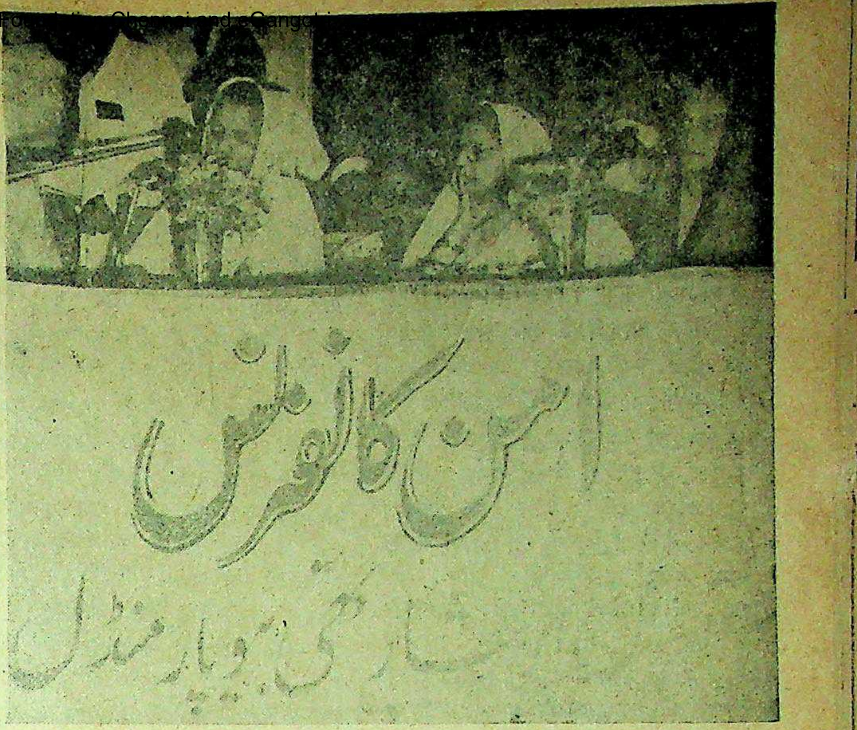

नेहरू पार्क नई दिल्ली में पिछले दिनों पुरुषार्थी व्यापार-मंडल के तत्त्वावधान में शांति-सम्मेलन बुलाया गया था। श्रीमती रामेश्वरी नेहरू सभानेत्री थीं। आचार्य विनोबा भावे ने सम्मेलन का उद्घाटन किया था। चित्र में आचार्य विनोबा भावे उद्घाटन के अवसर पर भाषण करते हुए दिखाई दे रहे हैं।

का त्योहार विशेष रूप से मनाया गया था। चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचार्य इस
र विशेष मेहमान थे। चित्र में (बाईं दाहिनी ओर) सर शंकरलाल,
श्री एम० वी० गाडगिल, माननीय राजाजी, श्रीमती हुमायूँ कबीर
और श्रीमती अजीज हुसेन दिखाई दे रही हैं।

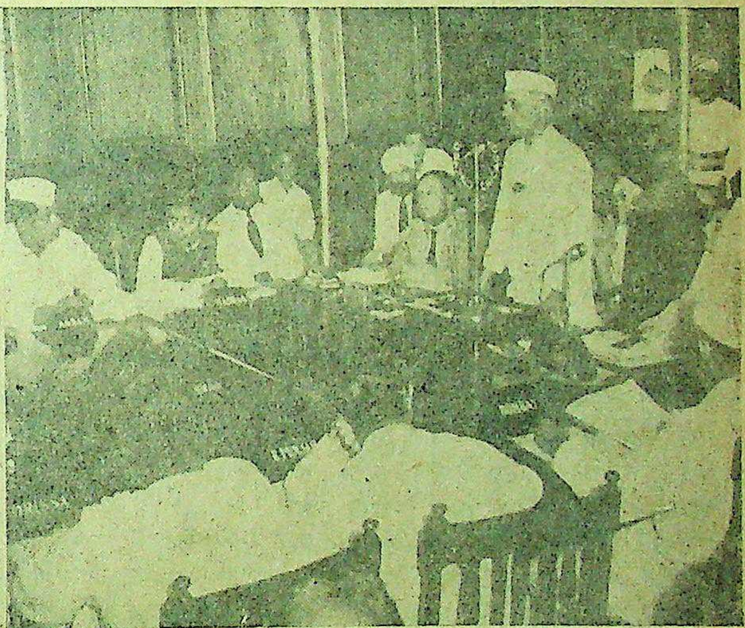

पिछले दिनों दिल्ली में प्रांतीय तथा देशी राज्यों के स्वायत्त शासन-विभाग के मंत्रियों का एक सम्मेलन बुलाया गया था। पंडित नेहरू ने सम्मेलन का उद्घाटन किया था। स्वास्थ्य मंत्रिणी श्रीमती राजकुमारी अमृतकौर सभानेत्री थीं। चित्र में पंडित जवाहरलाल नेहरू सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर भाषण दे रहे हैं।

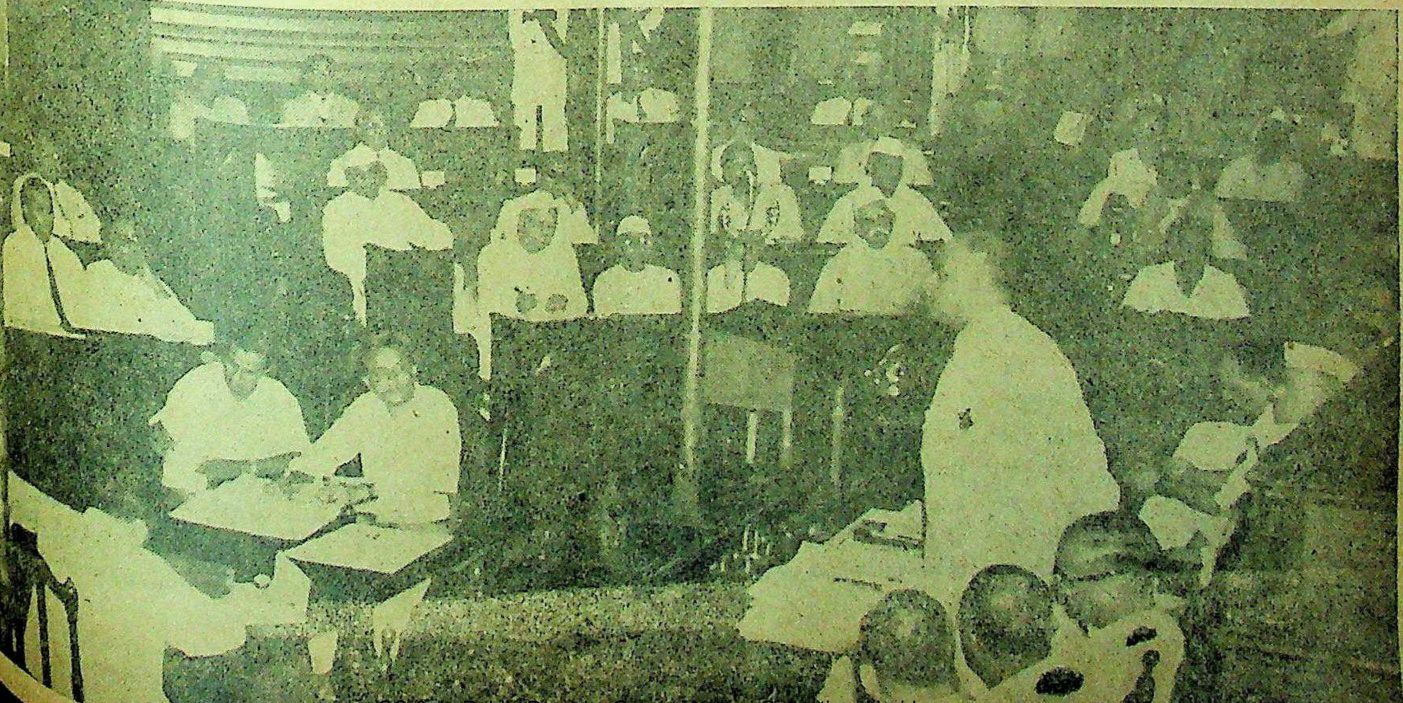

पण्डित नेहरू और राष्ट्रभाषा

(पेज ६ का शेष)

उन्हीं का सर्वत्र प्रचार होगा। फिर आज की भाँति हर दफ्तर में हजार-हजार रुपये के न अँगरेजी टाइपराइटर देखने में आयेंगे, न शीघ्रलिपिक ही। फिर जो लोग हिन्दुस्तानी की आड़ में अँगरेजी शिकार खेलना चाहते हैं, उन्हें बहुत सफलता की गुंजाइश नहीं है। हिन्दीभाषी प्रदेश अँगरेजी के साथ जो सलूक कर रहे हैं उससे बेहतर सलूक की आशा बँगला, मराठी आदि भाषाओं के प्रदेशों से नहीं हो सकती। हमारे अँगरेजी के बाबू लोगों को समझ लेना चाहिए कि अँगरेजी का मोह जितना जल्द छोड़ दिया जाये उतना ही अच्छा है। यदि केश श्वेत हो गए, सिर हिल रहा है, और इस जन्म में अपने प्रदेश की भाषा सीखने की बात असम्भव मालूम होती है, तो उनके लिए अब भी हिमालय, विन्ध्य, सतपुड़ा और श्रीशैल में कितनी खाली गुफाएँ पड़ी हैं। वह व्यर्थ आनेवाली पीढ़ी के रास्ते में रोड़े न अटकाएँ।

हिन्दुस्तानीवादी लोग, जो ऐसी अवस्था में पहुँच गए हैं, जब कि हिन्दी का सीखना उनके लिए असम्भव है, खामखाह जनता की भाषा और संस्कृत ठूँसने की बात कहकर वे अपने को धोखा देना चाहते हैं। आधुनिक ढङ्ग का सबल राष्ट्र बनने के लिए उत्सुक किसी देश के लिए यह असम्भव है कि वह अपने साहित्य को उतने ही शब्दों तक सीमित रखे जितने शब्दों का प्रयोग वहाँ की साधारण निरक्षर जनता करती है। नेहरू जी जैसों को पता भी नहीं कि जनता किस तरह की भाषा बोलती है। उनको ऐसा अवसर नहीं मिला तो उसके लिए उन्हें दोषी नहीं ठहरा सकते, हाँ, यह ठीक नहीं कि वह अपने सीखे शब्दों को जनता के शब्द मान लें। खामखाह संस्कृत ठूँसने का पक्षपाती आज कौन है? हिन्दी, बँगला, गुजराती, मराठी आदि सभी भाषाओं के उच्च साहित्य की पंडिताई दिखलाने के लिए संस्कृत शब्दों के ठूँसने को उपहासास्पद समझते हैं। नेहरू जी को आज क्या किसी समय के भारतीय साहित्य की उसकी अपनी भाषा में पढ़ने का कष्ट नहीं उठाना पड़ा? वरंच वह समझते हैं कि संस्कृत शब्दों के ठूँसने की प्रवृत्ति देश के विभाजन के बाद पाकिस्तान से खफा होकर नहीं हुई बल्कि वह उस समय हुई थी जब वह अति तरुण थे। आज संस्कृत शब्दों को तभी लिया जाता है जब विशेष भावों को प्रकट करने के लिए विशेष प्रकार के शब्दों की आवश्यकता होती है। और यह कार्य केवल संस्कृत शब्दों से ही नहीं लिया जाता बल्कि कितने ही स्थानीय बोलियों के शब्द भी उसमें लिए जाते हैं। संस्कृत के ठूँसने का अर्थात् संस्कृत के उपयुक्त शब्दों के लेने का आरोप एक ऐसे व्यक्ति के मुँह से शोभा नहीं देता जिसने अपने लिए तो अवश्य 'भारत का आविष्कार' किया है। विकसित होते समाज के प्रवर्धमान ज्ञान को समझाने के लिए प्रत्येक देश अपनी क्लासिकल भाषा का सहारा लेता है। इसके लिए नेहरू जी हमें किसके पास जाने के लिए कहते हैं, ग्रीक के पास? लातीनी के पास? या अरबी के पास? कभी तो वह कहते हैं हम धुली स्लेट से आरम्भ नहीं कर सकते, क्योंकि हमारे पास पूर्वजों की उपादेय निधि है। कोई भी समझदार भारतीय उनकी इस बात से इनकार नहीं कर सकता। फिर भाषा-निर्माण के लिए क्यों हमें धुली स्लेट हाथ में लेनी चाहिए? क्या भारत की भूमि की भाँति उसकी भाषा और संस्कृति का हमसे कोई सम्बन्ध नहीं है? क्या वह हमारे लिए अरबी-फारसी जैसी पराई चीज है? यदि हम दिन प्रतिदिन बढ़ते अपने सूक्ष्म ज्ञान के दानादान के लिए संस्कृत से शब्द न लें, परिभाषाएँ न बनाएँ तो किससे लें? अँगरेजी से अर्थात् ग्रीक, लातीनी से? यदि किसी ने विदेशी भाषा पढ़ने को कई वर्ष लगाये, किन्तु अपने देश की साहित्यिक भाषा के लिये कुछ घंटे भी बेकार समझा और वह उस भाषा को समझ नहीं पाता तो इसमें अपराध किसका है?

हिन्दुस्तानी के समर्थकों का हथियार

आज हिन्दुस्तानी के समर्थक हिन्दी प्रांतों से निराश हो अ-हिन्दीभाषी प्रान्तों से बल प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं। नेहरू जी पहले ही से दौड़-धूप कर रहे हैं और लोगों को उल्टा-सीधा समझाने की कोशिश करते हैं। उनका सबसे बड़ा हथियार है कि हिन्दी अपना साम्राज्य बनाना चाहती है, हिन्दी तुम्हारी भाषा को खा जायगी। इसलिये हिन्दी को अकेली राष्ट्रभाषा न बनने दो। इसके साथ उर्दू को भी होने दो, जिससे शक्ति-संतुलन बना रहे। क्या उपरोक्त कथन सरासर झूठ नहीं है, जिसकी 'सेवाग्रामियों से आशा नहीं की जा सकती? हिन्दी का झगड़ा बँगला, मराठी, तेलगू या मलयालम से बिलकुल नहीं है। हिन्दी उनके प्रदेश के भीतर कोई दखल नहीं देना चाहती उसे राज्यविस्तार का कोई लोभ नहीं है, उसका अपना क्षेत्र बहुत ही विस्तृत है; और वहाँ उसका स्थान अचल हो चुका है, जिसे कोई डिगा नहीं सकता। इसलिए विधान-परिषद् में अपने पक्ष का बल बढ़ाने के लिए हिन्दुस्तानी का प्रोपेगण्डा और सिंहनाद हिन्दी-भाषी प्रांतों से दूर मद्रास जैसी जगहों में किया जाता है, जहाँ यह भी सोचा जाता है कि वहाँ के बाबुओं के भीतर अब भी सूक्ष्म लोभ है कि अँगरेजी किसी तरह टिक जाती।

अ-हिन्दीभाषी प्रान्तों को सारी परिस्थिति आँख खोलकर देखनी चाहिये। हिन्दी प्रान्तों में हिन्दी सार्वभौम हो चुकी है, बङ्गाल में बँगला, असम में असमिया, उड़ीसा में उड़िया, आन्ध्र में तेलगू, तामिलनाड में तामिल, केरल में मलयालम, महाराष्ट्र में मराठी और गुजरात में गुजराती की सार्वभौमिकता को कोई नहीं हटा सकता है। आवश्यकता है एक प्रान्त के दूसरे प्रान्त के साथ, सभी प्रान्तों के केन्द्र के साथ व्यवहार के लिए एक भाषा की। क्या वह इन्हीं प्रांतीय राजभाषाओं में से होनी चाहिये या हिन्दुस्तानी, जिसे हिन्दी प्रांतों ने ठुकरा दिया है कि टट्टी की आड़ में एक और ही भाषा, उर्दू और उसकी लिपि को भी [illegible] कर ला दिया जाय? उर्दू हमारे किसी प्रांत की राजभाषा नहीं है। प्रत्येक विचारशील पुरुष मानेगा कि वैसी भाषा के लिये इन्हीं प्रांतीय राजभाषाओं में से एक को चुनना चाहिये। आज के हिन्दीभाषी क्षेत्र की भाषा सदा से सारे भारत के प्रांतों में पारस्परिक व्यवहार की भाषा मानी जाती रही। उसका प्रमाण २२ शताब्दी पहले अशोक के शिलालेखों की भाषा देती है, और आज भी साधुओं के मठों में बोली जानेवाली भाषा भी रही है। जो भाषा बहुसंख्यक जनता की भाषा और बहुस्थान-व्याप्य होती है उसे अन्तर्प्रान्तीय भाषा बनाने में आसानी होती है, वही व्यवहार कर सकती है, साध्य होती है, किन्तु यदि अ-हिन्दी भाषा-भाषी प्रांत उसके लिए किसी दूसरी प्रांतीय राजभाषा को चुनें तो उन्हें पूरी स्वतन्त्रता होनी चाहिये।

हमारी इन प्रान्तीय राजभाषाओं में से किसी के भी सारे भारत की राष्ट्रभाषा होने में हर्ज नहीं है। नेहरू जी हिन्दी में संस्कृत शब्दों के ठूँसने की बात कहते हैं। इन्हें मालूम नहीं कि ठूँसना किसे कहते हैं। इसे देखने के लिए उन्हें हिन्दी, बंगला, नहीं द्रविड़ भाषाओं में से एक मलयालम की ओर निगाह करनी चाहिए, जिसमें ८० और ९० प्रतिशत संस्कृत के शब्द मिलते हैं। इसे हम श्लाघनीय नहीं कहते। व्यर्थ ही संस्कृत शब्दों का ठूँसना या तो सस्ती पंडिताई दिखलाना है या भारी अदूरदर्शिता और हठधर्मी का परिचय देना है। आदि काल से विकसित होती आई भाषाओं में जो नए शब्द अपभ्रष्ट होकर या दूसरी तरह चले आये वे हमारी महत्वपूर्ण निधि हैं। अगत्या ही संस्कृत शब्दों को लेना चाहिए और ठूँसने के लाञ्छन की बिल्कुल परवाह न करके लेना चाहिए। सामान्य उपयोग के शब्द हिन्दी में एक लाख से अधिक नहीं हैं और उनमें दो-तिहाई के करीब शुद्ध संस्कृत के हैं। यही बात प्रायः दूसरी प्रान्तीय भाषाओं के लिए है। किन्तु वही भारत में उच्चतम न्यायालयों, पार्लियामेंटों और विश्वविद्यालयों के व्यवहार के लिए इससे तिगुने-चौगुने शब्दों की आवश्यकता होगी। सिर्फ शासन-विभाग के लिए हमें १० हजार शब्दों को जरूरत पड़ी। कानून के लिए भी हमें उतने ही शब्दों की आवश्यकता पड़ेगी। हिन्दी-परिषद्, प्रयाग की ओर से जो कोष छप रहा है उसमें तीन हजार शब्द हैं, जो सिर्फ तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकते हैं। प्रयोगीय साइंस के लिए डेढ़ लाख शब्दों की आवश्यकता होगी। युद्ध-विज्ञान, दर्शन, कला आदि के लिए और भी भारी संख्या में शब्द चाहिए। इस तरह सब मिलाकर तीन लाख शब्दों की और आवश्यकता होगी। हम अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली के पक्षपाती नहीं हैं, क्योंकि उसका अर्थ हमारे विलायती नक्कालों के लिए अँगरेजी शब्द होता है। यद्यपि इस बात को जर्मन, रूसी, जापानी नहीं मानते। हाँ, हम किसी तरह से विशेषज्ञों की मंडली से बाहर दूर तक प्रचलित हो गए शब्दों के [illegible] के पक्षपाती नहीं हैं। हम पेन्सिल

को आलेखनी, स्टूल और बैंच को
रेल को धूमयान नहीं बनाना
किन्तु ऐसे शब्द हमारे परिभाषा-
सौ में नहीं, हजार में एक होंगे।
सारे शब्द सभी प्रान्तीय भाषाएँ
से लेंगी। हमें पूर्ण कोशिश करनी
सारे शब्द सभी प्रान्तीय भाषाओं
हों। शासन-शब्दकोष तैयार करते
बँगला, मराठी तथा दूसरी भाषाओं
प्रयत्नों का उपयोग किया है।
भाषा में लेने का प्रयत्न का इस प्र
योग हो सकता है तो हमें परिभाषा-
के काम को एक ही प्रान्त में नहीं
प्रान्तों में बाँट कर कराना चाहिए
तरह के संगृहीत शब्दों में मुश्किल
में एक शब्द ऐसा होगा, जिसे
भाषाओं की परम्परा एक दूसरे से
बाधक होगी।

सारांश यह कि जिन संस्कृत
के प्रचार को नेहरू जी ठूँसना
वे अनिवार्यतया आवश्यक और
ही नहीं हैं, बल्कि वे सारे भा
भाषाओं के शब्दकोष को ८०-८५
शत तक एक कर देते हैं। संस्कृत
ठूँसने को सिर्फ हिन्दी में ही नहीं
जा सकता। उसके लिए आपको
हुक्म निकालकर बँगला, उड़िया
प्रान्तीय भाषाओं को ऐसा न करने
लिए बाध्य करना और सूर, तुलसी
कृतिवास, चंडीदास के महान् काव्यों
छापना, पढ़ना भी दंडनीय घोषित करना
होगा। फिर एक हिन्दुस्तानी ही नहीं,
बंगस्तानी, ओडियस्तानी, मराठस्तानी
तेलुगुस्तानी आदि न जाने कितनी 'स्ता-
नियों' को राजभाषा पद पर प्रतिष्ठित करना
पड़ेगा। तब जाकर नेहरू जी की 'ज
की भाषा' अपनाने की प्रतिज्ञा पूरी
सकेगी।

नागरी में शुद्ध नाम लिखे जायँ

अंत में हमें हिन्दुस्तानी और हि
स्तानी की आड़ में अँगरेजी के हिमायतियों
यही कहना है कि भारतीयों ने स्व
को प्राप्त करने में जो सफलता
की है उसका प्रभाव बहुत गम्भीर
दूर तक होकर रहेगा, जिसे सम
"भारत के आविष्कार" कर्ता
धोखा खाया करते हैं। अब अँगरेजी
खोये स्थान को नहीं प्राप्त कर सक
और न भारत-प्रजातन्त्र के जन्म के
कर इँग्लैंड के बादशाह का सिक्का
चलाया जा सकता है। "ते हि नो दि
गताः" का रोना छोड़कर हमें
ताराचन्द-आजाद को भविष्य
सामने सिर झुकाना चाहिए और
और नागरीलिपि को हिन्द
राष्ट्रभाषा तथा सर्वत्र व्यवसाय
और लिपि स्वीकार करनी चाहिए
भारत-सरकार को सबसे पहले देश
सर्वे विभाग को आज्ञा देनी चाहिए
अँगरेजी के भ्रष्ट उच्चारणों के आधार
वाले नक्शों का छापना बन्द करे
आगे से नागरी अक्षरों में स्थानीय
के उच्चारण के अनुसार भारत
नहीं, दुनिया भर के भौगोलिक
साथ नक्शे छापे जायँ। जिसमें न
को 'कलकुत्ता', 'मुत्रा' कहने का
मिले, और न हमें इस्टैलिनग्रेड (स्ता
ग्राद) और व्लैडीवोस्टक (व्ला
कहने का।

मातृमण्डल

सोवियत रूस में स्त्रियों के अधिकार

नागरिक स्वतन्त्रता में पुरुषों की भाँति स्त्रियों का भी समान अधिकार है

लेखिका, कुमारी विमला देवी राजदान, बी० ए०

८,००,००० पाठशालाओं की अध्यापिकायें भी सम्मिलित हैं। दस लाख से ऊपर सार्वजनिक स्वास्थ्य-सम्बन्धी-संस्थाओं में हैं, जिनमें से १२६ हजार वैद्या हैं। करीब दस लाख की संख्या में औरतें संस्थाओं और रसायनशालाओं में अनुसन्धान करती हैं। प्रसिद्ध स्त्री-वैज्ञानिकों के नाम भी देश में सर्वपरिचित हैं जैसे कि लिना स्टर्न जो कि विश्वविद्यालय की सदस्य है और सोवियत संघ के विज्ञान-परिषद् की सदस्यायें अना पनक्रटोवा और पलगीया पोलूबरीभेवा, औषधालय की सदस्य कोचिना और मास्को स्टेट विश्वविद्यालय की प्रोफेसर ओलंगा पोड्यसोटस्काया, प्रोफेसर मिलित्सा नकीना इत्यादि।

सोवियत-संघ के और निवासियों की तरह सोवियत की स्त्रियाँ भी अपने महान् प्रजातांत्रिक अधिकारों—भाषण, प्रेस सभा करने की आजादी और सांस्कृतिक और राजनैतिक कार्यों को बढ़ाने के लिये सार्वजनिक संस्थाओं में संगठित होने के अधिकारों का बहुत प्रयोग करती हैं। स्त्रियों की दर्जनों पत्रिकाएँ वहाँ प्रकाशित होती हैं। काम करनेवाली लाखों स्त्रियाँ ट्रेड यूनियनों में संगठित हैं। बीस लाख के करीब किसान औरतें सहकारी (कोआ-परेटिव) संस्थाओं की सदस्या हैं। युवक कम्यूनिस्ट लीग में लाखों लड़कियाँ हैं। दस लाख से अधिक औरतें कम्यूनिस्ट पार्टी (बोलशेविक) की सदस्या हैं।

सोवियत-सरकार द्वारा परिवार का जो ध्यान रक्खा जाता है और माँ-बच्चों के हितों की रक्षा की जाती है उसके परिणाम-स्वरूप सोवियत स्त्रियाँ सार्वजनिक कार्यों में बड़ी तेजी से भाग लेने लग जाती हैं। सोवियत-सरकार प्रतिवर्ष बड़े परिवारों की माताओं और अविवाहित माताओं, बच्चों की संस्थाओं को चलाने के लिये और बढ़ती हुई संतति की शिक्षा के सहायतार्थ बहुत-सा धन देती हैं। इनके ऊपर सन् १९४७ में ही लगभग १० अरब रूबल व्यय किये गये। सरकार द्वारा इस तरह लोगों का ध्यान रखने के परिणामस्वरूप महान् सोवियत जनता की लड़कियाँ अपने देश की समाजवादी, आर्थिक व्यवस्था और संस्कृत की अधिकाधिक उन्नति के लिये बड़े उत्साह से काम करती हैं। जीनैड़ा मनशिकोवा, जिसने सोवियत-संघ में सबसे अच्छी कपड़ा बुननेवाली की पदवी प्राप्त की, कहती है, "यह अनुभव करने से कि तुम अपनी जनता, अपने देश के हित में कुछ काम कर सकती हो, बहुत ही आनंद मिलता है।" सन् १९४७ में अधिक पैदा-वार होने पर सहस्रों सामूहिक खेतों की स्त्रियों को आर्डर और मेडल (तमगे) दिये गये; खेतीबाड़ी में सबसे श्रेष्ठ श्रमिकों में से, जिन्हें समाजवादी मजदूर के वीर की उच्च पदवी मिली है, सैकड़ों स्त्रियाँ भी हैं।

वैज्ञानिक, यन्त्रकार, अध्यापिकायें, लेखिकायें, नेत्रियाँ और चित्र बनानेवाली स्त्रियाँ समाजवादी संस्कृति की कीर्त्ति को बढ़ाती हैं जो कि संसार की सबसे उन्नत संस्कृति है। २५९ स्तालिन पुरस्कार स्त्रियों को उनके विज्ञान, यन्त्रकला, संस्कृत और कला में अत्युत्तम कारनामों के लिये दिये गये हैं।

महान् देशभक्ति के युद्ध के दौरान में सोवियत स्त्रियाँ सोवियत सेना और गुरिल्ला टुकड़ियों में भरती होकर स्वदेश की रक्षा के लिये उठ खड़ी हुईं। स्त्री डाक्टरों, नर्सों, सिगनल देनेवाली सेना की औरतों, हवाई जहाज को गोला मारकर भूमि पर गिरानेवाली, तोप चलानेवाली स्त्रियों, शत्रु के खेमों में रात को छिपकर गोली बरसानेवाली स्त्रियों और हवाबाज स्त्रियों ने युद्ध के सारे खतरों और कष्टों को बड़ी वीरता और दृढ़ता से सहन किया। शत्रु से लड़ने में उनकी वीरता और पराक्रम के लिये सोवियत-सरकार ने १,२०,००० स्त्रियों को विभूषित किया और ६२ स्त्रियों को सोवियत-संघ की वीर नारियों की पदवी दी।

दाद, खुजली
और
हरेक मेलका चमडीका दर्दोंके लीए
गत ५० वर्षों से
सपट
लोशन

जग विख्यात

कपड़े खराब नहीं करती।

नक्कालों से सावधान

सपट एन्ड को. डिपार्टमेंट U.P, DAI.
बम्बई २

सोवियट रूस की स्त्रियाँ खेतों में काम करने के लिये समूह बनाकर जा रही हैं।

सम्पादक के नाम चिट्ठियां

स्वतन्त्र इकाई की माँग ?

टेहरी में गत जनवरी ४८ की क्रांति ने टेहरी के राजतन्त्र को समाप्त कर प्रजातन्त्र कायम किया गया। केवल छ: माह की अवधि के लिए एक अंतरिम मंत्रिमण्डल कायम हुआ। मंत्रिमण्डल टेहरी के प्रजामण्डल द्वारा निर्वाचित है। प्रजामण्डल की नीति पर ही राज्य का वर्तमान और भावी शासन आधारित है। टेहरी का प्रजामण्डल युक्तप्रान्तीय कांग्रेस में विलीन हुआ है, अतः राज्य के शासन व नीति का भी युक्तप्रान्त के शासन में विलीन होना अवश्यम्भावी है।

प्रजामण्डल ने अपने इस छोटे से जीवन में इस राज्य की जनता में जो जागृति और स्फूर्ति फूँक दी थी, आजादी की जो आवाज लगाई थी, उसी का परिणाम यह हुआ कि इस सामन्तशाही राज्य में जनता को विजय रक्तहीन क्रांति से उपलब्ध हुई। जनता को कुछ नररत्न तो अवश्य इस आजादी की भेंट देने पड़े, जिसका परिणाम यह हुआ कि आज टेहरी-निवासी प्रजा-राज्य कायम किए हुए हैं। जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों ने शासन-भार अपने कन्धों पर सँभाला है। हमारे तपस्वी नेताओं ने आजादी प्राप्त करने के हेतु व्यक्तिगत स्वार्थों से बहुत ऊपर उठकर कार्य किया है। किन्तु आज का मंत्रिमण्डल जिसकी अवधि १४ अगस्त को पूरी हो गई है, प्रजामण्डल के हाथ की कठपुतली बना हुआ है जब कि इनके कन्धों पर जनता ने निःस्वार्थ सेवा करने का भार दिया था। जनता को मंत्रिमण्डल से जो आशाएँ थीं, उन पर प्रजामण्डल के कर्णधारों ने व्यक्तिगत स्वार्थ और संकुचित दायरे में पड़कर पर्दा डाल दिया। मंत्रिमण्डल ने इस छोटे से समय में जितने कार्य किए हैं, वे अवश्य प्रशंसनीय हैं; किन्तु यह कार्य ठीक इस प्रकार हुए जिस प्रकार एक अज्ञान बालक किसी वस्तु को अधिक मात्रा में हथियाने की चेष्टा करता है और जब वस्तु अधिक मात्रा में उसके सम्मुख आती है, तो वह तृप्त हो जाता है। मंत्रिमंडल के बनने के बाद प्रजामण्डल को रचनात्मक और निर्माण-कार्य में व्यस्त हो जाना था, जिससे प्रजा में संतोष की लहर दौड़ती। किंतु इसके विपरीत नव-निर्वाचित प्रजामण्डल व्यक्तिगत स्वार्थों को ध्रुव बनाए रखने के हेतु राजनीति में उलझ गया। आज प्रजामण्डल की नीति एकदम बदल चुकी है। प्रजामण्डल ने एक संकुचित दायरे की नीति अपनाई है, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण उसकी स्वतन्त्र इकाई की माँग है। प्रजामण्डल में आज दो विचार-धाराएँ काम कर रही हैं। एक ओर तो एक पार्टी ने स्वतंत्र इकाई की माँग की है और दूसरी ओर कुछ नेताओं ने विलीनीकरण पर जोर दिया है।

वास्तव में इस छोटे से राज्य का विलीनीकरण में ही हित है। यहाँ की आर्थिक, भौगोलिक और राजनीतिक परिस्थितियों का सुधार तभी हो सकता है, जब राज्य विलीन हो जाये। अब राज्य के स्वतन्त्र अस्तित्व की आवश्यकता नहीं है। यहाँ भी हमारे नेताओं को विलीनीकरण का प्रश्न ध्यान में रखकर निस्पृहता, दूरदर्शिता और बुद्धिमानी का प्रमाण देना है, राज्य को विलीन न करना हास्यास्पद और भ्रमपूर्ण है। जनता की इच्छाएँ तीव्र गति से पूर्ण होकर अब विलीनीकरण की ओर अग्रसर हो रही हैं। छोटे से और संकुचित दायरे के भीतर जनता नहीं रहना चाहती, अब हमारी जिम्मेदारी बढ़ गई है और हमारा प्रत्येक निर्णय हमारी शान और गम्भीरता के अनुकूल होना चाहिए।

टेहरी राज्य में ९० प्रतिशत जनता गरीब किसान है और बाकी १० प्रतिशत व्यापारी, नौकरी पेशे व अन्य धन्धों के लोग हैं। स्वतन्त्र इकाई की माँग ९० प्रतिशत जनता के हितों की अवहेलना है। आज प्रजामण्डल द्वारा निर्मित सरकार भी इस ओर प्रचार कर रही है, जब कि शासन को इस ओर से एकदम अलग रहना था। राज्य भर में कर्मचारियों द्वारा बेचारी ९० प्रतिशत अशिक्षित और गरीब जनता में जबरदस्ती प्रचार कर विधान-सभा में फलीभूत होने के हेतु ग्राम-पञ्चायतें कायम करने का प्रयास हो रहा है। आज राज्य में वही पुराने कर्मचारी हैं, जिनको देखकर जनता राजा साहब के सामन्तशाही काल में कोसों दूर भागती थी।

इस स्वतन्त्र इकाई की माँग पर इन राजतन्त्र वादियों को अपना जाल बिछाने का अच्छा अवसर प्राप्त हो रहा है, और वे इस प्रकार की प्रतिद्वन्द्विता देखकर अपने कारनामों में सफल होने की आशा कर रहे हैं—प्रजामण्डल जैसी जिम्मेवार संस्था व उसके द्वारा निर्मित सरकार ने इस क्षणभंगुर और स्वार्थलीन नीति अपनाने पर उस पुरानी मशीनरी के हाथ खुले कर दिये हैं। होना यह चाहिये कि तथ्य बताकर जनता के सामने स्वतन्त्र इकाई और विलीनीकरण का वैधानिक सच्चा और सही संतुलन कर उसके लाभ हानि बताकर उसे संतोष दिया जाये। फिर जनता जिसमें अपना हित समझे, वही उसका सच्चा मार्ग बने।

आज भारतवर्ष के कर्णधार प्रांतीयता को उखाड़ फेंकना चाहते हैं। परन्तु टेहरी की जिम्मेवार संस्था स्वतन्त्र इकाई की माँग द्वारा प्रांतीयता का स्पष्ट उदाहरण दे रही है। भारतवर्ष में टेहरी से कई गुने बड़े-बड़े राज्यों ने अपने विचारों को व्यापक करने, एक व्यापक क्षेत्र में रहना अधिक उपयोगी समझ, अपने को बड़े-बड़े संघों या प्रांतों में विलीनकर बुद्धिमानी का परिचय दिया है। क्या ये राज्य स्वतन्त्र इकाई के रूप में नहीं रह सकते थे ? उन राज्यों के कर्णधारों ने वहाँ की जनता ने अपने हित को खूब सोचा है और अपनी आर्थिक, भौगोलिक, सामाजिक, राजनैतिक परिस्थिति को उन्नत और व्यापक बना दिया है। आज ये राज्य विशाल प्रांतों के रूप में भारत के गौरव हैं। अतः टेहरी की जनता को विलीनीकरण पर अभिमान होना चाहिये और स्वतन्त्र इकाई की माँग को तत्काल दबा देनी चाहिये।

टेहरी
(गढ़वाल) —मधुसूदन मोतीवाल

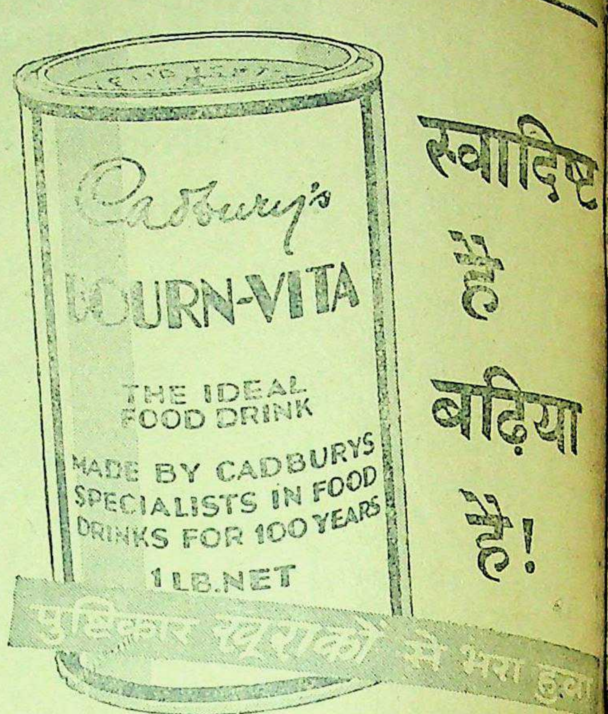
Cadbury's
BOURN-VITA
THE IDEAL FOOD DRINK
MADE BY CADBURYS SPECIALISTS IN FOOD DRINKS FOR 100 YEARS
1 LB. NET
पुष्टिकर पदार्थों से भरा हुआ
स्वादिष्ट है
बढ़िया है!

'बोर्न-विटा' में हड्डी बनाने और ताक़त देनेवाले उपादान ९५ सैकड़ा से अधिक ही होते हैं। साथ ही साथ यह ऐसा मज़ेदार होता है कि इससे हाज़मा तेज़ हो जाता है और यह आसानी से हाज़्म भी हो जाता है। ख़ास तौर पर गर्भ और स्वास्थ्य लाभ के दिनों में।

केडबरी का
बोर्न-विटा
केल्सेयम और ग्लाइकोज से भरपूर

K. B. 1

२०॥) में ज्वेलवाली रिस्टवाच

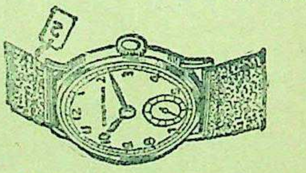

स्वीसमेड ठीक समय देनेवाली ३ वर्ष की गारण्टी। गोल या स्क्वायर सेप सुपिरियर २०॥), फ्लाट सेप क्रोमियम केस ३०), फ्लाट सेप रोल्ड गोल्ड १० वर्ष गारण्टी ५५), फ्लाट सेप १५ ज्वेल क्रोम केस ३८), फ्लाट सेप १५ ज्वेल रोल्ड गोल्ड ७५)।

रेक्टेंगुलर, कर्व या टोनो सेप क्रोमियम केस ४२), सुपिरियर ४५), गोल्ड ६०), रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेलयुक्त ९०) अलार्म टाइम पीस कीमत १८), २२) बीग साइज २५) पोस्टेज अलग कोई दो घड़ी लेने से माफ।

एच० डेभिड, एण्ड को० (S.P.)
पो० बक्स नम्बर ११४२४, कलकत्ता

मेरी तरह
हासिल क
खराब खून को साफ कर
डा. वामन गोपाल
आयोडाइज्ड
सार्सापरिला
इलाहाबाद एजन्ट
चम्पूलाल जौहरी एल०
एन्ड ब्रद

देशदूत में विज्ञापन दे
लाभ उठाइये।

ादिष्ट
है
ढ़िया
है!
रा हुआ
दान ९५ सैकड़ा से
होता है कि इससे
भी हो जाता है।
टा
भरपूर
K. B.
री तरह
हासिल
विज्ञापन दे
उठाइये।

वाददाताओं के पत्र

हैदराबाद स्टेट कांग्रेस की कार्य श्री आज्ञानुसार ८ अगस्त १९४८ हैदराबाद दिवस मनाया गया। हैदराबाद स्टेट कांग्रेस जिला र विभाग ने भी 'हैदराबाद वी दूसरे रूप में मनाया। इसके के कानों में जब से कासिम र रजाकारों के "लाल किले पर झण्डा गाड़ दो" की ध्वनि े उन्होंने यह निश्चय किया था क्रियात्मक प्रत्युत्तर दिया जाय। ल को उस्मानाबाद के स्वयं- भात फेरी निकाली किन्तु भारत ों और नगरों में नहीं, अपितु कदम निजाम स्टेट की ओर बढ़ाया। सिर से कफन अत्याचारों का प्रतिकार करने को धारण किये हुए जब यह "कदम-कदम बढ़ाये जा" का ते हुए और ध्वजा को निजाम स्टेट की सीमा में े लाल किले पर आसफिया हराने की शेखी मारनेवाले के खिसकने लगे। स्टेट और स्वयंसेवकों ने स्टेट की ग्राम "वांगी" में भारतीय ो लहराया।

के प्रथम दर्शन के बाद इन स्वयंसेवकों का उत्साह गया। उनके हौसले बढ़ते गये धीरे-धीरे निजाम स्टेट के ६१ अधिकार जमा लिया। रजाकारों पुलिस ने कुछ स्थानों पर का मुकाबला किया किन्तु होना पड़ा।

प्राप्त के साथ ही ग्रामीणों सभा में यह घोषणा की गई ग्राम निजामी हुकूमत से स्वतंत्र यहाँ प्रजातंत्र के अनुसार उत्तर- शासन स्थापित किया गया त् स्टेट कांग्रेस ने वहाँ का ने हाथ में लिया।

ग्रामों का क्षेत्रफल ६-७ सौ है। इसमें ७५,००० लोग बसते की आय २॥ लाख रुपये है। शोलापुर जिले के बार्शी तालुके पृथक् करता है जिसके कारण निजाम स्टेट में द्वीप बन इन ६१ ग्रामों के एक ओर से बार्शी-रोड जाती है। दूसरे किनारे रेलवे लाइन है। इन ६१ पुनः प्राप्त करने के लिये उस्माना- जिले के कलेक्टर ने एड़ी-चोटी लगाया। किन्तु हैदराबाद की पुलिस और रजाकारों को स्टेट मोर्चा तोड़ने में सफलता नहीं

ग्रामों में शान्ति स्थापित करने के पुलिस-विभाग स्थापित किया है, जिसकी सहायता के लिए एक सेना भी है। जनता ने एक भ्रमण जज भी नियुक्त किया है। से भी झगड़ों का निपटारा किया जाता है। अपराधियों के लिए एक जेल खाना भी रखा गया है। एक भ्रमण औषधालय द्वारा जनता के स्वास्थ्य-रक्षा का कार्य होता है। ग्रामीणों की जीवनोपयोगी वस्तुओं की पूर्ति के लिए एक सप्लाई-विभाग भी है। जिन ग्रामीणों को रजाकारों ने पूर्णतः लूटकर, निःसहाय बना दिया था उनके निवास और भोजन का प्रबन्ध स्टेट कांग्रेस की ओर से किया जा रहा है। इस समय ग्राम के ग्रामीण प्रसन्नता से जीवन बिता रहे हैं। इस घटना के बाद रजाकारों के सर्वेसर्वा और लाल किले पर आसफिया झण्डा लहराने के प्रस्तावक कासिम रिजवी आजकल जिला उस्मानाबाद में इस फिक्र में चक्कर काट रहे हैं कि कम से कम अपने इलाके में ही आसफिया झण्डा लहराने का अवसर मिले।

—संवाददाता

* * *

जयपुर, २१ अगस्त, १९४८, प्रतिनिधि सभा में बजट पर हुई बहस का उत्तर देते हुए उन्नति सचिव श्री दौलतमलजी भंडारी ने बताया कि राज्य के पास काफी मात्रा में अनाज है, और अगर ईश्वर की कृपा रही, वर्षा मौके पर होती रही और फसल भी अच्छी रही तो जयपुर को कोई भी डर किसी बात का नहीं है।

जहाँ तक जयपुर सरकार के शासन तन्त्र चलाने का सवाल है, मैं कहना चाहूँगा कि वह बिना किसी भेदभाव के बिना किसी पक्षपात के चलाया जायगा। चाहे वह जागीरदार हो, व्यापारी हो, प्रजा मंडली हो या और किसी वर्ग का हो, यदि वह अपराध करेगा तो उसे दंड दिया जायेगा। बिना किसी रू-रियायत के यह बात जयपुर के प्रधान सचिव पंडित हीरालाल शास्त्री ने प्रतिनिधि सभा में बजट पर हुई बहस का उत्तर देते हुए कही।

जागीरदारों के बारे में बोलते हुए आपने कहा जागीरदारों को चाहिए कि वे १७वीं शताब्दी के स्वप्नों को छोड़कर वास्तविक स्थिति को पहचानते हुए, जनता की मनोभावना का आदर करते हुए, अपने को इस २०वीं सदी में ढाल लें। वे अपनी खुशी से त्याग और देश-भक्ति का परिचय दें, अपने कुछ स्वार्थों को तो छोड़ें, देश तब उनकी कद्र करेगा और समय किसी से न रुकने वाले तकाजे को पूरा कर सकेंगे। जागीरदारों के प्रतिनिधियों की ओर से समय-समय पर किये गये इस दावे का उल्लेख करते हुए कि वे भी देश के लिये सब कुछ करने को तैयार हैं, आपने कहा यह तो उनके सोचने-समझने की बात है कि १९४८-४९ में हमें राजतन्त्र को किस प्रकार चलाना है। इस जमाने में यह सोचना पड़ेगा कि जमीन पर जो काम करते हैं उनकी आमदनी मानी जाय या फिर उनकी आमदनी मानी जाय जो खुद शासन वहाँ करते हैं और दूसरों से करवाते हैं। उन सब बातों पर बड़े ठंडे दिल से विचारना होगा। मजदूरों का और किसानों का जो हक है वह तो उन्हें देना ही होगा, आप कहते हैं हम सब कुछ करने को तैयार हैं, पर क्या करने को तैयार हैं यह पता नहीं, आपको इसलिये त्याग करना पड़ेगा। उन स्वार्थों का जिनका आप सदियों से इन गरीबों की कमाई से उपभोग करते आये हैं। हम तो शासन-कार्यों को मिल-जुलकर चलाना चाहते हैं। हम किसी के पक्ष या विपक्ष में हैं, ऐसा भ्रम अगर किसी को हो तो उसे निकाल देना चाहिये।

—संवाददाता

पिलानी (जयपुर) हिन्दी-साहित्य-समिति बिड़ला कालेज की प्रथम बैठक प्रो० सहल के सभापतित्व में हुई। सभापति जी ने समिति का थोड़े शब्दों में इतिहास बताया। श्री 'चंचल' ने समिति के भावी कार्य-क्रम वयोजना पर प्रकाश डाला। पदाधिकारियों का चुनाव इस प्रकार हुआ। उपसभापति सर्वश्री श्रीयुत केशरदेव शर्मा बी० ए० (फाइनल), प्रधान मन्त्री रामदेव? सिंह चौधरी बी० ए० (फाइनल) 'विशारद, उपमन्त्री हरलाल सिंह बी० ए० (प्रिवियस), कोषाध्यक्ष सुखदेव आर्य बी० काम (फाइनल) कार्य कारिणी तथा विभागीय मन्त्रियों का चुनाव निम्न प्रकार से हुआ। कविकुल संयोजक प्रो० अमरनाथ जौहरी एम० ए०, प्रो० पतराम गौड़ 'विशद' एम० ए०, जगदीश चन्द्र जोशी सम्पादन विभाग, प्रो० सहल, राधेश्याम शर्मा (संयोजक), गीएडाराम 'चंचल', गंगाप्रसाद शारदा शशिप्रभा स्वाध्याय मंडल:—डा० वेणीचन्द्रजी महेन्द्रा, श्री केशरदेव शर्मा (सं), श्री ऋषिकेश उपाध्याय आयोजन समिति, प्रो० गौहरी, प्रो० यागनिक जी, केशरदेव (संयोजक), हरलालसिंह सुखदेव आर्य, प्रचार और प्रकाशनविभाग (संयोजक) सुखदेव आर्य, प्रो० सहल, 'चंचल' अखिल विनय, केशरदेव शर्मा, सुखदेव, गंगाप्रसाद शारदा, श्री शशिप्रभा, ऋषिकेश परीक्षा व प्रतियोगिता विभाग (संयोजक), जीवनलाल जैन, शारदा, प्रो० गौड़ प्रधान मन्त्री जी हर विभाग के ऐक्स ओफिशियों रहेंगे।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, अगस्त ११ को तुलसी-जयन्ती और हिन्दी-दिवस बड़ी शान से मनाया गया। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन प्रयाग के आये हुए गश्ती पत्र के आदेशानुसार हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित करने के लिये और देवनागरी लिपि को स्वीकृत करने के लिये सर्वसम्मति से प्रस्ताव स्वीकृत किया गया।

—संवाददाता

जयपुर धारा-सभा ने अपने सदस्य श्री सुखदेव पांडे, का अपना प्रथम गैर-सरकारी उप सभापति निर्विरोध निर्वाचित किया। सभा के सभापति दीवान, सर वी० टी० कृष्णमाचार्य ने रावल रघुवीरसिंह ज़ी बिसाऊ, श्री नेमीचन्द्र जी कासलीवाल और पुरोहित श्री स्वरूपनारायण जी को सभापति एवं उपसभापति की अनुपस्थिति में अध्यक्षकार्य करने के लिए (पैनल आफ चेयरमैन पर) नियुक्त किया है।

जयपुर धारा-सभा के सामने १९४८ व ४९ का बजट पेश करते हुए जयपुर के मुख्य सचिव पंडित हीरालाल जी शास्त्री ने प्रकट किया कि राज्य कों इस वर्ष में २९ लाख रुपये की आय और होगी। इससे राज्य की कुल आमदनी ४ करोड़ रुपये से अधिक हो जाती है। प्रतिनिधि सभा में उपस्थित किये गये बजट से आमदनी ३७१ लाख रुपये और खर्च ३६१ लाख रुपये बताया गया था।

मुख्य सचिव ने सदस्यों को बताया कि ३९ लाख रुपये की जो कुल बचत होगी उसे भी इसी वर्ष में खर्च कर देने का विचार है। साढ़े इक्कीस लाख रुपये असाधारण कामों में लगाये जायेंगे जिनमें शरणार्थियों पर किया जानेवाला खर्चा भी शामिल है। साढ़े दस लाख रुपये राज्य कर्मचारियों को महँगाई का भत्ता देने में और सवा सात लाख रुपये हरिजन तथा पिछड़े हुए लोगों की उन्नति में लगाये जायेंगे।

—संवाददाता

* * *

उदयपुर राजपूताना प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के महिला-विभाग द्वारा महिला-मण्डल उदयपुर के संयोजकत्व में यह विचार सम्मुख रखते हुए कि अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस का अधिवेशन जो दिसम्बर में जयपुर में होने जा रहा है उसमें कैम्प तथा स्वयंसेविकाएँ तथा कार्यकर्त्रियाँ पहुँचें और राजपूताने में महिला कार्यकर्त्रियाँ तैयार हों। अतः अक्टूबर मास के प्रथम सप्ताह में महिला कार्यकर्त्री शिक्षण शिविर तथा स्वयंसेविका-शिविर हो रहा है। जिसमें भारत के अग्रगण्य नेताओं के भाषणों का लाभ होना पूर्ण संभावित है। स्मरण रहे इस शिविर को गतवर्ष पूज्य बापू जी के निधन के कारण बन्द कर देना पड़ा था। प्रवेश इच्छुक बहनें शीघ्र आवेदन-पत्र भेजें। ट्रेनिंग काल एक मास का रहेगा। तथा एक महिला पर रेल-किराये के अतिरिक्त ४५ भोजन रोशनी और रहने की व्यवस्था पर खर्च पड़ेगा। बहन की योग्यता कम से कम छठी तक की हो।

—कमलाकुमारी श्रोत्रिय

उदयपुर विद्यापीठ अपने ११ वर्ष समाप्त कर राजस्थान विद्यापीठ के रूप में परिवर्तित हो गया। उद्घाटन-समारोह १५ अगस्त से २१ अगस्त तक मनाया गया। इसमें शिक्षा, कला, साहित्य, संस्कृति, सार्वजनिक हितचिन्तन परिषदों की आयोजना की गई थी। रात्रि को कवि-सम्मेलन, संगीत-सम्मेलन, सार्वजनिक भाषण आदि का कार्यक्रम हुआ। २१ अगस्त को प्रातःकाल सरस्वती यज्ञ की पूर्णाहुती श्रीमान् महाराणा साहब जी श्री भूपालसिंहजी के प्रतिनिधि श्री कर्नल राव मनोहर सिंहजी द्वारा की गई। तदनन्तर सरस्वती-मन्दिर का शिलान्यास उदयपुर के प्रमुख प्रतिष्ठित २१ नागरिकों द्वारा किया गया जिनसे सर्वश्री बड़े मुल्ला साहब, श्री मोहनलाल जी सुखाडिया, श्री भूरेलालजी बया, स्वरूपसिंह जी चुंडावत, रघुवीरसिंह जी, हीरालाल जी कोठारी, भवानीशंकरजी वैद्य, भँवरलाल जी तायलिया, डा० मोहनसिंह जी मेहता आदि थे। प्रातःकाल से ही वर्षा हो रही थी किन्तु नागरिकों का भीगते हुये सहयोग देना आश्चर्यजनक था। सायंकाल ६॥ बजे राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति श्री बी श्री भूपालसिंह जी की अध्यक्षता में उद्घाटन-समारोह मनाया गया। समारोह में राजस्थान राज्य के कई मंत्री, प्रतिष्ठित नागरिक व्यापारी आदि सम्मिलित थे। महाराणा साहब ने विद्यापीठ को विश्वविद्यालय में परिणत होने की आशा के साथ ही हर वर्ग को इसमें सहयोग देने की अपील की।

राजस्थान विद्यापीठ के अन्तर्गत चलनेवाली राम टेकनिकल इन्स्टीट्यूट का उद्घाटन ता० २९ अगस्त को सायंकाल श्रीमान् मोहनलाल जी सुखाडिया द्वारा हो रहा है। इस इन्स्टीट्यूट को श्री राव एन० के० ने १०,००० दस हजार रुपया वार्षिक देना स्वीकृत किया है।

—संवाददाता

* * *

मुजफ्फरपुर सुहृद संघ के सदस्यों की एक बैठक श्री महेशप्रसादसिंह, एम० एल० ए० तथा सदस्य विधान-परिषद् के सभापतित्व में हुई। संघ के प्रधान मन्त्री श्री नीतीश्वरप्रसादसिंह ने कार्यों पर प्रकाश

डाला तथा आगे के कार्य-क्रम को पेश किया। सुहृद संघ का वार्षिकोत्सव जो अगले सितम्बर में होनेवाला था, अब नवम्बर में होगा; क्योंकि विहार प्रादेशिक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का वार्षिकोत्सव अक्टूबर में होने जा रहा है। संघ के वार्षिकोत्सव के साथ-साथ सांस्कृतिक-सम्मेलन, साहित्य-परिषद् और कवि सम्मेलन भी होंगे। भारत के सुप्रसिद्ध विद्वानों, कवियों तथा नेताओं से इसमें भाग लेने को अनुरोध किया जा रहा है। संघ की इस बैठक ने यह भी निश्चय किया कि मुजफ्फरपुर के अफसरों की एक सभा बुलाई जाये, जिसमें उन्हें हिन्दी में ही फैसला लिखने, आदेश जारी करने तथा अन्य कामों को करने का महत्त्व बतलाया जावे। इस सभा का सभापतित्व श्री एम० एन० फिलिप कमिश्नर तिर्हुत डिविजन और उद्घाटन श्री महेशप्रसादसिंह एम० एल० ए० के द्वारा कराये जाने के लिए उनसे अनुरोध किया जा रहा है। सभा में उन अफसरों को विशेष रूप से सम्मानित किया जायेगा जिन्होंने पहले से ही हिन्दी में फैसला लिखना, आदेश जारी करना, बयान लेना आदि शुरू कर दिया है।

—सहायक मन्त्री

* * *

ग्वालियर लश्कर से प्रगतिशील निर्भीक "जीता संसार" पुन: अगस्त ४८ से प्रकाशित हो रहा है। हमने पत्र को पुनः चालू करने का साहस आप जैसे सहयोगियों, बन्धुओं एवं स्नेहियों की सहायता पर ही किया है।

—संपादक

* * *

कानपुर चौबेपुर मंडल वंसथी ग्राम कांग्रेस सेवादल व प्रान्तीय रक्षा की ट्रेनिंग का काम ग्राम सहजोरी में दिन बुधवार ता० १८-८-४८ को रज्जनलाल वर्मा व सरदार दुलारे नायक, रामजीवन नायक जिलेदार तथा शिवनारायण पांडे, प्रबन्धक रामभरोसे पांडे, रामनाथ तिवारी, रामचन्द्र वाजपेयी, विश्वम्भरदयाल दुबे, कुलदीप नारायण श्रीवास्तव, भूतपूर्व नायक जत्थेदार इन आदमियों की अध्यक्षता में कैम्प की कवायद व लाठी-कुश्ती इन सब चीजों का कार्य शुरू हो गया है।

—भगवतीप्रसाद जत्थेदार

* * *

पटना (सेवदह) राजेन्द्र साहित्य विद्यालय तथा हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के परीक्षार्थियों को सूचित किया जाता है कि बाढ़ आ जाने के कारण विद्यालय में निवास-योग्य स्थान नहीं रह गया है; अतः वे सितम्बर के पूर्व आने का कष्ट करें।

—प्रधानाध्यापक

* * *

देवप्रयाग (डाक से) गढ़वाल में वर्षा अधिक होने से सड़कें तथा रास्ते विभिन्न स्थलों पर टूट गये। अभी कुछ दिनों तक मोटरों का यातायात पूर्ण तथा सुव्यवस्थित होना सम्भव नहीं है।

टिहरी राज्य प्रजामण्डल विलीनीकरण समिति के नेता श्री नत्थाराम रतूड़ी तथा श्रीसैन सिंह के नजरबन्दी की मियाद टिहरी की सरकार ने अनिश्चित काल के लिये बढ़ा दी है। इससे जनता में घोर असन्तोष छाया हुआ है।

टिहरी राज्य विधान सभा की सदस्यता के उम्मीदवारों के प्रार्थना पत्र १६ अगस्त ४८ को पेश हो चुके हैं। प्रजामण्डल 'स्वतन्त्र इकाई दल', 'लोक परिषद् पार्टी' तथा स्वतन्त्र पार्टी के उम्मीदवार हैं लोक-परिषद् के एक महान् नेता तीन-चार निर्वाचन क्षेत्रों से एवं प्रजामण्डल के कोषाध्यक्ष दो निर्वाचन क्षेत्रों से खड़े हुए हैं। सभी दल वोट 'पाने में प्रयत्नशील हैं। प्रजामण्डल विलीनीकरण पार्टी ने चुनाव न लड़ना निश्चय किया है।

श्रीबदरीनाथ मन्दिर कमेटी जो ग्रीष्मकाल में बदरीनाथ जी में हुई थी मालूम हुआ है कि गांधी स्मारक कोष की चर्चा मीटिंग में हो भी गई थी किन्तु कमेटी ने 'गांधी स्मारक कोष" में चन्दा नहीं दिया और ५ हजार रुपये मालवीय स्मारक कोष के ग्रन्थ-संग्रहालय के लिये श्री सर्गाजी की प्रेरणा एवं खास दिलचस्पी के कारण गुप्त काशी उत्तराखण्ड विद्यापीठ को दिये हैं। आशा है कि मन्दिर कमेटी अगले अधिवेशन में गांधी स्मारक कोष के लिये अवश्यमेव चन्दा मन्दिर के कोष से देने की कृपा करेगी।

—संवाददाता

टिहरी राज्य प्रजामण्डल विलीनीकरण समिति ने निश्चय किया है कि वह राज्य में बननेवाली विधान-सभा का खुले रूप से बहिष्कार करेगी, टिहरी का शीघ्र विलीनीकरण चाहनेवाले लोग चुनाव में न स्वयं खड़े होंगे और न किसी को वोट देंगे। यह आश्वासन टिहरी की अधिकांश जनता ने विलीनीकरण समिति को दिया है।

टिहरी (डाक से) विश्वस्त सूत्र द्वारा पता चला है कि टिहरी राज्य प्रजामण्डल-विलीनीकरण समिति के दो प्रमुख नेता श्री नत्थाराम रतूड़ी तथा श्री सत्यसिंह जो ता० २१ जुलाई १९४८ को सरकार द्वारा गिरफ्तार किए गये थे, एक मास के लिए और अधिक जेल में रक्खे जायेंगे। इन दोनों राजनैतिक बन्दियों को एक मास के लिए जेल में रक्खा गया था। श्री नत्थाराम रतूड़ी उस दिन से अभी तक भूख-हड़ताल पर हैं।

—संवाददाता

टिहरी (गढ़वाल) हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन की ओर से शिक्षण संस्थाओं के ट्रुपों में स्वतन्त्रता-दिवस का राष्ट्रीय पर्व श्री भास्करानन्द सकलानी, जिला स्काउट मास्टर की देख-रेख में कालेज ग्राउण्ड में मनाया गया। आजाद मैदान में सर्वप्रथम अर्थ-मंत्री महोदय श्री आनन्दशरण रतूड़ी ने राष्ट्रीय ध्वजा फहराई। मिलिट्री ने गार्ड आफ ऑनर दिया। तत्पश्चात् गर्ल्स गाइड तथा बालचरों का मार्च पास हुआ। फिर सभी भाई और बहनें कालेज में पहुँचीं, वहाँ पूज्य बापू जी के चित्र-स्थापना के समय "जन गण मन" के साथ सम्मान प्रकट करते हुए सलामी दी गई।

शाम को मंत्री महोदय के सभापतित्व में कैम्प फायर हुई जिसमें हिमालय विद्यापीठ ट्रूप का बेड़ा डान्स अत्यन्त लोकप्रिय रहा जिसके फलस्वरूप इस आइटम में भाग लेनेवाले बालचरों को दो मेडिल प्रदान किये गये। इसके अतिरिक्त कोआपरेटिव स्टोर, टिहरी के महानुभावों ने हमारी गर्ल्स गाइड को प्रोत्साहित करने के हेतु ११) रु० प्रदान किये।

—जगदम्बाप्रसाद बडोनी

राजधानी का रंगमंच

पंडित गोविन्दवल्लभ पंत केन्द्रीय सरकार में न जायेंगे

प्रांत में तीन दिन की नशाबन्दी—नवाबों की नगरी में क्या बेगमों की कमी थी—अमीनाबाद पार्क में कुँजड़ाखाना

(अपने विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

पं० गोविन्दवल्लभ पन्त दिल्ली न जायेंगे। यथार्थ में जिस पत्रकार ने दिल्ली में बैठकर यह हवाई उड़ाई थी कि युक्तप्रान्त के प्रधान मंत्री को श्री षण्मुखम् चेट्टी के स्थान पर भारत का अर्थमन्त्री नियुक्त किया जायगा, वह युक्तप्रांत की जटिल राजनीतिक स्थिति से पूर्णतया अनभिज्ञ प्रतीत होता है। इस प्रान्त की कांग्रेस तथा यहाँ के मंत्रिमण्डल में वाम तथा दक्षिण पक्ष का मतभेद और गुटबन्दी अधिक स्पष्ट है और गोविन्दवल्लभ पन्त का ही व्यक्तित्व है कि वह बीच में रहकर दोनों पक्षों को सन्तुलित करते रहते हैं अन्यथा इस प्रान्त में शक्ति की स्पर्द्धा इतनी जोर पकड़ जाए कि बड़ों बड़ों में खुली तू-तू मैं-मैं होने लगे। यद्यपि यह सही है कि पन्त जी अर्थशास्त्र के नामी विद्वान् हैं और बजट-निर्माण में तो अद्वितीय हैं, पर युक्तप्रांत की विस्फोटमयी भी राजनीति को जो व्यक्ति सन्तुलित किए हुए है, उसे इस प्रान्त से हटाकर केन्द्र में ले जाने की गलती पं० नेहरू न करेंगे।

* * *

स्थानीय गवर्नमेण्ट हाउस का वातावरण एक विचित्र-से रहस्य से परिवेष्ठित रहता है। इधर कुछ दिनों से यह 'राजभवन' ऐसे व्यक्तियों का आश्रय-स्थल हो रहा है, जिन्होंने संकट के समय सदा देश के विरुद्ध गद्दारी की और अब अवसर का लाभ उठाकर तथा सरलहृदया गवर्नर की खुशामद करके उनका संरक्षण प्राप्त करना चाहते हैं। फलतः देखा गया है कि गवर्नमेण्ट हाउस की दावतों, उत्सवों आदि में वही राजे-नवाब और ताल्लुकदार पुनः बुलाये जाने लगे हैं, जो सर मारिस हैलेट के समय वहाँ की शोभा बढ़ाते थे। हैलेट को डर न था, अतएव वह पत्रकारों को भी बुलाता था; परन्तु वर्तमान प्रबन्धक अपनी आलोचना के भय से केवल एक ब्रिटिश संवाद एजेन्सी के अतिरिक्त अन्य किसी पत्रकार को घुसने नहीं देना चाहते। हाँ, स्टेट्समैन एक अन्य अपवाद है। शहर कांग्रेस कमेटी तथा नगर के कांग्रेसजनों में इस बात से बड़ा क्षोभ है कि पुराने देशद्रोही गवर्नमेण्ट हाउस में बड़ा सत्कार पाते हैं और देशसेवकों को वहाँ कोई पूछता नहीं। इस पर एक दिन गवर्नर ने शहर कांग्रेस के कुछ कार्यकर्ताओं को दावत देकर उनके आँसू पोछने की व्यवस्था की, परन्तु गवर्नमेण्ट हाउस के सार्वजनिक उत्सवों में अब भी उनकी पूछ नहीं होती।

* * *

प्रांत में तीन दिन की नशाबन्दी हर साल सभी स्थानों पर होगी। प्रांतीय सरकार ने यह निश्चित किया है कि प्रतिवर्ष ३० जनवरी (गांधी निर्वाण दिवस) १५ अगस्त (स्वतन्त्रता दिवस) तथा २ अक्टूबर (गांधी जन्म-दिवस) पर प्रांत के सभी मदिरालय बन्द रहा करें। अभी तक यह आदेश आबकारी नियमावली पर नहीं चढ़ा है और जब तक नियमावली पर चढ़ न पाए, तब तक ठेकेदार अपनी दूकानें

बन्द रखने पर सरकार से हरजाना
सकते हैं। १५ अगस्त की बन्दी प
ठेकेदारों ने हरजाना माँगा भी है। स
ने उनसे कहा है कि १५ अगस्त के
महत्त्व को देखते हुए वे अपनी माँग
कर लें।

* * *

नवाबों की नगरी में बेगमों की
कमी ? यह बात और भी स्पष्ट है
जब पिछले शनिवार को सिटी मैजि
पुलिस के एक बड़े दल के साथ अ
बाद और केसरबाग क्षेत्रों पर छाप
और कुछ होटलों तथा गुप्त अड्डों से व्य
चार के लिये लाई गई तरुणियों का
किया। लाटूश रोड पर स्थित सुरं
प्रसिद्ध अड्डे पर भी छापा मारा गया
मिनटों की देर हुई थी, वरना कई स
नागरिक, जिनमें दो सरकारी अ
भी थे, इस अड्डे में केलि करते हुए
जाते।

* * *

लखनऊ का प्रख्यात अमीनाबाद
एक विचित्र कुँजड़ाखाना बन गया
पार्क की रेलिंग हटा दी गई है और
ओर शरणार्थी दूकानदारों के लिए लक
की बनी छोटी छोटी दूकानें रख दी गई
हैं। इस प्रकार पार्क घिर गया और हवा
आने का मार्ग अवरुद्ध हो गया है।
नहीं पार्क के अन्दर के रास्तों और
तक पर शरणार्थियों ने अपनी दूकानें
रखी है और वह किसी भी दृष्टि से
घूमने-घामने की जगह नहीं रही है।

* *

फिल्मी दुनिया मुफ्त

सिनेमा का भेद बतानेवाली पु
"फिल्मी दुनिया" अपना और
के पूरे पते लिखकर मुफ्त मँगाइये
पता—मधुर मन्दिर, हाथरस, यू०

महात्मा द्वारा प्राप्त मृगी,
(हिस्टेरिया) फिट की अनुभव सिद्ध
इस जड़ी को दौरे के साथ एक
नाक में सुंघा देने से इस रोग का
मर कर छींक के साथ निकल जाता है
रोगी सदैव के लिए निरोग हो जाता

पता—
श्री परमहंस जी महाराज
रामवन, पो० चित्रकूट

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ० ए०,
ए०, पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी
और होम्योपैथिक बायोकैमिक डा
आसानी से पास कर सकते हैं। नियम
मुफ्त मगायें। पता :—
इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड)

रामचरितमानस

टीकाकार—डाक्टर श्यामसुन्दरदास

'मानस' का महत्त्व किसी से छिपा नहीं है। भारतवर्ष में तो इसका न है ही, अन्य शों में भी इस अमर न्थ का आदर है। यह माणिक संस्करण इधर ई वर्ष से अप्राप्य था। ल में ही छपकर तैयार आ है। ग्राहकों को ता करनी चाहिए। क प्रतियाँ नहीं छापी हैं।

बड़े आकार के १२०० । रंग-बिरंगे दर्जनों त्र। सजिल्द प्रति का

ूल्य १२) रुपये

जहाँ पर हमारी ब्रांच ा एजेंसी है वहाँ ख़रीदने र डाकख़र्च की बचत होगी।

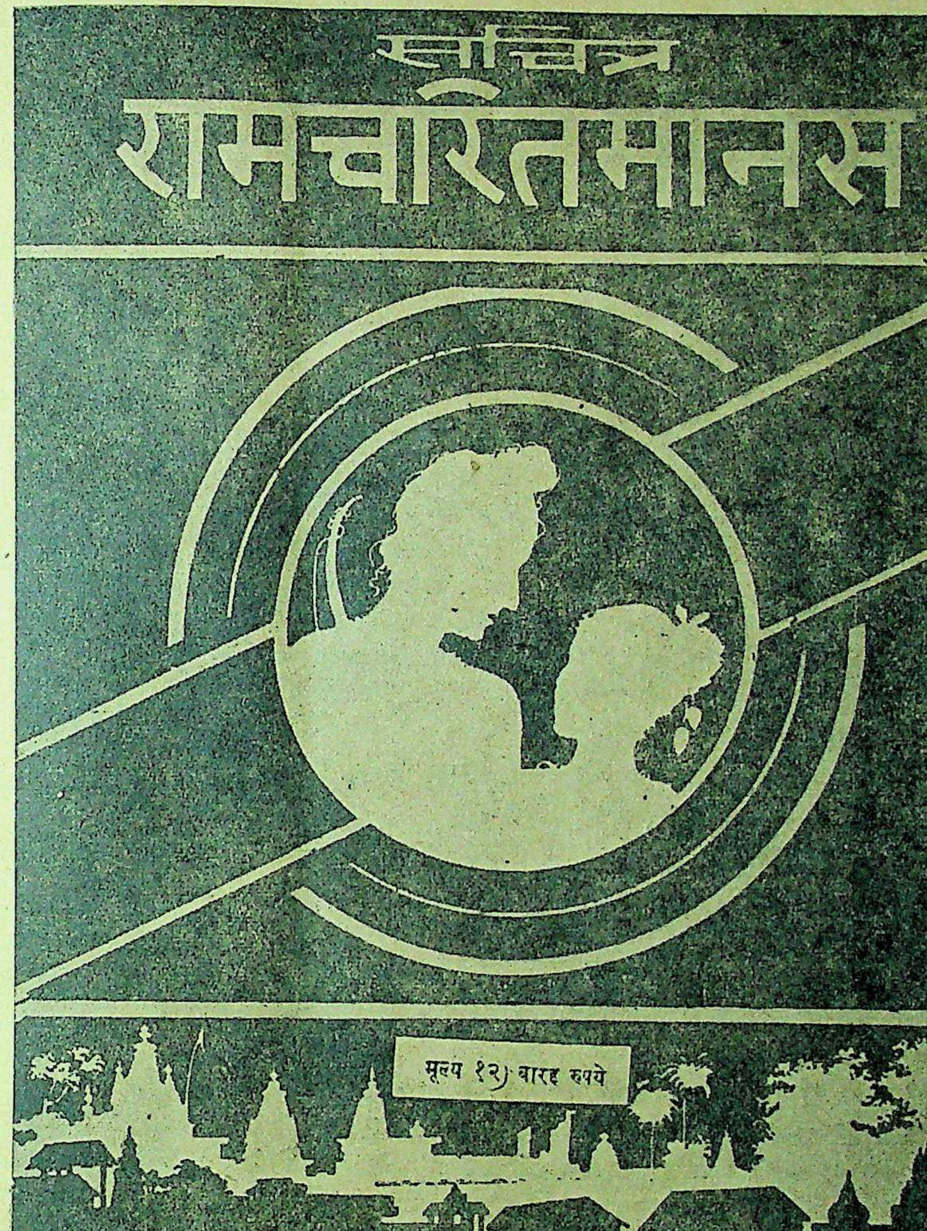

हमारी ब्रांचें और एजेन्सियाँ

१ इलाहाबाद सिटी—न्यू ऐरा बुकहाउस, हिवेट रोड
२ आगरा—आगरा पब्लिशिङ्ग हाउस, बाग़ मुज़फ़्फ़र ख़ाँ
३ अजमेर—इंडियन प्रेस लिमिटेड, कचहरी रोड
४ अलमोड़ा—डिस्ट्रिक्ट, बुकडिपो, लालबाज़ार
५ बनारस—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, बनारस छावनी
६ बाँदा—बुंदेलखण्ड पब्लिशिङ्ग हाउस
७ बरेली—इंडियन बुकडिपो
८ बम्बई—भारतीय पुस्तक भण्डार, कालबा देवी रोड
९ बीकानेर—गर्गबुक कम्पनी, कोट के भीतर
१० कलकत्ता—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, २२।१ कार्नवालिस स्ट्रीट
११ कानपुर—साहित्य-रत्नालय, श्रद्धानन्द पार्क
१२ दिल्ली—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, नई सड़क
१३ गोरखपुर—पुस्तक-स्थान, बख़्शीपुर
१४ ग्वालियर—लायल बुकडिपो, पाटनकर बाज़ार, लश्कर
१५ इन्दौर—नवयुग साहित्यसदन, खजूरी बाजार
१६ जयपुर—गोपाल बुकडिपो, त्रिपौलिया बाज़ार
१७ जबलपुर सी० पी०—इंडियन प्रेस, लिमिटेड
१८ लखनऊ—इंडियन बुकडिपो, अमीनुद्दौला पार्क
१९ मेरठ—पुस्तक-स्थान, वैस्टर्न कचहरी रोड
२० पटना—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, पो० ऑ० बाँकीपुर
२१ राँची—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, कोर्ट रोड
२२ अम्बाला (पूर्वी पंजाब)—इंडियन प्रेस लिमिटेड, दुर्गाचरण रोड

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

ऐतिहासिक भौतिकवाद

लेखक, भूतपूर्व काकोरी-कैदी

श्री मन्मथनाथ गुप्त और श्री रमेन्द्र वर्मा

लगभग ५०० पृष्ठों के सजिल्द ग्रन्थ का मूल्य केवल ६) रुपये।

मार्क्सवाद में ऐतिहासिक भौतिकवाद की गहनता को सरलतापूर्वक समझने के लिए इस ग्रन्थ की उपयोगिता अद्वितीय है। समाजवाद समझनेवालों के लिए इसका अध्ययन अपरिहार्य है।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

'कथा-साहित्य की सबसे अच्छी प्रतिनिधि पत्रिका'

मंजरी

श्रेष्ठ कथाकारों की सरस कहानियाँ और कथा-साहित्य पर गम्भीर तथा आलोचनात्मक लेख आकर्षक मुद्रण-विन्यास के साथ प्रस्तुत करनेवाली 'मंजरी' सांस्कृतिक मनोरंजन की एकमात्र कहानी-पत्रिका है।

एक सम्मति

प्रोफ़ेसर शिवपूजन सहाय, भूतपूर्व सम्पादक 'हिमालय'—'मंजरी' के तीन अंक देखे और तीनों को देखकर यही धारणा हुई कि कथा-साहित्य की सबसे अच्छी प्रतिनिधि-पत्रिका 'मंजरी' ही है। छपाई सफाई और सजावट के लिए तो इंडियन प्रेस का यशस्वी नाम ही प्रमाण है, सम्पादन-कौशल में आपने भी अपनी कला का आकर्षक प्रदर्शन किया है। साज-सज्जा और सामग्री-संकलन में सुरुचि का समावेश सर्वथा सराहनीय है। भिन्न भाषाओं की कहानियाँ देकर आप हिन्दी पाठकों को काफी तृप्त कर रहे हैं। बहुत से पाठकों ने यह मत व्यक्त किया है कि आपकी पत्रिका ही सब कहानी-पत्रिकाओं में श्रेष्ठ एवं उपयोगी है। मैं आपकी आरम्भिक सफलता पर आपको शत-शत बधाइयाँ देता हूँ।

× × ×

प्रतिमास 'मंजरी' पढ़कर आप भी अपना और अपने परिवार का सांस्कृतिक मनोरंजन कीजिए।

वार्षिक मूल्य ६) छः रुपये **प्रति अङ्क आठ आने**

प्रकाशक :

इंडियन प्रेस लि०, प्रयाग

हमारे जानवर

लेखक, कुँवर सुरेशसिंह

१०० जानवरों का सचित्र रोचक वर्णन

यह हिन्दी में अपने विषय की पहली पुस्तक है। हम अपने पास-पड़ोस के पालतू जानवरों को जरूर पहचानते हैं। उनकी आदतें और स्वभाव के बारे में भी थोड़ा बहुत जानते हैं, लेकिन इतने ही से क्या हम कह सकते हैं कि हमें सारे पशु-जगत् की जानकारी हो गई है!

इतना ही क्यों, हमें चिड़ियाखाना देखने का भी मौका मिला होगा। लेकिन वहाँ जिस सरसरी निगाह से हमने जानवरों को देखा होगा उनसे भी हम किसी पर विश्वास नहीं दिला सकते कि हमें पशुसमाज का काफी ज्ञान है।

ऐसी दशा में अपने देश के जंगल, पहाड़, बस्तियाँ और मैदानों में फैले हुए सैकड़ों पशुओं के बारे में तरह तरह की मनोरञ्जक बातें जानने के लिए एक ही उपाय है कि आप "हमारे जानवर" की एक प्रति आज ही मँगावें। आपको प्रायः सभी जानवरों का सचित्र वर्णन इस पुस्तक में मिलेगा। मूल्य ४)

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

भारी लूट ?

अवसर मत चूकिये आज ही मँगाइये

४) रु० में सात नई पुस्तकें

(१) ग्रहस्थ शास्त्र—दाम्पत्य जीवन को सुखी, सन्तुष्ट बनानेवाली मू० २) (२) वशीकरण विद्या—वशीकरण मन्त्रों तथा जादू के खेलों का संग्रह। (३) इँगलिश टीचर (हिन्दी) अँगरेजी लिखना-पढ़ना और बोलना सीखिये। मू० ।।।) (४) हुस्न परिस्तान आर्ट पेपर पर छपी हुई बढ़िया रंगीन चित्रावली मू० १।) (५) व्योपार को कुंजी मू० ।।) (६) संगीत सोल-गान विद्या तथा छन्द विद्या सिखानेवाली नई पुस्तक मू० १।) (७) ज्योतिषसार मू० १)

सात पुस्तकों के सेट का मूल्य ४) पोस्टेज पैकिंग ।।)

ग्लोब ट्रेडिंग कं० (न्योसेट सैकरता नं० ८, अलीगढ़)

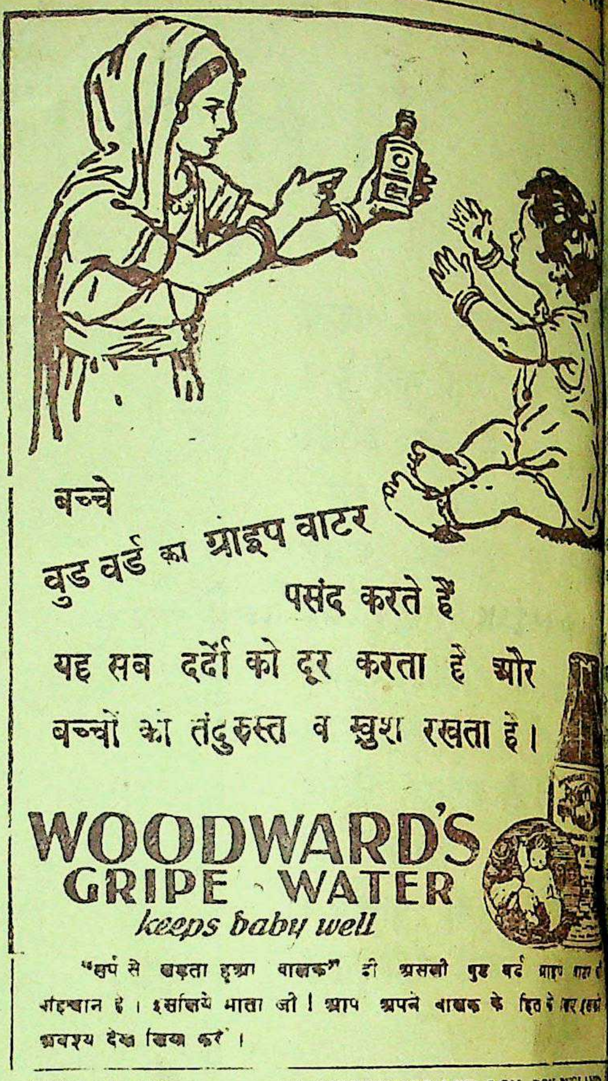

बच्चे
वुड वर्ड का ग्राइप वाटर
पसंद करते हैं
यह सब दर्दों को दूर करता है और
बच्चों को तंदुरुस्त व खुश रखता है।
WOODWARD'S
GRIPE WATER
keeps baby well

"दर्प से बढ़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिए इसे अवश्य देख लिया करें।

1-WW 118—117 W. WOODWARD LTD. LONDON, ENGLAND

मुलायम और
सुन्दर बालों के लिये
Vaseline
POMADE
CHESEBROUGH MFG. CO.

कोमलता से सुगंधित किया गया वेसलीन ब्रान्ड पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग

वेसलीन ब्रान्ड हेयर पोमेड पर ही

सभी दूकानों पर

Copyright

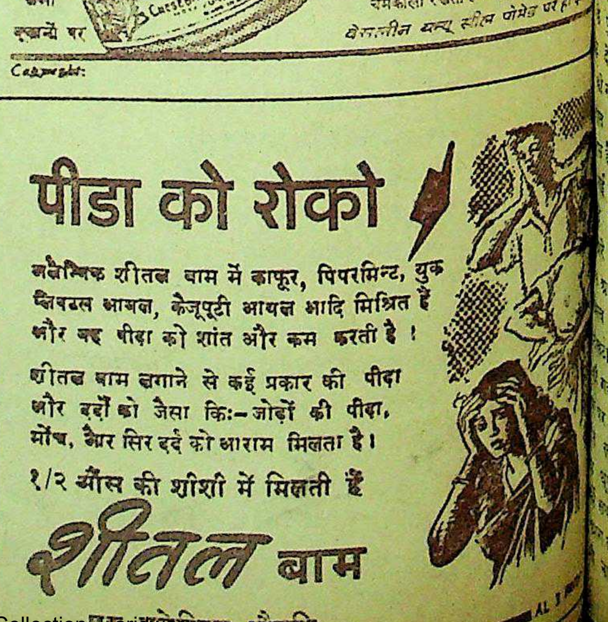

एलेम्बिक शीतल बाम में काफूर, पिपरमिन्ट, युकलिपटस आयल, कैजूपुटी आयल आदि मिश्रित हैं और वह पीड़ा को शांत और कम करती है।

शीतल बाम लगाने से कई प्रकार की पीड़ा और दर्दों को जैसा कि:—जोड़ों की पीड़ा, मोच, और सिर दर्द को आराम मिलता है।

१/२ औंस की शीशी में मिलती है

एलेम्बिक औषधि

प्रकाशक सम्पादक—एच० पी० घोष कि० मित्रा-द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड प्रयाग में मुद्रित [illegible] प्रधान सम्पादक ज्योतिप्रसाद

देशदूत

वर्ष ११, संख्या २] रविवार, १२ सितम्बर, १९४८

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

लेकिन लायकअली अपनी लियाकत का इजहार करते ही जा रहे हैं।

* * *

पंडित जवाहरलाल नेहरू का कहना है कि वाइसराय की शान के लिये यह जरूरी है कि उन्हें लंबा-चौड़ा वेतन और भत्ता दिया जाये। अपने राम की समझ में जरूर दिया जाना चाहिये क्योंकि शान और पोजीशन के लिये आदमी दिवालिया भी हो जाता है, कितने ही इस देश के ताल्लुकेदार, जमींदार और रईस शान के पीछे दिवालिया बन बैठे, उनकी रियासतें कोरट हो गईं, क्योंकि शान की रक्षा जरूरी समझा गया इस प्रकार की शान के पीछे अगर जनता पर टैक्स और टैक्स पर टैक्स लगता है तो कोई बात नहीं। खाना-कपड़ा नहीं मिलता है तो न सही, लेकिन शान की रक्षा तो होती है। इससे बढ़कर राष्ट्रवादिता और क्या हो सकती है? अब तक तो अँगरेज ही शान के पीछे भारत को तबाह किये थे किन्तु स्वतन्त्र भारत में भी शान की रक्षा होती रहेगी, यह बड़ी ही प्रसन्नता की बात है।

* * *

एक साहब ने कहा कि अन्न और कपड़ा बड़ा महँगा होता जा रहा है। जनता विशेषकर मध्यम श्रेणी का समाज परेशान है, क्या राष्ट्रीय सरकार इस सत्य को नहीं समझती? दूसरे साहब ने उत्तर दिया कि समझती सब कुछ है लेकिन करे तो क्या करे, इस वक्त विदेशों में जितने राजदूत भारत की ओर से नियुक्त हुए हैं, उनमें प्रत्येक की शान-शौकत की रक्षा के लिये भारत-सरकार लाखों रुपया खर्च कर रही है, यदि न खर्च करे तो क्या ब्रिटेन और अमरीका के आगे अपनी नाक कटाये? शान के पीछे करना ही पड़ता है क्या किया जाये? भारत की जनता तो किसी तरह रो-गाकर काट लेगी लेकिन अगर राजदूतों की विदेशी राष्ट्रों के सामने तौहीनी हो गई तो मानो लुटिया ही डूब गई। यह बातें सुनकर अपने राम की समझ में कुछ नहीं आया। स्वतन्त्र भारत अपना है, जनता अपनी है, कोई विदेशी राज्य है क्या? प्रजातन्त्र में यही होता है।

* * *

समाचार मिला है कि पाकिस्तान में शरियत का शासन प्रचलित करने के लिये एक प्रोग्राम बनाया गया है। प्रोग्राम में कहा गया है कि पाकिस्तान में मुसलमानों के लिये ज्यादा से ज्यादा पत्नियाँ मुहैया करने की ओर विशेष ध्यान दिया जायेगा। प्रत्येक मुसलमान के लिये चार पत्नियाँ प्राप्त करने का प्रबंध किया जायेगा। अपने राम की समझ में योजना तो बहुत अच्छी है, पाकिस्तानियों के लिये यह एक बड़ी भारी खुशखबरी है। जब मामूली आदमी चार पत्नियाँ रख सकेगा तो लियाकतअली, खलीकुज्जमा एण्ड कंपनी तो दर्जनों पत्नियाँ रखने के हकदार होंगे ही। क्योंकि आखिर प्रधान मंत्री के ओहदे और साधारण मुसलमान के जीवन में कुछ फर्क होगा ही। हमारी राय में भारत के मुसलमान जल्दी से जल्दी पाकिस्तान चले जाने का प्रबंध कर डालें तो अच्छा। बहती गंगा में हाथ धो डालें। शरियत लागू होने के पहले उन्हें चला जाना चाहिये। पाकिस्तान में लिस्ट तैयार हो रही है। खाने-पीने को न सही लेकिन पत्नियाँ मिल जाना उनके लिये भाग्य की बात है।

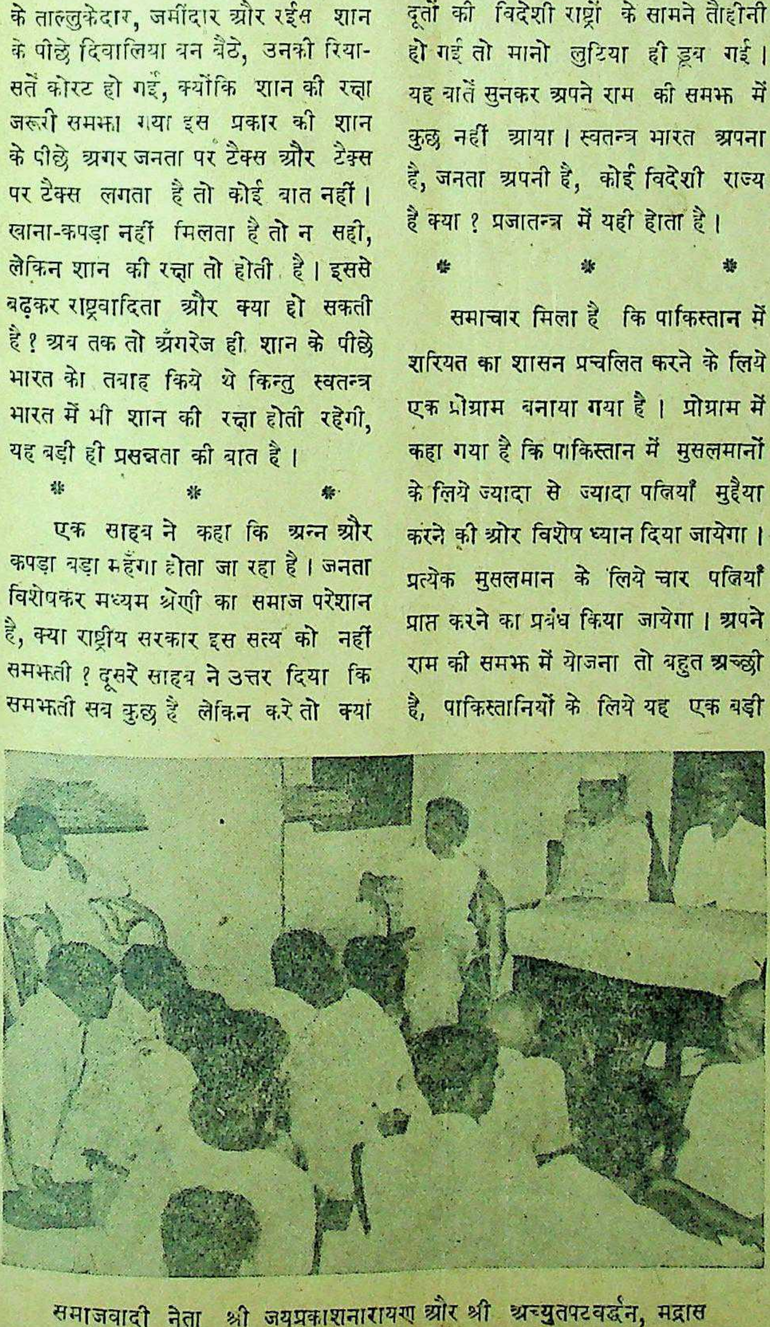

समाजवादी नेता श्री जयप्रकाशनारायण और श्री अच्युतपटवर्द्धन, मद्रास में श्रमजीवी पत्रकारों की एक सभा में।

* * *

मेनीफेस्टो में मगर एक बड़ी विचित्र बात लिखी गई है! चार पत्नियाँ प्राप्त होने पर मुसलमान जहाँ फूले न समायें वहाँ यह भी लिखा गया है कि शरियत कायम होने पर प्रत्येक मुसलमान की हजामत की जायगी। हजामत का अर्थ कुछ दूसरा नहीं, बल्कि मुंडन-संस्कार होगा। साथ ही राष्ट्रीय पोशाक एक तहमत और लबादा (खुली कमीज) होगी। इसका मतलब यह है कि दाढ़ी गायब हो जायेगी और खोपड़ी सफाचट। साथ में लुंगी और लबादा। मेनी फेस्टो की यह योजना बड़ी ही बेतुकी है। आखिर• लियाकत अली, जफरउल्ला खाँ, खलीकुज्जमा साहब और विशेष कर मिस्टर जिन्ना का क्या हाल होगा? इन लोगों ने जन्म भर अँगरेजी पोशाक पहनी और अँगरेजों के साथ टोस्ट-बटर खाया लेकिन जान पड़ता है बुढ़ौती में शरियत के अनुसार इन्हें भी हलाल होना पड़ेगा। अच्छा होता शरियत के लागू होने के साथ एक चिड़ियाखाना करांची में बनवा दिया जाता, जिसमें यह सब रख दिये जाते। शरियत के अनुसार पाकिस्तानी शासन होने पर इनका प्रदर्शन पाकिस्तानी दृष्टि से बड़ा ही सफल कार्य होता। देखना है शरियत क्या क्या गुल खिलाती है?

* * *

काश्मीर-कमीशनवाले इस वक्त बढ़िया खिचड़ी पका रहे हैं। पाकिस्तानी सेना काश्मीर हड़प करना चाहती है और कमीशनवाले पत्र-व्यवहार में लगे हैं। साथ ही काश्मीर के काट-कूट में भी दिलचस्पी ले रहे हैं। देखना है शेख अब्दुल्ला क्या करते हैं? वह स्वतन्त्र रहते हैं या दूसरी ओर कदम बढ़ाते हैं? दो बिल्लियों की लड़ाई में बन्दर ने सारी रोटी हजम कर ली थी। देखना है कमीशन बन्दरवाली चाल चलता है या कुछ और।

* * *

सम्पादक का पृष्ठ

विधान हिन्दी में स्वीकार किया जाना चाहिए

आगामी विधान-परिषद् में भारतीय विधान अंतिम रूप से स्वीकार किया जानेवाला है। विधान परिषद् का अधिवेशन अक्टूबर में होनेवाला है; किंतु कठिनाइयाँ इस प्रकार की उपस्थित हो रही हैं कि सभवत: अभी अधिवेशन का समय और अधिक बढ़ाया जाये। खैर अधिवेशन किसी भी समय हो, हमें इस संबंध में कुछ नहीं कहना किंतु यह तो निश्चित है कि इस बार विधान परिषद् में विधान अंतिम रूप से स्वीकृति के लिये उपस्थित किया जायेगा। इसलिये इस समय विशेष सावधान तथा सतर्क रहने की आवश्यकता है। यह सत्य किसी से छिपा नहीं है कि विधान अँगरेजी में तैयार हुआ है। विधान परिषद् के सभापति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ने विधान का हिन्दी रूप प्रस्तुत करने के लिये माननीय श्री घनश्यामसिंह गुप्त के सभापतित्व में एक समिति की स्थापना की थी। समिति ने विधान का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत कर दिया है और वह छप भी गया है। ऐसी दशा में यह आवश्यक प्रतीत होता है कि जो विधान हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि में प्रस्तुत हुआ है, मूल रूप से वही विधान-परिषद् के सामने उपस्थित किया जाना चाहिये। ऐसा करना न्यायोचित भी है, क्योंकि भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी अथवा हिन्दुस्तानी होनेवाली है और राष्ट्रलिपि देवनागरी; और यह भी निश्चय है कि अँगरेजी राष्ट्रभाषा कदापि स्वीकृत नहीं होगी, क्योंकि अँगरेजों के साथ साथ अँगरेजी भाषा और लिपि का भारतीय संघ में राष्ट्रीय दृष्टि से कोई महत्त्व नहीं होगा। ऐसी दशा में राष्ट्र तथा राष्ट्रीयता की रक्षा तथा हिन्दी भाषा-भाषी करोड़ों जनता के प्रति यह न्याय होगा कि हिन्दी-विधान मूल रूप से परिषद् के सामने प्रस्तुत किया जाये और वही स्वीकार किया जाये। हाँ विधान-परिषद् के जो सदस्य विभिन्न प्रांत के हैं, अथवा वह अँगरेजी के माहिर हैं, वह विधान के अँगरेजी रूप से समझने की सहायता ले सकते हैं। किन्तु विधान-परिषद् में स्वीकृत के लिये विधान का अँगरेजी रूप उपस्थित किया जाये, यह राष्ट्रभाषा और राष्ट्रभाषा के करोड़ों प्रेमियों पर एक घातक प्रहार ही नहीं उनके प्रति अपमानजनक भी होगा। हम विधान-परिषद् के सभापति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद जी का ध्यान इस ओर अकर्षित करते हैं। साथ ही परिषद् के राष्ट्रभाषा प्रेमियों से अनुरोध करते हैं कि वह विधान परिषद् के सभापति का ध्यान इस सत्य की ओर अकर्षित करें और विधान के हिन्दी रूप को उपस्थित करने के लिये अनुरोध करें। स्वतन्त्र भारत के लिये यह बड़े गौरव का कार्य होगा।

यद्यपि हम जानते हैं कि अँगरेजी के हिमायती इस कटु सत्य का विरोध करेंगे और उर्दू तथा पंडित सुन्दरलाल जी के 'हिन्दुस्तानी' वाले भलेमानसों के लिये यह कार्य उचित नहीं प्रतीत होगा, किन्तु व्यर्थ के अड़ंगों से एक राष्ट्रीय कार्य में रुकावट नहीं उत्पन्न होनी चाहिये। उर्दू तथा पंडित सुन्दरलाल की हिन्दुस्तानी का स्वतन्त्र भारत में कोई अस्तित्व नहीं है, यह तो केवल 'नेशनलिस्टों' की जमाअत एक ऐसा अस्त्र है जिसका हिन्दी के मार्ग में बाधा उत्पन्न करना तथा अड़ंगा डालना है। इस सत्य को विधान परिषद् के प्रत्येक भाषाभाषी सदस्य भली भाँति जानते हैं। हम पूछते हैं कि नये विधान का उर्दू में और पंडित सुन्दरलाल जी की 'हिन्दुस्तानी' में अनुवाद कराने का क्या तुक है ? जनता के पैसे की व्यर्थ बरबादी की गई है। ऐसे नामाकूल और उन राष्ट्रीय अनुवादों का क्या उपयोग है ? सिवा इसके कि 'नेशनल लाइब्रेरी' जिसका नामकरण पिछले दिनों माननीय मौलाना आजाद ने किया है, सुरक्षित रूप में लोगत की भाँति रखवा दिया जाये। इसके सिवा उर्दू तथा पंडित सुन्दरलाल जी के अनुवादों की उपयोगिता हमें तो कुछ और नहीं दिखाई देती।

इसलिये हम पुनः विधान-परिषद् के अध्यक्ष से अनुरोध करते हैं कि वह परिषद् के सामने देवनागरी लिपि में अनूदित हिन्दी का विधान प्रस्तुत करने की कृपा करें। विधान-परिषद् सदस्यों तथा हिन्दी समाचारपत्रों का ध्यान भी हम इस सत्य की ओर आकर्षित करते हैं। ऐसा करना राष्ट्रभाषा, राष्ट्रलिपि तथा राष्ट्र के करोड़ों राष्ट्रभाषा-प्रेमियों के प्रति न्यायसंगत होगा। राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन, माननीय घनश्यामसिंह गुप्त तथा अन्यान्य हिन्दी-प्रेमी सदस्यों से हमारा विशेष अनुरोध है कि वह राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति होनेवाले इस न्याय तथा सत्य की ओर अवश्य ध्यान दें। नये विधान के स्वीकृत होने के अवसर की यह प्रथम कसौटी है।

* * *

एक रहस्योद्घाटन

कश्मीर पर कबाइली आक्रमण की एक आश्चर्यजनक कहानी का रहस्योद्घाटन भारतीय पार्लियामेंट में हुआ है। पंडित हृदयनाथ कुंजरू के प्रश्न के उत्तर में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने जो विवरण दिया वह आश्चर्यजनक होते हुए बड़ा ही असन्तोषजनक है। गत वर्ष सर जाज कनिंघम, जो कि उस समय सीमाप्रान्त के गवर्नर थे, वे भारत के प्रधान सेनापति जनरल राब लाकहर्ट को कबाइली आक्रमण की सूचना देते हुए एक पत्र लिखा था। पत्र में यह भी प्रकट किया गया था कि आक्रमण में सीमाप्रान्तीय सरकार के सदस्य सक्रिय सहायता पहुँचा रहे हैं। पंडित कुंजरू के प्रश्न पर पंडित जवाहरलाल नेहरू के उत्तर से स्पष्ट होता है कि गवर्नर का लिखित पत्र प्रधान मंत्री को अक्टूबर सन् १९४७ के पहले ही पखवारे में मालूम हो गया
पत्र को प्रकाशित नहीं कि
क्यों ? इस प्रश्न पर पंडित
नेहरू ने उत्तर दिया कि
पाकिस्तान के साथ सम्बन्ध
ख्याल नहीं था बल्कि अधि
प्रान्तीय सरकार का षड्यन्त्र
था। यह उत्तर क्या वास्तविक
व्यक्त करता है ? पंडित नेहरू
भूल जाते हैं। वे पाकिस्तान
ख्याल नहीं करते। पाकिस्त
मंत्री ने काश्मीर के प्रधान
दिया था कि "आपने पाकि
पर भयानक आरोप लगाये
स्वीकार नहीं कर सकते।"
को पंडित नेहरू जैसे राजनीति
हैं, वह भी एक ऐसे व्यक्ति
जो सीमाप्रान्तीय सरकार का

पंडित जवाहरलाल नेहरू
गया कि "सुरक्षा कौंसिल में
की ओर से काश्मीर पर आक्र
सर जार्ज कनिंघम का वह पत्र
पेश किया गया। इस पर पं
उत्तर दिया कि मैं भूल ग
मेरे अन्य साथी भी। इसमें
को जानेवाले भारतीय प्रतिनि
स्वामी आयंगर को यह बात
कराई जा सकी। यह भूल जै
करनेवाला सिद्धान्त सभी
लागू होना, चाहिए। कश्मीर प
होता रहे हम उसे भूलते और
क्या यह सरकार पर लांछन
इसको स्पष्ट होने की आवश्यक
है कि जनरल राब लाकहर्ट ने
पत्र को क्यों नष्ट कर दिया ?
यह कहा जा सकता है कि
कानिंघम का वह पत्र भार
के उत्तरदायित्व पर एक
लगाता है। नेहरू सरकार ऐ
पूर्ण पत्र अथवा सामग्रियों
से गायब होते देखकर
और अपने देश के कल्याण
रखती है ?

* *

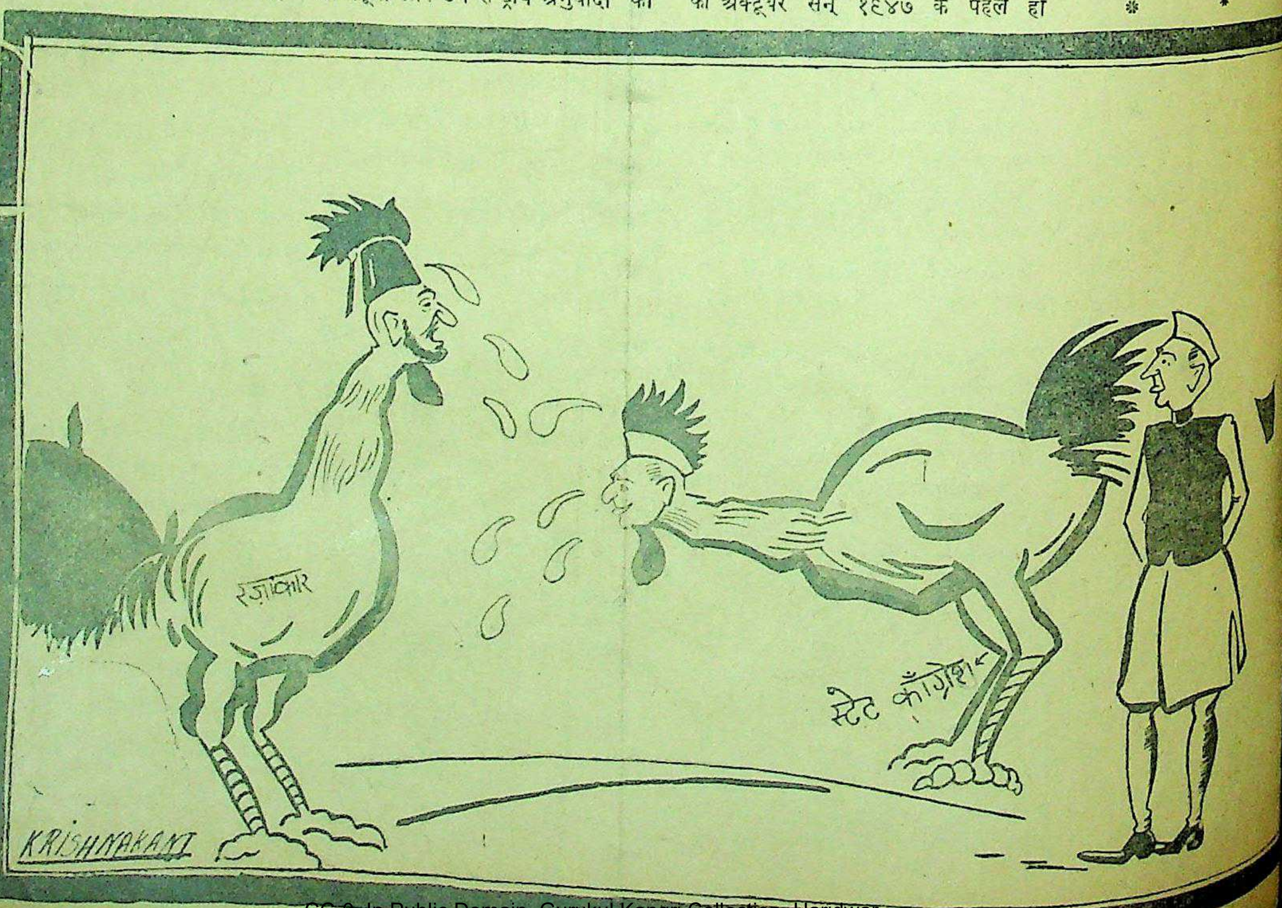

श्री जयप्रकाशनारायण ने कहा है कि हैदराबाद में अत्याचार समाप्त करने के लिये जनता को भारत सरकार की सहायता करनी चाहिए।

हिन्द और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति

भारत का गौरव ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत रहने से है या बाहर ?

लेखक, श्री विश्वमोहन सिनहा, एम० ए०

भारत का पर राष्ट्रीय नीति कैसी है ? क्या विदेशी राष्ट्रों से भारत ने जो संपर्क स्थापित किया है, वह मैत्री पूर्ण है अथवा कूटनीति से पूर्ण। वास्तव में विदेशी राष्ट्र भारतीय वैदेशिक नीति से लाभ ही उठा रहे हैं, वैसी सफलता भारत को नहीं प्राप्त हो रही है जैसी कि स्वतन्त्र राष्ट्रों को प्राप्त है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने भारत के वैदेशिक नीति की आलोचना की है और यह सुझाव दिया है कि उसे अपनी नीति में परिवर्तन करना चाहिए तभी भारत अपने स्वतन्त्र सत्ता की रक्षा कर सकता है। लेख पठनीय तथा विचारणीय है।

आत्मतुष्ट है। उसे दूसरे देशों के प्रति कोई द्वेष नहीं और न किसी प्रकार का लालच ही है। इस पत्र का तात्कालिक परिणाम कुछ भी नहीं निकला, सम्मेलन में हिन्दुस्तान को जो जगह मिली वह ब्रिटिश कामनवेल्थ का सदस्य होने के नाते और सम्मेलन में ब्रिटेन के पक्ष में हाथ उठाने के लिए किन्तु आज हम कह सकते हैं, वह पत्र हमारे स्वतन्त्र परराष्ट्र नीति के आधुनिक युग में प्रथम अभिव्यक्ति था।

उसके बाद से कांग्रेस ने आजादी की लड़ाई के लिए नीति और योजना बनाने के अलावा अपनी परराष्ट्र नीति को भी निर्धारित कर लेना आवश्यक समझा। इस तथ्य का महत्त्व कांग्रेस में पंडित जवाहरलाल नेहरू के प्रयत्नों के फलस्वरूप ही स्वीकार किया गया था। अस्तु, १९२७ में कांग्रेस ने अपने मद्रास अधिवेशन में प्रथमबार एक सम्यक परराष्ट्र नीति की घोषणा की। उसमें भविष्य में किसी भी साम्राज्यवादी युद्ध में भाग न लेने की बात पर विशेष रूप से जोर डाला गया था। फिर बाद को कांग्रेस के करीब-करीब हर अधिवेशन में इस सिद्धान्त को दुहराया गया। किन्तु इसकी परीक्षा का समय करीब १२ वर्ष बाद १९३९ में आया जब कि शान्ति-सम्मेलन और राष्ट्रसंघ के दिनों प्रकट किये गये तमाम उद्गारों को भुलाकर दुनिया के महान् राष्ट्र विश्वयुद्ध के रक्तकुंड में गोते लगाने को उतर पड़े। जब तक लड़ाई पश्चिमी यूरोपीय शक्तियों के बीच रही, कांग्रेस के लिए किसी प्रकार की दुविधा नहीं थी। १९३६ में कांग्रेस के लखनऊ-अधिवेशन के अवसर पर पंडित नेहरू ने जो नीति बनाई थी, वह उसके सामने थी। इस नीति को कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन में भी पुनः दुहराया गया। उन दिनों युद्ध की विभीषिका क्षितिज से झाँक रही थी, इसलिए लखनऊ-अधिवेशनवाली नीति की सम्यक व्याख्या की गई। फिर १९३९ में कांग्रेस कार्य-समिति ने १४ सितम्बर की अपनी बैठक में उस नीति के आधार पर एक विस्तृत वक्तव्य दिया, जिसमें साफ तौर पर ऐलान कर दिया गया कि हिन्दुस्तान अपनी मर्जी के खिलाफ इस युद्ध में कोई भाग नहीं लेगा। साथ ही उसमें ब्रिटेन से आग्रह किया गया था कि वह किन उद्देश्यों से प्रेरित हो युद्ध में भाग ले रहा है, उनकी स्पष्ट घोषणा करे, क्योंकि तभी हिन्दुस्तान जान सकेगा कि वस्तुतः ब्रिटेन अपने साम्राज्यवादी स्वार्थों की रक्षा के लिए लड़ रहा है अथवा तथाकथित प्रजातांत्रिक सिद्धान्तों की रक्षा के लिए। ब्रिटेन ने कभी इसका उत्तर नहीं दिया, बल्कि देश में जो कुछ भी प्रजातांत्रिक अधिकार बाकी थे, उन्हें क्रमशः खत्म करने लगा। यह कांग्रेस के लिए एक प्रकार की चुनौती थी। इसका जवाब वह दे सके, उसके पूर्व ही युद्ध में सबको भी उतर आना पड़ा। बस दुनिया भर की तमाम कम्युनिस्ट पार्टियों ने रूस के इशारे पर 'जनयुद्ध' का प्रचार आरम्भ कर दिया। ब्रिटेन तथा अन्य साम्राज्यवादी ताकतों ने अपने स्वार्थ के कारण कम्युनिस्टों को खूब प्रोत्साहन दिया। नतीजा यह हुआ कि रूस के युद्ध प्रवेश से कांग्रेस के आगे थोड़ा देर के लिए दुविधा उपस्थित हो गई। किन्तु ९ अगस्त १९४२ के बाद छिपा दुविधा का यह कुहरा बिलकुल फट गया। अगस्त क्रांति के दिनों अँगरेजों ने हिन्दुस्तान में मानवता, सभ्यता और प्रजातांत्रिक सिद्धांतों की वैसी हत्या की वह हिन्दुस्तान की मौजूदा नस्ल को चिरकाल तक याद रहेगी। उसे दुहराने की यहाँ कोई आवश्यकता भी नहीं।

उस अत्याचार के बाद फिर कांग्रेस को युद्ध के पूर्णतया साम्राज्यवादी होने में कोई शंका नहीं रही। अतः दमन और जुल्म के भीषण तांडव के बावजूद कांग्रेस अपने सिद्धांत पर अटल रही।

अन्तर एशियाई सम्मेलन

किन्तु अन्ततः स्वीकार करना पड़ेगा कि परिस्थितिवश कांग्रेस की परराष्ट्र नीति शुरू से लेकर १५ अगस्त १९४७ तक मूलतः नकारात्मक ही थी। उस तिथि के बाद से कांग्रेस को बल्कि कहना चाहिए हिन्दुस्तान को वास्तविक परराष्ट्र नीति बनाने का अवसर मिला। इसका शुभारम्भ अंतरिम सरकार के दिनों ही पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कर दिया, जब कि उनके प्रयत्नों से पुराने किले में एशियाई राष्ट्रों का महान् अधिवेशन बुलाया गया। यद्यपि अरब-यहूदी संघर्ष और हिन्द में अँगरेजी

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

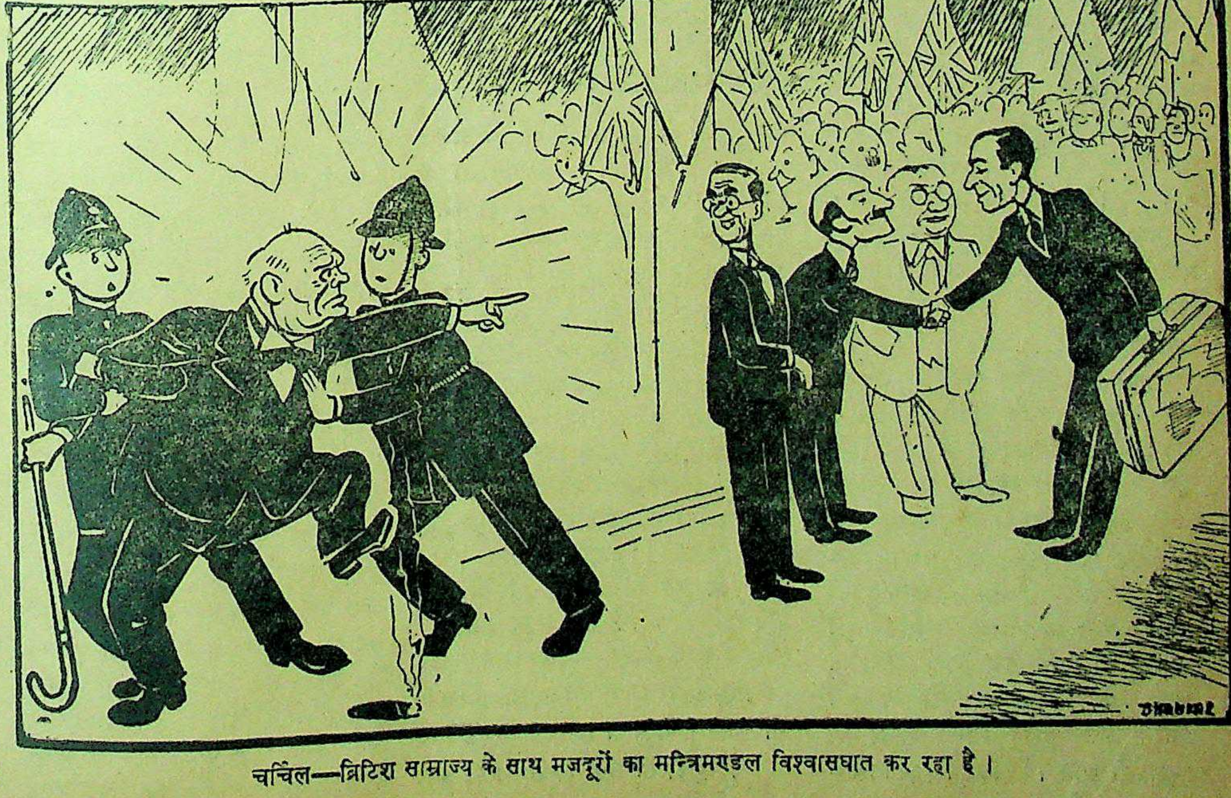

चर्चिल—ब्रिटिश साम्राज्य के साथ मजदूरों का मन्त्रिमण्डल विश्वासघात कर रहा है।

हिन्दुस्तानी की मर्यादा क्या है ?

राष्ट्रभाषा का स्थान हिन्दी को क्यों मिलना चाहिए !

लेखक, माननीय घनश्यामसिंह गुप्त, एम० एल० ए०

(स्पीकर लेजिस्लेटिव असेम्बली, मध्यप्रान्त व बरार)

विधान-परिषद् शीघ्र ही राष्ट्रभाषा तथा राष्ट्रलिपि का निर्णय करनेवाली है। भारतीय गुप्त उन व्यक्तियों में हैं जो हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित कराने में और हिन्दुस्तानी अपदस्थ कराने में सतत् उद्योगशील हैं। इस लेख में हिन्दी का महत्त्व और हिन्दुस्तानी की अनुपयोगिता बतलाई गई है। लेख विचारणीय तथा उपयोगी है।

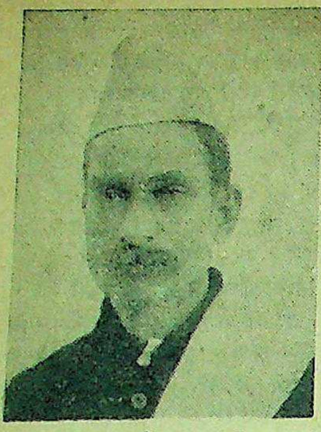

विधान परिषद् के सभापति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ।

हिन्दी, हिन्दुस्तानी और उर्दू का विवाद जनता का ध्यान अब स्वभावतः अधिक आकर्षित कर रहा है। पूर्वसंचित भावनाओं के कारण और नारों के पीछे चलने के कारण, इस विवाद में विचार का कुछ अभाव दीखता है। इस विषय पर आवेगों को छोड़कर युक्ति से ही विचार किया जाय तो अच्छा हो। विवाद, भाषा और लिपि दोनों के सम्बन्ध में है। इस छोटे से लेख में भाषा के सम्बन्ध में ही विचार किया जायेगा। सम्भव है कि इससे लिपि के विषय में विचार करना अनावश्यक हो जावे।

हिन्दुस्तानी की परिभाषा मैं इस प्रकार करूँगा : वह भाषा जिसमें हिन्दी और उर्दू का भेद नहीं रह जाता, जिसमें दोनों घुल-मिल कर एक हो जाती हैं। यद्यपि भिन्न भिन्न स्थानों में इसकी शब्दावली में भेद रहता है। पंजाब और दिल्ली की हिन्दुस्तानी में मध्यप्रदेश की अपेक्षा अधिक उर्दू शब्द होंगे। छत्तीसगढ़ में तो उर्दू शब्दों का छींटा ही रहेगा। यह हिन्दुस्तानी उन उन स्थानों की बोलचाल की भाषा है।

ब्रिटिश राज-सत्ता के कारण, उच्च शिक्षा, कानून, अदालत आदि की भाषा अँगरेजी रही है। यहाँ तक कि कांग्रेस के प्रस्ताव भी प्रायः अँगरेजी में ही हुआ करते थे। अतः अँगरेजी के अपने विस्तृत क्षेत्रों से बचे-खुचे क्षेत्रों में ही हिन्दुस्तानी से काम होता था। यथा साधारण बोलचाल, व्याख्यान और साधारण पुस्तकें। इन सब कामों के लिये हिन्दुस्तानी पर्याप्त होती थी। उससे ये सब काम भली प्रकार से निकल जाते थे। विशिष्ट शब्दावली के प्रयोग की आवश्यकता न होने से हिन्दी, हिन्दुस्तानी और उर्दू के वास्तविक विवाद का कोई प्रसंग ही न था।

हमारी राजनैतिक स्वतंत्रता के बाद यह स्वाभाविक इच्छा होने लगी कि अँगरेजी भाषा के साम्राज्य का भी अन्त किया जाय और उसका स्थान अपनी भाषा को मिले। इसका अनिवार्य परिणाम यह होता है कि जहाँ अब तक हमारी भाषा बोलचाल की थी और जिसकी शब्दावली मेरे अन्दाज से दो हजार शब्दों से अधिक नहीं थी वहाँ अब उसे उच्च शिक्षा, विज्ञान, कानून और विधान आदि की भाषा भी होनी है जिसके लिये लाखों शब्दों की शब्दावली अनिवार्य है जिसमें सूक्ष्म विचारों की और सूक्ष्म विचारों में भेद दिखानेवाले शब्दों की आवश्यकता है यथा प्रेशर और कम्प्रेशन में, क्लोराइड, क्लोराइट और क्लोरेट में, पेनल्टी, पनिशमेंट और सेन्टेन्स और हजारों ऐसे दूसरे शब्दों में।

हमें यह भी स्मरण रखना है कि हमारा प्रयत्न आज के लिये नहीं बल्कि भावी सन्तानों के लिये है। और हमें वह करना है जो उनकी उन्नति में साधक हो, चाहे वह आज हमारे लिये सुविधाजनक न हो और चाहे उससे हमारी भावनाओं पर कुछ आघात भी पहुँचता हो। यह भी देखना है कि हमारी शब्दावली ऐसी हो जो भारत अधिराज्य की अन्य भाषाओं को भी समान रूप से ग्राह्य हो सके, यथा मराठी, बँगला, तेलगू आदि जो कि सबके सब या तो संस्कृत से पैदा हुई या संस्कृत प्रचुर है। हमें यह भी देखना होगा कि हमारे शब्द प्रायः ऐसे हों जिनसे तद्भव और व्युत्पन्न शब्द सहलता से बन सकें। कई स्थानों में तो इनका एक लम्बा परिवार होता है। हमें यह भी देखना कि हमारे शब्द अपने अर्थ के स्वयं द्योतक हों। किसी शब्द के अर्थ को जानने के लिये उसे घोलना, कण्ठ करना न पड़ें, किन्तु स्वयं शब्द ही बता दें कि उसका अमुक अर्थ है। यथा पाठशाला स्कूल अपने अर्थ को नहीं बताता। सुसंस्कृत सार्थिक शब्द भावी विद्यार्थी के मानसिक और बौद्धिक उन्नति में साधक होगा और प्रत्येक असंस्कृत अनर्थक शब्द उसको भाररूप होगा चाहे वह आज हमारे लिये कितना भी परिचित और सहल क्यों न हो।

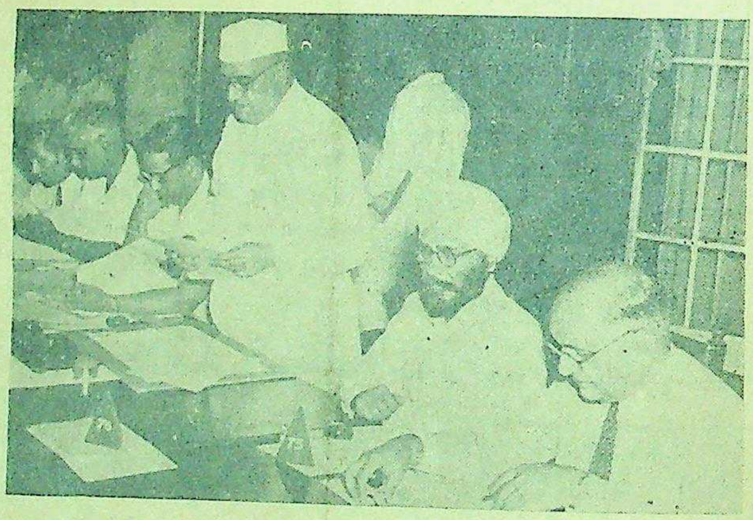

भारत के भोजन-मंत्री श्री जयरामदास दौलतराम भारत में अन्न और वस्त्र के कंट्रोल के सम्बन्ध में भाषण दे रहे हैं।

यह छोटा सा लेख लम्बा न हो इस गरज से मैंने केवल मुद्दे की बातें ही लिखी हैं और उन सबके उदाहरण नहीं दिये हैं। कालेज की पढ़ाई के लिए वैज्ञानिक शब्दावली बनाने का कार्य देखने का मुझे मौका मिला और अपनी विधान सभा (असेम्बली) के लिए शब्दावली बनाने का कार्य मुझे स्वयं करना पड़ा। इससे मैं निम्न परिणाम पर पहुँचा हूँ।

(१) हिन्दुस्तानी, हिन्दी और उर्दू का मिश्रण और यदि रासायनिक शब्द के प्रयोग के लिए क्षमा मिले तो कहूँगा, हिन्दी उर्दू का बोल, साधारण जनता की बोलचाल की भाषा है और रह सकती है। इसका शब्द-भाण्डार सीमित है। मेरे अन्दाज से दो हजार शब्दों से भी कम है। यह उच्च शिक्षा, कानून और प्रबन्ध की भाषा नहीं हो सकती जिसके लिए लाखों का शब्द-भण्डार आवश्यक है। इस महती आवश्यकता को पूरा करने के लिए हिन्दुस्तानी को बढ़ाने की धारणा उसे ही खत्म कर देगी जिस प्रकार कि बच्चों के फुग्गे को मर्यादा से अधिक बढ़ाने के यत्न में वह फूट जाता है। एक ही खूबी जिसके कारण हिन्दुस्तानी का राग गाया जाता है अर्थात् उसकी सरलता साधारण जनता की समझ में आना वह समाप्त हो जायेगी। दो हजार से लाखों का शब्द भण्डार बनना और वह फिर हिन्दुस्तानी; हिन्दी उर्दू का मिश्रण; दीखती रहे इसके लिए यह आवश्यक होगा कि अव्यवस्थित रीति से एक शब्द हम संस्कृत से लें और दूसरा अरबी या फारसी से। लीगल के लिए "वैध" तो लालेस के लिए "मुतलिकउल एनान" करेंगे। यह शब्द भावी

संतान के लिए सर्वथा नये,
कठिन होंगे और अरबी से
के कारण हमारी भाषाओं में
संस्कृत है असम्बद्ध होंगे।
विद्यार्थियों के लिए भाररूप
बुद्धि को धीरे धीरे अदृश्य
निश्चयपूर्वक थोथी बनाने
रहेंगे।

(२) हिन्दुस्तानी की उपयो
को यदि हम ध्यान में रखें तो
स्तान की राष्ट्रभाषा भी बन सकती
साधारण जनता के लिए
लिये।

(३) उच्च शिक्षा, कानून
आदि की भाषा या तो (अ) हि
संस्कृत जन्य : या (ब) उर्दू :
फारसी जन्य : या अँगरेजी हो
इसके सिवाय दूसरा कोई चारा
जब हमें इन तीनों में से एक
इसमें कोई सन्देह नहीं रहता कि
ही होगी।

सेवाग्राम
रंग-बिरंगी छपाई, अनेक
रचयिता श्री सोहनलाल
संरक्षक श्री घनश्यामदास
जनता की भाषा में, जनता
का, जनता का काव्य
रचनाओं का सुन्दर संग्रह।
बढ़िया कागज़, कपड़े की मज़बूत जिल्द
मूल्य दस रुपये।

आविष्कारों की कथा
मशीनें कैसे बनीं!
औजार कैसे बनें? रेल, जहाज,
सिनेमा वगैरह कैसे बने? नई
बनाकर या नये काम करके
दुनिया में प्रसिद्ध हो सकते हैं!
बातों को जानने के लिए यह पुस्तक
पढ़िए। मूल्य १)

जानवरों की मज़ेदार कहा
मोर और कौआ, लोमड़ी और
चालाक बुढ़िया, सोने की चिड़िया,
और सियार आदि कहानियाँ
इनका चमत्कार देखिए। मोटे
अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का

अपराजिता
यह श्रीयुत रामेश्वरप्रसाद शुक्ल
ए०, 'अञ्चल' की कतिपय सुन्दर
का संग्रह है। कविताएँ नवीन
नूतन सांस्कृतिक रुचि और प्रग
हैं। कवि 'अंचल' का रचनाओं
प्राप्त करने के लिए अपराजित
देखिए। सजिल्द पुस्तक का मूल्य
रुपये।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

कवि, उर्मिला कहानीकार, प्रमीला मेरी पत्नी, प्रभाकर और लता एक और लड़की— जनों का हमारा दल साहित्यिक रोमांटिक यानी रोमांचक खोजों की पर निकला हुआ था।

बरसात के दिन थे। बुन्देलखण्ड के प्रदेश की यात्रा थी। अकसर ऐसा था कि हमें बरसात में भींगने के बाद जाकर एक एक प्याला चाय होती थी। प्रभाकर की बातें ही भीगती ठिठुरती हमारी पार्टी के तक चाय का काम दे जाती थी हमें असली चाय न मिले, इस- इन दिनों मसखरे प्रभाकर को पार्टी का कप्तान बनाये । इस समय हम महोबा पहुँचे । महोबा हमीरपुर जिले का एक कस्बा है, लेकिन आल्हा-ऊदल की हरेक वीर-साहित्य का प्रेमी हिन्दू का नाम जानता है।

सागर के किनारे किनारे चल- नेवाले खूबसूरत पहाड़ गोरखार एक ऊँची चोटी के पास हम पहुँचे थे। चोटी चौरस शिलाओं थी और उसके नीचे एम गुफा का द्वार जरा दूसरी ओर को था। र पहुँचते ही हम लोग ठिठक- खामोश हो गये। गुफा के चर्म पर सिद्धासन से एक वृद्ध ध्यानावस्थित बैठे थे।

कर ने सामने पहुँचकर योगिराज कैमरा साध लिया।

'एक्सपोजर' ले चुकने के बाद तसवीर खींचने के लिए बटन रहा था कि योगिराज ने गर्दन आँखें खोल दीं।

तुम्हारों की! फोटो सत्या..." फोटो बिगड़ने की बौखलाहट में था और हम पाँचों हाथ जोड़कर जी को प्रणाम कर रहे थे।

मुड़कर मैंने देखा, प्रभाकर हमारे धरती पर लेटा हुआ योगिराज को प्रणाम कर रहा था।

गहरी रेखाओं से भरे हुये योगी जी के गेन्द' मुख पर एक स्निग्ध मुस्कान गई। एक हाथ उठाकर आशीर्वाद- हुये उन्होंने कहा—

"मैं इस प्रसन्न युवा-मण्डली का करता हूँ, भीतर आकर बैठिये।"

हम लोग कायदे से एक अर्द्ध-वृत्त उनके पास बैठ गये।

योगिराज के प्रश्न पर प्रभाकर ने हम उन्हें परिचय दिया—कवि, लेखक, नीकार, लेखक-पत्नी, लता, फोटो-

"इस दल में आप सभी कुछ न कुछ यह लता कुछ भी नहीं, बात है?" योगी जी के प्रश्न से अनुभव किया कि वह हम लोगों से शामिल एक सभ्य योगी हैं।

प्रभाकर ने लता और ओर बारी बारी से देखते हुए लता जी ही मधुकर जी की

नये योग का योगी

लेखक, रावी

> जीवन में मानव से मानव को कदापि घृणा नहीं करनी चाहिये। पारस्परिक प्रेम और एकता से जीवनयापन करना चाहिये। इस कहानी में योगविद्या के प्रेमी योगिराज ने कुछ इस प्रकार का उपदेश दिया है जो विभिन्न घटनाओं के सम्मिश्रण से रोचक बन गई है। कहानी आकर्षक और पठनीय है।

कविताओं के शीर्षक यानी कविता के विषय मधुकर जी को देती हैं।"

लिखने ही बैठे हैं तो हम छिपाएँ क्यों, लता का इससे अधिक स्पष्ट और संक्षिप्त के साथ साथ सम्पूर्ण परिचय और किन्हीं शब्दों में नहीं किया जा सकता था—लता ही मधुकर की कविताओं की प्रेरणा थी।

योगी जी ने एक गहरी दृष्टि लता पर डाली, लता लजा-सी उठी।

"और" प्रभाकर उत्साह-सा पाकर कह रहा था, "जिस तरह मधुकर जी को अपनी कविताओं की प्रेरणा लता जी से मिलती है, उसी तरह उर्मिला जी को अपनी कहानियों की प्रेरणा हमीं में से—यह श्रीमती प्रमीलाजी" मेरी पत्नी की ओर इशारा करते हुए उसने कहा, "इस बात को जानती हैं। प्रमीला जी बहुत उदार हैं और हम लोगों की अन्न-पूर्णा यही हैं। इन्हीं की बदौलत दिन भर में कम से कम एक बार कच्ची-पक्की रोटियाँ हमें जरूर मिल जाती हैं।"

उर्मिला मधुकर की पीठ की ओर से प्रभाकर को घूँसा दिखा रही थी और प्रमीला उर्मिला को ताकती हुई हँस रही थी।

"कवि, लेखक, कहानीकार, चित्रकार, कवि प्रेरणा, अन्नपूर्णा—बड़ा सुन्दर सम्मेलन है आप लोगों का। अगर मेरा बचपन होता तो मैं भी आप लोगों के साथ शामिल हो जाता। नौजवानों को और उनके तरीकों को मैं हमेशा से बहुत पसन्द करता हूँ।"

योगी जी ने दीवार के एक छोटे से छेद पर उँगली रक्खी और गुफा के भीतर दूर घंटी बजने की-सी आवाज हम लोगों को सुनाई दी। घुटे सिर और लम्बे-लम्बे दाँतोंवाला एक छोकरा उस अँधेरी गुफा के भीतर से आकर सामने खड़ा हो गया।

"चाय" योगी जी ने कहा और वह वापस चला गया।

दस मिनट के भीतर कीमती खूबसूरत बर्तनों में सजी हुई ट्रे में चाय और वैसी ही गरमागरम मीठी और नमकीन मठरियाँ हमारे सामने आ गईं।

उस नाश्ते के जायके में उस नाश्ते का चमत्कार हमारे लिए अधिक आश्चर्य की चीज थी।

"यह टी-सेट मैं गदर के साल सन् सत्तावन में अपने साथ बर्लिन से लाया था और यह अब भी इसी साल का बना हुआ मालूम होता है। होता है न?" योगी जी ने हमारी मानसिक शंकाओं का समाधान करते हुए हमारा कुतूहल और भी बढ़ा दिया।

"आप सन् सत्तावन में बर्लिन से आये थे—" प्रभाकर ने कुछ पूछना चाहा।

"हाँ, मेरा जन्म जर्मनी में हुआ था। मेरे माता-पिता जर्मनी में रहनेवाले हिन्दुस्तानी थे। मैं इस गोखार में रहनेवाले एक महात्मा का शिष्य हूँ। सन् १८५७ में जब मैं पहले-पहल यहाँ आया उस समय मैं आप लोग जैसा ही नौजवान था। मेरी उम्र इस समय एक सौ चौदह साल है।"

हम लोग मन ही मन उनकी उम्र का ही हिसाब लगा रहे थे।

"आप सन सत्तावन से बराबर इसी जगह रह रहे हैं।" मैंने कुछ आश्चर्य के साथ पूछा।

"हाँ, और मैं आपको तभी से जानता हूँ जब, पंद्रह बरस पहले आप इस गोखार की पहाड़ियों पर हवाई सैर करने आया करते थे। उन दिनों इस गुफा का दरवाजा एक चट्टान से बन्द रहता था, क्योंकि उन दिनों आपकी उम्र मेरी दोस्ती के लिए काफी नहीं थी।"

मुझे आश्चर्य था, योगिराज हमारे प्रश्नों के उत्तर पेशगी ही दे रहे थे। पन्द्रह बरस पहले, बचपन में जब मैं अपने बड़े भाई साहब के पास महोबा आया था तब यह गोखार गिरि मेरा प्रिय विहार-स्थल रहा करता था। इस गुफा को और इन

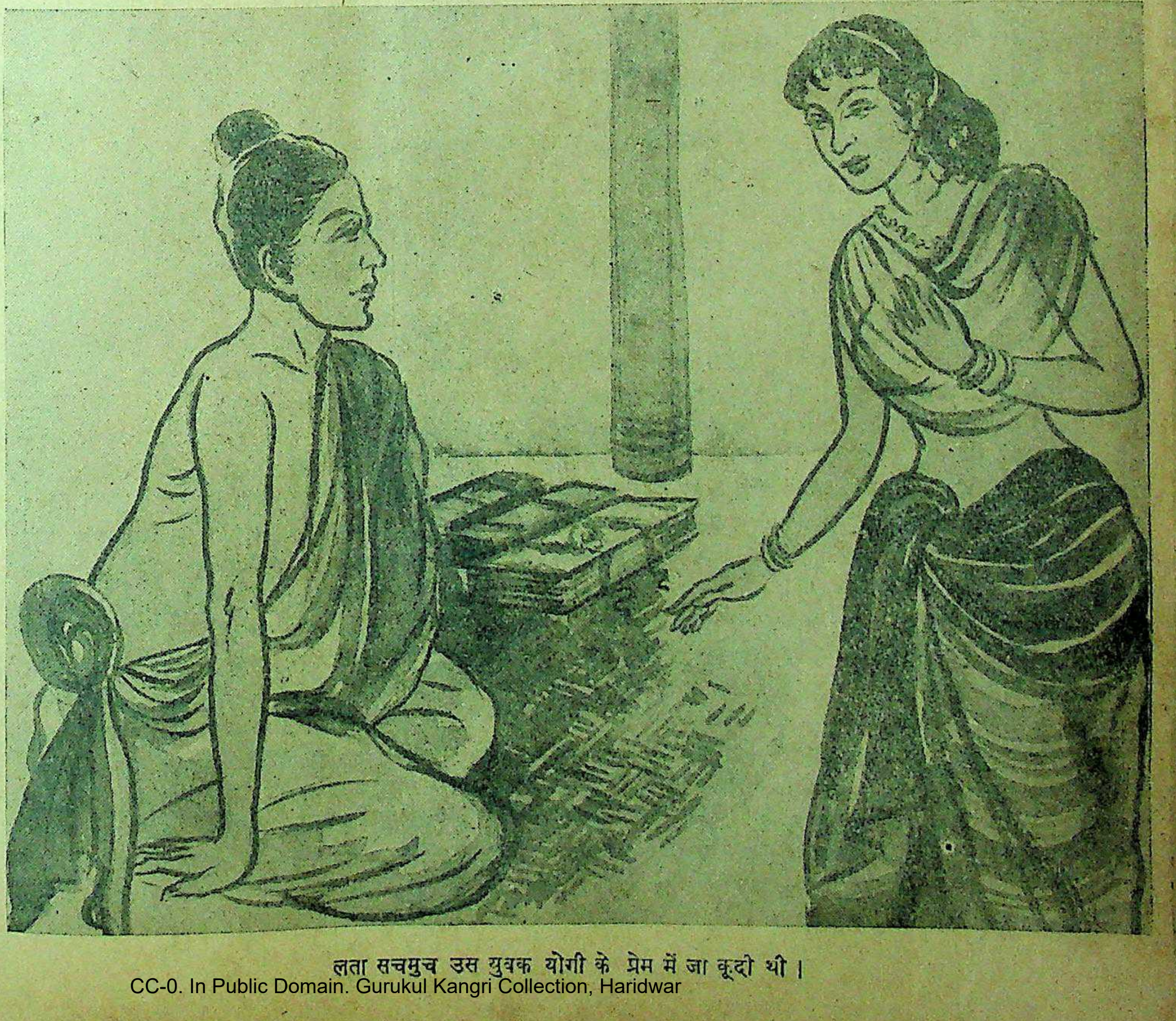

लता सचमुच उस युवक योगी के प्रेम में जा कूदी थी।

महात्मा जी को मैंने पहले कभी नहीं देखा था।

योगी जी एक पैनी, मुस्कराहट भरी दृष्टि से मुझे देख रहे थे।

‘मेरा यह मतलब नहीं” उन्होंने फिर कहना शुरू किया, “उन दिनों आपमें कोई कमी थी। उन दिनों आप मुझे अधिक प्रिय लगते थे और इन दिनों कुछ अधिक प्रेमी दिखाई देते हैं; तब आप लेने के हकदार अधिक थे, अब देने की समाई आपमें बढ़ रही है।”

“आप ठीक कहते हैं” मैंने अपने दिल की गहराई से स्वीकार किया।

“मैं आप जैसे नौजवानों को” “हम सबको सम्बोधित करते हुए योगी जी ने कहा, “बहुत पसंद करता हूँ। मेरे पास दूसरे लोग आते हैं। वे ज्ञान, वैराग्य, दुनिया से नफरत और उससे छुटकारे की बातें करते हैं। मुझे ऐसी बातों से नफरत होती है। वे ऐसी चीजें मांगते हैं जिनका वे कोई उपयोग नहीं कर सकते और ऐसी चीजों से भागना चाहते हैं जो इनके बहुत काम आ सकती हैं। उनकी बातें बहुत कुछ बनावटी और व्यर्थ के डर और नादानी से भरी होती हैं। इसीलिए मैं उन नौजवानों को ज्यादा पसंद करता हूँ जिनमें हर खूबसूरत चीज को अपनी तरफ खींचने का हौसला होता है, जिनमें उमंग होती है, जान होती है।”

योगी जी ने क्षण भर को रुककर हम सब पर एक घूमती हुई दृष्टि डाली और तब फिर कहने लगे—

“मैं योगियों की तरह बात नहीं करता। योगी लोग सरल, छोटे-छोटे और थोड़े से ही वाक्यों में अपनी बात पूरी कर लेते हैं। उनके वाक्य बहुत सारगर्भित होते हैं। लेकिन मैं वैसा योगी नहीं हूँ। आपने कई तरह के योग-मार्गों के नाम सुने होंगे—राजयोग, भक्तियोग, कर्मयोग, ज्ञानयोग, हठयोग, लययोग; लेकिन मेरे योग का नाम है मैत्रीयोग। इस योग का नाम अभी कम ही लोगों ने सुना होगा। इस योग-साधन का रास्ता यह है कि अपने मित्रों की संख्या अधिक से अधिक बढ़ाई जाय। इसके लिए हर दर्जे और हर विचार के लोगों के विचारों, व्यवहारों और उनके ढंगों से मेल खाने की जरूरत है। यह मैत्रीयोग ही आनेवाले जमाने का एक बहुत बड़ा योग या मजहब यानी धर्म होगा और नौजवानों का तो यही खास ‘रिलीजन’ होगा। आप मेरी बात समझ रहे हैं?”

“हम खूब समझ रहे हैं, महाराज!” प्रभाकर बोल उठा, “और इस मजहब में इसी दम अपना नाम लिखाने को तैयार हैं। क्या आप इतना और बता सकते हैं कि इस समय तक कितने मित्र आपने बना लिये हैं और कितने अभी और बना लेंगे?”

“मेरे मित्रों की तादाद इस समय सात करोड़ तिहत्तर लाख तक पहुँच चुकी है और मुझे कुल करीब साठ अरब मनुष्यों को मित्र बनाना है।”

“साठ अरब मनुष्यों को!” मैंने कहा, “दो अरब से ज्यादा मनुष्य तो दुनिया भर में भी नहीं हैं।”

“लेकिन दुनिया भर में मौजूद और मरने-पैदा होनेवाले कुल मनुष्यों की संख्या साठ अरब के ही लगभग है, उनमें से करीब दो अरब ही एक समय में शरीरधारी रहते हैं।”

“गुरुओं की बातें गुरु ही जानें” प्रभाकर ने मसखरेपन में मुझे सुनाते हुए योगीजी से कहा, “आपके मित्रों में अगर हमारा भी नाम आ गया हो तो क्या हमारा रोल-नम्बर बताने की कृपा करेंगे?”

“इनका रोल नम्बर” मेरी ओर लक्ष्य करके योगी जी ने कहा, “तो पन्द्रह बरस पहले का काफी पुराना हो गया है। लता जी, मधुकर जी, प्रभाकर जी, उर्मिला जी और प्रमीला जी का रोल नम्बर क्रमशः सात करोड़ अड़सठ लाख एक, सात करोड़ उनहत्तर लाख एक, सात करोड़ सत्तर लाख एक, सात करोड़ इकहत्तर लाख एक, साठ करोड़ बहत्तर लाख एक है। जब मैं किसी एक व्यक्ति से मिलता हूँ तब वह अकेला ही नहीं, बल्कि उसकी प्रकृति और प्रकार के एक लाख व्यक्ति मेरे मित्र हो जाते हैं—हरेक नया मित्र मेरे लिए एक लाख नये मित्रों का साधन होता है।”

योगी जी की आँखें लता की आँखों में टिकी हुई मुस्करा रही थीं।

“यह सब एक महान् सत्य है, गुरुदेव” प्रभाकर कह रहा था, “लेकिन आपके इस मैत्री योग से, यानी आपकी मित्रता से हमारा आपका क्या कुछ पारस्परिक लाभ भी हो सकेगा?”

“गुरुदेव?” योगी जी ने प्रभाकर के इस सम्बोधन को एक व्यंग्य के साथ दोहराकर क्षण भर बाद कहा, “लाभ यही होगा कि हम लोग न केवल अपनी ही बल्कि एक दूसरे की कमाई से भी परस्पर लाभ उठाएँगे। जो आपके पास होगा वह आप मुझे देंगे, जो मेरे पास होगा वह मैं आपको भी दूँगा।”

“उदाहरणार्थ, आप मुझे पवित्र ज्ञान देंगे, मैं आपकी धन से थोड़ी-बहुत सेवा करूँगा?” प्रभाकर कह रहा था।

“अगर आपके पास धन मुझसे अधिक और मेरे पास ज्ञान आपसे अधिक होगा, लेकिन मैं समझता हूँ, मेरे पास देने के लिए धन अधिक है और आपके पास देने के लिए ज्ञान अधिक है। मेरी अमीरी में क्या अब भी आपको कुछ संदेह है?” योगी जी मुस्करा रहे थे।

हम सबने अपने जीवन भर की सबसे अधिक अमीरी चाय अभी-अभी पी थी।

“मैं आप लोगों से बहुत कुछ सीख सकता हूँ” वह कह रहे थे, “ऐसी बातें, जिनकी आप आसानी से कल्पना भी नहीं कर सकते और आपको भी आपके मतलब की कुछ सलाहें दे सकता हूँ।”

“मैं उन्हें सुनने के लिए उत्सुक हूँ” उर्मिला ने कहा।

“आप लोग नौजवान हैं। आपमें प्रेम करने का माद्दा है। मेरी सलाह है कि आप ज्यादा से ज्यादा लोगों को—खास कर अपने हम-उम्रों को—ज्यादा से ज्यादा गहराई के साथ, खूब खुलकर प्यार करें। इसमें साहस और सफाई से काम लें। अपने आपको अधिक से अधिक आकर्षक बनायें। किसी गरीब या बदशकल से नफरत न करें, बल्कि उसको भी जहाँ तक बन सके, अमीर और खूबसूरत बनने की कामना करें और जीवन को मीठे रोमांसों की [illegible] बना डालें। ऐसा करने में सिर्फ इतना ध्यान रक्खें कि किसी की आप व्यर्थ ही बुराई न करें, आप अपनी बातों, कामों या विचारों से किसी को किसी तरह का नुकसान न पहुँचने दें और जो बात आपके दिल-दिमाग को खूब सोचने-विचारने पर ठीक न जँचती हो इसे दूसरों के कहने या दुनिया के विश्वास के कारण ठीक न मान लें। इन तीन बातों का जरा गहराई तक ध्यान रखते हुए, मधुकर जी, आप अपनी वापसी यात्रा में जितनी भी लड़कियों को प्यार कर सकें, खुलकर प्यार करने का प्रयोग करें।”

मधुकर कुछ झेंप सा उठा था।

“आप यह सलाह हम सबको ही दे रहे हैं या—” प्रभाकर पूछने लगा।

“मैं सभी को यह सलाह दे रहा हूँ, मेरा सिर्फ मधुकर जी से ही मतलब नहीं है।” उन्होंने कहा और इसके बाद काफी देर तक हम लोग योगी जी के साथ ‘बिना किसी तरह का नुकसान पहुँचाये किसी को प्यार करने’ की व्याख्या और छानबीन करते रहे।

“आप लोग लेखक और अन्वेषक हैं और नौजवान हैं” बातें पूरी होते होते योगी जी ने कहा, “यह सोने में सुहागे की बात है। आप खूब लिखें और आपकी सैरों और लेखों में जवानी का रस सदा ताजा रहे। दुनिया को अभी बहुत तरह की मानसिक खूराकों की जरूरत है। प्रेम और समाज-सुधारसम्बन्धी कहानियों के साथ साथ क्या जादू, तिलिस्म और जासूसी की कहानियों की ओर कुछ उपयोगी कदम और नहीं बढ़ाया जा सकता?” योगी जी अन्तिम बात उर्मिला जी से पूछ रहे थे।

“जादू की, जासूसी—तिलिस्मी, इनमें कुछ तथ्य नहीं है, इनका जमाना गया। जगे हुए हृदयवाले शिक्षित लोग अब मनोवैज्ञानिक चीजों को ही पसन्द करते हैं।” उर्मिला ने राय दी।

“मैं समझता हूँ, जादू, जासूसी, तिलिस्मी साहित्य का उपयोग अभी पूरा नहीं हुआ। जिज्ञासा, कुतूहल और नई नई सम्भावनाओं की जिस भावना को इस तरह का साहित्य लोगों में जगा सकता था, वह अभी नहीं हुआ। भावना-शील हृदयों ने इसकी ओर अभी आँख नहीं उठाई। इसका दिन आना अभी बाकी है। भौतिक विज्ञान और कौशल के बाद आन्तरिक विज्ञान और नियमबद्ध चमत्कारों की ओर इस प्रकार का साहित्य लोगों का ध्यान खींच सकता है। भावुक कल्पना के लेखकों के मुकाबले दूसरे, जरा रूखे ढंग के लेखक इस काम को अधिक अच्छा कर सकते हैं।” योगी जी की दृष्टि अब मुझ पर थी।

“मुझे कुछ जासूसी, तिलिस्मी या चमत्कार की चीजें दिखाई दें तो मैं उन पर जरूर लेख और उपन्यास लिख सकता हूँ। वैसे मेरी कल्पना इस दिशा में नहीं चल पाती।” मैंने योगी जी की निगाह का उत्तर दिया।

“समय आयेगा तब ऐसा ही होगा। अगली बार जब आप लोग यहाँ आयेंगे तब मैं आपको इस गुफा के साथ का बड़ा पुस्तकालय और [illegible] दिखाऊँगा। उसका द्वार इन दिनों अभी बन्द है।”

“इसके साथ पुस्तकालय और यम भी है?” मैंने और उर्मिला ने साथ पूछा।

“है, और भी बहुत कुछ है। लोग क्या अपने भोजन के समय तक ठहरेंगे? भोजन का प्रबन्ध हो सकता है।”

काफी देर हो गई थी, हम लोग खड़े हुए।

हमारे अभिवादन के लिए जुड़े हाथों के उत्तर में योगी जी ने अपने उठाये। उनकी हथेलियाँ दो-चार उनके झुर्रियों से भरे हुए मुख पर और उनके ‘मेक-अप’ का मसाला की बत्तियों की तरह चट-चटकर गालों से झड़ पड़ा।

बूढ़े योगिराज नहीं एक स्वस्थ, सुन्दर युवक हमारे सामने मुस्करा रहा था।

“लेडीज!” हमारे कप्तान प्रभा का स्वर गूँज उठा, “सावधान! अटेंशन— गिरो—प्रेम में—एकदम—फाल लव्—वन्—टू—थ्री—एट वंस!”

और लता, जो कि हम सब में सबसे ज्यादा प्रेम करने का साहस थी और सचमुच उस युवक योगी के में जा कूदी थी, मंत्र-मुग्ध-सी उसके को निहारती खड़ी रह गई।

दूसरे ही क्षण सारा दृश्य गायब गया। हम लोग उस गुफा के बाहर खड़े हुए थे और गुफा का द्वार मानो सदैव से सदैव की तरह ही बन्द था—जहाँ किसी द्वार का कोई निशान न था।

“यह जादू, जासूसी और तिलिस्म से ऊपर का एक ऐसा चमत्कार था जिसे हम लोग कभी समझ नहीं पायेंगे। फिर भी आइये हम लोग मुकाबला तो करें कि किसने इस जाग्रत अवस्था में क्या क्या स्वप्न देखा है।” मैंने सबको सलाह दी।

“ऐसे किसी मुकाबले की जरूरत नहीं है” हमने हैरानी के साथ देखा कि बूढ़े योगी जी फिर हमारे सामने उपस्थित होकर कह रहे थे, “आप लोग बे-मुरौवत दोस्तों में हैं और किसी भी नये दोस्त के अस्तित्व पर भी एक मिनट में अविश्वास कर लेने में आपको कोई झिझक नहीं है। मेरी यह भेंट यादगार के तौर पर लेते जाइये।”

हम छहों के हाथों में एक एक खूबसूरत गुलदस्ता, जिसका बर्तन सोने और चाँदी के सम्मिश्रण की-सी धातु का बना हुआ था और जिस पर खूबसूरत फूल सजाये हुए थे, थमाकर वह फिर गायब हो गये।

हम उन गुलदस्तों को अपने साथ ले आये हैं और वे अब भी ज्यों के त्यों हमारे घरों में सुरक्षित हैं।*

इस घटना को कहानी-रूप में लिख कर मैं इस पत्र में भेज रहा हूँ और अगर कोई अमीर पत्र-प्रकाशक हम लोगों के ऐसे सैर-सपाटों का पूरा खर्च देने के लिए तैयार हो तो ऐसे ही लेख और कुछ सप्रामाणिक रूप में और भी लिखकर हम लोग उसे देते रह सकते हैं।

---

* फूलों के वे गुलदस्ते तो नहीं, लेकिन इसी प्रकार के एक अधिक ऊँची कोटि के योगी की पगड़ी मद्रास की कालोनी में अब तक सुरक्षित है और कोई भी जिज्ञासु उसकी जाँच-पड़ताल कर सकता है।—लेखक

मारा रंग-मंच

दूसरी शादी'

जिक कुरीति का एक सामाजिक फ़िल्म

खक, श्री गोपाल मेहरोत्रा

री विवाह भारत में एक अत्यन्त प्रश्न है, जिसका विश्लेषण तीन कृत "दूसरी शादी" में किया गया है।

नीकार श्री वल्ली साहब ने अपनी 'देखोजी' प्रतिबिंब अंकित कथा को इस रूप में प्रदर्शित —धनी, प्रतिष्ठित तथा संतानहीन हीरालाल जी अपनी आदर्श-सहित सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कमला दिन-रात्रि सन्तानोत्पत्ति प्रार्थना करती, पर...। उसी एक नाटक मण्डली की —पाश्चात्य रंग में रँगी श्यापुत्री—प्रमिला, सेठ जी से लाभ उठाने के हितार्थ द्वितीय विवाह का पाँसा फेंकती है और गृह की रानी बन जाती है। सौभाग्यवश कई माह पश्चात् कमला गर्भवती होती है। प्रमिला अपनी आशा, निराशा में परिवर्तित होते निरखकर अपने साथी 'महिन्दर' की सहायता लेती है। सन्तानोत्पत्ति के पश्चात् प्रमिला 'उसे' मरा हुआ घोषित कर नदी में प्रवाहित करने के लिये महिन्दर को भेजती तथा स्वयं मातम मनाना प्रारम्भ कर देती है। षड्यन्त्रानुसार महिन्दर शिशु को मृतक यह कहकर उसी परिवार के भंगी गोपाल को दे देता है। जल में आसीन गोपाल बालक का रोदन सुनकर ठिठक जाता है और वह शिशु 'नन्हुवा' के रूप में उसकी झोपड़ी में दस वर्ष व्यतीत करता है। बालक अपनी माँ के साथ सेठ जी के गृह को स्वच्छ करने जाता है और घर का दीपक घर में भंगी का कार्य करता है। कमला की दशा दिन-प्रतिदिन अत्यन्त शोचनीय होती जाती है। एक प्रमाण द्वारा माँ अपने पुत्र को पहचान लेती है पर प्रमाणित करने से पूर्व वह पागल घोषित कर दी जाती है। प्रमिला के षड्यन्त्रोंवश गोपाल, महिन्दर तथा गुजरी को कारावास होता है, पर मिथ्यापूर्ण प्रमाण-पत्र का रहस्य अरहस्यमय होते ही प्रमिला गृह से निकाल दी जाती है और सेठ जी, गोपाल, गुजरी, अपने पुत्र तथा पत्नी सहित एक आदर्शमय जीवन में प्रवेश करते हैं, परन्तु महिन्दर का कोई समाचार नहीं चित्रित किया जाता है।

प्रस्तुत चित्रपट का कथानक में साधारणतः अछूतोद्धार तथा द्वितीय विवाह के कुप्रभावों का मार्मिक तथा सुन्दर चित्रण करने की चेष्टा की गई है, परन्तु अश्लील हास्य; अस्वाभाविक परिस्थितियों तथा ढोंगी विचारों ने दर्शकों के मुख से अनेक बार 'असम्भव' कहने के लिये बाध्य किया है। कथावस्तु नूतन भावनाओं से युक्त होने पर भी निम्नता (गौरव सहित एक वेश्या-पुत्री के साथ—बिना किसी पूछताछ के—सेठ जी का द्वितीय विवाह, कमला द्वारा आदि से ही भंगी द्वारा पलित बालक की रट, महिन्दर की अनेक बार धमकियाँ—प्रमिला को—परन्तु समय पर उसका शून्य हो जाना, पीड़ित कमला का चिकत्सक के प्रस्थान पर गायन इत्यादि) का अनुसरण करती है। यद्यपि अधिकतर चित्रों में लेखक की अयोग्यता, संवाद लेखक और संवादकार की अनभिज्ञता कथाकार सुरुचिता में परिणत करता हुआ दृष्टिगोचर होता है; परन्तु यहाँ एक 'साँपनाथ' हैं तो दूसरे 'नागनाथ'। कथोपकथन लेखक श्री आई० सी० कपूर जी—'बेहआया'..'बेगैरद' ... 'गुस्ताख, ...'मुत्तिला'..'शौक से'..'शौक से'. अगर तुम कहो तो कुछ दिनों के लिए मैं मसूरी जाना 'मुल्तवी' कर दूँ—उच्चारित करते हैं तो कहानीकार जी पतिव्रता की सुध लेते हैं। कथोपकथन की भाषा पर दृष्टि डालने से तो ऐसा प्रतीत होता है मानो श्री कपूर जी ने आबी गंगा में खड़े होकर सौगन्द ग्रहण की हो कि जब तक 'हिन्दी' की वह धज्जी-धज्जी न उड़ा लेंगे, उन्हें शान्ति न प्राप्त होगी। अतः मैं उनसे प्रार्थना करूँगा कि वे चित्र-व्यवसाय पर दया करें तो अति उत्तम होगा। संवादकार ने गीत अश्लील ('ओ भंगियों के राजा', 'दिल पर तीर चलाए नजरिया', आदि) एवं सुन्दर ('टूटा हुआ दिल गायेगा..', 'न घर अपना न दर अपना', 'भक्तों की है फरियाद', इत्यादि) रचे हैं, परन्तु भाषा के साथ घोर अन्याय किया गया है। पं० गोविन्दराम जी की चुराई हुई ध्वनियों ने गीतकार पर भी कीचड़ उछालने का सफल उपक्रम किया है। उदाहरणार्थ—'टूटा हुआ दिल...' (फरियाद है...' "लैला-मजनू"), देखोजी आई सुहानी रात' ('मेरे दिल पे लगेगी चोट... "पराये बस में") इत्यादि। जोहरा द्वारा दिया गया कमला का 'प्लेबैक' तो इस निम्नता को और भी स्पष्ट कर देता है। श्री सैयद इमाम मिस्त्री का कला-निर्देशन

शेष पृष्ठ १४ पर देखिए

'दूसरी शादी' नामक फ़िल्म में अभिनेता कुमार सेठ जी के और अभिनेत्री मुमताज शान्ति कमला के रूप में प्रमिला तथा रनजीत कुमारी भी दिखाई दे रही हैं।

सम्पादक के नाम चिट्ठियाँ

माननीय प्रधान भारतीय संविधान सभा के नाम खुला पत्र

भारतीय संविधान के हिन्दी अनुवाद के लिए, आपने जो समिति बनाई थी उसकी ओर से आपकी सेवा में हिन्दी संविधान का यह मसविदा पेश करता हूँ। समिति ने इसे अपनी तारीख २८ मई १९४८ की बैठक में स्वीकार कर लिया है और आपकी सेवा में पेश करने का मुझे अधिकार दिया है।

हमारी पहली बैठक में ही श्रीमान् जी ने यह स्पष्ट कर दिया था कि हमारा अनुवाद, केवल साधारण जनता की जानकारी के लिए ही न हो वरन् ऐसा हो जो कानूनी पण्डितों की जाँच में उतर सके और जिसकी प्रामाणिकता उतनी ही हो जितनी कि अँगरेजी मसविदा की, श्रीमान् जी ने यह भी इंगित किया था कि उसमें प्रयुक्त शब्दावली प्रायः ऐसी हो जो इस भारत-अधिराज्य (इंडियन डोमीनियन) के अन्य प्रान्तों को समान रूप से ग्राह्य हो सके। आपकी इन हिदायतों को ध्यान में रखकर ही हमने अपना कार्य आरम्भ किया। हमारे मार्ग में कई कठिनाइयाँ थीं जो प्रायः सबको विदित हैं। तथापि इस कठिन कार्य को करने की हमने हिम्मत की ताकि हिन्दी के लिए एक नये मार्ग के निर्माण में हम किसी प्रकार सफरमैना का काम दे सकें। अब तक हिन्दी का क्षेत्र सीमित था। धर्मग्रन्थ, कविता, उपन्यास, जीवनचरित्र आदि विषयों में हिन्दी का प्रयोग होता रहा। उच्च विज्ञान, विधान और संविधान का माध्यम हिन्दी नहीं रह गया था। हमारी राजनैतिक परिस्थिति के कारण वह अँगरेजी का विशेष क्षेत्र बना हुआ था। इससे संविधान के हिन्दी अनुवाद में, जिसमें प्रामाणिकता का दावा हो सके, असाधारण कठिनाइयों का होना स्वाभाविक था।

पहला कदम जो हमने उठाया वह यह था कि पारिभाषिक और विशेषार्थी अँगरेजी शब्दों को छाँटना और उनके पर्य्यायवाची शब्द को ढूँढना, निश्चित करना अथवा नया निर्माण करना। यह कार्य कोई आसान नहीं था। इसमें पर्याप्त समय लगा। इसके लिये इस कमेटी के सदस्य श्रीयुत डा० रघुवीर जी के हम आभारी हैं। वास्तव में शब्द-निमार्ण का कार्य उन्हीं का कहा जा सकता है। हमारी कठिनाइयाँ इसलिये भी बढ़ीं कि अँगरेजी का मसविदा (प्रारूप) समय समय पर पर्याप्त बदलता गया और जब हमें तारीख २६ फरवरी सन् १९४८ ई० को अन्तिम प्रारूप मिला तब संविधान की आगामी बैठक की तिथि दूर नहीं समझी गई। यद्यपि वह पीछे बढ़ती गई, जिसका हम कुछ अधिक लाभ न उठा सके।

विधान - शब्दावली - सम्बन्धी कार्य अन्यत्र करने में जो आक्षेप मेरे सुनने में आये उनका यहाँ जिक्र करने के लिये आपसे क्षमा चाहता हूँ। उस प्रकार के भ्रम प्रायः पाये जाते हैं, इसीलिये उनको यहाँ दूर करना मैं उचित समझता हूँ। कुछ लोगों की समझ है कि हमारी साधारण बोलचाल की भाषा इसके लिये पर्याप्त होनी चाहिये। विशिष्ट ज्ञान की अथवा विधान की पुस्तकों की भाषा को समझने की क्षमता साधारण लोगों को हो सकनी चाहिए। यह केवल भ्रम है: यह किसी भी भाषा में सम्भव नहीं। सभी भाषाओं में विशेष विषय की अपनी विशिष्ट शब्दाली होती है जो साधारण बोलचाल की परिधि से विभिन्न होती है। जिसने अँगरेजी-साहित्य में एम० ए० पास किया है ऐसे विद्यार्थी को भी यदि गणित की चलनकलन (इण्टिग्रल कैलकुलस) अथवा शांकव छेद (कानिक सेकशन) सम्बन्धी अँगरेजी की पुस्तक दे दी जाय तो वह उसके एक पृष्ठ को भी नहीं समझ सकेगा। यही बात न्यूनाधिक परिमाण में सब विषयों के लिये है। जब अँगरेजी सरीखी समृद्ध भाषा की यह बात है तो हिन्दी के लिये यह समझना कि साधारण भाषा की जानकारी से हम विशेष विषयों के ग्रन्थों को समझ सकें यह अज्ञानता की बात है। जब हमें सूक्ष्म भेद रखनेवाले शब्दों के लिये हिन्दी पर्य्याय बनाना है तो साधारण भाषा पंगु हो जाती है। यथा:—प्रोफेशन, आकुपेशन, ट्रेड, बिजनेस, कालिंग, और एम्प्लायमेण्ट। किसी विशिष्ट विषय को समझने के लिये उसकी शब्दावली को पढ़ना होगा।

दूसरे प्रकार की एक और धारणा प्रायः पाई जाती है, कुछ लोग यह समझते हैं कि अँगरेजो के प्रचलित शब्दों को हमें रखना चाहिए। यह साधारण बोलचाल के लिए तो ठीक है, परन्तु विशेष विषय के ग्रन्थ के लिए ठीक नहीं। वहाँ तो इस प्रकार के कई शब्दों को हमें छोड़ना होगा। उदाहरण के लिए "थरमामीटर" को लीजिये। "थरमामीटर" बहुत प्रचलित शब्द है जिसे गाँववाले भी जानते हैं। यह शब्द प्रयोग में आता है और बोलचाल की भाषा में आगे भी आयेगा। बोलचाल में "थरमामीटर" के स्थान में हिन्दी पर्य्याय के उपयोग की आवश्यकता नहीं। परन्तु भौतिक विज्ञान की पुस्तक में इससे काम न चलेगा। यदि हम इस एक "थरमामीटर" शब्द को विज्ञान की पुस्तक में रखते हैं तो उसके पचासों व्युत्पन्न और संयुक्त शब्दों को रखना होगा, ये पचासों शब्द हमारे सर्वथा अपरिचित हैं। यथा—"थरमल कंडिशन।"

ठीक यही बात अरबी और फारसी शब्दों की है। इस विषय पर हमने गम्भीरतापूर्वक विचार किया और अपने अनुभव के परिणामस्वरूप हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि हिन्दुस्तानी (हिन्दी उर्दू का मिश्रण) साधारण बोलचाल की भाषा है और साधारण बोलचाल की भाषा बनी रहेगी। इसके आगे इसकी परिधि नहीं जा सकती। उच्च विज्ञान अथवा विधान की भाषा यह नहीं हो सकती। इनकी भाषा या तो हिन्दी (प्रायश: संस्कृतजन्य) या उर्दू (प्रायश: अरबी, फारसीजन्य) होगी। [illegible] सिवाय कोई चारा नहीं। उदाहरण के लिए "ला" शब्द को लीजिये। इसके लिए प्रचलित अरबी शब्द "कानून" है। परन्तु जब हमें बोलचाल से आगे जाकर "ला, रूल्स, आरडिनेन्स, रेगुलेशन, आर्डर" आदि में भेद करने होंगे और जब 'ला' के पचासों तद्भव शब्द बनाने होंगे यथा "लाफुल, अनलाफुल, लालेस" आदि तब "कानून" से कान न चलेगा। एक प्रचलित शब्द "कानून" को रखने से उसके परिवार के पचासों शब्द हमें लेने होंगे जो हमारी भाषा में सर्वथा नये और अर्थहीन होंगे। तब हमारे सामने यह प्रश्न उपस्थित होता है कि एक प्रिय शब्द "कानून" को रखकर हम अनेकों नये शब्दों का अर्थहीन भार उठायें या कि उस एक को छोड़कर उस भार से मुक्त हो जावें और उससे भी अधिक अपनी भावी संतान को उस भार से मुक्त रक्खें। जब कि संस्कृतजन्य हिन्दी अथवा अरबी फारसीजन्य उर्दू के सिवाय तीसरा युक्तियुक्त मार्ग नहीं तो हमने स्वाभावत: हिन्दी को अंगीकार किया। इससे एक विशेष सुविधा यह है कि भारत-अधिराज्य (इंडियन डोमीनियन) की अन्य भाषायें, मराठी, बँगाली, गुजराती भी संस्कृतजन्य होने के कारण, और तेलगू, कनाडी, मलयालम संस्कृत प्रचुर होने के कारण, उन प्रांतीय भाषाओं को भी, यह शब्दावली प्रायः समान रूप से ग्राह्य होगी।

एक और आक्षेप के सम्बन्ध में कुछ चर्चा करने के लिए आपसे क्षमा चाहता हूँ। यह आक्षेप कुछ हिन्दी-साहित्यविज्ञों की ओर से शब्दों के चुनाव सम्बन्धी तथा हिन्दी की शैली के विषय में होता है। शब्दों के चुनाव के सम्बन्ध में; किसी एक चुने हुए शब्द के स्थान में दूसरा पर्य्यायवाची शब्द बनाना आसान है। उदाहरण के लिए हमारी भाषा में "मंत्री", "सचिव" और "आमात्य" तीन शब्द हैं जिन्हें "मिनिस्टर" और "सेक्रेटरी" के लिए निर्धारित करना है। हमने "मिनिस्टर" के लिए "मंत्री" और "सेक्रेटरी" के लिए "सचिव" रक्खा है। कोई यह कह सकता है कि "मिनिस्टर" के लिए "सचिव" अथवा "आमात्य" क्यों नहीं और "सेक्रेटरी" के लिए "मंत्री" अथवा "आमात्य" क्यों नहीं रखना चाहिए। यों देखने से तो एक या दूसरा उतना ही ठीक प्रतीत होता है। परन्तु शब्दों का चुनाव प्रायः पर्याप्त विचार के पश्चात् ही किया गया है और कहीं कहीं तो घंटों के विमर्श के बाद। अपने मिनिस्टर की मन्त्रणा से शासक (गवर्नर) का कार्य होता है, इसलिए मिनिस्टर के लिये मन्त्री रखा गया है सचा से सचिव बना है, जो अपने स्वामी के साथ रहता है इललिये सेक्रेटरी को सचिव कहा गया है।

शैली के सम्बन्ध में यह निवेदन करना उचित होगा कि सभी भषाओं में प्रत्येक विषय की अपनी विशेष शैली होती है। उसी भाषा में एक विषय की शैली दूसर में उपयुक्त नहीं होती। अँगरेजी भाषा में भी साहित्य की जो शैली है वह विज्ञान की अथवा कानून की शैली नहीं। शेक्सपियर का [illegible] सर वाल्टर स्काट की शैली में और दण्ड विधान की शैली में बड़ा अ एक में तो भाषा को ललित और बनाने के लिए उसी विचार के लि शब्दों का प्रयोग किया जाता दूसरे में उसी विचार को प्रकट लिए उसी शब्द और उसी वाक् पुनः पुनः प्रयोग यहाँ तक किया कि वह कर्णकटु होने, लगता है। लेखक की भिन्न विषय की शैली होती है। लार्ड मैकाले की हिस्ट्री इँगलेंड की शैली और इण्डियन कोड की शैली में आकाश-पाता अन्तर है यद्यपि दोनों का लेखक अँगरेजी में तो इस भेद के हम होने के कारण इसमें हमें अनोखापन दीखता। परन्तु यही चीज हमें अनोखी दीखती है और हम अथवा संविधान की शैली का साहि शैली से संतुलन करने लगते हैं। यह जाते हैं कि हिन्दी के लिये वास्तव नया मार्ग है। नये विषय के अनुव कुछ नई शैली का निर्माण करना हो साहित्य की शैली से कुछ भिन्न हुए नहीं रह सकती। वास्तव में तो शै निर्माता लेखक नहीं होते विषय होते और हिन्दी में हम विधान बनाना रक्खें तो यह निश्चय है कि विधान विषय हिन्दी में भी अपनी शैली लेगा, चाहे उसके प्रतिकूल हमारी कितनी भी इच्छा हो।

इन सब कठिनाइयों और अड़चनों के अस्तित्व में, इस बात का ध्यान रखते हुए कि संविधान के सदृश विशिष्ट विषय की परिशुद्धता और प्रमाणिकता में किसी प्रकार त्रुटि न आने पावे; संविधान यह हिन्दी मसविदा जितना भी सरल बनाया जा सकता था उतना सरल बनाने का यत्न किया गया, प्रायः अन्तिम में भी हमने अपने निर्धारित शब्दों बदला ताकि साधारण बोल-चाल की के शब्दों को स्थान मिल सके। परन्तु सब प्रयत्नों के बाद भी, हम यह नहीं सकते कि संविधान में ऐसे स्थान नहीं जिनको पूरी तौर से समझने के विशेष शब्दावली की जानकारी की श्यकता न हो। इन शब्दों को जाने यह सम्भव नहीं कि संविधान की सारी समझ में आ जावे। परन्तु हम यह सकते हैं कि हिन्दी भाषा को और को जाननेवाले किसी सज्जन को शब्दों की जानकारी सहज में ही सकती है।

मूल संविधान अँगरेजी में बना है जो कार्य हमें दिया गया है वह उसके वाद का है। संविधान सरीखे गूढ़ जटिल विषय के सच्चे और प्रामाणि अनुवाद में, मूल भाषा अँगरेजी की आ यता सर्वथा न हो यह सम्भव नहीं। यदि मूल विधान बनाने का कार्य ही हिन्दी में हुआ होता तो हम कह सकते हैं निर्धारित विचारों को सर्वथा कायम हुए भी उसमें अँगरेजी की आत्मी का सर्वथा अभाव होना सम्भव था हिन्दी का अपना 'निर्मल सुन्दर हो सकता।

इन विचारों को व्यक्त करते हुए संविधान का हिन्दी प्रारूप (मसवि

शेष पेज १४ पर देखि

ारतीय महिलायें और समाज

स्या सुलझाने के लिये हम कौन सा व्यावहारिक कदम उठा सकते हैं ?

[२]

लेखिका, कुमारी सरला देवी

> ुमारी सरला देवी महात्मा गांधी की शिष्या हैं। इस समय आप अल्मोड़ा में -आश्रम के द्वारा पतिता बहनों के उद्धार का कार्य कर रही हैं। इस लेख में की उन्नति के संबंध में विचार करते हुए लेखिका ने अपने अनुभवों का वर्णन है। इस लेखमाला का प्रथम अंश २६ अगस्त के 'देशदूत' में प्रकाशित हो चुका है।

GERMS- OUR INV E ENEMIES

कनस्टीट्यूशन क्लब नई दिल्ली में स्वास्थ्य मंत्रिणी राजकुमारी अमृत कौर।

ों की समस्या सुलझाने में सहायता लिये हम कौन सा व्यवहारिक कदम सकते हैं ? यह आसानी से हल होने- समस्या नहीं है। यह एक ऐसा प्रश्न ाज के स्वस्थ जीवन में घुन की जायेगा और जब तक नारी की समस्या को सफलता-पूर्वक नहीं गे तब तक ग्राम्य-जीवन को सामाजिक रूप में सुधारने का ल या मृतप्राय रहेगा। इस हमको क्या करना चाहिये या क्या कर सकते हैं ?

तो हमको यह महसूस करना या के साथ मान लेना चाहिये कि देशों में औरतें रोटी कमाती हैं, वे हमारे बच्चों को पैदा करती यदि वे न होतीं तो इस वक्त र हमारे बच्चे भूखों मरते। हमको भव करना चाहिये कि उनकी यह सम्माननीय है, इसलिये उनकी इज्जत करनी चाहिये।

इस प्रकार अपनी महिलाओं की उनकी मिहनत के लिये उचित सम्मान देकर पहला कदम उठाकर हमको अब यह सोचना चाहिये कि हम उनकी दूसरे कामों को बेहतर तरीके से करने में क्या मदद कर सकते हैं। अब हमको चाहिये कि उनको अपना विश्वासपात्र बनायें और अपने विचारों तथा मन्सूबों के बारे में उनके साथ बातचीत करें। पुरुषों के पास समय रहता है और वे पढ़ सकते हैं, स्त्रियों के पास अवकाश नहीं रहता न वे पढ़ सकती हैं। पुरुषों को चाहिये कि जिन पुस्तकों और अखबारों को पढ़ने का उनको अवसर मिलता है उनमें लिखी हुई बातों को स्त्रियों को बतलायें और उनके साथ विविध प्रसंगों की बातचीत करें जैसे कि सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक समस्यायें जो हमारे गाँवों के जीवन, राष्ट्र और दुनिया को प्रभावित कर रही हैं। शुरू शुरू में शायद स्त्रियाँ अनमनी रहेंगी और समझेंगी कि इन सब बातों से उन्हें क्या मतलब, पर धीरे धीरे वे इनकी व्यावहारिकता को महसूस करने लगेंगी और तब उनकी रुचि भी पुरुष-समाज से कम न रहेगी।

तीसरे हमको यह देखना है कि अपने लड़कों और लड़कियों के साथ हमारे व्यवहार में जो खटकनेवाली असामान्यता घुस जाती है, वह बन्द हो जाय। हमें चाहिये कि उनको ऐसे वातावरण में पालें कि भविष्य जीवन में संयुक्त कार्य करने तथा जिम्मेवारी को मिली-जुली अनुभव करने की उनकी नैसर्गिक शिक्षा होती रहे। लड़कियों को शिक्षा पाने का उतना ही अधिकार है जितना उनके भाइयों को। अपनी बहनों के साथ काम करने का स्वत्व लड़कों को भी बराबर मिलना चाहिये। क्योंकि जीवनयापन के लिये रोटी पैदा करने की मिहनत करने का स्वत्व एक विशेषाधिकार है। मिहनत करने का हक ही एक गौरव है और संसार में सबसे अधिक आवश्यक काम किसान का है, जिसके हर मौसम में अनवरत परिश्रम करते रहने से हम लोगों के खाने की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। पहाड़ के लड़कों को लड़कियों के साथ बराबर यह स्वत्व मिलना चाहिये कि वे भी शहरों में रहनेवाले और कम पैदा करनेवालों का खाना पैदा करके उनको जीवित रखने में मदद पहुँचायें। हमको उनके परिश्रम के पैदायशी हक से उनको वञ्चित नहीं रखना चाहिये बल्कि जो उनका नैसर्गिक कार्य है उसमें उचित हिस्सा बँटाने के लिये उनको प्रेरित करना चाहिये।

मैं कोई पर्दानशीन स्त्री नहीं हूँ; ऐसे देश से आई हूँ जहाँ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्रियाँ, पुरुषों के साथ स्वतंत्रता-पूर्वक चलती हैं, पर मैं यह कहने के लिये तैयार हूँ कि मुझे अकसर छोटे-पहाड़ी गाँव से गुजरते हुए स्वयं शरम आती है जब मैं देखती हूँ कि वहाँ आदमी बेकार बैठे हुए गप्पें लगाते हुए तम्बाकू पी रहे हैं और यदि जुआ न भी खेल रहे हों तो इसी तरह चाय आदि पीते हुए समय नष्ट कर रहे हैं। यह बेकार बैठने की प्रवृत्ति स्वयं अनैतिक है। छुट्टी बहुत अच्छी चीज है अगर हमको उसका उचित उपयोग करना आता है और अगर उसका आनन्द सब लोग उठाते हैं। पर यह वास्तव में शरम की बात है कि पुरुष तो बराबर बाजारों में मटरगश्ती किया करें जब कि उनकी औरतें उनके भरण-पोषण के लिए निरन्तर श्रम करती रहें। पुरुषों को चाहिये कि अपने अवकाश के समय अपनी स्त्रियों के कामों में हाथ बँटावें, इस तरह उनके साथ अपने विचारों तथा अवकाश को बाँटें और अधिक स्वस्थ पारिवारिक और सामाजिक जीवन की ओर अग्रसर हों। उपर्युक्त बातों के करने से समाज का एक आम दृष्टिकोण ऐसा बन जायगा कि साधारणः स्त्रियों के प्रति अधिक अच्छा भाव पैदा होने में मदद मिलेगी। वे पुरुषों की सम्मानित संगिनी बन जायेंगी और आज की तरह अवहेलनीय सेवकों सी नहीं रहेंगी; बचपन ही से लड़कों का अपने घर की लड़कियों और स्त्रियों के प्रति व्यवहार सम्माननीय होगा और इस तरह उनके गाँवों में भी उन्नति होगी।

बंबई की महिला विश्वविद्यालय द्वारा पदवी प्राप्त छात्रायें। दीक्षान्त समारोह राजा महाराजसिंह द्वारा सम्पन्न हुआ था।

विशेषतः पुरुष और स्त्रियों के आपसी सम्बन्धों के विषय में हमको चाहिये कि दोनों के लिए एक ही नैतिक माप निर्धारित करने की कोशिश करें। क्या ऐसा

उचित है कि बेचारी स्त्री को अनैतिक आचरण के लिए अपराधी करार दे दिया जाय और पुरुष को उससे बरी कर दिया जाय सिर्फ इस कारण कि स्त्री को उस कर्म का सीधा शारीरिक परिणाम भोगना पड़ता है और पुरुष को नहीं ? ऐसी नैतिक गलतियों में अपराधी पुरुष का भी पता चलाना चाहिये और उनकी भी कलई खोली जानी चाहिये और उसको अपने दुष्कर्म का गुरुत्व अनुभव कराने के लिए उसके विरुद्ध हर तरह का सामाजिक दबाव डाला जाना चाहिये जैसे कि जाति बहिष्कार, बायकाट आदि। दुर्भाग्यवश आजकल अधिकतर सामाजिक दण्ड-व्यवस्था केवल तभी होती है जब स्त्री की नैतिक भूल के कारण उसके पति की आर्थिक क्षति होती है।

इससे पता चलता है कि समाज का नैतिक स्तर कितना भीषण गिरा हुआ है और यह समाज की अस्वस्थ स्थिति का परिचायक है; और इससे हम एक दूसरे आवश्यक प्रश्न पर आ जाते हैं—वह है नारी को कम या अधिक खरीद-फरोख्त की वस्तु समझना। दुर्भाग्यवश आजकल माता-पिता लड़कियों के विवाह की योजना करते हैं तो अमूमन वे इसको नैतिक नहीं आर्थिक दृष्टिकोण से देखते हैं। अपनी लड़की का विवाह वे जिस परिवार में करना चाहते हैं उसकी आर्थिक स्थिति को वे देखते हैं न कि उसके सदस्यों की प्रवृत्तियों को। पर होना यह चाहिये कि लड़की के विवाह की व्यवस्था करते समय उसके भावी श्वशुर अमीर हैं कि नहीं इसकी इतनी परवाह नहीं जितनी इस बात की की जाय कि सास और ससुर नेक प्रकृति और नैतिक आचरण के हैं। लड़कियों को वेदना और अशान्ति असहिष्णु बर्ताव से अधिक होती है और परिश्रम से उतना कष्ट नहीं होता, और शादी तै करते समय इस बात को हमेशा याद रखना चाहिये।

मुझे याद है कि जब मैं पहाड़ी प्रदेश के अन्दर घूम रही थी तो कहीं मैंने यह सुना था कि अगर किसी आदमी की स्त्री मर जाय तो अधिक चिन्ता की बात नहीं क्योंकि पच्चीस रुपये खर्च करने पर दूसरी शादी हो जायेगी, पर अगर उसकी भैंस मर जाय तो वह अवश्य बड़ा नुकसान है, क्योंकि दूसरी भैंस खरीदने के लिये वह एक सौ पच्चीस रुपये कहाँ से लायेगा ? (ये दाम महँगी के पहले के हैं) हो सकता है कि इस कथन में व्यंग्यात्मक अतिशयोक्ति हो पर ऐसी अतिशयोक्ति की जा सकती है यही काफी मार्के की बात है, जहाँ धुआँ होता है वहाँ आग भी अवश्य होती है ?

पर अन्तिम और सबसे अधिक आवश्यक समस्या जिम्मेवारी की है। पुरुष और स्त्री दोनों को इस बात की जिम्मेवारी महसूस करनी चाहिये कि उनको अपने विवाह के समय की हुई प्रतिज्ञाओं की पूर्ति करनी है, जिनको कि हर बड़े धर्म ने अपने अपने तरीके से स्थायी माना है। जैसा कि ईसाइयों के विवाह के समय प्रतिज्ञा की जाती है (मैं इसका उल्लेख इस कारण कर रही हूँ कि इसको मैं अधिक अच्छी तरह जानती हूँ) "इससे अधिक अमीरी हो चाहे अधिक गरीबी, इससे अधिक उन्नति हो चाहे अवनति।" विवाह कभी भी फूलों की सेज न रहा, न रह सकता है, हर संयोग की अपनी कठिनाइयाँ होती हैं। चाहे जिन कारणों से भी हो, अपने आराम, सहूलियत या कायरता के कारण, एक बार हमने उस बन्धन में पड़ना मंजूर कर लिया है तो हमको जान लेना चाहिये कि उसे सेंतमेंत नहीं भंग किया जा सकता। हमको अपने संयुक्त जीवन में दोनों ओर से माफ करना और गलतियों को भूल जाने के नियम का बर्ताव करना चाहिये—केवल इसी प्रकार हम वैवाहिक जीवन की समस्याओं को हल कर सकते हैं। अगर इस सौदे में किसी मनुष्य को शत-प्रतिशत मुनाफा नहीं हो रहा है तो उसको अपने साथी को उसी प्रकार अलग फेंक देने का हक नहीं है जैसे कि एक पुराने जूते को। सम्भवत: उसको भी शत-प्रतिशत सन्तोष नहीं मिल रहा होगा। दोनों ओर से धैर्य, समझ और सब कुछ निभा ले जाने के निश्चय की आवश्यकता है, पर जिन औरतों को जीवन का सामना अकेले करने के लिये बाध्य होना पड़ता है उनके संशयपूर्ण जीवन को देखते हुए, इन विषयों में, औरत से मर्द की जिम्मेदारी अधिक है, दोनों ओर से सहनशीलता का आधिक्य स्वभावत: जग उठेगा यदि ऊपर कहे हुए सुधारों का प्रभावपूर्ण प्रयोग किया जाये।

अन्तिम बात यह है कि समाज को चाहिये कि वैयक्तिक और सामूहिक दोनों रूपों से उन औरतों के प्रति अपने उत्तरदायित्व को अंगीकार करे जिनको किन्हीं दुर्भाग्यशाली परिस्थितियों के संसर्ग से केवल अपने ही ऊपर निर्भर होना पड़ता है। उनको सम्मानपूर्ण जीवन-यापन की सुविधा मिलनी चाहिये और उनकी उन दुरात्माओं से रक्षा होनी चाहिये जो उनके एकाकीपन का फायदा उठाना चाहते हैं। इस उत्तरदायित्व को अंगीकार करके हम उन सामाजिक परिस्थितियों का व्यावहारिक प्रायश्चित्त कर सकते हैं जिन्होंने इस समस्या को जन्म दिया है और एक स्त्री को अपराधिनी मानकर उसके ऊपर पत्थर फेंकनेवालों का साथ देने के बजाय उसके जीवन को सुधार सकते हैं।

* * *

फिल्मी दुनिया मुफ्त

सिनेमा का भेद बतानेवाली पुस्तक "फिल्मी दुनिया" अपना और मित्रों के पूरे पते लिखकर मुफ्त मंगाइये।

पता—मधुर मन्दिर, हाथरस, यू० पी०

प्रतिमा

इस संग्रह में सुकवि राजाराम श्रीवास्तव की एक से एक बढ़िया ५० कविताएँ हैं। इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा है। क्या भाषा और क्या भाव सभी अनुपम हैं। रंगीन आवरण, बढ़िया छपाई और मूल्य केवल १) एक रुपया।

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

हमारा रंगमंच—'दूसरी शादी'

(पेज ११ का शेष)

नितान्त असफल, श्री कुमार जयवंत जी का चित्रलेख सफल, परन्तु अकलात्मक एवं पी० जी० जोशी की रूप-सज्जा उनके दिवालियेपन का साक्षात् प्रमाण है। श्री एम० जी० मालेकर का सम्पादन-कार्य निम्न कोटि का हुआ है ! ध्वनि आलेखन दोषपूर्ण तथा 'सेटिंग्स' भव्य हैं। श्री मोहन पाण्डेय का नृत्य-निर्देशन असफल हुआ है। छायालेखन सुन्दर एवं चरित्र-चित्रण उच्च कोटि का प्रदर्शित किया गया है—बालक नन्हुवा व कमला का विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

अभिनय-कला के दृष्टिकोण से सबसे सुन्दर कार्य नन्हुवा की भूमिका में सुलेमान ने किया है। उज्ज्वल भविष्य से परिपूर्ण बालक द्वारा गीत तथा अंतिम दृश्य का अभिनय अत्यधिक प्रशंसनीय है, जिसने अपने पिता से यह प्रस्फुटित करने के लिये बाध्य कर दिया था—'द्वितीय विवाह का फल कड़ुआ होता है और इसे परिषद् को स्वीकार भी कर लेना चाहिये, जो दर्शकों पर अपनी एक धुँधली छवि छोड़ जाता है।' प्रधान नायिका कमला की कल्पना में मुमताज शान्ती ने सदैव की भाँति घसिटता हुआ अभिनय किया है। गायन तथा एक आदर्श पत्नी के नाम पर आप अवश्य प्रसिद्ध हो सकेंगी; परन्तु प्रचलित जोहरा के 'प्लेबैक' तथा 'बेटा-बेटा' की धुन ने सब मेटियामेट कर दिया है। आपकी आगामी कृतियाँ "घर की इज्जत", "पद्मिनी", "हीर राँझा" आदि हैं। निकृष्ट रूप-सज्जा ने सेठ जी की काया में लोकप्रिय कुमार पर खींच कर तमाचा मारा है, जिससे वह आदि से अंत तक असफल ही दृष्टिगोचर हुए हैं। आपका आगामी आकर्षण 'देवर' है। प्रमिला के आवरण में 'देवर' की निर्मातृ प्रमिला ने असंतोषजनक कार्य किया है। गोपाल की छाया में गोपे तथा गुजरी की काया में रणजीतकुमारी ने हास्यजनक कार्य किया है। महिन्दर के रूप में डेविड की हत्या की गई है, उसे इतनी शुष्क भूमिका कदापि न स्वीकार करना चाहिये।

उपरोक्त विचारों को दृष्टिगत रखते हुए यह अचम्भा होता है कि क्या ये वही रामदरयानी हैं, जिन्होंने 'हिन्दुस्तान हमारा' जैसा सुन्दर चित्र उपस्थित किया था। चित्र चित्रकारों की दृष्टि से तृतीय श्रेणी का है, जो वर्तमान चित्रपट उद्योग का उच्चतम स्थान प्रदर्शित करने में अत्यधिक सफल हुआ है। यद्यपि "दूसरी शादी" अन्य नगरों में २५वें अथवा २६वें सप्ताहों में प्रवेश कर रहा है, परन्तु एक बार से अधिक निरखने योग्य नहीं घोषित किया जा सकती' जिसका एकमात्र कारण समायिक-समस्या, सुन्दर गीत तथा स्वस्थ प्रचार है।

* * *

सम्पादक के नाम चिट्ठि

(पेज १२ का शेष)

आपकी सेवा में उपस्थित कि है। उक्त कठिनाइयों के साथ अपनी न्यूनता को भी भूले नहीं संविधान के लिये किसी का यह नहीं कि यह सर्वथा ही निर्दोष है। यह मानते हैं कि उपयुक्त संशोधन इसमें सुधार होने की गुंजाइश हो है। परन्तु एक बात की आशा हम करते हैं और परमात्मा से प्रार्थ करते हैं कि यह मसविदा आगे पवित्र संकल्प में—स्वतन्त्र भारत का हिन्दी में बनाने में—सहायक हो। अधिराज्य के लाखों नर-नारी इस आपके पीछे हैं। हमें राजनैतिक तो मिल गई है; परन्तु अभी भी हम रेजी भाषा के दास बने हुए हैं। नेतृत्व में परमात्मा उस गुलामी से मुक्त करे और उसका श्रीगणेश संविधान का बनना हो।

संविधान के लिये शब्दावली के लिये हम डा० रघुवीर के उपकृ इस दिशा में उनकी सहायता बहुमूल्य है। श्रीयुत हरीभाऊ जी उपाध्याय कार्य में पूर्ण दत्तचित्त रहे और उनकी यता विशेष महत्त्व की रही। पं० पति जी त्रिपाठी तथा डा० नगेन्द्र जी वाद के पात्र हैं। प्रो० बालकृष्ण जी कार्य के लिये यह समिति अपना प्रकट करना चाहती है। मध्यप्रान्त और बरार की विधान-सभा के कर्मचारियों ने भरसक सहायता दी उसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं। नागपुर सरकारी छापखाने के अधीक्षक (सुपरिन्टेन्डेन्ट गवर्नमेंट प्रिन्टिंग) श्रीयुत वी० के० अय्यर ने छापने के में सब प्रकार की सुविधा दी इसके लि वे हमारे धन्यवाद के पात्र हैं।

नागपुर —घनश्यामसिंह
(मध्यप्रांत) सभापति

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ

सम्पादक—श्री सोहनलाल द्विवेदी
प्राक्कथन—सर सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

संस्कृति, हिन्दी, उर्दू, बंगला, राती, सिन्धी, मराठी, तामिल, मलयालम, कन्नड़, अंगरेजी और भाषाओं में महात्मा गांधी जी पर लि हुई सर्वोत्तम कविताओं का संग्रह—हिं भाषा में अर्थ-सहित।

बड़ा आकार, सुन्दर छपाई, पूरे के अनेक चित्र। बढ़िया जिल्द। प्रशंसित।

सादी जिल्द ६।।) कपड़े की जिल्द

परीदेश

यह पुस्तक खास कर छोटे बच्चों के लिए है। इसमें ऐसी एक भी बात नहीं जिसको समझने के लिए मायापच्ची करनी पड़े। इसमें रोजमर्रा की बातें बड़े अच्छे ढंग से लिखी गई हैं। बड़े आकार की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों और फूल पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है। मूल्य

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

ाददाताओं के पत्र

हैदराबाद स्टेट कांग्रेस के गुप्तचरों ने दी है कि कासिम रिजवी ने बीदर में रजाकारों का केन्द्रीय- जोर के साथ प्रारम्भ किया है। है कि कासिम रिजवी ने यह किया है कि यदि हैदराबाद की और निजाम ने भारत-संघ से सम- लिया तो वह इस्लाम की रक्षा हैदराबाद के मुसलमानों को विद्रोह तैयार करेंगे। उन्हें इस बात का है कि समस्त रजाकार पुलिस और बड़ा भाग उनका साथ देगा। इस बात का भी प्रबन्ध किया है कि की स्थिति में सरकारी कर्मचारी अपने पदों से हटकर हुकूमत के नष्ट कर दें। रिजवी का यह अनु- कि ऐसे समझौते की स्थिति उस होगी जब यू० एन० ओ० के प्रश्न पर विचार करने से इन- देगा ऐसी स्थिति में रिजवी बीदर स्टेट के समस्त रजाकारों को एक- और रजाकारों व आजाद का विरोध करनेवालों को जिले दंगे। या उन्हें समाप्त कर हैदराबाद के मुसलमानों में इस मतभेद बढ़ता जा रहा है।

६१ ग्रामों को स्वतन्त्र किया में कालरा के बढ़ते हुए रोग के लिए ५०० कालरा के बाद स्टेट कांग्रेस की ओर से ।

बाद स्टेट में आये हुए निर्वा- र्थियों में से १८ लोगों को राज- पुलिस ने इस दोष में गिरफ्तार कि उन्होंने धोखा देकर मुसल- गधों का मांस खिलाया; घटना जाती है कि स्टेट के बाहर से मुसलमानों का एक दल है। इस हिन्दुओं के गधों को रात में पकड़ और उनका मांस भोजन में थे जब धोबियों ने अपने गधों को होते हुए देखा तो उनमें से एक ने उस दल का पीछा किया। उसने पुलिस को वह स्थान जहाँ गधों के ५०० सिर और गड़ी हुई थीं। पुलिस ने उस दल के लोगों को गिरफ्तार कर लिया है।

निन्नुर जिला रायचूर निवासी स्व० वकील के पुत्र सिद्धमल्लया सेवा-समिति शोलापुर में यह वक्तव्य दिया कि ११ अगस्त रजाकारों के एक बड़े दल ने उनके घेर लिया। सिद्धमल्लया की वृद्ध ने अपने लड़के से कहा। कि वह पत्नी और छोटे भाइयों को लेकर सुरक्षित स्थान पर चले जायें तदनुसार अपनी माता पर घर छोड़कर वहाँ से गया, जब रजाकार घर में घुसे तो देखा की सिद्धमल्लया की माता देवी पिस्तौल लिये उनका स्वागत रही है। जब रजाकार आगे बढ़े तो में से चार पार्वती देवी की गोली के बन गये। किन्तु दुष्टों ने इस वीर को घेरकर घायल किया और के नीचे फेंक दिया। घर से हजार रुपये नगद और २२० तोला लूट लिया।

अगस्त को भारतीय वायुसेना विमानों को आकाश पर उड़ते हैदराबाद स्टेट की सीमा हिप्परगा के समस्त पठान पुलिस-कान्स्टेबल भाग गये, हिप्परगा की इस अनिश्चित स्थिति को देखकर हैदराबाद स्टेट कांग्रेस के स्वयंसेवकों ने हिप्परगा में प्रवेश किया। वहाँ सर्वत्र भारतीय ध्वजा लहराने लगी। आसफिया ध्वज अदृश्य हो गये, इस समय हिप्परगा पर कांग्रेस ही का अधिकार है।

उसमानाबाद जिले के ६१ ग्रामों को वापस लेने के लिये तुलजापुर और लातूर में निजामी मिलिट्री और रजाकारों की प्रचंड तैयारियाँ हो रही हैं। यहाँ पर रजाकारों व मुसलमानों को उत्तेजित करने के लिये बड़ी बड़ी सभायें की गई हैं।

—संवाददाता

* * *

जयपुर के शिक्षा सचिव पंडित देवीशंकर जी तिवारी ने प्रतिनिधि सभा के सदस्यों को बजट पर हुई बहस का जवाब देते हुए, विश्वास दिलाया कि समस्त शिक्षा-संस्थाओं में हिन्दी माध्यम-द्वारा शिक्षा देने की जयपुर सरकार पूरी कोशिश कर रही है। शिक्षा-पद्धति और शिक्षा के माध्यम के बारे में, आपने कहा, जयपुर पूरी तरह स्वतन्त्र नहीं है, क्योंकि इन विषयों में उसे राजपूताना विश्वविद्यालय पर निर्भर रहना पड़ता है। वहाँ हिन्दी का माध्यम जल्दी से जल्दी स्वीकार हो, इसका प्रयत्न किया जा रहा है।

छात्रों की बढ़ती हुई संख्या के कारण जयपुर के महाराजा हाईस्कूल तथा कुछ अन्य स्कूलों में शिफ्ट सिस्टम से दो दो बार पढ़ाई हो रही है। यदि आवश्यकता हुई तो यह तरीका और स्कूलों में भी लागू किया जायगा। आपने बताया कि इस वर्ष, सिवा मेडिकल कालेज के, किसी भी विद्यार्थी को स्कूल या कालेज में प्रवेश प्राप्त न कर सकने की शिकायत नहीं रही। इसके लिए आपने शिक्षा कमिश्नर और शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर की सराहना की।

—संवाददाता

जयपुर सरकार ने राज्य की धारा सभा और प्रतिनिधि सभा का कार्यकाल ५ सितम्बर, १९४८ से एक साल के लिये बढ़ा दिया है।

जयपुर के हाईकोर्ट ने अपने मातहत अदालतों को आदेश दिया है कि वे अपने फैसले और आज्ञायें हिन्दी में लिखा करें। अदालतों के दूसरे कागजात और रजिस्टर आदि तथा सारा पत्र-व्यवहार भी हिन्दी में ही करने का आदेश हुआ है। यह भी आवश्यक है कि अदालतों में जो अर्जियाँ और दस्तावेज पेश किये जायँ वे भी हिन्दी में ही हों। जो अदालत-कर्मचारी हिन्दी नहीं जानते उन्हें तुरन्त हिन्दी भाषा और देवनागरी सीख लेने का आदेश दिया गया है।

जयपुर सरकार ने राज्य के सबसे बड़े अस्पताल सवाई मान मेडीकल कालेज हास्पिटल की व्यवस्था आदि का संचालन करने के लिये एक समिति नियुक्त की है जिसमें राज्य के चिकित्सा-विभाग के प्रधान अधिकारी तथा अस्पताल के दो मुख्य डाक्टर, वहाँ के सुपरिन्टेन्डेन्ट और मामूली श्रेणी के कर्मचारी शामिल किये गये हैं।

सुटिलमेन्ट विभाग ने जयपुर राज्य की कुल जागीरात की पैमाइश एक वर्ष के अन्दर समाप्त कर देने की योजना बनाई है। इस काम के लिये पैमाइश के अमीनों की एक बड़ी संख्या में आवश्यकता है। बन्दोबस्त के अधिकारी नये कर्मचारियों पर ही निर्भर न हो करके राज्य के प्रायः २०० कर्मचारियों को सर्वे की शिक्षा देकर तैयार कर रहे हैं। यह शिक्षा २५ केन्द्रों में दो मास तक दी जायेगी जिसमें सर्वे संशोधन व तैयारी कागजात का कुल काम सिखाया जायगा।

इसके अतिरिक्त पटवारियों की भी एक बड़ी संख्या में आवश्यकता होगी और इस कमी को पूरी करने के लिये कस्बा सवाई जयपुर, सवाई माधोपुर, लालकोट, हिन्डोन, मालपुरा पावटा नरेना व खंडेला में पटवारी शिक्षालय खोले गये हैं जिनमें हर छः मास में परीक्षा लेकर उत्तीर्ण विद्यार्थियों को पटवारी का प्रमाण पत्र दिया जाता है।

जयपुर सरकार ने भारत-सरकार का यह सुझाव स्वीकार कर लिया है कि सेकेंड बेटेलियन जयपुर इफेन्टरी भारतीय सेना के साथ काम करेगी और उसके सब अफसर और सिपाही भारतीय सेना के नियमों के अन्तर्गत माने जायेंगे।

—संवाददाता

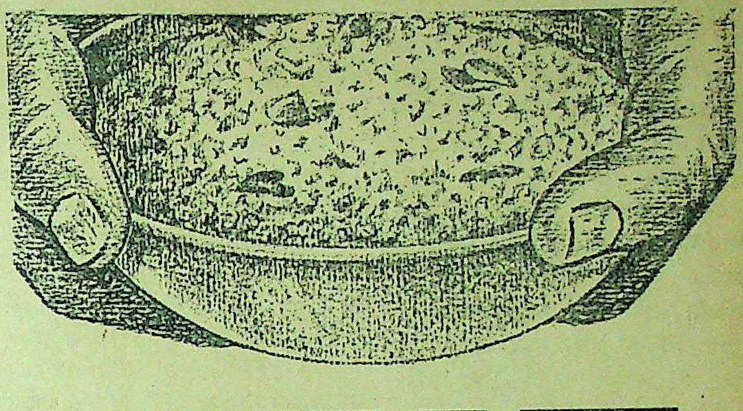

केसरिया गाजर का हलवा—
डालडा से बनाये जाने पर उत्कृष्ट!

एक पाव गाजर को छील कर उस का कद्दूकश कीजिये। दो प्याले दूध उबालिये, गाजर डाल कर हल्की आग पर तब तक हिलाते रहिये जब तक गाजर दूध को लग भग सोख न ले। डेढ़ प्याला चीनी, कुतरे हुये बादाम, पिस्ता, किशमिश डालिये। इस को लगभग सूख जाने तक पकाइये। आधा प्याला डालडा गरम कीजिये, और क्रमशः डालते जाइये—जब तक कि मिलाव सुर्ख़ न हो जाये। थोड़ा सा कुचला हुआ इलायचीदाना और पानी से मिश्रित केसर पाव चाय का चम्मच मिलाइये। डालडा के पृथक होने तक पकाइये। गरम अथवा ठंडा परोसिये।

कौन से आहार
"स्वास्थ्य रक्षक" हैं?

ऐसे आहार जो रोग के प्रतिकूल हैं। इस विषय पर मनोरंजक सूचना पाने के लिये लिखें।

मुफ़्त सलाह के लिये आज ही लिखिये—अथवा किसी भी दिन!

दि डालडा
एड्वायज़री
सरविस

पोस्ट बॉक्स नं० ३९३, बम्बई १

HVM. 77-172 HI

DALDA
VANASPATI
वनस्पती

चिरस्थायी व दिमाग़ी ताक़त बढ़ाने के लिए सेवन करो
PILLS
डॉ. गौतमराव केशव
टानिक
फॉस्फरस पिल्स
डॉ. वामन गोपाळ सार्सापरिला डेपो मुंबई नं. २.

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी एल० एस० धोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

हिन्द और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति

(पेज ७ का शेष)

शासन की आवशिष्ट असंगत छाया के कारण उस सम्मेलन में राजनीतिक संबंधों पर कोई विचार नहीं हो सका, सिर्फ सांस्कृतिक सम्बन्धों को घनिष्ठ बनाने पर जोर दिया गया, फिर भी यह कह सकते हैं कि वह सम्मेलन न सिर्फ हिन्दुस्तान के महान् भविष्य का सूचक है, बल्कि वह एशियाई राष्ट्रों का नवीन स्वर-संधान है जो पश्चिमी साम्राज्यवादियों की स्वार्थ-परता के लिए गहरी चुनौती सिद्ध होगा।

संयुक्तराष्ट्र संघ में भी हिन्दुस्तान ने दक्षिण अफ्रीका के प्रश्न पर जात्याभिमान ग्रस्त यूरोपीय राष्ट्रों को न सिर्फ करारी फटकार बताई, बल्कि डा० स्मट्स के प्रभाव के बावजूद विजय प्राप्त करके अपनी नवीन शक्ति का परिचय दिया।

किन्तु एशियाई राष्ट्र-सम्मेलन के आयोजन और फिर संयुक्तराष्ट्र-संघ में दक्षिण अफ्रिका के प्रश्न पर जीत से ही हिन्दुस्तान की परराष्ट्र नीति के उत्तरदायित्व शेष नहीं हो जाते। ये दोनों तथ्य तो सिर्फ भारी कामों की मंगल-पीठिका के रूप में ग्रहण किये जायँगे। क्योंकि एशियाई-सम्मेलन मुख्यतया सांस्कृतिक अधिवेशन था और संयुक्त राष्ट्र-संघ की विजय से हिन्द ने सिर्फ अपने प्रवासी नागरिकों की हित-रक्षा का प्रयास किया। इसकी परराष्ट्र नीति की सफलता का प्रमाण तभी मिलेगा। जब हिन्दुस्तान पदमर्दित एशियाई देशों का संघटन कर साम्राज्यवादियों को एशिया से भगा सकेगा और (२) रूस एवं अमेरिका की प्रतिद्वन्द्विता के कारण दो कैम्पों में बँटे विश्व में तटस्थ 'तृतीय दल' का शक्तिमान संघटन करके भावी युद्ध की भूमिका को नष्ट करेगा।

पंडित नेहरू की नीति

कांग्रेस की अब तक की घोषणाओं के अनुकूल और फिर अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में हिन्दुस्तान के उत्तरदायित्व और महत्त्व को समझते हुए पंडित नेहरू ने स्वाधीन हिन्दुस्तान के परराष्ट्र मंत्री के रूप में जो परराष्ट्रनीति घोषित की है, उसमें उपर्युक्त दोनों का सुन्दर समावेश हुआ है। इसलिए सिद्धान्तः हिन्दुस्तान की वर्तमान परराष्ट्र-नीति से किसी का कोई विरोध नहीं हो सकता।

किन्तु, १५ अगस्त १९४७ से लेकर १५ अगस्त १९४८ तक की अवधि में हिन्द-सरकार ने अपनी इस नीति का जैसा कुछ प्रयोग किया है वह सर्वथा चिन्तनीय है।

अब तक जो कुछ इस दिशा में किया गया है, उससे प्रकट होता है कि हिन्दुस्तान ने अन्तर्राष्ट्रीय जगत् की गुटबन्दियों से अपने को बचाये रखने को ही अपनी सारी शक्ति लगाई। यह उलझन सही होते हुए भी परराष्ट्रनीति का नकारात्मक पक्ष है। जहाँ तक एशियाई राष्ट्रों के संघटन द्वारा तटस्थ 'तृतीय दल' के निर्माण का सवाल है, हमने एक भी प्रयास नहीं किया है। यह हमारी नीति का अधिक व्यावहारिक और यथार्थ पक्ष है। अगर इस ओर ध्यान नहीं दिया जाता तो हम न सिर्फ अपनी अदूरदर्शिता का प्रमाते है, बल्कि अपने को जान-बूझकर ऐके धारा में छोड़ रहे हैं, जो हमें दलबन्दके किसी न किसी किनारे बिलकुल बेम

छोड़ देगी और वहाँ हिन्दुस्तान की समस्त मर्यादा धूल में मिलेगी और संभवतः उसे अधिक शक्तिमान् गुट का अनुयायी बनकर रहना पड़ेगा। पाकिस्तान के रवैयों से यह खतरा बढ़ता ही जा रहा है।

अकर्मण्यता का परिणाम

हमने अपनी परराष्ट्रनीति को कार्यान्वित करने में जो अकर्मण्यता दिखलाई है, उसी का नतीजा है कि (१) काश्मीर के प्रश्न पर हम अपनी न्यायपूर्ण स्थिति के बावजूद संयुक्तराष्ट्र-संघ में धोखा खा गये। हमारी अव्यावहारिकता, अकर्मण्यता और नकारात्मक मनोवृत्ति के कारण विदेशों में हमारा प्रचार-कार्य बिलकुल बेढंगा चल रहा है। (२) मध्यपूर्व के देशों में पाकिस्तान के एजेन्ट दिन-रात हिन्दुस्तान के विरुद्ध जहर उगलने के इस्लामी राष्ट्रों के कान भर रहे हैं। नतीजा है कि कभी ईरान में हिन्द-विरोधी प्रदर्शन किये जाते हैं, तो कभी पूज्य गांधी जी तक के विरुद्ध अशोचनीय विचार—खुलेआम अखबारों में प्रकाशित होते हैं। ट्रान्सजोर्डान के बादशाह—अब्दुल्ला ने भी स्पष्ट शब्दों में हिन्द-विरोधी विचार प्रकट किये हैं। (३) हमने अरब-यहूदी झगड़े में अपने को बिलकुल तटस्थ रखा है, फिर भी हैदराबाद में रजाकार गुंडों के साथ अरब सैनिक हिन्दुस्तानी प्रजा पर तरह-तरह के अत्याचार कर रहे हैं।

जहाँ तक हिन्दुस्तान के तटस्थ रहने की नीति है, उसमें भी अब तक कई गलतियाँ की जा चुकी है, और हमें उसका नतीजा की भुगतना पड़ा है। किन्तु सबसे खतरनाक बात तो यह है कि कुछ शक्तियाँ जान-बूझकर हमें दलबन्दी के दलदल में फँसाने को तत्पर हैं। इन शक्तियों का आग्रह है कि हिन्द रूस-विरोधी होकर आंग्ल अमरीकी पक्ष में जा खड़ा हो। निस्सन्देह रूस से बहुत से प्रश्नों पर हमारा मतभेद है। किन्तु उसी प्रकार ब्रिटेन और अमेरिका की व्यवस्था की बहुत सारी बातें हम कभी स्वीकार नहीं कर सकते। किन्तु ये बातें तो घरेलू व्यवस्था पर आश्रित हैं। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में हमें दोनों में से किसी के विरुद्ध नहीं जाना है, दोनों से मैत्री-भाव रखना है। हमें इन दोनों की दलबन्दी से कोई सरोकार नहीं।

उपर्युक्त शक्तियों के प्रभाव का ही परिणाम है कि कुछ लोग चाहते हैं, हिन्द अभी ब्रिटिश राष्ट्रमंडल में ही बना रहे। किन्तु अगर ऐसा हुआ तो फिर पंडित नेहरू की इच्छा के बावजूद हिन्द अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में तटस्थ नहीं रह सकेगा। कुछ लोग गत विश्व युद्ध के दिनों आयरलेंड द्वारा बरती गई नीति का हवाला देकर कह सकते हैं कि हिन्द भावी संघर्ष में आयरलेंड की भाँति ब्रिटिश राष्ट्र-मंडल में रहकर भी तटस्थ रहेगा। ऐसा सोचने से लोग भूल जाते हैं कि हिन्द और आयरलेंड की स्थिति में जमीन-आसमान का अन्तर है। सिर्फ ऐतिहासिक तुलनाओं से समस्या का निदान सम्भव नहीं।

आज ही अवश्य मँगायें

कोकशास्त्र (सचित्र) १) पो० ।=)
हिन्दी इंगलिशटीचर १॥) पो० ॥)
पुस्तक व पहेली का बड़ा सूचीपत्र मुफ्त "प्रभात" ट्रेनिंग कम्पनी, (४१)
पु

"५०००) रुपये नगद इनाम लीजिये"

सर्व शुद्ध पर ३०००) न्यूनतम गलती पर १०००) सर्वाधिक पूर्ति
४००) सर्वप्रथम भेजने पर एक रेडियो सेट किसी महिला अथवा विद्यार्थी के
हल पर अतिरिक्त इनाम ६००) रुपये। अन्तिम तारीख २६-९-४८ 'यह इनाम
कोई भाग्य के हाथ नहीं है पर केवल आपकी बुद्धि के ऊपर है।'

(१) ठंड का मौसम। — श...द
(२) अपनी यह बचाने का प्रयत्न हर प्राणी करता है। — ...।न
(३) हिन्दू बारह महीनों में से एक महीना। — सा...न
(४) यह किसी भी प्राणी के प्राण ले सकता है। — ...र

नियमा—(१) एक पूर्ति की फीस एक रुपया है। (२) मैनेजर का निर्णय
मान्य होगा। (३) फीस की रकम कम आने पर इनाम की रकम घट सकती है।
पूर्तियाँ सादे कागज पर साफ साफ लिखिये। (५) फीस केवल मनीआर्डर द्वारा
चाहिये।

पता :- ए० पी० वर्मा २६८ फ़्री गंज उज्जैन (C. I.)

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५।=), डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

सच है
सिरोलीन
रोच
सर्दी और खांसी की श्रेष्ठ औषधि है

अन्तू सरदार

भरोस सरदार के लड़की के सिवा कोई सन्तान न थी। और भरोस था ऐसा लटैत जिससे पुलिस भी डरती थी। एक जमींदार के यहाँ भरोस नौकर था। उसने अपनी बेटी को भी लाठी चलाना सिखला दिया था। इसका ब्याह जिस अनन्त (अन्तू) से किया गया था वह भरोस से सवाया था। एक झमेले में बड़ी मार काट हुई। इसमें अन्तू की स्त्री भी मारी गई और भतीजा प्रताप पागल-सा हो गया। पुलिस ने अन्तू को गिरफ्तार कर सज़ा करा दी। इधर प्रताप भी चल बसा। यह कहानी है तो बड़ों के लिए भी रोचक परन्तु बच्चों को बहुत पसन्द आवेगी। सुन्दर सरल भाषा, कई चित्र और कवर पृष्ठ रंगीन। मूल्य केवल बारह आने।

मैनेजर—बुकडिपो इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

२ सितम्बर, १९

न लीजिये"

र्वाधिक पूर्ति भेजने
थवा विद्यार्थी के
-९-४८ 'यह इनाम
है।'

श...द
...। न
सा...न
...र

नेजर का निर्णय
कम घट सकती है।
मनीआर्डर द्वारा

जैन (C. I.)

करो

मेह, निर्बलता, वीर्य
धातु का गिरना
वनसत" ने मान
एक बार परीक्षा
र्च अलग। यदि
स्ती है तो हमारा
तिला मस्ताना"
कमजोरी, सुस्ती,
शीशी ५।।=), डाक

ट्री, कानपुर

रोच"
धि है

भ-मेले में बड़ी
नू की स्त्री भी
प्रताप पागल-सा है
नू को गिरफ्तार कर
प्रताप भी चल रहा।
के लिए भी रोचक
न पसन्द आयेगी।
ई चित्र और
ल बारह आने।

वाद।

मूल्य ७।।)
संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

२६ सितम्बर, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 26th September, 1948

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

- पूरे जलती ज्वाला में।
संग्राम का इतिहास।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

हिन्दी विरोधी - आन्दोलन।
रंगमंच, मातृमन्दिर और स्वास्थ्य-चर्चा

पुराने
के स्थान में
नया

EVEREADY
EVEREADY TRADE MARK
Fresh Power
BRIGHTER LIGHT
LONGER LIFE

नये की प्रतीक्षा
कीजिए

EVEREADY
TRADE-MARK
फ़्लैशलाइट बैटरी

नेशनल कार्बन कम्पनी द्वारा प्रस्तुत

पीडा को रोको

अलेम्बिक शीतल बाम में काफूर, पिपरमिन्ट, युकलिपटस आयल, केजूपूटी आयल आदि मिश्रित हैं और यह पीडा को शांत और कम करती है।

शीतल बाम लगाने से कई प्रकार की पीड़ा और दर्दों को जैसा कि:—जोड़ों की पीड़ा, मोंच, और सिर दर्द को आराम मिलता है।

१/२ औंस की शीशी में मिलती हैं

शीतल बाम

एक अलेम्बिक औषधि

AL 3 HIND

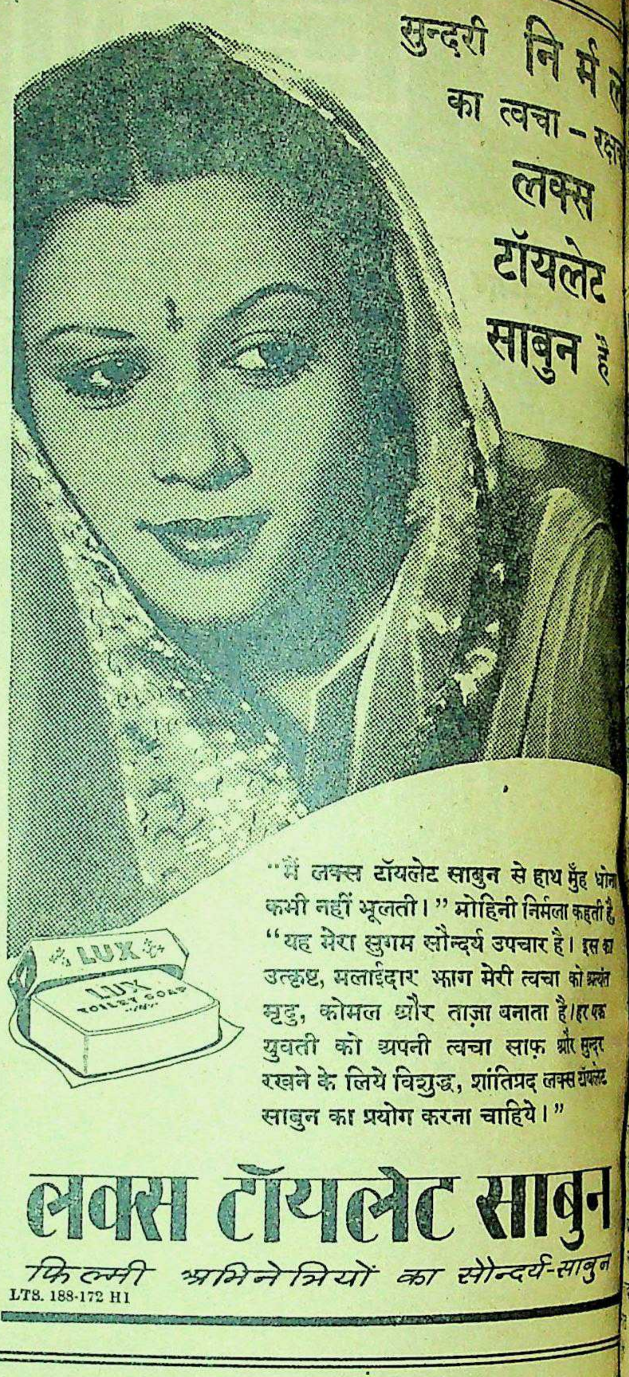

सुन्दरी निर्म
का त्वचा-रक्ष
लक्स
टॉयलेट
साबुन है

"मैं लक्स टॉयलेट साबुन से हाथ मुँह धोना कभी नहीं भूलती।" मोहिनी निर्मला कहती है, "यह मेरा सुगम सौन्दर्य उपचार है। इस का उत्कृष्ट, मलाईदार झाग मेरी त्वचा को अत्यंत मृदु, कोमल और ताज़ा बनाता है। हर एक युवती को अपनी त्वचा साफ़ और सुन्दर रखने के लिये विशुद्ध, शांतिप्रद लक्स टॉयलेट साबुन का प्रयोग करना चाहिये।"

LUX
LUX TOILET SOAP

लक्स टॉयलेट साबुन
फिल्मी अभिनेत्रियों का सौन्दर्य-साबुन
LTS. 183-172 HI

सच है
सिरोलीन "रोच"
सर्दी और खांसी की श्रेष्ठ औषधि है

देशदूत में विज्ञापन दीजिए

२६ सितम्बर, १९४

नि र्म ल
त्वचा - रक्ष
लक्स
टॉयलेट
साबुन है

से हाथ मुँह धोने
नी निर्मला कहती है
उपचार है। इस
री त्वचा को अत्यंत
बनाता है। हर एक
साफ़ और सुन्दर
तिप्रद लक्स टॉयलेट
ाहिये।"

साबुन
न्दर्य-साबुन

रोग
षधि है

दीजिए

देशदूत

१, संख्या ४] रविवार, २६ सितम्बर, १९४८

सम्पादक का पृष्ठ

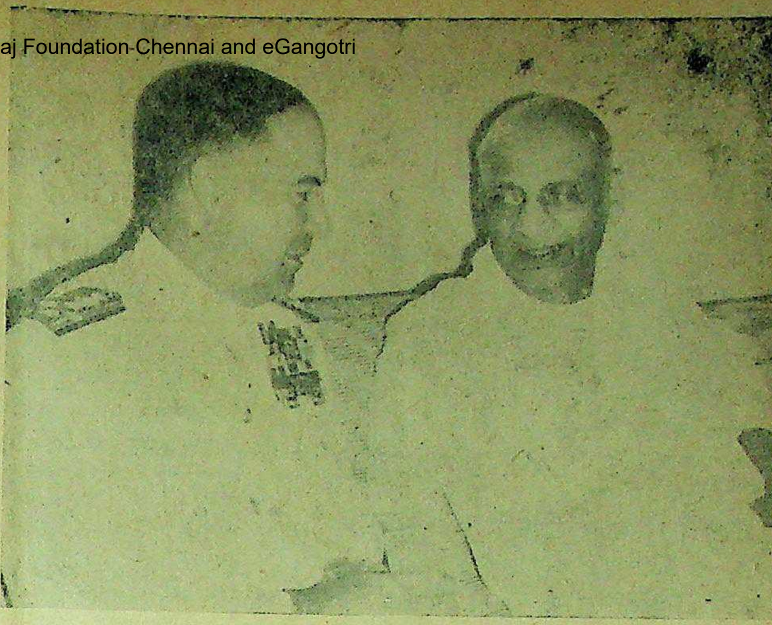

सरदार पटेल, पूर्वी अटलांटिक क्षेत्र के अमरीकी प्रधान सेनापति एडमिरल कोनोली।

ाद का आत्मसमर्पण

र के निजाम तथा उनकी य फौजों को आत्मसमर्पण हैदराबाद में होनेवाली सैनिक र्त हो गई। इस समय के आदेशों के द्वारा वहाँ की स्थापना हो गई है। और व्यवस्था के स्थापित देशी रियासतों की भाँति भी जनता की सरकार यह प्रसन्नता की बात है कांग्रेस के नेता तथा कर्ता जेलों से मुक्त कर कार समुदाय का प्रायः चुका है और उसके नेता थे, जो लाल किले पर डा फहराने का स्वप्न र करके लाल किले में न्द कर दिया गया है। ई कमाण्ड के सर्वोच्च नेरट कर्नल श्री राजेन्द्र: टनेण्ट कर्नल चौधरी के र वहाँ का प्रबन्ध तत्काल है। हमारा अनुमान था क यह युद्ध अधिक से दिनों में या एक सप्ताह में गा। किन्तु निजाम की यों कहना चाहिये कि तीन ही दिन में समाप्त ऐसे अवसर पर भारतीय के अधिकारियों की प्रशंसा रहेंगे जिन्होंने अपनी शक्ति की प्रेरणा से यह विजय प्राप्त यदि यह युद्ध इतनी शीघ्र तो धन-जन की हानि तो य ही निजाम की वर्तमान और ही रूप में दिखाई कार की यह विजय संसार एक प्रमुख स्थान ग्रहण करती प्रमाणित होता है कि ना संगठित, कितना साहसी लिये कितना बलिदान देने है।

नहीं सकते हैं कि भारत-सर- हैदराबाद में किस नीति के पित होगा, निजाम की क्या और लोकप्रिय सरकार की जाने के बाद भी क्या निजाम अक्षुण्ण रहेगा ? यह तो निर्णय का प्रश्न है, किन्तु भविष्य के लिये हम देना चाहते हैं।

हमें अपने पूर्व इतिहास की गलती को पुनः न दुहराना चाहिये। हमें मालूम है कि सुप्रसिद्ध पेशवा बाजीराव ने जब हैदराबाद पर चढ़ाई की थी और निजाम की स्थिति डावाँडोल हो गई थी तो इसी हैदराबाद के निजाम ने अपनी पगड़ी बाजीराव के चरणों पर जाकर रख दी थी, बाजीराव ने बड़ी उदारता से निजाम को अभयदान दिया था कि आप पूर्ववत् पुनः हैदराबाद का शासन कीजिये, मुझे कोई अपत्ति नहीं है। किन्तु मरहठों का इतिहास यह बतलाता है कि अँगरेजी शासन की स्थापना के बाद निजाम हैदराबाद ने अँगरेजों से मिलकर बाजीराव की इतिश्री कराई थी। हम समझते हैं कि भारत सरकार को हैदराबाद में जनतंत्र स्थापित करने के साथ-साथ इस ऐतिहासिक तथ्य को भूल न जाना चाहिए। बाजीराव पेशवा के समय में की गई गलती को पुनः न दोहराना चाहिए। हमारे कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि हैदराबाद में निजाम की सत्ता समाप्त कर दी जाये किंतु इस प्रकार की व्यवस्था की जानी चाहिये कि समय आने पर कहीं वह पुरानी ऐतिहासिक गलती दुहराई न जा सके। जिस प्रकार से भारत की अन्य देशी रियासतें व्यवस्था की दृष्टि से इस समय भारत-संघ में सम्मिलित हैं और वहाँ का शासन जनता की सरकार के हाथ में है तथा वहाँ के नरेशों का अस्तित्व पहले की भाँति समाप्त हो चुका है उसी प्रकार हैदराबाद में होनेवाली शासन-व्यवस्था और निजाम के सम्बन्ध में भी व्यवस्था होनी चाहिए। समाजवादी नेता तो हैदराबाद के टुकड़े-टुकड़े करके विभिन्न प्रान्तों में उसके सम्मिलित किये जाने के विशेष पक्षपाती हैं। वह तो हैदराबाद रियासत का अस्तित्व ही समाप्त कर देना चाहते हैं किन्तु हम इस नीति के विरोधी हैं। हैदराबाद रियासत ऐतिहासिक रियासत है, उसका अस्तित्व कभी समाप्त नहीं होना चाहिए; किन्तु जनता की जो सरकार स्थापित हो और जिस प्रकार की शासन व्यवस्था वहाँ लागू हो उसमें निजाम को वह अधिकार नहीं प्राप्त होने चाहिए जो उन्हें अँगरेजी सरकार ने दे रक्खे थे। यदि ऐसा होता है तो वहाँ की जनता अपने को पूर्ण स्वतंत्र अनुभव करेगी और हैदराबाद राज्य जनतंत्र से पूर्ण राज्य समझा जायगा।

रजाकारों के नेता सैयद कासिम रिजवी हैदराबाद को इस परिस्थिति में लाने के पूर्ण जिम्मेदार हैं। यदि रजाकार दल अपने कुकृत्यों से जनता की धन-जन की हानि न करता तथा प्रचार के द्वारा भारत-सरकार को चुनौती न देता तो सम्भवतः आज की परिस्थिति ही उत्पन्न न होती और निजाम की भी वही स्थिति होती जिस प्रकार अन्य रियासतों के नरेशों की। इसलिये कासिम रिजवी पर तो संगीन मुकदमा चलाया जाना चाहिए और उसके द्वारा किये जानेवाले अत्याचारों का फल उसे प्राप्त होना चाहिए। कानून और व्यवस्था की दृष्टि से इस प्रकार की कार्यवाही उचित और न्यायजनक जान पड़ती है। यदि निजाम के आत्मसमर्पण के बाद भी विदेशों की साम्राज्यवादी सरकारें, संयुक्त राष्ट्र-संघ अथवा पाकिस्तान इस सम्बन्ध में किसी प्रकार का हस्तक्षेप करते हैं तो भारत-सरकार को तनिक भी नहीं दबना चाहिए, क्योंकि भारतीय संघ में उत्पन्न होनेवाली किसी भी राजनीतिक समस्या का हल संघ ही कर सकता है न कि विदेशी सरकारें। अन्तर्राष्ट्रीय कानून, न्याय और शासन की दृष्टि से किसी भी विदेशी सरकार का हस्तक्षेप अनुचित और अवैध है।

साथ ही हम भारतीय संघ की मुस्लिम जमात को भी बधाई देते हैं जो हैदराबाद की उलझन के अवसर पर शान्ति और सुव्यवस्थित रही और किसी प्रकार की साम्प्रदायिक घटना के घटित होने का अवसर नहीं आने दिया गया। इससे यह भी प्रमाणित होता है कि भारतीय संघ का प्रत्येक नागरिक अपने राष्ट्र के प्रति वफादार है और अन्याय के सामने पूर्ण रूप से संगठित और एकमत है। हैदराबाद की विजय एक बहुत बड़ी विजय है। स्वतन्त्र भारत के इतिहास में यह अवसर स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा।

आगामी ३१ आक्टोबर को 'देशदूत' का

'दीपावली विशेषांक'

बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित होने जा रहा है

पिछले वर्षों की भाँति इस वर्ष भी 'देशदूत' का 'दीपावली' विशेषांक दीपावली के अवसर पर ३१ आक्टोबर को प्रकाशित होगा। राष्ट्र की सामयिक राजनीतिक समस्याओं पर सुप्रसिद्ध नेताओं की रचनायें, प्रसिद्ध कवियों की कवितायें तथा दर्जनों सुंदर चित्रों से यह अंक सुसज्जित होगा। कहानियाँ एक से एक लोकप्रिय और सुंदर होंगी। इसके अतिरिक्त रंगमंच तथा महिलाओं के लिये उपयोगी और बेजोड़ सामग्री उपलब्ध होगी।

विज्ञापनदाताओं को अभी से विज्ञापन के लिये स्थान सुरक्षित करा लेना चाहिए। एजेन्टों को भी अभी से अपनी प्रतियाँ रिजर्व करा लेनी चाहिए। कवर नयनाभिराम होगा। मूल्य केवल ।=) छः आना मात्र होगा।

विज्ञापन दर यह होगा।

कवर का चौथा पूरा पेज ४००) दूसरा या तीसरा पेज ३००)
पहला पेज पाठ्य-विषय के पहले ३००) साधारण पूरा पेज २००)

पृष्ठ का आकार १२½″ × ९″ कालम ४ स्क्रीन ६५

मैनेजर 'देशदूत'
इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

हिन्दी-विरोधी आन्दोलन

मद्रास में राष्ट्रभाषा के विरोधियों को करारा उत्तर मिल रहा है ?

लेखक, श्रीं सहदेव चक्रवर्ती विद्यालङ्कार (पत्रकार)

मद्रास में राष्ट्रभाषा हिन्दी के विरुद्ध आन्दोलन हो रहा है। मद्रास-सरकार आन्दोलन को ध्वंश करने की ओर अग्रसर है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने मद्रास के हिन्दी-विरोधी आन्दोलन पर एक विहग दृष्टि डाली है और यह बतलाया है कि प्रांतीयता को किसी प्रकार भी पनपने न देना चाहिए। लेख सामयिक और विचारपूर्ण है।

जहाँ एक ओर मद्रास में प्रान्तीय सरकार हिन्दी की देशव्यापी लोकप्रियता और प्रभाव को दृष्टि में रखकर उसे मद्रास में भी लोकप्रिय बनाने का प्रयास कर रही है, वहाँ दूसरी ओर परिआर रामास्वामी नायकर का दक्षिण भारतीय द्राविड़संघ प्रान्तीय सरकार, उस प्रस्ताव का डटकर विरोध कर रहा है, जिसके अनुसार मद्रास के माध्यमिक स्कूलों में हिन्दी को भी पाठ्य-क्रम में स्थान दिया जायगा। वस्तुतः रामास्वामी नायकर और उनका दल दक्षिण भारत में अपना एक छत्र राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित करने के उद्देश्य से ही प्रांतीय सरकार के हिन्दी पक्षपाती प्रस्ताव का डटकर विरोध कर, रहा है। नायकर ने १९३८-३९ में भी हिन्दी-विरोधी आन्दोलन का सूत्रपात करके, दक्षिण-भारत के कुछ लोगों में अपने को सर्वप्रिय बना लिया था। दक्षिण-भारतीय द्राविड़संघ के सदस्यों द्वारा हिन्दी के विरुद्ध अपनाया गया आन्दोलन प्रतिदिन उग्र रूप धारण करता जा रहा है। इस सम्बन्ध में वे सार्वजनिक सभाओं, जलूसों और धरना देना आदि परम्पराओं का अनुसरण कर रहे हैं। जस्टिस पार्टी, जिसके अध्यक्ष परिआर रामास्वामी नायकर हैं। के कई सदस्य मद्रास मिएटस्ट्रीट में स्थित टी० टी० वी० हाईस्कूल, जहाँ छात्रों को हिन्दी पढ़ाने का प्रबन्ध किया गया है। के मुख्य द्वार पर प्रतिदिन धरना दे रहे हैं। यह भी स्मरणीय है कि दक्षिण भारतीय द्राविड़संघ जस्टिस पार्टी का ही एक भाग है। १९३६ तक मद्रास में जस्टिस पार्टी का पर्याप्त प्रभाव रहा।

वैज्ञानिक फार्मूला

वस्तुस्थिति यह है कि द्राविड़संघ दक्षिण भारत में एक पृथक् द्राविड़-राज्य के निर्माण पर तुला हुआ है। उसके सदस्यों का कथन है कि उत्तरी भारत के आर्यों के एकाधिकार तथा प्रभुत्व से मुक्त होने के लिए दक्षिण भारत में द्राविड़-राज्य की स्थापना अनिवार्य है। उनका यह भी विश्वास है कि दक्षिण भारत के मूल-निवासी द्राविड़ थे और उनकी अपनी भाषा तामिल थी। यह अन्य सब भाषाओं की अपेक्षा वैज्ञानिक रूप से शुद्ध है, क्योंकि अन्य भाषाओं में पारस्परिक मिश्रण पाया जाता है। अपने कथन की पुष्टि के लिए वे प्रमाण भी उपस्थित करते हैं। उनके कथनानुसार यदि तेलगू, कन्नड और मलयालम में से संस्कृत शब्दों का निराकरण कर दिया जाय तो अवशिष्ट भाषा केवल तामिल ही रह जायगी। रामास्वामी नायकर व्यक्तिगतरूप से तामिल को शिक्षा का माध्यम बनाने के पक्ष में नहीं हैं। वे अधिक विकास के लिए अँगरेजी को ही शिक्षा का माध्यम स्वीकार करते हैं। इस दिशा में तो वे भारत-सरकार के शिक्षामन्त्री मौलाना आजाद से भी कई पग आगे बढ़ गये हैं। जहाँ मौलाना केवल पाँच वर्षों की निश्चित अवधि तक ही शिक्षा के माध्यम के लिये अँगरेजी के तथाकथित अनिवार्य अस्तित्व को स्वीकार करते हैं, वहाँ रामास्वामी उसे स्थायी रूप से शिक्षा का माध्यम बनाना चाहते हैं। किन्तु वे हिन्दी की तुलना में तामिल को अधिक महत्त्व देते हैं। वे उत्तरी भारत के लोगों द्वारा दक्षिण में होनेवाले हस्तक्षेप की अपेक्षा प्राचीन युग के चोल, चेर और पाण्ड्या राजाओं की द्राविड़ संस्कृति को अधिक महत्त्व देते हैं।

सरकार की दुर्बल नीति

यद्यपि मद्रास की प्रान्तीय सरकार ने तेलगू, मलयालम और कन्नडी भाषा-भाषी क्षेत्रों में हिन्दी के शिक्षण तथा ज्ञान को अनिवार्य घोषित किया है, किन्तु तामिल भाषी क्षेत्रों को इस अनिवार्यता से वंचित रखा है। ऐसा क्यों ? ऐसा करने से प्रांतीय सरकार पर पक्षपाती होने का दोषारोपण स्वाभाविक है। संभवतः उसने तामिल भाषी क्षेत्रों में १९३८ में हुए हिन्दी-विरोधी आन्दोलन को दृष्टि में रखकर ही वहाँ के माध्यमिक स्कूलों में हिन्दी को अनिवार्य विषय घोषित न किया हो। यदि मद्रास सरकार यह समझती है कि निकट भविष्य में हिन्दी भारत संघ की एकमाय राष्ट्रभाषा और राजभाषा घोषित हो जायगी और देश के सर्वतोमुखी शासन में आज-कल की तरह दक्षिण भारत के लोगों द्वारा भाग लेना भी आवश्यक है तो उसे प्रांतीय स्कूलों में हिन्दी के पठन-पाठन के लिये उतनी ही कठोर एवं बलवती नीति का अनुसरण करना चाहिए जितनी कि भारत के वर्तमान गवर्नर-जनरल श्रीचक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने अपने प्रधान मन्त्रित्व-कोल में १९३८-३९ में अपनाई थी। तामिल-नाड में भी हिन्दी का पठन-पाठन अनिवार्य कर दिया जाय। हमें मद्रास सरकार के सदस्यों की मनोवृत्ति के प्रति कोई संशय नहीं। वे हिन्दी के महत्त्व को समझते हैं। जब मद्रासी समाज इतने काल तक विदेशी भाषा अँगरेजी से मोह करता आया है तो उसे राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति उदासीन होने का अवसर क्यों दिया जाय ?

कुछ दिन पूर्व मद्रास सरकार के अर्थ मन्त्री गोपाल रेड्डी ने सरकार के प्रति की गई आलोचनाओं का उत्तर देते हुए कहा था कि "मद्रास के लिये हिन्दी आवश्यक है। क्योंकि इसी के द्वारा अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी में हमारी पहुँच हो सकती है। भारतीय पार्लियामेण्ट में प्रवेश पाने का हमारे लिये एकमात्र यही साधन है और हिन्दी सीखकर ही हम सांस्कृतिक रूप से दिल्ली पर विजय पा सकते हैं।" उनका कहना है कि मद्रास का हिन्दी-विरोधी आन्दोलन अचिर-जीवी है। यह धीमे-धीमे स्वयं शान्त हो जायगा। इस

आन्दोलन का क्या परिणा
तो भविष्य ही बतायेगा। कि
स्मरणीय है कि मद्रास के प्र
रामास्वामी रेडियर ने हि
आन्दोलनकारियों को चेताव
यदि उन्होंने 'सीधी कार्यवाही'
न किया तो हमें उनकी विरो
के दमन के लिये कानून का
पड़ेगा। यह ठीक है कि मद्रास
विरोधी आन्दोलन स्वयं शान्त
किन्तु फिर भी हिन्दी के
ज्ञान के लिये देश में एक अनु
वरण उपजाने की आवश्यकता
सरकार को सब प्रांतों में हिन्दी
के लिये एक समान नीति
चाहिये। इस दिशा में इतना
आवश्यक है कि हिन्दी के
स्थानीय एवं प्रादेशिक भाषाओं
प्रगति में कोई बाधा न पहुँचे।

घातक प्रचार

मद्रास में चल रहे हिन्दी
आन्दोलन में दक्षिण भारतीय
को उस 'तामिल अरसु कळ
संस्था का भी सहयोग प्राप्त है,
उद्देश्य 'समाजवादी तामिल
स्थापना करना है। इस संस्
श्री राजगोपालाचारी के पुराने
शिवराम ग्रामनी हैं। आप एक
राजनीतिक प्रभुत्व प्राप्त करने
कर रहे हैं। यह भी स्मरणीय
द्राविड़संघ आज से कई मास पूर्व
की वर्तमान सरकार का इसलिये
था, क्योंकि उसे उसकी चेष्टाओं
ब्राह्मण-विरोध की बू आती थी और
संघ ब्राह्मणों का कट्टर शत्रु है।
की शत्रुता चूहे-बिल्ली की-सी
का विचार 'उत्तर के प्रभुत्व'
दक्षिण को एक पृथक् स्वतन्त्र
ईसाई के रूप में स्थापित करने
मद्रास की जस्टिस पार्टी मृतप्राय
है और वह हिन्दी-विरोधी आन्दो
पुनः लुप्तप्राप अस्तित्व को प्रा
चाहती है। 'उत्तर के प्रभुत्व'
दक्षिण में द्राविड़-राज्य स्थापि
तो उनकी एक चाल है, वहाँ
टीक है कि अभी जनता उसके
से उपराय है। किन्तु यदि उनकी
प्रवृतियों का दमन न किया गया
दक्षिण भारत के राष्ट्रीय आन्
निकट भविष्य में संकटग्रस्त
सम्भावना बनी रहेगी। अ
वर्तमान हिन्दी-विरोधी आन्दोलन
सामयिक चुनौती समझना चाहि
उपेक्षा करना घातक होगा।

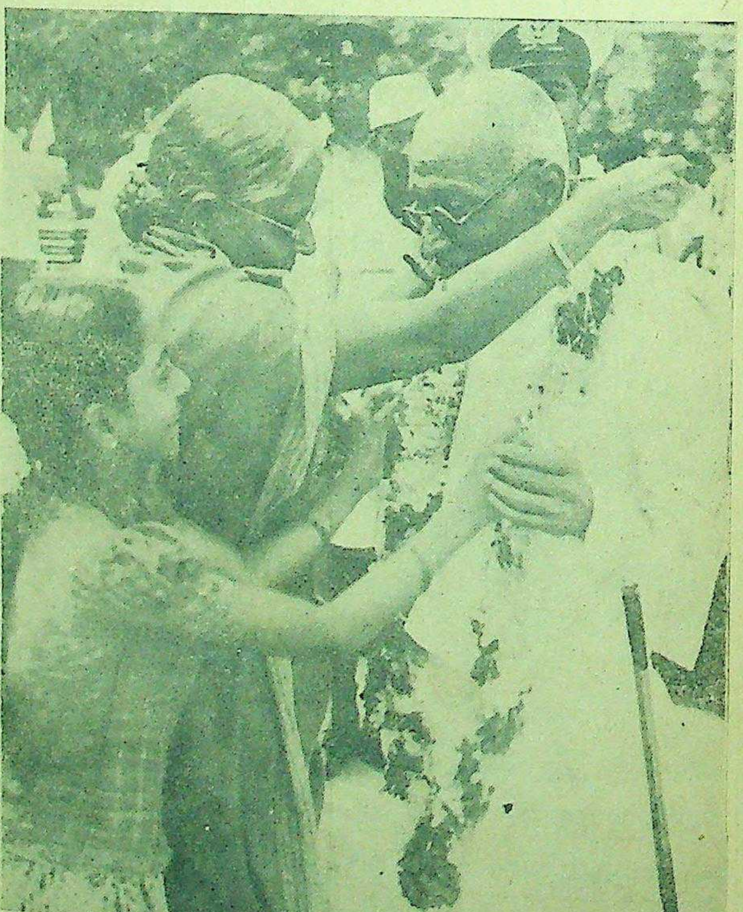

वयोवृद्ध कांग्रेसजन स्वर्गीय एस० श्रीनिवास आयंगर की पुत्री श्रीमती अम्बुजम्मल मैलापुर महिला एसोसियेशन की सभा में [illegible] रही हैं।

सेवाग्राम
रंग-बिरंगी छपाई, अनेक
रचयिता श्री सोहनलाल
संरक्षक श्री घनश्यामदास
जनता की भाषा में, जनता
का, जनता का काव्य
रचनाओं का सुन्दर संग्रह।
बढ़िया काग़ज़, कपड़े की
मूल्य दस रुपये।
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड

क्षिण-पूर्व की जलती ज्वालाएँ

ा, मलाया, जावा, सुमात्रा तथा अन्य द्वीपों की आज की राजनीति क्या है ?

लेखक, प्रोफेसर आशाराम, एम० ए०
(राजनीति-विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय)

(२)

ण-पूर्वी एशिया में शासन-परिवर्तन की ज्वालाएँ प्रज्वलित हो रही हैं। इस परिवर्तन क्यों हो रहा है ? वर्तमान शासन से जनता का क्या संपर्क है, जनता ाहै ? आदि सिद्धांतों के आधार पर इस लेख में विद्वान लेखक वहाँ के नैतिक विस्फोटों का सुंदर चित्रण करते हुए स्थिति स्पष्ट की है। लेख और पठनीय है। इस लेख का प्रथम अंश गत १९ सितम्बर के 'देशदूत' में प्रकाशित हो चुका है।

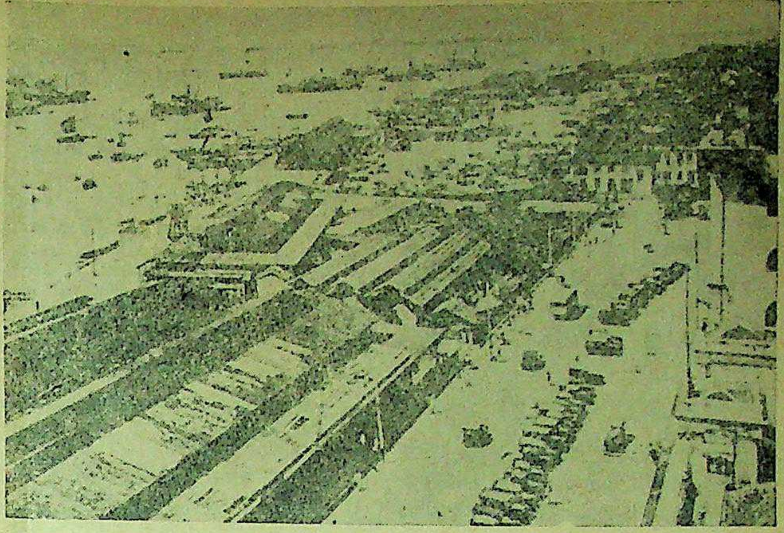

दक्षिण-पूर्व का सुप्रसिद्ध सैनिक केन्द्र स्थल सिगापूर का एक विहग दृश्य।

(३)

पूर्व के देश छोटे छोटे देश देश थे। इनमें अनेक छोटी बसी हुई हैं और ऐक्य ता है। विशेषकर उस समय वर्ग अपने साम्राज्यवादी कारण उनको विभाजित कर चाहता हो। कदाचित् नीति और प्रोत्साहन के पर चीनी और भारतीय तियों को भी बसा दिया मजदूरी और छोटा- ती हैं। फिर प्रत्येक देश अपने साथियों की खोज नको पैदा भी करता है। की भाँति यहाँ योरपीय अर्द्ध-योरपीय और इसाई गए और इन देशों में समझौता किया गया। की निधि इनका अपना है—रबर, मिट्टी का तेल, काफी और मसाले और । इन देशों के रहनेवाले किसान, शेष मजदूर और निवासी व्यापारी है। परन्तु व्यापार अथवा उद्योग- अधिकांश व्यापार भी भारतीय के हाथ में है। बड़ा व्यापार के उद्योग-धन्धे विलायती सम्राटों के हाथ में हैं। ये देश में अपने मालिक नहीं, देखनेवाले, गोरे मालिकों । यहाँ, स्वदेशी बिरला, अथवा सिंहानिया नहीं। कमी है, मध्यम वर्ग अत्यन्त

भारत की भाँति यहाँ पर दोलन न तो इतना शीघ्र और न पिछले युद्ध के बढ़ पाया। सन् १९०५ में देश (जापान) ने पहली योरपीय साम्राज्य (रूस) को । इसी समय संसार में एक ट भी आया। इस राजनैतिक संकट के समय एशियाई अपना पहला मोर्चा लिया। १९१४-१९१८ के युद्ध के मिला। युद्ध के बाद के संकट तथा योरपीय क्रान्तियों का देशों की त्रसित जनता उबल पड़ी और साम्राज्यशाही को लेने के देने पड़ गए। १९३० के आर्थिक संकट के समय भी पूर्वीय राष्ट्रीयता ने साम्राज्यशाही से टक्कर ली। परन्तु दक्षिण-पूर्व के देशों में ये हलचलें बड़े छोटे पैमाने पर रहीं और साम्राज्यशाही व्यवस्था पर कोई गहरा प्रभाव न डाल सकीं। इन देशों के राष्ट्रीय आन्दोलन कतिपय बहादुर मध्यमवर्गीय क्रान्तिकारियों तक सीमित थे, अथवा कभी कभी कहीं असंगठित ढंग से किसान-विद्रोह अथवा मजदूर-हड़तालें हो जाती थीं।

सन् १९३९-४८ तक के युद्ध में साम्राज्यशाही का अच्छा खासा भण्डाफोड़ हुआ, पूँजीवाद की कलई खुल गई। पाश्चात्य देशों के पूँजीवादी प्रजातन्त्र देश हिटलरशाही के सामने न ठहर सके और जापानी सेनाओं ने ब्रिटिश, अमरीकी, फ्रांसीसी, डच आदि साम्राज्यवादियों की सेनाओं को गाजर-मूली की भाँति काट कर फेंक दिया और लगभग ४-५ मास के बीच १४-१५ करोड़ जनता के भूभाग, दक्षिण-पूर्वीय एशिया पर कब्जा कर लिया।

मित्रराष्ट्रों की पराजय का एक कारण और भी था। दक्षिण-पूर्वी एशिया के देश इन साम्राज्यशाहों से घबरा गए थे, परेशान थे, और कुछ न सही, जापान के वादे भी गलत सही, लेकिन फिर भी जुआँ बदलना चाहते थे। हाँ, यहाँ के सामन्तों को जापान प्रलोभन दे चुका था, यहाँ के राष्ट्रवादी नेताओं से वादे कर चुका था कि उनको स्वतन्त्रता दे दी जाएगी। इस प्रकार के भुलावे में बहुत से भारतीय नेता भी आ चुके थे।

ज्यों ज्यों दिन बीतने लगे, त्यों त्यों जापान-अधिकृत भूभागों की जनता की निद्रा भंग होने लगी, भ्रम दूर होने लगे। जापान स्वतन्त्रता का साथी न था, अपहरण करनेवाला था, वह एशियाई पड़ोसी, सहायक बड़ा भाई न था; वह शोषक निकला। जनता की नींद खुली और उसने अपने हथियार सँभाले। धीरे धीरे, उसने लड़ना शुरू किया, छापेमार दलों का संगठन किया, राष्ट्रीय भावनाओं को जगाया और एक राष्ट्रीय आन्दोलन खड़ा कर दिया।

दक्षिण-पूर्वीय देशों के इस जागरण के अगुवा राष्ट्रवादी तो थे। वे स्वतन्त्रता चाहते थे। परन्तु समाजवादी और साम्यवादी भी थे। इसके दो कारण थे। प्रथम तो, इन देशों में देशी पूँजीपतियों का अभाव था, उनका अधिक प्रभाव न था और जो कुछ पूँजीपति थे मालिकों, साम्राज्यशाहों से मिल चुके थे। अतएव, राष्ट्रीय परम्पराओं के उत्तराधिकारी केवल किसान और मजदूर और निम्न मध्यमवर्ग तथा उनके नेता समाज और साम्यवादी थे।

दूसरे: छापेमार युद्ध पूँजीवाद और उसके सिद्धान्त द्वारा नहीं लड़ा जा सकता। पूँजीवाद, शान्ति, अहिंसा, सत्य आदि की बातें करता है, क्रांति की नहीं; वह समझौते की बातें करता है, लड़ाई की नहीं; वह वर्ग सहयोग किसान-जमींदार, मालिक-मजदूर के प्रेम की बातें करता है वर्ग संघर्ष की नहीं। और इन सिद्धान्तों से किसान-मजदूर लड़ने-मरने और क्रांति करने को प्रोत्साहित नहीं होता। छापेमार के लिए तो समाज और साम्यवाद के सिद्धांत चाहिये, किसान-मजदूर से कुर्बानी की माँग तब की जा सकती है जब उनके शोषकों के संहार का प्रोग्राम सामने लाया जा सके।

अतः, युद्ध के बीच दक्षिण-पूर्वीय देशों में राष्ट्रीय आन्दोलन बढ़े, छापेमार सेनाएँ तैयार हुई, लाखों नौजवान देश की स्वतन्त्रता के लिए कटिबद्ध हो जापान के विरुद्ध समरांगण में कूदे परन्तु समाज और साम्यवाद के नेतृत्व में। लगभग सभी देशों में इन दलों का नेतृत्व था। युद्ध के बाद यह सिद्ध भी हो गया। इण्डोचीन का नेता, श्री हो-ची-मिन कम्यूनिस्ट है, इण्डोनेशिया के नेतृत्व में समाजवादियों का बहुमत है और वे साम्यवादी (कम्यूनिस्ट दल) के साथ हैं; बर्मा में समाजवादी बहुमत में हैं और कुछ काल पहले तक उनका कम्यूनिस्टों से. सहयोग रहा है, स्याम और मलाया तथा फिलीपीन राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व भी समाजवादी और साम्यवादी दलों के हाथ में है और वे मिलकर मोर्चा ले रहे हैं।

(४)

श्री सम्पूर्णानन्द जी को खेद है कि ब्रिटेन की नीति द्वारा मलाया में कम्यूनिज्म का प्रसार हो रहा है। तात्पर्य यह कि यदि वह भारत की भाँति मलाया में भी समझौता कर लेता तो स्थिति सुधर सकती थी। इन देशों में अधिकांशतः योरपीय पूँजीपति हैं, वे ही उपरोक्त देशों की निधि के मालिक हैं। देशी पूँजीपति नहीं जो आधे-साझे का समझौता कर सकें। इन देशों का राष्ट्रीय नेतृत्व श्री नेहरू, पटेल और पन्त जैसे उदार सुधार और गांधीवादी नेताओं के हाथ में नहीं, वरन् किसान, मजदूर और मध्यमवर्ग के नेता, समाजवादी और कम्यूनिस्टों के हाथ में है। अतएव, साम्राज्यशाही के सामने समाजवाद और कम्यूनिज्म के साथ समझौता करने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं। और साम्राज्यवाद अपने पैरों कुल्हाड़ी कैसे मार सकता है ? यदि उसको जीवन की, पैर टेकने की कुछ भी आशा हो तो समझौता कर सकता है, परन्तु जब कुछ भी आशा न हो तो समझौता कैसा ? इसी कारण, जरा सहारा मिलते ही उसने बर्मा के समाजवादी नेताओं से समझौता कर लिया, केवल इस शर्त पर कि उनके आर्थिक और रक्षा-सम्बन्धी हित अक्षुण्ण रहेंगे। इन्हीं शर्तों पर इण्डोनेशिया में भी समझौते का प्रयत्न है।

परन्तु इस प्रकार के समझौते से उपरोक्त देशों को जनता को कोई लाभ नहीं, यहाँ देशी पूँजीपति भी नहीं जिनको कोई लाभ हो। उपरोक्त देशों की निधि—खानें, चाय, रबर और काफी के बाग, तेल के कुएँ, सब विदेशियों के हाथ में हैं। यदि ये ज्यों के त्यों विदेशियों के हाथ में रह जाते हैं तो जनता को कोई लाभ नहीं, यदि साम्राज्यशाही के एजेन्टों के पास रियासत और जमींदारी रह जाती है तो स्वराज्य से क्या फायदा ? यही कारण है कि उक्त देशों में साम्राज्यशाही के साथ समझौता असंभव है और जहाँ समझौता हुआ है जैसे बर्मा और कुछ काल के लिए इण्डोनेशिया में, वहाँ चल नहीं सकता, उसकी कलई शीघ्र ही खुल जाती है।

बर्मा और सीलोन (लंका) में समझौते के प्रयत्न किए गए। बर्मा में विफल हो चुके हैं और सीलोन की बारी है। बर्मा की सरकार कहने को समाजवादी है परन्तु वास्तव में ब्रिटेन के हित ज्यों के त्यों हैं। टिन, मिट्टी के तेल के कारखाने, लकड़ी का व्यापार, जहाजी कम्पनियाँ और कल-कारखानें तथा बैंक, सबके ऊपर ब्रिटिश पूँजीपतियों का अधिकार है, वहाँ की रक्षा रक्षा-नीति तथा पर राष्ट्रनीति भी ब्रिटेन से नत्थी है। बर्मा सरकार ने कम्यूनिस्ट

(शेष पृष्ठ १६ पर देखिए)

हास परिहास

भंग की तरंग

रिजवी दिल्ली पर अपना झंडा गाड़ना चाहता था। अब बिल्ली बनकर किसी की खाट के नीचे छिपा है। तुलसीदास पहले ही लिख गये हैं, उधरे अंत न होहिं निबाहू।

* * *

बेबिन हैदराबाद का पक्ष लेकर सुरक्षा-समिति में यह कहने वाले थे कि निजाम का पक्ष उचित था। खेद है कि हैदराबाद में अँगरेज चिड़िया के बैठने के लिये कोई अड्डा नहीं बन सकता।

* * *

हैदराबाद के हार जाने से एक और विपत्ति आ गई। अब इँगलैंड से लड़ाई का सामान कौन खरीदेगा। पाकिस्तान के पास इतना धन नहीं कि बेकार के सामान खरीद सकें। इन्हीं के पास सोने की ईंटें थीं।

* * *

भारत-सरकार जो चाहे करे किंतु एक बात का ध्यान उसे रखना चाहिये निजाम के हरम में किसी प्रकार की कमी न आने पाये। अस्सी-बयासी वर्ष की अवस्था में प्रेमिकाओं से अलग कर देना दिल पर सदमा पहुँचाना है। पटेल साहब अवश्य ध्यान रखें।

* * *

बाढ़ से करोड़ों रुपये की इस प्रान्त की हानि हो गई। ब्लेक मार्केट कोई करे और घर किसी का गिरे और खेत किसी का बहे। भगवान् के यहाँ भी कोई व्यक्ति ऐसे पहुँच गये हैं जिन्हें रिश्वत का रोग लग गया है। वहाँ भी 'एंटी करप्शन' विभाग की आवश्यकता है।

* * *

अँगरेजी समाचार पत्रों का रुख हैदराबाद के मामले में देखा गया। उन्हें बड़ा दुख हो रहा है कि जिस चीज को हमने बनाया उसी पर कुठाराघात हो रहा है। बेविन और एडेन साहब को स्वयं आकर रिजवी और लायकअली का स्थान ग्रहण करना चाहिये था।

* * *

कल एकाएक निजामी इतिहास देखने की उत्कंठा जाग गई। कहावत है लूट में चरखा नफा। जब मुगल रियासत मटियामेट होने लगा उस समय निजामी रियासत बन गई। और आज तक जितनी लड़ाइयाँ हुई हैं सबमें निजाम हारे। इतिहास यही कहता है। हमें तो ऐसा जान पड़ता है कि बी बीसे लड़ाई हुई होगी तो निजाम ही हारे होंगे।

* * *

नजीमुद्दीन पाकिस्तान के गवर्नर जनरल बन गये हैं। दूसरा आदमी इस ढङ्ग का मिलना भी कठिन है। किन्तु जफरुल्ला साहब के हाथ यह रसगुल्ला नहीं लगा इसी का अफसोस है।

* * *

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन निकट है किन्तु अभी सभापति के लिये दौड़ धूप नहीं हो रही है। ऐसी शिथिलता क्यों है। अब तो ऐसे आदमी को सभापति बनाना चाहिये जो आगे हैदराबाद में सम्मेलन करा सके।

* * *

हिन्दी में विधान छप गया। चलिये हिन्दी के लिये यही क्या कम है। पहले उर्दू और अँगरेजी में छापा गया। बढ़िया वस्तु सबसे अंत के लिये रखी जाती है शायद यही अभिप्राय रहा होगा।

—अगड़धत्त शर्मा

जब मैंने सुर्ती थी खाई

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

उर में उठ आया झंझा सा, ज्वार गले में आया,
मानो मैंने नहीं तमाखू कोई विष है खाया,
ऐसा लगा चित्त में मानो मृत्यु अभी है आई।
सिर में कुछ भूकंप आ गया लगी काँपने काया,
मानों किसी नर्तकी ने अपने सँग मुझे नचाया,
अथवा सीढ़ी समझ चढ़ गई मेरे ऊपर बाई।
लगा मुझे भय मानो त्रिजटा बैठी मेरे ऊपर,
अथवा किसी प्रेमिका ने मारा है मुँह पर थप्पड़,
जितना घी खाया था सब चरबी आँखों में छाई।
हिचकी पर हिचकी आई आँखों में आया पानी,
मैंने समझा याद कर रही मुझको यम की रानी,
लगा लड़खड़ाने में जैसे टूटी हुई तिपाई।
जी कुछ ऐसा हुआ पेट मुँह को आनेवाला है,
मानो एक साथ पी ली ताड़ी, विजया, हाला है,
अथवा चाय फेनाइल की है मुझको गई पिलाई।
उनके हाथों मिली पान में नहीं भला क्या करता,
सुरती के प्रभाव से बढ़कर उनसे था मैं डरता,
इधर हाल यह मेरा, उधर हँसी अधरों पर आई।

दक्षिण-पूर्व की जलती ज्वालाएँ

(पेज ५ का शेष)

विरोधी नीति का अनुकरण करने और ब्रिटेन का तथा साम्राज्यवादियों और देशी पूँजीपतियों का साथ देने का वचन दिया है। ऐसी स्थिति में जनता को किस प्रकार साथ रक्खा जा सकता है? राष्ट्रीय आन्दोलन को किस प्रकार एक किया जा सकता है? वहाँ राष्ट्रीय आन्दोलन टुकड़े-टुकड़े हो गया है, पुराने छापेमार, स्वयंसेवक, जनरल आंगसेन के साथी, सब सरकार के विरुद्ध हो कम्यूनिस्टों से मिल गए हैं और सरकार को ब्रिटिश साम्राज्यशाही के अतिरिक्त कोई सहायता देनेवाला नहीं रह गया। यहाँ तक कि श्री आंगसेन की पत्नी ने भी मन्त्रिमण्डल से इस्तीफा दे दिया है।

लंका की स्थिति भी आशाजनक नहीं। गृह-युद्ध आरंभ नहीं हुआ, परन्तु किसी भी क्षण शुरू हो सकता है। सरकारी दल सबसे बड़ा है परन्तु उसका बहुमत नहीं। विपक्षीदल में वामपक्षी दल का बहुमत है और देश में उसका जनता, विशेष कर शोषित जनता—किसान और मजदूरों पर—प्रभाव है। सरकार की समझौतेपसन्द, और ब्रिटिश सरकार की शोषण नीति का भण्डाफोड़ हो चुका है।

ऐसी दशा में, साम्राज्यशाही के सामने रास्ता साफ है। समझौते की संभावना न होने पर केवल दमन का रास्ता ही खुला है। अतएव, वह जगह जगह राष्ट्रीय आन्दोलनों पर कुठाराघात कर रही है। जनता पर अत्याचार कर रही है। इण्डोनेशिया में फ्रासीसी सेनाएँ चार वर्ष से गोला, बारूद की वर्षा कर रही हैं। इण्डोनेशिया की लड़ाई बन्द होती नजर नहीं आती। स्याम में, जहाँ कानूनी ढंग से राष्ट्रीय सरकार को नहीं हटाया जा सका वहाँ खरीदे हुई सेनानियों और प्रतिक्रियावादियों से विद्रोह कराकर सरकार बदल दी गई है। मलाया की जनता की आजादी की माँग का जवाब गोलाबारी और बमबारी से दिया जा रहा है।

साम्राज्यशाही एक प्रथा है। उसके अनुयायी और एजेन्ट प्रत्येक देश में मिल जाते हैं, कहीं कम और कहीं ज्यादा। और अनेक देशों के शासन आज उनके हाथ में हैं। अतएव जनता के इस स्वतन्त्रता-संग्राम का दमन देशों के विभिन्न साम्राज्यशाह अलग अलग ही नहीं करते, वरन् के मिलकर करते हैं, और जहाँ भी उनके साथी हैं, उनकी मदद के लिए तत्पर रहते हैं।

दक्षिण-पूर्व की जनता के विरोधी सारे साम्राज्यवादी देश हैं। ब्रिटेन, फ्रांस और हालैण्ड की सहायता करता रहा है, अमरीका भी यही करता रहा है और हाल में मलाया को हथियार भेजे हैं। सीलोन और नैपाल की सरकारें दमन कार्य में ब्रिटेन का हाथ बँटा रही हैं। मलाया में दमन-कार्य के लिए पाकिस्तान और आस्ट्रेलिया तथा अफ्रीका में भर्ती हो रही है, चीन और हांगकांग और ब्रिटेन से फौजें भेजी जा रही हैं।

(५)

श्री वल्लभभाई पटेल ने स्वतन्त्रता-दिवस पर सन्देश देते हुए यह न सोचा कि जिस तरह कल तक हम गुलाम थे उसी प्रकार आज भी करोड़ों आदमी
गुलाम हैं, हमारे पड़ोसी,
गुलाम हैं। आपने कहा
को विद्रोह (कम्यूनिज्म)
है। यह विद्रोह मलाया और
आ चुका है, इससे चीन
गया है। भारतवर्ष को इस आग
बचाने का हमारा पूरा इरादा है
हम पूरा पूरा इन्तजाम कर रहे हैं

यह एक गम्भीर घोषणा है,
गृह-सचिव की घोषणा है।
तात्पर्य केवल भारतीय साम्यवाद
है, यदि यह घोषणा घरेलू नीति
सीमित है तो गनीमत है।
ढंग से,घोषणा की गई है
प्रभाव-क्षेत्र विस्तृत हो जाता है।
होंगे साम्राज्यशाही का साथ
दक्षिण-पूर्वीय देशों के स्वतन्त्र
लनों को कुचलना। देश के
एक भयंकर कदम होगा।
शक्तियाँ हैं जो सरकार को
उठाने के लिए मजबूर करेंगी
पूँजीपतियों को उपरोक्त देशों की
स्वतन्त्रता प्रिय नहीं हो सकती,
में इनके अपने भी हित हैं,
है। इसी प्रकार चीनी पूँजीपति
इन देशों में हित है और वे
साम्राज्यों के साथ मिलकर
दमन करने में लगे हैं।

इधर, तटस्थता की नीति
से खाली नहीं। क्योंकि पाश्चात्य
शाह तटस्थ नहीं। वे शक्ति भर
आन्दोलनों का दमन कर रहे हैं
किसी न किसी प्रकार इनको भी
लेना चाहते हैं। यदि इनको न
सके और केवल अपनी दमन
सफल हुए तो एशिया में उनका
एक बार फिर भारी हो जायगा
उपनिवेशों की सहायता द्वारा
स्वतन्त्रता के लिए खतरा उत्पन्न
सकेंगे।

(६)

श्री श्री धरानी ने हाल ही में
कि दक्षिण-पूर्वी देशों के विद्रोह
के लिए चेतावनी हैं।
और शासन-परिवर्तनों से
स्वराज्य की भूख नहीं मिटी।
लिये तो भगवान् भी रोटी के
चाहिये। स्वराज्य को एक मजदूर
किसान लगान और एक मध्य
जीवी वेतन की कसौटी पर
है। इनके लिए स्वराज्य के मायने
सस्ता अनाज, सस्ता कपड़ा,
मकान। पंडित नेहरू ने ठीक
कि आर्थिक संकट साम्यवाद को
है। परन्तु यह कहना भूल गये
आर्थिक संकट को मिटानेवाली
के अतिरिक्त कोई दूसरी नीति

दक्षिण-पूर्व के देश आगे
हमसे आगे चल रहे हैं।
मोर्चा ले रहे हैं। वे हमारी
रहे हैं, संसार की गुलाम
जनता की लड़ाई लड़ रहे हैं।
को न समझना भारी भूल है
इसको समझकर मौन-
इसका विरोध करना मानव-
द्रोह होगा।

स्वाधीनता संग्राम का इतिहास

क्या भारत-सरकार इस कार्य में सक्रिय कदम उठायेगी ?

लेखक, श्री मन्मथ नाथ गुप्त

> कांग्रेस के पिछले ५० वर्ष के जीवन में विदेशी सत्ता से लगातार युद्ध करते हुए आज भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई है। ऐसी दशा में यह अत्यन्त आवश्यक है कि स्वाधीनता-संग्राम का एक प्रामाणिक इतिहास उपलब्ध हो। पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी तथा राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद के बीच इस संबंध में पत्र-व्यवहार भी हुआ है। विद्वान् लेखक ने इस लेख में ऐसे महत्त्वपूर्ण योजना के संबंध में अपने विचार प्रगट किए है,जो विचारणीय हैं।

राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद

कुछ दिनों से हिन्दी के सुप्र- श्री बनारसीदास चतुर्वेदी हुए शहीदों की तरफ ध्यान उनका "और हम भूल गये" को सबने पढ़ा होगा। यह हिन्दी-पत्रों में छपा। इसमें कर इस बात पर जोर दिया जो अपने शहीदों को भूलते जा दुख की बात है। चतुर्वेदी जी लेखक ने इस तरफ ध्यान मेरे लिए सुख की बात है तक मैं ही इस क्षेत्र में अपनी उठा रहा था। यह श्री कृपा तथा गुणग्राहकता का है कि उन्होंने इस सम्बन्ध में "भारत में सशस्त्र क्रान्ति-चेष्टा इतिहास" को सबसे अच्छा है। पर इस पुस्तक में ठोस होने पर भी मैं यह सम- में बहुत कुछ छूट गया है। ही बहुत सा मसाला पड़ा है पुस्तक में ठीक-ठीक उप-

बनारसीदास ने शायद "और शीर्षक लेख में व्यक्त अनुसरण करते हुए और उनके तार्किक उपसंहार तक संयुक्तप्रांत की सरकार द्वारा समाचार" के स्वतंत्रता-विशेषांक संग्राम का इतिहास" लेख लिखा है। इस लेख में विचार किया जायगा।

के २ अगस्त को राजेन्द्र बाबू बनारसीदास को एक पत्र लिखा था। उसके एक अंश को उद्धृत कर चतुर्वेदी जी अपने लेख का प्रारंभ करते हैं। वह अंश यों है :—

"आपका विचार सिपाहियों की दृष्टि से स्वाधीनता-संग्राम के इतिहास लिखने का बहुत सुन्दर है। आन्दोलन का जीवित इतिहास सिपाहियों की बहादुरी और जनता के त्याग का ही इतिहास हो सकता है।"

कहना न होगा कि राजेन्द्र बाबू के ये विचार बहुत ही सुन्दर हैं, पर कार्य रूप में जो हो रहा है वह कुछ और ही है। पहले के इतिहास-लेखक राजाओं का इतिहस लिखते थे। और अब नेताओं का इतिहास लिखा जाता है। अवश्य यह पहले के मुकाबले में प्रगति है क्योंकि नेतागण राजाओं की तरह किसी एक के औरस से जन्म पाने के कारण ही नेता नहीं हुए, उनमें पौरुष, उद्योम तथा सेवा है। अवश्य बहुत से नेता ऐसे भी हैं जिनके नेतृत्व का आधार जनमत का अच्छा ज्ञान, समय पर चोट करना तथा धोखेबाजी है। पर यहाँ उनकी बात नहीं हो रही है। वर्तमान काल के इतिहास-लेखक भले ही ऐसे नेताओं को सातवें आसमान पर उठाकर रख दे, पर निश्चित है कि भविष्य उनके धोखे में नहीं आयेगा। अब्राहम लिंकन की वह बात इस सम्बन्ध में स्मरणीय है कि सब लोगों को कुछ काल के लिये तथा कुछ लोगों को सर्वकाल के लिए धोखा देना संभव है, पर सब लोगों को सर्वकाल के लिये धोखा देना असंभव है। जितना भी झूठा इतिहास लिखा जाय, इतिहास को जितना भी सामयिक रूप से झुठलाया जाय, समय क्षीर का क्षीर और नीर का नीर कर देगा। इतिहास ऐसे मनों उदाहरणों से भरा पड़ा है, कि अपने समय के अच्छे समझे जानेवाले लोग बाद को बुरे समझे गये। यदि इसके उदाहरणों में जाऊँ तो विषयांतर होने का डर है। अभी थोड़े ही दिन हुए हैं, पर हम अपने पहले के सच्चे नेताओं को भी भूलते जा रहे हैं। मैंने अभी अपने एक लेख में दिखाया था कि हम केवल आजाद, भगतसिंह, रामप्रसाद, बिस्मिल, अशफाकुल्ला को ही नहीं भूले रहे हैं, हम लोकमान्य तिलक, पं० मोतीलाल नेहरू, देशबन्धु दास आदि को भी भूलते जा रहे हैं। मैंने उस लेख में दिखाया था कि मुझे दिल्ली की तसवीरों की आढ़तों में पं० मोतीलाल की कोई तसवीर नहीं मिली, यद्यपि उनके सुपुत्र इस समय भारतीय यूनियन के महामंत्री हैं, और पुत्री महत्त्वपूर्ण राजदूत हैं।

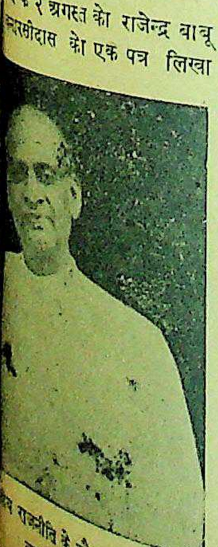

राजनीति के लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल।

पहले तो इस नींव के सवाल को उठाया जाय कि क्या सिपाहियों की बहादुरी और जनता के त्याग का इतिहास ही आन्दोलन का जीवित इतिहास है? मुझे ये शब्द सिपाहियों की बहादुरी कुछ खटकते हैं। इसमें जैसे कहीं कुछ पीठ ठोकने की बात है। मुझे यह पसन्द नहीं। मुझे तो योद्धा शब्द अधिक पसन्द है। मेरी दृष्टि में तो सभी सिपाही हैं, कोई बड़ा कोई छोटा। फिर सिपाही शब्द का association तनख्वाह पानेवाली सेना से है। स्वतन्त्रता-आन्दोलन के योद्धा किसी से तनख्वाह नहीं पाते थे। यहाँ तक कि जब अब स्वतन्त्रता के बाद तनख्वाह पाने की या क्षतिपूर्ति की बात आई है, तो उसे तरह तरह के बहाने से, कहीं ऊँचे आदर्शवाद के नाम पर तो कहीं अव्यावहारिकता के नाम पर टाल देने की प्रवृत्ति है। अस्तु।

इसलिये मैं स्वतन्त्रता के सिपाहियों के बनिस्बत स्वतन्त्रता के योद्धा शब्द अधिक पसन्द करूँगा। Soldiers of freedom से fighters for freedom शब्द अधिक सुन्दर है।

१८५७ से या उससे भी पहले से हमारे स्वतंत्रता-संग्राम का सूत्रपात हुआ है। इसमें नाना साहब, राममोहन, दयानन्द, खुदीराम, गोखले, तिलक, गांधी, मुहम्मदअली, जवाहरलाल, पटेल, अजमलखाँ, भगतसिंह, जयप्रकाश, अशफाकुल्ला, सभी का हाथ रहा। किसी का छोटा किसी का बड़ा। और इन सबसे अधिक भाग रहा जनता का जिसने इन्हें पैदा किया, तथा जिसने इनके विचारों को शक्ति बना दी। यों तो बड़े से बड़े विचार हैं, बड़े बड़े विचारवाले हैं, पर जैसा कि ट्राटस्की ने कहा है विचार तभी एक राजनैतिक और ऐतिहासिक शक्ति हो जाती है, जब जनता उसे अपना लेती है। किसी भी ऐसे विचार को ले लीजिये, जिसने जगत को हिलाकर यहाँ तक कि बदलकर रख दिया, और उसकी ऐतिहासिक वंशावली पर जाइये तो ज्ञात होगा कि सैकड़ों वर्षों से वह विचार था, शायद किसी पुस्तकालय की एक पुस्तक में बन्द पड़ा था, पर इतिहास के एक विशेष क्षण में एक विशेष व्यक्ति के मन में उसको एक विशेष रूप प्राप्त हुआ, और जनता ने उसे अपना लिया, बस इतिहास-निर्माण होने लगा, कायापलट, उथल पुथल आमूल परिवर्तन क्रान्ति हो गई।

भारतीय स्वाधीनता के जनक महात्मा गांधी

हमारे देश के ही स्वतन्त्रता-संग्राम को लिया जाय, तो हमें इस क्षेत्र में सबसे प्रसिद्ध जो नाम दीखता है वह महात्मा गांधी का है। उनका केन्द्रीय विचार जैसा कि वे बतलाते थे अहिंसा का विचार था। यह हजारों वर्ष पुराना है। पर जिस रूप में गांधी जी ने उनका प्रयोग किया, वह अपेक्षाकृत अर्वाचीन है। पाश्चात्य में passine resistance एक सुपरिचित अस्त्र था। अवश्य कहा जायगा passine resistance निष्क्रिय प्रतिरोध है, और सत्याग्रह सक्रिय प्रतिरोध है, पर यहाँ इस झगड़े की मीमांसा में पड़ने की कोई आवश्यकता नहीं है। क्योंकि यहाँ तो मैं केवल यही दिखलाना चाहता था इन विचारों में मौलिकता यदि थी भी तो बहुत कम थी पर एक विशेष आर्थिक सामाजिक परिस्थिति में उसने जनता के पेट्रोल को पकड़ लिया। और करोड़ों ने उसको अपना लिया।

मैंने इस सम्बन्ध में जो विशेष आर्थिक सामजिक परिस्थिति शब्द का प्रयोग किया है, कहीं वह एक नये रहस्यवाद के रूप में न आ जाय, इसलिए यह बता दिया जाय कि यद्यपि गांधी जी इस बात से परिचित नहीं थे, पर उनके द्वारा चलाए हुए सभी आन्दोलनों का सम्बन्ध World economie depression याने विश्व आर्थिक मन्दा की रेखा से था। १९१९ में विश्वव्यापी आर्थिक संकट पड़ा, इसी समय से जलियानवाला होकर असहयोग की नींव पड़ी, फिर १९२९ में विश्वव्यापी आर्थिक सकट पड़ा, इसी समय लाहौर कांग्रेस और उसी के सिलसिले में १९३० और फिर १९३२ का आन्दोलन चला, १९३२ के आन्दोलन का टाँय टाँय फिस्स हो जाने का एक कारण यह भी था कि

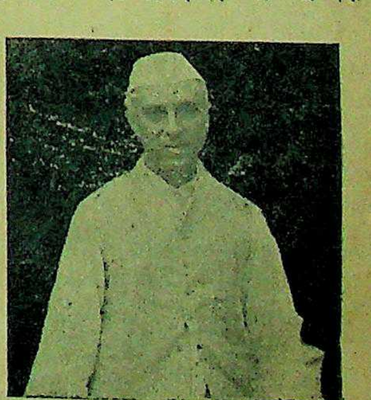

भारत के प्रधान मन्त्री माननीय पंडित जवाहरलाल नेहरू।

हिन्दी के प्रसिद्ध क्रांतिकारी श्री मन्मथ नाथ गुप्त

उस समय तक विश्वव्यापी आर्थिक संकट बहुत कुछ सँभल चुका था। १९३९ में तो द्वितीय महायुद्ध छिड़ गया, और बताने की आवश्यकता नहीं आर्थिक दृष्टि से देखने पर युद्ध तभी छिड़ता है जब आर्थिक गुत्थियाँ बहुत भयानक हो जाती हैं, और उन्हें जबरदस्ती सुलझाने की चेष्टा की जाती है। १९४० का वैयक्तिक सत्याग्रह तथा १९४२ की क्रान्ति इसी का सिलसिला है। यह सिलसिला १९४५ के नौसैनिक विद्रोह के आगे जाता है।

इस प्रकार जब हम किसी व्यक्तित्व को या नेता को उधेड़ कर देखेंगे तो पता लगेगा कि वह उससे कहीं कम महत्त्वपूर्ण है जितना कि उसे समझने की परिपाटी है। फिर भी वह महत्त्वपूर्ण है। स्वतंत्रता-संग्राम का इतिहास लिखने में हमें इस तारतम्य को कायम रखना पड़ेगा, द्वंद्वाद के शब्दों में नेता महत्त्वपूर्ण है भी, और नहीं भी है।

स्वतंत्रता-संग्राम के अब तक कई इतिहास लिखे गये हैं। श्री चिन्तामणि ने एक व्याख्यानमाला दी थी, जो पुस्तकाकार में छपी है। उसको पढ़ने से ऐसा ज्ञात होता है कि माडरेटों ने कुर्सी तोड़कर तथा बहुत टकसाली और सलीस अँगरेजी में स्पीचें झाड़कर इतिहास-निर्माण किया है। इसमें क्रान्तिकारियों का तो कहीं पता नहीं। श्री पट्टाभि ने एक इतिहास लिखा है, अवश्य यह कांग्रेस का इतिहास है, इसमें दूसरे लोगों का कहीं कहीं उल्लेख है, पर बहुत मामूली by the way है। इसे पढ़ने से यही धारणा होती है कि और लोगों का इतिहास-निर्माण में कोई विशेष क्या कुछ भी स्थान नहीं है। साथ ही यह भी बता दिया जाय कि यह कथित सिपाहियों की वीरता का इतिहास नहीं है। सत्याग्रह-संग्रमों में लोगों को बड़े बड़े त्याग करने पड़े, पर इसमें तो केवल नेताओं का चरित्र वर्णित है। कहीं भी आर्थिक, सामाजिक परिस्थिति से आन्दोलन को जोड़ने का प्रयास नहीं है।

१९४२ की क्रान्ति के कई इतिहास निकले हैं। यह आन्दोलन गांधी जी के द्वारा चलाये हुए आन्दोलनों से भिन्न प्रकृति का था। स्वयं पंडित नेहरू ने इस आन्दोलन के सम्बन्ध में जो कहा था, वह द्रष्टव्य है। उन्होंने अन्तिम बार छूटने के बाद कहा था :—

"यद्यपि ९ अगस्त को ही सब नेता गिरफ्तार हो गये थे, फिर भी जनता ने सरकार की चुनौती को स्वीकार कर लिया, और साहसपूर्ण तरीके से तुर्की-बतुर्की जवाब दिया। नेताओं की गिरफ्तारी पर गुस्सा तथा क्रोध में जनता ने बहादुरी के साथ बमबाजी, मशीनगन के गोले तथा लाठियाँ बर्दाश्त कीं। स्वतंत्रता के लिये जो असिट ज्वाला उनके हृदयों में धधक रही थी, वह साहसी तथा वीरतापूर्ण कृत्यों में पल्लवित हुई।"

जब कि पहले के आन्दोलन गांधी जी के बताये हुए दायरे में ही रहे, १९४२ में जनता उफनकर उस कढ़ाई के बाहर निकल गई। यह क्रान्ति थी, न कि महज दबाव राजनीति। ट्राटस्की ने क्रान्ति की विशेषता का इन शब्दों में वर्णन किया—"क्रान्ति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें जनता ऐतिहासिक घटनाओं में सीधे सीधे हस्तक्षेप कर चीजों को अपने हाथों ले लेती है। साधारण समयों में राष्ट्र वह चाहे राजतांत्रिक हो या लोकतांत्रिक जाति के ऊपर उठकर खड़ा हो जाता है, और उस दिशा में जो विशेषज्ञ होते हैं अर्थात् राजा, मंत्रीगण, नौकरशाहगण, पार्लियामेंटवादीगण....... पत्रकारगण इतिहास-निर्माण करते हैं। क्रान्ति का इतिहास सर्वोपरि इस बात का इतिहास है कि जनता अपने भाग्यनिर्माण काय में जबर्दस्ती घुस आये।"

सन् १९४२ में भारतवर्ष में यही तो हुआ, श्री गोविन्दसहाय ऐसे लेखक ने १९४२ की क्रान्ति को गांधीवादी दायरे का प्रमाणित करने का जी-तोड़ परिश्रम किया है। मैं यहाँ पर इस सम्बन्ध में कोई राय नहीं दूँगा, पर इस प्रकार स्वाधीनता-संग्राम के इतिहास को विभिन्न मतवादों का एक अखाड़ा बनाना पसंद न करूँगा।

इसलिये स्वाधीनता-संग्राम के इतिहास लिखने की कमेटी बनाने के पहले यह पसन्द करूँगा कि इस आधारगत सिद्धान्त को मान लिया जाय कि हम तथ्यों से परिचालित होंगे न कि वे विशेष मतवादों से। मतवादों के लिये और क्षेत्र हैं। अवश्य मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि निष्पक्ष होकर इतिहास लिखा जाय। नहीं प्रतिक्रियावाद बनाम प्रगति में प्रगति के साथ पक्षपात करना पड़ेगा।

इतिहास-लेखन का उद्देश्य मनोविनोद नहीं, बल्कि उसका उद्देश्य जड़ों का पता लगाकर आगे की उन्नति के लिये रास्ता बनाना है। भारत को जो कुछ भी स्वाधीनता मिली है, माना कि वह अधूरी है, पर उसमें सबका हाथ है, सबने उसके लिये त्याग किया। परतंत्र भारत में भले ही विभिन्न मतवादों में संघर्ष रहा हो, पर इस कारण क्रान्तिकारियों को इतिहास से बहिष्कृत करने की अपचेष्टा निन्दनीय है।

इसीलिये राजनैतिक लोगों की कमेटी बनाकर स्वतंत्रता-संग्राम के इतिहास लिखने की बात को मैं कुछ सन्देह की दृष्टि से ही देखता हूँ। श्री बनारसीदास जी ने जिस कमेटी का प्रस्ताव किया है, वह यों है। उसके सभापति तो डा० राजेन्द्रप्रसाद होंगे। इसके अलावा उसमें आचार्य नरेन्द्रदेव, बेनीपुरी जी, राजर्षि टंडन जी, जयचंद्र जी, कृष्णदत्त जी पालीवाल, सम्पूर्णानन्द जी, श्रीराम शर्मा होंगे। इस कमेटी के विरुद्ध कुछ कहने को नहीं है, पर क्या यह काम कर सकती है। पहली बात तो यह है कि इनमें से कितने इतिहास-लेखन के लिये समय निकाल सकेंगे, फिर दूसरी बात यह है कि इनमें से कुछ के कट्टर निजी मत हैं, इस कारण कहाँ तक इतिहास लिखना संभव होगा यह विचार्य है। कहीं यह अखाड़ा न बन जाय।

फिर भी किसी तरह की कमेटी तो होनी चाहिए क्योंकि इतिहास के मसाले के संग्रह के लिये दौरा करना पड़ेगा, फिर उसे छपाने के लिए और जनप्रिय बनाने के लिए भी एक जनता की विश्वस्त कमेटी का होना जरूरी है। ऐसी कमेटी के लिए डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ही सबसे अच्छे सभापति हो सकते हैं। दोयम नम्बर पर राजर्षि टंडन जी का नाम लिया जा सकता है। कमेटी में बनारसीदास जी तथा श्री बालकृष्ण शर्मा का नाम भी जोड़ा जाय। मैं संकोच के साथ अपना नाम भी इस कमेटी में रखना चाहता हूँ क्योंकि भारतीय भाषाओं में क्रान्तिकारी आन्दोलन के सबसे विस्तृत इतिहास

हिन्दी के सुप्रसिद्ध पत्रकार
बनारसीदास चतुर्वेदी

होने का सौभाग्य मुझे प्रा
पुस्तक "भारत में सशस्त्र क्रान्ति
रोमांचकारी इतिहास" सात
जब्त थी। इसका तीसरा सं
रहा है। फिर यह लेख छपते
लिखा हुआ "भारत में राष्ट्रीय
का इतिहास" भी बाजार में आ

बनारसीदास जी ने
कि सबसे बड़ा खतरा यह है कि
समय बीतता जायगा, इस प्रकार के
की ऐतिहासिक सामग्री कम होती
यह बिलकुल ठीक है। अब तो
साम्राज्यवाद हो गया, अब कांग्रेस
महज नौकरी दिलाने की संस्था
जैसा कि मौलाना आजाद ने इस
के सम्बन्ध में कहा है, ये
त्रता-संग्राम के स्थानीय
मसाला क्यों न एकत्र
Golden book of Indi
pendence क्यों न छापा
वर्णानुक्रमिक रूप से देश के
उठानेवाले प्रत्येक व्यक्ति का
से लेकर २० पंक्ति का
जाय, और इसमें प्रत्येक शहीद
हो।

इस सम्बन्ध में शीघ्रता की
कता है।

गुंजन

लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी० एल्-एल० बी०

प्यार ले लो, प्यार का अधिकार दे दो।

दान का मैं भार तेरे सह न पाता,
कह रहा मेरा हृदय जो, कह न पाता,
कुछ करो स्वीकार तो सब कुछ बने वह
तार ले लो, तार की झनकार दे दो।

रुक समीरण रूप-कलिका खिल न जाए,
झुक प्रणय-बन्दी मधुप से मिल न जाए,
भृंग गुंजन में छिड़ेगा कुंज-नर्तन
रूप ले लो, रूप का अभिसार दे दो।

मैं तुम्हारे नूपुरों में रह लिया कुछ,
विश्व के मग से विहँसकर कह लिया कुछ,
पाँव में लिपटा, मगर जग-शीष पर हूँ,
जीत ले लो, हार का उपहार दे दो।

गांधी-अभिनन्दन
सम्पादक—श्री सोहनला
प्राक्कथन—सर सर्वेपल्ली
संस्कृति, हिन्दी, उर्दू,
राती, सिन्धी, मराठी,
मलयालम, कन्नड़, अँगरेजी
भाषाओं में महात्मा गांधी
हुई सर्वोत्तम कविताओं का
भाषा में अर्थ-सहित।
बड़ा आकार, सुन्दर
के अनेक चित्र। बढ़िया
प्रशंसित।
सादी जिल्द ६।) कपड़े
मैनेजर, इंडियन प्रेस,

पता नहीं राखाल मास्टर को लेकर
लिखी जा सकती है या नहीं।"
खाल मास्टर कोई स्कूल का मास्टर
है बल्कि पोस्टमास्टर है। मैं कहा-
लिखता हूँ और वे पत्रिकाओं में
होती हैं—यह सुनने के बाद
मास्टर ने न जाने कितनी बार
एक ऐसी कहानी लिखने को कहा
उसका भी नाम हो।
एक करके उसने अपने जीवन
करीब सभी घटनाएँ मुझे सुना
रन्तु उन सबों को एक के बाद किस
सजाया जाय कि कहानी बन जाए
समझ में अभी भी नहीं आया।
बार इसी प्रकार शुरू किया
देखने में बिलकुल भोंदू की तरह
मूर्खों की तरह चेहरा, निकल के
चश्मा, सिर के बाल छोटे छोटे
—राखाल को देखने से बिलकुल
तरह मालूम होता था।
तक सुनकर राखाल मास्टर आग
जल उठे। कहा—"नहीं, तुम्हें
नहीं आता, तू जा! झूठी बातों को
बना बनाकर......हमें
कैसे लिखते हो तुम लोग!"
भर मुँह लटका कर बैठे,
आड़ से एक बार घूरकर देखते
—"जा बाबा, जा! तू अभी मुझे
कर! हमारा हिसाब गड़बड़
निकल यहाँ से।"
—"चिढ़ते क्यों हो मास्टर!
अन्त तक।"
सुना है, हाँ!" कहकर मास्टर
कान पर खोंसी और सीधे
ताककर कहा—"पागल किसे
जानते हो?—बस लिखा और
हँसकर कहा—"पागल तो नहीं
लिखा है पागल की तरह।"
एक ही बात है।" कहकर हाथ
उसने मुझे चुप किया और
पागल, किसको कहते हैं मालूम
कहते हैं—तुम्हारे गाँव के वह
कुत्तों को। चौबीसों घंटा उसे—
सोचा। उस दिन कहा—अजी
बैठो तो जरा, तमाखू-वमाखू
सिर हिलाकर उसने कहा—
काफी चित चढ़ आया है।
—इन लोगों को ही पागल
समझे?"
कान से कलम उतारकर
में ले लिया और निश्चिन्त
शुरू कर ही रहा था कि
क्या मन में आया कि फिर
कहा—"क्या अगर तुम लोग
लिखो तो कहानी न बने! तब
काम नहीं है लिखने का।
हमें अच्छी नहीं लगती।"

* *

उस दिन के बाद और कुछ नहीं
धान के खेतों के बीच की पगडंडी
एक कोस चलने के बाद वह
पार करके ग्राम के कई
नीचे बने उस छोटे से पोस्टआफिस
जान पड़ता। कभी कभी
पोस्टआफिस का दरवाजा

कहानी

असमात

लेखक, श्री शैलेजानन्द

अनुवादक, श्री प्रशान्त बनर्जी, श्री मृत्युंजय चौधरी

मानव-जीवन वास्तविकताओं का घर है। वास्तविकता में आकर्षण और हृदय की अनुभूति होती है, जिसका प्रत्यक्ष और आंतरिक प्रभाव पड़ना अनिवार्य है। राखाल मास्टर का जीवन भी वास्तविक घटनाओं से पूर्ण है। इस सुन्दर कहानी में राखाल मास्टर के साधारण जीवन की वास्तविकता का चित्रण बड़ी सुन्दरता से किया गया है। कहानी पठनीय तथा आकर्षक है।

बन्द करके फर्श पर ताड़ के पत्तों की बिनी चटाई बिछाकर उसी पर बैठा राखाल मास्टर उसी के हिसाब में व्यस्त रहता। चारों ओर कागज फैला रहता—उड़ जाने के डर से किसी पर एक बड़ा सा मिट्टी का ढेला, किसी पर पूरी एक ईंट और किसी को पाँव के नीचे दबाए हुए, चेहरे पर विरक्ति की रेखा, आँधी-तूफानों के उद्देश्य में जो भी मुँह में आता बड़बड़ाता हुआ अश्लील भाषा में गाली देकर मन ही मन कुढ़ता हुआ काम में लगा था।

मैं किसी प्रकार अपनी हँसी न रोक सका। अन्त में बहुत मुश्किल से हँसी रोककर कहा—"अजी, मास्टर, क्या एक बार दरवाजा खोलोगे?"

फिर क्या था। भीतर से राखाल मास्टर की चीत्कार सुनाई पड़ी—"क्या। दरवाजा और नहीं खोलेंगे? समय, असमय का कोई ख्याल ही नहीं.......भागो यहाँ से नहीं तो खून कर डालेंगे।"

बस—चुप!

कागज के खुस-खुस आवाज के अलावा कोई आवाज ही नहीं आ रही थी। क्षण भर सोचा एक बार और पुकारें। परन्तु पुकारने की आवश्यकता नहीं पड़ी। खिड़की के पास 'खुद' की आवाज होते ही मैंने ताका—राखाल मास्टर कमर पर हाथ रखकर खड़ा है।

आँख मिलते ही वह कह उठा—"साढ़े तेरह आने पैसे का गोलमाल—समझा? पिउन—बेटा को आने दो, हम उसकी नौकरी ही उड़ा देंगे—समझे!

यह सब देखने का अवसर मुझे नहीं मिला। संध्या हुई आ रही थी इतना लम्बा रास्ता हमें ही फिर अकेले जाना है। कहा—"एक बार तो दरवाजा खोलो मास्टर? चिट्ठी-पत्री देखकर ही हम चले जाएँगे।"

न जाने क्यों हठात् प्रसन्न होकर उसने दरवाजा खोल दिया। भीतर गये। उस दिन की डाक की चिट्ठी-पत्री एक खाट के नीचे पड़ी थी। राखाल मास्टर ने उँगली बढ़ाकर दिखाया और कहा—"देखना, और किसी की चिट्ठी मत लेना!"

अवाक् होकर मैं उसे देखता रह गया। इस प्रकार का व्यवहार उसने कभी नहीं किया था। मास्टर बोला—"तुम्हें मालूम है कितनी मजेदार चिट्ठियाँ रहती हैं? "तुम तो...क्या हो? लिफाफा कभी खुला पाकर हमीं देख लेते हैं फिर देखकर बन्द कर दिया करते हैं।...हाँ, सुनोगे? एक दिन एक लड़की ने लिखा था—"

कहकर वह बिलकुल कमजोर बाघ की खाट पर जमकर बैठ गया और उसी लड़की की चिट्ठी की कहानी शुरू की। मेरी सिर्फ दो चिट्ठियाँ थीं। हाथ में लेकर कहा—"रहने दो। तुम्हारी वह कहानी कभी और सुनेंगे—आज जाने दो।"

"वह तो जाओगे ही। अपना काम निपटा लिया न! जा!" यह कहकर तेजी से हमारी गरदन पकड़कर उसने जबरदस्ती हमें दरवाजा के बाहर किया और फिर दरवाजा बन्द कर लिया।

इसी प्रकार एक दिन और चिट्ठी की खोज में डाकघर गए थे। देखा दरवाजा बन्द है। भीतर मास्टर-दम्पति में कलह हो रही थी। तुमुल कलह!

किस बात पर इस कलह का सूत्रपात था, यह बाहर से कुछ समझ में न आया।

राखाल मास्टर क्रमागत अपने को साधु साबित करने की चेष्टा कर रहा था और उसकी स्त्री कह रही थी—"नहीं, तुम साधु नहीं हो—"तुम भंड, तुम बदमाश, तुम शैतान हो।"

और उन लोगों के मुँह से जो भाषा अनर्गल रूप से बह रही थी उसको सुनकर कानों में उँगली देना पड़ता था। दोनों ही बराबर! जैसी पत्नी वैसा पति, कोई किसी से कम नहीं।

नितान्त असमय में ही मैं आया। एक बार सोचा—लौट चलूँ फिर सोचा—इतना पथ पैदल पार करके आया और बिना डाक देखे ही घर लौटने में कुछ अफसोस के लिए बाकी नहीं रहेगा। 'भाग्य में जो भी हो—' कहकर मैंने खखारकर गला साफ किया और बुलाया—"मास्टर!"

दोनों के गले की आवाज तत्काल बन्द हो गई। इतनी आसानी से बन्द होगी, मैंने नहीं सोचा था। दरवाजा खोलते ही राखाल मास्टर ने मुँह बढ़ा करके कहा—"ओह तुम, आह, आ आ तेरी आज बहुत चिट्ठी है।"

नया महीना शुरू हुआ था। कई मासिकपत्र आए थे। हाथ में लेते ही और देरी न करके चल ही रहे थे कि राखाल मास्टर ने कहा—"बैठो, बात करनी है।"

बाध्य होकर बैठना ही पड़ा, पूछा—"क्या बात है?"

मास्टर ने कहा—"सुना है? तुमने हम लोगों का झगड़ा?"

मैंने कहा—"सुना है परन्तु कुछ समझ में नहीं आया।"

मास्टर तिरस्कार करने लगे—"समझ में कैसे नहीं आया? तुम तो कहानी

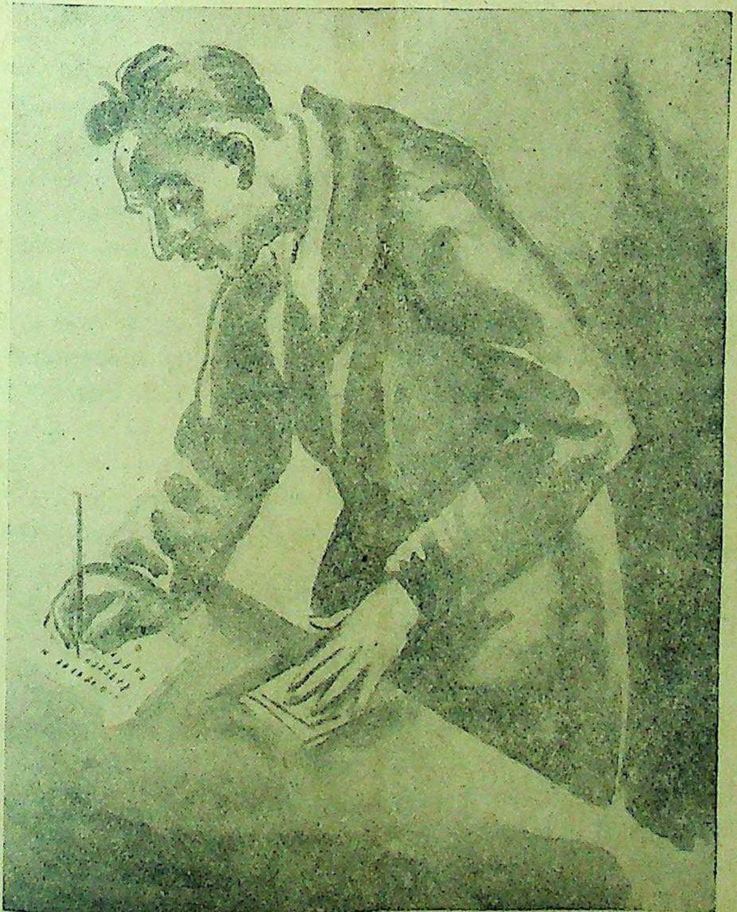

राखाल मास्टर क्या कर रहे हैं, इस कहानी में ढूँढ़िये।

लिखते हो न ?—यह तो एक बच्चा भी समझ सकता है।"

क्या जवाब दूँ, कुछ समझ में न आया—सोचकर चुप रहा। मास्टर ने कहा—"तब सुन!—वह हतभागी यदि इस तरह करेगी तो हम उसके मुँह में आग रख देंगे—नहीं तो क्या करेंगे ?"

किवाड़ की आड़ से मास्टर-पत्नी का कण्टस्वर सुनाई पड़ा—"हाँ, और वह नहीं करोगे ? आह......, तुम मेरे कितने गुणी पति हो ?"

"वह सुनो !" कहकर उँगली दिखाकर मास्टर ने कहा —"गले की आवाज तो सुनो—जैसे कोई काठ पर चोट कर रहा हो।"

इस बार भी गृहणी ने मानो कुछ कहा पर उसकी बात कुछ समझ में नहीं आई। तब मास्टर ने कहना शुरू किया—"सुनो, तब असली बात ही बतायें—एक दिन एक लिफाफे की चिट्ठी—देखा लिफाफा अच्छी तरह बन्द नहीं था। अलग रखा। इसी गाँव की चिट्ठी थी। निताई गांगुली जो कोयले की खान में काम करता है। लिखा है—अपने बीबी के पास उसने ! निताई की उम्र.........वह भी तेरे ही उमर का होगा, कम उम्र—बीबी भी वैसी ही। सोचा—पढ़ के ही देखें न क्या लिखा है।—आह, अजी वह क्या लिखा था ? हाँ, शादी करना—सार्थक था। बीबी को अगर उस तरह की चिट्ठी ही न लिख सके. ......और वह देख—हमारे घर में। कहकर मास्टर ने एक बार गृहणी की ओर उँगली बढ़ाकर कहा—उसको भला चिट्ठी क्या लिखेंगे !—शादी करने के बाद से अब तक हमको मुँह पर लात-झाड़ू ही लगाती रहती है। जैसे उल्लू की तरह चेहरा, वैसा ही गुण ! और कहती क्या है—"हतभागा, यदि तेरे साथ मेरी शादी न होती तो अधिक सुखी रहती'—इसीलिए तो कहता हूँ कि तब जा न बाबा ! जहाँ तेरा मन हो चली जा, जिससे मन हो शादी करके। मेरी हड्डियाँ ठंडी हों। परन्तु वह क्षमता तो नहीं है। हैं......हैं........,कहती है कि—'हाँ जाएँगे ! औरतों के जाने को रास्ता जो नहीं है—रे मुहजला !—मैं मरूँगी। मरकर भूत होकर तुम्हारा टोंटा दाबेंगे। देखना !' यही तो बोलने का ढंग है—खैर, सुनो तो असली बात ही सुनो।"

कहकर मास्टर ने थूक का एक घूँट उतारकर फिर इधर-उधर देखकर कहा—"निताई की जैसी बुद्धि ! देखा—चिट्ठी के अन्दर एक दस रुपये का नोट जोरू को भेजा है। सोचा–नोट तो गायब ही कर दें। पकड़ने लायक तो कुछ डर है नहीं और उस समय मुझे संसार में जो कष्ट था–वह और तुमसे क्या कहें ? पचीस रुपया, वेतन ! उसी में से बहन को दस रुपया भेंट भेजा। बाकी पन्द्रह रुपये और कितने दिन चलते। बस नोट, खसकाकर खाने गए। और खाने बैठे पर मुँह में भात अच्छा न लगा। मानो हाथ तो मुँह की ओर उठ नहीं रहे थे। रह-रहकर उसी नोट की याद आ रही थी। सोचा—ना बाबा, यह नहीं। आधा खाकर ही उठ आए। पत्नी ने कहा—'अजी, यह किस तरह का नखरा है ?' मैंने कहा—रहो ! बस उसी क्षण उठकर वह नोट बस उसी तरह लिफाफे के अन्दर भरकर खुद ही लेकर चल पड़े। निताई गांगुली के दरवाजे पर जाकर निताई की पत्नी को पुकारा। वह छोटी थी—किसी प्रकार आना नहीं चाहती थी। मैंने कहा—आकर दरवाजे के पीछे ही खड़ी हो जाओ। हम पोस्टमास्टर हैं। निताई की पत्नी घूँघट खींचकर आकर खड़ी हो गई। कहा—ले बहू, यह अपनी चिट्ठी लो। चिट्ठी के भीतर दस रुपया का एक नोट है। चिट्ठी उसने हाथ में ले ली। मैंने कहा—बहू, निताई को मना कर देना कि इस प्रकार रुपया भेजने से चोरी हो जाती है। सिर हिलाकर उसने कहा—अच्छा।

"बाबा जान छूटी। इतनी देरी के बाद निश्चिन्त होकर घर लौटकर कहा—'दो अब भात दो, खाएँगे।' पत्नी पूछने लगी—'क्या हुआ, बताओ तो सही।' शुरू से आखीर तक सब बताया। जानते हो फिर पत्नी ने क्या कहा ?"

"क्या कहा ?" कहकर मास्टर के मुँह की ओर मैंने ताका।

मास्टर हँसा, कहा—"तब तुम लेखक किस बात के ?"

कहकर मास्टर ने फिर शुरू किया—"मुँहजली, कहती है कि अरे, तुम हमारे कौन हो ? साधु, बिलकुल साधु ! रुपया तुमने लिया क्यों नहीं ? बस यही बात है झगड़े की। समझे ?"

सिर हिलाकर मैंने कहा—"हाँ।"

मास्टर क्रोधित हो उठा, कहा—"खाक, समझे। कुछ भी नहीं समझे ! समझकर भी तुम कहोगे कि उसको लेकर रहें !"

हँसकर मैंने कहा—"और नहीं" तो क्या कहेंगे ?"

"क्या कहोगे ?" कहकर; हमारी ओर ताककर दाँत पीसकर मास्टर ने कहा—"कहो कि झाड़ू मारकर घर से दूर कर दो।"

पोस्टआफिस और मास्टर की 'फेमिली क्वार्टर' में केवल एक दीवार का व्यवधान है। दीवार के उस पार से सुनाई पड़ा—"हे भगवान् ! हे भगवान् ! इस प्रकार के पति से हमें छुट्टी दिलाओ हे भगवान् ! सदा के लिए निष्कृति दो दे हरि, हे मधुसूदन—"कहकर कटाकट उँगली फोड़ने और रोने की आवाज सुनाई दी।"

राखाल मास्टर उठ खड़ा हुआ और बोला—"चले, चौबीसों घंटे यह क्या सुनेंगे। चल—तुझे थोड़ी दूर आगे तक छोड़ आऊँ।"

उस समय सूर्य अस्त हो रहा था—घर पहुँचते पहुँचते शायद रात हो जाएगी। बाहर आकर देखा—अस्तप्राय सूर्य की स्तम्भित रेखाएँ बादलों में प्रतिबिम्बित होकर सारे आकाश को विचित्र रंगों में रंग रही हैं। सामने दूर, शाल और महुआ का जंगल ! उस समय फाल्गुन का महीना था। चमकदार, चिकने पत्तों के भार से झुके हुए नत वृक्षों की पंक्ति, शाल और महुए के फूलों से वासित हवा, ऊँच-नीच, लहरों की तरह असमतल यह भूमिखण्ड और इनके बीच में संथालों के थोड़े से छोटे छोटे झोंपड़े। उसी के बगल से एक संकीर्ण पथरेखा टेढ़ी मेढ़ी वन में प्रवेश करती है। वही रास्ता पकड़कर चुपचाप चल रहे थे।

राखाल मास्टर हठात् पूछ बैठा—"हाँ जी, कुछ लिखा है ?"

"क्या !"

"वाह रे, इतनी जल्दी भूल गये। वह जो कहा था।"

हँसकर मैंने कहा–"तुम्हारी कहानी ?" मास्टर ने केवल गर्दन हिलाकर सम्मति दी। मैंने कहा—"नहीं तुम्हारी कहानी अब हम नहीं लिखेंगे।" मास्टर ने इन बातों को कान ही नहीं दिया। कहा—"नहीं क्यों लिखोगे ? लिखोगे, लिखोगे। परन्तु सब सच बात लिखना। यही—मेरी पत्नी के बारे में पहले लिखोगे। लिखोगे कि उसकी तरह खराब लड़की दुनिया में कहीं नहीं है। उस औरत के पास से भागने से हम बचेंगे। खुद अपने आँख से तो सब देख ही आये। भला और कुछ ज्यादा तुम्हें क्या बतायें।"

मैंने कहा—"अच्छा, अब तुम जाओ। नहीं तो लौटने में रात होगी।"

"होने दो न !" कहकर राखाल ने हमारे कंधे पर हाथ रखकर थोड़ा हँस दिया। कहा—"अँधेरे में साँप काटेगा, काटने दो न ! बचने की हमारी इच्छा नहीं है। कसम खाकर कहते हैं। पत्नी के उत्पात से एक एक दिन यह मालूम होता है कि हम मर जाएँ।" कहकर ही लौट जाने को वह पीछे घूमा। कहा—"अब जाएँ। परन्तु तुम लिखना !"

* * *

सम्मति देकर मैं घर आया।

लिखने की चेष्टा नहीं किया, यह बात नहीं है। लिखा था.........

पचीस रुपया, केवल पचीस रुपया वेतन। राखाल मास्टर का पोस्टमास्टरी करना ही ध्येय नहीं था। यह तो भाग की विडम्बना थी। बड़े आदमी का लड़का तो वह था नहीं—था एक नितान्त गरीब का। उस पर भी यदि उसके पिता जीते होते ! सो बचपन से ही वह पितृहीन बालक। ननिहाल में पालित। मामा बहुत बड़े आदमी थे। विराट् अट्टालिका, अनेक दास-दासी, बड़ा कुनबा, तीन तीन मोटर कार। उन्हीं में से एक में चढ़कर प्रतिदिन शाम को राखाल घूमने जाता था। जैसी पोशाक वैसा ही उसका चेहरा। लोग देखते थे और कह देते थे—'बेटा की तकदीर चोखी है।'

मामा ने ही राखाल की शादी कर दी, एक गरीब घर की अनाथा लड़की से। लड़की की एक बुआ ही उसकी अभिभावक थीं। मामा स्वयं लड़की देखने गये थे। लड़की की बुआ ने कहा—'देखो बेटा, लड़की के माँ-बाप नहीं हैं। फिर मामा ने ही पाला-पोसा है...........।'

मामा ने कहा था—"उसके लिए आप निश्चिन्त रहिये समधिन जी" मामा अपनी आधी सम्पत्ति अपने भांजे को दे जाएगा।"

शायद देते, परन्तु राखाल
ही ऐसा था कि वे उसे बिना
ही मर गये। राखाल—लड़की
था इसलिए धन-सम्पत्ति के लिए
ही क्या था। कुछ दिन बाद ही
गया कि वह अपनी स्त्री को लेकर
पर आ खड़ा हुआ है।—अब
निःसहाय और निःसम्बल राखाल।

उसके बाद तो फिर बहुत
अगर कहने लगें तो समकाण्ड
हो जाय। रास्ते रास्ते भटक भटक
कष्ट कर अन्त में बहुत दिनों बाद
को एक नौकरी मिली—पोस्टआफिस
पिऊन। उसके बाद डाकिये
मास्टर तक हुआ।

परन्तु यह जो दुःख और दु
भी शायद वह नीरव रहकर सह
यदि संगिनी उसके मन की होती।

राखाल कहता है—"वह दु
कथा और मत कहो भाई। वह लड़की
मुझे प्यार ही नहीं करती। प्यार
इतना झगड़ा और इतना तर्क-वितर्क
न होता।.....

बस, यहीं तक लिखा था। इसके
हुआ यह कागज प्रायः प्रतिदिन ही
के पास ले जाता था—सोचता
मिजाज ठीक रहा तो एक दिन
को पढ़कर सुनाऊँगा पर पढ़ तो
दिन भी नहीं पाया ! खुशमिजाज
में राखाल को पाना बहुत ही कठिन
जिस दिन भी जाता, सुनता—
आकर उसे बहुत विरक्त कर गया है।

विरक्त कर देनेवाले मनुष्यों
अभाव नहीं था। अगर कोई एक
कार्ड भी खरीदने आता तो मास्टर
पीसकर घुड़की लगाते थे। फिर डाक
में नाना प्रकार की जरूरतों के कारण
को आना पड़ता ही था। गाँव में
दुर्नाम का अंत नहीं था। सभी कहते
"बाबा रे ऐसा बदमिजाजी आदमी
लोगों ने अपने जीवन भर में नहीं
अब तो सभी को मिलकर उसके
एक दरख्वास्त भेजना चाहिए इसके
कोई चारा नहीं।"

यह बात सुनकर मुझे बहुत दु
था। एक दिन मास्टर से कहा
"देखो मास्टर, पोस्टआफिस में जो
उनसे ऐसा व्यवहार मत करो
तुम्हारा नुकसान है।"

"नुकसान ? क्या कहा—नुक
कहकर वह हमारे मुँह की तरफ
बोला था—"नहीं, नुकसान हमारा
नहीं कर सकेगा। तुम देख लेना
ने बहुत कोशिश की थी, परन्तु
कर सके। और उलटे ही हम तो
पोस्टमास्टर हो गये ! भगवान्
हैं।" यह कहकर मास्टर ने
ली। कहा—भगवान् के
रे.......। देख, हमने जो किसी
सान नहीं किया है तो देख लेना
भी कोई नुकसान नहीं कर सकता
सान जो कुछ मेरा किया वह तो
किया।" उसने अन्तःपुर की ओर
दिखाकर कहा—"चुप ! अगर
लेगी तो कुछ बाकी नहीं रखेगी।"

शेष पेज १८ पर

हमारा रंग-मंच

माज को बदल डालो'

तंत्र भारतीय जनता के लिये मार्ग-प्रदर्शन

लेखक, श्री गोपाल मेहरोत्रा

प्रगतिशील-युग के स्व-विकारों में व्यंगों को सहने में समाज सर्वथा रहा है कि—कोई उसके सम्मुख गालियाँ दे और वे उसमें पाप को से कदापि नहीं दृष्टिपात किये जाते के केवल कान हैं, नेत्र नहीं—जो र वस्तुओं के दोषों का निरीक्षण के उपरान्त यह नहीं जानता कि परिणाम क्या होगा तथा उसमें सत्य ! ऐसे समाज में पलित प्राणी क्या स्वतंत्रता की श्वासें ले सकता है ? ाज के प्रगतिशील प्राणी के विचार ज के कट्टर विरोधी हैं और इस के खण्ड पर नव-सामग्रियों की से एक नूतन समाजरूपी गृह करने का निरन्तर प्रयत्नशील क्रम है, परन्तु...। अतः उसमें स्व- के बिन्दुओं को प्रदर्शित करने के भारतीय-स्वर्ण-छाया-जगत् के यशस्वी तथा निर्देशक-निर्माता श्री विजय भट्ट ने प्रकाश पिक्चर्स की नवीन 'समाज को बदल डालो' का कर स्वतंत्र भारतीव जनता के अंकित करने की सफल चेष्टा

कहानीकार पं० गिरीश जी -विवाहों, पत्नी के प्रति पति के , निर्धन-विधवा-पुरुष की असह- ओं तथा फैशनेबल स्त्री-पुरुषों के के सहारे लेखनी को इस भाँति के योग्य निर्मित किया है— रमेश की प्रिया—चम्पा उसके घनिष्ट मित्र, किशोर जाने के कारण वह आत्महत्या है; उसकी आत्महत्या से पूर्व इस प्रणय-लीला तथा उसकी नोरमा का विवाह एक दुरात्मा, साथ हो जाने का ज्ञान होते ही को रमेश की पत्नी का रूप देने देता तथा सफल प्रयत्न भी है, परन्तु दुर्भाग्यवश......। और किशोर की छोटी बहन, कान्ती एक न्यायाधीश के साथ हो भी वह एक 'इँगलैंड-रिटर्न' मिस लीला के साथ प्रेम-लीला । एक दुर्घटनावश कान्ती अपने ठुकराकर अपने पिता के गृह चली । किशोर के अत्यधिक परिश्रम के भी सन्निपात की रोगिणी चम्पा का हो जाता है, परन्तु बेचारा ......। मनोरमा को दुष्ट के सुरक्षित रखने के हितार्थ किशोर, को समाप्त कर देता है। रक्तपाती न्यायालय में पागल की नाईं वादा- पर उपस्थित सज्जनों के सम्मुख समाज की कुरीतियों को स्फुटित करता तथा न्याय के हेतु न्यायाधीश (कान्ति के भूतपूर्व पति) को ललकारता है, परन्तु सम्पूर्ण न्यायालय शून्य रहता है, किशोर को मुक्ति की आज्ञा दी जाती है, न्याय के सम्मुख प्रश्नसूचक चिह्न नृत्य करते हैं और चित्र समाप्त हो जाता है।

मैरिया माण्टेज का 'अटलाण्टिस' में अभिनय करते समय का एक चित्र।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि प्रस्तुत चित्र की कहानी प्रेममय संसार तथा अन्य भारतीय चित्रों के कथानकों से भिन्न है, परन्तु क्या समाज केवल कुरीतियों का भंडार है ? जो सर्वथा असम्भव तथा विश्व के महान् कलाकार शेक्शपियर के अमूल्य रत्न ('विश्व को सुन्दर अथवा असुन्दर वस्तु नहीं है, परन्तु विचार-दृष्टिकोण उन्हें वैसा ही रूप प्रदान करता है।') को एक असहनीय ललकार है। चित्र का अंत एक प्रश्न है—वर्तमान-युग में निर्धनों का क्या अस्तित्व है तथा क्या मनुष्य अपराधी होते हुए भी निरपराधी है और नारी निर्दोष होती हुई भी दोषी है ?—जो भारतीय युवकों एवं जनता के सम्मुख अत्यधिक जटिलता का रूप धारण किये हुए है। कथा-वस्तु को 'क्यों' की ही सहायता प्राप्त कर सम्बोधित किया गया है औ फल को दर्शकों के निर्णय पर छोड़ दिया है। कहानी में कुछ ऐसी भी अस्वाभाविक परिस्थितियाँ (मनोरमा के विवाह के पश्चात् उसके पिता का लुप्त हो जाना, जयन्त की मृत्यु से पूर्व मृदुला का—'किशोर...किशोर ....' रटना, जयन्त के गोली मारने पर केवल मृदुला (मनोरमा) को ही लगना, जब कि दोनों की पीठ एक दूसरे के सम्मुख थी, इत्यादि) हैं, जो कहानी कारतथा दिग्दर्शक के दिवालियेपन की द्योतक हैं।

यद्यपि कथाकार ने संवाद-लेखन में परिश्रम आवश्य किया है, परन्तु शत-प्रतिशत कथोपकथन की भाषा उर्दू होने के कारण उसने, उनके तथा संवादों के उज्ज्वल मुख पर कालिख पोत दी है। एक ओर संवादकार जी—'मैंने पहले तुम्हें एक रमणी के रूप में देखा था, उसके पश्चात् (स्वप्नों में) एक प्रेयसी, तत्पश्चात् एक नारी, परन्तु आज एक 'माँ' की दृष्टि से'—कहते हैं और दूसरी ओर—'मुहब्बत दौलत की मुहताज नहीं होती', 'वालदैन की फरमाबरदारी', 'और फिर उसे नजर इमदाद कर देते हैं'—अलापते हैं। क्या ऐसे ही अपमान-जनक कार्यों द्वारा वे हिन्दी-साहित्य एवं भारतीयता की उज्ज्वलता की कामनायें करते हैं ? क्या उनमें मातृत्व का कोई अंग नहीं ? क्या विज्ञान की दृष्टि से एक दीन, हीन एवं विदेशी भाषा को प्रोत्साहन देकर हिन्दी को लज्जित करना ही हमारे सीने-संवाद-लेखकों के प्रथम कर्तव्य हैं। आश्चर्य है कि हिन्दी के प्रेमी श्री भट्ट जी के कानों पर जूँ तक न रेंगी ! सर्वश्री कमल जलालावादी, पं० इन्द्र तथा रूपदास द्वारा रचित गीत निकृष्ट कोटि के हैं। उदाहरणार्थ—'आँखें मिलाकर......'एक सूरत सलोनी रे', 'चढ़ती जवानी....', आदि) भारतीय चित्रपट-क्षेत्र के महान् अनुभवी संगीतज्ञ श्री खेमचन्द्र प्रकाश का संगीत-निर्देशन नितान्त असफल हुआ है, जो निर्देशक की महानता का भी परिचायक है। श्री शारदा शुक्ल का चित्रालेखन संतोषजनक, बी० एम० शुक्ला जी का नृत्य-प्रदर्शन साधारण तथा यूसुफ मूल जी का संपादन दोषपूर्ण हुआ है। श्री एस० जयकृष्ण तथा फडके जी की रूप-सजा सराहनीय है। चरित्र-चित्रण द्वितीय श्रेणी का है। ध्वनि-आलेखन दोषयुक्त है। 'प्लेबैक' संगीत भी अत्यधिक अरुचिकर प्रतीत हुआ है।

अभिनय-कला की दृष्टि से सबसे सुन्दर एवं सराहनीय कार्य किशोर की भूमिका में अरुण ने अभिभूत किया है। एक पागल की भूमिका में तो आपने आलोचक की लेखनी तोड़ दी है, पर 'प्लेबैक' संगीत ने आपकी उच्चता पर कीचड़ उछालने का सर्वप्रथम सफल प्रयास किया है। आशा है आपने अपनी आगामी रचना "सेहरा" में इससे कहीं सुन्दरता का परिचय दिया होगा। नरेश की काया में उमाकान्त तथा चम्पा की कल्पना में लीला पवाँर ने तृतीय श्रेणी का कार्य किया है। जयन्त की छाया में याकूब और मनोरमा की स्थिति में मृदुला ने असफलता के परिचय दिये हैं। कान्ती के आवारण में शान्तारिन ने सराहनीय अभिनय अभिनीत किया है। क्लर्क' जी की भूमिका के कलाकार ने द्वितीय श्रेणी का अभिनय प्रदर्शित किया है। शेष पात्रों के कार्य उल्लेखनीय नहीं हैं।

दिग्दर्शन—एक महान् दिग्दर्शक की दृष्टि से रमणियों की पंक्तियाँ, उनके अश्लील गीत और वस्त्रों को यथास्थान निरखकर नग्नता की भावना जागृत होती है—में कुछ ऐसे दृश्य हैं जो सभ्य गृहों की परम्परा में नहीं आते। वेश्या के प्रकोष्ठ का इतना निम्न एवं जर्जर चित्रण—ऐसे घिसे हुए दिग्दर्शक से ऐसी कुआशा न थी। ऐसा प्रकट होता है मानो अभी पश्चमी-बू उनमें अवशेष है, जिसके कारण 'काम' को कला का प्रतीक घोषित कर निश्चिन्त रूप से अपनी दिग्दर्शक-कला पर कुठाराघात करने का प्रयत्न किया गया है। क्या यही चित्र-निर्देशन है ? क्या ऐसी ही कुप्रवृत्तियों द्वारा देशोद्धार, साहित्य-सेवा तथा नव-पथ के निर्माण किये जायेंगे ? यदि भारत के श्री विजय भट्ट जी जैसे महान् कलाकारों की यही दशा रही तो भारत का बेड़ा पार ! यह प्रश्न उन समस्त प्रश्नों से जटिल है, जिसे दिग्दर्शक ने चित्र का माध्यम प्रदर्शित किया है। प्रथम राष्ट्र, तब समाज और उसके पश्चात् गृह। पर श्री भट्ट जी की नीति—प्रथम गृह, फिर समाज और अन्त (अवशेष) राष्ट्र के हितार्थ, जो सर्वदा अमान्य है। और मैं उनका पूर्ण रूप से विरोध करूँगा। फिर भी ऐसी गम्भीर मान्यता के चित्रों की आज देश को अत्यन्त आवश्यकता है, जिसके लिये वे अनेक बार साधुवाद के पात्र हैं।

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ० ए०, बी० ए०, पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से और होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ्त मँगायें। पता :—
इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

आज ही अवश्य मँगायें
कोकशास्त्र (सचित्र) १) पो० ।=)
हिन्दी इंगलिशटीचर १।।) पो० ।।)
पुस्तक व पहेली का बड़ा सूचीपत्र मुफ्त "प्रभात" ट्रेनिंग कम्पनी, (४१) मौरैना—जी० आई० पी० रेलवे।

मातृमण्डल

मातायें आप परेशान क्यों होती हैं ?

अधिक से अधिक शक्ति, साहस और जीवन का संचय करो

लेखिका, श्रीमती विमलादेवी राजदान, बी० ए०

बालकों को वीर बनने के लिए सबसे अधिक शिक्षा माता से मिलती है। परन्तु यह बहुधा देखा जाता है कि हमारी मातायें स्वयं इतनी घबड़ा उठती हैं कि उन्हें ही ढाढ़स और धैर्य नहीं बँधाया जा सकता। बच्चों को वीर बनना अथवा किसी भी कला का मर्मज्ञ बनाने की जितनी शिक्षा माता दे सकती है उतना पिता नहीं दे सकता। परन्तु समाज के अन्य सदस्यों की अपेक्षा माता-पिता अथवा अभिभावकों की शिक्षा और आचरण का अधिकतर प्रभाव बालक पर पड़ता है। इनमें यदि बालक को कलाकार अथवा वीर बनाने की भावना का अभाव रहा तो बालक निठल्लू और कायर रह जायगा। इसके अतिरिक्त बालक के स्वास्थ्य और रहन-सहन का अधिकतर सम्बन्ध माता ही से रहता है। बालपन में जो भी चीज बालक सीखता है वह अधिकतर माता की नकल करता है। क्योंकि उसके दैनिक जीवन का बहुत सा भाग माता के पास रहने में व्यतीत होता है। अतः यह कहा जा सकता है कि संसार के उत्थान में माता का सबसे अधिक हाथ है। फिर हमारी माताओं में भय अथवा संकोच का होना संसार की उन्नति के लिए घातक ही कहा जा सकता है। इस युग में जब कि सारे राष्ट्र अपनी उन्नति के लिए होड़ कर रहे हैं फिर हमारे देश की स्त्रियाँ अपने को पीछे रक्खें अथवा हमारे देशवासी अपने स्त्री-समाज की परवाह न करें यह देश के लिए अपमानजनक है। यह कहा जाता है कि हमारे अभिभावक ही वीरता पैदा करने के कारण हैं।

शिवाजी की माँ ने अपने लड़के में बालपन ही में वीरता का भाव भर दिया था जिसका फल शिवाजी के यौवन-काल में चमक उठा था। अतः बालक की उन्नति के लिए माता का सबसे बड़ा उत्तरदायित्व है। इस उत्तरदायित्व के लिए माता को सर्वदा निर्भय होना चाहिए। परन्तु मातायें इतनी भयभीत हो जाती हैं कि उनमें स्वयं ही संयम और साहस नहीं रह जाता, बालक जरा भी बीमार पड़ा कि वे घबड़ा उठती हैं। बच्चों को किसी दिन खाना देर से मिला अथवा न मिलने पर उनका धैर्य छूट जाता है। माता अपने बच्चे को जरा सी झुँझलाहट अथवा बुखार में देखकर जितना घबरा उठती है शायद पिता उतना नहीं। इस घबराहट का बीमार पर भी कम प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि बच्चे की माँ को अधिक ममता रहती है। किसी छूत की बीमारीवाले स्थान में भोजन करने से, जितना लड़का नहीं घबराता उतना माँ घबरा उठती है। कहीं हैजा न हो जाय अथवा चेचक का प्रकोप बढ़ जाय यह संदेह माँ के हृदय को कंपित कर देता है। माता का उत्तरदायित्व बालक के स्वास्थ, मस्तिष्क और अध्यात्मिक उत्थान से बहुत सम्बन्धित है। अतः माता को अपने इस उत्तरदायित्व के लिए अपने बच्चों को साहसी बनाना सबसे बड़ा कार्य है।

माता का प्यार सबसे बड़ा प्यार कहा जाता है और वास्तव में है भी। माता अपने बच्चे को निस्वार्थ प्रेम करती है। बालक स्कूल जाते समय पैदल जाता है। उस जाने में वह थकेगा इससे माँ घबड़ाकर बालक को साइकिल खरीद देती है। परन्तु साइकिल सीखते समय जब बच्चे को चोट लगती है माँ फिर घबड़ा उठती है और कहती है अब मत चढ़ो लल्ला! तुझे चोट लग गई है। पक उठेगा! इस घबड़ाहट से बालक भी घबड़ा उठता है। साइकिल पर न चढ़कर वह पुनः पैदल सफर करता है जिससे उसका पैर सूज आता; उसमें दर्द बढ़ जाता और फिर चलना-फिरना दूभर हो जाता है। इन सबका कारण माँ की घबड़ाहट ही कहा जायगा। क्योंकि माँ ही के कारण बच्चे को परेशानी उठानी पड़ी है। इस लिए कहा जा सकता है कि माता का भय बालक को भी भयभीत कर देता है। बालक कितना ही साहसी हो परन्तु माता के प्यार में उसकी भी वही स्थिति हो जाती है जो माँ की। अतः बालक के प्रत्येक कार्य में माता के प्यार का बहुत बड़ा प्रभाव रहता है। इसलिये माता पिता को चाहिए कि वे घबड़ायें कम, परन्तु जब स्वभाव पड़ गया तो फिर वे उस स्वभाव को एकाएक दूर कैसे कर सकते हैं? इसके लिये यदि माता-पिता चौकन्ने रहें तो वे भयभीत कम होंगे परन्तु चौकन्ना रहने के लिए उन्हें कुछ बातें नोट रखनी चाहिए। इन बातों को माता पिता को स्मरण दिलाने के लिए आवश्यक है कि इन्हें अपने रहने के घर र में मोटे अक्षरों में लिख दें।

पूर्वी पंजाब की स्त्रियाँ और लड़कियाँ रक्षा के लिये बंदूक चलाना सीखती हैं।

---

(१) यह कि माता-पिता जि
में रहें वहाँ भय की बातें न कि
नहीं तो इसका प्रभाव बालक पर
पड़ेगा।

(२) अपने को दूसरों से
समझना यह भी घबराहट की एक नि
है। लड़का किसी बड़े आदमी के
पहुँचा कि घबड़ा उठा। यह क्यों?
लिए कि माता-पिता ने कहा था देखो
आदमी से पूछकर काम करो, ये
आदि बातों से बालक का मस्तिष्क
हो जाता है। अतः माता पिता बालक
दबकर बात करने का पाठ न पढ़ावें।

(३) किसी चीज को यह न स
लेना चाहिए कि वह किसी विशेष
लिए बनी है। बल्कि यह समझना
कि वह संसार में सबके लिए है,
भावना से स्वार्थपरता आयेगी जिससे
बालक लालायित होकर पाने को
हो जायगा। इस भावना को मा
को सर्वदा ध्यान में रखना चाहिए।

(४) बालकों को यह शिक्षा
चाहिए कि वे कार्य-सिद्धी के लिए
के हँसने अथवा चिढ़ाने से न डरें
अपना सतत प्रयत्न करते रहें।

(५) भय का शब्द ही न
अच्छा है। परन्तु यदि कभी भी नाम
तो उससे डटकर मुकाबला करने
प्रेरणा दें।

अन्तिम बात यह कि अपने
अपूर्ण कार्यों पर कभी पश्चात्ताप न करने
की शिक्षा बच्चों को दिया करें।
यह कहें कि उस बार की भूल से
लो और आगे बढ़ो। अतः ये बातें मा
पिता को विशेषकर स्मरण रखनी आवश्यक
हैं। चूँकि बालक अधिकतर माता के
जीवन के साथ रहता है अतः मा
अधिक निर्भीक होना चाहिये।
मातायें जब तक निर्भीक न होंगी
हम पीछे ही रहेंगे। उन्हें निर्भीक
लिए संकोच और भय कम करना

२०॥) में ज्वेलवाली रिस

स्वीसमेड ठीक समय देनेवाली
गारण्टी। गोल या स्क्वायर
सुपिरियर २०॥), फ्लाट सेप क्रोमि
३०), फ्लाट सेप रोल्ड गोल्ड
गारण्टी ५५), फ्लाट से.
क्रोम केस ३८), फ्लाट सेप
रोल्ड गोल्ड ७५)।

रेक्टेंगुलर, क्रोम टोनो
केस ४२), सुपिरियर
६०), रोल्ड गोल्ड
६०) अलार्म टाइम पीस
बीग साइज २५) पोस्टेज
घड़ी लेने से माफ।

एच० डेभिड, एण्ड को०
पो० बक्स नम्बर ११५२५

स्वास्थ्य-चर्चा

पूज्य बापू सफल चिकित्सक

अन्न, जल और हवा की स्वच्छता स्वास्थ्य के लिये हितकर है

लेखक, श्री आचार्य नित्यानन्द सारस्वत

आज-कल चिकित्सा की विभिन्न प्रणालियाँ चालू हैं, किन्तु उनसे स्वस्थता नहीं, स्वस्थता का आभास ही मिलता है। क्या देशी और क्या विदेशी सभी मनस्वी पुरुष एक स्वर से घोषणा कर रहे हैं कि आज के चिकित्सक रोगों का इलाज करते हैं, किन्तु जनता में रोग पैदा ही न होने के अपने प्रधान कर्तव्य की ओर उनका कोई ध्यान नहीं है। अप्रतिहत बुद्धि महात्मा गांधी ने इस क्षेत्र में भी सबका ध्यान खींचा। उन्होंने स्वास्थ्य-सम्बन्धी बुनियादी सिद्धान्तों के पालन पर बड़ा जोर दिया। जिस प्रकार महर्षि आत्रेय ने प्राणैषणा के लिए आहार, स्वप्न और ब्रह्मचर्य के सम्यग्योग को आवश्यक बतलाया है, उसी प्रकार बापू ने भी इन तीनों और सम्बन्धित वस्तुओं पर जन्म भर प्रयोग किये और एक उपादेय निष्कर्ष पर पहुँचे।

इस प्रकार उन्होंने रोग पैदा ही न होने देने के लिए तो प्रयत्न किये ही, किंतु हो जाने पर उन्हें दूर करने के लिए प्राकृतिक साधनों के इस्तेमाल करने की दी। (जल और मिट्टी के द्वारा उपचार करने की प्रवृत्ति उनकी बहुत थी। भाप, उपवास, दूध और मट्ठे के प्रयोगों का भी वे बड़ा ध्यान थे। जब बापू सन् १९३६ में सेवाग्राम चले गये, तब से तो बापू को अपनी के दायरे को विस्तृत करना पड़ा प्रसिद्ध और देशी दवा भी थे।

किसी भी क्षेत्र में 'पर-उपदेश बहुतेरे' की अपेक्षा स्वयं अग्रगामी पसन्द करते थे। वे अपने रोगी को बात न बताते, जिसे कि वे स्वयं सकते हों। एक बार राष्ट्रमाता को खुजली हो गई थी। आयुर्वेदिक के अनुसार रक्तविकृति में नमक देने से शीघ्र लाभ होता ही है, बस 'बा' को 'नमक' बिलकुल छोड़ के लिए कहा। भोली-भाली 'बा' तो भोजन की कल्पना भी न कर "बिना नमक के भोजन से भूख सकती है, आप खुद नमक छोड़ें, के महत्त्व का पता लगे।" देर थी। बापू ने उसी दिन से साथ ही नमक छोड़ दिया।

किसी आश्रमवासी के बीमार होने पर उसकी परिचर्या का बड़ा ध्यान रखते कभी अनिवार्य कारणवश भूल पर याद आते ही उस त्रुटि को। बात यरवदा आश्रम की है। द्वीप में प्रवासी सेवक तोताराम जी गंगादेवी बीमार थीं। इलाज में था। किन्तु सोमवार का मौन था। सोचा, चलकर लिख देंगे। कार्य-व्यग्र रहने से थककर सोने चले जब रात को दो बजे आँख खुली, गंगादेवी की बीमारी की बात आई। उन्होंने तुरन्त निरालस्य उठ- कुशल चिकित्सक की भाँति जो लिखा, वह उन्हीं के शब्दों में :—

"...की कोई जरूरत नहीं है, देना चाहता हूँ, नारंगी का रस और द्राक्ष का रस लेती रहें, पानी पी सके इतना पीवे, कटी-स्नान लेवे और बरफ का मालिश भी करे, नाक में नमकी और सोडा का पानी भी लेवे और पेट पर आज भीं दिन में मट्टी की पोल्टिस लगावे।

दो बजे पाँच मिन

और अब ही चार ग्रेन क्वीनीन नीबू और सोडा में ले लो।"

वास्तव में मध्य रात्रि के बाद कागज के पत्र पर अंकित ये पंक्तियाँ ही बापू के कर्तव्यपरयण अमर चिकित्सक होने की प्रमाण पत्र है। वे उत्कृष्ट चिकित्सकों की तरह व्यक्तियों के रोगमुक्ति की बात सुनने को सदा सचेष्ट रहते। एक बार उन्हें श्री बनारसीदास चतुर्वेदी के बवासीर होने का समाचार मिला। उसके बाद जब चतुर्वेदी जी मिले, तो सबसे पहले उन्होंने यही पूछा कि—'कहो, तुम्हारे बवासीर का क्या हाल है? यह चिट्ठी डाक्टर के पास ले जाओ और सबसे पहले उसका इलाज कराओ।'

सन्त श्री बालकोबा जी के अतिश्रम से क्षय हो जाने से हरिज-निवास दिल्ली में आ जाने पर जिसने बापू के चिकित्सकोचित दूरदर्शिता और ममता से पूर्ण पत्र पढ़े हैं, वह सहज ही समझ सकता है कि बापू में कितने दयालु चिकित्सक का हृदय था। परचुरे शास्त्री की सेवा तो उनकी प्रसिद्ध ही है। कुष्ठ होने पर भी शास्त्री जी को आश्रम में अपने कुटिया के पास रखा। प्राकृतिक चिकित्सा तो चल ही रही थी, किन्तु बापू उनकी मालिश भी छूत से निर्भय होकर अपने हाथ से करते थे। उनका कहना था कि "ईश्वर की इच्छा हो तो मुझे बचावे अथवा मार डाले। पर मैं तो कोढ़ी की सेवा किये बिना नहीं रह सकता।"

मरीज के लिए उनका दरवाजा हर समय खुला रहता था। उसे मनसा, वाचा, कर्मणा सान्त्वना देना वे प्रथम कर्तव्य समझते थे। सन् १९२६ की बात है। वे अत्यन्त जरूरी काम से अहमदाबाद जा रहे थे। दिल्ली में गाड़ी बदलने को एक घण्टा मिलता था। जब उन्हें एक श्रद्धालु रोगिणी का पता लगा, तो तुरन्त कड़कती सर्दी में खुली मोटर में बैठकर मरीज को देखने गए और अगले स्टेशन जाकर गाड़ी पकड़ी।

जब बापू सन् ४० में वायसराय से मिलने शिमला जा रहे थे, तब स्टेशन पर पत्र-प्रतिनिधियों और देश के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के ठठ के ठठ लग गये थे। उन दिनों भारतीय राजनीति में गहरा अन्धकार छाया हुआ था। उसमें आलोक की आकांक्षा से कोई जरूरी वक्तव्य सुनने को सभी आकुल थे। गाड़ी के समय से पहले आने पर भी, बापू के सामने एक परिचित महिला पड़ गई और बापू पूछने लगे—'बच्ची का क्या हाल है? बीमारी अब कैसी है? दवा किसकी चल रही है? गाड़ी के चलने तक यही सिलसिला जारी रहा।

भारतीय स्वास्थ्य को उन्नत बनाने का आन्दोलन करनेवाले महात्मा गांधी।

बापू के पास भले ही किसी मेडिकल कालेज का डिग्री न हो, भले ही उनका नाम देशी और विदेशी चिकित्सा-पद्धतियों के सरकारी दफ्तरों में रजिस्टर्ड न हुआ हो, फिर भी चिकित्सा-शास्त्र के जितने तथ्या वे हमारे सामने रख गये हैं, उनसे हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। बापू ने कहा था :—

"..........मनुष्य जाति को होने वाले अधिकांश रोग स्वास्थ और शौच के नियमों की अवहेला के कारण ही होते हैं। स्वास्थ और शौच के नियम सीधे सादे हैं। शुद्ध से शुद्ध विचार रखिये। सारे बेकार और अपवित्र विचारों को निकाल दीजिये। शरीरिक और मानसिक श्रम का सन्तुलन रखिए। सीधे खड़े हूजिए, सीधे बैठिए, अपने हर एक काम में साफ-सुथरे रहिए। इन सब बातों में आपकी भीतरी स्थिति अभिव्यक्त होनी चाहिये। आपका आहार ठीक उतना ही हो, जितना मन और शरीर को सुस्थिति में रखने को आवश्यक हैं। मनुष्य जो खाता है, वैसा बनता है। 'आपका पानी, अन्न और हवा स्वच्छ होने चाहियें। जो त्रिविध स्वच्छता आप अपने लिए चाहते हैं, उसी से अपने आस-पास का वातावरण भर देना चाहिए।

* * *

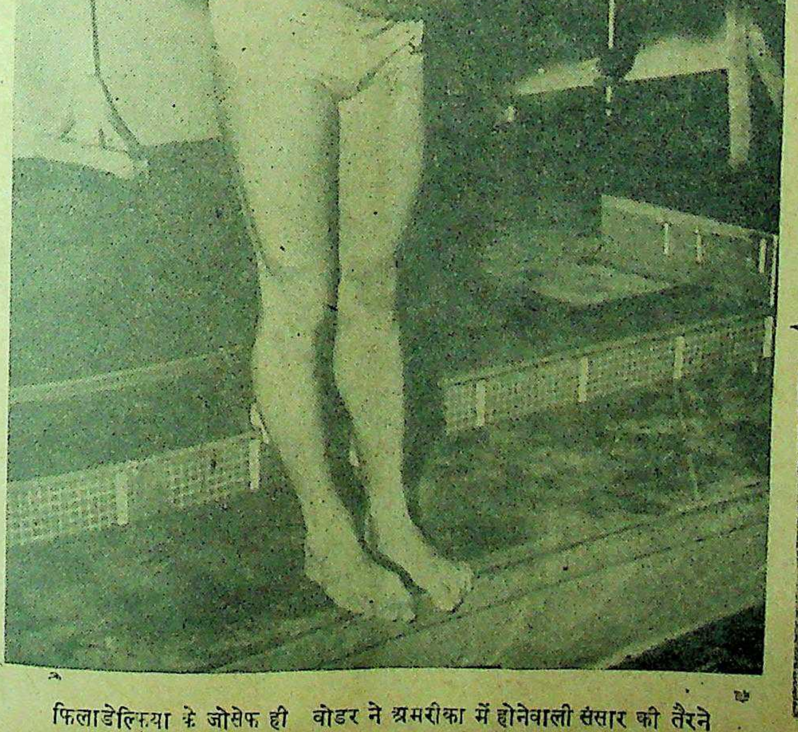

फिलाडेल्फिया के जोसेफ ही वोडर ने अमरीका में होनेवाली संसार की तैरने की प्रतियोगिता में प्रथम स्थान ग्रहण किया है।

सम्पादक के नाम पत्र

स्वालम्बी छात्र, हिन्दी और विश्वविद्यालय

विभाजन के पश्चात् देश की परिस्थिति बिलकुल ही बदल गई है हमारी सरकार सामाजिक स्वतन्त्रता के अंतर्गत आनेवाली सभी राष्ट्रीय निर्माणकारी क्रियात्मक योजनाओं के कार्यान्वित करने में कितनी क्रियाशील है, जिसमें 'सर्वोदय समाज' एक भगीरथ प्रयास है।

किंतु शिक्षा प्रचार और प्रसार की प्रायः सभी ठोस योजनाओं तथा सभाओं में कथित छात्रों को स्वतन्त्र रूपेण बी० ए० परीक्षा में जिसमें क्रियात्मक ज्ञान प्राप्त करना अपेक्षित नहीं। बैठने की सुविधा प्रदान करने के इस अन्यतम महत्त्वपूर्ण पहलू पर अद्यावधि किसी भी विज्ञ शिक्षा-प्रेमी ने न तो कभी चर्चा की और न शायद इसकी आवश्यकता ही समझी !

सामूहिक रूप से इन छात्रों को कथित सुविधा देना मुश्किल भी है, आसान भी है। मुश्किल इसलिये कि वह विश्वविद्यालयों के उच्च पदाधिकारियों तथा लम्बे उपाधिकारी महामहोपाध्याय, डी० लिट०, पी० एच० डी० आदि विद्वतवर्ग के बूते की बात है जो उच्च शिक्षा को केवल चंद लोगों की 'बपौती' मान बैठे हैं और आसान इसलिये कि वह विद्यार्थियों के एक बड़े समूह की सामयिक अनवहेलनीय माँग है।

सुनने में आया था कि नागपुर विश्वविद्यालय इस ओर अपना निश्चय कर चुका है कि वह उदारतापूर्वक इन छात्रों के लिए सन् ४८ से ही परीक्षा-प्रवेश-द्वार खोल देगा, लेकिन कुछ पता चला कि बात घपले में है। इधर आगरा विश्व-विद्यालय सम्मेलन के 'रत्नों' को केवल अँगरेजी में बैठने की अनुमति तो देता है लेकिन पास कर लेने पर परीक्षार्थी को उसके नाम के आगे बी० ए० (केवल अँगरेजी) तक भी लिखने का अधिकार साधिकार छीन लेता है जैसे वह परीक्षार्थी बिना उपाधि का केवल प्रवेशिकोत्तीर्ण (मैट्रिकुलेट) है। सम्मेलन की परीक्षा सम्बन्धी मान्यताएँ तो मानो छूताछूने के ही लिये हैं। कुछ लोगों की धारणा है कि उसे कोई भी पास कर सकता है।

आवश्यकता है हिन्दी-भाषा-भाषी के इस ओर सक्रिय-सामूहिक विरोध करने की कि अँगरेजी के 'कला-विशारद' (बी० ए०) एवं आचार्य (एम० ए०) की समकक्षता में, प्रांत के प्रत्येक मुहकमे, कचहरी, स्कूल, एवं गैर प्राइवेट संस्थाओं, 'सम्मेलन के विशारद' और 'रत्नों' को समान स्थान देने को हम देश के नेताओं का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहते हैं।

जबलपुर
१० सितम्बर ४८

—श्री नन्दन

* * *

इधर उधर की

संसार की जन-संख्या के बढ़ने के संबंध में अमरीका में समाचार प्रकाशित हुआ है कि सन् १९५५ ईसवी में संसार की कुल जन-संख्या २ अरब ४४ करोड़ हो जायगी। जो कि सन् १९४६ ईसवी की जन-संख्या से १९ करोड़ अधिक होगी।

* * *

सन् १९४६ में सारे संसार की जन-संख्या २ अरब २५ करोड़ के लगभग थी। सन् १९५५ में एशियावालों की जन-संख्या एक अरब २८ करोड़ हो जायगी जो सारे संसार की जन-संख्या का ५२ $\frac{१}{२}$ प्रतिशत होगी।

* * *

भारतवर्ष की जन-संख्या सन् १९५५ ईसवी में १९४६ ई० से ४ करोड़ अधिक हो जायगी। चीन की १ करोड़ अधिक तथा रूस की जन-संख्या १९४६ की १९$\frac{१}{३}$ करोड़ से बढ़कर १९५५ ईसवी में २१ करोड़ हो जायगी।

* * *

एशिया के अन्य तमाम देशों की जन-संख्या सन् १९५५ ईसवी में अड़तीस करोड़ ६ लाख होगी जब कि सन् १९४६ ईसवी में चौंतीस करोड़ तीन लाख की जन-संख्या थी।

* * *

जापान की जन संख्या सन् १९५५ ईसवी में सन् १९४६ ईसवी की सात करोड़ ६ लाख की बढ़कर आठ करोड़ तीन लाख हो जायगी।

* * *

यूरोपीय देशों की जन-संख्या सन् १९४६ में रूस की जन-संख्या को छोड़कर अड़तीस करोड़ दो लाख थी। अब यह सन् १९५५ ईसवी में चालीस करोड़ चार लाख हो जायगी।

* * *

संयुक्तराज्य अमरीका को छोड़कर अमरीका के अन्य राष्ट्रों की जन-संख्या सन् १९४६ ईसवी की सोलह करोड़ एक लाख जन-संख्या से बढ़कर सन् १९५५ ईसवी में अठारह करोड़ नौ लाख हो जायगी। अफ्रीका में सन् १९४६ की सत्रह करोड़ तीन लाख जन-संख्या बढ़कर सन् १९५५ में उन्नीस करोड़ एक लाख हो जायगी।

* * *

ओसीनिया आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड इत्यादि एक करोड़ दो लाख से बढ़कर एक करोड़ तीन लाख हो जायँगे।

* * *

भूमध्य सागर के फ्रान्सीसी तट के लीवण्ट द्वीप में हेलियोपोलिस (सूर्य नगर) नंगों का एक छोटा शहर है। सन् १९३० में यह २०० नग्न जन-संख्यावाला एक छोटा सा कस्बा था। युद्धकाल में उसमें काफी बँगले और अन्य इमारतें बनीं परंतु वहाँ के आदिम निवासी नंगे ही रहा करते थे। वे फल और कच्ची तरकारियाँ खाकर प्रसन्न रहते थे। युद्ध के प्रारम्भ होते ही उस शहर में शरणार्थियों की भीड़ जमा होने लगी। अब वह शहर नये युग का एक शहर हो गया है। शैलश्रृंग के उस नैसर्गिक नगर में पुलिस ने उन नगों पर आक्रमण करके उन्हें पकड़ लिया और सजायें दीं। आज वह नग्न शहर स्वर्ग की छटा दिखला रहा है।

मनोरंजक चुटकुले

कलकत्ता के बाल्टी व्यवसायियों ने विज्ञापन द्वारा ऐलान किया है कि हम कंट्रोल दाम पर आवश्यकतानुसार बाल्टियाँ दे सकते हैं। यह शुभ समाचार इस समय मिलना चाहिए। स्वतंत्र भारत होते ही देश की सारी आवश्यक वस्तुओं का अभाव होता जा रहा है। बाल्टी-प्रदान के विज्ञापनदाता इस युग के रेकार्ड को तोड़कर नया रेकार्ड स्थापित कर रहे हैं। देश में यह क्या शुभ के लक्षण नहीं है।

* * *

बर्लिन में खाद्य वस्तुओं के अभाव पर एक रूसी पत्र ने लिखा है:—

"बर्लिननिवासियों को अन्य सभी देश सहायता कर रहे हैं। पर सबसे बड़ी सहायता भारतवर्ष की ओर के भेजी जाने की आशा है। यह सहायता भरे हुए जहाजों में बाइबिलों की गाँठें होंगी जिनको दुर्भिक्ष के समय ब्रिटेननिवासियों ने भारतीय जनता में बहुत पहले वितारित किया था।

* * *

यह समाचार मालूम हुआ है कि रूस के अन्दर प्रतिदस जापानी बन्दियों के पीछे एक जापानी अपने देश को लौट कर गया है। वह भी पक्का कम्युनिस्ट बनकर !

दूसरे नौ व्यक्तियों के सम्बन्ध में क्या कहा जा सकता है ? क्या वे कम्युनिस्ट नहीं बने अथवा ?

* * *

रायडोजेनियरो (ब्राजील) शहर के मध्य भाग बरगास स्क्वायर का 'भारत स्वतंत्रता दिवस' पर 'महात्मा गांधी स्क्वायर' नाम रक्खा गया है।

कायदे आजम जिन्ना ने महात्मा जी की मृत्यु को 'हिन्दू जाति की महान्क्षति' कहा है। पर क्या जिन्ना साहब को यह नहीं मालूम था कि ब्राजील हिन्दू उपनिवेश नहीं है ! जिन्ना साहब की डायरी में कहीं ब्राजील भी हिन्दू-उपनिवेश न मान लिया जाय ?

* * *

कराची के नाम-परिवर्तन की चर्चा पाकिस्तान - उपनिवेश में चल रही है। नया नाम जो सोचा जा रहा है वह जिन्नाबाद है। नाम तो सुन्दर है पाकिस्तान में जिन्न (भूत) आबाद हो रहा है। वहाँ के बच्चों को भय से फुरसत मिलेगी या नहीं ?

* * *

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने दक्षिण भारत के कैरेकुडी को जो धनी चेहियर वंश का केन्द्र है देखा तो आश्चर्य करने लगे। उन्होंने कहा कि यहाँ पर इतने धनी होने पर भी गन्दा पानी पीते हैं। पंडित जी ने शायद सोच रक्खा है कि साफ पानी भी धन की निशानी है ! रुपया धन दे जो, उनके पास है फिर साफ पानी की क्या आवश्यकता !

* * *

पीटसबर्ग की एक स्त्री श्रीमती राउश को उसके पति आठ वर्षों से प्रति बड़े दिन पर मारा-पीटा करते थे। जब उसके पति ने दूसरे दिनों मारने का कार्यक्रम बनाया तो श्रीमती जी ने अदालत में तलाक दे दिया।

आश्चर्य क्या ! बड़े दिन की
को श्रीमती राउश सहर्ष सहन
थीं पर दूसरे दिनों में उनके अन्दर न
की शक्ति रह गई और न
वह बल ! पर्व के अवसरों पर
में वह अद्भुत शक्ति रहती है तो
भी स्वर्ग समझती है।

* *

आधुनिक ढङ्ग की कलाई
घड़ी १८) रु० में

इस
की
आधुनिक
की है,
१३" जुवेल-जड़ित, मजबूत, खराऊ,
मशीन, ठीक-ठीक समय देनेवाली,
यस केस, गोल या वर्गाकार, कीमत
रु०, डाक-व्यय ॥।) बारह आने,
३ वर्ष। अपना नाम-पता अँगरेजी में
लिखें।

बृटानिया वाच कं० (डी०
पोस्ट बाक्स ११४०३, कलकत्ता

स्वांस दमा खांसी के रोगियो नोट
श्री चित्रकूट कामदगिर
जिसकी केवल एक ही
आश्विन सुदी शरद्पूर्णिमा ता०
को सेवन करने से पुरानी
दमा खाँसी सदैव के लिये नष्ट हो
पता—महात्मा तपसी बाबा
चित्रकूट, जिला बाँदा (यू० पी०)

तुलनात्मक भाषाशास्त्र
(भाषा-विज्ञान)
लेखक डा० मंगलदेव शास्त्री
एम० ए०, डी० फिल०

इसमें तुलनात्मक भाषाशास्त्र के
का प्रतिपादन तथा संसार की
भाषाओं के परस्पर सम्बन्ध की
सुबोध व्याख्या है। प्रोफेसर ए०
वुलनर, डा० भगवान्दास, म० म०
नाथ झा और श्री गोपीनाथ कविराज
लक्ष्मणस्वरूप और धीरेन्द्र वर्मा
मनीषियों ने और अन्य नामी
तथा पत्रों ने इसकी प्रशंसा की है।
संख्या पौने तीन सौ से ऊपर;
कागज, बढ़िया जिल्द; मूल्य केवल

मैनेजर, बुकडिपो,
इण्डियन प्रेस, लिमिटेड,

शुभ सूचना
समस्त हिन्दी-प्रेमियों,
तथा कृपालु ग्राहकों को यह
देते हुए हमें हर्ष हो रहा है
लाहौरवाली ब्रांच फिर से
अम्बाला कैंट (पूर्वी पञ्जाब)
लोगों की पूर्ववत् सेवा के उद्देश्य से
हो चुकी है।
मैनेजर
इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

बर्लिन-क्रान्ति में अमरीका, ब्रिटेन और सोवियट रूस

क्या सोवियट रूस अमरीका से बर्लिन की राजनीति को पलटने के लिये अंतर्राष्ट्रीय मोर्चा लेगा ?

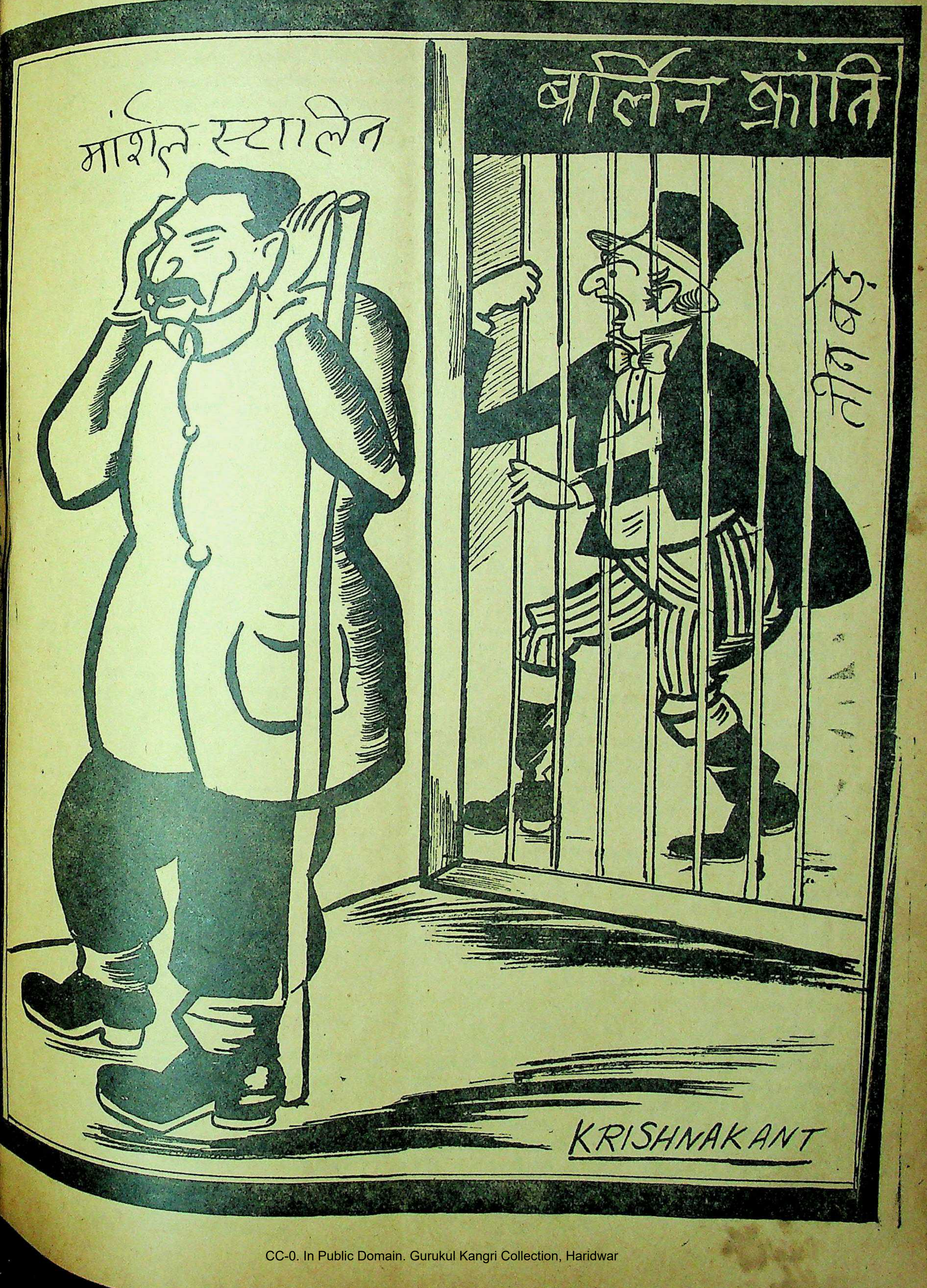
मार्शल स्टालिन
बर्लिन क्रांति
तीन बड़े
KRISHNAKANT

संवाददाताओं के पत्र

उदयपुर (डाक से) भारत-सरकार के पुनर्वास और सहायता-विभाग की ओर से उदयपुर में गोवर्धन विलास महल निराश्रित शरणार्थी महिलाओं और बालकों के लिए एक आश्रम गांधी-जयन्ती पर शुरू किया जा रहा है। जिसका उद्घाटन करना श्री माननीय शरणार्थी मंत्री श्री मोहनलाल सक्सेना ने आश्रम की संचालिका श्रीमती कमलाकुमारी श्रोत्रिय के निवेदन पर स्वीकार कर लिया है। आश्रम में प्रवेश चाहनेवाली महिलाएँ तथा बालक २५ सितम्बर तक उदयपुर पहुँच जायँ। प्रारंभ में १०००की संख्या में से २५० प्राणियों को ही लेने की व्यवस्था की गई है।

राजपूताने में अच्छी कार्यकर्त्रियाँ तैयार हों तथा कांग्रेस के अवसर पर अधिवेशन में पहुँचे अतः राजपूताना प्रांतीय कांग्रेस कार्य-समिति के महिला विभाग द्वारा एक मास का शिविर उदयपुर महिलामण्डल में श्रीमती कमलाकुमारी श्रोत्रिय के संयोजन में हो रहा है जिसका खर्च ४५) होगा। भारत-सरकार के शरणार्थी मंत्री माननीय श्री मोहनलाल सक्सेना उदयपुर में उक्त समय पधार रहे हैं। कृपा करके उन्होंने इसके उद्घाटन की स्वीकृति प्रदान की है। महिलाएँ ३० सितम्बर तक उदयपुर पहुँच जाँय।

पटना जिले में अभी गत माह में जल की लहरें हिलोरें लेती आईं और हजारों व्यक्तियों को गृहविहीन कर गईं। अभी उसके आतंक से लोग मुक्त भी न हो पाये थे कि पुनः विनाशकारी बाढ़ उपस्थित हो गई।

इधर गंगा की बाढ़ से भारत के अधिकांश शहर आक्रांत हैं ही, गंगा से सम्बन्धित अन्य नदियाँ भी अपना उग्र रूप दिखा रही हैं। जिले में जोरों का पानी बढ़ रहा है। सारी फसलें बर्बाद हो चुकी हैं। यह दूसरी फसल है। किसान अब चुपचाप घर बैठे हैं। प्रांतीय सहायता अभी अप्राप्त है। बिहार सरकार से निवेदन है कि वह अपने जनता-जनार्दन की ओर अविलंब ध्यान दें। अन्यथा भूखों मरने के सिवा अन्य कोई उपाय नहीं है।

सेवदही विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री मथुराप्रसादसिंह जी खेद के साथ सूचित करते हैं कि विद्यालय पुनः १ सप्ताह के लिए बन्द हो रहा है क्योंकि विद्यालय पानी से चारों ओर घिरा है। रहने की जगह का सर्वथा अभाव है।

* * *

उदयपुर राजस्थान विद्यापीठ राम टेकनिकल इन्स्टीट्यूट का उद्घाटन श्री भूरेलाल जी बया रसद-मन्त्री संयुक्तराजस्थान राज्य द्वारा किया गया। इस समय श्री एम० एन० के० को एक अभिनन्दन पत्र दिया गया। विद्यापीठ की इस प्रवृत्ति को पूर्ण रूप देने में श्लाघनीय प्रयत्न के लिये धन्यवाद दिया गया, तथा इस इन्स्टीट्यूट के साथ आपका नाम लगाना स्वीकृत किया गया। उद्घाटन का प्रारम्भ करते हुए श्री भूरेलाल जी बया रसद-मन्त्री ने कहा—

कवि, कलाकार, कलमकार और कारीगरों में अभूतपूर्व शक्ति होती है। वे चाहें तो राष्ट्र को स्वर्गभूमि बना सकते हैं और चाहें तो रौरव नरक। वे मनुष्य को देवता या दैत्य, जिस रूप में चाहें आकार दे सकते हैं। अतः विद्यापीठ के प्रो वाइस चान्सलर श्री नागर जी, जो राजस्थान के एक प्रमुख कलमकार हैं और जिनका दिल-दिमाग हमेशा नई नई कल्पनाएँ और सूझ पैदा करता है, इस दिशा में बहुत कुछ कर सकते हैं। आशा है वे अपने सहकारी बन्धुओं को अपनी जिम्मेवारी का खयाल अवश्य दिलयेंगे।

राजस्थान विद्यापीठ के इस सद्प्रयत्न के लिए मैं उसे धन्यवाद देता हूँ किन्तु धन्यवाद देने के साथ साथ यह आशा करना अनुचित नहीं होगा कि इस इन्स्टीट्यूट में पढ़नेवाले विद्यार्थियों को केवल भौतिक वैज्ञानिक उपकरणों की ही शिक्षा नहीं दी जायगी, बल्कि जीवन का टेकनिक भी सिखाया जायगा, जिसे भूल जाने से आज हमारे राष्ट्र की अवस्था इतनी शोचनीय हो गई है और दिन ब दिन नैतिक गिरावट की ओर बढ़ती जा रही है।

—संवाददाता

* * *

देवप्रयाग (डाक से) गढ़वाल की मोटरों का यातायात अब धीरे धीरे सुव्यवस्थित होने लगा है। टिहरी राज्य का यातायात भी शीघ्र सुव्यवस्थित होने की संभावना है।

मन्दिर बदरीनाथ के सेक्रेटरी श्री बगघाड़ी आजकल भूटान के अधिकारियों तथा सीमान्तवर्ती माड़ा गाँववालों के हुए झगड़े के कारण बढ़े हुए झगड़े को मिटाने के लिये उभयपक्ष में समझौता कराने के लिए सशस्त्र पुलिस के सहित थोलिंगमठ (भूटान) की ओर गये हैं।

ऊपर गढ़वाल में आजकल उत्तर गढ़वाल पृथक् जिला-निर्माण के संबन्ध में खूब जोरों से सभायें हो रही हैं जब कि वहाँ की जनसंख्या अपर्याप्त है।

टिहरी के अधिकारियों द्वारा ज्ञात हुआ है कि विधान सभा के चुनाव के संबंध में कुछनिर्वाचन क्षेत्रों पर झगड़ा होने से बायलेट बक्स भी कहीं कहीं नष्ट किये गये बतलाये जाते हैं। इस सम्बन्ध में थानीबड़या नामक स्थान पर तीन आदमी गिरफ्तार कर जमानत पर छोड़ दिये गये हैं। अन्य स्थानों की मार-पीट के संबंध में पूरी खबरें अभी प्राप्त हुई हैं। बाईं पोलिंग पर चुनाव ३० सितम्बर को होगा।

प्रजामंडल विलीनीकरण समिति, मालूम हुआ है कि विधान सभा के अधिवेशन पर भी सत्याग्रह करेगी।

टिहरी प्रजामंडल अब तक जिला गढ़वाल कांग्रेस कमेटी के रूप में परिवर्तित नहीं हुआ है।

—संवाददाता

* * *

दतिया की जनता मालवा-संघ में मिलने के लिये उत्सुक है। विभिन्न वर्गों के प्रमुख प्रतिनिधियों के हस्ताक्षरों से एक विचार-पत्र रियासती विभाग के विचारार्थ भेजा गया है, और देश के श्रेष्ठ नेताओं तथा प्रमुख पत्रों से इस विषय में यथोचित सहायता चाही गई है।

विचार-पत्र में बतलाया गया है कि दतिया राज्य की सीमायें कहीं भी विन्ध्यप्रदेश से नहीं मिलतीं, दूसरी ओर दतिया के आस-पास, माल और संघ का तानाबाना सा बिछा हुआ है। दतिया से विन्ध्यप्रदेश की राजधानी रीवाँ ३०० मील दूर है, और यात्रा में पैसे और समय की भारी हानि है। विन्ध्यप्रदेश में पक्षपात और मनमानी का बोलबाला है, जिसने जनता में सब कहीं असन्तोष भड़का दिया है।

दतिया राज्य सामाजिक और सांस्कृतिक, भौगोलिक और आर्थिक सभी प्रकार के बन्धनों से मध्यभारत संघ के साथ बिलकुल बँधा हुआ है। मध्यभारत और विन्ध्यप्रदेश दोनों की ही भलाई इस बात में है कि दतिया राज्य मध्यभारत में मिल जाय, क्योंकि तब दोनों के क्षेत्र सुडौल हो जायेंगे। कांग्रेस की नीति के अनुसार जनता को अपने भाग्य के निपटारे का पूर्ण अधिकार है, और दतिया की जनता जनमत के लिये भी प्रस्तुत है।

—संवाददाता

* * *

झूँझनूँ (डाक से) देहाती जनता के स्वास्थ्य की उन्नति अचूक नुस्खे और आयुर्वेदिक खोज के दिग्दर्शन के लिए जयपुर राज्य आयुर्वेद प्रगति संघ की ओर से शीघ्र ही श्री आचार्य नित्यानन्द सारस्वत के सम्पादकत्व में एक त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित होगी।

—संवाददाता

* * *

प्रतावगढ़ के हिन्दी-समिति कालाकाँकर की ओर से सम्मेलन-परीक्षा-मान्यता दिवस बड़े समारोह के साथ स्थानीय हनुमत हायर सेकेन्डरी स्कूल के मैदान में मनाया गया। भाषणों के पश्चात् एक प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हुआ, जिसमें अपनी सरकार ने सम्मेलन की विशारद एवं रत्न परीक्षाओं की मान्यता के लिये साग्रह प्रार्थना की गई। प्रस्ताव की एक एक प्रति प्रधान मंत्री, शिक्षा मंत्री एवं स्पीकर संयुक्त प्रान्त के पास भेज दी गई।

—संवाददाता

* * *

काशी सर्वोदय साहित्य उद्देश्य के अनुसार अब श्री गांधी युक्तप्रांत के सभी भण्डारों में गांधी के सुव्यवस्थित विक्रय के लिये पुस्त के संचालन को अपने हाथ में ले अतः इस कार्य को सफल एवं से चलाने के लिये उन सभी हिन्दी, तथा अँगरेजी के प्रकाशकों के सहयो आवश्यकता है, जो गांधी तथा गांधी धारा सम्बन्धित साहित्य का प्रकाशन हैं। जो प्रकाशक अपनी ऐसी पुस्तकें द्वारा बेचना चाहते हों, मंत्री, साहित्यसंघ काशी (बनारस) व्यवहार करें।

* *

फैजाबाद अवध कलामंडल वार्षिकोत्सव गत २८ तथा २९ जन्माष्टमी के दिनों में मनाया उत्सव पूर्ण रूप से सफल रहा। संगीत तथा काव्य की अपूर्व जनता स्नान करती रही। 'भारतीय न्त्रता संघर्ष', कालिदास का 'मेघदूत' नरोत्तम का 'सुदामा चरित्र' आदि नाट्य विशेष रूप से प्रशंसित हुए। मंडल के इस उत्सव में प्रयाग की लोकप्रिय कवयित्री श्रीमती कोकिल, श्री महेन्द्र तथा केशव जी लखनऊ के श्री लाल जी तथा श्रीवास्तव जी ने अपनी सुललित भी सुनाकर उत्सव की श्रीवृद्धि डा० रामकुमार वर्मा का सत्य' भी सुन्दर ढंग से अभिनीत हुआ श्री महादेवप्रसाद जी तथा श्री मुनीन्द्रनाथ पांडे जी के प्रबन्ध उत्सव बहुत सफल रहा। कलामंडल सभी कलाकार प्रयाग संगीत-सम्मेलन पुरस्कृत हो चुके हैं। उनमें से कुछ यह हैं:—कुमारी उमा वर्मा, कुमारी वर्मा, कुमारी विमलेश, श्रीमती और जगदीश सिनहा, श्याम बर्मा, और जगज्योति।

* *

'दमा' और पुरानी खाँसी के रोगियो—नोट कर

(अब चूके तो फिर साल भर तक पछताओगे)

हर साल की तरह से इस साल भी हमारी जगत् विख्यात महौषधि 'बूटी' के दो हजार पैकेट आश्रम में मुफ्त बाँटे जावेंगे, जो (शरद् पूर्णिमा) अक्टूबर को या फिर (कार्तिक पूर्णिमा) में एक ही खुराक खीर में खाने से सदा इस दुष्ट रोग से छुटकारा मिल जाता है। जो रोगी समय पर आश्रम में वे सदा की तरह २।=) रु० विज्ञापन, रजिस्ट्री आदि खर्च अभी से मनीआर्डर तुरन्त मँगा लें। देर करने पर फिर गत वर्ष की तरह सैकड़ों को निराश होना नोट कर लें कि वी० पी० किसी को नहीं भेजा जाता है। अमीर आदमी बाँटने के लिए कम से कम २५ आदमियों के लिए ४०) रु० भेजें।

पता—रायसाहब के० एल० शर्मा रईस (D) 'जगाधरी' [पूर्व पंजाब]

गुदड़ी के लाल

इस पुस्तक की कहानियाँ बहुत ही सरल और रोचक भाषा में लिखी गई हैं। इनको पढ़कर बच्चे बेहद खुश होते हैं। ऐसी पुस्तक अपने बच्चों को जरूर दीजिए। मूल्य ॥)

प्रतिमा

इस संग्रह में सुकवि राजाराम की एक से एक बढ़िया ५० इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा भाषा और क्या भाव सभी रंगीन आवरण, बढ़िया केवल १) एक रुपया।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

पटेल-अभिनंदन-ग्रंथ

नीति तथा सांस्कृतिक साहित्य का स्मृति-ग्रन्थ

तंत्र भारत के उपप्रधान मंत्री के लौहपुरुष माननीय सरदार ाई पटेल के तपस्वी, त्यागी, तथा शक्तिशाली जीवन से कौन नहीं है। भारतीय स्वतन्त्रता की सरदार पटेल का बलिदान राष्ट्र में स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

सरदार पटेल महात्मा गांधी के अनन्य र अनुयायी रहे हैं। जन-संगठित की ठोस सेवा में उन्होंने सदा ा लिया है। प्रचार-कार्य से ा अपने को अलग रखा। नीति से अधिक भारतीय था राष्ट्रीय उन्नति तथा विकास सदा से सक्रिय हाथ रहा है। है कि ऐसे त्यागी और नर-राष्ट्रीय सेवाओं तथा त्यागपूर्ण संबंध में किसी भी भाषा में साहित्य उपलब्ध नहीं है। स्वतंत्र प्रत्येक राष्ट्रप्रेमी इस कमी का र रहा है। समय की पुकार है की इस कमी की पूर्ति चाहिये। इसी दृष्टिकोण से भिनंदन-ग्रंथ' के प्रकाशन की नाई गई है।

मी ३१ अक्तूबर १९४८ को ल्लभभाई पटेल अपने जीवन वर्ष में पदार्पण कर रहे हैं। अवसर के उपलक्ष में सरदार अभिनंदन किया जाना चाहिए। भिनंदन-ग्रंथ' सरदार पटेल की जयंती के उपलक्ष में प्रकाशित है। इस ग्रंथ में सरदार पटेल का जीवन-चरित्र होगा। भारत के ताओं के द्वारा लिखे हुए सरदार जीवन के संबंध में संस्मरण होंगे। अधिवेशनों के अवसरों तथा सभाओं में दिये गये सरदार महत्त्वपूर्ण भाषणों का रोचक । इस ग्रंथ में 'सरदार पटेल में संस्कृतिक, राजनैतिक, रोचक साहित्य एकत्रित होगा। राजनीतिज्ञों के अतिरिक्त विदेशी के संदेश तथा सम्मतियाँ

'पटेल-अभिनन्दन ग्रंथ' को अधिक से अधिक ठोस, उपयुक्त, लोकप्रिय तथा श्रेष्ठ स्मृति-ग्रंथ बनाने के लिये एक संपादक मंडल का निर्माण हुआ है। संपादक-मंडल में श्री एस० के० पाटिल बंबई, श्री एस० सत्यनारायण मद्रास, श्री सत्यनारायण सिनहा नई दिल्ली, आचार्य जुगलकिशोर नई दिल्ली, श्रीमती रामेश्वरी नेहरू नई दिल्ली, श्री रफी अहमद किदवई नई दिल्ली, श्री जयनारायण व्यास जोधपुर, श्री सेठ गोविन्ददास जबलपुर, आचार्य श्रीमन्नारायण अग्रवाल वर्धा, आचार्य नरेन्द्रदेव, श्री सम्पूर्णानन्द, श्री ए० जी० खेर, श्री लालबहादुर शास्त्री, श्री केशवदेव मालवीय, श्री कमलापति त्रिपाठी, श्री कृष्णदत्त पालीवाल और श्री ज्योतिप्रसाद निर्मल, संपादक 'देशदूत' (संयोजक)

'पटेल अभिनन्दन-ग्रंथ' स्वतन्त्र भारत का उच्चकोटि का एक महत्त्वपूर्ण प्रकाशन, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक साहित्य का एक महान् स्मृति ग्रंथ होगा। सरदार पटेल के जीवन के संबन्ध में दर्जनों चित्र होंगे। कवर नयनाभिराम और सजिल्द। अवध पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ से १०) में प्राप्त हो सकेगा।

जानवरों की मज़ेदार कहानियाँ

मोर और कौआ, लोमड़ी और गधा, चालाक बुढ़िया, सोने की चिड़िया, सिंह और सियार आदि कहानियाँ पढ़िए और इनका चमत्कार देखिए। मोटे टाइपों में अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य ॥≶)

अपराजिता

यह श्रीयुत रामेश्वरप्रसाद शुक्ल एम० ए०, 'अञ्चल' की कतिपय सुन्दर कविताओं का संग्रह है। कविताएँ नवीन युग की नूतन सांस्कृतिक रुचि और प्रगति के साथ हैं। कवि 'अंचल' की रचनाओं का आनन्द प्राप्त करने के लिए अपराजित को अवश्य देखिए। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३) तीन रुपये।

परीदेश

यह पुस्तक ख़ास कर छोटे बच्चों के लिए है। इसमें ऐसी एक भी बात नहीं जिसको समझने के लिए माथापच्ची करनी पड़े। इसमें रोजमर्रा की बातें बड़े ही अच्छे ढंग से लिखी गई हैं। बड़े आकार की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों और फूल-पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है। मूल्य ॥)

आविष्कारों की कथा

मशीनें कैसे बनीं? तरह-तरह के औजार कैसे बनें? रेल, जहाज, तार और सिनेमा वगैरह कैसे बने? नई-नई चीज़ें बनाकर या नये काम करके क्या आप दुनिया में प्रसिद्ध हो सकते हैं? इन सारी बातों को जानने के लिए यह पुस्तक जरूर पढ़िए। मूल्य १)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

हमारे कुछ साहित्यिक ग्रन्थ

कामायनी-अनुशीलन

महाकवि 'प्रसाद' के महाकाव्य 'कामायनी' पर अनेक समीक्षकों ने विचार प्रकट किये हैं। इस पुस्तक में लेखक श्री रामलालसिंह एम० ए०, बी० टी०, साहित्यरत्न ने कामायनी के ऐतिहासिक तत्त्व, प्रकृति वर्णन, चरित्र-चित्रण, छन्द-विधान, भाषा और रस-संचार आदि पर बड़ी मार्मिकता से अनुशीलन किया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३) तीन रु०

कामायनी का विवेचन

प्रसिद्ध कवि प्रसाद जी के महाकाव्य 'कामायनी' को समझने में सहायता देने के लिए पंडित ब्रजभूषण शर्मा एम० ए० ने इस विवेचन को प्रस्तुत किया है। इसमें काव्य के तात्त्विक तथा मनोवैज्ञानिक सिद्धांत को स्पष्ट किया गया है। पुस्तक बड़े काम की है। मूल्य १) एक रु०।

तुलसी के चार दल

प्रथम और द्वितीय भाग

गोस्वामी तुलसीदास के रामलला नहछू, बरवै रामायण, पार्वती-मंगल तथा जानकी-मंगल का आलोचनात्मक परिचय तथा इन चारों ग्रन्थों की अध्ययनपूर्ण टीका। मूल्य प्रथम भाग का ३) तीन रुपये, द्वितीय भाग का २॥≶) दो रुपये ग्यारह आने।

साहित्य-प्रकाश

यह पुस्तक डा० रमाशंकर शुक्ल रसाल की लिखी है। इसमें साहित्यिक सिद्धान्तों का विवेचन किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

शरद् बाबू के उत्तमोत्तम उपन्यास

छुटकारा

एक निठल्ले और बेरोज़गार भाई की सहायता उपार्जनशील भाई को किस प्रकार करनी चाहिए, यह बात इस उपन्यास से भली भाँति सीखी जा सकती है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

नव-विधान

पाश्चात्य सभ्यता के अन्धानुकरण में पड़कर अत्यन्त अशान्तिमय जीवन व्यतीत करनेवाले पति का प्राचीन पद्धति से गृहकार्य का संचालन करनेवाली गृहिणी किस प्रकार सुखी करने में समर्थ हुई, यह बात इस उपन्यास में दरसाई गई है। मूल्य १॥=) एक रुपया दस आने।

मँझली दीदी

एक सौतेली बहन अपने माता-पिता से हीन भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार कर सकती है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर, बुकडिपो इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

अन्तू सरदार

भरोस सरदार के लड़की के सिवा कोई सन्तान न थी। और भरोस था ऐसा लठैत जिससे पुलिस भी डरती थी। एक जमींदार के यहाँ भरोस नौकर था। उसने अपनी बेटी को भी लाठी चलाना सिखला दिया था। इसका ब्याह जिस अनन्त (अन्तू) से किया गया था वह भरोस से सवाया था। एक झमेले में बड़ी मार-काट हुई। इसमें अन्तू की स्त्री भी मारी गई और भतीजा प्रताप पागल-सा हो गया। पुलिस ने अन्तू को गिरफ़ार कर सज़ा करा दी। इधर प्रताप भी चल बसा। यह कहानी है तो बड़ों के लिए भी रोचक, परन्तु बच्चों को बहुत पसन्द आवेगी। सुन्दर सरल भाषा, कई चित्र और कवर-पृष्ठ रंगीन। मूल्य केवल बारह आने।

मैनेजर—बुकडिपो इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

असमाप्त—कहानी

(पेज १० का शेष)

मैं तो चुप ही रहा। परन्तु मास्टर खुद चुप नहीं हुआ। वह कहने लगा—“गाँव के लोग हमें बदनाम करते हैं न। वह तो है ही। बेटा लोग सब निमकहराम हैं। हम सच्चे आदमी हैं न। वह देख, वह रजिस्ट्री पत्र हमने फेंक रखा है। पर क्यों जानते हो? वह बेटा, अविनाश के पास उस दिन चावल खरीदने गये थे। सुना कि बेटा रुपये का १० सेर भाव करके चावल बेच रहा है। हमें देखकर कहता है कि नहीं ठाकुर साहब चावल हम नहीं बेचेंगे। रुपया में १० सेर भी नहीं रुपये में आठ सेर। बहुत शोरगुल के बाद कहा—‘वही आठ ही सेर दो बाबा। घर में जो हमारी बीबी अदहन तैयार किये बैठी है।’ अविनाश ने गरदन हिलाकर कहा—‘नहीं साहब झूठमूठ बातें न बढ़ाओ, हम नहीं देंगे। अच्छा, रह जा तू अविनाश क्या तुम कभी हमारे पंजे में नहीं फँसोगे। मैंने सोचा था। बस आज पाया है। रजिस्ट्री चिट्ठी एक आई है, उसके नाम। आज दो दिन हो गए पर उसी जगह पड़ी है। रहने दो, वहीं पड़ी रहने दो।

मैंने कहा—“किन्तु यह तो तुम्हारा अन्याय है, मास्टर!”

“अन्याय?” कहकर मास्टर हमारे मुँह की ओर टकटकी बाँधकर देखने लगा फिर आगे कहा—“तब तुम लेखक किस काम के?”

क्या उत्तर देता, चुप ही रहा। परन्तु रजिस्ट्री चिट्ठी रोक रखना अन्याय है शायद यह बात मास्टर भूल न सका। और इसीलिये फिर उसने मुझसे प्रश्न किया—“अन्याय किस बात का, सुनौ तो! उसने जो कुछ किया, क्या वह अन्याय नहीं? और मेरा काम अन्याय है?”

क्या उत्तर देता कुछ समझ में नहीं आया। मेरे, अपनी चिट्ठी के साथ उठने का उपक्रम करते ही मास्टर ने पकड़ लिया—कहा—“यह सब नहीं चलेगा—तुम निर्णय करके जाओ।”

मैंने कहा—“अगर उसने चावल नहीं दिया तो इसमें तुम्हारा कोई नुकसान तो नहीं हुआ पर इसमें अगर उसे कुछ नुकसान हो जाय तो?”

मास्टर अन्यमनस्क हो जाने क्या सोच रहा था। पूछा, “किसमें नुकसान हो?”

“चिट्ठी रोक रखने की वजह से।”

“वह भी तो एक बात है!” कहकर मास्टर ने चुपचाप कई बार सिर हिलाते हुए एक लम्बी साँस लेकर कहा—“ठीक कहा, लेखक होना, कुछ बुद्धि का होना जरूरी होता है।’

दोनों ही चुप रहे।

सहसा मास्टर कह उठा—“अच्छा!” कहकर ही वह उठ खड़ा हुआ—“तुमने अपनी चिट्ठियाँ ले लीं?”

सिर हिलाकर मैं भी उठ खड़ा हुआ।

अविनाश की चिट्ठी हाथ में लेकर मास्टर ने कहा—“चलो न, तब खुद ही दे आवें। पर रोकने की क्या जरूरत है—रजिस्ट्री चिट्ठी में कुछ जरूरी भी तो हो सकता है। चल।

दोनों एक साथ ही बाहर निकल रहे थे कि दरवाजे के पास एक हट्टा-कट्टा लम्बा-चौड़ा सौंताल का छोकड़ा खड़ा था। सिर के घुँघराले बाल, गले में लाल कँठी की माला, हाथ में एक बिल्ली के बच्चे की तरह मटिए रंग का मृत खरगोश! सौंताल के छोकरे को देखते ही राखाल मास्टर का मुँह छोटा सा हो गया। चौखट के पास ही भभककर खड़ा हो गया। कहा, “क्या है,……मूँगरा……तू आज भी आया है……?” कहकर दाँत से ओंठ चबाकर मास्टर जाने क्या सोचने लगा।

मूँगरा ने कहा—“धत् तेरे की! रोज रोज पूसा नाई पूसा नाई, अन्तेतोबे तूँ बोलिस केने?”

“यह व्यापार हमने कुछ अनुमान कर लिया था? मूँगरा से पूछा—“कितना दाम? मूँगरा के दाम बढ़ाने के पहले ही मास्टर कह उठा—“तुम लोगे? आह, खरगोश का मांस है, समझे। बहुत सुन्दर है। मेरी पत्नी बहुत पसन्द करती है। दो तीन महीना से हमसे कहती हैं। परन्तु यह मूँगरा ऐसे बुरे दिन को आता कि हमारे हाथ में पैसा ही नहीं रहता। और पहले भी दो लाया था पर वही जो कहा—यह हतभागा ऐने दिन ही आता है……दाम? और ज्यादा कहाँ? दाम दो आना है?”

जेब से एक दुअन्नी निकाल कर मूँगरा के हाथ पर रखा और कहा—“दे, वह हमें दे?”

मूँगरा बहुत खुश हो गया और हाथ फैलाकर हँसकर दुअन्नी सँभाली।”

“ठहरो, ठहरो!” कहकर मास्टर घर के भीतर गया और झट एक लोहे का लम्बा छुरा लाकर कहा—“खूब अच्छी तरह इसको काटकर बोटी बना दे, मूँगरा! यह बाबू अभी यह सब नहीं जानता। समझे! वही, जिस तरह से तुम लोग बनाते हो! जाओ! पहले जाओ उस ताड़ के पेड़ से एक नीचेवाला पत्ता काट लाना फिर उसी पत्ता में ठीक से बाँधकर सब बाबू को दे देना। समझे! बाबू उसे हाथ में लटकाकर घर ले जाएँगे।”

सामने के ताड़ से एक पत्ता लाकर मूँगरा खरगोश काटने बैठ गया।

मास्टर फिर आज रजिस्ट्री चिट्ठी नहीं पहुँचा सका। कहा—“रहने दो, डाकिया के हाथ भेजने से भी काम हो जाएगा।” कहकर चौखट के ऊपर दबकर बैठ गया और कहा—“मामा के यहाँ जब रहता था तब प्रायः बंदूक लेकर शिकार करने जाता था।……जाता था तो जरूर, पर किसी दिन भी एक चिड़िया भी नहीं मार सके। गोली चलाता था, चलाते समय मन में कहता था ‘आह, क्यों मारें।’ और हाथ काँप जाता था और शिकार चूक जाता था। एक दिन एक कुत्ता मारा था। मामा को कबूतरों का शौक था। समझे?”

कहकर मास्टर ने आँख बन्द कर ली। बीते हुए ऐश्वर्य पूर्व दिनों की सुखद स्मृतियाँ शायद उसे याद आ गईं।

क्षण भर बाद आँखें खोलकर कहा—“घर में बहुत से कबूतर थे नाना प्रकार के कबूतर। एक दिन शायद एक कबूतर को बिल्ली ने पकड़ा था—कबूतर लँगड़ा कर चलता था और अच्छी तरह उड़ नहीं सकता था। पड़ोसी सुरेश बाबू के कुत्ते ने एक दिन आकर झप से उसके गरदन को पकड़कर जोर से झकझोरा—मार डाला। मैं क्रोध में जल उठा। बस, फौरन बन्दूक निकालकर गोली चलाया। धड़ाम् से जाकर कुत्ते के पेट में लगा। ओफ, कैसे काँय काँय करके वह रोने लगा। दौड़कर भाग जाने की वह कोशिश कर रहा था। फिर दूसरी गोली—बस, खतम! कुत्ता छटपटाते-छटपताते—गों गों करके हमारी आँख के सामने मर गया। ओह, वह कैसा भयानक दृश्य था!

कहकर मास्टर एक बार सिहर गया और दोनों हाथों से मुँह मूँदकर कहा—“बस, उस दिन जब से बन्दूक छोड़ दिया तो जिन्दगी में और किसी दिन……।

यह कहकर उसने जो मुँह ढाँक लिया तो बहुत देरी तक बात नहीं कर सका।

उसकी कहानी हमारी जेबों में ही अब तक घूम रही थी। मैंने समझा बस यही उपयुक्त समय है। बस, निकाल कर कहा—“तुम्हारी कहानी हमने थोड़ी सी लिखा है। सुनो!”

मास्टर ने मुँह पर से हाथ हटाया और कहा—“पढ़ो।”

मैंने पढ़ा।

थोड़ा सा सुनकर ही गरदन हिलाकर कहा—“नहीं, तुम लोग कहानी लिखना नहीं जानते हो।”

मैंने पूछा—“क्यों?”

कुछ देर चुप रहकर मास्टर बोला। “नहीं, दुख तो तुम्हें किसी दिन मिला ही नहीं। दुःख की बात तुम कैसे लिखोगे? मैं अगर लिखना जानता तो दिखा देता कि किस प्रकार लिखा जाता है।……अच्छा पढ़ो, अन्त तक तो सुनें!”

अन्त तक सुनकर न जाने क्या कहने जा रहा था कि उसकी नजर मूँगरा पर अटक गई। मांस कूटकर वह उसके दो हिस्से कर रहा था। मास्टर ने पूछा—“अरे वह, क्यों? दो जगह क्यों?”

मैंने कहा—“मैंने कहा है। एक तुम्हारा एक हमारा।”

“हमारे लिए है, हमारा!” आश्चर्य से पूछकर कहा उसने हमारी ओर देख कर कहा—“मैंने कहा कि हमारे पास पैसा नहीं हैं...तुम तो अच्छे बेवकूफ हो। चार पैसा भी हमें कहाँ से मिले?”

मैंने कहा—“पैसा तुम्हें नहीं देना होगा।”

करुण दृष्टि से एक बार मास्टर ने ताका फिर एक दीर्घ स्वाँस फेंककर कहा—“चार पैसा खर्च करने की भी क्षमता आज हमारी नहीं है।” कहते कहते उसकी दोनों आखें आँसू से भर गई। कहा—“ठहरो! उन्हें दिखा लायें।” कहकर एक भाग दोनों हाथ में उठाकर वह भीतर जाकर चिल्लाने लगा—“अरे ओ जी, ओ जी सुनती हो?”

उसी अवसर पर मैं अपना हिस्सा लेकर वहाँ से भागा।

यथासम्भव तेज चलकर काफी रास्ता आ चुके थे कि एकाएक पीछे से पुकारने की आवाज [illegible] और घूरकर देखा—राखाल मास्टर हमारे पीछे आ रहा था।

सारी राह दौड़ने के कारण रहा था—कहा, “भाग क्यों आये? तुमको एक बार लौटना होगा।” उसने हमारे हाथों को पकड़कर

मैंने कहा—“मैं अब नहीं रात हो जाएगी।”

परन्तु मास्टर ने किसी तरह भी छोड़ा। कहा, “तुमको जरूर होगा।”

बात कुछ समझ में नहीं बाध्य होकर लौटना ही पड़ा। कर वह हमें पोस्टआफिस के भीतर जाकर गोहराया—“पकड़ लाया हूँ, सुनती हो? पकड़ लाया हूँ, श्रीमती! कहाँ गईं।”

सिर पर घूँघट खींचकर आ खड़ी हुईं। एक हाथ में एक पानी और एक हाथ में छोटी से में चार बताशे।

मास्टर ने कहा—“लो थोड़ा पी लो।”

शायद उसे दुःख होगा, यही बताशों को खाकर मैंने पानी पी लि

मास्टर ने पुकारकर कहा—पान कहाँ है?” कहकर खुद उसने भूल सँभालकर कहा—“ओ पान, तो नहीं होगा। यहाँ तो हम दोनों नहीं खाते! अच्छा ठहरो देखें!”

कहकर न जाने क्या लाने को भीतर जा ही रहा था पर सका, पीतल की एक रकाबी में हुए सुपारी की छाल और हँसते हँसते उसकी स्त्री ने किया।

रकाबी पर की सुपारी लेते बार कनखियों से देखा—“खिंचे नयन, चेहरे पर क्षीण म्लान मुस्का वर्ण, कृशकाय शरीर, युवती, सुन्दरी कहने में भ्रम होता है, एक दिन उसके पास था— सन्देह ही नहीं। दुःख और दरि कारण वह सौंदर्य म्लान हो गया

मैंने सोचा—कहानी पर ‘कुत्सित’ लिखा है, वह काट दूँगी। “नमस्कार! अब आज आज्ञा दीजि

मास्टर-गृहिणी ने प्रति नमस्कार किया, कुछ बोली भी नहीं, हँसी से उत्तर दिया—

यह लड़की न जाने कैसे जीवन दुर्वाह कर सकती है—यही हुए मैं बाहर निकला। मास्टर भी साथ चलने लगा।

कुछ दूर आकर मास्टर ने हमारे कंधे पर हाथ रखकर “देखा?”

“क्या देखा, यह प्रश्न आवश्यकता नहीं समझी। फिर कहा—“हाँ।”

मास्टर ने कहा— कहानी में वह जो एक जगह लि वह हमें प्यार नहीं करती— देना।”

“निश्चय!” मैंने कहा। सोचा, कहानी पूरी नई लिखूँगा।

*

तिहासिक
ौतिकवाद

लेखक, भूतपूर्व काकोरी-कैदी
श्री मन्मथनाथ गुप्त और श्री रमेन्द्र वर्मा
लगभग ५०० पृष्ठों के सजिल्द ग्रन्थ का
मूल्य केवल ६) रुपये।

द में ऐतिहासिक भौतिकवाद की गहनता को सरलतापूर्वक समझने इस ग्रन्थ की उपयोगिता अद्वितीय है। समाजवाद समझनेवालों के लिए इसका अध्ययन अपरिहार्य है।

नेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

'कथा-साहित्य की सबसे अच्छी प्रतिनिधि पत्रिका'

मंजरी

ाकारों की सरस कहानियाँ और कथा-साहित्य पर गम्भीर तथा त्मक लेख आकर्षक मुद्रण-विन्यास के साथ प्रस्तुत करनेवाली 'मंजरी' सांस्कृतिक मनोरंजन की एकमात्र कहानी-पत्रिका है।

एक सम्मति

र शिवपूजन सहाय, भूतपूर्व सम्पादक 'हिमालय'—'मंजरी' के तीन अंक तीनों को देखकर यही धारणा हुई कि कथा-साहित्य की सबसे अच्छी पति- 'मंजरी' ही है। छपाई सफाई और सजावट के लिए तो इंडियन प्रेस का ही प्रमाण है, सम्पादन-कौशल में आपने भी अपनी कला का आकर्षक है। साज-सज्जा और सामग्री-संकलन में सुरुचि का समावेश सर्वथा । भिन्न भाषाओं की कहानियाँ देकर आप हिन्दी पाठकों को काफी तृप्त हुत से पाठकों ने यह मत व्यक्त किया है कि आपकी पत्रिका ही सब त्रिकाओं में श्रेष्ठ एवं उपयोगी है। मैं आपकी आरम्भिक सफलता पर -शत बधाइयाँ देता हूँ।

× × ×

री' पढ़कर आप भी अपना और अपने परिवार का सांस्कृतिक मनोरंजन कीजिए।

६) छः रुपये
प्रति अङ्क आठ आने

प्रकाशक :
इंडियन प्रेस लि०, प्रयाग

हमारे जानवर

लेखक, कुँवर सुरेशसिंह

१०० जानवरों का सचित्र रोचक वर्णन

हिन्दी में अपने विषय की पहली पुस्तक है। हम अपने पास-पड़ोस के पालतू रूर पहचानते हैं। उनकी आदतें और स्वभाव के बारे में भी थोड़ा बहुत किन इतने ही से क्या हम कह सकते हैं कि हमें सारे पशु-जगत् की जान- है!

ही क्यों, हमें चिड़ियाखाना देखने का भी मौका मिला होगा। लेकिन री निगाह से हमने जानवरों को देखा होगा उनसे भी हम किसी पर दिला सकते कि हमें पशुसमाज का काफी ज्ञान है।

दशा में अपने देश के जंगल, पहाड़, बस्तियाँ और मैदानों में फैले हुए के बारे में तरह तरह की मनोरञ्जक बातें जानने के लिए एक ही उपाय "हमारे जानवर" की एक प्रति आज ही मँगावें। आपको प्रायः सभी सचित्र वर्णन इस पुस्तक में मिलेगा। मूल्य ४)

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

लूट ? अवसर मत चूकिये आज ही मँगाइये
४) रु० में सात नई पुस्तकें

य शास्त्र—दाम्पत्य जीवन को सुखी, सन्तुष्ट बनानेवाली मू० २) (२) द्या—वशीकरण मन्त्रों तथा जादू के खेलों का संग्रह। (३) इँग्लिश) अँगरेजी लिखना-पढ़ना और बोलना सीखिये। मू० ।।।) (४) हुस्न र्ट पेपर पर छपी हुई बढ़िया रंगीन चित्रावली मू० १।) (५) व्योपार की) (६) संगीत ढोल-गान विद्या तथा छन्द विद्या सिखानेवाली नई पुस्तक) ज्योतिषसार मू० १)

त पुस्तकों के सेट का मूल्य ४) पोस्टेज पैकिंग ।।)

शोक ट्रेडिंग कं० (न्योसेट सैकरना नं० ४, अलीगढ़)

मूल्य की सूचना

WOODWARD'S
"GRIPE WATER"

वूडवर्ड्स ग्राइप वाटर का सही फुटकर दाम
निम्नप्रकार है:

प्रति शीशी: २ रुपये
(इसके अतिरिक्त लोकल टैक्सेस जहाँ लागू हों)

अधिक दाम मत दें

जब आप
वूडवर्ड्स
ग्राइपवाटर खरीदें

तब हर शीशीपर
इस ट्रेडमार्क का
अवलोकन करें

नक़ली मालसे सावधान रहिये!

WW. L-111 HI
W. WOODWARD LTD., LONDON, ENGLAND

कोक शास्त्र

इसमें स्त्री-पुरुषों के अद्भुत ८४ आसनों की जोड़दार फोटो, ब्लाक की रङ्गीन तसवीरें, यौवन के आनन्द प्राप्त करने के पोशीदा तरीके, प्राचीन जमाने के ऐसे ऐसे भेद जिनका लिखना सभ्यता के विरुद्ध है। जो शादीशुदा न हो उसको यह पुस्तक नहीं दी जाती। मूल्य २।।) रुपया, डाक-खर्च माफ।

खुफिया तसवीरों के कार्ड
२५ कार्ड का सेट २।।) रुपये में

पता—यलो ग्रीन एन्ड को० (D D A) 16, मेरीना अरकेड नई दिल्ली
Yellow Green & Co., (D D A) 16, Marina Arcada, New Delhi.

धोने के लिये
५०१ साबुन
दी टाटा आयल मिल्स कं० लिमिटेड

फ़िल्मी दुनिया मुफ्त

सिनेमा का भेद बतानेवाली पुस्तक "फ़िल्मी दुनिया" अपना और मित्रों के पूरे पते लिखकर मुफ्त मँगाइये।

पता—मधुर मन्दिर, हाथरस, यू० पी०

नक्कालों से सावधान! श्री चित्रकूट में!!

१०० वर्ष से जगत्प्रसिद्ध असली स्वाँस (दमा) की अचूक दवा प्रसिद्ध महात्मा की बूटी ता० १८-१०-४८ आश्विन सुदी शरद् पूर्णिमा को एक मात्रा घर बैठे सेवन करने से नया व पुराना स्वाँस (दमा) जड़ से नष्ट हो जाता है।

पता—महात्मा सेवा-मंडल
पो० चित्रकूट, (बाँदा) यू० पी०

मुफ्त

युवको! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीवन फीका हो चुका हो तो भारत भर में सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त रोग विशेषज्ञ कविराज ब्रह्मस्वरूप बी० ए० (D.A.) फतेहपुरी देहली से सलाह मशविरा मुफ्त करके अपना जीवन सुधार लें।

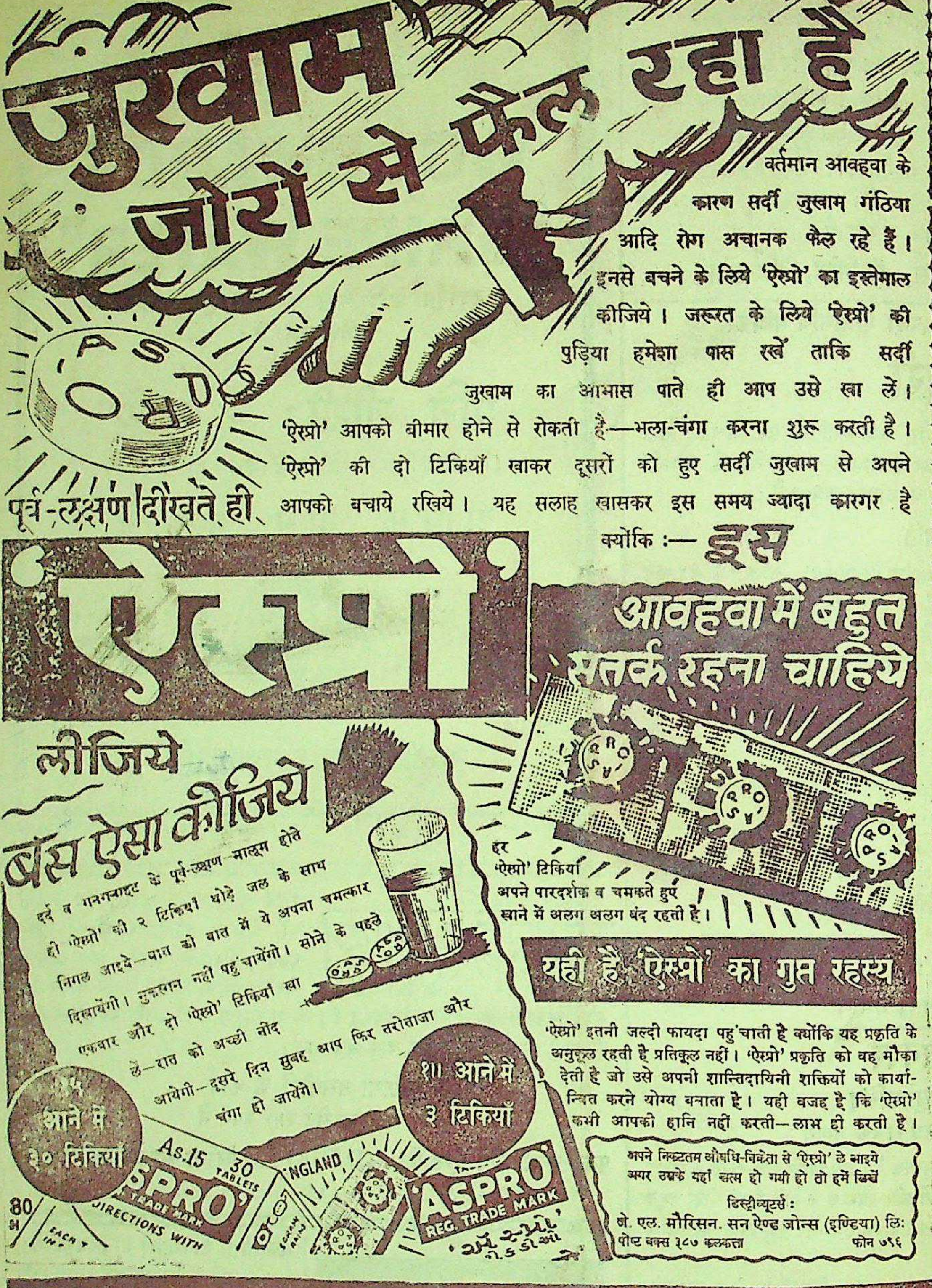

जुखाम जोरों से फैल रहा है

वर्तमान आवहवा के कारण सर्दी जुखाम गंठिया आदि रोग अचानक फैल रहे हैं। इनसे बचने के लिये 'ऐस्प्रो' का इस्तेमाल कीजिये। जरूरत के लिये 'ऐस्प्रो' की पुड़िया हमेशा पास रखें ताकि सर्दी जुखाम का आभास पाते ही आप उसे खा लें। 'ऐस्प्रो' आपको बीमार होने से रोकती है—भला-चंगा करना शुरू करती है। 'ऐस्प्रो' की दो टिकियाँ खाकर दूसरों को हुए सर्दी जुखाम से अपने आपको बचाये रखिये। यह सलाह खासकर इस समय ज्यादा कारगर है क्योंकि :— इस

आवहवा में बहुत सतर्क रहना चाहिये

पूर्व-लक्षण दीखते ही

'ऐस्प्रो' लीजिये

बस ऐसा कीजिये

दर्द व गनगनाहट के पूर्व-लक्षण मालूम होते ही 'ऐस्प्रो' की २ टिकियाँ थोड़े जल के साथ निगल जाइये—पल की बात में ये अपना चमत्कार दिखायेंगी। नुकसान नहीं पहुंचायेंगी। सोने के पहले एकबार और दो 'ऐस्प्रो' टिकियाँ खा लें—रात को अच्छी नींद आयेगी—दूसरे दिन सुबह आप फिर तरोताजा और चंगा हो जायेंगे।

हर 'ऐस्प्रो' टिकियाँ अपने पारदर्शक व चमकते हुए खाने में अलग अलग बंद रहती है।

यही है 'ऐस्प्रो' का गुप्त रहस्य

'ऐस्प्रो' इतनी जल्दी फायदा पहुंचाती है क्योंकि यह प्रकृति के अनुकूल रहती है प्रतिकूल नहीं। 'ऐस्प्रो' प्रकृति को वह मौका देती है जो उसे अपनी शान्तिदायिनी शक्तियों को कार्यान्वित करने योग्य बनाता है। यही वजह है कि 'ऐस्प्रो' कभी आपकी हानि नहीं करती—लाभ ही करती है।

आने में ३० टिकियाँ

१॥ आने में ३ टिकियाँ

अपने निकटतम औषधि-विक्रेता से 'ऐस्प्रो' ले आइये
अगर उसके यहाँ खत्म हो गयी हो तो हमें लिखें

डिस्ट्रीब्यूटर्स :
जे. एल. मौरिसन. सन ऐण्ड जोन्स (इण्डिया) लि:
पोष्ट बक्स ३८७ कलकत्ता फोन ७९६

---

५००) इनाम
आश्चर्यजनक
जादू की अँगूठी

यह अँगूठी जादू और
मदद से बनाई गई है।
कार्य कर दिखाती है। जो
करेगा, हर एक कार्य में
चाहे वह कितना ही कठिन और
के बाहर का भी क्यों न हो।
संकटों तथा बीमारियों से
अशुभ ग्रहयोग का कोई बुरा
पर न पड़ेगा, यदि आप
लिए धारण करें। यह
करनेवाला व्यक्ति जब किसी
वह आपसे मिलने के
इससे आप प्रेम, मुकद्दमा,
में सफल होंगे और कार्य
थोड़े में यह अँगूठी आपके
का काम देगी! एक बार
और उसके अद्भुत परिणामों
ही रात में देख लीजिये।

मूल्य फी अंगूठी २) रु०
तीन अंगूठियों के लिए
पैकिंग और डाक खर्च

श्री शंकर भण्ड
पो० बाक्स २४३,

विवाहित जीवन
को सुखमय बनानेवाली

काम शास्त्र (सचित्र)
चौरासी आसन (सचित्र)
१०० चुम्बन (सचित्र)
सुहागरात (सचित्र)
चारों पुस्तकें केवल ३॥)

ग्लोब ट्रेडर्स (९०१),

चित्रकूट की विश्वविख्यात
की विन्ध्याचल
केवल एक ही मात्रा
शरद-पूर्णिमा ता० १८-१०-
को सेवन करने से नया
दमा, खांसी सदैव के लिये
पता—श्री महात्मा
सन्तोषी आश्रम, चित्रकूट

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=), डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

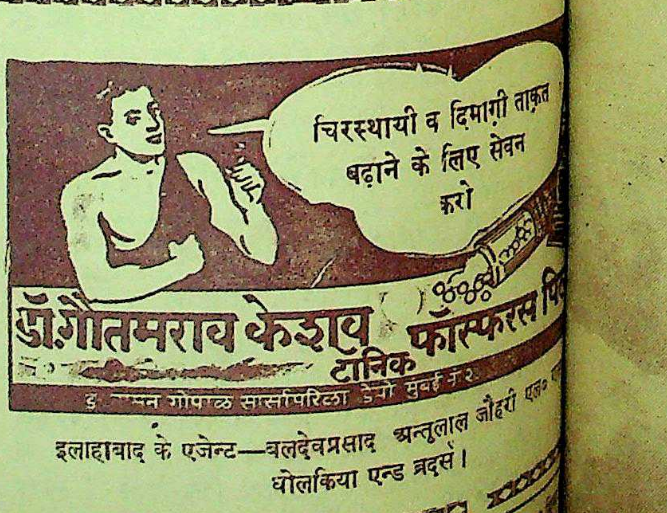

चिरस्थायी व दिमाग़ी ताक़त बढ़ाने के लिए सेवन करो

डॉ. गौतमराव केशव फॉस्फरस पि
टानिक

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी एण्ड
धोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

३ आक्टोबर, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 3rd October, 1948

गुरुकुल कांग.

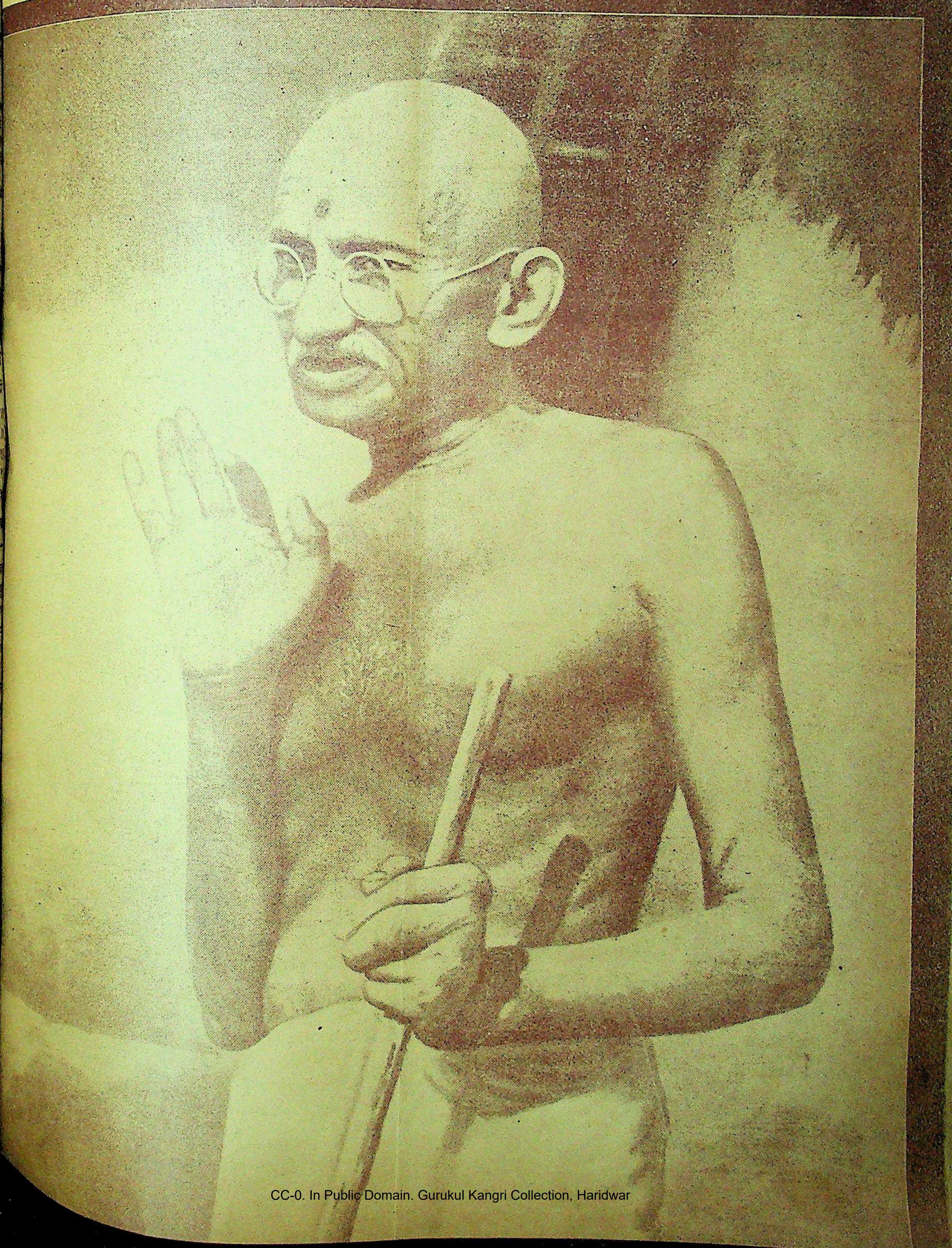

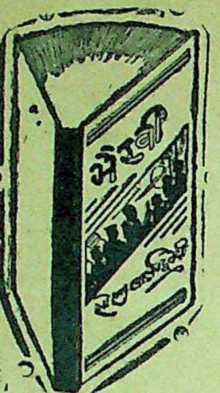

श्री सोहनलाल द्विवेदी
लिखित
काव्य कृतियों
के
नवीन संस्करण

भैरवी

गांधी युग का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। महामना मालवीयजी के शब्दों में 'ऐसी कविता का प्रचार देश के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक होना चाहिए।' मूल्य २॥=)

वासवदत्ता

बाबू मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं 'इस रचना से मैं बहुत प्रभावित हुआ।' स्वच्छन्दतापूर्वक जिस प्रौढ़ता की ओर द्विवेदीजी अग्रसर हो रहे हैं, जान पड़ता है, स्वयं वह भी उन्हें वरण करने के लिए आतुर हो रही है। 'वासवदत्ता' के प्रकाशन ने हिन्दी-साहित्य में एक नई क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। यह स्वयं पढ़कर निर्णय कीजिए। मूल्य १॥)

कुणाल

महापंडित राहुल सांकृत्यायन की सम्मति में—अशोक, तिष्यरक्षिता और कुणाल खास तौर से—'कुणाल' के चरित्र-चित्रण में कवि ने कमाल किया है। शब्द-सौकुमार्य और भावोत्कर्ष के साथ हो नपे तुले शब्दों के प्रयोग ने काव्य को बहुत ऊँचा उठाया है। विशेष संस्करण मूल्य २॥)

पूजागीत

राष्ट्रीय चेतना को काव्य का सच्चा स्वरूप देने के लिए द्विवेदी जी को प्रचुर सम्मान तथा लोकप्रियता प्राप्त हुई है। ये पूजा-गीत कवि के गौरव के अनुरूप ही हैं। मूल्य २)

विषपान

सुप्रसिद्ध पौराणिक कथा का सरल तथा सबल खंड-काव्य है। भाषा का प्रवाह, प्रसन्न शैली तथा कथा के मार्मिक घटना-क्रम की वर्णना ने इसे बड़ा ही हृदयग्राही बना दिया है। मूल्य १)

झरना
शिशुभारती
बाँसुरी

द्विवेदीजी पहले बालकों के कवि हैं पीछे राष्ट्र के। पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा माननीय सम्पूर्णानन्दजी ने इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा की है। 'अमृत बाज़ार पत्रिका' की सम्मति में—जिस प्रकार की शिक्षा बालकों को देने के लिए हमारे नेता वर्षों से प्रयत्न कर रहे हैं, इन पुस्तकों में उसी प्रकार का साहित्य है। प्रत्येक पुस्तक में कई रङ्गीन तथा अनेक सादे चित्र हैं। प्रत्येक पुस्तक का मूल्य १)।

पूरे सेट का मूल्य
१२ रु०

पता—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

स्वादिष्ट है बढ़िया है!

Cadbury's
BOURN-VITA
THE IDEAL FOOD DRINK
MADE BY CADBURYS SPECIALISTS IN FOOD DRINKS FOR 100 YEARS
1 LB.NET

और शक्ति से भरा हुवा-
खाद्योज पैदा करने वाला

'बोर्न-विटा' की चाक्लेटवाली मजेदार महक को छोटे और बड़े बराबर पसन्द करते हैं। परन्तु यह गुण इसके केल्सेयम और खाद्योजों का है जो अच्छी हड्डी बनाते हैं और आपको नई तन्दुरुस्ती और शक्ति का खजाना बख्शते हैं।

केडबरी का
बोर्न-विटा
केल्सेयम और खाद्योज से भरपूर

K. B.

ESTD 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेंट रिकगनाइजड A

सिन्हा होमियो मेडिकल कॉ
—पो० लहेरियासराय, बिहार—

आज हिन्दी उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के H.M. परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्सन सहित फीस H.L.M.S. १०), H.M.D.S. २५)। पुस्तकें—ग्र० पारिवारिक १॥). बायोकेमिक मेडिका १॥) मेडिकल डिक्शनरी २) आर्गेनन १॥) फार्माकोपिया सीम्पटम्स १॥) कुल किताबें १०) में एक साथ दी जायँगी डा० घरेलू दवाइयाँ ३०—=)॥ २००—≡) ड्राम, फी औंस ॥), शीशी का ८)। सुगर और गोली २।) फी पाउण्ड।

(१) बृ० इन्जेक्सन चिकित्सा ३)। बृ० ग्र० पारिवारिक चिकित्सा

नोट :—बृहत् सूची मुफ्त—सचित्र मेडिकल मैगजीन मासिक ॥)

संरक्षक—राय साहब डा० यदुवीरसिंह एम० डी० एच० (U.S.

देशदूत में विज्ञापन दीजि

देशदूत

११, संख्या ५] रविवार, ३ आक्टोबर, १९४८

नीराजना

लेखक श्री सोहनलाल द्विवेदीए म० ए०

देवता, नव राष्ट्र के नव राष्ट्र की नव अर्चना लो
विश्ववंद्य वरेण्य बापू, विश्व की नव वंदना लो
पा तुम्हारा स्नेह धागा,
यह अभागा देश जागा,
जागरण के देवता, नव जागरण की गर्जना लो
देवता, नव राष्ट्र के नव राष्ट्र की नव अर्चना लो
यह तुम्हारा ही तपोव्रत,
हुआ आज स्वतन्त्र भारत,
कोटि शीशों की अयाचित, नव समर्पण साधना लो
देवता, नव राष्ट्र के नव राष्ट्र की नव अर्चना लो
हे अहिंसा के पुजारी,
प्रणति हो कैसे तुम्हारी,
मौन प्राणों की निरन्तर, स्नेहमय नीराजना लो
देवता, नव राष्ट्र के नव राष्ट्र की नव अर्चना लो
लहरता नभ में तिरंगा,
लहरती है मुक्ति गंगा,
हे भगीरथ, भक्ति भागीरथी की आराधना लो
देवता, नव राष्ट्र के नव राष्ट्र की नव अर्चना लो

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

की सुरक्षा-परिषद् इस वक्त न मैं तेरा मेहमान' की कहावत र चरितार्थ कर रही है। हैदरा- ज़ाम साहब ने सुरक्षा-परिषद् को यह तार दिया कि हैदरा- न पर कुछ भी वाद-विवाद चाहिये। अपने राम की समझ हीं खत्म हो जाना चाहिये क्षा-परिषद् के प्रेसीडेण्ट महो- ग्रुप के आदमी जान हैदराबाद के मामले को लेकर टाल करने की फिराक में हैं। है कि हैदराबाद देखते ही हो गया। यूरोप के वाचाल की आशाओं पर पानी फिर ते तो बहुत थे कि हैदरा- को लेकर भारतीय संघ के ई नाटक प्रारम्भ किया अब पछताये होता का जब ईं खेत।"

* *

र के लायकअली मंत्रिमंडल कर ऐसी लूट-पाट मचाई ता है। जनता के धन पर ों ने खूब गुलछर्रे उड़ाये। विलायती बैंकों में जमाकर करोड़ों रुपये पाकिस्तान को लाखों रुपये के हथियार और लाखों रुपये भारतीय संघ र करने में फूँक दिये गये। राबाद पर भारतीयसंघ का गया है और मियाँ लायक यों का भंडाफोड़ शुरू हो अपने राम की समझ में नहीं रत-सरकार इस प्रकार से करोड़ों रुपये की वसूल- गी? मियाँ लायक के पास है न जायदाद, सिवा इसके मुकदमा चलाया जाय और सरकार उनके खाने पीने न्ध करे। गनीमत हुई कि वहाँ की जनता मीर खुराफातों के चंगुल से की इतनी ही बड़ी कृपा ने भारत के स्वतन्त्रता प्राप्त भारत को सिवा देने के कहीं कोई सूरत नहीं दिखलाई री में पाकिस्तान के करोड़ों रुपया पाकिस्तान गया। पंजाब के हजारों सिक्ख और पंजाबी अपनी लाखों की सम्पत्ति पाकिस्तान को भेंट चढ़ाकर दिल्ली में शरणार्थी बनकर आ बसे और मुद्रा-विनिमय के सिलसिले में सर षणमुखम् चेट्टी ने करोड़ों रुपया गोलगप्पे में डाल दिये। इसलिये हैदराबाद का जो रुपया फूँका गया, भारत-सरकार को समझ लेना चाहिये कि वह या तो ब्याज में गया या बट्टेखाते में। कहने का मतलब यह है कि रुपया अब मिलनेवाला नहीं है। "बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि लेइ।"

* * *

इस प्रकार से १५ अगस्त सन् १९४७ ईसवी से आज तक करोड़ों रुपये भारतीय संघ के गोल-मोल हो गये। इस समय भी भारत-सरकार का वैदेशिक विभाग करोड़ों रुपये अपने विदेशी राजदूतों के लिए 'प्रेस्टिज' के नाम पर पानी की तरह बहा रहा है। काश्मीर में शेख अब्दुल्ला की कृपा से काश्मीर की रक्षा के लाखों रुपये प्रतिदिन खर्च किये जा रहे हैं। सीमाप्रांत के खानाबदोश फिर भी अपनी खुराफात से बाज नहीं आ रहे हैं। इसके सिवा करोड़ों रुपये स्वतन्त्रता प्राप्त होने के बाद घर बनाने और ठीक करने में खर्च हुए हैं और हो रहे हैं। अपने राम का कहना तो सिर्फ यह है कि राष्ट्र की सम्पत्ति पानी की तरह बहाई जा रही है। लाखों रुपये विदेशी विशेषज्ञों को बाँटे जा रहे हैं जो स्वतन्त्र भारत की भावी पीढ़ी के लिए सपनों की भाँति योजनाएं तैयार कर रहे हैं। यह तो हुई खर्च की बातें; आमदनी का न कोई ठौर है न ठिकाना। राष्ट्र की आमदनी का सबसे बड़ा जरिया खेती का कार्य और कारखाने हैं किन्तु आजकल इनकी कैसी दुर्दशा है? आँखवालों के लिये इसे देख लेना कुछ भी कठिन नहीं है। इसलिये सिवा टैक्स के, आमदनी का जरिया और हो ही क्या सकता है? ऐसी दशा में यदि डेढ़ सेर का गेहूँ और सवा सेर का चावल जनता को खरीदना पड़ रहा है तो क्या बेजा है? करोड़ों रुपये डूब गये और करोड़ों पास-पड़ोसी खा गये। आखिर भारत सरकार क्या करे? कागज की परेशानी यों ही है, नोटों की छपाई की भी एक सीमा होती है। जान पड़ता है स्वतन्त्र भारत पर कुछ शनि की दृष्टि पड़ रही है इसीलिए खर्चे का जोर अपरम्पार है। हाँ अपनी प्रतिष्ठा वह अवश्य कायम किये हुए है।

* * *

इस समय संयुक्तराष्ट्र-संघ में अच्छी लतियाउज प्रारम्भ हो गई है। अमरीका और ब्रिटेन जर्मनी के मामले को लेकर रूस के पीछे हाथ धोकर पड़ गये हैं। ब्रिटेन के वैदेशिक मंत्री बेविन का कहना है कि अगर संसार में तीसरा महायुद्ध हुआ तो उसकी जिम्मेदारी रूस पर ही आयेगी। अपने राम की समझ में यह आता है कि यदि तीसरा महायुद्ध हुआ तो इसकी जिम्मेदारी अमरीका, ब्रिटेन और रूस तीनों पर आयेगी क्योंकि तीनों राष्ट्र अपने स्वार्थों के लिए प्रभुत्व, शक्ति और हथियारों को बढ़ाने के लिये संयुक्तराष्ट्र-संघ में जूझ रहे हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है कि "स्वारथ लाइ न करत कुकरम्।"

* * *

आगामी ३१ आक्टोबर को 'देशदूत' का

'दीपावली विशेषांक'

बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित होने जा रहा है

पिछले वर्षों की भाँति इस वर्ष भी 'देशदूत' का 'दीपावली' विशेषांक दीपावली के अवसर पर ३१ आक्टोबर को प्रकाशित होगा। राष्ट्र की सामयिक राजनीतिक समस्याओं पर सुप्रसिद्ध नेताओं की रचनायें, प्रसिद्ध कवियों की कवितायें तथा दर्जनों सुंदर चित्रों से यह अंक सुसज्जित होगा। कहानियाँ एक से एक लोकप्रिय और सुंदर होंगी। इसके अतिरिक्त रंगमंच तथा महिलाओं के लिये उपयोगी और बेजोड़ सामग्री उपलब्ध होगी।

विज्ञापनदाताओं को अभी से विज्ञापन के लिये स्थान सुरक्षित करा लेना चाहिए। एजेन्टों को भी अभी से अपनी प्रतियाँ रिजर्व करा लेनी चाहिए। कवर नयनाभिराम होगा। मूल्य केवल ।≈) छः आना मात्र होगा।

विज्ञापन दर यह होगा।

कवर का चौथा पूरा पेज ४००) दूसरा या तीसरा पेज ३००)
पहला पेज पाठ्य-विषय के पहले ३००) साधारण पूरा पेज २००)

पृष्ठ का आकार १२½"×९" कालम ४ स्कीन ६५

मैनेजर 'देशदूत'

इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

सम्पादक का पृष्ठ

उपनिवेशों के प्रधान मंत्रियों के सम्मेलन में क्या होगा ?

ब्रिटिश साम्राज्य के प्रधान मन्त्रियों का एक सम्मेलन आगामी अक्टूबर महीने के मध्य में लन्दन में होने जा रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक दृष्टि से इस सम्मेलन का बड़ा महत्त्व है। सम्मेलन में ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत जितने राष्ट्र हैं उनके सभी प्रधान मन्त्री एकत्रित होंगे और इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न पर विचार विनिमय होगा कि ब्रिटिश सरकार का उनके उपनिवेशों के साथ बाह्य और आन्तरिक सम्बन्ध भविष्य के लिए किस प्रकार का रहेगा ? ऐसे अवसर पर सम्मेलन में भारत के प्रधान मन्त्री पं० नेहरू का उपस्थित होना विशेष महत्त्वपूर्ण है। ब्रिटिश सरकार की वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, संयुक्तराष्ट्र संघ तथा सुरक्षा परिषद् में परंपरागत उसकी कूटनीतिक चालों से प्रत्येक उपनिवेश पूर्णतया परिचित है। ब्रिटिश सरकार की अन्तर्राष्ट्रीय नीति की प्रतिक्रिया प्रत्येक उपनिवेशों में व्यापक रूप में व्याप्त हो रही है। अधिकांश उपनिवेश ब्रिटिश नीति से सहमत नहीं हैं। भारतवर्ष भी उनमें से एक है। भारत जब से स्वतन्त्र हुआ है तब से यद्यपि ब्रिटेन की मजदूर-सरकार और भारत-सरकार में किसी प्रकार का व्यापक मतभेद नहीं हुआ है, फिर भी भारत को अपने पिछले अनुभव से प्रत्येक अवसर पर सचेत रहना ही पड़ता है। यद्यपि ब्रिटिश सरकार हैदराबाद के मामले में अपनी स्पष्ट नीति का उल्लेख पहले ही कर चुकी है और हाउस आफ कामन्स में चर्चिल दल के कट्टरपंथियों को करारा उत्तर भी दे चुकी है किन्तु काश्मीर के सम्बन्ध में वह जिस नीति का अनुसरण कर रही है तथा सुरक्षा-परिषद् और राष्ट्र-संघ में उसके द्वारा जो नीति बरती जाती है वह सच पूछा जाये तो भारत तथा ब्रिटिश सरकार के पारस्परिक राजनीतिक दृष्टि से सन्तोषजनक नहीं है। अँगरेज भारत को दो टुकड़े में बाँट देने के बाद भी अपनी फितरत से बाज नहीं आ रहे हैं। समय समय पर उनकी राजनीतिक नीति में जिस प्रकार के परिवर्तन तथा उतार-चढ़ाव होते दिखाई देते हैं उससे यह सिद्ध होता है कि उनका हृदय स्वच्छ नहीं है। प्रजातन्त्र तथा राष्ट्रीयता की आड़ में वह अपनी घृणित से घृणित नीति के उपयोग में आनाकानी नहीं करते। यही कारण है कि ब्रिटिश उपनिवेशों के अधिकांश राष्ट्र ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत रहने के विरुद्ध विद्रोह करते हैं। तथा पूर्ण स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए उससे युद्ध करते रहते हैं। भारत के सामने भी यही समस्या व्यापक रूप से इस निश्चय का कारण बन रही है।

लन्दन में होनेवाले प्रधान मंत्रियों के सम्मेलन में इस प्रश्न पर प्रमुख रूप से विचार हो। भारत का स्वतन्त्र विधान आगामी नवम्बर मास में अन्तिम रूप से स्वीकार होने के लिए भारतीय विधान परिषद् में आ रहा है। विधान-परिषद् में इस प्रश्न पर कि 'भारत साम्राज्य के अन्तर्गत रहे अथवा पूर्ण स्वतन्त्र' वैधानिक रूप से विचार होनेवाला है। इसीलिए अक्टूबर के महीने में अर्थात् भारतीत विधान-परिषद् के अधिवेशन के कुछ पूर्व ही प्रधान मंत्रियों का सम्मेलन लन्दन में हो रहा है। इसलिए भारत और ब्रिटेन सम्बन्धी भावी नीति पर यदि इस सम्मेलन में विचार-विनिमय हो तो आश्चर्य नहीं। अन्तर्राष्ट्रीय तथा एशियाई राजनीति की ओर दृष्टिपात करने से यह अनुमान होता है कि ब्रिटेन की परिस्थिति अमरीका और रूस के समकक्ष कुछ निर्बल हो रही है। यूरोप में भी इस समय ब्रिटेन अपनी किसी प्रकार की नीति का उपयोग अकेले नहीं कर सकता। उसे अमरीका का सहारा किसी न किसी रूप में लेना ही पड़ता है। एशिया का पड़ोसी सोवियट रूस है। सोवियट रूस और ब्रिटेन का आन्तरिक संघर्ष कभी घटता और कभी बढ़ता दिखलाई देता है। प्रशान्त महासागर में अमरीकनों का प्रभुत्व है, स्वतन्त्र चीन में अमरीकन नीति अग्रसर हो रही है। कम्युनिस्ट भारत के उत्तरी भाग से चीन होते हुए दक्षिण-पूर्वी द्वीप-समूह (हिन्द महासागर) की ओर दौड़ लगा रहे हैं। ब्रिटेन राजनीति की इस महत्त्वपूर्ण समस्या की ओर बड़े विचारपूर्ण दृष्टि से देख रहा है क्योंकि उसे कम से कम अपना अस्तित्व ही नहीं, वरन अपने साम्राज्य की सुरक्षा भी कायम रखनी है। ऐसी दशा में भारत ऐसे विशाल देश का सम्पर्क और सहयोग उसके लिए अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से सबसे अधिक उपयोगी प्रमाणित हो सकता है, इस तथ्य को वह भली भाँति जानता है। योरप की बात तो नहीं किन्तु एशिया में भारतवर्ष सबसे शक्तिशाली और एक सुलझा हुआ राष्ट्र है। यदि भारत अँगरेजी साम्राज्य के अन्तर्गत जैसा कि आज है वैसा ही भविष्य मे भी रहता है तो ब्रिटेन के लिए यह बड़े सौभाग्य की बात होगी किन्तु ब्रिटेन आज भी अपनी विदेशी राजनीति में जिस प्रकार खींचतान करता रहता है यदि उसका क्रम उसी प्रकार से भविष्य में भी जारी रहा और भारत के दो उपनिवेशों में पारस्परिक मनोमालिन्य उत्पन्न करके उसकी स्वार्थपूर्ति की प्रगति में कोई अन्तर न आया तो कम से कम भारत तो ब्रिटिश नीति के प्रतिकूल ही कदम बढ़ायेगा। इसलिए यह आवश्यक है कि ब्रिटेन को अपनी वैदेशिक नीति में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन करना पड़ेगा।

भारतवर्ष युग-युगान्तर से एक प्रजातन्त्रवादी राष्ट्र रहा है। कितनी ही विदेशी शक्तियाँ भारत में आईं और धीरे धीरे लोप हो गईं, अँगरेज भी भारत पर डेढ़ सौ वर्ष के शासन के बाद यहाँ से चले गये। भारत संसार के प्रत्येक राष्ट्र से एक मैत्री का भाव रखना चाहता है। वह राष्ट्रों में अपनी बराबरी की हैसियत खोना नहीं
चाहता। ब्रिटेन का
आज भी और भविष्य में
किन्तु ब्रिटेन अब भी यदि
है कि वह उसका कठपुतला
यह असम्भव है। यदि
पुरानी नीति में परिवर्तन नहीं
भारत को ब्रिटिश साम्राज्य
स्वतन्त्र रहने का पूरा अधिकार
ब्रिटिश साम्राज्य के
अथवा पूर्ण स्वतन्त्र, इसका
तो ब्रिटिश की वैदेशिक नीति
है। यद्यपि भारत में ऐसे
भी हैं जो भारत का ब्रिटिश
अन्तर्गत रहना ठीक नहीं
जिन कांग्रेस नेताओं के हाथ
शासन की बागडोर है
करते हैं कि यदि ब्रिटेन
नीति में ईमानदारी के
परिवर्तन करता है तो उन्हें
के अन्तर्गत रहने में
दिखाई देती। इसलिये
सम्बन्ध में अपनायेगी
भारत के सम्बन्ध में
इसलिये हम यह
कि ब्रिटेन अपनी
जितनी भी जल्दी हो
और भारत से उसका
स्थापित हो तभी
हो सकता है।

*

हिन्दी के सुप्रसिद्ध नाटक
राष्ट्रकर्मी सेठ गोविन्ददास एम०
ए० मेरठ में होनेवाले हिन्दी
सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन के
पद के लिए आप का निर्वाचन
रहा है। आप भारतीय विधान
हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर
कराने के लिये उद्योगशील हैं
संसार आपकी राष्ट्रीय तथा
सेवाओं से पूर्ण परिचित है।
है कि सभापति पद के लिये
मतदाता इस वर्ष आपको ही
के सभापति पद पर प्रतिष्ठित करें

आज तो....

लेखक, श्री 'अंचल' एम० ए०

आज राष्ट्र के महापर्व का सिंहासन है खाली !
यह कैसा त्योहार कि लगता कितना सूना सूना
कैसा यह मुहूर्त जिसमें दुख-दर्द हो रहा दूना
झुका जा रहा क्षुब्ध तिरंगा झंडा आज हमारा
रुद्ध हो रहा कोटि-कोटि कंठों में जय का नारा
घूम रहे खोये खोये-से तरुण वीर बलिदानी
शिथिल करों से डोर ध्वजा की खींच रहे सेनानी
देख न पड़ती कहीं विजय-गौरव की जीवित लाली
आज राष्ट्र के महापर्व का सिंहासन है खाली !
अभी उठा था देश दासता के सागर से ऊपर
अभी अभी गूँजे थे पर्वत-शिखरों पर सुख के स्वर
कितनी कठिन यातना, निर्वासन, अपमान सहन कर
राह मौत की देख देख फाँसी सेलों में गँजकर
उसके आवाहन पर यौवन ने सर्वस्व लुटाया
कितना रक्त बहा तब यह आजादी का दिन आया
किन्तु लग रहीं आज सूर्य की किरणों कितनी काली
आज राष्ट्र के महापर्व का सिंहासन है खाली !
आज तुम्हारा सच्चा तर्पण होगा राष्ट्रविधाता
आज तुम्हारा श्राद्ध-दिवस है ओ नवयुग-निर्माता
इतिहासों की रज में खोये हिंसक अत्याचारी
काल गर्भ में लीन हो गये कितने सत्ताधारी
देव ! तुम्हारी सुधि के घट पर युग-युग सत्य पलेंगे
महा देश के प्राण दीप बनकर चिरकाल जलेंगे
अरे ! आज तो कसक रही पीड़ा अंगारों वाली
आज राष्ट्र के महापर्व का सिंहासन है खाली

भगवान् कृष्ण और गांधी जी

भारतवर्ष कभी न कभी पुनः अखंडता प्राप्त करेगा

लेखक, आचार्य श्रीमन्नारायण अग्रवाल, एम० ए०

महात्मा गांधी अवतारी पुरुष थे। उनकी तुलना भगवान् कृष्ण से की जाती है। गांधी जी की जन्म-तिथि २ आक्टोबर को पड़ी है। इस समय गांधी-जयन्ती मना र समस्त राष्ट्र गांधी जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा है। इस लेख में विद्वान् खक ने गांधी जी और भगवान कृष्ण के जीवन की तुलना की है, जो पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

भगवान कृष्ण ने अपना सारा जीवन में बिताया और उस समय के सभी राज्यों को परास्त कर यादवों को एक ल राज्य सौंप दिया। अधिकार के चूर होकर यादवों ने आपस में ड़ना, भिड़ना शुरू किया और इस अपने ही हाथों अपना सत्यानाश कर । कहते हैं कि एक व्याध ने भगवान् को हिरन समझकर तीर छोड़ा। र उनके पैर में लगा और खून हते भगवान् का पार्थिव जीवन हो गया। मेरा ख्याल है कि व्याध की कथा केवल कवियों की कल्पना धिक संभव यह है कि यादव लोग भगवान् कृष्ण के उपदेशों से होंगे और उन्होंने कलियुग के किसी बहके हुए और आधे व्यक्ति द्वारा भगवान् का वध जान-करा डाला होगा।

त्मा गांधी की हत्या भी करीब इसी तरह हुई। उन्होंने जीवन भर अन्याय का सामना किया, पहले दक्षिण अफ्रिका में और फिर भारतवर्ष में। कई सत्याग्रह-आन्दोलनों के बाद १५ अगस्त १९४७ को देश स्वतन्त्र हुआ और गांधी जी के मार्ग-दर्शन में हिन्दुस्तान पर ब्रिटिश साम्राज्य खत्म हुआ। किन्तु अधिकार पाकर हमने बापू के उपदेशों की अवहेलना की और इस देश के बहुत से लोग यह सोचने लगे की गांधी राजनीति छोड़कर हिमालय चला जाय तो अच्छा हो। गांधी जी ने देश के विभाजन के विरुद्ध अपनी बुलन्द आवाज उठाई लेकिन हमने उनकी एक न सुनी और भारत का बँटवारा स्वीकार कर लिया। विभाजन के बाद बापू ने सैकड़ों बार समझाकर कहा कि पारस्परिक हिंसा बन्द की जाये और देश को मजबूत बनाने के लिये मिल-जुलकर प्रेम से रहा जाये। किन्तु उनका भाई-चारे का उपदेश भी हमें अखरने लगा और जातीय भावना तथा विद्वेष से पागल एक हिन्दू नवयुवक ने उन्हें गोली का शिकार बनाया।

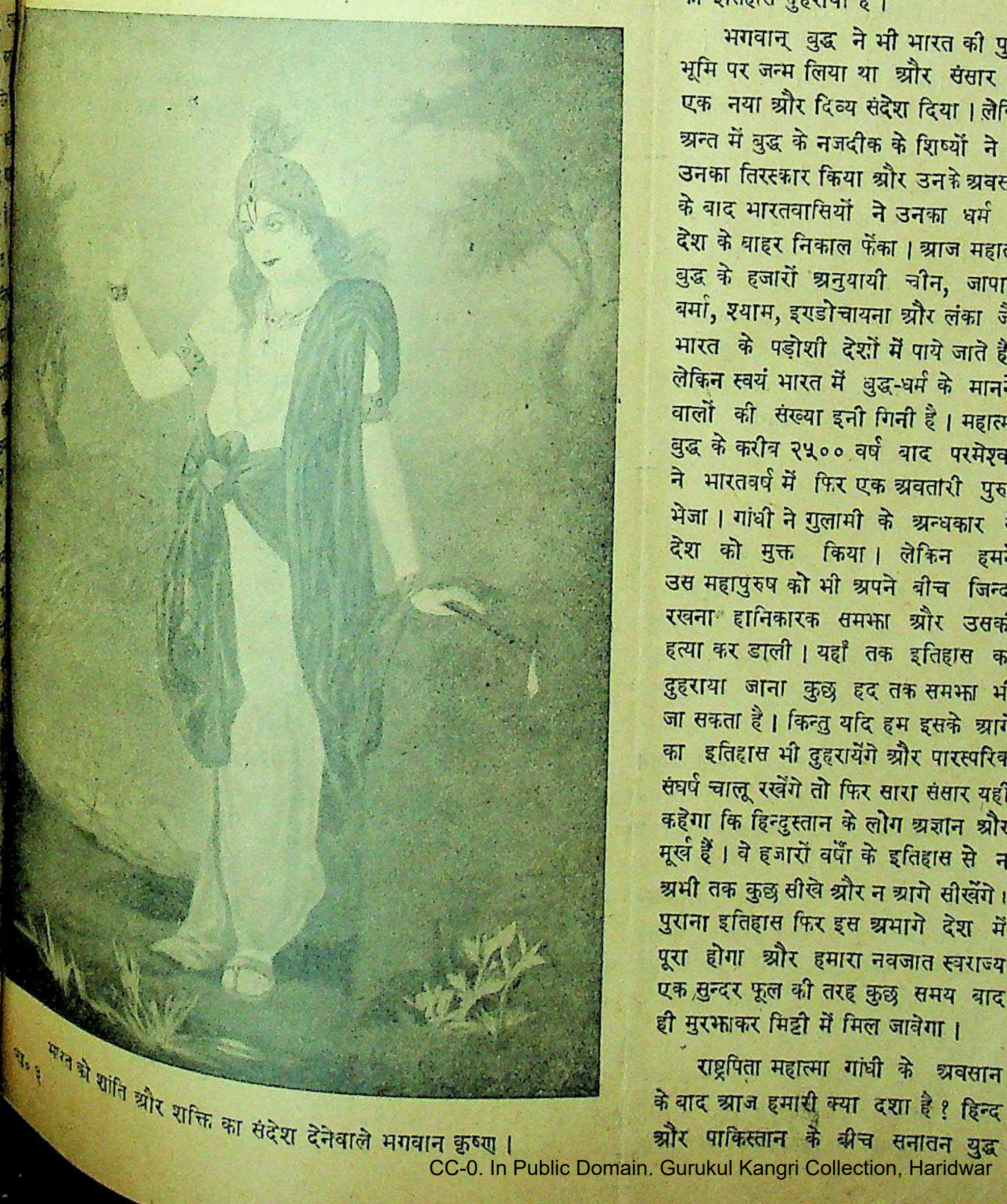

भारत को शांति और शक्ति का संदेश देनेवाले भगवान कृष्ण।

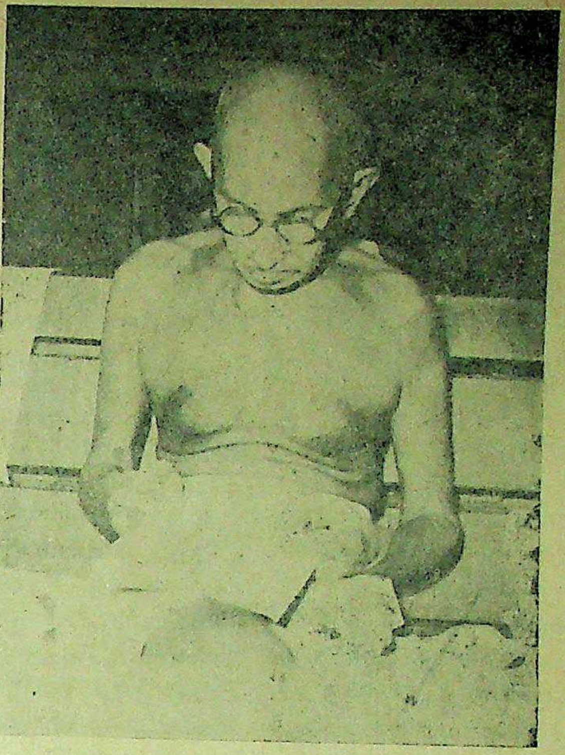

स्वर्गीय पूज्य महात्मा गांधी जिनकी जयंती २ आक्टोबर से मनाई जा रही है।

भगवान् कृष्ण के अस्त हो जाने के बाद यादव आपस में लड़ते रहे और अन्त में सब नाश में विलीन हो गये। क्या हजारों वर्षों बाद हम वही इतिहास दुहराना चाहते हैं। अभी तक तो हमने उसी तरह का इतिहास दुहराया है।

भगवान् बुद्ध ने भी भारत की पुण्य भूमि पर जन्म लिया था और संसार को एक नया और दिव्य संदेश दिया। लेकिन अन्त में बुद्ध के नजदीक के शिष्यों ने ही उनका तिरस्कार किया और उनके अवसान के बाद भारतवासियों ने उनका धर्म भी देश के बाहर निकाल फेंका। आज महात्मा बुद्ध के हजारों अनुयायी चीन, जापान, बर्मा, श्याम, इण्डोचायना और लंका जैसे भारत के पड़ोशी देशों में पाये जाते हैं। लेकिन स्वयं भारत में बुद्ध-धर्म के माननेवालों की संख्या इनी गिनी है। महात्मा बुद्ध के करीब २५०० वर्ष बाद परमेश्वर ने भारतवर्ष में फिर एक अवतारी पुरुष भेजा। गांधी ने गुलामी के अन्धकार से देश को मुक्त किया। लेकिन हमने उस महापुरुष को भी अपने बीच जिन्दा रखना हानिकारक समझा और उसकी हत्या कर डाली। यहाँ तक इतिहास का दुहराया जाना कुछ हद तक समझा भी जा सकता है। किन्तु यदि हम इसके आगे का इतिहास भी दुहरायेंगे और पारस्परिक संघर्ष चालू रखेंगे तो फिर सारा संसार यही कहेगा कि हिन्दुस्तान के लोग अज्ञान और मूर्ख हैं। वे हजारों वर्षों के इतिहास से न अभी तक कुछ सीखे और न आगे सीखेंगे। पुराना इतिहास फिर इस अभागे देश में पूरा होगा और हमारा नवजात स्वराज्य एक सुन्दर फूल की तरह कुछ समय बाद ही मुरझाकर मिट्टी में मिल जावेगा।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के अवसान के बाद आज हमारी क्या दशा है? हिन्द और पाकिस्तान के बीच सनातन युद्ध छिड़ा हुआ है। भारत की एक वर्ष पहले बँटी हुई फौजें आपस में लड़कर देश का सत्यानाश कर रही हैं। छोटी छोटी बातों पर हम अन्तर्राष्ट्रीय संस्था की कचहरी के सामने अपनी सफाई होने के लिए बुलाये जा रहे हैं। जिस तरह मुकदमाबाजी ने देश की करोड़ों गरीब जनता का नाश किया उसी तरह यू० एन० ओ० भी बन्दर और बिल्ली की कहानी की तरह हिन्द और पाकिस्तान दोनों का ही भयंकर नुकसान करते हुए मजा ले रहा है। बिना कारण हिन्द और पाकिस्तान दोनों का ही गला अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीतिज्ञों के हाथों में चला गया है। भारत में भी हम आपसी झगड़े बढ़ाते जा रहे हैं। भाषा की बुनियाद पर रोज नया संघर्ष पैदा हो रहा है। मैं भाषावाद प्रान्त रचना के विरुद्ध नहीं हूँ लेकिन हम जिस तरह भाषा-प्रेम की नींव पर अपने देश को छोटे छोटे टुकड़ों में बाँटने की कोशिश कर रहे हैं और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये आवश्यक हो तो खून भी बहाने की सोच रहे हैं; इससे तो यही प्रतीत होता है कि इस वक्त भाषावाद प्रान्त रचना करना भारत को नाश की ओर ले जाना ही होगा। भाषा के अलावा हमने अभी तक जात-पाँत को भी नहीं मिटाया है। ब्राह्मणों और अब्राह्मणों का झगड़ा दिन दिन बढ़ता जा रहा है। ब्राह्मणों ब्राह्मणों में भी न जाने कितने तरह के झगड़े हैं। हरिजनों के प्रति अभी भी हमारी भावनाएँ शुद्ध नहीं हुई हैं लेकिन अफसोस तो यह कि हरिजनों में आपस में भी आदूत और संघर्ष है। भाषा, धर्म और जाति के अलावा हम अपने तुच्छ स्वार्थों के लिये भी आपस में जोरों से लड़ भिड़ रहे हैं। पदलोलुपता, रिश्वतखोरी और चोर बाजार का बोलबाला है। अपनी दुश्मनी निकालने के लिए असत्य और हिंसा का उपयोग दिन दिन बढ़ रहा है। क्या यह सब स्थिति यादवों के इतिहास की पुनरावृत्ति नहीं है? क्या हम सचमुच हजारों

शेष पेज १८ पर देखिए

हिन्दी-अँगरेजी और उर्दू क्यों?

क्या मध्यभारत संघ राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि के सम्बन्ध में न्याय करेगा?

लेखक, श्री श्यामलाल गौड़ बी० ए०, एल-एल० बी०, (उज्जैन)

मध्य भारत-संघ की प्रान्तीय भाषा क्या है? इसका निर्णय अभी तक नहीं हुआ है। प्रान्त हिन्दी भाषा भाषी है फिर भी अँगरेजी और उर्दू का प्रभुत्व अभी पूर्ववत् बना हुआ है। लेखक ने इसी समस्या पर इस लेख में प्रकाश डाला है जो पठनीय तथा विचारणीय है।

मध्य भारतीय संघ के राज प्रमुख महाराजा ग्वालियर।

दो दासता के पाटों के बीच सिसकती हुई २२ राज्यों की जनता की हृदयकली खिल उठी। २८ मई के उस ऐतिहासिक अवसर पर जब कि ग्वालियर के मोती-महल में मध्यभारत संघ का उद्घाटन हुआ। राजधानी तक व राजधानी के उस प्रासाद तक पहुँचने में असमर्थ जनता ने अपने महामंत्री व राजप्रमुख के संदेश रेडियो द्वारा सुने। उद्घाटन भाषणों ने "अतीत के मालक" का स्मृति चित्र हमारे सामने उपस्थित किया। विक्रम और कालिदास का स्वर्णयुग आँखों के सामने नाच उठा। पराक्रम, प्राचीन वैभव, संस्कृति, सभ्यता, साहित्य व न्याय विक्रम व कालिदास के रूप में साकार हो उठे।

मालव-निवासियों ने सोचा, समझा और विश्वास किया। मालवी रक्त एक बार फिर इस धारणा से सवेग हुआ कि विक्रम और कालिदास के हम उतराधिकारी हैं और हमें अपना कर्त्तव्य पूरा करना है। जन साधारण ने उस "स्वर्णयुग" की कल्पना की! अवन्ती का यौवन साकार सामने आया। सांदीपन की शिक्षास्थली विक्रम और कालिदास के क्रीड़ा-स्थल उज्जैनी की ओर लोगों ने देखा—ध्वस्त, और उपेक्षित उज्जैनी फिर एक बार अपने प्रांगण में कालिदास और विक्रम की क्रीड़ाएँ देखेगी—मालव के राजनैतिक दाँव पेंच, साहित्यिक-कौशल व कला-प्रदर्शन की पुनरावृत्ति होगी! परन्तु समय पलटा। कालिदास के नहीं मोहम्मद तुगलक के इतिहास की पुनरावृत्ति हुई—मालव प्रांत के समर्थक—थोथे राज्यों के महत्त्व में पड़े और दो राजधानियों का निर्माण हुआ—विक्रम व कालिदास केवल शब्दों में रहे और चिर उपेक्षित अवन्ती उपेक्षित ही रही !!

इसका कारण क्या था? जनमत? नहीं यह कहना जनमत और जनतन्त्र के विरुद्ध होगा। इसका कारण केवल संकुचित मनोवृत्ति के राजनितिज्ञों को प्रसन्न करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। मैं ग्वालियर का हूँ—ग्वालियर का महत्त्व कम न हो—मैं इन्दौर का हूँ—इन्दौर किसी भी दशा में पीछे नहीं रह सकता—केवल इस प्रकार की विचारा-धारा का प्रभाव ही इस सत्य के पीछे है—और कुछ नहीं!

उक्त कथन कटु होने पर भी सत्य है इसे कोई अस्वीकार नहीं कर सकता। और मेरे उक्त कथन की पुष्टि मध्यभारत प्रांत के भाषा-संबन्धी निर्णय से भी हो सकती है। संघ में सम्मिलित होनेवाले राज्यों की संख्या २२ है। इन राज्यों में हिन्दी भाषा भाषिओं का ही बाहुल्य है। अधिकांश राज्यों ने तो अपनी राज्य भाषा का पद हिन्दी भाषा व देवनागरी लिपी को प्रदान किया। इन राज्यों में ग्वालियर सर्वोपरि है। भारतीय उपनिवेश के प्रांतों एवं राज्यों में ग्वालियर राज्य का ही उच्च न्यायालय (हाईकोर्ट) ऐसा न्यायालय था जिसने सर्वप्रथम हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि में अपने निर्णय देना प्रारंभ किये थे। इस प्रथा का अधिक श्रेय हमारे वर्तमान न्याय-सचिव महोदय को है जिन्होंने ग्वालियर के उच्च न्यायाधीश के रूप में सर्वप्रथम राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय लिपी में अपने निर्णय प्रदान करना प्रारम्भ किये। यह घटना उस समय की है जब विदेशियों की सार्वभौम सत्ता थी और गौरांग महाप्रभुओं का वरदहस्त उनकी अपनी भाषा अँगरेजी पर था। संकुचित दृष्टिकोणवाली प्रतिक्रियावादी शक्तियों ने हिन्दी भाषा का विरोध किया। "अदालतों की जबान आम-फ़हम हो" का नारा बुलन्द किया गया परन्तु सफल न हुए। ग्वालियर के न्याय-विभाग द्वारा आये दिन नवीन विधान राष्ट्रभाषा में प्रचलित किये गये। हिन्दी भाषा के प्रयोग के लिये भागीय आज्ञायें प्रसारित की गईं। परिणामस्वरूप हिन्दी अपने वास्तविक रूप में सामने आने लगी। इस क्षेत्र में काम करनेवालों को यह अनुभव हुआ कि वास्तव में न्याय के लिये हिन्दी ही वास्तविक भाषा है। राष्ट्रभाषा के हेतु जिन लोगों ने हिन्दी-विरोधी आन्दोलन के विरुद्ध टक्कर ली थी उन्हें यह विश्वास हो गया कि अब उनका क्षेत्र विस्तृत है—उनके समर्थक अधिक हैं और उनकी अपनी सरकार है। उन्हें यह भी विश्वास था कि ऐसी सरकार जिसके स्तम्भों ने गौरांग महाप्रभुओं की दासता को बिदा किया अवश्य ही भाषा संबन्धी बौद्धिक दासता को भी दूर करने में सहायक होगी! और उनका यह विश्वास करना आवश्यक भी था। परन्तु मध्यभारत गजट की न्यायालय संबन्धी विशेषाज्ञा ने उनकी व जन-साधारण की आशाओं पर तुषारापात किया जब कि उक्त विशेषाज्ञा में हिन्दी के साथ "अँगरेजी" का भी अपवित्र गठबंधन देखा। (देखिये मध्यभारत एक्स्ट्रा आर्डिनरी गजट दिनांक १६-६-४८ हाईकोर्ट विशेषाज्ञा धारा १५ पृ० २२)।

क्या उक्त "गठबन्धन"—हिन्दी और अँगरेजी का यह अनभेदा मिश्रण जन-साधारण की भावनाओं को देखकर दिया गया है अथवा किसी ऐसे स्थान के मुट्ठी भर लोगों को प्रसन्न करने की इच्छा से जो मानसिक दासता से मुक्त होने में कठिनाई अनुभव करते हैं? स्पष्ट है कि यह "अँगरेजी" का मोह नहीं है वरन् "अँगरेजी प्रेमी" लोगों को प्रसन्न रखने के मोह के अतिरिक्त और कुछ नहीं। मालव प्रान्त में तो निन्नानवे प्रतिशत से अधिक व्यक्ति इस भाषा से अनभिज्ञ हैं फिर इस भाषा को प्रश्रय क्यों?

प्रान्त में दो उच्च न्यायालयों का निर्माण भी यह प्रकट करता है कि वास्तव में हमारी संकुचित मनोवृत्तियों के कारण ही आज हमारे धन से इस प्रकार का अप्रासंगिक नाटक खेला जा रहा है। दो राजधानियों का व्यय, दो उच्चन्यायालयों का व्यय तथा दो भाषणों पर किया जानेवाला व्यय, यह सब जनता की ही आय से तो होगा। इस प्रकार दोहरा व्यय करना कहाँ तक उचित है यह तो सरकार ही जान सकती है। अर्थ-विशेषज्ञों की दृष्टि से भी संभव है इसके अनुचित व्यय के संबंध में आपत्ति उठाई जा सकती है।

इस समस्या के निराकरण का उपाय यदि न बताया जावे तो यह समालोचना अपूर्ण ही होगी। निराकरण का केवल एक मार्ग है और वह है मालव की प्राचीनता व उसके इतिहास का सम्मान। प्राचीन मालव के गौरव उज्जैन को राजधानी बनाया जावे। एक ही राजधानी हो, एक ही विश्वविद्यालय हो, एक ही उच्च न्यायालय हो और एक ही भाषा राष्ट्रभाषा हिन्दी व नागरी लिपि का प्रयोग हो समस्याएँ स्वतः समाप्त हो जावेंगी। उज्जैन ही मध्यभारत संघ में ऐसा स्थान है जहाँ पर इन समास्याओं का सीधा व सरल हल है।

हिन्दी भाषा का जो प्रयोग मध्यभारत गजट में कतिपय स्थानों पर हो रहा है वह हिन्दी भाषा के उपहास्य के अतिरिक्त और कुछ नहीं। उदाहरणार्थ मध्यभारत गजट में प्रकाशित निम्न विज्ञप्तितयाँ ही देना पर्याप्त होगा :—

"महाल कचेरी सांवेर"

"आप लोगों को जाहिर किया जाता है कि सदर कोंडवाड़े के नीचे लिखे तफसील की मवेशियाँ मालिक ने मुद्दत में आकर नहीं छुड़ाने से जो नीलाम करके उसके उत्पन्न में से दंड, खुराक बजा जाते बाकी रुपया टी० डी० जमा किया गया है......" म० भा० गजट दिनांक १४-८-४८ पृष्ठ २३० भाग (३विभाग ३।

"रजिस्ट्रार हाईकोर्ट इन्दौर"

मध्य भारतीय संघ के प्रधानमन्त्री
लीलाधर जोशी।

......प्रा० नं० १२, ३
मालूम हो कि सदर मुद्दई
ता० १२-८-४८ ई० रोज गुरुवार
की गई है। उस रोज दिन को
तुम अपने पुरावे के कागज समेत
में हाजिर रहो या मुकदमें का
वकील मुकर्रर करके उसको पुरे
भेजो......आइ० म० भा० ग०
३१-७-४८ पृष्ठ १५६ भाग २ विभ

इससे यह स्पष्ट हो जाता है
भारत सरकार अभी भाषा के
उदासीन है। हम अपनी जनप्रिय
से यही निवेदन करेंगे कि इस
प्रश्न को इस प्रकार टाला नहीं
हिन्दी हमारे प्रान्त की भाषा है और हिन्दी
भाषा व नागरी लिपि के अतिरिक्त
भाषा विशेषाज्ञा प्रचलित करके
लादना न्यायोचित नहीं है। हमें
है मध्यभारत सरकार हमारी
का समुचित आदर करेगी।

समय चूकि पुनि का पछ्ताने
चित्रकूट की
(स्वाँस) दमा की प्राणेश्वरी
जिसकी एक ही मात्रा
रात्रि ता: १८-१०-४८ को सेवन
नया व पुराना दमा सदैव के लिये
नष्ट हो जाता है। घर बैठे मँगाकर
करें। दवा जल्दी मगावें ताकि
मिल जावे।
मिलने का पता—
श्री महात्मा योगी बाबा
आयुर्वेदीक बूटी भण्डार
पो० चित्रकूट यू० पी०

वैवाहिक सुख प्राप्ति के
स्त्री प्रेम रहस्य
मुफ्त मँगाइये!
पता—विभाग (ट) बाक्स ३

प्रतिमा
इस संग्रह में सुकवि
की एक से एक बढ़िया
इन कविताओं को बड़ी
भाषा और क्या भाव
रंगीन आवरण, बढ़िया
केवल १) एक रुपया।
मैनेजर इण्डियन प्रेस,

कहानी

चोर

लेखक, श्री जगदीशकृष्ण जोशी

आपत्ति और दैवी प्रकोप पढ़े लिखे अथवा सम्भ्रान्त जन को ही नहीं बदल देते, वरन् मूढ़ और अशिक्षितों को भी परिवर्तित कर देते हैं। महादेव मूर्ख और आचरणहीन होकर भी दयालुता न खो सका। दूसरे के रुग्ण शिशु ने उसके आचरणहीन हृदय को पिघलाकर किस प्रकार सद्मार्ग पर ला दिया, उसका सुन्दर वर्णन कहानी में चित्रित किया गया है। कहानी रोचक और सुन्दर है।

पढ़े-लिखे समझदार मनुष्यों पर दैवी का प्रहार होता है तो उनमें भावत: वैराग्य की भावना उत्पन्न हो ती है, भले ही वह क्षणिक और अस्थायी पर अनपढ़ और जाहिल तो अपने के वेग को दूर करने अथवा कम के उद्देश्य से और ही मार्ग का लम्बन करते हैं। कई वर्ष पूर्व जब देव सुनार की पत्नी दो वर्ष के अबोध मुन्ना को छोड़कर स्वर्ग सिधारी उसे बड़ा दुख हुआ, पर पुत्र की भोली देखकर और उसे मरनेवाली की नी समझकर सन्तोष करके बैठ रहा। र भी क्या सकता था? परन्तु जब वह बालक भी १० वर्ष का चार दिन के मामूली बुखार के उससे मुख मोड़कर, अपनी मा के चला गया तो उसके शोक का वारा-रहा। पत्नी की मृत्यु के बाद तो पुत्र का मुख देखकर सन्तोष कर था, पर अब तो उसे चारों ओर ही अँधेरा दिखाई दे रहा था। उसे का भी बड़ा दुख था कि उसने कोई इलाज न किया। बेचारा बिना दवा-दारू के मर गया। यह कि महादेव का हाथ उस समय पर यदि वह जानता कि इस बुखार में ही उसका लाल उसे चला जायगा तो वह कहीं न र्ज लेकर उसकी दवा का प्रबन्ध र जो कुछ होना था वह तो हो रोने या पछताने से क्या

पढ़ा-लिखा या विद्वान् तो संसार की असारता और सोचकर वैराग्य-साधन में। उसने जाहिलोंवाला मार्ग, अख्तियार किया। भंग, चर्स, दि उड़ने लगा। एक दिन उसके साथी ने कोकीन की बड़ी हुए उसे कोकीन पड़ा एक दिया। महादेव को उसमें मज़ा आया कि उसने और सब कर कोकीन की आराधना शुरू अब काम में उसका दिल न वह होशियार कारीगर था। सारा काम उसी के पास आता अब उसने अपने ग्राहकों को शुरू कर दिया। दो-चार भले का दिया हुआ सोना भी बेच-आराध्या देवी कोकीन की दिया। परिणाम यह निकला मिलना बन्द हो गया। ऐसे का कौन विश्वास करता? कुछ महादेव ने सुनारी के औजार कर अपना शौक पूरा किया, वह भी समाप्त हो गये तो उसकी ती। पास में पैसा नहीं, आमदनी सूरत नहीं, पर व्यसन की पूर्ति चाहिये। अब वह क्या करे? साथियों में बैठकर रोया। आखिर ऐसे भी मिल गये जो उसे एक जाने को तैयार हो गये। के गढ़े में और दो सीढ़ी गया।

(२)

सावन का महीना था। शाम हो चुकी थी। अभी-अभी बड़ी जोर से पानी बरस कर थमा था। सड़क पर घुटने-घुटने पानी था। कमलकुमार जूते उतारकर छाते की नोक में अटकाये, धोती ऊपर चढ़ाकर, छप-छप करता घर जा रहा था। आज ६ तारीख थी। जिस यूरोपियन फर्म में वह काम करता था आज उसका 'पे डे' था। अत: इस समय उसके पर्स में ७४ रुपये ६ आने ६ पाई की रकम पड़ी हुई थी। घर में पुत्र चार दिन से बुखार से पीड़ित था। डाक्टर तो खैर देख गया था, और दवा भी आ गई थी, पर कल उसने बीमार को बेदाना देने के लिये कहा, और घर में एक पैसा भी न था। डाक्टर कमल का किसी जमाने का सहपाठी था। वह पुरानी मित्रता निबाह रहा था। न फीस लेता था, न दवा के दाम। पर फल तो बिना पैसा खर्च किये न मिल सकते थे। डाक्टर को यदि उसकी स्थिति का पता लग जाता तो वह फलों के लिये पैसे भी दे देता, पर कमल से कुछ कहा न गया। क्या दवा के दाम न लेना और बिना फीस के नित्य देख जाना ही कुछ कम था जो वह मित्र के आगे पैसों के लिये भी हाथ पसारता?

आज घर से चलने से पहले उसकी पत्नी रजनी ने खास तौर से एक डिब्बा बार्ली और बेदाना लाने को कह दिया था। बार्ली तो वह ले चुका, बेदाना और लेना था। रसूल खाँ फलवाले की दूकान पर जब वह रुका तो तीन-चार आदमी उसके पास आकर धक्का-मुक्की करने लगे। पानी की छींटें उड़कर उसके कपड़े खराब हो गये, दो एक धक्के भी लगे। उसने दो बेदाना छाँटकर उनका मूल्य पूछा। पैसे देने के लिये जब जेब में हाथ डालकर पर्स निकालना चाहा तो धक् से रह गया। जेब कट गई थी और पर्स गायब था! उसकी आँखों में आँसू आ गये। हाय! अब महीने भर का खर्च कैसे चलेगा?

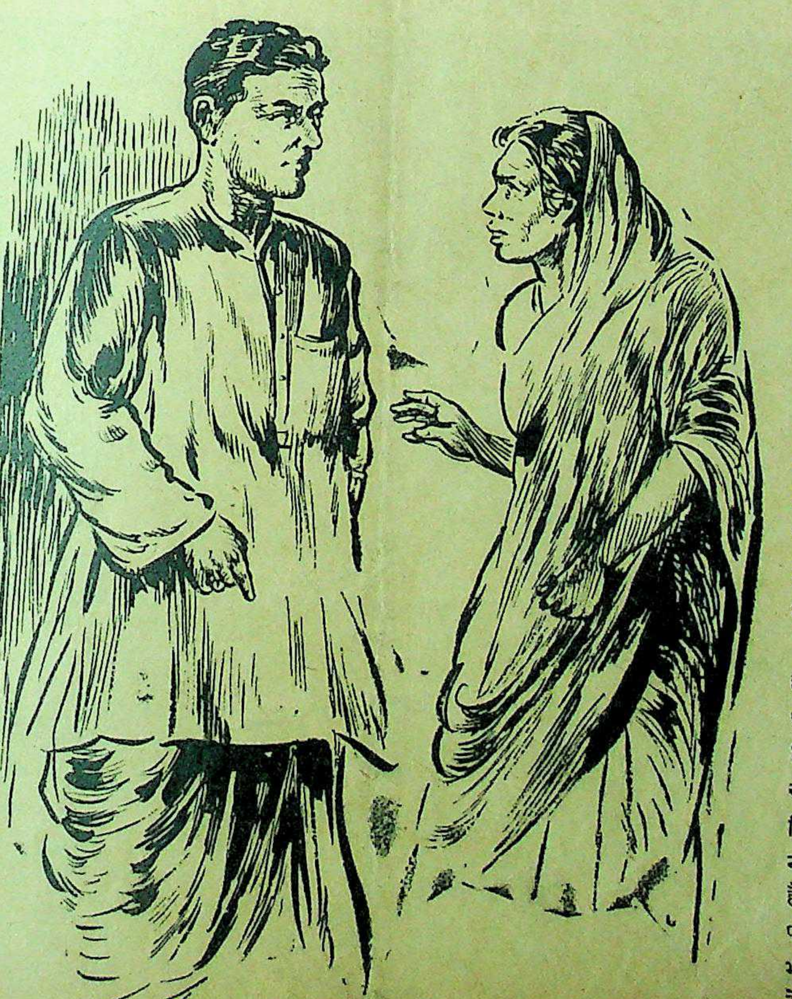

कमलकुमार के मुख से चोरी की बात सुनकर रजन अवाक खड़ी रह गई।

"क्या हुआ, बाबू जी?" रसूल खाँ ने उसकी यह हालत देखकर पूछा।

"जेब कट गई, भाई," कमल ने आँखों में ही आँसुओं को रोकते हुए कहा।

"जेब कट गई?" रसूल खाँ ने दुहराया, "कोई बात नहीं, बाबू जी, आप बच्चे के लिये बेदाना ले जाइये। पैसे फिर आ जायेंगे।"

"मगर मुझे तो आज ही तनख्वाह मिली थी," कमल ने रूँधे गले से कहा, "सब चला गया। अब मैं महीने भर तक क्या करूँगा।"

"ऐसा है," रसूल खाँ ने हमदर्दी से कहा, "तब तो बड़ा बुरा हुआ। मुझे तो जान पड़ता है कि जो तीन-चार आदमी आपके पास आकर लड़ने लगे थे, उन्हीं का यह काम है। यह चोरों का, खासकर जेब कतरनेवालों का, पुराना तरीका है।"

एक ग्राहक ने, जो खड़ा खड़ा दोनों की बातें सुन रहा था, कहा, "हाँ भैया, बाबू जी तो मारे ही गये। तुमने सुना कि महादेव सुनार भी इन चोरों के गिरोह में मिल गया है।"

एक और ग्राहक बोल, "जो होना था सो हो गया। अब गई रकम थोड़े ही मिलती है। पाव भर अंगूर देना, रसूल भाई।"

(३)

उस रात महादेव ने खूब शराब पी। महीने भर की ट्रेनिंग के बाद आज उसने पहली बार जेब कतरी थी। अत: रात को चोरों के अड्डे पर एक छोटा-मोटा जशन मनाया जा रहा था। सब पीकर मस्त हो गये। आज उनका सरदार कहीं बाहर गया हुआ था। इसलिये कमल की जेब से उड़ाया हुआ पर्स महादेव के ही पास रहा।

जब नशे में चूर महादेव अपने हाथ की सफाई और अपनी सफलता की प्रशंसा में जमीन आसमान मिलाने लगा तो नत्थू से न रहा गया। उसने जलकर कहा, "जेब का काम भी कोई काम है। जरा जरा से छोकरे इसे करते हैं। असली काम है दीवार का। मर्दाना काम!"

हमारे लिये जेब काटना, दीवार फाँदना, सेंध लगाना, चोरी है; परन्तु चोरों के यह हुनर हैं; और विभिन्न "कामों" के नाम पुकारे जाते हैं। नत्थू दीवार का काम करता था, अर्थात् दीवार फाँदकर घरों में चोरी करता था।

महादेव के लिये नत्थू का ताना असह्य था उसने कहा, "मैं आज ही और अभी दीवार का काम करके दिखा दूँगा कि मैं नत्थू से किसी बात में कम नहीं हूँ। साथियों ने उसे रोकना चाहा। समझाया कि उसे दीवार के काम की कोई ट्रेनिंग नहीं मिली है, फिर आज सरदार भी नहीं हैं। उनकी अनुपस्थिति में किसी नये काम पर जाना उचित नहीं है। स्वयं नत्थू ने भी उसे मना किया। पर उसके इन शब्दों ने कि "दीवार का काम कोई मजाक नहीं है जो हर नौसिखिया उसे कर सके,"

देशदूत

मानो आग पर घी डाल दिया। महादेव, नशे में झूमता हुआ, साथियों के रोकने की पर्वाह न करके, बाहर निकल गया।

(४)

आधी रात बीत चुकी है। कमलकुमार और रजनी अपने बीमार बच्चे के सिरहाने शय्या पर बैठे हैं। किसी के मुख से एक शब्द भी नहीं निकल रहा है। वह कहते भी क्या? पहाड़ से तीस दिनों का पूरा महीना सामने था और पास में एक पैसा भी नहीं! हे राम! कैसे बेड़ा पार लगेगा? पुत्र की बीमारी अलग जान का जंजाल बनी हुई थी। क्या उनका लाल बिना उपयुक्त चिकित्सा के उन्हें छोड़कर चला जायगा? बुखार की तेजी से सुकुमार बालक के लाल सुर्ख मुँह को ताकते हुए दोनों यही सोच रहे थे।

अन्त में रजनी ने एक लम्बी साँस लेकर इस मौन को भंग किया। "अब क्या होगा?" उसने पूछा।

कमल ने करुण दृष्टि से उसकी ओर देखा और ऊपर को संकेत किया, कहा कुछ नहीं। असहायों के सहाय, निरवलम्बों के अवलम्ब के अतिरिक्त वह इस समय देखता भी किसकी ओर?

कमरे में फिर नीरवता छा गई। इस बार कमल ने मौन भंग करते हुए कहा, "कल ही मकानवाले का किराया, दूधवाले का पैसा और मोदी का पैसा देना है, नहीं तो वह आगे उधार न देगा। मगर मैं दूँगा कहाँ से? हे परमात्मा! तू हमें यह किन पापों का बदला दे रहा है?"

कहते हैं स्त्री-बुद्धि प्रलयंकरी होती है, पर यह भी मानना पड़ेगा कि विपत्ति के समय उसका निवारण करने में भी वह पुरुष से आगे ही रहती है। रजनी चुपचाप उठी और दूसरे कमरे में चली गई। लौटकर उसने सोने की दो चूड़ियाँ पति के हाथ में रखते हुए कहा "लो, कल सवेरे ही इन्हें बेच आना। आजकल सोना महँगा है। महीना कट जायगा।"

कमल की आँखें डबडबा आईं। बोला, "हाय! मैं कैसा नीच हूँ। एक एक कर तुम्हारे सारे जेवर बेचकर खा गया। यह चूड़ियाँ रह गई थीं, सो वह भी—" उसका दिल भर आया और आगे कुछ न बोल सका।

रजनी ने आगे बढ़कर पति के गले में बाँहें डाल दीं और उसके गाल पर गाल रखकर हौले से बोली, "मेरे जेवर तो तुम हो। रहा यह सोना-चाँदी, सो यह ऐसे ही समय के लिये बनवाया जाता है।"

कमल ने कसकर पत्नी को हृदय से लगा, लिया वह कुछ कह सकने की दशा में न था।

इतने में द्वार पर कुछ आहट हुई। दोनों चौंककर एक दूसरे की बाहों से अलग हो गये और उसी ओर देखने लगे। धीरे धीरे दरवाजा खुला और पानी में लथपथ महादेव दिखाई पड़ा। पति-पत्नी उसे देखकर काँप उठे, पर महादेव की दृष्टि उन पर न थी। वह टकटकी बाँधे पलंग पर पड़े रोगी बालक को देख रहा था।

एकाएक वह झपटकर कमरे में घुस आया और बालक की शय्या के पास जा खड़ा हुआ। अब रजनी अपना भय त्याग कर "मेरा बच्चा" कहती हुई आगे बढ़ी। आहट पाकर महादेव ने उसकी ओर देखा, और रजनी यह देखकर आश्चर्यचकित रह गई कि उस पाषाणहृदय दस्यु के नेत्रों से आँसुओं की धार निकलकर उसके गालों पर बह रही है।

"डरो नहीं मा", उसने सान्त्वना देते हुए कहा, "यह सच है कि मैं तुम्हारे यहाँ चोरी करने आया था, पर इस बच्चे ने मुझे गिरफ्तार कर लिया। अब मैं चोर नहीं रहा। परमात्मा अब तक किये हुए मेरे पापों को क्षमा करे।"

अब कमल आगे बढ़ा, "भाई, तुम कौन हो?" उसने पूछा, "हमारी समझ में तो तुम्हारी बात कुछ भी नहीं आ रही है।"

"बाबू जी, मैं चोर हूँ।" महादेव ने उत्तर दिया, "आज शाम को आपकी जेब मैंने ही काटी थी, पर ईश्वर की कृपा से आपका पर्स अभी तक मेरे पास है। हमारा सरदार आज बाहर गया हुआ है। इसलिये इसका बँटवारा अभी तक नहीं हो सका, यह लीजिये।"

"पर भैया" रजनी ने पूछा, "बच्चे को देखकर तुम्हारे विचार कैसे बदल गये?"

मा, मैं हमेशा चोर न था। कुछ दिन पहले तक महादेव सुनार एक प्रतिष्ठित कारीगर था। मेरे भी फूल-सा सुन्दर एक बच्चा था। चार दिन के मामूली बुखार में वह बिना दवा-दारू के मर गया। अभी मुझे यह जान पड़ा कि मेरा ही बच्चा चारपाई पर पड़ा है। मा, मुझे माफ करो। मैं अब कभी चोरी न करूँगा। तुम्हारे मकान के सामने ही एक छोटी सी दूकान खोल लूँगा और तुम्हारे बच्चे को खिलाया करूँगा खिलाने दोगी, मा?" और आँसू बहाते हुए महादेव ने रजनी के पैरों पर सिर रख दिया।

रजनी की आँखें भी भर आईं। महादेव को उठाते हुए उसने कहा, "उठो,

चित्रकूट विन्ध्याचल
जिसकी केवल एक ही खुराक
१८-१०-४८ शरदपूर्णिमा को
से किसी भी तरह का नया व पुराना
दमा हमेशा के लिए जड़ से नष्ट
है। घर बैठे मँगाकर लाभ उठाइए।
महर्षि मुनीश्वर जी
संन्यासी आश्रम।चित्रकूट, बाँदा

भैया! बच्चा अच्छा हो जाय, फिर
दिन भर खिलाते रहना। मैं कभी
करूँगी।"
"कोई चिंता नहीं, मा,"
कहा, "विश्वास करो बच्चे का
बाँका न होगा। मैं पापी था,
परमात्मा ने मुझे दंड दिया।
मुझसे छीन लिया, पर तुम तो
भगवती हो। तुम्हारे प्रति वह
नहीं हो सकता। देखूं, कोई
हो तो बच्चे के लिये दूध ले आऊँ
और महादेव मकान के बाहर
गया, दीवार फाँदकर नहीं,
आदमियों की तरह, सदर दरवाजे

(५)

कमलकुमार के मकान के
महादेव ने पानों की छोटी सी
ली है। वह फिर लौटकर चोरों के
पर नहीं गया। रजनी का शिशु
उसकी गोद में रहता है। सवेरे
जहाँ महादेव घर में घुसकर
कि "आओ, राजा भैया,"
नन्हें नन्हें हाथ फैलाकर "दा, दा"
हुआ उसकी गोद में जाने को
है। उस समय वह मा की
को भी भूल जाता है।

सोवियट रूस के डिक्टेटर मार्शल स्टैलिन रूसी कलाकार गोर्की से शेर कर रहे हैं। गोर्की ने अपनी क्रांतिकारी रचनाओं के द्वारा रूसी-क्रांति को सफल बनाने में पूरी सहायता की थी।

पूज्य बापू पर भारतीय अभिनेत्रियाँ

सुरैया, पारो, वनमाला, रत्नमाला, किशोर साहू तथा वली साहब क्या कहते हैं ?

लेखक, श्री उमेश जोशी

> भारत की सुप्रसिद्ध अभिनेत्रियों तथा अभिनेताओं का पूज्य महात्मा गांधी के संबंध में क्या मत है, इसे इस लेख में प्रकट किया गया है। मैंने कई अभिनेत्रियों तथा अभिनेताओं के पास पूज्य बापू के संबंध में सम्मति जानने के लिये पत्र भेजा था। जो पत्र मेरे पास आये हैं, वह नीचे दिये जाते हैं। लेखक

ल्म जगत् की प्रसिद्ध गायिका और नेत्री मुमताज शांती।

(१)

की लोकप्रिय अभिनेत्री सुरैया ने एक पत्र में लिखा—

का कृपापत्र मिला। आपने जो के सम्बन्ध में मेरे विचार जानने वह मैं आपकी सेवा में प्रस्तुत कर जब कि दुनिया बापू को पूजती फिर मैं क्यों न बापू को पूजूँगी। इस युग की अमर ज्योति थे। वह तो हमेशा हमारे दिलों में जलती जब मैंने बापू की मृत्यु का समाचार तो मैं दंग रह गई, मुझे सहसा समा- विश्वास न हुआ। पर जो सत्य कौन टाल सकता है? बापू के से जो विश्व की क्षति हुई है, वह भी पूरी न होगी। बापू ने हमारे हुए जीवन को समेटकर कला और की लड़ी में पिरोया। हमारा स्तर ऊँचा किया। हम जो हृदय अंधेरियों की तरफ बढ़ रहे थे, रोक- जिन्दगी का सही रास्ता दिखाया। वे हमारे विकास के संबल थे। सम्मान के लिये मेरे पास शब्द नहीं। खोजती हूँ कि मैं किन-किन संकलन करके बापू को श्रद्धा- भेंट करूँ। भाषा की डिक्शनरी के पन्ने मैंने पलट डाले; परन्तु मुझे उन उसमें अभाव दीखा जिनसे कि महान् व्यक्तित्व निर्माण होता इसलिये आप इतने ही से सन्तोष । मेरे हृदय में बापू के लिये बहुत स्थान है, जिसको कि मैं लेखनी व्यक्त नहीं कर सकती। मेरी सम्पूर्ण- अपना राष्ट्र और समाज के साथ है। [illegible]

आपकी—सुरैया

(२)

सुप्रसिद्ध अभिनेत्री पारो का बापू के सम्बन्ध में मेरे पास निम्न पत्र आया है—

बम्बई १२-६-४८

आपका पत्र मिला——धन्यवाद! आपने जो मुझसे यह पूछा है कि मैं बापू को किस दृष्टिकोण से देखती हूँ, तथा उनका मेरे हृदय में क्या स्थान है? यह बतलाने से पूर्व मैं यह जरूरी समझती हूँ कि आप मुझे उत्तर के विलम्ब के लिये क्षमा कीजिये। मैंने बापू के सम्पूर्ण साहित्य का अध्ययन तो नहीं किया है, फिर भी जितना भी मैंने पढ़ा है इसके आधार पर मैं यह बात दावे के साथ कह सकती हूँ कि वह एक महान् साहित्यकार एवं कलाकार थे। उनका साहित्य जिन्दा साहित्य है जो कि युग-युगों तक जीवित रहेगा। कलाकार वह इसलिये थे कि उन्होंने कला की दुनिया में अभिनव क्रान्ति कर डाली। मुझे स्वयं नृत्य-कला में बापू की नवीन नवीन कल्पनाओं का सहारा लेना पड़ा। वास्तव में उनकी ऊँची उड़ान ही बड़ी कलात्मक हुआ करती थी। जितना भी उनके ऊपर लिखा जाये वह थोड़ा ही रहेगा, और फिर मैं तो लेखिका भी नहीं, मुझमें इतनी कहाँ शक्ति कि मैं बापू के महान् व्यक्तित्व को ठीक-ठीक आपके सामने चित्रित कर सकूँ? यह कार्य तो आप जैसे महान् कलाकारों का ही है। मेरी भगवान् से यही प्रार्थना है कि वह मुझमें इतनी शक्ति दे कि मैं जीवन यात्रा में गांधी जी के उसूलों को लिए हुए चल सकूँ। बस मैं इतना ही चाहती हूँ। मेरी कला तभी सफल होगी, जब कि मैं बापू को अपनी कला में उतार सकूँगी।

आपकी—पारो

फ़िल्म जगत् की प्रसिद्ध अभिनेत्री और गायिका सुरैया।

फिल्म-संसार की सुप्रसिद्ध अभिनेत्री रत्नमाला अपने पति और बच्चे के साथ।

(३)

सुप्रसिद्ध अभिनेत्री वनमाला बापू के सम्बन्ध में क्या कहती हैं? उनके विचार निम्न पत्र से स्पष्ट हो जाते हैं—

कार्ड आपका मिला। आपने जो यह दरियाफ्त किया है कि मैं बापू को किस आदर्श से देखती हूँ, उसको मैं आपके सामने रख रही हूँ। पूज्य बापू तो हमारे राष्ट्रपिता थे। शांति और अहिंसा के देवदूत। उन्होंने हमारे समस्त कल्मष को नष्ट किया। उन्होंने हमें भव्य जागरण के पथ पर ला खड़ा किया। बापू तो हमारे नन्दन वन के गुलाब प्रसून की स्वच्छ पंखुड़ियों पर बिखरी हुई पवित्र शबनम थे, या सत्य के अम्बर पर सतरङ्गी इन्द्र-धनुष, जिसने कि अपनी दिव्य झलक से विश्व को मोहित कर अपनी ओर आकर्षित किया। या यों कहिये कि भगवान् की नवीन कल्पना के वह प्रलुब्धकारी भावना थे। कुछ भी हो उनके निर्वाण से विश्व का हृदय सूना-सूना-सा हो गया। मुझे तो इस बात पर घोर लज्जा है कि उनके प्राणों का ग्राहक मेरी ही जाति का मरहठा युवक बना। १५ अगस्त आ गया है। हमको संकल्प करना चाहिये कि हम बापू की स्वर्ण सूझों का पालन करते रहेंगे। अधिक मैं क्या लिखूँ। बापू स्वयं प्रकाशमान हैं।

शुभेच्छु—वनमाला

(४)

विख्यात कलाकार किशोर साहू बापू के सम्बन्ध में लिखते हैं—

आपके सामने बापू के सम्बन्ध में मैं अपना दृष्टिकोण रख रहा हूँ। कला के शब्द-कोष में कोई ऐसे शब्द नहीं जिनका प्रयोग बापू के सम्मान में किया जाये। वह हँसते हुए तारों की मञ्जुल प्रभा थे। उन्होंने लोक-कल्याण के लिए अपना जीवन भी न्यौछावर कर दिया। कितने बहादुर वह थे—क्या विश्व के इतिहास

में इतनी बड़ी बहादुरी का प्रमाण और कोई मिल सकता है ? कदापि नहीं। उन्होंने अपनी दुनिया का निर्माण कला और सौंदर्य की भव्य पृष्ठभूमि पर किया। उनकी दुनिया में सत्य का उज्वल प्रकाश था, जिसमें हैवानियत एक मिनट भी नहीं डट सकती। उनके अचानक निर्वाण से हम सम्बलहीन हो गये, बेपतवार की नौका के सदृश्य। लेकिन हाँ इस घनघोर अन्धकार के बीच एक प्रकाश-रेखा दिखाई दे रही है, और यह प्रकाश-रेखा भी पूज्य बापू की निर्मित की हुई है। उन्होंने ही इस रेखा के विकास-स्वरूप का निर्माण किया। और वह प्रकाश रेखा है भारत की नवीन कल्पनाओं के आधार पंडित जवाहरलाल नेहरू। आज विश्व की आँखें आप पर ही लगी हुई हैं, क्योंकि आप बापू के सही उत्तराधिकारी हैं। बापू जिन्दा हैं जवाहर के देदीप्यमान व्यक्तित्व में। उनकी गम्भीर शक्ल की टेढ़ी मेढ़ी रेखाओं में टटोलिए तो आपको बापू की पवित्र आत्मा निश्चय ही मिल जायेगी। बापू के सम्बन्ध में तो मैं फिर कभी फुरसत में लिखूंगा, अभी आप इतने में सन्तोष करें।

आपका—किशोर साहू

(५)

भारतीय रजतपट की विख्यात अभिनेत्री रत्नमाला का एक पत्र देखिये—

बम्बई

१० मार्च, १९४८

आपका पत्र मुझे समय पर मिल गया था, किन्तु मैं पूना चली गई थी, कल ही वापस लौटी हूँ। आपके पत्र ने मेरे सामने एक नई समस्या पैदा कर दी है, यह पहला अवसर है कि आप इस प्रकार का गम्भीर सामयिक प्रश्न कर रहे हैं, आज तक किसी भी पत्रकार ने इस प्रकार का कदम नहीं उठाया। वास्तव में आपका नया कदम प्रशंसनीय है। मैं अपनी अल्प बुद्धि के अनुसार बापू के सम्बन्ध में चन्द शब्द लिख रही हूँ। बापू के ऊपर इतना लिखा गया है कि मेरे लिखने की कुछ भी गुंजाइश नहीं रही है। उस महामानव के प्रति जो भी सम्मान प्रगट किया जाये वही थोड़ा है। मैंने बापू की प्रार्थना में कई बार भाग लिया, जब जब मैं गई, तब तब मुझे आत्मक राहत मिली, प्रार्थना से लौटते वक्त मुझे ऐसा लगता था कि मानो मेरा शरीर एकदम हल्का हो गया है। जीवन की सम्पूर्ण समस्याओं का बोझा ऐसा गायब हो जाता था, बापू के पवित्र प्रवचनों के द्वारा जैसे गधे के सिर से सींग। मुझे तो बापू के यह शब्द कभी नहीं भूल सकते—"ईमानदारी के साथ कर्तव्य किये जाओ, कर्तव्य से भागो नहीं" मेरे पवित्र हृदय की प्रशस्त भावनाओं के रम्य प्रसूनों की माला पूज्य बापू के चरणों में समर्पित है।

आपकी—रत्नमाला

(६)

भारत की सुप्रसिद्ध अभिनेत्री मुमताज शान्ति को मैंने बापू के सम्बन्ध में पत्र लिखा उसका जवाब मुमताज शान्ति की तरफ से मिस्टर वली साहब ने दिया है। वली साहब भी हिन्दी के अच्छे माहिर हैं। आप कवि और शायर दोनों ही हैं—आप लिखते हैं—

प्रिय भाई जोशी जी,

जय हिन्द !

आपका मुमताज शान्ति के नाम भेजा हुआ पत्र आज मिला। वह तो आजकल अस्वस्थ हैं, इसलिये उन्होंने मुझसे उत्तर देने को कहा है। मैं उनके विचार आपके सामने रख रहा हूँ। मुझे और मेरी पत्नी को बापू अधिक प्यारे थे। वैसे तो वह दुनिया के प्यारे थे, ऐसा कौन प्राणी इस जगती पर होगा जिसको बापू से प्रेम न हो, यहाँ तक मिस्टर जिन्ना को भी बापू की मृत्यु से ठेस पहुँची। वास्तव में बापू हमारे यानी मुसलमानों के बहुत बड़े रहनुमा थे। उन्होंने मुसलमानों के लिये अपना जीवन ही दे दिया। मुसलमानों की भलाई के लिये उन्होंने क्या नहीं किया, लेकिन दुःख इस बात का है कि हमारे मुसलमान भाई "बापू" को ठीक नहीं समझ सके। क्या बापू का बलिदान हमारी आँखें खोलेगा ? आज जो मुसलमान भारतीय संघ में सुख-शान्ति की साँस ले रहे हैं, वह सिर्फ महात्मा गांधी जी की वजह से। हम उनके बहुत कृतज्ञ हैं। १५ अगस्त के दिन मेरा सब मुसलमान भाइयों से निवेदन है कि वे ईमानदारी के साथ बापू के पाक उसूलों के प्रचार का संकल्प करें, और इस बात की भी प्रतिज्ञा करें कि हम भारतीय संघ के प्रति वफादार रहेंगे।

आपका—वली

दाद, खुजली
और
हरेक मेलका चमडीका दर्दोंके लीए
गत ५० वर्षों से
जग विख्यात
कपड़े खराब नहीं करती।
नक्कालों से सावधान
सपट
लोशन
सपट एन्ड को, डिपार्टमेंट U.P, DAI.
बम्बई २

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ० ए०, बी० ए०, पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से और होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ्त मँगायें। पता :—
इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

मनोरंजक चुटकुले

एक मोटर से घोषणा हो रही थी कि राष्ट्रीय गान के लिये कौन सा गाना चुना गया है ?

इस प्रश्न पर भी काफी वाद-विवाद रहा। गाने पर भी (तिस पर राष्ट्रीय गाने पर) वाद-विवाद। अन्त में निर्णय हो गया 'वन्दे मातरम्' की जगह 'जनगण मन अधिनायक जय हे भारत भाग्य विधाता।"

* * *

भारत-सरकार ने जिस समय नाभा के राज्य का चार्ज लिया उस समय वहाँ के खजाने में काफी धन मिला।

उस धन से एक भारतवासी एक दिन तो जीवित रह ही सकता है। वह रकम कम थोड़े ही थी—केवल डेढ़ आने।

* * *

अर्थ-शास्त्रियों ने सरकार से अनुरोध किया है कि इस समय भुखमरी आदि से बचने के लिये आर्थिक सुधार के सारे कार्यक्रम मुअत्तल कर दिये जायँ, यह विरोध क्यों ? भुखमरी से बचने के लिए आर्थिक उत्थान रोकना ही अच्छा है।

* * *

क्या मिनिस्टर भी अच्छे व्यापारी बन सकते हैं ? इसका प्रत्यक्ष प्रमाण बंगाल की लीग मिनिस्टरी ने पिछले दिनों दिखला दिया था। मिनिस्टरी के व्यापार से जनता को गहरा धक्का लगा—सारा बंगाल दुर्भिक्ष में पड़ गया। व्यापार का क्या कम लाभ था ?

* * *

आज के युग में भी मिनिस्टर व्यापार करने में सिद्धहस्त हैं। अगल-बगल में दो दूकानें हैं। एक में छः आने सेर गेहूँ दूसरी में दस आने सेर। क्या यह व्यापार-कला नहीं है ?

* * *

गंगा-यमुना में बाढ़ आ गई। कहते हैं ऐसी बाढ़ पिछले कितने ही वर्षों से नहीं आई।

इसमें बुराई क्या ?

अपने बच्चों को स्वतन्त्रता में प्रफुल्लित देखकर हमारी देवियाँ गंगा और यमुना आदि भी प्रसन्न होकर बढ़ चली हैं।

पर चिन्ता यही है कहीं देश के पर्वत भी नदियों की तरह प्रसार न करने लग जायें !

* * *

भक्त लोग गङ्गा-तट पर निवास के लिये अपना घर इसलिये बनाते हैं कि नित्य-प्रति वे गङ्गा जी का दर्शन और स्नान किया करें। गङ्गा जी की इस बाढ़ से बनारस के बाबू राय कृष्णदास जी दर्शन से तो वंचित ही हो गए साथ ही उनका निवास-स्थान भी गया।

बड़े आदमियों के साथ में सुख भी होता है और दुख भी।

* * *

लोग सोचते हैं इस वर्ष पानी अधिक बरसेगा। लगभग ५० इंच पानी यू० पी० अकेले प्रान्त में बरस चुका होगा जब कि यहाँ १८ से ३० इंच तक पानी बरसा करता था। क्या अभी पानी कम बरसा जो लोग सोच रहे हैं कि अभी पानी अधिक बरसेगा। भगवान् करें इतने ही से गनीमत रहे !

* * *

आखिर हैदराबाद पर आ
गया ! कासिम रिजवी के पाप ने है
को भी चौपट कर दिया ! बेचारा
कहीं का न रहा ! कहावत है—
डूबता है नाव ले मँझधार में।

* *

अब हैदराबाद का क्या होगा
क्या ? वह वहीं रहेगा जहाँ है। पर नि
का क्या होगा ? अब पठारों की
जलाशय की शरण लेनी पड़ेगी;
निजाम की मृगतृष्णा पठारों से
हुई करांची के जलाशय में ही तृष्णा
होगी, शायद ऐसी आशा में हो।

* *

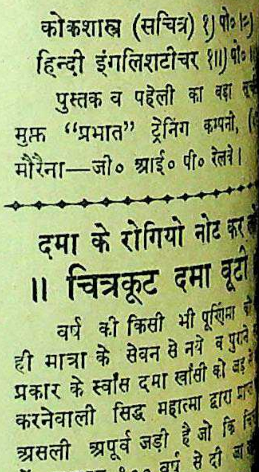
धोने के लिये
५०१ साबुन
दी टाटा आयल मिल्स कं० लिमिटेड

आज ही अवश्य मंगायें
कोकशास्त्र (सचित्र) १) पो० ।=)
हिन्दी इंगलिशटीचर १॥) पो०
पुस्तक व पहेली का बड़ा
मुफ्त "प्रभात" ट्रेनिंग कम्पनी,
मौरैना—जी० आई० पी० रेलवे।

दमा के रोगियो नोट कर
॥ चित्रकूट दमा बूटी
वर्ष की किसी भी पूर्णिमा
ही मात्रा के सेवन से नये व पुराने
प्रकार के स्वाँस दमा खाँसी को जड़
करनेवाली सिद्ध महात्मा द्वारा प्रा
असली अपूर्व जड़ी है जो कि
में लगभग १०० वर्ष से दी जा
आप लोग भी ता० १८-१०-४
पूर्णिमा को घर बैठे सेवन करके
लिये निरोग हो जायँ।
श्री महात्मा मौनीबाबा
आयुर्वेदिक आश्रम, चित्रकूट (यू

(रजिस्टर्ड)
१५० वर्ष की विश्व वि
(स्वाँस) दमा की फकीरी
जिसकी एक ही मात्रा
पूर्णिमा की रात्रि ता० १८-
(अनुसुइया बूटी) खीर के
करने से नया व पुराना दमा
से नष्ट हो जाता है। हजारों
बच्चे आराम पा चुके हैं।
लें ताकि टाइम पर मिल जावे।
—श्री महात्मा एस० के०
श्री सन्त सेवाश्रम,
पो० चित्रकूट,

देशदूत चित्रावली

के अवसर पर गवर्नमेंट हाउस में एक दावत दी गई थी। भारत के वाइसराय श्री राजगोपालाचारी दिल्ली तथा मेरठ मुसलमानों से हाथ मिलाते तथा बात करते दिखलाई दे रहे हैं।

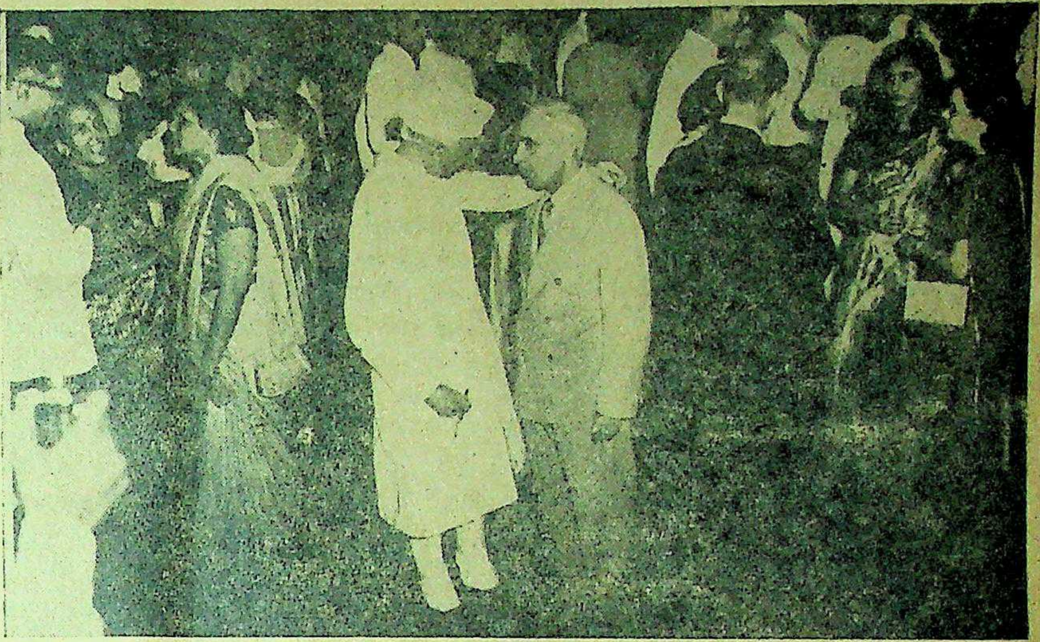

पिछले दिनों जिमखाना नई दिल्ली में पाकिस्तान के हाई कमिश्नर ने पाकिस्तान स्वतन्त्रता-दिवस मनाने के उपलक्ष्य में एक सभा की थी। सभा में पं० जवाहरलाल नेहरू, सर गिरजाशंकर बाजपेयी से कुछ परामर्श करते दिखाई दे रहे हैं।

और काश्मीर की महारानी, दिल्ली में काश्मीर के शरणार्थियों के बीच में। महारानी शरणार्थियों से बातें कर रही हैं।

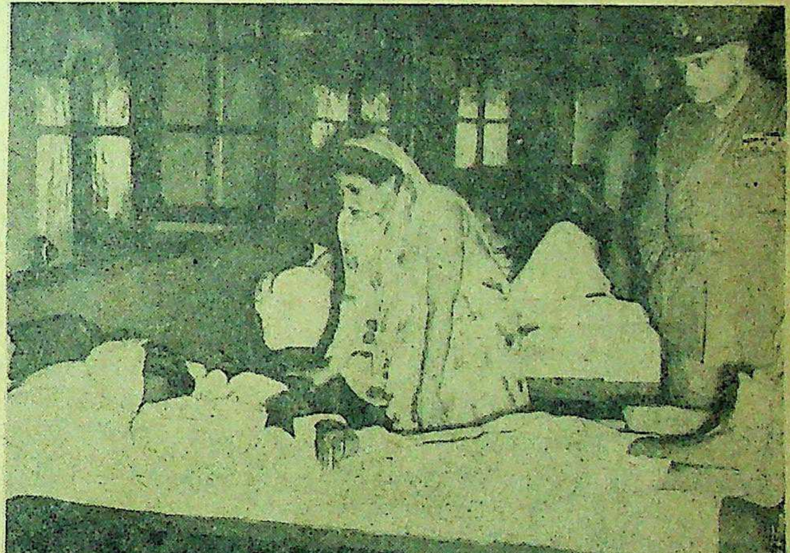

दिल्ली के सैनिक अस्पताल में महाराजा तथा महारानी काश्मीर, घायल सैनिकों का निरीक्षण कर रही हैं।

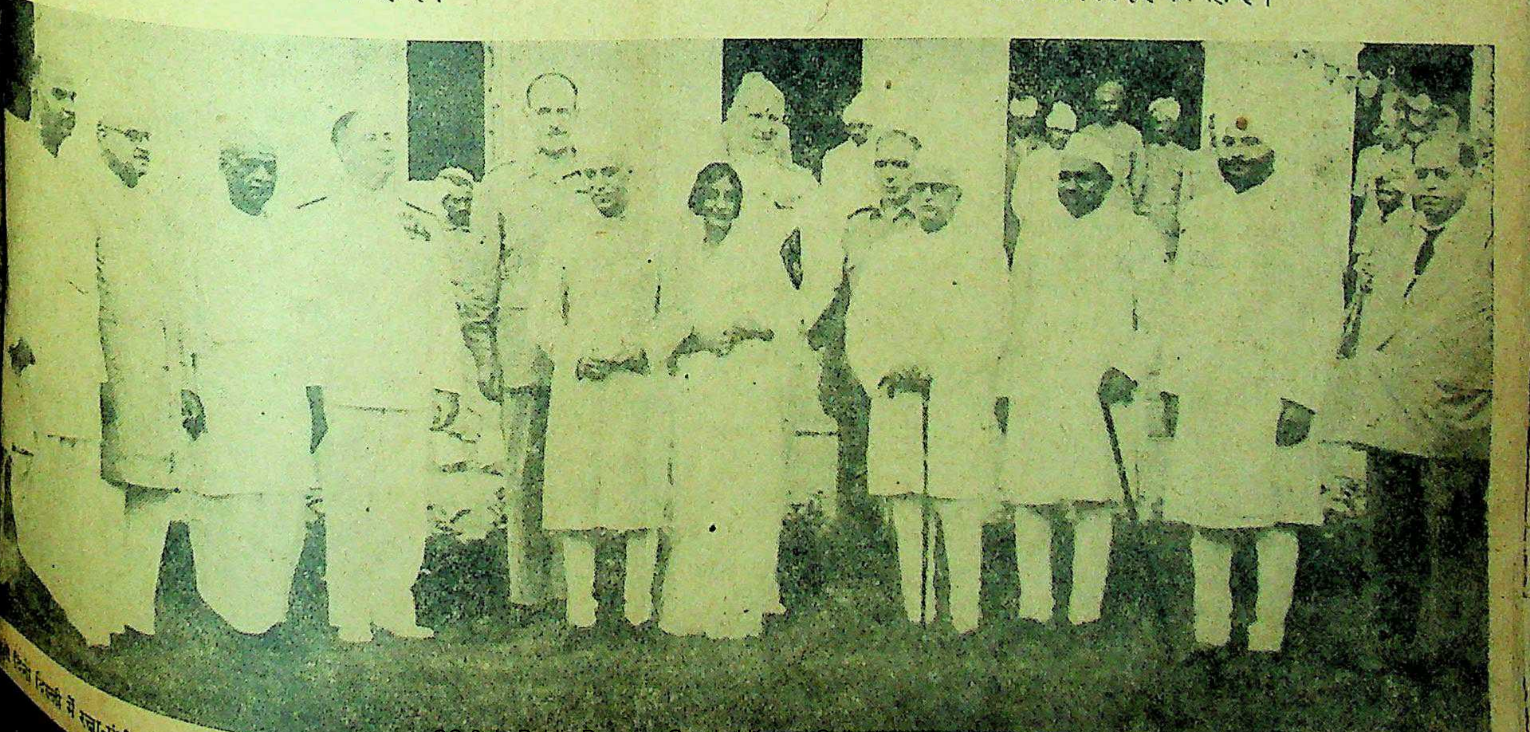

पिछले दिनों दिल्ली में रक्षा-मंत्री सरदार बलदेवसिंह ने अमेरिका के पूर्वी अटलाण्टिक और भूमध्यसागर क्षेत्र के समुद्री बेड़े के सेनाध्यक्ष एडमिरल ई० एल० कोनोली को प्रीत-भोज दिया

सम्पादक के नाम चिट्ठियाँ

भारत-सरकार और कासिम रिजवी

संयुक्तप्रान्त के फतेहपुर जिले के वहेरा नामक ग्राम के निवासी, हैदराबाद के प्रमुख रजाकार नेता सैयद कासिम रिजवी बी० ए०, एल-एल० बी० को अविलम्ब दिल्ली के लाल किले में लाकर, उसकी सर्वोच्च मीनार में खड़ा करके आम जनता के सामने फाँसी पर चढ़ाया जाय। कासिम रिजवी हैदराबाद का विनाशकारी पुच्छलतारा एवं वहाँ की जनता का राहुकेतु रहा है, और इस लड़ाई का पूरा जिम्मेदार भी वही था। दिल्ली के लाल किले पर आसफजाही झण्डा फहराने का उसका जो स्वप्न और हौसला था, उसका यह फल उसे अवश्य मिलना चाहिये। लाल किला में पहुँचने की उसकी मनोभिलाषा भी पूरी हो जायगी। विजेता के रूप में न होकर, बन्दी के रूप में ही लाल किले का दर्शन उसे करा दिया जाय। और पताका लगानेवाले किले के स्थान में एक निश्चित तिथि की घोषणा करके आम जनता के सामने उसे, आसफजाही पताका फहराने की याद दिलाते हुए, पाशविक दुष्कृत्यों का स्मरण कराते हुए, उसे फाँसी दे दी जाय। उसके जघन्य अत्याचारों का यह दण्ड भी न्यूनतम ही होगा। मैं कासिम रिजवी के जिले का निवासी होने के नाते भी केन्द्रीय सरकार से, देश की ओर से यह न्यायोचित माँग कर रहा हूँ। जनता की इस हार्दिक मनोकामना को अवश्य पूरा किया जाना चाहिये। रिजवी ने अपने घृणित, दानवीय कुकृत्यों से संयुक्तप्रान्त को और विशेषतः मेरे फतेहपुर जिले को उसका निवासी होने के नाते भारतीय इतिहास में सदैव के लिये कलंकित किया है।

अतः उसके जिले के निवासियों भी की जोरदार माँग है कि इस रिजवी को लाल किले में फाँसी दी जाय। इसके पूर्वज सन् १८५७ ई० से देश के अमर स्वाधीनता-संग्राम में अपना सर्वस्व अर्पण करके भारतीय सपूतों की तरह शहीद हुए थे, गोलियों के निशाना बने थे और फाँसी पर लटके थे। अँगरेजों से देश को मुक्त कराने के महान् प्रयास में इस परिवार की तमाम चल-अचल सम्पत्ति भी उस समय जब्त की गई थी। उसी उज्ज्वल वंश की तीसरी पीढ़ी में इस कुलाङ्गार रिजवी ने जन्म लेकर उनके पवित्र नाम को कलंकित किया है, और अपनी माता की पावन कोख लज्जित की है, अपने जिले के राजनैतिक गौरव में अमिट धब्बा लगाया है, देश की आत्मा को ठेस पहुँचाई है। इसने अपने पाशविक कृत्यों से हलाकू, चंगेजखाँ, तैमूर, नादिरशाह, औरङ्गजेब के काले कारनामें भी फीके व मात कर दिये गए हैं। इस्लाम के पवित्र नाम पर, कोलतार पोती है, और उसे कलंकित किया है। इसके ऊपर हैदराबाद राज्य की हजारों माताओं की पावन कोख सदैव के लिए सूनी करने के हजारों ललनाओं के प्रिय सुहाग-सिन्दूर छीनने, हजारों गृहदेवियों व कुमारियों के पावन सतीत्व नष्ट करने, निरीह वृद्ध, युवा, बालकों की नृशंस हत्या कराने, लूटपाट, नारी-अपहरण एवं बलात्कार के हजारों काण्ड करवाने की पूरी जिम्मेदारी है। इन अपराधों के करने व कराने का एकमात्र सबसे बड़ा प्रमुख अपराधी यह रिजवी ही है। इसके नकाब पोश रजाकारों ने व इसकी दूसरी पार्टी दीनदारों ने मनुष्यता को भी कलंकित करनेवाले, इतिहास में बेमिसाल पाशविक कृत्य किये हैं और राज्य में निरीह जनता के पावन रुधिर से होली खेलकर बर्बरता एवं पैशाचिकता का भीषण ताण्डव-नृत्य किया है। अतः आज देश की आम जनता की यह जोरदार न्यायोचित माँग व अभिलाषा है कि इस मानवता के हत्यारे रिजवी को अवश्य लाल किले में ही फाँसी दी जाय।

हैदराबाद के निरंकुश शासक निजाम नवाब मीरउस्मान अली खाँ को भी अविलम्ब गद्दी से उतारकर, उसकी समस्त व्यक्तिगत चल-अचल सम्पत्ति जब्त करके, हैदराबाद से निर्वासित करके दिल्ली के लाल किले में नजरबन्द रखा जाय, निजाम के पूर्व प्रधान मंत्री मीर लायक अलीखाँ व उसके पूरे मंत्रिमण्डल को देशद्रोह अपराध में हिन्द यूनियन से युद्ध छेड़ने के जुर्म में उन्हें भी हैदराबाद से निर्वासित करके दिल्ली के लाल किले में आजीवन नजरबन्द रक्खा जाय। निजाम व उसके पूर्वजों ने सदैव देश के साथ व तत्कालीन देश की सरकार के विरुद्ध विश्वासघात व विद्रोह किया है। सदैव से इसके पूर्वजों ने भी देश की तत्कालीन सरकार के विरोध में देश-हित के विपरीत अपने स्वार्थ-साधन के लिये बगावत का झंडा खड़ा किया था। भारतीय इतिहास और इसका व इसके वंश का इतिहास इस बात का साक्षी है। भारत के महान् सन् १८५७ ई० के अमर स्वाधीनता संग्राम में भी देश की स्वतन्त्रता के प्रयास में इसके पूर्वजों ने भीषण गद्दारी की थी और इसके फलस्वरूप ब्रिटिश सरकार ने इसे भी उपाधियाँ प्रदान की थीं। इसके राज्य की नींव ही विश्वासघात व देशद्रोह पर डाली गई है। इसके विश्वासघाती वंश ने सदैव अवसर देखकर कभी अँगरेजों का साथ दिया, और कभी फ्रांसीसियों का पक्ष लिया। सब तरह से निजाम स्वयं अँगरेजी साम्राज्यवाद का अनन्य भक्त, प्रमुख सहायक, पृष्ठ-पोषक, और अँगरेजी राज्य का फर्माबदार 'दोस्त' रहा है।

इसने सदैव देश के हित के विरुद्ध अपने गौराङ्ग महाप्रभुओं और 'चर्चिल बेविन गुट्ट' का दामन पकड़ा है और उनका साथ दिया है। राज्य की जनता की करोड़ों की सम्पत्ति इसने हिन्द सरकार से लड़ने के लिये शस्त्र खरीदने, इँगलैण्ड के टोरी नेताओं व पत्रों को भेंट करके अपनी ओर करने के प्रयास में पानी की तरह बहाया है। इसने सम्पूर्ण मुस्लिम जगत् का तानाशाह खलीफा बनने के अपने स्वप्न को पूरा करने के लिये, टर्की के इस्लाम के अन्तिम खलीफा श्री सुल्तान अहमद की पौत्री, अपनी ज्येष्ठ पुत्रवधू, बरार की शाहजादी श्रीमती दुर्रे शहवार को रोते हुए अपना आँचल फैलाकर हिन्द यूनियन से समझौता करनें की पहिले ही भिक्षा प्रार्थना को अपनी हृदय-हीनता व अकड़ से ठुकरा दिया था। परन्तु यह नासमझ, निरंकुश शासक रिजवी के हाथ की कठपुतली बना हुआ था। इसने राष्ट्र के प्रमुख राष्ट्रीय मुस्लिम नेताओं व अपने युवराज बरार के शाहजादे के सत्परामर्शों की भी सदैव इस दिशा में उपेक्षा की है। अतः न्यायतः इसके काले कारनामों का यह न्यूनतम दण्ड ही होगा। एक शासक होने के नाते हैदराबाद राज्य के समस्त काण्डों की पूरी जिम्मेवारी इसकी भी है, और इस नाते यह इन कार्यों का पूर्ण उत्तरदायी भी है। इतिहास ने कभी भी न्याय की तुला में अपराधी के पद व मान मर्यादा का ध्यान नहीं किया।

विश्व-इतिहास में हर हिटलर, बेनिये मुसोलिनी, जनरल टेजो, एयरफिल्ड मार्शल गोयरिङ्ग, हरवान रिबनट्राप, काउण्ट सियानो, मार्शल पेतॉं, आदि इसके जीते-जागते सजीव उदाहरण हैं। अतः हैदराबाद राज्य को सदैव के लिये निजामशाही मिटाकर, पूर्णतः स्वाधीन बनाकर, राज्यों के संघ में उसे मिलाकर, वहाँ पूर्ण जनतंत्रवादी उत्तरदायी सरकार अविलम्ब स्थापित कर दी जाय। निजाम को गद्दी से उतारकर उसके ज्येष्ठ पुत्र बरार के युवराज को पुनः उसकी गद्दी पर बिठाना और वहाँ निजामशाही राजतन्त्र कायम रखना और उसे पनपने देना एक महान् राजनैतिक विनाशकारी भूल होगी। निजाम या उसके वंश का विश्वास करके पुनः उसे पनपने देना सर्प के बच्चे को दूध पिलाकर पालने के समान देश के लिये अनिष्टकारी होगा।

सदैव से इतिहास की भी शिक्षा रही है कि अपने शत्रु को क्षमा करके कभी पुनः तैयारी करने का अवसर पाने के लिये कभी पनपने न देना चाहिये। इतिहास इसका साक्षी है कि इसके प्रतिकूल चलनेवालों ने सदैव राष्ट्र का एवं अपना विनाशकारी अनिष्ट किया है। आज निजामशाही को सदैव के लिये समाप्त करके हिन्द सरकार को समस्त देश, विशेष कर हैदराबाद राज्य के निवासियों व वहाँ की असंख्य बलिदानी स्वर्गीय पावन आत्माओं को संतोष एवं शान्ति प्रदान करने के लिये शीघ्र इस ओर अपना महत्वपूर्ण कदम उठाकर इस न्यायोचित माँग को अवश्य पूरा करना चाहिये। हमें पूर्ण आशा है कि हमारी राष्ट्रीय सरकार जनता जनार्दन की इस आकांक्षा व माँग को अवश्य पूरा करेगी।

फतेहपुर —दमाशंकर मिश्र
२४ सितम्बर ४८ 'सूर्य'

*

टिहरी की विधान सभा कि

टिहरी राज्य की विधान-नि
का निर्वाचन अब प्रायः समा
है। प्रजामण्डल की विज्ञप्ति
२३ सीटों पर प्रजामण्डल
पर लोक-परिषद् का अधिकार
है। यह तो स्पष्ट ही है कि परिषद्
मण्डल का ही बहुमत है, और
स्वतंत्र इकाई दल है, क्योंकि
दल ने चुनाव में भाग न लेकर
सभा का बहिष्कार ही किया है।
निर्वाचन में विशेषता यह पाई
कुल २ लाख ४० हजार
प्रजामडल स्वतंत्र इकाई दल
परिषद् दोनों को मिलाकर
४० हजार मतदाताओं ने
भाग लिया है, शेष सबसे
लाख मतदाताओं की है जिसने
करण के पक्ष का समर्थन
चुनाओं में भाग ही नहीं
दशा में प्रत्येक जानकार व्यक्ति
सकता है कि वर्तमान विधान
संख्यक मतों द्वारा बनी हुई
उसका कोई विशेष मूल्य नहीं
है, जब कि विलीनीकरण समि
लाख जनता का स्पष्ट बहुमत
इसकी परीक्षा केवल भारत-सर
महाराजा साहब के बीच सीधे
से ही हो सकती है। क्या ही अच्छा
कि अपने असली रूप में आकर
स्वतन्त्र इकाई दल १७
जनवरी तक टिहरी, नरेन्द्रनगर,
तथा कीर्तिनगर आदि स्थानों पर
एवं जनता की आम सभाओं के द्वारा
सम्मत टिहरी को युक्तप्रांत के एक
जिले के रूप में विलीनीकरण के प्रस्ता
प्रजामंडल कार्य-समिति द्वारा
निर्माण के समय किये हुए उपरोक्त
को अब भी विधान सभा के
समय कार्य-रूप में परिणत
देता और निश्चयात्मक रूप से
५ लाख जनता के आदर एवं
भाजन हो जाता। देखें अब वह
चलता है।

—सुरे

देवप्रयाग
(गढ़वाल)

*

गांधी-अभिनन्दन-
सम्पादक—श्री सोहनलाल
प्राक्कथन—सर सर्वपल्ली रा
संस्कृति, हिन्दी, उर्दू,
राती, सिन्धी, मराठी, तामि
मलयालम, कन्नड़, अंगरेजी
भाषाओं में महात्मा गांधी
हुई सर्वोत्तम कविताओं का
भाषा में अर्थ-सहित।
बड़ा आकार, सुन्दर छपाई
के अनेक चित्र। बढ़िया जिल्द
प्रशंसित।
सादी जिल्द ६॥) कपड़े की
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड

हँसपरिहास

भंग की तरंग

निजाम ने सुरक्षा-समिति से अपनी लौटा ली किन्तु समिति के सदस्य हैं कि विचार होना ही चाहिये। हे लोगों का काम मुरदा घसीटने का

* *

कोई व्यापारी फर्म चोरी-चोरी अफ्रीका जने का प्रयत्न कर रहा था। यदि र का परिवार सब नष्ट हो जाता तो की विशेषता क्या रह जाती ?

* *

लोगों का अनुमान है कि भूपाल के पाकिस्तान के गवर्नर-जनरल होंगे। इस कारण भूपाल और हिन्द में मैत्री होगी। हिन्द में जितने मुसलमान हैं सबको कोई न कोई पद पाकि- में मिल जाय तब तो मैत्री क्या प्रेम ा।

* *

अलीगढ़ विश्वविद्यालय ने हैदरा- के पराजय के दिन हड़ताल मनाई दि बाबा भी बोल देता तो क्या, द के लिये सब कुछ क्षमा है।

* *

अलीगढ़ विश्वविद्यालय भारत-सर- के शासन में है। भारत-सरकार के मन्त्री महोदय अलीगढ़ से कैसे पटते हैं ?

* *

कुछ लोग यह जानने के फेर में लगे कि भारत मद्रास पर शासन कर रहा है मद्रासप्रांत भारत पर शासन कर रहा क्या कोई बता सकता है ?

* *

गिरधारीलाल का कहना है कि साधु लोग मादक द्रव्य का प्रयोग छोड़ दें। यदि ऐसा होगा तो भगवान् के दर्शन कैसे होंगे।

* * *

समाचार छपा है कि बिहार असेम्बली का कार्य हिन्दी में होगा। क्या उस भाँति जैसे युक्तप्रांत में होता है ?

* * *

सुना जाता है चर्चिल उस दिन बहुत रोये जब निजाम ने सुरक्षा-समिति से अपना दावा लौटा लिया। आँखें सूज गई हैं और डाक्टर लोग उपचार कर रहे हैं।

* * *

अधिकारियों का कहना है कि सात साल के बाद सन् १९५५ में भारतवर्ष की आबादी चौवालीस करोड़ हो जायगी। हिसाब लगानेवाले ने यह नहीं सोचा कि इसी बीच कोई विश्वव्यापी युद्ध भी हो सकता है।

* * *

लियाकत अली खाँ कहते हैं कि हम लोग शांति ही चाहते हैं और संसार में शांतिस्थापन की चेष्टा कर रहे हैं। कोशकारों को शांति के शब्द का अर्थ बदलना चाहिये।

* * *

एक बड़े पुराने जर्मन दार्शनिक ने लिखा था कि 'शांति' युद्ध की पुत्री है। पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री शायद इसी कारण काश्मीर में लड़ रहे हैं।

* * *

हैदराबाद में कम्युनिस्ट लोगों की बन आई है। रजाकारों के हथियार ले-लेकर लूट-पाट कर रहे हैं। रजाकारों की सहायता कम्युनिस्ट लोग कर रहे थे तब चार दिनों में हैदराबाद हारा, यदि न करते तो तब क्या होता ?

बेढब की बहक

लेकख, श्री 'बेढब' बनारसी

पानी बंद होता है, न छाता है, न बरसाती,
कमर तक जल सड़क पर है, वहाँ किश्ती नहीं जाती।
कुछ सोचकर जाता हूँ कहने के लिये लेकिन
जब आँखें चार होती हैं न मुँह में बात है आती।
लड़की हैं, न लड़के हैं मगर है शौक लड़ने का,
शिखंडी आजकल बनने लगे अर्जुन के हैं नाती।
ोंने मरकहा एक साँड़ दरवाजे पे बाँधा है,
पहुँच-पाऊँ—न मैं इस वास्ते की है यह तैनाती।
ी चितवन का खंजर है कभी है जाल बालों का,
खुदा जाने मिटेंगे कब जहाँ से यह खुराफाती ?
नीचर से अमंगल कर रहे थे जो अभी कल तक,
बधाई दे रहे हैं आज शुकरू औ' जुमेराती।
ा में मीटिंगों में, बैठकर दुनिया की महिलाएँ,
यही कहती हैं—'अपने को अगर मैं मर्द कर पाती'।
हारा प्रेम महँगा है, नहीं मैं मोल ले सकता,
दुआ दूँगा अगर मिल जाय मुझको भीख खैराती।
ी दीवार, छत टूटी, घिरे बादल, वह आये हैं,
यही है रामधुन मेरी कि मेरी जान बच जाती।
ो हैं आजाद वह, तो हम भी हैं आजाद ए 'बेढब',
जरा देखेंगे हम भी कैसे अँग्रेजी नहीं जाती।

राजधानी का रंगमंच

बिगडैल और नखरेवाला सूचना विभाग किधर ?

भ्रष्टाचार निरोधक विभाग और लोहा विभाग षड़यंत्र केस—कृषि-मंत्री का प्रयास—गोरे अधगोरों को हिन्दी की शिक्षा।

(अपने विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

भ्रष्टाचार निरोधक विभाग द्वारा बहुप्रचारित लोहा व्यापार षड़यन्त्र केस अब क्या न चलेगा ? बताया जाता है कि मंत्रिमंडल पर अनेक ओर से इस बात का भारी दबाव पड़ रहा है कि इस मामले को समाप्त कर दिया जाय। यह स्मरणीय है कि भ्रष्टाचार निरोधक विभाग ने अत्यन्त परिश्रम और निपुणता के साथ इस प्रांत में लोहा और इस्पात के व्यापार में करोड़ों रुपये की चोर बाजारी के एक व्यापक षड़यन्त्र का रहस्योद्घाटन किया था, जिसमें भारत-सरकार के कानपुर स्थित लोहा और इस्पात कंट्रोलर और उनके दफ्तर के अनेक कर्मचारी भी लिप्त बताये गये थे और लोहा कंट्रोलर आर० आर० चोरी को तो इस सम्बन्ध में गिरफ्तार भी कर लिया गया था। चारी के अतिरिक्त सैकड़ों व्यापारी गिरफ्तार करके जमानत पर रिहा हुये तथा हजारों बही खाते पकड़े गये। भ्रष्टाचार निरोधक विभाग का दावा था कि यह मामला भारत के इतिहास में व्यावसायिक षड़यन्त्र का सबसे बड़ा मामला होगा, जिसमें १००० तो केवल अभियुक्त ही होंगे। उक्त विभाग इस मामले की जाँच तथा उनको न्यायालय के समक्ष के लिये जितना ही प्रयत्नशील था, उतने ही सचेष्ट थे अभियुक्त व्यापारी इस मामले को बीच में ही दफना देने के लिये। भ्रष्टाचार विरोधक विभाग के अधिकारियों को थैलियों तथा अन्य सुविधाओं के प्रलोभन दिये गये, पर व्यर्थ हुये। इस पर मंत्रिमंडल तक दौड़-धूप होने लगी। परन्तु सौभाग्यवश सिविल सप्लाइज विभाग उन दिनों श्री चन्द्रभानु गुप्त के अधिकार में था और यह समाजवादी मंत्री किसी भी दशम में इन समाजद्रोही व्यापारियों को क्षमा करने को तैयार न हुआ। इस पर प्रमुख कांग्रेसजनों द्वारा उन पर दबाव डाला जाने लगा। और अन्त में एक दिन आजिज आकर रसदमन्त्री को पत्रकारों के समक्ष प्रत्यक्ष शिकायत करनी पड़ी कि अनेक कांग्रेस नेता इस मामले को खतम करने के लिये उन पर बेजा दबाव डाल रहे हैं। समाजद्रोही नफाखोरों का साथ देनेवाले इन कांग्रेसी देशहितैषियों का नाम प्रकट करके उनका यथार्थ स्वरूप जनता को ज्ञात कराने के लिये पत्रकारों ने श्री चन्द्रभानु गुप्त से बड़ा अनुरोध किया, परन्तु राजनीतिक कारणों से श्री गुप्त ऐसा करने में असकर्थ रहे। परन्तु इन नेताओं का नाम, जो प्रकट में जनता के मित्र बनने का दावा करके अप्रयत्त उसके शत्रुओं की सहायता करते हैं, प्रकट हो जाना सार्वजनिक हित की बात होगी। मैं यह अधिकार पूर्वक कह सकता हूँ कि यदि इन नेताओं, का हस्तक्षेप न होता, तो कब का यह मामला न्यायालय के समक्ष आ जाता

* * *

कैलाशनाथ काटजू सम्पूर्णानन्द और श्री कृष्णदत्त पालीवाल को तलाक देने के बाद प्रांतीय सूचना-विभाग ने इस बार प्रधान मंत्री पं० गोविन्दवल्लभ पन्त के रूप में एक सबल पति पाया है जिन्होंने इस बिगडैल और नखरीले विभाग का शासन प्रबल और सुदृढ़ नीति से करना आरम्भ कर दिया है, पन्त जी ने इस विभाग में सबसे बड़ा और उपयोगी सुधार तो यह किया कि उसे डिप्टी कलेक्टरों के पंजे से निकालकर उसका संचालन-सूत्र श्री अमोलकचन्द्र के हाथ में दिया। श्री अमोलकचन्द्र यद्यपि प्रत्यक्ष पत्रकार नहीं रहे हैं, फिर भी वे एक पुराने सार्वजनिक कार्यकर्ता तथा अनुभवी वकील हैं।

२२॥) की रिस्टवाच मुफ्त
पूजा के उपलक्ष में—सिर्फ १५ दिनों के लिये। स्वीटजरलैंड की बनी गारंटी ३ साल
नं० ११२ रेक्टेंगुलर शेप
५ जुएल क्रोम केस ३४) रोल्ड गोल्ड ४०)
७ „ क्रोम केस ४४) रोल्ड गोल्ड ५५)
१५ „ क्रोम केस ५८) रोल्ड गोल्ड ७२)
नं० १२१ टोनो व कर्भ शेप
५ जुएल क्रोम केस ३७) रोल्ड गोल्ड ४४)
७ „ क्रोम केस ४६) रोल्ड गोल्ड ५८)
१५ „ क्रोम केस ६०) रोल्ड गोल्ड ७५)
४ जुएल नं० १२३ फ्लाट शेप क्रोम केस २८)
७ जुएल क्रोम केस ३५) रोल्ड गोल्ड ४८)
१५ „ क्रोम केस ३७) रोल्ड गोल्ड ६०)
नं० १२४ (१३) साइज
क्रोम केस १८॥) रेडीयम २०)
सेंटरसेकंडवाली २२।) रेडीयम २४)
एलार्म टाइमपीस १६) सुपीरीयर २०) बेस्ट २५) पोस्टेज अतिरिक्त।
कोई भी तीन घड़ी एक साथ लेनेवाले को एक घड़ी २२॥) रु० वाली मुफ्त मिलेगी।
एच० डेभिड० कम्पनी पो० ब० नं० ११४२४ कलकत्ता

संवाददाताओं के पत्र

जयपुर में कांग्रेस का अधिवेशन

स्वयंसेवक दल के प्रधान लोकनायक श्री जयनारायण व्यास का वक्तव्य

(संवाददाता-द्वारा)

जयपुर, "जिस प्रकार मजबूत मकान के लिए मजबूत नींव का होना आवश्यक है, यद्यपि बाहर से वह दिखाई नहीं देती, उसी प्रकार किसी भी संगठन के लिए चाहे वह सामाजिक हो या राजनैतिक या फिर धार्मिक, स्वयंसेवकों की निःस्वार्थ सेवा, अदम्य उत्साह एवं अटूट लगन अत्यन्त आवश्यक है, सच पूछिए तो किसी भी संगठन के किसी भी बड़े आयोजन में वे आधार हैं" यह शब्द जोधपुर राज्य के प्रधान मन्त्री तथा कांग्रेस अधिवेशन स्वयंसेवक दल के प्रधान दलपति श्री जयनारायण व्यास ने केन्द्रीय स्वयंसेवक शिक्षण शिविर के स्वयंसेवकों के समक्ष अपने संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित भाषण में कहे। श्री व्यास प्रातःकाल शिक्षण शिविर का उद्घाटन करनेवाले थे किन्तु किसी कारणवश आप नियत समय पर जयपुर नहीं पहुँच सके और जयपुर राज्य के शिक्षा सचिव श्री देवीशंकर जी तिवारी द्वारा आपकी अनुपस्थिति में यह कार्य सम्पन्न हुआ।

भाषण जारी रखते हुए आपने कहा कि "कोई भी महान् कार्य न केवल धन से पूरा हो सकता है और न केवल बुद्धि (मन) से ही, दोनों मिलकर भी शायद उसे पूरा न कर सकें जब कि तन का—शारीरिक शक्ति का सहयोग उसे प्राप्त न हो। अतएव तन को परिश्रम के लिए स्वस्थ एवं चुस्त रखना अत्यन्त आवश्यक है। एक प्रकार का स्वर्गीय उत्साह आपमें होना चाहिए। अपनी उद्देश्य की पूर्ति के लिए तभी आपका श्रम, आपके लिये आनन्द का कारण बनेगा अन्यथा तो वह आपके शरीर को थकाकर चूर कर देनेवाला होगा, इस माने में स्वयंसेवक किसी भी संस्था या आयोजन के शरीर हैं और अपने दलपति के आदेशों का पूरी लगन और उत्साह के साथ पालन करना उनका कर्तव्य हो जाता है।

कांग्रेस अधिवेशन के सम्बन्ध में बोलते हुए आपने कहा कि "राजपूताना प्रान्त के लिये यह परम सौभाग्य का विषय है कि स्वतन्त्र भारत में कांग्रेस का पहला अधिवेशन यहाँ हो रहा है। परन्तु इस खुशी में हमें इस महान् यज्ञ को सफल बनाने की दिशा में जो कठोर जिम्मेदारियाँ हमारे सामने हैं उन्हें नहीं भूल जाना है। और इन जिम्मेदारियों को पूरा करने में एक सुदृढ़ एवं सुसंगठित स्वयंसेवक दल का जो भाग होगा वह भी कम महत्त्व का नहीं है।

"अनुशासन का पालन करना स्वयंसेवक का सबसे पहला कर्तव्य है। यह ठीक है कि अन्धे होकर कोई काम हम न करें। बुद्धि का आवश्यक उपयोग भी किया जाय किन्तु यह इस प्रकार न होना चाहिये कि उससे अनुशासन भंग होता हो। अनुशासन में रहते हुए अपने नायक या दलपति के आदेशों का बुद्धिपूर्वक पालन करके ही आप अपने संगठन को शक्तिशाली बना सकेंगे।

आगे आपने बतलाया कि "यह मानकर हमें नहीं चलना चाहिये कि अधिवेशन के लिये ही स्वयंसेवक दल का संगठन किया जा रहा है, सच पूछिए तो राजपूताना प्रान्त का भी एक ऐसा मजबूत सेवा-दल का निर्माण हमें करना है जो यहाँ की राजनैतिक चेतना का आधार बन सके, ऐसा संगठन आपका हो कि भारत भूमि के प्रत्येक भाग में जब कभी भी ऐसे अवसर वहाँ आयें आपकी माँग हो। दूसरे प्रान्तों के लिये आपका संगठन आदर्श बने और इस प्रकार राजस्थान का मस्तक आप गौरव से ऊँचा कर सकें।

अन्त में आपने स्वयंसेवकों से उनके कर्त्तव्य को पहचानने, अध्यापकों एवं नायकों तथा दलपति आदि के आदेशों का हृदय से पालन करने की अपील करते हुए भाषण समाप्त किया।

इसके पश्चात् श्री व्यास का परिचय शिशिर में भाग लेनेवाले स्वयंसेवक-स्वयंसेविकाओं से कराया गया। स्मरण रहे कि शिविर में शिक्षार्थियों की संख्या ७२ है जिनमें ३१ महिलायें हैं। इनमें राजस्थान प्रान्त के १६, मत्स्य के १२, जोधपुर ६, सिरोही के १ तथा जयपुर के ३७ स्वयं सेवक हैं।

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी कलकत्ता की ओर से श्री भालचन्द शर्मा तथा श्री मँगतूराम जालान अधिवेशन के अवसर पर सोसायटी की ओर से भोजन की व्यवस्था करने के सिलसिले में आवश्यक बातचीत करने जयपुर आये। भोजन-उपसमिति के संयोजक, श्री रामेश्वर जी अग्रवाल से इस संबंध में विस्तार के साथ आप लोगों की बातचीत हुई जिसके फलस्वरूप कांग्रेस प्रतिनिधियों, डेलीगेटों और कांग्रेस-कार्यकारिणी के सदस्यों के भोजन प्रबन्ध का भार पूरी तरह सोसाइटी पर छोड़ा गया। यह भी निश्चय हुआ कि व्यवस्था संबंधी सारा खर्च सोसाइटी उठाएगी एवं आवश्यक सामग्री भोजन-उपसमिति सुलभ करेगी। आशा की जाती है सोसाइटी की ओर से यह काम १ नवम्बर से बाकायदा शुरू कर दिया जायगा;

आगामी कांग्रेस-अधिवेशन के लिये मोती डूंगरी क्षेत्र में प्रस्तावित गांधी नगर का शिलान्यास करने के लिये श्रद्धेय विनोबा भावे २० अक्तूबर को प्रातःकाल जयपुर में पधार रहे हैं। इस अवसर पर आपसे प्रार्थना की जा रही है कि कुछ दिन ठहरकर रचनात्मक कार्य में संलग्न जयपुर राज्य की संस्थाओं का आप निरीक्षण एवं पथ-प्रदर्शन करें। आशा है कि आप अनुमानतः एक सप्ताह यहाँ ठहरेंगे जिसमें आप स्थानीय खादी संघ, जयपुर राज्य गो-सेवा संघ एवं चर्खा संघ के अतिरिक्त वनस्थली बालिका विद्यापीठ, वनस्थली, तथा अखिल भारतीय चर्खा संघ की राजस्थान शाखा, गोविन्दगढ़ का भी निरीक्षण करेंगे।

—संवाददाता

* * *

आगरा में आगामी ३ अक्टूबर को अग्रवाल कुलप्रवर्तक श्री अग्रसेन जी महाराज की जयन्ती समस्त भारतवर्ष में बड़ी धूम-धाम से मनाई जायेगी। समस्त अग्रवाल बन्धुओं से प्रार्थना है कि वे इस दिन अपने यहाँ सभा करके, श्री अग्रसेन जी महराज के प्रति अपने श्रद्धाञ्जलि अर्पितकर और अपनी समाज की उन्नति तथा संगठन के लिए प्रयत्नशील हों। भारत-सरकार से भी प्रार्थना है कि वह इस दिन की आम छुट्टी घोषित करे और आल इंडिया रेडियो से अग्रवाल समाज के लिए एक विशेष प्रोग्राम ब्राडकास्ट करे। सभा आदि की सूचना "अग्रवाल हितैषी" आगरा में प्रकाशनार्थ अवश्य भेजी जाये।

श्री अग्रसेन जयन्ती के उपलक्ष में १०० सार्वजनिक संस्थाओं तथा बहनों को 'अग्रवाल हितैषी, बजाय ५) के ३) में दिया जावेगा। अतएव जो भाई बहन इस सुविधा से लाभ उठाना चाहें वे अपना वार्षिक चन्दा मनीआर्डर द्वारा शीघ्र भेज दें।

—संवाददाता

* * *

प्रयाग प्रयागवाल सभा दारागंज ने यह प्रस्ताव स्वीकृत किया है—हमारी भारतीय सैनिकों के प्रबल प्रहारों से ठिकाने पर आये हुए निजाम सरकार की पराजय का अचानक समाचार सुनकर दारागंज प्रयागवाल सभा की ओर से आज तीर्थ सम्राट् श्री वेणीमाधव जी का विशेष रूप से पूजन किया गया तथा ब्राह्मण, साधुओं, भिखारियों को मिठाई बाँटी गई। और बाद में उपस्थित जन-समुदाय इस विजय के उपलक्ष्य में, भारत के प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल जी नेहरू, सरदार पटेल जी, रक्षामन्त्री बल्देवसिंह जी को हार्दिक धन्यवाद प्रदान किया। साथ ही हम अपने वीर, रणकुशल, सेनापति राजेन्द्रसिंह को भी हार्दिक धन्यवाद प्रदान करते हैं।

—नन्दलाल मिश्र
उपमन्त्री

* * *

हरिद्वार गुरुकुल विश्वविद्यालय से निकलनेवाली गुरुकुलपत्रिका श्रद्धानन्द-बलिदान पर्व के अवसर पर 'श्रद्धानन्द अङ्क' के रूप में प्रकट होगी। इस में पूज्य स्वामी जी के प्रभावशाली व्यक्तित्व के अतिरिक्त इनके जीवन कार्यों और उनके जीवन दर्शन पर अधिकारी विद्वानों के विचार-पूर्ण लेख प्रकाशित होंगे।

—रमेश वेदी, सम्पादक

* * *

देवप्रयाग (गढ़वाल) की सभी संस्थाओं की ओर से भारतीय संघ के हैदराबाद की [illegible] पर खुशियाँ मनाई गई। जनता की

भगवान् कृष्ण और महात्मा

(पेज ५ का शेष)

वर्षों के इतिहास से आँख बन्द
विनाश करके ही साँस लेंगे।
मैं आशावादी हूँ। मेरी
यही आशा है कि भारत फिर
अपने प्राचीन गौरव को
संसार में एक नई रोशनी
हम पागल न बने और समय पर
तो मेरी यह भी धारणा है कि
अन्दर पाकिस्तान के लोग हिन्द
मिलने की भिक्षा माँगेंगे और
एक और अखण्ड बन जायेगा।
यह सब तभी हो सकेगा जब हम
और हिम्मत से काम लें और
जीवन तपस्वी और साधनामय
पूरी कोशिश करें। अमृत
नहीं टपका करता है। वह तो
पाथ का ही मीठा फल होता है।
भगवान् करे बापू की अमर
भारत को सन्मार्ग दिखाती रहे
सावधान होकर अपने उज्ज्वल
और धीरे धीरे लेकिन निश्चित
श्रद्धापूर्वक बढ़ते जावें।

* *

एक विराट् सभा श्री सन्तलाल
की अध्यक्षता में हुई। श्री
श्री "निर्मोही", श्री प्रेमलाल
मुरलीधर शास्त्री के भाषण हुए। और
सर्वसम्मत प्रस्ताव द्वारा
भारतीय फौज को उसकी
पर बधाई दी गई।

गढ़वाल के प्रसिद्ध
अध्यापक श्री नवकुमार
ही में स्वर्गवास हो गया है।
समुदाय में महान् शोक एवं
हुआ है। आप डी० ए० वी०
पौड़ी में विज्ञान-शास्त्र के
विज्ञान के अतिरिक्त हिन्दी तथा
ष्ट्रीय परिस्थिति के भी अच्छे
टिहरी राज्य की जनता
सभा के चुनाव के समय
नाम पर वोट दिये गए हैं वह
स्वतन्त्र इकाई दलवालों की
का घोर विरोध कर रही है। और
मालूम हुआ है कि गढ़वाल
अब "मर्जर" के पक्ष का
लगी है। किन्तु विलीनीकरण
लोक-परिषद् से कोई सम्बन्ध नहीं है
न वह उसके साथ सहयोग ही
चाहती है।

* *

लखनऊ गांधी कला केन्द्र
के प्रथम सामाजिक चित्र-
मुहूर्त २ अक्तूबर को होना
हुआ है। आशा की जाती है
की शोभा बढ़ाने के लिए
प्रमुख व्यक्तियों का भी
सकेगा। चित्र की सफलता
परिश्रम किया गया है।
प्राप्त कलाकारों का सहयोग
गया है।

* *

रामचरितमानस

टीकाकार—डाक्टर श्यामसुन्दरदास

'मानस' का महत्व किसी से छिपा नहीं है। भारतवर्ष में तो इसका मान है ही, अन्य देशों में भी इस अमर काव्य का आदर है। यह प्रामाणिक संस्करण इधर कई वर्ष से अप्राप्य था। हाल में ही छपकर तैयार हुआ है। ग्राहकों को शीघ्रता करनी चाहिए। अधिक प्रतियाँ नहीं छापी गई हैं।

बड़े आकार के १२०० पृष्ठ। रंग-विरंगे दर्जनों चित्र। सजिल्द प्रति का

मूल्य १२) रुपये

जहाँ पर हमारी ब्रांच या एजेंसी है वहाँ खरीदने पर डाकखर्च की बचत होगी।

सचित्र
रामचरितमानस
मूल्य १२) बारह रुपये

हमारी ब्रांचें और एजेन्सियाँ

१ इलाहाबाद सिटी—न्यू ऐरा बुकहाउस, ह्विवेट रोड
२ आगरा—आगरा पब्लिशिङ्ग हाउस, बाग मुजफ्फर खाँ
३ अजमेर—इंडियन प्रेस लिमिटेड, कचहरी रोड
४ अलमोड़ा—डिस्ट्रिक्ट बुकडिपो, लालबाजार
५ बनारस—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, बनारस छावनी
६ बाँदा—बुंदेलखण्ड पब्लिशिङ्ग हाउस
७ बरेली—इंडियन बुकडिपो
८ बम्बई—भारतीय पुस्तक भण्डार, कालबा देवी रोड
९ बीकानेर—गर्गबुक कम्पनी, कोट के भीतर
१० कलकत्ता—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, २२।१ कानवालिस स्ट्रीट
११ कानपुर—साहित्य-रत्नालय, श्रद्धानन्द पार्क
१२ दिल्ली—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, नई सड़क
१३ गोरखपुर—पुस्तक-स्थान, बख्शीपुर
१४ ग्वालियर—लायल बुकडिपो, पाटनकर बाजार, लश्कर
१५ इन्दौर—नवयुग साहित्यसदन, खजूरी बाजार
१६ जयपुर—गोपाल बुकडिपो, त्रिपौलिया बाजार
१७ जबलपुर सी० पी०—इंडियन प्रेस, लिमिटेड
१८ लखनऊ—इंडियन बुकडिपो, अमीनुद्दौला पार्क
१९ मेरठ—पुस्तक-स्थान, वैस्टर्न कचहरी रोड
२० पटना—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, पो० ऑ० बाँकीपुर
२१ राँची—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, कोर्ट रोड
२२ अम्बाला (पूर्वी पंजाब)—इंडियन प्रेस लिमिटेड, दुर्गाचरण रोड

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

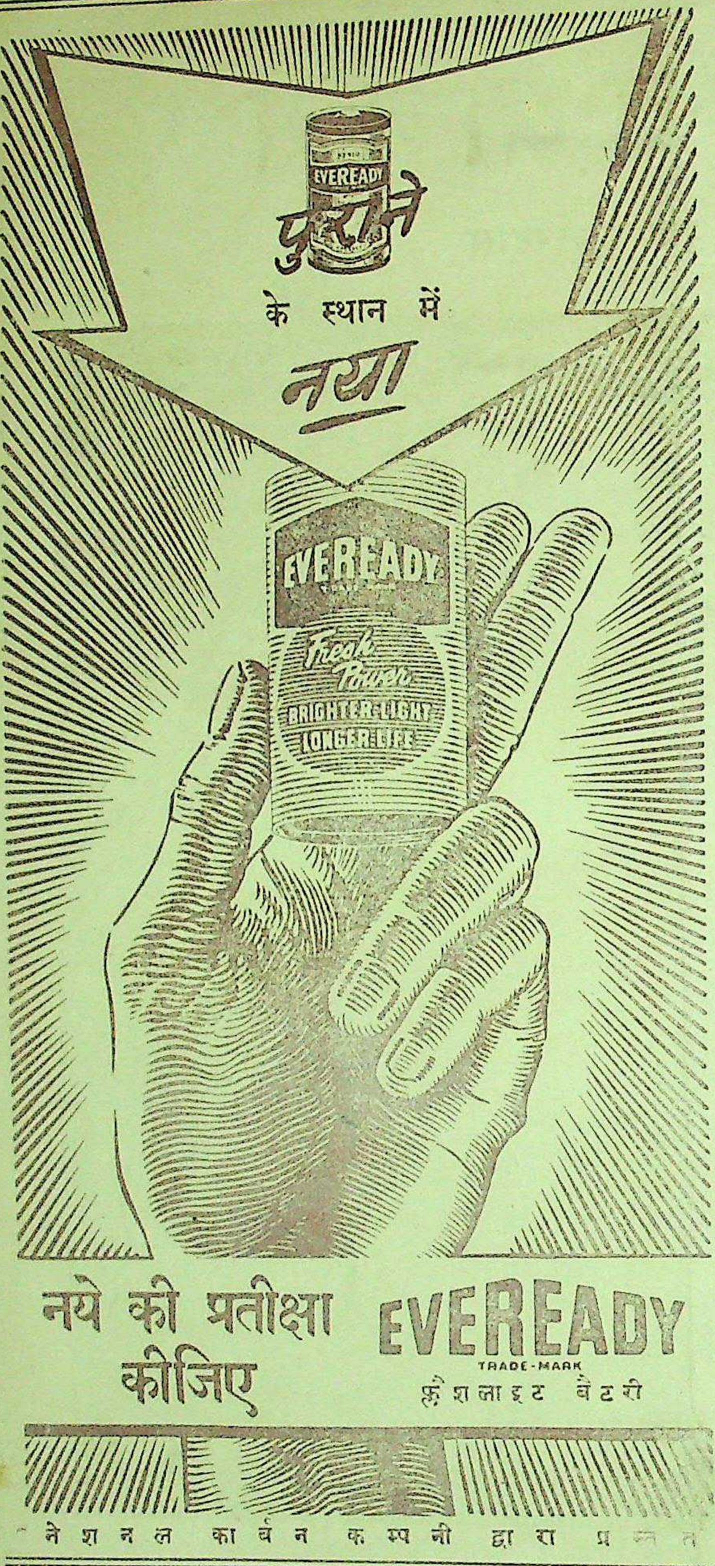

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५।।=), डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

कोक शास्त्र

इसमें स्त्री-पुरुषों के अद्भुत की जोड़दार फोटो, तसवीरें, यौवन के आनन्द पोशीदा तरीके, प्राचीन भेद जिनका लिखना सभ्यता के विरुद्ध है। जो शादीशुदा न हो उसको दी जाती। मूल्य २।।) रुपया, डाक-खर्च माफ।

खुफिया तसवीरों के कार्ड

२५ कार्ड का सेट २।।) रुपये में

पता—यलो ग्रीन एन्ड को० (D D A) 16, मेरीना अरकेड

Yellow Green & Co., (D D A) 16, Marina Areada,

भारी लूट ?

अवसर मत चूकिये आज

४) रु० में सात नई पुस्तकें

(१) ग्रहस्थ शास्त्र—दाम्पत्य जीवन को सुखी, सन्तुष्ट बनानेवाली वशीकरण विद्या—वशीकरण मन्त्रों तथा जादू के खेलों का संग्रह। टीचर (हिन्दी) अँगरेजी लिखना-पढ़ना और बोलना सीखिये। मू० परिस्तान आर्ट पेपर पर छपी हुई बढ़िया रंगीन चित्रावली मू० १) (५) कुंजी मू० ।।) (६) संगीत बोल-गान विद्या तथा छन्द विद्या सिखानेवाली मू० १।) (७) ज्योतिषसार मू० १)

सात पुस्तकों के सेट का मूल्य ४) पोस्टेज पैकिंग ।।)

ग्लोब ट्रेडिंग कं० (न्योसेट सैकरना नं० ४, अलीगढ़

'दमा' और पुरानी खाँसी के रोगियो—नोट

(अब चूके तो फिर साल भर तक पछताओगे)

हर साल की तरह से इस साल भी हमारी जगत् विख्यात बूटी' के दो हजार पैकेट आश्रम में मुफ्त बाँटे जावेंगे, जो (शरद् अक्टूबर को या फिर (कार्तिक पूर्णिमा) में एक ही खुराक खीर में इस दुष्ट रोग से छुटकारा मिल जाता है। जो रोगी समय पर आश्रम वे सदा की तरह २।=) रु० विज्ञापन, रजिस्ट्री आदि खर्च अभी से तुरन्त मँगा लें। देर करने पर फिर गत वर्ष की तरह सैकड़ों को निराश नोट कर लें कि वी० पी० किसी को नहीं भेजा जाता है। अमीर बाँटने के लिए कम से कम २५ आदमियों के लिए ४०) रु० भेजें।

पता—रायसाहब के० एल० शर्मा रईस (D) 'जगाधरी' [पूर्व पंजाब]

'कथा-साहित्य की सबसे अच्छी प्रतिनिधि पत्रिका'

मंजरी

प्रतिमास सचित्र, सरस और कलात्मक कहानियों द्वारा अपने पाठकों का मनोरंजन कर रही है आप भी नियमित रूप से 'मंजरी' पढ़कर स्वीकार करेंगे कि—

१—हिन्दी के आचार्यों और पत्र-पत्रिकाओं ने 'मंजरी' की प्रशंसा की है, वह वास्तव में उचित है।

२—हिन्दी के श्रेष्ठ कथाकारों के अतिरिक्त विश्व-विख्यात विदेशी श्रेष्ठ और सरस कहानियाँ भी 'मंजरी' में प्रकाशित हो रही हैं।

३—कहानियों के साथ-साथ, एक धारावाहिक उपन्यास, कथा- लेखकों के अध्ययनशील लेख और कथा-कृतियों की निष्पक्ष समीक्षा रहती है।

४—कहानियों में दर्जनों चित्र, दुरंगी छपाई, कलात्मक मुद्रण आवरण 'मंजरी' की अपनी विशेषताएं हैं।

५—जिन कथाकारों की कहानियाँ आपका मनोरंजन करती हैं, संक्षिप्त परिचय भी 'मंजरी' प्रस्तुत करती है।

सांस्कृतिक मनोरंजन के अनुष्ठान में 'मंजरी' को सक्रिय सहयोग दीजिए - उसके वार्षिक ग्राहक बनिए

प्रति अङ्क

वार्षिक मूल्य ६) छः रुपये

—प्रबन्धक 'मंजरी'—

इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद

र्षिक मूल्य ७।।)
=)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

१० आक्टोबर, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 10th October, 1948

र का विभाजन द्रोहपूर्ण है
की वैदेशिक नीति कैसी है ?

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

भारतीय भिखमंगों की समस्या
रंगमंच, मातृमन्दिर और स्वास्थ्य-चर्चा

भारत माता

अपने बच्चों से कहो ! कि वुड वर्ड का ग्राइप वाटर बच्चों को तंदुरुस्त रखता है

IMPORTANT TO MOTHERS
WOODWARD'S CELEBRATED
"GRIPE WATER"
INFANTS PRESERVATIVE

WOODWARD'S GRIPE WATER
keeps baby well

“सर्प से लड़ता हुआ बालक” ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिए इसको अवश्य देख लिया करें।

1-WW 117—117 W. WOODWARD LTD., LONDON, ENGLAND.

भारी लूट ? अवसर मत चूकिये आज ही मँगाइये ४) रु० में सात नई पुस्तकें

(१) गृहस्थ शास्त्र—दाम्पत्य जीवन को सुखी, सन्तुष्ट बनानेवाली मू० २) (२) वशीकरण विद्या—वशीकरण मन्त्रों तथा जादू के खेलों का संग्रह। (३) इँग्लिश टीचर (हिन्दी) अँगरेजी लिखना-पढ़ना और बोलना सीखिये। मू० ।।।) (४) हुस्न परिस्तान आर्ट पेपर पर छपी हुई बढ़िया रंगीन चित्रावली मू० १।) (५) व्योपार की कुंजी मू० ।।) (६) संगीत सोल-गान विद्या तथा छन्द विद्या सिखानेवाली नई पुस्तक मू० १।) (७) ज्योतिषसार मू० १)

सात पुस्तकों के सेट का मूल्य ४) पोस्टेज पैकिंग ।।)

ग्लोब ट्रेडिंग कं० (न्योसेट सैकरना नं० ४, अलीगढ़)

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे **“वीर्यसंजीवनसत”** ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ **“तिला मस्ताना”** की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५।।=), डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

२२।।) की रिस्टवाच मुफ्त

पूजा के उपलक्ष में—सिर्फ १५ दिनों के लिये। स्वीटजरलैंड की बनी गारंटी

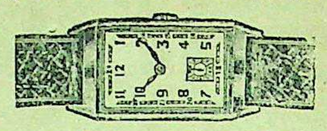

नं० ११२ रेक्टेंगुलर शेप

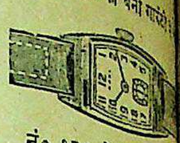

नं० १२१ टोनो व कर्व

५ जुएल क्रोम केस ३४) रोल्ड गोल्ड ४०) ५ जुएल क्रोम केस ३७) रोल्ड गोल्ड
७ ,, क्रोम केस ४४) रोल्ड गोल्ड ५५) ७ ,, क्रोम केस ४६) रोल्ड गोल्ड
१५ ,, क्रोम केस ५८) रोल्ड गोल्ड ७२) १५ ,, क्रोम केस ६०) रोल्ड गोल्ड

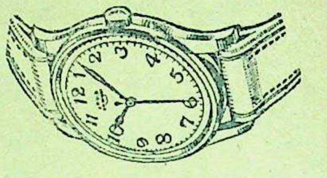

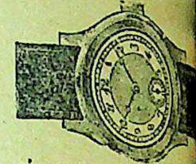

४ जुएल नं० १२३ फ्लाट शेप क्रोम केस २८) नं० १२४ (१३) साइज
७ जुएल क्रोम केस ३५) रोल्ड गोल्ड ४८) क्रोम केस १८।।) रेडीयम
१५ ,, क्रोम केस ३७) रोल्ड गोल्ड ६०) सेंटरसेकंडवाली २२।) रेडीयम
एलार्म टाइमपीस १६) सुपीरीयर २०) बेस्ट २५) पोस्टेज अतिरिक्त
कोई भी तीन घड़ी एक साथ लेनेवाले को एक घड़ी २२।।) रु० वाली मुफ्त

एच० डेभिड० कम्पनी पो० ब० नं० ११४२४ कलकत्ता

‘कथा-साहित्य की सबसे अच्छी प्रतिनिधि पत्रिका’

मंजरी

प्रतिमास सचित्र, सरस और कलात्मक कहानियों द्वारा अपने पाठकों का मनोरंजन कर रही है
आप भी नियमित रूप से ‘मंजरी’ पढ़कर स्वीकार करेंगे कि—

१—हिन्दी के आचार्यों और पत्र-पत्रिकाओं ने ‘मंजरी’ की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है, वह वास्तव में उचित है।

२—हिन्दी के श्रेष्ठ कथाकारों के अतिरिक्त विश्व-विख्यात् विदेशी कथाकारों की श्रेष्ठ और सरस कहानियाँ भी ‘मंजरी’ में प्रकाशित हो रही हैं।

३—कहानियों के साथ-साथ, एक धारावाहिक उपन्यास, कथा-साहित्य व लेखकों के अध्ययनशील लेख और कथा-कृतियों की निष्पक्ष समीक्षा भी रहती है।

४—कहानियों में दर्जनों चित्र, दुरंगी छपाई, कलात्मक मुद्रण-विन्यास आवरण ‘मंजरी’ की अपनी विशेषताएँ हैं।

५—जिन कथाकारों की कहानियाँ आपका मनोरंजन करती हैं, उनके संक्षिप्त परिचय भी ‘मंजरी’ प्रस्तुत करती है।

सांस्कृतिक मनोरंजन के अनुष्ठान में ‘मंजरी’ को आप अपना सक्रिय सहयोग दीजिए—उसके वार्षिक ग्राहक बनिए।

वार्षिक मूल्य ६) छः रुपये **प्रति अङ्क आठ आना**

—प्रबन्धक ‘मंजरी’—
इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

हमारे जानवर

लेखक, कुँवर सुरेशसिंह

१०० जानवरों का सचित्र रोचक वर्णन

यह हिन्दी में अपने विषय की पहली पुस्तक है। हम अपने पालतू जानवरों को जरूर पहचानते हैं। उनकी आदतें और स्वभाव के बारे में भी जानते हैं, लेकिन इतने ही से क्या हम कह सकते हैं कि हमें सारे पशु-जगत की जानकारी हो गई है?

इतना ही क्यों, हमें चिड़ियाखाना देखने का भी मौका मिला होगा उनसे भी वहाँ जिस सरसरी निगाह से हमने जानवरों को देखा होगा विश्वास नहीं दिला सकते कि हमें पशुसमाज का काफी ज्ञान है।

ऐसी दशा में अपने देश के जंगल, पहाड़, बस्तियाँ और मैदानों के सैकड़ों पशुओं के बारे में तरह तरह की मनोरञ्जक बातें जानने के लिए है कि आप “हमारे जानवर” की एक प्रति आज ही मँगावें। जानवरों का सचित्र वर्णन इस पुस्तक में मिलेगा। मूल्य ४)

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

देशदूत

र्ष ११, संख्या ६] [रविवार, १० आक्टोबर, १९४८

हैदराबाद के एजेन्ट जनरल का दिल्ली का निवासस्थान जहाँ पुलिस तथा फौज का पहरा लगा था।

प्ताह के समाचार

ज़ाकारों का नेता कासिम रिजवी म में रहने पर भी आराम के साथ सुखी जीवन व्यतीत कर रहा है। में उसकी दो प्रमुख माँगें चाय सिगरेट थीं, जो स्वीकार कर ली गई। से प्रतिदिन २४ सिगरेट मिलते हैं जितनी चाहे पी सकता है। रानशरीफ की एक प्रति भी पढ़ने माँगी थी, जो दे दी गई। अन्य र के साहित्य की उसने माँग नहीं हुआ है कि गिरफ्तारी के समय बाद से ५ मील बाहर अपने भाई छिपा था। गिरफ्तारी में उसने दूक नहीं डाली और गाड़ी में । उस समय उसके चेहरे पर भय के चिह्न स्पष्ट दृष्टिगोचर , किन्तु बाद में भारतीय अधि- के व्यवहार से आश्वस्त होकर या।

* *

लियन उड़ाके सिडनी काटन इतने समाचार छप चुके हैं कि पत्रों से शायद ही कोई समा- पाठक अनभिज्ञ हो; इसी के एसोसियेटेड प्रेस के संवाददाता है कि सिडनी काटन तथा उसके ने हैदराबाद में रज़ाकारों के टन से अधिक शस्त्रास्त्र पहुँ- इन शस्त्रास्त्रों को पहुँचाने में कम २०० बार उसने हैदराबाद भरी होंगी।

जनरल चौधरी हैदराबाद के आक्रमण रतीय फौजों के प्रधान सेनापति।

सिडनी काटन का प्रधान कार्यालय पाकिस्तान की राजधानी में है। उसके पास ४ विमान हैं। इन विमानों का परिचालक ३० उड़ाके करते हैं। इन विमान-चालकों में अँगरेज, अमेरिकन तथा अन्य यूरोपियन हैं। इन विमान-चालकों को जितना वेतन मिलता है उतना वेतन संसार के किसी भी विमान-चालक को नहीं मिलता। पता चला है कि विमान-चालक के लिए प्रतिघंटा २००० रुपया दिया जाता था।

हैदराबाद आने पर यह चालक सिकन्दराबाद तथा हैदराबाद के सर्वोत्तम होटलों में ठहरा करते थे।

* * *

हैदराबाद में सुविधा के लिए—शासन-प्रबन्ध-विषयक कार्य-भार का इस प्रकार विभाजन हुआ है—मेजर जनरल अल अदरूस—सेना; नवाब दीनयारजंग—पुलिस और राजस्व; पं० रामाचार—लोककार्य तथा यातायात; अब्दुलहसन सईद अली—न्याय तथा शिक्षा; और श्री राजा पन्नालाल पित्ती—सार्वजनिक स्वास्थ्य।

* * *

ज्ञात हुआ है कि एक विशेष वायुयान से एक करोड़ रुपये की भारतीय मुद्रा हैदराबाद पहुँचाई गई है।

* * *

न्यूयार्क में इस आशय की जोरों से अफवाह फैल रही है कि हैदराबाद के निजाम ब्रिटेन में एक भारी रियासत खरीदने का गम्भीरतापूर्वक विचार कर रहे हैं। उनका इरादा है कि यदि भारत-सरकार ने उनसे राज-त्याग की माँग की तो उस अवस्था में वह ब्रिटेन में खरीदी गई नई रियासत में आकर वास करेंगे।

* * *

नई दिल्ली में ४ अक्टूबर की संध्या को ६॥ बजे श्री के० एफ० नारीमान का हृदय की गति रुक जाने से देहावसान हो गया। श्री नारीमान बम्बई कारपोरेशन के कांग्रेस दल के नेता थे। वह दिल्ली कल आये थे और मेडेन्स होटल में ठहरे थे।

* * *

कराँची में तारीख ४ अक्टूबर को शाम के ४ बजे गवर्नर के निवास स्थान में सिन्ध के गवर्नर शेख गुलाम हुसेन हिदायतुल्ला की मृत्यु हो गई।

दक्षिणी कमांड के प्रधान सेनाध्यक्ष महाराज राजेन्द्रसिंह ने हैदराबाद में पूरी सफलता प्राप्त की है।

आगामी ३१ आक्टोबर को 'देशदूत' का

'दीपावली विशेषांक'

बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित होने जा रहा है

पिछले वर्षों की भाँति इस वर्ष भी 'देशदूत' का 'दीपावली' विशेषांक दीपावली के अवसर पर ३१ आक्टोबर को प्रकाशित होगा। राष्ट्र की सामयिक राजनीतिक समस्याओं पर सुप्रसिद्ध नेताओं की रचनायें, प्रसिद्ध कवियों की कवितायें तथा दर्जनों सुंदर चित्रों से यह अंक सुसज्जित होगा। कहानियाँ एक से एक लोकप्रिय और सुंदर होंगी। इसके अतिरिक्त रंगमंच तथा महिलाओं के लिये उपयोगी और बेजोड़ सामग्री उपलब्ध होगी।

विज्ञापनदाताओं को अभी से विज्ञापन के लिये स्थान सुरक्षित करा लेना चाहिए। एजेन्टों को भी अभी से अपनी प्रतियाँ रिजर्व करा लेनी चाहिए। और सितम्बर तक की बिक्री का हिसाब भेज देना चाहिए। कवर नयनाभिराम होगा। मूल्य केवल ।≈) छः आना मात्र होगा।

विज्ञापन दर यह होगा।

कवर का चौथा पूरा पेज ४००) दूसरा या तीसरा पेज ३००)
पहला पेज पाठ्य-विषय के पहले ३००) साधारण पूरा पेज २००)

पृष्ठ का आकार १२½"×९" कालम ४ स्क्रीन ६५

मैनेजर 'देशदूत'
इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

हास्यपरिहास

भंग की तरंग

लियाकतअली कहते हैं कि काश्मीर पाकिस्तान को मिलना चाहिये। पाकिस्तान को सारा संसार मिलना चाहिये लियाकतअली का उत्साह इतना कम क्यों है।

* * *

प्रयाग में चौबीसों घण्टे रेल का टिकट मिलता है किन्तु कहा जाता है लोग इससे लाभ नहीं उठाते गाड़ी के समय ही टिकट लेने जाते हैं। लोग सोचते हैं कि गाड़ी में तो भीड़ में चलना ही है इसलिए थोड़ा अनुभव टिकट लेने के समय से ही कर लिया जाय।

* * *

विचार हो रहा है कि हैदराबाद की सेना का क्या किया जाय। बनारस में सड़क बनानेवालों की कमी है यहाँ कुछ खप सकते हैं।

* * *

मद्रास में नशाबन्दी पूर्ण रूप से हो गई। यदि आबकारी विभाग तोड़कर पुलिस विभाग में वृद्धि न हो तो बड़ी अच्छी बात है।

* * *

मध्यप्रांत के पुलिस विभाग ने गांधी स्मारक कोष में एक लाख पैंतालिस हजार रुपये दान दिया है, पुलिस तो चाहे जितना दान दे सकती है, उसका हाथ बहुत लम्बा है।

* * *

हिज एक्सेलेंसी डाक्टर कैलासनाथ काटजू ने कहा है कि सरकारी भवन में चरखा कातने से वह पवित्र हो गया। यदि चरखे में यह करामात है तो सरकारी अन्य विभागों में उसे चलाने की पहले आवश्यकता है।

* * *

हैदराबाद में २ अक्टूबर को गांधी-जयन्ती की छुट्टी मनाई गई। हम समझते हैं सारा हैदराबाद पवित्र हो गया होगा।

* * *

हैदराबाद के मुसलमानों का भारत-संघ में विश्वास हो गया है। दो सप्ताह पहले उनका विश्वास कुछ और था। हैदराबादी मुसलमान बड़े सरल हृदय के हैं। बहुत शीघ्र विश्वास बदल लेते हैं।

* * *

बेगम शाइस्ता इकरामुल्ला ने कहा कि भारत में सामूहिक हत्याकांड हुआ था। घबड़ाहट में आपने पाकिस्तान के स्थान पर भारत कर दिया था ऐसा जान पड़ता है।

* * *

सोच लीजिये कि यदि भारत में सामूहिक हत्या हुई होती तो क्या होता। कल्पना कीजिये। अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है।

* * *

प्रान्तीय सरकार चोर बाजारी के लिए एक विशेष अदालत नियुक्त कर रही है। क्या इसकी आवश्यकता प्रांतीय सरकार समझ रही है।

* * *

यदि यह पता लग जाय कि अभी तक चोर बाजारों में पकड़े गये कितने व्यक्तियों को तथा उन्हें कितना दंड दिया गया है तो इस अदालत के सम्बन्ध में कुछ कल्पना की जाय।

* * *

चोर बाजार गुप्त रूप से चलता है इसे सब जानते हैं। इसे पता लगाने के लिए कोई गुप्त प्रबन्ध करना होगा प्रकट नहीं।

—'अगड़धत्त शर्मा'

चाय के प्रति

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

प्रेम फैलानेवाली है मिली काली में लाली है
विश्व वंदन करता तुझको चाय की ऐसी प्याली है

गर्म जब तुझको पाते हैं इन्द्र पै ललचा जाते हैं
इसी को पिला पिला के लोग फँसा कितनों को पाते हैं

सूट बढ़िया पहने अँगरेज कुली ले अपनी टूटी मेज
किया करते हैं तुझसे प्रेम बना करके हलकी या तेज

सुधा मुरदों को देती जान नहीं अब उसका कुछ सम्मान
और तू जीवित जन-समुदाय को किया करती जीवन दान

पेय तू कैसी लासानी धन्य तुझसे कवि की बानी
बहाने तेरे थोड़ा दूध पिया करता हूँ हे रानी

लोग कहते हैं तूटी है बड़ी ही तू तो ब्यूटी है
सबेरे पीना तुझको नित्य सभी मानव की ड्यूटी है

लगाते प्रातः तेरा भोग लोग कहते उड़ जाते रोग
वियोगी गये तुझे हैं मान हुआ तुझसे उनका संयोग

करा के थोड़ा तेरा पान अतिथि का कर लेते सम्मान
नहीं तो इस महँगी पै हाय कराते हम कैसे जलपान

अन्नू सरदार

भरोस सरदार के लड़की कोई सन्तान न थी। और भरोस लठैत जिससे पुलिस भी डरती जमींदार के यहाँ भरोस नौकर था अपनी बेटी को भी लाठी चलाना दिया था। इसका ब्याह (अन्नू) से किया गया सवाया था। एक झमेले में काट हुई। इसमें अन्नू गई और भतीजा प्रताप गया। पुलिस ने अन्नू को सज़ा करा दी। इधर प्रताप भी यह कहानी है तो बड़ों के लिए भी परन्तु बच्चों को बहुत पसन्द सुन्दर सरल भाषा, कई चित्र पृष्ठ रंगीन। मूल्य केवल बारह मैनजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

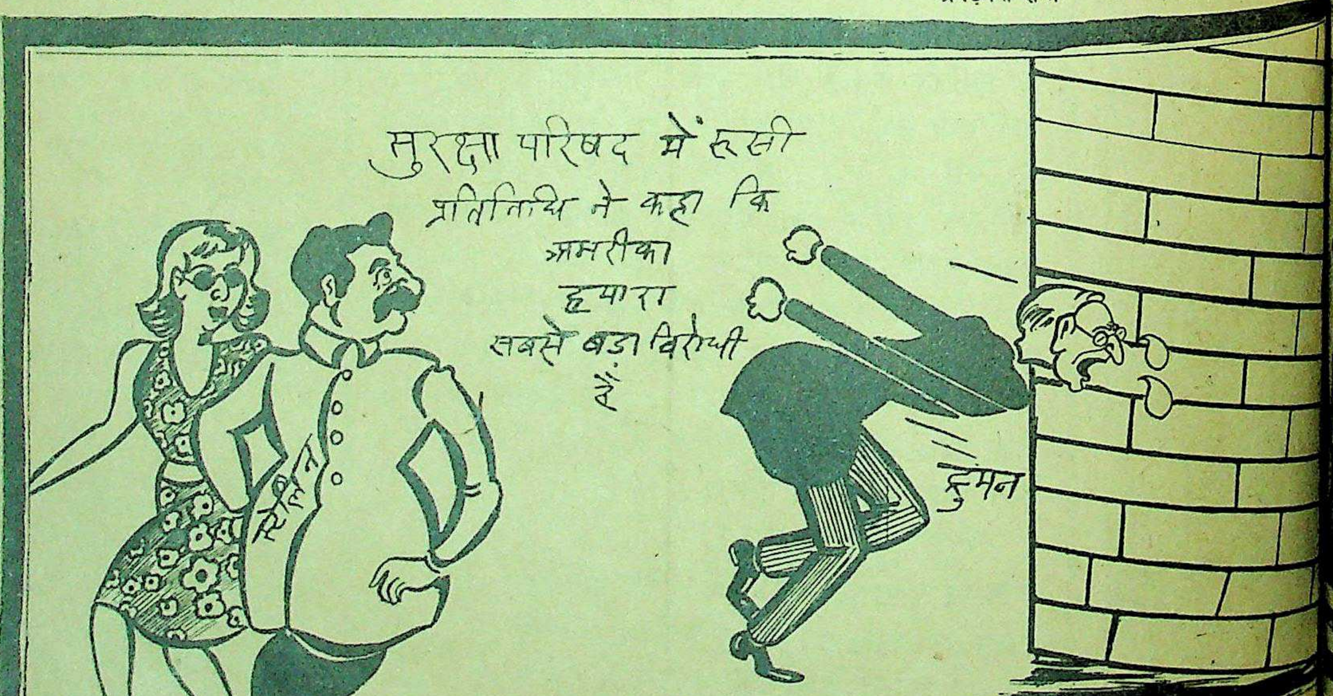
सुरक्षा परिषद में रूसी प्रतिनिधि ने कहा कि अमरीका हमारा सबसे बड़ा विरोधी है
स्टेलिन
ट्रूमन
KRISHNA KANT

काश्मीर-विभाजन की योजनायें

भारत को अन्यायपूर्ण नैतिक पतन से बचना चाहिए

लेखक, श्री ब्रजविहारी काचरू

काश्मीर की समस्या दिन-प्रति-दिन जटिल होती जा रही है। काश्मीर-कमीशन ने समस्या को और भी उलझन में डाल दिया है। सुनाई पड़ रहा है कि काश्मीर के जन की योजनायें बनाई जा रही हैं। प्रत्यक्षदर्शी तथा अनुभव प्राप्त लेखक ने लेख में काश्मीर की वर्तमान राजनैतिक स्थिति पर विचार करते हुए यह प्रमाणित है कि काश्मीर का विभाजन भारतीय दृष्टिकोण से अनैतिकता तथा अन्यायपूर्ण है। लेख सामयिक, विचारणीय तथा पठनीय है।

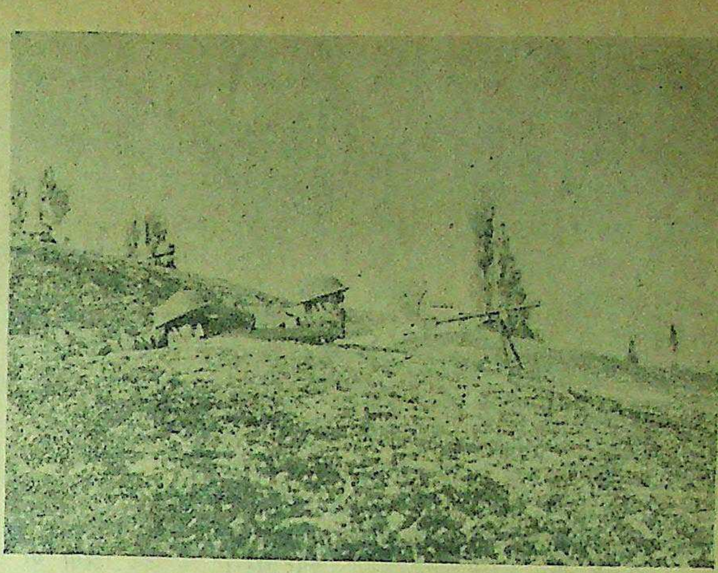

गत अक्टूबर में संगठित राष्ट्रीय सेना के सैनिक उड़ी के मोर्चे पर पाकिस्तानी सैनिकों की गोलियों का मुकाबला कर रहे हैं।

काश्मीर के लौह पुरुष—बख्शी गुलाम मुहम्मद उपप्रधान मन्त्री काश्मीर सरकार, शांति रक्षक दल के बीच में खड़े दिखाई देते हैं।

अगस्त को सहसा खण्ड-विख- स्वतन्त्रता का बकुचा भारतीयों के देकर अँगरेज यहाँ से चला। संसार हा। भारतीय ने समझा कि चिर साधना फलीभूत हुई। चारों त्साह एवं उल्लास दिखाई पड़ा। नव तन्त्रता शांत वातावरण न पा सकी– ने भारतीय के उन महान् स्वप्नों किया। पंजाब धधक उठा, धधकी और बाद में सहसा २३ को संसार ने सुना कि काश्मीर किस्तानी आतंक शुरू हुआ है। कबाइलों का हमला, स्थानीय काश्मीर सेना का विद्रोह, आदि किस्तान ने तटस्थ रहना चाहा, रूप का प्रकटीकरण होकर ही

विभाजन के बाद देशी राजाओं ों को दृष्टि में रखकर किसी भी संबन्धित होने की स्वतन्त्रता श्मीर की भौगोलिक सीमा ठीक शों से मिलती है। अतः यह पर न किया गया कि काश्मीर देश से अपने भाग्य को मिलाये। ने दोनों उपनिवेशों के साथ यथा- समझौता करके विचारने का समय । हालाँकि अप्रत्यक्ष रूप में शासक पाकिस्तान काफी दबाव था। काश्मीर का राजनैतिक वातावरण आज के वातावरण से ठीक भिन्न था। शेख अब्दुल्ला लगभग एक साल से जेल में था। काश्मीरी मुसलमान पाकिस्तान के पंजाब एवं नोआखाली कांडों से काफी दुःखी थे। इधर अपनी राजनैतिक साधना का फल भी चख नहीं पाये थे। नेहरू जी के वह कष्ट जो उन्होंने काश्मीरियों के लिये झेले थे उन्हें अभी जनता भूली नहीं थी। ऐसे वातावरण में उस समय पाकिस्तान काश्मीर में अपना प्रभाव जमा सकता असम्भव था। अतः एक साथ काश्मीर की [illegible] पर आक्रमण कर और उधर जम्मू में स्थानीय विद्रोह बड़काकर उन्होंने अपनी सत्ता जमानी चाही लेकिन सफल न रहे।

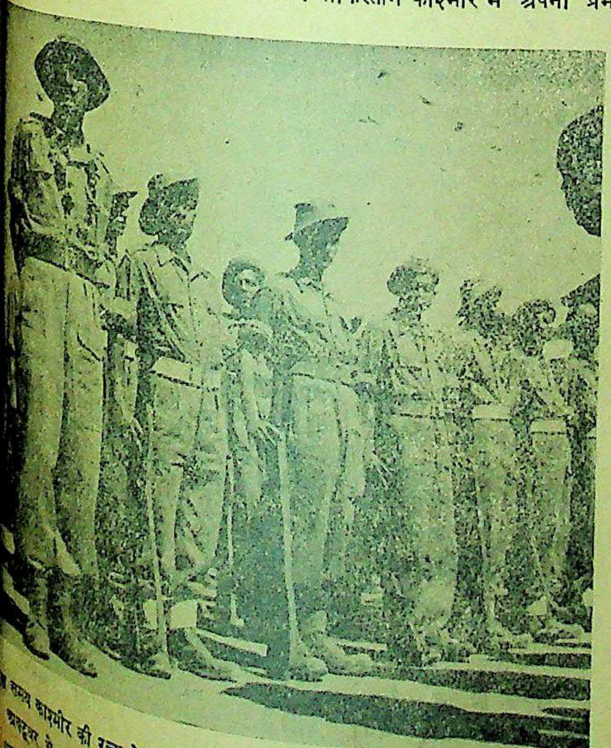

समय काश्मीर की रक्षा के लिये काश्मीरी सैनिक परेड के लिए तैयार हैं। गत: अक्टूबर से पहले इन्हें मातृभूमि की सेवा के लिए अयोग्य समझा जाता था।

भारत की सहायता

२६ अक्टूबर ४७ को काश्मीर की सीमाएँ धधक रही थीं। भय-त्रस्त काश्मीरी अपने भाग्य पर बैठे अपने अंतिम क्षण गिन रहे थे। इसी दिन हिन्द सरकार से महाराजा ने सहायतार्थ प्रार्थना की। भारत-सरकार ने प्रार्थना स्वीकार की लेकिन शर्त यह रही :—"इस संकटकाल में भारत सहायतार्थ तैयार है लेकिन शांति हो जाने पर जनता की इच्छा ही यह निश्चित करेगी कि काश्मीर भारत संघ में आ जाये या पाकिस्तान में।

संकटकालीन सरकार की स्थापना हुई। पूर्ण शासन-भार जनता के हाथ में आया। हिन्द सरकार की सेनायें वायुयानों द्वारा काश्मीर पहुँची। पाकिस्तान का मोर्चा इस दिन श्रीनगर से केवल डेढ़ मील की दूरी पर था। एक सौ साल तक शोषण करनेवाला महाराजा भी काश्मीरियों को अपने भाग्य पर छोड़कर भागा। 'गधादर' की स्वर्णमूर्ति का महत्त्व तीस लाख जनता से ज्यादा समझ कर उन मूर्तियों एवं भैलों तक को लारियों में बिठाकर जम्मू पहुँचाया गया। भारतीय सेना को पहले-पहल काफी क्षति उठानी पड़ी—काफी सेना काम आई और लगभग डेढ़ महीने में मोर्चा उड़ी पहुचा श्रीनगर से लगभग ६५ मील दूर। यह है काश्मीर-काण्ड की भूमिका। आज गर्मियाँ बीत रही हैं। लगभग नौ महीने से 'उडी' अपने हाथ में आई है लेकिन आज भी हमारी प्रगति गत वर्ष से ५–१० मील से ज्यादा नहीं।

पाकिस्तान ने भारत सरकार की कई याचनाओं को मानने से साफ इनकार किया। पाकिस्तान ने सिद्ध होने पर भी यह स्वीकार न किया कि काश्मीर-युद्ध में उनका भी हाथ है। इस स्थिति में सत्य को संसार के सामने लाने के लिये एवं अपने 'राष्ट्रीय हृदय' का अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शन करने के लिये भारतीय सरकार ने संयुक्तराष्ट्र संघ को फैसला देने की याचना की। शेख अब्दुल्ला और श्री गोपाल स्वामी आयंगर लगभग एक महीने तक 'लेकसेक्सेस' में अपनी स्थिति को स्पष्ट करने के लिये बैठे। उसका फल आज का काश्मीर कमीशन है। राष्ट्रसंघ का इतिहास देखने पर कहीं कहीं न्याय का प्रतिपादन नहीं दीखता। विशेषकर काश्मीर से वह न्याय करेंगे, काफी असम्भव है। आजकल उनकी हरकतों से स्पष्ट है कि वह काश्मीर को छुरा ही भोंकना चाहते हैं। काश्मीर-विभाजन ही केवल एक मार्ग है जिससे पाकिस्तान प्रसन्न हो सकता है।

तब और अब

अक्टूबर २६ की स्थिति काश्मीर में आज से बिलकुल भिन्न थी। भारत-सरकार ने, सहानुभूति एवं दया के नाम पर काश्मीर में सेनाएँ भेजी। उस समय सम्भवतः बढ़ते हुए आतंक एवं शोषण को रोकना ही उनका ध्येय था। लेकिन आज काश्मीर की युद्ध-ज्वालों में काफी भारतीय सैनिक स्वाहा हुए हैं। करोड़ों रुपये व्यय हो चुके हैं। नन्हें, सुन्दर काश्मीरी "काश्मीर हमारा है, इसकी हिफाजत हम करेंगे" कहते हुए उड़ी, बारामुल्ला में अपना जीवन दे चुके हैं। काश्मीर की स्वतन्त्रता अब रक्त से पली हुई है। रक्त से पली इस स्वतन्त्रता को क्या भारत छोड़ सकता है? आज के

काश्मीर से भारत की ३० करोड़ जनता के नैतिक उत्थान और पतन का सम्बन्ध बँधा है।

जनमत के प्रश्न का अन्त उसी दिन हुआ जब पाकिस्तान की सेनाएँ काश्मीर में आईं। यथास्थिति समझौता तोड़कर बारामुल्ला, उड़ी की सड़कों पर सुन्दर काश्मीरी ललनाओं का सतीत्व भंग किया गया। लाहौर पहुँचाकर वहाँ की कड़कती लू में उनके 'मार्केट' लगाकर उन्हें चार चार रुपये में बेचा गया। क्या इन्हीं लुटेरों एवं बर्बरता, शोषण की साकार मूर्तियों के हाथ जनमत होगा? शेख अब्दुल्ला ने स्पष्ट कहा है कि काश्मीर के विषय में जनमत हो जाये ऐसे कहनेवाले लोग साम्प्रदायवाद बर्बरता एवं बदमाशों की पीठ ठोकते हैं। वह संसार के सामने स्पष्ट करने के लिये मतगणना करने के लिये भी तैयार हैं लेकिन उसके लिये शान्ति की आवश्यकता है जो अभी बहुत समय बाद हो सकती है। मतगणना में काश्मीर किधर जाये यह तो स्पष्ट है। सांस्कृतिक प्रश्न आ जाने पर मुसलमान टिक सके यह कहना कठिन है। शेख अब्दुल्ला ने अपने एक भाषण में कहा :—"काश्मीर पाकिस्तान में इस आकर्षण से शामिल नहीं होगा क्योंकि वह मुस्लिम राष्ट्र है। केवल राजनैतिक एवं आर्थिक दृष्टि से जो उपनिवेश काश्मीर का हित कर सके वही ग्राह्य है—वह है भारत।"

काश्मीर को भारत से सम्बन्धित करने के लिए महाराजा के साथ साथ जनता ने भी प्रयत्न किया। हालाँकि काश्मीर में मुस्लिम बहुमत है परन्तु तो भी अपनी कला, राजनैतिक उन्नति एवं आर्थिक स्वरूप को सुरक्षित रखने के लिए उन्होंने हिन्दुस्तान चुना। काश्मीर में इस समय जनता की प्रतिनिधि संस्था नेशनल कांफ्रेंस है। इसके नेता हैं शेख अब्दुला। मुस्लिम कांफ्रेंस वहाँ लगभग मृत ही है। उनका नेता काश्मीर में प्रतिबन्ध होने के कारण वहाँ आ नहीं सकता है परन्तु जनता की ओर से बिलकुल नहीं हुआ—उस पर से प्रतिबन्ध हटाने का। पिछले असेम्बली चुनावों में नेशसल कांफ्रेंस ने भाग नहीं लिया। मुस्लिम कांफ्रेंस पूरी शक्ति से चुनाव लड़ रही थी। नेशनल कांफ्रेंस की ओर से घोषणा हुई की जनता वोट न दे दे। परिणामस्वरूप ६,८७,४१६ में से केवल ६८ २८ वोटरों ने वोट दिये यह है मुस्लिम कांफ्रेंस का जनता पर प्रभाव। यह था प्रश्न शेख का और युसूफ़ शाह का। जब जिन्नाह और शेख का प्रश्न आ जाता तब भी जिन्नाह को करारी हार खानी पड़ती। लेकिन जब पाकिस्तान हिन्दुस्तान—दो संस्कृतियों का प्रश्न आ जाये......।

गत वर्ष से काश्मीर युद्ध का मोर्चा बन गया है। विद्यार्थी, कलाकार, व्यापारी, हर एक पर इसका काफी प्रभाव पड़ा है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यदि ऐसी परिस्थिति काश्मीर में ज्यादा समय चली तो सम्भव है इसका बुरा फल निकले।

आजकल राष्ट्र-संघ का काश्मीर-कमीशन काश्मीर-भ्रमण कर रहा है। काश्मीरी न्याय के लिए उनकी ओर ताक रहे हैं, लेकिन उनकी छुरी–जो शायद काश्मीर में घोंपी जाये–को पंडित जी जैसे 'आदर्शवादी' भी पहचान गये और उन्हें भी कहना पड़ा कि 'राष्ट्र-संघ' राजनैतिक शक्ति पाने में लिप्त है।

इसके होते भी—धधकते हृदय से ही सही, कमीशन का स्वागत किया गया। उन्हें वह सब सुविधाएँ दी गईं जो उनके लिए आवश्यक थीं। इससे स्पष्ट है कि भारत शांतिपूर्वक काश्मीर का प्रश्न सुलझाना चाहता है।

आदर्शवादिता और शांतिप्रियता ही किसी प्रश्न को सुलझा नहीं सकती। इस समय भारत के नैतिक पतन का डर है। क्या काश्मीर के उन हिस्सों पर फिर बर्बरता का शासन होगा जहाँ एक बार जनता का उद्धार करती हुई भारतीय सेना जा घुसी है। काश्मीर-विभाजन के विषय में भारत की आज तक की नीति सराहनीय है लेकिन कहीं यह घोषणायें भी भारत विभाजन से पहले की घोषणायें ही सिद्ध न हों? हालाँकि काश्मीरी स्वतः आज विभाजन के विरुद्ध खड़े हुए हैं।

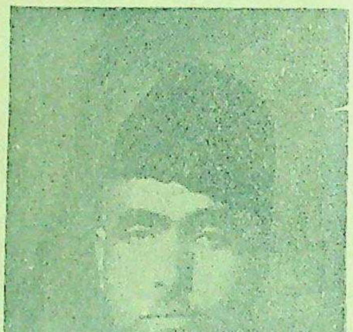

काश्मीर के प्रधान मन्त्री शेख अब्दुल्ला।

भौगोलिक दृष्टि से जम्मू काश्मीर राज्य की सीमा, पाकिस्तान, अफ़गानिस्तान, चीन, तुर्किस्तान एवं तिब्बत से मिलती है। काश्मीर का क्षेत्रफल कुल ८४,४७१ वर्गमील है इसकी जन-संख्या लगभग चालीस लाख है। भाषा एवं संस्कृति की दृष्टि से यह छः भागों में विभक्त है। डोगर, लद्दाख, बलतिस्तान, गिलगिट एवं पंजाबी बोलनेवाले हिस्से जैसे मीरपुर, पुंछ, एवं मुज्जफराबाद। डूँगर का प्रधान केन्द्र जम्मू है यह लगभग १०,००० वर्गमील है उसमें प्रायः हिन्दू रहते हैं जो ११ लाख में से आठ लाख हैं। जम्मू के उत्तर पूर्व में एवं भारत के लाहुल रामपुर तथा बुशर के इलाके के साथ ही लद्दाख की सीमा है। यह तीन लाख वर्गमील है। इसकी जनसंख्या लगभग ५० हजार है। लगभग यह सब बुद्ध के अनुयायी हैं। इन दो इलाकों की सीमा भारत से मिलती है एवं हिन्दू-जनसंख्या प्रधान है। लद्दाख के पश्चिमी में बलतिस्तान है जहाँ की जनसंख्या लगभग मुस्लिम ही है। यह इलाका लगभग १७,००० वर्गमील का है। इसके आगे पश्चिम की ओर गिलगित जैसा महत्त्वपूर्ण स्थान है यहीं हुंजरा, नागर, आदि छोटे छोटे राजे हैं। यह १८,००० वर्गमील का स्थान है। इसकी जनसंख्या एक लाख से अधिक है जो बहुतायत से मुसलमान ही हैं। इसकी सीमा सोवियत भूमि, अफ़गानिस्तान, एवं पाकिस्तान से मिलती है। इस समय यह पाकिस्तानी सेनाओं का महत्वपूर्ण अड्डा है। यह स्थान खास काश्मीर से ऊँची ऊँची पहाड़ियों द्वारा अलग हुए हैं। यहाँ केवल दो दर्रों से आदमी आ-जा सकते हैं बुर्जला और जोजला। यह प्रायः गर्मियों के तीन महीनों में आने-जाने के योग्य रहते हैं।

गिलगित के दक्षिण की तरफ एवं काश्मीर सीमा के पश्चिम की तरफ मीरपुर पुंछ एवं मुज्जफराबाद हैं। इसकी सीमा लगभग ६००० वर्गमील है, एवं जनसंख्या १० लाख के लगभग है। जिसमें लगभग एक लाख हिन्दू थे। अब तो उनमें से अधिकांश या तो मारे गये हैं या भाग निकले हैं। यहाँ ही पश्चिमीय पंजाब के मरी एवं रावलपिण्डी तथा सीमाप्रांत के हजारा आदि से सीमा मिलती है। यह पाकिस्तानी इलाके हैं। इन पाँच इलाकों के मध्य में काश्मीर शहर स्थित है। यह ६,००० वर्गमील का स्थान है एवं इसकी जनसंख्या १६ लाख है जिनमें १५ लाख से ज्यादा मुसलमान हैं इसका प्रधान केन्द्र श्रीनगर है जो झेलम के किनारे बसा है।

सैनिक दृष्टि से डूँगर एवं लदाख का बहुत अंश भारतीय सेना के हाथ में है। काश्मीर में भी प्रगति करने की कोशिश हो रही है। मीरपुर, गिलगित, आदि में भी काफी जोश से सेनाएँ लड़ रही हैं।

जनता की दृष्टि से तो डोगरे एवं लद्दाख की जनता नैसर्गिक रूप में भारत के साथ है। कश्मीरी मुसलमान भी शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में सहयोग ही करते आ रहे है। गिलगित, मीरपुर की जनता पाकिस्तान से ज्यादा प्रभावित है वहाँ का प्रभाव विजय के बाद भी हट सकता है।

यदि भारत अपने पुराने मतगणना के विचार को लेकर ही काश्मीर के भाग्य का निर्णय करना चाहे तो शांति के बाद बहादुर डोगरे, शांतिप्रिय लद्दाखी, और देशभक्त काश्मीरियों को अलग अलग अपने भाग्य को बनाने का अवसर देना चाहिये। राज्य को ठीक छः हिस्सों में बाँटकर ही हर एक इलाके की अलग अलग गणना हो। विभाजन किसी भी रूप में मान्य वही हो और शांति से पहले मतगणना भी न होनी चाहिये। अस्त व्यस्त एवं आतंकित काश्मीरी शांति की वायु के बाद ही कुछ निर्णय कर सकेंगे।

विवाहित जीवन
को सुखमय बनानेवाली अनूठी पुस्तकें
काम शास्त्र (सचित्र) १।।)
चौरासी आसन (सचित्र) १।।)
१०० चुम्बन (सचित्र) १।।)
सुहागरात (सचित्र) १।।)
चारों पुस्तकें केवल ३।।) पोस्टेज ।।)
ग्लोब ट्रेडर्स (९०१), अलीगढ़

तुलनात्मक भाषाशा
(भाषा-विज्ञान)
लेखक डा० मंगलदेव
एम० ए०, डी० फिल०
इसमें तुलनात्मक भाषाशास्त्र के
का प्रतिपादन तथा संसार की
भाषाओं के परस्पर सम्बन्ध की
सुबोध व्याख्या है। प्रोफेसर
वुलनर, डा० भगवान्दास, म०
नाथ झा और श्री गोपीनाथ कवि
लक्ष्मणस्वरूप और धीरेन्द्र
मनीषियों ने और अन्य नामी
तथा पत्रों ने इसकी प्रशंसा की
संख्या पौने तीन सौ से
कागज, बढ़िया जिल्द; मूल्य

गांधी-अभिनन्दन
सम्पादक—श्री सोहनलाल
प्राक्कथन—सर सर्वपल्ली
संस्कृति, हिन्दी, उर्दू,
राती, सिन्धी, मराठी, तामि
मलयालम, कन्नड़, अंगरेजी
भाषाओं में महात्मा गांधी जी
हुई सर्वोत्तम कविताओं का संग्रह
भाषा में अर्थ-सहित।
बड़ा आकार, सुन्दर छपाई
के अनेक चित्र। बढ़िया जिल्द।
प्रशंसित।
सादी जिल्द ६।।) कपड़े की जिल्द

सेवाग्राम
रंग-बिरंगी छपाई, अनेक
रचयिता श्री सोहनलाल
संरक्षक श्री घनश्यामदास
जनता की भाषा में, जनता
का, जनता का काव्य कवि
रचनाओं का सुन्दर संग्रह।
बढ़िया कागज़, कपड़े की
मूल्य दस रुपये।

पृथ्वी की कहानी
पृथ्वी कैसे बनी, पृथ्वी पर
कौन आया; नद-नदियाँ, पहाड़,
स्तान, बर्फीले देश, जानवर,
आदमी कैसे बने; धर्म और
और कानून कैसे बने; पुरानी
आज की दुनिया, पृथ्वी का
बातों का वर्णन इस पुस्तक में
ढंग से किया गया है। मूल्य

गुदड़ी के लाल
इस पुस्तक की कहानियाँ
सरल और रोचक भाषा में
हैं। इनको पढ़कर बच्चे
हैं। ऐसी पुस्तक अपने बच्चों
दीजिए। मूल्य ।।)
मैनेजर, बुकडिपो,
इण्डियन प्रेस, लिमिटेड,

भारतीय वैदेशिक नीति कैसी ?

विश्व तथा एशिया के पीड़ित राष्ट्रों के उत्थान में हम सहायक क्यों नहीं होते ?

लेखक, प्रोफेसर अवधबिहारी पांडेय एम० ए०

(इतिहास विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय)

भारत की वैदेशिक नीति कैसी है ? भारत को अपनी वैदेशिक नीति इतनी दृढ़ और शक्तिशाली बनानी चाहिये कि वह एशिया ही नहीं विश्व के समस्त पीड़ित राष्ट्रों का नेतृत्व करने में समर्थ हो सके। विद्वान् इतिहासज्ञ ने बड़ी योग्यता से इसी समस्या पर प्रकाश डाला है, जो विचारणीय तथा पठनीय है।

के प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक विभाग के प्रमुख पंडित जवाहरलाल नेहरू।

दो वर्ष पूर्व अस्थायी सरकार के के साथ भारतीयों को अपनी नीति स्थिर करने की सुविधा हुई। एशियाई सम्मेलन ने भारत- को अन्य एशियाई देशों के राज- से निकटतर सम्पर्क में आना दिया। १५ अगस्त १९४७ को तीय यूनियन की एक पूर्णतया सरकार बन गई। उस समय से वैदेशिक नीति स्थिर करना हमारा ही नहीं वरन् एक महत्त्वपूर्ण हो गया। वैदेशिक मन्त्री का कार्य- प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने हाथ में लिया। भारत की वैदे- नीति स्थिर करने में उनके व्यक्तित्व विचारों का बहुत अधिक प्रभाव यद्यपि साधारण दृष्टि से वह नीति की नहीं वरन् सम्पूर्ण मंत्रिमंडल है।

देशों में हमारे दूतावास स्थापित हैं। जहाँ राजदूत के पद के व्यक्ति नहीं हुई है वहाँ कहीं हाई और कहीं एजण्ट जनरल तथा भेजे गये हैं। इन साधनों द्वारा को अन्य देशों के सम्पर्क में व्यापारिक तथा सांस्कृतिक बढ़ाने, और उनको भारतीय स्थिति जानकारी कराने में बड़ी सुविधा हुई है। यह सब ठीक और आवश्यक है। इसलिए दूतावासों की संख्या बराबर बढ़ती जा रही है।

परन्तु दूतों को भेजने और बुलाने से ही हमारी आवश्यकता पूरी नहीं हो जाती। संसार में सम्मान और प्रभाव प्राप्त करने के लिये यह आवश्यक नहीं है कि हम दूतावासों को सजाने के लिये अपने राजदूत को कई देशों में घूम-फिर कर फर्नीचर, पर्दे आदि लाने की सुविधा दें अथवा ८ मोटरकारें और ३ मोटरसाइकिलें होने पर भी उसके लिए लगभग ५० हजार रुपये की एक नवीं रोल्स रायस खरीद दें, और उनको खूब खर्च करके शराब-कबाब-वाली दावतों के लिए भारतीय खजाने के लाखों रुपये उड़ा दें। यदि हम संसार के दो बड़े राष्ट्रों—संयुक्तराष्ट्र अमेरिका तथा सोवियट रूस—को अपने दूतों को १२५००) प्रतिमास अथवा ८७००) प्रतिमास वेतन देकर अपनी शक्ति और शान का आभास दिलाना चाहें या उनके भारत-स्थित राजदूतों को अपने गवर्नर जनरल के वेतन, भत्ते और महल से प्रभावित करना चाहें तो इसमें हमें न सफलता मिलेगी और न इस कोरी प्रतिष्ठा के नाम पर की गई फिजूल खर्ची को भारतीय कर-दाता ही अधिक दिन तक सहन करेगा।

हमें चाहिये कि हम ऐसे दूत भेजें जो अपनी व्यवहार-कुशलता, बुद्धिमत्ता तथा जानकारी से विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकें। अच्छे राजदूतों के चुनाव से भी अधिक आवश्य है एक अच्छी और सुलझी हुई नीति का ग्रहण करना। हम शिकायत करते हैं कि अमेरिकन तथा अँगरेजी प्रेस में हमारी नीति का विरोध किया जा रहा है, हमारे उद्देश्यों को जान-बूझकर बिगाड़ कर प्रकट किया जा रहा है और हमारे नेताओं के विरुद्ध काफी प्रचार किया जा रहा है। साथ ही हमारे रूसी राजदूत को पेरिस में एक पत्रकार से यह कहना पड़ता है कि रूसी प्रेस भी यही काम कर रहा है। तब सवाल उठता हैं कि हमारी प्रशंसा कौन करता है ? हमारे उदेश्यों को ठीक कौन समझता है ? हमारी बात की वकत कौन करता है ? खेद के साथ उत्तर सुनना पड़ता है 'कोई नहीं'। यह दूसरी बात है कि एक भूतपूर्व गवर्नर-जनरल जिसने साल भर का भत्ता ४ मास से कम में ही समाप्त करने पर भी रिश्तेदारों की-सी विदाई का सम्मान पाने के कारण हमारे प्रधान मंत्री को संसार का सबसे बड़ा राजनीतिज्ञ कहकर अपना आभार प्रकट किया हो। परन्तु उससे देश को और उसकी जनता को क्या हाथ लगेगा ? यदि हम इस प्रशंसा के भुलावे में आकर अभी तक की भूलों को जारी रक्खें तो सम्भव है हमें करारी हानि जरूर हो।

अपनी नीति स्थिर करने में हमें अपनी तथा संसार की वर्तमान स्थिति को ध्यान में रखना पड़ेगा। भारत एशियाई देशों में बड़े मार्के की स्थिति में है। उसमें काफी जन-संख्या है। चीन के बाद उसकी आबादी एशिया के अन्य राष्ट्रों से कहीं अधिक है। अपने पड़ोसी राज्यों से उसका आज का सम्बन्ध नहीं है। उसने फारस, अरब, चीन, ब्रह्मा, लंका, जापान तथा पूर्वीय द्वीपों से व्यापार का संबंध ही नहीं रक्खा वरन् उसने उनको अपनी सभ्यता, संस्कृति तथा धार्मिक नीति से भी प्रभावित किया है। उसने भी उनसे अनेक बातें सीखकर अपना ज्ञान-भण्डार बढ़ाया है। इस आदान-प्रदान के इतिहास को दृष्टि में रखते हुए और इस बात को स्मरण रखते हुए कि एशिया के अधिकाश देश उसी साम्राज्यवाद के पंजे में फँसे हैं जिससे हम अभी हाल में ही मुक्त हुए हैं, हमें एक ऐसी नीति ग्रहण करनी चाहिये जिससे एशिया की त्रस्त तथा शोषित जनता सीधे खड़ी होने का अवसर पा सके और स्वतन्त्रता तथा सुख का अनुभव करने की सुविधा प्राप्त कर सके। हमें निश्चय करना पड़ेगा कि हम उनके जीवन-मरण के उद्योगों में किस प्रकार सहायक हो सकते हैं और अखिल एशियाई भाई-चारे की भावना को किस प्रकार दृढ़ता दे सकते हैं।

दूसरी बात जो हमें ध्यान में रखनी पड़ेगी वह है अपनी आंतरिक स्थिति। हमारी गुलामी की जंजीरें अभी हाल में ही टूटी हैं। हमारे कुछ भाई उस पक्षी के समान हैं जो चिरकाल तक पिंजड़े में रहने के बाद खुली हवा में विचरण करने में सहमता है। वह पिंजड़े का ही सहारा ढूँढता है। हमें निश्चय करना होगा कि हम कामनवेल्थ के पिंजड़े में रहने के पक्षपतियों का साथ दें अथवा उससे निकल आने की नीति का समर्थन करनेवालों का। फिर हमारे यहाँ अभी प्रांतीयता और सांप्रदायिकता का विष भी विद्यमान है। इसलिये नियुक्तियाँ करते समय हमें इन भावनाओं की इस प्रकार उपेक्षा करना जिससे हमारी नेकनीयती पर संदेह

(शेष पृष्ठ १४ पर देखिये)

विजयलक्ष्मी पंडित पेरिस में होनेवाली सुरक्षा परिषद् में भाग के लिए दिल्ली से हवाई अड्डे को अपनी पुत्री रीता के साथ जा रही हैं।

भारत के रक्षामन्त्री सरदार बल्देवसिंह, देहरादून की सैनिक एकेडमी के निरीक्षण के समय, अधिकारी सैनिकों के साथ।

भारतीय भिखमंगों की समस्या

इसको हल करने का उत्तरदायित्व समाज व राज्य पर है

लेखक, श्री वंशीधर पुंडीर बी० ए०

> भारत में भिखमंगों की समस्या भी प्रधान है। जिस देश की आर्थिक स्थिति निर्बल होती है और बे-रोजगारी की जनता शिकार होती है, उसी देश में भिखमंगों का प्रभुत्व बढ़ता है। इस लेख में लेखक ने भिखमंगों की समस्या पर सुन्दर प्रकाश डाला है जो पठनीय तथा विचारणीय है।

यह बहुत ही हर्ष का विषय है कि प्रयाग में भी कुछ समाज-सुधारकों का ध्यान भिखमंगों की समस्या की ओर गया है और कुछ ही समय पहले प्रयाग विश्वविद्यालय में एक प्रतिनिधि सभा का भी आयोजन किया गया था। उसके पश्चात् इस दिशा में कुछ क्रियात्मक कदम उठाये गये हैं और समाज सेवक-समिति की स्थापना कर अभी कुछ ही दिन पहले उसके दफ्तर का भी मा० केशवदेव मालवीय के हाथों उद्घाटन किया गया है। समिति सबसे पहले भिखमंगों की समस्या पर ध्यान देकर इस ओर कुछ कार्य करेगी। इस दिशा में प्रयाग की जनता को इसके संगठनकर्ताओं का आभारी होना चाहिये विशेषकर श्री गोपीनाथ श्रीवास्तव का जिन्होंने इस दिशा में सबसे पहले कार्य का श्रीगणेश किया है।

भिखमंगों की समस्या न सिर्फ इलाहाबाद में ही है बल्कि यह एक देशव्यापी समस्या है जिस पर स्थानीय प्रयास ही हो पाये हैं और कोई देशव्यापी सरकारी या गैर-सरकारी क्रियात्मक प्रयत्न नहीं हो पाया है। कहीं कहीं म्युनिसिपैलिटियों या कार्पोरेशनों ने कुछ कदम उठाये हैं पर वे कदम इतने व्यापक नहीं हैं कि इस समस्या को जड़ से ही सुलझा दें बल्कि वे सिर्फ ऊपरी पैबन्द-मात्र हैं। भिखारियों की समस्या न सिर्फ भारत ही में इस रूप में है बल्कि कई अन्य देशों में भी इसी भाँति देशव्यापी है। अक्सर जितना जो देश समृद्ध होगा उतनी वहाँ यह समस्या भीषण नहीं होगी नहीं तो आर्थिक स्थिति से पिछड़े हुए देशों में अधिक ही पाई जायेगी। युद्ध या अन्य किसी दैवी संकट के अवसर पर इसका बढ़ जाना स्वाभाविक है क्योंकि उस समय सारी अर्थ-व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाती है और जीविका के साधन भी तुलनात्मक दृष्टिकोण से कम हो जाते हैं। इसके साथ साथ यह लोगों की मनोवृत्ति पर भी निर्भर करता है क्योंकि पूर्वी देशों में जहाँ गरीबी भी अधिक है और लोगों को धार्मिक प्रवृत्ति है और इस लोक का दिया हुआ दान उस लोक में मिलने की भावना है वहाँ इसका फलना-फूलना स्वाभाविक है। इस भावना के कारण वहाँ निष्क्रियता और अकर्मण्यता के बढ़ने की सम्भावना हो जाती है और जब बिना किसी काम-काज किये पेट भर जाया करे तब दिन भर कौन काम करना चाहेगा। इसीलिये कई हट्टे-कट्टे व्यक्तियों को भी आप भीख माँगते हुए पायेंगे।

भारत में प्राचीन काल से ही दान का बहुत महत्त्व बताया गया है और समय समय पर हमारे धार्मिक ग्रन्थों में इसका उल्लेख मिलता है और कई प्रकार की कहानियाँ भी रहती हैं। पर इसमें जो ध्यान देने की बात है वह यह है कि उसमें पात्र-कुपात्र का विचार किया जाता था और यह नहीं कि हर किसी को, जो भी माँगने आये उसे दे दिया जाये। इसीलिये यह प्रथा विकृत नहीं होने पाई और न्याय के आधार पर व्यवस्थित रही पर धीरे धीरे जैसे समय बीतता गया और आर्थिक स्थिति भी बिगड़ती गई वैसे लोगों को इस प्रकार भीख माँगने का सहारा लेना पड़ा और लोगों की धार्मिक प्रवृत्ति से और इस लोक व दूसरे लोक में फल पाने की भावना लाभ का उठाते रहे। इसीलिये धार्मिक स्थानों में अधिक भिखमंगे पाये जाते हैं और कई बार जब वे आपका पीछा करने लगते हैं तब आप परेशान भी हो जाते हैं।

वास्तव में यह सारी समस्या हमारी सामाजिक कुव्यवस्था और गठन की छाया-मात्र है। जहाँ गरीबी, भुखमरी और बेकारी होगी वहाँ इसका पनपना स्वाभाविक है। ऐसे बहुत ही कम व्यक्ति होंगे जो कि भीख माँगना पसन्द करेंगे पर जब परिस्थितियाँ मजबूर कर देती हैं तब थोड़े ही दिन में वह सब लज्जा खो बैठता है और उसे किसी के सामने हाथ फैलाने में लज्जा नहीं आती और वह कई प्रकार की भावभंगी लोगों को प्रभावित करने के लिये सीख जाता है। वास्तव में अपाहिजों आदि के लिये जीविका का कोई साधन नहीं रहता इसलिये वे इसे ही सबसे उचित और सुगम मार्ग समझते हैं। बेकारी, भूख, गरीबी और निराश्रय होने के कारण वे मजबूर हो जाते हैं कि इस प्रकार का भीख माँगने का कार्य प्रारम्भ करें। कुछ ही समय में वे समाज के ऊपर भार बन जाते हैं और बिना कुछ काम-काज किये हुये ही पेट भरना चाहते हैं। अपाहिजों के लिये तो यह क्षम्य है क्योंकि वे कुछ

समाजवाद की सुप्रसिद्ध नेत्री
कमलादेवी चट्टोपाध्याय।

शारीरिक कार्य करने में असमर्थ हैं
हट्टे-कट्टे व्यक्तियों को मुफ्त में
उपयुक्त नहीं है और उनके लिये
काम खोजना समाज और
उत्तरदायित्व है। सामाजिक
कारण ही यह समस्या उत्पन्न
और समाज को ही इसे हल
चाहिए।

भिखमंगों के सम्बन्ध में भी
बार कई प्रकार की विचित्र
होंगी और फिर आपने विचार
कि मैं किसी को भी एक पैसा
इससे कई वास्तविक सहायता
भी नुकसान पहुँचता है।
नाएँ सुनी हैं कि कई भिखारियों
अन्त में काफी रुपये मिले
अकेला ही था और सारी उम्र
पैसा माँगता रहा। ऐसी अवस्था
उत्पन्न होता है कि क्या संचय
लिये ही वह पैसा माँगता रहा
रुपया जमा हो जाने पर भी
की आदत नहीं छोड़ी और
धन भी उसके कारण काम न
कारण आपकी साधारण भिखारी
दया की भावना नहीं रहती
है इसकी भी यह बनावटी
इसके अलावा भिखारियों के
गुट होते हैं और इनके सरदार भी
जो कि अन्य भिखारियों को
के लिये भेजते हैं। ये सरदार
भर की आय में से काफी हिस्सा
और अपने आप कुछ काम न
वस्तुओं में मस्त रहते हैं। कुछ
वे बचपन से ही शिक्षा देने
कि भीख माँगने की कला में
जाते हैं। इससे समाज की
कारण कितने ही बच्चों के
जाते हैं। पर अब कितने ही
प्रकार की भीख की आदत
हो जायेगी क्योंकि लगभग
में प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य
है और कोई भी बच्चा
घूमता हुआ नजर नहीं
उसके अभिभावकों पर
होगा। इस प्रकार के
कुछ न कुछ भीख

शेष पृष्ठ १९

श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय और श्री जयप्रकाशनारायण तथा अन्य देवियाँ।

कहानी

प्रेम और बिजनेस

लेखक, श्री कृष्णमुरारीलाल गुप्त, एम० ए०

मनुष्य कभी कभी जीवन में इतना व्यस्त हो जाता है कि उसे कार्य के अतिरिक्त ...नन्त तक का स्मरण नहीं रह जाता। वीरेश कार्य में व्यस्त रहने के कारण अपने विवाह को भी भूल गया था इसको लेखक ने इस कहानी में बड़े ही आकर्षक ढंग से चित्रित किया है। कहानी हृदयग्राही और पठनीय है।

आज जब बम्बई स्टाक एक्सचेंज के ...बड़े दलाल, वीरेश ने अपनी युवा ...टिस्ट के साथ ठीक साढ़े नौ बजे अपने ...में प्रवेश किया, तब उसके प्राइवेट ...री माथुर के ओठों पर एक हल्की-...स्कान दौड़ गई। माथुर के नमस्ते ...ल्दी से गर्दन हिलाकर जवाब देते ...वीरेश झपटकर अपनी मेज के पास ...गया। उसके कुर्सी पर बैठते बैठते ...हाथ ने टेलीफोन सँभाल लिया ...एक मिनट के बाद टेलीफोन छोड़-...वीरेश पत्रों और तारों के ढेर को ...में अपने आपको भूल गया।

...ह नवयुवती एक वर्ष से वीरेश ...टाइपिस्ट थी। वह रूपवती और ...र्षक थी। आज उसके मुख पर ...अपूर्व छटा दिखलाई पड़ रही थी। ...अलसाई आँखों में एक चमक-सी ...उसके कपोलों पर एक असाधारण ...मा, और उसके अधरों पर एक ...मिश्रित प्रसन्नता थिरक रही थी। ...व और बातों में भी कुछ अन्तर ...मिस दास आज अपने छोटे कमरे में ...कर, जहाँ उसके बैठने का स्थान था, ...के दफ्तर में गई। उसकी मेज से ...हुए थोड़ी देर चुपचाप खड़ी रही।

...र्सी पर बैठा हुआ अब कोई मनुष्य ...था, बल्कि एक मशीन थी। प्रश्न-...आँखें उसकी ओर उठाकर वीरेश ...मात्र से पूछा '.....हूँ ?—क्या ...है ? छोटे-बड़े लिफाफों का ढेर ...मेज पर लगा था। उसकी चिन्तित ...में व्यग्रता झलक रही थी।

'...कुछ नहीं'—जरा-सा मुस्कराकर जाते ...मिस दास (टाइपिस्ट) ने कहा।

'मिस्टर माथुर'—मिस दास ने माथुर ...—'कल उन्होंने क्या आपसे कोई ...टाइपिस्ट रखने के लिये नहीं कहा।'

'कहा था'—माथुर ने गर्दन हिलाकर ...दिया—वीरेश बाबू ने मुझसे एक ...टाइपिस्ट की आवश्यकता बतलाई ...। मैंने कल एम्प्लायमेंट एक्सचेंज ...टाइपिस्ट गर्ल्स भेजने के लिये लिख ...था। आज तो अभी तक कोई ...डर और रूज से पुता हुआ चेहरा ...दिखाई नहीं दिया।'

'...जब तक कोई नहीं आता'—मिस-...दास ने कहा—'मैं ही काम कर दूँगी।' ...और वह सीधी जाकर, टाइपराइटर के ...सामने अपने नित्य के स्थान पर बैठ गई।

जिस व्यक्ति ने अधिक काम के समय किसी बड़े दलाल को नहीं देखा, उसने एक बड़ा अपूर्व दृश्य खो दिया। संसार की रचना करते समय भगवान् की शायद ही इतना अधिक व्यस्थ रहा हो।

आज का दिन वीरेश के लिये अधिक काम का दिन था। 'टिकटिक' करती हुई घड़ी की सुई आगे बढ़ रही थी। रह-रहकर 'टन-टन-न-न-न' टेलीफोन की घण्टी गूँज उठती थी। कुछ आदमी वीरेश से बातें कर बाहर निकलते, पर उनसे अधिक आदमियों का रेला फिर दफ्तर में घुस आता। मुस्कराती हुई, क्रोधित, चिन्तित, उत्तेजित, सब प्रकार के भावोंवाली मुखाकृतियाँ वहाँ दिखाई पड़ रही थीं। पत्र और तार लिये हुए नौकर इधर-उधर दौड़ रहे थे। दफ्तर के क्लर्क किसी डूबते हुए जहाज के मल्लाहों की तरह उछल रहे थे। यहाँ तक कि माथुर के मुख पर भी कुछ उद्वेग के चिह्न दिखाई पड़ने लगे।

एक अच्छी खासी हलचल वहाँ हुई थी। वीरेश ने अपनी कुर्सी पीछे हटाकर दीवाल से सटा ली और काम समाप्त करने में लग गया। वह कूदकर कभी टेलीफोन उठाता, कभी दरवाजे की तरफ बढ़ता, और कभी किसी क्लर्क के पास जा पहुँचता था।

काम की व्यस्तता के बीच वीरेश को सहसा मरुभूमि में एक जलाशय-सा दिखाई पड़ा। भूरे बालों और नीली आँखोंवाली, बनीठनी, रँगी-पुती, एक नवयुवती उसकी मेज के सामने खड़ी थी और माथुर उसकी बराबर में खड़ा था।

'आप टाइपिस्ट की खाली जगह के लिये आई हैं।' माथुर ने कहा।

दोनों हाथों में कागज भरे हुए वीरेश ने सिर उठाकर झुँझलाते हुए पूछा—'कैसी खाली जगह ?'

'टाइपिस्ट की' ....माथुर ने कहा—'आपने कल ही तो इसके लिए मुझसे कहा था।'

'तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है'—वीरेश बोला—'मैं भला ऐसा क्यों कहने लगा ?' पिछले साल भर में मिस दास के काम में हमें कभी कोई कमी दिखाई नहीं दी। जब तक वह स्वयं काम करना चाहें, हमें किसी दूसरी टाइपिस्ट का क्या करना है। यहाँ कोई जगह खाली नहीं है, श्रीमती। और मिस्टर माथुर, आप अभी एम्प्लायमेंट एक्सचेंज को लिख दीजिये कि हमें किसी टाइपिस्ट की आवश्यकता नहीं।

वह महिला, बिगड़ती और दफ्तर की मेज-कुर्सियों से टकराती हुई, वहाँ से चली गई। माथुर ने एक दूसरे क्लर्क के कान में कहा—'अभी से इतना भूलने लगे, तो फिर बुढ़ापे में कैसे काम चलेगा ?—'

भीड़ और कलम का क्रम अधिक बढ़ गया। उन पाँच - छः स्टाकों का मामला डाँवाडोल हो रहा था, जिनमें वीरेश के ग्राहकों की लम्बी-लम्बी रकमें फँसी हुई थीं। खरीदने और बेचने के आर्डर चीलों की तरह गतिपूर्वक आ-जा रहे थे। वीरेश को स्वयं अपने भी कुछ धन की चिन्ता थी और वह किसी मजबूत और सूक्ष्म काम करनेवाली मशीन की तरह बिना रुके, बिना हिचकिचाहट के, बिना गलती किये, काम कर रहा था। प्रत्येक अवसर के लिए शब्द, निर्णय और कार्य उसके पास तैयार थे, जैसे घड़ी अपने आप घण्टे मिनट और सेकेंड बजाती रहती है। स्टाक और बान्ड, ऋण और गिरवी, लाभ और हानि—यहाँ का संसार आर्थिक संसार था—इसमें मानवी संसार अथवा प्राकृतिक संसार के लिए कोई स्थान नहीं था।

जब दोपहर के खाने का समय निकट आया और काम की रफ्तार कुछ धीमी पड़ गई, तब वीरेश अपनी मेज के पास खड़ा था। उसके हाथ तारों के भरे हुए थे, उसके कान पर एक फाउन्टेनपेन रक्खा था और उसके लम्बे बाल उसके माथे पर बिखरे हुए थे। उसकी खिड़की खुली हुई थी और बाहर पेड़-पौधों पर वसन्त की बहार छाई हुई थी।

खुली हुई खिड़की में से आती हुई गुलाब की भीनी-भीनी सुगन्ध ने थोड़ी देर के लिये वीरेश को मस्त बना दिया। यह सुगन्ध मिस दास के फूलों की थी—मिस दास के अतिरिक्त और किसी की नहीं—मिस दास को गुलाब के फूलों से बहुत प्रेम था।

इस सुगन्ध ने मिस दास की सजीव मूर्ति वीरेश की आँखों के सामने लाकर खड़ी कर दी। आर्थिक संसार फीका पड़ गया। फिर मिस दास अगले ही कमरे में तो थीं—केवल बीस कदम दूर।

'मैं उससे कहूँगा'—वीरेश बड़बड़ाने लगा—'मैं अभी उससे कहता हूँ। मुझे आश्चर्य है मैंने पहले इस बारे में मिस दास से बात क्यों नहीं की।'

वह जल्दी से मिस दास के कमरे में घुस गया। जाकर वह उसकी मेज के पास कुर्सी खींचकर बैठ गया।

मिस दास ने मुस्कुराते हुए अपना सिर ऊपर उठाकर देखा। उसके गाल लाल हो गये और उसकी आँखों में स्नेह-सा उमड़ता हुआ दिखलाई पड़ा। वीरेश उसकी मेज पर एक कोहनी टेककर बैठा था। वह अभी दोनों हाथों में कागज दबोचे हुए था और पेन भी उसके कान पर ही था।

'मिस दास'—वह जल्दी से बोला—'मैं केवल एक मिनट दे सकता हूँ। उस एक मिनट में मैं कुछ कहना चाहता हूँ। क्या तुम मुझसे विवाह करोगी ? मैं जानता हूँ संसार में तुम भी बिलकुल अकेली और स्वतन्त्र हो, इसलिये मैं सीधे तुम्हीं से बात करने की धृष्टता कर रहा हूँ। मुझे तुमसे बात करने के लिये अधिक समय नहीं मिल

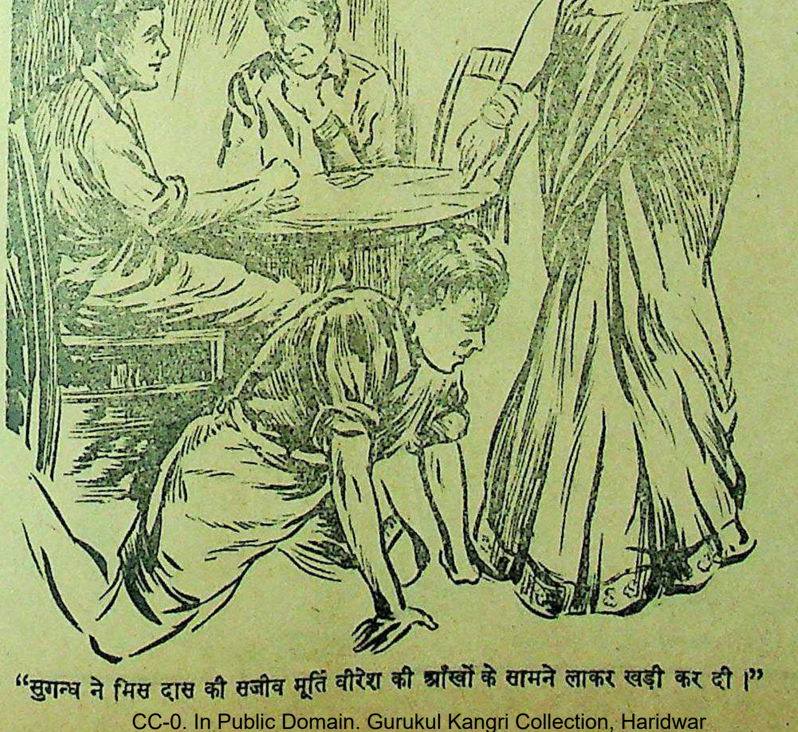

"सुगन्ध ने मिस दास की सजीव मूर्ति वीरेश की आँखों के सामने लाकर खड़ी कर दी।"

सका, लेकिन मैं सचमुच तुमसे प्रेम करता हूँ—बहुत अधिक प्रेम। कृपया जल्दी उत्तर दे दो, वे लोग दफ्तर में मेरी जान खाने को खड़े हुए इन्तजार कर रहे हैं।'

'आप कैसी बातें कर रहे हैं?' मिस दास ने आश्चर्यान्वित होकर कहा। वह उठकर खड़ी हो गई और वीरेश की ओर देखने लगी।

'तुम समझी नहीं?' वीरेश ने अशांत होकर कहा—'मैं तुमसे विवाह करना चाहता हूँ। मैं तुम्हें चाहता हूँ मिस दास। मैं बहुत दिनों से यह बात तुमसे कहने की सोच रहा था, आज काम हल्का पड़ने पर मैं किसी तरह एक मिनट निकाल सका। ....माथुर, उनसे एक मिनट ठहर जाने को कह दो।.......बोलो, मिस दास? मैं सचमुच तुमसे प्रेम करता हूँ।' वीरेश ने मिस दास का हाथ अपने दोनों हाथों में ले लिया।

मिस दास भौचक्की-सी बैठी रही, एक क्षण के बाद उसकी, आश्चर्य में डूबी हुई, आँखों से आँसू बहने लगे, और फिर उसका आँसुओं से भीगा हुआ चेहरा ओस से भीगे हुए गुलाब की तरह खिल उठा, और उसने अपनी एक भुजा वीरेश के गले में डाल दी।

'मैं समझ गई', उसने हौले से कहा—'इस बिजनेस ने थोड़ी देर के लिये तुम्हारे मस्तिष्क से सब बातें निकाल दी हैं। मैं तो पहले डर गई थी। तुम क्या सचमुच भूल गये? कल आठ बजे ही तो हम लोगों का विवाह हुआ था।'

(ओ० हेनरी की एक कहानी
के आधार पर)

कोमल, सुन्दर चेहरा
पांड्स के दो क्रीम से

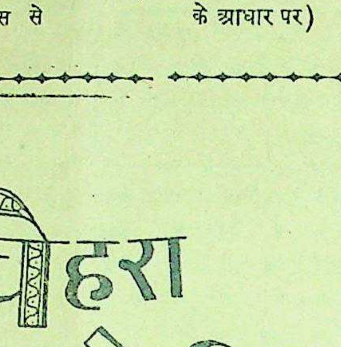

शरीर के स्वाभाविक सौन्दर्य को व्यक्त करने के लिये दो विभिन्न क्रीम आवश्यक हैं। पहिला, चेहरे को निर्मल और कोमल बनाने के लिये गहराई में प्रविष्ठ होनेवाले तेलों के उत्तम मिश्रण से बना क्रीम—पांड्स कोल्ड क्रीम। दूसरा, चिकनाई-रहित क्रीम जो अदृश्य रूप से दिन भर लगा रहे--पांड्स वेनिशिंग क्रीम।

प्रति रात्रि अपने चेहरे को पांड्स कोल्ड क्रीम से स्वच्छ कीजिये। इस खूब चिकने क्रीम को चेहरे और गले पर थपथपाइये। तब पोंछ डालिये और इस प्रकार आप चेहरे के सारे विकारों को पोंछ डालते हैं। यह उपचार शीघ्र ही आपके मुख को सुस्वास्थ्य और सौन्दर्य से आलोकित बना देगा।

दिन भर के धूल और गर्मी के विरुद्ध पांड्स वेनिशिंग क्रीम से अपने चेहरे की रक्षा कीजिये। यह चिकनाई-रहित है और लगाने पर अदृश्य हो जाता है। थोड़े से इस शीतल हलके क्रीम को अच्छी तरह फैलाने और अदृश्य होने तक मलने से आपके चेहरे को सुरक्षा और पुष्पवत् शृंगार मिल जाता है।

स्मरण रखिये कि ग्रीष्म की कठोर गरमी और सर्दी की शीत दोनों ही हमारे शरीर के प्रकृत तेलों को सुखाकर उसे काला और भद्दा बना देती हैं।

यह भी स्मरण रखिये कि छिद्रों की गहराई में धूल या मैल के कणों से ही शरीर में अधिकांश दाग पैदा हो जाते हैं।

पांड्स

पांड्स के दैनिक, नियमित प्रयोग से चेहरा स्वच्छ, उज्ज्वल और निर्मल हो जावेगा—वह सदैव युवा दिखेगा। आपके 'सौंदर्य नियमन' के इस साधन को प्रति दिन पांड्स के दो क्रीम से पूरा कीजिये।

व्यापारिक विवरण के लिये- एल. डी. सेमूर एंड कं. (इंडिया) लि०
बम्बई - कलकत्ता - देहली - मदरास - नोवा गोवा - कराची - कोलम्बो - रंगून

मुफ्त! मुफ्त!!

आप घर बैठे मैट्रिक, एफ० ए०, पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी और होम्योपैथिक बायोकैमिक आसानी से पास कर सकते हैं। मुफ्त मँगायें। पता :—

इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड)

फिल्म ऐक्टर

यदि आप फिल्म ऐक्टर बनकर १००) रु० से १५००) रु० मासिक तक कमाना चाहते हों तो आज ही लिखें। थोड़ा लिखा पढ़ा होना जरूरी है। अपना नाम व पूरा पता साफ

डाइरेक्टर इम्पीरियल चैम्बर
(फिल्म डिपार्टमेंट)
पो० ब० ६१ (*D. D. A.*)

जानवरों की मजेदार कहा

मोर और कौआ, लोमड़ी और चालाक बुढ़िया, सोने की चिड़िया और सियार आदि कहानियाँ इनका चमत्कार देखिए। अच्छे कागज पर छपी पुस्तक

अपराजिता

यह श्रीयुत रामेश्वरप्रसाद शुक्ल एम० ए०, 'अञ्चल' की कतिपय सुन्दर कविताओं का संग्रह है। कविताएँ नवीन नूतन सांस्कृतिक रुचि और प्रगति हैं। कवि 'अंचल' की रचनाओं का प्राप्त करने के लिए अपराजित देखिए। सजिल्द पुस्तक का मूल्य रुपये।

परीदेश

यह पुस्तक ख़ास कर छोटे लिए है। इसमें ऐसी एक भी जिसको समझने के लिए माथापच्ची पड़े। इसमें रोजमर्रा की बातें अच्छे ढंग से लिखी गई हैं। की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों और पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है।

आविष्कारों की कथा

मशीनें कैसे बनीं? तरह-तरह औजार कैसे बनें? रेल, जहाज, सिनेमा वगैरह कैसे बने? नई-नई बनाकर या नय काम करके दुनिया में प्रसिद्ध हो सकते हैं! बातों को जानने के लिए यह पुस्तक पढ़िए। मूल्य १)

डियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

हमारा रंग-मंच

'नाटक'

भाई-बहन के विवाह का समाजद्रोही अभिनय

लेखक, श्री गोपाल मेहरोत्रा

'नाटक' की कहानी अत्यधिक सरल जगत् पिक्चर्सकृत 'वीणा' का असु- रूप होने पर भी उसे गतिहीन प्रदर्शित किया गया है। ११ सहस्र फीट नष्ट करने के लिए, ए० यू० सुन्नी ने उसे भारतीय, स्वर्ण- पर इस भांति प्रदर्शित किया है— के मरने पर राधा अपनी विधवा दीन-हीन दशा में जीवन व्यतीत है। जीविकोपार्जना में उसकी मा करने का कार्य करती है और के कुँवर जी राधा से......। निकट पड़ोसी युवक, सरूपी राधा से देखता है। अपने पूर्वजों मर्यादा सुरक्षित रखने के हितार्थ के पिता महाराणा जी उसका पाश्चात्य रँग में रंगी तितली, से करवा देते हैं, जिसके पूर्व ही अपनी इच्छानुसार अगाध-सम्पत्ति की मान-मर्यादा ठुकराते हुए विवाह कर चुके थे। राधा, कुँवर करने में असमर्थ होकर शोभा दासी का कार्य करती है। एक रहस्य का उद्घाटन होता है। आत्म-हत्या कर लेती है और कुँवर राधा-सहित सुखमय जीवन करते हैं। फलतः उन्हें पुत्र-रत्न प्राप्त है और सरूपी, राधा को अपनी करता है।

कोटि के कथानक के चित्रण में देखकर बड़ा दुख होता है। रूढ़िवाद तथा वंश की मान-मर्यादा का अनुयायी महाराणा यदि अपने पुत्र का विवाह स्व-इच्छानुसार करना चाहता है तो प्रथम के पश्चात् द्वितीय विवाह पर उसका विरोध किस सामाजिकता अथवा उच्चता की शरण स्वीकार करता है? पत्नी की आत्म-हत्या का सर्वस्व दोष पति पर है, पिता पर नहीं! एक साथ दो नारियों के जीवन को नष्ट करना दकियानूसी विचारों को प्रोत्साहन देने के अतिरिक्त और क्या है? क्या आज का विद्यार्थी-वर्ग शिक्षा के स्थान पर धोबिनों के चित्र खींचता तथा प्रेमालाप करता है? कथाकार ने कितनी सरलता से कुँवर जी तथा राधा का विवाह करा दिया? क्या इसी मिश्रण के कारण ही आधुनिक सन्तानें इतनी निर्बल उत्पन्न नहीं होती हैं? मुस्लिम संस्कृति के अन्तर्गत तो भाई-बहन के विवाह भी माने गये हैं। किन्तु हिन्दू संस्कृति के यह सर्वथा विपरीत है। कथा-लेखक जी द्वारा लिखित कथोपकथन आदि से अन्त तक पूर्णतया ऊटपटांग तथा निरर्थक है। भाषा तो शत-प्रतिशत उर्दू है, जिसे सुनते-सुनते दर्शक ऊब जाते हैं—'तालीम अधूरी रह जायगी', 'इसे कुबूल कर लो, नजराने के तौर से', 'फरमाइये'..., 'फरमाइये'..., 'फरमाइये'...., 'एक फोटो उतारना चाहते हैं', आदि। श्री कुमार शुक्ल द्वारा रचित गीतों ने ऐसा मटियामेट किया है कि दर्शक चित्र के निर्माण पर रो उठता है। जब कुँवर जी 'दिल से निकले हूक मेरे', 'भूल जा ..' आदि तथा राधा जी 'ओ राजा जी...' अलापते हैं तो ऐसा प्रतीत मानो......। दिग्दर्शक ने सुरैया को रंगमंच पर उतारकर अपने पाकिस्तानी विचारों का प्रशंसनीय प्रदर्शन किया है। श्री नैशाद के अंधे संगीत ने तो सुरैया की स्वरलहरियों पर अत्यधिक कुठाराघात किया है। संगीत में न तो कोई नवीनता है, न स्वाभाविकता और न कोई कला ही—वही पुरातन पिटपिटाया संगीत। श्री सैलेन बोस का चित्रालेखन आकर्षण-हीन तथा असफल है। स्थान-स्थान पर कैमरे के 'कोणों' का भी असफल उपयोग किया गया है। श्री ए० ठाकुर का ध्वनि-आलेखन दोषपूर्ण हुआ है। सेटिंग्स तो अस्वाभाविक हैं। रूप-सज्जा साधारण है, परन्तु कलानेत्रियों की वेष-भूषाएँ कामुकता से पूर्ण हैं। समझ में नहीं आता कि वर्तमान युग के निर्देशक सुरैया को क्यों इतना अश्लील वस्त्र ग्रहण कराते हैं?

यद्यपि राधा की कल्पना में लोकप्रिय अभिनेत्री सुरैया ने सराहनीय कार्य किया है, परन्तु अब आपकी उच्छृङ्खल भावनाओं तथा कामुक प्रदर्शनों को सहना असह्य हो गया है। 'हंटरवाली' में नाडिया, 'चित्रलेखा' तथा 'परख' में मेहताब, 'अरमान' में शमीम, 'फैशन' में लीला पँवार, 'विष कन्या' में साधना बोस तथा 'जीवन-यात्रा' में नयनतारा की टाँगें और 'शहनाई' में रेहाना के उभरे स्तन देखकर आश्चर्य हुआ था, चित्र में सुरैया की निर्बल टाँगों को देखकर चकित रह जाना पड़ता है। नायक कुँवर जी की भूमिका में शून्य अमर ने असफल अभिनय किया है। पिचके गाल, कुएँ जैसी धँसी हुई आँखों ने तो आपकी असफलता में चार चाँद लगा दिये हैं। शोभा के आवरण में सोफिया ने तृतीय श्रेणी का अभिनय प्रदर्शित किया है।

यह है, श्री ए० आर० कारदार द्वारा निर्मित और सुन्नी द्वारा निर्देशित 'महान् सामाजिक संगीतमय चित्र', "नाटक"। निर्देशन एवं निर्माण के लिए तो हम यही प्रार्थना करेंगे कि श्री कारदार तथा सुन्नी जी ने जो दुस्साहस किया है उसकी पुनरावृत्ति न करने की उन्हें प्रस्तुत चित्र में भी 'सँजोग' के लेफ्टीनेन्ट कर्नल के चित्र को प्रदर्शित कर उन्हें राधा का पिता कहना—निर्देशक की महान् नीचता का परिचय प्राप्त होता है और शपथ लेनी चाहिये। प्रत्येक चित्रपट का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण वस्तु 'गति' होती है जो व्यक्ति चित्र में गति जैसी वस्तु को सफलतापूर्वक नहीं प्रदर्शित कर सकता उसे निर्देशक होने का कोई अधिकार नहीं है। 'रस्सी जल चुकी है, परन्तु ऐंठन अभी अवशेष है।' वास्तविक अर्थों में 'नाटक' दिग्दर्शक के दिवालियेपन का एक नग्न प्रमाण ही नहीं वरन् कथानक, भाव, पात्र-चयन, ध्वनि आलेखन, भाव आदि समस्त दृष्टिकोणों से दलित है और चित्र देखना, 'काले पानी की सजा' सा प्रतीत होता है।

'दमा' और पुरानी खाँसी के रोगियो—नोट कर लो
(अब चूके तो फिर साल भर तक पछताओगे)
हर साल की तरह से इस साल भी हमारी जगत् विख्यात महौषधि 'चित्रकूट बूटी' के दो हजार पैकेट आश्रम में मुफ्त बाँटे जावेंगे, जो (शरद् पूर्णिमा) ता० १८ अक्टूबर को या फिर (कार्तिक पूर्णिमा) में एक ही खुराक खीर में खाने से सदा के लिए इस दुष्ट रोग से छुटकारा मिल जाता है। जो रोगी समय पर आश्रम में न आ सकें वे सदा की तरह २।=) रु० विज्ञापन, रजिस्ट्री आदि खर्च अभी से मनीआर्डर भेजकर तुरन्त मँगा लें। देर करने पर फिर गत वर्ष की तरह सैकड़ों को निराश होना पड़ेगा। नोट कर लें कि वी० पी० किसी को नहीं भेजा जाता है। अमीर आदमी धर्मार्थ बाँटने के लिए कम से कम २५ आदमियों के लिए ४०) रु० भेजें। जल्दी करें।
पता—रायसाहब के० एल० शर्मा रईस (D) 'जगाधरी' [पूर्व पंजाब] E. P.

श्री रोमा नेहरू, 'अनजानगढ़' फिल्म की प्रसिद्ध अभिनेत्री।

श्री सुनन्दा देवी जो हिन्दी तथा बंगाली 'अनजानगढ़' फिल्म में अभिनय करती हैं।

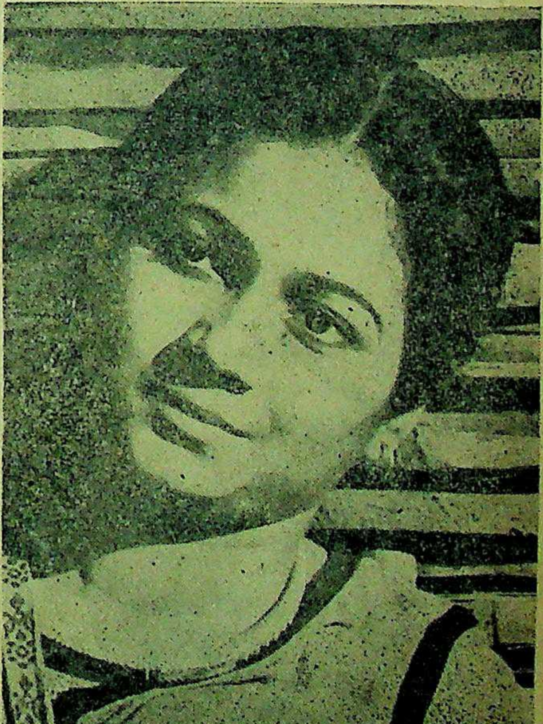
श्री अमिता बासू जो बंगाली 'अनजानगढ़' फिल्म में अभिनय करती हैं।

सम्पादक के नाम चिट्ठियां

एम्प्लायमेंट एक्सचेंज लैन्सडौन से बनारस

प्रिय सम्पादक जी,

गढ़वाल के प्रत्येक शुभचिन्तक को यह समाचार सुनकर बहुत दुःख व आश्चर्य होगा कि लैन्सडौन का दफ्तर एम्प्लायमेंट एक्चेंज हटाकर बनारस ले जाया जा रहा है। हमारी समझ में यह नहीं आता कि सरकार को यह कदम उठाने की क्या आवश्यकता पड़ी क्योंकि अभी गढ़वाल में सबको रोजगार भी नहीं मिल पाया है और हजारों व्यक्ति बे-रोजगार घर बैठे हैं। रोजगार का दफ्तर दीर्घ काल से गढ़वाल की सेवा कर रहा है और हजारों भूतपूर्व सैनिकों व सिविलियनों को कहीं न कहीं रोजगार दिलाने में सफल हुआ है। पर अब सरकार को यह चीज भी खटक गई और वे गढ़वाल के बहादुर नौजवानों को नौकरी के लिए जगह जगह भटकने के लिये मजबूर कर रहे हैं। गढ़वाली सिपाही आज काश्मीर और हैदराबाद के मोर्चे पर लड़ रहे हैं और अगर कल शांति होने पर सेना में विघटन किया गया तो वे घर बैठ जायेंगे और फिर उन्हें कहीं दरबानी या चौकीदारी के लिए भटकना पड़ेगा। गढ़वालियों की समय समय पर की गई राष्ट्रीय सेवाओं का यह पुरस्कार है कि वे साधारण नौकरी पाने के लिए भी अधिकारी न रहें। रोजगार के दफ्तर के द्वारा कोई बड़ी बड़ी नौकरियाँ तो लोगों को मिली नहीं थीं और सिर्फ पुलिस या फौज या रक्षा दल में लोग गये थे और अब इस प्रकार का अवसर छीन कर भी दर्वाजा बन्द किया जा रहा है। लड़ाई के दौरान में जब सरकार को आदमियों की आवश्यकता थी तब तो दफ्तर खोला गया और आज जब गढ़वाल की बे-रोजगार जनता को रोजगार की आवश्यकता है तब उससे ये सुविधायें भी छीनी जा रही हैं। लैन्सडौन का यह दफ्तर देहरादून, गढ़वाल, बिजनौर जिलों व टिहरी राज्य की जनता के काम आ रहा है और इसके हटने के बाद इस प्रदेश की जनता को कठिनाइयाँ उठानी पड़ेंगी। अब यह दफ्तर बनारस जा रहा है जब कि इलाहाबाद और गोरखपुर में पहले से ही दफ्तर मौजूद हैं। हमार या श्रम मंत्री का बनारस के प्रति यह प्रेम जो कि वह गढ़वाल की जनता के हितों की उपेक्षा कर दिखा रहे हैं ईर्ष्या के योग्य हैं। हम सरकार से अपील करेंगे कि वह अपने निर्णय पर विचार करे और गढ़वाल की जनता से भी अनुरोध करेंगे कि वह इस अवसर पर चुप होकर न बैठ जाये क्योंकि एक वक्त का गया हुआ दफ्तर फिर लौटाकर स्थापित करना बहुत ही कठिन होगा।

प्रयाग —बंशीलाल पुण्डरि
३० सितम्बर ४८

* * *

कुर्माली निश्चित रूप से हिन्दी है

पिछली बार तुलसी-जयन्ती के अवसर पर जब माननीय श्री पुरुषोत्तमदास जी टण्डन–पुरुलिया पधारे थे तब उन्नयन—समिति की ओर से उन्हें कुर्माली में लिखा हुआ एक मानपत्र अर्पित किया गया था। इस मानपत्र की भाषा को भाषाविज्ञान की दृष्टि से जाँचकर अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेल के प्रधान मंत्री और भाषातत्व के प्रसिद्धवेत्ता डाक्टर उदयनारायण तिवारी, एम० ए० डी० लिट् ने अपना मत देते हुए कहा है कि "इस मानपत्र की भाषा स्पष्ट रूप से बिहारी है। डाक्टर ग्रियर्सन ने बिहारी के अन्तर्गत मगही, मैथिली तथा भोजपुरी बालियों को रखा है।

"भागलपुर के पास बोली जानेवाली छिक्काछिकी बोली, राँची की पंच परगनियाँ बोली तथा छोटा नागपुर की प्रस्तुत कुर्माली बोली भी बिहारी के अन्तर्गत ही है। इसमें किसी प्रकार की दुविधा नहीं है। इस बोली के क्रियापद-विन्यास, पर सर्ग एवं बलाघात तीनों ही लक्षण भोजपुरी एवं मगही से मिलते हैं। अतः इसे बिहारी से पृथक नहीं माना जा सकता है।"

राँची, १ अक्टूबर ४८ —विद्याधर तिवारी

* * *

आजाद पार्क

गत २७ फरवरी सन् १९३१ ई० को दिन में दस बजे प्रयाग के 'अलफ्रेड पार्क' में भारत के महान् क्रान्तिकारी नेता, भारतीय प्रजातन्त्र सेना के सर्वोच्च प्रधान-सेनापति अमर शहीद श्री पं० चन्द्रशेखर मिश्र, "आजाद" सी० आई० डी० सुपरिंटेण्डेंट से वीरतापूर्वक घूँसे लड़ते हुये गोलियों से अमर-शहीद हुये थे। जिस वृक्ष के पीछे स्वर्गीय अमर शहीद श्री० आजाद ने प्राण विर्सजन किया था, वहाँ जनता द्वारा प्रतिदिन पूजा करने व एकत्रित हो जाने के कारण नृशंस अधिकारियों ने उस पेड़ को कटवा दिया था। जिस स्थान में इस नरपुङ्गव का पावन रक्त गिरा था, उस स्थान की पवित्र रज भी उस समय जनता डिब्बियों में भर कर ले गई थी। परन्तु खेद है कि प्रान्त के प्रमुख नेताओं का निवास-स्थान होते हुये भी आज तक इस 'अलफ्रेड पार्क' का नाम बदल कर "आजाद पार्क" नहीं रक्खा गया और न उस सड़क का ही नाम 'आजाद मार्ग' रक्खा गया। और न अब तक उनकी पवित्र स्मृति में कोई स्मारक ही बनवाया गया है। अतः मैं संयुक्तप्रांत का एक निवासी होने के नाते इलाहाबाद म्यूनिसिपल बोर्ड, उसके नव-निर्वाचित अध्यक्ष, नगर की समस्त जनता एवम् कांग्रेस नेताओं से अपील करता हूँ कि हम अलफ्रेड पार्क का नाम राष्ट्र के स्वतन्त्र होने के बाद श्री आजाद की अमर पुण्य स्मृति में पं० चन्द्रशेखर मिश्र, 'आजाद पार्क' और उस सकड़ का नाम भी बदलकर 'आजाद मार्ग' अविलम्ब रख दिया जाय। और उनकी पुण्य-स्मृति में उसके उपयुक्त एक स्मारक भी अवश्य बनवा दिया जाय। और वहाँ एक शहीद मेला भी लगवाया जाय।

फतेहपुर —दयाशंकर मिश्र
१ अक्तूबर ४८ 'सूर्य'

* * *

बड़ौदा के नये मिनिस्टर, राष्ट्रीय झंडे के सामने स्वतन्त्रता दिवस के अवसर सलामी दे रहे हैं।

ऐतिहासिक भौतिकवाद

लेखक, भूतपूर्व काकोरी-कैदी
श्री मन्मथनाथ गुप्त और श्री रमेन्द्र
लगभग ५०० पृष्ठों क सजिल्द ग्रन्थ
मूल्य केवल ६) रुपये।

मार्क्सवाद में ऐतिहासिक भौतिकवाद की गहनता को सरलतापूर्वक के लिए इस ग्रन्थ की उपयोगिता अद्वितीय है। समाजवाद समझने के लिए इसका अध्ययन अपरिहार्य है।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

हमारे कुछ साहित्यिक ग्रन्थ

कामायनी-अनुशीलन

महाकवि 'प्रसाद' के महाकाव्य 'कामायनी' पर अनेक समीक्षकों ने विचार प्रकट किये हैं। इस पुस्तक में लेखक श्री रामलालसिंह एम० ए०, बी० टी०, साहित्यरत्न ने कामायनी के ऐतिहासिक तत्त्व, प्रकृति वर्णन, चरित्र-चित्रण, छन्द-विधान, भाषा और रस-संचार आदि पर बड़ी मार्मिकता से अनुशीलन किया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३) तीन रु०

कामायनी का विवेचन

प्रसिद्ध कवि प्रसाद जी के महाकाव्य 'कामायनी' को समझने में सहायता देने के लिए पंडित व्रजभूषण शर्मा एम० ए० ने इस विवेचन को प्रस्तुत किया है। इसमें काव्य के तात्त्विक तथा मनोवैज्ञानिक सिद्धांत को स्पष्ट किया गया है। पुस्तक बड़े काम की है। मूल्य १) एक रु०।

तुलसी के चार दल
प्रथम और द्वितीय भाग

गोस्वामी तुलसीदास के रामलला नहछू, बरवै रामायण, पार्वती-मंगल तथा जानकी-मंगल का आलोचनात्मक परिचय तथा इन चारों ग्रन्थों की अध्ययनपूर्ण टीका। मूल्य प्रथम भाग का ३) तीन रुपये द्वितीय भाग का २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

साहित्य-प्रकाश

यह पुस्तक डा० रमाशंकर शुक्ल रसाल की लिखी है। इन्हें साहित्यिक सिद्धान्तों का विवेचन किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

मातृमण्डल

हिन्दू कोड बिल में उत्तराधिकार का प्रश्न?

क्या सामाजिक दृष्टि से यह सफलता प्राप्त करेगा?

लेखक, श्री प्रेम कपूर "कंचन"

ज समाज का प्रत्येक व्यक्ति प्रगति- ता की ओर अत्यधिक आकर्षणता से त हो रहा है। कारण में केवल इतना जा सकता है कि युग युग से चलती ई हुई परम्परा में उसको कोई सार्थकता नहीं होती और जिस वस्तु में उसे नता का आभास मिलता है उसकी उसकी दृष्टि अत्यन्त तीव्रता से खिंचती वह यह नहीं देखता कि जिस वस्तु को हम अपना रहे हैं उसका अन्त में णाम क्या होगा अतः आज समाज के रों के मुँह पर प्रगतिशीलता का प्रति- बढ़ने के लिये हिन्दू समाज के प्रगति- ग ने विधान में कोड बिल उपस्थित । मुझे यहाँ पर कोड बिल की आलो- नहीं करनी है क्योंकी प्रत्येक वस्तु ई के साथ साथ कुछ कमी अवश्य ी है फिर भी आज की आलोचना दो ही पक्ष होते हैं। उन पक्ष- छोड़कर बिल का एक अंग "उत्तरा- " का प्रश्न स्वयं का एक महत्त्वपूर्ण और अधिकांश प्रश्नों को या अपना रहा है या अपना चुका है। प्रतिरोधी शक्तियाँ कम हैं।

का "उत्तराधिकार" का प्रश्न रत है और पूर्ण हिन्दू-समाज से रोध हो रहा। विश्व के प्रत्येक ने भिन्न एवं स्वयं की मान्यता से हिन्दू-समाज का पोषण प्राकृति के हुआ है लेकिन आज के रूढ़िवादी ने स्वान्त सुखाय उसका मनमाना फिर भी इसकी विशेषता क्षीण आज के विश्व के किसी भी माज में यह नहीं स्वीकृत हुआ लिकाओं एवं नारियों को पिता बाद पिता की सम्पत्ति में अधि- दिया गया। ऋग्वेद की प्रत्येक कृति विवरण से पूर्ण है आज और सिवालों में स्थापित देवता होनेवाली प्राकृति घटनाओं का है आज के भारतीय विवाह सूमी का विवाह ऋग्वेद में नाओं के आधार पर ही रचा

आदिपुरुष सूर्य या सवता की का विवाह सोम से किया गया ों के मतानुसार सूर्य की पुत्री जाती है और सोम कभी तो वनस्पति के राजा सोमरस के चन्द्रमा के लिये लिखा गया और चन्द्रमा का विवाह का है। उस विवाह की परिपाटी एक झलक आज के विवाह- ती है। आज के विवाह इतने एवं प्रिय क्यों नहीं क्योंकि ऋचाओं का सौन्दर्य आज के जगत् में दब जाता है और प्राणी अपने आधार पर उसे चुका है। वैज्ञानिक आधार पर हुए कोयले का एक पिंड है। सूर्य की किरणों से संचित निखर उठता तथा जगत् वादी नहीं ठहरता। मनुष्य भी इसी भाँति अन्धकारमय उसके जीवन की किरण है। के जीवन का प्रतीक है कितनी हृदयंगम कल्पना है। उस विवाह में ऊषा स्वयं पति का निर्वाचन करती है वहाँ भी प्रथाओं का वर्णन है।

आर्य-युग में जब कि समाज में नारियों का कोई स्थान नहीं था पुरुष उसके सर्वेसर्वा थे क्योंकि आर्य खाना-बदोश होने के नाते एक स्थान पर घर-गृहस्थी लेकर नहीं बैठ सकते थे। लेकिन द्रविड़-युग में जब की वहाँ का समाज घर-गृहस्थी का पक्षपाती था—मातृ-युग का प्रचलन होता है। जब ऊषा (सूर्य की किरण) विश्व के सर्वोत्ति प्राणी को चुनती है तो गोत्र बदल जाता है और ऊषा को जगत् चन्द्रमा का मानता है सूर्य की वंशावली नहीं चलती है। ऊषा का धन पृथ्वी पर आता सूर्य के पास लौटकर नहीं जाता ठीक इसी प्रकार सूर्य के विनाश होने पर (विलीन) होने पर चन्द्रमा के वंश में दृष्टिगोचर नहीं होता।

आर्थिक दृष्टि से अवलोकन करने पर यह विचार हीन माना जाता है जब कि हमारा आदर्श है कि पिता–चाहे उसके एक ही कन्या क्यों न हो उसे उसका दान कर देना होता है। वह दूसरे गृह की शोभा बनकर चली जाती है। फिर आज के दहेज की प्रथा कुरीति में क्यों परिणत की गई। जो कुछ देना होता है पिता कन्या को दे देता है। पुरुष-कुल का पत्नी के धन में कोई अधिकार नहीं। वह पत्नी की सम्पत्ति है। पिता का धन जो वह अपने वंश के दीपक के लिये प्रस्तुत करता है उसमें दूसरे वंश दूसरे बीजवालों का कोई अधिकार नहीं। यदि ऐसा कानून स्वीकार किया गया तो यह प्रवृत्ति शीघ्र ही प्रचलित हो जायगी। "खाओ पियो और मौज करो।" उस समय वंश की प्रतिष्ठा नहीं रहेगी यवनों के यहाँ धन क्यों नहीं टिकता इसका मूल कारण अनुचित उत्तराधिकार का प्रश्न है। वे राजा महाराजा या बादशाह क्यों न हो चुके हों लेकिन उनकी जाति सर्वदा नंगी और भूखी रहेगी क्यों कि उनकी जड़ मजबूत नहीं वहीं से बिगाड़ प्रारम्भ होता है।

परिडत जवाहरलाल नेहरू अपने नाती के साथ। श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित पास ही खड़ी हैं।

उत्तराधिकार का प्रश्न इन्हीं की दीन दशा पर निर्मित है। युग तो केवल तनिक सी बात को पहाड़ मानकर मूल नाश करता है ठीक है लेकिन इसके माने यह कदापि नहीं होते कि काना बुरा है तो हम उसकी बुराई को दूर करने के लिये उसकी दूसरी आँख भी फोड़ दें। आज का युग इसी पर उतारू है। इस अधिकार के स्वीकृत होते ही हिन्दू-समाज का नैतिक पतन प्रारम्भ हो जायगा। मैं मानता हूँ मेरे भी बहने हैं और वे मुझे अत्यन्त प्रिय हैं मेरे भाग का—आधे से ज्याद देने पर भी मुझे संतोष हो जायगा—लेकिन अगले आनेवाले जीवन में यह समता नहीं रहेगी। भाई-बहनों का वह निष्पक्ष प्रेम जिसके स्थान पर समाज का भाल ऊँचा उठता है नत हो जायगा। जनता और नारी-समाज जिसके हक पर यह काँटा लगाया जा रहा है उसे इसे कदापि स्वीकार नहीं करना चाहिये। लेकिन आज के संसार में नारी पुरुष द्वन्द युद्ध प्रारम्भ है फिर भी उनमें तनिक भी सोचने की शक्ति होगी अवश्य इसका विरोध सरेगी।

इसलिये हिन्दू कोड बिल अध्यायों के साथ कुरीतियों से लिपटा है अपना अपत्र विचार इसकी नीति में लागू होता है आज प्रश्न है अपने उद्धार का बहुत से व्यक्ति मेरे विचार से भिन्न होंगे पर अन्त में एक न एक समय उन्हें यह स्वीकार करना होगा कि उत्तरधिकार क प्रश्ना एक जटिल प्रश्न है और जिसकी जड़ में हिन्दू-समाज के लिये विष भारा है।

आधुनिक ढङ्ग की कलाई-घड़ी १८) रु० में

इस कलाई-घड़ी की बनावट आधुनिक ढङ्ग की है, आकार १३" जुवेल-जड़ित, मजबूत, खटाऊ, लीवर मशीन, ठीक-ठीक समय देनेवाली, क्रोमियम केस, गोल या वर्गाकार, कीमत १८) रु०, डाक-व्यय ।।।) बारह आने, गारण्टी ३ वर्ष। अपना नाम-पता अँगरेजी में स्पष्ट लिखें।

ब्रिटानिया वाच कं० (डी० ए०)
पोस्ट बाक्स ११४०३, कलकत्ता

वैवाहिक सुख प्राप्ति के लिए
स्त्री प्रेम रहस्य
मुफ्त मँगाइये!
पता–विभाग (ट) बाक्स ३७२, देहली

इधर उधर की

रेडियो द्वारा शिक्षा

संयुक्त राज्य अमरीका में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में एक नवीन योजना तैयार की गई है। इस योजना से विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को विशेष सुविधा प्रदान की जा सकेगी। योजना इस गत गर्मी के मौसम में लागू की गई। इस योजना से विद्यार्थी अपना नाम यूनिवर्सिटी में लिखा कर घर ही पर पढ़ सकते हैं। रेडियो स्टेशन से यूनीवर्सिटी का सम्बन्ध स्थापित कर दिया गया है। आचार्य लोग यूनीवर्सिटी से जो भाषण व्यक्त करेंगे वह रेडियो शक्ति द्वारा सुनाई पड़ता है। इसमें विद्यार्थियों को फीस भी कम देनी पड़ती है। जो विषय रेडियो द्वारा पढ़ दिया जाता है उसकी परीक्षा भी होती है। परीक्षा देने के समय विद्यार्थी को यूनिवर्सिटी में उपस्थित रहना पड़ता है। बस इतने ही से शिक्षा-काल समाप्त हो जायगा। ऐसे कालेजों से प्रौढ़ शिक्षा में काफी सहायता मिलेगी। ऐसी योजना से करोड़ों विद्यार्थियों की शिक्षा की व्यवस्था की जा सकेगी।

* * *

कम्बल बनाने की सबसे तेज मशीन

नार्थ वेल्स इंजीनियरिंग फर्म द्वारा कम्बल बनाने की एक ऐसी मशीन आविष्कृत की गई है जिससे बहुत तेजी से काम किया जा सकता है। यह मशीन बहुत ही छोटी है। और इस समय प्रतिसप्ताह १००० की संख्या में तैयार की जा रही है।

* * *

पकाया हुआ भोजन साल भर तक सुरक्षित

ब्रिटेन में एक ऐसी व्यवस्था की जा रही है जिसके द्वारा काफी धन बचाया जा सकता है। साल भर का भोजन बना कर सुरक्षित रक्खा जा सकता है।

* * *

रसायनिक और जौहरी के लिये सहायता

रसायनिक और जौहरी का कार्य बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। अब ऐसे कार्य एक मशीन से अपने आप हो जायेंगे। यह मशीन इँगलैण्ड में बनी है।

* * *

एक नई मशीन

ब्रिटेन की पलास्टिक इण्डस्ट्री कम्पनी ने एक नई मशीन बनाई है जो नाव और जहाज बनाने में बड़ी ही उपयोगी सिद्ध हुई है। यह "इसोफ्लेक्स" के नाम से पुकारी जाती है।

* * *

आज ही अवश्य मँगायें
कोकशास्त्र (सचित्र) १) पो० ।=)
हिन्दी इंगलिशटीचर १।।) पो० ।।)
पुस्तक व पहेली का बड़ा सूचीपत्र मुफ्त "प्रभात" ट्रेनिंग कम्पनी, (४१) मैंरेना—जी० आई० पी० रेलवे।

भारतीय भिखमंगों की समस्या

(पेज ८ का शेष)

और कुछ बेकार बच्चों को पढ़ने-लिखने की ओर लगा सकते हैं। इस ओर अधिक ध्यान देना पड़ेगा और अधिक से अधिक बच्चों को भीख माँगने की कुप्रथा से बचाना होगा और शिक्षा आदि की ओर उनका ध्यान लगाना होगा।

अब हमें इस समस्या को हल करने की ओर ध्यान देना है और सोचना है कि क्या उपाय काम में लाये जायँ। इसको सिर्फ ऊपरी ढंग से हल करना तो पैबन्द लगाने के समान होगा। जब तक प्रश्न की गहराई में न उतरें तब तक सुलझाना कठिन है। देश व साधारण जनता की गरीबी ही इसके लिये अधिक उत्तरदायी है। आर्थिक कुव्यवस्था के कारण उन्हें भीख माँगने पर मजबूर होना पड़ता है और इसलिये जब तक आर्थिक व्यवस्था नहीं सुधरती तब तक एकदम हल होना कठिन है पर आर्थिक सुधार तो एक लम्बी योजना है और न जाने कब तक सुधरेगी इसलिये इसके दौरान में भी कुछ करना तो आवश्यक है ताकि अगर पूरी तरह से हल न हो सके तो कुछ कम तो हो जाये। बड़ी बड़ी आर्थिक योजनाओं के सहारे रहकर हम इसका तत्कालीन उपाय नहीं खोज निकाल सकते क्योंकि योजनाओं का फल दिखलाई देने में काफी समय लगता है। यह भी स्मरण रखने का विषय है कि इस प्रकार की बड़ी समस्यायें गैर-सरकारी संस्थाओं या प्रयत्नों से हल होनी कठिन हैं जब तक कि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सरकारी सहयोग न हो। जब हम लाखों रुपया सेना या युद्ध या पुलिस पर खर्च कर सकते हैं तब हम कुछ धन इस समस्या को हल करने पर क्यों नहीं खर्च कर सकते और समाज के उस अंग को सहायता पहुँचाने में समर्थ होते जो कि दीन-हीन है और अपने आप कुछ कर सकने में असमर्थ है। यह सरकार की ओर से सिर्फ कानून पास होने से कि कोई व्यक्ति भीख नहीं माँग सकता भिखारियों की संख्या कम नहीं हो सकती। कई शहरों में पुलिस ने भिखमंगों को पकड़-पकड़ कर शहर से बाहर खदेड़ दिया था पर फिर संख्या वहीं की वहीं पहुँच गई। इसके हम पक्ष में हैं कि हट्टे-कट्टे व्यक्तियों को भीख नहीं माँगनी चाहिये और उन पर कानून लागू किया जा सकता है पर जो वास्तव में अपाहिज हैं उनके लिये सहायता का प्रबन्ध होना चाहिये। इसके लिए सरकार को अपाहिज गृहों का प्रबन्ध करना चाहिए जहाँ कि उनकी समुचित देखभाल की जा सके और सड़कों से इस प्रकार के घृणित और दया उपजानेवाले दृश्य दूर किये जा सकें। कुष्टरोग-पीड़ितों के लिये अलग गृह होने चाहिये जहाँ उनके इलाज की भी व्यवस्था की जा सके। इस प्रकार के गृहों में अधिकांश में उनको ही स्थान मिलना चाहिये जो वास्तव में अधिकारी हैं। इस प्रकार के गृह गैर-सरकारी प्रबन्ध की अपेक्षा सरकारी व्यवस्था में ही अच्छे चल सकते हैं क्योंकि हम कई अनाथालयों व गोशालाओं को देखते हैं जहाँ के प्रबन्धक अधिकांश रुपया अपने इस्तेमाल में लाते हैं और बच्चों व गायों को भूखा मारते हैं।

इसके अलावा लोगों की धार्मिक मनोवृत्ति को भी बदलना आवश्यक है। लोग दान दें पर इस प्रकार नहीं कि उससे भिखमंगों की संख्या कम होने की अपेक्षा अधिक ही बढ़े। समय के अनुसार इस प्रकार की भावनाएँ भी बदलनी चाहिये और हमें व्यक्तिगत सहायता की अपेक्षा सामूहिक और सामाजिक सहायता को अधिक महत्त्व देना चाहिये। सामूहिक प्रणाली से किये गये कार्य अधिक महत्त्वपूर्ण होंगे और अधिक समय तक भी प्रभाव रख सकेंगे। इस प्रकार की एक केन्द्रीय संस्था होनी चाहिये जो कि सारी योजना का संचालन करे और सामूहिक सहायता पर जोर देकर अन्य लोगों से भी इसी ढंग से सहायता ले। वर्तमान चलते-फिरते ढंग से दान व सहायता से कोई विशेष लाभ नहीं होगा। मैं पहले ही कह चुका हूँ कि बिना सरकारी सहायता के इसका सफलता से हल होना कठिन है और सरकारी कानूनी सहायता व जनता का सहयोग व कार्यकर्ताओं की लगन इस समस्या को सुलझा सकती है। भिखारियों में स्वाभिमान की भावना भरना भी आवश्यक है और वे भी जर्मनी के उदाहरण से लाभ उठा सकते हैं जहाँ गत युद्ध के बाद अपाहिज छोटी छोटी गाड़ियों में शहरों में घुमाये जाते थे और वे कुछ चीजें बेचते रहते थे जिनको कि ग्राहक दया-भावना से प्रेरित होकर कुछ अधिक मूल्य में खरीदते थे। इस तरह स्वाभिमान की रक्षा हो सकती है जो कि एक स्वतन्त्र राष्ट्र के लिये आवश्यक है और गरीब अपाहिजों की भी आर्थिक सहायता हो जाती है। मुफ्त में ही भीख प्राप्त करना उचित नहीं है। पर इस प्रकार की बातें धीरे धीरे ही बढ़ सकती हैं। इलाहाबाद में समाज-सेवक-समिति ने इस प्रकार की एक बड़ी कमी को पूरा किया है और हमें आशा है कि इसके अनुभवी संचालक जनता में सामूहिक सहायता की भावना को जगा सकेंगे और भिखमंगों की समस्या को हल करने में सफल होंगे।

* * *

शुभ सूचना

समस्त हिन्दी-प्रेमियों, विद्यालयों तथा कृपालु ग्राहकों को यह शुभ सूचना देते हुए हमें हर्ष हो रहा है कि हमारी लाहौरवाली ब्रांच फिर से दुर्गाचरण रोड, अम्बाला कैंट (पूर्वी पञ्जाब) में आप लोगों की पूर्ववत् सेवा के उद्देश्य से स्थापित हो चुकी है।

मैनेजर
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

भारत की वैदेशिक नीति

(पेज ७ का शेष)

किया जाय, ठीक नहीं हो
अतिरिक्त हमें यह भी ध्यान में
कि हमारे निकटतम पड़ोसी रा
स्तान—को युद्ध की तैयारी के
विदेशों से प्रोत्साहन मिल रहा है
जानना चाहिये कि वे कौन लोग
पाकिस्तान को सामरिक सहायता
लिये व्यग्र हैं क्योंकि यह
समझ लेने से हमें अपने संभाव्य
से अपनी रक्षा करने में सुविधा
देश की हालत अभी काफी
हम सदियों पिछड़े हुए हैं। हमें
कंघी, रेशमी-ऊनी कपड़ा, खिलौने
नहीं वरन् मशीनों तथा उनके
खास जरूरत है। उनके बिना
निर्माण-कार्य चल ही नहीं सक
सोचना है कि हम उद्योगीकरण
कि नहीं ? यदि हाँ तो कहाँ तक
गति से—कछुए अथवा केचुए
से या विद्युत् गति से—? यह
करने के बाद ही हम स्थिर
कि हमें किन देशों से यह सहायता
से मिल सकती है और तब हमें
अधिक सम्पर्क बढ़ाने के उपाय
पड़ेंगे।

तीसरी विशेष बात हमें
में रखनी होगी कि विश्व-स्थिति
हाल में युद्ध की संभावना है
यदि है तो किन देशों
संघों के बीच ? इनमें से
न्याय और उन्नति के पथ पर हैं
के साथ मिलकर चलना हमारे लिये
योगी है अथवा बिना सैनिक
संचित किये ही अपनी
बजाने से हम अपने देश की
अधिक सफल रक्षा कर सकेंगे
हमें सोच लेना चाहिये। १९१
और १९३९-१९४५ के युद्धों से
हो गया है कि दो बड़े राष्ट्रों
प्रारम्भ हुआ युद्ध शीघ्र ही सारे
आक्रांत करने लगता है। इस
सोचना पड़ेगा कि हम अपनी
किस प्रकार चलाकर भावी शांति
में अधिक से अधिक योग दे स

जैसी नीति अभी तक
उससे यह संदेह होता है कि
हमारे नेताओं ने अभी सभी
पहलुओं पर विचार करके
राय कायम नहीं की है।
संदेह निर्मूल हो। परन्तु यदि
तथा हो तो यह परमावश्यक
कमी को शीघ्र से शीघ्र दूर
और एक ऐसी वैदेशिक नीति
सरण किया जाय जिससे
मिले, देश का आर्थिक
साथ संभव हो सके, हम
वर्गों की स्वतन्त्रता की
सहायता दे सकें और भारत
एशिया और फिर संसार
नित स्थान प्राप्त हो सके।

वैदेशिक नीति

त ७ का शेष)

ठीक नहीं होगा
यह भी ध्यान में
टतम पड़ोसी राज्य—
द्ध की तैयारी के
त्साहन मिल रहा है
कि वे कौन लोग हैं
सामरिक सहायता
क्योंकि यह
हमें अपने संभाव्य
करने में सुविधा
तत अभी काफी
पिछड़े हुए हैं। हमें
ऊनी कपड़ा, खिलौने
शीनों तथा उनके पुर्जे
है। उनके बिना
वल ही नहीं सकता
हम उद्योगीकरण
दि हाँ तो कहाँ तक
हुए अथवा केचुए
गति से—! यह
ही हम सिर
देशों से यह सहायता
ती है और तब हमें
बढ़ाने के उपाय

विशेष बात हमें
ी कि विश्व-स्थिति कैसी
की संभावना है अथवा नहीं
किन देशों अथवा देशों
? इनमें से किस
उन्नति के पथ पर है!
कर चलना हमारे लिये
वा बिना सैनिक
ही अपनी
न अपने देश की
रक्षा कर सकेंगे—
ोना चाहिये। १९
१९४५ के युद्धों से
कि दो बड़े राष्ट्र
युद्ध शीघ्र ही
ने लगता है। इस
कि हम अपनी
लाकर भावी शांति
अधिक योग दे
ीति अभी तक
संदेह होता है कि
ों ने अभी सभी
विचार करके
नहीं की है।
हो। परन्तु यदि
यह परमावश्यक
ग्र से शीघ्र दूर
सी वैदेशिक नीति
जाय जिससे शान्ति
का आर्थिक
ो सके, हम
स्वतन्त्रता की
सकें और भारत
र फिर संसार
प्राप्त हो सके।

दूत द्वारा भारत-स्थित नेपाली सेनाओं के सेनापति के स्वागत के समय भारत के वाइ-
राजगोपालाचारी और पंडित जवाहरलाल नेहरू प्रसन्न मुद्रा में दिखलाई दे रहे हैं।

पूर्वी अफ्रीका में स्वतन्त्रता वार्षिकोत्सव दिवस पर भारत सरकार के व्यापार कमिश्नर सरदार संगतसिंह, मोम्बासा में पंडित जवाहरलाल नेहरू का संदेश पढ़ रहे हैं।

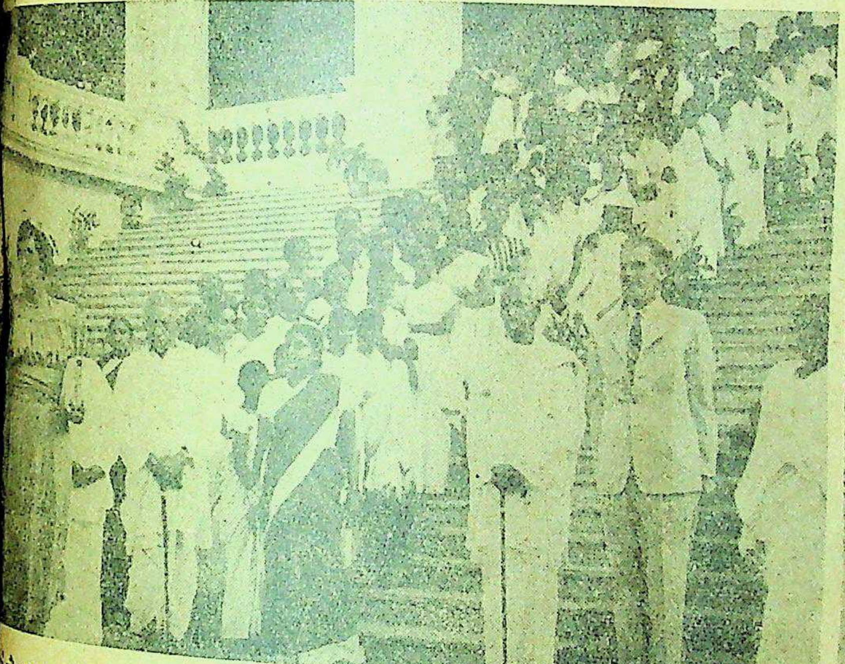

और लेडी नाई की विदाई के अवसर पर, मद्रास वीमेन्स वेलफेयर्स वर्कर्स द्वारा राजा जी हाल में, हार्दिक विदाई दी जा रही है। यह चित्र उसी अवसर पर लिया गया था।

मद्रास के वर्तमान गवर्नर महाराजा भावनगर के मद्रास पहुँचने पर तत्काल गवर्नर सर आर्चिबाल्ड नाई उनका स्वागत कर रहे हैं।

फ्रांसिस्को में अन्तर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन के ३१ वें अधिवेशन में भेजे गये प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य प्रातःकाल जलपान के समय अमरीकन पत्र प्रतिनिधियों के बीच वार्ता कर रहे हैं।
से दाहिनी ओर :—सर्व श्री के० जी० मेनन, आबिद अली, पियर सालिंगर (सैन्फ्रांसिसको क्रानिकल), एस० लाल, सम्पूर्णानन्द (प्रतिनिधि मण्डल के नेता), शिवकुमार शास्त्री
(प्रतिनिधि मण्डल के प्रेस एडवाइज़र), नित्यानन्द कानूनगो, के० टी० भाष्यम, हरिहरनाथ शास्त्री, आर० दास, एन० जी० रंगा, डैविड क्लेटन (रूटर), एस० पी० सक्सेना, श्रीमती

स्वास्थ्य-चर्चा

शहद के उपयोग

स्वास्थ्य-सौंदर्य के लिये शक्तिवर्द्धक और उपयोगी ओषधि

लेखक, श्री रामेश वेदी आयुर्वेदालङ्कार, हिमालय हर्बल इंस्टिट्यूट, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

आँखों के विकारों में शहद का प्रयोग बहुत प्रचलित ओषधि है। शहद के जल में घोल से आँखें धोई जाती हैं। रात को सोते समय सलाई से आँखों के अन्दर शहद आँजा जाता है। आँख दुखना, धूल आदि के कण गिर जाना, गाड़ी में सफर करते हुए आँख में कोयला पड़ जाने से घाव हो जाना आदि में दिन में दो बार और रात को बिस्तर पर जाने से पूर्व आँखों को शहद के पानी से धोकर शहद आँजने से या शहद की एक बूँद टपका देने से आराम होता है। रोचक गुण के कारण यह शीघ्र ही आँखों के व्रणों को अच्छा कर देता है।

* * *

बालों के लिए भी शहद का अच्छा प्रभाव कहा जाता है। एक भाग शहद और दो भाग नीबू का रस मिलाकर बनाये घोल को सिर पर रगड़ें और कुछ मिनटों तक ऐसे ही रहने दें। फिर स्वच्छ पानी से अच्छी तरह धोकर सूखे तौलिये से पोंछ डालिये। बालों का झड़ना, छिलके गिरना आदि सिर के रोगों में इसका उपयोग लाभकारी है। केश-वृद्धिकर लेपों में इसका प्रयोग बहुतायत से किया जाता है।

* * *

मुख की त्वचा के लिए इसका उपयोग इस प्रकार किया जाता है। मुख को बेसन से धोकर साफ करने के बाद एक भाग में दो भाग जल मिलाकर हलका किये हुए नीबू-रस में भीगा हुआ लिंट तीन चार मिनट तक मुख पर रखें। इसके बाद शहद में अँगुलियाँ डुबोकर सारे मुख की त्वचा पर शहद फैला दें फिर अँगुलियों से जल्दी जल्दी या कोमलता से थपथपायें। फिर चेहरे को वैसा ही पाँच-दस मिनट के लिए छोड़ दें और तब पानी में भीगे हुए मुलायम कपड़े से शहद को पोंछ लें और शीतल जल से धोकर यह प्रक्रिया समाप्त कर दें। एक दूसरी विधि इस प्रकार है—एक चम्मच शहद और इतना ही मैदा या बारीक पिसा हुआ बेसन और एक चम्मच नीबू का रस लेकर जरा-सा पानी मिलाकर पतली लेई-सी बना लें। इसे चेहरे पर फैलाकर हलकी हलकी मालिश करें और कुछ देर बाद ठंडे पानी से धोकर मुलायम तौलिये से पोंछ डालिये। इस प्रक्रिया को सप्ताह में दो या तीन बार दोहराइए। इससे चेहरे की त्वचा की रक्तवाहिनी नसों में नवीन रक्त का संचार होगा, जिससे चेहरे की झुर्रियाँ दूर होंगी, रंग निखरेगा, मुख की कांति और सौंदर्य की वृद्धि होगी।

* * *

पुराने जमाने के मधुमक्खी पालकों की कृतियों में कुछ बहुत ही विचित्र विचार पाये जाते हैं। सुबह और रात को खोपड़ी पर शहद को अच्छी तरह मला जाय तो गञ्जेपन की यह श्रेष्ठ ओषध है। इसके साथ कुछ मरी हुई मधुमक्खियाँ और थोड़ा सा पुराना छत्ता मिलाकर खरल में खूब रगड़ लिया जाय तो यह और भी अधिक प्रभावकारी हो जाता है। मरी मक्खियों को सुखाकर बनाया बारीक चूर्ण उस जमाने के सब गुप्त योगों का एक मुख्य अंग हुआ करता था। पानी के साथ मिलाकर रोज सुबह शरीर के लिए अव्यर्थ शोधक के रूप में दिया जाता था। बहुत सी मधु-मक्खियों के सिर इकट्ठे कर लिये गये हैं तो उन्हें जलाकर बनाई राख में थोड़ा सा शहद मिला देने से यह आँखों के सब विकारों के लिए अत्युपयोगी चमत्कारिक दवा बन जाती थी।

इस लेख के लेखक श्री रामेश वेदी

* * *

आक्सिमल नाम का एक प्रसिद्ध योग मध्यकाल में बहुत प्रचलित रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह शहद, पानी और सिरके के मिश्रण के अतिरिक्त और कुछ न था। लेकिन इसमें असाधारण गुणों का विश्वास किया जाता था। गृध्रसी, गठिया और इसी श्रेणी की अन्य शिकायतों का यह अचूक इलाज समझा जाता था।

* * *

चरक के समय में यह विश्वास किया जाता था कि जूठा शहद छोड़ देने से राक्षस, पिशाच, देव, ऋषि और बड़े-बूढ़े सब नाराज हो जाते हैं, जिससे ऐसा करने वाला पागल हो सकता है। शार्ङ्गधर (१६६३) यह समझता रहा है कि जिस मनुष्य को स्वप्न में शहद की मक्खी काटे वह रोगी हो तो अच्छा हो जाता है और स्वस्थ हो तो धन प्राप्त करता है।

* * *

छत्ते की उपजों में से शहद और मरी मक्खियाँ ही चिकित्सा के लिये उपयोगी होते थे सो बात नहीं। मोम में भी सब प्रकार के मानवीय रोगों को अच्छा करने की अनुपम शक्तियाँ विश्वास की जाती थीं। जख्मों को ठीक करने के गुण इसमें थे। मटर के दाने भर मोम यदि आप खा लें तो बच्चे में दूध की गाँठें कठोर न बनेंगी। कठोर सन्धियों और पीड़ा करनेवाली माँसपेशियों पर इसे मला जाता था। प्राकृतिक मोम की कल्पित चिकित्सा उपयोगिता परिश्रुत मोम के गुणों की तुलना में कुछ भी नहीं समझी जाती थी। यह योग। मोम का 'तेल' नाम से ज्ञात था और उस समय समस्त संसार में प्रसिद्ध था और प्रतीत होता है कि उस समय के लेखक इसे सर्व रोग नाशक ओषध के रूप में देखते थे। मोम के तेल का निर्माण बहुत पेचीदा कार्य रहा होगा। सबसे पहले मोम को पिघलाकर मीठी शराब में डाला जाता था और फिर हाथों से निचोड़ निचोड़ कर उसे अलग कर लिया जाता था। प्रत्येक बार नई शराब लेकर सात बार ऐसा किया जाता था। लाल ईंट के चूरे के कुछ परिमाण के साथ तब मोम को अर्क यन्त्र में रखा जाता था और सावधानी से परिस्रावित कर लिया जाता था। पात्र में पीले रंग का तेल प्राप्त होता था और यह एक बार फिर चुराया जा कर 'दिव्य ओषध' तैयार हो जाती थी। एक प्राचीन लेखक हमें बताता है कि इसके निर्माण में अद्भुत शक्तियाँ अपना प्रभाव डाल देती हैं और जब तेल चू रहा हो है तो पात्र में अग्नि, वायु, जल पृथ्वी में चारों तत्त्व भी प्रकट होते हैं

बालों को झड़ने से तुरन्त रोक अत्यन्त गम्भीर घावों को कुछ ही में ठीक कर देने और दाँतों का दर्द कटिशूल को दूर करने की शक्ति बहुत ही साधारण गुणों में से है। तेल में बहुत अधिक गुणों का दावा जाता था। यह न केवल कीड़ों को है और पक्षाघात तथा विकृत ठीक करता है परन्तु यह मृत या बच्चे को भी बाहर निकाल देता है।

गीत

लेखक, श्री धर्मवीर भारती एम॰ ए॰

दुश्मन हुई जाती मुझे, यह बादलों की पाँत भी!
क्या न था काफी, बनाने को मुझे पागल,
तुम्हारे गर्म होठों पर सुलगता मूँगिया बादल!
तुम्हारे स्पर्श के ही जुल्म से संयम न टिक पाता,
किसी गुमनाम होने में बँधा मैं और अकुलाता!
कि इतने में किसी नादान ने
यह भेज दी बरसात भी!

दुश्मन हुई जाती मुझे, यह बदलों की पाँत भी!
उमंगों की लहर पर डोलता सा जाफरानी तन,
बिजलियों के अछूते फूल के उभरे हुए सावन,
जहर, जो गेसुओं की पर्त में सौ पेंच खाता हो!
कहर, उस वक्त कोई रिमझिमा कर और ढाता हो!
धरा का विष सहूँ मैं
और झेलूँ स्वर्ग का आघात भी!

दुश्मन हुई जाती मुझे, यह बादलों की पाँत भी!
तुम्हारी साँस में बारीक चुम्बन की लहर छाई,
हवाओं में पिरोती गुदगुदी, कम्बख्त पुरवाई!
उसी कमजोर क्षण में आ घिरे ये फूल के बादल,
उलझते आ रहे जैसे हजारों नागिनों के दल!
मुझे इक साथ डस लेते,
बदलियों के हजारों फन
हुई जाती मुझे दुश्मन...

दुश्मन हुई जाती मुझे, यह बादलों की पाँत भी!

युग और साहित्य—लेखक, श्री
प्रिय द्विवेदी। 'युग और साहि
हिन्दी-निबन्धों का एक आदर्श
करती है। इसमें १३ मौलिक
हैं, जिन्हें विद्वानों ने बहुत पसन्द
है। मूल्य २॥≥) दो रुपये ग्यारह
हिन्दी साहित्य—यह हिन्दी साहि
परिवर्द्धित और परिमार्जित
है। पहले की दो आवृत्तियों
हिन्दी भाषा और साहित्य के
प्रकाशित हुआ था, किन्तु
स्वतन्त्र रूप में प्रकाशित
रहा है। कवियों के विषय में
अनुसंधान हुए हैं उन सबका
समावेश किया गया है।
स्थिति के वर्णन में भी आव
वर्तन किये गये हैं। हिन्दी
प्रत्येक विद्यार्थी को यह पुस्तक
पढ़नी चाहिए। मूल्य ४) चार
मैनेजर,
इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

...धानी का रंगमंच

महात्मा गांधी की जयंती का समारोह

...की बाढ़ की परेशानी दूर हो रही है—जमींदारी का उन्मूलन ...या नहीं?—नफाखोरों और चोर बाजारवालों को चेतावनी

(अपने विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

महात्मा गांधी के ८०वें जन्म-दिवस ...नऊ ने उस विश्वात्मा के महत्त्व ...नुरूप ही मनाया। गांधी जी के ...के पश्चात् का यह प्रथम गांधी-...थी, अतएव इस वर्ष के उत्साह ...पर विषाद की एक काली छाप ...थी, जो प्रत्येक समारोह में स्पष्ट ...उठती थी। प्रातःकाल से ही ...मोहल्लों में प्रभातफेरियाँ निकलीं ...सरकारी तथा नागरिक भवनों पर ...फहराई गई। ८ बजे अमी-...र्क से ऐतिहासिक ध्वज स्तम्भ पर ...झंडा चढ़ा, जिसको कांग्रेस ...ने सलामी दी। १० बजे गवर्न-...में इस पवित्र दिवस की पावन ...वर्नर तथा महामन्त्री ने बोध-...ष रूप से मँगाए हुए पीपल के ...में आरोपित किया। पन्त जी ...र हाउस में ही महात्मा जी के ...उद्घाटन किया और महा-...नी नायडू ने कौंसिल हाउस ...की एक अरुण प्रतिमा का ...किया। शाम को ५ बजे महा-...१०० अनाथ बालकों को भोजन कराया तथा ६॥ बजे एक सार्वजनिक सभा में स्वास्थ्य और खाद्यमंत्री श्री चन्द्रभानु गुप्त एवं प्रांतीय कांग्रेस के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन ने गांधी जी के सिद्धांतों पर प्रकाश डाला।

* * *

अगस्त-सितम्बर की भीषण बाढ़ से त्रस्त युक्तप्रान्त अब सुस्थिर हो रहा है। इस बाढ़ ने प्रायः २५ जिलों के ५ सहस्र वर्ग मील में फैले ४००० ग्रामों को जल प्लावित कर दिया था, जिनमें से आधे तो सर्वथा विनष्ट हो गए। क्रमानुसार बलिया, बनारस, गाजीपुर, उन्नाव, कानपुर, मुरादाबाद, बरेली आदि को भारी क्षति पहुँची है। प्राय २० लाख व्यक्तियों के पुनर्वास की समस्या है, क्योंकि नगरों तथा ग्रामों में भवनों की भारी हानि हुई है। संक्रामक रोग का विस्तार रोक दिया जा चुका है, परन्तु गृहहीनों के लिए भवन-निर्माण की समस्या अति विकट है। देहातों के लिए सरकार ने निश्चय किया है कि नदियों के तटों पर बसे हुए ग्रामों को अपेक्षाकृत ऊँचे स्थानों पर बसाया जाय। ग्रामीणों को भवन-निर्माण के लिए कच्ची ईंट, लकड़ी, बाँस, छप्पर के फूस की पूरी सुविधा दी जाएगी। शहरों के लिए भारत-सरकार ने ४००० टन अतिरिक्त सीमेण्ट दे दी है।

युक्तप्रांत में जमींदारी उन्मूलन होगा या नहीं—यह अभी कैसे कहा जा सकता है, क्योंकि भारत-सरकार को भय है कि जमींदारों को मिलनेवाले मुआवजे से देश में मुद्रा-स्फीति और भी तीव्र हो उठेगी और इसी कारण वह प्रांतीय सरकारों को यह कदम उठाने के विरुद्ध सचेत कर रही है और इसीलिये उसने बिहार एसेम्बली द्वारा स्वीकृत जमींदारी उन्मूलन बिल पर गवर्नर-जनरल की स्वीकृति रुकवा रक्खी है। युक्तप्रांत केन्द्र की नीति से पृथक् जाय, इसकी तो आशा ही नहीं की जा सकती, परन्तु पन्त मंत्रिमण्डल जमींदारों को कृषकों के रक्त और पसीने से उपार्जित धन पर मजा करने के लिये छोड़ने को किसी भी दशा में तैयार नहीं है। इसीलिये एसेम्बली की १८ अक्तूबर से प्रारम्भ होनेवाली बैठक में कृषि आय-कर बिल पेश किया जायगा, जिसके अन्तर्गत २॥ हजार की वार्षिक आय से ऊपर के जमींदारों को अपनी आमदनी का एक भाग आय कर के रूप में प्रांतीय सरकार को दे देना होगा, जो उसे जनहित के कार्यों में व्यय करेगी।

* * *

स्वास्थ्य, खाद्य एवं जनपद पूर्ति (सिविल सप्लाइज) मन्त्री श्री चन्द्रभानु गुप्त ने नफाखोरों तथा चोरबाजारियों को कठोर चेतावनी देते हुए उन्हें अपने चोरबाजार विरोधक कानून की याद दिलाई है। इस कानून के बनने के बाद ही संयोगवश कण्ट्रोल टूट गये और लोग इस भयावने कानून के विषय में बहुत कम जान पाये। इस कानून के अन्तर्गत सरकार को केवल नफाखोरी का सन्देह मात्र होने पर किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार कर लेने अथवा उसे नजरबन्द कर लेने का अधिकार होगा। विशेष अदालतें होंगी, जहाँ सफाई के वकील की गुञ्जाइश न होगी। अब नियंत्रण पुनः लागू हो रहे हैं, अतएव नफाखोरों को तीन बार सोचकर कोई कदम उठाना चाहिये।

* * *

प्रतिमा

इस संग्रह में सुकवि राजाराम श्रीवास्तव की एक से एक बढ़िया ५० कविताएँ हैं। इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा है। क्या भाषा और क्या भाव सभी अनुपम हैं। रंगीन आवरण, बढ़िया छपाई और मूल्य केवल १) एक रुपया।

पूजागीत

द्विवेदी जी की नवीनतम राष्ट्रीय कविताओं का संग्रह। प्रत्येक कविता जीवन में स्फूर्ति का संचार करती है। फेदरवेट पीले कागज पर छपी हुई पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

मैनेजर इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

रायडोजैनियरो (ब्राजील) में महात्मा गांधी स्क्वायर का नये नामकरण के पश्चात् का एक दृश्य। जो १५ अगस्त को लिया गया था।

संवाददाताओं के पत्र

जयपुर में होनेवाले कांग्रेस के ५५वें अधिवेशन के सिलसिले में सांगानेर स्काउट शिक्षकों के शिक्षण शिविर का राजपूताना प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान मन्त्री श्री सिद्धराज ढड्ढा तथा जयपुर के राजस्व सचिव श्री टीकाराम पालीवाल ने निरीक्षण किया। आपने अपने भाषणों में स्काउट शिक्षकों को अधिवेशन के अवसर पर अतिथियों की सेवा करके एक आदर्श उपस्थित करने की अपील की।

इस वर्ष भारत के आजाद होने तथा रियासतों—विशेषतः राजपूताना में पहली बार होने से भारत की जनता अधिवेशन में आने को अधिक उत्सुक होगी। ऐसा अनुमान है कि इस बार करीब पाँच छः लाख व्यक्ति इसमें दर्शक, प्रतिनिधि आदि की हैसियत से भाग लेंगे।

राजस्व सचिव श्री पालीवाल ने स्काउट संस्था के उद्देश्यों की सराहना करते हुए कहा कि स्काउट संस्था ने जिस उत्साह से युद्धकाल में सेवायें की उसी उत्साह से आज शांति-काल में भी सेवायें करती देखी जाती हैं। यह सामञ्जस्य बड़ा सुन्दर रहा है। आपने बतलाया कि देश की स्वतंत्रता हमारी क्रांति का एक चरण है। हमारे सामने राष्ट्र के निर्माण का एक बड़ा काम है। इसके लिये हमें देश के विभिन्न तत्वों का सामंजस्य स्थापित करके तथा शांति व प्रेम के जरिये देश को शक्तिशाली बनाना है। रचनात्मक कार्य इसका एक साधन है। जो प्रतिगामी तत्व देश की उन्नति के मार्ग में बाधक होंगे मौका आने पर उससे मुकाबला करना होगा।

अन्त में आपने स्काउट स्वयंसेवकों को कहा कि आपकी संस्था के 'सेवा करना, सेवा के लिये, बालकों में निष्ठा पैदा करना, आपस में मेल-जोल स्थापित करना' आदि उद्देश्य हैं।

राजपूताना प्रान्त में अ० भा० कांग्रेस कार्यकारिणी की अभी हाल में दिल्ली में हुई बैठक के एक निर्णय के अनुसार राजस्थानसंघ, मत्स्यसंघ, जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर की रियायतें ही सम्मिलित की गई हैं। सिरोही न शामिल करने में जो एक वैधानिक संकट उत्पन्न हो गया था उसका बहुत कुछ समाधान राजपूताना प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी को अ० भा० कांग्रेस कमेटी के केन्द्रीय कार्यालय से प्राप्त हुए एक पत्र से हो जाता है। इस पत्र में कहा गया है कि जब तक सिरोही और दाँता राज्य के सम्बन्ध में कार्यकारिणी कुछ निर्णय नहीं कर लेती तब तक ये रियासतें राजपूताना प्रांत के अंग समभी जावेंगी। राजपूताना प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष और जयपुर में होनेवाले आगामी कांग्रेस अधिवेशन की स्वागत-समिति के स्वागताध्यक्ष श्री गोकुल भाई भट्ट सिरोही-निवासी हैं।

—संवाददाता

* * *

देवप्रयाग (गढ़वाल) से पता चला है कि टिहरी लोक-परिषद् तथा प्रजामण्डल स्वतन्त्र इकाई दल के प्रतिनिधियों का शिष्ट मण्डल टिहरी के भाग्य के निर्णय के सम्बन्ध में नई दिल्ली रियासती सचिवालय के पास गया है। विलीनीकरण समिति प्रजा-मण्डल की ओर से प्रधान मंत्री श्री प्रेमलाल वैद्य ने रियासती सचिवालय से तार द्वारा प्रार्थना की है कि विधान-परिषद् को केवल १५ प्रतिशत जनता का मत प्राप्त है और बहुसंख्यक जनता विलय के पक्ष में है अतः टिहरी के अन्तिम निर्णय के पूर्व विचार-विमर्श के लिए प्रजामण्डल विलीनीकरण समिति की उपेक्षा न की जाय।

टिहरी के नेता श्री प्रेमलाल वैद्य श्रीनगर (गढ़वाल) कांग्रेस मण्डल के आमंत्रण पर टाऊन एरिया निर्वाचन में कांग्रेसी उम्मीदवारों के पक्ष में प्रचारार्थ श्रीनगर गए हुए हैं।

देवप्रयाग में रामलीला जो कि टिहरी की सामन्तशाही द्वारा कई वर्षों के पूर्व बन्द कर दी गई थी वह अब पुनः आगामी विजयादशमी से श्री भगवतीचरण शर्मा "निर्मोही" के सञ्चालन में बड़े समारोह के साथ आरम्भ की जा रही है।

—संवाददाता

* * *

टिहरी स्टेट एव अन्य पाँच और रियासतों के समूह में से चुने जाने भारतीय लोक सभा (विधान-परिषद्) की सदस्यता के लिये श्री परिपूर्णानन्द पैनूली (टिहरी के जननायक) तथा श्रीकृष्णसिंह (शिक्षा-मन्त्र) उम्मीदवार हैं। श्री डा० के० एन० गैराला, श्री श्रीलाल थपलियाल, श्री दौलतराम श्री नड़ी राम तथा एक विधान-परिषद् के दूसरे सदस्य का मत श्री परिपूर्णानन्द के तथा श्री ऋेपनसिंह, श्री खुशालसिंह, श्री ज्ञानसिंह, श्री शंकरसिंह, श्री भागसिंह तथा भागीरथ आदि–सदस्यों का मत श्री कृष्णसिंह के पक्ष में है। दो सदस्य तटस्थ हैं और उपरोक्त प्रजामण्डलीय सदस्य (विधान परिषद् टिहरी के सदस्य) जो कि संख्या में १६ हैं केन्द्रीय विधान-परिषद् की सदस्यता के चुनाव में वोट देने के लिये दिल्ली गये हैं।

—संवाददाता

* * *

हरिद्वार में यह चर्चा थी कि आबकारी के आदमी के मिले रहने से यहाँ बाहर से शराब लाई जाकर बेची जा रही है, पर अब नये आबकारी इन्सपेक्टर के आ जाने से ऐसे आदमियों की धड़ाधड़ गिरफ्तारियाँ हो रही हैं।

अखिल भारतवर्षीय रघुपति राघव राजाराम भक्त महासम्मेलन जो कि हरिद्वार में ६ से १६ नवम्बर १९४८ तक मनाया जावेगा उसके लिए तैयारियाँ जोर-शोर से हो रही हैं। सदस्य-संख्या तेजी से बढ़ रही है। सदस्य फार्म सम्मेलन के कार्यालय से मँगाये जा सकते हैं।

—संवाददाता

* * *

दतिया से 'आधुनिक कवि' नामक एक कविता प्रधान पाक्षिक पत्र श्रीयुत 'व्रजेश' जी के सम्पादन में शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा है। स्वतंत्र रचनाओं के अतिरिक्त प्रथमांक के लिए विषय 'बापू' और 'हैदराबाद विजय' हैं।

[illegible] ने मुरब्बों और औषधियों पर भी कस्टम चुंगी लगा दी है, जिससे जनता में सब कहीं असन्तोष है।

—संवाददाता

* * *

अमेठी सुलतानपुर की जनता को हैदराबाद के आत्मसमर्पण का समाचार सुनकर प्रसन्नता प्राप्त हुई। उसी उपलक्ष्य में श्री रणवीर विद्यालय तथा आनन्द पाटशाला में एक दिन की छुट्टी हो गई। सभी जाति एवं वर्ग के विद्यार्थियों ने श्रीमान् युवराज रणञ्जयसिंह के सभापतित्व में एक महती सभा की जिसमें सर्व-सम्मति से प्रस्ताव पास हुआ और भारत-सरकार को उसकी बुद्धिमत्तापूर्ण सैनिक कार्यवाही की अनुपम सफलता के लिये बधाई दी गई।

—संवाददाता

* * *

अजमेर में गांधी सिद्धांत प्रचार-समिति की ओर से गांधी-जयन्ती-समिति के अध्यक्ष श्री रामनरायन जी चौधरी के सभापतित्व में बड़ी धूमधाम से मनाई गई। प्रातः प्रभात-फेरी, ध्वजरोहण और बच्चों के खेल हुए। मध्याह्न में श्रीमती गोमती देवी जी भार्गव की अध्यक्षता में सरस्वती-बालिका विद्यालय चर्खा कताई हुई। रात्रि में विराट् सार्वजनिक सभा में सर्वश्री रामनरायन चौधरी, पं० ओम्प्रकाश वैद्य, श्री दौलतराम जी, आचार्य दत्तात्रेय वाळ्ले, पारसियों के धर्म गुरु श्री रुस्तम जी और एँग्लो इंडियन एसोसियेशन के प्रधान मंत्री श्री० अलेक्जेंडर के गांधी जी की पवित्र शिक्षाओं को ग्रहण करने और रचनात्मक कार्य्य में लग जाने पर महत्त्वपूर्ण भाषण हुए। सरस्वती-बालिका विद्यालय की बालिकाओं ने गांधी जी के जीवन-सम्बन्धी "धर्म-संकट" नामक एक सुन्दर ड्रामा भी खेला जिसको जनता ने बहुत ही पसन्द किया।

—संवाददाता

* * *

फैजाबाद में महाजनी टोला हरि-संकीर्तन समाज की ओर से गांधी-जयंती का उत्सव बड़े समारोह के साथ मनाया गया। गांधी जी की आत्मकथा के कुछ अंश, कुछ कवितायें तथा दो-तीन छोटे-छोटे भाषण भी हुए। रामायण और गीता पाठ के साथ ही गांधी जी के प्रिय भजनों और कीर्तनों को भी सुन्दर ढंग से लड़कियों ने गाया। बहुत से लोग उत्सव में सम्मिलित हुए और उसको पूर्ण रूप से सफल बनाया।

अवध कलामंडल की ओर
अक्टूबर को बाढ़-पीड़ितों की
एक प्रदर्शन हो रहा है। बाहर
कलाकारों तथा कवियों को निमंत्रि
गया है। उत्सव की सफलता नि
कही जा सकती है। स्थानीय म्युनि
हाल में रंगमंच का प्रबंध किया
ताकि जनता अधिक से अधिक
आ सके।

—संवाद

* * *

प्रयाग में संयुक्तप्रान्तीय
साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समि
सदस्य हैं स्थायी समिति का प्रथम
वेशन रविवार १० अक्टूबर १९४
राधारमण इन्टर कालेज, दारागंज,
में १ बजे से होगा।

कार्यक्रम इस प्रकार है—

नियम ८ के अनुसार पदाधि
का निर्वाचन एवं १३ ख के
कार्यसमिति का संगठन। आगामी
वेशन के लिये आये हुए निमन्त्र
विचार। हिन्दी-दिवस मनाने के
में तिथि का निश्चय। सम्मेलन की
विधि के सम्बन्ध प्रस्तुत विध
विचार। नियम १० ग में संशोधन
हुए प्रस्ताव पर विचार।

* * *

गरम कोट
हर किस्म के
कोट पैन्ट
कोट लड़कों के
लेडी कोट
न्द गाठें व
बमूजिब नया
बिल्कुल वाजबी भावों पर
किया जाता है। हजारों ग्राहक
वर्षों से लाभ उठा रहे हैं। आज
की सूची मंगवा कर आर्डर
लेवें। तार का पता: DURANAKOT
रमेश राज एंड कम्प
(कराची वाले)
मारवाड़ी कटरा नई सड़क
ब्रांच :- कानपुर

गांधी राष्ट्रीय स्मारक निधि समिति युक्तप्रान्त

गांधी राष्ट्रीय स्मारक निधि में दान देना गांधी जी के प्रिय दीन, उत्पीड़ित, अपन्न एवं व्यथित जनों की यथाशक्ति करना है; और उनके आदर्श, सिद्धान्त और उपदेशों को अमर का प्रयत्न करना है।

गांधी जी के ऋणों से उऋण होने की चेष्टा का उपयुक्त गांधी जयन्ती पक्ष है।

गोविन्दवल्लभ पन्त, अध्यक्ष
विचित्रनारायण शर्मा

रामचरितमानस

टीकाकार—डाक्टर श्यामसुन्दरदास

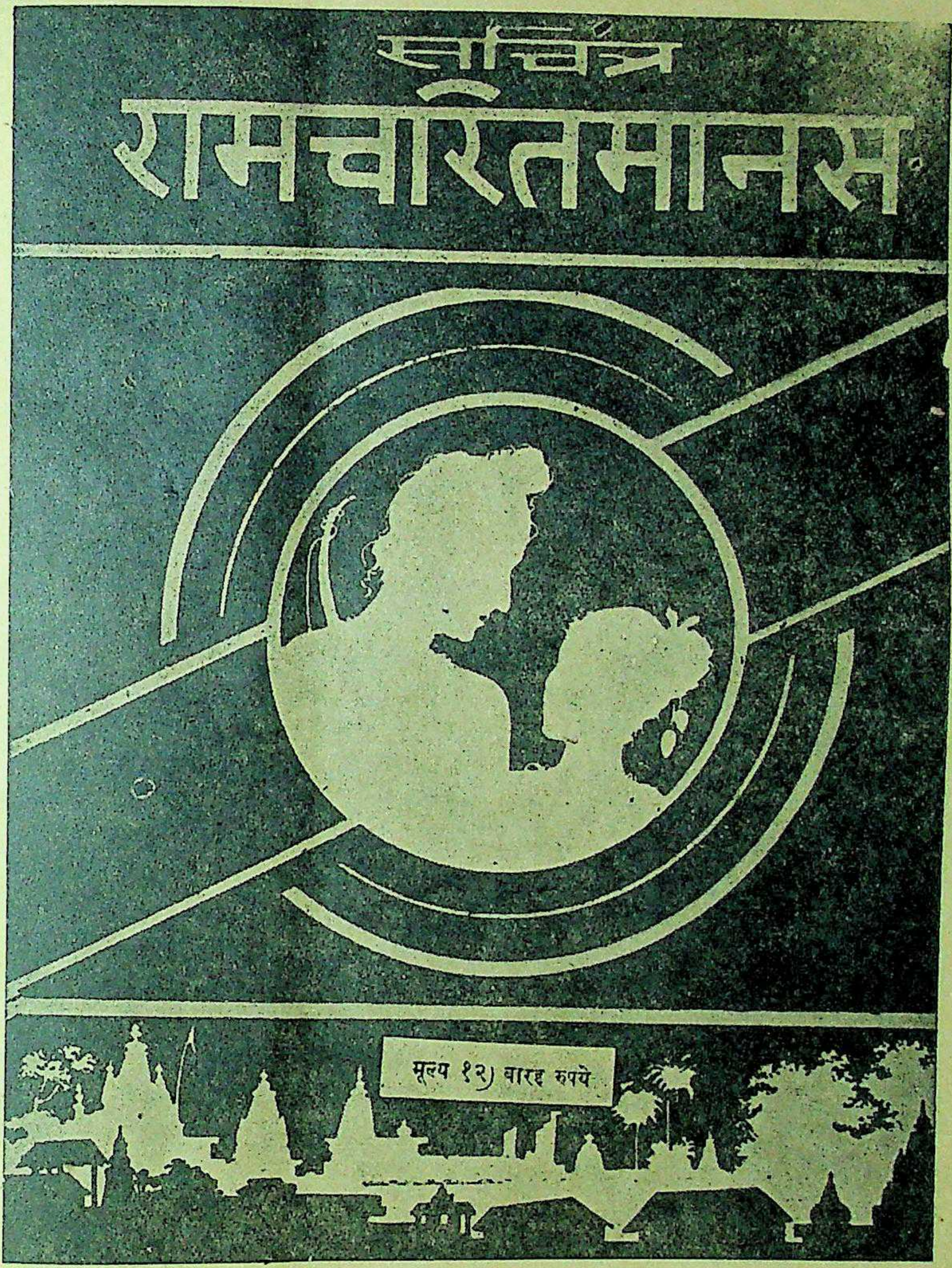

'मानस' का महत्त्व किसी से छिपा नहीं है। भारतवर्ष में तो इसका मान है ही, अन्य देशों में भी इस अमर ग्रन्थ का आदर है। यह प्रामाणिक संस्करण इधर ई वर्ष से अप्राप्य था। ल में ही छपकर तैयार हुआ है। ग्राहकों को शीघ्रता करनी चाहिए। अधिक प्रतियाँ नहीं छापी ई हैं।

बड़े आकार के १२०० ष्ठ। रंग-विरंगे दर्जनों चित्र। सजिल्द प्रति का

मूल्य १२) रुपये

जहाँ पर हमारी ब्रांच ा एजेंसी है वहाँ खरीदने र डाकखर्च की बचत होगी।

हमारी ब्रांचें और एजेन्सियाँ

१ इलाहाबाद सिटी—न्यू ऐरा बुकहाउस, हिवेट रोड
२ आगरा—आगरा पब्लिशिङ्ग हाउस, बाग मुजफ्फर खाँ
३ अजमेर—इंडियन प्रेस लिमिटेड, कचहरी रोड
४ अलमोड़ा—डिस्ट्रिक्ट बुकडिपो, लालबाजार
५ बनारस—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, बनारस छावनी
६ बाँदा—बुंदेलखण्ड पब्लिशिङ्ग हाउस
७ बरेली—इंडियन बुकडिपो
८ बम्बई—भारतीय पुस्तक भण्डार, कालबा देवी रोड
९ बीकानेर—गंगंबुक कम्पनी, कोट के भीतर
१० कलकत्ता—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, २२।१ कार्नवालिस स्ट्रीट
११ कानपुर—साहित्य-रत्नालय, श्रद्धानन्द पार्क
१२ दिल्ली—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, नई सड़क
१३ गोरखपुर—पुस्तक-स्थान, बख्शीपुर
१४ ग्वालियर—लायल बुकडिपो, पाटनकर बाजार, लश्कर
१५ इन्दौर—नवयुग साहित्यसदन, खजूरी बाजार
१६ जयपुर—गोपाल बुकडिपो, त्रिपौलिया बाजार
१७ जबलपुर सी० पी०—इंडियन प्रेस, लिमिटेड
१८ लखनऊ—इंडियन बुकडिपो, अमीनुद्दौला पार्क
१९ मेरठ—पुस्तक-स्थान, वैस्टर्न कचहरी रोड
२० पटना—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, पो० ऑ० बाँकीपुर
२१ राँची—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, कोर्ट रोड
२२ अम्बाला (पूर्वी पंजाब)—इंडियन प्रेस लिमिटेड, दुर्गाचरण रोड

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

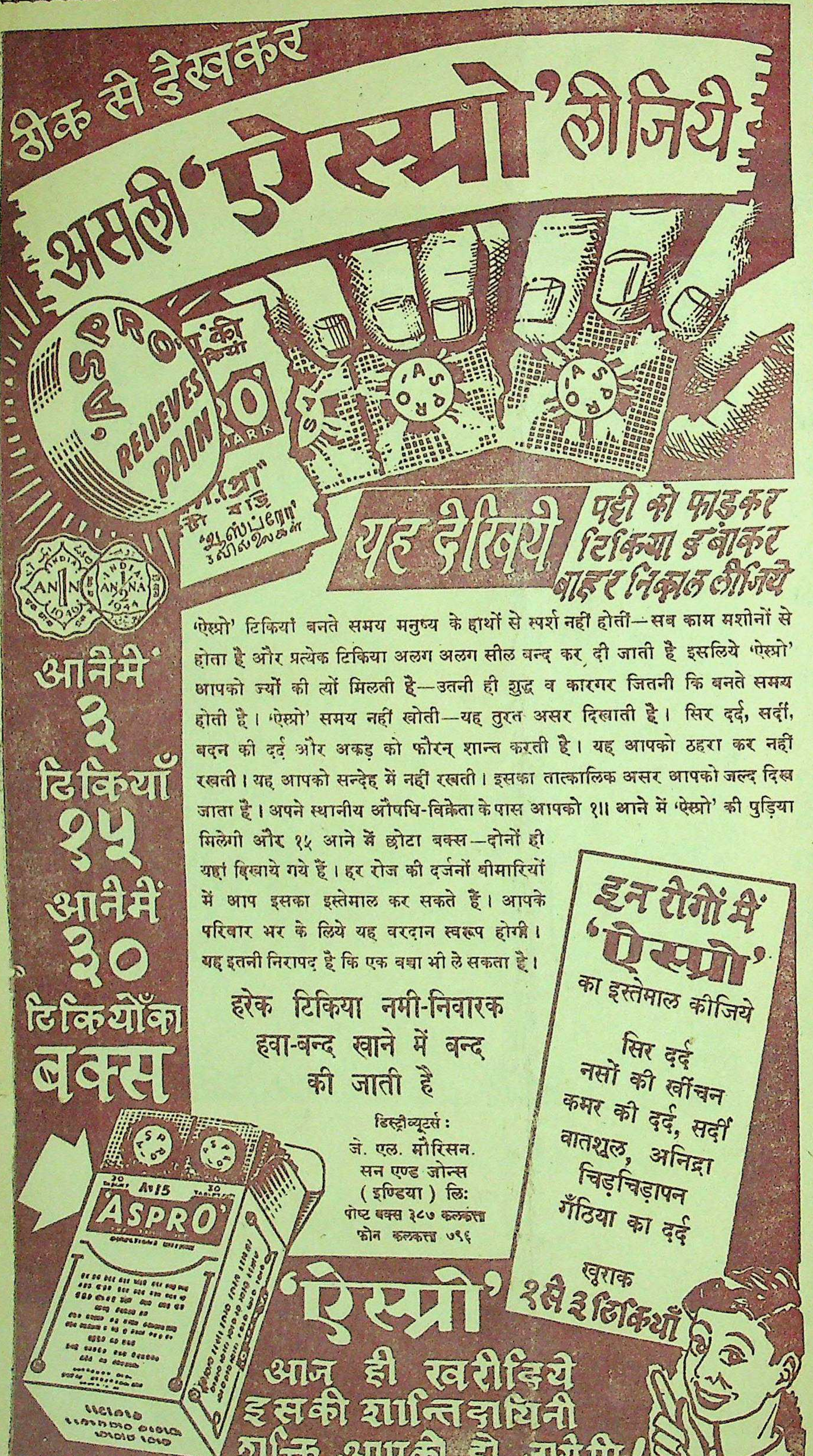

ठीक से देखकर असली 'ऐस्प्रो' लीजिये

यह देखिये पट्टी को फाड़कर टिकिया दबाकर बाहर निकाल लीजिये

'ऐस्प्रो' टिकियाँ बनते समय मनुष्य के हाथों से स्पर्श नहीं होतीं—सब काम मशीनों से होता है और प्रत्येक टिकिया अलग अलग सील बन्द कर दी जाती है इसलिये 'ऐस्प्रो' आपको ज्यों की त्यों मिलती है—उतनी ही शुद्ध व कारगर जितनी कि बनते समय होती है। 'ऐस्प्रो' समय नहीं खोती—यह तुरत असर दिखाती है। सिर दर्द, सर्दी, बदन की दर्द और अकड़ को फौरन् शान्त करती है। यह आपको ठहरा कर नहीं रखती। यह आपको सन्देह में नहीं रखती। इसका तात्कालिक असर आपको जल्द दिख जाता है। अपने स्थानीय औषधि-विक्रेता के पास आपको १॥ आने में 'ऐस्प्रो' की पुड़िया मिलेगी और १५ आने में छोटा बक्स—दोनों ही यहां दिखाये गये हैं। हर रोज की दर्जनों बीमारियों में आप इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। आपके परिवार भर के लिये यह वरदान स्वरूप होगी। यह इतनी निरापद है कि एक बच्चा भी ले सकता है।

आनेमें ३ टिकियाँ १५ आनेमें ३० टिकियोंका बक्स

हरेक टिकिया नमी-निवारक
हवा-बन्द खाने में बन्द
की जाती है

डिस्ट्रीब्यूटर्स :
जे. एल. मौरिसन.
सन एण्ड जोन्स
(इण्डिया) लि:
पोष्ट बक्स ३८७ कलकत्ता
फोन कलकत्ता ७९६

इन रोगों में 'ऐस्प्रो' का इस्तेमाल कीजिये

सिर दर्द
नसों की खींचन
कमर की दर्द, सर्दी
वातशूल, अनिद्रा
चिड़चिड़ापन
गँठिया का दर्द

खुराक २से ३ टिकियाँ

'ऐस्प्रो' आज ही खरीदिये इसकी शान्तिदायिनी शक्ति आपकी हो जायेगी!

78

धोने के लिये
५०१ साबुन
दी टाटा आयल मिल्स कं०

मुफ्त

युवको ! यदि अपनी मूल
नष्ट कर चुके हो, अथवा विवा
फीका हो चुका हो तो भार
सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त रो

कविराज ब्रह्मस्वरूप

(D.A.) फतेहपुरी देहली से
मशविरा मुफ्त करके अप
सुधार लें।

खिजाब अब लगाना न होगा

सफेद बाल काला

नक्कालों से सावधान !

इस तेल से बाल का पक
पका बाल जड़ से काला पैदा
सैकड़ों प्रशंसापत्रों से इसक
णित है। यह तैल सिर के दर्द
चक्कर आना आदि को आराम
की रोशनी को बढ़ाता है।
शीशी ३॥) व बड़ी शीशी ५)।

श्वेत कुष्ठ की वनौ

महात्मा प्रदत्त इस
से तीन दिन में पूरा फायदा
हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों,
की दवा से निराश हो चुके
लगाकर आरोग्य होवें।
२१ दिन का।

पता :—श्रीकृष्ण आयुर्वे
(द २), बड़ा बाजार,

आरो
१८६
नीलगिरि
बी. सांबालेकर

देशदूत में विज्ञापन देकर लाभ उठाइए।

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [कै० मित्रा-द्वारा इंडियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद

देशदूत

वार्षिक मूल्य ७॥)
एक प्रति का =)
Annual Price Rs. 7-8-0
Per Copy Annas Two.

गुरुकुल कांगड़ी

१७ आक्टोबर, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 17th October, 1948

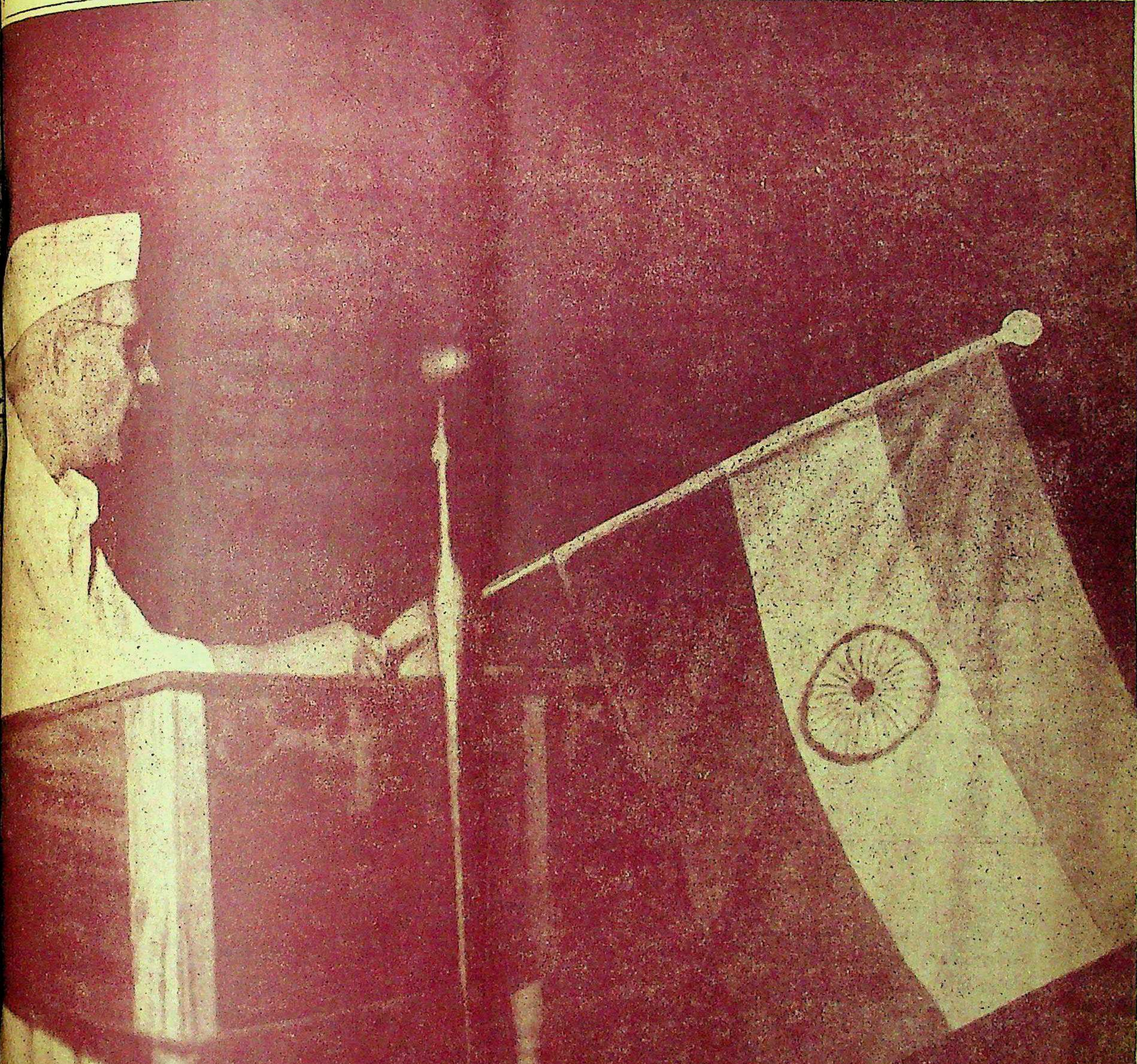

री भारत का ज्वालामुखी कैसा है?
का विरोधी रूप कैसा ?

हिन्दी भाषाभाषी
प्रान्तीय जनता का पत्र

हमारी शिक्षा और पुस्तकालय।
रंगमंच, मातृमन्दिर और स्वास्थ्य-चर्चा

पुराने
के स्थान में
नया
EVEREADY
Fresh Power
BRIGHTER LIGHT
LONGER LIFE

नये की प्रतीक्षा कीजिए

EVEREADY
TRADE-MARK
फ़्लैशलाइट बैटरी

नेशनल कार्बन कम्पनी द्वारा प्रस्तुत

पीडा को रोको

अलेम्बिक शीतल बाम में काफूर, पिपरमिन्ट, युकलिपटस आयल, कैजूपटी आयल आदि मिश्रित हैं और यह पीड़ा को शांत और कम करती है।

शीतल बाम लगाने से कई प्रकार की पीड़ा और दर्दों को जैसा कि:-जोड़ों की पीड़ा, मोंच, और सिर दर्द को आराम मिलता है।

१.२ औंस की शीशी में मिलती हैं

शीतल बाम

एक अलेम्बिक औषधि

AL 3 HINDY

२२॥) की रिस्टवाच मुफ्त

पूजा के उपलक्ष में—सिर्फ १५ दिनों के लिये। स्वीटजरलैंड की बनी गारं

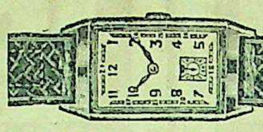

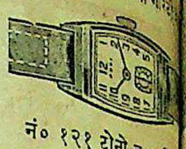

नं० ११२ रेक्टेंगुलर शेप

नं० १२१ टोनो व कर्व

५ जुएल क्रोम केस ३४) रोल्ड गोल्ड ४०) ५ जुएल क्रोम केस ३७) रोल्ड गो

७ „ क्रोम केस ४४) रोल्ड गोल्ड ५५) ७ „ क्रोम केस ४६) रोल्ड गो

१५ „ क्रोम केस ५८) रोल्ड गोल्ड ७२) १५ „ क्रोम केस ६०) रोल्ड गो

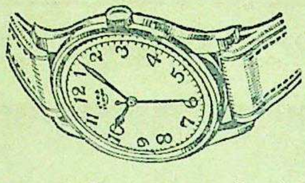

४ जुएल नं० १२३ फ़्लाट शेप क्रोम केस २८) नं० १२४ (१३) साइज

७ जुएल क्रोम केस ३५) रोल्ड गोल्ड ४८) क्रोम केस १८॥) रेडीयम

१५ „ क्रोम केस ३७) रोल्ड गोल्ड ६०) सेंटरसेकंडवाली २२॥) रेडी

एलार्म टाइमपीस १६) सुपीरीयर २०) बेस्ट २५) पोस्टेज अतिरिक्त

कोई भी तीन घड़ी एक साथ लेनेवाले को एक घड़ी २२॥) रु० वाली मुफ्त

एच० डेभिड० कम्पनी पो० ब० नं० ११४२४ कलकत्ता

‘कथा-साहित्य की सबसे अच्छी प्रतिनिधि पत्रिका’

मंजरी

प्रतिमास सचित्र, सरस और कलात्मक कहानियों द्वारा अपने पाठकों का मनोरंजन कर रही है आप भी नियमित रूप से ‘मंजरी’ पढ़कर स्वीकार करेंगे कि—

१—हिन्दी के आचार्यों और पत्र-पत्रिकाओं ने ‘मंजरी’ की मुक्त कण्ठ प्रशंसा की है, वह वास्तव में उचित है।

२—हिन्दी के श्रेष्ठ कथाकारों के अतिरिक्त विश्व-विख्यात विदेशी कथा श्रेष्ठ और सरस कहानियाँ भी ‘मंजरी’ में प्रकाशित हो रही हैं।

३—कहानियों के साथ-साथ, एक धारावाहिक उपन्यास, कथा-साहित्य लेखकों के अध्ययनशील लेख और कथा-कृतियों की निष्पक्ष समीक्षा भी रहती है।

४—कहानियों में दर्जनों चित्र, दुरंगी छपाई, कलात्मक मुद्रण-विन्या आवरण ‘मंजरी’ की अपनी विशेषताएँ हैं।

५—जिन कथाकारों की कहानियाँ आपका मनोरंजन करती हैं, उनके संक्षिप्त परिचय भी ‘मंजरी’ प्रस्तुत करती है।

सांस्कृतिक मनोरंजन के अनुष्ठान में ‘मंजरी’ को आप अपना सक्रिय सहयोग दीजिए—उसके वार्षिक ग्राहक बनिए।

वार्षिक मूल्य ६) छः रुपये **प्रति अङ्क आठ आ**

—प्रबन्धक ‘मंजरी’—

इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

हमारे जानवर

लेखक, कुँवर सुरेशसिंह

१०० जानवरों का सचित्र रोचक वर्णन

यह हिन्दी में अपने विषय की पहली पुस्तक है। हम अपने पास-पड़ो जानवरों को जरूर पहचानते हैं। उनकी आदतें और स्वभाव के बारे में भी जानते हैं, लेकिन इतने ही से क्या हम कह सकते हैं कि हमें सारे पशु-जग कारी हो गई है?

इतना ही क्यों, हमें चिड़ियाखाना देखने का भी मौका मिला होगा वहाँ जिस सरसरी निगाह से हमने जानवरों को देखा होगा उनसे भी हम विश्वास नहीं दिला सकते कि हमें पशुसमाज का काफी ज्ञान है।

ऐसी दशा में अपने देश के जंगल, पहाड़, बस्तियाँ और मैदानों में सैकड़ों पशुओं के बारे में तरह तरह की मनोरञ्जक बातें जानने के लिए एक है कि आप “हमारे जानवर” की एक प्रति आज ही मँगावें। आपके जानवरों का सचित्र वर्णन इस पुस्तक में मिलेगा। मूल्य ४)

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रया

देशदूत

वर्ष ११, संख्या ७] [रविवार, १७ आक्टोबर, १९४८

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

के जयपुर अधिवेशन के सभा- ा चुनाव सर पर है। राष्ट्र के कई पद के लिए चुनाव में खड़े हैं े एक डाक्टर पट्टाभि सीतारमैया डाक्टर पट्टाभि सीतारमैया इस के अध्यक्ष होंगे या नहीं इसे ुदा जाने या कांग्रेस हाई किन्तु उन्होंने एक वक्तव्य प्रका- वह सिद्ध कर दिया है कि इस कांग्रेस-अध्यक्ष होने के लिए हैं। अपने राम को याद है कि में डाक्टर पट्टाभि सीता- सुभाषचन्द्र बोस के मुकाबिले में क्ष-पद के लिए चुनाव में खड़े हुए हाई कमाण्ड के चाहने पर भी की गद्दी पर नहीं बैठ सके, के बाद उनकी इच्छा पुनः उठी है। लेकिन जान पड़ता बार भी उन्हें अध्यक्ष-पद से ना पड़ेगा। यद्यपि उन्होंने यह है कि मैंने देश की बहुत बड़ी है इसलिए इस बार मुझे अध्यक्ष बना दिया जाना । लेकिन सवाल तो यह है कि के लिए अन्य जो नेता खड़े देश-सेवा डाक्टर पट्टाभि की कम है? सभी नेता वर्षों जेल- रहे हैं। राष्ट्र के लिए सबने है। तो फिर अब इसकी नाप- करे कि किसकी सेवा कम है ज्यादा? अंगरेज तो यहाँ से । नहीं तो वे फैसला करने का आसानी से ले सकते थे क्योंकि के काम में उनसे बढ़कर शायद में कोई दूसरा हो। अब तो ग्रेस के अध्यक्ष-पद के लिए नेता । प्रजातन्त्रवाद इसी का नाम है।

* *

लुई माउण्टबेटेन ने पंडित लाल नेहरू और सरदार वल्लभ- की बड़ी प्रशंसा की है। अपने समझ में प्रशंसा करने का यह भी है। लार्ड लुई माउण्टबेटेन में भारत का विभाजन हुआ; की स्थापना हुई; काश्मीर और की दो रियासतें भावी राजनीति छोड़ने के लिये भारत-संघ से दी गईं और अन्त में बिस्तर विलायत चले गए। अंगरेज कि हैदराबाद का मामला अगर आगे बढ़े तो एक नाटक रचा जाय। लेकिन अभिनय होने के पूर्व ही वह साफ हो गया। पंडित जवाहरलाल नेहरू को ब्रिटिश साम्राज्य के प्रधान मन्त्रियों के सम्मेलन से विलायत जाना ही था। इन अँगरेजों को पंडित जी से कुछ काम भी निकालना है। ऐसी स्थिति में लार्ड लुई माउण्टबेटेन को भड़ैती का सौंपी गई है। लेकिन भारत-संघ के नेता इस तरह की भड़ैतियों को खूब जानते हैं। वह अपने राष्ट्र के प्रति कदापि विद्रोह करनेवाले नहीं। लार्ड माउण्ट बेटेन अपना गीत गाते जायँ लेकिन भारतीय नेता वही काम करेंगे जिससे राष्ट्र का हित होगा।

* * *

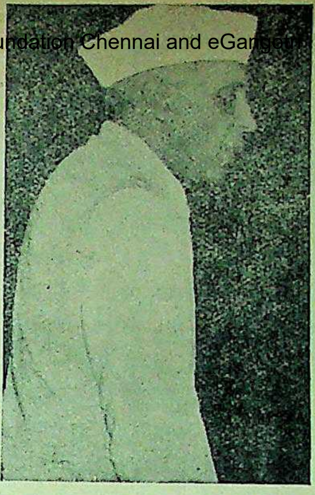

ब्रिटिश साम्राज्य के उपनिवेशों के प्रधान मंत्रियों का सम्मेलन लन्दन में हो रहा है। पंडित नेहरू सम्मेलन में भाग लेने के लिए लन्दन पहुँच गये हैं।

अमरीका के एक पदाधिकारी ने अमरीकन जनता को यह चेतावनी दी है—संभव है कि बर्लिन के प्रश्न को लेकर तीसरे महायुद्ध का प्रारम्भ होगा। एक तरफ रूस होगा और दूसरी ओर अमरीका। ब्रिटेन अमरीका के पीछे पूँछ की तरह लटका होगा। भीतर से वह रूस का साथ देगा और ऊपर से अमरीका का। किन्तु अन्त में वह उसी का साथ देगा जो जीतने लगेगा। अपने राम की समझ में नहीं आता कि संसार के ये महान् राष्ट्र अभी कौन-कौन सा पापड़ बेलनेवाले हैं।

* * *

आगामी ३१ आक्टोबर को 'देशदूत' का

'दीपावली विशेषांक'

बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित होने जा रहा है

पिछले वर्षों की भाँति इस वर्ष भी 'देशदूत' का 'दीपावली' विशेषांक दीपावली के अवसर पर ३१ आक्टोबर को प्रकाशित होगा। राष्ट्र की सामयिक राजनीतिक समस्याओं पर सुप्रसिद्ध नेताओं की रचनायें, प्रसिद्ध कवियों की कवितायें तथा दर्जनों सुंदर चित्रों से यह अंक सुसज्जित होगा। कहानियाँ एक से एक लोकप्रिय और सुंदर होंगी। इसके अतिरिक्त रंगमंच तथा महिलाओं के लिये उपयोगी और बेजोड़ सामग्री उपलब्ध होगी।

विज्ञापनदाताओं को अभी से विज्ञापन के लिये स्थान सुरक्षित करा लेना चाहिए। एजेन्टों को भी अभी से अपनी प्रतियाँ रिजर्व करा लेनी चाहिए और सितम्बर तक की बिक्री का हिसाब भेज देना चाहिए। कवर नयनाभिराम होगा। मूल्य केवल ।=) छः आना मात्र होगा।

विज्ञापन दर यह होगा।

कवर का चौथा पूरा पेज ४००) दूसरा या तीसरा पेज ३००)
पहला पेज पाठ्य-विषय के पहले ३००) साधारण पूरा पेज २००)

पृष्ठ का आकार १२½″ × ९″ कालम ४ स्क्रीन ६५

मैनेजर 'देशदूत'

इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

श्रीमती पंडित पेरिस में होनेवाली सुरक्षा परिषद् में भारत की ओर से जानेवाले प्रतिनिधि दल का नेतृत्व कर रही हैं।

इस समय भारत में प्रान्तीयता का जोर बढ़ रहा है। बंगाल में बंगाली; बिहार में बिहारी; मद्रास में मद्रासी; महाराष्ट्र में महाराष्ट्री; गुजरात में गुजराती तथा पंजाब में पंजाबी अपने अपने प्रान्त की सांस्कृतिक और राजनैतिक प्रगति को लेकर गिरोहबन्दी कर रहे हैं। केवल बच जाता है संयुक्त-प्रान्त। यहाँ की राष्ट्रीयता बड़ी विचित्र है। यहाँ प्रत्येक प्रान्त के लोगों के लिए द्वार खुला है। 'आओ जाओ घर तुम्हारा' की कहावत पूरी तरह चरितार्थ होती है। यहाँ की संस्कृति, यहाँ की राजनीति; यहाँ की भाषा; एक पंचमेल मिठाई के समान है। प्रत्येक प्रान्त के अलग अलग नेता हैं; परन्तु 'संयुक्तप्रान्त में सभी नेता हैं। दूसरे अर्थों में यह भी कहना चाहिए कि यह प्रान्त नेतृत्वहीन है। आचार्य कृपलानी ने एक बार अपने भाषण में कहा था कि 'यदि अब तक मैं अपने प्रान्त सिन्ध में रहता तो जन-सेवक ही बना रहता। किन्तु संयुक्तप्रान्त में आते ही मैं नेता बन गया।' अपने राम की समझ में आचार्य कृपलानी की बात सोलह आना पाव रत्ती ठीक है। संयुक्त-प्रान्त की कोई प्रान्तीयता नहीं है। आदर्श की दृष्टि से है तो यह बहुत अच्छा लेकिन तत्काल उपयोगिता की दृष्टि से यह हानिकर भी है। स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद यह जो प्रान्तीय स्वतंत्रता का नारा लगा है तब तो स्वराज्य का प्राप्त होना बहुत लाभदायक नहीं जान पड़ता।

* * *

पाकिस्तान के गवर्नर-जनरल श्री मुहम्मद अली जिन्ना का जब से स्वर्गवास हुआ है तब से पाकिस्तान की स्थिति डाँवाडोल हो रही है। पाकिस्तान किधर जा रहा है? इसे सिवा अँगरेजों के और दूसरा कोई नहीं जानता। बंगाल के प्रधान मंत्री सर नाजिमुद्दीन, लियाकत अली जैसे बड़े-बड़े लीगियों को पछाड़कर जिन्ना साहब के तख्त ताऊस पर जा बैठे। परन्तु बड़े अफसोस की बात है कि उनकी कोई खबर नहीं मिल रही है। जान पड़ता है कि जब से वे कायदे आजम की गद्दी पर बैठे हैं तब से उनकी बोलती बन्द हो गई है। देखना है सर नाजिमुद्दीन का मुँह कब खुलता है?

* * *

सम्पादक का पृष्ठ

जमींदारी-उन्मूलन

संयुक्तप्रांतीय सरकार ने जमींदारी प्रथा के उन्मूलन की जिस समिति का निर्माण किया था उसने अपनी रिपोर्ट पिछले दिनों प्रकाशित कर दी है। यह रिपोर्ट इतनी विस्तृत है तथा किसानों और जमींदारों के भावी सम्बन्ध के प्रत्येक पहलू पर इस प्रकार विचार किया गया है कि उसकी पूर्ण आलोचना इन कालमों में सम्भव नहीं है। कांग्रेस सरकार जनता की सरकार है। वह जब से शक्ति में आई है तब से उसका प्रधान उद्देश्य यही रहा है कि शोषण की जो प्रधान प्रथायें इस देश में चिरकाल से प्रचलित हैं उन्हें वैधनिक रूप से दूर किया जाना चाहिए। भारत एक खेतिहर देश है, किसान देश की सबसे बड़ी जनता है। किसानों पर इस देश की आर्थिक तथा साम्पत्तिक आय बहुत कुछ निर्भर है। किसान समुदाय शताब्दियों से पददलित और शोषित होता आया है। कांग्रेस सरकार ने शक्ति ग्रहण करते ही यह निश्चिय किया कि किसान समुदाय को अधिक से अधिक सुखी और स्वतन्त्र बनाना ही है। इसीलिये जमींदारी प्रथा के उन्मूलन की नीति ग्रहण की गई और अब ऐसा अनुभव होता है कि वह समय शीघ्र आनेवाला है जब कि जमीन का मालिक किसान ही होगा, जमींदार नहीं। जमींदारों ने अब तक किसानों का जिस भाँति शोषण किया है उसका अन्त शीघ्र ही होकर रहेगा। प्रान्तीय सरकार आगामी जनवरी मास में उन्मूलन समिति के सिफारिशों को असेम्बली में उपस्थित करके उसे कानूनी रूप देने में उद्योगशील है।

जहाँ तक जमींदारी प्रथा के दूर करने का प्रश्न है वहाँ तक प्रत्येक इस विचार से सहमत है कि किसान जिस भूमि पर खेती करता आया है वह उसी की ही होनी चाहिए। जमींदारों ने अपने जीवन के सैकड़ों वर्षों में जमींदारी से काफी लाभ उठाया है और यदि अब सरकार उन्हें मुआवजा देकर जमींदारी पर स्वयं अधिकार कर लेती है या किसानों का अधिकार उस पर हो जाता है तो यह न्यायोचित ही है। हमें प्रसन्नता है कि जमींदारी प्रथा उन्मूलन-समिति ने इस सम्बन्ध में जो सिफारिशें की हैं वह न्यायसंगत, सामयिक और जनता की रुचि के अनुकूल हैं; किन्तु हमें संदेह है कि समिति की सिफारशों को वैधानिक रूप से स्वीकार करने तथा कार्यरूप में परिणित करने में अभी कठिनाइयों का सामना करना पड़े। इन कठिनाइयों की वास्तविकता यह है कि केन्द्रीय तथा प्रांतीय सरकारों की आर्थिक स्थिति इतनी डाँवाडोल हो रही है कि यदि जमींदारों को मुआवजा देने का अवसर आया तो करोड़ों रुपये नकद कहाँ से दिए जायँगे। मुद्रा-स्फीति का व्यतिक्रम राष्ट्र के सामने जो संकट उत्पन्न कर रहा है उससे यदि आर्थिक कठिनाई उत्पन्न हो तो आश्चर्य नहीं। हाँ, सरकार सचेत अवश्य है किन्तु सक्रिय नहीं। सच पूछा जाय तो जमींदारी प्रथा के उन्मूलन का नारा पिछले कई वर्षों से लगाया जा रहा है किन्तु अभी तक उस पर कोई अन्तिम निर्णय नहीं हो सका। यदि मुद्रा-स्फीति का यही संघर्ष गतिमान रहा तो जमींदारी प्रथा के उन्मूलन का कार्य भी खटाई में पड़ जाना संभव है। एक ओर तो मुद्रा-स्फीति का प्रश्न है और दूसरी ओर भूमि के नये बन्दोबस्त का भी। इस समय के संघर्ष काल में भूमि का बन्दोबस्त करना हँसी खेल नहीं है। जब कि समिति की रिपोर्ट निकलने में कई वर्ष बीत गये तो वैधानिक रूप से नई स्थिति को कार्यरूप में परिणित करने के लिए भी यदि अभी कई वर्ष और लगें तो आश्चर्य नहीं। हम समझते हैं कि सन् १९५० के पहले जमींदारी प्रथा का उन्मूलन नहीं किया जा सकेगा। जो कुछ होगा विधान परिषद् के नियमानुसार आगामी सार्वजनिक चुनाव के बाद ही होगा।

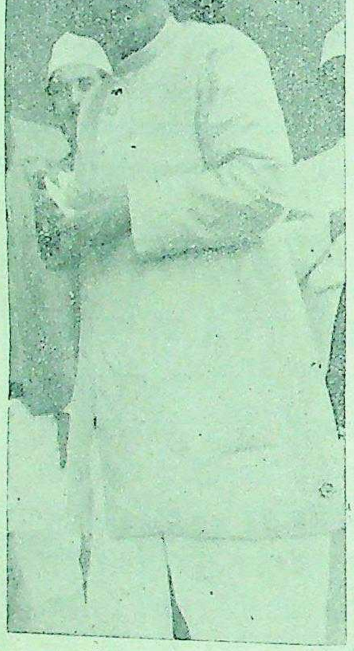
संयुक्तप्रांत के प्रधान मंत्री पंडित गोविन्दवल्लभ पंत जमींदारी उन्मूलन के लिये प्रयत्नशील हैं।

भारतीय किसान कांग्रेस सरकार की ओर बड़ी आशापूर्ण दृष्टि से देख रहे हैं। किसानों के लिए जमींदार काल के समान हैं। वह अपने को स्वतन्त्र उसी समय अनुभव करेंगे जब कि जमींदारों का प्रभुत्व उन पर से अथवा उनकी भूमि पर से एकदम उठ जायेगा। उनके लिये सबसे बड़ा स्वराज्य यही है। हमें संदेह है कि यदि कांग्रेस सरकार ने जल्दी से जल्दी इस ओर कदम न बढ़ाया और करोड़ों किसानों के शोषण की यह प्रथा बन्द न की तो आगामी सार्वजनिक चुनाव में भी उसे थोड़ी बहुत कठिनाई का सामना करना अनिवार्य होगा, साथ ही समाजवादियों और कम्युनिस्टों के नारे किसानों को गलत रास्ते पर ले जाने के लिए प्रेरित करेंगे। हम यह नहीं कहते कि संयुक्तप्रांतीय जमींदारी प्रथा उन्मूलन समिति ने जो सिफारिशें की हैं वह पूर्ण रूप से किसानों के लिए हितकर ही हैं, किन्तु अधिकांश सिफारिशें जमींदारी प्रथा को दूर करने में एक क्रांतिकारी मार्ग का प्रदर्शन तो करेंगी ही। ऐसी दशा में यदि सोलह आना जमींदारी प्रथा का उन्मूलन सरकार न भी कर सके तो न सही; किन्तु जितना भी करे उसे शीघ्र कार्यरूप में परिणित करे तभी कांग्रेस के किसान राज्य के आदर्श की पूर्ति हो सकेगी।

*   *   *

.संयुक्तराष्ट्र-संघ किधर ?

संयुक्तराष्ट्र संघ संसार के राष्ट्रों में शान्ति और व्यवस्था की स्थापना के लिए स्थापित हुआ है। संघ के प्रधान संचालक ब्रिटेन, अमरीका और रूस हैं। पिछले वर्षों की कार्रवाइयों तथा गुट-बन्दियों से यह अनुभव हो रहा है कि संघ को संसार के राष्ट्रों की दृष्टि से जितना उपयोगी सिद्ध होना चाहिए वह उतना नहीं हो रहा है। बड़े बड़े साम्राज्यवादी राष्ट्रसंघ को अपने स्वार्थों के लिए उपयोग में ला रहे हैं। यूरोप के अनेक छोटे छोटे राष्ट्र, इन साम्राज्यवादी राष्ट्रों के कुचक्र में पड़कर, असंगठित, विभाजित तथा पथभ्रष्ट हो रहे हैं। प्रत्येक महान राष्ट्र, छोटे-छोटे राष्ट्रों को भ्रष्टाचार के पथ की ओर अग्रसर कर रहा है और उसे स्वार्थ की पूर्ति का साधन बना रहा है। पूर्वीय यूरोप तो इस समय एक ज्वालामुखी की भाँति पक रहा है, किस अवसर पर वह ज्वालामुखी फूट पड़े और तीसरे महायुद्ध का प्रारम्भ हो जाये। निश्चयात्मक रूप से इस समय कुछ कहा नहीं जा सकता। राष्ट्रसंघ ने भारत के अनेक राजनैतिक प्रश्नों को लेकर कुछ ऐसी चालें चली हैं कि हमारे लिये यह कहना अनिवार्य है कि संसार में शान्ति और व्यवस्था की स्थापना सम्भव नहीं है। राष्ट्रसंघ की इसी प्रकार की कमजोरियों के कारण ही कम्युनिज्म यूरोप तथा एशिया में संक्रामक रोक ग्रहण करता जा रहा है। संघ समयानुसार इस प्रकार के निर्णय करता रहता है जो ब्रिटेन और अमरीका की दृष्टि से उपयोगी होते हैं किन्तु अन्य राष्ट्रों की दृष्टि से नहीं। बर्लिन की समस्या दिन प्रति दिन व्यापक रूप ग्रहण करती जा रही है, किन्तु साम्राज्यवादी राष्ट्रों के स्वार्थों के कारण कोई अन्तिम निर्णय नहीं होने पा रहा है। परिस्थिति निराशाजनक होती जा रही है। ऐसी दशा में हम यह कैसे मान लें कि जो राष्ट्र अपने ही महाद्वीप की आर्थिक साम्रा
नैतिक और सांस्कृतिक सुरक्षा
नहीं कर पा रहे हैं वह एशिया त
के भाग्य का निर्णय किस प्रकार क
हैं ? यदि राष्ट्रसंघ का यही रवैया र
साम्राज्यवादी राष्ट्रों ने अपने स्वार्थ
बलि न दी तो भारत ऐसा महान
कब तक संयुक्तराष्ट्र संघ से शान्ति
व्यवस्था की माँग करता रहेगा।
कभी तो उसे संघ से अलग होना

भारत के प्रधान मंत्री पंडित
लाल नेहरू और उप प्रधान मंत्री
वल्लभ भाई पटेल ने इसी दृष्टि
पिछले दिनों से संयुक्तराष्ट्र-संघ को
दी है कि वह अपनी नीति में परिवर्तन
राष्ट्र-संघ यूरोप तथा एशिया के बीच
किसी प्रकार का संघर्ष न
होने दे। क्योंकि संयुक्त-राष्ट्र-संघ की
योगिता से कोई इनकार नहीं
किन्तु, उसके द्वारा जिस प्रकार की
वाइयाँ हो रही हैं वह वास्तव में
जनक हैं। इससे यूरोप और एशिया
पारस्परिक सहयोग और प्रेम क
उत्पन्न हो सकता। सुरक्षा परिषद्
बाद के प्रश्न को लेकर एक उलझन
करने जा रही थी किन्तु उलझन उत्
होने के पूर्व ही हैदराबाद की हविशी
गई। अब काश्मीर की समस्या भी सुरक्षा
परिषद् तथा संयुक्तराष्ट्र-संघ के सामने
किन्तु कहा नहीं जा सकता कि ऊँट
करवट बैठाया जायेगा। फिर भी हैदराबाद
की विजय के बाद भारत का यह निश्
है कि सुरक्षा परिषद् द्वारा नियुक्त
के जाँच कमीशन की सिफारिशें
लिए मान्य नहीं होंगी। नये वर्ष के
ही ब्रिटेन और अमरीका बहुत कुछ
तथा काश्मीर के सम्बन्ध में विचार
मय कर लेना चाहते हैं किन्तु
का विभाजन हो अथवा काश्मीर पाकिस्
के हवाले कर दिया जाय यह तो
अनौचित्यपूर्ण है। वास्तव में यदि संयुक्त
संघ संसार के राष्ट्रों में शान्ति और
चाहता है तो उसे भारत के
बिना स्थिति को समझे बूझे कोई
नहीं करना चाहिए।

*   *

अपराजिता

यह श्रीयुत रामेश्वरप्रसाद शुक्ल
ए०, 'अञ्चल' की कतिपय सुन्दर क
का संग्रह है। कविताएँ नवीन
नूतन सांस्कृतिक रुचि और प्रगति
हैं। कवि 'अंचल' की रचनाओं का
प्राप्त करने के लिए अपराजित को
देखिए। सजिल्द पुस्तक का मूल्य
रुपये।
मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

रीका के वैदेशिक मंत्री जार्ज मार्शल।

विज्ञान ने बहुत ही तरक्की की गत के साधनों, मनुष्य के जीवन के लिए आवश्यक दि की बहुत उन्नति हुई है भी संसार में घटित होनेवाली सही स्वरूप मालूम करना, के सत्यासत्य की परख करना जनता के लिए उतना ही कठिन जितना कि आज से पहले के ने में था। यह बात कौन नहीं जब तक साम्राज्यशाही ने सत्ता भारतीयों के हाथ हस्ता- की थी तब तक ब्रिटेन के पत्र, के पैसों से चलनेवाली एजेन्सियाँ और ब्रिटिश रेडियो सी० भारत के विरुद्ध कितना करता था, यह बात किससे सन् १९१७ की क्रान्ति के के सभी पूँजीवादी राष्ट्र सोवियट लगातार प्रायः दो दर्शकों तक करते रहे हैं। आज इस बात नहीं जानता कि मलाया, बर्मा, स्याम, हिन्दचीन, आदि पूर्वी राष्ट्रों के जनान्दोलन पर पर्दा और उन राष्ट्रों पर अपना पञ्जा बनाये रखने के लिए ब्रिटिश, डच सरकारें और उनके अखबार नित्यप्रति कितनी झूठी ती हैं। आज यही बात पूर्वी चेकोस्लोवाकिया, पोलैण्ड,

स्लाविया के नेता मार्शल टीटो।
फो० ३

पूर्वी यूरोप का ज्वालामुखी

संसार के तीसरे महायुद्ध का विस्फोटक क्षेत्र क्या यही है ?

लेखक, श्री लक्ष्मण शास्त्री

[१]

यूरोप में पूर्वी यूरोप एक ज्वालामुखी की भाँति है। संसार के महान् राष्ट्रों की दृष्टि इस क्षेत्र में क्रियात्मक रूप ग्रहण कर रही है। वह ज्वालामुखी कब फूट पड़े, कुछ कहा नहीं जा सकता। इस लेख में योग्य लेखक ने पूर्वी यूरोप की राजनीतिक स्थिति का विस्तृत वर्णन किया है, जो ज्ञानवर्धक तथा जानकारी से पूर्ण है। इस लेख का शेष अंश अगले अंक में प्रकाशित होगा।

रूमानिया, बलगेरिया, युगोस्लाविया, अलबानिया, हंगरी आदि देशों के विषय में भी हम सुन रहे हैं। यद्यपि द्वितीय महासमर को समाप्त हुए अभी तीन बरस से ज्यादा हो चुका है फिर भी ब्रिटेन, अमेरिका आदि देशों की समाचार एजेंसियाँ और सरमायेदारों के समर्थक कुछ लेखक उनके देशों के विषय में संसार की जनता में गलतफहमी पैदा करने के लिए तरह तरह की बातों का प्रचार किया करते हैं। कोई कहता है पूर्वी यूरोप में 'डिक्टेक्टरशिप' चल रहा है। कोई कहता है वहाँ जनता की हालत पहले से खराब होती जा रही है और यदि मार्शल-सहायता उन्हें नहीं मिली तो वहाँ अकाल और भुखमरी का राज होगा। कोई कहता है पूर्वी यूरोप के राष्ट्रों में कोई स्वतन्त्र सरकारें ही नहीं हैं उन पर सोवियत रूस का निरंकुश शासन चल रहा है, मानो पूर्वी यूरोप के लोग सब एकदम नपुंसक हैं।

सत्य क्या है? पूर्वी यूरोप की दरअसल हालत क्या है? पश्चिमी यूरोप की जनता के मुकाबले में जनता की दशा अच्छी है या खराब? पूर्वी यूरोप के विषय में पूँजीवादी राष्ट्र इतनी दिलचस्पी क्यों ले रहे हैं? भारत, जिसके ऊपर से साम्राज्यशाही का पञ्जा दूर हो रहा है और संसार में अपना खोया हुआ पद फिर प्राप्त कर रहा है, इन बातों से तटस्थ नहीं रह सकता? आज संसार के जिस किसी कोने में भी जो भी महत्त्वपूर्ण घटना घटती है उसका असर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से हम भारतीयों पर भी पड़ता ही है, उसका फल हमें भोगना भी पड़ता ही है। ऐसी स्थिति में हमारा यह फर्ज हो जाता है कि संसार के दूसरे भागों में जो युगप्रवर्तक घटनायें घटती रहती हैं उन्हें समझने का प्रयत्न करें और उनके प्रति अपनी नीति बना लें। इस दृष्टि से पूर्वी यूरोप में युद्ध के अन्तिम बरसों और युद्ध के बाद गत तीन बरसों में जो घटनायें घटी हैं वे हमारे लिए भी काफी महत्त्व रखती हैं।

पूर्वी यूरोप युद्ध के पूर्व

पश्चिमी यूरोप में सामन्तवादी समाज के टूटने और उसके पूँजीवादी समाज के यूरोप में आविर्भूत होने की प्रक्रिया सन् १७८९ से प्रारम्भ हुई थी। सन् १८७१ यानी पैरिस कम्यून के समय तक सामन्तवादी, पिछड़ी और बिखरी जमींदारियों और रियासतों को संघटित कर ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, इटली आदि वर्तमान राष्ट्रों का रूप दिया जा चुका था। इसके शब्दों में १७८९ से १८७१ तक पश्चिमी यूरोप में पूँजीवादी प्रजातन्त्रात्मक क्रान्ति हो चुकी थी। उसके बाद से ये राष्ट्र साम्राज्यवाद का चोगा पहनने लग गए थे। वे संसार के दूसरे देशों पर कब्जा करने, दूसरे देशों पर हुकूमत करने के होड़ में पड़ चुके थे।

लेकिन, पूर्वी यूरोप में इस दर्मियान दशा कुछ दूसरी ही थी। वहाँ अभी सामन्तवादी व्यवस्था कायम थी, लोगों का खास पेशा खेती-बारी ही था। कोई कल-करखाने नहीं थे। कस्बों में छोटे मोटे उद्योग-व्यवसाय थे। लेकिन १९ वीं सदी के उत्तरार्द्ध के बाद धीरे धीरे पश्चिमी यूरोप के पूँजीपतियों ने इन देशों पर भी छापा मारा, उद्योग-व्यवसाय चलाने के लिए सुविधायें प्राप्त कीं, पूँजी लगाई, कारखाने खड़े किये, सस्ते दाम में कच्चा माल और श्रम पाकर भारी नफा कमाना प्रारम्भ किया। सन् १९१७ की क्रान्ति के पहले फ्रांस, जर्मनी और ब्रिटेन के सेठों की करोड़ों की पूँजी जारशाही रूस में लगी थी। वही हाल इस महासमर के समय तक पूर्वी यूरोप के राष्ट्रों का था।

जहाँ पश्चिमी यूरोप में सामन्तशाही का पूर्ण उन्मूलन सन् १७८९ से प्रारम्भ हुआ वहाँ पूर्वी यूरोप और एशिया में सन् १९०५ से सामन्तशाही टूटने लगी। लेनिन के शब्दों में "पूर्वी यूरोप और एशिया में पूँजीवादी प्रजातान्त्रिक क्रान्ति का प्रारम्भ सन् १९०५ से प्रारम्भ होता है। हमारे पूर्व में यह क्रान्ति रूस, ईरान, टर्की, चीन इन देशों में हुई क्रान्तियाँ, बालकन राष्ट्र (टर्की, ग्रीस, बलगेरिया आदि) में हुए युद्ध के रूप में अभिव्यक्त होती है। ये हमारे युग की युगप्रवर्तक घटनायें हैं। यह हर कोई समझ सकता है कि ये घटनायें उक्त राष्ट्रों में पूँजीवादी प्रजातांत्रिक और राष्ट्रीय आन्दोलनों के लिए जनता को जगा रही हैं। ये घटनायें जातियों की दृष्टि से स्वतन्त्र और एक प्रकार से राष्ट्रों के निर्माण के लिए रास्ता साफ कर रही हैं।"

सोवियट रूस के वैदेशिक मंत्री मोलोटोव।

इस प्रसंग में यह स्मरण रखने की बात है कि लेनिन ने इन बातों की ओर पूर्वी यूरोप और एशियाई देशों की प्रगतिशील शक्तियों द्वारा अख्तियार की जानेवाली नीति की ओर इशारा करते हुए कहा था। यदि दूसरे महासमर के समय यूरोप के विभिन्न देशों की समाजवादी पार्टियाँ धोखा न देतीं—युद्ध में अपने अपने यहाँ के सेठों की सहायता नहीं करतीं—तो प्रथम महासमर के समय जारशाही रूस के समान ही सम्पूर्ण यूरोप का नक्शा ही बदल जाता। लेकिन दुर्भाग्यवश ऐसा न हो सका।

प्रथम महासमर के बाद

सन् १९१७ की रूस भी मजदूर-क्रान्ति के बाद पूर्वी यूरोप के कितने ही देशों में छोटी-मोटी क्रान्तियाँ हुईं। लेकिन, कई कारणों से वे सफल नहीं हुईं। सामन्तवादी ताकतों ने साम्राज्यवादी देशों की मदद से फिर अपना प्रभुत्व जमाया।

स्मरण रखने की बात है कि प्रथम महासमर की समाप्ति अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति वुड्रो विलसन के १४ सूत्रीय सन्धि-नामे के अनुसार हुई थी। उनमें एक सूत्र था पराजित राष्ट्रों की जनता को आत्म-निर्णय का अधिकार दे दिया जायेगा। इसके अलावा चूँकि युद्ध समाप्त होते-होते सोवियत रूस में बोलशेविक सरकार स्थापित हो चुकी थी—जिससे सम्पूर्ण विश्व के विशेषकर यूरोप के पूँजीवादी देशों के लिए खतरा था—इसलिए ब्रिटेन, फ्रांस आदि देशों के राजनीतिज्ञ इस फिक्र में थे कि रूस को पश्चिम की ओर बढ़ने न देने के लिए कुछ करना चाहिए। इन बातों को ध्यान में रखकर ही आस्ट्रिया, हंगरी और रूस के कुछ पश्चिमी इलाकों को चीर-काटकर चेकोस्लोवाकिया, युगोस्लोवाकिया, पोलैण्ड आदि राष्ट्र बनाये गये थे।

इस बँटवारे से न पूर्वीय यूरोप की जटिल जातियों से इनका निपटारा हुआ और न

ब्रिटेन के वैदेशिक मंत्री श्री बेविन।

उन देशों को जनता को चैन ही नहीं मिला। कारण इनमें ज्यादातर देशों में काफी तादाद में जर्मन बसते थे। अतः ज्यों ही जर्मनी में हिटलर के हाथ ताकत आई त्यों ही उसने पूर्वी यूरोप की जटिल स्थिति से पूरा-पूरा फायदा उठाया। जर्मन अल्पसंख्यकों का नाम लेकर ही हिटलर ने पूर्वी यूरोप के राष्ट्रों को एक-एक करके अपने कब्जे में किया था। यद्यपि उसका असली मकसद पूर्वी यूरोप के धन-जन शक्ति को काबू में कर सोवियत रूस को हड़पना और फिर सारे संसार में नाजीवाद का झण्डा फहराना था।

हिटलर की निगाहें

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि हिटलर की फौजों ने अधिकृत देशों में कैसे-कैसे पाशविक अत्याचार किये, कितने नगरों और गांवों को तबाह किया! पूर्वी यूरोप की जनता के लिए फासिस्ट लुटेरों का राज्य नरक से भी बदतर राज्य था। उसमें आजादी के साथ सांस लेना तक कठिन था। साथ ही यह पूर्वी यूरोप की जनता के इतिहास में एक युगप्रवर्तक जमाना था। कारण, अत्यधिका दयनीय और कठिन परिस्थिति के उपस्थित होने के बावजूद पूर्वी यूरोप के मजदूर किसान-छात्र-बुद्धि जीवी एवं अन्यान्य प्रजातन्त्रप्रिय और प्रगतिशील लोगों ने फासिस्ट बर्बरता के द्वारा सदा के लिए सभ्यता और संस्कृति को नेस्तनाबूद करने नहीं दिया। उन्होंने अपने देश के बहादुर अपने प्रिय पिता-प्रपितामहों का स्मरण कर, विश्व-कल्याण का स्मरण कर इतिहास की एक विषम अवस्था में अपने को संगठित किया, शस्त्र सज्ज किया और जान की बाजी लगाकर हिटलरी लुटेरों के विरुद्ध लड़े। यदि पश्चिम में दूसरा मोर्चा खोलने में विलम्ब न किया होता तो उनका काम सहल होता, लेकिन ऐसा न हुआ क्योंकि सख्य राष्ट्र होते हुए ब्रिटेन का कुछ दूसरा ही इरादा था।

सोवियत से रूस की मदद

अन्त में सोवियत रूस की लाल सेना की, सोवियत छापेमारों की मदद से ही पूर्वी यूरोप के एक के बाद दूसरे राष्ट्रों को नाजीवाद के चंगुल से मुक्त किया जा सका। कितनी अवर्णनीय थी पूर्वी यूरोप के बहादुर जनता की खुशी जब कि सोवियत रूस के सैनिक उनकी मदद के लिए पहुँच गये थे! यह चेकोस्लोवाकिया के राष्ट्रपति डाक्टर वेनिस के निम्नलिखित शब्दों से हम समझ सकते हैं। उन्होंने कहा :—

"आज हमारे देश में प्रवेश करके लाल सेना दुश्मन को एक भारी पराजय दे रही है। लाल सेना हमारे देश की जनता के लिए स्वाधीनता तथा खुशी का और सुनिश्चित भविष्य का सन्देश लेकर आई है। रूसी सेनाओं के साथ हम पुराने मित्रों की तरह मिले। अब हमारे और उनके बीच में एक भी समस्या नहीं रह गई है।"

युगोस्लोविया, बलगेरिया, पोलेण्ड, रूमानिया इनमें से प्रत्येक देश के विचारशील लोगों की सोवियत रूस के प्रति ऐसी ही भावना थी। जिस अवर्णनीय मुसीबत के समय सोवियत रूस से इन देशों को हर तरह की मदद मिली, उससे सोवियत रूस के प्रति उनकी भावनायें दूसरी हो ही नहीं सकती थीं।

सन् १९४५ के बाद नई परिस्थिति

गुलाम देशों की जनता को सबसे बड़ी कमजोरी संगठन का अभाव होता है। लेकिन जब एक बार वह संगठित हो जाती है, जब एक बार हथियार उठाने का मौका उसे प्राप्त होता है, जब एक बार उसे अपने बाहुबल का परिचय हो जाता है तो उसके बाद उसके दुश्मन कमजोर पड़ जाते हैं। उसकी जीत निश्चित हो जाती है। पूर्वी यूरोप द्वितीय महासागर के पहले तक पश्चिमी यूरोप के ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी आदि देशों के मुकाबले में अत्यधिक कमजोर थे। लेकिन, इन देशों के हिटलरी जल्लादों के पंजे में जकड़ जाने के बाद, उनके हाथों द्वारा सदियों का किया-कराया तहस-नहस होते देख, माँ-बहनों को बेइज्जत और अपमान होते देख जनता में वह बल और पौरुष पैदा हुआ जैसे पहले कभी नहीं देखा गया था। हिटलर के किराये की फौजों से लड़ते-लड़ते जनता के, उनके राजनीतिक दलों के बीच के मतभेद भी काफी हद तक दूर हुए। सोवियत रूस से सहायता प्राप्त होने से उनकी हिम्मत और खुशी और भी बढ़ी।

• सम्पूर्ण पूर्वी यूरोप में इस प्रकार जनता के संगठित होने, जाग्रत हो जाने, जीवन मरण के संग्राम में बचकर उनमें अटूट मेल और सौहार्द्र की भावना पैदा होने के बाद अब संसार में किसी भी शक्ति के लिए यह संभव न था कि वह उनके गले पर पुरानी सामन्तवादी प्रथा बाँध दें, उन्हें फिर पाश्चात्य देशों के सरमायेदारों के शोषण की चक्की में पिसने दिया जाय। उन पर पहले कि तरह के जुल्म और अत्याचार होते जायँ।

अतः युद्ध समात होने के बाद पूर्वी यूरोप के प्रत्येक देश की जनता, राजनीतिज्ञ और चिन्तक दृढ़ संकल्प कर चुके थे कि अब पुराने दिन आने न देंगे। अब नई नींव, नई भित्ति पर हम अपने देश का निर्माण करेंगे, जिसमें मनुष्य का मनुष्य द्वारा शोषण, मनुष्य का मनुष्य द्वारा उत्पीड़न न होगा, जिसमें सभी समान होंगे, सभी आपस में भ्रातृभाव और मित्रभाव से मिल-जुलकर रहेंगे। जनता की भावनाओं से, उनके अभिलाषाओं से पूरी तरह परिचित पूर्वी यूरोप के लोकप्रिय नेताओं ने इन्हीं आदर्शों को आगे रखकर अपने अपने देश के पुनर्निर्माण कार्य में हाथ लगाया।

सन् १९४५ के फरवरी मास में, जब कि जर्मनी में हिटलरी सेना पर अन्तिम वार हो रहे थे, डाक्टर वेनिस ने चेकोस्लोवाकिया की जनता के सामने उपस्थित समस्यायें और उन्हें हल करने के तरीकों की चर्चा करते हुए एक भाषण दिया। उस भाषण के कुछ अंश हम यहाँ देते हैं जिससे हमें यह बात विदित हो जाती है कि लड़ाई के पहले के अपेक्षा कितना क्रांतिकारी परिवर्तन लोगों के दृष्टिकोण में हो चुका था।

युद्ध काल की घटनाओं की चर्चा करते के बाद डाक्टर वेनिस ने कहा :

"आज उस भयङ्कर महासमर की इति हो रही है जिससे हमारे देश के बर्बाद होने, चेकों और स्लोवाकों को एक दूसरे से पृथक् किये जाने, और हमारे राष्ट्रीय जीवन को ही—खतम किये जाने का खतरा पैदा हो गया था। दुश्मनों की तमाम शर्मनाक योजनायें असफल। इस युद्ध से फिर हम विजयी होकर, संगठित होकर और स्वतन्त्र होकर निकले। अब हमें अपने देश को राजनीतिक और सामाजिक दृष्टि से नये साधनों और किसी माने में नई संस्थाओं के द्वारा पुनर्संगठित करना चाहिये। आप सभी लोग नई जिन्दगी पर विश्वास करें, उसके बनाने, उसके लिए संग्राम करने, ईमानदारी के साथ उसे प्राप्त करने के लिए कमर कसें।...

हमारी सरकार प्रजातन्त्रवादी सरकार होगी, यानी हर नागरिक को हर तरह की स्वतन्त्रता की गारण्टी रहेगी, यह जनवादी प्रजातन्त्रात्मक सरकार होगी, नये ढंग का प्रजातन्त्र होगा जिसकी कि परख हो चुकी है। वह हम आपकी बनाई हुई सरकार होगी, वह जनता की इच्छानुकूल और आवश्यकतानुकूल बनाई जायगी। कम्युनिस्टों और बोलशेविकों को आतंक की सरकार कहकर जर्मन लोग तरह तरह के आक्षेप करेंगे, लेकिन अब उनकी बातों पर रत्ती भर ध्यान मत दीजिये।

"हमारी सरकार स्वतन्त्र सरकार होगी, उसमें चेकोस्लोवाकिया की छाप उस पर रहेगी। सोवियत रूस के साथ हमने समझौता किया है उसे हम बहुत ही महत्त्वपूर्ण समझते हैं और उसे अक्षर अक्षर पालन करने का हम प्रयत्न करते रहेंगे। सोवियत रूस की सिर्फ यही इच्छा है कि चेकोस्लोवाकिया उसका विश्वसनीय मित्र और साथी बना रहे, लेकिन साथ सोवियत रूस चाहता है कि हम स्वतन्त्र, मजबूत, हिम्मतवर और उन्नतिशील हों। यही अपने लिये हम भी चाहते हैं।"

डाक्टर वेनिस को कोई शख्स कम्यूनिस्ट नहीं कह सकता। वे एक लिबरर या उदारपन्थी देशप्रेमी थे। हमने उनके ये शब्द 'सेन्ट्रल यूरोपियन ओवरस्टरवर के फरवरी २३, १९४५ के अंक से लिये हैं। यह पत्र भी कम्यूनिस्ट पत्र नहीं है। तो क्या इन बातों से हम यह समझ नहीं सकते कि पाश्चात्य देशों से लेखकों और समाचार एजेन्सियों का यह आक्षेप कि संपूर्ण पूर्वी यूरोप पर रूसी सरकार का नियंत्रण हो गया, सोलहो आने झूठ और कपोलकल्पित है?

पूर्वी यूरोप में युद्धोत्तर काल में जनता की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जिन्दगी में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने के लिए कौन से कदम उठाए गए, इस पर हम अगले लेख में विचार करेंगे।

आज ही अवश्य मँगायें
कोकशास्त्र (सचित्र) १) पो० ।≈)
हिन्दी इंगलिशटीचर १।।) पो० ।।)
पुस्तक व पहेली का बड़ा सूचीपत्र मुफ्त "प्रभात" ट्रेनिंग कम्पनी, (४१) मौरेना—जी० आई० पी० रेलवे।

ये सब
क्यों दौड़ते हैं
हमाम साबुन से अपने दैनि
स्नान के लिये
HAMAM
हमाम साबुन
दी टाटा आयल मिल्स कं० लि

मुद्रास्फीति-विरोधी नीति क्यों ?

या भारत-सरकार देश को आर्थिक संकट से बचाने के लिए तत्पर है ?

लेखक, श्री राधानाथ चतुर्वेदी

किसी राष्ट्र की राजनीतिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिये यह अनिवार्य तथा आवश्यक है कि वहाँ की आर्थिक तथा व्यावसायिक स्थिति और भी अधिक व्यापक, लोकप्रिय तथा दृढ़ हो। भारत-सरकार मुद्रास्फीति की सफलता के लिए क्या कर रही है और उसके विपरीति किस प्रकार की प्रतिक्रियायें हो रही हैं, इसी आधार पर यह लेख लिखा गया है। लेखक ने भारत-सरकार की मुद्रास्फीति-संबंधी नीति की कटु आलोचना की है और कुछ उपाय भी सुझाये हैं। लेख सुंदर तथा गम्भीरतापूर्वक विचारणीय है।

मुद्रास्फीति-नाश के चिर-प्रतीक्षित ों की भारत-सरकार ने घोषणा कर है। मुद्रास्फीति को रोकने के लिए तीन मासों से लगातार परामर्श किये ते थे। पहले अर्थशास्त्रियों का सम्मे- हुआ। इसके बाद श्रमिक-प्रतिनिधियों, पतियों और प्रांतीय मंत्रियों से भी विमर्श किया गया। इनमें से प्रत्येक ने अपने क्षेत्र तथा दृष्टिकोण से फीति-निरोध के सुझाव-प्रस्ताव रखे। सरकार इन पर विचार कर ही रही हैदराबाद का प्रश्न शीर्षतम स्थिति गया। इस प्रश्न को सैनिक-कार्र- सुलझाने का निश्चय कर लिए द मुद्रास्फीति रोकने का प्रश्न ी की समस्याओं में डाल दिया हैदराबाद अभियान की सफल के बाद मुद्रास्फीति के प्रश्न की सरकार का ध्यान पुनः आकर्षित गत ४ अक्टूबर की संध्या को सरकार के अर्थ-सचिवालय ने एक प्रकाशित कर मुद्रास्फीति के संकट के लिए अपने भावी कदमों की कर दी। अर्थ-सचिवालय ने जो किये हैं उनकी रूपरेखा इस —

) सरकारी व्यय में कमी, और

) पूँजीपतियों के लाभांश पर

न निराशापूर्ण

बार-पत्र के उन पाठकों ने जिन्होंने तिनिधि सम्मेलन तथा अर्थ- सम्मेलन के सुझाव इस सम्बन्ध में पढ़े थे उनको सरकारी नवीन घोषणा से विस्मयजनक आघात लगा है। लोगों ने सरकार से आशा की थी कि वह मुद्रावाढ़ के कारण जो संकट आ गया है उसे नष्ट करने के लिये ठोस कदम उठायेगी, किन्तु जो प्रस्ताव भारत-सरकार ने घोषित किये हैं उन्हें पढ़कर अत्यन्त निराशा होती है। इन प्रस्तावों को पढ़ने से ऐसा लगता है कि सरकार ने केवल उद्योगपति सम्मेलन और प्रांतीय मंत्रियों के सुझावों को ही स्वीकार किया है। अन्य प्रतिनिधियों के सुझाओं को ज्यों का त्यों अलमारी में ही बन्द कर दिया गया है। भारत सरकार की नीति का एक स्थूल विश्लेषण ही हमारे इस मत के समर्थन के लिये प्रर्याप्त होगा।

सरकारी व्यय में कमी

सरकारी व्यय में कमी करने का निश्चय अत्यन्त शुभ है। इधर १५ अगस्त १९४७ के बाद से जब से स्वतन्त्र राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हुई तब से सरकारी खर्च बहुत अधिक बढ़ गए हैं। इन खर्चों की अनेक बार आलोचना भी हो चुकी है। जन-रंजन के दृष्टिकोण से तो सरकारी व्यय में कमी करना आवश्यक ही था, किंतु व्यावहारिक और सैद्धान्तिक दृष्टि से भी इसकी अतीव आवश्यकता थी। लेकिन इस सम्बन्ध में भारत-सरकार ने जो कदम उठाये हैं वह उत्साहप्रद नहीं है।

अनुत्साहप्रद नीति

सरकारी व्यय में ३ प्रकार से कमी करने का निश्चय किया गया है। राजस्व की वसूली में जो अतिरिक्त शासन व्यय होता है उस अन्तर को पूरा किया जाय और इस बात की चेष्टा की जाय कि शासन-तन्त्र पर होनेवाला व्यय राजस्व की आय से अधिक न हो। आनुमानिक आय-व्यय पत्रकों को बनाते समय इस बात का ख्याल रखा जाय कि खर्च कम से कम हो और बचत दिखलाने की कोशिश की जाय। यह बात प्रान्तीय और केन्द्रीय आय-व्यय पत्रकों पर समान रूप से लागू होती है। दूसरे सरकार द्वारा ऐसी विकास-योजनाओं के खर्चों को रोक दिया जाय जिनसे तात्कालिक उत्पादनवृद्धि की संभावना न हो। तीसरे प्रांतीय सरकारों को चेतावनी दी गई है कि उन्हें (अ) जमींदारी प्रथा के नाश और (ब) मद्य-निषेधादि के लिए कोई भी आर्थिक सहायता केन्द्र से नहीं दी जायगी। प्रान्तीय सरकारों को यह भी सलाह दी गई है कि वह अपने अपने प्रांतों में (यदि न लगा हो तो) कृषि आय-कर लगा दें।

चौथा कदम अचल-सम्पत्ति पर कर लगाने के सम्बन्ध में है जिसके लिये शीघ्रातिशीघ्र कानून स्वीकृत कराने की चेष्टा की जायगी।

खेद है कि भारत-सरकार के प्रथम तीनों कदम अत्यन्त अनुत्साहपूर्ण हैं और इनसे अर्थसंकट-ग्रस्त मध्यवर्गीय और श्रमिक समाज को कोई सहायता नहीं मिलती। सरकारी-व्यय में कमी का अर्थ या तो सरकारी कर्मचारियों की छटनी या उनके वेतन में कमी होता है। यह सरकारी कर्मचारी कौन हैं ? छटनी किनकी होगी ? वेतन किनका घटेगा ? स्पष्ट है कि सरकारी कर्मचारियों का अधिकांश कर्मचारी-वर्ग निम्न मध्य श्रेणी की जनता का है। इसे हम बाबू-वर्ग कह सकते हैं। यदि सच पूछा जाय यही वर्ग सर्वाधिक अर्थसंकट ग्रस्त है और इसे पहले सहायता मिलनी चाहिये, किन्तु कदम इसके विपरीति ही उठाये जा रहे हैं। खर्च में कमी इस प्रकार की जायगी कि जो कर्मचारी अस्थायी तौर पर नियुक्त हैं उनको निकाला जायगा और जो स्थायी हैं यदि उनके मूल वेतन में कमी न की गई तो कम से कम वह भत्ते तो मिलने बन्द ही हो जायेंगे जो अब तक मिलते रहे हैं। इसका फल क्या होगा ? हड़तालें; उपद्रव और सशंकित कम्यूनिस्ट संकट।

इसके बाद सरकार द्वारा स्वीकृत विकास योजनाओं को लीजिये। इन योजनाओं को पूरी लागू करने के बाद भी हमारे यहाँ बेकारी कुछ न कुछ अंश में अवश्य रहती, किन्तु अधिकांश बेकाम व्यक्तियों की उन योजनाओं के अन्तर्गत काम दिया जाता। पाकिस्तान से आये हुये शरणार्थी जिन्हें उपयुक्त काम नहीं मिल पाया है, इन योजनाओं में खपा दिए जाते और शनैः शनैः वह समाज की आर्थिक रूप-रेखा में घुलमिल जाते। विकास योजनाओं की प्रगति को धीमी करने का अर्थ होगा बेकार शरणार्थियों के पुर्नवास की समस्या को टालना। इस समस्या को टालने के फल कितने समाज-विरोधी सिद्ध हो सकते हैं इसकी कल्पना इसी बात से की जा सकती है कि "दिल्ली

शेष पृष्ठ १४ पर देखिए

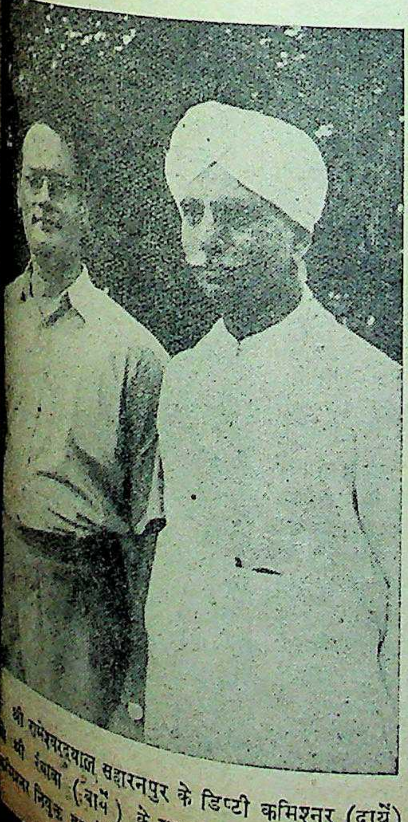

श्री रामेश्वरदयाल, सहारनपुर के डिप्टी कमिश्नर (दायें) श्री रंधावा (बायें) के स्थान पर दिल्ली के डिप्टी मिश्नर नियुक्त हुए हैं।

राजकुमारी बाईजी लाल, महाराज जोधपुर की बहिन चाइल्ड वेलफेयर और मैटरनिटी होम (मातृत्व भवन) का उद्घाटन करती दिखाई देती हैं।

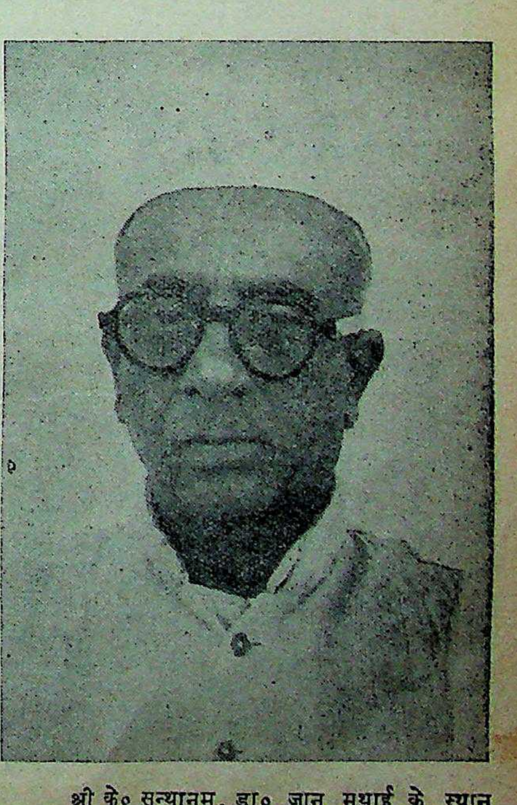

श्री के० सन्थानम्, डा० जान मथाई के स्थान पर भारत सरकार के रेलवे मंत्री नियुक्त हुए हैं।

क्यों दौड़ते हैं !
न से अपने दैनि
न के लिये
HAMAM
MĀM
म साबुन
यल मिल्स कं० लि

हमारी शिक्षा और पुस्तकालय

जनता को शिक्षित बनाने के लिये क्या करना चाहिए ?

लेखक, श्री संकठाप्रसादसिंह बी० ए०, साहित्यरत्न

> किसी भी राष्ट्र का सांस्कृतिक तथा राजनैतिक स्तर ऊँचा करने के लिये यह आवश्यक है कि पुस्तकालयों को अधिक से अधिक जन-साधारण के लिये उपयोगी बनाया जाये। जनता के साथ साथ सरकार को भी इस दिशा में कर्तव्य-परायण होना अनिवार्य है। अनुभवी लेखक ने इस लेख में इसी समस्या पर विचार विनिमय किया है, उपयोगी तथा विचारणीय है।

प्रायः प्रत्येक सभ्य, सुसंस्कृत एवं सम्पन्न देश अपने यहां के नागरिकों की शिक्षा का समुचित प्रयत्न करता है क्योंकि इन्हीं नागरिकों के ऊपर राष्ट्र का विशाल उत्तरदायित्व निर्भर है। यह निर्विवाद सत्य है कि यदि नागरिकों को उचित रूप से शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक एवं राजनीतिक शिक्षा न दी गई रहेगी तो राष्ट्र का विशाल प्रासाद शीघ्र ही धराशायी हो जायगा। अतएव प्रत्येक राष्ट्र के बुद्धिमान् कर्णधार शिक्षा के प्रत्येक अंगों—हर पहलु ओपर अपनी दृष्टि दोड़ाते और जनता की आवश्यकताओं की पूर्ति विभिन्न उपायों द्वारा करते हैं। शिक्षा के महत्त्व को समझ लेने के बाद ही वे अपने अपने देश में प्राइमरी, सेकण्डरी, हाईस्कूल, कालेज तथा यूनिवर्सिटियां आदि का जाल-सा बिछा देते हैं। नवयुवकों को शिक्षित करने के अतिरिक्त वे प्रौढ़ों की शिक्षा पर भी यथेष्ट ध्यान देते हुए प्रौढ़ पाठशालाएँ स्थापित करते हैं। शिक्षा के महत्त्व एवं उपयोगिता को ध्यान में रखकर ही एक पाश्चात्य विद्वान् ने कहा था कि 'शिक्षा पालने से आरम्भ होता है और कब्र पर समाप्त होती है'। सचमुच, शिक्षा पालने से भी पूर्व—माता के गर्भ से ही—प्रारंभ हो जाती है और इस शिक्षा का भावी मानसिक विकास पर यथेष्ट प्रभाव पड़ता है।

हमारे स्कूल, कालेज और विश्वविद्यालय हमें इतनी शिक्षा दे देते हैं कि हम स्वतः आगे पढ़ने में समर्थ हो जाते हैं। ये संस्थाएँ हममें केवल पढ़ने की भूख जागृत कर देती हैं, किन्तु उस क्षुधा-तृप्ति का कोई साधन हमें नहीं देतीं। वे हममें इतना ज्ञान अथवा आकांक्षा पैदा कर देती हैं कि हम आगे कला एवं विज्ञान में नई नई खोजें करने का प्रयत्न करें, पर खेद है कि उनके लिए वे हमें उचित साधन एवं सामग्री नहीं देतीं। इसके फलस्वरूप हमारे आज के डिग्रीधारी स्नातक अर्ध-शिक्षित रह जाते हैं और उचित सामग्री के अभाव में यह अपूर्ण शिक्षा भी कुछ कालोपरान्त अशिक्षिता एवं अज्ञानता में परिवर्तित हो जाती है। वास्तव में ये तथाकथित शिक्षित नवयुवक—जो वास्तव में अर्ध-शिक्षित ही होते हैं—समाज के लिए खतरनाक हैं। ऐसे नवयुवकों से स्वस्थ एवं उन्नत समाज के सृजन की संभावना नहीं है। प्रश्न उठता है कि स्कूलों एवं कालेजों में प्राप्त विद्या को पूर्ण बनाने का साधन क्या है? इसका उत्तर यह है कि स्कूलों में प्राप्त विद्या की वृद्धि के लिए पुस्तकों अथवा पुस्तकालयों का सहयोग वांछनीय है।

पुस्तकालय ही वह संस्था है जो जनता की प्रत्येक प्रकार की ज्ञान-पिपासा को शान्ति प्रदान कर सकता है। इस बात को दृष्टि में रखकर अँगरेजी के प्रसिद्ध विद्वान् लेखक कारलाइल ने कहा था, 'पुस्तकों का समूह ही वर्तमान युग का सच्चा विश्वविद्यालय है।' पर कारलाइल का तात्पर्य किसी भी प्रकार की और किसी भी ढंग से एकत्रित की गई पुस्तकों के समूह से नहीं था। क्योंकि बिना किसी ढंग या सिद्धान्त के एकत्रित की गई पुस्तकें चाहे जो भी नाम पा जायँ पर 'पुस्तकालय' कहलाने की अधिकारिणी नहीं हैं। पुस्तकों के समूह 'पुस्तकालय' तभी कहला सकते हैं जब उनका चुनाव जनता की आवश्यकता एवं रुचि को ध्यान में रखकर किया जाय और उनका वर्गीकरण किसी वैज्ञानिक ढंग से किया जाय। पुस्तकों को पूर्णतया उपयोगी एवं शीघ्रता से प्राप्य बनाने के लिए आवश्यक है कि वे किसी 'स्वीकृत प्रणाली' के आधार पर 'सूची-बद्ध' की गई हों।

सूची-करण की उपादेयता

पुस्तकालयों में 'कैटलाग' को 'समय-बचानेवाला-यंत्र' कहा जाता है। कैटलाग हमें बतलाता है कि (१) क्या अमुक नाम की पुस्तक पुस्तकालय में है? अथवा (२) क्या अमुक लेखक की अमुक पुस्तक या (३) अमुक लेखक की कौन कौन-सी पुस्तकें पुस्तकालय में हैं? (४) अमुक विषय पर कितनी और कौन कौन सी पुस्तकें हैं। इसके अतिरिक्त कैटलाग से हमें ज्ञात होता है कि पुस्तकालय की कौन सी पुस्तक सचित्र है या किसी लेखक की किस आत्म-कथा में उसका चित्र है या अमुक पुस्तक का कौन सा संस्करण पुस्तकालय में विद्यमान है।

वर्गीकरण की उपादेयता

वर्गीकरण से पुस्तकें विषयानुसार एकत्रित की जाती हैं। संसार का ज्ञान भिन्न भिन्न भागों में बाँट दिया जाता है और उन्हीं भागों में पुस्तकें विभाजित करके रखी जाती हैं। बिना वर्गीकरण के एक ही विषय की पुस्तकें अलग अलग जा पड़ेंगी और तब अध्ययनकर्ता को अपार असुविधा होगी। अतएव 'पुस्तकालय' की परिभाषा होगी 'पुस्तकों का समूह जो प्रयोगकर्ता की आवश्यकता एवं रुचि को ध्यान में रखकर एकत्रित किया गया हो, और जिनका वर्गीकरण एवं सूची-करण वैज्ञानिक ढंग से किया गया हो।' इस परिभाषा के अनुसार एक वकील, डाक्टर, इंजीनियर की उसकी आवश्यक पुस्तकों का छोटा सा समूह 'पुस्तकालय' कहला सकता है; किन्तु बिना किसी सिद्धान्त के ऊट पटांग ढंग से एक लाख पुस्तकों के समूह को भी 'पुस्तकालय' संज्ञा से सुशोभित नहीं कर सकते।

जब हम विश्व के पुस्तकालयों के इतिहास से भारतीय पुस्तकालयों के इतिहास की तुलना करते हैं तो लज्जा से सिर नीचा हो जाता है। हमारे यहां के स्कूलों, कालेजों और यूनीवर्सिटियों के पुस्तकालयों की तथा इनके अध्यक्षों एवं इनमें काम करनेवाले सहायकों की बड़ी दयनीय अवस्था है। हमारे 'जन-पुस्तकालयों' का तो कहना ही क्या है। प्रायः देखा जाता है कि हमारी शिक्षा-संस्थाओं की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए येनकेन प्रकारेण रुपया मिल जाता है; किन्तु जब पुस्तकों के क्रय का प्रश्न आता है तो रुपयों की कमी की दुहाई दी जाती है। ये लोग इतना भी सोचने का कष्ट नहीं करते कि यदि पुस्तकालयों को सम्पन्न एवं आकर्षक बनाने में अधिक धन व्यय किया जाय और दूसरे अंगों में काट-छांटकर दी जाय तो लाभ की अपेक्षाकृत अधिक संभावना है। पुस्तकाध्यक्षों का तो कहना ही क्या है। प्रायः स्कूलों में पुस्तकालय होते ही नहीं और वे यदि नाम-मात्र को हैं भी तो वे स्कूल के ड्रिल मास्टर—जो प्रायः फौज का रिटायर्ड हवलदार होते हैं—की अध्यक्षता में रखे जाते हैं, ऐसे ड्रिल मास्टर पुस्तकों की दुनिया से इतनी दूर रहते हैं जि गधे के सिर से सींग। ऐसे ड्रिल मास् महोदय लड़कों को पुस्तकों के पास कने तक नहीं देते। कभी कभी स् के पुस्तकालय स्कूल के ही किसी अ को अध्यक्षता में रख दिये जाते हैं। पक बेचारा स्कूल के पढ़ाई के कार्य से दबा रहता है अतएव अपने ऊप गए कार्य को क्लास मानीटर के देता है। फल यह होता है कि या तो लड़कों को मिलती ही नहीं, और मिलती भी हैं तो बिना पढ़ी हुई ही हो जाती हैं। क्योंकि इन बच्चों में के प्रति प्रेम उत्पन्न ही नहीं कि है। स्कूल का मास्टर कम वेतन कारण अपना पढ़ाने का कार्य जिसके लिए वह वेतन पाता है किसी प्रकार पूरा कर पाता है तो से लादे हुए कार्य को—जिसके लि कोई पारिश्रमिक भी नहीं पाता मनोयोगपूर्वक कैसे कर सकता है।

शेष पृष्ठ १८ पर

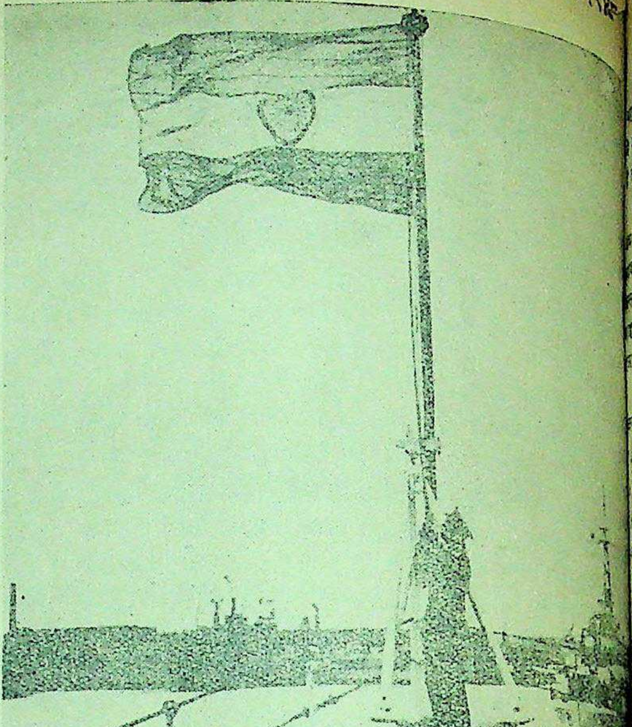

श्री वी० के० मेनन ने ब्रिटिश जलसेना विभाग से "दिल्ली" जंगी जहाज लेकर सरकार को दिया था। उस पर चैथम में तिरंगा झंडा लहराया गया।

श्री आर० के० कपूर वाशिंगटन भारतीय राजदूतावास में मंत्री बनाये गये हैं।

महाराज मयूरध्वजसिंह जी,
शासक, सौराष्ट्र के उपराजप्रमुख

प्रतिहिंसा

लेखक श्री, श्रीराम शर्मा "राम"

मनुष्य कभी कभी परिस्थितियों के अनुसार भावुकतावश हिंसक बन जाता है। इस प्रकार की हिंसा मानव के हृदय में प्रतिहिंसा के रूप में आती है, यदि उस पर गम्भीरतापूर्ण विचार किया जावे तो बड़ी ग्लानि होती है। इन्हीं भावनाओं का सुन्दर चित्र इस कहानी में अंकित किया गया है। कहानी मार्मिक, कारुणिक और पठनीय है।

निकलकर आये हों। जब उन्होंने पूछा, बुलाया, तो बस, आकर उनसे नमस्ते की एक दो मिनट बैठे और चल दिये।

"हाँ, समझ नहीं पड़ता कि कैसा है यह अजय...मेरा लड़का।"

"हाँ यह तो ठीक है, अजय सरल और सच्चरित्र है।"

"पर भाई मेरा तो जमींदारी का काम है जिसके हजार दोस्त, हजार दुश्मन। यहाँ तो बगुले की तरह रंग बदलना पड़ता है। तुम चाहे कितने ही संन्यासी और धर्मात्मा क्यों न बनो, पर जिनलोगों से रोज का काम पड़ता है उनके साथ बैठकर शराब पीनी पड़ती है और माला फेरनी भी। कलक्टर को जब तीन बार दावत दी, तब कहीं जाकर रायबहादुरी की डिग्री मिली। ऐसे भी तो हैं, जिन्हें जन्म हो गया उसका दरवाजा खटखटाते हुए।"

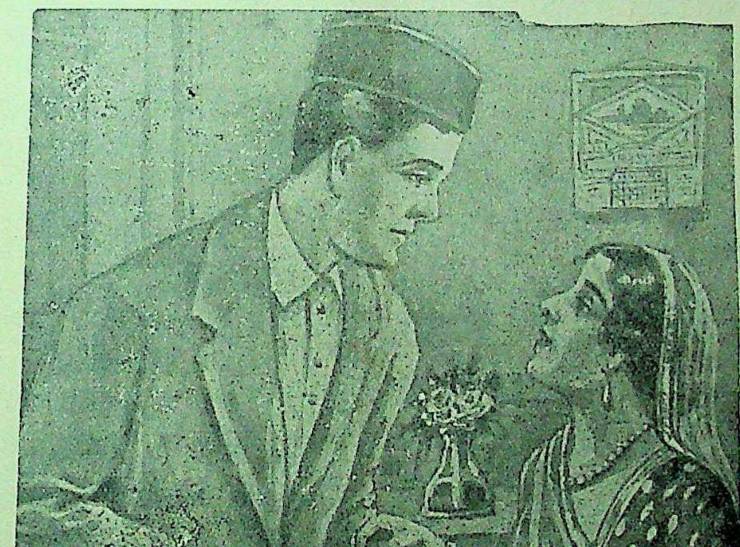

"हाँ, हाँ मैं जानती हूँ, मैं तुम्हें पहचानती हूँ, देव! तुम हिंसक नहीं।" और न जाने कितने गहरे मन के साथ अपने पति के अश्रुपूर्ण मुँह को अपनी छाती में छुपा लेने के लिए कान्ता ने अपने हाथों को आगे बढ़ा दिया।

परन्तु कैसी कठिनाई कि अजय इसके विपरीत। वह वैभव पाकर भी जैसे दीन और अपंग। वह तो सोचता कि दुनिया को देखे और उसका-सा आदमी बने।' कुछ उसके पास है तो दुनिया को दे।... हाँ वैरागी नहीं है... जीवन से विरक्त भी नहीं। चाहे उसमें भी है, जीवन से सान्निध्य।

और अब आ जायगी कान्ता, उसकी संगिनी और अर्द्धाङ्गिनी बनकर। वह जाने किस भय से, कितनी आतुरता से अपने मन में सोचता, हाय! ऐसे तो दोनों ही विपरीत....दोनों ही दूर दूर!....शिक्षित और सुबोध कान्ता रूप की परी सी...

निश्चय ही अजय सोचता मैं उसके लिए उपादेय नहीं हूँ। सार्थक भी नहीं। वह इन्जीनियर की लड़की, वह रूपगर्विता, भला क्यों न जीवन का सुहाग चाहेगी, ममता और प्रेम...!

अपनी इस अवस्था पर आते ही अजय कहता, हाय! सभी कुछ नष्ट होगा। मेरा स्वप्न, जीवन का अवसान...

उसने जाने कितनी बार देश के शोषण की कहानियाँ पढ़ीं। दुर्दांत पूँजीवाद और साम्राज्यवाद किस प्रकार देश को चूस रहा है, यह समस्याएँ उसके सामने आईं और आँखों में घुसकर बैठ गईं। वे कहानियाँ उसके हृदय पर जम गईं। प्रताड़ित कंकाल और खंडहर बना हुआ है, उसका देश।

संकुचित और हीन हिन्दू-समाज। वह देखता कि देश के सूखे और ऊजड़ आँगन में स्वार्थ और स्वेच्छा का नित्य ही नग्न तांडव होता है...मानव हू-हू और ही-ही करके हंसता हुआ दीखता है.... अपने ही स्वार्थ में चूर। भेड़िया सदृश यह मानव। वह कहता कहने को नारी मा है, देवी! समाज की भक्ति केन्द्र! पर यह कैसा उपहास है कैसी विडम्बना कि उसी नारी को वस्त्र नहीं, उसके पेट के बच्चों के लिये दूध नहीं। उसकी रक्षा नहीं, उसका स्त्रीत्व कभी भी सुरक्षित नहीं। वह मानो खंड खंड और चूर चूर...हाँ, लोग कहते हैं कि मैं विवाह करूँ। आखिर क्यों? वासना-पूर्ति के लिए? वह कहता...हाँ, यही व्यापार है। यहीं है, पुरुष और नारी का योग!'

लेकिन अजय को साथी चाहिए था जिससे कुछ कहे, उसकी सुने। उसमें जितनी व्यथा और पीड़ा थी, उसे वह स्वतः ही कब तक लिए रहता। वह विकृत हो जाता। इसी से उसका विवाह हो गया। कान्ता आ गई और उसने अपने पति की आवश्यकताओं को समझने का भार अपने ऊपर ले लिया। वह लाज-भरी, वह रूप की परी, जब उस नये भवन में आई, तो उसके साथ वह भी मुखरित हो उठा।

किन्तु उस सुहाग की रात में अजय और कान्ता...पति और पत्नी इतने समीप होकर भी दूर दूर थे। वे जाने कब कब की रुकी भावना को लेकर भी मौन बने थे। जैसे अज्ञात। उसी रात में अवसर पा कान्ता के मादक और सोये हुए नेत्रों को देख, अजय ने एकाएक कहा...कान्ता देवी, लोग कहते हैं कि मैं कुछ नहीं जानता...कुछ भी नहीं समझता। पर भला मैं क्या नहीं जानता। मैं भी आदमी हूँ। पिता जी की जो इच्छा है, उसे समझता हूँ। पर मेरा तो कहना है कि ये गिने-चुने अमीर, ये जमींदार और साहूकार, कहने को तो ईश्वर मानते हैं, मन्दिर और मसजिदों में जाते हैं...ये सब सभ्य और शिक्षित कहे जाते हैं। लेकिन देश के यही हन्ता है। तुमने गाँव नहीं देखा कान्ता। अब तक शहर में रही हो। पर मैं देख चुका हूँ। तुम सरीखी सुन्दर, मनोरम उन नारियों को कि जिन्हें लाज ढँकने के लिए वस्त्र नहीं...न पेट भरने के लिए अन्न। वे परतंत्र...वे पराजित। हाँ, वे पराजित मानव हमने ही गुलाम बनाये हैं। और सब कहते हैं कि वे जंगली हैं...वे असभ्य। कहने को देश गुलाम है, दीन है, पराजित। पर अनुभव कौन करता है। इन शहरों में, उन ऊँची हवेलियों में, इस सोने-चाँदी भरे विश्व में भला कौन अनुभव करता है। कोई नहीं। यही तो स्वेच्छा का नग्न तांडव है और रक्त-शोषण का खुला बाजार।...हाँ, गुलामी तो गाँववाले देखते हैं और मजदूर।

अपनी उस भावना में बहता हुआ अजय कह रहा था, कान्ता सुन रही थी, ऐसी अवस्था में मुझे कुछ नहीं सूझता कान्ता देवी! समर्पण की भावना भी नहीं जानता। मैं विसर्जन चाहता हूँ, मौत नहीं। तुम भी मुझे यही दो। मैं इस जमींदारी को लुटा दूँगा। यह

जिनके पेट का टुकड़ा है, उन्हीं को दे दूँगा।

कान्ता थक रही थी। प्रातः की ठंडी हवा का झोंका खाकर नींद से ऊब चली थी।

अजय ने कहा--अच्छा सो जायें अब। कहते हुए वह खड़ा हो गया।

कान्ता ने बरबस ही, उसकी ओर देखकर पूछा...और आप!

'हाँ, मैं भी सो जाऊँगा–उस काऊच पर।'

दिन निकल आया। सूरज भी चढ़ गया। पर न अजय आया, न बहू। माँ नें चाहा कि दोनों को जाकर जगा दे। पर सोचा, सुहाग की रात है, जाने कब सोये हों, कब तक जगे हों....

उसी समय नौकरानी ने बताया कि...छोटे बाबू तो काऊच पर सो रहे हैं। बहू पलँग पर, एक ओर पड़ी है, सिकुड़ी-सी...

माँ को शंका हुई कहीं रात भर काऊच पर तो नहीं सोया लड़का! उसने आतुर मन से कहा—अरे, जाने कैसा है यह अजय...मेरा...

जब कान्ता जागकर आई तो माँ ने उसे मर्मभरी दृष्टि से देखा। जैसे कुछ पाना चाहा। किन्तु उस अलसाई और सकुचाई कान्ता में उसने कोई भी नवीन भाव नहीं पाया। लेकिन माँ ने सोचा, जरूर अजय काऊच पर पड़ा है....बहू से दूर। उसी से उसने अपना माथा पकड़ लिया। साँस भरी और बड़ी वेदनामयी दृष्टि से बहू को लक्ष्य किया। उसने कहा..'अजय अब तुम्हारे हाथ है बहू। इसे सँभाल।'

कान्ता ने सुन लिया, मत नहीं दिया। उस क्षण उसने स्वयं ही समझा कि वह जिन आशा और आकांक्षाओं को समेटकर इस नये जीवन में आई है, वह सुगम नहीं है। पथ कँटीला है। लक्ष्य दूर। वह धुँधले आवरण में छिपा है।

और अजय दूर है। एक एक कर कई मास निकल गए। किन्तु कान्ता ने न पति को समझा है न पाया है। नई से पुरानी हो गई कान्ता। किन्तु अजय उसके पास जाकर नहीं बैठा। वह पूर्ववत् अपनी किताबों में उलझा रहा। कभी किसी गाँव में चला गया। यह देख माँ भी परेशान है। कान्ता उद्विग्न है। वह चाहती है कि एकांत पाये और अजय बाबू से उसके मन की बात पूछे। कुछ अपनी भी कहे।

उन्हीं दिनों नगर के धनवानों और सरकारपरस्तों की जेब से पैसा एकत्र किया गया था। बादशाह की स्मृतिस्वरूप उसकी प्रतिमा का प्रतिष्ठापन करने के लिए। वह रुपया उसी में लगा। कितनी सुन्दर और मोहक थी, वह प्रतिमा।

अजय भी एक दिन उस ओर निकला, रात का समय था। सुहावना और मोहक। प्रतिमा के चारों ओर फौवारों से पानी झर रहा था। विद्युत् के प्रकाश में उस शोभनीय प्रतिमा का रूप बरबस सभी को अपनी ओर खींच रहा था।

अजय ने उस ओर देखा और देखता रहा। वह सोचने लगा, यही है, वह बादशाह कि जिसने निर्बाध रूप से इस देश पर शासन किया है। अब मर गया तो क्या देश को भूखा, कंकाल और दरिद्र बना गया है...आज देश भी इसकी कौम से छूटा है।

उसी समय उसने अधीर बनकर कहा—और आज प्रतिमा के रूप में यह फिर भी शोभनीय है। आज भी इसके चारों ओर जलधारा प्रवाहित है...कलाकार ने दर्शनीय बना दी है, यह प्रतिमा।

अजय ने तुरंत ही कहा....अरे, यह पानी नहीं, खून की धारा है....पराजित जाति की आत्मपीड़ा का अश्रुजल...

उसी समय अजय एकाएक ही इतना अधीर और उद्विग्न हो गया कि उसने अपने सिर के बालों में उँगलियाँ दे लीं और आँखों में कठोरता लाकर बोला.... कंगालों के रक्त और मांस का गारा बनाकर यह फिर भी खड़ी कर दी गई है, प्रतिमा। इतनी नृशंस...इतनी क्रूर...

उसने दोनों हाथों को नीचे गिरा दिया और बड़े खिन्न भाव को ले तारों-भरे आसमान को देखकर बोला...'गुलाम देश था...विचारों से हीन'।

उसने अपने आप फिर कहा...हाय! हाय! ऐसे ही मर जायगा, यह देश। ऐसे ही लुटता रहेगा। यहाँ के धनवान् और शक्तिवान् यही चाहते हैं....गुलामी।

यह कहते हुए अजय अपने आप में खो गया। उसने फिर मूर्ति की ओर देखा। वहाँ जितने दर्शकों की भीड़ थी, वह हट गई। सन्नाटा छा गया। मूर्ति पूर्ववत्। अजय मुस्कराहट से पूर्ण।

यह देख अजय ने कहा—हाँ, तुम मुस्कराओ बादशाह सलामत। तुम भाग्यवान्। तुम अमर। इस देश की मूर्खता और निर्लज्जता पर हँसो।

उसने पीछे से सुना...कौन अजय बाबू। एक परिचित ने उसी ओर आते हुए कहा।

अजय ने उसकी ओर देखा।

पास आकर उस व्यक्ति ने कहा... 'आपने देखी न बादशाह की प्रतिमा। क्या कारीगरी है। रुपये भी हजारों लगे हैं। आपके पिता जी ने भी दिए हैं, पाँच हजार रुपये।'

इस बात को अजय ने सुन लिया। मित्र आगे बढ़ गया। मूर्ति की ओर देखते हुए अजय में ईर्ष्या और हिंसा का अविर्भाव हुआ। उसका हृदय सुइयों से बिंध गया। आँखों के सामने अँधेरा। उसमें जितना जोश था...नसों में नया रक्त, वह बरबस ही तीव्र हो गया। अजय अशान्त बन गया। उसके दाँत भिंच गये और उठकर प्रतिमा के समीप पहुँच गया। वहीं पास में पत्थर का टुकड़ा पड़ा था, उसे उठा लिया। उस पत्थर को हाथ की चुटकी में भींच लिया। हाथ उठाया और निशाना बाँधकर मूर्ति के मुँह पर खींच कर मार दिया।

खनन से मूर्ति की आँखें फूट गईं, ताज टूट गया और वह खंड-खंड होकर नीचे गिर गया। मूर्ति नष्ट हो गई। उसकी सुन्दरता, उसकी स्वर्गीय-सी आभा पल मारते में मिट गई।

लेकिन उस मूर्ति के खनन का जो चीत्कार उठा, उससे अजय काँप गया। उसका हृदय धक् से रह गया। फिर भी कठिनाई से वह मुस्कराया और हँसा और एकबारगी ठहाका मारकर पीछे को लौट गया। वह तेजी से घर की ओर चल दिया। उसने जो कुछ किया, मानो वह विचित्र होकर और साकार बनकर उसके पीछे पड़ गया। वह नहीं भूल सका। इसी से फिर मुड़ा। उसी अशांति, उद्वेग और हृदय की धड़कन को लिए वह प्रतिमा के समीप जाकर खड़ा हुआ। निश्चय ही वह अपराधी था, अतएव नत हुआ, उन टूटे टुकड़ों को उठाकर इस तरह देखने लगा कि जैसे यह प्रतिमा के नहीं, उसी के हृदय के टुकड़े हैं। कितने मुलायम....कितने मनोरम। उसकी आँखें भर आईं। वह गालों पर बह चलीं। टुकड़ों को उसने मुट्ठी में दबा लिया और प्रतिमा की ओर देख विनीत होकर बोला—ऐ दिगंबत आत्मा, भला तेरा क्या दोष। मैं मूढ़ था विवेकहीन....

उसने उन टुकड़ों को फिर करीने से रखा। उन्हें यथास्थान जमाया और तब उस काले से अन्तरिक्ष की ओर देखकर बोला...सब ऐसा ही सोचते हैं..ऐसा ही करते हैं सब।

वह उदार मन से घर की ओर चल दिया। मन में जितनी अशान्ति थी, वह तब भी उसे अधीर कर रही थी। जो प्रतिक्रिया और प्रतिहिंसा की भावना उसमें जाग्रत थी, वह अब उल्टी उसी को मथ रही थी।

घर पहुँचते ही उसने देखा कि कान्ता किसी पुस्तक में लगी है। कितनी सुन्दर, मनोरम और शांत है वह।

द्वार पर आते ही उसने पुकारा—कान्ता...!

कान्ता ने चौंककर देखा।

अजय पलँग पर बैठ गया। उसने कहा...मैं परेशान हूँ....मैं उद्विग्न।

कान्ता ने किताब को एक ओर रख दिया। उसी समय जैसे ही उसने पति को बच्चों की तरह रोते पाया, तो उसका माथा ठनक गया। पति से उसे जाने कितने गिले और कितनी शिकायतें थीं, वह उस समय बरबस ही उनको भूल इस प्रकार अजय की ओर बढ़ गई कि जैसे आज ही पाया अपने पति को..उसका मन और उसकी अनुभूति को। उसका पति इतना सरल है, इतना तरल और उदार, निश्चय ही, इतना वह उसी क्षण समझ पाई।

अजय ने कहा..मैं पाप करके आया हूँ..हिंसा।

हाँ, हाँ मैं जानती हूँ। मैं तुम्हें पहचानती हूँ, देव! तुम हिंसक नहीं। उसने इतना कहा और जाने कितने गहरे मन के साथ अपने पति के उस अश्रुपूर्ण मुँह को अपनी छाती में छिपा लेने के लिए कान्ता ने अपने हाथों को आगे बढ़ा दिया।

मुफ्त! मुफ्त!! मुफ्त!!!
आप घर बैठे मैट्रिक, एफ० ए०, बी० ए०, पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से और होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ्त मँगायें। पता :—
इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

फिल्म ऐक्टर
यदि आप फिल्म ऐक्टर बनकर १००) रु० से १५००) रु० मासिक तक कमाना चाहते हों तो आज ही लिखें। थोड़ा लिखा पढ़ा होना जरूरी है। अपना नाम व पूरा पता साफ
डाइरेक्टर इम्पीरियल
(फिल्म डिपार्टमेंट)
पो० ब० ६१ (*D. D. A.*)

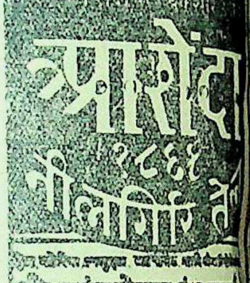

खिजाब अब लगाना न होगा।
सफेद बाल काला
नक्कालों से सावधान!
इस तेल से बाल का पकना
पका बाल जड़ से काला पैदा हो
सैकड़ों प्रशंसापत्रों से इसकी सत्यता
णित है। यह तैल सिर के दर्द व
चक्कर आना आदि को आराम कर
की रोशनी को बढ़ाता है। मूल्य
शीशी ३॥) व बड़ी शीशी ५)।
श्वेत कुष्ठ की वनौषधि
महात्मा प्रदत्त इस
से तीन दिन में पूरा फायदा। यदि
हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों,
की दवा से निराश हो चुके हों,
लगाकर आरोग्य होवें।
२१ दिन का।
पता :—श्रीकृष्ण आयुर्वेद
(द २), बड़ा बाजार,

मुफ्त
युवको! यदि अपनी भूल से
नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित
फीका हो चुका हो तो भारत
सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त रोग
कविराज ब्रह्मस्वरूप बी०
(D.A.) फतेहपुरी देहली से
मशविरा मुफ्त करके अपना
सुधार लें।

पूज्य बापू पर विदेशी कलाकार

विश्व के प्रसिद्ध अभिनेता तथा अभिनेत्रियों का क्या कहना है?

लेखक, श्री उमेश जोशी

की लोकप्रियता समस्त दिगन्त गई है, विश्व का ऐसा कोई नहीं जहां बापू का दिव्य न प्रसारित हुआ हो।

बापू के प्रभाव का दायरा नहीं है। उनके प्रभाव का महा- हर जगह उमड़ा है। धार्मिक, आध्यात्मिक, कलात्मक, दार्शनिक, कि युग के प्रत्येक विकास में अमर छाया प्रतिबिम्बित हो

विख्यात कलाकार चार्ली ने "बापू" शीर्षक एक लेख के मार्च १९४८ अंक में लिखा आज विनाश की ओर जा चारों तरफ हैवानियत की बिज- इन्सानियत के आसमान पर चमक पाशविकता के इस भयंकर इन्सानियत एवं मानवता को नहीं मिल रही। यह विचारी विश्व के एक कोने में खड़ी तरफ भी वह अपनी रक्षा जाती है, उसी तरफ उसे उपेक्षा कांटों की विशाल तल्प पर जाता है। कहीं भी उसे अपने का ठिकाना नहीं दृष्टिगोचर दुनिया के इस अन्धकार में वह का अनुसन्धान कर रही है। हुए नक्षत्र की धूमिल रोशनी को सुनहरी किरणों के जाल को छिपाये हुए सरक रही है, कदमों में इतनी शक्ति नहीं कि वह चल सके, तूफान ने उसके शरीर को जर्जरित कर दिया है। चलते चलते उसकी दृष्टि विश्व के पूर्व दिगन्त की ओर पड़ी। उसका सूखा हुआ चेहरा खिल गया, ठीक कमल की पंखुड़ियों जैसा। उसके लड़खड़ाते कदमों में एकदम शक्ति का संचार होने लगा——मानो उसे पुनः यौवन का देदीप्यमान सौन्दर्य मिल गया हो। उसने देखा मायूसी के घने कुहरे को हटाकर सत्य के विशाल प्रकाशपुञ्ज को। उस प्रकाश के दिव्य निकेतन में अंकित था——"कला और सौन्दर्य का संरक्षण यहां होता है। मानवता का रक्षा-गृह यही है। झिझकिये नहीं बिना भेद-भाव के मानव के मानवता की रक्षा की जाती है।" विश्व की मानवता मरते मरते बच गई। सृष्टि की सम्पूर्ण मानवता एकत्रित होकर सत्य के रूप बापू के रक्षा-गृह में केन्द्रित हो गई। आज जो विश्व में मानवता के रूप में कला और सौन्दर्य दीखता है, उसका समस्त श्रेय इसी महामानव को है। इस तथ्य को स्वीकार करने से कौन इनकार कर सकता है। बापू ने हमारी कला को जीवन-दान दिया, किन्तु अफसोस इस बात का है कि हम बापू को जिन्दा न रख सके, ताकि वह मुसीबतों के अन्धकार में सत्य का उज्ज्वल आलोक दिखाते रहते। मैं अपने श्रद्धा के पवित्र प्रसूनों को बापू के निर्मल चरणों में समर्पित करता हूँ।"

'नाटक' फिल्म की दो प्रमुख गायिकायें और अभिनेत्रियां।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त अभिनेत्री ग्रेटा गार्बो ने " क्लेशिंग लाइट" के फरवरी १९४८ के अंक में "पवित्र रोशनी" शीर्षक एक लेख लिखा है। लेख का कुछ अंश इस प्रकार है——"मैं तो हैरान हूँ कि आज दुनिया किस तरफ भागी जा रही है? शान्ति का सुन्दर किनारा कहीं दृष्टिगोचर नहीं होता। दुनिया अशान्ति की ऊँची-नीची, टेढ़ी-मेढ़ी घाटियों में से ही नहीं निकल पा रही। आज दुनिया में ऐसे शब्दों की कमी है, जिनसे कि इन्सानियत का भव्य गृह निर्माण होता है। संस्कृति और भाषा के उच्च स्तर से आज मानव खिसकता जा रहा है। मानव-जीवन बिना कला और सौन्दर्य के रेगिस्तान-सा हो गया है, और उस रेगिस्तान में अनैतिकता, असंयमता की गर्म लू चल रही है। धूल के बवण्डर में मानव रबड़ की गेंद की तरह ऊपर-नीचे उछल रहा है। परेशानियों एवं लाचारियों का जमघट एक पहाड़ की शक्ल में जिन्दगी की वादियों में लग गया है। ज्यों ज्यों मानव उस मजबूरियों की दृढ़ चट्टान को खोदने की कोशिश करता है, त्यों त्यों और भी अधिक वेग से मजबूरियों के शैल निर्माण होते चले जाते हैं। मानवता की कराहट की अवनी पर विलासिता के खुशनुमा उद्यान लगाये जा रहे हैं। दानवता की भयानक गैस के घटाटोप में सिर्फ एक जगह पवित्र रोशनी दृष्टिगोचर हो रही है, और वह जगह है सेवाग्राम की पर्णकुटी। बापू की यही पर्णकुटी दुनिया को पवित्र रोशनी दे रही है। दुनिया के कुछ लोगों ने इस पवित्र रोशनी को समझा, और कुछ ने बिलकुल नहीं समझा। न समझनेवालों की संख्या अधिक थी। पर जहां जहाँ यह पवित्र रोशनी फैली, वहां उसने अलकापुरी की दिव्य नगरी बसा दी। इस प्रकाश में समस्त कल्मष शलभों की तरह नष्ट होने लगे। बापू ने दुनिया की दानवता को चुनौती दी, अपनी कला और सत्य की अमर शक्ति पर। दानवता ने बापू के सामने अपने नये नये रूप बदले, उनको अपने आदर्श से डिगाना चाहा, किन्तु यह महा-मानव भला क्यों दानवता की प्रलुब्धकारी माया के षड्यंत्र में आने लगा? बापू ने इन्सानियत का दीपक पशुता के भीषण अन्धड़ में दाव पर रख दिया, क्योंकि उन्हें भरोसा था कि उनके पास सत्य का उज्ज्वल आलोक है, फिर

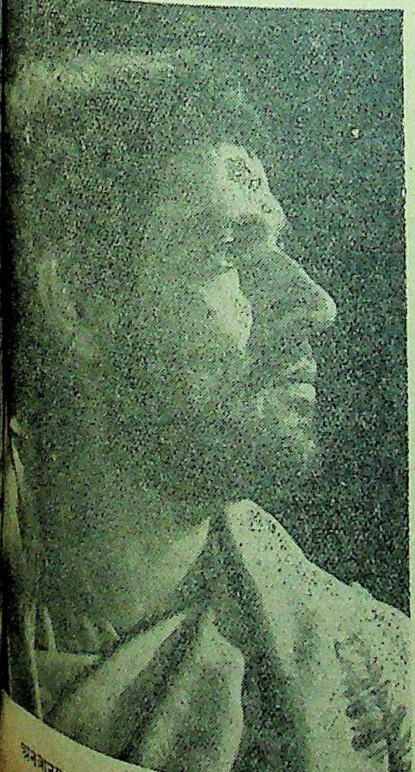
अनजानगढ़ फिल्म के महत्त्वपूर्ण भाग के अभिनेता श्री राममोहन।

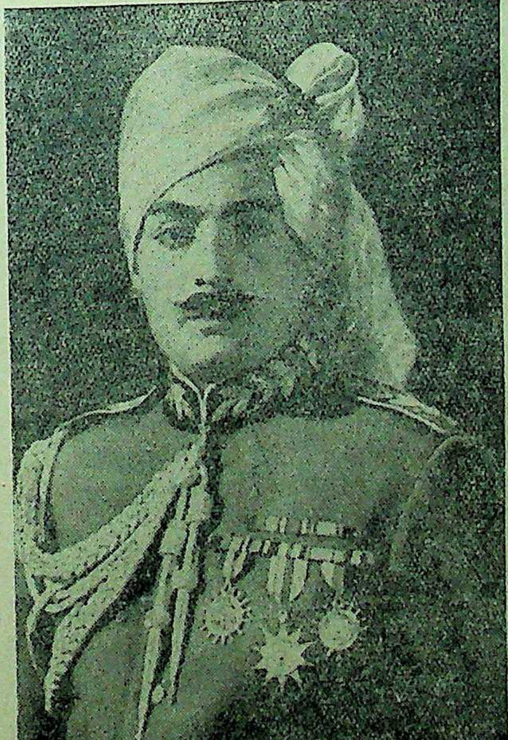
अनजानगढ़ फिल्म में भारतीय राज्यों की कहानी के अभिनेता श्री हीरालाल।

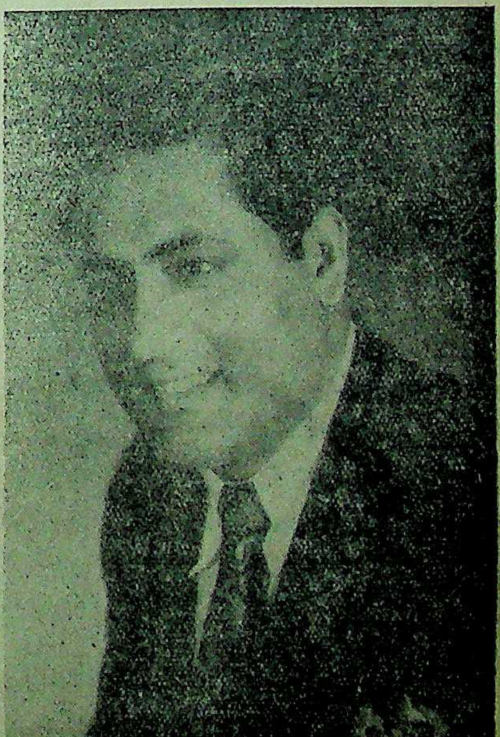
अनजानगढ़ हिन्दी फिल्म के प्रधान अभिनेता अजयकुमार शर्मा।

डर किस बात का ? हार-जीत का निर्णय तो ईश्वराधीन है, परिणाम का सोचना इन्सान का फर्ज नहीं, उसका कार्य तो सिर्फ कर्तव्य करते जाना है। दुनिया यह देखकर दंग रह गई कि बापू की जीत हुई, और पशुता की करारी हार। बापू आज हमारे साथ नहीं हैं। किन्तु उनके उद्देश्य, उनके उसूल तो उनको हमेशा दुनिया के हृदय में जिन्दा रक्खेंगे। वह कभी मर नहीं सकते, क्योंकि उन्होंने दुनिया को बहुत बड़ी बेशकीमती नियामत प्रदान की है। दुनिया उससे उऋण नहीं हो सकती। सेवाग्राम की पवित्र रोशनी हमेशा जिन्दा रहेगी उस रोशनी को कोई गुल नहीं कर सकता।"

विश्व का महान् कलाकार व निर्माता एलक्जेन्डर कोर्डा ने हालीवुड की सीनेट में "बीसवीं सदी का सर्वश्रेष्ठ कलाकार" शीर्षक पर बोलते हुए कहा—"यदि मुझसे पूछा जाये कि आपका दृष्टिकोण क्या है इस शीर्षक के सम्बन्ध में, तो मैं निःसंकोच रूप से कहूँगा कि महात्मा गांधी बीसवीं सदी के सर्वश्रेष्ठ कलाकार हैं, क्योंकि उन्होंने कला का संस्करण एक नवीन दृष्टिकोण के आधार पर किया है, यह माना कि कभी गांधी जी ने स्क्रीन पर अभिनय नहीं किया, किन्तु उन्होंने कला की विशाल पृष्ठभूमि तो निर्मित की। कितना बृहत कार्य उन्होंने कर डाला, जिसको कि आज तक किसी भी कलाकार ने और न किसी महापुरुष ने किया। हमें उनका कृतज्ञ रहना चाहिए। मुझे कला के निर्माण तथा विस्तार में गान्धीजी की विचारधारा से बहुत प्रेरणा मिली। विश्व के इतिहास में महात्मा गांधी ही एक ऐसे महान् कलाकार थे, जिन्होंने मानवों के अस्त-व्यस्त जीवन को एकीकरण करके सत्य और अहिंसा की पवित्र धरातल पर साहित्य और कला की रम्य चादर से प्रच्छन्न किया। आज तक यह महान् कार्य किसी भी स्क्रीन कलाकार ने नहीं किया। कोई भी कला तब तक सफल नहीं कही जा सकती, जब तक कि वह कला मानवों के टूटे हुए दिलों को न जोड़ सके, हमारे तरुणों के मुरझाये हुए हृदयों में प्राण दान न कर सके हमारी तरुण सूझों की टूटी हुई कमर को सीधा न कर सके, उन हृदयों को जो उत्साह के शिलाखंड से गिर गये हों उनको पुनः साहस के मनोहर रसा पर न उपनीत करा सके, कुचले हुए अरमानों की निर्मित हुई दुनिया को ध्वंस न कर सके एवं निराशा के विशालतम के आलम में आशा की स्वर्णरश्मियों के जाज्वल्यमान जाल को न फैला सके, तो वह कला, कला नहीं; और उस कला के निर्माता को मैं कलाकार कहने में भी संकोच करूँगा। गांधी जी ने कला को दूर से नहीं देखा, बल्कि उसको जीवन का एक विशेष अंग ही समझा। आज के कलाकार "कला" को दूर से देखते हैं, उसकी गहराई में प्रवेश करने का साहस नहीं करते—गहराई में जाने से वे डरते हैं। फिर हम उनको सर्वश्रेष्ठ कलाकार कैसे कह सकते हैं। आज गांधी जी हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी अमर कला, जिसका निर्माण सत्य के विशाल प्रांगण में हुआ है, हमारे दिलों में हमेशा जिन्दा रहेगी। इस कला की सुन्दर रोशनी हमेशा प्रज्वलित होती रहेगी, जब तक कि यह दुनियाँ स्थिर है।"

सुप्रसिद्ध अभिनेत्री लौरेटा यंग ने बापू को श्रद्धाञ्जलि भेंट करते हुए "स्क्रीनवर्ल्ड" में लिखा है—"मैं गांधी जी पर अटूट श्रद्धा क्यों रखती हूँ, इसका स्पष्टीकरण आज मुझे आपके सामने करना है। गांधीजी उस राष्ट्र में पैदा हुए जो सदियों से गुलाम था, लेकिन उस गुलामी के कीचड़ में गांधी जी कमल थे, जिन्होंने अपना सिर हमेशा गुलामी के कीचड़ से ऊपर रक्खा। और उन्होंने अपनी सुगन्ध से उस कीचड़ को भी सुगन्धित कर दिया। परन्तु जिनके आँखें थीं, उन्होंने ही गांधी जी की एहमियत समझी। अधिकतर लोग आँखें होने पर भी उनको न समझ सके। मैंने जब सर्वप्रथम उनके पवित्र दर्शन किये, तो मुझे ऐसा लगा कि मानो मैं स्वर्ग के दिव्य प्रांगण में बैठी हुई किसी देवदूत से वार्ता कर रही हूँ। उनके मधुर एवं निर्मल दर्शन से ही हृदय के अन्दर एक ऐसे प्रकाश का प्रादुर्भाव होता है कि जिससे मानव को संकटों की दुनिया से निकलने का प्रशस्त सम्बल मिल गया हो। मुझे गांधी जी के वे अमर वाक्य आज भी याद हैं, और हमेशा याद रहेंगे—"कला के प्रति वफादार रहना, कलाकार होकर कभी उसके साथ विश्वासघात न करना, और न कभी अपने बाह्य सौन्दर्य की पृष्ठभूमि पर कला के पवित्र उपकरणों से नई दुनिया का निर्माण करना। तुम्हारे अन्दर बहुत बड़ी शक्ति है, उसका ठीक व उचित प्रयोग करना। कहीं उस शक्ति को मानव-विनाश के कार्य में न लगा देना।" गांधी जी के इन पवित्र शब्दों को मैंने अपनी डायरी में नोट कर लिया है यही पवित्र शब्द ही मुझे डगमगाती दुनिया में गिरने से थाम लेते हैं। मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि मैं सदैव गांधी जी के निर्देश किये हुए मार्ग पर चलती रहूँ।"

विश्व का महान कलाकार साबू को आज कौन नहीं जानता। यह भारतीय है, लेकिन इसका विकास अमेरिका के कला-केन्द्र हालीवुड में हुआ आज इसका नाम ख्याति के आसमान पर सूरज की तरह चमक रहा है। उसने "अमेरिकन पिक्चर" को अपना सन्देश देते हुए लिखा है—"आज मेरे पास दुनिया के लिये यही एक सन्देश है कि वह सड़ी-गली दुनिया से निकलकर बापू की सृजन की हुई अभिनय दुनिया में प्रवेश करे। मुझे इस बात का गौरव है कि मैं भी उस देश में पैदा हुआ जिसमें कि विश्व की महान् आत्मा का आविर्भाव हुआ और वह सुन्दर देश है "भारत।" मेरा अधिक रहना भारत में नहीं हुआ, किन्तु मेरी आत्मा वहीं हर वक्त रहती है, क्योंकि भारत की पवित्र भूमि में विश्वकवि टैगोर, युवक सम्राट् सुभाष, गांधी जी के प्राण जवाहरलाल नेहरू आदि महान् आत्माओं ने जन्म लिया। फिर भला भारत विश्व को क्यों न नया प्रकाश दिखाये। गांधी जी तो इन सब आत्माओं के रहनुमा थे, इन सबसे सर्वोपरि। मेरी हिन्दुस्तान जाने की बड़ी लालसा है। वहां जाकर मैं सबसे पहले सेवाग्राम को देखूंगा, जहां कि पूज्य बापू रहते थे, जहां से कि वह दुनिया को रास्ता दिखलाते थे। मेरा विचार गांधी-साहित्य को सम्पूर्ण पढ़ने का है। मेरा दुनियावालों से कहना यही है कि वे बापू के पवित्र स्वप्न को पूरा करने में लग जायें, तथा वे अपने बीच गांधी जी को हमेशा जिन्दा रक्खें यदि वह सुख-शान्ति का साम्राज्य चाहते हैं। अमेरिकन, अँगरेज, रूसी, चाहे जो कोई भी हो सबको गांधी जी के मार्ग पर चलने से न हिचकना चाहिए। आज की दुनिया की यही आवश्यकता है। आज के युग की यही पुकार है।"

मनोरंजक चुटकुले

हैदराबाद के मंत्रियों ने कहा था—"हैदराबाद स्वतंत्र राष्ट्र है, वह भारत संघ में सम्मिलित नहीं हो सकता।"

हैदराबाद की सेनाओं के शस्त्र डालने के समय उन्हीं मंत्रियों ने चीत्कार करते हुए कहा—"हम भारत संघ में हैं। बचाइये।"

* * *

किसी ने कहा—"क्या कासिम रिजवी को फाँसी होगी ?"

दूसरे सज्जन ने उत्तर दिया—"कहीं हाकिम को फाँसी होती है ? उसे तो लाल किले की गद्दी मिलेगी।"

* * *

सर नाजिमुद्दीन ने गवर्नर-जनरल की हैसियत से प्रथम भाषण देते हुए कहा है—"हमारे शत्रु कायदे आजम की मृत्यु के बाद हमें कमजोर न समझ लें।"

सुप्रसिद्ध कलाकार हरेल्ड लास्की ने बापू के निर्वाण पर निम्नलिखित शब्द प्रेस को दिये—"दुनिया की एक महान् ज्योति गुल हो गई। वह ज्योति ऐसी थी कि जिसने गरीबों, मुफलिसों, मजलूमों, एवं असहायों के घरों को आलोकित किया। उनकी कमजोर आवाज को मजबूत बनाकर विश्व के सामने रक्खा। उनके आहत अरमानों को अपने उपचार-शिविर में स्थान देकर ठीक किया। वास्तव में वह बेकसों के भगवान् थे। मदद करते वक्त वह किसी किस्म का भेद-भाव नहीं करते थे—चाहे मदद चाहनेवाला किसी भी जाति एवं किसी भी देश का क्यों न हो। उनके लिये सब समान थे। मैं जब उनसे मिला, इस बात को दो साल हो गये। मैं हिन्दुस्तान गया हुआ था, उस वक्त हिन्दुस्तान आजाद मुल्क नहीं था, पर हां आजादी का उम्मेदवार हो चुका था—हां तो मैं गांधी जी से मिला। मैं अपना परिचय दिया। वह प्रसन्न मुद्रा से मुझसे बातचीत करते रहे। चलते वक्त मैंने अपनी डायरी उनके सामने रखी, यह कहते हुए—"मैं आपका सन्देश चाहता हूँ, कलाकारों के लिये।" उन्होंने हँसते हुए डायरी मुझसे ले ली और उन्होंने लिखा—"अपनी कला को विश्व के प्रति सजग बनाइए। कला का निर्माण एवं विकास सत्य के प्रकाश-गृह में कीजिये।" गांधी जी के सुन्दर शब्द आज के कलाकारों के लिये चुनौती हैं। इन थोड़े से शब्दों में उन्होंने कला का सम्पूर्ण सार भर दिया है। बस यही बापू का अंतिम उपहार मेरे पास सुरक्षित रक्खा है। इस उपहार को मैं दुनिया के बेश-कीमती हीरे-जवाहरातों से श्रेष्ठ समझता हूँ।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त निर्देशक व निर्माता मिस्टर ग्रीन वुड ने बापू के सम्बन्ध में कहा—'अभी दुनिया को बापू की २५ वर्ष तक और जरूरत थी। काश वह जिन्दा रहते तो कितना अच्छा होता। दुनिया के विशाल दामन से अशान्ति का काला मुंह हो जाता। फिर दुनिया में सिवाय सुख-शान्ति के और कुछ दृष्टिगोचर न होता। पर ऐसा ईश्वर को मंजूर ही नहीं था। हमारा स्वप्न अधूरा ही रह गया। किन्तु फिर भी हमें घबड़ाना नहीं चाहिए। बापू के दिव्य आदर्श तो हमारे कठिन मार्ग के पथ-प्रदर्शक अवश्य बनेंगे। ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है।"

*

आप कमजोर थोड़े ही हैं। के डाकुओं का सिरमोर कहीं सकता है ?

* *

एक लड़के के जोड़ का आता था उसने पाँच लिखकर दिया। मास्टर ने पूछा—"क्यों जी, ही योग हुआ ?"

लड़का—आता तो और था, आपने कहा था कि बाईं ओर शून्य रखते। इससे ५ के बाईं ओर रखना गलत है न ?

* *

मास्टर ने विद्यार्थियों को भूगोल हुए कहा—"भारत का मानचित्र की आकृति का था। पर अब...!"

एक विद्यार्थी ने कहा—" कटा शेर हो गया है।"

* *

एक लड़का स्कूल के समय पेड़ पर चढ़ रहा था। मास्टर ने बुलाकर दो चपत जड़ दिया; और हँसने लगे। इस पर वह लड़का बोला "जो ऊँचे चढ़ते हैं उन्हें थपेड़े पड़ते हैं।"

* *

एक मास्टर ने विद्यार्थियों से 'बारह में से तीस निकालो तो बचे ?'

एक लड़के ने कहा—'मास्टर इसको बीजगणित से निकालें तो

मास्टर साहब हँसते हुए कहने लगे—'ये चुटकुले हैं। क्या नहीं जानते माह में से ३० दिन निकले तो बचेंगे ? ग्यारह।'

* *

"अब 'दिल्ली' चला करेगा।" ने माँ से कहा।

"कहीं मिट्टी और घर चले नादान ?" माँ बोली।

"अरे माँ 'दिल्ली' युद्धपोत कि भारत ने इँगलैण्ड से खरीदा है।"

* *

"अपनी लोकप्रिय सरकार ने को भी अच्छा ख्याल किया।" माँ से कहा।

"क्या सरकार अभी तक करती थी रेवा ?" माँ ने पूछा।"

नहीं माँ अभी तक जनता पैदल करती थी। अब तो साक्षात् जनता प्रेस ट्रेन होकर पटना से दिल्ली

* *

शुभ सूचना

समस्त हिन्दी-प्रेमियों, तथा कृपालु ग्राहकों को यह शुभ देते हुए हमें हर्ष हो रहा है कि लाहौरवाली ब्रांच फिर से अम्बाला कैंट (पूर्वी पञ्जाब) लोगों की पूर्ववत् सेवा के उद्देश्य से हो चुकी है।

मैनेजर

इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

मातृमण्डल

भारत में आधुनिक भवन-निर्माण का महत्व

भारतीय नारियों को सहयोग देना आवश्यक है ?

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

तीय युद्ध के पश्चात् संसार के सारे ने यहाँ पुनर्निर्माण कार्य में जुट गये न्तु उतनी उन्नति और विकास नहीं नी आशा थी। संसार के सारे ने संयुक्तराष्ट्र-संघ के रूप में एक में प्रतिज्ञा की थी "हम सब शान्ति प्रयत्न करेंगे और एक दूसरे की सहायता करेंगे।" परन्तु यह रे कागज पर रह गई है। अभी चारों से मालूम हुआ है कि धान मन्त्री पंडित जवाहरलाल हिरा में अपनी एक वक्तृता में राष्ट्रों के नेता शान्ति के लिए उत्तेजनापूर्ण ढंग से सोच रहे र के हित की दृष्टि से अच्छा हम इस युग में भी १६ नदियों बाँध बनाने की योजना में स वाक्य से संसार के अणुबम शों का मस्तिष्क चक्कर करेगा। संसार संहारकारी यन्त्र बना सरी ओर भारत अपने देश के भोजन, वस्त्र और रहन-सहन के ठाने में लगा है। भारत-सरकार जना को जिसमें उस पुनर्निर्माण या जो भारत देश के लिए नव- ही कहा जा सकता है, प्रत्येक भार- ग करेगा और उसमें यथाशक्ति गा। भोजन-वस्त्र के साथ ही मनुष्य को अपने रहन-सहन का स्तर भी ऊँचा उठाना चाहिए। हमारे देश में आज मकानों की समस्या बड़ी बुरी स्थिति में है। आधुनिक भवन-निर्माताओं का ध्यान इस ओर अधिक आकर्षित हुआ है। क्योंकि पुरातनकालीन भवनों का ढाँचा और बनावट इतनी भद्दी और स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद है कि उनकी कायापलट हो जाना नितान्त आवश्यक है। नगरों में अब भी ऐसे मुहल्ले हैं जिनमें इतनी घनी आबादी है कि १० फीट लम्बे, १० फीट चौड़े तथा मुश्किल से ६ फीट ऊँचे मकान में कम से कम ५ प्राणियों का एक परिवार निवास कर रहा है। ऐसे मकान में हवा के लिए न तो खुली खिड़कियाँ हैं और न प्रकाश के लिए रोशनदान ही। वे या तो उसी मकान के भीतर लेटें अथवा यदि दरवाजे पर कुछ जगह हो तो कहीं बाहर स्थान मिल सकता है। ऐसी दशा में हम पुरातनकालीन भवनों को अस्वास्थ्यप्रद कह सकते है। विशेष कर हमारी स्त्रियों के लिए तो ऐसे मकान बहुत ही हानिप्रद हैं। अतः हमें अपने भवन-निर्माण में अपनी स्त्रियों से परामर्श लेकर कार्य प्रारम्भ करना चाहिए जिसके लिए हमें आधुनिक भवन-निर्माण कार्य-प्रणाली का अध्ययन करना अत्यावश्यक है।

हमारे देश में गरीबी इतनी अधिक है कि भवन-निर्माण में भी वह बाधक हो रही है। नगरों में अधिकांश निवासी किराये के मकान में रहते हैं। वे मकान इतने घने और संकीर्ण क्षेत्र में बने हैं कि उनकी मूल आकृति बदलने में मकान-मालिक को चिन्ता घेर लेती है; परन्तु वह यह नहीं समझता कि इस घनी बस्ती में स्त्रियों और छोटे बच्चों का स्वास्थ्य किस प्रकार अच्छा रह सकता है ? अतः मकान-मालिकों का प्रथम कर्तव्य है कि यदि वे किराये के लिए मकान बनायें तो काम से कम स्वास्थ्य को दृष्टि में रखकर। यह कार्य देरी करने का नहीं है। इस प्रश्न पर वे चौंक उठते हैं; नाक-भौं सिकोड़ते हैं। फिर किस प्रकार देश के भवन-निर्माण कार्य को प्रोत्साहन मिले ? यह प्रश्न सामने आता है।

आधुनिक भवन-निर्माण करने के लिए रुपयों और जगह की आवश्यकता पड़ती है। यह दोनों चीजें मकान-मालिकों के पास हैं जो कि हमारे सामने जमींदार अथवा पूँजीवादी मनोवृत्ति रखनेवालों से कम नहीं। ऐसे मकान-मालिकों को या तो आधुनिक ढंग का भवन बनाना चाहिए वरना सरकार उनके मकानों और जमीन का मुआवजा देकर खरीद ले। उस जमीन पर सरकार की ओर (अथवा इम्प्रूवमेण्टट्रस्ट आदि की ओर) से भवन निर्मित कराये जाने चाहिए। दूसरे यह कि जिन गरीब लोगों के पास अपनी भूमि और मकान हैं परन्तु आधुनिक भवन-निर्माण के खर्च की क्षमता नहीं रखते, उन्हें चाहिए कि वे सहयोगी ढंग से आधुनिक भवन-निर्माण करायें। इससे सहयोग-समितियाँ बन जाँयेंगी, भवन-निर्माणकर्ताओं को कर्ज मिल जायगा। धीरे-धीरे वे इस कर्ज से मुक्त हो जायँगी। इस प्रकार आधुनिक भवन-निर्माण-कार्य को आगे बढ़ाना अपने ही लिए नहीं, अपनी स्त्री और आनेवाली पीढ़ियों के लिए भी उपयोगी है।

आधुनिक भवनों की नकल क्यों की जाय ? अथवा आधुनिक भवन किस लिए उपयोगी कहे जा सकते हैं ? इस प्रश्न के लिए उपर्युक्त वर्णन काफी कहा जा सकता है फिर भी यह स्पष्ट कर देना अत्यावश्यक है कि आधुनिक भवन और पुरातनकालीन भवनों का मनुष्य के दैनिक जीवन से क्या सम्बन्ध है ? पुरातनकालीन भवनों के निर्माण को यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो यह प्रकट होता है कि वे अधिकतर ऊँची कुर्सीदार बनाये जाते थे। द्वार पर एक चबूतरा होता था चौपाल या बरामदे रहते थे। घर के अन्दर आँगन रहता था। इतने पर भी वे अस्वास्थ्यकर कहे जाते हैं। इसका कारण यही कहा जा सकता है कि उनमें न तो ठीक से स्नानागार बने रहते हैं, न रसोईघर और न शयनागार अथवा भंडारघर। देखने में आता है कि बहुत से परिवार एक ही कमरे अथवा घर में रोटी बनाते, स्नान करते, भंडारघर बनाते साथ ही शयनागार भी रखते हैं। इस पर भी उसमें न तो खुली खिड़की रहती है और न रोशनदान ही। टट्टी पाखाने के लिए वह सामने की नालियों में जाता है जिसका दुष्परिणाम वह भोगता है—भयंकर और सक्रामक रोग।

हिन्दू कोड बिल पर विवाद के लिए दिल्ली में महिलाओं की एक महती सभा में श्रीमती रेणुकाराय दिखाई दे रही हैं।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस सेवादल के प्रधान संचालक श्री आर० के० हार्डीकर दिल्ली में महिला स्वयंसेविकाओं को आदेश के लिए खोले गये क्लास का उद्घाटन करते समय [illegible] रहे हैं।

इसके प्रतिकूल आधुनिक भवनों में चाहे वह थोड़ी ही जगह में क्यों न बनाये गये हों छोटा-सा रसोईघर जिसकी चिमनी मकान के ऊपर को रहती है, स्नानागार के लिए एक छोटा-सा कमरा, भण्डारघर अलग, शयनागार अलग। साथ ही मकान में छज्जे और बरामदे अलग रहते हैं। यदि बरामदे भर को जगह न रही तो छज्जा अवश्य होगा। खिड़कियाँ और रोशनदान होंगे जिनसे खुली हवा और प्रकाश उस कमरे को स्वास्थ्यप्रद रखने में सहायक रहते हैं। भवन के अन्दर पाखाना और पेशाबगृह भी बना रहता है। उसके सामने यदि जगह रहती है तो एक छोटा-सा पार्क भी खेलने-कूदने और हवा के लिए बना रहता है यही आधुनिक भवन हैं जो हमको स्वस्थ रखने के लिए निर्मित किये जा रहे है। प्रश्न यह हो सकता है कि पुरुषों को भवन-निर्माण में कार्य करना चाहिये फिर स्त्रियों को इस कार्य की ओर क्यों घसीटा जाता है ? भवनों की आन्तरिक स्थिति को स्त्रियाँ अधिक समझती हैं उन्हें ही घर के भीतर रहना पड़ता है क्योंकि भारतवर्ष में स्त्रियों का कार्य घर ही तक सीमित रक्खा गया है फिर यदि उन्हें अपने वासस्थान के लिए सोचने का अवसर न दिया जाय तो फिर घर में कभी सुखमय जीवन व्यतीत हो ही नहीं सकता। इसलिये आधुनिक भवन-निर्माण में स्त्रियों का सहयोग लेना अत्यन्तावश्यक है और स्त्रियों को भी चाहिये कि वे स्वयं इस कार्य में अपने से जुटें।

कोई भवन जो नव निर्मित किया जाये उसे अपने ढंग का नया सामाजिक और मनोवैज्ञानिक ढंग से मिर्मित होना चाहिये। देखने में उसमें सुन्दरता हो और पड़ोसी भी उसी ढंग के भवन निर्मित किये हों, यह नहीं कि वह भवन भारत के मध्यकालीन भवनों के बीच काँटे में फूल जैसा हो। अभी तक भारतीय भवन इसलिए संकीर्ण और बन्द बनते थे कि उनमें एक परिवार रहता था। अब मनुष्य की आवश्यकतायें भी बढ़ रही हैं साथ ही उसका क्षेत्र भी बढ़ रहा है। भवन के अन्दर एक कमरा कम से कम बैठक अथवा मनोरंजन के लिए हो, पढ़ने के लिए हो तथा नौकर आदि के लिए अलग कमरे हों। स्नानागार, भंडार, रसोईघर आदि की सुव्यवस्था हो। इसके अतिरिक्त भवनों को मनोवैज्ञानिक ढंग से बना होना चाहिये। वह इसलिए कि भवन से यह स्पष्ट हो जाय कि भवन के मालिक का हृदय किस प्रकार का है। स्वच्छता, सादगी और आधुनिक उत्थानवादी है अथवा पिछड़े युग का। इस कार्य में भारतीय स्त्रियों को, पुरुषों को सहयोग देना अत्यन्त आवश्यक है वे गृहणी कही जाती हैं अतः उन्हें सुंदर गृह-निर्माण के लिए परिश्रम करना उनके लिए ही नहीं, समाज और देश के लिए हितकर है।

* * *

मुद्रास्फीति-विरोधी नीति क्यों ?

(पेज ७ का शेष)

में दिनों बंदिन चोरी, लूट और डाके की घटनाएँ उग्र रूप धारण करती जा रही हैं।" यह बात भारत-सरकार के एक अत्यन्त प्रमुख प्रवक्ता ने अपने मुँह से कही है। अभी कुछ दिन पूर्व भारत सरकार के एक विभाग के कर्मचारी चपरासी २५००० रुपये दिन दहाड़े छीने जा चुके हैं। यह बातें ऐसी हैं जो देखने में छोटी लगती हों, किन्तु इनके प्रभाव को न्यूनतम करने की चेष्टा व्यर्थ होगी।

सरकार का तीसरा निश्चय तो और भी खतरनाक है। इस निश्चय का अर्थ कांग्रेस-शासन की मूल भित्ति पर आघात करने के सदृश है। सन् २१ के सत्याग्रह के जमाने से लेकर स्वतन्त्रता प्रति के बाद तक एक एक कांग्रेस-कार्यकर्ता ने गाँव गाँव के चुनाव किसानों की सहायता से जीते हैं। कांग्रेस के प्रबल समर्थन का आधार यही रहा है कि कांग्रेस राज्य का अर्थ किसान राज होगा। किसान-राज में जमींदारी-अत्याचारों की कोई गुंजाइश न होगी। जमींदारी प्रथा के नाश में कांग्रेस-सरकारों ने सत्ता-प्राप्ति के बाद भी इतना अधिक विलम्ब सोच-विचार में कर दिया है कि किसानों के कांग्रेस पर विश्वास का आसन डोल चला है। जो रहा-सहा विश्वास है वह केन्द्रीय-सरकार की आर्थिक सहायता न मिलने की दशा में जमींदारी प्रथा के नाश न होने से बिलकुल ही चला जायगा। किसान विरोधी कांग्रेसी सरकारें कितने दिन चलेंगी ?

इधर तो सरकार जमींदारी प्रथा का नाश न करेगी और उधर कृषि-आय कर लगाएगी। कण्ट्रोल के मूल्य पर नाज खरीदेगी इन सबका कुल मिलाकर जरूर यह होगा कि कांग्रेस की लोकप्रियता पर आँच आवेगी। इस परिस्थिति का नाजायज लाभ उठाने से उचित सहायता के अभाव में समाज-विरोधी तत्त्वों को कब तक रोका जा सकेगा ?

चौथा कदम अवश्य लाभदायक था, क्योंकि इसका प्रत्यक्ष संबंध तालुकदारों तथा जमींदारों से है, किन्तु यह उस समय तक काम में नहीं आ सकता जब तक कानून न बन जाय। हमारा सुझाव है कि संकटकालीन स्थिति को दृष्टिगत रखकर आर्डिनेन्स द्वारा यह सुझाव क्यों न कार्यान्वित किया जाय ?

लाभांश का वितरण

सरकार ने पूँजीपतियों पर मुद्रा-स्फीति के अनुचित उपयोग को रोकने के लिए जो प्रतिबंध लगाए हैं उनमें से एक यह भी है कि व्यावसायिक संस्थाओं द्वारा वितरित लाभांश को सीमित कर दिया गया है। सरकार का कहना है कि ३१ मार्च सन् १९४८ के बाद जो लाभांश दिया जाय वह या तो व्यावसायिक संस्था के चुकता धन का ६ प्रतिशत हो अथवा गत २ बरसों के लाभांश के योगित धन से अधिक न हो। इस कदम से वर्तमान संकट के निवारण में कोई सहायता नहीं मिलती। इसका अर्थ तो यह हुआ कि इस समय जितना धन पूँजीपतियों के पास है वह तो रहेगा ही, लेकिन सरकार उनकी जेब में और धन जाने पर प्रतिबंध लगा देगी। अतिरिक्त लाभ कर की वापसी के धन को रोक रखने में भी यही नीति है। किन्तु क्या इससे समस्या हल हो जायगी ? प्रश्न यह है कि इस समय सर्वसाधारण जनता को तुरन्त मदद की जाय और श्रमिक वर्ग को आर्थिक-संकट के उस भार से मुक्त करके उत्पादन बढ़ाने का अवसर दिया जाय। इस प्रकार का कोई काम सरकार ने नहीं किया। "पूँजीपति और धन संग्रह न कर पायें" इस सिद्धान्त से उत्पादन-वृद्धि की समस्या हल नहीं होती। श्रमिक शक्ति की उत्पादन-वृत्ति को सबल बनाने से ही स्फीति का मूल कारण दूर किया जा सकेगा।

डाकखानों में रुपया जमा करने की सुविधा सर्वसाधारण की सीमित आय में नहीं हैं अस्तु अधिक रुपया जमा करने की व्यापक सरकारी सुविधाएँ निमूल्य हैं।

सरदार पटेल ने गत १५ अगस्त को अपने रेडियो-भाषण में कहा था—"चीन से हमें बड़ी आशा थी कि वह एशिया का नेतृत्व करेगा किन्तु वहाँ जो गृहयुद्ध आज हो रहा है उससे हमें बड़ी निराशा हुई है। हम नहीं चाहते कि वह स्थिति भारत में उत्पन्न हो।"

यह बात बिलकुल सच है। भारतवासी यह नहीं चाहते कि जापान की भाँति कोई शत्रु राष्ट्र भारत पर अणुबम का उपयोग करे।

भारतवासी नहीं चाहते कि भारत चीन की भाँति गृहयुद्ध का शिकार बने।

भारतवासी नहीं चाहते कि स्याम की भाँति सैनिक-क्रांतियों द्वारा सरकारों की स्थापना अथवा उन्मूलन हो।

भारतवासी नहीं चाहते कि बर्मा की भाँति हमारी केन्द्रीय सरकार के शासन का क्षेत्र भी राजधानी से केवल १२ मील के दायरे में सीमित हो जाय। (गत दो अक्टूबर को सरदार पटेल ने अपने एक भाषण में बतलाया है बर्मा सरकार का शासन केवल रंगून के १२ मील के दायरे में ही है।)

हम यह भी नहीं चाहते कि मलाया, सिंगापूर की भाँति यहाँ विद्रोह हो और फ्रांस की भाँति हड़तालें हों। यूरोपियन राष्ट्रों की भाँति भारत की यह भी इच्छा नहीं है कि हमारी राष्ट्रीय अर्थ नीति डालर या रूबल सहायता पर अवलंबित रहे।

यह सब भारतीय जनता नहीं चाहती और आशा करती है कि राष्ट्रीय सरकार भी इसकी मनोभावनाओं को समझकर कार्य करेगी। किन्तु मनोभ
सिद्धि अनिवार्यतः उन उपायों से
हो सकती जिस प्रकार के साधनों का
योग भारत-सरकार का अर्थ
कर रहा है। बेचारे षण्मुखम् चेट्टी
पावने के मामले में बुरी तरह
हो भारत आये और किन्हीं भी
उन्हें अपने पद से मुक्ति ग्रहण
पड़ी। अब श्री नियोगी आये हैं
अपने प्रथम और सर्वाधिक मह
कार्य में ही इतनी दुखद रीति से
हुए हैं कि हमें सन्देह है कि
उनका भावी फैसला ही न कर दे।

इस समय निस्पृह भावनाओं
करने की आवश्यकता है। नेहरू
समाजवादी विचारधारा में हमारा
विश्वास है। सरदार पटेल की
और निस्पृह सेवा-भावनाओं के
हैं, किन्तु दोनों ही बातों का क्या
यदि जन-जीवन का स्तर सुधारे,
स्थापित करने और वैभव-वृद्धि
उनका सहयोग प्राप्त नहीं होता
विशिष्ट स्वार्थों की रक्षा की नीति
आदर्शों की पूर्ति में कभी भी सहायक
हो सकेगी ?

विवाहित जीवन
को सुखमय बनानेवाली अनूठी
काम शास्त्र (सचित्र) १।)
चौरासी आसन (सचित्र) १।)
१०० चुम्बन (सचित्र) १।)
सुहागरात (सचित्र) १।)
चारों पुस्तकें केवल ३॥) पोस्टेज
ग्लोब ट्रेडर्स (९०१), अली

प्रतिमा
इस संग्रह में सुकवि राजाराम
की एक से एक बढ़िया ५० कवि
इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा है।
भाषा और क्या भाव सभी अनु
रंगीन आवरण, बढ़िया छपाई और
केवल १) एक रुपया।

पूजागीत
द्विवेदी जी की नवीनतम राष्ट्रीय
ताओं का संग्रह। प्रत्येक कविता
स्फूर्ति का संचार करती है। फेदरवेट
कागज पर छपी हुई पुस्तक का मूल्य
दो रुपये।
मैनेजर इण्डियन प्रेस, लिमिटेड,

कोक शास्त्र
इसमें स्त्री-पुरुषों के अद्भुत
की जोड़दार फोटो, ब्लाक की
तसवीरें, यौवन के आनन्द प्राप्त करने
पोशीदा तरीके, प्राचीन जमाने के
भेद जिनका लिखना सभ्यता के विरुद्ध है। जो शादीशुदा न हो उसको यह पुस्तक
दी जाती। मूल्य २॥) रुपया, डाक-खर्च माफ।
खुफिया तसवीरों के कार्ड
२५ कार्ड का सेट २॥) रुपये में
पता—यलो ग्रीन एन्ड को० (D D A) 16, मेरीना अरकेड नई दिल्ली
Yellow Green & Co., (D D A) 16, Marina Arcade, New Delhi

देशदूत चित्रावली

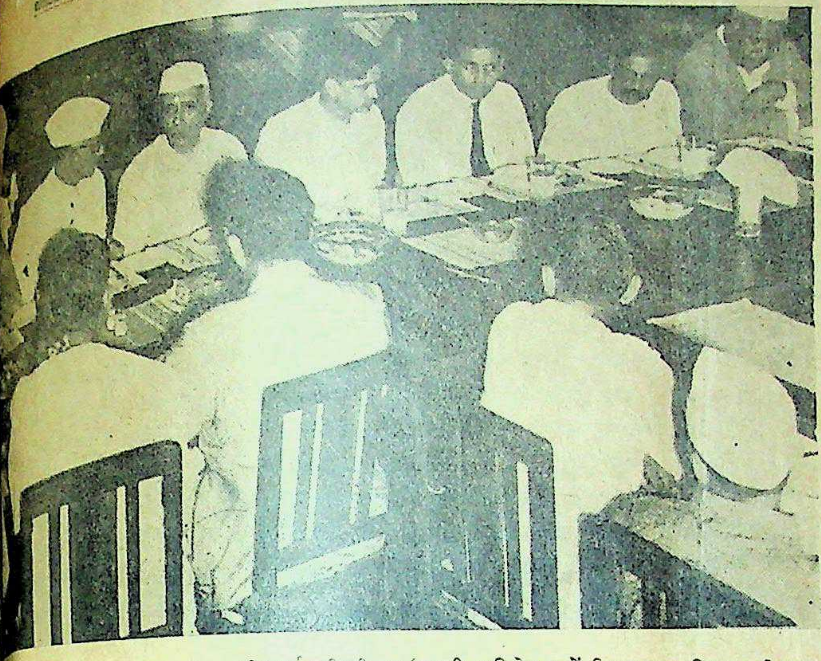

भारतवर्षीय सम्पादक-सम्मेलन की कार्यकारिणी का दिल्ली अधिवेशन में लिया गया चित्र। चित्र में पंडित जवाहरलाल नेहरू सदस्यों के साथ बातें करते दिखाई दे रहे हैं।

काश्मीर की महारानी दिल्ली में काश्मीरी शरणार्थियों के कैम्प में रुपये-पैसे बाँटती दिखाई दे रही हैं।

राजेन्द्रप्रसाद, पिलानी (जयपुर) के बिड़ला कालेज पर झण्डा फहराते दिखाई दे रहे हैं।

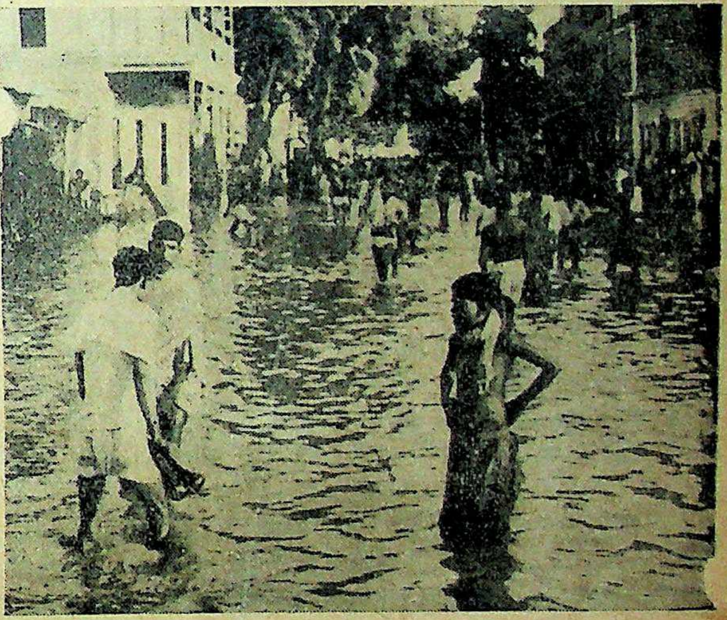

बनारस में गंगा जी का पानी बहुत अधिक बढ़ गया था। चित्र में बनारस की सड़कों और मुहल्लों में पानी बहने का दृश्य दिखाई दे रहा है।

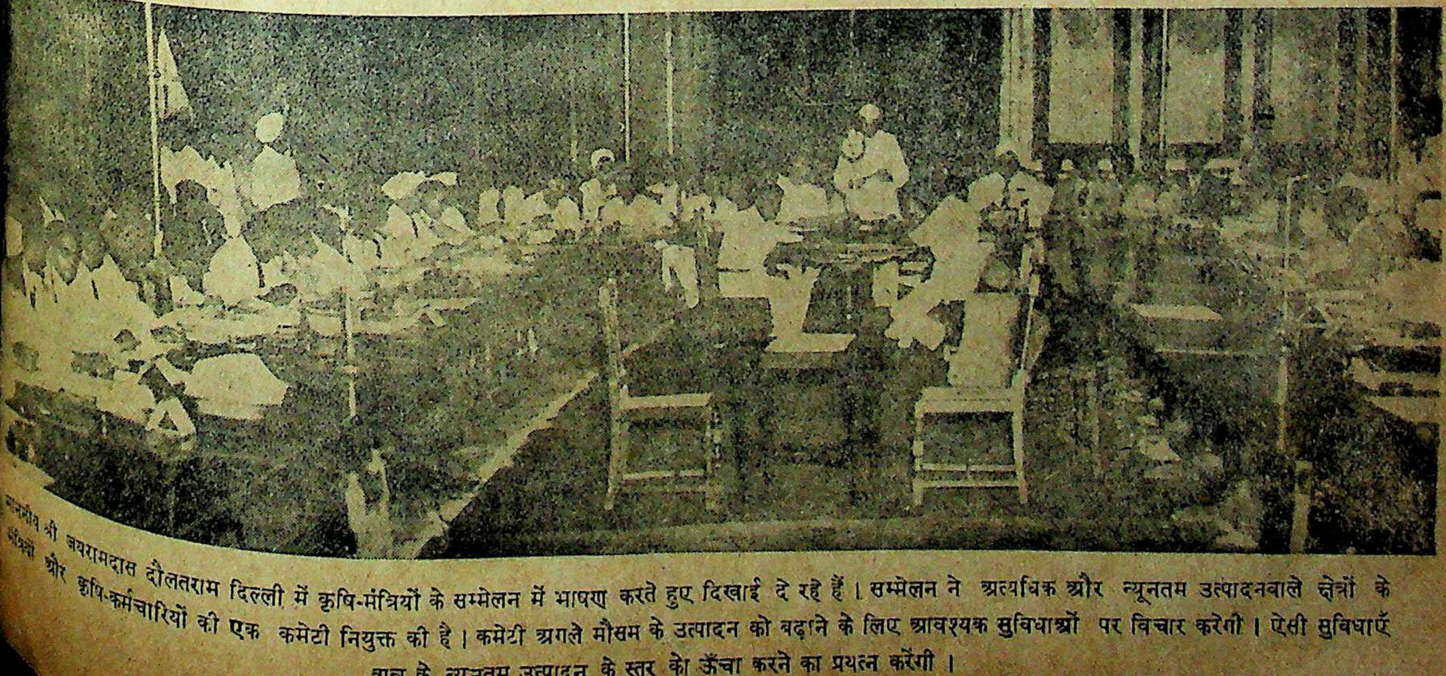

ननीय श्री जयरामदास दौलतराम दिल्ली में कृषि-मंत्रियों के सम्मेलन में भाषण करते हुए दिखाई दे रहे हैं। सम्मेलन ने अत्यधिक और न्यूनतम उत्पादनवाले क्षेत्रों के त्रियों और कृषि-कर्मचारियों की एक कमेटी नियुक्त की है। कमेटी अगले मौसम के उत्पादन को बढ़ाने के लिए आवश्यक सुविधाओं पर विचार करेगी। ऐसी सुविधाएँ अन्न के न्यूनतम उत्पादन के स्तर को ऊँचा करने का प्रयत्न करेंगी।

स्वास्थ्य-चर्चा

ओलम्पिक हाकी टीम

भारतीय खिलाड़ियों का दिल्ली में मैच

लेखक, श्री शिवकुमार विद्यालंकार

भारत की विश्व-विजेता ओलम्पिक हाकी टीम भारत लौट रही है। वह वापस आने के बाद दिल्ली में भी अपने जौहर दिखाएगी, इस खबर को पढ़कर हम दिल्लीवासी उसका खेल देखने को उत्सुक हो रहे थे। आखिरकार विगत शुक्रवार को इर्विन स्टेडियम नई दिल्ली में दिल्ली के चुने हुए खिलाड़ियों तथा विश्व-विजयी खिलाड़ियों में एक साम्मुख्य (मैच) हुआ। और वह भी भारत के गवर्नर-जनरल श्री राजगोपालाचार्य की देख-रेख में। दिल्ली के लगभग २० हजार दर्शक यह साम्मुख्य देखने के लिये उपस्थित थे।

दो सिक्ख-बन्धु रैफरी थी। उनकी विसल सुनकर सबसे पहले विश्व-विजयी टीम और बाद में दिल्ली की टीम मैदान में उतरी। पहली टीम की वर्दी हलकी नीली थी तो दूसरी की लाल। आधे मैदान में धूप थी तो आधे में छाया। ठीक सायंकाल ५ बजे बैंडबाजों और गगनभेदी करतल-ध्वनि के बीच खेल शुरू हुआ।

दर्शकों ने मर्यादाओं को तोड़ दिया। सैनिक लोग अनुनय-विनय करके लोगों को नियंत्रण में रखने का प्रयत्न करते रहे। मगर वे अपने काम में असफल रहे। दर्शक लोग बाँध तोड़कर मैदान के इर्द-गिर्द जमकर बैठ गए नौबत यहाँ तक पहुँच गई कि गवर्नर-जनरल भी खेल नहीं देख पाए। सशस्त्र पुलिस ने मौके पर पहुँच कर उनके सामने का मैदान दर्शकों से साफ कराया और तब कहीं जाकर वे मैच देख सके। सच जानिए तो मुश्किल से १० प्रतिशत लोग मैच अच्छी तरह देख सके। हमें पहले से ही पास मिल चुका था। इसलिए हमें पूरा मैच देखने का अवसर मिल गया।

खेल के आरम्भ में विश्व-विजयी टीम ने दिल्ली की टीम की परख करने के लिए जरा सी ढील छोड़ दी थी। फलस्वरूप दिल्ली की टीम ओलम्पिक टीम के पाले में पहुँच गई। विश्व-विजयी टीम पहले १० मिनट तक दबी रही। बाद में उसने जोर पकड़ा और गेंद दिल्ली टीम की तरफ दिखाई देने लगी। प्रथम हाफ में कोई खास जोश न था, गर्मी न थी। विश्व-विजयी टीम नाज-नखरों में खेल रही थी। उसके छोटे-छोटे पास दिल्ली टीम के खिलाड़ियों को काफी छका रहे थे। दूसरे हाफ में खेल में खूब गर्मी रही। दोनों टीमें एक-दूसरे पर गोल करने का भरसक प्रयत्न करती रहीं। अन्त में विश्व-विजयी टीम के सैन्टर फारवर्ड बलबीरसिंह ने दिल्ली टीम पर एक गोल कर दिया।

विश्व-विजयी टीम

पिंटो—गोलकीपर; जैन्टल और अख्तर हुसैन—बैक; केशव, अमीरकुमार और जसवन्तराय—हाफ बैक; किशनलाल (कैप्टन) बाबू बलबीरसिंह, राडविंग्स और जान लतीफ—फारवर्ड।

दिल्ली टीम

पुरी—गोलकीपर; सूरज, पीटर्स—बैक; सोमपुरी, रामेन्द्र और महताब—हाफ बैक; कैकर, सोहन; ध्यानचन्द्र (कैप्टन) विष्णु और दास।

दिल्ली टीम का कैप्टन ध्यानचन्द था। सब दर्शक उसके जौहर देखने को लालायित थे। सब लोग अपनी सीटों से उचक-उचककर ध्यानचन्द को देख रहे थे। खेल का श्रीगणेश उसी ने किया था। गेंद ने उसकी स्टिक का और स्टिक ने गेंद का पीछा नहीं छोड़ा। ऐसा प्रतीत होता था कि उसकी स्टिक पर सरेस लगी हुई है और गेंद उसके साथ चिपकी हुई है। यही वजह है कि पहले पहल दिल्ली की टीम ने विश्वविजयी टीम को दावे रखा। प्रतिस्पर्धी खिलाड़ी भी भाँप गये उन्होंने बहुत जल्दी खेल खेल में ही यह फैसला कर लिया कि ध्यानचन्द का पीछा किया जाय और उसे आजाद न छोड़ा जाय। सैन्टरवाले तो उसका पीछा करने में कामयाब न हो सके। उनसे तो उसका पिण्ड छूट जाता था। मगर सैन्टर-हाफ अमीरकुमार के सामने उसकी दाल न गल सकी। वह तो हाथ धोकर उसके पीछे पड़ गया था। ध्यानचन्द अपना पिण्ड छुड़ाने के लिए अपने साथियों को पास कर दिया करता था। उसकी इच्छा यह होती थी कि इस तरह थोड़ी देर के लिए अमीरकुमार से मुक्त होकर उसका कोई साथी उसे पास कर दे। मगर अपने एक भी साथी से उसकी यह आशा पूरी न हुई। सन् १९३६ में भी विश्वविजयी ओलम्पिक टीम ने दिल्ली में एक मैच खेला था। उस समय हमें स्मरण है कि ध्यानचन्द और रूपसिंह का पासिंग बड़ा शानदार रहा था। किन्तु अब के मैच में ध्यान को रूप का-सा साथी न मिल सका। फिर उसकी उम्र भी काफी ढल चुकी है। यही कारण है कि दर्शकगण ध्यान के खेल से प्रभावित न हो सके।

दिल्ली टीम के गोलकीपर का खेल प्रशंसनीय रहा। उसने करीब चार गोल बचाए। एक बार तो वह पैर से गेंद को ठुकरता ठुकराता 'डी' की लाइन तक पहुँच गया। वहाँ से उसने ऐसी जोर की हिट की कि आउट हो गया। 'डी' की लाइन तक पहुँचकर सचमुच उसने एक बहुत बड़े खतरे का सामना किया। यदि कहीं 'डी' से हिट करने के बाद किसी विरोधी ने बीच में ही गेंद रोक ली होती और थोड़ी सी कैरी करके 'डी' में पहुँच कर हिट कर दी होती तो दिल्ली टीम पर गोल निश्चित था। कारण यह है कि उस समय गोलकीपर गोल से बाहर था। आउट हो जाने से गोलकीपर को वापस लौटने का काफी समय मिल गया।

दिल्ली टीम के बैक सूरज और पीटर्स की काफी परीक्षा हुई विश्व-विजयी टीम के लेफ्ट-आउट जान लतीफ की तेजी ने लेफ्ट-बैक पीटर्स को काफी परेशान रखा। लतीफ अपने बराबर के दास से बचकर और महताब को भी चकमा देकर यदि कहीं दिखाई देता था तो बस गोल के आस-पास। इसीलिए पीटर्स को काफी सजग और सतर्क रहना पड़ता था। वह कई बार लतीफ को रोकने में समर्थ हुआ।

सैन्टरहाफ राजेन्द्र को बहुत कम मेहनत करनी पड़ी। अपने मुकाबले के खिलाड़ी बलबीरसिंह को वह बहुत कम रोक पाया। लेफ्ट-आउट दास काफी मुस्तैद दीखता था। उसके पास जब कभी गेंद आई उसने उसे अपने साथी विष्णु को पास करने की कोशिश की। उसमें प्रतिस्पर्धी लतीफ के समान तेजी न थी। लेफ्ट-आउट कैकर और लैफ्ट-इन सोहन का जोड़ा अच्छा रहा। उन्होंने अपने प्रतिस्पर्धी किशनलाल और बाबू को नहीं चमकने दिया। वे दोनों अपने प्रतिस्पर्धियों के लिए राहु साबित हुए।

विश्वविजयी टीम

विश्वविजयी ओलम्पिक टीम का केप्टिन किशनलाल था। वह राइट आउट खेल रहा था। उसकी रफ्तार बड़ी तेज थी। गेंद आई और वह उसे लेकर हवा हो जाता था। लेकिन उसका प्रतिस्पर्धी कैकर उसका बुरी तरह पीछा किया करता था। इसलिए वह कोई गोल न कर सका।

इस टीम के गोलकीपर पिंटो की अग्निपरीक्षा नहीं हुई वह गोल की बल्ली के साथ आराम से खड़ा रहता था। लेकिन था एकदम मुस्तैद। बैक जेन्टल और अख्तर का बचाव-कार्य कमाल का रहा। इन दोनों के कारण ही शायद गोलकीपर की अग्नि-परीक्षा न हो सकी। हाफ बैक केशव, अमीरकुमार और जसवन्तराम खूब खेले। वे तीनों मिलकर दिल्ली टीम के लिए दीवार-सी बना लेते थे। लेकिन कई बार विरोधी टीम के खिलाड़ी इस दीवार को भी छेदकर आगे बढ़ जाते थे। यह तीनों हाफ बैक लोग या शार्ट कार्नर के समय गोल के सामने ऐसी जबर्दस्त मोर्चेबन्दी कर देते थे कि क्या मजाल गेंद उधर से निकल भी जाये।

फारवर्ड खेलनेवालों में जान लतीफ और बलबीरसिंह अपना सानी न रखते थे। बलबीरसिंह की सदैव यह कोशिश रहा करती थी कि गेंद लतीफ के पास रहे और वही 'डी' में पहुँचकर गोल करे। कारण यह है कि सेन्टर आउट से शूट करना सदैव आसान होता है। इसमें गोल निश्चित-सा होता है। लेकिन विरोधी टीम के खिलाड़ी लतीफ को बुरी तरह घेर लेते थे, इसलिए उसे पास करने का मौका न मिलता था। देखनेवालों को ऐसा प्रतीत होता था कि लतीफ का खेल स्वार्थी है। कभी कभी बलबीरसिंह भी लतीफ को आजाद छोड़ देता था। उसकी चाह यह प्रतीत होती थी कि एक गोल तो

लतीफ के नाम का भी हो जाय।
कई बार गोल करने की कोशि
मगर पुरी ने उसकी दाल नहीं
उसने उसके बड़े करारे और तेज
रोका। लतीफ का पासिंग भी
था।

सेन्टर फारवर्ड बलबीरसिंह
प्रशंसनीय रहा। वह बड़े मजे में
था। उसकी खेल में तेजी थी।
गेंद उसके हाथ लगनी चाहिए,
हो जाता था। उसका पीछा
प्रतिस्पर्धी टापते रह जाते थे।
में उसकी एक भी हाईस्टिक
स्टिक पर उसका कमाल
है। हाफ टाइम के बाद खेल
अभी ८ मिनट ही हुए थे कि
ने दिल्ली टीम पर एक गोल दाग
इस गोल को दिल्लीवाले अंतिम
नहीं रोक सके।

बाबू की कैरी कमाल की थी।
प्रतिस्पर्धियों के जाल को छिन्न-भिन्न
वह आगे तो बढ़ जाता था,
गोल एक भी न कर सका। विरो
के कार्नर को विफल करने में बाबू ने
चतुराई दिखाई।

राडविंग का खेल पासिं
रहा। एक बार लाँग-कार्नर था।
ने इसे विफल कर दिया और
पास कर दिया। जब लतीफ ने देखा
मेरे से काम नहीं होगा तो उसने
सफाई के साथ गेंद बलबीरसिंह के
सरका दी। बड़ी नाजुक घड़ी थी।
निश्चित था। मगर बलबीरसिंह ने इस
शूटिंग किया कि गेंद गोल की
के ऊपर से निकल गई। यदि गोल
जाता तो नाम बलवीरसिंह का
गोल नहीं हुआ, इसलिए
होगा कि राडविंग का पासिंग
रहा। वह खूब सोच-समझकर
किया करता था।

खेल में ५ मिनट शेष थे।
विजयी टीम ने दिल्ली टीम को
दबा रखा था। खतरा था कि
और गोल न हो जाय। दोनों
काफी सरगर्मी दिखाई गई।
दिल्ली, टीम गोल उतार सकी
ही विश्व-विजयी टीम दूसरा गोल
सकी।

तुलनात्मक भाषाशास
(भाषा-विज्ञान)
लेखक डा० मंगलदेव शास्त्री
एम० ए०, डी० फिल०
इसमें तुलनात्मक भाषाशास्त्र के
का प्रतिपादन तथा संसार की
भाषाओं के परस्पर सम्बन्ध की
सुबोध व्याख्या है। प्रोफेसर ए०
वुलनर, डा० भगवान्दास, म०
नाथ झा और श्री गोपीनाथ कविराज
लक्ष्मणस्वरूप और धीरेन्द्र वर्मा
मनीषियों ने और अन्य नामी
तथा पत्रों ने इसकी प्रशंसा की है।
संख्या पौने तीन सौ से ऊपर
कागज, बढ़िया जिल्द; मूल्य
इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

अन्त में विनोबा जी ने कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं को चेतावनी दी कि यदि कांग्रेस के सत्ताधारी संस्था बना दिया गया तो वह अपनी सेवा के भाव से विचलित हो सकती है, इसलिये कांग्रेस को चाहिये कि जो सत्ता उसे मिली है उसे वह सेवा की दासी बना ले, कांग्रेस के अब राज्यसत्ता के बजाय प्राज्यसत्ता कायम करनी है। यही धर्मराज्य होगा और यहीं रामराज्य, तभी हमारे देश में सर्वोदय समाज की स्थापना होगी, हैदाबाद का जिक्र करते हुए विनोबा बाजी ने कहा कि वहाँ की विजय का श्रेय जनता के है जिसने देश में एकता बनाये रक्खी, निर्माण-समिति के संयोजक श्री दौलतमल भंडारी ने गांधीनगर के निर्माण की प्रगति का उल्लेख करते हुये विनोबा जी के धन्यवाद दिया।

कार्यसमिति ने निश्चय किया कि दर्शकों के टिकट की दर अधिक से अधिक १००० रुतथा कम से कम १० रुपये रक्खी जाय। विषय-निर्वाचनी कमेटी के लिए दर्शकों का पूरा टिकट २५ रुपये तथा १५ रुपए का मंजुर किया गया। डेलीगेटों के प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी का तथा द्वारा सिफारिश किये गये कार्यकर्ताओं का विषय निर्वाचिनी का टिकट १० रुपये में मिलेगा और स्वागत-समिति के सदस्यों के १५ रुपये में।

—संवाददाता

* * *

नागपुर गत सप्ताह आध्यात्मिक विश्वशांति-संघ के संस्थापक व संचालक श्री योगिराज धर्म्मध्रुव जी यहाँ पधारे। कुछ स्थानीय हाईस्कूल, कालेजों में भाषण के अतिरिक्त प्रधान मन्त्री पं० रविशंकर शुक्ल के निवासस्थान पर भी आपके उपदेश हुए। माननीय प्रधान मन्त्री के बँगले पर आयोजित महिला सभा में प्रवचन करते हुए श्री धर्म्मध्रुव जी ने कहा कि "यदि महिलायें चाहें तो भारत में शीघ्र रामराज्य स्थापित हो सकता है। अपनी संस्था का जिक्र करते हुए श्री योगिराज ने कहा कि हमारा विश्वास है कि बिना ईश्वर-भक्ति की नींव पर आध्यात्मिक वातावरण तैयार किये विश्व में प्रेम व शान्ति का अभाव बना ही रहेगा। स्त्रियों का कर्तव्य है कि बच्चों की नैतिक व धार्मिक शिक्षा अपने हाथ में लें। और परिवार में प्रतिदिन कुछ समय के लिए शास्त्र-पाठ, प्रार्थना, भजन, कीर्तन आदि का प्रोग्राम दिया जाया करे। कौटुम्बिक प्रेम-शान्ति की रक्षा व पास-पड़ोस की पवित्रता के सुरक्षित रखकर तथा सत्त्व व अहिंसा पर चलते हुए रचनात्मक धर्मों में समय देकर स्त्रियाँ सांस्कृतिक विकास व राष्ट्र की उन्नति में पूरा हाथ बँटा सकती हैं। मानव-जगत् के उत्पादन, पालन, संचालन की सुव्यवस्था तो "गृहणी जीवन" ही में है। आज यदि आसुरी शक्तियों से जगत् शान्त व सुरक्षित रह सकता है और नर-संहार रुक सकता है तो जगज्जननी नारियों के प्रयत्न द्वारा ही।

—संवाददाता

* * *

वर्धा आध्यात्मिक विश्व-शान्ति संघ के संस्थापक व संचालक श्री योगिराज धर्म्मध्रुव जी और गांधी-जयन्ती के अवसर पर वर्धा पधारे। सत्यनारायण बजाज एम० एल० ए० ने आपका स्वागत किया स्थानीय प्रमुख सभाओं में आपके भाषण हुए। सेवाग्राम की प्रार्थना-सभा में प्रवचन करते समय श्री धर्म्म ध्रुव जी ने कहा कि "यह वही पुनीत स्थल है जहाँ महापुरुष ने वास किया। दरिद्रनारायण की सेवा के निमित्त ग्रामीण जीवन बिताया। और यहीं से समस्त भौतिक-विश्व को आध्यात्मिक प्रकाश दिया। उनका रचनात्मक कार्य्य ही भारत की वास्तविक रचना में उपयोगी सिद्ध हो सकता है। बापू जी मन, वचन व कर्म में सत्य व अहिंसा के अनुयायी थे। इसीलिए वे महात्मा थे, निर्भय थे, सुखी थे, स्वतन्त्र थे। उनका मनोवांछित रामराज्य हमें निर्मित करना है, उनकी शिक्षा व संगति का असर हम औरों के लिए चुम्बक व पारस बनकर दिखायें। ईश्वर-भक्ति ही से बापू को आत्मशक्ति मिली। काश कि हम श्रद्धा-विश्वास के साथ शुद्ध मन से व्यक्तिगत व सामूहिक प्रार्थनाओं में समय दें। गांधीवादियों को यही शोभा देता है।

ईश्वर-प्रार्थना की महत्ता पर श्री योगिराज धर्म्मध्रुव जी ने अपने निजी अनुभवों द्वारा बहुत प्रकाश डाला।

—संवाददाता

* * *

देवप्रयाग गढ़वाल जिला कांग्रेस के प्रधान श्री छवाड़सिंह तथा प्रधान मन्त्री श्री भगवती चरण शर्मा "निर्मोही" चुने गये। और पं० श्रीलाल थपलियाल ने जिला कांग्रेस समिति की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया है।

श्रीनगर (गढ़वाल) टाऊन एरिया के अध्यक्ष के चुनाव में श्री मास्करानन्द मैठाणी वकील (स्वतन्त्र) बहुमत से विजयी हुए। मालूम हुआ है कि कांग्रेसी उम्मीदवार की ओर से पुनर्निर्वाचनार्थ प्रार्थना-पत्र पेश है।

टिहरी प्रजामण्डल स्वतन्त्र इकाई दल के १६ सदस्य नई देहली में भारतीय विधान-सभा के लिये ६ रियासतों के समूह में से चुने जानेवाले सदस्य के चुनाव में भाग लेने के लिए गये हैं। टिहरी की ओर से शिक्षामन्त्री श्रीकृष्णसिंह उक्त सदस्यता के लिये उम्मीदवार हैं।

२ अक्टूबर को देवप्रयाग में तथा वाह में कांग्रेस प्रजामण्डल, तथा सब स्थानीय संस्थाओं की ओर से प्रभातफेरी आदि संयुक्त रूप से व्यापक प्रोग्राम के अनुसार "गांधी-जयन्ती" मनाई गई। एक आम सभा श्री धनेश की अध्यक्षता में हुई। और टिहरी के नेता श्री प्रेमलाल वैद्य ने अपने भाषणों में जनता से स्व० बापू के सिद्धांतों के अनुसार चलने की अपील की। और सर्वसम्मन प्रस्ताव द्वारा श्री बापू के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए, कांग्रेस तथा भारतीय सरकार से गांधी संवत् भी प्रारम्भ किये जाने की प्रार्थना की गई।

—संवाददाता

* * *

देवप्रयाग में श्री प्रेमलाल वैद्य तथा श्री धनेश आदि के नेतृत्व में कांग्रेस के तत्त्वावधान में गांधी-जयन्ती बड़े समारोहपूर्वक मनाई गई।

श्री भगवतीचरण शर्मा "निर्मोही" जिला गढ़वाल कांग्रेस-कमेटी के प्रधान मन्त्री के देवप्रयाग की जनता, कांग्रेस मण्डल, प्रजामण्डल, विलीनीकरण समिति की ओर से मानपत्र दिये गये। एक सभा श्री कृष्णकान्त टोडरिया के नेतृत्व में हुई, श्री प्रेमलाल वैद्य श्री धनेश, श्री रमेश, श्री रामप्रसाद सनमैधा, श्री गयाप्रसाद शास्त्री तथा श्री "भिखारी" एवं श्री सन्तलाल आदि ने श्री निर्मोही जी का अभिनन्दन किया।

भारतीय विधान सभा के लिये टिहरी आदि राज्य-समूह की ओर टिहरी के शिक्षा-मन्त्री ठा० कृष्णसिंह जी बहुमत से सदस्य चुने गये और प्रजामण्डल के प्रतिनिधि वापस टिहरी आ गये हैं।

जानकार लोगों से ज्ञात हुआ है कि—गढ़वाल कांग्रेस कमेटी ने एक सर्वसम्मत प्रस्ताव के द्वारा डा० श्री कुशलानन्द गैरोला एम० एल० ए० से अनुरोध किया है कि आपके कार्य-काल में गढ़वाल अनाथ की-सी भाँति रहा अतः आप प्रांतीय कौंसिल की सदस्यता से अविलम्ब त्यागपत्र दे दें। क्योंकि आप अब टिहरी के मन्त्रिमण्डल के कार्य-भार में व्यस्त हैं।

टिहरी के जन-नायक एवं प्रजामण्डल विलीनीकरण पार्टी के प्रधान श्री प्रेमलाल वैद्य ने अपने एक वक्तव्य में टिहरी की जनता को सलाह दी है कि "टिहरी की ५ लाख जनता का हित विलीनीकरण में ही है। उसे प्रतिक्रियावादियों एवं स्वार्थमय दलबन्दियों के बहकावे में न आना चाहिये, क्योंकि, टिहरी की जन-संख्या एवं आय इतनी कम है कि उसमें उत्तरदायित्वपूर्ण शासन एवं स्वतन्त्र इकाई की स्थापना की कोई भी गुंजाइश नहीं है। अब वह समय एकदम सन्निकट है कि टिहरी राज्य की सब पार्टियाँ एक स्वर से विलीनीकरण के पक्ष का समर्थन करने लगेंगी।

—संवाददाता

* * *

पृथ्वी की कहानी

पृथ्वी कैसे बनी, पृथ्वी पर पहले-पहल कौन आया; नद-नदियाँ, पहाड़, जंगल, रेगिस्तान, बर्फीले देश, जानवर, पक्षी और आदमी कैसे बने; धर्म और जातियाँ, राजा और कानून कैसे बने; पुरानी यादगारें, आज की दुनिया, पृथ्वी का अन्त आदि बातों का वर्णन इस पुस्तक में बड़े अच्छे ढंग से किया गया है। मूल्य ॥=)॥

गुदड़ी के लाल

इस पुस्तक की कहानियाँ बहुत ही सरल और रोचक भाषा में लिखी गई हैं। इनको पढ़कर बच्चे बेहद खुश होते हैं। ऐसी पुस्तक अपने बच्चों को जरूर दीजिए। मूल्य ॥)

मैनेजर, बुकडिपो,
इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

इधर उधर की

प्रयाग के एक गाँव में चलता फिरता और बोलता हुआ एक बच्चा पैदा हुआ। बच्चा अपने हाथों दूध भी पीता था। पर अभाग्यवश वह ४ घंटे के अन्दर मर गया।

* * *

संयुक्त राज्य अमरीका में ऐसे इंजिन तैयार किये जा रहे हैं जिनमें ईंधन की बहुत ही बचत होगी। उस देश में साढ़े तीन करोड़ मोटरें तैयार हैं और आवश्यकता पड़ेगी तो काफी संख्या में तैयार की जा सकती हैं।

* * *

अमरीका में न्यूयार्क शहर की पर्ल रिवर में लीडरली विज्ञानशाला के एक विद्वान् डा० बेञ्जमिन एम० डग्गर ने बीमारियों से लोहा लेने के यंत्र का आविष्कार किया है इस यन्त्र से अमरीका के अस्पतालों में भयंकर संक्रामक रोगों को दूर किया जा रहा है।

* * *

अमरीका के एक वैज्ञानिक सूर्य की शक्ति से ईंधन की समस्या हल करना चाहते हैं। इस पर बहुत कुछ खोज कर चुके हैं, संसार के सम्मुख इस समस्या को लेकर बहुत कुछ अड़चने दूर हो जायँगी।

* * *

एलेक्ट्रिक तार में अमरीका के अन्दर एक नई खोज हुई है। यह तार बन भी गया है इससे भूमि के अन्दर की चीजें जानी जा सकेंगी। यह बाजारों में भी आ गया है। व्यापारिक चिह्न "लेटेक्स रुब" है।

* * *

माल और पैसिञ्जर गाड़ियों की रक्षा और यात्रा की देरी में कमी करने के लिए अमरीका की रेलवे में रेडियो पद्धति का उपयोग हो रहा है। अमरीका के शिकागो, इलीन्वाइज, जर्सी शहर, न्युजर्सी के बीच की लाइन पर जो ३१५ मील लम्बी है १५ स्टेशनरी ट्रान्समिटर द्वारा रेडियो प्रद्धति का उपयोग हो रहा है। रेडियो पद्धति रास्ते के स्टेशन और चलती हुई ट्रेनों के बीच आवश्यक यातायात बना रहा है। रेल रोड ने अपनी सारी मुख्य लाइन पर रेडियो पद्धति का उपयोग करने का कार्यक्रम बना लिया है।

* * *

पुस्तकाध्यक्षों की ट्रेनिङ्ग के लिए मैनचेस्टर में एक अन्तर्राष्ट्रीय स्कूल खोला गया है। इस स्कूल में विभिन्न देशों के ५० पुस्तकाध्यक्ष भाग ले रहे हैं। इस स्कूल में यह शिक्षा दी जाती है कि पुस्तकालय किस प्रकार जनता में जनप्रिय शिक्षा और अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञान कर सकते हैं। स्कूल में ४० पुस्तकाध्यक्ष जो कि अपने अपने देश के पुस्तकालय सुधारों के योग्यतम नेता हैं और जिनकी अवस्था ४० वर्ष से कम नहीं हैं भाग ले रहे हैं। स्कूल की शिक्षा १ माह की होगी जिसका अन्तिम सप्ताह लन्दन में शुरू किया जायगा। यह स्कूल ग्रुपों में कार्य करेगा। प्रत्येक ग्रुप पुस्तकालय के कार्य के महत्वपूर्ण दशाओं का गहन अध्ययन कर रहा है।

* * *

मनोरंजक चुटकुले

समाचार छपा है कि हैदराबाद में अरब और पठान सैनिक काफी संख्या में पकड़े जा रहे हैं। बेचारे सैनिक अपने देश से हजारों मील दूर धर्म की रक्षा करने आये थे। पर उन्हें यह क्या मालूम कि उधर अरबों पर यहूदी और पठानिस्तानी प्रदेश पर दूसरे आक्रमण कर बैठेंगे! खुदा का गजब तो है!!

* * *

पाकिस्तान के भाग्य अच्छे हैं, जिधर ही दृष्टि फेंकता है, बस, रुपया बरसने लगते हैं। गत वर्ष गांधी जी ने ५५ करोड़ दिलवाया। हैदराबाद ने भी २० करोड़ का दान दिया अमरीका और ब्रिटेन से सहायता मिल ही रही है। एक नया साथी अर्जेण्टाइना भी मिला है। इस बीच डेढ़ करोड़ पुनः हैदराबाद से लूट में मिल गये। ईश्वर देने लगता है तो छप्पर फाड़कर। लूट के दिन सर्वदा नहीं रहते! भारत की दुश्मनी की यह पूजा है। यदि पाकिस्तान भारत में पुनः मिल जाय तो उसकी भी वह दुर्गति हो जायगी जो भारत ढाई अरब कर्ज लेकर भोगता है। फिर पाकिस्तान क्यों कीचड़ में ढेले फेंके और छींटे खावे जब उसको अलग ही रहकर भारत को गाली देने में आनन्द! भारत ही को यह दिन मुबारक रहे!

* * *

बंगाल के अर्थ मन्त्री ने केन्द्रीय सरकार से वैधानिक ढंग से रुपये प्राप्त करने का रास्ता ढूँढ निकाला है। किसी सरकार को दूसरी सरकार की सहायता मिल जाय तो क्या कहना! बंगाल-सरकार को अपने अर्थ मंत्री श्री नलिनी रंजन सरकार की दूसरी सहायता मिल जाने से 'सोने में सुहागा मिल गया' वह चाहे जितना रुपया पैदा करे!"

* * *

इंगलैण्ड के विदेशी मंत्री मिस्टर बेविन ने कहा—यदि तीसरा युद्ध छिड़ा तो उसका उत्तरदायित्व 'रूस पर होगा'। ठीक ही कहा है। अभी तक संसार में जितने युद्ध हुए हैं उनमें इँगलैण्ड सर्वदा पीछे रहा है। फिर इसी युद्ध में क्यों आगे हो? लेकिन क्या बेविल महोदय को यह याद नहीं है कि संसार के सारे देशों को इँगलैण्ड के रहनेवालों ने बहुत पहिले ही लड़ा कर अधीन बना लिया था। अब यदि वे स्वतंत्र होना चाहते हैं तो युद्ध के अपराधी होते हैं। 'बोलने में दुख और न बोलने में भी'। रूस मूकों की आवाज कहाँ तक उठायेगा। वे तो जन्म के ही रोगी हैं—इँगलैण्ड के दास।

* * *

बेचारे डेवी क्या करेंगे। क्यों कि वे भी प्रेसीडेण्ट के एक उम्मीदवार हो रहे हैं। भारत में होते तो हम उन तीनों को त्रिवेणी अथवा त्रिदेव कहकर मान लेते! ठहरे वे दूर फिर भी हम संसार की सलामती के लिए तीनों ही को देवता मानते हैं। पर सन्देह है कहीं 'मधुर मधु पूर्ण प्याला जानते थे विष भरा निकला' के देवता न बन जायें।

* * *

हमारी शिक्षा और पुस्तकालय

(पेज ८ का शेष)

तक स्कूलों में एक अलग पुस्तकाध्यक्ष रखने की आवश्यकता पर किसी का ध्यान ही नहीं गया है और सच बात तो यह है कि जब पुस्तकालय ही नहीं है तो अलग पुस्तकाध्यक्ष रखने का प्रश्न ही नहीं उठता। किन्तु जिन स्कूलों में कामचलाऊ पुस्तकालय हैं भी वहाँ भी अलग से पुस्तकाध्यक्ष नहीं रक्खे जाते। यही बात बहुत से कालेजों में भी पाई जाती है। अधिकांश कालेजों और विश्वविद्यालयों में भी वैज्ञानिक ढंग पर ट्रेनिंग प्राप्त अध्यक्ष नहीं हैं अतएव वे पुस्तकों को अधिकतम उपयोगी बनाने में असमर्थ होते हैं।

प्रश्न उठता है कि हमारे कालेजों एवं विश्वविद्यालयों में योग्य पुस्तकाध्यक्ष क्यों नहीं हैं? सच बात तो यह है कि यदि इन संस्थाओं में अलग से पुस्तकाध्यक्ष रक्खे भी जाते हैं तो उनका वेतन इतना कम एवं पद इतना हीन रक्खा जाता है कि वे हमारे 'आदर' के नहीं बल्कि 'दया' के पात्र बन जाते हैं। बेचारे अपनी नमक-रोटी की ही समस्या कठिनता से सुलझा पाते हैं। अतएव इस पेशे के लोगों का अपने स्थान से असन्तुष्ट रहना स्वाभाविक ही है। उन्हें जहाँ थोड़े से अधिक रुपए मिलने की आशा होती है तो वे अपने स्थान से त्याग-पत्र देने में हिचकते नहीं। आज इस पेशे में प्रायः वे ही लोग पड़े रह गए हैं जिनका अन्यत्र कहीं ठिकाना नहीं। हमारे अधिकारी-वर्ग इस पर ध्यान ही नहीं देते कि कम वेतन पानेवाला व्यक्ति अच्छा कार्य नहीं कर सकता। अपने पेशे और वेतन से असन्तुष्ट व्यक्ति संतोषजनक कार्य कैसे कर सकता है? अतएव इस पेशे में निम्नलिखित सुधार वांछनीय है।—

प्रथम—पुस्तकाध्यक्षों का पद स्कूलों में स्कूलों के मास्टरों के पद के बराबर; कालेजों में लेक्चररों के पद के बराबर और विश्वविद्यालयों में प्रोफेसरों तथा डोनो के पद के बराबर समझा जाय और उतना ही वेतन भी मिले।

द्वितीय—ये पुस्तकाध्यक्ष उचित शिक्षा-प्राप्त विद्वान् व्यक्ति हों। वे कम से कम ग्रेजुएट हों और विश्वविद्यालयों के लाइब्रेरियनों को तो एक विषय का एम० ए० या डाक्टर और अन्य विषयों का साधारण ज्ञान रखना आवश्यक है।

तृतीय—इस पेशे में वे ही लोग आने का कष्ट करें जो अध्ययनशील हों और सामान्य ज्ञान अधिक से अधिक विषयों का रखते हों।

चतुर्थ—लाइब्रेरियनों को स्वभाव से प्रसन्नचित्त एवं हँसमुख होना चाहि जिससे वे अपने मधुर व्यवहार से मृतक पुस्तक-भंडार को सजीव एवं प्रिय बना सकें। मनहूस और शुष्क-हृदय लाइब्रेरियन पुस्तकालय को कब्रिस्तान ही बना डालेगा।

पंचम—लाइब्रेरियन को कम से कम एक वर्ष अधिक से अधिक २ वर्ष की इस विषय की ट्रेनिङ्ग वैज्ञानिक ढंग पर अवश्य मिलनी चाहिए कुछ पुस्तक-प्रेमी विद्वान पुस्तकाध्यक्षों को देश और समाज, की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए इस विषय में अनुसंधान करना चाहिए।

इतना होने पर ही जनता को पुस्तकालयों की उपयोगिता पूर्णरूप से ज्ञात हो सकती है आशा है। प्रान्तीय एवं केन्द्रीय जनता की सरकारें इस ओर अपना आवश्यक कदम शीघ्र उठाएँगी।

* * *

वैवाहिक सुख प्राप्ति के लि
"स्त्रीप्रेम रहस्य" मुफ्त
पता—पी० बी० ३७२ दि

जवानी—मुफ्त
खोई हुई जवानी सुवर्ण कम्पा
२४ घंटे में पुनः प्राप्त करें। नमूना
ए० वी० भवन, मोरीगेट, दि

गांधी-अभिनन्दन-ग्र
सम्पादक—श्री सोहनलाल द्वि
प्राक्कथन—सर सर्वपल्ली राध

संस्कृति, हिन्दी, उर्दू, बंगला, राती, सिन्धी, मराठी, तामिल, मलयालम, कन्नड़, अँगरेजी और भाषाओं में महात्मा गांधी जी पर हुई सर्वोत्तम कविताओं का संग्रह भाषा में अर्थ-सहित।

बड़ा आकार, सुन्दर छपाई के अनेक चित्र। बढ़िया जिल्द प्रशंसित।

सादी जिल्द ६।।) कपड़े की जि

सेवाग्राम
रंग-विरंगी छपाई, अनेक रंगीन
रचयिता श्री सोहनलाल द्विवेदी
संरक्षक श्री घनश्यामदास बिड़ला

जनता की भाषा में, जनता के का, जनता का काव्य कवि श्री रचनाओं का सुन्दर संग्रह। बड़ा बढ़िया काग़ज़, कपड़े की मज़बूत मूल्य दस रुपये।

परीदेश
यह पुस्तक ख़ास कर छोटे लिए है। इसमें ऐसी एक भी जिसको समझने के लिए माथापच्ची पड़े। इसमें रोजमर्रा की बातें अच्छे ढंग से लिखी गई हैं। की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है।

आविष्कारों की क
मशीनें कैसे बनीं! तरह औजार कैसे बनें? रेल, जहाज, सिनेमा वगैरह कैसे बने? बनाकर या नये काम करके दुनिया में प्रसिद्ध हो सकते हैं! बातों को जानने के लिए यह पढ़िए। मूल्य १)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

देशदूत में विज्ञापन
लाभ उठाइये।

रामचरितमानस

टीकाकार—डाक्टर श्यामसुन्दरदास

'मानस' का महत्त्व किसी से छिपा नहीं है। भारतवर्ष में तो इसका मान है ही, अन्य देशों में भी इस अमर काव्य का आदर है। यह प्रामाणिक संस्करण इधर कई वर्ष से अप्राप्य था। हाल में ही छपकर तैयार हुआ है। ग्राहकों को शीघ्रता करनी चाहिए। अधिक प्रतियाँ नहीं छापी गई हैं।

बड़े आकार के १२०० पृष्ठ। रंग-विरंगे दर्जनों चित्र। सजिल्द प्रति का

मूल्य १२) रुपये

जहाँ पर हमारी ब्रांच या एजेंसी है वहाँ खरीदने पर डाकखर्च की बचत होगी।

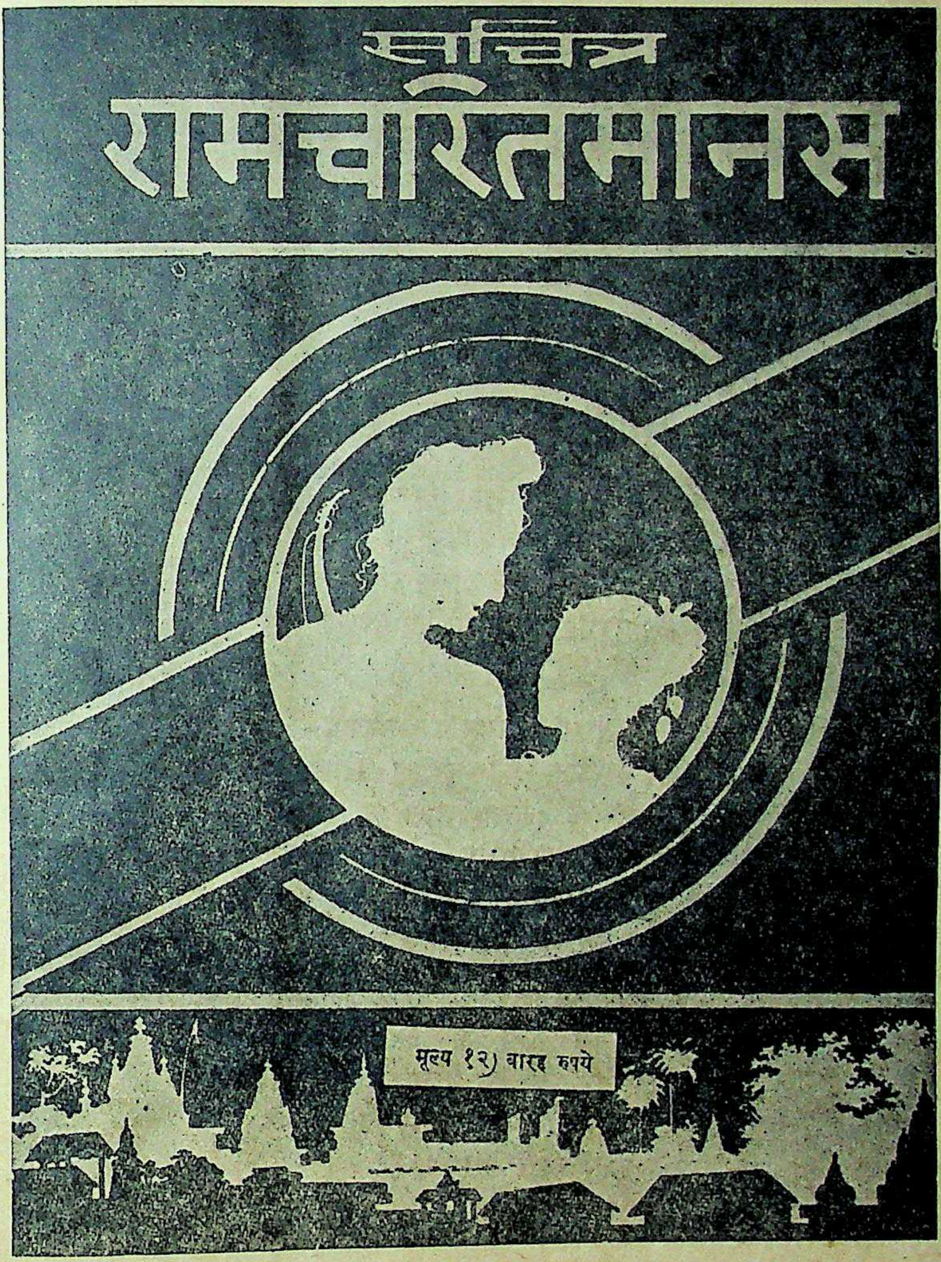

हमारी ब्रांचें और एजेन्सियाँ

१ इलाहाबाद सिटी—न्यू ऐरा बुकहाउस, हिवेट रोड
२ आगरा—आगरा पब्लिशिङ्ग हाउस, बाग मुजफ्फर खाँ
३ अजमेर—इंडियन प्रेस लिमिटेड, कचहरी रोड
४ अलमोड़ा—डिस्ट्रिक्ट बुकडिपो, लालबाजार
५ बनारस—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, बनारस छावनी
६ बाँदा—बुंदेलखण्ड पब्लिशिङ्ग हाउस
७ बरेली—इंडियन बुकडिपो
८ बम्बई—भारतीय पुस्तक भण्डार, कालबा देवी रोड
९ बीकानेर—गर्गबुक कम्पनी, कोट के भीतर
१० कलकत्ता—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, २२।१ कार्नवालिस स्ट्रीट
११ कानपुर—साहित्य-रत्नालय, श्रद्धानन्द पार्क
१२ दिल्ली—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, नई सड़क
१३ गोरखपुर—पुस्तक-स्थान, बख्शीपुर
१४ ग्वालियर—लायल बुकडिपो, पाटनकर बाजार, लश्कर
१५ इन्दौर—नवयुग साहित्यसदन, खजूरी बाजार
१६ जयपुर—गोपाल बुकडिपो, त्रिपौलिया बाजार
१७ जबलपुर सी० पी०—इंडियन प्रेस, लिमिटेड
१८ लखनऊ—इंडियन बुकडिपो, अमीनुद्दौला पार्क
१९ मेरठ—पुस्तक-स्थान, वैस्टर्न कचहरी रोड
२० पटना—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, पो० ऑ० बाँकीपुर
२१ राँची—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, कोर्ट रोड
२२ अम्बाला (पूर्वी पंजाब)—इंडियन प्रेस लिमिटेड, दुर्गाचरण रोड

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

श्री सोहनलाल द्विवेदी लिखित काव्य कृतियों के नवीन संस्करण

भैरवी

गांधी युग का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। महामना मालवीयजी के शब्दों में 'ऐसी कविता का प्रचार देश के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक होना चाहिए।' मूल्य २॥≡)

वासवदत्ता

बाबू मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं 'इस रचना से मैं बहुत प्रभावित हुआ।' स्वच्छन्दतापूर्वक जिस प्रौढ़ता की ओर द्विवेदीजी अग्रसर हो रहे हैं, जान पड़ता है, स्वयं वह भी उन्हें वरण करने के लिए आतुर हो रही है। 'वासवदत्ता' के प्रकाशन ने हिन्दी-साहित्य में एक नई क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। यह स्वयं पढ़कर निर्णय कीजिए। मूल्य १॥)

कुणाल

महापंडित राहुल सांकृत्यायन की सम्मति में—अशोक, तिष्यरक्षिता और कुणाल खास तौर से—'कुणाल' के चरित्र-चित्रण में कवि ने कमाल किया है। शब्द-सौकुमार्य और भावोत्कर्ष के साथ ही नपे तुले शब्दों के प्रयोग ने काव्य को बहुत ऊँचा उठाया है। विशेष संस्करण मूल्य २॥)

पूजागीत

राष्ट्रीय चेतना को काव्य का सच्चा स्वरूप देने के लिए द्विवेदी जी को प्रचुर सम्मान तथा लोकप्रियता प्राप्त हुई है। ये पूजा-गीत कवि के गौरव के अनुरूप ही हैं। मूल्य २)

विषपान

सुप्रसिद्ध पौराणिक कथा का सरल तथा सबल खंड-काव्य है। भाषा का प्रवाह, प्रसन्न शैली तथा कथा के मार्मिक घटना-क्रम को वर्णना ने इसे बड़ा ही हृदयग्राही बना दिया है। मूल्य १)

झरना
शिशुभारती
बाँसुरी

GURUKULA-KANGRI SAHARANPUR

द्विवेदीजी पहले बालकों के कवि हैं पीछे राष्ट्र के। पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा माननीय सम्पूर्णानन्दजी ने इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा की है। 'अमृत बाज़ार पत्रिका' की सम्मति में—जिस प्रकार की शिक्षा बालकों को देने के लिए हमारे नेता वर्षों से प्रयत्न कर रहे हैं, इन पुस्तकों में उसी प्रकार का साहित्य है। प्रत्येक पुस्तक में कई रङ्गीन तथा अनेक सादे चित्र हैं। प्रत्येक पुस्तक का मूल्य १)

पूरे सेट का मूल्य १२ रु०

पता—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

भारी लूट ? अवसर मत चूकिये आज ही

४) रु० में सात नई पुस्तकें

(१) ग्रहस्थ शास्त्र—दाम्पत्य जीवन को सुखी, सन्तुष्ट बनानेवाली मू० वशीकरण विद्या—वशीकरण मन्त्रों तथा जादू के खेलों का संग्रह। टीचर (हिन्दी) अँगरेजी लिखना-पढ़ना और बोलना सीखिये। मू० ॥) परिस्तान आर्ट पेपर पर छपी हुई बढ़िया रंगीन चित्रावली मू० १॥) (५) कुंजी मू० ॥) (६) संगीत सोल-गान विद्या तथा छन्द विद्या सिखानेवाली मू० १।) (७) ज्योतिषसार मू० १)

सात पुस्तकों के सेट का मूल्य ४) पोस्टेज पैकिंग ॥)

ग्लोब ट्रेडिंग कं० (न्योसेट सैकरना नं० ४, अलीगढ़)

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे **"वीर्यसंजीवनसत"** पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला म की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५।=) और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ घनकुट्टी,

'दमा' और पुरानी खाँसी के रोगियो—नोट

(अब चूके तो फिर साल भर तक पछताओगे)

हर साल की तरह से इस साल भी हमारी जगत् विख्यात महौषधि बूटी' के दो हजार पैकेट आश्रम में मुफ्त बाँटे जावेंगे, जो (शरद् पूर्णिमा) अक्टूबर को या फिर (कार्तिक पूर्णिमा) में एक ही खुराक खीर में खाने से इस दुष्ट रोग से छुटकारा मिल जाता है। जो रोगी समय पर आश्रम में वे सदा की तरह २।=) रु० विज्ञापन, रजिस्ट्री आदि खर्च अभी से मनी तुरन्त मँगा लें। देर करने पर फिर गत वर्ष की तरह सैकड़ों को निराश नोट कर लें कि वी० पी० किसी को नहीं भेजा जाता है। अमीर बाँटने के लिए कम से कम २५ आदमियों के लिए ४०) रु० भेजें।

पता—रायसाहब के० एल० शर्मा रईस (D) 'जगाधरी' [पूर्व पंजाब]

ऐतिहासिक भौतिकवाद

लेखक, भूतपूर्व काकोरी-कैदी
श्री मन्मथनाथ गुप्त और श्री
लगभग ५०० पृष्ठों के सजिल्द
मूल्य केवल ६) रुपये।

मार्क्सवाद में ऐतिहासिक भौतिकवाद की गहनता को सरलतापूर्वक के लिए इस ग्रन्थ की उपयोगिता अद्वितीय है। समाजवाद के लिए इसका अध्ययन अपरिहार्य है।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

देशदूत में विज्ञापन दीजिए

७ आक्टोबर,
किये आज ही
सात नई पुस्त
न्तुष्ट बनानेवाली
ों का संग्रह।
सीखिये। मू० ।।)
ली मू० १।) (५)
द्या सिखानेवाली
ेज पैकिंग ।।)
नं० ४, अलीगढ़

सा करो
ष, प्रमेह, निर्बलता
-पीछे धातु का
संजीवनसत"
ाप भी एक बार
किंग खर्च अलग।
या सुस्ती है
। "तिला मस
कार की कमजोरी,
), दो शीशी ५।=)
धनकुट्टी, कान

गियो—नोट कर
पछताओगे)
विख्यात महौषधि
जो (शरद् पूर्णिमा)
खीर में खाने से
य पर आश्रम में
र्च अभी से मनीआर्डर
कड़ों को निरोग होने
है। अमीर आदमी
४०) रु० भेजें।
धरी' [पूर्व पंजाब]

ूतपूर्व काकोरी-कै
गुप्त और श्री
ों के सजिल्द
केवल ६) रुपये।
को सरलतापूर्वक
समाजवाद
हार्य है।
मिटेड, इलाहाबा

न दीजि

ार्षिक मूल्य ७।।)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

ार, २४ आक्टोबर, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 24th October, 1948

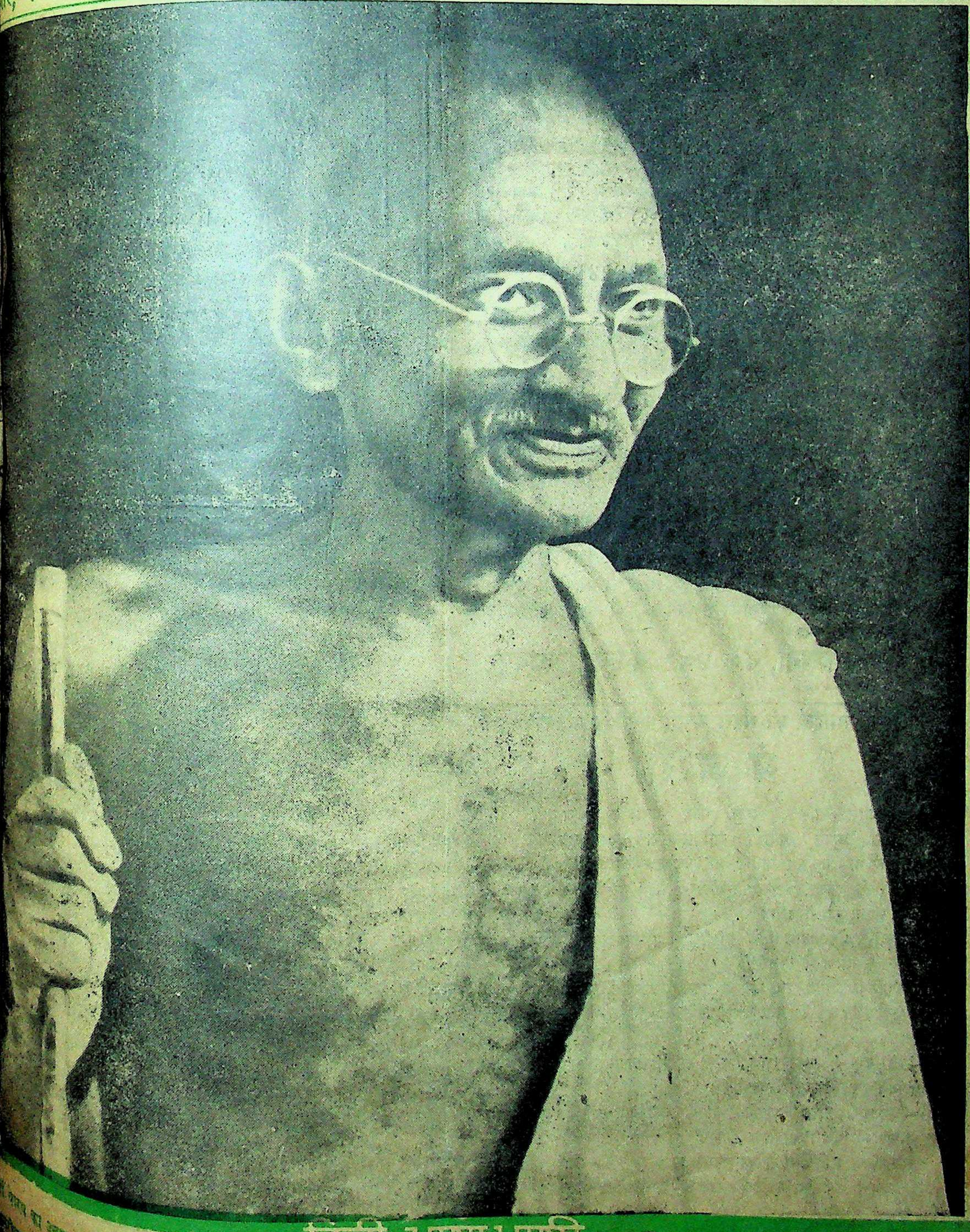

का ज्वालामुखी कैसा है?
का निर्वाचन - संग्राम।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र

राष्ट्रीय कांग्रेस का सभापतित्व।

२२॥) की रिस्टवाच मुफ्त

पूजा के उपलक्ष में—सिर्फ १५ दिनों के लिये। स्वीटजरलैंड की बनी गारंटी ३ साल

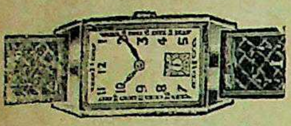

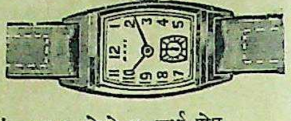

नं० ११२ रेक्टेंगुलर शेप
५ जुएल क्रोम केस ३४) रोल्ड गोल्ड ४०)
७ „ क्रोम केस ४४) रोल्ड गोल्ड ५५)
१५ „ क्रोम केस ५८) रोल्ड गोल्ड ७२)

नं० १२१ टोनो व कर्भ शेप
५ जुएल क्रोम केस ३७) रोल्ड गोल्ड ४४)
७ „ क्रोम केस ४६) रोल्ड गोल्ड ५८)
१५ „ क्रोम केस ६०) रोल्ड गोल्ड ७५)

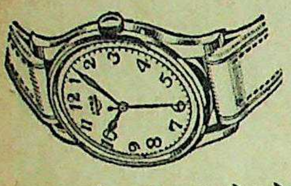

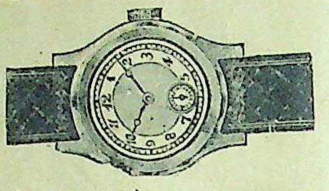

४ जुएल नं० १२३ फ्लाट शेप क्रोम केस २८)
७ जुएल क्रोम केस ३५) रोल्ड गोल्ड ४८)
१५ „ क्रोम केस ३७) रोल्ड गोल्ड ६०)

नं० १२४ (१३) साइज
क्रोम केस १८।) रेडीयम २०)
सेंटरसेकंडवाली २२।) रेडीयम २४)

एलार्म टाइमपीस १६) सुपीरीयर २०) बेस्ट २५) पोस्टेज अतिरिक्त।
कोई भी तीन घड़ी एक साथ लेनेवाले को एक घड़ी २२।) रु० वाली मुफ्त मिलेगी।

एच० डेभिड० कम्पनी पो० ब० नं० ११४२४ कलकत्ता

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे “**वीर्यसंजीवनसत**” ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ “**तिला मस्ताना**” की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५।=), डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

‘कथा-साहित्य की सबसे अच्छी प्रतिनिधि पत्रिका’

मंजरी

प्रतिमास सचित्र, सरस और कलात्मक कहानियों
द्वारा अपने पाठकों का मनोरंजन कर रही है
आप भी नियमित रूप से ‘मंजरी’ पढ़कर स्वीकार करेंगे कि—

१—हिन्दी के आचार्यों और पत्र-पत्रिकाओं ने ‘मंजरी’ की मुक्त कण्ठ से जो प्रशंसा की है, वह वास्तव में उचित है।

२—हिन्दी के श्रेष्ठ कथाकारों के अतिरिक्त विश्व-विख्यात् विदेशी कथाकारों की श्रेष्ठ और सरस कहानियाँ भी ‘मंजरी’ में प्रकाशित हो रही हैं।

३—कहानियों के साथ-साथ, एक धारावाहिक उपन्यास, कथा-साहित्य पर विद्वान् लेखकों के अध्ययनशील लेख और कथा-कृतियों की निष्पक्ष समीक्षा भी ‘मंजरी’ में रहती है।

४—कहानियों में दर्जनों चित्र, दुरंगी छपाई, कलात्मक मुद्रण-विन्यास, तिरंगा आवरण ‘मंजरी’ की अपनी विशेषताएँ हैं।

५—जिन कथाकारों की कहानियाँ आपका मनोरंजन करती हैं, उनके चित्र और संक्षिप्त परिचय भी ‘मंजरी’ प्रस्तुत करती है।

सांस्कृतिक मनोरंजन के अनुष्ठान में ‘मंजरी’ को आप अपना
सक्रिय सहयोग दीजिए—उसके वार्षिक ग्राहक बनिए।

वार्षिक मूल्य ६) छः रुपये **प्रति अङ्क आठ आने**

—प्रबन्धक ‘मंजरी’—
इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

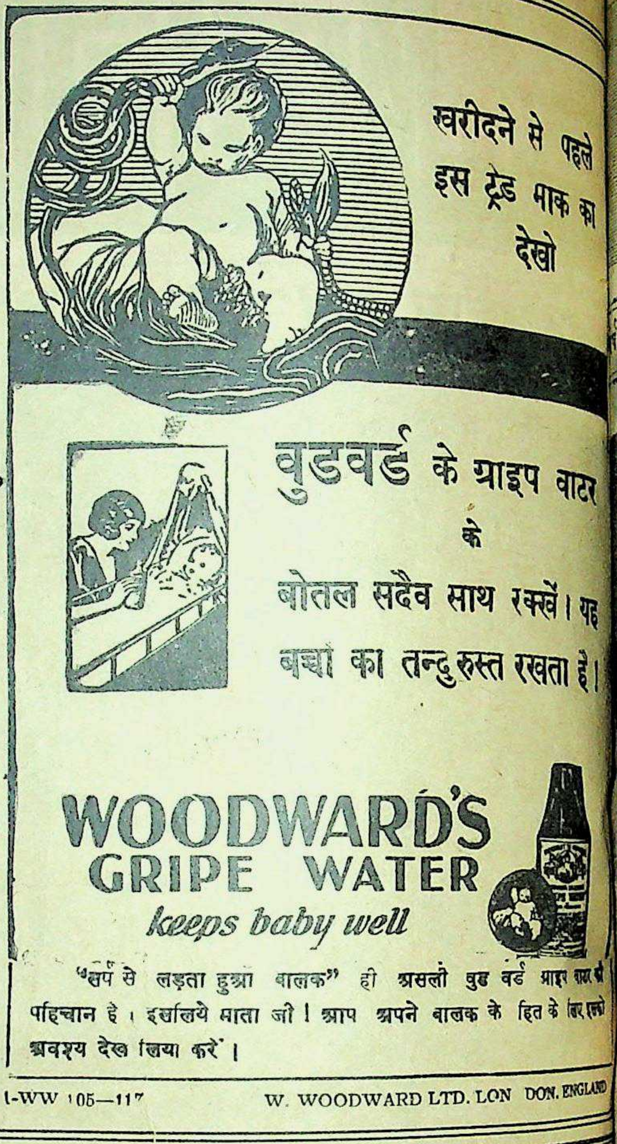

खरीदने से पहले
इस ट्रेड मार्क को
देखो

वुडवर्ड के ग्राइप वाटर
के
बोतल सदैव साथ रक्खें। यह
बच्चों को तन्दुरुस्त रखता है।

WOODWARD'S
GRIPE WATER
keeps baby well

“सर्प से लड़ता हुआ बालक” ही असली वुडवर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिए इसको अवश्य देख लिया करें।

1-WW 105—117 W. WOODWARD LTD. LONDON. ENGLAND

· · खिज़ाब अब लगाना न होगा।

सफेद बाल काला

नक्कालों से सावधान!

इस तेल से बाल का पकना रुककर, पका बाल जड़ से काला पैदा होता है, सैकड़ों प्रशंसापत्रों से इसकी सत्यता प्रमाणित है। यह तैल सिर के दर्द व सर में चक्कर आना आदि को आराम कर आँख की रोशनी को बढ़ाता है। मूल्य छोटी शीशी ३॥) व बड़ी शीशी ५)।

श्वेत कुष्ठ की वनौषधि

महात्मा प्रदत्त इस सफेदी की दवा से तीन दिन में पूरा फायदा। यदि सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों, विज्ञापनदाताओं की दवा से निराश हो चुके हों, तो इसे लगाकर आरोग्य होवें। मूल्य ४) २१ दिन का।

**पता :—श्रीकृष्ण आयुर्वेद भवन
(द २), बड़ा बाजार, हजारीबाग**

मुफ्त! मुफ्त!! मुफ्त!!!

आप घर बैठे मैट्रिक, एफ० ए०, बी० ए०, पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से और होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ्त मँगायें। पता :—

इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

मुफ़्त

युवको! यदि अपनी भूल से
नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित
फीका हो चुका हो तो भारत
सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त रोग
कविराज ब्रह्मस्वरूप बी०
(D.A.) फतेहपुरी देहली से
मशविरा मुफ्त करके अपना
सुधार लें।

आधुनिक ढङ्ग की
घड़ी १८) रु०

१,३" जुवेल-जड़ित, मजबूत,
मशीन, ठीक-ठीक समय देनेवाली,
यस केस, गोल या वर्गाकार,
रु०, डाक-व्यय ॥) बारह आने,
३ वर्ष। अ-ना नाम-पता
लिखें।
ब्रिटानिया वाच कं० (डी०
पोस्ट बाक्स ११४

देशदूत

र्ष ११, संख्या ८]   [रविवार, २४ आक्टोबर, १९४८

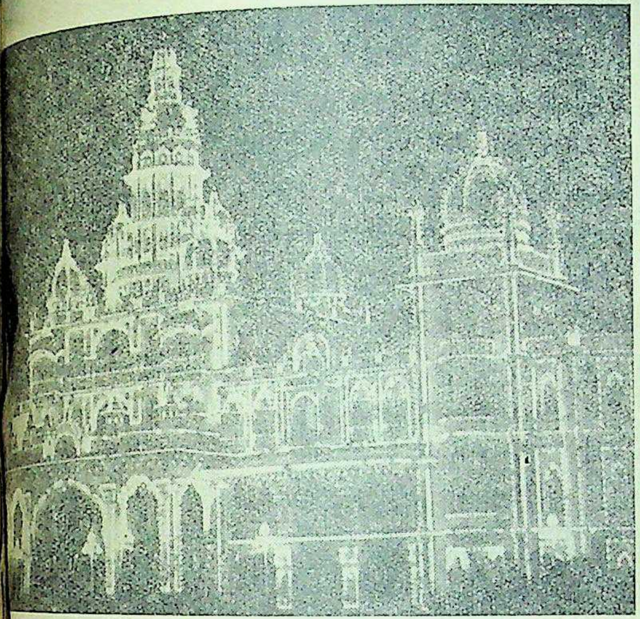

मैसूर में दशहरा-पर्व के समय राजमहल का प्रकाशमान दृश्य।

'देशदूत' का आगामी ३१ आक्टोबर का अंक

'दीपावली विशेषांक'

लोकप्रिय तथा बड़ी सजधज से प्रकाशित होगा

'देशदूत' का अगला अंक 'दीपावली' विशेषांक दीपावली के अवसर पर ३१ आक्टोबर को प्रकाशित हो रहा है। राष्ट्र की सामयिक राजनीतिक समस्याओं पर सुप्रसिद्ध नेताओं की रचनायें, प्रसिद्ध कवियों की कवितायें तथा दर्जनों सुंदर चित्रों से यह अंक सुसज्जित होगा। कहानियाँ एक से एक लोकप्रिय और सुंदर होंगी। इसके अतिरिक्त रंगमंच तथा महिलाओं के लिये उपयोगी और बेजोड़ सामग्री उपलब्ध होगी।

विज्ञापनदाताओं को विज्ञापन के लिये स्थान सुरक्षित करा लेना चाहिए। एजेन्टों को भी अपनी प्रतियाँ रिजर्व करा लेनी चाहिए। कवर नयनाभिराम होगा। मूल्य केवल।≈) छः आना मात्र होगा।

विज्ञापन दर यह होगा।

कवर का चौथा पूरा पेज ४००) दूसरा या तीसरा पेज ३००)
पहला पेज पाठ्य-विषय के पहले ३००) साधारण पूरा पेज २००)
पृष्ठ का आकार १२½" × ९" कालम ४ स्क्रीन ६५

मैनेजर 'देशदूत'
इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

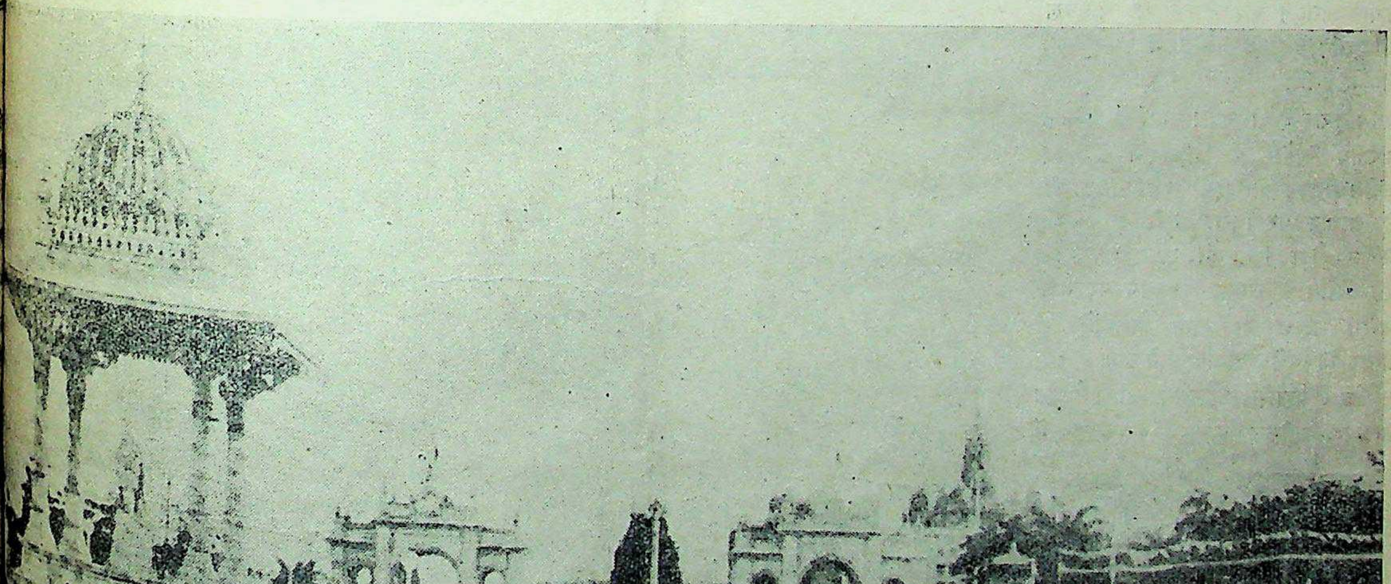

मैसूर में दशहरा-जलूस का एक दृश्य।

राष्ट्रीय कांग्रेस का सभापतित्व

माननीय पुरुषोत्तमदास टंडन और डाक्टर पट्टाभि सीतारमैया दोनों में कौन उपयुक्त हैं ?

लेखक, श्री चन्द्रोदय दीक्षित

राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस के सभापतित्व का चुनाव सर पर है। सभापतित्व के लिए अन्य उम्मीदवारों ने अपना नाम वापस ले लिया, इस समय केवल माननीय टंडन जी तथा डाक्टर पट्टाभि चुनाव-क्षेत्र में खड़े हैं। लेखक ने इस लेख में चुनाव के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए यह स्पष्ट किया है कि माननीय टंडन जी राष्ट्रपतित्व के पद के लिए क्यों उपयुक्त हैं?

कई वर्षों के बाद इस वर्ष कांग्रेस के अध्यक्ष-पद का चुनाव होने जा रहा है। कांग्रेस के अध्यक्ष को हम राष्ट्रपति मानते आये हैं क्योंकि हम उसे अपनी इच्छा से और बिना किसी प्रकार के जोर या दबाव के निर्वाचित करते रहे हैं साथ ही कांग्रेस स्वतन्त्र राष्ट्र के संघर्ष का प्रतीक रहो है ऐसी स्थिति में कांग्रेस के अध्यक्ष को राष्ट्रपति कहना अनुचित नहीं थाकिंतु अब स्थिति बदल चुकी है। नवीन विधान के बन जाने के उपरान्त हम किसी एक संस्था के अध्यक्ष को राष्ट्रपति नहीं कह सकेंगे। राष्ट्रपति के निर्वाचन में तो हमें अपने देश के प्रत्येक जन मत का आह्वान करना पड़ेगा और राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को उसमें अपना मत देना पड़ेगा।

इस वर्ष कांग्रेस अध्यक्ष-पद के लिए कुल ६ नाम उम्मीदवारों के आये थे। (१) बाबू राजेन्द्रप्रसाद, (२) श्री पट्टाभि सीतारमैया, (३) राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन, (४) श्री प्रफुल्लचन्द्र घोष, (५) आचार्य जे० बी० कृपलानी और (६) श्री शंकरराव देव। बाबू राजेन्द्रप्रसाद श्री प्रफुल्लचंद्र घोष, आचार्य कृपलानी, श्री शंकरराव देव आदि ने अपने नाम को वापस ले लिया है और अब चुनाव-संघर्ष में केवल दो ही नाम शेष हैं।

कहा जाता है कि विरोध को समाप्त करने से नया विरोध उत्पन्न हो जाता है। यह बात कांग्रेस में तो शत-प्रतिशत लागू होती है। गत वर्ष क्या उसके बहुत पहले से कांग्रेस के दक्षिणपक्षीय भाग की ओर से यह प्रचार किया जाता था कि कांग्रेस से दलों का दलदल समाप्त कर देना चाहिये। कांग्रेस के अन्दर दलों के कारण ही उसके कार्यक्रमों को एकात्मीयता से पूरा नहीं किया जाता। कई बार की असफल कोशिशों के बाद कांग्रेस में अन्य दलों की—सैद्धान्तिक दलों की—उपस्थिति अवैध करार दे दी गई। बम्बई के अखिल भारतीय कांग्रेस के अधिवेशन के बाद कांग्रेस में अब लोग दलों और सिद्धान्तों के आधार पर विरोध नहीं कर सकते लेकिन जैसा कि हमने ऊपर कहा है कि एक विरोध के समाप्त हो जाने पर नया विरोध उत्पन्न हो जाता है कांग्रेस के अन्दर भी विरोध अधिक होने लगा है।

डा० पट्टाभि सीतारमैया की इस बात को हम स्वीकार करते हैं कि चुनाव में जैसा कि लोग अकसर कहा करते हैं कि मित्रों के दबाव से खड़े हो गये हैं बात पूर्णतः सत्य नहीं है। यह ठीक है कि कांग्रेस अध्यक्ष-पद के लिए विधानानुसार कोई भी १० प्रतिनिधि किसी के नाम का प्रस्ताव कर सकते हैं लेकिन नाम वापस लेने की तारीख के बाद यह समझा जाता है कि उम्मीदवार स्वयं पद के लिए चुनाव लड़ने जा रहा है। यह हो सकता है कि चुनाव लड़ने में लोग संकुचित मनोभावों से दूर रहकर किसी महत् उद्देश्य पूर्ति तथा किसी पद्धति विशेष के प्रयोग के सुअवसर ग्रहण करने के लिए भी प्रवेश कर सकते हैं। प्रस्तुत लेख में हम कांग्रेस के अध्यक्ष-पद के लिए उम्मीदवार लोगों का संक्षिप्त परिचय देने का प्रयत्न करेंगे।

कांग्रेस के प्रधान मन्त्री श्री शंकरराव देव।

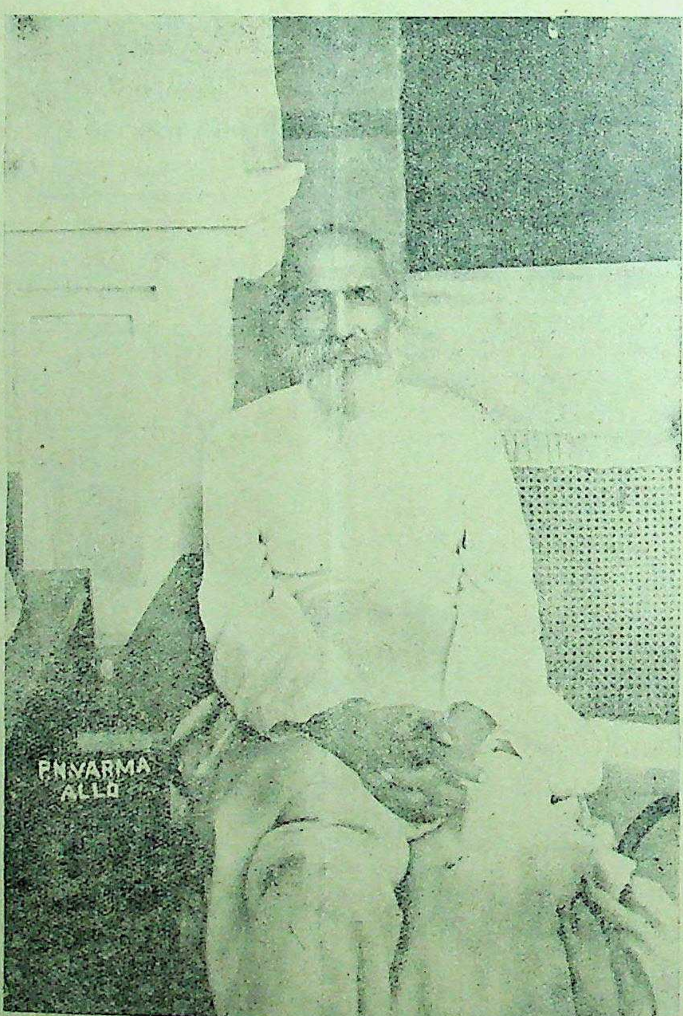

कांग्रेस के भावी सभापति राजर्षि श्री पुरुषोत्तमदास टंडन।

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन

कर्मठ एवं सत्यनिष्ठ योगी की भांति हैं। आप अपने विद्यार्थी काल से राजनीति से सम्बन्धित रहे हैं। सन् १९२१ में असहयोग आन्दोलन में आपने वकालत छोड़ी तदुपरान्त आप निरन्तर कांग्रेस की प्रथम पंक्ति के नेताओं में रहे हैं। युक्तप्रांत में तो आप सबसे वयोवृद्ध कांग्रेस नेता हैं। सिद्धान्त की दृष्टि से आप कभी भी गांधीवादी नहीं रहे। सन् १९३४ में बम्बई के कांग्रेस अधिवेशन में जब महात्मा गांधी ने कांग्रेस के लक्ष्य और उद्देश्यों में सत्य और अहिंसा का समावेश करने का प्रयत्न किया उस समय आपने राजनीतिक आधार पर उसका विरोध किया जिसमें महात्माजी को अपनी हार स्वीकार करके कांग्रेस की चार आनेवाली सदस्यता भी छोड़नी पड़ी। टंडन जी के त्याग और तपस्या के कारण ही उनसे प्रांत के लोग डरते हैं। आप लाला लाजपतराय द्वारा संस्थापित पीपुल्स सोसायटी के अध्यक्ष हैं। हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के

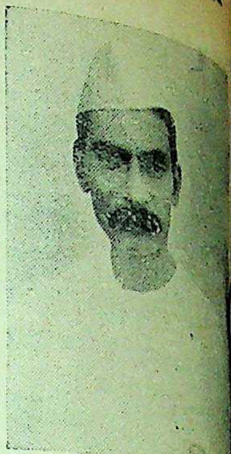

कांग्रेस के वर्तमान सभापति
राजेन्द्रप्रसाद।

संगठन और सफलताओं का
किसी एक व्यक्ति को दिया
तो राजर्षि टंडन को ही दिया
है। इस समय आप युक्तप्रान्तीय
कमेटी के अध्यक्ष तथा युक्तप्रांती
सभा के अध्यक्ष हैं।

डा० पट्टाभि सीतारमैया

डाक्टर साहब आंध्रप्रांत के
हैं। आप अपने विद्यार्थी काल से
९८ से कांग्रेस से सम्बन्धित हैं।
०८ में मद्रास के कांग्रेस-अ
आप पहले-पहल प्रतिनिधि के
सम्मिलित हुए थे। सितम्बर सन्
आपने जन-सेवा कार्य के लिए
डाक्टरी छोड़ दी और उस समय से
तर आप अखिल भारतीय कांग्रेस
सदस्य रहे हैं। सन् १९०६ और
के बीच में आपने आंध्रजातीय
को संगठित किया तथा राष्ट्रीय
(सन् १९१२) भारतीय राष्ट्रीयता
और प्रान्तों के पुनः वितरण (सन्
के सम्बन्ध में पुस्तकें प्रकाशित
१९१९ में आपने आन्ध्रप्रान्तीय
सम्मेलन का सभापतित्व कि
सन् १९२६ में मद्रासप्रान्तीय
सम्मेलन का सभापतित्व कि
१९२९ में आन्ध्र में अखिल भा
संघ की शाखा को आपने संगठित
कांग्रेस की स्वर्णजयन्ती के
देश ने आपसे कांग्रेस के अधि
कार के रूप में परिचय पा
तक कांग्रेस की अध्यक्षता की
कई बार उसके लिए खड़े हुए
नहीं सके। एक अधिकारी कांग्रे
एक बार बतलाया था कि
पहले सन् १९३६ में कांग्रेस के
पद के लिए चुनाव में खड़े होना
सन् १९३९ में आपका और श्री
चन्द्र बोस का चुनाव तो कांग्रे
हासिक चुनाव था। आपकी
महात्मा गांधी ने अपनी हार
था। श्री सुभाष बोस के त्याग
बाद भी आपको मौका नहीं
१९४६ में मेरठ-अधिवेशन के
कि आपने अपने वक्तव्य
महात्मा गांधी ने कांग्रेस
लिये दो नाम लिये
कृपलानी और दूसरा
स्वयं महात्माजी आचार्य
मौका देना चाहते थे।

*

पूर्वी यूरोप का ज्वालामुखी

संसार के तीसरे महायुद्ध का विस्फोटक क्षेत्र क्या यही है?

लेखक, श्री लक्ष्मण शास्त्री

[२]

यूरोप में पूर्वी यूरोप एक ज्वालामुखी की भाँति है। संसार के महान् राष्ट्रों की दृष्टि इस क्षेत्र में क्रियात्मक रूप ग्रहण कर रही है। यह ज्वालामुखी कब फूट पड़े, कुछ कहा नहीं जा सकता। इस लेख में योग्य लेखक ने पूर्वी यूरोप की राजनीतिक स्थिति का विस्तृत वर्णन किया है, जो ज्ञानवर्धक तथा जानकारी से पूर्ण है। इसका प्रथम अंश १७ आक्टोबर के 'देशदूत' में प्रकाशित हो चुका है।

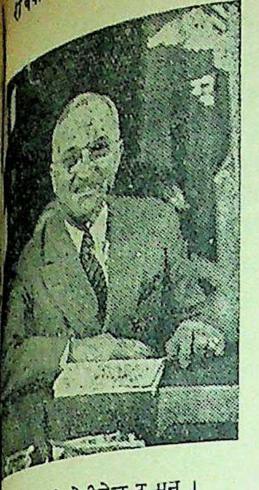

अमरीका के प्रेसीडेन्ट ट्रूमन।

पूर्वी यूरोप के आपेक्षाकृत पिछड़े हुए जनता जर्मनी को पिछले दशकों दृष्टि से देखती रही है। महासमर के पहले जर्मनी के राज- ने पूर्वी यूरोप को हड़पने के लिए दी हैं उससे उनका सन्देह बढ़ गया था। इन देशों पर के बाद जिस पाशविकता के सैनिकों ने स्थानीय जनता के किया, उससे जर्मनों के प्रति घृणा और गुस्सा सीमातीत हो। लेकिन, उन्हें सबसे अधिक बात से हुआ कि इन देशों पर कब्जा हो जाते ही युगोस्लाविया, रूमानिया आदि देशों के बड़े बड़े, उद्योगपति, बैंकों के मालिक, अफसर आदि ने जर्मनों का, इन देशों की जनता पर जुल्म की मदद की। इसके अतिरिक्त देशों के शासक हिटलरी सेना देखते ही अमेरिकनी और विमानों में बैठकर विलायत, वाशिं- भाग निकले। इन घटनाओं देशों के सत्ताजीवी वर्ग के प्रति के मन में अत्यधिक द्वेष और हुई। युद्ध-काल में जर्मनों द्वारा को भारी क्षति पहुँचाई जा चुकी युगोस्लाविया में ही युद्ध के कुल औद्योगिक शक्ति में से नष्ट की जा चुकी थी। ऐसी नेस्तनाबूद हुए नगरों और गाँवों बसाना, उद्योग-धन्धों को फिर अवस्था में लाना, देश को पिछड़े से उठाना, सभी लोगों को काम पारिश्रमिक के लिए व्यवस्था ऐसी समस्यायें थीं जिन्हें सुचारु हल किया जा सकता था, जब उत्पादन सम्बन्ध सामन्तवादी के स्थान पर नये उत्पादन स्थापित किये जावँ। देश की बागडोर ऐसे लोगों के हाथ में पर जनता का मजदूर, किसान, आदि का विश्वास हो और देश की समस्याओं को बदली में ठीक तरह से समझते हों सफलतापूर्वक हल करने के लिए में उत्साह और प्रेरणा पैदा हों।

सरकारें

समाप्त होने के बाद इन देशों में जो आम चुनाव हुए उससे सूरज की रोशनी के समान यह बात स्पष्ट हो गई कि हवा का रुख किस ओर है। हिटलरी फौजों के विरुद्ध अपने देश की आजादी के लिए पूर्वी यूरोप के प्रत्येक देश में जनता को संगठित करनेवाले वामपक्षीय नेता थे। युद्ध के बाद यदि देश की समस्याओं को सबसे ज्यादा अच्छी तरह समझने का दावा भी यदि कोई कर सकते थे, वे वहीं के युद्धोत्तरकाल में हुए आम चुनाव में भी उन्हीं को जनता ने सबसे ज्यादा वोट देकर चुना। और चकोस्लोवाकिया, पोलैण्ड, रुमानिया, बलगेरिया इन सभी देशों में वामपक्षीय सरकारें बनीं। पुरानी सामन्तवादी सरकारों के स्थान पर इस प्रकार वामपक्षीय सरकारों का बनना पूर्वी यूरोप के लिए कम महत्त्वपूर्ण बात नहीं थीं। दरअसल ये उक्त देशों की जनता के लिये और देशों के लिए एक क्रान्तिकारी घटना थी।

पूर्वी यूरोप की इन नई सरकारों की खूबी यह थी कि—जहाँ पूँजीवादी देशों में जैसे ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस आदि में प्रजातन्त्रवाद के नाम पर बड़े बड़े पूँजीपतियों और बैंकरों के दलालों का चुनाव होकर सरकारें बनती हैं—पूर्वी यूरोप आम जनता के प्रतिनिधियों की सरकार बनी। जहाँ पूँजीवादी देशों में सरकारों का खास काम सर्मायेदारों के कारबार को आगे बढ़ाने के लिए 'शान्ति और व्यवस्था' कायम करना है—वहाँ पूर्वी यूरोप में बनी सरकार का कार्य जनता के ऊपर सदियों जुल्म करने, उनका शोषण करने, उनकी प्रगति को रोकनेवाले वर्गों का दमन और जनोन्नति के लिए नानामुखी योजना बनाना और कार्यान्वित करना था। यह न सिर्फ मात्रा का फर्क था बल्कि गुणात्मक फर्क था।

अतः पूर्वी यूरोप की इन जनवादी प्रजातन्त्रवादी सरकारों ने अपने अपने देश की शासन की बागडोर अपने हाथ में आते ही जनता की जिन्दगी में कम से कम समय में अमूल परिवर्तन लाने, पिछड़े से पिछड़े जन समुदाय को भी सुसभ्य बनाने के लिए ऐसे महत्त्वपूर्ण और दूरदर्शितापूर्ण कदम उठाये जैसे पश्चिमी यूरोप के 'प्रजातन्त्र' की खूब ढपली बजानेवाले राजनीतिज्ञ सोच भी नहीं सकते थे।

जातियों को आत्मनिर्णय का अधिकार

पूर्वी यूरोप की जनवादी सरकारों का सबसे पहला कार्य अपने यहाँ की जातियों को आत्मनिर्णय का अधिकार देना और उनमें पिछले सदियों से होनेवाले परस्पर विद्वेष और झगड़ों को खतम कर उनके बीच में वास्तविक भ्रातृभाव और देशप्रेम फूँकना था। युद्ध के पहले पोलैण्ड, चेकोस्लोवाकिया, युगोस्लोवाकिया, बलगेरिया इन देशों में स्लाव जाति के ही विभिन्न सम्प्रदाय के बीच में काफी मैं-मैं तू-तू होती थी। चेकोस्लावाकिया में चेकों और स्लावों युगोस्लावाकिया में सेरबों क्रोटों, स्लोवानों, मण्टगोरियनों और मेसिडोनियों में काफी अनबन थी। नई सरकारों ने इन में से प्रत्येक सम्प्रदाय के लोगों के इलाकों को पादेशिक स्वतन्त्रता दे दी, बालिग मताधिकार के आधार पर अपनी अपनी विधान-परिषदें बनाने और अपने अपने प्रदेश की जनता की प्रगति के लिये आवश्यक कदम उठाने में सहायक कानून बनाने की स्वतन्त्रता दे दी। कानून और व्यवहार दोनों की दृष्टि से सभी जाती और सम्प्रदाय के लोग बराबर घोषित किये गए। इससे इन देशों के पिछड़े से पिछड़े हुए लोगों तक के दिल में यह भावना उत्पन्न हुई कि अब हम अपने घर के, अपने देश के स्वतन्त्र नागरिक हैं अब कोई बाहरी शक्ति आकर न हम पर जुल्म कर सकती है और न हमारे आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप ही कर सकती है। इस तरह जातियों को आत्मनिर्णय का अधिकार देकर इन देशों की सरकार ने जनता में आत्मसम्मान और देशाभिमान उत्पन्न किया देश के पुनर्निर्माण कार्य में हिस्सा अदा करने का उनका जो हक है उसे स्वीकार किया।

ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री मि० एटली।

जमीन का किसानों में वितरण

जैसा कि ऊपर बतलाया जा चुका है पूर्वी यूरप के देश कृषि-प्रधान रहे हैं। युगोस्लाविया में ७१ फी सदी, पोलैण्ड में ६३ फी सदी, रूमानिया में ७८ फी सदी, हंगरी में ५० फी सदी लोग खेती-बारी से ही जीवन-निर्वाह करते थे। जैसे कि सामन्तवादी देशों में हुआ करता है ज्यादातर जमीन मुट्ठी भर जमींदारों के हाथ में थी। ऐसे बहुत ही कम किसान थे जिनके पास खेती के लिये जमीन थी। इससे किसानों और देश का दोनों का सदा से काफी नुकसान होता आया है।

इसलिये जनवादी प्रजातांत्रिक सरकारों ने किसानों के ऊपर होनेवाली मुसीबत दूर करने और गल्ले की पैदावार बढ़ाने के उद्देश्य से जमीन का राष्ट्रीयकरण किया और उसे किसानों में बाँट दी। युगोस्लाविया में कुल १५ लाख एकड़ जमीन जमींदारों से छीन ली गई, जिसमें से ८ लाख एकड़ जमीन ३ लाख किसान परिवारों को बाँट दी। पोलैण्ड में २० लाख एकड़ जमीन जमींदारों से छीनकर ५ लाख किसानों में बाँट दी। इसके अलावा १ लाख ८७ हजार एकड़ जमीन में ३५८ सहकारी पञ्चायती फर्म बनाये गये।

इस कार्य से इन देशों में किसाना की गरीबी और कङ्गाली दूर होने के साथ ही सभी लोगों के लिये पर्याप्त गल्ला पैदा होने लगा और पहले से सस्ता और पर्याप्त गल्ला लोगों को मिलने लगा। युद्ध के पहले अलबानिया जैसे पहाड़ी देश की जनता बाहर से मँगाये जानेवाले गल्ले पर ही गुजारा किया करती थी।

सुरक्षा परिषद् में रूस के वैदेशिक मंत्री मोशिये मोलोटोव बर्लिन समस्या पर भाषण दे रहे हैं।

लेकिन आजकल वहाँ भी लोग अपने यहाँ पैदा हुए गेहूँ की रोटी खाने लगे हैं। यह सब भूमि सुधार के फलस्वरूप उत्पन्न परिस्थिति का ही परिणाम है।

व्यवसाय का राष्ट्रीयकरण

पूर्वी यूरोप की नई जनवादी प्रजातन्त्रवादी सरकारों द्वारा देश और जनता की दशा सुधारने के लिए उठाया गया दूसरा क्रान्तिकारी कदम व्यवसाय, बैंक, यातायात, खान आदि का राष्ट्रीयकरण है। कई दृष्टि से इससे इन देशों का बहुत बड़ा फायदा हुआ। इन देशों के आर्थिक जीवन पर दर्शकों से पश्चिमी यूरोप के व्यवसाय-गुटों का आधिपत्य था। मुनाफे की लालच से अरबों रुपये की पूँजी विदेशी सेठों ने इन देशों में लगाई थी। उससे न केवल वे इन देशों के मजदूरों का शोषण करते थे बल्कि उन देशों में अपनी राजनीतिक पैतरेबाजी भी खूब करते थे। पुराने सामन्तशाही शासकों में इतना दम नहीं था कि वे विदेशों के शक्तिशाली व्यवसायपतियों और राजनीतिज्ञों के विरुद्ध उँगली उठावें।

लेकिन, नई सरकारें बनाये जाने के बाद स्थिति ही दूसरी थी। अब अपने अपने यहाँ की जनता के लिए आवश्यक सस्ती से सस्ती चीजें जैसे कपड़ा, लोहे की चीजें, खाने-पीने की चीजें, मकान के लिए आवश्यक चीजें, लिखने-पढ़ने के लिए आवश्यक चीजें रेल, मोटर आदि ज्यादा से ज्यादा तादाद में तैयार करना ही इन देशों की सरकारों का लक्ष्य हो गया। मुनाफा के लिए चीजें उत्पन्न करने की प्रथा की ही इति हो चुकी थी।

पिछले तीन साल के अन्दर इन देशों में उद्योगों के राष्ट्रीकरण ने इतनी प्रगति की कि आजकल युगोस्लाविया के कुल औद्योगिक उत्पादन में से ९० फी सदी उन कारखानो में होता है जिन्हें सरकार ने अपने कब्जे में ले लिया है और जिन्हें मजदूर स्वयं चलाते हैं। इसी प्रकार बलगेरिया के कुल ७००० कारखानों में से ६१०० पर सरकारी कब्जा हो चुका है। पोलैण्ड में कुल औद्योगिक उत्पादन में से ८५ फी सदी उत्पादन उन कारखानों में होता है जिसका राष्ट्रीयकरण हुआ है। जो कारखाने अभी चन्द लोगों के हाथ में रह गये हैं उनके राष्ट्रीयकरण के लिए भी कोशिशें हो रही हैं। स्मरण रखने की बात है कि न अपने यहाँ के और न बाहर के किसी भी सर्मायेदार को एक कौड़ी भी मुआवजे के रूप में दी गई है। बल्कि जर्मनी के इन देशों पर अधिकार होने पर जिन सर्मायेदारों ने नफे के लालच से जर्मनों के लिए लड़ाई का माल सप्लाई करने का ठेका लिया था, जिन लोगों ने अपने देश की जनता के पीठ पर छुरा भोंका था ऐसे सर्मायेदारों के ऊपर मुकदमा चलाकर उन्हें उनके अपराध के अनुसार सजा दे दी है।

पुनर्निर्माण योजनायें

जातियों को आत्मनिर्णय का अधिकार दे देना, जमींदारी प्रथा को खतम कर जमीन को किसनों के बीच में बाँटना एवं उद्योगों का राष्ट्रीयकरण करना, ये ऐसे मौलिक और महत्त्वपूर्ण कदम थे जिनसे देश की आर्थिक और सामाजिक अभिवृद्धि के सामने रोड़ा अटकानेवाले वर्गों का खातमा हो चुका था और नये ढंग से कृषि और व्यवसाय के लिए धरातल तैयार हो चुका था।

इसके बाद पूर्वी यूरोप के प्रत्येक देश ने अपने अपने यहाँ की परिस्थिति के अनुसार मशीनें और उपभोग्य की चीजें पैदा करने के लिए योजनायें बनाई। उदाहरण के लिए युगोस्लाविया ने सन १९४७ में एक पञ्चवर्षीय योजना प्रारम्भ की है जो सन् १९५१ तक पूरी होगी और तब तक, अनुमान किया जाता है कि वहाँ का औद्योगिक उत्पादन सन् १९३९ के मुकाबले में ५ गुना बढ़ जायगा।

इसी प्रकार चेकोस्लोवाकिया की सरकार ने दोवर्षीय योजना बनाई है जिसके होने पर, आशा की जाती है कि यहाँ औद्योगिक उत्पादन लड़ाई के पहले के मुकाबले में ११० फी सदी हो जाएगा। इसी तरह बलगेरिया की सरकार ने दो-वर्षीय योजना हंगरी की सरकार ने त्रिवर्षीय योजना, पोलैण्ड की सरकार ने पञ्चवर्षीय योजना बनाकर उसके अनुसार कार्य करना प्रारम्भ किया है।

पश्चिमी यूरोप से एक कदम आगे

पूर्वी यूरोप उक्त सरकारों द्वारा उठाये गये कदम और उसके फलस्वरूप उत्पादन में पिछले तीन साल में हुई तरक्की पश्चिमी यूरोप के विभिन्न राष्ट्रों के उत्पादन में मिलान किया जाय यह पता चलता है कि पूर्वी यूरोपीय राष्ट्रों ने पश्चिमी यूरोप के उद्योग-व्यवसाय में संसार में सब से आगे बढ़े कहे जानेवाले देशों को भी किसी किसी मद में पिछले तीन ही तीन साल के अन्दर पछाड़ दिया है।

आज पश्चिमी यूरोप का औद्योगिक उत्पादन सन् १९३७ के उत्पादन के मुकाबले में ७२ और ९६ फी सदी के बीच में हैं। मतलब, लड़ाई खतम हुए तीन साल होने के बाद भी पश्चिमी यूरोप के राष्ट्रों का औद्योगिक उत्पादन लड़ाई के पहले के उत्पादन के बराबर तक भी नहीं हुआ है।

लेकिन, पूर्वीय यूरोप का औद्योगिक उत्पादन लड़ाई के पहले के मुकाबले में ८६ और १७४ फी सदी के बीच पहुँच गया है! बिजली, कोयला आदि महत्त्वपूर्ण चीजों का उत्पादन पूर्वी यूरोप में पश्चिमी यूरोप से काफी तेजी से हो रहा है। इससे इन देशों की जनता का जीवनस्तर नित्य-प्रति ऊँचा होता जा रहा है।

इधर पिछले कुछ हफ्तों में एक प्रसिद्ध अँगरेजी लेखक श्री एडगर पी० यंग ने पूर्वी यूरोप के विभिन्न देशों पर लेख लिखे हैं। इस लेख में उनकी आँखों देखा वर्णन है वे आज-कल पूर्वी यूरोप के देशों का भ्रमण कर रहे हैं। अपने एक लेख में जनवादी हंगरी में हुई चमत्कारपूर्ण प्रगति की चर्चा करते हुए लिखते हैं:—

"मैं (ये लेख) हंगरी में बैठकर लिख रहा हूँ। यह देश गैर-स्लाव जाति के लोगों का बसा हुआ है। (स्लाव देशों के समान) यहाँ की योजनायुक्त आर्थिक प्रणाली है और (स्लाव देशों के समान) यहाँ की इस आर्थिक प्रणाली का अच्छा परिणाम निकला है। देश के आर्थिक साधनों में से एक बड़े हिस्से के राष्ट्रीयकरण करने से उत्पादन योजना युक्त आर्थिक प्रणाली के अनुसार हो सका। और चूँकि वास्तविक जनवादी सरकार के नियन्त्रण में यह कार्य होने से जनता का जीवन-स्तर बराबर ऊँचे उठता जा रहा है। लड़ाई से इस देश में विशेषकर इसकी राजधानी बुडापेस्ट की काफी हानि हुई थी। उसकी तेजी से क्षतिपूर्ति की जा रही है। खाद्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। बराबर वह सस्ता भी होता जा रहा है। उद्योग में लगे मजदूरों की तनख्वाह में वृद्धि होती जा रही है। लेकिन उसके साथ ही साथ कारखानों में पैदा हुआ माल सस्ता भी होता जा रहा है। पिछले कुछ महीनों में यहाँ के सिक्के (फोरिन्ट—जो रूमानिया का रुपया है) की क्रय-शक्ति यानी खरीद की कूवत में १५ फी सदी बढ़ती हुई है। देश का बजट अतिरिक्त बजट है।"

उज्ज्वल भविष्य की ओर

इन तमाम क्रान्तिकारी सुधारों के कारण पूँजीवादी देशों को परेशान करनेवाले आर्थिक संकट, भुखमरी, गरीबी, दमन, चोरबाजारी, घूसखोरी इन चीजों से पूर्वी यूरोप की जनता का बेड़ा पार लगा है। इससे जनता के जीवन में स्थिरता, शान्ति और चैन और भविष्य के लिए आशा का सञ्चार हुआ है। इनमें से ज्यादातर देशों ने एक दूसरे से आर्थिक समझौते किये हैं। सोवियत रूस के साथ भी उनमें कइयों ने आर्थिक समझौते किये हैं जिससे एक दूसरे की भरपूर मदद होती है। प्रतिदिन, प्रतिपत्र पूर्वी यूरोप की जनता जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति कर पश्चिमी यूरोप से कहीं आगे निकलती जा रही है।

लेकिन, पश्चिमी यूरोप के इन 'प्र तन्त्रवादी' देशों की क्या हालत है। थैलीशाहों को करोड़पति से अरबों बनाने के लिये योजन यें बन रही हैं! मलाया, बर्मा, हिन्देशिया, हिन्द फिलस्तीन आदि देशों को सदियों और भी गुलाम बनाये रखने के लि षड्यन्त्र रचे जा रहे हैं। वहाँ आ संकट, बेरोजगारी, हड़ताल, गल्ले, कोयले की कमी का तांता लगा हुआ है वहाँ फासिस्टों के बर्बाद किये शहर गांव ज्यों के त्यों पड़े हैं। वहाँ संसार की प्रगतिशील शक्तियों के विरुद्ध दमन कार्य जोरों से चल रहा है। जनता अभी दुःखी है, परेशान है। लिए अमेरिकी पत्र 'सटरडे इवनिं संवाददाता ने पूर्वी और पश्चिमी का भ्रमण करने के बाद सही ही था कि 'पूर्वी यूरोप में मुझे अस्थायी स्थिरता दिखाई थी, लेकिन पश्चिमी में लोगों में मुझे अस्थिरता और कि विमूढ़ता के सिवा कुछ नजर न आ पूर्वी यूरोप की जनता के विरुद्ध और अमेरिका के सेठों के दलाल में नाना प्रकार की भ्रमोत्पादक प्रचार कर रहे हैं। भारत की विरा जनता को चाहिये कि विदेशियों प्रचार में न आवे।

* * *

वैवाहिक सुख प्राप्ति के लिए
"स्त्रीप्रेम रहस्य" मुफ्त
पता—पी० बी० ३७२ दिल्ली

जवानी—मुफ्त
खोई हुई जवानी सुवर्ण कम्पाउण्ड
२४ घंटे में पुनः प्राप्त करें। नमूना
ए० बी० भवन, मोरीगेट, दिल्ली

॥ ८००० रु० नकद इनाम ॥

पहिला इनाम—ठीक हल के लिए ६००० रु० (जो एक अधिक हल ठीक होने पर बांट दिया जावेगा)। दूसरा इनाम—सब से अधिक हलों के लिये १००० रु०। तीसरा इनाम सब से पहिले ठीक हल भेजने वाले के लिये १००० रु०।

क्या करना है? सामने दिये हुए नौ खानों में १०० तक के कोई ये अङ्क इस भांति से भरिये कि जिस ओर से भी जोड़ें जोड़ ४८ हो: एक अङ्क एक ही बार लिखा जा सकता है।

	४८	४८	४८
४८			
४८		१६	
४८			
४८	४८	४८	

दाखला फीस—एक रु० प्रति हल।

नियम—हर एक आदमी एक या एक से अधिक जितने हल चाहे सफेद कागज पर एक रुपया प्रति हल के हिसाब से फीस के साथ भेज सकता है। फीस अथवा मनीआर्डर या पोस्टल आर्डर द्वारा भेजनी चाहिये। मनीआर्डर की रसीद हलों के साथ आनी चाहिये अथवा ऐसा हो सकता है कि आपके हल मुकाबले में सम्मिलित न हो सकें। सही हल वही समझा जावेगा जो हमारे मुहरबन्द हल के साथ [illegible] मिलेगा। [illegible] 'भारत' के पास रखा गया है [illegible] कापी के लिये दो आने के टिकट और अपने पते का लिफाफा भेजें। इनाम की रकम [illegible] की आई हुई रकम के अनुसार कमी बेशी होसकती है पर [illegible] की गारण्टी है। हलों के रास्ते में खो जाने या डाकखाने के कारण देर पहुंचने [illegible] न होंगे। प्रवेश फीस किसी अवस्था में वापिस न होगी [illegible] हर प्रकार से मानने योग्य होगा। हर मामले का फैसला [illegible] मनीआर्डर कोपन पर साफ लिखें हल ५ नवम्बर तक डाक में डाल [illegible] भेजा हुआ कोई हल स्वीकार न किया जावेगा सही हल १५ नवम्बर [illegible]

॥ ई० टी० एण्ड कम्पनी, पोस्ट बैग नं० ८२ ए०, दिल्ली ॥
E. T. & Company, Post Bag No 82 A. Delhi.

अमेरिका के संयुक्तराष्ट्र में राष्ट्र- ... चुनाव होगा। इसका कोलाहल ... सुनाई दे रहा है। इस निर्वाचन- ... के दो महारथी और प्रतिद्वंद्वी हैं ... दल से टाम ड्यूवी और डेमा- ... दल से हैरी ट्रूमेन। वैसे तो हेनरी ... भी इस समर में भाग लेंगे पर न ... कोई दल है न उनकी कोई विशेष ... कहते हैं कि महाभारत के युद्ध में ... ने कर्ण का सारथित्व कर उसके ... को भंग किया था। आलोचकों का ... कि हेनरी वैलेस हैरी ट्रूमेन के पक्ष ... बनाने के सिवा कुछ अधिक ... न पा सकेंगे। अस्तु इस समय ... चर्चा टाम ड्यूवी की हो रही ... की दृष्टि में उनकी सफलता ... है। पर यह तो सभी स्वीकार ... कि उनके चुने जाने की संभावना ... में भी हैरी ट्रूमेन से कम ...

... ड्यूवी ने वकालत से अपना कार्य ... किया। जिस फर्म में वे काम करते ... ने अपने एक बड़े मुकदमे की ... लिये मेडली नाम के एक सुप्रसिद्ध ... नियत किया और ड्यूवी उनकी ... के लिये दिये गये। इस अनुभवी ... कार्य में ऐसी कुशलता और ... दिखाई की शीघ्र ही जब श्री ... टार्नी बनाए गए तो उन्होंने टाम ... अपना सहायक नियुक्त किया। ... कई वर्ष बड़े साठ अनुभवी ... के ऊपर इस प्रकार नियत किया ... के लिये कम सम्मान या गर्व ... थी। यहीं से ड्यूवी का सार्व- ... आरंभ होता है। मेडली ... में ड्यूवी की विशेषता है उनका ... व्यवहार ज्ञान और असाधारण ... कुशलता।

अमेरिका का निर्वाचन-संग्राम

हैरी ट्रूमेन के प्रतिद्वंद्वी टाम ड्यूवी कौन और क्या हैं?

लेखिका, कुमारी रोजी करीम बी० ए०

> अमेरिका का चुनाव नवम्बर में होने जा रहा है। श्री ट्रूमेन और श्री डेवी दो प्रतिद्वंद्वी उम्मीदवार हैं। श्री डेवी की जीत होगी या हार इस पर अभी से कैसे भविष्यवाणी की जा सकती है, किंतु डेवी का प्रभाव ट्रूमेन से कम नहीं है। इस लेख में लेखिका ने डेवी के संबंध में मनोरंजक बातें लिखी हैं, जो पठनीय हैं।

आरम्भ में ड्यूवी की वकालत नहीं चमकी। उनकी बुद्धिमत्ता को सब स्वीकार करते थे पर उनमें वकीलों का आडंबर नहीं था न वकीलों का अभिनय। पर शीघ्र ही उनकी प्रतिभा से सब प्रभावित होने लगे। जिस पक्ष की ओर से वे खड़े होते थे उसका समर्थन तर्कशुद्ध अकाट्य और सुगठित होता था और उनकी विवेचना गंभीर और प्रभावोत्पादक होती थी। उनका कहना था न्यायालय का समय नष्ट करना वकीली अपराध है। बारंबार हाथ पटकने से और युक्तियों से वह कार्य नहीं हो सकता जो सत्य और स्पष्ट कथन से। उन्हें वकालत में असाधारण सफलता मिलती गई। ७५ मामलों में से एक-दो को छोड़ प्रायः सभी में उन्होंने अभियुक्तों को दण्ड दिलवाया—और वे भी ऐसे-वैसे अभियुक्त नहीं जो ऐसे सबल और उदंड व्यक्तियों को जिनसे पुलिस भी काँपती थी। यह कदाचित् ही किसी दूसरे अमेरिकन के विषय में कहा जा सके।

अपनी पद-वृद्धि का श्रेय सदा ही ड्यूवी ने अपने सहकारी कर्मचारियों को दिया है। जब जब भी उन्हें सफलता मिली है तब तब उन्होंने उन सब व्यक्तियों के नाम प्रकाशित किये जिनकी उन्हें सहायता रही।

ड्यूवी स्वयं अति परिश्रमी हैं और अविश्रांत परिश्रम कर सकते हैं। तथापि उनका काम व्यवस्थित और साफ-सुथरा होता है। जब वे किसी काम के लिये मनुष्यों का चुनाव करते हैं तो केवल योग्यता ही का विचार किया जाता है। और कार्य में जो निपुणता दिखलाते हैं जो प्रशंसा के पात्र हैं उनकी वे व्यक्तिगत रूप से और सार्वजनिक रूप से प्रशंसा भी करते हैं। इसी कारण उनके साथ काम करनेवाले दिन-रात जी तोड़कर काम करते हैं। ड्यूवी प्रायः ऐसे ही कर्मचारियों को अपने साथ काम करने के लिये चुनते हैं जो उनकी अवस्था से मेल खाते हैं।

ड्यूवी की सबसे बड़ी योग्यता है किसी भी कार्य का सुचारु रूप से संगठन और कुशल संचालन। उनकी दृष्टि में संगठन और संचालन का अर्थ है दूसरे मनुष्यों की योग्यताओं का उपयोग कर लेना। इसलिये वे योग्यतम मनुष्यों को ही चुनते हैं।

एक समय की बात है कि एटार्नी के पद के लिए चुनाव हो रहा था। तब एक महाशय ने भाषण देते हुए कहा था कि न्यूयार्क के लोग ऐसे व्यक्ति को क्योंकर चुन सकते हैं जो न्यूयार्क के नागरिकों को जेल भिजवाकर प्रसन्न होता है। यह ड्यूवी की ओर संकेत था। ड्यूवी के रिपब्लिकन दल की संख्या डेमाक्रेटिक से बहुत कम थी। जब विजय ड्यूवी की हुई तो लोगों के लिए यह परमाश्चर्य था।

श्री ड्यूवी का पारिवारिक जीवन बहुत सादा और शांतिपूर्ण है। ड्यूवी-परिवार बड़ा धार्मिक है। पूरा कुटुंब प्रति रविवार नियमित रूप से आराधना के लिए गिरजा जाता है। वहाँ श्रीमती ड्यूवी आरगन बजाती हैं। हर वर्ष एक दिन ड्यूवी-परिवार संडे स्कूल के विद्यार्थियों को अपने निजी खेत पर ले जाता है और वहाँ श्री ड्यूवी स्वयं अपने हाथों से भोजन बनाकर उनको खिलाते हैं। घर में प्रतिदिन भोजन के समय और रात को सोते समय पारिवारिक प्रार्थना की जाती है। कभी कभी इसके लिए रेडियो मनोरंजक (प्रोग्राम) कार्यक्रम भी रोक देना पड़ता है।

श्रीमती ड्यूवी मझोले कद की स्त्री हैं। वे बड़ी सादगी से रहती हैं। वे अपने लिए बने-बनाए वस्त्र खरीदती हैं और उनका सुदीर्घ काल तक उपयोग करती हैं। वे न तो तड़क-भड़क पसंद करतीं हैं न अधिक दावतें ही देती हैं। वे कभी भाषण नहीं देतीं न किसी सार्वजनिक संस्थाओं के कार्यों में भाग लेती हैं, न कोई राजनैतिक समस्याओं की चर्चा करती हैं। वे कहती हैं कि संसार में वैसे ही उलझनें क्या कम हैं। फिर उनको अधिक क्यों बढ़ाया जाय।

ड्यवी पति-पत्नी का परिचय तब

शेष पेज १४ पर देखिए

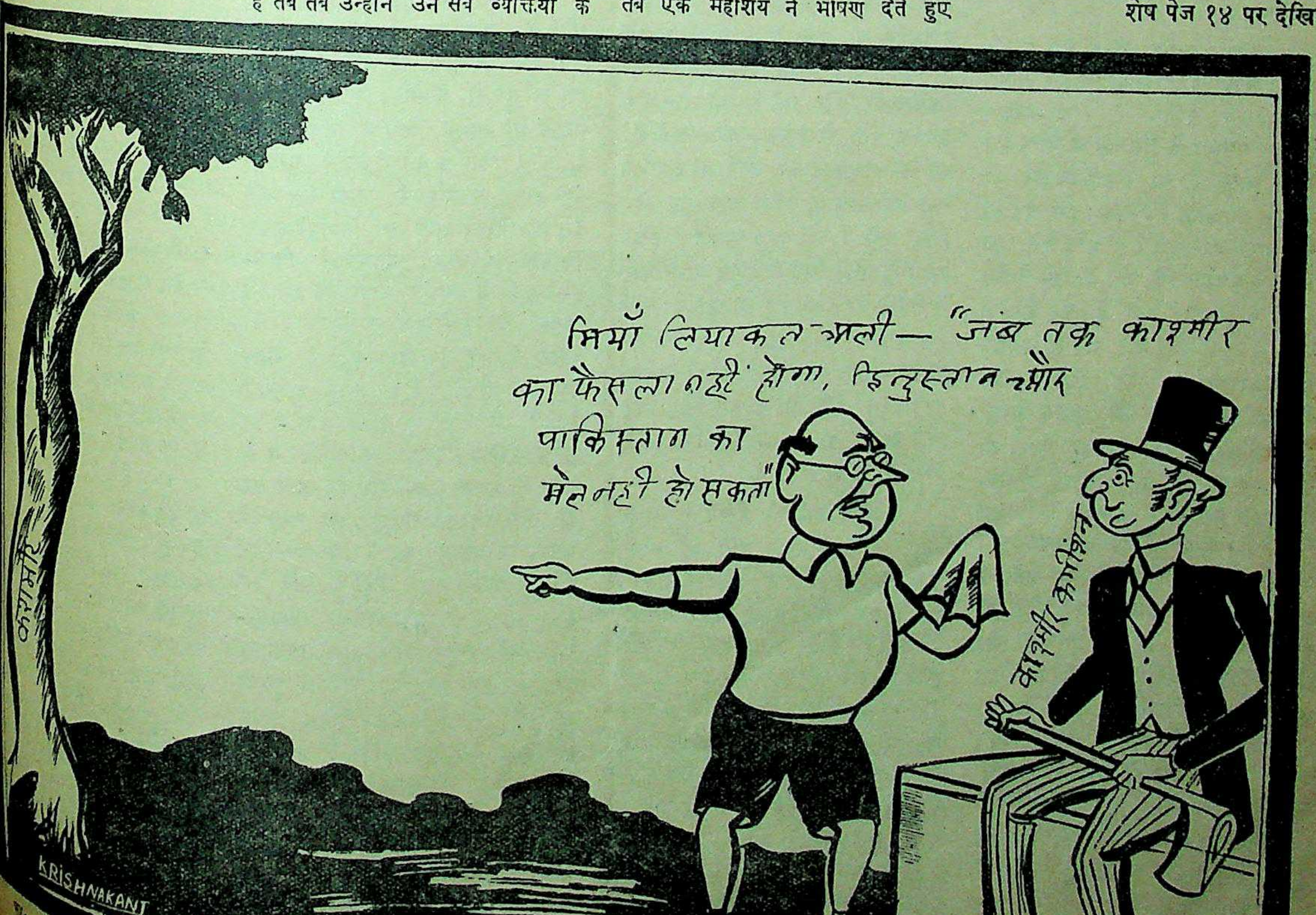
काश्मीर
मियाँ लियाकत अली— "जब तक काश्मीर का फैसला नहीं होगा, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का मेल नहीं हो सकता"
काश्मीर कमीशन
KRISHNAKANT

हिन्दी के दैनिक आगे बढ़ें

देवनागरी लिपि के सुधार के लिये कुछ सुझाव

लेखक, महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

राष्ट्रभाषा का पद हिन्दी को प्राप्त हो रहा है और देवनागरी लिपि को राष्ट्र-लिपि का पद। देवनागरी लिपि को अधिक लोकप्रिय और उपयोगी बनाने का कार्य सरकारी तथा गैर-सरकारी दोनों ओर जारी है। इस लेख में सम्मेलन के सभापति राहुल सांकृत्यायन ने भी देवनागरी लिपि में कुछ सुधारों का सुझाव दिया है, जो विचारणीय है।

इस लेख के लेखक महापण्डित श्री राहुल सांकृत्यायन

पार्लियामेंट, न्यायालय और शिक्षणालय सभी जगह विदेशी भाषा को हटाकर हिन्दी अपना स्थान लेने जा रही है। शताब्दियाँ और दशाब्दियाँ नहीं बहुत ही थोड़े समय में हिन्दी भाषा-भाषी महाप्रदेश (युक्तप्रांत, बिहार, महाकोसल विन्ध्य-प्रदेश, मालव-संघ, राजस्थान-संघ, मत्स्य-संघ, हिमाचलप्रदेश और पूर्वी पञ्जाब) में चारों ओर हिन्दी ही हिन्दी दिखलाई देगी। सभी बातों में हिन्दी का स्थान निश्चित दिखलाई पड़ता है। किन्तु प्रश्न है, अँगरेजी दैनिकों का स्थान हिन्दी कैसे ले? यह कानून से होनेवाली बात नहीं है। लोग क्यों हिन्दी को जानते, हिन्दी से प्रेम रखते भी, अँगरेजी दैनिक पढ़ते हैं या पढ़ने के लिए मजबूर होते हैं? हिन्दी दैनिक में किसी बात का अभाव है और अँगरेजी में उसका सद्भाव है, तभी तो ऐसा होता है।

एक और बात है, जिसके बारे में भी यहाँ कुछ कह देना आवश्यक है। वेतन, प्रभाव और स्थिति में हिन्दी-पत्रकार अँगरेजी पत्रकार से हीन समझा जाता है। कहा जाता है कि हिन्दी-पत्रकार की योग्यता कम होती है। लेकिन इस बात को कैसे माना जा सकता है? आज ऐसे बहुत से तरुण पत्रकार हैं, जो अँगरेजी से कम हिन्दी के पत्रकार नहीं हैं। वह अँगरेजी पत्रों में इसीलिए चले गये हैं, क्योंकि वहाँ वेतन और कार्य का अधिक सुभीता है। यदि हिन्दी पत्रों की स्थिति अच्छी हो तो वे सब अँगरेजी छोड़कर हिन्दी की तरफ चले आवेंगे। यह बात हम यूनिवर्सिटी और कालेजों में देख रहे हैं! पहले कितने ही हिन्दी के अच्छे विद्वान् वहाँ अँगरेजी पढ़ाते थे। अँगरेजों के जाने के साथ अँगरेजी पढ़नेवाले विद्यार्थियों की संख्या घोर रूप से कम हो गई और अँगरेजी अध्यापकों को हटाने की नौबत आई; इसका परिणाम ही रहा है, अध्यापकों का हिन्दी-अध्यापन की ओर झुकाव। इसलिए हिन्दी-पत्रकारों की योग्यता-अयोग्यता का प्रश्न नहीं है। यदि हिन्दी पत्रों का तल ऊँचा होगा, तो हिन्दी-पत्रकारों के वेतन का मान ऊँचा होगा, फिर योग्य से योग्य पत्रकार हिन्दी-पत्रों के पास होंगे।

हिन्दी-पत्रों को अँगरेजी भाषाविज्ञ गम्भीर पाठक इसीलिये नहीं लेते कि उनमें पाठ्य-सामग्री अँगरेजी पत्रों की अपेक्षा अत्यन्त कम होती है। आप किसी भी दो आने के अँगरेजी पत्र और डेढ़ आने के हिन्दी पत्र को लेकर मिलाइये; वहाँ सामग्री मुश्किल से तिहाई से भी कम मिलेगी। आज हिन्दी पत्रों के लिये ग्राहक-संख्या का प्रश्न नहीं है। एक ही प्रेस से निकलनेवाले हिन्दी और अँगरेजी दैनिकों में ड्योढ़े और दूने का अन्तर रहता है। यदि हिन्दी-पत्र अँगरेजी के बराबर सामग्री दें और रात के तीन बजे छपकर निकलनेवाले संस्करण में पन्द्रह मिनट पहले तक की खबर दे सकें, तो हिन्दी पत्र चारों ओर छा जायेंगे और अँगरेजी दैनिक अनिवार्यता नहीं केवल शौक की चीज रह जायेंगे।

इस प्रकार हमारे सामने अधिक पाठ्य-सामग्री और अल्पतम समय में मुद्रण ये दो बड़ी समस्यायें हैं, जिनमें भी पाठ्य-सामग्री के परिमाण को अँगरेजी पत्रों के बराबर करना सबसे पहली और अत्यन्त आवश्यक बात है। इस समस्या को हमें जल्दी से जल्दी हल करना है। इसके बिना न हम हिन्दी दैनिकों को ऊँचे स्थान पर ला सकते हैं, न हिन्दी पत्रकारों को ऊँचे उठा सकते हैं, न हम अपने महानेताओं और मंत्रियों को हिन्दी में वक्तव्य देने को मजबूर कर सकते हैं। अधिक पाठ्य-सामग्री उतने ही स्थान में तभी आ सकती है, यदि टाइप छोटा हो। हिन्दी पत्रों में जहाँ बारह प्वाइंट के टाइप लगते हैं, वहाँ अँगरेजी दैनिक अपने बहुत से स्थानों में छ प्वाइंट का टाइप लगते हैं। हिन्दी में छः प्वाइंट का टाइप बनाना कठिन नहीं है, किन्तु वैसा करने पर वह बहुत छोटा हो जाता है और पढ़नेवाले आँख दुखने की शिकायत करने लगते हैं, जो अनुचित नहीं है।

हिन्दी दैनिकों को देखने से मालूम होगा, कि उनमें ऊपर नीचे की मात्रायें बहुत टूटती हैं। बारह प्वाइंट के टाइप में वह जितना टूटती हैं, छ प्वाइंट में उससे भी ज्यादा टूटेंगी। इससे हमारे टाइपों के वर्तमान रूप को रखते हुए बारीक टाइप देना व्यवहार्य नहीं मालूम होता। इसका एक ही उपाय है, कि हम वर्तमान टाइप की आकृति में हलका-सा परिवर्तन कर दें। इसके लिए हिन्दी के पौने सात सौ में चौदह टाइपों में हमें थोड़ा सा स्थान परिवर्तन करना पड़ेगा और जो मात्रा या हलन्त अक्षर दूसरे अक्षरों के नीचे ऊपर लगते हैं उन्हें अगल-बगल में रख देना होगा। उदाहरणार्थ कि, की, को, कौ में करके ऊपर रक्खी जानेवाली मात्रायें आकार में परिवर्तन किये बिना संकुचित करके इतनी छोटी बना देनी पड़ेगी, कि वह क की अगल-बगल में बिना ऊपरी पाई से ऊपर गये रक्खी जा सकें। इसी तरह ऊपर की मात्रायें के, कै, कं, र्क और नीचे लगनेवाली मात्रायें, कृ, लृ, कु, कू, क् में नींचे लगनेवाली मात्रायें उठाकर दाहिनी ओर बगल में रख दी जायँ। स्मरण रहे कि ऊ की मात्रा रू में बगल में ही लगाई जाती है, उसी नियम को हमें व्यापक कर देना है। यदि लिपि में इतने सुधारों को मान लिया जाय, तो हिन्दी दैनिकों में आजकल आमतौर से व्यवहार होनेवाले बारह प्वाइंट के टाइप ही छः प्वाइंट के हो जायेंगे; क्योंकि अक्षरों का जितना बड़ा शरीर होता है, ऊपर नीचे मात्रा लगाने पर वह उतना ही और बढ़ जाता है। इस तरह हम छः प्वाइंट ही नहीं तीन प्वाइंट के सुपाठ्य टाइप हिन्दी को दे सकेंगे और हमारे पत्रों में अधिक पाठ्य-सामग्री देने की कोई कठिनाई नहीं रह जायगी। इससे केसों में भी सुविधा होगी।

बारीक टाइप-मात्राओं के टूटने और छपाई के दुष्पाठ्य होने की समस्या भी इसी सुधार में थोड़ी सी और बातें जान लेने पर दूर हो जायगी। हिन्दी की तरह मराठी भी नागरी लिपि में लिखी जाती है, किन्तु लिपि के बारे में जितने पुराणपंथी हम हैं, उतने हमारे मराठी बन्धु नहीं हैं। किरलोस्कर बाड़ी का बिजापुरे-टाइप इस बात का ज्वलन्त उदाहरण है। बिजापुरे-टाइप में अखंड टाइप के छः सौ तिरासी संख्या को कम करके उसे दो सौ बासठ ही नहीं कर दिया गया है, बल्कि वहाँ कोई मात्रा दूसरे अक्षर पर लटकती नही है, जैसे 'कि' में इ की मात्रा क पर लटक रही है। इसकी जगह वह क के ऊपर से हटकर आड़ी पाई के ऊपर तक ही सीमित रक्खी गई है। इस तरह हर एक टाइप अपने जड़ से ऊपर तक ठोस होने के कारण टूटता नहीं है। यदि हम ऊपर नीचे की मात्राओं को बिजापुरे-टाइप की बगल में लगाकर इस्तेमाल करें, तो हमारी सारी कठिनाई दूर हो जाती है। उस वक्त हमारे दैनिक उतनी ही फुर्ती से छप सकेंगे, जितने कि अंगरेजी के।

पत्र के छपकर निकलने तक के पन्द्रह मिनट पहले तक की खबरें हिन्दी दैनिकों में देने में एक और भारी अड़चन है, वह है तार और दूर-मुद्रक की भाषा का अँगरेजी होना, जिसके कारण हर एक समाचार और वक्तव्य जहाँ अँगरेजी पत्र सीधे छाप

देते हैं, वहाँ हिन्दीवालों को
करना पड़ता है। हाल ही में भारत के
मालिकों के ब्रिटिश साम्राज्यवाद के
प्रचारक राइटर के भागीदार बनने पर
खुशियाँ मनाई गईं। राष्ट्रीय और
ष्ट्रीय दृष्टि से यह कितनी खतरनाक
है, इस पर किसी ने ध्यान नहीं
हर एक समाचार-एजेन्सी समाचार
वक्त उसमें अपना रङ्ग देती है।
उसी तरह दुनिया के कोने-कोने से
साम्राज्यवादी रंग में रँगकर
करके हमें समाचार देता रहेगा,
आज तक देता रहा है, अन्तर
होगा, कि अब हम उसे अपना
स्वीकार करेंगे। जान पड़ता है, हमारे
ही देश-भाइयों को ब्रिटिश साम्रा
भारी मोह है, और वह हानि-
परवाह किये बिना उस टूटे वृक्ष
छाया अपने ऊपर बनाये रखना चाहते
यह अत्यन्त लज्जा की बात है
बल्कि राइटर के साम्राज्यवादी
दुनिया को देखकर हम कभी वस्तु
को ठीक से जान नहीं सकेंगे।

लेकिन अभी हम राइटर के
नीतिक हानि के पहलू पर बहस
रहे हैं। हमें देखना है, कि कैसे
दूर-मुद्रक हमारी अपनी भाषा में
हमारे पत्रों तक पहुँचायें जिससे
अनुवाद करने में समय लगाना
तथा प्रत्येक पत्र के अलग-अलग अनु
न होकर एक से ही समाचार सभी पत्रों
छपे। यह तभी हो सकता है, जब कि
और दूर-मुद्रक (टेली प्रिन्टर) हिन्दी
हमारी खबरें हमारे पास दें। हिन्दी
भाषी प्रान्तों की सोलह-सत्रह करोड़
संख्या, संयुक्तराष्ट्र अमेरिका की
संख्या से भी अधिक है, फिर
कोने-कोने से हिन्दी में हमारे
और संदेश आयें, यह हर तरह से
और स्वाभाविक है। राइटर के
से बाँधकर हम अपने हिन्दी दैनिकों
अँगरेजी की दया पर छोड़
हैं। हो सकता है, अंगरेजी के करोड़
स्वामियों को देश के मान-अपमान
से कोई मतलब नहीं हो; उन्हें तो
मिलना चाहिये, पाठकों की अँगरेजी
के लिये इजारादारी चाहिये, जो
टर के गठबन्धन से सिद्ध होता है!
हमारे राष्ट्र-नेता भी क्या सारे
हैं, कि न वह राष्ट्र के हित और
पर ध्यान देते हैं, न भारतीय
ही राष्ट्र-भाषा होनेवाली हिन्दी
देते हैं। औरों से हम वैसी आशा
सकते थे, उनकी भारतीयता
है, इसे कहने की आवश्यकता नहीं है
डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद और सरदार
भाई पटेल से ऐसी आशा नहीं थी

दूर-मुद्रक और तार में हिन्दी
सवाल विधान-सभा के हिन्दी के
बनाने न बनाने पर निर्भर नहीं
महाप्रदेश के दशों प्रांत और वहाँ
सत्रह करोड़ जनता को निश्चय
कि वह क्या स्वतंत्र होने के बाद भी
के अँचले में बँधी रहना चाहती है!

शेष पेज १८ पर

पिरामिड की हँसी

लेखक, श्री धर्मवीर भारती एम० ए०

मानव जीवन संघर्ष अनिवार्य है। युगों से संघर्ष चलता आ रहा है और कहीं नहीं दिखाई देता। इस संघर्ष में जीवन और कला विकसित होती जा रही है, वैसा ही अब। कहानी भी कलात्मक और जीवन संघर्ष का एक सुन्दर चित्र मिस्र की राजकुमारी कलाकार की कला के सामने पराजित होती है। कहानी मनोवैज्ञानिक सुन्दर और हृदय पर एक छाप छोड़ जानेवाली है।

मिस्र की एक पर्देनशीन औरत।

ह कला के प्रति जीवन का पहला था। मिस्र के राजदूत ने घूम-घूम-देश में घोषणा की—"मिस्र की री कला को कृत्रिम और नश्वर है। उसके मत में जीवन को बाह्य रूप रेखा, कला से अधिक है। उसका विश्वास है कि के सुकुमार उपासक, कलाकार यथार्थ चित्रण करने में असमर्थ। और इसीलिये उसकी प्रतिज्ञा है भी कलाकार उसके रूप की यथार्थ का अंकन कर सकेगा, उसके पर वह अपना वैभव और अपना अर्पित कर देगी।"

रे संसार की निगाहें एक बार मिस्र र उठ गईं। घोषणा कुतूहल से ईं। कलाकार प्रतिमांकन के लिये साधन और सुडौल प्रस्तर खंडों र मिस्र की ओर चल पड़े।

नी ने पहले कलाकार का स्वागत। वह आया। कलाकार ने छेनी। रानी ने मुख का आवरण उलट। बादल के हटने पर सुनहली धूप गई। कलाकार सिहर उठा। रानी पड़ी। वह निष्प्रभ हो गया। उसकी भ्रष्ट हो गई। रानी हँस पड़ी। र हार गया।

सरा आया, तीसरा आया। वर्षों। मीलों तक धरती प्रस्तर खंडों गईं। रानी प्रत्येक की हार पर ती, जलपात्र में अपने रूप की या देखती, बिखरी हुई अलकें। भाल के स्वेद बिन्दु पोंछती अपने सिंहासन पर आकर ती।

* *

और एक दिन प्रतिहारी ने सूचना "भारत से एक कलाकार आया है!"

"आने दो!" राजकुमारी बोली।

कलाकार ने प्रवेश किया। भौंरों सी लहराती हुई अलकों पर असाव-से रक्खा हुआ उष्णीष, भूमि तक हुआ नीला रेशमी उत्तरीय। चुना पीत अधोवस्त्र और सावधानी से हुआ अरुण कटिवस्त्र। आम की की भाँति आकर्षक, विशाल भोले और सारंग सी मतवाली चाल। वह आगे बढ़ा और एक लिपटा हुआ कमलपत्र रानी के चरणों के रख दिया। राजकुमारी ने उठाया। शबनम की बूँदों में पराग घोलकर मृणाल की तूलिका से राजकुमारी का एक रेखा चित्र बनाया गया था। आड़ी, तिरछी उलझी हुई रेखायें जिसमें उसके रूप की तो केवल झलक थी, लेकिन उन रेखाओं की हर वक्रता में रानी का दर्प बल खाकर इठला उठता था। रानी का गर्व हर अभाव में मुस्करा उठता था। वह रानी का चित्र नहीं, भाव छाया थी।

शे० ५

रानी ने देखा और वह मुस्कुरा पड़ी।

"यह तो भाव-छाया है; क्या तुम यथार्थ प्रतिमा का निर्माण कर सकोगे युवक? क्या तुम भारत से आवश्यक प्रस्तर खण्ड लाये हो?

"क्या मूर्ति के लिये पत्थर? विवशता थी राजकुमारी। भारत में पत्थर हैं ही कहाँ? जितने पत्थर थे भी कलाकारों ने मूर्ति-निर्माण के लिये उन्हें स्पर्श किया, और कला के स्पर्श से सब पत्थर देवता हो गये, राजकुमारी!"

राजकुमारी मुस्कराई।

"ओह तुम तो शिल्पी ही नहीं, कवि भी हो! लेकिन कला का गुणगान मेरे सम्मुख कर रहे हो। मैं जिसके एक भ्रूभंग से आहत होकर कितने युवक कवि बन गये हैं। जिसकी छवि की एक झलक का अंकन करने में कितने कलाकार असफल होकर चले गये और जिनके अवशेष पत्थरों से मिस्र की धरती ढँक गई है।"

"वे कलाकार न थे राजकुमारी! वे दर्प की प्रतिमा के कमजोर उपासक थे। उन्होंने यथार्थ की सीमाओं में कला को बाँध देना चाहा था और वे असफल होकर चले गये। भारत का कलाकार जीवन को, यथार्थ को, वाह्य रूप को कला की, कल्पना की, आदर्श की सीमाओं में बाँधता है।

"हूँ! शायद इसीलिये भारत का कलाकार पर्वतों, सागरों मरुस्थलों को पार कर रूप के चरणों में कला का फूल चढ़ाने मिस्र आया है—" राजकुमारी ने व्यंग किया।

"कदापि नहीं।" कलाकार ने उत्तर दिया—"मैं प्रणय-यातना के उद्देश्य से नहीं आया हूँ। मैं तुम्हारे लिये भारत से एक संदेश लाया हूँ। वह जीवन जो यथार्थ के दर्प में उलझकर रह जाता है परिवर्तन उसे नष्ट कर देता है। वह जीवन जो कला की असीम सीमाओं में बँधकर चलता है वह रूप अमर हो जाता है राजकुमारी! और देश के कलाकार तुम्हारे रूप की छाया का चित्रण करने आये थे मैं तुम्हारी छाया में रूप भरने आया हूँ।"

"मेरी छाया के रूप!" राजकुमारी हँसी "मुझे रूप की कमी नहीं है कलाकार! रूप के पाश में जकड़कर ही मैं सहस्रों कलाकारों के अभिमान को चूर चूर कर चुकी हूँ!"

कलाकार पल भर चुप रहा और फिर बोला—"एक कलाकार की हैसियत से मुझे इस पर लज्जा आती है राजकुमारी! अच्छा, इन्हीं अवशेष पत्थरों से मैं कला का वह शाश्वत निर्माण करूगा जिसे देखकर संसार आश्चर्यचकित रह जायगा। जिस दिन तुम्हारा रूप चूर चूर होकर बिखर जायगा और गर्म रेगिस्तानी हवा के झोंके उसे अनन्त शून्य में बिखरा देंगे उस दिन भी मेरा निर्माण गौरव से शीश उन्नत कर, जीवन की नश्वरता पर अमर अभिमान की हँसी हँसेगा—"

और धीरे धीरे एक दिन वह निर्माण पूरा हो गया। वह संसार का उच्चतम भव्य निर्माण पिरामिड। कलाकार ने रानी को आमन्त्रित किया। पिरामिड की कला का निरीक्षण करने के लिये। उस भव्य निर्माण जिसके आधार के समीप एक अन्त प्रकोष्ठ था। रानी ने कक्ष में प्रवेश किया सामने एक चिकना पत्थर था। रानी ने उसमें झुककर अपना प्रतिबिम्ब देखा। ऊपर के एक छेद से भूली भटकी हुई एक सूर्य किरण झाकने लगी जिसकी प्रकाश रेखा में रानी को लगा जैसे उसके कुछ बाल सफेद हो गये हैं। वह हँसी और कलाकार से बोली—"तुम्हारी कला त्रुटिपूर्ण है कलाकार! उसमें तो मेरे केश श्वेत दीखते हैं!"

"हाँ रानी कला की कल्पना के दर्पण

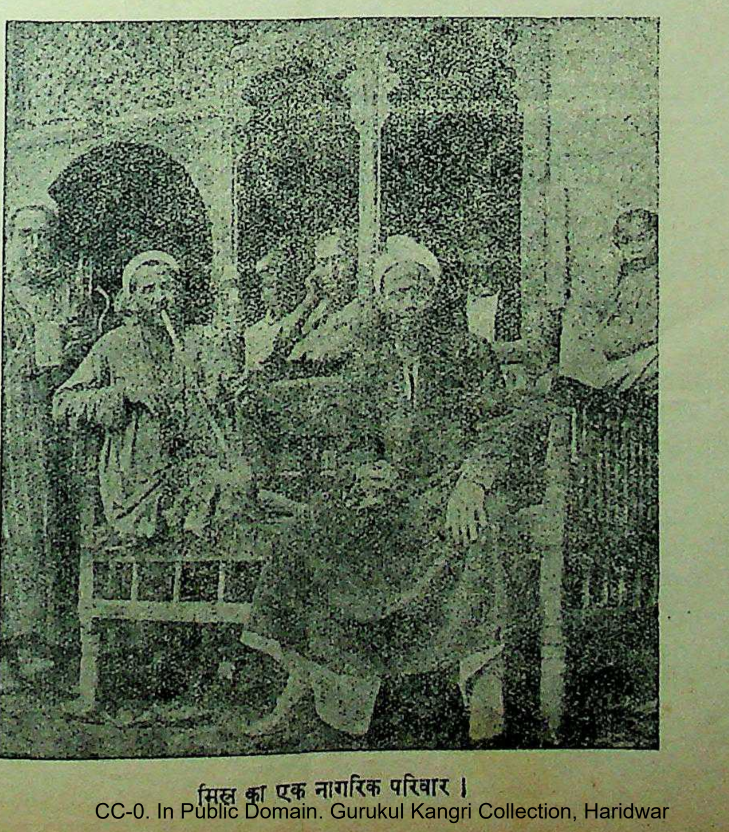

मिस्र का एक नागरिक परिवार।

में यथार्थ को अपनी सभी त्रुटियाँ दीखने लगती हैं और वह आहत होकर विद्रोह कर उठता है—कला त्रुटिपूर्ण है। क्या तुम्हारा रूप अमर रहेगा? जिस दिन तुम्हारे कोमल कपोलों पर श्वेत अलकें झूलेंगी जिस दिन तुम्हारे जीवन पर वृद्धावस्था का अभिशाप छा जायगा उस दिन तुम सोचोगी कि तुमने जीवन में क्या किया? केवल रूप के दर्प में मनुष्यों के जीवन को कुचलती रहीं। एक दिन भी तुमने हृदय की प्यास नहीं बुझाई। हमेशा भावना की भूख को झुठलाती रहीं। तुमने अपने जीवन से कला का, कविता का, प्रेम का बहिष्कार कर दिया और एक दिन कला, कविता, प्रेम तुमसे प्रतिशोध लेंगे!"

"कलाकार!" राजकुमारी चीख उठी—"मैं हार गई युवक! मैं तुम्हारे सामने हार मानती हूँ। मेरा वैभव, मेरा यौवन, मेरा रूप, मेरा राज्य, कला के; तुम्हारे चरणों पर अर्पित है।"

कलाकार स्तब्ध रह गया। क्षण भर असमंजस में रहा और उसके बाद सहसा बोल उठा "मुझे अस्वीकार है!"

"नहीं! नहीं! कलाकार इतना भीषण प्रतिशोध न लो। मानती हूँ मैं जीवन भर पत्थर रही पर तुम तो पत्थर को स्पर्श कर देवता बना देना जानते हो न!"

"ठीक है राजकुमारी! पर मेरे कन्धों पर कला के कन्धों पर, मानवता का उत्तरदायित्व है। किसी एक व्यक्तित्व की सीमाओं में बँधकर मैं कला की हत्या नहीं करना चाहता! विदा राजकुमारी, मेरा कार्य समाप्त हो गया—"

राजकुमारी ने क्षण भर जाते हुए कलाकार की ओर देखा ओह उसके बाद चोट खाई हुई नागिन की तरह तड़पकर बोली—"यह मेरी पहली पराजय थी—लेकिन यह पराजय मुझे विजय की शाश्वत चेतना देगी। मैं प्रेम की याचना नहीं करूँगी निष्ठुर! मैंने रूप की लहरों के सहारे जीवन की नाव खेई है और रूप के नष्ट होने के पहले ही मैं रूप की धारा में अपने जीवन को डुबो दूँगी!"

उसने अपनी उँगली से अँगूठी निकाली। अँगूठी का हीरा रंग और रूप की किरणों से जगमग हो रहा था। वह अँगूठी होटों तक ले गई और उसका जहर चूस लिया। उसके होंठ नीले पड़ गये और वह सदा के लिए सो गई।

लेकिन मिस्र के निवासी बोले—"हमारी रानी का रूप अजेय रहा है, अजेय रहेगा।"

वे वैज्ञानिक रसायन लाये। रानी का शव रसायनों में लपेटकर पिरामिड के अन्तर्कक्ष में रख दिया गया। वे बोले—"जब तक कला के इस विशिष्ट निर्माण, पिरामिड का अस्तित्व रहेगा, तब तक हमारी रानी का रूप भी शेष रहेगा। कला अमर है तो रूप भी नश्वर नहीं, हमारी राजकुमारी मरकर भी कला से जीत गई!"

* * *

लाखों वर्ष बाद—

एक कलाकार और उसकी पत्नी भ्रमण करते हुए पिरामिड के अन्तर्कक्ष में आये। उन्होंने राजकुमारी के ममी को देखा और देखा पिरामिड की ऊँचाई को।

"कितना भव्य निर्माण है!" कलाकार ने कहा।

"कितना मादक रूप है!" उसकी पत्नी ने कहा।

"इसके निर्माण में कला की कितनी महान् चेतना लगी होगी!" कलाकार ने कहा।

"और उस चेतना के मूल में यथार्थ रूप की कितनी सशक्त प्रेरणा रही होगी?"

"यथार्थ रूप की प्रेरणा! कला के शाश्वत निर्माण के सामने उसका क्या महत्व! यथार्थ नश्वर होता है, एकयुगीन होता है। कला युग युग की होती है, अमर होती है!"

कलाकार ने आगे बढ़कर ममी को स्पर्श किया। वह राख की तरह चूर चूर होकर बिखर गई। पत्नी चीख पड़ी। "कहाँ है यथार्थ! बस इतनी सी सत्ताशीलता पर उसकी तुलना तुम कला के अमर निर्माण से कर रही थीं—"

वह चुप हो गई। आज युगों के संघर्ष के बाद भी कला जीत गई। कलाकार हँस पड़ा और पत्थरों में वह हँसी गूँज गई। कला का शाश्वत निर्माण पिरामिड प्रतिध्वनि दोहराते हुए हँस पड़ा—अपनी विजय के गौरव पर।

* * *

फोटो खींचने का अपूर्व साधन

बाक्स प्लेट केमरा

सुन्दर, मजबूत, सस्ता। इस केमरे से आप आसानी से चाहे जिस दिलपसन्द चीज का मनोहर फोटो २।×३॥ इंच साइज के प्लेट पर खींच सकते हैं। बढ़िया फोटो न खिंचे तो दाम वापस। केमरे के साथ प्लेट, कार्ड, मसाला और फोटो खींचने की तरकीब मुफ्त, मूल्य ६।) पैकिंग पोस्टेज १।) रु०

ओरियन्टल केमरा हाउस, (एल० ३),
अलीगढ़ सिटी

तुलनात्मक भाषाशास्त्र

(भाषा-विज्ञान)

लेखक डा० मंगलदेव शास्त्री
एम० ए०, डी० फिल०

इसमें तुलनात्मक भाषाशास्त्र के सिद्धांतों का प्रतिपादन तथा संसार की भिन्न-भिन्न भाषाओं के परस्पर सम्बन्ध की सरल और सुबोध व्याख्या है। प्रोफेसर ए० सी० वुलनर, डा० भगवान्दास, म० म० गंगानाथ झा और श्री गोपीनाथ कविराज, डा० लक्ष्मणस्वरूप और धीरेन्द्र वर्मा आदि मनीषियों ने और अन्य नामी साहित्यिकों तथा पत्रों ने इसकी प्रशंसा की है। पृष्ठ-संख्या पौने तीन सौ से ऊपर; अच्छा कागज, बढ़िया जिल्द; मूल्य केवल ५)।

मैनेजर
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

श्री सोहनलाल द्विवेदी लिखित
काव्य कृतियों
के
नवीन संस्करण

भैरवी

गांधी युग का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। महाम मालवीयजी के शब्दों में 'ऐसी कविता प्रचार देश के एक काने से लेकर दूसरे तक होना चाहिए।' मूल्य २॥=)

वासवदत्ता

बाबू मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं 'इस रचना में बहुत प्रभावित हुआ।' स्वच्छन्दतापूर्वक प्रौढ़ता की ओर द्विवेदीजी अग्रसर हो रहे हैं, पड़ता है, स्वयं वह भी उन्हें वरण करने लिए आतुर हो रही है। 'वासवदत्ता' के प्रकाशन हिन्दी-साहित्य में एक नई क्रान्ति उत्पन्न क है। यह स्वयं पढ़कर निर्णय कीजिए। मूल्य

कुणाल

महापंडित राहुल सांकृत्यायन की सम्मति में—अशोक, तिष्यरक्षिता और कुणाल खास तौर से—'कुणाल' के चरित्र-चित्रण में कवि ने कमाल किया है। शब्द-सौकुमार्य और भावोत्क के साथ ही नपे तुले शब्दों के प्रयोग ने काव्य बहुत ऊँचा उठाया है। विशेष संस्करण मूल्य

पूजागीत

राष्ट्रीय चेतना को काव्य का सच्चा स्वरूप के लिए द्विवेदी जी को प्रचुर सम्मान त लोकप्रियता प्राप्त हुई है। ये पूजा-गीत कवि गौरव के अनुरूप ही हैं। मूल्य २)

विषपान

सुप्रसिद्ध पौराणिक कथा का सरल तथा स खंड-काव्य है। भाषा का प्रवाह, प्रसन्न शै तथा कथा के मार्मिक घटना-क्रम की वर्णना इसे बड़ा ही हृदयग्राही बना दिया है। मूल्य १)

झरना
शिशुभारती
बाँसुरी

द्विवेदीजी पहले बालकों के कवि हैं पीछे के। पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा मान सम्पूर्णानन्दजी ने इन कविताओं की प्रशंसा की है। 'अमृत बाज़ार पत्रिका' सम्मति में—जिस प्रकार की शिक्षा बाल को देने के लिए हमारे नेता वर्षों से प्रयत्न रहे हैं, इन पुस्तकों में उसी प्रकार का साहित्य प्रत्येक पुस्तक में कई रङ्गीन तथा अनेक चित्र हैं। प्रत्येक पुस्तक का मूल्य १)

पूरे सेट का मूल्य
१२ रु०

पता—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

हमारा रंग-मंच

'अनोखी अदा'

एक सामाजिक फिल्म

लेखक, श्री सौभाग्यमल जैन

प्रेम को लक्ष्य कर सिनेमा संसार में कुछ लिखा जा चुका है। नित्य-प्रेम-चित्रों का प्रदर्शन कर चलचित्र ऐतिहासिक, सामाजिक चित्रों की जनता के हृदय को जीतने में पूर्ण कार्य किया है, फिर भी दृष्टि से यह प्रेम आदर्श प्रेम का प्रेम नहीं कहा जा सकता। किसी भी चित्र की समालोचना के पूर्व इसका अवश्य ही ध्यान होता है कि चित्र में प्रेम-परा-का कहाँ तक प्रतिपादन किया है। प्रेम को लक्ष्य कर फिल्म जगत् चित्रों का सुप्रसिद्ध अभिनेताओं अभिनेत्रिय में एवं प्रतिष्ठित कला-के योग से तथा योग्य एवं उच्च के दिग्दर्शकों के तत्वावधान में किया जा रहा है। फिर उतना सफल नहीं हो पाता इसका कारण है स्वार्थमय प्रेम का प्रतिपादन। अदा' जैसा कि उसके नाम से होता है, एक ऐसा ही चित्र है।

कर्फ्यू लगा हुआ है। लाट साहब युवक गाता हुआ चला जा रहा पुलिसवाले की आहट पाकर युवक अनजान मकान में प्रवेश करता है गई और बहन भूख से व्याकुल है। उसे यह बर्दाश्त नहीं होता है इस कर्फ्यू में भी वह उन्हें कहीं से कर रोटी देता है। पुलिस गिरफ्तार लेती है। अचानक अपनी माता की की खबर पाकर गाँव जाने के लिए साहब रेल में बैठता है। दूसरी ओर मालिक की यातनाओं और भाई से दुखित होकर लड़की भी छोड़ उसके पास उसी जगह जाकर बैठी है और रोने लगती है। लाट को यह अच्छा प्रतीत नहीं होता उसे किसी भी प्रकार बहलाकर है—"मैं तुम्हें प्रेम करता हूँ। आप तो न जायेंगी ?" प्रत्युत्तर में उसे

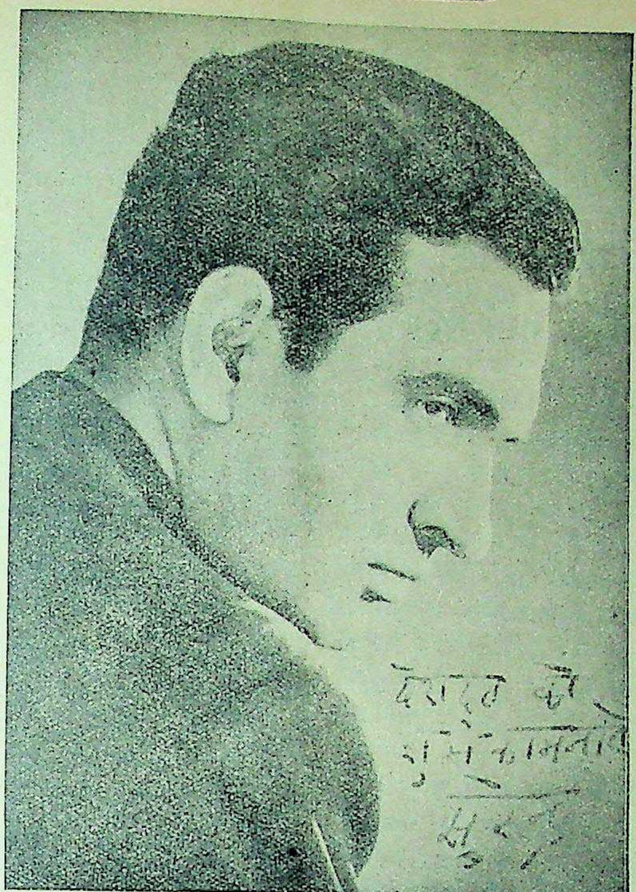

फिल्म-जगत् के सुप्रसिद्ध अभिनेता तथा मधुर गायक सुरेन्द्र।

'गीं' के स्थान पर 'गें' लिखा हुआ मिलता है। एक आशा की लहर उसके मानस में नाचने लगती है। भाग की बात गाड़ियों की टक्कर होती है और वे दोनों अस्पताल की शरण लेते हैं। लाट साहब ठीक होने पर लड़की को ढूँढ़ता है और दूसरी तरफ डाक्टर के प्यार को ठुकराकर लड़की पागल अवस्था में भयभीत बन इम्पीरियल कालेज में फिलासफी के प्रोफेसर के मकान में प्रवेश करती है। प्रोफेसर साहब उसकी सेवा-शुश्रूषा कर एवं उसका नाम 'कामिनी' रख उसे प्यार करने लग जाते हैं।

दूसरी ओर लाट साहब घर पहुँचकर मा से मिलता है और मा की मृत्यु पर उनकी अन्त्येष्टि क्रिया कर पिता की तमाम संपत्ति का अधिकारी हो जाता है। पिता काशी चल देते हैं। प्रोफेसर साहब पास ही के एक गाँव में मन बहलाने जाते हैं और ठीक उसी जन-स्थान में लाट साहब जाते हैं। इन्हीं दिनों लाट साहब का गाँव की एक लड़की से प्रेम हो जाता है परन्तु उस लड़की को वह भूलता नहीं। एकाएक एक दिन बाजार में प्रोफेसर साहब से मुलाकात हो जाती है। पर वह 'कामिनी' को नहीं देख पाता। आखिर एक दिन थियेटर में उन दोनों का मिलन हो ही जाता है। वह उसे चाँटा भी मार देती है क्योंकि वह उसे जानती नहीं। एक दिन आधी रात को मन बहलाने के लिए घर से चल देती है और लाट साहब से मिल जाती है। प्रोफेसर साहब उसे ले आते हैं। लाट साहब रहस्य समझ जाता हैं। उस समय लाट साहब प्रोफेसर साहब को कामिनी के दिमाग का आपरेशन करने को कहता है पर निराशा। अंत में वह निराश होकर किस्मत का फैसला करने के लिये प्रोफेसर साहब के सामने पिस्तौल तानकर खड़ा हो जाता है। और प्रोफेसर साहब से इजाजत पाकर उसे लाने का प्रयत्न करता है पर वह इनकार कर जाती है।

इस पर झुँझलाकर वह अपनी अंतिम निशानी पत्थर से चोट मारकर छोड़ जाता है और साथ में अपना हाथ भी जला लेता है। इस समय बेचारी गाँव की लड़की उसकी याद में तड़फती है। वह उसके प्यार को ठुकराकर अस्पताल पहुँचता है। कामिनी की स्मृति अब ठीक हो जाती है और अतीत के चित्र उसके मस्तिष्क पर घूमने लगते हैं। कामिनी लाट साहब से चिपट जाती है। यहीं से नया जीवन प्रारंभ होता है और अनोखी अदा का कार्य पूर्ण हो जाता है।

कला की दृष्टि से कहानी महत्त्वपूर्ण नहीं है। कई स्थानों पर कहानीकार ने संयोग विरुद्ध संबन्ध जोड़ने की चेष्टा की है जिससे कहानी का महत्व मारा जाता है। एकाएक लाट साहब का जेल से भागना और उसी लड़की के साथ में बैठना हमारे मस्तिष्क में एक तूफान सा खड़ा कर देता है। इससे कहानीकार का उद्देश्य साफ-साफ यह दृष्टिगोचर होता है कि वह इन दोनों को कहीं न कहीं पर मिलाने की चेष्टा अवश्य करता है। लाट साहब की पुलिस अफसरों के समक्ष बातचीत पूर्ण व्यंग्यात्मक है। समझ में नहीं आता कि एक कैदी अपने अफसरों के समक्ष इस प्रकार की व्यंग्यात्मक बातचीत कैसे कर सकता है ? कहानी की दूसरी खराबी यह यह है कि अस्पताल में जिस समय लाट साहब से लड़की की पहचान पूछी जाती है, ठीक उसी समय कामिनी के प्रेम में उन्मत्त डाक्टर और लाट साहब एक ही पहचान कैसे बता सकते हैं। न उनके शब्दों में फर्क है और न उनकी नाक कला में। कहानीकार की यह महान् अदूरदर्शिता है। लाट साहब का अपने प्रोफेसर साहब के समक्ष पिस्तौल तानकर खड़ा हो जाना हमें यह बतलाता है कि उसमें उस समय मनुष्यता का नाम शेष भी नहीं था। इस प्रकार कथा-रचयिता ने उसके चरित्र को भरसक गिराने की चेष्टा की है। चित्र के नायक के चरित्र को इस प्रकार गिराना चित्र की महत्ता को नष्ट करना है। लेखक ने उस गाँव की गरीब लड़की का कोई निष्कर्ष नहीं निकाला। फिर भी वह बेचारी गरीब लड़की आखिर तक अपने प्रेम को निभाती है। लाट साहब का एकाएक कामिनी पर पत्थर मारना कहानीकार की सबसे बड़ी भूल है। एक प्रेमी किस प्रकार अपनी प्रेमिका को हृदयहीन होकर पत्थर मार सकता है समझ में नहीं आता ? कहानीकार ने कहानी की भाषा ज्यादा क्लिष्ठ नहीं बनाई है। कहानी में न उच्च प्रेम की पराकाष्ठा ही है और न उसका उद्देश्य ही। चित्र का संगीत भी कोई विशेष सुन्दर नहीं है। यद्यपि गीतों की रचना फिल्म जगत् के महान् गीतकार श्री नौशाद ने की है परन्तु उनके इस नमूने को देखने से उनकी कोई विशेष प्रतिभा नहीं झलकती। दृश्यों का निर्माण, फोटोग्राफी, वेशभूषा असाधारण है।

चित्र के नायक के रूप में भारत के प्रसिद्ध अभिनेता श्री प्रेम अदीब को पाते हैं। उन्होंने अपनी कला का कोई विशेष परिचय नहीं दिया है। नसीम को हम चित्र में नायिका के रूप में पाते हैं। आपका अभिनय भी और चित्रों की अपेक्षा साधारण ही है। भारत के श्रेष्ठ गायक श्री सुरेन्द्र हमारे समक्ष प्रोफेसर साहब की भूमिका में आते हैं। आपने अवश्य ही चित्र में अपने कार्य को पूर्ण निभाया है। आपकी कला से पूर्ण दार्शनिकता झलकती है। अभिनेताओं की कला की दृष्टि से चित्र साधारण है।

* * *

सुप्रसिद्ध फिल्म-अभिनेता प्रेम अदीब।

सुप्रसिद्ध-फिल्म अभिनेत्री नसीम।

मातृमण्डल

नारियों की अभिरुचि में सादा जीवन

समाज और राष्ट्र की सेवा का सच्चा मार्ग यही है

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित का संयुक्तराष्ट्र-संघ की बैठक में सम्मिलित होने के लिये जाते समय बम्बई हवाई अड्डे पर लिया गया चित्र।

संसार सर्वदा सौंदर्योपासक रहा है। नारियाँ उस उपासना की एक साकार मूर्ति मानी जाती रही हैं। अतः सौन्दर्य-उपासना में नारियों का महत्व अधिक कहा जा सकता है। सौंदर्य में भी कई प्रकार के भेद हो जाते हैं। महात्मा जी ने सौन्दर्य की जो व्याख्या की है वह साधारण और मध्यम जन से निराला स्थान रखती है। महात्मा जी से मद्रास के एक विद्यार्थी श्री रामचन्द्रन ने दिल्ली में पूछा था—"मैं आपसे सौन्दर्य के सम्बन्ध में जानना चाहता हूँ।" महात्मा जी और रामचन्द्रन की प्रश्नोत्तरी में सौंदर्य का एक अद्भुत रूप निखर उठता है। वह रूप ढोंग, विडम्बना, शृंगार और तड़क भड़क से नहीं बनता, वरन्, वह अपने आप निखरा रहता है। गांधी जी सादगी के अवतार कहे जाते हैं। इसलिए वे छोटी से छोटी वस्तु में भी सौन्दर्य को देखा करते थे। पर, नारियाँ कदाचित् उस सौंदर्य को कभी भी पसन्द नहीं कर सकतीं। "सौन्दर्य और सादगी का सम्बन्ध नहीं हो सकता।" ऐसा नारियाँ सोच सकती हैं। परन्तु सादी तथा कोरे किनारे की साड़ी स्त्रियों के सौन्दर्य को कभी कभी इतना बढ़ा देती हैं कि उन सादी साड़ियों के आगे शृंगारमयी रँगीली सज-धजवाली साड़ियाँ मात हो जाती हैं। साड़ियों का चुनाव करते समय नारियाँ सादी साड़ियों को कम इसलिये पसन्द नहीं करतीं कि उनमें चित्ताकर्षक रंग नहीं होते, चित्ताकर्षक रंग नयनाभिराम तो होते हैं, परन्तु, उनमें वह वास्तविक आनन्द नहीं जिनके द्वारा चित्त को शांति मिल सके। चित्ताकर्षकहीन रंग तो महात्मा जी जैसे युग पुरुष ही पसन्द कर सकते हैं। तारोंभरी रात को देखकर कौन उसमें सौन्दर्य का आभास देख सकता है? सूर्योदय और सूर्यास्त कितने चित्ताकर्षक अथवा आनन्ददायी हैं यह भावुक और नयनाभिरामी पुरुष कभी पसन्द करेंगे? यह कम सम्भव हैं।

सौन्दर्य और सादगी भिन्न नहीं कहे जा सकते। इतना अन्तर तो अवश्य आ जाता है कि सौंदर्य को पसन्द करनेवाले दो रूप से उसे देखते हैं, कुछ तो अन्तर से और कुछ वाह्य चक्षुओं से। वाह्य चक्षुओं के दर्शकों को चूँकि विस्तृत संसार नहीं दिखलाई पड़ता अतः वे सौन्दर्य को संकीर्णता के क्षेत्र में देखते, और उसका आनन्द लेते हैं। जैसे ही उनकी दृष्टि अन्य की ओर बढ़ती है वैसे ही वे पहली सौन्दर्यशाली वस्तु को भूलवश घृणा कर आगन्तुक वस्तु पर बढ़ जाते हैं। यह क्षणिक सौंदर्योपासना है। इसका अस्तित्व भी क्षणिक है और इसका परिणाम भी क्षणिक रहता है। यह सर्वप्रिय हो ही नहीं सकता। इसके प्रतिकूल अन्तरप्रिय सौन्दर्य जिसका वाह्य जगत् से बहुत कम सम्बन्ध है विशाल है। इसमें छोटी छोटी वस्तुओं में भी बड़ा और प्रभावशाली आकर्षण दिखलाई देता है। यही सादगी है, मूल है; तत्व है; संसार के सभी वर्गों का प्रिय आधारभूत है। चमचमाती रंगीन साड़ी को दो ही चार नारियाँ खरीद और पहन सकती हैं। कोरी और सादी साड़ियों को संसार का अधिकतम वर्ग खरीद और पहनता है। यह क्यों? क्या रंगीनी में आकर्षण अधिक है? क्या कोरे किनारे पसन्द नहीं? अथवा वे उपयोगी नहीं होते? इससे तो यही कहा जा सकता है कि सादी वस्तुएँ जनप्रिय इसलिये हो जाती हैं कि उनमें वास्तविकता मौजूद रहती है। उनको विकृत करके नहीं, वरन् उसको मूल-रूप में हम देखते हैं। विकृत को क्षण भर में पसन्द और नापसन्द कर बदल दिया जाता है। परन्तु वास्तविक (सादापन) अपने स्थान पर ही रहता है।

सादी वस्तुओं को हम अधिक क्यों पसन्द करते हैं? यह आर्थिक, सामाजिक दृष्टि से भी ऊँचे स्तर पर है। सादगी में नम्रता है, दूसरे को अपनाने की क्षमता है; परन्तु रंगीनियाँ ऐसी स्थिति में नहीं होतीं। सादगी का केवल इतना ही तात्पर्य हो कि वह जन-साधारण में स्थान पा जाय तो फिर सादगी से रंगीनियाँ ही अच्छी। सादगी का मुख्य उद्देश्य दूसरों के लिए
उपयोगी होना, दूसरों की सेवा करना
कष्ट सहकर औरों को आराम पहुँ
यही उसका मुख्य ध्येय हो तो
अच्छी हो सकती है। वरना उसे
रंगीनियों से कम न समझना
कितनी नारियाँ साधारण हैं और
का जीवन व्यतीत करती हैं? इनकी
उँगलियों पर गिनी जा सकती है।
कस्तूर बा महात्मा जी की
आराम कर सकती थीं अच्छे और
कपड़े पहन सकती थीं। उनके
दूसरे भोजन पका सकते थे। परन्तु वे
सादी साड़ी पहनती थीं उनमें भी
खादी—मोटा वस्त्र। अपने से
थीं। यह गुण सादगी के हैं ऐसी
को कौन न पसन्द करेगा।
देखने में भले ही माता कस्तूर बा
नौकरानी, श्रमिक ऊँचे पर मूलतः
उद्योगिनी नारी थीं। उनके
संसार की छोटी-बड़ी नारियाँ
सकती हैं, इसलिए सादगी में यही
नहीं कि वह नम्र हो, और छोटे
ही तक सीमित हो। वरन् सादगी
मूल तथ्य सेवा होना चाहिए।

धन और रुपये-पैसे या सोने
हीरे यद्यपि तड़क-भड़क की
इनसे शान-शौकत बढ़ जाती है।
बिना आभूषण और गहनों के मनुष्य
सुन्दर प्रतीत हो तो वही आभूषण
मूल्यवान् समझना चाहिए। महात्मा
की वह सौम्य मूर्ति बिना
कितनी हृदयग्राही मालूम होती
इसका मूल कारण क्या है? उनमें
हृदय को आकर्षित करने की
वे बरबस जनता की आँखों की
जाते थे। उनमें कौन-सा
जो सर्वग्राही हो रहा था!
जिसको उन्होंने अपने जीवन का
बड़ा और महानतम आभूषण
था। धन और रत्नों में अन्य
कर सकते हैं, छीनने को तैयार हो
चोरी और डाके का भय
परन्तु सादगी को कौन छीन
कौन उस ओर झुक सकता है!
की अधिकतम जनसंख्या
निधि की ओर बरबस खिंच

शेष पेज १७ पर

डा० एस० डी० किचलू की अध्यक्षता में हिन्दुस्तान स्काउट एसोसियेशन के आठवें वार्षिकोत्सव पर लड़कियों का राष्ट्रीय गान के समय का लिया गया चित्र।

स्वास्थ्य और व्यायाम

स्वस्थ कैसे रहें ?

साधारण नियम और उपाय

लेखक, श्री कृष्णकुमार गुप्त, बी० काम०

च्छा स्वास्थ्य व्यक्तिविशेष के लिए
हत्व नहीं रखता; वह परिवार, जाति
देश के लिए और भी अधिक आव-
है। भारत के ठण्डे प्रदेशों में स्थित
के लाभ कभी उपलब्ध न थे, किन्तु
ही कल तक भारतवासियों के सम्मुख
वर्ष की आयु का आदर्श था। वे
के नवयुवक और नवयुवतियों की
युवावस्था में ही वृद्ध, पिचके
और धँसी हुई छातियोंवाले न होकर
और शक्तिशाली हुआ करते थे।
नित्यप्रति औषधि सेवन करते हैं और
स्वस्थ नहीं रहते। वैद्यक, एलोपेथिक,
और होमियोपेथिक सभी चिकि-
हमारे अनुभवानुसार व्यर्थ हैं और
ला से भी उत्तम स्वस्थ रहने के
हैं जिनका पालन करने से रोग का
ही न हो।

स्थ रहने के साधारण नियम हम
भली-भाँति विदित हैं ये दो भागों
जा सकते हैं। सर्वप्रथम जल से
त नियम हैं। शुद्ध और ताजा जल
समान लाभदायक है। नल का जल
जल से निश्चयात्मक रूप से निम्न
ा है और कहा भी गया है, नल
और कल के आटे में कुछ पोषण
शक्ति नहीं होती। गाँव के
के कुओं का जल सुलभ है और
से यथासम्भव लाभ उठाते हैं।
के आदि एवं अन्त में जल निषेध
अच्छा तो यही है कि जल भोजन के
समय उपरान्त पिया जाय और यदि
थोड़ी मात्रा में भोजन के मध्य में
चाहिये। यदि नित्य नये नये स्थानों
पीना पड़े, तो उबालकर पीना
। प्रातः ४ बजे उठकर बासी पानी
स्वास्थ्य के लिए हितकर है। ऐसा
पेट साफ हो जाता है और यदि
साफ रहे तो संसार के आधे रोग
नहीं फटकते।

भोजन के विषय में बड़ी बड़ी
प्रचलित हैं। न ५६ प्रकार के
भोजन स्वास्थ्य में वृद्धि करते हैं
न हर समय खाते रहना ही श्रेय-
है। वह तो पेट के साथ अन्याय
। दीर्घायु होने के लिए अल्पहारी
अच्छा है। ठसाठस चुन लेने से मेदे
अनावश्यक जोर पड़ता है और पाचन-
असम्भव हो जाती है। भोजन भूख
पर ही करना चाहिये और बिना
और अधिक खा लेना एक ही
है। जल्दबाजी के साथ भोजन करना
हानि कारक है। भोजन को
चबाया जाय उतना ही शीघ्र वह
होगा। भोजन उतना करना चाहिये
भोजन के पश्चात् भी कुछ भूख
रहे। गप-शप करने, सिनेमा जाने,
इत्यादि के लिए तो हमारे पास समय रहता है परन्तु दुर्भाग्यवश खाने के लिए इतनी कमी रहती है कि न हम हाथ-मुँह धोते हैं और न स्वच्छ जगह में बैठकर भोजन करते हैं। जिससे रोग के कीटाणु पेट में प्रवेश करते हैं। पुराने चौके और चूल्हे के सिद्धांत कदापि गलत न थे। भोजन के पश्चात् थोड़ा मट्ठा अथवा दही खाने से भोजन पचाने में सहायता होती है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि किसी भी सात्विक भोजन में खटाई, मिर्च मसाले और अचारों का स्थान नहीं।

कार्य के समय कार्य और विश्राम के समय विश्राम चाहिये। मनुष्य को कठिन परिश्रम के पश्चात् अपनी खोई हुई शक्ति का संचय करने के लिये कम से कम ६ घंटे अवश्य सोना चाहिए रात को १० बजे सोना और प्रातः ४ बजे उठना स्वास्थ के लिए बहुत ही अच्छा है। जाड़ों में कमरे के सब दरवाजे बन्द करके सोने अथवा मुँह ढक के सोने से होनेवाली हानियों से सब परिचित हैं और यदि उन्हीं बुरी आदतों को छोड़ दिया जाय तो स्वास्थ्य पर बहुत कुछ अच्छा प्रभाव पड़ सकता है। दिन में सोना किसी भी दशा में उचित नहीं और ऐसा करने से आलस्य बढ़ता है।

नियमित व्यायाम स्वास्थ्य के लिये भोजन के सामान आवश्यक हैं। शरीर के अवयवों को ठीक रखने के लिए नित्य-प्रति थोड़ा दण्ड-बैठक आदि करना चाहिये। मस्तिष्क से कार्य करनेवालों को खुले मैदान में रोज टहलना चाहिये। व्यायाम से चित्त प्रसन्न रहता है और प्रसन्न चित्त रहने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है। वास्तव में यदि मनुष्य अपने को चिन्ता-रहित रख सके तो उसकी आयु अनायास दुगुनी हो जाय। जो कार्य औषधियाँ नहीं कर सकतीं, वह व्यायाम द्वारा सहज ही में हो सकता है।

शरीर एक पवित्र मन्दिर है। उसको स्नानादि से शुद्ध और पवित्र रखना हमारा परम कर्तव्य है। ताजे जल से स्नान करना वांछनीय है। यदि गरम जल से स्नान किया जाय तो सर पर गर्म जल न पड़ना चाहिये। स्नान नित्य करना चाहिये और कम से कम सप्ताह भर में एक बार साबुन लगाकर सारे शरीर को अच्छी तरह से साफ करना चाहिये। मैले कपड़ों के व्यवहार से शरीर में खुजली और चर्मरोग की वृद्धि होती है। दाँतों का मैल प्रतिदिन साफ करना चाहिए अन्यथा पेट में जाकर मन्दाग्नि रोग पैदा करता है। तिनका, कलम, पैन्सिल दाँतों से चबाने से रोगों के जीवाणु पेट में चले जाते हैं।

अतएव यदि हम संयम से रह सकें, स्वास्थ्य सम्बन्धी साधारण नियमों का पालन कर सकें तो न केवल डाक्टरों का घर भरने से बच जायँगे बल्कि जीवन का लाभ उठाते हुए देश के स्वास्थ्य-संग्राम में भी बहुत कुछ भाग ले सकेंगे।

आज ही अवश्य मँगायें
कोकशास्त्र (सचित्र) १) पो० ।=)
हिन्दी इंगलिशटीचर १।।) पो० ।।)
पुस्तक व पहेली का बड़ा सूचीपत्र मुफ्त "प्रभात" ट्रेनिंग कम्पनी, (४१) मौरैना—जी० आई० पी० रेलवे।

हास परिहास

भंग की तरंग

लखनऊ के ईसाई दशहरा इस साल मना रहे हैं। और झाँसी के एक ईसाई स्कूल में रामधुन पर रोक लग रही है। किसी को बैंगन बादी करता है, किसी को शक्ति देता है।

* * *

पुलिस को आदर्श बनाने के लिए नई शिक्षा संस्था बनाई जा रही है। जब पुलिस आदर्श हो जायगी तब सब मंदिर टूट जायेंगे क्योंकि यही लोग देवता हो जाएँगे।

* * *

टण्डन जी का कहना है कि मुसलमान लोग भारतीय संस्कृति अपनायें। तब तो बड़ी कठिनाई होगी। चन्दन इत्यादि महँगा हो जायगा क्योंकि यह लोग भी टीका लगाने लगेंगे। होम करने लगेंगे, लकड़ी महँगी होने का डर है।

* * *

सुना है नोबुल पुरस्कार अगले वर्ष से संसार में सबसे अधिक सत्य बोलनेवाले को मिलेगा। जफरुल्ला खाँ का नाम पुरस्कार के लिये प्रस्तावित हो रहा है।

* * *

कहा जाता है कि चीनी का मूल्य घटने से चावल भी सस्ता होगा। शायद नमक का मूल्य घटने से गेहूँ भी सस्ता हो जाय। तो पहले चीनी और नमक का ही भाव घटाया जाय।

* * *

भारत-सरकार ने निश्चय किया है कि पाकिस्तान से आनेवाले माल पर महसूल नहीं लगेगा। पुराने और नये माल में कुछ अंतर करना चाहिये था।

* * *

कहा जाता है दतिया-नरेश सिंहासन त्यागनेवाले हैं। यह त्याग की भावना अच्छी है, इससे यह लोकोक्ति ठीक हो जायगी—अर्ध तजहिं बुध सरबस जाता।

* * *

निजाम महोदय पत्रकारों से नहीं मिलते। एक रजाकार से मिले तो यह नौबत हुई। पत्रकार से मिलने पर तो यह आशंका है कि कहीं राज पर ही खतरा न हो।

* * *

अयोध्या में इक्के और ताँगे नाबालिक लड़के हाँकने लगे हैं। लोग कहते हैं इसे रोकना चाहिये। लखनवी सरकार इसे रोक सकेगी इसका सन्देह है।

* * *

जबलपुर-शस्त्रागार से फिर शस्त्र चोरी होने लगे हैं। कड़ा पहरा होने पर ही—चोरी होती है यह भूतलीला है। जबलपुर के प्रीमियर महोदय को चाहिये कि किसी ओझा से इसकी देख-रेख करायें।

* * *

काशी में साधु-सम्मेलन होनेवाला है जिसमें कहा जायगा कि साधु मद्य न पीयें। गाँजा को छूट तो देनी चाहिये नहीं तो बमभोला के दर्शन कैसे होंगे।

—अगड़धत्त शर्मा

* * *

कैसे कैसे वरदान मिले

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

कैसे कैसे वरदान मिले
बंदर को लम्बी पूँछ मिली, गदहे को लम्बे कान मिले
तुम प्रतिभा लेकर पड़े रहो कैसे कोई सम्मान मिले
जब तक न मिले कोई ऐसा अकबर को जैसे मान मिले
मैं गया होस्टल, लड़के सब मजनू के बाबा जान मिले
प्रेमी बनकर वह जलते थे, सब कमरे निरे मसान मिले
इस राशन के युग में मुझको ऐसे ऐसे मेहमान मिले
भोजन की सेना पर विजयी होनेवाले कप्तान मिले
जो मिले एक से एक बढ़े, दिखलाते, 'बेढब' शान मिले
पत्नी तो केवल हाकिम थीं, भाई उनके सुलतान मिले
यह आशा मात्र दुराशा है, उनसे कोई वरदान मिले
केवल दिखलाने को दोनों मुस्कान मिले या पान मिले
कह रहा हाथ मल मल कर मैं, कुछ मुझे प्रेम का दान मिले
बोलीं मिल गया नयन सुख, क्या इससे बढ़कर वरदान मिले
मैं नहीं पान का भिक्षुक हूँ कुछ मान सहित अपमान मिले
कुछ मिले तुम्हारे हाथों से वह जान मिले अनजान मिले

श्वेत कुष्ट की अद्भुत दवा

प्रिय सज्जनो! औरों की भाँति मैं अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहता। यदि इसके ३ दिन लेप से सफेदी के दाग जड़ से आराम न हों तो मूल्य वापस। जो चाहें –)।। का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें। मूल्य २।) रु०

१८ प्रकार के गलित कुष्ट के निराश रोगी अपनी पूरी-पूरी हालत लिखकर दवा मँगा लें और आराम होकर लाभ उठावें, वी० पी० छुड़ाते समय हमारा पता अवश्य देख लें।

विष्णु आयुर्वेदभवन नं० १२
पोस्ट वारसलीगंज, (गया)

अमेरिका का निर्वाचन-संग्राम

(पेज ७ का शेष)

हुआ था जब ये दोनों बालक थे और एकत्र संगीत का अभ्यास करते थे। श्रीमती ड्यूवी पर अपने पति के उत्कर्ष का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वैसे तो वे हर एक बात में अपने पति का समर्थन करती हैं पर उनकी दृष्टि में वे केवल ड्यूवी हैं और कुछ नहीं। वे कहती हैं कि सदा ही जब किसी मनुष्य की पद वृद्धि होती है या उसका उत्कर्ष होता है तब सभी लोग उसमें असाधारण प्रतिभा देखने लगते हैं जब कि यथार्थ में दूसरों के समान वह भी एक साधारण व्यक्ति होता है।

एक समय श्रीमती ड्यूवी एलबेनी के अपने सरकारी निवास में किसी मित्र से बातचीत करने बैठी थीं। ये संभ्रान्त सज्जन प्रतिपादन कर रहे थे कि ड्यूवी असाधारण प्रतिभासंपन्न व्यक्ति हैं। इसी समय ड्यूवी का कुत्ता केन्यूट वहाँ आया और साथ ही श्री ड्यूवी ने भी वहाँ प्रवेश किया और वे कुत्ते से खेलने लगे। सहसा कुत्ते ने उन्हें गिरा दिया और वे चारों कोने चित्त हो गये। तब हँसते हुए श्रीमती ड्यूवी ने कहा 'देखा आपने असाधारण प्रतिभासंपन्न व्यक्ति को।'

श्री ड्यूवी के दो पुत्र हैं। एक की आयु १५ वर्ष की और दूसरे की १२ वर्ष की। वे छात्रावास में रहते हैं और जब छुट्टियों में घर आते हैं तो उन्हें घर का काम करना पड़ता है। फुरसत के समय वे बागवानी करते हैं और जो कुछ पैदा होता है अपने परिवार को ही बेचते हैं।

श्री ड्यूवी पैसों का मूल्य अच्छी तरह समझते हैं। उनकी संपत्ति बहुत थोड़ी है। पर वह सब उनकी स्वयं उपार्जित है। उन्हें स्मरण है कि विद्यार्थी दशा में वे खेत में मजदूरी कर अपनी जीविका चलाते थे और विवाहित जीवन के आरंभ में बड़ी कठिनाई से एक छोटे से घर में वे अपनी गृहस्थी चलाते थे। मितव्ययता उनका एक बड़ा गुण है। आय-व्यय का लेखा उनसे अच्छा बनता है और इसलिये वे सहज ही जान लेते हैं कि कौन व्यक्ति अपनी आय से अधिक खर्च कर रहा है और तब उससे निष्कर्ष निकालते हैं।

ड्यूवी हट्टे-कट्टे ऊँचे पूरे पुरुष हैं—स्टेलिन और चर्चिल से भी। घोड़े पर सवारी करना, तैरना और गाल्फ खेलना उनका नित्य साधारण व्यायाम है। उनको कभी किसी ने थका नहीं देखा है।

सादा जीवन और महान् सिद्धान्त उनका आदर्श है जिसका वे आचरण भी करते हैं।

आमोदा
नीलगिरि तैल
बी. सांकलेकर बंधु बम्बई ४.

प्रतिमा

इस संग्रह में सुकवि राजाराम श्रीवास्तव की एक से एक बढ़िया ५० कविताएँ हैं। इन कविताओं को बड़ी प्रशंसा है। क्या भाषा और क्या भाव सभी अनुपम हैं। रंगीन आवरण, बढ़िया छपाई और मूल्य केवल १) एक रुपया।

पूजागीत

द्विवेदी जी की नवीनतम राष्ट्रीय कविताओं का संग्रह। प्रत्येक कविता जीवन में स्फूर्ति का संचार करती है। फेदरवेट पीले कागज पर छपी हुई पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

मैनेजर इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

सुन्दरता के लिये बालों को रौबीले बनाकर रखिये
Vaseline POMADE
कोमलता से सुगंधित किया गया वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।
वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।
Copyrights

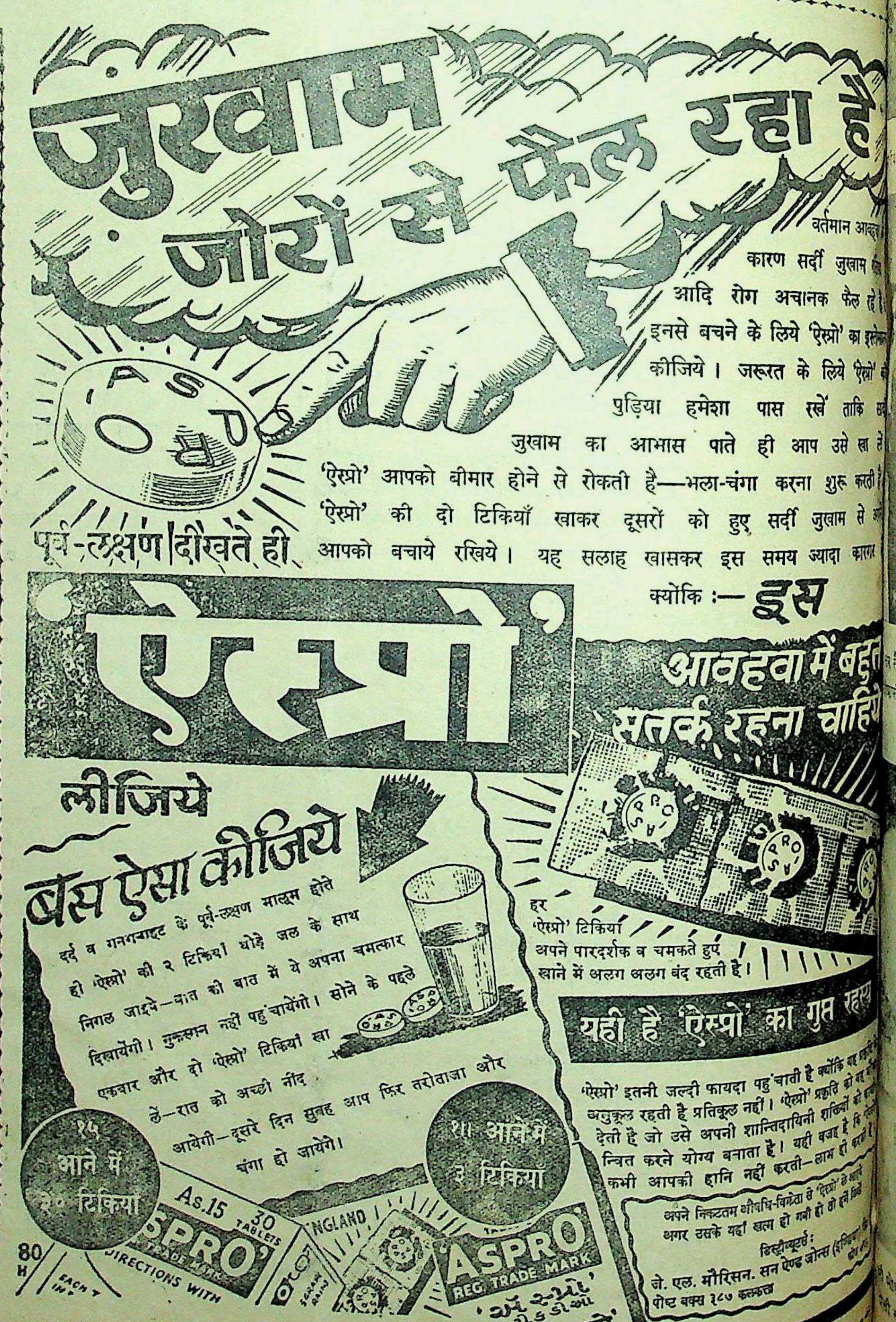

जुखाम जोरों से फैल रहा है
पूर्व-लक्षण दीखते ही
वर्तमान आव
कारण सर्दी जुखाम
आदि रोग अचानक फैल रहे है
इनसे बचने के लिये 'ऐस्प्रो' का इस्ते
कीजिये। जरूरत के लिये 'ऐस्प्रो' की
पुड़िया हमेशा पास रखें ताकि
जुखाम का आभास पाते ही आप उसे खा लें
'ऐस्प्रो' आपको बीमार होने से रोकती है—भला-चंगा करना शुरू करती है
'ऐस्प्रो' की दो टिकियाँ खाकर दूसरों को हुए सर्दी जुखाम से
आपको बचाये रखिये। यह सलाह खासकर इस समय ज्यादा कारगर
क्योंकि :— इस आवहवा में बहुत सतर्क रहना चाहिये
'ऐस्प्रो' लीजिये
बस ऐसा कीजिये
दर्द व गनगनाहट के पूर्व-लक्षण मालूम होते ही 'ऐस्प्रो' की २ टिकियाँ थोड़े जल के साथ निगल जाइये—बात की बात में ये अपना चमत्कार दिखायेंगी। नुकसान नहीं पहुंचायेंगी। सोने के पहले एकबार और दो 'ऐस्प्रो' टिकियाँ खा लें—रात को अच्छी नींद आयेगी—दूसरे दिन सुबह आप फिर तरोताजा और चंगा हो जायेंगे।
हर 'ऐस्प्रो' टिकियाँ अपने पारदर्शक व चमकते हुए खाने में अलग अलग बंद रहती है।
यही है 'ऐस्प्रो' का गुप्त रहस्य
'ऐस्प्रो' इतनी जल्दी फायदा पहुंचाती है क्योंकि
अनुकूल रहती है प्रतिकूल नहीं। 'ऐस्प्रो' प्रकृति को
देती है जो उसे अपनी शान्तिदायिनी शक्तियों को
न्वित करने योग्य बनाता है। यही वजह है कि
कभी आपकी हानि नहीं करती—लाभ ही करती है
अपने निकटतम औषधि-विक्रेता से 'ऐस्प्रो' ले
अगर उसके यहाँ खत्म हो गयी हो तो
डिस्ट्रीब्यूटर्स:
जे. एल. मौरिसन. सन ऐण्ड जोन्स (इण्डिया)
पोस्ट बक्स ३८७ कलकत्ता

'देशदूत' की साप्ताहिक, सामयिक और राष्ट्रीय चित्रावली

पुलिस अफसर रजाकारों से छीने गये अस्त्र और फौजी सामानों की जाँच कर रहे हैं।

भारतीय सशस्त्र पुलिस-सैनिक हैदराबाद के सामरिक स्थानों पर पहरा दे रहे हैं।

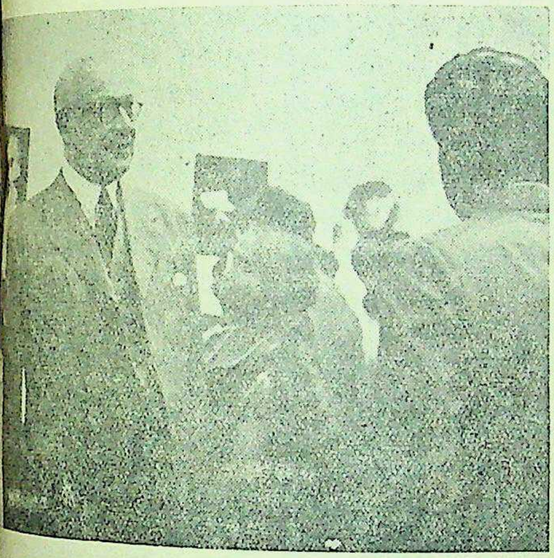

मैनुअल रंगानाथन, लन्दन में भारत के भूतपूर्व हाई कमिश्नर का मैसूर सोसायटी द्वारा आयोजित फोटोग्राफी की अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी बंगलोर के उद्घाटन के अवसर पर लिया गया चित्र।

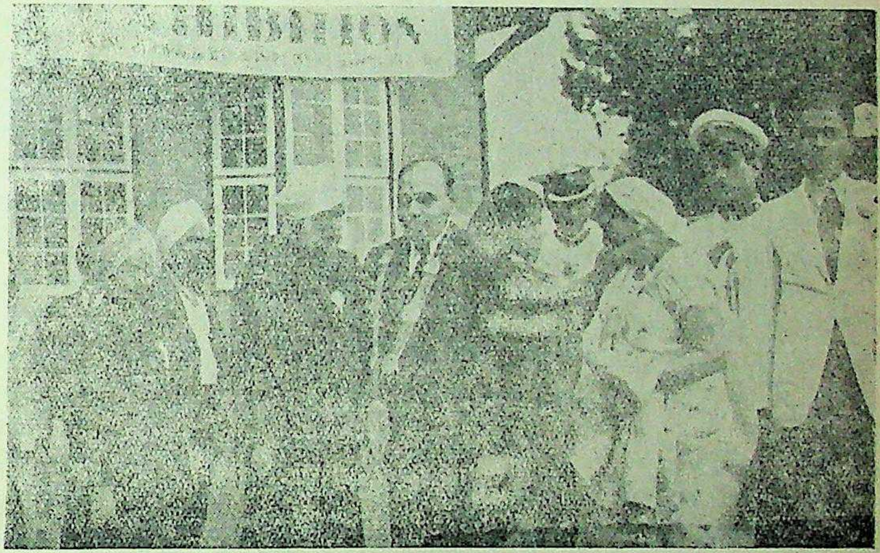

हिज एक्सलेन्सी सर चन्दूलाल त्रिवेदी और श्रीमती त्रिवेदी को इंडियन एकेडेमी आफ फाइन आर्ट्स की १६ वीं फाइन आर्ट्स क्राफ्ट्स प्रदर्शिनी शिमला के उद्घाटन के अवसर पर माला पहिनाते समय का लिया गया चित्र।

मोहनलाल सक्सेना शरणार्थी मंत्री, उन शरणार्थियों को चेक बाँट रहे हैं जो सहयोग समितियों के सदस्य हैं जिनको भारत-सरकार ने स्वीकार किया है।

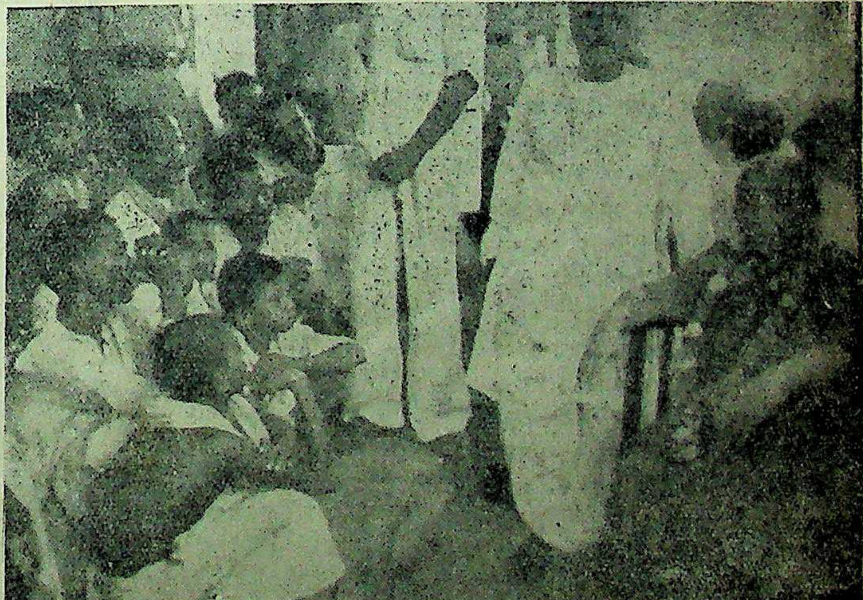

हिज एक्सलेन्सी श्रीमती सरोजिनी नायडू, युक्तप्रान्त के बाढ़पीड़ित क्षेत्र की आश्रयहीन संकटग्रस्त गरीब जनता की करुण कथा सुन रही हैं।

सम्पादक के नाम चिट्ठियाँ

सम्मेलन का सभापति कौन हो ?

(१)

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन का आगामी वार्षिक अधिवेशन मेरठ में होने जा रहा है। वह अधिवेशन राष्ट्रभाषा हिन्दी की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण होगा। इसलिए हमें सम्मेलन की बागडोर ऐसे प्रतिष्ठित, श्रेष्ठ साहित्यकार, साथ ही सक्रिय और कर्मठ राजनीतिज्ञ व्यक्ति के हाथों में सौंपना चाहिए जो सम्मेलन तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी की मर्यादा तथा प्रतिष्ठा को अक्षुण्ण बनाये रखने में पूर्ण समर्थ हो सके और सरकारी तथा राष्ट्रीय दृष्टि से राष्ट्रभाषा हिन्दी को जीवनदान देने में पूर्ण रूप से योग दे सके। आज राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिए जीवन-मरण की विकट समस्या उपस्थित है और इस समस्या का सुलझाना ही इस समय प्रत्येक हिन्दी भाषा-भाषी का महान् कर्तव्य है।

भारतीय विधान-परिषद् की कांग्रेस पार्टी ने पिछले दिनों बहुमत से यह निर्णय किया था कि हिन्दी को वैधानिक दृष्टि से राष्ट्रभाषा स्वीकृत किया जाना चाहिए। फिर भी हिन्दी-विरोधी शक्तियाँ इस समय राष्ट्रभाषा के मार्ग में बाधा उत्पन्न कर रही हैं। विधान-परिषद् के आगामी नवम्बर मास के अधिवेशन में राष्ट्रभाषा के महत्वपूर्ण तथा सार्वदेशिक प्रश्न पर पुनः विचार-विनिमय तथा निर्णय होनेवाला है। यदि वैधानिक दृष्टि से हिन्दी राष्ट्रभाषा-पद के लिये स्वीकृत कर ली जाती है तो सम्मेलन ही नहीं करोड़ों हिन्दी भाषा-भाषियों की एक महान् विजय होगी।

श्री सेठ गोविन्ददास जी भारतीय विधान-परिषद् के प्रभावशाली सदस्य हैं। सेठ जी विधान-परिषद् में हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार किये जाने के पक्ष में सदा से हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के प्राण माननीय श्रद्धेय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन को सक्रिय सहयोग देते आये हैं। भविष्य में भी वह इस ओर पूर्ण सन्नद्ध हैं। विधान-परिषद् में अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की ओर से एक विशेष प्रतिनिधित्व की इस समय विशेष आवश्यकता भी है। सेठ गोविन्ददास इसके लिए अधिकारी तथा उपयुक्त पात्र है।

राष्ट्रीय दृष्टि से सेठ गोविन्दास जी का स्थान गौरवपूर्ण है। पिछले ३० वर्ष से आपने देश तथा राष्ट्रभाषा के लिये त्याग और बलिदान किया है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि आप एक सफल और साधक साहित्यकार भी हैं। आपने हिन्दी साहित्य की अपनी श्रेष्ठ रचनाओं द्वारा ठोस सेवा की है। इस समय आप हिन्दी-जगत् के श्रेष्ठ नाटककार माने जाते हैं।

इसलिये हमारा निवेदन है कि इस वर्ष सम्मेलन के सभापति-पद के लिये, आप अपना मत, सेठ गोविन्ददास जी को दीजिए। राष्ट्रभाषा की मर्यादा को सुरक्षित रखने तथा उसे बल देने की दृष्टि से हम लोगों ने यही निर्णय किया है।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन कार्यालय की ओर से सभापति के चुनाव का मत-पत्र आपकी सेवा में पहुँच गया होगा। आप सभापति-पद के लिये सेठ गोविन्ददास जी को अपना मत देकर मत-पत्र सम्मेलन कार्यालय में तुरन्त भेजने की कृपा कीजिए। जिन सज्जनों के पास किसी कारण से मत-पत्र न पहुँचे हों, उन्हें उसको सम्मेलन कार्यालय से तुरन्त मँगवाकर और मत देकर भेज देना चाहिए।

सम्मेलन के परिषदों के सभापतियों के चुनाव में आप स्वतंत्र हैं। हमे पूर्ण विश्वास और आशा है कि समय के अनुसार राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्राण-प्रतिष्ठा तथा गौरव को अक्षुण्ण बनाये रखने की दृष्टि से आप हम लोगों के विचार से सहमत होंगे।

—राजेन्द्रसिंह गौड़, एम० ए०

* * *

(२)

इस समय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सामने सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन कराना। इस कार्य में जो बाधाएँ सामने हैं उनसे आप हम सभी भली-भाँति परिचित हैं। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का आगामी अधिवेशन मेरठ में हो रहा है। हमें इस समय ऐसे सभापति की आवश्यकता है जो अपने प्रभाव एवं व्यक्तित्व से विधान-परिषद् के सदस्यों को हिन्दी राष्ट्रभाषा स्वीकार करने के पक्ष में कर सके। हम देख रहे हैं कि इसके लिए सेठ गोविन्ददास जी पिछले पच्चीस वर्षों से केन्द्रीय धारासभा और नवनिर्मित-विधान-परिषद् तथा धारासभा में निरन्तर और अथक प्रयत्न कर रहे हैं। राष्ट्रभाषा का प्रश्न विधान-परिषद् में शीघ्र ही उपस्थित होनेवाला है। योगवश इसी बीच राष्ट्रीय महत्व के ही कार्यवश विदेश-यात्रा के अनेक अवसर आपके समक्ष उपस्थित हो रहे हैं; परन्तु आपने राष्ट्रभाषा के प्रश्न के हल होने तक ये कार्यक्रम स्थगित कर दिये हैं। आपकी हिन्दी-साहित्य को, विशेषतः नाट्य साहित्य की विपुल भेंट सर्वविदित है। हिन्दी की आज की समस्याओं और आपकी बहुमुखी और दीर्घकालीन साहित्य-सेवाओं को दृष्टिगत रखते हुए हम सभापति-पद के लिये आपका हृदय से समर्थन करते हैं तथा आशा करते हैं कि आप अपना बहुमूल्य मत आपको ही प्रदान कर अनुग्रहीत करेंगे।

सम्पूर्णानन्द, मंत्री, शिक्षा-विभाग, संयुक्तप्रांत लखनऊ; भूतपूर्व सभापति, अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन।

बाबूराम सक्सेना, एम० ए०, डी० लिट्०; कार्यवाहक सभापति, अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

गुलाबराय, एम० ए०, आगरा।

श्रीकृष्णदेवप्रसाद गौड़ एम० ए७, काशी।

कमलापति त्रिपाठी, सदस्य, विधान-परिषद्, सम्पादक,'संसार' काशी।

धीरेन्द्र वर्मा, एम० ए०, डी० लिट्०, अध्यक्ष हिन्दी-विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग।

लालजीराम शुक्ल, एम० ए०, बी० टी०, काशी।

जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, आयुर्वेद पंचानन, प्रयाग।

मौलिचन्द्र शर्मा, एम० ए०, एल-एल० बी०, भूतपूर्व प्रधान मंत्री, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन दिल्ली।

रामनाथ 'सुमन', प्रयाग।

ज्योतिप्रसाद निर्मल, सम्पादक 'देशदूत' प्रयाग।

पुरुषोत्तमदास टण्डन (राजा-मुनुआ), प्रयाग।

बालमुकुन्द गुप्त, एम० ए०, कानपुर।

प्रभात शास्त्री, प्रयाग।

जयदेव गुप्त, एम० ए०, कानपुर।

वाचस्पति पाठक, प्रयाग।

प्रभाकर माचवे, एम० ए०, माधव कालेज, उज्जैन।

रविशंकर शुक्ल, प्रधान मंत्री, मध्य-प्रांत-बरार; भूतपूर्व सभापति, मध्यप्रांतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन नागपुर।

द्वारकाप्रसाद मिश्र, गृह-विभाग मंत्री, मध्यप्रांत बरार: भूतपूर्व सभापति, मध्य-प्रांतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, नागपुर।

व्योहार राजेन्द्रसिंह, एम० एल० ए०, भूतपूर्व सभापति, मध्यप्रांतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, जबलपुर।

रामकुमार वर्मा, एम० ए०, पी-एच० डी०, नागपुर।

नंददुलारे वाजपेयी, एम० ए०, अध्यक्ष हिन्दी-विभाग, सागर विश्वविद्यालय, सागर।

विनयमोहन शर्मा, एम० ए०, अध्यक्ष हिन्दी-विभाग, नागपुर विश्व-विद्यालय, नागपुर।

प्रभुदयाल अग्निहोत्री, प्रधान मंत्री, मध्य-प्रांतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, अकोला।

रामगोपाल माहेश्वरी, सम्पादक, 'नव-भारत', नागपुर!

कालिकाप्रसाद दीक्षित 'कुसुमाकर,' सम्पादक, 'जयहिन्द,' जबलपुर।

रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', एम० ए०, जबलपुर।

नर्मदाप्रसाद खरे, सम्पादक, 'शुभ-चिंतक,' जबलपुर।

उमाशंकर शुक्ल, पत्रकार, वर्धा।

उषा देवी मित्रा, जबलपुर।

(३)

हिन्दी के सुप्रसिद्ध नाटककार और क
कर्मी सेठ गोविन्ददास एम० एल० ए

आपके सम्मानित पत्र के द्वारा मैं हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के मतदाताओं से एक निवेदन करना चाहता हूँ। मतदाताओं को सम्मेलन का सभापति निर्वाचित करना है। इसके लिए बाबू गोविन्ददास, श्री बालकृष्ण शर्मा "नवीन" और श्री चन्द्रबलि पांडेय नामजद हुए हैं। मेरी सम्मति में इस वर्ष के सम्मेलन के लिए बाबू गोविन्ददास जी को निर्वाचित करना समयोचित एवं लाभकारी होगा। इन्हीं कारणों से माननीय श्री सम्पूर्णानन्द, श्री कमलापति त्रिपाठी, श्री कृष्णदेवप्रसाद गौड़, माननीय श्री रविशंकर शुक्ल और माननीय श्री द्वारकाप्रसाद मिश्र, गोस
गणेशदत्त प्रभृति अन्य अनेक साहि
एवं नेताओं ने उनकी उम्मीदवा
समर्थन किया है। बाबू गोविन्ददा
की साहित्य-सेवाओं से हर हिन्दी
परिचित है।

मुझे यहाँ यह बात विशेष रू
कहनी है कि हमें हिन्दी को भावी
में उचित सम्मानप्रद स्थान दिलाने
सबसे बड़ा काम यह है कि भारत-सर
से उसे राज्यभाषा घोषित कराना है।
सम्भवतः विधान-परिषद् के अगले अधि-
वेशन में यह प्रश्न उपस्थित भी होगा
इस दिशा में श्री गोविन्ददास जी ने अ
तक बहुत प्रयत्न किया है। यदि सम्मे
के मतदाता उन्हें सभापति निर्वाचित क
तो उनका हाथ और भी मजबूत होग
मतदाताओं को यह जानकर सन्तो
होगा कि विधान-परिषद् में हिन्दी के
का समर्थन करने का अवसर न चूके
के विचार से ही बाबू गोविन्ददा
विदेशों में अपनी नियुक्ति के कई सर
प्रस्तावों को अस्वीकार किया है। यह स
भाषा के विषय में भी कटुतापूर्ण लड़
मोल लेने का नहीं। धीरतापूर्वक उ
स्तर पर अपना पक्ष प्रतिपादित करना
इस विशेष अवसर पर बुद्धिमानी है।

—विद्यामार्तण्ड

५ हिल्टनरोड
लखनऊ

* *

सफेद बाल काला!

खिजाब से नहीं हमारे आयुर्वेदि
"केश संजीवनी" (सुगन्धित) तैल से बा
का पकना रुककर सफेद बाल जड़ से का
हो जाता है। यह तैल दिमागी ताकत और
आँखों की रोशनी को बढ़ाता है। जि
विश्वास न हो वे दूना मूल्य वापस की श
लिखा लें। मूल्य २, बाल अधिक
गया हो तो ४) का तैल मंगावें। पता
श्री प्रयागराम ६४ काजीडांगा लेन
पो० शीवपुर (हवड़ा)

मनोरंजक चुटकुले

नवाब भूपाल हज को जाना चाहते हैं। बेचारों पर चारों ओर से छींटाकशी रही है। हैदराबाद के नवाब के प्रति- को दान देने पर रोक लगी और की तीर्थयात्रा में अड़चन। कौन सवाब (पुण्य) कहा जाय ? घर दान करे तो डाँटे जायँ बाहर में भी डाँट। फिर क्या करें। देहाती कहावत है—बाहर हो थुरे भीतर हो हुरे जायँ।

* *

सुरक्षा-परिषद् भी एक अच्छी रंग- है। न रोने की इच्छा पर भी रोना है और उदासीनता में हँसना। का मामला उसमें पेश होता है हैदराबाद की मालिक की राय से होने पर भी जब वह वापस लेते हैं तो परिषद् कहती है जब पेश हो गया फिर हैदराबाद वापस ले कैसे सकता हैदराबाद का न कोई अपना गवाह न कोई वकील फिर भी सुरक्षा-परि अदालत में हैदराबाद मोटे अक्षरों हैदराबाद चाहे माने या न माने सुरक्षा-परिषद् तो 'मान न मान मैं तेरा ' होकर फैसला करेगी।

* *

रत अब तो मालोमाल हो जायगा। र की जनता ने काश्मीर और जम्बू में मिला देने का प्रस्ताव पास श्रीनगर में। काश्मीर संसार का हा ही जाता है फिर श्रीनगर का वासस्थान! फिर मालोमाल क्या संदेह! परन्तु फल उल्टा। रुपये मिट्टी में मिले जा रहे हैं, सफलता कोसों दूर है !! श्रीनगर अपने लिये ही श्रीमय है आखिर को बसाने के लिए कहीं दरिद्र- भी तो होंगे। फिर भारत को यदि के पीछे दरिद्र होना पड़े तो क्या! और सम्पत्ति दोनों हाथ !!

* *

की अभिरुचि में सादा जीवन

(पेज १२ का शेष)

चमक से दूसरों में भव्य प्रकाश सकता है। नया जीवन जो इस से मिलता है वह है—दूसरों को और आनंदित देखने के लिए कर्म- होना। आभूषणों और रत्नों को जा सकता है, परन्तु, सादगी को नहीं जा सकता। इस आभूषण को ऊपर उन्मुक्त देखता और उसका कर सकता है। युग-पुरुषों ने और जीवन सबसे अधिक और उपयोगी चुना था। नारियों भावनाओं की इच्छा के होते चाहिए कि वे साधारण जीवन— से बिना दाम का खरीदा जा —अपना सकती हैं और उससे समाज का कल्याण कर है।

* *

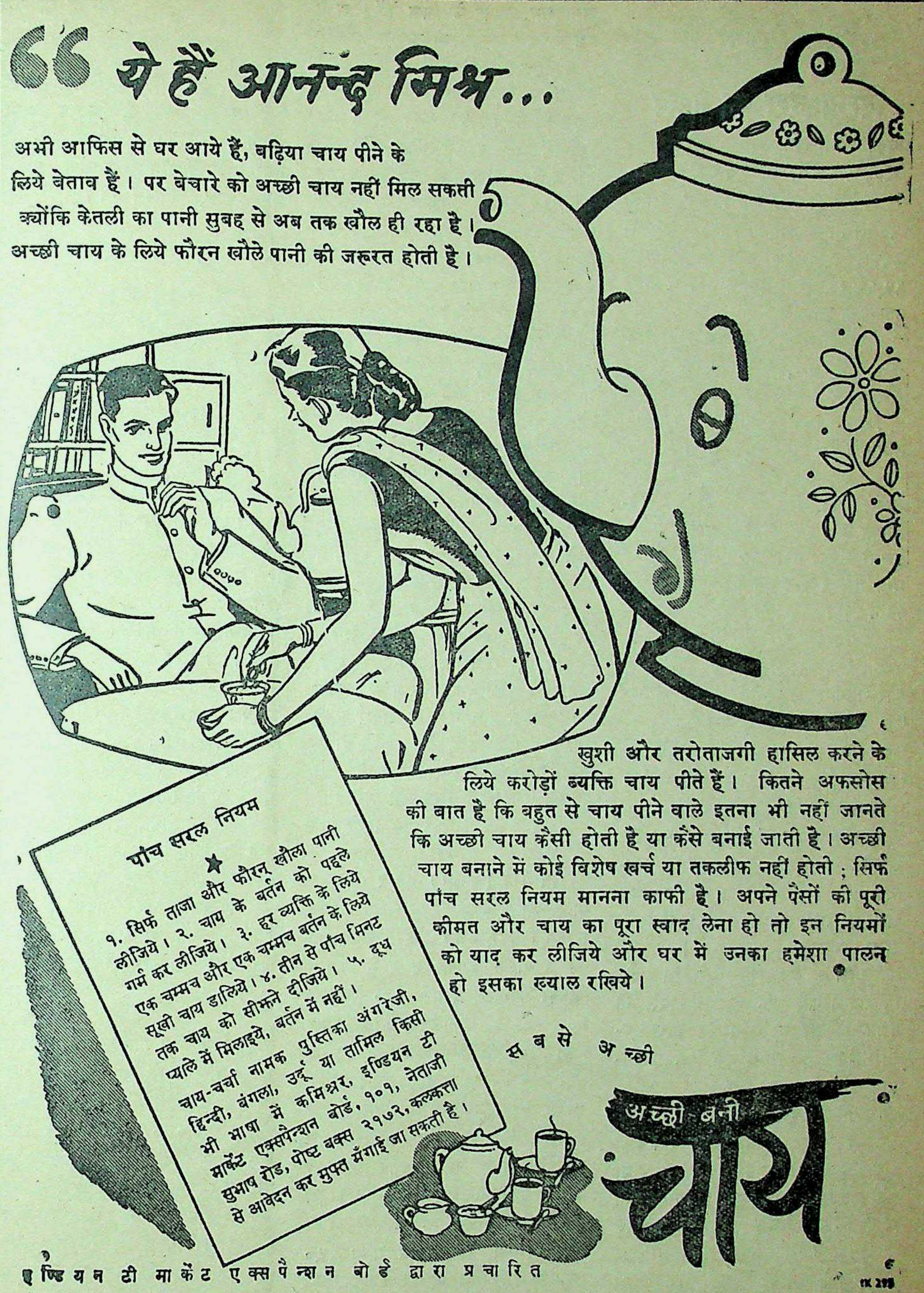

अभी आफिस से घर आये हैं, बढ़िया चाय पीने के लिये बेताब हैं। पर बेचारे को अच्छी चाय नहीं मिल सकती क्योंकि केतली का पानी सुबह से अब तक खौल ही रहा है। अच्छी चाय के लिये फौरन खौले पानी की जरूरत होती है।

खुशी और तरोताजगी हासिल करने के लिये करोड़ों व्यक्ति चाय पीते हैं। कितने अफसोस की बात है कि बहुत से चाय पीने वाले इतना भी नहीं जानते कि अच्छी चाय कैसी होती है या कैसे बनाई जाती है। अच्छी चाय बनाने में कोई विशेष खर्च या तकलीफ नहीं होती ; सिर्फ पाँच सरल नियम मानना काफी है। अपने पैसों की पूरी कीमत और चाय का पूरा स्वाद लेना हो तो इन नियमों को याद कर लीजिये और घर में उनका हमेशा पालन हो इसका ख्याल रखिये।

पाँच सरल नियम

★

१. सिर्फ ताजा और फौरन खौला पानी लीजिये। २. चाय के बर्तन को पहले गर्म कर लीजिये। ३. हर व्यक्ति के लिये एक चम्मच और एक चम्मच बर्तन के लिये सूखी चाय डालिये। ४. तीन से पाँच मिनट तक चाय को सीझने दीजिये। ५. दूध प्याले में मिलाइये, बर्तन में नहीं।

चाय-चर्चा नामक पुस्तिका अंगरेजी, हिन्दी, बंगला, उर्दू या तामिल किसी भी भाषा में कमिश्नर, इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड, १०१, नेताजी सुभाष रोड, पोष्ट बक्स २१७२, कलकत्ता से आवेदन कर मुफ्त मँगाई जा सकती है।

सबसे अच्छी

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IX 298

LIPTONS
WHITE LABEL
TEA
ONE POUND NETT
लिपटन
माने अच्छी चाय

संवाददाताओं के पत्र

विन्ध्यप्रदेश का महत्त्व

प्रेषक, श्री हरिमोहनलाल वर्मा, एम०-ए०, एल-टी०, साहित्य-रत्न, दतिया

पैंतीस इकाइयों के 'विलय' के फलस्वरूप निर्माण पानेवाले विंध्यप्रदेश का क्षेत्रफल २४,७३७ वर्गमील जनसंख्या ३५,६८,१९९ और वार्षिक आय २ करोड़ ६९ लाख रुपया है।

यह वीरभूमि, जो एशिया के अफगान बार्डर लैंड, यूरोप के स्विटजरलैंड और ब्रिटेन के स्काटलैंड की समता करती है, पिछले समय में चेदि, जैजाकभुक्ति तथा दशार्ण नामों से विख्यात थी।

प्रकृति की असीम अनुकम्पा के फलस्वरूप पहाड़, भील और नदियों के तान-वितान से युक्त होकर स्वतन्त्रता के विराट् पुजारी के रूप में यह प्रान्त बाहर के सभी प्रभावों की सैन्य-वाहनियों का सफल विरोध करता रहा।

आदि-कवि वाल्मीकि ने इसी भूमि में तमसा के किनारे 'रामायण' लिखी थी, और भगवान् व्यास ने भी इसी भूमि में जन्म पाया। कालिदास, बाण और राजशेखर विंध्यभूमि के अद्वितीय सौन्दर्य पर मुग्ध थे, और भवभूति की 'पद्मावती' के ध्वंसावशेष भी यहाँ बिखरे पड़े हैं।

भारतवर्ष के मध्य में स्थित विंध्यप्रदेश अपनी प्रकृति-प्रदत्त विशेषताओं से अत्यधिक आकर्षक है, और इस प्रकार वास्तविक अर्थ में भारत-माता की गोद में पलनेवाला एक सुकुमार लाड़िला है।

वीरसिंह देव और रघुराजसिंह जैसे प्रतापी नरेशों, आल्हा और ऊदल जैसे पराक्रमी योद्धाओं, व्याघ्रदेव और छत्रसाल जैसे स्वतन्त्रता के पुजारियों, तुलसीदास और केशवदास जैसे काव्य-कला के आचार्यों ने इस प्रांत को अपने विमल यश की कहानी का मोहक रूप दिया है।

सोना-चाँदी, ताँबा-सीसा, हीरा-पन्ना आदि से समृद्ध भारत का यह प्रांगण सभी प्रकार के धान्यों और औद्योगिक विकास के साधनों से भली प्रकार सम्पन्न होने पर भी काल के प्रभाव से अब तक पिछड़ा रहा, पर अब जनता के सौभाग्य से जनतंत्र में जन्म पाकर प्रगति का पथ प्रशस्त किया है।

जन-साधारण को उन्नति और विकास के उच्च स्तर पर पहुँचाने में यह नव-निर्मित प्रदेश सब प्रकार समर्थ हो, यही हमारी मंगल-कामना है।

* * *

जयपुर में आगामी १६ दिसम्बर से १९ दिसम्बर तक होनेवाले कांग्रेस के ५५ वें अधिवेशन के खुले अधिवेशन तथा विषय-निर्वाचिनी समिति की कार्रवाइयों की पूरी रिपोर्ट लेने के लिये कुशल हिन्दुस्तानी शीघ्रलिपि लेखकों की आवश्यकता है, शीघ्रलिपि की जो संस्थायें इस कार्य की जिम्मेदारी ले सकती हों अथवा जो शीघ्रलिपि लेखक इस कार्य के लिये जयपुर आ सकते हों वे कृपया संयोजक, प्रचार. प्रकाशन समिति, ५५ वाँ कांग्रेस अधिवेशन, जयपुर को लिख भेजें। अपने पत्र में इस बात का भी उल्लेख करें कि वे अपनी सेवायें निःशुल्क देना चाहते हैं अथवा पारिश्रमिक आधार पर। यदि निःशुल्क सेवायें देने को तत्पर हों तो क्या सुविधायें चाहेंगे यह भी सूचित करें।

कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर आयोजित सर्वोदय प्रदर्शनी के संबंध में प्रदर्शनी समिति में हाल ही में हुई एक बैठक में कई महत्त्वपूर्ण निर्णय किये गये। बैठक में श्री कृष्णदास जाजू, श्री जे० सी० कुमारप्पा, श्री आशादेवी, श्री कृष्णदास गांधी, श्री राधाकृष्ण बजाज और श्री गोकुलभाई भट्ट, क्रमानुसार, चर्खा-संघ, ग्रामोद्योग संघ, तालिमी संघ, गो-सेवा संघ और कांग्रेस स्वागत संमिति के प्रतिनिधि की हैसियत से उपस्थित थे। श्री कृष्णदास जाजू और श्री कृष्णदास गांधी, प्रदर्शनी समिति के, सभापति मंत्री चुने गये।

सर्वोदय प्रदर्शनी का उद्देश्य महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम को ध्यान में रखते हुए ग्रामीण जीवन के विभिन्न पहलुओं का दिग्दर्श कराना तथा उसे शिक्षाप्रद बनाना है, इस दृष्टि से प्रदर्शनी में नई तालीम, खादी, ग्रामोद्योग, गो-सेवा, खेती, घरेलू उद्योग तथा ग्राम संस्कृति आदि अनेक बिभाग होंगे प्रदर्शनी से लगा हुआ एक ग्रामोद्योग बाजार होगा, जिसमें गाँवों के उद्योग-धंधों में तैयार की गई वस्तुएँ बिक्री के लिये रखी जायेंगी।

—संवाददाता

* * *

पिलानी (जयपुर) गत २ अक्टूबर गांधी जयन्ती के अवसर पर हिन्दी साहित्य समिति, बिड़ला कालेज ने उपरोक्त प्रदर्शनी का आयोजन कालेज हाल में किया। जिसका उद्घाटन देशरत्न डा० राजेन्द्रप्रसाद जी के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। राष्ट्रपति ने निम्नलिखित विचार स्वयं अपनी लेखनी द्वारा प्रकट किये। "मुझे यह सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई कि हिन्दी के सभी पत्र-पत्रिकाओं की एक प्रदर्शनी की जा रही है और साथ ही उनकी सूची तैयार की जायगी। इस प्रदर्शनी का आरम्भ तो पिलानी में ही हो गया है। जहाँ प्रदर्शनी में प्रायः ३५० पत्र-पत्रिकाओं को भी जमा कर लिया जाय तो बहुत सुन्दर होगा। और उन सबकी प्रदर्शनी जयपुर कांग्रेस के अवसर पर की जाय तो बहुत सुन्दर होगा। जो प्रयत्न बिड़ला कालेज के लोगों ने अब तक किया है वह बहुत अच्छा और सफल रहा है। इसकी उपयोगिता जब सूची तैयार होकर छप जायगी और भी बढ़ जायगी।"

राष्ट्रपति के सुझाव के अनुसार बिड़ला कालेज ने निश्चय किया है कि यह प्रदर्शनी कांग्रेस के अधिवेशन के अवसर पर जयपुर में की जाय।

—संवाददाता

* * *

अजमेर ग्राम सेवा दल का चतुर्थ अधिवेशन डबरेला ग्राम में चौधरी जोधूराम में सभापतित्व में हुआ। उपस्थिति लगभग ५ हजार थी। प्रचार-मंत्री ने अब तक की कार्यवाही पढ़कर सुनाई। अधिवेशन में अनेक महानुभावों के किसानों की दशा सुधारने के लिए भाषण एवं बीथम हाईस्कूल के छात्रों का एक सुन्दर ड्रामा जिसमें इस्तमुरारदारों द्वारा किसानों पर कैसे कैसे जुल्म होते हैं, हुआ।

सम्मेलन में प्रस्ताव स्वीकृत हुआ कि ग्राम सेवा दल का यह अधिवेशन सरदार पटेल तथा दक्षिण-भारत के सेनाधिनायक महाराज श्री राजेन्द्रसिंह जी को उनकी सफलतापूर्ण और रक्तविहीन हैदराबाद में की गई पुलिस कार्यवाही पर हार्दिक बधाई देता है। एक अन्य प्रस्ताव में सरकार से प्रार्थना की गई कि ग्रामीण लोगों को कृषि आदि सामान बनाने के लिए लकड़ी की बड़ी आवश्यकया है, इसलिए चीफ कमिश्नर साहब ने जंगल में पेड़ न काटने का जो प्रतिबन्ध लगाया है उसमें संशोधन करने की उदारता करें।

—संवाददाता

* * *

अमेठी में विजयादशमी समोराह मनाया गया। राजभवन रामनगर में दरबार हुआ। सायंकाल रामलीला के समीप लगभग १०,००० जन सभा के समक्ष लाउड स्पीकर पर भाषण करते हुए युवराज श्री रणञ्जयसिंह जी ने कहा कि महाराज श्री रामचन्द्र जी एवं रामभक्त श्री महात्मा गांधी जी के भक्तों को चाहिए कि रामराज्य की स्थापना में सहायक हों। इस पवित्र कार्य के लिये महात्मा गांधी स्मारक राष्ट्रीय कोष में खुले हृदय से चन्दा देना चाहिए। आपने विजयादशमी का महत्त्व समझाते हुए रामायण सम्बन्धी अनेक भ्रान्तियों का निराकरण वाल्मीकीय रामायण के प्रमाण से किया।

विजयादशमी टेनिस टूर्नामेन्ट में श्री सुरेशचन्द्र मिश्र ने सिंगिल फाइनल में श्री पी० डी० चँदोला को सरलतापूर्वक जीत लिया किन्तु डबल फाइनल उन्हें श्री गजाधरप्रसाद को श्री चण्डिकाप्रसाद सिंह तथा श्री रणञ्जयसिंह को जीतने में पर्याप्त परिश्रम करना पड़ा।

श्रीमान के० एस० मल, एस० जी० ओ० ने अमेठी ने पारितोषिक वितरण किया।

—संवाददाता

* * *

जबलपुर में सदैव की भाँति निखिल भारतवर्षीय राष्ट्रीय विद्यापीठ की साहित्य, आयुर्वेद, गीता और रामायण की क्षायें १ली जनवरी १९४९ से होंगी। शहरों में ५ परीक्षार्थी और में ३ परीक्षार्थी होने पर केन्द्र किये जाते हैं। केन्द्र स्थापना परीक्षा में सम्मलित होने के आवेदन कर्यालय में १५ नवम्बर १९४८ निम्न पते पर आ जाना चाहिये। पत्र कर्यालय से प्राप्त किये जा सकते परीक्षा नियमावली के लिये तीन आने टिकट आना जरूरी है—पता—श्री मन्त्री राष्ट्रीय विद्यापीठ, जबलपुर (सी० पी०)

—संवाददाता

* * *

उदयपुर डाक से : भारत-सरकार के वास तथा सहायता विभाग द्वारा निराश्रित शरणार्थी महिलाश्रम का उद्घाटन शरणार्थी सचिव श्री मोहनलाल सक्सेना द्वारा होने के बाद आश्रम राजपूताने के विभिन्न हिस्सों से महिला तथा बच्चे टुकड़ियों में पहुँच रहे हैं स्मरण रहे यह आश्रम १००० प्राणियों की व्यवस्था करेगा। इसमें बच्चे भी सम्मिलित हैं। इसमें शिक्षा के साथ स्वावलम्ब होने की भी शिक्षा देकर उद्योग सिखाये जाते हैं।

महिला मंडल का वार्षिकोत्सव २४,२५,२६ अक्टूबर से मनाया जा रहा है। अध्यक्ष-स्थान के लिए श्रीमती श्वरीदेवी नेहरू से प्रार्थना की गई है। गत दो वर्षों के बाद मंडल यह पुनः कर रहा है।

—संवाददाता

कलकत्ता से निकलनेवाले सेवक' का दीपावली अंक एक विशेष के रूप में प्रकाशित होने जा रहा है।

—संवाददाता

* * *

बम्बई (मलाड) में आगामी मास के मध्य में अखिल भारतीय चिकित्सक सम्मेलन होने जा रहा है। इसके स्वागताध्यक्ष सेठ लक्ष्मीनारायण गाडोदिया हैं। माननीय पुरुषोत्तमदास टण्डन से सभापति पद स्वीकार करने के लिए प्रार्थना की गई है।

*

हिन्दी के दैनिक पत्र आगे बढ़ें

(पेज ८ का शेष)

हिन्दी पत्रों और पत्रकारों तथा पाठकों से मैं आशा रखता हूँ, कि वह अपने दैनिकों को उच्चतल पर पहुँचाने के लिये नागरी टाइप में शीघ्र सुधार करेंगे। सुधार करना होगा, केवल ि ी ौ ु ू ृ लृ इन पंद्रह ही टाइपों में और छोड़ दूसरों की आकृति में परिवर्तन की भी आवश्यकता नहीं होगी जैसा निम्न ब्लाक से मालूम होगा।

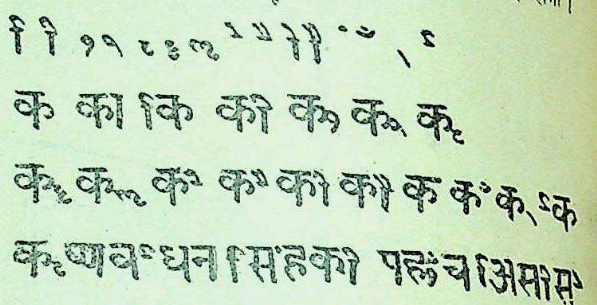

* * *

रामचरितमानस

टीकाकार—डाक्टर श्यामसुन्दरदास

'मानस' का महत्व किसी से छिपा नहीं है। भारतवर्ष में तो इसका मान है ही, अन्य देशों में भी इस अमर काव्य का आदर है। यह प्रामाणिक संस्करण इधर कई वर्ष से अप्राप्य था। हाल में ही छपकर तैयार गया है। ग्राहकों को शीघ्रता करनी चाहिए। अधिक प्रतियाँ नहीं छापी गई हैं।

बड़े आकार के १२०० पृष्ठ। रंग-विरंगे दर्जनों चित्र। सजिल्द प्रति का

मूल्य १२) रुपये

जहाँ पर हमारी ब्रांच या एजेंसी है वहाँ खरीदने पर डाकखर्च की बचत होगी।

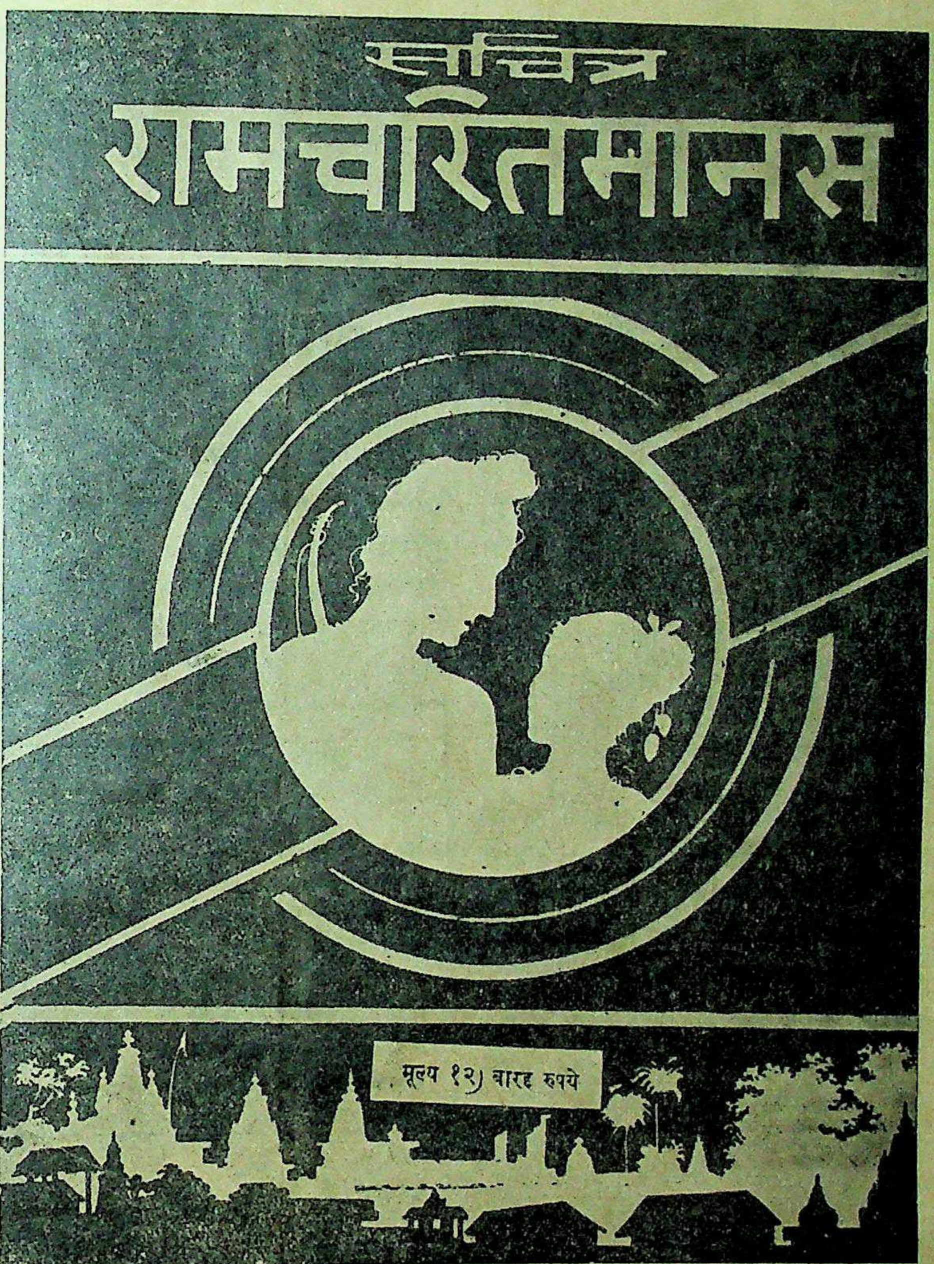

हमारी ब्रांचें और एजेन्सियाँ

१ इलाहाबाद सिटी—न्यू ऐरा बुकहाउस, हिवेट रोड
२ आगरा—आगरा पब्लिशिङ्ग हाउस, बाग मुजफ्फर खाँ
३ अजमेर—इंडियन प्रेस लिमिटेड, कचहरी रोड
४ अलमोड़ा—डिस्ट्रिक्ट बुकडिपो, लालबाजार
५ बनारस—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, बनारस छावनी
६ बाँदा—बुंदेलखण्ड पब्लिशिङ्ग हाउस
७ बरेली—इंडियन बुकडिपो
८ बम्बई—भारतीय पुस्तक भण्डार, कालबा देवी रोड
९ बीकानेर—गर्गबुक कम्पनी, कोट के भीतर
१० कलकत्ता—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, २२।१ कार्नवालिस स्ट्रीट
११ कानपुर—साहित्य-रत्नालय, श्रद्धानन्द पार्क
१२ दिल्ली—इंडियन पब्लिशिङ्ग हाउस, नई सड़क
१३ गोरखपुर—पुस्तक-स्थान, बख्शीपुर
१४ ग्वालियर—लायल बुकडिपो, पाटनकर बाजार, लश्कर
१५ इन्दौर—नवयुग साहित्यसदन, खजूरी बाजार
१६ जयपुर—गोपाल बुकडिपो, त्रिपौलिया बाजार
१७ जबलपुर सी० पी०—इंडियन प्रेस, लिमिटेड
१८ लखनऊ—इंडियन बुकडिपो, अमीनुद्दौला पार्क
१९ मेरठ—पुस्तक-स्थान, वैस्टर्न कचहरी रोड
२० पटना—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, पो० ऑ० बाँकीपुर
२१ राँची—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, कोर्ट रोड
२२ अम्बाला (पूर्वी पंजाब)—इंडियन प्रेस लिमिटेड, दुर्गाचरण रोड

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

राष्ट्रीय सम्पत्ति (१) मिश्र

३००० वर्ष पहले मिश्र एक महान और वैभवशाली देश था। मिश्र देश के बादशाह बहुत सम्पत्तिशाली थे। देश धन-धान्य से परिपूर्ण था। मिश्रवासी विज्ञान और शिल्पकला में अग्रणी थे। चित्रकारी और शिल्प-कला, रसायन शास्त्र और ज्योतिर्विज्ञान, निर्माण शास्त्र और वास्तु-विद्या में यह देश बहुत उन्नत था। नील नदी के इस प्रदेश को वैभवशाली बनाने में मिश्रवासियों का बहुत भारी हाथ था।

आज आप भी अपने देश के निर्माण में सहयोग दे सकते हैं, यदि आप अपनी आय के अनावश्यक अंश को बचाकर बुद्धिमत्तापूर्वक विभिन्न सरकारी सिक्योरिटियों में लगायें। इस प्रकार ऐसी राष्ट्रीय सुरक्षित पूंजी का संकलन होगा जो राष्ट्रीय भविष्य-निर्माण की सब योजनाओं के लिये आवश्यक है। याद रखिये, राष्ट्रीय सम्पत्ति का संकलन देशवासियों की बुद्धिमत्ता पूर्वक लगाई हुई बचत पर ही निर्भर है। आप की बचत आप के लिये भी हितकर होगी। सरकारी सिक्योरिटियों में लगाई हुई बचत केवल सुरक्षित ही नहीं बल्कि अधिक प्रतिलाभप्रद भी है। इस के आधार पर आप की वृद्धावस्था निस्सन्देह आनन्दमय और सुखी होगी और आप के कुटुम्ब का भविष्य भी सौभाग्यशाली बन जावेगा।

अपनी बचत को बुद्धिमत्ता पूर्वक
लगा कर सुरक्षित बनाइए

नैशनल सेविंग्ज़ सर्टीफिकेट्स ख़रीदिए। ये ५, ७, और १२ वर्ष की विभिन्न अवधियों में प्राप्त किये जा सकते हैं और अवधि के समाप्त होने पर इन पर क्रमशः ३%, ३-१/२% और ४-१/६% व्याज प्राप्त होता है।

अन्य सरकारी सिक्योरिटियों, डाकखानों और सेविंग्ज़ बैंक के खातों, बीमा कम्पनियों और कोऑपरेटिव संस्थाओं की मद में रुपया लगाइए।

भविष्य के लिए आज बचाइए

जो कुछ बचाइए
बुद्धिपूर्वक लगाइए

हिन्द सरकार के अर्थ विभाग, नई देहली, द्वारा प्रकाशित।

AC.413

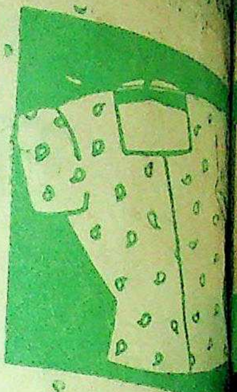

धोने के लिये
५०१ साबुन
दी टाटा आयल मिल्स कं०

फिल्म ऐक्ट

यदि आप फिल्म ऐक्टर बनकर १००) रु० से १५००) रु० मासिक तक कमाना चाहते हों तो आज ही लिखें। थोड़ा लिखा पढ़ा होना जरूरी है। अपना नाम व पूरा पता

डाइरेक्टर इम्पीरियल
(फिल्म डिपार्टमेंट)
पो० ब० ६१ (D. D. A.)

गरम को

हर किस्म
कोट पैन्ट
कोट लड़कों के
लेडी कोट
२ मोटे
मुनासिब
बिल्कुल बाजबी भावों पर
किया जाता है। हजारों
वर्षों से लाभ उठा रहे हैं।
की सूची मंगाकर आर्डर

रमेश राज एण्ड कम्प
(कराची वाले)
मारवाड़ी कटरा नई सड़क
ब्रांच :- कानपुर

ऐतिहासिक
भौतिकवाद

लेखक, भूतपूर्व काकोरी-कैदी
श्री मन्मथनाथ गुप्त और श्री रमेन्द्र वर्मा
लगभग ५०० पृष्ठों के सजिल्द ग्रन्थ का
मूल्य केवल ६) रुपये।

मार्क्सवाद में ऐतिहासिक भौतिकवाद की महत्ता को सरलतापूर्वक समझने के लिए इस ग्रन्थ की उपयोगिता अद्वितीय है। समाजवाद समझनेवालों के लिए इसका अध्ययन अपरिहार्य है।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

देशदूत में विज्ञापन दीजिए।

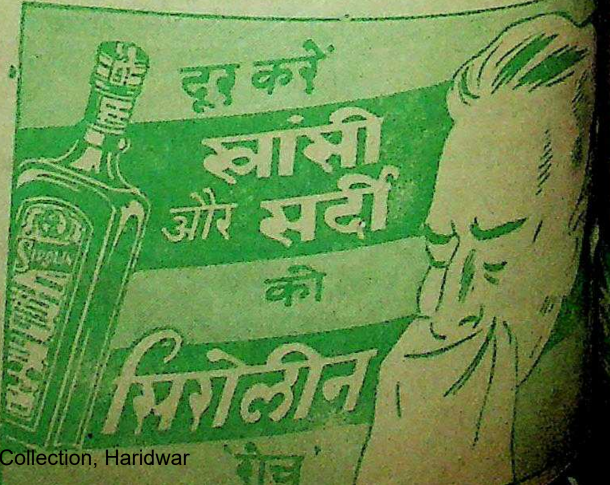

देशदूत

DESHDOOT
HINDI WEEKLY
Annual Price Rs. 7-8-0
Per Copy Annas Two.
वार्षिक मूल्य ७॥)
एक प्रति का =)

र, ७ नवम्बर, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 7th November, 1948

हिन्दी भाषाभाषी भारतीय जनता का पत्र

प्रकाशक : इण्डियन प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद
२ आना

घर की मधुरता और बढ़ाइए

इन-री-हो

की बनाई हुई 'रेशमी मिठाई', 'फ्रूट ड्राप्स' और 'क्रीमोला' टाफी हाथ में पाते ही बच्चों की किलकारी और हँसी से घर गूँजने लगता है।

बच्चों को हँसाने और खुश करने के लिए 'इन-री-हो' की बनाई मिठाइयाँ बाजार में बिलकुल बेजोड़ है।

क्रीमोला टाफी
इन-री-हो ड्राप्स

इंडस्ट्रियल
रिसर्च हाउस लिमिटेड
इलाहाबाद

तुलनात्मक भाषाशास्त्र

(भाषा-विज्ञान)

लेखक, डा० मंगलदेव शास्त्री एम० ए०. डी० फिल०

इसमें तुलनात्मक भाषाशास्त्र के सिद्धांतों का प्रतिपादन तथा संसार की भिन्न-भिन्न भाषाओं के परस्पर सम्बन्ध की सरल और सुबोध व्याख्या है। प्रोफेसर ए० सी० वुलनर, डा० भगवानदास, म० म० गंगानाथ झा और श्री गोपीनाथ कविराज, डा० लक्ष्मणस्वरूप और धीरेन्द्र वर्मा आदि मनीषियों ने और अन्य नामी साहित्यिकों तथा पत्रों ने इसकी प्रशंसा की है। पृष्ठ-संख्या पौने तीन सौ से ऊपर; अच्छा कागज, बढ़िया जिल्द; मूल्य केवल ५)।

ऐतिहासिक भौतिकवाद

लेखक, भूतपूर्व काकोरी कैदी, श्री मन्मथनाथ गुप्त और श्री रमेन्द्र वर्मा।

समाजवाद के तात्विक अध्ययन के लिए ऐतिहासिक भौतिकवाद को समझना बहुत जरूरी है, क्योंकि मार्क्सवाद के विषयों में यही सबसे गहन है। इस विषय पर विश्व-साहित्य में बुखारिन की पुस्तक सर्वोत्तम समझी जाती थी पर इस पुस्तक के प्रकाशन ने उसको पीछे छोड़ दिया। इस पुस्तक में वे सभी विषय तथा तथ्य हैं जो बुखारिन के समय तक उपलब्ध थे। उनके अतिरिक्त नवीनतम ज्ञान-विज्ञान, नृतत्त्व और इतिहास में जो उन्नति हुई है, उन सबका इसमें दिग्दर्शन है। इस पुस्तक में विरोधी मतों का वर्णन करके फिर उनका खंडन करते हुए मार्क्स के मतवाद की वैज्ञानिकता सिद्ध की गई है।

इसमें आदिम काल से लेकर अति आधुनिक समय तक का विश्व-इतिहास आ गया है। मार्क्सवादी पुस्तकों में अकसर उदाहरण यूरोपीय इतिहास से दिये गये हैं, पर इसमें विशेष कर भारतीय तथ्य दिये गये हैं।

इतिहास की आर्थिक व्याख्या को सहस्रों उदाहरणों से समझाने के अतिरिक्त इस पुस्तक में धर्म तथा सदाचार पर अत्यन्त गम्भीर अध्याय हैं। सदाचार पर जो अध्याय है उसमें विस्तार के साथ बताया गया है कि सदाचार [illegible] मार्क्सवाद का क्या प्रतिपाद्य है। पुस्तक में एक दर्जन अध्याय हैं। मूल्य ६)।

हमारे कुछ नाटक

रणभेरी

(चार मौलिक एकांकी)

रचयिता—श्रीयुत वैकुण्ठनाथ दुग्गल

१ **आन** की पृष्ठभूमि है बुंदेला वीर चम्पतराय और उनकी रानी सारन्धा की एक महत्त्वपूर्ण घटना। आरम्भ में बादशाह औरंगजेब ने इस वीर से सहायता लेकर अपनी उन्नति की और बादशाही मिल जाने के बाद वह इस स्वाधीन वीर से शत्रुता करने पर तुल गया।

२ **पुनर्संगठन** का आधार महाराष्ट्रों के अभ्युदय की एक विशिष्ट घटना ह। महाराज शाहू का सेनापति चन्द्रसेन पेशवा का प्रतिद्वंद्विता कर निजाम के यहां चला गया। अन्त में ठीक संगठन हो गया।

३ **राष्ट्रधर्म** का आधार है हर्षवर्धन और राजवर्धन के समय की वह घटना जिसमें मालवेन्द्र देवगुप्त ने कन्नौज को जीतकर हर्ष की बहन को कैद कर लिया था। वह किसी तरह जलखाने से निकलकर विन्ध्याचल के जंगल में पहुँची। वहां पर वह चिता में जल मरने को थी कि भाई हर्ष ने पहुँचकर उसे समझा-बुझाकर जीवित रहने के लिए राजी किया। विचित्र कथानक है।

४ **अजेय भारत** शुंगनरेश पुष्यमित्र के समय की एक घटना पर आधारित ह। इसमें यूनान के नरेश मीनेंडर की भारत पर चढ़ाई का वर्णन ह जिसे युवराज अग्निमित्र ने परास्त कर राजा के सामने ला खड़ा किया था और राजा ने उदारता से उसे मुक्त कर दिया था। बड़ा रोचक कथानक है। प्रचण्ड शत्रु को जीतकर मुक्त करना भारत की ही विशेषता है।

इस संग्रह की भाषा सुलझी हुई, कथानक बढ़िया और बीच-बीच में बहुत ही सुन्दर कविताएँ हैं। मूल्य १) एक रुपया।

भूख

[सामाजिक नाटक]

लेखक श्रीयुत वीरदेव 'वीर' बी० ए०

लेखक ने इस नाटक में भूख से होनेवाले कष्टों का करुण चित्र उपस्थित किया है। हिन्दू-मुस्लिम-एकता, व्यापारियों के जनता को निर्दयता से लूटने और सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं के सेवा भाव के अनोखे दृश्य इस नाटक में हैं। बीच-बीच में गीत भी बढ़िया हैं। मूल्य १) एक रुपया।

सन्त कबीर

प्रणेता—प्रो० साधुराम शास्त्री एम० ए०, एम० ओ० एल०

यह सचित्र नाटक है। कबीर साहब का जीवन हिन्दू-मुसलमानों के मन से असहिष्णुता और वैमनस्य को हटाकर एकता और भाईचारे की स्थापना में बीता था। पांच सौ वर्ष पहले हिन्दू-मुस्लिम-एकता की जितनी जरूरत थी उससे आज अधिक ही है। कबीर का उद्देश्य समझने में यह नाटक बहुत काम देगा। इसमें प्रणेता ने कबीर साहब की जीवन-[illegible] के सामने सुन्दर चित्र उपस्थित किया है। मूल्य ।||) बारह आने।

'रवीन्द्र-साहित्य पुस्तक-माला'

लेखक, डाक्टर रवीन्द्रनाथ ठाकुर

योगायोग

कवीन्द्र का यह उपन्यास जैसा कवित्वमय है वै
मनोविज्ञान की बारीकियों से परिपूर्ण। इसमें बंगाल के
का अपूर्व चित्रण है। नायिका है धर्म-प्राण कुमुद और
है राजा बहादुर मधुसूदन घोषाल जो गरीब घर का
होकर अपने पौरुष से बहुत बड़ा मालदार हुआ है।
विरोधी घराने की बेटी से विवाह करने पर उसके
जो विरोध के बादल उमड़ते हैं उनका गर्जन और नर्
कुमुद का शान्त-शिष्ट प्रतिकार देखकर बरबस लेख
सराहना करनी पड़ती है। इसमें गृहिणी की क्षमता का
उदाहरण है। भाषा, भाव और कथानक सभी दृष्टि
'योगायोग' कवीन्द्र के उपन्यासों में सर्वश्रेष्ठ है। इसे
बार पढ़कर दुबारा तिबारा पढ़ने को जी चाहता है।
कागज, बढ़िया जिल्द, पृष्ठ सवा तीन सौ से अधिक।
केवल ४) चार रुपये।

विश्व-परिचय

यह विज्ञान-विषयक पुस्तक है। इसमें परमा
नक्षत्रलोक, सौरजगत्, ग्रहलोक और भूलोक आदि
विषय का विशद विवेचन है। एक स्थान पर ले
लिखा है "वस्तुएँ सब रंगों को ग्रहण नहीं कर सकतीं
किसी को वापस कर देती हैं। वह लौटाया हुआ रं
देखते हैं। ब्लाटिंग पेपर जिस रस को सोख लेता है वह
काम नहीं आता—जिस रस को वह ले नहीं सकता वही
हुआ रस हमारा प्राप्य है।" इस प्रकार सरल रीति से
विषय समझाया गया है। पुस्तक बालकों के लिए होने पर
वयस्क विद्वानों को कम आनन्द न देगी। अच्छे कागज पर
हुई सुन्दर सजिल्द पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

रूस की चिट्ठी

डाक्टर रवीन्द्रनाथ ठाकुर वृद्धावस्था में रूस
वहां का आँखों देखा हाल उन्होंने चिट्ठियों में लिखकर
था। वह बड़ा विचित्र है। इधर तो रूस के सम्बन्ध में
सी बातें प्रकट हो गई हैं पर जिस समय रवि बाबू वहां
थे, रूस का हाल हमें विकृत रूप में बताया गया था।
कवि ने सुन्दर भाषा में प्रकट किया है। पुस्तक सचित्र
सजिल्द है। अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य २)
रुपये।

चार अध्याय

इस पुस्तक का कथानक चार अध्यायों में समाप्त
मुख्य नायिका कालेज की सुशिक्षित युवती एला
न करके देशोद्धार के काम में जीवन लगाने का प्रण
अनेक विप्लवपन्थियों से उसकी घनिष्ठता बढ़ी।
कई प्रेमी खड़े हुए। राजनीति, समाज और स्त्री
समस्या आदि के विचार बड़े अच्छे रूप में इस
सजिल्द पुस्तक का मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

मंजरी

सचित्र कलात्मक कहानी मासिक

जनवरी १९४८ से 'मंजरी' प्रतिमास अपूर्व
के साथ प्रकाशित हो रही है। तिरंगा आवरण
दर्जनों चित्र रहते हैं। श्रेष्ठ कथाकारों की सरस
नियाँ, धारावाहिक उपन्यास और कथा-साहित्य
गंभीर आलोचनात्मक लेख पढ़ने की रुचि है
आप 'मंजरी' के वार्षिक ग्राहक बन जाइए।

'मंजरी' को जब जिसने देखा, मुग्ध हो
विद्वान् आलोचकों और पत्र-पत्रिकाओं ने इसकी
कण्ठ से प्रशंसा की है। वार्षिक मूल्य ६) छः रुपये।

देशदूत

११, संख्या १०]   [रविवार, ७ नवम्बर, १९४८

भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने पेरिस में होनेवाली संयुक्तराष्ट्र संघ की बैठक में जोरदार भाषण दिया है।

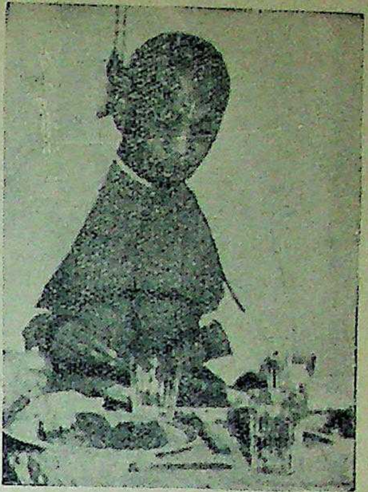

भारत के उपप्रधान मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने गत ३१ अक्तूबर को अपने जीवन के ७४वें वर्ष में पदार्पण किया है।

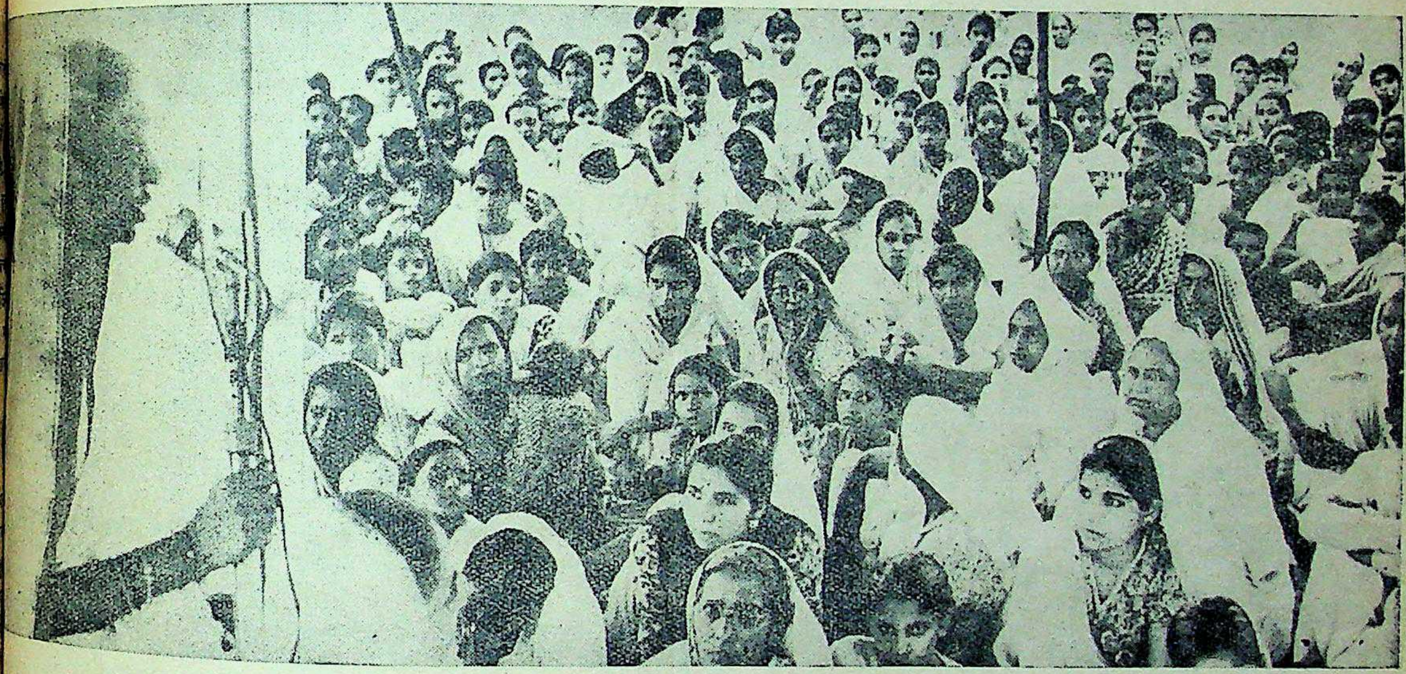

श्रीमती रामेश्वरी नेहरू गत गांधी जयन्ती के अवसर पर दिल्ली में महिलाओं की एक सभा में भाषण दे रही हैं।

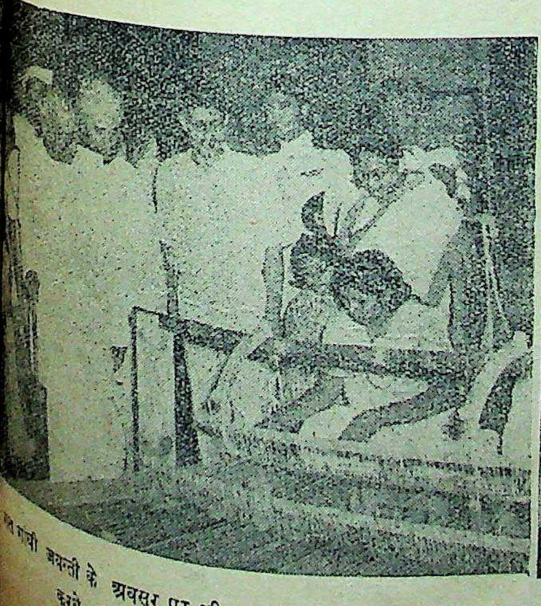

गत गांधी जयन्ती के अवसर पर श्री राजगोपालाचारी स्त्रियों द्वारा करघे की बुनाई का निरीक्षण कर रहे हैं।

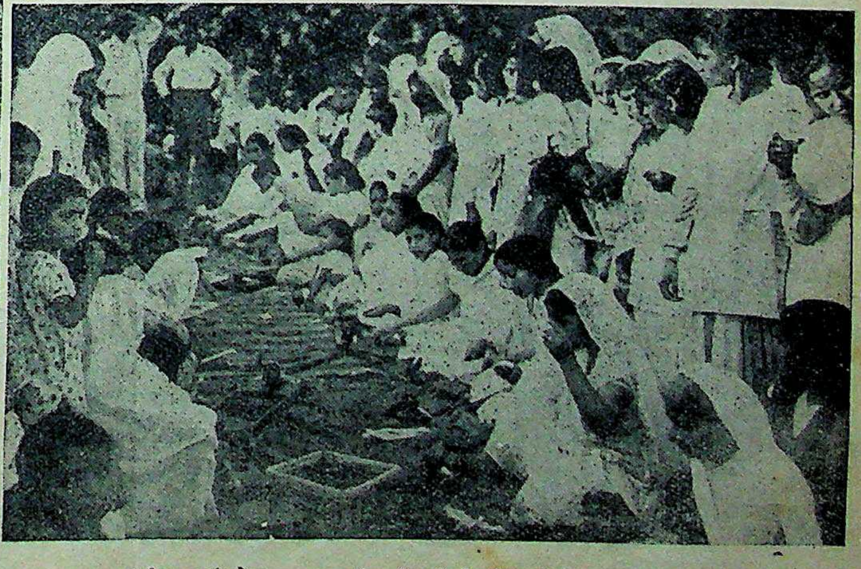

गत गांधी जयन्ती के अवसर पर दिल्ली की स्त्रियों की एक सभा में चर्खा कातने की प्रतियोगिता का प्रदर्शन हो रहा है।

राष्ट्रलिपि देवनागरी में सुधार

क्या राष्ट्र की लिपि का स्थान देवनागरी को शीघ्र प्राप्त होगा ?

लेखक, प्रोफेसर रामेश्वरदयाल दुबे, एम० ए०

भारतीय संघ के सामने राष्ट्र भाषा तथा राष्ट्र लिपि के सुलझाने की प्रमुख समस्या इस समय उपस्थित है। राष्ट्र लिपि देवनागरी स्वीकृत होगी, इसकी पूर्ण आशा है। इस लेख में लेखक ने यह बतलाया है कि देवनागरी लिपि राष्ट्र लिपि के उपयुक्त है ? लेख विचारणीय और पठनीय है।

श्रद्धेय बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन।

महत्व के जिन कुछ प्रश्नों ने हमारे नेताओं का और जनता का भी ध्यान अपनी ओर विशेष रूप से खींचा है उनमें से एक प्रश्न 'राष्ट्रलिपि' का भी है।

जहाँ तक राष्ट्रभाषा का प्रश्न है जन-सुलभ, लोक-सुलभ भाषा के विरुद्ध कोई कह भी क्या सकता है ? जो जनता की भाषा नहीं हो सकती, वह राष्ट्रभाषा कैसे हो सकती है ?

अतः राष्ट्रभाषा का प्रश्न पूर्ण रूप से सुलझ नहीं पाया है। उसके मूलाधार सिद्धान्त को तो सभी मानते हैं कि उसमें सर्वसुलभ शब्द होने चाहिये और वह उतनी सरल होनी चाहिये कि उसे आसानी से सीखा जा सके। परन्तु आगे चलकर समस्या तब पैदा होती है जब इस बात पर विचार होता कि जनता के लिये कौन सी भाषा सहज और सुलभ है तथा कौन से शब्द जनता के हैं अथवा हो सकते हैं और कौन से नहीं। राष्ट्रभाषा का नाम क्या हो—यह भी एक सुलझा हुआ प्रश्न है।

राष्ट्रलिपि के सम्बन्ध में गत वर्षों में काफी चर्चा चलती रही है। सन् १९४२ से राष्ट्रलिपि का प्रश्न और अधिक जटिल बन गया है।

पूज्य महात्मा गांधी जी ने हमारे राष्ट्र की बहुत सी समस्याओं को सुलझाया है। वे राष्ट्रभाषा के न केवल प्रेमी थे वरन् एक अद्वितीय प्रचारक थे। दक्षिण-भारत में हिन्दी का जो प्रचार गत ३० वर्ष से हो रहा है उसका बहुत कुछ श्रेय पूज्य गांधीजी को ही है।

किन्तु इधर राष्ट्रभाषा के क्षेत्र में जो एक नई उलझन पैदा हो गई है वह बापू के द्वारा ही अस्तित्व में आई है। भाषा के स्वरूप के बारे में तो नहीं, उसके नाम के बारे में कुछ मतभेद है परन्तु वह सामान्य ही है। किन्तु राष्ट्रलिपि के सम्बन्ध में मतभेद गहरा है और इस प्रश्न को लेकर जो आज एक बवंडर पैदा हो गया है उसके प्रति आज उदासीन नहीं रहा जा सकता।

गत ६ वर्ष से गांधी जी ने यह कहना प्राप्त कर दिया था कि राष्ट्रलिपि के लिये देवनागरी और फारसीलिपि (जिसे कुछ लोग भूल से उर्दूलिपि भी कहा करते हैं) दोनों को स्वीकार करना चाहिये और प्रत्येक भारतवासी के लिये इन दोनों लिपियों का ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य समझना चाहिये।

बापू जी का यह मत सन् '४२ के बाद ही बना था। उससे पहले गांधी जी देवनागरी को ही राष्ट्रलिपि के रूप में स्वीकार करते थे। उन्होंने एक स्थान पर लिखा था:—

"मैं भी वर्षों से एक लिपि का ही प्रतिपादन कर रहा हूँ। मुझे याद है कि दक्षिण अफ्रीका में गुजरातियों के साथ भारत सम्बन्धी पत्र-व्यवहार में एक हद तक मैंने देवनागरी लिपि का व्यवहार भी शुरू कर दिया था।...

...और एक ही स्रोत से निकली हुई भाषायें एक ही लिपि में लिखी जावें तो बहुत थोड़े समय में विविध प्रान्तों की खास खास भाषाओं का काम चलाऊ ज्ञान मैं प्राप्त कर लूंगा और जहाँ तक देवनागरी का सवाल है, सौन्दर्य या सजावट की दृष्टि से लज्जित होने जैसी कोई बात उसमें नहीं है। अतः मैं आशा करता हूँ कि जो लोग साक्षरता के आन्दोलन में लग रहे हैं वे मेरे इस सुझाव पर विचार करेंगे। अगर देवनागरी लिपि को वे ग्रहण कर लें तो निश्चय ही भावी सन्तान के परिश्रम और समय की बचत कर उनकी दुआयें पा लेंगे।

बापू की कथनी और कहनी में अन्तर नहीं होता था। वे जो कुछ कहते थे उसे कार्यरूप में भी परिणत करते थे। कहना तो यों चाहिये, कि पहले जिसे वह कर लेते थे तब उसे दूसरे को करने के लिये कहा करते थे।

देवनागरी लिपि का प्रचार वे सम्पूर्ण भारत में चाहते थे। वे मानते थे कि भारत की विभिन्न भाषायें अगर देवनागरी लिपि में लिखी जावें तो देश का बहुत हित होगा।

अहमदाबाद का नवजीवन कार्यालय बहुत कुछ बापू की इच्छाओं को पूर्ण करने का प्रयत्न करता रहा है। बापू जी की प्रेरणा से उसने ऐसी पुस्तकें प्रकाशित करना स्वीकार किया जिनकी भाषा तो हो गुजराती, परन्तु लिपि रहे देवनागरी। गांधी जी की आत्मकथा इसी रूप में प्रकाशित भी हुई थी।

हाँ, इधर बापू ने फारसी लिपि को देवनागरी के समकक्ष रखने का विचार किया था और इसीलिये उनका प्रयत्न दोनों लिपियों को समान पद देने की दृष्टि से फारसी लिपि-प्रचार में लग रहा था। किन्तु इस प्रयत्न में उन्हें न अधिक सफलता मिली और न मिलने की सम्भावना है। कारण स्पष्ट है। फारसी लिपि का देवनागरी लिपि से तुलना करने का अथवा दोनों को समान पद देने का कोई अर्थ ही नहीं है।

कुछ ही वर्षों में राष्ट्रभाषा का जो इतना व्यापक प्रचार अहिन्दी प्रान्तों में हुआ है, उसके मुख्य कारणों में से एक यह भी है कि उसकी लिपि देवनागरी रही है। देवनागरी लिपि भारत की अधिकांश लिपियों के निकट की लिपि है। उनके अक्षरों में अधिक समानता है। इसलिये राष्ट्रभाषा के सीखने में एक नई लिपि सीखने की कठिनाई आकर उपस्थित नहीं होती है। फारसी लिपि एक बिलकुल भिन्न विदेशी लिपि है। उसमें दोषों की भी कमी नहीं है अतः उसका प्रचार व्यापक रूप से होना असम्भव है। "मन" पर प्रयत्न करने पर अगर उसका प्रचार 'कन' भर हुआ तो क्या यह प्रचार कहलावेगा और क्या इस प्रकार यह लिपि व्यापक बन सके।

बापू की प्रेरणा से इधर नये प्रयोग चल रहे हैं। दोनों लिपियों को सीखने पर और 'साथ साथ सीखने' पर जोर डाला जा रहा है। इतना ही नहीं, यह प्रयत्न किया जा रहा है कि राष्ट्रभाषा का प्रचार हो तो दोनों लिपियों के साथ हो नहीं तो नहीं हो। पता नहीं यह लिपि की समस्या हमें कहाँ ले जाकर छोड़ेगी ?

जो हो यह स्पष्ट है कि देवनागरी लिपि का भविष्य उज्ज्वल है। भारत की आधी से अधिक जनता उससे पूर्ण रूप से परिचित हैं। जो नहीं परिचित है वह थोड़े समय में थोड़े प्रयत्न से परिचित हो सकती है, हो रही है। इसलिये राष्ट्रलिपि के लिये अगर कोई लिपि दावा कर सकती है तो देवनागरी ही कर सकती है।

पूर्वी पंजाब, युक्तप्रान्त, बिहार, मध्यप्रान्त, राजस्थान, संघ तथा अन्य अनेक रियासतों ने हिन्दी को राजभाषा और देवनागरी को राजलिपि स्वीकार कर लिया है। अहिन्दी प्रान्तों में भी हिन्दी और देवनागरी का सम्मान अत्यधिक बढ़ रहा है। इसलिये यह लगभग निश्चित सा है कि देवनागरी ही राष्ट्रलिपि बनेगी।

देवनागरी को जब राष्ट्रलिपि के आसन पर बैठना है तो उसे अपने को उस पद के लिये योग्य भी बनाना होगा। यह ठीक है कि देवनागरी लिपि में अनेक गुण हैं दोष बहुत कम। पर इतने पर ही सन्तोष कर बैठना उचित नहीं है।

जो दोष है उन्हें दूर करना है साथ ही आधुनिक आवश्यकताओं

अध्यक्ष महापण्डित राहुल सांकृ

की पूर्ति करने के लिये उसे और
सरल तथा संक्षेप बनाना है। इस
में अभी तक बहुत कुछ किया
चाहिये था।

समाचारपत्रों में कभी कभी
नागरी लिपि सुधार सम्बन्धी लेख
को मिल जाते हैं। पर
अधिक कुछ नहीं होता। इन लेखों
लिपि-विशेषज्ञ अपने अपने
जनता के सामने रखते हैं और
समाप्त हो जाता है।

लिपि-सम्बन्धी सुधारों के
यह अत्यन्त आवश्यक है कि उसे
चारपत्रों का, प्रकाशन संस्था
और सबसे अधिक सरकार का
मिले।

कुछ वर्ष हुए आचार्य
कालेलकर जी ने इस दिशा में
प्रयत्न किया था। महाराष्ट्र में
लिपि के कुछ नये सुधारों को
गया है। वहाँ के कुछ पत्र इस सुधार
देवनागरी लिपि में ही प्रकाशित
हैं। हिन्दी के क्षेत्र में अभी इन
से सुधारों तक का कहीं विशेष
नहीं किया गया है। खंडवा से प्र
होनेवाला 'स्वराज्य' ही शायद
मात्र हिन्दी पत्र ने जो इन सुधारों
अपना रहा है।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन जैसी
की प्रमुख संस्था ने भी अभी तक
दिशा में कुछ विशेष नहीं किया
हाँ, वर्धा की राष्ट्रभाषा प्रचार
ने अपना पूरा साहित्य इस सुधार
लिपि में ही प्रकाशित किया है।

यह हर्ष का विषय है कि प्र
सरकारें और केन्द्रीय सरकार
इस दिशा में अब प्रयत्नशील हो
है। युक्तप्रान्त की सरकार ने एक लि
सुधार-समिति की स्थापना की
इस समिति के अध्यक्ष आचार्य
देव जी हैं। लिपि-सुधार की यो
पर विचार हो रहा है। इधर
सरकार ने टाइपराइटरों के
के लिये तथा अन्य दृष्टियों से भी
लिपि में सुधार करने की दृष्टि
आचार्य काका कालेलकर की
में एक समिति का निर्माण किया है
अपना काम तत्परता से कर रही है
और ऐसी आशा की जाती है कि
समितियों की रिपोर्ट शीघ्र प्र
होंगी।

स्वतंत्र भारत के स्वतंत्र
वरण में ही यह सब कुछ सम्भव
हम आशा करते हैं कि राष्ट्र
आसन पर देवनागरी आसीन
और अनेक उपयोगी सुधारों को
कर वह अपने को उस उच्च पद के
सिद्ध करेगी ?

सन्देश

माननीय श्री बी० जी० खेर, प्रधान मंत्री, बम्बई—

मैं दीवाली और नये वर्ष के अवसर पर 'देशदूत' के पाठकों की प्रसन्नता की शुभकामना करता हूँ। हमारी यह प्रथम दीवाली है जिसमें हमारे राष्ट्रपिता हमारे बीच नहीं हैं, इसलिए हमें चाहिए कि हम इस पर्व को बड़ी शिष्टता और संयम से मनावें। हमें चाहिये कि भावी कार्यक्रम के लिए राष्ट्रपिता के बतलाये हुए गरीब और दलितों की सेवा का व्रत लेने की प्रतिज्ञा करें। जयहिन्द !

बंबई
२८ आक्टोबर

बी० जी० खेर

बर्लिन और युद्ध की संभावना

साम्राज्यवादी राष्ट्रों के स्वार्थों का केंद्र स्थल

लेखक, प्रोफेसर आशाराम एम० ए०

इस समय पेरिस में संयुक्त राष्ट्रसंघ का अधिवेशन हो रहा है। संसार के सामने अनेक जटिल समस्याएँ हैं जिन पर यहाँ विचार किया जा रहा है। अतएव इन समस्याओं की पृष्ठ-भूमि समझाने के लिए लेखक ने, निःशस्त्रीकरण, कोरिया, ग्रीस, पैलेस्टाइन, उपनिवेश आदि समस्याओं पर एक लेखमाला लिखने का निश्चय किया है। ये लेख 'देशदूत' में क्रमशः प्रकाशित किए जाएँगे।

के पर राष्ट्र सचिव बेविन ।

अमरीका और फ्रांस सोवि- कहते हैं कि या तो वह बर्लिन रोक हटा ले और उनको पहले वहाँ आने-जाने दे, अन्यथा शान्ति-विरोधी और आक्रमण- जाएगा। अर्थात्, यदि उनकी मानी गईं तो वे युद्ध छेड़ने स्वतंत्र होंगे। संसार की शान्ति एक गम्भीर परिस्थिति है। में हमारा भी हित है। पर भारत अछूता नहीं रह दुनिया के किसी कोने में पर लपटें हमको भी घेर अतएव बर्लिन की समस्या को हमारे लिए अति आवश्य-

की राजधानी बर्लिन का से शुरू होता है। अमरीका, फ्रांस ने पश्चिमी जर्मनी किया। सोवियट ने भी भाग में मुद्रा-सुधार के लिए देशों के यातायात पर रोक बर्लिन पहुँचने के लिए पश्चिमी सोवियट भाग की सीमाएँ पड़ती हैं और लगभग १५० सोवियट अधिकृत भाग में है। अतएव, रोक लगाने देशों को बर्लिन तक पहुँच होने लगी।

देशों ने कहना शुरू किया जर्मन जनता के अधिकारों रहा है, वह निर्दयी है और बर्लिन की जनता को भूखों मारना चाहता है। पश्चिमी बर्लिन की इस बाईस लाख जनता को सोवियट भालू के मुख से बचाना प्रत्येक यूरोपीय, प्रत्येक सभ्य व्यक्ति का धर्म है। अतएव, यदि सोवियट देश अपनी नीति न बदलेगा तो जर्मन जाति की रक्षा के लिए युद्ध अवश्यंभावी होगा।

के बर्लिन स्थित राजदूत।

तर्क इतना पोच था कि न चल सका। जिन पश्चिमी देशों ने रात-दिन बमबारी करके बर्लिन के लाखों निहत्थे नागरिकों को मौत के घाट उतार दिया, जिनके बमों ने इस नगर की ईंट से ईंट बजा दी और इतनी क्षति पहुँचाई कि दस वर्ष में भी पूरी न हो सके वे देश क्षण भर में बर्लिन-जनता के किस प्रकार हितैषी हो सकते हैं? जर्मनी की जनता को भी भुलावा नहीं दिया जा सकता। जिन देशों ने जर्मनी के विभाजन को स्वीकार कर उसकी एकता को चिरकाल के लिए खटाई में डाल दिया हो उनको जर्मनी का हितैषी कैसे माना जा सकता है?

जो कुछ थोड़ा-बहुत सहृदयता का बहाना रह गया था वह भी सोवियट सरकार ने दूर कर दिया। यदि बर्लिन की जनता को भूख से बचाने का ही प्रश्न है तो सोवियट देश सर्वथा समर्थ है। सोवियट सरकार बर्लिन को खाना, कपड़ा और उसके व्यवसायों के लिए कोयला देने के लिए तैयार हो गई। अतएव अब सहृदयता और जीवन रक्षा के नाम पर तो युद्ध नहीं लड़ा जा सकता, कोई दूसरा ही कारण खोज निकालना चाहिए। इसलिए पश्चिमी देशों ने अपने अधिकारों का बहाना ढूंढ़ा। उनका कहना है कि पश्चिमी राज्यों ने विजय और उसके बाद शान्ति समझौते के द्वारा पश्चिमी बर्लिन में रहने और वहाँ पर राज करने का हक प्राप्त किया था। सोवियट देश उनके इस अधिकार को छीन लेना चाहता है। वे अपने अधिकारों की रक्षा के लिए कटिबद्ध हैं और यदि जरूरत हुई तो युद्ध करके रक्षा करेंगे।

यह अधिकार क्या हैं और कैसे प्राप्त हुए? इनकी क्या शक्ल है?

युद्ध के बीच हिटलर और उसके साथियों को सोवियट राज और उसकी लाल सेनाओं से भय था। इतना भय ब्रिटिश, अमरीकी और फ्रांसीसी सेनाओं से न था। अतएव अपनी रक्षा के लिए उन्होंने पश्चिमी देशों को जर्मनी में आगे बढ़ने दिया और उनके सामने तेजी से आत्म-समर्पण भी किया, परन्तु लाल सेनाओं के विरुद्ध अपनी सारी ताकत लगा दी और यह प्रयत्न किया कि सोवियट प्रभाव जर्मनी में न बढ़ने पाए, चाहे ब्रिटिश और अमरीका सारे देश को क्यों न गुलाम बना लें।

इसका परिणाम यह हुआ कि हिटलर की हार के बाद जर्मनी का एक छोटा हिस्सा सोवियट सेनाओं के अधिकार में आ सका। और जब पोट्सडाम का समझौता हुआ तो सोवियट को केवल इतना भू-भाग मिला जिसमें कि लगभग एक करोड़ सत्तर लाख जर्मन रहते थे। साथ ही बर्लिन शहर पर चारों मुख्य शक्तियों का अधिकार कायम हो गया। इस समय कुछ पत्रों ने यह भी कहा है कि यदि सोवियट शासन अपने भू-भाग में से कुछ हिस्सा मित्रराष्ट्रों को दे दे तो पश्चिमी देश बर्लिन को छोड़ सकते हैं।

हाँ तो, दोनों ही ओर से पोट्सडाम समझौते की दुहाई दी जाती है। पाश्चात्य देशों का कहना है कि—

(१) इस समझौते के अनुसार बर्लिन पर शासन करने का पाश्चात्य देशों को अधिकार है।

(२) इसी कारण सोवियट देश को उनके बर्लिन आने-जाने के रास्ते में किसी प्रकार की रोक लगाने का कोई अधिकार नहीं। सोवियट शासन की लगाई गई रोकें अन्यायपूर्ण, समझौते के विरुद्ध और आक्रमणकारी इच्छाओं की द्योतक हैं।

सोवियट शासन के भी अपने तर्क हैं—

(१) पाश्चात्य देशों को बर्लिन के ऊपर शासन करने का अधिकार पोट्सडाम समझौते के अनुसार मिला था।

(२) पोट्सडाम समझौते की शर्तें थीं कि जर्मनी से नाजीवाद को मिटाया जाएगा, वहाँ निःशस्त्रीकरण किया जाएगा, स्वतंत्र और प्रजातन्त्र जर्मनी को प्रोत्साहन दिया जाएगा और जर्मनी की एकता को कायम रखा जाएगा।

(३) पाश्चात्य देशों ने इस समझौते का खण्डन किया है, इसका पालन नहीं किया, इसके विपरीत आचरण किया है। उन्होंने नाजीवाद का अन्त नहीं किया वरन् पुराने नाजी नेताओं को जीवित रखा है, उनको अपनी पुरानी जगह दे दी है, जर्मनी का निःशस्त्रीकरण नहीं किया और पुरानी सेनाओं को भविष्य के लिए बचा रखा है, उसके गोला-बारूद के कारखानों को बचा रखा है। वहाँ पर प्रजातन्त्र शक्तियों को सहायता देने के स्थान में एकाधिकार पूंजीपतियों को बढ़ावा दिया गया है और मजदूरों के आन्दोलनों पर हमले किए हैं। और अन्त में, जर्मनी की एकता पर आक्रमण किया है और उसको एक नहीं होने दिया।

पाश्चात्य देश कहते हैं कि सोवियट देश ने जर्मनी का शोषण किया है, वहाँ से करोड़ों की सम्पत्ति हटाकर सोवियट देश भेज दी है। सोवियट शासन ने हर्जाना लिया है। वह इसको छिपाता नहीं। परन्तु उसका कहना है कि यह उसकी क्षति-पूर्त्ति के लिए जरूरी था, यह पोट्सडाम समझौते के अनुकूल था और उसको पाश्चात्य प्रदेश से भी हर्जाना मिलना चाहिए था जो कि अमरीका आदि ने रोक दिया। कहाँ सोवियट देश की अरबों की क्षति और कहाँ पूर्वी जर्मनी की कुछ मशीनें?

अमरीका के परराष्ट्र सचिव जार्ज मार्शल।

पाश्चात्य देश कहते हैं कि जर्मनी के एके में सोवियट देश ने बाधाएँ डाली हैं। वह पूर्वी जर्मनी की आर्थिक व्यवस्था पर अपना अधिपत्य जमाए हुए है, वह संधि नहीं होने देता अतएव पाश्चात्य देश इस समय विभाजित जर्मनी से संतुष्ट हैं।

परन्तु सच यह है कि पाश्चात्य देश जर्मनी को स्वयं हड़प करना चाहते हैं और यदि पूरे जर्मनी को हड़प करने में कुछ बाधाएँ आती हैं—और ये बाधाएँ सच्ची हैं, क्योंकि सोवियट देश अपने जीते-जी ऐसा न होने देगा—तब वे पश्चिमी जर्मनी से संतोष कर लेना चाहते हैं। वे पाश्चात्य जर्मनी को अपनी योजना के अनुसार मार्शल योजना का एक अंग बना लेना चाहते हैं और धीरे-धीरे उसको पश्चिमी योरप के देशों की युद्ध-संबंधी तैयारियों का केन्द्र बना देना चाहते हैं। यह जर्मन जाति और संसार की जनता के प्रति घोर पाप है। इससे न केवल जर्मनी की एकता भंग होती है, वरन् भावी-युद्ध की तैयारी आगे बढ़ती है। पाश्चात्य देश अपने स्वार्थ में इतने अंधे हो गए हैं कि वे जर्मनी को फिर इस युद्ध की तैयारी में घसीट रहे हैं और उसके रूहर के गोला-बारूद के कारखानों को चालू कर रहे हैं।

यदि यह प्रश्न यहीं तक रहता, तब भी गनीमत थी। तय यह था कि

लंदन के 'पंच' में प्रकाशित कार्टून।

जर्मनी की एक मुद्रा होगी; परन्तु पाश्चात्य देशों ने पाश्चात्य जर्मनी में मुद्रा-सुधार कर डाला। इससे पूर्वी जर्मनी को यह भय हो गया कि कहीं रद्द की हुई मुद्रा उस भाग में न भर दी जाए। अतएव, सोवियट ने पश्चिमी और पूर्वी प्रदेशों के बीच आने-जाने पर रोक लगा दी। इस प्रकार पाश्चात्य देशों का बर्लिन पहुँचने का रास्ता रुक गया। सोवियट सरकार का कहना केवल यह है कि वह बिना जाँच-पड़ताल के सामान को अपनी ओर न आने देगा; परन्तु पाश्चात्य देश बिना रोक-टोक अपनी चीजें उस भाग में ले जाना चाहते हैं और इससे पूर्वीय देश की मुद्रा पर प्रभाव पड़ना आवश्यक है।

यह कैसे संभव हो सकता है कि दिल्ली नगर में दो मुद्राएँ चलें और उनका आस-पास के प्रदेश पर कोई प्रभाव न पड़े, विशेषतया उस समय जब इन मुद्राओं के चलाने-वाले परस्पर विरोधी देश हैं? यदि हैदराबाद शैतानी पर उतारू हो जाए तो भारतवर्ष को अवश्य ही हानि पहुँचा सकता है। यह बात पाश्चात्य विशेषज्ञ मानते हैं और फिर भी ब्रिटेन और अमरीका, सोवियट के विरुद्ध, उसके घिरे भू-भाग में, (बर्लिन में) स्वतन्त्र रूप से, राजा होकर रहना चाहते हैं। इसमें कौन-सा न्याय है?

पाश्चात्य देश इस समय इस समस्या को संयुक्त राष्ट्र-संघ के सामने ले गए हैं। उनको आशा है कि वह उनके पक्ष में फैसला देगा और यह अकारण नहीं, क्योंकि इस संघ में ऐसे राष्ट्रों का जोर है जो गुलाम देशों को परतन्त्र रखना चाहते हैं, जो वर्ग-भेद, स्पेन के फासिज्म आदि के पक्षपाती हैं। सारांश यह कि अधिकांश देश ब्रिटेन और अमरीका की मुट्ठी में हैं।

परन्तु क्या बर्लिन-समस्या इतनी जटिल है कि इसके ऊपर युद्ध होना अवश्यम्भावी है?

यदि संभव होता तो पाश्चात्य देश अभी तक सोवियट देश के ऊपर हमला बोल देते। जिस समय पाश्चात्य देशों ने पिछले जून-जुलाई में अपने प्रचार बम चलाने शुरू किए तो ऐसा प्रतीत होता था कि लड़ाई किसी भी क्षण शुरू हो सकती है। परन्तु उनकी दलील जनता को मान्य न थी और हारकर उनको मास्को जाना पड़ा; परन्तु मास्को जाने के बाद भी उनका ध्येय समझौता करना नहीं वरन् लड़ाई के बीज बोना और सोवियट के विरुद्ध झूठा प्रचार करना है।

आज की लड़ाई जनता की सहायता के बिना नहीं लड़ी जा सकती। परन्तु, इस समय कोई देश ऐसा नहीं जहाँ जनता युद्ध चाहती हो। दस-पाँच प्रतिशत की सहायता से युद्ध नहीं चलाए जा सकते। और पाश्चात्य देशों में कोई ऐसा नहीं जहाँ का शक्तिशाली मजदूर आन्दोलन युद्ध का विरोध न करता हो और कम्यूनिस्ट नेतृत्व में न हो। इटली और फ्रांस, दोनों ही देशों में तीस प्रतिशत से अधिक जनता कम्यूनिस्ट दल की सहायक है और शेष में अधिकांश युद्ध-विरोधी हैं और अपनी सरकारों से नाराज हैं। फ्रांस और इटली में गृह-युद्ध की स्थिति पहुँच चुकी है और ब्रिटेन तक के संबंध में श्री स्ट्राबोल्गी का कहना है कि युद्ध होने पर जनता दो भागों में बँट जाएगी और देश में एका न रह सकेगा। स्वयं अमरीकी जनता में इस प्रश्न पर भारी मतभेद है। यही कारण है कि सोवियट देश को धमकी और गालियाँ देने के साथ अमरीका उससे समझौते की बातें भी शुरू करता है। यदि सचमुच नहीं तो कम से कम जनता को भुलावा देने के लिए। मई में अमरीकी राजदूत ने मास्को में बातें शुरू की थीं। इस मास भी प्रेसीडेंट ट्रूमन सोवियट नेता स्टालिन से बात करने के लिए अपना दूत भेजना चाहते थे परन्तु जनरल मार्शल के दबाव से रुक गए।

युद्ध के संबंध में जाननेवालों की राय है कि इस समय सोवियट देश का पलड़ा इतना भारी है और लाल सेनाएँ इतनी शक्तिशाली हैं कि कुछ ही समय में वे सारे योरप पर छा जाएँगी। अमरीका स्वयं समझता है कि शायद स्पेन में कुछ अड्डे बाकी रह सकेंगे या वह भी नहीं और केवल ब्रिटेन अथवा उत्तरी अफ्रीका से बाद में लड़ाई लड़ी जाए। इसी आधार पर, पाश्चात्य सैन्य समझौते के अनुसार ब्रिटिश प्रतिनिधि फील्ड मार्शल मौंटगुमरी को सेनानी चुना गया है और स्पेन से समझौते की तैयारियाँ की जा रही हैं। परन्तु पहली धारणा से पाश्चात्य देशों में खलबली मच गई है। वे समझते हैं कि अमरीका अपने स्वार्थों के लिए उनको बलि-पशु बना रहा है। वे डालर की रक्षा के लिए अपनी जान नहीं खोएँगे। और दूसरी चाल से जनता में असंतोष है। वह किसी भी शर्त पर फासिस्ट स्पेन के साथ समझौता नहीं चाहती।

और फिर जिस जर्मन देश के लिए वे लड़ना चाहते हैं उसका क्या रुख है? जर्मनी का धनिक वर्ग ब्रिटेन और अमरीका के साथ हो सकता है परन्तु वहाँ की जनता इनकी विरोधी हो चुकी है। सोवियट देश ने जर्मनी से हर्जाना लिया है लेकिन जर्मनी को गुलाम नहीं बनाया, उसके उत्पादन को बढ़ाया है, वहाँ बेकारी खत्म की है। रूस उनकी एकता चाहता है, उनकी स्वतन्त्रता चाहता है। पश्चिमी जर्मनी को ब्रिटेन अमरीका और फ्रांस खोखला कर चुके हैं। उसके कल-कारखानों को उठाकर अपने देश ले गए हैं लेकिन उसकी उत्पादन शक्ति को बढ़ाने का कोई प्रयत्न नहीं किया। यहाँ तक कि पिछले दिनों हड़तालों की बाढ़-सी आ गई थी। वहाँ पर भुखमरी और बेकारी सर उठा रही है और स्वतन्त्रता और एकता स्वप्न होती जा रही है।

पिछले दिनों एक खबर छपी थी कि सोवियट शासन जर्मनी में भी उसी नीति का अनुकरण करेगा जो उसने कोरिया में बर्ती है। सोवियट देश ने कोरिया से अपनी सेनाएँ हटाने का ऐलान किया है। जर्मनी के संबंध में पाश्चात्य देशों को यही खतरा है। वे इस नीति में भी रूस की कोई चाल देखते हैं। कहिए कि इस सीधी-सी बात को वे चाल के रूप में जनता के सामने चाहते हैं।

किसी दूसरे देश से अपनी हटा लेना, इस में क्या चाल है? सेनाएँ हटाना चाल है तो ब्रिटेन सेनाएँ मलाया, सिंहापुर, अफ्रीका से क्यों नहीं हटा अमरीका ने अपनी सेनाएँ ग्रीस, कोरिया, फिलीपीन, चीन आदि में क्यों डाल रखी हैं? चाल है। दूसरे देशों से फौजें चाल स्वतन्त्र करने की चाल है को सशक्त बनाने, उनको आजाद की चाल है और इस चाल फ्रांस, अमरीका आदि जैसे साम्रा देश घबराते हैं, थर्राते हैं।

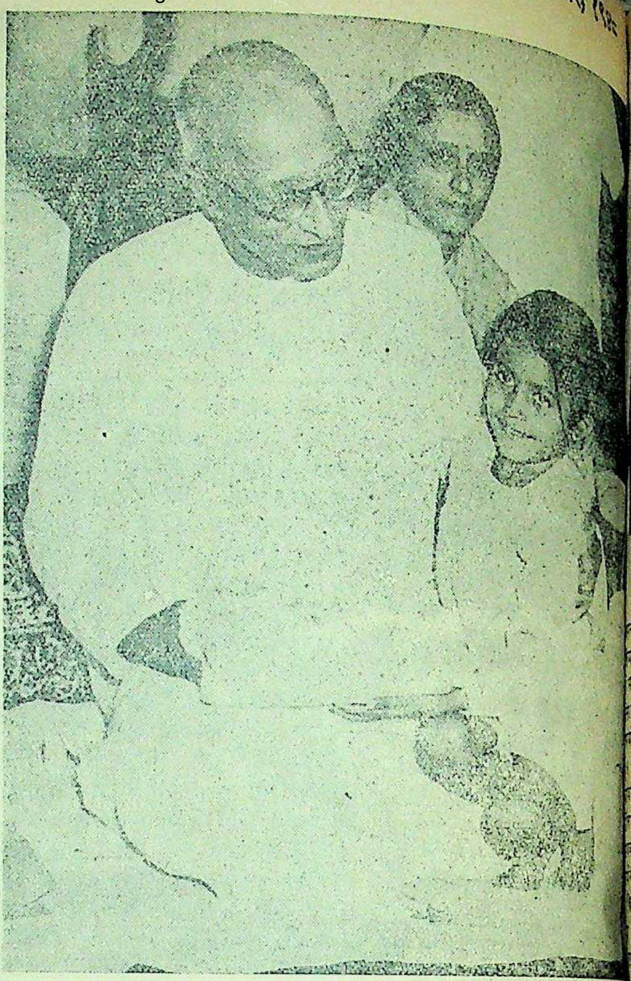

श्री राजाजी शरणार्थी कैम्प में एक शरणार्थी बच्चे को प्यार करते दिखलाई देते

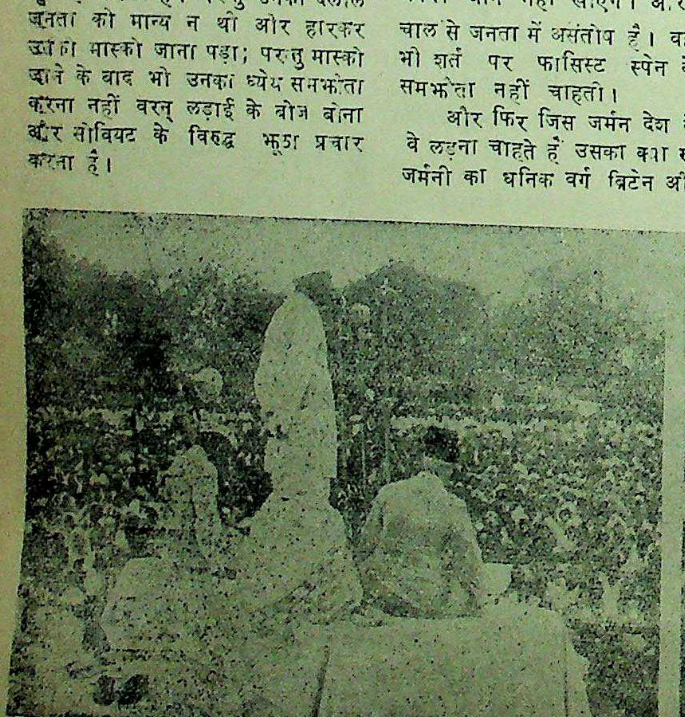

पंडित नेहरू गांधी जन्म दिवस पर दिल्ली की एक सभा में भाषण कर रहे हैं।

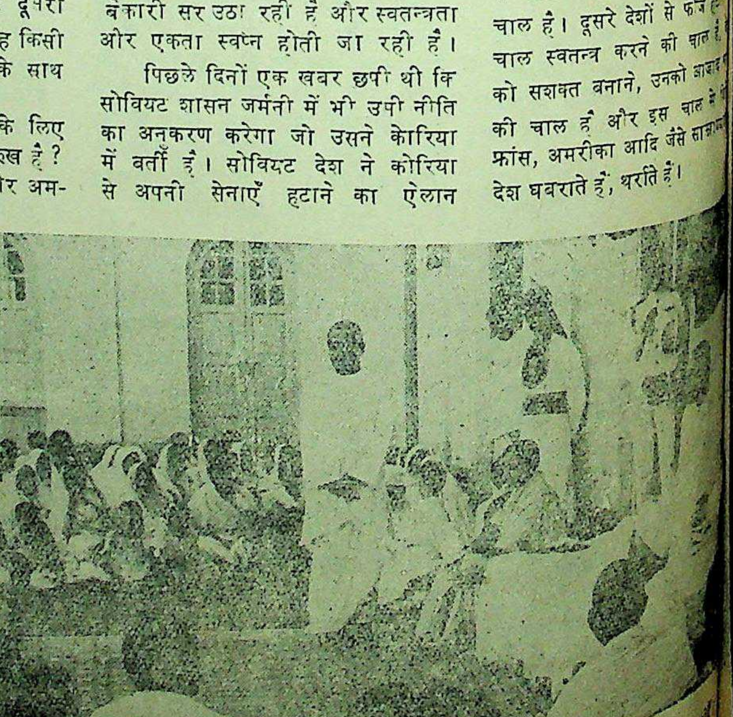

गांधी जयन्ती पर हरिजन बस्ती में राजाजी के भाषण का हिन्दी अनुवाद श्री नियोगी हरि कर

देशदूत

कम्यूनिज्म, फासिज्म, लोकतंत्र

योरोपीय राष्ट्र और भारत की अन्तर्राष्ट्रीय प्रगति कैसी ?

लेखक, श्री रतनलाल जोशी, एम० ए०

योरोपीय राष्ट्रों तथा भारत की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक स्थित दिन-प्रतिदिन व्यापक रूप ग्रहण करती जा रही है। कम्यूनिज्म, फासिज्म और लोकतंत्र का भयंकर संघर्ष राष्ट्रों की स्थिति को डावाँडोल की ओर खींच रही है। विद्वान् लेखक ने इस लेख में इसी समस्या पर बड़ा सुंदर प्रकाश डाला है, जो पठनीय है।

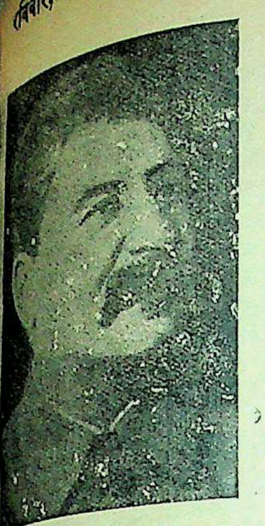

रूसी डिक्टेटर मार्शल स्टालिन

चीन के प्रजातन्त्रवादी नेता च्यांग-काई शेक

स्वाधीन भारत ने लोकतंत्र को भावी प्रगति का ध्रुवतारा घोषित है और विधान-निर्मात्री-परिषद् का जो विधान बनाया है उसमें के सभी प्रमुख लोकतंत्रों के अंशों का समावेश किया गया शीघ्र ही इस विधान को कानूनी पहनाया जायेगा और उसके को प्रतिज्ञाओं, स्वप्नों और नों को कर्म की कसौटी पर कसा ; किन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं लोकतंत्र भारत के लिये एक पूर्ण-नवीन एवं अपरिचित सूत्र है और भूमि पर जिसका कभी बीजा-हुआ ही न हो। प्राचीन काल में में लोकतंत्र थे और हिमालय से कन्याकुमारी तक उनका प्रसार लिच्छवियों के गणतंत्र तो इतिहास त प्रेरक सामग्री है। ईसा से वर्ष पूर्व भारत में अनेक लोकतंत्र में राज्य-संचालन का सारा कार्य चित परिषदों द्वारा होता था। वियों में तो न्यायाध्यक्षों का भी जनता द्वारा होता था। लिच्छ-यों के अतिरिक्त शाक्यों, पांचालों, आदि गणों में भी लोकतंत्र-व्यवस्था प्रचलित थी। वोट लेने की प्रणाली से परिषद् के जटिल और विवादास्पद विषयों का निर्णय किया जाता था। शाक्यों की सारी राज्य-व्यवस्था एक विस्तृत भवन में होती थी जहाँ सभी निर्वाचित सदस्य एकत्र होते थे। कौटिल्य के प्रमाण से तो ईसा-पूर्व के भारत में और भी लोकतंत्र थे जो बड़े शक्तिशाली और विकासोन्मुखी थे। उत्तर भारत के कई प्रसिद्ध लोकतंत्रों का उल्लेख कौटिल्य ने किया है। इस प्रकार लोकतंत्र केवल पश्चिम की ही देन नहीं है। हमारे देश में उसके पौदे काफी पहले लगाये जा चुके हैं।

* * *

भारत के गाँवों में तो पंचायतों के रूप में अभी तक लोकतंत्र की परम्परा प्रचलित है और यह लोकतंत्र अपने उद्देश्य में इतना निर्विकार और व्यवहार में इतना सरल है कि महात्मा गांधी तक को उससे प्रेरणा मिली थी। जनता द्वारा निर्वाचित पाँच व्यक्तियों के सामूहिक सहयोग से इन पंचायतों का संचालन होता है और वर्ग-विशेष के लिये भी इनमें अलग गुंजायशें रखने की प्रथा है। इस प्रकार हमारे गाँवों की पंचायतें अल्पमत के अधिकारों की सुरक्षा और सामूहिक दायित्व की समस्याओं से भी अपरिचित नहीं हैं और इस प्रकार उनका रूप एक सीमित क्षेत्र में संचालित केबिनेट से सादृश्य रखता है; लेकिन हमारे देश का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह रहा है कि लोकतंत्र का दायरा केवल गाँव तक ही सीमित रहा, सारे राष्ट्र की परिधि में उसका विस्तार न हो सका। राष्ट्रीयता की भावनाओं के अभाव में यह प्रसार असम्भव था। इसके विपरीत पाश्चात्य देशों में पहले राष्ट्रवाद का विकास हुआ और उससे उत्पन्न सामूहिक समस्याओं को हल करने के लिये लोकतंत्रीय शासन-प्रणाली को अपनाने की आवश्यकता समझी गई। अतः लोकतंत्र के सिद्धांतों को विकसित होने का जितना लम्बा देश-काल पश्चिम में मिला उतना उन्हें भारत में न मिल सका। भारत में आज जिस लोकतंत्रीय प्रणाली को अपनाया जा रहा है, वह व्यावहारिक रूप से पश्चिम की देन है और पश्चिम के राष्ट्रवाद के साथ वह हमारे देश में अंकुरित हुई है। कुछ अंशों में अँगरेजों को भी इसका श्रेय दिया जा सकता है। अतः आज हमारा यह कर्त्तव्य हो जाता है कि हम इस लोकतंत्र के सर्वांग की परीक्षा कर लें और उसके अंतर्भूत खतरों से बचकर आगे बढ़ें।

* * *

ब्रिटेन और उसके साथी देशों में जो लोकतंत्र आज प्रचलित है वह डाक्टर गोयबेल्स के विश्लेषण के अनुसार वस्तुतः वर्ग-शासन है और व्यावहारिक क्षेत्र में ऐसे वर्ग का शासन है जो अपने संकीर्ण स्वार्थों की परम्परा को सदैव अक्षुण्ण बनाये रखना चाहता है। इन पाश्चात्य लोकतंत्रों के विषय में बर्नार्ड शा का मत इस प्रकार है :—

"मित्रराष्ट्रों के विषय में जब कोई चर्चा करता है उन्हें 'पाश्चात्य लोकतंत्र' की संज्ञा देता है तो मैं हँसे बिना नहीं रह सकता। आखिर पश्चिम में लोकतंत्र है ही कहाँ? जो भी शासन-व्यवस्था यहाँ पाई जाती है, वह वास्तव में प्ल्यूटोक्रेसी है——नग्न रूप से न्यस्त स्वार्थों का शासन है जो सिर से पैर तक फासिस्ट है। काब्डेन और ब्राइट (इँगलैंड के सूत्रधार समाजवादी) को अलग फेंककर सोशिलस्टों द्वारा प्रदर्शित राज्य-परिचालित पूंजीवाद की अपरिमित सम्भावनाओं का शोषण करनेवाला यहाँ जो शासन है, वह फासिस्ट ही है। सिर्फ 'फासिस्ट' के बजाय उसे 'इँग्लिश' नाम दे दिया गया है। वस्तुतः आज का इँग्लैंड यूरोपीय फासिज्म का नेता है और जो फासिस्ट इंग्लैंड को बाह्यावरण को कोस रहे हैं, वे यह नहीं जानते कि वे क्या गलती कर रहे हैं....शायद यह उन्हें कभी ज्ञात भी नहीं होगा।"

पाश्चात्य सभ्यता के वर्तमान सबसे बड़े विचारक की यह स्पष्टोक्ति अँगरेजों को काफी कड़ुवी प्रतीत होती है, किन्तु उसमें सत्य के सिवाय मिथ्या का रंच-

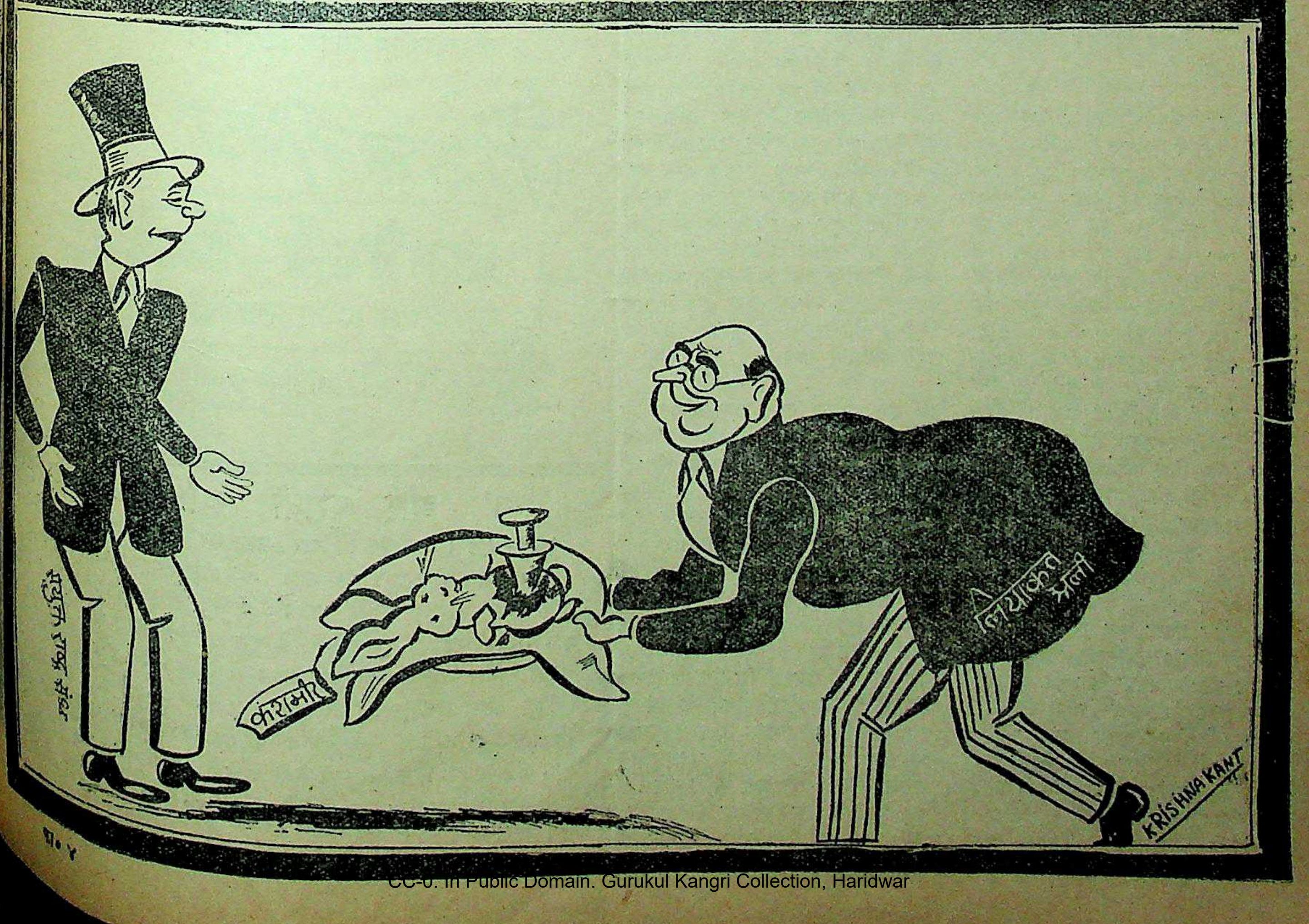

मात्र भी नहीं है और सत्य सदैव अप्रिय होता है। अमेरिका के विषय में भी बर्नार्ड शा के विचार इतने ही स्पष्ट और तेज हैं।

* * *

आधुनिक अमेरिकन लोकतंत्र की इस दुरवस्था का विश्लेषण करते हुए अप्टन सिंक्लेयर लिखता है :—

"वस्तुस्थिति यह है कि हमारे आधुनिक औद्योगिक कप्तान आर्थिक जगत् में उन्हीं स्थानों और क्षेत्रों की पूर्ति करते हैं जिनकी पूर्ति प्राचीन काल में जागीरों के सरदारों द्वारा होती थी। जिस संघर्ष के द्वारा उन्होंने सत्ता प्राप्त की है और जिस व्यवस्था के द्वारा वे उसे अपने हाथों में थामे हुए हैं, वे दोनों प्राचीन युग के सामंतों के तरीकों से सादृश्य रखते हैं। आज का औद्योगिक कप्तान भी मनुष्यों के संगठन पर शासन करता है जिसके आर्थिक स्तर पर अनेक वर्ग होते हैं और उन वर्गों के अपने अफसर, विशेषाधिकार और कर्तव्य होते हैं—यह सारी व्यवस्था प्राचीन युग की सामंतवादी व्यवस्था के आधार पर ही चल रही है। दोनों में कोई अंतर नहीं है और जिस प्रकार लुई बादशाह अपने को ही राज्य मानता था, वैसे ही मि० आर्मर अपने को ही 'आर्मर एंड कम्पनी' मानता है और मि० मार्गेन भी ठीक वैसे ही अपने को 'मार्गेन-वंश-परम्परा' मान लेता है और यह समझता है कि सारे व्यवसाय का अस्तित्व ही उसके लिये है और ईश्वरीय अधिकार के फलस्वरूप व उसका संचालक है।"

इस प्रकार लोकतंत्र के सिद्धांतों की आकर्षक घोषणाओं के बावजूद भी आधुनिक अमेरिका में आज सामंत-युगीन परिस्थितियाँ प्रचलित हैं। ऐतिहासिक क्रम के अनुसार यह औद्योगिक विकास की चरम परिणति है जो राजनीतिक विकास की भाँति अपने विस्फोट-बिंदु का शीघ्र ही स्पर्श करेगी। अमेरिका की सामान्य जनता आज असंतोष और रोष से क्षुब्ध है और भीतर ही भीतर एक सामाजिक क्रांति का ज्वालामुखी सुलग रहा है जो निकट भविष्य में समस्त आर्थिक असंगतियों का अंत कर देगा।

* * *

लेकिन इसका अभिप्राय यह नहीं है कि लोकतंत्र के प्रति हम निराश हो जायें और उसकी सुरक्षा का कोई प्रयत्न ही न करें। वैज्ञानिक उत्कर्ष की सबसे पहली शर्त यही है कि समाज का सारा ढाँचा लोकतंत्रीय सिद्धांतों पर आधारित हो। पश्चिम का लोकतंत्र अपने मौलिक सिद्धांतों से काफी विभिन्न दिशा में जाकर पथभ्रष्ट हो गया है। सारी बुराई वहाँ के राष्ट्रवाद की है। राष्ट्रवाद का विष यूरोप की भूमि से अभी गया नहीं है। सोवियत रूस के वैधानिक ढाँचे में राष्ट्रवाद के प्रादुर्भाव और विकास के लिये कोई गुंजायश नहीं रक्खी गई थी, किंतु आज का रूस राष्ट्रवाद को अपना रहा है और सारे संसार में फैली कम्यूनिस्ट पार्टियाँ भी यही कर रही हैं। इटैली और जर्मनी के फ़ासिज्म ने भी यही किया था। राष्ट्रवाद सबसे प्रथम एक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र के विरुद्ध सशंकित करता है और इस प्रकार के अनेक अकारण भयों को जन्म देता है। आज के अमेरिका में जो रूस के विरुद्ध सुरक्षा की तैयारी की जा रही है और उससे अंतर्राष्ट्रीय जगत् में जो बवंडर पैदा हो रहे हैं उन सबका मूलकारण अमेरिका का राष्ट्रवाद है जो फ़ासिज्म का बाना पहनकर तीसरे नरमेध का आवाहन कर रहा है। वर्तमान सोवियत रूस में भी जो ज्वर-गति से सुरक्षा-क्षेत्र बनाया जा रहा है और कूटनीतिक दाँव-पेंच खेले जा रहे हैं, उन सबका कारण वहाँ का नवोदित राष्ट्रवाद है जो कम्यूनिज्म की खाल ओढ़कर साम्राज्यवादी प्रसार का कार्यक्रम पूरा कर रहा है। अतः आज जो संघर्ष घनीभूत हो रहा है वह कम्यूनिज्म और पूंजीवाद के बीच में नहीं वरन् दो विभिन्न राष्ट्रवादों के बीच में है जो अपने असली रूप में फासिस्ट हैं—राष्ट्रीय कम्यूनिज्म और राष्ट्रीय लोकतंत्र दोनों मूलतः फासिज्म के ही शाब्दिक आवरण हैं। नात्सीवाद भी राष्ट्रीय समाजवाद कहा जाता था और मुसोलिनी भी अपने को साम्यवादी कहता था।

इस प्रकार सारे पाश्चात्य देशों में आज जो लोकतंत्रीय सरकारें हैं वे फासिज्म को अपना रही हैं और इस प्रकार अधिनायकतंत्र के प्रसार की परिस्थितियाँ काफी बलवती होती जा रही हैं। प्रथम महायुद्ध के बाद जिस प्रकार जनतंत्रवाद की उर्वर परिस्थितियों को पार्श्वभूमि में ढकेलकर अधिनायकतंत्र ने अपनी जड़ें जमा ली थीं उसी प्रकार आज भी लोकतंत्र की उज्ज्वल एवं आशा भरी सम्भावनाएँ अपनी ही विकृतियों के सघन आवरण में अवगुंठित होती जा रही हैं और फासिस्ट अधिनायकतंत्र एक छोर से दूसरे छोर तक अपना निरंकुश प्रभुत्व गहरा करता जा रहा है। लोकतंत्र की इस पतनावस्था के कारण आज भी ठीक वहीं हैं जो प्राचीन काल में यूनान के लोकतंत्र के प्रसंग में थे। यूनान को यूरोपीय संस्कृति और सभ्यता का सूत्रधार माना जाता है और चिंतन एवं अनुभूति के अन्य आवेगों की भाँति लोकतंत्र की लहर भी पाश्चात्य जगत् में यूनान की उर्वरा भूमि से ही आई। किंतु अपने व्यवहारिक क्षेत्र में यूनान का सामाजिक ढाँचा कभी भी लोकतंत्र के लिये शुभ नहीं हो सकता था। वहाँ के सारे लोकतंत्र का आधार ही दासत्व था और स्वयं एथेन्स में भी निर्वाचन के सम्बन्ध में ऐसी नागरिक पाबंदियाँ थीं कि जन-संख्या का एक वृहत् अंश वोट देने का अधिकारी नहीं हो सकता था। इस प्रकार यूनान में जो लोकतंत्र था वह वर्गवाद, दासत्व और विशेषाधिकारों पर आधारित था जैसा कि आज ब्रिटेन और अमेरिका में है। वहाँ विशुद्ध जनतंत्रीकरण का वातावरण कभी अबाध्य नहीं फैल सका। सारी सत्ता एक वर्ग-विशेष के ही हाथों में थी जो समाज के हितों की अपेक्षा अपने निजी स्वार्थों को अधिक महत्त्व देता था और उनकी सुरक्षा एवं संवर्धन के लिये शेष जनता के शोषण को बुरा नहीं समझता था।

* * *

इस प्रकार आज हम सभ्यता के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण संक्रांतिकाल के बीच में साँस ले रहे हैं। यह क्रांति अत्यन्त व्यापक भी है। जीवन से प्रासंगिक कोई अंग इससे अस्पर्श्य नहीं रहा है और यह भी निर्विवाद रूप से स्पष्ट हो गया है कि जैसी ऐक्य-ग्रथित और अंतर्निर्भर दुनिया आज है उस पर राष्ट्रीय सार्वभौमत्व का संकीर्ण और अंधारोपण खतरे से खाली नहीं है—अर्थात् आज यह समय आ गया है कि हम राष्ट्रीयता को मानववादी अंतर्राष्ट्रीयता से स्थानापन्न करें। ऐतिहासिक क्रम में कभी व्यतिक्रम नहीं पड़ता और चाहे हम अपना कर्तव्य पूरा करें या न करें किन्तु यह स्पष्ट है कि भविष्य में जातीयता का महत्त्व राजनीतिक या आर्थिक क्षेत्र की अपेक्षा सांस्कृतिक सीमाओं तक ही कायम रह सकेगा। आज की सघन घटाओं के बावजूद भी क्षितिज पर ऐसे आसार दिखाई पड़ रहे हैं मानो हमारा मानव-समाज ऐसी सामाजिक कर्मभूमि में पदार्पण कर रहा है जहाँ अभाव का अर्थशास्त्र बहिष्कृत हो जायेगा और व्यक्ति को अधिकाधिक आर्थिक समत्व प्राप्त होने लगेगा। जहाँ संस्था के बजाय व्यक्ति का समादर आवश्यक गिना जायेगा और सामाजिक प्रगति जहाँ प्रेम के बजाय श्रेय-पथ का अवलम्बन करेगी।

इस संक्रांति के मूल की सबसे [illegible] आवश्यकता आर्थिक सत्ता का [illegible]करण है और वास्तव में द्वितीय महायुद्ध का ऐतिहासिक उद्देश्य यही था। [illegible] हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि [illegible] हिटलर और मुसोलिनी की पराजय [illegible] इस उद्देश्य की सिद्धि हो जायेगी, [illegible] सोचना तो क्रांति है। नाजी सत्ता [illegible] पराजय तो उपयुक्त अवसरों की सूचनामात्र है। उनको निश्चित [illegible] पूर्ति के लिये प्रयोग में लाना तो [illegible] के ही ऊपर निर्भर है।

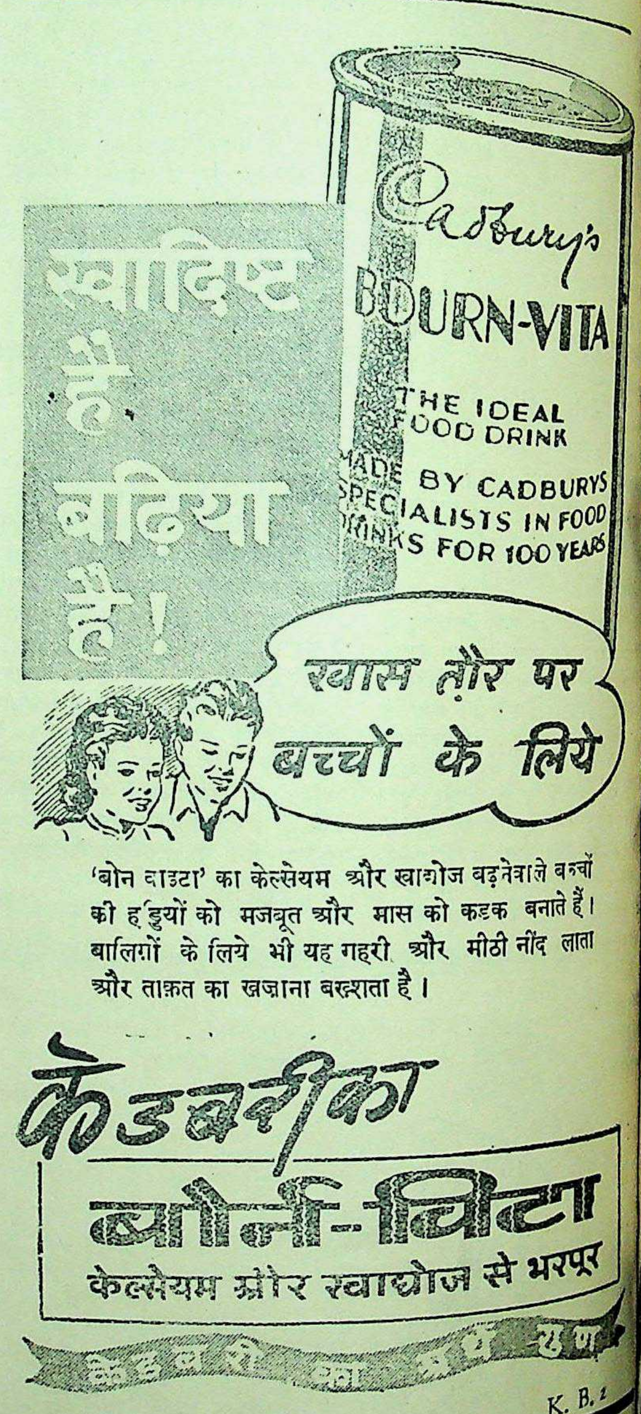

स्वादिष्ट है, बढ़िया है!
Cadbury's
BOURN-VITA
THE IDEAL FOOD DRINK
MADE BY CADBURYS SPECIALISTS IN FOOD DRINKS FOR 100 YEARS
खास तौर पर बच्चों के लिये

'बोन वाइटा' का केल्सेयम और ग्लाकोज बढ़नेवाले बच्चों की हड्डियों को मजबूत और मास को कड़क बनाते हैं। बालिगों के लिये भी यह गहरी और मीठी नींद लाता और ताक़त का ख़ज़ाना बख़्शाता है।

केडबरी का
बोर्न-विटा
केल्सेयम और ग्लाकोज से भरपूर

K. B. 2

'दमा' और पुरानी खाँसीवालो—नोट कर लो

१६-११-४८ (अब चूके तो फिर साल भर तक पछताओगे) 16-11-48

हर साल की तरह से इस साल भी हमारा जगत्-विख्यात "चित्र१८" [illegible] के दो हजार पैकेट आश्रम में मुफ्त बाँटे जावेंगे, जो (कार्तिक पूर्णमाशी) ता० १६ नवम्बर को एक ही खुराक खीर में खाने से सदा के लिए इस दुष्ट रोग से छुटकारा मिल जाता है। जो रोगी समय पर आश्रम में न आ सकें, वह [illegible] रजिस्ट्री आदि खर्च २।=) सदा की तरह अभी से मनीआर्डर द्वारा भेजकर [illegible] मंगा लें। देर करने से फिर गत वर्ष की तरह से सैकड़ों को निराश होना पड़ेगा। वी० पी० से दवा किसी को नहीं भेजी जाती है। धनवान् सज्जन धर्मार्थ [illegible] लिए कम से कम २५ मनुष्यों के लिए ४०) रु० भेजें। यह अन्तिम [illegible] है। जल्दी करें।

पता—रायसाहब के० एल० शर्मा, रईस आश्रम [D] 'जगाधरी' [E. P.]

कहानी

बेटे का इलाज

लेखक, श्री ओंकारनाथ शरद

मानव-हृदय संकट के समय घबराकर प्रायः बड़ी ही उलझनों में फंस जाता है। वह उलझनों को सुलझाने में जब तक अन्ध परम्परा का अनुसरण करता है, संकट सुलझने में समय लगता है जो भय का प्रेरणाउत्पादक कहा जा सकता है। विशेषकर नारी हृदय अधिकतर इस दुर्बलता का शिकार हुआ करता है जिसका सुन्दर चित्रण इस कहानी में रोचक ढंग से किया गया है। कहानी पठनीय और सुन्दर है।

वकील साहब क्रोध में बके जा रहे "... और देखो इस तरह मेरा सिर ती, मुझे तुम्हारी तरह घर में बन्द रहना पड़ता, मेरे पास दुनिया भर म है। दिन भर कचहरी और शाम ाज सेवक-संघ' का काम रहता है। हीं बताओ न, हमें कब फुर्सत है?" और वकील साहस जब नाराज होते तो उनकी पत्नी सुलक्ष्मी मौन हो । वह जानती थी कि कांग्रेस का करते करते इस नेता को भाषण देने आदत पड़ गई है वह घर के री के भीतर भी इनका पीछा ती। इससे सुलक्ष्मी चुप लगा । पर ज्यों ही वकील साहब धीमें कि वह फिर थोड़ा सा बोल देती, ता कि बुझती हुई आग में घी या, वकील साहब फिर बड़बड़ा और यह एक-दो दिन का क्रम तो महीने के तीसों दिन की प्रतिदिन ही काफी रात गए जब हब घर आते तब खाना खाते सोने जाने के पूर्व पति-पत्नी में हो जाती। इसका कभी किसी ढूंढना नहीं पड़ा। किसी दिन हब इस बात को लेकर ही शुरू कि उनका अमुक काम सुलक्ष्मी या और वह उनकी कुछ भी हीं करती। यह तो उनकी दृढ़ न गई थी। कभी सुलक्ष्मी ही कि उसने अमुक वस्तु लाने को और नहीं आई। उसकी शिका- कि वकील साहब संसार के लिए नेता हों, रक्षक हों, पर घर के कभी मिनट भर को भी नहीं कालते।

ने किस अभाग्य क्षणों में इनकी हुई थी कि कभी ये शान्ति से नहीं । और रह भी कैसे सकते? दोनों की विचारधारा में पूर्व और का अन्तर था। वकील साहब थे, नेता आदमी धनवान्। सुलक्ष्मी लिखी और भारतवर्ष की सत्तर फी सदी संकीर्ण विचारों की औरतों में चुनकर एक। वकील साहब को लेक्चरबाजी और रुपये पैदा करने से फुर्सत न मिलती और सुलक्ष्मी को घर में कामकाज चुक जाने पर पास-पड़ोस की औरतों को अपने यहाँ जुटाकर लोगों के चरित्र, आमदनी, खर्च और अपनी बड़ाई करने और कोई भी ब्राह्मण-ब्राह्मणी को मन भर कर दाव दक्षिणा देते संकोच न मालूम होता। वकील साहब तो पैसे जुटाने के फेर में रहते और सुलक्ष्मी को दान-दक्षिणा से परलोक बनता दिखाई पड़ता। वकील साहब जब कानून की किताबें या राजनीति की किताबें पढ़ते तो सुलक्ष्मी हनुमानचालीसा खोलकर बैठ जाती। फिर भला दोनों कहाँ मिल पाते!

उस दिन का यह झगड़ा कुछ गम्भीर था। बात यह थी कि इनके एकमात्र बेटे सतीश की तबीयत चार दिन से खराब है। बुखार उतरता ही न था। पहले दिनों तो वकील साहब ने सुलक्ष्मी और नौकर पर ही सब कुछ छोड़ दिया था। पर जब आज चार दिन से बिलकुल ही बुखार १०४° से कम न हुआ तो उन्हें भी कुछ चिंता हुई। मन में कुछ कचोट हो रही थी। झुँझलाकर उन्होंने कह ही तो डाला—"क्या बतावें, बुखार को भी आना था तो इसी मौके पर, डिस्ट्रिक्टबोर्ड के चुनाव के दिन। अगर यही चार छः दिन ढिलाई कर दी तो किया-धरा सब लिट्टी! साल भर की सेवा, बेकार!"

पत्नी को कुछ सहारा मिला, अपनी बात आगे करने का मौका मिला। हाथ नचाकर बोली—"हाँ हाँ लड़ लो। जीत लो चुनाव, चाहे घर की जो दशा हो! पता नहीं कैसा दिल है तुम्हारा कि बेटा खाट से लगा है और तुम्हें चुनाव की पड़ी है।"

"हाँ, इसी तरह सब होता है। इसी चुनाव की जीत पर ही सब कुछ ठाट-बाट हैं।" वकील साहब ने उत्तर दिया।

"हाँ रहे ठाट-बाट। मैं तो पचास बार कह चुकी हूँ कि फिर हमें जाने दो मायके, हम अपना वहाँ मन का इलाज कर लेंगे।"

"हाँ, हाँ, शहर में ही मायका होने से यही तो होता है कि जब मन हुआ धमकाने लगीं! मैं कहता हूँ, तुम आज चली जाओ आज, पर अगर सतीश ठीक होता तो मैं भला तुम्हारी इतनी बातें क्यों सुनता।" वकील साहब का मन बड़ा चंचल हो गया। कुछ समझ में नहीं आ रहा था। सतीश तो बुखार के मारे आँखें भी नहीं खोल रहा था।

वकील साहब ने अपने परम परिचित और प्रसिद्ध डाक्टर दास गुप्ता को बुला लिया। और दवा शुरू हुई। डाक्टर ने दवा शुरू करने के पहले ही कह दिया कि बुखार बिगड़ गया है, ठीक होने में ज्यादा समय लगेगा।

वकील साहब 'या सुलक्ष्मी, कोई भी भला इसका क्या उत्तर देते। चाहे जब उतरे बुखार। दवा शुरू हो गई। पर लाभ कुछ नहीं हुआ। बेटा खाट में पडा पड़ा हड्डी हो रहा था। वकील साहब सुबह-शाम डाक्टर दास गुप्ता से मिल लेते और दवा का प्रबन्ध कर देते। यहीं तक वे अपनी जिम्मेदारी समझते। वे दवा पिलाना और सतीश की देख-रेख करना सुलक्ष्मी के हिस्से का काम समझते। सुलक्ष्मी को इसमें कोई एतराज नहीं, न वह वकील साहब से कुछ अधिक चाहती, पर यह अवश्य चाहती कि बेटा बीमार है इसलिए वकील साहब चुनाव और समाज-सेवा छोड़कर बेटे के पास कचहरी के बाद का सब समय बिताते।

वकील साहब भी यह अनुभव करते थे, पर बेकार यों बैठना उनके लिए कदापि संभव नहीं, चाहे जो हो। वे बैठ भी तो नहीं पाते। अगर शाम को घर पर ही रह जायें तो एक घण्टे में कम से कम बीस आदमी आकर दरवाजा पीटते।

सतीश के बुखार ने अभी भी उतरने का नाम नहीं लिया। दास गुप्ता डाक्टर की दवा को भी आज आठ दिन पूरे हो गए। सुलक्ष्मी ने क्षुब्ध होकर वकील साहब से कहा—"मैं तो पहले ही जानती थी कि इस दास गुप्ता को कुछ नहीं आता जाता। पर पता नहीं क्यों तुम उसे इतना बड़ा धनवन्तरी माने बैठे हो? मैं तो कहती हूँ कि क्या उसे दवा बदलनी न चाहिये थी यदि अभी तक फायदा नहीं किया इस दवा ने तो।"

वकील साहब भला क्या उत्तर देते। कातर आँखों से सतीश को देखा, पास ही तिपाई पर रखी दवा की तीन शीशियाँ और शीशे का छोटा गिलास देखा और शीशियों पर लगे लेबिलों पर के लाल अक्षरों में छपे—मिक्श्चर उनकी आँखों में सजीव हो उठे। बेटे की दशा बिगड़ती ही जा रही थी। दास गुप्ता डाक्टर की दवा के लिए अधिक जिद करने की हिम्मत नहीं हो रही थी। सुलक्ष्मी की ओर देखकर उदासी के शब्दों में कहा—"तो तुम्हीं जिसे कहो बुला लाऊँ!"

"मेरी तो राय है कि किसी वैद्य कविराज को दिखाओ। डाक्टरों का चक्कर कभी ठीक नहीं होता। न हो तो गुरुदत्त वैद्य को ही दिखा दो न!" और उसी शाम गुरुदत्त वैद्य ने सतीश की नाड़ी देखकर आश्वासन दिया कि अधिक चिन्ता नहीं करना चाहिये जल्दी ही ठीक हो जाएगा।

वकील साहब ने सुलक्ष्मी की ओर देखा और सुलक्ष्मी ने लम्बी साँस खींची। फिर बोलीं—"शायद अब भगवान् सुन ले।"

"हाँ, दास गुप्ता डाक्टर रहता तो भगवान् कभी न सुनते! शायद गुरुदत्त वैद्य उन्हें जल्दी सुनावें भेंट।" कहकर वकील साहब क्षण भर को चुप रहे फिर कहा—"ऐसे भगवान् का भी क्या भरोसा!"

"देखो इस प्रकार देवी-देवता को मत कोसो। जाने कब कैसा हो!"

"पर हमें इन देवी-देवता और भगवान से कभी डर नहीं लगता।" वकील साहब ने कहा। उनका सुधारवाद उमड़ आया था। परन्तु सुलक्ष्मी चुप ही रही। इस विषय पर बात बढ़ाने से बुरा ही होगा।

और सात दिन बीत गये। गुरुदत्त वैद्य की गोलियों ने भी कुछ असर न

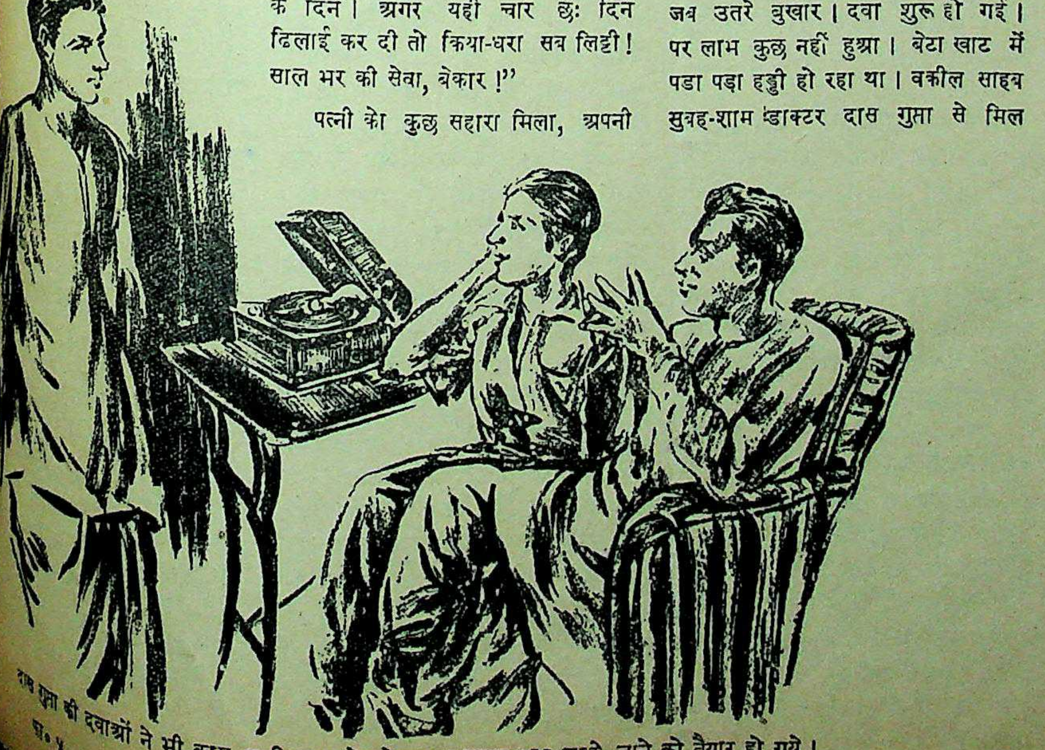

दास गुप्ता की दवाओं ने भी काम न दिया। बेचारे अपना बाक्स बन्द करके जाने को तैयार हो गये।

दिखाया और इस प्रकार आज उन्नीस दिन बीत गये। आज से सतीश ने ऊल-जलूल बकना शुरू किया। वकील साहब भी बहुत चिंतित हुए, सुलक्ष्मी का दिल बैठने लगा। दास गुप्ता डाक्टर तो केवल 'टाईफाइड' कहता था अब तो गुरुदत्त वैद्य ने कहा कि यह तो सन्निपात के लक्षण हैं; और यह सुनते ही सुलक्ष्मी के हाथ-पाँव फूल गये।

बहुत घबराकर उसने वकील साहब से कहा—"मेरा दिल बैठा जा रहा है, न हो तो किसी ज्योतिषी पंडित से जरा जन्म-कुण्डली ही दिखाते!"

वकील साहब के जिद की नींव भी हिल चुकी थी। उन्होंने अधिक अपने मन का करना नहीं चाहा और कहा—-बुला लो ज्योतिषी को, पर मैं तो जानता हूँ कि ज्योतिषी के किए कुछ नहीं होने को। डाक्टर का कहना है कि अट्ठाईस या इकतीस दिन लगेंगे, सो लगेंगे ही।"

और दूसरे दिन सवेरे ही प्रसिद्ध ज्योतिषी चिन्तामणि मिश्र ने बताया कि ग्रह कुछ बुरे पड़े हैं—-मंगल नीच के हैं। कोई हानि की आशा नहीं पर बीमारी लम्बी है।

"तो क्या शांति का कुछ उपाय नहीं?" आँखें पोंछकर सुलक्ष्मी ने पूछा।

ज्योतिषी महाराज कुछ देर चुप रहे फिर जोड़-जाड़कर बताया—-"हाँ शांति के लिए जप, दान-दक्षिणा किया जा सकता है।"

और बिना सोचे-समझे ही सुलक्ष्मी ने शांति की सब व्यवस्था करा दी। वकील साहब देख रहे थे—-व्यर्थ जाते हुए धन को—ज्योतिषी की जेब में। पर कुछ बोले नहीं, क्योंकि बोलना नहीं चाहते थे।

ज्योतिषी ने अपने मन के अनुसार चार दिन तक पूर्ण शांति की बहुत कोशिश की; परन्तु कुछ लाभ न हुआ। बच्चे की हालत बिगड़ती जा रही थी। न वकील साहब की समझ में कोई इलाज आता था न सुलक्ष्मी की समझ में। अन्त में वकील साहब ने कहा—"अगर राय हो तो फिर किसी दूसरे डाक्टर को बुलाऊँ।"

सुलक्ष्मी अपने मन का सब कुछ कर रही थी, उसके सुभाव पर ही तो गुरुदत्त वैद्य और चिन्तामणि मिश्र ज्योतिषी आये थे, पर दोनों ही असफल रहे। और उसका बच्चा, लाल का धीरे-धीरे हड्डी का ढाँचा भी गल रहा था। कहीं कुछ बुरा हो गया तो......। उसका मन कुछ भी सोचने समझने के उपयुक्त नहीं था। जल्दी में उसने वकील साहब से कहा—"हाँ, बुला लो, क्या पता डाक्टर ही की दवा लग जाए।" कहकर मन ही मन उसने अपने भगवान् को हाथ जोड़ा और कहा कि हे प्रभु, मेरे गोद की रक्षा करना। हमारे पाप का बदला इस रूप में मत निकालो।

वकील साहब ने शहर के सिविल सार्जन कर्नल वर्मा के साथ घर में प्रवेश किया। अच्छी तरह देख-भालकर सिविल सार्जन ने बताया कि कोई खतरा तो है ही नहीं! हाँ, यह बुखार जरा ज्यादा दिन लेता है।

वकील साहब को कर्नल वर्मा की बात बिलकुल ठीक जँची। "बुखार बिगड़ गया है—समय लेगा...। चिन्ता मत करो।" सुलक्ष्मी के कन्धे पर हाथ रखकर वकील साहब ने उसे ढाढ़स बँधाया। पर सुलक्ष्मी के लिए यह बुरा हो गया। पचीस दिनों से बेटे की बीमारी में अपने को पूरी तरह खपाती हुई यह नारी, यह माँ, यह सुलक्ष्मी जिस जलन और तपन का अनुभव करती आ रही थी, वह कब तक सहा जाता। प्रतिक्षण बेटे का काल उसे खा रहा था। उसका मन भी एक बड़े फोड़े की तरह अपने भीतर ही भीतर पक रहा था, कुल बुला रहा था, जो दर्द पैदा कर रहा था और ऐसा दर्द जो टीसकर भीतर को भीतर ही रह जाता था। वह टीस कैसी भयानक होती थी यह सुलक्ष्मी ही जाने। इस समय बहुत दिनों से असंतोष की छाया में पलता हुआ उसका मन, वकील साहब की सहानुभूति से भर आया और मन में जब उसका दुःख न समाया तो आँसू बनकर आँखों की राह बाहर छलक आया। वकील साहब का जी भी दुखने लगा, सुलक्ष्मी के कन्धे पर से हटा कर हाथ उसकी पीठ पर दाबा और अपने से लगा लिया। वकील साहब का स्पर्श पा सुलक्ष्मी के ढाढ़स का बाँध टूट गया और वह फफककर रो पड़ी।

नारी की पीड़ा जब रुदन बनकर उमड़ी तो उसे वकील साहब सँभाल न सके। फिर एक ऐसी नारी जो माँ भी है और पचीस दिनों से लगातार अपने एकमात्र बेटे को तिल-तिल करके गलते देख रही थी। सुलक्ष्मी को वकील साहब सँभाल न सके। दो चार सौ बिगड़े मजदूरों को, चार छः हजार की भीड़ को वे सँभालने की शक्ति अपने में निहित किए थे, पर इस सुलक्ष्मी को वे नहीं शान्त कर पा रहे थे।

वकील साहब ने कहा—"अब तुम्हारे भी इस प्रकार रोने से क्या लाभ, देखो न सतीश के साथ ही तुम भी कितनी दुबली हो गई हो। और अगर यही हाल रहा तुम्हारा तो मैं क्या करूँगा?"

उत्तर में सुलक्ष्मी फिर रो पड़ी—फूट-कर, फफककर! तभी काँपकर सतीश ने करवट बदली और चीख उठा—-"माँ, हमें पकड़ो—वे लिए जा रहे हैं हमें...... माँ.......!"

वकील साहब का सहारा छोड़ सुलक्ष्मी भागकर सतीश की खाट पर गई और उसे अपने कलेजे से लगा लिया। माँ की छाती का स्पर्श पा बालक भय भूल गया। लेकिन बेटे का इस प्रकार चीखना, सुलक्ष्मी ने दूसरे ही रूप में लिया। पति की ओर कातर दृष्टि से ताककर कहा—-"यदि तुम्हारी राय हो तो मैं अपने मन का एक काम और कर लूँ?"

"हाँ, कर लो!" इसके अलावा वकील साहब कहते भी क्या?

"विन्ध्याचल की महारानी की मानता थी, मैं पूरी कर लूँ।" सुलक्ष्मी ने बेटे के सिर पर हाथ फेरकर कहा।

"अरे अब क्या करेंगी तुम्हारी देवी? पर तुम चाहती हो तो जा सकती हो पर सतीश को कैसे जाने दूँ।"

क्षण भर सोचकर सुलक्ष्मी ने कहा—"ठीक है। मैं ही अकेली जाऊँगी, देवी माँ से प्रार्थना करूँगी कि मेरे लाल को खड़ा कर दें, दुबारा जाऊँगी।" आँखों के आँसू को बहाकर दोनों हाथों से सतीश का सिर दबाकर कहा। वकील साहब कुछ बोले नहीं, सुना नहीं गया दूसरे कमरे में चले गए और पलँग पर कटे वृक्ष की तरह गिरे, चिन्ता में डूबे हुए। सतीश तो बीमार है ही—सुलक्ष्मी को कैसे समझावे।

और तीसरे दिन ही सुलक्ष्मी नौकर को साथ ले विन्ध्याचल को रवाना हो गई। उसके अन्तरात्मा की यह आवाज थी कि अवश्य ही विन्ध्यवासिनी देवी के असन्तुष्ट होने के कारण ही सतीश बीमार है। फिर तो सुलक्ष्मी जा ही रही थीं, देवी को मनाने। उसे विश्वास था कि यदि देवी प्रसन्न हो गई तो अवश्य ही उसका बेटा अच्छा हो जायगा।

उसी दिन शाम को सिविल सार्जन ने सतीश की नब्ज और हृदय की धड़कन गिनकर बता दिया कि अब सत्ताईस दिन पूरा हो गया है। शायद बुखार उतरना शुरू हो।

और सचमुच ही जब सुलक्ष्मी लौटी तो देखा कि सतीश का बुखार कम हो रहा है। उसने लपककर एक दोने में लगी रोड़ी का एक टीका सतीश के पीले पड़े माथे पर लगा दिया। टीके के कारण चेहरे पर एक चमक आ गई। सुलक्ष्मी ने समझा कि महारानी ने ही कृपा की। आँखें मूँदकर मन ही मन प्रणाम किया इस अपनी कृपालु देवी को।

पास ही खड़े वकील साहब यह नाटक देख रहे थे और मन ही मन खुश हो रहे थे कि सिविल सार्जन का कहना सच ही निकला। दिन अधिक जरूर लगे पर बुखार उतर तो रहा है। यही तो आखिर डा० दास गुप्ता भी कह रहे थे। पर जिसके हाथ मरीज अच्छा हो वही यश का भागी। वह यही सब सोच सोच-कर मन ही मन खुश हो रहे थे कि एका-एक चौंक पड़े। देखा देवी के प्रेम में विह्वल सुलक्ष्मी देवी का प्रसाद, विन्ध्याचल के मन्दिर से लाया चीनी का गट्टा सतीश को खिलाने जा रही है। वे चिल्ला उठे—-"खबरदार, जो उसे कुछ खिलाया। अभी तो पूरी तरह बुखार भी नहीं उतरा है। क्या जान ही ले लेना चाहती हो?"

सुनकर सुलक्ष्मी की आँखों में खून उतर आया। चेहरा क्रोध, लज्जा और अपमान से लाल हो गया। झटके से उठ खड़ी हुई और गट्टे और प्रसाद के दोने को आँचल के खूँट में बाँधती हुई बोलीं—"तुम्हें तो अपनी ही जिद रहती है, न देवी देखो न देवता! अरे प्रसाद खिलाने में क्या होता है?"

"काश, इतनी ही अक्ल होती तुम्हें कि जान पातीं!" लम्बी साँस लेकर वकील साहब ने कहा और बैठके में चले गए। पर वहाँ भी उनका मन न लगा और दूसरे ही क्षण वे सड़क पर आ बाजार की ओर जा निकले।

क्षुब्ध मन से खड़ी सुलक्ष्मी ने खिड़की से झाँककर वकील साहब को जाते देखा। आशा से उसकी आँखें चमक गईं वकील साहब चले गये थे। सतीश के पास आ, निर्भय हो उसने आँचल में बँ को खोला और सतीश को खिला फिर मन ही मन देवी से इस अ के लिए क्षमा माँगी और प्रार्थ कि वह नाराज न होकर उसके बे शीघ्र ही स्वास्थ्य दें, सतीश ने भी की मिठाई पाई, वह भी खुश हो ग

शाम को सुलक्ष्मी का जी बहुत था। उसने पति से चुराकर ब देवी का प्रसाद खिला दिया था। मन में यह विश्वास अब जम गया उसका बेटा अब अवश्य चंगा हो ज वह विन्ध्याचल गई नहीं कि उस लड़का अच्छा होने लग गया है।

वकील साहब काफी रात गए घ गुस्सा शांत हो गया था। उसी स चर्चा करके कहा—"सुलक्ष्मी, तुम्हें नहीं मानना चाहिये। डाक्टर ने क कि बुखार उतरने पर अधिक हि की जानी चाहिये। यह टाइफाइड था। बड़ा भयंकर होता है। अग दुहरा गया तो फिर खैर नहीं।"

"हाँ, हाँ अब चाहे जो कहो, अच्छा हुआ तो मेरे ही विन्ध्याच से!" मन के पूरे उत्साह के साथ सु ने कहा। वकील साहब ने सम सुलक्ष्मी खुश है, बहुत बड़ी बात चुप ही रहे।

वकील साहब के सिविल सार्ज दवा और सुलक्ष्मी के देवी की अनु से सतीश अच्छा होने लगा। जि से वह खाट से लगा था उसी गति से चंगा भी होने लगा।

वकील साहब और सुलक्ष्मी दो की आँखें अपने अपने मन में समझे विजय पर चमकतीं। दोनों एक को घूरकर देखते। होठों पर मुस्का व्यंग करते पर इस बात के अज्ञान में कि सचमुच दोनों ही अँधेरे में रहे हैं।

किसी प्रकार सतीश अच्छा हो ग बुखार तो उतर गया, दाल, रोटी क्रम क्रम से सभी वस्तुएँ भी खाने दी गईं। वह उठकर थोड़ा-बहुत भी लगा था। सुलक्ष्मी विन्ध्या देवी के सम्मुख की गई इस प्रतिज्ञा भी नहीं भूली थीं कि अच्छा होने पर दर्शन करने आएगी।

एक दिन सुलक्ष्मी की माँ ने बुला भेजा। जब बुलावा लेकर दाई तो वकील साहब घर पर ही थे। बैठक बैठे बड़े ध्यान से कोई पुस्तक पढ़ थे। भीतर आकर सुलक्ष्मी ने क "सुना? माँ ने बुलवाया है। कल न, सो कहो तो हो आऊँ!" "क्या तुम्हारी माँ भी, क्या है, जब देखो भोज, कीर्तन! जाने उस बुढ़िया इसमें क्या मिलता है! खैर, तुम तो ही, हो आओ।" "और अगर तुम्हें लीफ न हो तो रह भी लूँगी एक भाभी के बच्चा होनेवाला भी तो है।" आँचल का खूँट उमेठते हुए सुलक्ष्मी कहा—"हाँ, हाँ, बच्चा-बच्चा हो तभी आना। पर, पर सतीश...... उसे सँभालना कुछ खाने-पीने में गड़बड़।"

शेष पेज १२ पर देखिये

मातृ-मंदिर

स्त्रियों के जीवन में विनय और शिष्टाचार

क्या भारतीय नारियाँ उच्छृङ्खलता का त्याग करने की ओर बढ़ेंगी ?

लेखक, श्री कृष्णकुमार गुप्त, बी० काम

कुमारी नियोगी एम० बी० बी० एस० में प्रथम उत्तीर्ण हुई हैं।

के प्रति पत्नी का क्या कर्तव्य है, स्त्री में क्या गुण होने चाहिये दाम्पत्य जीवन क्योंकर सरस सुमधुर हो सकता है इत्यादि प्रश्न में इतने सरल नहीं जितने कि वे में प्रतीत होते हैं। सती-साध्वी स्त्री में विरली ही होगी। पातिव्रत धर्म देह कठिन धर्मों में से है और सम्भव कठिनता ही उसके आलोक का है। फिर भी कुछ ऐसे साधारण जिनका स्त्री में समावेश होना आवश्यक है और जिनके होने से का जीवन किसी सीमा तक बन सकता है।

विनय और शिष्टाचार ऐसे गुण हैं किसी के पास होते हैं तो जो कोई संसर्ग में आता है वही उसका बन जाता है। कहा भी गया है कि विनय स्वभाव का एक विचित्र भूषण है और स्त्री के पास सुचरित्रता के साथ साथ यदि विनय भी हो तो सारा संसार उसका है।

निस्संदेह एक कोमल प्रकृतिमयी विनीत स्वभाववाली, मधुरभाषिणी ललना ही अपने स्वामी तथा परिवार को सुखी कर सकती है। जो स्त्रियाँ विनीत स्वभाव की नहीं होतीं, कटुभाषिणी होती हैं अथवा क्रोधी प्रकृति की होती हैं वे अपने स्वामी तथा परिवार से यथायोग्य सम्मान नहीं पातीं और न कोई उनसे प्रसन्न ही रहता है। नम्र स्वभाव की जितनी प्रशंसा की जाय उतनी ही थोड़ी है और स्त्री के लिये बड़े महत्त्व की वस्तु है। आज-कल जो सर्वथा अप्रिय दृश्य अथवा विवादग्रस्त पारिवारिक लड़ाइयाँ दिखलाई देती हैं वे प्रायः स्त्रियों में नम्रता के अभाव में होती हैं।

दिल्ली की सम्भ्रान्त महिलायें हिन्दू कोड बिल पर विचार-विनिमय कर रही हैं।

बहुत सी नवबधुएँ अपनी मातृसम पूज्य सास इत्यादि के साथ झगड़ा करती दीखती हैं, उन्हें अपने गुरुजनों को ही नीचा दिखाने में अच्छा लगता है। वे उस समय भूल जाती हैं कि वे अपने अहंकार के कारण जिस भक्ति और श्रद्धा को पाने की अधिकारिणी हैं उससे वंचित रह जाती हैं। कुछ स्त्रियाँ कभी कभी अपने पति के व्यवसाय और सामर्थ्य का मूर्खतापूर्ण भरोसा करती हैं। यह भाव उन्हें कहाँ से मिलता है इससे सम्बन्ध नहीं, सम्बन्ध है इससे कि इस भाव के स्थान पर आवश्यकता है सरल, मृदु, नम्र तथा कोमल स्वभाव की। सास से अपेक्षाकृत बहू यदि चार अक्षर अधिक पढ़ी है तो उसका यह अर्थ नहीं कि वह कठोर बन जाय और सब को घृणा की दृष्टि से देखने लगे।

शिष्टाचार एक मुख्य गुण है। यदि स्त्री किसी से ठीक प्रकार बात करना, किसके साथ कैसा व्यवहार होना चाहिये अथवा आदर-सत्कार आदि के नियम नहीं जानती तो उसका जीना अभिशाप है और वह अपने पति की भी प्रेयसि नहीं हो सकती। विनय और शिष्टाचार साथ-साथ चलते हैं और प्रत्येक नर-नारी का जीवन उन दोनों अमूल्य गुणों से प्रभावित होता है।

* * *

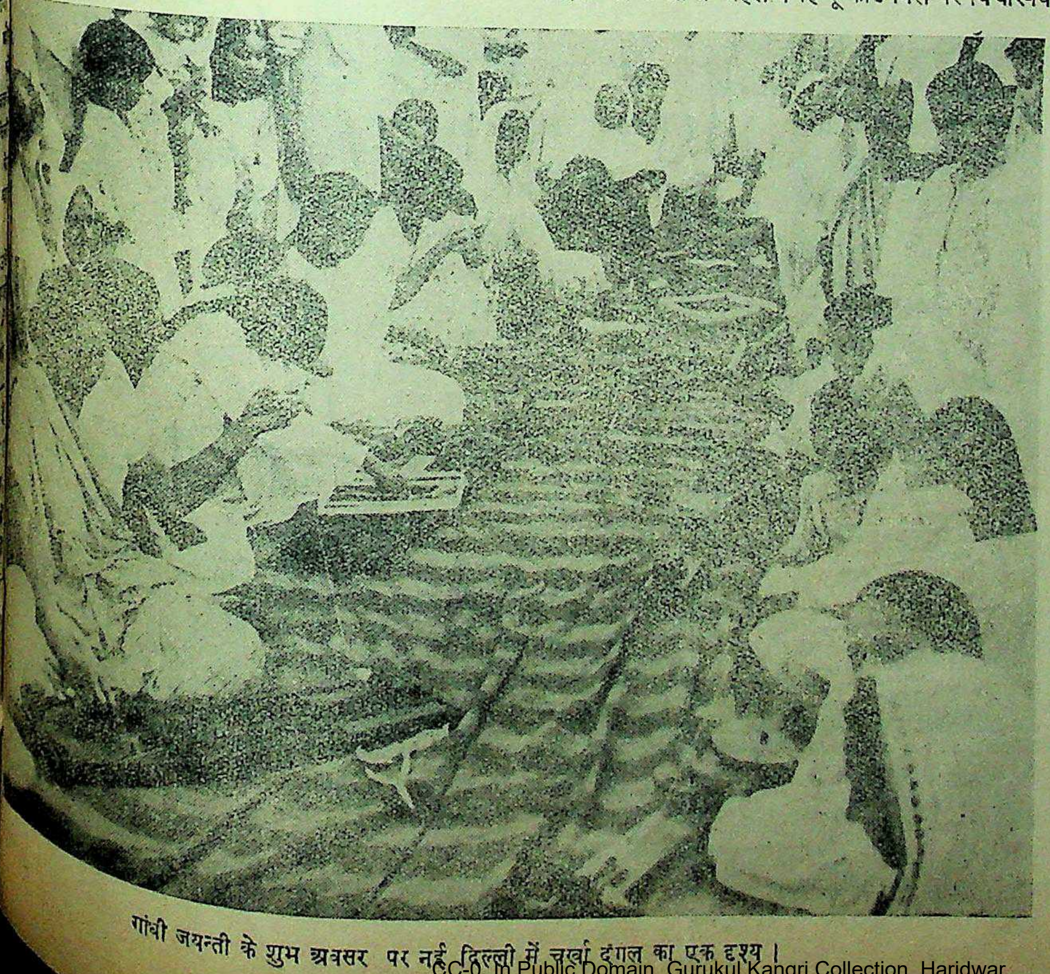

गांधी जयन्ती के शुभ अवसर पर नई दिल्ली में चर्खा दंगल का एक दृश्य।

कहानी—बेटे का इलाज

(पेज १० का शेष)

और आज्ञा पाकर सुलक्ष्मी ने खुशी खुशी तैयारी करके माँ के घर का रास्ता लिया।

माँ के यहाँ उसे चार दिन हो गए थे। सतीश अब तक ठीक था, वह बरसात का मौसम था, एक शाम चारों ओर से एकाएक काले काले बादल घिर आए और देखते ही देखते मूसलधार वर्षा होने लगी। औरतों की गोल में सभानेत्री की तरह बैठी सुलक्ष्मी की माँ ने बात की शृङ्खला तोड़कर एकाएक चौंककर अपने नौकर को पुकारा और कहा कि झटपट जाकर जरा मंदिर से पूछ तो आये कि यह कौन नक्षत्र बरस रहा है। मघा तो नहीं है?

"क्या होगा माँ, मघा का?" सुलक्ष्मी ने उत्सुकतावश पूछा। "अरे यह भी तुझे किसी ने नहीं बताया। मघा के पहले पानी में नहाने से साल भर कोई रोग व्याध नहीं आता। अगर यह माघा ही है तब तो मैं अपने सतीश को जरूर नहलाऊँगी।"

"अरे माँ पानी में? वह इतना तो कमजोर है!" सुलक्ष्मी ने कहा।

"दुत् पगली, मघा का पानी अमृत होता है अमृत!" माँ ने जोर दिया।

और ज्यों ही नौकर ने आकर बताया कि यह मघा ही है तो बिना सोचे-समझे ही सुलक्ष्मी की माँ ने सतीश को छत पर लाकर खूब नहलाया। सुलक्ष्मी रोक न सकी। माँ का कहना था न, कि मघा का पानी अमृत होता है। फिर सतीश क्यों इस अमूल्य अमृत से वंचित रह जाए?

मुफ्त! मुफ्त!! मुफ्त!!!

आप घर बैठे मैट्रिक, एफ० ए०, बी० ए०, पंजाब तथा आगरा यूनीवर्सिटी से और होम्योपैथिक बायोकैमिक डाक्टरी आसानी से पास कर सकते हैं। नियमावली मुफ्त मँगाएँ। पता:—

इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट (रजिस्टर्ड) अलीगढ़

पर उसी रात को जब सोते ही सोते सतीश को बुखार चढ़ा और देह भी तवे सी गर्म हो गई तो सुलक्ष्मी का दिमाग चक्कर खाने लगा। माँ ने कहा था अमृत होता है और यह क्या?

दूसरे दिन वकील साहब के घर फिर खाट बिछ गई। सिविल सार्जन की मोटर दरवाजे पर सुबह-शाम आने लगी। पर वकील साहब बड़े उदासीन हैं—यह कमजोर लड़का। फिर यह देवी-देवताओं चक्र, मघा का अमृत पानी। सुलक्ष्मी की अक्ल मारी गई है; और अपनी बूढ़ी सास को भला क्या कहें वे।

"केस हाथ से बाहर हो जायगा, अगर ठीक से परहेज न किया गया तो!" सिविल सार्जन ने कहा। सुलक्ष्मी के मन में यही विचार आया कि मघा का यह फल है। उत्तर में वकील साहब ने सुलक्ष्मी की ओर ताक भर दिया। मानो प्रश्न सुलक्ष्मी समझ गई। अभी तक वह जो किवाड़ पकड़ खड़ी थी सो चलकर सतीश के सिरहाने आ गई और सिर झुकाए हुए बोली—"नहीं डाक्टर साहब, अब गलती न होगी। जैसे आप कहिएगा करूँगी; बस इस बार मेरे बेटे को अच्छा कर दीजिए।"

और डाक्टर के अलावा वकील साहब भी मुस्कुरा पड़े—"नहीं नहीं; विन्ध्याचल हो आओ न!" सुलक्ष्मी की आँखें गीली हो गईं। बाहर निकलकर डाक्टर ने धीरे से वकील साहब से बतलाया। मामूली बुखार है, चिन्ता की बात नहीं पर वहाँ पर कहना जरूरी था। होने के ढंग में वकील साहब ने हिलाया। मन में भी खुशी थी कि के विन्ध्याचल जाने का खर्च बचा!

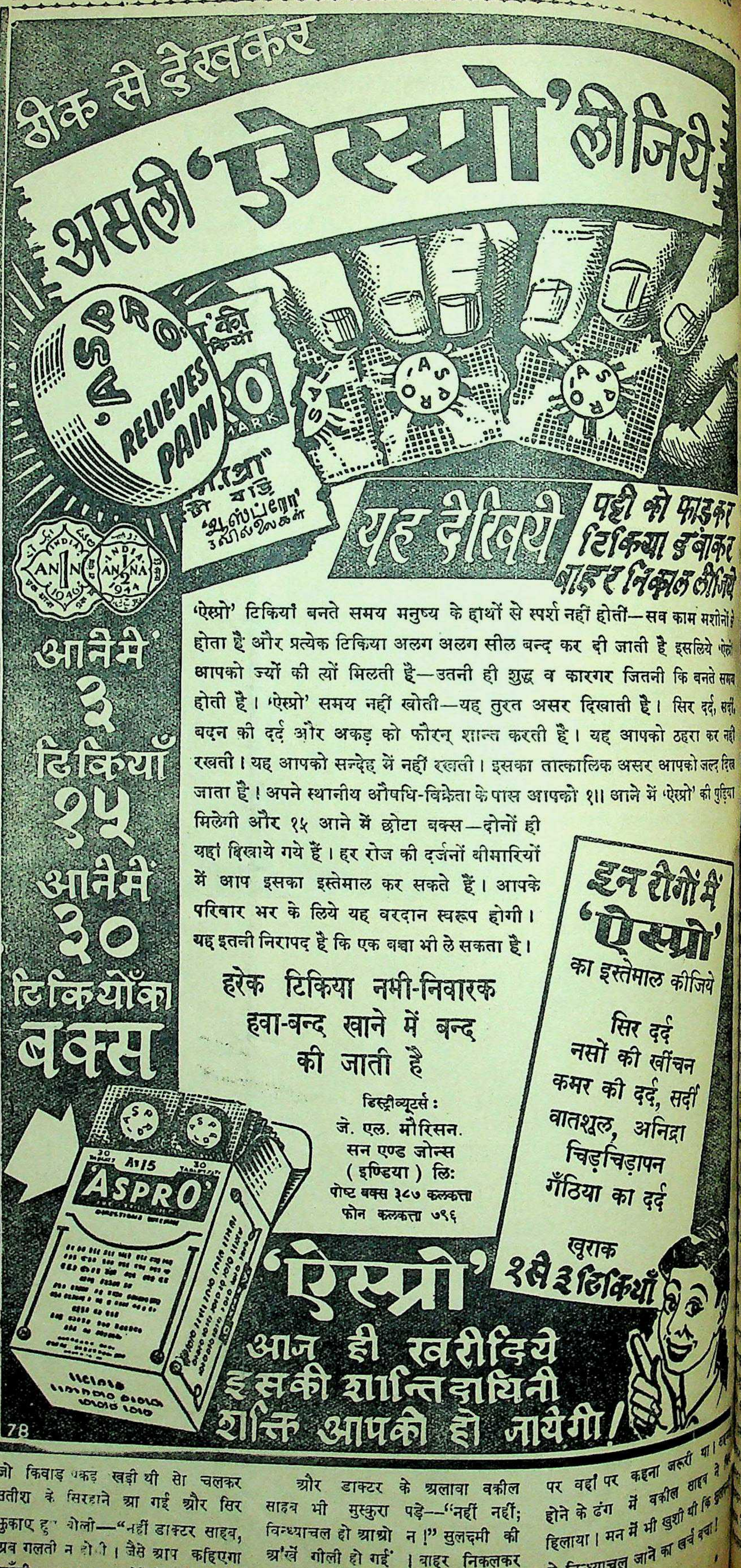
ठीक से देखकर
असली 'ऐस्प्रो' लीजिये
ASPRO
RELIEVES PAIN
ASPRO
INDIA 1 ANNA 1940
INDIA 1/2 ANNA 1944
यह देखिये
पट्टी को फाड़कर टिकिया दबाकर बाहर निकाल लीजिये
१ आनेमें २ टिकियाँ
१५ आनेमें ३० टिकियोंका बक्स
इन रोगों में 'ऐस्प्रो' का इस्तेमाल कीजिये
खूराक १ से ३ टिकियाँ
30 TABLETS A115 30 TABLETS
ASPRO
'ऐस्प्रो' आज ही खरीदिये इसकी शान्तिदायिनी शक्ति आपकी हो जायेगी!
78

'ऐस्प्रो' टिकियाँ बनते समय मनुष्य के हाथों से स्पर्श नहीं होतीं—सब काम मशीनों से होता है और प्रत्येक टिकिया अलग अलग सील बन्द कर दी जाती है इसलिये 'ऐस्प्रो' आपको ज्यों की त्यों मिलती है—उतनी ही शुद्ध व कारगर जितनी कि बनते समय होती है। 'ऐस्प्रो' समय नहीं खोती—यह तुरत असर दिखाती है। सिर दर्द, सर्दी, बदन की दर्द और अकड़ को फौरन् शान्त करती है। यह आपको ठहरा कर नहीं रखती। यह आपको सन्देह में नहीं रखती। इसका तात्कालिक असर आपको जल्द दिख जाता है। अपने स्थानीय औषधि-विक्रेता के पास आपको १॥ आने में 'ऐस्प्रो' की पुड़िया मिलेगी और १५ आने में छोटा बक्स—दोनों ही यहाँ दिखाये गये हैं। हर रोज की दर्जनों बीमारियों में आप इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। आपके परिवार भर के लिये यह वरदान स्वरूप होगी। यह इतनी निरापद है कि एक बच्चा भी ले सकता है।

हरेक टिकिया नमी-निवारक
हवा-बन्द खाने में बन्द
की जाती है

डिस्ट्रीब्यूटर्स:
जे. एल. मौरिसन.
सन एण्ड जोन्स
(इण्डिया) लि:
पोष्ट बक्स ३८७ कलकत्ता
फोन कलकत्ता ७९६

सिर दर्द
नसों की खींचन
कमर की दर्द, सर्दी
वातशूल, अनिद्रा
चिड़चिड़ापन
गँठिया का दर्द

नवम्बर, १९४८
नये
फाड़कर
डुबोकर
कीजिये
व काम मशीनों
है इसलिये 'ऐस्प्रो'
कि बनते समय
सिर दर्द, सर्दी
ठहरा कर नहीं
आपको जल्द दिख
'ऐस्प्रो' की पुड़िया
लोगों में
स्प्रो'
कीजिये
र्द
चिन
सर्दी
निद्रा
जरूरी था।
कील साहब ने
खुशी थी कि
का खर्च बचा!

महात्मा गांधी के संबंध में कई फिल्में तैयार हुई हैं।

पूज्य बापू के जीवन की नई फ़िल्में

क्या बापू के पवित्र नाम का दुरुपयोग करके अर्थ पिशाच लाभ उठाना चाहते हैं ?

लेखिका, श्रीमती शचीरानी गुर्टू एम० ए० साहित्याचार्य

पू की मृत्यु के पश्चात् से ही कुछ विशेषज्ञ बापू के जीवन को चित्रपट ने का अथक प्रयास कर रहे हैं। हैं बापू राष्ट्र की आत्मा एवं प्राण उनके अदृष्ट चरणों में भारत ही नहीं स्त विश्व नत मस्तक है। बापू से त सभी वस्तुएँ प्रिय हैं। सभी के ब इस आशा भरी प्रतीक्षा में कि बापू की वस्तुओं का कब लाभ करें। अतः जब कभी भी जीवन की आदर्श फिल्म तैयार वह विश्व की एक अलौकिक होगी। व्यावसायिक एवं आर्थिक हे तो इसकी सफलता में किंचित् ही नहीं। इसके अलावा आत्मो- नैतिक स्तर को उठाने में भी करेगी। विदेशों में बापू के की घटनाएँ आश्चर्य से देखी आनेवाली पीढ़ियाँ इस बात का लगा सकेंगी कि भारत की आत्म- कितनी प्रबल एवं सुदृढ़ है। सत्तर उनके जीवन का सिंहावलोकन क्या कोई बता सकेगा कि किसी ने भी इतने महान् कार्य किये ने एक विशाल राष्ट्र की आत्मा करने और गौरव बढ़ाने में किया। ऐसी विषम परिस्थितियों जब कि मानवता का मानस कार और बादलों से आच्छान्न उसके मार्ग में काँटों का जाल जब मनुष्य का मन शिथिल, विस्मृत और आध्यात्मिकता थी तथा मानवता पशुता के नग्न से लज्जित थी और जब कि तामिस्रा की कालिमा में भटकता हो रहा था, तब बापू आशा की कर आए थे। उन्होंने आज की की दुनियाँ को यह दिखाने में या कि सार्वजनिक कार्य-क्षेत्र में की शक्ति मात्र से ही पाश- का आश्रय लिए बिना बड़े-बड़े निकाले जा सकते हैं और अन्याय पीड़ितों का सदैव से चली अपनी पतितोवस्था से उद्धार करने किया। आइन्स्टाइन ने सत्य ही आनेवाली पीढ़ियाँ मुश्किल से करेंगी कि कभी कोई रक्तमांस क्ति भी इस धरती पर चलता था।"

की फ़िल्म, बापू के जीवन की का प्रदर्शन जनता के हृदय में और शक्ति का संचार करेगा। ही नहीं, वरन् संसार के सभी बापू का जीवन-चरित्र नवीन और नवीन शक्ति का प्रतीक होगा सब होते हुये भी सर्वाधिक प्रश्न यही है कि क्या निकट ही बापू की आदर्श-फ़िल्म तैयार ? जैसा कि अन्य स्थल पर प्रधान जवाहरलाल नेहरू ने कहा है बापू के इतने समीप हैं कि उनके ऐतिहासिक महत्त्व का ठीक ठीक नहीं लगा सकते। बापू की जीवन- संकलित सामग्री भी अभी बहुत है। अतः इतनी शीघ्रता में बापू की र करना अत्यन्त अस्वाभाविक एवं भ्रम उत्पन्न करनेवाली होगी। भारत की असंख्य जनता ने बापू के दर्शन किए हैं, उनकी वाणी सुनी है बहुतों ने तो उनसे बात चीत की है और उनके समीप भी रहे हैं। ऐसी स्थिति में निपुण से निपुण अभिनेता भी अभिनय में सफल नहीं हो सकता और लोगों में गांधी जी होने का विश्वास उत्पन्न नहीं कर सकता।

इसके अतिरिक्त फ़िल्म-व्यवसाय के गम्भीर वेत्ता इस बात पर भी जोर देते हैं कि बापू की फ़िल्म-योजना तैयार करनेवाले प्रोड्यूसर को न केवल असीमित सांकेतिक साधनों एवं कला की पूर्ण जानकारी ही अपेक्षित है वरन् उसको बापू के महान् जीवन और विशाल व्यक्तित्व का भी पूरा ज्ञान और ठोस अध्ययन होना चाहिए। एक प्रसिद्ध डायरेक्टर की सम्मति है कि एक शताब्दी बाद बापू की फ़िल्म तैयार करने की बात उठानी चाहिये। देश के प्रमुख डायरेक्टर, लेखक और कलाकार भारत-सरकार द्वारा इस कार्य के लिए निर्धारित किए जाने चाहिए जिससे कि वे संयुक्त प्रयास और वर्षों की खोज एवं अन्वेषण से इस कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न कर सकें।

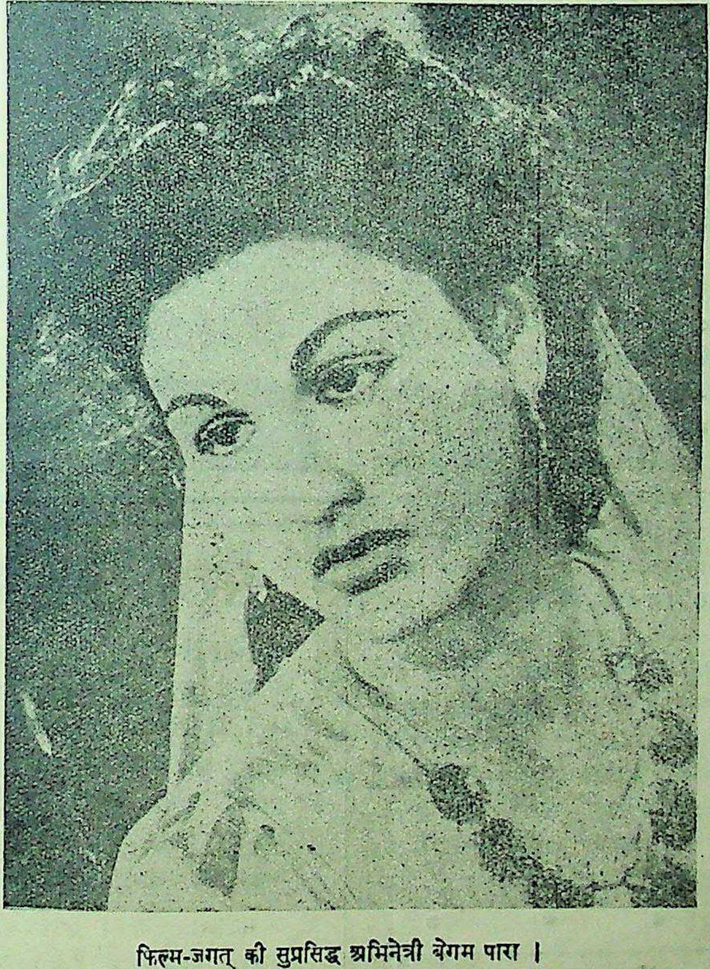

फ़िल्म-जगत् की सुप्रसिद्ध अभिनेत्री बेगम पारा।

बापू के महान् जीवन और विशाल व्यक्तित्व का सफल अभिनय करना सरल कार्य नहीं है, क्योंकि वे देश भी जो सांकेतिक साधनों और फ़िल्म-व्यवसाय में भारत से बढ़े हुए हैं ऐसी फ़िल्मों को तैयार करने में सफल नहीं हो सके। रूस में "लेनिन का चित्रपट तैयार करने का प्रयास किया गया था, किन्तु केवल मुख्य घटनाओं के प्रदर्शन के अतिरिक्त और कुछ न हो सका। रूस और चीन में लगभग दस वर्षों से डाक्टर सॉनयत सेन की फ़िल्म पर बाद-विवाद हो रहा है, किन्तु अभी तक भी कोई निर्णय न हो सका रूजवेल्ट की आश्चर्यमयी जीवन-कथा भी चित्रपट पर अभी तक नहीं आ सकी।

भारत की एक प्रमुख फ़िल्म-कंपनी ने बाल गंगाधर तिलक की फ़िल्म बनाने की घोषणा की थी। तीन वर्ष तक खूब खोज की और घोर प्रयत्न किया गया किन्तु अभी तक फ़िल्म नहीं बन सकी। निकट भविष्य में भी इस फिल्म के बनने की संभावना दृष्टिगोचर नहीं होती।

सबसे बड़ी कठिनाई जो इन फ़िल्मों को तैयार करने में होती है वह है "विषय" को सच्ची कसौटी पर कसना, पुनः इतने लम्बे और घटन पूर्ण जीवन को तीन घंटे की अवधि में बाँधना और भी कठिन कार्य है। क्या छोड़ा जाय और क्या ग्रहण किया जाय? किस प्रकार जीवन की वास्तविक घटनाओं को अभिनय और प्रदर्शन के योग्य बनाया जाय और कितनी मात्रा में तथा किस प्रकार उन्हें जनता के समक्ष रक्खा जाए? यदि इन समस्याओं को सुलझा भी लिया जाए तो व्यक्तित्व की महत्ता, प्रभाव, गौरव, महिमा आदि का दिग्दर्शन कराना तो सबसे अधिक कठिन कार्य है।

बापू की फ़िल्म तैयार करने में ऐसी अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। बापू तपस्या का धधकता हुआ अंगारा थे। उनके जीवन की घटनाओं का प्रदर्शन सहज नहीं। किसी भी महा पुरुष की अन्तः प्रेरणा का ऊहापोह करना खेल नहीं है—वह बन्धन में सीमित नहीं, वह संकुचित नहीं, असीम है और जगत् के किसी भी मापदण्ड से उसे मापा नहीं जा सकता। बापू भी अनेक टेढ़ी मेढ़ी लकीरों से बने थे और साधारण आदमी तो उनके सम्पूर्ण रूप को समझ भी नहीं सकता।

अभी हाल में ही 'पटेल इण्डिया लिमिटेड, ने गांधी जी की एक फ़िल्म का निर्माण किया है। इसमें पोर बन्दर में गांधी जी के जन्म से लेकर उनके जीवन की प्रमुख घटनायें वर्णित हैं—जैसे सन् १९१३ से १९४७ तक के भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की मुख्य बातें, १९१८ में गांधी जी का प्रथम सत्याग्रह डांडी यात्रा नामक कनून भंग, खिलाफत आन्दोलन, कैबिनट मिशन, १५ अगस्त और ३० जनवरी को महात्मा गांधी के महाप्रयाण की घटनाएँ आदि। यद्यपि यह फ़िल्म एक महा पुरुष के जीवन से सम्बन्धित है, तथापि बापू पर जो एक महान् कलात्मक चलचित्र बनना चाहिए उस आवश्यकता की इस फ़िल्म से पूर्ति नहीं होती। भारत-सरकार को ऐसे व्यक्तियों के कार्य पर, जो कि बापू के पवित्र नाम का दुरुपयोग करके व्यावसायिक एवं आर्थिक लाभ का ही विचार करते हैं, प्रतिबन्ध लगा देना चाहिये और सच्चे साधकों एवं कर्मनिष्ठों को सहायता और सहयोग प्रदान करके इस दिशा में अग्रसर होना चाहिए।

स्वास्थ्य और व्यायाम

लाल मिरच क्या है ?

अनेक रोगों में लाभदायक

लेखक, श्री रामेश वेदी आयुर्वेदालङ्कार,
हिमालय हर्बल इंस्टिट्यूट, गुरुकुल
कांगड़ी, हरिद्वार

१७ जून १९४७ के ट्रिब्यून में युनाइटेड प्रेस द्वारा वितरित पेशावर की एक खबर छपी थी कि एक कबाइली ने हाल में ही अपनी बीबी को इसलिए कत्ल कर दिया कि उसने व्यञ्जन में उसकी (कातिल पठान) पसन्द से अधिक लाल मिरचें डाल दी थीं। ट्रिब्यून ने इस घटना को 'गृहिणियाँ सावधान' शीर्षक के नीचे दिया है।

व्यञ्जनों में अधिक लालमिरच डालने से घरों में मामूली झगड़े होने की बातें तो पाठकों ने अपने पास-पड़ोस में अनेक बार सुनी होंगी, परन्तु उनका परिणाम इतना भयङ्कर कभी नहीं देखा होगा। सीमाप्रांत के इस पठान की घटना ने तो जैसे वास्तव में गृहिणियों को सावधान कर दिया है।

पेट के रोगों में उपयोगी

सारे संसार में लाल मिरच मसालों में बरती जाती है। बहुत तेज होने से इसे बहुत कम मात्रा में डालना होता है। थोड़ी मात्राओं में यह आमाशयिक रस को उत्तेजित करती है परन्तु अधिक मात्रा में खा लेने पर आमाशय की श्लैष्मिक झिल्लियों में शोथ पैदा कर देती है। चिकित्सा में लाल मिरच बहुधा क्षुधा उत्तेजक और दीपक के रूप में बरती जाती है। दूसरी दवाओं के साथ मिलाकर यह अजीर्ण, अफारा और हैजे में दी जाती है। लाल मिरच आधी रत्ती, रेवन्द चीनी ढाई रत्ती और सोंठ ढाई रत्ती ऐसी एक मात्रा दिन में दो बार भोजन को पचाने के लिए दी जाती है। लाल मिरच, सोंठ और रेवन्द चीनी को घोट कर मूँग के बराबर गोलियाँ बना ली जाती हैं। ये गोलियाँ बहुत अच्छी पाचक होती हैं और आमाशय की निर्बलता के कारण पैदा हुए अजीर्ण में उपयोग करने से बड़ा लाभ होता है। अजीर्ण और क्षुधानाश में लाल मिरच के चूर्ण को मुसब्बर के साथ मिलाकर देना उपयोगी होता है। लालमिरच आधी रत्ती और मुसब्बर आधी रत्ती की शहद के साथ गोलियाँ बना लें। डाक्टर वेअरिंग इसे कब्ज और अजीर्ण में देते हैं।

लाल मिरच के मद्यासव (टिंकचर कैप्सिसक) को एलोपैथिक में दूसरी बलदायक और कड़वी दवाओं के साथ मिला कर भूख बढ़ाने और आमाशयिक रस को उत्तेजित करने के लिए बरता जाता है। बूढ़ों के अफारे में, जब आमाशय निर्बल हो जाता है, भोजनों में लाल मिरच का प्रयोग आरम्भ कर देने से लाभ नजर आता है। लाल मिरच, भूनी हुई हींग और कपूर प्रत्येक आधी रत्ती की एक मात्रा बहुत जोर के दस्तों में दी जाती है।

गले के रोग

श्लैष्मिक आवरण (म्यूकस मेम्ब्रेन) पर लाल मिरच का प्रबल कार्य होता है। कण्ठ व्रण और गला बैठ जाने में गरारे के रूप में इसका प्रयोग किया जाता है। तीन पाव उबलते पानी में दस रत्ती लाल मिरच और एक तोला नमक मिलाकर दो-चार मिनट पड़ा रहने दें। छानकर गला बैठने में और वाचिक तन्त्रियों (वोकल कॉर्डस) के ढीला हो जाने में इससे गरारे करने चाहिए।

गुरदे के रोग

गुरदों का कार्य खराब होने से पेशाब ठीक तरह न आता हो तो यह उपयोगी औषध होती है। गुरदों की पुरानी शोथ के लिए यह सर्वोत्तम औषधियों में से एक है। इसे स्वल्प परिमाण में देने का ध्यान रखना चाहिये। बड़ी मात्राओं में देने से गुरदे में क्षोभ और शोथ पैदा कर देती है। जिससे पेशाब रुककर कष्ट से आने लगता है।

मदात्यय

पुराने मदात्यय (क्रानिक एल्काहलिज्म) के रोगियों के लिए यह सर्वोत्तम औषधियों में से एक है।

छाला गलने के लिए

त्वचा पर लगाने से पहले यह उसे लाल कर देती है और फिर छाला डाल देती है। ताजी या सूखी मिरचों को राई के साथ घोटकर बनाये कल्क को इस प्रयोजन के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

गठिया

आमवात (रुहुमेटिज्म) और कटिशूल में आक्रान्त मांसपेशियों पर इसका लेप किया जाता है। लाल मिरच के तैलील रेजिन (ओलियो रेजिन) को इथर में घोल कर शोषक रुई पर छिड़ककर आमवात (गठिया) जोड़ों पर लगाते हैं।

लाल मिरच से एक प्रकार का मरहम बनाया जाता है जिसमें पिसी हुई लाल मिरच पच्चीस भाग, मोम दस भाग, पैराफीन पचहत्तर भाग और सुअर की चरबी दस भाग डाली जाती है।

इस प्रकार लाल मिरचों को अनेक रोगों की दवाओं में विविध रूपों से भारतीय तथा विदेशी चिकित्सक बरत रहे हैं। इस बात का सदा ध्यान रखना चाहिए कि इसे अत्यल्प परिमाण में ही लेने से यह लाभ करेगी, अधिक मात्रा में लेने से यह अत्यन्त हानिकारक पदार्थ बन जाती है।

* * *

सफेद बाल काला !

खिजाब से नहीं हमारे आयुर्वेदिक "केश संजीवनी" (सुगन्धित) तैल से बालों का पकना रुककर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। यह तैल दिमागी ताकत और आँखों की रोशनी को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो वे दूना मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। मूल्य २, बाल अधिक पक गया हो तो ४) का तैल मँगावें। पता—

श्री प्रयागराम ६४ काजीडांगा लेन
पो० शिवपुर (हवड़ा)

२२॥) को रिस्टवाच मुफ्त

पूजा के उपलक्ष में—सिर्फ १५ दिनों के लिये। स्वीटजरलैंड की बनी गारंटी

नं० ११२ रेक्टेंगुलर शेप

५ जुएल क्रोम केस ३४) रोल्ड गोल्ड ४०)
७ „ क्रोम केस ४४) रोल्ड गोल्ड ५५)
१५ „ क्रोम केस ५८) रोल्ड गोल्ड ७२)

नं० १२१ टोनो व कर्व शे

५ जुएल क्रोम केस ३७) रोल्ड गोल
७ „ क्रोम केस ४६) रोल्ड गोल
१५ „ क्रोम केस ६०) रोल्ड गोल

४ जुएल नं० १२३ फ्लाट शेप क्रोम केस २८)
७ जुएल क्रोम केस ३५) रोल्ड गोल्ड ४८)
१५ „ क्रोम केस ३७) रोल्ड गोल्ड ६०)

नं० १२४ (१३) साइज
क्रोम केस १८॥) रेडीयम
सेंटरसेकंडवाली २२॥) रेडीयम

एलार्म टाइमपीस १६) सुपीरीयर २०) बेस्ट २५) पोस्टेज अतिरिक्त।

कोई भी तीन घड़ी एक साथ लेनेवाले को एक घड़ी २२॥) रु० वाली मुफ्त मि

एच० डेभिड० कम्पनी पो० ब० नं० ११४२४ कलकत्ता

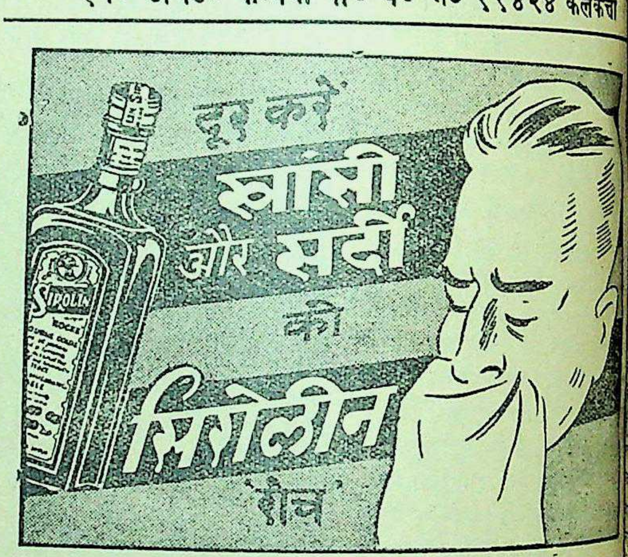

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निबलता, वी का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" न पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५।≈), डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

T. B.
टी० बी०

"तपेदिक" रोग के हताश रोगियो—

जबरी (jabri) का नाम नोट कर लो, यही इस दुष्ट रोग से रोगी को बचानेवाली शक्तिशाली औषधि है। एक बार परीक्षा करके देख लो, परीक्षा के लिए ही नमूना रखा गया है, जिसमें तसल्ली हो सके। मूल्य नं० १ (स्पेशल) पूरा दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन २०) रु०। 'जबरी' नं० २ पूरा २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु० महसूल आदि अलग है। आज ही देकर रोगी की जान बचावें। तार का पता "jabri" Jagadhri 'जगाधरी' (E.P.)

पता :—रायसाहब के० एल० शर्मा, रईस (D)

सम्पादक के नाम चिट्ठी

इतिहास के विद्वान् और वेद

में अपने प्रथम लेख में वेदों को समान-
ता का परिचय दे चुका हूँ। और
लेख में पूर्वाचित ऐतिहासिक
ों का युक्ति को सारहीनता प्रकट
चुका हूँ। अब इस लेख में विद्वानों
ता हूँ कि ऋग्वेद में समुद्र का
यह कहाँ तक सत्य है? इसको
के सामने रख रहा हूँ। आज-
प्रधान इतिहास के विद्वान् विश्व-
यों में अपने गगनभेदी स्वर से
के विद्यार्थियों को
बताते हुए बड़े गर्व के साथ
में सागर का वर्णन नहीं है" ऐसा
करते हुए शोभित हो रहे हैं।
आधार पर इस सिद्धान्त का
प्रचार हो रहा है कि हिन्दी के
द्वारा यह सिद्धान्त छोटे छोटे बच्चों
में सुदृढ़ किया जा रहा है।
देवनागरी के अक्षरों से परिचय
समुद्र शब्द को ऋग्वेद में पढ़कर
है कि समुद्र शब्द ऋग्वेद में बहुत
में लिखा है तो उसका समुद्र
"सिन्धु नदी है" या समुद्र नाम
में एक तालाब था ऐसा कहकर
समाधान किया जाता है।

मेरा नम्र निवेदन है कि यदि
जाये तो ऋग्वेद के अनेक स्थानों
शब्द देवनागरी जाननेवाला
भी देख सकता है। उसमें से
हाँ समुद्र शब्द का अर्थ अन्तरिक्ष
ता है। और सर्वत्र समुद्र शब्द
सागर ही होता है। जैसा कि
बालक से वृद्ध तक हर समय
में समझते हैं।

संस्कृत वाङ्मय में सिन्धु शब्द का
समुद्र और एक विशेष नद है जो
सिन्धु शब्द से बोधित होता
स्थानों में सिन्धु शब्द से केवल
का ज्ञान होता है। और सिन्धु
भी। परन्तु समुद्र शब्द से
मात्र में कहीं भी सिन्धु नदी
किया जाता है। मैं अब ऋग्वेद
का वर्णन जो प्रासंगिक रूप
है उसमें से कुछ आपके सम्मुख
कर रहा हूँ। ऋ० १।१९।७ वायु
में वायु द्वारा मेघों का सचालन
में लहरों के पैदा करने का
ऋ० १।११।१ में इन्द्र की
इन्द्र की विशेषण समुद्र व्यचसम्
समुद्र की भांति व्याप्त किया
नदी और पंजाब का समुद्र
सर, संसार में व्याप्त है।
।२५।७ वरुण की स्तुति में समुद्र
वरुण समुद्र जल में चलता
की गति के. जानता है कि कौन
इस समय समुद्र में कहाँ पर है।
दशा में है। ऋ० १।४४।१२
की स्तुति में जिस प्रकार प्रकृष्ट
सिन्धु अर्थात् समुद्र के
शोभा होती है उसी प्रकार
शोभा होता है। ऋ० १।३२।२
वज्र द्वारा मेघों को विदीर्ण
विदीर्ण मेघों से बरसे
जिस प्रकार कि गायें अपने
के पास जाती हैं, उसी प्रकार
समुद्र में जाते हैं। ऋग्वेद के
संसार के वृष्टि के जलों का
का वर्णन है जो कि स्वाभा-
वर्षा का जल अन्त में किसी
समुद्र में ही जाता है न कि
नदी या पंजाबी गड्ढे में।
इन्द्र की स्तुति में बनिये
करने की यात्रा में जिस प्रकार समुद्र में नाव-द्वारा यात्रा करते हैं उसी प्रकार यजमान लोग भी स्तुतियों द्वारा इन्द्र की स्तुति करते हैं। ऋ० १।४८।३ उषा देवी अर्थात् प्रातःकाल की अधिष्ठात्री देवता, प्रातःकाल रथों को जाने के लिये प्रेरणा करती है जैसे कि धन-कामना करनेवाले पुरुष समुद्र में नाव सजाकर भेजते हैं। ऋ० ६।६२।६ में भुज्यु के रक्षण का वर्णन है। ऋ० १।११६।३।४।५ में अश्विनी-कुमारों की स्तुति में तुग्र नामक राजा ने अपने पुत्र भुज्यु को समुद्र द्वारा अपने शत्रुओं को जीतने को भेजा। इस वृत्तान्त का वर्णन है। उसमें समुद्र में भुज्यु के नावों के नष्ट हो जाने पर भुज्यु ने अश्विनीकुमारों का स्मरण किया और अश्विनीकुमारों ने सेना-सहित भुज्यु की रक्षा की और अपनी सौ नावों पर जो कि पृथ्वी पर चलती थीं और अन्तरिक्ष में चलती थीं पानी में भी चलती थीं। जिनमें सैकड़ों खेनेवाले डांड लगे थे और छः छः घोड़े जुते थे। पर भी लगे थे। अ० १।१८२।५ उनसे तीन दिन में सेना सहित भुज्यु को जल-रहित प्रदेश में पहुँचा दिया। यहाँ समुद्र का नाम उदमेघ आया है। आप लोग ध्यान दें कि इस प्रकार के नावों द्वारा भुज्यु को अश्विनीकुमार तीन दिन में कितनी दूर पहुँचा सके होंगे। इसमें समुद्र के वर्णन में अनारम्भणी शब्द दिया है जिसका अर्थ भू-प्रदेश रहित होता है। क्या सूखी भूमि सिन्धु नदी से इतनी दूर हो सकती है कि जिसको पाने के लिये साधारण नाव भी इतनी देर लगावे। ऋ० १।९५।३८ इस मंत्र में अग्नि के तीन जन्म-स्थान बताये हैं। उनमें एक अन्तरिक्ष में वैद्युत अग्नि-रूप में। दूसरा सूर्य-रूप में तीसरा समुद्र में बड़वानल रूप में। क्या बड़वानल सिन्धु नदी या पंजाबी गर्त में हो सकता है। ऋ० २।२५।३ में समुद्र में ऊर्व का वर्णन है। ऊर्व बड़वानल का नाम है जो कि समुद्र में रहता है। और सर्वदा समुद्र के जल से पुष्ट होता है। बड़वानल का होना सिन्धु नदी या पंजाबी गर्त में सम्भव नहीं। ऋ० ३।४५।३ में समुद्र में बड़वा-नल का वर्णन है। ऋ० ३।२२।२ अग्नि की स्तुति में समुद्र में और्व नामक अग्नि में आपका ही तेज है ऐसा लिखा है। ऋ० ३।३।१९ इन्द्र की स्तुति में ऊर्व शब्द से समुद्र की अग्नि का वर्णन है। हमारी अभिलाषायें समुद्र के बड़वा-नल के समान बढ़ रही हैं। ऋ० ८।१०२।४ इसमें समुद्र में बसनेवाले अग्नि का वर्णन है। ऋ० ४।५८।१ में समुद्र में बड़वानल का वर्णन है। ऋ० ६।५।१३ में समुद्रैः लिखा है। समुद्रों से रक्षा की प्रार्थना है। सिन्धु नदी या पंजाबी गर्त एक होने के कारण बहुवचन से नहीं बोला जा सकता। कम से कम तीन में बहुवचन होता है। इससे चारों समुद्रों का ग्रहण होता है। ऋ० ९।८०।१ में समुद्रासः यह आया है। समुद्र जिस प्रकार पृथ्वी को व्याप्त करते हैं। ऋ० ४।२६।७ इन्द्र की स्तुति में इन्द्र का समुद्र-सम्बन्धी जलों को आकाश से वर्षा करने का वर्णन है। समुद्र-सम्बन्धी जल ही आकाश से मानसून द्वारा वर्षा करते हैं। इससे स्पष्ट समद्र का वर्णन है। क्या सिन्धु नदी का जल या पंजाबी गर्त का जल ही संसार में जल-वृष्टि करता है। ऋ० १०।४७।२ इन्द्र की स्तुतियों में इन्द्र के यश से चारों समुद्रों का व्याप्त होना लिखा है। अ० ९।३४।६ में चतुरः समुद्रान आया है। यह चारों समुद्र पृथ्वी के चतुर्दिश के समुद्रों को बताते हैं। क्या पंजाबी गर्त या सिन्धु नदी समुद्र शब्द से व्यवहृत हो सकती है। ऋ० १०।८९।१ में इन्द्र के यश को समुद्रों से बड़ा होना बताया गया है। इसमें सिन्धुभ्यः यह बहुवचन दिया है। क्या बहुवचन से सिन्धु नदी का ग्रहण हो सकता है। क्योंकि वे प्रत्येक एक ही थे। सिन्धु नदी कोई बहुत बड़ी वस्तु नहीं थी। जिससे यश का बड़ा होना कहते हुए स्तुत्य की शोभा हो। ऋ० २०।९८।५ इस मंत्र में देवताओं की स्तुति में अन्तरिक्षरूपी ऊपरी समुद्र से दिव्य जल वर्षाकर पृथ्वी के समुद्र में जल आने की प्रार्थना है। ऋ० १०।१०४।८ इस मंत्र में इन्द्र से सात दिव्य नदियों से सिन्धु समुद्र को बढ़ाने की प्रार्थना है। ऋ० १०।१३६।५ इसमें पूर्व समुद्र और पश्चिम समुद्र का वर्णन है। क्या पूर्व समुद्र सिन्धु नदी या पंजाबी गर्त हो सकता है या पश्चिम समुद्र सिन्धु नदी हो सकती है। ऋ० १०।१३७।२ में दो हवाओं का वर्णन है। जो पूर्व समुद्र तक और पश्चिम समुद्र तक जाती हैं। ऋ० ८।३।१० में इन्द्र की स्तुति में इन्द्र ने असीम बल से समुद्रों को पूरे भर देनेवाले जलों को पैदा किया। ऋ० ८।१८।५ में समुद्र के बढ़ने का वर्णन है। समुद्र का बढ़ना चन्द्रोदय से होता है। इससे सायण ने चन्द्रमा को देखकर समुद्र का बढ़ना अर्थ किया है। ऋ० २।२०।२४ में सिन्धौ समुद्रेषु दोनों शब्द दिये हैं। यह सिन्धु को समुद्र से भिन्न कह रहा है।

ऋ० ७।९६।७ में सरस्वती नदी का समुद्र में गिरने का वर्णन है। श्री जिमर साहब ने समुद्र का अर्थ सागर किया है। और स्थानों पर सिन्ध नदी की धारा जो पांच नदियों से मिलकर बनी है किया है। श्री मैक्समूलर साहब ने ऋ० में समुद्र का वर्णन माना है और श्री लासन साहब ने ऋग्वेद में समुद्र का वर्णन किया है। तथा दोनों साहबों ने सागर अर्थ सर्वत्र माना है। तथा श्री मेकडानल साहब व श्री कीथ साहब ने वैदिक इंडेक्स में समुद्र शब्द को माना है। और उसका अर्थ सागर किया है। इत्यादि कुछ प्रमाण देता हुआ विस्तार के भय से सभी प्रमाणों को आपके सामने इस समय उपस्थित नहीं कर रहा हूँ। अगले लेख में ऋग्वेद में पंजाब बाहर का भूगोल उपस्थित करूँगा।

—गिरीशचन्द्र अवस्थी
लखनऊ, विश्वविद्यालय

* * *

राजस्थान महिला-सम्मेलन

राजपूताना प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के महिला-विभाग की ओर से यहाँ पर कार्यकर्त्री और स्वयंसेविका शिक्षण शिविर एक मास से चल रहा है। जिसकी समाप्ति पर दीक्षान्त समारोह और राजपूताने की महिलाओं का सम्मेलन ता० २७ और २८ अक्टूबर को करने का निश्चय हुआ है। इस अवसर पर श्रद्धेय विनोबा भावे, जयनारायण जी व्यास, हरिभाऊ जी उपाध्याय, श्रीमती रामेश्वरी देवी जी नेहरू, रतनदेवी जी शास्त्री, भागीरथीदेवी जी उपाध्याय, राधादेवी जी गोयनका के अलावा राज-पूताने के कोने कोने से प्रतिनिधि बहनों के आने की खबरें पहुँची हैं।

यह विभाग राजपूताना प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के तत्वावधान में कार्य करता है। राजपूताने में महिलाएँ बहुत पिछड़ी मानी जाती हैं। इसका मूल कारण यह है कि यह प्रान्त अन्य प्रान्तों की अपेक्षा प्रायः सभी क्षेत्रों में पिछड़ा हुआ है। इसको सामने रखते हुए राजपूताना कांग्रेस कमेटी समाज के इस आधे अंग को नहीं भूली और प्रत्येक दिशा में महिलाओं को उठाने के लिये इसके द्वारा प्रयत्न किया जाने लगा। इसका उद्देश्य प्रान्त में कांग्रेस की ओर से महिला संगठन को बनाना तथा उनको शाखाओं के रूप में मान्यता देना। महिलाओं को अपने नागरिक व राजनैतिक अधिकारों तथा कर्त्तव्यों का भान कराना। सामाजिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों को उठाकर महिलाओं को प्रगतिशील तत्व की ओर ले जाना। महिलाओं की सर्वाङ्गीण उन्नति के लिए विविध प्रवृत्तियों को उठाना है। जिसकी विभिन्न प्रवृत्तियां हैं:— (१) श्री कस्तूरबा ट्रेनिंग विद्यालय चौथी कक्षा तक की योग्यतावाली महि-लाओं को तीन वर्ष की ट्रेनिंग देकर शिक्षा-विशारदों तथा ग्राम-सेविका के रूप में तैयार करना। (२) प्रौढ़ पाठशाला विभाग: इसके अन्तर्गत तीसरी कक्षा तक की शिक्षण दिया जाता है। इस समय १२ पाठशालाएँ विभिन्न मोहल्लों में चलती हैं। कक्षा, ६ मास में पूरी कराई जाती है। (३) छात्रा-लय में कस्तूरबा ट्रेनिंग विद्यालय की छात्राएँ रहती हैं तथा दूसरी शिक्षा संस्थाओं में शिक्षा लेनेवाली छात्रायें भी प्रवेश पा सकती हैं। (४) मिडिल स्कूल के अन्तर्गत उन महिलाओं को प्रवेश दिया जाता है जो मोहल्लों की पाठशालाओं के बाद अपना शिक्षण चालू रखना चाहती हैं। इस स्कूल में सिलाई, संगीत, बुनाई, कताई आदि का विशेष प्रबन्ध है। बाहरी महिलाएँ भी विशेष प्रबन्ध में भाग लेती हैं। (५) रात्रि विद्यालय में प्रयाग महिला विद्यापीठ की सरस्वती परीक्षा तक का नियमित अध्ययन कराया जाता है और साथ ही सर जे० जे० स्कूल आफ आर्ट बम्बई की एलिमेंट्री और इन्टरमिजियेट ग्रेड ड्राइंग परीक्षाओं के शिक्षण का प्रबन्ध है। (६) विधवा सहायता विभाग: के द्वारा निराश्रित महिलाओं को यथाशक्य अर्थ तथा अन्य प्रकार से सहायता की जाती है। (७) गश्ती पुस्तकालय के द्वारा महिलाओं में पढ़ने की रुचि बढ़ाने के लिये चार आने वार्षिक शुल्क पर घर बैठे पुस्तकें पहुँचाई जाती हैं। (८) पुस्तकालय व वाचनालय विभाग स्त्रियों और पुरुषों के लिये अलग अलग समय से खुलता है। लगभग

धोने के लिये
५०१ साबुन
दी टाटा आयल मिल्स कं० लिमिटेड

८००० पुस्तकें हैं तथा १३० के लगभग पत्र-पत्रादि आते हैं। (९) महिला सेवादल स्वयंसेविकाओं में निर्भीकता पैदा करने तथा सेवा की भावना बनाने के लिये यह दल प्रयत्न करता है। (१०) दम्पति - सम्मेलन - पारवारिक जीवन का स्तर ऊँचा उठे व उसके सम्बन्धी समस्याओं पर विचार करने के लिये कुछ प्रगतिशील जोड़ों का यह एक संगठन है। (११) इसके अतिरिक्त व्याख्यानमाला, औषध-वितरण, साक्षरता-आन्दोलन, कुरूढ़ि निवारण ट्रेनिंग शिविर और सभा-सम्मेलन के आयोजन भी मण्डल करता है। (१२) बाल-मंदिर महिलाओं के साथ आनेवाले बच्चों के लिये मांटेसरी पद्धति से शिक्षण का प्रबन्ध करता है।

इस संस्था में लगभग ५०,६० के वैतनिक भाई-बहन काम करते हैं। सम्मेलन में इस वर्ष प्रवृतियों को बढ़ाते हुए निश्चित रूप में ७५ हजार रुपया खर्च होगा। १० हजार रुपया सरकारी सहायता से प्राप्त हुआ है। शेष खर्च दानदाताओं की सहायता पर चलाया जाता है। ६००-७०० महिलाएँ विभिन्न प्रवृत्तियों से दैनिक लाभ उठाती हैं।

भविष्य में उठाई जानेवाली प्रवृतियाँ :—

गोशाला, जाग्रत महिला पत्र, महिला नार्मल स्कूल, प्रसूतिगृह, शिशु-रक्षण केन्द्र व मंडल की परीक्षाएँ भी सम्मेलन की सहायता से प्रारम्भ की जायेंगी। परंतु अन्य आवश्यकतायें भी हैं जिनमें भवन-निर्माण के लिए सहायता। किन्हीं निशुल्क महिलाओं की छात्रवृत्तियां। मासिक पत्र के लिये ६ हजार की सहायता। प्रसूतिगृह की इमारत के लिये १० हजार। गोशाला के लिये १० हजार। शिशु-रक्षण के केन्द्र के लिये ६ हजार। चालू खर्च के लिये यथाशक्ति। भवन-निर्माण में एक कमरे का भी खर्च स्वीकार किया जाता है। राजपूताने की महिलाओं के लिए मण्डल प्रौढ़ शिक्षण का एक प्रयोग है तथा महिलाओं में चेतना लाने का इसने प्रयत्न किया है।

—कमलाकुमारी श्रोत्रिय

—सुशीलाकुमारी
अग्रवाल, बी० ए०

टिहरी और प्रजामंडल

टिहरी की विधान सभा में २४ सीटें प्रजामण्डल के तथा शेष ७ सीटें स्वतन्त्र तथा लोकपरिषद् को प्राप्त हुई हैं। आशा है कि अब विधान-सभा के निकटतम अधिवेशन में प्रजा-मण्डल अपनी पूर्व स्वीकृति (विलीनीकरण) नीति का अब भी समर्थन करेगा। टिहरी राज्य प्रजा-मण्डल विलीनीकरण समिति के प्रधान ने अपने एक वक्तव्य में टिहरी की जनता से अनुरोध किया है कि "प्रजा-मण्डल अब शीघ्र ही कांग्रेस में परिणत होने जा रहा है। अब उसे इस संगठन में हाथ बँटाते हुए स्वार्थी, प्रतिक्रियावादी, तथा अवसरवादियों को कदापि प्रोत्साहन न देना चाहिए और सच्चे परखे हुए निःस्वार्थ कांग्रेसी देश-भक्तों का ही ध्यान रखना चाहिए और कांग्रेस के संगठन को मजबूत बनाना चाहिए। क्योंकि टिहरी की सभी दलबन्दियों का अन्त कांग्रेस के ही अनुशासन में आ जाने से हो सकता है और तब ही टिहरी का विकास हो सकता है।" आगे चलकर आपने प्रजामण्डल से भी अनुरोध किया है कि "वह अपनी प्रतिष्ठा को यदि कायम रखना चाहता है तो उसे जल्दी से जल्दी कांग्रेस में परिणत होकर उसकी नीति का अवलम्बन करना चाहिए।"

—मुरलीधर शास्त्री

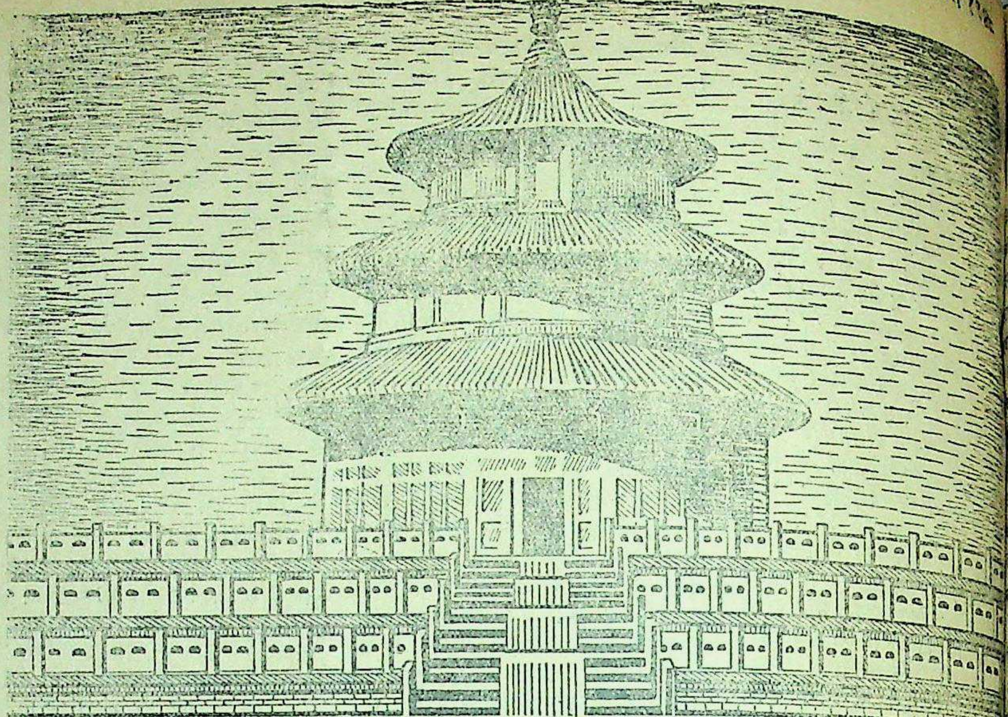

राष्ट्रीय सम्पत्ति (३) चीन

७वीं, ८वीं और ९वीं शताब्दियों में चीन सम्पत्ति और वैभव के उच्चतम शिखर पर था। उस समय चीन एक प्रभावशाली और संगठित देश था। इस देश के निवासी सुखी थे और उन्होंने कला और संस्कृति के उत्थान में भरसक सहयोग दिया था। तत्व ज्ञान, धर्म और साहित्य में यह देश उच्च कोटि को प्राप्त था। काग़ज़ और लकड़ी के ब्लॉक से छपाई का देश की उन्नति में आवश्यक भाग था। चाय का पहली बार यहाँ आविष्कार हुआ था, रेशम बहुतायत से पाया जाता था और शिल्पकला तथा उद्योग-धन्धों ने बहुत उन्नति की थी।

आज एक सौभाग्यशाली हिन्द का निर्माण किया जा रहा है। किसी भी राष्ट्र के निर्माण के लिये धन की आवश्यकता होती है। यदि आप घरेलू कम-ख़र्ची और मित-व्ययिता द्वारा बचत करें और इस बचत को बुद्धिमत्ता पूर्वक सरकारी सिक्योरिटियों में लगाएँ तो आप ऐसी आवश्यक सम्पत्ति स्थापित करने में सहयोग देंगे। याद रखिये, राष्ट्रीय सम्पत्ति का संकलन देशवासियों की बुद्धिमत्ता पूर्वक लगाई हुई बचत पर ही निर्भर है। ऐसा करने से आप अपनी भी सहायता करेंगे : बुद्धिमत्ता पूर्वक लगाई हुई बचत पर आपको अधिक ब्याज प्राप्त होगा और आप की यह पूँजी आप के बच्चों की पढ़ाई के लिये, और आप की तथा आप के कुटुम्ब की वृद्धावस्था को सुखद बनाने में सहायक होगी।

अपनी बचत को बुद्धिमत्ता पूर्वक लगा कर सुरक्षित बनाइए

नैशनल सेविंग्ज़ सर्टीफ़िकेट्स ख़रीदिए। ये ५, ७, और १२ वर्ष की विभिन्न अवधियों में प्राप्त किये जा सकते हैं और अवधि के समाप्त होने पर इन पर क्रमशः ३%, ३-१/८% और ४-१/६% ब्याज प्राप्त होता है।

अन्य सरकारी सिक्योरिटियों, डाकख़ानों और सेविंग्ज़ बैंक के खातों, बीमा कम्पनियों और कोऑपरेटिव संस्थाओं की मद में रुपया लगाइए।

भविष्य के लिए आज बचाइए

जो कुछ बचाइए बुद्धिपूर्वक लगाइए

हिन्द सरकार के अर्थ विभाग, नई देहली, द्वारा प्रकाशित। AC.41

श्वेत कुष्ट की अद्भुत दवा

प्रिय सज्जनो ! औरों की भाँति मैं अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहता। यदि इसके ३ दिन लेप से सफेदी के दाग जड़ से आराम न हों तो मूल्य वापस। जो चाहें –)॥ का टिकट भेजकर शर्तें लिखा लें। मूल्य २।) रु०

१८ प्रकार के गलित कुष्ट के निराश रोगी अपनी पूरी-पूरी हालत लिखकर दवा मँगा लें और आराम होकर लाभ उठावें, वी० पी० छुड़ाते समय हमारा पता अवश्य देख लें।

विष्णु आयुर्वेदभवन नं० १२
पोस्ट वारसलीगंज, (गया)

मुफ़्त

युवको ! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीवन फीका हो चुका हो तो भारत भर में सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त रोग विशेषज्ञ

कविराज ब्रह्मस्वरूप बी० ए०

(D.A.) फतेहपुरी देहली से सलाह मशविरा मुफ्त करके अपना जीवन सुधार लें।

जीवन की नई शृङ्खला

हिस्टेरिया रोग तथा अन्य मानसिक विकार जीवन को नीरस व भार बनानेवाले महाभयंकर रोग हैं। पूर्व इसके कि ये राजरोग दुःसाध्य अवस्था को प्राप्त हों 'ब्रेन्टन' का सेवन कर शीघ्र ही स्वास्थ्य लाभ करिये।

आज ही लिखें :—

मू० ४।।।=) प्र० शीशी डाकखर्च अलग।
अन्य जानकारी मुफ्त।

जय भारत लैबोरेट्रीज (D.D.)
ज्वालापुर (हरद्वार)

संवाददाताओं के पत्र

ऋषिकेश बाबा काली कमलीवाले ऋषिकेश की ओर से रा० ब० पं० जी ने आत्मविज्ञान भवन की योजना बनाई है। जिसमें तीस के व्यय का अनुमान है। आध्यात्मिक और योग-शिक्षा एक विशाल पुस्तकालय भी होगा श्री बद्रीनाथ तथा श्री केदारनाथ के बनाए जाएंगे। गंगोत्री, जमनोत्री दृश्यों का भी निर्माण होगा। योगी योजना की तैयारी के लिए स्टाफ आ गया है और के बाहर हरिद्वार की ओर राम-आदि का काम प्रारम्भ हो गया योजना को कार्य में परिणत करने सर्वप्रथम श्री राजा युद्ध शमशेर राणा नेपाल ने छियासठ हजार दान किया है।

—संवाददाता

* *

प्रयाग (डाक से) जानकार क्षेत्रों से हुआ है कि युक्तप्रांतीय कांग्रेस प्रजामण्डल टिहरी को कांग्रेस में करने के लिए सब फाइलों के लखनऊ २६ अक्टूबर को बुलाया विलीनीकरण-समिति की ओर से गई है कि इस अवसर पर समिति न की जाय, अपितु—उसे प्रजा-की अवैधानिकता सिद्ध करने का अवसर दिया जाय। प्रजामण्डल आज लखनऊ जा रहा है। प्रजामण्डल विलीनीकरण नेता श्री प्रेमलाल वैद्य तथा श्री आदि भी शीघ्र ही इसी लखनऊ जानेवाले हैं।

हुआ है कि टिहरी के ऐडमि० श्री ज्योतिप्रसाद को भारतीय ओर से पेन्शन दी गई है। आशा के स्थान पर नया ऐडमिनिस्ट्रे-की कृपा करेगा।

—संवाददाता

* *

—श्री रघुपति राघव राजा महासम्मेलन जो कि हरिद्वार में नवम्बर तक होगा उसमें सम्मि-महानुभावों के पत्र निरन्तर इस अवसर पर संगीत सम्मेलन सूरत गुजरात के संगीत-श्री ओंकारनाथ जी ठाकुर ने स्वी-है और आचार्य श्री विनोबा ने भी सम्मिलित होना अङ्गीकार है।

—लक्ष्मीनारायण

* *

—लोकप्रिय शिक्षा-मंत्री श्री की अपील पर जगह जगह प्रचार के लिए विद्यालय खुलें एक ऐसा ही "राष्ट्रीय रात्री नगर में स्थापना हुई। राज-नेता तथा अ० भा० हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के संयुक्त जैन भावुक ने उद्-। उन्होंने संक्षिप्त भाषण में प्रौढ़ शिक्षा का महत्त्व बतलाया। विद्यालय का संचालन कुमार - साहित्य - परिषद् करेगी।

—संवाददाता

* * *

बीकानेर—जिला कांग्रेस कमेटी के चुनाव के सिलसिले को लेकर जब चुनाव बहिष्कार किया और कांग्रेस मंत्री सरकार बाहर आ गये तब से जागीरी इलाकों में जागीरदारों ने खुलकर खेलना आरम्भ कर दिया है। अब उनके अत्याचार मार-पीट और झूठे मुकदमे तक ही सीमित न रहकर गाँवों को उजाड़ देने पर शायद तुल गये हैं।

गाँव बिसरासर की घटना को अभी कुछ दिन ही नहीं गुजरे हैं, जब कि वहाँ के जागीरदार के व्यवहार से गाँव को उजाड़ देने के लिये जनता को तङ्ग किया जाता है और उन पर झूठे मुकदमें चलाये जाते हैं। उन्हें गाँव छोड़कर आज खानाबदोश की जिन्दगी बितानी पड़ रही है, सारा गाँव उजाड़ पड़ा है।

रियासत में अकाल पड़ चुका है, अन्न की भीषण समस्या है दूसरी ओर जागीर-दारों के व्यवहार से किसानों का हाल बेहाल हो रहा है। रियासत में सर्वत्र अकाल पड़ा हुआ है पर रावत सर के राव अपने गाँव के किसानों से जबरदस्ती लगान व कुन्ते वसूल कर रहे हैं।

छापर के कांग्रेसी कार्यकर्ता हनुमान-प्रसाद जी को पुलिस ने थाने में बुलाकर कई चाँटे रसीद कर दिए और कहा कि तुमने आज कन्ट्रोल अफसर की पत्नी को भला-बुरा कहा है। उन्होंने कहा कि मैं इस बात से ही अपरचित हूँ पर पुलिस नहीं मानी और कहा कि चार पैसेवाले टोपियों को घमण्ड हो गया है और राजपूतों पर रोब जमाने चले हैं ध्यान रखना कांग्रेस को धूल में मिला देंगे। ध्यान रहे जमादार टा० दूधवाखारा जो महाराजा साहब का खास आदमी है उसका नजदीकी रिश्ते-दार है।

गंगानगर तहसील शाखा के प्रधान मन्त्री ने सूचना दी है कि गंगानगर म्युनि-सिपैलिटी का प्रधान और उप-प्रधान दोनों ही कांग्रेस संगठन की ओर से सर्वसम्मति से चुने गए हैं। रियासत भर में म्युनिसिपैल्टियाँ हैं परन्तु अभी तक सरकार ही प्रधानों और उप-प्रधानों को नामजद करती थी पर इस वर्ष रियासत में म्युनिसिपैल्टियों के चुनाव में जनता को अपना प्रधान चुनने का अधिकार प्राप्त हुआ है उसमें गंगानगर ने अपने प्रधान और उप-प्रधान दोनों ही कांग्रेस संगठन की ओर से चुने गये हैं। रियासत भर में अकाल पड़ा हुआ है। जगह जगह से इस बारे में समाचार प्राप्त हो रहे हैं कि अनाज के अभाव से जनता बड़ी परेशान है और सरकार की ओर से अभी तक इसका कोई उचित प्रबंध नहीं किया है। अभी अभी सुजानगढ़ तहसील कांग्रेस के प्रधान मन्त्री का तार प्राप्त हुआ है जिसमें उन्होंने लिखा है कि जनता अनाज के अभाव में भूखों मर रही है ठीक इसी प्रकार के समाचार चूरु लूणकरण सर आदि जगहों से प्राप्त हुए हैं।

गंगानगर तहसील कांग्रेस कमेटी ने सूचना दी है कि अभी फरीदगढ़ और अनूपगढ़ की सीमा पर पाकिस्तान के हमले हुए कुछ दिन भी नहीं हुए हैं कि ता० २१-१०-४८ को फिर तहसील करण पुर के पास मलकानी में कुछ पाकिस्तानी लोग भावलपुर की रियासत से घुस आए और गाँव के दो सिक्खों को कत्ल कर उनका धन माल उठा ले गए। इस घटना-स्थल पर सेना पहुँच गई जिसने आवश्यक कार्यवाही की।

—प्रचार-मन्त्री
जिला कांग्रेस कमेटी, बीकानेर

* * *

बापू के ८० वें जन्मदिन के पुण्य पर्व पर प्रौढ़ शिक्षा-समिति ने प्रतिज्ञा की है कि हम अपनी बहनों और भाइयों को अवश्य पढ़ायेंगे। हम ऐसे किसी बालक या बालका से शादी नहीं करेंगे जो कम से कम साक्षर नहीं हो।

१९४९ की विजयादशमी तक इस एक वर्ष के समय में जो पारिवारिक सदस्य (माता, बहन या पत्नी) पढ़ना आरम्भ नहीं करेंगे उनके हाथ का हम भोजन नहीं करेंगे। हम अशिक्षित बहनों और भाइयों की शादी में सम्मिलित ही नहीं होंगे। हम स्वयं अपनी शिक्षा को बढ़ाते रहेंगे और साक्षर स्त्री-पुरुषों को अधिकाधिक अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित करते रहेंगे। हम अपने व्यवहार में सर्वदा पूर्णतः अहिंसक बने रहेंगे तथा हरएक के प्रति उचित सम्मान और श्रद्धा की भावना बनाए रखेंगे। हम बिना किसी धर्म, जाति और साम्प्रदायिक भेद-भाव के मनुष्यमात्र की सच्चाई और ईमानदारी के साथ सेवा करने की भावना से ही यह प्रण करते हैं जिससे कि हम अपनी, अपने समाज की और अपने राष्ट्र की दिन-दूनी और रात चौगुनी उन्नति कर सकें।

—संवाददाता

* * *

उदयपुर—महाशास्ता श्री गवर्नर-जनरल ता० २२ की प्रातः भारत-सरकार द्वारा संचालित निराश्रित शरणार्थी महिलाश्रम का निरीक्षण करने पधारे। आश्रम की संयोजिका श्रीमती कमलाकुमारी श्रोत्रिय ने श्रीमती रामेश्वरी देवी नेहरू के सहयोग का जिक्र किया और आश्रम की रिपोर्ट रखते हुए गवर्नर-जनरल का स्वागत किया। स्वागत का उत्तर देते हुए श्री महामान्य राजाजी ने कहा कि मुझे यहाँ आते हुए अधिक प्रसन्नता है कि ऐसे आश्रम से महिलाएं स्वावलम्बी तथा अध्यापिकाएँ तैयार होकर निकलेंगी। आज देश को अध्यापकों की अत्यन्त आव-श्यकता है और प्रत्येक अध्यापक को हिन्दुस्तानी सीखकर उसके माध्यम द्वारा शिक्षा देनी होगी। वे लोग मुझसे भी अधिक सौभाग्यशाली हैं जो हिन्दुस्तानी जानते हैं क्योंकि मैं हिन्दुस्तानी नहीं जानता। मेरे जैसे को तो विश्राम काल से इँगलैंड जाकर वहाँ के बच्चों को अँगरेजी पढ़ाना चाहिये। एक बात मैं कह देना चाहता हूँ सबसे और खासकर शरणार्थियों से कि वे बात कम करें और काम ज्यादा। मेरी इस सलाह को मानेंगे तो मैं विश्वास दिलाता हूँ कि इसका अच्छा ही परिणाम होगा।

मुझे यह कहते हुए विशेष आनन्द हो रहा है कि राजधानियों का शरणार्थियों के प्रति विशेष स्नेह और उदारता है।

शरणार्थी महिलाश्रम का निरीक्षण करने के बाद उत्साहप्रद वातावरण में गवर्नर-जनरल की विदाई हुई।

अन्तिम तारीख समाप्त होते होते आज २५ महिलाओं की स्वागत-समिति भी बनी है। श्री नारायण देवी वर्मा स्वागताध्यक्षा, श्री विजयालक्ष्मी और इन्दुबाला सुखाडिया उप-स्वागताध्यक्षा, श्री कमलाकुमारी श्रोत्रिय स्वागत मंत्रिणी, श्री कुमारी राम बी० ए० बी० टी० और सुशीला अग्रवाल बी० ए० सहायक मंत्रिणी, सोहन देवी अर्थ - मंत्रिणी, प्रचार-मंत्रिणी श्री फूलकुँवर अग्रवाल, श्री रामप्यारी देवी स्वयंसेविका, मोहन देवी और सुमन देवी भोजन - विभाग कान्ता भटनागर निवास, चन्द्रकला पंडाल, इत्यादि।

गोमती देवी भार्गव गत २६ अक्टूबर को और श्री विनोबा भावे और श्री जानकी देवीजी बजाज गत २७ अक्टूबर को पधारे थे। राजपूताने के लगभग २७ नगरों और कस्बों से प्रतिनिधि बहिनों ने आने की सूचना कार्यालय को मिली थी। देश के कई नेताओं, प्रमुख महिलाओं और महाराणियों के शुभ कामना के सन्देश प्राप्त हुए हैं। इधर कार्यालय के वीरांगना दैनिक भी सम्मेलन समाचार के लिये निकल रहा है।

—प्रचार-मंत्री

* * *

नक्कालों से सावधान !

श्वेत कुष्ट की अद्भुत दवा

प्रिय सज्जनों! औरों की भाँति मैं अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहता। यदि इसके तीन दिन लेप से सफेदी के दाग जड़ से आराम न हों तो मूल्य वापस। जो चाहें -)॥ का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें। मूल्य २।) रु०

१८ प्रकार के गलित कुष्ट के निराश रोगी अपनी पूरी-पूरी हालत लिखकर दवा मँगा लें और आराम होकर लाभ उठावें, वी० पी० छुड़ाते समय हमारा पता अवश्य देख लें।

सफेद बाल काला !

खिजाब से नहीं हमारे आयुर्वेदिक "केश संजीवनी" (सुगन्धित) तैल से बालों का पकना रुककर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। यह तैल दिमागी ताकत और आँखों की रोशनी को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो वे दूना मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। मूल्य २), बाल अधिक पक गया हो तो ४) का तैल मँगावें। पता—

वैद्यराज अखिल किशोरराम
नं० १ पो० सरिया, जिला हजारीबाग।

दतिया इस वर्ष पूर्ण उत्साह व धूमधाम से जिला राजनैतिक सम्मेलन सेवड़ा जिला दतिया में श्री सनंकनंदन मेला के अवसर पर दिनांक १६ व १७ ११ ४८ तदनुसार कार्तिक सुदी पूर्णिमा व अगहन बदी पड़ीवा मंगलवार व बुधवार को होगा। सम्मेलन में विंध्य-प्रदेश सरकार के अभी तक किए गए कार्यों व जिला दतिया की आम जनता की माँगे कष्ट व सुधार के सम्बन्ध में पूर्ण विचार होगा। सम्मेलन में सबसे महत्वपूर्ण विषय जिला दतिया को मध्यभारत (मालवा प्रांत) में मिलने के लिये जिले के सब प्रतिनिधियों के द्वारा अन्तिम निर्णय होगा। सम्मेलन में देश के और विशेषकर यू० पी०, सी० पी० वे मध्य भारत के प्रमुख नेताओं को बुलाने के लिये निमंत्रण दिये गए हैं और आशा है वे सब अवश्य पधारने की कृपा करेंगे। दतिया जी० आई० पी० रेलवे का स्टेशन है। दतिया से सेवड़ा को मोटर चलती है। मेला में व्यापारियों को सुविधा व अन्य मनोरंजन के कार्यक्रम होंगे।

२८ अक्टूबर सन् १९४८ मिती कातिक बदी ११ गुरुवार को स्थान इन्दरगढ़ (दतिया) में एक बड़ी किसान-सभा का अयोजन किया गया है। किसानों की मुख्य मुख्य माँगों पर जैसे सेवड़ा की सड़क का बनवाया जाना तथा उद्योग स्कूल कष्टम आदि पर भी विचार किया गया।

—संवाददाता

* * *

हैदराबाद (दक्षिण) आध्यात्मिक विश्वशान्ति संघ के संचालक श्री धर्म्मध्रुव गौर महाराज इन दिनों हैदराबाद पधारे हुए हैं। आप यहाँ के नेताओं से मिलकर शान्ति-स्थापन का कार्यक्रम बना रहे हैं। यद्यपि यहाँ फौजी शासन ने स्थिति काबू में कर ली है फिर भी जनता में पारस्परिक विश्वास, प्रेम व निर्भयता का अभाव है। रजाकारों व उनके सहायक आफिसरों द्वारा हिन्दू जनता की अपरिमित हानि हुई है वातावरण शुद्ध करने के लिए प्रयत्न जारी हैं।

—संवाददाता

ख़िज़ाब अब लगाना न होगा।

सफेद बाल काला

नक्कालों से सावधान !

इस तेल से बाल का पकना रुककर, पका बाल जड़ से काला पैदा होता है, सैकड़ों प्रशंसापत्रों से इसकी सत्यता प्रमाणित है। यह तेल सिर के दर्द व सर में चक्कर आना आदि को आराम कर आँख की रोशनी को बढ़ाता है। मूल्य छोटी शीशी ३||) व बड़ी शीशी ५)।

श्वेत कुष्ठ की वनौषधि

महात्मा प्रद॰ इस सफेदी की दवा से तीन दिन में पूरा फायदा। यदि सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों, विज्ञापनदाताओं की दवा से निराश हो चुके हों, तो इसे लगाकर आरोग्य होवें। मूल्य ४) २१ दिन का।

पता :—श्रीकृष्ण आयुर्वेद भवन
(द २), बड़ा बाजार, हजारीबाग

इधर उधर की

लन्दन की गलियों में उन्हीं लोगों की मोटरें आ-जा सकती हैं जो वहाँ रहते हैं। बाजारों में खड़े बिजली के खम्भों पर "खेल-कूद गलियाँ" लिखी तख्तियाँ लगा दी गई हैं। बच्चे गली-कूँचों के मालिक हैं। बेरोक-टोक, गिरने-दबने के भय से मुक्त बच्चे वहाँ खेला करते हैं। उन्हें अपने इन क्रीड़ा-स्थानों पर बड़ा गर्व है, और वयस्क लोगों को भी अतिरिक्त स्थान मिल जाता है।

* * *

बच्चे, पौधे नित्यप्रति देखते हैं इसलिये दिलचस्पी नहीं लेते, ऐसा विषय पढ़ाने में शिक्षक ने सदा कठिनाई अनुभव की है। आजकल ब्रिटेन के विद्यालयों में प्राकृतिक इतिहास की शिक्षा फिल्मों-द्वारा दी जा रही है और बच्चे इस विषय में बहुत रुचि दिखा रहे हैं। पराग का छिड़काव और फूल-पत्ता उत्पत्ति को चित्रित करने के अतिरिक्त सारी फिल्मी कर्रवाई साथ-साथ साधारण भाषा में लिखकर समझाई जाती है। १० से १६ वर्ष की आयुवाले बच्चे भावी जीवन के लिए एक उपयोगी शिक्षा भी प्राप्त कर लेते हैं। पौधा-संबन्धी चित्र ऐसा है।

* * *

लन्दन की "ब्रिटिश इंस्टिट्यूट फार दी साएन्टिफिक ट्रीटमेंट आफ डेलिन्क्वेंसी" नामक चिकित्सालय में बच्चों को रोज खेलने और अधिकसे अधिक इच्छानुसार रौला मचाने की छूट दे दी जाती है और चिकित्सक लोग इनका अध्ययन करते रहते हैं। खेल-कूद के दौरान में उनकी भयानक आकृतियों और चेहरों के करुणाजनक भाव भय, आदि को देखने से इलाज की विधियों का पता चल जाता है। उचित इलाज के उपरांत हर एक बच्चा दोषों को समझकर अपनी आदतों को सावधानी से ठीक करता हुआ अपराध-मुक्त हो जाता है।

* * *

वर्दी पहने एक पुलिस-अफसर की ओर बच्चे बहुत जल्दी आकर्षित हो जाते हैं, विशेष रूप से उस समय जब कि वह कक्षा में पाठ पढ़ाने आता है। ब्रिटेन के अनेकों विद्यालयों में पुलिसवाले सप्ताह की १ दोपहर को सड़क पर चलने-फिरने की बातें और नियम-नमूनों की सहायता से छात्रों को समझाते हैं। बच्चे ऐसे पाठ में बहुत दिलचस्पी लेते हैं और सबक सीखने पर उन्हें सड़कों पर बचकर घूमना आ जाता है।

* * *

हाल ही में लन्दन के विक्टोरिया स्टेशन पर हुए एक समारोह के अवसर पर ११ वर्षीय फ्रेडरिक एडवर्ड्स ने महत्त्वपूर्ण भाग लिया था। छोटी कमीज, लम्बी पतलून और मखमल की टोपी पहने इस छोटे से लड़के ने चलते-फिरते पुस्तक-भंडार सहित चलनेवाली प्रथम रेलगाड़ी में सवार विक्रेता को अखबारों का पुलन्दा पकड़ाया था। उसकी वर्दी पर "स्मित बाँय" का बिल्ला लगा हुआ था। डब्ल्यू० एच० स्मित की फर्म ने १०० वर्ष पूर्व ब्रिटेन में सर्वप्रथम रेलवे पुस्तक-भंडार खोला था और फ्रेडरिक को इस बात का गर्व है कि उसका पिता और दादा, दोनों इसी फर्म में काम कर रहे हैं।

* * *

लन्दन के सेंचुरी थियेटर ने युद्ध के समय छः वर्षों तक विभिन्न स्थानों का दौरा किया। अब उसने एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाने योग्य एक समूची नाट्यशाला तैयार कर ली है जिसमें दो सौ दर्शक बैठ सकेंगे। अभिनेताओं को साथ ले जाकर अब यह चलती-फिरती नाट्यशाला ब्रिटेन के दूरस्थ गाँवों का मनोरंजन भी कर सकेगी।

* * *

लन्दन के ट्वेंटिएथ सेंचुरी थियेटर ने एक सुखांत नाटक की आयोजना की है। इसमें अभिनेताओं की बातें उनके अतिरिक्त सब सुन सकेंगे क्योंकि स्पर्स क्लब के लोग इसमें भाग लेंगे और स्पर्स क्लब लन्दन के बहरे लोगों की संस्था है जो उनके लाभार्थ निर्मित की गई है।

* * *

रायल कालेज आफ आर्ट्स, केनिंगस्टन ने मैज गार्लैन्ड नामक युवती को फैशन की प्रोफेसर का नवीन पद दिया है। इस पद पर मैज गार्लैन्ड पेरिस और न्यूयार्क के फैशन को परास्त करने का प्रयत्न करेंगी।

* * *

जवाहरलाल की कहानी

भारत वर्ष के सबसे पहले प्रधान मंत्री की जीवन कथा "जवाहरलाल की कहानी" में पढ़िये। मूल्य हिन्दी ५) रु० डाक व्यय पृथक्।

नया किताब घर, जामामस्जिद, देहली।

---

५००) इनाम

आश्चर्यजनक आविष्कार

जादू की अँगूठी

यह अँगूठी जादू और मेस्मरेजम की मदद से बनाई गई है। बस आश्चर्यजनक कार्य कर दिखाती है। जो कोई इसे धारण करेगा, हर एक कार्य में सिद्धि पायेगा, चाहे वह कितना ही कठिन और उसके बस के बाहर का भी क्यों न हो। वह आपकी संकटों तथा बीमारियों से रक्षा करेगी, अशुभ ग्रहयोग का कोई बुरा प्रभाव आप पर न पड़ेगा, यदि आप इसे हमेशा के लिए धारण करें। यह अँगूठी धारण करनेवाला व्यक्ति जब किसी को चाहेगा वह आपसे मिलने को विवश हो जायगा। इससे आप प्रेम, मुकद्दमा, नौकरी आदि में सफल होंगे और काफी धन प्राप्त करेंगे। थोड़े में यह अँगूठी आपको अपने रक्षक का काम देगी! एक बार परीक्षा कीजिये और उसके अद्भुत परिणामों को पहली ही रात में देख लीजिये।

मूल्य फी अंगूठी २) रु०
तीन अंगूठियों के लिए ५) रु०
पैकिंग और डाक खर्च अलग!

श्री शंकर भण्डार,
पो० बाक्स २४३, कानपुर।

भारतीय मार्गों के लिये अपनाइये
एच-बी-सी
बाइसिकल
हिन्दुस्तान
बाइसिकल मैनुफैक्चरिंग एण्ड
इण्डस्ट्रियल कारपोरेशन लि० पटना

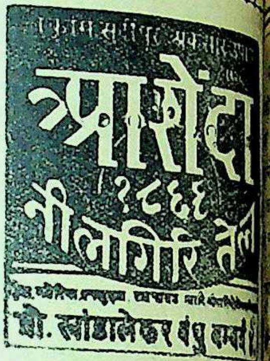

शुभ सूचना

समस्त हिन्दी-प्रेमियों, विद्या तथा कृपालु ग्राहकों को यह शुभ सू देते हुए हमें हर्ष हो रहा है कि हम लाहौरवाली ब्रांच फिर से दुर्गाचरण रोड अम्बाला कैंट (पूर्वी पञ्जाब) में लोगों की पूर्ववत् सेवा के उद्देश्य से स्था हो चुकी है।

मैनेजर
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रया

परीदेश

यह पुस्तक ख़ास कर छोटे बच्चों के लिए है। इसमें ऐसी एक भी बात न जिसको समझने के लिए माथापच्ची क पड़े। इसमें रोजमर्रा की बातें बड़े अच्छे ढंग से लिखी गई हैं। बड़े आ की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों और पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है। मूल्य

आविष्कारों की कथा

मशीनें कैसे बनीं! तरह-तरह के औजार कैसे बनें? रेल, जहाज, तार और सिनेमा वगैरह कैसे बने? नई-नई बनाकर या नये काम करके क्या आ दुनिया में प्रसिद्ध हो सकते हैं? इन बातों को जानने के लिए यह पुस्तक पढ़िए। मूल्य १)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

देशदूत में विज्ञापन देकर लाभ उठाइये।

श्रद्धांजलि !

आज हम अपने प्यारे बापू को अन्तिम—श्रद्धांजलि समर्पित कर रहे हैं, किन्तु, हम शोक से इतने अभिभूत हैं कि हमें उचित शब्द भी नहीं मिल रहे, जिनसे हम अपनी यत्किंचित् श्रद्धा भी निवेदित कर सकें। फिर भी, भारतीय-वाङ्मय के समर्थ साहित्यकारों ने, हमारी मूक भावनाओं को वाणी प्रदान की है। उन्होंने यथोचित शब्दों में, छंदों में बापूजी का अभिनन्दन किया है। देश विदेश के इन प्रतिनिधि कवियों की कविताओं द्वारा हम बापूजी को आज अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करने के लिए समुचित सामग्री पा सकते हैं। महात्मा जी का श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए—तथा बापूजी की अमर ज्योति को जागृत रखने के लिए **गांधी-अभिनन्दन-ग्रंथ** ७॥) तथा **सेवाग्राम** १०) (की सेवा स्वीकृत कीजिए)

अपराजिता

कवि 'अंचल' की मादक-मधुर कविताओं का अनूठा संग्रह। भाषा-सौष्ठव, अनुभूति की तीक्ष्णता, कल्पना की उड़ान और रस-प्रवाह की दृष्टि से ये कविताएँ हिन्दी-साहित्य में अनूठा स्थान रखती हैं। पण्डित नन्ददुलारे वाजपेयी भूमिका में लिखते हैं—"अंचल की विरह-साधना में बड़ी ही एकनिष्ठ, सजग, विह्वलताकारी तथा जीवनमय अनुभूतियों का संग्रह है। कवि के वास्तविक विद्रोह का यहीं से आरम्भ होता है। अपराजिता में अंचल की अनुभूतियाँ अपेक्षा से अधिक व्यापक और बहुमुखी हो गई हैं। वियोग के अन्तर्गत कवि की अनेकानेक अन्तर्वृत्तियों और मनोदशाओं का समारोह देखने योग्य हुआ है।".

इन कविताओं को पढ़कर आपको जीवन में एक नई प्रेरणा और नया दृष्टिकोण मिलेगा। पढ़िए और काव्य का स्वर्गीय आनन्द लूटिए। मूल्य ३) तीन रुपये।

कवि और छवि

सुप्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव प्रणीत

कवि श्री बालकृष्ण राव आधुनिक हिन्दी-जगत् के चोटी के कलाकार और सर्वश्रेष्ठ गीतिकार हैं। 'कवि और छवि' आपका नवीनतम गीतों का संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अंतर्द्वन्द्व से परिपूर्ण तो है ही, साथ ही सरस और हृदय पर मधुर प्रभाव और छाप छोड़ जानेवाला है। हृदय को तन्मय तथा गहन अनुभूति से सराबोर कर देनेवाले ऐसे गीत हिन्दी में आज लिखे ही नहीं जा रहे हैं। 'कवि और छवि' में संगृहीत सभी गीत बिलकुल नवीन हैं, पढ़ते पढ़ते हृदय उद्वेलित हो उठता है। छपाई-सफाई नयनाभिराम। सचित्र और सजिल्द प्रति का मूल्य केवल २) दो रुपये।

पूजा गीत
सोहनलाल द्विवेदी

यह कवि की नवीनतम राष्ट्रीय कविताओं का संग्रह है। प्रत्येक कविता जीवन में स्फूर्ति का संचार करती है। फेदरवेट पीले कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

कुणाल
सोहन लाल द्विवेदी

चक्रवर्ती अशोक के पुत्र कुणाल की कथा करुणापूर्ण भाषा में बड़े रोचक ढङ्ग से लिखी गई है। पढ़ते समय अशोक-कालीन भारतवर्ष का चित्र आँखों के सामने खिंच जाता है। मूल्य १।) एक रुपया चार आने। राज-संस्करण ३)

समुद्र-मन्थन की पौराणिक कथा के आधार पर रचित खण्ड-काव्य। भाषा में प्रवाह तथा ओज और पात्रों का सजीव चित्रण कवि सोहनलाल जी की खास विशेषता है। मूल्य १) रुपया।

हल्दीघाटी

इस महाकाव्य पर लेखक श्रीयुत श्यामनारायण पाण्डेय को दो हजार रुपये का देव पुरस्कार मिला है। इस पुस्तक में हल्दीघाटी के प्रसिद्ध युद्ध की पवित्र कहानी का वर्णन बड़े ही अनूठेपन से, फड़कती हुई कविता में, किया गया है। मूल्य २।॥)

मैनेजर—बुकडिपो इण्डियन प्रेस लिमिटेड इलाहाबाद।

हमारे कुछ धार्मिक ग्रन्थ

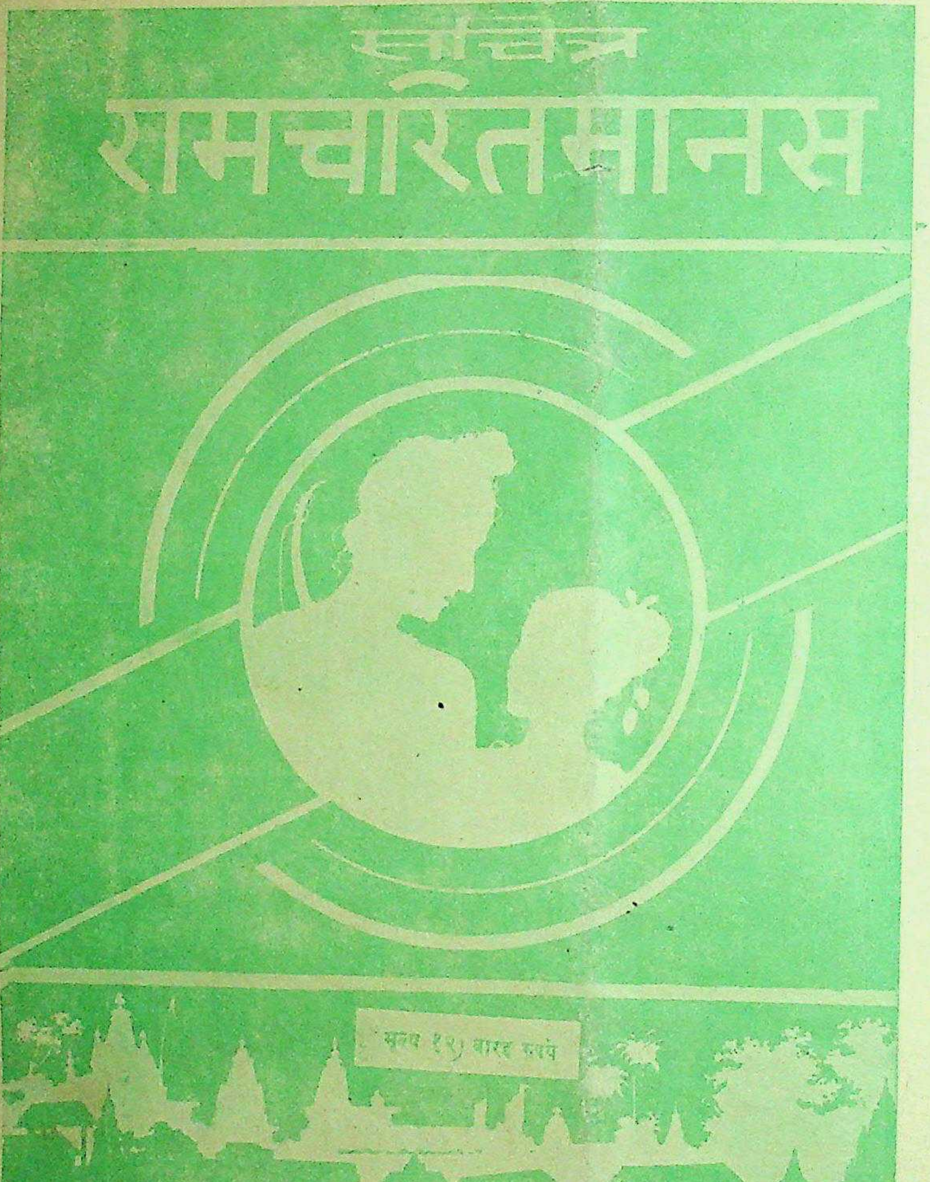

'मानस' का
किसी से छिपा नहीं
भारतवर्ष में तो
मान है ही,
देशों में भी इस
काव्य का आदर है।
प्रामाणिक संस्करण
कई वर्ष से अप्राप्य
इसके टीकाकार
श्यामसुन्दरदास हैं।
हाल में ही छपकर
हुआ है। ग्राहक शीघ्र
करें। अधिक प्रतियाँ
छापी गई हैं।

बड़े आकार के १२
पृष्ठ। रंग-बिरंगे
चित्र। सजिल्द प्रति

मूल्य १२) रुप

सचित्र हिन्दी-महाभारत

महर्षि वेदव्यास के महाभारत का अक्षरशः अनुवाद। अगणित रंगीन और सादे चित्रों के कारण महाभारत का यह संस्करण जैसे बहुत ही मनाभिराम है वैसे ही सीधी और सरल भाषा में लिखा हुआ होने के कारण स्त्री-बच्चों से लेकर बड़े-बूढ़ों तक के लिए उपयोगी है। मूल्य ८) आठ रुपये।

हिन्दी-महाभारत

आचार्य द्विवेदी जी ने इसमें महाभारत के अठारहों पर्वों की कथा बहुत ही मधुर और सरल भाषा में लिखी है। मूल्य ६) छः रुपये।

श्रीमद्भागवत

सुन्दर सरल भाषा में किया गया अविकल अनुवाद। महाभारत की तरह इसमें भी सादे और रंगीन चित्रों की भरमार है और सुबोध भाषा में लिखा हुआ होने के कारण आबाल-वृद्ध-वनिता सभी के लिए उपयोगी है। मूल्य १६) सोलह रुपये।

वाल्मीकीय रामायण
(सचित्र) दो भाग

महर्षि वाल्मीकि का रामायण हिन्दू-संस्कृति का इतिहास है। यह महाभारत से भी प्राचीन है। संसार भर में कोई भी ऐसी सभ्य भाषा नहीं है जिसमें इस ग्रन्थ का अनुवाद प्रकाशित न हुआ हो। हिन्दी में इसका बढ़िया अनुवाद नहीं था, उसी कमी को पूरा करने के लिए हमने इसका अनुवाद सरल भाषा में प्रकाशित किया है। सारी पुस्तक उपन्यास की तरह पढ़ते जाइए, समझने में कहीं जरा भी कठिनाई नहीं पड़ेगी। मूल्य ६॥) छः रुपये आठ आने प्रतिभाग।

प्राणायाम-विज्ञान और

पाश्चात्य मनीषी डाक्टर
बुरो ओटेव नामक सुप्रसिद्ध
के प्राणायाम-सम्बन्धी
वर्ष के अनुभव का वर्णन।
एक रुपया।

आध्यात्मिकी

आचार्य द्विवेदी जी ने इस
में हमारे ऋषि-मुनियों के
नये देशी और विदेशी
नास्तिक हर तरह के
का सार खींचकर
मूल्य १।-) एक

सदुपदेश-संग्रह

इसमें
के उत्तमोत्तम
संग्रह है।
जीवन को
सकते हैं। मूल्य १)

जहाँ पर हमारी ब्रांच या एजेंसी है वहाँ खरीदने पर डाकखर्च की बचत होगी।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

मूल्य ७॥)
संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

५ दिसम्बर, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 5th December, 1948

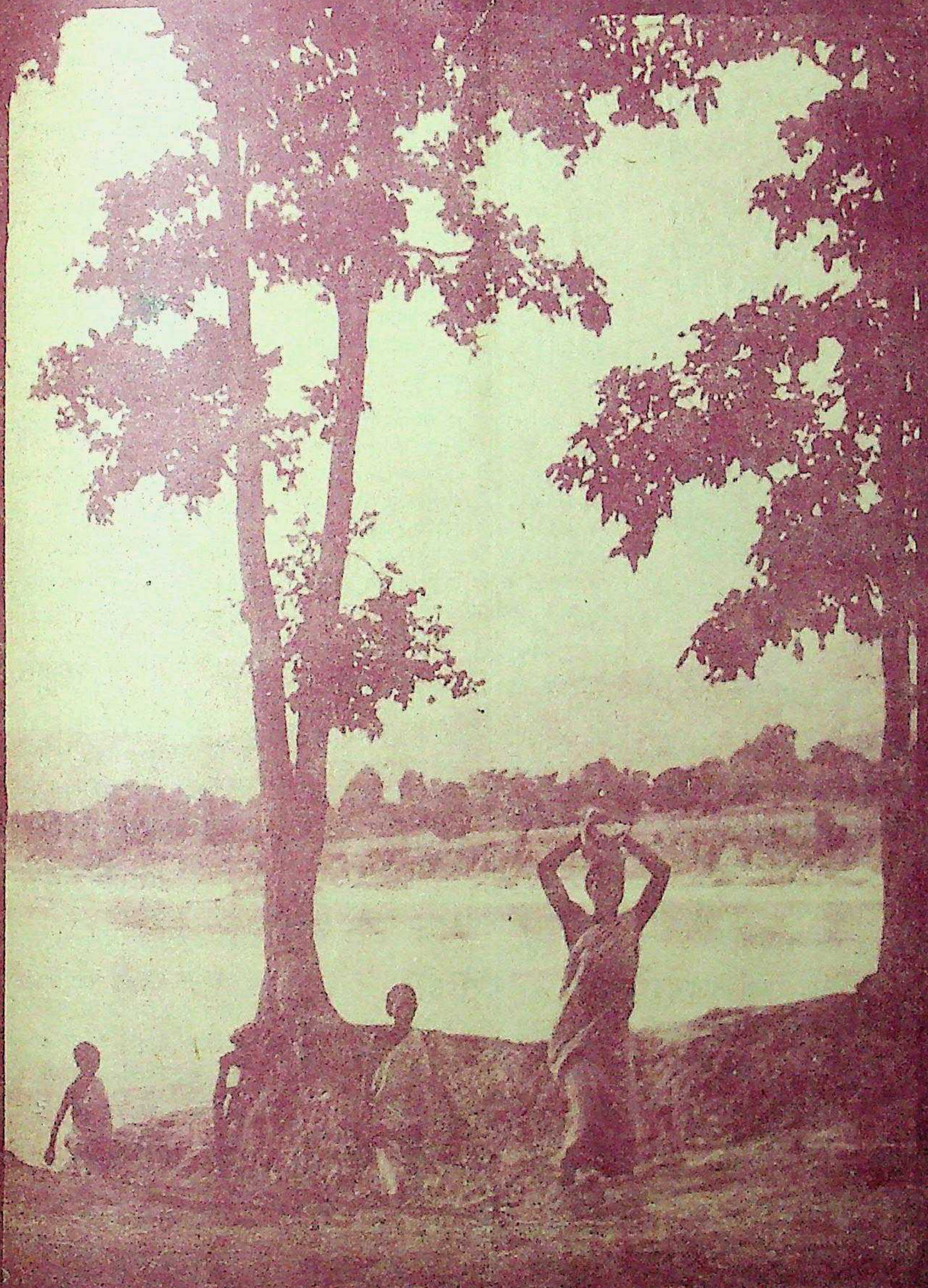

न्दी भाषाभाषी भारतीय जनता का पत्र

२ आना

घर की मधुरता
और बढ़ाइए

इन-री-हो

की बनाई हुई 'रेशमी मिठाई', 'फ्रूट ड्रांप्स' और 'क्रीमोला' टाफी हाथ में पाते ही बच्चों की किलकारी और हँसी से घर गूँजने लगता है।

बच्चों को हँसाने और खुश करने के लिए 'इन-री-हो' की बनाई मिठाइयाँ बाजार में बिलकुल बेजोड़ हैं।

क्रीमोला
टाफी
इन-री-हो
ड्राप्स

इंडस्ट्रियल
रिसर्च हाउस लिमिटेड
इलाहाबाद

मंजरी

सचित्र कलात्मक कहानी मासिक

जनवरी १९४८ से 'मंजरी' प्रतिमास अपूर्व सजधज के साथ प्रकाशित हो रही है। तिरंगा आवरण और दर्जनों चित्र रहते हैं। श्रेष्ठ कथाकारों की सरस कहानियाँ, धारावाहिक उपन्यास और कथा-साहित्य पर गंभीर आलोचनात्मक लेख पढ़ने की रुचि हो, तो आप 'मंजरी' के वार्षिक ग्राहक बन जाइए।

'मंजरी' को जब जिसने देखा, मुग्ध हो गया। विद्वान् आलोचकों और पत्र-पत्रिकाओं ने इसकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। वार्षिक मूल्य ६) छः रुपये।

तुलनात्मक भाषाशास्त्र

(भाषा-विज्ञान)

लेखक, डा॰ मंगलदेव शास्त्री एम॰ ए॰, डी॰ फिल॰

इसमें तुलनात्मक भाषाशास्त्र के सिद्धांतों का प्रतिपादन तथा संसार की भिन्न-भिन्न भाषाओं के परस्पर सम्बन्ध की सरल और सुबोध व्याख्या है। प्रोफेसर ए॰ सी॰ वुलनर, डा॰ भगवानदास, म॰ म॰ गंगानाथ झा और श्री गोपीनाथ कविराज, डा॰ लक्ष्मणस्वरूप और धीरेन्द्र वर्मा आदि मनीषियों ने और अन्य नामी साहित्यिकों तथा पत्रों ने इसकी प्रशंसा की है। पृष्ठ-संख्या पौने तीन सौ से ऊपर; अच्छा कागज, बढ़िया जिल्द; मूल्य केवल ५)।

शरद्-ग्रन्थावली

छुटकारा

एक निठल्ले और बेरोजगार भाई की सहायता उपार्जनशील भाई को किस प्रकार करनी चाहिए, यह बात इस उपन्यास से भली भांति सीखी जा सकती है। मूल्य १।-) एक रुपया पांच आने।

नव-विधान

पाश्चात्य सभ्यता के अन्धानुकरण में पड़कर अत्यन्त अशान्तिमय जीवन व्यतीत करनेवाले पति को प्राचीन पद्धति से गृहकार्य का संचालन करनेवाली गृहिणी किस प्रकार सुखी करने में समर्थ हुई, यह बात इस उपन्यास में दरसाई गई है। मूल्य ।।=) दस आने।

परिणीता

एक निर्धन परिवार की भोली-भाली नवयुवती ने एक साधन-सम्पन्न परिवार के युवक के प्रति आकर्षित होकर किस प्रकार खेल-खेल में ही उसके साथ विवाह कर लिया और दूर रहने पर भी उसे सदा हृदय से अपना पति मानती रही, यह कहानी इस उपन्यास में बहुत ही प्रभावोत्पादक ढंग से लिखी गई है। मूल्य १।-) एक रुपया पांच आने।

लेनदेन

इसमें चण्डीगढ़ की भैरवी षोडशी तथा वहां के जमींदार जीवानन्द का चरित्र बहुत ही उत्तम ढंग से चित्रित किया गया है, जिसके द्वारा सहृदय पाठकों का जहाँ मनोरंजन होगा वहीं मानव-चरित्र के सम्बन्ध की बहुत-सी ज्ञातव्य बातें भी उन्हें मालूम होंगी। मूल्य ३।-) तीन रुपये पाँच आने।

वैकुण्ठ का बिल

इस उपन्यास में जिन पात्रों की सृष्टि की गई है, उनके चरित्रों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करके मानव-सुलभ दुर्बलता से हम समुचित रूप से परिचित हो सकते हैं। मूल्य ।।≡) ग्यारह आने।

अरक्षणीया

दहेज की कुप्रथा से होनेवाले अनर्थों का जीता-जागता चित्र। मूल्य ।।=) दस आने।

बड़ी दीदी

करुण रस से पूर्ण एक सामाजिक उपन्यास। मल्य १।-) एक रुपया पांच आने।

श्रीकान्त

(प्रथम और द्वितीय भाग)—'श्रीकान्त' शरद् बाबू का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना गया है। इसमें शरद् बाबू की अमर लेखनी ने उनके कलाकार का मँजा और सधा रूप चित्रित किया है, जो अत्यन्त मनोरम है। प्रत्येक भाग का मूल्य २) दो रुपये।

पण्डितजी

इस उपन्यास में कुलीनता, उच्च शिक्षा, द्विज और द्विजेतर, गाँव की भलाई और अपनी तरक्की, नई शिक्षा और मिथ्या अभिमान आदि के सम्बन्ध में बहुत ही विशद विवेचना की गई है। मूल्य २) दो रुपये।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

वनवास

(खण्ड-काव्य)

कवि राजाराम श्रीवास्तव बी॰ एस्-सी॰, वकील इस काव्य में मर्यादापुरुषोत्तम रामचन्द्रजी के वनवास वर्णन बड़ी सुन्दर कविता में किया है। पुस्तक कवि प्रेमियों को मुग्ध कर लेती है। मूल्य ।।।=) चौदह आने।

चरित्र-गठन

मनुष्य-जीवन के साथ चरित्र का घनिष्ठ सम्बन्ध है इस पुस्तक में चरित्र-सुधार की सभी बातें बड़े अच्छे से समझाई गई हैं। इस पुस्तक को पढ़ने और उ को मानने से नवयुवकों को बहुत लाभ होगा। प्र माता-पिता अपनी सन्तान को यह पुस्तक अवश्य सजिल्द प्रति का मूल्य २) दो रुपये।

शिक्षा-समीक्षा

श्रीयुत कालिदास कपूर एम॰ ए॰, एल॰ टी॰ लि इस पुस्तक में शिक्षाशास्त्र-सम्बन्धी कितने ही आ विषयों पर विद्वत्तापूर्ण लेख हैं। शिक्षा की प्र समस्याओं के सुझाव हैं। मूल्य १) एक रुपया।

बाल विष्णुपुराण

इसमें भक्त ध्रुव और प्रह्लाद, राजा वेन, पृथु, भ और प्रियव्रत की कथा है। भरतखण्ड की पुरानी बातें सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी राजाओं की नामावली आश्रम-धर्म, नित्य-कर्म और अतिथि-सेवा का वर्णन कलियुग की महिमा भी इसमें है। मूल्य ।।) आठ आने।

अद्भुत कथा

इस पुस्तक में ऐसी विचित्र हृदयाकर्षक ११ कहानि हैं जिनको लड़के बड़े चाव से पढ़ेंगे और सुनेंगे। कहा से शिक्षा भी मिलेगी। पुस्तक सभी के काम की मूल्य १।।) एक रुपया आठ आने।

आदर्शभूमि अथवा चित्तौर

भारत के इतिहास में चित्तौर को अपूर्व गौरव है। कोई १३०० वर्ष तक उस पर एक ही वंश ने किया है। चित्तौर में कई युद्ध हुए हैं। वहाँ की वीरों ने अपनी शूरता से पवित्र कर दिया है। उ का विस्तृत वर्णन इसमें पढ़िए। २५० से ऊपर सचित्र पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

भक्त-चरितावली

इसमें सुप्रसिद्ध भक्तों की जीवन-गाथा है। अद्वै चैतन्य महाप्रभु, नित्यानन्द गोस्वामी, हरिदास, राय, रूप सनातन और जीव गोस्वामी, श्रीनिवास आचार्य, नरोत्तम दास और गोपाल प्रकाशानन्द सरस्वती आदि के सिवा श्री रामानुज स्वामी, मध्वाचार्य, गो॰ वल्लभाचार्य, सन्त तुकाराम, कबीर साहब, गुरु नानक और तुलसीदास का चरित्र भी इसमें हैं। ४०० से अ की सचित्र सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल १।-) रुपये पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

देशदूत

११, संख्या १४] [रविवार, ५ दिसम्बर, १९४८

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

कल पूर्वी बङ्गाल यानी पाकिस्तान बड़ी बेतुकी हो रही है। लगभग बल्कि पश्चिमी बङ्गाल में भाग लाख व्यक्तियों को तो बसा किन्तु शेष बारह लाख, व्यक्ति हैं और सरकार के सामने एक हो गई है। अपने राम की नहीं आता कि यह पाकिस्तान का खेला गया है वह क्या ऐसी ही लिए। सर नाजिमुद्दीन जो आज-स्तान के गवर्नर जनरल हैं वही पहले पूर्व बङ्गाल के प्रधान मंत्री नाजिमुद्दीन के गवर्नर-जनरल बङ्गाल पर यह आफत आने। पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री लियाकत अली खाँ और सर बातें तो बड़ी लम्बी-लम्बी कर रहे उनकी कोई करनी करतूत-नजर रही है। देखना है यहाँ के शर-की समस्या कैसे हल होती है?

* *

राबाद का काण्ड समाप्त हुआ। कश्मीर की बारी है। सरदार पटेल ने अपने नागपुर के में कहा था कि हैदराबाद का अब समाप्त हुआ। शीघ्र ही आपरेशन भी सफलतापूर्वक जाएगा। अपने राम को प्रसन्नता कश्मीर का आपरेशन प्रारम्भ हो पिछले कुछ हफ्तों से काश्मीर में जिस तीव्र गति से बढ़ रही दुश्मनों को खदेड़ते हुए पीछे हटाती है, उससे यह सिद्ध हो रहा है कि में दो महीने से अधिक समय होगा। साथ ही इस बात को भी चाहिए कि यह जाड़े का दिन का उत्तरी भूखण्ड इस समय पहाड़ बन गया है। पाकिस्तान हमलावरों को स्वप्न में भी यह नहीं थी कि जाड़े में यह आपरे-किया जायगा; किन्तु, डाक्टरों के अनुसार जाड़े में किया जानेवाला होता है। जब जाड़े में भारतीय की बढ़ती हुई यह हालत है तो गर्मी में उनकी क्या स्थिति होगी भली भाँति समझा जा सकता है। समस्या अब फिर संयुक्तराष्ट्र-संघ दौड़ है। लेकिन इस भागा-दौड़ी कोई परिणाम निकलनेवाला है। अब तो काश्मीर का फैसला और हिन्दुस्तान की फौजी द्वारा होगा! हमें तो ऐसा जान कि काश्मीर का फैसला हो जाने कमीशन का यह फैसला आयेगा कि काश्मीर का विभाजन हो जाना चाहिए। देखना है किसको जीत होती है?

* * *

सरदार वल्लभभाई पटेल ने भारत के उपप्रधान मंत्री प्रयाग विश्वविद्यालय के दीक्षान्त भाषण के अवसर पर जोरदार शब्दों में यह अपील की है कि लोगों को राष्ट्रीय अस्तित्व के लिए अनेक खतरों का मुकाबिला करते हुए अपनी शक्ति का संगठन करना चाहिए। आदर्श और सिद्धांत-की दृष्टि से इससे किसका मतभेद हो सकता है? किन्तु कम्युनिस्टों और सोशलिस्टों को कैसे समझाया जाय? यह दोनों दल तो यह समझते हैं कि यदि हम केंद्रीय सरकार की कुर्सी पर बैठेंगे तभी सच्चा स्वराज्य प्राप्त होगा। बँटवारा हो जाने के बाद भी मुस्लिम लीगी विचारवालों की कमी नहीं है। एक दल तो ऐसा है जो भीतर से कट्टर लीगी है, किन्तु ऊपर से गांधीवाद का चोगा पहन रक्खा हैं। अपने राम की समझ में इसलिए नहीं आता कि स्वराज्य के इन ठीकेदारों से राष्ट्र की रक्षा कैसे की जाय? आपसी भाई-बहनों के इस खतरे का मुकाबिला कैसे किया जाय? वास्तव में अँगरेज इस देश से चले गये हैं। किन्तु, अँगरेजियत और अँगरेजी विचार धारा का बोलबाला है। एक जमात तो ऐसी है जो अब भी अँगरेजी राज्य की स्थापना का स्वप्न देखती है। यही सब राष्ट्रीय अस्तित्व के खतरे हैं। आवश्यकता है केन्द्रीय सरकार के वसूल बनाने की और राष्ट्र में ऐसे वातावरण उत्पन्न करने की जो सचमुच विशुद्ध राष्ट्रीय हों, जो हिन्दुस्तान को अपनी मातृभूमि मानता हो। जो पैदा यहाँ हुए हो, वह यहीं मरने की इच्छा रखते हों। तब तो राष्ट्रीय एकता की स्थापना में सफलता आवश्य ही मिलेगी किन्तु जो खाते हैं हिन्दुस्तान का किन्तु नारा बुलन्द करते हैं ईरान फारस और अरब का। तो फिर कैसे काम चलेगा। लेकिन अपनी शक्ति का संगठन तो किया ही जाना चाहिए। किसी भी प्रकार के खतरे का सामना करते हुए यह सत्य है।

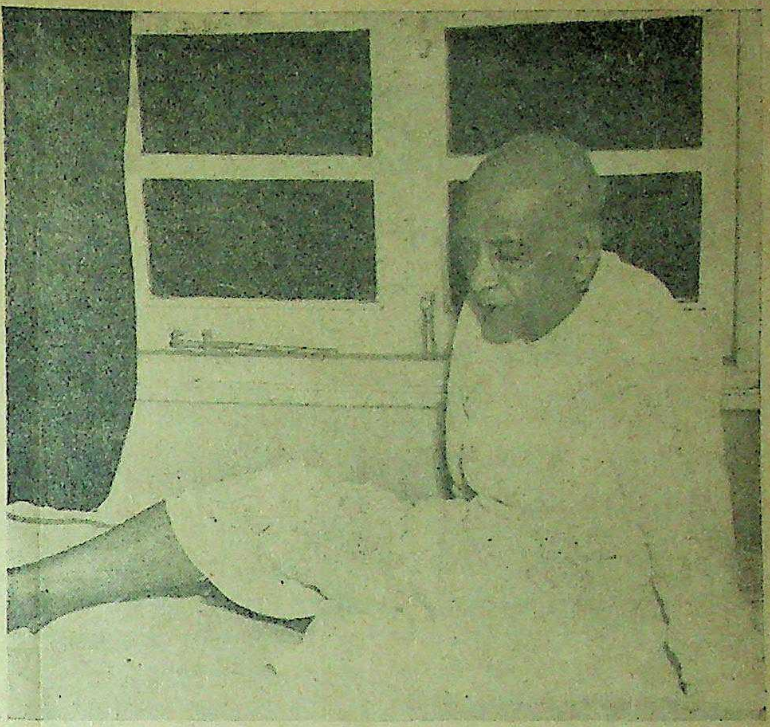

भारत के उपप्रधान मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल बंबई में अपने जन्म दिवस पर लोगों की बधाई स्वीकार कर रहे हैं।

* * *

चीन की मैडम च्यांगकाई शेक इस समय अमरीका की ओर लपकी हैं। कहावत है कि मियाँ की दौड़ मसजिद तक। आखिर मैडम च्यांगकाई शेक आफत आने पर जायँ कहाँ? अमरीका, चीन का सरपरस्त है; पैसा देनेवाला है; और उसका भरण-पोषण करनेवाला है; आज से नहीं वर्षों से, इसी के भरोसे चीन में अब तक प्रजातन्त्रवाद की रक्षा होती है। मार्शल च्यांगकाई शेक और अमरीका के बीच मैडम च्यांगकाई शेक ने दुभाषिए का काम किया है। मार्शल च्यांगकाई शेक युद्धभूमि में अनवरत रूप से लड़ते रहे हैं और मैडम च्यांगकाई शेक अमरीका और चीन के बीच आवागमन द्वारा जोड़-गाँठ लगाती रही हैं सचमुच पति-पत्नी ने राष्ट्रीय चीन की बड़ी सुरक्षा की है किन्तु, अब तो आफत सिर पर है। कम्युनिस्ट दिन-प्रतिदिन बढ़ते चले आ रहे हैं। पता नहीं किस समय नानकिंग का महल कम्युनिज्म के समुन्दर में गर्क हो जाये। अँगरेज तो पहले से ही पिटे पिटाये बैठे हैं उनकी सहायता का तो प्रश्न ही नहीं। देखना है अमरीका अपनी सहायता में कहाँ तक सफल होता है? अपने राम तो समझते हैं कि एशिया की सुरक्षा हो सकती है तो भारत के द्वारा ही। अमरीकन और अँगरेजों के द्वारा नहीं। सरदार पटेल ने अपने हाल में दिये गये भाषण में यही बात कही थी।

* * *

शीश के ऊपर तुम्हारी मौन ममता का अभय है

लेखक, प्रोफेसर 'अंचल' एम० ए०

शीश के ऊपर तुम्हारी मौन ममता का अभय है
गूँजता है कान में उस अनकहे आशीश का स्वर
जिंदगी में जो अभावों औ' दुखों का मूक सहचर
सामने साकार है पथ-सा असीमित वर तुम्हारा
है जहाँ कर्तव्य की दुर्दम प्रगति की प्राणधारा
ठोकरें लगतीं—खड़ा होता मगर गिर गिर निरंतर
एक धुन लेकर रहा निर्माण सौ सौ बार मिटकर
है यही बल—स्वप्न पर विश्वास की होती विजय है
मार्ग के अवरोध की चट्टान जल बनती पिघलकर
मार्ग के काँटे कुसुम बनते मृदुल साभार झरकर
दे मुझे वरदान अपराजेय अविनाशी बनाया
दग्ध मानस की चिता को दीप-सा जलना सिखाया
जानता हूँ किस दिशा से स्नेह का यह स्रोत आता
शक्ति की बिखरी उमंगों में विभा की गति जगाता
एक इस कैवल्य में सारी द्विधा औ द्वैत क्षम है
तुम कहीं भी हो—बँधा है सूत्र रक्षा का तुम्हारा
है मुझे लगता यही, प्रतिक्षण मुझे तुमने पुकारा
है तुम्हारी याद का मंगल-कवच कल्याण मेरा
दूर कर देता विषमता से थके मन का अँधेरा
है मुझे घेरे खड़े संघर्ष-तक्षक फन उठाये
जिंदगी में दूर तक फुफकार जिनकी भीति ढाये
है अमर उल्लास—बल के मेरु-सा दृढ यह हृदय है
शीश के ऊपर तुम्हारी मौन ममता का अभय है।

सम्पादक का पृष्ठ

काश्मीर और पाकिस्तान

काश्मीर की समस्या पहले कुछ दिनों के लिए जितनी उलझी हुई मालूम होती थी, उतनी ही अब सुलझने की ओर अग्रसर हो रही है। हैदराबाद के युद्ध-समाप्त के पश्चात् भारत-सरकार का ध्यान काश्मीर की ओर विशेष रूप से अग्रसर हुआ है। इस समय भयंकर शीत विशेषकर काश्मीर में पड़ रहा है। ऐसी परिस्थित में भी भारतीय फौजें पाकिस्तानी फौजों को पराजित करती हुई आगे बढ़ रही हैं। अठारह हजार ऊँची बर्फीली चोटियों पर भारतीय फौजें अपने युद्ध-कला प्रदर्शन में सफल हो रही हैं। यह भारतीय फौजों के लिए वास्तव में काश्मीर युद्ध की घटना बड़ी गौरवपूर्ण है। संसार में जितने भी युद्ध प्रायः अब तक पहाड़ी प्रदेशों में हुए हैं वहाँ सैनिकों ने दस हजार सात सौ फीट ऊँची बर्फीली चोटियों पर युद्ध प्रदर्शन किया है। भारतीय फौजों की जो प्रगति इस समय काश्मीर में हो रही है वास्तव में ऐतिहासिक परम्परा की दृष्टि से वह अद्भुत है। ऐसी स्थिति में पाकिस्तान तथा उसे प्रोत्साहित करनेवाले अँगरेज गवर्नरों को परेशानी में पड़ जाना अनिवार्य है। यही कारण है कि पाकिस्तान के वैदेशिक मंत्री सर जफरुल्ला ने संयुक्तराष्ट्र संघ से यह अनुरोध किया है कि वह भारतीय फौजों की प्रगति के रोकने में बीच बचाव करें। हम नहीं समझते कि इस तरह के अनुरोधों से पाकिस्तान की रक्षा कितने दिनों तक की जायगी ? संयुक्तराष्ट्र संघ अथवा सुरक्षा परिषद् पाकिस्तान की गुहार पर कहाँ कहाँ सहायता करने के लिए तत्पर होंगे ? यह निश्चित बात है कि यदि पाकिस्तान की फौजी शक्ति कमजोर है और वहाँ के नेता केवल बड़ी बड़ी बातों तथा भय के द्वारा ही भारतीय संघ को भयभीत करना चाहते हैं, तो यह असम्भव है। अब वह समय बीत गया जब कि पाकिस्तान अँगरेजों के भरोसे अथवा सहायता के द्वारा येन केन प्रकारेण सफलता प्राप्त कर लेता रहा है। विभाजन के बाद से अब तो समझौते की या पारस्परिक सद्भावना के दो ही मार्ग हैं—या तो हथियारों के बल से फैसला किया जाय या विदेशियों को पंच न मान कर पारस्परिक वार्ता अथवा मेल-मिलाप से। वास्तविकता यह है कि संसार के महान् राष्ट्र भी पाकिस्तानियों की बार बार पुकार से कुछ अस्त-व्यस्त से हो गये हैं।

भारतीय संघ ने काश्मीर के सम्बन्ध में अपनी निश्चित नीति बनाली है। पाकिस्तानियों के व्यर्थ पुकार का अब उस पर कोई प्रभाव पड़नेवाला नहीं है। जब तक पाकिस्तानी फौजों का आक्रमण काश्मीर में बन्द नहीं हो जाता पाकिस्तानी फौजें वापस नहीं बुला ली जाती, और पाकिस्तान की ओर से काश्मीर में होनेवाले युद्ध की समाप्ति नहीं कर दी जाती तब तक भारतीय संघ किसी प्रकार का भी न तो समझौता करने को तैयार है और न ऐसे अवसर के लिए वह तैयार है जब कि संयुक्त राष्ट्र संघ या विदेशी कूटनीतिज्ञ इस सम्बन्ध में बीच-बचाव करने के लिए आगे बढ़ें। उसके सामने तो सीधा सा प्रश्न यह है कि पाकिस्तान ने काश्मीर पर सब से पहले आक्रमण करना शुरू किया इस लिए उसका कर्तव्य है कि वह सबसे पहले युद्ध भी वहीं बन्द करे। भारतीय संघ की फौजें जिस प्रकार पहले प्रत्याक्रमणकारी थीं वैसे ही आज भी है। काश्मीर राज्य भारतीय संघ का एक अङ्ग है। जिस समय भारतीय सरकार ने यह निश्चय किया कि देशी राज्यों को संघ का एक अविभाज्य अंग बनाया जाय और वहाँ जिस प्रकार का निरंकुश शासन स्थापित है उसका अन्त किया जाय, उसी समय भारत की अनेक महत्वपूर्ण रियासतों ने भारत सरकार से सहयोग किया था। पाकिस्तानी फौजों ने जिस समय काश्मीर पर आक्रमण किया, उसके पूर्व ही काश्मीर भारत संघ में शामिल हो गया था। ऐसी दशा में भारत सरकार का यह कर्तव्य हो गया कि जिस प्रकार से हो वह आक्रमणकारियों से काश्मीर की रक्षा करे क्योंकि भारत सरकार और काश्मीर के बीच जो समझौता हुआ है उसमें यह स्पष्ट कहा गया है कि यदि काश्मीर की स्वतंत्रता किसी पड़ोसी या विदेशी राष्ट्रों के द्वारा भंग की जायगी तो भारत सरकार उसकी सहायता करेगी।

श्री पट्टाभि सीतारमैया

श्री पुरुषोत्तमदास टंडन

श्री प्रफुल्लचन्द्र घोष

श्री

भारत सरकार आज जो काश्मीर की सुरक्षा के लिए युद्ध कर रही है वह अपने पूर्व समझौते के अनुसार ही है। पाकिस्तान का आक्रमण तो बाद को प्रारम्भ हुआ और हो सकता है कि अब खुल्लमखुल्ला यह युद्ध हिन्दुस्तान बनाम पाकिस्तान का युद्ध घोषित किया जा सके।
है कि पिछले दिनों भारत
रियासती विभाग तथा वैदेशि
ने पेरिस स्थित अपने राजदूत
पत्र भेजकर आगाह किया
काश्मीर के सम्बन्ध में किसी
पर हस्ताक्षर अथवा वार्ता उस
न करें जब तक कि संयु
पाकिस्तान को यह आदेश न दे
काश्मीर से अपनी आक्रमणकारी
वापस बुला ले इसका स्पष्ट अर्थ
कि जब तक पाकिस्तान अपनी आ
नीति स्थगित नहीं करेगा तब
किसी भी ऐसी कार्यवाही
न देगी चाहे वह संयुक्तराष्ट्र सं
से प्रचारित किया गया हो। इ
हैं कि भारत सरकार की इस
नीति औचित्यपूर्ण है। पाकिस्तान
सचमुच काश्मीर की सुरक्षा चाह
वहाँ उसे अपनी आक्रमणकारी
समाप्त कर देना चाहिए।
वह नहीं करता तो आगामी
महीनों में यह प्रमाणित हो
पाकिस्तान कितना शक्तिशा
संयुक्तराष्ट्र संघ या सुरक्षा परि
सहायता करके समझौते के का
सफल हो सकती है ?

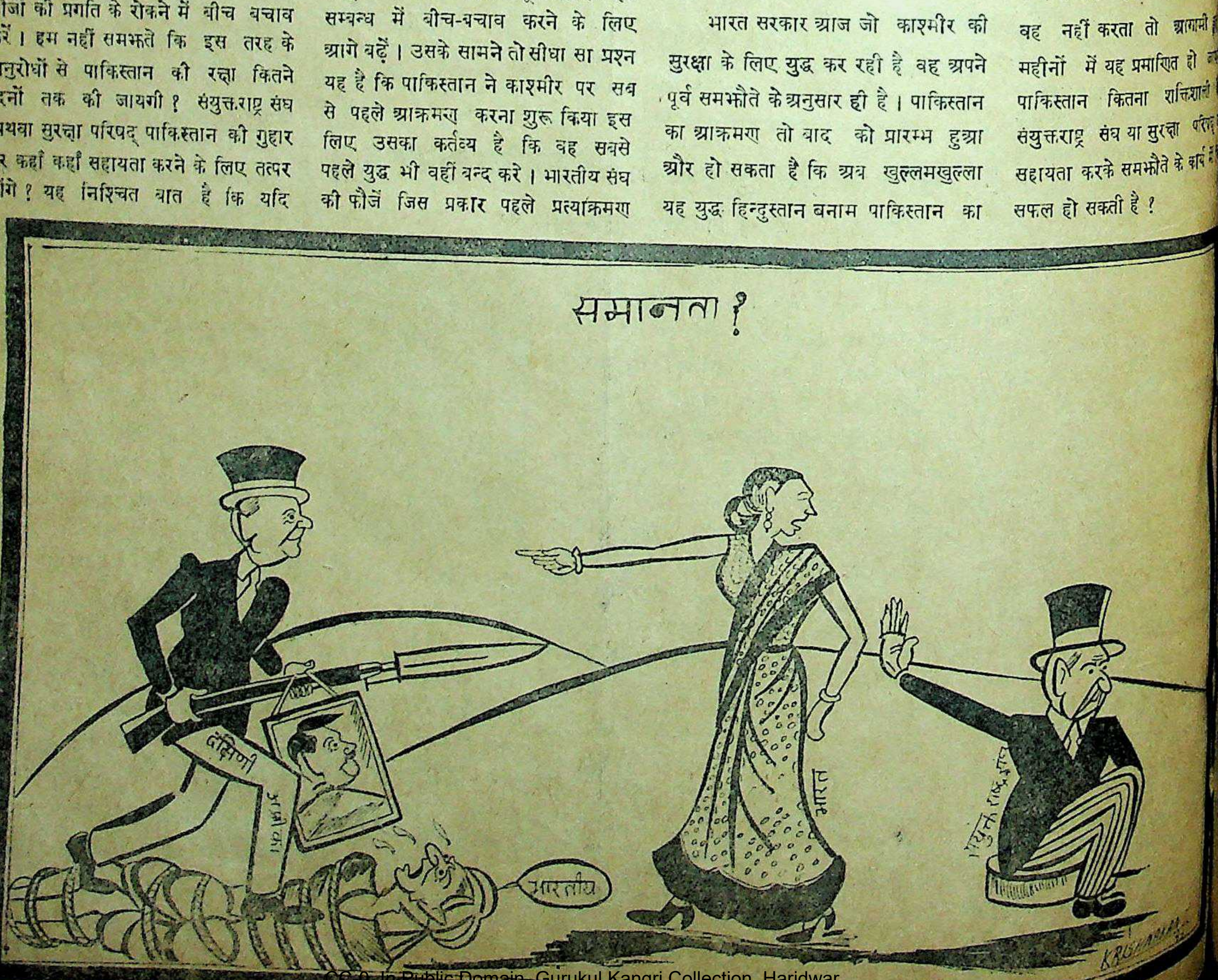

बर्मा और प्रवासी भारतीय

भूमि-सम्बन्धी नये विधान से भारतीयों में असंतोष

लेखक, श्री चन्द्रचूड़, एम० ए०

> बर्मा सन् १९३५ ईसवी तक भारत का एक अंग था। महात्मा जी और कांग्रेस के आदर्शों ने बर्मा को भी स्वतन्त्रता प्राप्त होने में सहायता दी है। आज जब कि दोनों राष्ट्र अपना अलग अलग आस्तित्व रखते हैं; दोनों अपना स्वतन्त्र विधान बना रहे हैं, ऐसे समय में दोनों देशों को एक दूसरे की मैत्री का ध्यान रखना चाहिए। आज बर्मा में भूमि का राष्ट्रीयकरण हो रहा है जिसका होना अनिवार्य है। परन्तु बहुत से प्रवासी भारतवासी बर्मा में खेतिहर हैं। उनकी आर्थिक स्थिति की ओर भारत को ध्यान देना है। लेखक ने उन प्रवासी भारतवासियों की स्थिति का चित्र खींचकर भारत-सरकार का ध्यान उस ओर आकर्षित किया है। लेख सुन्दर और पठनीय है।

के प्रेसिडेंट डाक्टर पट्टाभि सीतारमैया।

रंगून से प्राप्त हुए संवादों में वहाँ के भूमि-सम्बन्धी नए के कारण प्रवासी भारतीयों में असन्तोष की थी। यह असन्तोष उग्र रूप से फैलता जा रहा है लोगों का जो वहाँ की स्थिति का अध्ययन करने के पश्चात् यहाँ कहना है कि बर्मा में किसी भी कृषि-विद्रोह और व्यापारियों के हो सकते हैं। वहाँ की सरकार की रहा है? इसका विश्लेषण करना है; परन्तु, इधर की परिस्थितयों परिणाम निकालना उतना कुछ नहीं जान पड़ता कि बर्मा की सरकार अपने देशवासियों की और असावधानी के कारण खोये हुए कृषि-विषयक एवं औद्योगिक अधिकारों को राष्ट्रीयकरण की नीति प्राप्त करना चाहती है। बर्मा की द्वारा स्वीकृत उसका भूमि के का विधान इस दिशा में पहला प्रयत्न है और इसमें सन्देह इस प्रयत्न की सफलता या असफलता उसकी अनेक प्रस्तावित अथवा योजनाओं का भविष्य है।

से कुछ भी सम्पर्क रखनेवाले उनका केवल समाचारपत्रों और द्वारा प्राप्त ज्ञान ही क्यों न हो तरह जानते हैं कि वहाँ प्रवासी की एक बड़ी संख्या वर्त्तमान है। प्रवासियों में दो वर्ग मुख्य हैं—

(१) श्रमिक वर्ग, जिनमें अधिकांश कुली और मजदूर हैं जो बर्मा के फैक्टरियों आदि के कल-पुर्जे वहाँ के समृद्ध धान के खेतों और में काम करनेवाले अनपद कुली और चरवाहे आदि।

(२) श्रेष्ठि वर्ग जिनमें दक्षिण भारत (सेट्टि) सं० (श्रेष्ठि) लोग हैं प्रमुख भूमिपति तथा नागरिक आर्थिक रीढ़ हैं और जिन्हें ही से सबसे अधिक क्षति पहुँचने की संभावना है। बर्मा के १२ लाख एकड़ धान के खेतों में २३ लाख एकड़ खेत केवल इन चेट्टियों के हाथ में हैं। ऐसी स्थिति में उनका भूमि के राष्ट्रीयकरण का विरोध करना स्वाभाविक है और वह भी उस दशा में जब कि गवर्नमेन्ट ने उनके लिए क्षति-पूर्ति का कोई न्यायोचित आधार न बनाया हो। जिस आधार पर गवर्नमेन्ट उनकी भूमि आत्मसात् करने जा रही है उसके मूल में बर्मा की गवर्नमेन्ट की धाँधली साफ साफ झलकती है।

इस असन्तोष को लेकर अनेक व्यक्तियों ने भारत-सरकार से अपने प्रवासियों की स्थिति के सम्बन्ध में हस्तक्षेप करने का अनुनय किया है। उन्होंने इसके लिए महान् खेद व्यक्त किया है कि रङ्गून-स्थित भारतीय दूतावास के प्रधान ने उनकी स्थिति सुधारने या बर्मा की गवर्नमेंट के साथ समझौता करने में अपनी कमजोरी और अयोग्यता का परिचय देकर वहाँ की परराष्ट्रनीति के प्रति जनता में विक्षोभ उत्पन्न करने और फलस्वरूप उसकी मनोवृत्ति बदलने में ही सहायता की है।

इन संवादों और अनुनय-पत्रों के आधार पर मैंने भी एक तटस्थ आलोचक के रूप में भारत-सरकार के परराष्ट्र-विभाग का ध्यान अपने उन पत्रों में इस ओर आकर्षित करने का प्रयत्न किया था जिन्हें 'हिन्दुस्तान टाइम्स' 'अमृतबाजार-पत्रिका' और 'लीडर' ने सहर्ष प्रकाशित किए थे।

हर्ष की बात है कि भारतीय सरकार ने इन संवादों और विनतियों पर पूरा पूरा ध्यान दिया है और अभी हाल में नई दिल्ली में एक विशेष अधिवेशन में इस विषय का एक प्रस्ताव रखकर बर्मा के नए भूमि-विषयक विधान के सम्बन्ध में भारतीयों का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक प्रतिनिधि-मंडल भेजने की योजना बनाई है। इस सम्बन्ध में बर्मा सरकार से लिखा-पढ़ी की जा चुकी है और अब प्रतिनिधि-मण्डल का जाना निश्चित हो गया है।

इस प्रतिनिधि-मंडल के सदस्य कौन होंगे? अभी इस पर विचार करना शेष है, परन्तु अनुमानतः इसमें उन सरकारी और स्वार्थ-संयुक्त प्रतिनिधियों के अतिरिक्त

भारत के प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू।

जिनका इस समस्या से सीधा सम्बन्ध है, ऐसे सार्वजनिक क्षेत्र के कार्यकर्ता भी होंगे जो अनुभवी और पक्षपातरहित हों। 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के एक विशेष संवाददाता ने मंडल का प्रतिनिधित्व करने के लिए डा० पट्टाभि सीतारमैया के नाम के प्रस्तावित होने की सूचना दी है।

इस योजना के अनुसार इतना तो निश्चित ही समझना चाहिए कि यह मंडल स्थिति को अपनी आँखों से अवलोकन कर उसकी उचित समीक्षा और दोनों सरकारों के बीच समझौते का प्रयत्न करेगा।

परन्तु क्या मैं इसके साथ ही एक और अनुरोध अपने परराष्ट्र-विभाग से कर सकता हूँ?

जहाँ तक मैं समझता हूँ इस प्रतिनिधि-मण्डल से केवल प्रवासियों के दूसरे वर्ग का ही हित हो सकता है; क्या पहले वर्ग की ओर भी ध्यान देना हमारा कर्त्तव्य नहीं? अपने पत्रों में भी मैंने स्पष्ट रूप से दोनों वर्गों की स्थिति की समीक्षा के लिए अनुरोध किया था।

वस्तुस्थिति का यदि ठीक से अनुशीलन किया जाय तो प्रवासियों का पहला वर्ग जिसके अंश में श्रम और अपमान का मछली-भात खाना पड़ा है कहीं अधिक दुरवस्था में अपने संघर्षमय घृणित जीवन की घड़ियाँ गिन रहा है। दूसरा वर्ग तो फिर भी ऐसा है जिसे सुख और विलास के साधनों का कभी अभाव नहीं रह सकता चाहे वह संसार के किसी कोने में अधिष्ठित हो; परन्तु उनका क्या जो अपने वास्तविक संसार परिवार की आर्थिक संकट-ज्वाला से झुलसे हुए विदेशों में श्रम की कौड़ी कमाने और उस पर नित्य तरह तरह का अत्याचार और अपमान सहने के लिए विवश हैं?

उन प्रवासियों की दुखभरी कहानियाँ मैंने सुनी हैं और उनकी अवस्था का अनुमान करना भी मेरे लिए इसी से सरल

शेष पेज १६ पर देखिए

भारत के पूर्वी पड़ोसी: बर्मा और श्याम

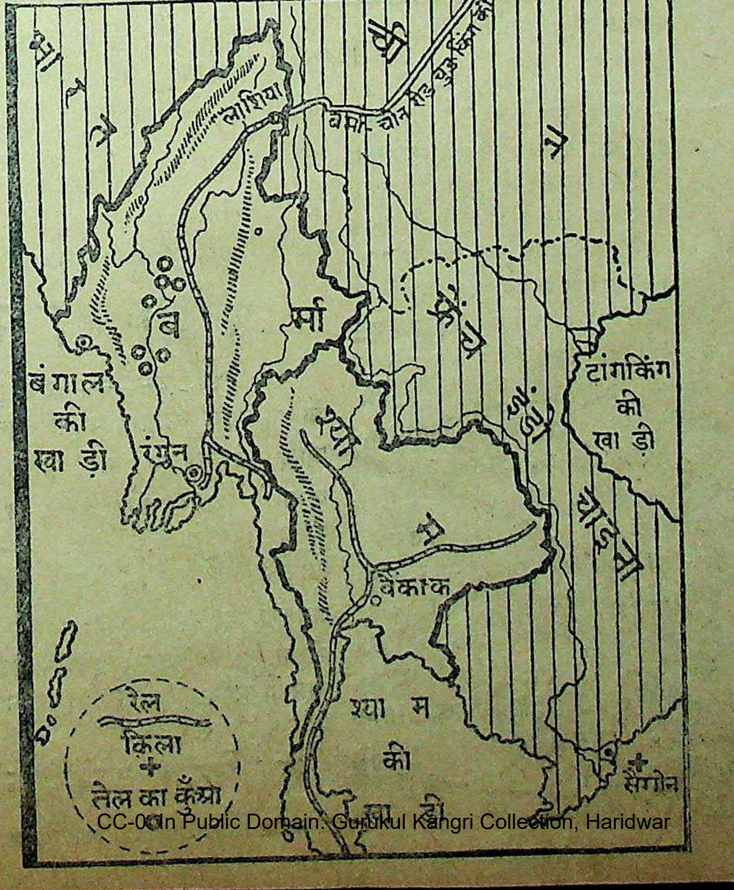

दिल्ली की चिट्ठी

पाकिस्तानी धमकी और भारतीय संघ

नैपाली दूतावास में चहल-पहल—प्रजातंत्र चीन किधर ?—डाक्टर पट्टाभि सीतारमैया के नामों का मनोरञ्जक विवरण।

(विशेष संवाददाता द्वारा)

इस सप्ताह पाकिस्तान की कोरी धमकी कि कि यदि भारतीय सैन्य-बल का चाप कम न हुआ तो वह वैदेशिक मन्त्री सर जफरुल्ला खाँ के अनुसार अपनी गगन सेना का उपयोग करने को बाध्य होगा, कुछ चर्चा रही। कुछ लोगों ने यह भी कल्पना की कि अब पाकिस्तान-हिन्दुस्तान में युद्ध होने में देर नहीं है। परन्तु ये लोग भूल गये जो भोंकते वे काटते कम ही। इस धमकी का हाल तो वही हुआ कि "घन आये, पर आइके उजरिगे।"

पाकिस्तान के सम्बन्ध में यह सर्वदा ध्यान में रखने की बात है कि पाकिस्तान वहीं तक अपने कदम उठा सकता है जहाँ तक उसे ब्रिटेन का समर्थन प्राप्त होने की संभावना है। इसका कारण है कि पाकिस्तान इँगलैण्ड की सृष्टि है और तभी तक इसका अस्तित्व है जब तक ऐसी इँगलैंड की इच्छा है। इस समय भारतीय कूटनीति ऐसी है कि खुल्लमखुल्ला ब्रिटेन की सरकार हिन्दुस्तान के विरुद्ध सहायता नहीं कर सकती। इस समय 'हर तरह से' इँगलैंड को हिन्दुस्तान को प्रसन्न रखना अभीष्ट है। पाकिस्तान चाहने पर भी इँगलैंड से अपना गठबन्धन तोड़ नहीं सकता; परन्तु हिन्दुस्तान चाहे तो निमेष मात्र में इँगलैंड से विमुख हो सकता है। इसके सिवा हिन्दुस्तान की पाकिस्तान से सेना और नौ सेना तिगुनी से अधिक है और गगन सेना चौगुनी से अधिक। इन सेनाओं को साज-सामान पहुँचाने के लिए—यद्यपि सब कुछ नहीं, तो बहुत कुछ तो है ही। इस्पात का या दूसरी तरह का सामान तैयार करने के कारखाने पाकिस्तान में नहीं के बराबर हैं। हाँ, एक चीज उनके पास हमसे बहुत ज्यादा है और वह है मजहबी जोश। अगर इससे हवाई जहाज चल सकें या तोपें गोले उगल सकें तो उनकी जीत भी निश्चित समझी जा सकती है।

* * *

इस सप्ताह नेपाली दूतावास में काफी चहल-पहल रही। राजदूत श्रीमान् जनरल सिंह शमशेर ने अपनी कन्या राजकुमारी भुवन और जामाता खेतड़ी के (जयपुर) राजाबहादुर श्री सरदारसिंह जी का समारोह के अवसर पर निमंत्रित एक सहस्राधिक गण्यमान्य व्यक्तियों से परिचय कराया। यद्यपि नेपाली राजपुरुष मद्य-निषेध के कायल नहीं हैं; परन्तु फिर भी—अन्य दूतावासों द्वारा दी गई पार्टियों की तरह इस समारोह में मदिरा का सर्वथा बहिष्कार रहा। इस विवाह की विशेषता यह है—प्रथा के प्रतिकूल—कि इसमें किसी तरह का निश्चित तिलक कन्यापक्ष द्वारा वरपक्ष को नहीं दिया गया, और न वरपक्ष ने ऐसी माँग ही की। दूसरी विशेषता यह है कि राजकुमारी भुवन राणा घराने की प्रथम कन्या हैं जिन्होंने विवाह के पूर्व अपने पति को देखा है। राजधानी के सभी क्षेत्र इस विवाह से प्रसन्न हैं क्योंकि इस सम्बन्ध में भारत और नेपाल का सम्बन्ध निकट से निकटतर हो गया है।

* * *

चीन से आये इस समाचार से किसी को आश्चर्य नहीं हुआ कि चीन की रक्त-वाहिनी सूचाऊ के बगल से निकल गई है। जेनरिसमो च्यांगकाई शेक की पत्नी संयुक्त राष्ट्र जा रहीं और चीन के स्वर्गीय राष्ट्रपिता डाक्टर सूनयात सेन के पुत्र डाक्टर सून को-को चैंग ने प्रधान मंत्री मनोनीत किया है। ये सारी बातें इसका प्रमाण हैं कि चीन की राष्ट्रीय सरकार के कर्णधारों की कितनी पतली हालत है। चीन से हाल में आये एक भारतीय विशिष्ट पुरुष का कहना था कि "चीन की रक्तवाहिनी को यांग्सी नदी के तट तक पहुँचने से राष्ट्रीय सरकार ही सेनाएँ तो रोक नहीं सकती है।" अमेरिका और इँगलैंड यह देख रहे हैं कि उनके लिये क्या यह श्रेयस्कर न होगा कि प्रत्यक्ष सहायता कर वे ऐसी स्थिति उत्पन्न न करें कि सोवियत रूस की तरह चीन में वे फिर व्यापारियों के रूप में भी न घुस सकें।

कुछ लोगों का यह विचार है कि उत्तरी चीन में चीनी कम्युनिस्टों की नई सरकार बनते ही इँगलैंड और अमेरिका में नई सरकार को स्वीकार करने की होड़ होगी। क्योंकि व्यापारी होने के कारण दोनों ही नई चीनी सरकार से अच्छे सम्बन्ध स्थापित करना चाहेंगे। इस रुख का एक कारण यह होगा कि नई चीनी सरकार बहिष्कार से बाध्य होकर सर्वथा सोवियत रूस पर ही निर्भर न हो जाय ?

* * *

'विष्णुसहस्रनाम का' युग तो चला गया और अमरकोष का भी। परन्तु नामों का अपभ्रंश होना अब भी जारी है। अपने स्वागत के लिए बुलाई गई सभा में जयपुर-अधिवेशन के निर्वाचित राष्ट्रपति डा० पट्टाभि सीतारमैया ने विभिन्न लोगों द्वारा लिखे करीब एक सौ नाम सुनाये। उल्लेखनीय नाम हैं; पट्टवी सीताराम, फट्टावी सीताराम, पित्तम भाई सीताराम, पट्टाभि सीधारकविया, कवा भाई सीतारामैया, भिटा भाई सत्यारमिया, पट्टाल सीत्तारमैया, सीताराम पट्टाभि, पका भाई सीतारमैया, कट्टाभि सीतारामया, पिटाभाई सीताराम, मि० पलेटा भाई सीतारमैया, भाटा भाई सीतारामैथा, सीताराम पिट्टाबिया डा० सीत्तारमिया, आनरेबुल डा० पट्टाभि, सेक्रेटेरियट गारू (तेलुगु अर्थ 'जी'), सातारा से एक ज्योतिषी ने लिखा भा० म० डा० पट्टाभि सितारामय्या, अध्यक्ष कांग्रेस उम्मेदवार सीताभि पट्टाराम इत्यादि।

इधर उधर की

अमेरिका के बहुत से महान् व्यक्तियों ने समाचारपत्र विक्रेता से अपना जीवन प्रारम्भ किया था। संयुक्तराज्य के कोलम्बिया विश्वविद्यालय के अध्यक्ष ड्वाइट डी० आइसन होवर, संयुक्तराज्य के सर्वोच्च न्यायालय के सहकारी न्यायाधीश विलियम डगलस, रिपब्लिक पार्टी की ओर से राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार न्यूयार्क के गवर्नर थाम्स ड्यूई और उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार केलिफोर्निया के गवर्नर अर्ल-वारेन ने समाचार पत्र बेचकर अपनी प्रारम्भिक जीविका को चलाई थी।

* * *

अमेरिका के लगभग २००० दैनिक पत्र निकलते हैं। इनमें १२ से १८ वर्ष तक के बालक समाचारपत्र बेचने का कार्य करते हैं। इनमें से प्रत्येक बालक प्रतिदिन औसतन ८० समाचारपत्र अपने नियमित ग्राहकों को उनके घरों पर पहुँचाता है। समाचारपत्र इन विक्रेताओं को इस कार्य के लिए वेतन ही नहीं देते बल्कि उनकी शिक्षा, मनोरंजन आदि की व्यवस्था करना उनके वार्षिक कार्य क्रम में शामिल है।

* * *

अनाज का भाव कन्ट्रोल लगाने से बढ़ने के बजाय घट गया है। शिमला में ढाई रुपये सेर चावल और एक रुपये सेर गेहूँ बिक रहा है।

* * *

पेरिस इस समय अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र बनने जा रहा है। जब तक मध्य यूरोप में स्थान नहीं था तब तक अमरीका में अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र रक्खा गया था। अब चूँकि अशान्तमय वायुमण्डल पैदा हो रहा है इससे पेरिस को केन्द्र बनना आवश्यक है। संसार के दो महायुद्ध पेरिस (फ्रान्स) को उकसाकर लड़े गये थे। तीसरा भी पेरिस (फ्रान्स) को उकसाकर होगा ऐसा सम्भव होने लगा है।

* * *

खिजाब अब लगाना
सफेद बाल काला
नक्कालों से सावधान!
इस तेल से बाल का
पका बाल जड़ से काला
सैकड़ों प्रशंसापत्रों से इसकी
णित है। यह तेल सिर के दर्द
चक्कर आना आदि को आराम
की रोशनी को बढ़ाता है।
शीशी ३॥) व बड़ी शीशी ५)
श्वेत कुष्ठ की बनौषधि
महात्मा प्रदत्त ३० वर्ष
से तीन दिन में पूरा फायदा।
हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों,
की दवा से निराश हो चुके हों,
लगाकर आरोग्य होवें।
२१ दिन का।
पता :—श्रीकृष्ण आयुर्वेद
(द २), बड़ा बाजार, ह

जीवन की नई
हिस्टेरिया रोग तथा अन्य
विकार जीवन को नीरस
बनानेवाले महा भयंकर रोग है।
कि ये राजरोग दुःसाध्य अवस्था
हो 'ब्रेन्टन' का सेवन कर शीघ्र
स्वास्थ्य लाभ करिये।
आज ही लिखें :—
मू० ४॥=) प्र० शीशी डाकखर्च
अन्य जानकारी मुफ्त।
जय भारत लैबोरेट्रीज (D.D
ज्वालापुर (हरद्वार)

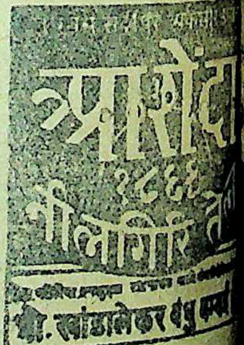

परमात्मा पर भरोसा करो
और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता,
का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का
आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने
पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार
कीजिए। कीमत एक डिब्बा ३।—) डाक और पैकिंग खर्च अलग।
आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो
जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला
की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी,
नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत शीशी ३=), दो शीशी ५॥=),
और पैकिंग खर्च अलग।
रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

सारा विश्व अर्थ संकट का शिकार !

इस दुर्दशा की ओर क्या संयुक्तराष्ट्र ध्यान देगा ?

लेखक, श्री राधानाथ चतुर्वेदी

आज विश्व का दो तिहाई भाग अर्थ संकट की कठिन घड़ियों से गुजर रहा है। यह संकट दुर्भिक्ष का ही रूप कहा जा सकता है। परंतु यह मानवीय देन है। यह संकट टाला जा सकता है परंतु जब तक सारे राष्ट्र विश्व-बन्धुत्व न दिखलायेंगे आर्थिक संकट टल नहीं सकता। भावी युद्ध की शंकायें सभी राष्ट्रों को अपना धन, दूसरों के देने के लिए रोक रही हैं। जिसी दिन ये शंकायें दूर हुई उसी दिन आर्थिक संकट अपने आप टल जायगा। लेखक ने अपने इस लेख में आर्थिक संकट का विशद वर्णन किया है। लेख सुंदर और पठनीय है।

को आर्थिक दृष्टि से बिलकुल खोखला बना दिया था। चीन-जापान युद्ध के आठ बरसों में पुनर्निर्माण का कोई कार्य न हो सका और फलस्वरूप स्वाधीनता प्राप्त करने के बाद भी चीन कोई बल न प्राप्त कर सका। इसीलिए आज भी संसार को च्यांग सरकार की यह घोषणाएं पढ़कर तनिक भी विस्मय नहीं होता कि वह मुद्रा-संकट के निवारण के लिए अत्यन्त कठोर कदम उठा रही है। चीन में नोटों का मूल्य घटाया जा रहा है। लोगों के रहने-सहने का स्तर निम्नतम स्थिति में पहुंच गया है। सरदार पटेल ने गत १५ अगस्त की रात को स्वाधीनता दिवस के अवसर पर भाषण देते हुये कहा था—"हमारी उम्मीद थी कि ४५ करोड़ की आबादी-वाला देश चीन एशिया के नेता की बागडोर अपने हाथ में लेगा किन्तु वहां के आन्तरिक संकटों, विपत्तियों, सघर्षों और युद्ध ने उसे बिलकुल निर्बल बना दिया।" चीन की निर्बलता के और जो भी कारण किन्तु उन कारणों में वहां का मुद्रासंकट भी एक प्रमुख कारण है।

हिन्द एशिया, हिन्द चीन, मलाया और सिंगापुर में फ्रांस, ब्रिटेन और हालैण्ड के औपनिवेशिक युद्ध लड़े जा रहे हैं। इन युद्धों में विजय प्राप्त करने के लिए, अपनी पुरानी साम्राज्यवादी आदतों से लाचार उक्त सत्ताएं, जिनमें उनकी पराजय निश्चित है निरन्तर लड़े जा रही हैं और जनता के निर्मम व शोषण दमन में पानी की तरह रुपया बहा रही और इस प्रकार आर्थिक संकट उत्पन्न कर रही हैं। अपनी विशिष्ट सिद्धियों के लिए वह कोई भी उत्पादन-कार्य नहीं होने देतीं।

बर्मा भी आर्थिक-संकट से मुक्त नहीं है। बर्मा का आन्तरिक और गृह-विद्रोह बर्मा की सरकार की अपरिमित धनराशि फौजी कार्रवाई पर व्यय कर रहा है।

फिलस्तीन तथा फिलस्तीन के युद्ध में भाग लेनेवाले सीरिया, मिस्र, ट्रान्सजारडन तथा अन्य अरब राष्ट्र आर्थिक-सहायता के लिए हाथ फैलाए बैठे हैं।

गीत

लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०

साथी अपनी याद न छीनो।
जीवन की कड़वी घूँटों का, साथी मीठा स्वाद न छीनो।
साथी अपनी याद न छीनो।
मेरी मधु-तृष्णा निर्मम है,
मन को मृग-तृष्णा क्या कम है,
होश नशे में पाता जो, उस पागल का उन्माद न छीनो।
सागर का आधार किनारा,
बिना कूल क्या गतिमय धारा,
साथी, सीमित की सीमा यह, प्रेमी की मर्याद न छीनो।
चातक की अनबुझी प्यास ही,
उसके जीवन की मिठास थी,
मुझसे मेरे सूनेपन का साथी मधुर प्रसाद न छीनो।
साथी अपनी याद न छीनो।

फिलस्तीन का युद्ध-जन्य व्ययभार अरबों और नवजात यहूदीराष्ट्र इजराइल सबके लिए एक विकट आर्थिक समस्या का रूप धारण करता जा रहा है।

जर्मनी का मुद्रा संकट तो आज विश्व व्यापी सरदर्द बन गया है। जर्मनी के आर्थिक-पतन की स्थिति का शोषण सोवियत और ऍंग्लो-अमेरिकन शक्तियां अपनी अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए किस प्रकार कर रही हैं इसके उदाहरण के लिए बर्लिन में पैदा किया जानेवाला खाद्यसंकट, पश्चिमी-शक्तिओं का असहयोग और "वार्ता, वार्ता और वार्ता" की नीति पर्याप्त हैं।

फ्रांस में ११वीं बार सरकार बनी है। पिछली सरकारों की अस्थिरता और पतन का क्या कारण है? यदि उसकी खोज की जाय तो आर्थिक-खोखलापन ही फ्रांस की रेनो, एण्डी मेरी, सुचेयान तथा अन्यान्य सरकारों के न रहने का कारण निकलेगा।

यूरोप के अन्य पश्चिमी राष्ट्र अपने

पश्चिमी यूरोप में राजसत्ता के रक्षक अमरीका के वैदेशिक मंत्री जार्ज मार्शल

आर्थिक संकट के कारण ही मार्शल सहायता कार्य-क्रम की ठीक उसी भाँति प्रतीक्षा कर रहे हैं जैसे चकोर चाँदनी की ओर पपीहा स्वाति बूंद की चाहना करता है। ब्रिटेन यूरोप का वह राष्ट्र है जिसे मार्शल-योजनान्तर्गत सबसे अधिक डालर मिले हैं और यदि यह कहा जाय कि ब्रिटेन की आर्थिक-सहायता के लिए ही अमेरिकन सरकर ने मार्शल-योजना की रचना की है तो यह बात कोई अधिक अतिशयोक्तिपूर्ण न होगी।

इस प्रकार जापान से आर्थिक-विपत्ति के जो बादल उठे हैं उनमे एशिया और यूरोप का कोई कोना भी नहीं बचा है। प्रशान्त सागर से लेकर अटलाण्टिक के छोर तक आर्थिक संकट ही संकट छाया हुआ है। आज के यूरोप और एशिया की पतित आर्थिक स्थिति युद्धोत्तरकालीन परिस्थितिओं और दुखद संकटों का एक ज्वलन्त उदाहरण है। यह पतन इस बात का आँखें खोल देनेवाला दृष्टान्त है कि मानवता के लिए युद्ध कितना भयावह अभिशाप सिद्ध हो सकता है।

सुदूर पूर्व से लेकर सुदूर पश्चिम तक प्रदेशों, आर्थिक-संकटों में ग्रस्त प्रशान्त सागरीय राष्ट्र जापान से ले अटलाण्टिक के किनारे को चूमनेवाले ब्रिटेन तक की राष्ट्र माला में भारत का स्थान बीचोबीच में है। भारत इस राष्ट्रमाला की केन्द्र-स्थली है।

सन् १८५७ के विद्रोह की असफलता के बाद से १५ अगस्त १९४७ के स्वाधी-

संसार में [illegible] का अकेला विरोधी
[illegible] जनरल फ्रैंको

नता दिवस तक के ६० वरसों में विदेशी सत्ता ने भारत का जो राजनीतिक सामाजिक, आर्थिक, निर्मम, क्रूर तथा हिसक दमन एवं शोषण किया है उसके काले धब्बे और कमजोरियों को दूर करते करते यदि सैकड़ों बरस नहीं तो पचीसों बरस तो अवश्य ही लग जायंगे।

आज भारत भी आर्थिक संकट, मुद्रा स्फीति तथा जीवनयापन के स्तर की निम्नता से बुरी तरह पीड़ित है। चीन का नाम यदि मुद्रा स्फीति के राष्ट्रों में सबसे आगे है तो चीन के बाद दूसरा नम्बर हिन्दुस्तान का ही है। हमारे यहाँ जीवनोपयोगी वस्तुओं के मूल्य में ४०० से लेकर ६०० प्रतिशत तक की वृद्धि हो चुकी है। अन्न का मूल्य युद्ध के पूर्व के समय के मूल्य को दृष्टिगत रखते हुए ७०० प्रतिशत ऊँचा बढ़ गया है। इतने मूल्य पर भी अभी कुछ दिन पूर्व तक उसकी अप्राप्ति की शिकायत थी। सन् १९३७-३८ में जो गेहूँ १५ और २० सेर के भाव मिलता था आज उसका मूल्य रुपए का १॥ और १॥। सेर हो गया है। वस्त्राभाव से तो समस्त राष्ट्र पीड़ित है ही साथ ही वस्त्र के मूल्य में भी ३०० और ४०० प्रतिशत के बीच वृद्धि हुई है।

जीवनयापन की जब आधारभूत वस्तुओं के मूल्य की यह दशा है तो अन्य सामग्रियों के बढ़े हुए मूल्यों की शिकायत करना ही व्यर्थ है। इस तेजी का या अर्थ शास्त्रियों के शब्दों में "मुद्रा स्फीति" का हमारे राष्ट्र के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों पर बड़ा कुप्रभाव पड़ रहा है। हमारा सांस्कृतिक और सामाजिक तथा राष्ट्रीयता का पूरा ढाँचा ही लड़खड़ाया जा रहा है! यदि समय के पूर्व ही हम न चेते तो वह दिन दूर नहीं है जब हमारा चारित्रिक पतन सम्पूर्ण राष्ट्र को ही विनाश गर्त में ढकेल देगा! मुद्रास्फीति, आर्थिक पतन या सर्वसाधारण के मतानुसार "यह तेजी!" यदि न रोकी गई तो पारस्परिक मैत्री, सहयोग, सामंजस्य तथा अन्य समाजोपयोगी समस्त भावनाएँ लुप्त हो जायगी और जिसका सम्पूर्ण भार राष्ट्र की राजनीति को वहन करना पड़ेगा। इसमें हमें सन्देह है कि राष्ट्रीय राजनीति सामाजिक और आर्थिक पतन के संयुक्त बोझ को उठाने में समर्थशाली सिद्ध होगी।

आर्थिक समस्या का मूलभूत कारण क्या है? इस प्रश्न के विभिन्न पहलुओं और विभिन्न दृष्टिकोणों तथा विभिन्न क्षेत्रों के अनुसार भिन्न भिन्न उत्तर होंगे। राजनीतिज्ञ इस प्रश्न का उत्तर आन्तरिक अशान्ति, देश का विभाजन और साम्प्रदायिक झगड़ों द्वारा देंगे। अर्थ शास्त्री उत्पादन का अभाव बतलायेंगे। उद्योगपति मानव-श्रम की अप्राप्ति और अभावों का रोना रोयेंगे। व्यापारी तथा समाज के अन्य व्यक्ति अन्न तथा वस्त्र के मूल्यों की वृद्धि की कहानी सुनायेंगे। मालिक नौकरों की बढ़ी हुई तनख्वाह की शिकायत करेगा और नौकर वेतन की कमी बतलाएगा।

अनिवार्यतः प्रत्येक की शिकायत, अभावाभियोग के कथनों में पर्याप्त सत्यांश है, इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता किन्तु इसके साथ ही हमें यह भी मानना पड़ेगा कि हमारी व्यक्तिगत और सामूहिक लापरवाही, अकर्मण्यता, आलस और अतीत की गुलामी की प्रवृत्तियाँ ही राष्ट्रीय, अन्तर एशियाई और यूरेशिया की आर्थिक विपत्तियों का कारण हैं। हमने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक नियमों के विरुद्ध जो जो कर्म किए हैं उन नियमों के उल्लंघन का ही दण्ड यह आर्थिक संकट है।

इसको दूर करने का यही एक उपाय है कि हम तुरन्त सँभले। दृढ़ निश्चय तथा शुभ कल्पना के साथ दृढ़ उद्योग के पथ पर अग्रसर हों। परिश्रम, सहिष्णुता और सदाचार के पाप से आर्य संकट के इस अँधेरे समय में भी घबड़ाएँ नहीं। समाज और राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह जहाँ भी हो, अपने अपने कर्तव्य का पालन करे। "कर्तव्य पालन" को "रक्षक शब्द" बना लिया जाय तभी हम इस राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संकट से मुक्ति प्राप्त कर सकेंगे।

अर्थ संकट को रोकनेवाली मुद्रास्फीति-निरोधक नीति की राष्ट्री की घोषणा कर्तव्य-पालन की ओ निश्चित दिशा संकेत करेगी।

* *

नक्कालों से सावधान!

श्वेत कुष्ट की अद्भुत

प्रिय सज्जनो! औरों की अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहत इसके तीन दिन लेप से सफेदी से आराम न हों तो मूल्य चाहें —)॥ का टिकट भेजकर लें। मूल्य २॥) रु०

१८ प्रकार के गलित कुष्ट रोगी अपनी पूरी-पूरी हालत लि मगा लें और आराम होकर लाभ वी० पी० छुड़ाते समय हमारा देख लें।

सफेद बाल काला!

खिजाब से नहीं हमारे "केश संजीवनी" (सुगन्धित) तैल का पकना रुककर सफेद बाल हो जाता है। यह तैल दिमागी आँखों की रोशनी को बढ़ाता विश्वास न हो वे दूना मूल्य लिखा लें। मूल्य २), बाल गया हो तो ४) का तैल मँगावें।

वैद्यराज अखिल किशोर
नं० १ पो० सरिया, जिला हजा

राजज्योतिषी

जगत्-प्रसिद्ध ज्योतिषी और तान्त्रिक पंडित हरिश्चन्द्र शास्त्री, ज्योतिष-तीर्थ,
अध्यक्ष अखिल बङ्गाल ज्योतिष-संघ

ज्योतिष-गृह १४१।१ सी, रशा रोड, कालीघाट, कलकत्ता।

हजारा पार्क के ठीक पूर्व में फोन—९७८।

ये महान् ज्योतिषी न केवल पूर्वीय और पाश्चात्य ज्योतिष के ही प्रकाण्ड पण्डित हैं, प्रत्युत हस्तरेखा शास्त्र (सामुद्रिक विद्या) के भी पहुँचे हुए पारखी हैं। जो भी आपके निकट सम्पर्क में आये हैं, वे आपकी आलौकिक, आध्यात्मिक शक्ति के उन आश्चर्यजनक परिणामों से पूर्णतः सन्तुष्ट हैं, जो आपने महामाया श्री सिद्धेश्वरी की भक्ति कर उन्हें प्रसन्न कर प्राप्त की है।

योग और तन्त्र द्वारा के दुष्परिणामों को दूर कर पेचीदे कानूनी मुकदमों और बीमारियों से रोगी को स्वस्थ निश्चित सफलता प्राप्त करने धारण शक्ति प्राप्त कर ली है।

आपके आश्चर्यजनक कवचों द्वारा निश्चित सफलता मिलती है

शान्ति कवच :—मन की शान्ति, पारिवारिक प्रसन्नता, असाध्य रोगों पर विजय, दुर्घटनाओं से रक्षा, अकाल मृत्यु से बचाव, आग और चोरी का भय-उन्मूलन तथा परीक्षाओं में इससे सफलता मिलती है। इस कवच को पहननेवाला सभी परेशानियों से बच जाता है, क्योंकि इससे दुष्ट ग्रहों की शान्ति हो जाती है। साधारण का मूल्य ५) रु०; विशेष (शीघ्र लाभकारी) का २०) रु०।

बगला कवच :—रोजगार-धन्धे में सफलता, अभिलाषा की पूर्ति, राजसम्मान, नौकरी में तरक्की, व्यापार में उन्नति, धन में वृद्धि और सभी पर अपना प्रभुत्व रखना इस कवच से प्राप्त होता है। अनेक व्यक्तियों ने बहुत ही निराशाजनक और पेचीदे कानूनी मुकदमों में इस कवच से सफलता प्राप्त की है। साधारण का मूल्य १२) रु०; विशेष (शीघ्र प्रभावकारी) का ४५) रु०।

नृसिंह कवच :—स्त्रियों की सभी तरह की बीमारियाँ इससे ठीक हो जाती हैं। मृत बच्चे को बलपूर्वक गर्भ से बाहर निकलने से जो दोष रह जाते हैं उन्हें दूर करना, बाँझ स्त्रियों के भी पुत्र प्राप्त होना, मासिक धर्म-सम्बन्धी दोषों को ठीक कर देना इस कवच के प्रभाव हैं। साधारण का मूल्य १०) रु०; विशेष (शीघ्र प्रभावकारी) का २९) रु०।

आकर्षिणी कवच :—जिस व्यक्ति को पाने की इच्छा हो (स्त्री या पुरुष) पूर्णतः अधिकार में आ जाता है जिससे मनवांछित कार्य कराया जा सकता है। साधारण का मूल्य १२) रु०; विशेष (शीघ्र प्रभावकारी) का ५०) रु०।

उन आदरणीय महानुभावों में से कुछ के नाम, जिन्हें व्यक्तिगत रूप से आपकी भविष्यवाणी, फलित ज्योतिष की ठीक ठीक गणना तथा सामुद्रिक और तांत्रिक शक्तियों का परिचय मिल चुका है :—

महाराजाधिराज बर्दवान; हिजहाइनेस राजा धेनकानल (उड़ीसा), नेपाल के राना कर्नल गोविन्द शमशेर जङ्ग बहादुर; श्री ए० वाण्डलेर, इँगलैंड; श्री मैगूराम, हैदराबाद, सिन्ध; देसाई, डाइरेक्टर, अमर सुरेन्द्रनाथ चौबे, आगरा; श्री मदन, लाहौर; श्री के० वेंकट पट्टम; श्री फजुलुलहक, भूतपूर्व बङ्गाल; श्री बाबूलाल चौखानी भारतलक्ष्मी स्टूडियो, कलकत्ता; कुमार चौधरी, मन्त्री आसाम श्री पी० आर० दास, बार-एट-ला श्री जी० डी० खेतान, व्यापारी और भागलपुर, रायबहादुर वाइसराय, दिल्ली; जगत्प्रसिद्ध उदयशङ्कर आदि।

समस्त पत्र-व्यवहार अँगरेजी में किया जाना चाहिए।

कहानी

"अन्तिम मिलन"

लेखक, श्री हृदयेश टण्डन

मनुष्य अपनी स्थिति को अच्छी से अच्छी बनाने के लिए सतत प्रयत्न करता है। परन्तु ज्योंही उसकी स्थिति में सुधार हुआ, त्योंही वह अपने पूर्व दिनों और जीवन साथियों को प्रायः भूल जाता है। कभी कभी तो वह घटनाओं के वशीभूत हो सुधार की ओर मुड़ता है परन्तु ऐसा बहुधा कम होता है। ऐसी स्थिति में पुरुष और स्त्री तक का सम्बन्ध भी टूट जाता है। लेखक ने इस कहानी में मनुष्य की अभिलाषा-पूर्ति को लेकर जीवन के उस अंग पर प्रकाश डाला है जहाँ पर मनुष्य अपने कर्तव्य को प्रायः भूल जाते हैं। रेखा—जो इस कहानी का प्राण कही जा सकती है। मानवीय अभिलाषा की पूर्ति में अपना सर्वस्व निछावर कर देती है—का जीवन बड़े ही मार्मिक ढंग से वर्णन किया गया है। कहानी रोचक और सुन्दर है।

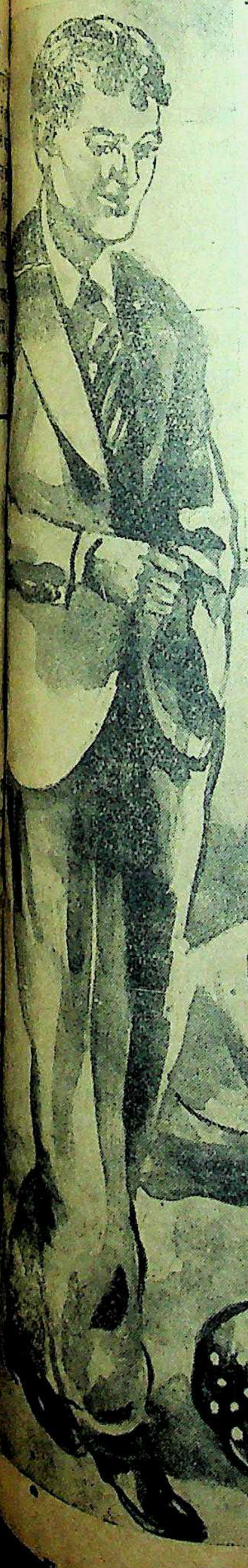

के पीछेवाली सड़क पर उसका नौकर दीनू, जो सदैव फटे और मलिन वस्त्रों में अपने को ढके रहता था, आता दीख पड़ा।

जीवन उसको न पहचान सका पर दीनू ने पुकारा! जीवन पीछे मुड़ा और दीन नेत्रों से दीनू की ओर देखा—जीवन के न पहचानने का कारण भी था। आज दीनू उसे पूरा 'इँगलैण्ड रिटर्न' मालूम हो रहा था।

हाथों में सिगरेट था, पैकेट लिए हुए सिगरेट का कश खींचता हुआ बोला—"जीवन भैया! कहाँ जा रहे हो, पहचाना नहीं, मैं हूँ दीनू?

जीवन हक्का-बक्का रह गया। उसकी उस दशा को देखकर वह अपने तन का भी होश न कर पाया और बोल उठा—"दीनू! यह क्या, तुम यह...... सूट......?"

वाक्य पूरे भी न हो पाये थे इसी बीच में दीनू के मुँह से शब्द निकल पड़े—"हाँ, हाँ भैया! तुमको नहीं मालूम, मैं तुम्हारे यहाँ से जाने के बाद अचानक बम्बई पहुँच गया। एकाएक भाग्यचक्र पलटा और आज दिन आपकी दया से, मैं अनपढ़ भिखारी इस गति में हूँ।"

"क्यों दीनू, क्या वहाँ बिना पढ़ा-लिखा और दरिद्र व्यक्ति भी धनवान् बन सकता है?"

"हाँ भैया! ऐसी ही बात है। मेरे ऐसे अनपढ़ पचास रुपया रोज पैदा कर लेते हैं, किन्तु यदि आप ऐसा ईमानदार और सज्जन पुरुष वहाँ पहुँच जाये तो यहाँ के ऐसे दो-चार गाँव वह मोल ले सकता है।"

जीवन कल्पना की दुनिया में मँडरा रहा था कि एकाएक बोल उठा—"मैं कल सुबह फिर बम्बई जा रहा हूँ; यदि चलना हो तो तैयार हो जाना मैं गाड़ी लेकर आऊँगा।"

"अच्छा, अच्छा! मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा किंतु किसी से कहना नहीं!" जीवन ने उसकी पीठ पर थपथपाते हुए कहा।

दीनू तो चला गया परन्तु जीवन के मस्तिष्क में 'दीनू' का चित्र रह-रहकर नाच उठता था। रह-रहकर वह सोच उठता! "पचास रुपया रोज!.. ...... पचास रुपया!! मैं भी धनवान् हो जाऊँगा!!!" जीवन के हृदय में धन पैदा करने की भावना तीव्र हो उठी।

किसी प्रकार उसने घर की राह ली, पर आत्मा में शान्ति न थी। हृदय उतावला हो रहा था—'कल सुबह कब होगा? कब जाएगा? और अधिक सम्पत्ति का मालिक कैसे बनेगा?'

एक छोटे से ग्राम में तीन व्यक्तियों का एक छोटा सा परिवार रहता था। परिवार का प्रमुख था जीवन। उसने बिसातखाने तथा परचून की एक छोटी सी दूकान खोल रक्खी थी और वह अपनी ईमानदारी और सज्जनता के कारण गाँव में देवता के समान पूजा जाता था। न्यूनतम सम्पत्ति होते हुए भी उसका परिवार धन-धान्य से भरा पूरा था। उसकी पत्नी रेखा मानो साक्षात् देवी थी, और वे दोनों पति-पत्नी, अपने छः वर्षीय प्रिय पुत्र प्रीतम के साथ सन्तोषपूर्वक सुख एवं शान्ति का जीवन व्यतीत कर रहे थे। किन्तु वास्तविक सुख संसार में है कहाँ, यह कहना कठिन है! फिर भी मनुष्य में तृष्णा की जितनी भी कमी हो गई उतना ही वह अधिक सुखी होगा। जीवन में भी धन की तृष्णा की कमी थी और यही कारण था कि वह अपनी उस सीमित सम्पत्ति में ही सन्तुष्ट था। लेकिन, विधि का विधान कुछ और ही था। घटनाचक्र कुछ ऐसा घूमा कि जीवन के दिल में एकाएक असन्तोष की ज्वाला भड़क उठी।"

"सूर्य की अंतिम किरणों ने संसार से बिदा ली। पूनों का स्वच्छ और निर्मल चन्द्रमा नीले अकाश में अपनी पूर्ण ज्योत्स्ना से हँस उठा। जीवन अपने घर आया। रेखा अभी तक ध्यान-मग्ना हो पूजा में ही लीन हुई बैठी थी। सतीत्व के तेज से उसका मुखमण्डल देदीप्यमान हो रहा है। एक अपूर्व ज्योति उसके नयनों से प्रकट हो रही है। उसी समय जीवन ने पुकारा—"रेखा!" वह चौंक पड़ी, उसका ध्यान भंग हो गया। उसने देखा उसके पतिदेव उसके सामने ही खड़े हैं। उसने समझा कि कदाचित् यह उसका ही आकर्षण है। वह निराकार चित्र साकार रूप में परिवर्तित हो गया, वह प्रेम-विह्वल होकर पति के चरणों से लिपट गई।

जीवन ने उसे उठाया और हाथ-मुँह धोकर खाना खाने के लिए जाकर बैठ गया। थाली सामने रक्खी थी किन्तु हाथ

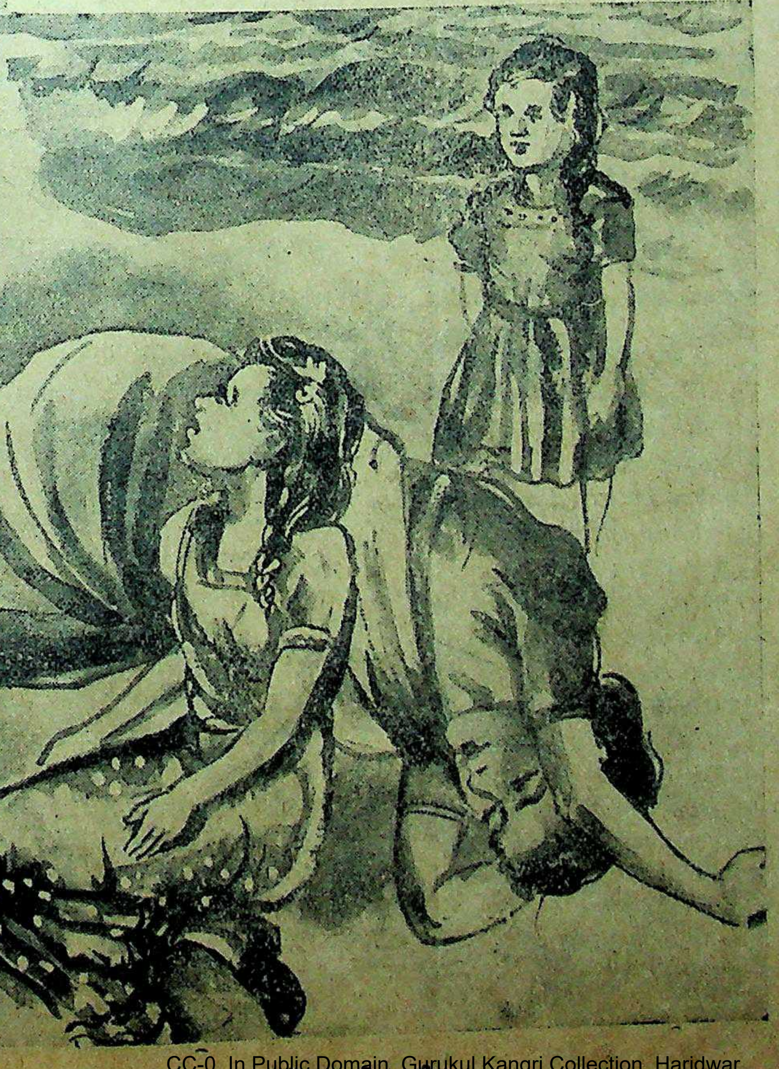

रेखा किसी प्रकार पति के द्वार तक पहुँच कर गिर पड़ी।

देशदूत

नहीं चला था, क्यों ? क्योंकि अभी तक उसका प्रीतम बाहर खेल रहा है ! ज्योंही पिता की आहट मिली; फौरन दौड़कर थाली के पास आकर बैठ गया। प्रीतम सैदव जीवन के साथ बैठकर खाता और जीवन भी बिना प्रीतम के एक ग्रास भी नहीं तोड़ता।

ग्रास का एक टुकड़ा ही अपने मुँह में रक्खा था कि अपने प्रिय पुत्र प्रीतम से बोला—"क्यों प्रीतम यदि मैं कहीं बाहर कुछ दिनों के लिए चला जाऊँ तो तुम किसके साथ खाओगे ?"

"किसी के साथ नहीं पिताजी ! जहाँ आप जाएँगे, मैं भी साथ में चलूँगा।"

"माँ के साथ खाया करना।"

"नहीं, नहीं ! ...मैं आपके ही साथ खाऊँगा।"

जीवन बच्चे के इन शब्दों को सुनकर हँस पड़ा और कहा—"अच्छा-अच्छा मेरे ही साथ खाना।"

जीवन ने अभी थोड़ा ही खाना खाया था कि उठकर चल दिया। रेखा ने भी अधिक न खाया कि उसके भी मुँह का टुकड़ा जमीन पर आ गिरा। वह विह्वल हो उठी। प्रीतम ने भी खाना छोड़ दिया। और जाकर चारपाई पर पिता के पास बैठ गया, रेखा भी वहीं आ गई। तीनों एक साथ बैठे विचार-धारा में निमग्न थे। किन्तु रेखा से न रह गया। उसने पूछा—"आज आपने खाना क्यों नहीं खाया ?"

जीवन ने बड़ी ही व्यंगता से उत्तर दिया—"खाया तो, अधिक इच्छा न थी, आज सर में दर्द हो रहा था, जाओ तुम खा लो।"

"लाइए सर दबा दूँ, फिर खा लूँगा।" जीवन लेट रहा, रेखा पति का सर दबाने लगी।

"प्रीतम तुम भी सो जाओ। रात्रि अधिक हो रही है !" जीवन ने कहा—प्रीतम दिन भर के खेल-कूद के परिश्रम के बाद निद्रा की गोद में सो गया पर जीवन और रेखा की आँखों में निद्रा न थी।

अब जीवन को भी दिन भर के परिश्रम के बाद थकावट प्रतीत हुई और वह भी सो गया। रेखा ने भी पति का सर दबाते ही दबाते आँखें बन्द कर लीं ! परन्तु जीवन इस समय स्वप्न में भी घुलमिल रहा था और रात्रि भर उसके ही विचारों में उलझे जीवन ने सवेरा किया ! वह सोच रहा था—'क्या वह भी अमीर बन जायगा ?'

प्रातःकाल के चिह्न दृष्टिगोचर होते ही जीवन ने शय्या त्याग दी। पहले पहल जाकर उसने रेखा की निद्रा को भङ्ग किया और कहा—"रेखा ! मैं कल तुमसे प्रीतम की वजह से कोई बात न कर पाया। आज मैं बम्बई जा रहा हूँ। दो महीने बाद वापस आ जाऊँगा।"—"सुना है तुमने, दीनू जो हमारे यहाँ का नौकर था वह बम्बई से आया है, बड़े ही ठाट-बाट में था। मुझे आज वह अचानक मिल गया और कहने लगा, यदि आप ऐसे ईमानदार लोग वहाँ पहुँच जाएँ तो इस गाँव ऐसे दो चार गाँव अपनी रकमों से खरीद लें। पचास रुपया रोज वह पैदा करता है।"

रेखा ने, जीवन की बातों को बड़े ही ध्यान से सुना; पर लज्जावश कुछ भी न कह पाई और पति की ओर एकटक निगाह से देखने लगी।

"घबड़ाना नहीं रेखा ! मैं जल्दी ही आ जाऊँगा। देखो प्रीतम न उठने पाए।"

रेखा की आँखों में अश्रु डबडबा आये। जीवन ने कहा—"पगली कहीं की, रोती क्यों हो ? घबड़ाना नहीं, मैं जल्दी ही आ जाऊँगा।" और जीवन उसे सान्त्वना देता हुआ अपने साथ में दूसरे कमरे में ले गया। एक पत्थर से रेखा खींचते हुए कहा—"देखो ! यह साठ रेखा है इसमें से एक रेखा रोज मिटाती जाना। बस आखिरी रेखा को मैं स्वयं आकर मिटा दूँगा। इसी बीच में दीनू ने आकर आवाज दी। वह फौरन बाहर चला गया।

"अरे दीनू चुप रहो ! मैं अभी आ रहा हूँ, कहीं प्रीतम न उठ जाए।" इतना कहकर फिर जीवन अन्दर आ गया।

रेखा थाल में माला-फूल लिए आरती सँजो रही थी। पतिदेव को सामने आते देख फौरन उठी और फूलों का हार गले में पहना दिया और पति के चरणों की रज को अपने नेत्रों से लगा लिया।

जीवन, सुबह की मन्द-मन्द हवाओं के बीच में होता हुआ रेखा की आँखों से ओझल होता जा रहा था।

रेखा घर आई। देखा प्रीतम सोकर उठ बैठा था। प्रीतम ने अपने पिता को न पाकर कई बार माँ से पूछा, पर रेखा ने धीरज बँधाकर उसको चुप कर दिया।

* * *

गाड़ी आने में अभी घण्टे भर की देर थी। दीनू जीवन को बैठाकर चाय पीने चला गया। अचानक प्लेटफार्म पर भक, भक, भक, भक करती हुई गाड़ी जीवन के सामने आकर खड़ी हो गई। किन्तु अभी तक दीनू का कुछ भी पता न था।

एकाएक जीवन की निगाह एक मनीबेग पर पड़ गई। वह मनीबेग एक युवती का था, जो सामने फर्स्ट क्लास के डिब्बे में प्रवेश कर रही थी। जीवन ने फौरन लपककर उसको उठा लिया और देने के लिए दरवाजे के अन्दर घुस पड़ा। बेग को बढ़ाते हुए जीवन ने कहा—"यह आपका मनीबेग प्लेटफार्म पर गिर गया था।'

"धन्यवाद कहकर उस युवती ने उसको, सौ-सौ रुपए की पाँच नोटों की गड्डी को, देने के लिए बढ़ाया।'

जीवन मना ही कर रहा था कि गाड़ी ने सीटी दी। वह नीचे उतर भी न पाया कि गाड़ी चल दी। वह घबड़ा गया। उसकी घबड़ाहट को निहारते हुए बीना ने कहा—"आप चिन्ता न कीजिए, मैं आपका टिकट बनवा दूँगी।"

"गाड़ी तीव्र गति से हवा को चीरती हुई चली जा रही थी। कुछ बादल भी घिर आए। शीतल वायु बह रही थी, मन को शान्ति मिली। पर्वतों के सघन वनों का दृश्य बड़ा रमणीक था। मार्ग मनोरम था। परन्तु थोड़ी ही देर में वह सुखद दृश्य दुखद मालूम होने लगा। सिर चकराने लगा। आँखें खोलने की इच्छा न होती थी। अचानक एक भयंकर आँधी से गाड़ी ने टक्कर ली और गाड़ी क्षण भर में ही पटरी पर से उतर गई। कितने ही व्यक्ति मृत्यु के ग्रास हो गए। कितनी ही स्त्रियों की माँग का सिन्दूर धुल गया। दीनू भी गहरी चोट खा गया।

* * *

उस रेखा के मिटने का आज आखिरी दिन है। रेखा सुबह से ही उछल रही है। प्रीतम को सजा दिया, स्वयं सज-धज कर बैठी अपने प्यारे की याद में प्रतीक्षा कर रही है माँ, बेटे दोनों में आशाओं का पुल बाँधा जा रहा है। किन्तु वह नहीं जानती कि आज उस पत्थर की रेखा के साथ ही साथ उसके जीवन......

समय ने पलटा खाया। भाग्य बदल गया। सुख स्वप्न हो गया और सहसा विपत्तियों का बवंडर आ ही गया। दरवाजे पर खड़ा दीनू कुंडियाँ खटखटा रहा था। रेखा ने फौरन जाकर कुंडी खोल दी। उसके शरीर पर जख्म और पट्टियाँ बँधी देख, रेखा का हृदय गगन-मंडल पर चक्कर लगाने लगा। वह अवाक् देखती रह गई। उसका हृदय तड़प उठा ! हाय ! यह क्या ?—"दीनू वह कहाँ है कुशल से तो है ?"

दीनू की आखों से आँसू बिखर उठे। वह घबड़ा गया, शरीर काँप रहा था पर साहस कर बोला—"बहूजी ! क्षमा करो, मेरे ही कारण आज वह......गाड़ी के पलट जाने से मृत्यु की गोद......। उसका कंठ रुँधने लगा और आँसू बाँध तोड़कर वह निकले !

"रेखा के मुख से एक हल्की चीख निकल पड़ी और वह अचेत हो गई। होश में आने पर, अतीत की स्मृतियाँ उसके मानस क्षेत्र में टूटी माला के दानों सी बिखर गईं। सोहाग का सिन्दूर अलोप हो गया। चूड़ियाँ खन खन कर पृथ्वी पर आ गईं। प्रीतम माँ की गोद में सुबक सुबक कर रो रहा था और वह इतना रोया कि उसकी आँखें पथरा गईं।"

ईश्वर की असीम अनुकम्पा से जीवन तथा बीना बम्बई शहर जा पहुँचे। बीना के भीतरी गहरी चोट आई, किन्तु जीवन का बाल भी बाँका न हुआ। तत्पश्चात् दोनों की आँखें एक हो गई और जीवन उस युवती के मायाजाल में फँस गया। वह भी क्या करता ? पुरुष था ही ! मानव-स्वभाव ऐसा ही है ? कोई बिरला ही बच पाता है अनंग के बाणों से।" बाप को चिता होने लगी और उसने कहा—"बेटी बीना, तुम यह क्या कर रही हो। जिसको मैं जनता नहीं कौन है, किस जाति का है, क्या पेशा है ! उसके साथ तुम कैसे शादी करोगी ?"

"आपका कहना सत्य है पिताजी, पर उसने मेरी नई जिन्दगी की है। आपकी एकलौती बेटी की जान बचाई। जितना भी मैं उसका एहसान मानूँ कम है। फिर सब बातों में कुशल है। पढ़ा है लिखा है, रूप है रंग है और क्या चाहिए ! यदि मैं उससे शादी कर लूँ तो हर्ज ही क्या ?"

"यह तो सब कुछ है पर समझ लेना यदि मेरा कहना नहीं माना तो पछताना पड़ेगा। जो भी, अपने माँ-बाप का कहना नहीं मानते वह बाद में अवश्य दुख पाते हैं।"

"मैंने सब कुछ निश्चय कर लिया, मैं अब इन्हीं की हूँ और इन्हीं की होकर जीवित रहूँगी।"

"बीना ! सँभल जाओ नहीं
पतन की ओर जाना पड़ेगा।"

"कोई चिन्ता नहीं
इनको पति मान लिया है, यदि
आँचल फैलाकर भीख भी
तो उसमें भी मैं खुश हूँ और
मेरे सौभाग्य की रेखा अब सफल

"अच्छा बेटी ! जैसी तुम्हारी

* * *

"लक्ष्मी ! तेरी लीला
तेरा आना अच्छा है परन्तु जाना
अकेली नहीं जाती अपने साथ सुख
सभी कुछ ले जाती है। तेरे न
विद्वान् मूर्ख बन जाता है,
हो जाते हैं और सारी होशियारी
मिल जाती है।" रेखा की दुनिया
गई ! मित्र शत्रु हो गए।
हो गए। कोई सहानुभूति प्रकट
न रहा। वह दिन भर अपने
प्रीतम को लिए दर-दर की
लगी। किन्तु भाग्यचक्र का
एक फिर पलट गया और वह
खाने में पहुँची, जहाँ जीवन उस
मालिक, बीना की सम्पत्ति
कारी था।

"बीबी बच्चे मात पिता को,
तो भूले सबको। धन की खातिर
वाले दे देते हैं जान कितने हैं
तेरे बन्दे भगवान्।"—
संगीत ने जीवन को चौंका दिया।
फौरन काम छोड़कर ध्वनि की
आया। देखा ! रेखा बैठी धान
है। रेखा की भी आँखें उधर
और दोनों की दृष्टि ने एक दूसरे
व्याकुल कर दिया।

देखते ही जीवन तो फौरन
भाग खड़े हुए, किन्तु रेखा को
अधिक शान्ति मिली। उसको
प्रभात का दूर दर्शन हुआ। चूड़ियाँ
माँग भरी और सारे सुख सम्पत्ति की
अधिकारणी होने का कल्पना करने

कुछ ही समय के बाद जीवन में
पैदा हुई, रेखा से मिलने के लिए
ईश्वर से अभिवादन करने के लिए
जोड़ रही थी, जीवन तेजी से कमरे
खोलकर भीतर आया। उसका हृदय
उठा। वह प्रेम-विह्वल होकर
चरणों से लिपट गई और अविरल
धारा से उनको धोने लगी। ऐसी
अपूर्व भक्ति देखकर किसका हृदय
जेगा। जीवन ने सौ-सौ की
रेखा को देने के लिए बढ़ाया और
"रेखा यह क्या ढोंग मचा
अभी तक तुमको सब विधवा जानते
चूड़ियाँ क्यों पहनी ?

नम्र भाव से रेखा ने कहा—
कारेएगा ! अभी तक मैं धोखे में
के रहते मैं कैसे विधवा हो
दुनिया कुछ समझे पर आप न

"तो मेरी जिन्दगी
हो। मैं रुपया पैदा करने आया हूँ
यहाँ इस प्रकार रहते मैं कुछ भी
पाऊँगा।"

"नहीं स्वामी ! किसी को
तक पता न होगा मैं आपसे
हूँ सीधे आप मुझे अपना लें।"

शेष पेज १२ पर

आज भारतीय सिने-जगत् पर अमरीकन फिल्मों का काफी प्रभाव है। जिस प्रभाव के कारण आज भारतीय सिने-जगत् ने अपनी संस्कृति को खोखला बना डाला उसकी खूब विडम्बना की है। यहाँ तक कि उसको कहीं का नहीं रखा। आज का भारतीय सिने-जगत् अत्यन्त बेहूदा-बेतुका हो गया है। इसका एक और कारण है-अँगरेजी राज और उसकी पाश्चात्य सभ्यता। भारतीय सिने-जगत् आज तक भी समाज की सत्यता प्रकट करने में दृष्टिगोचर नहीं हुआ; कामुकता, अश्लीलता और उच्छृंखलपूर्ण चित्रों को ही प्राधान्य देकर उसको प्रदर्शित करने में अपना कर्तव्य समझता था। युद्ध के जमाने में चाहे जैसी गंदी अश्लील फिल्म भी चला दी जाती थी, परन्तु आज ऐसा नहीं होना चाहिये। भारत स्वतन्त्र हो गया है अतः शुद्ध व सुन्दर वातावरण, फिल्मों में आना अत्यन्त आवश्यक है। स्वतन्त्रता प्राप्त हुए आज वर्ष महीने बीत गये हैं परन्तु नैतिकता के ठेकेदारों ने इस स्वतन्त्रता का मूल्य अभी तक नहीं समझा। वह आज इसमें 'साजन' शहनाई, सफर, लीला, सोना-चाँदी और भद्दे से भद्दा अश्लील चित्र 'खिड़की' भी देखने को मिला। कितनी दुर्भाग्य की बात है यह। आज भी हमारे फिल्म-निर्देशक अपना व्यापार ही समझ बैठे हैं। पता नहीं इनके दिल-दिमागों में जनता व देश का क्या होगा? ऐसे भद्दे संस्कृतिहीन चित्रों का प्रदर्शन बन्द होना अत्यन्त आवश्यक है। सुना जा रहा है कि बम्बई सरकार ने फिल्म सेन्सर बोर्ड को कड़ी शर्तें दी हैं, देखना है कहाँ तक अमल होता है।

नवयुग चित्रपट ने 'फूल और काँटे' में अपने ढंग का अनोखा कलामय भावना-प्रधान चित्र प्रस्तुत किया है। जो समाज में अधिक सुन्दर सुसंस्कृतिमय भावनात्मक व अनोखी अदा के साथ उपस्थित किया है। काश। कि हमारे अन्य कहानी-कार व निर्देशक अपनी सचाई के साथ आवें। 'फूल और काँटे' में जो एक कमी है वह यह लेखक महोदय ने एक भावुक उर पर पड़नेवाली भावनाएँ क्या असर कर सकती हैं। "भावुकता कमजोरी है" इसका नग्न दृश्य प्रस्तुत किया है तथा अनेक महत्त्वपूर्ण विचारों पर लेखक महोदय ने काफी गम्भीरता से विचार किया दिखाई देता है।

सुन्दर (मोहन सहगल) भावुक कवि-हृदय है। रूपा (शालिनि) वेश्या की लड़की कला-प्रेमी भावुक व प्रयत्नशील है। दोनों का प्रेम एक सुन्दर घटना से हो जाता है। डाक्टर (सालवी) अपने शहर के नामी मशहूर व आदर्श डाक्टर है। उनकी पत्नी (ललित पवार) कुछ शंकीली है। वह डाक्टर पर शङ्का करती रहती है। रूपा व सुन्दर की प्रीति दिन-दूनी रात चौगुनी हो जाती है। परन्तु डा० की पत्नी इन दोनों को एक साथ देखना नहीं चाहती।

डाक्टर नये विचार-धारा के थे, वे इन दोनों के प्रति प्रसन्न है। रूपा व सुन्दर के विवाह में दुनियाँ की समाज से बाधाएँ

'फूल और काँटे' एक सामाजिक चित्र

सामाजिक फिल्म निर्माताओं के लिए आदर्श चलचित्र

लेखक, श्री "उद्धव"

उपस्थित होती हैं दोनों बिछुड़े से रहते हैं परन्तु चिन्तातुर। सुन्दर सारी वर्षा सिर पर लेता है। परन्तु रूपा से मिल नहीं पाता। खाँसी बढ़ती है और तपेदिक का रूप ले लेती है। वह पर्वाह नहीं करता परन्तु मजबूर होकर डाक्टर कह ही देता है—सुन्दर। तुम्हें तपेदिक हो गया है। सुन्दर अवाक् चित्र-सा निस्तेज, निरुत्साह रह जाता है। उसमें चलने की शक्ति नहीं रहती वह रुक जाता है। परन्तु रूपा भावी माता बननेवाली थी बात प्रकट हुई। विवाह स्वीकार हुआ परन्तु क्या था? पाँचवे छठे फेरे में ही सुन्दर गिर जाता है—फिर क्या—मृत्यु ही मृत्यु! सुन्दर हमेशा के लिये सो गया। इधर कुछ ही महीनों में रूपा ने एक सुन्दर लड़की को जन्म दिया। परन्तु डाक्टर की पत्नी डाक्टर पर जलन करने लगी, भयानक जलन! वह समझती है डाक्टर और रूपा का पहले से ही संबंध था सुन्दर की मृत्यु इन्हीं लोगों से हुई। वह एक दिन इसी कारण बीमार पड़ी। बीमार क्या थी मर ही गई। अनजान हाथों ने दवा के बदले जहर दिया। डाक्टर पकड़े गये। और छूटे भी .....

डाक्टर पत्नी से विमुख; रूपा पति से विमुख। परन्तु दोनों अपने भारतीय संस्कृति पर अडिग अचल गीता और महाभारत के तत्त्वों पर अचल सुन्दरता को पार कर गये।

'फूल और काँटे' वास्तव में आज तमाम फिल्मों पर चाँटा रसीद करता है। लेखक महोदय ने नायक को आधे ही में मार कर कहानी में शिथिलता टपकने नहीं दी। बल्कि कहानी में आकर्षण पैर कर दिखाया। गीता के वचनों का लेखक ने खूब परिचय कराया। अन्त में पर्दे की ओट से कहता है—'मनुष्य का जीना चाहिये और दूसरे को जीने रहने को सिखाना चाहिये। मनुष्य जब तक जीये दूसरों के लिये जीना चाहिये।'

नायिका व नायक के प्रीति में कई अस्वाभाविकता नहीं आने पाई 'मिर्जा साहिबा' की प्रीति में जो एक बेढंगी चाल है और जो बेदर्द दिल हैं इन पात्रों में वह नहीं है। फूल और काँटे' के नायक को यदि अन्त में मारा होता तो शायद यह कहानी अत्यन्त लोकप्रिय 'देवदास' जैसी कृति साबित होती परन्तु लेखक महोय को भावुक उर की पीड़ा और उसके मन पर पड़नेवाले तात्कालिक प्रभाव बतलाया था। दूसरी बात यह कि सामाजिक कुरीति पर थोड़ा बहुत प्रभाव डालना जरूरी था। और तीसरी बात जन-जागृति के लिये गीता का उपदेश इत्यादि अनेक सुन्दर चित्रण काफी सफलता के साथ बतलाया गया है परन्तु लेखक महोदय की एक ही बात पर निकृष्टता आ गई है। वह है—जहर की शीशी व दवा की शीशी एक ही साथ रखा जाना। डाक्टर के घर में जहर रह सकता है पर खुल्लमखुल्ला दवाइयों की शीशियों के साथ रखना न्यायसंगत नहीं है। लेखक की कला का अभाव यहीं पर ही साबित हो जाता है। फिर भी जहर की शीशी से कहानी पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता। परन्तु जहर के बारे में दर्शकों में असंतोष जरूर पाया जाता है। फिल्म में मराठी संस्कृति का ही प्राधान्य रहा है। लग्नविधि कितनी सादी व आकर्षक बताई गई है। काश! कि अन्य निर्देशक भी ऐसे ही स्वाभाविक रीति-रिवाजों को महत्व देगें।

कवि की भूमिका में मोहन सहगल खूब अच्छे जँचते हैं। उनकी मुद्रा-भावना प्रधान दर्शनीय है। उसके वह समय समय पर कहनेवाले वाक्य—"हमने अपने आशियाने के लिए जो चुभे दिल में उसी दिन के लिए।" अत्यन्त आकर्षक व हृदयस्पर्शी है। दिल तो चाहता है कि उसकी भावभंगी को अन्तर्तम कर लूँ। डाक्टर से 'तपेदिक' नाम सुनकर जो मुद्रा हो जाती है और उसके मुख से जो वाक्य निकलते हैं वह अत्यन्त हृदयंगम-भावना प्रधान व आकर्षक है। उस समय की मुद्रा देखकर हृदय दहल उठता है। उसका गाया हुआ गीत—"मन में समा के भूल न जाना।" खूब सुंदर व भावना-प्रधान है। दर्शकों के मन पर इसका खूब अच्छा प्रभाव पड़ता है। ऐसी सुन्दर भूमिका शायद मोहन सहगल एक उपयुक्त कलाकार ही कर सकता था। उसकी भावभंगी दर्शकों के दिलों पर असर किये बिना नहीं रहती। चित्र का मुख्य आकर्षण मोहन सहगल ही है। शालिनि नई तारका दर्शकों का दिल अपनी ओर खींच ही लेती है। उसके वह कलात्मक नृत्य उसकी भावभंगी कमाल कर गई। गीत अत्यन्त सुंदर व भावना-प्रधान हैं—खुशी व उत्साह पर गाया हुआ नृत्य पर गीत—बलि बलि जवानी लहराये...खूब सुंदर है। उसी तरह रंज और गम में गाया हुआ गीत—"बेदर्दी...मेरी अँखियाँ देहि दुहाई.. अत्यन्त सुंदर व आकर्षक नृत्य है। इसका नृत्य अपने ढंग का बेजोड़ नृत्य है।

शालिनि ही एक योग्य कलाकार ठहरी जो इन गीतों पर अपने ढङ्ग के अनोखे नृत्य कर आकर्षक बन गई। माता का

शेष १६ पर देखिए

फिल्म जगत की सुप्रसिद्ध अभिनेत्री तथा सफल गायिका कानन बाला।

कहानी—"अन्तिम मिलन"

(पृष्ठ १० का शेष)

किसी के आने की आहट पाकर जीवन फौरन बाहर निकल गया। इधर रेखा फिर अपने काम में व्यस्त हो गई।

"आह! दुर्भाग्य तू भी कितना निष्ठुर है। आखिर न छोड़ा यहाँ भी रेखा को। शायद भगवान् को भी भिखारिन के सुख पर ईर्षा थी। अरी दुर्भाग्य! दुनिया ने उसके पवित्र प्रेम को कलंकित बनाने में कोई बात उठा न रक्खी।"

हर ओर से उसके मुँह पर गालियों के छींटे पड़ने लगे। वह घबरा गई और भागकर पति के चरणों से जा लिपटी। जीवन ने भी प्रेम में विह्वल होकर रेखा को अपना लिया। वीना अपनी सौत को देखकर अवाक् रह गई, कुछ बोलते तो न बना; परन्तु अपने भाग्य को कोसने लगी। उसके पिता ने भी जब यह दृश्य देखा तो व्याकुल हो उठे! अपनी पुत्री के दुख की ज्वाला में जल उठे और कहा—"वीना! वीना पिता से लिपटी सिसक-सिसककर रो रही थी।"

रेखा से यह न देखा गया और अपने पति की लाज को बचाने के लिए कहा—"बहन! दुखी मत हो। तुमने मेरे सुहाग की रक्षा की। अब मैं तुम्हारे सिंदूर की रक्षा करूँगी।" यह कहकर रेखा वीना का हाथ पति के करों में पकड़ाकर चल पड़ी। उस दिन से रेखा उस मुहल्ले में न दिखलाई पड़ी।

गीत के प्रखर स्रोत ने फिर अपना रूप बदला। धीरे धीरे रेखा का जीवन-दीप बुझता जा रहा था। दिन-रात के अटूट कार्य ने उसके शरीर को दुर्बल कर दिया। उसका शरीर थक चुका था, अंगों ने कार्य करने से इनकार कर दिया। महीनों से वह बीमार थी निराहार के कारण। किसी प्रकार बिस्तर से उठी और चल पड़ी। धीरे धीरे वह प्रातः से संध्या तक चलती रही।

रेखा जीवन के द्वार तक पहुँच चुकी थी। वह माँ वसुधा को टेककर आश्रय लेना चाहती थी; परन्तु गम्भीर बीमारी ने उसे सदा के लिए जीवन के द्वार तक पहुँचाने में सहायता दी थी। भगवान् भास्कर अपनी अंतिम स्वर्णिम किरणें उसके मुख-मण्डल पर फेंककर दुखी हो छिप गए। एकाएक किसी ने पुकारा—'जीवन भैया! तुम्हारे द्वार पर कोई भिखारिनी पड़ी है।

भीतर से दौड़ता हुआ जीवन द्वार पर आया, देखा तो एक भिखारिनी लेटी पड़ी थी। जीवन ने पुकारा—"कौन?"

'मैं हूँ आपकी सौभागिनी रेखा।' कहकर रेखा ने उठना चाहा, पर शक्ति क्षीण हो चुकी थी इससे न उठ सकी। उसके नेत्रों से आँसू बहने लगे।

जीवन ने रेखा की दशा देखकर कहा—रेखा! तुम? कहकर उसे उठाया। रेखा ने कहा—'बस अब मेरा अन्तिम है देव! अपने चरणों की धूल दे दो जिससे मैं शांति से विदा हो सकूँ। शीघ्रता करें। जीवन ने अपना पैर बढ़ाया। रेखा ने उसे छूकर मस्तक पर लगाया कि हाथ वहीं का वहीं रह गया।'

जीवन रेखा के सिर को अपनी गोद में लिए मौन आँसू बहा रहे थे। मुहल्ले के लोग और वीना एक आदर्श दम्पति का अन्तिम मिलन देख रहे थे।

* * *

T. B. टी० बी० "तपेदिक" रोग के हताश रोगियो—
जबरी (jabri) का नाम नोट कर लो, यही इस दुष्ट रोग से रोगी की जान बचाने वाली शक्तिशाली औषधि है। एक बार परीक्षा करके देख लो, परीक्षार्थ ही नमूना रखा गया है, जिसमें तसल्ली हो सके। मूल्य नं० १ (स्पेशल) पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन २०) रु०। 'जबरी' नं० २ पूरा कोर्स २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु० महसूल आदि अलग है। आज ही आर्डर देकर रोगी की जान बचायें। तार का पता "jabri" jagadhri काफी है।
पता :—रायसाहब के० एल० शर्मा, रईस (D) 'जगाधरी' (E.P.)

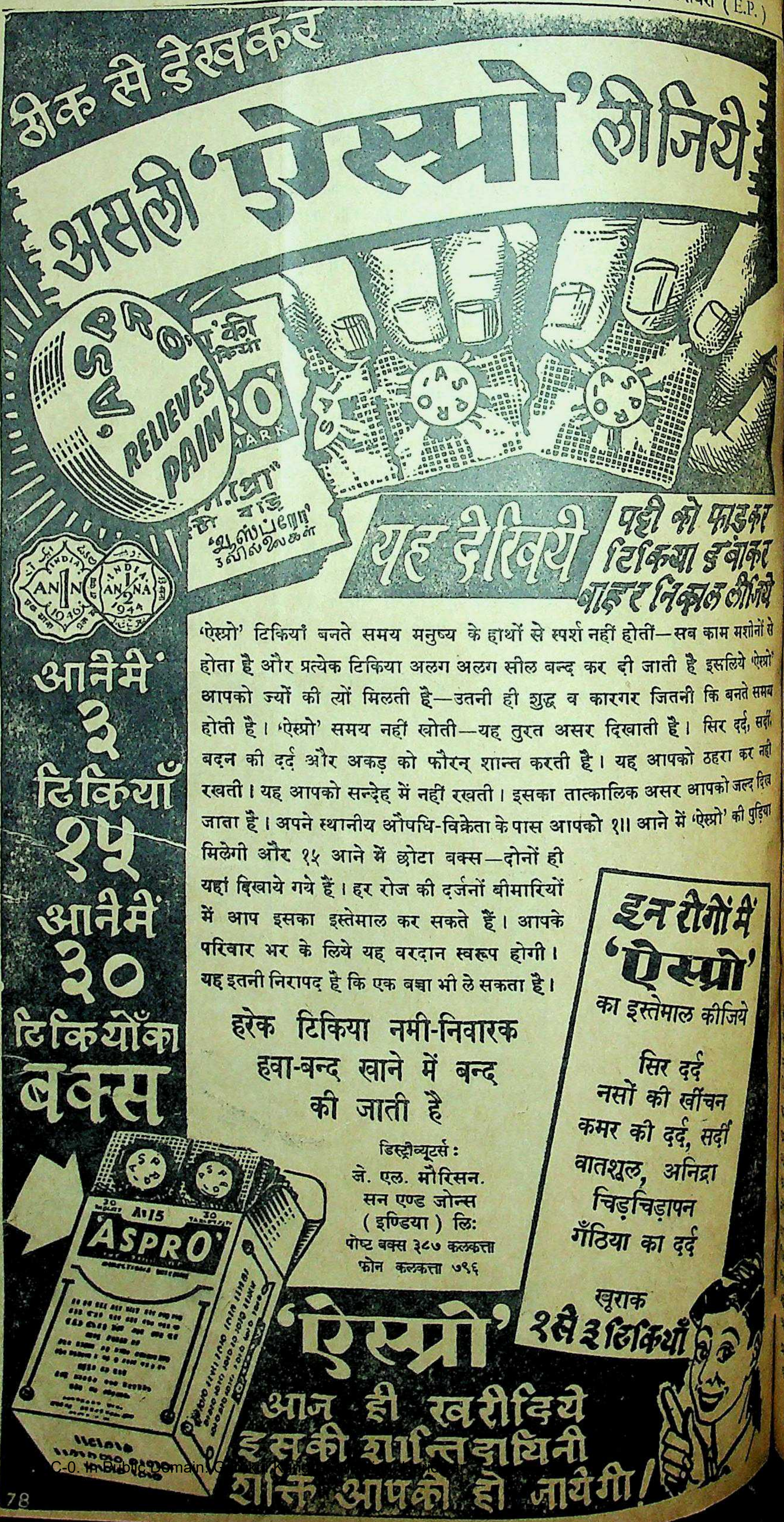

ठीक से देखकर असली 'ऐस्प्रो' लीजिये
यह देखिये
पट्टी को फाड़कर टिकिया दबाकर बाहर निकाल लीजिये
'ऐस्प्रो' टिकियाँ बनते समय मनुष्य के हाथों से स्पर्श नहीं होतीं—सब काम मशीनों से होता है और प्रत्येक टिकिया अलग अलग सील बन्द कर दी जाती है इसलिये 'ऐस्प्रो' आपको ज्यों की त्यों मिलती है—उतनी ही शुद्ध व कारगर जितनी कि बनते समय होती है। 'ऐस्प्रो' समय नहीं खोती—यह तुरत असर दिखाती है। सिर दर्द, सर्दी बदन की दर्द और अकड़ को फौरन् शान्त करती है। यह आपको ठहरा कर नहीं रखती। यह आपको सन्देह में नहीं रखती। इसका तात्कालिक असर आपको जल्द दिख जाता है। अपने स्थानीय औषधि-विक्रेता के पास आपको १॥ आने में 'ऐस्प्रो' की पुड़िया मिलेगी और १५ आने में छोटा बक्स—दोनों ही यहाँ दिखाये गये हैं। हर रोज की दर्जनों बीमारियों में आप इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। आपके परिवार भर के लिये यह वरदान स्वरूप होगी। यह इतनी निरापद है कि एक बच्चा भी ले सकता है।
आने में ३ टिकियाँ
१५ आने में ३० टिकियों का बक्स
हरेक टिकिया नमी-निवारक हवा-बन्द खाने में बन्द की जाती है
डिस्ट्रीब्यूटर्स :
जे. एल. मौरिसन.
सन एण्ड जोन्स
(इण्डिया) लि:
पोष्ट बक्स ३८७ कलकत्ता
फोन कलकत्ता ७९६
इन रोगों में 'ऐस्प्रो' का इस्तेमाल कीजिये
सिर दर्द
नसों की खींचन
कमर की दर्द, सर्दी
वातशूल, अनिद्रा
चिड़चिड़ापन
गँठिया का दर्द
खूराक १ से ३ टिकियाँ
'ऐस्प्रो' आज ही खरीदिये इसकी शान्तिदायिनी शक्ति आपकी हो जायेगी!
78

विश्व में भारतीय नारियों का आदर्श

विदेशी राष्ट्र अपनी उन्नति के लिए भारत से शिक्षा क्यों नहीं ग्रहण करते ?

लेखिका 'काली'

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में कोई ऐसा सम्मेलन न रहा जिसमें भारतीय प्रतिनिधि मंडल ने भाग न लिया हो। भारतीय प्रतिनिधि मण्डल की विशेषता सबसे निराली थी। प्रत्येक प्रतिनिधि मंडल में महिला सदस्या अवश्य थीं। संसार यह देखकर चकित हो रहा है कि अभी ब्रिटिश शासन को हटे डेढ़ वर्ष से अधिक न हुए भारतीयों ने सभ्यता के क्षेत्र में पहले बाजी मार ली। ब्रिटेन में महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए १५ वर्षों तक लड़ना पड़ा था, परन्तु भारतवर्ष में स्वातंत्र्य प्राप्ति के साथ ही साथ अधिकारों का भी बँटवारा हो गया। भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम में स्त्री और पुरुषों के बराबर के हाथ रहे हैं। कितनी महिलाएँ ब्रिटिश कारागारों में भारतीय स्वतन्त्रता के लिये बन्द रहीं। उनको तरह तरह की यातनायें दी गईं; अपमानित किया गया; पर वे अपने पथ पर अपने नेता (महात्मा गांधी) के बताए मार्ग पर चलती रहीं। अन्य देशों के स्वतन्त्रता संग्राम में स्त्रियों को बहुत कम हाथ बँटाने का अवसर मिला; क्योंकि उनके मार्ग हिंसात्मक थे जिसको स्त्रियाँ स्वभाव के कारण अपनाने में असमर्थ रहीं।

अतः पुरुषों का दावा प्रबल रहा कि स्वातन्त्र्य संग्राम को उन्होंने ही जीता है। परन्तु भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के नेता ने ऐसे मार्ग का अवलम्बन किया जिसको देश के दोनों वर्ग (स्त्री और पुरुष) ने समानता से अपनाया। युद्ध में केवल एक साधारण स्वयंसेविका अथवा सैनिक की ही कार्य नहीं किया, वरन्, उन्होंने नेताओं का भी कार्य किया। हमारे कांग्रेस सभापति के निर्वाचन का इतिहास बतलाता है कि हमारे स्वातन्त्र्य संग्राम में दो महिलाओं ने हमारा नेतृत्व भी ग्रहण किया था। श्रीमती सरोजनी नायडू ने कानपुर में भारतीय राष्ट्रीय महासभा की अध्यक्षता की थी। श्री नेलीसेन गुप्ता ने, मालवीय जी की गिरफ्तारी पर कलकत्ता अधिवेशन की अध्यक्षता की थी। धरना देना, पर्चे बाँटना, नमक बनाना, १४४ जैसी धाराओं को तोड़ना हमारी महिलाओं के लिए वैसा ही कार्य था जैसे पुरुषों के लिए। कार्यालयों में भी वे कार्य करती हैं। उनकी उन पिछली सेवाओं ने स्वतंत्र भारत के युग में उनके अधिकारों की मान्यता दी। स्वतन्त्र भारत में उनके अधिकार पुरुषों से कम नहीं हैं। विधान परिषद् में अभी अभी जो विधान का मसविदा आया है उसमें महिलाओं के अधिकारों को पुरुषों के अधिकारों के समान स्वीकार किया गया है। यह विधान तो कुछ देर से लागू होगा। इस समय देखा जाय तो महिलायें पुरुषों के समान सभी पदों को सुशोभित करती हैं। भारतीय मन्त्रिमण्डल में राजकुमारी अमृतकौर स्वाथ्य विभाग की मन्त्राणी हैं। श्रीमती सरोजनी नायडू युक्तप्रांत की गवर्नर हैं। इसके अतिरिक्त जो भी योग्यतम महिला जिस पद के योग्य समझी जाती हैं उसे उस पद पर नियुक्त किया जाता है। कुमारी मृदला साराभाई को पाकिस्तान में जबरदस्ती भगाई हुई महिलाओं को प्राप्त करने का उत्तरदायित्व दिया गया है। श्रीमती विजयलक्ष्मी पन्डित मास्को में राजदूत का कार्य करती हैं, साथ ही संयुक्त राष्ट्र संघ में भारतीय प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व भी करती हैं। एशियाई सम्मेलन की अध्यक्षता की हैसियत से श्रीमती सरोजनी नायडू ने संसार को चकित कर दिया कि भारतीय महिलायें विश्व के कार्य संचालन में कितनी क्षमता रखती हैं।

हमारा देश जिस किसी देश को अपनी सूझ अथवा राय देता है उसमें महिलाओं स्थान अनिवार्य हैं। संसार के अन्य देशों को भारत के इस आदर्श से कुछ तो लज्जा होती है और कुछ ईर्षा। भारत ने समय समय पर भूले हुये विश्व का प्रदर्शन किया हैं आज जब कि सारे देश ईर्षा, मनो मालिन्य से विनाश की ओर अग्रसर हो रहे हैं भारत आदर्शवादी बनकर ही विश्व का कल्याण कर सकता है। पेरिस के संयुक्त राष्ट्र संघ के बीच हमारे प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने संसार के राष्ट्रों को खुली चुनौती दी है कि "अणुबम के इस युग में भारत किसी भी आक्रमण का सामना करने को तैयार है।" वह किस बल पर ? इसको भी नेहरू जी ने स्पष्ट कर दिया है कि हमारे राष्ट्र-पिता ने जो अस्त्र हमें दिया है वह अमोघ है उसे नारियाँ भी चला सकती हैं फिर हमें चिन्ता तो है ही नहीं। जिस अस्त्र को नारियाँ भी चला कर विश्व विजय कर सकती हैं वह अस्त्र भारत के राष्ट्र-पिता का नव निर्मित अस्त्र अहिंसा है।

स्त्रियाँ मातृत्व रखती हैं अतः उनमें ममत्व अधिक होता है। अहिंसा ममत्व और मातृत्व का प्राथमिक अंग है। भारतीय महिलाओं का आदर्श संसार जब अपनावेगा उस समय विश्व शान्ति की समस्या सुलझ जायगी। स्वतंत्र भारत के विधान में स्त्रियों को तलाक तक देने की

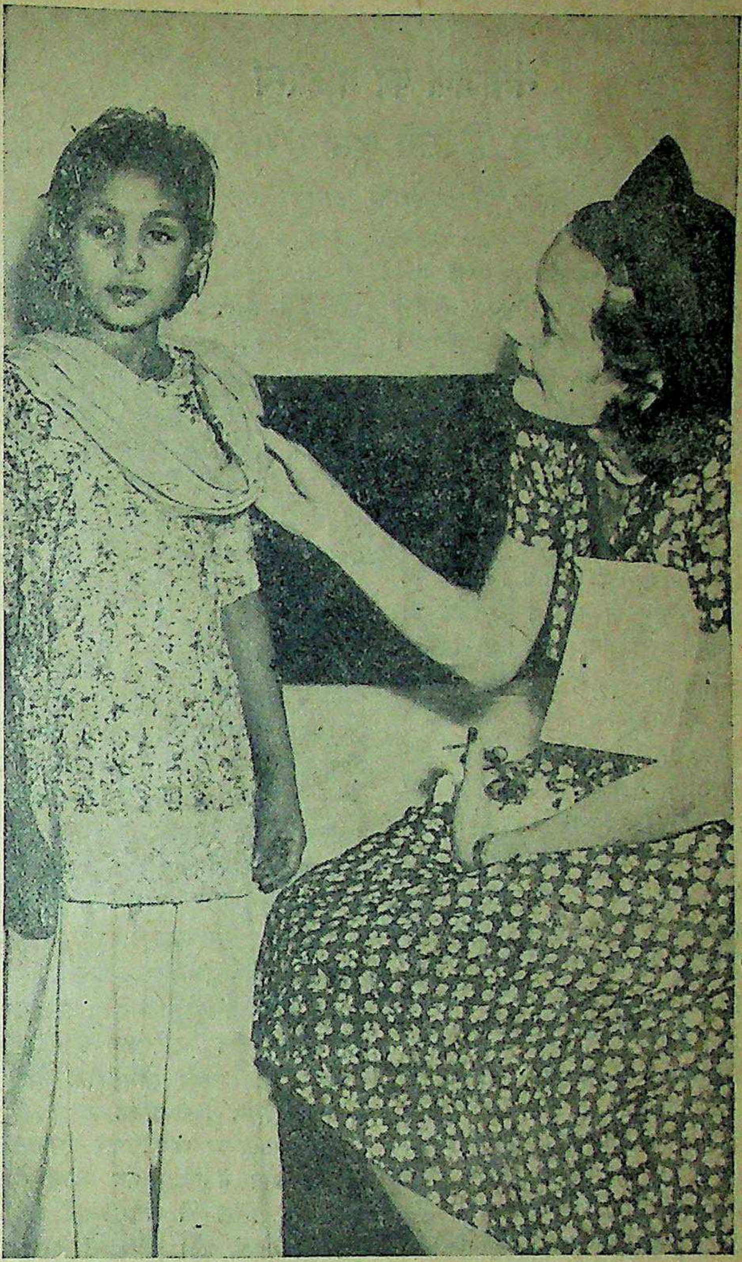

भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के अन्तिम प्रतीक अर्ल माउण्टबेटेन की पत्नी दिल्ली में भारतीय बालिका को प्यार करती दिखलाई दे रही हैं।

व्यवस्था की गई है। आधुनिक सभ्यता के जितने अंग हैं उनमें स्त्रियों की प्रधानता स्वीकार कर ली गई है। प्रधानता स्वीकार कर लेना तो मौखिक प्रश्न है। भारत ने उसे प्रयोगात्मक रूप देकर मौलिक बना दिया है। अभी अभी संयुक्तप्रान्तीय सरकार ने मजदूरों की न्यूनतम मजदूरी की जो घोषणा की है उसमें एक ही कार्य करनेवाले स्त्री-पुरुष की मजदूरी में समानता व्यवहृत करने का सिद्धांत स्वीकार किया है। ऐसी ही जितनी संस्थाये और कार्य सरकार द्वारा किये जा रहे हैं उनमें स्त्रियों के अधिकारों का खयाल रक्खा जाता है। मानवता का बहिष्कार करनेवाले पश्चिमीय देश अफ्रीका में एशियाई निवासियों के प्रति जो दुर्व्यवहार कर रहे हैं श्रीमती पंडित ने पेरिस में उनकी अच्छी खबर ली है।

संसार स्त्री-पुरुषों के समानाधिकार की घोषणा तो करता है परन्तु उसे प्रयोगात्मक रूप देने में हिचकिचा रहा है। उस हिचकिचाने का कारण भी है—उनका भ्रम है कि स्त्रियों को स्वतन्त्रता देने पर वे विदेशों में अधिक संख्या में प्रस्थान कर जायँगी, जिससे उनके देश की जन संख्या और राष्ट्रीयता को गहरा धक्का लगेगा। परन्तु यह उनका भ्रम है। भारत ने सर्वदा स्त्रियों को स्वतन्त्रता दे रक्खी थी। वह स्वतन्त्रता राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत होकर भी मानवता के प्रति प्रेम था। अशोक ने अपनी कन्या संघमित्रा को विदेश में धर्म प्रचारार्थ भेजा था। क्या अशोक को संदेह नहीं था कि उसकी कन्या विदेशी हो जायगी। उसे विश्वास था कि मानवता के प्रति प्रेम का संदेश देनेवाली यह कन्या संसार में आदर्श की देवी होगी। आज भी हमारे देश की कितनी महिलाएँ विदेश भ्रमण करके वापस आईं परन्तु यह नहीं सुना गया कि उन्होंने किसी विदेशी को अपनाया है। वे विदेशी के साथ भातृत्व रखती हैं, उसके दुख दर्द में सम्मिलित होती हैं परन्तु राष्ट्रीयता और मानव में भारत की आदर्श देवी हैं।

उपर्युक्त विवरण से प्रकट होता है कि भारतीय नारियों को पुरुषों के समान अधिकार दिये जाने से विश्व में एक नवीन क्रांति हुई है। भारतीय नारियाँ विश्व के क्षितिज पर एक जाज्वल्यमान तारा बनकर चमकने लगी हैं। जब तक विश्व के राष्ट्र नारियों के समानाधिकार का प्रयोगात्मक रूप नहीं देते उन्हें भय लगा ही रहेगा। ज्योंही उन्होंने भारत का आदर्श अपनाया त्योंही उनके दिल से भ्रम दूर हो जायँगे उस समय उनकी नारियाँ भी उनके देश को विश्व में उन्नति के क्षितिज पर चमका दगीं।

स्वास्थ्य-चर्चा

गंगाजल का माहात्म्य

स्वास्थ्य के लिये अमोघ रामबाण

लेखक, श्री कृष्णकुमार गुप्त बी० काम

मनुष्य के जीवन में जल एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। हमारे लिये भोजन इतना आवश्यक नहीं जितना जल। वह मनुष्य-शरीर का एक अंग है। जल लाभदायक होने के लिये यथासम्भव गुणयुक्त होना चाहिये। भौम जलों में गंगाजल अद्वितीय है।

सूर्यकुल के सगर नामक एक राजा ने एक समय अश्वमेध यज्ञ किया। राजा के केशिनी रानी से असमंजस नाम का पुत्र और सुमति नाम की रानी से ६०,००० पुत्र हुए। उन्होंने अपने पुत्रों को घोड़े की रखवाली पर नियुक्त किया। लोभी इन्द्र इस घोड़े को चुरा ले गया और कपिल मुनि के आश्रम में बाँध आया। राजा सगर के पुत्र घोड़े को खोजते खोजते जब कपिल मुनि के आश्रम में पहुँचे तो वहाँ घोड़े को बँधा देखकर उन्हें बड़ा क्रोध आया और उन्होंने मुनि को बहुत कुछ खोटी-खरी सुनाई। इस पर मुनि ने क्रोध कर उनकी ओर देखा तो वे भस्म हो गये। राजा ने असमंजस के पुत्र अंशुमान को अपने पुत्रों की खोज में भेजा। वह कपिल मुनि के आश्रम में पहुँचा और अनुनय-विनय करके घोड़े को माँग लाया। यहीं गरुड़ ने उसे उपदेश किया कि पृथ्वी पर गंगा जी के लाने का उद्योग करो। जब गंगाजल से तुम्हारे पुरखों की भस्म बहेगी तब उन्हें स्वर्ग प्राप्त होगा। अस्तु राजा सगर ने घोड़े का यज्ञ समाप्त किया और वे अंशुमान को राज्य दे वन को चले गये। अंशुमान का दिलीप नामक पुत्र हुआ। अंशुमान और दिलीप दोनों से गंगा लाने का कोई उद्योग न बन पड़ा। दिलीप का पुत्र भगीरथ हुआ। इसने घोर तप किया और अन्त में वह गंगा जी को पृथ्वी पर लाने में समर्थ हुआ। आकाश से गिरने पर गंगा जी का वेग सँभालने के लिये भगीरथ ने शिव जी की तपस्या की और उन्हें गंगा जी को अपने मस्तक पर धारण करने के लिये तत्पर किया। यह है गंगा जी के पृथ्वी पर आने की पैराणिक कथा।

हमें गंगावतरण में आस्था और विश्वास हो या न हो, गंगाजल में कुछ वास्तविकता अवश्य है और गंगा जी की महिमा निस्संदेह है। अनेक नास्तिक भी धार्मिक दृष्टि से नहीं तो स्वास्थ्य की दृष्टि से गंगा जी के भक्त हैं और गंगाजल के गुणों को स्वीकार करते हैं। वे चाहें गंगा जी को पूज्य न मानते हों परन्तु जब अपने चिकित्सक द्वारा आदेश पाते हैं तो अवश्य गंगा-तट पर आरोग्यप्राप्ति के हेतु जाते हैं और अवधि बीत जाने पर अपने को एक परिवर्तित मनुष्य पाते हैं।

दिव्य जल में स्वाभाविक छः गुण होते हैं:— (१) ठंडापन, (२) पवित्रता, (३) कल्याणकारिता, (४) स्वच्छता, (५) निर्मलता और (६) हल्कापन। यह प्रायः सभी न्यून अथवा अधिक मात्रा में, गंगाजल में पाये जाते हैं। गंगाजल अमृत के समान गुणकारी, पथ्य और त्रिदोशनाशक है। वह श्रम, मूर्च्छा, तन्द्रा, तृषा, वमन एक बारगी दूर करता है। वह मनोहर, पवित्र, बलकारक, तृप्तिजनक, हृदय को निरन्तर हितकारी, अजीर्ण को हरनेवाला, शीतल और हल्का है। वह मेधाजनक, रसायन, पाचक और बुद्धिवर्धक है। वह दूध और दवा होने का दावा रखता है।

अस्वस्थ मनुष्यों के लिये नित्यप्रति, प्रातःकाल गंगास्नान एक मुफ्त किन्तु बड़ी लाभप्रद ओषधि है। मेढकी का स्नान न लेकर स्नान आध घंटा पर्यन्त होना चाहिये। गंगा यदि घर से दो-तीन मील दूर हो तो और भी अच्छा है। उतनी दूर भ्रमण करते हुए जाना उचित है जिससे थोड़ा व्यायाम भी हो जाय। बहुत से मनुष्यों ने अनुभव किया है कि गंगाजल के सेवन से गर्मियों में प्यास कम लगती है, गंगास्नान करने से शरीर सारे दिन कार्य करने योग्य अवस्था में रहता है और उसे किसी प्रकार का आलस्य नहीं व्यापता, गंगा किनारे वास करने से आश्चर्यजनक स्वास्थ्य लाभ होता है। आरोग्य-प्राप्ति के लिये अनेक महापुरुषों ने समय समय पर गंगा-किनारे कल्पवास किये हैं। माघ में हरिद्वार तथा प्रयाग में कुम्भ और वार्षिक मेले गंगा-किनारे होते हैं। वहाँ सहस्रों और लाखों की संख्या में साधु, महात्मा और कल्पवासी एकत्र होकर गंगा की स्वच्छ, निर्मल तथा पवित्र जलवायु का सेवन कर अपने भाग्य को सराहते हैं।

जल में देश काल और पात्र के भेद से भिन्न-भिन्न गुणों का प्रादुर्भाव हो जाता है। गंगाजल सदैव सर्वत्र समान रहता है। वह कभी खराब नहीं होता; न उसमें कीड़े पड़ते हैं। वह देश के प्रत्येक कोने को जाता है। यह सत्यनारायण भगवान् की कथा के लिये चरणामृत बनाने के लिये व्यवहृत होता है, उसका प्रयोग शुद्धि करने के लिये किया जाता है, वह मृत्यु-शय्या पर पड़े रोगी को जीवन-दान एवं मुक्ति के लिये दिया जाता है। प्रयाग से १५) मन किराया देकर वह मद्रास इत्यादि मन्दिरों में चढ़ाने के लिये भेजा जाता है।

आधुनिक वैज्ञानिकों ने भी अपने अनुसन्धान द्वारा गंगाजल को गुणयुक्त पाया है। हिमालय पर्वत से निकली हुई नदियाँ पत्थरों से टकराती हुई बड़े तीव्र वेग से बहती हैं। गंगा के जल में गंधक, चूना इत्यादि खनिज पदार्थ मिले होते हैं। इससे इसका जल हल्का, निर्मल, हितकारी, पुण्यजनक और देवादि ऋषिगणों से सेवनीय है। विन्ध्याचलादि पर्वतों से निकली हुई नदियों का जल उलटे शिरोरोग, हृद-रोग, कोढ़ इत्यादि उत्पन्न करनेवाला है। यमुनाजल भी किंचित-भारी बात और जठराग्निजनक तथा रूखा है।

तुलसीदासरचित रामचरितमानस में गंगाजल को यथेष्ट महत्व दिया गया है। गोस्वामी जी ने गंगा को "जनपावनि" कहकर सम्बोधित किया है। वनवास जाते समय राम, लक्ष्मण और जानकी ने गंगा को प्रणाम किया है। सीता ने गंगा जी से अपना मनोरथ पूरा होने का वरदान माँगा था और गंगा ने सहर्ष दिया था। राम को मनाने के लिये भरत के आने के समय गुह का अपने योद्धाओं से "समर मरन पुनि सुरसरि तीरा" इत्यादि कथन गंगा जी की महिमा पुकार-पुकार कर कहते हैं।

धन्य है वह ग्राम और नगर उनके निवासी जिनके समीप गंगा है और जिससे वे लाभ उठाते हैं। वहाँ बारह स्नान करनेवाले तथा गंगाजल करनेवाले भी मिलेंगे। उसमें कोई नहीं। केवल यही है कि वर्षाऋतु शरदऋतु की अपेक्षाकृत कम लाभ है है। गंगा में इधर कुछ समय से पशुओं तथा मनुष्यों का प्रवाह और शहर के दूषित जल का समागम जल की पवित्रता को आघात पहुँचा है। इसे हमें रोकना चाहिये ताकि गंगाजल और गंगा जी से पूर्ण उठा सकें।

लिपटन के प्रेमी : ५

लिपटन की हिमालयन ब्लेण्ड से हमारे ग्राम की गुत्थियाँ आसानी से सुलझती हैं

गाँव का मुखिया

इस शान्त ग्राम का जीवन सुख व सन्तोष का मालूम पड़ता है परन्तु हमारी भी समस्यायें और मतभेद हैं। घरेलू झगड़ों को तय करना, चिढ़े हुए अफसर को शान्त करना यानी हमारे इस छोटे से समाज की सुख-शान्ति पर खतरा लानेवाली सभी समस्याओं को दूरन्देशी से सुलझाना आयेदिन लगा ही रहता है। आप समझ सकते हैं मेरा काम सहज नहीं है लेकिन बढ़िया चाय उसे सहज बना देती है और मेरे लिये बढ़िया चाय का मतलब है—लिपटन की हिमालयन ब्लेण्ड।

लिपटन की
हिमालयन ब्लेण्ड
सर्वोत्तम दार्जिलिंग चाय

Liptons Flowery Orange Pekoe
LIPTON'S

LTX 153

स्वतन्त्र भारत का नवीन आविष्कार
विद्यार्थियों—जनता तथा फोटोग्राफर्स को स्वर्ण अवसर

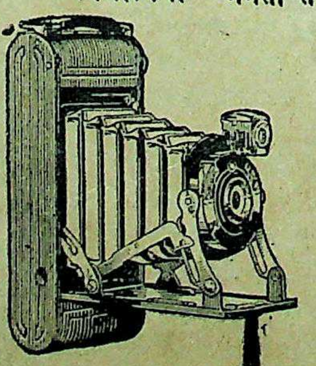

सुन्दर, मजबूत, टीन की बौडी, बढ़िया फोकस, लेन्स, विश्वसनीय हिन्दुस्तान के होशियार कारीगरों द्वारा बनाये हुए कीमत में काम में विलायती केमरों से टक्कर लेनेवाले। केमरों से आप चाहे जिस दिलपसंद चीज का टिकाऊ मनोहर फोटो नं० १२० के फिल्म पर २॥ × ३॥ इंच साइज का खींच सकते हैं।

नं० १ औरियन्ट कट् फिल्म बौक्स केमरा— मू० ८॥) पोस्टेज पैकिंग १॥) केमरे के साथ कट् फिल्म कार्ड, मसाला और फोटो खींचने की तरकीब मुफ्त। नं० २ औरियन्ट रौल फिल्म बौक्स केमरा—मू० १८॥) पोस्टेज पैकिंग १॥) फोटो खींचने की तरकीब मुफ्त। नं० ३ औरियन्ट रौल फिल्म फोल्डिंग केमरा— मू० २२॥) पोस्टेज पैकिंग १॥) फोटो खींचने की तरकीब मुफ्त।

गारंटी :—हमारा दावा है कि आप कभी भी असन्तुष्ट न होंगे केमरे से बढ़िया फोटो न खिंचे तो मूल्य वापिस।

ओरियन्टल केमरा हाउस (वी० जी० ओ० नं० २) अलीगढ़ सिटी

पंडित जवाहरलाल नेहरू

स्वर्गीय त्यागमूर्ति पंडित मोतीलाल नेहरू तथा पंडित नेहरू की स्वर्गीया माता श्रीमती स्वरूप रानी नेहरू। पंडित नेहरू की स्वर्गीय पत्नी श्रीमती कमला नेहरू तथा श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित।

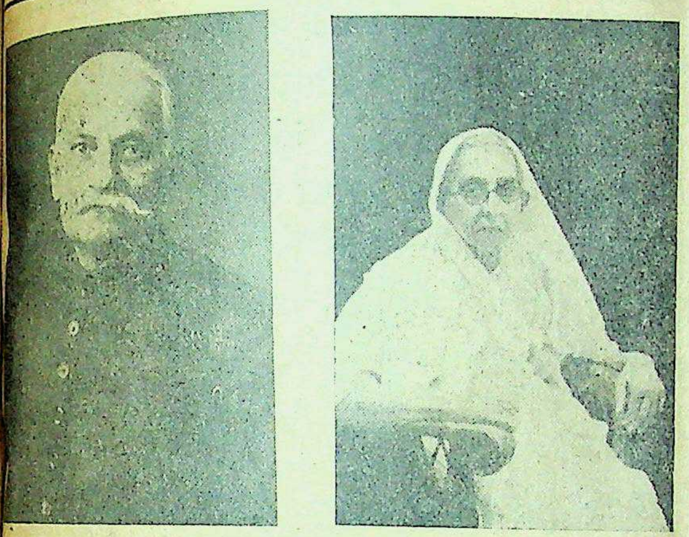

पण्डित मोतीलाल नेहरू और माता स्वरूप रानी नेहरू जिनकी सन्तानें विश्व-कल्याण में लगी हुई हैं।

पण्डित जवाहरलाल नेहरू को राष्ट्रीय नेताओं ने महात्मा जी का योग्य उत्तराधिकारी घोषित किया है।

श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित ने पेरिस के संयुक्तराष्ट्र-संघ में अफ्रीकन प्रश्न पर भारी बहुमत से विजय प्राप्त की है।

स्वर्गीया कमला नेहरू की मृत्यु के पश्चात् भी हजारों रुग्ण नारियाँ आज भी उनके

बर्मा और प्रवासी भारतीय

(पेज ५ का शेष)

हो गया है। विशेषतः निम्न श्रेणी के प्रवासी तो उन जानवरों की तरह हैं जिनसे मनुष्य ने काम लेना तो खूब सीखा है पर उनके काम की सराहना करना अथवा उनके श्रम को ध्यान में रखकर उनके पोषण-संरक्षण का भी प्रबन्ध करना न्याय का नहीं, व्यक्तिगत इच्छा और सदाशयता का आधेय माना है। इसका परिणाम जितना बुरा हुआ है उसे ठीक ठीक व्यक्त करने का दायित्व राजनीतिज्ञों ने संसार के इने-गिने मानववादियों के हाथ में सौंपकर अपने अपने स्वार्थों में भूले रहने की नीति का अनुसरण कर अपनी समझ से बुद्धिमानी ही क्यों न दिखलाई हो, पर तर्क और विवेक की कसौटी पर वे कभी खरे नहीं उतर सकते। यहाँ यह पूछा जा सकता है कि मानववाद मनुष्य कहे जानेवाले सभी प्राणियों की पैतृक सम्पत्ति नहीं है क्या ?

मुझे विश्वास है कि कम से कम एशिया, दक्षिण अफ्रीका और आस्ट्रेलिया के जाति-विभेद एवं अमानुषिक अत्याचारों की विभीषिका से बचने का प्रयत्न करेगा जिसका बीज आधुनिक युग में संसार के कोने-कोने में योरपवालों का बोया हुआ है।

* * *

रङ्गमञ्च

(पेज ११ का शेष)

हृदय उसने खूब अच्छे ढङ्ग से निभाया। सालवी डाक्टर की भूमिका में भारतीय संस्कृति के योग्य पथ-दर्शक रहे हैं। अपनी भूमिका में वे अच्छे आकर्षक साबित हुए हैं। ललिता पवार भी अपनी भूमिका में अच्छी रही। पात्र-चयन बहुत सुन्दर व स्वाभाविक हुआ है। इसके लिये निर्देशक अच्युत रानडे को धन्यवाद है। गीतकार लेखक व अन्य कलाप्रेमी सज्जनों ने जो सराहनीय कार्य किया उसके लिए समाज आभारी है। आशा करते हैं कि भविष्य में भी वह भारतीय संस्कृति को ख्याल में रखकर सही-सही घटनायें स्वाभाविक ही पर्दे पर दर्शायेंगे। अन्य निर्देशकों से भी यही आशा है कि वे 'फूल और काँटे' जैसी सुसंस्कृतिमय फिल्मों का प्रदर्शन करेंगे।

श्वेत कुष्ट की अद्भुत दवा

प्रिय सज्जनो! औरों की भाँति मैं अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहता। यदि इसके ३ दिन लेप से सफेदी के दाग जड़ से आराम न हों तो मूल्य वापस। जो चाहें -)॥ का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें। मूल्य २॥) रु०

१८ प्रकार के गलित कुष्ट के निराश रोगी अपनी पूरी-पूरी हालत लिखकर दवा मँगा लें और आराम होकर लाभ उठावें, वी० पी० छुड़ाते समय हमारा पता अवश्य देख लें।

विष्णु आयुर्वेदभवन नं० १२
पोस्ट वारसलीगंज, (गया)

स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधान मन्त्री की जीवन कहानी

जो देश के लिए अपने विशाल महलों को छोड़ कर जेलों की मुसीबतें सहन करता रहा औ अपनी आरामकुर्सियों और कालीनों को छोड़कर गाँव गाँव गुलामी की स्वतन्त्रता के लिये जगा फिरा। पुलिस की लाठियाँ और गोलियों की बौछार की परवाह न की और जिसने अपने बच्चों, बहनों को आजादी के लिये सौंप दिया और भारतवर्ष का वे ताज बादशाह जवाहरलाल नेह हैं। इस हीरा की जीवन कहानी और उसके अँगरेजों के विरुद्ध महात्मा जी की अनुमति Guidanc के अनुसार कारनामे। जवाहरलाल की जद्दोजेहद, मुसीबतें, जेलें, पुलिसवालों की लाठि अथवा इस पुस्तक में ऐसे हालात हैं, कि आपको उसकी काबिलियत का लोहा मानना पड़ेगा, और आ का दिमाग रोशन हो जावेगा हर सियासी काम करनेवाले। हर लाइब्रेरी हर पढ़े-लिखे को यह पुस् जवाहरलाल नेहरू की कहानी पढ़नी चाहिये। कीमत उर्दू, ५॥) हिन्दी, ५) डाकखर्च ॥) दो पुस्तकें मँगाने पर डाकखर्च माफ।

मिलने का पता—
नया किताब घर—उर्दू बाजार (D A) दिल्ली।

कसीदा मशीन

कपड़े पर हर प्रकार के सुन्दर बेल-बूटे, फूल-पत्ती, सीन-सीनरी काढ़ने की सुन्दर और मजबूत चाँदी की तरह चमकती हुई ४ सुइयोंवाली मशीन मूल्य ३) पैकिङ्ग पो० ।॥), कसीदाकारी की डिजाइन की पुस्तक मू० २) पो० ॥)।

सन्तोष ट्रेडिंग कम्पनी (एच ४)
पाठक स्ट्रीट, जैगंज, अलीगढ़

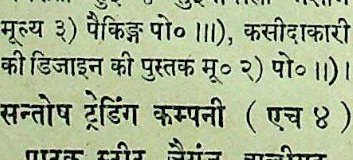

स्वतन्त्र रहना चाहते हो तो
परफ्यू मेडिका
द्वारा
वैज्ञानिक तरीके के फारमूला सीखिये सुगन्धित तैल, साबुन, शर्बत, स्याही पालिश, क्रीम, स्नो, पावडर, सैन्ट, पोमेड अलता, बिन्दी, नेलपालिस, लिपस्टिक, आदि सभी श्रृंगार सामिग्री व पेटेन्ट दवाऐं मल्हम तथा अनेक प्रकार के सामान जो विदेश से आते हैं। बनाकर धन और यश प्राप्त करें।
मूल्य ५)
शुभ प्रकाश कम्पनी मथुरा

भारतीय मार्ग के लिये अपनाइए तो अपनी
एच-बी-सी
बाइसिकल।
हिन्दुस्तान
इंडस्ट्रियल

मूल्य की सूचना

WOODWARD'S
"GRIPE WATER"

वूडवर्ड्स ग्राइप वाटर का सही फुटकर दाम निम्नप्रकार हैं:

प्रति शीशी: २ रुपये
(इसके अतिरिक्त लोकल टैक्सेस जहां लागू हों)
अधिक दाम मत दें

जब आप वूडवर्ड्स ग्राइपवाटर खरीदें
तब हर शीशीपर इस ट्रेडमार्क का अवलोकन करें

नक़ली मालसे सावधान रहिये!

W. WOODWARD LTD., LONDON, ENGLAND

देशदूत में विज्ञापन दीजिए।

संवाददाताओं के पत्र

हरिद्वार—हिन्दुस्तान स्काउट एसोसियेशन हर की पैड़ी हरिद्वार सेवा-कार्य के साथ साथ राष्ट्र-निर्माण की मुख्य मुख्य ओं पर कार्य कर रही है। हरिद्वार स्काउटों की ट्रेनिंग और उनके ट्रुप गाँवों में जा-जाकर रचनात्मक कार्य कर रहे हैं। पिछले दिनों श्री शान्तिस्वरूप र्ग रीजनल आर्गेनाइजर तथा कार्यालया- हरिद्वार ने नार्मल स्कूल के ८० त्र अध्यापकों को स्काउट-शिक्षा दी। क्षा समारोह पर श्री नरदेव शास्त्री, श्री मोहन सक्सेना आदि महानुभाव स्थित थे। यह शिविर पहाड़ी घाटियों चलाया गया था। स्थानीय म्युनिसिपल लों के अध्यापकों की स्काउट ट्रेनिंग शान्तिस्वरूप गर्ग के प्रबन्ध से ता० नवम्बर से शुरू हो रही है

—संवाददाता

* * *

मथुरा—देशबन्धु-पुस्तकालय को निसिपल बोर्ड ने 'गांधी पार्क' में भवन नाने के वास्ते जमीन दी है, जिसका न्यास इसी वर्ष होने की सम्भावना इसी कारण इस वर्ष पुस्तकालय का कोत्सव नहीं किया गया है, पुस्तका- का वार्षिक नवनिर्वाचन इसी महीने में रहा है। पुस्तकालय भारत-सरकार द्वारा स्टर्ड भी हो गया है। आशा है मथुरा पुस्तकालय का अभाव शीघ्र ही दूर । धनी-मानी सज्जनों को शिक्षा र में अधिक सहायता देकर देश को गे बढ़ाना है।

वैजनाथ दान
प्रबन्ध मन्त्री

* * *

सुल्तानपुर—ता० १७-११-४८ को श्री रणवीर विद्यालय में पंजाब केसरी ला लाजपतराय जी की निधन तिथि श्री रणञ्जयसिंह की अध्यक्षता में ई गई। उक्त युवराज महोदय ने लाला जी के साहस, देशप्रेम, क्ति, धर्मानुराग आदि अनेक गुणों शंसा करते हुए कहा कि वे केन्द्रीय सभा के हमारे स्वतन्त्र राष्ट्रीय दल ता थे। साइमन कमीशन का पूर्ण ष्कार उन्हीं की योग्यता और तत्परता परिणाम था। उन्होंने देश और शों में भारत की जो गौरव-वृद्धि की अत्यन्त प्रशंसनीय है। वे देश के महान् कर्मवीर नेता थे, डी० ए० वी० लाहौर की स्थापना में उनका प्रमुख था। मुझे भी उनके नेतृत्व में कई वर्ष र्य करने का सौभाग्य प्राप्त है। ऐसे र्शों वे देश के एक महान् एवं वीर थे उनकी मृत्यु भी वीरतापूर्ण ही थी।

यंसेवी हीरो शिवदुलारे तथा उदित यणसिंह ने स्वर्गीय लाला जी के प्रति ञ्जलि भेंट की।

—संवाददाता

* * *

मद्रास—हिन्दी लेखक-संघ की बैठक ता० १३-११-४८ को श्रीमान् शिवराज जी शर्मा की अध्यक्षता में हुई। इस बैठक में श्री वसन्त पुराणिक श्री रामेन्द्रकुमारसिंह, श्री विट्ठलराव, श्री हीरासिंह—"मदन" ने अपनी अपनी कहानियाँ सुनाईं और श्री राजेन्द्रकुमार-सिंह, श्री प्र० वेङ्कटराव जी ने अपनी कविताएँ सुनाईं जिनसे सभा की कार्यवाही अत्यन्त सफल हुई।

आशा की जाती है कि मद्रास के अन्यान्य हिन्दी-साहित्य-प्रेमियों के सहयोग से यह संघ पूर्ण रूप से पल्लवित होकर जनता और साहित्य की सेवा सफलपूर्वक कर सकेगा।

—राजा

* * *

जोधपुर—स्थानीय नागरी प्रचारणी सभा तथा मारवाड़ कुमार साहित्य परिषद् के तत्त्वावधान में 'हिन्दी रक्षा दिवस' का विशाल आयोजन किया गया। दिवस का उद्घाटन करने हेतु युक्तप्रान्तीय महिला कांग्रेस की प्रधान मंत्री, 'नारी' की सम्पादिका और हिन्दू काशी विश्वविद्यालय की महिला-विभाग की अध्यक्षा श्रीमती हरदेवी मलकानी एम० ए० बी० टी० कल शाम को पधारीं। स्टेशन पर स्थानीय संस्थाओं के प्रतिनिधियों तथा पत्रकारों ने उनका फूल-मालाओं द्वारा स्वागत किया। नागरी सभा के अध्यक्ष डा० महावीरसिंह गोहलोत एम० ए०, एल०-एल० बी०, मंत्री श्री 'राकेश' अ० भा० कुमार हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के संयुक्त मंत्री तथा कुमार साहित्य-परिषद् के प्रचाराध्यक्ष श्री नेमीचन्द्र भावुक, परिषद् के संयुक्त मंत्री श्री जयदत्त शर्मा, प्रसिद्ध राजस्थानी संगीतज्ञ श्री पी० देव आर्य आदि स्टेशन पर विशिष्ट व्यक्तियों में से उपस्थित थे। कुमार साहित्य-परिषद् ने आज लगभग ५ हजार हिंदी के पक्ष में लोगों से हस्ताक्षर करवाये। हिंदी दिवस का उद्घाटन करते हुए श्रीमती मलकानी ने कहा कि किसी भी जन प्रिय सरकार के लिए जन-भावनाओं की उपेक्षा करना ठीक नहीं है। आज नगर में कुमार साहित्य परिषद् के कार्यकर्ताओं ने 'हिन्दी ही क्यों' पर जगह जगह लोगों को समझाया।

—संवाददाता

* * *

उदयपुर—"राजस्थान विश्वविद्यापीठ" की ओर से संयुक्त राजस्थान सरकार को राजस्थान विश्वविद्यापीठ एक्ट बनाने के लिये निवेदन किया गया है। आज सौभाग्य से संयुक्त राजस्थान राज्य में अपनी लोकप्रिय कांग्रेस सरकार कायम है। जिसको जनता का नैतिक और परोक्षतः विधि बल प्राप्त है। उदयपुर हिन्दी विद्यापीठ को राजपूताने के शिष्ट सामान्य नागरिकों तथा प्रतिभाओं का पूरा समर्थन लेकर "राजस्थान विश्वविद्यापीठ" में बदल गया है। राजपूताने की जनता के शिष्ट सामान्य, जन-संस्थायें लोकनेता आदि इसके हामी हैं और वे चाहते हैं कि संयुक्त राजस्थान सरकार ऐसा ऐक्ट बनाये।

—संवाददाता

* * *

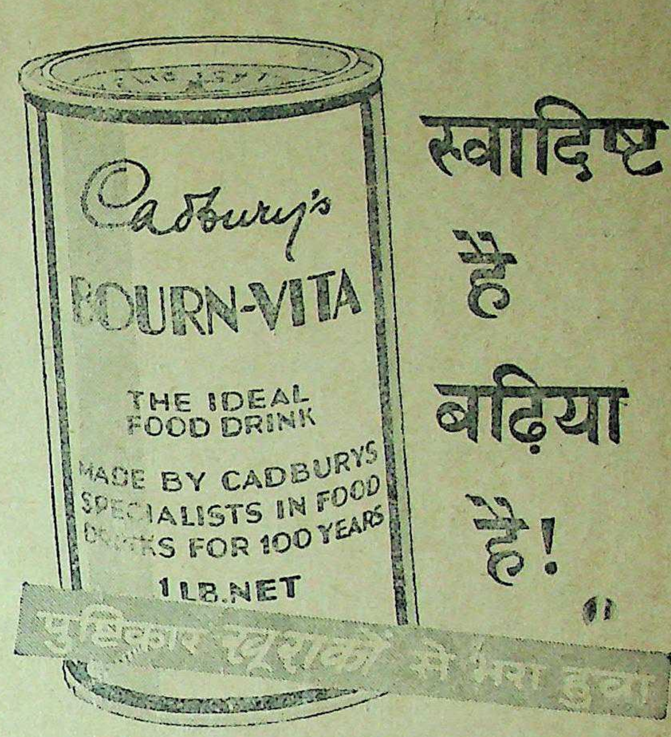
Cadbury's
BOURN-VITA
THE IDEAL FOOD DRINK
MADE BY CADBURYS SPECIALISTS IN FOOD DRINKS FOR 100 YEARS
1 LB. NET
पुष्टिकार खुराकों से भरा हुआ
स्वादिष्ट है बढ़िया है!

'बोर्न-विटा' में हड्डी बनाने और ताक़त देनेवाले उपादान ९५ सैकड़ा से अधिक ही होते हैं। साथ ही साथ यह ऐसा मज़ेदार होता है कि इससे हाज़मा तेज़ हो जाता है और यह आसानी से हज़्म भी हो जाता है। ख़ास तौर पर गर्भ और स्वास्थ्य लाभ के दिनों में।

केडबरी का
बोर्न-विटा
केल्सियम और ग्लुकोज से भरपूर

K. B. 1

बृहत्
अमेरिकन होमियोपैथिक पारिवारिक चिकित्सा
(मूल ले०—महामना डा० सैमुयल हैनिमैन का आशीर्वाद)
ले०—डा० यदुवीर सिन्हा एम० डी० एस० (U.S.A.)
प्रिन्सिपल—दि सिन्हा होमियो मेडिकल कालेज एन्ड हासपिटल
पो० लहेरियासराय (बिहार)
आज ही ३) एडवान्स के साथ आर्डर भेज दें।

यह पुस्तक होमियोपैथी का मूल मन्त्र है। इसकी एक-एक बात चिकित्सा जगत के गूढ़ से गूढ़ भेद बतानेवाली कुञ्जी है। सदृश विधान ही संसार में सबसे उत्तम चिकित्सा विधान है। विरोधियों का माथा झुका दिया और दुनियाँ को बता दिया कि बीमारी को जड़ मूल से दूर करने के लिये, किस ढंग से औषधि प्रयोग करना चाहिये। इतना ही नहीं, रोगी के लिये दवा को चुनने की विधि, दवा बनाने की विधि, तथा दवाओं के प्रयोग करने की रीति, चिकित्सा सम्बन्धी ऐसी कोई भी बात नहीं है जो इसमें न बताई गई हो। साधारण तथा डाक्टरों के जानने योग्य बातें भरी पड़ी हैं, क्योंकि इसमें होमियोपैथी के हरेक सिद्धांत को बड़ी बारीकी से समझाया गया है। सुन्दर छपाई पृष्ठ १००० मू० ६।) रु० लागत मात्र।

प्रकाशक—
सिन्हा एण्ड को० (अमेरिकन होमियो फार्मेसी)
लहेरियासराय (बिहार)।

बीकानेर—रियासत की सरहद पर बराबर पाकिस्तानियों के हमले हो रहे हैं इन सब हमलों में जो सबसे बड़ा हमला पाकिस्तानियों का हुआ है वह रियासत की सरहद पर स्थित रायसिंहनगर तहसील का ख्यालीवाला का है। इस हमले की पूरी पूरी खबरें अत्र विश्वस्त रूप से जानकर करणपुर तहसील कांग्रेस के मंत्री ने व गाँव के लोगों ने भेजी है उन्होंने लिखा है—

तारीख १२ को करीब १०० पठानों ने जो मशीनगन व दूसरे हथियारों से लेस थे, ख्यालीवाला पर हमला कर दिया और लूट-पाट मचानी आरंभ कर दी, गाँववालों ने आर्मड पुलिस से प्रार्थना की कि वह उनकी रक्षा करे, परन्तु उन्होंने यह वह कर टाल दिया कि हमें फायर करने की आज्ञा नहीं है, थोड़ी देर बाद मिलिट्री पहुँची और उन लुटेरों का मुकाबला किया फिर भी गाँव के तीन आदमी कत्ल कर दिये गये और तीन-चार बुरी तरह घायल हुए। आपस के मुकाबले पर भी करीब ५० हजार के माल का नुकसान हुआ, जिसमें नकदी, पशु आदि सम्मिलित हैं। पाकिस्तानियों ने एक औरत के कान में से इयरिंग इस बुरी निर्दयता से खींचे कि उसका कान ही टूट गया और खून बहने लगा। इन सब कार्य से आस-पास की मंडियों जैसे रायसिंहनगर, कर्णपुर, गजसिंहपुर में घबड़ाहट फैल गई है ठीक समय पर इसकी सूचना सम्बन्धित अधिकारियों को दी जा चुकी है।

बीकानेर राज्य के किसान अधिकांश जागीरी क्षेत्र में होने के कारण, बहुत दुखी और मुसीबत में हैं। जागीरदार की ओर से नित नये जुल्मों की शिकायतें, कार्यालय में आती हैं। जिन्हें देखकर जिला कांग्रेस ने विशेष रूप से किसानों के लिए किसान-समिति की स्थापना की है जो किसानों पर होनेवाले अत्याचारों को देखे-सुने और किसानों की रक्षा करे।

—संवाददाता

* * *

पटना के नागरिकों ने 'प्रसाद' परिषद् के तत्त्वावधान में आगामी दिसम्बर मास में, शिवजी के अभिनन्दन-समारोह का आयोजन किया है। इस महान् कार्य में परिषद् की ओर से हम आपके सहयोग की प्रार्थना करते हैं। हमारी प्रार्थना है कि शिवजी के सम्बन्ध में आप अपने विचारों को लिपिबद्ध कर अधिक से अधिक १० दिसम्बर १९४८ तक हमारे पास भेजने की कृपा करें जिससे यथाशीघ्र हम उन्हें मुद्रित करा लें। लेखक अपनी भावनाओं को लेख, संस्मरण या संदेश के रूप में अथवा अन्य किसी रूप में कुछ पंक्तियों में भी भेजने के लिए स्वतन्त्र हैं।

—संवाददाता

* * *

चारुवा (होशंगाबाद)—रविवार को प्रातःकालीन अरुणिम वेला में "जवाहर-जयन्ती के उपलक्ष" में प्रभातफेरी विशाल जन-समूह के साथ निकाली गई जो कि स्थानीय प्राचीन किले में जाकर समाप्त हुई। झंडावन्दन के अनन्तर तुमुल "जयघोषों" के मध्य प्रातः कार्य समाप्त हुआ। सायंकाल नेहरू चौक में 'आम कांग्रेस कमेटी' के तत्त्वावधान में मंडलाधीश श्री शिवनारायण जी शर्मा की अध्यक्षता में सभा हुई। एक अत्यन्त सुन्दर पत्र पुष्पजटित भव्य मञ्च पर पावन सूत्र एवं पुष्प-हारों से शोभित विश्ववद्य बापू एवं विश्व गौरव जवाहर के चित्र सभा को गौरव प्रदान कर रहे थे। वक्ताओं ने, जिनमें सर्वश्री कान्ताप्रासद जी परसाई, पं० हरनारायण जी शर्मा, शिवकुमार शर्मा एवं श्री पराशर मुख्य हैं, अपने गम्भीर मनोवैज्ञानिक एवं सारगर्भित भाषणों में 'नेहरू जी के चिरायु' होने की कामना की और उनकी सेवाओं के लिए अपनी श्रद्धांजलियाँ भेंट कीं। वन्दे मातरम् के बाद कार्य समाप्त हुआ।

सभा के साथ ही स्थानीय श्री "गुप्तेश्वरवाचनालय" का वार्षिक अधिवेशन भी हुआ जिसमें मन्त्री ने वार्षिक रिपोर्ट पढ़ जनता में साक्षरता पैदा करने की अपील करते हुए सहयोग की भावना चाही। एक निर्विरोध प्रस्ताव द्वारा भारत-सरकार से "राष्ट्रभाषा हिन्दी" को ही रखने की माँग की।

९ नवम्बर को "हिन्दी दिवस" मनाया गया। हिन्दी-साहित्य-समिति का निर्माण भविष्य में कार्य संचालनार्थ किया गया और उसे प्रांतीय सम्मेलन से सम्बद्ध करने का प्रयत्न हो रहा है। निम्नलिखित पदाधिकारी आगामी वर्ष के लिये चुने गये हैं—सभापति श्री कामताप्रसाद जी परसाई (हि० मा०) उपसभापति श्री शिवनारायण शर्मा (मंडलाधीश), मन्त्री श्री नर्मदाप्रसाद पाराशर (पाठक), उपमंत्री श्री मोतीलाल सेन, और कोषाध्यक्ष श्री रामशङ्कर भगत।

सर्वसम्मति से पास प्रस्ताव द्वारा भारत-सरकार की "हिन्दुस्तानी नीति" की आलोचना करते हुए 'राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्रलिपि देवनागरी' रखने की माँग की गई।

—संवाददाता

* * *

लखनऊ—युक्तप्रान्त में गत अक्टूबर १९४८ से १७ नये डाकखाने देहाती क्षेत्र में खोले गये हैं। इन डाखानों के खुलने से २५० गाँवों का लाभ होगा। इन गाँवों में ४ डाकखाने भली प्रकार से आत्मनिर्भर होकर चल सकते हैं। १३ डाकखानो के लिए ३५४२॥≶) तीन हजार पाँच सौ बयालीस रुपये पन्द्रह आने वार्षिक हानि होने का अनुमान है, ये डाकखाने:—अमोलर (फतेहगढ़), निमैनी (एटा), बेरी (एटा), सराय नीम (एटा), यकुटगंज (एटा), गोरहा (एटा), परखाम (मथुरा), इज्जतपुर (अलीगढ़), मन्दपुर (अलीगढ़), नौकोचिपाताल (नैनीताल), काफरा (अलमोड़ा), पिण्डारा (सुल्तानपुर), गेरखेत (पावड़ी), बिसाबाजीर (अलमोड़ा), उतरावल (बस्ती), दुबेपुर (प्रतापगढ़), और महाराजनगर (सीतापुर)—

घर बैठे डाक्टर बनिये

थोड़े पढ़े लिखे भी घर बैठे होम्योपैथी बायोकेमिस्ट्री, प्राकृतिक चिकित्सा जल चिकत्सा, वायु चिकित्सा; तथा सूर्य चिकित्सा के डाक्टर बन सकते हैं। नियमावली मुफ्त मँगायें।

इंटर नेशनल इन्स्टीटयूट रजिस्टर्ड अलीगढ़

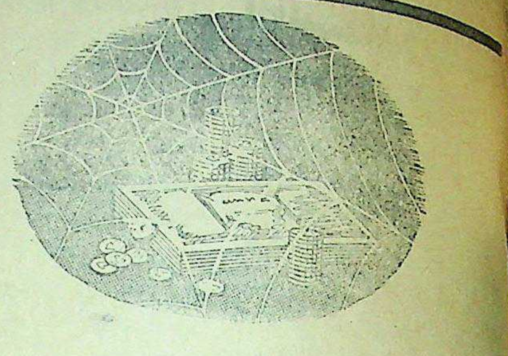

रुपये पर जाला

क्या आप जानते हैं कि एक ऐसी मकड़ी है जो आप के रुपये को धीरे २ अपने जाल में खींचे जा रही है ?—वह है नफ़ाख़ोर। वह समझता है कि आज कल चीज़ें भली भांति पर्याप्त नहीं और यही कारण है कि वह उनके दाम बढ़ा चढ़ा कर मांगता है। वह प्रायः वास्तविक मूल्य से कहीं अधिक दामों पर अनावश्यक चीज़ें ख़रीदने का प्रलोभन देता है। और घाटे में आप रहते है।

यदि आप बुद्धिमान हैं तो आप अपनी अनावश्यक ख़रीदारी को स्थगित कर दें और इस प्रकार आप केवल अपनी आय की बचत ही नहीं करेंगे बल्कि आप नफ़ाख़ोर को भी चीज़ों के दाम कम करने पर विवश कर देंगे। उचित तो यही है कि आप अपनी बचत को विभिन्न सरकारी सिक्योरिटियों में लगाइए। इन में आप की पूँजी सुरक्षित रहेगी और आप को ब्याज भी अधिक प्राप्त होगा।

नैशनल सेविंग्ज़ सर्टीफ़िकेट्स ख़रीदिए। ये ५, ७, और १२ वर्ष की विभिन्न अवधियों में प्राप्त किये जा सकते हैं और अवधि के समाप्त होने पर इन पर क्रमशः ३%, ३-१/२% और ४-१/६% ब्याज प्राप्त होता है।

अन्य सरकारी सिक्योरिटियों, डाकख़ानों और सेविंग्ज़ बैंक के खातों, बीमा कम्पनियों और कोऑपरेटिव संस्थाओं की मद में रुपया लगाइए।

भविष्य के लिए आज बचाइए
जो कुछ बचाइए बुद्धिपूर्वक लगाइए

हिन्द सरकार के अर्थ विभाग, नई देहली, द्वारा प्रकाशित।
AC.419

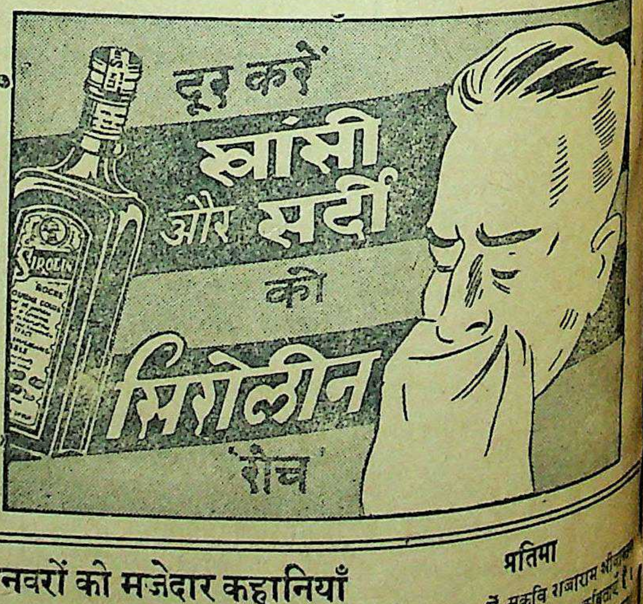

जानवरों की मजेदार कहानियाँ

मोर और कौआ, लोमड़ी और गधा, चालाक बुढ़िया, सोने की चिड़िया, सिंह और सियार आदि कहानियाँ पढ़िए और इनका चमत्कार देखिए। मोटे टाइपों में अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य ।।≶)

प्रतिमा

इस संग्रह में सुकवि राजाराम श्री की एक से एक बढ़िया ५० कविताएँ हैं। इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा है। भाषा और क्या भाव सभी अनुपम हैं। रंगीन आवरण, बढ़िया छपाई और केवल १) एक रुपया।

मैनेजर इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

हमारे कुछ धार्मिक ग्रन्थ

महर्षि वेदव्यास के महाभारत का अक्षरशः अनुवाद। अगणित रँगीन और सादे चित्रों के कारण महाभारत का यह संस्करण जैसे बहुत ही नयनाभिराम है वैसे ही सीधी और सरल भाषा में लिखा हुआ होने के कारण स्त्री-बच्चों से लेकर बड़े-बूढ़ों तक के लिए उपयोगी है।

इस ग्रंथरत्न का बड़ा आदर है। इसकी प्रति प्रत्येक भारतवासी के घर में होनी चाहिये। इसके पठन-पाठन से सभी का उपकार होता है।

मूल्य ८०) अस्सी रुपये

महात्मा तुलसीदास जी का

राम-चरित-मानस

'मानस' का महत्त्व किसी से छिपा नहीं है। भारतवर्ष में तो इसका मान है ही, अन्य देशों में भी इस अमर काव्य का आदर है। यह प्रामाणिक संस्करण इधर कई वर्ष से अप्राप्य था। इसके टीकाकार राय बहादुर बाबू श्यामसुन्दर दास हैं। यह हाल ही में छप कर तैयार हुआ है। मोटे अक्षरों में मूल ग्रन्थ है और छोटे अक्षरों में सुन्दर सरल भाषा में अर्थ है। बालक, बूढ़े और स्त्रियाँ सभी इस संस्करण से लाभ उठा सकते हैं। इस ग्रन्थ से घर की शोभा बढ़ती है।

ग्राहक शीघ्रता करें। अधिक प्रतियाँ नहीं छापी गई हैं। बड़े आकार के १२०० पृष्ठ रंगे दर्जनों चित्र। बढ़िया मजबूत जिल्द वाली प्रति का मूल्य १२) रुपये

हिन्दी-महाभारत

आचार्य द्विवेदी जी ने इसमें महाभारत के अठारहों पर्वों की कथा बहुत ही मधुर और सरल भाषा में लिखी है। मूल्य ६) छः रुपये।

श्रीमद्भागवत

सुन्दर सरल भाषा में किया गया अविकल अनुवाद। महाभारत की तरह इसमें भी सादे और रंगीन चित्रों की भरमार है और सुबोध भाषा में लिखा हुआ होने के कारण आबाल-वृद्ध-वनिता सभी के लिए उपयोगी है। मूल्य १६) सोलह रुपये।

वाल्मीकीय रामायण

(सचित्र) दो भाग

महर्षि वाल्मीकि का रामायण हिन्दू-संस्कृति का इतिहास है। यह महाभारत से भी प्राचीन है। संसार भर में कोई भी ऐसी सभ्य भाषा नहीं है जिसमें इस ग्रन्थ का अनुवाद प्रकाशित न हुआ हो। हिन्दी में इसका बढ़िया अनुवाद नहीं था, उसी कमी को पूरा करने के लिए हमने इसका अनुवाद सरल भाषा में प्रकाशित किया है। सारी पुस्तक उपन्यास की तरह पढ़ते जाइए, समझने में कहीं जरा भी कठिनाई नहीं पड़ेगी। मूल्य ६॥) छः रुपये आठ आने प्रतिभाग।

प्राणायाम-विज्ञान और कला

पाश्चात्य मनीषी डाक्टर शोजाबुरो ओटेव नामक सुप्रसिद्ध चिकित्सक के प्राणायाम-सम्बन्धी लगातार कई वर्ष के अनुभव का वर्णन। मूल्य १) एक रुपया।

आध्यात्मिकी

आचार्य द्विवेदी जी ने इस पुस्तक में हमारे ऋषि-मुनियों से लेकर नये से नये देशी और विदेशी आस्तिक और नास्तिक हर तरह के विद्वानों के मत का सार खींचकर रख दिया है। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

सदुपदेश-संग्रह

इसमें देश-विदेश के महात्माओं के उत्तमोत्तम उपदेशों का सुन्दर संग्रह है। इसका मनन करके हम अपने जीवन को सार्थक तथा सुखमय बना सकते हैं। मूल्य ॥) आठ आने।

जहाँ पर हमारी ब्रांच या एजेंसी है वहाँ खरीदने पर डाकखर्च की बचत होगी।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

भैरवी
सोहनलाल द्विवेदी

पण्डित जवाहरलाल नेहरू तक ने 'भैरवी' की राष्ट्रीय कविताओं को पसन्द किया है। इसकी हजारों प्रतियाँ बिकी हैं। विद्वानों की सम्मति में भैरवी 'गांधीयुग' का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। मूल्य २।।≈) दो रुपये ग्यारह आने।

हिन्दी का एक आधुनिक काव्य है। इस काव्य की प्रशंसा विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से की है। मूल्य २) दो रुपये।

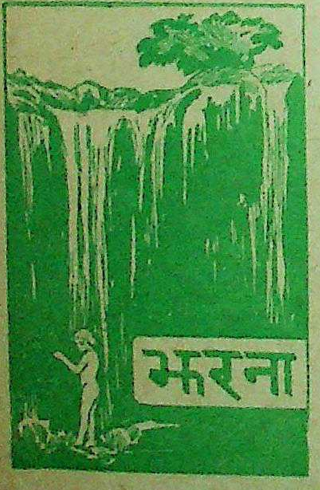

यह कवि सोहनलालजी की बालकोपयोगी २३ कविताओं का संग्रह है। मातृभूमि, जय-जय स्वदेश, हवा का झोंका, तुम बढ़ो चलो ही अकेले आदि सुन्दर कविताएं इसमें हैं। अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य केवल ।।।) बारह आने।

द्विवेदी-काव्यमाला

आचार्य पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी अमर कविताओं का पूर्ण संग्रह। पृष्ठ संख्या पांच सौ से ऊपर। अच्छा कागज। सजिल्द प्रति का मूल्य ४) चार रुपये।

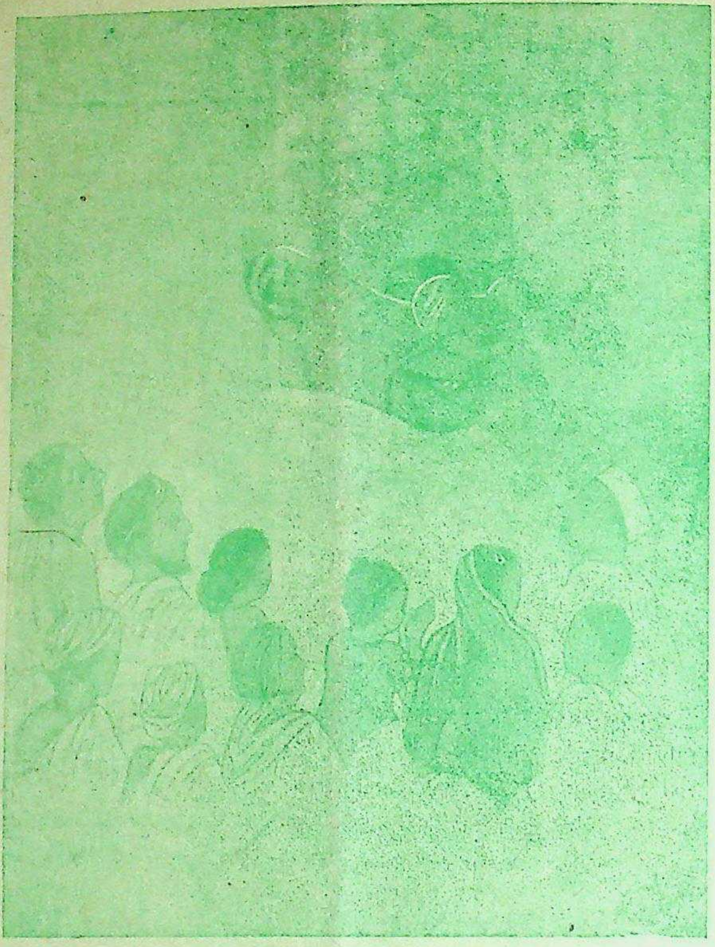

श्रद्धांजलि !

आज हम अपने प्यारे बापू को अन्तिम—श्रद्धांजलि समर्पित कर रहे हैं, किन्तु, हम शोक से इतने अभिभूत हैं कि हमें उचित शब्द भी नहीं मिल रहे, जिनसे हम अपनी यत्किंचित् श्रद्धा भी निवेदित कर सकें। फिर भी, भारतीय-वाङ्मय के समर्थ साहित्यकारों ने, हमारी मूक भावनाओं को वाणी प्रदान की है। उन्होंने यथोचित शब्दों में, छंदों में बापूजी का अभिनन्दन किया है। देश विदेश के इन प्रतिनिधि कवियों की कविताओं द्वारा हम बापूजी को आज अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करने के लिए समुचित सामग्री पा सकते हैं। महात्मा जी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए—तथा बापूजी की अमर ज्योति को जागृत रखने के लिए **गांधी-अभिनन्दन-ग्रंथ** ७।) तथा **सेवाग्राम** १०) (की सेवा स्वीकृत कीजिए)

अपराजिता

कवि 'अंचल' की मादक-मधुर कविताओं का अनूठा संग्रह। भाषा-सौष्ठव, अनुभूति की तीक्ष्णता, कल्पना की उड़ान और रस-प्रवाह की दृष्टि से ये कविताएँ हिन्दी-साहित्य में अनूठा स्थान रखती हैं। पण्डित नन्ददुलारे वाजपेयी भूमिका में लिखते हैं—"अंचल की विरह-साधना में बड़ी ही एकनिष्ठ, सजग, विह्वलताकारी तथा जीवनमय अनुभूतियों का संग्रह है। कवि के वास्तविक विद्रोह का यहीं से आरम्भ होता है। अपराजिता में अंचल की अनुभूतियाँ अपेक्षा से अधिक व्यापक और बहुमुखी हो गई हैं। वियोग के अन्तर्गत कवि की अनेकानेक अन्तर्वृत्तियों और मनोदशाओं का समारोह देखने योग्य हुआ है।"

इन कविताओं को पढ़कर आपको जीवन में एक नई प्रेरणा और नया दृष्टिकोण मिलेगा। पढ़िए और काव्य का स्वर्गीय आनन्द लूटिए। मूल्य ३) तीन रुपये।

कवि और छवि

सुप्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव प्रणीत

कवि श्री बालकृष्ण राव आधुनिक हिन्दी-जगत् के चोटी के कलाकार और सर्वश्रेष्ठ गीतिकार हैं। 'कवि और छवि' आपका नवीनतम गीतों का संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अंतर्द्वन्द्व से परिपूर्ण तो है ही, साथ ही सरस और हृदय पर मधुर प्रभाव और छाप छोड़ जानेवाला है। हृदय को तन्मय तथा गहन अनुभूति से सराबोर कर देनेवाले ऐसे गीत हिन्दी में आज लिखे ही नहीं जा रहे हैं। 'कवि और छवि' में संगृहीत सभी गीत बिलकुल नवीन हैं, पढ़ते पढ़ते हृदय उद्वेलित हो उठता है। छपाई-सफाई नयनाभिराम। सचित्र और सजिल्द प्रति का मूल्य केवल २) दो रुपये।

पूजागीत
सोहनलाल द्विवेदी

यह कवि की नवीनतम राष्ट्रीय क ताओं का संग्रह है। प्रत्येक कविता में स्फूर्ति का संचार करती है। पीले कागज पर छपी पुस्तक का मू दो रुपये।

कुणाल
सोहन लाल द्विवेदी

चक्रवर्ती अशोक के पुत्र कु कथा करुणापूर्ण भाषा में से लिखी गई है। पढ़ते समय कालीन भारतवर्ष का चित्र सामने खिंच आता है। मूल्य १।) रुपया चार आने। राज-संस्करण २)

समुद्र-मन्थन की पौराणिक आधार पर रचित खण्ड-काव्य। प्रवाह तथा ओज और पात्रों चित्रण कवि सोहनलाल जी की विशेषता है। मूल्य २) रुपया।

हल्दीघाटी

इस महाकाव्य पर लेखक श्यामनारायण पाण्डेय को दो हजार का देव पुरस्कार मिला है। हल्दीघाटी के प्रसिद्ध युद्ध की का वर्णन बड़े ही अनूठे ढंग से कविता में किया गया है। मूल्य

मैनेजर—बुकडिपो इण्डियन प्रेस लिमिटेड

गुरुकुल कांगड़ी,

षिक मूल्य ७॥)
तिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

र, १२ दिसम्बर, १९४८ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 12th December, 1948

न्दी भाषाभाषी भारतीय जनता का पत्र

घर की मधुरता और बढ़ाइए

इन-री-हो

की बनाई हुई 'रेशमी मिठाई', 'फ्रूट ड्रांप्स' और 'क्रीमोला' टाफी हाथ में पाते ही बच्चों की किलकारी और हँसी से घर गूँजने लगता है।

बच्चों को हँसाने और खुश करने के लिए 'इन-री-हो' की बनाई मिठाइयाँ बाजार में बिलकुल बेजोड़ हैं।

क्रीमोला टाफी
इन-री-हो ड्राप्स

इंडस्ट्रियल
रिसर्च हाउस लिमिटेड
इलाहाबाद

मंजरी

सचित्र कलात्मक कहानी मासिक

जनवरी १९४८ से 'मंजरी' प्रतिमास अपूर्व सजधज के साथ प्रकाशित हो रही है। तिरंगा आवरण और दर्जनों चित्र रहते हैं। श्रेष्ठ कथाकारों की सरस कहानियाँ, धारावाहिक उपन्यास और कथा-साहित्य पर गंभीर आलोचनात्मक लेख पढ़ने की रुचि हो, तो आप 'मंजरी' के वार्षिक ग्राहक बन जाइए।

'मंजरी' को जब जिसने देखा, मुग्ध हो गया। विद्वान् आलोचकों और पत्र-पत्रिकाओं ने इसकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। वार्षिक मूल्य ६) छः रुपये।

तुलनात्मक भाषाशास्त्र

(भाषा-विज्ञान)

लेखक, डा० मंगलदेव शास्त्री एम० ए०, डी० फिल०

इसमें तुलनात्मक भाषाशास्त्र के सिद्धांतों का प्रतिपादन तथा संसार की भिन्न-भिन्न भाषाओं के परस्पर सम्बन्ध की सरल और सुबोध व्याख्या है। प्रोफेसर ए० सी० वुलनर, डा० भगवानदास, म० म० गंगानाथ झा और श्री गोपीनाथ कविराज, डा० लक्ष्मणस्वरूप और धीरेन्द्र वर्मा आदि मनीषियों ने और अन्य नामी साहित्यिकों तथा पत्रों ने इसकी प्रशंसा की है। पृष्ठ-संख्या पौने तीन सौ से ऊपर; अच्छा कागज, बढ़िया जिल्द; मूल्य केवल ५)।

हमारी नई पुस्तकें

संगति

आकाशरंजन मेहता नामी डाक्टर थे। उनकी खासी आमदनी थी। किन्तु उनकी अर्द्धांगिनी सुशिक्षित हेमप्रभा यह समझती थी कि डाक्टर मेहता सिर्फ आविष्कार की धुन में रहते हैं; मेरे पिता के दिये धन से ही गुजर होता है। इससे वह सिर-चढ़ी स्त्री बन गई थी। और डाक्टर मेहता उसकी फटकार सुनकर भी भीगी बिल्ली बने हुए अपने काम में लगे रहते थे। उनका मित्र प्रणयलाल जौहरी कई वर्ष विलायत में रहकर लौटा तो उनसे मिलने आया। उन्होंने हेमप्रभा से उसका परिचय करा दिया। परिचय इतना घनिष्ठ हो गया कि उससे बचने को डा० मेहता आँखों का इलाज कराने के बहाने दूसरे प्रान्त में चले गये। इधर प्रणयलाल का रंग गहरा होता गया। कई महीने बाद डा० मेहता नकली अन्धे बनकर लौटे और इसी रूप में उन्होंने हेमप्रभा के खोये हुये प्रेम पर अधिकार किया। पुस्तक को हाथ में लेकर समाप्त किये बिना पाठक छोड़ना नहीं चाहते। लेखक ने विलक्षण कथानक की सृष्टि करके गिरते हुए चरित्र को समुन्नत बनाया है। मूल्य १।) एक रुपया आठ आने।

यात्री

श्रीयुत पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी बी० ए० ने इस पुस्तक में लिखा है कि हम सभी अनन्त पथ के यात्री हैं। यह जीवन-यात्रा कब आरम्भ हुई और कहाँ इसकी समाप्ति होगी। लेखक ने क्यों लिखूँ, जीवन-पथ पर, स्मृति और शिक्षक-जीवन आदि २० शीर्षकों में विभिन्न विषयों पर परिमार्जित भाषा में उच्च विचार प्रकट किये हैं। यात्री अपने ढंग की अनुपम पुस्तक है। सचित्र आवरण की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

अनातोले फ्रांस की चुनी हुई कहानियाँ

फ्रांस के इस नामी कहानी लेखक की प्रतिभा का अनुमान पाठकों छाया-सुन्दरी, उसका पति, रूप की परी, मदारी, पेरिस की सुन्दरी और माल आदि कहानियों से लगेगा। प्रत्येक कहानी बेजोड़ है। सामाजिक चित्रण सजीव है। ये कहानियाँ पाठकों का मनोरंजन करने के साथ ही उपकार भी करेंगी। मूल्य १) एक रुपया।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

वनवास

(खण्ड-काव्य)

कवि राजाराम श्रीवास्तव बी० एस्-सी०, वकील ने इस काव्य में मर्यादापुरुषोत्तम रामचन्द्रजी के वनवास का वर्णन बड़ी सुन्दर कविता में किया है। पुस्तक कविता-प्रेमियों को मुग्ध कर लेती है। मूल्य ॥|=) चौदह आने।

अद्भुत कथा

इस पुस्तक में ऐसी विचित्र हृदयाकर्षक ११ कहानियाँ हैं जिनको लड़के बड़े चाव से पढ़ेंगे और सुनेंगे। कहानियों से शिक्षा भी मिलेगी। पुस्तक सभी के काम की है। मूल्य १।) एक रुपया आठ आने।

विषवृक्ष

यह सुप्रसिद्ध उपन्यास-प्रणेता राय-बहादुर बाबू बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का बढ़िया उपन्यास है। इसका हिन्दी रूपान्तर किया है कृतविद्य श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने। "विषवृक्ष सभी के घर के आँगन में लगा हुआ है। क्षेत्र-भेद से विषवृक्ष में रोग, शोक आदि नानाविध फल लगते हैं।" इस उपन्यास में विषवृक्ष है कुन्दनन्दिनी जो थोड़ी अवस्था में अनाथ हुई और नगेन्द्र बाबू का आश्रय पाकर उनके रिश्तेदार से ब्याही गई। फिर सत्रह साल की उम्र में विधवा हो गई। इसके रूप पर नगेन्द्र बाबू ऐसे रीझे कि उसके साथ विधवा-विवाह कर लिया। उपन्यास में वर्णित उलझनों में पड़कर पाठक चकरा जाते हैं। भाषा और कथानक सभी विचित्र है। मूल्य २) दो रुपये।

नवदुर्गा

नवदुर्गा बंगाली, पंडित की बेटी थी। उसका विवाह करने की चिन्ता में माँ-बाप और बेटी तीनों घर से कलकत्ते के लिए चले। रास्ते में केदारेश्वर तीर्थ में दर्शन करने के लिए ठहर गये। वहाँ के महन्त अम्बिकाचरणपुरी ने नवदुर्गा को प्राप्त करने के लिए जो जाल रचा उसका वर्णन पढ़कर पाठकों को दंग हो जाना पड़ता है। अन्त में महन्त का चरड चाकर अधरचन्द्र मुखोपाध्याय 'मियाँ की जूती और मियाँ का सिर' की कहावत के अनुसार महन्त जी से खासी रकम ऐंठकर और नवदुर्गा को विधि से पानी बनाकर चलता हुआ। लेखक ने महन्त जी की जो दुर्गति काशी में लाकर कराई है उससे पाठक विस्मित और खिन्न हुए बिना न रहेंगे। मूल्य १।) एक रुपया चार आने।

हार या जीत

इस उपन्यास में लेखक डा० व्रजेश्वर वर्मा एम० ए०, डी० फिल० ने एक देहाती लुहार की अल्पवयस्क बेटी को घटनाक्रम से, अनाथ दशा में, देहात से महराजगंज की रानी पृथाकुँवरि के आश्रय में पहुँचा दिया है। वहाँ रानी की कृपा से इस लड़की ने विद्या पढ़ी। फिर इसमें उन गुणों का विकास हुआ जिससे मनुष्य सभ्य होकर सम्मान पाता है। इसने असहयोग आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया और अन्त में कलकत्ता जाकर नौकरी कर ली। कई पुस्तकें लिखीं, विदेश-यात्रा के बाद रानी के कुँअर की प्रार्थना पर उससे विवाह किया। उपन्यास की घटनावली, विचारों का संघर्ष और चन्दा की नम्रतापूर्ण दृढ़ता सराहने योग्य है। मूल्य २) दो रुपये।

मैनेजर, बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

देशदूत

वर्ष ११, संख्या १५] [रविवार, १२ दिसम्बर, १९४८

आज दीप से दीप—

लेखक, प्रोफेसर चन्द्रप्रकाश वर्मा, एम० ए०

आज दीप से दीप जलाने का प्रसंग है।
ज्योति जिये, तम नष्ट-भ्रष्ट हो, जग जगमग हो,
ऐसा एक न पग हो जो मग में डगमग हो;
रग-रग में हो नवोत्शाह, नव हर्ष, नया रस,
यह न कहे कोई—मेरा यह स्वप्न भंग है।

चित्रकार का चित्र—रहे रचना जीवन की,
कवि-कविता में रहे कथा जड़ की, चेतन की;
गायक गा दे गीत कि नभ के तारे बोलें—
यह मानव-मन की कितनी ऊँची उमंग है।

बदल रहा युग, बदल रहीं हैं परिभाषाएँ,
द्वार खड़ी कवि! नव-युग की नव आशाएँ;
स्वागत कर, उठ, देख, ज्योति सर्वत्र एक सी—
नभ से भू तक एक रूप है, एक रंग है।

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

संसार में जितनी विचित्र घटनायें घटती हैं उनमें अकरीका सबसे प्रधान है। इस समय अमरीका सभी तरह से संसार के राष्ट्रों के लिए पनाह का केन्द्र-स्थल माना जा रहा है जिस प्रकार पिछले महायुद्ध के समय संसार के पराजित राष्ट्रों के भगेड़ू नरेशों का केन्द्रस्थल लन्दन बन गया था, उसी प्रकार लड़ाई के बाद विभिन्न राष्ट्रों के भगेड़ुओं का केन्द्रस्थल वाशिंगटन बन गया है। इसके सिवा अमरीका महाजनी का भी काम करने लगा है। उधर चीन में कम्युनिस्ट बढ़ते जा रहे हैं। इधर मैडम च्यांग काई शेक जार्ज मार्शल से मिलकर तीन अरब डालर की सहायता की मांग कर रही हैं। अभी अभी हाल में एक खबर न्यूयार्क की आई है कि एक २५ वर्ष की युवती बिलकुल मर गई थी लेकिन देखते देखते जिन्दा हो गई। इन सब बातों के देखते हुए यह कहना पड़ता है कि इस वक्त संसार में ऐहिक, भौतिक, दैविक सभी दृष्टियों से अमरीका की वाहवाही हो रही है। जिसे पंनाह लेनी हुई वह अमरीका की तरफ भाग खड़ा हुआ; जिसे पैसे की आवश्यकता हुई वह अमरीका की तरफ भाग खड़ा हुआ। इस प्रकार अमरीका इस समय संसार के राष्ट्रों का एकमात्र धनीधोरी है। गनीमत है कि भारत इस धनीधोरी के चक्कर में अभी नहीं पड़ा।

*   *   *

बम्बईप्रांतीय शिक्षा-विभाग ने अपने यहाँ यह हुक्म जारी किया है कि छात्र लोग अपने निवेदनपत्रों में सर और मैडम के स्थान पर गुरु जी और बहन जी का प्रयोग किया करें। अपने राम को जानकर प्रसन्नता होती है कि अँगरेजी का बहिष्कार किसी तरह हो तो रहा है। गुरु जी और बहन जी ही सही। लेकिन सवाल यह है कि उर्दू पढ़नेवाले विद्यार्थी आखिर अपने निवेदनपत्रों में क्या लिखेंगे? अगर कहीं उन्होंने गुरुजी के स्थान पर उस्ताद जी लिखकर अपने अध्यापकों को सम्बोधन किया तब तो मामला ही उलट जायगा फिर छात्रायें अपनी अध्यापिकाओं को बहन जी लिखें वह भी बेतुका सा जान पड़ता है। आशा है इस सम्बन्ध में अभी और विचार-विनिमय होगा तो इस सम्बन्ध में और भी स्पष्टता प्रकट होगी।

*   *   *

भारतीय पार्लियामेंट के अध्यक्ष श्री जी० वी० मावलंकर ने अपने एक वक्तव्य में कहा है कि भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्र-लिपि देवनागरी ही होनी चाहिए। यदि हिन्दी राष्ट्रभाषा न हुई तो भारत की एकता खतरे में पड़ जायगी। श्री मावलंकर का कथन बावन तोले पावरत्ती का है लेकिन विधान-परिषद् के उन हिन्दुस्तानी प्रेमियों की क्या हालत होगी जब श्री मावलंकर के कथनानुसार राष्ट्रलिपि और राष्ट्रभाषा का निर्णय हो जायगा।

*   *   *

शंघाई रायटर को सरकारी सूत्र से ज्ञात हुआ कि कई सौ अमरीकी जहाज यहाँ आ जायँगे। ज्ञात हुआ है कि ये जहाज तिंगताओ जल-केन्द्र से आ रहे हैं और अमरीका उत्तरी चीन से यहाँ इन्हें इसलिए भेज रहा है कि यहाँ रहनेवाले विदेशियों को संभावित उपद्रवों का कोई डर न हो। सरकारी राजधानी नानकिंग से खबर मिली है कि वहाँ से ७० मील दूर ३०,००० कम्युनिस्टों के यकायक बढ़ आने के कारण वहाँ की प्रथम रक्षापंक्ति में दरार पड़ने का खतरा है और मार्शल च्यांग उत्तर की ओर से कुमक भेज रहे हैं। उत्तरी चीन में सरकारी कब्जे के पीपिंग-टिंटसिन-टोंगशान त्रिकोण के मजबूत शासन का प्रबन्ध किया जा रहा है। यहाँ से कम्युनिस्ट बराबर पीछे हट रहे हैं। पीछे हटते हुए कम्युनिस्टों ने सरकारी फौज की तीन टुकड़ियों को घेर लिया है।

*   *   *

नई दिल्ली, रक्षा विभाग की एक विज्ञप्ति में बताया गया है कि विध्वंसक रदरहेम (बेड़े का अग्रणी), रिडाउट और रेडर का, जिन्हें हिन्द सरकार ने ब्रिटेन से लिया है, नाम क्रमशः राजपूत, रंजी और राना रखा जायगा। अगले वर्ष के आरम्भ में विध्वंसक हिन्द की नौसेना को मिल जायँगे और उसी समय इनके नये नाम रख दिये जायँगे।

ये विध्वंसक १६४२ में तैयार किये गये थे, इनका वजन १७०० टन से अधिक है। इन पर चार ४·७" की तोपें, चार दो पौंड का गोला फेंकनेवाली तोपें, आठ २० मिलीमीटर की तोपें, और आठ २१" के टारपीडो ट्यूब लगे हैं। राडर की आधुनिक व्यवस्था भी इन पर है। विध्वंसकों की गति ४० मील प्रतिघंटा से अधिक है।

*   *   *

नई दिल्ली, महात्मा गांधी की हत्या के मुकदमे में सरकारी वकील श्री दफ़्तरी ने अपनी बहस जारी रखी। आपने कहा कि मुखबिर बाडगे के बयान के अलावा भी काफी सबूत मौजूद है कि गांधी जी की हत्या के लिए षड्यन्त्र किया गया था। यह साबित हो चुका है कि २० जनवरी को छः अभियुक्त गोडसे, मदनलाल आप्टे, करकरे, शंकर तथा गोपाल गोडसे दिल्ली में थे। यह भी सिद्ध हो गया है कि ये लोग उसी दिन बिड़ला भवन में प्रार्थना के समय उपस्थित थे। दादा महाराज, दीक्षित महाराज, गरीब जुम्मा, मधुकर काले, खीरे आदि गवाहों के बयानों और डाक्टर परचुरे के इकबालिया बयान (जिसे बाद में उसने गलत बताया) से साबित हो जाता है कि गोडसे और आप्टे २७ जनवरी तक हथियारों की तलाश में लगे थे और इसीलिये ग्वालियर गये थे, ज्योतीगहरी किशन और सुन्दरलाल की गवाहियों से यह भी पता चला है कि गोडसे, आप्टे और करकरे २६ व ३० जनवरी को दिल्ली में मौजूद थे।

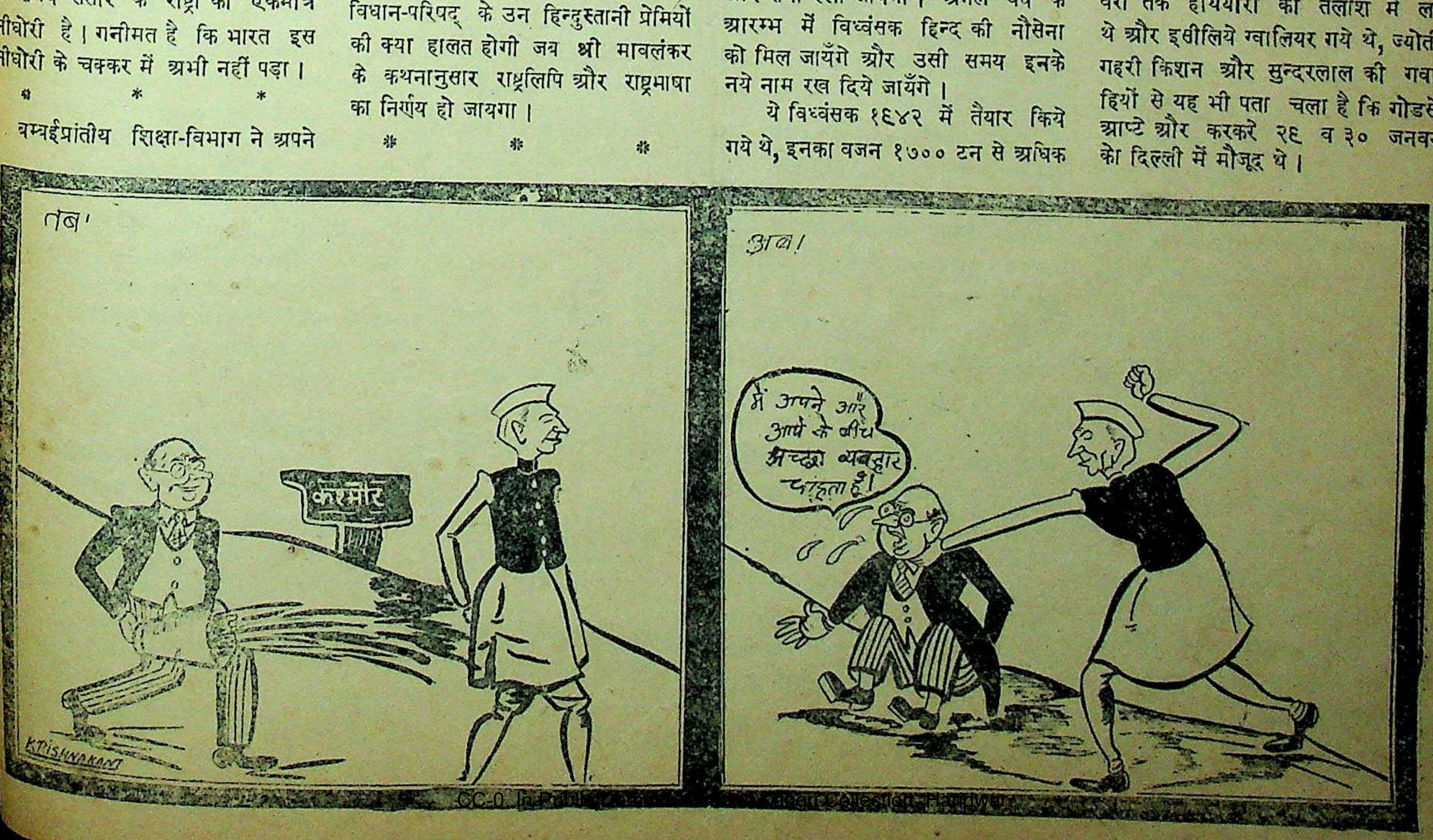
तब
कश्मीर
अब!
मैं अपने और आर्य के बीच अच्छा व्यवहार चाहता हूँ।

सम्पादक का पृष्ठ

कांग्रेस-अधिवेशन का महत्त्व

कांग्रेस महासमिति का वार्षिक अधिवेशन आगामी सप्ताह बड़ी धूम-धाम से जयपुर में होने जा रहा है। कांग्रेस संसार की उन महान् राष्ट्रीय संस्थाओं में है, जिसके द्वारा भारत को स्वाधीनता प्राप्त हुई। कांग्रेस के नेताओं ने जिस त्याग, बलिदान और तपस्या का परिचय, विश्वबन्धु महात्मा गांधी के अधिनायकत्व में दिया है, वह इतिहास में स्वर्णांकित है। राष्ट्र के बड़े से बड़े कर्णधार कांग्रेस के सभापति रह चुके हैं और उन्होंने अपने समय में जिस राष्ट्रीयता, जागरूकता और अपनी संगठन-शक्ति का जैसा उज्ज्वल परिचय दिया है, वह भी भारतीय स्वाधीनता-संग्राम के इतिहास में अमर है। स्वर्गीय लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के बाद पूज्य महात्मा गांधी ने राष्ट्र की बागडोर अपने हाथ में ली और अपनी जिस दैवी शक्ति का परिचय दिया, उसका उज्ज्वल रूप आज हमारे सामने है। अब तो कांग्रेस भारतीय जनता की नस-नस में व्याप्त है। आज कांग्रेस के नाम पर बड़ा से बड़ा आन्दोलन चाहे वह राष्ट्रीय हो अथवा अन्तर्राष्ट्रीय, सफल बनाया जा सकता है। इसका विधान पूर्ण रूप से जनतन्त्रात्मक, असाम्प्रदायिक और राष्ट्रीय है। जहाँ प्रत्येक भारतीय को यह गर्व है कि उसकी एकमात्र संस्था कांग्रेस ही है। अब तक कांग्रेस के अधिवेशन साठ से अधिक हो चुके हैं और इन वर्षों में राष्ट्र की प्रगति में जो उत्थान हुआ है, उसका भी राष्ट्रीय इतिहास में एक स्थान है। राष्ट्रीय, आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक दृष्टिकोण से कांग्रेस का इस समय तक का कार्य स्वयं एक ज्वलन्त इतिहास है। इस देश पर डेढ़ सौ वर्षों से शासन करनेवाली ब्रिटिश सरकार यह भली भाँति जानती है कि कांग्रेस की क्या शक्ति है और जनता पर उसके निर्णय का क्या प्रभाव पड़ सकता है। कांग्रेस को ही यह एकमात्र श्रेय है कि भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई और अँगरेज यहाँ से चले गये। शासन में परिवर्तन हुआ; केन्द्र तथा प्रान्तों में कांग्रेस सरकारें स्थापित हुईं इतना नहीं, वरन् आज समस्त देश पर कांग्रेसी शासन का बोलबाला है। ब्रिटिश सरकार को भारत छोड़ते समय स्वप्न में भी यह भरोसा नहीं था, कि कांग्रेस के नेता शासन की बागडोर पूरी सफलता के साथ सँभाल लेंगे, क्योंकि राष्ट्र को उन्होंने ऐसी दयनीय स्थिति में छोड़ा था कि उस पर विजय पाना और सफलतापूर्वक शासन-संचालन करना, स्वयं एक समस्या बन गई थी; किन्तु, विभाजन से उत्पन्न राष्ट्रीय संकट का पूर्ण रूप से सामना करते हुए कांग्रेस विजयी हुई और इस समय भी आन्तरिक और बाह्य सभी प्रकार की परिस्थितियों का सामना करते हुए कांग्रेस नेता शासन-संचालन का कार्य सफलतापूर्वक कर रहे हैं।

इस वर्ष कांग्रेस देशी रियासती क्षेत्र में हो रही है। देशी रियासतों में पिछले एक वर्ष में जन-तन्त्रात्मक दृष्टि से जो परिवर्तन हुआ है, उसका ज्वलन्त प्रमाण आज हमारे सामने है। इसी सफलता के अनुरूप जयपुर में जो कांग्रेस होनेवाली है वह भी पूर्णरूपेण सफल होगी इसमें सन्देह नहीं, इस बार कांग्रेस के अध्यक्ष डाक्टर पट्टाभि सीतारमैया चुनाव लड़कर विजयी हुए हैं। उन्होंने अपने चुनाव-सम्बन्धी परिपत्र में राष्ट्रहित के लिए वादे तो बहुत किये हैं; किन्तु वह स्वयं कितने सफल होंगे, इसका प्रमाण तो भविष्य ही देगा। सबसे बड़ी समस्या इस समय कांग्रेस और कांग्रेस सरकार के पारस्परिक सहयोग की है। कांग्रेस सभापति का जो महत्व पिछले वर्षों में रहा है, कांग्रेस सरकारों की स्थापना के बाद वह केवल एक शोभा की वस्तु रह गई है। फिर भी, कांग्रेस का सभापति तो सभापति है ही। यदि डाक्टर पट्टाभि पूज्य महात्मा गांधी के मार्ग-प्रदर्शन पर सचमुच चल सकें तो जन-साधारण की दृष्टि से राष्ट्रीय महत्व की सम्भावना अवश्य है, किन्तु परिस्थितियों से यह ज्ञात होता है कि कांग्रेस का सभापति यदि कांग्रेस सरकार से अधिक से अधिक सहयोग करे; बिना किसी विवाद के उसके कार्य में सहायक हो तभी उसकी स्थिति की सुरक्षा हो सकती है। कांग्रेस का सभापति, कांग्रेस सरकार की आलोचना, प्रत्यालोचना करने के आधार पर अपनी समुचित सुरक्षा नहीं कर सकता। यह निश्चित है।

इस समय देश में जन-साधारण की दृष्टि से अनेक ऐसी समस्यायें उत्पन्न हो गई हैं जिससे राष्ट्र की राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और पारस्परिक सहयोग की परम्परा कुछ बिगड़-सी चली है। यदि कांग्रेस सभापति, कांग्रेस सरकारों की ईमानदारी से आलोचना करता हुआ राष्ट्रहित का कार्य करे तो सचमुच बहुत कुछ सुधार की सम्भावना है। परन्तु उसकी नीति केवल विरोधी भावना से ओत-प्रोत न होनी चाहिये। इस समय देश को रोटी और वस्त्र की आवश्यकता है। यद्यपि कांग्रेस सरकारें इस ओर दत्तचित्त हैं, फिर भी, यदि कांग्रेस उनसे सहयोग करे तो इस सम्बन्ध में अधिक से अधिक सफलता प्राप्त हो सकती है। आन्तरिक आर्थिक प्रभाव से ही आज का मानव बहुत विकृत हो गया है। आन्तरिक परिस्थितियों के बिगड़ने में रोटी और वस्त्र का अभाव अधिक व्यापक है। जयपुर कांग्रेस का अधिवेशन पुराने कांग्रेस अधिवेशनों से प्रायः भिन्न है, ऐसी आशा है। पहले की कांग्रेस विदेशियों को भारत से निकालने और स्वाधीनता दिलाने के कार्य में सहयोगी थी, किंतु अब वही कांग्रेस राष्ट्रीय सरकारों को भारत की आन्तरिक परिस्थितियों के सुधारने में सहयोग देने की ओर अग्रसर होगी, तभी आज की समस्या हल होगी। अब इस समय विदेशियों से लड़ने की परिस्थिति नहीं है; वरन्, आन्तरिक परिस्थितियों की स्थिति है। हमारा विश्वास है कि जयपुर कांग्रेस डाक्टर पट्टाभि के अधिनायकत्व में कुछ इस प्रकार की नीति स्थिर करेगा जिससे भारत की वर्तमान परिस्थिति में सुधार हो, गरीबी दूर हो, जन-साधारण की स्थिति शक्तिशाली बने; पारस्परिक एकता और संगठन शक्ति का प्रादुर्भाव हो, तभी आज की स्थिति सुलझ सकती है। यदि ऐसा हुआ तो महात्मा गांधी के आदर्शों की वास्तविक रूप से रक्षा होगी और कांग्रेस सरकारों के होते हुए कांग्रेस-अधिवेशन की सार्थकता भी सिद्ध होगी।

* * *

भारतीय विधान के प्रसिद्ध आचार्य श्री मावलंकर।

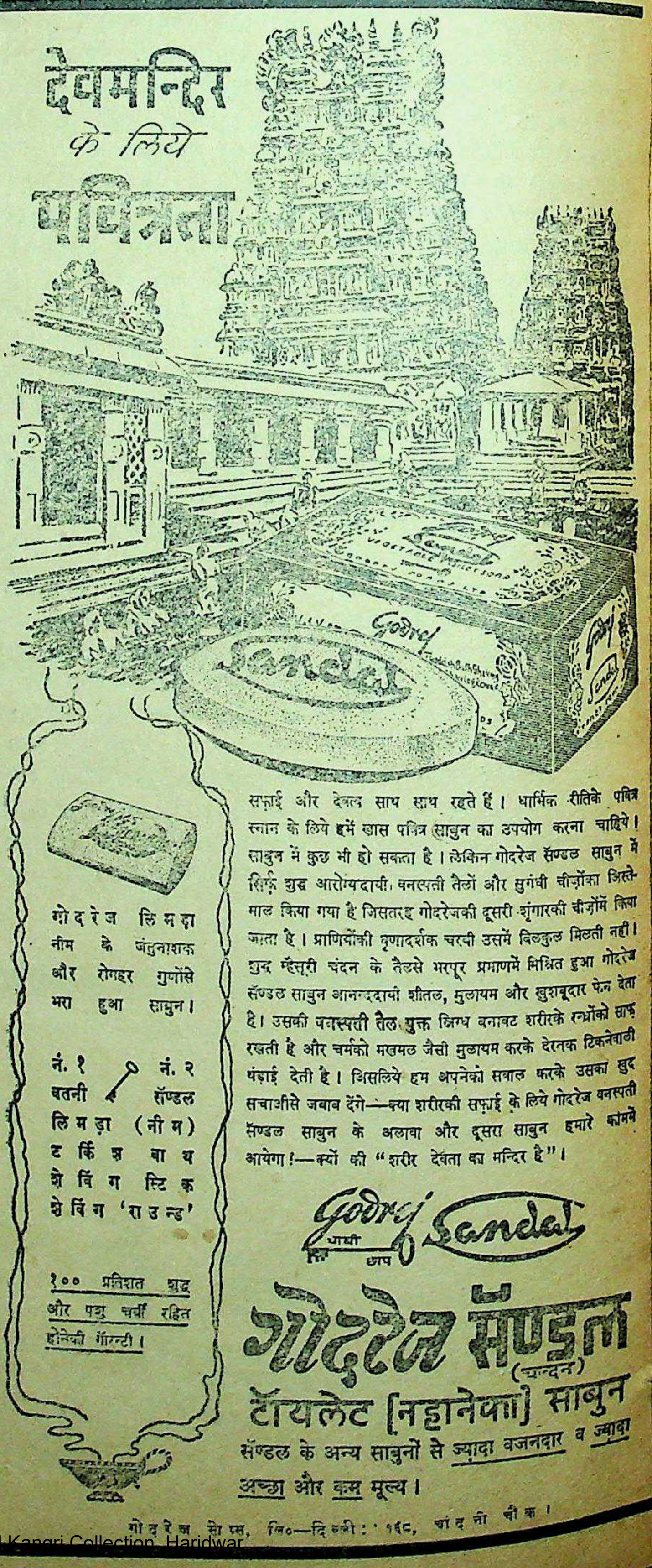

देवमन्दिर के लिये पवित्रता

सफ़ाई और देवत्व साथ साथ रहते हैं। धार्मिक रीतिके पवित्र स्नान के लिये हमें खास पवित्र साबुन का उपयोग करना चाहिये। साबुन में कुछ भी हो सकता है। लेकिन गोदरेज सॅण्डल साबुन में सिर्फ़ शुद्ध आरोग्यदायी, वनस्पती तेलों और सुगंधी चीज़ोंका इस्तेमाल किया गया है जिसतरह गोदरेजकी दूसरी शृंगारकी चीज़ोंमें किया जाता है। प्राणियोंकी घृणादर्शक चरबी उसमें बिलकुल मिलती नहीं। शुद्ध मैसूरी चंदन के तैलसे भरपूर प्रमाणमें मिश्रित हुआ गोदरेज सॅण्डल साबुन आनन्ददायी शीतल, मुलायम और खुशबूदार फेन देता है। उसकी वनस्पती तैल युक्त स्निग्ध बनावट शरीरके रन्ध्रोंको साफ़ रखती है और चर्मको मखमल जैसी मुलायम करके देरतक टिकनेवाली ठंडाई देती है। इसलिये हम अपनेको सवाल करके उसका खुद सचाईसे जबाव देंगे—क्या शरीरकी सफ़ाई के लिये गोदरेज वनस्पती सॅण्डल साबुन के अलावा और दूसरा साबुन हमारे काममें आयेगा!—क्यों की "शरीर देवता का मन्दिर है"।

गोदरेज लिमड़ा नीम के जंतुनाशक और रोगहर गुणोंसे भरा हुआ साबुन।

नं. १ वतनी
नं. २ सॅण्डल
लिमड़ा (नीम)
टर्किश बाथ
शेविंग स्टिक
शेविंग 'राउन्ड'

१०० प्रतिशत शुद्ध और पशु चर्बी रहित होनेकी गॅरन्टी।

Godrej Sandal
चाबी छाप

गोदरेज सॅण्डल (चन्दन)
टॉयलेट [नहानेका] साबुन
सॅण्डल के अन्य साबुनों से ज्यादा वजनदार व ज्यादा अच्छा और कम मूल्य।

गोदरेज सोप्स, लि०—दिल्ली: १६८, चांदनी चौक।

भारतीय संघ की भाषा हिन्दी के सिवा दूसरी भाषा नहीं हो सकती

हिन्दी - साहित्य - सम्मेलन के सभापति सेठ गोविन्ददास का अभिभाषण

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्राण माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन

देश के स्वतन्त्र होने तक स्वतन्त्रता हमारा प्रथम लक्ष्य था। इस कार्य के सामने अन्य सारे कार्य गौण थे। देश के स्वतन्त्र होते ही स्वतन्त्र देश के विधान बनाने का प्रश्न हमारे सामने आया। विधान परिषद् के निर्वाचन के पश्चात् विधान किस भाषा में बने तथा किस लिपि में लिखा जाय, देश की राष्ट्र-भाषा और राष्ट्रलिपि कौन-सी हो, ये प्रश्न किसी न किसी रूप में विधान-परिषद् के सामने आते रहे हैं। यद्यपि इनका अन्तिम निर्णय अब तक नहीं हुआ है पर मैं यह मानता हूँ कि बड़े बड़े विरोधों के रहते हुए भी हिन्दी हमारे देश की राष्ट्र-भाषा और देवनागरी ही राष्ट्र-लिपि घोषित होगी। एक बात और हो सकती है कि नागरी में लिखी जानेवाली 'भारती' हमारे देश की राष्ट्र-भाषा निश्चित की जाय। यदि यह होता है तो मैं इसका भी स्वागत करता हूँ, क्योंकि भारत हमारे देश का प्राचीन नाम है। हिन्द और हिन्दुस्तान नाम तो उसे पीछे से मिला। हिन्द नाम के कारण भाषा का नाम भी हिन्दी हो गया। देश का नाम भारत और भारत देश की भाषा का नाम भारती, यह हमारी परम्परा और संस्कृति के अधिक अनुरूप है। हाँ तो मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि राष्ट्र-भाषा और राष्ट्र-लिपि का अब तक चाहे निर्णय न हुआ हो, पर हिन्दी या भारती ही हमारी राष्ट्र-भाषा और नागरी ही राष्ट्र-लिपि होगी। यदि और कुछ हुआ तो वह स्वाभाविक न होकर अस्वाभाविक होगा और कोई अस्वाभाविक बात स्थायी नहीं हो सकती।

अँगरेजी इस देश की राष्ट्र-भाषा हो नहीं सकती। लगभग दो सौ वर्षों के अँगरेजी राज्य के उपरान्त इस देश के कितने प्रतिशत लोग अँगरेजी जानते हैं? हिन्दुस्तानी कोई भाषा है ही नहीं। उसका न कोई व्याकरण है, न साहित्य। जिस भाषा का अस्तित्व ही नहीं वह राष्ट्र-भाषा कैसे बनाई जा सकती है? अँगरेजी की 'कनसाइज आक्सफर्ड डिक्शनरी' में हिंदुस्तानी को मुगल विजेताओं की भाषा कहा है। हिन्दुस्तानी कही जानेवाली भाषा में बाजारों में बोले जानेवाले शब्दों के अतिरिक्त वैज्ञानिक और शास्त्रीय शब्दों का न निर्माण हुआ है और न हो सकता है। साधारण पढ़ाई-लिखाई भी या तो अँगरेजी भाषा में हो सकती है या हिन्दी में या उर्दू में; हिंदुस्तानी में नहीं।

झगड़ा हिन्दुस्तानी नाम का नहीं है, झगड़ा है हिन्दुस्तानी नाम में जो अर्थ निहित हो गया है उसका। हिंदुस्तानी का अर्थ वह भाषा है जिसमें इतने प्रतिशत शब्द संस्कृत, इतने फारसी, इतने अरबी के हों, फिर वह नागरी और अरबी लिपियों में लिखी जानेवाली भाषा है। कुछ महानुभावों का मत है कि भाषा का नाम हिंदुस्तानी रखा जाय, पर वह एक ही लिपि नागरी में लिखी जाय। किन्तु भाषा केवल लिखने की न होकर बोलने की भी वस्तु है। यदि नागरी लिपि में लिखी जानेवाली हिंदुस्तानी राष्ट्रभाषा घोषित हो तो भी उसमें कितने प्रतिशत शब्द किस भाषा के रहेंगे, यह प्रश्न उठेगा और रेडियो आदि में जहाँ भाषा लिखी न जाकर केवल बोली जाती है, सदा एक झगड़ा मचा रहेगा, जैसा आज मचा है।

मेरठ में होनेवाले हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष सेठ गोविन्ददास

जो लोग हिन्दुस्तानी का विरोध करते हैं, वे किसी साम्प्रदायिक भावना से ऐसा करते हैं, यह मैं नहीं मानता; वरन् मैं तो यह कहता हूँ कि हिन्दुस्तानी का समर्थन करनेवाले उसका समर्थन साम्प्रदायिकता की भावना से करते हैं। जो देश में एक संस्कृति चाहते हैं वे भला दो लिपियों में लिखी जानेवाली भाषा का समर्थन कैसे करेंगे?

हिन्दी का राष्ट्र-भाषा होना इसलिए स्वाभाविक नहीं है कि वह अन्य प्रांतीय भाषाओं से श्रेष्ठ है। हम अन्य प्रांतीय भाषाओं को नीची और हिन्दी को उनसे ऊँची नहीं मानते। हिन्दी का राष्ट्र-भाषा होना इसलिए स्वाभाविक है कि कुमायूँ से लेकर बस्तर तक और जैसलमेर से बिहार के पूर्वीय छोर के अंतिम ग्राम तक हिन्दी ही लोगों की भाषा है। उसे इस देश की तीस करोड़ में से अठारह करोड़ जनता बोलती और बाईस करोड़ समझती है। संयुक्त-प्रांत, बिहार, महाकोशल, राजस्थान, मध्यभारत, विन्ध्य-प्रदेश, पूर्वी-पंजाब, हिमाचल-प्रदेश की भाषा हिन्दी है। दक्षिण-भारत में भी उसका प्रचार अत्यन्त शीघ्रता से हो रहा है।

राष्ट्र-भाषा और प्रांतीय भाषाएँ

राष्ट्र-भाषा हिन्दी और राष्ट्र-लिपि देवनागरी हो जाने का कोई यह अर्थ न समझे कि हम भिन्न-भिन्न प्रांतों की प्रांतीय भाषाओं का गला घोटना चाहते हैं। विदेशी राज्य ने विदेशी भाषा को हमारे देश पर लाद, उसी को हमारी शिक्षा का माध्यम, हमारी धारा-सभाओं और न्यायालयों की भाषा बना हम पर जो घोर अत्याचार किया था, ऐसी कोई बात करने की कल्पना तक हम नहीं कर सकते। जिन प्रांतों की भाषा हिन्दी नहीं है, जैसे बंगाल, आसाम, उड़ीसा, महाराष्ट्र, गुजरात, तामिल, आन्ध्र, कर्नाटक, मलयालयम आदि उन प्रांतों में हम शिक्षा का माध्यम हिन्दी भाषा को नहीं बनाना चाहते; न वहाँ की धारा-सभाओं और न्यायालयों में हम हिंदी को चलाना चाहते हैं। अहिंदी प्रांतों की शिक्षा का माध्यम, वहाँ की धारा-सभाओं और न्यायालयों की भाषा प्रांतीय भाषा ही रहें। हाँ, केन्द्रीय तथा अन्तर्प्रान्तीय सारे कार्य राष्ट्र-भाषा हिंदी में ही होने चाहिये और केन्द्रीय तथा अन्तर्प्रान्तीय सारे कार्य सुचारु रूप से चल सकें इसके लिये समूचे भारत में राष्ट्र-भाषा की शिक्षा भी अनिवार्य होनी चाहिये। हम इस बात के लिए भी प्रस्तुत हैं कि दक्षिण-भारत तथा अहिंदी प्रांतों के अपने भाइयों के सुविधार्थ केन्द्र में भी हिन्दी के साथ-साथ कुछ समय के लिए अँगरेजी का अस्तित्व रख लिया जाय। देश की सर्वाङ्गीण उन्नति के लिए राष्ट्र-भाषा और प्रांतीय भाषाओं दोनों का समान महत्त्व है, और दोनों की समान उन्नति आवश्यक है।

राष्ट्र-लिपि

हमारी देवनागरी इस देश की ही नहीं समस्त संसार की लिपियों में सबसे अधिक वैज्ञानिक लिपि है। हमारी लिपि स्वरों और व्यंजनों का जैसा वैज्ञानिक पृथक्करण है वैसा अन्य लिपियों में नहीं। 'अ' का उच्चारण हर स्थान पर 'अ' ही होगा और 'इ' का 'इ' ही; 'क' यदि कहीं लिखा जायगा तो वह 'क' ही पढ़ा जायगा और कुछ नहीं। अँगरेजी में जिस प्रकार 'बीयूटी' बट का 'यू' 'अ' पढ़ा जाता है और 'पीयूटी' पुट का 'यू' 'अ' वैसा हमारी लिपि में नहीं होता। हमारी लिपि में लिखे जानेवाले शब्दों के वर्णविन्यास में भी कोई कठिनाई नहीं पड़ती। अँगरेजी शब्दों में जिस प्रकार मूक (साइलेन्ट) अक्षर रहते हैं वैसे हमारे यहाँ नहीं। उर्दू में अक्षरों को मिलाकर लिखने और नुकतों के कारण उसके पढ़ने में जो अड़चनें आती हैं वे हमारी लिपि में नहीं। हर विषय की शिक्षा हमारी लिपि के द्वारा जितनी सुगमता से दी जा सकती है उतनी अन्य किसी लिपि के द्वारा नहीं। फिर हमारी लिपि संस्कृत लिपि होने के कारण अन्य प्रान्तीय भाषाओं की लिपि के जितने सन्निकट है, उतनी अन्य कोई लिपि नहीं। मराठी में तो इसी लिपि का उपयोग होता है, गुजराती लिपि और हिंदी लिपि में भी अधिक अंतर नहीं और बँगला लिपि के भी अधिकांश अक्षर नागरी से मिलते-जुलते हैं। इतना नहीं, बर्मा, सिंहल, मलाया, श्याम, हिन्देशिया और हिन्द चीन आदि की वर्णमालाएँ भी प्रायः हमारी वर्णमाला के ही समान हैं। फिर भी आधुनिक यंत्रकाल में उसमें थोड़े बहुत सुधारों की आवश्यकता है। विशेषज्ञों की राय से हमें इन सुधारों को अवश्य स्वीकार कर लेना चाहिये। इस दिशा में हम संकुचित वृत्ति न रखें। हमारी भाषा और साहित्य में निर्माण का कार्य हमें तेजी से अवश्य चलाना है, और

जीवित भाषा में भाषा के लिए स्वच्छन्दता की भी आवश्यकता है। स्वच्छन्दता में बन्धन अखरते हैं तथापि कुछ न कुछ नियंत्रण भी अवश्यक होते हैं। इस क्षेत्र में हमें बहुत सूक्ष्म अनुसन्धान की ओर तो न जाना चाहिये, किंतु भाषा के रूप के सम्बन्ध में विद्वानों को एकत्रित हो कुछ न कुछ निश्चय कर लेना आवश्यक है। दृष्टान्त के लिए किस स्थान पर 'यी' और किस स्थान पर 'ई' कहाँ 'ये' और कहाँ 'ए' का उपयोग हो, इसका निश्चय होना है। इसी प्रकार के अन्य अनेक प्रयोग अभी अनेश्चत हैं। श्री रामचन्द्र वर्मा ने इस विषय पर 'अच्छी हिंदी' और श्री किशोरीदास वाजपेयी ने 'लेखन कला' पुस्तक लिखी है, पर इसे मैं आरम्भ मात्र मानता हूँ। इस विषय में विद्वानों की एक समिति का आयोजन होना चाहिये।

छपाई, टाइप रायटर, तार आदि के लिए लिपि में सुधारों की ओर अधिक आवश्यकता है। इस सम्बन्ध में गत वर्ष सम्मेलन के सभापति पद से दिये गये अपने भाषण में महापंडित राहुल जी ने जो कुछ कहा था उसे हमें कार्य रूप में परिणत करने का प्रयत्न करना चाहिये।

रेडियो

रेडियो को भी आज बहुत बड़ा स्थान प्राप्त हो गया है। रेडियो द्वारा अनंत ज्ञान का प्रसार किया जा सकता है। रेडियो की आवश्यकता नगरों की अपेक्षा गाँवों में अधिक है, क्योंकि वहाँ के निवासियों में पढ़े-लिखे लोगों की संख्या बहुत कम है और ऐसे लोगों की ज्ञान-वृद्धि जितनी शीघ्र रेडियो से हो सकती है अन्य किसी वस्तु से नहीं। भारत में केन्द्र में ही नहीं, अधिकांश प्रांतों में भी प्रांतीय ब्राडकास्टिंग स्टेशन खुल गये हैं, परंतु इन स्टेशनों से जो कुछ प्रसारित किया जाता है उसकी सामग्री और भाषा दोनों ही दोषों से ओत-प्रोत है। भाषा की दृष्टि से तो रेडियो का बहुत समय तक सम्मेलन ने बहिष्कार तक किया था। जिस समय सम्मेलन ने रेडियो का बहिष्कार कर रखा था उस समय में और आज में बड़ा अन्तर हो गया है। अब देश स्वतंत्र है। पाकिस्तान की स्थापना हो गई है। पर इतने पर भी आज भी रेडियो का सारा वातावरण अराष्ट्रीय है। रेडियो के तीन प्रधान विभाग हैं—

(१) गृह-विभाग (होम-सर्विस)

(२) समाचार-विभाग (सेन्ट्रल न्यूज आरगानाइजेशन)

(३) विदेशी विभाग (एक्सटर्नल सर्विसेज)

प्रथम विभाग भारतवासियों के लिए है, दूसरे का सम्बन्ध समाचारों से है और तीसरे विभाग द्वारा विदेशों में भारत से सम्बन्ध रखनेवाली बातों का प्रचार किया जाता है। जो भारतीय भारत के बाहर उपनिवेशों में निवास करते हैं उनसे सम्पर्क स्थापित रखने का कार्य भी यह तीसरा विभाग ही करता है।

तीनों विभागों का संचालन ऐसे लोगों के हाथ में है, जिनमें अधिकांश को न भारतीय संस्कृति का ज्ञान और न हमारी भाषा का। रेडियो के इस अवस्था में रहने के अनेक कारण हैं जिनमें निम्नलिखित मुख्य हैं:—

(१) हमारी राष्ट्रीय सरकार होने पर भी सरकार का ध्यान अब तक रेडियो की ओर नहीं गया। मंत्रियों के भाषणों को छोड़कर अन्य कौन सा प्रचार रेडियो द्वारा किया जाता है इस ओर सरकार का कोई लक्ष्य नहीं।

(२) बुखारी साहब और उनके कुछ साथियों के चले जाने पर भी अभी भी रेडियो पर बुखारी-समूह का ही अधिकार है।

(३) नये कर्मचारियों की नियुक्तियों में भी भारतीय संस्कृति के जानकारों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है, क्योंकि इन नियुक्तियों को करनेवाले अधिकारियों में भारतीय संस्कृति को जाननेवाले व्यक्ति ही नहीं हैं।

(४) "रेडियो-हिंदी-परामर्श-समिति" के एक भी सुझाव को कार्यरूप में परिणत नहीं किया जाता।

इसके निम्नलिखित फल हुए हैं—

(१) रेडियो द्वारा किसी भी प्रकार का भारतीय सांस्कृतिक-प्रचार नहीं होता।

(२) रेडियो द्वारा जो रूपक तथा नाटक प्रसारित किये जाते हैं उनमें आज भी अधिकांश ऐसे होते हैं जो सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक धरातल की दृष्टि से विशेष महत्त्वपूर्ण नहीं कहे जा सकते।

(३) रद्दी और टुच्चे फिल्मी गाने गाये जाते हैं, जो लोक-रुचि को दूषित करते हैं।

(४) इस प्रकार के कार्यक्रम विदेशों में भी भारत को नीचा दिखाते हैं।

भाषा की दृष्टि से भी रेडियो अत्यधिक दूषित है। कुछ समय पूर्व भाषा में थोड़ा बहुत सुधार हुआ था, पर अब फिर इसमें परिवर्तन हुआ है। इसका मुख्य कारण कदाचित् उर्दू पत्रों का प्रचार है। यह प्रचार किस प्रकार किया जा रहा है इस सम्बन्ध में मैं यहाँ एक दृष्टान्त देना चाहता हूँ। 'तन्वीर' नामक उर्दू का एक दैनिक पत्र लखनऊ से निकलता है। उर्दू-जगत् में इस पत्र की यथेष्ट प्रतिष्ठा है। ता० १४ अक्टूबर सन् १९४८ के अपने अंक में 'आखिर यह कौन सी जबान है' शीर्षक अग्रलेख में इस पत्र ने जो कुछ लिखा है वह ध्यान देने योग्य है। वह लिखता है—

"रेडिओ की ज़बान में बाज़ अलफाज़ तो रायजुल वक्त अलफाज के मुकाबले में इतने भोंडे और लचर होते हैं कि बेखबरी में बाज़ औकात यह मालूम होता है कि कोई गाली दे रहा है, जो ख़बरों में शामिल हो गयी हैं।"

इस प्रकार के अलफाजों की इसी लेख में एक लम्बी सूची दी गई है। इसी सूची से कुछ शब्दों को देखिए—

'आयु, सहायता, वर्ष, चर्चा, अधिकार, विरोध, शनिवार, उचित, उपाय, अधिकारी, न्याय, शिक्षा, निश्चय, स्वीकार, इतिहास, शासन, सम्बन्ध, समय, घटना, पद की शपथ लेना, समाप्त।'

ये शब्द भोंडे और लचर तथा गालियों से प्रतीत होते हैं!

पत्र सिफारिश करता है—"अगर हिन्दुस्तानी के लफ़्ज़ का इस्तेमाल रखना ही चाहते हैं तो हिन्दुस्तानी ही ज़बान भी इस्तेमाल करनी पड़ेगी, जो तक्सीम से पहले होती रही है। अगर वो इस पर तुले हुए हैं कि हिन्दुस्तानी का लफ़्ज़ भी इस्तेमाल करते रहें और इस्तेमाल इसी ज़बान को करते रहें तो उर्दू की ख़बरें किसी दूसरे वक्त में सुनानी शुरू कर दें ताकि मुल्क की अक्सरीयत जिस ज़बान को समझ सकती है और शरीफ़ लोगों की मजलिस में समझी और बोली जाती है, उसको भी आगे बढ़ने का मौका मिले।"

शेष पेज १६ पर देखिए

मुमताज़ शांती
अपनी सुन्दर त्वचा की रक्षा
लक्स
टॉयलेट साबुन
से करती है

यह मोहिनी फ़िल्मी अभिनेत्री कहती है:—"मैं अपनी त्वचा को साफ़ और कोमल रखने के लिये लक्स टॉयलेट साबुन पर निर्भर रहती हूँ। इस का उत्तम झाग त्वचा को साफ़ और रेशम की तरह मृदु एवं मुलायम बना देता है। हर एक स्त्री को अपनी त्वचा-सौन्दर्य की रक्षा लक्स टॉयलेट साबुन से करनी चाहिये।"

लक्स टॉयलेट साबुन
फ़िल्मी अभिनेत्रियों का सौन्दर्य-साबुन

LUX
LUX TOILET SOAP

देशद्रोहियों से सावधान रहिए !

भारतीय कम्युनिस्ट आग से क्यों खेलना चाहते हैं ?

लेखक, श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन, बी० ए०, एल० एल० बी० (पत्रकार)

संसार के सामने भयङ्कर समस्यायें उठ खड़ी हुई हैं। शान्ति रखना चाहिए अथवा युद्ध की ओर अग्रसर होना ? आज संसार आर्थिक संकटों से गुजर रहा है इसका मूल कारण युद्ध नहीं, वरन्, मुद्रा अथवा धन का संचय है। संसार के कुछ ही देश होंगे जो इस दूषित सिद्धांत से अछूते होंगे। इस संकट काल में कम्युनिस्टों को अपने सिद्धांत के प्रचार का अवसर मिला है। वे मानवता के विनाश अथवा सभ्यता की परवाह न करके संसार में भीषण संग्राम का उत्पत्ति में लगे हुए हैं। लेखक ने इस परिस्थिति का सुन्दर चित्र लेख में बड़े ही रोचक ढङ्ग से वर्णन किया है। यह लेख 'देशदूत' के गत दीपावली अंक में प्रकाशित प्रोफेसर प्रकाशचंद गुप्त के लेख का करारा उत्तर है।

भारत सरकार के गृह-मन्त्री सरदार पटेल

जब कम्युनिस्ट भाई कांग्रेस या हिन्द-सरकार के बारे में जनता को सलाह देते, या उनकी चर्चा करते हैं, तो अचानक ह ध्यान आता है कि इन मुल्ला लोगों क्यों तकलीफ की ? आज तक इनकी कोई बात ऐसी नहीं हुई है जो पूरी पूरी हिन्द के हित में हो और रूस से जिसका सम्बन्ध न हो। ये राजनीतिक गद्देबाज तो अपनी गेंद हमेशा ही उछालते रहते हैं बिना इस बात को ध्यान किये हुए कि द कहाँ फेंकें, कब फेंकें और कैसे फेंकें। वल एक बात का ध्यान रहता है इनको किसी न किसी तरह रूस का ही फायदा , यद्यपि उनकी इस फायदा उठाने की नीयत ने, उनकी भीषण मूर्खता और दूरपन्थी के कारण रूस जैसे महान् देश हानि ही पहुँचाई है, लेकिन आँख पट्टी बँधा हुआ आदमी चलते ही चला ता है और उसे इस बात का ज्ञान नहीं ता कि वह कहाँ जा रहा है और वह हाँ जायगा, किसके टक्कर लगायेगा र किससे टक्कर खायेगा। ऐसे ही न्धे अपने को नयनसुख कहते हैं।

प्रयाग विश्वविद्यालय के एक अध्या-क श्री प्रकाशचन्द्र जी गुप्त ने 'देशदूत' दीपावली अंक में एक लेख में लिखा जिसमें उन्होंने ऊटपटांग बातों का क पनाला खोल दिया है और उसमें हरू-पटेल और अन्य नेताओं पर कई ह से निम्न कोटि के आक्षेप किए हैं। किन इन लोगों का आक्षेप करना धर्म गाली इन लोगों की भाषा है, इन गों से इन कामों की शिकायत ही क्या सकती है ? गुप्त जी का कहना है कि रतीय सरकार के और उसके प्रधान मंत्री ब्रिटिश कामनवेल्थ में शामिल ही हो हैं और वे अब अन्तर्राष्ट्रीय द्वन्द्व में स्थता का दावा झूठे ही करते हैं—और का कहना है "इस बार बड़े चुपचाप लन्दन गये थे। आपने धड़ल्ले से नहीं कहा कि भारत को ब्रिटिश ाज्य से अलग होना ही है।" पं० हरलाल नेहरू या कोई भी भारतीय, कम्युनिस्टों को छोड़कर, इस बात वे से नहीं कह सकता कि भारत को करना है ? विधान-परिषद् के फैसले नेहरू जी कैसे एलान कर सकते थे कि क्या करना है। खैर, भारतीय के प्रतिनिधि जो ठीक समझेंगे वह लेकिन कम्युनिस्ट भाइयों को इससे क्या मतलब ? उन्होंने आज तक हमारे किसी काम में हाथ नहीं बँटाया, बल्कि उलझनें डाली हैं। हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन में देश को धोखा दिया है, देश के महान् नेताओं को बदनाम किया है; अब उनका मुँह कैसे कि इतनी लम्बी-चौड़ी बातें करें। जनता उनको जानती है, जनता उनको पहचान गई है और जनता ने देशद्रोहियों को खूब समझ लिया है और उनको घृणा की दृष्टि से देखती है—परन्तु ये लोग जनता के हित की कसमें हर चौराहों पर खाते फिरते हैं और जनता को उनकी गलेबाजी सुनकर हँसी आती है।

गुप्त जी ने मास्कोस्थित भारतीय दूतावास को "राजकीय ठाट-बाट" से चलाने की कई जगह अपने लेख में ताना-कशी की है—लेकिन गुप्त जी शायद यह नहीं जानते कि नई दिल्ली में रूसी राजदूत दुनिया के सब राजदूतों से अधिक ठाट-बाट से रहते हैं, यद्यपि वे राजकीय ठाट-बाट करनेवालों को 'बुजुर्वा' कहकर नर्कवास के घाट उतार देते हैं। बिना समझे-बूझे किसी बात को कहना बुद्धिमत्ता की निशानी नहीं है। इस सिलसिले में मैं यह बता देना उचित समझता हूँ कि भारतीय सरकार ने गलतियाँ की हैं और मैं तो यह भी कहने के लिए तैयार हूँ कि वे और भी गलतियाँ कर सकते हैं—क्योंकि वे इन्सान हैं और शासन-प्रबन्ध में बहुत निपुण और अनुभवी नहीं हुए हैं। लेकिन हम यह भी जानते हैं कि वे देश के सबसे बड़े प्रेमी हैं, उनकी नीयत साफ है और उनका प्रत्येक क्षण देश की भलाई के लिए बीतता है।

ह्यूगो ने मुसकराते हुए कहा, श्रीमती एलिस तुम

महान् नेता के बारे में गिल-बिल करना किसी समझदार आदमी को शोभा नहीं देता और उससे कुछ लाभ भी नहीं होता।

गुप्त जी ने अपने लेख में कहा है कि सरदार पटेल का गृह-विभाग यह नहीं चाहता कि भारतीय विद्यार्थीगण सोवियत संघ में शिक्षा के लिए जायँ गो कि सोवियत सरकार वहाँ से विद्यार्थी भेजने को तैयार है। यह तो सर्वविदित है कि बाहर के लोगों के लिए अधिकतर सोवियत के दरवाजे बन्द हैं। हाँ, यदि रूस के "पाँचवें दस्ते" के लोग यहाँ से बुलाये जायँ—कवि और साहित्यिक के नाते से—तो उन्हें देश के प्रतिनिधि बनाकर कैसे भेजा जाय, जब कि देश में और बड़े बड़े लेखक और कलाकार विद्यमान हैं। किसी छोटे मोटे कलम घिसनेवाले को, जो अपनी पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर नेहरू ऐसे नेता का अपमानजनक व्यंग चित्र छापकर और राष्ट्रीय सरकार की निन्दा बौखलाये हुए मनुष्य की तरह करे और देशद्रोहियों की लिस्ट में अच्छा स्थान पाने योग्य हो, उसे हम रूस या ताजकिस्तान के राष्ट्र कवि की शताब्दी में भारतीय प्रतिनिधि बनाकर भेजने का पाप कैसे अपने सिर पर लें। अगर स्टालिन या स्टालिन के कुत्ते के लिए भी ऐसी बातें रूस में कोई कहे या लिखे जैसा कि हमारे तथाकथित कम्युनिस्ट भाई करते हैं तो रूस में उनकी हस्ती निहायत खामोशी के साथ मिटा दी जाती है—यहाँ तो हमारे कम्युनिस्ट भाई जिस सुर से चाहते हैं हिनहिनाते हैं और जो गाली चाहते हैं, वह चुन-चुनकर देते हैं और अधिकतर उनका बाल भी बाँका ीं होता है।

हम ब्रिटेन या अमेरिका के साथ रहें, रूस के साथ रहें या हम कुछ और -यह तो हम सोच-विचार कर करेंगे चित होगा। हमें कम्युनिस्ट भाइयों सलाह की कोई दरकार नहीं—ये ी सलाह की गठरी अपने सिर पर क्खे रहें तो अच्छा है, लेकिन हम बात रूस के लोगों तक पहुँचा देना ते हैं, यदि पहुँच सकती हो, कि ऐसे महान् देश के सबसे बड़े शत्रु श के ये पथभ्रष्ट कम्युनिस्ट भाई अगर रूसी सरकार इन लोगों को ा हरकारा या 'पाँचवाँ दस्ता' बनाकर काम बनाना चाहती है या इनसे रखना चाहती है, तो उनकी यह री भूल है। रूस ऐसे महान् देश की हानि संसार की सबसे बड़ी हानि होगी, यदि रूस ऐसा मुल्क समाप्त होता है तो कौन देश असलियत में जिन्दा रहता है ? लेकिन रूस से भारत अच्छा से अच्छा सम्बन्ध चाहता है और उसकी चेष्टा करता है और इस कार्य में कोई बाधा डालता है तो ये कम्युनिस्ट भाई हैं। इनसे सबको सावधान रहना चाहिए।

* * *

भारतीय मार्ग के लिये अपनाइए तो अपनी
स्वच्छन्द गामी
एच-बी-सी
बाइसिकल।
HINDUSTAN
हिन्दुस्तान
बाइसिकल मैनुफैक्चरिंग एण्ड
इण्डस्ट्रियल कारपोरेशन् लि० पटना

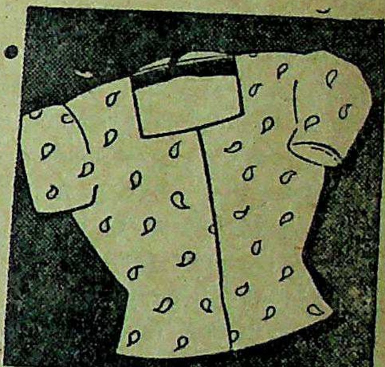

धोने के लिये।
५०१ साबुन
दी टाटा आयल मिल्स कं० लिमिटेड

१००) इनाम

एक सिद्ध महात्मा की बताई श्वेत कुष्ट की अद्भुत जड़ी, जिसके चन्द रोज के ही लगाने से सफेद कोढ़ जड़ से आराम। अगर आप हजारों डाक्टर, वैद्य, कविराज की दवा से निराश हो चुके हैं तो भी इसे एक बार सेवन कर इस महान् दुष्ट रोग से छुटकारा पावें ! अगर विश्वास न हो तो -) का टिकट भेज शर्त लिखा लें। गुणहीन होने पर १०० रु० इनाम। मूल्य लगाने की दवा २), खाने की ३॥) रु०।

श्री चन्द्रकान्ता फार्मेसी (२१२)
पो० राजधनवार (हजारी बाग)

स्वतन्त्र रहना चाहते हो तो
परफ्यू मैडिका
द्वारा
शुभ प्रकाश कंपनी मथुरा

सेठ गोविन्ददास जी कौन हैं ?

मेरठ में होनेवाले हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अध्यक्ष का एक रेखा-चित्र

लेखक, श्री चन्द्रगुप्त

सेठ गोविन्ददास मेरठ हि० सा० स० के अध्यक्ष चुने गये हैं आप हिन्दी गगन के एक उदीयमान तारा हैं। साहित्य में नाटक के अपूर्ण अंग को आपकी लेखनी ने पूर्ण करने में कोर कसर नहीं उठा रक्खी। देश के स्वतंत्रता-संग्राम में आप एक अग्रणी सैनिक रहे हैं। आज भी आप महाकोशल प्रां० कां० क० के अध्यक्ष और विधान-परिषद् के सदस्य हैं। लेखक ने सेठ जी के जीवन पर एक सुन्दर प्रकाश डाला है। लेख रोचक और पठनीय है।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन मेरठ अधिवेशन के मनोनीत अध्यक्ष सेठ गोविन्ददास

यह सुखद संयोग ही है कि भारतीय सशस्त्र क्रांति की ऐतिहासिक भूमि मेरठ में, जहाँ गत वर्ष अखिल भारतीय कांग्रेस समिति का सबसे महत्त्वपूर्ण अधिवेशन हुआ, जिसमें राष्ट्रीय जीवन का व्यापक और गहरा प्रभाव डालनेवाले विचार और निर्णय हुए, वहीं हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का ऐसा अधिवेशन होने जा रहा है, जिसके समक्ष न केवल हिन्दी को, वरन् भारतीय और राष्ट्रीयता को भी अभूतपूर्व रूप से प्रभावित करनेवाले प्रश्न प्रस्तुत हैं। इस अधिवेशन को ऐसे अध्यक्ष की आवश्यकता थी जो हिन्दी की जीवन्त 'परम्पराओं को अग्रसर करने के साथ ही, देश के राजनैतिक जीवन में उथल-पुथल के कारण हिन्दी के मार्ग में व्याप्त विघ्न-बाधाओं को दूर करने तथा उसे प्रशस्त और उज्ज्वल बनाने का भार उठा सके। सेठ गोविन्ददास जी के रूप में उसे अपने अनुरूप हिन्दी का अनन्य साधक, विचारक, द्रष्टा, नाट्यकार, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, विज्ञान-प्रेमी, कलाविद और कर्मठ अध्यक्ष प्राप्त हो गया है। सेठ जी स्वभाव से साहित्यिक और राष्ट्रीय परिस्थितियों की माँगवश राजनेता हैं। उन्होंने अपना सार्वजनिक जीवन माँ भारती के मन्दिर में अपने साहित्यक दीप सँजोकर ही आरम्भ किया है। उनकी आरम्भिक रचनायें गद्य और पद्य दोनों में हैं; परन्तु उनका अपना जीवन-दर्शन आरम्भ से ही दृढ़ रहा है और उनकी यह मान्यता रही है कि जीवन को सूक्ष्म विवेक पथ पर अग्रसर करने के लिए रंगमंच की स्थूल माध्यम जितना उपयोगी है उतना अन्य नहीं। यही कारण है जो उन्होंने अपनी प्रतिभा की सहज अभिव्यंजना के लिये नाटक का माध्यम चुना और पिछले तीस वर्ष के घोर राजनैतिक संघर्षमय जीवन में जेल में या जेल के बाहर जो भी अवकाश के क्षण मिले उनमें लगभग अस्सी नाट्य-कृतियाँ हिन्दी-साहित्य को भेंट कीं। इनमें से अधिकांश कृतियों के भारत की प्रमुख भाषाओं में अनुवाद हो चुके हैं। अँगरेजी अनुवाद शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाले हैं। इन कृतियों की विवेचना पृथक् ग्रंथ-लेखन का विषय है तथापि इतना कहना अप्रासंगिक न होगा कि उन्होंने अपनी सहज प्रतिभा को पूर्वी और पश्चिमी नाट्य-शास्त्र के सूक्ष्म अध्ययन से परिपक्व किया और दोनों के सामंजस्य की गत्यात्मक परम्पराओं को अपनी कृतियों में निबाहा। वे नाटक को विचार-प्रधान मानते हैं। इस सम्बन्ध में वे इब्सन से स्पष्टतः प्रभावित हैं। घटनाओं के सम्बन्ध में वे चेखव के इस सूत्र का अनुगमन करते प्रतीत होते हैं कि 'अपने पात्रों को कठिन या अवसादपूर्ण वातावरण में डालो, उनमें यहाँ-वहाँ आदर्शवादिता की पुट हो और अन्तिम अंक में उनसे विदा लो।" समृद्ध कुल में जन्म होने के कारण रवीन्द्र की तरह उनकी कृतियों—विशेषतः आरंभिक कृतियों में उच्चवर्गीय भावनाओं और मनःस्थितियों का ही अधिक चित्रण है; परन्तु इसके विपरीत राष्ट्रीय संघर्ष में खिंचने के कारण पुश्किन की तरह जन-जीवन से निकटता और तादात्म्य की छाया उनकी बाद की रचनाओं में है। उनकी सबसे नवीन कृति 'इन्दुमती' में; जो उपन्यास है (इस समय छप रहा है) तथा जो अगस्त-क्रांतिकाल के जेल-जीवन में लिखी गई है राष्ट्रीय संघर्ष की पृष्ठभूमि में लेखक की जन-जीवन से निकटता का आत्मकथात्मक चित्रण है।

वे 'कला के लिये कला' को आकर्षक विडम्बना मानते आये हैं और 'कला जीवन के लिये' का प्रतिपादन करते आये हैं। उन्होंने अपने 'तीन नाटक' की भूमिका में रोम्याँ रोलाँ और जान रस्किन के कला-विषयक विचारों का समर्थन किया है और नवोन्मेषी जीवन-साहित्य की परम्परा को अग्रसर किया है।

उनके नाटकों के सम्बन्ध में विभिन्न मत हैं और हो सकते हैं। उन पर कोई अंतिम निर्णय देना समकालीन आलोचकों के लिए कठिन तथा अनावश्यक भी है इन्द्रधनुष के रंगों का विश्लेषण प्रत्येक रंग के सम्बन्ध में रुचि-अनु भिन्न-भिन्न विचार हो सकते हैं; परन्त रंगों का समागम उसे अनुपम कला में परिणत कर देता है। इसी प्र सेठ जी की समस्त कृतियों को दृष्टिगत र इतना निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है। उनमें इन्द्रधनुषी स्नेहिल, विरल अ प्रेरक उत्कृष्टता है और उनका हि और भारतीय नाट्य-साहित्य में वि स्थान है और रहेगा। उनके नाटकों अनेक भिन्न-भिन्न विश्वविद्यालयों के भिन्न पाठ्यक्रमों में स्वीकृत हैं। हिन् रंगमंच न होने पर भी उनमें से कई स्थानों पर सफलता से खेले जा चुके कुछ के [illegible] हैं।

साहित्य-साधना और साहित्यिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं की स्थापना सेठ जी का जीवन-व्रत रहा है। महाकोशल के समकालीन सामाजिक, साहित्यिक और राजनैतिक जीवन के आरम्भ में ही शारदा-भवन-पुस्तकालय राष्ट्रीय हिन्दी मन्दिर, श्री शारदा शारदा पुस्तकमाला, दैनिक लोकमत की स्थापना ऐसे ही यत्नों की स्मृतियाँ हैं। यदि देश की पुकार और राष्ट्रीय संघर्ष की आँधी साहित्य-क्षेत्र से आपको अपनी ओर बार-बार न खींचती तो ये संस्थाएँ आज भी न केवल जीवित होतीं; वरन् इतनी विकसित कुसुमित और फलान्वित होतीं कि हिन्दी-जगत् को उन पर गर्व होता। यद्यपि वह प्रयास परिस्थितियोंवश स्थायित्व प्राप्त नहीं कर सका; परन्तु मूल लक्ष्य उनकी दृष्टि से कभी ओझल नहीं हुआ। स्वतन्त्रता के मंगल-प्रभात में ज्यों ही उन्हें किंचित् अवकाश मिला तो उन्होंने महाकोशल-शहीद-स्मारक के अन्तर्गत अखिल भारतीय-सांस्कृतिक केन्द्र की भी नींव डाल एक बार पुनः प्राणवान् सांस्कृतिक और साहित्यिक परम्पराओं को समृद्ध और गतिशील बनाने का कार्य हाथ में लिया है।

देश के पुनर्निर्माण की इस घड़ी में जनवाणी हिन्दी का अपना स्थान है। इसका क्षेत्र राष्ट्रवाणी के पद तक सीमित न होकर भारतीय संस्कृति की प्रतिनिधि और वाहिनी के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं की समकक्ष होने तक विस्तृत है। साहित्य-सम्मेलन का वर्त्तमान अधिवेशन हिन्दी के नवीन दायित्वों के अनुकूल क्रियाशील होने का महत्त्वपूर्ण सीमा-चिह्न है। संक्रांतिकाल में सृजनात्मक शक्ति के प्रवाह में विकृत और विवर्ण विरोधात्मक तत्त्व भी उमड़ते हैं। इनके परिहार के लिए साहित्यिक की सहानुभूति, राजनीतिज्ञ की दूरदर्शिता, सेनानी का साहस, दार्शनिक का संयम, कलाकार की कुशलता और कर्मवीर की कर्मठता चाहिये। सेठ जी में यह गुण सहज ही विद्यमान हैं। यह अपेक्षा की जानी चाहिये कि आप अपने कार्यकाल का यथा-सम्भव यथेष्ट समय सम्मेलन और सांस्कृतिक-केन्द्र को जो प्रकृति से एक दूसरे के पूरक हैं, देंगे। हिंदी रंगमंच का अभाव पुराना है। इसकी अब पूर्ति होनी ही चाहिये। साहित्य-सम्मेलन का प्रकाशन-कार्य योजनाबद्ध और गतिशील करने का प्रश्न है। इसके लिये यदि देश के विश्वविद्यालयों के हिन्दी-विभागों के अन्वेषण और प्रकाशन-विभागों में सामान्यतः एकसूत्रीयता स्थापित की जा सके तो सम्मेलन की शक्ति शेष महत्त्वपूर्ण कार्यों में लगाई जा सकती है। आशा है सम्मेलन सेठ जी की अध्यक्षता में हिंदी की चतुर्मुखी प्रगति की योजना स्थिर करने और उसे कार्यान्वित करने में सफल होगा।

जय हिन्दी ! जय नागरी !!

* * *

॥ २५०००) रुपये इनाम ॥

सर्वशुद्धि पर १६०००) १ अशुद्धि पर ५०००) २ अशुद्धि पर ३०००) ५००) और ४००) प्रथम महिला या विद्यार्थी के शुद्ध हल पर अधिक ५०), ३०), २०) क्रमशः सर्वाधिक पूर्तियों पर।

१	प्रभा +	यह सबको अच्छा लगता है।
	वि + यी	यह प्रायः मद में मस्त रहता है।
	म + न	अच्छी स्त्री इसे सदा साफ रखती है।
		पत्र ऐसा भी होता है।
		इसका जप करते हैं।
		कोमल होता है।
		साफ दिखाई देता है।
		का आदर करती है।
		भोजन अच्छा लगता है।

में एक बिना मात्रा का अक्षर लिखिये। पूर्तियाँ सादे कागज पर भेजिये। पूर्तियाँ क्रास किया हुआ) सहित ता० ३१ दिस- पूर्तियों की धनराशि के अनुसार होंगे। पता व रकम अवश्य लिखिये। फल ता० की प्राप्ति के लिये दो आना फीस के साथ 'वीर अर्जुन', 'कर्मवीर', 'देशदूत' व हैं।

, रूपभवन, बहेड़ी (बरेली) यू० पी०

यह मोहिनी फ़िल्मी अभिनेत्री त्वचा को साफ़ और कोम टॉयलेट साबुन पर निर्भर रहत त्वचा को साफ़ और रेशम की बना देता है। हर एक स्त्री की रक्षा लक्स टॉयलेट साबु

लक्स टॉयलेट

फ़िल्मी अभिनेत्रियों

कहानी

उपहार

> मानवीय प्रकृति भी बड़ी विलक्षण होती है। कोई वस्तु की वास्तविकता और सौन्दर्य पसन्द करता है तो कोई उसके प्रतिकूल वस्तु का मूल्य। ह्यूगो ने श्रीमती एलिस को हीरे की अँगूठी जो कि उसे पसन्द थी, उपहार में देना चाहा, और उसे युक्ति से दिया भी; परन्तु श्रीमती एलिस के पति ने उसका महत्व न समझकर थोड़े से मूल्य में बेच दिया। इस कृत्य का श्रीमती एलिस पर मनोवैज्ञानिक क्या प्रभाव पड़ा होगा यह तो नहीं कहा जा सकता, पर लेखक ने कहानी को ऐसे ढंग से लिखा है कि उसमें रोचकता और उत्सुकता भर गई है। कहानी सुन्दर और पठनीय है।

श्रीमती एलिस ने होटल के कमरे का दरवाजा खोला और भीतर श्रीमान् ह्यूगो को आराम कुर्सी पर पैर फैलाये मुस्कराते पाया।

“तुम भी गजब के मनुष्य हो, भला इस समय यहाँ कैसे?”

“तुम्हें एक खुशखबरी सुनाने आया हूँ। कुछ इनाम दिलवाओ, तो सुनाऊँ।”

“अच्छा! क्या इनाम चाहते हो?”

बस, वही.......”

“तुम्हारे इशारे समझ में नहीं आते। तुम्हें कुछ सुनाना हो, तो सुनाओ। इनाम-विनाम कुछ नहीं मिलेगा।”

“इनाम तो अवश्य मिलेगा, अभी नहीं, तो थोड़ी देर ठहरकर। अच्छा सुनो, तुम जानती हो कि आज से छः मास पहले मैं ‘सीमेण्ट वर्क्स’ में नौकर हुआ था। अधिकारियों की कृपा से मेरा वेतन भी बढ़ा और मेरे काम से सन्तुष्ट होकर कम्पनी ने मुझे २० सहस्र के हिस्से बोनस के रूप में दिये, मेरे सौभाग्य से हिस्सों का दाम अल्प समय में ही दुगना हो गया और अब मैंने उन हिस्सों को ४० हजार में बेच दिया है।”

“सचमुच तुम बड़े भाग्यवान् हो। अच्छा होता, हमारा भी ऐसा ही भाग्य होता।”

“एलिस! तनिक हिम्मत करो। तुम्हारा भाग्य भी बुरा नहीं है। देखो, उस मेज पर कागज में क्या लिपटा रखा है।”

एलिस उसे उठा लाई, ह्यूगो ने खोला, कागज के पैकट में एक छोटी मखमली डिबिया थी।

एलिस ने उत्सुकता से पूछा—“भीतर क्या है?”

“स्वयं देखो।” ह्यूगो ने डिबिया एलिस के हाथों में दे दी। एलिस ने उसे खोला। भीतर बढ़िया हीरे से जड़ी सोने की अँगूठी थी।

“तो क्या मेरे लिये है?” एलिस ने उत्सुकता से पूछा।

“हाँ, प्रिये! तुम्हारे ही लिए। तुमसे बढ़कर मुझे और कौन प्रिय है?”

“पुरुषों की प्रियाओं का क्या पता चलता है? स्त्रियाँ तो उनकी खिलवाड़ की वस्तु हैं।” एलिस ने मुस्कराकर कहा।

“सम्भव है, जो तुम कहती हो, ठीक हो। परन्तु सब उँगलियाँ एक समान नहीं होतीं।”

ह्यूगो ने प्रेम से वह अँगूठी एलिस की उँगली में पहना दी और पूछा—“क्यों? तुम्हें पसन्द आई कि नहीं?”

एलिस ने बड़े ध्यान से अँगूठी को देखा, हीरे को परखा, मुखाकृति पर संतोष की लहर दौड़ गई। परन्तु उसी क्षण एक शंका के कारण उदास भी हो गई।

“प्यारे ह्यूगो! यह कितने की है?”

“क्यों? पैसे दोगी?”

“नहीं, यों ही पूछ लिया।”

“केवल हीरे का मूल्य पन्द्रह सौ रुपये है। सोना और बनवाई अलग।”

“तब मैं इसे नहीं लूँगी।”

“क्यों?”

“इतने अधिक मूल्य की अँगूठी देखकर मेरे पति को तुरन्त सन्देह हो जायगा और चाहे परस्पर हमारा सम्बन्ध कितना ही पवित्र क्यों न हो, वह अवश्य ही दाल में काला समझेगा।”

ह्यूगो ने कुछ क्षण सिर खुजलाया और फिर कहा—“प्यारी एलिस! मुझे एक तरकीब सूझी है। मैं जिस जौहरी से इसे लाया हूँ, यद्यपि उसे मूल्य तो दे चुका हूँ, फिर भी उसे समझा दूँगा कि वह कल को इसे अपने ‘शो-विण्डो’ में रखे, तुम अपने पति के साथ जाना, इसे देखना और पसन्द करना। जौहरी नकली पत्थर कहकर इसे ५०) में तुम्हें बेच देगा। इस प्रकार साँप भी मर जायेगा और लाठी भी न टूटेगी।”

अगले दिन एलिस ने ऐसा ही किया। अँगूठी उसके पति को भी अच्छी मालूम हुई, जौहरी ने भी तनिक नमक-मिर्च लगाया। “श्रीमान्! इसका वास्तविक मूल्य १२५) था, परन्तु जिस महिला ने इसे पहले मोल लिया था, वह आर्थिक कठिनाई के कारण ५०) तक इसे बेच देने की आज्ञा दे गई है। आप बड़े सौभाग्यशाली हैं, जो ऐसा सुअवसर आपको मिल रहा है। यदि आप बनवाने जायेंगे, तो १२५) से एक कौडी कम न लगेगी। है तो यह नकली हीरा, मगर असली को मात करता है। इसे देखकर जौहरी भी धोखा खा जाते हैं।”

एलिस के पति ने ४५) देने चाहे, परन्तु दूकानदार ने कहा—“५०) देने हों, तो दीजिए, नहीं तो अपना रास्ता लीजिए।”

एलिस ने पति की ओर कटाक्ष से देखा, भला स्त्री के प्रेम-कटाक्ष की अवहेलना कौन पुरुषपुङ्गव कर सकता है?

सौदा तय हो गया। जौहरी ने अँगूठी डिबिया में रखकर सुन्दर कागज में पैक की। एलिस के पति ने उसे जेब में सँभालकर रखा और उससे कहा—“तुम तनिक घर चलो, मैं अभी ‘इन्ग्रेवर’ के पास जाकर इस पर दोनों के नाम लिखवाये लाता हूँ।”

* * *

पूरे एक घंटे के पश्चात् पति के आने की आहट मिली। एलिस ने दौड़कर दरवाजा खोला। पतिदेवता बहुत प्रसन्न दिखाई देते थे, पत्नी ने पूछा—“आज क्या बात है? इतने प्रसन्न होने का कारण क्या है?

“वस्त्र तो उतारने दो, सब बतलाये देता हूँ। आज प्रथम बार मेरा भाग्य खुला है।”

एलिस को सन्देह होने लगा कि कहीं यह भला आदमी अँगूठी बेच तो नहीं आया है! एलिस ने पूछा—“अँगूठी पर नाम खुदा.या नहीं?”

“जरा सब्र करो, उसी की बात बताता हूँ।”

एलिस का हृदय धड़कने लगा।

“अच्छा, मैं जब नाम खोदनेवाले के पास पहुँचा, तो वहाँ एक व्यापारी बैठा था, उसने अँगूठी देखकर पूछा—“यह कितने में ली?”

मैंने अपनी चीज की कद्र बढ़ाने के ख्याल से कहा—“१००) में।”

“मैं तुम्हें २००) देता हूँ, मुझे बेच दो।”

मैंने समझा कि आ गया धोखे में। नकली हीरे को असली समझ रहा है। अब मैंने तनिक अकड़कर कहा—“५००) से कम की नहीं है।”

व्यापारी ने अँगूठी को फिर एक बार गौर से देखा, और पूछा—“क्यों? बेचने का इरादा है?”

“ली तो अपने ही लिये थी, यदि आपको पसन्द ही आ गई है, तो ५००) में बेच भी सकता हूँ।”

“व्यापारी ने तुरन्त १००)-१००) के पाँच नोट गिन दिए। सो ले आया हूँ, जिसमें से ५०) तुम्हारे और शेष ४५०) मेरे। देखो, कैसा होशियार हूँ। तुम मुझे बेकार ही बुद्धू समझा करती हो।”*

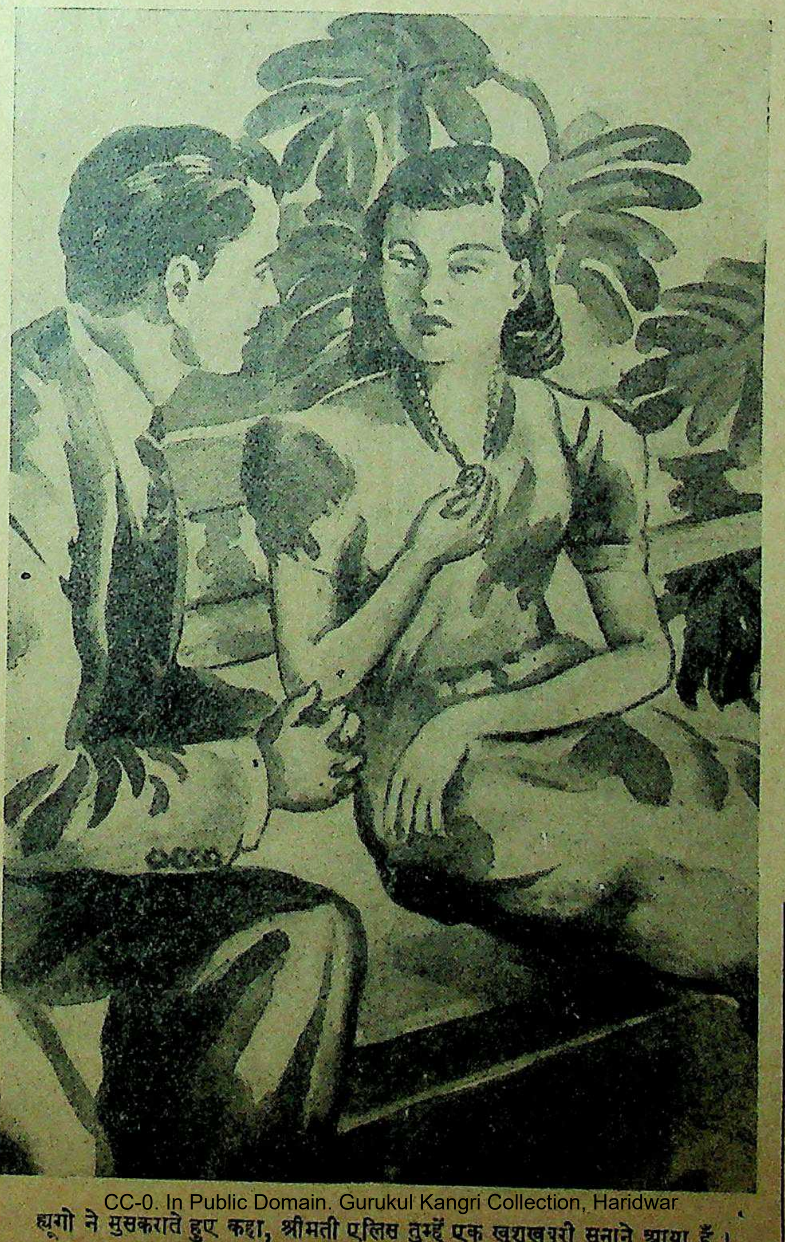

ह्यूगो ने मुस्कराते हुए कहा, श्रीमती एलिस तुम्हें एक खुशखबरी सुनाने आया हूँ।

---

* एक विदेशी कहानी के आधार पर। अनुवादक, श्री आनन्दीप्रसाद मिश्र निर्द्वन्द्व।

डोंगरे बालामृत से कमजोर बच्चे ताक़तवर बनते हैं।

राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति, वर्धा

अहिन्दी भाषाभाषी प्रांतों में हिन्दी-प्रचार की प्रगति

लेखक, श्री भदन्त आनन्द कौसल्यायन, प्रधान मन्त्री

राष्ट्रभाषा का प्रश्न इस समय जितना गम्भीर और महत्त्वपूर्ण हो गया है, उतना पहले नहीं था, क्योंकि पहले केवल मौखिक सिद्धांत प्रतिपादित होते थे। आज विधान-परिषद् के सामने हाँ या न का उत्तर देना है। हिन्दी के विद्वान् ही नहीं वरन् अँगरेजी, बंगला, गुजराती तथा अन्य भाषा-भाषियों ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए अपनी अनुमति दी है। श्री आनन्द जी ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा होने के लिए उसके बढ़ते हुए क्षेत्र का एक सुन्दर चित्र इस लेख में खींचा है। विद्वत्तापूर्ण और रोचक ढंग से लिखा गया लेख सुन्दर और पठनीय है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-स्तम्भ श्री भदन्त आनन्द कौसल्यायन

अप्रैल, १९३६ में अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के नागपुर-अधिवेशन में निर्णय हुआ था कि अहिन्दी-भाषी प्रांतों में राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार किया जाय। फलस्वरूप राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति की स्थापना हुई, जिसका प्रधान कार्यालय वर्धा में रखा गया। देशरत्न डा० राजेन्द्रप्रसाद जी 'अध्यक्ष', श्री जमुनालाल जी बजाज 'उपाध्यक्ष एवं कोषाध्यक्ष', श्री सत्यनारायण जी (वर्तमान मंत्री, हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, मद्रास) मंत्री, तथा श्रीयुत श्रीमन्नारायण अग्रवाल संयुक्त मंत्री चुने गये। इनके अतिरिक्त महात्मा गांधी, पं० जवाहरलाल नेहरू, बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन, काका कालेलकर, पं० माखनलाल चतुर्वेदी, श्री वियोगी हरि आदि देश के १७ गण्य-मान्य नेताओं ने सदस्य बनकर समिति के सम्मान को बढ़ाया। महाराष्ट्र, गुजरात, बंबई, सिंध, बंगाल, आसाम और उड़ीसा इन सात प्रांतों में समिति के राष्ट्रभाषा-प्रचार-कार्य का श्रीगणेश हुआ। प्रचार-कार्य उत्तरोत्तर बढ़ने लगा, किंतु खेद के साथ लिखना पड़ता है कि सन् १९४२ में राष्ट्रभाषा के प्रश्न पर मतभेद होने के कारण बाद में महात्मा गांधी ने समिति से त्याग-पत्र दे दिया। फलतः श्री काका कालेलकर आदि कुछ अन्य सदस्य भी समिति से पृथक् हो गये।

आज समिति का १३वाँ साल है। संघर्ष और कठिनाइयाँ इसके सामने हैं। अतीत में समिति को अपने अस्तित्व और संवर्धन की लड़ाइयाँ लड़नी पड़ी हैं! आज इसे अपने मजबूत अस्तित्व और संवर्धन-जन्य विशाल जिम्मेदारियों को सुचारु रूप से निबाहने की लड़ाई लड़नी पड़ रही है।

समिति के इतिहास में यह वर्ष सफलता का वर्ष कहा जा सकता है। इस सफलता का श्रेय हमारे प्रांतीय कार्य-संचालकों, केन्द्र-व्यवस्थापकों प्रचारकों तथा स्थानीय कर्मचारियों को है। आर्थिक कठिनाइयों और विरोधों के बावजूद भी हमारे प्रचारक बड़ी लगन और उत्साह से कार्य करते आ रहे हैं। राष्ट्रभाषा के प्रति दिनों-दिन लोगों का प्रेम और सम्मान बढ़ ही रहा है।

हमारे स्थानीय कार्यकर्ताओं की संख्या ८० के करीब है, जो हमारे उत्तरोत्तर बढ़ते कार्य-कलेवर के सामने नगण्य सी मालूम पड़ रही है। इस वर्ष समिति के विभागों की संख्या में वृद्धि नहीं हुई, किंतु उसके कार्य-कलेवर में विशेष उन्नति हुई है।

समिति के निम्नलिखित विभाग हैं:—

(१) प्रचार, (२) परीक्षा, (३) प्रकाशन (४) पुस्तक-बिक्री, (५) राष्ट्रभाषा (पत्रिका), (६) पुस्तकालय, (७) प्रेस, (८) भवन और (९) अर्थ।

प्रचार-विभाग

इस विभाग के जिम्मे अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य हैं, जैसे—प्रान्तीय समितियों को संगठित करना, उनकी कठिनाइयों को दूर करने का प्रयत्न करना, एक प्रांत को दूसरे प्रांत के कार्यों से जानकारी कराना, समय-समय पर आवश्यक और सामयिक सलाह देना, जनता की जानकारी के लिए आवश्यक सूचना और परिपत्र आदि प्रकाशित करना, इत्यादि-इत्यादि।

'राष्ट्रभाषा' (मा० पत्रिका) और पुस्तकालय प्रचार-विभाग के उपांग हैं।

अहिंदी भाषा-भाषियों में हिन्दी के प्रति आकर्षण पैदा करने की दृष्टि से राष्ट्रभाषा प्रतिमास १६वीं तारीख को नियम से प्रकाशित होती है। इसकी लोकप्रियता उत्तरोत्तर बढ़ रही है।

समिति के पुस्तकालय में इस समय विभिन्न विषयों पर हिन्दी की पर्याप्त पुस्तकें हैं। समिति के कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त बाहर के व्यक्ति पुस्तकालय के नियमित सदस्य बनकर लाभ उठा रहे हैं।

इस समय देश के विभिन्न अहिंदी-भाषी प्रांतों में तथा विदेशों में समिति के १४१४ प्रमाणित प्रचारक हिन्दी-प्रचार का कार्य कर रहे हैं। उनका आँकड़ा नीचे लिखे अनुसार है:—

प्रांतवार प्रचारकों की संख्या

प्रान्त	प्रचारक
आसाम	४०
बंगाल	१३
उत्कल	२२
गुजरात	३४३
महाराष्ट्र	६५२
विदर्भ-नागपुर	६९
आन्ध्र	१७
सिंध	५२
बंबई	१९५
अन्य	११

समिति का प्रचार समुद्र पार पहुँच गया है। अनेक प्रचारक आज लंका, जंजीबार, दक्षिण अफ्रीका और पूर्व अफ्रीका के विभिन्न भागों में हिंदी का प्रचार कर रहे हैं।

देश के विभाजन के कारण सिंधी अपने प्रांत से बाहर भारतीय-संघ में आ गये हैं। उनकी समिति का प्रधान कार्यालय अजमेर में रखा गया है जहाँ से विभिन्न प्रांतों में बिखरे सिंधियों की राष्ट्रभाषा-शिक्षा का प्रबंध किया जाता है।

परीक्षा-विभाग

परीक्षा और प्रचार विभाग-समिति के दो अन्योन्याश्रित अंग हैं। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। एक का फैलाव दूसरे को बल देता है। यह नहीं कहा जा सकता कि परीक्षा-प्रसार के कारण प्रचार-क्षेत्र बढ़ रहा है, या प्रचार के कारण परीक्षार्थी बढ़ रहे हैं।

अहिन्दी-भाषी प्रांतों में राष्ट्रभाषा हिंदी सीखने के प्रति लोगों में अपार उत्साह दिखाई दे रहा है, जो परीक्षार्थियों के नीचे दिये आँकड़ों से स्पष्ट हो जाता है।

इस वर्ष भी फरवरी और सितम्बर में दो परीक्षाएं हुईं। उनके आँकड़े इस प्रकार हैं:—

(फरवरी, ४८)

केन्द्र	परीक्षा	संख्या
५७५	प्रारम्भिक	२४६३४
	प्रवेश	१६६८३
	परिचय	४६८३
	कोविद	१०७०
	अतिरिक्त	३१
	कुल	४७१०१

(सितम्बर' ४८)

केन्द्र	परीक्षा	संख्या
६६७	प्रारम्भिक	३८४२८
	प्रवेश	२४६२२
	परिचय	९१४३
	कोविद	१६१४
	अतिरिक्त	१५
	रत्न	६३
	कुल	७३८८५

गत वर्ष के साथ इस वर्ष के परीक्षार्थियों की संख्या संतुलित करने पर प्रगति का पूरा चित्र सामने आ जाता है:—

सन् १९४७ की दोनों परीक्षाओं में कुल परीक्षार्थी— ७००१५

सन् १९४८ की दोनों परीक्षाओं में कुल परीक्षार्थी १२०९८६

प्रांतवार फरवरी तथा सितम्बर' ४८ के परीक्षार्थियों की संख्या आगे दी गई है—

प्रांत	परीक्षार्थी
आसाम	२४२०
बङ्गाल	१६८५
उत्कल	६५१७
सिन्ध	१११
राजस्थान (म० भा० त)	८५७
अन्य	२०८
गुजरात	४७४७६
महाराष्ट्र	३२४४६
बम्बई	१३३०८
कर्नाटक	९०८
आंध्र	५८
हैदराबाद (दक्षिण)	२०७
विदर्भ-नागपुर	१३६६४
फुटकर	७६१
	१२०९२३
राष्ट्रभाषा-रत्न परीक्षार्थी	६३
	१२०९८६

परीक्षार्थियों, परीक्षा-केन्द्रों और प्रचारकों का उन्नति-क्रम :—

वर्ष	परीक्षार्थी	केन्द्र	प्रचारक
१९३७	६१९	१८	७
,, ३८	२४८६	७५	६३
,, ३९	८६४९	१४०	१४१
,, ४०	१५९६५	२५०	२२६
,, ४१	२७३८८	४२८	२६१
,, ४२	१३६५८	६४२	३५२
,, ४३	५०२६७	६७२	३९९
,, ४४	४४३४५	७५०	४२०
,, ४५	४७८७७	७९२	६२१
,, ४६	४४७०१	८२८	८७५
,, ४७	७००१५	१०८६	११६८
,, ४८	१२०९८६	१२९४	१४१४

प्रकाशन और पुस्तक-बिक्री विभाग

दोनों विभाग एक ही व्यक्ति की देख-रेख में चल रहे हैं। सरकार से जितना कागज मिलता है वह प्रकाशन के लिए पर्याप्त नहीं होता। अतः आवश्यकता के अनुसार पुस्तकों का प्रकाशन नहीं हो पा रहा है। फिर भी इस वर्ष समिति की परीक्षाओं की १७ पुस्तकों का पुनर्मुद्रण तथा दो नई पुस्तकों का प्रकाशन किया जा सका है।

प्रकाशन-विभाग को अभी अधिक व्यापक नहीं बनाया जा सकता है। कागज की कमी दूर होते ही पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त राष्ट्र के लिए दूसरे उपयोगी साहित्य का प्रकाशन भी समिति के ध्यान में है।

पुस्तक-बिक्री विभाग :—समिति द्वारा प्रकाशित पुस्तकों तथा समिति की विभिन्न परीक्षाओं के लिए आवश्यक पुस्तकों का संग्रह इस विभाग में किया जाता है। आज की कठिन परिस्थितियों में यातायात की असुविधा के बावजूद भी समिति ने इस वर्ष करीब डेढ़ लाख मूल्य की पुस्तकें ग्राहकों के पास भेजी हैं।

प्रेस-विभाग

समितिने अपने बढ़ते हुए प्रचार-कार्य को दृष्टि में रखकर अपना एक प्रेस चालू करनेका निर्णयकिया। फलस्वरूप अप्रैल, १९४६ में समिति ने प्रेस के निमित्त २५०००) की मंजूरी दी और जून १९४६ में 'राष्ट्रभाषा प्रेस' का उद्घाटन हुआ। इस प्रेस से समिति की बहुतेरी कठिनाइयाँ हल

शेष पेज १८ पर देखिए

मातृमण्डल

आधुनिक नवयुवती

भारतीय लड़कियाँ पश्चिमी रंग में कब तक रँगती रहेंगी ?

लेखक, श्री कृष्णकुमार गुप्त, बी० काम

वेडफोर्डशायर के एक विद्वान् न्यायाधीश ने, संसार की गति-विधि को दृष्टि में रखते हुए, कुछ समय पूर्व, सुन्दर नवयुवतियों द्वारा साज-शृंगार की कृत्रिम सामग्री के अत्यधिक प्रयोग पर आपत्ति प्रकट की। वास्तव में कोई कारण नहीं कि वे "अपने चेहरों को बन्दर जैसा बनायें और मुँह को डाकखाने के लेटरबक्सों की भांति रक्खें। आधुनिक युग में रहनेवाली एक आधुनिक युवती एक आधुनिक समस्या है जिसका हल सरल नहीं।

"आधुनिक युवती" भारतीय या अभारतीय दोनों ही हैं। हमारा सम्बन्ध भारतीय नवयुवतियों से है, क्योंकि वही देश की आशा हैं, उन्हीं के साथ उन्नतशील नवयुवकों का भाग्य जुड़ा है और वे ही हमारी सुख-समृद्धि का कारण होती हैं। भारत में पाश्चात्य ढंग की अनेक नवयुवतियाँ मिलेंगी जो बिलकुल गलत रास्ते पर चलती हैं और जिनमें किसी प्रकार की बुद्धि नहीं।

प्रेम करना सर्वप्रथम और सर्वप्रमुख रूप में आधुनिक नवयुवती के जीवन में घुसा है। ऐसे प्रेम का अर्थ क्षणिक कामपिपास की शान्ति के अतिरिक्त और कुछ नहीं। नैतिक पतन का मार्ग इस प्रकार सीधा खुल जाता है। प्रेम करने के लिये पहली आवश्यकता यह है कि नवयुवती अपने को समय के अनुकूल बनाये अपने रंग को निखारे, गालों को लाल करे और चटकीले-भड़कीले वस्त्र पहनकर फैशनेबिल बने। बाजारों, मेलों और तमाशों में हर प्रकार के वस्त्र पहने नवयुवतियाँ मिलती हैं। यह पूरी बेशर्मी है और इसके पीछे कोई कारण नहीं।

अपने प्रेमी को अपनी टाँग ऊँची करके कहते हुए "मेरी टाँगों की ओर देखिये, कितनी सुन्दर हैं" बहुधा सुना जा सकता है। एक समझदार व्यक्ति को ऐसी बात विरक्ति से भर देने के लिये पर्याप्त है। पश्चिम की आधुनिक महिलाओं को तो यहाँ पर विचार करने से छोड़ देना ही अच्छा होगा। उनके सामाजिक नियम पूर्व में प्रचलित नियमों से भिन्न हैं। भारतीय समाज पाश्चात्य नारी को बड़ी उपेक्षा की दृष्टि से देखता है। वह उनकी वेश्याओं से तुलना करने में भी नहीं हिचकता। सैकड़ों आधुनिक नवयुवतियों ने युद्ध-काल में सरकारी कार्यालयों में नौकरियाँ कीं। उन्होंने कोई अच्छा कार्य नहीं किया। जहाँ कहीं भी वे रहीं, उन्होंने गन्दगी फैलाई। अंगरेज सैनिकों के मनोरंजनार्थ ही उन्हें नौकर रक्खा गया था। दोष नवयुवतियों को देना चाहिये न कि उनके स्वामियों को। आश्चर्य होता है कि पीने-खानेवाली यह जाति कब तक जीवित रहेगी ?

भारतीय नवयुवतियों के विषय में लिखते समय हमें सचाई से काम लेना चाहिये। यदि हम हृदय पर हाथ रखकर देखें तो पता लगेगा कि उनके कारनामे गन्दे और सन्देहास्पद हैं। उन्होंने क्रीम, स्नो, पाउडर और ओठों की लाली को बुरी तरह अपना लिया है। यह पूर्व और पश्चिम के मिलन का परिणाम है। दोनों सभ्यताओं के समागम का यह सुपरिणाम न होकर कुपरिणाम है।

नकल की आदत तो बन्दर में होती है। वह कम बुद्धि के कारण होती है। स्त्रियाँ अल्पबुद्धि की क्यों बनें और नकल करें ? यदि उन्हें नकल ही करनी सिद्ध है तो वे अच्छी बातों की नकल करें, न कि बुरी की। कृत्रिम साज-शृंगार सुन्दरता को बढ़ाता नहीं। वह उसे भद्दा बनाता है। यदि हमारे वस्त्र स्वास्थ्य के नियमों के अनुसार बने हों, न कि फैशन के अनुसार, हमारी सन्तति और उसका स्वास्थ्य अच्छा होगा। स्वस्थ शरीर और स्त्रियों की सुन्दरता साथ साथ चलते हैं। स्नो, पाउडर और साबुन इत्यादि बेचनेवाले अपनी वस्तुओं की चाहे जितनी प्रशंसा क्यों न करें, वे कुछ लाभ नहीं करतीं, हानि अवश्य करती हैं। देशी वस्तुओं के प्रयोग करनेवाले उनमें बुरी सुगन्ध पाते हैं और उन्हें मुफ्त भी नहीं पसन्द करते। साबुन खुश्की करते हैं, पाउडरों से चर्म का रंग बिगड़ता है और गालों और ओठों की लाली से गली-सड़क से निकलना कठिन हो जाता है।

सारी बात का सार यह है कि स्त्रियाँ फैशन इत्यादि के फेर में इसलिये पड़ी रहती हैं कि वे सुन्दर प्रतीत हों और मनुष्य उन्हें चाहें। भारतीय नवयुवतियों की कभी यह इच्छा नहीं हो सकती कि उन्हें दुनिया भर चाहे। "चाहना गैर प्रेम करना" उनके पतियों का कार्य है। इतिहास साक्षी है, भारतीय पति सदैव प्राकृतिक सुन्दरता और पतिपरायणा स्त्रियाँ चाहते रहे हैं। उनकी स्त्रियाँ अच्छी पुस्तकों की भाँति हों, जो अपने में कुछ गुण और वास्तविकता रखती हों न कि कुरुचि उत्पन्न करनेवाली और गुणरहित। तड़क-भड़क के स्थान पर स्वच्छता, शान-शौकत के स्थान पर सादगी और ढोंग के स्थान पर सच्चा सदआचरण आवश्यक है।

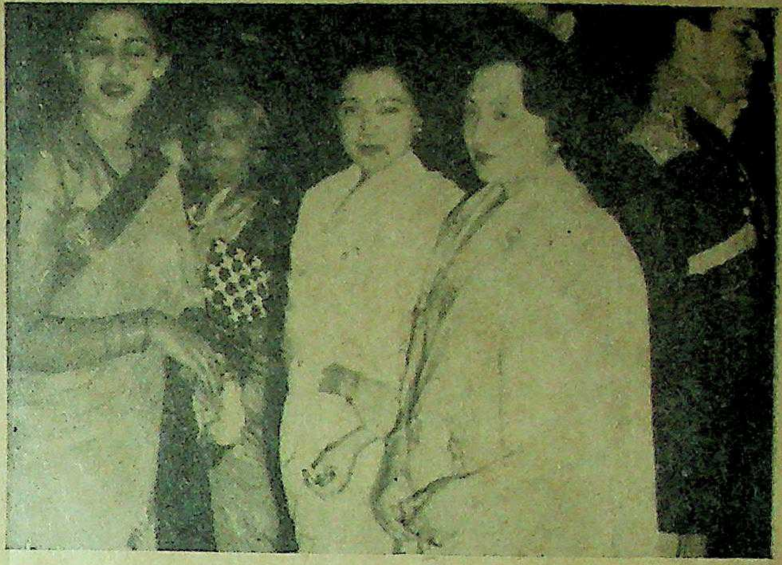

ये सम्भ्रान्त महिलायें प्राचीन परम्परा को तोड़कर नूतन पद्धति का जन्म दे रही हैं। इसके लिए यह सब कष्ट की जरा भी चिन्ता नहीं करती।

एक और बात है। कुछ आधुनिक नवयुवतियाँ प्रत्येक बात में अपने व्यक्तित्व की छाप लगाना चाहती हैं। वे समान अधिकार और अधिक अवसर की खोज में हर समय लगी रहती हैं। इससे अधिक कोई गलत रास्ता नहीं हो सकता। पुरुष आज स्वयं उन्हें उनका पूरा भाग देने के लिये इच्छुक है। लेने और भार उठाने की सामर्थ्य उनमें होनी चाहिये। उन्हें मदान्ध होकर अधिकारों की दौड़ में नहीं दौड़ना चाहिये। वे पुरुषों से ऊपर उठने का तो स्वप्न देखना ही छोड़ दें। उन्हें अपने क्षेत्र में उन्नति करनी चाहिये और वास्तविकता के आधार पर आदान-प्रदान द्वारा जीवन में आगे बढ़ना चाहिये।

* * *

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत एक डिब्बा ३।-) डाक और पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत शीशी ३=), दो शीशी ५।।=), डाक और पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

स्वतन्त्र भारत का नवीन आविष्कार

विद्यार्थियों, जनता तथा फोटोग्राफर्स को स्वर्ण अवसर

सुन्दर, मजबूत, टीन की बौडी, स्प्रे कलर, बढ़िया फोकस, लेन्स, विश्वसनीय हिन्दुस्तान के होशियार कारीगरों द्वारा बनाये हुए कीमत में सस्ते, काम में विलायती केमरों से टक्कर लेनेवाले। इन केमरों से आप चाहे जिस दिलपसंद चीज का टिकाऊ मनोहर फोटो नं० १२० के फिल्म पर २।। × ३।। इंच साइज का खींच सकते हैं।

नं० १ ओरियन्ट कट् फिल्म बौक्स केमरा—मू० ८।।) पोस्टेज पैकिंग १।।) केमरे के साथ कट् फिल्म कार्ड, मसाला और फोटो खींचने की तरकीब मुफ्त। नं० २ ओरियन्ट रौल फिल्म बौक्स केमरा—मू० १८।।) पोस्टेज पैकिंग १।।) फोटो खींचने की तरकीब मुफ्त। नं० ३ ओरियन्ट रौल फिल्म फोल्डिंग केमरा—मू० २२।।) पोस्टेज पैकिंग १।।) फोटो खींचने की तरकीब मुफ्त।

गारंटी :—हमारा दावा है कि आप कभी भी असन्तुष्ट न होंगे केमरे से बढ़िया फोटो न खिंचे तो मूल्य वापिस।

ओरियन्टल केमरा हाउस (वी० जी० ओ० नं० २) अलीगढ़ सिटी

सम्पादक के नाम चिट्ठियां

राजस्थान विद्यापीठ

गत मई १९४७ को मैंने प्रताप विश्वविद्यालय की घोषणा की थी। संयोगात वह योजना मुझे स्थगित करनी पड़ी! किन्तु राजस्थान में एक विश्वविद्यापीठ, मैं स्थापित कर जनता के सर्वांगीण उच्च शिक्षण-दीक्षण का स्थायी प्रबन्ध कर जाऊँ यह मेरी हार्दिक इच्छा तथा मेरा वचन ज्यों का त्यों मैंने अपने मन में रखा। मेरे जीवन का लक्ष्य सदा प्रजा का पालन-पोषण करना रहा है। मेरे जीवन-काल में भारतमाता स्वाधीन हुई और एक नये युग का सवेरा हुआ। मेरे लिये और हम सबके लिये यह एक सौभाग्य का विषय है।

महात्मा गांधी जी की महान् तपस्या, पं० जवाहरलाल जी नेहरू और सरदार वल्लभभाई पटेल को क्षमता एवं नेतृत्व से आज अनेकों संकटों का सामना करता हुआ भी अपना यह महान् देश भारतवर्ष एक और शक्तिशाली हो रहा है, ऐसा मैं मानता हूँ और उसे अधिक से अधिक शक्तिशाली एवं तेजोमय होना ही होगा।

अतः हम सबका कर्त्तव्य हो जाता है कि हर एक क्षेत्र में ईश्वर ने हमें जो भी जगह और विषय भारतवर्ष में दिया है उसमें भारतीय मानवता के नव निर्माण के विशाल और स्थायी काम कर जायें। मेरा तो दृढ़ मत है कि राव या रंक जो भी हो उसको आज अज्ञान, गरीबी भूख और दीनता दूर करने के अनेकों काम करने होंगे। भारत सरकार, अन्य सरकारें तथा कांग्रेस और अन्य संस्थायें इस दिशा में काम कर रही हैं। राजस्थान में भी यह कार्य प्रारम्भ हो गया है और उत्तरोत्तर बढ़ता जायगा। किन्तु उन अनेक कामों में एक महत्त्वपूर्ण और विशाल कार्य राजस्थान विश्व-विद्यापीठ भी है। इस राजस्थान विश्वविद्यापीठ द्वारा लोक शिक्षण, उच्च साक्षरता, लोक-जीवन-निर्माण, साहित्यिक, सांस्कृतिक, रचनात्मक कार्य तथा प्राचीन वाङ्मय की शोध खोज संग्रह सम्पादन-कार्य हो रहा है तथा अब इस चतुर्मुखी कार्य को विश्वविद्यापीठ के आधार पर विकसित किया जाने का प्रारम्भ मैंने कर दिया है।

अपने बन्धु नरेशों से जो सदैव मेरे सहयोगी रहे हैं और जिन्होंने हमेशा अच्छे और महान् कार्यों में मुझे साथ दिया है उनसे मैं निवेदन करता हूँ कि वे राजस्थान विश्वविद्यापीठ के मेरे इस जीवन के उत्तम कार्य में मुझे पूरा साथ दें। इस घड़ी राजस्थान विश्वविद्यापीठ की उन्नति का कार्य मुझे बड़ा संतोष और सुख देता है।

अतः आप सब सहयोगी बन्धु नरेशों से मैं अनुरोध करता हूँ कि आज की स्थिति में कष्ट उठाकर भी राजस्थान विश्वविद्यापीठ की नींव भर दें और इसकी अविचल दृढ़ता के लिये यथा योग्य आर्थिक सहायता दें। आज हम नरेशों का यह पवित्र कर्तव्य हो जाता है कि हम विद्याप्रसार तथा भारतीय सभ्यता के शिक्षण द्वारा उत्थान के कार्यों में लग जायँ। पुराने और कल के बीच इतिहास में हमने महत्त्वपूर्ण हिस्सा अदा किया है। मेरे प्रतापी पूर्वजों ने और आपके आदरणीय पूर्वजों ने तथा हम सबने भारतीय इतिहास की अनेक घटनाएँ गढ़ी हैं आज भी भारतीय जनता के चक्रवर्ती राज्य और जनतन्त्र के अरुणोदय में हमने साबित कर दिया है कि भारतमाता की सेवा करने में हम किसी से पीछे नहीं हैं। अतः हमारी स्मरणीय आहुतियों की पूर्णाहुति मेरे मन में इस राजस्थान विश्वविद्यापीठ को खड़ा करके ही हो सकती है। हमने अपने राज्यों को किसी स्वार्थ से नहीं, भारतीय मानवता की सेवा और उसके नये अभ्युदय के लिये समझ बूझ कर दिया है। और इसलिये संयुक्त राजस्थान में जनसेवकों के ११ वर्षों के अविराम परिश्रम से जलाई गई उदयपुर हिन्दी विद्यापीठ की ज्योति में अपनी कामना के प्रताप विश्वविद्यालय को मिलाकर मैंने राजस्थान विश्वविद्यापीठ को उस ज्योति में बदल दिया है जो सदैव जलती रहेगी और भारतीय मानवता की पीढ़ियों को प्रकाश, आनन्द और शांति देती रहेगी। कल तक हमने राज्य शक्ति द्वारा जन पोषण का कार्य किया था, आज हम वैधानिक नृपतित्व का कर्तव्य करते हुए जनता की आत्मा के आवरण हटाने के ज्ञान यज्ञ का कार्य करें, क्योंकि अब हमारे यही और ऐसे ही कार्य शेष रह गये हैं। अतः मैं आशा ही नहीं विश्वास करता हूँ कि मेरे बन्धु नरेश की भांति आप मेरे इस राजस्थान विश्वविद्यापीठ के दायित्व में पूरा भाग बटायेंगे और नव राजस्थान की मानवता के शिक्षण द्वारा निर्माण के इस यज्ञ को सफल बनाने में कष्ट उठाकर भी स्थायी आर्थिक सहायता जो आपके योग्य हो करेंगे।

उदयपुर —(महाराणा) उम्मेदसिंह
राजप्रमुख

* * *

गांधी जी के फोटो और साहित्य का प्रदर्शन

सोचा गया है कि पूज्य गांधी जी के चित्रों की सजावट का एक विभाग सर्वोदय प्रदर्शनी के एक मुख्य स्थान में किया जाये। इस आयोजन का हेतु बापू के जीवन के बहुविध कार्यों और अवस्थाओं को अंकित करना है जो उनकी जिन्दगी से ताल्लुक रखते थे। सब मित्रों से अनुरोध है कि इस चित्र-संग्रह के लिये वे सहायता करें और ऐसे जितने फोटो वे भेज सकें सर्वोदय प्रदर्शनी को भेजने की कृपा करें। जो भेजनेवाले अपने फोटो वापस लेना चाहेंगे उनके फोटो की नकल कराकर असल उनको वापिस भेज दिये जायँगे।

यह सभी जानते हैं कि गांधी जी का खुद का लिखा और उनके संबंध में लिया गया विपुल साहित्य देशी और विदेशी भाषाओं में है। सब प्रकाशनकारों, लेखकों और मित्रों से अनुरोध है कि ऐसे साहित्य की एक एक प्रति वे प्रदर्शनी को भेजें। उनके साथ हिन्दी अथवा अंगरेजी में, किताब और भाषा का नाम लिख भेजें। ये किताबें लौटाई नहीं जायेंगी।

इन सब चित्रों और किताबों का प्रदर्शनी में जो संकलन जमा होगा, गांधी जी की यादगार में बननेवाले संग्रहालय को दे दिया जायेगा।

जो किताबें या फोटो बापू मंडप के लिये भेजी जायें वे अच्छी तरह से पैक करके रजिस्ट्री, डाक से सर्वोदय प्रदर्शनी के सेक्रेटरी को, सर्वोदय प्रदर्शनी, गांधी-नगर, जयपुर के पते से भेजी जाय।

कांग्रेस-कैंप, —कृष्णदास गांधी
जयपुर मंत्री, सर्वोदय प्रदर्शनी

* * *

जयपुर कांग्रेस के प्रतिनिधियों से

आपके ठहरने की व्यवस्था प्रतिनिधिनिवास में की गई है। प्रतिनिधिनिवास में प्रतिनिधियों के ठहरने की व्यवस्था प्रान्तवार की गई है। प्रतिनिधिनिवास में पानी, रोशनी तथा चारपाइयों की व्यवस्था रहेगी। निवास-शुल्क प्रतिव्यक्ति ५ रुपये रखा गया है जो अग्रिम जमा कराना होगा। अपने आने की सूचना तथा निवास-शुल्क आप तुरन्त स्वागत समिति कार्यालय को भेज देंगे तो आपको भी सहूलियत होगी और स्वागत समिति के काम में भी। एक सीमित संख्या में प्रतिनिधियों के कुटुम्ब के व्यक्तियों के ठहरने के लिये भी प्रतिनिधिनिवास में स्थान रखा गया है पर इस बारे में पहले सूचना देना तथा आवश्यक-शुल्क जमा करना लाजमी है। परिवार के व्यक्ति अगर आपके साथ आयें तो उनका भी प्रतिव्यक्ति, जिनमें ८ वर्ष से ऊपर के बच्चे भी शामिल हैं, ५ रुपये निवास-शुल्क देना होगा। भोजन के लिये प्रतिनिधिनिवास में स्वागत समिति की ओर से एक भोजनालय होगा जिसमें १ रुपया प्रतिव्यक्ति प्रतिभोजन देने पर भोजन किया जा सकेगा। स्वागत समिति के भोजनालय के अलावा, आस पास और भी भोजनालय होंगे उनमें भी भोजन किया जा सकता है। गांधीनगर स्टेशन पहुँचने के लिये खास खास स्थानों से स्पेशल रेल गाड़ियाँ रवाना होंगी। इस संबंध में आप अपनी प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी से पत्र-व्यवहार करें। स्वागत समिति ने तय किया है कि प्रतिनिधियों को विषय निर्वाचिनी समिति के लिये १०) का रियायती टिकट दिया जाय। यहाँ आते समय कृपया अपनी प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी से, 'प्रतिनिधि प्रमाण-पत्र' प्राप्त करके अवश्य साथ लायें जिससे यहाँ आने पर निवास, अधिवेशन के प्रवेश-पत्र तथा विषय समिति के रियायती टिकट आदि हासिल करने में कोई दिक्कत न हो।

दिसम्बर में यहाँ काफी सर्दी पड़ती है इसलिए कृपया ओढ़ने बिछाने तथा पहिनने के गरम कपड़े पर्याप्त मात्रा में जरूर साथ लायें।

१५ नवम्बर, १९४८ —सिद्धराज ढड्ढा
संयुक्त मन्त्री

* * *

मालव प्रान्त की राजधानी

मालव प्रदेश का इतिहास इस बात का साक्षी है कि यह प्रदेश अपनी एक कोटि जनता के साथ स्वतन्त्र इकाई में रहकर पृथक् प्रान्त बनने की क्षमता रखता है। इतिहास के इस सत्य की पुनरावृत्ति का श्रेय भूतपूर्व मध्यभारतीय देशी राज्य लोक परिषद् को है, जिसने विक्रम व कालीदास की भूमि, संस्कृति, साहित्य, कला, धर्म, ज्ञान, विज्ञान के प्राचीन केन्द्र उज्जैन में इस सत्य को कार्यरूप में परिणित करने के लिये पग उठाने का दृढ संकल्प किया और आशातीत सफलता भी प्राप्त की। युगों से विशृंखलित मालव भू को शृंखलाबद्ध किया। वर्तमान युग में जब प्राचीन संस्कृति तथा इतिहास की पुनरावृत्ति हो रही है, महा मालव का निर्माण किया।

जिस कल्याण की प्रेरणा ने हमें मध्य-भारत में विलीन होने के लिये आमंत्रित किया—जिस भौगोलिक सामिप्य ने हमें मालव प्रान्त के रूप में यह भव्य स्वरूप प्रदान किया—जिस स्वशासन एवम् सुशासन को सुव्यवस्थित एवम् चिरवांछित रूप में देखने की लालसा हमारे मन में जगी—जिस अपव्यय को रोकने को हमने २३ राज्यों को एक कड़ी में पिरो दिया—जिसे सांस्कृतिक एकता को पुनः प्राप्त करने को हमने अतीत की ओर देखा—आज हमारे यह भाव प्रादेशिक भावनाओं के गर्त में पड़कर विनाश की ओर अग्रसर हो रहे हैं। हमारी संकीर्णताओं ने आज हमें दो विरोधी शिविरों में विभक्त कर दिया है। इन परिस्थितियों में प्रान्त के प्रतिनिधियों का उत्तरदायित्व और भी बढ़ जाता है। इस महाविनाश से त्राण पाने का केवल एक मार्ग है; वह यह है कि दिल्ली दौलताबाद के लघुसंस्करण की पुनरावृत्ति का अन्त कर वृत संकल्प ही विक्रम के साथ आदित्य की संधी करानेवाली अवन्तिका को ही शासन-केन्द्र बनाने का निर्णय किया जाये। हमारे लिये यह परम सौभाग्य का विषय है कि हमारे प्रांतपति श्री गोपीकृष्ण जी विजयवर्गीय ने समस्याओं के अध्ययन के पश्चात् हमारे जन-प्रतिधियों का उचित मार्ग दर्शन किया है। आपने "नई दुनिया" में दिये गये वक्तव्य में प्रांतपति जी ने उज्जैन को राजधानी बनाये जाने का संकेत दिया है। वास्तव में हमारे लिये यह एक शुभ संदेश है और जन-प्रतिनिधियों का भी यह कर्त्तव्य है कि वे प्रांतपति जी के संदेश का पूर्ण रूप से सम्मान करें।

आशा ही नहीं, वरन् पूर्ण विश्वास है कि आप हमारे इस निर्णय में सहयोग देकर तथा अपनी स्वीकृति के हस्ताक्षर प्रदान कर उज्जैन को मालव प्रान्त की राजधानी बनाने के जन-कल्याणकारी उद्योग में सहायक होंगे।

उज्जैन मंत्री
१ दिसम्बर, ४८ राजधानी निर्माण समिति

क़सीदा मशीन

कपड़े पर हर प्रकार के सुन्दर बेल-बूटे, फूल-पत्ती, सीन-सीनरी काढ़ने की सुन्दर और मजबूत चाँदी की तरह चमकती हुई ४ सुइयोंवाली मशीन मूल्य ३) पैकिङ्ग पो० ।।।), कसीदाकारी की डिजाइन की पुस्तक मू० २) पो० ।।)।

सन्तोष ट्रेडिंग कम्पनी (एच ४)
पाठक स्ट्रीट, जैगंज, अलीगढ़

"शहीद", "खिड़की" और "मेला"

इन फिल्मों के संबंध में जनता की रुचि क्या है ?

लेखक, श्री गोपाल मेहरोत्रा

आजकल फ़िल्मिस्तान कृत "शहीद", नर्गिस, दिलीपकुमार जीवन, आदि से अभिनीत "मेला" तथा श्री प्यारेलाल जी 'संतोषी' द्वारा निर्देशित "खिड़की" फिल्म लोकप्रिय हो रहे हैं।

* * *

श्री रमेश सहगल द्वारा दिग्दर्शित "शहीद" का उच्चारण सुनते ही हमारे जीवित शव में एक नवीन क्रांति, एक नूतन उत्साह, एक नव स्फूर्ति का अनुभव होता है। परन्तु चित्र में प्रदर्शित शहीद के प्रति बलात्कारों, सामाजिकता के प्रति दुर्व्यवहारों और राष्ट्रीयता के दुरुपयोगों को निरखकर मस्तिष्क लज्जा से नत हो जाता है और हृदय विद्रोह करने के लिये उत्सुक हो उठता है, पर जनता की अज्ञानता, निम्नता और दुर्बलता के कारण लेखक रक्त का घूँट पीकर दाँत कटकटाता हुआ अपनी जिह्वा को ही काट डालता है।

कथासार देश की आन पर अपनी आहुति देनेवाले क्रान्तिकारी ब्रिटिश शासन की टाँय-टाँय फिस-फिस सुनकर शूरवीरों की भाँति भाग जाते हैं और रायबहादुर साहब के गृह-दीपक, रामशीला के साथ किशोरावस्था व्यतीत करते हुए तरुण होते हैं। पं० जवाहरलाल होने की दुराशा से एक दुर्घटनावश उन्हें गोली लगती है और वे तरुणी शीला के......। शीला की मँगनी के दिवस राम और वह सुकुमारी रात्रि के नौ बजे से प्रातः छः बजे तक......। राम की अज्ञानता में शीला का विवाह विनोद आई० सी० एस० से हो जाता है। ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला देने के हेतु राम के सेनापतित्व में अहिंसावादी गोपाल भैया तथा गुरु जी को कारावास होता है। शीला अपने प्रेम की आहुति देने के हितार्थ उन शहीदों को भाग जाने का कुअवसर प्रदान करती है। अन्त में राम भी पकड़ा जाता है। उसे मृत्युदण्ड प्राप्त होता है और उसके साथ ही साथ शीला के भी प्राणपखेरू उड़ जाते हैं।

इस महान् अराष्ट्रीयता के अतिरिक्त चित्र में अनेक अस्वाभाविकताएँ भी अपना अद्वितीय स्थान रखती हैं। 'वतन के नोजवाँ शहीद हो' के अतिरिक्त अन्य समस्त गीतों—'वेदरदी बालम आ.....', 'बदनाम न हो जाये मुहब्बत का फसाना,' 'बचपन की याद......', आदि—के आशय प्रणय ही रहे हैं। संगीत इक्के गाड़ीवालों से मिलते-जुलते हैं। संवाद जर्जर एवं हास्यपद हैं। चित्रा लेखन, रूप-सज्जा तथा ध्वनि-आलेखन साधारण कोटि के हैं।

राम की भूमिका में दिलीपकुमार तथा रायसाहब की छाया में चन्द्रमोहन ने सुन्दर कार्य किया है। शेष पात्रों में शीला की भूमिका में कामिनी कौशल, रायसाहब के मित्र की काया में एस० एल० पुरी, शीला के पिता की कल्पना में वी० एच० देसाई तथा उनके दामाद के आवरण में रामसिंह ने संतोषजनक कार्य किया है। शेष पात्रों के कार्य उल्लेखनीय नहीं हैं।

यद्यपि प्रस्तुत चित्र ने जनता की दृष्टि में महान् आदरणीय स्थान प्राप्त करने का उपक्रम किया है, परन्तु वास्तव में दिग्दर्शक ने अश्लील रोमान्स, हिंसा-अहिंसा के अस्वाभाविक प्रसंगों तथा गन्दे गीतों को स्थान देकर अपने उज्ज्वल व्यक्तित्व पर कीचड़ उछालने की सफल चेष्टा की है। आशा है, आपने अपनी आगामी रचना "समाधि" में इस महान् प्रगति का काला मुँह करने का ही प्रयत्न किया होगा।

* * *

भारतीय चंचल-क्षेत्र के महान् साहित्यकार श्री प्यारेलाल जी 'संतोषी' ने "शहनाई" में पाँच-पाँच नायक और पाँच-पाँच नायिकाओं के कुरुचिपूर्ण संकेतों, 'जवानी की रेल.......', 'आना मेरी जान सण्डे के सण्डे', 'पहली ही मुलाकात में दिल आपका हुआ, आपका हुआ आपके बाप का हुआ', आदि जैसे अश्लील गीतों, नसीर खाँ जैसे किराये के टट्टुओं, मुमताज अली जैसे हिजड़ों तथा गदहे की भाँति हँसनेवाले एस० एल० पुरी, आदि के घृणित ताण्डवनृत्यों को प्रदर्शित करने के पश्चात् ग्यारह-ग्यारह नायक और ग्यारह-ग्यारह नायिकाओं के साथ "खिड़की" की ओर संकेत किया है।

'खिड़की' चित्र की कहानी आदि से अन्त तक भड़ुओं और वेश्याओं के अश्लील परिहासों तथा निरर्थक हुल्लड़बाजियों से परिपूर्ण है। कहीं पर युवक युवतियों के वेश में रमणियों के प्रकोष्ठ में प्रवेश कर सौ-डेढ़ सौ बल खाते हैं और कहीं कमलाकला-कुंज की संचालिका सरदार जी का वेश धरकर 'फिफ्टी' का रोमान्स देखती हैं। प्रदर्शनी में तो दिग्दर्शक ने निर्लज्जता एवं अराष्ट्रीयता की सीमा ही पार कर दी है, जिसे प्रगतिशील सेन्सर-विभागों ने महान् श्रद्धा-सहित अपनाया है। 'एक चवन्नी चाँदी की जय बोला महात्मा गांधी को' जैसे अपमानजनक गीत को छातियाँ उछाल-उछाल कर, कूल्हे मटका-मटका कर, आँखें मार-मार कर वासनामय नृत्य साहित प्रदर्शित करना कितनी राष्ट्रीयता, समाज एवं कला की वास्तविक सेवा है ? क्या पूज्यवर बापू तथा खादी के नाम पर बाइस-बाइस नायक-नायिकाओं का नग्न नृत्यप्रदर्शन ही राष्ट्रपिता के प्रति श्री संतोषी जी की वास्तविक श्रद्धांजलि है ? समाज-सेवक संस्थाओं को कामुम-कुत्तों के अड्डे घोषित करना क्या पतन की पराकाष्ठा नहीं ?

नितीश मुकर्जी और नीलिमा दास 'महाकाल' नामक चल-चित्र में नीलकंठ और मेघमाला का अभिनय करते हुए।

यदि आप लोग शून्य रहे तो एक दिन वह आयेगा जब श्री प्यारेलाल जी अपने चित्रों में १०१ नायक-नायिकाओं का नग्न आलिंगन-चुम्बन प्रदर्शित करने में लेशमात्र के लिए भी न हिचकेंगे, जिसके अपराधी आप होंगे और सजा आपकी भावी सन्तानों को भुगतनी पड़ेगी, जो उन्हें 'मच्छर की सन्तान' भी कहने के अयोग्य कर देगा। दिग्दर्शक की 'अपनी छाया', 'रोशनी', 'सरगम' आदि की प्रतीक्षा कीजिये।

* * *

इधर कुछ दिनों से पुरुषों की भाँति स्त्रियों को निर्मात्रि बनने का ज्वर विशेष रूप से पीड़ित कर रहा है। साधना बोस, प्रतिमादास गुप्ता, जद्दनबाई, कमलाबाई मगलौरकर, देविकारानी आदि में सुश्री हिली वाडिया भी अपना विशेष स्थान रखती हैं। उनकी उत्साहित चल-चित्र-निर्माण-संस्था की दुर्गति को निरखकर उन पर तरस आता है। श्री एस० यू० सनी जैसे असफल निर्देशक को एक चित्र का भार देना मूर्खता एवं विश्वासघातकता की परकाष्ठा नहीं तो और क्या है ? वाडिया फिल्म्स लि० की नवीन रचना "मेला" उस कुप्रवृत्ति का ज्वलंत उदाहरण है।

श्री किशोर साहू ने 'कुवाँरा बाप' तथा 'सिंदूर' का निर्माण 'फोर्टी लिटिल मदर्स' तथा 'गोटे की टोपी' की धींगा-धींगी में किया, परन्तु सनी जी ने 'रतन' चित्र की पूरी कापी ही कर दी है। 'चोरी पर सीना जोरी' वाली कहावत चरितार्थ करने के लिए दिग्दर्शक ने 'हिच कोकची' तथा 'लिटिल मि० जिम' की कुछ अ[illegible]तियों को उल्टा 'धरती को आकाश पुकारे', (उमराजिया बेगम द्वारा स्फुटित गीत 'रानी के इस पास सजनवा की स्पष्ट छाया) 'ऋतु आई सावन की...' (रणजीत कृत 'मुसाफिर' के इस गीत—ऋतु वसंत की आई पिया' का प्रतिबिम्ब) आदि गीतों को प्रदर्शित करने का दुस्साहस किया है।

संवादों की भाषा के साथ अन्याय करने के साथ ही कहानी एवं चित्रालेखन में भी त्रुटियों की अधिकता है। समस्त स्थानों पर इतना प्रकाश प्रदर्शित करना अत्यन्त अस्वाभाविक प्रतीत होता है। रूप-सज्जा प्रशंसनीय तथा वेशभूषा स्वाभाविक है। मंजू के विवाह से सम्बन्धित दृश्यों में कला-निर्देशक तथा चित्र-निर्देशक ने अपनी अज्ञानता का परिचय स्पष्ट रूप में देने की कृपा की है।

अभिनय-कला की दृष्टि से सबसे सुन्दर गायिका मंजू की भूमिका में नर्गिस ने अभिभूत किया है। आपकी भाव-भंगियों में स्वाभाविकता, अभिनय में सौंदर्य तथा वाणी में भोलापन है। आपकी भावी कृतियाँ—'आग', 'बरसात', 'अनोखा प्यार', आदि हैं। नायक मोहन की छाया में दिलीपकुमार ने भी प्रशंसनीय अभिनय अभिभूत किया है। अंतिम दृश्य निरखने योग्य है। हास्य-अभिनेता जीवन ने भैकू की कल्पना में मनोरंजक कार्य किया है। पञ्चायत में न्यायाधीश की भूमिका में जीवन ने अत्यधिक सफलता प्राप्त की है। मंजू की सौतेली माँ की काया में नूरजहाँ तथा वसन्ती के आवरण में रूपकमल ने निम्नकोटि का अभिनय प्रदर्शित किया है। विश्वास है, पापुलर प्रोडक्शन कृत 'जन्मपत्री' में आप नायिका के रूप में रंच-मंच पर अपनी कला प्रसारित करेंगी।

साहित्य-चर्चा

'बापू के आशीर्वाद'

महान् आत्मा के रोज के विचार

बापू महान् थे, यह सर्वविदित है, पर उनकी इस विभूति का क्या रहस्य है इसे बहुत कम लोग समझते हैं। अपने जीवन में बापू को इस प्रश्न की मीमांसा करने का न तो अवकाश मिला, न आवश्यकता ही प्रतीत हुई। पर जिस तरह कृष्ण के सामने अर्जुन "शिष्यस्तेहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्" कहते हुए बैठ गये थे, उसी तरह श्री आनन्द हिंगोरानी का उनकी पत्नी के अवसान के बाद विषाद योग आरम्भ हुआ और "सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति" कहते हुए वे बापू की शरण में गये तो बापू ने इस बीसवीं शताब्दी में अपनी "गीता" की रचना आरम्भ कर दी और अपने व्यस्त जीवन में वे रोज थोड़ा समय अवश्य निकाल कर एक विचार जो कि तीन या चार लाइन का होता था लिखकर श्री हिंगोरानी के दिये हुए अलबम में रख देते थे। बापू की यह "गीता" एक दिन उतनी ही लोकप्रिय हो जावेगी जितनी आजकल भगवद्गीता है, यह मेरी भविष्यवाणी है। "कालोह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी" और "संजायते कोऽपि ममैव वेत्ता" यह ध्वनि इन विचारों के प्रत्येक शब्द से निकल रही है।

पूज्य बापू

कठोपनिषद् ने कहा है "दूरमेते विपरीते विषूची अविद्या या च विद्येति ज्ञाता" और भी श्रुतियाँ कहती हैं, इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः, तमेवं विद्वानमृत इह भवति, नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय, आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान्न बिभेति कुतश्चन, अविदुषस्त्वथ तस्य भयं भवति, अविद्या या मन्तरे वर्तमानाः, ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति, अन्योऽसावन्योऽहमस्मीति न स वेद यथा पशुरेवं स देवानाम्, आत्मविदः स इदं सर्वं भवति यदा चर्मवत्।" इस प्रकार की सहस्रों बातें कही गई हैं पर बीसवीं शताब्दी में ये विचार "आधुनिक" नहीं माने जाते थे। गांधी जी ने हमारी आधुनिक भाषा हिन्दी में इन्हीं विचारों को बीसवीं शताब्दी का लिबास पहनाकर प्रस्तुत किया है।

आप पूछ सकते हैं कि नई बात क्या कही? मैं इस लेख में उन्होंने नई बात क्या कही, इसका विशद विवेचन एक तो इस कारण नहीं कर सकता कि अभी इस पुस्तक में बापू के केवल पाँच महीनों के दैनिक विचार छपे हैं और इस तरह की तीन जिल्दें छपना बाकी हैं और सामग्री के इस आंशिक अभाव के अलावा अभी प्रस्तुत लेख केवल एक छोटा सा पुस्तक-परिचय-मात्र है, पर अपने पाठकों के सोचने और समझने के लिये इसको इंगित अवश्य करना चाहता हूँ कि क्यों बापू के इन विचारों को मैं भगवद्गीता से किसी तरह कम नहीं समझता।

यदि मेरे पाठकों में से किसी को भगवद्गीता की महत्ता के बारे में सन्देह है और वे उस पुस्तक को पढ़ने योग्य नहीं समझते तो उनसे मेरा अनुरोध है कि वे इस लेख को यहीं पर पढ़ना बन्द कर दें।

भगवद्गीता में ज्ञान, कर्म और भक्ति को परमार्थ का साधन कहकर भगवान् ने लोकमंगल के लिये अनासक्त कर्म करने की शिक्षा दी है उसका आदर्श समुच्चय मोहनदास करमचन्द गांधी के जीवन में अभिव्यक्त हुआ। "अनासक्तियोग" के लेखक गांधी ज्ञानी थे, भारत की स्वतन्त्रता के निर्णायक गांधी कर्मयोगी थे, और "राम" कहते हुए प्राण-त्याग करने वाले गांधी भक्तराज थे। हजारों वर्ष पूर्व धर्म-क्षेत्र में स्वयं भगवान् कृष्ण ने जिस ज्ञान-बीज को बोया गांधी जी के जीवन-रूपी कर्मक्षेत्र में भारत ने उसको न केवल पल्लवित किया बल्कि उसका फल भी चक्खा।

कृष्ण ने डंके की चोट पर कहा था "नेहाभि क्रम नाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते, स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्" और गांधी जी ने यद्यपि कृष्ण की तरह पूर्ण अवतार होने का कोई दावा नहीं किया पर वे अपनी इस नई गीता में लिख गये "आदम को खुदा मत कहो, आदम खुदा नहीं; लेकिन खुदा के नूर से आदम जुदा नहीं" और उस नूर को आदम किस तरह सदा प्रकाशमान रख सकता है यह बतलाने का उन्होंने प्रयास किया है।

वे लिखते हैं "मिथ्या ज्ञान से हम हमेशा डरते रहें। मिथ्या ज्ञान वह है जो हमको सत्य से दूर रखता है या करता है।"

और सत्य क्या है? इस विषय में गांधी जी लिखते हैं "ईश्वर के नाम तो अनेक हैं, लेकिन एक ही नाम ढूंढें तो वह है सत्, सत्य। इसलिए सत्य ही ईश्वर है।"

प्रस्तुत पुस्तक में गांधी जी ने यह बतलाया है कि उस परम सत्य के दर्शन कैसे हो सकते हैं। यही प्रश्न कृष्ण के सामने उठा था, इसी की मीमांसा बुद्ध और ईसा मसीह ने की और इसी प्रश्न का उत्तर गांधी जी ने आजीवन खोजा। इसी कारण उन्होंने अपनी आत्मकथा नामक पुस्तक का अँगरेजी में नाम "My Experiments with Truth" रक्खा। प्रस्तुत विचार गांधी जी के स्वर्गवास के कुछ ही पूर्व के हैं। नोआखाली जाने तक वे बराबर उन्हें लिखते गये इसलिये उनमें अधिक प्रौढ़त्व और गांभीर्य है।

गांधी जी के विचारों को पातञ्जलि योग सूत्रों में आप बीज रूप से पा सकते हैं। पर वे इस अर्थ में आधुनिक हैं कि वैयक्तिक रूप से जिन समाधानों को हमारे ऋषि लोग कर गये उनका गांधी जी ने सामूहिक प्रयोग किया, क्योंकि उनका कहना है "मनुष्य की शांति की कसौटी समाज में ही हो सकती है, हिमालय की टोच पर नहीं।"

श्री हिंगोरानी ने इस पुस्तक को जनता के सम्मुख रखकर समाज का महान् उपकार किया है और लोग उनके कृतज्ञ रहेंगे।*

—भगीरथ पांडे एम० ए०

---

* स्वर्गीय महात्मा गांधी के २०-११-४४ से १६-४-४५ तक लिखे हुए आशीर्वादों का संग्रह। प्रकाशक, श्री आनंद हिंगोरानी, संपादक—गांधी सीरीज एडमांस्टन रोड, प्रयाग। पृष्ठ ३१२। मूल्य १०)

खिजाब अब लगाना न होगा।

सफेद बाल काला

नकालों से सावधान!

इस तेल से बाल का पकना रुककर, पका बाल जड़ से काला पैदा होता है, सैकड़ों प्रशंसापत्रों से इसकी सत्यता प्रमाणित है। यह तेल सिर के दर्द व सर में चक्कर आना आदि को आराम कर आँख की रोशनी को बढ़ाता है। मूल्य छोटी शीशी ३॥) व बड़ी शीशी ५)।

श्वेत कुष्ठ की बनौषधि

महात्मा प्रदत्त ३७ सफेदी की दवा से तीन दिन में पूरा फायदा। यदि सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों, विज्ञापनदाताओं की दवा से निराश हो चुके हों, तो इसे लगाकर आरोग्य होवें। मूल्य ४) २१ दिन का।

पता :—श्रीकृष्ण आयुर्वेद भवन
(द २), बड़ा बाजार, हजारीबाग

स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधान मन्त्री की जीवन कहानी

जो देश के लिए अपने विशाल महलों को छोड़ कर जेलों की मुसीबतें सहन करता रहा और अपनी आरामकुर्सियों और कालीनों को छोड़कर गाँव गाँव गुलामी की स्वतन्त्रता के लिये जगाता फिरा। पुलिस की लाठियाँ और गोलियों की बौछार की परवाह न की और जिसने अपने बच्चों, स्त्री बहनों को आजादी के लिये सौंप दिया और भारतवर्ष का बे ताज बादशाह **जवाहरलाल नेहरू** हैं। इस हीरो की जीवन कहानी और उसके अँगरेजों के विरुद्ध महात्मा जी की अनुमति Guidance के अनुसार कारनामे। जवाहरलाल की जद्दोजेहद, मुसीबतें, जेलें, पुलिसवालों की लाठियाँ, अथवा इस पुस्तक में ऐसे हालात हैं, कि आपको उसकी काबिलियत का लोहा मानना पड़ेगा, और आप का दिमाग रोशन हो जावेगा हर सियासी काम करनेवाले। हर लाइब्रेरी हर पढ़े-लिखे को यह पुस्तक **जवाहरलाल नेहरू की कहानी** पढ़नी चाहिये। कीमत उर्दू, ५॥) हिन्दी, ५) डाकखर्च ।) आने दो पुस्तकें मँगाने पर डाकखर्च माफ।

मिलने का पता—

नया किताब घर—उर्दू बाजार (D A) दिल्ली।

देशदूत साप्ताहिक चित्रावली

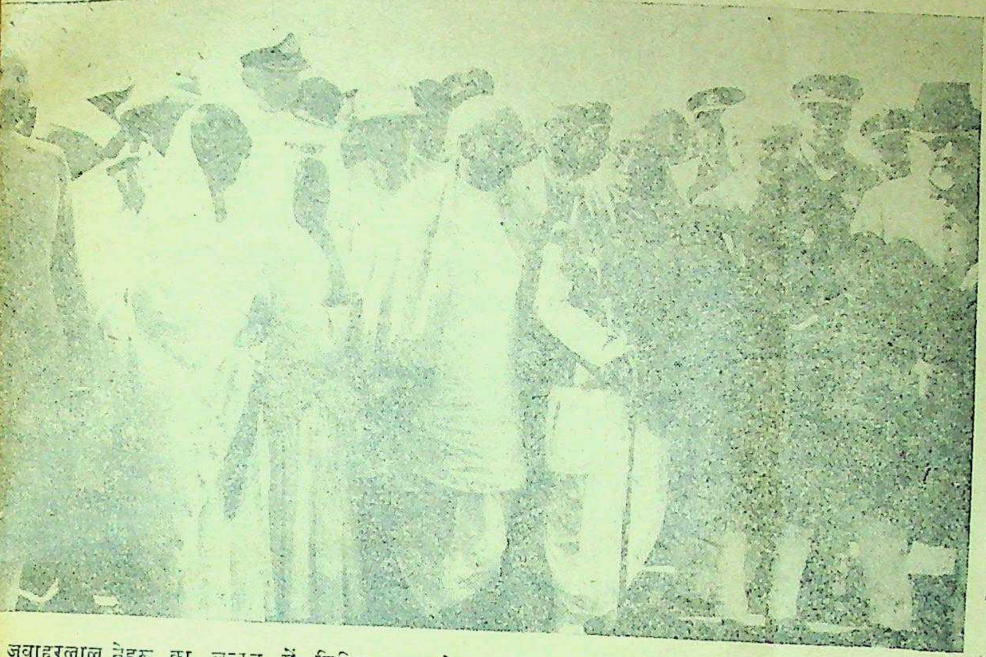

त जवाहरलाल नेहरू का लन्दन में ब्रिटिश कामन वेल्थ सम्मेलन में भाग लेने की वापसी के समय पालम हवाई-अड्डे पर भारतीय नेता स्वागत करते दिखलाई पड़ रहे हैं।

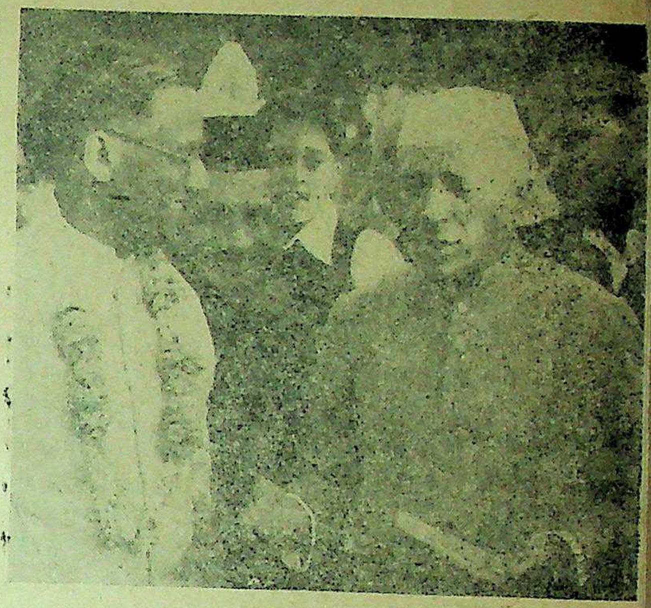

पंडित जवाहरलाल नेहरू और दिल्ली के उर्दू दैनिक 'तेज' के सम्पादक श्री लाला देशबन्धु गुप्त 'तेज' की स्वर्ण-जयन्ती के दिन ।

संयुक्त-राष्ट्र-संघ की अपील पर दिल्ली में 'पुष्प-दिवस' का एक दृश्य ।

सरदार बलदेवसिंह द्वारा भारतीय सेनाओं की सहायता के लिए दिल्ली में आयोजित किया गया मेला ।

र्लमेन्ट हाउस में युगान्तरकालीन कलाओं की प्रदर्शिनी का उद्घाटन राजकुमारी अमृत या था । चित्र में राजकुमारी अमृतकौर, राजा जी और डा० ताराचन्द खड़े हैं ।

काश्मीर की शरणार्थी महिलायें, जम्मू काश्मीर की महारानी के निरीक्षण के समय दिल्ली में अपनी दुख-कथायें सुना रही हैं ।

भारतीय संघ की भाषा हिन्दी....

(पेज ६ का शेष)

यह है भारत की अक्सरीयत और शरीफ लोगों की मजलिस में बोली जानेवाली जबान! धन्य है!

रेडियो सदृश देश और विदेश में प्रचार के सबसे बड़े साधन की ओर हमें और हमारी सरकार को ध्यान देना ही होगा। छोटे-मोटे सुधार से यहाँ काम न चलेगा; इस विभाग में तो पूर्ण क्रान्ति आवश्यक हैं।

सरकार का कर्त्तव्य

हिन्दी राष्ट्रभाषा और नागरी राष्ट्रलिपि घोषित कराने के साथ हमें निम्नलिखित बातें सरकार से करानी हैं—

(१) सरकार हिन्दी और अहिन्दी समस्त प्रान्तों के भाषा-विज्ञों की एक समिति बनाये जो पारिभाषिक शब्दों के अन्तिम रूपों का निर्णय करे जिन्हें हिन्दी और अहिन्दी सब प्रान्तों की भाषाओं में समान रूप से व्यवहृत किया जा सके।

(२) हिन्दी-भाषी प्रांतों की समस्त शिक्षा का माध्यम हिन्दी हो। अहिंदी प्रांतों में हिंदी अनिवार्य की जाय। समस्त विश्वविद्यालयों को और शिक्षा-संस्थाओं को इस सम्बन्ध में सरकार स्पष्ट आदेश दे।

(३) सरकार द्वारा एक केन्द्रीय ट्रेनिंग कालेज खोला जाय, जहाँ, सरकारी नौकरियों के लिए जिन व्यक्तियों का चुनाव हो जाय उनको, नियुक्ति के पहले यदि वे हिन्दी न जानते हों तो, हिन्दी की शिक्षा दी जाय और उनके लिए हिन्दी की परीक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य हो।

(४) हिंदी-भाषी प्रांतों के विश्वविद्यालयों में 'डाक्टरेट' के लिए जो निबंध लिये जाते हैं, अँगरेजी भाषा के थीसिस को छोड़, शेष सभी हिन्दी में लिये जायें।

(५) जिस प्रकार संयुक्तप्रांत की धारा-सभा में सारे बिल, प्रस्ताव, प्रश्न आदि हिंदी में प्रस्तुत किये जाते हैं उसी प्रकार केंद्रीय धारा-सभा और हिंदी भाषा-भाषी प्रांतों की धारा सभा में की कार्यवाही की जाय। केन्द्रीय धारा-सभा में कुछ समय तक हिंदी के साथ-साथ अँगरेजी में भी यह कार्य किया जा सकता है।

(६) प्राचीन साहित्य की खोज, वैज्ञानिक और शास्त्रीय साहित्य के निर्माण तथा प्रत्येक विषय के लिए उपयुक्त पाठ्य-पुस्तकें लिखाने के लिए सरकार सम्मेलन को पर्याप्त आर्थिक सहायता दे।

(७) हिंदी में तार भेजने और हिंदी टेलीप्रिंटर लाइनों की व्यवस्था की जाय।

(८) जिस प्रकार लार्ड कर्जन ने यहाँ की पुरानी ऐतिहासिक इमारतों की सुरक्षा के लिए एक कानून बनवाया था उसी प्रकार एक नया कानून प्राचीन साहित्यकारों के जन्मस्थान की रक्षा के लिए बनाया जाय। गोस्वामी तुलसीदास जी के जन्मस्थान की रक्षा के लिए यदि कुछ न किया गया तो यह स्थान बहुत शीघ्र वह जानेवाला है। इस सम्बन्ध में तत्काल कुछ न कुछ होना अत्यावश्यक है और इस कार्य में सरकार से सहायता मिलनी चाहिए।

मेरे दो स्वप्न

इस भाषण को पूर्ण करने से पहले मैं अपने दो स्वप्नों के उल्लेख का लोभ का संवरण नहीं कर सकता—मेरे प्रथम स्वप्न के फलस्वरूप सन् १९१९ के अ० भा० हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के पटना-अधिवेशन में, जिसके सभापति पं० विष्णुदत्त जी शुक्ल थे, एक प्रस्ताव पास हुआ था, जिसका आशय था कि भिन्न-भिन्न विषयों पर ग्रन्थ-निर्माण करने के लिए लेखकों को एक स्थान पर रक्खा जाये और उन्हें जीवन-निर्वाह की चिन्ता से मुक्त कर दिया जाय। इसी उद्देश्य से जबलपुर में 'राष्ट्रीय हिन्दी मन्दिर' की स्थापना हुई थी, परन्तु वह प्रयास सफल न हो सका। आज लेखकों की जीविका और साहित्य-सृजन दोनों ही प्रश्न उस समय की अपेक्षा कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण हो गये हैं। इस युग में ऐसी संस्था का निर्माण अत्यन्त आवश्यक है। यदि ऐसी संस्था का निर्माण, जो लेखकों को एक स्थान पर रख सके, नहीं हो सकता फिर एक ऐसी संस्था का निर्माण होना चाहिए, जो लेखकों को उनकी जीविका की चिन्ता से मुक्त कर उन्हीं के स्थान पर रहने दे और उनसे एक निश्चित समय के भीतर एक निश्चित परिणाम में साहित्य-सृजन का कार्य कराये। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि यदि साहित्यकार अपनी जीविका चलाने के लिए कोई दूसरा कार्य करते रहें और केवल अवकाश का समय ही साहित्य-सृजन में लगाते रहें तो हमें जिस साहित्य की आवश्यकता है उसकी रचना में बहुत समय लगेगा। लेखकों को हम उनकी जीविका की चिंता से मुक्त कर ही इस कार्य को सुन्दर रूप में करा सकते हैं।

मेरा दूसरा स्वप्न है भारत में भी 'नोबेल पुरस्कार' के समान कम से कम एक लाख रुपये के एक ऐसे पुरस्कार की व्यवस्था जो किसी भी भारतीय भाषा के सर्वोत्तम ग्रंथ पर हर तीसरे वर्ष दिया जाये। वह ग्रन्थ चाहे राष्ट्र-भाषा हिन्दी में हो अथवा बँगला, मराठी, गुजराती, तामिल, तेलगु, मलयालम, कन्नड़ आदि किसी भी प्रांतीय भाषा में।

इन योजनाओं तथा सम्मेलन के अन्य कार्यों के लिये यथेष्ट धन चाहिए। गत युद्ध में कितना कमाया है लोगों ने, उचित व अनुचित दोनों ही प्रकारों से। करोड़ों रुपया लोगों ने इनकम टैक्स के रूप में दिये हैं। दान के एक-एक करोड़ के ट्रस्ट भी बने हैं। भारत की दानप्रणाली बड़ी दूषित रही है; अब भी दूषित है। मैं तो समाज का वह संगठन चाहता हूँ कि जिसमें न किसी के पास दान देने को रहे और न कोई दान के लिये हाथ फैलाये। परन्तु जब तक व्यक्तिगत सम्पत्ति है, तब तक दान-प्रणाली रहेगी और इसलिए उसका सुधार भी अभीष्ट है। क्या भारत में भी इन कार्यों के लिए कोई दाता सामने आयेगा? जिन्होंने उचित मार्गों से कमाया है वे उसमें सार्वजनिक भाग मानकर दान दे सकते हैं और जिन्होंने अनुचित मार्गों से प्राप्त किया है वे अपने पाप का प्रायश्चित्त करने के लिये। ध्यान रखें यह लक्ष्मी चंचला है। 'स्थिराभव, स्थिराभव, स्थिराभव' का जप करते रहने पर भी यह आज तक कहीं स्थिरा नहीं रही है और न भविष्य में ही रहनेवाली है। बड़े-बड़े साम्राज्यों का निर्माण हुआ और नाश। बड़े बड़े करोड़पति बने और बिगड़े। जिन्होंने इस सम्पदा का उपयोग कर लिया वे ही धन्य हो गये, शेष का वही हाल हुआ जो धन पर बैठे साँपों का होता है।

इस भाषण का अन्त करता हूँ मैं राष्ट्रकवि मैथिलीशरण जी गुप्त की निम्न पंक्तियों से—

जय देव-मन्दिर-देहली,
सम-भाव से जिस पर चढ़ी
नृप-हेम-मुद्रा और रङ्क-वराटिका।
मुनि-सत्य-सौरभ की कली
कवि-कल्पना जिसमें बढ़ी,
फूले फले साहित्य की वह वाटिका।

श्वेत कुष्ट की अद्भुत दवा

प्रिय सज्जनो! औरों की भाँति मैं अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहता। यदि इसके ३ दिन के लेप से सफेदी के दाग जड़ से आराम न हों तो मूल्य वापस। जो चाहें -)॥ का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें। मूल्य बतौर नमूना ३) पूरा खुराक ५) रू० शीघ्र फायदा करनेवाल नं० १, १०) पेशगी भेजनेवालों को डाक खर्च माफ। १८ प्रकार के गलित कुष्ट के निराश रोगी अपनी पूरी-पूरी हालत लिखकर दवा मँगा लें और आराम होकर लाभ उठावें, वी० पी० छुड़ाते समय हमारा पता अवश्य देख लें।

विष्णु आयुर्वेदभवन नं० १२
पोस्ट वारसलीगंज, (गया)

ESTD 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेंट रिकगनाइजड AIDED

सिन्हा होमियो मेडिकल कौलेज

—पो० लहेरियासराय बिहार—

आज हिन्दी उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़ कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्सन सहित फीस H.L.M.S. १०), H.M.B.S. १५) H.M.D.S. २५)। पुस्तकें—अ० परिवारिक १॥). बायोकेमिक १॥) मेटेरिया मेडिका १॥) मेडिकल डिक्सनरी २) आर्गेनन १॥) फार्माकोपिया (१॥) रेड लाईन सीम्पटम्स १॥) कुल किताबें १०) में एक साथ दी जायँगी डा० ख० माफ। अमेरिकन दवाइयाँ ३०-=)॥ २००—≡) ड्राम, फी औंस ।), घरेलू बक्स पुस्तक सहित ३६ शीशो का ८)। सुगर और गोली २॥) फी पाउण्ड।

(१) बृ० इजेक्सन चिकित्सा ३)। बृ० अ० परिवारिक चिकित्सा ६)।

नोटः—बृहत् सूची मुफ्त—सचित्र मेडिकल मैगजीन मासिक ।) सालाना—४)।

संरक्षक—राय साहब डा० यदुवीरसिंह एम० डी० एस० (U.S.A.)

T. B. टी. बी. 'तपेदिक' चाहे फेफड़ों का हो या अँतड़ियों का बड़ा भयंकर रोग है

(१) पहला स्टेज	(२) दूसरा स्टेज	(३) तीसरा स्टेज	(४) चौथा स्टेज	अन्तिम स्टेज
मामूली ज्वर, खाँसी	ज्वर-खाँसी की अधिकता	शरीर सूखना, ज्वर-खाँसी की भयंकरता	सब ही बातों की भयंकरता शरीर पर वर्म, दस्त आदि का शुरू होना	रोगी की मौत और भयंकर जर्मों का इधर-उधर फैलना
जबरी	(JABRI)	जबरी	(JABRI)	

अनेक प्रशंसापत्र आप इन्हीं कालमों में देख चुके हैं। भारत के कोने-कोने में लोगों ने यह मान लिया है कि इस दुष्ट रोग से रोगी की जान बचानेवाली यदि कोई औषधि है तो वह एकमात्र "जबरी" ही है। "जबरी" के नाम में ही भारत के पूज्य ऋषियों के आत्मिक बल का कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि प्रथम दिन से ही इस दुष्ट रोग के जर्म नष्ट होना शुरू हो जाते हैं। यदि—आप इस तरफ से हताश हो चुके हों तो भी परमात्मा का नाम लेकर एक बार "जबरी" की परीक्षा करें। परीक्षार्थ ही हमने १० दिन का नमूना रख दिया है, जिसमें तसल्ली हो सके। बस—आज ही आर्डर दें। अन्यथा फिर वही कहावत होगी कि—अब पछताये क्या होत है, जब चिड़िया चुग गई खेत। सैकड़ों डाक्टर, हकीम, वैद्य अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार द्वारा आर्डर देते हैं। हमारा तार का पता केवल "जबरी" जगाधरी (Jabri Jagadhri) काफी है। तार में अपना पूरा पता दें। मूल्य इस प्रकार है—जबरी स्पेशल नं० १ जिसमें साथ साथ ताकत बढ़ाने के लिए सोना, मोती, अभ्रक आदि मूल्यवान् भस्में भी पड़ती हैं। पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन के लिए २०) रु०। जबरी नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान् जड़ी-बूटियां है, पूरा कोर्स २०) रु०, नमूना १० दिन के लिए ६) रु०। महसूल आदि अलग है। आर्डर देते समय नं० १ या २ तथा पत्र का हवाला जरूर दें। पार्सल जल्द प्राप्त करने के लिए मूल्य मनीआर्डर से भेजें।

पता—रायसाहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड बैङ्कर्स (D) 'जगाधरी' (पूर्व पंजाब)

संवाददाताओं के पत्र

मेरठ में युक्तप्रांतीय हिंदी पत्रकार-सम्मेलन का पंचम वार्षिक अधिवेशन 'मतवाला'--सम्पादक श्री बेचन शर्मा 'उग्र' की अध्यक्षता में ता० ११ तथा १२ दिसम्बर १९४८ को मेरठ में होगा।

—संवाददाता

*　　　*　　　*

जयपुर प्राकृतिक जीवन में भी कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर सम्मेलन का आयोजन किया गया है। इसके स्वागताध्यक्ष बाबा राघवदास जी हैं। सम्मेलन का उद्घाटन पुडुकोटा के यजस्वी डाक्टर और "लाइफ नेचरल" के सम्पादक के० लक्ष्मण शर्मा महोदय करेंगे। पहले से सूचना देनेवालों के लिए निवास का प्रबन्ध मुफ़्त और भोजन का १) रुपया प्रतिवार चार्ज हो कर किया जायगा। पत्र व्यवहार डा० सुरेन्द्रप्रसाद गर्ग, मन्त्री गांधीनगर, जयपुर से करना चाहिये।

—सुरेन्द्रप्रसाद गर्ग मन्त्री

*　　　*　　　*

कोटा का राजस्थान हिंदी विद्यापीठ गत १४ वर्षों से सम्मेलन की परीक्षाओं का प्रचार कर रहा है। इस वर्ष ४०० छात्र सम्मेलन की विभिन्न परिक्षाओं में कोटा से सम्मिलित हो रहे हैं। छात्र के नियमित एवं निःशुल्क शिक्षण के अतिरिक्त व्याख्यानमाला का भी प्रबंध किया जाता है जिसमें राजस्थान के प्रमुख विद्वान् भाग लेते है। छात्र-संख्या एवं उत्तम परीक्षा-फल की दृष्टि यह विद्यापीठ राजस्थान प्रान्त में सर्वप्रथम स्थान ग्रहण कर चुका है। विभिन्न परिक्षाओं में सर्वप्रथम उन्हीं छात्रों को गत ५४ वर्षों से पदक भेंट किये जाते हैं।

—संवाददाता

*　　　*　　　*

देवप्रयाग में युक्तप्रांत के माननीय कृषि-मन्त्री गोचर से वापसी में २३ नवम्बर को देवप्रयाग पहुँचे वहाँ पर एक सार्वजनिक सभा श्री घनेश शास्त्री की अध्यक्षता में माननीय मन्त्रिमहोदय के स्वागतार्थ हुई जिसमें राज्य के विभिन्न इलाकों की जनता काफी संख्या में उपस्थित थी जनता की ओर से एक अभिनन्दन-पत्र मन्त्रि महोदय को लोकनायक श्री प्रेमलाल वैद्य के नेतृत्व में दिया गया। जिसमें टिहरी की वर्तमान परिस्थिति एवं जनता के असन्तोष का उल्लेख करते हुए टिहरी को प्रान्त के एक जिले में विलय किये जाने की प्रार्थना की गई।

टिहरी के जननायक श्री परिपूर्णानन्द पैतूली अपने टिहरी के तूफ़ानी दौरे के सिलसिले में २६ नवम्बर को देवप्रयाग पहुँचे, वहाँ भी सर्वत्र की भाँति आपका शानदार स्वागत हुआ। श्री प्रेमलाल वैद्य के तत्त्वाधान में श्री ब्रजमोहन जी सनमैय्या की अध्यक्षता में एक विराट सार्वजनिक सभा में श्री पैतूली जी ने अपने भाषणों में टिहरी की वर्तमान शोचनीय परिस्थित एवं प्रजामंडल (जो अब राज्य कांग्रेस बन गया है) की डुलमुल नीति पर प्रकाश डाला और जनता से संगठित होकर मुकाबला करने की अपील की।

टिहरी के मन्त्रिमंडल एवं प्रजामंडल की अवधि समाप्ति पर है अतः उनके एजन्ट पुनः उन्हें पदों पर आरूढ़ रखने के लिये देहातों का जोरों से दौरा कर रहे हैं।

—संवाददाता

मुफ़्त
२२॥) की सेन्टर सेकेण्ड रिस्टवाच

नये चालान की कुछ खास चुनी हुई घड़ियाँ सुन्दर मजबूत स्वीस की बनी ३ साल की गारण्टी गोल क्रोम केस १८॥) सेन्टर सेकेण्ड २२॥) पलाट शेप ४ ज्वेल २३)
छोटी साइज „ „ २५)
„ शेप ७ „ क्रोम २७) रोल्ड गोल्ड ३८)
„ शे १५ „ „ ३२) रोल्ड गोल्ड ५८)
रेकटैंगुलर कर्भ व टोनो (चित्र जैसा)
५ ज्वेल क्रोम केस ३०) रोल्ड गोल्ड ३५)
७ ज्वेल क्रोम केस ३७) रोल्ड गोल्ड ४८)
१५ ज्वेल क्रोम केस ५२) रोल्ड गोल्ड ६१)
एलार्म टाइमपीस १८) सुपीरियर २२), बीग २५) डाक खर्च अतिरिक्त कोई भी तीन घड़ी एक साथ लेने से २२॥) वाली रिस्टवाच मुफ़्त मिलेगी।
एच० डेविड ऐन्ड को, पो० ब० ११४२४
कलकत्ता

सिरदर्द के कारण एकाउण्टैण्ट चौंधिया गया।

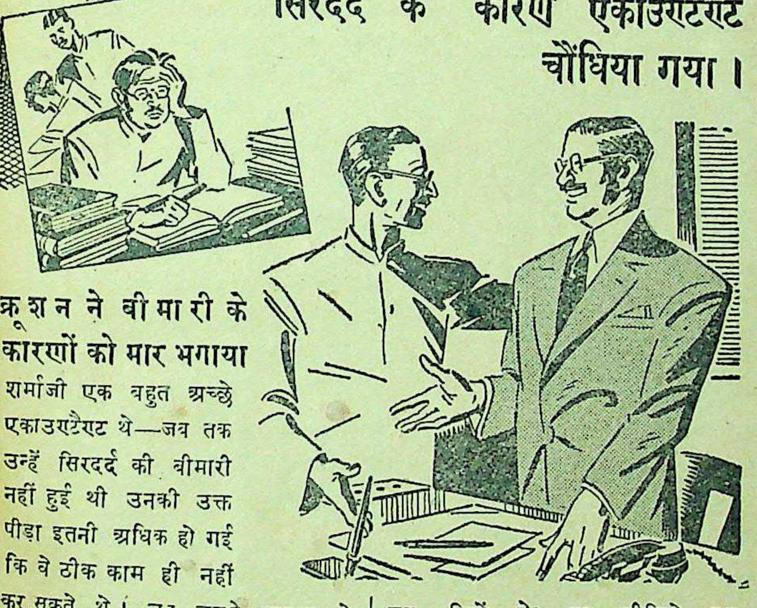

क्रूशन ने बीमारी के कारणों को मार भगाया

शर्माजी एक बहुत अच्छे एकाउण्टैण्ट थे—जब तक उन्हें सिरदर्द की बीमारी नहीं हुई थी उनकी उक्त पीड़ा इतनी अधिक हो गई कि वे ठीक काम ही नहीं कर सकते थे। जब उनके अफसर ने उनकी सुस्ती की शिकायत की तो उन्होंने स्वीकार किया कि सिरदर्द की बेचैनी के कारण ही ऐसा है। उनके अफसर ने उनको प्रातःकाल जलपान के पूर्व क्रूशन के सेवन की नेक सलाह दी।
दो सप्ताह के बाद ही शर्माजी एक नये व्यक्ति बन गये—अपने कार्य में एक ही, अत्यन्त चुस्त एवं उत्सुक। छः माह के अन्दर ही सिरदर्द उनके अतीत की बात बन गया। फिर तो उनको तरक्की मिली और वेतन-वृद्धि भी सिरदर्द पेट की गड़बड़ी के कारण तथा अँतड़ियों में मल-मूत्र के संग्रह के कारण—जिससे रक्त विषाक्त बन जाता है—हुआ करता है।

इन विषों को दूर कीजिये—पुनः एकत्र होने से रोकिये—और फिर आपको कभी तकलीफ नहीं होगी। क्रूशेन साल्ट सिरदर्द यथा शीघ्र अच्छा करता है। और टिकाऊ आराम प्रदान करता है। यह सभी प्रकार के विष एवं एसिड को जो गठिया और नसों की सूजन आदि को जो कई बीमारियों के घर हैं, शरीर से बाहर निकालने में प्रकृति को सहायता प्रदान करता है।

क्रूशेन साल्ट आज ही खरीदिये। प्रत्येक दवाई-विक्रेता के यहाँ मिलता है। पीले कागज की तख्ती के डिब्बे में, मूल्य १॥=)

KRUSCHEN SALTS

आपको भी
क्रूशन की आवश्यकता महसूस हो सकती है

Ad. No. KSID. 1 Hindi.

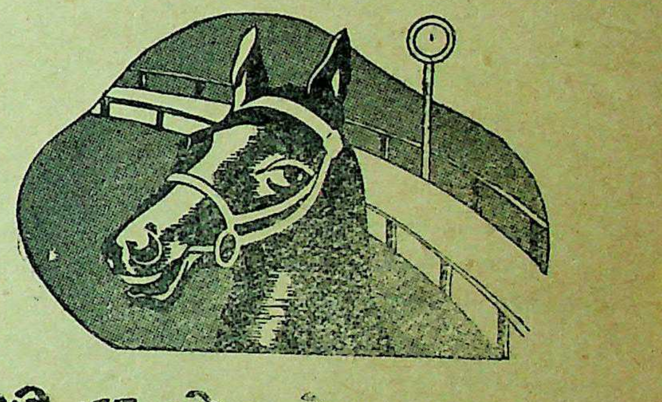

यदि यह घोड़ा बोल सकता....

तो आप से यह साधारण प्रश्न पूछता : कितने ऐसे मनुष्यों को आप जानते हैं जो जुये के भरोसे किसी विशेष अवधि तक फलते-फूलते रहे हों—सम्भवतः हज़ार में एक! कारण तो प्रत्यक्ष ही है : यदि हारने वालों की संख्या जीतने वालों की अपेक्षा अधिक न होती तो भला दलाल, एजेन्ट और "बुकी" भारी आय कैसे कर पाते? इस से भी कहीं बुरी बात तो यह है कि वह जो जीत भी जाते हैं अपनी जीत की आय को प्रायः व्यर्थ ही नष्ट कर देते हैं और परिणाम यह होता है कि आर्थिक रूप से उनकी स्थिति भी हारने वालों जैसी ही हो जाती है।

जो जूये के बारे में सच है वही सट्टे के सम्बन्ध में भी कहा जा सकता है। इस लिये क्यों न आप बुद्धिमत्ता से काम लें और अपना रुपया और बचत—जैसी भी हो, थोड़ी हो, या अधिक,—सुरक्षित और लाभप्रद मद में लगाएँ?

नैशनल सेविंग्ज़ सर्टीफ़िकेट्स ख़रीदिए। ये ५, ७, और १२ वर्ष की विभिन्न अवधियों में प्राप्त किये जा सकते हैं और अवधि के समाप्त होने पर इन पर क्रमशः ३%, ३-१/२% और ४-१/६% ब्याज प्राप्त होता है।
अन्य सरकारी सिक्योरिटियों, डाकख़ानों और सेविंग्ज़ बैंक के खातों, बीमा कम्पनियों और कोऑपरेटिव संस्थाओं की मद में रुपया लगाइए।

भविष्य के लिए आज बचाइए
जो कुछ बचाइए बुद्धिपूर्वक लगाइए

हिन्द सरकार के अर्थ विभाग, नई देहली, द्वारा प्रकाशित।
AC. 420

राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति, वर्धा

(पेज १० का शेष)

हो गई हैं। प्रेस की पूँजी अब तक ५००-००) के करीब पहुँच चुकी है।

भवन-विभाग

समिति का उद्देश्य वर्धा में राष्ट्रभाषा-कार्यकर्ताओं का एक उपनिवेश (कॉलनी) निर्माण करना है। इस उद्देश्य से इस वर्ष ८ एकड़ और जमीन मोल ले ली गई है। इस प्रकार समिति के पास अब कुल १२॥ एकड़ जमीन हो गई है।

इस प्रकार यह 'हिन्दी-नगर' दिनों-दिन फैलता जा रहा है।

साधनों के अभाव में भवनों के निर्माण का कार्य अभी पूरा नहीं हो सका है। अब तक ६-६ कमरों के दो ब्लाक, ४ परिवारीक्वार्टर, प्रेस की इमारत तथा १२४ फीट लंबा एकदो मंजिला भवन बनकर तैयार हुए हैं। इनके अतिरिक्त एक सामूहिक भोजन-शाला भी बन चुकी है।

पोस्ट आफिस

पिछले साल से समिति की सुविधा के लिये समिति के भवन में ही एक 'पोस्ट ऑफिस' खुल गया है। असुविधाओं से एक हद तक छुटकारा मिल गया है।

अपनी नई योजनाओं को पूरी करने के लिये समिति को राष्ट्रभाषा-प्रेमियों के हर तरह के सहयोग की आवश्यकता है। धन्यवाद!

◆ ◆ ◆

नक्कालों से सावधान!

श्वेत कुष्ट की अद्‌भुत दवा

प्रिय सज्जनो! औरों की भाँति मैं अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहता। यदि इसके तीन दिन लेप से सफेदी के दाग जड़ से आराम न हों तो मूल्य वापस। जो चाहें –)॥ का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें। मूल्य २॥) रु०

१८ प्रकार के गलित कुष्ट के निराश रोगी अपनी पूरी-पूरी हालत लिखकर दवा मगा लें और आराम होकर लाभ उठावें, वी० पी० छुड़ाते समय हमारा पता अवश्य देख लें।

सफेद बाल काला!

खिजाब से नहीं हमारे आयुर्वेदिक "केश संजीवनी" (सुगन्धित) तैल से बालों का पकना रुककर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। यह तैल दिमागी ताकत और आँखों की रोशनी को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो वे दूना मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। मूल्य २), बाल अधिक पक गया हो तो ४) का तैल मँगावें। पता—

वैद्यराज अखिल किशोरराम
नं० १ पो० सरिया, जिला हजारीबाग।

◆ ◆ ◆

घर बैठे डाक्टर बनिये

थोड़े पढ़े लिखे भी घर बैठे होम्योपैथी बायोकेमिस्ट्री, प्राकृतिक चिकित्सा जल चिकित्सा, वायु चिकित्सा; तथा सूर्य चिकित्सा के डाक्टर बन सकते हैं। नियमावली मुफ्त मँगायें।

इंटर नेशनल इन्स्टीट्यूट रजिस्टर्ड अलीगढ़

चेहरे की अधिक सुन्दरता के लिये

पांड्स के दो क्रीम

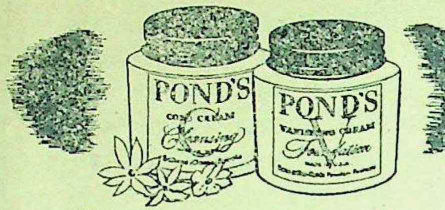
POND'S
COLD CREAM
Cleansing
POND'S
VANISHING CREAM
Protective

एक निर्मलता के लिये – एक सुरक्षा के लिये

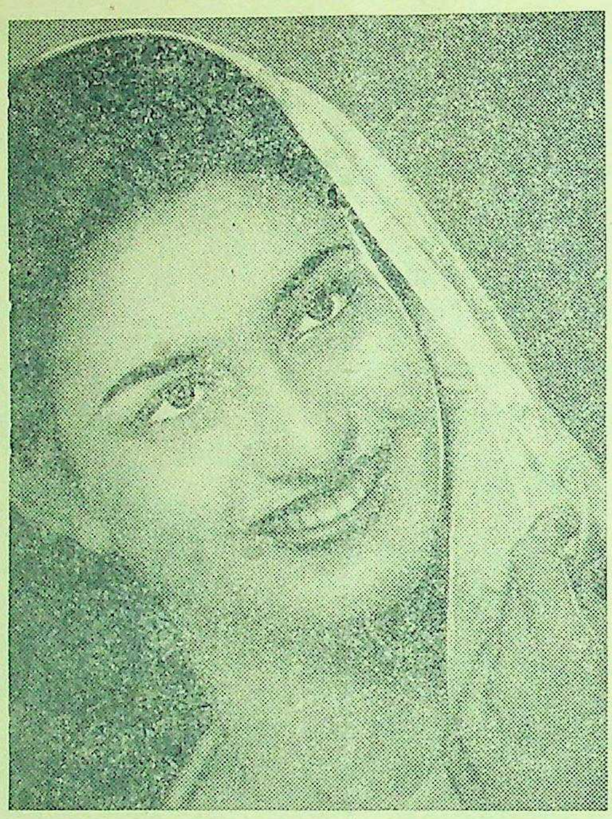

चेहरे को निर्मल, ताज़ा और युवा बनाये रखने के लिये आपको दो सौंदर्य क्रीम की आवश्यकता है। पहिला, उसे निर्मल और कोमल बनाये रखने के लिये उत्तम रूप से मिश्रित तेलों का क्रीम। दूसरा चिकनाई-रहित क्रीम जो गर्मी और धूल के विरुद्ध सुरक्षा के लिये सारे दिन भर अदृश्य रूप से लगा रह सके।

अपने चेहरे को पांड्स कोल्ड क्रीम से निर्मल कीजिये—कोमल, सुखद चिकना क्रीम। प्रति रात्रि इस हिमवत् क्रीम को अपने चेहरे और गले पर थपथपाइये। छिद्रों के भीतर धूल के जो अदृश्य कण हैं उन्हें ढीला करने के लिये उसे धीरे-धीरे थपथपाइये। तब उसे पोंछ डालिये। अब देखिये कितना उज्ज्वल और स्वच्छ आपका चेहरा दिखता है! और मुख कितनी सुन्दरता के साथ कोमल प्रतीत होता है!

पांडस वेनिशिंग क्रीम से अपने चेहरे की रक्षा कीजिये—शीतल, हल्का, चिकनाई-रहित क्रीम। प्रति सवेरे इस क्रीम की बहुत पतली झिल्ली लगाइये। यह बड़ी सरलता से रमता है और चिकना नहीं है। आपके चेहरे को यह सुन्दर पुष्पवत् शृंगार देता है।

स्मरण रखिये कि ग्रीष्म की कठोर गरमी और सर्दी की शीत दोनों ही हमारे शरीर के प्रकृत तेलों को सुखाकर उसे काला और भद्दा बना देती हैं।
पांड्स
यह भी स्मरण रखिये कि छिद्रों की गहराई में धूल या मैल के कणों से ही शरीर में अधिकांश दाग पैदा हो जाते हैं।
पांड्स के दैनिक, नियमित प्रयोग से चेहरा स्वच्छ, उज्ज्वल और निर्मल हो जावेगा—वह सदैव युवा दिखेगा। आपके 'सौंदर्य नियमन' के इस साधन को प्रति दिन पांड्स के दो क्रीम से पूरा कीजिये।

व्यापारिक विवरण के लिये– एल. डी. सेमूर एंड कं. (इंडिया) लि०
बम्बई - कलकत्ता - देहली - मदरास - नोवा गोवा - कराची - कोलम्बो - रंगून

आरोंदा
१८६६
नीलगिरि तैल
पी. सांडालेकर बंधु बम्बई ४.

मुफ्त

युवको! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीवन फीका हो चुका हो तो भारत भर में सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त रोग विशेषज्ञ

कविराज ब्रह्मस्वरूप बी० ए०

(D.A.) फतेहपुरी देहली से सलाह मशविरा मुफ्त करके अपना जीवन सुधार लें।

जीवन की नई शृङ्खला

हिस्टेरिया रोग तथा अन्य मानसिक विकार जीवन को नीरस व भारस्वरूप बनानेवाले महा भयंकर रोग हैं। पूर्व इसके कि ये राजरोग दुःसाध्य अवस्था को प्राप्त हों 'ब्रेन्टन' का सेवन कर शीघ्र ही पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करिये।

आज ही लिखें :—
मू० ४।।।=) प्र० शीशी डाक-खर्च सहित।
अन्य जानकारी मुफ्त।
जय भारत लैबोरेट्रीज (D.D.I.)
ज्वालापुर (हरद्वार)

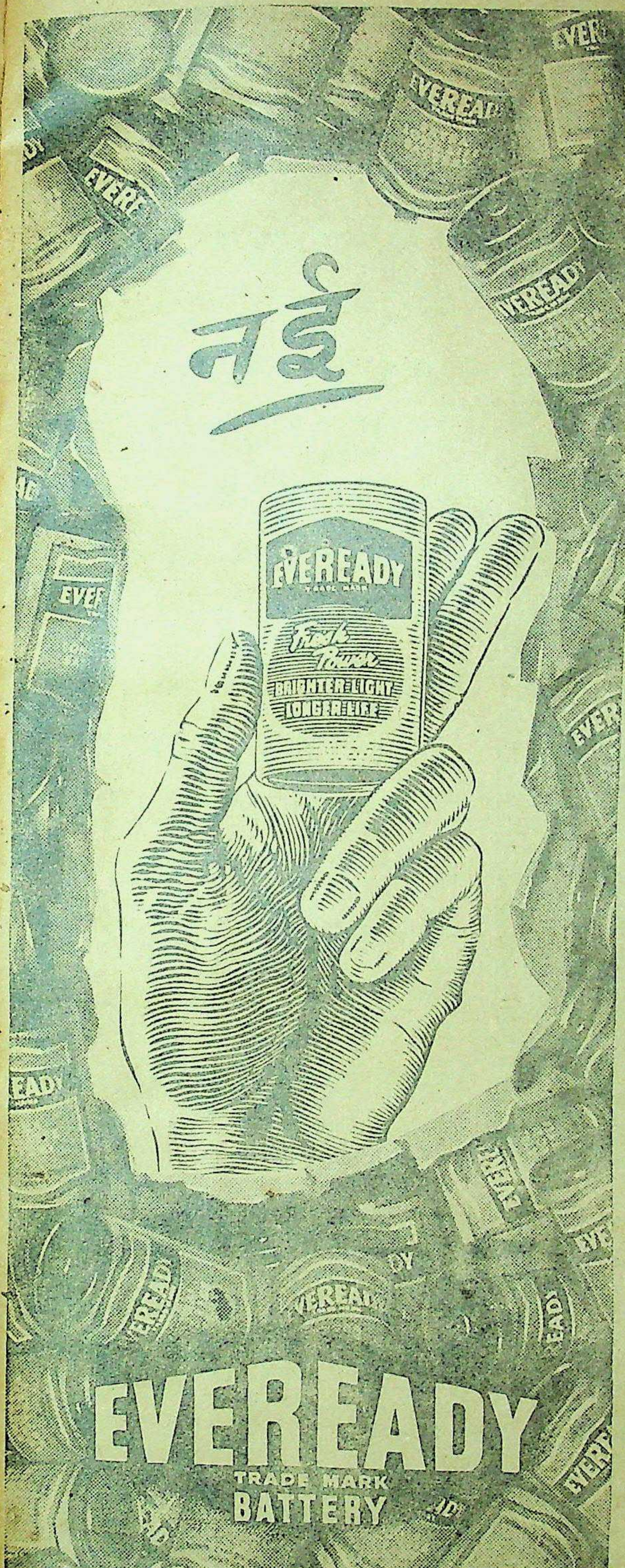

नई
EVEREADY
Fresh Power
BRIGHTER LIGHT
LONGER LIFE
EVEREADY
TRADE MARK
BATTERY

नेशनल कार्बन कम्पनी द्वारा प्रस्तुत

लिपटन के प्रेमी : २

मैं पार्टियों में लिपटन की हिमालयन ब्लेण्ड चाय परोस देती हूँ चारों ओर से प्रश्नों की बौछार होने लगती है

गृहिणी

मैं अपने अतिथियों को अच्छी चाय पिलाती हूँ और वे इसकी बड़ी प्रशंसा करते हैं। काफी अरसे से मैं सिर्फ लिपटन की हिमालयन ब्लेण्ड चाय ही इस्तेमाल कर रही हूँ। मेरे अतिथि चाय पीते जाते हैं और तारीफ के पुल बांधते जाते हैं। आखिरकार वे पूछ ही बैठते हैं—"यह कौन सी चाय है?" लिपटन की हिमालयन ब्लेण्ड चाय का नाम बताने पर लिपटन के बहुत से जीवन साथी बन गये हैं। पहले, दाम कुछ ज्यादा मालूम पड़ता है परन्तु क्वालिटी बढ़िया होने की वजह से चाय कम लगती है और आखिरकार बड़ी सस्ती पड़ती है।

लिपटन की
हिमालयन ब्लेण्ड
सर्वोत्तम दार्जिलिंग चाय

LTK 98

पीडा को रोको

अलेम्बिक शीतल बाम में काफ़ूर, पिपरमिन्ट, युकलिपटस आयल, कैजूपुटी आयल आदि मिश्रित हैं और यह पीड़ा को शांत और कम करती है।

शीतल बाम लगाने से कई प्रकार की पीड़ा और दर्दों को जैसा कि:—जोड़ों की पीड़ा, मोंच, और सिर दर्द को आराम मिलता है।

१, २ औंस की शीशी में मिलती हैं

शीतल बाम

एक अलेम्बिक औषधि

AL 3 HIND

10 Saridon
ANALGESIC TABLETS
दूर करता है सभी दर्दों को शीघ्रता पूर्वक

देशदूत में विज्ञापन दीजिए।

हमारे कुछ धार्मिक ग्रन्थ

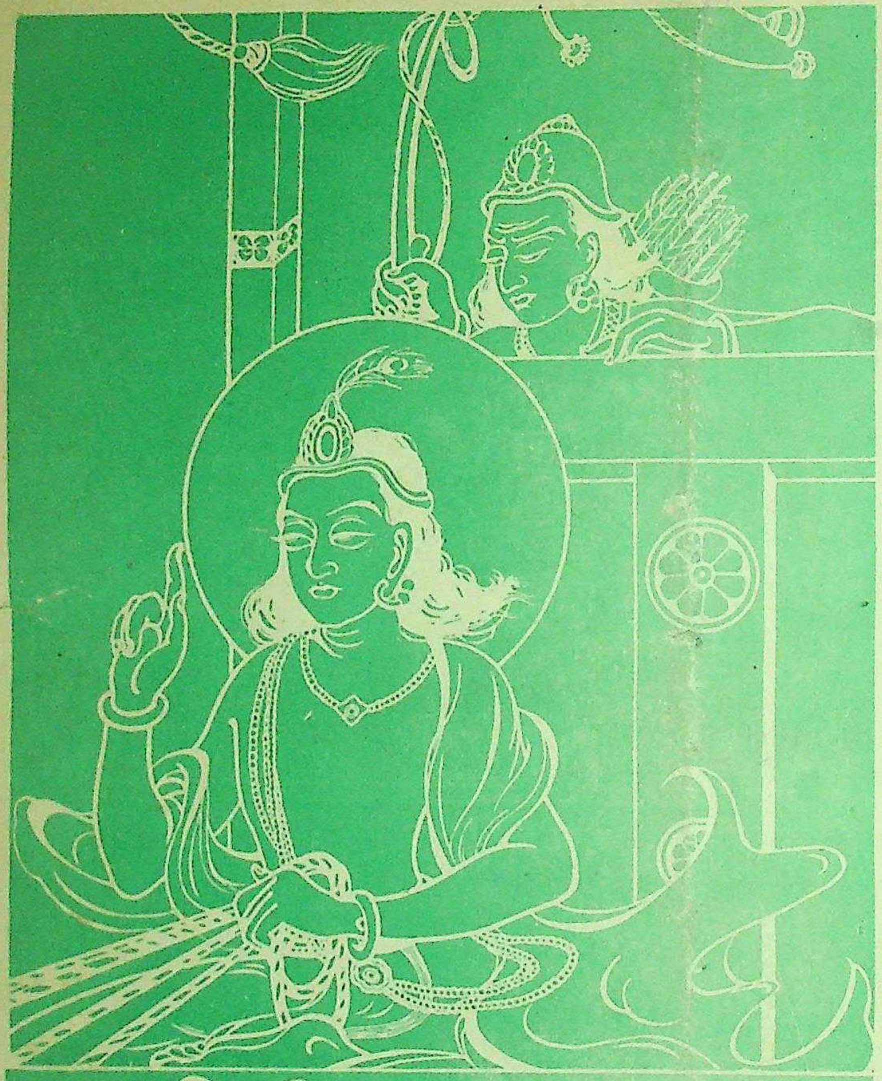

हिन्दी-महाभारत

महर्षि वेदव्यास के महाभारत का अक्षरशः अनुवाद। अगणित रंगीन और सादे चित्रों के कारण महाभारत का यह संस्करण जैसे बहुत ही नयनाभिराम है वैसे ही सीधी और सरल भाषा में लिखा हुआ होने के कारण स्त्री-बच्चों से लेकर बड़े-बूढ़ों तक के लिए उपयोगी है।

इस ग्रंथरत्न का बड़ा आदर है। इसकी प्रति प्रत्येक भारतवासी के घर में होनी चाहिये। इसके पठन-पाठन से सभी का उपकार होता है।

मूल्य ८०) अस्सी रुपये

महात्मा तुलसीदास जी का

राम-चरित-मानस

'मानस' का महत्त्व किसी से छिपा नहीं है। भारतवर्ष में तो इसका मान है ही, अन्य देशों में भी इस अमर काव्य का आदर है। यह प्रामाणिक संस्करण इधर कई वर्ष से अप्राप्य था। इसके टीकाकार राय बहादुर बाबू श्यामसुन्दर दास हैं। यह हाल ही में छप कर तैयार हुआ है। बड़े अक्षरों में मूल ग्रन्थ है और छोटे अक्षरों में सुन्दर सरल भाषा में अर्थ है। बालक, बूढ़े और स्त्रियाँ सभी इस संस्करण से लाभ उठा सकते हैं। इस ग्रन्थ से घर की शोभा बढ़ती है।

ग्राहक शीघ्रता करें। अधिक प्रतियाँ नहीं छापी गई हैं।

बड़े आकार के १२०० पृष्ठ रंग-बिरंगे दर्जनों चित्र। बढ़िया मजबूत जिल्द वाली प्रति का मूल्य १२) रुपये

हिन्दी-महाभारत

आचार्य द्विवेदी जी ने इसमें महाभारत के अठारहों पर्वों की कथा बहुत ही मधुर और सरल भाषा में लिखी है। मूल्य ६) छः रुपये।

श्रीमद्भागवत

सुन्दर सरल भाषा में किया गया अविकल अनुवाद। महाभारत की तरह इसमें भी सादे और रंगीन चित्रों की भरमार है और सुबोध भाषा में लिखा हुआ होने के कारण आबाल-वृद्ध-वनिता सभी के लिए उपयोगी है। मूल्य १६) सोलह रुपये।

वाल्मीकीय रामायण

(सचित्र) दो भाग

महर्षि वाल्मीकि का रामायण हिन्दू-संस्कृति का इतिहास है। यह महाभारत से भी प्राचीन है। संसार भर में कोई भी ऐसी सभ्य भाषा नहीं है जिसमें इस ग्रन्थ का अनुवाद प्रकाशित न हुआ हो। हिन्दी में इसका बढ़िया अनुवाद नहीं था, उसी कमी को पूरा करने के लिए हमने इसका अनुवाद सरल भाषा में प्रकाशित किया है। सारी पुस्तक उपन्यास की तरह पढ़ते जाइए, समझने में कहीं जरा भी कठिनाई नहीं पड़ेगी। मूल्य ६।) छः रुपये आठ आने प्रतिभाग।

प्राणायाम-विज्ञान और कला

पाश्चात्य मनीषी डाक्टर शोजाबुरो ओटेव नामक सुप्रसिद्ध चिकित्सक के प्राणायाम-सम्बन्धी लगातार कई वर्ष के अनुभव का वर्णन। मूल्य १) एक रुपया।

आध्यात्मिकी

आचार्य द्विवेदी जी ने इस पुस्तक में हमारे ऋषि-मुनियों से लेकर नये से नये देशी और विदेशी आस्तिक और नास्तिक हर तरह के विद्वानों के मत का सार खींचकर रख दिया है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

सदुपदेश-संग्रह

इसमें देश-विदेश के महात्माओं के उत्तमोत्तम उपदेशों का सुन्दर संग्रह है। इसका मनन करके हम अपने जीवन को सार्थक तथा सुखमय बना सकते हैं। मूल्य ।।) आठ आने।

जहाँ पर हमारी ब्रांच या एजेंसी है वहाँ खरीदने पर डाकखर्च की बचत होगी।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

Computed
1999-2000